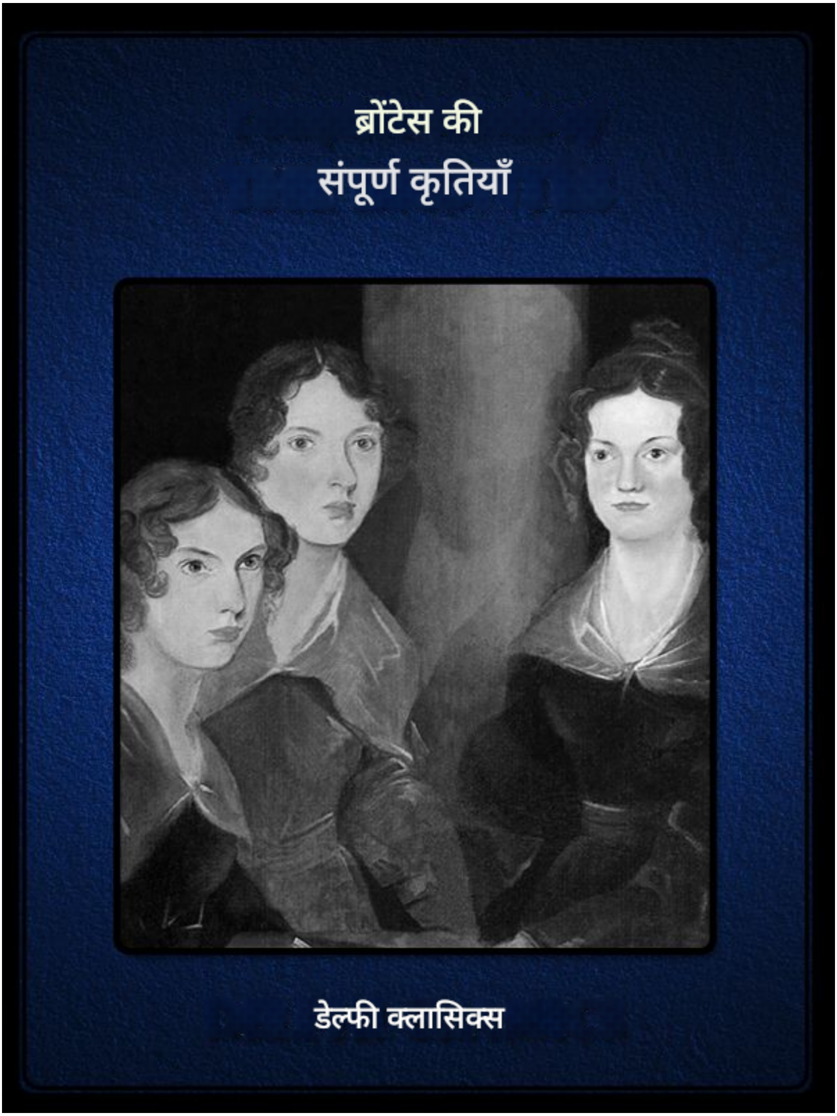

Table of Contents

संपूर्ण रचनाएँ
सामने

अंतर्वस्तु

शार्लोट ब्रोंटे के उपन्यास

जेन आयर
शर्ली
विलेट
प्रोफेसर
एम्मा

शार्लोट ब्रोंटे की बाल रचनाएँ

एंग्रिया की कहानियाँ
लौरा का चेहरा
स्टैनक्लिफ का होटल
विली एलिन की कहानी
एल्बियन और मरीना
एंग्रिया और एंग्रियन
द्वीपवासियों की कहानियाँ
हरा बौना

एमिली ब्रोंटे का उपन्यास

वर्थरिंग हाइट्स

ऐनी ब्रोंटे के उपन्यास

एग्नेस ग्रे
वाइल्डफेल हॉल का किरायेदार

कविता

क्यूरर, एलिस और एक्टन बेल की कविताएँ

पैट्रिक ब्रोंटे की रचनाएँ

कॉटेज कविताएँ
दो उपदेश
और थके हुए लोग विश्राम करते हैं।

ब्रैनवेल ब्रोंटे

ब्रैनवेल की कविता

जीवनियाँ

एलिजाबेथ गैस्केल द्वारा लिखित शार्लोट ब्रोंटे का जीवन
शार्लोट ब्रोंटे, टी. वेमिस रीड द्वारा
फ्रांसिस ए. लेलैंड द्वारा रचित "द ब्रोंटे फैमिली"
क्लेमेंट किंग शॉर्टर द्वारा रचित "शार्लोट ब्रोंटे और उनका समूह"

© डेल्फी क्लासिक्स 2012

संस्करण 3

The World's Greatest Writers

Which Delphi eBook will you buy next?

ALEXANDRE DUMAS
ANTHONY TROLLOPE
ANTON CHEKHOV
CHARLES DICKENS
D.H. LAWRENCE
EDGAR ALLAN POE
F. SCOTT FITZGERALD
GEORGE ELIOT
H.G. WELLS
HONORÉ DE BALZAC
JACK LONDON
JAMES JOYCE
JULES VERNE
JANE AUSTEN
JOSEPH CONRAD
LEO TOLSTOY
MARK TWAIN
OSCAR WILDE
O. HENRY
R.L STEVENSON
RUDYARD KIPLING
SIR A. CONAN DOYLE
SIR WALTER SCOTT
THOMAS HARDY
THE BRONTËS
VIRGINIA WOOLF
WILKIE COLLINS
W. M. THACKERAY

www.delphiclassics.com

Buy direct, receive free downloads and browse our vast range of titles

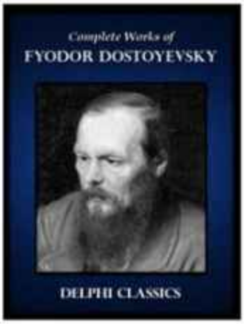

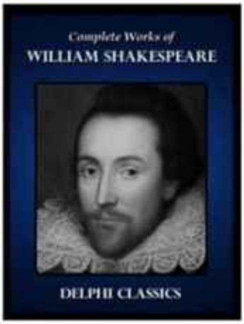

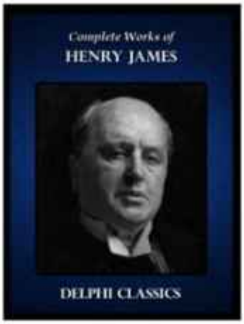

संपूर्ण रचनाएँ

सामने

हमारी बेस्टसेलर ई-बुक श्रृंखला में अन्य क्लासिक लेखक भी शामिल हैं...

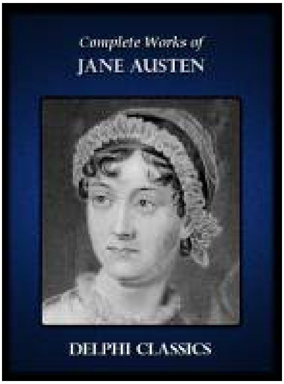

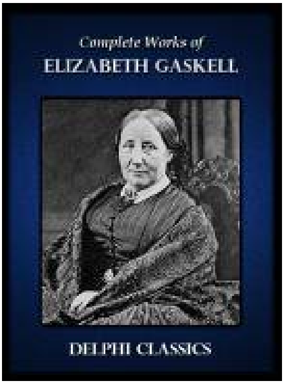

शार्लोट ब्रोंटे के उपन्यास

बहनों का जन्मस्थान थॉर्नटन, वेस्ट यॉर्कशायर है।

जेन आयर

एक आत्मकथा

उन्नीसवीं सदी के सबसे प्रभावशाली उपन्यासों में से एक, जेन आयर 1847 में "कुरर बेल" के छद्म नाम से प्रकाशित हुआ था, जो इस "आत्मकथा" के कथित संपादक थे। यह उपन्यास तीन विशिष्ट विधाओं को समेटे हुए है। इसका स्वरूप एक बिल्डुंग्सरोमन (विकास-प्रसंग) है, जो एक बच्चे के परिपक्व होने की कहानी है, जिसमें वयस्कता की ओर बढ़ते हुए भावनाओं और अनुभवों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। जेन आयर में गहन सामाजिक आलोचना भी है, जिसके मूल में नैतिकता की प्रबल भावना है,

और अंत में इसमें गॉथिक कथाओं के विशिष्ट उदास और भावुक बायरॉनिक चरित्र का समावेश है। यह उपन्यास अक्सर अपने समय से आगे माना जाता है क्योंकि इसमें एक विचारशील और भावुक युवती के विकास का चित्रण किया गया है, जो एक परिपूर्ण जीवन की चाह रखने वाली व्यक्तिवादी होने के साथ-साथ अत्यंत नैतिक भी है। जेन एक गरीब और साधारण महिला के रूप में अपने शुरुआती जीवन से, एक करुणामय और आत्मविश्वासी संपूर्ण महिला के रूप में अपने परिपक्व जीवन तक विकसित होती है। जैसे-जैसे वह परिपक्व होती है, वह मानवीय स्थिति की जटिलताओं पर गहराई से विचार करती है। जेन को ईश्वर में गहरी आस्था है, लेकिन वह आत्मनिर्भर भी है। जेन को भले ही बहुत कष्ट सहने पड़ते हैं, लेकिन उसे कभी भी संकट में फंसी ऐसी महिला के रूप में नहीं दिखाया गया जिसे बचाने की ज़रूरत हो, और इस तरह वह नारीवादी साहित्य का एक आदर्श उदाहरण बन जाती है।

बीस वर्ष की उम्र में शार्लोट

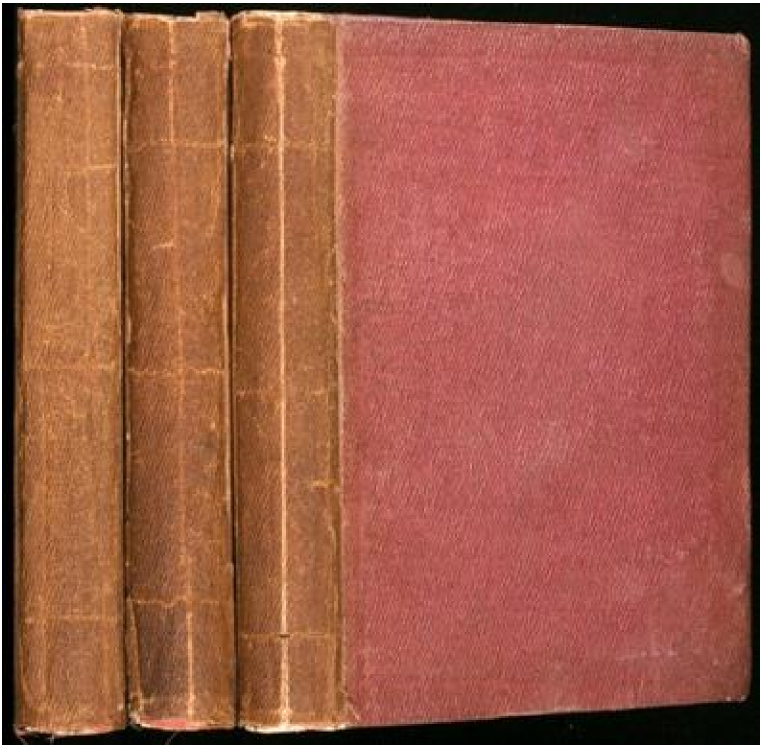

तीन खंडों का यह अत्यंत दुर्लभ पहला संस्करण संग्राहकों के बीच अत्यधिक मूल्यवान है।

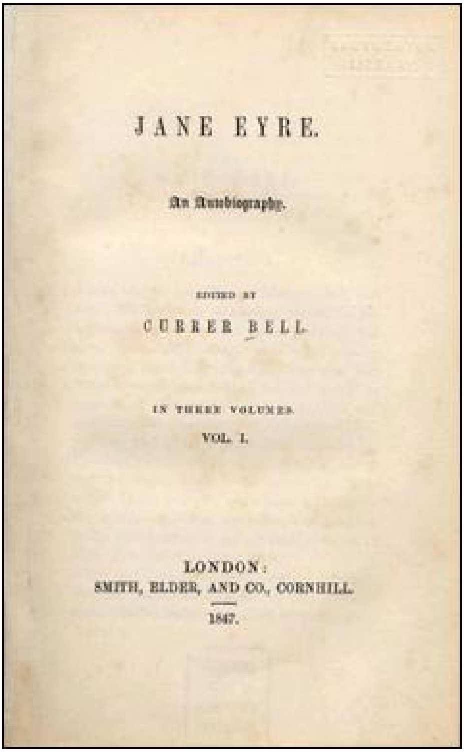

JANE EYRE.

An Autobiography.

EDITED BY

CURRER BELL.

IN THREE VOLUMES.

VOL. I.

LONDON:
SMITH, ELDER, AND CO., CORNHILL.

1847.

शीर्षक पृष्ठ पर शार्लोट का पुरुष छद्म नाम अंकित है।

को

डब्ल्यू. एम. थैकरे, एस्क्वायर,

यह काम

आदरपूर्वक अंकित है

द्वारा

लेखक

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना
तीसरे संस्करण के लिए टिप्पणी
अध्याय 1
अध्याय II
अध्याय III
अध्याय IV
अध्याय V
अध्याय VI
अध्याय VII
अध्याय आठ
अध्याय 9
अध्याय X
अध्याय XI
अध्याय XII
अध्याय XIII
अध्याय 14
अध्याय पंद्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह
अध्याय अठारह
अध्याय XIX
अध्याय XX
अध्याय XXI
अध्याय XXII
अध्याय XXIII

अध्याय 24
अध्याय XXV
अध्याय XXVI
अध्याय XXVII
अध्याय XXVIII
अध्याय 29
अध्याय XXX
अध्याय XXXI
अध्याय XXXII
अध्याय XXXIII
अध्याय 34
अध्याय XXXV
अध्याय 36
अध्याय 37
अध्याय 38 - निष्कर्ष

1943 की फिल्म रूपांतरण

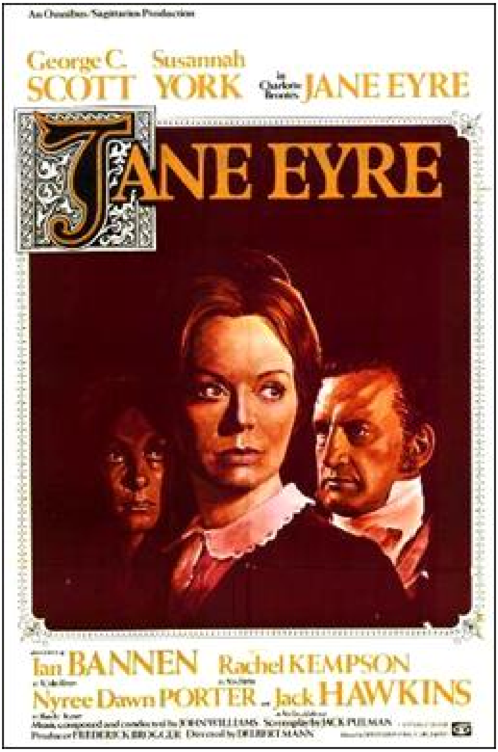

1970 की फिल्म रूपांतरण

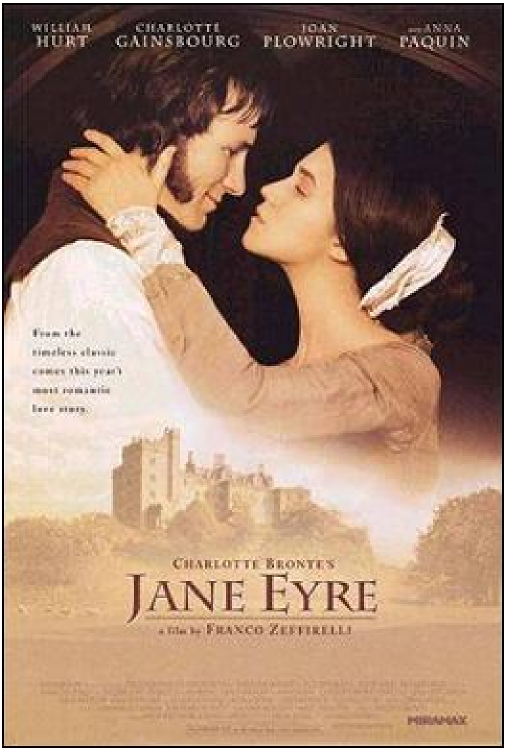

1996 में बनी फिल्म का रूपांतरण

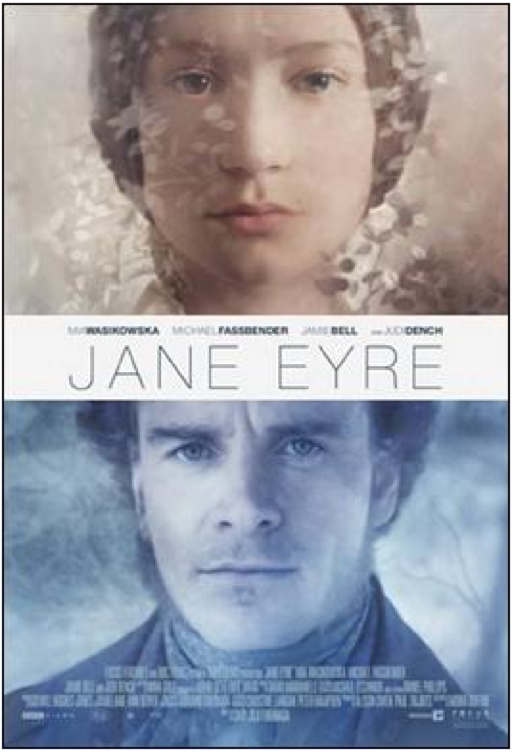

2011 की फिल्म रूपांतरण

प्रस्तावना

“जेन आयर” के पहले संस्करण के लिए प्रस्तावना की आवश्यकता न होने के कारण मैंने कोई प्रस्तावना नहीं लिखी; इस दूसरे संस्करण के लिए आभार और विविध टिप्पणियों के कुछ शब्दों की आवश्यकता है।

मेरी ओर से तीन तिमाहियों में धन्यवाद देना बनता है।

आम जनता के लिए, जो इसे आसानी से स्वीकार कर लेते हैं, यह एक सरल और

दिखावटी कहानी बन गई है।

प्रेस को, उसके ईमानदार मताधिकार के लिए, जिसने एक गुमनाम उम्मीदवार के लिए निष्पक्ष मैदान खोल दिया है।

मेरे प्रकाशकों को, उनकी सूझबूझ, ऊर्जा, व्यावहारिक सोच और उदारता के लिए, जिन्होंने एक अज्ञात और अप्रशिक्षित लेखक को सहायता प्रदान की है।

मेरे लिए प्रेस और जनता मात्र अस्पष्ट प्रतीक हैं, और मुझे उन्हें अस्पष्ट शब्दों में ही धन्यवाद देना चाहिए; लेकिन मेरे प्रकाशक निश्चित हैं: वैसे ही कुछ उदार आलोचक भी हैं जिन्होंने मुझे उस तरह प्रोत्साहित किया है जैसे उदार हृदय और उच्च विचार वाले लोग किसी संघर्षरत अजनबी को प्रोत्साहित करना जानते हैं; उन सभी को, अर्थात् मेरे प्रकाशकों और चयनित समीक्षकों को, मैं हार्दिक रूप से कहता हूँ, महोदय, मैं आप सभी का दिल से धन्यवाद करता हूँ।

इस प्रकार, उन लोगों के प्रति आभार व्यक्त करने के बाद जिन्होंने मेरी सहायता की और मुझे प्रोत्साहित किया, मैं एक अन्य वर्ग की ओर मुड़ता हूँ; जहाँ तक मुझे पता है, यह एक छोटा वर्ग है, लेकिन इसलिए इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। मेरा तात्पर्य उन कुछ संशयवादी या आलोचनात्मक लोगों से है जो "जेन आयर" जैसी पुस्तकों की प्रवृत्ति पर संदेह करते हैं: जिनकी दृष्टि में जो कुछ भी असामान्य है वह गलत है; जिनके कान हर उस विरोध में कट्टरता—जो अपराध की जननी है—को धर्मपरायणता का अपमान मानते हैं, जो पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है। मैं ऐसे संशयवादियों को कुछ स्पष्ट अंतरों को समझाना चाहूँगा; मैं उन्हें कुछ सरल सत्यों की याद दिलाना चाहूँगा।

रूढ़िवादिता नैतिकता नहीं है। आत्म-धार्मिकता धर्म नहीं है। पहले पर हमला करना दूसरे पर आक्रमण करना नहीं है। फरीसी के चेहरे से नकाब उतारना कांटों का ताज पहनने के लिए अधार्मिक हाथ उठाना नहीं है।

ये बातें और कर्म एक दूसरे के बिलकुल विपरीत हैं: ये उतने ही अलग हैं जितना कि बुराई और अच्छाई। मनुष्य अक्सर इन्हें एक ही समझ लेते हैं: इन्हें एक ही समझ लेना ठीक नहीं है; दिखावे को सच्चाई नहीं मान लेना चाहिए; संकीर्ण मानवीय सिद्धांत, जो केवल कुछ लोगों को प्रसन्न और गौरवान्वित करते हैं, उन्हें मसीह के विश्व-उद्धारकारी सिद्धांत का स्थान नहीं देना चाहिए। मैं दोहराता हूँ, इनमें अंतर है; और इन दोनों के बीच की स्पष्ट और व्यापक सीमा रेखा खींचना अच्छा है, बुरा नहीं।

दुनिया को शायद इन विचारों का विखंडन पसंद न आए, क्योंकि वह इन्हें आपस में मिलाने की आदी रही है; बाहरी दिखावे को ही असली मूल्य मान लेना, सफेदी की दीवारों को पवित्र मंदिरों का प्रमाण मान लेना उसके लिए सुविधाजनक रहा है। दुनिया शायद उस व्यक्ति से नफरत करे जो छानबीन करने और सच्चाई उजागर करने का साहस करता है—जो सोने की परत को हटाकर उसके नीचे छिपी धातु को सामने लाता है—जो समाधि में प्रवेश करके अस्थि-कलशों को प्रकट करता है: लेकिन चाहे वह कितनी भी नफरत करे, दुनिया उस व्यक्ति की ऋणी है।

अहाब मीकायाह को पसंद नहीं करता था, क्योंकि वह उसके विषय में कभी अच्छी भविष्यवाणी नहीं करता था, बल्कि बुरी ही करता था; शायद वह केनान्नाह के चापलूस बेटे को ज़्यादा पसंद करता था; फिर भी, अगर अहाब चापलूसी पर ध्यान न देता और सच्ची सलाह सुनता, तो वह खूनी मौत से बच सकता था।

हमारे समय में एक ऐसा व्यक्ति है जिसके शब्द कोमल कानों को लुभाने के लिए नहीं गढ़े गए हैं: जो, मेरे विचार से, समाज के महान लोगों के सामने उसी प्रकार आता है जैसे इम्लाह का पुत्र यहूदा और इस्राएल के सिंहासनधारी राजाओं के सामने आया था; और जो उतनी ही गहरी सच्चाई बोलता है, उतनी ही शक्ति के साथ जितनी पैगंबर जैसी और उतनी ही जीवंत — उतना ही निडर और साहसी। क्या "वैनिटी फेयर" का व्यंग्यकार उच्च पदों पर आसीन है? मैं नहीं कह सकता; लेकिन मुझे लगता है कि यदि उनमें से कुछ, जिन पर वह अपने व्यंग्य की ग्रीक अग्नि बरसाता है, और जिन पर वह अपनी निंदा की लेविन-ब्रांड की चमक बिखेरता है, समय रहते उसकी चेतावनियों को मान लें — तो वे या उनकी संतानें एक घातक रिमोथ-गिलियड से बच सकती हैं।

मैंने इस व्यक्ति का ज़िक्र क्यों किया? पाठक, मैंने उनका ज़िक्र इसलिए किया है क्योंकि मुझे लगता है कि उनमें एक ऐसी बुद्धि है जो उनके समकालीनों ने अभी तक नहीं पहचानी है; क्योंकि मैं उन्हें उस युग का पहला सामाजिक पुनरुत्थानकर्ता मानता हूँ—उस कर्मठ दल का स्वामी जो विकृत व्यवस्था को सुधारना चाहता है; क्योंकि मुझे लगता है कि उनके लेखन पर टिप्पणी करने वाले किसी भी व्यक्ति ने अभी तक उनकी तुलना के लिए उपयुक्त शब्द नहीं खोजे हैं, उनके हुनर का सही वर्णन करने वाले शब्द नहीं खोजे हैं। लोग कहते हैं कि वे फील्डिंग जैसे हैं: लोग उनकी बुद्धि, हास्य और हास्य-बोध की बात करते हैं। वे फील्डिंग से इस तरह मिलते-जुलते हैं जैसे एक

चील एक गिद्ध से: फील्डिंग मरे हुए जानवरों पर झपट सकते थे, लेकिन थैकरे कभी ऐसा नहीं करते। उनकी बुद्धि तेज है, उनका हास्य आकर्षक है, लेकिन दोनों का उनकी गंभीर प्रतिभा से वही संबंध है जो ग्रीष्म ऋतु के बादल के किनारे चमकती हुई हल्की सी बिजली का उसकी कोख में छिपी हुई घातक चिंगारी से होता है। अंत में, मैंने श्री थैकरे का जिक्र इसलिए किया है, क्योंकि अगर वे एक बिल्कुल अजनबी की इस श्रद्धांजलि को स्वीकार करेंगे, तो मैंने "जेन आयर" के इस दूसरे संस्करण को उन्हीं को समर्पित किया है।

करर बेल।

21 दिसंबर, 1847।

तीसरे संस्करण के लिए टिप्पणी

“जेन आयर” के तीसरे संस्करण के प्रकाशन के अवसर का लाभ उठाते हुए, मैं एक बार फिर जनता को संबोधित करना चाहता हूँ और यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि उपन्यासकार के रूप में मेरा दावा केवल इसी एक कृति पर आधारित है। अतः, यदि अन्य उपन्यासों का श्रेय मुझे दिया गया है, तो यह एक ऐसा सम्मान है जो अनुचित है; और परिणामस्वरूप, यह उस व्यक्ति को नकारा जा रहा है जो वास्तव में इसका हकदार है।

यह स्पष्टीकरण पहले से हो चुकी गलतियों को सुधारने और भविष्य में होने वाली गलतियों को रोकने में सहायक होगा।

करर बेल।

13 अप्रैल, 1848।

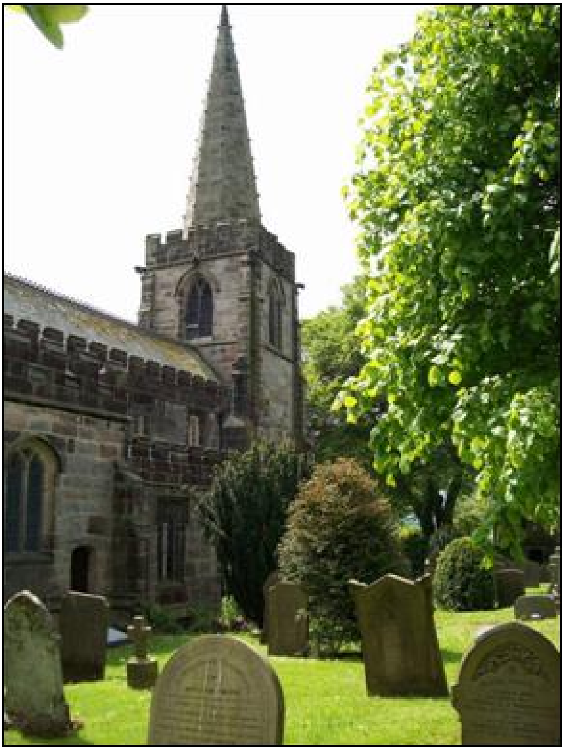

सेंट माइकल चर्च, हैथरसाज, डर्बीशायर, जहां शार्लोट ने 'जेन आयर' लिखते समय पूजा-अर्चना की थी।

अध्याय 1

उस दिन टहलने का कोई चांस नहीं था। हम सुबह एक घंटा झाड़ियों में टहलते रहे थे; लेकिन दोपहर के खाने के बाद (श्रीमती रीड, जब कोई मेहमान नहीं होता था, तो

जल्दी खाना खा लेती थीं) ठंडी सर्दियों की हवा अपने साथ इतने घने बादल और इतनी तेज बारिश लेकर आई थी कि अब बाहर टहलना नामुमकिन था।

मुझे इस बात की खुशी थी: मुझे लंबी पैदल यात्राएँ कभी पसंद नहीं थीं, खासकर सर्द दोपहरों में: मेरे लिए ठंडी शाम में घर लौटना भयानक था, जब मेरी उंगलियाँ और पैर की उंगलियाँ ठंडी हो जाती थीं, और नर्स बेसी की डांट से मेरा दिल दुखी हो जाता था, और एलिजा, जॉन और जॉर्जियाना रीड के मुकाबले अपनी शारीरिक हीनता के एहसास से मैं शर्मिंदा हो जाता था।

एलिज़ा, जॉन और जॉर्जियाना अब ड्राइंग रूम में अपनी माँ के चारों ओर जमा थे: वह आग के पास सोफे पर लेटी हुई थीं, और अपने प्यारे बच्चों के साथ (जो उस समय न तो झगड़ रहे थे और न ही रो रहे थे) पूरी तरह से खुश दिख रही थीं। उन्होंने मुझे समूह में शामिल होने से मना कर दिया था; यह कहते हुए, "मुझे दूर रखने की मजबूरी के लिए उन्हें खेद है; लेकिन जब तक उन्हें बेसी से कोई खबर नहीं मिलती, और वह खुद देखकर यह पता नहीं लगा लेतीं कि मैं अधिक मिलनसार और बच्चों जैसा स्वभाव, अधिक आकर्षक और चंचल व्यवहार - कुछ हल्का, स्पष्ट और अधिक स्वाभाविक - अपनाने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ, तब तक उन्हें वास्तव में मुझे उन सुविधाओं से वंचित रखना होगा जो केवल संतुष्ट, खुश, छोटे बच्चों के लिए होती हैं।"

मैंने पूछा, "बेसी के अनुसार मैंने क्या किया है?"

“जेन, मुझे नुक्ताचीनी करने वाले या सवाल पूछने वाले लोग पसंद नहीं हैं; इसके अलावा, एक बच्ची का बड़ों से इस तरह बहस करना वाकई डरावना है। कहीं बैठ जाओ; और जब तक तुम विनम्रता से बात न कर सको, चुप रहो।”

ड्राइंग रूम से सटा हुआ एक नाश्ता कक्ष था, मैं चुपके से अंदर चला गया। उसमें एक किताबों की अलमारी थी: मैंने जल्दी ही एक किताब उठा ली, इस बात का ध्यान रखते हुए कि उसमें चित्र हों। मैं खिड़की के पास वाली कुर्सी पर बैठ गया: अपने पैर समेटकर, मैं तुर्कों की तरह पालथी मारकर बैठ गया; और लाल मोरीन का पर्दा लगभग बंद करके, मैं दोहरी निश्चिंतता में डूब गया।

दाहिनी ओर लाल रंग के परदे की तहें मेरी नज़रों को ढक रही थीं; बाईं ओर कांच की साफ़ खिड़कियाँ थीं, जो मुझे नवंबर के उदास दिन से बचा रही थीं, लेकिन उससे अलग नहीं कर पा रही थीं। बीच-बीच में, अपनी किताब के पन्ने पलटते हुए, मैं उस सर्दी की दोपहर के दृश्य का अध्ययन कर रहा था। दूर, धुंध और बादलों का एक

धुंधला सा आवरण दिखाई दे रहा था; पास में गीला लॉन और तूफ़ान से झुलसी झाड़ियाँ थीं, जिन पर लगातार बारिश एक लंबे और कष्टदायक झोंके के साथ तेज़ी से बह रही थी।

मैं अपनी किताब— बेविक की 'हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश बर्ड्स'— पर लौट आया: आम तौर पर, मुझे इसकी छपाई में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी; फिर भी कुछ ऐसे शुरुआती पन्ने थे जिन्हें, एक बच्चे के रूप में, मैं पूरी तरह से खाली नहीं छोड़ सकता था। ये वे पन्ने थे जिनमें समुद्री पक्षियों के निवास स्थानों का वर्णन था; उन "एकांत चट्टानों और प्रायद्वीपों" का जहाँ केवल वे ही रहते थे; नॉर्वे के तट का, जो अपने दक्षिणी छोर, लिंडेनेस या नाज़ से लेकर नॉर्थ केप तक द्वीपों से भरा हुआ है—

"जहाँ उत्तरी महासागर, विशाल भंवरों में,
नग्न, उदास द्वीपों के चारों ओर उबाल आता है
सुदूर थुले का; और अटलांटिक लहर
तूफानी हेब्राइड्स के बीच से होकर गुजरता है।

लैपलैंड, साइबेरिया, स्पिट्जबर्गेन, नोवा ज़ेम्ब्ला, आइसलैंड, ग्रीनलैंड के उजाड़ तटों और "आर्कटिक क्षेत्र के विशाल विस्तार और उन सुनसान, वीरान इलाकों, बर्फ और हिम के भंडार, जहां सदियों की सर्दियों से जमा बर्फ के ठोस मैदान, आल्प्स की ऊंचाइयों पर जमे हुए, ध्रुव को घेरे हुए हैं और अत्यधिक ठंड की भीषण कठोरता को समेटे हुए हैं" के सुझाव को मैं अनदेखा नहीं कर सका। इन मृत्यु-सफेद क्षेत्रों के बारे में मैंने अपना एक विचार बनाया: धुंधला, उन सभी अधूरी समझों की तरह जो बच्चों के दिमाग में धुंधली सी तैरती रहती हैं, लेकिन अजीब तरह से प्रभावशाली। इन परिचयात्मक पृष्ठों के शब्द आगे आने वाले छोटे-छोटे दृश्यों से जुड़ गए और लहरों और फुहारों के सागर में अकेले खड़े चट्टान को; एक सुनसान तट पर फंसी टूटी नाव को; और बादलों की परतों से डूबते हुए जहाज़ के मलबे पर चमकते ठंडे और भयानक चंद्रमा को महत्व दिया।

मैं यह नहीं बता सकता कि उस एकांत कब्रिस्तान में कौन सी भावना व्याप्त थी, जिसमें उत्कीर्ण समाधि-पत्थर, उसका द्वार, उसके दो पेड़, टूटी हुई दीवार से घिरा हुआ क्षितिज और शाम के समय का प्रमाण देने वाला नव-उगता हुआ अर्धचंद्र था।

मुझे लगा कि सुस्त समुद्र में स्थिर खड़े वे दोनों जहाज समुद्री प्रेत थे।

चोर के थैले को पीछे से दबाए हुए उस दरिंदे को मैं जल्दी से पार कर गया: वह

आतंक का एक प्रतीक था।

तो काले सींगों वाला प्राणी भी एक चट्टान पर एकांत में बैठा था, और दूर स्थित एक भीड़ का अवलोकन कर रहा था जो एक फांसी के तख्ते के चारों ओर जमा थी।

हर तस्वीर एक कहानी कहती थी; जो मेरी अविकसित समझ और अपूर्ण भावनाओं के लिए अक्सर रहस्यमय होती थी, फिर भी अत्यंत रोचक होती थी: उतनी ही रोचक जितनी कि बेसी कभी-कभी सर्दियों की शामों में सुनाती थी, जब वह अच्छे मूड में होती थी; और जब वह अपनी इस्त्री करने की मेज को बच्चों के चूल्हे के पास लाकर हमें उसके चारों ओर बैठने देती थी, और जब वह श्रीमती रीड के लेस के झालरों को समेटती और उनकी नाइट कैप के किनारों को मोड़ती थी, तो पुरानी परियों की कहानियों और अन्य गाथागीतों से लिए गए प्रेम और रोमांच के अंशों से हमारा ध्यान आकर्षित करती थी; या (जैसा कि मैंने बाद में पाया) पामेला और हेनरी, अर्ल ऑफ मोरलैंड की किताबों से लिए गए अंशों से।

बेविक को अपनी गोद में लिए हुए, मैं खुश थी: कम से कम अपने तरीके से खुश थी। मुझे बस किसी रुकावट का डर था, और वह बहुत जल्दी आ गई। नाश्ते के कमरे का दरवाजा खुल गया।

“बोह! मैडम मोप!” जॉन रीड की आवाज आई; फिर वह रुका: उसने पाया कि कमरा खाली था।

“वो कहाँ है!” वो चिल्लाया। “लिज़ी! जॉर्जी! (अपनी बहनों को पुकारते हुए) जोन यहाँ नहीं है: माँ को बताओ कि वो बारिश में बाहर भाग गई है — बुरी जानवर!”

मैंने सोचा, “अच्छा हुआ मैंने पर्दा खींच दिया था”; और मैं दिल से चाहती थी कि वह मेरी छिपने की जगह का पता न लगा पाए: और न ही जॉन रीड खुद इसका पता लगा पाता; वह न तो दूरदृष्टि वाला था और न ही कल्पनाशील; लेकिन एलिजा ने दरवाजे से अपना सिर अंदर डाला और तुरंत कहा—

"वह निश्चित रूप से खिड़की वाली सीट पर बैठी है, जैक।"

और मैं तुरंत बाहर आ गया, क्योंकि मुझे इस बात का डर सता रहा था कि कहीं जैक मुझे घसीटकर बाहर न ले जाए।

मैंने झिझकते हुए पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"

“कहिए, ‘मास्टर रीड, आप क्या चाहते हैं?’” जवाब मिला। “मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ आएँ;” और एक आरामकुर्सी पर बैठते हुए, उन्होंने इशारे से मुझे पास आकर

उनके सामने खड़े होने का संकेत दिया।

जॉन रीड चौदह साल का एक स्कूली छात्र था; मुझसे चार साल बड़ा, क्योंकि मैं तो केवल दस साल का था: अपनी उम्र के हिसाब से लंबा-चौड़ा और हट्टा-कट्टा, उसकी त्वचा मैली और अस्वस्थ थी; चौड़े चेहरे पर मोटी रेखाएं, भारी-भरकम हाथ-पैर और बड़े-बड़े अंग थे। वह खाने में ज़रूरत से ज़्यादा खाता था, जिससे उसे पित्त की समस्या हो गई थी, उसकी आंखें धुंधली और बेजान हो गई थीं और गाल लटके हुए थे। उसे अब स्कूल में होना चाहिए था; लेकिन उसकी माँ उसे एक-दो महीने के लिए घर ले गई थी, "उसके नाज़ुक स्वास्थ्य के कारण।" शिक्षक श्री माइल्स ने कहा कि अगर उसे घर से कम केक और मिठाइयाँ भेजी जाएँ तो वह बहुत अच्छा करेगा; लेकिन माँ का मन इस कठोर राय से पिघल गया और वह इस अधिक सौम्य विचार की ओर झुक गई कि जॉन का पीलापन अत्यधिक पढ़ाई और शायद घर की याद के कारण था।

जॉन को अपनी माँ और बहनों से कोई स्नेह नहीं था, और मुझसे उसे घृणा थी। वह मुझे धमकाता और सज़ा देता था; सप्ताह में दो-तीन बार नहीं, दिन में एक-दो बार नहीं, बल्कि लगातार: मेरी हर नस उससे डरती थी, और उसके पास आते ही मेरी हड्डियों का हर हिस्सा सिकुड़ जाता था। कई बार मैं उसके आतंक से दंग रह जाती थी, क्योंकि उसकी धमकियों या उसके अत्याचारों के खिलाफ मेरे पास कोई उपाय नहीं था; नौकर अपने युवा मालिक को नाराज़ नहीं करना चाहते थे, इसलिए वे मेरा पक्ष नहीं लेना चाहते थे, और श्रीमती रीड इस मामले में अंधी और बहरी थीं: उन्होंने उसे कभी मुझे मारते या गाली देते नहीं देखा, हालाँकि वह कभी-कभी उनकी मौजूदगी में भी ऐसा करता था, लेकिन अक्सर उनकी पीठ पीछे।

जॉन की आज्ञा का पालन करते हुए, मैं उसकी कुर्सी के पास गया: उसने लगभग तीन मिनट तक अपनी जीभ मेरी ओर निकाली, जितनी दूर तक वह बिना जड़ों को नुकसान पहुंचाए निकाल सकता था। मुझे पता था कि वह जल्द ही वार करेगा, और वार के डर से मैं उस व्यक्ति के घिनौने और बदसूरत रूप के बारे में सोच रहा था जो अभी वार करने वाला था। मुझे आश्चर्य है कि क्या उसने मेरे चेहरे पर यह भाव पढ़ लिया था; क्योंकि अचानक, बिना कुछ बोले, उसने ज़ोर से वार किया। मैं लड़खड़ा गया, और संभलकर खड़े होने पर उसकी कुर्सी से एक-दो कदम पीछे हट गया।

“यह तुम्हारी उस गुस्ताखी के लिए है जो तुमने कुछ देर पहले माँ को जवाब देते

हुए की थी," उसने कहा, "और पर्दों के पीछे छिपने के तुम्हारे छुपकर जाने के लिए, और दो मिनट पहले तुम्हारी आँखों में जो भाव थे, उनके लिए, कमीने!"

जॉन रीड के दुर्व्यवहार की आदत हो जाने के कारण, मैंने कभी उसका जवाब देने के बारे में सोचा ही नहीं; मेरी चिंता तो बस इस बात की थी कि उस अपमान के बाद आने वाले आघात को कैसे सहन किया जाए।

"तुम पर्दे के पीछे क्या कर रहे थे?" उसने पूछा।

मैं पढ़ रहा था।

"किताब दिखाओ।"

मैं खिड़की के पास वापस गया और उसे वहां से ले आया।

"तुम्हें हमारी किताबें लेने का कोई हक नहीं है; माँ कहती हैं, तुम आश्रित हो; तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं; तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए कुछ नहीं छोड़ा; तुम्हें भीख माँगनी चाहिए, न कि हमारे जैसे अमीरों के बच्चों के साथ यहाँ रहना चाहिए, न हमारे जैसा खाना खाना चाहिए, न माँ के खर्चे पर कपड़े पहनना चाहिए। अब, मैं तुम्हें अपनी किताबों की अलमारियों में से किताबें ढूँढ़ना सिखाऊँगी: क्योंकि ये मेरी हैं; सारा घर मेरा है, या कुछ सालों में मेरा हो जाएगा। जाओ और दरवाजे के पास खड़े हो जाओ, शीशे और खिड़कियों से दूर।"

मैंने वैसा ही किया, पहले तो मुझे उसके इरादे का पता नहीं था; लेकिन जब मैंने उसे किताब उठाते और हवा में लहराते हुए फेंकने की मुद्रा में देखा, तो मैं सहज ही डर के मारे चीखते हुए एक तरफ हट गया: लेकिन देर नहीं हुई; किताब फेंकी गई, वह मुझे लगी और मैं गिर पड़ा, मेरा सिर दरवाजे से टकराया और उसमें चोट लग गई। घाव से खून बह रहा था, दर्द बहुत तेज था: मेरा डर चरम पर पहुँच चुका था; अब दूसरी भावनाएँ हावी हो रही थीं।

"दुष्ट और निर्दयी लड़के!" मैंने कहा। "तुम हत्यारे की तरह हो—तुम गुलामों के मालिक की तरह हो—तुम रोमन सम्राटों की तरह हो!"

मैंने गोल्डस्मिथ की 'हिस्ट्री ऑफ रोम' पढ़ी थी और नीरो, कैलिगुला आदि के बारे में अपनी राय बना ली थी। मैंने मन ही मन कुछ समानताएं भी देखी थीं, जिन्हें मैंने कभी खुलकर कहने के बारे में नहीं सोचा था।

"क्या! क्या!" वह चिल्लाया। "क्या उसने मुझसे ऐसा कहा? क्या तुमने सुना, एलिज़ा और जॉर्जियाना? क्या मैं माँ को नहीं बताऊँगा? लेकिन पहले—"

वह मेरी ओर बेतहाशा दौड़ा: मैंने महसूस किया कि उसने मेरे बाल और कंधे पकड़ लिए हैं: वह हताशा से मुझ पर टूट पड़ा था। मैंने सचमुच उसमें एक अत्याचारी, एक हत्यारा देखा। मैंने अपने सिर से खून की एक-दो बूँदें अपनी गर्दन पर टपकती महसूस कीं, और कुछ तीखे दर्द का अहसास हुआ: ये भावनाएँ उस समय भय पर हावी हो गईं, और मैंने उसे उन्माद में देखा। मुझे ठीक से नहीं पता कि मैंने अपने हाथों से क्या किया, लेकिन उसने मुझे "चूहा! चूहा!" कहकर पुकारा और ज़ोर से चिल्लाया। मदद उसके पास ही थी: एलिज़ा और जॉर्जियाना श्रीमती रीड के लिए दौड़ी थीं, जो ऊपर चली गई थीं: अब वह वहाँ पहुँचीं, उनके पीछे बेसी और उसकी नौकरानी एबॉट भी थीं। हम अलग हो गए: मैंने ये शब्द सुने—

अरे बाप रे! मास्टर जॉन पर भड़कना कितना भयानक था!

“क्या किसी ने कभी जुनून की ऐसी तस्वीर देखी है!”

फिर श्रीमती रीड ने आगे कहा —

“इसे लाल कमरे में ले जाओ और वहाँ बंद कर दो।” तुरंत ही चार हाथों ने मुझे पकड़ लिया और मुझे ऊपर ले जाया गया।

अध्याय II

मैंने हर तरह से विरोध किया: यह मेरे लिए एक नया अनुभव था, और इस परिस्थिति ने बेसी और मिस एबॉट की मेरे प्रति बनी हुई बुरी राय को और भी पुख्ता कर दिया। दरअसल, मैं थोड़ा सा आपा खो बैठा था; या यूँ कहूँ कि फ्रांसीसी लोग कहते हैं, मैं अपने आप से बाहर हो गया था: मुझे इस बात का एहसास था कि एक पल के विद्रोह ने मुझे भयानक सजाओं का पात्र बना दिया है, और किसी भी अन्य विद्रोही गुलाम की तरह, मैंने अपनी हताशा में किसी भी हद तक जाने का निश्चय कर लिया था।

"मिस एबॉट, उसकी बांहें पकड़ो: वह पागल बिल्ली की तरह है।"

“अरे, कितनी शर्मनाक बात है! कितनी शर्मनाक बात है!” नौकरानी चिल्लाई। “मिस आयर, आपने अपने उपकारिणी के बेटे, अपने युवा स्वामी, एक युवक पर हाथ उठाकर कितना घिनौना व्यवहार किया! यह कितना शर्मनाक है!”

“मालिक! वह मेरा मालिक कैसे है? क्या मैं नौकर हूँ?”

“नहीं; तुम तो एक सेवक से भी बदतर हो, क्योंकि तुम अपनी जीविका के लिए कुछ नहीं करते। यहीं बैठो और अपने बुरे कर्मों पर विचार करो।”

तब तक वे मुझे श्रीमती रीड द्वारा बताए गए कमरे में ले जा चुके थे और मुझे एक स्टूल पर बिठा दिया था: मेरी इच्छा हुई कि मैं उछलकर वहां से उठ जाऊं; लेकिन उनके दोनों हाथों ने मुझे तुरंत पकड़ लिया।

“अगर तुम शांत नहीं बैठोगी, तो तुम्हें बांधना पड़ेगा,” बेसी ने कहा। “मिस एबॉट, मुझे अपने गार्टर्स उधार दे दो; वो मेरे गार्टर्स तुरंत तोड़ देंगी।”

मिस एबॉट ने अपने एक मजबूत पैर से आवश्यक बंधन हटाने के लिए अपना सिर घुमाया। बंधनों की यह तैयारी, और इससे जुड़ी अतिरिक्त बदनामी ने, मेरे उत्साह को थोड़ा कम कर दिया।

मैंने चिल्लाकर कहा, "इन्हें मत उतारो; मैं हिलूंगी नहीं।"

इसकी गारंटी के तौर पर, मैंने अपने हाथों से खुद को अपनी सीट से बांध लिया।

“ध्यान रखना, ऐसा मत करना,” बेसी ने कहा; और जब उसे यकीन हो गया कि मैं सचमुच शांत हो रहा हूँ, तो उसने मुझे पकड़ना छोड़ दिया; फिर वह और मिस एबॉट बाहें मोड़े खड़ी रहीं, मेरी मानसिक स्थिति पर अविश्वास भरी नजरों से मेरे चेहरे को देखती रहीं।

"उसने पहले कभी ऐसा नहीं किया था," बेसी ने अंत में अबीगैल की ओर मुड़ते हुए कहा।

“लेकिन ये तो उसमें हमेशा से था,” जवाब मिला। “मैंने अक्सर मालकिन को बच्ची के बारे में अपनी राय बताई है, और मालकिन मुझसे सहमत थीं। वो बहुत चालाक है: मैंने उसकी उम्र की किसी लड़की को इतना धूर्त कभी नहीं देखा।”

बेसी ने कोई जवाब नहीं दिया; लेकिन कुछ देर बाद मुझसे बात करते हुए उसने कहा— “आपको यह पता होना चाहिए, मिस, कि आप श्रीमती रीड की ऋणी हैं: वही आपका पालन-पोषण करती हैं: अगर वह आपको बेदखल कर दें, तो आपको गरीबखाने जाना पड़ेगा।”

इन शब्दों पर मेरे पास कहने को कुछ नहीं था: ये मेरे लिए नए नहीं थे: मेरे जीवन की शुरुआती यादों में भी इसी तरह के संकेत मिलते थे। मेरी निर्भरता का यह ताना मेरे कानों में एक अस्पष्ट लयबद्ध स्वर बन गया था: बहुत दर्दनाक और दिल तोड़ने वाला, लेकिन आधा ही समझ में आने वाला। मिस एबॉट भी इसमें शामिल हो गईं—

"और आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि आप मिस रीड और मास्टर रीड के बराबर हैं, सिर्फ इसलिए कि मिस रीड ने कृपा करके आपको उनके साथ पाला-पोसा है। उनके पास बहुत पैसा होगा, और आपके पास कुछ भी नहीं होगा: आपका कर्तव्य है कि आप विनम्र रहें और उनके लिए खुद को स्वीकार्य बनाने का प्रयास करें।"

"हम जो तुम्हें बता रहे हैं, वह तुम्हारे भले के लिए है," बेसी ने नरम स्वर में कहा, "तुम्हें मददगार और मिलनसार बनने की कोशिश करनी चाहिए, तब शायद तुम्हें यहाँ घर मिल जाए; लेकिन अगर तुम गुस्सैल और बदतमीज़ हो जाओगी, तो मुझे पूरा यकीन है कि मालकिन तुम्हें यहाँ से भेज देंगी।"

"इसके अलावा," मिस एबॉट ने कहा, "भगवान उसे सज़ा देंगे: हो सकता है कि वे उसे उसके नखरों के बीच ही मार डालें, और फिर वह कहाँ जाएगी? आओ, बेसी, हम उसे छोड़ देते हैं: मैं किसी भी कीमत पर उसका दिल नहीं चाहती। मिस आयर, जब तुम अकेली हो तो प्रार्थना करो; क्योंकि अगर तुम पश्चाताप नहीं करोगी, तो हो सकता है कि चिमनी से कोई बुरी चीज़ नीचे आए और तुम्हें ले जाए।"

वे चले गए, दरवाजा बंद कर दिया और पीछे से ताला लगा दिया।

लाल कमरा एक चौकोर कक्ष था, जिसमें बहुत कम ही सोया जाता था, शायद कभी नहीं, सिवाय तब जब गेट्सहेड हॉल में अचानक आगंतुकों की भीड़ उमड़ पड़ती और उसमें मौजूद सभी जगह का उपयोग करना आवश्यक हो जाता था। फिर भी, यह हवेली के सबसे बड़े और आलीशान कमरों में से एक था। महोगनी के विशाल खंभों पर टिका पलंग, गहरे लाल रंग के दमिश्क के पर्दों से ढका हुआ, बीच में एक तंबू की तरह खड़ा था; दो बड़ी खिड़कियाँ, जिन पर पर्दे हमेशा नीचे खींचे रहते थे, इसी तरह के पर्दों की झालरों और लटकनों से आधी ढकी रहती थीं; कालीन लाल था; पलंग के नीचे की मेज गहरे लाल रंग के कपड़े से ढकी थी; दीवारें हल्के भूरे रंग की थीं जिनमें गुलाबी रंग की झलक थी; अलमारी, शौचालय की मेज और कुर्सियाँ गहरे रंग की पॉलिश की हुई पुरानी महोगनी की थीं। इन गहरे छायादार वातावरण से, बर्फीले मार्सिले कोट से ढके पलंग के गद्दे और तकिए ऊँचे उठते हुए, चमकते हुए सफेद रंग में

दिखाई देते थे। बिस्तर के सिरहाने के पास रखी एक विशाल गद्देदार आरामकुर्सी भी कुछ कम प्रमुख नहीं थी, वह भी सफेद रंग की थी, जिसके सामने एक फुटस्टूल रखा था; और देखने में, जैसा कि मैंने सोचा, वह एक फीके सिंहासन की तरह लग रही थी।

यह कमरा ठंडा रहता था, क्योंकि इसमें शायद ही कभी आग जलती थी; यह शांत रहता था, क्योंकि यह बच्चों के कमरे और रसोई से दूर था; गंभीर रहता था, क्योंकि यह ज्ञात था कि इसमें बहुत कम लोग आते थे। केवल नौकरानी ही शनिवार को यहाँ आती थी, दर्पणों और फर्नीचर से एक सप्ताह की शांत धूल साफ करने के लिए: और श्रीमती रीड स्वयं, काफी अंतराल पर, अलमारी में एक गुप्त दराज की सामग्री देखने के लिए आती थीं, जहाँ विभिन्न चर्मपत्र, उनका गहनों का डिब्बा और उनके दिवंगत पति का एक छोटा चित्र रखा था; और इन्हीं अंतिम शब्दों में लाल कमरे का रहस्य छिपा है - वह जादू जो इसकी भव्यता के बावजूद इसे इतना एकांत बनाए रखता था।

श्री रीड की मृत्यु को नौ वर्ष हो चुके थे: इसी कक्ष में उन्होंने अंतिम सांस ली थी; यहीं पर उनका शव रखा गया था; इसलिए उनके ताबूत को अंतिम संस्कार करने वालों द्वारा ले जाया गया था; और उस दिन से, एक उदास पवित्रता की भावना ने इसे बार-बार प्रवेश करने से रोक रखा था।

मेरी सीट, जिस पर बेसी और कठोर स्वभाव वाली मिस एबॉट ने मुझे जकड़ रखा था, संगमरमर की चिमनी के पास एक नीची ओटोमन कुर्सी थी; बिस्तर मेरे सामने था; मेरे दाहिनी ओर ऊँची, गहरे रंग की अलमारी थी, जिसके पैनलों की चमक में धुंधली, टूटी हुई परछाइयाँ झलक रही थीं; मेरे बाईं ओर धुंधली खिड़कियाँ थीं; उनके बीच लगा एक बड़ा सा दर्पण बिस्तर और कमरे की खाली भव्यता को दोहरा रहा था। मुझे पक्का यकीन नहीं था कि उन्होंने दरवाज़ा बंद किया था या नहीं; और जब मैंने हिलने की हिम्मत की, तो मैं उठकर देखने गया। अफसोस! हाँ: कोई जेल इससे ज़्यादा सुरक्षित नहीं थी। लौटकर, मुझे दर्पण के सामने से गुज़रना पड़ा; मेरी मोहित निगाहें अनजाने में ही उसके द्वारा प्रकट की गई गहराई को निहारने लगीं। उस काल्पनिक खोखले में सब कुछ वास्तविकता से कहीं अधिक ठंडा और अंधकारमय लग रहा था: और वहाँ मुझे घूरती हुई वह विचित्र छोटी आकृति, जिसका सफेद चेहरा और भुजाएँ अंधकार में चमक रही थीं, और भय से भरी उसकी आँखें जहाँ सब कुछ स्थिर था, वहाँ एक वास्तविक आत्मा का आभास करा रही थीं: मैंने उसे बेसी की शाम की कहानियों में वर्णित उन छोटे प्रेतों में से एक समझा, जो आधे परी और आधे शैतान

थे, जो सुनसान, फर्न से भरी घाटियों से निकलकर देर से आने वाले यात्रियों के सामने प्रकट होते थे। मैं अपनी कुर्सी पर लौट आया।

उस समय अंधविश्वास मेरे साथ था; लेकिन अभी उसकी पूर्ण विजय का समय नहीं आया था: मेरा खून अभी भी गर्म था; विद्रोही दास का मनोभाव अभी भी अपनी कड़वी शक्ति से मुझे झकझोर रहा था; मुझे अतीत की यादों के तीव्र प्रवाह को रोकना था, इससे पहले कि मैं निराशाजनक वर्तमान के आगे झुक जाऊं।

जॉन रीड के सभी हिंसक अत्याचार, उसकी बहनों की सभी अभिमानी उदासीनता, उसकी माँ की सभी घृणा, नौकरों का सभी पक्षपात, मेरे अशांत मन में एक गंदे कुएँ में जमे काले कालिख की तरह उभर आए। मैं हमेशा क्यों पीड़ित रहती थी, हमेशा क्यों दबाई जाती थी, हमेशा क्यों आरोपित की जाती थी, हमेशा क्यों दोषी ठहराई जाती थी? मैं कभी किसी को प्रसन्न क्यों नहीं कर पाती थी? किसी का भी दिल जीतने की कोशिश करना व्यर्थ क्यों था? एलिज़ा, जो जिद्दी और स्वार्थी थी, का सम्मान किया जाता था। जॉर्जियाना, जिसका स्वभाव बिगड़ा हुआ था, जो बहुत ही कटु द्वेषपूर्ण थी, जिसका व्यवहार नुक्ताचीनी भरा और उद्दंड था, उसे सर्वत्र लाड़-प्यार मिलता था। उसकी सुंदरता, उसके गुलाबी गाल और सुनहरे बाल, उसे देखने वाले हर किसी को आनंदित करते प्रतीत होते थे, और हर गलती के लिए प्रायश्चित का साधन बन जाते थे। जॉन को कोई नहीं रोकता था, दंडित करना तो दूर की बात है; हालाँकि वह कबूतरों की गर्दन मरोड़ देता था, मटर के छोटे चूजों को मार डालता था, भेड़ों पर कुत्तों को छोड़ देता था, ग्रीनहाउस की बेलों से सारे फल तोड़ लेता था और कंज़र्वेटरी के सबसे उत्तम पौधों की कलियाँ फोड़ देता था; फिर भी वह अपनी माँ को "बुढ़िया" कहकर पुकारता था; कभी-कभी उसकी सांवली त्वचा, जो उसकी अपनी त्वचा जैसी थी, के लिए उसे कोसता था; उसकी इच्छाओं की निर्मम अवहेलना करता था; अक्सर उसके रेशमी वस्त्रों को फाड़कर खराब कर देता था; और फिर भी वह "उसका लाडला" था। मैंने कोई गलती करने की हिम्मत नहीं की: मैंने हर कर्तव्य को पूरा करने का प्रयास किया; और मुझे सुबह से दोपहर तक और दोपहर से रात तक शरारती और थकाऊ, उदास और छुपकर काम करने वाला कहा जाता था।

मुझे लगी चोट और गिरने से मेरे सिर में अभी भी दर्द हो रहा था और खून बह रहा था: जॉन ने मुझे जानबूझकर मारने के लिए किसी को फटकार नहीं लगाई थी; और क्योंकि मैंने आगे की अतार्किक हिंसा को रोकने के लिए उसके खिलाफ मोर्चा खोल

दिया था, इसलिए मुझ पर व्यापक निंदा का बोझ था।

"अन्याय! – अन्याय!" मेरी अंतरात्मा ने, पीड़ादायक उत्तेजना से प्रेरित होकर, क्षणिक लेकिन असमय शक्ति प्राप्त कर ली: और संकल्प, समान रूप से उत्तेजित होकर, असहनीय उत्पीड़न से बचने के लिए कुछ अजीब उपाय सुझाने लगा – जैसे भाग जाना, या यदि ऐसा संभव न हो तो फिर कभी खाना-पीना छोड़ देना और स्वयं को मरने देना।

उस उदास दोपहर में मेरी आत्मा कितनी व्याकुल थी! मेरा सारा दिमाग उथल-पुथल में था, और मेरा सारा दिल विद्रोह से भरा हुआ था! फिर भी, किस अंधकार में, किस घोर अज्ञानता में, यह मानसिक युद्ध लड़ा गया! मैं अपने भीतर के उस निरंतर प्रश्न का उत्तर नहीं दे पा रहा था - मैं इस प्रकार क्यों पीड़ित था; अब, इतने वर्षों के अंतराल पर - मैं यह नहीं कहूंगा कि कितने वर्ष बीत चुके हैं - मुझे यह स्पष्ट रूप से समझ में आता है।

मैं गेट्सहेड हॉल में एक असामंजस्य था: मैं वहाँ किसी के जैसा नहीं था; श्रीमती रीड, उनके बच्चों या उनके चुने हुए सेवकों में से किसी के साथ मेरा कोई सामंजस्य नहीं था। वास्तव में, अगर वे मुझसे प्यार नहीं करते थे, तो मैं भी उनसे उतना ही कम प्यार करता था। वे उस चीज़ के प्रति स्नेह रखने के लिए बाध्य नहीं थे जो उनमें से किसी एक के साथ सहानुभूति नहीं रख सकती थी; एक विषम प्राणी, स्वभाव, क्षमता और प्रवृत्तियों में उनसे विपरीत; एक बेकार प्राणी, जो उनके हित में कुछ नहीं कर सकता था, न ही उनके सुख में कुछ जोड़ सकता था; एक हानिकारक प्राणी, जो उनके व्यवहार के प्रति आक्रोश और उनके निर्णय के प्रति अवमानना के बीज पाले हुए था। मैं जानता हूँ कि यदि मैं एक आशावादी, प्रतिभाशाली, लापरवाह, मेहनती, सुंदर, चंचल बच्चा होता - भले ही उतना ही आश्रित और अकेला - श्रीमती रीड मेरी उपस्थिति को अधिक सहजता से सहन कर लेतीं; उनके बच्चे मेरे प्रति अधिक आत्मीयता और भाईचारे की भावना रखते; नौकर मुझे बच्चों के समूह का बलि का बकरा बनाने के लिए कम प्रवृत्त होते।

लाल कमरे से दिन का उजाला छंटने लगा था; चार बज चुके थे, और बादलों से घिरी दोपहर धुंधली शाम में बदल रही थी। मुझे सीढ़ियों की खिड़की पर लगातार बारिश की आवाज़ सुनाई दे रही थी, और हॉल के पीछे के बगीचे में हवा के गरजने की आवाज़ आ रही थी; मैं धीरे-धीरे पत्थर की तरह ठंडा पड़ गया, और फिर मेरा साहस

टूट गया। मेरी हमेशा की तरह की शर्मिंदगी, आत्मसंदेह, और निराशा की भावना, मेरे क्षीण होते क्रोध की आग पर बुझ गई। सब कहते थे कि मैं दुष्ट हूँ, और शायद मैं सच में दुष्ट था; क्या मैं खुद को भूखा रखकर मरने के अलावा और कुछ सोच ही रहा था? यह तो निश्चित रूप से एक अपराध था: और क्या मैं मरने के योग्य था? या गेट्सहेड चर्च के वेदी के नीचे का तहखाना एक आकर्षक जगह थी? मुझे बताया गया था कि श्री रीड उसी तहखाने में दफन हैं; और इस विचार से प्रेरित होकर, मैं उनके विचार को याद करते हुए, बढ़ते डर के साथ उस पर विचार करने लगा। मुझे उनकी याद नहीं आ रही थी; लेकिन मैं जानती थी कि वह मेरे अपने चाचा थे—मेरी माँ के भाई—कि उन्होंने मुझे अनाथ शिशु के रूप में अपने घर में शरण दी थी; और अपने अंतिम क्षणों में उन्होंने श्रीमती रीड से यह वादा लिया था कि वह मुझे अपने बच्चों की तरह पालेगी और मेरा भरण-पोषण करेगी। श्रीमती रीड ने शायद यह माना होगा कि उन्होंने यह वादा निभाया था; और मुझे विश्वास है कि उन्होंने अपनी प्रकृति के अनुसार ऐसा किया भी था; लेकिन अपने पति की मृत्यु के बाद, वह अपने समुदाय से बाहर के और किसी भी रिश्ते से रहित व्यक्ति को भला कैसे पसंद कर सकती थीं? एक ऐसे अजनबी बच्चे के लिए माता-पिता की भूमिका निभाने के कठिन वचन से बंधे रहना, जिसे वह प्यार नहीं कर सकती थीं, और अपने परिवार में एक बेमेल अजनबी को स्थायी रूप से घुसपैठ करते देखना उनके लिए अत्यंत कष्टदायक रहा होगा।

मेरे मन में एक अनोखा विचार आया। मुझे ज़रा भी शक नहीं था—कभी शक नहीं था—कि अगर मिस्टर रीड ज़िंदा होते तो वे मेरे साथ अच्छा बर्ताव करते; और अब, जब मैं सफ़ेद पलंग और धुंधली दीवारों को निहार रही थी—कभी-कभी मंत्रमुग्ध होकर धुंधले से चमकते दर्पण की ओर भी देखती—तो मुझे मृतकों के बारे में सुनी हुई बातें याद आने लगीं, जो अपनी अंतिम इच्छाओं के उल्लंघन से कब्रों में व्याकुल होकर, झूठे लोगों को दंडित करने और पीड़ितों का बदला लेने के लिए धरती पर लौट आते हैं; और मैंने सोचा कि मिस्टर रीड की आत्मा, अपनी बहन के बच्चे के अन्याय से व्याकुल होकर, अपना निवास स्थान—चाहे गिरजाघर के तहखाने में हो या मृतकों की अज्ञात दुनिया में—छोड़कर इस कक्ष में मेरे सामने आ सकती है। मैंने अपने आँसू पोंछे और सिसकियाँ दबा लीं, इस डर से कि कहीं मेरे तीव्र दुःख का कोई संकेत किसी अलौकिक आवाज़ को जगाकर मुझे सांत्वना न दे दे, या अंधकार से किसी प्रभामंडल वाले चेहरे को मुझ पर अजीब सी दया से झुका न दे। सैद्धांतिक रूप से यह

विचार सांत्वनादायक था, लेकिन मुझे लगा कि अगर यह साकार हो गया तो भयानक होगा: मैंने अपनी पूरी ताकत से इसे दबाने का प्रयास किया— मैंने दृढ़ रहने का प्रयास किया। अपने बालों को आँखों से झटकते हुए, मैंने अपना सिर उठाया और अंधेरे कमरे में साहसपूर्वक चारों ओर देखने की कोशिश की; उसी क्षण दीवार पर एक प्रकाश चमका। क्या यह, मैंने स्वयं से पूछा, चाँद की कोई किरण थी जो पर्दे के किसी छेद से होकर आ रही थी? नहीं; चाँदनी स्थिर थी, और यह हिल रही थी; जब मैं देख रहा था, यह छत तक ऊपर चली गई और मेरे सिर के ऊपर काँप उठी। अब मैं आसानी से अनुमान लगा सकता हूँ कि प्रकाश की यह लकीर, संभवतः, लॉन के पार किसी के द्वारा ले जाई जा रही लालटेन की चमक थी: लेकिन तब, मेरा मन भय के लिए तैयार था, मेरी नसें घबराहट से काँप रही थीं, मैंने सोचा कि तेज़ी से आती हुई किरण किसी दूसरी दुनिया से आने वाले किसी दर्शन का संकेत है। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा, मेरा सिर गर्म हो गया; एक आवाज़ मेरे कानों में गूँज उठी, जिसे मैंने पंखों की फड़फड़ाहट समझा; कुछ मेरे पास प्रतीत हुआ; मैं घुटन और पीड़ा से बेहाल था; मेरा धैर्य टूट गया; मैं दरवाजे की ओर भागा और हताशा में ताला तोड़ने की कोशिश की। बाहरी गलियारे से कदमों की आहट सुनाई दी; चाबी घूमी और बेसी और एबॉट अंदर आ गए।

"मिस आयर, क्या आप बीमार हैं?" बेसी ने कहा।

"कितनी भयानक आवाज थी! इसने मुझे अंदर तक झकझोर दिया!" मठाधीश ने कहा।

"मुझे बाहर ले जाओ! मुझे नर्सरी में जाने दो!" मैं चिल्ला रही थी।

"किसलिए? क्या तुम्हें चोट लगी है? क्या तुमने कुछ देखा है?" बेसी ने फिर पूछा।

"ओह! मैंने एक रोशनी देखी, और मुझे लगा कि कोई भूत आएगा।" मैंने अब बेसी का हाथ पकड़ लिया था, और उसने उसे मुझसे नहीं छुड़ाया।

"उसने जानबूझकर चीख मारी है," एबॉट ने कुछ नाराज़गी से कहा। "और कैसी चीख! अगर उसे बहुत दर्द हो रहा होता तो इसे माफ़ किया जा सकता था, लेकिन वह तो बस हम सबको यहाँ बुलाना चाहती थी: मैं उसकी शरारतों को जानता हूँ।"

"यह सब क्या है?" एक और आवाज ने सख्ती से पूछा; और श्रीमती रीड गलियारे से गुजरीं, उनकी टोपी हवा में लहरा रही थी, उनका गाउन तूफानी ढंग से फड़फड़ा रहा था। "एबॉट और बेसी, मुझे लगता है मैंने आदेश दिया था कि जेन आयर को लाल

कमरे में तब तक रखा जाए जब तक मैं खुद उसके पास न आ जाऊं।"

"मैडम, मिस जेन बहुत जोर से चीखी थीं," बेसी ने विनती करते हुए कहा।

"उसे जाने दो," यही एकमात्र उत्तर था। "बेसी का हाथ छोड़ दो, बच्ची: यकीन मानो, तुम इन तरीकों से बाहर नहीं निकल पाओगी। मुझे छल-कपट से घृणा है, विशेषकर बच्चों में; यह मेरा कर्तव्य है कि मैं तुम्हें दिखाऊं कि चालबाज़ी काम नहीं आएगी: अब तुम यहाँ एक घंटा और रहोगी, और केवल पूर्ण आज्ञापालन और शांत रहने की शर्त पर ही मैं तुम्हें मुक्त करूंगी।"

"ओ चाची! मुझ पर दया करो! मुझे क्षमा करो! मैं इसे सहन नहीं कर सकता— मुझे किसी और तरीके से दंडित किया जाए! अगर ऐसा हुआ तो मैं मारा जाऊंगा—"

"चुप रहो! यह हिंसा अत्यंत घृणित है," और निस्संदेह, वह ऐसा ही महसूस करती थी। उसकी नज़र में मैं एक प्रतिभाशाली अभिनेत्री थी; वह मुझे उग्र भावनाओं, नीच स्वभाव और खतरनाक कपट का मिश्रण मानती थी।

बेसी और एबॉट के चले जाने के बाद, श्रीमती रीड मेरी अब बेकाबू पीड़ा और सिसकियों से तंग आकर, अचानक मुझे वापस धकेल कर कमरे में बंद कर दिया, बिना कोई और बातचीत किए। मैंने उन्हें झाड़ू लगाते हुए सुना; और उनके जाने के तुरंत बाद, मुझे लगता है कि मुझे एक तरह का दौरा पड़ा: बेहोशी ने मुझे पूरी तरह से जकड़ लिया।

अध्याय III

अगली बात जो मुझे याद है, वो ये है कि मैं एक भयानक सपने जैसी अनुभूति के साथ जागा, और मेरे सामने एक भयानक लाल चमक दिखाई दी, जिस पर मोटी काली पट्टियाँ बनी हुई थीं। मुझे कुछ आवाज़ें भी सुनाई दीं, खोखली सी, मानो हवा या पानी के तेज़ बहाव से दबी हुई हों: बेचैनी, अनिश्चितता और आतंक की एक सर्वव्यापी

भावना ने मेरी इंद्रियों को भ्रमित कर दिया। कुछ ही देर में, मुझे एहसास हुआ कि कोई मुझे संभाल रहा है; मुझे उठा रहा है और बैठने की मुद्रा में सहारा दे रहा है, और पहले कभी किसी ने मुझे इतने प्यार से नहीं उठाया या सहारा नहीं दिया था। मैंने अपना सिर तकिए या बांह पर टिकाया, और मुझे आराम महसूस हुआ।

पांच मिनट बाद ही भ्रम का बादल छंट गया: मुझे अच्छी तरह पता था कि मैं अपने ही बिस्तर पर हूँ, और वह लाल चमक बच्चों के कमरे की आग की थी। रात हो चुकी थी: मेज पर एक मोमबत्ती जल रही थी; बेसी हाथ में एक कटोरा लिए बिस्तर के पास खड़ी थी, और एक सज्जन मेरे तकिये के पास एक कुर्सी पर बैठे मेरे ऊपर झुके हुए थे।

मुझे एक अवर्णनीय राहत का अनुभव हुआ, सुरक्षा और निश्चिंतता का एक सुकून भरा एहसास हुआ, जब मुझे पता चला कि कमरे में एक अजनबी है, जो गेट्सहेड का निवासी नहीं है और श्रीमती रीड से उसका कोई संबंध नहीं है। बेसी से नज़रें हटाकर (हालाँकि उसकी उपस्थिति मुझे एबॉट की उपस्थिति की तुलना में कहीं कम अप्रिय लगी होगी), मैंने उस सज्जन के चेहरे को गौर से देखा: मैं उन्हें जानती थी; वे श्री लॉयड थे, एक दवा विक्रेता, जिन्हें श्रीमती रीड कभी-कभी नौकरों के बीमार होने पर बुलाती थीं: अपने और बच्चों के लिए वे एक चिकित्सक नियुक्त करती थीं।

“तो मैं कौन हूँ?” उसने पूछा।

मैंने उनका नाम लिया और साथ ही अपना हाथ भी बढ़ाया: उन्होंने मुस्कुराते हुए मेरा हाथ थाम लिया और कहा, “हम जल्द ही सब ठीक कर लेंगे।” फिर उन्होंने मुझे लिटाया और बेसी से कहा कि रात भर मुझे कोई परेशान न करे। कुछ और निर्देश देकर और अगले दिन फिर आने का संकेत देकर वे चले गए; मेरे दुख के बीच: जब वे मेरे तकिये के पास कुर्सी पर बैठे थे, तब मुझे बहुत सुकून और अपनापन महसूस हो रहा था; और जैसे ही उन्होंने दरवाजा बंद किया, पूरा कमरा अंधेरा हो गया और मेरा दिल फिर से डूब गया: असहनीय उदासी ने उसे भारी कर दिया।

"क्या आपको नींद आ रही है, मिस?" बेसी ने बड़ी नरमी से पूछा।

मुझे उसका जवाब देने की हिम्मत ही नहीं हुई; क्योंकि मुझे डर था कि अगला वाक्य कठोर हो सकता है। "मैं कोशिश करूँगी।"

"क्या आप कुछ पीना चाहेंगे, या कुछ खाना चाहेंगे?"

"नहीं, धन्यवाद, बेसी।"

“तो मुझे लगता है कि मुझे सोने जाना चाहिए, क्योंकि बारह बज चुके हैं; लेकिन अगर आपको रात में किसी चीज की जरूरत हो तो आप मुझे बुला सकते हैं।”

यह तो वाकई अद्भुत शिष्टाचार है! इसने मुझे प्रश्न पूछने का साहस दिया।

“बेसी, मुझे क्या हो गया है? क्या मैं बीमार हूँ?”

"मुझे लगता है कि तुम लाल कमरे में रोते-रोते बीमार पड़ गई थी; तुम जल्द ही ठीक हो जाओगी, इसमें कोई शक नहीं।"

बेसी पास ही स्थित नौकरानी के कमरे में चली गई। मैंने उसे कहते सुना—

“सारा, आओ और मेरे साथ नर्सरी में सो जाओ; मैं आज रात उस बेचारी बच्ची के साथ अकेले रहने की हिम्मत नहीं कर सकती: वह मर सकती है; उसे ऐसा दौरा पड़ना कितनी अजीब बात है: मुझे आश्चर्य है कि क्या उसने कुछ देखा भी था। मालकिन कुछ ज्यादा ही सख्त थीं।”

सारा उसके साथ वापस आई; दोनों बिस्तर पर चली गईं; सोने से पहले वे आधे घंटे तक आपस में फुसफुसाती रहीं। मैंने उनकी बातचीत के कुछ अंश सुने, जिनसे मैं स्पष्ट रूप से चर्चा का मुख्य विषय समझ सका।

“कोई चीज़ उसके पास से गुज़री, पूरी तरह से सफ़ेद कपड़ों में, और गायब हो गई” — “उसके पीछे एक बड़ा काला कुत्ता” — “कमरे के दरवाजे पर तीन ज़ोरदार दस्तक” — “उसकी कब्र के ठीक ऊपर कब्रिस्तान में एक रोशनी,” इत्यादि।

अंततः दोनों सो गए: आग और मोमबत्ती बुझ गई। मेरे लिए, उस लंबी रात के पहर भयानक जागते हुए बीते; भय से तनावग्रस्त: ऐसा भय जो केवल बच्चे ही महसूस कर सकते हैं।

लाल कमरे वाली इस घटना के बाद मुझे कोई गंभीर या दीर्घकालिक शारीरिक बीमारी नहीं हुई; इसने केवल मेरी नसों को एक ऐसा आघात पहुँचाया जिसका असर मुझे आज भी महसूस होता है। हाँ, श्रीमती रीड, मुझे आपके कारण कुछ भयानक मानसिक पीड़ा सहनी पड़ी है, लेकिन मुझे आपको क्षमा कर देना चाहिए, क्योंकि आपको पता नहीं था कि आपने क्या किया: मेरे दिल को चोट पहुँचाते हुए, आपको लगा कि आप केवल मेरी बुरी प्रवृत्तियों को जड़ से उखाड़ रही हैं।

अगले दिन, दोपहर तक मैं उठकर तैयार हो गई और बच्चों के कमरे की चूल्हे के पास शॉल ओढ़कर बैठ गई। मैं शारीरिक रूप से कमजोर और टूटी हुई महसूस कर रही थी, लेकिन मेरी सबसे बुरी हालत मन की असहनीय पीड़ा थी: एक ऐसी पीड़ा जो

मुझसे लगातार चुपचाप आंसू निकलवा रही थी; गाल से एक आंसू पोंछते ही दूसरा आ जाता था। फिर भी, मैंने सोचा, मुझे खुश होना चाहिए था, क्योंकि रीड परिवार का कोई भी सदस्य वहाँ नहीं था, वे सब अपनी माँ के साथ गाड़ी में बाहर गए हुए थे। एबॉट भी दूसरे कमरे में सिलाई कर रही थी, और बेसी इधर-उधर घूमते हुए, खिलौने समेटते और दराज ठीक करते हुए, बीच-बीच में मुझसे असाधारण स्नेह भरे शब्द कह रही थी। यह स्थिति मेरे लिए शांति का स्वर्ग होनी चाहिए थी, क्योंकि मैं लगातार डांट-फटकार और बिना किसी धन्यवाद के काम करने की आदी थी; लेकिन वास्तव में, मेरी नसें अब ऐसी स्थिति में थीं कि कोई शांति उन्हें शांत नहीं कर सकती थी, और कोई खुशी उन्हें सुखद रूप से उत्तेजित नहीं कर सकती थी।

बेसी रसोई में गई थी और अपने साथ एक चमकीले रंग की चीनी मिट्टी की थाली में एक टार्ट लेकर आई थी। उस थाली पर बना स्वर्ग का पक्षी, जो कलियों और गुलाब की कलियों के घेरे में बैठा था, मुझे बहुत पसंद था; और मैंने उस थाली को हाथ में लेकर करीब से देखने की कई बार गुज़ारिश की थी, लेकिन अब तक मुझे यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। अब वह कीमती थाली मेरे घुटनों पर रखी गई और मुझे उस पर सजी नाजुक पेस्ट्री खाने के लिए सादर आमंत्रित किया गया। व्यर्थ की कृपा! अन्य कई लंबे समय से प्रतीक्षित और चाही गई कृपाओं की तरह, यह भी बहुत देर से आई! मैं टार्ट नहीं खा सकी; और पक्षी के पंख, फूलों के रंग, अजीब तरह से फीके लग रहे थे: मैंने थाली और टार्ट दोनों को एक तरफ रख दिया। बेसी ने पूछा कि क्या मुझे कोई किताब चाहिए: किताब शब्द ने मुझे क्षणिक रूप से प्रेरित किया और मैंने उससे पुस्तकालय से गुलिवर ट्रेवल्स लाने का अनुरोध किया। इस पुस्तक को मैंने बार-बार बड़े आनंद से पढ़ा था। मैंने इसे तथ्यों का वर्णन माना और इसमें परियों की कहानियों से भी अधिक गहरी रुचि पाई: क्योंकि जहाँ तक परियों की बात है, मैंने उन्हें फॉक्सग्लोव के पत्तों और घंटियों के बीच, मशरूमों के नीचे और पुरानी दीवारों के कोनों को ढकने वाली ज़मीनी आइवी के नीचे व्यर्थ ही खोज लिया था, और अंततः इस दुखद सत्य को स्वीकार कर लिया था कि वे सभी इंग्लैंड छोड़कर किसी ऐसे जंगली देश में चले गए हैं जहाँ जंगल अधिक घने और निर्जन हैं, और जनसंख्या कम है; जबकि, मेरी मान्यता के अनुसार, लिलिपुट और ब्रॉबडिग्नाग पृथ्वी की सतह के ठोस भाग हैं, इसलिए मुझे कोई संदेह नहीं था कि एक दिन लंबी यात्रा करके मैं अपनी आँखों से एक राज्य के छोटे-छोटे खेत, घर और पेड़, नन्हे-मुन्ने लोग, छोटी

गायें, भेड़ें और पक्षी देख सकूँ; और दूसरे राज्य के ऊँचे-ऊँचे अनाज के खेत, विशाल मास्टिफ़ कुत्ते, दैत्य बिल्लियाँ, मीनार जैसे पुरुष और स्त्रियाँ देख सकूँ। फिर भी, जब यह प्रिय पुस्तक मेरे हाथ में आई—जब मैंने इसके पन्ने पलटे, और इसके अद्भुत चित्रों में उस आकर्षण को खोजने का प्रयास किया जो मुझे अब तक हमेशा मिलता रहा था—तो सब कुछ भयावह और उदास हो गया; दानव दुबले-पतले भूतों जैसे लग रहे थे, बौने दुष्ट और डरावने शैतान जैसे, और गुलीवर सबसे भयानक और खतरनाक क्षेत्रों में एक अकेला भटकने वाला। मैंने पुस्तक बंद कर दी, जिसे पढ़ने की अब और हिम्मत नहीं थी, और उसे मेज पर, बिना चखे हुए टार्ट के बगल में रख दिया।

बेसी ने अब कमरे की धूल झाड़कर उसे साफ-सुथरा कर लिया था, और हाथ धोने के बाद, उसने रेशम और साटन के शानदार टुकड़ों से भरी एक छोटी सी दराज खोली और जॉर्जियाना की गुड़िया के लिए एक नई टोपी बनाने लगी। इसी बीच वह गा रही थी: उसका गाना था—

“उन दिनों में जब हम खानाबदोशों की तरह घूमते थे,
काफी समय पहले।"

मैंने यह गीत पहले भी कई बार सुना था, और हमेशा बड़े चाव से; क्योंकि बेसी की आवाज़ बहुत मधुर थी, कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता था। लेकिन अब, हालांकि उसकी आवाज़ अभी भी मधुर थी, मुझे उसकी धुन में एक अवर्णनीय उदासी महसूस हुई। कभी-कभी, अपने काम में मग्न होकर, वह मुखड़े को बहुत धीमी, बहुत देर तक गाती थी; "बहुत समय पहले" किसी अंतिम संस्कार के भजन की सबसे उदास लय की तरह लगता था। फिर वह एक और गीत गाने लगी, इस बार वह सचमुच बहुत दुख भरा था।

मेरे पैर दुख रहे हैं और मेरे अंग थके हुए हैं;
रास्ता लंबा है और पहाड़ दुर्गम हैं;
जल्द ही शाम ढल जाएगी, चाँदनी रात नहीं रहेगी और आसमान उदास हो जाएगा।
उस निर्धन अनाथ बच्चे के रास्ते पर।
उन्होंने मुझे इतनी दूर और इतने अकेले क्यों भेजा?
ऊपर जहाँ बंजर भूमि फैली हुई है और धूसर चट्टानें ढेर हैं?
पुरुष कठोर हृदय के होते हैं, और दयालु देवदूत केवल
एक गरीब अनाथ बच्चे के कदमों पर नजर रखें।

फिर भी दूर से हल्की-हल्की रात की हवा बह रही है।

वहां बादल बिल्कुल नहीं हैं, और साफ तारे हल्की रोशनी बिखेर रहे हैं।

ईश्वर अपनी दया से सुरक्षा प्रदान कर रहा है।

अनाथ बच्चे को सांत्वना और आशा प्रदान करना।

अगर मैं टूटे हुए पुल से गिर भी जाऊं तो भी,

या फिर झूठी रोशनी से बहकावे में आकर दलदलों में भटक जाएं,

फिर भी मेरे पिता, वादे और आशीर्वाद के साथ,

उस निर्धन अनाथ बच्चे को अपनी गोद में ले लो।

मन में यह विचार आता है कि इससे मुझे शक्ति प्राप्त होगी।

हालांकि आश्रय और परिवार दोनों से वंचित कर दिया गया था;

स्वर्ग एक घर है, और वहां मुझे आराम जरूर मिलेगा;

ईश्वर अनाथ और गरीब बच्चे का मित्र है।

“आइए, मिस जेन, रोना मत,” बेसी ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा। मानो वह आग से कह रही हो, “जलना मत!” लेकिन वह मेरे भीतर व्याप्त असहनीय पीड़ा को कैसे समझ सकती थी? सुबह के दौरान श्री लॉयड फिर आए।

"अरे वाह, इतनी जल्दी उठ गई!" उसने नर्सरी में प्रवेश करते हुए कहा। "अच्छा, नर्स, वह कैसी है?"

बेसी ने जवाब दिया कि मैं बहुत अच्छा कर रहा हूँ।

“तो फिर उसे और अधिक खुशमिजाज दिखना चाहिए। इधर आइए, मिस जेन: आपका नाम जेन है, है ना?”

जी हाँ, जेन आयर।

"अच्छा, आप रो रही थीं, मिस जेन आयर; क्या आप मुझे बता सकती हैं कि किस बारे में? क्या आपको कोई दर्द है?"

"जी नहीं, महोदय।"

“ओह! मुझे लगता है कि वह इसलिए रो रही है क्योंकि वह मालकिन के साथ गाड़ी में बाहर नहीं जा सकी,” बेसी ने बीच में कहा।

"बिल्कुल नहीं! अरे, वह तो इस तरह की छोटी-छोटी बातों के लिए बहुत बूढ़ी हो चुकी है।"

मैंने भी यही सोचा था; और झूठे आरोप से मेरा आत्मसम्मान आहत हुआ, इसलिए

मैंने तुरंत जवाब दिया, "मैंने जीवन में कभी ऐसी बात पर आंसू नहीं बहाए: मुझे गाड़ी में बाहर जाना पसंद नहीं है। मैं इसलिए रोती हूं क्योंकि मैं दुखी हूं।"

“ओह, धिक्कार है, मिस!” बेसी ने कहा।

वह सम्मानित वैद्य थोड़ा स्तब्ध प्रतीत हुआ। मैं उसके सामने खड़ा था; उसने अपनी निगाहें मुझ पर गड़ा रखी थीं: उसकी आँखें छोटी और धूसर थीं; बहुत चमकीली नहीं थीं, लेकिन मैं कह सकता हूँ कि अब मैं उन्हें चतुर समझूँगा: उसका चेहरा कठोर लेकिन सौम्य दिखता था। मुझे कुछ देर देखने के बाद उसने कहा—

“कल आपको किस वजह से तबीयत खराब हुई थी?”

"वह गिर गई थी," बेसी ने फिर से अपने शब्दों में कहा।

“गिर गई! अरे वाह, ये तो बिल्कुल बच्ची जैसी लग रही है! क्या वो इस उम्र में चल भी नहीं सकती? वो तो आठ या नौ साल की ही होगी।”

“मुझे धक्का लगा था,” यह सीधा-सादा स्पष्टीकरण था, जो मेरे अहंकार को ठेस पहुँचने के एक और झटके से मेरे मुँह से निकल गया; “लेकिन इससे मैं बीमार नहीं हुआ,” मैंने आगे कहा; जबकि मिस्टर लॉयड ने चुटकी भर तंबाकू का सेवन किया।

जैसे ही वह डिब्बा अपनी बनियान की जेब में रख रहा था, नौकरों के खाने की तेज़ घंटी बजी; वह समझ गया कि क्या है। "यह तुम्हारे लिए है, नर्स," उसने कहा; "तुम नीचे जा सकती हो; तुम्हारे लौटने तक मैं मिस जेन को डांटूंगा।"

बेसी वहीं रहना चाहती थी, लेकिन उसे जाना पड़ा, क्योंकि गेट्सहेड हॉल में भोजन के समय की पाबंदी का कड़ाई से पालन किया जाता था।

"गिरने से तो तुम बीमार नहीं हुई; फिर किस वजह से हुई?" बेसी के चले जाने के बाद मिस्टर लॉयड ने पूछा।

"मुझे अंधेरा होने तक एक ऐसे कमरे में बंद रखा गया था जहां भूत रहता है।"

मैंने मिस्टर लॉयड को एक ही समय में मुस्कुराते और भौंहें चढ़ाते हुए देखा।

“भूत! क्या, तुम तो अभी बच्चे हो! तुम्हें भूतों से डर लगता है?”

“मैं मिस्टर रीड के भूत के बारे में सोचती हूँ: उनकी मृत्यु उसी कमरे में हुई थी और उन्हें वहीं रखा गया था। बेसी या कोई भी रात में उस कमरे में नहीं जाता, अगर संभव हो तो; और मुझे बिना मोमबत्ती के अकेले बंद रखना बहुत क्रूरता थी, इतनी क्रूरता कि मुझे लगता है मैं इसे कभी नहीं भूल पाऊँगी।”

“बकवास! और क्या यही बात तुम्हें इतना दुखी करती है? क्या अब तुम्हें दिन के

उजाले में भी डर लगता है?”

“नहीं: लेकिन जल्द ही फिर रात आ जाएगी: और इसके अलावा, मैं दुखी हूँ, बहुत दुखी हूँ, कुछ और बातों के लिए।”

“और क्या-क्या? क्या आप मुझे उनमें से कुछ बता सकते हैं?”

इस प्रश्न का पूर्ण उत्तर देने की मेरी कितनी इच्छा थी! कोई उत्तर गढ़ना कितना कठिन था! बच्चे महसूस तो कर सकते हैं, लेकिन वे अपनी भावनाओं का विश्लेषण नहीं कर सकते; और यदि विश्लेषण आंशिक रूप से ही सही, विचारों में हो भी जाए, तो वे उस प्रक्रिया के परिणाम को शब्दों में व्यक्त करना नहीं जानते। फिर भी, अपने दुख को व्यक्त करके उसे कम करने के इस पहले और एकमात्र अवसर को खोने के डर से, मैंने कुछ देर रुककर, संक्षेप में, लेकिन यथासंभव, एक सच्चा उत्तर गढ़ने का प्रयास किया।

"एक बात तो यह है कि मेरे न तो पिता हैं, न माता, न भाई-बहन।"

"तुम्हारी एक दयालु चाची और चचेरे भाई-बहन हैं।"

मैं फिर रुका; फिर लड़खड़ाते हुए बोला—

लेकिन जॉन रीड ने मुझे नीचे गिरा दिया, और मेरी चाची ने मुझे लाल कमरे में बंद कर दिया।

श्री लॉयड ने दूसरी बार अपनी नसवार की डिब्बी निकाली।

“क्या आपको नहीं लगता कि गेट्सहेड हॉल एक बहुत ही सुंदर घर है?” उसने पूछा। “क्या आप इतने अच्छे घर में रहने के लिए बहुत आभारी नहीं हैं?”

"यह मेरा घर नहीं है, महोदय; और मठाधीश का कहना है कि मुझे यहां रहने का अधिकार एक नौकर से भी कम है।"

"छी! तुम इतने मूर्ख तो नहीं हो सकते कि इतनी शानदार जगह को छोड़ना चाहो?"

"अगर मेरे पास कहीं और जाने की जगह होती, तो मुझे इसे छोड़ने में खुशी होती; लेकिन जब तक मैं एक महिला नहीं बन जाती, तब तक मैं गेट्सहेड से कभी दूर नहीं जा सकती।"

"शायद आप—कौन जानता है? क्या श्रीमती रीड के अलावा आपके कोई और रिश्तेदार हैं?"

मुझे नहीं लगता, महोदय।

"क्या तुम्हारे पिता का कोई सामान नहीं है?"

“मुझे नहीं पता। मैंने एक बार आंटी रीड से पूछा था, और उन्होंने कहा था कि शायद मेरे कुछ गरीब, निम्न वर्ग के रिश्तेदार हों जिनका नाम आयर हो, लेकिन उन्हें उनके बारे में कुछ भी पता नहीं था।”

"अगर आपके पास ऐसे लोग होते, तो क्या आप उनके पास जाना चाहेंगे?"

मैंने विचार किया। बड़ों को गरीबी भयावह लगती है; बच्चों को तो और भी ज्यादा: उन्हें मेहनती, कर्मठ और सम्मानजनक गरीबी का ज्यादा अंदाजा नहीं होता; वे इस शब्द को केवल फटे-पुराने कपड़ों, कम भोजन, बिना चूल्हे के चूल्हों, असभ्य व्यवहार और भ्रष्ट आदतों से जुड़ा हुआ समझते हैं: मेरे लिए गरीबी का अर्थ ही पतन था।

“नहीं; मैं गरीब लोगों में शामिल होना पसंद नहीं करूंगा,” यह मेरा जवाब था।

"क्या तब भी नहीं जब वे आपके प्रति दयालु हों?"

मैंने अपना सिर हिलाया: मुझे समझ नहीं आ रहा था कि गरीब लोगों के पास दयालु होने के साधन कैसे हो सकते हैं; और फिर उनकी तरह बोलना सीखना, उनके तौर-तरीके अपनाना, अशिक्षित रहना, उन गरीब महिलाओं की तरह बड़ा होना जिन्हें मैं कभी-कभी गेट्सहेड गांव की झोपड़ियों के दरवाजों पर अपने बच्चों को दूध पिलाते या उनके कपड़े धोते हुए देखती थी: नहीं, मैं जाति की कीमत पर स्वतंत्रता खरीदने के लिए इतनी साहसी नहीं थी।

लेकिन क्या आपके रिश्तेदार वाकई इतने गरीब हैं? क्या वे कामकाजी लोग हैं?

“मैं नहीं बता सकती; आंटी रीड कहती हैं कि अगर मुझे कुछ मिलेगा भी तो वो भिखारियों का समूह होगा: मैं भीख मांगना पसंद नहीं करूंगी।”

क्या आप स्कूल जाना चाहेंगे?

मैंने फिर सोचा: मुझे स्कूल के बारे में बहुत कम जानकारी थी: बेसी कभी-कभी इसे एक ऐसी जगह बताती थी जहाँ युवतियाँ बेड़ियों में बैठती थीं, पीठ पर तख्ते पहनती थीं, और उनसे बेहद सभ्य और अनुशासित होने की उम्मीद की जाती थी: जॉन रीड को अपना स्कूल नापसंद था और वह अपने शिक्षक को गालियाँ देता था; लेकिन जॉन रीड की पसंद मेरी पसंद नहीं थी, और अगर बेसी के स्कूल अनुशासन के किस्से (गेट्सहेड आने से पहले जिस परिवार में वह रहती थी, वहाँ की युवतियों से इकट्ठा किए गए) कुछ हद तक भयावह थे, तो उन्हीं युवतियों द्वारा हासिल की गई कुछ उपलब्धियों का उसका विवरण, मुझे लगा, उतना ही आकर्षक था। वह उनके द्वारा बनाई गई सुंदर प्राकृतिक दृश्यों और फूलों की पेंटिंग्स, उनके द्वारा गाए जाने वाले

गीतों और बजाए जाने वाले वाद्य यंत्रों, उनके द्वारा कमाए जाने वाले पैसों, उनके द्वारा अनुवादित की जाने वाली फ्रांसीसी पुस्तकों के बारे में शेखी बघारती थी; यह सुनकर मेरा मन भी उनसे प्रेरणा लेने लगा। इसके अलावा, स्कूल एक पूर्ण परिवर्तन होगा: इसका अर्थ था एक लंबी यात्रा, गेट्सहेड से पूरी तरह अलग होना, एक नए जीवन में प्रवेश करना।

"मैं सचमुच स्कूल जाना चाहूंगा," मेरे विचारों का यही अंतिम निष्कर्ष था जो सुनाई दिया।

“अरे वाह! कौन जाने क्या हो जाए?” श्री लॉयड उठते हुए बोले। “बच्चे को हवा और माहौल में बदलाव की ज़रूरत है,” उन्होंने मन ही मन कहा; “उसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है।”

बेसी अब वापस लौटी; उसी क्षण बजरी वाली पगडंडी पर गाड़ी के चलने की आवाज सुनाई दी।

“क्या वह आपकी मालकिन हैं, नर्स?” श्री लॉयड ने पूछा। “जाने से पहले मैं उनसे बात करना चाहूंगा।”

बेसी ने उन्हें नाश्ते के कमरे में आने का न्योता दिया और बाहर जाने का रास्ता दिखाया। बाद में उनके और श्रीमती रीड के बीच हुई बातचीत में, मुझे लगता है, आगे की घटनाओं से, उस वैद्य ने मुझे स्कूल भेजने की सलाह दी होगी; और यह सलाह निस्संदेह आसानी से मान ली गई होगी; क्योंकि जैसा कि एबॉट ने कहा, एक रात जब मैं बिस्तर पर सो गया था और उन्हें लगा कि मैं सो गया हूँ, तब दोनों बेसी के साथ नर्सरी में सिलाई कर रहे थे और इस विषय पर चर्चा कर रहे थे, “मालकिन को, वह कहने की हिम्मत करती हैं, ऐसे थकाऊ, बदमिजाज बच्चे से छुटकारा पाकर बहुत खुशी हुई होगी, जो हमेशा ऐसा लगता था जैसे वह हर किसी पर नजर रख रही हो और छुपकर साजिशें रच रही हो।” मुझे लगता है कि एबॉट ने मुझे एक तरह का बचकाना गाइ फॉक्स होने का श्रेय दिया।

उसी अवसर पर मुझे पहली बार मिस एबॉट के बेसी को भेजे गए संदेशों से पता चला कि मेरे पिता एक गरीब पादरी थे; कि मेरी माँ ने अपने दोस्तों की इच्छा के विरुद्ध उनसे शादी की थी, जो इस रिश्ते को उनके लिए नीचा समझते थे; कि मेरे दादा रीड उनकी अवज्ञा से इतने नाराज थे कि उन्होंने उन्हें एक पैसा भी नहीं दिया; कि मेरी माँ और पिता के विवाह के एक वर्ष बाद, मेरे पिता को टाइफस बुखार हो गया जब वे एक

बड़े औद्योगिक शहर के गरीबों के बीच गए थे जहाँ उनका पादरी का पद स्थित था और जहाँ उस समय यह बीमारी प्रचलित थी: कि मेरी माँ को उनसे संक्रमण लग गया और दोनों की एक महीने के भीतर मृत्यु हो गई।

बेसी ने जब यह कहानी सुनी तो आह भरी और कहा, "बेचारी मिस जेन पर भी तरस आता है, मठाधीश।"

“हां,” एबॉट ने जवाब दिया; “अगर वह एक प्यारी, सुंदर बच्ची होती, तो कोई उसकी उदासी पर दया कर सकता था; लेकिन ऐसी छोटी सी मेंढक जैसी बच्ची के लिए कोई वास्तव में परवाह नहीं कर सकता।”

“बिल्कुल भी ज्यादा फर्क नहीं पड़ता,” बेसी ने सहमति जताते हुए कहा: “कम से कम, मिस जॉर्जियाना जैसी खूबसूरत महिला उसी हालत में कहीं ज्यादा दिलकश होती।”

“हाँ, मैं मिस जॉर्जियाना पर मोहित हूँ!” भावुक मठाधीश ने कहा। “छोटी सी प्यारी! – उसके लंबे घुंघराले बाल, नीली आँखें, और उसका इतना प्यारा रंग; मानो उसे चित्रित किया गया हो! – बेसी, मुझे रात के खाने में वेल्श खरगोश खाने का मन कर रहा है।”

“मैं भी ऐसा कर सकता हूँ—भुने हुए प्याज के साथ। चलो, नीचे चलते हैं।” वे चले गए।

अध्याय IV

श्री लॉयड के साथ हुई मेरी बातचीत और बेसी और एबॉट के बीच हुई उपरोक्त बैठक से मुझे ठीक होने की इच्छा के लिए पर्याप्त आशा मिली: बदलाव निकट प्रतीत हो रहा था, - मैं चुपचाप इसकी कामना और प्रतीक्षा कर रही थी। हालाँकि, इसमें देरी हुई: दिन और सप्ताह बीत गए: मेरा स्वास्थ्य सामान्य हो गया था, लेकिन जिस विषय पर

मैं सोच रही थी, उस पर कोई नई चर्चा नहीं हुई। श्रीमती रीड कभी-कभी मुझे कठोर दृष्टि से देखती थीं, लेकिन शायद ही कभी मुझसे बात करती थीं: मेरी बीमारी के बाद से, उन्होंने मेरे और अपने बच्चों के बीच पहले से कहीं अधिक स्पष्ट दूरी बना ली थी; मुझे अकेले सोने के लिए एक छोटा सा कमरा दिया था, मुझे अकेले भोजन करने के लिए बाध्य किया था, और मेरा सारा समय नर्सरी में बिताने के लिए कहा था, जबकि मेरे चचेरे भाई-बहन लगातार ड्राइंग रूम में रहते थे। हालाँकि, उन्होंने मुझे स्कूल भेजने के बारे में कोई संकेत नहीं दिया: फिर भी मुझे सहज रूप से यह विश्वास था कि वह मुझे अपने साथ एक ही छत के नीचे अधिक समय तक नहीं रख पाएंगी; अब तो पहले से कहीं ज्यादा, जब उसकी नजरें मेरी तरफ पड़ती थीं, तो उनमें एक अटूट और गहरी घृणा झलकती थी।

एलिज़ा और जॉर्जियाना, जाहिर तौर पर आदेशों का पालन करते हुए, मुझसे यथासंभव कम बात करती थीं: जॉन जब भी मुझे देखता, अपनी जीभ गाल में दबा लेता था, और एक बार मुझे डांटने की कोशिश भी की; लेकिन जैसे ही मैं उसी गहरे क्रोध और घोर विद्रोह की भावना से प्रेरित होकर उसके विरुद्ध हो गई, जिसने पहले मेरे अंदर भ्रष्टाचार की भावना जगाई थी, उसने रुक जाना ही बेहतर समझा, और गालियां बकते हुए मुझसे भाग गया, और कसम खाने लगा कि मैंने उसकी नाक तोड़ दी है। मैंने सचमुच उसकी उस उभरी हुई नाक पर अपनी उंगलियों से जितना जोर से हो सकता था उतना जोर से प्रहार किया था; और जब मैंने देखा कि या तो उस प्रहार से या मेरी नज़र से वह डर गया है, तो मुझे अपने इरादे को पूरा करने की बहुत इच्छा हुई; लेकिन वह पहले ही अपनी माँ के पास था। मैंने उसे रोते हुए स्वर में यह कहानी सुनाते हुए सुना कि कैसे "वह दुष्ट जेन आयर" उस पर पागल बिल्ली की तरह झपटी थी: उसे काफी सख्ती से रोका गया।

“जॉन, उसके बारे में मुझसे बात मत करो: मैंने तुमसे कहा था कि उसके पास मत जाओ; वह ध्यान देने योग्य नहीं है; मैं नहीं चाहता कि तुम या तुम्हारी बहनें उससे मेलजोल रखें।”

यहां, रेलिंग पर झुककर, मैंने अचानक बिना सोचे-समझे चिल्ला दिया—

वे मेरे साथ जुड़ने के लायक नहीं हैं।

श्रीमती रीड काफी हष्ट-पुष्ट महिला थीं; लेकिन, इस अजीब और दुस्साहसी घोषणा को सुनकर, वह फुर्ती से सीढ़ियों से ऊपर दौड़ीं, मुझे बवंडर की तरह खींचकर नर्सरी

में ले गईं, और मुझे मेरे पालने के किनारे पर जोर से दबाते हुए, मुझे उस जगह से उठने या दिन के शेष समय में एक भी शब्द बोलने की चुनौती दी।

“अगर अंकल रीड ज़िंदा होते, तो वे तुमसे क्या कहते?” यह सवाल मैंने बड़ी मुश्किल से पूछा। मैं इसे बड़ी मुश्किल से अपनी मर्ज़ी से इसलिए कह रही हूँ, क्योंकि ऐसा लग रहा था मानो मेरी ज़बान ने मेरी इच्छा के बिना ही शब्द बोल दिए हों: मेरे अंदर से कुछ ऐसा निकल रहा था जिस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था।

“क्या?” श्रीमती रीड ने धीमी आवाज़ में कहा: उनकी आमतौर पर शांत और गंभीर रहने वाली भूरी आँखों में डर झलक रहा था; उन्होंने अपना हाथ मेरी बांह से हटा लिया और मुझे ऐसे घूरने लगीं मानो उन्हें सचमुच पता ही न हो कि मैं बच्चा हूँ या शैतान। अब तो मेरी खैर नहीं थी।

"मेरे चाचा रीड स्वर्ग में हैं, और वे सब कुछ देख सकते हैं जो तुम करते और सोचते हो; और पापा और मम्मी भी देख सकते हैं: वे जानते हैं कि तुम मुझे दिन भर कैसे चुप करा देते हो, और तुम मेरी मौत की कामना कैसे करते हो।"

श्रीमती रीड ने जल्द ही अपना हौसला जुटा लिया: उन्होंने मुझे खूब हिलाया, मेरे दोनों कान खींचे और फिर बिना कुछ कहे चली गईं। बेसी ने एक घंटे के लंबे उपदेश से इस अंतराल को भर दिया, जिसमें उन्होंने यह साबित कर दिया कि मैं अब तक किसी भी घर में पला-बढ़ा सबसे दुष्ट और बिगड़ा हुआ बच्चा था। मुझे उनकी बात पर आधा ही यकीन हुआ; क्योंकि मेरे मन में सचमुच केवल बुरे भाव ही उमड़ रहे थे।

नवंबर, दिसंबर और जनवरी का आधा महीना बीत गया। गेट्सहेड में क्रिसमस और नए साल का जश्न हमेशा की तरह धूमधाम से मनाया गया; उपहारों का आदान-प्रदान हुआ, डिनर और शाम की पार्टियाँ हुईं। ज़ाहिर है, मैं इन सभी खुशियों से वंचित रहा: मेरी भागीदारी एलिज़ा और जॉर्जियाना के रोज़ाना सजने-संवरने को देखने और उन्हें पतले मलमल के फ्रॉक और लाल कमरबंद में सजे-धजे, घुंघराले बालों के साथ ड्राइंग रूम में आते देखने तक ही सीमित थी; और उसके बाद, नीचे बजते पियानो या वीणा की आवाज़, बटलर और नौकर के आने-जाने की आवाज़, जलपान परोसे जाने पर गिलासों और चीनी मिट्टी के बर्तनों की खनक, और ड्राइंग रूम का दरवाज़ा खुलने-बंद होने पर बातचीत की धीमी आवाज़ सुनने में ही थी। जब मैं इस काम से ऊब जाता, तो सीढ़ियों के ऊपर बने एकांत और शांत नर्सरी में चला जाता: वहाँ, थोड़ा उदास तो होता, लेकिन दुखी नहीं। सच कहूँ तो, मुझे लोगों के बीच जाने की ज़रा भी इच्छा नहीं

थी, क्योंकि लोगों के बीच मुझे बहुत कम ही नोटिस किया जाता था; और अगर बेसी दयालु और मिलनसार होती, तो श्रीमती रीड की डरावनी निगाहों के नीचे, महिलाओं और पुरुषों से भरे कमरे में शामें गुजारने के बजाय, उसके साथ शांति से शामें बिताना मेरे लिए एक सुखद अनुभव होता। लेकिन बेसी, अपनी दासियों को कपड़े पहनाते ही, रसोई और गृहणी के कमरे के चहल-पहल वाले हिस्से में चली जाती थी, और आमतौर पर मोमबत्ती अपने साथ ले जाती थी। तब मैं अपनी गुड़िया को गोद में लेकर आग धीमी होने तक बैठी रहती, बीच-बीच में इधर-उधर देखती रहती कि कहीं उस अंधेरे कमरे में मुझसे भी बुरी कोई चीज तो नहीं है; और जब अंगारे मंद लाल हो जाते, तो मैं जल्दी से कपड़े उतारती, जितना हो सके गांठें और डोरियां खींचती, और ठंड और अंधेरे से बचने के लिए अपने पालने में शरण लेती। मैं हमेशा अपनी गुड़िया को इसी पालने में ले जाती थी; इंसान को किसी न किसी चीज से प्यार तो करना ही होता है, और स्नेह के योग्य वस्तुओं की कमी में, मैंने एक फीकी, जर्जर सी मूर्ति को, जो एक छोटे से पुतले जैसी थी, प्यार करने और संजोने में आनंद पाया। अब मुझे यह याद करके हैरानी होती है कि मैं उस छोटे से खिलौने पर कितनी बेतुकी श्रद्धा से मोहित थी, मानो उसे जीवित और भावनाओं को महसूस करने में सक्षम मानती थी। जब तक वह मेरी नाइटगाउन में लिपटा न होता, मुझे नींद नहीं आती थी; और जब वह वहाँ सुरक्षित और गर्म पड़ा रहता था, तो मैं अपेक्षाकृत खुश होती थी, यह सोचकर कि वह भी खुश है।

कंपनी के जाने का इंतज़ार करते हुए मुझे घंटे बहुत लंबे लगते थे, और मैं सीढ़ियों पर बेसी के कदमों की आहट सुनने के लिए तरसती रहती थी: कभी-कभी वह बीच में अपनी अंगुली या कैंची लेने के लिए ऊपर आती, या शायद मेरे लिए रात के खाने के तौर पर कुछ लाती - एक बन या चीज़केक - फिर वह मेरे खाने के दौरान बिस्तर पर बैठ जाती, और जब मैं खा लेती, तो वह मेरे चारों ओर कपड़े लपेट देती, और दो बार मुझे चूमती, और कहती, "शुभ रात्रि, मिस जेन।" जब बेसी इतनी कोमल होती, तो वह मुझे दुनिया की सबसे अच्छी, सबसे प्यारी, सबसे दयालु इंसान लगती; और मैं दिल से चाहती थी कि वह हमेशा इतनी ही खुशमिजाज और मिलनसार रहे, और मुझे कभी परेशान न करे, डांटे नहीं, या बेवजह काम न दे, जैसा कि वह अक्सर किया करती थी। मुझे लगता है कि बेसी ली एक अच्छी स्वाभाविक प्रतिभा वाली लड़की रही होगी, क्योंकि वह जो भी करती थी उसमें होशियार थी, और कहानी सुनाने की उसमें अद्भुत

कला थी; कम से कम, मुझे तो उसकी बचपन की कहानियों से यही लगता है। अगर मुझे उसका चेहरा और रूप-रंग ठीक से याद है, तो वह सुंदर भी थी। मुझे याद है कि वह दुबली-पतली युवती थी, जिसके काले बाल, गहरी आँखें, सुंदर चेहरे की बनावट और साफ-सुथरा रंग था; लेकिन उसका स्वभाव चंचल और जल्दबाज़ था, और उसे सिद्धांतों या न्याय की कोई परवाह नहीं थी: फिर भी, जैसी भी वह थी, मुझे गेट्सहेड हॉल में बाकी सब से वह ज़्यादा पसंद थी।

यह पंद्रह जनवरी का दिन था, सुबह के लगभग नौ बजे थे: बेसी नाश्ता करने नीचे गई हुई थी; मेरे चचेरे भाई-बहनों को अभी तक उनकी माँ के पास नहीं बुलाया गया था; एलिज़ा अपनी टोपी और गर्म बागवानी कोट पहनकर मुर्गियों को दाना चुगने जा रही थी, जो काम उसे बहुत पसंद था: और उतना ही उसे घर की नौकरानी को अंडे बेचना और उससे मिलने वाले पैसे जमा करना भी पसंद था। उसे व्यापार में महारत हासिल थी और बचत करने की प्रबल प्रवृत्ति थी; यह न केवल अंडे और मुर्गियाँ बेचने में, बल्कि माली से फूलों की जड़ों, बीजों और पौधों की कलमों के लिए सौदेबाजी करने में भी दिखाई देती थी; उस माली को श्रीमती रीड से आदेश मिला था कि वह अपनी मालकिन से उसके बगीचे की सभी उपज खरीदे जिसे वह बेचना चाहती थी: और अगर एलिज़ा को इससे अच्छा मुनाफा हो सकता था तो वह अपने सिर के बाल भी बेच देती। जहाँ तक उसके पैसों की बात है, वह पहले उन्हें किसी चिथड़े या पुराने कर्ल-पेपर में लपेटकर अलग-अलग कोनों में छिपा देती थी; लेकिन जब घर की नौकरानी ने इनमें से कुछ खजाने खोज लिए, तो एलिजा को अपने बहुमूल्य खजाने के खो जाने का डर सताने लगा, इसलिए उसने इसे अपनी माँ को पचास या साठ प्रतिशत की अत्यधिक ब्याज दर पर सौंपने की सहमति दे दी; और वह हर तिमाही में ब्याज वसूलती रही, और एक छोटी सी किताब में बड़ी सावधानी से हिसाब रखती रही।

जॉर्जियाना एक ऊंचे स्टूल पर बैठी थी, शीशे के सामने अपने बाल संवार रही थी और अपनी लटों में कृत्रिम फूल और पुराने पंख लगा रही थी, जो उसने अटारी की एक दराज में रखे थे। मैं अपना बिस्तर ठीक कर रही थी, क्योंकि बेसी ने मुझे उसके लौटने से पहले बिस्तर ठीक करने का सख्त आदेश दिया था (क्योंकि बेसी अब अक्सर मुझे एक तरह से सहायक के रूप में काम पर लगाती थी, कमरा साफ करने, कुर्सियों से धूल झाड़ने आदि के लिए)। रजाई बिछाकर और अपनी नाइट ड्रेस को तह

करके, मैं खिड़की के पास जाकर वहाँ बिखरी हुई कुछ चित्र-पुस्तकों और गुड़ियाघर के सामान को व्यवस्थित करने लगी; जॉर्जियाना के अचानक आदेश से कि उसके खिलौनों को अकेला छोड़ दो (क्योंकि छोटी कुर्सियाँ और दर्पण, परियों की प्लेटें और कप, सब उसके थे) मेरा काम रुक गया; और फिर, कुछ और करने को न होने के कारण, मैं खिड़की पर लगे पाले के फूलों पर साँस छोड़ने लगी, और इस तरह शीशे में एक जगह बना ली जिससे मैं बाहर मैदान को देख सकूँ, जहाँ सब कुछ स्थिर और कठोर पाले के प्रभाव से पत्थर जैसा था।

इस खिड़की से चौकीदार का कमरा और गाड़ी वाली सड़क दिखाई दे रही थी, और जैसे ही मैंने शीशे पर जमी चांदी जैसी सफेद पत्तियों को हटाकर बाहर देखने की जगह बनाई, मैंने देखा कि फाटक खुल गया और एक गाड़ी अंदर आ गई। मैंने उसे उदासीनता से ऊपर जाते हुए देखा; गेट्सहेड में गाड़ियाँ अक्सर आती थीं, लेकिन कोई भी ऐसी गाड़ी नहीं लाती थी जिसमें मेरी दिलचस्पी हो; वह घर के सामने रुकी, दरवाज़े की घंटी ज़ोर से बजी, और नए आने वाले को अंदर आने दिया गया। यह सब मेरे लिए कुछ भी मायने नहीं रखता था, मेरा ध्यान जल्द ही एक नन्ही भूखी रॉबिन चिड़िया की ओर आकर्षित हो गया, जो आकर खिड़की के पास दीवार से लगे पत्तों रहित चेरी के पेड़ की टहनियों पर चहचहाने लगी। मेरे नाश्ते की रोटी और दूध के बचे हुए टुकड़े मेज पर रखे थे, और एक रोटी का टुकड़ा तोड़कर, मैं खिड़की की चौखट को खींचकर टुकड़ों को खिड़की की चौखट पर रख रहा था, तभी बेसी दौड़ती हुई ऊपर नर्सरी में आ गई।

“मिस जेन, अपना एप्रन उतारो; तुम यहाँ क्या कर रही हो? क्या तुमने आज सुबह हाथ-मुँह धोए हैं?” जवाब देने से पहले मैंने एक बार फिर खींचा, क्योंकि मैं चाहती थी कि चिड़िया को उसकी रोटी सुरक्षित रहे: खिड़की खुल गई; मैंने रोटी के टुकड़े बिखेर दिए, कुछ पत्थर की चौखट पर, कुछ चेरी के पेड़ की डाल पर, फिर खिड़की बंद करके मैंने जवाब दिया—

“नहीं, बेसी; मैंने अभी-अभी धूल झाड़ना खत्म किया है।”

“शरारती, लापरवाह बच्चे! और अब तुम क्या कर रहे हो? तुम्हारा चेहरा बिल्कुल लाल हो गया है, जैसे तुमने कोई शरारत की हो: खिड़की क्यों खोल रहे थे?”

मुझे जवाब देने की परेशानी से मुक्ति मिल गई, क्योंकि बेसी को स्पष्टीकरण सुनने की बहुत जल्दी थी; वह मुझे वॉशस्टैंड तक खींच ले गई, मेरे चेहरे और हाथों को

साबुन, पानी और एक मोटे तौलिए से बेरहमी से, लेकिन सौभाग्य से संक्षिप्त रूप से रगड़ा; मेरे बालों को एक कड़े ब्रश से संवारा, मेरा एप्रन उतार दिया, और फिर मुझे सीढ़ियों के ऊपर ले जाकर सीधे नीचे आने को कहा, क्योंकि नाश्ते के कमरे में मेरी आवश्यकता थी।

मैं पूछना चाहती थी कि मुझे कौन बुला रहा है: मैं यह भी पूछना चाहती थी कि क्या श्रीमती रीड यहाँ हैं; लेकिन बेसी पहले ही जा चुकी थी और उसने मेरे सामने नर्सरी का दरवाजा बंद कर दिया था। मैं धीरे-धीरे नीचे उतरी। लगभग तीन महीनों से मुझे श्रीमती रीड के पास नहीं बुलाया गया था; नर्सरी में इतने लंबे समय तक कैद रहने के कारण, नाश्ते, भोजन और ड्राइंग रूम मेरे लिए भयानक जगह बन गए थे, जहाँ जाने से मुझे डर लगता था।

मैं अब खाली हॉल में खड़ी थी; मेरे सामने नाश्ते के कमरे का दरवाज़ा था, और मैं डर और थरथराहट के मारे वहीं रुक गई। उन दिनों अन्यायपूर्ण दंड के भय ने मुझे कितना डरपोक बना दिया था! मुझे नर्सरी में लौटने से डर लग रहा था, और बैठक में जाने से भी डर लग रहा था; दस मिनट तक मैं घबराहट और हिचकिचाहट में खड़ी रही; नाश्ते के कमरे की घंटी की तेज़ आवाज़ ने मेरा फैसला कर दिया; मुझे अंदर जाना ही होगा।

“मुझे कौन चाहेगा?” मैंने मन ही मन सोचा, और दोनों हाथों से दरवाज़े का कड़ा हैंडल घुमाया, जो एक-दो पल के लिए मेरी कोशिशों का विरोध करता रहा। “इस कमरे में आंटी रीड के अलावा मुझे और क्या दिखेगा? कोई पुरुष या स्त्री?” हैंडल घूमा, दरवाज़ा खुला, और अंदर जाकर झुककर प्रणाम करते हुए मैंने ऊपर देखा – एक काला खंभा! – कम से कम पहली नज़र में तो मुझे ऐसा ही लगा, कालीन पर सीधा खड़ा वह सीधा, संकरा, काले रंग का खंभा: ऊपर बना हुआ भयानक चेहरा किसी तराशे हुए मुखौटे जैसा था, मानो स्तंभ के ऊपर एक शिखर के रूप में रखा गया हो।

श्रीमती रीड आग के पास अपनी हमेशा वाली सीट पर बैठ गईं; उन्होंने मुझे पास आने का इशारा किया; मैं उनके पास गया, और उन्होंने मुझे उस कठोर चेहरे वाले अजनबी से इन शब्दों के साथ परिचित कराया: "यह वही छोटी लड़की है जिसके बारे में मैंने आपसे बात करने की गुजारिश की थी।"

वह एक पुरुष था, उसने धीरे से अपना सिर मेरी ओर घुमाया और घनी भौहों के

नीचे चमकती हुई जिज्ञासु दिखने वाली दो भूरी आँखों से मुझे निहारने के बाद, गंभीर स्वर में कहा, "उसका कद छोटा है: उसकी उम्र क्या है?"

“दस साल।”

“इतना?” यह संदेह भरा जवाब था; और उन्होंने कुछ मिनटों तक मुझे गौर से देखा। फिर उन्होंने मुझसे पूछा— “तुम्हारा नाम क्या है, छोटी बच्ची?”

“जेन आयर, महोदय।”

ये शब्द कहते हुए मैंने ऊपर देखा: वह मुझे एक लंबा सज्जन व्यक्ति प्रतीत हुआ; लेकिन तब मैं बहुत छोटा था; उसकी विशेषताएं बड़ी थीं, और वे और उसके शरीर की सभी रेखाएं समान रूप से कठोर और सलीकेदार थीं।

“अच्छा, जेन आयर, और क्या तुम एक अच्छी बच्ची हो?”

इसका सकारात्मक उत्तर देना असंभव था: मेरी छोटी सी दुनिया की राय इससे बिल्कुल अलग थी: मैं चुप रहा। श्रीमती रीड ने सिर हिलाकर मेरी ओर से जवाब दिया और थोड़ी देर बाद कहा, "शायद इस विषय पर जितना कम बोला जाए उतना ही अच्छा है, श्री ब्रॉकलहर्स्ट।"

“यह सुनकर बहुत दुख हुआ! मुझे और उसे कुछ बात करनी है;” और सीधे खड़े होकर वह श्रीमती रीड के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। “इधर आओ,” उसने कहा।

मैं कालीन पर कदम रखते हुए आगे बढ़ा; उसने मुझे अपने सामने सीधा खड़ा कर दिया। उसका चेहरा कितना अद्भुत था, अब जब वह लगभग मेरे चेहरे के बराबर था! उसकी नाक कितनी बड़ी थी! और उसका मुँह कितना बड़ा था! और उसके दाँत कितने बड़े और उभरे हुए थे!

“शरारती बच्चे को देखने से ज्यादा दुखद दृश्य और कोई नहीं होता,” उसने कहना शुरू किया, “विशेषकर एक शरारती छोटी लड़की को। क्या आप जानते हैं कि मरने के बाद दुष्ट कहाँ जाते हैं?”

"वे नरक में जाएंगे," यह मेरा सहज और रूढ़िवादी उत्तर था।

“और नरक क्या है? क्या आप मुझे यह बता सकते हैं?”

"आग से भरा एक गड्ढा।"

"और क्या तुम उस गड्ढे में गिरना चाहोगे, और वहाँ हमेशा के लिए जलते रहना चाहोगे?"

"जी नहीं, महोदय।"

इससे बचने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

मैंने एक पल सोचा; जब मुझे जवाब सूझा, तो वह आपत्तिजनक था: "मुझे स्वस्थ रहना चाहिए, और मरना नहीं चाहिए।"

“तुम स्वस्थ कैसे रह सकते हो? तुमसे छोटे बच्चे तो रोज़ मर जाते हैं। मैंने अभी एक-दो दिन पहले ही पाँच साल के एक नन्हे बच्चे को दफनाया था, एक प्यारा सा बच्चा, जिसकी आत्मा अब स्वर्ग में है। डर है कि अगर तुम भी इस दुनिया से चले गए तो तुम्हारे बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकेगा।”

उसकी शंका दूर करने की स्थिति में न होने के कारण, मैंने केवल कालीन पर टिके हुए दो बड़े पैरों पर अपनी निगाहें डालीं और आह भरी, यह कामना करते हुए कि मैं वहां से काफी दूर चली जाऊं।

मुझे उम्मीद है कि वह आह दिल से निकली है, और आपको इस बात का पछतावा है कि आप कभी अपनी उत्कृष्ट परोपकारी महिला को असुविधा का कारण बनीं।

“परोपकारी महिला! परोपकारी महिला!” मैंने मन ही मन कहा: “वे सभी श्रीमती रीड को मेरी परोपकारी महिला कहते हैं; अगर ऐसा है, तो परोपकारी महिला एक अप्रिय चीज है।”

“क्या आप रात और सुबह प्रार्थना करते हैं?” मेरे प्रश्नकर्ता ने आगे पूछा।

"जी श्रीमान।"

क्या आप बाइबल पढ़ते हैं?

"कभी-कभी।"

“खुशी से? क्या आपको यह पसंद है?”

मुझे प्रकाशितवाक्य, दानियेल की पुस्तक, उत्पत्ति और शमूएल, निर्गमन का थोड़ा सा भाग, राजाओं और इतिहास के कुछ भाग, और अय्यूब और योना की पुस्तकें पसंद हैं।

और भजन संहिता? मुझे उम्मीद है कि आपको वे पसंद आएंगे?

"जी नहीं, महोदय।"

“नहीं? ओह, चौंकाने वाली बात! मेरा एक छोटा बेटा है, जो तुमसे भी छोटा है, जिसे छह भजन कंठस्थ हैं: और जब तुम उससे पूछते हो कि उसे क्या पसंद है, खाने के लिए एक जिंजरब्रेड-नट या सीखने के लिए एक भजन का श्लोक, तो वह कहता है: ‘ओह! भजन का श्लोक! देवदूत भजन गाते हैं;’ वह कहता है, ‘मैं यहाँ एक छोटा

देवदूत बनना चाहता हूँ;' फिर उसे अपनी इस बचकानी भक्ति के बदले में दो मेवे मिलते हैं।"

मैंने कहा, "भजन संहिता रोचक नहीं है।"

"यह इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारा हृदय दुष्ट है; और तुम्हें ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह इसे बदल दे: तुम्हें एक नया और पवित्र हृदय दे: तुम्हारे पत्थर के हृदय को छीन ले और तुम्हें मांस का हृदय दे।"

मैं अपने हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया के बारे में एक प्रश्न पूछने ही वाला था कि श्रीमती रीड ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए मुझे बैठने को कहा; फिर उन्होंने स्वयं बातचीत जारी रखी।

"श्रीमान ब्रॉकलहर्स्ट, मुझे लगता है कि मैंने तीन सप्ताह पहले आपको लिखे पत्र में यह संकेत दिया था कि इस छोटी लड़की का स्वभाव और चरित्र वैसा नहीं है जैसा मैं चाहती हूँ: यदि आप उसे लोवुड स्कूल में दाखिला देते हैं, तो मुझे खुशी होगी यदि अधीक्षक और शिक्षकों से अनुरोध किया जाए कि वे उस पर कड़ी नज़र रखें, और सबसे बढ़कर, उसकी सबसे बड़ी कमजोरी, धोखेबाजी की प्रवृत्ति, से सावधान रहें। जेन, मैं यह बात आपके सामने इसलिए कह रही हूँ ताकि आप श्रीमान ब्रॉकलहर्स्ट को धोखा देने की कोशिश न करें।"

मुझे श्रीमती रीड से डरना और उन्हें नापसंद करना जायज़ था; क्योंकि उनका स्वभाव ही मुझे बेरहमी से चोट पहुँचाना था; मैं उनकी उपस्थिति में कभी खुश नहीं रह पाता था; चाहे मैं कितनी भी सावधानी से उनकी बात मानता, चाहे उन्हें खुश करने की कितनी भी कोशिश करता, मेरे सारे प्रयास व्यर्थ ही हो जाते और बदले में मुझे ऊपर लिखे वाक्य ही सुनने को मिलते। अब, एक अजनबी के सामने बोले गए इस आरोप ने मेरे दिल को चीर दिया; मुझे धुंधला सा एहसास हुआ कि वह मेरे जीवन के उस नए चरण से आशा को मिटा रही थीं जिसमें उन्होंने मुझे धकेलना तय किया था; मुझे महसूस हुआ, हालाँकि मैं उस भावना को व्यक्त नहीं कर सकता था, कि वह मेरे भविष्य के रास्ते में नफरत और निर्दयता के बीज बो रही थीं; मैंने खुद को श्री ब्रॉकलहर्स्ट की नज़रों के सामने एक धूर्त, हानिकारक बच्चे में बदलते देखा, और मैं इस चोट को कैसे ठीक कर सकता था?

"कुछ भी नहीं, सचमुच," मैंने सोचा, जैसे ही मैंने अपनी सिसकी को दबाने की कोशिश की, और जल्दी से कुछ आँसू पोंछ लिए, जो मेरी पीड़ा के निष्फल प्रमाण थे।

श्री ब्रॉकलहर्स्ट ने कहा, “धोखा देना सचमुच एक बच्चे में बहुत बड़ी गलती है; यह झूठ के समान है, और सभी झूठे लोगों को आग और गंधक से जलती हुई झील में जलना ही पड़ेगा; लेकिन श्रीमती रीड, उस पर नज़र रखी जाएगी। मैं मिस टेंपल और शिक्षकों से बात करूँगा।”

मेरी परोपकारी महिला ने आगे कहा, "मैं चाहूंगी कि उसका पालन-पोषण उसके भविष्य के अनुरूप हो; उसे उपयोगी बनाया जाए, उसे विनम्र रखा जाए: जहाँ तक छुट्टियों की बात है, आपकी अनुमति से वह हमेशा लोवुड में ही छुट्टियां बिताएगी।"

“महोदया, आपके निर्णय बिल्कुल विवेकपूर्ण हैं,” श्री ब्रॉकलहर्स्ट ने उत्तर दिया। “विनम्रता एक ईसाई गुण है, और यह लोवुड के विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है; इसलिए मैं निर्देश देता हूँ कि उनमें इसके विकास पर विशेष ध्यान दिया जाए। मैंने उनमें अहंकार की सांसारिक भावना को कम करने के सर्वोत्तम तरीकों का अध्ययन किया है; और अभी कुछ दिन पहले ही मुझे अपनी सफलता का एक सुखद प्रमाण मिला। मेरी दूसरी बेटी, ऑगस्टा, अपनी माँ के साथ स्कूल देखने गई थी, और लौटकर उसने कहा: ‘ओह, प्यारे पापा, लोवुड की सभी लड़कियाँ कितनी शांत और सादी दिखती हैं, उनके बाल कानों के पीछे कंघी किए हुए हैं, उनके लंबे एप्रन हैं, और उनकी फ्रॉक के बाहर छोटी-छोटी हॉलैंड की जेबें हैं - वे लगभग गरीबों के बच्चों जैसी हैं! और,’ उसने कहा, ‘उन्होंने मेरी और माँ की पोशाक को ऐसे देखा जैसे उन्होंने पहले कभी रेशमी गाउन नहीं देखा हो।’”

श्रीमती रीड ने जवाब दिया, "मुझे यह स्थिति बिल्कुल पसंद है; अगर मैं पूरे इंग्लैंड में खोज भी लेती, तो भी मुझे जेन आयर जैसी बच्ची के लिए इससे बेहतर व्यवस्था शायद ही मिलती। मेरे प्रिय श्री ब्रॉकलहर्स्ट, मैं हर बात में निरंतरता की वकालत करती हूँ।"

"महोदया, निरंतरता ईसाई धर्म का सर्वोपरि कर्तव्य है; और लोवुड की स्थापना से संबंधित हर व्यवस्था में इसका पालन किया गया है: सादा भोजन, साधारण वस्त्र, सादगीपूर्ण आवास, मजबूत और सक्रिय आदतें; यही इस घर और इसके निवासियों का नियमित जीवन है।"

“बिल्कुल सही, महोदय। तो मैं इस बात पर भरोसा कर सकता हूँ कि इस बच्ची को लोवुड में एक छात्रा के रूप में दाखिला मिल जाएगा, और वहाँ उसे उसकी स्थिति और भविष्य के अनुरूप प्रशिक्षण दिया जाएगा?”

"महोदया, आप ऐसा कर सकती हैं: उसे चुने हुए पौधों की उस नर्सरी में रखा जाएगा, और मुझे विश्वास है कि वह अपने चुने जाने के अमूल्य विशेषाधिकार के लिए कृतज्ञता व्यक्त करेगी।"

"तो मैं उसे जल्द से जल्द भेज दूंगी, श्रीमान ब्रॉकलहर्स्ट; क्योंकि, मैं आपको विश्वास दिलाती हूं, मैं उस जिम्मेदारी से मुक्त होने के लिए उत्सुक हूं जो बहुत कष्टदायक होती जा रही थी।"

“बिल्कुल, बिल्कुल, महोदया; और अब मैं आपको सुप्रभात कहता हूँ। मैं एक-दो सप्ताह में ब्रॉकलहर्स्ट हॉल लौट जाऊँगा: मेरे अच्छे मित्र, आर्चडीकन, मुझे इससे पहले जाने की अनुमति नहीं देंगे। मैं मिस टेंपल को सूचित कर दूँगा कि उन्हें एक नई लड़की के आने की सूचना है, ताकि उनके स्वागत में कोई कठिनाई न हो। अलविदा।”

"अलविदा, श्रीमान ब्रॉकलहर्स्ट; श्रीमती और मिस ब्रॉकलहर्स्ट, और ऑगस्टा और थियोडोर, और मास्टर ब्रॉटन ब्रॉकलहर्स्ट को मेरी ओर से नमस्कार कहना।"

“जी हाँ, महोदया। छोटी बच्ची, ये रही ‘बाल मार्गदर्शिका’ नामक पुस्तक, इसे प्रार्थनापूर्वक पढ़ो, विशेषकर वह भाग जिसमें ‘झूठ और छल की आदी शरारती बच्ची मार्था जी — - की भयानक अचानक मृत्यु का वर्णन है’।”

इन शब्दों के साथ श्री ब्रॉकलहर्स्ट ने मेरे हाथ में एक पतले कवर में सिला हुआ एक छोटा सा पर्चा थमा दिया, और अपनी गाड़ी के लिए घंटी बजाकर वे चले गए।

श्रीमती रीड और मैं अकेले रह गए: कुछ मिनट खामोशी में बीत गए; वह सिलाई कर रही थीं, मैं उन्हें देख रहा था। श्रीमती रीड उस समय लगभग छत्तीस या सवा तीस वर्ष की होंगी; वह मजबूत कद-काठी की महिला थीं, चौड़े कंधों और मजबूत अंगों वाली, लंबी नहीं, और हृष्ट-पुष्ट होने के बावजूद मोटी नहीं थीं: उनका चेहरा कुछ बड़ा था, निचला जबड़ा काफी विकसित और ठोस था; उनकी भौंहें नीची थीं, ठुड्डी बड़ी और उभरी हुई थी, मुंह और नाक काफी सुव्यवस्थित थे; उनकी हल्की भौहों के नीचे एक ऐसी आंख चमकती थी जिसमें दया का भाव नहीं था; उनकी त्वचा सांवली और अपारदर्शी थी, बाल लगभग सुनहरे थे; उनका स्वास्थ्य एकदम स्वस्थ था - बीमारी कभी उनके पास नहीं आती थी; वह एक कुशल और चतुर प्रबंधक थीं; उनका घर और किराएदार पूरी तरह से उनके नियंत्रण में थे; उनके बच्चे कभी-कभार ही उनकी बात नहीं मानते थे और उनका उपहास उड़ाते थे; वह अच्छे कपड़े पहनती थीं, और उनका व्यक्तित्व और आभास ऐसा था जो सुंदर पोशाकों को और भी निखार देता था।

उनकी आरामकुर्सी से कुछ गज की दूरी पर एक छोटी सी चौकी पर बैठकर, मैंने उनके शरीर का निहारना शुरू किया; मैंने उनके चेहरे के भावों को गौर से देखा। मेरे हाथ में वह पुस्तिका थी जिसमें झूठे व्यक्ति की अचानक मृत्यु का वर्णन था, और इसी वृत्तांत ने मुझे एक उचित चेतावनी के रूप में आकर्षित किया था। अभी-अभी जो कुछ हुआ था; श्रीमती रीड ने श्री ब्रॉकलहर्स्ट से मेरे बारे में जो कहा था; उनकी पूरी बातचीत का लहजा मेरे मन में ताजा, ताजा और चुभने वाला था; मैंने हर शब्द को उतनी ही तीव्रता से महसूस किया था जितना कि मैंने उसे स्पष्ट रूप से सुना था, और अब मेरे भीतर आक्रोश की आग भड़क उठी थी।

श्रीमती रीड ने अपने काम से नज़रें ऊपर उठाईं; उनकी निगाहें मेरी निगाहों पर टिक गईं, और उसी समय उनकी उंगलियों की फुर्तीली हरकतें रुक गईं।

“कमरे से बाहर जाओ; नर्सरी में लौट जाओ,” उनका आदेश था। मेरी नज़र या किसी और बात ने उन्हें नाराज़ कर दिया होगा, क्योंकि उन्होंने बेहद गुस्से में, हालांकि अपनी झुंझलाहट को दबाते हुए, बात की। मैं उठा, दरवाज़े तक गया; फिर वापस आया; खिड़की तक गया, कमरे के उस पार गया, और फिर उनके बिल्कुल पास पहुँच गया।

मुझे बोलना ही होगा: मुझ पर बहुत अत्याचार हुआ था, और मुझे पलटना ही होगा: लेकिन कैसे? मेरे पास अपने विरोधी पर पलटवार करने की कितनी शक्ति बची थी? मैंने अपनी सारी ऊर्जा समेट ली और इस सीधे-सादे वाक्य में उसे प्रकट कर दिया—

“मैं धोखेबाज नहीं हूँ: अगर मैं होता, तो मैं कहता कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ; लेकिन मैं स्पष्ट कहता हूँ कि मैं तुमसे प्यार नहीं करता: जॉन रीड को छोड़कर दुनिया में सबसे ज़्यादा मैं तुमसे नफ़रत करता हूँ; और झूठे के बारे में यह किताब तुम अपनी प्रेमिका, जॉर्जियाना को दे दो, क्योंकि झूठ तो वही बोलती है, मैं नहीं।”

श्रीमती रीड के हाथ अब भी उनके काम पर निष्क्रिय पड़े थे: उनकी बर्फीली निगाहें अब भी मेरी ओर जमा देने वाली ठंडक के साथ टिकी हुई थीं।

"तुम्हें और क्या कहना है?" उसने पूछा, उस लहजे में जो किसी वयस्क विरोधी से बात करने का होता है, न कि उस लहजे में जो आमतौर पर किसी बच्चे से बात करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

उसकी वो आंखें, वो आवाज, मेरे अंदर की सारी घृणा को जगा बैठी। सिर से पैर तक कांपते हुए, अनियंत्रित उत्तेजना से रोमांचित होकर, मैं आगे बढ़ा—

“मुझे खुशी है कि आप मेरी रिश्तेदार नहीं हैं: मैं जीवन भर आपको कभी चाची नहीं कहूंगी। मैं बड़ी होकर आपसे मिलने कभी नहीं आऊंगी; और अगर कोई मुझसे पूछे कि मैं आपको कैसा मानती थी और आपने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया, तो मैं कहूंगी कि आपके बारे में सोचते ही मुझे घिन आती है और आपने मेरे साथ बहुत क्रूरता से व्यवहार किया।”

"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसा कहने की, जेन आयर?"

“मेरी हिम्मत कैसे हुई, श्रीमती रीड? मेरी हिम्मत कैसे हुई? क्योंकि यही सच है। आपको लगता है कि मुझमें कोई भावना नहीं है, और मैं बिना किसी प्यार या दया के रह सकती हूँ; लेकिन मैं ऐसे नहीं जी सकती: और आपमें ज़रा भी दया नहीं है। मुझे याद रहेगा कि कैसे आपने मुझे वापस धकेल दिया — बेरहमी और हिंसा से — लाल कमरे में, और मुझे वहाँ मेरी मृत्यु तक बंद रखा; जबकि मैं पीड़ा में थी; जबकि मैं घुटते हुए चिल्ला रही थी, ‘दया करो! दया करो, चाची रीड!’ और वह सज़ा जो आपने मुझे दी क्योंकि आपके दुष्ट बेटे ने मुझे मारा — मुझे बेवजह गिरा दिया। जो भी मुझसे सवाल पूछेगा, मैं उसे यही कहानी सुनाऊँगी। लोग आपको अच्छी औरत समझते हैं, लेकिन आप बुरी हैं, कठोर हृदय वाली हैं। आप धोखेबाज़ हैं!”

इस उत्तर को पूरा करने से पहले ही, मेरी आत्मा आनंद से भर उठी, एक ऐसी अनोखी आज़ादी और विजय का एहसास हुआ, जैसा मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया था। ऐसा लगा जैसे कोई अदृश्य बंधन टूट गया हो और मैं अनचाही आज़ादी में पहुँच गया हूँ। यह भावना निराधार नहीं थी: श्रीमती रीड डरी हुई लग रही थीं; उनका काम उनके घुटनों से फिसल गया था; वह अपने हाथ ऊपर उठा रही थीं, खुद को आगे-पीछे हिला रही थीं और यहाँ तक कि अपना चेहरा भी ऐसे बना रही थीं जैसे रोने वाली हों।

“जेन, तुम गलतफहमी में हो: तुम्हें क्या हुआ है? तुम इतनी बुरी तरह क्यों कांप रही हो? क्या तुम थोड़ा पानी पीना चाहोगी?”

नहीं, श्रीमती रीड।

"क्या तुम्हारी कोई और इच्छा है, जेन? मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, मैं तुम्हारा दोस्त बनना चाहता हूँ।"

“तुम नहीं। तुमने मिस्टर ब्रॉकलहर्स्ट को बताया था कि मेरा चरित्र खराब है, मेरा स्वभाव धोखेबाज है; और मैं लोवुड में सबको बता दूँगा कि तुम क्या हो और तुमने

क्या किया है।”

"जेन, तुम इन बातों को नहीं समझतीं: बच्चों की गलतियों को सुधारना जरूरी है।"

“धोखा देना मेरी गलती नहीं है!” मैंने उग्र और ऊँची आवाज़ में चिल्लाकर कहा।

"लेकिन जेन, तुम भावुक हो, इसलिए तुम्हें यह स्वीकार करना होगा: और अब नर्सरी में वापस जाओ - वहाँ एक प्यारी सी बच्ची है - और थोड़ी देर लेट जाओ।"

“मैं आपकी प्रिय नहीं हूँ; मैं लेट नहीं सकती: मुझे जल्द से जल्द स्कूल भेज दीजिए, श्रीमती रीड, क्योंकि मुझे यहाँ रहना पसंद नहीं है।”

"मैं उसे जल्द ही स्कूल भेज दूंगी," श्रीमती रीड ने धीमी आवाज़ में कहा; और अपना काम समेटकर वह अचानक अपार्टमेंट से निकल गईं।

मैं वहाँ अकेला रह गया था — मैदान का विजेता। यह मेरी अब तक की सबसे कठिन लड़ाई थी, और मेरी पहली जीत थी: मैं कुछ देर उस चटाई पर खड़ा रहा, जहाँ श्री ब्रॉकलहर्स्ट खड़े थे, और मैंने अपने विजेता के एकांत का आनंद लिया। पहले तो मैं मन ही मन मुस्कुराया और बहुत प्रसन्न हुआ; लेकिन यह तीव्र आनंद उतनी ही तेज़ी से शांत हो गया जितनी तेज़ी से मेरी नब्ज़ों की धड़कन धीमी हुई। एक बच्चा बड़ों से झगड़ा नहीं कर सकता, जैसा मैंने किया था; अपनी उग्र भावनाओं को अनियंत्रित रूप से नहीं दिखा सकता, जैसा मैंने अपनी भावनाओं को दिखाया था, बिना बाद में पछतावे की पीड़ा और प्रतिक्रिया की ठंडक का अनुभव किए। जलती हुई, जीवंत, चमकती, सब कुछ निगलती हुई घास की एक कतार मेरे मन का सटीक प्रतीक होती जब मैंने श्रीमती रीड पर आरोप लगाया और उन्हें धमकाया था: वही कतार, आग बुझने के बाद काली और झुलसी हुई, मेरी बाद की स्थिति को सटीक रूप से दर्शाती, जब आधे घंटे के मौन और चिंतन ने मुझे मेरे आचरण की मूर्खता और मेरी घृणास्पद और घृणा उत्पन्न करने वाली स्थिति की उदासी को दिखाया था।

मैंने पहली बार प्रतिशोध का स्वाद चखा था; निगलने पर यह सुगंधित शराब जैसा लगा, गर्म और तीखा: इसका धातु जैसा और संक्षारक स्वाद मुझे ऐसा एहसास दिला रहा था मानो मुझे जहर दिया गया हो। मैं अब खुशी-खुशी जाकर श्रीमती रीड से माफी मांगना चाहता था; लेकिन मैं अपने अनुभव और सहज ज्ञान से जानता था कि ऐसा करने से वह मुझे दुगनी घृणा से ठुकरा देंगी, जिससे मेरे स्वभाव की हर उग्र भावना फिर से जागृत हो जाएगी।

मैं उग्र भाषण देने की बजाय किसी बेहतर क्षमता का प्रयोग करना चाहती थी;

उदासी भरे आक्रोश से कम किसी शांत भावना को पोषित करना चाहती थी। मैंने एक किताब उठाई—कुछ अरबी कहानियाँ; मैं बैठ गई और पढ़ने का प्रयास किया। मुझे विषय समझ में नहीं आया; मेरे अपने विचार हमेशा मेरे और उस पृष्ठ के बीच तैरते रहते थे जिसे मैं आमतौर पर आकर्षक पाती थी। मैंने नाश्ते के कमरे का कांच का दरवाजा खोला: झाड़ियाँ एकदम शांत थीं: काली बर्फ पूरे मैदान में छाई हुई थी, सूरज या हवा का कोई असर नहीं था। मैंने अपने सिर और बाहों को अपनी फ्रॉक के किनारे से ढक लिया और बागान के एक सुनसान हिस्से में टहलने चली गई; लेकिन मुझे शांत पेड़ों, गिरते हुए देवदार के शंकुओं, शरद ऋतु के जमे हुए अवशेषों, हवाओं से ढेर में बहकर अब एक साथ सख्त हो चुके भूरे पत्तों में कोई आनंद नहीं मिला। मैं एक फाटक से टिक गई और एक खाली खेत में देखा जहाँ कोई भेड़ चर नहीं रही थी, जहाँ छोटी घास कटी-फटी और पीली पड़ गई थी। यह बहुत ही उदास दिन था; एक बेहद धुंधला आसमान, मानो बर्फ की चादर से ढका हो, चारों ओर छाया हुआ था; वहीं से बर्फ के टुकड़े रुक-रुक कर गिर रहे थे, जो कठोर रास्ते और बर्फीले मैदान पर बिना पिघले जम रहे थे। मैं एक बेचारे बच्चे की तरह खड़ा था, बार-बार अपने आप से बुदबुदा रहा था, "मैं क्या करूँ? मैं क्या करूँ?"

अचानक मुझे एक स्पष्ट आवाज सुनाई दी, “मिस जेन! आप कहाँ हैं? दोपहर के भोजन पर आइए!”

यह बेसी थी, मैं उसे अच्छी तरह जानता था; लेकिन मैं हिला तक नहीं; उसके हल्के कदम रास्ते पर आते रहे।

“तुम शरारती नन्ही सी बच्ची!” उसने कहा। “बुलाए जाने पर क्यों नहीं आती?”

जिन विचारों में मैं डूबी हुई थी, उनकी तुलना में बेसी की उपस्थिति मुझे प्रसन्नतापूर्ण लग रही थी; हालाँकि हमेशा की तरह वह थोड़ी नाराज़ थी। दरअसल, श्रीमती रीड के साथ हुए झगड़े और उन पर जीत के बाद, मुझे आया के क्षणिक गुस्से की ज़्यादा परवाह नहीं थी; बल्कि मैं उसके युवा और सहज स्वभाव का आनंद लेना चाहती थी। मैंने बस अपनी दोनों बाहें उसके चारों ओर लपेट लीं और कहा, "आओ, बेसी! डाँटो मत।"

यह हरकत मेरी आदत से कहीं अधिक स्पष्ट और निर्भीक थी: किसी तरह इससे वह खुश हो गई।

“तुम एक अजीब बच्ची हो, मिस जेन,” उसने मेरी ओर देखते हुए कहा; “एक

छोटी सी आवारा, अकेली बच्ची: और मुझे लगता है कि तुम स्कूल जा रही हो?”

मेंने सिर हिलाया।

और क्या आपको बेचारी बेसी को छोड़कर जाने का अफसोस नहीं होगा?

“बेसी को मेरी क्या परवाह है? वह तो हमेशा मुझे डांटती रहती है।”

“क्योंकि तुम एक अजीब, डरी हुई, शर्मीली सी बच्ची हो। तुम्हें और साहसी होना चाहिए।”

“क्या! और भी चोटें खानी पड़ेंगी?”

“बेवकूफी! लेकिन तुम सच में बहुत परेशान हो, ये तो पक्का है। मेरी माँ ने पिछले हफ्ते मुझसे मिलने आकर कहा था कि वो नहीं चाहतीं कि उनका कोई बच्चा तुम्हारी जगह हो। अब अंदर आओ, मेरे पास तुम्हारे लिए एक अच्छी खबर है।”

मुझे नहीं लगता कि तुमने ऐसा किया है, बेसी।

“बच्चे! तुम्हारा क्या मतलब है? तुम्हारी आँखें मुझे कितनी उदास देख रही हैं! खैर, मालकिन और बाकी लड़कियाँ और मास्टर जॉन आज दोपहर चाय पीने जा रहे हैं, और तुम मेरे साथ चाय पियोगे। मैं रसोइए से तुम्हारे लिए एक छोटा सा केक बनाने को कहूँगी, और फिर तुम अपनी दराजें देखने में मेरी मदद करोगे; क्योंकि मुझे जल्द ही तुम्हारा सामान पैक करना है। मालकिन चाहती हैं कि तुम एक-दो दिन में गेट्सहेड छोड़ दो, और तुम अपने साथ ले जाने के लिए अपने मनपसंद खिलौने चुन सकते हो।”

"बेसी, तुम्हें वादा करना होगा कि मेरे जाने तक तुम मुझे और डांट नहीं दोगी।"

“ठीक है, मैं करूँगा; लेकिन ध्यान रखना कि तुम बहुत अच्छी लड़की हो, और मुझसे डरना मत। जब मैं कभी-कभी थोड़ी तीखी आवाज़ में बोलूँ तो चौंक मत जाना; इससे तुम्हें बहुत गुस्सा आएगा।”

"मुझे नहीं लगता कि मैं तुमसे फिर कभी डरूँगी, बेसी, क्योंकि मुझे तुम्हारी आदत हो गई है, और जल्द ही मुझे डरने के लिए दूसरे लोग मिल जाएँगे।"

"अगर आप उनसे डरेंगे तो वे भी आपको नापसंद करेंगे।"

"तुम ऐसा ही करती हो, बेसी?"

"मुझे आपसे कोई नफरत नहीं है, मिस; मेरा मानना है कि मैं बाकी सभी से ज्यादा आपको पसंद करता हूं।"

आप इसे दिखाते नहीं हैं।

“अरे वाह, तुम तो बहुत ही चतुर हो! तुम्हारे बोलने का तरीका बिल्कुल नया है। आखिर किस चीज ने तुम्हें इतना साहसी और निडर बना दिया?”

“क्यों, मैं जल्द ही आपसे दूर हो जाऊंगी, और इसके अलावा”— मैं श्रीमती रीड के साथ हुई बातचीत के बारे में कुछ कहने ही वाली थी, लेकिन फिर मैंने सोचा कि इस विषय पर चुप रहना ही बेहतर होगा।

तो क्या तुम मुझे छोड़कर जाने से खुश हो?

"बिल्कुल नहीं, बेसी; वास्तव में, अभी मुझे काफी अफसोस हो रहा है।"

“अभी-अभी! और वो भी! मेरी प्यारी बच्ची ने कितनी बेरुखी से कहा! मैं कह सकता हूँ कि अगर मैं तुमसे चुंबन मांगूँ तो तुम मुझे नहीं दोगी: तुम कहोगी कि तुम ऐसा नहीं करना चाहती।”

“मैं तुम्हें चूमकर स्वागत करती हूँ: अपना सिर झुका लो।” बेसी झुकी; हम दोनों ने एक-दूसरे को गले लगाया, और मैं काफी सुकून महसूस करते हुए उसके पीछे घर में चली गई। वह दोपहर शांति और सद्भाव में बीती; और शाम को बेसी ने मुझे अपनी कुछ सबसे मनमोहक कहानियाँ सुनाईं और अपने कुछ सबसे मधुर गीत गाए। मेरे लिए भी जीवन में आशा की किरणें थीं।

अध्याय V

19 जनवरी की सुबह के ठीक पाँच बजे ही बेसी मेरे कमरे में मोमबत्ती लेकर आई और मुझे पहले से ही उठकर लगभग तैयार पाया। मैं उसके आने से आधा घंटा पहले ही उठ चुका था, और ढलते चाँद की हल्की रोशनी में, जिसकी किरणें मेरे पालने के पास वाली छोटी खिड़की से अंदर आ रही थीं, मैंने अपना चेहरा धोकर कपड़े पहन लिए थे। मुझे उस दिन गेट्सहेड से एक कोच से निकलना था जो सुबह छह बजे लॉज के गेट से गुज़रता था। बेसी ही अकेली थी जो अभी तक उठी थी; उसने नर्सरी में आग

जला दी थी, जहाँ वह अब मेरा नाश्ता बनाने लगी। यात्रा के विचारों से उत्साहित बच्चे शायद ही कुछ खा पाते हैं; मैं भी नहीं खा सका। बेसी ने मुझे उबले हुए दूध और रोटी के कुछ चम्मच खिलाने की व्यर्थ कोशिश की, फिर कुछ बिस्कुट कागज़ में लपेटकर मेरे बैग में रख दिए; फिर उसने मुझे मेरा पेलिस और बोनट पहनाया, और खुद को शॉल में लपेटकर हम नर्सरी से निकल गए। जब हम श्रीमती रीड के शयनकक्ष के पास से गुजरे, तो उन्होंने कहा, "क्या आप अंदर जाकर मालकिन को अलविदा कह देंगे?"

"नहीं, बेसी: वह कल रात मेरे कमरे में आई थी जब तुम रात के खाने के लिए नीचे गई हुई थी, और उसने कहा कि मुझे सुबह उसे या मेरे चचेरे भाइयों को परेशान करने की ज़रूरत नहीं है; और उसने मुझसे कहा कि मुझे याद रखना चाहिए कि वह हमेशा मेरी सबसे अच्छी दोस्त रही है, और उसके बारे में बात करना चाहिए और उसके प्रति आभारी रहना चाहिए।"

"आपने क्या कहा, मिस?"

"कुछ नहीं: मैंने अपना चेहरा चादर से ढक लिया और उससे मुंह मोड़कर दीवार की ओर देखने लगा।"

"वह गलत था, मिस जेन।"

"तुम्हारी बात बिलकुल सही थी, बेसी। तुम्हारी मालकिन मेरी दोस्त नहीं, बल्कि मेरी दुश्मन रही है।"

"ओह मिस जेन! ऐसा मत कहो!"

"गेट्सहेड को अलविदा!" मैंने चिल्लाते हुए कहा, जैसे ही हम हॉल से गुजरे और सामने के दरवाजे से बाहर निकले।

चाँद डूब चुका था और चारों तरफ घना अंधेरा था; बेसी के हाथ में एक लालटेन थी, जिसकी रोशनी गीली सीढ़ियों और हाल ही में पिघली बर्फ से भीगी बजरी वाली सड़क पर पड़ रही थी। सर्दी की सुबह बहुत ठंडी और सर्द थी: जैसे ही मैं तेज़ी से आगे बढ़ा, मेरे दाँत किटकिटाने लगे। कुली के कमरे में रोशनी थी: जब हम वहाँ पहुँचे, तो हमने देखा कि कुली की पत्नी अभी-अभी आग जला रही थी: मेरा संदूक, जिसे पिछली शाम नीचे लाया गया था, दरवाजे पर रस्सी से बंधा खड़ा था। छह बजने में बस कुछ ही मिनट बाकी थे, और जैसे ही वह समय बीता, दूर से आती हुई गाड़ी की आवाज़ ने आने वाली गाड़ी की सूचना दी; मैं दरवाजे पर गया और अंधेरे में उसकी बत्तियों को तेज़ी से पास आते हुए देखा।

“क्या वह अकेले जा रही है?” कुली की पत्नी ने पूछा।

"हाँ।"

और यह कितनी दूर है?

“पचास मील।”

“कितना लंबा रास्ता है! मुझे आश्चर्य है कि श्रीमती रीड उसे इतनी दूर अकेले छोड़ने से डरती क्यों नहीं हैं।”

कोच आकर रुका; वह अपने चार घोड़ों के साथ द्वार पर खड़ा था और उसका ऊपरी हिस्सा यात्रियों से लदा हुआ था: गार्ड और कोचवान जोर-जोर से जल्दी चलने का आग्रह कर रहे थे; मेरा ट्रंक ऊपर उठाया गया; मुझे बेसी की गर्दन से अलग किया गया, जिससे मैं चुंबनों के साथ लिपटा हुआ था।

"उसका अच्छे से ख्याल रखना," उसने गार्ड से कहा, जब वह मुझे अंदर ले जा रहा था।

“हाँ, हाँ!” यही जवाब मिला: दरवाज़ा ज़ोर से बंद हुआ, एक आवाज़ ने कहा “ठीक है,” और हम आगे बढ़ गए। इस तरह मैं बेसी और गेट्सहेड से अलग हो गया; इस तरह अनजान और, जैसा कि मैंने तब समझा, दूरस्थ और रहस्यमय क्षेत्रों की ओर निकल पड़ा।

मुझे उस यात्रा की बहुत कम याद है; मुझे बस इतना पता है कि वह दिन मुझे असाधारण रूप से लंबा लगा और ऐसा लगा जैसे हमने सैकड़ों मील का सफर तय कर लिया हो। हम कई कस्बों से गुज़रे और एक बहुत बड़े कस्बे में गाड़ी रुकी; घोड़ों को बाहर निकाला गया और यात्री भोजन करने के लिए उतरे। मुझे एक सराय में ले जाया गया, जहाँ गार्ड चाहता था कि मैं कुछ खा लूँ; लेकिन, क्योंकि मुझे भूख नहीं थी, उसने मुझे एक विशाल कमरे में छोड़ दिया, जिसके दोनों सिरों पर अंगीठी थी, छत से एक झूमर लटका हुआ था और दीवार से सटी एक छोटी लाल गैलरी थी जो संगीत वाद्ययंत्रों से भरी हुई थी। मैं वहाँ काफी देर तक इधर-उधर घूमता रहा, बहुत अजीब महसूस कर रहा था और इस बात से बुरी तरह डरा हुआ था कि कोई आकर मेरा अपहरण न कर ले; क्योंकि मैं अपहरणकर्ताओं पर विश्वास करता था, उनके कारनामों का ज़िक्र बेसी की कहानियों में अक्सर होता था। आखिरकार गार्ड वापस आया; मुझे एक बार फिर गाड़ी में बिठा दिया गया, मेरा रक्षक अपनी सीट पर बैठा, अपना खोखला हॉर्न बजाया और हम एल- की "पथरीली सड़क" पर सरपट दौड़ पड़े।

दोपहर का समय नम और कुछ धुंध भरा था: जैसे-जैसे शाम ढलने लगी, मुझे एहसास होने लगा कि हम गेट्सहेड से बहुत दूर आ गए हैं: हमने कस्बों से गुजरना बंद कर दिया; इलाका बदल गया; क्षितिज के चारों ओर विशाल धूसर पहाड़ियाँ उभरने लगीं: जैसे-जैसे गोधूलि गहराता गया, हम घने जंगल से घिरी एक घाटी में उतरने लगे, और रात के बाद जब चारों ओर बादल छा गए, तो मुझे पेड़ों के बीच से एक तेज हवा के बहने की आवाज सुनाई दी।

उस आवाज़ से नींद में खलल पड़ते हुए, मैं आखिरकार सो गया; अभी ज़्यादा देर तक सोया ही नहीं था कि अचानक गति रुकने से मेरी नींद खुल गई; गाड़ी का दरवाज़ा खुला था, और एक नौकरानी जैसी दिखने वाली महिला वहाँ खड़ी थी: मैंने दीपों की रोशनी में उसका चेहरा और वस्त्र देखा।

"क्या यहाँ जेन आयर नाम की कोई छोटी लड़की है?" उसने पूछा। मैंने "हाँ" कहा, और फिर मुझे बाहर निकाला गया; मेरा सामान नीचे दिया गया, और गाड़ी तुरंत चल पड़ी।

लंबे समय तक बैठे रहने से मेरा शरीर अकड़ गया था और कोच के शोर और गति से मैं चकित था। होश में आकर मैंने चारों ओर देखा। चारों ओर बारिश, हवा और अंधेरा छाया हुआ था; फिर भी, मुझे धुंधला सा अपने सामने एक दीवार और उसमें एक खुला दरवाजा दिखाई दिया; मैं अपनी नई मार्गदर्शक के साथ उस दरवाजे से अंदर गया: उसने दरवाजा बंद कर दिया और ताला लगा दिया। अब एक घर या कई घर दिखाई दे रहे थे - क्योंकि इमारत दूर तक फैली हुई थी - जिसमें कई खिड़कियां थीं और कुछ में बत्तियां जल रही थीं; हम एक चौड़े पथरीले रास्ते पर भीगते हुए ऊपर गए और एक दरवाजे से अंदर प्रवेश किया; फिर नौकरानी मुझे एक गलियारे से होते हुए आग वाले कमरे में ले गई, जहाँ उसने मुझे अकेला छोड़ दिया।

मैं खड़ा रहा और अपनी सुन्न उंगलियों को आग की लौ से सेंकने लगा, फिर मैंने चारों ओर देखा; वहाँ कोई मोमबत्ती नहीं थी, लेकिन चूल्हे की धुंधली रोशनी में रुक-रुक कर वॉलपेपर लगी दीवारें, कालीन, पर्दे और चमकता हुआ महोगनी का फर्नीचर दिखाई दे रहा था: यह एक बैठक कक्ष था, गेट्सहेड के ड्राइंग रूम जितना विशाल या शानदार तो नहीं, लेकिन काफी आरामदायक था। मैं दीवार पर लगी एक तस्वीर को समझने की कोशिश कर रहा था, तभी दरवाजा खुला और एक व्यक्ति टॉर्च लेकर अंदर आया; दूसरा उसके पीछे-पीछे आया।

पहली महिला लंबी थी, उसके बाल काले थे, आंखें काली थीं और माथा पीला और बड़ा था; उसका शरीर आंशिक रूप से शॉल से ढका हुआ था, उसका चेहरा गंभीर था और उसकी चाल सीधी थी।

“बच्चा अभी बहुत छोटा है, उसे अकेले भेजना ठीक नहीं है,” उसने मोमबत्ती मेज पर रखते हुए कहा। उसने एक-दो मिनट तक मुझे ध्यान से देखा, फिर आगे बोली—

“उसे जल्दी सुला देना चाहिए; वह थकी हुई लग रही है: क्या तुम भी थके हुए हो?” उसने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा।

“थोड़ा सा, महोदया।”

“और उसे भूख भी लगी होगी, इसमें कोई शक नहीं: सोने से पहले उसे थोड़ा खाना खिला दो, मिस मिलर। क्या यह पहली बार है जब तुम अपने माता-पिता को छोड़कर स्कूल आई हो, मेरी प्यारी बच्ची?”

मैंने उन्हें बताया कि मेरे माता-पिता नहीं हैं। उन्होंने पूछा कि उन्हें मरे हुए कितना समय हो गया है: फिर मेरी उम्र, मेरा नाम, क्या मैं पढ़-लिख सकती हूँ और थोड़ी-बहुत सिलाई कर सकती हूँ: फिर उन्होंने अपनी तर्जनी उंगली से मेरे गाल को धीरे से छुआ और यह कहते हुए कि "उम्मीद है कि मैं एक अच्छी बच्ची बनूँगी," मुझे मिस मिलर के साथ विदा कर दिया।

जिस महिला को मैं छोड़कर आई थी, उसकी उम्र लगभग उनतीस वर्ष रही होगी; जो मेरे साथ आई, वह मुझसे कुछ वर्ष छोटी प्रतीत हुई: पहली महिला ने मुझे अपनी आवाज़, रूप और हावभाव से प्रभावित किया। मिस मिलर अधिक साधारण थीं; उनका रंग लालिमा लिए हुए था, हालांकि उनके चेहरे पर चिंता झलक रही थी; उनकी चाल और हरकतें जल्दबाजी भरी थीं, मानो उनके पास हमेशा कई काम हों: वास्तव में, वह एक सहायक शिक्षिका ही थीं, जैसा कि मुझे बाद में पता चला। उनके नेतृत्व में, मैं एक बड़े और अनियमित आकार के भवन के एक कमरे से दूसरे कमरे और एक गलियारे से दूसरे गलियारे में जाती रही; जब तक कि घर के उस हिस्से में छाई हुई पूर्ण और कुछ हद तक नीरस चुप्पी से बाहर निकलते हुए, हमें कई आवाज़ों की गूंज सुनाई दी, और तुरंत ही हम एक चौड़े, लंबे कमरे में प्रवेश कर गए, जिसमें बहुत सारी मेजें थीं, प्रत्येक छोर पर दो-दो मेजें थीं, जिनमें से प्रत्येक पर दो मोमबत्तियाँ जल रही थीं, और चारों ओर बेंचों पर नौ या दस से लेकर बीस वर्ष की आयु की लड़कियाँ बैठी थीं। धुंधली रोशनी में देखने पर वे मुझे असंख्य प्रतीत हुए, हालांकि वास्तव में उनकी

संख्या अस्सी से अधिक नहीं थी; वे सभी एक ही तरह के भूरे रंग के विचित्र फैशन वाले फ्रॉक और लंबे हॉलैंड एप्रन पहने हुए थे। यह अध्ययन का समय था; वे कल के कार्य पर विचार-विमर्श कर रहे थे, और जो गुनगुनाहट मैंने सुनी वह उनकी फुसफुसाहट भरी पुनरावृत्तियों का संयुक्त परिणाम थी।

मिस मिलर ने मुझे दरवाजे के पास एक बेंच पर बैठने का इशारा किया, फिर लंबे कमरे के ऊपरी हिस्से तक चलते हुए वह चिल्लाईं—

"निरीक्षकों, पाठ्यपुस्तकों को इकट्ठा करके सुरक्षित स्थान पर रख दो!"

चार लंबी लड़कियाँ अलग-अलग मेजों से उठीं और घूम-घूम कर किताबें इकट्ठा करके उन्हें हटा दिया। मिस मिलर ने फिर से आदेश दिया—

"निगरानी करने वालों, खाने की थालियाँ ले आओ!"

लंबी लड़कियाँ बाहर गईं और थोड़ी देर में लौट आईं, हर एक के हाथ में एक ट्रे थी, जिस पर कुछ न कुछ रखा हुआ था, मुझे नहीं पता क्या था, और हर ट्रे के बीच में पानी का एक जग और एक मग रखा था। खाना सबको दिया गया; जिन्हें पसंद आया उन्होंने पानी पिया, मग सबके लिए साझा था। जब मेरी बारी आई, तो मैंने प्यास लगने के कारण पानी पिया, लेकिन खाने को हाथ नहीं लगाया, उत्तेजना और थकान के कारण मैं खाने में असमर्थ था: हालाँकि, अब मैंने देखा कि वह एक पतली जई की रोटी थी जिसे टुकड़ों में बाँटा गया था।

खाना खत्म होने के बाद, मिस मिलर ने प्रार्थना पढ़ी और कक्षा के सभी बच्चे दो-दो करके ऊपर चले गए। थकान से चूर होकर, मैंने शायद ही ध्यान दिया कि शयनकक्ष कैसा था, सिवाय इसके कि स्कूल के कमरे की तरह यह भी बहुत लंबा था। आज रात मुझे मिस मिलर के साथ सोना था; उन्होंने कपड़े उतारने में मेरी मदद की: लेटते ही मैंने बिस्तरों की लंबी कतारों पर नज़र डाली, जिनमें से प्रत्येक पर जल्दी ही दो लोग लेट गए; दस मिनट में एकमात्र बत्ती बुझ गई, और सन्नाटे और घोर अंधेरे के बीच मैं सो गया।

रात जल्दी बीत गई। मैं इतनी थकी हुई थी कि सपने भी नहीं देख पाई; मैं केवल एक बार उठी, जब मुझे हवा के तेज़ झोंके और मूसलाधार बारिश की आवाज़ सुनाई दी, और मुझे एहसास हुआ कि मिस मिलर मेरे पास आकर बैठ गई हैं। जब मैंने दोबारा आँखें खोलीं, तो एक ज़ोरदार घंटी बज रही थी; लड़कियाँ उठकर कपड़े पहन रही थीं; अभी दिन का उजाला नहीं हुआ था, और कमरे में एक-दो बत्तियाँ जल रही

थीं। मैं भी अनिच्छा से उठी; कड़ाके की ठंड थी, और मैंने ठंड से बचने के लिए जैसे कपड़े पहन सकती थी, वैसे ही पहने, और जब कोई बेसिन खाली मिला तो नहाया, जो जल्दी नहीं मिला, क्योंकि कमरे के बीच में स्टैंड पर छह लड़कियों के लिए केवल एक ही बेसिन था। फिर घंटी बजी: सभी दो-दो की कतार में खड़ी हुईं, और उसी क्रम में सीढ़ियाँ उतरीं और ठंडे और धुंधले स्कूल के कमरे में प्रवेश किया: यहाँ मिस मिलर ने प्रार्थनाएँ पढ़ीं; उसके बाद उन्होंने पुकारा—

"कक्षाएं बनाओ!"

कुछ मिनटों तक भारी कोलाहल रहा, जिसके दौरान मिस मिलर बार-बार "शांत हो जाओ!" और "व्यवस्था बनाए रखो!" चिल्लाती रहीं। जब कोलाहल शांत हुआ, तो मैंने देखा कि सभी चार कुर्सियों के सामने, चार मेजों पर, चार अर्धवृत्तों में बैठे थे; सभी के हाथों में किताबें थीं, और प्रत्येक मेज पर खाली सीट के सामने एक बड़ी किताब, बाइबिल जैसी, रखी थी। कुछ सेकंड का सन्नाटा छा गया, जिसके बीच संख्याओं की धीमी, अस्पष्ट गूंज सुनाई दी; मिस मिलर इस अस्पष्ट ध्वनि को शांत करने के लिए एक कक्षा से दूसरी कक्षा में गईं।

दूर से घंटी की झंकार सुनाई दी: तुरंत तीन महिलाएं कमरे में दाखिल हुईं, प्रत्येक एक मेज के पास गईं और अपनी-अपनी जगह बैठ गईं। मिस मिलर चौथी खाली कुर्सी पर बैठ गईं, जो दरवाजे के सबसे पास थी और जिसके चारों ओर सबसे छोटे बच्चे बैठे थे: मुझे इसी निचली श्रेणी में बुलाया गया और सबसे नीचे बैठा दिया गया।

अब कामकाज शुरू हुआ, दिन की प्रार्थना दोहराई गई, फिर बाइबल के कुछ अंश पढ़े गए, और इसके बाद बाइबल के अध्यायों का एक लंबा पाठ हुआ, जो एक घंटे तक चला। जब यह अभ्यास समाप्त हुआ, तब तक दिन पूरी तरह से निकल चुका था। अथक घंटी चौथी बार बजी: कक्षाओं को इकट्ठा किया गया और नाश्ते के लिए दूसरे कमरे में ले जाया गया: मुझे कुछ खाने को मिलने की उम्मीद देखकर कितनी खुशी हुई! मैं कल बहुत कम खाने के कारण अब लगभग बीमार पड़ चुका था।

भोजन कक्ष एक विशाल, नीची छत वाला, अंधकारमय कमरा था; दो लंबी मेजों पर गर्म पेय से धुआँ निकल रहा था, जिसकी गंध मुझे बिल्कुल भी लुभावनी नहीं लगी। भोजन की गंध जब उसे निगलने वालों की नाक तक पहुँची तो मैंने असंतोष का एक सर्वव्यापी प्रदर्शन देखा; जुलूस के आगे चल रही, प्रथम श्रेणी की लंबी लड़कियों की फुसफुसाहट सुनाई दी—

"घिनौना! दलिया फिर से जल गया!"

"चुप रहो!" एक आवाज़ आई; यह मिस मिलर की नहीं, बल्कि एक उच्च शिक्षिका की थी, जो कद में छोटी और सांवली थीं, सलीके से कपड़े पहने हुए थीं, लेकिन उनका चेहरा कुछ उदास सा लग रहा था। वे एक मेज के शीर्ष पर बैठ गईं, जबकि दूसरी मेज पर एक अधिक सुडौल महिला बैठी थीं। मैंने उन्हें व्यर्थ ही ढूंढा जिन्हें मैंने पिछली रात देखा था; वे दिखाई नहीं दे रही थीं: मिस मिलर उस मेज के निचले हिस्से में बैठी थीं जहाँ मैं बैठा था, और एक अजीब सी, विदेशी दिखने वाली, बुजुर्ग महिला, जो बाद में पता चला कि फ्रेंच शिक्षिका थीं, दूसरी मेज पर उसी स्थान पर बैठ गईं। एक लंबी प्रार्थना हुई और एक भजन गाया गया; फिर एक नौकर शिक्षकों के लिए चाय लेकर आया, और भोजन शुरू हुआ।

भूख से बेहाल और अब बेहद कमजोर महसूस करते हुए, मैंने अपने हिस्से का एक-दो चम्मच बिना स्वाद के बारे में सोचे ही चट कर लिया; लेकिन भूख का पहला दर्द कम होते ही, मुझे एहसास हुआ कि मेरे हाथ में एक घिनौना व्यंजन है; जला हुआ दलिया सड़े हुए आलू जितना ही बुरा होता है; अकाल भी इसके आगे फीका पड़ जाता है। चम्मच धीरे-धीरे चलाए गए: मैंने हर लड़की को अपना खाना चखते और उसे निगलने की कोशिश करते देखा; लेकिन ज्यादातर मामलों में कोशिश जल्द ही छोड़ दी गई। नाश्ता खत्म हो गया था, और किसी ने नाश्ता नहीं किया था। जो हमें नहीं मिला था उसके लिए धन्यवाद दिया गया, और दूसरा भजन गाया गया, फिर भोजन कक्ष को खाली करके स्कूल के कमरे में ले जाया गया। मैं सबसे आखिर में बाहर जाने वालों में से एक थी, और मेजों के पास से गुजरते हुए मैंने एक शिक्षिका को दलिया का कटोरा लेकर उसे चखते देखा; उसने बाकी शिक्षिकाओं की ओर देखा; उन सभी के चेहरों पर नाराजगी थी, और उनमें से एक, जो मोटी थी, फुसफुसाते हुए बोली—

"बेहद घिनौना! कितना शर्मनाक!"

पाठ दोबारा शुरू होने से पहले पंद्रह मिनट बीत गए, इस दौरान कक्षा में ज़बरदस्त शोरगुल था; ऐसा लग रहा था मानो उस समय ज़ोर से और खुलकर बोलने की छूट थी, और उन्होंने इस विशेषाधिकार का पूरा फायदा उठाया। सारी बातचीत नाश्ते पर केंद्रित थी, जिसकी सबने जमकर बुराई की। बेचारे! यही तो उनका एकमात्र सहारा था। मिस मिलर अब कमरे में अकेली शिक्षिका थीं: उनके चारों ओर खड़ी कुछ लड़कियाँ गंभीर और उदास भाव से बातें कर रही थीं। मैंने किसी के मुँह से श्री

ब्रॉकलहर्स्ट का नाम सुना; जिस पर मिस मिलर ने नापसंदगी जताते हुए सिर हिलाया; लेकिन उन्होंने सबके गुस्से को शांत करने की कोई खास कोशिश नहीं की; निस्संदेह वह भी गुस्से में शामिल थीं।

स्कूल के कमरे में घड़ी में नौ बज गए; मिस मिलर अपने घेरे से उठीं और कमरे के बीच में खड़ी होकर रोने लगीं—

"शांत हो जाओ! अपनी-अपनी सीटों पर बैठ जाओ!"

अनुशासन कायम रहा: पाँच मिनट में अव्यवस्थित भीड़ व्यवस्थित हो गई, और अपेक्षाकृत शांति ने ज़ुबानों के शोर को शांत कर दिया। वरिष्ठ शिक्षक अब समय पर अपने-अपने पदों पर लौट आए: लेकिन फिर भी, ऐसा लग रहा था जैसे सभी प्रतीक्षा कर रहे हों। कमरे के किनारों पर बेंचों पर अस्सी लड़कियाँ बिना हिले-डुले सीधी बैठी थीं; वे एक विचित्र समूह प्रतीत हो रही थीं, सभी के बाल चेहरे से कंघी किए हुए थे, एक भी लट दिखाई नहीं दे रही थी; भूरे रंग की ऊँची पोशाकें, गले के चारों ओर एक संकीर्ण टक के साथ, उनकी फ्रॉक के सामने हॉलैंड की छोटी जेबें (हाइलैंडर के पर्स जैसी) बंधी हुई थीं, जो काम के थैले का काम करती थीं: सभी ने ऊनी मोज़े और पीतल के बकल वाले देसी जूते पहने हुए थे। इस पोशाक में बीस से अधिक लड़कियाँ थीं, या यूँ कहें कि युवतियाँ थीं; यह उन पर बिल्कुल भी जँच नहीं रही थी, और सबसे सुंदर को भी विचित्र बना रही थी।

मैं अब भी उन्हें देख रहा था, और बीच-बीच में शिक्षकों को भी परख रहा था - उनमें से कोई भी मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आया; क्योंकि मोटा शिक्षक थोड़ा असभ्य था, सांवला शिक्षक काफी उग्र था, विदेशी शिक्षक कठोर और विचित्र था, और बेचारी मिस मिलर! बैंगनी रंग की, मौसम की मार से झुलसी हुई और अत्यधिक काम से थकी हुई लग रही थी - तभी, जैसे ही मेरी नजर एक-एक चेहरे पर घूमी, पूरा स्कूल एक साथ उठ खड़ा हुआ, मानो एक ही स्प्रिंग से हिल रहा हो।

क्या बात थी? मुझे कोई आदेश सुनाई नहीं दिया था: मैं उलझन में थी। इससे पहले कि मैं होश में आती, कक्षाएँ फिर से बैठ गईं: लेकिन अब सबकी निगाहें एक ही बिंदु पर टिकी थीं, मेरी निगाह भी उसी दिशा में गई और उस शख्स से मिली जिसने मुझे कल रात रिसीव किया था। वह लंबे कमरे के निचले हिस्से में, चूल्हे के पास खड़ी थी; क्योंकि दोनों सिरों पर आग जल रही थी; वह चुपचाप और गंभीरता से छात्राओं की दोनों पंक्तियों को देख रही थी। मिस मिलर पास आकर, मानो उनसे कोई सवाल

पूछ रही हों, और उनका जवाब पाकर, अपनी जगह पर वापस चली गईं और ज़ोर से बोलीं—

"प्रथम श्रेणी के निरीक्षक, ग्लोब ले आओ!"

निर्देश का पालन किया जा रहा था, तभी परामर्श के लिए चुनी गई महिला धीरे-धीरे कमरे में आगे बढ़ी। मुझे लगता है कि मेरे अंदर श्रद्धा का भाव प्रबल है, क्योंकि मेरी आँखें आज भी उसके कदमों का अनुसरण करते हुए प्रशंसा और विस्मय से भरी हुई हैं। अब, दिन के उजाले में, वह लंबी, सुंदर और सुडौल दिख रही थी; भूरी आँखों में सौम्य चमक थी और लंबी पलकों की सुंदर बनावट उसके बड़े चेहरे की सफेदी को और निखार रही थी; उसके दोनों कनपटी पर गहरे भूरे रंग के बाल उस समय के फैशन के अनुसार गोल घुंघराले गुच्छों में बंधे थे, जब न तो सीधे बैंड और न ही लंबे घुंघराले बाल चलन में थे; उसका पहनावा भी उस समय के फैशन के अनुसार बैंगनी कपड़े का था, जिस पर काले मखमल की स्पेनिश शैली की कढ़ाई थी; उसकी कमरबंद पर एक सोने की घड़ी चमक रही थी (उस समय घड़ियाँ इतनी आम नहीं थीं जितनी अब हैं)। पाठक इस चित्र को पूरा करने के लिए इसमें कुछ और जोड़ सकते हैं: परिष्कृत चेहरे की बनावट; पीलापन लिए हुए भी, साफ रंगत; और एक राजसी आभा और चाल-ढाल, और उसे कम से कम, शब्दों के माध्यम से जितना स्पष्ट हो सकता है, मिस टेंपल के बाहरी रूप का सही अंदाजा हो जाएगा - मारिया टेंपल, जैसा कि मैंने बाद में उस प्रार्थना-पुस्तक में नाम लिखा हुआ देखा जो मुझे चर्च ले जाने के लिए सौंपी गई थी।

लोवुड की अधीक्षक (यह महिला इसी पद पर थीं) एक मेज पर रखे दो ग्लोब के सामने बैठ गईं, फिर पहली कक्षा के विद्यार्थियों को अपने चारों ओर बुलाया और भूगोल का पाठ पढ़ाना शुरू किया; निचली कक्षाओं के विद्यार्थियों को शिक्षकों ने बुलाया: इतिहास, व्याकरण आदि की पुनरावृत्तियाँ एक घंटे तक चलीं; इसके बाद लेखन और अंकगणित की कक्षाएँ हुईं, और मिस टेंपल ने कुछ बड़ी छात्राओं को संगीत की शिक्षा दी। प्रत्येक पाठ की अवधि घड़ी से मापी जाती थी, जो अंत में बारह बज गई। अधीक्षक उठीं।

उन्होंने कहा, "मुझे विद्यार्थियों को संबोधित करना है।"

पढ़ाई बंद होने से पहले ही हंगामा मचने लगा था, लेकिन उसकी आवाज सुनते ही वह शांत हो गया। उसने बोलना जारी रखा—

“आज सुबह आपने नाश्ता किया था जिसे आप खा नहीं सके; आपको भूख लगी होगी: — मैंने आदेश दिया है कि सभी को रोटी और पनीर का दोपहर का भोजन परोसा जाए।”

शिक्षकों ने उसे कुछ आश्चर्य भरी नजरों से देखा।

उन्होंने स्पष्टीकरण भरे लहजे में कहा, "यह मेरी जिम्मेदारी पर किया जाना है," और तुरंत बाद कमरे से चली गईं।

कुछ ही देर में रोटी और पनीर लाकर पूरे स्कूल में बाँट दिया गया, जिससे सभी बहुत खुश हुए और तरोताज़ा महसूस करने लगे। अब आदेश दिया गया, “बगीचे में चलो!” हर किसी ने रंगीन कैलिको की डोरियों वाली खुरदरी भूसी की टोपी और भूरे रंग की झालरदार चादर ओढ़ ली। मैंने भी इसी तरह कपड़े पहने और नदी के किनारे-किनारे चलते हुए खुली हवा में निकल गया।

बगीचा एक विशाल घेरा था, जिसके चारों ओर इतनी ऊंची दीवारें थीं कि बाहर का नजारा बिल्कुल भी दिखाई नहीं देता था; एक तरफ ढका हुआ बरामदा था, और चौड़े रास्ते बीच के उस हिस्से को घेरे हुए थे जो दर्जनों छोटी-छोटी क्यारियों में बंटा हुआ था: ये क्यारियां विद्यार्थियों के लिए बाग-बगीचों के रूप में निर्धारित थीं, और हर क्यारी का एक मालिक था। फूलों से भरी होने पर वे निस्संदेह सुंदर दिखतीं; लेकिन अब, जनवरी के आखिरी दिनों में, सब कुछ सर्दी की मार और गिरी हुई सड़न से ढका हुआ था। मैं कांप उठा जब मैं खड़ा होकर अपने चारों ओर देखा: बाहर व्यायाम करने के लिए यह एक खराब दिन था; तेज बारिश तो नहीं हो रही थी, लेकिन हल्की पीली धुंध छाई हुई थी; कल की बाढ़ से सब कुछ अभी भी भीगा हुआ था। लड़कियों में से जो मजबूत थीं वे इधर-उधर दौड़ रही थीं और सक्रिय खेलों में लगी हुई थीं, लेकिन कई पीली और दुबली-पतली लड़कियां बरामदे में आश्रय और गर्मी के लिए इकट्ठा हो गईं; और उनके बीच, जैसे ही घनी धुंध उनके कांपते शरीरों तक पहुंची, मुझे अक्सर खोखली खांसी की आवाज सुनाई दी।

अभी तक मैंने किसी से बात नहीं की थी, और न ही किसी ने मेरी तरफ ध्यान दिया था; मैं काफी अकेला खड़ा था: लेकिन इस अकेलेपन की भावना से मैं अभ्यस्त था; इसने मुझे ज्यादा परेशान नहीं किया। मैं बरामदे के एक खंभे से टिक गया, अपने भूरे रंग के लबादे को अपने चारों ओर कसकर लपेट लिया, और बाहर की ठंड और अंदर की भूख को भुलाने की कोशिश करते हुए, देखने और सोचने में खुद को लीन

कर लिया। मेरे विचार इतने अस्पष्ट और अधूरे थे कि उन्हें दर्ज करना उचित नहीं था: मुझे अभी तक ठीक से पता भी नहीं था कि मैं कहाँ हूँ; गेट्सहेड और मेरा अतीत एक अथाह दूरी पर तैरते हुए प्रतीत हो रहे थे; वर्तमान अस्पष्ट और अजीब था, और भविष्य के बारे में मैं कोई अनुमान नहीं लगा सकता था। मैंने मठ जैसे बगीचे के चारों ओर देखा, और फिर घर की ओर देखा - एक बड़ी इमारत, जिसका आधा हिस्सा भूरा और पुराना लग रहा था, और दूसरा आधा बिल्कुल नया। नए हिस्से में, जिसमें स्कूल का कमरा और छात्रावास था, जालीदार खिड़कियों से रोशनी आ रही थी, जिससे यह चर्च जैसा दिखता था; दरवाजे के ऊपर एक पत्थर की पट्टिका पर यह शिलालेख था: —

“लोवुड संस्थान। — इस भाग का पुनर्निर्माण ई.स. — - में ब्रॉकलहर्स्ट हॉल की निवासी नाओमी ब्रॉकलहर्स्ट द्वारा किया गया था।” “तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे अच्छे कामों को देखें और स्वर्ग में रहने वाले तुम्हारे पिता की महिमा करें।” — संत मत्ती, 5:16

मैंने इन शब्दों को बार-बार पढ़ा: मुझे लगा कि इनमें ही कोई व्याख्या छिपी है, लेकिन मैं इनके अर्थ को पूरी तरह समझ नहीं पा रहा था। मैं अभी भी "संस्था" के अर्थ पर विचार कर रहा था और पहले शब्दों और धर्मग्रंथ की आयत के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास कर रहा था, तभी मेरे ठीक पीछे से खांसी की आवाज सुनकर मैंने अपना सिर घुमाया। मैंने पास ही एक पत्थर की बेंच पर एक लड़की को बैठे देखा; वह एक किताब पर झुकी हुई थी, जिसे वह ध्यान से पढ़ रही थी: जहाँ मैं खड़ा था, वहाँ से मुझे किताब का शीर्षक दिखाई दे रहा था - वह "रस्सेलास" था; एक ऐसा नाम जो मुझे अजीब लगा, और इसलिए आकर्षक भी। एक पन्ना पलटते हुए उसने ऊपर देखा, और मैंने उससे सीधे कहा -

“क्या आपकी किताब दिलचस्प है?” मैंने पहले ही यह इरादा बना लिया था कि मैं एक दिन उससे किताब उधार लेने के लिए कहूँगी।

एक-दो सेकंड के विराम के बाद, जिसमें उसने मुझे गौर से देखा, उसने जवाब दिया, "मुझे यह पसंद है।"

“यह किस बारे में है?” मैंने पूछा। मुझे खुद भी नहीं पता कि मैंने एक अजनबी से इस तरह बातचीत शुरू करने की हिम्मत कहाँ से जुटाई; यह कदम मेरे स्वभाव और आदतों के विपरीत था: लेकिन मुझे लगता है कि उसके पेशे ने कहीं न कहीं मेरे मन में सहानुभूति जगाई; क्योंकि मुझे भी पढ़ना पसंद था, हालांकि हल्के-फुल्के और

बचकाने किस्म का; मैं गंभीर या सारगर्भित चीजों को समझ या आत्मसात नहीं कर सकता था।

"आप इसे देख सकते हैं," लड़की ने मुझे किताब देते हुए जवाब दिया।

मैंने ऐसा ही किया; सरसरी तौर पर देखने पर मुझे यकीन हो गया कि विषयवस्तु शीर्षक से कहीं कम आकर्षक थी: "रैसलस" मेरी मामूली रुचि के लिए नीरस लग रही थी; मुझे उसमें परियों या जिन्नों के बारे में कुछ भी नहीं दिखा; घनी छपाई वाले पन्नों पर कोई चमकीली विविधता नज़र नहीं आ रही थी। मैंने उसे वापस कर दिया; उसने चुपचाप उसे ले लिया, और बिना कुछ कहे वह अपने पूर्व अध्ययनशील मूड में लौटने ही वाली थी: मैंने फिर से उसे परेशान करने का साहस किया—

“क्या आप मुझे बता सकते हैं कि दरवाजे के ऊपर उस पत्थर पर क्या लिखा है? लोवुड इंस्टीट्यूशन क्या है?”

“यह वह घर है जहाँ आप रहने आए हैं।”

“और इसे संस्थान क्यों कहते हैं? क्या यह किसी भी तरह से अन्य स्कूलों से अलग है?”

“यह आंशिक रूप से एक चैरिटी स्कूल है: आप और मैं, और हम सभी, चैरिटी के बच्चे हैं। मुझे लगता है कि आप एक अनाथ हैं: क्या आपके पिता या आपकी माता में से कोई एक मर नहीं गया है?”

"दोनों की मृत्यु मेरी याददाश्त से पहले ही हो गई थी।"

"खैर, यहां की सभी लड़कियों ने अपने माता-पिता में से एक या दोनों को खो दिया है, और इसे अनाथों को शिक्षित करने वाली संस्था कहा जाता है।"

“क्या हमें कोई पैसा नहीं देना होगा? क्या वे हमें बिना किसी शुल्क के रखेंगे?”

"हम या हमारे दोस्त हर साल इनमें से प्रत्येक के लिए पंद्रह पाउंड का भुगतान करते हैं।"

"तो फिर वे हमें दान के बच्चे क्यों कहते हैं?"

"क्योंकि पंद्रह पाउंड भोजन और शिक्षण के लिए पर्याप्त नहीं है, और कमी को चंदे से पूरा किया जाता है।"

“कौन-कौन सदस्यता लेता है?”

"इस इलाके और लंदन में कई परोपकारी स्वभाव वाली महिलाएं और पुरुष।"

“नाओमी ब्रॉकलहर्स्ट कौन थीं?”

"जिस महिला ने इस घर के नए हिस्से का निर्माण करवाया था, जैसा कि उस पट्टिका में दर्ज है, और जिसका बेटा यहां सब कुछ देखता और निर्देशित करता है।"

"क्यों?"

"क्योंकि वह कोषाध्यक्ष और संस्था के प्रबंधक हैं।"

"तो यह घर उस लंबी महिला का नहीं है जो घड़ी पहनती है, और किसने कहा कि हमें रोटी और पनीर मिलेगा?"

“मिस टेंपल को? ओह, नहीं! काश ऐसा होता: उन्हें अपने हर काम के लिए मिस्टर ब्रॉकलहर्स्ट को जवाब देना पड़ता है। मिस्टर ब्रॉकलहर्स्ट ही हमारे लिए सारा खाना और सारे कपड़े खरीदते हैं।”

क्या वह यहाँ रहता है?

“नहीं—दो मील दूर, एक बड़े हॉल में।”

क्या वह एक अच्छा आदमी है?

"वह एक पादरी हैं, और कहा जाता है कि वे बहुत अच्छे काम करते हैं।"

"क्या आपने कहा कि उस लंबी महिला का नाम मिस टेंपल था?"

"हाँ।"

“और बाकी शिक्षकों को क्या कहा जाता है?”

लाल गालों वाली महिला को मिस स्मिथ कहते हैं; वह काम संभालती हैं और कपड़े काटती हैं—क्योंकि हम अपने कपड़े, फ्रॉक, पेलिस और सब कुछ खुद बनाते हैं; काले बालों वाली छोटी महिला मिस स्केचर्ड हैं; वह इतिहास और व्याकरण पढ़ाती हैं और दूसरी कक्षा के बच्चों की पुनरावृत्ति करवाती हैं; और शॉल ओढ़ने वाली और पीले रिबन से कमर पर रूमाल बांधने वाली महिला मैडम पियरोट हैं: वह फ्रांस के लिस्ले से आई हैं और फ्रेंच पढ़ाती हैं।

क्या आपको शिक्षक पसंद हैं?

"अच्छी तरह से पर्याप्त।"

“क्या आपको वो छोटी काली वाली पसंद है, और वो मैडम — -? — मैं उनका नाम वैसे नहीं बोल सकती जैसे आप बोलते हैं।”

"मिस स्केचर्ड जल्दबाज़ हैं - आपको सावधान रहना चाहिए कि आप उन्हें नाराज़ न करें; मैडम पियरोट कोई बुरी किस्म की इंसान नहीं हैं।"

लेकिन मिस टेंपल सबसे अच्छी हैं—है ना?

"मिस टेंपल बहुत अच्छी और बहुत बुद्धिमान हैं; वह बाकियों से श्रेष्ठ हैं, क्योंकि वह उनसे कहीं अधिक जानती हैं।"

"क्या आप यहां काफी समय से हैं?"

"दो साल।"

क्या तुम अनाथ हो?

"मेरी मां का निधन हो गया।"

"क्या आप यहां खुश हैं?"

"तुम कुछ ज्यादा ही सवाल पूछते हो। मैंने तुम्हें फिलहाल काफी जवाब दे दिए हैं: अब मैं पढ़ना चाहता हूँ।"

लेकिन उसी क्षण भोजन के लिए बुलावा आया; सभी घर में वापस आ गए। भोजन कक्ष में फैली गंध नाश्ते के समय हमारी नाक में आने वाली गंध से कुछ कम ही अप्रिय थी: भोजन दो बड़े टिन के बर्तनों में परोसा गया था, जिनमें से बासी चर्बी की तेज़ भाप उठ रही थी। मैंने देखा कि भोजन में बेस्वाद आलू और जंग लगे मांस के अजीब टुकड़े मिले-जुले और पकाए हुए थे। इस भोजन में से प्रत्येक छात्र को पर्याप्त मात्रा में परोसा गया। मैंने जितना खा सका उतना खाया और मन ही मन सोचने लगा कि क्या हर दिन का भोजन ऐसा ही होगा।

रात के खाने के बाद, हम तुरंत स्कूल के कमरे में चले गए: कक्षाएं फिर से शुरू हुईं और शाम पांच बजे तक चलती रहीं।

दोपहर की एकमात्र उल्लेखनीय घटना यह थी कि मैंने उस लड़की को देखा जिससे मैंने बरामदे में बातचीत की थी, उसे मिस स्केचर्ड ने इतिहास की कक्षा से अपमानित करके निकाल दिया और बड़े से स्कूल के कमरे के बीच में खड़ा कर दिया। यह सज़ा मुझे बेहद अपमानजनक लगी, खासकर इतनी बड़ी लड़की के लिए - वह तेरह या उससे ऊपर की लग रही थी। मुझे उम्मीद थी कि वह बहुत दुखी और शर्मिंदा होगी; लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि वह न तो रोई और न ही शरमाई: शांत, हालांकि गंभीर, वह खड़ी रही, सबकी निगाहें उस पर टिकी थीं। "वह इसे इतनी शांति से - इतनी दृढ़ता से कैसे सहन कर सकती है?" मैंने खुद से पूछा। "अगर मैं उसकी जगह होती, तो शायद मैं चाहती कि धरती फट जाए और मुझे निगल ले। वह ऐसी लग रही है जैसे अपनी सज़ा से परे, अपनी स्थिति से परे, किसी ऐसी चीज़ के बारे में सोच रही हो जो न उसके आस-पास है और न उसके सामने। मैंने दिवास्वप्नों के बारे में सुना है—क्या

वह अभी दिवास्वप्न में है? उसकी आँखें ज़मीन पर टिकी हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि वह उसे नहीं देख रही—उसकी दृष्टि अंदर की ओर मुड़ी हुई है, मानो उसके दिल में उतर गई हो: मुझे लगता है कि वह उस चीज़ को देख रही है जो उसे याद है; न कि उस चीज़ को जो वास्तव में मौजूद है। मैं सोच रही हूँ कि वह किस तरह की लड़की है—अच्छी है या शरारती।”

शाम पांच बजे के कुछ ही देर बाद हमने एक और भोजन किया, जिसमें एक छोटा मग कॉफी और आधा टुकड़ा ब्राउन ब्रेड था। मैंने बड़े चाव से ब्रेड खाई और कॉफी पी; लेकिन मुझे इससे ज़्यादा मिल जाता तो और भी अच्छा होता - मुझे अभी भी भूख लगी थी। आधे घंटे का आराम, फिर पढ़ाई; फिर एक गिलास पानी और ओट्सकेक का एक टुकड़ा, प्रार्थना और फिर बिस्तर। लोवुड में मेरा पहला दिन कुछ ऐसा ही बीता।

अध्याय VI

अगला दिन पहले की तरह ही शुरू हुआ, सुबह उठकर तख़्ते की रोशनी में कपड़े पहने; लेकिन आज सुबह हमें नहाने की रस्म नहीं निभानी पड़ी; घड़ों का पानी जम गया था। पिछली शाम मौसम बदल गया था, और तेज़ उत्तर-पूर्वी हवा, जो रात भर हमारे शयनकक्ष की खिड़कियों की दरारों से सीटी बजाती हुई अंदर आ रही थी, ने हमें बिस्तरों में कांपने पर मजबूर कर दिया था, और घड़ों का पानी बर्फ़ में जम गया था।

डेढ़ घंटे की प्रार्थना और बाइबल पाठ समाप्त होने से पहले ही मुझे ठंड से दम घुटने लगा। आखिरकार नाश्ते का समय आ गया, और आज सुबह दलिया जला नहीं था; खाने लायक था, मात्रा कम थी। मेरा हिस्सा कितना छोटा लग रहा था! काश यह दुगुना होता।

दिन के दौरान मुझे चौथी कक्षा में दाखिला मिल गया और मुझे नियमित कार्य और

काम सौंपे गए: अब तक मैं लोवुड में चल रही गतिविधियों का केवल दर्शक ही था; अब मुझे उसमें एक भागीदार बनना था। शुरू में, क्योंकि मुझे रटने की आदत नहीं थी, इसलिए पाठ मुझे लंबे और कठिन लगे; बार-बार काम बदलने से भी मैं उलझन में पड़ गया; और मुझे खुशी हुई जब दोपहर लगभग तीन बजे, मिस स्मिथ ने मुझे दो गज लंबा मलमल का बॉर्डर, सुई, अंगुली आदि के साथ दिया और मुझे कक्षा के एक शांत कोने में बैठने के लिए कहा और उसे सिलने का निर्देश दिया। उस समय अधिकांश अन्य छात्राएँ भी सिलाई कर रही थीं; लेकिन एक कक्षा अभी भी मिस स्केचर्ड की कुर्सी के चारों ओर खड़ी होकर पढ़ रही थी, और क्योंकि सब शांत था, इसलिए उनके पाठों का विषय, प्रत्येक छात्रा का प्रदर्शन और मिस स्केचर्ड की उनके प्रदर्शन पर टिप्पणियाँ या प्रशंसा सुनी जा सकती थी। यह अंग्रेजी इतिहास की कक्षा थी: पाठकों के बीच मैंने बरामदे में बैठी अपनी परिचित को देखा: पाठ शुरू होने पर वह कक्षा में सबसे आगे थी, लेकिन उच्चारण की किसी गलती या विराम चिह्नों पर ध्यान न देने के कारण वह अचानक सबसे पीछे चली गई। उस गुमनाम स्थिति में भी, मिस स्कैचर्ड उस पर लगातार ध्यान देती रहीं: वह उससे लगातार इस तरह के वाक्य बोलती रहती थीं: —

"बर्न्स" (ऐसा लगता है कि यही उसका नाम था: यहाँ सभी लड़कियों को उनके उपनामों से पुकारा जाता था, जैसे अन्य जगहों पर लड़कों को पुकारा जाता है), "बर्न्स, तुम अपने जूते के किनारे पर खड़ी हो; तुरंत अपनी उंगलियाँ बाहर की ओर करो।" "बर्न्स, तुम अपनी ठुड्डी को बहुत ही अप्रिय तरीके से बाहर निकाल रही हो; इसे अंदर खींचो।" "बर्न्स, मैं तुमसे अपना सिर ऊपर उठाने पर ज़ोर देती हूँ; मैं तुम्हें इस मुद्रा में अपने सामने नहीं देखूँगी," इत्यादि।

एक अध्याय को दो बार पढ़ने के बाद, किताबें बंद कर दी गईं और लड़कियों की परीक्षा ली गई। पाठ में चार्ल्स प्रथम के शासनकाल का कुछ भाग शामिल था, और टन भार, पाउंड भार और जहाज के धन से संबंधित कई प्रश्न थे, जिनका उत्तर उनमें से अधिकांश देने में असमर्थ प्रतीत हुईं; फिर भी, बर्न्स के पास पहुँचते ही हर छोटी-मोटी समस्या का समाधान तुरंत हो जाता था: ऐसा लगता था कि उसकी स्मृति ने पूरे पाठ का सार याद रखा था, और वह हर बिंदु पर उत्तर देने के लिए तैयार थी। मुझे उम्मीद थी कि मिस स्केचर्ड उसकी एकाग्रता की प्रशंसा करेंगी; लेकिन इसके बजाय, वह अचानक चिल्लाई —

"अरे गंदी, बदतमीज़ लड़की! तुमने आज सुबह अपने नाखून बिल्कुल नहीं साफ किए!"

बर्न्स ने कोई जवाब नहीं दिया: मैं उसकी चुप्पी पर हैरान थी। मैंने सोचा, "वह यह क्यों नहीं समझा रही कि वह न तो अपने नाखून साफ कर सकती थी और न ही अपना चेहरा धो सकती थी, क्योंकि पानी जम गया था?"

मेरा ध्यान तभी भटक गया जब मिस स्मिथ ने मुझे धागे का एक गुच्छा पकड़ने को कहा: जब वह उसे लपेट रही थीं, तो वह बीच-बीच में मुझसे बातें करती रहीं, पूछती रहीं कि क्या मैं पहले कभी स्कूल गई हूँ, क्या मैं निशान लगा सकती हूँ, सिलाई कर सकती हूँ, बुनाई कर सकती हूँ, आदि; जब तक उन्होंने मुझे जाने की अनुमति नहीं दी, मैं मिस स्केचर्ड की गतिविधियों पर ध्यान नहीं दे सकी। जब मैं अपनी सीट पर लौटी, तो वह महिला कोई आदेश दे रही थी जिसका अर्थ मुझे समझ नहीं आया; लेकिन बर्न्स तुरंत कक्षा छोड़कर किताबों वाले छोटे से कमरे में गईं और आधे मिनट में एक सिरे से बंधी टहनियों का एक गट्ठा लेकर लौट आईं। उन्होंने इस अशुभ उपकरण को सम्मानपूर्वक मिस स्केचर्ड को भेंट किया; फिर उन्होंने चुपचाप, बिना कुछ कहे, अपना एप्रन खोल दिया, और शिक्षिका ने तुरंत और तेज़ी से टहनियों के गुच्छे से उनकी गर्दन पर बारह वार किए। बर्न्स की आँखों में एक भी आँसू नहीं आया; और, हालांकि मैं सिलाई करते-करते रुक गई, क्योंकि इस दृश्य को देखकर मेरी उंगलियां व्यर्थ और शक्तिहीन क्रोध की भावना से कांप रही थीं, लेकिन उसके गंभीर चेहरे के भाव में कोई बदलाव नहीं आया।

"बेशर्म लड़की!" मिस स्केचर्ड ने कहा; "तुम्हारी ये गंदी आदतें सुधर नहीं सकतीं: छड़ी ले जाओ।"

बर्न्स ने बात मानी: जब वह किताबों की अलमारी से बाहर निकली तो मैंने उसे ध्यान से देखा; वह अभी अपना रूमाल अपनी जेब में वापस रख रही थी, और उसके पतले गाल पर आंसू की एक बूंद चमक रही थी।

लोवुड में शाम का खेल-कूद का समय मुझे दिन का सबसे सुखद हिस्सा लगता था: शाम पाँच बजे खाई गई रोटी और कॉफी का एक घूंट भूख तो नहीं मिटाता था, लेकिन ताजगी का संचार कर देता था; दिन भर की सुस्ती दूर हो जाती थी; स्कूल का कमरा सुबह की तुलना में अधिक गर्म लगता था - क्योंकि अब उसमें जलती हुई आग थोड़ी और तेज जल रही होती थी, जो कुछ हद तक मोमबत्तियों की कमी पूरी कर देती

थी, क्योंकि मोमबत्तियाँ अभी तक शुरू नहीं हुई थीं; हल्की लालिमा, शोरगुल और अनेक आवाजों का मिश्रण एक सुखद स्वतंत्रता का एहसास कराता था।

जिस दिन मैंने मिस स्केचर्ड को अपने शिष्य बर्न्स को कोड़े मारते देखा था, उस शाम मैं हमेशा की तरह अकेले ही मेजों और हंसते-खेलते समूहों के बीच घूम रहा था, फिर भी मुझे अकेलापन महसूस नहीं हो रहा था: जब मैं खिड़कियों के पास से गुजरता, तो कभी-कभी पर्दा उठाकर बाहर देखता; बर्फ तेजी से गिर रही थी, नीचे के शीशों पर बर्फ की मोटी परत जम रही थी; खिड़की के पास कान लगाकर, मैं अंदर के उल्लासपूर्ण शोर के बीच बाहर हवा की उदास कराह सुन सकता था।

शायद, अगर मैंने हाल ही में एक अच्छा घर और दयालु माता-पिता को छोड़ा होता, तो यही वह क्षण होता जब मुझे बिछड़ने का सबसे अधिक दुख होता; वह हवा मेरे दिल को उदास कर देती; यह अस्पष्ट अराजकता मेरी शांति भंग कर देती! लेकिन इस समय, मैं दोनों से एक अजीब उत्तेजना और बेचैनी से भर गया था, और मैं चाहता था कि हवा और भी ज़ोर से गरजे, उदासी और भी गहरी होकर अंधेरा बन जाए, और अफरा-तफरी शोर में बदल जाए।

फॉर्म्स के ऊपर से कूदते हुए और टेबलों के नीचे से रेंगते हुए, मैं एक चिमनी तक पहुँचा; वहाँ, ऊँचे तार के फेंडर के पास घुटने टेककर, मैंने बर्न्स को पाया, तल्लीन, चुपचाप, अपने आस-पास की हर चीज़ से अलग होकर एक किताब के साथ, जिसे वह अंगारों की धुंधली रोशनी में पढ़ रही थी।

मैंने उसके पीछे आकर पूछा, "क्या यह अभी भी 'रैसेलास' है?"

“हां,” उसने कहा, “और मैंने इसे अभी-अभी पूरा किया है।”

और पाँच मिनट बाद ही वह चुप हो गई। मुझे इस बात की खुशी हुई। मैंने सोचा, "अब शायद मैं उसे बोलने के लिए मना सकूँ।" मैं उसके बगल में ज़मीन पर बैठ गया।

बर्न्स के अलावा आपका और क्या नाम है?

“हेलेन।”

क्या आप यहां से बहुत दूर से आए हैं?

मैं उत्तर में एक ऐसी जगह से आता हूँ जो स्कॉटलैंड की सीमा के बिल्कुल करीब है।

क्या तुम कभी वापस जाओगे?

मुझे उम्मीद तो यही है; लेकिन भविष्य के बारे में कोई भी निश्चित नहीं हो सकता।

"क्या आप लोवुड छोड़ना चाहते हैं?"

“नहीं! मैं क्यों जाऊं? मुझे शिक्षा प्राप्त करने के लिए लोवुड भेजा गया था; और जब तक मैं वह लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वहां से जाने का कोई फायदा नहीं होगा।”

"लेकिन वो शिक्षिका, मिस स्केचर्ड, तुम्हारे साथ इतनी क्रूरता से पेश आती हैं?"

“क्रूर? बिलकुल नहीं! वह सख्त है: उसे मेरी कमियां पसंद नहीं हैं।”

और अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं उसे नापसंद करता; मैं उसका विरोध करता। अगर वह मुझे उस छड़ी से मारती, तो मैं उसे उसके हाथ से छीन लेता; मैं उसे उसकी नाक के नीचे तोड़ देता।

“शायद आप ऐसा कुछ नहीं करेंगे; लेकिन अगर आपने ऐसा किया, तो श्री ब्रॉकलहर्स्ट आपको स्कूल से निकाल देंगे; यह आपके रिश्तेदारों के लिए बहुत दुख की बात होगी। किसी ऐसे कष्ट को धैर्यपूर्वक सहना कहीं बेहतर है जिसे केवल आप ही महसूस करें, बजाय इसके कि आप जल्दबाजी में कोई ऐसा कदम उठाएं जिसके बुरे परिणाम आपके सभी रिश्तेदारों तक पहुंचें; और इसके अलावा, बाइबल हमें बुराई के बदले भलाई करने का आदेश देती है।”

लेकिन फिर कोड़े खाना और लोगों से भरे कमरे के बीच में खड़ा होना शर्मनाक लगता है; और तुम इतनी अच्छी लड़की हो: मैं तुमसे बहुत छोटी हूँ, और मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती।

"फिर भी, यदि आप इससे बच नहीं सकते, तो इसे सहन करना आपका कर्तव्य होगा: यह कहना कमजोरी और मूर्खता है कि आप वह सहन नहीं कर सकते जो आपके भाग्य में लिखा है।"

मैंने आश्चर्य से उसकी बातें सुनीं: मैं सहनशीलता के इस सिद्धांत को समझ नहीं पा रहा था; और उससे भी कम, मैं उसके द्वारा अपने दंडदाता के प्रति दिखाई गई सहनशीलता को समझ या उससे सहानुभूति रख पा रहा था। फिर भी मुझे लगा कि हेलेन बर्न्स चीजों को एक ऐसे प्रकाश से देख रही है जो मेरी आँखों को दिखाई नहीं देता। मुझे संदेह था कि वह सही हो सकती है और मैं गलत; लेकिन मैं इस मामले पर गहराई से विचार नहीं करना चाहता था; फेलिक्स की तरह, मैंने इसे किसी और सुविधाजनक समय के लिए टाल दिया।

"तुम कहती हो कि तुममें कमियां हैं, हेलेन: वे क्या हैं? मुझे तो तुम बहुत अच्छी

लगती हो।"

तो मुझसे सीखो, दिखावे से मत आंकना: जैसा कि मिस स्केचर्ड ने कहा, मैं लापरवाह हूँ; मैं शायद ही कभी चीजों को व्यवस्थित रखती हूँ और कभी नहीं रखती; मैं बेपरवाह हूँ; मैं नियम भूल जाती हूँ; जब मुझे पाठ पढ़ना चाहिए, तब मैं पढ़ती हूँ; मेरा कोई तरीका नहीं है; और कभी-कभी मैं तुम्हारी तरह कहती हूँ, मुझे व्यवस्थित व्यवस्थाओं के अधीन रहना पसंद नहीं है। यह सब मिस स्केचर्ड को बहुत परेशान करता है, जो स्वभाव से साफ-सुथरी, समय की पाबंद और सजग हैं।

मैंने आगे कहा, "और गुस्सैल और क्रूर भी"; लेकिन हेलेन बर्न्स ने मेरी बात नहीं मानी: वह चुप रहीं।

"क्या मिस टेंपल आपके प्रति उतनी ही सख्त हैं जितनी मिस स्केचर्ड?"

मिस टेंपल का नाम सुनते ही उनके गंभीर चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान आ गई।

मिस टेंपल दयालुता से परिपूर्ण हैं; उन्हें किसी के प्रति कठोर होना कष्टदायी लगता है, चाहे वह स्कूल का सबसे शरारती छात्र ही क्यों न हो: वह मेरी गलतियों को देखती हैं और मुझे उनके बारे में विनम्रता से बताती हैं; और यदि मैं कुछ प्रशंसा के योग्य कार्य करता हूँ, तो वह मुझे उदारतापूर्वक पुरस्कृत करती हैं। मेरे दयनीय रूप से दोषपूर्ण स्वभाव का एक प्रबल प्रमाण यह है कि उनकी इतनी सौम्य, इतनी तर्कसंगत फटकार भी मुझे मेरी गलतियों से मुक्त नहीं कर पाती; और उनकी प्रशंसा भी, यद्यपि मैं उसका अत्यंत सम्मान करता हूँ, मुझे निरंतर सावधानी और दूरदर्शिता के लिए प्रेरित नहीं कर पाती।

मैंने कहा, "यह तो अजीब बात है, सावधान रहना इतना आसान है।"

“तुम्हारे लिए तो यह बात बिल्कुल सच है। मैंने आज सुबह तुम्हारी कक्षा में तुम्हें देखा और पाया कि तुम बहुत ध्यान से सुन रही थी: मिस मिलर जब पाठ समझा रही थीं और तुमसे सवाल पूछ रही थीं, तब तुम्हारे विचार कहीं भटकते ही नहीं थे। लेकिन अब, मेरे विचार तो लगातार भटकते रहते हैं; जब मुझे मिस स्केचर्ड की बातें ध्यान से सुननी चाहिए और उनकी कही हर बात को समझने की कोशिश करनी चाहिए, तब अक्सर मुझे उनकी आवाज़ भी सुनाई नहीं देती; मैं एक तरह के सपने में खो जाती हूँ। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं नॉर्थम्बरलैंड में हूँ और मेरे आस-पास जो आवाज़ें सुनाई दे रही हैं, वे हमारे घर के पास डीपडेन से बहने वाली एक छोटी सी नदी के

कलकल की हैं; फिर, जब मेरी बारी आती है जवाब देने की, तो मुझे जगाया जाता है; और उस काल्पनिक नदी की आवाज़ सुनने के कारण मैंने कुछ भी नहीं सुना होता, इसलिए मेरे पास कोई जवाब तैयार नहीं होता।”

"लेकिन आज दोपहर आपने कितना अच्छा जवाब दिया।"

“यह महज़ संयोग था; जिस विषय पर हम पढ़ रहे थे, उसमें मेरी रुचि थी। आज दोपहर, डीपडेन के सपने देखने के बजाय, मैं सोच रहा था कि एक ऐसा व्यक्ति जो न्याय की चाह रखता है, वह चार्ल्स प्रथम की तरह कभी-कभी इतना अन्यायपूर्ण और नासमझ कैसे हो सकता है; और मैंने सोचा कि यह कितना दुखद है कि अपनी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा के बावजूद, वह राजसी अधिकारों से आगे नहीं देख सका। काश वह दूर तक देख पाता, और समझ पाता कि जिसे युग की भावना कहते हैं, वह किस ओर बढ़ रही है! फिर भी, मैं चार्ल्स को पसंद करता हूँ - मैं उसका सम्मान करता हूँ - मुझे उस बेचारे मारे गए राजा पर दया आती है! हाँ, उसके शत्रु सबसे बुरे थे: उन्होंने वह खून बहाया जिसे बहाने का उन्हें कोई अधिकार नहीं था। उनकी हिम्मत कैसे हुई उसे मारने की!”

हेलेन अब खुद से बात कर रही थी: वह भूल गई थी कि मैं उसकी बात ठीक से समझ नहीं पा रहा था—कि मैं उस विषय से अनभिज्ञ था, या लगभग अनभिज्ञ था, जिस पर वह चर्चा कर रही थी। मैंने उसे याद दिलाया कि वह मेरे स्तर पर है।

और जब मिस टेंपल आपको पढ़ाती हैं, तो क्या आपके विचार भटकने लगते हैं?

"नहीं, बिल्कुल नहीं, अक्सर नहीं; क्योंकि मिस टेंपल के पास आमतौर पर कुछ ऐसा कहने को होता है जो मेरे अपने विचारों से कहीं अधिक नया होता है; उनकी भाषा मुझे बेहद पसंद आती है, और जो जानकारी वह देती हैं वह अक्सर वही होती है जो मैं प्राप्त करना चाहता हूं।"

"तो फिर, मिस टेंपल के साथ आपका व्यवहार अच्छा है?"

“हाँ, निष्क्रिय रूप से: मैं कोई प्रयास नहीं करता; मैं अपनी प्रवृत्ति के अनुसार चलता हूँ। ऐसी अच्छाई में कोई गुण नहीं है।”

“बहुत ज़रूरी बात: जो आपके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, आप भी उनके साथ अच्छा व्यवहार करें। यही मेरी एकमात्र इच्छा है। अगर लोग हमेशा क्रूर और अन्याय करने वालों के प्रति दयालु और आज्ञाकारी बने रहें, तो दुष्टों की मनमानी चलती रहेगी: उन्हें कभी डर नहीं लगेगा, और इसलिए वे कभी नहीं बदलेंगे, बल्कि और भी बुरे होते

चले जाएंगे। जब हम पर बिना किसी कारण के हमला किया जाए, तो हमें भी करारा जवाब देना चाहिए; मुझे पूरा यकीन है कि हमें ऐसा करना चाहिए—इतना करारा कि हमला करने वाले को सबक मिले कि वह फिर कभी ऐसा न करे।”

"मुझे उम्मीद है कि जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम्हारा मन बदल जाएगा: अभी तो तुम एक छोटी, अनुभवहीन लड़की ही हो।"

“लेकिन मुझे यह महसूस होता है, हेलेन; मुझे उन लोगों से नफरत करनी ही चाहिए जो, चाहे मैं उन्हें खुश करने के लिए कुछ भी करूँ, मुझसे नफरत करना जारी रखते हैं; मुझे उन लोगों का विरोध करना ही चाहिए जो मुझे अन्यायपूर्ण तरीके से दंडित करते हैं। यह उतना ही स्वाभाविक है जितना कि उन लोगों से प्यार करना जो मुझे स्नेह दिखाते हैं, या जब मुझे लगता है कि मुझे दंडित किया जाना चाहिए तो उसे स्वीकार करना।”

“मूर्तिपूजक और बर्बर जनजातियाँ उस सिद्धांत को मानती हैं, लेकिन ईसाई और सभ्य राष्ट्र उसे अस्वीकार करते हैं।”

“कैसे? मुझे समझ नहीं आ रहा।”

"नफरत पर काबू पाने का सबसे अच्छा तरीका हिंसा नहीं है, न ही बदला लेना किसी घाव को पूरी तरह से भरता है।"

"तो क्या?"

“नए नियम को पढ़ो, और देखो कि मसीह क्या कहते हैं और कैसे कार्य करते हैं; उनके वचन को अपना नियम बनाओ, और उनके आचरण को अपना उदाहरण मानो।”

वह क्या कहता है?

अपने शत्रुओं से प्रेम करो; जो तुम्हें कोसते हैं, उन्हें आशीर्वाद दो; जो तुमसे घृणा करते हैं और तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं, उनके साथ भलाई करो।

"तब मुझे श्रीमती रीड से प्यार करना होगा, जो मैं नहीं कर सकता; मुझे उनके बेटे जॉन को आशीर्वाद देना होगा, जो असंभव है।"

इसके बाद हेलेन बर्न्स ने मुझसे स्पष्टीकरण मांगा, और मैंने तुरंत अपने तरीके से अपने दुखों और शिकायतों की कहानी सुनाना शुरू कर दिया। उत्तेजित होने पर मैं कड़वा और उग्र हो जाता था, और बिना किसी संकोच या नरमी के, जैसा मेरे मन में था वैसा ही बोलता था।

हेलेन ने अंत तक धैर्यपूर्वक मेरी बात सुनी: मुझे उम्मीद थी कि वह फिर कोई

टिप्पणी करेगी, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।

मैंने अधीरता से पूछा, "तो क्या श्रीमती रीड एक कठोर हृदय वाली, बुरी महिला नहीं हैं?"

“वह तुम्हारे प्रति निर्दयी रही है, इसमें कोई संदेह नहीं; क्योंकि देखो, वह तुम्हारे स्वभाव को नापसंद करती है, जैसे मिस स्केचर्ड मेरे स्वभाव को; लेकिन तुम उसके द्वारा कही और की गई हर बात को कितनी बारीकी से याद रखते हो! उसके अन्याय ने तुम्हारे हृदय पर कितना गहरा प्रभाव डाला है! किसी भी दुर्व्यवहार का इतना गहरा प्रभाव मेरे भावों पर नहीं पड़ता। क्या तुम उसकी कठोरता और उससे उत्पन्न तीव्र भावनाओं को भूलने की कोशिश करके अधिक प्रसन्न नहीं होगे? मुझे लगता है कि जीवन बहुत छोटा है, इसे शत्रुता पालने या गलतियों को गिनने में व्यतीत नहीं करना चाहिए। हम सब इस संसार में दोषों से बोझिल हैं, और होना ही चाहिए: लेकिन वह समय शीघ्र आएगा, जब मुझे विश्वास है, हम अपने नश्वर शरीरों को त्यागने के साथ-साथ इन दोषों को भी त्याग देंगे; जब यह बोझिल शरीर और पाप हमारे शरीर से विलीन हो जाएंगे, और केवल आत्मा की चिंगारी शेष रहेगी, - प्रकाश और विचार का वह अगोचर सिद्धांत, उतना ही शुद्ध जितना कि सृष्टिकर्ता से प्राणी को प्रेरित करने के लिए निकलते समय था: जहाँ से यह आया है, वहीं लौटेगा; शायद फिर से मनुष्य से उच्चतर किसी सत्ता को प्रदान किया जाए - शायद विभिन्न स्तरों से गुजरने के लिए।” महिमा, फीकी मानव आत्मा से निकलकर देवदूत के समान चमक उठे! क्या यह कभी मनुष्य से राक्षस बनने के लिए विलीन नहीं हो सकता? नहीं; मैं ऐसा नहीं मान सकता: मेरा एक अलग मत है: जो मुझे किसी ने कभी नहीं सिखाया, और जिसका मैं शायद ही कभी ज़िक्र करता हूँ; लेकिन जिसमें मुझे आनंद आता है, और जिससे मैं जुड़ा रहता हूँ: क्योंकि यह सभी को आशा प्रदान करता है: यह अनंतकाल को विश्राम बनाता है - एक शक्तिशाली घर, न कि आतंक और खाई। इसके अलावा, इस मत के साथ, मैं अपराधी और उसके अपराध के बीच स्पष्ट रूप से अंतर कर सकता हूँ; मैं पहले को पूरी ईमानदारी से क्षमा कर सकता हूँ जबकि दूसरे से घृणा करता हूँ: इस मत के साथ प्रतिशोध कभी मेरे हृदय को चिंतित नहीं करता, अपमान कभी मुझे बहुत अधिक घृणा नहीं दिलाता, अन्याय कभी मुझे बहुत नीचा नहीं करता: मैं शांति से रहता हूँ, अंत की ओर देखते हुए।

हेलेन का सिर, जो हमेशा झुका रहता था, इस वाक्य को समाप्त करते ही थोड़ा

और नीचे झुक गया। मैंने उसकी नज़र से समझ लिया कि वह अब मुझसे बात नहीं करना चाहती थी, बल्कि अपने विचारों से संवाद करना चाहती थी। उसे ध्यान लगाने का ज़्यादा समय नहीं मिलता था: तभी एक निगरानीकर्ता, एक बड़ी सी खुरदरी लड़की, वहाँ आई और कंबरलैंड के लहजे में ज़ोर से बोली—

"हेलेन बर्न्स, अगर तुम अभी जाकर अपनी दराज ठीक से व्यवस्थित नहीं करोगी और अपना काम समेटकर नहीं रखोगी, तो मैं मिस स्केचर्ड को बुलाकर इसे देखने के लिए कह दूंगी!"

हेलेन ने आह भरी क्योंकि उसकी तंद्रा भंग हो गई, और उठकर उसने बिना किसी उत्तर या देरी के मॉनिटर के आदेश का पालन किया।

अध्याय VII

लोवुड में मेरा पहला सत्र एक युग जैसा लगा; और वह स्वर्णिम युग भी नहीं था; इसमें नए नियमों और अपरिचित कार्यों के अभ्यस्त होने की कठिनाइयों से जूझना पड़ा। इन मामलों में असफलता का भय मुझे शारीरिक कठिनाइयों से भी अधिक सता रहा था; हालाँकि ये कठिनाइयाँ मामूली नहीं थीं।

जनवरी, फरवरी और मार्च के कुछ हिस्से में, भारी बर्फ और उसके पिघलने के बाद लगभग दुर्गम सड़कों के कारण हम बगीचे की चारदीवारी से बाहर नहीं निकल पाते थे, सिवाय चर्च जाने के। लेकिन इस सीमा के भीतर हमें हर दिन एक घंटा खुली हवा में बिताना पड़ता था। हमारे कपड़े हमें भीषण ठंड से बचाने के लिए पर्याप्त नहीं थे: हमारे पास जूते नहीं थे, बर्फ हमारे जूतों में घुस जाती थी और वहीं पिघल जाती थी: हमारे बिना दस्तानों वाले हाथ सुन्न हो जाते थे और उन पर शीतदंश के छाले पड़ जाते थे, जैसे हमारे पैर। मुझे अच्छी तरह याद है कि हर शाम जब मेरे पैर सूज जाते थे तो मुझे कितनी तकलीफ होती थी; और सुबह सूजी हुई, छिली हुई और अकड़ी हुई

उंगलियों को जूतों में जबरदस्ती डालना कितना कष्टदायक होता था। फिर भोजन की कमी भी चिंताजनक थी: बढ़ते बच्चों की तीव्र भूख के कारण, हमारे पास एक कमजोर बीमार व्यक्ति को जीवित रखने के लिए भी मुश्किल से पर्याप्त भोजन होता था। पोषण की इस कमी के कारण एक तरह का दुर्व्यवहार हुआ, जिसका छोटे विद्यार्थियों पर बहुत बुरा असर पड़ा: जब भी भूखी बड़ी लड़कियों को मौका मिलता, वे छोटे बच्चों को उनके हिस्से से फुसलाकर या धमकाकर छीन लेती थीं। कई बार मैंने चाय के समय बांटे गए भूरे रंग की रोटी के अनमोल टुकड़े को दो दावेदारों के बीच साझा किया है; और अपने कॉफी के मग का आधा हिस्सा एक तिहाई को देने के बाद, मैंने भूख की मजबूरी से निकले गुप्त आंसुओं के साथ शेष भाग को निगल लिया है।

सर्दी के उस मौसम में रविवार का दिन बहुत नीरस होता था। हमें ब्रॉकलब्रिज चर्च तक दो मील पैदल चलना पड़ता था, जहाँ हमारे संरक्षक संत पूजा करवाते थे। हम ठंड से काँपते हुए निकलते थे और चर्च पहुँचते-पहुँचते और भी ठंडे हो जाते थे: सुबह की प्रार्थना के दौरान हम लगभग लकवाग्रस्त हो जाते थे। दोपहर के भोजन के लिए वापस लौटना बहुत दूर था, इसलिए प्रार्थनाओं के बीच में ठंडे मांस और रोटी का एक छोटा सा हिस्सा परोसा जाता था, ठीक उसी तरह जैसे हमारे सामान्य भोजन में परोसा जाता था।

दोपहर की प्रार्थना सभा समाप्त होने पर हम एक खुली और पहाड़ी सड़क से वापस लौटे, जहाँ उत्तर की ओर बर्फ से ढकी चोटियों की श्रृंखला पर बहने वाली कड़ाके की सर्दी की हवा ने लगभग हमारे चेहरों की त्वचा को छील दिया।

मुझे याद है मिस टेंपल हमारी उदास कतार के साथ-साथ हल्के और तेज़ कदमों से चल रही थीं, उनकी चेकदार चादर वाली चादर ठंडी हवा में फड़फड़ा रही थी और उनके शरीर से लिपटी हुई थी। वे उपदेश और उदाहरण से हमें प्रोत्साहित कर रही थीं कि हम अपना मनोबल बनाए रखें और आगे बढ़ें, जैसा कि उन्होंने कहा, "मजबूत सैनिकों की तरह।" बाकी शिक्षक, बेचारे, आम तौर पर खुद इतने निराश थे कि दूसरों का हौसला बढ़ाने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहे थे।

वापस आने पर हमें धधकती आग की रोशनी और गर्मी की कितनी चाहत थी! लेकिन, कम से कम छोटे बच्चों को तो यह नहीं मिल पाया: स्कूल के कमरे में हर चूल्हे के चारों ओर बड़ी-बड़ी लड़कियों की दोहरी कतार खड़ी हो जाती थी, और उनके

पीछे छोटे बच्चे समूहों में दुबके रहते थे, अपनी भूखी बाहों को अपने एप्रन में लपेटे हुए।

शाम के खाने के समय थोड़ी राहत मिली, जब हमें दुगुनी रोटी मिली—आधे के बजाय पूरी रोटी—और साथ में मक्खन की पतली परत भी। यह वह साप्ताहिक दावत थी जिसका हम सभी हर रविवार को बेसब्री से इंतज़ार करते थे। मैं आमतौर पर इस भरपूर भोजन का आधा हिस्सा अपने लिए बचा लेता था; लेकिन बाकी हमेशा मुझे बाँटना पड़ता था।

रविवार की शाम चर्च की धार्मिक शिक्षाओं और सेंट मैथ्यू के पाँचवें, छठे और सातवें अध्यायों को कंठस्थ करने में बीती; और मिस मिलर द्वारा पढ़े गए एक लंबे प्रवचन को सुनने में भी, जिनकी लगातार जम्हाई उनकी थकान को दर्शा रही थी। इन गतिविधियों के बीच-बीच में लगभग आधा दर्जन छोटी लड़कियाँ यूटिचस का अभिनय करती थीं, जो नींद से बेहाल होकर तीसरी मंज़िल से तो नहीं गिरती थीं, लेकिन चौथी पंक्ति से गिर जाती थीं और अधमरी हालत में उठाई जाती थीं। इसका उपाय यह था कि उन्हें कक्षा के बीच में धकेल दिया जाए और प्रवचन समाप्त होने तक वहीं खड़े रहने के लिए बाध्य किया जाए। कभी-कभी उनके पैर जवाब दे देते थे और वे सब एक साथ ढेर हो जाती थीं; तब उन्हें व्यवस्थापकों की ऊँची कुर्सियों के सहारे उठाया जाता था।

मैंने अभी तक श्री ब्रॉकलहर्स्ट के दौरों का ज़िक्र नहीं किया है; और सच तो यह है कि मेरे आने के बाद पहले महीने के अधिकांश समय तक वे घर से बाहर ही रहे; शायद अपने मित्र आर्चडीकन के साथ अपना प्रवास बढ़ा रहे थे: उनकी अनुपस्थिति मेरे लिए राहत की बात थी। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मुझे उनके आने से डरने के अपने कारण थे: लेकिन अंततः वे आ ही गए।

एक दोपहर (उस समय मुझे लोवुड में आए तीन सप्ताह हो चुके थे), मैं हाथ में स्लेट लिए, भाग के एक सवाल को हल करने में लगा हुआ था, तभी मेरी नज़र खिड़की की ओर उठी और अचानक एक आकृति पर पड़ी जो अभी-अभी गुज़र रही थी: मैंने लगभग सहज ही उस दुबले-पतले चेहरे को पहचान लिया; और जब दो मिनट बाद, शिक्षक समेत पूरा स्कूल एक साथ उठ खड़ा हुआ, तो मुझे यह जानने के लिए ऊपर देखने की ज़रूरत नहीं पड़ी कि वे किसका स्वागत कर रहे थे। एक लंबा कदम स्कूल के कमरे में आया, और थोड़ी देर बाद मिस टेंपल के बगल में, जो खुद उठ चुकी

थीं, वही काला स्तंभ खड़ा था जो गेट्सहेड के चूल्हे के पास से मुझे इतने अशुभ ढंग से घूर रहा था। अब मैंने उस इमारत पर तिरछी नज़र डाली। हाँ, मैं सही था: यह मिस्टर ब्रॉकलहर्स्ट थे, एक ओवरकोट पहने हुए, और पहले से कहीं ज़्यादा लंबे, पतले और सख्त दिख रहे थे।

इस दृश्य को देखकर मेरे भयभीत होने के अपने कारण थे; मुझे श्रीमती रीड द्वारा मेरे स्वभाव आदि के बारे में दिए गए कपटपूर्ण संकेत अच्छी तरह याद थे; श्री ब्रॉकलहर्स्ट द्वारा मिस टेंपल और शिक्षकों को मेरे दुष्ट स्वभाव के बारे में बताने का वादा भी याद था। मैं हमेशा से इस वादे के पूरा होने से भयभीत था, — मैं प्रतिदिन उस "आने वाले व्यक्ति" की प्रतीक्षा कर रहा था, जिसकी मेरे अतीत और व्यवहार के बारे में दी गई जानकारी मुझे हमेशा के लिए एक बुरा बच्चा साबित कर देगी: और अब वह मेरे सामने था।

वह मिस टेंपल के बगल में खड़ा था; वह उनके कान में धीरे से कुछ कह रहा था: मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह मेरे कुकर्मों का खुलासा कर रहा था; और मैं पीड़ादायक चिंता से उसकी आँखों को देख रहा था, हर पल यह आशंका कर रहा था कि उसकी काली पुतली घृणा और तिरस्कार से मेरी ओर मुड़ जाएगी। मैं सुन भी रहा था; और चूंकि मैं कमरे के बिल्कुल ऊपरी हिस्से में बैठा था, इसलिए मैंने उसकी कही हुई अधिकांश बातें सुन लीं: इसका सार सुनकर मेरी तात्कालिक आशंका दूर हो गई।

“मुझे लगता है, मिस टेंपल, लोवटन से खरीदा हुआ धागा ठीक रहेगा; मुझे लगा कि यह कैलिको कमीज़ों के लिए बिल्कुल सही रहेगा, और मैंने उसी के हिसाब से सुइयाँ भी छाँट ली हैं। आप मिस स्मिथ को बता दीजिए कि मैं रफू करने वाली सुइयों का नोट बनाना भूल गई, लेकिन अगले हफ्ते उन्हें कुछ कागज़ात भेज दिए जाएँगे; और उन्हें किसी भी हालत में हर छात्रा को एक बार में एक से ज़्यादा सुइयाँ नहीं देनी हैं: अगर उनके पास ज़्यादा सुइयाँ होंगी, तो वे लापरवाह हो जाएँगी और उन्हें खो देंगी। और, हे महोदया! काश ऊनी मोज़ों का ध्यान रखा जाता! — पिछली बार जब मैं यहाँ आई थी, तो मैं रसोई के बगीचे में गई और रस्सी पर सूख रहे कपड़ों को देखा; वहाँ बहुत सारे काले मोज़े थे जिनकी हालत बहुत खराब थी: उनमें छेदों का आकार देखकर मुझे यकीन हो गया कि उनकी समय-समय पर अच्छी तरह से मरम्मत नहीं की गई थी।”

वह रुका।

“आपके निर्देशों का पालन किया जाएगा, महोदय,” मिस टेंपल ने कहा।

“और, महोदया,” उसने आगे कहा, “धुलाई करने वाली ने मुझे बताया कि कुछ लड़कियों के पास सप्ताह में दो साफ कपड़े होते हैं: यह बहुत ज्यादा है; नियमों के अनुसार उन्हें एक ही साफ कपड़े धोने की अनुमति है।”

"मुझे लगता है कि मैं उस परिस्थिति को समझा सकती हूँ, महोदय। एग्नेस और कैथरीन जॉनस्टोन को पिछले गुरुवार को लोवटन में कुछ दोस्तों के साथ चाय पीने के लिए आमंत्रित किया गया था, और मैंने उन्हें उस अवसर के लिए साफ कपड़े पहनने की अनुमति दी थी।"

श्री ब्रॉकलहर्स्ट का संरक्षण।

“खैर, एक बार तो यह बात टल जाए; लेकिन कृपया ऐसा बार-बार न होने दें। और एक और बात है जिसने मुझे चौंका दिया; मैंने हाउसकीपर से हिसाब-किताब करते समय पाया कि पिछले पखवाड़े में दो बार लड़कियों को रोटी और पनीर का दोपहर का भोजन परोसा गया है। यह कैसे हो सकता है? मैंने नियम-कानून देखे, और मुझे उसमें दोपहर के भोजन का कोई ज़िक्र नहीं मिला। यह नया नियम किसने लागू किया? और किस अधिकार से?”

"इस परिस्थिति के लिए मैं ही जिम्मेदार हूं, महोदय," मिस टेंपल ने उत्तर दिया: "नाश्ता इतना खराब बना था कि विद्यार्थी उसे खा ही नहीं सकते थे; और मैं उन्हें दोपहर के भोजन तक उपवास रखने की अनुमति नहीं दे सकती थी।"

महोदया, मुझे एक क्षण दीजिए। आप जानती हैं कि इन लड़कियों के पालन-पोषण में मेरी योजना उन्हें विलासिता और भोग-विलास की आदतों का आदी बनाना नहीं है, बल्कि उन्हें दृढ़, धैर्यवान और आत्म-त्यागी बनाना है। यदि भूख में कोई छोटी-मोटी आकस्मिक कमी आ जाए, जैसे कि भोजन का खराब हो जाना, किसी व्यंजन में कम या ज्यादा मसाला डाल देना, तो उस घटना को खोए हुए आराम को किसी अधिक स्वादिष्ट चीज़ से बदलकर बेअसर नहीं किया जाना चाहिए, जिससे शरीर को लाड़-प्यार मिले और इस संस्था का उद्देश्य ही न भटक जाए; बल्कि इसे विद्यार्थियों के आध्यात्मिक उत्थान के लिए उपयोग किया जाना चाहिए, उन्हें अस्थायी अभाव में धैर्य दिखाने के लिए प्रोत्साहित करके। ऐसे अवसरों पर एक संक्षिप्त संबोधन उचित होगा, जिसमें एक विवेकशील शिक्षक आदिम ईसाइयों के कष्टों; शहीदों की पीड़ाओं; स्वयं प्रभु यीशु के उपदेशों का उल्लेख करने का अवसर लेगा, जिसमें उन्होंने अपने शिष्यों

को अपना क्रूस उठाकर उनका अनुसरण करने का आह्वान किया था; और उनकी इस चेतावनी का कि मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं, बल्कि प्रभु के मुख से निकलने वाले प्रत्येक वचन से जीवित रहेगा। ईश्वर; उनकी दिव्य सांत्वनाओं के लिए, "यदि तुम मेरे लिए भूख या प्यास सहन करते हो, तो तुम धन्य हो।" हे महोदया, जब तुम इन बच्चों के मुँह में जले हुए दलिया के बजाय रोटी और पनीर डालती हो, तो तुम उनके निर्जीव शरीरों को तो भर देती हो, पर तुम यह नहीं सोचती कि तुम उनकी अमर आत्माओं को कितना भूखा मार रही हो!

श्री ब्रॉकलहर्स्ट एक बार फिर रुक गए—शायद अपनी भावनाओं से अभिभूत होकर। जब उन्होंने मिस टेंपल से बात करना शुरू किया था, तब उन्होंने नज़रें नीचे कर ली थीं; लेकिन अब वह सीधे अपने सामने देख रही थीं, और उनका चेहरा, जो स्वभाव से संगमरमर की तरह पीला था, उस पदार्थ की ठंडक और स्थिरता को भी धारण कर रहा था; विशेष रूप से उनका मुंह, जो ऐसा बंद था मानो उसे खोलने के लिए किसी मूर्तिकार की छेनी की आवश्यकता हो, और उनकी भौंहें धीरे-धीरे पत्थर जैसी कठोरता में तब्दील हो गईं।

इसी बीच, श्री ब्रॉकलहर्स्ट चूल्हे पर खड़े होकर, अपने हाथ पीठ के पीछे बांधे, पूरे विद्यालय का भव्य अवलोकन कर रहे थे। अचानक उनकी आँख झपकी, मानो किसी ऐसी चीज़ से टकराई हो जिसने उनकी पुतली को चकाचौंध कर दिया हो या चौंका दिया हो; मुड़कर उन्होंने पहले की तुलना में अधिक तीव्र स्वर में कहा—

"मिस टेंपल, मिस टेंपल, वो घुंघराले बालों वाली लड़की कौन है? लाल बाल, महोदया, घुंघराले — पूरे बाल घुंघराले?" और अपनी छड़ी बढ़ाते हुए उन्होंने उस भयानक चीज़ की ओर इशारा किया, ऐसा करते समय उनका हाथ कांप रहा था।

"यह जूलिया सेवर्न है," मिस टेंपल ने बहुत धीमी आवाज़ में उत्तर दिया।

"जूलिया सेवर्न, महोदया! और उनके या किसी और के बाल घुंघराले क्यों हैं? इस संस्था के हर नियम और सिद्धांत की अवहेलना करते हुए, वह इतनी खुलेआम दुनिया के अनुरूप क्यों ढलती हैं - यहाँ एक धर्मपरायण, परोपकारी संस्था में - कि अपने बालों को घुंघराले रखती हैं?"

"जूलिया के बाल प्राकृतिक रूप से घुंघराले हैं," मिस टेंपल ने और भी धीमी आवाज़ में जवाब दिया।

"स्वाभाविक रूप से! हाँ, लेकिन हमें प्रकृति के अनुरूप नहीं चलना है; मैं चाहती हूँ

कि ये लड़कियाँ ईश्वर की कृपा की संतान हों: और इतनी अधिकता क्यों? मैंने बार-बार कहा है कि मैं चाहती हूँ कि बाल सलीके से, शालीनता से और सरलता से संवारे जाएँ। मिस टेंपल, उस लड़की के बाल पूरी तरह से काटने होंगे; मैं कल एक नाई भेजूँगी: और मैं दूसरों को भी देखती हूँ जिनके बाल बहुत अधिक बढ़े हुए हैं - उस लंबी लड़की को कहो कि वह मुड़ जाए। सभी छात्राओं को कहो कि वे उठें और अपना चेहरा दीवार की ओर करें।”

मिस टेंपल ने अपने होठों पर रूमाल फेरा, मानो अनजाने में आई मुस्कान को छुपाने की कोशिश कर रही हों; फिर भी उन्होंने आदेश दिया और जब प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों को बात समझ में आई, तो उन्होंने आज्ञा का पालन किया। अपनी बेंच पर थोड़ा पीछे झुककर, मैं उनके हाव-भाव और चेहरे के भाव देख सकता था, जिनसे वे इस हरकत पर टिप्पणी कर रहे थे: यह दुख की बात थी कि श्री ब्रॉकलहर्स्ट भी उन्हें नहीं देख पा रहे थे; शायद उन्हें लगता कि प्याले और थाली के बाहरी हिस्से के साथ वे चाहे जो भी करें, अंदर का हिस्सा उनकी पहुंच से बाहर था, जितना उन्होंने सोचा भी नहीं था।

उन्होंने लगभग पाँच मिनट तक इन जीवंत पदकों के पिछले भाग का बारीकी से निरीक्षण किया, फिर फैसला सुनाया। ये शब्द विनाश की घंटी की तरह गूंजे —

"उन सभी चोटीनुमा बालों को काट देना चाहिए।"

मिस टेंपल ने विरोध जताया।

“महोदया,” उसने आगे कहा, “मुझे एक स्वामी की सेवा करनी है जिसका राज्य इस संसार का नहीं है: मेरा उद्देश्य इन लड़कियों में शारीरिक वासनाओं को कुचलना है; उन्हें सिखाना है कि वे लज्जा और संयम का वस्त्र पहनें, न कि गुंथे हुए बालों और महंगे वस्त्रों का; और हमारे सामने उपस्थित प्रत्येक युवती के बालों की लटें ऐसी गुंथी हुई हैं मानो स्वयं अहंकार ने बुनी हों; मैं दोहराता हूँ, इन्हें काटना होगा; समय की बर्बादी के बारे में सोचिए, …”

श्री ब्रॉकलहर्स्ट का भाषण यहीं रुक गया: तीन अन्य महिलाएं कमरे में दाखिल हुईं। उन्हें थोड़ा पहले आ जाना चाहिए था ताकि वे उनके पहनावे पर दिए गए व्याख्यान को सुन सकें, क्योंकि वे मखमल, रेशम और फर के शानदार परिधानों में सजी हुई थीं। तीनों में से छोटी दो (सोलह और सत्रह वर्ष की सुंदर लड़कियां) ने उस समय फैशन में चल रही भूरे रंग की बीवर की टोपियां पहन रखी थीं, जिन पर

शुतुरमुर्ग के पंख लगे हुए थे, और इस सुंदर टोपी के किनारे से उनके हल्के घुंघराले बाल लटक रहे थे; बड़ी महिला ने एक कीमती मखमली शॉल ओढ़ी हुई थी, जिस पर फर की किनारी लगी हुई थी, और उन्होंने नकली फ्रेंच कर्ल लगा रखे थे।

मिस टेंपल ने श्रीमती और मिस ब्रॉकलहर्स्ट के रूप में इन महिलाओं का आदरपूर्वक स्वागत किया और उन्हें कमरे के शीर्ष पर स्थित सम्माननीय सीटों पर बैठाया। ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपने आदरणीय रिश्तेदार के साथ गाड़ी में आई थीं और ऊपर के कमरे की छानबीन कर रही थीं, जबकि वे गृहस्वामी से कुछ काम निपटा रहे थे, धोबी से पूछताछ कर रहे थे और अधीक्षक को फटकार लगा रहे थे। अब वे मिस स्मिथ पर तरह-तरह की टिप्पणियाँ और फटकार लगाने लगीं, जिन्हें लिनेन की देखभाल और छात्रावासों के निरीक्षण का जिम्मा सौंपा गया था: लेकिन मेरे पास उनकी बातें सुनने का समय नहीं था; अन्य मामलों ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया था।

अब तक, श्री ब्रॉकलहर्स्ट और मिस टेंपल की बातचीत को समझने के साथ-साथ, मैंने अपनी सुरक्षा के लिए भी पर्याप्त सावधानी बरती थी; मुझे लगा था कि अगर मैं किसी की नज़र से बच जाऊँ तो मेरी सुरक्षा हो जाएगी। इसके लिए, मैं बेंच पर पीछे की ओर बैठी थी, और हिसाब-किताब में व्यस्त होने का दिखावा करते हुए, मैंने स्लेट को इस तरह पकड़ा था कि मेरा चेहरा छिपा रहे: मैं शायद किसी की नज़र से बच जाती, अगर मेरी वह धोखेबाज़ स्लेट किसी तरह मेरे हाथ से फिसल न जाती, और ज़ोरदार आवाज़ के साथ गिरकर सबकी निगाहें सीधे मुझ पर न टिक जातीं; मुझे पता था कि अब सब कुछ खत्म हो गया है, और स्लेट के दो टुकड़े उठाने के लिए झुकते ही मैंने सबसे बुरे हालात के लिए खुद को तैयार कर लिया। और वही हुआ।

"लापरवाह लड़की!" श्री ब्रॉकलहर्स्ट ने कहा, और तुरंत बाद— "मुझे लगता है कि यह नई छात्रा है।" और इससे पहले कि मैं सांस ले पाती, "मुझे यह नहीं भूलना चाहिए कि मुझे उसके बारे में कुछ कहना है।" फिर ज़ोर से: मुझे लगा जैसे कितनी ज़ोर से! "जिस बच्ची ने उसकी स्लेट तोड़ी है, वह आगे आए!"

मैं अपनी मर्जी से हिल भी नहीं सकती थी; मैं लकवाग्रस्त हो गई थी: लेकिन मेरे दोनों ओर बैठी दो बड़ी लड़कियों ने मुझे पैरों पर खड़ा किया और मुझे उस भयानक न्यायाधीश की ओर धकेल दिया, और फिर मिस टेंपल ने धीरे से मुझे उनके पैरों तक पहुंचाया, और मैंने उनकी फुसफुसाती सलाह सुनी—

"डरिए मत, जेन, मैंने देखा कि यह एक दुर्घटना थी; आपको दंडित नहीं किया जाएगा।"

वह मधुर फुसफुसाहट मेरे दिल में छुरा घोंपने जैसी लगी।

“एक मिनट भी बीता तो वो मुझे पाखंडी समझकर तिरस्कार करेगी,” मैंने सोचा; और इस दृढ़ विश्वास के साथ ही रीड, ब्रॉकलहर्स्ट और उनके साथियों के प्रति क्रोध की लहर मेरे दिल में दौड़ उठी। मैं हेलेन बर्न्स तो थी ही नहीं।

"वह स्टूल लाओ," श्री ब्रॉकलहर्स्ट ने एक बहुत ऊंचे स्टूल की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर से एक मॉनिटर अभी-अभी उठा था: उसे लाया गया।

बच्चे को उस पर रख दो।

और मुझे वहाँ किसने रखा, यह मैं नहीं जानता: मैं विवरण नोट करने की स्थिति में नहीं था; मुझे केवल इतना पता था कि उन्होंने मुझे श्री ब्रॉकलहर्स्ट की नाक की ऊँचाई तक उठा लिया था, कि वह मुझसे एक गज की दूरी पर थे, और मेरे नीचे नारंगी और बैंगनी रंग के रेशमी फर के आवरण और चांदी जैसे पंखों का एक बादल फैला हुआ था और लहरा रहा था।

श्री ब्रॉकलहर्स्ट हिचकिचाए।

“महिलाओं,” उसने अपने परिवार की ओर मुड़ते हुए कहा, “मिस टेंपल, शिक्षकों और बच्चों, क्या आप सभी ने इस लड़की को देखा है?”

बेशक उन्होंने ऐसा किया; क्योंकि मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे उनकी निगाहें मेरी झुलसी हुई त्वचा पर जलते हुए शीशे की तरह टिकी हुई थीं।

“देखो, वह अभी छोटी है; तुम देख सकते हो कि उसमें बचपन की सामान्य आकृति है; ईश्वर ने कृपापूर्वक उसे वही रूप दिया है जो उसने हम सभी को दिया है; कोई भी स्पष्ट विकृति उसे एक विशिष्ट चरित्र के रूप में नहीं दर्शाती। कौन सोच सकता है कि शैतान ने उसमें अपना सेवक और एजेंट पा लिया है? फिर भी, मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि यही सच है।”

एक ठहराव—जिसमें मैंने अपनी नसों की कमजोरी को स्थिर करना शुरू किया, और महसूस किया कि रुबिकॉन (एक निर्णायक मोड़) पार हो चुका है; और यह कि अब इस परीक्षा से बचा नहीं जा सकता, इसे दृढ़ता से सहन करना होगा।

“मेरे प्यारे बच्चों,” काले संगमरमर के पुरोहित ने करुणा भरे स्वर में कहा, “यह एक दुखद, एक शोकपूर्ण अवसर है; क्योंकि मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको चेतावनी दूं

कि यह लड़की, जो ईश्वर की अपनी भेड़ों में से एक हो सकती है, एक छोटी सी त्यागी हुई बच्ची है: सच्चे झुंड की सदस्य नहीं, बल्कि स्पष्ट रूप से एक घुसपैठिया और अजनबी है। आपको उससे सावधान रहना चाहिए; आपको उसके उदाहरण से बचना चाहिए; यदि आवश्यक हो, तो उसकी संगति से दूर रहें, उसे अपने खेलों से बाहर रखें और अपनी बातचीत से उसे अलग कर दें। शिक्षकों, आपको उस पर नज़र रखनी चाहिए: उसकी हरकतों पर नज़र रखें, उसके शब्दों का ध्यानपूर्वक विश्लेषण करें, उसके कार्यों की बारीकी से जांच करें, उसकी आत्मा को बचाने के लिए उसके शरीर को दंडित करें: यदि वास्तव में ऐसा उद्धार संभव हो, क्योंकि (यह कहते हुए मेरी जीभ लड़खड़ा रही है) यह लड़की, यह बच्ची, एक ईसाई देश की मूल निवासी, ब्रह्मा की पूजा करने वाले और जगन्नाथ के सामने घुटने टेकने वाले कई छोटे विधर्मियों से भी बदतर है - यह लड़की - झूठी है!”

अब दस मिनट का विराम आया, जिसके दौरान मैं, जो अब तक पूरी तरह से होश में था, ने देखा कि सभी ब्रॉकलहर्स्ट महिलाएं अपने रूमाल निकालकर अपनी आंखों पर लगा रही थीं, जबकि बुजुर्ग महिला आगे-पीछे झूल रही थीं और दोनों युवा फुसफुसा रही थीं, "कितना भयानक!" श्री ब्रॉकलहर्स्ट ने बोलना जारी रखा।

“यह मैंने उसकी उपकारिणी से सीखा; उस धर्मपरायण और दयालु महिला से जिसने उसे अनाथ अवस्था में गोद लिया, अपनी बेटी की तरह पाला-पोसा, और जिसकी दया और उदारता का उस अभागी लड़की ने इतनी बुरी, इतनी भयानक कृतघ्नता से बदला कि अंततः उसकी उत्तम संरक्षिका को उसे अपने बच्चों से अलग करना पड़ा, इस डर से कि कहीं उसका बुरा उदाहरण उनकी पवित्रता को दूषित न कर दे: उसने उसे यहाँ उपचार के लिए भेजा है, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में यहूदी अपने बीमारों को बेथेस्डा के अशांत तालाब में भेजते थे; और, शिक्षकों, अधीक्षक, मैं आप सभी से विनती करता हूँ कि उसके चारों ओर पानी को स्थिर न होने दें।”

इस शानदार समापन के साथ, श्री ब्रॉकलहर्स्ट ने अपने ओवरकोट का ऊपरी बटन ठीक किया, अपने परिवार से कुछ बुदबुदाया, जो उठे, मिस टेंपल को प्रणाम किया, और फिर सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति शान से कमरे से बाहर चले गए। दरवाजे पर मुड़कर, मेरे न्यायाधीश ने कहा—

"उसे उस स्टूल पर आधे घंटे और खड़े रहने दो, और दिन के बाकी समय में उससे कोई बात न करे।"

मैं वहाँ ऊँचाई पर बैठा था; मैं, जिसने कहा था कि कमरे के बीचोंबीच अपने स्वाभाविक पैरों पर खड़े होने की शर्म सहन नहीं कर सकता, अब बदनामी के चबूतरे पर सबके सामने था। मेरी भावनाओं को शब्दों में बयान करना असंभव है; लेकिन जैसे ही वे सब उमड़ीं, मेरी साँसें रुक गईं और मेरा गला सिकुड़ गया, एक लड़की आई और मेरे पास से गुज़री: गुज़रते हुए उसने अपनी आँखें उठाईं। उसकी आँखों में कैसी अजीब सी चमक थी! उस किरण ने मेरे अंदर कैसी असाधारण अनुभूति पैदा कर दी! उस नई भावना ने मुझे कैसे ऊपर उठाया! ऐसा लगा जैसे कोई शहीद, कोई नायक, किसी गुलाम या पीड़ित के पास से गुज़रा हो और उसे शक्ति प्रदान की हो। मैंने बढ़ते हुए उन्माद पर काबू पाया, अपना सिर उठाया और स्टूल पर मजबूती से खड़ा हो गया। हेलेन बर्न्स ने मिस स्मिथ से अपने काम के बारे में एक छोटा सा सवाल पूछा, पूछताछ की तुच्छता के लिए उसे डांट पड़ी, वह अपनी जगह पर लौट गई और फिर से जाते हुए मेरी तरफ मुस्कुराई। क्या मुस्कान थी! मुझे वह अब भी याद है, और मैं जानता हूँ कि वह उत्कृष्ट बुद्धि और सच्चे साहस का परिणाम थी; उसकी विशिष्ट आकृतियाँ, उसका पतला चेहरा, उसकी धँसी हुई भूरी आँखें, किसी देवदूत के रूप की परछाईं की तरह चमक उठीं। फिर भी उस क्षण हेलेन बर्न्स ने अपनी बांह पर "गंदा निशान" पहन रखा था; मुश्किल से एक घंटा पहले ही मैंने मिस स्केचर्ड को उसे कल रोटी और पानी के भोजन की सजा सुनाते हुए सुना था क्योंकि उसने नकल करते समय उसे बिगाड़ दिया था। मनुष्य का स्वभाव ही अपूर्ण है! ऐसे धब्बे सबसे साफ ग्रह की डिस्क पर भी होते हैं; और मिस स्केचर्ड जैसी आँखें केवल उन सूक्ष्म दोषों को ही देख पाती हैं, और ग्रह की पूरी चमक को नहीं देख पातीं।

अध्याय आठ

आधा घंटा बीतने से पहले ही पाँच बज गए; स्कूल की छुट्टी हो गई और सभी चाय

पीने के लिए भोजनालय में चले गए। अब मैंने नीचे जाने का साहस किया: गहरा अंधेरा छा चुका था; मैं एक कोने में जाकर ज़मीन पर बैठ गया। जिस जादू ने मुझे अब तक सहारा दिया था, वह टूटने लगा; प्रतिक्रिया हुई और जल्द ही, इतना गहरा दुःख मुझे जकड़ लिया कि मैं अपना चेहरा ज़मीन पर रखकर गिर पड़ा। अब मैं रोने लगा: हेलेन बर्न्स यहाँ नहीं थी; किसी चीज़ ने मुझे सहारा नहीं दिया; मैं अकेला पड़ गया और मेरे आँसुओं से फर्श भीग गया। मैंने लोवुड में बहुत अच्छा बनने और बहुत कुछ करने का इरादा किया था: बहुत सारे दोस्त बनाने, सम्मान पाने और सबका स्नेह जीतने का। मैंने पहले ही काफ़ी प्रगति कर ली थी: उसी सुबह मैं अपनी कक्षा में सबसे आगे पहुँच गया था; मिस मिलर ने मेरी बहुत प्रशंसा की थी; मिस टेंपल ने मुस्कुराकर मेरी सराहना की थी; उन्होंने मुझे चित्र सिखाने और फ्रेंच सीखने देने का वादा किया था, अगर मैं अगले दो महीने तक इसी तरह सुधार करता रहूँ: और फिर मेरे सहपाठियों ने मेरा बहुत स्वागत किया; मुझे मेरी ही उम्र के लोगों ने बराबरी का दर्जा दिया, और किसी ने भी मुझे परेशान नहीं किया; अब, मैं यहाँ फिर से कुचला और रौंदा हुआ पड़ा हूँ; क्या मैं कभी फिर से उठ पाऊँगा?

"कभी नहीं," मैंने मन ही मन सोचा; और मेरी दिली तमन्ना थी कि मैं मर जाऊं। टूटी-फूटी आवाज़ में सिसकते हुए यही इच्छा ज़ाहिर करते हुए, कोई मेरे पास आया: मैं चौंककर उठी — हेलेन बर्न्स फिर से मेरे पास थीं; बुझती हुई आग की रोशनी में बस इतना दिखाई दिया कि वो उस लंबे, खाली कमरे में आ रही हैं; वो मेरे लिए कॉफ़ी और ब्रेड लेकर आईं।

"आओ, कुछ खा लो," उसने कहा; लेकिन मैंने दोनों को अपने से दूर रख दिया, ऐसा लग रहा था मानो एक बूँद या एक टुकड़ा भी मेरी इस हालत में मेरा गला घोंट देगा। हेलेन ने मुझे देखा, शायद आश्चर्य से: मैं अब अपनी बेचैनी को कम नहीं कर पा रही थी, चाहे मैंने कितनी भी कोशिश की हो; मैं लगातार ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी। वह मेरे पास ज़मीन पर बैठ गई, अपने घुटनों को बाहों में भर लिया और अपना सिर उन पर टिका दिया; उस मुद्रा में वह एक भारतीय की तरह चुप रही। मैं ही पहली थी जिसने बोलना शुरू किया—

"हेलेन, तुम उस लड़की के साथ क्यों रहती हो जिसे हर कोई झूठा मानता है?"

"सब लोग, जेन? अरे, तुम्हें इस नाम से पुकारा जाता है, यह तो केवल अस्सी लोगों ने ही सुना है, जबकि दुनिया में करोड़ों लोग हैं।"

लेकिन लाखों लोगों से मेरा क्या लेना-देना है? मुझे पता है, अस्सी लोग मुझसे नफरत करते हैं।

"जेन, तुम गलत हो: शायद स्कूल में कोई भी तुम्हें नापसंद या तिरस्कार नहीं करता: मुझे यकीन है कि बहुत से लोग तुम पर तरस खाते हैं।"

"मिस्टर ब्रॉकलहर्स्ट की बातों के बाद वे मुझ पर दया कैसे कर सकते हैं?"

“श्री ब्रॉकलहर्स्ट कोई भगवान नहीं हैं, न ही वे कोई महान और प्रशंसित व्यक्ति हैं; यहाँ उन्हें कोई पसंद नहीं करता; उन्होंने कभी खुद को लोकप्रिय बनाने की कोशिश नहीं की। अगर उन्होंने तुम्हें अपना खास प्रिय माना होता, तो तुम्हारे चारों ओर खुले या छिपे हुए दुश्मन होते; लेकिन अभी तो उनमें से अधिकांश हिम्मत होने पर तुम्हारे प्रति सहानुभूति जताते। शिक्षक और छात्र एक-दो दिन के लिए तुम्हें ठंडे भाव से देख सकते हैं, लेकिन उनके दिलों में मित्रता की भावना छिपी है; और अगर तुम अच्छा प्रदर्शन करती रहोगी, तो ये भावनाएँ जल्द ही अपने अस्थायी दमन के बाद और भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाएँगी। इसके अलावा, जेन”— वह रुक गई।

“तो, हेलेन?” मैंने अपना हाथ उसके हाथ में रखते हुए कहा: उसने मेरी उंगलियों को धीरे से सहलाकर गर्म किया और आगे बोली—

“यदि सारा संसार तुमसे घृणा करे और तुम्हें दुष्ट समझे, जबकि तुम्हारा अंतरात्मा तुम्हें निर्दोष ठहराए और तुम्हें दोषमुक्त करे, तो भी तुम मित्रों से वंचित नहीं रहोगे।”

“नहीं; मैं जानती हूँ कि मुझे अपने बारे में अच्छा सोचना चाहिए; लेकिन यह काफी नहीं है: अगर दूसरे मुझसे प्यार नहीं करते तो मैं जीने से बेहतर मरना पसंद करूँगी—मैं अकेला और नफरत का पात्र बनकर नहीं रह सकती, हेलेन। सुनो; तुमसे, या मिस टेंपल से, या किसी और से जिसे मैं सचमुच प्यार करती हूँ, थोड़ा सा भी स्नेह पाने के लिए, मैं अपनी बांह की हड्डी तुड़वाने, या किसी बैल से उछलने देने, या लात मारते घोड़े के पीछे खड़े होकर उसके खुर से अपनी छाती पर चोट खाने के लिए भी तैयार हूँ—”

“चुप रहो, जेन! तुम इंसानों के प्यार को बहुत ज़्यादा महत्व देती हो; तुम बहुत जल्दबाज़ और उग्र हो; जिस सर्वशक्तिमान ने तुम्हारा शरीर बनाया और उसमें जीवन डाला, उसने तुम्हें तुम्हारी कमज़ोर आत्मा या तुम्हारे जैसी कमज़ोर प्राणियों से कहीं ज़्यादा संसाधन दिए हैं। इस धरती और मनुष्यों के अलावा, एक अदृश्य जगत और आत्माओं का साम्राज्य है: वह जगत हमारे चारों ओर है, क्योंकि वह सर्वत्र विद्यमान है;

और वे आत्माएँ हमें देखती हैं, क्योंकि उन्हें हमारी रक्षा करने का दायित्व सौंपा गया है; और यदि हम पीड़ा और अपमान से मर रहे हों, यदि तिरस्कार हमें चारों ओर से घेर ले और घृणा हमें कुचल दे, तो भी देवदूत हमारी पीड़ाओं को देखते हैं, हमारी निर्दोषता को पहचानते हैं (यदि हम निर्दोष हैं: जैसा कि मैं जानता हूँ कि तुम इस आरोप से मुक्त हो जिसे श्री ब्रॉकलहर्स्ट ने श्रीमती रीड से सुनी हुई बात को कमज़ोर और आडंबरपूर्ण ढंग से दोहराया है; क्योंकि मैं तुम्हारी प्रखर आँखों और निर्मल चेहरे पर एक सच्ची भावना देखता हूँ), और ईश्वर केवल आत्मा के शरीर से अलग होने की प्रतीक्षा करता है ताकि हमें पूर्ण पुरस्कार से नवाज़ सके। तो फिर, हमें दुख से अभिभूत होकर क्यों डूबना चाहिए?" जब जीवन इतनी जल्दी समाप्त हो जाता है, और मृत्यु निश्चित रूप से सुख और गौरव की ओर ले जाने वाला मार्ग है?

मैं चुप था; हेलेन ने मुझे शांत कर दिया था; लेकिन उसकी शांति में एक अवर्णनीय उदासी भी समाई हुई थी। जब वह बोल रही थी तो मुझे दुःख का आभास हुआ, पर मैं यह नहीं बता सका कि यह दुःख कहाँ से आया; और जब बोलना समाप्त करने के बाद उसने थोड़ी तेज़ साँस ली और हल्की सी खाँसी की, तो क्षण भर के लिए मैं अपने दुःखों को भूल गया और उसके लिए एक अस्पष्ट चिंता से भर गया।

मैंने अपना सिर हेलेन के कंधे पर टिकाया और अपनी बाहें उसकी कमर में डाल दीं; उसने मुझे अपनी ओर खींच लिया और हम चुपचाप बैठ गए। हम अभी ज्यादा देर तक बैठे भी नहीं थे कि एक और व्यक्ति अंदर आया। तेज हवा से आसमान से कुछ घने बादल छंट गए थे और चाँद दिखाई दे रहा था; पास की एक खिड़की से आती उसकी रोशनी हम दोनों पर और पास से आ रही उस शख्स पर पड़ रही थी, जिसे हमने तुरंत मिस टेंपल के रूप में पहचान लिया।

"मैं तुम्हें ढूंढने के लिए ही आई हूँ, जेन आयर," उसने कहा; "मैं तुम्हें अपने कमरे में चाहती हूँ; और चूंकि हेलेन बर्न्स तुम्हारे साथ है, तो वह भी आ सकती है।"

हम चले; अधीक्षक के निर्देशों का पालन करते हुए, हमें कुछ जटिल रास्तों से होकर गुजरना पड़ा और सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं, तब जाकर हम उनके कमरे तक पहुँचे; कमरे में अच्छी आग जल रही थी और वह कमरा खुशनुमा लग रहा था। मिस टेंपल ने हेलेन बर्न्स को चूल्हे के एक तरफ एक नीची कुर्सी पर बैठने को कहा और खुद दूसरी कुर्सी पर बैठकर मुझे अपने पास बुलाया।

"क्या सब खत्म हो गया?" उसने मेरी ओर देखते हुए पूछा। "क्या तुमने रोकर

अपना दुख भुला दिया?”

मुझे डर है कि मैं ऐसा कभी नहीं कर पाऊंगा।

"क्यों?"

"क्योंकि मुझ पर गलत आरोप लगाया गया है; और आप, महोदया, और बाकी सभी लोग अब मुझे दुष्ट समझेंगे।"

“तुम जैसी साबित होगी, हम तुम्हें वैसा ही समझेंगे, मेरी बच्ची। अच्छी लड़की की तरह व्यवहार करती रहो, और तुम हमें संतुष्ट करोगी।”

"क्या मैं करूँ, मिस टेंपल?"

“तुम्हें पता चल जाएगा,” उसने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। “और अब मुझे बताओ कि वह महिला कौन है जिसे श्री ब्रॉकलहर्स्ट ने तुम्हारी उपकारिणी कहा था?”

"श्रीमती रीड, मेरे चाचा की पत्नी। मेरे चाचा का निधन हो गया है, और उन्होंने मुझे उनकी देखभाल में छोड़ दिया है।"

तो क्या उसने तुम्हें अपनी मर्जी से गोद नहीं लिया था?

"नहीं, महोदया; उसे ऐसा करना पड़ा, इसका उसे अफसोस था: लेकिन मेरे चाचा ने, जैसा कि मैंने अक्सर नौकरों को कहते सुना है, मरने से पहले उससे वादा ले लिया था कि वह हमेशा मुझे अपने पास रखेगी।"

“अच्छा, जेन, तुम जानती हो, या कम से कम मैं तुम्हें बता दूँ, कि जब किसी अपराधी पर आरोप लगता है, तो उसे हमेशा अपना बचाव करने का मौका दिया जाता है। तुम पर झूठ बोलने का आरोप लगा है; जितना हो सके, मेरे सामने अपना बचाव करो। जो कुछ भी तुम्हें याद है, वही कहो; लेकिन कुछ भी जोड़ो मत और कुछ भी बढ़ा-चढ़ाकर मत बताओ।”

मैंने अपने मन ही मन ठान लिया था कि मैं पूरी तरह संयमित और सही रहूँगी; और कुछ मिनट सोचने के बाद, यह तय करने के लिए कि मुझे क्या कहना है, मैंने उसे अपने दुख भरे बचपन की पूरी कहानी सुना दी। भावनाओं से व्याकुल होने के कारण, मेरी भाषा सामान्य से अधिक संयमित थी, जब मैं उस दुखद विषय पर बात करती थी; और हेलेन की इस चेतावनी को ध्यान में रखते हुए कि मुझे आक्रोश को बढ़ावा नहीं देना चाहिए, मैंने कहानी में सामान्य से बहुत कम कड़वाहट और कटुता का प्रयोग किया। इस प्रकार संयमित और सरल होने के कारण, यह अधिक विश्वसनीय लग रही थी: मुझे लगा जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ती गई, मिस टेंपल ने मुझ पर पूरा विश्वास किया।

कहानी सुनाते समय मैंने श्री लॉयड का ज़िक्र किया था कि दौरे के बाद वे मुझसे मिलने आए थे; क्योंकि मैं लाल कमरे की उस भयानक घटना को कभी नहीं भूल पाया था; जिसका वर्णन करते समय मेरी उत्तेजना कुछ हद तक बेकाबू हो गई थी; क्योंकि श्रीमती रीड द्वारा मेरी क्षमा की गुहार को ठुकराकर मुझे दूसरी बार उस अंधेरे और डरावने कमरे में बंद कर देने पर मेरे दिल में उठी पीड़ा की वह सिहरन मेरी यादों में भी कम नहीं हो पाई थी।

मैंने अपनी बात समाप्त कर दी थी: मिस टेंपल कुछ मिनट तक चुपचाप मुझे देखती रहीं; फिर उन्होंने कहा—

“मैं मिस्टर लॉयड के बारे में कुछ जानता हूँ; मैं उन्हें पत्र लिखूंगा; यदि उनका जवाब आपके बयान से मेल खाता है, तो आप सार्वजनिक रूप से सभी आरोपों से बरी हो जाएंगी; जेन, मेरे लिए आप अब निर्दोष हैं।”

उसने मुझे चूमा, और मुझे अपने पास ही रखते हुए (जहाँ मैं खड़े रहने से पूरी तरह संतुष्ट था, क्योंकि मुझे उसके चेहरे, उसके वस्त्र, उसके एक-दो आभूषण, उसके सफेद माथे, उसके गुच्छेदार और चमकदार घुंघराले बालों और चमकती हुई काली आँखों को निहारने से एक बच्चे जैसा आनंद मिलता था), उसने हेलेन बर्न्स को संबोधित करना शुरू किया।

"हेलेन, आज रात कैसी हो? क्या आज तुम्हें बहुत खांसी हुई है?"

"मुझे नहीं लगता, महोदया।"

और आपके सीने में दर्द?

"यह थोड़ा बेहतर है।"

मिस टेंपल उठीं, अपना हाथ लिया और अपनी नब्ज़ जाँची; फिर अपनी सीट पर लौट आईं: जैसे ही वह बैठीं, मैंने उनकी एक हल्की सी आह सुनी। कुछ मिनटों तक वह सोच में डूबी रहीं, फिर खुद को संभालते हुए उन्होंने प्रसन्नता से कहा—

“लेकिन आज रात तुम दोनों मेरे मेहमान हो; मुझे तुम्हारे साथ मेहमानों जैसा ही व्यवहार करना चाहिए।” उसने अपनी घंटी बजाई।

“बारबरा,” उसने दरवाजा खोलने वाली नौकरानी से कहा, “मैंने अभी तक चाय नहीं पी है; ट्रे लाओ और इन दोनों युवतियों के लिए कप लगा दो।”

और थोड़ी ही देर में एक ट्रे लाई गई। आग के पास छोटी गोल मेज पर रखे चीनी मिट्टी के प्याले और चमकीली चायदानी मेरी आँखों को कितनी सुंदर लग रही थीं! पेय

की भाप कितनी सुगंधित थी, और टोस्ट की खुशबू! हालाँकि, मुझे निराशा हुई (क्योंकि मुझे भूख लगने लगी थी) कि मैं उसका बहुत छोटा सा हिस्सा ही चख पाई: मिस टेंपल ने भी यही देखा।

“बारबरा,” उसने कहा, “क्या तुम थोड़ी और रोटी और मक्खन नहीं ला सकतीं? तीन लोगों के लिए पर्याप्त नहीं है।”

बारबरा बाहर गई: वह जल्द ही लौट आई।

"मैडम, श्रीमती हार्डन का कहना है कि उन्होंने हमेशा की तरह उतनी ही मात्रा भेज दी है।"

यह ध्यान देने योग्य है कि श्रीमती हार्डन गृहस्वामी थीं: एक ऐसी महिला जो श्री ब्रॉकलहर्स्ट के बिल्कुल अनुरूप थीं, जो व्हेल की हड्डी और लोहे के समान भागों से बनी थीं।

“ओह, बहुत खूब!” मिस टेंपल ने जवाब दिया; “मुझे लगता है कि हमें इसी से काम चलाना होगा, बारबरा।” और जब लड़की चली गई तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, “सौभाग्य से, इस बार मैं कमियों को पूरा कर सकती हूँ।”

हेलेन और मुझे मेज के पास आने के लिए आमंत्रित करने के बाद, और हम दोनों के सामने एक-एक कप चाय और टोस्ट का एक स्वादिष्ट लेकिन पतला टुकड़ा रखने के बाद, वह उठी, एक दराज का ताला खोला, और उसमें से कागज में लिपटा हुआ एक पार्सल निकालकर, हमारी आंखों के सामने एक अच्छे आकार का सीड-केक प्रकट किया।

“मैं आप सभी को इसमें से थोड़ा-थोड़ा अपने साथ ले जाने के लिए देना चाहती थी,” उसने कहा, “लेकिन टोस्ट बहुत कम है, इसलिए आपको इसे अभी खाना होगा,” और उसने उदारतापूर्वक अपने हाथ से टोस्ट के टुकड़े काटने शुरू कर दिए।

उस शाम हमने अमृत और पवित्र भोज का आनंद लिया; और उस दावत का सबसे सुखद पहलू वह संतुष्टि भरी मुस्कान थी जिसके साथ हमारी मेज़बान ने हमें देखा, जब हमने उसके द्वारा उदारतापूर्वक परोसे गए स्वादिष्ट भोजन से अपनी भूख मिटाई।

चाय खत्म होने और ट्रे हटाए जाने के बाद, उसने हमें फिर से आग के पास बुलाया; हम उसके दोनों ओर बैठ गए, और अब उसके और हेलेन के बीच बातचीत शुरू हुई, जिसे सुनने का मौका मिलना वास्तव में एक सौभाग्य की बात थी।

मिस टेंपल के हावभाव में हमेशा एक शांत, गरिमामय और शालीन भाषा का भाव

रहता था, जो उन्हें कभी भी भावुक, उत्तेजित या उत्सुक नहीं होने देता था: यह भाव उनके प्रति श्रद्धा की भावना से उन लोगों के आनंद को नियंत्रित करता था जो उन्हें देखते और सुनते थे; और अब मेरी भी यही भावना थी: लेकिन हेलेन बर्न्स के बारे में सुनकर मैं आश्चर्यचकित रह गया।

ताज़गी भरा भोजन, जलती हुई शानदार आग, अपनी प्रिय शिक्षिका की उपस्थिति और स्नेह, या शायद इन सबसे बढ़कर, उसके अपने अनूठे मन में कुछ ऐसा था जिसने उसकी आंतरिक शक्तियों को जगा दिया था। वे जागृत हुईं, प्रज्वलित हुईं: पहले, वे उसके गालों की चमक में दमक उठीं, जिन्हें मैंने इस समय तक केवल पीला और निर्जीव ही देखा था; फिर वे उसकी आँखों की तरल चमक में जगमगा उठीं, जिन्होंने अचानक मिस टेंपल की सुंदरता से भी कहीं अधिक विलक्षण सुंदरता प्राप्त कर ली थी - ऐसी सुंदरता जो न तो कोमल रंग की थी, न लंबी पलकों की, न ही सँवारी हुई भौंहों की, बल्कि अर्थ, गति और दीप्ति की थी। फिर उसकी आत्मा उसके होठों पर आ गई, और शब्द बहने लगे, जिसका स्रोत मैं नहीं बता सकता। क्या चौदह वर्ष की लड़की का हृदय इतना विशाल, इतना सशक्त हो सकता है कि वह शुद्ध, पूर्ण, जोशीली वाक्पटुता के उफान को धारण कर सके? उस शाम, जो मेरे लिए अविस्मरणीय थी, हेलेन के भाषण की यही विशेषता थी; ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसकी आत्मा एक बहुत ही संक्षिप्त समय में उतना ही जीना चाहती हो जितना कि कई लोग एक लंबे जीवन में जीते हैं।

उन्होंने उन चीजों के बारे में बातें कीं जिनके बारे में मैंने कभी नहीं सुना था; राष्ट्रों और बीते समय के बारे में; दूर देशों के बारे में; प्रकृति के उन रहस्यों के बारे में जिन्हें खोजा गया था या जिनका अनुमान लगाया गया था: उन्होंने किताबों के बारे में बात की: उन्होंने कितनी किताबें पढ़ी थीं! उनके पास ज्ञान का कितना भंडार था! फिर वे फ्रांसीसी नामों और फ्रांसीसी लेखकों से इतने परिचित लग रहे थे: लेकिन मेरा आश्चर्य तब चरम पर पहुँच गया जब मिस टेंपल ने हेलेन से पूछा कि क्या वह कभी अपने पिता द्वारा सिखाई गई लैटिन को याद करने के लिए थोड़ा समय निकालती है, और शेल्फ से एक किताब निकालकर उसे वर्जिल का एक पृष्ठ पढ़ने और उसका अर्थ समझाने के लिए कहा; और हेलेन ने आज्ञा का पालन किया, हर पंक्ति को पढ़ते हुए मेरे मन में श्रद्धा का भाव बढ़ता गया। उसके समाप्त करने से पहले ही सोने का समय हो गया! कोई देरी नहीं हो सकती थी; मिस टेंपल ने हम दोनों को गले लगाया, और

हमें अपने हृदय से लगाते हुए कहा—

“भगवान आप सभी बच्चों को आशीर्वाद दें!”

हेलेन को उसने मुझसे थोड़ी देर ज़्यादा देर तक थामे रखा: उसने उसे ज़्यादा अनिच्छा से जाने दिया; उसकी नज़र हेलेन का ही पीछा करते हुए दरवाजे तक गई; उसी के लिए उसने दूसरी बार एक उदास आह भरी; उसी के लिए उसने अपने गाल से एक आंसू पोंछा।

बेडरूम में पहुँचते ही हमें मिस स्केचर्ड की आवाज़ सुनाई दी: वह दराजों की जाँच कर रही थीं; उन्होंने अभी-अभी हेलेन बर्न्स की दराज निकाली थी, और जब हम अंदर आए तो हेलेन का स्वागत एक तीखी फटकार के साथ हुआ, और उसे बताया गया कि कल उसके कंधे पर अव्यवस्थित ढंग से तह किए गए आधे दर्जन कपड़े पिन से टांगे जाने चाहिए।

"मेरा सामान सचमुच शर्मनाक तरीके से अस्त-व्यस्त था," हेलेन ने धीमी आवाज में मुझसे कहा। "मैंने इसे व्यवस्थित करने का इरादा किया था, लेकिन मैं भूल गई।"

अगली सुबह, मिस स्केचर्ड ने गत्ते के एक टुकड़े पर बड़े अक्षरों में "गंदी औरत" लिखा और उसे एक ताबीज की तरह हेलेन के बड़े, सौम्य, बुद्धिमान और दयालु दिखने वाले माथे पर बांध दिया। हेलेन ने उसे शाम तक धैर्यपूर्वक, बिना किसी नाराजगी के पहने रखा, मानो वह उसे एक उचित दंड समझ रही हो। दोपहर की स्कूल की छुट्टी के बाद जैसे ही मिस स्केचर्ड चली गईं, मैं दौड़कर हेलेन के पास गई, उसे फाड़कर आग में फेंक दिया: वह क्रोध जिसे वह व्यक्त नहीं कर सकती थी, पूरे दिन मेरे मन में जल रहा था, और गर्म, बहते आँसू लगातार मेरे गालों को झुलसा रहे थे; क्योंकि उसकी उदास स्वीकृति का दृश्य मेरे हृदय में असहनीय पीड़ा दे रहा था।

ऊपर वर्णित घटनाओं के लगभग एक सप्ताह बाद, मिस टेंपल, जिन्होंने मिस्टर लॉयड को पत्र लिखा था, को उनका उत्तर मिला: ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने जो कहा वह मेरे विवरण की पुष्टि करता है। मिस टेंपल ने पूरे स्कूल को इकट्ठा करके घोषणा की कि जेन आयर के खिलाफ लगाए गए आरोपों की जांच की गई है, और उन्हें यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि वह सभी आरोपों से पूरी तरह बरी हो गई हैं। तब शिक्षकों ने मुझसे हाथ मिलाया और मुझे चूमा, और मेरे साथियों के बीच खुशी की एक हल्की सी गूंज फैल गई।

इस प्रकार एक भारी बोझ से मुक्त होकर, मैंने उसी क्षण से नए सिरे से काम शुरू

किया, हर कठिनाई को पार करते हुए अपना रास्ता खुद बनाने का संकल्प लिया: मैंने कड़ी मेहनत की, और मेरी सफलता मेरे प्रयासों के अनुरूप थी; मेरी स्मृति, जो स्वभाव से दृढ़ नहीं थी, अभ्यास से सुधर गई; अभ्यास ने मेरी बुद्धि को तेज किया; कुछ ही हफ्तों में मुझे उच्च कक्षा में पदोन्नत कर दिया गया; दो महीने से भी कम समय में मुझे फ्रेंच और चित्रकला शुरू करने की अनुमति मिल गई। मैंने क्रिया 'एत्रे' के पहले दो काल सीखे, और उसी दिन अपनी पहली कुटिया का रेखाचित्र बनाया (जिसकी दीवारें, संयोगवश, पीसा की झुकी हुई मीनार की दीवारों से भी अधिक ढलान वाली थीं)। उस रात, बिस्तर पर जाते समय, मैं कल्पना में गर्म भुने हुए आलू, या सफेद रोटी और ताजे दूध के बर्मेसाइड रात्रिभोज की तैयारी करना भूल गया, जिससे मैं अपनी आंतरिक इच्छाओं को शांत करता था: इसके बजाय मैंने अंधेरे में दिखाई देने वाले आदर्श चित्रों के दृश्य का आनंद लिया; ये सब मेरे अपने हाथों की रचनाएँ थीं: पेंसिल से उकेरे गए घर और पेड़, मनमोहक चट्टानें और खंडहर, कुयप जैसे मवेशियों के झुंड, खिले हुए गुलाबों पर मंडराती तितलियों के प्यारे चित्र, पके चेरी से फल चुगते पक्षियों के चित्र, मोती जैसे अंडों से घिरे चिड़ियों के घोंसले, जो युवा आइवी की टहनियों से घिरे थे। मैंने मन ही मन इस संभावना पर भी विचार किया कि क्या मैं मैडम पियरोट द्वारा उस दिन दिखाई गई एक छोटी सी फ्रांसीसी कहानी का अनुवाद कर पाऊँगी; और यह समस्या भी मेरी संतुष्टि के अनुसार हल नहीं हुई, जब तक कि मैं मीठी नींद में नहीं सो गई।

सुलैमान ने बिल्कुल सही कहा है - "जहां प्रेम हो, वहां जड़ी-बूटियों का भोजन करना, रुके हुए बैल और उसके साथ घृणा करने से बेहतर है।"

मैं अब लोवुड की तमाम कठिनाइयों को गेट्सहेड और उसकी रोजमर्रा की विलासिता से बदलना नहीं चाहूंगा।

अध्याय 9

लेकिन लोवुड की तंगी, या यूँ कहें कि परेशानियाँ कम होने लगीं। बसंत का मौसम आ चुका था; सर्दियों की ठंड थम गई थी; बर्फ पिघल चुकी थी, और तेज़ हवाएँ शांत हो गई थीं। जनवरी की ठंडी हवा से छिलकर सूज गए मेरे पैर, अप्रैल की हल्की हवा में ठीक होने लगे; कनाडा की ठंड से रातें और सुबहें अब हमारी नसों में खून नहीं जमाती थीं; अब हम बगीचे में खेलने का समय सह सकते थे: कभी-कभी धूप वाले दिन मौसम सुहावना और खुशनुमा हो जाता था, और उन भूरी क्यारियों पर हरियाली छा जाती थी, जो रोज़ाना ताज़ा होकर यह एहसास दिलाती थी कि आशा रात में उन पर चलती है और हर सुबह अपने कदमों के निशान छोड़ जाती है। पत्तियों के बीच से फूल झाँकने लगे; स्नो-ड्रॉप्स, क्रोकस, बैंगनी ऑरिकुला और सुनहरी आँखों वाले पैंसी। गुरुवार की दोपहर (आधे अवकाश के दिनों में) हम अब टहलने जाते थे, और रास्ते के किनारे, झाड़ियों के नीचे और भी सुंदर फूल खिलते हुए पाते थे।

मैंने यह भी पाया कि एक महान आनंद, एक ऐसा सुख जिसकी सीमाएँ क्षितिज तक ही सीमित थीं, हमारे बगीचे की ऊँची और नुकीली दीवारों के ठीक बाहर मौजूद था: यह आनंद विशाल पहाड़ी घाटी को घेरे हुए भव्य शिखरों के दृश्य में निहित था, जो हरियाली और छाया से भरपूर थी; एक उज्ज्वल नाले में, जो गहरे पत्थरों और चमकते भंवरों से भरा था। यह दृश्य कितना अलग दिखता था जब मैंने इसे सर्दियों के बर्फीले आकाश के नीचे देखा था, जो पाले से जमा हुआ था, बर्फ से ढका हुआ था! — जब मौत जैसी ठंडी धुंध पूर्वी हवाओं के आवेग में उन बैंगनी चोटियों के साथ बहती थी, और नीचे लुढ़कती हुई नाले की जमी हुई धुंध में मिल जाती थी! वह नाला तब एक प्रचंड धारा थी, मैली और बेकाबू: यह जंगल को चीर देती थी, और हवा में एक गरजती हुई ध्वनि भेजती थी, जो अक्सर जंगली बारिश या घूमती हुई ओलों से घनी हो जाती थी; और इसके किनारों पर स्थित जंगल केवल कंकालों की कतारें ही दिखाता था।

अप्रैल से मई का महीना शुरू हुआ: एक उज्ज्वल, शांत मई का महीना; नीले आसमान, शांत धूप और हल्की पश्चिमी या दक्षिणी हवाओं से भरा हुआ। अब वनस्पति पूरी तरह से विकसित हो गई थी; लोवुड ने अपने घने बालों को बिखेर दिया; वह पूरी तरह से हरा-भरा और फूलों से लदा हो गया; उसके विशाल एल्म, ऐश और ओक के ढांचे फिर से जीवंत हो उठे; जंगल के पौधे उसकी गुफाओं में बहुतायत से उग

आए; अनगिनत प्रकार की काई ने उसके खोखले हिस्सों को भर दिया, और उसने अपने जंगली प्रिमरोज़ पौधों की बहुतायत से एक अनोखी ज़मीनी धूप बना दी: मैंने छायादार स्थानों में उनके हल्के सुनहरे रंग को सबसे मधुर चमक के बिखराव की तरह चमकते देखा है। मैंने इन सबका भरपूर आनंद लिया, स्वतंत्र रूप से, बिना किसी की निगरानी के और लगभग अकेले: इस असाधारण स्वतंत्रता और आनंद का एक कारण था, जिसकी ओर अब मेरा ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है।

क्या मैंने किसी निवास स्थान के लिए एक रमणीय स्थल का वर्णन नहीं किया है, जब मैं इसे पहाड़ियों और जंगलों से घिरा हुआ और एक नदी के किनारे से ऊपर उठता हुआ बताता हूँ? निःसंदेह, काफी रमणीय है: लेकिन क्या यह स्वास्थ्यकर है या नहीं, यह एक अलग प्रश्न है।

वह वन-घाटी, जहाँ लोवुड स्थित था, कोहरे और कोहरे से उत्पन्न महामारी का उद्गम स्थल था; जो वसंत ऋतु के साथ तेज़ी से फैलते हुए अनाथालय में प्रवेश कर गया, उसके भीड़ भरे विद्यालय कक्ष और छात्रावास में टाइफस फैला दिया, और मई के आने से पहले ही उस आश्रम को एक अस्पताल में बदल दिया।

अर्ध-भुखमरी और सर्दी-जुकाम की अनदेखी के कारण अधिकांश छात्राएँ संक्रमण की चपेट में आ गईं: अस्सी में से पैंतालीस लड़कियाँ एक ही समय में बीमार पड़ी रहीं। कक्षाएँ स्थगित कर दी गईं, नियमों में ढील दी गई। जो कुछ लड़कियाँ स्वस्थ थीं, उन्हें लगभग असीमित छूट दी गई; क्योंकि चिकित्सक ने उन्हें स्वस्थ रखने के लिए नियमित व्यायाम की आवश्यकता पर ज़ोर दिया था: और अगर ऐसा न होता, तो किसी के पास उनकी देखभाल करने या उन्हें नियंत्रित करने का समय नहीं होता। मिस टेंपल का पूरा ध्यान रोगियों पर केंद्रित था: वह बीमारों के कमरे में ही रहती थीं, रात में कुछ घंटों के आराम के अलावा कभी बाहर नहीं निकलती थीं। शिक्षक उन लड़कियों के प्रस्थान के लिए सामान पैक करने और अन्य आवश्यक तैयारियाँ करने में पूरी तरह से व्यस्त थे, जो सौभाग्य से अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ संक्रमण के केंद्र से बाहर निकलने में सक्षम और इच्छुक थीं। कई लड़कियाँ, जो पहले से ही संक्रमित थीं, घर गईं और वहीं उनकी मृत्यु हो गई: कुछ की मृत्यु स्कूल में ही हो गई, और बीमारी की प्रकृति के कारण देरी की अनुमति न होने के कारण उन्हें चुपचाप और जल्दी से दफना दिया गया।

जब लोवुड में बीमारी घर कर चुकी थी और मौत वहाँ बार-बार आती थी; जब वहाँ

उदासी और भय का माहौल छाया हुआ था; जब उसके कमरे और गलियारे अस्पताल जैसी गंध से भरे हुए थे, दवाइयाँ और गोलियाँ मृत्यु के प्रकोप को दूर करने की व्यर्थ कोशिश कर रही थीं, तब भी मई का वह चमकीला महीना बाहर की ऊँची पहाड़ियों और सुंदर जंगलों पर निर्मल चमक रहा था। उसका बगीचा भी फूलों से जगमगा रहा था: हॉलीहॉक पेड़ जितने ऊँचे उग आए थे, लिली खिल चुकी थीं, ट्यूलिप और गुलाब खिले हुए थे; छोटी-छोटी क्यारियों की सीमाएँ गुलाबी थ्रिफ्ट और गहरे लाल रंग के डबल डेज़ी से सजी हुई थीं; स्वीटब्रियर सुबह-शाम अपनी मसालों और सेबों जैसी सुगंध बिखेर रहे थे; और लोवुड के अधिकांश निवासियों के लिए ये सुगंधित खजाने किसी काम के नहीं थे, सिवाय कभी-कभार ताबूत में रखने के लिए मुट्ठी भर जड़ी-बूटियाँ और फूल देने के।

लेकिन मैं और बाकी सब जो ठीक-ठाक थे, उस दृश्य और मौसम की सुंदरता का भरपूर आनंद लेते रहे; वे हमें सुबह से शाम तक बंजारों की तरह जंगल में घूमने देते थे; हम जो चाहते थे वो करते थे, जहाँ चाहते थे वहाँ जाते थे: हमारा जीवन भी बेहतर हो गया था। श्री ब्रॉकलहर्स्ट और उनका परिवार अब लोवुड के पास कभी नहीं आते थे: घर के मामलों की कोई छानबीन नहीं होती थी; गुस्सैल गृहणी जा चुकी थी, संक्रमण के डर से उसे भगा दिया गया था; उसकी जगह लेने वाली, जो लोटन डिस्पेंसरी में मैट्रन थी, अपने नए घर के तौर-तरीकों से अपरिचित होने के कारण, अपेक्षाकृत उदारता से पेश आती थी। इसके अलावा, खाने-पीने का बोझ भी कम हो गया था; बीमार लोग कम खा पाते थे; हमारे नाश्ते के बर्तन पहले से भरे रहते थे; जब नियमित भोजन तैयार करने का समय नहीं होता था, जो अक्सर होता था, तो वह हमें ठंडी पाई का एक बड़ा टुकड़ा या ब्रेड और पनीर का एक मोटा टुकड़ा देती थी, जिसे हम अपने साथ जंगल में ले जाते थे, जहाँ हममें से हर कोई अपनी पसंद की जगह चुनता था और शानदार भोजन करता था।

मेरी पसंदीदा जगह एक चिकना और चौड़ा पत्थर था, जो नाले के ठीक बीच से ऊपर उठा हुआ, सफ़ेद और सूखा था, और वहाँ तक पहुँचने के लिए पानी में से होकर जाना पड़ता था; यह कारनामा मैंने नंगे पैर किया। पत्थर इतना चौड़ा था कि उस पर एक और लड़की और मैं आराम से बैठ सकती थीं; उस समय मेरी चुनी हुई साथी मैरी एन विल्सन थी; एक चतुर और समझदार महिला, जिसकी संगति में मुझे आनंद आता था, आंशिक रूप से इसलिए कि वह हाजिरजवाब और मौलिक थी, और आंशिक रूप

से इसलिए कि उसका व्यवहार मुझे सहज महसूस कराता था। मुझसे कुछ साल बड़ी होने के कारण, वह दुनियादारी में मुझसे कहीं अधिक माहिर थी और मुझे कई ऐसी बातें बता सकती थी जो मुझे सुनना पसंद था: उसके साथ मेरी जिज्ञासा शांत होती थी: मेरी कमियों को भी वह भरपूर सहन करती थी, कभी भी मेरी किसी बात पर रोक नहीं लगाती थी। उसे कहानी सुनाने का शौक था, मुझे विश्लेषण करने का; उसे जानकारी देना पसंद था, मुझे सवाल पूछना; इसलिए हम दोनों की आपस में खूब बनती थी, और हम दोनों को अपने मेलजोल से बहुत मनोरंजन मिलता था, भले ही हमें कोई खास सीख न मिली हो।

और इस बीच हेलेन बर्न्स कहाँ थीं? मैंने आज़ादी के ये सुहावने दिन उनके साथ क्यों नहीं बिताए? क्या मैं उन्हें भूल गया था? या मैं इतना निकम्मा हो गया था कि उनकी पवित्र संगति से ऊब गया था? मैंने जिस मैरी एन विल्सन का ज़िक्र किया है, वह मेरी पहली परिचित से कहीं कमतर थीं: वह मुझे केवल मनोरंजक कहानियाँ सुना सकती थीं और मेरी चटपटी और तीखी गपशप का जवाब दे सकती थीं; जबकि, अगर मैंने हेलेन के बारे में सच कहा है, तो वह उन लोगों को, जिन्हें उनसे बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त होता था, कहीं अधिक उच्च कोटि की चीज़ों का स्वाद चखाने में सक्षम थीं।

सच है, पाठक; और मैं यह जानता और महसूस करता था: और यद्यपि मैं एक अपूर्ण प्राणी हूँ, जिसमें अनेक दोष हैं और कुछ ही गुण, फिर भी मैं हेलेन बर्न्स से कभी नहीं ऊबा; और न ही उसके प्रति मेरा स्नेह कभी कम हुआ, उतना ही प्रबल, कोमल और सम्मानजनक जितना मेरे हृदय में कभी रहा है। भला ऐसा क्यों न होता, जब हेलेन ने हर समय और हर परिस्थिति में मेरे प्रति एक शांत और निष्ठावान मित्रता दिखाई, जिसे कभी भी दुर्भावना ने नहीं तोड़ा, न ही कभी चिढ़ ने परेशान किया? लेकिन हेलेन इस समय बीमार थी: कुछ हफ्तों से वह मेरी नज़रों से ओझल थी, पता नहीं ऊपर के किस कमरे में। मुझे बताया गया कि वह बुखार के रोगियों वाले अस्पताल के हिस्से में नहीं थी; क्योंकि उसकी बीमारी तपेदिक थी, टाइफस नहीं: और तपेदिक से, अपनी अज्ञानता में, मैंने एक ऐसी बीमारी समझी जो हल्की थी, जिसे समय और देखभाल से ठीक किया जा सकता था।

इस बात से मेरा यह विचार और भी पुख्ता हो गया कि वह एक-दो बार बहुत गर्म और धूप वाली दोपहरों में नीचे आई और मिस टेंपल उसे बगीचे में ले गईं; लेकिन इन

मौकों पर मुझे उसके पास जाकर बात करने की अनुमति नहीं थी; मैंने उसे केवल स्कूल के कमरे की खिड़की से देखा, और वह भी ठीक से नहीं; क्योंकि वह बहुत ज्यादा ढकी हुई थी और बरामदे के नीचे थोड़ी दूरी पर बैठी थी।

जून की शुरुआत में एक शाम, मैं मैरी ऐन के साथ जंगल में बहुत देर तक बाहर रहा; हमेशा की तरह, हम बाकी लोगों से अलग हो गए थे और बहुत दूर भटक गए थे; इतना दूर कि हम रास्ता भटक गए और एक सुनसान झोपड़ी में जाकर रास्ता पूछना पड़ा, जहाँ एक पुरुष और महिला रहते थे, जो जंगल में उगने वाले मेवे खाने वाले अर्ध-जंगली सूअरों के झुंड की देखभाल करते थे। जब हम वापस लौटे, तो चाँद निकल चुका था: एक टट्टू, जिसे हम सर्जन का जानते थे, बगीचे के दरवाजे पर खड़ा था। मैरी ऐन ने कहा कि उसे लगता है कि कोई बहुत बीमार होगा, क्योंकि मिस्टर बेट्स को शाम के उस समय बुलाया गया था। वह घर के अंदर चली गई; मैं कुछ मिनट रुका और अपने बगीचे में जंगल से खोदी गई कुछ जड़ों को लगाया, जिन्हें मुझे डर था कि अगर मैं सुबह तक छोड़ देता तो वे मुरझा जातीं। यह करने के बाद, मैं थोड़ी देर और रुका रहा: ओस गिरने पर फूलों से मीठी खुशबू आ रही थी; वह कितनी सुहावनी शाम थी, कितनी शांत, कितनी गर्म; पश्चिम की अभी भी चमकती रोशनी कल के एक और सुहावने दिन का वादा कर रही थी; पूर्व के गंभीर आकाश में चंद्रमा बड़ी शान से उदय हो रहा था। मैं इन चीजों को देख रहा था और एक बच्चे की तरह इनका आनंद ले रहा था, तभी मेरे मन में एक विचार आया जो पहले कभी नहीं आया था: —

"बीमारी के बिस्तर पर लेटे रहना और मृत्यु के कगार पर होना कितना दुखद है! यह दुनिया कितनी सुखद है – इससे बिछड़ जाना और न जाने कहाँ जाना कितना भयावह होगा?"

फिर मेरे मन ने स्वर्ग और नरक के विषय में जो कुछ उसमें समाहित किया गया था, उसे समझने का पहला गंभीर प्रयास किया; और पहली बार वह स्तब्ध रह गया; और पहली बार पीछे, चारों ओर और आगे देखते हुए, उसने चारों ओर एक अथाह खाई देखी: उसने उस एक बिंदु को महसूस किया जहाँ वह खड़ा था - वर्तमान; बाकी सब आकारहीन बादल और खाली गहराई थी; और उस अराजकता में लड़खड़ाने और डूबने के विचार से वह कांप उठा। इस नए विचार पर चिंतन करते हुए, मैंने सामने का दरवाजा खुलते सुना; श्री बेट्स बाहर आए, और उनके साथ एक नर्स थी। उन्हें घोड़े

पर सवार होकर जाते देख, वह दरवाजा बंद करने ही वाली थी, लेकिन मैं दौड़कर उसके पास गया।

हेलेन बर्न्स कैसी हैं?

जवाब था, "बहुत खराब।"

"क्या मिस्टर बेट्स उसी से मिलने गए थे?"

"हाँ।"

और वह उसके बारे में क्या कहता है?

"उनका कहना है कि वह यहां ज्यादा देर नहीं रहेंगी।"

कल मेरे कानों में कहे गए इस वाक्य से केवल यही आभास होता कि उसे नॉर्थम्बरलैंड में उसके अपने घर ले जाया जा रहा है। मुझे यह संदेह नहीं था कि इसका अर्थ उसकी मृत्यु है; परन्तु अब मैं तुरंत समझ गया! मेरे मन में यह बात स्पष्ट हो गई कि हेलेन बर्न्स इस संसार में अपने अंतिम दिन गिन रही है, और उसे आत्माओं के लोक में ले जाया जा रहा है, यदि ऐसा कोई लोक होता है। मुझे भय का एक गहरा आघात लगा, फिर दुःख की एक तीव्र लहर दौड़ गई, फिर उसे देखने की एक तीव्र इच्छा - एक आवश्यकता सी महसूस हुई; और मैंने पूछा कि वह किस कमरे में लेटी है।

“वह मिस टेंपल के कमरे में हैं,” नर्स ने कहा।

"क्या मैं ऊपर जाकर उनसे बात कर सकता हूँ?"

“अरे नहीं, बच्चे! ऐसा होने की संभावना नहीं है; और अब तुम्हारे अंदर आने का समय हो गया है; अगर तुम ओस गिरते समय बाहर रुके रहे तो तुम्हें बुखार हो जाएगा।”

नर्स ने सामने का दरवाजा बंद कर दिया; मैं बगल वाले दरवाजे से अंदर गया जो कक्षा की ओर जाता था: मैं बिल्कुल सही समय पर पहुंचा; नौ बज रहे थे, और मिस मिलर विद्यार्थियों को सोने के लिए बुला रही थीं।

लगभग दो घंटे बाद, शायद ग्यारह बजे के आसपास, मैं सो नहीं पा रही थी और छात्रावास की पूर्ण शांति को देखकर मुझे लगा कि मेरे साथी गहरी नींद में सो रहे हैं। मैं धीरे से उठी, नाइट ड्रेस के ऊपर फ्रॉक पहनी और बिना जूतों के कमरे से बाहर निकलकर मिस टेंपल के कमरे की तलाश में चल पड़ी। कमरा घर के बिल्कुल दूसरे छोर पर था; लेकिन मुझे रास्ता पता था; और साफ आसमान वाली गर्मियों की

चाँदनी, जो गलियारे की खिड़कियों से आती हुई दिखाई दे रही थी, ने मुझे उसे आसानी से ढूंढने में मदद की। कपूर और जले हुए सिरके की गंध ने मुझे बुखार वाले कमरे के पास आते ही आगाह कर दिया: और मैं जल्दी से उसके दरवाजे से अंदर चली गई, इस डर से कि कहीं रात भर जागती रहने वाली नर्स मुझे सुन न ले। मुझे पकड़े जाने और वापस भेजे जाने का डर था; क्योंकि मुझे हेलेन को देखना था, मुझे मरने से पहले उसे गले लगाना था, मुझे उसे आखिरी बार चूमना था, उससे आखिरी बार बात करनी थी।

सीढ़ियों से नीचे उतरकर, घर के निचले हिस्से को पार करते हुए, मैंने बिना शोर किए दो दरवाज़े खोलने और बंद करने में सफलता प्राप्त की और फिर सीढ़ियों की एक और सीढ़ी पर पहुँचा; मैं उस पर चढ़ा और ठीक मेरे सामने मिस टेंपल का कमरा था। चाबी के छेद से और दरवाज़े के नीचे से हल्की रोशनी आ रही थी; चारों ओर गहरी खामोशी छाई हुई थी। पास जाकर मैंने देखा कि दरवाज़ा थोड़ा खुला हुआ था; शायद बीमारी के इस तंग कमरे में ताज़ी हवा आने देने के लिए। संकोच करने की इच्छा न रखते हुए, और अधीर आवेगों से भरा हुआ - आत्मा और इंद्रियाँ तीव्र पीड़ा से कांप रही थीं - मैंने दरवाज़ा वापस बंद कर दिया और अंदर देखा। मेरी नज़र हेलेन को ढूंढ रही थी, और मुझे मृत्यु का डर सता रहा था।

मिस टेंपल के बिस्तर के पास, सफेद पर्दों से आधा ढका हुआ, एक छोटा सा पालना रखा था। कपड़ों के नीचे मुझे एक आकृति की हल्की सी झलक दिखाई दी, लेकिन चेहरा पर्दों से छिपा हुआ था: बगीचे में जिस नर्स से मैंने बात की थी, वह आरामकुर्सी पर सो रही थी; मेज पर एक बुझी हुई मोमबत्ती धीमी-धीमी जल रही थी। मिस टेंपल कहीं दिखाई नहीं दे रही थीं: मुझे बाद में पता चला कि उन्हें बुखार वाले कमरे में एक बेहोश मरीज के पास बुलाया गया था। मैं आगे बढ़ा; फिर पालने के पास रुक गया: मेरा हाथ पर्दे पर था, लेकिन मैंने उसे हटाने से पहले बोलना बेहतर समझा। मुझे अभी भी एक लाश देखने के डर से कंपकंपी छूट रही थी।

“हेलेन!” मैंने धीरे से फुसफुसाते हुए कहा, “क्या तुम जाग रही हो?”

उसने खुद को संभाला, पर्दा वापस लगाया, और मैंने उसका चेहरा देखा, पीला, कमजोर, लेकिन काफी संयमित: वह इतनी कम बदली हुई लग रही थी कि मेरा डर तुरंत दूर हो गया।

“क्या यह तुम हो, जेन?” उसने अपनी कोमल आवाज में पूछा।

“ओह!” मैंने सोचा, “वह मरने वाली नहीं है; वे गलतफहमी में हैं: अगर वह मर रही होती तो वह इतनी शांति से बोल और दिख नहीं पाती।”

मैं उसके पालने पर चढ़ गया और उसे चूमा: उसका माथा ठंडा था, और उसका गाल भी ठंडा और पतला था, और उसका हाथ और कलाई भी वैसी ही थी; लेकिन वह हमेशा की तरह मुस्कुरा रही थी।

“जेन, तुम यहाँ क्यों आई हो? ग्यारह बज चुके हैं: मैंने कुछ मिनट पहले ही ग्यारह बजने की आवाज़ सुनी थी।”

“मैं तुमसे मिलने आया था, हेलेन: मैंने सुना था कि तुम बहुत बीमार हो, और तुमसे बात किए बिना मुझे नींद नहीं आई।”

"तो तुम मुझे अलविदा कहने आए हो: शायद तुम बिल्कुल सही समय पर आए हो।"

“क्या तुम कहीं जा रही हो, हेलेन? क्या तुम घर जा रही हो?”

"हाँ; मेरे लंबे समय से बसे घर में— मेरे आखिरी घर में।"

“नहीं, नहीं, हेलेन!” मैं घबराकर रुक गई। जब मैं अपने आँसू रोकने की कोशिश कर रही थी, तभी हेलेन को खांसी का दौरा पड़ा; हालाँकि, इससे नर्स नहीं जागी; खांसी रुकने के बाद, वह कुछ मिनटों तक थकी हुई सी लेटी रही; फिर उसने फुसफुसाते हुए कहा—

“जेन, तुम्हारे छोटे पैर नंगे हैं; लेट जाओ और मेरे रजाई से खुद को ढक लो।”

मैंने वैसा ही किया: उसने अपना हाथ मेरे ऊपर रख दिया, और मैं उसके करीब सिमट गया। काफी देर की चुप्पी के बाद, उसने फुसफुसाते हुए बोलना फिर शुरू किया—

“मैं बहुत खुश हूँ, जेन; और जब तुम्हें मेरी मृत्यु की खबर मिले, तो निश्चित रूप से शोक मत करना: शोक करने जैसा कुछ नहीं है। हम सबको एक दिन मरना है, और जो बीमारी मुझे ले जा रही है, वह कष्टदायी नहीं है; यह कोमल और धीरे-धीरे होने वाली है: मेरा मन शांत है। मेरे जाने का शोक मनाने वाला कोई नहीं है: मेरे केवल पिता हैं; और उनकी हाल ही में शादी हुई है, और उन्हें मेरी कमी महसूस नहीं होगी। कम उम्र में मरकर मैं बड़े कष्टों से बच जाऊँगी। मुझमें ऐसे गुण या प्रतिभाएँ नहीं थीं जिनसे मैं दुनिया में अच्छी तरह से अपना रास्ता बना पाती: मैं हमेशा गलतियाँ करती रहती।”

"लेकिन तुम कहाँ जा रही हो, हेलेन? क्या तुम देख सकती हो? क्या तुम्हें पता है?"

मुझे विश्वास है; मुझे आस्था है: मैं ईश्वर के पास जा रहा हूँ।

“ईश्वर कहाँ है? ईश्वर क्या है?”

“मेरे और आपके सृष्टिकर्ता, जो अपनी सृष्टि को कभी नष्ट नहीं करेंगे। मैं उनकी शक्ति पर पूर्णतः भरोसा करता हूँ और उनकी अच्छाई में पूरी तरह विश्वास रखता हूँ: मैं उस विशेष क्षण के आने का इंतजार कर रहा हूँ जो मुझे उनसे मिलाएगा, और उन्हें मेरे सामने प्रकट करेगा।”

"तो क्या आपको यकीन है, हेलेन, कि स्वर्ग जैसी कोई जगह है, और मरने के बाद हमारी आत्माएं वहां पहुंच सकती हैं?"

मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में एक अवस्था अवश्य होगी; मैं ईश्वर को दयालु मानता हूँ; मैं बिना किसी संशय के अपने अमर स्वरूप को उनके हवाले कर सकता हूँ। ईश्वर मेरे पिता हैं; ईश्वर मेरे मित्र हैं: मैं उनसे प्रेम करता हूँ; मुझे विश्वास है कि वे भी मुझसे प्रेम करते हैं।

"और क्या मैं मरने के बाद तुमसे फिर मिल पाऊंगा, हेलेन?"

"तुम भी उसी सुख के क्षेत्र में पहुँचोगी: निःसंदेह, उसी सर्वशक्तिमान, सार्वभौमिक पिता द्वारा तुम्हारा स्वागत किया जाएगा, प्रिय जेन।"

मैंने फिर सवाल किया, लेकिन इस बार सिर्फ मन में। “वह क्षेत्र कहाँ है? क्या उसका अस्तित्व है?” और मैंने हेलेन को और कसकर गले लगा लिया; वह मुझे पहले से कहीं अधिक प्यारी लग रही थी; मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं उसे जाने नहीं दे सकता; मैं अपना चेहरा उसकी गर्दन पर छिपाकर लेट गया। तभी उसने अत्यंत मधुर स्वर में कहा—

“मैं कितना आराम महसूस कर रहा हूँ! खाँसी के उस आखिरी दौरे ने मुझे थोड़ा थका दिया है; मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं सो जाऊँगा: लेकिन मुझे छोड़कर मत जाना, जेन; मुझे तुम्हारे पास रहना अच्छा लगता है।”

"मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगा, प्रिय हेलेन: कोई मुझे तुमसे दूर नहीं ले जा सकता।"

"क्या तुम्हें गर्मी लग रही है, प्रिय?"

"हाँ।"

शुभ रात्रि, जेन।

शुभ रात्रि, हेलेन।

उसने मुझे चूमा, मैंने उसे, और हम दोनों जल्द ही सो गए।

जब मैं जागा तो दिन हो चुका था: एक अजीब सी हलचल ने मुझे जगाया; मैंने ऊपर देखा; मैं किसी की बाहों में था; नर्स मुझे पकड़े हुए थी; वह मुझे गलियारे से होते हुए वापस छात्रावास ले जा रही थी। मुझे बिस्तर छोड़ने के लिए डांट नहीं पड़ी; लोगों के पास सोचने के लिए और भी बहुत कुछ था; मेरे कई सवालों का तब कोई जवाब नहीं दिया गया; लेकिन एक-दो दिन बाद मुझे पता चला कि मिस टेंपल जब सुबह-सुबह अपने कमरे में लौटीं तो उन्होंने मुझे छोटी सी पालने में लेटा हुआ पाया; मेरा चेहरा हेलेन बर्न्स के कंधे पर था, मेरी बाहें उनकी गर्दन के चारों ओर लिपटी हुई थीं। मैं सो रहा था, और हेलेन — मर चुकी थीं।

उनकी कब्र ब्रॉकलब्रिज चर्चयार्ड में है: उनकी मृत्यु के पंद्रह साल बाद तक यह केवल घास के टीले से ढकी हुई थी; लेकिन अब एक धूसर संगमरमर की पट्टिका उस स्थान को चिह्नित करती है, जिस पर उनका नाम और "रिसर्गम" शब्द अंकित है।

अध्याय X

अब तक मैंने अपने तुच्छ जीवन की घटनाओं का विस्तृत वर्णन किया है: अपने जीवन के पहले दस वर्षों को मैंने लगभग उतने ही अध्याय समर्पित किए हैं। लेकिन यह कोई नियमित आत्मकथा नहीं है। मैं स्मृति का उल्लेख केवल वहीं करता हूँ जहाँ मुझे पता है कि उसकी प्रतिक्रियाएँ कुछ हद तक रुचिकर होंगी; इसलिए अब मैं आठ वर्षों का समय लगभग मौन में व्यतीत कर रहा हूँ: केवल कुछ पंक्तियाँ ही संबंधों को जोड़े रखने के लिए पर्याप्त हैं।

जब टाइफस बुखार ने लोवुड में तबाही मचा दी, तो यह धीरे-धीरे वहां से गायब हो गया; लेकिन तब तक इसकी उग्रता और पीड़ितों की संख्या ने स्कूल की ओर जनता

का ध्यान आकर्षित कर लिया था। इस बीमारी के कारण की जांच की गई और धीरे-धीरे कई तथ्य सामने आए जिनसे जनता में भारी आक्रोश फैल गया। स्कूल का स्थान अस्वास्थ्यकर था; बच्चों के भोजन की मात्रा और गुणवत्ता; भोजन बनाने में इस्तेमाल किया जाने वाला खारा और दुर्गंधयुक्त पानी; विद्यार्थियों के दयनीय कपड़े और रहने की व्यवस्था — ये सभी बातें सामने आईं और इन खोजों का परिणाम श्री ब्रॉकलहर्स्ट के लिए बेहद निराशाजनक, लेकिन संस्थान के लिए लाभकारी साबित हुआ।

काउंटी के कई धनी और परोपकारी व्यक्तियों ने बेहतर स्थान पर अधिक सुविधाजनक भवन के निर्माण के लिए बड़ी धनराशि दान की; नए नियम बनाए गए; खान-पान और वस्त्रों में सुधार किए गए; विद्यालय के कोष का प्रबंधन एक समिति को सौंपा गया। श्री ब्रॉकलहर्स्ट, जो अपनी संपत्ति और पारिवारिक संबंधों के कारण महत्वपूर्ण थे, कोषाध्यक्ष के पद पर बने रहे; लेकिन उनके कर्तव्यों के निर्वहन में उन्हें अधिक उदार और सहानुभूतिपूर्ण मानसिकता वाले सज्जनों का सहयोग प्राप्त हुआ: निरीक्षक के रूप में भी उनका कार्यभार उन लोगों ने संभाला जो तर्क और सख्ती, आराम और मितव्ययिता, करुणा और ईमानदारी का सामंजस्य बिठाना जानते थे। इस प्रकार सुधरे हुए विद्यालय ने समय के साथ एक वास्तव में उपयोगी और प्रतिष्ठित संस्था का निर्माण किया। इसके पुनर्निर्माण के बाद मैं आठ वर्षों तक इसकी दीवारों के भीतर रहा: छह वर्ष छात्र के रूप में और दो वर्ष शिक्षक के रूप में; और दोनों ही भूमिकाओं में मैं इसके महत्व और उपयोगिता की गवाही देता हूँ।

इन आठ वर्षों के दौरान मेरा जीवन एकसमान रहा, लेकिन दुखी नहीं, क्योंकि यह निष्क्रिय नहीं था। मुझे उत्कृष्ट शिक्षा के साधन उपलब्ध थे; कुछ विषयों के प्रति लगाव और सभी में उत्कृष्टता प्राप्त करने की इच्छा, साथ ही अपने शिक्षकों, विशेषकर जिनसे मुझे प्रेम था, को प्रसन्न करने की प्रबल इच्छा ने मुझे प्रेरित किया: मैंने मुझे मिले सभी अवसरों का भरपूर लाभ उठाया। समय के साथ मैं प्रथम कक्षा की प्रथम छात्रा बनी; फिर मुझे शिक्षिका का पदभार सौंपा गया; जिसे मैंने दो वर्षों तक उत्साहपूर्वक निभाया, लेकिन उस अवधि के अंत में मेरा मन बदल गया।

सभी परिवर्तनों के बावजूद, मिस टेंपल अब तक सेमिनरी की अधीक्षक बनी रहीं: उन्हीं के मार्गदर्शन से मुझे अपनी अधिकांश शिक्षा प्राप्त हुई; उनकी मित्रता और संगति मेरे लिए निरंतर सहारा रही; उन्होंने मेरे लिए माँ, अनुशासिका और बाद में साथी की भूमिका निभाई। इसी दौरान उनका विवाह हो गया और वे अपने पति (एक

पादरी, एक उत्कृष्ट व्यक्ति, लगभग ऐसी पत्नी के योग्य) के साथ एक दूर के जिले में चली गईं, और इस प्रकार वे मुझसे बिछड़ गईं।

जिस दिन से वह चली गई, मैं पूरी तरह बदल गया: उसके साथ ही मेरे सारे सुकून, मेरी हर वो याद, हर वो रिश्ता जो लोवुड को किसी न किसी रूप में मेरा घर बना देता था, सब कुछ खो गया। मैंने उससे उसके स्वभाव का कुछ अंश और उसकी कई आदतें अपना ली थीं: अधिक सामंजस्यपूर्ण विचार: जो भावनाएँ पहले अधिक नियंत्रित लगती थीं, वे अब मेरे मन में घर कर चुकी थीं। मैंने कर्तव्य और व्यवस्था के आगे घुटने टेक दिए थे; मैं शांत हो गया था; मुझे लगता था कि मैं संतुष्ट हूँ: दूसरों की नज़रों में, और अक्सर खुद मेरी नज़रों में भी, मैं एक अनुशासित और शांत स्वभाव का व्यक्ति प्रतीत होता था।

लेकिन नियति, रेवरेंड मिस्टर नैस्मिथ के रूप में, मेरे और मिस टेंपल के बीच आ गई: मैंने उन्हें शादी समारोह के तुरंत बाद, यात्रा की पोशाक में एक डाक गाड़ी में बैठते देखा; मैंने गाड़ी को पहाड़ी पर चढ़ते और उसके शिखर के पार गायब होते देखा; और फिर अपने कमरे में लौट आया, और वहाँ उस अवसर के सम्मान में दी गई आधी छुट्टी का अधिकांश समय एकांत में बिताया।

मैं ज़्यादातर समय कमरे में इधर-उधर घूमता रहा। मैं बस अपने नुकसान पर अफ़सोस कर रहा था और सोच रहा था कि इसकी भरपाई कैसे की जाए; लेकिन जब मेरे विचार समाप्त हुए और मैंने ऊपर देखा तो पाया कि दोपहर बीत चुकी थी और शाम काफी आगे बढ़ चुकी थी, तब मुझे एक और बात समझ में आई, कि इस बीच मुझमें एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया हुई थी; कि मेरे मन ने मिस टेंपल से जो कुछ भी लिया था, उसे त्याग दिया था—या यूँ कहें कि वह अपने साथ वह शांत वातावरण ले गई थीं जिसमें मैं उनके आसपास रहकर साँस ले रहा था—और अब मैं अपने स्वाभाविक परिवेश में रह गया था और पुरानी भावनाओं के जागृत होने लगा था। ऐसा नहीं लग रहा था जैसे कोई सहारा छीन लिया गया हो, बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे कोई प्रेरणा ही चली गई हो: शांत रहने की शक्ति मुझसे दूर नहीं हुई थी, बल्कि शांति का कारण ही अब नहीं रहा था। मेरी दुनिया कुछ वर्षों से लोवुड में थी: मेरा अनुभव उसके नियमों और प्रणालियों का था; अब मुझे याद आया कि वास्तविक दुनिया विशाल है, और आशाओं और भय, संवेदनाओं और उत्तेजनाओं का एक विविध क्षेत्र उन लोगों की प्रतीक्षा कर रहा है, जिनमें इसके विस्तार में आगे बढ़ने, इसके खतरों के

बीच जीवन का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने का साहस है।

मैं अपनी खिड़की के पास गया, उसे खोला और बाहर देखा। इमारत के दो हिस्से थे; बगीचा था; लोवुड की निचली सीमाएँ थीं; पहाड़ियों से घिरा क्षितिज था। मेरी नज़र बाकी सभी चीज़ों को छोड़कर उन सबसे दूर स्थित नीली चोटियों पर टिक गई; मैं उन्हीं पर चढ़ना चाहता था; चट्टानों और बंजर भूमि की उनकी सीमा के भीतर सब कुछ जेलखाना, निर्वासन की सीमाएँ जैसा लग रहा था। मैंने एक पहाड़ के आधार के चारों ओर घूमती हुई सफेद सड़क का पीछा किया, जो दो पहाड़ों के बीच एक घाटी में गायब हो रही थी; मैं उस पर और आगे जाने के लिए कितना तरस रहा था! मुझे वह समय याद आया जब मैंने उसी सड़क पर कोच में यात्रा की थी; मुझे गोधूलि बेला में उस पहाड़ी से उतरना याद आया; ऐसा लग रहा था जैसे लोवुड में पहली बार आने के बाद से एक युग बीत गया हो, और तब से मैंने इसे कभी नहीं छोड़ा था। मेरी सारी छुट्टियाँ स्कूल में ही बीती थीं: श्रीमती रीड ने मुझे कभी गेट्सहेड नहीं बुलाया; न तो वह और न ही उनके परिवार का कोई सदस्य कभी मुझसे मिलने आया था। बाहरी दुनिया से मेरा कोई संपर्क नहीं था, न ही चिट्ठी-पत्री से: स्कूल के नियम, स्कूल के कर्तव्य, स्कूल की आदतें और धारणाएँ, आवाज़ें, चेहरे, मुहावरे, पहनावे, पसंद-नापसंद—बस इतना ही मैं अपने जीवन के बारे में जानता था। और अब मुझे लगा कि यह काफी नहीं है; आठ साल की दिनचर्या से मैं एक ही दोपहर में ऊब गया था। मुझे आज़ादी चाहिए थी; आज़ादी के लिए मैं व्याकुल था; आज़ादी के लिए मैंने प्रार्थना की; मानो वह हल्की-हल्की बहती हवा में बिखर गई हो। मैंने उसे त्याग दिया और एक विनम्र विनती की; बदलाव के लिए, प्रेरणा के लिए: वह विनती भी मानो धुंधली सी हवा में उड़ गई: “तो,” मैं लगभग हताश होकर रोया, “कम से कम मुझे एक नई गुलामी ही दे दो!”

यहां भोजन के समय की घंटी बजने से मुझे नीचे आने का बुलावा आया।

सोने तक मुझे अपने अधूरे विचारों को फिर से शुरू करने का समय नहीं मिला: यहाँ तक कि मेरे साथ उसी कमरे में बैठी एक शिक्षिका ने अपनी लंबी-चौड़ी बातों से मुझे उस विषय से दूर रखा जिस पर मैं फिर से विचार करना चाहती थी। काश नींद उन्हें चुप करा देती। ऐसा लग रहा था मानो अगर मैं खिड़की पर खड़े होकर मेरे मन में आए आखिरी विचार पर फिर से लौट जाऊं, तो कोई न कोई नया विचार मुझे राहत दे देगा।

अंततः मिस ग्राइस ने खर्राटे लिए; वह एक भारी-भरकम वेल्श महिला थीं, और अब तक उनकी नाक से निकलने वाली खर्राटों की आवाज़ को मैंने हमेशा एक परेशानी के अलावा और किसी रूप में नहीं देखा था; आज रात मैंने उनकी पहली गहरी आवाज़ का संतोष के साथ स्वागत किया; मुझे किसी भी तरह की रुकावट से राहत मिली; मेरे आधे-अधूरे विचार तुरंत पुनर्जीवित हो गए।

"एक नई गुलामी! इसमें कुछ तो खास है," मैंने मन ही मन कहा (समझिए, मैंने ज़ोर से नहीं बोला), "मुझे पता है कि है, क्योंकि यह सुनने में मीठा नहीं लगता; यह आज़ादी, उत्साह, आनंद जैसे शब्दों जैसा नहीं है: सुनने में तो बहुत अच्छा लगता है; लेकिन मेरे लिए बस शब्द ही हैं; और इतने खोखले और क्षणभंगुर हैं कि इन्हें सुनना समय की बर्बादी है। लेकिन गुलामी! यह तो हकीकत है। कोई भी सेवा कर सकता है: मैंने यहाँ आठ साल सेवा की है; अब मैं बस कहीं और सेवा करना चाहता हूँ। क्या मैं अपनी इच्छा से इतना कुछ हासिल नहीं कर सकता? क्या यह मुमकिन नहीं है? हाँ—हाँ—लक्ष्य इतना मुश्किल नहीं है; काश मेरे पास इसे हासिल करने के तरीके खोजने के लिए पर्याप्त दिमाग होता।"

मैंने अपने दिमाग को जगाने के लिए बिस्तर पर उठकर बैठ गया: रात बहुत ठंडी थी; मैंने अपने कंधों को शॉल से ढक लिया, और फिर मैंने अपनी पूरी ताकत से दोबारा सोचने का प्रयास किया।

"मैं क्या चाहता हूँ? एक नई जगह, एक नए घर में, नए लोगों के बीच, नई परिस्थितियों में: मैं यही चाहता हूँ क्योंकि इससे बेहतर चाहने का कोई फायदा नहीं। लोग नई जगह कैसे पाते हैं? मुझे लगता है वे दोस्तों से मदद मांगते हैं: मेरे तो कोई दोस्त नहीं हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके कोई दोस्त नहीं हैं, जिन्हें खुद ही सब कुछ ढूंढना पड़ता है और खुद ही अपना सहारा बनना पड़ता है; और उनका सहारा क्या है?"

मैं कुछ कह नहीं सका: मुझे कोई जवाब नहीं मिला; तब मैंने अपने दिमाग को जल्दी से जवाब ढूंढने का आदेश दिया। दिमाग तेज़ी से काम करने लगा: मुझे अपने सिर और कनपटी में धड़कन महसूस होने लगी; लेकिन लगभग एक घंटे तक वह अव्यवस्थित रूप से काम करता रहा; और उसके प्रयासों का कोई परिणाम नहीं निकला। व्यर्थ के परिश्रम से बेहाल होकर मैं उठा और कमरे में एक चक्कर लगाया; पर्दा हटाया, एक-दो तारे देखे, ठंड से कांप उठा, और फिर बिस्तर पर लेट गया।

मेरी अनुपस्थिति में, किसी दयालु परी ने शायद मेरे तकिये पर ज़रूरी सुझाव रख दिया था; क्योंकि जैसे ही मैं लेटा, वह बात धीरे से और स्वाभाविक रूप से मेरे मन में आ गई। — "नौकरी चाहने वाले विज्ञापन दें; आपको —शायर हेराल्ड में विज्ञापन देना होगा।"

"कैसे? मुझे विज्ञापन के बारे में कुछ नहीं पता।"

अब उत्तर सुचारू रूप से और शीघ्रता से आने लगे: —

आपको विज्ञापन और उसके भुगतान के लिए धनराशि हेराल्ड के संपादक को संबोधित एक लिफाफे में संलग्न करनी होगी; आपको इसे जल्द से जल्द लोवटन स्थित डाकघर में डाल देना होगा; उत्तर जे.ई. को संबोधित होने चाहिए, जो वहां के डाकघर में हैं; आप अपना पत्र भेजने के लगभग एक सप्ताह बाद जाकर पता कर सकते हैं कि कोई उत्तर आया है या नहीं, और उसके अनुसार कार्रवाई कर सकते हैं।

मैंने इस योजना पर दो-तीन बार विचार किया; तब यह मेरे दिमाग में अच्छी तरह से बैठ गई; यह मेरे सामने एक स्पष्ट व्यावहारिक रूप में आ गई: मुझे संतुष्टि महसूस हुई और मैं सो गया।

सुबह होते ही मैं उठ गया: स्कूल की घंटी बजने से पहले ही मैंने अपना विज्ञापन लिख लिया, उसे संलग्न कर दिया और भेज दिया; वह इस प्रकार था: —

"एक युवती, जिसे पढ़ाने का अनुभव है" (क्या मैं दो साल तक शिक्षक नहीं रहा था?) "एक निजी परिवार में नौकरी की इच्छुक है जहाँ बच्चे चौदह वर्ष से कम आयु के हों (मैंने सोचा कि चूंकि मैं मुश्किल से अठारह वर्ष का था, इसलिए अपनी उम्र के करीब के विद्यार्थियों को पढ़ाना उचित नहीं होगा)। वह अच्छी अंग्रेजी शिक्षा की सामान्य शाखाओं के साथ-साथ फ्रेंच, ड्राइंग और संगीत पढ़ाने में भी योग्य है" (उन दिनों, पाठक, योग्यताओं की यह अब संकीर्ण सूची काफी व्यापक मानी जाती थी)। "पता, जे.ई., डाकघर, लोवटन, -शायर।"

यह दस्तावेज़ दिन भर मेरी दराज में बंद रहा: चाय के बाद, मैंने नए अधीक्षक से लोवटन जाने की अनुमति मांगी, ताकि मैं और मेरे एक-दो साथी शिक्षकों के लिए कुछ छोटे-मोटे काम निपटा सकूँ; अनुमति तुरंत मिल गई; मैं चला गया। यह दो मील की पैदल दूरी थी, और शाम बारिश से भरी थी, लेकिन दिन अभी भी लंबे थे; मैंने एक-दो दुकानों का दौरा किया, डाकघर में पत्र डाला, और भीगे हुए कपड़ों में भारी बारिश में भीगते हुए, लेकिन राहत भरे मन से वापस आ गया।

अगला सप्ताह लंबा लगा: आखिरकार, सभी सांसारिक चीजों की तरह, यह भी समाप्त हो गया, और एक बार फिर, सुहावने पतझड़ के दिन के अंत में, मैंने खुद को लोवटन जाने वाली सड़क पर चलते हुए पाया। वैसे, यह एक मनोरम रास्ता था; नाले के किनारे और घाटी के सबसे सुंदर घुमावों से होकर गुजरता हुआ: लेकिन उस दिन मैं घास के मैदान और पानी के आकर्षण से ज़्यादा उन पत्रों के बारे में सोच रहा था, जो शायद उस छोटे से कस्बे में मेरा इंतज़ार कर रहे हों या न कर रहे हों, जहाँ मुझे जाना था।

इस अवसर पर मेरा दिखावटी उद्देश्य जूतों के लिए नाप लेना था; इसलिए मैंने पहले वह काम निपटाया, और जब वह हो गया, तो मैं मोची की दुकान से साफ-सुथरी और शांत छोटी सी गली पार करके डाकघर चला गया: डाकघर एक बूढ़ी महिला चलाती थी, जिसने नाक पर सींग के चश्मे और हाथों में काले दस्ताने पहन रखे थे।

मैंने पूछा, "क्या जे.ई. के लिए कोई पत्र उपलब्ध हैं?"

उसने चश्मे के ऊपर से मुझे गौर से देखा, फिर उसने एक दराज खोली और काफी देर तक उसमें रखी चीजों को टटोलती रही, इतनी देर तक कि मेरी उम्मीदें डगमगाने लगीं। आखिरकार, लगभग पाँच मिनट तक एक दस्तावेज़ को अपने चश्मे के सामने पकड़े रहने के बाद, उसने उसे काउंटर के उस पार पेश किया, और साथ ही एक बार फिर जिज्ञासा और संदेह भरी नज़र से देखा - यह जे.ई. के लिए था।

“क्या सिर्फ एक ही है?” मैंने पूछा।

“अब और नहीं हैं,” उसने कहा; और मैंने उसे अपनी जेब में रख लिया और घर की ओर मुँह कर लिया: मैं उसे तब खोल नहीं सकता था; नियमों के अनुसार मुझे आठ बजे तक वापस आना था, और तब तक साढ़े सात बज चुके थे।

मेरे पहुँचने पर अनेक कर्तव्य मेरा इंतज़ार कर रहे थे। मुझे लड़कियों के अध्ययन के समय उनके साथ बैठना पड़ता था; फिर मेरी बारी प्रार्थना पढ़ने की होती थी; उन्हें सुलाने की; उसके बाद मैंने अन्य शिक्षकों के साथ भोजन किया। यहाँ तक कि जब हम अंततः रात को सोने चले गए, तब भी वही हमेशा की तरह मिस ग्राइस मेरी साथी थीं: हमारे मोमबत्तीदान में मोमबत्ती का एक छोटा सा टुकड़ा ही बचा था, और मुझे डर था कि कहीं वह बात करते-करते उसे भी बुझा न दें; सौभाग्य से, उन्होंने जो भारी भोजन किया था, उसका उन पर नींद लाने वाला प्रभाव पड़ा: मेरे कपड़े उतारने से पहले ही वह खर्राटे लेने लगी थीं। मोमबत्ती का एक इंच हिस्सा अभी भी बचा था: अब

मैंने अपना पत्र निकाला; उस पर F अक्षर की मुहर लगी थी; मैंने उसे खोला; उसमें संक्षिप्त में लिखा था।

"यदि जे.ई., जिन्होंने पिछले गुरुवार को —शायर हेराल्ड में विज्ञापन दिया था, उल्लिखित योग्यताएं रखती हैं, और यदि वे चरित्र और योग्यता के संबंध में संतोषजनक संदर्भ दे सकती हैं, तो उन्हें उस पद की पेशकश की जा सकती है जहाँ केवल एक ही छात्रा है, एक छोटी बच्ची, जिसकी उम्र दस वर्ष से कम है; और जहाँ वेतन तीस पाउंड प्रति वर्ष है। जे.ई. से अनुरोध है कि वे संदर्भ, नाम, पता और सभी विवरण निम्नलिखित पते पर भेजें: —

श्रीमती फेयरफैक्स, थॉर्नफील्ड, मिलकोट के पास, -शायर।

मैंने दस्तावेज़ को ध्यान से देखा: लिखावट पुराने ज़माने की और कुछ अस्पष्ट थी, जैसे किसी बुज़ुर्ग महिला की हो। यह बात संतोषजनक थी: मुझे मन ही मन डर सता रहा था कि इस तरह अपने दम पर और अपने मार्गदर्शन में काम करने से मैं किसी मुसीबत में फँस सकता हूँ; और सबसे बढ़कर, मैं चाहता था कि मेरे प्रयासों का परिणाम सम्मानजनक, उचित और नियमों के अनुसार हो। अब मुझे लगा कि मेरे हाथ में जो काम था, उसमें एक बुज़ुर्ग महिला का होना बुरा नहीं था। श्रीमती फेयरफैक्स! मैंने उन्हें काले गाउन और विधवा टोपी में देखा; शायद थोड़ी रूखी, लेकिन असभ्य नहीं: एक आदर्श अंग्रेज़ बुज़ुर्ग महिला। थॉर्नफील्ड! निस्संदेह, यही उनके घर का नाम था: एक साफ़-सुथरा और व्यवस्थित स्थान, मुझे यकीन था; हालाँकि मैं परिसर का सही नक्शा बनाने में असफल रहा। मिलकोट, - -शायर; मैंने इंग्लैंड के नक्शे को याद किया, हाँ, मैंने उसे देखा था; शायर और शहर दोनों। —शायर उस दूरदराज के काउंटी से सत्तर मील लंदन के करीब था जहाँ मैं अब रहता था: यह मेरे लिए एक अच्छी बात थी। मैं ऐसी जगह जाना चाहता था जहाँ जीवन और चहल-पहल हो: मिलकोट ए- नदी के किनारे बसा एक बड़ा औद्योगिक शहर था; निस्संदेह एक व्यस्त जगह: और भी अच्छा; कम से कम यह एक पूर्ण बदलाव होगा। ऐसा नहीं था कि लंबी चिमनियों और धुएं के बादलों का विचार मुझे बहुत आकर्षित करता था — "लेकिन," मैंने तर्क दिया, "थॉर्नफील्ड शायद शहर से काफी दूर होगा।"

यहां मोमबत्ती का सॉकेट गिर गया और बाती बुझ गई।

अगले दिन नए कदम उठाने थे; मेरी योजनाएँ अब मेरे तक ही सीमित नहीं रह सकती थीं; मुझे उन्हें सफल बनाने के लिए सबको बताना ही था। दोपहर के अवकाश

के दौरान अधीक्षक से मिलने का समय मिलने पर, मैंने उन्हें बताया कि मुझे एक नई नौकरी मिलने की संभावना है जहाँ वेतन मेरे वर्तमान वेतन से दोगुना होगा (क्योंकि लोवुड में मुझे केवल 15 पाउंड प्रति वर्ष मिलते थे); और उनसे अनुरोध किया कि वे मेरी ओर से श्री ब्रॉकलहर्स्ट या समिति के किसी सदस्य को इस बारे में बताएँ और पता करें कि क्या वे मुझे उन्हें संदर्भ के रूप में उल्लेख करने की अनुमति देंगे। उन्होंने सहर्ष मध्यस्थता करने की सहमति दी। अगले दिन उन्होंने यह मामला श्री ब्रॉकलहर्स्ट के समक्ष रखा, जिन्होंने कहा कि श्रीमती रीड को पत्र लिखना होगा, क्योंकि वे मेरी स्वाभाविक अभिभावक थीं। तदनुसार, उस महिला को एक पत्र भेजा गया, जिसने उत्तर में कहा, "मैं जो चाहूँ कर सकती हूँ: उन्होंने बहुत पहले ही मेरे मामलों में हस्तक्षेप करना छोड़ दिया था।" यह नोट समिति के सभी सदस्यों तक पहुँचा और अंततः, मुझे जो अत्यंत थकाऊ विलंब प्रतीत हुआ, उसके बाद मुझे अपनी स्थिति सुधारने के लिए औपचारिक अवकाश दिया गया; और यह आश्वासन भी दिया गया कि चूंकि मैंने लोवुड में शिक्षक और छात्र दोनों के रूप में हमेशा अच्छा व्यवहार किया है, इसलिए उस संस्थान के निरीक्षकों द्वारा हस्ताक्षरित चरित्र और क्षमता का एक प्रमाण पत्र मुझे तुरंत उपलब्ध कराया जाएगा।

मुझे यह प्रशंसा पत्र लगभग एक महीने में प्राप्त हुआ, मैंने इसकी एक प्रति श्रीमती फेयरफैक्स को भेजी और उनसे जवाब प्राप्त किया, जिसमें उन्होंने कहा कि वह संतुष्ट हैं और उन्होंने मुझे दो सप्ताह बाद उनके घर में गवर्नेंस का पदभार ग्रहण करने के लिए निर्धारित किया।

अब मैं तैयारियों में जुट गई: पखवाड़ा जल्दी ही बीत गया। मेरे पास कपड़ों का बहुत बड़ा भंडार नहीं था, हालांकि मेरी जरूरतों के लिए पर्याप्त था; और आखिरी दिन मेरे ट्रंक को पैक करने के लिए काफी था, वही ट्रंक जो मैं आठ साल पहले गेट्सहेड से अपने साथ लाई थी।

बक्से में रस्सी बंधी थी, कार्ड कील से ठोका हुआ था। आधे घंटे में डाकिया उसे लेने आने वाला था ताकि उसे लोवटन ले जा सके, जहाँ मुझे अगली सुबह जल्दी पहुँचकर कोच से मिलना था। मैंने अपने काले कपड़े के यात्रा वस्त्रों को झाड़-पोंछ कर तैयार कर लिया था, अपनी टोपी, दस्ताने और मफ भी तैयार कर लिए थे; मैंने अपनी सभी दराजों में यह सुनिश्चित कर लिया था कि कोई भी सामान छूट न जाए; और अब मेरे पास करने को कुछ नहीं था, इसलिए मैं बैठ गया और आराम करने की कोशिश

की। मैं आराम नहीं कर सका; हालाँकि मैं पूरे दिन पैदल चला था, अब एक पल भी आराम नहीं कर सकता था; मैं बहुत उत्तेजित था। मेरे जीवन का एक चरण आज रात समाप्त हो रहा था, एक नया चरण कल शुरू होने वाला था: इस बीच सोना असंभव था; मुझे इस बदलाव को होते हुए बेचैनी से देखना था।

लॉबी में, जहाँ मैं एक व्याकुल आत्मा की तरह भटक रही थी, मुझसे मिलने आए एक नौकर ने कहा, "मैडम, नीचे एक व्यक्ति आपसे मिलना चाहता है।"

“ज़रूर कोई संदेशवाहक होगा,” मैंने सोचा और बिना कुछ पूछे नीचे की ओर दौड़ पड़ा। मैं रसोई में जाने के लिए पीछे वाले कमरे या शिक्षकों के बैठक कक्ष से गुज़र रहा था, जिसका दरवाज़ा आधा खुला हुआ था, तभी कोई बाहर भागा—

“मुझे पूरा यकीन है कि यह वही है! — मैं उसे कहीं भी बता सकती थी!” उस व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा जिसने मेरा रास्ता रोककर मेरा हाथ पकड़ लिया।

मैंने देखा: मैंने एक महिला को देखा जो एक सलीके से सजी नौकरानी की तरह कपड़े पहने हुए थी, उम्रदराज लेकिन अभी भी जवान; बहुत सुंदर, काले बाल और आंखों वाली और जीवंत रंगत वाली।

“अच्छा, कौन है?” उसने एक जानी-पहचानी आवाज़ और मुस्कान के साथ पूछा; “मुझे लगता है, आप मुझे पूरी तरह से भूली नहीं हैं, मिस जेन?”

अगले ही पल मैं उसे गले लगाकर प्यार से चूमने लगा: “बेसी! बेसी! बेसी!” बस यही मैंने कहा; जिस पर वह आधी हँसी, आधी रोई, और हम दोनों बैठक में चले गए। आग के पास तीन साल का एक छोटा बच्चा प्लेड फ्रॉक और पैंट पहने खड़ा था।

"यह मेरा छोटा बेटा है," बेसी ने सीधे-सीधे कहा।

“तो फिर तुम शादीशुदा हो, बेसी?”

"हां; लगभग पांच साल पहले रॉबर्ट लीवेन, जो कोचवान थे, से मेरी एक छोटी बेटी हुई थी; और बॉबी के अलावा मेरी एक और छोटी बच्ची है, जिसका नाम मैंने जेन रखा है।"

“और आप गेट्सहेड में नहीं रहते?”

मैं लॉज में रहता हूँ: बूढ़ा कुली चला गया है।

“अच्छा, और वे सब कैसे हैं? मुझे उनके बारे में सब कुछ बताओ, बेसी: लेकिन पहले बैठ जाओ; और, बॉबी, आओ और मेरी गोद में बैठो?” लेकिन बॉबी अपनी माँ के पास खिसकना पसंद करता था।

“मिस जेन, आप इतनी लंबी या इतनी मोटी नहीं हुई हैं,” श्रीमती लीवन ने आगे कहा। “मुझे लगता है कि स्कूल में आपकी अच्छी तरह देखभाल नहीं की गई है: मिस रीड आपसे काफी लंबी हैं; और मिस जॉर्जियाना तो चौड़ाई में आप दोनों के बराबर हैं।”

"जॉर्जियाना खूबसूरत है, मुझे लगता है, बेसी?"

“बिल्कुल। पिछली सर्दियों में वह अपनी माँ के साथ लंदन गई थी, और वहाँ हर कोई उसकी तारीफ़ कर रहा था, और एक युवक को उससे प्यार हो गया: लेकिन उसके रिश्तेदार इस रिश्ते के खिलाफ थे; और — आपको क्या लगता है? — उसने और मिस जॉर्जियाना ने भागने की योजना बनाई; लेकिन उनका भेद खुल गया और उन्हें रोक लिया गया। मिस रीड ने ही उनका भेद खोला था: मुझे लगता है कि वह ईर्ष्यालु थी; और अब वह और उसकी बहन एक-दूसरे से झगड़ती रहती हैं; वे हमेशा लड़ती रहती हैं —”

"अच्छा, तो जॉन रीड का क्या हुआ?"

"ओह, उसकी हालत उतनी अच्छी नहीं है जितनी उसकी माँ चाहती थी। वह कॉलेज गया, और उसे चुन लिया गया, मुझे लगता है इसे यही कहते हैं: और फिर उसके चाचा चाहते थे कि वह वकील बने और कानून की पढ़ाई करे: लेकिन वह इतना बिगड़ैल नौजवान है कि मुझे लगता है वे उसे कभी कुछ खास नहीं बना पाएंगे।"

"वह कैसा दिखता है?"

“वह बहुत लंबा है: कुछ लोग उसे एक सुंदर युवक कहते हैं; लेकिन उसके होंठ बहुत मोटे हैं।”

और श्रीमती रीड?

"मालकिन देखने में हष्ट-पुष्ट और चेहरे से काफी स्वस्थ लगती हैं, लेकिन मुझे लगता है कि उनकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है: श्री जॉन का व्यवहार उन्हें पसंद नहीं आता - वह बहुत पैसा खर्च करते हैं।"

"क्या उसने तुम्हें यहाँ भेजा है, बेसी?"

"जी नहीं, बिलकुल नहीं: लेकिन मैं तुम्हें देखने के लिए बहुत समय से तरस रहा था, और जब मैंने सुना कि तुम्हारा पत्र आया है, और तुम देश के किसी दूसरे हिस्से में जा रहे हो, तो मैंने सोचा कि मैं निकल पड़ूँ, और तुम्हारे मेरे पहुँच से पूरी तरह ओझल होने से पहले तुम्हें देख लूँ।"

“मुझे अफसोस है कि तुम मुझसे निराश हो, बेसी।” मैंने हंसते हुए कहा: मैंने महसूस किया कि बेसी की नजरें, हालांकि सम्मान व्यक्त कर रही थीं, लेकिन किसी भी तरह से प्रशंसा नहीं दर्शा रही थीं।

"नहीं, मिस जेन, बिल्कुल नहीं: आप काफी सभ्य हैं; आप एक महिला की तरह दिखती हैं, और यह उतना ही है जितना मैंने आपसे उम्मीद की थी: आप बचपन में इतनी सुंदर नहीं थीं।"

बेसी के स्पष्ट जवाब पर मैं मुस्कुराई: मुझे लगा कि यह सही था, लेकिन मैं स्वीकार करती हूं कि मैं इसके महत्व के प्रति पूरी तरह उदासीन नहीं थी: अठारह वर्ष की आयु में अधिकांश लोग दूसरों को खुश करना चाहते हैं, और यह विश्वास कि उनके पास ऐसा कोई बाहरी रूप नहीं है जो उस इच्छा का समर्थन कर सके, उन्हें केवल संतुष्टि ही प्रदान करता है।

“वैसे तो मुझे लगता है कि तुम काफी होशियार हो,” बेसी ने दिलासा देते हुए कहा। “तुम क्या कर सकते हो? क्या तुम पियानो बजा सकते हो?”

"थोड़ा।"

कमरे में एक था; बेसी गई और उसे खोला, और फिर मुझसे बैठने और उसे एक धुन सुनाने के लिए कहा: मैंने एक-दो वाल्ट्ज़ बजाए, और वह मंत्रमुग्ध हो गई।

“मिस रीड्स इतना अच्छा नहीं बजा सकती थीं!” उसने उत्साह से कहा। “मैंने हमेशा कहा था कि तुम सीखने में उनसे आगे निकल जाओगी: और क्या तुम चित्र बना सकती हो?”

"चिमनी के ऊपर लगी वह मेरी ही एक पेंटिंग है।" यह जलरंगों में बनी एक भूदृश्य पेंटिंग थी, जिसे मैंने अधीक्षक को मेरी ओर से समिति के साथ मध्यस्थता करने के लिए धन्यवाद के रूप में भेंट किया था, और जिसे उन्होंने फ्रेम करवाकर शीशे से ढक दिया था।

“वाह, यह तो बहुत सुंदर है, मिस जेन! यह उतनी ही बेहतरीन तस्वीर है जितनी मिस रीड के किसी चित्रकार द्वारा बनाई जा सकती थी, उन युवतियों की तो बात ही छोड़िए, जो इसके आसपास भी नहीं आ सकतीं: और क्या आपने फ्रेंच सीखी है?”

"हां, बेसी, मैं इसे पढ़ भी सकता हूं और बोल भी सकता हूं।"

“और आप मलमल और कैनवास पर भी काम कर सकते हैं?”

"मैं कर सकता हूँ।"

“ओह, आप तो वाकई एक सभ्य महिला हैं, मिस जेन! मुझे पता था कि आप ऐसी ही होंगी: आपके रिश्तेदार आपको नोटिस करें या न करें, आप आगे बढ़ती ही रहेंगी। मुझे आपसे कुछ पूछना था। क्या आपने कभी अपने पिता के रिश्तेदारों, आयर्स से कुछ सुना है?”

"कभी नहीं।"

“खैर, आपको पता ही है कि मालकिन हमेशा कहती थीं कि वे गरीब और बेहद नीच हैं: और वे गरीब हो भी सकते हैं; लेकिन मेरा मानना है कि वे रीड्स जितने ही संभ्रांत हैं; क्योंकि लगभग सात साल पहले, एक दिन मिस्टर आयर गेट्सहेड आए और आपसे मिलना चाहते थे; मालकिन ने कहा कि आप पचास मील दूर स्कूल में हैं; वे बहुत निराश लग रहे थे, क्योंकि वे रुक नहीं सकते थे: वे एक विदेशी यात्रा पर जा रहे थे, और जहाज एक-दो दिन में लंदन से रवाना होने वाला था। वे देखने में काफी सज्जन लग रहे थे, और मेरा मानना है कि वे आपके पिता के भाई थे।”

"वह किस विदेशी देश में जा रहा था, बेसी?"

“हजारों मील दूर एक द्वीप है, जहाँ शराब बनाई जाती है—बटलर ने मुझे यही बताया था—”

“मदीरा?” मैंने सुझाव दिया।

"हां, यही है - यही वह शब्द है।"

तो वह चला गया?

“हाँ; वह घर में कुछ मिनट भी नहीं रुका: मालकिन उससे बहुत नाराज़ थीं; बाद में उन्होंने उसे ‘धोखेबाज व्यापारी’ कहा। मेरे रॉबर्ट का मानना है कि वह शराब का व्यापारी था।”

मैंने जवाब दिया, "बहुत संभावना है; या शायद किसी शराब व्यापारी का क्लर्क या एजेंट हो।"

बेसी और मैंने पुराने दिनों की बातें करते हुए एक घंटा और बिताया, फिर उसे जाना पड़ा। अगली सुबह लोवटन में कोच का इंतज़ार करते हुए मेरी उससे कुछ मिनटों के लिए फिर मुलाकात हुई। हम आखिरकार ब्रॉकलहर्स्ट आर्म्स के दरवाजे पर अलग हुए: हम दोनों अपने-अपने रास्ते चले गए; वह लोवुड फेल की चोटी की ओर चल पड़ी ताकि उस वाहन का इंतज़ार कर सके जो उसे गेट्सहेड वापस ले जाएगा, और मैं उस वाहन में सवार हो गया जो मुझे मिलकोट के अनजान परिवेश में नए कर्तव्यों और एक

नए जीवन की ओर ले जाने वाला था।

अध्याय XI

उपन्यास का नया अध्याय किसी नाटक के नए दृश्य जैसा होता है; और जब मैं इस बार पर्दा उठाता हूँ, पाठक, तो आप कल्पना कीजिए कि आप मिलकोट के जॉर्ज इन में एक कमरा देख रहे हैं, जिसकी दीवारों पर सराय के कमरों की तरह बड़े-बड़े डिज़ाइन वाले वॉलपेपर लगे हैं; ऐसा कालीन, ऐसा फर्नीचर, मेंटलपीस पर ऐसे आभूषण, ऐसी तस्वीरें, जिनमें जॉर्ज तृतीय का चित्र, वेल्स के राजकुमार का चित्र और वोल्फ की मृत्यु का चित्रण शामिल है। यह सब आपको छत से लटकते तेल के दीपक की रोशनी और उस शानदार आग की रोशनी में दिखाई दे रहा है, जिसके पास मैं अपने लबादे और टोपी में बैठा हूँ; मेरा मफ और छाता मेज पर पड़ा है, और मैं अक्टूबर के दिन की 16 घंटे की ठंड और उमस से अपनी सुन्नता और कंपकंपी दूर कर रहा हूँ: मैं सुबह चार बजे लोवटन से निकला था, और मिलकोट शहर की घड़ी में अब आठ बज रहे हैं।

पाठकगण, हालाँकि मैं आराम से रह रही हूँ, लेकिन मेरा मन शांत नहीं है। मैंने सोचा था कि जब कोच यहाँ रुकेगा तो कोई मुझसे मिलने आएगा; मैंने लकड़ी की सीढ़ियाँ उतरते समय बेचैनी से चारों ओर देखा, जो मेरे आराम के लिए "गाड़ियों" ने रखी थीं, यह उम्मीद करते हुए कि मेरा नाम पुकारा जाएगा और मुझे थॉर्नफील्ड ले जाने के लिए कोई गाड़ी इंतज़ार कर रही होगी। ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं दिया; और जब मैंने एक वेटर से पूछा कि क्या कोई मिस आयर के बारे में पूछताछ करने आया है, तो मुझे नकारात्मक उत्तर मिला: इसलिए मेरे पास एक निजी कमरे में ले जाने का अनुरोध करने के अलावा कोई चारा नहीं था: और मैं यहाँ इंतज़ार कर रही हूँ, जबकि तरह-तरह के संदेह और भय मेरे विचारों को परेशान कर रहे हैं।

अनुभवहीन युवाओं के लिए यह एक बहुत ही अजीब अनुभूति होती है जब वे स्वयं को संसार में बिल्कुल अकेला पाते हैं, हर रिश्ते से कटे हुए, अनिश्चित कि जिस बंदरगाह की ओर वे जा रहे हैं वहाँ पहुँच पाएंगे या नहीं, और अनेक बाधाओं के कारण उस स्थान पर वापस नहीं लौट पा रहे जहाँ से वे जा चुके हैं। रोमांच का आकर्षण उस अनुभूति को मधुर बना देता है, गर्व की चमक उसे गर्म कर देती है; परन्तु फिर भय की धड़कन उसे व्याकुल कर देती है; और मुझ पर भय हावी हो गया जब आधा घंटा बीत गया और मैं अब भी अकेला था। मैंने घंटी बजाने का सोचा।

"क्या इस इलाके में थॉर्नफील्ड नाम की कोई जगह है?" मैंने बुलावा आने पर वेटर से पूछा।

“थॉर्नफील्ड? मुझे नहीं पता, महोदया; मैं बार में पता करूँगा।” वह गायब हो गया, लेकिन तुरंत ही फिर प्रकट हो गया —

“क्या आपका नाम आयर है, मिस?”

"हाँ।"

"यहां एक व्यक्ति आपका इंतजार कर रहा है।"

मैं उछलकर उठा, अपना मफ और छाता लिया और सराय के गलियारे में तेजी से घुस गया: एक आदमी खुले दरवाजे के पास खड़ा था, और लैंप की रोशनी वाली सड़क पर मुझे धुंधला सा एक घोड़े वाला वाहन दिखाई दिया।

"मुझे लगता है कि यह आपका सामान होगा?" उस आदमी ने मुझे देखते ही अचानक कहा और गलियारे में रखे मेरे ट्रंक की ओर इशारा किया।

“हाँ।” उसने उसे गाड़ी पर लादा, जो एक तरह की कार थी, और फिर मैं अंदर बैठ गया; इससे पहले कि वह मुझे चुप कराता, मैंने उससे पूछा कि थॉर्नफील्ड कितनी दूर है।

"छह मील की दूरी का मामला।"

"वहाँ पहुँचने में हमें कितना समय लगेगा?"

"डेढ़ घंटे में होगा।"

उसने कार का दरवाजा बंद किया, बाहर अपनी सीट पर बैठा और हम चल पड़े। हमारी यात्रा धीमी गति से चल रही थी, जिससे मुझे सोचने-विचारने का भरपूर समय मिला; मैं अपनी यात्रा के इतने करीब पहुँचकर संतुष्ट था; और जैसे ही मैं आरामदायक, हालांकि भव्य नहीं, वाहन में पीछे की ओर झुक गया, मैंने अपने आराम

पर बहुत विचार किया।

"मुझे लगता है," मैंने सोचा, "नौकरानी और उसके साधारण हाव-भाव को देखकर लगता है कि श्रीमती फेयरफैक्स कोई बहुत नखरे वाली महिला नहीं हैं: और यह अच्छा ही है; मैं केवल एक बार ही अच्छे लोगों के बीच रही हूँ, और उनके साथ मेरा अनुभव बहुत बुरा रहा। मुझे आश्चर्य है कि क्या वह इस छोटी बच्ची के अलावा अकेली रहती हैं; यदि ऐसा है, और यदि वह थोड़ी भी मिलनसार हैं, तो मैं निश्चित रूप से उनके साथ घुल-मिल जाऊँगी; मैं पूरी कोशिश करूँगी; यह दुख की बात है कि पूरी कोशिश करने पर भी सफलता नहीं मिलती। लोवुड में, मैंने यही संकल्प लिया, उस पर कायम रही और उन्हें खुश करने में सफल रही; लेकिन श्रीमती रीड के साथ, मुझे याद है कि मेरी पूरी कोशिश को हमेशा तिरस्कार के साथ ठुकरा दिया गया था। मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि श्रीमती फेयरफैक्स दूसरी श्रीमती रीड न निकलें; लेकिन अगर ऐसा हुआ, तो मैं उनके साथ रहने के लिए बाध्य नहीं हूँ! चाहे कुछ भी हो जाए, मैं फिर से विज्ञापन दे दूँगी। अब तक हम इस रास्ते पर कितना आगे बढ़ चुके हैं, मुझे आश्चर्य है?"

मैंने खिड़की खोली और बाहर देखा; मिलकोट हमारे पीछे था; उसकी रोशनी की संख्या देखकर लग रहा था कि वह काफी विशाल जगह है, लोवटन से कहीं ज्यादा बड़ी। जहाँ तक मेरी नज़र जा रही थी, हम एक तरह के खुले मैदान में थे; लेकिन पूरे इलाके में घर बिखरे हुए थे; मुझे लगा कि हम लोवुड से अलग किसी इलाके में हैं, अधिक आबादी वाला, कम रमणीय; अधिक हलचल भरा, कम रोमांटिक।

सड़कें बर्फीली थीं, रात धुंध भरी थी; मेरे मार्गदर्शक ने अपने घोड़े को पूरे रास्ते पैदल चलने दिया, और डेढ़ घंटे का सफर, मुझे यकीन है, दो घंटे तक खिंच गया; अंत में वह अपनी सीट पर मुड़ा और बोला—

अब आप थॉर्नफील्ड से ज्यादा दूर नहीं हैं।

मैंने फिर बाहर देखा: हम एक गिरजाघर के पास से गुजर रहे थे; मैंने आकाश के सामने उसका चौड़ा और नीचा मीनार देखा, और उसकी घंटी सवा बज रही थी; मैंने एक पहाड़ी पर रोशनी की एक पतली सी कतार भी देखी, जो किसी गाँव या छोटे कस्बे को दर्शा रही थी। लगभग दस मिनट बाद, ड्राइवर नीचे उतरा और दो फाटक खोले: हम अंदर गए, और वे हमारे पीछे बंद हो गए। अब हम धीरे-धीरे एक रास्ते पर चढ़े, और एक घर के लंबे अग्रभाग के सामने पहुँचे: एक पर्दे वाली धनुषाकार खिड़की

से मोमबत्ती की रोशनी चमक रही थी; बाकी सभी खिड़कियाँ अंधेरी थीं। गाड़ी सामने के दरवाजे पर रुकी; उसे एक नौकरानी ने खोला; मैं उतरा और अंदर चला गया।

“क्या आप इधर चलेंगी, महोदया?” लड़की ने कहा; और मैं उसके पीछे-पीछे एक चौकोर हॉल से गुज़री जिसके चारों ओर ऊँचे दरवाज़े थे: उसने मुझे एक कमरे में ले गई जिसकी आग और मोमबत्ती की दोहरी रोशनी ने पहले तो मेरी आँखों को चकाचौंध कर दिया, क्योंकि यह उस अंधेरे के बिल्कुल विपरीत थी जिसमें मेरी आँखें दो घंटे से डूबी हुई थीं; लेकिन जब मैं देख सकी, तो मेरे सामने एक आरामदायक और सुखद दृश्य प्रकट हुआ।

एक छोटा सा आरामदायक कमरा; जलती हुई आग के पास एक गोल मेज; ऊँची पीठ वाली और पुराने ज़माने की एक आरामकुर्सी, जिस पर विधवा टोपी, काले रेशमी गाउन और सफ़ेद मलमल के एप्रन में एक बेहद सलीके से बैठी एक छोटी सी बुजुर्ग महिला बैठी थी; बिलकुल वैसी ही जैसी मैंने श्रीमती फेयरफैक्स के बारे में सोचा था, बस थोड़ी कम भव्य और सौम्य दिख रही थीं। वह बुनाई में व्यस्त थीं; एक बड़ी बिल्ली उनके पैरों के पास शालीनता से बैठी थी; संक्षेप में, घरेलू सुख-सुविधाओं के आदर्श को पूरा करने के लिए किसी चीज की कमी नहीं थी। एक नई गवर्नेस के लिए इससे अधिक आश्वस्त करने वाला परिचय शायद ही सोचा जा सकता था; न तो कोई भव्यता थी जो अभिभूत कर दे, न ही कोई शान-शौकत जो शर्मिंदा कर दे; और फिर, जैसे ही मैं अंदर आया, बुज़ुर्ग महिला उठीं और तुरंत और विनम्रता से मुझसे मिलने के लिए आगे आईं।

“कैसी हो मेरी प्यारी? मुझे लगता है तुम्हारी यात्रा थका देने वाली रही होगी; जॉन बहुत धीरे गाड़ी चलाता है; तुम्हें ठंड लग रही होगी, आग के पास आ जाओ।”

“श्रीमती फेयरफैक्स, शायद?” मैंने कहा।

"जी हां, आप सही कह रहे हैं: बैठ जाइए।"

वह मुझे अपनी कुर्सी पर ले गई, और फिर मेरा शॉल उतारने और मेरी टोपी की डोरियाँ खोलने लगी; मैंने उससे विनती की कि वह खुद को इतनी परेशानी में न डाले।

“अरे, कोई बात नहीं; मुझे लगता है कि ठंड से तुम्हारे हाथ लगभग सुन्न हो गए होंगे। लीह, थोड़ा गरमा गरम नेगस बना लो और एक-दो सैंडविच काट लो: ये रही भंडारगृह की चाबियाँ।”

और उसने अपनी जेब से चाबियों का एक बहुत ही घरेलू गुच्छा निकाला और

नौकर को दे दिया।

“तो अब आग के पास आ जाओ,” उसने आगे कहा। “तुम अपना सामान साथ लाए हो ना, मेरे प्यारे?”

"हां मैम।"

"मैं इसे आपके कमरे में पहुंचा दूंगी," उसने कहा और जल्दी से बाहर निकल गई।

मैंने सोचा, “वह मेरे साथ एक आगंतुक जैसा व्यवहार करती है। मुझे ऐसे स्वागत की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी; मैंने तो केवल ठंडेपन और रूखेपन की ही कल्पना की थी: यह वैसा नहीं है जैसा मैंने गवर्नेंस के व्यवहार के बारे में सुना है; लेकिन मुझे इतनी जल्दी खुश नहीं होना चाहिए।”

वह लौटी; उसने अपने हाथों से मेज से बुनाई का सामान और एक-दो किताबें हटाईं, ताकि लीह द्वारा लाई गई ट्रे के लिए जगह बन सके, और फिर उसने मुझे जलपान परोसा। मुझे थोड़ा अजीब लगा क्योंकि मुझे पहले कभी इतनी तवज्जो नहीं मिली थी, और वह भी मेरी मालकिन और वरिष्ठ अधिकारी द्वारा; लेकिन चूंकि उसे खुद ऐसा नहीं लग रहा था कि वह कुछ अनुचित कर रही है, इसलिए मैंने उसकी इस विनम्रता को चुपचाप स्वीकार करना ही बेहतर समझा।

"क्या मुझे आज रात मिस फेयरफैक्स से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा?" मैंने उनसे पूछा, जब मैंने उनके द्वारा परोसे गए भोजन का आनंद ले लिया था।

“तुमने क्या कहा, मेरे प्यारे? मुझे थोड़ा बहरापन है,” उस भले आदमी ने अपना कान मेरे मुंह के पास लाते हुए जवाब दिया।

मैंने प्रश्न को और अधिक स्पष्ट रूप से दोहराया।

“मिस फेयरफैक्स? ओह, आपका मतलब मिस वारेन्स से है! वारेन्स आपकी भावी छात्रा का नाम है।”

“जी हां! तो क्या वह आपकी बेटी नहीं है?”

नहीं, मेरा कोई परिवार नहीं है।

मुझे अपनी पहली पूछताछ के बाद यह पूछना चाहिए था कि मिस वारेन्स का उससे क्या संबंध था; लेकिन मुझे याद आया कि बहुत सारे सवाल पूछना शिष्टाचार के विरुद्ध था: इसके अलावा, मुझे यकीन था कि समय रहते मुझे जवाब मिल जाएगा।

"मुझे बहुत खुशी है," उसने आगे कहा, और मेरे सामने बैठ गई, और बिल्ली को अपनी गोद में ले लिया; “मुझे बहुत खुशी है कि तुम आ गई हो; अब यहाँ किसी साथी

के साथ रहना बहुत सुखद होगा। वैसे तो यहाँ रहना हमेशा ही सुखद होता है; क्योंकि थॉर्नफील्ड एक शानदार पुराना हॉल है, शायद हाल के वर्षों में इसकी थोड़ी उपेक्षा हुई है, लेकिन फिर भी यह एक सम्मानजनक जगह है; फिर भी तुम जानती हो कि सर्दियों में सबसे अच्छे कमरों में भी अकेले रहना कितना उदास लगता है। मैं अकेलेपन की बात इसलिए कह रही हूँ क्योंकि लियाह बेशक एक अच्छी लड़की है, और जॉन और उसकी पत्नी बहुत ही सभ्य लोग हैं; लेकिन तुम जानती हो कि वे तो नौकर हैं, और उनसे बराबरी के स्तर पर बात नहीं की जा सकती: उनसे उचित दूरी बनाए रखनी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि अपना अधिकार खो बैठे। मुझे यकीन है कि पिछली सर्दी (वह बहुत ही भीषण थी, अगर तुम्हें याद हो, और जब बर्फ नहीं गिरी तो बारिश और तेज हवा चली), नवंबर से फरवरी तक घर में कसाई और डाकिया के अलावा कोई नहीं आया; और मैं रात-रात भर अकेले बैठे-बैठे सचमुच बहुत उदास हो गई थी; कभी-कभी लियाह मुझे पढ़कर सुनाती थी; लेकिन मुझे नहीं लगता कि बेचारी को यह काम पसंद आया होगा: उसे यह बंधनकारी लगता था।” वसंत और ग्रीष्म ऋतु में सब कुछ बेहतर हो जाता था: धूप और लंबे दिन कितना फर्क लाते हैं; और फिर, इस शरद ऋतु की शुरुआत में ही, नन्ही एडेल वारेन्स और उसकी नर्स आ गईं: एक बच्चा घर को एकदम जीवंत कर देता है; और अब जब तुम यहाँ हो तो मैं बहुत खुश हो जाऊँगी।

उस सम्मानित महिला की बातें सुनकर मेरा दिल सचमुच उनके प्रति स्नेह से भर गया; और मैंने अपनी कुर्सी थोड़ा उनके पास खींच ली, और अपनी हार्दिक कामना व्यक्त की कि उन्हें मेरी संगति उतनी ही सुखद लगे जितनी उन्होंने अपेक्षा की थी।

“पर मैं आज रात आपको देर तक नहीं जगाऊँगी,” उसने कहा; “अभी बारह बजने ही वाले हैं, और आप दिन भर सफ़र करते रहे हैं: आपको थकान महसूस हो रही होगी। अगर आपके पैर अच्छे से गर्म हो गए हैं, तो मैं आपको आपका कमरा दिखाती हूँ। मैंने आपके लिए मेरे कमरे के बगल वाला कमरा तैयार करवा दिया है; यह छोटा सा कमरा है, लेकिन मुझे लगा कि आपको सामने वाले बड़े कमरों से ज़्यादा यह पसंद आएगा: बेशक उनमें बढ़िया फर्नीचर है, लेकिन वे इतने नीरस और एकांत भरे हैं कि मैं खुद उनमें कभी नहीं सोती।”

मैंने उनके इस विचारशील चुनाव के लिए उन्हें धन्यवाद दिया, और लंबी यात्रा से थक जाने के कारण मैंने सोने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने अपनी मोमबत्ती ली, और मैं उनके पीछे कमरे से बाहर निकल गया। पहले उन्होंने यह देखा कि हॉल का दरवाजा

बंद है या नहीं; ताले से चाबी निकालकर वे मुझे ऊपर ले गईं। सीढ़ियाँ और रेलिंग ओक की थीं; सीढ़ी की खिड़की ऊँची और जालीदार थी; वह और लंबी गैलरी, जिसमें बेडरूम के दरवाजे खुलते थे, किसी घर की बजाय किसी गिरजाघर की तरह लग रही थीं। सीढ़ियों और गैलरी में एक अजीब सी ठंडी और गुंबदनुमा हवा छाई हुई थी, जो अकेलेपन और सन्नाटे का उदास एहसास दिला रही थी; और जब अंत में मुझे मेरे कमरे में ले जाया गया, तो मुझे यह देखकर खुशी हुई कि वह छोटा था और साधारण, आधुनिक शैली में सजा हुआ था।

जब श्रीमती फेयरफैक्स ने मुझे शुभ रात्रि कहा और मैंने अपना दरवाजा बंद कर लिया, आराम से चारों ओर देखा और उस विशाल हॉल, उस अंधेरी और चौड़ी सीढ़ी और उस लंबी, ठंडी गैलरी के भयानक प्रभाव को अपने छोटे से कमरे के जीवंत रूप से कुछ हद तक मिटा दिया, तब मुझे याद आया कि शारीरिक थकान और मानसिक चिंता से भरे दिन के बाद, मैं आखिरकार सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया हूँ। कृतज्ञता से मेरा हृदय भर गया और मैं पलंग के पास घुटने टेककर बैठ गया और जहाँ धन्यवाद देना बनता था, वहाँ धन्यवाद दिया; उठने से पहले, मैंने अपने आगे के मार्ग में सहायता और उस दया को अर्जित करने की शक्ति की प्रार्थना करना नहीं भूला, जो मुझे बिना कमाए ही इतनी सहजता से दी गई थी। उस रात मेरे पलंग में कोई कांटे नहीं थे; मेरे एकांत कमरे में कोई भय नहीं था। थका हुआ और संतुष्ट, मैं जल्दी और गहरी नींद सो गया: जब मैं जागा तो दिन का उजाला हो चुका था।

नीले रंग के रंगीन पर्दे से छनकर आती धूप से वह कमरा मुझे बहुत ही सुंदर और रोशन लगा। दीवारों पर लगा वॉलपेपर और कालीन ही फर्श दिख रहे थे, जो लोवुड की सादी लकड़ी की पट्टियों और दागदार प्लास्टर से बिलकुल अलग थे। यह नज़ारा देखकर मेरा मन प्रसन्न हो गया। बाहरी चीज़ों का युवाओं पर गहरा असर होता है: मुझे लगा जैसे मेरे जीवन का एक नया दौर शुरू हो रहा है, जिसमें खुशियाँ और सुख तो होंगे ही, साथ ही काँटे और मेहनत भी। नए दृश्य और आशा की नई दुनिया को देखकर मेरी इंद्रियाँ मानो जागृत हो उठीं। मैं ठीक-ठीक बता नहीं सकता कि वे क्या उम्मीद कर रही थीं, लेकिन वह कुछ सुखद ज़रूर था: शायद उस दिन या उस महीने नहीं, बल्कि भविष्य में किसी अनिश्चित समय पर।

मैं उठी; मैंने बड़े ध्यान से कपड़े पहने: मुझे सादे कपड़े पहनने पड़ते थे—क्योंकि मेरे पास ऐसा कोई कपड़ा नहीं था जो बेहद सादगी से न बना हो—फिर भी स्वभाव से

मुझे साफ-सुथरा रहना पसंद था। मेरी आदत नहीं थी कि मैं अपने पहनावे की परवाह न करूं या दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति लापरवाह रहूं: इसके विपरीत, मैं हमेशा यथासंभव सुंदर दिखना चाहती थी और अपनी सुंदरता की कमी के बावजूद जितना संभव हो उतना आकर्षक दिखना चाहती थी। कभी-कभी मुझे अफसोस होता था कि मैं और सुंदर नहीं थी; कभी-कभी मैं चाहती थी कि मेरे गाल गुलाबी हों, नाक सीधी हो और होंठ चेरी जैसे छोटे हों; मैं लंबी, गरिमामय और सुगठित काया की होना चाहती थी; मुझे दुर्भाग्य लगता था कि मैं इतनी छोटी, इतनी पीली और मेरे चेहरे की बनावट इतनी अनियमित और स्पष्ट थी। और ये आकांक्षाएं और अफसोस मेरे मन में क्यों थे? यह कहना मुश्किल होगा: मैं उस समय स्पष्ट रूप से खुद से नहीं कह सकती थी; फिर भी मेरे पास एक कारण था, और वह भी तार्किक, स्वाभाविक कारण। हालांकि, जब मैंने अपने बालों को अच्छी तरह से कंघी कर लिया, और अपनी काली फ्रॉक पहन ली - जो कि भले ही क्वेकर्स की शैली की थी, लेकिन कम से कम इतनी तो अच्छी तरह फिट बैठती थी - और अपने साफ सफेद टकर को ठीक कर लिया, तो मुझे लगा कि मैं श्रीमती फेयरफैक्स के सामने पेश होने के लिए काफी सम्मानजनक दिखूंगी, और मेरी नई छात्रा कम से कम मुझसे घृणा से मुंह नहीं मोड़ेगी। अपने कमरे की खिड़की खोलकर और यह देखकर कि मैंने सब कुछ साफ-सुथरा रखा है, मैं बाहर निकल पड़ी।

लंबी और घनी छतों वाली गैलरी को पार करते हुए, मैं ओक की फिसलन भरी सीढ़ियों से नीचे उतरा; फिर मैं हॉल में पहुँचा: मैं वहाँ एक मिनट के लिए रुका; मैंने दीवारों पर लगी कुछ तस्वीरों को देखा (मुझे याद है, एक तस्वीर में कवच पहने एक गंभीर पुरुष और दूसरी में पाउडर लगे बालों और मोतियों के हार वाली एक महिला थी), छत से लटकते कांसे के दीपक को देखा, और एक बड़ी घड़ी को देखा जिसका ओक का बना हुआ आवरण विचित्र नक्काशी से सजा था, और समय और घिसावट से काला पड़ गया था। सब कुछ मुझे बहुत भव्य और प्रभावशाली लगा; लेकिन मैं भव्यता का इतना आदी नहीं था। हॉल का दरवाज़ा, जो आधा काँच का था, खुला था; मैंने दहलीज पार की। यह शरद ऋतु की एक सुहावनी सुबह थी; सुबह का सूरज शांत भाव से भूरे रंग के पेड़ों और हरे-भरे खेतों पर चमक रहा था; लॉन पर आगे बढ़ते हुए, मैंने ऊपर देखा और हवेली के सामने का नजारा लिया। यह तीन मंजिला थी, आकार में विशाल नहीं, लेकिन काफी बड़ी थी: एक सज्जन का घर, न कि किसी रईस का निवास: ऊपर की ओर बने कंगूरे इसे एक सुंदर दृश्य प्रदान करते थे। इसका धूसर

अग्रभाग एक कौवे के घोंसले की पृष्ठभूमि से स्पष्ट रूप से अलग दिखाई दे रहा था, जिसके कांव-कांव करते निवासी अब उड़ रहे थे: वे लॉन और मैदानों के ऊपर से उड़ते हुए एक विशाल घास के मैदान में उतरे, जो एक धंसी हुई बाड़ से अलग था, और जहाँ बलूत के पेड़ों की तरह मजबूत, गांठदार और चौड़े, विशाल पुराने कांटेदार पेड़ों की एक कतार ने हवेली के नामकरण की व्युत्पत्ति को तुरंत स्पष्ट कर दिया। दूर पहाड़ियाँ थीं: लोवुड के आसपास की पहाड़ियों जितनी ऊँची नहीं, न ही उतनी पथरीली, न ही जीवित दुनिया से अलग करने वाली बाधाओं जैसी; फिर भी पर्याप्त शांत और एकांत पहाड़ियाँ, और ऐसा प्रतीत होता था जैसे थॉर्नफील्ड को एक ऐसे एकांत में समेटे हुए हों जिसकी मुझे मिलकोट के हलचल भरे इलाके के इतने पास होने की उम्मीद नहीं थी। पेड़ों से घिरी छतों वाला एक छोटा सा गाँव इन्हीं पहाड़ियों में से एक की ढलान पर फैला हुआ था; जिले का चर्च थॉर्नफील्ड के करीब स्थित था: इसकी पुरानी मीनार की चोटी घर और द्वारों के बीच एक छोटी पहाड़ी पर नज़र रखती थी।

मैं अभी भी शांत दृश्य और सुखद ताजी हवा का आनंद ले रहा था, कौवों की कांव-कांव को प्रसन्नता से सुन रहा था, हॉल के चौड़े, पुराने अग्रभाग का सर्वेक्षण कर रहा था, और सोच रहा था कि श्रीमती फेयरफैक्स जैसी अकेली छोटी महिला के रहने के लिए यह कितनी शानदार जगह है, तभी वह महिला दरवाजे पर प्रकट हुई।

“क्या! इतनी जल्दी बाहर निकल गए?” उसने कहा। “लगता है तुम जल्दी उठने वाले हो।” मैं उसके पास गया, और उसने मुझे प्यार से चूमा और हाथ मिलाया।

“आपको थॉर्नफील्ड कैसा लगा?” उसने पूछा। मैंने उसे बताया कि मुझे यह बहुत पसंद आया।

“हाँ,” उसने कहा, “यह एक सुंदर जगह है; लेकिन मुझे डर है कि अगर श्री रोचेस्टर यहाँ स्थायी रूप से आकर रहने का फैसला नहीं करते हैं, या कम से कम यहाँ अक्सर आते-जाते नहीं हैं, तो यह अव्यवस्थित हो जाएगा; बड़े घर और सुंदर मैदान मालिक की उपस्थिति को अनिवार्य बनाते हैं।”

“श्रीमान रोचेस्टर!” मैंने हैरानी से कहा। “ये कौन हैं?”

“थॉर्नफील्ड के मालिक,” उसने धीमी आवाज़ में जवाब दिया। “क्या आपको नहीं पता था कि उनका नाम रोचेस्टर था?”

बेशक मैं नहीं जानता था—मैंने उसके बारे में पहले कभी नहीं सुना था; लेकिन उस बूढ़ी महिला को ऐसा लग रहा था मानो उसका अस्तित्व एक सर्वमान्य तथ्य हो,

जिससे हर किसी को सहज रूप से परिचित होना चाहिए।

मैंने आगे कहा, "मुझे लगा था कि थॉर्नफील्ड आपका है।"

“मुझे? वाह! क्या विचार है! मुझे! मैं तो बस घर की देखभाल करने वाली हूँ—मैनेजर। सच कहूँ तो, मैं माँ की तरफ से रोचेस्टर परिवार से दूर का रिश्ता रखती हूँ, या कम से कम मेरे पति रखते थे; वे एक पादरी थे, हे गाँव के पादरी—जो पहाड़ी पर बसा एक छोटा सा गाँव है—और गेट के पास वाला वह चर्च उनका था। वर्तमान श्री रोचेस्टर की माँ फेयरफैक्स थीं, और मेरे पति की चचेरी बहन थीं: लेकिन मैं इस रिश्ते को कभी महत्व नहीं देती—वास्तव में, मेरे लिए यह कुछ भी नहीं है; मैं खुद को एक साधारण गृहणी ही मानती हूँ: मेरे मालिक हमेशा विनम्र हैं, और मैं उनसे इससे अधिक की अपेक्षा नहीं करती।”

और वो छोटी बच्ची — मेरी छात्रा!

“ये श्री रोचेस्टर की देखरेख में पली-बढ़ी हैं; उन्होंने मुझे इनके लिए एक गवर्नेंस ढूंढने का काम सौंपा था। मेरा मानना है कि वे इन्हें —शायर में पालना चाहते थे। ये रही, अपनी ‘बोन’ के साथ, जैसा कि ये अपनी नर्स को बुलाती हैं।” तब रहस्य सुलझ गया: ये मिलनसार और दयालु छोटी विधवा कोई बड़ी महिला नहीं थीं; बल्कि मेरी ही तरह एक आश्रित थीं। मुझे ये बात बुरी नहीं लगी; बल्कि, मुझे पहले से कहीं ज़्यादा खुशी हुई। मेरे और उनके बीच समानता वास्तविक थी; ये उनकी ओर से केवल दया भाव का परिणाम नहीं थी: ये तो और भी अच्छा था – मेरी स्थिति और भी ज़्यादा स्वतंत्र हो गई।

जब मैं इस खोज पर विचार कर रहा था, तभी एक छोटी बच्ची अपनी परिचारिका के साथ लॉन में दौड़ती हुई आई। मैंने अपनी छात्रा की ओर देखा, जिसने पहले तो मुझे अनदेखा कर दिया: वह बिल्कुल छोटी बच्ची थी, शायद सात या आठ साल की, दुबली-पतली, पीली, छोटी-छोटी विशेषताओं वाली चेहरे वाली और कमर तक लहराते घुंघराले बालों वाली।

“सुप्रभात, मिस एडेला,” श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा। “आइए और उस महिला से बात कीजिए जो आपको पढ़ाएगी और एक दिन आपको एक बुद्धिमान महिला बनाएगी।” वह पास आईं।

“सेस्ट ला मा गवर्नर!” उसने मेरी ओर इशारा करते हुए और अपनी नर्स को संबोधित करते हुए कहा; जिसने उत्तर दिया—

"हाँ निश्चित रूप से।"

"क्या वे विदेशी हैं?" मैंने फ्रांसीसी भाषा सुनकर आश्चर्यचकित होकर पूछा।

“नर्स विदेशी है, और एडेल का जन्म यूरोप में हुआ था; और मेरा मानना है कि छह महीने पहले तक वह वहीं थी। जब वह पहली बार यहाँ आई थी तो उसे अंग्रेज़ी बिल्कुल नहीं आती थी; अब वह थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी बोल लेती है: मुझे उसकी बात समझ नहीं आती, वह अंग्रेज़ी को फ्रेंच के साथ मिलाकर बोलती है; लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि आप उसकी बात आसानी से समझ जाएँगे।”

सौभाग्य से मुझे एक फ्रांसीसी महिला से फ्रेंच सीखने का अवसर मिला था; और चूंकि मैं मैडम पियरोट से यथासंभव बातचीत करने का प्रयास करती थी, और इसके अलावा, पिछले सात वर्षों में मैंने प्रतिदिन फ्रेंच का कुछ हिस्सा याद कर लिया था - अपने उच्चारण पर पूरा ध्यान देकर और अपनी शिक्षिका के उच्चारण की यथासंभव नकल करके, मैंने भाषा में एक निश्चित स्तर की दक्षता और शुद्धता प्राप्त कर ली थी, और मैडमोजेल एडेला के साथ बातचीत में मुझे कोई खास परेशानी नहीं होनी चाहिए थी। जब उन्होंने सुना कि मैं उनकी गवर्नेस हूँ, तो वे आईं और मुझसे हाथ मिलाया; और जब मैं उन्हें नाश्ते के लिए ले गई, तो मैंने उनसे उनकी अपनी भाषा में कुछ वाक्य कहे: उन्होंने पहले तो संक्षेप में उत्तर दिया, लेकिन जब हम मेज पर बैठ गए, और उन्होंने अपनी बड़ी भूरी आँखों से लगभग दस मिनट तक मुझे देखा, तो वे अचानक धाराप्रवाह बोलने लगीं।

“आह!” वह फ्रेंच में बोली, “आप मेरी भाषा उतनी ही अच्छी तरह से बोलते हैं जितनी अच्छी तरह से मिस्टर रोचेस्टर बोलते हैं: मैं आपसे वैसे ही बात कर सकती हूँ जैसे उनसे, और सोफी भी। वह खुश होगी: यहाँ कोई उसे समझ नहीं पाता: मैडम फेयरफैक्स पूरी तरह से अंग्रेजी बोलती हैं। सोफी मेरी नर्स है; वह मेरे साथ समुद्र पार एक बड़े जहाज में आई थी जिसमें एक चिमनी थी जिससे धुआँ निकलता था — कितना धुआँ निकलता था! — और मैं बीमार थी, सोफी भी बीमार थी, और मिस्टर रोचेस्टर भी बीमार थे। मिस्टर रोचेस्टर सैलून नामक एक सुंदर कमरे में सोफे पर लेट गए, और सोफी और मैं दूसरी जगह छोटे-छोटे बिस्तरों पर सोए। मैं तो अपने बिस्तर से लगभग गिर ही गई थी; वह एक शेल्फ जैसा था। और मैडमोजेल — आपका नाम क्या है?”

“आयर — जेन आयर।”

“एरे? छी! मैं यह नहीं कह सकती। खैर, हमारा जहाज सुबह, पूरी तरह उजाला होने से पहले, एक बड़े शहर में रुका - एक विशाल शहर, जिसमें बहुत ही अंधेरे घर थे और चारों ओर धुआँ छाया हुआ था; बिल्कुल उस सुंदर साफ-सुथरे शहर जैसा नहीं था जहाँ से मैं आई थी; और मिस्टर रोचेस्टर मुझे अपनी बाहों में उठाकर एक तख्ते पर से किनारे तक ले गए, और सोफी बाद में आई, और हम सब एक कोच में बैठ गए, जो हमें एक खूबसूरत बड़े घर में ले गया, जो इससे भी बड़ा और शानदार था, जिसे होटल कहते थे। हम वहाँ लगभग एक सप्ताह तक रहे: मैं और सोफी हर दिन पेड़ों से भरे एक बड़े हरे-भरे स्थान पर टहलने जाया करते थे, जिसे पार्क कहते थे; और वहाँ मेरे अलावा कई बच्चे थे, और एक तालाब था जिसमें सुंदर पक्षी थे, जिन्हें मैं जूठे टुकड़े खिलाती थी।”

"जब वह इतनी तेज़ी से बोलती है तो क्या आप उसे समझ पाते हैं?" श्रीमती फेयरफैक्स ने पूछा।

मैं उसे बहुत अच्छी तरह समझ गया था, क्योंकि मैं मैडम पियरोट की धाराप्रवाह भाषा का आदी था।

“काश,” उस महिला ने आगे कहा, “आप उससे उसके माता-पिता के बारे में एक-दो सवाल पूछ लेते: मुझे आश्चर्य है कि क्या उसे वे याद हैं?”

मैंने पूछा, "एडेले, जब तुम उस खूबसूरत साफ-सुथरे कस्बे में रहती थी जिसके बारे में तुमने बात की थी, तब तुम किसके साथ रहती थी?"

“मैं बहुत समय पहले माँ के साथ रहती थी; लेकिन अब वो स्वर्ग सिधार चुकी हैं। माँ मुझे नाचना, गाना और कविताएँ सुनाना सिखाती थीं। बहुत से सज्जन और महिलाएं माँ से मिलने आते थे, और मैं उनके सामने नाचती थी, या उनकी गोद में बैठकर उन्हें गीत सुनाती थी: मुझे यह अच्छा लगता था। क्या मैं अब आपको अपना गीत सुनाऊँ?”

उसने नाश्ता कर लिया था, इसलिए मैंने उसे अपनी प्रतिभा का नमूना दिखाने की अनुमति दी। अपनी कुर्सी से उतरकर वह मेरे घुटने पर बैठ गई; फिर, अपने छोटे हाथों को विनम्रता से सामने जोड़कर, अपने बालों को झटकते हुए और अपनी आँखें छत की ओर उठाते हुए, उसने किसी ओपेरा का गीत गाना शुरू कर दिया। यह एक परित्यक्त महिला का गीत था, जो अपने प्रेमी की बेवफाई पर विलाप करने के बाद, आत्मसम्मान का सहारा लेती है; अपनी परिचारिका से अपने सबसे चमकीले गहनों

और सबसे कीमती वस्त्रों से सजने का अनुरोध करती है, और उस रात एक भोज में उस धोखेबाज से मिलने और अपने प्रसन्नतापूर्ण व्यवहार से उसे यह साबित करने का संकल्प करती है कि उसके परित्याग का उस पर कितना कम प्रभाव पड़ा है।

एक नन्हे गायक के लिए यह विषय अजीबोगरीब ढंग से चुना गया प्रतीत हुआ; लेकिन मुझे लगता है कि प्रदर्शनी का उद्देश्य बचपन की तुतलाहट के साथ गाए गए प्रेम और ईर्ष्या के सुरों को सुनना था; और वह उद्देश्य बेहद ही भद्दा था: कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा।

एडेल ने मधुरता से और अपनी उम्र के भोलेपन के साथ वह छोटा सा गीत गाया। यह सुनकर वह मेरी गोद से उठी और बोली, "अब, मैडमोजेल, मैं आपको कुछ कविता सुनाती हूँ।"

एक विशेष मुद्रा अपनाते हुए, उन्होंने "ला लीग डेस रैट्स: फेबल डे ला फॉन्टेन" से शुरुआत की। फिर उन्होंने विराम चिह्नों और उच्चारण पर विशेष ध्यान देते हुए, आवाज में लचीलापन और हावभाव की उपयुक्तता के साथ उस छोटे से अंश का पाठ किया, जो उनकी उम्र के हिसाब से वाकई बहुत असामान्य था, और जिससे यह साबित होता था कि उन्हें सावधानीपूर्वक प्रशिक्षित किया गया था।

मैंने पूछा, "क्या यह तुम्हारी मां ने तुम्हें सिखाया था?"

“हाँ, और वो इसे इस तरह कहती थीं: ‘Qu’ avez vous donc? lui dit un de ces rats; parlez!’ वो मुझे हाथ उठाने के लिए कहती थीं—ताकि मुझे याद रहे कि सवाल के समय मुझे अपनी आवाज़ ऊँची करनी है। अब क्या मैं आपके लिए नाचूँ?”

“नहीं, इतना ठीक रहेगा: लेकिन जैसा कि आप कहते हैं, आपकी मां के पवित्र कुंवारी के पास जाने के बाद, आप किसके साथ रहते थे?”

“मैं मैडम फ्रेडरिक और उनके पति के साथ रहती थी: वे मेरी देखभाल करती थीं, लेकिन उनका मुझसे कोई रिश्ता नहीं था। मुझे लगता है कि वे गरीब थीं, क्योंकि उनका घर मेरी माँ के घर जितना आलीशान नहीं था। मैं वहाँ ज़्यादा दिन नहीं रही। मिस्टर रोचेस्टर ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उनके साथ इंग्लैंड जाकर रहना चाहूँगी, और मैंने हाँ कह दी; क्योंकि मैं मैडम फ्रेडरिक से पहले मिस्टर रोचेस्टर को जानती थी, और वे हमेशा मेरे प्रति दयालु थे और मुझे सुंदर कपड़े और खिलौने देते थे: लेकिन आप देख सकते हैं कि उन्होंने अपना वादा नहीं निभाया, क्योंकि वे मुझे इंग्लैंड ले आए,

और अब वे खुद वापस चले गए हैं, और मैं उन्हें कभी नहीं देख पाती।”

नाश्ते के बाद, एडेल और मैं पुस्तकालय में चले गए, जिसे श्री रोचेस्टर ने स्कूल के कमरे के रूप में इस्तेमाल करने का निर्देश दिया था। अधिकांश पुस्तकें काँच के दरवाजों के पीछे बंद थीं; लेकिन एक अलमारी खुली थी जिसमें प्राथमिक शिक्षा के लिए आवश्यक सभी पुस्तकें और कई हल्की-फुल्की साहित्य, कविता, जीवनी, यात्रा वृत्तांत, कुछ प्रेम उपन्यास आदि रखे थे। मुझे लगता है कि उन्होंने सोचा होगा कि ये सभी पुस्तकें गवर्नेंस के निजी अध्ययन के लिए पर्याप्त होंगी; और वास्तव में, इनसे मेरा फिलहाल मन भर गया; लोवुड में मुझे जो थोड़ी-बहुत सामग्री मिलती थी, उसकी तुलना में ये पुस्तकें मनोरंजन और जानकारी का भरपूर भंडार लग रही थीं। इस कमरे में एक नया और बेहतरीन ध्वनि वाला पियानो भी था; साथ ही चित्रकारी के लिए एक स्टैंड और दो ग्लोब भी थे।

मैंने अपनी छात्रा को काफी आज्ञाकारी पाया, हालांकि वह पढ़ाई में ज्यादा रुचि नहीं दिखा रही थी: उसे किसी भी तरह के नियमित काम की आदत नहीं थी। मुझे लगा कि शुरुआत में उसे ज्यादा बांधकर रखना ठीक नहीं होगा; इसलिए, जब मैंने उससे काफी देर तक बात की और उसे थोड़ा-बहुत सिखा दिया, और जब सुबह से दोपहर हो गई, तो मैंने उसे उसकी आया के पास वापस जाने दिया। फिर मैंने सोचा कि मैं दोपहर के भोजन तक उसके लिए कुछ छोटे-छोटे चित्र बना लूँगी।

जब मैं अपना पोर्टफोलियो और पेंसिलें लेने ऊपर जा रहा था, तभी श्रीमती फेयरफैक्स ने मुझे आवाज़ दी: “मुझे लगता है कि अब तुम्हारी सुबह की पढ़ाई खत्म हो गई है,” उन्होंने कहा। वह एक कमरे में थीं जिसके तह वाले दरवाजे खुले हुए थे: उनके बोलने पर मैं अंदर चला गया। वह एक बड़ा, आलीशान कमरा था, जिसमें बैंगनी कुर्सियाँ और पर्दे, टर्की कालीन, अखरोट की लकड़ी की दीवारें, तिरछे शीशे वाली एक विशाल खिड़की और भव्य नक्काशी वाली ऊँची छत थी। श्रीमती फेयरफैक्स एक साइडबोर्ड पर रखे कुछ सुंदर बैंगनी रंग के फूलदानों की धूल झाड़ रही थीं।

"कितना सुंदर कमरा है!" मैंने चारों ओर देखते हुए कहा; क्योंकि मैंने इससे पहले कभी इतना भव्य कमरा नहीं देखा था।

“जी हाँ; यह भोजन कक्ष है। मैंने अभी खिड़की खोली है, ताकि थोड़ी हवा और धूप अंदर आ सके; क्योंकि जिन कमरों में कम ही लोग रहते हैं, उनमें सब कुछ बहुत सीलन भरा हो जाता है; वह ड्राइंग रूम तो किसी तहखाने जैसा लगता है।”

उसने खिड़की के सामने बने एक चौड़े मेहराब की ओर इशारा किया, जिस पर टायरियन शैली में रंगा हुआ पर्दा लटका हुआ था, जो अब ऊपर उठा हुआ था। दो चौड़ी सीढ़ियाँ चढ़कर, मैंने अंदर झाँका, और मुझे लगा जैसे मैंने किसी परीलोक की झलक देख ली हो, क्योंकि मेरी अनुभवहीन आँखों को वह दृश्य इतना चमकीला लगा। लेकिन वह महज़ एक बहुत ही सुंदर ड्राइंग रूम था, और उसके अंदर एक छोटा सा कमरा, दोनों में सफ़ेद कालीन बिछे थे, जिन पर मानो फूलों की चमकदार मालाएँ सजी हों; दोनों की छतें सफ़ेद अंगूरों और लताओं की बर्फीली नक्काशी से सजी थीं, जिनके नीचे गहरे लाल रंग के सोफे और ओटोमन एक शानदार कंट्रास्ट में चमक रहे थे; जबकि हल्के रंग के पैरियन मेंटलपीस पर लगे आभूषण चमकीले बोहेमियन कांच के थे, जो माणिक लाल रंग के थे; और खिड़कियों के बीच बड़े-बड़े दर्पण बर्फ और आग के उस मिश्रित रंग को दोहरा रहे थे।

मैंने कहा, "श्रीमती फेयरफैक्स, आप इन कमरों को कितनी व्यवस्थित रखती हैं!" "न धूल है, न ही कैनवास के पर्दे: सिवाय इसके कि हवा ठंडी लगती है, ऐसा लगता है जैसे इनमें रोजाना लोग रहते हों।"

"क्यों, मिस आयर, हालांकि मिस्टर रोचेस्टर का यहाँ आना दुर्लभ है, लेकिन वे हमेशा अचानक और अप्रत्याशित रूप से आते हैं; और जैसा कि मैंने देखा कि उन्हें सब कुछ सँवारा हुआ और उनके आगमन पर व्यवस्था की भागदौड़ देखकर परेशानी होती है, इसलिए मैंने कमरों को तैयार रखना ही सबसे अच्छा समझा।"

"क्या मिस्टर रोचेस्टर एक सख्त और नज़ाकत पसंद व्यक्ति हैं?"

"ऐसा बिल्कुल नहीं है; लेकिन उनमें एक सज्जन व्यक्ति की रुचियां और आदतें हैं, और वे उम्मीद करते हैं कि चीजों का प्रबंधन उनके अनुरूप ही किया जाए।"

“क्या आप उसे पसंद करते हैं? क्या उसे आम तौर पर पसंद किया जाता है?”

“ओह, जी हाँ; इस परिवार का यहाँ हमेशा से सम्मान रहा है। इस मोहल्ले की लगभग सारी ज़मीन, जहाँ तक नज़र जाती है, सदियों से रोचेस्टर परिवार की रही है।”

"अच्छा, लेकिन, उसकी ज़मीन की बात छोड़ दें तो, क्या आप उसे पसंद करते हैं? क्या उसे उसके अपने गुणों के लिए पसंद किया जाता है?"

"मेरे पास उसके जैसा न करने का कोई कारण नहीं है; और मेरा मानना है कि उसके किरायेदार उसे एक न्यायप्रिय और उदार जमींदार मानते हैं: लेकिन वह कभी भी उनके बीच ज्यादा नहीं रहा है।"

लेकिन क्या उसमें कोई विलक्षणता नहीं है? संक्षेप में, उसका चरित्र कैसा है?

"ओह! मुझे लगता है कि उनका चरित्र बेदाग है। शायद वे थोड़े सनकी हैं: उन्होंने बहुत यात्रा की है और दुनिया का बहुत कुछ देखा है, ऐसा मुझे लगता है। मैं कह सकता हूँ कि वे चतुर हैं, लेकिन मेरी उनसे कभी ज्यादा बातचीत नहीं हुई।"

वह किस तरह से विलक्षण है?

"मुझे नहीं पता—इसे शब्दों में बयान करना आसान नहीं है—कुछ खास नहीं, लेकिन जब वह आपसे बात करता है तो आप इसे महसूस कर सकते हैं; आप हमेशा निश्चित नहीं हो सकते कि वह मजाक कर रहा है या गंभीर है, वह खुश है या इसके विपरीत; संक्षेप में, आप उसे पूरी तरह से नहीं समझ पाते—कम से कम मैं तो नहीं समझ पाता: लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, वह बहुत अच्छा शिक्षक है।"

श्रीमती फेयरफैक्स से मुझे उनके और मेरे मालिक के बारे में बस इतनी ही जानकारी मिली। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें किसी व्यक्ति या वस्तु के चरित्र-चित्रण या उसके मुख्य बिंदुओं को समझने और उनका वर्णन करने का कोई ज्ञान नहीं होता: यह महिला स्पष्ट रूप से इसी श्रेणी में आती थीं; मेरे प्रश्नों ने उन्हें उलझन में तो डाला, लेकिन उनसे कोई स्पष्टीकरण नहीं मिला। उनकी नज़र में श्री रोचेस्टर, श्री रोचेस्टर ही थे; एक सज्जन, एक ज़मींदार – इससे अधिक कुछ नहीं: उन्होंने आगे कोई पूछताछ या खोजबीन नहीं की और स्पष्ट रूप से मेरी उनकी पहचान के बारे में अधिक स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने की इच्छा पर आश्चर्य व्यक्त किया।

भोजन कक्ष से निकलते ही, उसने मुझे घर का बाकी हिस्सा दिखाने का प्रस्ताव रखा; और मैं उसके पीछे-पीछे ऊपर-नीचे गया, हर चीज़ की सुंदरता को निहारता रहा; क्योंकि सब कुछ सुव्यवस्थित और आकर्षक था। मुझे सामने के बड़े कमरे विशेष रूप से भव्य लगे: और तीसरी मंजिल के कुछ कमरे, हालांकि अंधेरे और छोटे थे, अपनी प्राचीनता के कारण दिलचस्प थे। निचले कमरों में रखा फर्नीचर समय-समय पर फैशन बदलने के साथ यहाँ लाया जाता रहा था: और उनकी संकरी खिड़कियों से आती धुंधली रोशनी में सौ साल पुराने पलंग दिखाई दे रहे थे; ओक या अखरोट की लकड़ी के संदूक, जिन पर ताड़ की शाखाओं और देवदूतों के सिर की अजीब नक्काशी थी, मानो हिब्रू सन्दूक की मूर्तियाँ हों; ऊँची पीठ वाली संकरी कुर्सियों की कतारें; और भी पुराने स्टूल, जिनके गद्दीदार शीर्षों पर अभी भी आधी मिट चुकी कढ़ाई के निशान दिखाई दे रहे थे, जो उन उंगलियों द्वारा की गई थीं जो दो पीढ़ियों से मृत हो चुकी थीं।

इन सभी अवशेषों ने थॉर्नफील्ड हॉल की तीसरी मंजिल को अतीत के घर जैसा रूप दिया: स्मृति का एक पवित्र स्थान। मुझे दिन के समय इन एकांत स्थानों की खामोशी, उदासी और विचित्रता पसंद थी; लेकिन उन चौड़े और भारी पलंगों में से किसी एक पर रात बिताने की मेरी बिल्कुल भी इच्छा नहीं थी: कुछ पलंग ओक के दरवाजों से बंद थे; अन्य पुराने अंग्रेजी शैली के पर्दों से ढके थे जिन पर मोटी नक्काशी की गई थी, जिनमें अजीबोगरीब फूलों, अजीबोगरीब पक्षियों और अजीबोगरीब इंसानों की आकृतियाँ बनी थीं— ये सब चाँदनी की मंद रोशनी में वाकई अजीब लगते।

मैंने पूछा, "क्या नौकर इन कमरों में सोते हैं?"

“नहीं; वे पीछे की ओर कई छोटे अपार्टमेंट में रहते हैं; यहाँ कोई कभी नहीं सोता: ऐसा लगता है मानो अगर थॉर्नफील्ड हॉल में कोई भूत होता, तो यही उसका अड्डा होता।”

"तो मुझे लगता है: आपके पास कोई भूत नहीं है, है ना?"

"मैंने तो कभी इसके बारे में नहीं सुना," श्रीमती फेयरफैक्स ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

“क्या किसी की कोई परंपराएं हैं? क्या कोई किंवदंतियां या भूत-प्रेत की कहानियां हैं?”

“मुझे ऐसा नहीं लगता। फिर भी यह कहा जाता है कि रोचेस्टर अपने समय में शांत स्वभाव की बजाय हिंसक जाति थे: शायद यही कारण है कि वे अब अपनी कब्रों में शांति से विश्राम कर रहे हैं।”

“हाँ— ‘जीवन के उतार-चढ़ाव भरे दौर के बाद वे चैन से सोते हैं’,” मैंने बुदबुदाया। “अब आप कहाँ जा रही हैं, श्रीमती फेयरफैक्स?” क्योंकि वह जा रही थीं।

“ऊपर की ओर चलते हैं; क्या आप वहाँ से नज़ारा देखना चाहेंगे?” मैं उनके पीछे-पीछे एक बहुत ही संकरी सीढ़ी से अटारी तक गया, और वहाँ से एक सीढ़ी और एक गुप्त द्वार से होते हुए हॉल की छत पर पहुँचा। अब मैं कौवों के झुंड के बराबर ऊँचाई पर था, और उनके घोंसलों में देख सकता था। प्राचीरों पर झुककर और नीचे दूर तक देखते हुए, मैंने नक्शे की तरह फैले मैदान का जायज़ा लिया: चमकीला और मखमली लॉन हवेली के भूरे आधार को कसकर घेरे हुए था; मैदान, एक पार्क जितना चौड़ा, अपने प्राचीन पेड़ों से भरा हुआ; जंगल, मटमैला और सूखा, एक पगडंडी से विभाजित, जो स्पष्ट रूप से झाड़ियों से ढकी हुई थी, पेड़ों की पत्तियों से भी ज़्यादा

हरी काई से ढकी हुई थी; द्वार पर स्थित गिरजाघर, सड़क, शांत पहाड़ियाँ, सभी शरद ऋतु के दिन के सूरज में विश्राम कर रहे थे; क्षितिज एक शुभ आकाश से घिरा हुआ था, नीला, मोती जैसे सफेद रंग से जड़ा हुआ। दृश्य में कोई भी विशेषता असाधारण नहीं थी, लेकिन सब कुछ मनमोहक था। जब मैं वहाँ से मुड़ा और गुप्त द्वार से वापस आया, तो मुझे सीढ़ी से नीचे उतरने का रास्ता मुश्किल से दिखाई दे रहा था; ऊपर की ओर देखते हुए नीले आकाश के उस मेहराब और उस धूप से जगमगाते दृश्य की तुलना में अटारी एक तिजोरी की तरह काली लग रही थी, जिसमें उपवन, चारागाह और हरी पहाड़ी शामिल थी, जिसका केंद्र वह हॉल था, और जिस पर मैं आनंद से निहार रहा था।

श्रीमती फेयरफैक्स कुछ देर रुककर गुप्त द्वार बंद करने लगीं; मैंने टटोलते हुए अटारी से बाहर निकलने का रास्ता खोज लिया और संकरी सीढ़ी से नीचे उतरने लगा। मैं उस लंबे गलियारे में कुछ देर रुका, जो तीसरी मंजिल के आगे और पीछे के कमरों को अलग करता था: संकरा, नीचा और धुंधला, जिसके एक छोर पर केवल एक छोटी सी खिड़की थी, और बंद छोटे काले दरवाजों की दो पंक्तियों के साथ, किसी ब्लूबीयर्ड के महल के गलियारे जैसा लग रहा था।

जब मैं धीरे-धीरे टहल रहा था, तभी इस शांत इलाके में मुझे जिस आखिरी आवाज़ की उम्मीद थी, वो थी एक हंसी। ये एक अजीब सी हंसी थी; साफ, औपचारिक, भावहीन। मैं रुक गया: आवाज़ एक पल के लिए रुकी; फिर से शुरू हुई, और तेज़: क्योंकि पहले तो साफ थी, लेकिन बहुत धीमी थी। वो एक शोरगुल भरी गूंज में बदल गई, मानो हर सुनसान कमरे में उसकी गूंज सुनाई दे रही हो; हालांकि वो सिर्फ एक कमरे से शुरू हुई थी, और मैं उस दरवाजे की ओर इशारा कर सकता था जहां से आवाज़ आ रही थी।

“श्रीमती फेयरफैक्स!” मैंने पुकारा, क्योंकि अब मुझे उनकी बड़ी सीढ़ियों से नीचे उतरती हुई आवाज़ सुनाई दे रही थी। “क्या आपने वो ज़ोरदार हंसी सुनी? कौन है वो?”

“संभवतः कुछ नौकरानियां,” उसने उत्तर दिया: “शायद ग्रेस पूल।”

“क्या तुमने सुना?” मैंने फिर पूछा।

"हां, बिल्कुल: मैं अक्सर उसकी आवाज सुनती हूं: वह इन्हीं कमरों में से एक में सिलाई करती है। कभी-कभी लिआ भी उसके साथ होती है; वे अक्सर साथ में शोर

मचाती हैं।"

हंसी धीमी, अक्षरीय ध्वनि में दोहराई गई और एक अजीब सी बड़बड़ाहट में समाप्त हुई।

"ग्रेस!" श्रीमती फेयरफैक्स ने हैरानी से कहा।

मुझे सचमुच ग्रेस के जवाब की उम्मीद नहीं थी; क्योंकि वह हंसी इतनी दुखद और अलौकिक थी जितनी मैंने कभी सुनी थी; और अगर दोपहर का समय न होता, और उस अजीब सी हंसी में भूतियापन का कोई संकेत न होता; और न ही वह दृश्य और मौसम डर के अनुकूल होता, तो मैं अंधविश्वासवश डर जाता। हालांकि, इस घटना ने मुझे दिखा दिया कि आश्चर्य की भावना रखना भी मेरी मूर्खता थी।

मेरे सबसे पास वाला दरवाजा खुला और एक नौकरानी बाहर आई - तीस से चालीस वर्ष की एक महिला; गठीली, चौकोर कद-काठी वाली, लाल बालों वाली और सख्त, भावहीन चेहरे वाली: इससे कम रोमांटिक या कम भूतिया दिखने वाली किसी और आकृति की कल्पना करना मुश्किल था।

"बहुत शोर है, ग्रेस," श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा। "रास्ते याद रखना!" ग्रेस ने चुपचाप झुककर अभिवादन किया और अंदर चली गई।

विधवा ने आगे कहा, "वह एक ऐसी महिला है जिससे हमें सिलाई करनी पड़ती है और लीह को उसके घरेलू कामों में मदद करनी पड़ती है; कुछ मामलों में वह पूरी तरह से निर्दोष नहीं है, लेकिन वह ठीक-ठाक काम कर लेती है। वैसे, आज सुबह आपकी नई छात्रा के साथ आपका कैसा अनुभव रहा?"

इस प्रकार एडेल पर केंद्रित बातचीत तब तक जारी रही जब तक हम नीचे के उजाले और खुशनुमा क्षेत्र में नहीं पहुँच गए। एडेल दौड़ती हुई हॉल में हमसे मिलने आई और खुशी से चिल्लाई—

"महिलाओं, आपका खाना परोसा जा रहा है!" और साथ ही कहा, "मुझे बहुत भूख लगी है!"

हमें श्रीमती फेयरफैक्स के कमरे में खाना तैयार मिला, जो हमारा इंतजार कर रहा था।

अध्याय XII

थॉर्नफील्ड हॉल से मेरे पहले शांत परिचय ने एक सुगम करियर का जो वादा किया था, वह उस स्थान और वहां के निवासियों से लंबे समय तक परिचित होने पर झूठा साबित नहीं हुआ। श्रीमती फेयरफैक्स वैसी ही निकलीं जैसी वह दिखती थीं - शांत स्वभाव वाली, दयालु महिला, अच्छी शिक्षा प्राप्त और औसत बुद्धि वाली। मेरी छात्रा एक चंचल बच्ची थी, जिसे बहुत लाड़-प्यार मिला था, इसलिए वह कभी-कभी जिद्दी हो जाती थी; लेकिन चूंकि वह पूरी तरह से मेरी देखरेख में थी, और किसी भी तरफ से कोई अनुचित हस्तक्षेप उसके सुधार की मेरी योजनाओं में बाधा नहीं बना, इसलिए उसने जल्द ही अपनी छोटी-मोटी शरारतों को भुला दिया और आज्ञाकारी और सीखने की इच्छुक बन गई। उसमें कोई बड़ी प्रतिभा नहीं थी, चरित्र के कोई विशिष्ट लक्षण नहीं थे, भावनाओं या रुचि का कोई ऐसा विशेष विकास नहीं था जो उसे बचपन के सामान्य स्तर से एक इंच भी ऊपर उठाता; लेकिन न ही उसमें कोई ऐसी कमी या अवगुण था जो उसे उससे नीचे गिराता। उसने उचित प्रगति की, मेरे प्रति एक जीवंत, हालांकि शायद बहुत गहरा नहीं, स्नेह रखती थी; और उनकी सादगी, हंसमुख बातचीत और दूसरों को खुश करने के प्रयासों ने मुझे बदले में एक हद तक लगाव से प्रेरित किया, जो हम दोनों को एक-दूसरे की संगति में संतुष्ट रखने के लिए पर्याप्त था।

यह बात उन लोगों को ठंडी भाषा लग सकती है जो बच्चों के देवदूत स्वभाव और उनकी शिक्षा का दायित्व मानने वालों के कर्तव्य के बारे में गंभीर मत रखते हैं, और यह मानते हैं कि बच्चों के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव रखना आवश्यक है। लेकिन मैं माता-पिता के अहंकार को बढ़ावा देने, पाखंड को दोहराने या ढोंग को सहारा देने के लिए नहीं लिख रहा हूँ; मैं केवल सच कह रहा हूँ। मुझे एडेल के कल्याण और प्रगति के लिए सच्ची चिंता थी, और उसके छोटे से रूप से मुझे गहरा लगाव था: ठीक वैसे ही जैसे श्रीमती फेयरफैक्स के प्रति मेरे मन में उनकी दयालुता के लिए कृतज्ञता थी, और उनके साथ समय बिताना मुझे उतना ही सुखद लगता था जितना कि उनके मेरे प्रति शांत भाव और उनके संयमित स्वभाव के कारण।

जो चाहे मुझे दोष दे सकता है, लेकिन मैं आगे यह भी कहना चाहूँगी कि कभी-कभी जब मैं अकेले बगीचे में टहलने जाती थी; जब मैं फाटकों तक जाती और उनसे सड़क को देखती; या जब एडेल अपनी नर्स के साथ खेल रही होती और श्रीमती फेयरफैक्स भंडारगृह में जेली बना रही होतीं, तब मैं तीन सीढ़ियाँ चढ़कर अटारी का दरवाज़ा खोलती और ऊपर पहुँचकर दूर एकांत खेतों और पहाड़ियों तथा धुंधले क्षितिज को देखती — तब मुझे ऐसी दृष्टि की लालसा होती जो उस सीमा को पार कर सके; जो उस व्यस्त दुनिया, उन कस्बों, उन जीवंत क्षेत्रों तक पहुँच सके जिनके बारे में मैंने सुना तो था लेकिन कभी देखा नहीं था — तब मुझे अपने पास मौजूद अनुभव से कहीं अधिक व्यावहारिक अनुभव की इच्छा होती; अपने जैसे लोगों से मेलजोल की, विभिन्न चरित्रों से परिचय की, जो यहाँ मेरी पहुँच से बाहर था। मैं श्रीमती फेयरफैक्स और एडेल में जो अच्छाई थी उसकी सराहना करती थी; लेकिन मैं अच्छाई के अन्य और अधिक जीवंत रूपों में विश्वास करती थी, और जिस अच्छाई में मैं विश्वास करती थी उसे देखना चाहती थी।

मुझे कौन दोष देगा? निस्संदेह कई लोग; और मुझे असंतुष्ट कहा जाएगा। मैं कुछ नहीं कर सकता था: बेचैनी मेरे स्वभाव में थी; कभी-कभी यह मुझे पीड़ा पहुँचाती थी। तब मेरा एकमात्र सहारा तीसरी मंजिल के गलियारे में आगे-पीछे टहलना था, उस स्थान की शांति और एकांत में सुरक्षित महसूस करना, और अपने मन को उन सभी उज्ज्वल दृश्यों पर टिके रहने देना जो उसके सामने उभरते थे - और निश्चित रूप से, वे अनेक और चमकते थे; अपने हृदय को उस उल्लासपूर्ण हलचल से भर देना, जो उसे कष्ट से भरते हुए भी जीवन से भर देती थी; और सबसे बढ़कर, अपने अंतर्मन को एक ऐसी कहानी सुनने देना जो कभी समाप्त नहीं होती थी - एक ऐसी कहानी जिसे मेरी कल्पना ने रचा और निरंतर सुनाया; घटनाओं, जीवन, जोश, भावनाओं से भरपूर, जो मैं चाहता था और अपने वास्तविक जीवन में नहीं पा सका था।

यह कहना व्यर्थ है कि मनुष्य को शांति से संतुष्ट हो जाना चाहिए: उन्हें सक्रियता चाहिए; और यदि उन्हें सक्रियता न मिले तो वे उसे स्वयं उत्पन्न कर लेंगे। लाखों लोग मुझसे भी बदतर नियति का सामना कर रहे हैं, और लाखों लोग अपनी नियति के विरुद्ध मौन विद्रोह कर रहे हैं। यह कोई नहीं जानता कि पृथ्वी पर रहने वाले लोगों के जनसमूह में राजनीतिक विद्रोहों के अलावा कितने विद्रोह सुलग रहे हैं। आम तौर पर महिलाओं को बहुत शांत माना जाता है: लेकिन महिलाएं भी पुरुषों की तरह ही

भावनाएं महसूस करती हैं; उन्हें भी अपने कौशल के विकास और प्रयासों के लिए उतने ही अवसर चाहिए जितने उनके भाइयों को; वे भी अत्यधिक कठोर बंधन और पूर्ण गतिरोध से उतनी ही पीड़ा झेलती हैं जितनी पुरुष झेलते हैं; और यह कहना संकीर्ण सोच है कि उनकी अधिक विशेषाधिकार प्राप्त सह-मानवों को केवल हलवा बनाने, मोज़े बुनने, पियानो बजाने और थैले कढ़ाई करने तक ही सीमित रहना चाहिए। यदि वे अपने लिंग के लिए निर्धारित मानदंडों से अधिक कुछ करने या सीखने का प्रयास करती हैं, तो उनकी निंदा करना या उन पर हंसना नासमझी है।

जब मैं इस तरह अकेला होता था, तो अक्सर ग्रेस पूल की हंसी सुनता था: वही गूंज, वही धीमी, हल्की हा! हा! जो पहली बार सुनकर मुझे रोमांचित कर देती थी। मैं उसकी अजीबोगरीब बड़बड़ाहट भी सुनता था; जो उसकी हंसी से भी ज़्यादा अजीब थी। कुछ दिन ऐसे होते थे जब वह बिल्कुल चुप रहती थी; लेकिन कुछ दिन ऐसे भी होते थे जब मैं उसकी आवाज़ों का कारण नहीं समझ पाता था। कभी-कभी मैं उसे देखता था: वह अपने कमरे से हाथ में बेसिन, प्लेट या ट्रे लेकर बाहर आती, रसोई में जाती और थोड़ी देर में लौट आती, आमतौर पर (ओह, रोमांटिक पाठक, मुझे सच बताने के लिए क्षमा करें!) पोर्टर का एक बर्तन लिए हुए। उसकी उपस्थिति हमेशा उसकी मौखिक विचित्रताओं से उत्पन्न जिज्ञासा को कम कर देती थी: कठोर चेहरे और गंभीर स्वभाव वाली, उसमें ऐसी कोई बात नहीं होती थी जिस पर ध्यान दिया जा सके। मैंने उससे बातचीत शुरू करने की कुछ कोशिशें कीं, लेकिन वह कम बोलने वाली लगती थी: एक शब्द का जवाब आमतौर पर हर कोशिश को नाकाम कर देता था।

घर के अन्य सदस्य, अर्थात् जॉन और उसकी पत्नी, नौकरानी लीह और फ्रांसीसी नर्स सोफी, भले लोग थे; लेकिन उनमें कोई खास बात नहीं थी; मैं सोफी से फ्रेंच में बात करता था और कभी-कभी उससे उसके देश के बारे में सवाल पूछता था; लेकिन वह वर्णनात्मक या कथात्मक शैली की नहीं थी और आमतौर पर ऐसे नीरस और उलझे हुए जवाब देती थी जो जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने के बजाय उसे कम कर देते थे।

अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर बीत गए। जनवरी की एक दोपहर, श्रीमती फेयरफैक्स ने एडेल के लिए छुट्टी की गुहार लगाई, क्योंकि उन्हें सर्दी हो गई थी; और, चूंकि एडेल ने भी इस अनुरोध का उत्साहपूर्वक समर्थन किया, जिससे मुझे अपने बचपन में कभी-

कभार मिलने वाली छुट्टियों का महत्व याद आ गया, इसलिए मैंने उनकी बात मान ली, यह सोचकर कि मैंने इस मामले में लचीलापन दिखाकर अच्छा किया। वह एक सुहावना, शांत दिन था, हालांकि बहुत ठंड थी; मैं पूरी सुबह पुस्तकालय में बैठे-बैठे थक गई थी: श्रीमती फेयरफैक्स ने अभी-अभी एक पत्र लिखा था जो डाक से भेजा जाना बाकी था, इसलिए मैंने अपनी टोपी और लबादा पहना और उसे हे तक ले जाने की पेशकश की; दो मील की दूरी सर्दियों की दोपहर में एक सुखद सैर होगी। मैंने देखा कि एडेल श्रीमती फेयरफैक्स के बैठक कक्ष में चूल्हे के पास अपनी छोटी कुर्सी पर आराम से बैठी थी, और मैंने उसे खेलने के लिए उसकी सबसे अच्छी मोम की गुड़िया (जिसे मैं आमतौर पर दराज में चांदी के कागज में लपेटकर रखती थी) और मनोरंजन के लिए एक कहानी की किताब दी; और उसे जवाब देते हुए, "रेवेनेज़ बिएंट, मा बोने एमी, मा चेरे एमडीले। जेनेट," एक चुंबन के साथ मैं बाहर चला गया।

ज़मीन सख्त थी, हवा थम सी गई थी, मेरा रास्ता सुनसान था; मैं तेज़ चलता रहा जब तक कि मुझे गर्मी महसूस नहीं हुई, और फिर मैं धीरे-धीरे चलने लगा ताकि उस समय और उस जगह पर मौजूद सुख के विभिन्न रूपों का आनंद ले सकूँ और उनका विश्लेषण कर सकूँ। तीन बज रहे थे; जब मैं घंटाघर के नीचे से गुज़रा तो चर्च की घंटी बजी: उस समय का आकर्षण उसकी बढ़ती धुंध में, ढलते और हल्के-फुल्के सूरज में था। मैं थॉर्नफील्ड से एक मील दूर एक ऐसी गली में था जो गर्मियों में जंगली गुलाबों के लिए, पतझड़ में मेवों और ब्लैकबेरी के लिए प्रसिद्ध थी, और अब भी उसमें कुछ मूंगा जैसे फल और बेर मौजूद थे, लेकिन सर्दियों में उसका सबसे बड़ा आनंद उसकी पूर्ण शांति और पत्तों से रहित सन्नाटे में था। अगर हवा का एक झोंका भी चलता, तो यहाँ उसकी कोई आवाज़ नहीं होती; क्योंकि यहाँ न तो कोई होली का पेड़ था, न ही कोई सदाबहार पेड़ जो सरसराहट करता, और बिना पत्तों वाली हॉथोर्न और हेज़ल की झाड़ियाँ उतनी ही शांत थीं जितनी कि रास्ते के बीच में बने सफेद, घिसे हुए पत्थर। दूर-दूर तक, दोनों ओर, केवल खेत थे, जहाँ अब कोई मवेशी नहीं चरते थे; और झाड़ी में कभी-कभार हिलने-डुलने वाले छोटे भूरे पक्षी, ऐसे प्रतीत होते थे मानो वे एक-एक भूरे पत्ते हों जो गिरना भूल गए हों।

यह गली हे तक पूरी तरह से ऊपर की ओर जाती थी; बीच में पहुँचकर मैं एक सीढ़ी पर बैठ गया जो वहाँ से एक खेत में जाती थी। मैंने अपना लबादा अपने चारों ओर लपेट लिया और अपने हाथों को मफ में ढक लिया, जिससे मुझे ठंड नहीं लगी,

हालाँकि बहुत ठंड थी; इसका प्रमाण उस बर्फ की चादर से मिलता है जो पुल को ढके हुए थी, जहाँ कुछ दिन पहले बर्फ पिघलने के बाद एक छोटी सी धारा बह रही थी, जो अब जम गई थी। अपनी जगह से मैं थॉर्नफील्ड को देख सकता था: नीचे घाटी में धूसर और बुर्जदार हॉल मुख्य आकर्षण था; इसके जंगल और घने पक्षी-चिड़ियाघर पश्चिम की ओर फैले हुए थे। मैं तब तक रुका रहा जब तक सूरज पेड़ों के बीच डूब नहीं गया और उनके पीछे लालिमा लिए हुए साफ रंग में गायब हो गया। फिर मैं पूर्व की ओर मुड़ गया।

मेरे ऊपर पहाड़ी की चोटी पर उगता हुआ चाँद बैठा था; बादल की तरह पीला, लेकिन क्षण भर के लिए चमकता हुआ, वह हे पर नज़र गड़ाए हुए था, जो पेड़ों में आधा छिपा हुआ था और अपनी कुछ चिमनियों से नीला धुआँ उड़ा रहा था: वह अभी भी एक मील दूर था, लेकिन पूर्ण सन्नाटे में मैं उसकी हल्की फुसफुसाहट साफ सुन सकता था। मेरे कान धाराओं के प्रवाह को भी महसूस कर रहे थे; किन घाटियों और गहराइयों में, यह मैं नहीं बता सकता था: लेकिन हे के पार कई पहाड़ियाँ थीं, और निस्संदेह कई छोटी नदियाँ उनके दर्रों से होकर बह रही थीं। उस शाम की शांति में सबसे पास की धाराओं की कलकल और सबसे दूर की धाराओं की सरसराहट एक समान सुनाई दे रही थी।

इन हल्की लहरों और फुसफुसाहटों के बीच एक कर्कश ध्वनि फूट पड़ी, जो एक साथ इतनी दूर और इतनी स्पष्ट थी: एक स्पष्ट पदचाप, पदचाप, एक धातुई खड़खड़ाहट, जिसने लहरों के कोमल आरोहण को मिटा दिया; जैसे किसी चित्र में, किसी चट्टान का ठोस द्रव्यमान, या किसी विशाल ओक के पेड़ के खुरदुरे तने, जो पृष्ठभूमि में गहरे और मजबूत रूप से चित्रित होते हैं, नीले पहाड़, धूप वाले क्षितिज और मिश्रित बादलों की हवाई दूरी को मिटा देते हैं, जहाँ रंग रंग में घुलमिल जाते हैं।

पुल पर शोरगुल मच गया था: एक घोड़ा आ रहा था; गली के घुमावों ने उसे छिपा रखा था, लेकिन वह नज़दीक आ रहा था। मैं अभी-अभी बाड़ से बाहर निकल ही रहा था; फिर भी, क्योंकि रास्ता संकरा था, मैं उसे जाने देने के लिए वहीं रुक गया। उन दिनों मैं छोटा था, और मेरे मन में तरह-तरह की कल्पनाएँ उमड़ती रहती थीं: बचपन की कहानियों की यादें भी अन्य बेकार की बातों के बीच थीं; और जब वे यादें ताज़ा होतीं, तो जवानी के बढ़ते दौर ने उनमें बचपन से कहीं ज़्यादा जोश और जीवंतता भर दी। जैसे-जैसे वह घोड़ा नज़दीक आता गया, और जैसे-जैसे मैं धुंधलके में उसके प्रकट

होने का इंतज़ार करता गया, मुझे बेसी की कुछ कहानियाँ याद आईं, जिनमें उत्तरी इंग्लैंड की एक आत्मा का ज़िक्र था जिसे "गिट्रैश" कहा जाता था, जो घोड़े, खच्चर या बड़े कुत्ते के रूप में सुनसान रास्तों पर भटकती थी, और कभी-कभी देर से आने वाले यात्रियों को देख लेती थी, जैसे यह घोड़ा अब मेरी ओर आ रहा था।

वह बहुत पास था, लेकिन अभी दिखाई नहीं दे रहा था; तभी, पैरों की आहट के साथ-साथ, मुझे झाड़ी के नीचे से सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी, और हेज़ल के तनों के पास से एक बड़ा कुत्ता सरक कर निकला, जिसका काला और सफेद रंग उसे पेड़ों के बीच अलग ही पहचान दे रहा था। यह बिल्कुल बेसी के गिट्रैश का ही रूप था - शेर जैसा प्राणी, लंबे बालों और विशाल सिर वाला: हालाँकि, वह मेरे पास से चुपचाप गुज़र गया; मेरी उम्मीद के विपरीत, वह अपनी अजीब सी आँखों से मेरे चेहरे की ओर देखने के लिए नहीं रुका। घोड़ा उसके पीछे आया - एक लंबा घोड़ा, और उसकी पीठ पर एक सवार। उस आदमी, उस इंसान ने तुरंत ही मेरा भ्रम तोड़ दिया। गिट्रैश पर कभी कोई सवार नहीं होता था: वह हमेशा अकेला होता था; और मेरी धारणा के अनुसार, भले ही वे जानवरों के बेजान शवों में निवास करते हों, वे आम इंसान के रूप में शरण लेने की इच्छा नहीं कर सकते। यह कोई गिट्रैश नहीं था, - बल्कि मिलकोट जाने के लिए शॉर्टकट लेने वाला एक यात्री था। वह गुज़र गया, और मैं आगे बढ़ गया; कुछ कदम चलने के बाद, मैं मुड़ा: एक फिसलने की आवाज़ और "अब क्या करें?" की चीख, और एक ज़ोरदार गिरने की आवाज़ ने मेरा ध्यान खींचा। आदमी और घोड़ा दोनों गिर पड़े थे; वे उस बर्फ़ की चादर पर फिसल गए थे जिसने पुल को चिकना कर दिया था। कुत्ता उछलता हुआ वापस आया, और अपने मालिक को संकट में देखकर, और घोड़े की कराह सुनकर, तब तक भौंकता रहा जब तक कि शाम की पहाड़ियों में उसकी आवाज़ गूंजने लगी, जो उसके आकार के अनुपात में गहरी थी। उसने गिरे हुए समूह के चारों ओर सूंघा, और फिर वह मेरी ओर दौड़ा; वह बस इतना ही कर सकता था, - मदद के लिए कोई और रास्ता नहीं था। मैंने उसकी बात मानी, और उस यात्री के पास गया, जो तब तक अपने घोड़े से खुद को छुड़ा चुका था। उसके प्रयास इतने ज़ोरदार थे, मुझे लगा कि उसे ज़्यादा चोट नहीं लगी होगी; लेकिन मैंने उससे सवाल पूछा -

"क्या आपको चोट लगी है, महोदय?"

मुझे लगता है कि वह अपशब्द बोल रहा था, लेकिन मैं निश्चित नहीं हूं; हालांकि,

वह कुछ ऐसा उच्चारण कर रहा था जिसके कारण वह मुझे सीधे जवाब नहीं दे पा रहा था।

"क्या मैं कुछ कर सकता हूँ?" मैंने दोबारा पूछा।

"तुम्हें बस एक तरफ खड़ा होना होगा," उसने उठते हुए उत्तर दिया, पहले घुटनों के बल, फिर पैरों के बल। मैंने वैसा ही किया; जिसके बाद एक ज़ोरदार, धड़धड़ाती, खड़खड़ाती आवाज़ शुरू हुई, साथ ही भौंकने और चिल्लाने की आवाज़ भी आ रही थी, जिसने मुझे कुछ गज दूर धकेल दिया; लेकिन मैं तब तक पूरी तरह से नहीं हटा जब तक मैंने घटना को देख नहीं लिया। अंततः यह सौभाग्यपूर्ण रहा; घोड़ा फिर से स्थिर हो गया, और कुत्ते को "लेट जाओ, पायलट!" कहकर चुप करा दिया गया। अब यात्री झुककर अपने पैर और टांग को टटोलने लगा, मानो यह जाँच रहा हो कि वे ठीक हैं या नहीं; जाहिर तौर पर उनमें कुछ खराबी थी, क्योंकि वह उस सीढ़ी तक लंगड़ाकर रुका जहाँ से मैं अभी उठा था, और बैठ गया।

मुझे लगता है कि मैं कुछ उपयोगी काम करने के मूड में था, या कम से कम दखलंदाजी करने के मूड में था, क्योंकि मैं अब फिर से उसके पास चला गया।

"अगर आपको चोट लगी है और आपको मदद चाहिए, महोदय, तो मैं थॉर्नफील्ड हॉल या हे से किसी को बुला सकता हूँ।"

"धन्यवाद: मैं करूँगा: मेरी कोई हड्डी नहीं टूटी है, बस मोच आई है;" और फिर वह खड़ा हुआ और अपना पैर चलाकर देखा, लेकिन परिणाम स्वरूप उसके मुँह से अनायास ही "उफ़!" निकल गया।

दिन का उजाला अभी भी बाकी था, और चाँद चमक रहा था: मैं उसे साफ़ देख सकती थी। उसका शरीर एक घुड़सवारी के लबादे में लिपटा हुआ था, जिसका कॉलर फर का था और कमरबंद स्टील का था; उसके विवरण स्पष्ट नहीं थे, लेकिन मैंने उसकी मध्यम ऊँचाई और चौड़ी छाती के सामान्य बिंदुओं का अंदाज़ा लगा लिया। उसका चेहरा सांवला था, गंभीर भाव-भंगिमाओं और भारी माथे के साथ; उसकी आँखें और सिकुड़ी हुई भौहें इस समय क्रोधित और हताश लग रही थीं; वह जवानी पार कर चुका था, लेकिन अधेड़ उम्र तक नहीं पहुँचा था; शायद वह पैंतीस साल का होगा। मुझे उससे ज़रा भी डर नहीं लगा, और न ही थोड़ी सी झिझक हुई। अगर वह एक सुंदर, वीर दिखने वाला युवक होता, तो मैं उसकी इच्छा के विरुद्ध उससे इस तरह सवाल करने और बिना पूछे अपनी सेवाएँ देने की हिम्मत नहीं करती। मैंने शायद ही कभी

कोई सुंदर युवक देखा था; अपने जीवन में कभी किसी से बात नहीं की थी। मेरे मन में सुंदरता, शालीनता, वीरता और आकर्षण के लिए सैद्धांतिक श्रद्धा और सम्मान था; लेकिन अगर मैं उन गुणों को पुरुष रूप में साकार रूप में देख पाता, तो मुझे सहज रूप से पता चल जाता कि उनमें मेरे प्रति न तो कोई सहानुभूति थी और न ही हो सकती थी, और मैं उनसे उसी तरह दूर रहता जैसे कोई आग, बिजली या किसी भी ऐसी चीज से दूर रहता है जो चमकदार तो हो लेकिन शत्रुतापूर्ण हो।

अगर उस अजनबी ने भी मेरी बात सुनकर मुस्कुराया होता और मेरे प्रति सौम्य भाव दिखाया होता; अगर उसने मेरी सहायता की पेशकश को खुशी-खुशी और धन्यवाद के साथ ठुकरा दिया होता, तो मैं अपने रास्ते चला जाता और दोबारा पूछताछ करने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं करता: लेकिन उस यात्री की भौंहें चढ़ाने वाली नज़र और रूखेपन ने मुझे असहज कर दिया: जब उसने मुझे जाने का इशारा किया तो मैं अपनी जगह पर ही रहा और बोला—

"मैं आपको इतनी देर रात, इस सुनसान गली में, तब तक छोड़कर जाने के बारे में सोच भी नहीं सकता, महोदय, जब तक मैं यह न देख लूं कि आप अपने घोड़े पर सवार होने के लिए तैयार हैं।"

जब मैंने यह कहा तो उसने मेरी तरफ देखा; इससे पहले उसने शायद ही कभी मेरी तरफ देखा था।

उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि आपको खुद भी घर जैसा महसूस होना चाहिए, अगर आपका घर इसी इलाके में है तो आप कहां से आए हैं?"

"मैं यहीं नीचे से हूँ; और मुझे चांदनी रात में बाहर रहने से बिल्कुल भी डर नहीं लगता: अगर आप चाहें तो मैं खुशी-खुशी आपके लिए हे तक दौड़कर आ जाऊँगा: दरअसल, मैं वहाँ एक पत्र पोस्ट करने जा रहा हूँ।"

“आप ठीक नीचे रहते हैं—क्या आपका मतलब उस घर से है जिसकी प्राचीरें बुर्जदार हैं?” उन्होंने थॉर्नफील्ड हॉल की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर चंद्रमा की धुंधली रोशनी पड़ रही थी, जिससे वह जंगल से अलग और हल्का दिखाई दे रहा था, जो पश्चिमी आकाश के विपरीत, अब छाया के एक विशाल समूह जैसा प्रतीत हो रहा था।

"जी श्रीमान।"

"ये किसका घर है?"

श्री रोचेस्टर का।

क्या आप मिस्टर रोचेस्टर को जानते हैं?

नहीं, मैंने उसे कभी नहीं देखा।

तो क्या वह निवासी नहीं है?

"नहीं।"

"क्या आप मुझे बता सकते हैं कि वह कहाँ है?"

"मुझसे नहीं हो सकता।"

“तुम राजमहल की नौकरानी तो हो नहीं, बिलकुल नहीं। तुम तो—” वह रुक गया, मेरी पोशाक पर नज़र दौड़ाई, जो हमेशा की तरह काफी सादी थी: एक काला मेरिनो चोला, एक काली बीवर टोपी; इनमें से कोई भी किसी दासी के लायक नहीं थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि मैं क्या हूँ; मैंने उसकी मदद की।

मैं गवर्नेंस हूँ।

“अरे, गवर्नेंस!” उसने दोहराया; “हे भगवान, मैं भूला तो नहीं था! गवर्नेंस!” और फिर से मेरे कपड़ों की जाँच की गई। दो मिनट में वह सीढ़ी से उठा: हिलने की कोशिश करते समय उसके चेहरे पर दर्द के भाव थे।

उन्होंने कहा, "मैं आपको मदद लाने का आदेश नहीं दे सकता; लेकिन यदि आप कृपा करें तो आप स्वयं मेरी थोड़ी मदद कर सकते हैं।"

"जी श्रीमान।"

"क्या आपके पास कोई छाता नहीं है जिसे मैं छड़ी की तरह इस्तेमाल कर सकूं?"

"नहीं।"

“मेरे घोड़े की लगाम पकड़ने की कोशिश करो और उसे मेरे पास ले आओ: क्या तुम डरते नहीं हो?”

अकेले में घोड़े को छूने से मुझे डर लगना चाहिए था, लेकिन जब मुझे ऐसा करने के लिए कहा गया, तो मैं आज्ञा मानने को तैयार हो गई। मैंने अपना मफ बाड़ पर रख दिया और उस ऊंचे घोड़े के पास गई; मैंने लगाम पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह बहुत फुर्तीला था और मुझे अपने सिर के पास नहीं आने दे रहा था; मैंने बार-बार कोशिश की, लेकिन व्यर्थ: इस बीच, मुझे उसके पैरों की धमक से बहुत डर लग रहा था। यात्री कुछ देर तक देखता रहा और अंत में हँस पड़ा।

“मैं समझ गया,” उसने कहा, “पहाड़ को कभी मुहम्मद के पास नहीं लाया जा सकेगा, इसलिए आप केवल इतना ही कर सकते हैं कि मुहम्मद को पहाड़ तक जाने में सहायता करें; मुझे आपसे यहाँ आने की विनती करनी होगी।”

मैं आ गया। “माफ़ कीजिए,” उसने आगे कहा, “ज़रूरत मुझे मजबूर करती है कि मैं आपसे कुछ काम लूँ।” उसने अपना भारी हाथ मेरे कंधे पर रखा और कुछ दबाव के साथ मुझ पर झुकते हुए लंगड़ाते हुए अपने घोड़े की ओर बढ़ा। लगाम पकड़ते ही उसने उसे तुरंत काबू में कर लिया और काठी पर कूद पड़ा; ज़ोर लगाते हुए उसके चेहरे पर दर्द का भाव था, क्योंकि इससे उसकी मोच में खिंचाव आ गया था।

“अब,” उसने अपने निचले होंठ को कसकर चबाने से छोड़ते हुए कहा, “मुझे मेरा चाबुक दे दो; वह वहीं झाड़ी के नीचे पड़ा है।”

मैंने इसे खोजा और मुझे यह मिल गया।

"धन्यवाद; अब हे को पत्र जल्दी से भेज दीजिए और जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाइए।"

एड़ी के हल्के से स्पर्श से ही उसका घोड़ा पहले उछला और पिछले पैरों पर खड़ा

हो गया, फिर उछलकर भाग गया; कुत्ता अपनी लगाम खींचकर तेजी से भागा; तीनों गायब हो गए।

"जंगल में उगने वाली बंजर भूमि की तरह,

तेज हवाएँ तेज़ी से बह जाती हैं।

मैंने अपना मफ उठाया और आगे बढ़ गई। घटना घटित हो चुकी थी और मेरे लिए बीती बात हो चुकी थी: यह एक महत्वहीन घटना थी, इसमें कोई रोमांच नहीं था, एक तरह से कोई दिलचस्पी नहीं थी; फिर भी इसने मेरे नीरस जीवन के एक घंटे में बदलाव ला दिया। मेरी मदद की ज़रूरत थी और मैंने मदद की थी: मुझे कुछ करके खुशी हुई; भले ही वह काम तुच्छ और क्षणिक था, फिर भी वह एक सक्रिय कार्य था, और मैं निष्क्रिय जीवन से ऊब चुकी थी। वह नया चेहरा भी स्मृति की गैलरी में एक नई तस्वीर की तरह था; और वह वहाँ टंगी बाकी सभी तस्वीरों से अलग था: पहला, क्योंकि वह मर्दाना था; और दूसरा, क्योंकि वह गहरा, मजबूत और गंभीर था। जब मैं हे में दाखिल हुई और डाकघर में चिट्ठी डाली, तब भी वह चेहरा मेरे सामने था; घर तक ढलान पर तेज़ी से चलते हुए मैंने उसे देखा। जब मैं बाड़ के पास पहुँचा, तो मैं एक मिनट के लिए रुका, चारों ओर देखा और ध्यान से सुना, इस उम्मीद में कि शायद फिर से किसी घोड़े के खुरों की आवाज़ पुल पर गूँज उठे, और शायद कोई लबादा ओढ़े सवार और गिट्रैश जैसे न्यूफ़ाउंडलैंड कुत्ते फिर से दिखाई दें: मुझे केवल सामने झाड़ी और एक कटा हुआ विलो पेड़ दिखाई दिया, जो चाँदनी से मिलने के लिए सीधा ऊपर की ओर उठ रहा था; मुझे केवल एक मील दूर थॉर्नफ़ील्ड के आसपास के पेड़ों के बीच रुक-रुक कर बहती हवा की हल्की सी सरसराहट सुनाई दी; और जब मैंने उस सरसराहट की दिशा में नीचे देखा, तो मेरी नज़र हॉल के सामने से गुज़रते हुए एक खिड़की में जलती हुई रोशनी पर पड़ी: इसने मुझे याद दिलाया कि मुझे देर हो रही है, और मैं जल्दी से आगे बढ़ गया।

मुझे थॉर्नफील्ड में दोबारा प्रवेश करना अच्छा नहीं लगा। उसकी दहलीज पार करना ठहराव में लौटना था; शांत हॉल को पार करना, अंधेरी सीढ़ियों पर चढ़ना, अपने अकेले छोटे से कमरे में जाना, और फिर शांत श्रीमती फेयरफैक्स से मिलना, और उनके साथ लंबी सर्दियों की शाम बिताना, मेरी सैर से जागी हल्की उत्तेजना को पूरी तरह से शांत कर देना था, - एक समान और बहुत ही स्थिर जीवन की अदृश्य बेड़ियों को फिर से अपनी इंद्रियों पर थोप देना था; एक ऐसा जीवन जिसकी सुरक्षा और

आराम के विशेषाधिकारों की कद्र करना मैं अब असमर्थ होता जा रहा था। उस समय अनिश्चित संघर्षपूर्ण जीवन के तूफानों में फँस जाना और कठोर और कड़वे अनुभवों से उस शांति की लालसा करना सीख लेना कितना अच्छा होता, जिसके बीच मैं अब दुखी था! हाँ, उतना ही अच्छा जितना किसी ऐसे व्यक्ति को लंबी सैर करना अच्छा होता है जो "बहुत आरामदायक कुर्सी" पर बैठे-बैठे थक गया हो: और मेरे हालात में हिलने-डुलने की इच्छा उतनी ही स्वाभाविक थी जितनी उसके हालात में होती।

मैं द्वार पर रुका रहा; मैं लॉन पर रुका रहा; मैं फुटपाथ पर आगे-पीछे चहलकदमी करता रहा; कांच के दरवाजे के शटर बंद थे; मैं अंदर नहीं देख पा रहा था; और मेरी आँखें और आत्मा दोनों उस उदास घर से - उस धूसर खोखलेपन से, जो मुझे किरणों से रहित कोठरियों जैसा लग रहा था - उस फैले हुए आकाश की ओर खिंची चली गईं, - एक नीला सागर जो बादलों के दाग से मुक्त था; चंद्रमा गंभीर चाल से उस पर चढ़ रहा था; ऐसा लग रहा था मानो वह पहाड़ियों की चोटियों को पीछे छोड़ते हुए ऊपर की ओर देख रहा हो, जहाँ से वह आया था, जो उससे बहुत नीचे थीं, और अनंत गहराई और असीम दूरी में आधी रात के अंधेरे की तरह शीर्ष की ओर बढ़ रही थीं; और उन कांपते तारों के लिए जो उसके मार्ग का अनुसरण कर रहे थे; उन्हें देखकर मेरा दिल कांप उठा, मेरी रगों में झनझनाहट होने लगी। छोटी-छोटी चीजें हमें धरती पर वापस लाती हैं; हॉल में घड़ी की घंटी बजी; इतना ही काफी था; मैंने चंद्रमा और तारों से मुंह मोड़ा, एक बगल का दरवाजा खोला और अंदर चला गया।

हॉल न तो अंधेरा था और न ही रोशनी से जगमगा रहा था; केवल ऊँचे लटके हुए कांसे के दीपक से ही हल्की रोशनी फैल रही थी; दीपक और ओक की सीढ़ियों के निचले पायदानों पर एक गर्म चमक बिखरी हुई थी। यह सुनहरी चमक बड़े भोजन कक्ष से आ रही थी, जिसका दो पल्लों वाला दरवाजा खुला था, और अंगीठी में जलती हुई आग संगमरमर के चूल्हे और पीतल के चूल्हे पर पड़ रही थी, जिससे बैंगनी रंग के पर्दे और पॉलिश किया हुआ फर्नीचर बेहद मनमोहक रोशनी में दिखाई दे रहा था। इसके अलावा, मेंटलपीस के पास एक समूह भी दिखाई दे रहा था: मैंने मुश्किल से ही उसे देखा था, और मुश्किल से ही आवाजों के एक खुशनुमा मिश्रण को सुन पाया था, जिसमें मुझे एडेल की आवाज सुनाई दी, तभी दरवाजा बंद हो गया।

मैं जल्दी से श्रीमती फेयरफैक्स के कमरे में गई; वहाँ भी आग जल रही थी, लेकिन न मोमबत्ती थी, और न ही श्रीमती फेयरफैक्स। इसके बजाय, बिल्कुल अकेली,

कालीन पर सीधी बैठी, और गंभीरता से आग की लपटों को निहारती हुई, मैंने एक बड़े काले और सफेद लंबे बालों वाले कुत्ते को देखा, जो गली के गिट्रैश जैसा ही था। वह इतना मिलता-जुलता था कि मैं आगे बढ़ी और बोली - "पायलट" और वह उठकर मेरे पास आया और मुझे सूंघा। मैंने उसे सहलाया, और उसने अपनी बड़ी पूंछ हिलाई; लेकिन वह एक अजीब प्राणी लग रहा था, और मैं यह नहीं बता सकती थी कि वह कहाँ से आया था। मैंने घंटी बजाई, क्योंकि मुझे एक मोमबत्ती चाहिए थी; और मैं इस आगंतुक के बारे में भी जानना चाहती थी। लिआ अंदर आई।

"यह कौन सा कुत्ता है?"

वह अपने गुरु के साथ आया था।

"किसके साथ?"

"मास्टर - श्री रोचेस्टर - के साथ, वह अभी-अभी पहुंचे हैं।"

"जी हां! और क्या श्रीमती फेयरफैक्स उनके साथ हैं?"

"जी हां, और मिस एडेल भी; वे भोजन कक्ष में हैं, और जॉन एक सर्जन को बुलाने गया है; क्योंकि मालिक का एक्सीडेंट हो गया है; उनका घोड़ा गिर गया और उनके टखने में मोच आ गई है।"

क्या घोड़ा हे लेन में गिर गया था?

"हां, ढलान से नीचे आते समय, यह बर्फ पर फिसल गया।"

"अरे! क्या तुम मेरे लिए एक मोमबत्ती लाओगी, लीया?"

लिआ इसे लेकर आई; वह अंदर आई, उसके पीछे श्रीमती फेयरफैक्स भी आईं, जिन्होंने वही खबर दोहराई; और बताया कि सर्जन श्री कार्टर आ गए हैं और अब श्री रोचेस्टर के साथ हैं: फिर वह चाय के बारे में आदेश देने के लिए जल्दी से बाहर चली गईं, और मैं अपने कपड़े उतारने के लिए ऊपर चला गया।

अध्याय XIII

ऐसा प्रतीत होता है कि सर्जन के आदेशानुसार श्री रोचेस्टर उस रात जल्दी सो गए; और अगली सुबह भी वे जल्दी नहीं उठे। जब वे उठे तो उनका काम था: उनके एजेंट और कुछ किरायेदार आ चुके थे और उनसे बात करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे।

अब मुझे और एडेल को पुस्तकालय खाली करना पड़ा: अब इसका उपयोग प्रतिदिन आगंतुकों के स्वागत कक्ष के रूप में किया जाएगा। ऊपर के एक कमरे में आग जलाई गई, और मैं वहाँ अपनी किताबें ले गया, और उसे भावी विद्यालय के लिए तैयार किया। सुबह के दौरान मैंने महसूस किया कि थॉर्नफील्ड हॉल बदल गया था: अब यह किसी गिरजाघर की तरह शांत नहीं था, बल्कि हर एक-दो घंटे में दरवाजे पर दस्तक या घंटी की आवाज से गूंज उठता था; कदमों की आहट भी अक्सर हॉल में सुनाई देती थी, और नीचे से अलग-अलग सुरों में नई आवाजें आती थीं; बाहरी दुनिया से एक धारा बह रही थी; इसका एक स्वामी था: और मुझे यह पहले से बेहतर लगा।

उस दिन एडेल को पढ़ाना आसान नहीं था; वह मन लगाकर नहीं पढ़ रही थी: वह बार-बार दरवाजे की ओर दौड़ती और रेलिंग के ऊपर से झाँकती रहती कि क्या उसे मिस्टर रोचेस्टर की एक झलक मिल सकती है; फिर वह नीचे जाने के बहाने बनाती, जैसा कि मुझे शक था, पुस्तकालय जाने के लिए, जहाँ मुझे पता था कि उसकी ज़रूरत नहीं है; फिर, जब मुझे थोड़ा गुस्सा आया और मैंने उसे चुपचाप बैठाया, तो वह लगातार अपने "दोस्त, मिस्टर एडवर्ड फेयरफैक्स डी रोचेस्टर" के बारे में बात करती रही, जैसा कि उसने उन्हें नाम दिया था (मैंने पहले उनका उपनाम नहीं सुना था), और अनुमान लगाती रही कि वह उसके लिए क्या उपहार लाए होंगे: क्योंकि ऐसा लगता है कि उन्होंने पिछली रात इशारा किया था कि जब उनका सामान मिलकोट से आएगा, तो उसमें एक छोटा सा डिब्बा मिलेगा जिसकी सामग्री में उसकी दिलचस्पी होगी।

“और इसका मतलब यह होना चाहिए,” उसने कहा, “कि उसमें मेरे लिए कोई उपहार होगा, और शायद आपके लिए भी, महोदया। महोदय ने आपके बारे में बात की थी: उन्होंने मुझसे मेरी गवर्नेंस का नाम पूछा था, और यह भी पूछा था कि क्या वह दुबली-पतली और थोड़ी पीली तो नहीं थी। मैंने हाँ कहा था: क्योंकि यह सच है, है ना, महोदया?”

मैं और मेरी छात्रा ने हमेशा की तरह श्रीमती फेयरफैक्स के बैठक कक्ष में भोजन किया; दोपहर तूफानी और बर्फीली थी, और हमने उसे कक्षा में ही बिताया। अंधेरा

होते ही मैंने एडेल को किताबें और काम समेटने और नीचे जाने की अनुमति दी; क्योंकि नीचे अपेक्षाकृत शांति थी और घंटी बजना बंद हो गई थी, इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि श्री रोचेस्टर अब बाहर हैं। अकेले रह जाने पर, मैं खिड़की के पास गई; लेकिन वहाँ से कुछ भी दिखाई नहीं दिया: गोधूलि बेला और बर्फ के टुकड़ों ने मिलकर हवा को घना कर दिया था, और लॉन पर लगे झाड़ियाँ भी छिप गई थीं। मैंने पर्दा गिरा दिया और वापस आग के पास आ गई।

सुलगते अंगारों में मैं एक दृश्य को निहार रहा था, जो राइन नदी पर स्थित हाइडेलबर्ग के महल की उस तस्वीर से मिलता-जुलता था जिसे मैंने पहले देखा था, तभी श्रीमती फेयरफैक्स अंदर आईं, और उनके प्रवेश से मेरे द्वारा रचे जा रहे ज्वलंत दृश्यों का ताना-बाना टूट गया, और साथ ही कुछ भारी और अप्रिय विचार भी बिखर गए जो मेरे एकांत पर हावी होने लगे थे।

“श्री रोचेस्टर को खुशी होगी यदि आप और आपकी छात्रा आज शाम ड्राइंग रूम में उनके साथ चाय पिएं,” उसने कहा; “वह दिन भर इतने व्यस्त रहे हैं कि वे आपसे पहले मिलने का समय नहीं निकाल पाए।”

मैंने पूछा, "उनका चाय पीने का समय कब है?"

“ओह, छह बजे: वह गाँव में जल्दी उठ जाता है। बेहतर होगा कि आप अभी अपनी फ्रॉक बदल लें; मैं आपके साथ चलूँगी और इसे बाँध दूँगी। ये रही मोमबत्ती।”

क्या मुझे अपनी फ्रॉक बदलनी पड़ेगी?

"जी हां, आपको ऐसा ही करना चाहिए: जब मिस्टर रोचेस्टर यहां होते हैं तो मैं हमेशा शाम के लिए तैयार होकर आती हूं।"

यह अतिरिक्त समारोह कुछ हद तक भव्य प्रतीत हुआ; हालाँकि, मैं अपने कमरे में गई और श्रीमती फेयरफैक्स की सहायता से, अपने काले कपड़े के वस्त्र को काले रेशम के वस्त्र से बदल दिया; यह मेरे पास मौजूद सबसे अच्छा और एकमात्र अतिरिक्त वस्त्र था, हल्के भूरे रंग के वस्त्र को छोड़कर, जिसे मैं लोवुड के अपने श्रृंगार संबंधी विचारों के अनुसार, केवल विशेष अवसरों पर पहनने के लिए बहुत बढ़िया समझती थी।

“तुम्हें एक ब्रोच चाहिए,” श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा। मेरे पास एक छोटा सा मोती का आभूषण था जो मिस टेंपल ने मुझे विदाई की निशानी के रूप में दिया था: मैंने उसे पहन लिया और फिर हम नीचे चले गए। अजनबियों से परिचित न होने के कारण, श्री

रोचेस्टर की उपस्थिति में इस तरह औपचारिक रूप से उपस्थित होना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल था। मैंने श्रीमती फेयरफैक्स को भोजन कक्ष में आगे जाने दिया और उस कमरे को पार करते समय उनकी छाया में चलती रही; और मेहराब को पार करते हुए, जिसका पर्दा अब गिरा हुआ था, हम आगे के सुंदर कमरे में प्रवेश कर गए।

मेज पर दो मोमबत्तियाँ जल रही थीं, और दो मेंटलपीस पर; एक शानदार आग की रोशनी और गर्मी में पायलट लेटा हुआ था— एडेल उसके पास घुटनों के बल बैठी थी। सोफे पर आधा लेटे हुए श्री रोचेस्टर दिखाई दिए, उनका पैर तकिये पर टिका था; वे एडेल और कुत्ते को देख रहे थे: आग की रोशनी उनके चेहरे पर पूरी तरह पड़ रही थी। मैं अपने यात्री को उसकी चौड़ी और काली भौहों से पहचान गया; उसका चौकोर माथा, जो उसके काले बालों की क्षैतिज लटों से और भी चौकोर लग रहा था। मैंने उसकी दृढ़ नाक को पहचान लिया, जो सुंदरता से अधिक उसके व्यक्तित्व को दर्शाती थी; उसके भरे हुए नथुने, जो मेरे विचार से क्रोध का संकेत दे रहे थे; उसका गंभीर मुँह, ठोड़ी और जबड़ा— हाँ, ये तीनों ही बहुत गंभीर थे, और इसमें कोई संदेह नहीं था। अब लबादे से मुक्त उसका शरीर, मैंने उसके चेहरे की बनावट के साथ पूरी तरह मेल खाता हुआ पाया: मेरा मानना है कि यह एक अच्छे कद-काठी का था— चौड़ी छाती और पतली कमर वाला, हालाँकि न तो लंबा और न ही आकर्षक।

मिस्टर रोचेस्टर को मिसेज फेयरफैक्स और मेरे आने की जानकारी जरूर रही होगी; लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि वे हमें देखने के मूड में नहीं थे, क्योंकि हमारे पास आने पर भी उन्होंने अपना सिर नहीं उठाया।

"ये हैं मिस आयर, महोदय," श्रीमती फेयरफैक्स ने अपने शांत लहजे में कहा। उन्होंने झुककर अभिवादन किया, लेकिन उनकी निगाहें कुत्ते और बच्चे के समूह से हटी नहीं थीं।

“मिस आयर को बैठने दीजिए,” उसने कहा: और उसके बनावटी, कड़े अभिवादन और अधीर लेकिन औपचारिक लहजे में कुछ ऐसा था जो मानो यह व्यक्त कर रहा हो, “मिस आयर यहाँ हों या न हों, इससे मुझे क्या फर्क पड़ता है? इस समय मेरा उनसे बात करने का मन नहीं है।”

मैं बिल्कुल निश्चिंत होकर बैठ गया। औपचारिक शिष्टाचार से किया गया स्वागत शायद मुझे उलझन में डाल देता: मैं न तो शालीनता और न ही शिष्टाचार से उसका प्रतिफल दे पाता; लेकिन कठोर स्वभाव ने मुझे बाध्य नहीं किया; बल्कि, व्यवहार की

विचित्रता के बावजूद शालीनता ने मुझे लाभ पहुँचाया। इसके अलावा, कार्यवाही की विलक्षणता रोचक थी: मुझे यह देखने में रुचि थी कि वह आगे कैसे बढ़ेगा।

वह एक मूर्ति की तरह स्थिर रहा, यानी न तो बोला और न ही हिला। श्रीमती फेयरफैक्स को लगा कि किसी को तो विनम्र होना चाहिए, इसलिए उन्होंने बोलना शुरू किया। हमेशा की तरह विनम्रता से - और हमेशा की तरह कुछ घिसी-पिटी बातों के साथ - उन्होंने दिन भर के काम के दबाव पर उनके प्रति सहानुभूति जताई; उस दर्दनाक मोच से उन्हें जो परेशानी हुई होगी, उस पर भी उन्होंने सहानुभूति व्यक्त की; फिर उन्होंने इस सब से निपटने में उनके धैर्य और लगन की प्रशंसा की।

“महोदया, मुझे चाय चाहिए,” बस यही जवाब उसे मिला। उसने जल्दी से घंटी बजाई; और जब थाली आई, तो उसने बड़ी तेज़ी से प्याले, चम्मच आदि सजाना शुरू कर दिया। मैं और एडेल मेज़ पर चले गए; लेकिन मालिक अपने पलंग से नहीं उठा।

"क्या आप मिस्टर रोचेस्टर का कप मुझे दे देंगे?" श्रीमती फेयरफैक्स ने मुझसे कहा; "एडेल शायद इसे गिरा देगी।"

मैंने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। जैसे ही उसने मेरे हाथ से प्याला लिया, एडेल ने मेरे पक्ष में एक निवेदन करने के लिए इस अवसर को अनुकूल समझते हुए चिल्लाकर कहा—

"क्या यह सच नहीं है, महोदय, कि आपके छोटे से संदूक में मिस आयर के लिए एक उपहार है?"

“उपहारों की बात कौन करता है?” उसने रूखे स्वर में कहा। “क्या आपको उपहार की उम्मीद थी, मिस आयर? क्या आपको उपहार पसंद हैं?” और उसने मेरी ओर ऐसी निगाहों से देखा जो मैंने देखा कि काली, क्रोधित और भेदक थीं।

"मुझे इनके बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है, महोदय; मुझे इनका बहुत कम अनुभव है: इन्हें आम तौर पर सुखद चीज़ें माना जाता है।"

“आम तौर पर यही माना जाता है? लेकिन आप क्या सोचते हैं?”

"मुझे समय चाहिए, महोदय, इससे पहले कि मैं आपको ऐसा उत्तर दे सकूँ जो आपकी स्वीकृति के योग्य हो: एक उपहार के कई पहलू होते हैं, है ना? और किसी भी उपहार के स्वरूप के बारे में राय देने से पहले सभी पहलुओं पर विचार करना चाहिए।"

"मिस आयर, आप एडेल जितनी भोली नहीं हैं: वह तो मुझे देखते ही जोर-शोर से 'उपहार' की मांग करती है: आप तो बात को घुमा-फिराकर कहती हैं।"

"क्योंकि मुझे अपनी योग्यताओं पर एडेल की तुलना में कम भरोसा है: वह पुराने परिचय और परंपरा के आधार पर दावा कर सकती है; क्योंकि वह कहती है कि आप हमेशा उसे खिलौने देते रहे हैं; लेकिन अगर मुझे अपना पक्ष रखना पड़े तो मैं उलझन में पड़ जाऊंगी, क्योंकि मैं अजनबी हूं और मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है जिससे मुझे कोई मान्यता मिले।"

"अरे, ज़रूरत से ज़्यादा विनम्रता मत दिखाओ! मैंने एडेल की जाँच की है और पाया है कि तुमने उस पर बहुत मेहनत की है: वह बुद्धिमान नहीं है, उसमें कोई प्रतिभा नहीं है; फिर भी थोड़े ही समय में उसने बहुत सुधार किया है।"

“महोदय, आपने मुझे मेरा ‘उपहार’ दे दिया है; मैं आपका आभारी हूँ: यह वह पुरस्कार है जिसकी शिक्षकों को सबसे अधिक चाह होती है - अपने छात्रों की प्रगति की प्रशंसा।”

“हम्फ!” श्री रोचेस्टर ने कहा और चुपचाप अपनी चाय पी ली।

“आग के पास आओ,” मालिक ने कहा, जब थाली हटा दी गई और श्रीमती फेयरफैक्स अपनी बुनाई के साथ एक कोने में बैठ गईं; जबकि एडेल मेरा हाथ पकड़कर मुझे कमरे में घुमा रही थी और मुझे कंसोल और शिफॉनियर पर रखी सुंदर किताबें और सजावटी सामान दिखा रही थी। हमने कर्तव्यवश आज्ञा का पालन किया; एडेल मेरी गोद में बैठना चाहती थी, लेकिन उसे पायलट के साथ खेलने का आदेश दिया गया।

“आप तीन महीने से मेरे घर में रह रहे हैं?”

"जी श्रीमान।"

“और आप कहाँ से आए हैं—?”

“लोवुड स्कूल से, — -शायर में।”

“अरे! एक धर्मार्थ संस्था। आप वहां कितने समय तक रहे?”

"आठ साल।"

“आठ साल! जीवन के प्रति आपका दृढ़ संकल्प तो अद्भुत है। मुझे लगा था कि ऐसे स्थान पर आधा समय बिताने से ही किसी का भी स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा! इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आपका चेहरा किसी दूसरी दुनिया का लगता है। मुझे समझ नहीं आया कि आपको ऐसा चेहरा कहाँ से मिला। कल रात जब आप हे लेन में मेरे पास आईं, तो मुझे अचानक परियों की कहानियाँ याद आ गईं और मेरा मन हुआ कि मैं

आपसे पूछ लूँ कि क्या आपने मेरे घोड़े पर जादू कर दिया है: मुझे अभी पक्का पता नहीं है। आपके माता-पिता कौन हैं?”

मेरे पास कोई नहीं है।

"और मुझे लगता है कि वे कभी थे भी नहीं: क्या आपको वे याद हैं?"

"नहीं।"

“मुझे तो ऐसा नहीं लगा। तो क्या आप उस बाड़ पर बैठकर अपने लोगों का इंतजार कर रहे थे?”

“किसके लिए, महोदय?”

“हरे रंग की वर्दी पहने उन लोगों के लिए: यह एक शानदार चांदनी रात थी। क्या मैंने तुम्हारे किसी घेरे को तोड़ दिया, जिसकी वजह से तुमने उस पुल पर वह बर्फ बिछा दी?”

मैंने अपना सिर हिलाया। “हरे रंग के कपड़े पहने हुए सभी लोग सौ साल पहले इंग्लैंड छोड़कर चले गए थे,” मैंने उतनी ही गंभीरता से कहा जितनी गंभीरता से उसने कहा था। “और हे लेन में भी, या उसके आस-पास के खेतों में भी, उनका कोई निशान नहीं मिलेगा। मुझे नहीं लगता कि गर्मी, फसल का मौसम, या सर्दियों का चाँद, कभी भी उनके उत्सवों पर इतना प्रकाश डालेगा।”

श्रीमती फेयरफैक्स ने अपनी बुनाई छोड़ दी थी, और भौंहें उठाकर, मानो सोच रही थीं कि यह किस तरह की बातचीत है।

“अच्छा,” श्री रोचेस्टर ने बात जारी रखते हुए कहा, “यदि आप माता-पिता को त्याग देते हैं, तो आपके कुछ रिश्तेदार तो होंगे ही: चाचा और चाची?”

“नहीं; मैंने तो कभी किसी को नहीं देखा।”

और आपका घर?

मेरे पास कोई नहीं है।

“तुम्हारे भाई-बहन कहाँ रहते हैं?”

मेरे कोई भाई या बहन नहीं हैं।

आपको यहां आने की सलाह किसने दी?

मैंने विज्ञापन दिया, और श्रीमती फेयरफैक्स ने मेरे विज्ञापन का जवाब दिया।

“जी हां,” उस महिला ने कहा, जो अब हमारी स्थिति को समझ चुकी थी, “और मैं ईश्वर की कृपा से लिए गए इस निर्णय के लिए प्रतिदिन आभारी हूं। मिस आयर मेरे

लिए एक अमूल्य साथी रही हैं, और एडेल के लिए एक दयालु और सजग शिक्षिका रही हैं।”

श्री रोचेस्टर ने जवाब दिया, "उसका चरित्र-चित्रण करने की जहमत मत उठाइए। प्रशंसाओं से मुझ पर कोई असर नहीं पड़ेगा; मैं खुद फैसला करूँगा। उसने सबसे पहले मेरे घोड़े को गिराया था।"

“सर?” श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा।

मुझे इस मोच के लिए उसे धन्यवाद देना होगा।

विधवा व्याकुल लग रही थी।

"मिस आयर, क्या आप कभी किसी कस्बे में रही हैं?"

"जी नहीं, महोदय।"

"क्या आपने समाज को काफी हद तक देखा है?"

"लोवुड के विद्यार्थियों और शिक्षकों के अलावा और अब थॉर्नफील्ड के कैदियों के अलावा कोई नहीं।"

“क्या आपने बहुत पढ़ा है?”

"मैंने केवल वही पुस्तकें पढ़ीं जो मुझे मिलीं; और वे न तो बहुत अधिक थीं और न ही बहुत विद्वतापूर्ण।"

“आपने एक नन का जीवन जिया है: इसमें कोई संदेह नहीं कि आप धार्मिक रीति-रिवाजों में अच्छी तरह से प्रशिक्षित हैं; — ब्रॉकलहर्स्ट, जो मुझे पता चला है कि लोवुड का निर्देशन करते हैं, एक पादरी हैं, है ना?”

"जी श्रीमान।"

"और तुम लड़कियाँ शायद उनकी पूजा करती थीं, जैसे धार्मिक महिलाओं से भरा कोई मठ अपने गुरु की पूजा करता है।"

"अरे नहीं।"

“तुम तो कमाल हो! नहीं! क्या! एक नौसिखिया अपने पुजारी की पूजा नहीं करेगी! यह तो ईशनिंदा जैसा लगता है।”

मुझे मिस्टर ब्रॉकलहर्स्ट बिल्कुल पसंद नहीं थे; और ऐसा महसूस करने वाली मैं अकेली नहीं थी। वह एक कठोर व्यक्ति हैं; एक साथ आडंबरी और दखलंदाजी करने वाले; उन्होंने हमारे बाल काट दिए; और पैसे बचाने के चक्कर में हमें घटिया सुई और धागा खरीदकर दिया, जिससे हम मुश्किल से सिलाई कर पाते थे।

"यह तो सरासर गलत मितव्ययिता थी," श्रीमती फेयरफैक्स ने टिप्पणी की, जो अब फिर से संवाद का सार समझ चुकी थीं।

"और क्या यही उसके अपराध का मुख्य बिंदु था?" श्री रोचेस्टर ने पूछा।

"जब वह प्रावधान विभाग के एकमात्र अधीक्षक थे, समिति की नियुक्ति से पहले, उन्होंने हमें भूखा रखा; और वह सप्ताह में एक बार लंबे-लंबे व्याख्यानों से हमें ऊबाते थे, और शाम को अपनी ही लिखी किताबों से अचानक होने वाली मौतों और न्याय के बारे में पढ़कर सुनाते थे, जिससे हमें सोने से डर लगता था।"

“जब आप लोवुड गए थे तब आपकी उम्र कितनी थी?”

लगभग दस।

“और तुम वहाँ आठ साल रहे: तो अब तुम्हारी उम्र अठारह साल है?”

मैंने सहमति दे दी।

“देखो, गणित उपयोगी है; इसके बिना तो मैं तुम्हारी उम्र का अंदाज़ा भी नहीं लगा पाता। जहाँ चेहरे और हाव-भाव में इतना अंतर हो, वहाँ उम्र का सही-सही पता लगाना मुश्किल है, जैसा कि तुम्हारे मामले में है। और तुमने लोवुड में क्या सीखा? क्या तुम खेल सकते हो?”

"थोड़ा।"

“बिल्कुल: यही तो सर्वमान्य उत्तर है। पुस्तकालय में जाइए— मतलब, अगर आप चाहें तो।— (मेरे आदेशात्मक लहजे के लिए क्षमा करें; मुझे ‘यह करो’ कहने की आदत है और बात हो जाती है: मैं एक नए कैदी के लिए अपनी आदतें नहीं बदल सकता।)— तो जाइए पुस्तकालय में; अपने साथ एक मोमबत्ती ले जाइए; दरवाजा खुला छोड़ दीजिए; पियानो पर बैठ जाइए और कोई धुन बजाइए।”

मैंने उसके निर्देशों का पालन करते हुए प्रस्थान किया।

कुछ ही मिनटों में वह चिल्लाया, "बस करो! मुझे लगता है तुम थोड़ा-बहुत खेलती हो; बाकी अंग्रेज़ स्कूली लड़कियों की तरह; शायद कुछ से बेहतर, लेकिन अच्छी नहीं।"

मैंने पियानो बंद किया और वापस आ गया। श्री रोचेस्टर ने आगे कहा, “आज सुबह एडेल ने मुझे कुछ रेखाचित्र दिखाए, जिनके बारे में उसने कहा कि वे आपके हैं। मुझे नहीं पता कि वे पूरी तरह से आपके ही बनाए हुए हैं या नहीं; शायद किसी उस्ताद ने आपकी मदद की हो?”

“नहीं, बिलकुल!” मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा।

“अरे! इससे तो स्वाभिमान को ठेस पहुंची। अच्छा, अगर आप अपने पोर्टफोलियो की मौलिकता की गारंटी दे सकते हैं, तो उसे मेरे सामने लाओ; लेकिन जब तक आप पूरी तरह आश्वस्त न हों, तब तक अपनी बात मत कहिए: मैं पैचवर्क पहचान सकता हूँ।”

"तो मैं कुछ नहीं कहूंगा, और आप स्वयं ही निर्णय ले लीजिए, महोदय।"

मैं पुस्तकालय से पोर्टफोलियो लेकर आया था।

“टेबल के पास आओ,” उन्होंने कहा; और मैंने उसे उनके सोफे तक ले गया। एडेल और श्रीमती फेयरफैक्स तस्वीरें देखने के लिए पास आ गईं।

श्री रोचेस्टर ने कहा, "भीड़ मत लगाओ; जैसे ही मैं चित्र बनाना समाप्त करूँ, उन्हें मेरे हाथ से ले लो; लेकिन अपने चेहरे मेरे चेहरे के बिल्कुल पास मत लाओ।"

उसने जानबूझकर हर रेखाचित्र और चित्र का बारीकी से निरीक्षण किया। तीन को उसने अलग रख दिया; बाकी को जांचने के बाद उसने अपने से दूर फेंक दिया।

“श्रीमती फेयरफैक्स, इन्हें दूसरी मेज पर ले जाइए और एडेल के साथ इन्हें देखिए; आप” (मेरी ओर देखते हुए) “अपनी सीट पर बैठ जाइए और मेरे सवालों के जवाब दीजिए। मुझे लगता है कि ये चित्र एक ही व्यक्ति ने बनाए हैं: क्या वो चित्र आपने बनाए हैं?”

"हाँ।"

और आपको इन्हें करने का समय कब मिला? इनमें काफी समय और सोच-विचार लगा है।

"मैंने ये काम लोवुड में बिताई अपनी पिछली दो छुट्टियों के दौरान किए थे, जब मेरे पास कोई और काम नहीं था।"

“आपको ये प्रतियां कहां से मिलीं?”

"मेरे सिर के बाहर।"

“क्या वह सिर जो मुझे अब तुम्हारे कंधों पर दिख रहा है?”

"जी श्रीमान।"

"क्या इसके अंदर इसी तरह का कोई और फर्नीचर है?"

मुझे लगता है कि ऐसा हो सकता है: मुझे उम्मीद है - बेहतर होगा।

उसने तस्वीरों को अपने सामने फैलाया और फिर बारी-बारी से उनका अवलोकन

किया।

जब तक वह इस काम में व्यस्त हैं, मैं आपको, पाठक, बता दूँ कि वे क्या हैं: और सबसे पहले, मुझे यह स्पष्ट करना होगा कि वे कोई अद्भुत विषय नहीं हैं। दरअसल, वे विषय मेरे मन में स्पष्ट रूप से उभर आए थे। जब मैंने उन्हें आध्यात्मिक दृष्टि से देखा, उन्हें साकार करने का प्रयास करने से पहले, वे बहुत प्रभावशाली थे; लेकिन मेरा हाथ मेरी कल्पना का साथ नहीं दे सका, और हर बार उसने मेरे द्वारा सोची गई वस्तु का एक धुंधला सा चित्र ही बना पाया।

ये चित्र जलरंगों से बने थे। पहले चित्र में गहरे, काले बादल उफनते समुद्र के ऊपर मंडराते हुए दिखाई दे रहे थे: दूर-दूर तक का सारा दृश्य धुंधला था; अग्रभूमि भी धुंधली थी; या यूँ कहें कि निकट की लहरें धुंधली थीं, क्योंकि वहाँ कोई भूमि नहीं थी। प्रकाश की एक किरण ने आधे डूबे हुए मस्तूल को उभारा, जिस पर एक जलकौवा बैठा था, काला और विशाल, जिसके पंख झाग से सने हुए थे; उसकी चोंच में रत्नों से जड़ा एक सोने का कंगन था, जिसे मैंने अपने पैलेट की पूरी चमकीली रंगत और पेंसिल की पूरी स्पष्टता से चित्रित किया था। पक्षी और मस्तूल के नीचे, एक डूबा हुआ शव हरे पानी में से झाँक रहा था; एक सुंदर भुजा ही एकमात्र अंग थी जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी, जहाँ से कंगन बह गया था या फट गया था।

दूसरी तस्वीर में अग्रभूमि में केवल एक पहाड़ी की धुंधली चोटी थी, जिस पर घास और कुछ पत्तियाँ हवा के झोंके से झुकी हुई थीं। उसके आगे और ऊपर फैला हुआ आकाश गोधूलि बेला के समान गहरा नीला था: आकाश में एक स्त्री की आकृति उभर रही थी, जिसे मैंने धुंधले और कोमल रंगों में चित्रित किया था। धुंधले माथे पर एक तारा था; नीचे की रेखाएँ धुंध के बीच से दिखाई दे रही थीं; आँखें गहरी और जंगली चमक रही थीं; बाल धुंधले, किसी तूफान या बिजली के झटके से फटे बादल की तरह लहरा रहे थे। गर्दन पर चाँदनी जैसी हल्की परछाई थी; वही हल्की चमक पतले बादलों की कतार को छू रही थी, जिनसे यह संध्या तारा उभरता और झुकता हुआ दिखाई दे रहा था।

तीसरी तस्वीर में एक हिमखंड का शिखर ध्रुवीय सर्दियों के आकाश को भेदता हुआ दिखाई दे रहा था: उत्तरी रोशनी का एक समूह क्षितिज पर घनी कतारों में अपनी धुंधली किरणें फैला रहा था। इन्हें दूर धकेलते हुए, अग्रभूमि में एक सिर उभरा - एक विशाल सिर, हिमखंड की ओर झुका हुआ और उस पर टिका हुआ। माथे के नीचे जुड़े

हुए दो पतले हाथ, जो उसे सहारा दे रहे थे, चेहरे के निचले हिस्से के सामने एक काले रंग का घूंघट खींच रहे थे। एक बिल्कुल रक्तहीन, हड्डी की तरह सफेद माथा और एक खोखली और स्थिर आंख, जिसमें निराशा की चमक के अलावा कोई अर्थ नहीं था, दिखाई दे रही थी। कनपटी के ऊपर, काले वस्त्र की घुमावदार तहों के बीच, जो बादल की तरह अस्पष्ट और स्थिर थी, सफेद लौ का एक घेरा चमक रहा था, जो और भी भड़कीले रंग की चमक से जड़ा हुआ था। यह पीला अर्धचंद्र "एक शाही मुकुट की तरह" था; और जिस चीज़ को इसने सजाया था, वह "ऐसी आकृति थी जिसका कोई आकार नहीं था।"

"क्या इन चित्रों को बनाते समय आप खुश थे?" श्री रोचेस्टर ने कुछ देर बाद पूछा।

"मैं पूरी तरह से तल्लीन था, महोदय: हाँ, और मैं खुश भी था। संक्षेप में, उन्हें चित्रित करना मेरे जीवन के सबसे तीक्ष्ण सुखों में से एक था।"

"इसका मतलब कुछ खास नहीं है। आपके अपने ही शब्दों में, आपके सुख बहुत कम रहे हैं; लेकिन मुझे यकीन है कि इन विचित्र रंगों को मिलाते और सजाते समय आप एक तरह के कलाकार के स्वप्नलोक में ही रहते थे। क्या आप हर दिन इन्हें लंबे समय तक देखते रहते थे?"

"छुट्टियों के कारण मेरे पास करने के लिए और कुछ नहीं था, और मैं सुबह से दोपहर तक और दोपहर से रात तक उन पर बैठा रहता था: ग्रीष्म ऋतु के लंबे दिनों ने मुझे काम करने के लिए प्रेरित किया।"

और क्या आप अपने अथक परिश्रम के परिणाम से संतुष्ट थे?

"बिल्कुल नहीं। मैं अपने विचार और अपने काम के बीच के विरोधाभास से व्याकुल था: दोनों ही मामलों में मैंने कुछ ऐसा सोचा था जिसे साकार करने में मैं पूरी तरह असमर्थ था।"

"पूरी तरह नहीं: तुमने अपने विचार की छाया को तो पकड़ लिया है; लेकिन शायद इससे ज़्यादा नहीं। तुम्हारे पास कलाकार की कला और ज्ञान की कमी थी, जिससे तुम उसे पूर्ण रूप दे सकीं: फिर भी, एक स्कूली छात्रा के लिए ये चित्र अनोखे हैं। जहाँ तक विचारों की बात है, वे रहस्यमय हैं। संध्या तारे में ये आँखें तुमने सपने में देखी होंगी। तुम इन्हें इतना स्पष्ट कैसे बना सकीं, फिर भी ये बिल्कुल भी चमकीली नहीं हैं? क्योंकि ऊपर का ग्रह इनकी किरणों को दबा देता है। और इनकी गंभीर गहराई में क्या अर्थ है? और तुम्हें हवा को चित्रित करना किसने सिखाया? उस आकाश में और इस

पहाड़ी की चोटी पर तेज़ आंधी चल रही है। तुमने लैटमोस कहाँ देखा? क्योंकि यही लैटमोस है। लो! चित्रों को रख दो!”

मैंने अभी पोर्टफोलियो की डोरियाँ बाँधी ही थीं कि घड़ी देखते हुए उन्होंने अचानक कहा—

“नौ बज गए हैं: मिस आयर, आप एडेल को इतनी देर तक क्यों जगाए रख रही हैं? उसे बिस्तर पर ले जाओ।”

एडेल ने कमरे से निकलने से पहले उसे चूमने की कोशिश की: उसने उस स्पर्श को सहन किया, लेकिन ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि उसे उतना आनंद आया हो जितना पायलट को आया होता, या उतना अधिक भी नहीं।

“अब आप सबको शुभ रात्रि,” उन्होंने दरवाजे की ओर हाथ हिलाते हुए कहा, मानो वे हमारी संगति से ऊब गए हों और हमें विदा करना चाहते हों। श्रीमती फेयरफैक्स ने अपनी बुनाई समेट ली; मैंने अपना पोर्टफोलियो उठाया; हमने उन्हें झुककर प्रणाम किया, बदले में हमें एक ठंडा सा प्रणाम मिला, और हम वहाँ से चले गए।

"आपने कहा था कि मिस्टर रोचेस्टर कोई असाधारण रूप से विचित्र व्यक्ति नहीं थे, श्रीमती फेयरफैक्स," मैंने एडेल को सुलाने के बाद उनके कमरे में वापस आकर उनसे कहा।

"तो क्या वह सच में ऐसा है?"

मुझे ऐसा लगता है: वह बहुत परिवर्तनशील और अचानक व्यवहार करने वाला व्यक्ति है।

"सच है: इसमें कोई शक नहीं कि वह किसी अजनबी को ऐसा लग सकता है, लेकिन मैं उसके व्यवहार से इतना अभ्यस्त हूं कि मैं कभी इस बारे में सोचता ही नहीं; और फिर, अगर उसके स्वभाव में कुछ खास बातें हैं, तो उन्हें नजरअंदाज किया जाना चाहिए।"

"क्यों?"

"आंशिक रूप से इसलिए कि यह उसका स्वभाव है - और हममें से कोई भी अपने स्वभाव को बदल नहीं सकता; और आंशिक रूप से इसलिए कि उसके मन में निस्संदेह कष्टदायक विचार आते हैं, जो उसे परेशान करते हैं और उसके मनोबल को अस्थिर कर देते हैं।"

"किस बारे में?"

"एक तो पारिवारिक समस्याएं हैं।"

लेकिन उसका कोई परिवार नहीं है।

"अभी तो नहीं, लेकिन उनके या कम से कम उनके रिश्तेदारों के यहां निधन हो चुका है। कुछ साल पहले उन्होंने अपने बड़े भाई को खो दिया था।"

"उसका बड़ा भाई?"

"जी हां। वर्तमान श्री रोचेस्टर को इस संपत्ति पर कब्जा किए हुए बहुत समय नहीं हुआ है; केवल लगभग नौ वर्ष।"

"नौ साल का समय सहनीय है। क्या वह अपने भाई से इतना अधिक स्नेह करता था कि उसके चले जाने से अब भी उसका दुख कम नहीं हो रहा था?"

"नहीं, शायद नहीं। मेरा मानना है कि उनके बीच कुछ गलतफहमियाँ थीं। श्री रोलैंड रोचेस्टर, श्री एडवर्ड के प्रति पूरी तरह से न्यायसंगत नहीं थे; और शायद उन्होंने उनके पिता को उनके खिलाफ भड़काया था। वह बुजुर्ग सज्जन धन के शौकीन थे और पारिवारिक संपत्ति को एकजुट रखने के लिए उत्सुक थे। वे संपत्ति को बाँटकर कम करना पसंद नहीं करते थे, फिर भी वे चाहते थे कि श्री एडवर्ड के पास भी धन हो, ताकि परिवार का रुतबा बना रहे; और, उनके बालिग होने के कुछ ही समय बाद, कुछ ऐसे कदम उठाए गए जो पूरी तरह से उचित नहीं थे और जिनसे बहुत नुकसान हुआ। श्री रोचेस्टर और श्री रोलैंड ने मिलकर श्री एडवर्ड को एक ऐसी स्थिति में डाल दिया जिसे वे अपनी दौलत बनाने के लिए कष्टदायी मानते थे: उस स्थिति का सटीक स्वरूप क्या था, यह मैं कभी स्पष्ट रूप से नहीं जान पाया, लेकिन उनका मन उस पीड़ा को सहन नहीं कर सका। वे आसानी से क्षमा करने वाले नहीं हैं: उन्होंने अपने परिवार से नाता तोड़ लिया, और अब कई वर्षों से उनका जीवन अस्थिर रहा है। मुझे नहीं लगता कि अपने भाई की बिना वसीयत छोड़े मृत्यु के बाद से वे थॉर्नफील्ड में कभी भी एक साथ दो सप्ताह तक रहे हैं। उसे जागीर का मालिक बना दिया गया; और वास्तव में, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वह पुरानी जगह से दूर रहता है।"

"उसे इससे क्यों बचना चाहिए?"

"शायद उसे यह निराशाजनक लगता है।"

जवाब गोलमोल था। मुझे कुछ स्पष्ट जानकारी चाहिए थी; लेकिन श्रीमती फेयरफैक्स या तो श्री रोचेस्टर के मुकदमों की उत्पत्ति और प्रकृति के बारे में मुझे और

अधिक स्पष्ट जानकारी नहीं दे सकीं, या देना नहीं चाहती थीं। उन्होंने कहा कि ये मामले उनके लिए भी रहस्य थे, और उन्हें जो कुछ भी पता था वह ज्यादातर अनुमानों पर आधारित था। वास्तव में, यह स्पष्ट था कि वह चाहती थीं कि मैं इस विषय को यहीं छोड़ दूं, और मैंने वैसा ही किया।

अध्याय 14

अगले कई दिनों तक मुझे श्री रोचेस्टर का बहुत कम ही दर्शन हुआ। सुबह के समय वे अपने व्यवसाय में व्यस्त रहते थे, और दोपहर में मिलकोट या आसपास के इलाकों से सज्जन उनसे मिलने आते थे और कभी-कभी उनके साथ भोजन भी करते थे। जब उनकी मोच ठीक हो गई और वे घुड़सवारी करने लगे, तो वे अक्सर बाहर घूमने जाते थे; शायद इन मुलाकातों का जवाब देने के लिए, क्योंकि वे आमतौर पर देर रात तक ही लौटते थे।

इस दौरान, एडेल को भी उनके पास शायद ही कभी बुलाया जाता था, और उनसे मेरी जान-पहचान हॉल, सीढ़ियों या गैलरी में कभी-कभार होने वाली मुलाकातों तक ही सीमित थी। कभी-कभी वे मुझे घमंडी और ठंडे लहजे में देखते हुए, बस एक दूर से सिर हिलाकर या ठंडी नज़र से मेरी मौजूदगी का एहसास कराते थे, और कभी-कभी सज्जनता से झुककर मुस्कुराते थे। उनके बदलते मिजाज से मुझे कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि मैं समझती थी कि इसमें मेरा कोई हाथ नहीं था; ये उतार-चढ़ाव उन कारणों पर निर्भर थे जिनका मुझसे कोई लेना-देना नहीं था।

एक दिन उनके यहाँ मेहमान आए हुए थे और उन्होंने मेरा पोर्टफोलियो मंगवाया था; शायद उसके अंदर की चीज़ें दिखाने के लिए। श्रीमती फेयरफैक्स ने मुझे बताया कि वे सज्जन मिलकोट में एक सार्वजनिक सभा में शामिल होने के लिए जल्दी चले गए थे; लेकिन रात बारिश वाली और खराब मौसम के कारण श्री रोचेस्टर उनके साथ

नहीं गए। उनके जाने के तुरंत बाद उन्होंने घंटी बजाई: संदेश आया कि मुझे और एडेल को नीचे जाना है। मैंने एडेल के बाल संवारे और उसे संवारा, और यह सुनिश्चित करने के बाद कि मैं अपने सामान्य क्वेकर पहनावे में हूँ, जिसमें कुछ भी बदलने की ज़रूरत नहीं थी—सब कुछ बहुत सलीके से और सादा था, गुंथे हुए बालों सहित, जिसमें कोई गड़बड़ी नहीं हो सकती थी—हम नीचे गए। एडेल सोच रही थी कि क्या छोटा बक्सा आखिरकार आ गया है; क्योंकि किसी गलती के कारण, उसके आने में अब तक देरी हो रही थी। वह खुश हुई: जब हम भोजन कक्ष में दाखिल हुए तो मेज पर एक छोटा सा डिब्बा रखा हुआ था। ऐसा लगा जैसे वह उसे सहज रूप से जानती हो।

"मा बोइट! मा बोइट!" वह चिल्लाई और उसकी ओर दौड़ पड़ी।

"हाँ, आखिरकार तुम्हारा 'बोइट' मिल ही गया: इसे एक कोने में ले जाओ, पेरिस की असली बेटी, और इसे चीर-फाड़ कर मज़े करो," आग के पास रखी एक विशाल आरामकुर्सी की गहराई से आती हुई श्री रोचेस्टर की गहरी और कुछ व्यंग्यात्मक आवाज़ सुनाई दी। "और ध्यान रखना," उन्होंने आगे कहा, "मुझे इस शारीरिक प्रक्रिया के किसी भी विवरण या आंतों की स्थिति के बारे में कोई जानकारी मत देना: तुम्हारा काम चुपचाप होना चाहिए: tiens-toi tranquille, enfant; comprends-tu?"

एडेल को शायद ही चेतावनी की ज़रूरत थी—वह पहले ही अपने खजाने के साथ सोफे पर जा चुकी थी और ढक्कन को बांधने वाली रस्सी को खोलने में व्यस्त थी। इस बाधा को हटाने और टिशू पेपर के कुछ चांदी जैसे लिफाफे उठाने के बाद, उसने बस इतना कहा—

"ओह सिएल! क्यू सेस्ट ब्यू!" और फिर वह आनंदमय चिंतन में लीन हो गया।

"क्या मिस आयर वहाँ हैं?" अब मालिक ने पूछा, अपनी सीट से आधा उठकर दरवाजे की ओर देखते हुए, जिसके पास मैं अभी भी खड़ा था।

"अरे! अच्छा, आगे आइए; यहाँ बैठिए।" उन्होंने अपनी कुर्सी के पास एक कुर्सी खींची। "मुझे बच्चों की बकबक पसंद नहीं है," उन्होंने आगे कहा; "क्योंकि मैं बूढ़ा कुंवारा हूँ, इसलिए उनकी तुतलाहट से मुझे कोई सुखद यादें नहीं जुड़ी हैं। किसी शरारती बच्चे के साथ पूरी शाम अकेले बिताना मेरे लिए असहनीय होगा। उस कुर्सी को और दूर मत खींचिए, मिस आयर; ठीक वहीं बैठिए जहाँ मैंने रखा है—कृपा हो तो। इन शिष्टाचारों को धिक्कार है! मैं इन्हें अक्सर भूल जाता हूँ। और न ही मुझे

भोली-भाली बूढ़ी औरतें पसंद हैं। वैसे, मुझे अपनी पत्नी का ध्यान रखना होगा; उनकी उपेक्षा करना ठीक नहीं होगा; वह एक फेयरफैक्स हैं, या उनसे शादी की है; और कहते हैं ना कि खून पानी से गाढ़ा होता है।”

उन्होंने फोन किया और श्रीमती फेयरफैक्स को निमंत्रण भेजा, जो जल्द ही बुनाई की टोकरी हाथ में लेकर आ गईं।

शुभ संध्या महोदया; मैंने आपको एक नेक काम के लिए भेजा है। मैंने एडेल को अपने उपहारों के बारे में मुझसे बात करने से मना किया है, और वह उपहारों से इतनी तृप्त है कि उसे बहुत खुशी हो रही है: कृपया उसकी लेखा परीक्षक और वार्ताकार बनकर उसकी सेवा करें; यह आपके द्वारा किए गए सबसे परोपकारी कार्यों में से एक होगा।

दरअसल, एडेल ने श्रीमती फेयरफैक्स को देखते ही उन्हें अपने सोफे पर बुलाया और जल्दी से अपनी गोद में अपने "बोइट" (बर्तन) की चीनी मिट्टी, हाथीदांत और मोम से बनी सामग्री भर दी; इस बीच, वह अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी में, जिस पर वह माहिर थी, स्पष्टीकरण और उत्साह उड़ेलती रही।

“अब मैंने एक अच्छे मेज़बान की भूमिका निभा दी है,” श्री रोचेस्टर ने आगे कहा, “अपने मेहमानों को आपस में मनोरंजन करने का मौका दे दिया है, अब मुझे अपनी इच्छा पूरी करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। मिस आयर, अपनी कुर्सी को थोड़ा और आगे खींच लीजिए: आप अभी भी बहुत पीछे हैं; मैं इस आरामदायक कुर्सी पर अपनी स्थिति को बिगाड़े बिना आपको नहीं देख सकता, और मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहता।”

मैंने आदेश का पालन किया, हालाँकि मैं कुछ देर छाया में रहना ज़्यादा पसंद करता; लेकिन श्री रोचेस्टर के आदेश देने का तरीका इतना सीधा था कि उनकी बात तुरंत मानना स्वाभाविक ही लगा।

जैसा कि मैंने बताया, हम भोजन कक्ष में थे: रात के खाने के लिए जलाई गई रोशनी से कमरा उत्सवपूर्ण प्रकाश से भर गया था; बड़ी आग पूरी तरह से लाल और चमकदार थी; बैंगनी पर्दे ऊँची खिड़की और उससे भी ऊँचे मेहराब के सामने भव्य और विशाल रूप से लटके हुए थे; एडेल की धीमी बातचीत (वह ज़ोर से बोलने की हिम्मत नहीं कर रही थी) और हर विराम के साथ खिड़कियों पर सर्दियों की बारिश की बूँदों की आवाज़ के अलावा सब कुछ शांत था।

श्री रोचेस्टर, अपनी मखमली कुर्सी पर बैठे हुए, पहले से अलग दिख रहे थे; उतने गंभीर नहीं—उदासी तो बिल्कुल नहीं। उनके होठों पर मुस्कान थी और उनकी आँखें चमक रही थीं, चाहे शराब की वजह से हो या नहीं, मैं निश्चित नहीं कह सकता; लेकिन मुझे लगता है कि ऐसा ही था। संक्षेप में, वे अपने दोपहर के भोजन के बाद वाले मूड में थे; सुबह के ठंडे और कठोर स्वभाव की तुलना में अधिक खुले और मिलनसार, और साथ ही अधिक आत्म-संतोषी भी; फिर भी वे बेहद गंभीर दिख रहे थे, अपने भारी सिर को कुर्सी की उभरी हुई पीठ पर टिकाए हुए, और आग की रोशनी को अपने ग्रेनाइट जैसे चेहरे और अपनी बड़ी, काली आँखों में ग्रहण कर रहे थे; क्योंकि उनकी बड़ी, काली आँखें थीं, और बहुत ही सुंदर भी—कभी-कभी उनकी गहराई में एक खास बदलाव आता था, जो अगर कोमलता नहीं भी थी, तो कम से कम आपको उस एहसास की याद दिलाती थी।

वह दो मिनट से आग को देख रहा था, और मैं भी उतनी ही देर से उसे देख रहा था, तभी अचानक मुड़कर उसने देखा कि मेरी निगाहें उसके चेहरे पर टिकी हुई हैं।

“आप मेरी जांच कीजिए, मिस आयर,” उसने कहा: “क्या आपको लगता है कि मैं सुंदर हूँ?”

अगर मैंने सोच-समझकर जवाब दिया होता, तो मैं इस सवाल का जवाब कुछ सामान्य रूप से अस्पष्ट और विनम्र तरीके से देता; लेकिन मुझे पता चलने से पहले ही जवाब मेरे मुंह से निकल गया - "नहीं, महोदय।"

“अरे! सच में! आपमें कुछ अनोखा है,” उसने कहा: “आप एक नन्ही नानी जैसी लगती हैं; विचित्र, शांत, गंभीर और सरल, जैसे आप अपने हाथों को सामने रखकर बैठी हों और आपकी नज़रें आमतौर पर कालीन पर टिकी हों (सिवाय इसके कि कभी-कभी वे मेरी ओर तीखी निगाहों से देखती हैं; जैसे अभी-अभी); और जब कोई आपसे कोई सवाल पूछता है या कोई टिप्पणी करता है जिसका आपको जवाब देना पड़ता है, तो आप तुरंत एक तीखा जवाब देती हैं, जो अगर सीधा-सादा न भी हो, तो कम से कम रूखा तो होता ही है। आपका इससे क्या मतलब है?”

“महोदय, मैं कुछ ज्यादा ही सरल बोल गया; क्षमा चाहता हूँ। मुझे यह कहना चाहिए था कि दिखावे के बारे में पूछे गए प्रश्न का तुरंत उत्तर देना आसान नहीं होता; कि सबकी पसंद अलग-अलग होती है; और सुंदरता का कोई खास महत्व नहीं होता, या कुछ इसी तरह की बात।”

“तुम्हें ऐसा कुछ भी नहीं कहना चाहिए था। सुंदरता का तो कोई महत्व ही नहीं! और फिर, पिछली बदतमीज़ी को कम करने, मुझे शांत करने और मनाने के बहाने, तुम मेरे कान के नीचे एक छुरा घोंप रही हो! बताओ तो सही, तुम्हें मुझमें क्या कमी दिखती है? मुझे लगता है कि मेरे सारे अंग और चेहरे बाकी पुरुषों की तरह ही हैं?”

"श्री रोचेस्टर, मुझे अपने पहले उत्तर से मुकरने की अनुमति दें: मेरा इरादा कोई तीखी प्रतिक्रिया देने का नहीं था: यह केवल एक गलती थी।"

“बिल्कुल सही: मुझे ऐसा लगता है: और इसके लिए आपको जवाबदेह होना पड़ेगा। मेरी आलोचना करो: क्या मेरा माथा तुम्हें भाता नहीं?”

उसने अपने माथे पर क्षैतिज रूप से फैले काले बालों की लहरों को ऊपर उठाया और बौद्धिक अंगों का एक ठोस समूह दिखाया, लेकिन परोपकार के सौम्य संकेत के उभरने के स्थान पर अचानक कमी दिखाई दी।

"तो महोदया, क्या मैं मूर्ख हूँ?"

“बिल्कुल नहीं, महोदय। अगर मैं आपसे बदले में पूछूं कि क्या आप परोपकारी हैं, तो शायद आप मुझे असभ्य समझेंगे?”

“फिर वही बात! एक बार फिर चाकू से वार किया, जब उसने मेरे सिर पर थपथपाने का नाटक किया: और ऐसा इसलिए क्योंकि मैंने कहा था कि मुझे बच्चों और बूढ़ी औरतों की संगति पसंद नहीं है (यह बात कितनी दयनीय है!)। नहीं, युवती, मैं कोई आम परोपकारी नहीं हूँ; लेकिन मेरा ज़मीर ज़िंदा है;” और उसने उन उभारों की ओर इशारा किया जो इस क्षमता का संकेत देते हैं, और जो सौभाग्य से उसके लिए काफ़ी स्पष्ट थे; वास्तव में, उसके सिर के ऊपरी हिस्से को काफ़ी चौड़ाई देते थे: “और, इसके अलावा, एक समय था जब मेरे दिल में एक तरह की कोमल भावना थी। जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तब मैं काफ़ी संवेदनशील था, बेसहारा, अनाथ और बदकिस्मत लोगों के प्रति सहानुभूति रखता था; लेकिन भाग्य ने तब से मुझे खूब लाड़-प्यार दिया है: उसने मुझे अपनी उंगलियों से गूँथा है, और अब मैं खुद को तसल्ली देता हूँ कि मैं रबर की गेंद की तरह कठोर और मज़बूत हूँ; हालाँकि, अभी भी एक-दो दरारों से पारगम्य हूँ, और उस गोले के बीच में एक संवेदनशील बिंदु है। हाँ: क्या इससे मेरे लिए कोई उम्मीद बची है?”

“किस बात की आशा, महोदय?”

"क्या यह भारत के रबर से वापस मांस में मेरे अंतिम रूपांतरण के बारे में है?"

मैंने सोचा, "निश्चित रूप से उसने बहुत ज्यादा शराब पी ली है"; और मुझे उसके इस विचित्र प्रश्न का क्या उत्तर देना है, यह समझ नहीं आ रहा था: मैं कैसे बता सकता था कि क्या वह पुनः रूपांतरित होने में सक्षम है?

“आप बहुत उलझन में लग रही थीं, मिस आयर; और हालांकि आप मुझसे ज्यादा सुंदर नहीं हैं, फिर भी उलझन भरा भाव आप पर जंचता है; इसके अलावा, यह सुविधाजनक भी है, क्योंकि इससे आपकी वो जिज्ञासु निगाहें मेरे चेहरे से हटकर कालीन के ऊनी फूलों में उलझी रहती हैं; तो उलझन में रहें। युवती, आज रात मेरा मन मिलनसार और बातूनी रहने का है।”

इस घोषणा के साथ ही वह अपनी कुर्सी से उठे और संगमरमर के शेल्फ पर हाथ टिकाकर खड़े हो गए: इस मुद्रा में उनका चेहरा और शरीर दोनों स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे; उनकी छाती की असामान्य चौड़ाई, जो उनके अंगों की लंबाई के अनुपात में लगभग असंगत थी। मुझे यकीन है कि अधिकांश लोग उन्हें बदसूरत समझते; फिर भी उनके हावभाव में इतना सहज गर्व था; उनके व्यवहार में इतनी सहजता थी; अपनी बाहरी दिखावट के प्रति इतनी उदासीनता थी; और अपनी व्यक्तिगत सुंदरता की कमी को पूरा करने के लिए अन्य गुणों, चाहे वे स्वाभाविक हों या आकस्मिक, पर इतना घमंडी भरोसा था कि उन्हें देखकर व्यक्ति भी अनजाने में उस उदासीनता में शामिल हो जाता था, और एक अंधे, अपूर्ण अर्थ में ही सही, उनके आत्मविश्वास पर भरोसा कर लेता था।

“आज रात मेरा मन मिलनसार और बातूनी होने का है,” उन्होंने दोहराया, “और इसीलिए मैंने तुम्हें बुलाया है: आग और झूमर मेरे लिए पर्याप्त साथी नहीं थे; पायलट भी नहीं होता, क्योंकि इनमें से कोई भी बात नहीं कर सकता। एडेल थोड़ी बेहतर है, लेकिन फिर भी बहुत पीछे है; श्रीमती फेयरफैक्स भी वैसी ही हैं; मुझे यकीन है कि अगर तुम चाहो तो तुम मुझे पसंद आ सकती हो: जिस पहली शाम मैंने तुम्हें यहाँ बुलाया था, तुमने मुझे उलझन में डाल दिया था। तब से मैं तुम्हें लगभग भूल ही गया हूँ: अन्य विचारों ने तुम्हारे विचारों को मेरे दिमाग से निकाल दिया है; लेकिन आज रात मैं आराम से रहना चाहता हूँ; जो परेशान करता है उसे नज़रअंदाज़ करना चाहता हूँ, और जो अच्छा लगता है उसे याद करना चाहता हूँ। अब मुझे तुम्हें बोलने के लिए प्रेरित करना अच्छा लगेगा—तुम्हारे बारे में और जानना—इसलिए बोलो।”

बोलने के बजाय, मैंने मुस्कुरा दिया; और वह मुस्कान न तो बहुत संतुष्ट करने वाली

थी और न ही विनम्र।

“बोलो,” उन्होंने आग्रह किया।

“क्या बात है, महोदय?”

“जो आपको पसंद हो। विषय का चुनाव और उसे प्रस्तुत करने का तरीका पूरी तरह से आप पर निर्भर है।”

इसलिए मैं चुपचाप बैठा रहा और कुछ नहीं बोला: "अगर वह मुझसे सिर्फ बोलने और दिखावा करने के लिए बोलने की उम्मीद करता है, तो उसे पता चलेगा कि उसने गलत व्यक्ति से बात की है," मैंने सोचा।

"आप गूंगी हैं, मिस आयर।"

मैं अब भी अवाक था। उसने अपना सिर थोड़ा मेरी ओर झुकाया और एक ही झटके में मेरी आँखों में झाँकने लगा।

“जिद्दी?” उसने कहा, “और नाराज़ भी। आह! यह तो बिल्कुल सुसंगत है। मैंने अपना अनुरोध एक बेतुके, लगभग उद्दंड रूप में रखा है। मिस आयर, क्षमा करें। असल बात यह है कि मैं आपको किसी से कमतर नहीं समझना चाहता: यानी” (खुद को सुधारते हुए), “मैं केवल बीस साल के आयु अंतर और एक सदी के अनुभव से उत्पन्न श्रेष्ठता का दावा करता हूँ। यह जायज़ है, जैसा कि एडेल कहती; और इसी श्रेष्ठता के कारण, और केवल इसी कारण, मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप कृपया मुझसे थोड़ी देर बात करें और मेरे विचारों को भटकाएँ, जो एक ही बात पर अटके रहने से परेशान हैं – जंग लगे कील की तरह सड़ रहे हैं।”

उन्होंने स्पष्टीकरण देने की कृपा की, लगभग माफी मांगने की, और मुझे उनकी इस विनम्रता के प्रति असंवेदनशील महसूस नहीं हुआ, और मैं ऐसा दिखना भी नहीं चाहता था।

“अगर संभव हो तो मैं आपका मनोरंजन करने के लिए तैयार हूँ, महोदय—पूरी तरह से तैयार हूँ; लेकिन मैं कोई विषय नहीं उठा सकता, क्योंकि मुझे कैसे पता चलेगा कि आपको किस विषय में रुचि होगी? मुझसे प्रश्न पूछिए, और मैं उनका उत्तर देने की पूरी कोशिश करूँगा।”

तो, सबसे पहले, क्या आप मुझसे सहमत हैं कि मुझे थोड़ा दबंग, कठोर, शायद कभी-कभी सख्त होने का अधिकार है, उन कारणों से जो मैंने बताए हैं, अर्थात्, मैं आपकी उम्र का पिता हूँ, और मैंने कई देशों के कई लोगों के साथ विविध अनुभवों से

जूझते हुए, आधी दुनिया का भ्रमण किया है, जबकि आप एक ही घर में एक ही परिवार के साथ शांति से रहे हैं?

"आप जैसा चाहें वैसा करें, महोदय।"

“यह कोई जवाब नहीं है; बल्कि यह बहुत ही निराशाजनक और टालमटोल भरा जवाब है। स्पष्ट रूप से उत्तर दें।”

"मुझे नहीं लगता, महोदय, कि आपको मुझ पर हुक्म चलाने का अधिकार है, सिर्फ इसलिए कि आप मुझसे उम्र में बड़े हैं, या इसलिए कि आपने मुझसे ज्यादा दुनिया देखी है; आपकी श्रेष्ठता का दावा इस बात पर निर्भर करता है कि आपने अपने समय और अनुभव का कितना सदुपयोग किया है।"

“हम्म! आपने तुरंत जवाब दे दिया। लेकिन मैं इसकी इजाज़त नहीं दूंगा, क्योंकि इससे मुझे कोई फ़ायदा नहीं होगा, क्योंकि मैंने दोनों लाभों का बेपरवाह, बल्कि कहें तो बुरा इस्तेमाल किया है। श्रेष्ठता की बात छोड़ दें, तो भी आपको कभी-कभी मेरे आदेश मानने होंगे, और आदेश के लहजे से नाराज़ या आहत नहीं होना होगा। मानेंगे?”

मैं मुस्कुराया: मैंने मन ही मन सोचा कि मिस्टर रोचेस्टर बड़े ही अनोखे हैं - वे शायद यह भूल जाते हैं कि उनके आदेशों को प्राप्त करने के लिए वे मुझे प्रति वर्ष 30 पाउंड का भुगतान करते हैं।

“मुस्कान तो ठीक है,” उसने तुरंत ही सामने वाले के भाव को भांपते हुए कहा; “लेकिन बोलो भी।”

"मैं सोच रहा था, महोदय, कि बहुत कम मालिक ही यह जानने की जहमत उठाएंगे कि उनके वेतनभोगी अधीनस्थ उनके आदेशों से नाराज या आहत हुए हैं या नहीं।"

“वेतनभोगी अधीनस्थ! क्या! तुम मेरे वेतनभोगी अधीनस्थ हो? ओह हाँ, मैं वेतन देना भूल गया था! अच्छा, तो फिर इस भाड़े के आधार पर, क्या तुम मुझे थोड़ा रौब जमाने दोगे?”

"नहीं महोदय, उस आधार पर नहीं; लेकिन इस आधार पर कि आप इसे भूल गए थे, और इस बात की परवाह करते हैं कि आश्रित अपनी निर्भरता में सहज है या नहीं, मैं पूरी तरह सहमत हूं।"

और क्या आप अनेक पारंपरिक रूपों और वाक्यांशों को छोड़ने के लिए सहमत होंगे, यह सोचे बिना कि यह चूक उद्दंडता के कारण हुई है?

"मुझे पूरा यकीन है, महोदय, मैं अनौपचारिकता को कभी भी उद्दंडता नहीं समझूंगा: एक मुझे काफी पसंद है, जबकि दूसरी ऐसी चीज है जिसे कोई भी स्वतंत्र व्यक्ति वेतन के लिए भी स्वीकार नहीं करेगा।"

"बकवास! ज़्यादातर आज़ाद लोग तनख्वाह के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं; इसलिए चुप रहो, और उन बातों पर चर्चा मत करो जिनके बारे में तुम्हें ज़रा भी जानकारी नहीं है। फिर भी, तुम्हारे जवाब में भले ही कुछ कमियाँ हों, मैं मन ही मन तुम्हारी तारीफ़ करता हूँ; और जितना तुमने कहा, उतना ही तुम्हारी बात के सार के लिए भी; तुम्हारा अंदाज़ साफ़ और सच्चा था; ऐसा अंदाज़ अक्सर देखने को नहीं मिलता: बल्कि इसके उलट, दिखावा, बेरुखी, या बेवकूफ़ाना और घटिया सोच से कही गई बात को गलत समझना ही आम तौर पर साफ़गोई का नतीजा होता है। तीन हज़ार में से तीन नवोदित स्कूली छात्राएँ भी मुझे वैसा जवाब नहीं देतीं जैसा तुमने अभी दिया है। लेकिन मैं तुम्हारी तारीफ़ नहीं कर रहा: अगर तुम बाकी लोगों से अलग हो, तो इसमें तुम्हारी कोई खूबी नहीं है: कुदरत ने ऐसा किया है। और फिर, मैं अपने निष्कर्ष पर जल्दी पहुँच जाता हूँ: क्योंकि जहाँ तक मुझे पता है, तुम बाकी लोगों से बेहतर नहीं हो सकती; तुम्हारे कुछ अच्छे गुणों के मुकाबले तुममें असहनीय कमियाँ भी हो सकती हैं।"

"और शायद तुम भी," मैंने मन ही मन सोचा। जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया, मेरी नज़रें उससे मिलीं: मानो उसने मेरी नज़र को पढ़ लिया हो, और जवाब में उसने ऐसा कहा जैसे उसका अर्थ शब्दों में भी व्यक्त किया गया हो और कल्पना में भी।

"हाँ, हाँ, तुम सही कह रही हो," उसने कहा; "मुझमें भी बहुत सारी कमियाँ हैं: मैं जानता हूँ, और मैं उन्हें छुपाना नहीं चाहता, मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ। भगवान जाने मुझे दूसरों के प्रति इतना कठोर होने की ज़रूरत नहीं है; मेरा भी एक अतीत है, कर्मों की एक श्रृंखला है, जीवन के रंग हैं जिन पर मैं अपने भीतर चिंतन करता हूँ, जो मेरे पड़ोसियों के उपहास और निंदा को मुझ पर ही ला सकते हैं। मैंने इक्कीस साल की उम्र में एक गलत रास्ते पर चलना शुरू किया, या यूँ कहूँ (क्योंकि अन्य गलतियों की तरह, मैं आधा दोष दुर्भाग्य और प्रतिकूल परिस्थितियों पर डालना पसंद करता हूँ), और तब से मैं कभी सही रास्ते पर नहीं लौट पाया: लेकिन मैं बहुत अलग हो सकता था; मैं तुम्हारे जितना अच्छा हो सकता था - ज़्यादा बुद्धिमान - लगभग उतना ही बेदाग। मैं तुम्हारी मन की शांति, तुम्हारे स्वच्छ विवेक, तुम्हारी बेदाग याददाश्त से ईर्ष्या

करता हूँ। छोटी बच्ची, बिना किसी दाग या दाग के याददाश्त एक अनमोल खजाना है - शुद्ध ताजगी का एक अटूट स्रोत: है ना?"

"जब आप अठारह वर्ष के थे तब आपकी याददाश्त कैसी थी, महोदय?"

ठीक है, तो फिर; निर्मल, स्वस्थ: गंदगी के बहाव ने इसे बदबूदार पोखर में नहीं बदला था। अठारह साल की उम्र में मैं तुम्हारे बराबर था—बिल्कुल तुम्हारे बराबर। कुदरत ने मुझे कुल मिलाकर एक अच्छा इंसान बनाया था, मिस आयर; बेहतर किस्म का, और तुम देख रही हो कि मैं वैसा नहीं हूँ। तुम कहोगी कि तुम्हें यह नहीं दिखता; कम से कम मैं खुद को तसल्ली देता हूँ कि तुम्हारी आँखों में मुझे यही दिखता है (वैसे, सावधान रहना, तुम अपनी उस आँख से क्या जताती हो; मैं उसकी भाषा को जल्दी समझ लेता हूँ)। तो मेरी बात मानो,—मैं कोई दुष्ट नहीं हूँ: तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिए—मुझे ऐसी कोई बुरी छवि नहीं देनी चाहिए; लेकिन, मुझे पूरा यकीन है, मेरी स्वाभाविक प्रवृत्ति से ज़्यादा परिस्थितियों के कारण, मैं एक मामूली पापी हूँ, उन सभी तुच्छ भोग-विलास में लिप्त हूँ जिनसे अमीर और निकम्मे लोग जीवन जीने की कोशिश करते हैं। क्या तुम्हें आश्चर्य होता है कि मैं यह तुमसे कह रहा हूँ? जान लो, कि अपने आने वाले जीवन में तुम अक्सर खुद को चुनी हुई पाओगी। अपने परिचितों के रहस्यों के अनैच्छिक विश्वासपात्र: लोग सहज रूप से जान जाएंगे, जैसा कि मैंने पाया है, कि आपकी विशेषता खुद के बारे में बताना नहीं है, बल्कि दूसरों की बातें सुनना है; वे यह भी महसूस करेंगे कि आप उनकी नासमझी पर दुर्भावना से नहीं, बल्कि एक प्रकार की सहज सहानुभूति से सुनते हैं; यह सहानुभूति इसलिए भी कम सुकून देने वाली और उत्साहवर्धक नहीं है क्योंकि यह बहुत ही सहज तरीके से प्रकट होती है।

"आपको कैसे पता? आप यह सब कैसे अनुमान लगा सकते हैं, महोदय?"

"मैं इसे भली-भांति जानती हूँ; इसलिए मैं लगभग उतनी ही आज़ादी से लिखती हूँ जैसे किसी डायरी में अपने विचार लिख रही हो। आप कहेंगे कि मुझे परिस्थितियों से ऊपर होना चाहिए था; हाँ, होना भी चाहिए था—हाँ, होना भी चाहिए था; लेकिन आप देखिए, मैं नहीं थी। जब भाग्य ने मेरे साथ अन्याय किया, तो मुझमें शांत रहने की बुद्धि नहीं थी: मैं हताश हो गई; फिर मैं पतित हो गई। अब, जब कोई दुष्ट मूर्ख अपनी तुच्छ अश्लीलता से मुझे घृणा उत्पन्न करता है, तो मैं यह सोचकर खुद को बेहतर नहीं समझ सकती: मुझे यह स्वीकार करना ही पड़ता है कि हम दोनों एक ही स्तर पर हैं। काश मैं दृढ़ रहती—भगवान जानता है, मैं यही चाहती हूँ! जब आप गलती करने के

लिए प्रलोभित हों, तो पश्चाताप से डरें, मिस आयर; पश्चाताप जीवन का विष है।"

"कहा जाता है कि पश्चाताप ही इसका इलाज है, महोदय।"

"यह इसका इलाज नहीं है। सुधार इसका इलाज हो सकता है; और मैं सुधार कर सकता हूँ—मुझमें अभी भी इसके लिए शक्ति है—अगर—लेकिन जब मैं बाधाओं, बोझों और अभिशापों से घिरा हुआ हूँ, तो इसके बारे में सोचने का क्या फायदा? इसके अलावा, चूंकि मुझे सुख से पूरी तरह वंचित कर दिया गया है, इसलिए मुझे जीवन से आनंद प्राप्त करने का अधिकार है: और मैं इसे प्राप्त करूँगा, चाहे इसके लिए कितनी भी कीमत चुकानी पड़े।"

"तब तो आप और भी अधिक पतित हो जाएंगे, महोदय।"

"संभवत:: लेकिन मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए, जब मुझे मीठा, ताजा आनंद मिल सकता है? और मुझे यह उतना ही मीठा और ताजा मिल सकता है जितना कि मधुमक्खी द्वारा मैदान में इकट्ठा किया गया जंगली शहद।"

"इससे दर्द होगा—इसका स्वाद कड़वा होगा, महोदय।"

"तुम्हें कैसे पता? – तुमने तो कभी कोशिश ही नहीं की। तुम कितने गंभीर – कितने संजीदा दिख रहे हो: और तुम इस विषय में उतने ही अनभिज्ञ हो जितना कि यह छोटा सा चित्र" (मेंटलपीस से एक उठाते हुए)। "तुम्हें मुझे उपदेश देने का कोई अधिकार नहीं है, तुम नौसिखिए, जिसने अभी जीवन की दहलीज भी पार नहीं की है, और इसके रहस्यों से बिल्कुल अनजान हो।"

"मैं आपको आपके ही शब्दों की याद दिलाना चाहता हूँ, महोदय: आपने कहा था कि गलती पश्चाताप लाती है, और आपने पश्चाताप को अस्तित्व का जहर बताया था।"

"और अब गलती की बात कौन करता है? मुझे तो लगता ही नहीं कि मेरे मन में जो विचार कौंधा, वह कोई गलती थी। मेरा मानना है कि वह एक प्रेरणा थी, प्रलोभन नहीं: वह बहुत ही सुखद, बहुत ही सुकून देने वाली थी – मैं यह जानता हूँ। यह फिर से आ रही है! मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि यह कोई शैतान नहीं है; या अगर है भी, तो इसने प्रकाश के देवदूत का रूप धारण कर लिया है। मुझे लगता है कि जब यह सुंदर अतिथि मेरे दिल में प्रवेश मांगता है, तो मुझे उसे स्वीकार करना ही चाहिए।"

"इस पर भरोसा मत करो, महोदय; यह सच्चा देवदूत नहीं है।"

"एक बार फिर, आपको कैसे पता? आप किस सहज ज्ञान के आधार पर पाताल लोक के पतित देवदूत और शाश्वत सिंहासन के दूत के बीच, एक मार्गदर्शक और एक

प्रलोभक के बीच अंतर करने का दावा करते हैं?”

"महोदय, आपके चेहरे के भाव देखकर मुझे लगा कि जब आपने कहा कि वह सुझाव आपको परेशान कर रहा है, तो आप काफी विचलित थे। मुझे पूरा यकीन है कि अगर आप उस पर ध्यान देंगे तो यह आपके लिए और भी कष्टदायक साबित होगा।"

बिल्कुल नहीं – इसमें दुनिया का सबसे नेक संदेश छिपा है: बाकी, तुम मेरे अंतरात्मा के रखवाले नहीं हो, इसलिए चिंता मत करो। लो, अंदर आ जाओ, प्यारे यात्री!

उसने यह बात ऐसे कही मानो वह किसी अदृश्य दृष्टि से बात कर रहा हो, जो केवल उसकी अपनी आँखों से ही दिखाई देती हो; फिर, उसने अपनी आधी फैली हुई बाहों को अपनी छाती पर मोड़ लिया और ऐसा लगा जैसे वह उस अदृश्य सत्ता को अपनी बाहों में समाहित कर रहा हो।

“अब,” उन्होंने मुझसे फिर बात करते हुए कहा, “मैंने तीर्थयात्री का स्वागत किया है—जो कि मेरा दृढ़ विश्वास है, एक छद्म देवता हैं। इससे मुझे पहले ही लाभ हुआ है: मेरा हृदय एक प्रकार का श्मशान था; अब यह एक पवित्र स्थान बन जाएगा।”

सच कहूँ तो, महोदय, मुझे आपकी बात बिल्कुल समझ नहीं आ रही: मैं बातचीत जारी नहीं रख पा रहा हूँ, क्योंकि यह मेरी समझ से परे हो गई है। केवल एक बात मुझे समझ आई: आपने कहा कि आप उतने अच्छे नहीं हैं जितना आप होना चाहते हैं, और आपको अपनी अपूर्णता का अफसोस है; — एक बात जो मुझे समझ आई: आपने संकेत दिया कि कलंकित स्मृति एक चिरस्थायी अभिशाप है। मुझे लगता है कि यदि आप प्रयास करें, तो समय के साथ आप वह बन सकते हैं जो आप स्वयं स्वीकार करेंगे; और यदि आप आज से ही अपने विचारों और कार्यों को सुधारने का दृढ़ संकल्प लें, तो कुछ ही वर्षों में आपके पास स्मृतियों का एक नया और बेदाग भंडार होगा, जिसे आप प्रसन्नतापूर्वक याद कर सकते हैं।

"बिल्कुल सही सोचा; बिल्कुल सही कहा, मिस आयर; और इस समय, मैं पूरी ऊर्जा के साथ नरक का मार्ग प्रशस्त कर रहा हूँ।"

"महोदय?"

मैं नेक इरादे रख रहा हूँ, जो मुझे पत्थर की तरह अटल लगते हैं। निश्चित रूप से, मेरे साथी और मेरे लक्ष्य पहले जैसे नहीं होंगे।

"और बेहतर?"

और बेहतर—शुद्ध अयस्क की तरह, जो मैल से कहीं बेहतर होता है। आपको मुझ पर संदेह है; मुझे स्वयं पर कोई संदेह नहीं है: मैं जानता हूँ कि मेरा लक्ष्य क्या है, मेरे उद्देश्य क्या हैं; और इस समय मैं एक ऐसा अटल नियम स्थापित करता हूँ, जो मेदियों और फारसियों के नियम के समान है, कि दोनों सही हैं।

"ऐसा नहीं हो सकता, महोदय, यदि उन्हें वैध बनाने के लिए एक नए कानून की आवश्यकता हो।"

"हाँ, मिस आयर, लेकिन इसके लिए एक नए कानून की सख्त जरूरत है: अभूतपूर्व परिस्थितियों के संयोजन के लिए अभूतपूर्व नियमों की आवश्यकता होती है।"

"यह एक खतरनाक सिद्धांत प्रतीत होता है, महोदय; क्योंकि यह तुरंत देखा जा सकता है कि इसका दुरुपयोग होने की संभावना है।"

“साक्ष्यपूर्ण ऋषि! ऐसा ही है: लेकिन मैं अपने कुलदेवताओं की कसम खाता हूँ कि इसका दुरुपयोग नहीं करूँगा।”

आप इंसान हैं और गलतियां कर सकते हैं।

मैं हूं: तुम भी हो—तो फिर क्या?

"मनुष्य और त्रुटिपूर्ण प्राणियों को उस शक्ति का आधिपत्य नहीं करना चाहिए जिसे केवल दिव्य और परिपूर्ण प्राणियों को ही सुरक्षित रूप से सौंपा जा सकता है।"

“कौन सी शक्ति?”

किसी भी विचित्र, अनधिकृत कार्यप्रणाली के बारे में यह कहना कि, 'इसे सही होने दो।'

“‘इसे सही होने दो’ — ये शब्द आपने ही कहे हैं।”

“तो शायद यही सही हो,” मैंने उठते हुए कहा, क्योंकि मुझे उस चर्चा को जारी रखना व्यर्थ लग रहा था जो मेरे लिए पूरी तरह से अंधकारमय थी; और इसके अलावा, मुझे यह भी एहसास था कि मेरे वार्ताकार का चरित्र मेरी समझ से परे था; कम से कम, मेरी वर्तमान समझ से परे; और मुझे अनिश्चितता, असुरक्षा की अस्पष्ट भावना महसूस हो रही थी, जो अज्ञानता के विश्वास के साथ आती है।

"आप कहां जा रहे हैं?"

"एडेल को सुलाने का समय हो गया है: उसके सोने का समय बीत चुका है।"

"तुम मुझसे डरते हो, क्योंकि मैं स्फिंक्स सांप की तरह बोलता हूँ।"

"आपकी भाषा रहस्यमय है, महोदय: लेकिन यद्यपि मैं चकित हूँ, मैं निश्चित रूप से भयभीत नहीं हूँ।"

"आप डरे हुए हैं - आपका आत्म-प्रेम किसी गलती से भयभीत है।"

"इस लिहाज से मुझे थोड़ी घबराहट हो रही है - मैं कोई बेतुकी बात नहीं करना चाहता।"

“अगर आप हंसती भी हैं, तो इतनी गंभीर और शांत आवाज़ में कि मैं उसे समझदारी समझ लूँगी। क्या आप कभी नहीं हंसतीं, मिस आयर? जवाब देने की ज़रूरत नहीं है— मैंने आपको बहुत कम हंसते देखा है; लेकिन आप बहुत खुलकर हंस सकती हैं: यकीन मानिए, आप स्वभाव से कठोर नहीं हैं, ठीक वैसे ही जैसे मैं स्वभाव से दुष्ट नहीं हूँ। लोवुड का बंधन अभी भी आप पर थोड़ा हावी है; आपके चेहरे को नियंत्रित करता है, आपकी आवाज़ को दबाता है और आपके अंगों को सीमित करता है; और आप किसी पुरुष और भाई— या पिता, या स्वामी, या जो भी हो—की उपस्थिति में बहुत खुलकर मुस्कुराने, बहुत खुलकर बोलने या बहुत तेज़ी से चलने से डरती हैं: लेकिन, समय के साथ, मुझे लगता है कि आप मेरे साथ स्वाभाविक होना सीख जाएंगी, क्योंकि मेरे लिए आपके साथ पारंपरिक होना असंभव है; और तब आपकी नज़रें और हरकतें आज की तुलना में कहीं अधिक जीवंत और विविध होंगी। मुझे कभी-कभी पिंजरे की तंग सलाखों के बीच से एक अजीब तरह के पक्षी की झलक दिखाई देती है: एक जीवंत, बेचैन, दृढ़ निश्चयी कैदी वहाँ है; अगर वह आज़ाद होता, तो बादलों की ऊँचाई तक उड़ जाता। आप अभी भी क्या आप जाने पर अड़े हैं?

“नौ अंक हो गए हैं, महोदय।”

“कोई बात नहीं, — एक मिनट रुकिए: एडेल अभी सोने के लिए तैयार नहीं है। मिस आयर, मेरी स्थिति, आग की ओर पीठ और कमरे की ओर चेहरा, अवलोकन के लिए अनुकूल है। आपसे बात करते हुए, मैंने बीच-बीच में एडेल को भी देखा है (मेरे अपने कारण हैं कि मैं उसे एक दिलचस्प अध्ययन क्यों मानती हूँ, — ऐसे कारण जो मैं शायद, बल्कि मैं आपको किसी दिन ज़रूर बताऊँगी)। उसने लगभग दस मिनट पहले अपने बक्से से एक छोटी गुलाबी रेशमी फ्रॉक निकाली; जैसे ही उसने उसे खोला, उसका चेहरा खुशी से चमक उठा; नज़ाकत उसके खून में है, उसके दिमाग में घुलमिल गई है, और उसकी हड्डियों के मज्जा में समा गई है। ‘Il faut que je

l'essaie!' वह चिल्लाई, 'et à l'instant même!' और वह कमरे से बाहर भाग गई। वह अब सोफी के साथ कपड़े बदल रही है: कुछ ही मिनटों में वह वापस आएगी; और मैं जानती हूँ कि मैं क्या देखूँगी, — सेलीन वारेन्स का एक छोटा रूप, जैसा कि वह मंच पर दिखाई देती थीं। उदय हो रहा है— लेकिन कोई बात नहीं। हालांकि, मेरी सबसे कोमल भावनाओं को गहरा आघात लगने वाला है: मुझे यही पूर्वाभास है; अभी रुकिए, देखिए कि यह सच होता है या नहीं।

कुछ ही देर में एडेल के नन्हे कदमों की आहट हॉल में सुनाई दी। वह अंदर आई, जैसा कि उसके अभिभावक ने भविष्यवाणी की थी, वह पूरी तरह बदल चुकी थी। उसने पहले जो भूरे रंग की फ्रॉक पहनी थी, उसकी जगह गुलाबी रंग के सैटिन की एक छोटी, घेरदार और कमर से पूरी तरह से भरी हुई पोशाक पहन रखी थी; उसके माथे पर गुलाब की कलियों का एक मुकुट था; उसके पैरों में रेशमी मोजे और छोटे सफेद सैटिन सैंडल थे।

"क्या मेरी पोशाक ठीक लग रही है?" वह उछलते हुए बोली; "और मेरे जूते? और मेरी मोज़े? देखो, मुझे लगता है मैं नाचूंगी!"

और अपनी पोशाक फैलाते हुए, वह कमरे में इधर-उधर घूमती रही, जब तक कि मिस्टर रोचेस्टर के पास पहुँचकर, वह उनके सामने हल्के से पैर की उंगलियों पर घूमी, फिर उनके पैरों पर एक घुटने के बल बैठ गई और चिल्लाई —

"सर, आपकी दयालुता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद;" फिर उठकर उसने कहा, "माँ भी तो ऐसे ही करती थीं, है ना सर?"

"बिल्कुल!" जवाब था; "और, 'इसी तरह', उसने मेरे ब्रिटिश पैंट की जेब से मेरा अंग्रेज़ी सोना निकाल लिया। मैं भी कभी-कभी अनुभवहीन हो जाता हूँ, मिस आयर, — हाँ, घास की तरह हरा: अब आपको कोई और बसंत का रंग उतना ताज़ा नहीं करता जितना कभी मुझे करता था। हालाँकि, मेरा बसंत तो बीत चुका है, लेकिन वह मेरे हाथों में वह फ्रांसीसी फूल छोड़ गया है, जिससे कभी-कभी मेरा मन करता है कि छुटकारा पा लूँ। अब मुझे उस जड़ की कोई कदर नहीं है जहाँ से वह उगा था; क्योंकि मुझे पता चल गया था कि वह एक ऐसी किस्म का फूल है जिसे केवल सोने की धूल से ही खाद मिल सकती है, इसलिए मुझे उस फूल से बस आधी ही पसंद है, खासकर जब वह अभी की तरह इतना कृत्रिम दिखता है। मैं उसे रोमन कैथोलिक सिद्धांत के अनुसार रखता और पालता हूँ, जिसमें एक अच्छे काम से अनेक पापों, चाहे वे बड़े हों

या छोटे, का प्रायश्चित हो जाता है। मैं यह सब किसी दिन समझाऊँगा। शुभ रात्रि।"

अध्याय पंद्रह

श्री रोचेस्टर ने बाद में एक अवसर पर इसका स्पष्टीकरण दिया। एक दोपहर की बात है, जब संयोगवश उनकी मुलाकात मैदान में मुझसे और एडेल से हुई: और जब वह पायलट और अपने शटलकॉक से खेल रही थी, तो उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उसके सामने एक लंबी बीच की पगडंडी पर ऊपर-नीचे चलूँ।

फिर उसने कहा कि वह फ्रांसीसी ओपेरा नर्तकी सेलीन वारेन्स की बेटी थी, जिसके प्रति उसके मन में कभी एक गहरा प्रेम था। सेलीन ने भी उससे कहीं अधिक तीव्र प्रेम का दावा किया था। वह खुद को उसका आदर्श मानता था, भले ही वह दिखने में बदसूरत था: उसका मानना था, जैसा कि उसने कहा, कि सेलीन को अपोलो बेल्वीडेरे की भव्यता के बजाय उसका "एथलीट जैसा पतला शरीर" अधिक पसंद था।

और, मिस आयर, मैं इस बात से इतना खुश हुआ कि उस फ्रांसीसी अप्सरा ने अपने ब्रिटिश बौने को इतना पसंद किया कि मैंने उसे एक होटल में ठहराया; उसे नौकरों का पूरा जखीरा, एक गाड़ी, कश्मीरी कपड़े, हीरे, गहने, आदि दिए। संक्षेप में, मैंने बाकी सभी दीवाने लोगों की तरह, प्रचलित तरीके से खुद को बर्बाद करने की प्रक्रिया शुरू कर दी। लगता है, मुझमें शर्म और विनाश का कोई नया रास्ता बनाने की मौलिकता नहीं थी, बल्कि मैं पुराने रास्ते पर मूर्खतापूर्ण सटीकता के साथ चलता रहा, ताकि घिसे-पिटे केंद्र से एक इंच भी न भटकूँ। मेरा भी वही हश्र हुआ जो बाकी सभी दीवाने लोगों का होता है। एक शाम जब मैं वहाँ पहुँचा, जब सेलीन को मेरी उम्मीद नहीं थी, तो मैंने उसे वहाँ पाया; लेकिन वह एक गर्म रात थी, और मैं पेरिस में घूमते-घूमते थक गया था, इसलिए मैं उसके बेडरूम में बैठ गया; उसकी उपस्थिति से हाल ही में पवित्र हुई हवा में साँस लेकर खुश था। नहीं, - मैं अतिशयोक्ति कर रहा हूँ; मैंने

कभी नहीं सोचा था कि उसमें कोई पवित्र करने वाला गुण था: बल्कि यह एक तरह का था... वह जो परफ्यूम छोड़ गई थी, उसकी खुशबू कस्तूरी और अंबर जैसी थी, पवित्रता की महक से कम। मैं कंज़र्वेटरी के फूलों और छिड़के हुए एसेंस की महक से घुटन महसूस करने ही लगा था कि तभी मुझे खिड़की खोलकर बालकनी में जाने का ख्याल आया। वहां चांदनी और गैस की रोशनी थी, और सब कुछ एकदम शांत और निर्मल था। बालकनी में एक-दो कुर्सियां थीं; मैं बैठ गया और एक सिगार निकाला, — "अगर आप मुझे माफ करें तो मैं अभी एक सिगार पी लूंगा।"

यहां एक विराम आया, जिसे सिगार निकालकर जलाने से भर गया; उसे होठों से लगाकर और ठंडी और सूरजविहीन हवा में हवाना की धूप की एक लकीर छोड़ते हुए, वह आगे बढ़ा —

"उन दिनों मुझे भी बोनबोन बहुत पसंद थे, मिस आयर, और मैं क्रोक्वेंट (इस असभ्यता को नज़रअंदाज़ करें) - क्रोक्वेंट चॉकलेट कन्फिट्स खा रहा था, और बीच-बीच में सिगरेट पी रहा था, और साथ ही उन गाड़ियों को देख रहा था जो फैशनेबल सड़कों से होते हुए पास के ओपेरा हाउस की ओर जा रही थीं। तभी, खूबसूरत अंग्रेज़ी घोड़ों द्वारा खींची जा रही एक शानदार, बंद गाड़ी में, शहर की चकाचौंध भरी रात में, मैंने उस 'गाड़ी' को पहचान लिया जो मैंने सेलीन को दी थी। वह लौट रही थी: ज़ाहिर है, मेरा दिल बेसब्री से धड़क रहा था, जिस लोहे की रेलिंग पर मैं टिका हुआ था। गाड़ी, जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, होटल के दरवाजे पर रुकी; मेरी प्रेमिका (ओपेरा की प्रेमिका के लिए यही शब्द है) उतरी: हालाँकि उसने एक लबादा ओढ़ा हुआ था - जो कि जून की इतनी गर्म शाम में एक अनावश्यक बोझ था - मैंने उसे तुरंत उसके छोटे से पैर से पहचान लिया, जो उसकी पोशाक के स्कर्ट से झाँक रहा था, जैसे ही वह गाड़ी की सीढ़ी से उतरी। बालकनी पर झुककर, मैं धीरे से कहने ही वाला था, 'मोन' 'एन्ज' - एक ऐसे स्वर में, जो निश्चित रूप से केवल प्रेम के कानों को ही सुनाई देना चाहिए - तभी एक आकृति उसके पीछे गाड़ी से कूदी; वह भी लबादा ओढ़े हुए थी; लेकिन फुटपाथ पर जो आवाज गूंजी वह एक नुकीली एड़ी की थी, और वह एक टोपीधारी सिर था जो अब होटल के मेहराबदार पोर्टे कोचेयर के नीचे से गुजरा।

"आपने कभी ईर्ष्या का अनुभव नहीं किया, है ना, मिस आयर? बिल्कुल नहीं: मुझे आपसे पूछने की ज़रूरत नहीं है; क्योंकि आपने कभी प्रेम का अनुभव नहीं किया। आपको अभी इन दोनों भावनाओं का अनुभव करना बाकी है: आपकी आत्मा सो रही

है; वह आघात अभी आना बाकी है जो इसे जगाएगा। आप सोचती हैं कि सारा जीवन उसी शांत प्रवाह में बह रहा है जिसमें आपकी जवानी अब तक गुज़री है। आँखें बंद और कान बंद करके बहते हुए, आप न तो बाढ़ के तल में दूर तक फैली चट्टानों को देख पाती हैं, न ही उनके तल पर उठती लहरों की गूँज सुन पाती हैं। लेकिन मैं आपसे कहता हूँ - और आप मेरी बात ध्यान से सुनें - आप एक दिन नदी के एक ऊबड़-खाबड़ दर्रे पर पहुँचेंगी, जहाँ जीवन की पूरी धारा भंवर और कोलाहल, झाग और शोर में बिखर जाएगी: या तो आप चट्टान की चोटियों पर चूर-चूर हो जाएँगी, या किसी शक्तिशाली लहर द्वारा उठाकर एक शांत धारा में ले जाई जाएँगी - जैसा कि मैं अब बह रहा हूँ।"

"मुझे यह दिन अच्छा लगता है; मुझे वह इस्पात जैसा आकाश अच्छा लगता है; मुझे इस पाले में दुनिया की कठोरता और शांति अच्छी लगती है। मुझे थॉर्नफील्ड अच्छा लगता है, इसकी प्राचीनता, इसका एकांत, इसके पुराने कौवे और कांटेदार पेड़, इसका धूसर मुखौटा, और उस धातु के आकाश को प्रतिबिंबित करने वाली काली खिड़कियों की कतारें: और फिर भी कितने लंबे समय से मैंने इसके विचार मात्र से घृणा की है, इससे एक बड़े महामारी-गृह की तरह परहेज किया है? मैं अब भी इससे कितनी घृणा करता हूँ—"

उसने दांत पीसे और चुप रहा: उसने कदम रोक दिए और अपने जूते को ज़मीन पर पटका। ऐसा लग रहा था मानो कोई घृणित विचार उसे जकड़ रहा हो, और इतनी ज़ोर से जकड़ रहा हो कि वह आगे नहीं बढ़ पा रहा हो।

हम सड़क पर चढ़ रहे थे कि वह अचानक रुक गया; हॉल हमारे सामने था। उसने अपनी नज़र उसकी दीवारों पर उठाई और उन पर ऐसी तीखी निगाह डाली जैसी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी और न ही उसके बाद कभी देखी। दर्द, शर्म, क्रोध, अधीरता, घृणा, तिरस्कार, मानो क्षण भर के लिए उसकी काली भौंहों के नीचे फैली बड़ी पुतली में एक कांपता हुआ संघर्ष कर रहे थे। वह संघर्ष बहुत तीव्र था जो सर्वोपरि होना चाहिए था; लेकिन एक और भावना उठी और विजयी हुई: कुछ कठोर और निंदक: स्वेच्छाचारी और दृढ़: इसने उसके जुनून को शांत कर दिया और उसके चेहरे को पत्थर जैसा बना दिया: वह आगे बढ़ता रहा—

"जिस क्षण मैं चुप थी, मिस आयर, मैं अपने भाग्य के साथ एक योजना बना रही थी। वह वहाँ, उस बीच के पेड़ के तने के पास खड़ी थी - एक चुड़ैल जैसी, ठीक वैसी

ही जैसी मैकबेथ को फॉरेस के मैदान में दिखाई दी थीं। 'तुम्हें थॉर्नफील्ड पसंद है?' उसने अपनी उंगली उठाते हुए कहा; और फिर उसने हवा में एक संदेश लिखा, जो घर के सामने, खिड़कियों की ऊपरी और निचली पंक्ति के बीच, भयंकर चित्रलिपि में लिखा गया था, 'पसंद करो अगर कर सको! पसंद करो अगर हिम्मत हो!'”

“‘मुझे यह पसंद आएगा,’ मैंने कहा; ‘मुझे यह पसंद आने की पूरी उम्मीद है;’ और (उसने उदास स्वर में कहा) “मैं अपना वचन निभाऊंगा; मैं सुख और अच्छाई के रास्ते में आने वाली बाधाओं को तोड़ दूंगा—हाँ, अच्छाई। मैं पहले जैसा था, जैसा हूँ, उससे बेहतर इंसान बनना चाहता हूँ; जैसे अय्यूब के लेविथान ने भाले, तीर और कवच को तोड़ दिया था, जिन्हें दूसरे लोहे और पीतल के समान बाधाएँ मानते हैं, मैं उन्हें तिनके और सड़ी हुई लकड़ी के समान समझूंगा।”

एडेल शटलकॉक लेकर उसके आगे दौड़ पड़ी। “दूर हटो!” वह कठोर स्वर में चिल्लाया; “दूर रहो, बच्ची; या सोफी के पास जाओ!” फिर चुपचाप अपनी सैर जारी रखते हुए, मैंने उसे उस बिंदु पर वापस लाने का साहस किया जहाँ से वह अचानक मुड़ गया था।

मैंने पूछा, "जब मैडम वारेन्स अंदर आईं, तो क्या आप बालकनी से चले गए थे, महोदय?"

मुझे लगभग इस बेतुके समय पर पूछे गए प्रश्न के लिए फटकार की उम्मीद थी, लेकिन इसके विपरीत, अपने गुस्से भरे तन्मयता से बाहर निकलते हुए, उन्होंने मेरी ओर देखा और उनके माथे से उदासी छट गई। “ओह, मैं सेलीन को भूल ही गया था! खैर, बात वहीं खत्म करते हैं। जब मैंने अपनी प्रेमिका को एक घुड़सवार के साथ आते देखा, तो मुझे जैसे कोई फुफकार सुनाई दी और ईर्ष्या का हरा सांप चांदनी रात में बालकनी से लहराते हुए मेरी बनियान के अंदर घुस गया और दो मिनट में मेरे दिल की गहराई तक पहुंच गया। अजीब!” उन्होंने अचानक फिर से बात शुरू करते हुए कहा। “यह अजीब बात है कि मैंने तुम्हें इन सब बातों का राज़दार चुना, युवती; और भी अजीब बात है कि तुम चुपचाप मेरी बातें सुन रही हो, मानो मेरे जैसे आदमी के लिए तुम्हारे जैसी भोली-भाली, अनुभवहीन लड़की को अपनी ओपेरा-प्रेमिकाओं की कहानियाँ सुनाना दुनिया की सबसे आम बात हो! लेकिन आखिरी विलक्षणता पहली विलक्षणता को स्पष्ट करती है, जैसा कि मैंने पहले भी संकेत दिया था: तुम अपनी गंभीरता, विचारशीलता और सावधानी के साथ रहस्यों को सुनने के लिए ही बनी हो।

इसके अलावा, मैं जानता हूँ कि मैंने किस तरह के दिमाग को अपने संपर्क में रखा है: मैं जानता हूँ कि यह ऐसा दिमाग नहीं है जिस पर कोई बुरा असर पड़े: यह एक अनोखा दिमाग है: यह अद्वितीय है। सौभाग्य से मेरा इसे नुकसान पहुँचाने का कोई इरादा नहीं है: लेकिन, अगर मैं ऐसा करता भी, तो इसे मुझसे कोई नुकसान नहीं होता। हम दोनों जितनी ज़्यादा बातें करेंगे, उतना ही अच्छा होगा; क्योंकि मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकता, लेकिन तुम मुझे तरोताज़ा कर सकती हो।" इस विषयांतर के बाद वह आगे बढ़ा—

मैं बालकनी में ही रहा। 'वे उसके शयनकक्ष में ज़रूर आएंगे,' मैंने सोचा: 'चलो मैं घात लगाकर बैठ जाता हूँ।' इसलिए मैंने खुली खिड़की से हाथ अंदर डालकर पर्दा खींच दिया, बस एक छोटा सा छेद खुला छोड़ दिया जिससे मैं सब कुछ देख सकूँ; फिर मैंने खिड़की बंद कर दी, बस एक छोटी सी दरार छोड़ी जिससे प्रेमियों की फुसफुसाहट भरी बातें सुनाई दे सकें: फिर मैं चुपके से अपनी कुर्सी पर वापस चला गया; और जैसे ही मैं बैठा, वे दोनों अंदर आ गए। मेरी नज़र तुरंत उस छेद पर पड़ी। सेलीन की नौकरानी अंदर आई, एक दीपक जलाया, उसे मेज पर रखा और चली गई। इस तरह वे दोनों मुझे साफ़ दिखाई दिए: दोनों ने अपने लबादे उतार दिए, और वहाँ 'वारेन्स' था, साटन और गहनों में चमकता हुआ, – ज़ाहिर है, मेरे उपहारों में से एक, – और वहाँ उसका साथी एक अधिकारी की वर्दी में था; और मैं उसे एक युवा अय्याश विस्काउंट के रूप में जानता था – एक बेवकूफ और दुष्ट युवक जिससे मैं कभी-कभार समाज में मिला था, और जिसे मैंने कभी नफरत करने के बारे में नहीं सोचा था क्योंकि मैं उससे इतनी घृणा करता था। उसे पहचानते ही ईर्ष्या का साँप तुरंत टूट गया; क्योंकि उसी क्षण सेलीन के लिए मेरा प्यार आग में जलकर राख हो गया। जो स्त्री मेरे जैसे प्रतिद्वंद्वी के लिए मुझे धोखा दे सकती थी, वह मेरे लिए किसी काम की नहीं थी; वह केवल तिरस्कार की पात्र थी; हालाँकि, मुझसे कम, जो उसका शिकार बन चुका था।

"उन्होंने बातें शुरू कीं; उनकी बातचीत ने मुझे पूरी तरह से राहत दी: तुच्छ, स्वार्थी, निर्दयी और बेतुकी, यह सुनने वाले को क्रोधित करने के बजाय थकाने के लिए ही बनी थी। मेरा एक कार्ड मेज पर पड़ा था; इसे देखकर मेरा नाम चर्चा में आ गया। उनमें से किसी के पास भी मुझे अच्छी तरह से परेशान करने की ऊर्जा या बुद्धि नहीं थी, लेकिन उन्होंने अपने छोटे से तरीके से जितना हो सके मुझे अपमानित किया:

खासकर सेलीन, जिसने मेरी व्यक्तिगत कमियों को भी बड़े ही शानदार ढंग से उजागर किया - जिन्हें उसने विकृतियाँ कहा। अब यह उसकी आदत थी कि वह जिसे वह मेरी 'पुरुष सुंदरता' कहती थी, उसकी ज़ोरदार प्रशंसा करती थी: जिसमें वह आपसे बिल्कुल अलग थी, जिसने दूसरी मुलाकात में मुझसे साफ-साफ कह दिया था कि आप मुझे सुंदर नहीं मानते। उस समय यह अंतर मुझे चौंका गया और —"

एडेल फिर से दौड़ती हुई आई।

"महाशय, जॉन अभी-अभी यह कहने आया था कि आपके एजेंट ने फोन किया था और वह आपसे मिलना चाहता है।"

आह! उस स्थिति में मुझे संक्षेप में बताना होगा। खिड़की खोलकर मैं उनके पास गया; सेलीन को अपनी सुरक्षा से मुक्त किया; उसे होटल खाली करने का नोटिस दिया; तत्काल खर्चों के लिए उसे एक पर्स दिया; चीखों, हिस्टीरिया, प्रार्थनाओं, विरोधों, ऐंठनों की परवाह किए बिना, बोइस डी बोलोग्ने में विस्काउंट से मुलाकात का समय तय किया। अगली सुबह मुझे उससे मिलने का सौभाग्य मिला; उसकी कमजोर, मुरझाई हुई बांह में एक गोली मारी, जो मुर्गी के पंख की तरह कमजोर थी, और फिर सोचा कि मैंने पूरे दल का काम तमाम कर दिया है। लेकिन दुर्भाग्य से, छह महीने पहले, वारेन्स ने मुझे यह एडेल नाम की लड़की दी थी, जिसने दावा किया था कि वह मेरी बेटी है; और शायद वह हो भी सकती है, हालाँकि मुझे उसके चेहरे पर इस तरह के गंभीर पितृत्व का कोई सबूत नहीं दिखता: पायलट उससे ज़्यादा मेरे जैसी है। माँ से संबंध तोड़ने के कुछ साल बाद, उसने अपने बच्चे को छोड़ दिया और एक संगीतकार या गायक के साथ इटली भाग गई। मैंने उस पर कोई स्वाभाविक दावा नहीं किया। एडेल का खर्चा उठाने का ज़िम्मा मेरा नहीं था, और अब मैं इसे स्वीकार भी नहीं करता, क्योंकि मैं उसका पिता नहीं हूँ; लेकिन यह सुनकर कि वह बिल्कुल बेसहारा थी, मैंने उस बेचारी को पेरिस की गंदगी और कीचड़ से निकालकर यहाँ एक अंग्रेजी ग्रामीण बगीचे की उपजाऊ मिट्टी में लाकर उसे अच्छी तरह से बड़ा होने दिया। श्रीमती फेयरफैक्स ने आपको उसे पालने-पोसने के लिए नियुक्त किया था; लेकिन अब जब आप जानते हैं कि वह एक फ्रांसीसी ओपेरा गायिका की नाजायज संतान है, तो शायद आप अपने पद और अपनी आश्रिता के बारे में अलग तरह से सोचेंगे: आप किसी दिन मेरे पास यह सूचना लेकर आएँगे कि आपको कोई और जगह मिल गई है — आप मुझसे एक नई गवर्नेंस ढूंढने की गुहार लगाएँगे, वगैरह — है ना?

नहीं: एडेल न तो अपनी माँ की गलतियों के लिए ज़िम्मेदार है और न ही आपकी: मुझे उससे लगाव है; और अब जब मुझे पता है कि वह एक तरह से अनाथ है—अपनी माँ द्वारा त्यागी गई और आपके द्वारा ठुकराई गई, महोदय—तो मैं पहले से भी ज़्यादा उससे जुड़ जाऊँगी। भला मैं एक अमीर परिवार की बिगड़ी हुई बच्ची को, जो अपनी गवर्नेंस को एक झंझट समझती है, एक अकेली अनाथ बच्ची से ज़्यादा कैसे पसंद कर सकती हूँ, जो उसे एक दोस्त की तरह मानती है?

"अरे, आप इसे जिस रोशनी में देख रहे हैं, वह तो अद्भुत है! अच्छा, मुझे अब अंदर जाना होगा; और आपको भी: अंधेरा हो रहा है।"

लेकिन मैं एडेल और पायलट के साथ कुछ मिनट और बाहर रुका रहा—उसके साथ दौड़ लगाई और बैटलडोर और शटलकॉक का खेल खेला। जब हम अंदर आए और मैंने उसका बोनट और कोट उतार दिया, तो मैंने उसे अपनी गोद में बिठा लिया; उसे एक घंटे तक वहीं बिठाए रखा, उसे मनचाही बातें करने दीं: यहाँ तक कि उन छोटी-मोटी आज़ादियों और तुच्छ बातों पर भी नहीं डांटा जिनमें वह ध्यान दिए जाने पर भटक जाती थी, और जो उसके चरित्र की सतहीपन को दर्शाती थीं, जो शायद उसकी माँ से विरासत में मिली थी, जो एक अंग्रेज़ मानसिकता के अनुकूल नहीं थी। फिर भी उसमें खूबियाँ थीं; और मैं उसमें मौजूद हर अच्छी बात की पूरी तरह सराहना करने को तैयार था। मैंने उसके चेहरे और चेहरे में मिस्टर रोचेस्टर की कोई समानता खोजने की कोशिश की, लेकिन नहीं मिली: कोई लक्षण, कोई भाव-भंगिमा रिश्ते का संकेत नहीं देती थी। यह अफ़सोस की बात थी: अगर यह साबित हो जाता कि वह उनसे मिलती-जुलती है, तो वह उसके बारे में और अधिक सोचते।

रात को अपने कमरे में लौटने के बाद ही मैंने श्री रोचेस्टर द्वारा सुनाई गई कहानी पर गंभीरता से विचार किया। जैसा कि उन्होंने कहा था, कहानी के सार में शायद कुछ भी असाधारण नहीं था: एक धनी अंग्रेज का एक फ्रांसीसी नर्तकी के प्रति प्रेम और उसका उसके साथ विश्वासघात, समाज में आम बातें थीं; लेकिन उस भावनात्मक आवेश में कुछ निश्चित रूप से अजीब था जो अचानक उन्हें तब आ लगा जब वे अपने मन की वर्तमान संतुष्टि और पुराने हॉल और उसके आसपास के वातावरण में अपने नवप्रवर्तित आनंद को व्यक्त कर रहे थे। मैंने इस घटना पर आश्चर्यपूर्वक विचार किया; लेकिन धीरे-धीरे इसे छोड़ते हुए, क्योंकि यह मुझे फिलहाल समझ से परे लग रही थी, मैंने अपने स्वामी के मेरे प्रति व्यवहार पर ध्यान केंद्रित किया। मुझ पर उन्होंने जो

विश्वास जताया था, वह मेरे विवेक की प्रशंसा प्रतीत होता था: मैंने इसे इसी रूप में माना और स्वीकार किया। उनका व्यवहार अब कुछ हफ्तों से मेरे प्रति पहले की तुलना में अधिक एकसमान था। मैं कभी भी उनके रास्ते में नहीं आया; वह कभी भी घमंड का दिखावा नहीं करते थे: जब वे मुझसे अप्रत्याशित रूप से मिलते थे, तो यह मुलाकात सुखद लगती थी; वे हमेशा मुझसे कुछ कहते थे और कभी-कभी मुस्कुराते भी थे: जब मुझे उनके औपचारिक निमंत्रण पर बुलाया जाता था, तो मुझे ऐसे सौहार्दपूर्ण स्वागत का अनुभव होता था जिससे मुझे यह महसूस होता था कि मुझमें वास्तव में उन्हें प्रसन्न करने की क्षमता है, और ये शाम की बैठकें उनके आनंद के साथ-साथ मेरे लाभ के लिए भी आयोजित की जाती थीं।

सच कहूँ तो, मैं अपेक्षाकृत कम बोलता था, लेकिन मैं उनकी बातें बड़े चाव से सुनता था। संवाद करना उनका स्वभाव था; उन्हें दुनिया से अपरिचित लोगों को इसके दृश्यों और तौर-तरीकों की झलक दिखाना अच्छा लगता था (मेरा मतलब भ्रष्ट दृश्यों और बुरे तौर-तरीकों से नहीं है, बल्कि उन दृश्यों से है जो अपने विशाल स्वरूप और नवीनता के कारण दिलचस्प होते थे); और मुझे उनके द्वारा दिए गए नए विचारों को ग्रहण करने, उनके द्वारा चित्रित नए चित्रों की कल्पना करने और उनके द्वारा प्रकट किए गए नए क्षेत्रों में उनके साथ विचार-विमर्श करने में बहुत आनंद आता था, और मैं कभी भी किसी अप्रिय संकेत से विचलित या परेशान नहीं होता था।

उनके सहज व्यवहार ने मुझे पीड़ादायक बंधन से मुक्त कर दिया: उनकी मित्रतापूर्ण स्पष्टता, जो सच्ची और सौहार्दपूर्ण दोनों थी, ने मुझे उनकी ओर आकर्षित किया। कई बार मुझे ऐसा लगता था मानो वे मेरे स्वामी नहीं बल्कि मेरे रिश्तेदार हों: फिर भी वे कभी-कभी थोड़े दबंग भी होते थे; पर मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था; मैं समझती थी कि यह उनका स्वभाव है। जीवन में इस नए आकर्षण के जुड़ने से मैं इतनी प्रसन्न और संतुष्ट हो गई कि मैंने रिश्तेदारों की चाह छोड़ दी: मेरा पतला सा भाग्य विस्तृत प्रतीत होने लगा; जीवन के खालीपन भर गए; मेरा स्वास्थ्य सुधर गया; मेरा शरीर और शरीर शक्ति से भर गया।

क्या अब मेरी नज़रों में मिस्टर रोचेस्टर बदसूरत हो गए थे? नहीं, पाठक: कृतज्ञता और कई सुखद और सौम्य यादों ने उनके चेहरे को मेरे लिए सबसे आकर्षक बना दिया था; कमरे में उनकी उपस्थिति किसी भी तेज़ आग से भी ज़्यादा मन को प्रसन्न कर देती थी। फिर भी मैं उनकी कमियों को भूली नहीं थी; वास्तव में, मैं भूल ही नहीं

सकती थी, क्योंकि वे अक्सर उन्हें मेरे सामने लाते थे। वे अभिमानी, व्यंग्यपूर्ण और हर तरह से हीन भावना रखने वाले व्यक्ति के प्रति कठोर थे: मैं अपने मन ही मन जानती थी कि मेरे प्रति उनकी अपार दयालुता कई अन्य लोगों के प्रति उनके अन्यायपूर्ण कठोर व्यवहार से संतुलित थी। वे मूडी भी थे; समझ से परे; एक से अधिक बार, जब मैंने उन्हें पढ़कर सुनाने के लिए बुलाया, तो मैंने उन्हें अपनी लाइब्रेरी में अकेले बैठे हुए पाया, उनका सिर उनकी मुड़ी हुई बाहों पर झुका हुआ था; और जब उन्होंने ऊपर देखा, तो एक उदास, लगभग द्वेषपूर्ण, भौंहों ने उनके चेहरे को काला कर दिया। लेकिन मुझे विश्वास था कि उनकी मूडीनेस, उनकी कठोरता और नैतिकता की उनकी पिछली कमियों (मैं पिछली कह रही हूँ, क्योंकि अब वे सुधरे हुए प्रतीत होते थे) का कारण भाग्य का कोई क्रूर प्रहार था। मुझे विश्वास था कि वह स्वभाव से ही बेहतर प्रवृत्तियों, उच्च सिद्धांतों और शुद्ध रुचियों वाला व्यक्ति था, न कि उन परिस्थितियों से विकसित, न शिक्षा से प्रेरित और न ही भाग्य से प्रेरित। मुझे लगता था कि उसमें उत्कृष्ट गुण थे; हालांकि फिलहाल वे कुछ हद तक बिगड़े और उलझे हुए थे। मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि मुझे उसके दुख से बहुत पीड़ा हुई, चाहे वह कुछ भी हो, और मैं उसे कम करने के लिए बहुत कुछ करने को तैयार था।

हालांकि मैंने अपनी मोमबत्ती बुझा दी थी और बिस्तर पर लेट गई थी, फिर भी मुझे नींद नहीं आ रही थी क्योंकि मैं उसके उस चेहरे के भाव के बारे में सोच रही थी जब वह गली में रुका था और उसने बताया था कि कैसे उसका भाग्य उसके सामने आ गया था और उसे थॉर्नफील्ड में खुश रहने की चुनौती दे रहा था।

“क्यों नहीं?” मैंने खुद से पूछा। “ऐसी कौन सी बात है जो उसे घर से दूर कर रही है? क्या वह जल्द ही इसे फिर से छोड़ देगा? श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा था कि वह यहाँ दो सप्ताह से ज़्यादा नहीं रुकता था; और अब उसे यहाँ रहते हुए आठ सप्ताह हो गए हैं। अगर वह चला गया, तो यह बदलाव बहुत दुखद होगा। मान लीजिए कि वह वसंत, ग्रीष्म और शरद ऋतु में अनुपस्थित रहे: धूप और सुहावने दिन कितने आनंदहीन लगेंगे!”

मुझे ठीक से याद नहीं कि इस चिंतन के बाद मैं सोया था या नहीं; खैर, एक अस्पष्ट, अजीब और उदास सी आवाज़ सुनकर मैं एकदम से जाग गया, जो मुझे लगा कि मेरे ठीक ऊपर से आ रही थी। काश मैंने मोमबत्ती जलाए रखी होती: रात बेहद अंधेरी थी; मेरा मन उदास था। मैं उठा और बिस्तर पर बैठ गया, सुनने लगा। आवाज़

धीमी हो गई थी।

मैंने दोबारा सोने की कोशिश की; लेकिन मेरा दिल बेचैनी से धड़क रहा था: मेरी आंतरिक शांति भंग हो गई थी। हॉल में दूर लगी घड़ी में दो बज गए। ठीक उसी समय ऐसा लगा जैसे मेरे कमरे के दरवाजे को किसी ने छुआ हो; मानो अंधेरी गैलरी में बाहर रास्ता टटोलते हुए उंगलियों ने दरवाज़े के पैनल को छुआ हो। मैंने कहा, "कौन है?" किसी ने जवाब नहीं दिया। मैं डर से कांप उठा।

अचानक मुझे याद आया कि शायद वो पायलट ही हो, जो रसोई का दरवाजा खुला रह जाने पर अक्सर मिस्टर रोचेस्टर के कमरे की दहलीज तक पहुँच जाता था: मैंने खुद उसे सुबह-सुबह वहाँ लेटे हुए देखा था। इस विचार से मुझे कुछ राहत मिली: मैं लेट गया। खामोशी मन को शांत करती है; और जैसे ही पूरे घर में फिर से सन्नाटा छा गया, मुझे नींद आने लगी। लेकिन उस रात मेरी किस्मत में सोना नहीं लिखा था। एक सपना मेरे कानों तक पहुँचा ही था कि एक भयानक घटना से डरकर भाग गया।

यह एक भयानक हंसी थी—धीमी, दबी हुई और गहरी—ऐसा लग रहा था जैसे मेरे कमरे के दरवाजे के ठीक कुंडी से निकली हो। मेरे पलंग का सिरहाना दरवाजे के पास था, और पहले तो मुझे लगा कि वह हंसने वाला मेरे पलंग के पास खड़ा है—या यूं कहें कि मेरे तकिये के पास दुबका है: लेकिन मैं उठा, चारों ओर देखा, और कुछ भी दिखाई नहीं दिया; और जब मैं देखता ही रहा, वह अजीब सी आवाज़ फिर से सुनाई दी: और मैं समझ गया कि यह दरवाज़े के पीछे से आ रही है। मेरी पहली इच्छा थी कि उठकर कुंडी लगा दूं; फिर, दोबारा चिल्लाऊं, "वहां कौन है?"

कुछ गड़गड़ाहट और कराहट सुनाई दी। थोड़ी देर बाद, कदमों की आहट गैलरी से होते हुए तीसरी मंजिल की सीढ़ियों की ओर पीछे हट गई: उस सीढ़ी में हाल ही में एक दरवाजा बंद कर दिया गया था; मैंने उसे खुलते और बंद होते सुना, और सब कुछ शांत हो गया।

“क्या वह ग्रेस पूल थी? और क्या उस पर किसी शैतान का साया है?” मैंने सोचा। अब अकेले रहना नामुमकिन था: मुझे श्रीमती फेयरफैक्स के पास जाना ही होगा। मैंने जल्दी से अपनी फ्रॉक और शॉल ओढ़ी; मैंने कुंडी खोली और कांपते हाथों से दरवाजा खोला। बाहर और गैलरी में बिछी चटाई पर एक मोमबत्ती जल रही थी। मैं इस बात से हैरान थी: लेकिन उससे भी ज़्यादा मैं इस बात से दंग रह गई कि हवा एकदम धुंधली थी, मानो धुएँ से भरी हो; और जब मैं इन नीली लपटों का स्रोत ढूंढने के लिए दाएं-

बाएं देख रही थी, तो मुझे जलने की तेज़ गंध महसूस हुई।

कुछ चरमराहट हुई: एक दरवाज़ा थोड़ा खुला हुआ था; और वह दरवाज़ा मिस्टर रोचेस्टर का था, और वहाँ से धुएँ का एक बादल उमड़ पड़ा। मैंने मिसेज़ फेयरफैक्स के बारे में सोचना बंद कर दिया; मैंने ग्रेस पूल या उस हँसी के बारे में सोचना बंद कर दिया: पल भर में, मैं कमरे के अंदर थी। बिस्तर के चारों ओर आग की लपटें उठ रही थीं: पर्दे जल रहे थे। आग और धुएँ के बीच, मिस्टर रोचेस्टर गहरी नींद में बेसुध पड़े थे।

“जागो! जागो!” मैं चिल्लाई। मैंने उसे हिलाया, लेकिन वह केवल बड़बड़ाया और करवट बदली: धुएँ ने उसे बेहोश कर दिया था। एक पल भी बर्बाद नहीं किया जा सकता था: चादरें भी आग पकड़ने लगी थीं, मैं उसके बेसिन और जग की ओर दौड़ी; सौभाग्य से, एक चौड़ा और दूसरा गहरा था, और दोनों पानी से भरे हुए थे। मैंने उन्हें ऊपर उठाया, बिस्तर और उस पर लेटे हुए व्यक्ति को पानी से भिगो दिया, अपने कमरे में वापस भागी, अपना पानी का जग लाई, पलंग को फिर से पानी से भिगोया, और ईश्वर की कृपा से, उसे जला रही लपटों को बुझाने में सफल रही।

बुझे हुए चूल्हे की सरसराहट, मेरे हाथ से फेंके गए घड़े के टूटने की आवाज़, और सबसे बढ़कर, मेरे द्वारा उदारतापूर्वक डाले गए पानी के छींटे की आवाज़ ने आखिरकार मिस्टर रोचेस्टर को जगा दिया। हालांकि अब अंधेरा हो चुका था, मुझे पता था कि वह जाग गए हैं; क्योंकि मैंने उन्हें पानी के एक कुंड में लेटे हुए देखकर अजीबोगरीब गालियां बकते हुए सुना था।

“क्या बाढ़ आई है?” वह चिल्लाया।

“जी नहीं, महोदय,” मैंने उत्तर दिया; “लेकिन आग लगी थी: उठिए, उठिए; आपकी आग बुझ चुकी है; मैं आपके लिए मोमबत्ती लाता हूँ।”

“ईसाई जगत के सभी परियों की कसम, क्या यह जेन आयर है?” उसने पूछा। “मेरे साथ क्या किया है, डायन, जादूगरनी? तुम्हारे अलावा कमरे में कौन है? क्या तुमने मुझे डुबोने की साजिश रची है?”

“मैं आपके लिए एक मोमबत्ती लाता हूँ, महोदय; और, भगवान के नाम पर, उठ जाइए। किसी ने कुछ साजिश रची है: आपको जल्द से जल्द पता लगाना होगा कि यह कौन और क्या है।”

“लो! मैं उठ गई हूँ; लेकिन अगर तुम चाहो तो मोमबत्ती ले आओ: दो मिनट रुको,

मैं कुछ सूखे कपड़े पहन लूँ, अगर कोई सूखे कपड़े मिलें तो — हाँ, ये रहा मेरा ड्रेसिंग गाउन। अब भागो!”

मैं दौड़ा; मैं दीर्घा में बची हुई मोमबत्ती ले आया। उसने मेरे हाथ से मोमबत्ती ली, उसे ऊपर उठाया और बिस्तर का जायजा लिया, जो पूरी तरह काला और झुलसा हुआ था, चादरें भीगी हुई थीं और चारों ओर का कालीन पानी में डूबा हुआ था।

“क्या हुआ? और किसने किया?” उसने पूछा। मैंने उसे संक्षेप में बताया कि क्या हुआ था: गैलरी में मैंने जो अजीब सी हंसी सुनी थी; तीसरी मंजिल तक जाने वाली सीढ़ी; धुआं, आग की गंध जिसने मुझे उसके कमरे तक पहुँचाया था; वहाँ मैंने जो हालत देखी थी, और कैसे मैंने उस पर जितना पानी मेरे हाथ लगा, सब डाल दिया था।

उन्होंने बड़ी गंभीरता से मेरी बात सुनी; जैसे-जैसे मैं बोलता गया, उनके चेहरे पर आश्चर्य से ज़्यादा चिंता के भाव दिखने लगे; मेरे बोलने के बाद भी उन्होंने तुरंत कुछ नहीं कहा।

मैंने पूछा, "क्या मैं श्रीमती फेयरफैक्स को फोन करूं?"

"श्रीमती फेयरफैक्स? नहीं; आप उन्हें किस लिए बुला रहे हैं? वह क्या कर सकती हैं? उन्हें निश्चिंत होकर सोने दीजिए।"

“तब मैं लेआ को लाऊंगा और यूहन्ना और उसकी पत्नी को जगाऊंगा।”

“बिल्कुल नहीं: बस शांत रहो। तुमने शॉल ओढ़ी हुई है। अगर तुम्हें पर्याप्त गर्मी नहीं लग रही है, तो मेरी चादर ले लो; उसे अपने ऊपर ओढ़ लो और आरामकुर्सी पर बैठ जाओ: लो, मैं उसे ओढ़ देता हूँ। अब अपने पैर स्टूल पर रख लो, ताकि वे गीले न हों। मैं कुछ मिनटों के लिए जा रहा हूँ। मैं मोमबत्ती ले आता हूँ। मेरे लौटने तक वहीं रहना; एकदम शांत रहना। मुझे दूसरी मंजिल पर जाना है। हिलना मत, याद रखना, और किसी को बुलाना भी मत।”

वह चला गया: मैंने रोशनी को धीरे-धीरे गायब होते देखा। वह बहुत धीरे से गैलरी से ऊपर गया, सीढ़ियों का दरवाजा जितना हो सके कम आवाज़ के साथ खोला, अपने पीछे बंद कर दिया, और आखिरी किरण भी गायब हो गई। मैं घोर अंधेरे में डूब गया। मैंने किसी आवाज़ की उम्मीद में कान लगाए, लेकिन कुछ सुनाई नहीं दिया। बहुत लंबा समय बीत गया। मैं थक गया था: लबादा ओढ़ने के बावजूद ठंड थी; और फिर मुझे वहाँ रुकने का कोई फायदा नहीं लगा, क्योंकि मुझे घर को जगाना नहीं था। मैं मिस्टर रोचेस्टर के आदेशों का उल्लंघन करके उनकी नाराज़गी मोल लेने ही वाला था, तभी गैलरी की दीवार पर एक बार फिर हल्की रोशनी चमकी, और मैंने उसके नंगे पैरों की आवाज़ चटाई पर सुनी। "उम्मीद है कि वह वही हो," मैंने सोचा, "और कोई बुरी चीज़ नहीं।"

वह पीला और बेहद उदास होकर वापस अंदर आया। उसने अपनी मोमबत्ती को कपड़े धोने की जगह पर रखते हुए कहा, "मुझे सब पता चल गया है; यह वैसा ही है जैसा मैंने सोचा था।"

“कैसे, महोदय?”

उसने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि हाथ बांधे ज़मीन की ओर देखता रहा। कुछ मिनटों बाद उसने कुछ अजीब से लहजे में पूछा—

"मुझे याद नहीं कि जब आपने अपने कमरे का दरवाजा खोला तो आपने कुछ देखा था या नहीं।"

"नहीं महोदय, केवल जमीन पर पड़ा मोमबत्ती स्टैंड।"

"लेकिन क्या आपने कोई अजीब सी हंसी सुनी? मुझे लगता है कि आपने वह हंसी

पहले भी सुनी होगी, या कुछ इसी तरह की?"

"जी जनाब: यहाँ एक महिला सिलाई करती है, जिसका नाम ग्रेस पूल है, - वह उस तरह से हँसती है। वह एक विलक्षण व्यक्ति है।"

“बिल्कुल सही। ग्रेस पूल—आपने सही अंदाज़ा लगाया। जैसा कि आपने कहा, वह विलक्षण हैं—बहुत ही विलक्षण। खैर, मैं इस विषय पर विचार करूँगा। इस बीच, मुझे खुशी है कि आज रात की घटना के सटीक विवरण से आप ही मेरे अलावा एकमात्र व्यक्ति हैं। आप कोई बकवास करने वाले मूर्ख नहीं हैं: इसके बारे में कुछ मत कहिए। मैं इस स्थिति का कारण बताऊँगा” (बिस्तर की ओर इशारा करते हुए): “और अब अपने कमरे में लौट जाइए। मैं बाकी रात पुस्तकालय में सोफे पर आराम से बिता लूँगा। लगभग चार बज रहे हैं—दो घंटे में नौकर उठ जाएँगे।”

“शुभ रात्रि, महोदय,” मैंने विदा लेते हुए कहा।

वह आश्चर्यचकित प्रतीत हुआ—बहुत ही असंगत तरीके से, क्योंकि उसने अभी-अभी मुझे जाने के लिए कहा था।

“क्या!” वह हैरानी से बोला, “क्या तुम मुझे अभी से छोड़ रही हो, और वह भी इस तरह से?”

"आपने कहा था कि मैं जा सकता हूँ, महोदय।"

लेकिन बिना विदा लिए नहीं; बिना आभार और सद्भावना के एक-दो शब्द कहे नहीं; संक्षेप में, उस संक्षिप्त, नीरस अंदाज़ में नहीं। अरे, आपने मेरी जान बचाई! मुझे एक भयानक और दर्दनाक मौत से छुड़ाया! और आप मेरे पास से ऐसे गुज़र रहे हैं जैसे हम एक-दूसरे के लिए अजनबी हों! कम से कम हाथ तो मिला लीजिए।

उसने अपना हाथ बढ़ाया; मैंने उसे अपना हाथ दिया: उसने पहले मेरा हाथ एक हाथ में लिया, फिर दोनों हाथों में।

“आपने मेरी जान बचाई है: मुझे आपका इतना बड़ा ऋणी होने में खुशी है। मैं इससे अधिक कुछ नहीं कह सकता। ऋणी के रूप में इस तरह के दायित्व को निभाना मेरे लिए पहले कभी संभव नहीं था: लेकिन आप: यह अलग बात है; जेन, मुझे आपके उपकार बोझ नहीं लगते।”

वह रुका; मेरी ओर देखा: उसके होठों पर शब्द लगभग कांप रहे थे, लेकिन उसकी आवाज अवरुद्ध थी।

“शुभ रात्रि महोदय। इस मामले में कोई ऋण, लाभ, बोझ या दायित्व नहीं है।”

“मुझे पता था,” उसने आगे कहा, “कि तुम किसी न किसी तरह, किसी न किसी समय मेरा भला करोगी; — मैंने तुम्हें पहली बार देखते ही तुम्हारी आँखों में देख लिया था: तुम्हारी अभिव्यक्ति और मुस्कान ने” — (फिर वह रुका) — “मेरे दिल की गहराई में इतनी खुशी भर दी थी” (वह जल्दी से आगे बढ़ा) “अचानक ही नहीं। लोग स्वाभाविक सहानुभूति की बात करते हैं; मैंने अच्छे जिन्नों के बारे में सुना है: सबसे अजीब कहानियों में भी सच्चाई के अंश होते हैं। मेरी प्रिय रक्षक, शुभ रात्रि!”

उनकी आवाज में एक अजीब सी ऊर्जा थी, उनकी नजरों में एक अजीब सी आग थी।

मैंने कहा, "मुझे खुशी है कि मैं जाग रहा था," और फिर मैं जाने लगा।

“क्या! तुम जाओगे?”

मुझे ठंड लग रही है, महोदय।

“ठंड लग रही है? हाँ, और ऊपर से तालाब में खड़ी हो! तो जाओ, जेन; जाओ!” लेकिन उसने मेरा हाथ पकड़ रखा था और मैं उसे छुड़ा नहीं पा रही थी। तभी मुझे एक उपाय सूझा।

“मुझे लगता है कि मुझे श्रीमती फेयरफैक्स के हिलने की आवाज सुनाई दे रही है, महोदय,” मैंने कहा।

“ठीक है, मुझे अकेला छोड़ दो,” उसने अपनी उंगलियां ढीली कर दीं, और मैं वहां से चला गया।

मैं अपने पलंग पर वापस आ गया, लेकिन नींद का नामोनिशान नहीं था। सुबह होने तक मैं एक उफनते हुए, लेकिन अशांत सागर में छटपटाता रहा, जहाँ खुशियों की लहरों के नीचे मुसीबतों की लहरें उठ रही थीं। कभी-कभी मुझे लगता था कि उस तूफानी जलधारा के पार मुझे बेउला की पहाड़ियों जैसा सुंदर किनारा दिखाई दे रहा है; और कभी-कभी आशा से भरी एक ताज़ा हवा मेरी आत्मा को विजयपूर्वक सीमा की ओर ले जाती थी: लेकिन मैं कल्पना में भी वहाँ नहीं पहुँच सका—एक विपरीत हवा ज़मीन से आती थी और मुझे लगातार पीछे धकेलती रहती थी। होश उन्माद का विरोध करता था: विवेक वासना को चेतावनी देता था। इतना बेचैन था कि आराम नहीं कर पा रहा था, इसलिए दिन निकलते ही मैं उठ गया।

अध्याय सोलह

उस रात की नींद हराम होने के बाद अगले दिन मिस्टर रोचेस्टर को देखने की मेरी इच्छा भी थी और डर भी। मैं उनकी आवाज़ फिर से सुनना चाहता था, फिर भी उनसे नज़रें मिलाने से डरता था। सुबह के शुरुआती समय में, मुझे क्षण भर के लिए उनके आने की उम्मीद सता रही थी; वे अक्सर स्कूल के कमरे में नहीं आते थे, लेकिन कभी-कभी कुछ मिनटों के लिए ज़रूर आते थे, और मुझे ऐसा लग रहा था कि वे उस दिन ज़रूर आएंगे।

लेकिन सुबह हमेशा की तरह ही गुज़री: एडेल की पढ़ाई में कोई खलल नहीं पड़ा; नाश्ते के तुरंत बाद ही मुझे मिस्टर रोचेस्टर के कमरे के आसपास कुछ हलचल सुनाई दी, मिसेज़ फेयरफैक्स की आवाज़, लीह की, रसोइया की - यानी जॉन की पत्नी की - और यहाँ तक कि जॉन की कर्कश आवाज़ भी। कुछ लोग चिल्ला रहे थे, "कितनी अच्छी बात है कि मास्टर अपने बिस्तर में जल नहीं गए!" "रात में मोमबत्ती जलाकर रखना हमेशा खतरनाक होता है।" "कितनी अच्छी बात है कि उन्होंने सूझबूझ से पानी का जग याद कर लिया!" "मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने किसी को जगाया नहीं!" "उम्मीद है कि लाइब्रेरी के सोफे पर सोने से उन्हें सर्दी नहीं लग जाएगी," इत्यादि।

काफी बातचीत के बाद सफाई और चीज़ों को ठीक करने की आवाज़ सुनाई दी; और जब मैं रात के खाने के लिए नीचे जाते समय उस कमरे के पास से गुज़रा, तो खुले दरवाज़े से देखा कि सब कुछ फिर से पूरी तरह व्यवस्थित हो गया था; बस पलंग से पर्दे हटे हुए थे। लिआ खिड़की के पास खड़ी होकर धुएँ से धुंधले हो चुके शीशों को रगड़ रही थी। मैं उससे बात करने ही वाला था, क्योंकि मैं जानना चाहता था कि इस मामले में क्या हुआ है: लेकिन आगे बढ़ने पर मैंने कमरे में एक और व्यक्ति को देखा - एक महिला पलंग के पास कुर्सी पर बैठी नए पर्दों में छल्ले सिल रही थी। वह महिला कोई और नहीं बल्कि ग्रेस पूल थी।

वह हमेशा की तरह अपने भूरे रंग के गाउन, चेकदार एप्रन, सफेद रुमाल और टोपी

में शांत और गंभीर बैठी थी। वह अपने काम में मग्न थी, मानो उसका सारा ध्यान उसी में लगा हुआ था: उसके सख्त माथे और साधारण चेहरे पर न तो वह पीलापन था और न ही वह हताशा जो किसी ऐसे व्यक्ति के चेहरे पर दिखाई देती है जिसने हत्या का प्रयास किया हो, और जिसका शिकार पिछली रात उसके ठिकाने तक उसका पीछा कर आया हो, और (जैसा कि मुझे लगा), उस पर उस अपराध का आरोप लगाया हो जिसे वह अंजाम देना चाहती थी। मैं चकित और हैरान था। जब मैं उसे घूर रहा था, उसने ऊपर देखा: न तो कोई हलचल हुई, न ही उसके चेहरे का रंग बदला, न ही उसके अपराधबोध का कोई संकेत मिला, न ही पकड़े जाने का डर। उसने अपने हमेशा के शांत और संक्षिप्त अंदाज में कहा, "सुप्रभात, मिस"; और एक और रिंग और टेप लेकर सिलाई का काम जारी रखा।

मैंने सोचा, "मैं उसकी परीक्षा जरूर लूंगा: ऐसी पूर्ण अभेद्यता समझ से परे है।"

“सुप्रभात, ग्रेस,” मैंने कहा। “क्या यहाँ कुछ हुआ है? मुझे लगा कि थोड़ी देर पहले मैंने नौकरों को आपस में बात करते सुना था।”

"कल रात केवल स्वामी जी अपने बिस्तर पर पढ़ रहे थे; वे जलती हुई मोमबत्ती के साथ सो गए, और पर्दों में आग लग गई; लेकिन, सौभाग्य से, वे बिस्तर के कपड़ों या लकड़ी के काम में आग लगने से पहले ही जाग गए, और उन्होंने कलश में रखे पानी से आग बुझाने का प्रबंध किया।"

“अजीब बात है!” मैंने धीमी आवाज़ में कहा, फिर उसे घूरते हुए पूछा— “क्या मिस्टर रोचेस्टर ने किसी को नहीं जगाया? क्या किसी ने उनकी हरकत नहीं सुनी?”

उसने फिर से मेरी ओर देखा, और इस बार उसकी आँखों में चेतना का भाव था। वह मुझे सावधानीपूर्वक परखती हुई प्रतीत हुई; फिर उसने उत्तर दिया—

“नौकर इतनी दूर सोते हैं, आप जानती हैं, मिस, उन्हें शायद ही कुछ सुनाई दे। श्रीमती फेयरफैक्स का कमरा और आपका कमरा मालिक के कमरे के सबसे पास हैं; लेकिन श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा कि उन्हें कुछ सुनाई नहीं दिया: जब लोग बूढ़े हो जाते हैं, तो वे अक्सर गहरी नींद सोते हैं।” वह थोड़ी देर रुकी, और फिर बनावटी उदासीनता दिखाते हुए, लेकिन फिर भी स्पष्ट और अर्थपूर्ण लहजे में बोलीं — “लेकिन आप तो जवान हैं, मिस; और मुझे लगता है कि आपकी नींद हल्की है: शायद आपने कोई आवाज़ सुनी हो?”

“हाँ,” मैंने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, ताकि शीशे चमका रही लिया मुझे

सुन न सके, “और पहले तो मुझे लगा कि यह पायलट है: लेकिन पायलट हंस नहीं सकता; और मुझे यकीन है कि मैंने एक हंसी सुनी, और वह भी अजीब सी।”

उसने धागे से भरी एक नई सुई ली, उसे सावधानीपूर्वक मोम लगाया, स्थिर हाथ से सुई में धागा डाला, और फिर पूर्ण संयम के साथ अवलोकन किया —

"मुझे लगता है, मिस, जब मालिक इतने खतरे में थे तो शायद ही वे हँसेंगे: आप ज़रूर सपना देख रही होंगी।"

“मैं सपना नहीं देख रहा था,” मैंने कुछ स्नेह के साथ कहा, क्योंकि उसकी निर्भीक उदासीनता ने मुझे उत्तेजित कर दिया था। उसने फिर मेरी ओर देखा; और उसी पैनी और सचेत निगाह से।

“क्या तुमने स्वामी को बताया कि तुमने हँसी सुनी?” उसने पूछा।

मुझे आज सुबह उनसे बात करने का अवसर नहीं मिला।

“क्या आपने अपना दरवाजा खोलकर गैलरी में बाहर देखने के बारे में नहीं सोचा?” उसने आगे पूछा।

वह मुझसे पूछताछ कर रही थी, मानो मुझसे अनजाने में ही जानकारी निकलवाने की कोशिश कर रही हो। मुझे यह ख्याल आया कि अगर उसे पता चल गया कि मुझे उसके अपराध के बारे में पता है या मुझे शक है, तो वह मुझ पर अपनी कुछ बुरी चालें चलेगी; इसलिए मैंने सतर्क रहना ही बेहतर समझा।

मैंने कहा, "इसके विपरीत, मैंने अपना दरवाजा बंद कर लिया था।"

तो क्या आपको हर रात बिस्तर पर जाने से पहले अपने दरवाजे पर कुंडी लगाने की आदत नहीं है?

“शैतान! वह मेरी आदतें जानना चाहती है, ताकि वह उसी के अनुसार अपनी योजना बना सके!” क्रोध ने एक बार फिर विवेक पर विजय प्राप्त कर ली: मैंने तीखे स्वर में उत्तर दिया, “अब तक मैं अक्सर कुंडी लगाना भूल जाता था: मुझे यह आवश्यक नहीं लगता था। मुझे थॉर्नफील्ड हॉल में किसी खतरे या परेशानी का आभास नहीं था: लेकिन भविष्य में” (और मैंने शब्दों पर विशेष जोर दिया) “मैं लेटने से पहले सब कुछ सुरक्षित करने का पूरा ध्यान रखूंगा।”

“ऐसा करना ही समझदारी होगी,” उसने जवाब दिया: “यह इलाका मेरी जानकारी में सबसे शांत है, और जब से यह घर बना है, मैंने कभी नहीं सुना कि हॉल में चोरों ने चोरी करने की कोशिश की हो; हालाँकि, जैसा कि सब जानते हैं, बर्तनों की अलमारी

में सैकड़ों पाउंड के बर्तन रखे हैं। और आप देखिए, इतने बड़े घर के लिए नौकर बहुत कम हैं, क्योंकि मालिक यहाँ ज़्यादा नहीं रहे हैं; और जब वे आते हैं, तो अविवाहित होने के कारण उन्हें ज़्यादा सेवा की ज़रूरत नहीं होती: लेकिन मैं हमेशा सावधानी बरतने में ही भलाई समझती हूँ; दरवाज़ा जल्दी बंद हो जाता है, और किसी भी संभावित परेशानी से बचने के लिए कुंडी लगी होना ज़रूरी है। बहुत से लोग, महोदया, सब कुछ ईश्वर की कृपा पर छोड़ देते हैं; लेकिन मैं कहती हूँ कि ईश्वर साधनों के बिना नहीं रह सकता, हालाँकि जब उनका समझदारी से उपयोग किया जाता है तो वह अक्सर उन्हें आशीर्वाद देता है।” और यहाँ उसने अपना भाषण समाप्त किया: उसके लिए यह लंबा भाषण था, और उसने इसे एक क्वेक महिला की तरह शालीनता से कहा।

जब रसोइया अंदर आया, तब भी मैं उसकी चमत्कारिक आत्म-संयम और सबसे रहस्यमय पाखंड को देखकर पूरी तरह से अचंभित खड़ा था।

"श्रीमती पूल," उसने ग्रेस को संबोधित करते हुए कहा, "नौकरों का खाना जल्द ही तैयार हो जाएगा: क्या आप नीचे आ जाएँगी?"

“नहीं; बस मेरी एक पाइंट पोर्टर और थोड़ी सी पुडिंग एक ट्रे में रख दो, मैं उसे ऊपर ले जाऊँगा।”

"क्या आपको मांस चाहिए?"

"बस एक निवाला, और थोड़ा सा पनीर, बस इतना ही।"

और साबूदाना?

"अभी इसकी चिंता मत करो: मैं चाय के समय से पहले नीचे आ जाऊंगी: मैं खुद बना लूंगी।"

यहां के रसोइए ने मेरी ओर मुड़कर कहा कि श्रीमती फेयरफैक्स मेरा इंतजार कर रही हैं: इसलिए मैं वहां से चला गया।

रात के खाने के दौरान मैंने श्रीमती फेयरफैक्स द्वारा पर्दे में लगी आग का ब्योरा मुश्किल से ही सुना, क्योंकि मैं ग्रेस पूल के रहस्यमय चरित्र को लेकर बहुत उलझन में थी, और उससे भी ज़्यादा थॉर्नफील्ड में उसकी स्थिति के बारे में सोच रही थी और यह सवाल कर रही थी कि उसे उस सुबह हिरासत में क्यों नहीं लिया गया, या कम से कम उसके मालिक की सेवा से बर्खास्त क्यों नहीं किया गया। पिछली रात उसने लगभग उसके अपराध के बारे में अपना विश्वास ज़ाहिर कर दिया था: किस रहस्यमय

कारण ने उसे उस पर आरोप लगाने से रोक रखा था? उसने मुझे भी गुप्त रखने का आदेश क्यों दिया था? यह अजीब था: एक साहसी, प्रतिशोधी और अभिमानी सज्जन किसी तरह अपने सबसे तुच्छ आश्रितों में से एक के वश में लग रहे थे; उसके इतने वश में कि जब उसने उसकी जान लेने की कोशिश की, तब भी उसने खुलेआम उस पर जानलेवा हमले का आरोप लगाने की हिम्मत नहीं की, उसे सज़ा देने की तो बात ही दूर।

अगर ग्रेस जवान और खूबसूरत होती, तो मुझे यह सोचने का लालच होता कि मिस्टर रोचेस्टर को उसके प्रति विवेक या भय से ज़्यादा कोमल भावनाएँ प्रभावित कर रही थीं; लेकिन, उसकी कठोर शक्ल और गंभीर स्वभाव के कारण, यह विचार स्वीकार्य नहीं था। "फिर भी," मैंने सोचा, "वह भी कभी जवान थी; उसकी जवानी उसके मालिक की जवानी के समकालीन होगी: श्रीमती फेयरफैक्स ने मुझे एक बार बताया था कि वह यहाँ कई वर्षों से रह रही है। मुझे नहीं लगता कि वह कभी सुंदर रही होगी; लेकिन, जहाँ तक मुझे पता है, उसमें मौलिकता और चरित्र की दृढ़ता हो सकती है जो व्यक्तिगत खूबियों की कमी को पूरा कर दे। मिस्टर रोचेस्टर दृढ़ और सनकी लोगों के शौकीन हैं: ग्रेस कम से कम सनकी तो है ही। क्या पता किसी पिछली सनक (उसके जैसे अचानक और जिद्दी स्वभाव के लिए एक बहुत ही संभव सनक) ने उसे उसके वश में कर दिया हो, और अब वह उसके कार्यों पर एक गुप्त प्रभाव डाल रही हो, जो उसकी अपनी नासमझी का परिणाम है, जिसे वह न तो मिटा सकता है और न ही अनदेखा करने की हिम्मत कर सकता है?" लेकिन, जब मैं इस अनुमान के बिंदु पर पहुँचा, तो श्रीमती पूल का चौकोर, सपाट शरीर और उनका भद्दा, रूखा, यहाँ तक कि खुरदुरा चेहरा मेरे मन में इतनी स्पष्टता से उभर आया कि मैंने सोचा, "नहीं; असंभव! मेरा अनुमान सही नहीं हो सकता।" फिर भी," हमारे दिलों में दबी हुई आवाज़ ने सुझाव दिया, "तुम भी सुंदर नहीं हो, और शायद मिस्टर रोचेस्टर तुम्हें पसंद करते हों: कम से कम, तुमने अक्सर ऐसा महसूस किया होगा जैसे वह तुम्हें पसंद करते हों; और पिछली रात— उनके शब्द याद करो; उनकी नज़र याद करो; उनकी आवाज़ याद करो!"

मुझे सब कुछ अच्छी तरह याद था; भाषा, नज़र और लहजा उस पल मानो एकदम ताज़ा हो गए थे। मैं अब कक्षा में थी; एडेल चित्र बना रही थी; मैं उसके ऊपर झुकी और उसकी पेंसिल को निर्देशित किया। वह चौंककर ऊपर देखने लगी।

"क्या बात है, मैडम?" उसने कहा। "आपकी उंगलियां पत्ते की तरह कांप रही हैं, और आपके गाल लाल हैं: लेकिन, चेरी की तरह लाल!"

"झुकने से मुझे बहुत गर्मी लग रही है, एडेल!" वह रेखाचित्र बनाती रही; मैं सोचता रहा।

ग्रेस पूल के बारे में मेरे मन में जो घृणास्पद विचार था, उसे मैंने तुरंत अपने दिमाग से निकाल दिया; वह मुझे बहुत बुरा लग रहा था। मैंने अपनी तुलना उससे की और पाया कि हम दोनों अलग थे। बेसी लीवन ने कहा था कि मैं एक सभ्य महिला हूँ; और उसने सच कहा था - मैं सचमुच एक सभ्य महिला थी। और अब मैं बेसी के समय से कहीं ज़्यादा अच्छी दिख रही थी; मुझमें ज़्यादा चमक और निखार था, ज़्यादा जीवंतता थी, ज़्यादा ऊर्जा थी, ज़्यादा उत्साह था, क्योंकि मेरी आशाएँ उज्ज्वल थीं और आनंद भी ज़्यादा तीव्र थे।

मैंने खिड़की की ओर देखते हुए कहा, "शाम होने वाली है। आज मैंने श्री रोचेस्टर की आवाज या घर में उनके कदमों की आहट नहीं सुनी; लेकिन मुझे यकीन है कि मैं उन्हें रात से पहले देख लूंगी: मुझे सुबह की मुलाकात से डर लग रहा था; अब मैं चाहती हूं कि ऐसा हो, क्योंकि मेरी उम्मीद इतनी लंबी खिंच गई है कि अब मैं बेचैन हो गई हूं।"

जब शाम ढल गई और एडेल मुझे छोड़कर सोफी के साथ नर्सरी में खेलने चली गई, तो मुझे इसकी बहुत तीव्र इच्छा हुई। मैं नीचे घंटी बजने का इंतज़ार करती रही; मैं लीह के संदेश लेकर आने का इंतज़ार करती रही; कभी-कभी मुझे लगता था कि मैंने मिस्टर रोचेस्टर के कदमों की आहट सुनी है, और मैं दरवाजे की ओर मुड़कर उम्मीद करती थी कि वह खुलेंगे और अंदर आएंगे। दरवाजा बंद ही रहा; अंधेरा केवल खिड़की से ही अंदर आ रहा था। अभी देर नहीं हुई थी; वह अक्सर मुझे सात और आठ बजे बुलाते थे, और अभी तो केवल छह ही बजे थे। आज रात तो मुझे पूरी तरह निराश नहीं होना चाहिए था, जब मुझे उनसे इतनी सारी बातें कहनी थीं! मैं फिर से ग्रेस पूल का विषय उठाना चाहती थी, और सुनना चाहती थी कि वह क्या जवाब देंगे; मैं उनसे साफ-साफ पूछना चाहती थी कि क्या उन्हें सच में लगता है कि कल रात की घिनौनी कोशिश उसी ने की थी; और अगर ऐसा है, तो उन्होंने उसकी बुराई को क्यों छुपाए रखा। मेरी जिज्ञासा से उन्हें चिढ़ होती थी या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था; मैं उन्हें बारी-बारी से परेशान करने और शांत करने का आनंद जानती थी; यह एक ऐसा

काम था जिसमें मुझे सबसे ज्यादा आनंद आता था, और मेरी सहज प्रवृत्ति हमेशा मुझे हद से आगे बढ़ने से रोकती थी; उकसावे की सीमा से आगे बढ़ने का मैंने कभी साहस नहीं किया; लेकिन बिल्कुल सीमा पर अपनी कुशलता आजमाना मुझे अच्छा लगता था। सम्मान के हर छोटे से छोटे रूप और अपने पद की हर मर्यादा का पालन करते हुए, मैं बिना किसी डर या झिझक के उससे बहस कर सकता था; यह बात हम दोनों को भाती थी।

अंततः सीढ़ियों पर एक चरमराहट सुनाई दी। लिआ प्रकट हुई; लेकिन उसने केवल इतना बताया कि श्रीमती फेयरफैक्स के कमरे में चाय तैयार है। मैं वहाँ गया, कम से कम नीचे जाने की खुशी तो थी; क्योंकि मुझे लगा कि इससे मैं श्री रोचेस्टर के और करीब पहुँच जाऊँगा।

जब मैं उनके पास बैठा, तो उस महिला ने कहा, "आपको चाय चाहिए होगी; आपने रात के खाने में बहुत कम खाया था। मुझे खेद है," उन्होंने आगे कहा, "आज आपकी तबीयत ठीक नहीं है: आपका चेहरा लाल और बुखार जैसा लग रहा है।"

“ओह, एकदम बढ़िया! मैंने पहले कभी इतना अच्छा महसूस नहीं किया।”

“तो फिर आपको अच्छी भूख दिखाकर इसे साबित करना होगा; क्या आप चायदानी भर देंगे जब तक मैं इस सुई से बुनाई पूरी कर लेती हूँ?” अपना काम पूरा करने के बाद, वह उठकर पर्दा गिराने लगी, जिसे उसने अब तक ऊपर रखा हुआ था, शायद दिन के उजाले का पूरा फायदा उठाने के लिए, हालाँकि अब शाम पूरी तरह से अंधेरे में डूब रही थी।

खिड़की के शीशों से बाहर देखते हुए उसने कहा, "आज रात मौसम साफ है, हालांकि तारों की रोशनी नहीं है; श्री रोचेस्टर के लिए कुल मिलाकर यात्रा के लिए एक अनुकूल दिन रहा है।"

“यात्रा! — क्या श्री रोचेस्टर कहीं चले गए हैं? मुझे नहीं पता था कि वे बाहर गए हैं।”

“ओह, नाश्ता करते ही वो निकल पड़े! वो मिलकोट के दूसरी तरफ दस मील दूर श्री एश्टन के घर, लीज़ गए हैं। मेरा मानना है कि वहाँ काफी लोग इकट्ठा हैं; लॉर्ड इंग्राम, सर जॉर्ज लिन, कर्नल डेंट और अन्य।”

"क्या आपको उम्मीद है कि वह आज रात वापस आ जाएगा?"

“नहीं—और न ही कल; मुझे लगता है कि वह एक सप्ताह या उससे अधिक समय

तक रुकेंगे: जब ये उच्च कोटि के, फैशनेबल लोग एक साथ मिलते हैं, तो वे इतनी शालीनता और उल्लास से घिरे होते हैं, उनके पास मनोरंजन और आनंद की इतनी अच्छी व्यवस्था होती है कि उन्हें अलग होने की कोई जल्दी नहीं होती। ऐसे अवसरों पर सज्जनों की विशेष रूप से मांग रहती है; और श्री रोचेस्टर इतने प्रतिभाशाली और समाज में इतने जीवंत हैं कि मुझे लगता है कि वे सबके चहेते हैं: महिलाएं उन्हें बहुत पसंद करती हैं; हालाँकि आपको नहीं लगता कि उनकी शक्ल-सूरत उन्हें महिलाओं की नज़र में खास बनाती है: लेकिन मुझे लगता है कि उनकी योग्यता और क्षमताएं, शायद उनका धन और उच्च वंश, उनकी शक्ल-सूरत की किसी भी छोटी-मोटी कमी को पूरा कर देते हैं।"

"क्या लीज़ में महिलाएं हैं?"

"ये श्रीमती एश्टन और उनकी तीन बेटियाँ हैं—सचमुच बहुत ही सुंदर युवतियाँ; और ये माननीय ब्लैंच और मैरी इंग्राम हैं, मेरी राय में, बेहद खूबसूरत महिलाएँ: दरअसल, मैंने ब्लैंच को छह-सात साल पहले देखा था, जब वह अठारह साल की थीं। वह यहाँ श्री रोचेस्टर द्वारा आयोजित क्रिसमस बॉल और पार्टी में आई थीं। आपको उस दिन भोजन कक्ष देखना चाहिए था—कितनी भव्यता से सजाया गया था, कितनी जगमगाहट थी! मुझे लगता है कि वहाँ पचास महिलाएँ और पुरुष उपस्थित थे—सभी काउंटी के प्रतिष्ठित परिवारों से; और मिस इंग्राम उस शाम की सबसे सुंदर महिला मानी जा रही थीं।"

"आपने उन्हें देखा था, आप कहती हैं, श्रीमती फेयरफैक्स: वह कैसी थीं?"

"हाँ, मैंने उसे देखा था। भोजन कक्ष के दरवाजे खुले हुए थे; और क्रिसमस का समय होने के कारण नौकरों को हॉल में इकट्ठा होने और कुछ महिलाओं को गाते-बजाते सुनने की अनुमति दी गई थी। श्री रोचेस्टर ने मुझे अंदर बुलाया, और मैं एक शांत कोने में बैठ गया और उन्हें देखने लगा। मैंने इससे पहले कभी इतना शानदार दृश्य नहीं देखा था: महिलाएं शानदार ढंग से सजी हुई थीं; उनमें से अधिकांश - कम से कम युवा महिलाएं - सुंदर दिख रही थीं; लेकिन मिस इंग्राम निश्चित रूप से रानी थीं।"

और वह कैसी थी?

"लंबी कद-काठी, सुडौल सीना, ढलानदार कंधे; लंबी, आकर्षक गर्दन; सांवला और साफ रंग; सुंदर चेहरे की बनावट; मिस्टर रोचेस्टर जैसी आंखें: बड़ी और काली,

और उनके गहनों की तरह चमकदार। और फिर उनके बाल कितने सुंदर थे; काले और इतने सलीके से संवारे हुए: पीछे घनी चोटियों का मुकुट, और आगे मैंने अब तक के सबसे लंबे, चमकदार घुंघराले बाल देखे थे। उन्होंने शुद्ध सफेद वस्त्र पहने थे; एक अंबर रंग का दुपट्टा उनके कंधे से होते हुए छाती तक जाता था, बगल में बंधा हुआ था, और लंबे, झालरदार सिरे उनके घुटने से नीचे लटक रहे थे। उन्होंने अपने बालों में एक अंबर रंग का फूल भी लगाया हुआ था: यह उनके काले घुंघराले बालों के साथ खूब जंच रहा था।"

"वह बेशक बहुत प्रशंसित थीं?"

जी हाँ, बिलकुल: और सिर्फ़ अपनी सुंदरता के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी प्रतिभा के लिए भी। वह उन चुनिंदा महिलाओं में से एक थीं जो गाती थीं: एक सज्जन पियानो पर उनका साथ देते थे। उन्होंने और मिस्टर रोचेस्टर ने एक युगल गीत गाया था।

"श्री रोचेस्टर? मुझे पता ही नहीं था कि वह गा भी सकते हैं।"

"ओह! उनकी आवाज बहुत ही सुरीली है, और संगीत के प्रति उनका स्वाद भी उत्कृष्ट है।"

और मिस इंग्राम: उनकी आवाज कैसी थी?

"वह बेहद प्रभावशाली और दमदार थीं: उन्होंने बहुत ही मधुरता से गाया; उन्हें सुनना एक सुखद अनुभव था; और बाद में उन्होंने संगीत भी बजाया। मैं संगीत का पारखी नहीं हूँ, लेकिन श्री रोचेस्टर हैं; और मैंने उन्हें कहते सुना है कि उनका प्रदर्शन असाधारण रूप से अच्छा था।"

"और यह खूबसूरत और प्रतिभाशाली महिला, क्या वह अभी तक शादीशुदा नहीं है?"

"ऐसा प्रतीत नहीं होता: मुझे लगता है कि न तो उसके पास और न ही उसकी बहन के पास बहुत बड़ी संपत्ति है। ओल्ड लॉर्ड इंग्राम की जागीरें मुख्य रूप से उत्तराधिकार में थीं, और लगभग सब कुछ सबसे बड़े बेटे को मिला था।"

लेकिन मुझे आश्चर्य नहीं होता कि किसी धनी रईस या सज्जन ने उस पर मोहित होने की कोशिश की है: उदाहरण के लिए, मिस्टर रोचेस्टर। वह अमीर हैं, है ना?

"ओह! हाँ। लेकिन देखिए, उम्र में काफी अंतर है: श्री रोचेस्टर लगभग चालीस वर्ष के हैं; वह केवल पच्चीस वर्ष की हैं।"

“इसका क्या हुआ? हर दिन और भी ज्यादा असमान मुकाबले होते रहते हैं।”

“सच है: फिर भी मुझे नहीं लगता कि मिस्टर रोचेस्टर इस तरह का कोई विचार रखेंगे। लेकिन आप कुछ नहीं खाते: जब से आपने चाय पीना शुरू किया है, तब से आपने शायद ही कुछ चखा हो।”

“नहीं: मुझे इतनी प्यास लगी है कि मैं खा नहीं सकता। क्या आप मुझे एक और कप पानी देंगे?”

मैं एक बार फिर मिस्टर रोचेस्टर और खूबसूरत ब्लैंच के बीच विवाह की संभावना पर चर्चा करने ही वाला था; लेकिन एडेल आ गई और बातचीत का रुख बदल गया।

जब मैं फिर से अकेला हुआ, तो मैंने प्राप्त जानकारी की समीक्षा की; अपने हृदय में झाँका, उसके विचारों और भावनाओं का विश्लेषण किया, और कल्पना के असीम और पथहीन रेगिस्तान में भटक रहे विचारों को एक कठोर हाथ से वापस सामान्य ज्ञान की सुरक्षित शरण में लाने का प्रयास किया।

मेरे ही न्यायालय में मेरा न्याय हुआ, स्मृति ने कल रात से मेरे मन में संजोई आशाओं, इच्छाओं और भावनाओं का प्रमाण दिया—लगभग दो सप्ताह से मैं जिस सामान्य मानसिक स्थिति में था उसका; तर्क ने आगे आकर अपने शांत तरीके से एक सीधी-सादी, स्पष्ट कहानी सुनाई, जिसमें दिखाया गया कि कैसे मैंने वास्तविकता को नकार दिया और आदर्श को उन्मादपूर्वक ग्रहण किया;—मैंने इस प्रकार निर्णय सुनाया:—

जेन आयर से बड़ा मूर्ख कभी पैदा ही नहीं हुआ था; उससे भी ज्यादा सनकी बेवकूफ कभी मीठे झूठों में डूबकर जहर को अमृत समझकर नहीं पी गया था।

“तुम,” मैंने कहा, “मिस्टर रोचेस्टर की चहेती? तुम्हें उन्हें प्रसन्न करने की शक्ति प्राप्त है? क्या तुम उनके लिए किसी भी तरह से महत्वपूर्ण हो? जाओ! तुम्हारी मूर्खता मुझे घृणा दिलाती है। और तुमने कभी-कभार मिलने वाले विशेषण के संकेतों से आनंद लिया है—एक परिवार वाले और दुनियादार सज्जन द्वारा एक आश्रित और अनुभवहीन व्यक्ति को दिखाए गए अस्पष्ट संकेत। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? बेचारी मूर्ख!—क्या स्वार्थ भी तुम्हें समझदार नहीं बना सकता था? क्या तुमने आज सुबह पिछली रात के संक्षिप्त दृश्य को अपने मन में दोहराया?—अपना चेहरा छुपा लो और शर्म करो! क्या उन्होंने तुम्हारी आँखों की प्रशंसा में कुछ कहा था? अंधी कुतिया! अपनी धुंधली पलकें खोलो और अपनी ही शापित मूर्खता को देखो! किसी भी स्त्री के

लिए अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति द्वारा चापलूसी करना अच्छा नहीं होता, जिसका उससे विवाह करने का कोई इरादा नहीं हो सकता; और सभी स्त्रियों के लिए अपने भीतर एक गुप्त प्रेम को पनपने देना पागलपन है, जो यदि अनचाहा और अज्ञात रहे, तो उस जीवन को ही खा जाएगा जो उसे पालता है; और यदि इसका पता चल जाए और इसका जवाब दिया जाए, तो यह आग की तरह विनाश की ओर ले जाएगा। दलदली जंगल जहाँ से निकलना असंभव है।

"तो सुनो, जेन आयर, तुम्हारा फैसला सुनो: कल, अपने सामने शीशा रखो, और चाक से अपना चित्र बनाओ, पूरी ईमानदारी से, बिना किसी कमी को छुपाए; कोई कठोर रेखा मत छोड़ो, कोई अप्रिय अनियमितता मत मिटाओ; उसके नीचे लिखो, 'एक गवर्नेंस का चित्र, अलग-थलग, गरीब और साधारण।'"

"इसके बाद, हाथीदांत का एक चिकना टुकड़ा लें—आपके ड्राइंग बॉक्स में एक तैयार रखा होगा: अपनी पैलेट लें, अपने सबसे ताज़े, सबसे उत्तम, सबसे साफ़ रंगों को मिलाएँ; अपने सबसे कोमल ऊँट के बालों की पेंसिल चुनें; अपनी कल्पना के अनुसार सबसे सुंदर चेहरा सावधानीपूर्वक बनाएँ; श्रीमती फेयरफैक्स द्वारा ब्लैंच इंग्राम के दिए गए वर्णन के अनुसार, इसे अपने सबसे कोमल रंगों और सबसे प्यारी रेखाओं में रंगें; काले घुंघराले बालों और प्राच्य आँखों को याद रखें;—क्या! आप श्री रोचेस्टर को आदर्श मान रहे हैं! संयम! कोई रोना-धोना नहीं!—कोई भावुकता नहीं!—कोई पछतावा नहीं! मैं केवल विवेक और दृढ़ संकल्प को सहन करूँगा। भव्य लेकिन सामंजस्यपूर्ण चेहरे की बनावट, यूनानी गर्दन और छाती को याद रखें; गोल और चमकदार भुजा और कोमल हाथ दिखाई दें; हीरे की अंगूठी और सोने का कंगन न छोड़ें; पोशाक, हवा में लटकती लेस और चमकदार साटन, सुंदर स्कार्फ और सुनहरे गुलाब को ईमानदारी से चित्रित करें; इसे 'ब्लैंच, एक प्रतिष्ठित महिला' कहें।"

"भविष्य में जब भी आपको लगे कि मिस्टर रोचेस्टर आपके बारे में अच्छा सोचते हैं, तो इन दोनों तस्वीरों को निकालकर उनकी तुलना करें: कहें, 'अगर मिस्टर रोचेस्टर कोशिश करें तो शायद उस कुलीन महिला का प्यार जीत सकते हैं; क्या यह संभव है कि वे इस गरीब और तुच्छ आम आदमी के बारे में गंभीरता से सोचें?'"

मैंने दृढ़ निश्चय किया, "मैं यह करूँगा," और इस संकल्प को मन में बिठाने के बाद मैं शांत हो गया और सो गया।

मैंने अपना वादा निभाया। एक-दो घंटे में ही मैंने क्रेयॉन से अपना चित्र बना लिया;

और दो सप्ताह से भी कम समय में मैंने काल्पनिक ब्लैंच इंग्राम की हाथीदांत की एक छोटी सी प्रतिकृति तैयार कर ली। चेहरा देखने में काफी सुंदर लग रहा था, और चाक से बने असली चेहरे से तुलना करने पर अंतर इतना स्पष्ट था कि आत्म-नियंत्रण की कोई सीमा नहीं थी। मुझे इस काम से लाभ हुआ: इसने मेरे दिमाग और हाथों को व्यस्त रखा, और उन नए भावों को मजबूती और स्थिरता प्रदान की जिन्हें मैं अपने हृदय में अमिट रूप से अंकित करना चाहता था।

कुछ ही समय में, मुझे अपने आप को बधाई देने का कारण मिला कि मैंने अपनी भावनाओं को इस प्रकार संयमित कर लिया था। इसके फलस्वरूप, मैं बाद की घटनाओं का सामना शांत भाव से कर सका, जबकि यदि मैं इसके लिए तैयार नहीं होता, तो शायद मैं शांत भाव को बाहरी रूप से भी बनाए रखने में असमर्थ होता।

अध्याय सत्रह

एक हफ़्ता बीत गया, और मिस्टर रोचेस्टर की कोई खबर नहीं आई: दस दिन बीत गए, और वे फिर भी नहीं आए। श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा कि अगर वे सीधे लीज़ से लंदन चले जाएँ, और फिर वहाँ से महाद्वीप चले जाएँ, और अगले एक साल तक थॉर्नफील्ड में अपना चेहरा न दिखाएँ, तो उन्हें आश्चर्य नहीं होगा; वे अक्सर इसी तरह अचानक और अप्रत्याशित रूप से चले जाते थे। यह सुनकर मुझे एक अजीब सी ठंडक और दिल में घबराहट महसूस होने लगी। मैं सचमुच निराशा की एक भयानक अनुभूति को महसूस कर रही थी; लेकिन अपने विवेक को समेटकर और अपने सिद्धांतों को याद करके, मैंने तुरंत अपनी भावनाओं को नियंत्रित किया; और यह आश्चर्यजनक था कि मैं उस अस्थायी भूल से कैसे उबर गई - मैंने मिस्टर रोचेस्टर की गतिविधियों को एक ऐसा मामला मानने की गलती को कैसे दूर किया जिसमें मुझे कोई गहरी दिलचस्पी लेने की ज़रूरत थी। ऐसा नहीं था कि मैंने हीनता की भावना से खुद को

नीचा दिखाया: इसके विपरीत, मैंने बस इतना कहा -

“थॉर्नफील्ड के स्वामी से आपका कोई संबंध नहीं है, सिवाय इसके कि आप उनकी शिष्या को पढ़ाने के लिए उनसे मिलने वाला वेतन प्राप्त करें और उनके द्वारा दिए जाने वाले सम्मानजनक और दयालु व्यवहार के लिए आभारी रहें, जो कि यदि आप अपना कर्तव्य निभाते हैं तो उनसे प्राप्त करने का आपका अधिकार है। यह सुनिश्चित करें कि यही एकमात्र संबंध है जिसे वह आपके और उनके बीच गंभीरता से स्वीकार करते हैं; इसलिए उन्हें अपनी भावनाओं, उत्साह, पीड़ा आदि का पात्र न बनाएं। वह आपके वर्ग के नहीं हैं: अपनी जाति का सम्मान करें और आत्मसम्मान बनाए रखें, और अपना पूरा दिल, आत्मा और शक्ति उस जगह न लुटाएं जहां ऐसे उपहार की आवश्यकता नहीं है और जिसे तिरस्कृत किया जाएगा।”

मैं शांतिपूर्वक अपने दिन के कामों में लगा रहा; लेकिन बीच-बीच में मेरे दिमाग में थॉर्नफील्ड छोड़ने के अस्पष्ट विचार आते रहते थे; और मैं अनजाने में विज्ञापन तैयार करता रहता था और नई परिस्थितियों के बारे में अटकलें लगाता रहता था: मैंने इन विचारों को रोकने की कोशिश नहीं की; अगर संभव होता तो वे अंकुरित होकर फल दे सकते थे।

श्री रोचेस्टर दो सप्ताह से अधिक समय से अनुपस्थित थे, जब डाक ने श्रीमती फेयरफैक्स को एक पत्र पहुंचाया।

“यह गुरु की ओर से है,” उसने उस दिशा की ओर देखते हुए कहा। “अब मुझे लगता है कि हमें पता चल जाएगा कि हमें उनके लौटने की उम्मीद करनी चाहिए या नहीं।”

जब वह सील तोड़कर दस्तावेज़ पढ़ रही थी, तब मैं अपनी कॉफ़ी पीता रहा (हम नाश्ता कर रहे थे): कॉफ़ी गर्म थी, और इसी वजह से मेरे चेहरे पर अचानक एक तीखी चमक आ गई। मेरा हाथ क्यों काँप रहा था, और मैंने अनजाने में अपनी कप की आधी कॉफ़ी तश्तरी में क्यों गिरा दी, इस पर मैंने विचार नहीं किया।

"खैर, मुझे कभी-कभी लगता है कि हम बहुत शांत हैं; लेकिन अब हमारे पास पर्याप्त व्यस्त होने का मौका है: कम से कम कुछ समय के लिए," श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा, अभी भी नोट को अपने चश्मे के सामने पकड़े हुए।

इससे पहले कि मैं स्पष्टीकरण मांग पाती, मैंने एडेल के एप्रन की डोरी बांध दी, जो ढीली हो गई थी: उसे एक और बन देने और उसके मग में दूध भरने के बाद, मैंने

लापरवाही से कहा—

"मुझे लगता है कि मिस्टर रोचेस्टर जल्द ही वापस नहीं लौटेंगे?"

“जी हाँ, वो आ रहे हैं—तीन दिन में, वो अगले गुरुवार को होंगे; और अकेले भी नहीं। मुझे नहीं पता कि लीज़ होटल के कितने लोग उनके साथ आ रहे हैं: उन्होंने निर्देश भेजे हैं कि सभी बेहतरीन शयनकक्ष तैयार किए जाएँ; पुस्तकालय और ड्राइंग रूम साफ़ किए जाएँ; मुझे मिलकोट के जॉर्ज इन से और जहाँ कहीं से भी संभव हो, रसोई के लिए और नौकर लाने हैं; और महिलाएँ अपनी नौकरानियाँ और पुरुष अपने नौकर लाएँगे: तो हमारे यहाँ पूरी भीड़ होगी।” और श्रीमती फेयरफैक्स ने अपना नाश्ता जल्दी से निगला और काम शुरू करने के लिए दौड़ पड़ीं।

जैसा कि उसने पहले ही बताया था, वे तीन दिन काफी व्यस्त रहे। मैंने सोचा था कि थॉर्नफील्ड के सभी कमरे बेहद साफ-सुथरे और सुव्यवस्थित होंगे; लेकिन लगता है मैं गलत थी। तीन महिलाओं को काम पर लगाया गया था; और ऐसी सफाई, ऐसी झाड़ू-पोछा, पेंट की ऐसी धुलाई और कालीनों की ऐसी झाड़-पोंछ, चित्रों को ऐसी बार-बार उतारना और लगाना, दर्पणों और पर्दों की ऐसी चमक, शयनकक्षों में ऐसी आग जलाना, चूल्हे पर चादरों और पंखों वाले बिस्तरों को ऐसी हवा देना, मैंने न तो पहले कभी देखा था और न ही बाद में। एडेल तो इस सब के बीच बिल्कुल बेकाबू हो गई: मेहमानों के आने की तैयारी और उनके आगमन की उम्मीद ने उसे मानो आनंदित कर दिया था। वह सोफी से अपने सभी पुराने कपड़ों (जिन्हें वह "टॉयलेट" कहती थी) की जाँच करने, पुराने कपड़ों को ठीक करने और नए कपड़ों को हवा देकर व्यवस्थित करने को कह रही थी। वह खुद तो बस सामने के कमरों में उछल-कूद करती रहती थी, पलंगों पर चढ़ती-उतरती रहती थी और चिमनियों में धधकती विशाल आग के सामने गद्दों, तकियों और गद्दों पर लेटती रहती थी। स्कूल के कामों से उसे छूट मिली हुई थी: श्रीमती फेयरफैक्स ने मुझे जबरदस्ती अपने यहाँ काम पर लगा लिया था, और मैं सारा दिन भंडारगृह में उनकी और रसोइए की मदद (या बाधा) करती रहती थी; कस्टर्ड, चीज़केक और फ्रेंच पेस्ट्री बनाना, शिकार किए गए जानवरों के मांस को सजाना और मिठाई के व्यंजनों को अलंकृत करना सीख रही थी।

पार्टी के गुरुवार दोपहर छह बजे डिनर के समय पहुंचने की उम्मीद थी। इस बीच मेरे पास कल्पनाओं में खोने का समय नहीं था; और मेरा मानना है कि मैं एडेल को छोड़कर बाकी सभी की तरह सक्रिय और खुशमिजाज था। फिर भी, कभी-कभी मेरी

खुशी पर एक धब्बा लग जाता था; और मैं अनजाने में ही संदेह, अपशकुन और अंधकारमय अटकलों में डूब जाता था। ऐसा तब हुआ जब मैंने संयोग से तीसरी मंजिल की सीढ़ी का दरवाजा (जो हाल ही में हमेशा बंद रहता था) धीरे से खुलते देखा, और ग्रेस पूल को एक साफ-सुथरी टोपी, सफेद एप्रन और रूमाल पहने हुए अंदर आते देखा; जब मैंने उसे गैलरी में धीरे-धीरे चलते देखा, उसकी धीमी चाल ढीली चप्पलों में दबी हुई थी; जब मैंने उसे हलचल भरे, अस्त-व्यस्त कमरों में झांकते देखा, - शायद सफाईकर्मी से अंगीठी को पॉलिश करने, संगमरमर की शेल्फ साफ करने या वॉलपेपर लगी दीवारों से दाग हटाने के सही तरीके के बारे में कुछ कहने के लिए, और फिर आगे बढ़ जाने के लिए। वह दिन में एक बार रसोई में जाती, अपना खाना खाती, चूल्हे पर बैठकर धीरे-धीरे पाइप पीती और फिर अपने साथ पोर्टर का घड़ा लेकर वापस लौट आती, ताकि अपने एकांत में ऊपर के एकांत कक्ष में जाकर सुकून पा सके। चौबीसों घंटे में से केवल एक घंटा ही वह नीचे अपने साथी नौकरों के साथ बिताती; बाकी सारा समय वह दूसरी मंजिल के किसी कम छत वाले, ओक की लकड़ी के कमरे में बिताती: वहाँ वह बैठकर सिलाई करती और शायद मन ही मन उदास होकर हँसती, मानो किसी काल कोठरी में बंद कैदी की तरह अकेली हो।

सबसे अजीब बात तो यह थी कि मेरे अलावा घर में किसी ने भी उसकी आदतों पर ध्यान नहीं दिया, न ही किसी ने उन पर आश्चर्य जताया: किसी ने भी उसकी स्थिति या नौकरी के बारे में चर्चा नहीं की; किसी ने भी उसके अकेलेपन या एकांत पर तरस नहीं खाया। एक बार, मैंने गलती से लिआ और एक सफाईकर्मी के बीच बातचीत का कुछ हिस्सा सुन लिया, जिसका विषय ग्रेस थी। लिआ कुछ कह रही थी जो मुझे समझ नहीं आया, और सफाईकर्मी ने टिप्पणी की—

"मुझे लगता है कि उसे अच्छी तनख्वाह मिलती है?"

“हाँ,” लिआ ने कहा; “काश मेरे पास भी इतनी अच्छी आमदनी होती; ऐसा नहीं है कि मेरी आमदनी कम है, थॉर्नफील्ड में तो कंजूसी नहीं है; लेकिन श्रीमती पूल को जो आमदनी मिलती है, उसका पाँचवाँ हिस्सा भी नहीं है। और वो तो बचत कर रही हैं: हर तीन महीने में मिलकोट के बैंक में पैसे जमा करती हैं। मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर उन्होंने इतना पैसा बचा लिया हो कि अगर वो जाना चाहें तो आत्मनिर्भर रह सकें; लेकिन मुझे लगता है कि उन्हें इस जगह की आदत हो गई है; और वो अभी चालीस साल की भी नहीं हुई हैं, और हर काम के लिए मज़बूत और सक्षम हैं। उनके लिए

अभी कारोबार छोड़ना जल्दबाजी होगी।”

सफाईकर्मी ने कहा, "मुझे लगता है कि वह एक कुशल कारीगर है।"

“आह! – वह जानती है कि उसे क्या करना है, – उससे बेहतर कोई नहीं,” लिआ ने महत्वपूर्ण लहजे में जवाब दिया; “और हर कोई उसकी जगह नहीं ले सकता – चाहे उसे कितना भी पैसा क्यों न मिले।”

“ऐसा नहीं है!” जवाब मिला। “मुझे आश्चर्य है कि क्या गुरुजी—”

सफाईकर्मी अपना काम कर रही थी; लेकिन तभी लिआ मुड़ी और उसने मुझे देखा, और उसने तुरंत अपनी साथी को एक धक्का दिया।

“क्या उसे पता नहीं?” मैंने उस महिला को फुसफुसाते हुए सुना।

लिआ ने सिर हिलाया, और बातचीत वहीं खत्म हो गई। मुझे बस इतना ही समझ आया कि थॉर्नफील्ड में कोई रहस्य था; और उस रहस्य में शामिल होने से मुझे जानबूझकर अलग रखा गया था।

गुरुवार का दिन आ गया: पिछली शाम को ही सारा काम पूरा हो चुका था; कालीन बिछा दिए गए थे, पलंगों पर झालरें लगा दी गई थीं, चमकदार सफेद चादरें बिछा दी गई थीं, साज-सज्जा की मेजें व्यवस्थित कर दी गई थीं, फर्नीचर चमकाया गया था, गुलदस्तों में फूल सजे हुए थे: कमरे और बैठक कक्ष दोनों ही हाथों से बनाए गए ताजे और चमकदार दिख रहे थे। हॉल की भी अच्छी तरह सफाई कर दी गई थी; और बड़ी नक्काशीदार घड़ी के साथ-साथ सीढ़ियों के पायदान और रेलिंग को भी कांच की तरह चमकाया गया था; भोजन कक्ष में, प्लेटें सजी हुई थीं और चमक रही थीं; ड्राइंग रूम और बेडरूम में चारों ओर विदेशी फूलों से भरे गुलदस्ते सजे हुए थे।

दोपहर हो गई: श्रीमती फेयरफैक्स ने अपना सबसे अच्छा काला साटन गाउन, दस्ताने और सोने की घड़ी पहन ली; क्योंकि मेहमानों का स्वागत करना, उन्हें उनके कमरों तक ले जाना आदि उनका कर्तव्य था। एडेल भी तैयार हो रही थी, हालाँकि मुझे लगता था कि उस दिन कम से कम उसे पार्टी में शामिल होने का मौका मिलने की संभावना बहुत कम थी। फिर भी, उसे खुश करने के लिए, मैंने सोफी को उसे अपनी एक छोटी, पूरी मलमल की फ्रॉक पहनाने की अनुमति दे दी। मुझे खुद कुछ भी बदलने की ज़रूरत नहीं थी; मुझे अपने स्कूल के कमरे के पवित्र स्थान को छोड़ने की ज़रूरत नहीं थी; क्योंकि वह अब मेरे लिए एक पवित्र स्थान बन चुका था, "मुसीबत के समय में एक बहुत ही सुखद शरण।"

वह एक सुहावना, शांत वसंत का दिन था—उन दिनों में से एक जो मार्च के अंत या अप्रैल की शुरुआत में, गर्मी के आगमन की सूचना देते हुए धरती पर चमकते हैं। अब वह दिन समाप्त होने वाला था; लेकिन शाम अभी भी गर्म थी, और मैं स्कूल के कमरे में खिड़की खोलकर काम कर रहा था।

"देर हो रही है," श्रीमती फेयरफैक्स लड़खड़ाते हुए अंदर आईं। "अच्छा हुआ मैंने मिस्टर रोचेस्टर के बताए समय के एक घंटे बाद खाना ऑर्डर किया; क्योंकि अब छह बज चुके हैं। मैंने जॉन को गेट पर भेजा है यह देखने के लिए कि सड़क पर कुछ है या नहीं: वहाँ से मिलकोट की दिशा में दूर तक देखा जा सकता है।" वह खिड़की के पास गईं। "देखो, वो रहा!" उन्होंने कहा। "अच्छा, जॉन," (बाहर झुकते हुए), "कोई खबर?"

"वे आ रहे हैं, महोदया," जवाब मिला। "वे दस मिनट में यहाँ पहुँच जाएँगे।"

एडेल खिड़की की ओर भागी। मैं भी उसके पीछे-पीछे गया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि मैं एक तरफ खड़ा रहूँ, ताकि पर्दे की आड़ में मैं देख सकूँ और खुद दिखाई न दूँ।

जॉन द्वारा दिए गए दस मिनट बहुत लंबे लग रहे थे, लेकिन आखिरकार पहियों की आवाज़ सुनाई दी; चार घुड़सवार तेज़ी से आगे बढ़े, और उनके पीछे दो खुली गाड़ियाँ आईं। लहराते घूंघट और फहराते पंख गाड़ियों में सजे थे; दो घुड़सवार युवा, आकर्षक दिखने वाले सज्जन थे; तीसरे थे श्री रोचेस्टर, अपने काले घोड़े मेसरूर पर, पायलट उनके आगे उछल रहा था; उनके बगल में एक महिला सवार थी, और वे दोनों उस समूह के पहले सदस्य थे। उनका बैंगनी घुड़सवारी वस्त्र लगभग ज़मीन को छू रहा था, उनका घूंघट हवा में लहरा रहा था; उसकी पारदर्शी तहों में घुलमिलकर, और उनमें से चमकते हुए, उनके घने काले घुंघराले बाल दिखाई दे रहे थे।

"मिस इंग्राम!" श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा और वह जल्दी से नीचे अपने पद की ओर चल पड़ीं।

जुलूस, सड़क के घुमावदार रास्ते से गुज़रते हुए, तेज़ी से घर के कोने की ओर मुड़ गया और वह मेरी नज़रों से ओझल हो गया। एडेल ने नीचे जाने की गुज़ारिश की; लेकिन मैंने उसे अपनी गोद में बिठाया और समझाया कि वह किसी भी हालत में, न अभी और न ही कभी, महिलाओं के सामने आने की हिम्मत करे, जब तक कि उसे विशेष रूप से बुलाया न जाए: कि श्री रोचेस्टर बहुत नाराज़ होंगे, इत्यादि। यह सुनकर

उसकी आँखों से कुछ आँसू बहने लगे; लेकिन जब मैंने गंभीर चेहरा बनाना शुरू किया, तो आखिरकार वह उन्हें पोंछने के लिए राज़ी हो गई।

अब हॉल में खुशी की एक हल्की सी हलचल सुनाई दे रही थी: सज्जनों की गहरी आवाज़ें और महिलाओं के मधुर स्वर आपस में मधुरता से घुलमिल रहे थे, और सबसे ऊपर, हालांकि धीमी, थॉर्नफील्ड हॉल के स्वामी की सुरीली आवाज़ थी, जो अपने सुंदर और वीर अतिथियों का हॉल में स्वागत कर रहे थे। फिर हल्के कदमों से सीढ़ियाँ चढ़ीं; और गैलरी में चहलकदमी की आवाज़ गूंजी, हल्की-हल्की हँसी सुनाई दी, दरवाजे खुलते-बंद होते रहे, और कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया।

“Elles changent de toilettes,” एडेल ने कहा; जो ध्यान से सुन रही थी और हर हरकत पर गौर कर रही थी; और उसने आह भरी।

उन्होंने कहा, "माँ के घर पर, जब आसपास लोग होते थे, तो मैं उनके पीछे-पीछे हर जगह जाती थी, बैठक कक्ष से लेकर उनके शयनकक्ष तक; मैं अक्सर नौकरानियों को महिलाओं के बाल बनाते और उन्हें कपड़े पहनाते हुए देखती थी, और यह बहुत मजेदार होता था: इसी तरह से आप सीखते हैं।"

“क्या तुम्हें भूख नहीं लग रही, एडेल?”

"जी हां, महोदया: हमने पांच-छह घंटे से कुछ नहीं खाया है।"

"अच्छा, अब जब महिलाएं अपने कमरों में हैं, मैं नीचे जाकर आपके लिए कुछ खाने को ले आता हूँ।"

अपने आश्रय से सावधानीपूर्वक निकलते हुए, मैं एक पिछली सीढ़ी की तलाश में गया जो सीधे रसोई की ओर जाती थी। उस क्षेत्र में हर तरफ अफरा-तफरी मची हुई थी; सूप और मछली पकने की अंतिम अवस्था में थे, और रसोइया अपने बर्तनों के ऊपर इस कदर झुकी हुई थी मानो वह जलकर राख हो जाएगी। नौकरों के हॉल में दो कोचवान और तीन सज्जन आग के चारों ओर खड़े या बैठे थे; मुझे लगता है कि नौकरानियाँ अपनी मालकिनों के साथ ऊपर थीं; मिलकोट से लाए गए नए नौकर इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहे थे। इस अफरा-तफरी से निकलते हुए, मैं आखिरकार भंडारगृह तक पहुँचा; वहाँ से मैंने एक ठंडा चिकन, एक ब्रेड का रोल, कुछ टार्ट्स, एक-दो प्लेट और एक चाकू-कांटा उठाया: इस लूट के साथ मैं जल्दी से वहाँ से निकल गया। मैं गैलरी में वापस आ गया था, और जैसे ही मैं अपने पीछे पिछला दरवाजा बंद कर रहा था, तभी एक तेज गूंज ने मुझे आगाह किया कि महिलाएँ अपने

कमरों से बाहर आने वाली हैं। मैं उनके कुछ दरवाजों से गुजरे बिना और अपने खाने-पीने के सामान के साथ पकड़े जाने के जोखिम के बिना स्कूल के कमरे तक नहीं जा सकता था; इसलिए मैं इस छोर पर रुक गया, जो खिड़की रहित होने के कारण अंधेरा था: अब तो बिल्कुल अंधेरा था, क्योंकि सूरज डूब चुका था और गोधूलि बेला छा रही थी।

कुछ देर बाद कमरे एक-एक करके सुंदरियों से भरे हुए बाहर निकले: हर कोई प्रसन्न और सहज भाव से, शाम के धुंधलके में चमकते हुए वस्त्रों के साथ बाहर आया। एक क्षण के लिए वे गैलरी के दूसरे छोर पर एक साथ खड़ी रहीं, मधुर और सौम्य उत्साह से बातें करती रहीं: फिर वे सीढ़ियों से लगभग उतनी ही खामोशी से उतर गईं जैसे कोई चमकदार धुंध पहाड़ी से नीचे लुढ़कती है। उनकी सामूहिक उपस्थिति ने मुझ पर उच्च वर्ग की शालीनता का ऐसा प्रभाव छोड़ा, जैसा मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था।

मैंने एडेल को स्कूल के कमरे के दरवाजे से झाँकते हुए देखा, जिसे उसने थोड़ा खुला रखा हुआ था। "कितनी सुंदर महिलाएं हैं!" उसने अंग्रेजी में कहा। "काश मैं भी उनके पास जा पाती! क्या आपको लगता है कि मिस्टर रोचेस्टर हमें खाने के बाद थोड़ी देर में बुला लेंगे?"

"नहीं, बिलकुल नहीं; श्री रोचेस्टर को किसी और बात पर ध्यान देना है। आज रात महिलाओं की चिंता मत कीजिए; शायद आप उन्हें कल देख लें: ये रहा आपका भोजन।"

वह सचमुच भूखी थी, इसलिए चिकन और टार्ट्स ने कुछ देर के लिए उसका ध्यान भटकाने का काम किया। अच्छा हुआ कि मैंने ये खाना जुटा लिया, वरना हम तीनों (एडेल, जिसे मैंने अपने खाने का एक हिस्सा दिया था) को शायद रात का खाना भी न मिलता: नीचे सब लोग इतने व्यस्त थे कि हमारे बारे में सोचने का किसी को समय ही नहीं था। मिठाई नौ बजे के बाद ही परोसी गई और दस बजे तक नौकर ट्रे और कॉफी के कप लेकर इधर-उधर भाग रहे थे। मैंने एडेल को सामान्य से बहुत देर तक जागने दिया; क्योंकि उसने कहा कि जब तक नीचे दरवाजे खुलते-बंद होते रहेंगे और लोग इधर-उधर भागते रहेंगे, तब तक उसे नींद नहीं आएगी। इसके अलावा, उसने कहा, कपड़े उतारने के बाद शायद मिस्टर रोचेस्टर का कोई संदेश आ जाए; "और फिर कितना अफसोस!"

मैंने उसे तब तक कहानियां सुनाईं जब तक वह सुनती रही; फिर कुछ बदलाव के लिए मैं उसे गैलरी में ले गया। हॉल का लैंप जल रहा था, और उसे रेलिंग के ऊपर से नौकरों को आते-जाते देखना अच्छा लग रहा था। शाम ढलने पर ड्राइंग रूम से संगीत की आवाज़ आई, जहाँ पियानो रखा हुआ था; एडेल और मैं सुनने के लिए सीढ़ियों के सबसे ऊपरी पायदान पर बैठ गए। थोड़ी देर में एक आवाज़ पियानो की मधुर धुनों में घुलमिल गई; एक महिला गा रही थी, और उसके सुर बहुत ही मधुर थे। एकल गीत समाप्त होने के बाद, एक युगल गीत शुरू हुआ, और फिर एक उल्लास: बीच-बीच में आनंदमय बातचीत की हल्की फुसफुसाहट गूंज उठी। मैंने देर तक सुना: अचानक मुझे एहसास हुआ कि मेरा कान पूरी तरह से मिली-जुली आवाज़ों का विश्लेषण करने और उच्चारणों के भ्रम में से श्री रोचेस्टर के उच्चारण को पहचानने की कोशिश में लगा हुआ था; और जब उसने उन्हें पकड़ लिया, जो उसने जल्दी ही कर लिया, तो उसे दूरी के कारण अस्पष्ट हो चुके स्वरों को शब्दों में पिरोना पड़ा।

घड़ी में ग्यारह बज चुके थे। मैंने एडेल की ओर देखा, जिसका सिर मेरे कंधे पर टिका हुआ था; उसकी आँखें भारी हो रही थीं, इसलिए मैंने उसे अपनी बाहों में उठाया और बिस्तर पर ले गया। लगभग एक बजने के बाद ही सभी सज्जन और महिलाएं अपने-अपने कमरों में गए।

अगला दिन भी पहले दिन की तरह ही सुहावना था: उस दिन सभी लोग आस-पास के किसी स्थान की सैर पर निकले। वे सुबह तड़के ही निकल पड़े, कुछ लोग घोड़ों पर सवार थे, बाकी लोग गाड़ियों में; मैंने उनके जाने और लौटने दोनों को देखा। मिस इंग्राम, हमेशा की तरह, अकेली महिला घुड़सवार थीं; और हमेशा की तरह, मिस्टर रोचेस्टर उनके साथ-साथ घोड़े दौड़ा रहे थे; दोनों बाकी लोगों से थोड़ा अलग चल रहे थे। मैंने यह बात श्रीमती फेयरफैक्स को बताई, जो मेरे साथ खिड़की पर खड़ी थीं।

मैंने कहा, "आपने कहा था कि उनके शादी करने के बारे में सोचने की संभावना नहीं है, लेकिन आप देख सकते हैं कि श्री रोचेस्टर स्पष्ट रूप से अन्य सभी महिलाओं की तुलना में उसे अधिक पसंद करते हैं।"

"हां, मैं कह सकता हूं: इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह उसकी प्रशंसा करता है।"

मैंने आगे कहा, "और वह भी उसे; देखो वह कैसे अपना सिर उसकी ओर झुकाए हुए है मानो कोई गोपनीय बातचीत कर रही हो; काश मैं उसका चेहरा देख पाता; मुझे अभी तक उसकी एक झलक भी नहीं मिली है।"

“आप उन्हें आज शाम देख लेंगी,” श्रीमती फेयरफैक्स ने उत्तर दिया। “मैंने श्री रोचेस्टर से कहा कि एडेल महिलाओं से मिलने के लिए कितनी उत्सुक हैं, और उन्होंने कहा: ‘ओह! उन्हें भोजन के बाद ड्राइंग रूम में आने दीजिए; और मिस आयर से उनके साथ आने का अनुरोध कीजिए।’”

“हां; उन्होंने यह बात केवल शिष्टाचारवश कही थी: मुझे जाने की जरूरत नहीं है, मुझे यकीन है,” मैंने उत्तर दिया।

मैंने उनसे कहा कि चूंकि आपको लोगों के बीच रहने की आदत नहीं है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि आप इतने सारे अजनबियों के सामने आना पसंद करेंगे; और उन्होंने अपने तेज लहजे में जवाब दिया - 'बकवास! अगर वह आपत्ति करती है, तो उसे बता देना कि यह मेरी विशेष इच्छा है; और अगर वह विरोध करती है, तो कह देना कि अगर वह अवज्ञा करती है तो मैं आकर उसे ले जाऊंगा।'

मैंने जवाब दिया, “मैं उन्हें यह परेशानी नहीं दूंगी। अगर कोई और बेहतर विकल्प न हो तो मैं चली जाऊंगी; लेकिन मुझे यह पसंद नहीं है। क्या आप वहां रहेंगी, श्रीमती फेयरफैक्स?”

“नहीं; मैंने मना कर दिया था, और उन्होंने मेरी बात मान ली। मैं आपको बताता हूँ कि औपचारिक प्रवेश की शर्मिंदगी से कैसे बचा जाए, जो इस काम का सबसे अप्रिय हिस्सा है। आपको ड्राइंग रूम में तब जाना है जब वह खाली हो, महिलाओं के खाने की मेज छोड़ने से पहले; अपनी पसंद के किसी भी शांत कोने में बैठ जाइए; सज्जनों के आने के बाद आपको ज़्यादा देर रुकने की ज़रूरत नहीं है, जब तक कि आप चाहें: बस मिस्टर रोचेस्टर को अपनी मौजूदगी का एहसास होने दीजिए और फिर चुपचाप निकल जाइए – कोई आपको नोटिस नहीं करेगा।”

"क्या आपको लगता है कि ये लोग लंबे समय तक टिकेंगे?"

“शायद दो या तीन सप्ताह, निश्चित रूप से इससे अधिक नहीं। ईस्टर की छुट्टियों के बाद, सर जॉर्ज लिन, जो हाल ही में मिलकोट से सांसद चुने गए हैं, को शहर जाकर अपना पदभार ग्रहण करना होगा; मुझे लगता है कि श्री रोचेस्टर भी उनके साथ जाएंगे: मुझे आश्चर्य है कि वे थॉर्नफील्ड में इतनी देर तक रुके हुए हैं।”

मुझे थोड़ी घबराहट हो रही थी जब मुझे अपनी बच्ची को लेकर ड्राइंग रूम में जाने का समय नज़दीक आता दिखा। एडेल दिन भर खुशी से झूम रही थी, क्योंकि उसे शाम को महिलाओं के सामने पेश किया जाना था; और सोफी के उसे कपड़े पहनाने

का काम शुरू करने के बाद ही वह थोड़ी शांत हुई। फिर इस प्रक्रिया की अहमियत ने उसे तुरंत संभाल लिया, और जब तक उसके घुंघराले बाल करीने से संवरे हुए, लटकते हुए गुच्छों में सँवारे गए, उसकी गुलाबी साटन की फ्रॉक पहनी गई, उसकी लंबी कमरबंद बाँधी गई और उसके लेस के दस्ताने ठीक से लगाए गए, तब तक वह किसी जज की तरह गंभीर लग रही थी। उसे अपने कपड़ों को अस्त-व्यस्त न करने की चेतावनी देने की कोई ज़रूरत नहीं थी: कपड़े पहनने के बाद, वह शालीनता से अपनी छोटी कुर्सी पर बैठ गई, पहले उसने साटन की स्कर्ट को ऊपर उठा लिया ताकि उसमें सिलवटें न पड़ जाएँ, और मुझे आश्वासन दिया कि जब तक मैं तैयार नहीं हो जाती, वह वहाँ से हिलेगी नहीं। मैंने झटपट यही किया: मेरी सबसे अच्छी पोशाक (चांदी-धूसर रंग की, जो मिस टेंपल की शादी के लिए खरीदी गई थी और उसके बाद कभी नहीं पहनी गई) जल्दी से पहन ली गई; मेरे बाल जल्दी से संवारे गए; मेरा एकमात्र आभूषण, मोती का ब्रोच, जल्दी से लगा लिया गया। हम नीचे उतर गए।

सौभाग्य से ड्राइंग रूम में प्रवेश करने का एक और रास्ता था, उस हॉल के अलावा जहाँ वे सभी रात के खाने पर बैठे थे। हमने कमरा खाली पाया; संगमरमर के चूल्हे पर एक बड़ी आग धीमी आंच पर जल रही थी, और मेजों पर सजे खूबसूरत फूलों के बीच मोमबत्तियाँ एकांत में जगमगा रही थीं। मेहराब के सामने लाल पर्दा लटका हुआ था: हालाँकि यह पर्दा बगल के हॉल में बैठे लोगों से बहुत कम दूरी बनाए हुए था, वे इतनी धीमी आवाज़ में बात कर रहे थे कि उनकी बातचीत का कुछ भी स्पष्ट रूप से सुनाई नहीं दे रहा था, बस एक मधुर फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी।

एडेल, जो किसी गंभीर भाव से प्रभावित लग रही थी, बिना कुछ कहे उस पायदान पर बैठ गई जिसकी ओर मैंने उसे इशारा किया था। मैं खिड़की के पास वाली सीट पर जाकर बैठ गया और पास की मेज से एक किताब उठाकर पढ़ने की कोशिश करने लगा। एडेल अपना पायदान मेरे पैरों के पास ले आई; थोड़ी ही देर में उसका हाथ मेरे घुटने से छू गया।

“क्या बात है, एडेल?”

"क्या मैं इन खूबसूरत फूलों में से सिर्फ एक फूल भी नहीं ले सकती, मैडम? बस अपने पहनावे को पूरा करने के लिए।"

“एडेल, तुम अपने ‘टॉयलेट’ को बहुत ज़्यादा अहमियत देती हो: लेकिन तुम एक फूल ले सकती हो।” और मैंने गुलदस्ते से एक गुलाब निकाला और उसे उसकी

कमरबंद में लगा दिया। उसने असीम संतुष्टि की आह भरी, मानो उसकी खुशियों का प्याला भर गया हो। मैंने अपना चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया ताकि मैं अपनी मुस्कान को रोक न सकूँ: उस छोटी पेरिसियन लड़की की पहनावे के प्रति गंभीर और स्वाभाविक लगाव में कुछ हास्यास्पद होने के साथ-साथ कुछ पीड़ादायक भी था।

अब उठने की एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी; मेहराब से पर्दा हट गया; उसके पार भोजन कक्ष दिखाई दिया, जिसकी जगमगाहट से एक लंबी मेज पर सजे चांदी और कांच के शानदार मिठाई सेट पर प्रकाश पड़ रहा था; कुछ महिलाएं प्रवेश द्वार पर खड़ी थीं; वे अंदर गईं और उनके पीछे पर्दा गिर गया।

वे मात्र आठ ही थे; फिर भी, जैसे-जैसे वे आते गए, ऐसा प्रतीत हुआ मानो उनकी संख्या कहीं अधिक हो। उनमें से कुछ बहुत लंबे थे; कई सफेद वस्त्र पहने हुए थे; और उन सभी का आवरण इतना विशाल था कि ऐसा लग रहा था मानो कोहरा चंद्रमा को बड़ा कर देता हो। मैं उठा और मैंने उन्हें प्रणाम किया: एक-दो ने बदले में सिर झुकाया, बाकी सब मुझे घूरते रहे।

वे कमरे में इधर-उधर फैल गए, उनकी फुर्तीली और चंचल चाल मुझे सफेद पंखों वाले पक्षियों के झुंड की याद दिला रही थी। उनमें से कुछ सोफे और ओटोमन पर अर्ध-लेटी हुई मुद्रा में बैठ गए; कुछ मेजों पर झुककर फूलों और किताबों को निहारने लगे; बाकी आग के चारों ओर समूह बनाकर बैठ गए; सभी धीमी लेकिन स्पष्ट आवाज़ में बातें कर रहे थे, जो मानो उनकी आदत बन गई थी। मुझे बाद में उनके नाम पता चले, इसलिए अब उनका ज़िक्र करना उचित होगा।

सबसे पहले, श्रीमती एश्टन और उनकी दो बेटियाँ थीं। वह स्पष्ट रूप से एक सुंदर महिला रही होंगी और अब भी अच्छी तरह से सजी-धजी थीं। उनकी बेटियों में सबसे बड़ी, एमी, अपेक्षाकृत छोटी थीं: भोली-भाली, मासूम चेहरे और व्यवहार वाली, और आकर्षक कद-काठी की; उनकी सफेद मलमल की पोशाक और नीली कमरबंद उन पर खूब जंच रही थी। दूसरी, लुइसा, लंबी और अधिक सुंदर कद-काठी की थीं; उनका चेहरा बेहद खूबसूरत था, जिसे फ्रांसीसी शब्द 'मिनोइस शिफॉने' से पुकारा जाता है: दोनों बहनें लिली की तरह सुंदर थीं।

लेडी लिन लगभग चालीस वर्ष की एक विशाल और हष्ट-पुष्ट महिला थीं, जो बहुत सीधी खड़ी थीं, बहुत अभिमानी दिखती थीं, और एक चमकते हुए साटन के वस्त्र में सजी हुई थीं: उनके काले बाल नीले पंख की छाया में और रत्नों के एक घेरे के भीतर

चमकदार रूप से चमक रहे थे।

श्रीमती कर्नल डेंट दिखावटीपन से दूर थीं; लेकिन मुझे लगा कि वे अधिक शालीन थीं। उनका दुबला-पतला शरीर, कोमल और सौम्य चेहरा और सुनहरे बाल थे। उनकी काली साटन की पोशाक, कीमती विदेशी लेस का दुपट्टा और मोतियों के आभूषण मुझे उस कुलीन महिला की इंद्रधनुषी चमक से कहीं अधिक भाए।

लेकिन सबसे विशिष्ट तीन महिलाएं—शायद आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि वे समूह की सबसे लंबी महिलाएं थीं—विधवा लेडी इंग्राम और उनकी बेटियां, ब्लैंच और मैरी थीं। तीनों ही महिलाएं कद-काठी में बेहद श्रेष्ठ थीं। विधवा की उम्र चालीस से पचास के बीच रही होगी: उनका शरीर अभी भी सुडौल था; उनके बाल (कम से कम मोमबत्ती की रोशनी में) अभी भी काले थे; उनके दांत भी अभी भी बिल्कुल सही प्रतीत होते थे। अधिकांश लोग उन्हें उनकी उम्र की एक शानदार महिला कहते: और शारीरिक रूप से देखा जाए तो वे निस्संदेह थीं भी; लेकिन उनके हावभाव और चेहरे पर लगभग असहनीय अहंकार झलकता था। उनके चेहरे की बनावट रोमन शैली की थी और उनकी ठुड्डी एक स्तंभ की तरह उनके गले में समाई हुई थी: ये विशेषताएं मुझे न केवल फूली हुई और काली दिखाई दीं, बल्कि अहंकार से भरी हुई भी लगीं; और ठुड्डी भी उसी सिद्धांत पर टिकी हुई थी, लगभग अलौकिक रूप से सीधी। उनकी आंखें भी तेज और कठोर थीं: यह मुझे श्रीमती रीड की याद दिलाती थीं; वे बोलते समय अपने शब्दों को मन में घुमाती थीं; उसकी आवाज़ गहरी थी, उसके लहजे में बहुत आडंबर, बहुत हठधर्मिता थी—संक्षेप में, बहुत असहनीय। गहरे लाल मखमल का चोला और सोने की कढ़ाई वाले किसी भारतीय कपड़े की शॉल की पगड़ी ने उसे (शायद वह खुद ऐसा सोचती थी) एक सच्ची शाही गरिमा प्रदान की थी।

ब्लैंच और मैरी कद में बराबर थीं, चिनार के पेड़ों की तरह सीधी और लंबी। मैरी अपनी लंबाई के हिसाब से दुबली-पतली थी, जबकि ब्लैंच का शरीर देवी की मूर्ति जैसा सुडौल था। ज़ाहिर है, मैं उसे विशेष रुचि से देख रहा था। पहला, मैं यह देखना चाहता था कि क्या उसका रूप-रंग श्रीमती फेयरफैक्स के वर्णन से मेल खाता है; दूसरा, क्या वह मेरे द्वारा बनाए गए उसके काल्पनिक लघुचित्र से मिलता-जुलता है; और तीसरा - जो कि स्पष्ट हो जाएगा! - क्या वह श्री रोचेस्टर की पसंद के अनुरूप है।

व्यक्तित्व के लिहाज से, वह मेरी तस्वीर और श्रीमती फेयरफैक्स के वर्णन से हूबहू मेल खाती थी। सुडौल बबूला शरीर, झुके हुए कंधे, आकर्षक गर्दन, गहरी आंखें और

काले घुंघराले बाल सब कुछ मौजूद था; लेकिन उसका चेहरा? उसका चेहरा उसकी माँ जैसा था; एक युवा, झुर्रियों रहित चेहरा: वही नीचा माथा, वही उभरे हुए नैन-नक्श, वही गर्व। हालांकि, यह इतना गंभीर गर्व नहीं था! वह लगातार हंसती रहती थी; उसकी हंसी व्यंग्यात्मक थी, और उसके होंठों का स्वाभाविक रूप से उभरा हुआ और अभिमानी भाव भी वैसा ही था।

प्रतिभावान व्यक्ति को आत्म-जागरूक कहा जाता है। मैं यह तो नहीं कह सकती कि मिस इंग्राम प्रतिभाशाली थीं या नहीं, लेकिन वे आत्म-जागरूक थीं—वास्तव में असाधारण रूप से। उन्होंने सौम्य श्रीमती डेंट के साथ वनस्पति विज्ञान पर चर्चा शुरू की। ऐसा प्रतीत हुआ कि श्रीमती डेंट ने इस विज्ञान का अध्ययन नहीं किया था: हालाँकि, जैसा कि उन्होंने कहा, उन्हें फूल पसंद थे, "विशेषकर जंगली फूल"; मिस इंग्राम ने इसका अध्ययन किया था, और उन्होंने बड़े ही सलीके से इसकी शब्दावली का वर्णन किया। मुझे शीघ्र ही समझ आ गया कि वे (जिसे बोलचाल की भाषा में कहा जाता है) श्रीमती डेंट की अज्ञानता का फायदा उठा रही थीं—उनका यह प्रयास चतुर हो सकता था, लेकिन निश्चित रूप से सौम्य नहीं था। वे अभिनय करती थीं: उनका प्रदर्शन शानदार था; वे गाती थीं: उनकी आवाज़ सुरीली थी; वे अपनी माँ से अलग से फ्रेंच में बात करती थीं; और वे इसे अच्छी तरह, धाराप्रवाह और स्पष्ट उच्चारण के साथ बोलती थीं।

मैरी का चेहरा ब्लैंच की तुलना में अधिक सौम्य और खुला था; उसके चेहरे की बनावट भी कोमल थी और त्वचा भी कुछ हद तक गोरी थी (मिस इंग्राम का रंग स्पेनिश महिला की तरह गहरा था) - लेकिन मैरी में जीवन की कमी थी: उसके चेहरे पर भावहीनता थी, उसकी आँखों में चमक नहीं थी; वह कुछ बोलती नहीं थी, और एक बार अपनी जगह पर बैठ जाने के बाद, वह मूर्ति की तरह स्थिर खड़ी रहती थी। दोनों बहनें बेदाग सफेद वस्त्र पहने हुए थीं।

क्या अब मैं मिस इंग्राम को मिस्टर रोचेस्टर के लिए एक उपयुक्त विकल्प मान सकती थी? मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकती थी—मुझे उनकी स्त्री सौंदर्य की पसंद का ज्ञान नहीं था। यदि उन्हें राजसी सौंदर्य पसंद था, तो वह साक्षात राजसी सौंदर्य थीं: साथ ही वह निपुण और चंचल भी थीं। मुझे लगा कि अधिकांश सज्जन उनकी प्रशंसा करेंगे; और उन्होंने वास्तव में उनकी प्रशंसा की, इसका प्रमाण मुझे मिल चुका था: संदेह की अंतिम किरण को दूर करने के लिए, बस उन्हें एक साथ देखना बाकी था।

पाठक, आपको यह नहीं समझना चाहिए कि एडेल इस पूरे समय मेरे पैरों के पास स्टूल पर बिना हिले-डुले बैठी रही: नहीं; जब महिलाएं अंदर आईं, तो वह उठीं, उनसे मिलने के लिए आगे बढ़ीं, गरिमापूर्ण प्रणाम किया और गंभीरता से बोलीं—

"सुप्रभात महिलाओं।"

और मिस इंग्राम ने उपहास भरे लहजे में उसकी ओर देखा और कहा, "ओह, कितनी छोटी कठपुतली है!"

लेडी लिन ने टिप्पणी की, "मुझे लगता है कि यह मिस्टर रोचेस्टर की देखरेख में पली हुई बच्ची है - वही छोटी फ्रांसीसी लड़की जिसके बारे में वह बात कर रहे थे।"

श्रीमती डेंट ने स्नेहपूर्वक उनका हाथ पकड़ा और उन्हें चूमा।

एमी और लुइसा एश्टन एक साथ चिल्लाईं - "बच्चे का कितना प्यारा प्यार!"

और फिर उन्होंने उसे एक सोफे पर बुलाया, जहाँ वह अब उनके बीच आराम से बैठी थी, बारी-बारी से फ्रेंच और टूटी-फूटी अंग्रेजी में बातें कर रही थी; न केवल युवतियों का ध्यान आकर्षित कर रही थी, बल्कि श्रीमती एश्टन और लेडी लिन का भी ध्यान आकर्षित कर रही थी, और जी भर कर लाड़-प्यार पा रही थी।

अंततः कॉफ़ी लाई जाती है, और सज्जनों को बुलाया जाता है। मैं छाया में बैठता हूँ—अगर इस चकाचौंध से भरे कमरे में कहीं छाया हो भी तो; खिड़की का पर्दा मुझे आधा छिपा लेता है। फिर मेहराब खुलती है; वे आते हैं। सज्जनों का सामूहिक रूप, महिलाओं की तरह, बहुत प्रभावशाली है: वे सभी काले वस्त्रों में हैं; उनमें से अधिकांश लंबे हैं, कुछ युवा हैं। हेनरी और फ्रेडरिक लिन वास्तव में बहुत ही आकर्षक और जोशीले हैं; और कर्नल डेंट एक शानदार सिपाही हैं। जिले के मजिस्ट्रेट श्री एश्टन एक सज्जन व्यक्ति हैं: उनके बाल बिल्कुल सफेद हैं, उनकी भौहें और मूंछें अभी भी काली हैं, जो उन्हें एक "साहसिक कुलीन" का रूप देती हैं। लॉर्ड इंग्राम, अपनी बहनों की तरह, बहुत लंबे हैं; उनकी तरह, वे भी सुंदर हैं; लेकिन उनमें मैरी की तरह उदासीनता और उदासी झलकती है: ऐसा लगता है कि उनके शरीर की लंबाई तो अधिक है लेकिन रक्त में स्फूर्ति या मस्तिष्क में शक्ति नहीं है।

और मिस्टर रोचेस्टर कहाँ हैं?

वह सबसे आखिर में आता है: मैं मेहराब की ओर नहीं देख रही हूँ, फिर भी मैं उसे अंदर आते हुए देखती हूँ। मैं अपना ध्यान उन बुनाई की सुइयों पर, उस पर्स के जालों पर केंद्रित करने की कोशिश करती हूँ जिसे मैं बना रही हूँ—मैं केवल अपने हाथों में

किए काम के बारे में सोचना चाहती हूँ, केवल अपनी गोद में पड़े चाँदी के मोतियों और रेशमी धागों को देखना चाहती हूँ; जबकि, मैं उसकी आकृति को स्पष्ट रूप से देखती हूँ, और मुझे वह क्षण याद आ जाता है जब मैंने उसे आखिरी बार देखा था; ठीक उसके बाद जब मैंने उसे वह सेवा दी थी जिसे वह आवश्यक समझता था, और वह मेरा हाथ पकड़े हुए, मेरे चेहरे की ओर देखते हुए, मुझे उन आँखों से देख रहा था जो एक भरे हुए और उमड़ते हुए दिल को दर्शाती थीं; जिसकी भावनाओं में मेरा भी कुछ अंश था। उस क्षण मैं उसके कितने करीब आ गई थी! उसके बाद ऐसा क्या हुआ था, जिसने उसकी और मेरी सापेक्ष स्थिति को बदल दिया था? फिर भी अब, हम कितने दूर, कितने अजनबी हो गए थे! इतने अजनबी कि मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह आकर मुझसे बात करेगा। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, जब उसने मेरी ओर देखे बिना, कमरे के दूसरी ओर बैठ गया, और कुछ महिलाओं से बातचीत करने लगा।

जैसे ही मैंने देखा कि उसका ध्यान पूरी तरह से उन पर केंद्रित है, और मैं बिना किसी की नज़र में आए उन्हें देख सकती हूँ, मेरी आँखें अनायास ही उसके चेहरे की ओर खिंच गईं; मैं अपनी पलकों को रोक नहीं पाई: वे उठतीं और उसकी पुतलियाँ उस पर टिक जातीं। मैंने देखा, और देखने में मुझे एक तीव्र आनंद मिला—एक अनमोल फिर भी मार्मिक आनंद; शुद्ध सोने जैसा, जिसमें पीड़ा की एक तीखी नोक थी: ऐसा आनंद जैसा प्यास से मरते हुए उस व्यक्ति को महसूस होता है जो जानता है कि जिस कुएँ तक वह रेंगकर गया है वह विषैला है, फिर भी झुककर उस पवित्र जल को पीता है।

यह बात बिल्कुल सच है कि "सुंदरता देखने वाले की नज़र में होती है।" मेरे स्वामी का रंगहीन, जैतून जैसा चेहरा, चौकोर, भारी माथा, चौड़ी और काली भौहें, गहरी आँखें, सशक्त चेहरे की बनावट, दृढ़, गंभीर होंठ— ऊर्जा, दृढ़ निश्चय और इच्छाशक्ति से परिपूर्ण— नियम के अनुसार सुंदर नहीं थे; लेकिन मेरे लिए वे सुंदरता से कहीं अधिक थे; उनमें एक ऐसी रुचि, एक ऐसा प्रभाव था जिसने मुझे पूरी तरह से अपने वश में कर लिया— जिसने मेरी भावनाओं को मेरे अपने वश से छीनकर अपने बंधन में बांध लिया। मेरा उनसे प्रेम करने का इरादा नहीं था; पाठक जानते हैं कि मैंने अपनी आत्मा से प्रेम के उन बीजों को मिटाने के लिए बहुत प्रयास किए थे; और अब, उन्हें पहली बार फिर से देखते ही, वे स्वतः ही हरे-भरे और प्रबल होकर प्रकट हो गए! उन्होंने बिना मेरी ओर देखे ही मुझे उनसे प्रेम करने पर मजबूर कर दिया।

मैंने उनकी तुलना उनके मेहमानों से की। लिन परिवार की वीरतापूर्ण गरिमा, लॉर्ड इंग्राम की शांत शालीनता, यहाँ तक कि कर्नल डेंट की सैन्य विशिष्टता, उनकी सहज सारगर्भित और वास्तविक शक्ति से बिल्कुल विपरीत थीं। मुझे उनके रूप-रंग, उनके भावों से कोई सहानुभूति नहीं थी: फिर भी मैं कल्पना कर सकता था कि अधिकांश पर्यवेक्षक उन्हें आकर्षक, सुंदर और प्रभावशाली कहेंगे; जबकि वे श्री रोचेस्टर को कठोर चेहरे वाला और उदास दिखने वाला कहेंगे। मैंने उन्हें मुस्कुराते और हंसते देखा - कुछ भी नहीं; मोमबत्तियों की रोशनी में उनकी मुस्कान जितनी ही आत्मा थी; घंटी की झंकार में उनकी हंसी जितना ही महत्व था। मैंने श्री रोचेस्टर को मुस्कुराते देखा: - उनके कठोर चेहरे नरम पड़ गए; उनकी आँखें चमकीली और कोमल हो गईं, उनकी किरण खोजपूर्ण और मधुर दोनों थी। उस समय वे लुईसा और एमी एश्टन से बात कर रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने उस दृष्टि को शांति से ग्रहण किया जो मुझे इतनी भेदक लग रही थी: मुझे उम्मीद थी कि उनकी आँखें झुक जाएँगी, उनके चेहरे का रंग खिल उठेगा; लेकिन मुझे खुशी हुई जब मैंने पाया कि वे जरा भी विचलित नहीं हुए थे। "वह उनके लिए वैसा नहीं है जैसा मेरे लिए है," मैंने सोचा: "वह उनके जैसा नहीं है। मुझे विश्वास है कि वह मेरे जैसा है; — मुझे पूरा यकीन है कि वह है — मैं उससे जुड़ाव महसूस करती हूँ — मैं उसके चेहरे और हाव-भाव की भाषा समझती हूँ: हालाँकि पद और धन हमें अलग करते हैं, मेरे दिमाग और दिल में, मेरे खून और नसों में कुछ ऐसा है जो मुझे मानसिक रूप से उससे जोड़ता है। क्या मैंने कुछ दिन पहले कहा था कि मेरा उससे कोई लेना-देना नहीं है सिवाय उसके हाथों से वेतन लेने के? क्या मैंने खुद को उसे वेतनदाता के अलावा किसी और रूप में सोचने से रोका था? यह तो प्रकृति के विरुद्ध है! मेरी हर अच्छी, सच्ची, सशक्त भावना अनायास ही उसके चारों ओर इकट्ठा हो जाती है। मैं जानती हूँ कि मुझे अपनी भावनाओं को छिपाना होगा: मुझे आशा को कुचलना होगा; मुझे याद रखना होगा कि वह मेरी परवाह नहीं करता। क्योंकि जब मैं कहती हूँ कि मैं उसके जैसी हूँ, तो मेरा मतलब यह नहीं है कि मुझमें उसके जैसा प्रभाव डालने की शक्ति और उसके जैसा आकर्षण है; मेरा मतलब केवल इतना है कि मेरी कुछ रुचियाँ और भावनाएँ उससे मिलती-जुलती हैं। इसलिए, मुझे लगातार दोहराना होगा कि हम हमेशा के लिए हैं अलग-थलग: — और फिर भी, जब तक मैं सांस लेती हूं और सोचती हूं, मुझे उससे प्यार करना चाहिए।"

कॉफी परोसी जाती है। सज्जनों के आने के बाद से महिलाएं चहचहाने लगी हैं;

बातचीत तेज और खुशनुमा हो जाती है। कर्नल डेंट और मिस्टर एश्टन राजनीति पर बहस करते हैं; उनकी पत्नियां सुनती हैं। दो स्वाभिमानी विधवाएं, लेडी लिन और लेडी इंग्राम, आपस में बातें करती हैं। सर जॉर्ज—जिनका वर्णन करना मैं भूल गया—एक बहुत बड़े और तरोताजा दिखने वाले देहाती सज्जन, उनके सोफे के सामने कॉफी का कप हाथ में लिए खड़े हैं और बीच-बीच में कुछ बोलते हैं। मिस्टर फ्रेडरिक लिन मैरी इंग्राम के बगल में बैठ गए हैं और उन्हें एक शानदार किताब की नक्काशी दिखा रहे हैं: वह देखती हैं, बीच-बीच में मुस्कुराती हैं, लेकिन जाहिर तौर पर ज्यादा कुछ नहीं कहतीं। लंबे और शांत लॉर्ड इंग्राम छोटी और चंचल एमी एश्टन की कुर्सी की पीठ पर हाथ बांधकर झुके हुए हैं; वह उनकी ओर देखती हैं और चिड़िया की तरह चहचहाती हैं: वह उन्हें मिस्टर रोचेस्टर से ज्यादा पसंद करती हैं। हेनरी लिन ने लुइसा के पैरों के पास रखे एक ओटोमन पर कब्ज़ा कर लिया है: एडेल उसके साथ उस पर बैठी है: वह उससे फ्रेंच में बात करने की कोशिश कर रहा है, और लुइसा उसकी गलतियों पर हंस रही है। ब्लैंच इंग्राम किसके साथ जोड़ी बनाएगी? वह मेज पर अकेली खड़ी है, एक एल्बम पर झुकी हुई है। ऐसा लगता है जैसे वह किसी के बुलावे का इंतज़ार कर रही हो; लेकिन वह ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करेगी: वह खुद ही अपना साथी चुन लेती है।

एश्टन परिवार को छोड़कर, मिस्टर रोचेस्टर चूल्हे के पास उतने ही अकेले खड़े हैं जितनी वह मेज के पास खड़ी है: वह उनका सामना करती है, और मेंटलपीस के दूसरी तरफ अपनी जगह ले लेती है।

“श्रीमान रोचेस्टर, मुझे लगा था कि आपको बच्चे पसंद नहीं हैं?”

"न ही मैं हूँ।"

“तो फिर, आपको उस नन्ही गुड़िया की जिम्मेदारी लेने की प्रेरणा कहाँ से मिली?” (एडेल की ओर इशारा करते हुए)। “आपने उसे कहाँ से उठाया?”

मैंने उसे नहीं उठाया; उसे मेरे पास छोड़ दिया गया था।

आपको उसे स्कूल भेजना चाहिए था।

मैं इसका खर्च नहीं उठा सकता था: स्कूल बहुत महंगे हैं।

“अरे, मुझे लगता है आपने उसके लिए एक देखभाल करने वाली रखी होगी: मैंने अभी-अभी उसके साथ एक व्यक्ति को देखा था – क्या वह चली गई? ओह, नहीं! वह अभी भी खिड़की के पर्दे के पीछे है। आप उसे वेतन देते होंगे, बिल्कुल; मुझे लगता है कि यह काफी महंगा होगा, बल्कि उससे भी ज्यादा; क्योंकि आपको उन

दोनों का भी खर्चा उठाना पड़ेगा।”

मुझे डर था—या यूँ कहूँ, उम्मीद थी?—कि मेरे बारे में किए गए संकेत से मिस्टर रोचेस्टर मेरी तरफ देखेंगे; और मैं अनजाने में ही छाया में और पीछे हट गई: लेकिन उन्होंने अपनी नज़रें मेरी तरफ नहीं घुमाईं।

"मैंने इस विषय पर विचार नहीं किया है," उसने उदासीनता से कहा, सीधे अपने सामने देखते हुए।

“नहीं, तुम मर्द तो मितव्ययिता और सामान्य ज्ञान के बारे में कभी सोचते ही नहीं। माँ की बात सुनो, जब वह शिक्षिकाओं के बारे में बात करती हैं: मैरी और मैंने अपने समय में कम से कम एक दर्जन शिक्षिकाएँ रखी थीं; उनमें से आधी घृणित थीं और बाकी हास्यास्पद, और सभी बुरी आत्माओं जैसी थीं - है ना माँ?”

"क्या तुमने मेरी बात सुनी?"

इस प्रकार विधवा की विशेष संपत्ति होने का दावा करने वाली युवती ने स्पष्टीकरण के साथ अपना प्रश्न दोहराया।

“मेरी प्यारी, गवर्नेंस का ज़िक्र मत करो; यह शब्द मुझे बेचैन कर देता है। मैंने उनकी अक्षमता और मनमानी के कारण बहुत कष्ट झेला है। मैं ईश्वर का शुक्र अदा करती हूँ कि अब उनसे मेरा काम तमाम हो गया है!”

श्रीमती डेंट यहाँ उस धर्मपरायण महिला की ओर झुकीं और उनके कान में कुछ फुसफुसाया; मुझे लगता है, जो जवाब मिला उससे, यह एक याद दिलाना था कि शापित जाति का एक व्यक्ति वहाँ मौजूद था।

“कोई बात नहीं!” महारानी ने कहा, “मुझे उम्मीद है कि इससे उसे फायदा होगा!” फिर, धीमी आवाज़ में, लेकिन इतनी तेज़ कि मैं सुन सकूँ, “मैंने उसे देखा; मैं चेहरे की बनावट को परखने में माहिर हूँ, और उसके चेहरे में मुझे उसके वर्ग की सारी कमियाँ नज़र आती हैं।”

“ये क्या हैं, महोदया?” श्री रोचेस्टर ने जोर से पूछा।

"मैं तुम्हें चुपके से बताऊंगी," उसने अपने सिर पर पहनी पगड़ी को तीन बार हिलाते हुए गंभीर भाव से जवाब दिया।

लेकिन मेरी जिज्ञासा अपनी भूख से आगे निकल जाएगी; अब उसे भोजन की भूख है।

"ब्लांच से पूछो; वह मुझसे ज्यादा तुम्हारे करीब है।"

“ओह, माँ, उसका ज़िक्र मेरे पास मत करो! मुझे तो पूरे परिवार के बारे में बस एक ही बात कहनी है; वे सब झंझट हैं। ऐसा नहीं है कि मुझे उनसे कभी कोई परेशानी हुई हो; मैंने तो पासा पलटने का पूरा ध्यान रखा। थियोडोर और मैं अपनी मिस विल्सन, मिसेज़ ग्रे और मैडम जौबर्ट पर क्या-क्या शरारतें करते थे! मैरी हमेशा इतनी नींद में रहती थी कि किसी भी शरारत में बढ़-चढ़कर हिस्सा नहीं ले पाती थी। सबसे ज़्यादा मज़ा मैडम जौबर्ट के साथ आता था: मिस विल्सन बेचारी कमज़ोर, आँसू बहाने वाली और उदास थीं, उन्हें हराने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी; और मिसेज़ ग्रे रूखी और बेपरवाह थीं; उन पर किसी भी चोट का कोई असर नहीं होता था। लेकिन बेचारी मैडम जौबर्ट! मुझे आज भी उनकी उग्र अवस्था याद है, जब हम उन्हें हद से ज़्यादा परेशान कर देते थे—चाय गिरा देते थे, ब्रेड-बटर चूर-चूर कर देते थे, किताबें छत तक उछाल देते थे, और स्केल, डेस्क, फेंडर और आग जलाने के औज़ारों से खेल खेलते थे। थियोडोर, क्या तुम्हें वे मज़ेदार दिन याद हैं?”

“हाँ, बिल्कुल,” लॉर्ड इंग्राम ने धीमी आवाज़ में कहा; “और बेचारी बूढ़ी छड़ी चिल्लाती थी, ‘अरे तुम बदमाश बच्चों!’ — और फिर हम उसे समझाते थे कि हम जैसे चतुर लोगों को सिखाने की कोशिश करना कितना गलत है, जबकि वह खुद इतनी अज्ञानी है।”

“हमने किया था; और, टेडो, तुम्हें पता है, मैंने तुम्हारे ट्यूटर, फीके चेहरे वाले मिस्टर वाइनिंग—जिन्हें हम 'पार्सन इन द पिप' कहते थे—पर मुकदमा चलाने (या सताने) में तुम्हारी मदद की थी। उन्होंने और मिस विल्सन ने एक-दूसरे के प्यार में पड़ने की हद पार कर दी थी—कम से कम टेडो और मैंने तो यही सोचा था; हमने कई बार उनकी कोमल निगाहों और आहों को देखा, जिन्हें हमने 'ला बेले पैशन' के संकेत समझा, और मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि जनता को जल्द ही हमारी इस खोज का पता चल गया; हमने इसका इस्तेमाल अपने बोझ को घर से निकालने के लिए एक तरह से हथियार के तौर पर किया। प्यारी माँ, जैसे ही उन्हें इस बात का जरा सा भी पता चला, उन्हें समझ आ गया कि यह अनैतिक प्रवृत्ति का मामला है। है ना, मेरी प्यारी माँ?”

“निश्चित रूप से, मेरी सबसे अच्छी राय। और मैं बिल्कुल सही थी: इस पर भरोसा रखें: किसी भी सुव्यवस्थित गृह में शिक्षिकाओं और शिक्षकों के बीच संबंधों को एक पल के लिए भी बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए, इसके हज़ार कारण हैं; पहला कारण

—"

"ओह, कृपालु माँ! हमें इन सब बातों की सूची से मुक्त कीजिए! बाकी सब तो हम जानते ही हैं: बचपन की मासूमियत के लिए बुरे उदाहरण का खतरा; ध्यान भटकना और परिणामस्वरूप साथी द्वारा कर्तव्य की उपेक्षा; आपसी गठबंधन और भरोसा; उससे उत्पन्न विश्वास; उसके साथ आने वाली धृष्टता; विद्रोह और व्यापक उथल-पुथल। क्या मैं सही कह रही हूँ, बैरोनेस इंग्राम, इंग्राम पार्क की?"

"मेरी प्यारी लिली, तुम अभी भी वैसी ही हो, जैसी हमेशा से हो।"

"तो फिर और कुछ कहने की जरूरत नहीं: विषय बदल दीजिए।"

एमी एश्टन ने इस बात को अनसुना करते हुए, अपनी कोमल, बचकानी आवाज़ में कहा: "लुईसा और मैं भी अपनी गवर्नेंस से सवाल-जवाब किया करते थे; लेकिन वह इतनी अच्छी इंसान थीं कि सब कुछ सह लेती थीं: कोई भी बात उन्हें परेशान नहीं करती थी। वह हमसे कभी नाराज़ नहीं होती थीं; थीं क्या, लुईसा?"

"नहीं, कभी नहीं: हम जो चाहें कर सकते थे; उसकी डेस्क और वर्कबॉक्स की तलाशी ले सकते थे, और उसके दराजों को उलट-पुलट कर सकते थे; और वह इतनी नेक दिल थी कि हम जो भी मांगते, वह हमें दे देती।"

मिस इंग्राम ने व्यंग्य से होंठ सिकोड़ते हुए कहा, "मुझे लगता है, अब हमारे पास सभी मौजूदा शिक्षिकाओं के संस्मरणों का एक सार होगा: ऐसी स्थिति से बचने के लिए, मैं एक नए विषय को शामिल करने का प्रस्ताव रखती हूँ। श्री रोचेस्टर, क्या आप मेरे प्रस्ताव का समर्थन करते हैं?"

"महोदया, मैं इस मुद्दे पर आपका समर्थन करता हूं, जैसा कि अन्य सभी मुद्दों पर करता हूं।"

"तो फिर इसे आगे लाने की जिम्मेदारी मुझ पर है। श्री एडुआर्डो, क्या आप आज रात बोलने के लिए उपलब्ध हैं?"

"डोना बियांका, अगर आप आदेश देंगी तो मैं आ जाऊंगा।"

"तो, महाराज, मैं आपको यह सर्वोच्च आदेश देता हूँ कि आप अपने फेफड़ों और अन्य स्वर अंगों को सुसज्जित कर लें, क्योंकि मेरी शाही सेवा में इनकी आवश्यकता होगी।"

"इतनी दिव्य मरियम का रिज़ियो कौन नहीं बनना चाहेगा?"

"रिज़ियो भाड़ में जाए!" वह अपने घुंघराले बालों को लहराते हुए चिल्लाई और

पियानो की ओर बढ़ी। “मेरी राय में वायलिन वादक डेविड एक नीरस किस्म का आदमी रहा होगा; मुझे काला बोथवेल ज़्यादा पसंद है: मेरे विचार में एक आदमी में शैतान का अंश होना ही चाहिए; और इतिहास जेम्स हेपबर्न के बारे में जो चाहे कहे, लेकिन मुझे लगता है कि वह बिल्कुल वैसा ही जंगली, क्रूर, डाकू नायक था जिसे मैं अपना हाथ देने के लिए तैयार हो जाती।”

“सज्जनों, सुनिए! अब आप में से कौन बोथवेल से सबसे ज्यादा मिलता-जुलता है?” श्री रोचेस्टर ने चिल्लाकर कहा।

“मुझे कहना चाहिए कि प्राथमिकता आपके पास है,” कर्नल डेंट ने जवाब दिया।

“मैं अपनी ईमानदारी की कसम खाता हूँ, मैं आपका बहुत आभारी हूँ,” यह उत्तर मिला।

मिस इंग्राम, जो अब गर्व और गरिमा के साथ पियानो पर बैठी थीं, अपने बर्फीले सफेद वस्त्रों को राजसी अंदाज में फैलाए हुए, एक शानदार प्रस्तावना शुरू की; साथ ही साथ बातें भी कर रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो आज रात वह अपने पूरे शौर्य में थीं; उनके शब्द और हावभाव दोनों ही श्रोताओं की न केवल प्रशंसा, बल्कि विस्मय भी जगाने के लिए थे: वह स्पष्ट रूप से उन्हें बेहद साहसी और निडर व्यक्ति के रूप में प्रभावित करने पर तुली हुई थीं।

“ओह, मैं आजकल के नौजवानों से तंग आ चुकी हूँ!” वह वाद्य यंत्र बजाते हुए बोली। “बेचारे, कमज़ोर से, पापा के घर के गेट से एक कदम भी बाहर निकलने लायक नहीं: और मम्मी की इजाज़त और देखरेख के बिना तो इतनी दूर भी नहीं जा सकते! ऐसे प्राणी जो अपने सुंदर चेहरों, गोरे हाथों और छोटे पैरों की चिंता में इतने डूबे रहते हैं; मानो सुंदरता से किसी पुरुष का कोई लेना-देना हो! मानो सुंदरता स्त्री का विशेष अधिकार न हो—उसका जायज़ हक और विरासत! मैं मानती हूँ कि बदसूरत स्त्री सृष्टि के सुंदर चेहरे पर धब्बा है; लेकिन सज्जनों की बात करें तो, उन्हें केवल बल और वीरता पर ध्यान देना चाहिए: उनका आदर्श वाक्य होना चाहिए:—शिकार करो, गोली चलाओ और लड़ो: बाकी सब बेकार है। अगर मैं पुरुष होती तो यही मेरी योजना होती।”

“जब भी मेरी शादी होगी,” उसने कुछ देर रुकने के बाद कहा, “मैंने ठान लिया है कि मेरा पति मेरा प्रतिद्वंदी नहीं, बल्कि मेरा साथी होगा। मैं सिंहासन के पास किसी प्रतिद्वंदी को बर्दाश्त नहीं करूंगी; मैं उससे पूर्ण निष्ठा की अपेक्षा रखूंगी: उसकी भक्ति

मुझमें और उसके आईने में दिखने वाली छवि में बँटी नहीं होगी। श्री रोचेस्टर, अब आप गाइए, मैं आपके लिए बजाऊंगी।”

“मैं पूर्णतः आज्ञाकारी हूँ,” यह उत्तर था।

“तो ये एक समुद्री लुटेरों का गीत है। जान लो कि मैं समुद्री लुटेरों से प्रेम करता हूँ; और इसीलिए इसे पूरे मन से गाओ।”

"मिस इंग्राम के मुख से निकले आदेश दूध और पानी के मग में भी जान डाल देते थे।"

"इसलिए सावधान रहना: यदि तुम मुझे प्रसन्न नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें यह दिखाकर शर्मिंदा कर दूंगा कि ऐसे काम कैसे किए जाने चाहिए।"

"यह अक्षमता को बढ़ावा देने जैसा है: मैं अब असफल होने का प्रयास करूंगा।"

“सावधान! यदि तुम जानबूझकर गलती करोगे, तो मैं तुम्हें उचित दंड दूंगा।”

"मिस इंग्राम को दयालु होना चाहिए, क्योंकि उनके पास ऐसी सजा देने की शक्ति है जो किसी भी इंसान की सहनशीलता से परे हो।"

“हा! समझाओ!” महिला ने आदेश दिया।

"क्षमा कीजिए महोदया: स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है; आपकी अपनी विवेकशीलता ही आपको यह बता देगी कि आपकी एक भौंह ही मृत्युदंड के लिए पर्याप्त होगी।"

“गाओ!” उसने कहा, और फिर से पियानो को छूते हुए, उसने जोशपूर्ण शैली में संगत शुरू कर दी।

“अब मेरे यहाँ से निकल जाने का समय आ गया है,” मैंने सोचा: लेकिन तभी हवा में गूंजती आवाज़ों ने मुझे रोक दिया। श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा था कि श्री रोचेस्टर की आवाज़ बहुत सुरीली है: और सच में थी – एक मधुर, दमदार बेस, जिसमें वे अपनी भावनाएँ, अपना जोश उड़ेल देते थे; कानों से दिल तक पहुँचने का रास्ता बनाते हुए, और वहाँ अजीब तरह से संवेदना जगाते हुए। मैंने आखिरी गहरी और पूरी आवाज़ के शांत होने तक इंतज़ार किया – जब तक बातचीत का सिलसिला, जो एक पल के लिए रुका था, फिर से शुरू नहीं हो गया; तब मैं अपने सुरक्षित कोने से निकला और बगल वाले दरवाज़े से बाहर निकल गया, जो सौभाग्य से पास ही था। वहाँ से एक संकरा रास्ता हॉल में जाता था: उसे पार करते हुए, मैंने देखा कि मेरी चप्पल ढीली है; मैं उसे बाँधने के लिए रुका, और सीढ़ियों के नीचे बिछी चटाई पर घुटने टेक दिए। मैंने

भोजन कक्ष का दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनी; एक सज्जन बाहर आए; जल्दी से उठकर, मैं उनके सामने खड़ा हो गया: वे श्री रोचेस्टर थे।

"आप कैसे हैं?" उसने पूछा।

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ, महोदय।"

"तुम कमरे में आकर मुझसे बात क्यों नहीं की?"

मैंने सोचा कि जिसने यह सवाल पूछा था, उसे ही पलटकर जवाब दे दूं: लेकिन मैं यह आज़ादी नहीं लेना चाहता था। मैंने जवाब दिया—

"मैं आपको परेशान नहीं करना चाहता था, क्योंकि आप किसी काम में व्यस्त लग रहे थे, महोदय।"

"मेरी अनुपस्थिति में तुम क्या कर रहे थे?"

"कुछ खास नहीं; हमेशा की तरह एडेल को पढ़ा रहा हूँ।"

"और तुम पहले से काफी पीले पड़ गए हो – जैसा कि मैंने पहली नजर में ही देख लिया। क्या बात है?"

"बिल्कुल नहीं, महोदय।"

"क्या उस रात जब तुमने मुझे लगभग डुबो दिया था, तुम्हें सर्दी लग गई थी?"

"बिल्कुल भी नहीं।"

"ड्राइंग रूम में वापस जाओ: तुम बहुत जल्दी जा रहे हो।"

"मैं थक गया हूँ, महोदय।"

उसने एक मिनट तक मेरी तरफ देखा।

"और थोड़ा उदास भी," उसने कहा। "किस बात पर? बताओ।"

"कुछ नहीं—कुछ नहीं, महोदय। मैं अवसादग्रस्त नहीं हूँ।"

"पर मैं यकीन करता हूँ कि तुम बहुत उदास हो: कुछ और शब्द सुनने से तुम्हारी आँखों में आँसू आ जाएँगे — सचमुच, अभी तुम्हारी आँखों में आँसू हैं, चमक रहे हैं और बह रहे हैं; और एक बूंद चाबुक से फिसलकर झंडे पर गिर गई है। अगर मेरे पास समय होता, और मुझे किसी घमंडी नौकर के आने का डर न होता, तो मैं समझ जाता कि इन सबका क्या मतलब है। खैर, आज रात के लिए मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ; लेकिन समझ लो कि जब तक मेरे मेहमान यहाँ रहेंगे, मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम हर शाम ड्राइंग रूम में आओगे; यही मेरी इच्छा है; इसे नज़रअंदाज़ मत करना। अब जाओ, और सोफी को एडेल के लिए भेज दो। शुभ रात्रि, मेरे —" वह रुक गया, अपने होंठ काटे,

और अचानक मुझे छोड़कर चला गया।

अध्याय अठारह

थॉर्नफील्ड हॉल में ये दिन बहुत खुशनुमा और व्यस्त थे; पहले तीन महीने जो मैंने इस घर की छत के नीचे शांति, नीरसता और एकांत में बिताए थे, उनसे ये कितना अलग था! ऐसा लगता था मानो सारी उदासी घर से दूर हो गई हो, सारी निराशाजनक यादें भुला दी गई हों: हर जगह जीवन था, दिन भर चहल-पहल रहती थी। अब आप गैलरी में, जो कभी इतनी शांत रहती थी, या सामने के कमरों में, जो कभी इतने खाली रहते थे, बिना किसी सजी-धजी नौकरानी या सजे-धजे नौकर से मिले प्रवेश नहीं कर सकते थे।

रसोईघर, बटलर की पेंट्री, नौकरों का हॉल, प्रवेश हॉल, सभी जगहें गुलजार थीं; और जब सुहावने बसंत के मौसम में नीला आसमान और धूप खिली होती थी, तो हॉल खाली और शांत हो जाते थे, क्योंकि धूप में लोग बाहर मैदान में निकल आते थे। यहाँ तक कि जब मौसम बदल जाता था और कई दिनों तक लगातार बारिश होती थी, तब भी आनंद पर कोई असर नहीं पड़ता था: बाहर की चहल-पहल रुकने के कारण घर के अंदर के मनोरंजन और भी अधिक जीवंत और विविध हो जाते थे।

मुझे आश्चर्य हुआ कि मनोरंजन में बदलाव का प्रस्ताव रखे जाने पर वे पहली शाम क्या करेंगे: उन्होंने "चरडेस खेलने" की बात कही, लेकिन अपनी अज्ञानता के कारण मैं उस शब्द को समझ नहीं पाया। नौकरों को बुलाया गया, भोजन कक्ष की मेजें हटा दी गईं, बत्तियाँ इधर-उधर कर दी गईं, और कुर्सियों को मेहराब के सामने अर्धवृत्त में लगा दिया गया। जब श्री रोचेस्टर और अन्य सज्जन इन बदलावों का निर्देश दे रहे थे, तब महिलाएँ अपनी नौकरानियों को बुलाने के लिए सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे दौड़ रही थीं। श्रीमती फेयरफैक्स को शॉल, पोशाक, और किसी भी प्रकार के पर्दों के रूप में

घर में मौजूद सामान के बारे में जानकारी देने के लिए बुलाया गया; और तीसरी मंजिल की कुछ अलमारियों की तलाशी ली गई, और उनके अंदर रखी हुई चीजें, जैसे कि ब्रोकेड और घेरेदार पेटीकोट, साटन के थैले, काले कपड़े, लेस के लबादे आदि, नौकरानियों द्वारा बांहों में भरकर नीचे लाई गईं; फिर उनमें से चयन किया गया, और चुनी गई चीजों को ड्राइंग रूम के भीतर बने बेडरूम में ले जाया गया।

इसी बीच, श्री रोचेस्टर ने फिर से अपने आस-पास की महिलाओं को बुलाया और उनमें से कुछ को अपने दल में शामिल करने के लिए चुन रहे थे। उन्होंने कहा, "मिस इंग्राम मेरी हैं, बिल्कुल।" इसके बाद उन्होंने मिस एश्टन और श्रीमती डेंट के नाम लिए। उन्होंने मेरी ओर देखा: मैं संयोगवश उनके पास ही थी, क्योंकि मैं श्रीमती डेंट के कंगन का ढीला हुआ कुंडा ठीक कर रही थी।

“क्या तुम खेलोगे?” उसने पूछा। मैंने सिर हिला दिया। उसने ज़िद नहीं की, जबकि मुझे डर था कि वह ऐसा ही करेगा; उसने मुझे चुपचाप अपनी सामान्य सीट पर वापस जाने दिया।

वह और उनके सहायक अब पर्दे के पीछे चले गए: दूसरा दल, जिसका नेतृत्व कर्नल डेंट कर रहे थे, कुर्सियों की कतार पर बैठ गया। उनमें से एक सज्जन, श्री एश्टन, ने मुझे देखकर सुझाव दिया कि मुझे भी उनके साथ बैठने के लिए कहा जाए; लेकिन लेडी इंग्राम ने तुरंत इस विचार को अस्वीकार कर दिया।

मैंने उसे कहते सुना, "नहीं, वह इस तरह के किसी भी खेल के लिए बहुत बेवकूफ दिखती है।"

कुछ देर बाद घंटी बजी और पर्दा उठ गया। मेहराब के भीतर, सर जॉर्ज लिन की भारी-भरकम आकृति दिखाई दी, जिन्हें श्री रोचेस्टर ने भी चुना था। वे सफेद चादर में लिपटे हुए थे: उनके सामने, एक मेज पर, एक बड़ी किताब खुली पड़ी थी; और उनके बगल में एमी एश्टन खड़ी थीं, जो श्री रोचेस्टर के लबादे में लिपटी हुई थीं और उनके हाथ में एक किताब थी। किसी अदृश्य व्यक्ति ने खुशी से घंटी बजाई; फिर एडेल (जो अपने अभिभावक के दल में शामिल होने पर अड़ी हुई थी) आगे बढ़ी और अपनी बांह पर रखी फूलों की टोकरी के फूल चारों ओर बिखेर दिए। फिर मिस इंग्राम की भव्य आकृति दिखाई दी, जो सफेद वस्त्र पहने हुए थीं, उनके सिर पर एक लंबा घूंघट था और उनके माथे पर गुलाबों का मुकुट था; उनके बगल में श्री रोचेस्टर चल रहे थे, और वे दोनों मेज के पास पहुंचे। वे घुटने टेककर बैठ गए; जबकि श्रीमती डेंट और लुईसा

एश्टन, जो सफेद वस्त्र पहने हुए थीं, उनके पीछे अपनी-अपनी जगह पर खड़ी हो गईं। इसके बाद मूक अभिनय के साथ एक समारोह हुआ, जिसमें शादी का मूक अभिनय आसानी से पहचाना जा सकता था। समारोह के समापन पर, कर्नल डेंट और उनके साथियों ने दो मिनट तक फुसफुसाते हुए परामर्श किया, फिर कर्नल ने पुकारा —

"दुल्हन!" श्री रोचेस्टर ने झुककर अभिवादन किया और पर्दा गिर गया।

काफी समय बीतने के बाद वह फिर से उठा। दूसरी बार उठने पर पहले से कहीं अधिक भव्य दृश्य दिखाई दिया। जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, ड्राइंग रूम डाइनिंग रूम से दो सीढ़ियाँ ऊपर था, और ऊपरी सीढ़ी के शीर्ष पर, कमरे के अंदर एक या दो गज पीछे, एक बड़ा संगमरमर का बेसिन रखा हुआ था - जिसे मैंने कंज़र्वेटरी की एक सजावटी वस्तु के रूप में पहचाना - जहाँ वह आमतौर पर विदेशी पौधों से घिरा हुआ और सुनहरी मछलियों से भरा रहता था - और जहाँ से इसे इसके आकार और वजन के कारण बड़ी मुश्किल से लाया गया होगा।

इस कुंड के किनारे कालीन पर श्री रोचेस्टर शॉल ओढ़े और सिर पर पगड़ी बांधे बैठे दिखाई दिए। उनकी गहरी आंखें, सांवली त्वचा और पयनिम जैसी विशेषताएं उनके पहनावे से बिल्कुल मेल खाती थीं: वे किसी पूर्वी अमीर, किसी राजकवि या विजय के शिकार की तरह लग रहे थे। तभी मिस इंग्राम नजर आईं। वे भी पूर्वी शैली में सजी थीं: कमर पर लाल रंग का दुपट्टा बंधा था; कनपटी पर कढ़ाई वाला रूमाल बंधा था; उनकी सुडौल भुजाएं खुली थीं, जिनमें से एक सिर पर रखे घड़े को थामे हुए थी। उनकी शारीरिक बनावट, रंग-रूप और हाव-भाव से ऐसा लग रहा था मानो वे किसी पितृसत्तात्मक युग की इजरायली राजकुमारी हों; और निस्संदेह वे इसी चरित्र को प्रस्तुत करना चाहती थीं।

वह कुंड के पास गई और अपना घड़ा भरने के लिए झुकी; फिर उसने घड़ा अपने सिर तक उठाया। कुएँ के किनारे खड़ा व्यक्ति अब उससे बात करने लगा, मानो कोई अनुरोध कर रहा हो: — "वह जल्दी से उठी, अपना घड़ा हाथ में लिया और उसे पानी पिलाया।" फिर उसने अपने वस्त्र के भीतर से एक संदूक निकाला, उसे खोला और उसमें शानदार कंगन और झुमके दिखाए; उसने आश्चर्य और प्रशंसा का भाव दिखाया; घुटने टेककर उसने खजाना उसके चरणों में रख दिया; उसकी निगाहों और हाव-भाव से अविश्वास और प्रसन्नता दोनों झलक रही थी; अजनबी ने उसके हाथों में कंगन और कानों में बालियाँ पहना दीं। वे एलीएज़र और रेबेका थे: केवल ऊँट ही नहीं थे।

भविष्यवाणी करने वाले दल ने फिर से आपस में विचार-विमर्श किया: जाहिर तौर पर वे उस दृश्य के अर्थ को लेकर सहमत नहीं हो पा रहे थे। उनके प्रवक्ता कर्नल डेंट ने "पूरे दृश्य" की मांग की; जिसके बाद पर्दा फिर से गिर गया।

तीसरी बार उठने पर ड्राइंग रूम का केवल एक हिस्सा ही दिखाई दिया; बाकी हिस्सा एक पर्दे से ढका हुआ था, जिस पर किसी प्रकार का गहरा और मोटा कपड़ा लटका हुआ था। संगमरमर का बेसिन हटा दिया गया था; उसकी जगह पर लकड़ी की मेज और रसोई की कुर्सी रखी थी: ये वस्तुएँ एक सींग के लैंप से आ रही बहुत धुंधली रोशनी में दिखाई दे रही थीं, क्योंकि सभी मोमबत्तियाँ बुझ चुकी थीं।

इस घिनौने दृश्य के बीच, एक आदमी मुट्ठी बांधे घुटनों पर टिकाए, ज़मीन पर नज़र गड़ाए बैठा था। मैं मिस्टर रोचेस्टर को पहचानता था; हालाँकि उनका मैला चेहरा, अस्त-व्यस्त कपड़े (उनका कोट एक बाँह से ढीला लटका हुआ था, मानो किसी हाथापाई में उनकी पीठ से लगभग फट गया हो), हताश और गुस्से से भरा चेहरा, और खुरदुरे, उलझे हुए बाल उन्हें आसानी से छिपा सकते थे। जैसे ही वह हिला, एक जंजीर खनक उठी; उनकी कलाइयों में बेड़ियाँ लगी हुई थीं।

“ब्राइडवेल!” कर्नल डेंट ने कहा, और इस तरह यह नाटक सुलझ गया।

कलाकारों को अपनी सामान्य वेशभूषा में वापस आने के लिए पर्याप्त समय बीत जाने के बाद, वे भोजन कक्ष में वापस आ गए। श्री रोचेस्टर, मिस इंग्राम को अंदर लेकर आए; वह उनके अभिनय की प्रशंसा कर रही थीं।

“क्या आप जानते हैं,” उसने कहा, “कि तीनों किरदारों में से मुझे आपका आखिरी किरदार सबसे अच्छा लगा? काश आप कुछ साल पहले जीवित होते, तो आप कितने बहादुर और साहसी लुटेरे बनते!”

"क्या मेरे चेहरे से सारी कालिख धुल गई है?" उसने अपना चेहरा उसकी ओर घुमाते हुए पूछा।

"अफ़सोस! हाँ, यह तो और भी अफ़सोस की बात है! उस बदमाश के रूज से ज़्यादा आपके चेहरे पर और कुछ भी शोभा नहीं दे सकता।"

तो फिर आपको सड़क का हीरो चाहिए?

"एक अंग्रेज़ समुद्री डाकू, इतालवी डाकू के बाद दूसरे नंबर पर सबसे बेहतरीन होगा; और उससे भी बेहतर केवल एक लेवेंटाइन समुद्री डाकू ही हो सकता है।"

“खैर, मैं जो भी हूँ, याद रखना तुम मेरी पत्नी हो; एक घंटा पहले ही इन सभी

गवाहों की उपस्थिति में हमारी शादी हुई है।” वह खिलखिलाकर हंस पड़ी और उसका चेहरा लाल हो गया।

“अब, डेंट,” श्री रोचेस्टर ने आगे कहा, “अब तुम्हारी बारी है।” और जैसे ही दूसरा दल पीछे हटा, वह और उसका साथी खाली सीटों पर बैठ गए। मिस इंग्राम अपने नेता के दाहिनी ओर बैठ गईं; बाकी ज्योतिषी उनके और उनके दोनों ओर की कुर्सियों पर बैठ गए। अब मैं अभिनेताओं को नहीं देख रहा था; अब मैं उत्सुकता से पर्दा उठने का इंतज़ार नहीं कर रहा था; मेरा ध्यान दर्शकों पर केंद्रित था; मेरी आँखें, जो पहले मेहराब पर टिकी थीं, अब अनजाने में कुर्सियों के अर्धवृत्त की ओर खिंची चली गईं। कर्नल डेंट और उनके साथियों ने क्या नाटक खेला, उन्होंने कौन से शब्द चुने, उन्होंने खुद को कैसे पेश किया, यह मुझे अब याद नहीं है; लेकिन मुझे अभी भी हर दृश्य के बाद होने वाली बातचीत याद है: मैं श्री रोचेस्टर को मिस इंग्राम की ओर मुड़ते हुए और मिस इंग्राम को उनकी ओर मुड़ते हुए देखता हूँ; मैं उन्हें अपना सिर उनकी ओर झुकाते हुए देखता हूँ, यहाँ तक कि उनके काले घुंघराले बाल लगभग उनके कंधे को छूते हैं और उनके गालों को लहराते हैं; मैं उनकी आपस में फुसफुसाहट सुनता हूँ; मुझे उनकी एक-दूसरे को देखती निगाहें याद आती हैं; और इस दृश्य से उत्पन्न भावना का कुछ अंश भी इस क्षण स्मृति में लौट आता है।

मैंने आपको बताया है, पाठक, कि मैं मिस्टर रोचेस्टर से प्यार करने लगी थी: अब मैं उनसे प्यार करना बंद नहीं कर सकती थी, सिर्फ इसलिए कि मैंने पाया कि उन्होंने मुझे नज़रअंदाज़ करना शुरू कर दिया था — क्योंकि मैं घंटों उनके साथ बिता सकती थी, और वे कभी मेरी तरफ देखते भी नहीं थे — क्योंकि मैंने देखा कि उनका सारा ध्यान एक महान महिला पर केंद्रित था, जो गुजरते समय अपने वस्त्रों के किनारे से भी मुझे छूने से कतराती थी; जो, अगर कभी गलती से भी, अपनी गहरी और अभिमानी नज़र मुझ पर पड़ती, तो तुरंत उसे हटा लेती, मानो मैं देखने लायक कोई तुच्छ वस्तु हूँ। मैं उनसे प्यार करना बंद नहीं कर सकती थी, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि वे जल्द ही इसी महिला से शादी करेंगे — क्योंकि मैं उनमें प्रतिदिन उनके इरादों के प्रति एक गर्वपूर्ण आत्मविश्वास देखती थी — क्योंकि मैं उनमें हर घंटे प्रेम निवेदन का एक ऐसा तरीका देखती थी, जो भले ही लापरवाह था और प्रेम निवेदन करने की बजाय प्रेम निवेदन करना पसंद करता था, फिर भी अपनी लापरवाही में ही मोहक और अपने गर्व में ही अप्रतिरोध्य था।

इन परिस्थितियों में प्रेम को ठंडा या समाप्त करने जैसा कुछ भी नहीं था, हालांकि निराशा पैदा करने के लिए बहुत कुछ था। पाठक, आप सोचेंगे कि ईर्ष्या पैदा करने के लिए भी बहुत कुछ था: अगर मेरी स्थिति में कोई महिला मिस इंग्राम जैसी महिला से ईर्ष्या करने की हिम्मत कर सकती है। लेकिन मुझे ईर्ष्या नहीं थी: या बहुत कम ही थी; — मेरे दर्द की प्रकृति को उस शब्द से समझाया नहीं जा सकता था। मिस इंग्राम ईर्ष्या के लायक नहीं थीं: वह इतनी निम्न स्तर की थीं कि ईर्ष्या की भावना को जगाने के लिए पर्याप्त नहीं थीं। इस विरोधाभास के लिए क्षमा करें; मैं जो कह रही हूँ वही कह रही हूँ। वह बहुत दिखावटी थीं, लेकिन सच्ची नहीं थीं: उनका व्यक्तित्व सुंदर था, कई प्रतिभाशाली उपलब्धियाँ थीं; लेकिन उनका दिमाग कमजोर था, उनका हृदय स्वभाव से बंजर था: उस भूमि पर कुछ भी स्वाभाविक रूप से नहीं पनपता था; कोई भी प्राकृतिक फल उसकी ताजगी से प्रसन्न नहीं होता था। वह अच्छी नहीं थीं; वह मौलिक नहीं थीं: वह किताबों से घिसे-पिटे वाक्य दोहराती रहती थीं: उन्होंने कभी अपनी राय नहीं रखी, न ही कभी रखी। वह उच्च स्तर की भावनाओं की वकालत करती थीं; लेकिन उन्हें सहानुभूति और दया की भावनाएँ नहीं पता थीं; कोमलता और सच्चाई उनमें नहीं थी। अक्सर वह इसे ज़ाहिर कर देती थी, छोटी एडेल के प्रति अपने मन में पनपी द्वेषपूर्ण घृणा को अनुचित रूप से प्रकट करके: अगर एडेल उसके पास आती तो उसे अपमानजनक शब्दों से दूर धकेल देती; कभी-कभी उसे कमरे से बाहर जाने का आदेश देती, और हमेशा उसके साथ ठंडेपन और कटुता से पेश आती। मेरी आँखों के अलावा और भी आँखें उसके चरित्र के इन प्रदर्शनों को देख रही थीं—करीब से, उत्सुकता से, चतुराई से। जी हाँ; भावी दूल्हा, मिस्टर रोचेस्टर स्वयं, अपनी होने वाली पत्नी पर निरंतर निगरानी रखते थे; और उनकी इसी बुद्धिमत्ता— उनकी इसी सतर्कता— उनकी प्रियतमा की कमियों के प्रति उनकी इस पूर्ण, स्पष्ट जागरूकता— उनके प्रति उनके भावों में स्पष्ट रूप से दिखाई न देने के कारण ही मेरा यह निरंतर पीड़ादायक दर्द उत्पन्न होता था।

मैंने देखा कि वह उससे शादी करने जा रहा था, पारिवारिक कारणों से, शायद राजनीतिक कारणों से, क्योंकि उसका रुतबा और संबंध उसके अनुकूल थे; मुझे लगा कि उसने उसे अपना प्यार नहीं दिया था, और उसकी योग्यताएँ उससे वह अनमोल प्रेम पाने के लिए उपयुक्त नहीं थीं। यही वह बिंदु था - यही वह जगह थी जहाँ उसकी नस दब गई और उसे छेड़ा गया - यही वह जगह थी जहाँ उसका जुनून पनपा और

बढ़ा: वह उसे मोहित नहीं कर सकी।

यदि वह तुरंत ही जीत हासिल कर लेती, और वह आत्मसमर्पण करके सच्चे मन से अपना दिल उसके चरणों में रख देता, तो मैं अपना चेहरा ढक लेता, दीवार की ओर मुँह कर लेता, और (लाक्षणिक रूप से) उनके लिए मर जाता। यदि मिस इंग्राम एक अच्छी और नेक महिला होती, जो बल, उत्साह, दयालुता और समझदारी से परिपूर्ण होती, तो मुझे दो बाघों - ईर्ष्या और निराशा - से एक ही जीवन भर संघर्ष करना पड़ता: फिर, मेरा दिल छलनी होकर खा जाता, मैं उसकी प्रशंसा करता - उसकी उत्कृष्टता को स्वीकार करता, और अपने शेष जीवन के लिए शांत रहता: और उसकी श्रेष्ठता जितनी अधिक पूर्ण होती, मेरी प्रशंसा उतनी ही गहरी होती - मेरी शांति उतनी ही सच्ची होती। लेकिन वास्तविकता यह थी कि मिस इंग्राम के मिस्टर रोचेस्टर को मोहित करने के प्रयासों को देखना, उनकी बार-बार की विफलता को देखना - स्वयं इस बात से अनभिज्ञ कि वे विफल हो रहे थे; व्यर्थ ही यह कल्पना करते हुए कि दागा गया प्रत्येक तीर निशाने पर लगा, और सफलता पर घमंड से चूर होते हुए, जबकि उसका अहंकार और आत्मसंतुष्टि उस चीज को और भी दूर कर रही थी जिसे वह आकर्षित करना चाहती थी - इसे देखना निरंतर उत्तेजना और निर्दय संयम के अधीन होने जैसा था।

क्योंकि, जब वह असफल हुई, तो मैंने देखा कि वह कैसे सफल हो सकती थी। श्री रोचेस्टर की छाती से बार-बार टकराकर उनके पैरों पर बेअसर होकर गिरने वाले तीर, अगर किसी कुशल हाथ से चलाए जाते, तो शायद उनके अभिमानी हृदय में हलचल मचा देते—उनकी कठोर आँखों में प्रेम और उनके व्यंग्यपूर्ण चेहरे पर कोमलता ला देते; या, इससे भी बेहतर, बिना हथियारों के एक मौन विजय प्राप्त की जा सकती थी।

मैंने खुद से पूछा, "जब उसे उसके इतने करीब आने का सौभाग्य प्राप्त है, तो वह उसे और अधिक प्रभावित क्यों नहीं कर पाती?" “यकीनन वह उसे सचमुच पसंद नहीं करती, या उससे सच्चा स्नेह नहीं रखती! अगर वह करती, तो उसे इतनी बनावटी मुस्कानें बिखेरने, लगातार निगाहें झपकाने, इतने दिखावटी हाव-भाव और इतने सारे नखरे दिखाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। मुझे लगता है कि वह बस चुपचाप उसके पास बैठकर, कम बोलकर और कम देखकर ही उसके दिल के करीब पहुँच सकती है। मैंने उसके चेहरे पर उस भाव से बिल्कुल अलग भाव देखा है जो अब उसके इतने जोश से

बात करने पर कठोर हो जाता है; लेकिन तब वह भाव स्वाभाविक था: वह दिखावटी कलाओं या सोची-समझी चालों से नहीं आया था; बस उसे स्वीकार करना था—बिना किसी दिखावे के उसके सवालों का जवाब देना था, ज़रूरत पड़ने पर बिना मुँह बनाए उससे बात करनी थी—और वह भाव बढ़ता गया, दयालु और सौम्य होता गया, और एक पोषण देने वाली धूप की किरण की तरह मन को सुकून देता गया। शादी के बाद वह उसे कैसे खुश कर पाएगी? मुझे नहीं लगता कि वह कर पाएगी; फिर भी यह संभव है; और उसकी पत्नी, मेरा पक्का विश्वास है, सबसे खुश महिला होगी। सूरज की रोशनी जारी है।

मैंने अभी तक श्री रोचेस्टर की स्वार्थ और संबंध के लिए विवाह करने की योजना की निंदा नहीं की है। जब मुझे पहली बार पता चला कि उनका ऐसा इरादा है, तो मुझे आश्चर्य हुआ: मैंने सोचा था कि वे पत्नी के चुनाव में इतने सामान्य कारणों से प्रभावित नहीं होंगे; लेकिन जैसे-जैसे मैंने दोनों पक्षों की स्थिति, शिक्षा आदि पर विचार किया, मुझे उन्हें या मिस इंग्राम को उनके बचपन से ही सिखाए गए विचारों और सिद्धांतों के अनुरूप कार्य करने के लिए दोषी ठहराना और उनकी आलोचना करना कम उचित लगा। उनके वर्ग के सभी लोग इन सिद्धांतों को मानते थे: इसलिए, मैंने अनुमान लगाया कि उनके पास इन्हें मानने के ऐसे कारण होंगे जिन्हें मैं समझ नहीं सकता। मुझे लगा कि अगर मैं उनके जैसा सज्जन होता, तो मैं केवल उसी पत्नी को अपनाता जिससे मैं प्यार कर सकूँ; लेकिन इस योजना से पति की खुशी को मिलने वाले स्पष्ट लाभों ने मुझे आश्वस्त किया कि इसके व्यापक रूप से अपनाने के खिलाफ कुछ तर्क अवश्य होंगे जिनसे मैं पूरी तरह अनभिज्ञ था: अन्यथा मुझे पूरा विश्वास था कि पूरी दुनिया वही करेगी जो मैं चाहता हूँ।

लेकिन अन्य मामलों में भी, मैं अपने स्वामी के प्रति बहुत उदार होता जा रहा था: मैं उनकी उन सभी कमियों को भूलता जा रहा था, जिन पर मैंने कभी पैनी नजर रखी थी। पहले मेरा प्रयास उनके चरित्र के सभी पहलुओं का अध्ययन करना था: अच्छाई और बुराई दोनों को समझना; और दोनों का उचित मूल्यांकन करके एक निष्पक्ष निर्णय लेना। अब मुझे उनमें कोई बुराई नहीं दिखती थी। वह व्यंग्य जो मुझे पहले विचलित करता था, वह कठोरता जो कभी मुझे चौंका देती थी, अब किसी उत्तम व्यंजन में तीखे मसालों की तरह थीं: उनकी उपस्थिति तीखी थी, लेकिन उनकी अनुपस्थिति तुलनात्मक रूप से फीकी लगती थी। और उस अस्पष्ट भाव की बात करें

तो—क्या वह कोई भयावह या दुखद, कोई षडयंत्रकारी या निराशाजनक अभिव्यक्ति थी?—जो एक सतर्क पर्यवेक्षक की आँखों में कभी-कभी प्रकट होती थी, और फिर आंशिक रूप से प्रकट हुई उस विचित्र गहराई को समझने से पहले ही गायब हो जाती थी; वह चीज़ जो मुझे भयभीत और सहमने कर देती थी, मानो मैं ज्वालामुखी जैसी दिखने वाली पहाड़ियों के बीच भटक रहा हूँ और अचानक ज़मीन कांप उठी हो और उसमें दरार दिखाई दी हो: उस चीज़ को मैं रुक-रुक कर देखता रहता था; धड़कते दिल से, लेकिन भयभीत नसों से नहीं। उससे बचने की इच्छा के बजाय, मैं केवल उसे जानने का साहस करना चाहता था; और मुझे मिस इंग्राम खुशकिस्मत लगती थीं, क्योंकि एक दिन वह फुर्सत में उस अथाह गहराई में झांक सकेंगी, उसके रहस्यों का पता लगा सकेंगी और उनके स्वरूप का विश्लेषण कर सकेंगी।

इस बीच, जब मैं केवल अपने स्वामी और उनकी भावी दुल्हन के बारे में सोच रहा था—केवल उन्हें देख रहा था, केवल उनकी बातें सुन रहा था, और केवल उनकी महत्वपूर्ण गतिविधियों पर ध्यान दे रहा था—बाकी लोग अपने-अपने शौक और रुचियों में मग्न थे। लेडीज़ लिन और इंग्राम गंभीर चर्चाओं में मशगूल थीं, जहाँ वे एक-दूसरे को अपनी पगड़ी हिलाकर अभिवादन करतीं और अपने चारों हाथों को आश्चर्य, रहस्य या भय के भावों में ऊपर उठातीं, जैसे कि दो बड़ी कठपुतलियाँ हों, उनके गपशप के विषय के अनुसार। सौम्य श्रीमती डेंट मिलनसार श्रीमती एश्टन से बात कर रही थीं; और वे दोनों कभी-कभी मुझे विनम्रता से एक शब्द या मुस्कान देती थीं। सर जॉर्ज लिन, कर्नल डेंट और श्री एश्टन राजनीति, काउंटी मामलों या न्याय संबंधी मामलों पर चर्चा कर रहे थे। लॉर्ड इंग्राम एमी एश्टन के साथ इश्कबाजी कर रहे थे; लुईसा श्री लिन में से एक के साथ खेलती और गाती थीं; और मैरी इंग्राम दूसरे के जोशीले भाषणों को सुस्ती से सुन रही थीं। कभी-कभी सभी, मानो सर्वसम्मति से, अपनी बातचीत रोककर मुख्य पात्रों को देखने और सुनने लगते थे; क्योंकि आखिरकार, श्री रोचेस्टर और उनसे घनिष्ठ संबंध होने के कारण मिस इंग्राम ही उस समारोह की जान थे। यदि वे एक घंटे के लिए कमरे से बाहर चले जाते, तो उनके मेहमानों के मन में एक उदासी छा जाती; और उनके वापस आने पर बातचीत में नई जान आ जाती थी।

एक दिन जब उन्हें काम के सिलसिले में मिलकोट बुलाया गया और उनके देर से लौटने की संभावना नहीं थी, तो उनकी जीवंतता की कमी विशेष रूप से महसूस हुई।

दोपहर बारिश से भरी थी: हे के पार एक मैदान में हाल ही में लगाए गए जिप्सी शिविर को देखने के लिए समूह द्वारा प्रस्तावित सैर को इसलिए स्थगित कर दिया गया। कुछ सज्जन अस्तबल में गए हुए थे: युवा सज्जन और युवा महिलाएं बिलियर्ड रूम में बिलियर्ड्स खेल रहे थे। विधवा इंग्राम और लिन ताश के एक शांत खेल में सुकून ढूंढ रही थीं। श्रीमती डेंट और श्रीमती एश्टन द्वारा बातचीत में शामिल करने के कुछ प्रयासों को घमंडी चुप्पी से ठुकराने के बाद, ब्लैंच इंग्राम ने पहले पियानो पर कुछ भावुक धुनें गुनगुनाईं, और फिर पुस्तकालय से एक उपन्यास लाकर, सोफे पर घमंडी उदासीनता के साथ लेट गईं, और कल्पना के जादू से अनुपस्थिति के उबाऊ घंटों को गुजारने की तैयारी करने लगीं। कमरा और पूरा घर शांत था: केवल कभी-कभार ऊपर से बिलियर्ड खेलने वालों की हंसी की आवाज सुनाई देती थी।

शाम ढलने ही वाली थी, और घड़ी ने रात के खाने के लिए तैयार होने का समय बता दिया था, तभी ड्राइंग रूम की खिड़की के पास मेरे बगल में बैठी छोटी एडेल अचानक चिल्लाई —

"लीजिए, मिस्टर रोचेस्टर, हम फिर से वापस आ गए हैं!"

मैंने मुड़कर देखा, और मिस इंग्राम अपने सोफे से झट से आगे बढ़ीं: बाकी लोग भी अपने-अपने कामों से नज़रें उठाकर देखने लगे; क्योंकि उसी समय पहियों की चरमराहट और घोड़ों के खुरों की छप-छप की आवाज़ गीली बजरी पर सुनाई दी। एक पोस्ट-चेज़ (घोड़ागाड़ी) आ रही थी।

“वह इस तरह घर क्यों लौटा?” मिस इंग्राम ने कहा। “वह मेसरूर (काला घोड़ा) पर सवार होकर गया था, है ना? और पायलट भी उसके साथ था: उसने जानवरों का क्या किया?”

जैसे ही उसने यह कहा, वह अपने लंबे कद और भारी वस्त्रों के साथ खिड़की के इतने करीब आ गई कि मुझे अपनी रीढ़ की हड्डी में लगभग दर्द होने तक पीछे झुकना पड़ा। अपनी जल्दबाजी में उसने पहले तो मेरी तरफ ध्यान ही नहीं दिया, लेकिन जब उसने देखा, तो उसने अपने होंठ सिकोड़े और दूसरी खिड़की की ओर बढ़ गई। गाड़ी रुकी; ड्राइवर ने घंटी बजाई, और यात्रा के वस्त्र पहने एक सज्जन उतरे; लेकिन वह मिस्टर रोचेस्टर नहीं थे; वह एक लंबा, फैशनेबल दिखने वाला आदमी था, एक अजनबी।

“कितना उत्तेजक!” मिस इंग्राम ने हैरानी से कहा: “तुम थकाऊ बंदर!” (एडेल को

संबोधित करते हुए), "तुम्हें खिड़की पर झूठी जानकारी देने के लिए किसने बिठाया है?" और उन्होंने मेरी ओर गुस्से भरी नज़र से देखा, मानो गलती मेरी ही हो।

हॉल में कुछ बातचीत की आवाज सुनाई दी, और जल्द ही नया मेहमान अंदर आया। उसने लेडी इंग्राम को प्रणाम किया, क्योंकि वह उन्हें उपस्थित महिलाओं में सबसे वरिष्ठ मान रहा था।

"ऐसा लगता है कि मैं एक अनुपयुक्त समय पर आया हूँ, महोदया, जब मेरे मित्र, श्री रोचेस्टर, घर से बाहर हैं; लेकिन मैं एक बहुत लंबी यात्रा से आया हूँ, और मुझे लगता है कि मैं अपने पुराने और घनिष्ठ परिचय का लाभ उठाकर उनके लौटने तक यहीं ठहर सकता हूँ।"

उनका व्यवहार विनम्र था; बोलने का उनका लहजा मुझे कुछ असामान्य लगा—पूरी तरह से विदेशी तो नहीं, लेकिन पूरी तरह से अंग्रेज़ भी नहीं था; उनकी उम्र श्री रोचेस्टर के लगभग बराबर थी—तीस से चालीस के बीच; उनका रंग बेहद पीला था: वैसे तो पहली नज़र में वे देखने में अच्छे लगते थे। लेकिन गौर से देखने पर उनके चेहरे में कुछ ऐसा दिखा जो अप्रिय था, या यूँ कहें कि मन को भाता नहीं था। उनके चेहरे के भाव नियमित थे, लेकिन कुछ हद तक शिथिल थे; उनकी आँखें बड़ी और सुगठित थीं, लेकिन उनमें झलकती हुई जीवंतता एक नीरस, खालीपन भरी जीवंतता थी—कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा।

ड्रेसिंग-बेल की आवाज़ से सभी लोग तितर-बितर हो गए। खाना खाने के बाद ही मैंने उसे दोबारा देखा: तब वह बिल्कुल सहज लग रहा था। लेकिन उसका चेहरा मुझे पहले से भी कम पसंद आया: वह मुझे बेचैन और निर्जीव सा लगा। उसकी आँखें इधर-उधर भटक रही थीं, और उनके भटकने का कोई अर्थ नहीं था: इससे उसका चेहरा अजीब सा लग रहा था, जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। एक सुंदर और आकर्षक दिखने वाले व्यक्ति के लिए, वह मुझे बेहद अरुचिकर लगा: उस चिकनी त्वचा वाले, अंडाकार चेहरे में कोई शक्ति नहीं थी; उस बाज जैसी नाक और छोटे चेरी जैसे होंठों में कोई दृढ़ता नहीं थी; उसके नीचे झुके, समतल माथे पर कोई विचार नहीं था; उसकी खाली, भूरी आँखों में कोई आदेश नहीं था।

मैं अपनी पसंदीदा जगह पर बैठा था और जब मैं उन्हें देख रहा था, तो मेंटलपीस पर रखे जिरांडोल की रोशनी उन पर पूरी तरह पड़ रही थी—क्योंकि वे आग के पास खींची हुई एक आरामकुर्सी पर बैठे थे और ठंड लगने पर और भी पास आते जा रहे थे

—मैंने उनकी तुलना मिस्टर रोचेस्टर से की। मुझे लगता है (आदरपूर्वक कहूँ तो) कि एक चिकने हंस और एक खूंखार बाज़ के बीच, एक शांत भेड़ और उसके रक्षक, खुरदुरे बालों वाले, तेज आँखों वाले कुत्ते के बीच इससे बड़ा अंतर नहीं हो सकता।

उन्होंने श्री रोचेस्टर को एक पुराने मित्र के रूप में संबोधित किया था। उनकी मित्रता विचित्र रही होगी: वास्तव में, यह पुरानी कहावत का एक सटीक उदाहरण है कि "चरमपंथी लोग मिलते हैं।"

दो-तीन सज्जन उनके पास बैठे थे, और मुझे कमरे के उस पार से उनकी बातचीत के कुछ अंश सुनाई दे रहे थे। पहले तो मुझे जो सुनाई दिया, वह ठीक से समझ नहीं आया; क्योंकि मेरे पास बैठी लुईसा एश्टन और मैरी इंग्राम की बातचीत में बीच-बीच में सुनाई देने वाले अधूरे वाक्य उलझे हुए थे। ये दोनों उस अजनबी के बारे में बात कर रही थीं; दोनों ने उसे "सुंदर पुरुष" कहा। लुईसा ने कहा कि वह "एक प्यारा प्राणी" था, और वह उसे "बहुत पसंद करती थी"; और मैरी ने उसके "सुंदर छोटे मुंह और प्यारी नाक" का उदाहरण देते हुए उसे आदर्श आकर्षक बताया।

“और उसका माथा कितना सौम्य है!” लुइसा चिल्लाई, “कितना चिकना है – वो झुर्रियां बिल्कुल नहीं हैं जो मुझे बिल्कुल पसंद नहीं हैं; और उसकी आंखें और मुस्कान कितनी शांत हैं!”

और फिर, मुझे बहुत राहत मिली जब श्री हेनरी लिन ने उन्हें कमरे के दूसरी तरफ बुलाया, ताकि हे कॉमन की स्थगित यात्रा के बारे में कोई बात तय की जा सके।

अब मेरा ध्यान आग के पास बैठे समूह पर केंद्रित हो सका और मुझे तुरंत पता चला कि नए आने वाले का नाम श्री मेसन था; फिर मुझे पता चला कि वे अभी-अभी इंग्लैंड आए थे और किसी गर्म देश से आए थे: शायद यही कारण था कि उनका चेहरा इतना पीला था, वे चूल्हे के इतने पास बैठे थे और घर में ओवरकोट पहने हुए थे। थोड़ी देर बाद जमैका, किंग्स्टन, स्पैनिश टाउन जैसे शब्दों से पता चला कि वे वेस्ट इंडीज में रहते थे; और मुझे यह जानकर काफी आश्चर्य हुआ कि उन्होंने श्री रोचेस्टर को सबसे पहले वहीं देखा और उनसे जान-पहचान की थी। उन्होंने अपने मित्र की उस क्षेत्र की चिलचिलाती गर्मी, तूफानों और बरसात के मौसम के प्रति नापसंदगी के बारे में बताया। मुझे पता था कि श्री रोचेस्टर एक यात्री थे: श्रीमती फेयरफैक्स ने ऐसा कहा था; लेकिन मुझे लगता था कि उनकी यात्रा यूरोप महाद्वीप तक ही सीमित थी; इससे पहले मैंने कभी भी दूर-दराज के तटों की यात्राओं के बारे में कोई संकेत नहीं

सुना था।

मैं इन बातों पर विचार कर रहा था, तभी एक घटना, और वह भी कुछ हद तक अप्रत्याशित, ने मेरे विचारों का सिलसिला तोड़ दिया। श्री मेसन, किसी के दरवाजा खोलते ही कांपने लगे और उन्होंने आग में और कोयला डालने को कहा, जिसकी लौ बुझ चुकी थी, हालांकि राख का ढेर अभी भी गर्म और लाल चमक रहा था। कोयला लेकर आया नौकर बाहर जाते समय श्री एश्टन की कुर्सी के पास रुका और धीमी आवाज में उनसे कुछ कहा, जिसे मैं केवल इतना ही सुन पाया, "बुढ़िया" - "काफी परेशानी वाली।"

मजिस्ट्रेट ने जवाब दिया, "उसे बता दो कि अगर वह खुद को नहीं ले जाती है तो उसे हथकड़ी में डाल दिया जाएगा।"

“नहीं— रुको!” कर्नल डेंट ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “उसे मत भेजो, एश्टन; हम इस मामले का फायदा उठा सकते हैं; बेहतर होगा कि आप महिलाओं से सलाह लें।” और ज़ोर से बोलते हुए उन्होंने आगे कहा— “महिलाओं, आपने जिप्सी शिविर में जाने के लिए हे कॉमन जाने की बात की थी; सैम यहाँ कहता है कि एक बूढ़ी मदर बंचे इस समय नौकरों के हॉल में है, और ‘कुलीन’ लोगों के सामने लाए जाने पर अड़ी है, ताकि वह उनका भविष्य बता सके। क्या आप उससे मिलना चाहेंगी?”

“निश्चित रूप से, कर्नल जी,” लेडी इंग्राम चिल्लाईं, “आप ऐसी नीच धोखेबाज को बढ़ावा नहीं देंगे? उसे तुरंत बर्खास्त कर दीजिए!”

“लेकिन मैं उन्हें जाने के लिए मना नहीं सकता, महाराज,” नौकर ने कहा; “न ही कोई नौकर मना सकता है: श्रीमती फेयरफैक्स अभी उनके साथ हैं, उनसे जाने की विनती कर रही हैं; लेकिन उन्होंने चिमनी के कोने में एक कुर्सी ले ली है, और कहती हैं कि जब तक उन्हें अंदर आने की अनुमति नहीं मिल जाती, तब तक कोई भी उन्हें वहां से नहीं हटा सकता।”

"वह क्या चाहती है?" श्रीमती एश्टन ने पूछा।

“‘कुलीन वर्ग को उनके भाग्य के बारे में बताने के लिए,’ वह कहती है, महोदया; और वह कसम खाती है कि उसे यह करना ही होगा और वह करेगी।”

“वह कैसी है?” मिस एश्टन ने एक ही सांस में पूछा।

"एक बेहद बदसूरत बूढ़ी औरत, महोदया; लगभग पूरी तरह से काली।"

“अरे वाह, वो तो सचमुच जादूगरनी है!” फ्रेडरिक लिन चिल्लाया। “बेशक, उसे

अंदर आने दो।”

“बिल्कुल,” उसके भाई ने जवाब दिया; “मज़े का ऐसा मौका गँवाना बहुत दुख की बात होगी।”

“मेरे प्यारे बच्चों, तुम लोग क्या सोच रहे हो?” श्रीमती लिन ने हैरानी से कहा।

"मैं इस तरह की किसी भी असंगत कार्यवाही को किसी भी हालत में स्वीकार नहीं कर सकती," डॉवेजर इंग्राम ने कहा।

“जी हां, मां, लेकिन आप कर सकती हैं—और करेंगी भी,” पियानो की कुर्सी पर घूमते हुए ब्लैंच की अभिमानी आवाज सुनाई दी; जहां वह अब तक चुपचाप बैठी थी, मानो संगीत की कई शीटों का अध्ययन कर रही हो। “मुझे अपना भविष्य जानने की उत्सुकता है: इसलिए, सैम, उस बुढ़िया को आगे आने का आदेश दो।”

“मेरी प्यारी ब्लैंच! याद करो—”

“हाँ, मुझे सब याद है जो तुम बता सकते हो; और मुझे अपनी वसीयत चाहिए – जल्दी करो, सैम!”

“हाँ – हाँ – हाँ!” सभी किशोर-किशोरी, लड़के-लड़कियाँ, सब एक साथ चिल्ला उठे। “उसे आने दो – बहुत मज़ा आएगा!”

नौकर अभी भी वहीं रुका हुआ था। उसने कहा, "वह बहुत ही खूंखार दिखती है।"

"जाओ!" मिस इंग्राम ने कहा, और वह आदमी चला गया।

सैम के लौटते ही पूरे समूह में तुरंत उत्साह छा गया: हंसी-मजाक और चुटकुलों की गहमागहमी चल रही थी।

“वह अभी नहीं आएगी,” उसने कहा। “उसका कहना है कि ‘आम लोगों’ के सामने पेश होना उसका कर्तव्य नहीं है (ये उसके अपने शब्द हैं)। मुझे उसे अकेले एक कमरे में ले जाना होगा, और फिर जो लोग उससे सलाह लेना चाहते हैं, उन्हें एक-एक करके उसके पास जाना होगा।”

“देखो, मेरी रानी ब्लैंच,” लेडी इंग्राम ने कहना शुरू किया, “वह अतिक्रमण कर रही है। सावधान रहो, मेरी परी जैसी बच्ची — और —”

“बेशक, उसे पुस्तकालय में ले चलो,” उस “परी जैसी लड़की” ने बीच में टोकते हुए कहा। “मेरा काम उस अशिष्ट भीड़ के सामने उसकी बात सुनना नहीं है: मैं उसे पूरी तरह से अपने पास रखना चाहती हूँ। क्या पुस्तकालय में आग लगी है?”

"जी मैडम—लेकिन वह तो बहुत ही भद्दी दिखती हैं।"

"बकवास बंद करो, मूर्ख! और मेरा आदेश मानो।"

सैम एक बार फिर गायब हो गया; और रहस्य, उत्साह और उम्मीदें एक बार फिर चरम पर पहुंच गईं।

“अब वह तैयार है,” नौकर ने वापस आते हुए कहा। “वह जानना चाहती है कि उसका पहला आगंतुक कौन होगा।”

"मुझे लगता है कि बाकी महिलाओं के जाने से पहले मुझे उससे मिल लेना चाहिए," कर्नल डेंट ने कहा।

"उसे बता दो, सैम, एक सज्जन आ रहे हैं।"

सैम गया और वापस आ गया।

“वह कहती हैं, महोदय, कि उन्हें कोई सज्जन पुरुष नहीं चाहिए; उन्हें उनके पास आने की जहमत उठाने की भी जरूरत नहीं है; और,” उन्होंने बड़ी मुश्किल से अपनी हंसी रोकते हुए कहा, “युवा और अविवाहित महिलाओं को छोड़कर, उन्हें भी नहीं चाहिए।”

“वाह, उसका स्वाद तो लाजवाब है!” हेनरी लिन ने कहा।

मिस इंग्राम गंभीर भाव से उठीं: "मैं पहले जाती हूँ," उन्होंने एक ऐसे स्वर में कहा जो किसी हताश उम्मीद के नेता के लिए उपयुक्त हो सकता था, जो अपने सैनिकों के अग्रिम मोर्चे पर एक दरार से आगे बढ़ रहा हो।

“ओह, मेरी सबसे प्यारी! ओह, मेरी सबसे प्रिय! रुको—सोचो!” उसकी माँ की पुकार थी; लेकिन वह गरिमापूर्ण मौन में उनके पास से गुज़र गई, उस दरवाजे से अंदर चली गई जिसे कर्नल डेंट ने खुला रखा था, और हमने उसे पुस्तकालय में प्रवेश करते हुए सुना।

कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। लेडी इंग्राम ने सोचा कि हाथ मलना ही उचित होगा, और उन्होंने वैसा ही किया। मिस मैरी ने कहा कि उन्हें तो ऐसा करने की हिम्मत ही नहीं हुई। एमी और लुईसा एश्टन दबी आवाज़ में हँसीं और थोड़ी डरी हुई लग रही थीं।

मिनट बहुत धीरे-धीरे बीत रहे थे: पंद्रह मिनट गिने जाने के बाद पुस्तकालय का दरवाजा दोबारा खुला। मिस इंग्राम मेहराब से होते हुए हमारे पास लौट आईं।

क्या वह हँसेगी? क्या वह इसे मज़ाक समझेगी? सभी की निगाहें उत्सुकता भरी नज़रों से उस पर टिकी थीं, और उसने भी सभी निगाहों को तिरस्कार और शीतलता

भरे भाव से देखा; वह न तो घबराई हुई लग रही थी और न ही खुश: वह अकड़कर अपनी सीट पर गई और चुपचाप बैठ गई।

“तो, ब्लैंच?” लॉर्ड इंग्राम ने कहा।

“बहन, उसने क्या कहा?” मैरी ने पूछा।

“आपने क्या सोचा? आपको कैसा लगा? क्या वह सचमुच में ज्योतिषी है?” मिस एश्टन ने पूछा।

“अरे, अरे, भले लोगों,” मिस इंग्राम ने जवाब दिया, “मुझ पर दबाव मत डालिए। सच में, आप लोगों की हैरानी और आसानी से विश्वास करने की प्रवृत्ति बहुत जल्दी जागृत हो जाती है: आप सभी – मेरी प्यारी माँ सहित – इस मामले को जो महत्व दे रहे हैं, उससे लगता है कि आप पूरी तरह से मानते हैं कि हमारे घर में एक असली चुड़ैल है, जो उस बूढ़े सज्जन के साथ घनिष्ठ रूप से मिलीभगत कर रही है। मैंने एक खानाबदोश आवारा को देखा है; उसने पुराने तरीके से हस्तरेखा शास्त्र का अभ्यास किया और मुझे वही बताया जो ऐसे लोग आमतौर पर बताते हैं। मेरी इच्छा पूरी हो गई है; और अब मुझे लगता है कि श्री एश्टन को कल सुबह उस चुड़ैल को हथकड़ी में डाल देना चाहिए, जैसा कि उन्होंने धमकी दी थी।”

मिस इंग्राम ने एक किताब उठाई, कुर्सी पर पीछे झुक गईं और आगे बातचीत करने से इनकार कर दिया। मैंने लगभग आधे घंटे तक उन्हें देखा: इस पूरे समय में उन्होंने एक भी पन्ना नहीं पलटा, और उनका चेहरा पल-पल और भी उदास, असंतुष्ट और निराशा से भरा होता चला गया। जाहिर है, उन्हें अपने फायदे की कोई बात सुनने को नहीं मिली थी: और उनकी लंबे समय तक चली उदासी और चुप्पी से मुझे ऐसा लगा कि अपनी कथित उदासीनता के बावजूद, वे खुद भी उन सभी बातों को जरूरत से ज्यादा महत्व दे रही थीं जो उन्हें बताई गई थीं।

इसी बीच, मैरी इंग्राम, एमी और लुईसा एश्टन ने कहा कि वे अकेले जाने की हिम्मत नहीं कर सकतीं; फिर भी वे तीनों जाना चाहती थीं। राजदूत सैम के माध्यम से बातचीत शुरू हुई; और बहुत इधर-उधर चक्कर लगाने के बाद, शायद सैम की पिंडलियों में दर्द होने लगा होगा, आखिरकार बड़ी मुश्किल से कठोर सिबिल से तीनों को एक साथ उससे मिलने की अनुमति मिल गई।

उनकी यात्रा मिस इंग्राम की यात्रा जितनी शांत नहीं थी: हमें पुस्तकालय से उन्मादी हंसी और छोटी-छोटी चीखें सुनाई दे रही थीं; और लगभग बीस मिनट के बाद वे दरवाजा तोड़कर बाहर आ गईं और हॉल में दौड़ती हुई आईं, मानो वे डर के मारे बुरी तरह घबरा गई हों।

"मुझे यकीन है कि वह कुछ गड़बड़ है!" वे सब एक साथ चिल्लाए। "उसने हमें ऐसी बातें बताईं! वह हमारे बारे में सब जानती है!" और वे हांफते हुए उन अलग-अलग कुर्सियों पर बैठ गए जो सज्जनों ने जल्दी से उनके लिए लाई थीं।

और स्पष्टीकरण मांगने पर उन्होंने बताया कि उसने उन्हें बचपन में कही और की गई बातों के बारे में बताया था; उनके घरों में उनके कमरों में रखी किताबों और

सजावटी सामानों का वर्णन किया था; वे स्मृति चिन्ह जो उनके रिश्तेदारों ने उन्हें भेंट किए थे। उन्होंने दावा किया कि उसने उनके मन की बात भी जान ली थी, और उनमें से प्रत्येक के कान में उस व्यक्ति का नाम फुसफुसाया था जिसे वह दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार करती थी, और उन्हें उनकी सबसे बड़ी इच्छा के बारे में भी बताया था।

यहां सज्जनों ने उपरोक्त दोनों बिंदुओं पर और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए गंभीर निवेदन किया; लेकिन उनकी इस विनती के बदले उन्हें केवल शर्मिंदगी, उत्तेजना, कंपकंपी और हल्की हंसी ही मिली। इस बीच, वृद्ध महिलाओं ने सिरका परोसा और पंखे चलाए; और बार-बार इस बात पर चिंता व्यक्त की कि उनकी चेतावनी पर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया; बड़े सज्जन हंसे, और छोटे सज्जन उत्तेजित महिलाओं को अपनी सेवाएं देने का आग्रह करने लगे।

उस अफरा-तफरी के बीच, और जब मेरी आंखें और कान पूरी तरह से मेरे सामने के दृश्य में मग्न थे, तभी मैंने अपनी कोहनी के पास किसी के फीते के बंद होने की आवाज सुनी: मैं मुड़ा, और सैम को देखा।

“कृपा करके बताइए, महोदया, जिप्सी कह रही है कि कमरे में एक और अविवाहित युवती है जो अभी तक उससे नहीं मिली है, और वह कसम खा रही है कि जब तक वह सब कुछ नहीं देख लेगी तब तक नहीं जाएगी। मुझे लगा कि वह आप ही होंगी: इसके अलावा कोई और विकल्प नहीं है। मैं उसे क्या बताऊँ?”

“ओह, मैं ज़रूर जाऊँगा,” मैंने जवाब दिया; और अपनी तीव्र जिज्ञासा को शांत करने के इस अप्रत्याशित अवसर से मैं बहुत खुश था। मैं चुपके से कमरे से बाहर निकल गया, किसी की नज़र मुझ पर नहीं पड़ी — क्योंकि सभी लोग काँपते हुए तीनों के चारों ओर जमा हो गए थे जो अभी-अभी लौटे थे — और मैंने चुपचाप दरवाज़ा बंद कर दिया।

सैम ने कहा, "अगर आप चाहें तो, मैडम, मैं हॉल में आपका इंतजार करूंगा; और अगर वह आपको डरा दे, तो बस मुझे बुला लेना और मैं अंदर आ जाऊंगा।"

“नहीं, सैम, रसोई में वापस जाओ: मुझे ज़रा भी डर नहीं है।” मुझे भी डर नहीं था; लेकिन मैं काफी उत्सुक और उत्साहित था।

अध्याय XIX

जब मैं पुस्तकालय में दाखिल हुआ तो वह काफी शांत लग रहा था, और सिबिल—अगर वह सिबिल ही थीं—चिमनी के कोने पर एक आरामकुर्सी में बड़े आराम से बैठी थीं। उन्होंने लाल लबादा और काली टोपी पहनी हुई थी: या यूँ कहें कि चौड़ी किनारी वाली जिप्सी टोपी, जिसे उन्होंने ठुड्डी के नीचे धारीदार रूमाल से बाँध रखा था। मेज पर एक बुझी हुई मोमबत्ती रखी थी; वह आग के ऊपर झुकी हुई थीं और जलती हुई लौ की रोशनी में किसी छोटी काली किताब, जैसे कोई प्रार्थना-पुस्तक हो, पढ़ रही थीं: वह पढ़ते समय अपने आप से शब्द बुदबुदा रही थीं, जैसा कि ज्यादातर बूढ़ी औरतें करती हैं; मेरे आते ही उन्होंने पढ़ना बंद नहीं किया: ऐसा लग रहा था कि वह एक पैराग्राफ पूरा करना चाहती थीं।

मैं कालीन पर खड़ा हो गया और अपने हाथों को गर्म करने लगा, जो ड्राइंग रूम की आग से दूर बैठने के कारण काफी ठंडे हो गए थे। मैं अब अपने जीवन में पहले से कहीं अधिक शांत महसूस कर रहा था: जिप्सी के रूप में ऐसा कुछ भी नहीं था जो मेरी शांति भंग कर सके। उसने अपनी किताब बंद की और धीरे से ऊपर देखा; उसकी टोपी का किनारा उसके चेहरे को आंशिक रूप से ढक रहा था, फिर भी जैसे ही उसने चेहरा उठाया, मैं देख सका कि उसका चेहरा अजीब था। वह पूरी तरह से भूरा और काला दिख रहा था: उसकी ठुड्डी के नीचे से गुजरती हुई सफेद पट्टी के नीचे से परियों की लटें निकली हुई थीं, जो उसके गालों, या कहें जबड़े पर आधी फैली हुई थीं: उसकी आंखें सीधे और निडर निगाहों से मेरी ओर देखने लगीं।

"अच्छा, तो आप अपना भविष्य जानना चाहते हैं?" उसने अपनी आवाज में उतनी ही दृढ़ता से कहा जितनी उसकी निगाहें थीं, और उसके चेहरे की तरह ही कठोर।

“मुझे इसकी परवाह नहीं है, माँ; आप जो चाहें कर सकती हैं: लेकिन मुझे आपको चेतावनी देनी चाहिए, मुझे इस पर विश्वास नहीं है।”

"ऐसा कहना तुम्हारी धृष्टता जैसा है: मुझे तुमसे यही उम्मीद थी; जब तुमने दहलीज पार की तो तुम्हारे कदमों में ही मुझे यह सुनाई दे गया था।"

“क्या तुमने सुना? तुम्हारी सुनने की शक्ति बहुत तेज़ है।”

“मेरे पास है; और मेरी नज़र और दिमाग दोनों ही बहुत तेज़ हैं।”

"आपको अपने व्यवसाय में इन सबकी आवश्यकता होगी।"

“हाँ, बिल्कुल; खासकर जब मुझे आप जैसे ग्राहकों से निपटना होता है। आप क्यों नहीं कांपते?”

मुझे ठंड नहीं लग रही है।

"तुम पीले क्यों नहीं पड़ जाते?"

"मै बीमार नहीं हूँ।"

"आप मेरी कला से सलाह क्यों नहीं लेते?"

मैं मूर्ख नहीं हूँ।

बुढ़िया ने अपने सिर पर बंधी टोपी और पट्टी के नीचे दबी हुई हंसी को दबाया; फिर उसने एक छोटी काली पाइप निकाली और उसे जलाकर पीने लगी। कुछ देर तक इस सुकून देने वाले पेय का आनंद लेने के बाद, उसने अपना झुका हुआ शरीर सीधा किया, पाइप को होठों से हटाया और आग को टकटकी लगाए देखते हुए बड़े ही सधे हुए स्वर में बोली, "तुम्हें ठंड लग रही है; तुम बीमार हो; और तुम मूर्ख हो।"

मैंने पलटकर कहा, "इसे साबित करो।"

संक्षेप में कहूँ तो, तुम ठंडे पड़ गए हो, क्योंकि तुम अकेले हो: कोई भी स्पर्श तुम्हारे भीतर की आग को नहीं जगा सकता। तुम बीमार हो; क्योंकि सबसे उत्तम भावना, मनुष्य को दी गई सर्वोच्च और मधुर भावना, तुमसे दूर रहती है। तुम मूर्ख हो, क्योंकि चाहे तुम कितना भी कष्ट सह लो, तुम उसे पास आने का न बुलाओगे, न ही उससे मिलने के लिए एक कदम भी आगे बढ़ोगे जहाँ वह तुम्हारा इंतज़ार कर रही है।

उसने एक बार फिर अपनी छोटी काली पाइप को होठों से लगाया और पूरे जोश के साथ धूम्रपान करना शुरू कर दिया।

"आप यह सब बातें लगभग किसी भी ऐसे व्यक्ति से कह सकते हैं जिसे आप जानते हों और जो एक बड़े घर में एकाकी आश्रित के रूप में रहता हो।"

मैं यह बात लगभग किसी से भी कह सकता हूँ, लेकिन क्या यह बात लगभग हर किसी के लिए सच होगी?

मेरी परिस्थितियों में।

“हाँ; बिल्कुल, आपकी परिस्थितियों में: लेकिन मुझे आपके जैसी स्थिति वाला

कोई दूसरा व्यक्ति ढूंढकर दिखाओ।”

"आपके लिए हजारों लोग आसानी से मिल जाएंगे।"

“मेरे लिए तो शायद ही कोई ऐसा ढूंढ पाए। अगर आप जानते हैं, तो आप एक अनोखी स्थिति में हैं: खुशी के बहुत करीब; जी हां, बस पहुंच के भीतर। सारी सामग्री तैयार है; बस उन्हें मिलाने के लिए एक प्रयास की जरूरत है। संयोग से वे कुछ अलग-अलग हो गए हैं; बस एक बार उनके करीब आ जाइए और परम आनंद मिल जाएगा।”

मुझे पहेलियाँ समझ नहीं आतीं। मैं अपने जीवन में कभी कोई पहेली सुलझा नहीं पाया।

"यदि आप चाहते हैं कि मैं और स्पष्ट रूप से बोलूं, तो मुझे अपनी हथेली दिखाएं।"

"और मुझे इसे चांदी से पार करना होगा, मुझे लगता है?"

"सुनिश्चित होना।"

मैंने उसे एक शिलिंग दी: उसने उसे अपनी जेब से निकाली एक पुरानी मोज़े की जेब में रख लिया, उसे बांधकर वापस रख दिया और मुझसे हाथ आगे बढ़ाने को कहा। मैंने वैसा ही किया। उसने अपना चेहरा हथेली के पास लाया और बिना छुए उसे ध्यान से देखने लगी।

“ये तो बहुत बारीक है,” उसने कहा। “मैं ऐसी लिखावट को समझ ही नहीं पा रही; लगभग बिना रेखाओं वाली; वैसे भी, हथेली में क्या लिखा होता है? भाग्य तो वहाँ नहीं लिखा जाता।”

मैंने कहा, "मुझे आप पर विश्वास है।"

“नहीं,” उसने आगे कहा, “यह चेहरे में है: माथे पर, आँखों के आसपास, मुँह की रेखाओं में। घुटने टेकें और अपना सिर ऊपर उठाएँ।”

“अहा! अब तुम्हें वास्तविकता का एहसास हो रहा है,” मैंने उसकी बात मानते हुए कहा। “मैं अब तुम पर थोड़ा भरोसा करना शुरू करूँगा।”

मैं उसके बिल्कुल करीब घुटनों के बल बैठ गया। उसने आग को हिलाया, जिससे चिथड़ों से प्रकाश की एक लहर फूट पड़ी: लेकिन जैसे ही वह बैठी, उस तेज रोशनी ने उसके चेहरे को और भी गहरे अंधेरे में धकेल दिया: मेरा चेहरा उस रोशनी से जगमगा उठा।

कुछ देर मुझे निहारने के बाद उसने कहा, “मुझे आश्चर्य है कि आज रात तुम किन

भावनाओं के साथ मेरे पास आए हो। मुझे आश्चर्य है कि तुम्हारे दिल में क्या विचार चल रहे होते हैं जब तुम उस कमरे में घंटों बैठे रहते हो और तुम्हारे सामने वे सुंदर लोग किसी जादुई लालटेन की आकृतियों की तरह मंडराते रहते हैं: मानो वे सचमुच मानव रूपों की मात्र परछाइयाँ हों, न कि वास्तविक मानव।"

मुझे अक्सर थकान महसूस होती है, कभी-कभी नींद आती है, लेकिन मैं शायद ही कभी उदास होता हूँ।

"तो क्या आपके पास भविष्य की फुसफुसाहटों से आपको उत्साहित और प्रसन्न करने के लिए कोई गुप्त आशा है?"

"मैं नहीं। मेरी सबसे बड़ी आशा यही है कि मैं अपनी कमाई में से इतना पैसा बचा सकूँ कि एक दिन मैं अपने द्वारा किराए पर लिए गए एक छोटे से घर में एक स्कूल स्थापित कर सकूँ।"

"आत्मा के लिए एक घटिया पोषण: और उस खिड़की वाली सीट पर बैठे रहना (देखो, मैं तुम्हारी आदतें जानता हूँ) —"

"तुमने इन्हें सेवकों से सीखा है।"

"अरे! तुम खुद को बहुत बुद्धिमान समझते हो। खैर, शायद मैं हूं: सच कहूं तो, मेरी उनमें से एक, श्रीमती पूल से जान-पहचान है—"

नाम सुनते ही मैं एकदम से उठ खड़ा हुआ।

"क्या सच में?" मैंने सोचा; "तो फिर इस धंधे में शैतानी भी शामिल है!"

"घबराइए मत," उस अजनबी ने आगे कहा; "श्रीमती पूल भरोसेमंद हैं: शांत और सौम्य; उन पर कोई भी भरोसा कर सकता है। लेकिन, जैसा कि मैं कह रहा था: उस खिड़की के पास वाली सीट पर बैठे हुए, क्या आप अपने भविष्य के स्कूल के अलावा किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोच रहे हैं? क्या आपको अपने सामने सोफे और कुर्सियों पर बैठे लोगों में कोई दिलचस्पी नहीं है? क्या कोई ऐसा चेहरा नहीं है जिसे आप निहारते हों? कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसकी हरकतों को आप कम से कम जिज्ञासा से देखते हों?"

मुझे सभी चेहरों और सभी आकृतियों का अवलोकन करना अच्छा लगता है।

"लेकिन क्या आप कभी उनमें से एक को अलग नहीं करते - या शायद, दो को?"

"मैं अक्सर ऐसा करता हूं; जब किसी जोड़े के हावभाव या नजरें कोई कहानी बयां करती हुई प्रतीत होती हैं, तो उन्हें देखना मुझे मनोरंजक लगता है।"

आपको कौन सी कहानी सुनना सबसे ज्यादा पसंद है?

"ओह, मेरे पास ज्यादा विकल्प नहीं हैं! वे आम तौर पर एक ही विषय पर आधारित होते हैं - प्रेम प्रसंग; और अंत में एक ही तरह की त्रासदी - विवाह - का वादा करते हैं।"

"और क्या आपको यह नीरस विषय पसंद है?"

"सच कहूं तो, मुझे इसकी परवाह नहीं है: यह मेरे लिए कुछ भी नहीं है।"

“तुम्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता? जब एक युवती, जो जवान, जीवन से भरपूर और स्वस्थ है, अपनी सुंदरता से मनमोहक है और रुतबे व धन-दौलत से संपन्न है, किसी सज्जन की आँखों में देखकर मुस्कुराती है, तो तुम —”

“मैं क्या?”

आप उन्हें जानते हैं—और शायद उनके बारे में अच्छा सोचते भी हों।

“मैं यहाँ मौजूद सज्जनों को नहीं जानता। मैंने उनमें से किसी से मुश्किल से एक शब्द भी बोला है; और जहाँ तक उनके बारे में अच्छी राय की बात है, तो मैं उनमें से कुछ को सम्मानित, गंभीर और मध्यम आयु वर्ग का मानता हूँ, जबकि अन्य युवा, जोशीले, सुंदर और जीवंत हैं: लेकिन निश्चित रूप से वे सभी अपनी इच्छानुसार किसी की भी मुस्कान पाने के लिए स्वतंत्र हैं, और मेरे लिए इस बात पर विचार करना उचित नहीं है कि यह मेरे लिए कोई मायने रखता है।”

“क्या आप यहां मौजूद सज्जनों को नहीं जानते? आपने उनमें से किसी से एक शब्द भी नहीं बोला? क्या आप घर के मालिक के बारे में ऐसा कहेंगे!”

"वह घर पर नहीं है।"

“अत्यंत गहन टिप्पणी! एक अत्यंत चतुर तर्क! वह आज सुबह मिलकोट गए थे, और आज रात या कल वापस आ जाएँगे: क्या इस वजह से वह आपके परिचितों की सूची से बाहर हो जाते हैं - मानो उनका अस्तित्व ही मिट जाता है?”

"नहीं; लेकिन मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि श्री रोचेस्टर का आपके द्वारा प्रस्तुत विषय से क्या संबंध है।"

मैं सज्जनों की आँखों में मुस्कुराती महिलाओं की बात कर रहा था; और हाल ही में श्री रोचेस्टर की आँखों में इतनी मुस्कानें बिखरी हैं कि वे दो भरे हुए प्यालों की तरह छलक रही हैं: क्या आपने कभी इस पर ध्यान नहीं दिया?

"श्री रोचेस्टर को अपने मेहमानों की संगति का आनंद लेने का अधिकार है।"

"उनके अधिकार पर कोई सवाल नहीं है: लेकिन क्या आपने कभी गौर नहीं किया कि यहां विवाह के बारे में बताई गई सभी कहानियों में से, श्री रोचेस्टर को सबसे जीवंत और सबसे निरंतर कहानी का सौभाग्य प्राप्त हुआ है?"

“सुनने वाले की उत्सुकता कहानी सुनाने वाले की ज़ुबान को तेज़ कर देती है।” मैंने ये बात उस जिप्सी से नहीं, बल्कि खुद से कही, जिसकी अजीबोगरीब बातें, आवाज़ और हाव-भाव ने मुझे एक तरह के सपने में जकड़ लिया था। उसके होंठों से एक के बाद एक अनपेक्षित वाक्य निकलते रहे, जब तक कि मैं एक रहस्यमयी जाल में नहीं उलझ गया; और सोचने लगा कि कौन सी अनदेखी आत्मा हफ्तों से मेरे दिल के पास बैठकर उसकी धड़कनों को देख रही थी और हर धड़कन का हिसाब रख रही थी।

“एक श्रोता की उत्सुकता!” उसने दोहराया: “हाँ; श्री रोचेस्टर घंटों बैठे रहे, उनका कान उन आकर्षक होठों की ओर झुका रहा जो संवाद करने के अपने कार्य में इतना आनंद ले रहे थे; और श्री रोचेस्टर सुनने के लिए इतने इच्छुक थे और उन्हें दिए गए इस मनोरंजन के लिए इतने आभारी प्रतीत हो रहे थे; क्या आपने यह देखा है?”

“आभारी! मुझे याद नहीं आता कि मैंने उनके चेहरे पर कृतज्ञता देखी हो।”

“पता लगाना! आपने विश्लेषण कर लिया है। और आपने क्या पता लगाया, अगर कृतज्ञता नहीं तो?”

मेंने कुछ नहीं कहा।

“तुमने प्रेम देखा है, है ना? — और आगे देखते हुए, तुमने उसे विवाहित देखा है, और उसकी दुल्हन को खुश देखा है?”

“हम्म! बिलकुल नहीं। कभी-कभी तुम्हारी जादूगरनी की कुशलता में ही कुछ गड़बड़ हो जाती है।”

"तो फिर तुमने आखिर क्या देखा है?"

"कोई बात नहीं: मैं यहाँ पूछताछ करने आया था, कबूलनामा करने नहीं। क्या यह ज्ञात है कि श्री रोचेस्टर शादी करने वाले हैं?"

“जी हां; और खूबसूरत मिस इंग्राम को भी।”

“जल्द ही?”

“बाहरी तौर पर देखने से तो यही निष्कर्ष निकलता है: और, निस्संदेह (हालाँकि, आप जिस दुस्साहस से इस पर सवाल उठा रहे हैं, वह आपके लिए दंडनीय है), वे

एक बेहद खुशहाल जोड़ी होंगे। उन्हें ऐसी खूबसूरत, नेक, बुद्धिमान और गुणी महिला से ज़रूर प्यार होगा; और शायद वह भी उनसे प्यार करती हैं, या अगर उनके व्यक्तित्व से नहीं, तो कम से कम उनके धन से। मुझे पता है कि वह रोचेस्टर की जागीर को बेहद उपयुक्त मानती हैं; हालाँकि (भगवान मुझे माफ़ करें!) मैंने लगभग एक घंटे पहले इस बारे में उनसे कुछ ऐसा कहा जिससे उनका चेहरा एकदम गंभीर हो गया: उनके होंठ आधे इंच नीचे झुक गए। मैं उनके धूर्त प्रेमी को सावधान रहने की सलाह दूँगा: अगर कोई दूसरा, ज़्यादा या साफ़-सुथरे किराए के साथ आता है, तो वह गया काम से —”

"लेकिन, माँ, मैं श्री रोचेस्टर का भविष्य जानने नहीं आया था: मैं अपना भविष्य जानने आया था; और आपने मुझे इसके बारे में कुछ नहीं बताया।"

“तुम्हारा भाग्य अभी अनिश्चित है: जब मैंने तुम्हारा चेहरा देखा, तो एक भाव दूसरे से विरोधाभासी लगा। किस्मत ने तुम्हें कुछ सुख दिया है: यह मैं जानता हूँ। मुझे यह आज शाम यहाँ आने से पहले ही पता था। उसने इसे तुम्हारे लिए बड़े ध्यान से एक तरफ रख दिया है। मैंने उसे ऐसा करते देखा है। यह तुम पर निर्भर करता है कि तुम अपना हाथ बढ़ाओ और इसे उठा लो: लेकिन क्या तुम ऐसा करोगे, यही वह समस्या है जिसका मैं अध्ययन कर रहा हूँ। कालीन पर फिर से घुटने टेक दो।”

मुझे ज्यादा देर तक मत रोको; आग मुझे झुलसा देती है।

मैं घुटनों के बल बैठ गया। वह मेरी ओर नहीं झुकी, बल्कि कुर्सी पर पीछे की ओर झुककर मुझे देखती रही। वह बुदबुदाने लगी, —

आँख में लौ टिमटिमाती है; आँख ओस की तरह चमकती है; यह कोमल और भावों से भरी हुई लगती है; यह मेरी बातों पर मुस्कुराती है: यह संवेदनशील है; इसके निर्मल क्षेत्र में एक के बाद एक भाव आते रहते हैं; जहाँ यह मुस्कुराना बंद कर देती है, वहाँ यह उदास हो जाती है; पलकों पर एक अचेतन सुस्ती छा जाती है: यह अकेलेपन से उत्पन्न उदासी का संकेत है। यह मुझसे मुँह मोड़ लेती है; यह और अधिक जाँच-पड़ताल सहन नहीं करेगी; यह एक उपहास भरी नज़र से, मेरे द्वारा पहले से की गई खोजों की सच्चाई को नकारती प्रतीत होती है, - संवेदनशीलता और निराशा दोनों के आरोप को अस्वीकार करती है: इसका गर्व और संकोच केवल मेरे मत की पुष्टि करते हैं। आँख अनुकूल है।

“जहाँ तक मुख की बात है, वह कभी-कभी हँसी में आनंदित होता है; वह मस्तिष्क में आने वाले सभी विचारों को व्यक्त करने के लिए तत्पर रहता है; हालाँकि मुझे लगता है कि वह हृदय के कई अनुभवों पर मौन रहना पसंद करेगा। गतिशील और

लचीला होने के कारण, इसे कभी भी एकांत के शाश्वत मौन में सिमटने के लिए नहीं बनाया गया था: यह एक ऐसा मुख है जिसे बहुत बोलना चाहिए, अक्सर मुस्कुराना चाहिए और अपने वार्ताकार के प्रति मानवीय स्नेह रखना चाहिए। यह विशेषता भी शुभ है।"

"मुझे सौभाग्यशाली परिणाम का एकमात्र शत्रु माथे में ही दिखाई देता है; और वह माथा कहता है, 'मैं अकेले रह सकता हूँ, यदि आत्मसम्मान और परिस्थितियाँ ऐसा करने की माँग करें। मुझे सुख खरीदने के लिए अपनी आत्मा बेचने की आवश्यकता नहीं है। मेरे भीतर एक जन्मजात खजाना है, जो मुझे तब भी जीवित रख सकता है जब सभी बाहरी सुख मुझसे छीन लिए जाएँ, या केवल ऐसी कीमत पर दिए जाएँ जिसे मैं वहन नहीं कर सकता।' माथा घोषणा करता है, 'विवेक दृढ़ता से लगाम थामे बैठा है, और वह भावनाओं को बेकाबू होकर मुझे जंगली खाई में धकेलने नहीं देगा। जुनून चाहे कितने भी उग्र हों, जैसे सच्चे विधर्मी होते हैं; और इच्छाएँ हर तरह की व्यर्थ कल्पनाएँ कर सकती हैं: लेकिन हर तर्क में अंतिम शब्द विवेक का ही होगा, और हर निर्णय में निर्णायक मत उसी का होगा। तेज हवा, भूकंप और आग चाहे गुजर जाएँ: लेकिन मैं उस शांत आवाज का अनुसरण करूँगा जो अंतरात्मा की आवाज की व्याख्या करती है।'

"ठीक कहा, माथे वाली; तुम्हारी बात का सम्मान किया जाएगा। मैंने अपनी योजनाएँ बना ली हैं—मुझे लगता है कि ये सही योजनाएँ हैं—और उनमें मैंने अंतरात्मा की आवाज़ और तर्क की सलाह का ध्यान रखा है। मैं जानता हूँ कि जवानी कितनी जल्दी मुरझा जाएगी और फूल नष्ट हो जाएँगे, अगर आनंद के प्याले में शर्म की एक बूंद भी या पश्चाताप का एक अंश भी मिल जाए; और मुझे त्याग, दुःख, विघटन नहीं चाहिए—ये मेरी पसंद नहीं हैं। मैं पोषण करना चाहता हूँ, नष्ट नहीं करना — कृतज्ञता अर्जित करना चाहता हूँ, खून के आँसू नहीं बहाना चाहता—नहीं, नमकीन आँसू भी नहीं: मेरी फसल मुस्कान, स्नेह और मिठास में होनी चाहिए—बस इतना ही काफी है। मुझे लगता है कि मैं एक तरह के अद्भुत उन्माद में हूँ। मैं इस पल को अनंत काल तक खींचना चाहता हूँ; लेकिन हिम्मत नहीं कर पा रहा हूँ। अब तक मैंने खुद को पूरी तरह से नियंत्रित किया है। मैंने वैसा ही किया है जैसा मैंने मन ही मन कसम खाई थी; लेकिन आगे मेरी क्षमता से परे हो सकता है। उठो, मिस आयर: मुझे अकेला छोड़ दो; खेल खत्म हो चुका है।"

मैं कहाँ था? क्या मैं जागा हुआ था या सो रहा था? क्या मैं सपना देख रहा था? क्या मैं अभी भी सपना देख रहा था? बुढ़िया की आवाज़ बदल गई थी: उसका लहजा, उसके हाव-भाव, सब कुछ मुझे ऐसा लग रहा था जैसे शीशे में मेरा अपना चेहरा हो—जैसे मेरी अपनी ज़बान की बोली हो। मैं उठा, लेकिन गया नहीं। मैंने देखा; मैंने आग को हिलाया, और फिर देखा: लेकिन उसने अपने सिर पर अपनी टोपी और पट्टी कसकर बाँध ली, और फिर से मुझे जाने का इशारा किया। लौ ने उसके फैले हुए हाथ को रोशन कर दिया: अब सतर्क होकर, और कुछ नया खोजने के लिए उत्सुक होकर, मैंने तुरंत उस हाथ पर ध्यान दिया। वह हाथ बुढ़ापे की वजह से मुरझाया हुआ नहीं था, जैसे मेरा अपना हाथ था; वह एक गोल, लचीला अंग था, चिकनी उंगलियों वाला, समरूप रूप से मुड़ा हुआ; छोटी उंगली पर एक चौड़ी अंगूठी चमक रही थी, और आगे झुककर, मैंने उसे देखा, और मुझे एक ऐसा रत्न दिखाई दिया जिसे मैंने पहले भी सौ बार देखा था। मैंने फिर से चेहरे को देखा; जो अब मुझसे मुँह नहीं मोड़े हुए था—इसके विपरीत, टोपी उतरी हुई थी, पट्टी हटी हुई थी, और सिर आगे की ओर झुका हुआ था।

“अच्छा, जेन, क्या तुम मुझे जानती हो?” परिचित आवाज ने पूछा।

“बस लाल चोगा उतार दीजिए, महोदय, और फिर—”

"लेकिन धागा उलझ गया है - मेरी मदद करो।"

"इसे तोड़ दीजिए, महोदय।"

“तो फिर— ‘अपना उधार लो!’” और मिस्टर रोचेस्टर अपने भेस से बाहर आ गए।

"जी साहब, यह तो बहुत ही अजीब विचार है!"

“लेकिन बढ़िया तरीके से अंजाम दिया, है ना? आपको ऐसा नहीं लगता?”

"महिलाओं के साथ तो आपने अच्छा ही व्यवहार किया होगा।"

लेकिन आपके साथ नहीं?

"तुमने मेरे साथ बंजारे जैसा व्यवहार नहीं किया।"

“मैंने कौन सा किरदार निभाया? क्या मैंने खुद का किरदार निभाया?”

“नहीं; कोई अज्ञात कारण है। संक्षेप में, मेरा मानना है कि आप मुझे उकसाने की कोशिश कर रहे हैं—या कहें कि उकसाने की; आप बेतुकी बातें करके मुझे बेतुकी बातें बोलने पर मजबूर कर रहे हैं। यह बिल्कुल भी उचित नहीं है, महोदय।”

"क्या तुम मुझे माफ कर दोगी, जेन?"

“जब तक मैं इस बारे में पूरी तरह सोच-विचार नहीं कर लेती, तब तक मैं कुछ नहीं कह सकती। अगर विचार करने पर मुझे पता चलता है कि मैंने कोई बड़ी गलती नहीं की है, तो मैं आपको माफ करने की कोशिश करूंगी; लेकिन यह सही नहीं था।”

"ओह, आप बिल्कुल सही थे - बहुत सावधान, बहुत समझदार।"

मैंने सोचा और महसूस किया कि कुल मिलाकर, मैंने ऐसा ही किया था। इससे मुझे थोड़ी राहत मिली; लेकिन सच तो यह है कि साक्षात्कार की शुरुआत से ही मैं सतर्क था। मुझे कुछ बनावटीपन का शक था। मैं जानता था कि जिप्सी और ज्योतिषी इस दिखने में बूढ़ी औरत की तरह व्यवहार नहीं करते; इसके अलावा मैंने उसकी बनावटी आवाज़ और अपने चेहरे को छिपाने की उसकी बेचैनी पर भी ध्यान दिया था। लेकिन मेरा मन ग्रेस पूल के बारे में सोच रहा था - वह जीती-जागती पहेली, रहस्यों की पराकाष्ठा, जैसा कि मैं उसे समझता था। मैंने मिस्टर रोचेस्टर के बारे में कभी नहीं सोचा था।

“अच्छा,” उसने कहा, “तुम किस बारे में सोच रहे हो? तुम्हारी उस गंभीर मुस्कान का क्या अर्थ है?”

“आश्चर्य और आत्म-प्रशंसा, महोदय। मुझे लगता है कि अब मुझे सेवानिवृत्त होने की आपकी अनुमति मिल गई है?”

“नहीं; एक पल रुकिए; और मुझे बताइए कि उस ड्राइंग रूम में लोग क्या कर रहे हैं।”

"मैं कह सकता हूँ कि हम जिप्सी लोगों के बारे में चर्चा कर रहे हैं।"

बैठ जाओ! मुझे सुनने दो कि उन्होंने मेरे बारे में क्या कहा।

“मुझे ज्यादा देर नहीं रुकना चाहिए, महोदय; लगभग ग्यारह बज चुके होंगे। ओह, क्या आपको पता है, श्री रोचेस्टर, कि आज सुबह आपके जाने के बाद से यहाँ एक अजनबी आया है?”

“एक अजनबी! — नहीं; यह कौन हो सकता है? मुझे किसी की उम्मीद नहीं थी; क्या वह चला गया?”

“नहीं; उसने कहा कि वह आपको लंबे समय से जानता है, और जब तक आप वापस नहीं आते, तब तक वह यहाँ रहने का साहस कर सकता है।”

“उसने क्या किया! क्या उसने अपना नाम बताया?”

“उनका नाम मेसन है, महोदय; और वे वेस्ट इंडीज से आए हैं; मुझे लगता है कि वे

जमैका के स्पैनिश टाउन से हैं।"

श्री रोचेस्टर मेरे पास ही खड़े थे; उन्होंने मेरा हाथ पकड़ रखा था, मानो मुझे कुर्सी तक ले जा रहे हों। जैसे ही मैंने बोलना शुरू किया, उन्होंने मेरी कलाई को ज़ोर से पकड़ लिया; उनके होठों पर मुस्कान जम गई: मानो किसी झटके से उनकी सांस रुक गई हो।

"मेसन! – वेस्ट इंडीज!" उसने ऐसे स्वर में कहा जैसे कोई मशीन अपने एक-एक शब्द बोल रही हो; "मेसन! – वेस्ट इंडीज!" उसने दोहराया; और उसने अक्षरों को तीन बार दोहराया, बोलते-बोलते उसका चेहरा राख से भी अधिक सफेद होता जा रहा था: ऐसा लग रहा था मानो उसे पता ही न हो कि वह क्या कर रहा है।

"क्या आप अस्वस्थ महसूस कर रहे हैं, महोदय?" मैंने पूछा।

"जेन, मुझे चोट लगी है; मुझे चोट लगी है, जेन!" वह लड़खड़ा गया।

"ओह, मुझ पर सहारा लीजिए, महोदय।"

"जेन, तुमने पहले भी मुझे अपना कंधा दिया था; अब मुझे दे दो।"

जी हाँ, महोदय, जी हाँ; और मेरी बांह भी।

वह बैठ गया और मुझे भी अपने बगल में बैठा लिया। मेरा हाथ अपने दोनों हाथों में पकड़कर उसने उसे रगड़ा; और साथ ही साथ अत्यंत परेशान और उदास नज़र से मेरी ओर देखता रहा।

"मेरे प्यारे दोस्त!" उसने कहा, "काश मैं तुम्हारे साथ किसी शांत द्वीप पर होता; और सारी परेशानियाँ, खतरे और भयानक यादें मुझसे दूर होतीं।"

"क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ, महोदय? — मैं आपकी सेवा में अपना जीवन भी दे दूंगा।"

"जेन, अगर मदद की जरूरत पड़ी तो मैं तुमसे ही मदद मांगूंगा; मैं तुमसे वादा करता हूं।"

"धन्यवाद महोदय। मुझे बताइए कि मुझे क्या करना है, मैं कम से कम कोशिश तो करूंगा।"

"जेन, अभी मेरे लिए भोजन कक्ष से एक गिलास शराब ले आओ: वे लोग वहाँ रात का खाना खा रहे होंगे; और मुझे यह भी बताओ कि क्या मेसन उनके साथ है और वह क्या कर रहा है।"

मैं गया। मैंने देखा कि सभी लोग भोजन कक्ष में भोजन कर रहे थे, जैसा कि श्री

रोचेस्टर ने कहा था; वे मेज पर नहीं बैठे थे, बल्कि भोजन साइडबोर्ड पर सजाया गया था; हर किसी ने अपनी पसंद का भोजन ले लिया था, और वे समूहों में इधर-उधर खड़े थे, उनके हाथों में प्लेटें और गिलास थे। हर कोई बेहद खुश लग रहा था; हंसी-मजाक और बातचीत का माहौल था। श्री मेसन आग के पास खड़े कर्नल और श्रीमती डेंट से बात कर रहे थे, और वे भी उतने ही खुश दिख रहे थे। मैंने एक वाइन का गिलास भरा (मैंने देखा कि मिस इंग्राम मुझे ऐसा करते हुए घूर रही थीं: मुझे लगता है कि उन्हें लगा कि मैं कुछ गलत कर रहा हूँ), और मैं पुस्तकालय लौट आया।

श्री रोचेस्टर के चेहरे का अत्यधिक पीलापन गायब हो गया था, और वे एक बार फिर दृढ़ और गंभीर दिख रहे थे। उन्होंने मेरे हाथ से गिलास ले लिया।

“हे सेवक आत्मा, तुम्हारी सेहत अच्छी रहे!” उसने कहा। उसने उसे पी लिया और मुझे वापस दे दिया। “ये लोग क्या कर रहे हैं, जेन?”

"हंसते-हंसते बातें कर रहे हैं, महोदय।"

"वे गंभीर और रहस्यमय नहीं दिखते, मानो उन्होंने कुछ अजीब सुना हो?"

"बिल्कुल नहीं: वे हंसी-मजाक और उल्लास से भरे हुए हैं।"

और मेसन?

वह भी हंस रहा था।

"अगर ये सभी लोग एक साथ आकर मुझ पर थूकें, तो तुम क्या करोगी, जेन?"

"अगर हो सके तो, महोदय, मैं उन्हें कमरे से बाहर निकाल दूंगा।"

वह हल्की सी मुस्कान के साथ बोला, "लेकिन अगर मैं उनके पास जाऊं, और वे मुझे केवल ठंडी निगाहों से देखें, आपस में व्यंग्य भरी फुसफुसाहट करें, और फिर एक-एक करके चले जाएं, तो क्या होगा? क्या तुम उनके साथ जाओगे?"

"मुझे तो ऐसा नहीं लगता, महोदय: मुझे आपके साथ रहने में अधिक आनंद आएगा।"

"मुझे दिलासा देने के लिए?"

"जी हां, महोदय, मैंने आपको यथासंभव सांत्वना देने का प्रयास किया।"

और अगर मेरी बात मानने के कारण तुम पर प्रतिबंध लगा दिया जाए तो?

"शायद मुझे उनके प्रतिबंध के बारे में कुछ भी पता नहीं होना चाहिए; और अगर मुझे पता भी होता, तो मुझे इसकी कोई परवाह नहीं होती।"

तो फिर, क्या आप मेरी खातिर निंदा करने की हिम्मत कर सकते हैं?

"मैं किसी भी ऐसे मित्र के लिए ऐसा करने का साहस कर सकता हूँ जो मेरी निष्ठा का पात्र हो; जैसा कि मुझे यकीन है, आप भी हैं।"

“अब कमरे में वापस जाओ; चुपचाप मेसन के पास जाओ और उसके कान में फुसफुसाकर कहो कि मिस्टर रोचेस्टर आए हैं और उनसे मिलना चाहते हैं: उन्हें अंदर ले आओ और फिर मुझे अकेला छोड़ दो।”

"जी श्रीमान।"

मैंने उनका आदेश मान लिया। जब मैं सीधे उनके बीच से गुजरा तो सभी लोग मुझे घूर रहे थे। मैंने श्री मेसन को ढूंढा, उन्हें संदेश दिया और उनसे पहले कमरे से बाहर निकल गया: मैंने उन्हें पुस्तकालय तक पहुंचाया और फिर मैं ऊपर चला गया।

काफी देर रात, जब मैं कुछ देर बिस्तर पर सो चुका था, तब मैंने आगंतुकों को अपने कमरों की ओर जाते हुए सुना: मैंने श्री रोचेस्टर की आवाज पहचानी और उन्हें कहते सुना, "इधर आओ, मेसन; यह तुम्हारा कमरा है।"

उन्होंने हंसमुख लहजे में बात की: उनके हंसमुख लहजे ने मेरे मन को सुकून दिया। मैं जल्द ही सो गया।

अध्याय XX

मैं अपना पर्दा खींचना भूल गई थी, जो मैं आमतौर पर खींचती थी, और खिड़की का पर्दा भी गिराना भूल गई थी। नतीजा यह हुआ कि जब पूर्णिमा का चमकीला चाँद (क्योंकि रात सुहावनी थी) मेरी खिड़की के ठीक सामने आकाश में आया और बिना ढके शीशे से मुझे देखा, तो उसकी शानदार निगाहों ने मुझे जगा दिया। आधी रात को जागकर मैंने अपनी आँखें खोलीं तो देखा कि चाँदी जैसा सफेद और एकदम साफ था। वह सुंदर तो था, लेकिन कुछ ज्यादा ही गंभीर भी; मैं आधी उठी और पर्दा खींचने के लिए हाथ बढ़ाया।

हे भगवान! कितना रोना था!

रात - उसका सन्नाटा - उसकी शांति, थॉर्नफील्ड हॉल के एक छोर से दूसरे छोर तक गूंजने वाली एक भयंकर, तीखी और कर्कश आवाज से दो टुकड़ों में बिखर गई।

मेरी नब्ज़ रुक गई: मेरा दिल ठहर गया; मेरी फैली हुई बांह सुन्न पड़ गई। चीख शांत हो गई, और दोबारा नहीं निकली। सचमुच, जिस भी प्राणी ने वह भयानक चीख निकाली थी, वह उसे जल्दी दोहरा नहीं सकता था: एंडीज़ पर्वतमाला का सबसे चौड़े पंखों वाला गिद्ध भी अपने घोंसले में छिपे बादल से लगातार दो बार ऐसी चीख नहीं निकाल सकता था। ऐसी आवाज़ निकालने वाले प्राणी को दोबारा कोशिश करने से पहले आराम करना पड़ता।

यह तीसरी मंजिल से निकला; क्योंकि यह मेरे ऊपर से गुजरा। और ठीक ऊपर—हाँ, मेरे कमरे की छत के ठीक ऊपर वाले कमरे में—मुझे अब एक संघर्ष की आवाज सुनाई दी: शोर से ऐसा लग रहा था कि यह जानलेवा संघर्ष था; और एक दबी हुई आवाज चिल्लाई—

“मदद! मदद! मदद!” तीन बार तेजी से।

“क्या कोई नहीं आएगा?” वह चिल्लाया; और फिर, जब लड़खड़ाना और पैर पटकना बेतहाशा जारी था, मैंने तख्तों और प्लास्टर के बीच से देखा: —

“रोचेस्टर! रोचेस्टर! भगवान के लिए, जल्दी आओ!”

एक कमरे का दरवाजा खुला: कोई दौड़ता हुआ या झपटता हुआ गैलरी से गुजरा। ऊपर फर्श पर एक और कदम पड़ा और कुछ गिरा; और सन्नाटा छा गया।

मैंने कुछ कपड़े पहन लिए थे, हालांकि डर से मेरे सारे अंग कांप रहे थे; मैं अपने कमरे से बाहर निकला। सभी सोए हुए जाग गए थे: हर कमरे में चीखें, डरावनी फुसफुसाहटें सुनाई दे रही थीं; एक के बाद एक दरवाजे खुलते गए; कोई बाहर देखता तो कोई बाहर देखता; गैलरी भर गई। सज्जन और महिलाएं, सभी अपने बिस्तरों से उठ गए थे; और “अरे! क्या हुआ?” — “किसे चोट लगी है?” — “क्या हुआ है?” — “रोशनी लाओ!” — “क्या आग लगी है?” — “क्या लुटेरे हैं?” — “हम कहाँ भागें?” ये सवाल सभी घबराए हुए पूछ रहे थे। अगर चाँदनी न होती तो वे घोर अंधेरे में होते। वे इधर-उधर भाग रहे थे; वे एक-दूसरे से सट गए थे: कुछ सिसक रहे थे, कुछ लड़खड़ा रहे थे: घबराहट असहनीय थी।

“रोचेस्टर कहाँ है?” कर्नल डेंट चिल्लाए। “वह मुझे अपने बिस्तर पर नहीं मिल रहा

है।”

“यहाँ! यहाँ!” की आवाज़ जवाब में सुनाई दी। “शांत रहो, तुम सब: मैं आ रहा हूँ।”

गैलरी के आखिरी छोर पर दरवाजा खुला और श्री रोचेस्टर मोमबत्ती लेकर आगे बढ़े: वे अभी-अभी ऊपरी मंजिल से नीचे उतरे थे। एक महिला तुरंत उनके पास दौड़ी; उसने उनका हाथ पकड़ लिया: वह मिस इंग्राम थीं।

“कौन सी भयानक घटना घटी है?” उसने कहा। “बताओ! हमें तुरंत सबसे बुरी खबर बताओ!”

“लेकिन मुझे नीचे मत गिराओ या मेरा गला मत घोंटो,” उसने जवाब दिया: क्योंकि मिस एश्टन अब उससे लिपट गई थीं; और विशाल सफेद लबादों में लिपटी दोनों विधवाएं पूरी रफ्तार से चल रहे जहाजों की तरह उस पर टूट पड़ रही थीं।

“सब ठीक है! सब ठीक है!” वह चिल्लाया। “यह तो महज़ एक नाटक का पूर्वाभ्यास है, जिसमें कुछ भी नहीं का बखेड़ा है। देवियों, दूर रहें, वरना मैं खतरनाक हो जाऊंगा।”

और वह खतरनाक दिख रहा था: उसकी काली आँखों से चिंगारियाँ निकल रही थीं। खुद को बड़ी मुश्किल से शांत करते हुए उसने आगे कहा—

“एक नौकरानी को बुरा सपना आया है; बस इतना ही। वह बहुत जल्दी घबरा जाती है और डर जाती है: उसने अपने सपने को किसी प्रेत या ऐसी ही किसी चीज़ में बदल लिया होगा; और डर के मारे उसे दौरा पड़ गया है। अब, मुझे आप सबको अपने कमरों में वापस भेजना होगा; क्योंकि जब तक घर में सब कुछ व्यवस्थित नहीं हो जाता, उसकी देखभाल नहीं की जा सकती। सज्जनों, कृपया महिलाओं के लिए एक उदाहरण बनें। मिस इंग्राम, मुझे यकीन है कि आप व्यर्थ के डर पर अपनी श्रेष्ठता साबित करने में सफल होंगी। एमी और लुईसा, कबूतरों के जोड़े की तरह अपने-अपने कमरों में लौट जाओ। (विधवाओं से), “अगर आप इस ठंडी गैलरी में और देर तक रहीं, तो आपको निश्चित रूप से ठंड लग जाएगी।”

और इस प्रकार, कभी फुसलाकर तो कभी आदेश देकर, उसने उन सभी को एक बार फिर उनके अलग-अलग कमरों में बंद करवा दिया। मैंने अपने कमरे में वापस जाने का आदेश मिलने का इंतज़ार नहीं किया, बल्कि चुपचाप निकल गया, ठीक वैसे ही जैसे मैंने उसे छोड़ा था।

लेकिन सोने का मन नहीं हुआ: इसके विपरीत, मैंने उठकर सावधानी से कपड़े पहने। चीख के बाद जो आवाज़ें और शब्द मैंने सुने थे, वे शायद केवल मैंने ही सुने थे; क्योंकि वे मेरे ऊपर वाले कमरे से आ रहे थे: लेकिन उनसे मुझे यकीन हो गया कि यह किसी नौकर का सपना नहीं था जिसने पूरे घर में दहशत फैला दी थी; और श्री रोचेस्टर ने जो स्पष्टीकरण दिया था, वह केवल अपने मेहमानों को शांत करने के लिए गढ़ा गया एक मनगढ़ंत किस्सा था। इसलिए, मैंने आपात स्थिति के लिए तैयार रहने के लिए कपड़े पहने। कपड़े पहनने के बाद, मैं काफी देर तक खिड़की के पास बैठा रहा, शांत मैदानों और चांदी जैसे चमकते खेतों को देखता रहा और न जाने किस बात का इंतज़ार करता रहा। मुझे लगा कि उस अजीब चीख, संघर्ष और पुकार के बाद कुछ न कुछ घटना ज़रूर घटित होगी।

नहीं: सन्नाटा छा गया: हर फुसफुसाहट और हलचल धीरे-धीरे थम गई, और लगभग एक घंटे में थॉर्नफील्ड हॉल फिर से रेगिस्तान की तरह शांत हो गया। ऐसा लगा जैसे नींद और रात ने अपना राज फिर से कायम कर लिया हो। इसी बीच चाँद ढलने लगा: वह डूबने ही वाला था। ठंड और अंधेरे में बैठना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था, इसलिए मैंने सोचा कि मैं अपने बिस्तर पर लेट जाऊँ, जैसे कपड़े पहने हुए। मैं खिड़की से हटी और कालीन पर धीरे से सरकी; जैसे ही मैं जूते उतारने के लिए झुकी, किसी ने धीरे से दरवाजे पर दस्तक दी।

मैंने पूछा, "क्या मुझे यहाँ चाहा जाता है?"

"क्या तुम जाग गए हो?" यह आवाज मुझे सुनाई दी, जिसकी मुझे उम्मीद थी, यानी मेरे मालिक की आवाज।

"जी श्रीमान।"

“और कपड़े पहने हुए?”

"हाँ।"

"तो फिर चुपचाप बाहर आ जाओ।"

मैंने आज्ञा का पालन किया। श्री रोचेस्टर गैलरी में एक मशाल लेकर खड़े थे।

उन्होंने कहा, "मैं तुम्हें चाहता हूं, इधर आओ: आराम से आओ, और शोर मत करो।"

मेरी चप्पलें पतली थीं: मैं चटाई वाले फर्श पर बिल्ली की तरह धीरे-धीरे चल सकती थी। वह गैलरी से होते हुए सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया और उस मनहूस तीसरी

मंजिल के अंधेरे, निचले गलियारे में रुक गया: मैं उसके पीछे-पीछे गई और उसके बगल में खड़ी हो गई।

"क्या तुम्हारे कमरे में स्पंज है?" उसने फुसफुसाते हुए पूछा।

"जी श्रीमान।"

"क्या आपके पास कोई लवण हैं— वाष्पशील लवण?"

"हाँ।"

"वापस जाओ और दोनों को ले आओ।"

मैं वापस लौटा, वॉशस्टैंड पर स्पंज ढूंढा, दराज में नमक देखा और फिर से उसी रास्ते पर चल पड़ा। वह अब भी इंतज़ार कर रहा था; उसके हाथ में एक चाबी थी: छोटे काले दरवाजों में से एक के पास पहुँचकर उसने उसे ताले में डाला; वह रुका और फिर मुझसे बात की।

"क्या आपको खून देखकर उल्टी नहीं आती?"

मुझे लगता है कि मैं ऐसा नहीं करूंगा: मेरी अभी तक कभी परीक्षा नहीं हुई है।

जब मैंने उसे जवाब दिया तो मुझे रोमांच का अनुभव हुआ; लेकिन न तो ठंडक महसूस हुई और न ही कमजोरी।

उन्होंने कहा, "बस मुझे अपना हाथ दे दो, बेहोशी का दौरा पड़ने का खतरा मोल लेना ठीक नहीं होगा।"

मैंने अपनी उंगलियाँ उसकी उंगलियों में डालीं। "गर्म और स्थिर," उसने कहा: उसने चाबी घुमाई और दरवाजा खोल दिया।

मुझे एक कमरा दिखाई दिया जिसे मैंने पहले भी देखा था, उस दिन जब श्रीमती फेयरफैक्स ने मुझे घर दिखाया था: उस पर टेपेस्ट्री लगी हुई थी; लेकिन अब टेपेस्ट्री का एक हिस्सा मुड़ा हुआ था, और एक दरवाजा दिखाई दे रहा था, जो तब छिपा हुआ था। यह दरवाजा खुला था; अंदर के कमरे से रोशनी आ रही थी: मुझे वहाँ से एक गुर्राने और झपटने जैसी आवाज़ सुनाई दी, लगभग किसी कुत्ते के झगड़ने जैसी। श्री रोचेस्टर ने अपनी मोमबत्ती नीचे रखते हुए मुझसे कहा, "एक मिनट रुको," और वह अंदर के कमरे की ओर बढ़ गए। उनके प्रवेश करते ही ज़ोरदार हंसी की आवाज़ गूंजी; पहले तो शोरगुल था, फिर ग्रेस पूल की अपनी ही हंसी में बदल गया, "हा! हा!" फिर वह भी वहाँ आ गईं। उन्होंने बिना कुछ बोले ही कुछ व्यवस्था की, हालाँकि मैंने किसी की धीमी आवाज़ सुनी जो उन्हें संबोधित कर रही थी: वह बाहर आए और अपने पीछे

दरवाजा बंद कर लिया।

"यहाँ, जेन!" उसने कहा; और मैं एक बड़े से पलंग के दूसरी तरफ चली गई, जिसके पर्दों ने कमरे के एक बड़े हिस्से को छिपा रखा था। पलंग के सिरहाने के पास एक आरामकुर्सी थी: उस पर एक आदमी बैठा था, कोट को छोड़कर उसने पूरे कपड़े पहने हुए थे; वह स्थिर था; उसका सिर पीछे की ओर झुका हुआ था; उसकी आँखें बंद थीं। मिस्टर रोचेस्टर ने उसके ऊपर मोमबत्ती जलाई; मैंने उसके पीले और बेजान से दिखने वाले चेहरे में अजनबी, मेसन को पहचान लिया: मैंने यह भी देखा कि उसके शरीर का एक हिस्सा और एक बांह लगभग खून से लथपथ थी।

"मोमबत्ती पकड़ो," श्री रोचेस्टर ने कहा, और मैंने उसे पकड़ लिया: वे वॉशस्टैंड से पानी का एक बेसिन लाए: "इसे पकड़ो," उन्होंने कहा। मैंने उनकी बात मानी। उन्होंने स्पंज लिया, उसे पानी में डुबोया, और लाश जैसे चेहरे को गीला किया; उन्होंने मेरी सूंघने वाली बोतल मांगी, और उसे नाक के नथुनों पर लगाया। श्री मेसन ने थोड़ी देर में अपनी आँखें खोलीं; वे कराह उठे। श्री रोचेस्टर ने घायल व्यक्ति की कमीज़ खोली, जिसकी बांह और कंधे पर पट्टी बंधी थी: उन्होंने तेज़ी से बहते खून को स्पंज से पोंछा।

"क्या तत्काल कोई खतरा है?" श्री मेसन ने धीमी आवाज़ में पूछा।

"छी! नहीं – बस मामूली खरोंच है। इतना परेशान मत हो, दोस्त: हिम्मत रखो! मैं अभी तुम्हारे लिए सर्जन बुलाता हूँ: मुझे उम्मीद है कि सुबह तक तुम्हारा ऑपरेशन हो जाएगा। जेन," उसने आगे कहा।

"महोदय?"

"मुझे आपको इस कमरे में इस सज्जन के साथ एक या दो घंटे के लिए छोड़ना होगा: जब खून वापस आएगा तो आप मेरी तरह ही उसे पोंछना: अगर उन्हें कमजोरी महसूस हो, तो आप उस स्टैंड पर रखा पानी का गिलास उनके होठों से लगाना और अपनी नमक की दवा उनकी नाक में डालना। आप किसी भी बहाने से उनसे बात नहीं करेंगे — और — रिचर्ड, अगर आपने उससे बात की तो यह आपकी जान के लिए खतरा होगा: अपने होंठ खोले — खुद को परेशान किया — और इसके परिणामों के लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।"

फिर बेचारा कराह उठा; ऐसा लग रहा था मानो वह हिलने की हिम्मत ही न कर पा रहा हो; मौत या किसी और चीज़ के डर ने उसे लगभग लकवाग्रस्त कर दिया था। श्री रोचेस्टर ने खून से सना हुआ स्पंज मेरे हाथ में थमा दिया, और मैंने भी उसी तरह

उसका इस्तेमाल किया जैसे उन्होंने किया था। उन्होंने एक पल मुझे देखा, फिर कहते हुए, "याद रखना! – कोई बात नहीं," और कमरे से बाहर चले गए। जैसे ही चाबी ताले में घिसी, मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई, और उनके जाते कदमों की आवाज़ सुनाई देना बंद हो गई।

मैं तीसरी मंजिल पर, इसकी रहस्यमयी कोठरियों में से एक में जकड़ा हुआ था; चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था; मेरी आँखों और हाथों के नीचे एक पीला और खून से सना हुआ दृश्य था; एक हत्यारिन मुझसे बस एक दरवाजे की दूरी पर थी: हाँ - यह भयावह था - बाकी मैं सहन कर सकता था; लेकिन ग्रेस पूल के अचानक मुझ पर टूट पड़ने के विचार से ही मैं कांप उठा।

लेकिन मुझे अपनी जगह पर डटे रहना होगा। मुझे इस भयानक चेहरे को देखना होगा—ये नीले, स्थिर होंठ जो खुलने से इनकार कर रहे हैं—ये आँखें जो कभी बंद होती हैं, कभी खुलती हैं, कभी कमरे में इधर-उधर भटकती हैं, कभी मुझ पर टिक जाती हैं, और हमेशा भय की उदासी से भरी रहती हैं। मुझे बार-बार खून और पानी के पात्र में हाथ डुबोना होगा और टपकते खून को पोंछना होगा। मुझे अपने काम पर बुझी न हुई मोमबत्ती की रोशनी को मंद होते देखना होगा; मेरे चारों ओर बुनी हुई प्राचीन टेपेस्ट्री पर परछाइयाँ गहरी होती जा रही हैं, विशाल पुराने पलंग के पर्दों के नीचे काली होती जा रही हैं, और सामने रखे एक बड़े कैबिनेट के दरवाजों पर अजीब तरह से काँप रही हैं—जिसके सामने के हिस्से को बारह पैनलों में विभाजित किया गया था, और उस पर भयावह डिज़ाइन में बारह प्रेरितों के सिर बने हुए थे, प्रत्येक को एक फ्रेम की तरह अपने अलग पैनल में रखा गया था; जबकि उनके ऊपर शीर्ष पर एक काला क्रूस और मरते हुए ईसा मसीह की मूर्ति थी।

जैसे-जैसे बदलता हुआ अंधकार और टिमटिमाती हुई चमक कभी इधर तो कभी उधर मंडराती, कभी दाढ़ी वाले चिकित्सक ल्यूक का माथा झुकता; कभी सेंट जॉन के लंबे बाल लहराते; और अचानक जूडास का शैतानी चेहरा पैनल से उभरता हुआ दिखाई देता, मानो उसमें जान आ रही हो और वह अपने अधीनस्थ के रूप में सर्वोपरि देशद्रोही—स्वयं शैतान—के रहस्योद्घाटन की धमकी दे रहा हो।

इन सबके बीच, मुझे देखने के साथ-साथ सुनना भी था: उस गुफा में छिपे जंगली जानवर या शैतान की हरकतों को सुनने के लिए। लेकिन श्री रोचेस्टर के आने के बाद से ऐसा लग रहा था जैसे वह जगह सम्मोहित हो गई हो: पूरी रात मैंने तीन लंबे

अंतरालों पर केवल तीन आवाजें सुनीं - एक कदम की चरमराहट, कुत्ते के गुर्राने की क्षणिक पुनरावृत्ति, और एक गहरी मानवीय कराह।

फिर मेरे मन में ही चिंता सताने लगी। आखिर यह कौन सा अपराध था जो इस एकांत महल में साक्षात निवास कर रहा था, और जिसे न तो मालिक निकाल पा रहा था और न ही वश में कर पा रहा था? – यह कौन सा रहस्य था, जो रात के सन्नाटे में कभी आग तो कभी खून बहाकर भड़क उठता था? यह कौन सा प्राणी था, जो एक साधारण स्त्री के चेहरे और रूप में लिपटा हुआ, कभी किसी ताने मारने वाले राक्षस की आवाज निकालता था, तो कभी किसी शिकारी पक्षी की तरह?

और जिस आदमी पर मैं झुकी थी—यह साधारण, शांत अजनबी—वह इस भयानक जाल में कैसे फंस गया था? और उस पर क्रोध क्यों टूटा था? उसे इस समय घर के इस हिस्से में आने के लिए किसने मजबूर किया, जबकि उसे बिस्तर पर सो जाना चाहिए था? मैंने सुना था कि मिस्टर रोचेस्टर ने उसे नीचे का कमरा दिया था—वह यहाँ क्यों आया था! और अब, उस पर हुए अत्याचार या धोखे के बावजूद वह इतना शांत क्यों था? मिस्टर रोचेस्टर द्वारा लागू किए गए गुप्तवास को उसने इतनी शांति से क्यों स्वीकार कर लिया? मिस्टर रोचेस्टर ने यह गुप्तवास क्यों लागू किया? उनके मेहमान के साथ दुर्व्यवहार हुआ था, पहले भी उनके जीवन के खिलाफ एक घिनौनी साजिश रची गई थी; और दोनों ही प्रयासों को उन्होंने गुप्त रूप से दबा दिया और गुमनामी में डूब गए! अंत में, मैंने देखा कि मिस्टर मेसन, मिस्टर रोचेस्टर के प्रति विनम्र थे; कि बाद वाले की उग्र इच्छाशक्ति ने पहले वाले की निष्क्रियता पर पूर्ण प्रभुत्व जमा रखा था: उनके बीच हुई कुछ ही बातचीत ने मुझे इसका आश्वासन दिया। यह स्पष्ट था कि उनके पूर्व संबंधों में, एक का निष्क्रिय स्वभाव दूसरे की सक्रिय ऊर्जा से हमेशा प्रभावित होता रहा था: तो फिर श्री मेसन के आगमन की खबर सुनकर श्री रोचेस्टर इतने भयभीत क्यों हो गए? इस निर्भीक व्यक्ति का नाम मात्र, जिसे अब वे एक बच्चे की तरह नियंत्रित करने के लिए अपने शब्दों से ही वश में कर लेते थे, कुछ घंटे पहले उन पर इस प्रकार क्यों आ गिरा, जैसे किसी बलूत के पेड़ पर बिजली गिरती है?

ओह! मैं उसकी नज़र और उसके पीले चेहरे को नहीं भूल सकती जब उसने फुसफुसाते हुए कहा: "जेन, मुझे चोट लगी है - मुझे चोट लगी है, जेन।" मैं उस बांह के कांपने को भी नहीं भूल सकती जिसे उसने मेरे कंधे पर रखा था: और यह कोई

मामूली बात नहीं थी जो फेयरफैक्स रोचेस्टर के दृढ़ निश्चयी मन को इतना झुका सकती थी और उसके बलवान शरीर को कंपा सकती थी।

"वह कब आएगा? वह कब आएगा?" रात जैसे-जैसे लंबी होती गई, मैं मन ही मन रोती रही – मेरा घायल मरीज़ बेहाल, कराहता और बीमार होता जा रहा था: न सुबह हुई, न मदद आई। मैंने बार-बार मेसन के पीले होठों पर पानी लगाया; बार-बार उसे होश में लाने वाले नमक दिए: मेरे प्रयास व्यर्थ लग रहे थे: या तो शारीरिक या मानसिक पीड़ा, या खून की कमी, या तीनों मिलकर उसकी ताकत को तेज़ी से खत्म कर रहे थे। वह इतना कराह रहा था, और इतना कमज़ोर, बेबस और हारा हुआ लग रहा था कि मुझे लगा जैसे वह मर रहा हो; और शायद मैं उससे बात भी न कर पाऊं।

मोमबत्ती आखिरकार बुझ गई; उसके बुझते ही मैंने खिड़की के पर्दों के किनारों पर धूसर रोशनी की लकीरें देखीं: भोर होने वाली थी। तभी मुझे नीचे आंगन में बने उसके दूर के पिंजरे से पायलट के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी: उम्मीद फिर से जाग उठी। और यह उम्मीद बेवजह नहीं थी: पाँच मिनट बाद ही चाबी की चरमराहट और खुलते ताले ने मुझे बताया कि मेरी ड्यूटी खत्म हो गई है। यह दो घंटे से ज़्यादा नहीं चली होगी: कई हफ्ते तो इससे भी छोटे लगे हैं।

मिस्टर रोचेस्टर अंदर आए, और उनके साथ वह सर्जन भी थे जिन्हें वे लेने गए थे।

"अब, कार्टर, सतर्क रहो," उसने आखिरी व्यक्ति से कहा: "मैं तुम्हें घाव पर पट्टी बांधने, उसे कसने, मरीज को नीचे लाने और बाकी सब काम करने के लिए केवल आधा घंटा देता हूँ।"

"लेकिन क्या वह हिलने-डुलने की स्थिति में है, महोदय?"

"इसमें कोई शक नहीं; यह कोई गंभीर बात नहीं है; वह घबराया हुआ है, उसका मनोबल बनाए रखना जरूरी है। चलो, काम पर लग जाओ।"

श्री रोचेस्टर ने मोटा पर्दा हटाया, हॉलैंड ब्लाइंड ऊपर उठाया और जितनी हो सके उतनी रोशनी अंदर आने दी; और मैं यह देखकर आश्चर्यचकित और प्रसन्न हुआ कि भोर कितनी आगे बढ़ चुकी थी: पूरब में गुलाबी किरणें फैलने लगी थीं। फिर वे मेसन के पास गए, जिसका सर्जन पहले से ही इलाज कर रहा था।

"अब, मेरे प्यारे दोस्त, तुम कैसे हो?" उसने पूछा।

"मुझे डर है कि अब मेरा काम तमाम हो चुका है," धीमी आवाज में जवाब आया।

"बिल्कुल नहीं! हिम्मत रखो! आज से दो हफ्ते बाद तुम्हें ज़रा भी नुकसान नहीं

होगा: बस थोड़ा सा खून बहा है, बस इतना ही। कार्टर, उसे यकीन दिलाओ कि कोई खतरा नहीं है।”

"मैं यह काम पूरी ईमानदारी से कर सकता हूँ," कार्टर ने कहा, जिसने अब पट्टियाँ खोल दी थीं; "काश मैं यहाँ जल्दी पहुँच पाता: इतना खून नहीं बहता — लेकिन ये क्या? कंधे का मांस फटा हुआ है और कटा हुआ भी। ये घाव चाकू से नहीं किया गया है: यहाँ दांत लगे हैं!"

“उसने मुझे काट लिया,” उसने धीरे से कहा। “जब रोचेस्टर ने उससे चाकू छीना, तो उसने मुझे शेरनी की तरह डरा दिया।”

"तुम्हें हार नहीं माननी चाहिए थी: तुम्हें तुरंत उससे भिड़ जाना चाहिए था," श्री रोचेस्टर ने कहा।

“लेकिन ऐसी परिस्थितियों में कोई क्या कर सकता था?” मेसन ने जवाब दिया। “ओह, यह बहुत भयानक था!” उसने कांपते हुए कहा। “और मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी: वह शुरू में तो बिल्कुल शांत दिख रही थी।”

“मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी,” उसके दोस्त ने जवाब दिया; “मैंने कहा था—जब तुम उसके पास जाओ तो सावधान रहना। वैसे भी, तुम कल तक इंतजार कर सकते थे और मुझे अपने साथ ले जा सकते थे: आज रात अकेले उससे मिलने की कोशिश करना सरासर मूर्खता थी।”

मुझे लगा कि मैं कुछ अच्छा कर सकता था।

“तुमने सोचा! तुमने सोचा! हाँ, तुम्हारी बातें सुनकर मुझे गुस्सा आ रहा है: लेकिन फिर भी, मेरी सलाह न मानने के कारण तुमने बहुत कष्ट सहा है, और आगे भी सहना पड़ेगा; इसलिए मैं और कुछ नहीं कहूँगा। कार्टर — जल्दी करो! — जल्दी करो! सूरज जल्द ही निकलेगा, और मुझे उसे यहाँ से भेजना ही होगा।”

“जी सर, सीधे देखिए; कंधे पर सिर्फ पट्टी बंधी है। मुझे बांह में लगे दूसरे घाव को देखना होगा: मुझे लगता है कि उसने यहाँ भी अपने दांत गड़ाए हैं।”

"उसने मेरा खून चूसा: उसने कहा कि वह मेरा दिल निचोड़ लेगी," मेसन ने कहा।

मैंने श्री रोचेस्टर को कांपते हुए देखा: घृणा, भय और नफरत की एक विशिष्ट अभिव्यक्ति ने उनके चेहरे को लगभग विकृत कर दिया; लेकिन उन्होंने केवल इतना ही कहा—

"चलो, चुप रहो, रिचर्ड, और उसकी बकवास पर ध्यान मत दो: उसे दोहराओ

मत।"

"काश मैं इसे भूल पाता," यह जवाब था।

"जब आप देश से बाहर होंगे तो आप ऐसा सोचेंगे: जब आप स्पैनिश टाउन लौटेंगे, तो आप उसे मृत और दफन मान सकते हैं - या बल्कि, आपको उसके बारे में बिल्कुल भी सोचने की जरूरत नहीं है।"

इस रात को भूलना नामुमकिन है!

“यह नामुमकिन नहीं है: हिम्मत रखो, यार। दो घंटे पहले तो तुम बिल्कुल बेजान लग रहे थे, और अब तुम बिल्कुल ठीक हो और बातें कर रहे हो। देखो! – कार्टर ने तुम्हारा काम तमाम कर दिया है या लगभग कर ही दिया है; मैं तुम्हें पल भर में ठीक कर दूंगा। जेन” (वापस आने के बाद पहली बार मेरी तरफ मुड़ते हुए उन्होंने कहा), “यह चाबी लो: मेरे बेडरूम में जाओ, और सीधे मेरे ड्रेसिंग रूम में जाओ: अलमारी का सबसे ऊपर वाला दराज खोलो और एक साफ कमीज और रुमाल निकालो: उन्हें यहाँ लाओ; और फुर्ती से काम लेना।”

मैं गया; उसने जिस भंडार का उल्लेख किया था, उसे खोजा, बताए गए लेख ढूंढे और उन्हें लेकर लौट आया।

“अब,” उसने कहा, “जब तक मैं उसके शौच का इंतजाम करता हूँ, तब तक बिस्तर के दूसरी तरफ जाओ; लेकिन कमरे से बाहर मत जाना: तुम्हें फिर से बुलाया जा सकता है।”

मैंने निर्देशानुसार सेवानिवृत्ति ले ली।

“जब तुम नीचे गई थीं, जेन, क्या नीचे कोई हलचल थी?” श्री रोचेस्टर ने थोड़ी देर बाद पूछा।

“नहीं, महोदय; सब कुछ एकदम शांत था।”

“हम तुम्हें चतुराई से यहाँ से निकाल लेंगे, डिक: और यह तुम्हारे और उस बेचारे जीव के लिए भी अच्छा होगा। मैंने ठंड से बचने के लिए बहुत कोशिश की है, और मैं नहीं चाहता कि आखिरकार ऐसा हो। लो, कार्टर, इसे जैकेट पहनाने में मदद करो। तुमने अपना फर वाला लबादा कहाँ छोड़ दिया? मुझे पता है, इस भयानक ठंड में तुम इसके बिना एक मील भी नहीं चल सकते। तुम्हारे कमरे में? — जेन, मिस्टर मेसन के कमरे में जाओ, — जो मेरे कमरे के बगल में है, — और वहाँ जो लबादा दिखेगा उसे ले आओ।”

मैं फिर दौड़ा और फिर लौट आया, अपने साथ फर से जड़ा और किनारीदार एक विशाल लबादा लिए हुए।

“अब, मेरे पास तुम्हारे लिए एक और काम है,” मेरे अथक स्वामी ने कहा; “तुम्हें फिर से मेरे कमरे में आना होगा। जेन, तुमने मखमली जूते पहने हैं, यह तुम्हारी कृपा है! — इस समय कोई अनाड़ी संदेशवाहक काम नहीं आएगा। तुम्हें मेरी श्रृंगार की मेज का बीच वाला दराज खोलना होगा और उसमें से एक छोटी शीशी और एक छोटा गिलास निकालना होगा, — जल्दी करो!”

मैं वांछित जहाजों को लेकर वहां गया और वापस आया।

“बहुत बढ़िया! अब, डॉक्टर साहब, मैं अपनी ज़िम्मेदारी पर खुद ही एक खुराक ले लूँगी। ये दवा मैंने रोम में एक इतालवी धोखेबाज़ से खरीदी थी – एक ऐसा आदमी जिसे आप लात मारते, कार्टर। इसे अंधाधुंध इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर अच्छा रहता है: जैसे अभी। जेन, थोड़ा पानी दे दीजिए।”

उसने छोटा सा गिलास मेरी तरफ बढ़ाया, और मैंने वॉशस्टैंड पर रखी पानी की बोतल से उसे आधा भर लिया।

“बस इतना ही काफी है; अब शीशी के किनारे को गीला कर लो।”

मैंने वैसा ही किया; उसने गहरे लाल रंग के तरल की बारह बूंदें नापीं और उसे मेसन को भेंट किया।

"पियो, रिचर्ड: इससे तुम्हें एक घंटे के लिए वह हिम्मत मिल जाएगी जिसकी तुम्हें कमी है।"

"लेकिन क्या इससे मुझे नुकसान होगा? क्या यह ज्वलनशील है?"

“पियो! पियो! पियो!”

श्री मेसन ने बात मान ली, क्योंकि विरोध करना स्पष्ट रूप से व्यर्थ था। अब उन्होंने कपड़े पहन लिए थे: उनका चेहरा अभी भी पीला था, लेकिन वे अब खून से लथपथ और मैले नहीं थे। श्री रोचेस्टर ने तरल पदार्थ निगलने के बाद उन्हें तीन मिनट तक बैठने दिया; फिर उन्होंने उनका हाथ पकड़ा—

उन्होंने कहा, "अब मुझे पूरा यकीन है कि तुम अपने पैरों पर खड़े हो सकते हो—कोशिश करो।"

मरीज उठ खड़ा हुआ।

“कार्टर, उसे दूसरे कंधे के नीचे से ले लो। हिम्मत रखो, रिचर्ड; बाहर निकलो—

बस इतना ही!”

श्री मेसन ने कहा, "मुझे वाकई बेहतर महसूस हो रहा है।"

“मुझे पूरा यकीन है कि तुम जानती हो। अब, जेन, हमारे आगे-आगे पीछे की सीढ़ियों पर चलो; बगल वाले गलियारे का दरवाजा खोलो, और आँगन में खड़ी (या ठीक बाहर, क्योंकि मैंने उसे कहा था कि वह अपने खड़खड़ाते पहियों को फुटपाथ पर न चलाए) उस गाड़ी के ड्राइवर को बताओ कि वह तैयार रहे; हम आ रहे हैं: और, जेन, अगर कोई आस-पास हो, तो सीढ़ियों के नीचे आकर अपने होंठ सिकोड़ लो।”

तब तक साढ़े पाँच बज चुके थे और सूरज निकलने ही वाला था; लेकिन मैंने रसोई को अभी भी अँधेरा और शांत पाया। बगल के गलियारे का दरवाज़ा बंद था; मैंने उसे जितना हो सके कम आवाज़ के साथ खोला: पूरा आँगन शांत था; लेकिन फाटक खुले हुए थे, और बाहर एक घोड़ागाड़ी खड़ी थी, जिसमें घोड़े तैयार थे और ड्राइवर डिब्बे पर बैठा था। मैं उसके पास गया और कहा कि सज्जन आ रहे हैं; उसने सिर हिलाया: फिर मैंने चारों ओर ध्यान से देखा और सुना। सुबह की खामोशी हर जगह छाई हुई थी; नौकरों के कमरों की खिड़कियों पर अभी भी पर्दे लगे हुए थे; फूलों से लदे बगीचे के पेड़ों पर छोटी-छोटी चिड़िया चहचहा रही थीं, जिनकी डालियाँ आँगन के एक तरफ की दीवार पर सफेद मालाओं की तरह लटकी हुई थीं; बंद अस्तबलों में घोड़ा बीच-बीच में पैर पटक रहे थे: बाकी सब कुछ शांत था।

अब वे सज्जन प्रकट हुए। श्री रोचेस्टर और सर्जन के सहारे मेसन काफी सहजता से चलते हुए प्रतीत हुए: उन्होंने उन्हें गाड़ी में बिठाया; कार्टर उनके पीछे-पीछे आए।

श्री रोचेस्टर ने रिचर्ड से कहा, “उसका ख्याल रखना, और जब तक वह पूरी तरह ठीक न हो जाए, उसे अपने घर पर ही रखना। मैं एक-दो दिन में आकर देखूंगा कि वह कैसा है। रिचर्ड, तुम्हारा हालचाल कैसा है?”

"ताज़ी हवा मुझे तरोताज़ा कर देती है, फेयरफैक्स।"

"कार्टर, उसकी तरफ की खिड़की खुली छोड़ दो; हवा नहीं चल रही है - अलविदा, डिक।"

“फेयरफैक्स —”

"अच्छा, यह क्या है?"

“उसकी देखभाल की जाए; उसके साथ यथासंभव कोमल व्यवहार किया जाए: उसे—” वह रुक गया और फूट-फूटकर रोने लगा।

“मैं अपनी पूरी कोशिश करता हूँ; और मैंने किया है, और करता रहूँगा,” यह जवाब था: उसने गाड़ी का दरवाजा बंद कर दिया, और गाड़ी चली गई।

“काश, यह सब कभी खत्म हो जाए!” श्री रोचेस्टर ने भारी-भरकम आंगन के फाटकों को बंद करते हुए और उन पर ताला लगाते हुए कहा।

यह सब करने के बाद, वह धीमी गति से और खोए हुए से अंदाज़ में बगीचे की सीमा से लगी दीवार में बने एक दरवाजे की ओर बढ़ा। मुझे लगा कि उसका काम मुझसे हो चुका है, इसलिए मैं घर लौटने की तैयारी करने लगी; लेकिन तभी मैंने उसे फिर से "जेन!" कहते सुना। उसने दरवाजा खोल दिया था और मेरे इंतज़ार में खड़ा था।

“कुछ पलों के लिए ऐसी जगह आओ जहाँ थोड़ी ताजगी हो,” उसने कहा; “वह घर तो बस एक कालकोठरी है: क्या तुम्हें ऐसा महसूस नहीं होता?”

"मुझे तो यह एक शानदार हवेली लगती है, महोदय।"

“तुम्हारी आँखों पर अनुभवहीनता का भ्रम छाया हुआ है,” उसने उत्तर दिया; “तुम इसे एक जादुई माध्यम से देख रहे हो: तुम यह नहीं पहचान पा रहे हो कि सोने की परत कीचड़ है और रेशमी पर्दे मकड़ी के जाले; संगमरमर गंदा स्लेट है, और पॉलिश की हुई लकड़ी महज़ बेकार टुकड़े और पपड़ीदार छाल है। अब यहाँ,” (उसने उस हरे-भरे घेरे की ओर इशारा किया जिसमें हम प्रवेश कर चुके थे) “सब कुछ वास्तविक, मधुर और पवित्र है।”

वह एक ऐसे रास्ते पर भटक गया जिसके किनारे बॉक्सवुड के पेड़ लगे थे, एक तरफ सेब, नाशपाती और चेरी के पेड़ थे, और दूसरी तरफ तरह-तरह के पुराने जमाने के फूलों से भरी क्यारियां थीं, जिनमें स्टॉक्स, स्वीट-विलियम्स, प्रिमरोज़, पैंसी, सदर्नवुड, स्वीट-ब्रायर और कई सुगंधित जड़ी-बूटियां मिली हुई थीं। अप्रैल की लगातार बारिश और धूप के बाद एक सुहावनी बसंत की सुबह ने उन्हें अब इतना ताजा बना दिया था: सूरज अभी-अभी छनकर आती पूरब की हल्की रोशनी में प्रवेश कर रहा था, और उसकी रोशनी ओस से भीगे हुए बाग के पेड़ों को रोशन कर रही थी और उनके नीचे बने शांत रास्तों पर चमक रही थी।

"जेन, क्या तुम एक फूल लोगी?"

उसने झाड़ी पर खिले पहले आधे खिले गुलाब को उठाया और मुझे दे दिया।

"धन्यवाद महोदय।"

“क्या तुम्हें यह सूर्योदय पसंद है, जेन? वह आकाश जिसमें ऊँचे और हल्के बादल हैं जो दिन के गर्म होने के साथ-साथ निश्चित रूप से पिघल जाएँगे — यह शांत और सुखद वातावरण?”

“जी हां, बिल्कुल।”

"तुमने एक अजीब रात बिताई है, जेन।"

"जी श्रीमान।"

"और इसकी वजह से तुम्हारा चेहरा पीला पड़ गया है - क्या तुम्हें डर लग रहा था जब मैंने तुम्हें मेसन के साथ अकेला छोड़ा था?"

मुझे डर था कि अंदर वाले कमरे से कोई बाहर आ जाएगा।

लेकिन मैंने दरवाजा बंद कर दिया था - चाबी मेरी जेब में थी: अगर मैं अपने पालतू मेमने को भेड़िये की मांद के इतने पास बिना पहरे के छोड़ देता तो मैं एक लापरवाह चरवाहा होता: तुम सुरक्षित थे।

"क्या ग्रेस पूल अभी भी यहीं रहती हैं, महोदय?"

“अरे हाँ! उसके बारे में ज्यादा मत सोचो—उस बात को अपने विचारों से निकाल दो।”

"लेकिन मुझे लगता है कि जब तक वह यहाँ रहेगी, आपकी जिंदगी बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं है।"

“चिंता मत करो—मैं अपना ख्याल खुद रख लूंगी।”

"क्या कल रात आपको जिस खतरे का आभास हुआ था, वह अब टल गया है, महोदय?"

“जब तक मेसन इंग्लैंड से बाहर नहीं निकल जाता, मैं इसकी गारंटी नहीं दे सकता; और तब भी नहीं। मेरे लिए, जेन, जीना एक ऐसे गड्ढे की सतह पर खड़े होने जैसा है जो किसी भी दिन फटकर आग उगल सकता है।”

लेकिन श्री मेसन आसानी से बहकावे में आने वाले व्यक्ति प्रतीत होते हैं। महोदय, आपका प्रभाव उन पर स्पष्ट रूप से बहुत मजबूत है: वे कभी भी आपका विरोध नहीं करेंगे या जानबूझकर आपको नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।

"अरे नहीं! मेसन मेरी अवहेलना नहीं करेगा; और न ही, यह जानते हुए भी, वह मुझे नुकसान पहुंचाएगा - लेकिन, अनजाने में, वह एक पल में, एक लापरवाह शब्द से, मुझे जीवन से नहीं तो हमेशा के लिए खुशी से वंचित कर सकता है।"

"उसे सावधान रहने के लिए कहिए, महोदय: उसे बताइए कि आपको किस बात का डर है, और उसे दिखाइए कि खतरे को कैसे टाला जा सकता है।"

वह व्यंग्यपूर्ण ढंग से हँसा, जल्दी से मेरा हाथ पकड़ा और उतनी ही जल्दी उसे अपने से दूर फेंक दिया।

“अगर मैं ऐसा कर पाता, मूर्ख, तो खतरा कहाँ होता? पल भर में सब नष्ट हो जाता। जब से मैं मेसन को जानता हूँ, मुझे बस उससे कहना होता है, ‘ऐसा करो,’ और काम हो जाता है। लेकिन इस मामले में मैं उसे आदेश नहीं दे सकता: मैं यह नहीं कह सकता, ‘रिचर्ड, मुझे नुकसान पहुँचाने से सावधान रहो;’ क्योंकि यह ज़रूरी है कि मैं उसे इस बात से अनजान रखूँ कि मुझे नुकसान पहुँचाया जा सकता है। अब तुम उलझन में दिख रहे हो; और मैं तुम्हें और उलझन में डालूँगा। तुम मेरे छोटे दोस्त हो, है ना?”

"मुझे आपकी सेवा करना और हर सही बात में आपकी आज्ञा का पालन करना अच्छा लगता है, महोदय।"

बिल्कुल सही: मैं तुम्हें ऐसा करते हुए देखता हूँ। जब तुम मेरी मदद करते हो और मुझे प्रसन्न करते हो—मेरे लिए और मेरे साथ काम करते हो, जैसा कि तुम हमेशा कहते हो, ‘जो सही है’—तो तुम्हारी चाल-ढाल, हाव-भाव, तुम्हारी आँखों और चेहरे में मुझे सच्ची संतुष्टि दिखाई देती है। क्योंकि अगर मैं तुम्हें वह करने को कहूँ जो तुम्हें गलत लगता है, तो न तो तुम्हारे पैरों में फुर्ती होगी, न हाथों में तेज़ी, न आँखों में चमक और न ही चेहरे पर उत्साह। तब मेरा मित्र शांत और पीला पड़कर मेरी ओर मुड़ेगा और कहेगा, ‘नहीं महोदय; यह असंभव है: मैं यह नहीं कर सकता, क्योंकि यह गलत है;’ और एक स्थिर तारे की तरह शांत हो जाएगा। खैर, तुम भी मुझ पर अधिकार रखते हो और मुझे चोट पहुँचा सकते हो: फिर भी मैं तुम्हें अपनी कमज़ोरी नहीं दिखाता, कहीं ऐसा न हो कि तुम, जो इतने वफादार और मित्रवत हो, मुझे तुरंत वश में कर लो।

"अगर आपको मिस्टर मेसन से उतना ही डर है जितना मुझसे है, तो आप बिल्कुल सुरक्षित हैं।"

“ईश्वर करे ऐसा ही हो! जेन, ये लो, एक मंडप है; बैठ जाओ।”

दीवार में बनी मेहराबनुमा मंडप पर बेलें चढ़ी हुई थीं; उसमें एक साधारण सी कुटिया थी। श्री रोचेस्टर ने उस पर बैठकर मेरे लिए जगह छोड़ दी, लेकिन मैं उनके

सामने खड़ा रहा।

“बैठो,” उसने कहा; “यह बेंच दो लोगों के लिए काफी लंबी है। मेरे बगल में बैठने में तुम्हें कोई झिझक तो नहीं है, है ना? क्या यह गलत है, जेन?”

मैंने उसे यह मानकर जवाब दिया: मुझे लगा कि इनकार करना नासमझी होगी।

“अब, मेरे नन्हे मित्र, जब सूरज ओस पी रहा हो—जब इस पुराने बगीचे के सारे फूल जागकर खिल रहे हों, और पक्षी काँटेदार झाड़ियों से अपने बच्चों के लिए नाश्ता ला रहे हों, और सुबह की मधुमक्खियाँ अपना पहला काम कर रही हों—मैं तुम्हारे सामने एक बात रखूँगा, जिसे तुम्हें अपना मानना होगा: लेकिन पहले, मेरी ओर देखो, और मुझे बताओ कि तुम निश्चिंत हो, और तुम्हें यह डर नहीं है कि मैं तुम्हें रोककर गलती कर रहा हूँ, या तुम यहाँ रुककर गलती कर रहे हो।”

"नहीं, महोदय; मैं संतुष्ट हूँ।"

“तो फिर, जेन, अपनी कल्पना का सहारा लो: मान लो कि तुम अब एक संस्कारी और अनुशासित लड़की नहीं हो, बल्कि बचपन से ही बिगड़ा हुआ एक जंगली लड़का हो; कल्पना करो कि तुम किसी दूर देश में हो; सोचो कि तुम वहाँ एक बड़ी गलती कर बैठते हो, चाहे वह किसी भी तरह की हो या किसी भी मकसद से की गई हो, लेकिन जिसके परिणाम जीवन भर तुम्हारा पीछा करेंगे और तुम्हारे पूरे जीवन को कलंकित कर देंगे। ध्यान रहे, मैं अपराध नहीं कह रहा; मैं खून बहाने या किसी अन्य दोषी कृत्य की बात नहीं कर रहा, जिससे अपराधी कानून के अधीन हो जाए: मेरा शब्द है गलती। समय के साथ तुम्हारे किए के परिणाम तुम्हारे लिए पूरी तरह असहनीय हो जाते हैं; तुम राहत पाने के उपाय करते हो: असामान्य उपाय, लेकिन न तो गैरकानूनी और न ही दोषी। फिर भी तुम दुखी हो; क्योंकि जीवन की सीमा पर ही आशा ने तुम्हारा साथ छोड़ दिया है: दोपहर में तुम्हारा सूरज ग्रहण में डूब जाता है, जो तुम्हें लगता है कि सूर्यास्त तक नहीं हटेगा। कड़वी और नीच यादें ही तुम्हारी यादों का एकमात्र भोजन बन गई हैं: तुम इधर-उधर भटकते हो, निर्वासन में आराम की तलाश में: सुख में खुशी — मेरा मतलब है निर्मम, कामुक सुख में डूबे रहना—जो बुद्धि को कुंद कर देता है और भावनाओं को नष्ट कर देता है। हृदय से व्याकुल और आत्मा से मुरझाए हुए, आप वर्षों के स्वैच्छिक निर्वासन के बाद घर लौटते हैं: आप एक नए व्यक्ति से मिलते हैं— कैसे या कहाँ, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता: आप इस अजनबी में उन अच्छे और उज्ज्वल गुणों का भंडार पाते हैं जिनकी आपने बीस वर्षों से तलाश की है, और जो

आपको पहले कभी नहीं मिले; और वे सभी ताज़े, स्वस्थ, बेदाग और दोषरहित हैं। ऐसा साथ जीवन देता है, पुनर्जीवित करता है: आप बेहतर दिनों की वापसी का अनुभव करते हैं—उच्च इच्छाएँ, शुद्ध भावनाएँ; आप अपने जीवन को फिर से शुरू करना चाहते हैं, और अपने शेष दिनों को एक अमर प्राणी के योग्य तरीके से बिताना चाहते हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, क्या आप रीति-रिवाज की बाधा को पार करने में न्यायसंगत हैं—एक मात्र पारंपरिक अड़चन जिसे न तो आपका विवेक पवित्र मानता है और न ही आपका विवेक स्वीकार करता है?

वह जवाब के लिए रुका: और मैं क्या कहता? काश कोई अच्छी आत्मा मुझे कोई समझदारी भरा और संतोषजनक जवाब सुझा पाती! व्यर्थ की आकांक्षा! पश्चिम की हवा मेरे चारों ओर फैली लताओं में फुसफुसा रही थी; लेकिन कोई कोमल एरियल उसकी सांसों को बोलने का माध्यम नहीं बना रही थी: पक्षी पेड़ों की चोटियों पर गा रहे थे; लेकिन उनका गीत, चाहे कितना भी मधुर क्यों न हो, अस्पष्ट था।

श्री रोचेस्टर ने एक बार फिर अपना प्रश्न प्रस्तुत किया:

“क्या भटकते और पापी, लेकिन अब विश्राम की तलाश में और पश्चाताप करने वाले व्यक्ति को संसार की राय की परवाह न करने का साहस करने का औचित्य है, ताकि वह इस सौम्य, दयालु, मिलनसार अजनबी से हमेशा के लिए जुड़ जाए, और इस प्रकार अपने मन की शांति और जीवन के पुनर्जन्म को सुनिश्चित कर सके?”

“महोदय,” मैंने उत्तर दिया, “किसी भटकते हुए व्यक्ति का विश्राम या किसी पापी का सुधार कभी भी किसी साथी मनुष्य पर निर्भर नहीं होना चाहिए। पुरुष और स्त्रियाँ मरते हैं; दार्शनिक ज्ञान में लड़खड़ाते हैं, और ईसाई अच्छाई में: यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने कष्ट सहा है और गलती की है, तो उसे सुधार की शक्ति और उपचार के लिए सांत्वना पाने के लिए अपने समकक्षों से कहीं अधिक उच्चतर की ओर देखना चाहिए।”

“परन्तु साधन—वह साधन! ईश्वर, जो कार्य करता है, वही साधन नियुक्त करता है। मैं स्वयं—बिना किसी दृष्टांत के, स्पष्ट-साफ़ कहूँ—एक सांसारिक, व्यभिचारी, बेचैन व्यक्ति रहा हूँ; और मेरा मानना है कि मुझे अपने उपचार का साधन मिल गया है—”

वह रुका: पक्षी चहचहाते रहे, पत्तियाँ हल्की सरसरा रही थीं। मुझे लगभग आश्चर्य हुआ कि क्या उन्होंने अपने गीत और फुसफुसाहट रोककर इस अनसुने रहस्य को

सुनने की कोशिश की; लेकिन उन्हें कई मिनट इंतजार करना पड़ता—खामोशी इतनी देर तक खिंची रही। अंत में मैंने देर से बोलने वाले की ओर देखा: वह उत्सुकता से मेरी ओर देख रहा था।

“मेरे प्यारे दोस्त,” उसने बिल्कुल बदले हुए स्वर में कहा—उसका चेहरा भी बदल गया, उसकी सारी कोमलता और गंभीरता गायब हो गई, और वह कठोर और व्यंग्यात्मक हो गया— “तुमने मिस इंग्राम के प्रति मेरे कोमल लगाव को तो देखा ही होगा: क्या तुम्हें नहीं लगता कि अगर मैं उससे शादी कर लूँ तो वह मुझे पूरी तरह से बदल देगी?”

वह तुरंत उठा, बिल्कुल रास्ते के दूसरे छोर तक गया, और जब वापस आया तो वह एक धुन गुनगुना रहा था।

“जेन, जेन,” उसने मेरे सामने रुकते हुए कहा, “जागते-जागते तुम बिल्कुल पीली पड़ गई हो: क्या तुम मुझे अपनी नींद में खलल डालने के लिए कोसना नहीं चाहती?”

“तुम्हें श्राप दूं? नहीं, जनाब।”

“शब्द की पुष्टि में हाथ मिलाओ। कितनी ठंडी उंगलियाँ हैं! कल रात जब मैंने रहस्यमयी कक्ष के द्वार पर इन्हें छुआ था, तब ये गर्म थीं। जेन, तुम मेरे साथ फिर कब पहरा दोगी?”

"जब भी मैं उपयोगी हो सकूँ, महोदय।"

उदाहरण के लिए, मेरी शादी से एक रात पहले! मुझे यकीन है कि मैं सो नहीं पाऊँगी। क्या आप मेरे साथ जागकर मेरा साथ देंगे? मैं आपसे अपनी प्रियतमा के बारे में बात कर सकती हूँ: क्योंकि अब आप उसे देख चुके हैं और जानते हैं।

"जी श्रीमान।"

"वह एक अनोखी इंसान है, है ना, जेन?"

"जी श्रीमान।"

“एकदम तगड़ी, जेन: बड़ी, सांवली और सुडौल; उसके बाल बिल्कुल वैसे ही हैं जैसे कार्थेज की महिलाओं के होते होंगे। अरे वाह! अस्तबल में डेंट और लिन हैं! झाड़ियों के रास्ते, उस छोटे से दरवाज़े से अंदर जाओ।”

मैं एक तरफ गया तो वह दूसरी तरफ चला गया, और मैंने उसे आंगन में खुशी से कहते हुए सुना—

"आज सुबह मेसन आप सभी से पहले निकल गया; वह सूर्योदय से पहले ही चला

गया था: मैं उसे विदा करने के लिए चार बजे उठा था।"

अध्याय XXI

पूर्वाभास विचित्र चीज़ें हैं! और सहानुभूति भी; और संकेत भी; और ये तीनों मिलकर एक ऐसा रहस्य बनाते हैं जिसकी कुंजी मानवता को अभी तक नहीं मिली है। मैंने अपने जीवन में कभी पूर्वाभासों पर हँसी नहीं उड़ाई, क्योंकि मुझे स्वयं भी विचित्र पूर्वाभास हुए हैं। मेरा मानना है कि सहानुभूति मौजूद है (उदाहरण के लिए, दूर-दराज के, लंबे समय से अनुपस्थित, पूरी तरह से अलग-थलग पड़े रिश्तेदारों के बीच, जो अपने अलगाव के बावजूद, उस स्रोत की एकता पर ज़ोर देते हैं जिससे प्रत्येक अपनी उत्पत्ति का पता लगाता है) जिसकी कार्यप्रणाली मनुष्य की समझ से परे है। और संकेत, जहाँ तक हम जानते हैं, प्रकृति की मनुष्य के प्रति सहानुभूति मात्र हो सकते हैं।

जब मैं छोटी बच्ची थी, मात्र छह वर्ष की, एक रात मैंने बेसी लीवन को मार्था एबॉट से यह कहते हुए सुना कि उसने एक छोटे बच्चे का सपना देखा था; और बच्चों का सपना देखना स्वयं या अपने परिवार के लिए किसी मुसीबत का निश्चित संकेत होता है। यह बात शायद मेरी स्मृति से मिट जाती, यदि इसके तुरंत बाद एक ऐसी घटना न घटी होती जिसने इसे मेरे मन में हमेशा के लिए बिठा दिया। अगले दिन बेसी को उसकी छोटी बहन के अंतिम समय में घर बुलाया गया।

हाल ही में मुझे यह कहावत और यह घटना बार-बार याद आ रही थी; क्योंकि पिछले एक हफ्ते में शायद ही कोई रात ऐसी गुज़री हो जब मुझे किसी शिशु का सपना न आया हो। कभी मैं उसे अपनी बाहों में सहलाती, कभी अपनी गोद में झुलाती, कभी लॉन में फूलों से खेलते देखती, तो कभी बहते पानी में हाथ डुबोते देखती। कभी वो रात रोता हुआ बच्चा होता, तो कभी हंसता हुआ: कभी मेरे पास

आकर सोता, कभी मुझसे दूर भागता; लेकिन चाहे वो किसी भी रूप में हो, चाहे उसका चेहरा कैसा भी हो, लगातार सात रातों तक नींद में जाते ही वो मुझसे मिलने ज़रूर आता था।

मुझे एक ही विचार का यह दोहराव पसंद नहीं आया—एक ही छवि का यह अजीबोगरीब बार-बार आना—और जैसे-जैसे सोने का समय नज़दीक आता गया और उस दृश्य का समय नज़दीक आता गया, मैं घबराता गया। उस चांदनी रात में जब मैंने रोने की आवाज़ सुनी, तो मैं उसी शिशु-प्रेत के साथ होने के कारण जागा था; और अगले दिन दोपहर को मुझे एक संदेश मिला कि श्रीमती फेयरफैक्स के कमरे में कोई मुझे बुला रहा है। वहाँ पहुँचने पर मैंने एक आदमी को मेरा इंतज़ार करते हुए पाया, जो किसी सज्जन के नौकर जैसा दिखता था: उसने गहरे शोक के वस्त्र पहने थे, और उसके हाथ में पकड़ी टोपी के चारों ओर एक काला कपड़ा बंधा हुआ था।

“मुझे लगता है कि आपको शायद ही मैं याद हूँ, मिस,” मेरे अंदर आते ही वह उठते हुए बोले; “लेकिन मेरा नाम लीवन है: जब आप आठ-नौ साल पहले गेट्सहेड में थीं, तब मैं श्रीमती रीड के साथ कोचवान का काम करता था, और मैं अभी भी वहीं रहता हूँ।”

“ओह, रॉबर्ट! आप कैसे हैं? मुझे आप बहुत अच्छे से याद हैं: आप मुझे कभी-कभी मिस जॉर्जियाना के भूरे रंग के टट्टू पर घुमाने ले जाते थे। और बेसी कैसी हैं? क्या आपकी शादी बेसी से हो गई है?”

"जी हां, महोदया: मेरी पत्नी बहुत ही स्वस्थ हैं, धन्यवाद; उन्होंने लगभग दो महीने पहले मुझे एक और नन्हा बच्चा दिया - अब हमारे तीन बच्चे हैं - और मां और बच्चा दोनों स्वस्थ हैं।"

“और क्या घर पर परिवार के लोग ठीक हैं, रॉबर्ट?”

"मुझे खेद है कि मैं आपको उनके बारे में कोई बेहतर खबर नहीं दे सकता, महोदया: वे इस समय बहुत बुरी हालत में हैं - बहुत संकट में हैं।"

मैंने उसकी काली पोशाक पर नज़र डालते हुए कहा, "उम्मीद है कोई मरा नहीं होगा।" उसने भी अपनी टोपी के चारों ओर लिपटे काले कपड़े पर नज़र डाली और जवाब दिया—

“श्री जॉन का निधन कल, लंदन स्थित उनके कक्ष में एक सप्ताह पहले हो गया।”

"श्री जॉन?"

"हाँ।"

और उसकी माँ इसे कैसे सहन करती है?

"देखिए, मिस आयर, यह कोई सामान्य दुर्घटना नहीं है: उनका जीवन बहुत ही उथल-पुथल भरा रहा है: पिछले तीन वर्षों में उन्होंने खुद को अजीबोगरीब रास्तों पर चलने दिया, और उनकी मृत्यु चौंकाने वाली थी।"

मैंने बेसी से सुना कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है।

“वाह! इससे बुरा तो हो ही नहीं सकता था: उसने सबसे बुरे आदमियों और औरतों के बीच रहकर अपनी सेहत और सारी दौलत बर्बाद कर दी। वह कर्ज में डूब गया और जेल भी गया: उसकी माँ ने दो बार उसकी मदद की, लेकिन जैसे ही वह रिहा हुआ, वह अपने पुराने साथियों और आदतों में लौट गया। उसका दिमाग खराब था: जिन धूर्तों के बीच वह रहता था, उन्होंने उसे इतना बेवकूफ बनाया जितना मैंने कभी सुना भी नहीं था। वह करीब तीन हफ्ते पहले गेट्सहेड आया और अपनी मालकिन से सब कुछ उसे देने को कहा। मालकिन ने मना कर दिया: उसकी फिजूलखर्ची के कारण उसकी आमदनी काफी कम हो गई थी; इसलिए वह वापस चला गया, और अगली खबर यह आई कि उसकी मौत हो गई है। उसकी मौत कैसे हुई, भगवान ही जाने! - लोग कहते हैं कि उसने आत्महत्या कर ली।”

मैं चुप रहा: हालात बेहद भयावह थे। रॉबर्ट लेवेन ने बोलना फिर शुरू किया—

“मालकिन की तबीयत भी कुछ समय से खराब थी: उनका वजन तो बढ़ गया था, लेकिन उनमें ताकत नहीं बची थी; पैसों की कमी और गरीबी के डर ने उन्हें पूरी तरह तोड़ दिया था। श्री जॉन की मृत्यु की खबर और जिस तरह से हुई, वह अचानक मिली: इससे उन्हें दिल का दौरा पड़ गया। वह तीन दिन तक बोल नहीं पाईं; लेकिन पिछले मंगलवार को उनकी हालत कुछ बेहतर लग रही थी: ऐसा लग रहा था जैसे वह कुछ कहना चाहती हों, और मेरी पत्नी को इशारे कर रही थीं और कुछ बुदबुदा रही थीं। हालांकि, कल सुबह ही बेसी समझ पाई कि वह आपका नाम ले रही थीं; और आखिरकार उन्होंने ये शब्द सुने, ‘जेन को लाओ – जेन आयर को बुलाओ: मैं उससे बात करना चाहती हूं।’ बेसी को यकीन नहीं है कि वह होश में थीं या उनके शब्दों का कोई मतलब था; लेकिन उन्होंने मिस रीड और मिस जॉर्जियाना को बताया और उन्हें आपको बुलवाने की सलाह दी। युवतियों ने पहले तो टालमटोल किया; लेकिन उनकी मां इतनी बेचैन हो गईं और बार-बार ‘जेन, जेन’ कहती रहीं कि आखिरकार वे मान

गईं। मैं कल गेट्सहेड से निकल गया: और अगर आप तैयार हैं मैडम? मैं आपको कल सुबह जल्दी अपने साथ वापस ले जाना चाहूंगा।

"हां, रॉबर्ट, मैं तैयार रहूंगी: मुझे लगता है कि मुझे जाना चाहिए।"

“मुझे भी ऐसा ही लगता है, मिस बेसी ने कहा था कि उन्हें पूरा यकीन है कि आप मना नहीं करेंगी: लेकिन मुझे लगता है कि आपको उतरने से पहले अनुमति लेनी होगी?”

“जी हां; और मैं इसे अभी करूँगा;” और उसे नौकरों के हॉल में भेजकर, और उसे जॉन की पत्नी की देखरेख और जॉन के ध्यान में सौंपकर, मैं मिस्टर रोचेस्टर की तलाश में चला गया।

वह नीचे के किसी भी कमरे में नहीं था; वह आंगन में, अस्तबल में या मैदान में भी नहीं था। मैंने श्रीमती फेयरफैक्स से पूछा कि क्या उन्होंने उसे देखा है; हाँ: उनका मानना था कि वह मिस इंग्राम के साथ बिलियर्ड्स खेल रहा था। मैं जल्दी से बिलियर्ड्स रूम की ओर भागा: वहाँ गेंदों की खनक और आवाज़ों की गूंज सुनाई दे रही थी; श्री रोचेस्टर, मिस इंग्राम, दोनों मिस एश्टन और उनके प्रशंसक सभी खेल में मग्न थे। इतने दिलचस्प माहौल में दखल देना हिम्मत का काम था; लेकिन मेरा काम ऐसा था जिसे मैं टाल नहीं सकता था, इसलिए मैं मास्टर के पास गया जहाँ वह मिस इंग्राम के बगल में खड़े थे। जैसे ही मैं पास पहुँचा, वह मुड़ीं और मुझे घमंडी नज़रों से देखा: उनकी आँखें मानो पूछ रही थीं, "अब इस रेंगने वाले जीव को क्या चाहिए?" और जब मैंने धीमी आवाज़ में कहा, "श्री रोचेस्टर," तो उन्होंने ऐसा इशारा किया मानो मुझे वहाँ से भगाना चाहती हों। मुझे उस समय उनका रूप-रंग याद है—वह बेहद शालीन और आकर्षक थीं: उन्होंने आसमानी नीले रंग का क्रैप गाउन पहना हुआ था; उनके बालों में नीले रंग का पतला स्कार्फ लिपटा हुआ था। खेल के दौरान वह बेहद उत्साहित थीं, और उनकी अभिमानी भाव-भंगिमा में चिढ़ का भी कोई असर नहीं दिख रहा था।

“क्या वह व्यक्ति आपसे मिलना चाहता है?” उसने श्री रोचेस्टर से पूछा; और श्री रोचेस्टर यह देखने के लिए मुड़े कि वह “व्यक्ति” कौन है। उन्होंने एक अजीब सा मुंह बनाया — जो उनके विचित्र और अस्पष्ट हाव-भावों में से एक था — अपना क्यू नीचे फेंक दिया और मेरे पीछे कमरे से बाहर चले गए।

“तो, जेन?” उसने कहा, और अपनी पीठ स्कूल के कमरे के दरवाजे से टिका ली,

जिसे उसने बंद कर दिया था।

"अगर आप चाहें, महोदय, तो मुझे एक या दो सप्ताह की छुट्टी चाहिए।"

“क्या करें? — कहाँ जाएँ?”

"एक बीमार महिला को देखने के लिए जिसने मुझे बुलवाया है।"

“कौन बीमार महिला? — वह कहाँ रहती है?”

“गेट्सहेड में; — -शायर में।”

“-शायर? वो तो सौ मील दूर है! वो कौन हो सकती है जो इतनी दूर से लोगों को उससे मिलने के लिए बुलाती है?”

“उनका नाम रीड है, महोदय – श्रीमती रीड।”

“गेट्सहेड का रीड? गेट्सहेड का एक रीड था, जो एक मजिस्ट्रेट था।”

“यह उनकी विधवा हैं, महोदय।”

“और तुम्हारा उससे क्या लेना-देना है? तुम उसे कैसे जानते हो?”

“श्री रीड मेरे चाचा थे—मेरी मां के भाई।”

“वह तो बिलकुल बेवकूफ था! तुमने मुझे यह बात पहले कभी नहीं बताई थी: तुम हमेशा कहती थी कि तुम्हारे उससे कोई रिश्तेदार नहीं हैं।”

"कोई भी मुझे अपना नहीं मानना चाहता, महोदय। श्री रीड की मृत्यु हो चुकी है, और उनकी पत्नी ने मुझे त्याग दिया है।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं गरीब था, बोझ था, और वह मुझे नापसंद करती थी।"

“लेकिन रीड ने बच्चे छोड़े थे? — आपके चचेरे भाई-बहन तो होंगे ही? सर जॉर्ज लिन कल गेट्सहेड के एक रीड के बारे में बात कर रहे थे, जिनके बारे में उन्होंने कहा था कि वे शहर के सबसे बड़े बदमाशों में से एक थे; और इंग्राम उसी जगह की एक जॉर्जियाना रीड का जिक्र कर रहे थे, जिनकी सुंदरता की एक-दो सीजन पहले लंदन में बहुत प्रशंसा हुई थी।”

“जॉन रीड भी मर गया है, महोदय: उसने खुद को बर्बाद कर लिया और अपने परिवार को भी लगभग बर्बाद कर दिया, और माना जाता है कि उसने आत्महत्या कर ली। इस खबर से उसकी माँ को इतना गहरा सदमा लगा कि उसे मिर्गी का दौरा पड़ गया।”

“और तुम उसका क्या भला कर सकती हो? बकवास है, जेन! मैं कभी भी सौ

मील दौड़कर उस बूढ़ी औरत से मिलने नहीं जाऊंगी जो शायद तुम्हारे पहुँचने से पहले ही मर चुकी हो: इसके अलावा, तुम कहती हो कि उसने तुम्हें छोड़ दिया था।”

जी हाँ, महोदय, लेकिन यह बहुत पहले की बात है; और उस समय उनकी परिस्थितियाँ बहुत अलग थीं: अब मैं उनकी इच्छाओं की उपेक्षा आसानी से नहीं कर सकता।

"तुम कब तक रुकोगे?"

"जितना कम समय हो सके, महोदय।"

"मुझसे वादा करो कि तुम सिर्फ एक हफ्ते रुकोगे—"

"मुझे अपना वचन नहीं देना चाहिए: कहीं ऐसा न हो कि मुझे उसे तोड़ना पड़े।"

“हर हाल में तुम वापस आओगे: किसी भी बहाने से तुम उसके साथ स्थायी रूप से रहने के लिए राजी नहीं होगे?”

“अरे नहीं! अगर सब ठीक रहा तो मैं जरूर लौट आऊंगा।”

“और आपके साथ कौन जाएगा? आप सौ मील की यात्रा अकेले नहीं कर सकते।”

"नहीं, महोदय, उसने अपना कोचवान भेजा है।"

“क्या वह व्यक्ति भरोसेमंद है?”

"जी जी, महोदय, वह दस साल से परिवार में रह रहा है।"

श्री रोचेस्टर सोचने लगे। "आप कब जाना चाहते हैं?"

"कल सुबह जल्दी, महोदय।"

“खैर, तुम्हारे पास कुछ पैसे तो होंगे ही; बिना पैसों के यात्रा नहीं कर सकते, और मुझे लगता है तुम्हारे पास ज्यादा पैसे नहीं होंगे: मैंने तुम्हें अभी तक कोई वेतन नहीं दिया है। जेन, तुम्हारे पास कुल मिलाकर कितनी संपत्ति है?” उसने मुस्कुराते हुए पूछा।

मैंने अपना पर्स निकाला; वह बिल्कुल खाली था। "पांच शिलिंग, महोदय।" उसने पर्स लिया, उसमें से सारी रकम अपनी हथेली में निकाल ली और ऐसे हँसा जैसे उसकी कमी उसे मज़ेदार लग रही हो। थोड़ी देर बाद उसने अपना पर्स निकाला: "ये लीजिए," उसने मुझे एक नोट देते हुए कहा; उसमें पचास पाउंड थे, और उसे मुझे सिर्फ पंद्रह पाउंड देने थे। मैंने उससे कहा कि मेरे पास खुले पैसे नहीं हैं।

मुझे बदलाव नहीं चाहिए; तुम यह जानते हो। अपनी तनख्वाह ले लो।

मैंने अपने हक से अधिक लेने से इनकार कर दिया। पहले तो उसने तेवर चढ़ाए; फिर, मानो कुछ याद आने पर, उसने कहा—

“ठीक है, ठीक है! अभी सब कुछ न देना ही बेहतर है: अगर तुम्हारे पास पचास पाउंड होते, तो शायद तुम तीन महीने दूर रहते। दस हैं; क्या यह काफी नहीं है?”

जी हाँ, महोदय, लेकिन अब आपको मुझे पाँच डॉलर देने होंगे।

"तो फिर वापस आकर ले जाना; मैं चालीस पाउंड के लिए तुम्हारा बैंकर हूँ।"

"श्रीमान रोचेस्टर, जब मुझे यह अवसर मिल रहा है, तो मैं आपसे एक अन्य व्यावसायिक मामले का भी उल्लेख कर देता हूँ।"

“क्या यह व्यापार से संबंधित कोई मामला है? मुझे इसे सुनने में दिलचस्पी है।”

"क्या आपने मुझे लगभग यह बता ही दिया है, महोदय, कि आपकी जल्द ही शादी होने वाली है?"

“हाँ; तो फिर क्या?”

"ऐसे में, महोदय, एडेल को स्कूल जाना चाहिए: मुझे यकीन है कि आप इसकी आवश्यकता को समझेंगे।"

“उसे मेरी दुल्हन के रास्ते से हटाने के लिए, वरना वो उसे बहुत ही बेरहमी से कुचल सकती है? इस सुझाव में समझदारी है; इसमें कोई शक नहीं। जैसा कि आप कहते हैं, एडेल को स्कूल जाना ही होगा; और आपको तो सीधे शैतान के पास जाना ही होगा?”

"मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा, महोदय; लेकिन मुझे कहीं और नौकरी तलाशनी होगी।"

“बिल्कुल!” उसने कर्कश स्वर और चेहरे के विकृत भावों के साथ कहा, जो एक साथ अविश्वसनीय और हास्यास्पद थे। उसने कुछ मिनट तक मेरी ओर देखा।

"और मुझे लगता है कि आप बूढ़ी मैडम रीड या उनकी बेटियों, मिसेज़ से, कोई जगह ढूंढने का अनुरोध करेंगे?"

"नहीं महोदय; मेरे अपने रिश्तेदारों के साथ ऐसे संबंध नहीं हैं कि मैं उनसे मदद मांगने का हकदार हो सकूं - लेकिन मैं विज्ञापन जरूर दूंगा।"

“तुम मिस्र के पिरामिडों पर चढ़ोगी!” वह गुर्राया। “अपनी जान जोखिम में डालो! काश मैंने तुम्हें दस पाउंड की जगह एक सॉवरेन ही दे दिया होता। मुझे नौ पाउंड वापस दे दो, जेन; मुझे इसकी ज़रूरत है।”

“जी हाँ, मैंने भी,” मैंने अपने हाथ और पर्स पीछे रखते हुए जवाब दिया। “मैं किसी भी हालत में पैसे नहीं दे सकती थी।”

“कितनी कंजूस हो तुम!” उसने कहा, “मेरी पैसों की गुहार ठुकरा रही हो! मुझे पाँच पाउंड दे दो, जेन।”

“पांच शिलिंग नहीं, महोदय; न ही पांच पेंस।”

मुझे बस नकदी देखने दीजिए।

"नहीं, महोदय; आप पर भरोसा नहीं किया जा सकता।"

जेन!

"महोदय?"

"मुझसे एक बात का वादा करो।"

"मैं आपसे वादा करता हूँ, महोदय, कि मैं वह सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे लगता है कि मैं कर सकता हूँ।"

“इसका प्रचार न करें: और इस अवसर की तलाश का जिम्मा मुझ पर छोड़ दें। मैं समय आने पर आपके लिए एक उपयुक्त अवसर ढूंढ लूंगा।”

"मुझे ऐसा करने में खुशी होगी, महोदय, यदि आप बदले में यह वादा करें कि आपकी दुल्हन के घर में प्रवेश करने से पहले मैं और एडेल दोनों सुरक्षित रूप से घर से बाहर निकल जाएंगे।"

“बहुत खूब! बहुत खूब! मैं इस पर अपना वचन देता हूँ। तो आप कल जाएँगे?”

जी हाँ; जल्दी।

"क्या आप रात के खाने के बाद ड्राइंग रूम में आएँगे?"

"नहीं महोदय, मुझे यात्रा की तैयारी करनी होगी।"

तो क्या हमें कुछ समय के लिए एक-दूसरे से विदा लेनी होगी?

"मुझे लगता है ऐसा ही है, महोदय।"

“और लोग विदाई की वह रस्म कैसे निभाते हैं, जेन? मुझे सिखाओ; मैं इसके लिए पूरी तरह तैयार नहीं हूँ।”

वे अलविदा कहते हैं, या वे जो भी रूप पसंद करें।

"तो यह कहो।"

"विदाई, श्री रोचेस्टर, फिलहाल के लिए।"

मुझे क्या कहना चाहिए?

"अगर आप चाहें तो वही, महोदय।"

"फिलहाल के लिए अलविदा, मिस आयर; क्या बस इतना ही?"

"हाँ?"

“मुझे तो यह कंजूसी भरा, नीरस और बेरुखा लगता है। मुझे कुछ और चाहिए: रस्म में कुछ बदलाव। जैसे हाथ मिलाना; लेकिन नहीं—इससे भी मुझे संतुष्टि नहीं मिलेगी। तो क्या तुम सिर्फ अलविदा कहोगी, जेन?”

"बस इतना ही काफी है, महोदय: एक हार्दिक शब्द में भी उतनी ही सद्भावना व्यक्त की जा सकती है जितनी कई शब्दों में।"

“बहुत संभावना है; लेकिन यह खाली और ठंडा है — ‘अलविदा’।”

“वह कब तक उस दरवाजे से पीठ टिकाकर खड़ा रहेगा?” मैंने खुद से पूछा; “मुझे अपना सामान पैक करना शुरू करना है।” खाने की घंटी बजी और वह अचानक बिना कुछ बोले भाग गया: मैंने उसे दिन भर फिर नहीं देखा और सुबह उसके उठने से पहले ही मैं वहां से निकल गई थी।

मैं मई की पहली तारीख को दोपहर करीब पांच बजे गेट्सहेड स्थित लॉज पहुंचा: हॉल में जाने से पहले मैं अंदर गया। वह बहुत साफ-सुथरा था: सजावटी खिड़कियों पर छोटे-छोटे सफेद पर्दे लगे थे; फर्श बिल्कुल साफ था; अंगीठी और चूल्हे के औजार चमकीले थे, और आग साफ जल रही थी। बेसी चूल्हे पर बैठी अपने सबसे छोटे बच्चे को दूध पिला रही थी, और रॉबर्ट और उसकी बहन एक कोने में चुपचाप खेल रहे थे।

“आपका भला हो! मुझे पता था कि आप आएंगे!” मेरे प्रवेश करते ही श्रीमती लीवन ने कहा।

“जी बेसी,” मैंने उसे चूमने के बाद कहा; “और मुझे उम्मीद है कि मैं बहुत देर नहीं हुई हूँ। श्रीमती रीड कैसी हैं? — उम्मीद है कि वह अभी भी जीवित हैं।”

“हां, वह जीवित है; और पहले से कहीं अधिक समझदार और संयमित है। डॉक्टर का कहना है कि वह एक-दो सप्ताह और जीवित रह सकती है; लेकिन उन्हें नहीं लगता कि वह पूरी तरह से ठीक हो पाएगी।”

"क्या उसने हाल ही में मेरे बारे में बात की है?"

“आज सुबह ही वो आपके बारे में बात कर रही थी और चाहती थी कि आप आ जाएँ, लेकिन अब वो सो रही है, या यूँ कहूँ कि दस मिनट पहले जब मैं घर पर थी तब सो रही थी। वो आम तौर पर दोपहर भर सुस्ती में रहती है और लगभग छह या सात

बजे उठती है। क्या आप यहाँ एक घंटे आराम कर लेंगी, मैडम, फिर मैं आपके साथ ऊपर आ जाऊँगी?"

रॉबर्ट अंदर आया, और बेसी ने अपने सोए हुए बच्चे को पालने में लिटा दिया और उसका स्वागत करने चली गई। बाद में उसने मुझसे अपना बोनट उतारने और चाय पीने का आग्रह किया, क्योंकि उसने कहा कि मैं पीली और थकी हुई लग रही थी। मुझे उसकी मेहमाननवाज़ी स्वीकार करने में खुशी हुई; और मैंने अपने यात्रा के कपड़े उतारने की अनुमति उसी सहजता से दे दी, जैसे मैं बचपन में उसे अपने कपड़े उतारने देती थी।

जैसे ही मैंने उसे भागदौड़ करते देखा, पुराने दिन मेरे मन में उमड़ आए—वह अपनी सबसे अच्छी चाय की थाली सजा रही थी, ब्रेड और मक्खन काट रही थी, चाय के साथ केक सेंक रही थी, और बीच-बीच में छोटे रॉबर्ट या जेन को हल्के से थपथपा रही थी या धक्का दे रही थी, ठीक वैसे ही जैसे वह मुझे पहले दिया करती थी। बेसी ने अपना तेज गुस्सा, फुर्ती और खूबसूरती बरकरार रखी थी।

चाय तैयार थी, मैं मेज की ओर बढ़ने ही वाला था कि उसने मुझे वहीं बैठने को कहा, बिल्कुल अपने पुराने सख्त लहजे में। उसने कहा, मुझे चूल्हे के पास ही चाय परोसी जानी चाहिए; और उसने मेरे सामने एक छोटी गोल ट्रे में मेरा कप और टोस्ट की प्लेट रख दी, ठीक वैसे ही जैसे वह पहले मुझे चुपके से चुराई हुई कोई स्वादिष्ट मिठाई बच्चों की कुर्सी पर परोसती थी: और मैंने मुस्कुराते हुए उसकी बात मान ली, जैसे पहले दिनों में करता था।

वह जानना चाहती थी कि क्या मैं थॉर्नफील्ड हॉल में खुश हूँ, और वहाँ की मालकिन कैसी हैं; और जब मैंने उन्हें बताया कि वहाँ केवल एक मालिक है, तो क्या वह एक अच्छे सज्जन हैं, और क्या मैं उन्हें पसंद करती हूँ। मैंने उन्हें बताया कि वह दिखने में थोड़े बदसूरत हैं, लेकिन काफी सज्जन हैं; और वह मेरे साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, और मैं संतुष्ट हूँ। फिर मैंने उन्हें उस खुशनुमा समूह के बारे में बताना शुरू किया जो हाल ही में उस घर में रुका था; और बेसी ने इन विवरणों को दिलचस्पी से सुना: ये ठीक उसी तरह के विवरण थे जो उन्हें पसंद थे।

ऐसी बातचीत में एक घंटा जल्दी ही बीत गया: बेसी ने मुझे मेरी टोपी वगैरह लौटा दी, और उसके साथ मैं लॉज से निकलकर हॉल में चला गया। लगभग नौ साल पहले, मैं उसी के साथ उस रास्ते पर चला था जिस पर मैं अब चल रहा था। जनवरी की एक

अंधेरी, धुंध भरी, ठंडी सुबह, मैं एक शत्रुतापूर्ण छत को हताश और कड़वे दिल से छोड़कर, एक अपराधी और लगभग तिरस्कृत महसूस करते हुए, लोवुड के ठंडे आश्रय की तलाश में निकला था: वह सीमा जो इतनी दूर और अनजानी थी। वही शत्रुतापूर्ण छत अब फिर मेरे सामने खड़ी थी: मेरी संभावनाएं अभी भी अनिश्चित थीं; और मेरा दिल अभी भी दुखी था। मैं अभी भी धरती पर एक भटकते हुए व्यक्ति जैसा महसूस कर रहा था; लेकिन मुझे खुद पर और अपनी क्षमताओं पर अधिक दृढ़ विश्वास था, और उत्पीड़न का भय कम हो गया था। मेरे साथ हुए अन्याय का गहरा घाव भी अब पूरी तरह भर चुका था; और आक्रोश की आग बुझ चुकी थी।

बेसी ने हॉल से मेरे आगे चलते हुए कहा, "आप पहले नाश्ते के कमरे में जाइए; वहां युवतियां होंगी।"

अगले ही पल मैं उस अपार्टमेंट में था। वहाँ का हर फर्नीचर ठीक वैसा ही दिख रहा था जैसा उस सुबह था जब मेरी पहली मुलाकात मिस्टर ब्रॉकलहर्स्ट से हुई थी: जिस कालीन पर वे खड़े हुए थे, वह अभी भी चूल्हे पर बिछी हुई थी। किताबों की अलमारियों पर नज़र डालते हुए, मुझे लगा कि मैं बेविक की 'ब्रिटिश बर्ड्स' की दो प्रतियाँ तीसरी शेल्फ पर अपनी पुरानी जगह पर देख सकता हूँ, और 'गुलिवर ट्रेवल्स' और 'अरेबियन नाइट्स' ठीक उसके ऊपर रखी हुई थीं। निर्जीव वस्तुएँ तो नहीं बदली थीं; लेकिन सजीव वस्तुएँ इतनी बदल चुकी थीं कि उन्हें पहचानना मुश्किल था।

दो युवतियाँ मेरे सामने प्रकट हुईं; एक बहुत लंबी, लगभग मिस इंग्राम जितनी लंबी — बेहद दुबली-पतली, पीली त्वचा और गंभीर भाव वाली। उसकी आँखों में एक तपस्वीपन था, जो उसके सीधे स्कर्ट वाले काले कपड़े के परिधान, कड़क लिनेन कॉलर, कनपटी से दूर कंघी किए हुए बालों और काले मोतियों की माला व क्रूस जैसे नन जैसे आभूषणों से और भी बढ़ गया था। मुझे पूरा यकीन था कि यह एलिज़ा ही है, हालाँकि उस लंबे और रंगहीन चेहरे में मुझे उसके पहले के रूप की कोई झलक नहीं दिखी।

दूसरी लड़की भी निश्चित रूप से जॉर्जियाना ही थी: लेकिन वो जॉर्जियाना नहीं जिसे मैं याद करता था— ग्यारह साल की दुबली-पतली और परी जैसी लड़की। ये तो पूरी तरह से विकसित, काफी गोल-मटोल लड़की थी, मोम की मूर्ति जैसी गोरी, सुंदर और सुव्यवस्थित चेहरे की बनावट, नीली आँखों में उदासी और घुंघराले पीले बाल। उसकी पोशाक का रंग भी काला था; लेकिन उसका डिज़ाइन उसकी बहन की पोशाक

से इतना अलग था—इतना अधिक प्रवाहमय और आकर्षक कि वो उतनी ही स्टाइलिश लग रही थी जितनी दूसरी की पोशाक रूढ़िवादी।

दोनों बहनों में से प्रत्येक में माँ का एक गुण था - और केवल एक ही; दुबली-पतली और पीली दिखने वाली बड़ी बेटी की आँखें अपनी माँ की तरह केयर्नगोर्म जैसी थीं: खिलखिलाती और भरपूर छोटी लड़की के जबड़े और ठोड़ी की बनावट उनकी माँ जैसी थी - शायद थोड़ी नरम हो गई थी, लेकिन फिर भी चेहरे को एक अवर्णनीय कठोरता प्रदान करती थी जो अन्यथा इतनी कामुक और सुडौल थी।

जैसे ही मैं आगे बढ़ा, दोनों महिलाएं मेरा स्वागत करने के लिए खड़ी हो गईं और दोनों ने मुझे "मिस आयर" कहकर पुकारा। एलिज़ा का अभिवादन संक्षिप्त और रूखे स्वर में था, बिना किसी मुस्कान के; फिर वह वापस बैठ गई, अपनी नज़रें आग पर टिका दीं और मानो मुझे भूल ही गई हो। जॉर्जियाना ने अपने "आप कैसी हैं?" के साथ-साथ मेरी यात्रा, मौसम आदि के बारे में कई सामान्य बातें भी पूछीं, जो कुछ धीमी और उबाऊ आवाज़ में कही गईं: और साथ ही कई तिरछी निगाहें भी डालीं जो मुझे सिर से पैर तक परख रही थीं - कभी मेरी सादी मेरिनो फर वाली कोट की सिलवटों पर, तो कभी मेरी कॉटेज बोनट की सादी किनारी पर। युवतियों में बिना कुछ कहे ही यह जताने का एक अनोखा तरीका होता है कि वे आपको एक "चुनौती" समझती हैं। उनकी नज़रों में एक खास तरह का घमंड, व्यवहार में शीतलता, और स्वर में बेपरवाही, बिना किसी स्पष्ट अभद्रता के उनके विचारों को पूरी तरह से व्यक्त कर देती है।

लेकिन चाहे छुपकर हो या खुलकर, अब उनका तिरस्कार मुझ पर उतना असर नहीं कर पाता था जितना पहले करता था: अपने चचेरे भाइयों के बीच बैठे हुए मुझे आश्चर्य हुआ कि एक की पूर्ण उपेक्षा और दूसरे के अर्ध-व्यंग्यपूर्ण व्यवहार के बावजूद मैं कितना सहज महसूस कर रहा था – एलिज़ा ने मुझे न तो अपमानित किया और न ही जॉर्जियाना ने मुझे परेशान किया। दरअसल, मेरे पास सोचने के लिए और भी बातें थीं; पिछले कुछ महीनों में मेरे भीतर ऐसी भावनाएँ उमड़ पड़ी थीं जो उनकी कल्पना से कहीं अधिक प्रबल थीं – ऐसे दर्द और सुख जो उनकी कल्पना से कहीं अधिक तीव्र और उत्कृष्ट थे – कि उनके व्यवहार से मुझे अच्छे या बुरे की कोई परवाह नहीं थी।

"श्रीमती रीड कैसी हैं?" मैंने थोड़ी देर बाद जॉर्जियाना की ओर शांत भाव से देखते हुए पूछा, जिसने सीधे संबोधन पर इस तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त की, मानो यह एक

अप्रत्याशित स्वतंत्रता हो।

“श्रीमती रीड? आह! माँ, आपका मतलब है; उनकी तबीयत बहुत खराब है: मुझे संदेह है कि आप आज रात उनसे मिल पाएंगी।”

मैंने कहा, "अगर आप बस ऊपर जाकर उसे बता दें कि मैं आ गया हूँ, तो मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।"

जॉर्जियाना लगभग चौंक गई और उसने अपनी नीली आँखें हैरानी से चौड़ी कर लीं। मैंने आगे कहा, "मुझे पता है कि वह मुझसे मिलना चाहती थी, और मैं उसकी इस इच्छा को पूरा करने में ज़रूरत से ज़्यादा देरी नहीं करूँगा।"

“माँ को शाम को परेशान होना पसंद नहीं है,” एलिज़ा ने कहा। मैं जल्दी से उठी, चुपचाप बिना बुलाए अपनी टोपी और दस्ताने उतारे, और कहा कि मैं बेसी के पास जा रही हूँ—जो शायद रसोई में थी—और उससे पूछूँगी कि क्या श्रीमती रीड आज रात मुझसे मिलने के लिए तैयार हैं या नहीं। मैं गई, और बेसी को ढूंढकर उसे अपना काम सौंपने के बाद, मैंने आगे की तैयारी शुरू की। अब तक मेरी आदत हमेशा घमंड से दूर रहने की रही थी: आज जिस तरह का स्वागत हुआ था, एक साल पहले तो मैं अगले ही दिन गेट्सहेड छोड़ने का फैसला कर लेती; अब मुझे अचानक समझ आ गया कि यह एक मूर्खतापूर्ण योजना होगी। मैं अपनी चाची से मिलने के लिए सौ मील का सफर तय करके आई थी, और मुझे उनके ठीक होने तक—या उनकी मृत्यु तक—उनके साथ रहना होगा: उनकी बेटियों के घमंड या मूर्खता की बात हो, तो मुझे उसे एक तरफ रखना होगा, खुद को उससे अलग करना होगा। इसलिए मैंने हाउसकीपर से बात की; मैंने उससे मुझे एक कमरा दिखाने के लिए कहा, उसे बताया कि मैं शायद यहाँ एक या दो सप्ताह के लिए आगंतुक रहूँगा, अपना सामान अपने कमरे में पहुँचाया और मैं खुद भी उसके पीछे-पीछे वहाँ गया: मैं बेसी से सीढ़ियों पर मिला।

“मालकिन जाग गई हैं,” उसने कहा; “मैंने उन्हें बता दिया है कि आप यहाँ हैं: आइए और देखते हैं कि क्या वह आपको पहचान पाएंगी।”

मुझे उस जाने-माने कमरे तक जाने के लिए किसी के मार्गदर्शन की ज़रूरत नहीं थी, जहाँ मुझे पहले अक्सर डांट-फटकार के लिए बुलाया जाता था। मैं बेसी से पहले ही जल्दी से दरवाज़ा खोला: मेज़ पर एक हल्की रोशनी थी, क्योंकि अब अंधेरा हो रहा था। वहाँ पुराने ज़माने की तरह सुनहरे पर्दों वाला बड़ा चारपाई वाला पलंग था; वहाँ शौच की मेज़, आरामकुर्सी और वह पायदान था, जिसके सामने मुझे सौ बार घुटने

टेककर उन अपराधों के लिए माफ़ी माँगने की सज़ा मिली थी जो मैंने किए ही नहीं थे। मैंने पास के एक कोने में देखा, इस उम्मीद में कि शायद मुझे वहाँ छिपी हुई किसी डरावनी छड़ी की पतली सी आकृति दिखाई दे, जो शैतान की तरह उछलकर मेरी काँपती हथेली या सिकुड़ती गर्दन पर वार करने के लिए तैयार रहती थी। मैं पलंग के पास गया; मैंने पर्दे खोले और ऊँचे-ऊँचे तकियों पर झुक गया।

मुझे श्रीमती रीड का चेहरा अच्छी तरह याद था, और मैं उस परिचित छवि को खोजने के लिए उत्सुक थी। यह सुखद बात है कि समय प्रतिशोध की लालसा को शांत कर देता है और क्रोध और घृणा की भावनाओं को दबा देता है। मैं इस महिला को कड़वाहट और घृणा में छोड़कर गई थी, और अब मैं उसके पास केवल उसकी पीड़ाओं के प्रति सहानुभूति और सभी चोटों को भुलाकर क्षमा करने की प्रबल इच्छा के साथ लौटी थी—मेल-मिलाप करने और सौहार्दपूर्ण हाथ मिलाने की।

वह जाना-पहचाना चेहरा सामने था: हमेशा की तरह कठोर, निर्दयी—वही अनोखी आँख जिसे पिघलाना नामुमकिन था, और थोड़ी उठी हुई, दबंग, निरंकुश भौंहें। कितनी बार उसने मुझ पर धमकी और नफ़रत बरसाई थी! और अब जब मैं उसकी कठोर रेखा को देखता हूँ, तो बचपन के डर और दुख कैसे ताज़ा हो जाते हैं! फिर भी मैं झुका और उसे चूमा: उसने मेरी ओर देखा।

“क्या यह जेन आयर है?” उसने कहा।

जी हां, आंटी रीड। आप कैसी हैं, प्यारी आंटी?

मैंने एक बार कसम खाई थी कि मैं उसे फिर कभी चाची नहीं कहूँगी: मुझे लगा कि अब उस कसम को भूलकर तोड़ना कोई पाप नहीं है। मेरी उंगलियाँ चादर के बाहर फैले उसके हाथ पर टिक गई थीं: अगर उसने मेरे हाथ को प्यार से छुआ होता, तो उस पल मुझे सच्चा सुख मिलता। लेकिन कठोर स्वभाव वाले लोग इतनी जल्दी नरम नहीं पड़ते, न ही स्वाभाविक घृणा इतनी आसानी से दूर होती है। श्रीमती रीड ने अपना हाथ हटा लिया और मुझसे मुँह फेरते हुए कहा कि रात गर्म है। फिर से उन्होंने मुझे इतनी ठंडी निगाहों से देखा कि मुझे तुरंत समझ आ गया कि मेरे बारे में उनकी राय—मेरे प्रति उनकी भावना—अपरिवर्तित और अटल है। उनकी पत्थर जैसी आँखों से—जो कोमलता से रहित और आँसुओं से भी नहीं घुलती—मैं समझ गई कि उन्होंने मुझे अंत तक बुरा ही मानने का निश्चय कर लिया है; क्योंकि मुझे अच्छा मानना उन्हें कोई आनंद नहीं देगा: केवल अपमान का एहसास कराएगा।

मुझे दर्द हुआ, फिर गुस्सा आया; और फिर उसे वश में करने का दृढ़ निश्चय हुआ—उसके स्वभाव और इच्छा दोनों के बावजूद उसकी स्वामिनी बनने का। मेरी आँखों में आँसू उमड़ आए, ठीक वैसे ही जैसे बचपन में आते थे: मैंने उन्हें वापस वहीं रोक दिया। मैं एक कुर्सी लेकर पलंग के पास आई: मैं बैठ गई और तकिये पर झुक गई।

मैंने कहा, "आपने मुझे बुलाया था, और मैं यहाँ हूँ; और मेरा इरादा तब तक यहीं रहने का है जब तक मैं यह न देख लूँ कि आप कैसे हैं।"

“ओह, बिल्कुल! क्या आपने मेरी बेटियों को देखा है?”

"हाँ।"

“ठीक है, आप उनसे कह दीजिएगा कि आप तब तक रुकें जब तक मैं आपसे कुछ बातें न कर लूँ जो मेरे मन में हैं: आज रात बहुत देर हो चुकी है, और मुझे उन्हें याद करने में कठिनाई हो रही है। लेकिन कुछ ऐसा था जो मैं कहना चाहता था—देखने दीजिए—”

उसकी भटकती निगाहें और बदले हुए स्वर से पता चल रहा था कि कभी जीवंत रहने वाले उसके शरीर में कितना बड़ा बदलाव आ चुका है। बेचैनी से करवट बदलते हुए उसने अपने चारों ओर चादर लपेट ली; रजाई के एक कोने पर टिकी मेरी कोहनी ने उसे और कस दिया: वह तुरंत चिढ़ गई।

“सीधे बैठो!” उसने कहा; “कपड़े कसकर पकड़कर मुझे परेशान मत करो। क्या तुम जेन आयर हो?”

मैं जेन आयर हूँ।

“उस बच्ची से मुझे जितनी परेशानी हुई है, उसका कोई अंदाज़ा भी नहीं लगा सकता। उसे मेरे कंधों पर छोड़ना कितना बड़ा बोझ था! उसकी समझ से परे स्वभाव, अचानक गुस्सा आना और हर पल मेरी हरकतों पर नज़र रखना, ये सब मुझे बहुत परेशान करते थे! कसम से, एक बार तो उसने मुझसे पागलों जैसी बातें कीं, जैसे कोई शैतान हो। कोई बच्चा कभी ऐसे बोलता या दिखता नहीं था जैसे वो करती थी; मुझे खुशी हुई कि वो घर से दूर चली गई। लोवुड में उसके साथ क्या हुआ? वहाँ बुखार फैल गया और कई छात्र मर गए। लेकिन वो नहीं मरी: पर मुझे लगा जैसे वो मर गई हो - काश वो मर गई होती!”

"यह एक अजीब इच्छा है, श्रीमती रीड; आप उससे इतनी नफरत क्यों करती हैं?"

मुझे उसकी माँ से हमेशा से ही नफ़रत थी; क्योंकि वह मेरे पति की इकलौती बहन

थी और उनकी लाडली थी। जब उसने निम्न वर्ग में शादी की, तो परिवार द्वारा उसे बेदखल करने का उन्होंने कड़ा विरोध किया; और जब उसकी मृत्यु की खबर आई, तो वे पागलों की तरह रोए। वे बच्चे को बुलवाते थे; हालाँकि मैं उनसे विनती करती थी कि उसे किसी और को सौंप दें और उसके पालन-पोषण का खर्च उठाएँ। पहली बार जब मैंने उसे देखा, तो मुझे उससे घृणा हो गई - एक बीमार, रोने वाली, तड़पती हुई बच्ची! वह रात भर अपने पालने में रोती रहती थी - दूसरे बच्चों की तरह ज़ोर-ज़ोर से नहीं चिल्लाती थी, बल्कि सिसकियाँ भरती और कराहती थी। रीड को उस पर दया आती थी; और वे उसकी देखभाल करते थे और उसे ऐसे देखते थे जैसे वह उनका अपना बच्चा हो: वास्तव में, उस उम्र में उन्होंने अपने बच्चों की जितनी देखभाल कभी नहीं की थी। वे मेरे बच्चों को उस नन्हे बच्चे से दोस्ती करवाने की कोशिश करते थे: लेकिन मेरे बच्चे उसे बर्दाश्त नहीं कर पाते थे, और जब वे अपनी नापसंदगी दिखाते थे तो वे उन पर गुस्सा हो जाते थे। अपनी अंतिम बीमारी में, वे उसे लगातार अपने बिस्तर के पास लाते थे; और मरने से ठीक एक घंटा पहले, उन्होंने मुझे मैंने उस बच्चे को अपने पास रखने की कसम खाई थी। मुझे तो किसी गरीब, बेघर बच्चे की ज़िम्मेदारी भी सहनी पड़ती, पर वो कमज़ोर था, जन्मजात कमज़ोर। जॉन अपने पिता से बिलकुल भी मिलता-जुलता नहीं है, और मुझे इस बात की खुशी है: जॉन मुझ जैसा और मेरे भाइयों जैसा है— बिलकुल गिब्सन जैसा। काश, वो मुझसे पैसे मांगने के लिए चिट्ठियाँ लिखना बंद कर दे? मेरे पास उसे देने के लिए और पैसे नहीं हैं: हम गरीब होते जा रहे हैं। मुझे आधे नौकरों को निकालना पड़ेगा और घर का कुछ हिस्सा बंद करना पड़ेगा; या उसे किराए पर देना पड़ेगा। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकती— फिर भी हम गुज़ारा कैसे करेंगे? मेरी आमदनी का दो-तिहाई हिस्सा गिरवी रखी संपत्तियों के ब्याज चुकाने में चला जाता है। जॉन बुरी तरह जुआ खेलता है, और हमेशा हारता है— बेचारा! वो धोखेबाजों से घिरा हुआ है: जॉन की हालत बहुत खराब है— उसका चेहरा डरावना है— उसे देखकर मुझे शर्म आती है।

वह बहुत उत्साहित हो रही थी। "मुझे लगता है कि अब मुझे उसे छोड़कर चले जाना चाहिए," मैंने बेसी से कहा, जो बिस्तर के दूसरी तरफ खड़ी थी।

"शायद आपने सुना होगा, महोदया: लेकिन वह अक्सर रात के समय इस तरह बात करती है - सुबह के समय वह शांत रहती है।"

मैं उठ खड़ी हुई। श्रीमती रीड ने कहा, “रुको! मुझे एक और बात कहनी है। वह

मुझे धमकाता है—वह लगातार मुझे या मुझे अपनी जान से मारने की धमकी देता है: और कभी-कभी मुझे सपने में वह गले में गहरे घाव के साथ या सूजे हुए और काले पड़े चेहरे के साथ पड़ा हुआ दिखाई देता है। मैं एक अजीब स्थिति में आ गई हूँ: मैं बहुत परेशान हूँ। अब क्या करूँ? पैसा कहाँ से आएगा?”

बेसी ने अब उन्हें नींद की दवा पीने के लिए मनाने की कोशिश की: बड़ी मुश्किल से उसे सफलता मिली। कुछ देर बाद, श्रीमती रीड थोड़ी शांत हुईं और ऊंघने लगीं। फिर मैं उन्हें छोड़कर चला गया।

दस दिन से ज़्यादा समय बीत गया, तब जाकर मेरी उससे दोबारा बात हो पाई। वह या तो बेहोश रहती थी या सुस्त; और डॉक्टर ने उसे हर वो चीज़ करने से मना कर दिया था जिससे उसकी हालत बिगड़ सकती थी। इस बीच, मैंने जॉर्जियाना और एलिज़ा के साथ जैसे-तैसे गुज़ारा। शुरू में तो वे दोनों बहुत रूखी थीं। एलिज़ा आधा दिन सिलाई, पढ़ने या लिखने में बिताती और मुझसे या अपनी बहन से मुश्किल से ही कुछ बोलती। जॉर्जियाना घंटों अपनी चिड़िया से बेमतलब की बातें करती रहती और मेरी तरफ़ बिल्कुल ध्यान नहीं देती। लेकिन मैंने ठान लिया था कि मैं खाली हाथ नहीं चलूँगी: मैं अपने ड्राइंग का सामान साथ लाई थी, और उसी से मेरा काम चल गया।

मुझे पेंसिलों का एक डिब्बा और कुछ कागज़ दिए जाते थे, और मैं उनसे अलग, खिड़की के पास बैठ जाता था, और कल्पना के निरंतर बदलते बहुरंगी दृश्य में क्षण भर के लिए उभरने वाले किसी भी दृश्य को चित्रित करने में खुद को व्यस्त कर लेता था: दो चट्टानों के बीच समुद्र की एक झलक; उगता हुआ चंद्रमा, और उसके ऊपर से गुजरता हुआ एक जहाज; सरकंडों और जल-झंडियों का एक समूह, और उनमें से कमल के फूलों से सजे एक जलपरी का सिर; कांटेदार झाड़ियों के फूलों की माला के नीचे, एक चिड़िया के घोंसले में बैठी एक बौनी।

एक सुबह मैं एक चेहरा बनाने में मग्न हो गया: यह किस तरह का चेहरा होगा, इसकी मुझे परवाह नहीं थी और न ही मुझे पता था। मैंने एक नरम काली पेंसिल ली, उसकी नोक चौड़ी की और काम शुरू कर दिया। जल्द ही मैंने कागज पर एक चौड़ा और उभरा हुआ माथा और चेहरे की निचली चौकोर आकृति बना ली: उस आकृति ने मुझे आनंद दिया; मेरी उंगलियां सक्रिय रूप से उसमें चेहरे की विशेषताएं भरने लगीं। उस माथे के नीचे स्पष्ट क्षैतिज भौहें बनानी थीं; फिर स्वाभाविक रूप से, एक सुस्पष्ट नाक, सीधी हड्डी और भरे हुए नथुनों के साथ; फिर एक लचीला दिखने वाला मुंह, जो

बिल्कुल भी संकरा नहीं था; फिर एक दृढ़ ठुड्डी, जिसके बीचोंबीच एक स्पष्ट दरार थी: बेशक, कुछ काली मूंछें और कनपटी पर गुच्छेदार और माथे के ऊपर लहराते हुए काले बाल भी बनाने थे। अब बारी थी आंखों की: मैंने उन्हें सबसे आखिर में बनाया था, क्योंकि उन पर सबसे ज्यादा ध्यान देने की जरूरत थी। मैंने उन्हें बड़ा बनाया; मैंने उन्हें अच्छी तरह से आकार दिया: पलकों को मैंने लंबा और गहरा बनाया; पुतलियां चमकदार और बड़ी थीं। "अच्छा! लेकिन अभी पूरी तरह से नहीं," मैंने परिणाम का जायज़ा लेते हुए सोचा: "इनमें और अधिक जोश और उत्साह की कमी है;" और मैंने परछाइयों को और गहरा कर दिया, ताकि रोशनी और भी ज़्यादा चमके — एक-दो सही स्पर्शों ने सफलता दिला दी। वहाँ, मेरी नज़र एक दोस्त के चेहरे पर थी; और उन युवतियों का मुझसे मुँह मोड़ लेना क्या दर्शाता था? मैंने उसे देखा; मैं उस जीवंत छवि को देखकर मुस्कुराया: मैं तल्लीन और संतुष्ट था।

"क्या यह किसी परिचित का चित्र है?" एलिज़ा ने पूछा, जो चुपके से मेरे पास आ गई थी। मैंने जवाब दिया कि यह महज़ एक काल्पनिक चित्र है, और उसे जल्दी से बाकी कागज़ों के नीचे रख दिया। बेशक, मैंने झूठ बोला था: वास्तव में, यह मिस्टर रोचेस्टर का बहुत सटीक चित्र था। लेकिन इससे उसे या मेरे अलावा किसी और को क्या लेना-देना था? जॉर्जियाना भी देखने के लिए आगे बढ़ी। बाकी चित्र उसे बहुत पसंद आए, लेकिन उसने इसे "बदसूरत आदमी" कहा। दोनों मेरी कला देखकर हैरान लग रही थीं। मैंने उनके चित्र बनाने की पेशकश की; और बारी-बारी से दोनों ने पेंसिल से रूपरेखा बनवाई। फिर जॉर्जियाना ने अपना एल्बम निकाला। मैंने एक जलरंग चित्र बनाने का वादा किया: इससे वह तुरंत खुश हो गई। उसने मैदान में टहलने का प्रस्ताव रखा। बाहर निकले हुए दो घंटे भी नहीं हुए थे कि हम गहरी गोपनीय बातचीत में मशगूल हो गए: उसने मुझे दो सीज़न पहले लंदन में बिताई अपनी शानदार सर्दियों का वर्णन सुनाया — वहाँ उसे मिली प्रशंसा — उसे मिले ध्यान का; और मुझे उसके द्वारा हासिल की गई उपाधि प्राप्त करने के बारे में भी संकेत मिले। दोपहर और शाम के दौरान ये बातें और भी विस्तार से बताई गईं: कई हल्की-फुल्की बातचीत सुनाई गईं और भावुक दृश्यों का वर्णन किया गया; संक्षेप में, उस दिन उन्होंने मेरे मनोरंजन के लिए एक तरह से आधुनिक जीवन पर आधारित उपन्यास रच दिया। बातचीत हर दिन दोहराई जाती थी: हमेशा एक ही विषय पर केंद्रित रहती थी - खुद के बारे में, अपने प्रेम और अपने दुखों के बारे में। यह अजीब बात थी कि उन्होंने कभी भी अपनी माँ की

बीमारी, अपने भाई की मृत्यु या परिवार के वर्तमान निराशाजनक भविष्य का ज़िक्र नहीं किया। उनका मन पूरी तरह से बीते हुए सुखों की यादों और आने वाले सुख-सुविधाओं की आकांक्षाओं में डूबा हुआ लगता था। वह हर दिन अपनी माँ के बीमार कमरे में लगभग पाँच मिनट ही बिताती थीं, इससे ज़्यादा नहीं।

एलिज़ा अब भी कम बोलती थी: ज़ाहिर है उसके पास बात करने का समय नहीं था। मैंने उससे ज़्यादा व्यस्त इंसान कभी नहीं देखा था; फिर भी यह कहना मुश्किल था कि वह क्या करती थी: या यूँ कहें कि उसकी मेहनत का कोई नतीजा पता लगाना मुश्किल था। उसे सुबह जल्दी उठने के लिए अलार्म लगा हुआ था। मुझे नहीं पता कि वह नाश्ते से पहले क्या करती थी, लेकिन नाश्ते के बाद वह अपना समय नियमित हिस्सों में बाँट लेती थी, और हर घंटे के लिए एक तय काम होता था। दिन में तीन बार वह एक छोटी सी किताब पढ़ती थी, जिसे जाँचने पर मुझे पता चला कि वह एक आम प्रार्थना पुस्तक थी। मैंने एक बार उससे पूछा कि उस किताब में ऐसी क्या खास बात है, तो उसने कहा, "उसमें लिखी प्रार्थना की विधि।" तीन घंटे वह सुनहरे धागे से एक चौकोर गहरे लाल कपड़े की किनारी सिलने में लगाती थी, जो लगभग कालीन जितना बड़ा था। जब मैंने उससे इस कपड़े के इस्तेमाल के बारे में पूछा, तो उसने बताया कि यह गेट्सहेड के पास हाल ही में बने एक नए चर्च की वेदी का आवरण है। दो घंटे वह अपनी डायरी लिखने में लगाती थी; दो घंटे रसोई के बगीचे में अकेले काम करने में; और एक घंटा अपने हिसाब-किताब करने में। ऐसा लगता था जैसे उसे किसी की संगति या बातचीत की ज़रूरत नहीं थी। मुझे लगता है कि वह अपने तरीके से खुश थी: यह दिनचर्या उसके लिए पर्याप्त थी; और कोई भी घटना जो उसे इसकी नियमितता को बाधित करने के लिए मजबूर करती थी, उसे सबसे ज्यादा परेशान करती थी।

एक शाम, जब वह सामान्य से अधिक बातूनी थीं, तो उन्होंने मुझसे कहा कि जॉन का व्यवहार और परिवार के संभावित विनाश ने उन्हें बहुत पीड़ा दी है; लेकिन अब उन्होंने अपना मन बना लिया है और संकल्प कर लिया है। उन्होंने अपनी संपत्ति सुरक्षित कर ली है; और जब उनकी माँ का निधन होगा - और उन्होंने शांति से कहा कि उनके ठीक होने या लंबे समय तक जीवित रहने की संभावना बिल्कुल नहीं है - तो वह अपनी एक पुरानी इच्छा पूरी करेंगी: एक ऐसी एकांत जगह की तलाश करेंगी जहाँ उनकी नियमित दिनचर्या हमेशा के लिए सुरक्षित रहे और वे खुद को इस व्यर्थ दुनिया

से दूर रख सकें। मैंने उनसे पूछा कि क्या जॉर्जियाना उनके साथ आएगी।

“बिल्कुल नहीं। जॉर्जियाना और उसमें कोई समानता नहीं थी: कभी नहीं रही। वह किसी भी कीमत पर उसकी संगति का बोझ नहीं उठाना चाहती थी। जॉर्जियाना को अपना रास्ता खुद चुनना चाहिए; और एलिजा को भी अपना रास्ता खुद चुनना चाहिए।”

जब जॉर्जियाना मुझसे अपने दिल की बात नहीं कह रही होती थी, तो वह अपना ज़्यादातर समय सोफे पर लेटे-लेटे घर की नीरसता के बारे में चिंता करते हुए और बार-बार यह कामना करते हुए बिताती थी कि उसकी चाची गिब्सन उसे शहर आने का निमंत्रण भेज दें। उसने कहा, "कितना अच्छा होता अगर वह एक-दो महीने के लिए कहीं चली जातीं, जब तक सब कुछ खत्म न हो जाए।" मैंने उससे यह नहीं पूछा कि "सब कुछ खत्म" से उसका क्या मतलब था, लेकिन मुझे लगता है कि वह अपनी माँ के संभावित निधन और अंतिम संस्कार की उदास रस्मों का जिक्र कर रही थी। एलिज़ा आमतौर पर अपनी बहन की सुस्ती और शिकायतों पर उतना ध्यान नहीं देती थी मानो उसके सामने कोई बड़बड़ाती, आलसी लड़की हो ही न। लेकिन एक दिन, जब वह अपना हिसाब-किताब समेट रही थी और कढ़ाई खोल रही थी, तो अचानक उसने उससे इस तरह बात शुरू की—

“जॉर्जियाना, तुमसे भी अधिक घमंडी और मूर्ख प्राणी को तो निश्चित रूप से कभी धरती पर बोझ बनने की अनुमति नहीं दी गई होगी। तुम्हें जन्म लेने का कोई अधिकार नहीं था, क्योंकि तुम जीवन का कोई उपयोग नहीं करती। एक समझदार प्राणी की तरह अपने लिए, अपने भीतर और अपने साथ जीने के बजाय, तुम केवल अपनी कमजोरी को किसी दूसरे की ताकत से जोड़ना चाहती हो: यदि कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता जो तुम्हारे जैसी मोटी, कमजोर, फूली हुई, बेकार चीज का बोझ उठाने को तैयार हो, तो तुम चिल्लाती हो कि तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव किया गया है, तुम्हें उपेक्षित किया गया है, तुम दुखी हो। फिर, तुम्हारे लिए जीवन निरंतर परिवर्तन और रोमांच का दृश्य होना चाहिए, अन्यथा दुनिया एक कालकोठरी है: तुम्हारी प्रशंसा होनी चाहिए, तुम्हें रिझाया जाना चाहिए, तुम्हारी चापलूसी होनी चाहिए - तुम्हें संगीत, नृत्य और समाज मिलना चाहिए - अन्यथा तुम मुरझा जाओगी, मर जाओगी। क्या तुममें ऐसी कोई व्यवस्था बनाने की समझ नहीं है जो तुम्हें सभी प्रयासों और सभी इच्छाओं से मुक्त कर दे, केवल तुम्हारी अपनी इच्छा से? एक दिन लो; उसे भागों में बाँटो; प्रत्येक

भाग को उसका कार्य सौंपो: एक घंटे, दस घंटे का कोई भी खाली समय न छोड़ो। मिनट, पाँच मिनट—सब कुछ शामिल करो; हर काम को बारी-बारी से, विधिपूर्वक, कड़ाई से करो। दिन कब शुरू हुआ, पता भी नहीं चलेगा और कब खत्म हो जाएगा; और एक भी खाली पल गुजारने के लिए तुम किसी के ऋणी नहीं हो: तुम्हें किसी की संगति, बातचीत, सहानुभूति, सहनशीलता की ज़रूरत नहीं पड़ी; संक्षेप में, तुमने एक स्वतंत्र व्यक्ति की तरह जीवन जिया है। मेरी यह सलाह मानो: यह मेरी पहली और आखिरी सलाह है; फिर चाहे कुछ भी हो जाए, तुम्हें मेरी या किसी और की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। इसे नज़रअंदाज़ करो—पहले की तरह ही लालच, शिकायत और आलस करते रहो—और अपनी मूर्खता के परिणाम भुगतो, चाहे वे कितने भी बुरे और असहनीय क्यों न हों। मैं तुम्हें यह स्पष्ट रूप से बता रहा हूँ; और सुनो: क्योंकि यद्यपि मैं अब जो कहने वाला हूँ उसे दोहराऊंगा नहीं, लेकिन मैं उस पर अमल जरूर करूंगा। मेरी माँ की मृत्यु के बाद, मैं तुमसे नाता तोड़ लूंगा: जिस दिन उनका ताबूत गेट्सहेड चर्च के तहखाने में ले जाया जाएगा, उस दिन से तुम और मैं ऐसे अलग हो जाएंगे जैसे हम कभी एक-दूसरे को जानते ही न हों। दूसरे। आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि महज़ एक ही माता-पिता से जन्म लेने के कारण मैं आपको अपने सबसे कमज़ोर दावे से भी मुझे बांधने दूँगी: मैं आपको यह बता सकती हूँ - अगर पूरी मानव जाति, हम दोनों को छोड़कर, नष्ट हो जाए और हम दोनों ही पृथ्वी पर अकेले रह जाएँ, तो मैं आपको पुरानी दुनिया में छोड़कर नई दुनिया में चली जाऊँगी।

उसने अपने होंठ बंद कर लिए।

“तुम्हें ये सब बकवास करने की ज़रूरत नहीं थी,” जॉर्जियाना ने जवाब दिया। “सब जानते हैं कि तुम सबसे स्वार्थी और निर्दयी इंसान हो: और मैं तुम्हारे मेरे प्रति घृणा भरे रवैये को जानती हूँ: लॉर्ड एडविन वेयर के बारे में तुमने जो चाल चली थी, उसमें मुझे इसका एक नमूना देखने को मिला था: तुम मुझे अपने से ऊपर उठते हुए, उपाधि धारण करते हुए, उन सामाजिक समूहों में शामिल होते हुए बर्दाश्त नहीं कर सकीं जहाँ तुम अपना चेहरा दिखाने की हिम्मत भी नहीं करतीं, इसलिए तुमने जासूस और मुखबिर बनकर मेरे सारे सपने हमेशा के लिए बर्बाद कर दिए।” जॉर्जियाना ने अपना रुमाल निकाला और एक घंटे तक नाक पोंछती रही; एलिज़ा ठंडी, भावहीन और लगन से काम करती बैठी रही।

यह सच है कि कुछ लोग उदार भावना को कम महत्व देते हैं, लेकिन यहाँ दो

स्वभावों का चित्रण किया गया था - एक असहनीय रूप से कटु, दूसरा इसके अभाव में घृणित रूप से बेस्वाद। विवेक के बिना भावना वास्तव में एक बेस्वाद पेय है; लेकिन भावना से रहित विवेक मनुष्य के लिए इतना कड़वा और कर्कश निवाला है कि उसे पचाना मुश्किल है।

वह एक गीली और हवादार दोपहर थी: जॉर्जियाना एक उपन्यास पढ़ते-पढ़ते सोफे पर सो गई थी; एलिजा नए चर्च में संत दिवस की प्रार्थना सभा में शामिल होने गई थी - क्योंकि धर्म के मामलों में वह एक कट्टर नियमनिष्ठ थी: कोई भी मौसम उसके धार्मिक कर्तव्यों के समयबद्ध निर्वहन में बाधा नहीं बन सकता था; मौसम कैसा भी हो, वह हर रविवार को तीन बार चर्च जाती थी, और सप्ताह के दिनों में भी जब भी प्रार्थना होती थी, उतनी बार जाती थी।

मैंने ऊपर जाकर उस मरणासन्न महिला को देखने का मन बनाया, जो वहाँ लगभग उपेक्षित पड़ी थी: नौकर भी उस पर कभी-कभार ही ध्यान देते थे: किराए पर रखी गई नर्स की भी ठीक से देखभाल नहीं होती थी, इसलिए वह जब भी मौका मिलता, कमरे से निकल जाती थी। बेसी वफादार थी; लेकिन उसे अपने परिवार की देखभाल करनी थी, और वह केवल कभी-कभार ही हॉल में आ पाती थी। मैंने उम्मीद के मुताबिक बीमार के कमरे को खाली पाया: कोई नर्स नहीं थी; मरीज़ शांत लेटी थी, और सुस्त लग रही थी; उसका पीला पड़ा चेहरा तकियों में धंसा हुआ था: अंगीठी में आग बुझ रही थी। मैंने ईंधन बदला, बिस्तर की चादरें ठीक कीं, कुछ देर उस महिला को निहारा जो अब मुझे नहीं देख सकती थी, और फिर मैं खिड़की की ओर चला गया।

बारिश की बूँदें खिड़कियों पर ज़ोर से पड़ रही थीं, हवा तूफ़ानी बह रही थी: “वहाँ कोई लेटा है,” मैंने सोचा, “जो जल्द ही सांसारिक तत्वों के युद्ध से मुक्त हो जाएगा। वह आत्मा — जो अब अपने भौतिक बंधन को छोड़ने के लिए संघर्ष कर रही है — अंततः मुक्त होने पर कहाँ विचरण करेगी?”

इस महान रहस्य पर विचार करते हुए, मुझे हेलेन बर्न्स की याद आई, उनके अंतिम शब्द याद आए—उनका विश्वास—आत्माओं की समानता का उनका सिद्धांत। मैं अब भी उनके सुस्पष्ट स्वरों को ध्यान से सुन रहा था—उनके शांत मृत्युशय्या पर लेटे हुए उनके पीले और आध्यात्मिक रूप, उनके मुरझाए चेहरे और उदात्त दृष्टि की कल्पना कर रहा था, जब वे अपने दिव्य पिता की गोद में वापस लौटने की अपनी तड़प फुसफुसा रही थीं—तभी पीछे पलंग से एक कमजोर आवाज सुनाई दी: "यह कौन

है?"

मुझे पता था कि श्रीमती रीड कई दिनों से नहीं बोली थीं: क्या उनकी सेहत में सुधार हो रहा था? मैं उनके पास गया।

"मैं हूं, आंटी रीड।"

“कौन— मैं?” उसने जवाब दिया। “तुम कौन हो?” उसने हैरानी और थोड़ी घबराहट भरी निगाहों से मेरी तरफ देखा, लेकिन फिर भी पूरी तरह से घबराई हुई नहीं थी। “तुम मेरे लिए बिल्कुल अजनबी हो— बेसी कहाँ है?”

“वह लॉज में है, चाची।”

“आंटी,” उसने दोहराया। “मुझे आंटी कौन कहता है? आप गिब्सन परिवार की सदस्य तो नहीं हैं; फिर भी मैं आपको पहचानती हूँ—आपका चेहरा, आपकी आँखें और आपका माथा मुझे बहुत जाना-पहचाना लगता है: आप—अरे, आप तो जेन आयर जैसी हैं!”

मैंने कुछ नहीं कहा: मुझे डर था कि अपनी पहचान ज़ाहिर करने से किसी को झटका लग सकता है।

“लेकिन,” उसने कहा, “मुझे डर है कि यह एक भ्रम है: मेरे विचार मुझे धोखा दे रहे हैं। मैं जेन आयर को देखना चाहती थी, और मुझे उसकी शक्ल ऐसी लग रही है जो असल में है ही नहीं: इसके अलावा, आठ साल में वह कितनी बदल गई होगी।” मैंने अब उसे विनम्रता से आश्वस्त किया कि मैं वही व्यक्ति हूँ जिसे वह समझ रही थी और चाहती थी: और यह देखकर कि वह मेरी बात समझ गई है, और वह पूरी तरह से शांत है, मैंने समझाया कि कैसे बेसी ने अपने पति को मुझे थॉर्नफील्ड से लाने के लिए भेजा था।

“मैं बहुत बीमार हूँ, मुझे पता है,” उसने कुछ देर बाद कहा। “कुछ मिनट पहले मैं करवट बदलने की कोशिश कर रही थी, पर मैं अपना एक भी अंग हिला नहीं पा रही हूँ। मरने से पहले मन को शांत कर लेना अच्छा है: स्वस्थ रहते हुए हम जिन चीजों को मामूली समझते हैं, वे इस समय हमारे लिए बोझ बन जाती हैं। क्या नर्स यहाँ है? या कमरे में आपके अलावा कोई नहीं है?”

मैंने उसे आश्वस्त किया कि हम अकेले हैं।

“खैर, मैंने दो बार तुम्हारे साथ गलत किया है, जिसका मुझे अब पछतावा है। एक तो मैंने अपने पति से किया वादा तोड़ा कि मैं तुम्हें अपने बच्चे की तरह पालूंगी; दूसरा

—” वह रुक गई। “आखिरकार, शायद यह कोई बड़ी बात नहीं है,” उसने मन ही मन बुदबुदाया: “और फिर शायद मैं सुधर जाऊं; और उसके सामने खुद को इतना नीचा दिखाना मुझे दुख देता है।”

उसने अपनी स्थिति बदलने का प्रयास किया, लेकिन असफल रही: उसके चेहरे का भाव बदल गया; ऐसा लगा जैसे उसे कोई आंतरिक अनुभूति हो रही हो - शायद यह अंतिम पीड़ा का पूर्वाभास था।

“खैर, मुझे इसे जल्द से जल्द निपटाना होगा। अनंत काल मेरे सामने है: मुझे उसे बता देना चाहिए। — मेरे ड्रेसिंग-केस के पास जाओ, उसे खोलो और उसमें से एक पत्र निकालो जो तुम्हें वहां मिलेगा।”

मैंने उसके निर्देशों का पालन किया। उसने कहा, "पत्र पढ़ो।"

यह संक्षिप्त था, और इस प्रकार इसकी कल्पना की गई थी: —

महोदया, क्या आप कृपा करके मुझे मेरी भतीजी जेन आयर का पता भेज देंगी और बता देंगी कि वह कैसी हैं? मेरा इरादा जल्द ही पत्र लिखने का है और उनसे मदीरा आने का अनुरोध करने का है। ईश्वर की कृपा से मैंने पर्याप्त धन जुटाने के प्रयास में सफलता पाई है; और चूंकि मैं अविवाहित और निःसंतान हूँ, इसलिए मैं उन्हें अपने जीवनकाल में गोद लेना चाहती हूँ और अपनी मृत्यु के बाद जो कुछ भी मेरे पास बचे, वह उन्हें सौंपना चाहती हूँ। महोदया, इत्यादि।

"जॉन आयर, मदीरा।"

यह तीन साल पहले की बात है।

मैंने पूछा, "मुझे इसके बारे में पहले कभी क्यों नहीं पता चला?"

क्योंकि मैं तुमसे इतनी नफरत करता था कि तुम्हें खुशहाल बनाने में कभी मदद नहीं कर सकता था। जेन, मैं तुम्हारा मेरे प्रति किया गया व्यवहार नहीं भूल सकता— वो क्रोध जो तुमने मुझ पर दिखाया था; वो लहजा जिसमें तुमने कहा था कि तुम दुनिया में सबसे ज्यादा मुझसे नफरत करती हो; वो बचकाना न दिखने वाला चेहरा और आवाज जिसमें तुमने कहा था कि मेरे बारे में सोचते ही तुम्हें उल्टी आने लगती है, और तुमने दावा किया था कि मैंने तुम्हारे साथ बहुत क्रूरता की है। मैं अपनी भावनाओं को नहीं भूल सकता जब तुम अचानक उठ खड़ी हुईं और अपने मन का जहर उगल दिया: मुझे ऐसा डर लगा जैसे किसी जानवर को जिसे मैंने मारा या धक्का दिया हो, उसने इंसानी आँखों से मेरी तरफ देखा हो और मर्द की आवाज में मुझे कोस रहा हो।

— मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ! जल्दी करो!

“प्रिय श्रीमती रीड,” मैंने उन्हें उनकी मनचाही ड्रिंक देते हुए कहा, “अब इन सब बातों के बारे में मत सोचिए, इन्हें अपने मन से निकाल दीजिए। मेरे भावुक शब्दों के लिए मुझे क्षमा कीजिएगा: मैं तब बच्चा था; उस दिन से आठ-नौ साल बीत चुके हैं।”

उसने मेरी कोई बात नहीं सुनी; लेकिन जब उसने पानी चखा और सांस ली, तो वह इस प्रकार आगे बढ़ी —

“मैं तुमसे कहती हूँ कि मैं इसे भूल नहीं सकी; और मैंने अपना बदला लिया: तुम्हारे चाचा द्वारा तुम्हें गोद लिया जाना और आराम और सुख-सुविधाओं में रखा जाना, यह मैं सहन नहीं कर सकी। मैंने उन्हें पत्र लिखा; मैंने कहा कि मुझे उनकी निराशा के लिए खेद है, लेकिन जेन आयर मर चुकी थी: लोवुड में टाइफस बुखार से उसकी मृत्यु हो गई थी। अब तुम जो चाहो करो: लिखो और मेरे कथन का खंडन करो —जब चाहो मेरे झूठ का पर्दाफाश करो। मुझे लगता है कि तुम मेरे लिए पीड़ा का कारण बनने के लिए ही पैदा हुए थे: मेरे अंतिम क्षणों में उस कृत्य की याद मुझे सता रही है, जिसे तुम्हारे बिना मैं कभी करने की हिम्मत न करती।”

"अगर आप इस बारे में सोचना बंद कर दें, चाची, और मुझे दया और क्षमा की दृष्टि से देखें, तो कितना अच्छा होगा।"

"तुम्हारा स्वभाव बहुत ही खराब है," उसने कहा, "और एक ऐसा स्वभाव जिसे मैं आज तक समझ नहीं पा रही हूँ: नौ साल तक तुम हर तरह के इलाज में धैर्यवान और शांत कैसे रह सकते थे, और दसवें साल में तुम अचानक आग और हिंसा कैसे भड़क उठे, यह मेरी समझ से परे है।"

“मेरा स्वभाव उतना बुरा नहीं है जितना आप सोचती हैं: मैं भावुक हूँ, पर प्रतिशोधी नहीं। बचपन में कई बार, अगर आप मुझे अनुमति देतीं तो मैं आपसे प्रेम करने के लिए बहुत उत्सुक होती; और अब मैं आपसे सुलह करने के लिए बहुत तरस रही हूँ: मुझे चूम लो, चाची।”

मैंने अपना गाल उसके होठों के पास ले जाकर छुआ, लेकिन उसने उसे छुआ तक नहीं। उसने कहा कि बिस्तर पर झुककर मैंने उसे सताया है, और फिर से पानी माँगा। जब मैंने उसे लिटाया—क्योंकि मैंने उसे उठाया था और पानी पीते समय उसे अपनी बांह पर सहारा दिया था—तो मैंने उसके बर्फीले ठंडे और चिपचिपे हाथ को अपने हाथ से ढक लिया: उसकी कमजोर उंगलियां मेरे स्पर्श से सिकुड़ गईं—उसकी बेजान आंखें

मेरी निगाहों से बचती रहीं।

अंत में मैंने कहा, "तो फिर, चाहे तुम मुझसे प्यार करो या नफरत करो, तुम्हें मेरी पूरी और नि: मुफ्त क्षमा प्राप्त है: अब ईश्वर से क्षमा मांगो और शांति पाओ।"

बेचारी, पीड़ित महिला! अब उसके लिए अपनी आदत बन चुकी मानसिकता को बदलने का प्रयास करना बहुत देर हो चुकी थी: जीते जी, वह हमेशा मुझसे नफरत करती थी - मरते समय भी, वह मुझसे नफरत करती रहेगी।

अब नर्स अंदर आई, और बेसी भी उसके पीछे-पीछे आई। मैं आधे घंटे और वहीं रुका रहा, शायद मुझे कुछ सौहार्दपूर्ण भाव दिखाई दे, पर उसने ऐसा कुछ नहीं दिखाया। वह तेजी से बेहोशी की ओर बढ़ रही थी; उसका मन फिर से जागृत नहीं हुआ: उसी रात बारह बजे उसकी मृत्यु हो गई। मैं उसकी अंतिम सांसें लेने के लिए उपस्थित नहीं था, न ही उसकी कोई बेटी। वे अगली सुबह हमें यह बताने आए कि सब कुछ समाप्त हो गया है। तब तक उसका शव तैयार था। एलिजा और मैं उसे देखने गए: जॉर्जियाना, जो जोर-जोर से रो रही थी, ने कहा कि वह जाने की हिम्मत नहीं कर सकती। सारा रीड का कभी मजबूत और सक्रिय शरीर वहाँ पड़ा था, अकड़ा हुआ और स्थिर: उसकी कठोर आँख उसकी ठंडी पलकों से ढकी हुई थी; उसके माथे और मजबूत चेहरे पर अब भी उसकी निर्दयी आत्मा की छाप थी। वह शव मेरे लिए एक विचित्र और गंभीर वस्तु था। मैंने उसे उदासी और पीड़ा से देखा: उसमें न तो कोई कोमलता थी, न कोई मिठास, न कोई दया, न कोई आशा, न ही कोई वशीकरण। केवल उसके दुखों के लिए एक कर्कश पीड़ा - मेरे नुकसान के लिए नहीं - और मृत्यु के ऐसे भयावह रूप पर एक उदास, आँसूहीन निराशा।

एलिजा ने शांत भाव से अपने माता-पिता को देखा। कुछ मिनटों की चुप्पी के बाद उसने गौर किया—

“अपनी सेहत के हिसाब से तो उन्हें लंबी उम्र जीनी चाहिए थी: मुसीबतों ने उनकी उम्र कम कर दी।” और फिर एक पल के लिए उनके होंठ सिकुड़ गए: जैसे ही यह थम गया, वह मुड़ीं और कमरे से बाहर चली गईं, और मैं भी। हम दोनों में से किसी की भी आंखों से आंसू नहीं निकले।

अध्याय XXII

श्री रोचेस्टर ने मुझे केवल एक सप्ताह की छुट्टी दी थी: फिर भी गेट्सहेड छोड़ने में मुझे एक महीना लग गया। मैं अंतिम संस्कार के तुरंत बाद जाना चाहती थी, लेकिन जॉर्जियाना ने मुझसे तब तक रुकने की विनती की जब तक वह लंदन नहीं जा सकी, जहाँ उसे आखिरकार उसके चाचा, श्री गिब्सन ने आमंत्रित किया था, जो अपनी बहन के अंतिम संस्कार का निर्देशन करने और पारिवारिक मामलों को निपटाने के लिए आए थे। जॉर्जियाना ने कहा कि उसे एलिज़ा के साथ अकेले रहने से डर लगता है; उससे उसे न तो उसकी उदासी में सहानुभूति मिली, न उसके डर में सहारा, और न ही उसकी तैयारियों में मदद; इसलिए मैंने उसकी कमजोर मानसिकता वाली चीखों और स्वार्थी विलापों को यथासंभव सहन किया, और उसके लिए कपड़े सिलने और पैक करने में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया। यह सच है कि जब मैं काम कर रही थी, वह आलस करती रहती थी; और मैंने मन ही मन सोचा, "अगर हम दोनों का जीवन हमेशा साथ रहना तय होता, चचेरे भाई, तो हम अलग तरह से शुरुआत करते। मैं चुपचाप सहनशील बनकर नहीं बैठ जाता; मैं तुम्हें तुम्हारा काम सौंप देता और उसे पूरा करने के लिए मजबूर करता, वरना वह अधूरा ही रह जाता: मैं इस बात पर भी ज़ोर देता कि तुम अपनी उन बेमन से की गई शिकायतों को अपने मन में ही दबाकर रखो। हमारा रिश्ता बहुत क्षणिक है और एक विशेष रूप से दुखद समय में शुरू हुआ है, इसीलिए मैं इस रिश्ते को लेकर इतना धैर्यवान और आज्ञाकारी होने के लिए तैयार हूँ।"

अंततः मैंने जॉर्जियाना को विदा कर दिया; लेकिन अब एलिज़ा की बारी थी कि वह मुझसे एक और सप्ताह रुकने का अनुरोध करे। उसने कहा कि उसकी योजनाओं में उसका सारा समय और ध्यान लगा हुआ है; वह किसी अज्ञात गंतव्य के लिए रवाना होने वाली थी; और सारा दिन वह अपने कमरे में दरवाज़ा बंद करके बैठी रही, संदूक भरती रही, दराज खाली करती रही, कागज़ जलाती रही और किसी से कोई बात नहीं करती रही। वह चाहती थी कि मैं घर की देखभाल करूँ, आने-जाने वालों से मिलूँ और शोक संदेशों का जवाब दूँ।

एक सुबह उसने मुझे बताया कि मैं आज़ाद हूँ। और उसने आगे कहा, “तुम्हारी बहुमूल्य सेवाओं और विवेकपूर्ण आचरण के लिए मैं तुम्हारी आभारी हूँ! तुम्हारे जैसे व्यक्ति के साथ रहने और जॉर्जियाना के साथ रहने में कुछ अंतर है: तुम जीवन में अपनी भूमिका निभाते हो और किसी पर बोझ नहीं डालते। कल,” उसने आगे कहा, “मैं महाद्वीप के लिए रवाना हो रही हूँ। मैं लिस्ले के पास एक धार्मिक स्थान में अपना निवास बनाऊँगी—जिसे तुम नन-आश्रम कहोगे; वहाँ मैं शांति और निश्चिंतता से रहूँगी। मैं कुछ समय के लिए रोमन कैथोलिक सिद्धांतों की परीक्षा और उनकी प्रणाली के कामकाज के सावधानीपूर्वक अध्ययन में अपना समय लगाऊँगी: यदि मुझे यह, जैसा कि मुझे आधा संदेह है, सभी चीजों को शालीनता और व्यवस्थित रूप से करने का सबसे अच्छा तरीका लगता है, तो मैं रोम के सिद्धांतों को अपना लूँगी और शायद नन-आसन धारण कर लूँगी।”

मैंने न तो उसके इस फैसले पर हैरानी जताई और न ही उसे इससे रोकने की कोशिश की। मैंने मन ही मन सोचा, "यह पेशा तुम पर बिलकुल फिट बैठेगा: उम्मीद है इससे तुम्हें बहुत फायदा होगा!"

जब हम विदा हुए, तो उसने कहा: "अलविदा, चचेरी बहन जेन आयर; मैं तुम्हें शुभकामनाएं देती हूं: तुममें कुछ तो समझ है।"

फिर मैंने जवाब दिया: “तुम नासमझ नहीं हो, चचेरी बहन एलिज़ा; लेकिन मुझे लगता है कि एक साल में तुम्हें फ्रांस के किसी मठ में जिंदा ही दफ़ना दिया जाएगा। खैर, इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है, और अगर तुम्हें ठीक लगे तो मुझे कोई परवाह नहीं।”

“तुम सही हो,” उसने कहा; और इन शब्दों के साथ हम दोनों अपने-अपने रास्ते चले गए। चूंकि मुझे फिर कभी उसका या उसकी बहन का ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, इसलिए यहाँ यह बताना उचित होगा कि जॉर्जियाना ने एक धनी, पुराने ज़माने के फैशनेबल आदमी से फ़ायदेमंद शादी कर ली, और एलिज़ा ने वास्तव में संन्यास ले लिया, और आज भी वह उस मठ की प्रमुख हैं जहाँ उन्होंने दीक्षा ली थी और जिसे उन्होंने अपनी सारी संपत्ति दान कर दी थी।

लंबे या छोटे समय के लिए घर लौटने पर लोगों को कैसा महसूस होता है, यह मैं नहीं जानती थी: मैंने कभी इस अनुभूति का अनुभव नहीं किया था। मुझे पता था कि बचपन में लंबी सैर के बाद गेट्सहेड लौटने पर ठंड या उदास दिखने के लिए डांट

पड़ती थी; और बाद में, चर्च से लोवुड लौटने पर भरपेट भोजन और अच्छी आग की कामना होती थी, लेकिन दोनों ही न मिलने पर कैसा लगता था। इनमें से कोई भी वापसी सुखद या वांछनीय नहीं थी: कोई चुंबक मुझे किसी खास जगह की ओर नहीं खींचता था, बल्कि पास आने पर आकर्षण की शक्ति बढ़ती जाती थी। थॉर्नफील्ड की वापसी का अनुभव अभी बाकी था।

मेरी यात्रा बेहद थकाऊ लग रही थी—बहुत थकाऊ: एक दिन में पचास मील, एक रात सराय में गुज़री; अगले दिन भी पचास मील। पहले बारह घंटों में मैं श्रीमती रीड के अंतिम क्षणों के बारे में सोचता रहा; मैंने उनका विकृत और मुरझाया हुआ चेहरा देखा और उनकी बदली हुई आवाज़ सुनी। मैं अंतिम संस्कार के दिन, ताबूत, शव वाहन, किराएदारों और नौकरों के काले जुलूस—रिश्तेदारों की संख्या बहुत कम थी—खुली हुई कब्र, शांत गिरजाघर, गंभीर प्रार्थना सभा के बारे में सोचता रहा। फिर मुझे एलिज़ा और जॉर्जियाना की याद आई; मैंने एक को बॉलरूम की शोभा बढ़ाते देखा, दूसरी को एक कॉन्वेंट की कोठरी में; और मैं उनके व्यक्तित्व और चरित्र की अलग-अलग विशेषताओं पर विचार करता रहा और उनका विश्लेषण करता रहा। शाम को उस बड़े शहर में पहुँचने पर ये विचार बिखर गए; रात ने उन्हें एक नया मोड़ दे दिया: अपने यात्री बिस्तर पर लेटकर, मैंने पुरानी यादों को छोड़कर भविष्य की ओर रुख किया।

मैं थॉर्नफील्ड वापस जा रहा था: लेकिन मुझे वहाँ कितने दिन रुकना था? ज़्यादा दिन नहीं; इस बात का मुझे पूरा यकीन था। मेरी अनुपस्थिति के दौरान मुझे श्रीमती फेयरफैक्स से खबर मिली थी: हॉल में पार्टी समाप्त हो चुकी थी; श्री रोचेस्टर तीन सप्ताह पहले लंदन के लिए रवाना हो गए थे, लेकिन उनके दो सप्ताह में लौटने की उम्मीद थी। श्रीमती फेयरफैक्स का अनुमान था कि वे अपनी शादी की तैयारियों के लिए गए हैं, क्योंकि उन्होंने एक नई गाड़ी खरीदने की बात कही थी: उन्होंने कहा कि मिस इंग्राम से उनकी शादी का विचार अभी भी उन्हें अजीब लगता है; लेकिन सबकी बातों और खुद की देखी हुई चीज़ों से उन्हें अब कोई संदेह नहीं था कि यह घटना जल्द ही घटित होगी। "अगर आपको इस पर संदेह है तो आप बहुत अविश्वासी हैं," मैंने मन ही मन सोचा। "मुझे इस पर कोई संदेह नहीं है।"

इसके बाद सवाल उठा, "मैं कहाँ जाऊँ?" मैंने पूरी रात मिस इंग्राम का सपना देखा: सुबह के एक जीवंत सपने में मैंने उन्हें थॉर्नफील्ड के द्वार मेरे लिए बंद करते और मुझे दूसरी सड़क की ओर इशारा करते हुए देखा; और मिस्टर रोचेस्टर हाथ बाँधे देख रहे थे

- मानो व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ, उन पर और मुझ पर।

मैंने श्रीमती फेयरफैक्स को अपनी वापसी की सही तारीख नहीं बताई थी; क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि मिलकोट में मुझे लेने के लिए कोई कार या घोड़ागाड़ी आए। मैंने अकेले ही चुपचाप पैदल जाने का इरादा किया; और जून की एक शाम लगभग छह बजे, अपना बक्सा अस्तबल के रखवाले के हवाले करने के बाद, मैं चुपके से जॉर्ज इन से निकल गया और थॉर्नफील्ड जाने वाली पुरानी सड़क पर चल पड़ा: यह सड़क मुख्य रूप से खेतों से होकर गुजरती थी और अब इस पर बहुत कम लोग चलते थे।

यह कोई चकाचौंध भरी या शानदार गर्मी की शाम नहीं थी, हालांकि सुहावनी और कोमल थी: सड़क के किनारे घास काटने वाले काम में लगे हुए थे; और आकाश, हालांकि बादलों से पूरी तरह मुक्त नहीं था, फिर भी भविष्य के लिए शुभ संकेत दे रहा था: जहाँ भी नीला रंग दिखाई दे रहा था, उसका नीला रंग हल्का और स्थिर था, और बादलों की परतें ऊँची और पतली थीं। पश्चिम दिशा भी गर्म थी: कोई भी धुंधली चमक उसे ठंडा नहीं कर रही थी - ऐसा लग रहा था मानो कोई आग जल रही हो, संगमरमरी धुएँ के आवरण के पीछे एक वेदी जल रही हो, और छिद्रों से सुनहरी लालिमा चमक रही हो।

जैसे-जैसे सड़क छोटी होती गई, मुझे खुशी महसूस हुई: इतनी खुशी कि मैं एक पल रुककर खुद से पूछने लगा कि इस खुशी का क्या मतलब है: और अपने मन को याद दिलाने लगा कि मैं अपने घर नहीं जा रहा था, न ही किसी स्थायी विश्राम स्थल पर, न ही ऐसी जगह जहाँ मेरे प्रिय मित्र मेरा इंतज़ार कर रहे हों। मैंने कहा, “श्रीमती फेयरफैक्स आपका शांत भाव से स्वागत करेंगी, यह तो पक्का है; और छोटी एडेल आपको देखकर ताली बजाएगी और उछल पड़ेगी: लेकिन आप अच्छी तरह जानते हैं कि आप उनके बारे में नहीं, बल्कि किसी और के बारे में सोच रहे हैं, और वह आपके बारे में नहीं सोच रहा है।”

लेकिन जवानी से ज्यादा जिद्दी और क्या हो सकता है? अनुभवहीनता से ज्यादा अंधा और क्या हो सकता है? इन लोगों ने कहा कि मिस्टर रोचेस्टर को फिर से देखने का सौभाग्य ही काफी सुखद है, चाहे वो मुझे देखें या न देखें; और उन्होंने आगे कहा — “जल्दी करो! जल्दी करो! जब तक हो सके उनके साथ रहो: बस कुछ और दिन या हफ्ते, और तुम उनसे हमेशा के लिए अलग हो जाओगी!” और फिर मैंने अपने

अंदर पल रहे एक गहरे दर्द को दबा लिया—एक विकृत भावना जिसे मैं स्वीकार नहीं कर पा रही थी—और आगे बढ़ गई।

थॉर्नफील्ड के घास के मैदानों में भी घास काटी जा रही है: या यूँ कहें कि जब मैं वहाँ पहुँचा, तब तक मज़दूर अपना काम समेटकर अपने कंधों पर फावड़े लिए घर लौट रहे थे। मुझे बस एक-दो खेत पार करने हैं, फिर मैं सड़क पार करके दरवाज़े पर पहुँच जाऊँगा। झाड़ियाँ गुलाबों से कितनी भरी हुई हैं! लेकिन मेरे पास गुलाब तोड़ने का समय नहीं है; मुझे घर पहुँचना है। मैं एक ऊँची झाड़ी के पास से गुज़रा, जिसकी पत्तीदार और फूलों वाली शाखाएँ रास्ते पर फैली हुई थीं; मुझे पत्थर की सीढ़ियों वाला संकरा बाड़ दिखाई दिया; और मैंने देखा — श्री रोचेस्टर वहाँ बैठे हैं, उनके हाथ में एक किताब और एक पेंसिल है; वे लिख रहे हैं।

खैर, वो भूत तो नहीं है; फिर भी मेरी हर नस कांप रही है: एक पल के लिए मैं खुद पर काबू नहीं रख पा रही। इसका क्या मतलब है? मैंने सोचा भी नहीं था कि उसे देखकर मैं इस तरह कांपूंगी, या उसकी मौजूदगी में मेरी आवाज या चलने-फिरने की शक्ति चली जाएगी। मैं जैसे ही हिल-डुल पाऊंगी, वापस चली जाऊंगी: मुझे खुद को पूरी तरह से मूर्ख बनाने की जरूरत नहीं है। मुझे घर जाने का दूसरा रास्ता पता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मुझे बीस रास्ते पता हों; क्योंकि उसने मुझे देख लिया है।

"हिल्लो!" वह चिल्लाता है; और अपनी किताब और पेंसिल ऊपर रख देता है। "ये लो! आओ, अगर तुम चाहो तो।"

मुझे लगता है कि मैं कुछ दिखावटी तो हूँ; हालाँकि किस तरह से, यह मैं स्वयं नहीं जानती; क्योंकि मुझे अपने हाव-भाव का ठीक से होश नहीं है, और मैं केवल शांत दिखने की कोशिश कर रही हूँ; और सबसे बढ़कर, अपने चेहरे की मांसपेशियों को नियंत्रित करने की कोशिश कर रही हूँ—जो मेरी इच्छा के विरुद्ध विद्रोह कर रही हैं, और जो मैंने छिपाने का निश्चय किया था उसे व्यक्त करने के लिए संघर्ष कर रही हैं। लेकिन मेरे पास एक पर्दा है—वह नीचे है: मैं शायद शालीनता से व्यवहार करने का प्रयास कर सकती हूँ।

"और ये हो जेन आयर? क्या तुम मिलकोट से पैदल आ रही हो? हाँ – ये तुम्हारी एक चाल है: गाड़ी मंगवाने के बजाय, आम इंसान की तरह गलियों में खड़खड़ाहट करते हुए आना, बल्कि शाम के धुंधलके में चुपके से अपने घर के पास आना, मानो

कोई सपना हो या कोई परछाई। पिछले महीने तुमने अपने साथ क्या-क्या कर लिया?”

“मैं अपनी चाची के साथ थी, महोदय, जिनकी मृत्यु हो चुकी है।”

“एकदम जेनियन जवाब! हे अच्छे देवदूतों, मेरी रक्षा करो! वह दूसरी दुनिया से आई है—मृत लोगों के निवास से; और शाम के धुंधलके में यहाँ अकेले में मुझसे मिलकर मुझे यही बताती है! अगर हिम्मत होती, तो मैं तुम्हें छूकर देखता कि तुम असलियत हो या परछाईं, हे परी!—लेकिन मैं दलदल में नीले रंग की चमकती रोशनी को पकड़ना ज़्यादा पसंद करूँगा। भगोड़ा! भगोड़ा!” एक पल रुककर उसने आगे कहा। “पूरे एक महीने से मुझसे दूर रही हो, और मुझे पूरी तरह भूल गई हो, कसम खाओ!”

मुझे पता था कि अपने स्वामी से दोबारा मिलने में आनंद आएगा, भले ही इस डर से मेरा दिल टूट गया था कि वह जल्द ही मेरे स्वामी नहीं रहेंगे, और इस ज्ञान से भी कि मैं उनके लिए कुछ भी नहीं था। लेकिन श्री रोचेस्टर में (कम से कम मुझे तो यही लगता था) खुशी बांटने की ऐसी अपार शक्ति थी कि मेरे जैसे अजनबी पक्षियों को बिखेरे गए उनके टुकड़ों का स्वाद चखना भी मेरे लिए एक दावत जैसा था। उनके आखिरी शब्द सुकून देने वाले थे: ऐसा लगता था मानो वे यह जता रहे हों कि मैं उन्हें भूल जाऊं या न भूलूं, इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। और उन्होंने थॉर्नफील्ड को मेरा घर कहा था - काश, वह मेरा घर होता!

वह बाड़ से नीचे नहीं उतरा, और मुझे उससे आगे जाने की अनुमति मांगने में हिचकिचाहट हो रही थी। मैंने थोड़ी देर बाद उससे पूछा कि क्या वह लंदन गया था।

"हां; मुझे लगता है कि आपको यह बात किसी और के देखने से पता चली होगी।"

"श्रीमती फेयरफैक्स ने मुझे एक पत्र में बताया था।"

और क्या उसने आपको बताया कि मैं क्या करने गया था?

"जी हां, महोदय! सबको आपके काम के बारे में पता था।"

“जेन, तुम्हें वो गाड़ी देखनी चाहिए और मुझे बताना चाहिए कि क्या तुम्हें नहीं लगता कि वो मिसेज़ रोचेस्टर पर बिल्कुल जँचेगी; और क्या वो उन बैंगनी गद्दियों पर पीछे झुककर रानी बोआडिसीया जैसी नहीं लगेंगी। काश, जेन, मैं थोड़ा सा भी उनके साथ बाहरी रूप से मेल खा पाता। अब बताओ, हे परी, क्या तुम मुझे कोई ऐसा मंत्र, या औषधि, या कुछ ऐसा बता सकती हो जिससे मैं सुंदर पुरुष बन जाऊँ?”

"यह जादू की शक्ति से परे होगा, महोदय;" और मन ही मन मैंने कहा, "एक प्रेम भरी निगाह ही काफी है: आप ऐसे लोगों के लिए काफी आकर्षक हैं; या यूं कहें कि आपकी सख्ती में सुंदरता से परे एक शक्ति है।"

श्री रोचेस्टर कभी-कभी मेरी अनकही भावनाओं को बड़ी कुशलता से समझ लेते थे, जो मेरे लिए समझ से परे थी: इस बार उन्होंने मेरी अचानक आई प्रतिक्रिया पर कोई ध्यान नहीं दिया; बल्कि उन्होंने अपनी खास मुस्कान से मेरी ओर मुस्कुराया, जो वे कभी-कभार ही देते थे। उन्हें लगता था कि यह मुस्कान आम परिस्थितियों के लिए काफी नहीं है: यह भावनाओं की सच्ची धूप थी - जो उन्होंने अब मुझ पर बिखेर दी।

"जाने दो, जेनेट," उसने मुझे बाड़ पार करने के लिए जगह देते हुए कहा: "घर जाओ, और अपने थके-हारे छोटे भटकते पैरों को एक दोस्त की दहलीज पर रोक लो।"

अब मुझे बस चुपचाप उसकी बात माननी थी: आगे बातचीत करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। मैं बिना कुछ बोले बाड़ पार कर गया और शांति से उसे छोड़कर जाने का इरादा किया। एक आवेग ने मुझे जकड़ लिया—एक शक्ति ने मुझे वापस मोड़ दिया। मैंने कहा—या मेरे भीतर किसी चीज़ ने मेरे लिए कहा, और मेरी इच्छा के विरुद्ध—

"श्री रोचेस्टर, आपकी अपार दयालुता के लिए धन्यवाद। आपसे दोबारा मिलकर मुझे बेहद खुशी हो रही है: और आप जहां भी हों, वही मेरा घर है—मेरा एकमात्र घर।"

मैं इतनी तेज़ी से चल रहा था कि कोशिश करने पर भी वह मुझे पकड़ नहीं पाता। छोटी एडेल मुझे देखकर खुशी से झूम उठी। श्रीमती फेयरफैक्स ने हमेशा की तरह सादगी और मित्रता से मेरा स्वागत किया। लिआ मुस्कुराई और सोफी ने भी प्रसन्नता से मुझे "शुभ संध्या" कहा। यह बहुत सुखद था; अपने साथी मनुष्यों द्वारा प्यार किए जाने और यह महसूस करने से बढ़कर कोई खुशी नहीं है कि आपकी उपस्थिति उनके सुख में इजाफा करती है।

उस शाम मैंने भविष्य के डर से अपनी आँखें दृढ़तापूर्वक बंद कर लीं: मैंने उस आवाज़ को अनसुना कर दिया जो मुझे बार-बार बिछड़ने और आने वाले दुख की चेतावनी दे रही थी। जब चाय खत्म हो गई और श्रीमती फेयरफैक्स ने अपनी बुनाई का काम समेट लिया, और मैं उनके पास एक नीची कुर्सी पर बैठ गई, और एडेल कालीन पर घुटनों के बल बैठकर मेरे करीब आ गई, और आपसी स्नेह का एक

सुनहरा शांति का घेरा हम दोनों को घेर लिया, तो मैंने मन ही मन प्रार्थना की कि हम जल्द ही या दूर तक अलग न हों; लेकिन जब हम इस तरह बैठे थे, श्री रोचेस्टर बिना बताए अंदर आए, और हमें देखकर, मानो इतने सौहार्दपूर्ण समूह को देखकर आनंदित हो रहे हों — जब उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि अब वह बूढ़ी औरत ठीक है क्योंकि उसे अपनी गोद ली हुई बेटी वापस मिल गई है, और आगे कहा कि उन्होंने देखा कि एडेल अपनी छोटी अंग्रेज़ माँ को चिढ़ाने के लिए तैयार है — तो मुझे थोड़ी उम्मीद जगी कि वह अपनी शादी के बाद भी हमें अपनी सुरक्षा में कहीं न कहीं साथ रखेंगे, और हमें अपनी उपस्थिति की धूप से पूरी तरह से दूर नहीं करेंगे।

थॉर्नफील्ड हॉल लौटने के बाद दो सप्ताह तक अनिश्चितता भरी शांति छाई रही। मालिक की शादी के बारे में कोई चर्चा नहीं हुई और न ही मुझे ऐसी कोई तैयारी नज़र आई। लगभग हर दिन मैं श्रीमती फेयरफैक्स से पूछती थी कि क्या उन्हें कोई फैसला पता चला है: उनका जवाब हमेशा नकारात्मक होता था। एक बार उन्होंने बताया कि उन्होंने श्री रोचेस्टर से पूछा था कि वह अपनी दुल्हन को कब घर लाएंगे; लेकिन उन्होंने केवल एक मज़ाक और अपने अजीब से हावभाव से जवाब दिया, और वह समझ नहीं पाईं कि उनका क्या इरादा है।

एक बात ने मुझे विशेष रूप से आश्चर्यचकित किया, और वह यह थी कि न तो कोई आना-जाना था, न ही इंग्राम पार्क का दौरा: बेशक वह बीस मील दूर था, दूसरे काउंटी की सीमा पर; लेकिन एक सच्चे प्रेमी के लिए यह दूरी क्या मायने रखती थी? श्री रोचेस्टर जैसे कुशल और अथक घुड़सवार के लिए, यह महज़ एक सुबह की सवारी होती। मैंने ऐसी उम्मीदें पालनी शुरू कर दीं, जिन पर विश्वास करना मेरे लिए असंभव था: कि रिश्ता टूट गया था; कि अफवाह गलत थी; कि दोनों में से किसी एक ने अपना मन बदल लिया था। मैं अपने गुरु के चेहरे को देखकर यह जानने की कोशिश करती थी कि वह उदास हैं या क्रोधित; लेकिन मुझे याद नहीं आता था कि कब उनका चेहरा इतना साफ और भावहीन रहा था। अगर उनके साथ बिताए पलों में मैं और मेरी शिष्या उदास हो जाते और निराशा में डूब जाते, तो वे और भी खुश हो जाते। उन्होंने मुझे पहले कभी इतनी बार अपने पास नहीं बुलाया था; वहाँ रहते हुए वे मेरे प्रति इतने दयालु कभी नहीं रहे थे — और, अफसोस! मैंने उन्हें इतना प्यार कभी नहीं किया था।

अध्याय XXIII

इंग्लैंड पर ग्रीष्म ऋतु की एक शानदार छटा छाई हुई थी: आसमान इतना शुद्ध और सूर्य इतने तेजस्वी थे कि ऐसा नजारा उस समय लगातार देखने को नहीं मिलता था, मानो कभी-कभार ही ऐसा नजारा हमारी लहरों से घिरी धरती पर देखने को मिलता हो। ऐसा लग रहा था मानो दक्षिण से इटली के दिनों का एक समूह, शानदार यात्री पक्षियों के झुंड की तरह, एल्बियन की चट्टानों पर आकर ठहर गया हो। सारी घास काट ली गई थी; थॉर्नफील्ड के चारों ओर के खेत हरे-भरे और कटे हुए थे; सड़कें सफेद और सूखी हुई थीं; पेड़ अपने चरम पर थे; घनी पत्तियों वाली और गहरे रंग की झाड़ियाँ और जंगल, बीच में साफ किए गए घास के मैदानों के धूपदार रंग के साथ एक सुंदर विरोधाभास पैदा कर रहे थे।

ग्रीष्म संक्रांति की पूर्व संध्या पर, एडेल, हे लेन में आधे दिन जंगली स्ट्रॉबेरी इकट्ठा करते-करते थक गई थी और सूरज डूबने के साथ ही सो गई। मैंने उसे सोते हुए देखा और जब मैं वहां से निकली, तो बगीचे की ओर चल पड़ी।

अब चौबीसों घंटे का सबसे सुहावना समय था: “दिन अपनी तीव्र अग्नियों से ढल चुका था,” और ओस हांफते मैदान और झुलसी हुई चोटियों पर ठंडी-ठंडी गिर रही थी। जहाँ सूर्य बादलों के वैभव से रहित, सादगी से अस्त हुआ था, वहाँ एक गंभीर बैंगनी रंग फैला हुआ था, जो एक पहाड़ी की चोटी पर लाल रत्न और भट्टी की लौ की तरह चमक रहा था, और आधे आकाश पर ऊँचा और चौड़ा, कोमल और उससे भी अधिक कोमल, फैला हुआ था। पूरब का अपना आकर्षण था, एक सुंदर गहरा नीला रंग, और अपना एक साधारण रत्न, एक झिलमिलाता तारा: जल्द ही वह चंद्रमा का दावा करेगा; लेकिन वह अभी क्षितिज के नीचे था।

मैं कुछ देर फुटपाथ पर चला; तभी किसी खिड़की से एक हल्की, जानी-पहचानी खुशबू आई—सिगार की खुशबू; मैंने पुस्तकालय की खिड़की को एक हाथ की चौड़ाई

जितना खुला देखा; मुझे पता था कि वहाँ से कोई मुझे देख रहा होगा; इसलिए मैं अलग होकर बगीचे में चला गया। बगीचे का कोई भी कोना इतना शांत और स्वर्ग जैसा नहीं था; यह पेड़ों से भरा था, फूलों से खिला हुआ था: एक तरफ एक बहुत ऊँची दीवार इसे आंगन से अलग करती थी; दूसरी तरफ, बीच के पेड़ों की एक कतार इसे लॉन से अलग करती थी। नीचे एक धँसी हुई बाड़ थी; यही एकांत खेतों से इसे अलग करती थी: लॉरेल के पेड़ों से घिरा और एक विशाल हॉर्स-चेस्टनट के पेड़ पर समाप्त होने वाला एक घुमावदार रास्ता, जिसके आधार पर एक सीट बनी थी, बाड़ तक जाता था। यहाँ कोई बिना देखे घूम सकता था। जब ऐसी ओस गिर रही थी, ऐसा सन्नाटा छाया हुआ था, ऐसी धुंध छा रही थी, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हमेशा के लिए इस छाया में रह सकता हूँ; लेकिन बाड़े के ऊपरी हिस्से में फूलों और फलों की क्यारियों से गुजरते हुए, उगते हुए चंद्रमा की रोशनी से आकर्षित होकर, जो इस अधिक खुले हिस्से पर पड़ रही थी, मेरा कदम रुक गया - न तो ध्वनि से, न ही दृष्टि से, बल्कि एक बार फिर एक चेतावनी भरी सुगंध से।

मीठी काँटे और दक्षिणी लकड़ी, चमेली, गुलाबी और गुलाब लंबे समय से शाम को अपनी सुगंधित भेंट चढ़ा रहे हैं: यह नई सुगंध न तो झाड़ी की है और न ही फूल की; यह—मैं इसे अच्छी तरह जानती हूँ—यह श्री रोचेस्टर की सिगार की है। मैं चारों ओर देखती हूँ और सुनती हूँ। मुझे पके फलों से लदे पेड़ दिखाई देते हैं। मुझे आधा मील दूर जंगल में एक बुलबुल की चहचहाहट सुनाई देती है; कोई हिलता-डुलता रूप दिखाई नहीं देता, न ही किसी के आने की आहट सुनाई देती है; लेकिन वह सुगंध बढ़ती जाती है: मुझे भागना होगा। मैं झाड़ियों की ओर जाने वाले संकरे रास्ते की ओर बढ़ती हूँ, और मैं श्री रोचेस्टर को अंदर आते हुए देखती हूँ। मैं आइवी की आड़ में एक तरफ हट जाती हूँ; वह ज़्यादा देर नहीं रुकेंगे: वह जल्द ही वहीं लौट जाएँगे जहाँ से आए थे, और अगर मैं चुपचाप बैठी रही तो वह मुझे कभी नहीं देख पाएँगे।

लेकिन नहीं—शाम का समय उन्हें भी उतना ही सुहावना लगता है जितना मुझे, और यह प्राचीन उद्यान भी उतना ही आकर्षक है; और वे टहलते रहते हैं, कभी आंवले की डालियों को उठाकर उन पर लदे बेर जैसे बड़े-बड़े फलों को देखते हैं; कभी दीवार से एक पका हुआ चेरी तोड़ते हैं; कभी फूलों के गुच्छे की ओर झुकते हैं, या तो उनकी सुगंध को सूंघने के लिए या उनकी पंखुड़ियों पर ओस की बूंदों को निहारने के लिए। एक बड़ा पतंगा मेरे पास से भिनभिनाता हुआ गुजरता है; वह श्री रोचेस्टर के पैरों के

पास एक पौधे पर बैठ जाता है: वे उसे देखते हैं, और झुककर उसकी जांच करते हैं।

मैंने सोचा, "अब उसकी पीठ मेरी तरफ है और वह किसी काम में व्यस्त भी है; शायद अगर मैं धीरे से चलूं तो बिना किसी का ध्यान खींचे चुपके से निकल जाऊं।"

मैंने घास के किनारे पर कदम रखा ताकि कंकड़ों की चरमराहट से मेरी मौजूदगी का पता न चल सके: वह मेरे गुजरने की जगह से एक-दो गज की दूरी पर क्यारियों के बीच खड़ा था; ऐसा लग रहा था जैसे पतंगा उसे अपनी ओर खींच रहा हो। "मैं बहुत अच्छे से गुजर जाऊंगी," मैंने मन ही मन सोचा। जैसे ही मैं उसकी परछाईं से गुजरी, जो अभी पूरी तरह से उगी नहीं थी और बगीचे पर दूर तक फैली हुई थी, उसने बिना मुड़े धीरे से कहा—

"जेन, आओ और इस आदमी को देखो।"

मैंने कोई आवाज़ नहीं की: उसकी आँखें पीछे नहीं थीं— क्या उसकी परछाई महसूस कर सकती थी? पहले तो मैं चौंक गया, फिर मैं उसके पास पहुँचा।

“उसके पंखों को देखो,” उसने कहा, “वह मुझे वेस्ट इंडीज के किसी कीड़े की याद दिलाता है; इंग्लैंड में इतना बड़ा और रंगीन रात्रिचर कीट अक्सर देखने को नहीं मिलता; देखो! वह उड़ गया।”

पतंगा इधर-उधर भटक गया। मैं भी दबे पांव पीछे हट रहा था; लेकिन मिस्टर रोचेस्टर मेरे पीछे आए, और जब हम विकेट पर पहुंचे, तो उन्होंने कहा—

"वापस मुड़ जाओ: इतनी खूबसूरत रात में घर में बैठे रहना शर्म की बात है; और निश्चित रूप से कोई भी तब बिस्तर पर जाना नहीं चाहेगा जब सूर्यास्त और चंद्रोदय इस तरह मिल रहे हों।"

यह मेरी एक कमजोरी है कि हालांकि कभी-कभी मेरी जुबान जवाब देने में तत्पर रहती है, लेकिन कई बार बहाना बनाने में बुरी तरह नाकाम हो जाती है; और यह चूक हमेशा किसी संकट के समय होती है, जब मुझे किसी दर्दनाक शर्मिंदगी से निकलने के लिए एक आसान शब्द या विश्वसनीय बहाने की सख्त जरूरत होती है। मुझे इस समय श्री रोचेस्टर के साथ छायादार बगीचे में अकेले चलना अच्छा नहीं लग रहा था; लेकिन मुझे उन्हें छोड़ने का कोई बहाना नहीं सूझा। मैं धीमे कदमों से उनके पीछे-पीछे चली, और मेरे दिमाग में बचने का कोई रास्ता खोजने की होड़ लगी हुई थी; लेकिन वे खुद इतने शांत और गंभीर दिख रहे थे कि मुझे अपनी किसी भी उलझन पर शर्म आ गई: बुराई - अगर कोई बुराई थी या होने वाली थी - तो वह सिर्फ मुझमें ही निहित प्रतीत

हुई; उनका मन अचेतन और शांत था।

“जेन,” उसने फिर से कहना शुरू किया, जैसे ही हम लॉरेल की पगडंडी में दाखिल हुए और धीरे-धीरे धँसी हुई बाड़ और हॉर्स-चेस्टनट के पेड़ की दिशा में आगे बढ़े, “गर्मियों में थॉर्नफील्ड एक सुखद जगह है, है ना?”

"जी श्रीमान।"

"आप तो इस घर से कुछ हद तक जुड़ ही गए होंगे, — आप, जिनकी नजर प्राकृतिक सुंदरता पर रहती है, और जिनमें जुड़ाव की भावना भी काफी प्रबल है?"

"मैं इससे सचमुच जुड़ा हुआ हूं।"

और हालांकि मुझे समझ नहीं आ रहा कि ऐसा कैसे है, लेकिन मुझे लगता है कि आपने उस नासमझ छोटी बच्ची एडेल के लिए भी कुछ हद तक सम्मान हासिल कर लिया है; और यहाँ तक कि भोली-भाली महिला फेयरफैक्स के लिए भी?

जी हाँ, महोदय; अलग-अलग मायनों में, मुझे दोनों से स्नेह है।

और क्या उन्हें उनसे अलग होने का दुख होगा?

"हाँ।"

“अफ़सोस!” उसने कहा, आह भरी और रुक गया। “इस जीवन में घटनाओं का यही सिलसिला है,” उसने थोड़ी देर बाद कहा: “जैसे ही आप किसी सुखद विश्राम स्थल पर आराम से बैठते हैं, एक आवाज़ आपको उठने और आगे बढ़ने के लिए पुकारती है, क्योंकि विश्राम का समय समाप्त हो चुका होता है।”

“क्या मुझे आगे बढ़ना ही होगा, महोदय?” मैंने पूछा। “क्या मुझे थॉर्नफील्ड छोड़ना ही होगा?”

“मुझे लगता है कि तुम्हें ऐसा करना ही होगा, जेन। मुझे माफ करना, जेनेट, लेकिन मुझे सच में लगता है कि तुम्हें ऐसा करना ही होगा।”

यह एक झटका था, लेकिन मैंने इसे खुद पर हावी नहीं होने दिया।

"जी हाँ, महोदय, जब मार्च करने का आदेश आएगा तो मैं तैयार रहूंगा।"

"अब समय आ गया है - मुझे इसे आज रात ही देना होगा।"

तो क्या आप शादी करने जा रहे हैं, महोदय?

"बिल्कुल सही — एकदम सटीक: अपनी हमेशा की तरह तीक्ष्ण बुद्धि के साथ, आपने एकदम सटीक बात कही है।"

“जल्द ही, महोदय?”

"बहुत जल्द, मेरी—यानी मिस आयर: और तुम्हें याद होगा, जेन, जब मैंने, या अफवाह ने, तुम्हें साफ-साफ बताया था कि मेरा इरादा अपने कुंवारेपन को पवित्र फंदे में डालने का है, शादी के पवित्र बंधन में बंधने का—संक्षेप में, मिस इंग्राम को अपनी बाहों में लेने का (वह बहुत सुंदर हैं: लेकिन यह बात मायने नहीं रखती—मेरी खूबसूरत ब्लैंच जैसी बेहतरीन चीज की कभी कमी नहीं हो सकती): खैर, जैसा कि मैं कह रहा था—मेरी बात सुनो, जेन! तुम कहीं और पतंगों को देखने तो नहीं जा रही हो? वह तो बस एक लेडी-क्लॉक थी, बच्ची, जो 'घर की ओर उड़ रही थी।' मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ कि तुमने ही सबसे पहले मुझसे कहा था, उस विवेक के साथ जिसका मैं सम्मान करता हूँ—उस दूरदर्शिता, समझदारी और विनम्रता के साथ जो तुम्हारी जिम्मेदार और आश्रित स्थिति के लिए उपयुक्त है—कि अगर मैं मिस इंग्राम से शादी कर लूँ, तो तुम और छोटी एडेल दोनों को तुरंत निकल जाना चाहिए। मैं इस तरह की बातों को छोड़ देता हूँ मेरी प्रेमिका के चरित्र पर इस सुझाव से जो कलंक लगा है, उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ; वास्तव में, जब तुम दूर जाओगी, जेनेट, मैं इसे भूलने की कोशिश करूँगा: मैं केवल इसकी बुद्धिमत्ता पर ध्यान दूँगा; जो इतनी बुद्धिमत्तापूर्ण है कि मैंने इसे अपने जीवन का मूलमंत्र बना लिया है। एडेल को स्कूल जाना चाहिए; और तुम्हें, मिस आयर, एक नई नौकरी ढूंढनी चाहिए।

"जी हाँ, महोदय, मैं तुरंत विज्ञापन दूंगा: और इस बीच, मुझे लगता है—" मैं कहने ही वाला था, "मुझे लगता है कि मैं यहाँ तब तक रह सकता हूँ, जब तक मुझे रहने के लिए कोई और जगह न मिल जाए:" लेकिन मैं रुक गया, क्योंकि मुझे लगा कि लंबी सजा का जोखिम उठाना ठीक नहीं होगा, क्योंकि मेरी आवाज पूरी तरह से नियंत्रण में नहीं थी।

श्री रोचेस्टर ने आगे कहा, "लगभग एक महीने में मैं दूल्हा बनने की उम्मीद करता हूं; और इस बीच, मैं खुद आपके लिए रोजगार और आश्रय की तलाश करूंगा।"

"धन्यवाद महोदय; मुझे खेद है कि मैं दे रहा हूँ—"

"अरे, माफ़ी मांगने की कोई ज़रूरत नहीं! मेरा मानना है कि जब कोई आश्रित अपना कर्तव्य उसी तरह निभाता है जैसे आपने निभाया है, तो उसे अपने नियोक्ता से हर संभव सहायता प्राप्त करने का अधिकार है; वास्तव में, मैंने अपनी होने वाली सास के माध्यम से एक ऐसी जगह के बारे में सुना है जो मुझे लगता है कि उपयुक्त रहेगी: आयरलैंड के कॉनॉट स्थित बिटरनट लॉज की श्रीमती डायोनिसियस ओ'गैल की पाँचों

बेटियों की शिक्षा का जिम्मा लेना है। मुझे लगता है कि आपको आयरलैंड पसंद आएगा: कहते हैं कि वहाँ के लोग बहुत ही मिलनसार हैं।”

"इसमें अभी बहुत समय लगेगा, महोदय।"

"कोई बात नहीं—तुम्हारी जैसी समझदार लड़की को यात्रा या दूरी से कोई आपत्ति नहीं होगी।"

“यात्रा नहीं, बल्कि दूरी: और फिर समुद्र एक बाधा है —”

“किससे, जेन?”

“इंग्लैंड से और थॉर्नफील्ड से: और —”

"कुंआ?"

"आपसे, महोदय।"

मैंने ये शब्द लगभग अनायास ही कह दिए, और मेरी इच्छाशक्ति के विपरीत, मेरे आँसू बह निकले। हालाँकि, मैं इस तरह नहीं रोई कि कोई सुन ले; मैंने सिसकने से खुद को रोका। श्रीमती ओ'गैल और बिटरनट लॉज का ख्याल मेरे दिल को झकझोर कर रख गया; और उससे भी ज़्यादा ठंड उस खारे पानी और झाग का ख्याल था, जो मानो मेरे और उस गुरु के बीच आने वाला था, जिनके साथ मैं अब चल रही थी, और उससे भी ज़्यादा ठंड उस विशाल सागर की याद से लगी — धन-दौलत, जाति-रिवाज, सब कुछ मेरे और उस चीज़ के बीच आ गया जिसे मैं स्वाभाविक रूप से और अनिवार्य रूप से प्यार करती थी।

मैंने फिर कहा, "यह बहुत लंबा रास्ता है।"

“हाँ, बिल्कुल; और जब तुम आयरलैंड के कॉनॉट में बिटरनट लॉज पहुँचोगी, तो मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगा, जेन: यह नैतिक रूप से निश्चित है। मैं कभी आयरलैंड नहीं जाता, क्योंकि मुझे उस देश में कोई खास दिलचस्पी नहीं है। हम अच्छे दोस्त रहे हैं, जेन; है ना?”

"जी श्रीमान।"

“और जब दोस्त बिछड़ने वाले होते हैं, तो वे बचे हुए थोड़े समय को एक-दूसरे के करीब बिताना पसंद करते हैं। आओ! हम आधे घंटे तक शांति से सफर और बिछड़ने के बारे में बातें करेंगे, जबकि ऊपर आकाश में तारे अपनी चमक बिखेर रहे होंगे: ये रहा शाहबलूत का पेड़: ये रही उसकी पुरानी जड़ों के पास वाली बेंच। आओ, हम आज रात वहाँ शांति से बैठेंगे, भले ही अब हमें फिर कभी वहाँ साथ बैठने का

सौभाग्य न हो।” उन्होंने मुझे और खुद को बैठाया।

“जेनट, आयरलैंड का रास्ता बहुत लंबा है, और मुझे अपनी नन्ही दोस्त को इतनी थका देने वाली यात्रा पर भेजने का बहुत दुख है: लेकिन अगर मैं इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकती, तो भला क्या करूँ? जेन, क्या तुम मुझसे कुछ मिलती-जुलती हो?”

इस समय तक मैं किसी भी तरह का जवाब देने का जोखिम नहीं उठा सकता था: मेरा दिल थम गया था।

“क्योंकि,” उसने कहा, “कभी-कभी तुम्हारे बारे में मुझे एक अजीब सी अनुभूति होती है—खासकर जब तुम मेरे पास होती हो, जैसे अभी: ऐसा लगता है जैसे मेरी बाईं पसलियों के नीचे कहीं एक डोरी है, जो तुम्हारे छोटे से शरीर के उसी हिस्से में स्थित एक ऐसी ही डोरी से कसकर और अटूट रूप से बंधी हुई है। और अगर वह तूफानी नहर और लगभग दो सौ मील का भूभाग हमारे बीच आ जाए, तो मुझे डर है कि वह जुड़ाव की डोर टूट जाएगी; और तब मुझे एक घबराहट भरी आशंका होती है कि मेरे अंदरूनी हिस्से में रक्तस्राव होने लगेगा। जहाँ तक तुम्हारी बात है,—तुम मुझे भूल जाओगी।”

“मुझे ऐसा कभी नहीं करना चाहिए, महोदय: आप जानते हैं—” आगे बढ़ना असंभव था।

जेन, क्या तुम्हें जंगल में बुलबुल की आवाज़ सुनाई दे रही है? सुनो!

सुनते-सुनते मैं फूट-फूट कर रोने लगी; क्योंकि मैं अपने दर्द को और दबा नहीं सकती थी; मुझे हार माननी पड़ी और तीव्र पीड़ा से मेरा पूरा शरीर कांप उठा। जब मैंने कुछ कहा, तो बस यही तीव्र इच्छा व्यक्त की कि काश मैं कभी पैदा ही न हुई होती या कभी थॉर्नफील्ड न आई होती।

"क्योंकि आपको इसे छोड़ने का अफसोस है?"

मेरे भीतर दु:ख और प्रेम से उमड़ी भावनाओं की प्रचंडता हावी होने का दावा कर रही थी, पूर्ण प्रभुत्व के लिए संघर्ष कर रही थी, और अंततः प्रभुत्व जमाने, विजय प्राप्त करने, जीने, उठने और शासन करने का अधिकार जता रही थी: हाँ, और बोलने का भी।

“थॉर्नफील्ड को छोड़कर मुझे बहुत दुख हो रहा है: मैं थॉर्नफील्ड से प्यार करता हूँ: — मैं इससे प्यार करता हूँ, क्योंकि मैंने इसमें एक परिपूर्ण और आनंदमय जीवन जिया है, — कम से कम कुछ समय के लिए। मुझे कुचला नहीं गया। मुझे पत्थर की

तरह कठोर नहीं बनाया गया। मुझे हीन विचारों के साथ दफनाया नहीं गया, और न ही मुझे उज्ज्वल, ऊर्जावान और उच्चतर चीज़ों के साथ संवाद के हर पल से वंचित किया गया। मैंने आमने-सामने, उन लोगों से बात की है जिनका मैं आदर करता हूँ, जिनसे मुझे आनंद मिलता है — एक मौलिक, एक सशक्त, एक विस्तृत मन से। मैं आपको जानता हूँ, श्री रोचेस्टर; और यह सोचकर मुझे भय और पीड़ा होती है कि मुझे आपसे हमेशा के लिए अलग होना पड़ेगा। मुझे प्रस्थान की आवश्यकता दिखाई देती है; और यह मृत्यु की आवश्यकता को देखने जैसा है।"

"आपको इसकी आवश्यकता कहाँ दिखाई देती है?" उसने अचानक पूछा।

"कहाँ? महोदय, आपने इसे मेरे सामने रखा है।"

"किस रूप में?"

"मिस इंग्राम के रूप में; एक नेक और खूबसूरत महिला, - आपकी दुल्हन।"

"मेरी दुल्हन! कौन सी दुल्हन? मेरी कोई दुल्हन नहीं है!"

लेकिन आपको मिलेगा।

"हाँ; मैं करूँगा! मैं करूँगा!" उसने अपने दांत भींच लिए।

"तो मुझे जाना होगा: — आपने खुद ही कह दिया है।"

"नहीं: तुम्हें यहीं रहना होगा! मैं शपथ लेता हूँ—और मैं अपनी शपथ निभाऊंगा।"

"मैं तुमसे कहती हूँ, मुझे जाना ही होगा!" मैंने आवेश में आकर कहा। "क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारे लिए कुछ भी न बनकर रह सकती हूँ? क्या तुम्हें लगता है कि मैं एक मशीन हूँ? एक ऐसी मशीन जिसमें कोई भावनाएँ नहीं हैं? और जो अपने होठों से रोटी का टुकड़ा छीने जाने और अपने प्याले से जीवन का एक बूँद गिराए जाने को सहन कर सकती है? क्या तुम्हें लगता है कि गरीब, गुमनाम, साधारण और छोटी होने के कारण मैं आत्माहीन और हृदयहीन हूँ? तुम गलत सोचते हो! मेरे पास भी उतनी ही आत्मा है जितनी तुम्हारे पास, और उतना ही हृदय भी! और अगर ईश्वर ने मुझे थोड़ी सुंदरता और बहुत धन दिया होता, तो मैं तुम्हारे लिए मुझे छोड़ना उतना ही मुश्किल बना देती जितना अब मेरे लिए तुम्हें छोड़ना मुश्किल है। मैं अब तुमसे रीति-रिवाजों, परंपराओं या नश्वर शरीर के माध्यम से बात नहीं कर रही हूँ; यह मेरी आत्मा है जो तुम्हारी आत्मा को संबोधित कर रही है; मानो हम दोनों कब्र से गुजर चुके हों, और ईश्वर के चरणों में बराबर खड़े हों, जैसे हम हैं!"

"जैसे हम हैं!" श्री रोचेस्टर ने दोहराया — "हाँ," उन्होंने मुझे अपनी बाहों में भरते

हुए कहा। मुझे अपने सीने से लगाते हुए, मेरे होठों पर अपने होंठ दबाते हुए: “हाँ, जेन!”

“जी हाँ, महोदय,” मैंने उत्तर दिया: “लेकिन ऐसा नहीं है; क्योंकि आप विवाहित हैं—या लगभग विवाहित हैं, और आपने अपने से नीची स्त्री से विवाह किया है—जिससे आपको कोई सहानुभूति नहीं है—जिससे मुझे नहीं लगता कि आप सचमुच प्रेम करते हैं; क्योंकि मैंने आपको उसका उपहास करते देखा और सुना है। मैं ऐसे विवाह को अस्वीकार करता हूँ: इसलिए मैं आपसे बेहतर हूँ—मुझे जाने दीजिए!”

“कहाँ, जेन? आयरलैंड?”

“हां – आयरलैंड। मैंने अपने मन की बात कह दी है, और अब मैं कहीं भी जा सकता हूं।”

"जेन, शांत रहो; इतना संघर्ष मत करो, जैसे कोई जंगली, उन्मत्त पक्षी अपनी हताशा में अपने ही पंख नोच रहा हो।"

“मैं कोई पक्षी नहीं हूँ; और कोई जाल मुझे फंसा नहीं सकता; मैं एक स्वतंत्र इच्छाशक्ति वाला एक स्वतंत्र मनुष्य हूँ, जिसका प्रयोग मैं अब तुम्हें छोड़कर जाने के लिए कर रहा हूँ।”

एक और प्रयास ने मुझे मुक्त कर दिया, और मैं उसके सामने सीधा खड़ा हो गया।

उन्होंने कहा, “और तुम्हारी इच्छा ही तुम्हारे भाग्य का निर्णय करेगी। मैं तुम्हें अपना हाथ, अपना हृदय और अपनी समस्त संपत्ति का एक हिस्सा अर्पित करता हूँ।”

"तुम एक नाटक कर रहे हो, जिस पर मैं बस हंसता हूं।"

मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम जीवन भर मेरे साथ रहो—मेरी दूसरी आत्मा बनो, और मेरे सबसे अच्छे सांसारिक साथी बनो।

"उस भाग्य के लिए आप पहले ही अपना चुनाव कर चुके हैं, और आपको उसका पालन करना होगा।"

"जेन, कुछ पल शांत रहो: तुम बहुत ज्यादा उत्साहित हो: मैं भी शांत हो जाऊंगी।"

लॉरेल की क्यारियों से होकर हवा का एक झोंका आया और शाहबलूत के पेड़ों की डालियों को थरथरा दिया: वह दूर चला गया – अनिश्चित दूरी तक – और फिर शांत हो गया। उस समय बुलबुल का गीत ही एकमात्र आवाज़ थी: उसे सुनकर मैं फिर रो पड़ी। श्री रोचेस्टर चुपचाप बैठे रहे, मुझे कोमल और गंभीर भाव से देखते रहे। कुछ समय बीतने के बाद उन्होंने कुछ कहा; अंत में उन्होंने कहा –

"जेन, मेरे पास आओ, और चलो हम एक-दूसरे को समझाएं और जानें।"

मैं अब कभी तुम्हारे पास नहीं आऊंगा: मैं अब तुमसे अलग हो गया हूं, और वापस नहीं लौट सकता।

लेकिन, जेन, मैं तुम्हें अपनी पत्नी के रूप में बुला रहा हूँ: मैं केवल तुमसे ही विवाह करना चाहता हूँ।

मैं चुप रहा: मुझे लगा कि वह मेरा मजाक उड़ा रहा है।

"आओ, जेन—इधर आओ।"

"तुम्हारी दुल्हन हमारे बीच खड़ी है।"

वह उठा और एक ही छलांग में मेरे पास पहुँच गया।

“मेरी दुल्हन यहाँ है,” उसने मुझे फिर से अपनी ओर खींचते हुए कहा, “क्योंकि मेरी बराबरी की और मेरी हमशक्ल यहाँ है। जेन, क्या तुम मुझसे शादी करोगी?”

फिर भी मैंने कोई जवाब नहीं दिया, और मैं उसकी पकड़ से खुद को छुड़ाने के लिए छटपटाती रही: क्योंकि मुझे अब भी अविश्वास था।

"क्या तुम्हें मुझ पर शक है, जेन?"

“पूरी तरह से।”

“क्या आपको मुझ पर भरोसा नहीं है?”

बिलकुल भी नहीं।

“क्या मैं तुम्हारी नज़रों में झूठा हूँ?” उसने भावुक होकर पूछा। “छोटे संशयवादी, तुम यकीन कर लोगे। मिस इंग्राम के लिए मेरे मन में क्या प्रेम है? बिलकुल नहीं: और यह तुम जानते हो। उसके मन में मेरे लिए क्या प्रेम है? बिलकुल नहीं: जैसा कि मैंने साबित करने की पूरी कोशिश की है: मैंने उसके पास यह अफवाह फैलाई कि मेरी संपत्ति उतनी नहीं है जितनी बताई जाती है, और उसके बाद मैं परिणाम देखने के लिए उसके सामने गया; परिणाम यह था कि वह और उसकी माँ दोनों ने मुझसे दूरी बनाए रखी। मैं मिस इंग्राम से शादी नहीं करूँगा—मैं नहीं कर सकता। तुम—तुम अजीब, तुम लगभग अलौकिक प्राणी!—मैं तुमसे अपने खून की तरह प्यार करता हूँ। तुम—गरीब, गुमनाम, छोटी और सादी सी—मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे पति के रूप में स्वीकार करो।”

“क्या, मैं!” मैंने हैरानी से कहा, उसकी गंभीरता और विशेष रूप से उसकी असभ्यता को देखते हुए, उसकी ईमानदारी पर विश्वास करने की कोशिश करते हुए:

“मैं, जिसका दुनिया में तुम्हारे सिवा कोई दोस्त नहीं है – अगर तुम मेरे दोस्त हो: तो मुझे एक शिलिंग भी नहीं, सिवाय उसके जो तुमने मुझे दिया है?”

“जेन, मुझे तुम्हें पूरी तरह से अपना बनाना है। क्या तुम मेरी बनोगी? जल्दी से हां कहो।”

"श्रीमान रोचेस्टर, मुझे आपका चेहरा देखने दीजिए: चांदनी की ओर मुड़िए।"

"क्यों?"

“क्योंकि मैं तुम्हारे चेहरे के भाव पढ़ना चाहता हूँ — घूम जाओ!”

“लो! यह तुम्हें एक मुड़े-तुड़े, खरोंच लगे पन्ने से ज़्यादा पठनीय नहीं लगेगा। पढ़ते रहो: बस जल्दी करो, क्योंकि मैं कष्ट सह रहा हूँ।”

उसका चेहरा बहुत उत्तेजित और लाल था, चेहरे पर तीव्र भाव थे और आंखों में अजीब सी चमक थी।

“ओह, जेन, तुम मुझे तड़पाती हो!” उसने कहा। “अपनी उस खोजपूर्ण, फिर भी वफादार और उदार नज़र से, तुम मुझे तड़पाती हो!”

“मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? यदि आप सच्चे हैं, और आपका प्रस्ताव वास्तविक है, तो आपके प्रति मेरी भावनाएँ केवल कृतज्ञता और भक्ति की ही होनी चाहिएं - वे मुझे पीड़ा नहीं दे सकतीं।”

“धन्यवाद!” वह चिल्लाया; और उन्माद में बोला — “जेन, मुझे जल्दी स्वीकार करो। कहो, एडवर्ड — मुझे मेरा नाम बताओ — एडवर्ड — मैं तुमसे शादी करूँगा।”

“क्या तुम सच में गंभीर हो? क्या तुम मुझसे सचमुच प्यार करते हो? क्या तुम सच में चाहते हो कि मैं तुम्हारी पत्नी बनूँ?”

“हाँ, मैं करता हूँ; और यदि आपको संतुष्ट करने के लिए शपथ लेना आवश्यक है, तो मैं शपथ लेता हूँ।”

"तो फिर, महोदय, मैं आपसे विवाह कर लूंगी।"

“एडवर्ड – मेरी प्यारी पत्नी!”

प्रिय एडवर्ड!

“मेरे पास आओ—पूरी तरह से अभी मेरे पास आओ,” उसने कहा; और अपनी गहरी आवाज़ में, मेरे कान में फुसफुसाते हुए, जब उसका गाल मेरे गाल से टिका हुआ था, “मेरी खुशी का कारण बनो—मैं तुम्हारी खुशी का कारण बनूंगा।”

कुछ देर बाद उसने कहा, “भगवान मुझे क्षमा करें! और मनुष्य मुझसे दखल न दें:

वह मेरी है, और मैं उसे अपने पास रखूंगा।”

“इसमें दखल देने वाला कोई नहीं है, महोदय। मेरा कोई रिश्तेदार नहीं है जो हस्तक्षेप करे।”

“नहीं—यही तो सबसे अच्छी बात है,” उसने कहा। और अगर मैं उससे कम प्यार करती तो मुझे उसका लहजा और खुशी भरी नज़रें क्रूर लगतीं; लेकिन, उसके पास बैठी, बिछड़ने के बुरे सपने से जागकर—मिलन के स्वर्ग में बुलाई गई—मैं केवल उस आनंद के बारे में सोच रही थी जो मुझे इतनी प्रचुर मात्रा में पीने को मिला था। बार-बार उसने पूछा, “क्या तुम खुश हो, जेन?” और बार-बार मैंने जवाब दिया, “हाँ।” जिसके बाद उसने धीरे से कहा, “यह प्रायश्चित करेगा—यह प्रायश्चित करेगा। क्या मैंने उसे बेसहारा, उदास और अकेला नहीं पाया? क्या मैं उसकी रक्षा, स्नेह और सांत्वना नहीं दूँगा? क्या मेरे दिल में प्यार और मेरे संकल्पों में दृढ़ता नहीं है? यह ईश्वर के न्याय में प्रायश्चित करेगा। मैं जानता हूँ कि मेरा रचयिता मेरे कर्मों को स्वीकार करता है। दुनिया के फैसले से—मैं खुद को अलग रखता हूँ। मनुष्य की राय से—मैं उसकी परवाह नहीं करता।”

लेकिन रात में क्या हुआ था? चाँद अभी डूबा नहीं था, और हम सब अंधेरे में थे: मैं अपने स्वामी का चेहरा मुश्किल से देख पा रहा था, चाहे मैं कितना भी पास क्यों न था। और शाहबलूत के पेड़ को क्या हुआ था? वह मरोड़ रहा था और कराह रहा था; जबकि लॉरेल की झाड़ियों में हवा ज़ोर से चल रही थी, और हम पर से गुज़र रही थी।

श्री रोचेस्टर ने कहा, "हमें अंदर जाना चाहिए: मौसम बदल रहा है। जेन, मैं तुम्हारे साथ सुबह तक बैठा रह सकता था।"

“और इसलिए,” मैंने सोचा, “क्या मैं तुम्हारे साथ ऐसा कर सकता हूँ?” शायद मुझे ऐसा कहना चाहिए था, लेकिन जिस बादल की ओर मैं देख रहा था, उसमें से एक भयंकर, तीखी चिंगारी निकली, और एक चटकने की आवाज़ आई, एक धमाका हुआ, और एक तेज़ गड़गड़ाहट हुई; और मैंने बस यही सोचा कि अपनी चकाचौंध भरी आँखों को मिस्टर रोचेस्टर के कंधे पर छुपा लूँ।

बारिश तेज़ बरस रही थी। वह मुझे जल्दी से पगडंडी से होते हुए, मैदान से गुज़रकर घर के अंदर ले गया; लेकिन दहलीज पार करने से पहले ही हम पूरी तरह भीग चुके थे। वह हॉल में मेरा शॉल उतार रहा था और मेरे खुले बालों से पानी झाड़ रहा था, तभी श्रीमती फेयरफैक्स अपने कमरे से बाहर आईं। मैंने उन्हें पहले नहीं देखा,

न ही श्री रोचेस्टर ने। लैंप जल रहा था। घड़ी में बारह बज रहे थे।

“जल्दी से अपने गीले कपड़े उतार दो,” उसने कहा; “और जाने से पहले, शुभ रात्रि — शुभ रात्रि, मेरी जान!”

उन्होंने मुझे बार-बार चूमा। जब मैंने उनकी बाहों से छूटकर ऊपर देखा, तो वहाँ विधवा खड़ी थी, पीली पड़ी, गंभीर और हैरान। मैंने बस उन्हें देखकर मुस्कुराया और ऊपर की ओर दौड़ पड़ी। मैंने सोचा, "स्पष्टीकरण किसी और समय के लिए ठीक रहेगा।" फिर भी, जब मैं अपने कमरे में पहुँची, तो इस विचार से मुझे गहरा दुख हुआ कि उन्होंने जो देखा, उसे उन्होंने क्षण भर के लिए भी गलत समझा होगा। लेकिन खुशी ने जल्द ही बाकी सभी भावनाओं को मिटा दिया; और चाहे हवा कितनी भी तेज़ चल रही हो, गरज कितनी भी गहरी और करीब हो, बिजली कितनी भी तेज़ और बार-बार चमक रही हो, दो घंटे तक चलने वाले तूफान में बारिश कितनी भी तेज़ हो, मुझे ज़रा भी डर नहीं लगा और न ही कोई भय। इस दौरान मिस्टर रोचेस्टर तीन बार मेरे दरवाजे पर आए, यह पूछने के लिए कि क्या मैं सुरक्षित और शांत हूँ: और यही मेरे लिए सुकून था, यही किसी भी चीज़ के लिए ताकत थी।

सुबह बिस्तर से उठने से पहले ही, छोटी एडेल दौड़ती हुई आई और मुझे बताया कि बगीचे के निचले हिस्से में स्थित विशाल हॉर्स-चेस्टनट के पेड़ पर रात में बिजली गिर गई थी और उसका आधा हिस्सा टूटकर अलग हो गया था।

अध्याय 24

जब मैं उठी और कपड़े पहने, तो मैंने जो कुछ हुआ था उसके बारे में सोचा और मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या यह एक सपना था। जब तक मैं मिस्टर रोचेस्टर को दोबारा नहीं देख लेती और उनसे प्यार और वादे के अपने शब्दों को दोहराते हुए नहीं सुन लेती, तब तक मैं वास्तविकता के बारे में निश्चित नहीं हो सकती थी।

अपने बालों को संवारते हुए मैंने शीशे में अपना चेहरा देखा और महसूस किया कि अब वह साधारण नहीं रहा: उसके चेहरे पर आशा और रंग में जीवंतता थी; और मेरी आँखें मानो फलदायकता के स्रोत को देख चुकी थीं और उसकी चमकती लहरों से किरणें उधार ले रही थीं। मैं अक्सर अपने स्वामी की ओर देखने से कतराती थी, क्योंकि मुझे डर था कि वे मेरी इस नज़र से प्रसन्न नहीं होंगे; लेकिन मुझे यकीन था कि अब मैं अपना चेहरा उनकी ओर उठा सकती हूँ और मेरे भावों से उनका स्नेह कम नहीं होगा। मैंने अपनी दराज से एक सादी लेकिन साफ और हल्की गर्मियों की पोशाक निकाली और पहन ली: ऐसा लग रहा था कि कोई भी पोशाक मुझ पर इतनी अच्छी नहीं लगी थी, क्योंकि मैंने कभी भी इतने आनंदमय मूड में कोई पोशाक नहीं पहनी थी।

जब मैं दौड़कर हॉल में गई, तो मुझे आश्चर्य नहीं हुआ कि रात के तूफ़ान के बाद जून की एक शानदार सुबह खिल उठी थी; और खुले कांच के दरवाजे से ताज़ी और सुगंधित हवा का झोंका महसूस हो रहा था। प्रकृति भी प्रसन्न होगी जब मैं इतनी खुश थी। एक भिखारी औरत और उसका छोटा बच्चा—दोनों पीले-पीले, फटेहाल—रास्ते से आ रहे थे, और मैं दौड़कर नीचे गई और उन्हें अपने पर्स में मौजूद सारे पैसे दे दिए —लगभग तीन-चार शिलिंग: चाहे अच्छा हो या बुरा, उन्हें मेरी खुशी में हिस्सा लेना ही था। कौवे कांव-कांव कर रहे थे, और अन्य पक्षी चहचहा रहे थे; लेकिन मेरे आनंदित हृदय से अधिक प्रसन्न और मधुर कुछ भी नहीं था।

श्रीमती फेयरफैक्स ने उदास चेहरे के साथ खिड़की से बाहर देखते हुए मुझे चौंका दिया और गंभीरता से कहा, "मिस आयर, क्या आप नाश्ते पर आएंगी?" भोजन के दौरान वह शांत और संयमित रहीं, लेकिन मैं उस समय उनके भ्रम को दूर नहीं कर सकी। मुझे अपने शिक्षक के स्पष्टीकरण का इंतजार करना था; और उन्हें भी। मैंने जितना खा सकती थी उतना खाया और फिर जल्दी से ऊपर चली गई। मैंने एडेल को स्कूल के कमरे से निकलते हुए देखा।

“तुम कहाँ जा रहे हो? अब पढ़ाई का समय हो गया है।”

“श्री रोचेस्टर ने मुझे नर्सरी में भेज दिया है।”

"कहाँ है वह?"

“अंदर,” उसने उस अपार्टमेंट की ओर इशारा करते हुए कहा जिसे वह छोड़कर गई थी; और मैं अंदर गया, और वह वहीं खड़ा था।

“आओ और मुझे सुप्रभात कहो,” उसने कहा। मैं खुशी-खुशी आगे बढ़ी; और अब मुझे केवल एक ठंडा शब्द या हाथ मिलाना ही नहीं मिला, बल्कि एक आलिंगन और एक चुंबन मिला। यह स्वाभाविक लगा: उसके द्वारा इतना प्यार और दुलार पाना सुखद लगा।

“जेन, तुम खिलखिलाती, मुस्कुराती और प्यारी लग रही हो,” उसने कहा: “आज सुबह सचमुच बहुत सुंदर लग रही हो। क्या यह मेरी प्यारी सी परी है? क्या यह मेरी सरसों के दाने जैसी है? यह नन्ही सी, धूप से खिली हुई सूरत वाली लड़की, जिसके गालों पर डिंपल हैं और होंठ गुलाबी हैं; रेशम जैसे मुलायम भूरे बाल और चमकीली भूरी आँखें?” (पाठक, मेरी आँखें हरी थीं; लेकिन कृपया इस गलती के लिए मुझे क्षमा करें: मुझे लगता है कि उसके लिए वे नई रंगी हुई थीं।)

"यह जेन आयर है, महोदय।"

उन्होंने आगे कहा, “जल्द ही जेन रोचेस्टर बनने वाली हो तुम, जेनेट; चार हफ्तों में; एक दिन भी ज्यादा नहीं। क्या तुमने सुना?”

मैंने सुना, और मैं इसे पूरी तरह समझ नहीं पाई: इससे मुझे चक्कर आने लगा। वह एहसास, वह घोषणा जो मेरे अंदर फैली, खुशी से कहीं अधिक तीव्र थी—कुछ ऐसा जिसने मुझे झकझोर दिया और स्तब्ध कर दिया। मुझे लगता है कि वह लगभग डर था।

"तुम शरमा गई, और अब तुम्हारा चेहरा सफेद पड़ गया है, जेन: इसका क्या कारण है?"

"क्योंकि तुमने मुझे एक नया नाम दिया है - जेन रोचेस्टर; और यह बहुत अजीब लगता है।"

“जी हां, श्रीमती रोचेस्टर,” उसने कहा; “युवा श्रीमती रोचेस्टर — फेयरफैक्स रोचेस्टर की कन्या-वधू।”

“ऐसा कभी नहीं हो सकता, महोदय; यह संभव नहीं लगता। मनुष्य इस संसार में कभी पूर्ण सुख का अनुभव नहीं कर पाता। मैं अपनी प्रजाति के अन्य लोगों से अलग भाग्य के लिए पैदा नहीं हुआ था: मेरे साथ ऐसा होना एक काल्पनिक कहानी है - एक दिवास्वप्न।”

“जिसे मैं साकार कर सकता हूँ और करूँगा। मैं आज से ही शुरुआत करूँगा। आज सुबह मैंने लंदन स्थित अपने बैंकर को पत्र लिखकर उनसे अपने पास रखे कुछ गहने

भेजने को कहा है, जो थॉर्नफील्ड की महिलाओं की खानदानी धरोहर हैं। एक-दो दिन में मैं उन्हें आपको सौंपने की आशा करता हूँ: क्योंकि मैं आपको हर वो विशेषाधिकार और सम्मान दूँगा जो मैं किसी रईस की बेटी को देता, अगर मेरी उससे शादी होने वाली होती।”

“ओह, महोदय! गहनों की बारिश कभी मत करो! मुझे उनके बारे में सुनना पसंद नहीं है। जेन आयर के लिए गहनों की बात अप्राकृतिक और अजीब लगती है: मैं उन्हें नहीं चाहती।”

“मैं स्वयं तुम्हारे गले में हीरे की चेन पहनाऊंगा, और तुम्हारे माथे पर मुकुट पहनाऊंगा, जो तुम पर जंचेगा: क्योंकि प्रकृति ने कम से कम इस माथे पर अपनी कुलीनता की छाप तो लगा ही दी है, जेन; और मैं तुम्हारी इन सुंदर कलाइयों पर कंगन पहनाऊंगा, और तुम्हारी इन परी जैसी उंगलियों को अंगूठियों से सजाऊंगा।”

“नहीं, नहीं महोदय! अन्य विषयों पर विचार कीजिए, अन्य बातें कीजिए और अलग लहजे में बोलिए। मुझसे ऐसे बात मत कीजिए जैसे मैं कोई सुंदर स्त्री हूँ; मैं आपकी साधारण, क्वेकरी गवर्नेस हूँ।”

"तुम मेरी नजरों में एक खूबसूरती हो, और मेरे दिल की ख्वाहिश के बिल्कुल करीब हो, - नाजुक और हवा जैसी।"

“तुम्हें तुच्छ और महत्वहीन कहना है। तुम सपना देख रहे हो, महोदय, या फिर तुम उपहास कर रहे हो। भगवान के लिए व्यंग्य मत करो!”

“मैं दुनिया को यह भी मनवाऊंगा कि तुम भी खूबसूरत हो,” वह बोलता रहा, और मुझे उसकी इस लहजे से सचमुच बेचैनी होने लगी, क्योंकि मुझे लगा कि वह या तो खुद को धोखा दे रहा है या मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा है। “मैं अपनी जेन को साटन और लेस के वस्त्र पहनाऊंगा, उसके बालों में गुलाब लगाऊंगा; और मैं अपने सबसे प्रिय सिर को एक अनमोल घूंघट से ढक दूंगा।”

“और तब आप मुझे पहचान नहीं पाएंगे, महोदय; और मैं आपकी जेन आयर नहीं रहूंगी, बल्कि एक विदूषक की पोशाक में एक बंदरिया, एक उधार के पंख वाली चिड़िया बन जाऊंगी। श्री रोचेस्टर, मैं आपको मंच के साज-सज्जा में देखना ज़्यादा पसंद करूंगी, बजाय इसके कि मैं किसी दरबारी महिला के वस्त्र में सजी रहूं; और मैं आपको सुंदर नहीं कहती, महोदय, हालांकि मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं: इतना ज़्यादा कि आपकी चापलूसी नहीं कर सकती। मेरी चापलूसी मत कीजिए।”

लेकिन मेरी आपत्ति को अनसुना करते हुए, वह अपनी बात पर अड़ा रहा। “आज ही मैं तुम्हें गाड़ी में बिठाकर मिलकोट ले जाऊंगा, और तुम्हें अपने लिए कुछ कपड़े चुनने होंगे। मैंने तुमसे कहा था कि चार हफ़्तों में हमारी शादी हो जाएगी। शादी चुपचाप, नीचे उस गिरजाघर में होगी; और फिर मैं तुम्हें तुरंत शहर ले जाऊंगा। वहाँ कुछ दिन रुकने के बाद, मैं अपनी प्रेमिका को सूरज के नज़दीकी इलाकों में ले जाऊंगा: फ़्रांस के अंगूर के बागों और इटली के मैदानों में; और वह पुरानी कहानियों और आधुनिक इतिहास में जो कुछ भी प्रसिद्ध है, वह सब देखेगी: वह शहरों के जीवन का स्वाद भी चखेगी; और वह दूसरों से तुलना करके खुद को महत्व देना सीखेगी।”

“क्या मैं यात्रा करूँ? — और आपके साथ, महोदय?”

“तुम पेरिस, रोम और नेपल्स में ठहरोगे; फ्लोरेंस, वेनिस और वियना में; जिस भी भूमि पर मैं घूमा हूँ, उस पर तुम फिर से कदम रखोगे; जहाँ भी मैंने अपने खुरों की आहट सुनी है, वहाँ तुम्हारे अप्सरा के पैर भी पड़ेंगे। दस वर्ष पहले, मैं आधे पागल होकर यूरोप में भटकता रहा; घृणा, नफरत और क्रोध मेरे साथी थे; अब मैं स्वस्थ और शुद्ध होकर, एक देवदूत को अपने सांत्वनादाता के रूप में लेकर वहाँ लौटूँगा।”

यह सुनकर मैं उस पर हंस पड़ी। मैंने दृढ़ता से कहा, “मैं कोई देवदूत नहीं हूँ, और मरने तक देवदूत नहीं बनूँगी: मैं जैसी हूँ वैसी ही रहूँगी। श्री रोचेस्टर, आप मुझसे किसी दिव्य चीज़ की अपेक्षा न करें और न ही उसकी माँग करें—क्योंकि आपको वह नहीं मिलेगी, ठीक वैसे ही जैसे मुझे आपसे वह नहीं मिलेगी: जिसकी मुझे ज़रा भी उम्मीद नहीं है।”

आप मुझसे क्या अपेक्षा रखते हैं?

“शायद कुछ समय के लिए आप अभी जैसे हैं वैसे ही रहेंगे, बस कुछ ही समय के लिए; फिर आप ठंडे पड़ जाएंगे; फिर आपका मनमौजी स्वभाव हो जाएगा; फिर आप सख्त हो जाएंगे, और मुझे आपको खुश करने में बहुत मशक्कत करनी पड़ेगी: लेकिन जब आप मुझसे अच्छी तरह घुल-मिल जाएंगे, तो शायद आप मुझे फिर से पसंद करने लगेंगे, - पसंद तो करेंगे, लेकिन प्यार नहीं करेंगे। मुझे लगता है कि आपका प्यार छह महीने या उससे भी कम समय में फिर से जाग उठेगा। मैंने पुरुषों द्वारा लिखी किताबों में पढ़ा है कि पति का प्यार ज़्यादा से ज़्यादा इतने समय तक ही रहता है। फिर भी, एक दोस्त और साथी होने के नाते, मैं आशा करता हूँ कि मैं अपने प्यारे स्वामी के लिए कभी भी पूरी तरह से अप्रिय न बनूँ।”

“अरुचिकर! और फिर से तुम्हें पसंद करने लगी! मुझे लगता है कि मैं तुम्हें फिर से पसंद करने लगूँगी, और बार-बार: और मैं तुमसे यह स्वीकार करवा लूँगी कि मैं तुम्हें न केवल पसंद करती हूँ, बल्कि तुमसे प्यार भी करती हूँ - सच्चाई, उत्साह और निष्ठा के साथ।”

"लेकिन क्या आप मनमौजी नहीं हैं, महोदय?"

“जो स्त्रियाँ मुझे केवल अपने चेहरे से ही आकर्षित करती हैं, उनके लिए मैं साक्षात शैतान बन जाता हूँ जब मुझे पता चलता है कि उनमें न तो आत्मा है और न ही हृदय—जब वे मेरे सामने सपाटपन, तुच्छता और शायद मूर्खता, अशिष्टता और चिड़चिड़ेपन का दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं: परन्तु स्पष्ट दृष्टि और वाक्पटु वाणी, अग्नि से बनी आत्मा और ऐसे चरित्र के लिए जो झुकता तो है पर टूटता नहीं—जो एक साथ लचीला और स्थिर, आज्ञाकारी और सुसंगत है—मैं सदा कोमल और सच्चा रहता हूँ।”

“क्या आपको कभी ऐसे किसी व्यक्ति का अनुभव हुआ है, महोदय? क्या आपने कभी ऐसे किसी व्यक्ति से प्रेम किया है?”

मुझे अब यह बहुत पसंद है।

लेकिन मेरे सामने: क्या मैं वास्तव में किसी भी तरह से आपके कठिन मापदंड पर खरा उतरता हूँ?

“मैंने कभी आपकी शक्ल नहीं देखी। जेन, तुम मुझे मोहित करती हो, और मुझ पर अपना अधिकार जमाती हो— तुम समर्पण करती हुई प्रतीत होती हो, और तुम्हारी कोमलता का एहसास मुझे भाता है; और जब मैं रेशम के मुलायम धागे को अपनी उंगली पर लपेटता हूँ, तो एक सिहरन मेरे हाथ से होते हुए मेरे दिल तक पहुँच जाती है। मैं मोहित हो गया हूँ— तुम पर विजय प्राप्त हो गई है; और यह मोहित होना शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता; और यह विजय किसी भी जीत से कहीं अधिक जादुई है। जेन, तुम क्यों मुस्कुरा रही हो? तुम्हारे चेहरे के उस रहस्यमय, उस अनोखे भाव का क्या अर्थ है?”

“मैं सोच रहा था, महोदय (आप इस विचार के लिए मुझे क्षमा करेंगे; यह अनैच्छिक था), मैं हरक्यूलिस और सैमसन और उनकी प्रेमिकाओं के बारे में सोच रहा था—”

“तुम तो नन्हे परी जैसे थे—”

“चुप रहिए, महोदय! आप अभी समझदारी से बात नहीं कर रहे हैं; ठीक वैसे ही जैसे उन सज्जनों ने समझदारी से काम नहीं लिया। हालांकि, अगर उनकी शादी हो गई होती, तो वे पति के रूप में अपनी सख्ती से प्रेमी के रूप में अपने कोमल स्वभाव की भरपाई कर लेते; और मुझे डर है कि आप भी ऐसा ही करेंगे। मुझे आश्चर्य है कि एक साल बाद, अगर मैं आपसे कोई ऐसा अनुरोध करूं जिसे पूरा करना आपके लिए सुविधाजनक या सुखद न हो, तो आप मुझे क्या जवाब देंगे।”

“अब मुझसे कुछ पूछो, जेन, — सबसे छोटी बात: मैं विनती सुनना चाहता हूँ —”

"जी हां, महोदय; मेरी याचिका पूरी तरह तैयार है।"

बोलो! लेकिन अगर तुम ऊपर देखकर उस चेहरे के साथ मुस्कुराओगे, तो मैं बिना सोचे-समझे ही किसी बात पर सहमति जता दूँगा, और इससे मैं मूर्ख बन जाऊँगा।

"बिल्कुल नहीं, महोदय; मैं बस इतना ही पूछ रही हूँ: गहने मत मंगवाइए, और मुझे गुलाबों का ताज मत पहनाइए: आप चाहें तो उस सादे रुमाल के चारों ओर सोने की फीती की एक पट्टी लगा सकते हैं।"

“मैं मानो सोने पर भी सोने की परत चढ़ा रहा हूँ। मुझे पता है: आपकी विनती मान ली गई है – फिलहाल के लिए। मैंने जो आदेश अपने बैंकर को भेजा था, उसे मैं वापस भेज रहा हूँ। लेकिन आपने अभी तक कुछ माँगा नहीं है; आपने एक दान वापस लेने का अनुरोध किया है: फिर से कोशिश कीजिए।”

"तो फिर, महोदय, कृपया मेरी जिज्ञासा को शांत करें, जो एक बिंदु पर बहुत बढ़ गई है।"

वह परेशान लग रहा था। “क्या? क्या?” उसने जल्दी से कहा। “जिज्ञासा एक खतरनाक विनती है: अच्छा हुआ कि मैंने हर अनुरोध को पूरा करने की शपथ नहीं ली है—”

लेकिन इसका पालन करने में कोई खतरा नहीं है, महोदय।

"इसे कहो, जेन: लेकिन मेरी इच्छा है कि किसी रहस्य की मात्र पूछताछ के बजाय, यह मेरी आधी संपत्ति की मांग हो।"

“हे राजा अहसुएरुस! मुझे आपकी आधी संपत्ति से क्या चाहिए? क्या आप सोचते हैं कि मैं कोई यहूदी सूदखोर हूँ, जो ज़मीन में अच्छा निवेश चाहता है? मैं तो आपका पूरा भरोसा पाना चाहता हूँ। यदि आप मुझे अपने दिल में जगह देंगे, तो आप मुझे अपने भरोसे से वंचित नहीं करेंगे?”

जेन, तुम पर मेरा पूरा भरोसा है; लेकिन भगवान के लिए, एक बेकार बोझ की चाह मत रखो! ज़हर की लालसा मत करो—मेरे हाथों में एक सरासर ईव बनकर मत लौटो!

"क्यों नहीं, महोदय? आप अभी-अभी तो मुझे बता रहे थे कि आपको हारना कितना पसंद है, और दूसरों को मनाना आपको कितना अच्छा लगता है। क्या आपको नहीं लगता कि मुझे इस स्वीकारोक्ति का फायदा उठाना चाहिए, और अपनी शक्ति का एक छोटा सा परीक्षण करने के लिए, ज़रूरत पड़ने पर रोना-धोना और रूठना भी शुरू कर देना चाहिए?"

"मैं तुम्हें इस तरह का कोई भी प्रयोग करने की चुनौती देता हूँ। अतिक्रमण करो, मनमानी करो, वरना खेल खत्म।"

"क्या सच में, महोदय? आप तो जल्दी मान जाते हैं। अब आप कितने गंभीर दिखते हैं! आपकी भौहें मेरी उंगली जितनी मोटी हो गई हैं, और आपका माथा किसी आश्चर्यजनक कविता में वर्णित 'नीले रंग के बादलों से घिरे गरजते बादल' जैसा दिखता है। शायद यही आपका वैवाहिक रूप होगा, महोदय?"

"अगर शादी के बाद तुम्हारा यही रूप रहेगा, तो मैं, एक ईसाई होने के नाते, किसी तुच्छ परी या छछूंदर के साथ संबंध रखने का विचार तुरंत त्याग दूँगा। लेकिन तुमने ये क्यों पूछा, भला बताओ तो सही?"

"देखो, अब तो तुम बिल्कुल भी सभ्य नहीं हो; और मुझे चापलूसी से कहीं ज्यादा बदतमीजी पसंद है। मैं देवदूत बनने से बेहतर एक वस्तु बनना पसंद करूंगी। मुझे यही पूछना है, — तुमने मुझे यह विश्वास दिलाने के लिए इतनी मेहनत क्यों की कि तुम मिस इंग्राम से शादी करना चाहते हो?"

"बस इतना ही? शुक्र है इससे बुरा नहीं हुआ!" और अब उन्होंने अपनी काली भौंहें खोलीं; नीचे देखकर मेरी तरफ मुस्कुराए और मेरे बालों को सहलाया, मानो किसी खतरे को टलते देखकर बहुत प्रसन्न हुए हों। "मुझे लगता है मैं कबूल कर सकता हूँ," उन्होंने आगे कहा, "भले ही इससे तुम थोड़ी नाराज़ हो जाओगी, जेन—और मैंने देखा है कि जब तुम नाराज़ होती हो तो कितनी जोशीली हो जाती हो। कल रात ठंडी चाँदनी में तुम दमक रही थीं, जब तुमने भाग्य के खिलाफ विद्रोह किया और मेरे बराबर अपना दर्जा हासिल किया। जेनेट, वैसे, प्रस्ताव तो तुमने ही दिया था।"

"बिल्कुल मैंने किया। लेकिन कृपया मुद्दे पर आइए, महोदय — मिस इंग्राम?"

"खैर, मैंने मिस इंग्राम से प्रेम का नाटक किया, क्योंकि मैं आपको भी उसी तरह मुझसे दीवाना बनाना चाहता था जैसे मैं आपसे था; और मुझे पता था कि ईर्ष्या ही वह सबसे अच्छा साथी होगी जिसका इस्तेमाल मैं इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए कर सकता हूँ।"

“बहुत खूब! अब तो तुम छोटे हो गए हो—मेरी छोटी उंगली के सिरे से भी छोटे। इस तरह का व्यवहार करना बेहद शर्मनाक और निंदनीय था। क्या आपने मिस इंग्राम की भावनाओं का जरा भी ख्याल नहीं रखा, महोदय?”

“उसकी भावनाएँ एक ही चीज़ में सिमटी हुई हैं—अभिमान; और उसे कम करने की ज़रूरत है। क्या तुम ईर्ष्या कर रही थी, जेन?”

“कोई बात नहीं, श्रीमान रोचेस्टर: आपको यह जानने में कोई दिलचस्पी नहीं है। मुझे एक बार फिर सच-सच जवाब दीजिए। क्या आपको लगता है कि मिस इंग्राम आपके बेईमान नखरे से परेशान नहीं होंगी? क्या उन्हें अकेलापन और उपेक्षा महसूस नहीं होगी?”

“असंभव! — जब मैंने तुम्हें बताया कि कैसे उसने इसके विपरीत मुझे छोड़ दिया: मेरी दिवालियापन की खबर ने पल भर में उसके दिल की लौ को ठंडा कर दिया, या यों कहें कि बुझा दिया।”

“श्री रोचेस्टर, आपका दिमाग जिज्ञासु और रचनात्मक है। मुझे खेद है कि कुछ मामलों में आपके सिद्धांत थोड़े विचित्र हैं।”

"जेन, मेरे सिद्धांतों को कभी प्रशिक्षित नहीं किया गया: ध्यान न मिलने के कारण वे शायद थोड़े बिगड़ गए हैं।"

“एक बार फिर, गंभीरता से; क्या मैं उस महान लाभ का आनंद ले सकता हूँ जो मुझे प्रदान किया गया है, इस डर के बिना कि कोई और उस कड़वी पीड़ा से पीड़ित हो रहा है जो मैंने स्वयं कुछ समय पहले महसूस की थी?”

"हाँ, मेरी प्यारी बच्ची: इस दुनिया में तुम्हारे जैसा शुद्ध प्रेम मेरे लिए किसी और के पास नहीं है - क्योंकि मैं अपनी आत्मा को वह सुखद आशीर्वाद देता हूँ, जेन, तुम्हारे स्नेह में विश्वास।"

मैंने अपने होंठ उस हाथ की ओर बढ़ाए जो मेरे कंधे पर रखा था। मैं उससे बहुत प्यार करती थी—इतना कि शब्दों में बयां करना मेरे बस की बात नहीं थी—इतना कि शब्दों में उसे व्यक्त करने की शक्ति नहीं थी।

“कुछ और पूछिए,” उन्होंने थोड़ी देर बाद कहा; “मुझे विनती सुनना और उसकी बात मान लेना अच्छा लगता है।”

मैं एक बार फिर अपनी विनती के साथ तैयार था। “श्रीमान, कृपया श्रीमती फेयरफैक्स को अपने इरादे बता दीजिए: उन्होंने मुझे कल रात हॉल में आपके साथ देखा था और वे बहुत हैरान थीं। उनसे दोबारा मिलने से पहले उन्हें कुछ स्पष्टीकरण दे दीजिए। इतनी अच्छी महिला द्वारा गलत समझे जाने से मुझे बहुत दुख होता है।”

“अपने कमरे में जाओ और अपनी टोपी पहन लो,” उसने जवाब दिया। “मैं चाहता हूँ कि तुम आज सुबह मेरे साथ मिलकोट चलो; और जब तुम गाड़ी के लिए तैयार हो रही हो, मैं उस बुढ़िया को समझा दूँगा। क्या उसने सोचा था, जेनेट, कि तुमने प्यार के लिए पूरी दुनिया दे दी थी और उसे खोना उचित समझा था?”

"मुझे लगता है कि उसने सोचा था कि मैं अपनी हैसियत भूल गया हूँ, और आपकी भी, महोदय।"

“स्टेशन! स्टेशन! — तुम्हारा स्थान मेरे हृदय में है, और उन लोगों की गर्दन पर है जो अभी या भविष्य में तुम्हारा अपमान करने का प्रयास करेंगे। — जाओ।”

मैं जल्दी से तैयार हो गया; और जब मैंने मिस्टर रोचेस्टर को मिसेज़ फेयरफैक्स के बैठक कक्ष से निकलते सुना, तो मैं तुरंत वहाँ पहुँचा। बुज़ुर्ग महिला सुबह का पाठ पढ़ रही थीं—दिन का पाठ; उनकी बाइबिल उनके सामने खुली पड़ी थी और उनका चश्मा उस पर टिका था। मिस्टर रोचेस्टर की घोषणा से उनका काम रुक गया था, लेकिन अब मानो वे भूल गई थीं: सामने की खाली दीवार पर टिकी उनकी आँखें एक शांत मन के अचानक अप्रत्याशित समाचार से जागृत होने के आश्चर्य को व्यक्त कर रही थीं। मुझे देखकर वे चौंक उठीं: उन्होंने मुस्कुराने की कोशिश की और बधाई के कुछ शब्द कहे; लेकिन मुस्कान गायब हो गई और वाक्य अधूरा रह गया। उन्होंने अपना चश्मा ठीक किया, बाइबिल बंद की और अपनी कुर्सी मेज से पीछे खींच ली।

“मैं बहुत हैरान हूँ,” उसने कहना शुरू किया, “मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं आपसे क्या कहूँ, मिस आयर। क्या मैं सपना तो नहीं देख रही थी? कभी-कभी जब मैं अकेली बैठी होती हूँ तो मुझे आधी नींद आ जाती है और मैं ऐसी बातें सोचती हूँ जो कभी हुई ही नहीं। कई बार जब मैं ऊंघ रही होती हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि मेरे प्यारे पति, जिनका पंद्रह साल पहले निधन हो गया, अंदर आए और मेरे पास बैठ गए; और मैंने उन्हें मुझे मेरे नाम, ऐलिस, से पुकारते हुए भी सुना, जैसे वे पहले पुकारते

थे। अब, क्या आप मुझे बता सकती हैं कि क्या यह सचमुच सच है कि मिस्टर रोचेस्टर ने आपसे शादी का प्रस्ताव रखा है? मुझ पर हँसिएगा मत। लेकिन मुझे सच में लगा कि वे पाँच मिनट पहले यहाँ आए थे और उन्होंने कहा कि एक महीने में आप उनकी पत्नी होंगी।"

मैंने जवाब दिया, "उसने मुझसे भी यही बात कही है।"

"उसने ऐसा किया है! क्या आप उस पर विश्वास करते हैं? क्या आपने उसे स्वीकार किया है?"

"हाँ।"

उसने हैरानी से मेरी तरफ देखा। "मैंने कभी सोचा भी नहीं था। वह एक स्वाभिमानी आदमी है: रोचेस्टर परिवार के सभी लोग स्वाभिमानी थे: और कम से कम उसके पिता को तो पैसा बहुत पसंद था। उसे भी हमेशा से सावधान कहा जाता रहा है। क्या वह तुमसे शादी करने वाला है?"

"वह मुझे ऐसा बताता है।"

उसने मुझे पूरी तरह से गौर से देखा: उसकी आँखों में मैंने पढ़ा कि उन्हें वहाँ ऐसा कोई आकर्षण नहीं मिला जो इस पहेली को सुलझाने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हो।

"मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा!" उसने आगे कहा; "पर इसमें कोई शक नहीं कि यह सच है क्योंकि आप ऐसा कह रहे हैं। इसका क्या जवाब होगा, मैं नहीं बता सकती: मुझे सच में नहीं पता। ऐसे मामलों में पद और धन की समानता अक्सर उचित होती है; और आपकी उम्र में बीस साल का अंतर है। वह लगभग आपके पिता समान हैं।"

"जी नहीं, बिल्कुल नहीं, श्रीमती फेयरफैक्स!" मैंने चिढ़कर कहा; "वह मेरे पिता से बिलकुल भी मिलते-जुलते नहीं हैं! हमें साथ देखने वाला कोई भी व्यक्ति एक पल के लिए भी यह नहीं सोचेगा। श्री रोचेस्टर दिखने में और असल में उतने ही जवान हैं जितने कि कुछ लोग पच्चीस साल के होते हैं।"

"क्या वह सचमुच प्यार के लिए तुमसे शादी करने जा रहा है?" उसने पूछा।

उसकी बेरुखी और संशय से मुझे इतना दुख हुआ कि मेरी आंखों में आंसू आ गए।

विधवा ने आगे कहा, "मुझे आपको दुखी करने का खेद है; लेकिन आप बहुत युवा हैं और पुरुषों से आपका परिचय बहुत कम है, इसलिए मैं आपको आगाह करना चाहती थी। एक पुरानी कहावत है कि हर चमकने वाली चीज सोना नहीं होती; और

इस मामले में मुझे डर है कि कुछ ऐसा होगा जो आपकी या मेरी अपेक्षा से भिन्न होगा।"

"क्यों? क्या मैं कोई राक्षस हूँ?" मैंने कहा: "क्या यह असंभव है कि श्री रोचेस्टर को मुझसे सच्चा स्नेह हो?"

नहीं: तुम बिल्कुल ठीक हो; और हाल ही में तुम्हारी सेहत में काफी सुधार हुआ है; और मुझे यकीन है कि मिस्टर रोचेस्टर तुम्हें बहुत पसंद करते हैं। मैंने हमेशा देखा है कि तुम उनकी लाडली रही हो। कई बार तुम्हारी खातिर, मुझे उनकी इस विशेष पसंद से थोड़ी बेचैनी हुई है और मैंने तुम्हें सावधान करने की कोशिश भी की है: लेकिन मैं किसी भी गलत बात की आशंका भी नहीं करना चाहती थी। मुझे पता था कि ऐसा विचार तुम्हें चौंका देगा, शायद तुम्हें बुरा भी लग जाए; और तुम इतनी समझदार, इतनी विनम्र और संवेदनशील हो कि मुझे उम्मीद थी कि तुम अपनी रक्षा खुद कर लोगी। कल रात मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि मुझे कितना कष्ट हुआ जब मैंने पूरे घर में तुम्हें ढूंढा, और तुम कहीं नहीं मिलीं, न ही मालिक; और फिर, बारह बजे, मैंने तुम्हें उनके साथ आते देखा।

"खैर, अब उस बात को छोड़ो," मैंने अधीरता से बीच में ही टोकते हुए कहा; "इतना ही काफी है कि सब कुछ ठीक था।"

"मुझे उम्मीद है कि अंत में सब ठीक हो जाएगा," उसने कहा, "लेकिन यकीन मानिए, आपको बहुत सावधान रहना चाहिए। मिस्टर रोचेस्टर से दूरी बनाए रखने की कोशिश करें: उन पर और खुद पर भी शक करें। उनके जैसे ओहदे वाले सज्जन अपनी गवर्नेस से शादी करने के आदी नहीं होते।"

मुझे सचमुच गुस्सा आ रहा था: तभी सौभाग्य से एडेल दौड़कर अंदर आ गई।

"मुझे जाने दो, मुझे भी मिलकोट जाने दो!" वह चिल्लाई। "श्रीमान रोचेस्टर नहीं मानेंगे, हालांकि नई गाड़ी में बहुत जगह है। उनसे विनती कीजिए कि मुझे जाने दें, महोदया।"

"हाँ, मैं ऐसा ही करूँगा, एडेल;" और मैं अपनी उदास निगरानी से छुटकारा पाकर खुश होकर उसके साथ जल्दी से चला गया। गाड़ी तैयार थी: वे उसे सामने ला रहे थे, और मेरे मालिक फुटपाथ पर चहलकदमी कर रहे थे, पायलट उनके पीछे-पीछे चल रहा था।

"क्या एडेल हमारे साथ नहीं आ सकतीं, महोदय?"

मैंने उससे साफ मना कर दिया। मुझे कोई बिगड़ैल बच्चा नहीं चाहिए! मुझे सिर्फ तुम ही चाहिए।

"कृपया उसे जाने दीजिए, श्री रोचेस्टर: यह बेहतर होगा।"

“नहीं, वह एक संयम होगी।”

उनकी नज़र और आवाज़ दोनों ही बेहद सख्त थीं। श्रीमती फेयरफैक्स की चेतावनियों की ठंडक और उनके संदेह की नमी मुझ पर छा गई थी: मेरी आशाओं में कुछ अस्थिरता और अनिश्चितता छा गई थी। मुझे उन पर अपना नियंत्रण लगभग खो बैठा था। मैं बिना और विरोध किए, उनकी बात मानने ही वाली थी; लेकिन जैसे ही उन्होंने मुझे गाड़ी में बिठाया, उन्होंने मेरे चेहरे की ओर देखा।

“क्या बात है?” उसने पूछा; “सारी धूप गायब हो गई है। क्या तुम सचमुच बच्ची को भेजना चाहते हो? अगर वह पीछे छूट जाए तो क्या तुम्हें बुरा लगेगा?”

"मैं तो यही चाहूंगा कि वह चली जाए, महोदय।"

“तो फिर अपनी टोपी उतारो, और बिजली की तरह तेज़ी से वापस आओ!” उसने एडेल से कहा।

उसने जितनी जल्दी हो सके उसकी बात मान ली।

"आखिरकार, एक सुबह की मामूली सी रुकावट से कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा," उसने कहा, "जब मैं जल्द ही तुम्हें - तुम्हारे विचारों, बातचीत और साथ को - जीवन भर के लिए अपना बनाने वाला हूँ।"

जब एडेल को अंदर लाया गया, तो उसने मेरी मदद के लिए आभार व्यक्त करते हुए मुझे चूमना शुरू कर दिया: उसे तुरंत उसके दूसरी तरफ एक कोने में बिठा दिया गया। फिर उसने मेरी ओर देखा; क्योंकि वह इतनी सख्त पड़ोसी थी कि उसके चिड़चिड़े स्वभाव के कारण वह उस पर बहुत पाबंदी लगा रही थी, इसलिए एडेल ने कुछ भी कहने या उससे कोई जानकारी पूछने की हिम्मत नहीं की।

मैंने विनती करते हुए कहा, "उसे मेरे पास आने दीजिए: वह शायद आपको परेशान करेगी, महोदय: इस तरफ काफी जगह है।"

उसने उसे ऐसे सौंप दिया जैसे वह कोई पालतू कुत्ता हो। "मैं उसे स्कूल ज़रूर भेजूंगा," उसने कहा, लेकिन अब वह मुस्कुरा रहा था।

एडेल ने उसकी बात सुनी और पूछा कि क्या उसे स्कूल "बिना मैडम के" जाना होगा?

“हाँ,” उसने उत्तर दिया, “बिल्कुल, मैडमोजेल के बिना; क्योंकि मुझे मैडमोजेल को चंद्रमा पर ले जाना है, और वहाँ मैं ज्वालामुखी की चोटियों के बीच सफेद घाटियों में से एक में एक गुफा की तलाश करूँगा, और मैडमोजेल वहाँ मेरे साथ रहेंगी, और केवल मेरे साथ।”

"उसके पास खाने के लिए कुछ नहीं होगा: तुम उसे भूखा मार दोगी," एडेल ने कहा।

“मैं उसके लिए सुबह-शाम मन्ना इकट्ठा करूँगा: चाँदनी रात में मैदान और पहाड़ियाँ मन्ना से पुखरी हुई हैं, एडेल।”

उसे खुद को गर्म करने की इच्छा होगी: वह आग के लिए क्या करेगी?

"चंद्रमा के पहाड़ों से आग निकलती है: जब वह ठंडी हो जाएगी, तो मैं उसे एक चोटी पर ले जाऊंगा, और उसे एक गड्ढे के किनारे पर लिटा दूंगा।"

“ओह, उसके कपड़े तो खराब हो जाएंगे — बिल्कुल भी आरामदायक नहीं! और उसके कपड़े फट जाएंगे: उसे नए कपड़े कैसे मिलेंगे?”

श्री रोचेस्टर असमंजस में पड़ गए। “अरे!” उन्होंने कहा। “एडेल, तुम क्या करोगी? कोई उपाय सोचो। तुम्हें क्या लगता है, सफेद या गुलाबी बादल गाउन का विकल्प कैसे हो सकते हैं? और इंद्रधनुष से एक सुंदर स्कार्फ भी काटा जा सकता है।”

कुछ देर सोचने के बाद एडेल ने निष्कर्ष निकाला, “वह जैसी है वैसी ही बेहतर है। वैसे भी, चांद पर सिर्फ तुम्हारे साथ रहते-रहते वह ऊब जाएगी। अगर मैं मैडमोजेल होती, तो मैं तुम्हारे साथ जाने के लिए कभी राजी नहीं होती।”

“उसने सहमति दे दी है: उसने वचन दे दिया है।”

लेकिन आप उसे वहां नहीं ले जा सकते; चांद तक जाने का कोई रास्ता नहीं है: वहां सब हवा है; और न तो आप और न ही वह उड़ सकते हैं।

“एडेल, उस खेत को देखो।” अब हम थॉर्नफील्ड के फाटकों के बाहर थे, और मिलकोट की ओर जाने वाली चिकनी सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, जहाँ आंधी-तूफान से धूल अच्छी तरह से बैठ गई थी, और जहाँ दोनों ओर की नीची झाड़ियाँ और ऊँचे-ऊँचे पेड़ बारिश से हरे-भरे और चमक रहे थे।

“एडेल, उस खेत में, लगभग दो सप्ताह पहले की एक शाम मैं टहल रहा था—उसी शाम जब तुमने बाग के मैदानों में घास काटने में मेरी मदद की थी; और, घास इकट्ठा करते-करते थक जाने पर, मैं एक सीढ़ी पर आराम करने के लिए बैठ गया;

और वहाँ मैंने एक छोटी सी किताब और एक पेंसिल निकाली, और बहुत पहले मुझ पर आई एक विपत्ति और आने वाले सुखद दिनों के लिए अपनी एक कामना के बारे में लिखना शुरू किया: मैं बहुत तेज़ी से लिख रहा था, हालाँकि दिन का उजाला पत्तों से गायब हो रहा था, तभी कुछ रास्ते पर आया और मुझसे दो गज की दूरी पर रुक गया। मैंने उसे देखा। वह एक छोटी सी चीज़ थी जिसके सिर पर रेशमी घूंघट था। मैंने उसे अपने पास आने का इशारा किया; वह जल्द ही मेरे घुटने के पास खड़ी हो गई। मैंने उससे कभी बात नहीं की, और उसने भी मुझसे शब्दों में कभी बात नहीं की; लेकिन मैंने उसकी आँखों को पढ़ा, और उसने मेरी आँखों को; और हमारी मौन बातचीत कुछ इस प्रकार थी—

"वह एक परी थी, और एल्फ-लैंड से आई थी," उसने कहा; "उसका उद्देश्य मुझे प्रसन्न करना था: मुझे उसके साथ आम दुनिया से निकलकर किसी एकांत स्थान पर जाना होगा—जैसे कि चाँद पर—और उसने हे-हिल के ऊपर उठते हुए अपने सींग की ओर सिर हिलाया: उसने मुझे संगमरमर की गुफा और चाँदी की घाटी के बारे में बताया जहाँ हम रह सकते थे। मैंने कहा कि मैं जाना चाहूँगी; लेकिन मैंने उसे याद दिलाया, जैसा कि तुमने मुझे याद दिलाया था, कि मेरे पास उड़ने के लिए पंख नहीं हैं।"

"'ओह,' परी ने जवाब दिया, 'इसका कोई मतलब नहीं! ये रहा ताबीज जो सारी मुश्किलें दूर कर देगा;' और उसने एक सुंदर सोने की अंगूठी आगे बढ़ाई। 'इसे मेरे बाएं हाथ की चौथी उंगली में पहन लो, और मैं तुम्हारी हो जाऊंगी, और तुम मेरे हो जाओगे; और हम धरती छोड़कर उस पार अपना स्वर्ग बना लेंगे।' उसने फिर से चांद की ओर इशारा किया। 'एडेल, अंगूठी मेरी पतलून की जेब में एक सोने के सिक्के के भेष में रखी है: लेकिन मैं जल्द ही इसे फिर से अंगूठी में बदलने का इरादा रखती हूं।'"

लेकिन मैडमोजेल का इससे क्या लेना-देना है? मुझे परी से कोई मतलब नहीं है: आपने कहा था कि आप मैडमोजेल को चांद पर ले जाएंगे?

"मैडमोजेल एक परी है," उसने रहस्यमय ढंग से फुसफुसाते हुए कहा। इस पर मैंने उससे कहा कि वह उसकी बातों पर ध्यान न दे; और उसने बदले में सच्चे फ्रांसीसी संदेह का परिचय देते हुए श्री रोचेस्टर को "एक सच्चा धूर्त" कहा और उन्हें आश्वस्त किया कि वह उनकी "परी कथाओं" को बिल्कुल भी महत्व नहीं देती, और यह भी कहा कि "बाकी, कोई परी नहीं थी, और फिर भी अगर थी भी तो": उसे पूरा

यकीन था कि वे कभी उसके सामने प्रकट नहीं होंगी, न ही उसे कभी अंगूठी देंगी, और न ही उसके साथ चंद्रमा पर रहने का प्रस्ताव देंगी।

मिलकोट में बिताया गया एक घंटा मेरे लिए कुछ हद तक कष्टदायक था। श्री रोचेस्टर ने मुझे एक रेशम के गोदाम में जाने के लिए बाध्य किया: वहाँ मुझे आधा दर्जन पोशाकें चुनने का आदेश दिया गया। मुझे यह काम बिल्कुल पसंद नहीं था, मैंने इसे टालने की अनुमति मांगी: नहीं - इसे अभी करना होगा। ज़ोरदार फुसफुसाहट में की गई विनतियों के बल पर, मैंने आधा दर्जन पोशाकों को दो तक सीमित कर दिया: हालाँकि, उन्होंने कसम खाई कि वे इन्हें स्वयं चुनेंगे। मैंने चिंता के साथ उनकी नज़र रंग-बिरंगे कपड़ों पर घूमते हुए देखी: उनकी नज़र सबसे चमकदार नीलम रंग के रेशम और एक शानदार गुलाबी साटन पर टिक गई। मैंने फुसफुसाहट में उनसे कहा कि वे चाहें तो मुझे एक सोने का गाउन और एक चांदी की टोपी एक साथ खरीद सकते हैं: मैं उनकी पसंद की पोशाक पहनने की हिम्मत तो कभी नहीं करूंगी। बड़ी मुश्किल से, क्योंकि वे पत्थर की तरह जिद्दी थे, मैंने उन्हें सादे काले साटन और मोती-धूसर रेशम के बदले में पोशाक बदलने के लिए राजी किया। "अभी के लिए यह ठीक रहेगा," उन्होंने कहा; लेकिन वह फिर भी मुझे फूलों की क्यारियों की तरह चमकता हुआ देखना चाहता था।

मुझे खुशी थी कि मैंने उसे रेशम के गोदाम से और फिर जौहरी की दुकान से बाहर निकाल दिया; वह मुझे जितना अधिक खरीदता, उतना ही मेरा चेहरा झुंझलाहट और अपमान से लाल होता जाता। जैसे ही हम गाड़ी में वापस बैठे, और मैं बुखार और थकान से चूर होकर पीछे बैठी, मुझे वह बात याद आई जो घटनाओं की भागदौड़ में, चाहे वो अंधेरी हों या उजाली, मैं पूरी तरह भूल गई थी - मेरे चाचा जॉन आयर का श्रीमती रीड को लिखा पत्र: मुझे गोद लेने और मुझे अपना उत्तराधिकारी बनाने का उनका इरादा। मैंने सोचा, "सचमुच राहत की बात होगी, अगर मुझे थोड़ी सी भी आज़ादी मिल जाए; मैं मिस्टर रोचेस्टर द्वारा गुड़िया की तरह सजे-धजे रहना या रोज़ाना मेरे चारों ओर सोने की बारिश होते हुए दूसरी दानाए की तरह बैठना बर्दाश्त नहीं कर सकती। घर पहुँचते ही मैं मदीरा को पत्र लिखूँगी और अपने चाचा जॉन को बताऊँगी कि मेरी शादी होने वाली है और किससे: अगर मुझे एक दिन मिस्टर रोचेस्टर को धनवान बनाने की उम्मीद होती, तो मैं अभी उनके साथ रहना बेहतर समझती।" और इस विचार से कुछ राहत पाकर (जिसे मैं उस दिन अमल में नहीं ला पाई), मैंने

एक बार फिर अपने स्वामी और प्रेमी की आँखों में देखने का साहस किया, जो बड़ी दृढ़ता से मेरी ओर देख रही थीं, हालाँकि मैंने अपना चेहरा और नज़रें दोनों फेर ली थीं। वह मुस्कुराया; और मुझे लगा कि उसकी मुस्कान वैसी ही थी जैसे कोई सुल्तान किसी आनंदमय और प्रेमपूर्ण क्षण में अपने सोने-जवाहरात से समृद्ध दास पर बिखेरता है: मैंने उसके हाथ को, जो हमेशा मेरा हाथ ढूँढ़ रहा था, ज़ोर से कुचल दिया और उसे उस भावुक दबाव से लाल होकर वापस उसकी ओर धकेल दिया।

मैंने कहा, “आपको उस तरह से देखने की ज़रूरत नहीं है; अगर आप ऐसा करेंगे, तो मैं अध्याय के अंत तक केवल अपनी पुरानी लोवुड फ्रॉक ही पहनूंगी। मैं इस हल्के बैंगनी रंग के गिंघम कपड़े में शादी करूंगी: आप अपने लिए मोती जैसे भूरे रेशम से एक ड्रेसिंग गाउन और काले साटन से अनगिनत जैकेट बना सकते हैं।”

वह खिलखिलाया; उसने अपने हाथ मलते हुए कहा, “ओह, उसे देखना और सुनना कितना सुखद है!” “क्या वह अनोखी है? क्या वह आकर्षक है? मैं इस छोटी सी अंग्रेज़ लड़की को ग्रैंड टर्क के पूरे हरम, हिरणी जैसी आँखों, अप्सराओं जैसी आकृति और सब कुछ के बदले भी नहीं बदलूंगा!”

पूर्वी संदर्भ ने मुझे फिर से परेशान कर दिया। मैंने कहा, "मैं तुम्हें हरम के बराबर एक इंच भी बर्दाश्त नहीं करूँगा; इसलिए मुझे उसके बराबर मत समझो। अगर तुम्हें उस तरह की किसी चीज़ में रुचि है, तो महोदय, बिना देरी किए इस्तांबुल के बाज़ारों में जाइए और उस अतिरिक्त धन का कुछ हिस्सा, जिसे आप यहाँ ठीक से खर्च करने में असमर्थ प्रतीत होते हैं, गुलामों की खरीद पर खर्च कर दीजिए।"

"और तुम क्या करोगी, जेनेट, जब मैं इतने टन मांस और इतनी सारी काली आँखों के लिए सौदेबाजी कर रहा हूँ?"

मैं एक मिशनरी बनकर गुलामों को आज़ादी का उपदेश देने के लिए निकलूँगा—जिनमें आपके हरम की औरतें भी शामिल हैं। मैं वहाँ प्रवेश पाऊँगा और विद्रोह भड़काऊँगा; और आप, हे तीन पूंछ वाले बदमाश, पलक झपकते ही हमारे हाथों में जकड़े पाएँगे: और मैं तो तब तक आपकी बेड़ियाँ नहीं खोलूँगा जब तक आप उस चार्टर पर हस्ताक्षर नहीं कर देते, जो उस निरंकुश शासक द्वारा अब तक दिया गया सबसे उदार चार्टर है।

"मैं तुम्हारी दया पर निर्भर रहने को तैयार हूँ, जेन।"

“श्री रोचेस्टर, अगर आप इस तरह की निगाहों से गिड़गिड़ाएंगे तो मैं आप पर जरा

भी दया नहीं करूंगा। जब तक आप इस तरह दिखेंगे, मुझे पूरा यकीन है कि दबाव में आप जो भी चार्टर जारी करेंगे, रिहा होने पर आपका पहला काम उसकी शर्तों का उल्लंघन करना ही होगा।”

“जेन, तुम क्या चाहती हो? मुझे डर है कि तुम मुझे वेदी पर संपन्न विवाह समारोह के अलावा एक निजी विवाह समारोह से गुजरने के लिए मजबूर करोगी। लगता है तुम कुछ विशेष शर्तें रखोगी— वो क्या होंगी?”

“मुझे बस मन की शांति चाहिए, महोदय; बोझ से दबा हुआ नहीं। क्या आपको याद है आपने सेलीन वारेन्स के बारे में क्या कहा था? — उन हीरों और कश्मीरी ऊन के बारे में जो आपने उसे दिए थे? मैं आपकी अंग्रेज़ सेलीन वारेन्स नहीं बनूंगी। मैं एडेल की गवर्नेंस बनी रहूंगी; इससे मुझे अपने रहने-खाने का खर्च और तीस पाउंड सालाना मिलेंगे। मैं अपने कपड़े उसी पैसे से खरीदूंगी, और आप मुझे कुछ नहीं देंगे सिवाय —”

"अच्छा, लेकिन क्या?"

“आपका सम्मान; और यदि मैं भी आपको अपना सम्मान दूं, तो वह ऋण समाप्त हो जाएगा।”

“खैर, बेबाक और बेशर्म स्वभाव के मामले में तुम्हारा कोई मुकाबला नहीं,” उसने कहा। हम अब थॉर्नफील्ड के पास पहुँच रहे थे। “क्या आप आज मेरे साथ भोजन करना चाहेंगे?” उसने द्वार से अंदर आते ही पूछा।

"नहीं, धन्यवाद महोदय।"

और अगर कोई पूछे तो, ‘नहीं, धन्यवाद’ कहने का क्या मतलब है?

“मैंने आपके साथ कभी भोजन नहीं किया है, महोदय: और मुझे अब ऐसा करने का कोई कारण नहीं दिखता: जब तक कि —”

“किस समय तक? आपको अधूरी बातें करने में आनंद आता है।”

जब तक मेरे लिए कोई विकल्प न हो।

"क्या तुम्हें लगता है कि मैं किसी राक्षस या भूत की तरह खाता हूँ, कि तुम मेरे भोजन में मेरे साथ रहने से डरते हो?"

"मैंने इस विषय पर कोई अनुमान नहीं लगाया है, महोदय; लेकिन मैं अगले एक महीने तक हमेशा की तरह काम करना चाहता हूँ।"

"तुरंत ही तुम अपनी शिक्षिका की गुलामी छोड़ दोगी।"

"जी हाँ, क्षमा करें महोदय, मैं नहीं आऊँगा। मैं हमेशा की तरह अपना काम करता रहूँगा। मैं हमेशा की तरह दिन भर आपके रास्ते से दूर रहूँगा: आप शाम को मुझे बुला सकते हैं, जब आपका मन करे मुझसे मिलने का, और मैं तब आ जाऊँगा; लेकिन इसके अलावा किसी और समय नहीं।"

“मुझे सिगरेट चाहिए, जेन, या चुटकी भर नसवार, ताकि इस सब के बीच मुझे तसल्ली मिल सके, ‘पोर मी डोनर उन कॉन्टेनेंस,’ जैसा कि एडेल कहती थी; और दुर्भाग्य से मेरे पास न तो सिगार का डिब्बा है, न ही नसवार की डिब्बी। लेकिन सुनो—फुसफुसाओ। अभी तुम्हारा समय है, नन्ही तानाशाह, लेकिन जल्द ही यह मेरा होगा; और जब मैं तुम्हें पूरी तरह से अपने कब्जे में ले लूंगा, तो मैं तुम्हें—लाक्षणिक रूप से—इस तरह एक जंजीर से बांध दूंगा” (अपनी घड़ी के गार्ड को छूते हुए)। “हाँ, प्यारी नन्ही सी चीज़, मैं तुम्हें अपने सीने में रखूंगा, कहीं मैं अपने गहने को न तोड़ दूं।”

उन्होंने यह बात तब कही जब वे मुझे गाड़ी से उतरने में मदद कर रहे थे, और बाद में जब उन्होंने एडेल को गाड़ी से बाहर निकाला, तो मैं घर में दाखिल हुई और ऊपर की मंजिल पर चली गई।

उन्होंने मुझे शाम को अपने पास बुलाया। मैंने उनके लिए एक काम तैयार कर रखा था; क्योंकि मैं सारा समय उनसे अकेले में बातचीत करने में बिताना नहीं चाहती थी। मुझे उनकी सुरीली आवाज़ याद थी; मुझे पता था कि उन्हें गाना पसंद है—अच्छे गायक आमतौर पर ऐसा ही करते हैं। मैं खुद कोई गायिका नहीं थी, और उनकी बारीकी से की गई राय में, कोई संगीतकार भी नहीं थी; लेकिन जब प्रस्तुति अच्छी होती थी तो मुझे सुनना अच्छा लगता था। जैसे ही शाम ढलने लगी, रोमांस का वो पल, और नीले तारों वाला झंडा खिड़की पर फहराने लगा, मैं उठी, पियानो खोला, और उनसे विनती की, भगवान के लिए, मुझे एक गीत सुना दें। उन्होंने कहा कि मैं एक नखरीली चुड़ैल हूँ, और वो किसी और समय गाना पसंद करेंगे; लेकिन मैंने कहा कि अभी जैसा समय कोई और नहीं है।

“क्या मुझे उसकी आवाज पसंद आई?” उसने पूछा।

"बिल्कुल।" मुझे उसकी उस संवेदनशील घमंड को बढ़ावा देना पसंद नहीं था; लेकिन एक बार, और सुविधा के लिए, मैं उसे शांत और प्रोत्साहित भी करना चाहूँगा।

"तो फिर, जेन, तुम्हें संगत बजानी होगी।"

"बहुत अच्छा, महोदय, मैं कोशिश करूंगा।"

मैंने कोशिश तो की, लेकिन तुरंत ही मुझे कुर्सी से उतार दिया गया और "एक छोटा सा अनाड़ी" कहा गया। मुझे बिना किसी औपचारिकता के एक तरफ धकेल दिया गया — जो बिल्कुल वही था जो मैं चाहता था — उसने मेरी जगह ले ली और खुद ही बजाने लगा: क्योंकि वह गाने के साथ-साथ बजाना भी जानता था। मैं खिड़की के कोने में चला गया। और जब मैं वहाँ बैठा था और शांत पेड़ों और धुंधली घास को देख रहा था, तभी एक मधुर धुन में निम्नलिखित गीत गाया गया: —

“सबसे सच्चा प्यार जो कभी दिल में बसा”
इसके प्रज्वलित मूल में महसूस किया गया,
प्रत्येक नस में, तीव्र शुरुआत के साथ,
उमड़ते हुए प्यार की लहर।
मुझे हर दिन उसके आने की उम्मीद रहती थी।
उसका बिछड़ना मेरा दर्द था;
इस संभावना ने उसके कदमों में देरी कर दी
उसकी हर रग में बर्फ जमी हुई थी।
मैंने सपना देखा था कि यह एक अनाम आनंद होगा।
जैसा मैं प्यार करता था, जैसा मैं रहना पसंद करता था;
और मैंने इस वस्तु को दबाया
जितनी उत्सुकता से, उतनी ही अंधी भी।
लेकिन वह स्थान पथहीन होने के कारण बहुत विशाल था।
जिसने हमारे जीवन को बीच में ला खड़ा किया,
और झागदार धारा की तरह खतरनाक
समुद्र की लहरों का हरा रंग।
और लुटेरों के रास्ते की तरह प्रेतवाधित
जंगल या वन क्षेत्र से होकर;
शक्ति और न्याय के लिए, और विपत्ति और क्रोध के लिए,
हमारी आत्माओं के बीच एक खाई थी।
मैंने खतरों का सामना किया; मैंने बाधाओं को नजरअंदाज किया;
मैंने अपशकुनों को चुनौती दी:

जो भी धमकी देता था, परेशान करता था, चेतावनी देता था,
मैं जल्दबाजी में वहां से गुजर गया।
मेरा इंद्रधनुष प्रकाश की गति से आगे बढ़ा;
मैं सपने की तरह उड़ रहा था;
मेरी दृष्टि में एक भव्य गुलाब प्रकट हुआ।
शावर और ग्लीम का वह बच्चा।
दुःख के मंद बादलों में भी उज्ज्वल
वह कोमल, गंभीर आनंद की चमक बिखेरता है;
और अब मुझे इसकी परवाह भी नहीं है कि यह कितना घना और भयावह है।
विपत्तियां निकट आ रही हैं।
मुझे इस पल में कोई परवाह नहीं है, प्रिय।
हालाँकि मैंने हर चीज़ पर जल्दबाजी की है
पंखों पर सवार होकर आना चाहिए, मजबूत और तेज,
प्रतिशोध की तीव्र भावना का ऐलान करना:
भले ही अभिमानी घृणा मुझे मार गिराए,
ठीक है, बार मेरे पास आ रहा है,
और क्रोधी भौंहों के साथ शक्ति को पीसते हुए,
अनंत शत्रुता की शपथ लो।
मेरी प्रेमिका ने अपना छोटा हाथ रखा है
मेरे अटूट विश्वास के साथ,
और उन्होंने विवाह के पवित्र बंधन की प्रतिज्ञा की।
हमारी प्रकृति आपस में गुंथी हुई होगी।
मेरे प्यार ने शपथ ली है, चुंबन के साथ,
मेरे साथ जीना— मेरे साथ मरना;
अंततः मुझे मेरा अनाम आनंद प्राप्त हो गया।
जैसा मैं प्रेम करता हूँ, वैसा ही मुझे भी प्रेम मिलता है!

वह उठा और मेरी ओर आया, और मैंने उसका चेहरा पूरी तरह से चमकता हुआ देखा, उसकी बाज जैसी तेज निगाहें चमक रही थीं, और उसके हर चेहरे पर कोमलता और जुनून झलक रहा था। मैं पल भर के लिए सहम गई - फिर मैंने खुद को संभाला।

कोमल दृश्य, साहसी प्रदर्शन, मैं नहीं चाहती थी; और मैं दोनों के खतरे में थी: बचाव का हथियार तैयार करना होगा - मैंने अपनी जुबान तेज की: जैसे ही वह मेरे पास पहुँचा, मैंने तीखे स्वर में पूछा, "अब वह किससे शादी करने जा रहा है?"

"उनकी प्रिय जेन द्वारा यह सवाल पूछना एक अजीब बात थी।"

“सचमुच! मैंने इसे बहुत स्वाभाविक और आवश्यक समझा: उसने अपनी भावी पत्नी के अपने साथ मरने की बात कही थी। ऐसे अमानवीय विचार से उसका क्या मतलब था? मेरा उसके साथ मरने का कोई इरादा नहीं था - वह इस बात पर भरोसा कर सकता था।”

“ओह, उसकी बस एक ही तमन्ना थी, एक ही प्रार्थना थी, कि मैं उसके साथ रहूँ! मृत्यु मुझ जैसे लोगों के लिए नहीं थी।”

"बिल्कुल यही सच था: जब मेरा समय आएगा तो मुझे भी मरने का उतना ही अधिकार होगा जितना उसे था: लेकिन मुझे उस समय का इंतजार करना चाहिए, और सती प्रथा में जल्दबाजी में मर नहीं जाना चाहिए।"

"क्या मैं उसके स्वार्थी विचार के लिए उसे माफ कर दूंगी, और सुलह का चुंबन देकर अपनी क्षमा साबित करूंगी?"

नहीं: मुझे छुट्टी दे दी जाए तो बेहतर होगा।

यहां मैंने खुद को "एक कठोर छोटी सी चीज" के रूप में संबोधित करते हुए सुना; और यह भी कहा गया, "कोई भी दूसरी महिला अपनी प्रशंसा में गाए जाने वाले ऐसे छंदों को सुनकर अंदर तक पिघल जाती।"

मैंने उसे आश्वस्त किया कि मैं स्वभाव से कठोर हूँ—बहुत सख्त, और वह मुझे अक्सर ऐसा ही पाएगा; और इसके अलावा, मैं अगले चार सप्ताह बीतने से पहले अपने चरित्र के कई कठोर पहलू उसे दिखाने के लिए दृढ़ संकल्पित था: उसे पूरी तरह से पता चल जाना चाहिए कि उसने किस तरह का सौदा किया है, जबकि इसे रद्द करने का अभी भी समय है।

क्या मैं चुप रहूंगा और तर्कसंगत तरीके से बात करूंगा?

"अगर वह चाहे तो मैं चुप रहूंगी, और जहां तक तर्कसंगत रूप से बात करने की बात है, मुझे लगता था कि मैं अभी वही कर रही हूं।"

वह चिढ़ गया, बड़बड़ाया और नाराज़ हो गया। मैंने मन ही मन सोचा, "बहुत अच्छा; तुम चाहे जितना गुस्सा करो और बेचैन हो जाओ, लेकिन मुझे यकीन है कि

तुम्हारे साथ यही सबसे अच्छा तरीका है। मैं तुम्हें जितना कह सकता हूँ उससे कहीं ज़्यादा पसंद करता हूँ; लेकिन मैं भावुकता के भंवर में नहीं डूबूँगा: और अपनी इस चुटीली बातचीत से मैं तुम्हें खाई के किनारे तक पहुँचने से भी रोकूँगा; और इसके अलावा, इसकी तीखी मदद से तुम्हारे और मेरे बीच वह दूरी बनाए रखूँगा जो हमारे वास्तविक आपसी लाभ के लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।"

धीरे-धीरे मैंने उसे इतना उत्तेजित कर दिया कि वह काफी चिढ़ गया; फिर, जब वह गुस्से में कमरे के दूसरे छोर पर चला गया, तो मैं उठा और अपने स्वाभाविक और आदतन सम्मानजनक तरीके से "शुभ रात्रि महोदय" कहते हुए बगल वाले दरवाजे से बाहर निकल गया और चला गया।

इस प्रकार अपनाई गई व्यवस्था को मैंने परीक्षण अवधि के दौरान पूरी तरह से जारी रखा; और मुझे इसमें भरपूर सफलता मिली। वह कुछ हद तक चिड़चिड़ा और गुस्सैल तो रहा, लेकिन कुल मिलाकर मैं देख सकता था कि उसका भरपूर मनोरंजन किया जा रहा था, और भेड़ जैसी आज्ञाकारिता और कबूतर जैसी संवेदनशीलता, हालांकि उसकी निरंकुशता को और बढ़ावा देती, लेकिन उसके विवेक को अधिक प्रसन्न करती, उसकी समझदारी को संतुष्ट करती और यहाँ तक कि उसकी रुचि के विपरीत भी होती।

दूसरों की मौजूदगी में मैं पहले की तरह ही विनम्र और शांत रहती थी; किसी और तरह के व्यवहार की ज़रूरत नहीं थी: केवल शाम की बैठकों में ही मैं उन्हें इस तरह परेशान और नाराज़ करती थी। वह ठीक सात बजते ही मुझे बुलवा लेते थे; हालाँकि अब जब मैं उनके सामने आती थी, तो उनके होठों पर "प्यार" और "डार्लिंग" जैसे मीठे शब्द नहीं होते थे: मेरे लिए सबसे अच्छे शब्द थे "उत्तेजित करने वाली कठपुतली," "शरारती परी," "शैतान," आदि। अब दुलार के बदले मुझे मुँह बनाना पड़ता था; हाथ दबाने पर बांह पर चुटकी; गाल पर चुंबन पर कान खींचना। यह सब ठीक था: फिलहाल मैं इन कठोर व्यवहारों को किसी भी कोमल व्यवहार से ज़्यादा पसंद करती थी। मैंने देखा कि श्रीमती फेयरफैक्स मुझे पसंद करती थीं: मेरे बारे में उनकी चिंता गायब हो गई थी; इसलिए मुझे यकीन था कि मैंने अच्छा किया। इसी बीच, श्री रोचेस्टर ने कहा कि मैं उन्हें बुरी तरह परेशान कर रहा हूँ और मेरे इस व्यवहार के लिए जल्द ही भयानक बदला लेने की धमकी दी। उनकी धमकियों पर मैं मन ही मन हँस पड़ा। मैंने सोचा, "मैं तुम्हें अभी तो काबू में रख सकता हूँ; और मुझे इसमें कोई शक

नहीं कि मैं आगे भी ऐसा कर पाऊँगा: अगर एक उपाय कारगर नहीं होता, तो दूसरा उपाय ढूंढना ही पड़ता है।"

फिर भी मेरा काम आसान नहीं था; अक्सर मैं उसे चिढ़ाने के बजाय खुश करना ज़्यादा पसंद करती थी। मेरे भावी पति मेरे लिए मेरी पूरी दुनिया बन रहे थे; और दुनिया से भी बढ़कर: लगभग मेरे लिए स्वर्ग की आशा। वे मेरे और धर्म के हर विचार के बीच ऐसे खड़े थे जैसे ग्रहण मनुष्य और विशाल सूर्य के बीच आ जाता है। उन दिनों मैं ईश्वर को उनकी रचना के रूप में नहीं देख पाती थी: जिसे मैंने अपना आदर्श बना लिया था।

अध्याय XXV

प्रेम-प्रसंग का महीना बीत चुका था: उसके अंतिम क्षण गिने-चुने रह गए थे। आने वाले दिन को टालना संभव नहीं था—शादी का दिन; और उसके आगमन की सभी तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं। कम से कम मुझे तो कुछ और करना नहीं था: मेरे बक्से पैक किए हुए, ताले लगे हुए, रस्सियों से बंधे हुए, मेरे छोटे से कमरे की दीवार के साथ कतार में रखे थे; कल, इस समय, वे लंदन के अपने रास्ते पर काफी आगे निकल चुके होंगे: और मैं भी (ईश्वर की कृपा से),—या यूँ कहें, मैं नहीं, बल्कि जेन रोचेस्टर, एक ऐसी शख्सियत जिसे मैं अभी तक नहीं जानती थी। केवल पते के कार्ड चिपकाने बाकी थे: वे दराज में चार छोटे-छोटे चौकोर टुकड़ों में पड़े थे। श्री रोचेस्टर ने स्वयं प्रत्येक पर पता लिखा था, "श्रीमती रोचेस्टर, — - होटल, लंदन": मैं उन्हें चिपकाने या किसी और से चिपकाने के लिए खुद को मना नहीं पा रही थी। श्रीमती रोचेस्टर! उनका अस्तित्व ही नहीं था: उनका जन्म कल सुबह आठ बजे के बाद ही होगा; और मैं इस बात की पुष्टि होने तक इंतज़ार करती कि वह जीवित ही इस दुनिया में आई है, इससे पहले कि मैं उसे वह सारी संपत्ति सौंपती। इतना ही काफी था कि

उस कोठरी में, मेरी ड्रेसिंग टेबल के सामने, उसके कहे जाने वाले वस्त्रों ने पहले ही मेरे काले कपड़े के लोवुड फ्रॉक और भूसे की टोपी को हटा दिया था: क्योंकि वह शादी का सूट, मोती के रंग का गाउन, और हथियाए गए सूट से लटका हुआ धुंधला घूंघट मेरा नहीं था। मैंने कोठरी बंद कर दी ताकि उसमें रखे अजीब, प्रेत जैसे वस्त्रों को छिपा सकूँ; जो आज शाम नौ बजे मेरे कमरे की छाया में एक बेहद भूतिया सी चमक बिखेर रहे थे। "मैं तुम्हें अकेला छोड़ रही हूँ, सफेद सपने," मैंने कहा। "मुझे बुखार है: मुझे हवा चलने की आवाज़ सुनाई दे रही है: मैं बाहर जाकर उसे महसूस करूँगी।"

केवल तैयारियों की हड़बड़ी ही नहीं थी जिसने मुझे बेचैन कर दिया था; न ही कल से शुरू होने वाले उस बड़े बदलाव—नए जीवन—की प्रत्याशा थी: इन दोनों परिस्थितियों का भी निस्संदेह उस बेचैन, उत्तेजित मनोदशा को उत्पन्न करने में योगदान था जिसने मुझे इस देर रात अंधेरे मैदान में जाने के लिए मजबूर किया: लेकिन एक तीसरे कारण ने मेरे मन को इन सबसे कहीं अधिक प्रभावित किया।

मेरे मन में एक अजीब और चिंताजनक विचार था। कुछ ऐसा घटित हुआ था जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था; मेरे सिवा किसी को भी उस घटना के बारे में पता नहीं था और न ही किसी ने उसे देखा था: यह पिछली रात घटित हुआ था। उस रात श्री रोचेस्टर घर से बाहर थे; और अभी तक लौटे भी नहीं थे: उन्हें तीस मील दूर स्थित अपनी दो-तीन खेतों वाली छोटी सी जागीर में काम के लिए जाना पड़ा था - इंग्लैंड से अपने नियोजित प्रस्थान से पहले उन्हें स्वयं जाकर उस काम को निपटाना आवश्यक था। अब मैं उनके लौटने का इंतजार कर रहा था; अपने मन का बोझ हल्का करने और उनसे उस पहेली का हल जानने के लिए उत्सुक था जिसने मुझे परेशान कर रखा था। पाठक, उनके आने तक प्रतीक्षा कीजिए; और जब मैं अपना रहस्य उन्हें बताऊंगा, तो आप भी इस बात को समझ पाएंगे।

तेज़ हवा के झोंकों से बेहाल होकर मैं बाग़ की शरण में चला गया। दिन भर दक्षिण से तेज़ हवा चलती रही, लेकिन बारिश की एक बूँद भी नहीं गिरी। रात होते-होते हवा शांत होने के बजाय और तेज़ होती चली गई: पेड़ एक ही दिशा में स्थिर होकर हिलते रहे, ज़रा भी नहीं हिले और मुश्किल से एक घंटे में एक बार ही अपनी डालियाँ झटकते थे; उनकी शाखाओं का उत्तर की ओर झुकना इतना निरंतर था कि बादल एक छोर से दूसरे छोर तक तेज़ी से, झुंड दर झुंड, आते रहे: उस जुलाई के दिन नीले आसमान की एक झलक भी नज़र नहीं आई।

हवा के साथ दौड़ते हुए मुझे एक अजीब सा आनंद आ रहा था, मानो मैं अपने मन की परेशानियों को अंतरिक्ष में गरजते हुए असीम वायु-प्रवाह में सौंप रहा था। लॉरेल की पगडंडी से नीचे उतरते हुए, मेरे सामने शाहबलूत के पेड़ का टूटा-फूटा ढांचा था; वह काला और फटा हुआ खड़ा था: बीच से फटा हुआ उसका तना भयानक ढंग से कराह रहा था। फटे हुए हिस्से एक-दूसरे से अलग नहीं हुए थे, क्योंकि मजबूत आधार और दृढ़ जड़ें उन्हें नीचे से अलग नहीं होने दे रही थीं; हालांकि जीवन शक्ति नष्ट हो गई थी - रस का प्रवाह रुक गया था: दोनों ओर की उनकी बड़ी शाखाएँ सूख चुकी थीं, और अगली सर्दियों के तूफ़ान निश्चित रूप से उनमें से एक या दोनों को गिरा देंगे: फिर भी, अभी तक उन्हें एक पेड़ कहा जा सकता है - एक खंडहर, लेकिन एक संपूर्ण खंडहर।

"तुमने एक-दूसरे को थामे रखकर सही किया," मैंने कहा: मानो वो विशालकाय टुकड़े जीवित प्राणी हों और मेरी बात सुन सकते हों। "मुझे लगता है, भले ही तुम इतने झुलसे हुए, जले-पुराने और झुलसे हुए दिख रहे हो, फिर भी तुममें जीवन की थोड़ी सी झलक बाकी है, जो तुम्हारी सच्ची और ईमानदार जड़ों से जुड़े उस बंधन से उभर रही है: अब तुम पर कभी हरे पत्ते नहीं होंगे – अब कभी पक्षियों को तुम्हारी डालियों पर घोंसले बनाते और मधुर गीत गाते नहीं देखेंगे; सुख और प्रेम का समय तुम्हारे लिए समाप्त हो गया है: लेकिन तुम वीरान नहीं हो: तुममें से हर एक के पास एक साथी है जो उसके क्षय में उसके साथ सहानुभूति जताएगा।" जैसे ही मैंने उनकी ओर देखा, आकाश के उस हिस्से में क्षण भर के लिए चंद्रमा प्रकट हुआ जिसने उनकी दरार को भर दिया; उसका गोला रक्त-लाल था और आधा बादलों से ढका हुआ था; ऐसा लगा जैसे उसने मुझ पर एक व्याकुल, उदास नज़र डाली हो, और तुरंत ही बादलों के गहरे बहाव में फिर से छिप गई। एक पल के लिए थॉर्नफील्ड के चारों ओर हवा थम गई; लेकिन दूर जंगल और पानी के ऊपर से एक कर्कश, उदास विलाप सुनाई दे रहा था: उसे सुनना दुखद था, और मैं फिर से भाग गया।

मैं इधर-उधर बाग में घूमता रहा, पेड़ों की जड़ों के आसपास की घास में बिखरे सेबों को इकट्ठा किया; फिर पके और कच्चे सेबों को अलग करने में जुट गया; उन्हें घर में लाकर भंडारगृह में रख दिया। फिर मैं पुस्तकालय में यह देखने गया कि आग जल रही है या नहीं, क्योंकि गर्मी का मौसम होने के बावजूद, मैं जानता था कि ऐसी उदास शाम में श्री रोचेस्टर को घर आने पर एक खुशनुमा चूल्हा देखना अच्छा लगेगा: हाँ,

आग कुछ देर पहले ही जल चुकी थी और अच्छी तरह जल रही थी। मैंने उनकी आरामकुर्सी चिमनी के कोने पर रख दी; मेज को उसके पास खिसका दिया; पर्दा गिरा दिया और मोमबत्तियाँ जलाने के लिए तैयार रखीं। पहले से कहीं अधिक बेचैन होकर, इन व्यवस्थाओं को पूरा करने के बाद मैं एक जगह बैठ नहीं पा रहा था, यहाँ तक कि घर में भी नहीं रह पा रहा था: कमरे में रखी एक छोटी घड़ी और हॉल में रखी पुरानी घड़ी ने एक साथ दस बज दिए।

"कितनी देर हो गई है!" मैंने कहा। "मैं दौड़कर द्वार तक जाती हूँ: बीच-बीच में चाँदनी दिख रही है; सड़क पर दूर तक अच्छी तरह दिखाई दे रहा है। शायद वह अभी आ रहा हो, और उससे मिलने से कुछ मिनटों का इंतज़ार बच जाएगा।"

द्वारों को घेरे हुए विशाल वृक्षों में तेज़ हवा गर्जना कर रही थी; लेकिन जहाँ तक मेरी नज़र जा रही थी, दाईं और बाईं ओर सड़क बिल्कुल शांत और सुनसान थी: चाँद की रोशनी में रुक-रुक कर बादलों की छायाएँ दिखाई दे रही थीं, इसके अलावा यह एक लंबी, धुंधली रेखा मात्र थी, जिसमें एक भी हिलता हुआ धब्बा नहीं था।

देखते-देखते मेरी आँखों में एक बचकाना आँसू आ गया—निराशा और अधीरता का आँसू; शर्मिंदा होकर मैंने उसे पोंछ दिया। मैं वहीं रुका रहा; चाँद पूरी तरह अपने कक्ष में सिमट गया और घने बादलों का पर्दा ओढ़ लिया: रात गहरी होती गई; तेज़ हवा के साथ बारिश बरसने लगी।

"काश वो आ जाए! काश वो आ जाए!" मैं डर के मारे कांपते हुए बोली। मुझे उम्मीद थी कि वो चाय से पहले आ जाएगा; अब अंधेरा हो चुका था: उसे क्या रोक रहा था? क्या कोई दुर्घटना हो गई थी? पिछली रात की घटना फिर से मेरे दिमाग में घूम रही थी। मैंने इसे किसी आपदा की चेतावनी समझा। मुझे डर था कि मेरी उम्मीदें इतनी ऊंची थीं कि पूरी नहीं हो सकती थीं; और मैंने हाल ही में इतना सुख भोगा था कि मुझे लगा कि मेरा भाग्य अपने चरम पर पहुंच चुका है, और अब गिरने ही वाला है।

मैंने सोचा, "खैर, मैं घर वापस नहीं जा सकती; जब वह खराब मौसम में बाहर हो तो मैं आग के पास नहीं बैठ सकती: अपने शरीर को थकाना मेरे दिल पर बोझ डालने से बेहतर है; मैं आगे जाकर उससे मिलूंगी।"

मैं चल पड़ा; मैं तेज़ चला, पर ज़्यादा दूर नहीं: एक चौथाई मील भी नापा नहीं था कि मुझे घोड़ों के खुरों की आहट सुनाई दी; एक घुड़सवार पूरी रफ़्तार से आता हुआ दिखाई दिया; एक कुत्ता उसके साथ दौड़ रहा था। बुरी आशंका को दूर भगाओ! यह

वही था: वह यहाँ था, मेसरूर पर सवार, उसके पीछे पायलट था। उसने मुझे देख लिया; क्योंकि चाँद ने आकाश में एक नीला मैदान खोल दिया था, और उसमें पानी की तरह चमक रहा था: उसने अपनी टोपी उतारकर अपने सिर के चारों ओर घुमाई। अब मैं उससे मिलने दौड़ पड़ा।

"लो!" उसने हाथ बढ़ाते हुए और घोड़े की पीठ से झुकते हुए कहा: "तुम मेरे बिना नहीं रह सकते, यह तो स्पष्ट है। मेरे जूते के अंगूठे पर पैर रखो; मुझे दोनों हाथ दो: चढ़ जाओ!"

मैंने आज्ञा मानी: खुशी ने मुझे फुर्तीला बना दिया: मैं उसके सामने उछल पड़ी। स्वागत में मुझे एक हार्दिक चुंबन मिला, और कुछ गर्व भरी जीत की बातें भी, जिन्हें मैंने जैसे-तैसे निगल लिया। उसने अपनी खुशी को रोकते हुए पूछा, "लेकिन जेनेट, क्या कोई बात है कि तुम मुझसे इस समय मिलने आई हो? क्या कुछ गड़बड़ है?"

"नहीं, लेकिन मुझे लगा था कि तुम कभी नहीं आओगे। मैं घर में तुम्हारा इंतज़ार नहीं कर सकती थी, खासकर इस बारिश और हवा में।"

"बारिश और हवा, सचमुच! हाँ, तुम जलपरी की तरह भीग रही हो; मेरा लबादा अपने चारों ओर लपेट लो: लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें बुखार है, जेन: तुम्हारा गाल और हाथ दोनों जल रहे हैं। मैं फिर से पूछता हूँ, क्या कोई बात है?"

"अभी कुछ नहीं; मैं न तो डरा हुआ हूँ और न ही दुखी हूँ।"

"तो आप दोनों ही रहे हैं?"

"बल्कि: लेकिन मैं आपको इसके बारे में थोड़ी देर में सब कुछ बता दूंगा, महोदय; और मुझे यकीन है कि आप मेरी इस कोशिश पर हंसेंगे ही।"

"कल बीत जाने पर मैं तुम पर दिल खोलकर हँसूँगा; तब तक मेरी हिम्मत नहीं: मेरा इनाम पक्का नहीं है। ये तुम हो, जो पिछले महीने मछली की तरह फिसलन भरी और काँटेदार झाड़ी की तरह चुभती रही? मैं जहाँ भी उंगली रखता, चुभन होती ही थी; और अब ऐसा लगता है जैसे मैंने किसी भटके हुए मेमने को अपनी बाहों में उठा लिया हो। जेन, तुम अपने चरवाहे को ढूँढ़ने के लिए बाड़े से बाहर भटक गई थी, है ना?"

"मैं तुम्हें चाहता था: लेकिन शेखी मत बघारो। हम थॉर्नफील्ड में हैं: अब मुझे नीचे उतरने दो।"

उसने मुझे फुटपाथ पर गिरा दिया। जैसे ही जॉन अपने घोड़े पर सवार होकर मेरे

पीछे हॉल में आया, उसने मुझे जल्दी से कुछ सूखा पहनने और फिर पुस्तकालय में उसके पास लौटने को कहा; और जब मैं सीढ़ियों की ओर बढ़ा, तो उसने मुझे रोककर यह वादा लिया कि मैं ज्यादा देर नहीं लगाऊंगा: और मैं सच में देर नहीं लगा पाया; पाँच मिनट में ही मैं उसके पास पहुँच गया। मैंने उसे रात के खाने पर पाया।

"बैठ जाओ और मेरा साथ दो, जेन: भगवान करे, यह थॉर्नफील्ड हॉल में तुम्हारा लंबे समय तक का आखिरी भोजन हो।"

मैं उसके पास बैठ गई, लेकिन उससे कहा कि मैं खाना नहीं खा सकती। "क्या इसका कारण यह है कि तुम्हारे सामने एक यात्रा है, जेन? क्या लंदन जाने के विचार से ही तुम्हारी भूख मर गई है?"

"आज रात मुझे अपना भविष्य स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा है, महोदय; और मुझे यह भी नहीं पता कि मेरे दिमाग में क्या विचार चल रहे हैं। जीवन में सब कुछ अवास्तविक सा लगता है।"

"मेरे अलावा: मैं काफी मजबूत हूं - मुझे छुओ।"

"आप, महोदय, सबसे अधिक प्रेत-समान हैं: आप महज़ एक सपना हैं।"

हंसते हुए उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। "क्या यह सपना है?" उसने अपना हाथ मेरी आंखों के पास लाते हुए कहा। उसका हाथ गोल, मांसल और बलवान था, साथ ही उसकी बांह लंबी और मजबूत थी।

“हाँ; हालाँकि मैं इसे छूता हूँ, यह एक सपना है,” मैंने इसे अपने चेहरे के सामने से नीचे रखते हुए कहा। “महोदय, क्या आपने रात का खाना खा लिया है?”

“जी हां, जेन।”

मैंने घंटी बजाई और थाली हटाने का आदेश दिया। जब हम फिर से अकेले हो गए, तो मैंने आग को हिलाया और फिर अपने मालिक की गोद में बैठ गया।

मैंने कहा, "लगभग आधी रात हो चुकी है।"

“हां, लेकिन याद रखना, जेन, तुमने मुझसे वादा किया था कि मेरी शादी से एक रात पहले तुम मेरे साथ जागोगी।”

मैंने किया; और मैं कम से कम एक या दो घंटे के लिए अपना वादा निभाऊंगा: मुझे सोने की कोई इच्छा नहीं है।

"क्या आपकी सभी व्यवस्थाएं पूरी हो चुकी हैं?"

“सब ठीक है, महोदय।”

“और मेरी तरफ से भी,” उसने जवाब दिया, “मैंने सब कुछ तय कर लिया है; और हम कल चर्च से लौटने के आधे घंटे के भीतर थॉर्नफील्ड से निकल जाएंगे।”

"बहुत खूब, महोदय।"

“जेन, तुमने कितनी अद्भुत मुस्कान के साथ वो शब्द कहा – ‘बहुत बढ़िया!’ तुम्हारे दोनों गालों पर कितना चमकीला रंग है! और तुम्हारी आँखें कितनी अनोखी तरह से चमक रही हैं! क्या तुम ठीक हो?”

मुझे विश्वास है कि मैं हूँ।

“विश्वास करो! क्या बात है? मुझे बताओ कि तुम क्या महसूस करते हो।”

“मैं नहीं कर सकता, महोदय: मेरे मन की भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करना असंभव है। काश यह क्षण कभी समाप्त न हो: कौन जानता है कि अगला क्षण किस नियति के साथ आए?”

"यह हाइपोकॉन्ड्रिया है, जेन। तुम या तो बहुत ज्यादा उत्साहित हो गई हो, या बहुत ज्यादा थक गई हो।"

"क्या आप, महोदय, शांत और खुश महसूस कर रहे हैं?"

“शांत? नहीं: लेकिन दिल की गहराई से खुश।”

मैंने उसकी ओर देखा और उसके चेहरे पर आनंद के भावों को समझने की कोशिश की: उसका चेहरा उत्साह से भरा हुआ था और लालिमा से लाल हो गया था।

“मुझे अपना विश्वास दो, जेन,” उसने कहा: “अपने मन का बोझ मुझसे बाँटकर उसे हल्का कर दो। तुम्हें किस बात का डर है? — कि मैं एक अच्छा पति साबित नहीं हो पाऊँगा?”

"यह विचार मेरे मन में दूर-दूर तक नहीं आता।"

“क्या आप उस नए क्षेत्र को लेकर आशंकित हैं जिसमें आप प्रवेश करने वाले हैं? — उस नए जीवन को लेकर जिसमें आप प्रवेश कर रहे हैं?”

"नहीं।"

"जेन, तुम मुझे उलझन में डाल देती हो: तुम्हारी उदास और निर्भीक निगाहें और लहजा मुझे परेशान और पीड़ादायक लगते हैं। मुझे स्पष्टीकरण चाहिए।"

“तो महोदय, सुनिए। आप कल रात घर से बाहर थे?”

“हाँ, मैं जानती हूँ; और आपने कुछ देर पहले मेरी अनुपस्थिति में हुई किसी घटना का संकेत दिया था: — शायद कुछ खास नहीं; लेकिन संक्षेप में, इसने आपको

परेशान किया है। मुझे बताइए। क्या श्रीमती फेयरफैक्स ने कुछ कहा है? या आपने नौकरों की बातें सुनी हैं? — क्या आपके आत्मसम्मान को ठेस पहुंची है?"

"नहीं, महोदय।" बारह बज चुके थे— मैंने घड़ी की मधुर ध्वनि और कर्कश, कंपन करती हुई आवाज के समाप्त होने तक प्रतीक्षा की, और फिर मैं आगे बढ़ा।

"कल सारा दिन मैं बहुत व्यस्त थी, और अपनी निरंतर भागदौड़ में बहुत खुश थी; क्योंकि जैसा कि आप सोचते हैं, मैं नई दुनिया आदि के बारे में किसी भी डर से परेशान नहीं हूँ: मुझे आपके साथ रहने की आशा रखना एक गौरवशाली बात लगती है, क्योंकि मैं आपसे प्यार करती हूँ। नहीं, महोदय, अभी मुझे सहलाइए मत— मुझे शांति से बात करने दीजिए। कल मैंने ईश्वर पर पूरा भरोसा किया, और विश्वास किया कि घटनाएँ आपके और मेरे भले के लिए हो रही हैं: अगर आपको याद हो तो वह एक सुहाना दिन था— हवा और आकाश की शांति ने आपकी यात्रा में आपकी सुरक्षा या आराम के बारे में किसी भी आशंका को दूर कर दिया। चाय के बाद मैं थोड़ी देर फुटपाथ पर टहलती रही, आपके बारे में सोचती रही; और मैंने आपको कल्पना में इतना करीब देखा कि मुझे आपकी वास्तविक उपस्थिति का एहसास ही नहीं हुआ। मैंने अपने सामने आने वाले जीवन के बारे में सोचा—आपका जीवन, महोदय—एक ऐसा अस्तित्व जो मेरे अपने जीवन से कहीं अधिक विस्तृत और रोमांचक है: उतना ही अधिक जितना कि उस समुद्र की गहराई जिसमें धारा बहती है, उसके अपने संकरे मार्ग के उथलेपन से कहीं अधिक है। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्यों नैतिकतावादी इस दुनिया को एक उजाड़ वीरान जगह कहते हैं: मेरे लिए यह गुलाब की तरह खिल उठी। सूर्यास्त के ठीक समय, हवा ठंडी हो गई और आसमान में बादल छा गए: मैं अंदर गई, सोफी ने मुझे ऊपर बुलाया ताकि मैं अपनी शादी की पोशाक देख सकूँ, जो वे अभी-अभी लाए थे; और उसके नीचे डिब्बे में मुझे तुम्हारा उपहार मिला - वह घूंघट जिसे तुमने अपनी शाही फिजूलखर्ची में लंदन से मंगवाया था: शायद तुमने सोचा होगा कि चूंकि मैं गहने नहीं पहनना चाहती, इसलिए मुझे कुछ इतना महंगा स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दिया। मैंने उसे खोलते हुए मुस्कुराया और सोचा कि मैं तुम्हारे कुलीन शौक और अपनी साधारण दुल्हन को कुलीन महिला के गुणों में छुपाने के तुम्हारे प्रयासों को लेकर तुम्हें कैसे चिढ़ाऊँगी। मैंने सोचा कि मैं तुम्हारे लिए वह बिना कढ़ाई वाला सुनहरे रंग का चौकोर कपड़ा लेकर जाऊँगी जिसे मैंने अपने साधारण सिर को ढकने के लिए खुद तैयार किया था, और पूछूँगी कि क्या यह उस औरत के लिए

काफी नहीं है जो अपने पति को न तो दौलत दे सकती है, न खूबसूरती, न ही रुतबा। मैंने साफ देखा कि तुम कैसे दिखोगे; और तुम्हारे उग्र गणतंत्रवादी जवाब सुने, और "आपकी यह अभिमानी दलील कि धन-दौलत बढ़ाने या प्रतिष्ठा ऊंचा करने के लिए किसी धनी महिला या राजसी महिला से विवाह करना आपके लिए आवश्यक नहीं है।"

"तुमने मुझे कितनी अच्छी तरह से पढ़ लिया, चुड़ैल!" श्री रोचेस्टर ने बीच में कहा: "लेकिन कढ़ाई के अलावा तुम्हें घूंघट में क्या मिला? क्या तुम्हें जहर मिला, या खंजर, जो तुम अब इतनी उदास दिख रही हो?"

"नहीं, नहीं, महोदय; कपड़े की कोमलता और भव्यता के अलावा, मुझे फेयरफैक्स रोचेस्टर के गर्व के अलावा कुछ नहीं मिला; और इससे मुझे डर नहीं लगा, क्योंकि मैं उस राक्षस को देखने का आदी हूँ। लेकिन, महोदय, जैसे-जैसे अंधेरा होता गया, हवा तेज़ होती गई: कल शाम को यह ऐसे नहीं चल रही थी जैसे अब चलती है - तूफ़ानी और तेज़ - बल्कि एक उदास, कराहती हुई आवाज़ के साथ, कहीं ज़्यादा डरावनी। काश आप घर पर होते। मैं इस कमरे में आया, और खाली कुर्सी और बुझी हुई चूल्हे को देखकर मैं काँप गया। बिस्तर पर जाने के कुछ देर बाद तक मुझे नींद नहीं आई - बेचैनी और घबराहट ने मुझे परेशान कर दिया। तेज़ होती आंधी मेरे कानों में एक उदास, धीमी आवाज़ को दबाती हुई सी लग रही थी; चाहे वह घर के अंदर हो या बाहर, मैं पहले तो बता नहीं सका, लेकिन यह हर ठहराव पर अनिश्चित और उदास रूप में दोहराई जाती रही; अंत में मुझे समझ आया कि यह दूर से किसी कुत्ते के भौंकने की आवाज़ होगी। जब यह बंद हुई तो मुझे राहत मिली। सोते समय, मुझे सपनों में एक अंधेरी और तूफानी रात का ख्याल आता रहा।" मेरे मन में आपके साथ रहने की इच्छा बनी रही, और मुझे एक अजीब, अफसोसजनक एहसास हुआ कि हमारे बीच कोई बाधा है। अपनी पहली नींद के दौरान, मैं एक अनजान रास्ते के घुमावों का पीछा कर रहा था; चारों ओर घना अंधेरा छाया हुआ था; बारिश मुझ पर बरस रही थी; मेरे ऊपर एक नन्हे बच्चे का बोझ था: एक बहुत छोटा सा जीव, चलने में असमर्थ, जो मेरी ठंडी बाहों में कांप रहा था और मेरे कान में दर्द भरी आवाज़ में रो रहा था। मैंने सोचा, श्रीमान, कि आप मुझसे बहुत आगे रास्ते पर हैं; और मैंने आपको पकड़ने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी, और आपका नाम पुकारने और आपको रुकने के लिए कहने की बार-बार कोशिश की - लेकिन मेरे हाथ-पैर बंधे हुए थे, और मेरी आवाज़

अस्पष्ट ही रह गई; जबकि मुझे महसूस हुआ कि आप हर पल मुझसे और दूर होते जा रहे हैं।

“और ये सपने अब तुम्हारे मन पर बोझ बन गए हैं, जेन, जब मैं तुम्हारे करीब हूँ? कितनी घबराई हुई हो तुम! काल्पनिक दुख को भूल जाओ, और केवल वास्तविक खुशी के बारे में सोचो! तुम कहती हो कि तुम मुझसे प्यार करती हो, जेनेट: हाँ – मैं यह नहीं भूलूँगा; और तुम इसे नकार नहीं सकती। वे शब्द तुम्हारे होठों पर अनकहे नहीं रह गए। मैंने उन्हें स्पष्ट और मधुर सुना: शायद एक विचार थोड़ा गंभीर था, लेकिन संगीत की तरह मधुर – ‘मुझे लगता है कि तुम्हारे साथ जीने की आशा रखना एक गौरवशाली बात है, एडवर्ड, क्योंकि मैं तुमसे प्यार करती हूँ।’ क्या तुम मुझसे प्यार करती हो, जेन? – इसे दोहराओ।”

"जी हां, महोदय—जी हां, पूरे दिल से।"

कुछ मिनटों की चुप्पी के बाद उसने कहा, “खैर, यह अजीब है; लेकिन उस वाक्य ने मेरे दिल को बहुत पीड़ा पहुँचाई है। क्यों? मुझे लगता है क्योंकि तुमने इसे इतनी गंभीर, धार्मिक ऊर्जा के साथ कहा, और क्योंकि तुम्हारी ऊपर की ओर देखती निगाहें अब आस्था, सत्य और भक्ति की पराकाष्ठा हैं: ऐसा लगता है जैसे कोई आत्मा मेरे पास हो। शरारती दिखो, जेन: जैसा कि तुम अच्छी तरह जानती हो: अपनी जंगली, शर्मीली, चिढ़ाने वाली मुस्कान बिखेरो; मुझे बताओ कि तुम मुझसे नफरत करती हो - मुझे चिढ़ाओ, मुझे परेशान करो; कुछ भी करो लेकिन मुझे विचलित मत करो: मैं दुखी होने की बजाय क्रोधित होना पसंद करूँगा।”

"जब मेरी कहानी समाप्त हो जाएगी, तब मैं तुम्हें तुम्हारी इच्छा अनुसार चिढ़ाऊंगा और परेशान करूंगा: लेकिन मुझे अंत तक सुनो।"

"मुझे लगा था, जेन, तुमने मुझे सब कुछ बता दिया था। मुझे लगा था कि मैंने सपने में तुम्हारी उदासी का कारण ढूंढ लिया है।"

मैंने सिर हिलाया। “क्या! और भी कुछ है? लेकिन मैं इसे कुछ खास महत्वपूर्ण नहीं मानूंगा। मैं आपको पहले ही अविश्वास के बारे में चेतावनी दे रहा हूं। आगे बढ़ो।”

उसके हावभाव में व्याप्त बेचैनी और कुछ हद तक आशंकित अधीरता ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया, लेकिन मैं आगे बढ़ गया।

“मैंने एक और सपना देखा, महोदय: थॉर्नफील्ड हॉल एक उजाड़ खंडहर था, चमगादड़ों और उल्लुओं का ठिकाना। मैंने सोचा कि उस भव्य अग्रभाग का कुछ भी

नहीं बचा था सिवाय एक खोल जैसी दीवार के, जो बहुत ऊँची और बहुत नाजुक दिख रही थी। मैं चांदनी रात में अंदर घास से ढके घेरे में भटक रही थी: कहीं मैं संगमरमर के चूल्हे से टकराई, कहीं कंगनी के गिरे हुए टुकड़े से। शॉल में लिपटी हुई, मैं अब भी उस अनजान नन्हे बच्चे को लिए घूम रही थी: मैं उसे कहीं भी नहीं रख सकती थी, चाहे मेरी बाहें कितनी भी थक गई हों—चाहे उसका वजन मेरी प्रगति में कितनी भी बाधा डाल रहा हो, मुझे उसे थामे रहना था। मैंने सड़क पर दूर से एक घोड़े के सरपट दौड़ने की आवाज सुनी; मुझे यकीन था कि वह आप ही थे; और आप कई वर्षों के लिए और एक दूर देश के लिए विदा हो रहे थे। मैं ऊपर से आपकी एक झलक पाने की उत्सुकता में, उस पतली दीवार पर बेतहाशा और खतरनाक जल्दबाजी में चढ़ गई: मेरे पैरों के नीचे से पत्थर लुढ़क गए, जिन लता शाखाओं को मैंने पकड़ा था वे टूट गईं, बच्चा डर से मेरी गर्दन से लिपट गया, और लगभग मेरा गला घोंट दिया; आखिरकार मैं ऊपर पहुँच गई शिखर। मैंने तुम्हें सफेद रास्ते पर एक छोटे से बिंदु की तरह देखा, हर पल धुंधलाता हुआ। धमाका इतना ज़ोरदार था कि मैं खड़ा नहीं हो सका। मैं संकरी सी जगह पर बैठ गया; मैंने अपनी गोद में बैठे डरे हुए बच्चे को चुप कराया: तुम सड़क के एक मोड़ पर मुड़े: मैंने आखिरी बार देखने के लिए आगे झुका; दीवार ढह गई; मैं कांप गया; बच्चा मेरी गोद से लुढ़क गया, मेरा संतुलन बिगड़ गया, मैं गिर गया और होश में आ गया।

"अब, जेन, बस इतना ही।"

“प्रस्तावना तो बीत गई, महोदय; असली कहानी तो अभी बाकी है। जागते ही मेरी आँखें एक तेज़ रोशनी से चौंधिया गईं; मैंने सोचा—अरे, दिन निकल आया! पर मैं गलत थी; वह तो बस मोमबत्ती की रोशनी थी। मुझे लगा सोफी अंदर आ गई है। ड्रेसिंग टेबल में एक बत्ती जल रही थी, और अलमारी का दरवाज़ा, जहाँ मैंने सोने से पहले अपनी शादी की पोशाक और घूंघट टांगा था, खुला हुआ था; मुझे वहाँ सरसराहट सुनाई दी। मैंने पूछा, ‘सोफी, तुम क्या कर रही हो?’ किसी ने जवाब नहीं दिया; लेकिन अलमारी से एक आकृति निकली; उसने बत्ती उठाई, उसे ऊपर उठाया, और सूटकेस से लटके कपड़ों को देखा। ‘सोफी! सोफी!’ मैंने फिर पुकारा: और फिर भी सन्नाटा छाया रहा। मैं बिस्तर पर उठ बैठी, आगे झुकी: पहले हैरानी, फिर घबराहट, मुझ पर छा गई; और फिर मेरे शरीर में खून जम गया। श्री रोचेस्टर, यह सोफी नहीं थी, यह लिआ नहीं थी, यह श्रीमती फेयरफैक्स नहीं थीं: यह नहीं थी—

नहीं, मुझे इस बात का पूरा यकीन था, और अब भी है—वह अजनबी महिला, ग्रेस पूल भी नहीं थी।

“यह उनमें से ही कोई रहा होगा,” मेरे गुरु ने बीच में ही टोकते हुए कहा।

“नहीं, महोदय, मैं आपको पूरी गंभीरता से आश्वस्त करता हूँ कि ऐसा बिल्कुल नहीं है। मेरे सामने खड़ी आकृति को मैंने थॉर्नफील्ड हॉल परिसर में पहले कभी नहीं देखा था; उसकी ऊँचाई, उसका आकार मेरे लिए बिल्कुल नया था।”

"इसका वर्णन करो, जेन।"

“महोदय, ऐसा लग रहा था जैसे कोई महिला हो, लंबी और मोटी, जिसके घने और काले बाल पीठ तक लटके हुए हों। मुझे नहीं पता कि उसने क्या पहना था: वह सफेद और सीधा था; लेकिन वह गाउन था, चादर थी या कफ़न, मैं बता नहीं सकता।”

क्या तुमने उसका चेहरा देखा?

“शुरू में तो नहीं। लेकिन थोड़ी देर बाद उसने मेरा घूंघट उठाया; उसे ऊपर उठाया, देर तक निहारा, फिर उसे अपने सिर पर डाल लिया और दर्पण की ओर मुड़ गई। उसी क्षण मैंने अंधेरे आयताकार दर्पण में चेहरे और चेहरे की विशेषताओं का प्रतिबिंब बिल्कुल स्पष्ट रूप से देखा।”

और वे कैसे थे?

“मेरे लिए तो यह बहुत ही भयानक और डरावना था — ओह, महोदय, मैंने ऐसा चेहरा पहले कभी नहीं देखा! यह एक बदरंग चेहरा था — एक क्रूर चेहरा। काश मैं उन लाल आँखों की भनक और चेहरे की भयानक काली सूजन को भूल पाता!”

"भूत आमतौर पर पीले रंग के होते हैं, जेन।"

“यह, महोदय, बैंगनी रंग का था: होंठ सूजे हुए और काले थे; माथे पर झुर्रियाँ थीं: काली भौहें खून से लाल आँखों के ऊपर उठी हुई थीं। क्या मैं आपको बताऊँ कि इसने मुझे किस चीज़ की याद दिलाई?”

"आप कर सकते हैं।"

"उस भयानक जर्मन प्रेत - पिशाच" के बारे में।

“अरे! इसने क्या किया?”

"महोदय, इसने मेरे दुबले-पतले सिर से मेरा घूंघट हटा दिया, उसे दो हिस्सों में फाड़ दिया और दोनों को फर्श पर फेंककर उन पर पैर रख दिया।"

"उसके बाद?"

“उसने खिड़की का पर्दा हटाया और बाहर देखा; शायद उसने भोर होते हुए देखा, क्योंकि मोमबत्ती लेकर वह दरवाजे की ओर लौट गई। मेरे बिस्तर के ठीक पास आकर वह आकृति रुक गई: उसकी धधकती आँखें मुझ पर टिकी थीं – उसने मोमबत्ती मेरे चेहरे के पास लाकर मेरी आँखों के सामने बुझा दी। मुझे उसका भयानक चेहरा अपने ऊपर जलता हुआ महसूस हुआ और मैं बेहोश हो गया: अपने जीवन में दूसरी बार – केवल दूसरी बार – मैं भय से बेसुध हो गया।”

जब आपको होश आया तो आपके साथ कौन-कौन था?

“कोई नहीं, महोदय, बस दिन का उजाला। मैं उठी, सिर और चेहरा पानी से धोया, खूब पानी पिया; मुझे महसूस हुआ कि कमजोरी के बावजूद मैं बीमार नहीं थी, और मैंने निश्चय किया कि यह दृश्य मैं केवल आपको ही बताऊंगी। अब, महोदय, मुझे बताइए कि वह स्त्री कौन और क्या थी?”

“तुम अति-उत्तेजित मस्तिष्क की उपज हो; यह निश्चित है। मुझे तुम्हारा बहुत ध्यान रखना होगा, मेरे अनमोल रत्न: तुम्हारे जैसे तंत्रिका तंत्र कठोर व्यवहार के लिए नहीं

बने हैं।”

"सर, इस बात पर भरोसा रखिए, मेरी घबराहट में कोई गलती नहीं थी; बात सच थी: लेन-देन वास्तव में हुआ था।"

“और तुम्हारे पिछले सपने, क्या वे भी सच थे? क्या थॉर्नफील्ड हॉल खंडहर है? क्या मैं तुमसे अपूरणीय बाधाओं से अलग हो गया हूँ? क्या मैं तुम्हें बिना आँसू बहाए, बिना चुंबन दिए, बिना एक शब्द कहे छोड़ रहा हूँ?”

"अभी तक नहीं।"

“क्या मैं ऐसा करने वाला हूँ? अरे, वह दिन तो शुरू हो चुका है जो हमें अटूट बंधन में बांध देगा; और एक बार हम एकजुट हो जाएंगे, तो इन मानसिक भयों का कोई पुनरावर्तन नहीं होगा: मैं इसकी गारंटी देता हूँ।”

"मानसिक भय, महोदय! काश मैं इन्हें केवल मानसिक भय ही मान पाती: मेरी इच्छा अब पहले से कहीं अधिक है; क्योंकि आप भी मुझे उस भयानक आगंतुक के रहस्य को नहीं समझा सकते।"

और चूंकि मैं ऐसा नहीं कर सकता, जेन, तो यह अवास्तविक ही रहा होगा।

लेकिन, महोदय, जब मैंने आज सुबह उठते ही खुद से ऐसा कहा, और जब मैंने कमरे में चारों ओर देखकर दिन के उजाले में प्रत्येक परिचित वस्तु के प्रसन्नतापूर्ण रूप से साहस और सांत्वना प्राप्त करने की कोशिश की, तो वहाँ - कालीन पर - मैंने वह देखा जिसने मेरी परिकल्पना को पूरी तरह से झूठा साबित कर दिया - घूंघट, ऊपर से नीचे तक दो हिस्सों में फटा हुआ!

मुझे महसूस हुआ कि मिस्टर रोचेस्टर चौंक गए और कांप उठे; उन्होंने झट से मुझे गले लगा लिया। “भगवान का शुक्र है!” उन्होंने कहा, “कि अगर कल रात तुम्हारे पास कोई बुरी चीज़ आई भी थी, तो सिर्फ़ घूंघट को ही नुकसान पहुँचा। सोचो, क्या हो सकता था!”

उसने गहरी साँसें लीं और मुझे अपने इतने करीब खींच लिया कि मैं मुश्किल से साँस ले पा रही थी। कुछ मिनटों की चुप्पी के बाद, उसने प्रसन्नतापूर्वक बोलना जारी रखा—

“अब, जेनेट, मैं तुम्हें इसके बारे में सब कुछ समझाता हूँ। यह आधा सपना, आधा हकीकत था। मुझे पूरा यकीन है कि एक औरत तुम्हारे कमरे में आई थी: और वह औरत—ज़रूर—ग्रेस पूल ही रही होगी। तुम खुद उसे एक अजीब प्राणी कहती हो:

जितना तुम जानती हो, उसके हिसाब से तो ऐसा कहना जायज़ है—उसने मेरे साथ क्या किया? मेसन के साथ क्या किया? नींद और जागने के बीच की अवस्था में, तुमने उसके आने और उसकी हरकतों को देखा; लेकिन बुखार से बेहाल, लगभग बेहोशी की हालत में, तुमने उसे एक भूतिया रूप दे दिया जो उसके असली रूप से बिल्कुल अलग था: लंबे बिखरे बाल, फूला हुआ काला चेहरा, बढ़ा हुआ कद, ये सब कल्पना की उपज थे; बुरे सपने का नतीजा थे: घूंघट का बेरहमी से फाड़ना असली था: और यह बिल्कुल उसके जैसा ही है। मुझे पता है कि तुम पूछोगी कि मैं ऐसी औरत को अपने घर में क्यों रखता हूँ: जब हमारी शादी को एक साल और एक दिन हो जाएगा, तब मैं तुम्हें बताऊंगा; लेकिन अभी नहीं। क्या तुम संतुष्ट हो, जेन? क्या तुम इस रहस्य के मेरे समाधान को स्वीकार करती हो?”

मैंने विचार किया, और सच कहूँ तो मुझे यही एकमात्र संभव विकल्प लगा: मैं संतुष्ट तो नहीं थी, लेकिन उसे खुश करने के लिए मैंने ऐसा दिखाने की कोशिश की—मुझे निश्चित रूप से राहत महसूस हो रही थी; इसलिए मैंने उसे संतुष्ट मुस्कान के साथ जवाब दिया। और अब, चूंकि एक बज चुका था, मैं उससे विदा लेने की तैयारी करने लगी।

"क्या सोफी नर्सरी में एडेल के साथ नहीं सोती?" उसने पूछा, जब मैंने अपनी मोमबत्ती जलाई।

"जी श्रीमान।"

“और एडेल के छोटे से बिस्तर में तुम्हारे लिए काफी जगह है। जेन, आज रात तुम्हें उसके साथ सोना होगा: तुमने जो घटना बताई है, उससे घबरा जाना स्वाभाविक है, और मैं नहीं चाहती कि तुम अकेले सोओ: मुझसे वादा करो कि तुम बच्चों के कमरे में जाओगी।”

मुझे ऐसा करने में बहुत खुशी होगी, महोदय।

“और अंदर से दरवाज़ा अच्छी तरह बंद कर दो। ऊपर जाते समय सोफी को जगा देना, यह बहाना बनाकर कि वह तुम्हें कल सुबह समय पर जगा दे; क्योंकि तुम्हें तैयार होकर नाश्ता आठ बजे से पहले खत्म कर लेना है। और अब, उदास विचारों को भूल जाओ: चिंता को दूर भगाओ, जेनेट। क्या तुम्हें हवा की धीमी फुसफुसाहट सुनाई नहीं दे रही? और खिड़कियों पर बारिश की बूँदें भी नहीं पड़ रही हैं: देखो यहाँ” (उसने पर्दा उठाया) — “कितनी प्यारी रात है!”

ऐसा ही था। आधा आकाश निर्मल और पवित्र था: पश्चिम की ओर मुड़ी हवा के साथ बहते बादल, चांदी की तरह चमकती लंबी-लंबी पंक्तियों में पूर्व की ओर विलीन हो रहे थे। चंद्रमा शांति से चमक रहा था।

श्री रोचेस्टर ने मेरी आँखों में जिज्ञासा भरी निगाहों से देखते हुए कहा, "अच्छा, मेरी जेनेट अब कैसी है?"

"महोदय, रात शांत है; और मैं भी शांत हूँ।"

और आज रात तुम वियोग और दुःख के सपने नहीं देखोगे; बल्कि सुखद प्रेम और आनंदमय मिलन के सपने देखोगे।

यह भविष्यवाणी आधी ही पूरी हुई: मैंने दुख का सपना तो नहीं देखा, लेकिन खुशी का भी उतना ही कम; क्योंकि मैं बिल्कुल भी नहीं सोई। नन्ही एडेल को अपनी बाहों में लिए, मैं बचपन की नींद को देखती रही—इतनी शांत, इतनी भावहीन, इतनी मासूम—और आने वाले दिन का इंतज़ार करती रही: मेरा सारा जीवन मेरे शरीर में जागृत और हलचल से भरा था: और जैसे ही सूरज निकला, मैं भी उठ गई। मुझे याद है कि जब मैं एडेल को छोड़कर गई तो वह मुझसे लिपट गई: मुझे याद है कि मैंने उसके छोटे हाथों को अपनी गर्दन से छुड़ाते हुए उसे चूमा; और मैं उस पर अजीब सी भावना से रोई, और उसे छोड़कर चली गई क्योंकि मुझे डर था कि मेरी सिसकियाँ उसकी शांत नींद को भंग कर देंगी। वह मेरे बीते जीवन का प्रतीक लग रही थी; और अब मैं यहाँ अपने अज्ञात भविष्य के दिन के उस भयानक, लेकिन पूजनीय प्रतीक से मिलने के लिए तैयार थी।

अध्याय XXVI

सोफी मुझे कपड़े पहनाने के लिए सात बजे आई: उसे अपना काम पूरा करने में बहुत देर लग गई; इतनी देर कि श्री रोचेस्टर, शायद मेरी देरी से चिढ़कर, यह पूछने के लिए

ऊपर संदेश भेजने लगे कि मैं क्यों नहीं आई। वह अभी मेरे घूंघट (आखिरकार वह सादा, चौकोर सुनहरे रंग का घूंघट था) को ब्रोच से मेरे बालों में लगा ही रही थी कि मैं जितनी जल्दी हो सके उसके हाथों से निकल गई।

"रुको!" वह फ्रेंच में चिल्लाई। "आईने में खुद को देखो: तुमने एक बार भी खुद को नहीं देखा है।"

तो मैंने दरवाजे पर मुड़कर देखा: मुझे एक लबादा और घूंघट ओढ़े हुए व्यक्ति को देखा, जो मुझसे इतना अलग था कि मानो किसी अजनबी की छवि हो। "जेन!" एक आवाज ने पुकारा, और मैं जल्दी से नीचे उतरी। सीढ़ियों के नीचे श्री रोचेस्टर ने मेरा स्वागत किया।

"देर करने वाले!" उसने कहा, "मेरा दिमाग अधीरता से जल रहा है, और तुम इतनी देर तक रुके रहते हो!"

वह मुझे भोजन कक्ष में ले गया, मुझे चारों ओर से ध्यानपूर्वक देखा, मुझे "एक कमल के समान सुंदर, और न केवल अपने जीवन का गौरव, बल्कि अपनी आँखों का तारा" बताया, और फिर यह कहते हुए कि वह मुझे नाश्ता करने के लिए केवल दस मिनट का समय देगा, उसने घंटी बजा दी। उसके हाल ही में नियुक्त नौकरों में से एक, एक सेवक ने घंटी का जवाब दिया।

"क्या जॉन गाड़ी तैयार कर रहा है?"

"जी श्रीमान।"

"क्या सामान नीचे लाया गया है?"

"वे इसे गिरा रहे हैं, महोदय।"

"तुम चर्च जाओ: देखो कि क्या मिस्टर वुड (पादरी) और क्लर्क वहाँ हैं: वापस आकर मुझे बताओ।"

जैसा कि पाठक को ज्ञात है, गिरजाघर द्वार के ठीक बाहर था; नौकर जल्द ही लौट आया।

"श्री वुड चर्च के कक्ष में हैं, महोदय, वे अपना सरप्लस पहन रहे हैं।"

और गाड़ी?

घोड़ों को जोता जा रहा है।

"हम नहीं चाहेंगे कि यह चर्च जाए; लेकिन हमारे लौटते ही यह तैयार होना चाहिए: सभी बक्से और सामान व्यवस्थित और बंधे हुए हों, और कोचवान अपनी सीट पर

बैठा हो।"

"जी श्रीमान।"

जेन, क्या तुम तैयार हो?

मैं उठा। वहाँ न कोई दूल्हे का दोस्त था, न कोई दुल्हन की सहेली, न कोई रिश्तेदार इंतज़ार कर रहा था और न ही कोई व्यवस्था कर रहा था: केवल श्री रोचेस्टर और मैं ही थे। जब हम वहाँ से गुज़रे तो श्रीमती फेयरफैक्स हॉल में खड़ी थीं। मैं उनसे बात करना चाहता था, लेकिन मेरा हाथ लोहे की पकड़ में थाम लिया गया था: मुझे इतनी तेज़ी से आगे बढ़ाया जा रहा था कि मैं मुश्किल से ही उनका साथ दे पा रहा था; और श्री रोचेस्टर के चेहरे को देखकर ऐसा लग रहा था मानो एक पल की भी देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या कोई और दूल्हा कभी उनके जैसा दिखता होगा - इतना दृढ़ निश्चयी, इतना दृढ़ संकल्पित: या कौन, ऐसे स्थिर माथे के नीचे, कभी ऐसी प्रज्वलित और चमकती आँखें दिखा सकता है।

मुझे नहीं पता कि दिन सुहाना था या अशुभ; सड़क से नीचे उतरते हुए मैंने न तो आकाश की ओर देखा और न ही धरती की ओर: मेरा हृदय मेरी आँखों के साथ था; और दोनों मानो श्री रोचेस्टर के शरीर में समा गए थे। मैं उस अदृश्य वस्तु को देखना चाहता था जिस पर चलते-चलते वह एक तीखी नज़र टिकाते और फिर झपट पड़ते थे। मैं उन विचारों को महसूस करना चाहता था जिनकी शक्ति का वह सामना करते और प्रतिरोध करते प्रतीत होते थे।

कब्रिस्तान के पास आकर वह रुक गया: उसने देखा कि मेरी सांस फूल रही थी। “क्या मैं अपने प्यार में क्रूर हूँ?” उसने कहा। “एक पल रुको: मुझ पर सहारा लो, जेन।”

और अब मुझे वह तस्वीर याद आ रही है: मेरे सामने शांत भाव से उठती हुई ईश्वर की पुरानी, धूसर रंग की वेदी, मीनार के चारों ओर चक्कर लगाता एक कौआ, और दूर तक फैला हुआ लालिमा लिए सुबह का आकाश। मुझे हरे-भरे कब्रों के टीलों की भी कुछ याद है; और मैं उन दो अजनबियों को भी नहीं भूली हूँ जो छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच घूम रहे थे और कुछ काई लगे कब्र के पत्थरों पर खुदे हुए संदेश पढ़ रहे थे। मैंने उन्हें देखा, क्योंकि जैसे ही उन्होंने हमें देखा, वे चर्च के पीछे की ओर चले गए; और मुझे पूरा यकीन था कि वे गलियारे के बगल वाले दरवाजे से अंदर जाकर समारोह देखने वाले थे। श्री रोचेस्टर ने उन्हें नहीं देखा; वे मेरी ओर ध्यान से देख रहे थे, जिस

पर से शायद कुछ पल के लिए खून गायब हो गया था: क्योंकि मुझे अपना माथा पसीने से भीगा हुआ और गाल व होंठ ठंडे लग रहे थे। जब मैं संभली, जो कि जल्दी ही हो गई, तो वे धीरे से मुझे बरामदे तक ले गए।

हम शांत और सादे मंदिर में दाखिल हुए; पुजारी अपने सफेद चोगे में साधारण वेदी पर प्रतीक्षा कर रहे थे, उनके बगल में क्लर्क था। सब कुछ शांत था: केवल एक कोने में दो परछाइयाँ हिल रही थीं। मेरा अनुमान सही निकला: अजनबी हमसे पहले अंदर आ गए थे, और अब वे रोचेस्टर परिवार के मकबरे के पास खड़े थे, उनकी पीठ हमारी ओर थी, वे रेलिंग के माध्यम से पुराने, समय के साथ फीके पड़े संगमरमर के मकबरे को देख रहे थे, जहाँ एक घुटनों के बल बैठा देवदूत गृहयुद्ध के समय मार्स्टन मूर में मारे गए डैमर डी रोचेस्टर और उनकी पत्नी एलिजाबेथ के अवशेषों की रक्षा कर रहा था।

हमें प्रार्थना के लिए बनी रेलिंग के पास जगह मिल गई। मेरे पीछे किसी के आहट भरे कदमों की आहट सुनकर मैंने पीछे मुड़कर देखा: अजनबियों में से एक - जाहिर तौर पर एक सज्जन - वेदी की ओर बढ़ रहे थे। प्रार्थना शुरू हुई। विवाह के उद्देश्य का स्पष्टीकरण दिया गया; और फिर पादरी एक कदम आगे बढ़े, और श्री रोचेस्टर की ओर थोड़ा झुककर आगे बढ़े।

“मैं तुम दोनों से यह अपेक्षा करता हूँ और तुम्हें यह आदेश देता हूँ (क्योंकि न्याय के उस भयानक दिन तुम्हें इसका उत्तर देना होगा, जब सभी हृदयों के रहस्य उजागर हो जाएँगे), कि यदि तुममें से किसी को भी कोई ऐसी बाधा ज्ञात हो जिसके कारण तुम कानूनी रूप से विवाह बंधन में नहीं बंध सकते, तो उसे अभी स्वीकार करो; क्योंकि यह अच्छी तरह जान लो कि जितने भी लोग परमेश्वर के वचन के विपरीत विवाह बंधन में बंधे हैं, वे परमेश्वर द्वारा नहीं बांधे गए हैं, और न ही उनका विवाह वैध है।”

वह रिवाज के मुताबिक रुक गया। उस वाक्य के बाद का विराम कभी उत्तर से टूटता है क्या? शायद सौ साल में एक बार भी नहीं। और पादरी, जिसने अपनी किताब से नज़रें नहीं हटाई थीं और एक पल के लिए ही अपनी सांस रोकी थी, आगे बढ़ रहा था: उसका हाथ पहले ही मिस्टर रोचेस्टर की ओर बढ़ चुका था, और उसके होंठ खुल कर पूछने ही वाले थे, "क्या आप इस स्त्री को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करेंगे?" - तभी एक स्पष्ट और नज़दीकी आवाज़ सुनाई दी -

“यह विवाह आगे नहीं बढ़ सकता: मैं एक बाधा की घोषणा करता हूँ।”

पादरी ने वक्ता की ओर देखा और चुपचाप खड़ा रहा; क्लर्क ने भी ऐसा ही किया; श्री रोचेस्टर थोड़ा सा हिले, मानो उनके पैरों तले भूकंप आ गया हो: मजबूती से खड़े होकर, बिना सिर या आँखें घुमाए, उन्होंने कहा, "आगे बढ़िए।"

जब उन्होंने गहरे लेकिन धीमे स्वर में वह शब्द कहा, तो चारों ओर गहरी शांति छा गई। कुछ देर बाद श्री वुड ने कहा—

"जो कुछ भी कहा गया है, उसकी जांच किए बिना और उसकी सत्यता या असत्यता के प्रमाण जुटाए बिना मैं आगे नहीं बढ़ सकता।"

"समारोह पूरी तरह से बाधित हो गया है," हमारे पीछे से एक आवाज़ आई। "मैं अपने आरोप को साबित करने की स्थिति में हूँ: इस विवाह में एक ऐसी बाधा है जिसे दूर नहीं किया जा सकता।"

श्री रोचेस्टर ने सुना तो सही, पर ध्यान नहीं दिया: वे हठपूर्वक और अकड़कर खड़े रहे, मेरे हाथ को थामे रखने के अलावा उन्होंने कोई हरकत नहीं की। उनकी पकड़ कितनी गर्म और मजबूत थी! और इस समय उनका पीला, दृढ़, विशाल चेहरा किसी तराशे हुए संगमरमर जैसा लग रहा था! उनकी आंखें चमक रही थीं, अभी भी चौकस, और फिर भी अंदर से उग्र!

श्री वुड असमंजस में लग रहे थे। उन्होंने पूछा, "बाधा किस प्रकार की है? शायद इसे दूर किया जा सकता है - इसका कोई स्पष्टीकरण दिया जा सकता है?"

“बिल्कुल नहीं,” जवाब मिला। “मैंने इसे दुर्गम कहा है, और मैंने सोच-समझकर ऐसा कहा है।”

वक्ता आगे आया और रेलिंग पर झुक गया। उसने प्रत्येक शब्द को स्पष्ट, शांत और स्थिर स्वर में, लेकिन बिना ज़ोर से बोले, बोलना जारी रखा।

“इसमें बस इतना ही शामिल है कि पहले एक शादी हो चुकी है। श्री रोचेस्टर की पत्नी अभी जीवित हैं।”

उन धीमी आवाज़ों से मेरी नसें ऐसे कांप उठीं जैसे गर्जना से कभी नहीं कांपी थीं —मेरे रक्त ने उनकी सूक्ष्म हिंसा को ऐसे महसूस किया जैसे ठंड या आग को कभी नहीं; लेकिन मैं संयमित थी, और बेहोश होने का कोई खतरा नहीं था। मैंने श्री रोचेस्टर को देखा: मैंने उन्हें भी मेरी ओर देखने पर मजबूर किया। उनका पूरा चेहरा रंगहीन चट्टान जैसा था: उनकी आंखें चिंगारी और पत्थर दोनों जैसी थीं। उन्होंने किसी बात से

इनकार नहीं किया: ऐसा लग रहा था मानो वे हर चीज को चुनौती दे रहे हों। बिना बोले, बिना मुस्कुराए, बिना मुझमें एक इंसान को पहचाने, उन्होंने बस अपनी बांह से मेरी कमर को जकड़ लिया और मुझे अपने से चिपका लिया।

“तुम कौन हो?” उसने घुसपैठिए से पूछा।

“मेरा नाम ब्रिग्स है, मैं लंदन की — - स्ट्रीट का एक सॉलिसिटर हूँ।”

और तुम मुझ पर पत्नी थोपोगे?

"अगर आप ऐसा नहीं मानते हैं, तो मैं आपको आपकी पत्नी के अस्तित्व की याद दिलाना चाहूंगा, महोदय, जिसे कानून मान्यता देता है।"

"कृपया मुझे उसके बारे में जानकारी दें—उसका नाम, उसके माता-पिता, उसका निवास स्थान।"

“ज़रूर।” श्री ब्रिग्स ने शांत भाव से अपनी जेब से एक कागज़ निकाला और एक औपचारिक, नाक से निकलने वाली आवाज़ में पढ़ा: —

मैं पुष्टि करता/करती हूँ और सिद्ध कर सकता/सकती हूँ कि 20 अक्टूबर, ई.स. (पंद्रह वर्ष पूर्व) को, इंग्लैंड के — काउंटी में थॉर्नफील्ड हॉल और — शायर में फर्नेडियन मैनर के निवासी एडवर्ड फेयरफैक्स रोचेस्टर का विवाह मेरी बहन बर्था एंटोइनेटा मेसन से हुआ था। बर्था मेसन व्यापारी जोनास मेसन और उनकी पत्नी एंटोइनेटा, जो एक क्रियोल थीं, की पुत्री थीं। विवाह समारोह जमैका के स्पैनिश टाउन स्थित — चर्च में संपन्न हुआ। विवाह का रिकॉर्ड उस चर्च के रजिस्टर में उपलब्ध है — इसकी एक प्रति मेरे पास है। हस्ताक्षर, रिचर्ड मेसन।

"यदि वह दस्तावेज प्रामाणिक है, तो यह साबित कर सकता है कि मेरा विवाह हुआ था, लेकिन यह साबित नहीं करता कि उसमें मेरी पत्नी के रूप में उल्लिखित महिला अभी भी जीवित है।"

“वह तीन महीने पहले जीवित थी,” वकील ने जवाब दिया।

"आपको कैसे मालूम?"

"मेरे पास इस तथ्य का एक गवाह है, जिसकी गवाही का खंडन आप भी शायद ही करेंगे।"

"उसे पेश करो - वरना नरक में जाओ।"

“मैं उसे पहले पेश करूंगा—वह मौके पर मौजूद है। श्री मेसन, कृपया आगे आएं।”

नाम सुनते ही श्री रोचेस्टर ने अपने दांत भींच लिए; उनके शरीर में एक तीव्र

कंपकंपी भी दौड़ गई; उनके पास होने के कारण मैंने उनके शरीर में क्रोध या निराशा की एक तीव्र हलचल महसूस की। दूसरा अजनबी, जो अब तक पृष्ठभूमि में रुका हुआ था, अब पास आ गया; एक पीला चेहरा वकील के कंधे के ऊपर से झाँका - जी हाँ, यह स्वयं मेसन था। श्री रोचेस्टर मुड़े और उसे घूरने लगे। जैसा कि मैंने अक्सर कहा है, उनकी आँख काली पड़ गई थी: अब उसमें एक भूरी, बल्कि खूनी चमक थी; और उनका चेहरा लाल हो गया - जैतून जैसे गाल और निर्मल माथे पर जैसे दिल की आग फैल रही हो और ऊपर उठ रही हो, वैसी ही चमक आ गई: और वे हिले, उन्होंने अपना मजबूत हाथ उठाया - वे मेसन पर प्रहार कर सकते थे, उसे गिरकर गिरजाघर के फर्श पर पटक सकते थे, एक निर्मम प्रहार से उसकी साँसें रोक सकते थे - लेकिन मेसन पीछे हट गया और धीमी आवाज़ में बोला, "हे भगवान!" श्री रोचेस्टर पर तिरस्कार का कोई असर नहीं हुआ—उनका जोश मानो किसी बीमारी से मुरझा गया हो: उन्होंने केवल पूछा— "तुम्हें क्या कहना है?"

मेसन के सफेद होठों से एक अस्पष्ट उत्तर निकला।

“अगर आप स्पष्ट जवाब नहीं दे सकते, तो मामला गंभीर है। मैं फिर पूछता हूँ, आपको क्या कहना है?”

“महोदय—महोदय,” पादरी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “यह मत भूलिए कि आप एक पवित्र स्थान पर हैं।” फिर मेसन से विनम्रतापूर्वक पूछा, “क्या आपको पता है, महोदय, कि इस सज्जन की पत्नी अभी जीवित हैं या नहीं?”

वकील ने आग्रह किया, "हिम्मत रखो, खुलकर बोलो।"

मेसन ने अधिक स्पष्ट स्वर में कहा, "वह अब थॉर्नफील्ड हॉल में रह रही है। मैंने उसे पिछले अप्रैल में वहां देखा था। मैं उसका भाई हूं।"

“थॉर्नफील्ड हॉल में!” पादरी ने हैरानी से कहा। “असंभव! मैं इस इलाके का पुराना निवासी हूँ, महोदय, और मैंने थॉर्नफील्ड हॉल में श्रीमती रोचेस्टर के बारे में कभी नहीं सुना।”

मैंने श्री रोचेस्टर के होठों पर एक गंभीर मुस्कान देखी, और उन्होंने कुछ बुदबुदाया —

“नहीं, भगवान की कसम! मैंने पूरा ध्यान रखा था कि किसी को इसके बारे में पता न चले—या उस नाम से उसके बारे में भी।” वह दस मिनट तक सोचता रहा—उसने खुद से विचार-विमर्श किया: उसने अपना संकल्प लिया और उसे घोषित कर दिया—

“बस करो! सब एक साथ बाहर निकलो, जैसे बंदूक से गोली निकलती है। वुड, अपनी किताब बंद करो और अपना चोगा उतार दो; जॉन ग्रीन (क्लर्क से), चर्च छोड़ दो: आज कोई शादी नहीं होगी।” उस आदमी ने बात मान ली।

श्री रोचेस्टर ने बड़े साहस और बेपरवाही से बोलना जारी रखा: “द्विविवाह एक घिनौना शब्द है! — मेरा इरादा तो द्विविवाह करने का था; लेकिन भाग्य ने मुझे मात दे दी, या ईश्वर ने मुझे रोक दिया, — शायद आखिरी वाला ही सही है। इस समय मैं शैतान से कुछ बेहतर नहीं हूँ; और, जैसा कि मेरे पादरी मुझे बताते हैं, मैं निस्संदेह ईश्वर के सबसे कठोर दंड का पात्र हूँ, यहाँ तक कि उस कभी न बुझने वाली आग और अमर कीड़े के दंड का भी। सज्जनों, मेरी योजना विफल हो गई है: — इस वकील और उसके मुवक्किल की बात सच है: मेरा विवाह हो चुका है, और जिस महिला से मेरा विवाह हुआ था वह जीवित है! आप कहते हैं कि आपने वुड, उस घर में श्रीमती रोचेस्टर के बारे में कभी नहीं सुना; लेकिन मुझे यकीन है कि आपने कई बार वहाँ निगरानी में रखी गई उस रहस्यमय पागल महिला के बारे में गपशप सुनी होगी। कुछ ने आपको फुसफुसाकर बताया होगा कि वह मेरी नाजायज सौतेली बहन है: कुछ ने, मेरी त्यागी हुई प्रेमिका। मैं अब आपको सूचित करता हूँ कि वह मेरी पत्नी है, जिससे मैंने पंद्रह साल पहले शादी की थी, — बर्था मेसन नाम की; इस महिला की बहन। दृढ़ निश्चयी व्यक्ति, जो अब अपने कांपते अंगों और सफेद गालों से दिखा रहा है कि पुरुष कितना मजबूत हृदय धारण कर सकते हैं। हिम्मत रखो, डिक! — मुझसे मत डरो! — मैं लगभग किसी औरत को मारने में उतना ही संकोच नहीं करूँगा जितना तुम्हें। बर्था मेसन पागल है; और वह एक पागल परिवार से आई है; तीन पीढ़ियों से मूर्ख और पागल लोग! उसकी माँ, जो क्रियोल थी, पागल और शराबी दोनों थी! — जैसा कि मुझे बेटी से शादी करने के बाद पता चला: क्योंकि वे पहले पारिवारिक रहस्यों पर चुप रहते थे। बर्था, एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह, दोनों मामलों में अपने माता-पिता की नकल करती थी। मेरी एक आकर्षक साथी थी — पवित्र, बुद्धिमान, विनम्र: आप कल्पना कर सकते हैं कि मैं एक खुशहाल इंसान था। मैंने समृद्ध दृश्य देखे! ओह! मेरा अनुभव स्वर्गिक रहा है, काश आप इसे जान पाते! लेकिन मुझे आपको और कुछ समझाने की ज़रूरत नहीं है। ब्रिग्स, वुड, मेसन, मैं आप सभी को घर आने और श्रीमती पूल के मरीज़ और मेरी पत्नी से मिलने के लिए आमंत्रित करता हूँ! आप देखेंगे कि किस तरह के इंसान से मुझे धोखे से शादी करनी पड़ी, और फैसला करेंगे

कि क्या मुझे समझौते को तोड़ने और कम से कम किसी मानवीय चीज़ के प्रति सहानुभूति जताने का अधिकार था। “यह लड़की,” उसने मेरी ओर देखते हुए कहा, “तुम्हारे जितना ही, वुड, इस घिनौने रहस्य के बारे में जानती थी: उसने सोचा था कि सब कुछ जायज़ और कानूनी है और उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उसे एक धोखेबाज़, दुष्ट व्यक्ति के साथ झूठे बंधन में बांध दिया जाएगा, जो पहले से ही एक बुरे, पागल और क्रूर साथी से बंधा हुआ था! तुम सब आओ—मेरे पीछे आओ!”

मुझे अभी भी कसकर पकड़े हुए, वह चर्च से बाहर निकल गया: तीनों सज्जन उसके पीछे आए। हॉल के सामने वाले दरवाजे पर हमें गाड़ी मिली।

“इसे कोचहाउस में वापस ले जाओ, जॉन,” श्री रोचेस्टर ने शांत स्वर में कहा; “आज इसकी आवश्यकता नहीं होगी।”

हमारे प्रवेश द्वार पर, श्रीमती फेयरफैक्स, एडेल, सोफी और लीह हमसे मिलने और हमारा अभिवादन करने के लिए आगे बढ़ीं।

“सब लोग इधर-उधर हो जाओ!” गुरुजी चिल्लाए; “बधाई देना बंद करो! इन्हें कौन चाहता है? मैं तो बिल्कुल नहीं! ये पंद्रह साल देर से आई हैं!”

वह आगे बढ़े और सीढ़ियाँ चढ़ गए, मेरा हाथ पकड़े हुए और उन सज्जनों को अपने पीछे आने का इशारा करते हुए, जिनका उन्होंने अनुसरण किया। हम पहली सीढ़ी चढ़े, गैलरी से होते हुए तीसरी मंजिल पर पहुँचे: श्री रोचेस्टर की मुख्य चाबी से खुला नीचा, काला दरवाजा हमें टेपेस्ट्री से सजे कमरे में ले गया, जिसमें एक बड़ा पलंग और चित्रों से सुसज्जित अलमारी थी।

"मेसन, तुम इस जगह को जानते हो," हमारे गाइड ने कहा; "उसने तुम्हें यहीं काटा और चाकू मारा था।"

उसने दीवार से पर्दे हटाए और दूसरा दरवाजा देखा; उसने उसे भी खोल दिया। बिना खिड़की वाले एक कमरे में, एक ऊँची और मजबूत दीवार से घिरी हुई आग जल रही थी, और छत से एक चेन से लटका हुआ एक दीपक था। ग्रेस पूल आग के ऊपर झुकी हुई थी, मानो किसी बर्तन में कुछ पका रही हो। कमरे के दूसरे छोर पर, घने अंधेरे में, एक आकृति इधर-उधर भाग रही थी। वह क्या था, जानवर था या इंसान, पहली नज़र में बताना मुश्किल था: वह चारों पैरों पर रेंगता हुआ प्रतीत हो रहा था; वह किसी अजीब जंगली जानवर की तरह झपट रहा था और गुर्रा रहा था; लेकिन वह कपड़ों से ढका हुआ था, और घने काले, भूरे बाल, जो किसी जानवर की गर्दन के

बालों की तरह बिखरे हुए थे, उसके सिर और चेहरे को ढके हुए थे।

“सुप्रभात, श्रीमती पूल!” श्री रोचेस्टर ने कहा। “आप कैसी हैं? और आज आपका काम कैसा चल रहा है?”

"हम सहनीय हैं, महोदय, धन्यवाद," ग्रेस ने उबलते हुए मिश्रण को सावधानीपूर्वक चूल्हे पर रखते हुए उत्तर दिया: "थोड़े चिड़चिड़े हैं, लेकिन उग्र नहीं हैं।"

एक भयंकर चीख ने उसकी अनुकूल रिपोर्ट को झूठा साबित कर दिया: कपड़े पहने हुए लकड़बग्घा उठ खड़ा हुआ और अपने पिछले पैरों पर सीधा खड़ा हो गया।

“अरे! महोदय, वह आपको देख रही है!” ग्रेस ने हैरानी से कहा: “आप यहाँ न रुकें तो बेहतर होगा।”

"बस कुछ पल, ग्रेस: आपको मुझे कुछ पल देने होंगे।"

“तो फिर अपना ख्याल रखिए, महोदय! — भगवान के लिए, अपना ख्याल रखिए!”

उस पागल औरत ने दहाड़ लगाई: उसने अपने बिखरे बालों को चेहरे से हटाया और अपने आगंतुकों को बेतहाशा घूरने लगी। मैंने उस बैंगनी चेहरे को, उन सूजे हुए नैन-नक्शों को अच्छी तरह पहचान लिया। श्रीमती पूल आगे बढ़ीं।

मिस्टर रोचेस्टर ने उसे एक तरफ धकेलते हुए कहा, "रास्ते से हट जाओ। मुझे लगता है कि अब उसके पास चाकू नहीं है, और मैं सतर्क हूं।"

"कोई नहीं जानता कि उसके पास क्या है, महोदय: वह इतनी चालाक है: उसकी धूर्तता को समझना मनुष्य के विवेक के बस की बात नहीं है।"

"हमें उसे यहीं छोड़ देना चाहिए," मेसन ने फुसफुसाते हुए कहा।

"भाड़ में जाओ!" यह उसके बहनोई की सलाह थी।

“‘सावधान!’” ग्रेस चिल्लाई। तीनों सज्जन एक साथ पीछे हट गए। मिस्टर रोचेस्टर ने मुझे अपने पीछे धकेल दिया: उस पागल औरत ने उछलकर उनका गला बुरी तरह पकड़ लिया और उनके गाल पर अपने दांत गड़ा दिए: वे जूझने लगे। वह एक बड़ी महिला थी, कद में लगभग अपने पति के बराबर और साथ ही मोटी भी: उसने लड़ाई में ज़बरदस्त ताकत दिखाई – एक से ज़्यादा बार उसने लगभग उनका गला घोंट दिया, जबकि वह फुर्तीले थे। वह एक ज़ोरदार मुक्के से उन्हें काबू कर सकते थे; लेकिन उन्होंने वार नहीं किया: वह सिर्फ़ कुश्ती लड़ते रहे। आखिरकार उन्होंने उनकी बाहों पर काबू पा लिया; ग्रेस पूल ने उन्हें एक रस्सी दी और उन्होंने उनकी बाहों को पीछे की

ओर जकड़ लिया: पास में पड़ी रस्सी से उन्होंने उन्हें एक कुर्सी से बांध दिया। यह सब ज़ोरदार चीखों और भयानक छटपटाहट के बीच हुआ। फिर मिस्टर रोचेस्टर दर्शकों की ओर मुड़े: उन्होंने उन्हें एक कड़वी और उदास मुस्कान के साथ देखा।

"यह मेरी पत्नी है," उसने कहा। "यही एकमात्र वैवाहिक आलिंगन है जिसे मैं कभी जान पाऊंगा—यही वो स्नेहपूर्ण शब्द हैं जो मेरे खाली समय को सुकून देंगे! और यही तो मैं चाहता था" (मेरा हाथ मेरे कंधे पर रखते हुए): "यह युवती, जो नरक के द्वार पर इतनी गंभीर और शांत खड़ी है, एक राक्षस की करतूतों को संयम से देख रही है, मैं उसे उस भयंकर अनुभव के बाद एक बदलाव के रूप में चाहता था। वुड और ब्रिग्स, अंतर देखिए! इन निर्मल आँखों की तुलना उस लाल आँसुओं से कीजिए—इस चेहरे की तुलना उस मुखौटे से—इस रूप की तुलना उस भारी-भरकम शरीर से; फिर मेरा न्याय कीजिए, हे धर्म के पुजारी और विधि के अनुयायी, और याद रखिए कि जिस न्याय से आप न्याय करेंगे, उसी से आपका भी न्याय किया जाएगा! अब आप यहाँ से चले जाइए। मुझे अपने इस पुरस्कार को छुपाना होगा।"

हम सब पीछे हट गए। श्री रोचेस्टर ग्रेस पूल को कुछ और निर्देश देने के लिए थोड़ी देर हमारे पीछे रुके। सीढ़ियों से उतरते हुए उन्होंने मुझसे बात की।

"आप, महोदया," उसने कहा, "सभी आरोपों से मुक्त हैं: आपके चाचा यह सुनकर प्रसन्न होंगे - यदि वास्तव में, वह तब तक जीवित हों - जब श्री मेसन मदीरा लौटेंगे।"

"मेरे चाचा! उनका क्या हुआ? क्या आप उन्हें जानते हैं?"

"श्री मेसन ऐसा करते हैं। श्री आयर कई वर्षों से उनके घर के फुंचाल संवाददाता रहे हैं। जब आपके चाचा को आपका पत्र मिला जिसमें आपने श्री रोचेस्टर के साथ अपने संभावित विवाह की सूचना दी थी, तो जमैका लौटते समय मदीरा में स्वास्थ्य लाभ के लिए ठहरे श्री मेसन संयोगवश उनके साथ थे। श्री आयर ने इस खबर का जिक्र किया; क्योंकि वे जानते थे कि मेरे मुवक्किल रोचेस्टर नाम के एक सज्जन से परिचित थे। श्री मेसन, जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, आश्चर्यचकित और दुखी होकर, उन्होंने वास्तविक स्थिति बताई। मुझे यह कहते हुए खेद है कि आपके चाचा इस समय बीमार बिस्तर पर हैं; उनकी बीमारी की प्रकृति - गिरावट - और जिस अवस्था तक यह पहुँच चुकी है, उसे देखते हुए, यह संभावना नहीं है कि वे कभी ठीक हो पाएंगे। वे स्वयं आपको उस जाल से निकालने के लिए इंग्लैंड नहीं आ सके जिसमें

आप फंस गई थीं, लेकिन उन्होंने श्री मेसन से इस झूठे विवाह को रोकने के लिए तुरंत कदम उठाने का आग्रह किया। उन्होंने सहायता के लिए उन्हें मेरे पास भेजा। मैंने पूरी तत्परता दिखाई, और मैं आभारी हूँ कि मुझे देर नहीं हुई: जैसा कि आप, निःसंदेह, ऐसा ही होगा। यदि मुझे यह नैतिक रूप से निश्चित न होता कि मदीरा पहुँचने से पहले आपके चाचा की मृत्यु हो जाएगी, तो मैं आपको श्री मेसन के साथ वापस जाने की सलाह देता; लेकिन अभी स्थिति यह है कि मुझे लगता है कि जब तक आपको श्री आयर से कोई और जानकारी न मिल जाए, तब तक आपको इंग्लैंड में ही रहना चाहिए। क्या हमें और किसी कारण से रुकना है?" उन्होंने श्री मेसन से पूछा।

"नहीं, नहीं—चलिए चलते हैं," चिंतित होकर उन्होंने जवाब दिया; और श्री रोचेस्टर से विदा लिए बिना ही वे हॉल के दरवाजे से बाहर निकल गए। पादरी ने अपने अभिमानी अनुयायी से कुछ देर तक उपदेश या फटकार लगाई; यह कार्य पूरा करके वे भी चले गए।

जब मैं अपने कमरे के आधे खुले दरवाजे पर खड़ी थी, जिसमें मैं अब खुद को समेट चुकी थी, तब मैंने उसे जाते हुए सुना। घर खाली हो गया, मैंने खुद को अंदर बंद कर लिया, कुंडी लगा दी ताकि कोई अंदर न आ सके, और आगे बढ़ी - रोने के लिए नहीं, शोक मनाने के लिए नहीं, मैं अभी इसके लिए बहुत शांत थी, बल्कि - यंत्रवत रूप से शादी का गाउन उतारा, और उसकी जगह वह सूती गाउन पहन लिया जिसे मैंने कल पहना था, मानो आखिरी बार। फिर मैं बैठ गई: मैं कमजोर और थकी हुई महसूस कर रही थी। मैंने अपनी बाहें एक मेज पर टिका दीं, और अपना सिर उन पर रख दिया। और अब मैंने सोचा: अब तक मैंने केवल सुना था, देखा था, चली थी - जहाँ मुझे ले जाया गया या घसीटा गया, वहाँ ऊपर-नीचे गई थी - घटनाओं को तेजी से होते देखा था, खुलासे होते हुए देखे थे: लेकिन अब, मैंने सोचा।

सुबह काफ़ी शांत रही थी—सिवाय उस पागल व्यक्ति के साथ हुए संक्षिप्त घटनाक्रम के: चर्च में हुई घटना शोरगुल भरी नहीं थी; न ही कोई आवेश का विस्फोट हुआ, न कोई ज़ोरदार कहा-सुनी हुई, न कोई विवाद हुआ, न कोई अवज्ञा या चुनौती हुई, न कोई आँसू, न कोई सिसकियाँ: कुछ शब्द बोले गए, विवाह पर शांत भाव से आपत्ति जताई गई; श्री रोचेस्टर ने कुछ कड़े, संक्षिप्त प्रश्न पूछे; उत्तर दिए गए, स्पष्टीकरण दिए गए, सबूत पेश किए गए; मेरे स्वामी ने सच्चाई को खुले तौर पर स्वीकार किया; फिर जीता-जागता सबूत देखा गया; घुसपैठिए चले गए, और सब कुछ

समाप्त हो गया।

मैं हमेशा की तरह अपने कमरे में थी—सिर्फ मैं, बिना किसी स्पष्ट बदलाव के: मुझ पर किसी चीज़ का कोई असर नहीं हुआ था, न ही कोई चोट आई थी, न ही कोई नुकसान हुआ था। फिर भी कल वाली जेन आयर कहाँ थी?—उसका जीवन कहाँ था?—उसके भविष्य के क्या आसार थे?

जेन आयर, जो कभी एक उत्साही, आशावान महिला थी—लगभग दुल्हन जैसी—फिर से एक ठंडी, अकेली लड़की बन गई थी: उसका जीवन फीका पड़ गया था; उसकी संभावनाएं अंधकारमय थीं। ग्रीष्म ऋतु के बीच में ही क्रिसमस जैसी ठंड पड़ गई थी; जून में दिसंबर जैसा सफेद तूफान आ गया था; पके सेब बर्फ से जम गए थे, बर्फ के ढेर ने खिलते गुलाबों को कुचल दिया था; घास के मैदानों और मक्के के खेतों पर बर्फ की चादर बिछी थी: जो गलियां कल रात फूलों से खिली थीं, आज बर्फ से ढकी थीं और उन पर कोई चला नहीं था; और जो जंगल बारह घंटे पहले उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के बीच के उपवनों की तरह हरे-भरे और सुगंधित थे, अब उजाड़, जंगली और बर्फीले नॉर्वे के चीड़ के जंगलों की तरह सफेद फैले हुए थे। मेरी सारी आशाएं मर चुकी थीं—एक ऐसी व्यथा से त्रस्त, जैसी एक ही रात में मिस्र देश के सभी प्रथमजात बच्चों पर आ गिरी थी। मैंने अपनी उन प्यारी इच्छाओं को देखा, जो कल तक खिली-खिली और दमकती हुई थीं; वे अब ठंडी, निर्जीव लाशों की तरह पड़ी थीं, जो कभी पुनर्जीवित नहीं हो सकती थीं। मैंने अपने प्रेम को देखा: वह भावना जो मेरे स्वामी की थी—जिसे उन्होंने ही जन्म दिया था; वह मेरे हृदय में एक ठंडे पालने में तड़पते बच्चे की तरह कांप रही थी; बीमारी और पीड़ा ने उसे जकड़ लिया था; वह श्री रोचेस्टर की बाहों में नहीं जा सकती थी—उनकी छाती से गर्माहट नहीं पा सकती थी। ओह, अब वह कभी उनकी ओर मुड़ नहीं सकती थी; क्योंकि विश्वास चकनाचूर हो गया था—विश्वास नष्ट हो गया था! श्री रोचेस्टर मेरे लिए वह नहीं थे जो पहले थे; क्योंकि वह वह नहीं थे जो मैंने उन्हें समझा था। मैं उन पर दोष नहीं लगाऊंगी; मैं यह नहीं कहूंगी कि उन्होंने मुझे धोखा दिया; लेकिन उनके मन से निर्मल सत्य का गुण गायब हो गया था, और मुझे उनकी उपस्थिति से दूर जाना होगा: यह मैं अच्छी तरह समझ गई थी। कब—कैसे—कहाँ, मैं अभी तक नहीं समझ पा रही थी; लेकिन मुझे पूरा विश्वास था कि वह मुझे थॉर्नफील्ड से जल्दी ले जाएंगे। ऐसा लगता था कि उनके मन में मेरे लिए सच्चा स्नेह नहीं था; वह केवल क्षणिक जुनून था: जो अब रुक गया

था; वह अब मुझे नहीं चाहेंगे। अब तो मुझे उनके रास्ते में आने से भी डर लगेगा: मेरा दिखना उनके लिए घृणास्पद होगा। ओह, मेरी आंखें कितनी अंधी थीं! मेरा आचरण कितना कमजोर था!

मेरी आँखें ढकी और बंद थीं: मेरे चारों ओर घूमता हुआ अंधकार तैरता हुआ प्रतीत हो रहा था, और प्रतिबिंब एक काले और उलझे हुए प्रवाह की तरह आ रहे थे। आत्म-त्यागी, शिथिल और सहज, ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी विशाल नदी के सूखे तल पर लेट गया हूँ; मैंने दूर पहाड़ों में बाढ़ की आवाज सुनी और उस प्रचंड धारा को आते हुए महसूस किया: उठने की मुझमें कोई इच्छा नहीं थी, भागने की मुझमें कोई शक्ति नहीं थी। मैं बेहोश पड़ा था, मरने की लालसा कर रहा था। केवल एक विचार ही मेरे भीतर जीवन की तरह धड़क रहा था - ईश्वर का स्मरण: इसने एक अनकही प्रार्थना को जन्म दिया: ये शब्द मेरे प्रकाशहीन मन में इधर-उधर भटक रहे थे, मानो कुछ फुसफुसाया जाना चाहिए, लेकिन उन्हें व्यक्त करने की कोई ऊर्जा नहीं थी।

“मुझसे दूर मत रहो, क्योंकि मुसीबत करीब है: मदद करने वाला कोई नहीं है।”

वह निकट था: और चूंकि मैंने उसे टालने के लिए स्वर्ग से कोई प्रार्थना नहीं की थी — चूंकि मैंने न तो हाथ जोड़े थे, न घुटने टेके थे, न होंठ हिलाए थे—वह आ गया: पूरी ताकत से बाढ़ मुझ पर बह गई। मेरे जीवन के क्षीण होने, मेरे प्रेम के खो जाने, मेरी आशा के बुझ जाने, मेरे विश्वास के मृत्यु के कगार पर पहुँचने की पूरी चेतना एक उदास समूह के रूप में मेरे ऊपर पूरी शक्ति से मंडरा रही थी। उस कड़वे पल का वर्णन नहीं किया जा सकता: वास्तव में, “पानी मेरी आत्मा में समा गया; मैं गहरे कीचड़ में डूब गया: मुझे खड़े होने की शक्ति नहीं थी; मैं गहरे पानी में आ गया; बाढ़ ने मुझे बहा दिया।”

अध्याय XXVII

दोपहर के समय मैंने अपना सिर उठाया और चारों ओर देखते हुए पश्चिम की ओर से आती धूप को दीवार पर ढलते सूरज की सुनहरी रोशनी बिखेरते हुए देखकर मैंने पूछा, "मुझे क्या करना चाहिए?"

लेकिन मेरे मन ने जो जवाब दिया— “थॉर्नफील्ड को तुरंत छोड़ दो”—वह इतना तीव्र और भयानक था कि मैंने अपने कान बंद कर लिए। मैंने कहा कि मैं अब ऐसे शब्द सहन नहीं कर सकती। मैंने कहा, “मैं एडवर्ड रोचेस्टर की दुल्हन नहीं हूँ, यह तो मेरे दुख का सबसे छोटा हिस्सा है: मैं अपने सबसे शानदार सपनों से जाग उठी हूँ और उन्हें व्यर्थ और निरर्थक पाया है, यह एक ऐसा भय है जिसे मैं सहन कर सकती हूँ और उस पर काबू पा सकती हूँ; लेकिन मुझे उसे निश्चित रूप से, तुरंत, पूरी तरह से छोड़ना होगा, यह असहनीय है। मैं ऐसा नहीं कर सकती।”

लेकिन तभी मेरे भीतर से एक आवाज़ आई कि मैं यह कर सकती हूँ और भविष्यवाणी की कि मुझे यह करना ही होगा। मैं अपने संकल्प से जूझ रही थी: मैं कमज़ोर होना चाहती थी ताकि आगे आने वाले भयानक कष्टों से बच सकूँ; और अंतरात्मा, जो अत्याचारी बन चुकी थी, ने वासना का गला थाम लिया, उसे ताना मारते हुए कहा कि उसने अभी तक दलदल में अपना कोमल पैर ही रखा है, और कसम खाई कि वह अपने लोहे के हाथ से उसे पीड़ा की अथाह गहराई में धकेल देगा।

“मुझे यहाँ से अलग कर दिया जाए,” फिर मैं रो पड़ी। “कोई और मेरी मदद करे!”

“नहीं; तुम स्वयं को अलग कर लोगे, कोई तुम्हारी सहायता नहीं करेगा: तुम स्वयं अपनी दाहिनी आँख निकाल लोगे; स्वयं अपना दाहिना हाथ काट लोगे: तुम्हारा हृदय बलि का बकरा होगा, और तुम ही उसे भेदने वाले पुजारी होगे।”

मैं अचानक उठ खड़ी हुई, उस निर्दयी न्यायाधीश के सन्नाटे और उस भयानक आवाज़ की खामोशी से मैं भयभीत थी। सीधा खड़े होते ही मेरा सिर चकराने लगा। मुझे एहसास हुआ कि मैं उत्तेजना और कमजोरी के कारण बीमार पड़ रही थी; उस दिन मैंने नाश्ता नहीं किया था, इसलिए न कुछ खाया था न पिया था। और एक अजीब सी पीड़ा के साथ, मुझे याद आया कि इतने लंबे समय से यहाँ बंद रहने के बावजूद, किसी ने भी मेरा हालचाल नहीं पूछा था, न ही मुझे नीचे आने का न्योता दिया था: छोटी एडेल ने भी दरवाज़ा नहीं खटखटाया था; श्रीमती फेयरफैक्स ने भी मुझे नहीं ढूँढा था। "दोस्त हमेशा उन्हें भूल जाते हैं जिन्हें किस्मत छोड़ देती है," मैंने बुदबुदाते हुए कुंडी खोली और बाहर निकल गई। मैं एक बाधा से टकरा गई: मेरा सिर

अभी भी चकरा रहा था, मेरी नज़र धुंधली थी और मेरे हाथ-पैर कमज़ोर थे। मैं जल्दी संभल नहीं पाई। मैं गिर पड़ी, लेकिन ज़मीन पर नहीं: एक फैली हुई बांह ने मुझे थाम लिया। मैंने ऊपर देखा - मुझे श्री रोचेस्टर का सहारा मिला हुआ था, जो मेरे कमरे की दहलीज के पार एक कुर्सी पर बैठे थे।

"आखिरकार तुम बाहर आ ही गई," उसने कहा। "अच्छा, मैं तुम्हारा लंबे समय से इंतज़ार कर रहा था, सुन रहा था: फिर भी मुझे एक भी हलचल या सिसकी सुनाई नहीं दी: अगर पाँच मिनट और यह मौत जैसी खामोशी रहती, तो मैं चोर की तरह ताला तोड़ देता। तो तुम मुझसे दूर भाग रही हो? – तुम खुद को बंद करके अकेले शोक मना रही हो! काश तुम आती और मुझे खरी-खोटी सुनाती। तुम भावुक हो। मुझे किसी तरह के दृश्य की उम्मीद थी। मैं आँसुओं की गर्म बारिश के लिए तैयार था; बस मैं चाहता था कि वे मेरे सीने पर बहें: अब एक बेजान ज़मीन ने उन्हें ग्रहण किया है, या तुम्हारे भीगे हुए रूमाल ने। लेकिन मैं गलत था: तुम बिल्कुल नहीं रोई! मुझे एक सफेद गाल और एक धुंधली आँख दिखाई दे रही है, लेकिन आँसुओं का कोई निशान नहीं। तो क्या मैं मान लूँ, तुम्हारा दिल खून के आँसू रो रहा है?"

"अच्छा, जेन! एक भी शिकायत का शब्द नहीं? कुछ भी कड़वा नहीं—कुछ भी मार्मिक नहीं? कुछ भी ऐसा नहीं जो किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाए या किसी के जुनून को भड़काए? तुम चुपचाप वहीं बैठी हो जहाँ मैंने तुम्हें बिठाया है, और मुझे एक थकी हुई, उदासीन नज़र से देख रही हो।"

"जेन, मेरा इरादा तुम्हें इस तरह चोट पहुँचाने का बिल्कुल नहीं था। अगर वह आदमी, जिसके पास एक छोटी सी मेमना थी, जो उसे बेटी की तरह प्यारी थी, जो उसी के साथ रोटी खाती थी, उसी के साथ पानी पीती थी और उसी की गोद में सोती थी, किसी गलती से उसे कसाईखाने में मार देता, तो उसे भी अपनी इस खूनी गलती पर उतना पछतावा नहीं होता जितना मुझे हो रहा है। क्या तुम मुझे कभी माफ़ करोगी?"

पाठक, मैंने उसे उसी क्षण और उसी जगह पर क्षमा कर दिया। उसकी आँखों में इतना गहरा पश्चाताप था, उसकी आवाज़ में इतनी सच्ची करुणा थी, उसके हावभाव में इतनी मर्दाना ऊर्जा थी; और इसके अलावा, उसके पूरे चेहरे और हावभाव में इतना अटूट प्रेम था - मैंने उसे पूरी तरह से क्षमा कर दिया: लेकिन शब्दों में नहीं, बाहरी रूप से नहीं; केवल अपने हृदय की गहराई में।

“क्या तुम जानती हो कि मैं एक बदमाश हूँ, जेन?” कुछ देर बाद उसने उदास स्वर में पूछा—शायद मेरी लगातार चुप्पी और विनम्रता पर आश्चर्य करते हुए, जो इच्छाशक्ति से अधिक कमजोरी का परिणाम थी।

"जी श्रीमान।"

"तो मुझे साफ-साफ और तीखे शब्दों में बताओ—मुझे बख्शो मत।"

“मैं नहीं कर सकती: मैं थकी हुई और बीमार हूँ। मुझे पानी चाहिए।” उसने एक गहरी आह भरी और मुझे बाहों में उठाकर नीचे ले गया। पहले तो मुझे पता ही नहीं चला कि वह मुझे किस कमरे में ले गया है; मेरी धुंधली नज़रों से सब कुछ साफ़ नहीं दिख रहा था: तभी मुझे आग की गर्माहट महसूस हुई; क्योंकि गर्मी का मौसम था और मैं अपने कमरे में बर्फ़ की तरह ठंडी हो गई थी। उसने मेरे होठों पर शराब लगाई; मैंने उसे चखा और तरोताज़ा हो गई; फिर मैंने कुछ खाया जो उसने मुझे दिया और मैं तुरंत ठीक हो गई। मैं पुस्तकालय में थी—उसकी कुर्सी पर बैठी थी—वह बिल्कुल पास था। “अगर मैं अब बिना ज़्यादा तकलीफ़ के इस दुनिया से चली जाऊँ, तो अच्छा होगा,” मैंने सोचा; “तब मुझे मिस्टर रोचेस्टर से अलग होने के लिए अपने दिल के तार तोड़ने की कोशिश नहीं करनी पड़ेगी। लगता है मुझे उसे छोड़ना ही होगा। मैं उसे छोड़ना नहीं चाहती—मैं उसे छोड़ नहीं सकती।”

“अब कैसी हो, जेन?”

“अब बहुत बेहतर हूँ, महोदय; मैं जल्द ही ठीक हो जाऊँगा।”

"जेन, वाइन का स्वाद फिर से चखो।"

मैंने उसकी बात मान ली; फिर उसने गिलास मेज पर रखा, मेरे सामने खड़ा हुआ और मुझे ध्यान से देखने लगा। अचानक वह किसी भावुकता से भरी अस्पष्ट आवाज़ में मुँह फेरकर चला गया; वह कमरे में तेज़ी से चला गया और वापस आया; वह मेरी ओर झुका मानो मुझे चूमना चाहता हो; लेकिन मुझे याद आया कि अब स्पर्श करना मना था। मैंने अपना चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया और उसका चेहरा एक तरफ़ हटा दिया।

“क्या! — ये कैसे हो रहा है?” उसने हड़बड़ी में कहा। “ओह, मुझे पता चल गया! तुम बर्था मेसन के पति को चूम नहीं सकतीं? तुम मेरी बाहों को भरा हुआ और मेरे आलिंगन को अपना समझ रही हो?”

"खैर, मेरे लिए यहाँ न तो कोई जगह है और न ही कोई दावा है, महोदय।"

“क्यों, जेन? मैं आपको ज्यादा बोलने की परेशानी से बचाऊंगा; मैं आपके लिए जवाब दे दूंगा — क्योंकि मेरी पहले से ही एक पत्नी है, आप जवाब देंगी। — क्या मैं सही अनुमान लगा रही हूँ?”

"हाँ।"

“अगर तुम ऐसा सोचती हो, तो मेरे बारे में तुम्हारी राय बहुत अजीब होगी; तुम मुझे एक षड्यंत्रकारी, अय्याश, नीच और अय्याश समझती होगी, जिसने निस्वार्थ प्रेम का दिखावा करके तुम्हें जानबूझकर बिछाए जाल में फंसाया है, और तुम्हारा मान-सम्मान छीन लिया है। इस पर तुम्हारा क्या कहना है? मैं देख रही हूँ कि तुम कुछ कह नहीं सकती, पहली बात तो यह है कि तुम अभी भी कमजोर हो, और साँस लेने के लिए भी काफी कुछ करना बाकी है; दूसरी बात, तुम अभी तक मुझ पर आरोप लगाने और मुझे बुरा-भला कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाई हो, और इसके अलावा, आँसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा है, और अगर तुमने ज्यादा बोला तो वे बह निकलेंगे; और तुम्हें बहस करने, डांटने, हंगामा करने की कोई इच्छा नहीं है: तुम सोच रही हो कि क्या करना है - तुम्हें लगता है कि बात करना बेकार है। मैं तुम्हें जानती हूँ - मैं सतर्क हूँ।”

“महोदय, मैं आपके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं करना चाहता,” मैंने कहा; और मेरी कांपती हुई आवाज ने मुझे अपने वाक्य को संक्षिप्त करने की चेतावनी दी।

“तुम्हारे अर्थ में नहीं, बल्कि मेरे अर्थ में तुम मुझे बर्बाद करने की साजिश रच रही हो। तुमने मानो कह ही दिया है कि मैं शादीशुदा हूँ—एक शादीशुदा आदमी होने के नाते तुम मुझसे दूर रहोगी, मेरे रास्ते से हट जाओगी: अभी तुमने मुझे चूमने से इनकार कर दिया है। तुम मुझसे पूरी तरह अजनबी बनने का इरादा रखती हो: इस छत के नीचे केवल एडेल की देखभाल करने वाली बनकर रहना चाहती हो; अगर कभी मैंने तुमसे कोई दोस्ताना बात कही, अगर कभी तुम्हारे मन में मेरे लिए फिर से कोई दोस्ताना भावना जागी, तो तुम कहोगी,— ‘उस आदमी ने तो मुझे लगभग अपनी रखैल बना ही लिया था: मुझे उसके लिए बर्फ और पत्थर की तरह सख्त रहना होगा;’ और तुम उसी के अनुसार बर्फ और पत्थर की तरह सख्त हो जाओगी।”

मैंने अपने स्वर को संवारते हुए और स्थिर करते हुए उत्तर दिया: "महोदय, मुझमें सब कुछ बदल गया है; मुझे भी बदलना होगा - इसमें कोई संदेह नहीं है; और भावनाओं के उतार-चढ़ाव और यादों और धारणाओं के साथ निरंतर संघर्ष से बचने के लिए, केवल एक ही उपाय है - एडेल के लिए एक नई गवर्नेंस होनी चाहिए, महोदय।"

"ओह, एडेल स्कूल जाएगी—यह तो मैंने पहले ही तय कर लिया है; और मैं तुम्हें थॉर्नफील्ड हॉल की भयानक यादों और अनुभवों से परेशान नहीं करना चाहती—यह शापित जगह—अचान का यह तंबू—यह अभिमानी तहखाना, जो खुले आसमान के नीचे भी जीवित मृत्यु का खौफनाक मंजर पेश करता है—यह संकरा पत्थर का नरक, जिसमें एक असली शैतान है, जो हमारी कल्पना से भी कहीं ज़्यादा भयानक है। जेन, तुम यहाँ नहीं रहोगी, न ही मैं। तुम्हें थॉर्नफील्ड हॉल लाना मेरी गलती थी, क्योंकि मुझे पता था कि यह जगह भूतिया है। मैंने तुम्हें देखने से पहले ही उन्हें निर्देश दिया था कि वे तुमसे इस जगह के श्राप के बारे में सारी जानकारी छुपाएँ; सिर्फ इसलिए कि मुझे डर था कि अगर एडेल को पता चल जाए कि उसे किसके साथ रखा गया है, तो उसे कभी कोई गवर्नेंस नहीं मिलेगी, और मेरी योजनाएँ मुझे उस पागल को कहीं और ले जाने की इजाज़त नहीं देतीं—हालाँकि मेरे पास एक पुराना घर है, फर्नेडियन मैनर, जो इससे भी ज़्यादा एकांत और छिपा हुआ है, जहाँ मैं उसे सुरक्षित रूप से रख सकती थी, अगर मुझे इस बारे में कोई झिझक न होती।" घने जंगल के बीचोंबीच स्थित उस स्थान की अस्वस्थता ने मेरे अंतरात्मा को इस व्यवस्था से विमुख कर दिया। शायद उन नम दीवारों ने मुझे जल्द ही उसके आरोप से मुक्त कर दिया होता: लेकिन हर खलनायक की अपनी बुराई होती है; और मेरी प्रवृत्ति अप्रत्यक्ष हत्या करने की नहीं है, यहाँ तक कि उस चीज़ की भी जिससे मुझे सबसे ज़्यादा नफ़रत है।

"उस पागल औरत के मोहल्ले को तुमसे छिपाना, मानो किसी बच्चे को चादर ओढ़ाकर किसी उपास के पेड़ के पास लिटाने जैसा था: उस शैतान का इलाका ज़हरीला है, और हमेशा से रहा है। लेकिन मैं थॉर्नफील्ड हॉल को बंद कर दूंगा: मैं सामने का दरवाज़ा कीलों से ठोक दूंगा और नीचे की खिड़कियों पर तख्ते लगा दूंगा: मैं श्रीमती पूल को यहाँ मेरी पत्नी के साथ रहने के लिए सालाना दो सौ रुपये दूंगा, जैसा कि तुम उस भयानक चुड़ैल को कहते हो: ग्रेस पैसे के लिए बहुत कुछ करेगी, और उसका बेटा, ग्रिम्सबी रिट्रीट का रखवाला, उसका साथ देगा और उसके दौरे के समय उसकी मदद के लिए मौजूद रहेगा, जब मेरी पत्नी को उसके साथी द्वारा रात में लोगों को उनके बिस्तरों में जलाने, उन्हें चाकू मारने, उनकी हड्डियों से मांस नोचने आदि के लिए उकसाया जाता है —"

मैंने उन्हें बीच में ही रोकते हुए कहा, "महोदय, आप उस अभागी महिला के प्रति निर्दयी हैं: आप उसके बारे में घृणा से, प्रतिशोधी द्वेष से बात करते हैं। यह क्रूरता है -

वह पागल होने से बच नहीं सकती।"

“जेन, मेरी प्यारी (मैं तुम्हें इसी नाम से पुकारूँगी, क्योंकि तुम हो ही), तुम्हें पता नहीं है कि तुम क्या कह रही हो; तुमने मुझे फिर गलत समझा: मैं उससे इसलिए नफरत नहीं करती क्योंकि वह पागल है। अगर तुम पागल होतीं, तो क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुमसे नफरत करती?”

जी हाँ, महोदय।

“तो तुम गलतफहमी में हो, और तुम मेरे बारे में कुछ नहीं जानते, न ही उस तरह के प्यार के बारे में जो मैं कर सकता हूँ। तुम्हारे शरीर का हर कण मुझे उतना ही प्यारा है जितना मेरा अपना: दर्द और बीमारी में भी यह उतना ही प्यारा रहेगा। तुम्हारा मन मेरा खजाना है, और अगर यह टूट भी जाए, तो भी यह मेरा खजाना रहेगा: अगर तुम गुस्से में पागल हो जाओ, तो मेरी बाहें तुम्हें जकड़ लेंगी, न कि कोई तंग जैकेट— तुम्हारा आलिंगन, क्रोध में भी, मेरे लिए आकर्षक होगा: अगर तुम मुझ पर उस औरत की तरह बेतहाशा टूट पड़ो, तो मैं तुम्हें गले लगा लूँगा, कम से कम उतना ही प्यार से जितना कि वह बंधनकारी होगा। मैं तुमसे घृणा से दूर नहीं हटूँगा जैसा कि मैं उससे हटा था: तुम्हारे शांत पलों में तुम्हारे पास मेरे सिवा कोई देखने वाला या देखभाल करने वाला नहीं होगा; और मैं अथक कोमलता से तुम्हारे ऊपर मंडराता रहूँगा, भले ही तुम बदले में मुझे कोई मुस्कान न दो; और तुम्हारी आँखों में देखते-देखते कभी नहीं थकूँगा, भले ही उनमें अब मेरे लिए पहचान की कोई किरण न हो। — लेकिन मैं इन विचारों की श्रृंखला का पीछा क्यों कर रहा हूँ? मैं तुम्हें थॉर्नफील्ड से हटाने की बात कर रहा था। तुम जानती हो, मैं तुरंत जाने के लिए तैयार हूँ: कल तुम चली जाओगी। मैं तुमसे बस इतना ही अनुरोध करता हूँ कि तुम इस छत के नीचे एक और रात सह लो, जेन; और फिर, इसके दुखों और भय को हमेशा के लिए अलविदा! मुझे एक ऐसी जगह जाना है, जो मुझे घृणित यादों, अवांछित दखलअंदाजी—यहाँ तक कि झूठ और बदनामी से भी सुरक्षित रखेगी।

“और एडेल को भी अपने साथ ले जाइए, महोदय,” मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा; “वह आपकी साथी होगी।”

“जेन, तुम्हारा क्या मतलब है? मैंने तुमसे कहा था कि मैं एडेल को स्कूल भेज दूँगी; और मुझे एक साथी के रूप में किसी बच्चे की क्या ज़रूरत है, वो भी अपने बच्चे की नहीं, बल्कि एक फ्रांसीसी नर्तकी की नाजायज़ औलाद की? तुम उसके बारे में

मुझसे क्यों ज़िद कर रही हो! मैं कहती हूँ, तुम एडेल को मेरे साथी के रूप में क्यों सौंप रही हो?”

"आपने सेवानिवृत्ति की बात की थी, महोदय; और सेवानिवृत्ति और एकांत नीरस होते हैं: आपके लिए बहुत नीरस।"

“एकांत! एकांत!” उसने चिढ़कर दोहराया। “लगता है मुझे स्पष्टीकरण देना पड़ेगा। मुझे नहीं पता तुम्हारे चेहरे पर ये कैसा भाव उभर रहा है। तुम्हें मेरे एकांत में रहना होगा। समझे?”

मैंने अपना सिर हिलाया: वह जिस तरह से उत्तेजित हो रहा था, उस मौन विरोध को व्यक्त करने के लिए भी साहस की आवश्यकता थी। वह कमरे में तेज़ी से चल रहा था, और अचानक रुक गया, मानो एक ही जगह जम गया हो। उसने मुझे देर तक घूरकर देखा: मैंने अपनी नज़रें उससे हटाकर आग पर टिका दीं, और शांत, संयमित दिखने की कोशिश की।

“अब जेन के चरित्र में जो पेचीदगी है,” उसने आखिरकार कहा, उसकी आवाज़ में जितना भाव था, उससे कहीं ज़्यादा शांति थी। “अब तक तो सब ठीक चल रहा था; पर मुझे हमेशा से पता था कि कोई न कोई उलझन और पहेली ज़रूर आएगी: और ये रही वो। अब तो झुंझलाहट, गुस्सा और अंतहीन मुसीबत का समय है! हे भगवान! काश मैं सैमसन की थोड़ी सी ताकत लगाकर इस उलझन को धागे की तरह तोड़ पाता!”

उसने दोबारा चलना शुरू किया, लेकिन थोड़ी देर बाद फिर रुक गया, और इस बार मेरे ठीक सामने।

“जेन! क्या तुम मेरी बात सुनोगी?” (वह झुका और अपने होंठ मेरे कान के पास लाया); “क्योंकि, अगर तुम नहीं मानोगी, तो मैं हिंसा का सहारा लूँगा।” उसकी आवाज़ कर्कश थी; उसका चेहरा एक ऐसे व्यक्ति का था जो असहनीय बंधन को तोड़कर बेलगाम हो जाएगा। मैंने देखा कि एक और पल में, और उन्माद के एक और झटके के साथ, मैं उसके साथ कुछ भी नहीं कर पाऊँगी। वर्तमान क्षण—समय का बीतता हुआ पल—ही मेरे पास उसे नियंत्रित और संयमित करने का एकमात्र साधन था—घृणा, पलायन, भय का एक भी प्रयास मेरी और उसकी दोनों की मृत्यु का कारण बन जाता। लेकिन मैं डरी नहीं थी: ज़रा भी नहीं। मैंने एक आंतरिक शक्ति का अनुभव किया; एक प्रभाव का एहसास, जिसने मुझे सहारा दिया। संकट खतरनाक

था; लेकिन उसमें एक आकर्षण भी था: शायद वैसा ही जैसा एक भारतीय अपनी डोंगी में तेज़ धारा को पार करते समय महसूस करता है। मैंने उसकी मुट्ठी पकड़ी, उसकी मुड़ी हुई उंगलियों को ढीला किया, और उसे शांत करते हुए कहा—

"बैठ जाइए; मैं आपसे जितनी देर चाहें बात करूंगा और आपकी सारी बातें सुनूंगा, चाहे वे तर्कसंगत हों या न हों।"

वह बैठ गया, लेकिन उसे सीधे बोलने की अनुमति नहीं मिली। मैं काफी देर से आँसुओं से जूझ रही थी: मैंने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की थी, क्योंकि मुझे पता था कि वह मुझे रोते हुए नहीं देखना चाहेगा। लेकिन अब, मैंने सोचा कि उन्हें खुलकर और जितनी देर तक चाहें बहने देना ही बेहतर है। अगर इससे उसे परेशानी होती है, तो और भी अच्छा। इसलिए मैंने खुद को रोक नहीं पाया और जी भर के रोने लगी।

थोड़ी देर बाद मैंने उसे मुझसे संयम बरतने की विनती करते हुए सुना। मैंने कहा कि जब तक वह इतने आवेश में है, मैं संयम नहीं बरत सकती।

“लेकिन मैं नाराज़ नहीं हूँ, जेन: मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ; और तुमने अपने छोटे से पीले चेहरे पर जो दृढ़, स्थिर भाव बनाए रखा था, मैं उसे सहन नहीं कर सका। अब चुप हो जाओ और अपनी आँखें पोंछ लो।”

उनकी शांत आवाज से पता चला कि वे शांत हो गए हैं; इसलिए मैं भी शांत हो गई। अब उन्होंने अपना सिर मेरे कंधे पर रखने की कोशिश की, लेकिन मैंने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया। फिर वे मुझे अपनी ओर खींचने की कोशिश करते: नहीं।

“जेन! जेन!” उसने इतनी गहरी उदासी भरे लहजे में कहा कि मेरी हर नस कांप उठी; “तो तुम मुझसे प्यार नहीं करतीं? क्या तुम्हारे लिए सिर्फ मेरी हैसियत और पत्नी का दर्जा ही मायने रखता था? अब जब तुम मुझे अपना पति बनने के लायक नहीं समझतीं, तो मेरे स्पर्श से ऐसे कतराती हो जैसे मैं कोई मेंढक या बंदर हूँ।”

इन शब्दों ने मुझे गहरा घाव दिया: फिर भी मैं क्या कर सकता था या क्या कह सकता था? शायद मुझे कुछ भी नहीं करना चाहिए था या कुछ भी नहीं कहना चाहिए था; लेकिन मुझे इस बात का इतना पछतावा था कि मैंने उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई थी कि मैं उस घाव पर मरहम लगाने की इच्छा को नियंत्रित नहीं कर सका जहाँ मैंने खुद घाव किया था।

मैंने कहा, "मैं तुमसे पहले से कहीं ज्यादा प्यार करता हूँ, लेकिन मुझे इस भावना को दिखाना या इसमें लिप्त होना नहीं चाहिए, और यह आखिरी बार है जब मुझे इसे

व्यक्त करना होगा।"

“आखिरी बार, जेन! क्या! तुम्हें लगता है कि तुम मेरे साथ रह सकती हो, मुझे रोज़ देख सकती हो, और फिर भी, अगर तुम मुझसे प्यार करती हो, तो हमेशा ठंडी और दूर रहोगी?”

"नहीं, महोदय; मुझे पूरा यकीन है कि मैं ऐसा नहीं कर सकता; और इसलिए मुझे लगता है कि केवल एक ही रास्ता है: लेकिन अगर मैंने इसका जिक्र किया तो आप बहुत क्रोधित हो जाएंगे।"

“अरे, बता ही दो! अगर मैं गुस्से में आ जाऊं, तो तुम्हें रोने की कला आती है।”

"श्रीमान रोचेस्टर, मुझे अब जाना होगा।"

“कितनी देर के लिए, जेन? कुछ मिनटों के लिए, जब तक तुम अपने बालों को संवार लेती हो—जो थोड़े बिखरे हुए हैं; और अपना चेहरा धो लेती हो—जो बुखार से लाल दिख रहा है?”

मुझे एडेल और थॉर्नफील्ड को छोड़ना होगा। मुझे जीवन भर के लिए तुमसे विदा लेना होगा: मुझे अजनबी चेहरों और अजनबी दृश्यों के बीच एक नए जीवन की शुरुआत करनी होगी।

“बिल्कुल: मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हें ऐसा करना चाहिए। मुझसे अलग होने की दीवानगी को मैं नज़रअंदाज़ करता हूँ। तुम्हारा मतलब है कि तुम्हें मेरा हिस्सा बनना होगा। नए जीवन की बात करें तो, सब ठीक है: तुम फिर भी मेरी पत्नी रहोगी: मैं शादीशुदा नहीं हूँ। तुम श्रीमती रोचेस्टर रहोगी—वास्तव में भी और नाम से भी। जब तक हम दोनों जीवित रहेंगे, मैं सिर्फ तुम्हारे साथ रहूँगा। तुम दक्षिण फ्रांस में मेरे एक घर में जाओगी: भूमध्य सागर के किनारे एक सफ़ेद रंग का विला। वहाँ तुम एक सुखी, सुरक्षित और बेहद मासूम ज़िंदगी जियोगी। कभी मत डरना कि मैं तुम्हें बहकाने की कोशिश कर रहा हूँ—तुम्हें अपनी रखैल बनाने की। तुमने अपना सिर क्यों हिलाया? जेन, तुम्हें समझदारी से काम लेना होगा, वरना सच में मैं फिर से पागल हो जाऊँगा।”

उसकी आवाज और हाथ कांप रहे थे; उसके बड़े नथुने फैल गए थे; उसकी आंखें धधक रही थीं: फिर भी मैंने बोलने की हिम्मत की।

“महोदय, आपकी पत्नी जीवित हैं: यह बात आपने स्वयं आज सुबह स्वीकार की है। यदि मैं आपकी इच्छा के अनुसार आपके साथ रहती, तो मैं आपकी रखैल होती:

इसके विपरीत कहना कुतर्क है—झूठ है।”

जेन, मैं शांत स्वभाव का आदमी नहीं हूँ—तुम यह भूल रही हो: मैं सहनशील नहीं हूँ; मैं शांत और भावहीन नहीं हूँ। मुझ पर और खुद पर दया करके, मेरी नब्ज़ पर उंगली रखो, उसकी धड़कन महसूस करो, और—सावधान रहो!

उसने अपनी कलाई खोली और मुझे दिखाई: उसके गालों और होंठों से खून गायब हो रहा था, वे पीले पड़ रहे थे; मैं बहुत परेशान था। उसे इस तरह से उत्तेजित करना, उस प्रतिरोध से जिसे वह इतना नापसंद करता था, क्रूरता थी: हार मानना तो नामुमकिन था। मैंने वही किया जो मनुष्य सहज रूप से तब करते हैं जब वे घोर संकट में फंस जाते हैं - मैंने मनुष्य से परे किसी शक्ति से सहायता मांगी: "भगवान मेरी मदद करें!" ये शब्द अनायास ही मेरे होंठों से निकल गए।

“मैं कितना मूर्ख हूँ!” श्री रोचेस्टर अचानक चिल्लाए। “मैं उसे बार-बार कहता रहता हूँ कि मेरी शादी नहीं हुई है, और उसे इसका कारण नहीं बताता। मैं भूल जाता हूँ कि उसे उस औरत के स्वभाव के बारे में कुछ नहीं पता, न ही उसके साथ मेरे इस घिनौने रिश्ते की वजहों के बारे में। ओह, मुझे पूरा यकीन है कि जेन मुझसे सहमत होगी, जब उसे सब कुछ पता चल जाएगा! जेनेट, ज़रा अपना हाथ मेरे हाथ में रखो—ताकि मुझे तुम्हारे पास होने का एहसास हो—और मैं तुम्हें कुछ ही शब्दों में सारी सच्चाई बता दूँगा। क्या तुम मेरी बात सुनोगी?”

"जी जनाब; घंटों तक, अगर आप चाहें तो।"

“मैं बस कुछ मिनट पूछ रहा हूँ। जेन, क्या तुमने कभी सुना या जाना है कि मैं अपने घर का सबसे बड़ा बेटा नहीं था: कि मेरा एक भाई था जो मुझसे बड़ा था?”

मुझे याद है कि श्रीमती फेयरफैक्स ने मुझे एक बार ऐसा कहा था।

"क्या आपने कभी सुना है कि मेरे पिता एक लालची और लोभी व्यक्ति थे?"

मुझे कुछ इसी तरह की बात समझ में आई है।

“खैर, जेन, जैसा कि था, उन्होंने संपत्ति को एकजुट रखने का फैसला किया; वे अपनी संपत्ति को बांटने और मुझे एक उचित हिस्सा देने का विचार सहन नहीं कर सकते थे: उन्होंने तय किया कि सब कुछ मेरे भाई रोलैंड को मिलेगा। फिर भी, वे यह भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि उनका बेटा गरीब रहे। मेरी शादी एक अमीर व्यक्ति से होनी चाहिए। उन्होंने मेरे लिए जल्दी ही एक जीवनसाथी की तलाश शुरू कर दी। श्री मेसन, एक वेस्ट इंडीज बागान मालिक और व्यापारी, उनके पुराने परिचित थे। उन्हें

यकीन था कि उनकी संपत्ति वास्तविक और विशाल है: उन्होंने पूछताछ की। उन्हें पता चला कि श्री मेसन के एक बेटा और एक बेटी थी; और उन्होंने उनसे यह भी जाना कि वे बेटी को तीस हजार पाउंड की संपत्ति दे सकते हैं और देंगे: यह काफी था। जब मैंने कॉलेज छोड़ा, तो मुझे जमैका भेज दिया गया, ताकि मैं एक ऐसी दुल्हन से शादी कर सकूँ जिसका पहले से ही मेरे लिए प्रस्ताव रखा गया था। मेरे पिता ने उसके धन के बारे में कुछ नहीं कहा; लेकिन उन्होंने मुझे बताया कि मिस मेसन अपनी सुंदरता के लिए स्पैनिश टाउन में मशहूर थीं: और यह झूठ नहीं था। मैंने उन्हें ब्लैंच इंग्राम की तरह एक सुंदर महिला पाया: लंबी, सांवली और राजसी। उनका परिवार सुरक्षित करना चाहता था मैं इसलिए आकर्षित हुआ क्योंकि मैं अच्छे खानदान का था; और वह भी। पार्टियों में उसे मुझे दिखाया जाता था, वह शानदार कपड़े पहने होती थी। मैं उसे शायद ही कभी अकेले देखता था, और उससे निजी बातचीत भी बहुत कम होती थी। वह मेरी चापलूसी करती थी, और मुझे खुश करने के लिए अपने आकर्षण और गुणों का खुलकर प्रदर्शन करती थी। उसके सभी पुरुष उसकी प्रशंसा करते और मुझसे ईर्ष्या करते प्रतीत होते थे। मैं चकाचौंध हो गया, उत्तेजित हो गया: मेरी इंद्रियां उत्तेजित हो गईं; और अज्ञानी, अनुभवहीन और नासमझ होने के कारण, मुझे लगा कि मैं उससे प्यार करता हूँ। ऐसी कोई मूर्खता नहीं है जो समाज की मूर्खतापूर्ण प्रतिद्वंद्विता, कामुकता, जल्दबाजी, जवानी के अंधेपन से इतनी प्रेरित न हो कि कोई व्यक्ति उसे करने पर मजबूर हो जाए। उसके रिश्तेदारों ने मुझे प्रोत्साहित किया; प्रतिस्पर्धियों ने मुझे उकसाया; उसने मुझे आकर्षित किया: शादी लगभग हो ही गई इससे पहले कि मुझे पता चले कि मैं कहाँ हूँ। ओह, जब मैं उस कृत्य के बारे में सोचता हूँ तो मुझे अपने लिए कोई सम्मान नहीं रहता! - आंतरिक तिरस्कार की पीड़ा मुझे जकड़ लेती है। मैंने कभी प्यार नहीं किया, मैंने कभी सम्मान नहीं किया, मैं उसे जानता भी नहीं था। मुझे उसके अस्तित्व का भी यकीन नहीं था। उसके स्वभाव में एक ही गुण था: मैंने उसके मन या व्यवहार में न तो विनम्रता, न ही परोपकार, न ही स्पष्टवादिता, न ही परिष्कार देखा — और फिर भी मैंने उससे विवाह कर लिया: — मैं कितना मूर्ख, नीच और नासमझ था! शायद मैंने इससे कम पाप किया होता — लेकिन मुझे याद रखना चाहिए कि मैं किससे बात कर रहा हूँ।

“मेरी दुल्हन की माँ को मैंने कभी नहीं देखा था: मुझे लगा था कि वह मर चुकी है। हनीमून खत्म होने पर मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ; वह तो बस पागल थी और

उसे पागलखाने में भर्ती कराया गया था। उसका एक छोटा भाई भी था—बिल्कुल गूंगा और बेवकूफ। बड़ा भाई, जिसे आप देख चुके हैं (और जिससे मैं नफरत नहीं कर सकता, जबकि मैं उसके सभी रिश्तेदारों से घृणा करता हूँ, क्योंकि उसके कमजोर दिमाग में थोड़ी सी भी स्नेह की भावना बची है, जो उसकी अभागी बहन में उसकी निरंतर रुचि और मेरे प्रति उसके कुत्ते जैसे लगाव से ज़ाहिर होती है), शायद एक दिन उसी हालत में होगा। मेरे पिता और मेरे भाई रोलैंड को यह सब पता था; लेकिन वे सिर्फ तीस हज़ार पाउंड के बारे में सोचते थे और मेरे खिलाफ साजिश में शामिल हो गए।"

"ये घिनौनी खोजें थीं; लेकिन अगर छिपाने की धोखेबाजी न होती, तो मैं इन्हें अपनी पत्नी के सामने निंदा का विषय न बनाता, तब भी जब मैंने पाया कि उसका स्वभाव मुझसे बिल्कुल अलग है, उसकी पसंद मुझे नापसंद है, उसका दिमाग साधारण, नीच, संकीर्ण और किसी भी उच्चतर या व्यापक चीज़ की ओर बढ़ने में पूरी तरह असमर्थ है — जब मैंने पाया कि मैं उसके साथ एक भी शाम या दिन का एक भी घंटा आराम से नहीं बिता सकता; कि हमारे बीच सौहार्दपूर्ण बातचीत नहीं हो सकती, क्योंकि मैं जो भी विषय शुरू करता, वह तुरंत उसे भद्दा और तुच्छ, विकृत और मूर्खतापूर्ण मोड़ दे देती — जब मैंने महसूस किया कि मेरा घर कभी शांत या स्थिर नहीं रहेगा, क्योंकि कोई भी नौकर उसके हिंसक और अनुचित स्वभाव के लगातार प्रकोप या उसके बेतुके, विरोधाभासी और कठोर आदेशों की झुंझलाहट को सहन नहीं कर सकता — तब भी मैंने खुद को रोका: मैंने फटकार से परहेज किया, मैंने विरोध को कम किया; मैंने अपने पश्चाताप और घृणा को गुप्त रूप से दबाने की कोशिश की; मैंने अपने अंदर की भावनाओं को दबा दिया।" मुझे गहरी घृणा महसूस हुई।

जेन, मैं तुम्हें घिनौनी बातों से परेशान नहीं करूँगा: कुछ कड़े शब्दों से ही मेरी बात स्पष्ट हो जाएगी। मैं उस ऊपर वाली औरत के साथ चार साल रहा, और उससे पहले ही उसने मेरी परीक्षा ले ली थी: उसका चरित्र भयानक तेज़ी से परिपक्व और विकसित हुआ; उसकी बुराइयाँ तेज़ी से और घिनौनी रूप से पनप उठीं: वे इतनी प्रबल थीं कि केवल क्रूरता ही उन्हें रोक सकती थी, और मैं क्रूरता का प्रयोग नहीं करना चाहता था। उसकी बुद्धि कितनी बौनी थी, और उसकी प्रवृत्तियाँ कितनी विशाल थीं! उन प्रवृत्तियों ने मुझ पर कितने भयानक अभिशाप डाले! बर्था मेसन, एक कुख्यात माँ

की असली बेटी, ने मुझे उन सभी भयानक और अपमानजनक पीड़ाओं से गुज़ारा जो एक ऐसे पुरुष को सहनी पड़ती हैं जो एक साथ अनियंत्रित और अपवित्र पत्नी से बंधा हो।

“इस बीच मेरे भाई की मृत्यु हो गई, और चार साल बाद मेरे पिता भी चल बसे। मैं अब काफी अमीर तो था, लेकिन फिर भी घोर गरीबी में जी रहा था: मेरे साथ एक ऐसी घृणित, अपवित्र और पतित प्रकृति जुड़ गई थी, जिसे कानून और समाज दोनों ने मेरा हिस्सा मान लिया था। और मैं किसी भी कानूनी कार्यवाही से इससे छुटकारा नहीं पा सका: क्योंकि डॉक्टरों ने अब पता लगा लिया था कि मेरी पत्नी पागल थी - उसकी अति ने समय से पहले ही पागलपन के बीज बो दिए थे। जेन, तुम्हें मेरी कहानी पसंद नहीं आ रही; तुम लगभग बीमार लग रही हो - क्या मैं बाकी बातें किसी और दिन के लिए टाल दूं?”

"नहीं, महोदय, इसे अभी समाप्त कीजिए; मुझे आप पर दया आती है - मुझे वास्तव में आप पर दया आती है।"

“जेन, कुछ लोगों से मिलने वाली दया एक घृणित और अपमानजनक भेंट होती है, जिसे लौटा देना उचित भी है; परन्तु यह दया निर्मम, स्वार्थी हृदयों की स्वाभाविक दया है; यह दुखों को सुनकर होने वाला एक मिश्रित, अहंकारी दर्द है, जिसमें उन लोगों के प्रति अज्ञानतापूर्ण तिरस्कार भी मिला हुआ है जिन्होंने उन्हें सहा है। परन्तु जेन, तुम्हारी दया ऐसी नहीं है; यह वह भावना नहीं है जिससे तुम्हारा पूरा चेहरा इस समय भरा हुआ है—जिससे तुम्हारी आँखें लगभग छलक रही हैं—जिससे तुम्हारा हृदय व्याकुल है—जिससे तुम्हारा हाथ मेरे हाथों में काँप रहा है। मेरी प्रियतमा, तुम्हारी दया प्रेम की पीड़ादायी जननी है: इसकी व्यथा ही दिव्य प्रेम की जन्मदया है। मैं इसे स्वीकार करता हूँ, जेन; पुत्री को स्वतंत्र रूप से आने दो—मेरी बाहें उसका स्वागत करने के लिए तत्पर हैं।”

"अब महोदय, आगे बताइए; जब आपको पता चला कि वह पागल है, तो आपने क्या किया?"

जेन, मैं निराशा के कगार पर पहुँच गया था; आत्मसम्मान का एक अंश ही मुझे उस खाई से बचाए हुए था। दुनिया की नज़रों में, मैं निस्संदेह कलंकित था; लेकिन मैंने खुद को बेदाग साबित करने का संकल्प लिया था—और अंत तक मैंने उसके अपराधों के दाग को नकार दिया, और खुद को उसकी मानसिक कमियों से अलग कर लिया।

फिर भी, समाज मेरा नाम और व्यक्तित्व उससे जोड़ता था; मैं उसे रोज़ देखता और सुनता था: उसकी साँसों की कुछ गंध (छी!) मेरी साँसों में घुली हुई थी; और इसके अलावा, मुझे याद था कि मैं कभी उसका पति था—वह याद तब भी और अब भी मेरे लिए असहनीय रूप से घृणित है; साथ ही, मैं जानता था कि जब तक वह जीवित है, मैं कभी किसी दूसरी और बेहतर पत्नी का पति नहीं बन सकता; और, हालाँकि वह मुझसे पाँच साल बड़ी थी (उसके परिवार और उसके पिता ने उसकी उम्र के बारे में भी मुझसे झूठ बोला था), वह शायद मेरी ही उम्र तक जीवित रहेगी, क्योंकि वह शारीरिक रूप से जितनी स्वस्थ थी, मानसिक रूप से उतनी ही कमज़ोर थी। इस प्रकार, छब्बीस वर्ष की आयु में, मैं पूरी तरह निराश था।

"एक रात मैं उसकी चीखों से जाग गया था — (क्योंकि डॉक्टरों ने उसे पागल घोषित कर दिया था, इसलिए उसे कमरे में बंद कर दिया गया था) — वह वेस्ट इंडीज की एक भयानक रात थी; वैसी ही जैसी अक्सर वहाँ के तूफानों से पहले होती है। बिस्तर पर नींद न आने के कारण मैं उठा और खिड़की खोली। हवा गंधक की भाप जैसी थी — मुझे कहीं भी ताजगी नहीं मिली। मच्छर भिनभिनाते हुए कमरे में घुस आए और उदास होकर भिनभिनाने लगे; समुद्र, जिसकी आवाज़ मुझे वहाँ से सुनाई दे रही थी, भूकंप की तरह धीमी गड़गड़ाहट कर रहा था — काले बादल छा रहे थे; चाँद लहरों में डूब रहा था, चौड़ा और लाल, गर्म तोप के गोले की तरह — उसने तूफ़ान के उथल-पुथल से कांपती दुनिया पर अपनी आखिरी खूनी नज़र डाली। मैं उस वातावरण और दृश्य से शारीरिक रूप से प्रभावित हुआ, और मेरे कान उस पागल औरत की गालियों से भर गए जो अभी भी चीख रही थी; जिसमें उसने क्षण भर के लिए मेरा नाम ऐसे राक्षसी घृणा के स्वर में, ऐसी भाषा में लिया! — किसी भी वेश्या ने उससे ज्यादा गंदी भाषा का इस्तेमाल नहीं किया होगा: हालांकि वह दो कमरों की दूरी पर थी, मैंने उसके हर शब्द को सुना - वेस्ट इंडिया हाउस के पतले विभाजन उसकी भेड़िया जैसी चीखों में मामूली सी बाधा ही बन रहे थे।

"अंत में मैंने कहा, 'यह जीवन नरक है: यह हवा है—ये अथाह गड्ढे की आवाज़ें हैं! अगर हो सके तो मुझे इससे मुक्ति पाने का पूरा अधिकार है। इस नश्वर अवस्था के कष्ट मुझे उस भारी शरीर के साथ छोड़ देंगे जो अब मेरी आत्मा पर बोझ है। कट्टरपंथी की जलती हुई अनंतता से मुझे कोई भय नहीं है: भविष्य में ऐसी कोई अवस्था नहीं है जो इस वर्तमान अवस्था से बदतर हो—मुझे इससे मुक्त होने दो, और ईश्वर के पास

घर जाने दो!'"

"मैंने यह बात तब कही जब मैं घुटनों के बल बैठकर एक संदूक खोल रहा था जिसमें दो भरी हुई पिस्तौलें थीं: मैं खुद को गोली मारना चाहता हूँ। मैंने यह इरादा केवल एक क्षण के लिए ही किया था; क्योंकि मैं पागल नहीं था, इसलिए घोर निराशा का वह संकट, जिसने आत्म-विनाश की इच्छा और योजना को जन्म दिया था, एक पल में ही बीत गया।"

"यूरोप से आती एक ताज़ी हवा समुद्र के ऊपर से बहकर खुली खिड़की से अंदर आ गई: तूफान टूट पड़ा, हवा में हलचल हुई, गरज उठी, आग भड़की और हवा शुद्ध हो गई। तब मैंने एक संकल्प लिया। जब मैं अपने गीले बगीचे के टपकते संतरे के पेड़ों के नीचे, और उसके भीगे अनार और अनानास के बीच चल रही थी, और जब उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की चमकीली सुबह मेरे चारों ओर फैल रही थी — मैंने इस प्रकार सोचा, जेन — और अब सुनो; क्योंकि उस घड़ी में सच्ची बुद्धिमत्ता ने ही मुझे सांत्वना दी और मुझे सही मार्ग दिखाया।"

"यूरोप से आती मीठी हवा अभी भी ताज़ा पत्तों में सरसरा रही थी, और अटलांटिक महासागर अपनी गौरवशाली स्वतंत्रता में गरज रहा था; मेरा हृदय, जो लंबे समय से सूखा और झुलसा हुआ था, उस स्वर से भर उठा, और जीवनदायी रक्त से भर गया — मेरा अस्तित्व नवीनीकरण के लिए तरस रहा था — मेरी आत्मा शुद्ध जल के लिए प्यासी थी। मैंने आशा को पुनर्जीवित होते देखा — और पुनर्जन्म को संभव महसूस किया। अपने बगीचे के निचले भाग में एक फूलों से सजे मेहराब से मैंने समुद्र को देखा — आकाश से भी नीला: पुरानी दुनिया परे थी; इस प्रकार स्पष्ट संभावनाएं खुल गईं: —

"'जाओ,' होप ने कहा, 'और यूरोप में फिर से जीवन व्यतीत करो: वहाँ किसी को पता नहीं चलेगा कि तुम्हारा नाम कितना कलंकित है, और न ही यह कि तुम पर कितना घिनौना बोझ है। तुम उस पागल को अपने साथ इंग्लैंड ले जा सकते हो; थॉर्नफील्ड में उसकी उचित देखभाल और सावधानी के साथ उसे कैद कर लो: फिर तुम जहाँ चाहो वहाँ जाओ, और जो चाहो नया रिश्ता बना लो। वह स्त्री, जिसने तुम्हारे धैर्य का इतना दुरुपयोग किया है, तुम्हारे नाम को इतना कलंकित किया है, तुम्हारे सम्मान को इतना ठेस पहुँचाई है, तुम्हारी जवानी को इतना बर्बाद किया है, वह तुम्हारी पत्नी नहीं है, और न ही तुम उसके पति हो। यह सुनिश्चित करो कि उसकी स्थिति के

अनुसार उसकी देखभाल की जाए, और तुमने वह सब कर दिया है जो ईश्वर और मानवता तुमसे चाहती है। उसकी पहचान, तुम्हारा उससे संबंध, विस्मृति में दफ़न हो जाए: तुम किसी भी जीवित प्राणी को यह बताने के लिए बाध्य नहीं हो। उसे सुरक्षा और आराम प्रदान करो: उसकी बदनामी को गुप्त रखो, और उसे छोड़ दो।'

"मैंने ठीक इसी सुझाव पर अमल किया। मेरे पिता और भाई ने मेरी शादी के बारे में अपने किसी भी परिचित को नहीं बताया था; क्योंकि, उन्हें इस रिश्ते के बारे में सूचित करने के लिए मैंने जो पहला पत्र लिखा था—जिसमें मैं इसके परिणामों से अत्यधिक घृणा करने लगी थी, और परिवार के स्वभाव और संरचना को देखते हुए, मुझे अपना भविष्य भयावह दिखाई दे रहा था—उसमें मैंने इसे गुप्त रखने का पुरजोर निर्देश दिया था: और जल्द ही मेरे पिता द्वारा मेरे लिए चुनी गई पत्नी का दुराचार ऐसा था कि उन्हें उसे अपनी बहू के रूप में स्वीकार करने में शर्म आने लगी। इस रिश्ते को सार्वजनिक करने की इच्छा तो दूर, वे इसे मुझसे भी ज्यादा छुपाने के लिए उत्सुक हो गए।"

"तो फिर मैंने उसे इंग्लैंड पहुँचाया; उस राक्षसी के साथ जहाज में मेरी यात्रा बहुत भयानक रही। जब मैं आखिरकार उसे थॉर्नफील्ड ले गया और उसे तीसरी मंजिल के उस कमरे में सुरक्षित पाया, तो मुझे बहुत खुशी हुई, जिसके गुप्त भीतरी कमरे को उसने दस साल से जंगली जानवरों का अड्डा बना रखा है—एक प्रेत-कोठरी। मुझे उसके लिए एक परिचारिका ढूंढने में कुछ परेशानी हुई, क्योंकि एक ऐसी परिचारिका का चयन करना आवश्यक था जिस पर विश्वास किया जा सके; क्योंकि उसकी बड़बड़ाहट से मेरा रहस्य अवश्य ही उजागर हो जाता: इसके अलावा, उसके कुछ दिनों—कभी-कभी हफ्तों—के होश में रहने के अंतराल होते थे, जिन्हें वह मुझे गाली देने में बिताती थी। आखिरकार मैंने ग्रिम्सबी रिट्रीट से ग्रेस पूल को काम पर रखा। वह और सर्जन कार्टर (जिन्होंने उस रात मेसन के घावों पर पट्टी बांधी थी जब उसे चाकू मारा गया था और वह परेशान था), केवल दो ही लोग हैं जिन पर मैंने कभी अपना विश्वास जताया है। श्रीमती फेयरफैक्स को शायद कुछ संदेह हुआ होगा, लेकिन उन्हें तथ्यों के बारे में कोई सटीक जानकारी नहीं मिल सकती थी। ग्रेस कुल मिलाकर एक अच्छी परिचारिका साबित हुई है; हालाँकि, आंशिक रूप से उसकी एक गलती के कारण अपनी उस बीमारी के कारण, जिसका इलाज शायद ही कोई कर सके, और जो उसके कष्टदायक पेशे का हिस्सा है, उसकी सतर्कता कई बार कमजोर पड़ चुकी है और

नाकाम हो चुकी है। वह पागल औरत धूर्त और दुष्ट दोनों है; उसने अपने संरक्षक की क्षणिक चूक का फायदा उठाने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी; एक बार उसने अपने भाई को जिस चाकू से मारा था, उसे छिपाया, और दो बार अपनी कोठरी की चाबी हासिल करके रात में वहां से निकली। इनमें से पहली बार उसने मुझे मेरे बिस्तर पर जलाने की कोशिश की; दूसरी बार उसने तुम पर वह भयानक हमला किया। मैं ईश्वर का शुक्रगुजार हूं, जिसने तुम्हारी रक्षा की, कि उसने अपना क्रोध तुम्हारे शादी के कपड़ों पर निकाला, जिससे शायद उसे अपने वैवाहिक दिनों की धुंधली यादें ताजा हो गईं: लेकिन जो हो सकता था, उसके बारे में सोचना भी मेरे बस की नहीं। जब मैं उस चीज के बारे में सोचता हूं जो आज सुबह मेरे गले पर झपटी, जिसने मेरे कबूतर के घोंसले पर अपना काला और लाल चेहरा मंडराते हुए दिखाया, तो मेरा खून जम जाता है।

"और महोदय," मैंने उनके रुकने पर पूछा, "जब आपने उसे यहाँ बसा दिया, तो आपने क्या किया? आप कहाँ गए थे?"

"मैंने क्या किया, जेन? मैंने खुद को एक मायावी रोशनी में बदल लिया। मैं कहाँ गया? मैं मार्च की आत्मा की तरह बेतहाशा भटकता रहा। मैंने महाद्वीप की खोज की और उसके सभी देशों में टेढ़े-मेढ़े रास्तों से यात्रा की। मेरी प्रबल इच्छा एक अच्छी और बुद्धिमान स्त्री को खोजना और पाना थी, जिससे मैं प्रेम कर सकूँ: थॉर्नफील्ड में छोड़े गए मेरे क्रोध के बिल्कुल विपरीत—"

"लेकिन आप शादी नहीं कर सकते, महोदय।"

मैंने ठान लिया था और मुझे पूरा यकीन था कि मैं ऐसा कर सकता हूँ और मुझे ऐसा करना चाहिए। मेरा इरादा आपको धोखा देने का नहीं था, जैसा कि मैंने आपको धोखा दिया है। मेरा इरादा अपनी कहानी साफ़-साफ़ बताना और अपने प्रस्ताव खुलेआम रखना था: और मुझे यह इतना तर्कसंगत लगा कि मुझे प्यार करने और प्यार पाने की आज़ादी मिलनी चाहिए, मुझे कभी संदेह नहीं हुआ कि कोई महिला मेरी स्थिति को समझने और मुझे स्वीकार करने के लिए तैयार और सक्षम हो सकती है, उस अभिशाप के बावजूद जिससे मैं बोझिल था।

तो, महोदय?

"जब तुम जिज्ञासु होती हो, जेन, तो मुझे हमेशा मुस्कान आ जाती है। तुम उत्सुक पक्षी की तरह अपनी आँखें खोलती हो, और बीच-बीच में बेचैन हरकतें करती हो,

मानो तुम्हें बोलकर जवाब नहीं मिल रहे हों, और तुम किसी के दिल की बात जानना चाहती हो। लेकिन आगे बढ़ने से पहले, मुझे बताओ कि तुम 'अच्छा, महोदय?' कहकर क्या कहना चाहती हो? यह एक छोटा सा वाक्य है जो तुम अक्सर बोलती हो; और जिसने कई बार मुझे अंतहीन बातचीत में उलझाए रखा है: मुझे ठीक से नहीं पता क्यों।"

"मेरा मतलब है, आगे क्या हुआ? आपने कैसे कार्रवाई की? उस घटना का क्या परिणाम निकला?"

"बिल्कुल सही! और अब आप क्या जानना चाहते हैं?"

"क्या आपको कोई पसंद आई, क्या आपने उससे शादी का प्रस्ताव रखा, और उसने क्या कहा।"

मैं आपको बता सकता हूँ कि क्या मुझे कोई पसंद आई, और क्या मैंने उससे शादी का प्रस्ताव रखा: लेकिन उसने क्या कहा, यह अभी तक भाग्य की किताब में दर्ज नहीं हुआ है। दस लंबे वर्षों तक मैं भटकता रहा, कभी एक राजधानी में, कभी दूसरी में: कभी सेंट पीटर्सबर्ग में; अक्सर पेरिस में; कभी-कभी रोम, नेपल्स और फ्लोरेंस में। खूब पैसा और एक पुराने नाम का सहारा होने के कारण, मैं अपनी पसंद के लोगों से मिल सकता था: कोई भी समूह मेरे लिए बंद नहीं था। मैंने अंग्रेज़ महिलाओं, फ्रांसीसी काउंटेस, इतालवी सिग्नोरा और जर्मन ग्रैफिन के बीच अपनी आदर्श स्त्री की तलाश की। मुझे वह नहीं मिली। कभी-कभी, एक पल के लिए, मुझे लगा कि मैंने एक झलक देखी, एक आवाज़ सुनी, एक आकृति देखी, जिसने मेरे सपने के साकार होने की घोषणा की: लेकिन मैं तुरंत ही इसके लायक नहीं था। आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं मन या व्यक्तित्व की पूर्णता चाहता था। मैं केवल वही चाहता था जो मुझे भाता हो - क्रियोल के विपरीत: और मेरी यह चाहत व्यर्थ थी। उन सभी में मुझे एक भी ऐसी नहीं मिली जिसे, अगर मैं कितना भी स्वतंत्र होता, तो मैं - चेतावनी देता क्योंकि मैं विषम संबंधों के जोखिमों, भयावहताओं और घृणाओं से भलीभांति परिचित था—वह मुझसे शादी करने का प्रस्ताव रखती। निराशा ने मुझे लापरवाह बना दिया। मैंने भोग-विलास का सहारा लिया—लेकिन व्यभिचार कभी नहीं: जिससे मुझे घृणा थी, और आज भी है। यही मेरी भारतीय मेसालिना का गुण था: इससे और उसके प्रति गहरी घृणा ने मुझे सुख में भी बहुत संयमित रखा। कोई भी आनंद जो उग्रता की सीमा तक पहुँचता था, मुझे उसके और उसकी बुराइयों के करीब ले जाता

प्रतीत होता था, और मैं उससे दूर रहता था।

“फिर भी मैं अकेला नहीं रह सकता था; इसलिए मैंने रखैलें रखने का सहारा लिया। पहली जिसे मैंने चुना, वह थी सेलीन वारेन्स – एक और ऐसा कदम जिसे याद करके आदमी खुद को कोसता है। तुम जानती ही हो कि वह कैसी थी और उसके साथ मेरा रिश्ता कैसे खत्म हुआ। उसकी दो और रखैलें थीं: एक इतालवी, जियासिंटा, और एक जर्मन, क्लारा; दोनों बेहद खूबसूरत मानी जाती थीं। कुछ ही हफ्तों में उनकी खूबसूरती मेरे लिए क्या मायने रखती थी? जियासिंटा सिद्धांतहीन और हिंसक थी: मैं तीन महीने में ही उससे ऊब गया। क्लारा ईमानदार और शांत थी; लेकिन भारी, नासमझ और भावनाओं से प्रभावित न होने वाली: मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं आई। मुझे खुशी हुई कि मैंने उसे अच्छा-खासा पैसा देकर उसका अच्छा कारोबार शुरू करवा दिया और इस तरह उससे सम्मानजनक तरीके से छुटकारा पा लिया। लेकिन, जेन, तुम्हारे चेहरे से मुझे लगता है कि तुम अभी मेरे बारे में अच्छी राय नहीं बना रही हो। तुम मुझे एक भावनाहीन, सिद्धांतहीन अय्याश समझती हो, है ना?”

"सच में, महोदय, अब मुझे आप उतने पसंद नहीं आते जितने पहले आते थे। क्या आपको इस तरह रहना ज़रा भी गलत नहीं लगा, पहले एक रखैल के साथ और फिर दूसरी के साथ? आप तो इसे एक सामान्य बात की तरह बताते हैं।"

“यह मेरे साथ था; और मुझे यह पसंद नहीं था। यह जीने का एक नीच तरीका था: मैं कभी भी इसमें वापस नहीं जाना चाहूंगी। रखैल रखना गुलाम खरीदने के बाद दूसरा सबसे बुरा काम है: दोनों ही स्वभाव से और स्थिति से हमेशा हीन होते हैं: और हीन लोगों के साथ घनिष्ठ संबंध रखना अपमानजनक है। अब मुझे सेलीन, जियासिंटा और क्लारा के साथ बिताए समय की याद से नफरत होती है।”

मुझे इन शब्दों की सच्चाई का एहसास हुआ; और मैंने इनसे यह निश्चित निष्कर्ष निकाला कि यदि मैं स्वयं को और मुझे दी गई सभी शिक्षाओं को इस हद तक भुला दूं कि किसी भी बहाने से, किसी भी औचित्य से, किसी भी प्रलोभन में आकर, इन निर्धन लड़कियों की उत्तराधिकारी बन जाऊं, तो एक दिन वह मुझे उसी भावना से देखेगा जो अब उसके मन में उनकी स्मृति का अपमान कर रही है। मैंने इस दृढ़ विश्वास को ज़ुबान से नहीं कहा: इसे महसूस करना ही काफी था। मैंने इसे अपने हृदय में अंकित कर लिया, ताकि यह परीक्षा की घड़ी में मेरे लिए सहायक बना रहे।

“अब, जेन, आप ‘अच्छा, महोदय’ क्यों नहीं कहतीं? मैंने अभी तक नहीं कहा है।

आप गंभीर दिख रही हैं। मुझे लगता है कि आप अब भी मुझसे नाराज़ हैं। लेकिन चलिए मुद्दे पर आते हैं। पिछले जनवरी में, सभी रखैलियों से छुटकारा पाने के बाद—एक कठोर, कड़वे मन से, एक बेकार, आवारा, अकेले जीवन के परिणामस्वरूप—निराशा से ग्रस्त, सभी पुरुषों के प्रति, और विशेष रूप से सभी महिलाओं के प्रति कटुता से भरा हुआ (क्योंकि मैंने एक बुद्धिमान, वफादार, प्रेम करने वाली महिला की धारणा को केवल एक सपना मानना शुरू कर दिया था), व्यापार के कारण मैं इंग्लैंड वापस आ गया।"

"एक बर्फीली सर्दी की दोपहर में, मैं थॉर्नफील्ड हॉल के पास से गुजरा। घृणित स्थान! मुझे वहाँ न तो शांति की उम्मीद थी, न ही सुख की। हे लेन की एक सीढ़ी पर मैंने एक शांत छोटी सी आकृति को अकेले बैठे देखा। मैं उसके पास से उतनी ही लापरवाही से गुजरा, जितनी लापरवाही से उसके सामने वाले कटे हुए विलो पेड़ के पास से गुजरा था: मुझे इस बात का कोई पूर्वाभास नहीं था कि वह मेरे लिए क्या होगा; मुझे अंदर से कोई चेतावनी नहीं मिली थी कि मेरे जीवन की निर्णायक - अच्छे या बुरे के लिए मेरी प्रतिभा - वहाँ विनम्र वेश में प्रतीक्षा कर रही है। मुझे तब भी इसका पता नहीं चला, जब मेसरूर की दुर्घटना के समय, वह मेरे पास आई और गंभीरता से मेरी मदद की पेशकश की। बचकाना और दुबला-पतला प्राणी! ऐसा लगा जैसे कोई चिड़िया मेरे पैर पर आकर बैठ गई हो और मुझे अपने छोटे से पंख पर बिठाकर ले जाने का प्रस्ताव दे रही हो। मैं चिड़चिड़ा था; लेकिन वह नहीं गई: वह अजीब दृढ़ता के साथ मेरे पास खड़ी रही, और एक प्रकार के अधिकार के साथ देखती और बोलती रही। मुझे मदद की ज़रूरत थी, और उसी हाथ से: और मुझे मदद मिली।"

"जब मैंने एक बार उस नाजुक कंधे को छुआ, तो कुछ नया—एक ताजा रस और भावना—मेरे शरीर में समा गया। अच्छा हुआ कि मुझे पता चल गया था कि यह परी मेरे पास वापस आएगी—कि यह मेरे नीचे वाले घर की है—वरना मैं इसे अपने हाथों से जाते हुए महसूस नहीं कर पाती और इसे धुंधली झाड़ी के पीछे गायब होते हुए बिना किसी विशेष अफसोस के नहीं देख पाती। मैंने उस रात तुम्हें घर आते सुना, जेन, हालाँकि शायद तुम्हें पता नहीं था कि मैं तुम्हारे बारे में सोच रही थी या तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी। अगले दिन मैंने तुम्हें—खुद को छिपाए—आधे घंटे तक देखा, जब तुम गैलरी में एडेल के साथ खेल रही थीं। मुझे याद है, वह बर्फीला दिन था, और तुम घर से बाहर नहीं जा सकती थीं। मैं अपने कमरे में थी; दरवाजा थोड़ा खुला था: मैं सुन भी

सकती थी और देख भी सकती थी। एडेल ने कुछ देर के लिए तुम्हारा ध्यान अपनी ओर खींचा; फिर भी मुझे लगा कि तुम्हारे विचार कहीं और थे: लेकिन तुम उसके साथ बहुत धैर्यवान थीं, मेरी छोटी जेन; तुमने उससे बातें कीं और उसे काफी देर तक हंसाया। जब आखिरकार वह तुम्हें छोड़कर चली गई, तो तुम तुरंत गहरी सोच में डूब गईं: आप धीरे-धीरे गैलरी में टहलने लगीं। बीच-बीच में, खिड़की से गुजरते हुए, आप बाहर गिरती हुई मोटी बर्फ पर नज़र डालतीं; आप सिसकती हवा को सुनतीं, और फिर धीरे-धीरे आगे बढ़तीं और सपने देखने लगतीं। मुझे लगता है कि दिन के वे दृश्य अंधकारमय नहीं थे: कभी-कभी आपकी आँखों में एक सुखद चमक होती थी, आपके चेहरे पर एक कोमल उत्तेजना होती थी, जो किसी कड़वी, चिड़चिड़ी, या चिंताग्रस्त सोच को नहीं दर्शाती थी: बल्कि आपकी नज़र में यौवन के मीठे विचार झलकते थे, जब उसकी आत्मा आशा की उड़ान पर सवार होकर एक आदर्श स्वर्ग की ओर बढ़ती है। हॉल में एक नौकर से बात करती श्रीमती फेयरफैक्स की आवाज़ ने आपको जगाया: और जेनेट, आप कितनी अजीब तरह से मुस्कुराईं! आपकी मुस्कान में बहुत अर्थ था: यह बहुत चतुर थी, और ऐसा लगता था जैसे आप अपने ही विचारों को हल्के में ले रही हों। ऐसा लगता था जैसे वह कह रही हो - 'मेरे सुंदर सपने तो बहुत अच्छे हैं, लेकिन मुझे यह नहीं भूलना चाहिए कि वे बिल्कुल अवास्तविक हैं। मेरे दिमाग में एक गुलाबी आकाश और फूलों से भरा हरा स्वर्ग है; लेकिन बाहर, मैं पूरी तरह से जानती हूँ, मेरे सामने एक रहस्य छिपा है। 'मेरे लिए यह एक कठिन रास्ता है, और चारों ओर काले तूफान मंडरा रहे हैं।' तुम नीचे भागे और श्रीमती फेयरफैक्स से कोई काम मांगा: साप्ताहिक गृह लेखा-जोखा करना, या कुछ इसी तरह का, मुझे लगता है। मैं तुमसे नाराज़ थी क्योंकि तुम मेरी नज़रों से ओझल हो गए थे।

मैं बेसब्री से शाम का इंतज़ार कर रहा था, ताकि मैं तुम्हें अपने पास बुला सकूँ। मुझे शक था कि तुम्हारा स्वभाव मेरे लिए असामान्य था, बिलकुल नया था: मैं उसे और गहराई से जानना चाहता था। तुम कमरे में एक शर्मीले और स्वतंत्र भाव के साथ दाखिल हुईं: तुमने अजीबोगरीब कपड़े पहने थे - ठीक वैसे ही जैसे तुम अब पहनती हो। मैंने तुमसे बात की: जल्द ही मैंने पाया कि तुममें अजीब विरोधाभास थे। तुम्हारा पहनावा और व्यवहार नियमों से बंधा हुआ था; तुम्हारा भाव अक्सर संकोची था, और कुल मिलाकर ऐसा लग रहा था जैसे तुम स्वभाव से तो सभ्य हो, लेकिन समाज से बिलकुल अपरिचित हो, और किसी गलती या भूल से खुद को नुकसान पहुँचाने से

बहुत डरती हो; फिर भी जब तुमसे बात की जाती, तो तुम अपने सामने वाले के चेहरे पर एक पैनी, साहसी और चमकती हुई नज़र उठातीं: तुम्हारी हर नज़र में पैठ और शक्ति थी; जब तुमसे मुश्किल सवाल पूछे जाते, तो तुम तुरंत और सटीक जवाब देतीं। बहुत जल्द तुम मुझसे घुलमिल गईं: मुझे लगता है कि तुमने अपने और अपनी सख्त और गुस्सैल मालकिन जेन के बीच सहानुभूति महसूस की; क्योंकि यह देखना आश्चर्यजनक था कि कैसे अचानक ही आपके व्यवहार में एक सुखद सहजता छा गई: चाहे मैं कितना भी गुस्सा दिखाऊं, आपने मेरी उदासी पर कोई आश्चर्य, भय, झुंझलाहट या नाराजगी नहीं दिखाई; आप मुझे देखते रहे, और बीच-बीच में एक सरल लेकिन बुद्धिमत्तापूर्ण मुस्कान बिखेरते रहे जिसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। मैं जो देख रहा था उससे संतुष्ट और प्रेरित दोनों था: मुझे जो देखा वह पसंद आया, और मैं और देखना चाहता था। फिर भी, लंबे समय तक मैंने आपसे दूरी बनाए रखी, और आपकी संगति बहुत कम चाही। मैं एक बौद्धिक शौकीन था, और इस नए और दिलचस्प परिचय की संतुष्टि को लंबे समय तक बनाए रखना चाहता था: इसके अलावा, कुछ समय के लिए मुझे एक डर सता रहा था कि अगर मैंने फूल को स्वतंत्र रूप से छुआ तो उसकी सुंदरता फीकी पड़ जाएगी - ताजगी का मीठा आकर्षण उससे दूर हो जाएगा। तब मुझे नहीं पता था कि यह कोई क्षणभंगुर फूल नहीं था, बल्कि एक अविनाशी रत्न में तराशा हुआ, उसी फूल की एक चमकदार प्रतिकृति थी। इसके अलावा, मैं यह देखना चाहता था कि अगर मैं आपसे दूर रहूं तो क्या आप मुझे ढूंढेंगे - लेकिन आपने ऐसा नहीं किया; आप कक्षा में अपनी डेस्क और ईज़ल की तरह स्थिर रहे; अगर संयोग से जब मेरी तुमसे मुलाकात हुई, तो तुम मुझे देखते ही देखते आगे बढ़ गईं, और सम्मान के अनुरूप पहचान का कोई संकेत भी नहीं दिया। जेन, उन दिनों तुम्हारा चेहरा हमेशा विचारशील रहता था; उदास नहीं, क्योंकि तुम बीमार नहीं थीं; लेकिन उत्साहित भी नहीं, क्योंकि तुम्हारे मन में कोई उम्मीद नहीं थी और कोई वास्तविक खुशी भी नहीं थी। मुझे आश्चर्य होता था कि तुम मेरे बारे में क्या सोचती हो, या क्या तुम कभी मेरे बारे में सोचती भी हो, और मैंने यह पता लगाने का निश्चय किया।

मैंने फिर से तुम पर ध्यान देना शुरू किया। जब तुम बात करती थीं, तुम्हारी निगाहों में एक तरह की खुशी और व्यवहार में सौम्यता झलकती थी। मैंने देखा कि तुम एक मिलनसार हृदय की थीं; यह शांत विद्यालय का कमरा था— तुम्हारे जीवन की

नीरसता—जिसने तुम्हें उदास कर दिया था। मैंने खुद को तुम्हारे प्रति दयालु होने का आनंद लेने दिया; दयालुता ने जल्द ही भावनाओं को जगा दिया: तुम्हारा चेहरा भावहीन हो गया, तुम्हारी आवाज़ कोमल हो गई; मुझे अच्छा लगता था जब तुम कृतज्ञता और प्रसन्नता से मेरा नाम लेती थीं। जेन, मुझे इस समय तुमसे अचानक मुलाकात का आनंद मिलता था: तुम्हारे व्यवहार में एक अजीब सी झिझक होती थी: तुम थोड़ी परेशानी— एक मंडराते संदेह— के साथ मेरी ओर देखती थीं: तुम नहीं जानती थीं कि मेरी सनक क्या हो सकती है— क्या मैं मालिक बनकर सख्त होने वाला हूँ, या दोस्त बनकर दयालु होने वाला हूँ। अब मैं तुमसे इतना प्यार करता था कि अक्सर पहली बार की उस सनक को छिपाना मुश्किल हो जाता था; और जब मैं स्नेह से अपना हाथ बढ़ाता था, तो तुम्हारे युवा, उदास चेहरे पर ऐसी चमक, प्रकाश और आनंद छा जाता था कि मुझे अक्सर तुम्हें उसी क्षण अपने दिल से लगाने से खुद को रोकना पड़ता था।

"उन दिनों की बातें अब और मत कीजिए, महोदय," मैंने बीच में ही टोकते हुए अपनी आँखों से कुछ आँसू पोंछ लिए; उनकी भाषा मेरे लिए यातना समान थी; क्योंकि मैं जानती थी कि मुझे क्या करना है — और जल्द ही करना है — और ये सारी यादें, और उनकी भावनाओं का ये खुलासा मेरे काम को और भी कठिन बना रहे थे।

"नहीं, जेन," उसने जवाब दिया: "अतीत पर ध्यान देने की क्या आवश्यकता है, जब वर्तमान इतना अधिक निश्चित है — भविष्य इतना उज्ज्वल है?"

उस मोहभंग भरी बात को सुनकर मैं सिहर उठा।

"अब आप समझ गए होंगे कि मामला क्या है—है ना?" उन्होंने आगे कहा। "जवानी और जवानी का आधा हिस्सा असहनीय दुख और आधा हिस्सा नीरस एकांत में बिताने के बाद, मुझे पहली बार वह मिला है जिससे मैं सचमुच प्यार कर सकता हूँ —मुझे तुम मिल गई हो। तुम मेरी हमसफ़र हो—मेरा बेहतर स्वरूप हो—मेरी अच्छी फ़रिश्ता हो। मैं तुमसे एक मज़बूत लगाव से बंधा हुआ हूँ। मैं तुम्हें अच्छा, प्रतिभाशाली, प्यारा मानता हूँ: मेरे दिल में एक तीव्र, एक गंभीर जुनून पैदा हुआ है; यह तुम्हारी ओर झुकता है, तुम्हें मेरे जीवन के केंद्र और स्रोत की ओर खींचता है, मेरे अस्तित्व को तुम्हारे चारों ओर लपेट लेता है, और एक शुद्ध, शक्तिशाली लौ में प्रज्वलित होकर, तुम्हें और मुझे एक कर देता है।"

“मैंने यही महसूस किया और जाना था, इसीलिए मैंने तुमसे शादी करने का निश्चय किया। यह कहना कि मेरी पहले से ही एक पत्नी थी, सरासर मजाक है: तुम अब जानती हो कि मेरी पत्नी तो बस एक भयानक राक्षस थी। तुम्हें धोखा देने की कोशिश करना मेरी गलती थी; लेकिन मुझे तुम्हारे स्वभाव में मौजूद हठ का डर था। मुझे बचपन से ही मन में बैठी हुई पूर्वाग्रहों का डर था: मैं तुम्हें विश्वास दिलाने से पहले तुम्हारी सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहता था। यह कायरता थी: मुझे पहले तुम्हारी महानता और उदारता का सहारा लेना चाहिए था, जैसा कि मैं अब कर रहा हूँ - तुम्हें अपने पीड़ा भरे जीवन के बारे में खुलकर बताना चाहिए था - तुम्हें एक बेहतर और सम्मानजनक जीवन की अपनी भूख और प्यास के बारे में बताना चाहिए था - तुम्हें अपना संकल्प नहीं (यह शब्द कमजोर है), बल्कि यह दिखाना चाहिए था कि मैं ईमानदारी से और सच्चे दिल से प्यार करना चाहता हूँ, जहाँ मुझे भी बदले में ईमानदारी से और सच्चे दिल से प्यार मिले। फिर मुझे तुमसे वफादारी की प्रतिज्ञा स्वीकार करने और अपनी वफादारी देने के लिए कहना चाहिए था। जेन - अब मुझे दे दो।”

एक विराम।

"जेन, तुम चुप क्यों हो?"

मैं एक भयानक परीक्षा से गुज़र रहा था: लोहे की आग जैसे हाथ ने मेरे शरीर को जकड़ लिया था। भयानक क्षण: संघर्ष, अंधकार और जलन से भरा हुआ! आज तक कोई भी इंसान मुझसे ज़्यादा प्यार पाने की इच्छा नहीं कर सकता था; और जिसने मुझे इतना प्यार किया, मैं उसकी पूजा करता था: और मुझे प्रेम और मूर्तिपूजा दोनों को त्यागना होगा। एक ही निराशाजनक शब्द ने मेरे असहनीय कर्तव्य को जन्म दिया — “चले जाओ!”

“जेन, तुम समझती हो कि मैं तुमसे क्या चाहता हूँ? बस इतना वादा — ‘मैं तुम्हारी हो जाऊँगी, मिस्टर रोचेस्टर।’”

"श्रीमान रोचेस्टर, मैं आपकी नहीं बनूंगी।"

एक और लंबा सन्नाटा।

“जेन!” उसने कोमल स्वर में फिर से बोलना शुरू किया, जिससे मैं दुःख से टूट गई और एक भयानक भय से कांप उठी — क्योंकि यह शांत आवाज किसी उठते हुए शेर की दहाड़ जैसी थी — “जेन, क्या तुम दुनिया में एक रास्ते पर चलना चाहती हो और

मुझे दूसरे रास्ते पर जाने देना चाहती हो?”

"मैं करता हूं।"

जेन (मेरी ओर झुकते हुए और मुझे गले लगाते हुए), "क्या तुम सच में ऐसा कह रही हो?"

"मैं करता हूं।"

“और अब?” मेरे माथे और गाल पर धीरे से चुंबन करते हुए।

“हाँ,” कहते हुए मैंने खुद को तेजी से और पूरी तरह से बंधन से मुक्त कर लिया।

“ओह, जेन, यह तो बहुत बुरा है! यह—यह तो बहुत ही बुरा है। मुझसे प्यार करना बुरा नहीं होगा।”

"यह आपकी बात मानना चाहेगा।"

उसकी भौंहें तन गईं—उसके चेहरे पर एक अजीब सी घबराहट छा गई: वह उठा; लेकिन फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। मैंने सहारा लेने के लिए कुर्सी के पीछे हाथ रखा: मैं कांप रही थी, डर रही थी—लेकिन मैंने दृढ़ निश्चय किया।

“एक पल रुको, जेन। तुम्हारे जाने के बाद मेरी इस दयनीय ज़िंदगी पर एक नज़र डाल लेना। तुम्हारे साथ सारी खुशियाँ छिन जाएँगी। फिर क्या बचेगा? पत्नी के नाम पर मेरे पास ऊपर बैठी वह पागल औरत है: जैसे तुम मुझे उस कब्रिस्तान में पड़ी किसी लाश के पास भेज रही हो। मैं क्या करूँ, जेन? मुझे साथी और उम्मीद कहाँ मिलेगी?”

“मेरी तरह करो: ईश्वर और खुद पर भरोसा रखो। स्वर्ग में विश्वास रखो। आशा है कि वहां फिर मिलेंगे।”

तो फिर तुम हार नहीं मानोगे?

"नहीं।"

“तो क्या तुम मुझे दुखमय जीवन जीने और अभिशापित होकर मरने की सजा देते हो?” उसकी आवाज ऊंची हो गई।

मैं आपको निष्पाप जीवन जीने की सलाह देता हूँ, और आपकी शांतिपूर्ण मृत्यु की कामना करता हूँ।

“तो क्या तुम मुझसे प्यार और मासूमियत छीन लेते हो? क्या तुम मुझे वासना के चक्कर में धकेल देते हो, एक जुनून के लिए, एक पेशे के लिए बुराई के लिए?”

“श्रीमान रोचेस्टर, मैं इस नियति को आपके लिए उतना ही अनुपयुक्त मानता हूँ

जितना स्वयं के लिए। हम संघर्ष करने और सहन करने के लिए पैदा हुए हैं—आप भी और मैं भी: ऐसा ही कीजिए। आप मुझे भूल जाएँगे, इससे पहले कि मैं आपको भूल जाऊँ।"

"तुम अपनी ऐसी भाषा से मुझे झूठा साबित कर रहे हो, मेरी प्रतिष्ठा को कलंकित कर रहे हो। मैंने कहा था कि मैं नहीं बदल सकता: तुम मेरे सामने ही कह रहे हो कि मैं जल्द ही बदल जाऊँगा। और तुम्हारे आचरण से तुम्हारे निर्णय में कितना विकृति और तुम्हारे विचारों में कितनी कुटिलता है, यह स्पष्ट होता है! क्या किसी मनुष्य को निराशा में धकेलना बेहतर है बजाय इसके कि एक साधारण मानवीय कानून का उल्लंघन किया जाए, जबकि इस उल्लंघन से किसी को कोई नुकसान न हो? क्योंकि तुम्हारे न तो कोई रिश्तेदार हैं और न ही कोई परिचित, जिन्हें मेरे साथ रहकर नाराज़ करने का तुम्हें डर हो?"

यह सच था: और जब वह बोल रहा था, तो मेरी अंतरात्मा और बुद्धि दोनों ही मेरे खिलाफ हो गईं, और मुझे उसका विरोध करने का दोषी ठहराने लगीं। वे लगभग उतनी ही ज़ोर से बोल रही थीं जितनी भावनाएँ: और वे बेतहाशा चिल्ला रही थीं। "ओह, मान जाओ!" उसने कहा। "उसकी पीड़ा के बारे में सोचो; उसके खतरे के बारे में सोचो—अकेले छोड़े जाने पर उसकी हालत देखो; उसके उतावले स्वभाव को याद करो; निराशा के बाद आने वाली लापरवाही पर विचार करो—उसे दिलासा दो; उसे बचाओ; उससे प्यार करो; उसे बताओ कि तुम उससे प्यार करती हो और उसकी रहोगी। दुनिया में तुम्हारी परवाह कौन करता है? या तुम्हारे करने से किसे नुकसान होगा?"

फिर भी मेरा जवाब अटल था— "मैं अपनी परवाह करता हूँ। जितना अकेला, जितना बेसहारा, जितना असहाय मैं रहूँगा, उतना ही मैं अपना सम्मान करूँगा। मैं ईश्वर द्वारा दिए गए, मनुष्य द्वारा स्वीकृत नियमों का पालन करूँगा। मैं उन सिद्धांतों पर कायम रहूँगा जो मुझे तब मिले थे जब मैं स्वस्थ था, पागल नहीं—जैसा कि मैं अब हूँ। नियम और सिद्धांत उन समयों के लिए नहीं हैं जब कोई प्रलोभन न हो: वे ऐसे क्षणों के लिए हैं, जब शरीर और आत्मा उनकी कठोरता के विरुद्ध विद्रोह करते हैं; वे कठोर हैं; उनका उल्लंघन नहीं किया जा सकता। यदि मैं अपनी सुविधा के लिए उन्हें तोड़ दूँ, तो उनका क्या मूल्य होगा? उनका मूल्य है—ऐसा मैंने हमेशा माना है; और यदि मैं अब इस पर विश्वास नहीं कर सकता, तो इसका कारण यह है कि मैं पागल हूँ—पूरी

तरह से पागल: मेरी नसों में आग दौड़ रही है, और मेरा दिल इतनी तेज़ी से धड़क रहा है कि मैं उसकी धड़कनों को गिन नहीं सकता। पूर्वकल्पित राय, पूर्व निर्धारित निर्णय, इस समय मेरे पास एकमात्र सहारा हैं: मैं वहीं अपना पैर जमाता हूँ।”

मैंने किया। श्री रोचेस्टर ने मेरे चेहरे के भाव पढ़कर समझ लिया कि मैंने ऐसा किया है। उनका क्रोध चरम पर था: चाहे कुछ भी हो जाए, उन्हें एक पल के लिए इसके आगे झुकना ही पड़ा; वे मेरे पास आए और मेरी बांह पकड़कर मेरी कमर थाम ली। ऐसा लग रहा था मानो वे मुझे अपनी जलती हुई निगाहों से भस्म कर रहे हों: शारीरिक रूप से, उस क्षण मैं भट्टी की तपती गर्मी में सूखी घास की तरह शक्तिहीन महसूस कर रही थी: मानसिक रूप से, मेरी आत्मा अभी भी मेरे साथ थी, और उसके साथ ही मुझे अपनी अंतिम सुरक्षा का आश्वासन भी था। सौभाग्य से, आत्मा का एक व्याख्याकार होता है - अक्सर अवचेतन, लेकिन फिर भी एक सच्चा व्याख्याकार - आँखों में। मेरी नज़र उनकी आँखों से मिली; और जब मैंने उनके क्रूर चेहरे को देखा तो अनजाने में एक आह भर दी; उनकी पकड़ दर्दनाक थी, और मेरी अत्यधिक थकी हुई शक्ति लगभग समाप्त हो चुकी थी।

“कभी नहीं,” उसने दांत पीसते हुए कहा, “कभी भी कोई चीज एक साथ इतनी नाज़ुक और इतनी अदम्य नहीं थी। मेरे हाथ में तो वह एक साधारण सरकंडे जैसी लगती है!” (और उसने मुझे अपनी पकड़ की ताकत से हिला दिया।) “मैं उसे अपनी उंगली और अंगूठे से झुका सकता हूँ: और अगर मैं उसे झुकाऊँ, फाड़ दूँ, कुचल दूँ तो क्या फायदा? उस आँख को देखो: उस दृढ़, जंगली, स्वतंत्र चीज़ को देखो जो उससे झाँक रही है, मुझे चुनौती दे रही है, साहस से भी बढ़कर—एक कठोर विजय के साथ। मैं उसके पिंजरे के साथ कुछ भी करूँ, मैं उस तक नहीं पहुँच सकता—वह जंगली, सुंदर प्राणी! अगर मैं उस छोटे से पिंजरे को फाड़ दूँ, अगर मैं उसे चीर दूँ, तो मेरा अत्याचार केवल कैदी को मुक्त कर देगा। मैं घर का विजेता हो सकता हूँ; लेकिन इससे पहले कि मैं खुद को उसके मिट्टी के निवास का स्वामी कह सकूँ, वह कैदी स्वर्ग में भाग जाएगा। और हे आत्मा—तुम्हारी इच्छाशक्ति, ऊर्जा, सद्गुण और पवित्रता के साथ—मुझे चाहिए: केवल तुम्हारा नाज़ुक शरीर नहीं। तुम स्वयं कोमल उड़ान भरकर आ सकती हो और मेरे हृदय से लिपट सकती हो, अगर तुम चाहो: तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध पकड़ी गई, तुम एक सार की तरह पकड़ से बच निकलोगी—तुम मेरी सुगंध साँस लेने से पहले ही गायब हो जाओगी। ओह! आओ, जेन, आओ!”

यह कहते ही उसने मुझे अपनी पकड़ से छोड़ दिया और केवल मेरी ओर देखा। उस नज़र का विरोध करना उस बेचैन तनाव से कहीं अधिक कठिन था: हालाँकि, अब तो केवल एक मूर्ख ही उसके आगे झुक जाता। मैंने उसकी क्रोध को चुनौती दी थी और उसे विफल कर दिया था; मुझे उसके दुख से बचना ही था: मैं दरवाजे की ओर चला गया।

“तुम जा रही हो, जेन?”

मैं जा रहा हूँ, महोदय।

“क्या तुम मुझे छोड़कर जा रहे हो?”

"हाँ।"

“क्या तुम नहीं आओगे? क्या तुम मेरे सांत्वनादाता, मेरे उद्धारकर्ता नहीं बनोगे? क्या मेरा गहरा प्रेम, मेरा तीव्र दुख, मेरी बेताब प्रार्थना, तुम्हारे लिए कुछ भी मायने नहीं रखती?”

उनकी आवाज़ में कितना अवर्णनीय दुख था! दृढ़ता से यह दोहराना कितना मुश्किल था, "मैं जा रहा हूँ।"

जेन!

श्रीमान रोचेस्टर!

“तो फिर चले जाओ, मैं सहमत हूँ; लेकिन याद रखना, तुम मुझे यहाँ पीड़ा में छोड़कर जा रही हो। अपने कमरे में जाओ; मैंने जो कुछ कहा है उस पर विचार करो, और जेन, मेरी पीड़ाओं पर एक नज़र डालो — मेरे बारे में सोचो।”

वह मुँह फेरकर सोफे पर औंधा गिर पड़ा। "ओह, जेन! मेरी आशा - मेरा प्यार - मेरी ज़िंदगी!" उसके होंठों से दर्द भरी आवाज़ में निकला। फिर एक गहरी, ज़ोरदार सिसकी आई।

मैं दरवाजे तक पहुँच चुकी थी; लेकिन, पाठक, मैं वापस लौटी—जितने दृढ़ निश्चय से पीछे हटी थी, उतने ही दृढ़ निश्चय से वापस लौटी। मैं उसके पास घुटनों के बल बैठ गई; मैंने उसका चेहरा तकिये से हटाकर अपनी ओर किया; मैंने उसके गाल पर चुंबन किया; मैंने अपने हाथ से उसके बालों को सहलाया।

“हे मेरे प्रिय स्वामी, ईश्वर आपको आशीर्वाद दें!” मैंने कहा। “ईश्वर आपको हानि और बुराई से बचाए रखें—आपका मार्गदर्शन करें, आपको सांत्वना दें—और मेरे प्रति आपकी पिछली दयालुता के लिए आपको अच्छा प्रतिफल दें।”

"छोटी जेन का प्यार ही मेरे लिए सबसे बड़ा इनाम होता," उसने जवाब दिया; "उसके बिना मेरा दिल टूट गया है। लेकिन जेन मुझे अपना प्यार देगी: हाँ—पूरी गरिमा और उदारता से।"

उसके चेहरे पर खून खौल उठा; उसकी आँखों से आग सी चमक उठी; वह सीधा खड़ा हो गया; उसने अपनी बाहें फैला दीं; लेकिन मैंने उसके आलिंगन से बचकर तुरंत कमरे से बाहर निकल गया।

"अलविदा!" मेरे दिल की यही आवाज़ गूंजी जब मैं उससे विदा लेने गई। निराशा ने उसमें और जोड़ दिया, "हमेशा के लिए अलविदा!"

* * * * *

उस रात मुझे सोने का ख्याल भी नहीं आया; लेकिन बिस्तर पर लेटते ही मुझे नींद आ गई। मैं अपने बचपन के दृश्यों में खो गया: मैंने सपना देखा कि मैं गेट्सहेड के लाल कमरे में लेटा हुआ हूँ; रात गहरी थी, और मेरा मन अजीब भय से भरा हुआ था। वह प्रकाश जिसने बहुत पहले मुझे बेहोश कर दिया था, इस सपने में फिर से प्रकट हुआ, मानो दीवार पर धीरे-धीरे चढ़ रहा हो, और धुंधली छत के बीचोंबीच कांपते हुए ठहर गया हो। मैंने देखने के लिए अपना सिर उठाया: छत बादलों में तब्दील हो गई, ऊँचे और धुंधले; उसकी चमक ऐसी थी जैसे चंद्रमा उन वाष्पों को चमकाता है जिन्हें वह चीरने वाला होता है। मैंने उसे आते देखा - एक अजीब सी उम्मीद के साथ; मानो उसके शरीर पर विनाश का कोई शब्द लिखा हो। वह ऐसे प्रकट हुई जैसे पहले कभी कोई चंद्रमा बादलों से नहीं निकला था: पहले एक हाथ ने काले बादलों को भेदकर उन्हें हटाया; फिर, चंद्रमा नहीं, बल्कि एक सफेद मानव आकृति नीले आकाश में चमकी, अपना शानदार माथा धरती की ओर झुकाए हुए। वह मुझे निहारती रही, निहारती रही। उसने मेरी आत्मा से बात की: उसकी आवाज़ असीम रूप से दूर थी, फिर भी इतनी नज़दीक थी, जैसे वह मेरे दिल में फुसफुसा रही हो—

"मेरी बेटी, प्रलोभन से दूर रहो।"

"माँ, मैं करूँगा।"

सपने से जागने के बाद मैंने जवाब दिया। अभी रात ही थी, पर जुलाई की रातें छोटी होती हैं: आधी रात के तुरंत बाद भोर हो जाती है। मैंने सोचा, "मुझे जो काम पूरा करना है, उसे शुरू करने में अभी देर नहीं हुई है।" मैं उठी: मैं तैयार थी; क्योंकि

मैंने अपने जूतों के अलावा कुछ भी नहीं उतारा था। मुझे पता था कि मेरी दराज में कुछ लिनेन, एक लॉकेट और एक अंगूठी कहाँ मिलेगी। इन चीज़ों को ढूंढते हुए, मुझे मोतियों का हार मिला, जिसे श्री रोचेस्टर ने कुछ दिन पहले मुझे जबरदस्ती दिया था। मैंने उसे वहीं छोड़ दिया; वह मेरा नहीं था: वह उस स्वप्निल दुल्हन का था जो हवा में गायब हो गई थी। बाकी चीज़ों को मैंने एक पार्सल में बांधा; मेरा पर्स, जिसमें बीस शिलिंग थे (मेरे पास बस इतना ही था), मैंने अपनी जेब में रख लिया: मैंने अपनी भूसे की टोपी पहनी, शॉल को पिन से लगाया, पार्सल और अपनी चप्पलें लीं, जिन्हें मैंने अभी तक नहीं पहना था, और चुपके से अपने कमरे से निकल गई।

"अलविदा, प्यारी श्रीमती फेयरफैक्स!" मैंने फुसफुसाते हुए कहा, जैसे ही मैं उनके दरवाजे के पास से गुजरी। "अलविदा, मेरी प्यारी एडेल!" मैंने नर्सरी की ओर देखते हुए कहा। उसे गले लगाने के लिए अंदर जाने का ख्याल भी मन में नहीं आया। मुझे अपने कानों को चुप कराना था: क्योंकि मुझे पता था कि कहीं वे सुन तो नहीं रहे हों।

मैं श्री रोचेस्टर के कमरे से बिना रुके निकल जाता; लेकिन उस दहलीज पर मेरा दिल एक पल के लिए धड़कना बंद हो गया, और मेरा पैर भी रुक गया। वहाँ नींद नहीं थी: वह व्यक्ति बेचैनी से एक दीवार से दूसरी दीवार तक घूम रहा था; और बार-बार आहें भर रहा था, जिसे मैं सुन रहा था। इस कमरे में मेरे लिए एक स्वर्ग था - एक क्षणिक स्वर्ग - अगर मैं चाहूँ तो: मुझे बस अंदर जाना था और कहना था -

"श्रीमान रोचेस्टर, मैं आपसे प्यार करूंगी और जीवन भर, मृत्यु तक आपके साथ रहूंगी," और ये शब्द मेरे होठों से आनंद की लहरों की तरह फूट पड़ते। मैंने इसके बारे में सोचा।

वह दयालु स्वामी, जिसे अब नींद नहीं आ रही थी, बेचैनी से सुबह होने का इंतज़ार कर रहा था। वह सुबह मुझे बुलवाएगा; मैं तब तक जा चुकी होऊंगी। वह मुझे ढूँढ़ेगा: व्यर्थ। वह खुद को अकेला महसूस करेगा; उसका प्यार ठुकरा दिया गया होगा: वह दुखी होगा; शायद हताश भी हो जाएगा। मैंने भी यही सोचा। मेरा हाथ ताले की ओर बढ़ा: मैंने उसे वापस पकड़ लिया और आगे बढ़ गई।

मैं उदास मन से सीढ़ियों से नीचे उतरा: मुझे पता था कि मुझे क्या करना है, और मैंने उसे यंत्रवत ही किया। मैंने रसोई के बगल वाले दरवाजे की चाबी ढूंढी; मैंने तेल की एक शीशी और एक पंख भी ढूंढा; मैंने चाबी और ताले पर तेल लगाया। मैंने थोड़ा

पानी लिया, थोड़ी रोटी ली: क्योंकि शायद मुझे दूर तक चलना पड़े; और मेरी ताकत, जो हाल ही में बुरी तरह से कमजोर हो गई थी, उसे टूटने नहीं देना था। यह सब मैंने बिना एक भी आवाज किए किया। मैंने दरवाजा खोला, बाहर निकला, और उसे धीरे से बंद कर दिया। आंगन में धुंधली सुबह की रोशनी चमक रही थी। बड़े द्वार बंद और ताले लगे हुए थे; लेकिन उनमें से एक में एक छोटा सा दरवाज़ा केवल कुंडी से बंद था। मैं उसी से बाहर निकला: मैंने उसे भी बंद कर दिया; और अब मैं थॉर्नफील्ड से बाहर था।

खेतों के उस पार, एक मील दूर, एक सड़क थी जो मिलकोट की विपरीत दिशा में जाती थी; एक ऐसी सड़क जिस पर मैं कभी नहीं चला था, लेकिन अक्सर उसे देखता था और सोचता था कि वह कहाँ जाती है: मैंने अपने कदम उसी ओर मोड़े। अब किसी भी तरह के चिंतन की अनुमति नहीं थी: न तो अतीत की ओर एक नज़र डालनी थी, न ही आगे की ओर। न तो अतीत के बारे में सोचना था और न ही भविष्य के बारे में। अतीत एक ऐसा मधुर पन्ना था - इतना दुखद - कि उसकी एक पंक्ति भी पढ़ने से मेरा साहस टूट जाता और मेरी सारी ऊर्जा समाप्त हो जाती। भविष्य एक भयानक खालीपन था: कुछ-कुछ उस दुनिया जैसा जब प्रलय थम गई थी।

मैं सूर्योदय के बाद तक खेतों, झाड़ियों और गलियों से होकर गुज़री। मुझे लगता है कि वह एक सुहावनी गर्मी की सुबह थी: मुझे पता है कि मेरे जूते, जो मैंने घर से निकलते समय पहने थे, ओस से जल्द ही भीग गए थे। लेकिन मैंने न तो उगते सूरज की ओर देखा, न मुस्कुराते आकाश की ओर, न ही जागती प्रकृति की ओर। जो व्यक्ति किसी सुंदर दृश्य से होते हुए फांसी के तख्ते तक ले जाया जाता है, वह अपने रास्ते में खिलते फूलों के बारे में नहीं सोचता, बल्कि उस तख्ते और कुल्हाड़ी की धार के बारे में सोचता है; हड्डी और नस के विच्छेदन के बारे में; अंत में खुलती कब्र के बारे में: और मैंने उदास पलायन और बेघर भटकने के बारे में सोचा - और ओह! मैंने जो कुछ छोड़ा था, उसके बारे में सोचकर मुझे बहुत पीड़ा हुई। मैं खुद को रोक नहीं सकी। मैंने अब उसके बारे में सोचा - अपने कमरे में - सूर्योदय देखते हुए; उम्मीद कर रही थी कि मैं जल्द ही आकर कहूँगी कि मैं उसके साथ रहूँगी और उसकी हो जाऊँगी। मैं उसकी होने के लिए तड़प रही थी; मैं वापस लौटने के लिए व्याकुल थी: अभी बहुत देर नहीं हुई थी; मैं अभी भी उसे शोक के कड़वे दर्द से बचा सकती थी। मुझे यकीन था कि अभी तक मेरा पलायन अज्ञात था। मैं वापस जाकर उसका सहारा बन सकता

था—उसका गौरव; उसके दुख से मुक्ति दिलाने वाला, शायद विनाश से भी। ओह, उसके आत्मत्याग का वह भय—मेरे त्याग से कहीं अधिक बुरा—मुझे कितना सताता था! यह मेरे सीने में चुभते तीर की तरह था; जब मैंने इसे निकालने की कोशिश की तो इसने मुझे चीर डाला; जब याद ने इसे और गहरा धकेल दिया तो इसने मुझे व्याकुल कर दिया। झाड़ियों और पेड़ों के झुरमुटों में पक्षी गाने लगे: पक्षी अपने साथियों के प्रति वफादार थे; पक्षी प्रेम के प्रतीक थे। मैं क्या था? अपने हृदय के दर्द और सिद्धांतों के लिए किए गए उन्मत्त प्रयास के बीच, मैं स्वयं से घृणा करता था। मुझे आत्म-प्रशंसा से कोई सांत्वना नहीं मिली: आत्म-सम्मान से भी नहीं। मैंने अपने स्वामी को चोट पहुँचाई थी—घायल किया था—छोड़ दिया था। मैं अपनी ही नज़रों में घृणित था। फिर भी मैं न तो मुड़ सकता था, न ही एक कदम पीछे हट सकता था। ईश्वर ने ही मुझे आगे बढ़ाया होगा। जहाँ तक मेरी अपनी इच्छा या अंतरात्मा की बात है, तीव्र दु:ख ने एक को कुचल दिया था और दूसरे को दबा दिया था। मैं अपने अकेले रास्ते पर चलते हुए फूट-फूटकर रो रही थी: मैं पागलों की तरह तेज़ी से भाग रही थी। एक कमजोरी, जो अंदर से शुरू होकर मेरे अंगों तक फैल गई, ने मुझे जकड़ लिया और मैं गिर पड़ी: मैं कुछ मिनटों तक गीली घास पर अपना चेहरा दबाए पड़ी रही। मुझे डर था - या शायद उम्मीद थी - कि मैं यहीं मर जाऊंगी: लेकिन मैं जल्दी ही उठ गई; हाथों और घुटनों के बल रेंगती हुई आगे बढ़ी, और फिर से अपने पैरों पर खड़ी हो गई - सड़क तक पहुँचने के लिए पहले की तरह ही उत्सुक और दृढ़ निश्चयी।

वहाँ पहुँचकर मुझे झाड़ी के नीचे आराम करने के लिए बैठना पड़ा; और बैठे-बैठे ही मुझे पहियों की आवाज़ सुनाई दी और एक गाड़ी आती हुई दिखाई दी। मैं खड़ा हुआ और हाथ उठाया; गाड़ी रुक गई। मैंने पूछा कि वह कहाँ जा रही है: ड्राइवर ने एक दूर जगह का नाम बताया, जहाँ मुझे यकीन था कि मिस्टर रोचेस्टर का कोई संबंध नहीं था। मैंने पूछा कि वह मुझे वहाँ कितने में ले जाएगा; उसने तीस शिलिंग बताए; मैंने जवाब दिया कि मेरे पास केवल बीस हैं; ठीक है, वह कोशिश करेगा कि काम चल जाए। उसने मुझे अंदर बैठने की अनुमति भी दी, क्योंकि गाड़ी खाली थी: मैं अंदर गया, अंदर बंद हो गया, और गाड़ी अपने रास्ते चल पड़ी।

प्रिय पाठक, ईश्वर करे कि आप कभी भी उस पीड़ा को न सहें जो मैंने उस समय महसूस की थी! ईश्वर करे कि आपकी आँखों से कभी भी ऐसे तूफानी, झुलसा देने वाले, हृदयविदारक आँसू न बहें जैसे मेरी आँखों से बहे थे। ईश्वर करे कि आप कभी

भी ईश्वर से ऐसी निराशा और पीड़ा भरी प्रार्थना न करें जैसी उस घड़ी मेरे होठों से निकली थी; क्योंकि ईश्वर करे कि आप कभी भी मेरी तरह उस चीज़ के लिए बुराई का साधन बनने से न डरें जिसे आप पूर्णतः प्रिय मानते हैं।

अध्याय XXVIII

दो दिन बीत चुके हैं। गर्मी की शाम है; कोचवान ने मुझे व्हिटक्रॉस नामक स्थान पर उतार दिया है; मैंने जो पैसे दिए थे, उसके बदले वह मुझे इससे आगे नहीं ले जा सकता था, और मेरे पास दुनिया का एक भी शिलिंग नहीं बचा था। इस समय तक कोच एक मील दूर जा चुका है; मैं अकेला हूँ। इसी क्षण मुझे याद आता है कि मैं अपना पार्सल कोच की जेब से निकालना भूल गया था, जहाँ मैंने उसे सुरक्षा के लिए रखा था; वह वहीं रह गया है, वहीं रहना होगा; और अब, मैं पूरी तरह से बेसहारा हूँ।

व्हिटक्रॉस न तो कोई कस्बा है, न ही कोई छोटा गाँव; यह तो बस एक पत्थर का खंभा है जो चार सड़कों के मिलन बिंदु पर खड़ा है: शायद दूर से और अंधेरे में अधिक स्पष्ट दिखने के लिए इस पर सफेदी की गई है। इसकी चोटी से चार भुजाएँ निकलती हैं: शिलालेख के अनुसार, जिस कस्बे की ओर ये भुजाएँ इशारा करती हैं, वह दस मील दूर है; और सबसे दूर वाला बीस मील से अधिक दूर है। इन कस्बों के सुप्रसिद्ध नामों से मुझे पता चलता है कि मैं किस ज़िले में आया हूँ; एक उत्तर-मध्यभूमि ज़िला, दलदली भूमि से घिरा हुआ, पहाड़ों से घिरा हुआ: यह मैं देखता हूँ। मेरे पीछे और दोनों ओर विशाल दलदल हैं; मेरे पैरों के नीचे उस गहरी घाटी के पार दूर तक पहाड़ों की लहरें फैली हुई हैं। यहाँ की आबादी कम ही होगी, और मुझे इन सड़कों पर कोई यात्री नहीं दिखता: ये सड़कें पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की ओर फैली हुई हैं - सफेद, चौड़ी, सुनसान; ये सभी दलदल में कटी हुई हैं, और हीथर इनके किनारे तक गहरी और जंगली रूप से उगती है। फिर भी कोई राहगीर यहाँ से गुजर सकता है; और मैं

नहीं चाहती कि इस समय कोई मुझे देखे: अजनबी सोचेंगे कि मैं यहाँ साइनपोस्ट के पास क्यों खड़ी हूँ, मानो मेरा कोई उद्देश्य ही न हो और मैं खोई हुई सी हूँ। मुझसे सवाल पूछे जा सकते हैं: मैं कोई जवाब नहीं दे पाऊँगी सिवाय इसके कि जो अविश्वसनीय लगे और संदेह पैदा करे। इस समय न तो मेरा कोई मानवीय बंधन है, न कोई आकर्षण या आशा मुझे वहाँ बुला रही है जहाँ मेरे साथी प्राणी हैं — मुझे देखने वाला कोई भी मेरे लिए दयालु विचार या शुभकामना नहीं रखेगा। मेरा कोई रिश्तेदार नहीं है सिवाय सार्वभौमिक माँ, प्रकृति के: मैं उसकी गोद में शरण लूँगी और शांति की प्रार्थना करूँगी।

मैं सीधे बंजर ज़मीन में जा घुसा; मैंने भूरी बंजर ज़मीन पर गहरी लकीरों में बनी एक खोखली जगह को पकड़ लिया; मैं घुटनों तक गहरे पानी में घनी झाड़ियों में घुस गया; मैं उसके घुमावों के साथ मुड़ा, और एक छिपे हुए कोने में काई से ढकी ग्रेनाइट की चट्टान पाकर उसके नीचे बैठ गया। मेरे चारों ओर बंजर ज़मीन के ऊँचे किनारे थे; चट्टान ने मेरे सिर को पनाह दी: उसके ऊपर आकाश था।

कुछ समय बीतने के बाद ही मुझे यहाँ भी शांति का अनुभव हुआ: मुझे एक अस्पष्ट भय सता रहा था कि कहीं जंगली मवेशी आस-पास न हों, या कोई शिकारी या अवैध शिकारी मुझे देख न ले। अगर हवा का एक झोंका रेगिस्तान में आता, तो मैं ऊपर देखता, यह सोचकर कि कहीं कोई बैल तो नहीं भाग रहा; अगर कोई चिड़िया सीटी बजाती, तो मैं उसे कोई आदमी समझता। लेकिन अपने डर को निराधार पाकर और शाम ढलते ही छा जाने वाली गहरी शांति से शांत होकर, मुझे आत्मविश्वास मिला। अभी तक मैंने सोचा नहीं था; मैं केवल सुनता, देखता और डरता रहा था; अब मुझे सोचने-समझने की शक्ति वापस मिल गई।

मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? ओह, असहनीय सवाल, जब मैं कुछ भी नहीं कर सकता था और कहीं नहीं जा सकता था! — जब मुझे इंसानी बस्ती तक पहुँचने से पहले अपने थके-हारे, काँपते अंगों से एक लंबा रास्ता तय करना था — जब मुझे रहने की जगह पाने से पहले ठंडी दया की भीख माँगनी पड़ती थी: अनिच्छुक सहानुभूति की गुहार लगानी पड़ती थी, लगभग निश्चित रूप से ठुकराया जाता था, इससे पहले कि मेरी कहानी सुनी जाए, या मेरी कोई ज़रूरत पूरी की जाए!

मैंने बंजर ज़मीन को छुआ: वह सूखी थी, फिर भी गर्मी से भरी हुई थी। मैंने आकाश की ओर देखा; वह निर्मल था: खाई की चोटी के ठीक ऊपर एक सुंदर तारा

टिमटिमा रहा था। ओस गिर रही थी, लेकिन बड़ी कोमलता से; हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी। प्रकृति मुझे दयालु और भली-भांति लगी; मुझे लगा कि वह मुझसे प्रेम करती है, भले ही मैं समाज से बहिष्कृत था; और मैं, जो मनुष्य से केवल अविश्वास, अस्वीकृति और अपमान की ही उम्मीद कर सकता था, उससे पुत्रवत स्नेह से लिपटा रहा। कम से कम आज रात, मैं उसका मेहमान बनूँगा, जैसे उसका बच्चा: मेरी माँ मुझे बिना पैसे और बिना किसी कीमत के अपने घर में ठहराएगी। मेरे पास अभी भी रोटी का एक टुकड़ा बचा था: दोपहर में जिस कस्बे से हम गुज़रे थे, वहाँ से मैंने एक सिक्के से जो रोटी खरीदी थी, उसका बचा हुआ हिस्सा - मेरा आखिरी सिक्का। मैंने जगह-जगह पके हुए बेर चमकते देखे, जैसे बंजर ज़मीन में काले मोती: मैंने मुट्ठी भर बेर तोड़े और उन्हें रोटी के साथ खा लिया। मेरी भूख, जो पहले बहुत तेज़ थी, इस साधु के भोजन से, अगर पूरी तरह से शांत नहीं हुई, तो कम से कम शांत हो गई। इसके समाप्त होने पर मैंने अपनी शाम की प्रार्थना की, और फिर अपना सोफा चुना।

चट्टान के किनारे झाड़ियाँ बहुत गहरी थीं: जब मैं लेटा तो मेरे पैर उनमें धंस गए; दोनों ओर ऊँची उठती हुई झाड़ियाँ ठंडी हवा के लिए बहुत कम जगह छोड़ती थीं। मैंने

अपनी शॉल को दोहरा मोड़कर अपने ऊपर ओढ़ लिया; काई से ढकी एक नीची सी जगह मेरा तकिया बन गई। इस तरह लेटने पर, कम से कम रात की शुरुआत में तो मुझे ठंड नहीं लग रही थी।

मेरा विश्राम शायद बेहद सुखद होता, लेकिन एक दुखी हृदय ने उसे भंग कर दिया। वह अपने गहरे घावों, अपने भीतरी रक्तस्राव और टूटे हुए दिलों का विलाप कर रहा था। वह श्री रोचेस्टर और उनके भाग्य के लिए कांप रहा था; वह उनके लिए कड़वी दया से विलाप कर रहा था; वह निरंतर लालसा से उन्हें पुकार रहा था; और, टूटे हुए पंखों वाले पक्षी की तरह असहाय होकर, वह अब भी व्यर्थ ही अपने टूटे हुए पंखों को फड़फड़ाते हुए उन्हें ढूंढने का प्रयास कर रहा था।

विचारों की इस पीड़ा से थककर मैं घुटनों के बल उठ खड़ा हुआ। रात हो चुकी थी और उसके ग्रह उदय हो चुके थे: एक सुरक्षित, शांत रात: भय के साथ के लिए बहुत ही शांत। हम जानते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है; लेकिन निश्चित रूप से हम उनकी उपस्थिति को सबसे अधिक तब महसूस करते हैं जब उनके कार्य हमारे सामने सबसे भव्य पैमाने पर फैले होते हैं; और यह निर्मल रात्रि आकाश में है, जहाँ उनके ग्रह अपने मौन पथ पर विचरण करते हैं, कि हम उनकी अनंतता, उनकी सर्वशक्तिमत्ता, उनकी सर्वव्यापकता को सबसे स्पष्ट रूप से पढ़ पाते हैं। मैं श्री रोचेस्टर के लिए प्रार्थना करने के लिए घुटनों के बल उठा था। ऊपर देखते हुए, मैंने आँसुओं से धुंधली आँखों से विशाल आकाशगंगा को देखा। यह याद करते हुए कि वह क्या थी - वे अनगिनत प्रणालियाँ जो अंतरिक्ष में प्रकाश की एक कोमल लकीर की तरह फैली हुई थीं - मैंने ईश्वर की शक्ति और सामर्थ्य को महसूस किया। मुझे उनकी उस क्षमता पर पूरा विश्वास था कि वे अपनी बनाई हुई हर चीज को बचा लेंगे: मुझे विश्वास हो गया कि न तो पृथ्वी नष्ट होगी, न ही इस पर बसी कोई आत्मा। मैंने अपनी प्रार्थना को कृतज्ञता में बदल दिया: जीवन का स्रोत आत्माओं का उद्धारकर्ता भी था। श्री रोचेस्टर सुरक्षित थे; वह ईश्वर का था, और ईश्वर ही उसकी रक्षा करेगा। मैं फिर से पहाड़ी की गोद में लेट गया; और जल्द ही नींद में अपने दुख को भूल गया।

लेकिन अगले दिन, अभाव मेरे सामने पीला और निर्जीव होकर आया। नन्हे पक्षियों के अपने घोंसलों से चले जाने के बहुत समय बाद; मधुमक्खियों के दिन के सुनहरे उजाले में ओस सूखने से पहले ही मैदान का शहद इकट्ठा करने के बहुत समय बाद — जब सुबह की लंबी परछाइयाँ छंट गईं और सूरज धरती और आकाश को भर गया —

मैं उठा और मैंने अपने चारों ओर देखा।

कितना शांत, गर्म और उत्तम दिन था! यह फैला हुआ मैदान कितना सुनहरा रेगिस्तान था! चारों ओर धूप ही धूप थी। काश मैं यहीं रह पाता। मैंने एक छिपकली को चट्टान पर दौड़ते देखा; मैंने एक मधुमक्खी को मीठे बेरों के बीच व्यस्त देखा। काश उस पल मैं मधुमक्खी या छिपकली बन जाता, ताकि मुझे यहाँ उचित पोषण और स्थायी आश्रय मिल जाता। लेकिन मैं एक इंसान था, और मेरी भी इंसानी ज़रूरतें थीं: मुझे वहाँ नहीं रुकना चाहिए था जहाँ उन्हें पूरा करने के लिए कुछ भी न हो। मैं उठा; मैंने उस बिस्तर को देखा जिसे मैं छोड़कर आया था। भविष्य से निराश होकर, मेरी बस यही इच्छा थी - कि उस रात मेरे रचयिता ने सोते समय मेरी आत्मा को मुझसे ले लेने का निर्णय लिया होता; और मृत्यु द्वारा भाग्य के साथ आगे के संघर्ष से मुक्त होकर, यह थका हुआ शरीर अब शांति से गल जाए, और इस वीरान भूमि की मिट्टी में मिल जाए। हालाँकि, जीवन अभी भी मेरे अधिकार में था, अपनी सभी आवश्यकताओं, कष्टों और जिम्मेदारियों के साथ। बोझ उठाना ही था; ज़रूरतों को पूरा करना था; कष्ट सहना था; ज़िम्मेदारी निभानी थी। मैं निकल गया।

व्हिटक्रॉस को फिर से पाकर, मैं उस सड़क पर चल पड़ा जो सूरज से दूर जा रही थी, जो अब तेज़ और ऊँचा था। किसी और परिस्थिति से मेरा चुनाव तय नहीं हो सकता था। मैं बहुत देर तक चलता रहा, और जब मुझे लगा कि मैं लगभग काफी चल चुका हूँ, और उस थकान के आगे झुक सकता हूँ जो मुझे लगभग वश में कर रही थी —इस मजबूरी में किए गए प्रयास को छोड़ सकता हूँ, और पास में पड़े एक पत्थर पर बैठकर, उस उदासीनता के आगे निःसंकोच हो सकता हूँ जिसने मेरे दिल और शरीर को जकड़ रखा था—तभी मुझे एक घंटी की आवाज़ सुनाई दी—एक चर्च की घंटी।

मैंने आवाज़ की दिशा में मुड़कर देखा, और वहाँ, उन रमणीय पहाड़ियों के बीच, जिनके बदलते स्वरूपों पर मैंने एक घंटा पहले ध्यान देना बंद कर दिया था, मुझे एक छोटा सा गाँव और एक मीनार दिखाई दी। मेरे दाहिनी ओर की पूरी घाटी चरागाहों, अनाज के खेतों और जंगलों से भरी हुई थी; और एक चमकती हुई धारा हरे रंग की विभिन्न छटाओं, पकते हुए अनाज, घने जंगलों और साफ-सुथरे धूप वाले मैदानों के बीच से टेढ़ी-मेढ़ी बहती हुई जा रही थी। पहियों की गड़गड़ाहट से मेरा ध्यान सामने सड़क की ओर गया, और मैंने देखा कि एक भारी माल से लदी गाड़ी पहाड़ी पर चढ़ रही है, और थोड़ी ही दूर पर दो गायें और उनका चरवाहा थे। मानव जीवन और मानव

श्रम निकट थे। मुझे संघर्ष जारी रखना होगा: जीने के लिए प्रयास करना होगा और बाकी लोगों की तरह मेहनत करनी होगी।

लगभग दो बजे दोपहर को मैं गाँव में दाखिल हुआ। गाँव की इकलौती गली के आखिर में एक छोटी सी दुकान थी, जिसकी खिड़की में कुछ रोटियाँ रखी थीं। मुझे एक रोटी खाने की बहुत इच्छा हुई। उस रोटी से शायद मुझे थोड़ी ऊर्जा मिल जाती; उसके बिना आगे बढ़ना मुश्किल था। जैसे ही मैं अपने साथियों के बीच पहुँचा, मुझे फिर से ताकत और जोश पाने की इच्छा हुई। मुझे लगा कि किसी गाँव की सड़क पर भूख से बेहोश हो जाना अपमानजनक होगा। क्या मेरे पास ऐसा कुछ नहीं था जो मैं इन रोटियों के बदले दे सकूँ? मैंने सोचा। मेरे गले में एक छोटा सा रेशमी रुमाल बंधा था; मेरे पास दस्ताने थे। मैं शायद ही समझ पा रहा था कि घोर गरीबी में जी रहे पुरुष और महिलाएं कैसे गुजारा करते होंगे। मुझे नहीं पता था कि इनमें से कोई भी चीज स्वीकार की जाएगी या नहीं: शायद नहीं की जाएगी; लेकिन मुझे कोशिश तो करनी ही होगी।

मैं दुकान में दाखिल हुआ: वहाँ एक महिला थी। एक सभ्य पोशाक पहने हुए व्यक्ति को देखकर, जैसा कि उसने अनुमान लगाया, वह विनम्रता से आगे बढ़ी। वह मेरी सेवा कैसे कर सकती थी? मैं शर्म से भर गया: मेरे मुँह से वह विनती नहीं निकल रही थी जो मैंने सोच रखी थी। मैंने उसे आधे पहने हुए दस्ताने, सिकुड़ा हुआ रूमाल देने की हिम्मत नहीं की: इसके अलावा, मुझे लगा कि यह बेतुका होगा। मैंने बस थोड़ी देर बैठने की अनुमति माँगी, क्योंकि मैं थका हुआ था। ग्राहक की उम्मीद में निराश होकर, उसने मेरी विनती मान ली। उसने एक कुर्सी की ओर इशारा किया; मैं उस पर बैठ गया। मुझे रोने की तीव्र इच्छा हुई; लेकिन यह जानते हुए कि ऐसा करना उचित नहीं होगा, मैंने खुद को रोक लिया। थोड़ी देर बाद मैंने उससे पूछा, "क्या गाँव में कोई दर्जी या साधारण कारीगर है?"

“हां; दो या तीन। जितने लोगों के लिए रोजगार उपलब्ध था, लगभग उतने ही थे।”

मैंने विचार किया। अब मैं एक निर्णायक मोड़ पर आ गया था। मुझे मजबूरी का सामना करना पड़ा। मैं एक ऐसे व्यक्ति की स्थिति में खड़ा था जिसके पास कोई सहारा नहीं था, कोई दोस्त नहीं था, एक पैसा भी नहीं था। मुझे कुछ करना होगा। क्या? मुझे कहीं आवेदन करना होगा। कहाँ?

क्या उसे आस-पड़ोस में ऐसी कोई जगह पता थी जहाँ नौकर की आवश्यकता हो?

नहीं; वह कुछ नहीं कह सकी।

“इस जगह का मुख्य व्यापार क्या था? यहाँ के अधिकांश लोग क्या काम करते थे?”

"उनमें से कुछ खेतिहर मजदूर थे; काफी लोग श्री ओलिवर के सुई कारखाने और फाउंड्री में काम करते थे।"

“क्या श्री ओलिवर ने महिलाओं को काम पर रखा था?”

नहीं; यह पुरुषों का काम था।

और महिलाएं क्या करती हैं?

“मुझे नहीं पता,” जवाब मिला। “कुछ लोग एक काम करते हैं, कुछ दूसरे। बेचारे लोगों को जैसे-तैसे गुजारा करना पड़ता है।”

वह मेरे सवालों से थक चुकी थी; और सच कहूँ तो, मुझे उससे बार-बार सवाल पूछने का क्या हक था? एक-दो पड़ोसी अंदर आए; जाहिर है मेरी कुर्सी की जरूरत थी। मैंने उनसे विदा ली।

मैं गली में आगे बढ़ता गया, दाहिनी और बाईं ओर के सभी घरों को देखता रहा; लेकिन मुझे किसी भी घर में प्रवेश करने का कोई कारण या प्रेरणा नहीं मिली। मैं एक घंटे या उससे अधिक समय तक गाँव में इधर-उधर घूमता रहा, कभी थोड़ी दूर जाकर वापस लौट आता। बहुत थका हुआ और भूख से बेहाल, मैं एक गली में मुड़ गया और झाड़ी के नीचे बैठ गया। कुछ ही मिनटों में, मैं फिर से खड़ा हो गया और कुछ खोजने लगा - कोई सहारा, या कम से कम कोई सूचना देने वाला। गली के अंत में एक छोटा सा सुंदर घर था, जिसके सामने एक बगीचा था, जो बेहद साफ-सुथरा और फूलों से भरा हुआ था। मैं वहीं रुक गया। मुझे उस सफेद दरवाजे के पास जाने या चमकते हुए दरवाज़े की कुंडी को छूने की क्या ज़रूरत थी? उस घर में रहने वालों को मेरी सेवा करने में क्या रुचि हो सकती थी? फिर भी मैं पास गया और दरवाज़ा खटखटाया। एक सौम्य दिखने वाली, साफ-सुथरे कपड़े पहनी युवती ने दरवाजा खोला। एक हताश हृदय और कमजोर शरीर से अपेक्षित आवाज में—बेहद धीमी और लड़खड़ाती आवाज में—मैंने पूछा कि क्या यहाँ किसी नौकर की आवश्यकता है?

“नहीं,” उसने कहा; “हम नौकर नहीं रखते।”

मैंने आगे पूछा, “क्या आप मुझे बता सकते हैं कि मुझे किसी भी तरह का रोजगार कहाँ मिल सकता है? मैं यहाँ बिल्कुल अजनबी हूँ, मेरा यहाँ कोई परिचित नहीं है।

मुझे काम चाहिए, चाहे कुछ भी हो जाए।"

लेकिन मेरे लिए सोचना या मेरे लिए जगह ढूंढना उसका काम नहीं था; इसके अलावा, उसकी नज़र में मेरा चरित्र, मेरी स्थिति और मेरी कहानी कितनी संदिग्ध रही होगी। उसने अपना सिर हिलाया, और कहा कि उसे "अफ़सोस है कि वह मुझे कोई जानकारी नहीं दे सकती," और सफ़ेद दरवाज़ा बड़े ही धीरे और शालीनता से बंद हो गया: लेकिन इसने मुझे बाहर कर दिया। अगर उसने दरवाज़ा थोड़ी देर और खुला रखा होता, तो मुझे लगता है कि मैं रोटी का एक टुकड़ा मांग लेता; क्योंकि मैं अब बहुत लाचार हो चुका था।

मैं उस घिनौने गाँव में वापस नहीं लौट सकता था, जहाँ मदद की कोई उम्मीद भी नहीं थी। मेरा मन तो पास ही दिख रहे जंगल की ओर जाने का कर रहा था, जो अपनी घनी छाया में आश्रय देने का वादा करता प्रतीत हो रहा था; लेकिन मैं इतना बीमार, इतना कमज़ोर और भूख से इतना व्याकुल था कि मेरी सहज प्रवृत्ति मुझे ऐसे स्थानों की ओर भटकने पर मजबूर कर रही थी जहाँ भोजन मिलने की संभावना हो। एकांत, एकांत नहीं, विश्राम नहीं, जब तक भूख रूपी गिद्ध मेरे शरीर में अपने चोंच और पंजे गड़ाए रहे।

मैं घरों के पास से गुज़रा; उन्हें छोड़कर चला गया, फिर वापस आया, और फिर भटकने लगा: हमेशा इस बात से विचलित होता रहा कि मुझे कुछ भी मांगने का कोई अधिकार नहीं है—अपने अकेलेपन में किसी से मदद की उम्मीद करने का कोई हक नहीं है। इसी बीच, दोपहर ढलती चली गई, और मैं इस तरह एक खोए हुए और भूखे कुत्ते की तरह भटकता रहा। एक खेत पार करते हुए, मैंने अपने सामने गिरजाघर का शिखर देखा: मैं उसकी ओर तेज़ी से बढ़ा। गिरजाघर के पास, और एक बगीचे के बीच में, एक छोटा सा, लेकिन अच्छी तरह से बना हुआ घर था, जो मुझे निस्संदेह पादरी का निवास था। मुझे याद आया कि अजनबी जो किसी ऐसी जगह पर आते हैं जहाँ उनके कोई दोस्त नहीं होते, और जिन्हें रोज़गार की ज़रूरत होती है, वे कभी-कभी परिचय और सहायता के लिए पादरी से गुहार लगाते हैं। पादरी का कर्तव्य है कि वे उन लोगों की मदद करें—कम से कम सलाह देकर—जो अपनी मदद खुद करना चाहते हैं। मुझे लगा कि मुझे यहाँ सलाह लेने का कुछ अधिकार है। फिर हिम्मत जुटाकर, और अपनी बची-खुची ताकत इकट्ठा करके, मैं आगे बढ़ा। मैं घर पहुँचा, और रसोई के दरवाजे पर दस्तक दी। एक बूढ़ी औरत ने दरवाजा खोला: मैंने पूछा, क्या यह

पादरी का निवास है?

"हाँ।"

"क्या पादरी अंदर थे?"

"नहीं।"

"क्या वह जल्द ही आ जाएगा?"

नहीं, वह घर से चला गया था।

“दूरी तक?”

“ज्यादा दूर नहीं – बस तीन मील दूर। उनके पिता की अचानक मृत्यु के कारण उन्हें वहां से जाना पड़ा था: वे अभी मार्श एंड में थे, और संभवतः वहां दो सप्ताह और रुकेंगे।”

क्या घर में कोई महिला मौजूद थी?

“नहीं, उसके सिवा कोई नहीं था, और वह घर की नौकरानी थी;” और उससे, पाठक, मैं उस राहत की भीख नहीं मांग सका जिसकी कमी से मैं डूब रहा था; मैं अभी भीख नहीं मांग सकता था; और फिर मैं रेंगकर दूर चला गया।

मैंने एक बार फिर अपना रुमाल उतारा—एक बार फिर मुझे उस छोटी सी दुकान में रखी रोटियों की याद आई। काश, एक टुकड़ा ही मिल जाए! भूख की पीड़ा को कम करने के लिए बस एक निवाला ही काफी है! सहज ही मैंने अपना चेहरा फिर से गाँव की ओर मोड़ा; मुझे वह दुकान फिर से मिल गई, और मैं अंदर चली गई; और यद्यपि वहाँ उस महिला के अलावा और भी लोग थे, मैंने हिम्मत करके यह निवेदन किया—“क्या वह मुझे इस रुमाल के बदले एक रोटी दे देंगी?”

उसने मुझे स्पष्ट संदेह भरी नजरों से देखा और कहा, "नहीं, उसने कभी इस तरह से सामान नहीं बेचा।"

लगभग हताश होकर मैंने आधा केक माँगा; उसने फिर मना कर दिया। “उसे कैसे पता चलेगा कि मुझे रुमाल कहाँ से मिला?” उसने कहा।

"क्या वह मेरे दस्ताने लेगी?"

“नहीं! वो उनसे क्या कर सकती थी?”

पाठक, इन विवरणों पर विचार करना सुखद नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि बीते हुए दर्दनाक अनुभवों को याद करने में आनंद होता है; लेकिन आज के समय में मैं उन समयों को याद करने की हिम्मत भी नहीं कर पाता जिनका मैं जिक्र कर रहा हूँ:

शारीरिक पीड़ा के साथ-साथ नैतिक पतन की यादें इतनी कष्टदायक हैं कि उन्हें याद करना कभी भी उचित नहीं है। मैंने उन लोगों में से किसी को भी दोष नहीं दिया जिन्होंने मुझे ठुकरा दिया। मुझे लगा कि यह होना ही था, और इसमें कुछ नहीं किया जा सकता था: एक साधारण भिखारी अक्सर संदेह का पात्र होता है; एक अच्छे कपड़े पहने भिखारी तो निश्चित रूप से संदेह का पात्र होता है। बेशक, भीख मांगना एक तरह का रोजगार था; लेकिन मुझे रोजगार देना किसका काम था? निश्चित रूप से उन लोगों का नहीं जिन्होंने मुझे उस समय पहली बार देखा था, और जो मेरे चरित्र के बारे में कुछ नहीं जानते थे। और उस महिला की बात करें जिसने रोटी के बदले मेरा रूमाल लेने से इनकार कर दिया, तो वह सही थी, अगर उसे यह प्रस्ताव संदिग्ध लगा या लेन-देन लाभहीन लगा। अब मैं संक्षेप में बोलता हूँ। मैं इस विषय से ऊब गया हूँ।

अंधेरा होने से कुछ देर पहले मैं एक फार्महाउस के पास से गुजरा, जिसके खुले दरवाजे पर किसान बैठा रोटी और पनीर का अपना रात का खाना खा रहा था। मैं रुका और बोला—

“क्या आप मुझे रोटी का एक टुकड़ा देंगे? मुझे बहुत भूख लगी है।” उन्होंने आश्चर्य भरी नज़र से मेरी ओर देखा; लेकिन बिना कुछ कहे, उन्होंने अपनी रोटी में से एक मोटा टुकड़ा काटकर मुझे दे दिया। मुझे लगता है कि उन्होंने मुझे भिखारी नहीं, बल्कि एक सनकी औरत समझा होगा, जिसे उनकी भूरी रोटी पसंद आ गई थी। जैसे ही मैं उनके घर से दूर हुई, मैं बैठ गई और उसे खा लिया।

मुझे कहीं भी छत के नीचे रहने की जगह मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी, इसलिए मैंने उसी जंगल में रहने की जगह ढूंढी जिसका जिक्र मैंने पहले किया था। लेकिन मेरी रात बहुत कष्टदायक थी, मेरी नींद टूटी: ज़मीन गीली थी, हवा ठंडी थी: इसके अलावा, कई बार घुसपैठिए मेरे पास से गुज़रे, और मुझे बार-बार अपना ठिकाना बदलना पड़ा; मुझे ज़रा भी सुरक्षा या शांति का एहसास नहीं हुआ। सुबह होते-होते बारिश शुरू हो गई; अगला पूरा दिन भीगता रहा। पाठक, मुझसे उस दिन का विस्तृत विवरण मत मांगिए; पहले की तरह, मैंने काम की तलाश की; पहले की तरह, मुझे ठुकरा दिया गया; पहले की तरह, मैं भूखा रहा; लेकिन एक बार खाना मेरे मुँह में गया। एक झोपड़ी के दरवाजे पर मैंने एक छोटी लड़की को ठंडे दलिया का ढेर सूअर के चारे में डालते देखा। मैंने पूछा, "क्या तुम मुझे वह दोगी?"

उसने मेरी तरफ घूरकर देखा। “माँ!” उसने हैरानी से कहा, “एक औरत मुझसे ये दलिया मांग रही है।”

“ठीक है बच्ची,” भीतर से एक आवाज आई, “अगर वह भिखारी है तो उसे दे दो। उस सूअर को इसकी जरूरत नहीं है।”

लड़की ने जमे हुए सांचे को मेरे हाथ में खाली कर दिया, और मैंने उसे बड़ी लालच से चट कर लिया।

जैसे-जैसे नम शाम गहरी होती गई, मैं एक सुनसान पगडंडी पर रुक गया, जिस पर मैं एक घंटे या उससे अधिक समय से चल रहा था।

“मेरी ताकत बिल्कुल जवाब दे रही है,” मैंने मन ही मन कहा। “मुझे लगता है कि मैं अब और आगे नहीं जा सकती। क्या आज रात मैं फिर से अकेली पड़ जाऊंगी? जब तक इतनी बारिश हो रही है, क्या मुझे अपना सिर ठंडी, भीगी हुई ज़मीन पर रखना पड़ेगा? मुझे डर है कि मैं इसके अलावा कुछ नहीं कर सकती: क्योंकि मुझे कौन अपनाएगा? लेकिन यह बहुत भयानक होगा, भूख, कमजोरी, ठंड और इस निराशा के साथ— उम्मीद का पूरी तरह से टूट जाना। हालांकि, शायद मैं सुबह होने

से पहले ही मर जाऊंगी। और मैं मौत के इस विचार को क्यों स्वीकार नहीं कर पा रही? मैं इस बेकार ज़िंदगी को क्यों बचाए रखना चाहती हूं? क्योंकि मैं जानती हूं, या मानती हूं, कि मिस्टर रोचेस्टर जीवित हैं: और फिर, भूख और ठंड से मरना एक ऐसा भाग्य है जिसे प्रकृति चुपचाप स्वीकार नहीं कर सकती। हे ईश्वर! मुझे थोड़ी देर और सहारा दो! मदद करो!— मेरा मार्गदर्शन करो!"

मेरी धुंधली निगाहें धुंधले और निर्मल परिदृश्य पर घूम रही थीं। मैंने देखा कि मैं गाँव से बहुत दूर भटक गया था: वह बिल्कुल नज़र से ओझल हो गया था। उसके चारों ओर की सारी खेती गायब हो चुकी थी। मैं कई रास्तों और पगडंडियों से होते हुए एक बार फिर बंजर भूमि के पास पहुँच गया था; और अब, मेरे और उस धुंधली पहाड़ी के बीच केवल कुछ खेत ही बचे थे, जो लगभग उतने ही जंगली और अनुत्पादक थे जितनी वह बंजर भूमि जिससे उन्हें बड़ी मुश्किल से सुधारा गया था।

"खैर, मैं सड़क या भीड़भाड़ वाली राह पर मरने की बजाय वहीं मरना पसंद करूँगा," मैंने सोचा। "और यह कहीं बेहतर है कि कौवे और काले कौवे—अगर इन इलाकों में कोई कौवे हों तो—मेरी हड्डियों से मेरा मांस नोच लें, बजाय इसके कि मुझे किसी वर्कहाउस के ताबूत में कैद करके एक गरीब की कब्र में सड़ने दिया जाए।"

फिर मैं पहाड़ी की ओर मुड़ा। मैं वहाँ पहुँच गया। अब बस एक खोखली जगह ढूँढनी थी जहाँ मैं लेट सकूँ और कम से कम छिप सकूँ, भले ही सुरक्षित न महसूस करूँ। लेकिन उस बंजर ज़मीन की सतह समतल लग रही थी। उसमें रंग के अलावा कोई विविधता नहीं थी: हरा, जहाँ दलदल में सरकंडे और काई उग आए थे; काला, जहाँ सूखी मिट्टी पर केवल झाड़ियाँ थीं। अंधेरा बढ़ता जा रहा था, फिर भी मैं इन बदलावों को देख पा रहा था, हालाँकि ये केवल प्रकाश और छाया के क्रमिक परिवर्तन मात्र थे; क्योंकि दिन के उजाले के साथ रंग फीके पड़ गए थे।

मेरी नज़र अब भी उस उफनते टीले और दलदली ज़मीन के किनारे पर घूम रही थी, जो सबसे जंगली नज़ारों में खो रही थी, तभी दलदलों और पहाड़ियों के बीच एक धुंधले बिंदु पर एक रोशनी चमकी। "यह तो कोई भद्दी आग है," मेरा पहला विचार था; और मुझे लगा कि यह जल्द ही गायब हो जाएगी। लेकिन यह लगातार जलती रही, न कम हुई और न बढ़ी। "तो क्या यह अभी-अभी जलाई गई कोई बड़ी आग है?" मैंने सोचा। मैंने देखा कि क्या यह फैलेगी: लेकिन नहीं; न कम हुई, न बढ़ी। "हो सकता है यह किसी घर में जलती मोमबत्ती हो," मैंने अनुमान लगाया; "लेकिन अगर ऐसा है, तो

मैं कभी वहाँ तक नहीं पहुँच सकता। यह बहुत दूर है: और अगर यह मेरे एक गज के भीतर भी होती, तो इसका क्या फायदा? मैं बस दरवाज़ा खटखटाता और वह मेरे मुँह पर बंद हो जाता।"

और मैं जहाँ खड़ा था वहीं बैठ गया, और अपना चेहरा ज़मीन पर छिपा लिया। मैं कुछ देर तक चुपचाप लेटा रहा: रात की हवा पहाड़ी और मेरे ऊपर से गुज़री, और दूर कहीं धीमी होकर सिसकियाँ लेने लगी; बारिश तेज़ बरस रही थी, और मुझे फिर से पूरी तरह भिगो रही थी। काश मैं उस ठंडी ठंड—मौत की उस सौम्य सुन्नता—के प्रति थोड़ा अकड़ जाता, तो शायद वह बरसती रहती; मुझे उसका एहसास ही नहीं होता; लेकिन मेरा अभी भी जीवित शरीर उसके ठंडे प्रभाव से काँप उठा। मैं थोड़ी देर बाद उठ गया।

प्रकाश अभी भी मौजूद था, बारिश के बीच मंद लेकिन लगातार चमक रहा था। मैंने फिर से चलने की कोशिश की: मैं अपने थके हुए अंगों को धीरे-धीरे घसीटते हुए उसकी ओर बढ़ा। वह मुझे पहाड़ी के ऊपर से तिरछे रास्ते से होते हुए एक चौड़े दलदल से ले गया, जो सर्दियों में भी पार करना असंभव होता, और अब, गर्मियों के चरम पर भी, पानी से भरा और हिलता हुआ था। यहाँ मैं दो बार गिरा; लेकिन उतनी ही बार उठा और अपनी शक्ति को फिर से इकट्ठा किया। यह प्रकाश मेरी एकमात्र आशा थी: मुझे इसे पाना ही था।

दलदल पार करने के बाद, मुझे बंजर भूमि पर सफ़ेद रंग की एक झलक दिखाई दी। मैं उसके पास पहुँचा; वह एक सड़क या पगडंडी थी: वह सीधे प्रकाश की ओर जा रही थी, जो अब पेड़ों के एक झुंड के बीच एक छोटी पहाड़ी से चमक रहा था - अँधेरे में उनकी आकृति और पत्तियों को देखकर मुझे लगा कि वे देवदार के पेड़ थे। जैसे ही मैं पास पहुँचा, मेरा तारा गायब हो गया: मेरे और उसके बीच कोई बाधा आ गई थी। मैंने अपने सामने मौजूद उस अंधेरे पिंड को छूने के लिए हाथ बढ़ाया: मैंने एक नीची दीवार के खुरदुरे पत्थरों को पहचाना - उसके ऊपर, बाड़ जैसी कोई चीज़ थी, और अंदर, एक ऊँची और काँटेदार झाड़ी थी। मैं टटोलता रहा। फिर से मेरे सामने एक सफ़ेद वस्तु चमकी: वह एक द्वार था - एक छोटा सा दरवाज़ा; जैसे ही मैंने उसे छुआ, वह अपने कब्ज़ों पर हिल गया। दोनों ओर काले रंग की झाड़ीनुमा होली या यू के पेड़ खड़े थे।

फाटक से अंदर प्रवेश करते हुए और झाड़ियों को पार करते हुए, एक घर की

आकृति दिखाई दी, काली, नीची और काफी लंबी; लेकिन प्रकाश का कोई संकेत नहीं था। चारों ओर घना अंधेरा था। क्या घरवाले आराम करने चले गए थे? मुझे आशंका थी कि ऐसा ही होगा। दरवाजा ढूंढते हुए, मैं मुड़ा: तभी एक छोटी सी जालीदार खिड़की के कांच के टुकड़ों से फिर से एक चमकती रोशनी दिखाई दी, जो जमीन से एक फुट की दूरी पर थी, और आइवी या किसी अन्य रेंगने वाले पौधे के कारण और भी छोटी लग रही थी, जिसके पत्ते घर की दीवार के उस हिस्से पर घने गुच्छों में फैले हुए थे जहाँ वह खिड़की लगी थी। खिड़की इतनी संकरी और छिपी हुई थी कि पर्दे या शटर की आवश्यकता नहीं समझी गई थी; और जब मैं झुका और उस पर लटके पत्तों को हटाया, तो मैं अंदर सब कुछ देख सका। मैं एक कमरा साफ-साफ देख सका, जिसका फर्श रेत से चिकना किया हुआ था; अखरोट की लकड़ी की एक अलमारी, जिस पर पीतल की प्लेटें पंक्तियों में सजी थीं, जो जलती हुई पीट की आग की लालिमा और चमक को प्रतिबिंबित कर रही थीं। मुझे एक घड़ी, एक सफेद लकड़ी की मेज और कुछ कुर्सियाँ दिखाई दीं। मोमबत्ती, जिसकी रोशनी मेरे लिए मार्गदर्शक थी, मेज पर जल रही थी; और उसकी रोशनी में एक बुजुर्ग महिला, जो कुछ हद तक खुरदरी दिखती थी, लेकिन अपने आस-पास के सभी लोगों की तरह बेहद साफ-सुथरी थी, एक मोजा बुन रही थी।

मैंने इन वस्तुओं पर सरसरी नज़र डाली—इनमें कुछ भी असाधारण नहीं था। चूल्हे के पास एक और दिलचस्प समूह दिखाई दिया, जो गुलाबी शांति और गर्माहट से भरे वातावरण में स्थिर बैठा था। दो युवा, सुंदर महिलाएं—हर तरह से शालीन—बैठी थीं, एक नीची झूला कुर्सी पर, दूसरी उससे भी छोटे स्टूल पर; दोनों ने गहरे शोक वस्त्र पहने थे, जो उनके गोरे चेहरों और गर्दन को और भी खूबसूरत बना रहे थे: एक बड़ा बूढ़ा पॉइंटर कुत्ता अपना भारी सिर एक लड़की के घुटने पर टिकाए बैठा था—दूसरी की गोद में एक काली बिल्ली आराम कर रही थी।

इन लोगों के लिए यह साधारण रसोई एक अजीब जगह थी! ये कौन थीं? ये मेज पर बैठी बुज़ुर्ग महिला की बेटियाँ तो नहीं हो सकती थीं; क्योंकि वह तो देहाती लग रही थीं, और ये सभी बेहद सलीकेदार और सभ्य थीं। मैंने कहीं भी ऐसे चेहरे नहीं देखे थे: फिर भी, जैसे ही मैंने उन्हें निहारा, मुझे उनके हर चेहरे की बनावट से अपनापन महसूस हुआ। मैं उन्हें सुंदर नहीं कह सकता - वे इस शब्द के लिए बहुत पीली और गंभीर थीं: जैसे ही वे एक-एक किताब पर झुकीं, वे गंभीर भाव से विचारमग्न हो गईं।

उनके बीच एक स्टैंड पर दूसरी मोमबत्ती और दो बड़ी किताबें रखी थीं, जिन्हें वे बार-बार देखती रहीं, मानो अपने हाथों में पकड़ी छोटी किताबों से उनकी तुलना कर रही हों, जैसे लोग अनुवाद के लिए शब्दकोश देख रहे हों। यह दृश्य इतना शांत था मानो सभी आकृतियाँ परछाईं हों और आग से जगमगाता कमरा एक तस्वीर हो: इतना सन्नाटा था कि मैं अंगीठी से गिरती राख की आवाज़, कोने में रखी घड़ी की टिक-टिक सुन सकता था; और मुझे तो ऐसा लगा जैसे मैं उस महिला की बुनाई की सुइयों की खट-खट की आवाज़ भी सुन सकता हूँ। इसलिए, जब अंततः किसी आवाज ने उस विचित्र सन्नाटे को भंग किया, तो वह मुझे स्पष्ट रूप से सुनाई दी।

"सुनो, डायना," एक तल्लीन छात्रा ने कहा; "फ्रांज और बूढ़ा डैनियल रात में साथ हैं, और फ्रांज एक सपने के बारे में बता रहा है जिससे वह डर के मारे जाग गया है — सुनो!" और उसने धीमी आवाज़ में कुछ पढ़ा, जिसका एक भी शब्द मुझे समझ नहीं आया; क्योंकि वह एक अनजान भाषा में था — न तो फ्रेंच और न ही लैटिन। यह ग्रीक थी या जर्मन, मैं नहीं बता सकती।

"यह तो बहुत प्रभावशाली है," उसने समाप्त करने के बाद कहा: "मुझे यह बहुत पसंद आया।" दूसरी लड़की, जिसने अपनी बहन की बात सुनने के लिए अपना सिर उठाया था, आग की ओर देखते हुए, पढ़ी गई पंक्ति को दोहराया। कुछ समय बाद, मुझे भाषा और किताब दोनों का ज्ञान हो गया; इसलिए, मैं यहाँ उस पंक्ति को उद्धृत करूँगा: हालाँकि, जब मैंने इसे पहली बार सुना था, तो यह मेरे लिए केवल एक बेमानी सी ध्वनि थी—जिसका कोई अर्थ नहीं था:

"'फिर एक प्रकट हुआ, जो रात के तारों जैसा दिखता था।' वाह! वाह!" वह बोली, उसकी गहरी और काली आँखें चमक उठीं। "देखो, एक मंद और शक्तिशाली महादूत तुम्हारे सामने उचित रूप से विराजमान है! यह पंक्ति सौ पन्नों के झूठे वादों के बराबर है। 'मैं अपने क्रोध के कटोरे में विचारों को तौलता हूँ और अपने क्रोध के भार से कर्मों को तौलता हूँ।' मुझे यह पसंद आया!"

दोनों फिर चुप हो गए।

"क्या सिर्फ यही एक देश है जहां वे इस तरह बात करते हैं?" बुढ़िया ने बुनाई से नज़रें उठाकर पूछा।

"हां, हन्ना - इंग्लैंड से कहीं बड़ा देश, जहां वे किसी और तरीके से बात नहीं करते।"

"खैर, निश्चित रूप से, मुझे नहीं पता कि वे एक दूसरे को कैसे समझ सकते हैं: और अगर आप में से कोई भी वहां जाता, तो मुझे लगता है कि आप बता सकते थे कि उन्होंने क्या कहा?"

“हम शायद उनकी कही हुई कुछ बातें समझ सकते हैं, लेकिन पूरी नहीं—क्योंकि हम उतने होशियार नहीं हैं जितना तुम सोचती हो, हन्ना। हम जर्मन नहीं बोलते और बिना शब्दकोश की मदद के हम उसे पढ़ भी नहीं सकते।”

और इससे आपको क्या फायदा होता है?

"हम इसे कभी न कभी सिखाने का इरादा रखते हैं—या कम से कम इसके मूल तत्वों को, जैसा कि वे कहते हैं; और तब हमें अभी की तुलना में अधिक पैसा मिलेगा।"

“मुझे अच्छा लगा, लेकिन पढ़ाई छोड़ दो; आज रात के लिए तुमने काफी कुछ कर लिया है।”

मुझे लगता है कि हम थक गए हैं: कम से कम मैं तो थक गई हूँ। मैरी, क्या तुम भी थक गई हो?

"जानलेवा रूप से: आखिरकार, एक ऐसी भाषा पर अथक परिश्रम करना कठिन काम है जिसका कोई गुरु नहीं है, सिवाय एक शब्दकोश के।"

"हाँ, खासकर यह जटिल लेकिन शानदार जर्मन भाषा। मुझे आश्चर्य है कि सेंट जॉन कब घर लौटेंगे।"

“अब तो उसे ज़्यादा देर नहीं लगेगी: अभी तो बस दस ही बजे हैं (कमरबंद से निकाली एक छोटी सोने की घड़ी को देखते हुए)। हन्ना, बारिश बहुत तेज़ हो रही है: क्या तुम कृपा करके बैठक में जल रही आग को देख लोगी?”

वह महिला उठी: उसने एक दरवाजा खोला, जिसके माध्यम से मुझे धुंधला सा एक रास्ता दिखाई दिया: थोड़ी देर बाद मैंने उसे एक अंदरूनी कमरे में आग को हिलाते हुए सुना; वह थोड़ी देर बाद वापस आ गई।

“अरे बच्चों!” उसने कहा, “मुझे अब उस कमरे में जाने में बहुत परेशानी हो रही है: कोने में खाली पड़ी कुर्सी के साथ वह कमरा बहुत अकेला लग रहा है।”

उसने अपने एप्रन से अपनी आँखें पोंछीं: पहले गंभीर दिख रही दोनों लड़कियाँ अब उदास लग रही थीं।

“लेकिन अब वह बेहतर जगह पर है,” हन्ना ने आगे कहा: “हमें उसके दोबारा यहाँ

आने की कामना नहीं करनी चाहिए। और वैसे भी, किसी को भी शांतिपूर्ण मृत्यु की आवश्यकता नहीं होती, न ही उसे मिली।”

"आपका कहना है कि उन्होंने हमारा ज़िक्र तक नहीं किया?" एक महिला ने पूछा।

“उनके पास समय नहीं था, बेटा: तुम्हारे पिता एक मिनट में चले गए। उन्हें कल की तरह थोड़ी सी बीमारी थी, लेकिन कुछ खास नहीं; और जब मिस्टर सेंट जॉन ने पूछा कि क्या वे तुम दोनों में से किसी को बुलवाना चाहेंगे, तो वे उन पर हँस पड़े। अगले दिन फिर से उनके सिर में थोड़ा भारीपन शुरू हो गया - यानी पखवाड़े भर से - और वे सो गए और फिर कभी नहीं उठे: जब तुम्हारा भाई कमरे में गया और उन्हें पाया तो वे लगभग बेहोश थे। आह, बच्चे! ये तो पुराने खानदान की आखिरी निशानी है - क्योंकि तुम और मिस्टर सेंट जॉन उन लोगों से बिल्कुल अलग हो जो अब नहीं रहे; क्योंकि तुम्हारी माँ तुम्हारे रास्ते पर बहुत चलती थी, और लगभग उतनी ही पढ़ी-लिखी थी। वह तुम्हारी हूबहू छवि थी, मैरी: डायना तुम्हारे पिता जैसी है।”

मुझे वे दोनों इतनी मिलती-जुलती लगीं कि मैं यह नहीं बता पाई कि बूढ़ी नौकरानी (अब मैंने उसे नौकरानी ही मान लिया था) को उनमें क्या अंतर नज़र आया। दोनों का रंग गोरा और शरीर दुबला-पतला था; दोनों के चेहरे गरिमा और बुद्धिमत्ता से भरे थे। बेशक, एक के बाल दूसरी से थोड़े गहरे रंग के थे, और उनके बालों को संवारने का तरीका भी अलग था; मैरी के हल्के भूरे बाल बीच से बँटे हुए और चिकने गुंथे हुए थे: डायना के गहरे काले बाल घने घुंघराले होकर उसकी गर्दन को ढके हुए थे। घड़ी में दस बज गए।

"मुझे यकीन है कि आप लोग रात का खाना खाना चाहेंगे," हन्ना ने कहा; "और जब मिस्टर सेंट जॉन आएंगे तो उन्हें भी खाना चाहिए होगा।"

और वह खाना बनाने लगी। महिलाएं उठीं; ऐसा लग रहा था जैसे वे बैठक में जाने वाली हों। इस क्षण तक, मैं उन्हें देखने में इतना मग्न था, उनकी उपस्थिति और बातचीत ने मुझमें इतनी गहरी रुचि जगा दी थी कि मैं अपनी दयनीय स्थिति को लगभग भूल ही गया था: अब मुझे याद आ गई। तुलना करने पर ऐसा लग रहा था कि मैं पहले से कहीं अधिक दयनीय और हताश हूँ। और इस घर के सदस्यों को मेरे लिए चिंता जताने के लिए प्रेरित करना कितना असंभव लग रहा था; उन्हें मेरी ज़रूरतों और दुखों की सच्चाई पर विश्वास दिलाना—उन्हें मेरी भटकन को कुछ समय के लिए आराम देने के लिए राजी करना! जैसे ही मैं दरवाजे से बाहर निकला और हिचकिचाते

हुए उस पर दस्तक दी, मुझे लगा कि मेरा यह आखिरी विचार मात्र था। हन्ना ने दरवाजा खोला।

"तुम क्या चाहते हो?" उसने आश्चर्य भरी आवाज में पूछा, और अपने हाथ में पकड़ी मोमबत्ती की रोशनी में मुझे देखा।

मैंने कहा, "क्या मैं आपकी रखेलों से बात कर सकता हूँ?"

“बेहतर होगा कि आप मुझे बता दें कि आपको उनसे क्या कहना है। आप कहाँ से आए हैं?”

मैं अजनबी हूँ।

"इस समय आप यहां किस काम से आए हैं?"

मुझे किसी भी बाहरी कमरे में या कहीं भी एक रात के लिए आश्रय चाहिए, और खाने के लिए रोटी का एक टुकड़ा चाहिए।

अविश्वास, वही भावना जिसका मुझे डर था, हन्ना के चेहरे पर दिखाई दी। कुछ देर रुककर उसने कहा, "मैं तुम्हें रोटी का एक टुकड़ा दे दूंगी, लेकिन हम किसी बेघर को अपने यहाँ रहने की जगह नहीं दे सकते। इसकी संभावना नहीं है।"

मुझे आपकी रखेलों से बात करने दीजिए।

“नहीं, मैं नहीं। वे आपके लिए क्या कर सकते हैं? आपको अभी इधर-उधर नहीं घूमना चाहिए; स्थिति बहुत खराब लग रही है।”

“लेकिन अगर तुम मुझे भगा दोगे तो मैं कहाँ जाऊँगा? मैं क्या करूँ?”

“ओह, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आप जानते हैं कि कहाँ जाना है और क्या करना है। बस ध्यान रहे कि कोई गलत काम न करें, बस इतना ही। ये लो एक पैसा; अब जाओ —”

“एक पैसा मुझे खाना नहीं खिला सकता, और मुझमें आगे जाने की ताकत नहीं है। दरवाजा बंद मत करो: — अरे, भगवान के लिए ऐसा मत करो!”

मुझे जाना ही होगा; बारिश बहुत तेज हो रही है—”

“युवा लड़कियों को बताओ। मुझे उन्हें देखने दो—”

"बिल्कुल नहीं। तुम वैसे नहीं हो जैसे तुम्हें होना चाहिए, वरना तुम इतना शोर नहीं मचाते। यहाँ से चले जाओ।"

लेकिन अगर मुझे ठुकरा दिया गया तो मुझे मरना ही पड़ेगा।

“तुम नहीं। मुझे डर है कि तुम्हारे कुछ बुरे इरादे हैं, जो तुम्हें रात के इस समय

लोगों के घरों में ले आए हैं। अगर तुम्हारे कोई साथी—चोर या ऐसे ही कोई—आस-पास कहीं भी हों, तो उन्हें बता देना कि हम घर में अकेले नहीं हैं; हमारे साथ एक सज्जन व्यक्ति, कुत्ते और बंदूकें हैं।” यह सुनकर ईमानदार लेकिन दृढ़ नौकर ने दरवाजा बंद कर दिया और अंदर से कुंडी लगा दी।

यह चरम क्षण था। असहनीय पीड़ा की एक लहर—गहरी निराशा की एक सिसकी—ने मेरे हृदय को चीर-फाड़ कर दिया। मैं सचमुच थक चुका था; एक कदम भी हिलना मेरे लिए असंभव था। मैं गीली दहलीज पर गिर पड़ा: मैं कराह उठा—मैंने अपने हाथ मल दिए—मैं घोर पीड़ा में रो पड़ा। ओह, मृत्यु का यह भयानक साया! ओह, यह अंतिम घड़ी, इतनी भयावहता से नज़दीक आ रही है! हाय, यह अकेलापन—अपने ही समुदाय से यह अलगाव! न केवल आशा का सहारा, बल्कि धैर्य का आधार भी चला गया—कम से कम एक पल के लिए; लेकिन मैंने जल्द ही उसे पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया।

मैंने कहा, “मैं मर ही सकता हूँ, और मैं ईश्वर में विश्वास रखता हूँ। मुझे चुपचाप उनकी इच्छा की प्रतीक्षा करने दो।”

मैंने ये शब्द न केवल सोचे, बल्कि बोले भी; और अपने सारे दुख को अपने दिल में समेटकर, मैंने उसे वहीं चुप और स्थिर रहने के लिए मजबूर करने का प्रयास किया।

"सभी मनुष्यों को मरना है," पास ही से आती एक आवाज ने कहा; "लेकिन सभी को एक लंबी और असमय मौत का सामना करने के लिए अभिशप्त नहीं किया जाता, जैसा कि तुम्हारा होगा यदि तुम यहां अभाव से मर जाओगे।"

“कौन बोल रहा है?” मैंने अचानक आई उस आवाज़ से भयभीत होकर पूछा, और अब मुझे किसी भी घटना से मदद की कोई उम्मीद नहीं दिख रही थी। कोई आकृति पास ही थी—कैसी आकृति, घोर अंधेरी रात और मेरी कमजोर दृष्टि के कारण मैं उसे पहचान नहीं पा रहा था। ज़ोर से देर तक दस्तक देते हुए, नए आने वाले ने दरवाज़े की ओर इशारा किया।

“क्या आप ही हैं, मिस्टर सेंट जॉन?” हन्ना ने हैरानी से पूछा।

“जी हां — जी हां; जल्दी खोलिए।”

“अरे वाह, कितनी भीगी और ठंडी हो गई होगी, कितनी तूफानी रात है! अंदर आ जाओ— तुम्हारी बहनें तुम्हारे बारे में बहुत चिंतित हैं, और मुझे लगता है कि आसपास कुछ बदमाश लोग हैं। वहाँ एक भिखारी औरत लेटी हुई थी— कसम से, वो अभी तक

गई नहीं है!— उठो! शर्म करो! यहाँ से हटो, मैं कहती हूँ!”

“चुप रहो, हन्ना! मुझे उस औरत से कुछ कहना है। तुमने उसे बाहर रखकर अपना फर्ज पूरा कर दिया है, अब मुझे उसे अंदर आने देने का फर्ज निभाने दो। मैं पास ही थी और मैंने तुम दोनों की बातें सुनीं। मुझे लगता है यह एक अजीब मामला है - मुझे कम से कम इसकी जांच करनी चाहिए। युवती, उठो और मेरे आगे घर में चलो।”

बड़ी मुश्किल से मैंने उसकी बात मानी। थोड़ी देर बाद मैं उस साफ-सुथरी, चमकदार रसोई में, चूल्हे के ठीक ऊपर, कांपती हुई, घबराई हुई खड़ी थी; मुझे एक बेहद भयानक, जंगली और झुलसी हुई शक्ल दिखाई दे रही थी। दोनों औरतें, उनका भाई, मिस्टर सेंट जॉन, बूढ़ा नौकर, सब मुझे घूर रहे थे।

मैंने किसी को पूछते हुए सुना, "सेंट जॉन, यह कौन है?"

“मैं नहीं बता सकता: मैंने उसे दरवाजे पर पाया,” यह जवाब मिला।

"वह देखने में गोरी लगती है," हन्ना ने कहा।

जवाब मिला, "मिट्टी या मौत की तरह सफेद। वह गिर जाएगी: उसे बैठने दो।"

और सचमुच मेरा सिर चकरा गया: मैं गिर पड़ा, लेकिन एक कुर्सी ने मुझे सहारा

दिया। मैं होश में था, हालांकि इस समय मैं बोल नहीं पा रहा था।

“शायद थोड़ा पानी उसे ठीक कर दे। हन्ना, थोड़ा पानी ले आओ। लेकिन वह बिल्कुल कमजोर हो गई है। कितनी दुबली-पतली और कितनी बेजान!”

“महज एक प्रेत!”

क्या वह बीमार है, या सिर्फ भूखी है?

“मुझे बहुत भूख लगी है। हन्ना, क्या यह दूध है? मुझे दो, और एक रोटी का टुकड़ा भी।”

डायना (मैं उसे उसके लंबे घुंघराले बालों से पहचानती थी, जो मेरे ऊपर झुकते समय आग और मेरे बीच लटक रहे थे) ने रोटी तोड़ी, उसे दूध में डुबोया और मेरे होठों से लगाया। उसका चेहरा मेरे चेहरे के पास था: मैंने उसके चेहरे पर दया देखी और उसकी तेज़ साँसों में सहानुभूति महसूस की। उसके सरल शब्दों में भी वही सुकून देने वाला भाव था: "खाने की कोशिश करो।"

“हाँ—कोशिश करो,” मैरी ने कोमल स्वर में दोहराया; और मैरी के हाथ ने मेरी भीगी हुई टोपी हटाई और मेरा सिर उठाया। मैंने जो मुझे दिया गया उसका स्वाद चखा: पहले तो धीरे से, फिर जल्द ही उत्सुकता से।

“शुरू में ज्यादा मत पिलाओ— उसे रोको,” भाई ने कहा; “उसने काफी पी लिया है।” और उसने दूध का प्याला और रोटी की थाली हटा ली।

"थोड़ा और, सेंट जॉन—उसकी आँखों में लालसा देखो।"

“अभी और नहीं, बहन। कोशिश करो कि क्या वह अब बोल सकती है—उससे उसका नाम पूछो।”

मुझे लगा कि मैं बोल सकती हूँ, और मैंने जवाब दिया - "मेरा नाम जेन इलियट है।" हमेशा की तरह पकड़े जाने से बचने के लिए, मैंने पहले ही एक छद्म नाम अपनाने का फैसला कर लिया था।

“और आप कहाँ रहते हैं? आपके दोस्त कहाँ हैं?”

मैं चुप था।

"क्या हम आपके किसी परिचित को बुला सकते हैं?"

मैंने अपना सिर हिलाया।

आप अपने बारे में क्या बता सकते हैं?

किसी तरह, अब जब मैं इस घर की दहलीज पार कर चुका था, और इसके

मालिकों से आमने-सामने हो चुका था, तो मुझे अब बहिष्कृत, आवारा और दुनिया से ठुकराया हुआ महसूस नहीं हो रहा था। मैंने भिखारी का रूप त्यागने का साहस किया—अपने स्वाभाविक तौर-तरीकों और चरित्र को फिर से अपनाने का। मैं एक बार फिर खुद को जानने लगा; और जब श्री सेंट जॉन ने हिसाब मांगा—जो मैं इस समय देने के लिए बहुत कमजोर था—तो मैंने थोड़ी देर रुककर कहा—

"सर, मैं आज रात आपको कोई जानकारी नहीं दे सकता।"

“लेकिन फिर आप मुझसे क्या उम्मीद करते हैं,” उसने कहा।

“कुछ नहीं,” मैंने उत्तर दिया। मेरी शक्ति संक्षिप्त उत्तरों के लिए ही पर्याप्त थी। डायना ने मेरी बात को गंभीरता से लिया।

“क्या आपका मतलब यह है,” उसने पूछा, “कि हमने अब आपको वह सहायता दे दी है जिसकी आपको आवश्यकता थी? और अब हम आपको बंजर भूमि और बरसात की रात में जाने की अनुमति दे सकते हैं?”

मैंने उसकी ओर देखा। मुझे लगा कि उसका चेहरा बेहद खूबसूरत है, शक्ति और अच्छाई दोनों का भाव उसमें समाया हुआ है। मुझे अचानक हिम्मत आ गई। उसकी दया भरी निगाहों का जवाब मुस्कान से देते हुए मैंने कहा, “मैं आप पर भरोसा करता हूँ। अगर मैं कोई बेसहारा और आवारा कुत्ता होता, तो मुझे पता है कि आप आज रात मुझे अपने घर से नहीं भगातीं: वैसे भी, मुझे कोई डर नहीं है। आप मेरे साथ जो चाहें करें; लेकिन मुझे ज्यादा बोलने से मना कर दीजिए - मेरी सांस फूल रही है - बोलते समय मुझे ऐंठन होती है।” तीनों ने मेरी ओर देखा और तीनों चुप रहे।

श्री सेंट जॉन ने अंत में कहा, “हन्ना, उसे अभी यहीं बैठने दो और उससे कोई सवाल मत पूछो; दस मिनट बाद उसे बचा हुआ दूध और रोटी दे देना। मैरी और डायना, चलो बैठक में चलते हैं और इस मामले पर बात करते हैं।”

वे चले गए। थोड़ी देर में एक महिला लौटी—मैं बता नहीं सकती कि कौन। जैसे ही मैं उस आरामदायक आग के पास बैठी, मुझ पर एक सुखद स्तब्धता छाने लगी। उसने दबी आवाज़ में हन्ना को कुछ निर्देश दिए। थोड़ी देर में, नौकरानी की मदद से, मैं सीढ़ियों पर चढ़ने में कामयाब हो गई; मेरे भीगे हुए कपड़े उतार दिए गए; और जल्द ही एक गर्म, सूखा बिस्तर मुझे मिल गया। मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया—असहनीय थकावट के बीच कृतज्ञता और आनंद की अनुभूति हुई—और सो गई।

अध्याय 29

इसके बाद के लगभग तीन दिन और तीन रातों की यादें मेरे मन में धुंधली सी हैं। उस दौरान मुझे कुछ संवेदनाएँ महसूस हुईं, लेकिन कुछ ही विचार आए और न ही कोई क्रिया हुई। मुझे पता था कि मैं एक छोटे से कमरे में और एक संकरे बिस्तर पर थी। ऐसा लग रहा था जैसे मैं उस बिस्तर से चिपक गई हूँ; मैं उस पर पत्थर की तरह स्थिर पड़ी थी; और मुझे उससे खींचकर निकालना लगभग मुझे मार डालने जैसा होता। मुझे समय का कोई एहसास नहीं हुआ—सुबह से दोपहर और दोपहर से शाम के बदलाव का। मैंने देखा कि कोई कब कमरे में आता या जाता था: मैं यह भी बता सकती थी कि वे कौन थे; जब बोलने वाला मेरे पास खड़ा होता था तो मैं उसकी बात समझ सकती थी; लेकिन मैं जवाब नहीं दे सकती थी; अपने होंठ खोलना या अपने अंगों को हिलाना दोनों ही असंभव था। नौकरानी हन्नाह मुझसे सबसे ज़्यादा बार मिलने आती थी। उसका आना मुझे परेशान करता था। मुझे ऐसा लगता था कि वह मुझे यहाँ से भगाना चाहती है: कि वह मुझे या मेरी परिस्थितियों को नहीं समझती; कि वह मेरे प्रति पूर्वाग्रह रखती है। डायना और मैरी दिन में एक या दो बार कमरे में आती थीं। वे मेरे बिस्तर के पास इस तरह के वाक्य फुसफुसाती थीं—

"यह बहुत अच्छा हुआ कि हमने उसे अपने साथ ले लिया।"

“हाँ; अगर उसे पूरी रात बाहर छोड़ दिया जाता, तो सुबह दरवाजे पर उसकी लाश जरूर मिलती। मुझे आश्चर्य है कि उसने क्या-क्या झेला होगा?”

"मुझे लगता है, अजीबोगरीब कठिनाइयाँ रही होंगी - एक गरीब, दुबला-पतला, पीला पड़ा हुआ घुमक्कड़?"

"मुझे लगता है कि वह अशिक्षित व्यक्ति नहीं है, उसके बोलने के तरीके से तो यही लगता है; उसका उच्चारण बिल्कुल शुद्ध था; और उसने जो कपड़े उतारे, हालांकि उन पर छींटे पड़े थे और वे गीले थे, लेकिन वे कम घिसे हुए और अच्छे थे।"

"उसका चेहरा विचित्र है; भले ही वह मांसहीन और मुरझाया हुआ हो, फिर भी मुझे वह पसंद है; और जब वह स्वस्थ और जीवंत होती है, तो मुझे लगता है कि उसकी शारीरिक बनावट मनमोहक होगी।"

उनकी बातचीत में मुझे एक बार भी उनके द्वारा मेरे प्रति दिखाए गए आतिथ्य सत्कार पर खेद का एक शब्द भी नहीं सुनाई दिया, न ही मुझ पर संदेह या घृणा का। मुझे इससे सुकून मिला।

श्री सेंट जॉन एक बार ही आए: उन्होंने मुझे देखा और कहा कि मेरी सुस्ती अत्यधिक और लंबे समय तक की थकान की प्रतिक्रिया है। उन्होंने कहा कि डॉक्टर को बुलाने की कोई ज़रूरत नहीं है: उन्हें पूरा विश्वास था कि प्रकृति अपने आप ही सब कुछ संभाल लेगी। उन्होंने कहा कि हर नस किसी न किसी तरह से अत्यधिक तनावग्रस्त हो गई है और पूरे शरीर को कुछ समय के लिए सुस्ती में रहना होगा। कोई बीमारी नहीं थी। उन्होंने अनुमान लगाया कि एक बार ठीक होने की प्रक्रिया शुरू हो जाए तो मेरी रिकवरी काफी तेज़ होगी। ये राय उन्होंने कुछ ही शब्दों में, शांत और धीमी आवाज़ में दीं; और थोड़ी देर रुककर, एक ऐसे व्यक्ति के लहजे में, जो ज़्यादा विस्तार से टिप्पणी करने का आदी नहीं था, कहा, "कुछ असामान्य शारीरिक बनावट है; निश्चित रूप से, यह अशिष्टता या पतन का संकेत नहीं है।"

“बिल्कुल नहीं,” डायना ने जवाब दिया। “सच कहूँ तो, सेंट जॉन, मेरा दिल उस बेचारी बच्ची के लिए तड़प रहा है। काश हम उसकी स्थायी रूप से मदद कर सकें।”

“ऐसा होना बहुत मुश्किल है,” जवाब मिला। “आप पाएंगे कि वह कोई युवती है जिसका अपने दोस्तों से कोई अनबन हो गई है और शायद उसने नासमझी में उनसे नाता तोड़ लिया है। अगर वह जिद्दी न हो तो शायद हम उसे उनके दोस्तों से मिलाने में कामयाब हो जाएं: लेकिन उसके चेहरे पर मुझे दृढ़ता के भाव दिखाई देते हैं जिससे मुझे उसकी आज्ञाकारिता पर संदेह होता है।” वह कुछ मिनट तक मुझे देखता रहा; फिर बोला, “वह समझदार तो दिखती है, लेकिन बिल्कुल भी सुंदर नहीं है।”

"वह बहुत बीमार है, सेंट जॉन।"

"चाहे वह स्वस्थ हो या बीमार, वह हमेशा सादी ही रहेगी। उसके चेहरे की सुंदरता में न तो आकर्षण है और न ही सामंजस्य।"

तीसरे दिन मेरी हालत बेहतर हो गई; चौथे दिन मैं बोल पा रहा था, हिल-डुल पा रहा था, बिस्तर से उठ पा रहा था और करवट बदल पा रहा था। हन्नाह मेरे लिए

दलिया और सूखा टोस्ट लेकर आई थी, शायद दोपहर के खाने के समय। मैंने बड़े चाव से खाया: खाना स्वादिष्ट था—उस बुखार वाले स्वाद से रहित था जिसने अब तक मेरे हर खाने को ज़हर बना दिया था। जब वह चली गई, तो मैं अपेक्षाकृत तरोताज़ा और ऊर्जावान महसूस कर रहा था: थोड़ी देर बाद आराम की तृप्ति और कुछ करने की इच्छा ने मुझे जगा दिया। मैं उठना चाहता था; लेकिन मैं क्या पहनूँ? केवल मेरे गीले और कीचड़ से सने कपड़े; जिनमें मैं ज़मीन पर सोया था और दलदल में गिर गया था। मुझे अपने उपकार करने वालों के सामने ऐसे कपड़े पहने जाने में शर्म आ रही थी। मुझे इस अपमान से बचा लिया गया।

पलंग के पास रखी कुर्सी पर मेरी सारी चीज़ें साफ़-सुथरी और सूखी पड़ी थीं। मेरी काली रेशमी फ्रॉक दीवार पर टंगी थी। उस पर से दलदल के निशान हट चुके थे; गीलेपन से पड़ी सिलवटें भी मिट चुकी थीं: वह बिल्कुल शालीन लग रही थी। मेरे जूते और मोज़े भी साफ़ करके पहनने लायक बना दिए गए थे। कमरे में नहाने-धोने का सामान था, और बाल संवारने के लिए कंघी और ब्रश भी। थका देने वाली प्रक्रिया के बाद, और हर पाँच मिनट में आराम करते हुए, मैं कपड़े पहनने में कामयाब हुई। मेरे कपड़े मुझ पर ढीले थे; क्योंकि मैं बहुत दुबली हो चुकी थी, लेकिन मैंने शॉल से अपनी कमियों को ढक लिया, और एक बार फिर, साफ़-सुथरी और सभ्य दिखने लगी — गंदगी का एक भी धब्बा नहीं, उस अव्यवस्था का कोई निशान नहीं जिससे मुझे इतनी नफ़रत थी, और जो मुझे इतना नीचा दिखाती थी — मैं रेलिंग का सहारा लेकर पत्थर की सीढ़ियों से नीचे एक संकरे, निचले रास्ते से उतरी, और जल्दी ही रसोई में पहुँच गई।

वहाँ ताज़ी रोटी की खुशबू और जलती हुई आग की गर्माहट फैली हुई थी। हन्ना रोटी पका रही थी। यह सर्वविदित है कि पूर्वाग्रहों को उस हृदय से मिटाना सबसे कठिन होता है जिसकी मिट्टी शिक्षा से उपजाऊ या उपजाऊ न हुई हो: वे वहाँ पत्थरों के बीच खरपतवार की तरह जड़ जमा लेते हैं। हन्ना शुरू में सचमुच ठंडी और कठोर थी; बाद में वह थोड़ी नरम पड़ने लगी; और जब उसने मुझे साफ-सुथरे और अच्छे कपड़े पहने हुए देखा, तो वह मुस्कुरा भी गई।

"वाह, तुम उठ गए!" उसने कहा। "तो तुम ठीक हो। अगर चाहो तो चूल्हे के पास मेरी कुर्सी पर बैठ सकते हो।"

उसने झूला कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा: मैंने इसे ले लिया। वह जल्दी-

जल्दी काम में लग गई और बीच-बीच में तिरछी निगाहों से मुझे देखती रही। ओवन से कुछ रोटियाँ निकालते हुए, उसने मेरी ओर मुड़कर सीधे-सीधे पूछा—

"क्या आप यहां आने से पहले कभी भीख मांगने गए थे?"

मुझे एक पल के लिए गुस्सा आया; लेकिन यह याद करके कि क्रोध करना उचित नहीं था, और यह कि मैं वास्तव में उसके सामने एक भिखारी की तरह दिख रहा था, मैंने शांत भाव से उत्तर दिया, लेकिन फिर भी उसमें एक निश्चित दृढ़ता थी।

"मुझे भिखारी समझना आपकी गलती है। मैं भिखारी नहीं हूँ; न ही आप और न ही आपकी युवतियाँ।"

कुछ देर रुकने के बाद उसने कहा, "मुझे यह समझ नहीं आ रहा: शायद आपके पास न तो घर है और न ही पैसा?"

"घर या पीतल (जिससे मेरा मतलब शायद पैसा है) की कमी किसी को आपके अर्थ में भिखारी नहीं बनाती।"

“क्या तुम किताबी ज्ञान रखते हो?” उसने थोड़ी देर बाद पूछा।

"हाँ बहुत है।"

लेकिन आप कभी बोर्डिंग स्कूल नहीं गए?

मैं आठ साल तक बोर्डिंग स्कूल में रहा।

उसने अपनी आँखें चौड़ी कर लीं। "तो फिर ऐसी कौन सी बात है जिसके लिए तुम खुद को रोक नहीं सकते?"

“मैंने खुद को संभाला है; और मुझे उम्मीद है कि आगे भी संभाल लूंगी। इन आंवलों का आप क्या करेंगी?” मैंने पूछा, जब वह फलों से भरी टोकरी लेकर आई।

"इन्हें पाई बना दो।"

"मुझे दे दो, मैं उन्हें चुन लूंगा।"

नहीं; मैं नहीं चाहता कि तुम कुछ भी न करो।

लेकिन मुझे कुछ तो करना ही होगा। मुझे उन्हें दे दो।

वह मान गई; और वह मेरे कपड़े पर बिछाने के लिए एक साफ तौलिया भी ले आई, "कहीं ऐसा न हो कि मैं इसे गंदा कर दूं," जैसा कि उसने कहा।

“तुम्हारे हाथों को देखकर लगता है कि तुम्हें नौकर का काम करने की आदत नहीं है,” उसने कहा। “क्या तुम कभी दर्जी रही हो?”

“नहीं, तुम गलत हो। और अब, मैंने जो कुछ भी किया है, उसे भूल जाओ: मेरे बारे

में और मत सोचो; बस मुझे उस घर का नाम बताओ जहाँ हम हैं।”

"कुछ लोग इसे मार्श एंड कहते हैं, और कुछ लोग इसे मूर हाउस कहते हैं।"

“और यहाँ रहने वाले सज्जन का नाम मिस्टर सेंट जॉन है?”

“नहीं; वह यहाँ नहीं रहता: वह केवल कुछ समय के लिए रुका है। जब वह घर पर होता है, तो वह मॉर्टन में अपने ही पल्ली में होता है।”

“वो गाँव जो कुछ मील दूर है?”

“हाँ।”

और वह कौन है?

वह एक पादरी हैं।

मुझे पादरी के घर की बूढ़ी गृहणी का जवाब याद आया, जब मैंने पादरी से मिलने के लिए कहा था। "तो क्या यह उनके पिता का निवास स्थान था?"

“जी हां; बूढ़े श्री रिवर्स यहां रहते थे, और उनके पिता, दादा और उनसे पहले उनके परदादा भी यहीं रहते थे।”

तो उस सज्जन का नाम श्री सेंट जॉन रिवर्स है?

“जी हां; सेंट जॉन अपने नाम की तरह ही सुशोभित हैं।”

“और उनकी बहनों के नाम डायना और मैरी रिवर्स हैं?”

"हाँ।"

“उनके पिता की मृत्यु हो गई है?”

"स्ट्रोक के कारण तीन सप्ताह बाद मृत्यु हो गई।"

“क्या उनकी कोई माँ नहीं है?”

"मालकिन को मरे हुए एक साल हो गया है।"

"क्या आप लंबे समय से परिवार के साथ रह रहे हैं?"

“मैं यहाँ तीस साल से रह रही हूँ। मैंने उन तीनों की देखभाल की है।”

“इससे साबित होता है कि तुम एक ईमानदार और निष्ठावान सेवक रहे होगे। मैं तुम्हारे बारे में इतना तो कह ही सकता हूँ, भले ही तुमने मुझे भिखारी कहकर असभ्यता दिखाई हो।”

उसने एक बार फिर हैरानी भरी निगाहों से मेरी ओर देखा। उसने कहा, "मुझे लगता है कि तुम्हारे बारे में मेरी सोच पूरी तरह गलत थी, लेकिन आजकल इतने सारे धोखेबाज घूम रहे हैं, तुम्हें मुझे माफ कर देना चाहिए।"

और फिर भी," मैंने कुछ सख्ती से कहा, "आप मुझे दरवाजे से बाहर निकालना चाहते थे, उस रात जब आपको एक कुत्ते को भी बाहर नहीं निकालना चाहिए था।"

"खैर, यह मुश्किल था: लेकिन कोई क्या कर सकता है? मैंने अपने से ज़्यादा बच्चों के बारे में सोचा: बेचारे! मेरे सिवा उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। मैं जल्द ही उन्हें देखने वाला हूँ।"

मैंने कुछ मिनटों तक गंभीर चुप्पी बनाए रखी।

"तुम मेरे बारे में ज्यादा बुरा मत सोचो," उसने फिर कहा।

"परन्तु मैं तुम्हारे बारे में अच्छा नहीं सोचता," मैंने कहा; "और मैं तुम्हें बताता हूँ क्यों—इसलिए नहीं कि तुमने मुझे आश्रय देने से इनकार कर दिया, या मुझे धोखेबाज समझा, बल्कि इसलिए कि तुमने अभी-अभी मेरे पास न तो धन-दौलत है और न ही घर, इसे एक तरह से अपमान बना दिया। कुछ महानतम लोग भी मेरी ही तरह दरिद्र रहे हैं; और यदि तुम ईसाई हो, तो तुम्हें गरीबी को अपराध नहीं समझना चाहिए।"

"अब मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए," उसने कहा: "श्री सेंट जॉन भी मुझे यही कहते हैं; और मुझे लगता है कि मैं गलत थी — लेकिन अब आपके बारे में मेरी धारणा पहले से बिल्कुल अलग है। आप एक छोटे से गड्ढे की तरह दिखते हैं।"

"बस इतना ही काफी है—मैं तुम्हें अभी माफ कर देता हूँ। हाथ मिलाओ।"

उसने अपना मैदे से सना और खुरदुरा हाथ मेरे हाथ में रख दिया; उसके खुरदुरे चेहरे पर एक और अधिक हार्दिक मुस्कान खिल उठी, और उसी क्षण से हम दोस्त बन गए।

हन्ना को बात करने का बहुत शौक था। जब मैं फल तोड़ रहा था और वह पाई के लिए पेस्ट बना रही थी, तब वह मुझे अपने दिवंगत स्वामी और स्वामिनी और "बच्चों" के बारे में तरह-तरह की बातें बताती रही, जैसा कि वह उन युवाओं को बुलाती थी।

उसने बताया कि बूढ़े श्री रिवर्स एक साधारण से व्यक्ति थे, लेकिन एक सज्जन पुरुष थे और उनका परिवार बहुत पुराना था। मार्श एंड शुरू से ही रिवर्स परिवार की संपत्ति थी, और उसने पुष्टि की कि यह "लगभग दो सौ साल पुराना था - देखने में तो यह एक छोटा, साधारण सा स्थान लगता था, मॉर्टन वेले में स्थित श्री ओलिवर के भव्य हॉल से इसकी कोई तुलना नहीं थी।" लेकिन उसे याद था कि बिल ओलिवर के पिता एक कुशल दर्जी थे; और हेनरी परिवार के पुराने दिनों में रिवर्स परिवार एक संभ्रांत परिवार था, जैसा कि मॉर्टन चर्च के अभिलेखों में देखकर कोई भी जान सकता

था। फिर भी, उसने माना, "बूढ़े मालिक अन्य लोगों की तरह ही थे - कुछ खास अलग नहीं: शिकार और खेती के दीवाने, और इसी तरह के काम।" मालकिन अलग थीं। वह एक बड़ी पाठक थीं और खूब पढ़ती थीं; और बच्चे उन्हीं की तरह थे। इस इलाके में उनके जैसा कोई नहीं था, न कभी रहा था; तीनों को ही बचपन से ही पढ़ाई का शौक था; और वे हमेशा से ही अपनी अलग पहचान रखती थीं। श्री सेंट जॉन बड़े होकर कॉलेज जाएंगे और पादरी बनेंगे; और लड़कियाँ स्कूल छोड़ते ही गवर्नेंस की नौकरी ढूंढेंगी: क्योंकि उन्होंने बताया था कि उनके पिता ने कुछ साल पहले एक भरोसेमंद आदमी के दिवालिया हो जाने से बहुत सारा पैसा खो दिया था; और अब उनके पास उन्हें देने के लिए पर्याप्त धन नहीं था, इसलिए उन्हें अपना गुजारा खुद करना होगा। वे लंबे समय से घर पर बहुत कम समय बिता रही थीं, और अब अपने पिता की मृत्यु के कारण कुछ हफ्तों के लिए ही यहाँ आई थीं; लेकिन उन्हें मार्श एंड और मॉर्टन, और आसपास के सभी मैदान और पहाड़ियाँ बहुत पसंद थीं। वे लंदन और कई अन्य बड़े शहरों में भी रही थीं; लेकिन वे हमेशा कहती थीं कि घर जैसा कोई स्थान नहीं है; और वे एक-दूसरे के साथ बहुत अच्छे से रहती थीं - कभी झगड़ा नहीं करती थीं। उन्हें नहीं पता था कि ऐसा एकजुट परिवार कहाँ मिल सकता है।

आंवला तोड़ने का अपना काम खत्म करने के बाद, मैंने पूछा कि वे दोनों महिलाएं और उनका भाई अब कहाँ हैं।

“मैं मॉर्टन घूमने गया हूँ; लेकिन वे आधे घंटे में चाय पीने के लिए वापस आ जाएँगे।”

वे हन्ना द्वारा निर्धारित समय के भीतर लौट आए: वे रसोई के दरवाजे से अंदर आए। श्री सेंट जॉन ने मुझे देखकर केवल झुककर अभिवादन किया और आगे बढ़ गए; दोनों महिलाएं रुक गईं: मैरी ने कुछ शब्दों में, विनम्रतापूर्वक और शांत भाव से मुझे नीचे आने लायक स्वस्थ देखकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की; डायना ने मेरा हाथ पकड़ा और मेरी ओर सिर हिलाया।

“तुम्हें मेरे जाने की इजाज़त का इंतज़ार करना चाहिए था,” उसने कहा। “तुम अब भी बहुत पीली और दुबली-पतली दिख रही हो! बेचारी बच्ची! बेचारी!”

डायना की आवाज़ मुझे कबूतर की गुटरगू जैसी मधुर लगती थी। उसकी आँखें ऐसी थीं जिनसे नज़रें मिलाना मुझे बेहद अच्छा लगता था। उसका पूरा चेहरा मुझे मोहक लगता था। मैरी का चेहरा भी उतना ही बुद्धिमान था—उसके नैन-नक्श भी

उतने ही सुंदर थे; लेकिन उसका भाव थोड़ा संयमित था, और उसका व्यवहार, हालांकि सौम्य था, फिर भी थोड़ा दूरीपूर्ण था। डायना के बोलने और देखने के अंदाज़ में एक खास अधिकार झलकता था: स्पष्ट रूप से उसमें दृढ़ इच्छाशक्ति थी। मेरा स्वभाव ही ऐसा था कि मैं उसके जैसी दृढ़ शक्ति के आगे झुकने में आनंद महसूस करता था, और जहाँ तक मेरी अंतरात्मा और आत्मसम्मान अनुमति देते थे, मैं उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति के आगे न झुक जाता था।

"और यहाँ तुम्हारा क्या काम है?" उसने आगे कहा। "यह तुम्हारी जगह नहीं है। मैरी और मैं कभी-कभी रसोई में बैठते हैं, क्योंकि घर पर हम आज़ाद रहना पसंद करते हैं, यहाँ तक कि मनमानी भी करना चाहते हैं – लेकिन तुम मेहमान हो, और तुम्हें बैठक में जाना चाहिए।"

मैं यहाँ बिल्कुल ठीक हूँ।

"बिल्कुल नहीं, क्योंकि हन्ना इधर-उधर भाग-दौड़ कर रही है और तुम्हें आटे से ढक रही है।"

"इसके अलावा, आग तुम्हारे लिए बहुत तेज है," मैरी ने बीच में कहा।

"बिल्कुल," उसकी बहन ने कहा। "चलो, तुम्हें आज्ञाकारी होना होगा।" और मेरा हाथ पकड़े हुए ही उसने मुझे उठाया और अंदर के कमरे में ले गई।

"वहीं बैठो," उसने मुझे सोफे पर बिठाते हुए कहा, "जब तक हम अपने कपड़े उतारकर चाय तैयार कर लेते हैं; यह हमारे छोटे से ग्रामीण घर में मिलने वाला एक और विशेषाधिकार है - जब हमारा मन करे या जब हन्ना बेकिंग, ब्रूइंग, वॉशिंग या इस्त्री कर रही हो, तब हम अपना खाना खुद बना सकते हैं।"

उसने दरवाजा बंद कर दिया, और मुझे मिस्टर सेंट जॉन के साथ अकेला छोड़ दिया, जो सामने बैठे थे, उनके हाथ में कोई किताब या अखबार था। मैंने पहले बैठक कक्ष का निरीक्षण किया, और फिर उसमें बैठे व्यक्ति का।

बैठक का कमरा छोटा था, बहुत ही सादे ढंग से सजा हुआ था, फिर भी साफ-सुथरा होने के कारण आरामदायक था। पुरानी शैली की कुर्सियाँ चमकीली थीं, और अखरोट की लकड़ी की मेज किसी दर्पण की तरह थी। पुराने जमाने के पुरुषों और महिलाओं के कुछ अनोखे, प्राचीन चित्र रंगीन दीवारों की शोभा बढ़ा रहे थे; कांच के दरवाजों वाली अलमारी में कुछ किताबें और चीनी मिट्टी के बर्तनों का एक प्राचीन सेट रखा था। कमरे में कोई भी अनावश्यक सजावट नहीं थी - आधुनिक फर्नीचर का एक

भी टुकड़ा नहीं था, सिवाय दो वर्कबॉक्स और गुलाब की लकड़ी की एक महिला की मेज के, जो एक साइड टेबल पर रखी थी: कालीन और पर्दे समेत सब कुछ एक साथ पुराना और अच्छी तरह से सहेजा हुआ प्रतीत होता था।

श्री सेंट जॉन—दीवारों पर टंगी धूल भरी तस्वीरों की तरह एकदम स्थिर बैठे थे, उनकी निगाहें उस पन्ने पर टिकी थीं जिसे वे पढ़ रहे थे, और उनके होंठ मौन थे—उनका अध्ययन करना काफी आसान था। अगर वे मनुष्य की जगह मूर्ति भी होते, तो भी उनका अध्ययन करना इतना आसान नहीं होता। वे युवा थे—शायद अट्ठाईस से तीस वर्ष के—लंबे, दुबले-पतले; उनका चेहरा आँखों को मोह लेता था; यह एक यूनानी चेहरे जैसा था, जिसकी रूपरेखा अत्यंत शुद्ध थी: एकदम सीधी, पारंपरिक नाक; एकदम एथेंसवासी होंठ और ठोड़ी। वास्तव में, बहुत कम ही कोई अंग्रेज चेहरा प्राचीन मॉडलों के इतना करीब आता है जितना उनका था। मेरे चेहरे की अनियमितता को देखकर वे शायद थोड़ा चौंक जाते, क्योंकि उनका अपना चेहरा इतना सुसंगठित था। उनकी आँखें बड़ी और नीली थीं, जिन पर भूरी पलकें थीं; उनका ऊँचा माथा, हाथीदांत की तरह रंगहीन, सुनहरे बालों की लटों से आंशिक रूप से ढका हुआ था।

यह एक सौम्य वर्णन है, है ना, पाठक? फिर भी, जिसका वर्णन किया गया है, वह शायद ही किसी को सौम्य, विनम्र, भावुक या शांत स्वभाव का प्रतीत कराता है। यद्यपि वह अब शांत बैठा था, उसकी नाक, मुंह और भौंहों में कुछ ऐसा था, जो मेरी समझ से उसके भीतर बेचैनी, कठोरता या उत्सुकता के भावों को दर्शाता था। उसने मुझसे एक शब्द भी नहीं बोला, न ही मेरी ओर देखा, जब तक कि उसकी बहनें वापस नहीं आ गईं। डायना, चाय बनाते हुए अंदर-बाहर आते-जाते, मेरे लिए ओवन के ऊपर पका हुआ एक छोटा सा केक लाई।

“इसे अभी खा लो,” उसने कहा: “तुम्हें भूख लगी होगी। हन्ना कहती है कि तुमने नाश्ते के बाद से दलिया के अलावा कुछ नहीं खाया है।”

मैंने मना नहीं किया, क्योंकि मेरी भूख जागृत हो चुकी थी। श्री रिवर्स ने अपनी किताब बंद की, मेज के पास आए और बैठते ही अपनी नीली, चित्रमय आँखों से मुझे घूरने लगे। उनकी निगाहों में अब एक सहज स्पष्टता, एक खोजपूर्ण और दृढ़ निश्चय था, जिससे पता चलता था कि अब तक उनकी निगाहें झिझक के कारण नहीं, बल्कि इरादे के कारण ही अजनबी से हटी हुई थीं।

उन्होंने कहा, "तुम्हें बहुत भूख लगी है।"

"जी हां, महोदय।" यह मेरा तरीका है—यह हमेशा से मेरी सहज प्रवृत्ति रही है—कि मैं संक्षिप्त बात का संक्षिप्तता से और सीधी बात का सरलता से जवाब दूं।

"यह आपके लिए अच्छा है कि हल्के बुखार के कारण आपको पिछले तीन दिनों से परहेज करना पड़ा: शुरू में अपनी भूख की लालसा के आगे झुकना खतरनाक हो सकता था। अब आप खा सकते हैं, हालांकि अभी भी अत्यधिक मात्रा में नहीं।"

"मुझे उम्मीद है कि मुझे आपके खर्चे पर ज्यादा देर तक खाना नहीं खाना पड़ेगा, महोदय," यह मेरा बहुत ही बेढंगा, बनावटी और अपरिष्कृत जवाब था।

"नहीं," उन्होंने शांत भाव से कहा, "जब आप हमें अपने दोस्तों के निवास स्थान के बारे में बता देंगे, तो हम उन्हें पत्र लिख सकते हैं, और आपको घर वापस भेजा जा सकता है।"

"मैं आपको स्पष्ट रूप से बता दूं कि यह करना मेरे बस की बात नहीं है; क्योंकि मैं पूरी तरह से बेघर और दोस्तों से रहित हूं।"

तीनों ने मेरी ओर देखा, लेकिन अविश्वास से नहीं; मुझे लगा कि उनकी निगाहों में कोई संदेह नहीं था: बल्कि जिज्ञासा अधिक थी। मैं विशेष रूप से युवतियों की बात कर रहा हूँ। सेंट जॉन की आँखें, शाब्दिक अर्थ में तो स्पष्ट थीं, लेकिन लाक्षणिक अर्थ में उन्हें समझना कठिन था। ऐसा लगता था कि वे उनका उपयोग दूसरों के विचारों को जानने के साधन के रूप में करते थे, न कि अपने स्वयं के विचारों को प्रकट करने के लिए: उनकी उत्सुकता और संयम का यह संयोजन प्रोत्साहन देने की अपेक्षा कहीं अधिक शर्मिंदगी का कारण बनता था।

उन्होंने पूछा, "क्या आपका मतलब यह है कि आप हर तरह के संपर्क से पूरी तरह अलग-थलग हैं?"

"हाँ, मेरा किसी भी जीवित प्राणी से कोई संबंध नहीं है: इंग्लैंड में किसी भी घर में प्रवेश पाने का मेरा कोई अधिकार नहीं है।"

"आपकी उम्र में यह एक बहुत ही अनोखी स्थिति है!"

यहां मैंने देखा कि उनकी नजर मेरे हाथों पर टिकी हुई थी, जो मेरे सामने मेज पर मुड़े हुए थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह वहां क्या ढूंढ रहे थे: उनके शब्दों ने जल्द ही उनकी खोज का स्पष्टीकरण दे दिया।

"आपकी कभी शादी नहीं हुई? आप कुंवारी हैं?"

डायना हंस पड़ी। "अरे, वह सत्रह या अठारह साल से ज़्यादा की नहीं हो सकती,

सेंट जॉन," उसने कहा।

“मेरी उम्र लगभग उन्नीस साल है, लेकिन मेरी शादी नहीं हुई है। नहीं।”

मेरे चेहरे पर जलन की एक लहर दौड़ गई; क्योंकि शादी के जिक्र से कड़वी और परेशान करने वाली यादें ताजा हो गईं। सभी ने मेरी शर्मिंदगी और भावनाओं को देख लिया। डायना और मैरी ने मेरी लालिमा से भरी शक्ल से नज़रें हटाकर मुझे राहत दी; लेकिन मेरा ठंडा और गंभीर भाई मुझे घूरता रहा, यहाँ तक कि उसकी वजह से जो परेशानी हुई, उससे मेरे चेहरे पर रंग के साथ-साथ आंसू भी निकल आए।

“आप आखिरी बार कहाँ रहते थे?” उसने अब पूछा।

"आप बहुत जिज्ञासु हैं, सेंट जॉन," मैरी ने धीमी आवाज में कहा; लेकिन वह मेज पर झुक गया और एक दूसरी दृढ़ और तीक्ष्ण दृष्टि से उत्तर की मांग करने लगा।

मैंने संक्षिप्त रूप से उत्तर दिया, "जिस स्थान पर मैं रहा और जिस व्यक्ति के साथ मैं रहा, उसका नाम मेरा रहस्य है।"

"मेरी राय में, यदि आप चाहें तो आपको इसे सेंट जॉन और अन्य सभी प्रश्नकर्ताओं से छिपाकर रखने का पूरा अधिकार है," डायना ने टिप्पणी की।

“लेकिन अगर मुझे आपके बारे में या आपके इतिहास के बारे में कुछ भी पता नहीं है, तो मैं आपकी मदद नहीं कर सकता,” उन्होंने कहा। “और आपको मदद की ज़रूरत है, है ना?”

"मुझे इसकी बहुत ज़रूरत है, और मैं इसके लिए इतनी कोशिश कर रहा हूँ, महोदय, कि कोई सच्चा परोपकारी व्यक्ति मुझे ऐसा काम दिला दे जिसे मैं कर सकूँ, और जिसके पारिश्रमिक से मेरा गुजारा चल सके, भले ही जीवन की बुनियादी ज़रूरतों को ही सही।"

मुझे नहीं पता कि मैं सचमुच एक परोपकारी व्यक्ति हूँ या नहीं; फिर भी मैं इस नेक उद्देश्य में अपनी पूरी क्षमता से आपकी सहायता करने को तैयार हूँ। तो सबसे पहले, मुझे बताइए कि आप अब तक क्या करते आए हैं और आप क्या कर सकते हैं।

मैंने अपनी चाय पी ली थी। इस पेय से मुझे बहुत ताजगी मिली; उतनी ही जितनी किसी विशालकाय व्यक्ति को शराब से मिलती है: इसने मेरी तनावग्रस्त नसों को नई ऊर्जा दी और मुझे इस मर्मस्पर्शी युवा न्यायाधीश से दृढ़ता से बात करने में सक्षम बनाया।

“श्रीमान रिवर्स,” मैंने उनकी ओर मुड़कर कहा, और उनकी ओर देखते हुए, जैसे वे

भी खुले और निडर होकर मेरी ओर देख रहे थे, "आपने और आपकी बहनों ने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है—एक महान व्यक्ति अपने साथी मनुष्य पर ऐसा उपकार नहीं कर सकता; आपने अपने उदार आतिथ्य से मुझे मृत्यु से बचाया है। इस उपकार के कारण आप मेरी असीम कृतज्ञता के पात्र हैं, और कुछ हद तक मेरे विश्वास के भी। मैं आपको उस यात्री के इतिहास के बारे में उतना ही बताऊंगा जितना मैं अपनी मानसिक शांति—अपनी नैतिक और शारीरिक सुरक्षा, और दूसरों की सुरक्षा—को खतरे में डाले बिना बता सकता हूँ।"

"मैं एक अनाथ हूँ, एक पादरी की बेटी। मेरे माता-पिता का निधन मेरे उन्हें जानने से पहले ही हो गया था। मेरा पालन-पोषण आश्रित के रूप में हुआ; मेरी शिक्षा एक धर्मार्थ संस्था में हुई। मैं आपको उस संस्था का नाम भी बताऊँगी, जहाँ मैंने छह साल एक छात्रा के रूप में और दो साल एक शिक्षिका के रूप में बिताए — लोवुड अनाथालय, —शायर: आपने इसके बारे में सुना होगा, श्री रिवर्स? — रेवरेंड रॉबर्ट ब्रॉकलहर्स्ट कोषाध्यक्ष हैं।"

मैंने श्री ब्रॉकलहर्स्ट के बारे में सुना है और मैंने स्कूल भी देखा है।

लगभग एक साल पहले मैं लोवुड छोड़कर एक निजी गवर्नेंस बनने चली गई थी। मुझे एक अच्छी नौकरी मिल गई थी और मैं खुश थी। यहाँ आने से चार दिन पहले मुझे यह जगह छोड़नी पड़ी। अपने जाने का कारण मैं बता नहीं सकती और न ही बताना चाहिए: यह व्यर्थ, खतरनाक और अविश्वसनीय लगेगा। मुझ पर कोई दोष नहीं है: मैं आप तीनों की तरह ही निर्दोष हूँ। मैं दुखी हूँ और कुछ समय के लिए दुखी रहूँगी; क्योंकि जिस विपत्ति ने मुझे उस घर से निकाल दिया जिसे मैंने स्वर्ग बना लिया था, वह एक अजीब और भयानक घटना थी। मैंने अपने जाने की योजना बनाते समय केवल दो बातों का ध्यान रखा - गति और गोपनीयता: इन्हें सुनिश्चित करने के लिए, मुझे अपने पास मौजूद सब कुछ पीछे छोड़ना पड़ा, सिवाय एक छोटे से पार्सल के; जिसे मैं अपनी जल्दबाजी और मानसिक परेशानी में, उस कोच से निकालना भूल गई जो मुझे व्हिटक्रॉस लेकर आया था। इस तरह, मैं इस इलाके में बिल्कुल बेसहारा होकर आई। मैंने दो रातें खुले में सोईं और लगभग दो दिन बिना किसी दहलीज को पार किए भटकती रही: लेकिन उस दौरान मैंने केवल दो बार भोजन का स्वाद चखा; और वह भी भूख से मजबूर होकर। मैं लगभग अंतिम सांस तक थका हुआ और हताश था, तभी श्री रिवर्स, आपने मुझे अपने दरवाजे पर भूख से मरने से बचाया और मुझे

अपनी छत के नीचे शरण दी। मैं जानता हूँ कि आपकी सभी बहनों ने मेरे लिए क्या-क्या किया है - क्योंकि मैं अपनी इस सुस्ती के दौरान बेहोश नहीं रहा - और मैं उनकी सहज, सच्ची और सौम्य करुणा का उतना ही ऋणी हूँ जितना कि आपके धार्मिक प्रेम का।

“सेंट जॉन, अब उसे और बोलने मत दो,” जब मैं रुका तो डायना ने कहा; “वह अभी उत्तेजना के लिए तैयार नहीं है। मिस इलियट, सोफे पर आकर बैठ जाइए।”

उपनाम सुनते ही मैं अनजाने में थोड़ा चौंक गया: मैं अपना नया नाम भूल गया था। श्री रिवर्स, जिनसे शायद ही कुछ बच पाता था, ने इसे तुरंत देख लिया।

“आपने कहा था कि आपका नाम जेन इलियट है?” उसने पूछा।

"मैंने ऐसा कहा था; और यह वह नाम है जिससे मुझे फिलहाल पुकारा जाना उचित लगता है, लेकिन यह मेरा असली नाम नहीं है, और जब मैं इसे सुनता हूं, तो यह मुझे अजीब लगता है।"

"क्या आप अपना असली नाम नहीं बताएंगे?"

“नहीं: मुझे सबसे ज्यादा पकड़े जाने का डर है; और जो भी खुलासा मेरे पकड़े जाने का कारण बन सकता है, मैं उससे बचता हूँ।”

“आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, मुझे पूरा यकीन है,” डायना ने कहा। “अब ऐसा ही करो, भाई, उसे थोड़ी देर शांति से रहने दो।”

लेकिन कुछ क्षणों तक विचार करने के बाद, सेंट जॉन ने पहले की तरह ही शांत भाव से और उतनी ही सूझबूझ के साथ अपना काम फिर से शुरू कर दिया।

"आप हमारी मेहमाननवाजी पर लंबे समय तक निर्भर नहीं रहना चाहेंगे - मुझे लगता है कि आप मेरी बहनों की करुणा और सबसे बढ़कर, मेरे दान से जल्द से जल्द छुटकारा पाना चाहेंगे (मैं इस अंतर को भली-भांति समझती हूँ, और मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है - यह उचित है): आप हमसे स्वतंत्र होना चाहते हैं?"

“हाँ, मैं करता हूँ: मैं पहले ही कह चुका हूँ। मुझे काम करना सिखाओ, या काम ढूँढ़ना सिखाओ: बस यही मेरी अब गुज़ारिश है; फिर मुझे जाने दो, चाहे कितनी भी छोटी सी झोपड़ी में ही क्यों न हो; लेकिन तब तक मुझे यहीं रहने दो: मुझे बेघर और दरिद्र होने की भयावहता का एक और अनुभव करने से डर लगता है।”

“हाँ, तुम्हें यहीं रहना होगा,” डायना ने अपना सफेद हाथ मेरे सिर पर रखते हुए कहा। “हाँ,” मैरी ने उसी सहज और स्वाभाविक लहजे में दोहराया, जो उसके लिए

स्वाभाविक प्रतीत होता था।

श्री सेंट जॉन ने कहा, “मेरी बहनों को आपकी देखभाल करने में उतना ही आनंद आता है जितना किसी ठंडी हवा से खिड़की से अंदर आ गिरे हुए आधे जमे हुए पक्षी की देखभाल करने में। मुझे तो आपको आत्मनिर्भर बनाने की ज़्यादा इच्छा है और मैं इसके लिए प्रयास भी करूँगा; लेकिन ध्यान रहे, मेरी सीमा सीमित है। मैं तो बस एक छोटे से ग्रामीण इलाके का पादरी हूँ: मेरी सहायता अत्यंत सरल होगी। और यदि आप छोटी-छोटी बातों को तुच्छ समझते हैं, तो मुझसे कहीं अधिक प्रभावी सहायता प्राप्त करें।”

"उसने पहले ही कह दिया है कि वह ईमानदारी से कुछ भी करने को तैयार है," डायना ने मेरी ओर से जवाब दिया; "और आप जानते हैं, सेंट जॉन, उसके पास सहायकों के अलावा कोई विकल्प नहीं है: उसे आप जैसे रूखे-सूखे लोगों को बर्दाश्त करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।"

मैंने जवाब दिया, "मैं दर्जी बनूंगी; मैं एक साधारण काम करने वाली महिला बनूंगी; मैं नौकरानी बनूंगी, एक दाई बनूंगी, अगर इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता।"

“ठीक है,” श्री सेंट जॉन ने बड़े शांत भाव से कहा। “यदि आपका यही इरादा है, तो मैं अपने समय और तरीके से आपकी सहायता करने का वादा करता हूँ।”

अब उन्होंने फिर से वही किताब पढ़ना शुरू कर दिया जिसमें वे चाय से पहले व्यस्त थे। मैं जल्दी ही वहाँ से चला गया, क्योंकि मैं अपनी वर्तमान शक्ति के अनुसार जितना बोल सकता था और जितनी देर बैठ सकता था, उतनी देर बैठ चुका था।

अध्याय XXX

मूर हाउस के निवासियों के बारे में जैसे-जैसे मेरा ज्ञान बढ़ता गया, वे मुझे और भी अच्छे लगने लगे। कुछ ही दिनों में मेरा स्वास्थ्य इतना सुधर गया कि मैं दिन भर बैठ

सकता था और कभी-कभी बाहर टहल भी सकता था। मैं डायना और मैरी के सभी कामों में उनका साथ दे सकता था; उनसे जितनी चाहे उतनी बातें कर सकता था और जब और जहाँ वे मुझे अनुमति देतीं, उनकी मदद कर सकता था। इस मेलजोल में एक नई तरह का आनंद था, एक ऐसा आनंद जिसका अनुभव मैंने पहली बार किया था - रुचियों, भावनाओं और सिद्धांतों की पूर्ण समानता से उत्पन्न आनंद।

मुझे वही पढ़ना अच्छा लगता था जो उन्हें पसंद था: जो उन्हें अच्छा लगता था, उससे मुझे भी आनंद मिलता था; जो उन्हें पसंद आता था, मैं उसका आदर करता था। उन्हें अपना एकांत घर बहुत प्यारा था। मैं भी उस धूसर, छोटे, प्राचीन ढांचे में, जिसकी छत नीची थी, जालीदार खिड़कियाँ थीं, जर्जर दीवारें थीं, और देवदार के पेड़ों की कतार थी - जो पहाड़ी हवाओं के दबाव में तिरछी उग आई थीं; उसका बगीचा, यू और होली के पेड़ों से भरा हुआ था - और जहाँ केवल सबसे मजबूत प्रजातियों के फूल ही खिलते थे - एक ऐसा आकर्षण पाता था जो शक्तिशाली और स्थायी था। वे अपने घर के पीछे और आसपास के बैंगनी रंग के दलदली मैदानों से चिपके रहे— उस खोखली घाटी से, जिसमें उनके द्वार से निकलने वाला कंकड़दार पगडंडी नीचे उतरती थी, और जो पहले फर्न के किनारों के बीच से होकर गुजरती थी, और फिर कुछ सबसे जंगली छोटे चरागाहों के बीच से, जो कभी बंजर भूमि की सीमा बनाते थे, या भूरे रंग की बंजर भूमि की भेड़ों के झुंड को उनके छोटे काई लगे चेहरे वाले मेमनों के साथ भोजन प्रदान करते थे:— मैं कहता हूँ, वे इस दृश्य से पूर्ण लगाव के उत्साह से चिपके रहे। मैं उस भावना को समझ सकता था, और उसकी शक्ति और सच्चाई दोनों को साझा कर सकता था। मैंने उस स्थान के आकर्षण को देखा। मैंने उसके एकांत की पवित्रता को महसूस किया: मेरी आँखें उभार और फैलाव की रूपरेखा पर टिकी रहीं — काई, हीथ-बेल, फूलों से सजी घास, चमकीली फर्न और कोमल ग्रेनाइट चट्टान द्वारा पहाड़ी और घाटी को दिए गए जंगली रंगों पर। ये विवरण मेरे लिए वही थे जो उनके लिए थे— आनंद के इतने सारे शुद्ध और मधुर स्रोत। तेज हवा और हल्की-हल्की हवा; उबड़-खाबड़ और शांत दिन; सूर्योदय और सूर्यास्त के समय; चांदनी और बादलों से घिरी रात, इन क्षेत्रों में मेरे लिए वही आकर्षण पैदा करती है जो उनके लिए करती है - मेरी इंद्रियों को उसी जादू से जकड़ लेती है जो उन्हें मोहित करता है।

घर के अंदर हम दोनों की आपस में खूब सहमति थी। वे दोनों मुझसे कहीं अधिक ज्ञानवान और पढ़े-लिखे थे; फिर भी मैंने बड़ी उत्सुकता से उनके दिखाए ज्ञान के मार्ग

का अनुसरण किया। उन्होंने मुझे जो किताबें दीं, मैंने उन्हें बड़े चाव से पढ़ा; फिर शाम को उनके साथ दिन भर पढ़ी हुई बातों पर चर्चा करना मुझे बेहद संतोष देता था। हमारे विचार आपस में मेल खाते थे; हमारी राय आपस में बिल्कुल मिलती थी: संक्षेप में कहें तो, हमारी सोच पूरी तरह एक जैसी थी।

अगर हम तीनों में कोई श्रेष्ठ और नेता थी, तो वह डायना थी। शारीरिक रूप से वह मुझसे कहीं बेहतर थी: वह सुंदर और ऊर्जावान थी। उसके उत्साह में जीवन की प्रचुरता और प्रवाह की निश्चितता थी, जिसने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया, जबकि मेरी समझ से परे था। शाम शुरू होने पर मैं कुछ देर बात कर सकती थी, लेकिन जैसे ही उत्साह और धाराप्रवाह का पहला दौर समाप्त हुआ, मैं डायना के चरणों में एक स्टूल पर बैठने, अपना सिर उसकी गोद में रखने और बारी-बारी से उसकी और मैरी की बातें सुनने के लिए मजबूर हो गई, क्योंकि वे उस विषय पर विस्तार से चर्चा कर रही थीं जिस पर मैंने बस थोड़ा सा ही बात की थी। डायना ने मुझे जर्मन सिखाने की पेशकश की। मुझे उससे सीखना अच्छा लगा: मैंने देखा कि शिक्षिका की भूमिका उसे भाती थी और उसे रास आती थी; और छात्र की भूमिका भी मुझे उतनी ही भाती थी और मुझे रास आती थी। हमारे स्वभाव आपस में मेल खाते थे: इसका परिणाम एक-दूसरे के प्रति गहरा स्नेह था। उन्हें पता चला कि मैं चित्र बना सकती हूँ: उनकी पेंसिलें और रंग-पेटियाँ तुरंत मेरी सेवा में तत्पर हो गईं। इस एक क्षेत्र में मेरी कुशलता उनसे कहीं अधिक थी, जिसने उन्हें आश्चर्यचकित और मोहित कर दिया। मैरी घंटों बैठकर मुझे देखती रहती, फिर वह मुझसे सीखती; और इस तरह वह एक आज्ञाकारी, बुद्धिमान और मेहनती छात्रा बन गई। इस तरह एक-दूसरे का मनोरंजन करते हुए दिन घंटों की तरह और सप्ताह दिनों की तरह बीतते चले गए।

श्री सेंट जॉन के साथ जो घनिष्ठता मेरे और उनकी बहनों के बीच स्वाभाविक रूप से और तेजी से विकसित हुई थी, वह उनके साथ नहीं थी। हमारे बीच अब भी जो दूरी बनी हुई थी, उसका एक कारण यह था कि वे अपेक्षाकृत कम ही घर पर रहते थे: उनका अधिकांश समय अपने क्षेत्र में बिखरी हुई आबादी के बीच बीमार और गरीब लोगों की सेवा में व्यतीत होता प्रतीत होता था।

मौसम कभी भी उसके इन देहाती भ्रमणों में बाधक नहीं लगता था: बारिश हो या धूप, सुबह की पढ़ाई पूरी होने पर वह अपनी टोपी उतारता और अपने पिता के पुराने कुत्ते कार्लो के पीछे-पीछे प्रेम या कर्तव्य के अपने मिशन पर निकल जाता—मुझे ठीक

से पता नहीं कि वह इसे किस दृष्टि से देखता था। कभी-कभी, जब दिन बहुत प्रतिकूल होता, तो उसकी बहनें शिकायत करतीं। तब वह एक अजीब सी मुस्कान के साथ कहता, जो प्रसन्नता से अधिक गंभीर होती—

और अगर मैं हवा के झोंके या हल्की बारिश की बूंदों से इन आसान कामों से विचलित हो जाऊं, तो भविष्य के लिए ऐसी सुस्ती कैसी तैयारी होगी जो मैंने अपने लिए तय की है?

इस सवाल पर डायना और मैरी की आम प्रतिक्रिया एक आह भरना और कुछ मिनटों तक शोकपूर्ण चिंतन करना था।

लेकिन उनकी बार-बार अनुपस्थिति के अलावा, उनसे मित्रता में एक और बाधा थी: वे एकांतप्रिय, अंतर्मुखी और कुछ हद तक चिंतनशील स्वभाव के प्रतीत होते थे। अपने धार्मिक कार्यों में उत्साही, जीवन और आदतों में निर्दोष होते हुए भी, वे उस मानसिक शांति, उस आंतरिक संतोष का आनंद लेते हुए प्रतीत नहीं होते थे, जो प्रत्येक सच्चे ईसाई और व्यावहारिक परोपकारी का हक होना चाहिए। अक्सर, शाम को जब वे खिड़की के पास बैठते, अपने सामने डेस्क और कागज़ रखे होते, तो वे पढ़ना-लिखना बंद कर देते, अपनी ठुड्डी हाथ पर टिका लेते और न जाने किन विचारों में खो जाते; लेकिन उनकी आँखों की बार-बार चमक और परिवर्तनशील फैलाव से यह स्पष्ट होता था कि वे विचार अशांत और उत्तेजित थे।

मुझे लगता है कि प्रकृति उनके लिए आनंद का वह खजाना नहीं थी जो उनकी बहनों के लिए थी। उन्होंने एक बार, और केवल एक बार मेरे सामने, पहाड़ियों के ऊबड़-खाबड़ आकर्षण के प्रति अपनी गहरी भावना और अपने घर कहे जाने वाले काले छत और सफ़ेद दीवारों के प्रति जन्मजात स्नेह व्यक्त किया; लेकिन जिस लहजे और शब्दों में उन्होंने यह भावना व्यक्त की, उसमें आनंद से अधिक उदासी थी; और ऐसा कभी नहीं लगा कि वे शांत खामोशी के लिए मैदानों में घूमते हों - न ही उन्होंने कभी उन हजारों शांतिपूर्ण सुखों की खोज की या उन पर ध्यान केंद्रित किया जो वे दे सकते थे।

उनकी कम बोलने की आदत के कारण, मुझे उनके विचारों को समझने का अवसर मिलने में कुछ समय लग गया। मुझे उनके विचारों की गहराई का पहला अंदाजा तब हुआ जब मैंने उन्हें मॉर्टन स्थित उनके अपने चर्च में उपदेश देते हुए सुना। काश मैं उस उपदेश का वर्णन कर पाता, लेकिन यह मेरे बस की बात नहीं है। मैं उस उपदेश के

मुझ पर पड़े प्रभाव को भी ठीक से व्यक्त नहीं कर सकता।

शुरुआत शांत थी—और वास्तव में, बोलने के लहजे और स्वर के लिहाज़ से, अंत तक शांति बनी रही: एक गंभीर, फिर भी संयमित उत्साह जल्द ही स्पष्ट उच्चारणों में झलकने लगा, जिसने उनकी उत्तेजित भाषा को प्रेरित किया। यह उत्साह बढ़ता ही गया—संकुचित, सघन, नियंत्रित। उपदेशक की शक्ति से हृदय रोमांचित और मन चकित रह गया: लेकिन दोनों में कोई नरमी नहीं आई। पूरे प्रवचन में एक अजीब सी कड़वाहट थी; सांत्वना देने वाली कोमलता का अभाव था; कैल्विनवादी सिद्धांतों—चुनाव, पूर्वनियति, निंदा—के कठोर संदर्भ बार-बार आते रहे; और इन बिंदुओं का प्रत्येक उल्लेख विनाश के लिए सुनाए गए फैसले जैसा प्रतीत हुआ। जब उन्होंने अपना प्रवचन समाप्त किया, तो बेहतर, शांत और उनके प्रवचन से अधिक ज्ञान प्राप्त करने के बजाय, मुझे एक अवर्णनीय उदासी का अनुभव हुआ; मुझे ऐसा प्रतीत हुआ—मुझे नहीं पता कि दूसरों को भी ऐसा ही लगा या नहीं—कि जिस वाक्पटुता को मैं सुन रहा था, वह निराशा की उस गहराई से निकली थी जहाँ अतृप्त लालसाओं और बेचैन आकांक्षाओं के कष्टदायक आवेग उमड़ रहे थे। मुझे यकीन था कि सेंट जॉन रिवर्स—चाहे वे कितने भी पवित्र जीवन जीने वाले, कर्तव्यनिष्ठ और उत्साही क्यों न हों—ने अभी तक ईश्वर की उस शांति को नहीं पाया था जो सभी समझ से परे है: मुझे लगा कि उन्होंने उसे उसी प्रकार नहीं पाया था, जैसे मैंने अपने टूटे हुए आदर्श और खोए हुए स्वर्ग के लिए अपने छिपे हुए और कष्टदायक पछतावे को नहीं पाया था—वे पछतावे जिनका मैंने हाल ही में उल्लेख करने से परहेज किया है, लेकिन जिन्होंने मुझे जकड़ रखा था और मुझ पर निर्दयतापूर्वक अत्याचार किया था।

इस बीच एक महीना बीत चुका था। डायना और मैरी जल्द ही मूर हाउस छोड़कर एक बिल्कुल अलग जीवन और परिवेश में लौटने वाली थीं, जहाँ उन्हें दक्षिण इंग्लैंड के एक बड़े, फैशनेबल शहर में गवर्नेस के रूप में काम करना था। वहाँ दोनों ऐसे परिवारों में थीं जिनके धनी और अभिमानी सदस्य उन्हें केवल विनम्र आश्रित मानते थे, और जो न तो उनकी जन्मजात प्रतिभाओं को जानते थे और न ही उन्हें निखारते थे, बल्कि उनकी अर्जित योग्यताओं की सराहना करते थे, ठीक वैसे ही जैसे वे अपने रसोइए के कौशल या अपनी नौकरानी के स्वाद की सराहना करते थे। श्री सेंट जॉन ने अभी तक मुझे उस नौकरी के बारे में कुछ नहीं बताया था जिसका उन्होंने मेरे लिए वादा किया था; फिर भी यह अत्यंत आवश्यक हो गया था कि मुझे किसी न किसी

प्रकार का पेशा मिले। एक सुबह, जब मुझे बैठक में उनके साथ कुछ मिनटों के लिए अकेला छोड़ दिया गया, तो मैंने खिड़की के उस कोने की ओर जाने का साहस किया - जिसे उन्होंने मेज, कुर्सी और डेस्क से एक प्रकार के अध्ययन कक्ष के रूप में समर्पित कर रखा था - और मैं बोलने ही वाला था, हालांकि मुझे ठीक से पता नहीं था कि अपनी बात को किन शब्दों में कहूँ - क्योंकि उनके जैसे स्वभाव वाले लोगों पर छाई हुई संकोच की बर्फ को तोड़ना हमेशा मुश्किल होता है - तभी उन्होंने बातचीत शुरू करके मेरी परेशानी को आसान कर दिया।

जैसे ही मैं उसके पास पहुँचा, उसने ऊपर देखते हुए कहा— "क्या आपको मुझसे कोई सवाल पूछना है?"

“जी हां; मैं जानना चाहता हूं कि क्या आपने किसी ऐसी सेवा के बारे में सुना है जिसे मैं स्वयं प्रदान कर सकूं?”

“मैंने तीन सप्ताह पहले आपके लिए कुछ सोचा या तैयार किया था; लेकिन चूंकि आप यहां उपयोगी और खुश दोनों लग रहे थे - क्योंकि मेरी बहनें स्पष्ट रूप से आपसे जुड़ गई थीं, और आपकी संगति उन्हें असाधारण आनंद देती थी - इसलिए मैंने आपके आपसी आराम में दखल देना तब तक अनुचित समझा जब तक कि मार्श एंड से उनके जल्द ही चले जाने से आपका आराम आवश्यक न हो जाए।”

“और वे अब तीन दिन में चले जाएंगे?” मैंने कहा।

“हाँ; और जब वे चले जाएँगे, तो मैं मॉर्टन स्थित पादरी के घर लौट आऊँगा: हन्ना मेरे साथ आएगी; और यह पुराना घर बंद कर दिया जाएगा।”

मैंने कुछ क्षण प्रतीक्षा की, यह उम्मीद करते हुए कि वह पहले उठाए गए विषय को आगे बढ़ाएगा; लेकिन ऐसा लगा जैसे वह किसी और विचार में लीन हो गया हो: उसकी नज़रें मुझसे और मेरे काम से विमुख थीं। मुझे उसे उस विषय पर वापस लाना पड़ा जो मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और चिंताजनक था।

"श्री रिवर्स, आप किस प्रकार की नौकरी की तलाश में हैं? मुझे आशा है कि इस देरी से नौकरी पाने में और अधिक कठिनाई नहीं होगी।"

"नहीं, ऐसा नहीं है; क्योंकि यह एक ऐसा काम है जिसे देने की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ मेरी है और स्वीकार करने की ज़िम्मेदारी आपकी।"

वह फिर रुक गया: ऐसा लग रहा था जैसे वह आगे बोलने में हिचकिचा रहा हो। मैं अधीर हो गया: एक-दो बेचैन हरकतें और उसके चेहरे पर टिकी एक उत्सुक और

सटीक नज़र ने उसे मेरी भावना उतनी ही प्रभावी ढंग से समझा दी जितनी कि शब्दों से समझाई जा सकती थी, और वह भी कम परेशानी के साथ।

"आपको सुनने की जल्दी नहीं है," उन्होंने कहा: "मैं आपको स्पष्ट रूप से बता दूं, मेरे पास सुझाव देने के लिए कुछ भी योग्य या लाभदायक नहीं है। समझाने से पहले, कृपया मेरी स्पष्ट सूचना को याद कर लें, कि यदि मैं आपकी सहायता करता हूँ, तो यह एक अंधे व्यक्ति द्वारा लंगड़े की सहायता करने के समान होगा। मैं गरीब हूँ; क्योंकि मुझे लगता है कि जब मैं अपने पिता का कर्ज चुका दूंगा, तो मेरे पास जो कुछ भी पैतृक संपत्ति बचेगी, वह यह जर्जर फार्महाउस, पीछे झुलसे हुए देवदार के पेड़ों की कतार और सामने यू-पेड़ों और होली-झाड़ियों वाली बंजर भूमि का टुकड़ा होगा। मैं गुमनाम हूँ: रिवर्स एक पुराना नाम है; लेकिन वंश के तीन इकलौते वंशजों में से, दो अजनबियों के बीच आश्रित का पेट पालते हैं, और तीसरा खुद को अपने देश से पराया मानता है - न केवल जीवन भर के लिए, बल्कि मृत्यु में भी। हाँ, और वह खुद को इस भाग्य से सम्मानित मानता है, और मानने के लिए बाध्य है, और केवल उस दिन की आकांक्षा रखता है जब सांसारिक बंधनों से बिछड़ने का बोझ उसके कंधों पर डाला जाएगा, और जब उस चर्च-मिलिटेंट का मुखिया, जिसके सबसे विनम्र सदस्यों में से वह एक है, यह वचन देगा, 'उठो, मेरे पीछे आओ!'

सेंट जॉन ने अपने उपदेश देते हुए ये शब्द कहे, शांत, गंभीर स्वर में; बिना लाली वाले गालों और चमकती निगाहों के साथ। उन्होंने फिर से उपदेश देना शुरू किया—

"और चूंकि मैं स्वयं गरीब और गुमनाम हूँ, इसलिए मैं आपको केवल गरीबी और गुमनामी की ही सेवा दे सकता हूँ। आप इसे अपमानजनक भी समझ सकते हैं—क्योंकि अब मैं देखता हूँ कि आपकी आदतें वैसी हैं जिन्हें दुनिया परिष्कृत कहती है: आपका स्वाद आदर्श की ओर झुका हुआ है, और आपका समाज कम से कम शिक्षितों के बीच रहा है; लेकिन मेरा मानना है कि कोई भी सेवा जो हमारी जाति को बेहतर बना सकती है, वह अपमानजनक नहीं है। मेरा मानना है कि ईसाई मजदूर को जिस भूमि पर खेती का काम सौंपा जाता है, वह जितनी बंजर और अनुपयोगी होती है—उसके परिश्रम का प्रतिफल जितना कम होता है—उसे उतना ही अधिक सम्मान मिलता है। ऐसी परिस्थितियों में, उसका भाग्य एक अग्रणी का होता है; और सुसमाचार के पहले अग्रणी प्रेरित थे—उनके सेनापति स्वयं यीशु, मुक्तिदाता थे।"

"तो?" मैंने कहा, जब वह फिर रुका — "आगे बढ़ो।"

आगे बढ़ने से पहले उन्होंने मेरी ओर देखा; वास्तव में, वे बड़ी सहजता से मेरे चेहरे को पढ़ रहे थे, मानो मेरे चेहरे की भाव-भंगिमाएँ किसी पृष्ठ पर अंकित अक्षर हों। इस गहन अवलोकन से निकाले गए निष्कर्षों को उन्होंने अपनी अगली टिप्पणियों में आंशिक रूप से व्यक्त किया।

"मुझे विश्वास है कि आप मेरे द्वारा प्रस्तावित पद स्वीकार कर लेंगे," उन्होंने कहा, "और कुछ समय के लिए इसे संभालेंगे: हालांकि स्थायी रूप से नहीं: ठीक वैसे ही जैसे मैं अंग्रेजी ग्रामीण क्षेत्र के पद को स्थायी रूप से नहीं संभाल सकता; क्योंकि आपके स्वभाव में भी एक ऐसा मिश्रण है जो शांति के लिए उतना ही हानिकारक है जितना मेरे स्वभाव में, हालांकि यह अलग प्रकार का है।"

जब वह एक बार फिर रुका, तो मैंने आग्रह किया, "कृपया समझाएं।"

"मैं ऐसा करूँगी; और आप सुनेंगे कि यह प्रस्ताव कितना तुच्छ, कितना मामूली और कितना तंग करने वाला है। अब जब मेरे पिता का देहांत हो गया है और मैं अपनी ज़िम्मेदारी खुद उठाती हूँ, तो मैं मॉर्टन में ज़्यादा दिन नहीं रहूँगी। मैं शायद बारह महीने के भीतर ही यह जगह छोड़ दूँगी; लेकिन जब तक मैं यहाँ रहूँगी, इसके सुधार के लिए मैं पूरी कोशिश करूँगी। जब मैं दो साल पहले मॉर्टन आई थी, तब यहाँ कोई स्कूल नहीं था: गरीब बच्चों के लिए तरक्की की कोई उम्मीद नहीं थी। मैंने लड़कों के लिए एक स्कूल खोला: अब मैं लड़कियों के लिए दूसरा स्कूल खोलना चाहती हूँ। मैंने इसके लिए एक इमारत किराए पर ली है, जिसके साथ दो कमरों का एक छोटा सा घर भी जुड़ा हुआ है, जो शिक्षिका के रहने के लिए है। उनका वेतन तीस पाउंड सालाना होगा: उनका घर पहले से ही बहुत ही सादे ढंग से, लेकिन पर्याप्त रूप से, एक महिला, मिस ओलिवर की कृपा से सुसज्जित है; जो मेरे इलाके के इकलौते अमीर आदमी - मिस्टर ओलिवर, जो घाटी में एक सुई-कारखाने और लोहे की भट्टी के मालिक हैं, की इकलौती बेटी हैं। वही महिला वर्कहाउस के एक अनाथ बच्चे की शिक्षा और कपड़ों का खर्च उठाती है, इस शर्त पर कि वह उसकी मदद करेगी।" क्या आप घर और स्कूल से जुड़े ऐसे छोटे-मोटे कामों में गृहिणी बनेंगी, जिन्हें पढ़ाने के पेशे के कारण उन्हें स्वयं करने का समय नहीं मिलेगा? क्या आप यह गृहिणी बनेंगी?

उन्होंने यह सवाल कुछ जल्दबाजी में पूछा; ऐसा लग रहा था मानो उन्हें उम्मीद थी कि मैं इस प्रस्ताव को गुस्से से, या कम से कम तिरस्कारपूर्वक अस्वीकार कर दूंगी: मेरे सारे विचार और भावनाएँ न जानते हुए, हालांकि कुछ हद तक अनुमान लगाते

हुए, वे यह नहीं बता सकते थे कि यह पद मुझे कैसा लगेगा। सच तो यह था कि यह पद साधारण था - लेकिन फिर यह सुरक्षित था, और मुझे एक सुरक्षित आश्रय चाहिए था: यह थकाऊ था - लेकिन फिर, एक अमीर घर में गवर्नेंस के पद की तुलना में, यह स्वतंत्र था; और अजनबियों के अधीन गुलामी का डर मेरे मन में लोहे की तरह बैठ गया था: यह नीच नहीं था - अयोग्य नहीं था - मानसिक रूप से अपमानजनक नहीं था, मैंने अपना निर्णय ले लिया।

"श्री रिवर्स, मैं आपके प्रस्ताव के लिए धन्यवाद देता हूं और इसे पूरे दिल से स्वीकार करता हूं।"

“लेकिन क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?” उन्होंने कहा। “यह एक गाँव का स्कूल है: आपके विद्यार्थी केवल गरीब लड़कियाँ होंगी—झोपड़ी में रहने वालों की बेटियाँ—ज़्यादा से ज़्यादा, किसानों की बेटियाँ। बुनाई, सिलाई, पढ़ना, लिखना, हिसाब-किताब, बस यही सब आपको सिखाना होगा। आप अपनी उपलब्धियों का क्या करेंगे? अपने दिमाग के सबसे बड़े हिस्से—भावनाओं—रुचियों—का क्या करेंगे?”

“इन्हें तब तक बचाकर रखें जब तक इनकी जरूरत न हो। ये लंबे समय तक चलेंगे।”

"तो फिर आपको पता है कि आप क्या करने जा रहे हैं?"

"मैं करता हूं।"

अब वह मुस्कुराया: और यह कोई कड़वी या उदास मुस्कान नहीं थी, बल्कि एक बेहद प्रसन्न और गहरी संतुष्टि भरी मुस्कान थी।

और आप अपने कार्य का निर्वहन कब से शुरू करेंगे?

मैं कल अपने घर जाऊंगा और अगर आप चाहें तो अगले हफ्ते स्कूल खोल दूंगा।

"ठीक है: ऐसा ही हो।"

वह उठा और कमरे में चला गया। फिर रुककर उसने मेरी तरफ देखा। उसने अपना सिर हिलाया।

मैंने पूछा, "श्री रिवर्स, आपको किस बात पर आपत्ति है?"

“आप मॉर्टन में ज्यादा दिन नहीं रुकेंगे: नहीं, नहीं!”

“क्यों? ऐसा कहने का आपका क्या कारण है?”

मैंने तुम्हारी आँखों में यह पढ़ लिया; यह उस तरह की आँख नहीं है जो जीवन में एकरूपता बनाए रखने का वादा करती हो।

मैं महत्वाकांक्षी नहीं हूं।

वह "महत्वाकांक्षी" शब्द पर चौंक गया। उसने दोहराया, "नहीं। आपको महत्वाकांक्षा का ख्याल कैसे आया? कौन महत्वाकांक्षी होता है? मुझे पता है कि मैं हूँ: लेकिन आपको यह कैसे पता चला?"

मैं अपने बारे में बात कर रहा था।

“अच्छा, अगर आप महत्वाकांक्षी नहीं हैं, तो आप —” वह रुक गए।

"क्या?"

“मैं कहना चाहता था, ‘भावुक’: लेकिन शायद आप शब्द का गलत अर्थ निकाल लेते और नाराज़ हो जाते। मेरा मतलब है कि मानवीय भावनाएँ और सहानुभूति आप पर बहुत गहरा प्रभाव डालती हैं। मुझे यकीन है कि आप अपना खाली समय एकांत में बिताने और अपने काम के घंटों को नीरस और प्रेरणाहीन श्रम में लगाने से लंबे समय तक संतुष्ट नहीं रह सकते: ठीक वैसे ही जैसे मैं संतुष्ट नहीं रह सकता,” उन्होंने ज़ोर देकर कहा, “यहाँ दलदल में धँसे, पहाड़ों से घिरे रहने से—ईश्वर द्वारा प्रदत्त मेरी प्रकृति का उल्लंघन हो रहा है; स्वर्ग से प्राप्त मेरी शक्तियाँ निष्क्रिय हो गई हैं—बेकार हो गई हैं। अब आप सुन रहे हैं कि मैं कैसे अपने ही विचारों का खंडन कर रहा हूँ। मैं, जिसने साधारण जीवन में संतोष का उपदेश दिया और ईश्वर की सेवा में लकड़ी काटने वालों और पानी भरने वालों के काम को भी उचित ठहराया—मैं, उनका नियुक्त सेवक, अपनी बेचैनी में लगभग पागल हो रहा हूँ। खैर, प्रवृत्तियों और सिद्धांतों में किसी न किसी तरह सामंजस्य बिठाना ही होगा।”

वह कमरे से चला गया। इस संक्षिप्त घंटे में ही मैंने उसके बारे में पिछले पूरे महीने की तुलना में कहीं अधिक जान लिया था; फिर भी वह मुझे उलझन में डालता रहा।

जैसे-जैसे अपने भाई और घर को छोड़ने का दिन नज़दीक आता गया, डायना और मैरी रिवर्स और भी उदास और चुप होती गईं। दोनों ने सामान्य दिखने की कोशिश की; लेकिन जिस दुख से वे जूझ रही थीं, उसे पूरी तरह से जीता या छिपाया नहीं जा सकता था। डायना ने संकेत दिया कि यह अब तक की उनकी सभी विदाई से अलग होगी। सेंट जॉन के लिए, यह शायद वर्षों की विदाई होगी: यह जीवन भर की विदाई भी हो सकती है।

“वह अपने दृढ़ संकल्पों के लिए सब कुछ कुर्बान कर देगा,” उसने कहा: “स्वाभाविक स्नेह और उससे भी प्रबल भावनाएँ। सेंट जॉन शांत दिखते हैं, जेन;

लेकिन उनके भीतर एक तीव्र पीड़ा छिपी है। आप उन्हें सौम्य समझेंगे, फिर भी कुछ मामलों में वे मृत्यु के समान कठोर हैं; और सबसे बुरी बात यह है कि मेरा अंतरात्मा मुझे उनके इस कठोर निर्णय से उन्हें रोकने की अनुमति नहीं देता: निश्चित रूप से, मैं एक पल के लिए भी उन्हें इसके लिए दोषी नहीं ठहरा सकती। यह सही है, नेक है, ईसाई है: फिर भी यह मेरा दिल तोड़ देता है!" और उसकी सुंदर आँखों से आँसू बह निकले। मैरी ने अपना सिर झुकाकर अपना काम जारी रखा।

"अब हम पिताविहीन हैं: जल्द ही हम घर और भाईविहीन भी हो जाएंगे," उसने धीरे से कहा।

उसी क्षण एक छोटी सी दुर्घटना घटित हुई, जो मानो भाग्य द्वारा जानबूझकर रची गई थी ताकि इस कहावत की सत्यता सिद्ध हो सके कि "दुर्भाग्य कभी अकेले नहीं आते," और उनकी परेशानियों में एक और विपत्ति जुड़ गई, जो प्याले और होंठ के बीच फिसलने जैसी थी। सेंट जॉन खिड़की के पास से एक पत्र पढ़ते हुए गुजरे। वे अंदर चले गए।

"हमारे चाचा जॉन की मृत्यु हो गई है," उसने कहा।

दोनों बहनें स्तब्ध प्रतीत हुईं: वे चौंकी या भयभीत नहीं हुईं; उनकी आँखों में यह खबर दुखद होने के बजाय कहीं अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत हुई।

"मर गई?" डायना ने दोहराया।

"हाँ।"

उसने अपने भाई के चेहरे पर टकटकी लगाकर देखा। "और फिर क्या?" उसने धीमी आवाज़ में पूछा।

"तो फिर क्या, मर जाओ?" उसने चेहरे पर पत्थर जैसी भावहीनता बनाए रखते हुए उत्तर दिया। "तो फिर क्या? क्यों—कुछ नहीं। पढ़ो।"

उसने चिट्ठी उसकी गोद में फेंक दी। उसने उस पर सरसरी नज़र डाली और उसे मैरी को दे दिया। मैरी ने चुपचाप उसे पढ़ा और अपने भाई को लौटा दिया। तीनों ने एक-दूसरे को देखा और तीनों मुस्कुराए— एक उदास, गंभीर मुस्कान।

अंत में डायना ने कहा, "आमीन! हम अभी भी जी सकते हैं।"

"खैर, इससे हमारी स्थिति पहले से बदतर तो नहीं हुई है," मैरी ने टिप्पणी की।

श्री रिवर्स ने कहा, "यह मन में इस बात की तस्वीर को काफी मजबूती से बिठा देता है कि क्या हो सकता था," और "इसकी तुलना वर्तमान स्थिति से कुछ ज्यादा ही

स्पष्ट रूप से कर देता है।"

उसने पत्र को मोड़कर अपनी डेस्क में बंद कर दिया और फिर बाहर चला गया।

कुछ मिनटों तक कोई नहीं बोला। फिर डायना मेरी ओर मुड़ी।

“जेन, तुम हम पर और हमारे रहस्यों पर आश्चर्य करोगी,” उसने कहा, “और सोचोगी कि हम इतने कठोर हृदय वाले हैं कि चाचा जैसे करीबी रिश्तेदार की मृत्यु पर भी हमें कोई दुख नहीं हुआ; लेकिन हमने उन्हें कभी देखा या जाना नहीं। वे मेरी माँ के भाई थे। मेरे पिता और उनके बीच बहुत पहले झगड़ा हुआ था। उन्हीं की सलाह पर मेरे पिता ने अपनी अधिकांश संपत्ति उस सट्टेबाजी में लगा दी जिसने उन्हें बर्बाद कर दिया। उनके बीच आपसी आरोप-प्रत्यारोप का दौर चला: वे गुस्से में अलग हो गए और फिर कभी सुलह नहीं हुई। मेरे चाचा ने बाद में अधिक सफल व्यवसाय किए: ऐसा लगता है कि उन्होंने बीस हजार पाउंड की संपत्ति अर्जित की। उन्होंने कभी शादी नहीं की और हमारे अलावा उनका कोई करीबी रिश्तेदार नहीं था, सिवाय एक और व्यक्ति के, जो हमसे ज्यादा करीबी रिश्तेदार नहीं था। मेरे पिता हमेशा यह सोचते थे कि वे अपनी गलती का प्रायश्चित हमें अपनी संपत्ति देकर करेंगे; उस पत्र से हमें पता चलता है कि उन्होंने तीस गिनी को छोड़कर, जो सेंट जॉन, डायना और मैरी रिवर्स के बीच तीन शोक की अंगूठियाँ खरीदने के लिए बाँटी जानी थीं, एक-एक पैसा दूसरे रिश्तेदार को दे दिया है। उनका अधिकार था, बेशक, वह अपनी मर्जी से कुछ भी कर सकता था; फिर भी ऐसी खबर सुनकर क्षणिक रूप से मन उदास हो जाता है। मैरी और मैं खुद को एक-एक हजार पाउंड पाकर धनी समझते; और सेंट जॉन के लिए भी इतनी रकम मूल्यवान होती, क्योंकि इससे वह बहुत अच्छे काम कर पाता।

यह स्पष्टीकरण देने के बाद, विषय वहीं समाप्त हो गया, और श्री रिवर्स या उनकी बहनों में से किसी ने भी इसका ज़िक्र नहीं किया। अगले दिन मैं मार्श एंड से मॉर्टन के लिए रवाना हो गया। उसके अगले दिन, डायना और मैरी भी दूर बी- के लिए निकल गईं। एक सप्ताह बाद, श्री रिवर्स और हन्ना पादरी के घर चले गए: और इस तरह पुराना फार्महाउस वीरान हो गया।

अध्याय XXXI

अंततः जब मुझे अपना घर मिल गया, तो वह एक झोपड़ी थी; एक छोटा सा कमरा जिसकी दीवारें सफेदी से पुती थीं और फर्श चिकना था, जिसमें चार रंगी हुई कुर्सियाँ और एक मेज, एक घड़ी, एक अलमारी जिसमें दो-तीन प्लेटें और थालियाँ थीं, और चाय के बर्तनों का एक सेट था। ऊपर, रसोई के समान आकार का एक कमरा था, जिसमें लकड़ी का पलंग और दराजों वाली एक अलमारी थी; छोटा, फिर भी मेरे सीमित कपड़ों के लिए काफी बड़ा: हालाँकि मेरे दयालु और उदार मित्रों की कृपा से, आवश्यक वस्तुओं का एक छोटा सा भंडार मिल गया है।

शाम हो चुकी है। मैंने अपनी नौकरानी को एक संतरा देकर विदा कर दिया है। मैं चूल्हे के पास अकेली बैठी हूँ। आज सुबह गाँव का स्कूल खुला। मेरे पास बीस विद्यार्थी थे। उनमें से केवल तीन ही पढ़ सकते हैं: कोई भी लिखना या गणित नहीं जानता। कुछ बुनाई करते हैं, और कुछ सिलाई-बुनाई करते हैं। वे इलाके के सबसे अलग लहजे में बोलते हैं। फिलहाल, मुझे और उन्हें एक-दूसरे की भाषा समझने में कठिनाई हो रही है। उनमें से कुछ असभ्य, अशिष्ट, जिद्दी और साथ ही अज्ञानी भी हैं; लेकिन अन्य विनम्र हैं, सीखने की इच्छा रखते हैं, और उनका स्वभाव मुझे प्रसन्न करता है। मुझे यह नहीं भूलना चाहिए कि ये साधारण कपड़े पहने हुए छोटे किसान भी उतने ही अच्छे हैं जितने कि कुलीन खानदान के लोग; और उनमें भी जन्मजात श्रेष्ठता, शिष्टाचार, बुद्धिमत्ता और दयालुता के गुण उतने ही मौजूद हैं जितने कि कुलीन लोगों में। मेरा कर्तव्य है कि मैं इन गुणों को विकसित करूँ: निश्चित रूप से मुझे इस कार्य को करने में कुछ सुख मिलेगा। मुझे अपने सामने खुल रहे जीवन में बहुत अधिक आनंद की उम्मीद नहीं है: फिर भी, यदि मैं अपने मन को नियंत्रित करूँ और अपनी क्षमताओं का उचित उपयोग करूँ, तो निस्संदेह यह मुझे प्रतिदिन जीवन यापन करने के लिए पर्याप्त धन प्रदान करेगा।

क्या आज सुबह और दोपहर उस खाली, साधारण से स्कूल के कमरे में बिताए घंटों के दौरान मैं बहुत खुश, शांत और संतुष्ट था? खुद को धोखा न देते हुए, मुझे जवाब देना होगा - नहीं: मैं कुछ हद तक उदास था। मुझे लगा - हाँ, मैं मूर्ख हूँ - मुझे अपमानित महसूस हुआ। मुझे संदेह हुआ कि मैंने एक ऐसा कदम उठाया है जो

सामाजिक स्तर पर मुझे ऊपर उठाने के बजाय नीचे गिरा रहा है। मेरे आस-पास जो कुछ भी मैंने सुना और देखा, उसकी अज्ञानता, गरीबी और अशिष्टता से मैं थोड़ा निराश था। लेकिन इन भावनाओं के लिए मुझे खुद से बहुत नफरत और घृणा नहीं करनी चाहिए; मैं जानता हूँ कि ये गलत हैं - यह एक बड़ी उपलब्धि है; मैं इन पर काबू पाने का प्रयास करूँगा। मुझे उम्मीद है कि कल मैं इन पर कुछ हद तक काबू पा लूँगा; और शायद कुछ हफ्तों में ये पूरी तरह से शांत हो जाएँगी। कुछ महीनों में, संभव है, मेरे विद्यार्थियों में प्रगति और बेहतर बदलाव देखकर मिलने वाली खुशी, घृणा की जगह संतुष्टि का काम करे।

इस बीच, मैं खुद से एक सवाल पूछती हूँ— इनमें से कौन सा बेहतर है?— प्रलोभन के आगे झुक जाना; वासना की बात मान लेना; कोई कष्टदायी प्रयास न करना— कोई संघर्ष न करना;— या रेशमी जाल में फँस जाना; उस पर लिपटे फूलों पर सो जाना; दक्षिणी जलवायु में, एक आलीशान विला की सुख-सुविधाओं के बीच जागना; या अब फ्रांस में मिस्टर रोचेस्टर की प्रेमिका बनकर रहना; अपना आधा समय उनके प्यार में मदहोश रहना— क्योंकि वो— हाँ, वो कुछ समय के लिए मुझसे बहुत प्यार करते। उन्होंने मुझसे प्यार किया— कोई भी मुझसे फिर कभी इतना प्यार नहीं करेगा। मैं अब कभी भी सुंदरता, यौवन और आकर्षण को दी जाने वाली मीठी श्रद्धा को नहीं जान पाऊँगी— क्योंकि अब कोई और मुझे इन आकर्षणों का पात्र नहीं मानेगा। वो मुझसे प्यार करते थे और मुझ पर गर्व करते थे— ऐसा कोई और पुरुष कभी नहीं करेगा।— लेकिन मैं कहाँ भटक रही हूँ, क्या कह रही हूँ, और सबसे बढ़कर, क्या महसूस कर रही हूँ? मैं पूछती हूँ, क्या यह बेहतर है कि मार्सिले में मूर्खों के स्वर्ग में गुलाम बनकर रहना - एक पल भ्रामक आनंद से व्याकुल होकर अगले ही पल पश्चाताप और शर्म के कड़वे आँसुओं से घुटते हुए - या इंग्लैंड के स्वस्थ हृदय में स्थित एक हवादार पहाड़ी कोने में एक स्वतंत्र और ईमानदार गाँव की शिक्षिका बनकर रहना?

हाँ; अब मुझे लगता है कि सिद्धांतों और नियमों का पालन करना और उन्माद के क्षण में उमड़ने वाली बेकाबू इच्छाओं को ठुकराना और कुचल देना मेरा सही निर्णय था। ईश्वर ने मुझे सही रास्ता दिखाया: मैं उनके मार्गदर्शन के लिए उनका आभारी हूँ!

शाम के समय के अपने विचारों को इस बिंदु तक लाते हुए, मैं उठा, अपने दरवाजे पर गया और फसल कटाई के दिन के सूर्यास्त को देखा, और अपनी कुटिया के सामने

के शांत खेतों को देखा, जो स्कूल के साथ गाँव से आधा मील दूर थी। पक्षी अपने अंतिम गीत गा रहे थे—

"हवा सुहावनी थी, ओस से राहत मिल रही थी।"

जब मैं देख रही थी, तो मुझे लगा कि मैं खुश हूँ, और मुझे आश्चर्य हुआ कि कुछ ही देर में मैं रोने लगी—और क्यों? उस नियति के लिए जिसने मुझे मेरे स्वामी से विमुख कर दिया था: अब मैं उन्हें कभी नहीं देख पाऊँगी; उस घोर दुःख और घातक क्रोध के लिए—मेरे जाने के परिणाम—जो शायद अब उन्हें सही रास्ते से इतना दूर खींच रहे थे कि वहाँ से उनके लौटने की कोई उम्मीद नहीं बची थी। इस विचार के साथ ही, मैंने अपना चेहरा शाम के सुंदर आकाश और मॉर्टन की सुनसान घाटी से फेर लिया—मैं सुनसान इसलिए कह रही हूँ, क्योंकि घाटी के उस मोड़ पर जो मुझे दिखाई दे रहा था, वहाँ चर्च और पादरी के घर के अलावा कोई इमारत नज़र नहीं आ रही थी, जो पेड़ों में आधे छिपे हुए थे, और बिल्कुल किनारे पर वेल हॉल की छत थी, जहाँ धनी श्री ओलिवर और उनकी बेटी रहते थे। मैंने अपनी आँखें छुपा लीं और अपना सिर अपने दरवाजे के पत्थर के फ्रेम पर टिका दिया; लेकिन जल्द ही मेरे छोटे से बगीचे को घास के मैदान से अलग करने वाले छोटे से दरवाजे के पास एक हल्की सी आवाज़ ने मुझे ऊपर देखने पर मजबूर कर दिया। एक कुत्ता—बूढ़ा कार्लो, जैसा कि मैंने थोड़ी देर में देखा, मिस्टर रिवर्स का पॉइंटर—अपनी नाक से गेट को धक्का दे रहा था, और सेंट जॉन खुद बाँहें बाँधे उस पर झुके हुए थे; उनकी भौंहें तन गई थीं, उनकी निगाहें, लगभग नाराज़गी से भरी गंभीर, मुझ पर टिकी हुई थीं। मैंने उनसे अंदर आने को कहा।

“नहीं, मैं नहीं रुक सकती; मैं तुम्हारे लिए सिर्फ एक छोटा सा पार्सल लाई हूँ जो मेरी बहनों ने तुम्हारे लिए छोड़ा था। मुझे लगता है उसमें एक रंग-डिब्बा, पेंसिल और कागज है।”

मैं उसे लेने के लिए आगे बढ़ा: यह एक सुखद उपहार था। जैसे ही मैं पास आया, उसने मेरे चेहरे को गंभीरता से देखा, मुझे लगा: उस पर आँसुओं के निशान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे।

“क्या आपको अपने पहले दिन का काम उम्मीद से ज्यादा कठिन लगा?” उन्होंने पूछा।

“अरे नहीं! इसके विपरीत, मुझे लगता है कि समय के साथ मैं अपने छात्रों के

साथ बहुत अच्छे से तालमेल बिठा लूंगी।”

“लेकिन शायद आपके रहने की जगह—आपकी कुटिया—आपका फर्नीचर—आपकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा है? सच तो यह है कि वे काफी कम हैं; लेकिन—” मैंने बात काटते हुए कहा—

मेरी कुटिया साफ-सुथरी और मौसम से सुरक्षित है; मेरा फर्नीचर पर्याप्त और आरामदायक है। जो कुछ मैंने देखा है, उससे मैं निराश नहीं, बल्कि आभारी महसूस करता हूँ। मैं इतना मूर्ख और व्यभिचारी नहीं हूँ कि कालीन, सोफा और चांदी के बर्तनों की कमी का अफसोस करूँ; इसके अलावा, पाँच सप्ताह पहले मेरे पास कुछ भी नहीं था - मैं एक अछूत, एक भिखारी, एक आवारा था; अब मेरे पास जान-पहचान है, एक घर है, एक व्यवसाय है। मैं ईश्वर की कृपा, अपने मित्रों की उदारता और अपने भाग्य की प्रचुरता पर आश्चर्यचकित हूँ। मैं शिकायत नहीं करता।

लेकिन क्या आपको एकांत एक दमनकारी भावना लगती है? आपके पीछे वह छोटा सा घर अंधेरा और खाली है।

"मुझे अभी तक शांति का अनुभव करने का भी मुश्किल से समय मिला है, अकेलेपन के कारण अधीर होने की तो बात ही दूर है।"

“बहुत खूब; मुझे उम्मीद है कि आप अपनी संतुष्टि को महसूस कर रही होंगी: वैसे भी, आपकी समझदारी आपको बताएगी कि लूत की पत्नी के डगमगाते डर के आगे झुकना अभी जल्दबाजी होगी। मेरे आपसे मिलने से पहले आपने क्या छोड़ा था, यह तो मैं नहीं जानता; लेकिन मैं आपको सलाह देता हूँ कि पीछे मुड़कर देखने के हर प्रलोभन का दृढ़ता से विरोध करें: कम से कम कुछ महीनों तक अपने वर्तमान मार्ग पर दृढ़ता से आगे बढ़ें।”

“मैं यही करना चाहता हूँ,” मैंने उत्तर दिया। सेंट जॉन ने आगे कहा—

"इच्छाओं के प्रवाह को नियंत्रित करना और प्रकृति के झुकाव को मोड़ना कठिन काम है; लेकिन यह संभव है, यह मैं अपने अनुभव से जानता हूँ। ईश्वर ने हमें कुछ हद तक अपना भाग्य स्वयं बनाने की शक्ति दी है; और जब हमारी ऊर्जा को ऐसे पोषण की आवश्यकता प्रतीत होती है जो उसे नहीं मिल सकता — जब हमारी इच्छा किसी ऐसे मार्ग पर चलने के लिए विवश होती है जिस पर हम नहीं चल सकते — तो हमें न तो भूख से मरना चाहिए और न ही निराशा में स्थिर रहना चाहिए: हमें बस मन के लिए एक और पोषण खोजना है, जो उस वर्जित भोजन जितना ही शक्तिशाली हो

जिसका स्वाद लेने के लिए वह तरस रहा था — और शायद उससे भी अधिक शुद्ध; और साहसी कदमों के लिए एक ऐसा मार्ग बनाना है जो उतना ही सीधा और चौड़ा हो जितना कि भाग्य ने हमारे सामने अवरुद्ध किया है, भले ही वह उससे अधिक कठिन हो।"

"एक साल पहले मैं खुद बेहद दुखी था, क्योंकि मुझे लगता था कि मैंने पादरी बनने का फैसला करके गलती की है: इसके एक जैसे कर्तव्यों ने मुझे मौत के कगार पर पहुंचा दिया था। मैं दुनिया के अधिक सक्रिय जीवन के लिए तड़प रहा था — एक साहित्यिक करियर के अधिक रोमांचक परिश्रम के लिए — एक कलाकार, लेखक, वक्ता बनने के लिए; पादरी बनने के अलावा कुछ भी बनने के लिए: हाँ, एक राजनेता, एक सैनिक, यश के उपासक, प्रसिद्धि के प्रेमी, सत्ता के भूखे का दिल मेरे पादरी के चोगे के नीचे धड़क रहा था। मैंने सोचा; मेरा जीवन इतना दयनीय था, इसे बदलना ही होगा, नहीं तो मुझे मरना होगा। अंधकार और संघर्ष के एक दौर के बाद, प्रकाश आया और राहत मिली: मेरा सीमित जीवन अचानक एक असीम मैदान में फैल गया — मेरी शक्तियों ने स्वर्ग से उठने, अपनी पूरी ताकत इकट्ठा करने, अपने पंख फैलाने और पहुंच से परे उड़ने का आह्वान सुना। ईश्वर ने मुझे एक काम सौंपा था; जिसे दूर तक ले जाने, उसे अच्छी तरह से पूरा करने के लिए कौशल और शक्ति, साहस और वाक्पटुता, एक सैनिक, राजनेता और वक्ता, इन सबकी आवश्यकता थी: क्योंकि ये सभी गुण एक अच्छे मिशनरी में निहित हैं।

"मैंने एक धर्म प्रचारक बनने का संकल्प लिया। उसी क्षण से मेरी मनस्थिति बदल गई; मेरे सारे बंधन टूटकर बिखर गए, केवल उनकी पीड़ादायक कसक ही शेष रही—जिसे केवल समय ही ठीक कर सकता है। मेरे पिता ने ही यह दृढ़ संकल्प मुझ पर थोपा था, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद से मेरे सामने कोई वास्तविक बाधा नहीं रही; कुछ मामले सुलझ गए, मॉर्टन का उत्तराधिकारी मिल गया, भावनाओं की एक-दो उलझनें टूट गईं या अलग हो गईं—मानवीय कमजोरी के साथ मेरा अंतिम संघर्ष, जिसमें मुझे विश्वास है कि मैं विजय प्राप्त करूँगा, क्योंकि मैंने प्रतिज्ञा की है कि मैं विजय प्राप्त करूँगा—और मैं यूरोप छोड़कर पूर्व की ओर चल पड़ा।"

उन्होंने अपनी विशिष्ट, शांत, फिर भी दृढ़ स्वर में यह कहा; बोलते-बोलते उन्होंने मेरी ओर नहीं, बल्कि डूबते सूरज की ओर देखा, जिसकी ओर मैंने भी देखा। हम दोनों की पीठ विकेट की ओर जाने वाले रास्ते की ओर थी। उस घास से ढके रास्ते पर हमें

किसी के कदमों की आहट नहीं सुनाई दी; घाटी में बहते पानी की आवाज़ ही उस समय और दृश्य की एकमात्र सुकून देने वाली ध्वनि थी; ऐसे में हम चौंक ही सकते थे जब एक मधुर, चांदी की घंटी जैसी मीठी आवाज़ ने पुकारा—

"शुभ संध्या, श्रीमान रिवर्स। और शुभ संध्या, बूढ़े कार्लो। आपका कुत्ता अपने दोस्तों को आपसे भी जल्दी पहचान लेता है, महोदय; जब मैं खेत के निचले हिस्से में था, तब उसने अपने कान खड़े किए और पूंछ हिलाई, और अब आपकी पीठ मेरी ओर है।"

यह सच था। हालाँकि श्री रिवर्स संगीत की पहली धुन पर चौंक गए थे, मानो उनके सिर पर बिजली गिर पड़ी हो, फिर भी वाक्य के अंत तक वे उसी मुद्रा में खड़े रहे जिसमें वक्ता ने उन्हें चौंकाया था—उनकी बांह फाटक पर टिकी थी, उनका चेहरा पश्चिम की ओर था। अंत में, उन्होंने बड़े सधे हुए अंदाज़ में मुड़ा। मुझे ऐसा लगा जैसे उनके बगल में एक दृश्य प्रकट हुआ हो। उनसे तीन फीट की दूरी पर, शुद्ध सफेद वस्त्रों में लिपटी एक आकृति दिखाई दी—एक युवा, सुंदर आकृति: भरी हुई, फिर भी सुडौल; और जब कार्लो को सहलाने के लिए झुकने के बाद, उसने अपना सिर उठाया और अपना लंबा घूंघट पीछे हटाया, तो उनकी नज़र के सामने एक परिपूर्ण सौंदर्य का चेहरा खिल उठा। परिपूर्ण सौंदर्य एक सशक्त अभिव्यक्ति है; लेकिन मैं इसे कम करके नहीं आंक रहा हूँ: एल्बियन की समशीतोष्ण जलवायु ने जितने सुंदर चेहरे गढ़े हैं, उतने ही सुंदर चेहरे; वहाँ की नम हवाओं और धुंध भरे आकाश ने जितने शुद्ध गुलाब और लिली के रंग उत्पन्न और संरक्षित किए हैं, उतने ही शुद्ध रंग इस मामले में इस शब्द को उचित ठहराते हैं। उसमें किसी भी प्रकार की सुंदरता की कमी नहीं थी, कोई दोष दिखाई नहीं दे रहा था; युवती के चेहरे की बनावट सुस्पष्ट और कोमल थी; आँखें वैसी ही थीं जैसी हम सुंदर चित्रों में देखते हैं - बड़ी, गहरी और भरी हुई; लंबी और घनी पलकें एक सुंदर आँख को कोमल आकर्षण से घेरे हुए थीं; पेंसिल से तराशा हुआ माथा जो स्पष्टता प्रदान करता था; सफेद चिकना माथा जो रंग और किरणों की जीवंत सुंदरता में शांति जोड़ता था; अंडाकार, ताजा और चिकना गाल; ताजे, लाल, स्वस्थ और सुंदर होंठ; एक समान और बेदाग चमकते दांत; छोटी सी डिंपल वाली ठुड्डी; घने, भरपूर बालों का आभूषण - संक्षेप में, ये सभी गुण, जो मिलकर सुंदरता के आदर्श को साकार करते हैं, पूरी तरह से उसके थे। मैं इस सुंदरी को देखकर आश्चर्यचकित रह गया: मैंने पूरे दिल से उसकी प्रशंसा की। प्रकृति ने निश्चित रूप से

उसे एक विशेष भाव से बनाया था; और, सौतेली माँ के रूप में उपहारों की अपनी सामान्य सीमित राशि को भूलकर, उसने अपनी इस प्रियतम को एक दादी की उदारता से नवाजा था।

सेंट जॉन रिवर्स इस सांसारिक देवदूत के बारे में क्या सोचते थे? यह सवाल मैंने स्वाभाविक रूप से अपने मन में तब पूछा जब मैंने उन्हें उसकी ओर मुड़ते और उसे देखते हुए देखा; और स्वाभाविक रूप से, मैंने उनके चेहरे पर इस जिज्ञासा का उत्तर खोजने की कोशिश की। उन्होंने अपनी नज़र पेरी से हटा ली थी और खिड़की के पास उगे हुए डेज़ी के एक छोटे से गुच्छे को देख रहे थे।

"सुंदर शाम है, लेकिन तुम्हारे अकेले बाहर रहने के लिए बहुत देर हो चुकी है," उसने कहा और अपने पैर से बंद फूलों के बर्फीले सिरों को कुचल दिया।

“ओह, मैं तो आज दोपहर ही एस-” (उसने लगभग बीस मील दूर स्थित एक बड़े कस्बे का नाम लिया) “से घर लौटी हूँ। पापा ने मुझे बताया कि आपका स्कूल खुल गया है और नई शिक्षिका आ गई हैं; इसलिए मैंने चाय के बाद अपनी टोपी पहनी और उन्हें देखने के लिए घाटी की ओर दौड़ पड़ी: क्या ये वही हैं?” उसने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा।

“हाँ,” सेंट जॉन ने कहा।

"क्या आपको लगता है कि आपको मॉर्टन पसंद आएगा?" उसने मुझसे सीधे और भोलेपन से भरे लहजे और हावभाव से पूछा, जो मनमोहक था, भले ही बचकाना सा था।

मुझे उम्मीद है कि मैं ऐसा करूंगा। मेरे पास ऐसा करने के कई कारण हैं।

"क्या आपको अपने छात्र उतने ही ध्यान देने वाले लगे जितनी आपने उम्मीद की थी?"

"अत्यंत।"

"क्या तुम्हें तुम्हारा घर पसंद है?"

"बहुत ज्यादा।"

"क्या मैंने इसे अच्छे से सजाया है?"

"बहुत ही बढ़िया, सचमुच।"

“और एलिस वुड में आपके लिए एक परिचारक का अच्छा चुनाव किया?”

“बिल्कुल सही। वह सीखने में रुचि रखती है और हुनरमंद भी है।” (तो फिर, मैंने

सोचा, यह मिस ओलिवर हैं, उत्तराधिकारी; ऐसा लगता है कि उन्हें भाग्य और प्रकृति दोनों का भरपूर आशीर्वाद प्राप्त है! मुझे आश्चर्य है कि ग्रहों का कौन सा शुभ संयोग उनके जन्म का कारण बना?)

"मैं कभी-कभी आकर आपको पढ़ाने में मदद करूँगी," उसने आगे कहा। "कभी-कभी आपसे मिलने आना मेरे लिए अच्छा रहेगा; और मुझे बदलाव पसंद है। श्री रिवर्स, एस- में रहने के दौरान मैं बहुत खुश थी। कल रात, या यूँ कहें कि आज सुबह, मैं दो बजे तक नाचती रही। दंगों के बाद से —-वीं रेजिमेंट वहाँ तैनात है; और अधिकारी दुनिया के सबसे अच्छे लोग हैं: वे हमारे सभी युवा चाकू-धारने वालों और कैंची-व्यापारियों को शर्मिंदा कर देते हैं।"

मुझे ऐसा लगा कि मिस्टर सेंट जॉन का निचला होंठ बाहर निकला हुआ था और ऊपरी होंठ एक पल के लिए मुड़ा हुआ था। उनका मुँह काफी दबा हुआ लग रहा था और उनके चेहरे का निचला हिस्सा असामान्य रूप से सख्त और चौकोर था, जब हँसती हुई लड़की ने उन्हें यह जानकारी दी। उन्होंने भी अपनी नज़र डेज़ी के फूलों से हटाकर उस लड़की पर डाली। उनकी नज़र में कोई मुस्कान नहीं थी, वह खोज भरी और अर्थपूर्ण थी। लड़की ने भी हँसी के साथ जवाब दिया और उनकी हँसी उनकी जवानी, उनके गुलाबों, उनके डिम्पल्स और उनकी चमकीली आँखों को खूब शोभा दे रही थी।

जब वह चुपचाप और गंभीर खड़ा था, तो वह फिर से कार्लो को सहलाने लगी। "बेचारा कार्लो मुझसे प्यार करता है," उसने कहा। "वह अपने दोस्तों के प्रति कठोर और उदासीन नहीं है; और अगर वह बोल पाता, तो चुप नहीं रहता।"

जब वह अपने युवा और गंभीर स्वामी के सामने सहजता से झुकते हुए कुत्ते के सिर पर हाथ फेर रही थी, तो मैंने स्वामी के चेहरे पर एक चमक देखी। मैंने उसकी गंभीर आँखों में अचानक एक लौ सी जल उठी और वे अनियंत्रित भावनाओं से जगमगा उठीं। इस प्रकार लाल और प्रज्वलित होकर, वह पुरुष के लिए लगभग उतना ही सुंदर लग रहा था जितना कि वह स्त्री के लिए। उसकी छाती एक बार ज़ोर से धड़की, मानो उसका विशाल हृदय, निरंकुश बंधनों से थककर, इच्छा के विरुद्ध भी फैल गया हो और स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए एक ज़ोरदार छलांग लगा रहा हो। लेकिन मुझे लगता है कि उसने उसे वैसे ही नियंत्रित किया जैसे एक दृढ़ निश्चयी सवार उछलते हुए घोड़े को नियंत्रित करता है। उसने न तो शब्दों से और न ही हरकत से मेरे

कोमल स्पर्श का जवाब दिया।

“पापा कहते हैं कि अब आप हमसे मिलने कभी नहीं आते,” मिस ओलिवर ने ऊपर देखते हुए कहा। “वेल हॉल में तो आप बिलकुल अजनबी लगते हैं। आज शाम पापा अकेले हैं और उनकी तबीयत भी ठीक नहीं है: क्या आप मेरे साथ वापस आकर उनसे मिलेंगे?”

"श्री ओलिवर के मामलों में दखल देने का यह उचित समय नहीं है," सेंट जॉन ने उत्तर दिया।

“यह सही समय नहीं है! लेकिन मैं कहती हूँ, यह सही समय है। यही वह समय है जब पापा को सबसे ज़्यादा साथ की ज़रूरत होती है: जब काम खत्म हो जाता है और उनके पास करने के लिए कुछ नहीं होता। अब, मिस्टर रिवर्स, आइए। आप इतने शर्मीले और इतने उदास क्यों हैं?” उन्होंने उनकी चुप्पी को तोड़ते हुए जवाब दिया।

“मैं भूल ही गई!” उसने अपने खूबसूरत घुंघराले बालों को हिलाते हुए कहा, मानो खुद पर ही हैरान हो। “मैं कितनी लापरवाह और बेपरवाह हूँ! मुझे माफ़ कर दीजिए। मैं भूल ही गई थी कि आपके मेरे साथ बातचीत में शामिल न होने के अच्छे कारण हैं। डायना और मैरी आपको छोड़कर चली गई हैं, मूर हाउस बंद है, और आप बहुत अकेले हैं। मुझे यकीन है कि मुझे आप पर तरस आता है। पापा से मिलने ज़रूर आइएगा।”

"आज रात नहीं, मिस रोसामंड, आज रात नहीं।"

श्री सेंट जॉन लगभग एक मशीन की तरह बोल रहे थे: उन्हें खुद ही पता था कि इस तरह मना करने में उन्हें कितनी मेहनत करनी पड़ी।

“अच्छा, अगर तुम इतने ही जिद्दी हो, तो मैं तुम्हें छोड़कर चला जाता हूँ; क्योंकि मैं और अधिक देर तक रुकने की हिम्मत नहीं कर सकता: ओस गिरने लगी है। शुभ संध्या!”

उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। उसने बस उसे छुआ। "शुभ संध्या!" उसने गूंजती हुई धीमी और खोखली आवाज़ में दोहराया। वह मुड़ी, लेकिन पल भर में वापस लौट आई।

“क्या आप ठीक हैं?” उसने पूछा। उसका यह सवाल पूछना उचित ही था: उसका चेहरा उसके गाउन की तरह पीला पड़ गया था।

“बिल्कुल ठीक,” उसने स्पष्ट कहा; और झुककर अभिवादन करते हुए द्वार से बाहर

निकल गया। वह एक तरफ गई; वह दूसरी तरफ। खेत में परी की तरह चलते हुए उसने दो बार पीछे मुड़कर उसे देखा; वह मजबूती से कदम बढ़ाते हुए बिल्कुल भी नहीं मुड़ा।

दूसरे के कष्ट और बलिदान के इस दृश्य ने मेरे विचारों को मेरे अपने आत्म-चिंतन से विमुख कर दिया। डायना रिवर्स ने अपने भाई को "मृत्यु के समान अटल" बताया था। उन्होंने कोई अतिशयोक्ति नहीं की थी।

अध्याय XXXII

मैंने गाँव के विद्यालय का काम यथासंभव सक्रियता और निष्ठा से जारी रखा। शुरुआत में यह सचमुच बहुत कठिन था। काफी समय बीतने के बाद भी, तमाम कोशिशों के बावजूद, मैं अपने विद्यार्थियों और उनके स्वभाव को समझ नहीं पाई। पूरी तरह से अशिक्षित, बिल्कुल सुस्त बुद्धि वाले, वे मुझे बेहद मंदबुद्धि लगते थे; और पहली नज़र में तो सभी एक जैसे ही मंदबुद्धि लगते थे: लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि मैं गलत थी। उनमें भी शिक्षितों की तरह ही अंतर था; और जब मैं उन्हें जानने लगी, और वे मुझे, तो यह अंतर तेज़ी से स्पष्ट हो गया। मेरे प्रति, मेरी भाषा, मेरे नियमों और मेरे तौर-तरीकों के प्रति उनका आश्चर्य शांत होने के बाद, मैंने पाया कि ये भारी-भरकम दिखने वाली, मुँह खोले खड़ी रहने वाली कुछ लड़कियाँ तेज़ बुद्धि वाली बन गईं। कई ने अपना व्यवहार विनम्र और मिलनसार दिखाया; और मैंने उनमें सहज शिष्टता, जन्मजात आत्मसम्मान और उत्कृष्ट क्षमता के कई उदाहरण पाए, जिन्होंने मेरा स्नेह और प्रशंसा दोनों जीत लिए। उन्होंने जल्द ही अपना काम अच्छे से करने, खुद को साफ-सुथरा रखने, अपने काम को नियमित रूप से सीखने और शांत एवं व्यवस्थित व्यवहार अपनाने में आनंद लेना शुरू कर दिया। कुछ मामलों में उनकी प्रगति की गति तो आश्चर्यजनक थी; और मुझे इस पर गर्व और खुशी दोनों महसूस हुई: इसके

अलावा, मुझे व्यक्तिगत रूप से कुछ बेहतरीन लड़कियां पसंद आने लगीं; और वे भी मुझे पसंद करने लगीं। मेरी छात्राओं में कई किसानों की बेटियां थीं: लगभग बड़ी हो चुकी युवतियां। वे पहले से ही पढ़ना, लिखना और सिलाई करना जानती थीं; और मैंने उन्हें व्याकरण, भूगोल, इतिहास और कढ़ाई की बारीकियां सिखाईं। मैंने उनमें सराहनीय चरित्र वाली लड़कियां पाईं - ज्ञान की इच्छुक और सुधार के लिए तत्पर - जिनके साथ मैंने उनके घरों में कई सुखद शामें बिताईं। उनके माता-पिता (किसान और उनकी पत्नी) ने मुझ पर बहुत ध्यान दिया। उनकी सरल दयालुता को स्वीकार करने और बदले में उनके प्रति सम्मान दिखाने में मुझे आनंद आता था - उनकी भावनाओं का पूरा ख्याल रखना - जिसकी शायद उन्हें हमेशा आदत नहीं थी, और जिसने उन्हें प्रसन्न और लाभान्वित दोनों किया; क्योंकि, इससे भले ही उन्हें अपनी नजरों में सम्मान मिला, लेकिन इससे उनमें उस सम्मानजनक व्यवहार के योग्य बनने की होड़ पैदा हो गई जो उन्हें प्राप्त हुआ था।

मुझे ऐसा लगा जैसे मैं पड़ोस में सबकी चहेती बन गई हूँ। जब भी मैं बाहर जाती, चारों ओर से हार्दिक अभिवादन सुनाई देते और दोस्ताना मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया जाता। आम लोगों के स्नेह के बीच रहना, भले ही वह केवल मेहनतकश लोगों का स्नेह हो, "धूप में बैठने जैसा, शांत और सुखद" था; मन की शांत भावनाएँ उस किरण के नीचे पनपती और खिलती थीं। जीवन के इस दौर में, मेरा हृदय निराशा से डूबने की बजाय कृतज्ञता से अधिक बार भर जाता था: और फिर भी, पाठक, आप सभी को बताऊँ तो, इस शांति, इस उपयोगी जीवन के बीच - अपने छात्रों के बीच सम्मानजनक परिश्रम में बिताए एक दिन के बाद, अकेले संतुष्टिपूर्वक चित्रकारी या पढ़ने में बिताई एक शाम के बाद - मैं रात में अजीब सपने देखने लगती थी: रंग-बिरंगे, हलचल भरे, आदर्शों से भरे, उत्साह से भरे, तूफानी सपने - ऐसे सपने जहाँ, असामान्य दृश्यों के बीच, रोमांच से भरे, जोखिम भरे और रोमांटिक संयोग से भरे, मैं बार-बार श्री रोचेस्टर से मिलती थी, हमेशा किसी रोमांचक मोड़ पर; और फिर उनकी बाहों में होने का एहसास, उनकी आवाज़ सुनना, उनकी आँखों में देखना, उनके हाथ और गाल को छूना, उनसे प्यार करना, उनसे प्यार पाना—उनके साथ पूरा जीवन बिताने की उम्मीद, पूरी ताकत और जोश के साथ फिर से जाग उठी। फिर मैं जाग उठी। फिर मुझे याद आया कि मैं कहाँ हूँ और किस स्थिति में हूँ। फिर मैं अपने बिना पर्दे वाले बिस्तर पर काँपती और थरथराती हुई उठी; और फिर उस शांत, अंधेरी रात ने

निराशा की उथल-पुथल देखी और जुनून का विस्फोट सुना। अगली सुबह नौ बजे मैं समय पर स्कूल खोल रही थी; शांत, स्थिर, दिन के नियमित कर्तव्यों के लिए तैयार।

रोसामंड ओलिवर मुझसे मिलने आने का अपना वादा निभाती थीं। स्कूल में उनका आना आम तौर पर उनकी सुबह की घुड़सवारी के दौरान होता था। वह अपने टट्टू पर सरपट दौड़ती हुई दरवाजे तक आतीं, उनके पीछे एक घुड़सवार नौकर होता था। बैंगनी रंग की पोशाक में, काले मखमल की टोपी जो उनके गालों को छूते और कंधों तक लहराते लंबे बालों के ऊपर खूबसूरती से सजी होती थी, उनकी सुंदरता की कल्पना करना मुश्किल है: और इसी तरह वह देहाती इमारत में प्रवेश करतीं और गांव के बच्चों की चकाचौंध भरी कतारों के बीच से निकल जातीं। वह आम तौर पर उस समय आती थीं जब मिस्टर रिवर्स अपना दैनिक धार्मिक पाठ पढ़ा रहे होते थे। मुझे डर है कि उस आगंतुक की निगाहें युवा पादरी के दिल को भेद देती थीं। एक तरह की सहज प्रवृत्ति उन्हें उनके आने की चेतावनी देती थी, भले ही उन्होंने उसे देखा न हो; और जब वह दरवाजे से पूरी तरह से दूर देख रहा होता था, अगर वह वहाँ दिखाई देती, तो उसका गाल चमक उठता, और उसके संगमरमर जैसे दिखने वाले चेहरे के भाव, हालांकि वे शिथिल होने से इनकार करते थे, अवर्णनीय रूप से बदल जाते, और उनकी शांत अवस्था में ही एक दमित उत्साह प्रकट होता, जो मांसपेशियों की कसरत या तेज नजर से कहीं अधिक मजबूत होता।

निःसंदेह, वह अपनी शक्ति जानती थी: वास्तव में, वह इसे उससे छिपा नहीं सकता था, क्योंकि वह छिपा नहीं सकता था। अपने ईसाई संयम के बावजूद, जब वह उसके पास जाकर उससे बात करती और उसके चेहरे पर प्रसन्नतापूर्वक, उत्साहवर्धक, यहाँ तक कि स्नेहपूर्ण मुस्कान बिखेरती, तो उसका हाथ काँपने लगता और उसकी आँखें जलने लगतीं। मानो वह अपने उदास और दृढ़ चेहरे से, यदि होठों से न कहे, तो कह रहा हो, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, और मैं जानता हूँ कि तुम मुझे पसंद करती हो। यह सफलता की निराशा नहीं है जो मुझे चुप रखती है। यदि मैं अपना हृदय अर्पित करूँ, तो मुझे विश्वास है कि तुम उसे स्वीकार करोगी। लेकिन वह हृदय पहले से ही एक पवित्र वेदी पर रखा है: उसके चारों ओर अग्नि सज चुकी है। वह शीघ्र ही भस्म हो जाने वाली एक बलि मात्र रह जाएगी।"

और फिर वह निराश बच्चे की तरह मुंह फुला लेती; उदासी का बादल उसकी चमकती जीवंतता को धुंधला कर देता; वह जल्दी से अपना हाथ उससे छुड़ा लेती और

क्षणिक चिड़चिड़ेपन से उसकी ओर मुँह फेर लेती, एक साथ इतनी वीर और इतनी शहीद जैसी। जब वह इस तरह उसे छोड़कर चली गई, तो सेंट जॉन निस्संदेह उसका पीछा करने, उसे वापस बुलाने, उसे अपने पास रखने के लिए पूरी दुनिया दे देते; लेकिन वह स्वर्ग का एक भी मौका नहीं छोड़ते, न ही उसके प्रेम के आनंद के लिए सच्चे, शाश्वत स्वर्ग की एक भी आशा त्यागते। इसके अलावा, वह अपने स्वभाव में मौजूद हर चीज - घुमक्कड़, आकांक्षी, कवि, पुजारी - को एक ही जुनून की सीमा में नहीं बांध सकते थे। वह वैले हॉल के बैठक कक्षों और शांति के लिए अपने मिशन युद्ध के जंगली मैदान को नहीं छोड़ सकते थे - और न ही छोड़ना चाहते थे। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा, जब मैंने एक बार, उनकी झिझक के बावजूद, उनके विश्वास को जीतने का साहस किया था।

मिस ओलिवर पहले से ही मेरी कुटिया में बार-बार आकर मुझे सम्मानित करती थीं। मैं उनके पूरे व्यक्तित्व को जान चुकी थी, जो रहस्य या दिखावे से रहित था: वह चंचल थीं, पर निर्दयी नहीं; सख्त थीं, पर स्वार्थी नहीं। जन्म से ही उन्हें लाड़-प्यार मिला था, पर वह पूरी तरह बिगड़ी हुई नहीं थीं। वह जल्दबाज़ थीं, पर हंसमुख; घमंडी (वह इसमें कुछ नहीं कर सकती थीं, क्योंकि शीशे में हर झलक उन्हें इतनी सुंदर दिखाती थी), पर बनावटी नहीं; उदार; धन के अभिमान से मुक्त; भोली; पर्याप्त बुद्धिमान; हंसमुख, जीवंत और बेपरवाह: संक्षेप में, वह मुझ जैसी अपनी ही जाति की एक उदासीन महिला के लिए भी बहुत आकर्षक थीं; लेकिन वह बहुत अधिक रोचक या पूरी तरह से प्रभावशाली नहीं थीं। उनका दिमाग, उदाहरण के लिए, सेंट जॉन की बहनों के दिमाग से बिल्कुल अलग था। फिर भी, मैं उन्हें लगभग वैसे ही पसंद करती थी जैसे अपनी शिष्या एडेल को; बस फर्क इतना था कि जिस बच्चे की हमने देखभाल की हो और जिसे पढ़ाया हो, उसके प्रति एक गहरा स्नेह पैदा होता है, जितना हम किसी उतने ही आकर्षक वयस्क परिचित के प्रति नहीं कर सकते।

उन्हें मुझ पर एक अजीब सी मोहब्बत हो गई थी। उन्होंने कहा कि मैं मिस्टर रिवर्स जैसी थी, बस, उन्होंने माना, "उनकी खूबसूरती का दसवां हिस्सा भी नहीं, हालांकि मैं एक भली-भांति और सीधी-सादी लड़की थी, लेकिन वो तो फरिश्ता थे।" हालांकि, मैं उन्हीं की तरह अच्छी, समझदार, शांत और दृढ़ थी। उन्होंने जोर देकर कहा कि मैं एक गांव की स्कूल टीचर की तरह बिल्कुल प्राकृतिक थी: उन्हें पूरा यकीन था कि अगर मेरे अतीत के बारे में पता चले तो वह एक मनमोहक प्रेम कहानी बन सकती है।

एक शाम, अपनी स्वाभाविक बचकानी चंचलता और बेपरवाह, फिर भी सौम्य जिज्ञासा के साथ, वह मेरी छोटी रसोई की अलमारी और मेज की दराज में खोजबीन कर रही थी। तभी उसे सबसे पहले दो फ्रांसीसी पुस्तकें, शिलर की एक पुस्तक, एक जर्मन व्याकरण और शब्दकोश, और फिर मेरे चित्र बनाने का सामान और कुछ रेखाचित्र मिले, जिनमें मेरी एक छात्रा का एक सुंदर, नन्ही परी जैसी आकृति का पेंसिल से बनाया गया चित्र और मॉर्टन घाटी और आसपास के मैदानों में खींचे गए प्रकृति के कई दृश्य शामिल थे। पहले तो वह आश्चर्य से स्तब्ध रह गई, और फिर आनंद से भर उठी।

"क्या मैंने ये चित्र बनाए थे? क्या मुझे फ्रेंच और जर्मन आती थी? क्या प्रेम था— क्या चमत्कार था मेरा! मैंने एस- के पहले स्कूल में उसके शिक्षक से भी बेहतर चित्र बनाए थे। क्या मैं उसका एक चित्र बनाऊं, ताकि पापा को दिखा सकूं?"

"खुशी से," मैंने उत्तर दिया; और इतनी परिपूर्ण और तेजस्वी आदर्श की नकल करने के विचार से मुझे एक कलाकार जैसा आनंद मिला। उन्होंने गहरे नीले रंग की रेशमी पोशाक पहनी हुई थी; उनकी बाहें और गर्दन नंगी थीं; उनका एकमात्र आभूषण उनके भूरे बाल थे, जो प्राकृतिक घुंघराले बालों की तरह उनके कंधों पर लहरा रहे थे। मैंने एक बढ़िया गत्ते का टुकड़ा लिया और उस पर सावधानीपूर्वक रूपरेखा बनाई। मैंने इसे रंगने का आनंद लेने का वादा किया; और, चूंकि तब तक काफी देर हो चुकी थी, मैंने उनसे कहा कि उन्हें किसी और दिन आकर बैठना होगा।

उसने मेरे बारे में अपने पिता को इतनी तारीफ की कि अगली शाम खुद मिस्टर ओलिवर उसके साथ आए — एक लंबा, मजबूत कद-काठी वाला, अधेड़ उम्र का और सफ़ेद बालों वाला आदमी, जिसके साथ उसकी प्यारी बेटी किसी पुराने बुर्ज के पास खिले हुए फूल जैसी लग रही थी। वह कम बोलने वाला और शायद थोड़ा घमंडी व्यक्ति लग रहा था; लेकिन मेरे प्रति उसका व्यवहार बहुत अच्छा था। रोज़ामंड के चित्र का स्केच उसे बहुत पसंद आया: उसने कहा कि मुझे उसका पूरा चित्र बनाना चाहिए। उसने यह भी ज़ोर दिया कि मैं अगले दिन वेले हॉल में शाम बिताने आऊं।

मैं वहाँ गया। मैंने पाया कि वह एक बड़ा, सुंदर निवास था, जो मालिक की संपत्ति का भरपूर प्रमाण दे रहा था। मेरे वहाँ रहने के दौरान रोज़ामंड अत्यंत प्रसन्न और आनंदित थी। उसके पिता मिलनसार थे; और जब चाय के बाद उन्होंने मुझसे बातचीत शुरू की, तो उन्होंने मॉर्टन स्कूल में मेरे द्वारा किए गए कार्यों की स्पष्ट रूप से प्रशंसा

की और कहा कि उन्हें केवल इस बात का डर है कि जो उन्होंने देखा और सुना है, उससे मैं इस जगह के लिए बहुत ही योग्य हूँ और जल्द ही इसे छोड़कर किसी अधिक उपयुक्त स्थान पर चला जाऊँगा।

“सचमुच,” रोसामंड चिल्लाई, “वह इतनी होशियार है कि किसी ऊँचे परिवार में दाई का काम कर सकती है, पापा।”

मैंने सोचा कि मैं इस देश के किसी भी ऊँचे परिवार में रहने की बजाय जहाँ हूँ वहीं रहना ज़्यादा पसंद करूँगी। श्री ओलिवर ने श्री रिवर्स—रिवर्स परिवार—के बारे में बड़े आदर से बात की। उन्होंने कहा कि उस इलाके में यह एक बहुत पुराना नाम है; कि उस परिवार के पूर्वज धनी थे; कि मॉर्टन की सारी ज़मीन कभी उन्हीं की थी; कि आज भी उन्हें लगता है कि उस परिवार का प्रतिनिधि चाहे तो सबसे अच्छे परिवार से संबंध बना सकता है। उन्होंने इस बात पर अफ़सोस जताया कि इतने अच्छे और प्रतिभाशाली युवक ने धर्म प्रचारक बनने का इरादा किया; यह एक अनमोल जीवन को व्यर्थ करना था। ऐसा प्रतीत हुआ कि रोज़ामंड और सेंट जॉन के विवाह में उसके पिता कोई बाधा नहीं डालेंगे। श्री ओलिवर स्पष्ट रूप से युवा पादरी के अच्छे खानदान, पुराने नाम और पवित्र पेशे को धन की कमी के लिए पर्याप्त प्रतिफल मानते थे।

यह 5 नवंबर का दिन था और छुट्टी का दिन था। मेरी छोटी नौकरानी घर की सफाई में मेरी मदद करने के बाद चली गई थी, उसे अपनी सहायता के लिए एक पैसा ही मिला था और वह उससे संतुष्ट थी। मेरे आस-पास सब कुछ एकदम साफ-सुथरा और चमकदार था - फर्श एकदम साफ, अंगीठी चमकीली और कुर्सियाँ एकदम पॉलिश की हुई। मैंने भी खुद को साफ-सुथरा कर लिया था और अब मेरे पास दोपहर का पूरा समय था जिसे मैं अपनी इच्छानुसार बिता सकती थी।

जर्मन भाषा के कुछ पन्नों का अनुवाद करने में एक घंटा लग गया; फिर मैंने अपना पैलेट और पेंसिलें उठाईं और रोज़ामंड ओलिवर की लघुचित्र को पूरा करने के अधिक सुकून भरे, क्योंकि आसान, काम में जुट गई। सिर तो पहले ही बन चुका था: बस पृष्ठभूमि को रंगना और वस्त्रों को छायांकित करना बाकी था; पके हुए होठों में थोड़ा सा गहरा लाल रंग मिलाना था—बालों में कहीं-कहीं हल्की सी लटें डालनी थीं—नीली पलकों के नीचे पलकों की छाया को थोड़ा और गहरा रंग देना था। मैं इन बारीक विवरणों को पूरा करने में मग्न थी, तभी एक तेज़ दस्तक के बाद मेरा दरवाज़ा खुला और सेंट जॉन रिवर्स अंदर आ गए।

"मैं यह देखने आया हूँ कि आप अपनी छुट्टियाँ कैसे बिता रहे हैं," उन्होंने कहा। "उम्मीद है, सोच-विचार में नहीं? नहीं, यह अच्छी बात है: चित्रकारी करते समय आपको अकेलापन महसूस नहीं होगा। देखिए, मुझे अब भी आप पर भरोसा नहीं है, हालाँकि आपने अब तक अद्भुत धैर्य बनाए रखा है। मैं आपके लिए शाम के सुकून के लिए एक किताब लाया हूँ," और उन्होंने मेज पर एक नई प्रकाशित पुस्तक रख दी—एक कविता: उन दिनों की उन वास्तविक रचनाओं में से एक जो अक्सर सौभाग्यशाली जनता को मिलती थीं—आधुनिक साहित्य का स्वर्ण युग। अफसोस! हमारे युग के पाठक उतने भाग्यशाली नहीं हैं। लेकिन हिम्मत रखिए! मैं न तो आरोप लगाऊँगा और न ही शिकायत करूँगा। मैं जानता हूँ कि कविता न मरी है, न ही प्रतिभा खोई है; न ही धन ने इन पर कोई अधिकार प्राप्त किया है, न ही इन्हें बांधने या नष्ट करने का: ये दोनों एक दिन फिर से अपना अस्तित्व, अपनी उपस्थिति, अपनी स्वतंत्रता और शक्ति का दावा करेंगे। शक्तिशाली देवदूत, स्वर्ग में सुरक्षित! वे मुस्कुराते हैं जब नीच आत्माएँ विजय प्राप्त करती हैं, और कमजोर आत्माएँ उनके विनाश पर रोती हैं। कविता नष्ट हो गई? प्रतिभा निर्वासित? नहीं! साधारणता, नहीं: ईर्ष्या को अपने मन में यह विचार न आने दें। नहीं; वे न केवल जीवित हैं, बल्कि शासन करते हैं और उद्धार करते हैं: और उनके सर्वव्यापी दिव्य प्रभाव के बिना, तुम नरक में होते - अपने ही नीच कर्मों के नरक में।

जब मैं उत्सुकता से "मार्मियन" पत्रिका के चमकीले पन्नों को देख रहा था (क्योंकि यह "मार्मियन" ही थी), तभी सेंट जॉन मेरी ड्राइंग को देखने के लिए झुके। उनका लंबा कद अचानक सीधा हो गया; उन्होंने कुछ नहीं कहा। मैंने उनकी ओर देखा; उन्होंने मेरी नज़रें चुरा लीं। मैं उनके विचारों को भली-भांति जानता था और उनके दिल की बात समझ सकता था; उस क्षण मैं उनसे अधिक शांत और स्थिर महसूस कर रहा था: उस क्षण मुझे उन पर बढ़त प्राप्त थी, और मेरे मन में यह इच्छा हुई कि यदि संभव हो तो मैं उनकी कुछ मदद करूँ।

मैंने सोचा, "अपनी सारी दृढ़ता और आत्म-संयम के बावजूद, वह अपने ऊपर बहुत अधिक बोझ डाल लेता है: हर भावना और पीड़ा को अपने भीतर दबा लेता है—कुछ भी व्यक्त नहीं करता, कुछ भी स्वीकार नहीं करता, कुछ भी साझा नहीं करता। मुझे यकीन है कि अगर वह इस प्यारी रोज़ामंड के बारे में थोड़ी बात करे, जिससे वह शादी न करने की सोचता है, तो उसे फायदा होगा: मैं उसे बोलने पर मजबूर कर दूँगा।"

मैंने पहले कहा, “श्रीमान रिवर्स, बैठ जाइए।” लेकिन उन्होंने हमेशा की तरह जवाब दिया कि वे नहीं रुक सकते। मैंने मन ही मन सोचा, “ठीक है, खड़े रहिए; लेकिन आप अभी नहीं जाएँगे, मैंने ठान लिया है: अकेलापन आपके लिए उतना ही बुरा है जितना मेरे लिए। मैं कोशिश करूँगा कि आपके भरोसे का राज़ जान सकूँ और उस पत्थर जैसे सीने में कोई छेद कर सकूँ जिससे मैं सहानुभूति की एक बूँद आप तक पहुँचा सकूँ।”

मैंने सीधे-सीधे पूछा, "क्या यह चित्र ऐसा है?"

“पसंद! किसे पसंद करते हो? मैंने ध्यान से नहीं देखा।”

“जी हां, मिस्टर रिवर्स।”

मेरी अचानक और विचित्र जल्दबाजी देखकर वह लगभग चौंक गया: उसने मुझे हैरानी से देखा। “अरे, अभी तो कुछ नहीं,” मैंने मन ही मन बुदबुदाया। “मैं आपकी थोड़ी सी अकड़ से परेशान नहीं होना चाहती; मैं पूरी कोशिश करने को तैयार हूँ।” मैंने आगे कहा, “आपने इसे ध्यान से और स्पष्ट रूप से देखा; लेकिन मुझे कोई आपत्ति नहीं है अगर आप इसे फिर से देखें,” और मैं उठी और उसे उसके हाथ में रख दिया।

उन्होंने कहा, "एक बेहतरीन ढंग से बनाई गई तस्वीर; बहुत ही सौम्य, स्पष्ट रंग; बहुत ही सुंदर और सटीक चित्रकारी।"

“जी हां, जी हां; मुझे यह सब पता है। लेकिन समानता का क्या? यह किसके जैसा दिखता है?”

कुछ झिझक पर काबू पाते हुए उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे लगता है कि आप मिस ओलिवर हैं।"

“ज़रूर। और अब, महोदय, आपके सटीक अनुमान के लिए आपको इनाम के तौर पर, मैं वादा करता हूँ कि मैं आपको इस चित्र की हूबहू और सटीक प्रतिकृति बनाकर दूँगा, बशर्ते आप यह स्वीकार करें कि यह उपहार आपको स्वीकार्य होगा। मैं अपना समय और मेहनत ऐसी भेंट पर बर्बाद नहीं करना चाहता जिसे आप बेकार समझें।”

वह तस्वीर को निहारता रहा: जितना अधिक वह देखता, उतना ही मजबूती से उसे थामे रहता, और उतना ही वह उसे पाने की लालसा रखता। “यह बिल्कुल वैसी ही है!” उसने बुदबुदाया; “आँख को बड़ी कुशलता से बनाया गया है: रंग, प्रकाश, भाव, सब कुछ एकदम सही है। यह मुस्कुरा रही है!”

“क्या ऐसी ही पेंटिंग होने से आपको सुकून मिलेगा या दुख होगा? मुझे बताइए।

जब आप मेडागास्कर में हों, या केप आइलैंड्स में हों, या भारत में हों, तो क्या उस यादगार वस्तु को अपने पास रखना आपको सांत्वना देगा? या उसे देखकर आपको ऐसी यादें आएंगी जो आपको कमजोर और दुखी कर देंगी?”

अब उसने चुपके से अपनी आँखें ऊपर उठाईं: उसने अनिश्चितता और बेचैनी भरे भाव से मेरी ओर देखा: उसने फिर से तस्वीर का जायजा लिया।

"यह तो निश्चित है कि मैं इसे प्राप्त करना चाहूंगा: लेकिन क्या यह विवेकपूर्ण या बुद्धिमानी भरा होगा, यह एक अलग प्रश्न है।"

चूंकि मुझे पता चल गया था कि रोसामंड सचमुच उसे पसंद करती है, और उसके पिता के इस रिश्ते का विरोध करने की संभावना नहीं थी, इसलिए मैं—सेंट जॉन की तुलना में कम ऊंचे विचारों वाला—अपने मन में उनके मिलन का दृढ़ता से समर्थन कर रहा था। मुझे लगता था कि अगर वह मिस्टर ओलिवर की विशाल संपत्ति का मालिक बन जाए, तो वह उससे उतना ही अच्छा काम कर सकता है जितना कि अगर वह जाकर अपनी प्रतिभा को धूप में बर्बाद कर दे और अपनी ताकत को नष्ट कर दे। इसी विश्वास के साथ मैंने अब उत्तर दिया—

"जहां तक मैं देख सकता हूं, आपके लिए मूल प्रति को तुरंत अपने पास ले लेना अधिक बुद्धिमानी और विवेकपूर्ण होगा।"

तब तक वह बैठ चुके थे: उन्होंने तस्वीर को अपने सामने मेज पर रख दिया था, और दोनों हाथों से अपना माथा टिकाकर उसे स्नेहपूर्वक निहार रहे थे। मैंने देखा कि अब वे मेरी इस धृष्टता पर न तो क्रोधित थे और न ही आहत। मैंने यह भी देखा कि जिस विषय को वे अब तक अछूता मानते थे, उस पर इतनी खुलकर चर्चा होना—इस विषय पर इतनी बेबाकी से बात सुनना—उनके लिए एक नया सुख—एक अनचाही राहत—बनने लगा था। संकोची लोगों को अक्सर अपने भावों और दुःखों की खुलकर चर्चा की ज़रूरत होती है, बजाय विस्तृत चर्चा के। सबसे कठोर दिखने वाला व्यक्ति भी आखिर इंसान ही होता है; और उनके मन के "शांत सागर" में साहस और सद्भावना के साथ "उभार" देना अक्सर उन पर पहला दायित्व डालना होता है।

“मुझे पूरा यकीन है कि वह तुम्हें पसंद करती है,” मैंने उसकी कुर्सी के पीछे खड़े होकर कहा, “और उसके पिता तुम्हारा सम्मान करते हैं। इसके अलावा, वह एक प्यारी लड़की है—थोड़ी नासमझ है; लेकिन तुम अपने और उसके दोनों के बारे में पर्याप्त सोचोगे। तुम्हें उससे शादी कर लेनी चाहिए।”

“क्या वह मुझे पसंद करती है?” उसने पूछा।

“बिल्कुल; वह बाकी सब लोगों से ज़्यादा तुम्हें पसंद करती है। वह लगातार तुम्हारे बारे में बात करती रहती है: ऐसा कोई विषय नहीं है जिसका वह इतना आनंद लेती हो या जिस पर वह इतनी बार चर्चा करती हो।”

“यह सुनकर बहुत अच्छा लगा,” उन्होंने कहा— “बहुत अच्छा लगा: बस पंद्रह मिनट और बोलिए।” और उन्होंने सचमुच अपनी घड़ी निकाली और समय देखने के लिए उसे मेज पर रख दिया।

मैंने पूछा, "लेकिन आगे बढ़ने का क्या फायदा, जब आप शायद किसी तीखे विरोधाभास की तैयारी कर रहे हैं, या अपने दिल को जकड़ने के लिए एक नई जंजीर बना रहे हैं?"

“ऐसी कठिन बातें मत सोचो। कल्पना करो कि मैं पिघल रहा हूँ, जैसा कि मैं अभी हूँ: मानवीय प्रेम मेरे मन में एक नए खुले झरने की तरह उमड़ रहा है और उस सारे खेत को मीठी बाढ़ से भर रहा है जिसे मैंने इतनी सावधानी और मेहनत से तैयार किया है—इतने परिश्रम से अच्छे इरादों और आत्म-त्याग की योजनाओं के बीज बोए हैं। और अब यह एक अमृतमय बाढ़ से सराबोर है—नए अंकुर डूब गए हैं—स्वादु विष उन्हें नष्ट कर रहा है: अब मैं खुद को वेल हॉल के ड्राइंग रूम में अपनी दुल्हन रोज़ामंड ओलिवर के चरणों में एक ओटोमन पर लेटा हुआ देखता हूँ: वह अपनी मधुर आवाज में मुझसे बात कर रही है—उन आँखों से मुझे निहार रही है जिन्हें आपके कुशल हाथों ने इतनी खूबसूरती से चित्रित किया है—अपने मूंगे जैसे होठों से मुस्कुरा रही है। वह मेरी है—मैं उसका हूँ—यह वर्तमान जीवन और यह क्षणभंगुर संसार मेरे लिए पर्याप्त है। चुप रहो! कुछ मत कहो—मेरा हृदय आनंद से भरा है—मेरी इंद्रियाँ मंत्रमुग्ध हैं—मेरे द्वारा चिह्नित समय को शांति से बीतने दो।”

मैंने उसकी बात मान ली: घड़ी चलती रही: वह तेज़ और धीमी साँसें ले रहा था: मैं चुपचाप खड़ा रहा। इस खामोशी के बीच चारों लोग तेज़ी से आगे बढ़े; उसने घड़ी वापस रखी, तस्वीर नीचे रखी, उठा और चूल्हे पर खड़ा हो गया।

“अब,” उसने कहा, “वह थोड़ी सी जगह उन्माद और भ्रम में डूबी हुई थी। मैंने अपने माथे प्रलोभन की छाती पर टिका दिए, और स्वेच्छा से अपनी गर्दन उसके फूलों के जुए के नीचे रख दी। मैंने उसका प्याला चखा। तकिया जल रहा था: माला में एक साँप था: शराब का स्वाद कड़वा था: उसके वादे खोखले थे - उसके प्रस्ताव झूठे थे: मैं

यह सब देखता और जानता हूँ।"

मैंने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

"यह अजीब बात है," उन्होंने आगे कहा, "कि मैं रोसामंड ओलिवर से इतनी शिद्दत से प्यार करता हूँ—वास्तव में, पहले प्यार की पूरी तीव्रता से, जिसकी वह बेहद खूबसूरत, आकर्षक और मोहक है—लेकिन साथ ही साथ मुझे यह शांत, स्पष्ट एहसास भी होता है कि वह मेरे लिए अच्छी पत्नी नहीं बनेगी; कि वह मेरे लिए उपयुक्त साथी नहीं है; कि मुझे शादी के एक साल के भीतर ही यह पता चल जाएगा; और बारह महीने के इस आनंद के बाद जीवन भर का पछतावा होगा। यह मैं जानता हूँ।"

"सचमुच अजीब!" मैं खुद को वीर्यपात करने से नहीं रोक सका।

"यद्यपि मेरे भीतर कुछ ऐसा है," उन्होंने आगे कहा, "जो उसके आकर्षण के प्रति अत्यंत संवेदनशील है, वहीं कुछ ऐसा भी है जो उसकी कमियों से उतना ही गहराई से प्रभावित है: वे ऐसी हैं कि वह मेरी किसी भी आकांक्षा में सहानुभूति नहीं दिखा सकती - मेरे किसी भी कार्य में सहयोग नहीं कर सकती। क्या रोज़ामंड एक पीड़ित, एक श्रमिक, एक धर्म प्रचारक थी? क्या रोज़ामंड एक मिशनरी की पत्नी थी? नहीं!"

लेकिन आपको मिशनरी बनने की जरूरत नहीं है। आप उस योजना को छोड़ सकते हैं।

"क्या मैं इसे छोड़ दूँ? क्या! अपने कर्तव्य को? अपने महान कार्य को? स्वर्ग में महल के लिए धरती पर रखी गई अपनी नींव को? उन लोगों में गिने जाने की मेरी आशा को जिन्होंने अपनी सारी महत्वाकांक्षाओं को अपनी जाति के उत्थान की गौरवशाली महत्वाकांक्षा में विलीन कर दिया है—अज्ञान के क्षेत्र में ज्ञान का प्रसार करने के लिए—युद्ध के स्थान पर शांति लाने के लिए—बंधन के स्थान पर स्वतंत्रता लाने के लिए—अंधविश्वास के स्थान पर धर्म लाने के लिए—नरक के भय के स्थान पर स्वर्ग की आशा लाने के लिए? क्या मुझे इसे छोड़ना होगा? यह मेरी रगों में बहने वाले रक्त से भी अधिक प्रिय है। यही वह है जिसकी मुझे प्रतीक्षा करनी है, और जिसके लिए मुझे जीना है।"

काफी देर रुकने के बाद मैंने कहा— "और मिस ओलिवर? क्या उनकी निराशा और दुख में आपकी कोई दिलचस्पी नहीं है?"

"मिस ओलिवर हमेशा चाहने वालों और चापलूसों से घिरी रहती हैं: एक महीने से

भी कम समय में, मेरी छवि उनके दिल से मिट जाएगी। वह मुझे भूल जाएंगी; और शायद किसी ऐसे व्यक्ति से शादी कर लेंगी जो उन्हें मुझसे कहीं ज्यादा खुश रखेगा।"

"आप काफी शांत भाव से बोलते हैं; लेकिन आप संघर्ष में कष्ट भोग रहे हैं। आप धीरे-धीरे कमजोर होते जा रहे हैं।"

नहीं। अगर मैं थोड़ा दुबला हो जाता हूँ, तो यह मेरे भविष्य को लेकर चिंता के कारण है, जो अभी तक तय नहीं है - मेरा प्रस्थान, जो लगातार टलता जा रहा है। आज सुबह ही मुझे खबर मिली है कि जिस उत्तराधिकारी के आने का मैं इतने लंबे समय से इंतजार कर रहा था, वह अगले तीन महीनों तक मेरी जगह लेने के लिए तैयार नहीं हो पाएगा; और शायद ये तीन महीने बढ़कर छह महीने भी हो सकते हैं।

"जब भी मिस ओलिवर कक्षा में प्रवेश करती हैं, तो आप कांपने लगते हैं और आपका चेहरा लाल हो जाता है।"

एक बार फिर उनके चेहरे पर हैरानी के भाव छा गए। उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई स्त्री किसी पुरुष से इस तरह बात करने की हिम्मत करेगी। मुझे तो इस तरह की बातचीत में सहजता महसूस होती थी। मैं किसी भी सशक्त, विवेकशील और परिष्कृत व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, से तब तक सहजता से बात नहीं कर पाती थी, जब तक मैं पारंपरिक संकोच की सीमाओं को पार करके विश्वास की दहलीज को पार न कर लूं और उनके दिल में अपनी जगह न बना लूं।

"तुम मौलिक हो," उसने कहा, "और डरपोक नहीं। तुम्हारे मन में साहस है, और तुम्हारी आँखों में भेदक दृष्टि है; लेकिन मुझे तुम्हें आश्वस्त करने दो कि तुम मेरी भावनाओं को पूरी तरह से गलत समझ रहे हो। तुम उन्हें जितना गहरा और शक्तिशाली समझते हो, वे उससे कहीं अधिक हैं। तुम मुझे मेरी अपेक्षा से अधिक सहानुभूति दे रहे हो। जब मैं मिस ओलिवर के सामने रंग भरता हूँ, और जब मैं छायांकन करता हूँ, तो मैं खुद पर दया नहीं करता। मैं अपनी कमजोरी को तुच्छ समझता हूँ। मैं जानता हूँ कि यह नीच है: केवल शरीर का बुखार है: आत्मा की कंपकंपी नहीं। आत्मा तो चट्टान की तरह स्थिर है, अशांत समुद्र की गहराई में दृढ़ता से जमी हुई। मुझे वही समझो जो मैं हूँ - एक कठोर और निर्मम व्यक्ति।"

मैंने अविश्वास भरी मुस्कान दी।

"तुमने मेरा विश्वास पूरी तरह से जीत लिया है," उसने आगे कहा, "और अब यह तुम्हारे लिए पूरी तरह से तत्पर है। मैं अपने मूल रूप में, ईसाई धर्म द्वारा मानव कुरूपता

को ढकने वाले रक्तरंजित आवरण से मुक्त होकर, एक निर्मम, कठोर और महत्वाकांक्षी व्यक्ति हूँ। सभी भावनाओं में से केवल स्वाभाविक स्नेह ही मुझ पर स्थायी प्रभाव रखता है। मेरा मार्गदर्शक भावना नहीं, बल्कि तर्क है; मेरी महत्वाकांक्षा असीमित है: दूसरों से आगे बढ़ने, दूसरों से अधिक करने की मेरी इच्छा कभी तृप्त नहीं होती। मैं धीरज, दृढ़ता, परिश्रम और प्रतिभा का सम्मान करता हूँ; क्योंकि इन्हीं के द्वारा मनुष्य महान लक्ष्यों को प्राप्त करता है और उच्च पदस्थ होता है। मैं तुम्हारे करियर को रुचि से देखता हूँ, क्योंकि मैं तुम्हें एक मेहनती, अनुशासित और ऊर्जावान महिला का आदर्श मानता हूँ: इसलिए नहीं कि मुझे तुम्हारे द्वारा झेली गई पीड़ा या अभी भी झेल रही पीड़ा के प्रति गहरी सहानुभूति है।”

मैंने कहा, "आप खुद को महज एक मूर्तिपूजक दार्शनिक बताते हैं।"

नहीं। मुझमें और ईश्वरवादी दार्शनिकों में यह अंतर है: मैं विश्वास करता हूँ; और मैं सुसमाचार में विश्वास करता हूँ। आपने अपने विशेषण का गलत प्रयोग किया है। मैं कोई मूर्तिपूजक नहीं, बल्कि एक ईसाई दार्शनिक हूँ—यीशु के संप्रदाय का अनुयायी। उनके शिष्य के रूप में मैं उनके पवित्र, दयालु और परोपकारी सिद्धांतों को अपनाता हूँ। मैं उनका समर्थन करता हूँ: मैंने उन्हें फैलाने की शपथ ली है। युवावस्था में धर्म की ओर आकर्षित होकर, इसने मेरे मूल गुणों को इस प्रकार संवारा है:— सूक्ष्म बीज, स्वाभाविक स्नेह से, इसने परोपकार के विशाल वृक्ष को विकसित किया है। मानवीय सत्यनिष्ठा की जंगली, रेशेदार जड़ से, इसने ईश्वरीय न्याय की उचित भावना को पोषित किया है। अपने तुच्छ अस्तित्व के लिए शक्ति और प्रसिद्धि प्राप्त करने की महत्वाकांक्षा से, इसने मेरे गुरु के राज्य को फैलाने की महत्वाकांक्षा को जन्म दिया है; क्रूस के ध्वज के लिए विजय प्राप्त करने की महत्वाकांक्षा को। धर्म ने मेरे लिए इतना कुछ किया है; मूल तत्वों को सर्वोत्तम उपयोग में लाया है; प्रकृति को संवारा और प्रशिक्षित किया है। लेकिन यह प्रकृति को जड़ से नहीं उखाड़ सकता: और न ही यह तब तक जड़ से उखाड़ा जा सकेगा जब तक यह नश्वर अमरता प्राप्त नहीं कर लेता।

यह कहकर उन्होंने अपनी टोपी उठाई, जो मेरी पैलेट के बगल में मेज पर पड़ी थी। उन्होंने एक बार फिर चित्र को देखा।

“वह बहुत प्यारी है,” उसने धीरे से कहा। “उसे सचमुच दुनिया की गुलाब कहना बिलकुल सही है!”

"और क्या मैं आपके लिए इसी तरह की एक पेंटिंग नहीं बना सकता?"

कौन अच्छा है? कोई नहीं।

चित्र पर उसने पतले कागज़ का वह टुकड़ा रख दिया जिस पर मैं चित्रकारी करते समय अपना हाथ रखकर कागज़ को गंदा होने से बचाती थी। उस खाली कागज़ पर उसने अचानक क्या देखा, यह मैं बता नहीं सकती थी; लेकिन किसी चीज़ ने उसकी नज़र खींच ली थी। उसने झट से कागज़ उठाया; किनारे को देखा; फिर मेरी ओर एक ऐसी दृष्टि डाली जो अवर्णनीय और बिल्कुल समझ से परे थी: एक ऐसी दृष्टि जो मेरे शरीर, चेहरे और पहनावे के हर पहलू को निहार रही थी; क्योंकि वह सब कुछ पर बिजली की तरह तेज़ी से गुज़री। उसके होंठ खुले, मानो कुछ बोलने वाले हों: लेकिन उसने अपने आने वाले वाक्य को रोक दिया, चाहे वह कुछ भी हो।

मैंने पूछा, “क्या बात है?”

“दुनिया में कुछ भी नहीं,” जवाब मिला; और, कागज़ वापस रखते हुए, मैंने देखा कि उसने बड़ी कुशलता से हाशिये से एक पतली पर्ची फाड़ी। वह उसके दस्ताने में गायब हो गई; और, एक झटपट सिर हिलाकर और “शुभ दोपहर” कहकर, वह गायब हो गया।

“वाह!” मैंने जिले की एक प्रचलित कहावत का प्रयोग करते हुए कहा, “लेकिन यह तो दुनिया का सबसे बेहतरीन उदाहरण है!”

मैंने भी कागज़ को ध्यान से देखा; लेकिन उस पर पेंसिल से रंग लगाने के लिए लगाए गए कुछ धुंधले धब्बों के अलावा कुछ नहीं दिखा। मैंने एक-दो मिनट तक इस रहस्य पर विचार किया; लेकिन जब मुझे इसका कोई हल नहीं मिला और मुझे यकीन हो गया कि यह कोई खास बात नहीं है, तो मैंने इसे छोड़ दिया और जल्द ही भूल गया।

अध्याय XXXIII

जब श्री सेंट जॉन गए, तब बर्फ़बारी शुरू हो चुकी थी; तूफ़ान पूरी रात चलता रहा। अगले दिन तेज़ हवा अपने साथ ताज़ी और तेज़ बर्फ़बारी लेकर आई; शाम होते-होते घाटी बर्फ़ से भर गई थी और लगभग अगम्य हो गई थी। मैंने अपना शटर बंद कर दिया था, बर्फ़ को अंदर आने से रोकने के लिए दरवाज़े पर चटाई बिछा दी थी, आग को तेज़ कर दिया था, और लगभग एक घंटे तक चूल्हे पर बैठकर तूफ़ान की दबी हुई गर्जना सुनने के बाद, मैंने एक मोमबत्ती जलाई, "मार्मियन" उठाई, और शुरू किया—

“नोरहम के किलेनुमा ऊंचे टीले पर दिन ढल रहा है,
और ट्वीड की सुंदर नदी चौड़ी और गहरी है,
और चेविओट के पहाड़ एकांत में हैं;
विशाल मीनारें, मुख्य बुर्ज,
उनके चारों ओर फैली हुई अगल-बगल की दीवारें,
पीली चमक में जगमगा रहा था।

मैं संगीत में तूफान को जल्द ही भूल गया।

मुझे एक आवाज़ सुनाई दी: मैंने सोचा, हवा ने दरवाज़ा हिला दिया है। नहीं; यह सेंट जॉन रिवर्स थे, जिन्होंने कुंडी उठाकर बर्फीले तूफान—भयानक अंधेरे—से अंदर आकर मेरे सामने खड़े हो गए: उनके लंबे शरीर को ढकने वाला लबादा ग्लेशियर की तरह सफेद था। मैं लगभग स्तब्ध रह गया, क्योंकि उस रात मुझे उस सुनसान घाटी से किसी मेहमान की उम्मीद बिल्कुल नहीं थी।

“कोई बुरी खबर है?” मैंने पूछा। “क्या कुछ हुआ है?”

“नहीं। तुम तो बहुत जल्दी घबरा जाते हो!” उसने अपना लबादा उतारकर दरवाजे पर टांगते हुए जवाब दिया, और फिर उसी शांत भाव से उस चटाई को दरवाजे की ओर धकेल दिया जिसे उसके आने से अस्त-व्यस्त हो गई थी। उसने अपने जूतों से बर्फ झाड़ी।

“मैं आपके फर्श की पवित्रता को धूमिल कर दूंगा,” उसने कहा, “लेकिन एक बार के लिए मुझे माफ कर दीजिए।” फिर वह आग के पास गया। “यथाविश्वास कीजिए, यहाँ तक पहुँचने में मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी है,” उसने आग की लपटों पर अपने हाथ सेंकते हुए कहा। “बर्फ के एक ढेर ने मुझे कमर तक डुबो दिया; सौभाग्य से बर्फ अभी भी काफी नरम है।”

“लेकिन आप यहाँ क्यों आए हैं?” मैं यह कहने से खुद को रोक नहीं सका।

"किसी आगंतुक से यह सवाल पूछना थोड़ा अटपटा है; लेकिन चूंकि आपने पूछा है, तो मैं बस आपसे थोड़ी बातचीत करना चाहता हूँ; मैं अपनी मूक किताबों और खाली कमरों से ऊब गया हूँ। इसके अलावा, कल से मैं उस व्यक्ति की उत्तेजना महसूस कर रहा हूँ जिसे आधी कहानी सुनाई गई हो और जो उसका अगला भाग सुनने के लिए बेचैन हो।"

वह बैठ गया। मुझे कल का उसका अजीब व्यवहार याद आया, और सचमुच मुझे डर लगने लगा कि उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। अगर वह पागल था भी, तो उसका पागलपन बहुत शांत और संयमित था: मैंने उसके उस सुंदर चेहरे को आज से पहले कभी इतना कठोर नहीं देखा था जितना आज, जब उसने अपने बर्फ से भीगे बालों को माथे से हटाया और आग की रोशनी को अपने पीले माथे और गालों पर पड़ने दिया, जहाँ मुझे यह देखकर बहुत दुख हुआ कि चिंता या दुख का खोखला निशान अब स्पष्ट रूप से खुदा हुआ था। मैं इंतज़ार करता रहा, उम्मीद कर रहा था कि वह कुछ ऐसा कहेगा जिसे मैं कम से कम समझ सकूँ; लेकिन अब उसका हाथ उसकी ठोड़ी पर था, उसकी उंगली उसके होंठ पर: वह सोच रहा था। मुझे लगा कि उसका हाथ उसके चेहरे की तरह ही कमजोर लग रहा था। शायद बिना वजह ही मेरे दिल में दया की लहर दौड़ गई: मैं कहने को विवश हुआ—

"काश डायना या मैरी आकर तुम्हारे साथ रहने लगें: यह बहुत दुख की बात है कि तुम बिल्कुल अकेले हो; और तुम अपने स्वास्थ्य के प्रति बेहद लापरवाह हो।"

"बिल्कुल नहीं," उसने कहा। "मैं जरूरत पड़ने पर अपना ख्याल रखता हूँ। मैं अब ठीक हूँ। आपको मुझमें क्या कमी दिखती है?"

यह बात उसने बेपरवाही और उदासीनता से कही, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि मेरी चिंता, कम से कम उसकी नज़र में, पूरी तरह से अनावश्यक थी। मैं चुप हो गया।

वह अब भी धीरे-धीरे अपनी उंगली अपने ऊपरी होंठ पर फेर रहा था, और उसकी आंखें अब भी सपने में खोई हुई सी चमकती हुई अंगीठी पर टिकी हुई थीं; कुछ कहना जरूरी समझते हुए, मैंने उससे तुरंत पूछा कि क्या उसे अपने पीछे वाले दरवाजे से कोई ठंडी हवा का झोंका महसूस हो रहा है।

"नहीं, नहीं!" उसने संक्षिप्त और कुछ चिड़चिड़ेपन से जवाब दिया।

मैंने मन ही मन सोचा, "ठीक है, अगर तुम बात नहीं करोगे तो चुप रहो; मैं अब तुम्हें अकेला छोड़ देता हूँ और अपनी किताब पर लौटता हूँ।"

मैंने मोमबत्ती बुझाई और "मार्मियन" पढ़ना फिर से शुरू कर दिया। वह थोड़ी देर में हिले-डुले; मेरी नज़र तुरंत उनकी हरकतों पर पड़ी; उन्होंने बस एक मोरोक्को का पर्स निकाला, उसमें से एक पत्र निकाला, जिसे उन्होंने चुपचाप पढ़ा, मोड़ा, वापस रख दिया और फिर से ध्यान में लीन हो गए। मेरे सामने ऐसे रहस्यमय व्यक्ति के होते हुए पढ़ने की कोशिश करना व्यर्थ था; और न ही मैं अधीर होकर चुप रह सकती थी; अगर वह चाहते तो मुझे डांट सकते थे, लेकिन मैं बोलती ही रहूंगी।

"क्या आपने हाल ही में डायना और मैरी से बात की है?"

"उस पत्र के बाद से नहीं जो मैंने आपको एक सप्ताह पहले दिखाया था।"

“क्या आपकी व्यवस्थाओं में कोई बदलाव नहीं हुआ है? क्या आपको उम्मीद से पहले इंग्लैंड छोड़ने के लिए नहीं कहा जाएगा?”

“मुझे बिल्कुल भी डर नहीं है: ऐसा सौभाग्य मुझे मिलना बहुत मुश्किल है।” अब तक उलझन में पड़ चुकी मैं अपनी बात बदलने लगी। मैंने स्कूल और अपने छात्रों के बारे में बात करने का सोचा।

"मैरी गैरेट की मां की तबीयत अब बेहतर है, और मैरी आज सुबह स्कूल वापस आ गई है, और अगले हफ्ते फाउंड्री क्लोज से चार नई लड़कियां स्कूल में आएंगी - वे आज ही आ जातीं अगर बर्फबारी न होती।"

"वास्तव में!"

"मिस्टर ओलिवर दो का भुगतान करते हैं।"

"क्या उस?"

"उसका इरादा क्रिसमस पर पूरे स्कूल को तोहफा देने का है।"

"मुझे पता है।"

क्या यह आपका सुझाव था?

"नहीं।"

"तो किसका?"

"मुझे लगता है, उसकी बेटी की है।"

"यह बिल्कुल उसकी तरह है: वह बहुत ही मिलनसार है।"

"हाँ।"

फिर सन्नाटा छा गया: घड़ी में आठ बज चुके थे। इससे वह जाग उठा; उसने अपने पैर सीधे किए, सीधा बैठा और मेरी ओर मुड़ा।

उन्होंने कहा, "अपनी किताब थोड़ी देर के लिए छोड़ दें और आग के थोड़ा और करीब आ जाएं।"

मुझे आश्चर्य हुआ, और मेरा आश्चर्य कभी खत्म नहीं हुआ, इसलिए मैंने बात मान ली।

“आधे घंटे पहले,” उन्होंने आगे कहा, “मैंने एक कहानी के अगले भाग को सुनने की अपनी उत्सुकता व्यक्त की थी: अब सोच-विचार करने पर मुझे लगता है कि कथावाचक की भूमिका निभाकर और आपको श्रोता बनाकर इस मामले को बेहतर ढंग से सुलझाया जा सकता है। शुरू करने से पहले, यह कहना उचित होगा कि कहानी आपको कुछ घिसी-पिटी सी लग सकती है; लेकिन बासी बातें भी अक्सर नए लोगों के मुंह से निकलने पर ताजगी का एहसास कर लेती हैं। बाकी, चाहे वह घिसी-पिटी हो या नई, कहानी संक्षिप्त है।”

“बीस साल पहले, एक गरीब पादरी—इस समय उसका नाम न लें—एक अमीर आदमी की बेटी के प्यार में पड़ गया; उसे भी उससे प्यार हो गया और उसने अपने सभी दोस्तों की सलाह के खिलाफ जाकर उससे शादी कर ली, जिसके परिणामस्वरूप शादी के तुरंत बाद सभी ने उसे त्याग दिया। दो साल बीतने से पहले ही, वह जल्दबाज़ जोड़ा दोनों मर गए और एक ही शिला के नीचे चुपचाप अगल-बगल दफना दिए गए। (मैंने उनकी कब्र देखी है; यह एक विशाल कब्रिस्तान के फर्श का हिस्सा थी जो एक उजाड़ औद्योगिक शहर के भयानक, कालिख से सने पुराने गिरजाघर को घेरे हुए था।) वे एक बेटी छोड़ गए, जिसे जन्म के तुरंत बाद चैरिटी ने अपनी गोद में लिया—वह गोद उतनी ही ठंडी थी जितनी बर्फ की वह परत जिसमें मैं आज रात लगभग फंस गया था। चैरिटी उस बेसहारा बच्ची को उसके अमीर मायके वालों के घर ले गई; उसका पालन-पोषण उसकी एक चाची ने किया, जिनका नाम (अब मैं नामों पर आ रहा हूँ) गेट्सहेड की श्रीमती रीड था। आप चौंक गए—क्या आपने कोई आवाज़ सुनी? मुझे लगता है कि यह बगल के स्कूल के कमरे की छत पर रेंगता हुआ चूहा ही होगा: मेरे जन्म से पहले वह एक खलिहान था। उसकी मरम्मत और उसमें बदलाव करवाए गए थे, और खलिहानों में आम तौर पर चूहे पाए जाते हैं। — आगे बढ़ते हैं। श्रीमती रीड ने उस अनाथ बच्चे को दस साल तक अपने पास रखा: वह उनके साथ खुश था या नहीं, यह मैं नहीं कह सकती, क्योंकि मुझे कभी बताया नहीं गया; लेकिन उस समय के अंत में उन्होंने उसे एक ऐसी जगह भेज दिया जिसे

आप जानते हैं — वह कोई और नहीं बल्कि लोवुड स्कूल था, जहाँ आप स्वयं इतने लंबे समय तक रहे। ऐसा लगता है कि वहाँ उनका करियर बहुत सम्मानजनक रहा: एक छात्रा से, वह आपकी तरह एक शिक्षिका बन गईं — वास्तव में मुझे लगता है कि उनके और आपके इतिहास में कई समानताएँ हैं — उन्होंने एक गवर्नेस बनने के लिए उसे छोड़ दिया: वहाँ भी, आप दोनों का भाग्य एक जैसा था; उन्होंने श्री रोचेस्टर के एक आश्रित बच्चे की शिक्षा का जिम्मा लिया।

“श्रीमान रिवर्स!” मैंने बीच में ही टोक दिया।

“मैं आपकी भावनाओं को समझ सकता हूँ,” उन्होंने कहा, “लेकिन कृपया कुछ देर संयम रखें: मैं लगभग समाप्त कर चुका हूँ; मुझे अंत तक सुनें। श्री रोचेस्टर के चरित्र के बारे में मुझे कुछ नहीं पता, सिवाय इसके कि उन्होंने इस युवती को सम्मानजनक विवाह का प्रस्ताव दिया था, और विवाह के वेदी पर ही उसे पता चला कि उनकी एक पत्नी जीवित है, हालाँकि वह मानसिक रूप से विक्षिप्त है। उनके बाद के आचरण और प्रस्तावों के बारे में केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है; लेकिन जब एक ऐसी घटना घटी जिसके कारण गवर्नेस की खोज आवश्यक हो गई, तो पता चला कि वह गायब हो गई है - कोई नहीं बता सकता कि कब, कहाँ और कैसे। वह रात में थॉर्नफील्ड हॉल से चली गई थी; उसके बारे में हर खोज व्यर्थ रही: पूरे देश में उसकी तलाश की गई; उसके बारे में कोई जानकारी नहीं मिल सकी। फिर भी, उसे ढूंढना एक गंभीर मामला बन गया है: सभी समाचार पत्रों में विज्ञापन दिए गए हैं; मुझे स्वयं एक वकील श्री ब्रिग्स का पत्र मिला है, जिसमें वही विवरण दिए गए हैं जो मैंने अभी बताए हैं। क्या यह एक अजीब कहानी नहीं है?”

मैंने कहा, "बस मुझे इतना बता दीजिए, और चूंकि आप इतना कुछ जानते हैं, तो आप मुझे जरूर बता सकते हैं - श्री रोचेस्टर का क्या हाल है? वे कैसे और कहां हैं? वे क्या कर रहे हैं? क्या वे ठीक हैं?"

“मुझे श्री रोचेस्टर के बारे में कुछ भी पता नहीं है: पत्र में उनका ज़िक्र केवल उस धोखाधड़ी और गैरकानूनी प्रयास के वर्णन के लिए किया गया है जिसका मैंने उल्लेख किया है। आपको उस गवर्नेस का नाम पूछना चाहिए—जिस घटना के लिए उनकी उपस्थिति आवश्यक है, उसका स्वरूप जानना चाहिए।”

“तो क्या कोई थॉर्नफील्ड हॉल नहीं गया था? क्या किसी ने मिस्टर रोचेस्टर को नहीं देखा था?”

मुझे नहीं लगता।

"लेकिन उन्होंने उसे पत्र लिखा था?"

"बिल्कुल।"

“और उसने क्या कहा? उसके पत्र किसके पास हैं?”

श्री ब्रिग्स ने संकेत दिया है कि उनके आवेदन का उत्तर श्री रोचेस्टर से नहीं, बल्कि एक महिला से आया था: इस पर 'एलिस फेयरफैक्स' के हस्ताक्षर हैं।

मुझे ठंड और निराशा का अनुभव हुआ: मेरे सबसे बुरे डर शायद सच हो गए थे: वह संभवतः इंग्लैंड छोड़कर बेतहाशा हताशा में महाद्वीप पर अपने किसी पुराने ठिकाने पर पहुँच गया था। और वहाँ उसने अपने भीषण कष्टों के लिए कौन सा नशा - अपनी तीव्र भावनाओं के लिए कौन सा सहारा - ढूँढा था? मैं इस प्रश्न का उत्तर देने की हिम्मत नहीं कर पाई। ओह, मेरे बेचारे स्वामी - जो कभी लगभग मेरे पति बनने वाले थे - जिन्हें मैं अक्सर "मेरे प्यारे एडवर्ड!" कहकर पुकारती थी!

श्री रिवर्स ने टिप्पणी की, "वह जरूर एक बुरा आदमी रहा होगा।"

मैंने स्नेहपूर्वक कहा, "आप उन्हें नहीं जानते - उनके बारे में कोई राय न दें।"

“ठीक है,” उसने शांत स्वर में उत्तर दिया: “और सच कहूँ तो मेरा ध्यान उससे हटकर दूसरी बातों पर है: मुझे अपनी कहानी पूरी करनी है। चूंकि आप गवर्नेस का नाम नहीं पूछेंगी, इसलिए मुझे खुद ही बताना पड़ेगा। रुकिए! मेरे पास यह है—महत्वपूर्ण बातों को लिखित रूप में देखना हमेशा अधिक संतोषजनक होता है।”

और फिर जानबूझकर वह पॉकेटबुक निकाली गई, खोली गई, उसमें से कुछ ढूंढा गया; उसके एक खाने से कागज का एक फटा-पुराना टुकड़ा निकाला गया, जिसे जल्दबाजी में फाड़ा गया था: मैंने उसकी बनावट और उस पर लगे गहरे नीले, झील के रंग और सिंदूरी रंग के धब्बों में उस चित्र के कवर के उखड़े हुए किनारे को पहचान लिया। वह उठा, उसे मेरी आँखों के पास लाया: और मैंने अपनी लिखावट में, भारतीय स्याही से उकेरे गए शब्द "जेन आयर" पढ़े - जो निस्संदेह किसी क्षणिक कल्पना की उपज थे।

“ब्रिग्स ने मुझे जेन आयर के बारे में लिखा था,” उन्होंने कहा, “विज्ञापनों में जेन आयर की मांग थी: मैं जेन इलियट को जानता था। — मैं मानता हूँ कि मुझे कुछ संदेह था, लेकिन कल दोपहर ही वह पूरी तरह से निश्चित हो गया। क्या आप इस नाम को स्वीकार करते हैं और उपनाम का त्याग करते हैं?”

“जी हां—जी हां; लेकिन मिस्टर ब्रिग्स कहां हैं? शायद वे मिस्टर रोचेस्टर के बारे में आपसे ज्यादा जानते हों।”

“ब्रिग्स लंदन में हैं। मुझे संदेह है कि उन्हें मिस्टर रोचेस्टर के बारे में कुछ भी पता होगा; उन्हें मिस्टर रोचेस्टर में कोई दिलचस्पी नहीं है। इस बीच, आप तुच्छ बातों में उलझकर महत्वपूर्ण बातों को भूल जाते हैं: आप यह जानने की कोशिश नहीं करते कि मिस्टर ब्रिग्स ने आपको क्यों खोजा था - उन्हें आपसे क्या चाहिए था।”

"अच्छा, वह क्या चाहता था?"

"बस आपको यह बताने के लिए कि आपके चाचा, मदीरा के श्री आयर, का निधन हो गया है; कि उन्होंने अपनी सारी संपत्ति आपके नाम कर दी है, और अब आप अमीर हैं - बस इतना ही - इससे ज्यादा कुछ नहीं।"

“मैं! — अमीर?”

"जी हां, तुम, अमीर - वाकई एक धनाढ्य उत्तराधिकारी हो।"

मौन सफल रहा।

“आपको अपनी पहचान साबित करनी होगी,” सेंट जॉन ने कुछ देर बाद जवाब दिया: “यह एक ऐसा चरण है जिसमें कोई कठिनाई नहीं होगी; इसके बाद आप तुरंत संपत्ति पर कब्ज़ा कर सकते हैं। आपकी संपत्ति अंग्रेजी कोष में निहित है; ब्रिग्स के पास वसीयत और आवश्यक दस्तावेज हैं।”

लीजिए, एक नया अवसर मिला! पाठक, पल भर में गरीबी से अमीरी तक पहुँच जाना बड़ी बात है—बेहद बड़ी बात; लेकिन यह ऐसी बात नहीं है जिसे एक ही बार में समझा जा सके, या जिसका आनंद लिया जा सके। जीवन में और भी कई ऐसे अवसर आते हैं जो कहीं अधिक रोमांचक और आनंददायी होते हैं: यह एक ठोस, वास्तविक दुनिया का मामला है, इसमें कुछ भी आदर्शवादी नहीं है: इसके सभी पहलू ठोस और गंभीर हैं, और इसके परिणाम भी वैसे ही हैं। धनवान होने की खबर सुनकर कोई उछल-कूद नहीं करता, खुशी से चिल्लाता नहीं है; बल्कि जिम्मेदारियों पर विचार करने लगता है, और काम-काज के बारे में सोचने लगता है; स्थिर संतोष की नींव पर कुछ गंभीर चिंताएँ जन्म लेती हैं, और हम खुद को संभालते हैं, और गंभीर भाव से अपने इस सुख पर चिंतन करते हैं।

इसके अलावा, विरासत, वसीयत, और मृत्यु, अंतिम संस्कार जैसे शब्द एक साथ जुड़े हुए हैं। मैंने सुना था कि मेरे चाचा का निधन हो गया है - मेरे इकलौते रिश्तेदार;

उनके अस्तित्व के बारे में पता चलने के बाद से ही मैंने उनसे मिलने की उम्मीद पाल रखी थी: अब, मैं उन्हें कभी नहीं देख पाऊँगी। और फिर यह पैसा सिर्फ मुझे मिला: मुझे और मेरे खुशहाल परिवार को नहीं, बल्कि सिर्फ मुझे, एक अकेले व्यक्ति को। यह निस्संदेह एक बड़ा वरदान था; और स्वतंत्रता गौरवशाली होगी - हाँ, मुझे ऐसा महसूस हुआ - इस विचार से मेरा दिल भर आया।

“आखिरकार तुमने अपना माथा सीधा कर लिया,” श्री रिवर्स ने कहा। “मुझे लगा था कि मेडुसा ने तुम्हें देख लिया है और तुम पत्थर में बदल रहे हो। शायद अब तुम पूछोगे कि तुम्हारी कीमत कितनी है?”

मेरी कीमत कितनी है?

"अरे, मामूली सी बात है! कुछ खास नहीं है - बीस हजार पाउंड, मुझे लगता है वे कहते हैं - लेकिन यह क्या है?"

“बीस हजार पाउंड?”

यह एक चौंकाने वाली खबर थी - मैं चार-पाँच हज़ार का अनुमान लगा रहा था। इस खबर ने सचमुच मुझे स्तब्ध कर दिया: श्री सेंट जॉन, जिन्हें मैंने पहले कभी हंसते हुए नहीं सुना था, अब हंस रहे थे।

“खैर,” उसने कहा, “अगर तुमने हत्या की होती, और मैंने तुम्हें बताया होता कि तुम्हारा अपराध उजागर हो गया है, तो तुम शायद ही इससे ज्यादा भयभीत दिख सकते थे।”

"यह बहुत बड़ी रकम है—क्या आपको नहीं लगता कि इसमें कोई गलती हुई है?"

"बिल्कुल भी कोई गलती नहीं हुई।"

"शायद आपने आंकड़े गलत पढ़े हैं - यह दो हजार भी हो सकता है!"

“यह अंकों में नहीं, अक्षरों में लिखा है, — बीस हजार।”

मुझे फिर से ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं औसत दर्जे की खान-पान की समझ रखने वाला व्यक्ति हूँ जो सौ लोगों के लिए सजी मेज पर अकेले बैठकर दावत का आनंद ले रहा हूँ। श्री रिवर्स उठे और अपना लबादा ओढ़ लिया।

“अगर आज रात इतनी तूफानी न होती,” उसने कहा, “तो मैं हन्ना को तुम्हारे साथ रहने के लिए भेज देता: तुम इतनी दुखी लग रही हो कि तुम्हें अकेला नहीं छोड़ा जा सकता। लेकिन बेचारी हन्ना! मेरी तरह बर्फ पर इतनी आसानी से नहीं चल सकती: उसके पैर इतने लंबे नहीं हैं: इसलिए मुझे तुम्हें तुम्हारे दुखों में ही छोड़ना

पड़ेगा। शुभ रात्रि।”

वह कुंडी उठा रहा था: तभी अचानक मेरे मन में एक विचार आया। "एक मिनट रुको!" मैंने चिल्लाकर कहा।

"कुंआ?"

"मुझे यह समझ में नहीं आता कि श्री ब्रिग्स ने मेरे बारे में आपको क्यों लिखा; या वह आपको कैसे जानते थे, या उन्हें कैसे लगा कि आप, जो इतनी दूरदराज जगह पर रहते हैं, मेरी खोज में सहायता कर सकते हैं।"

“ओह! मैं एक पादरी हूँ,” उन्होंने कहा; “और पादरियों से अक्सर अजीबोगरीब मामलों में अपील की जाती है।” कुंडी फिर से खड़खड़ाई।

“नहीं; इससे मुझे संतुष्टि नहीं मिलती!” मैंने कहा: और वास्तव में उस जल्दबाजी भरे और अस्पष्ट जवाब में कुछ ऐसा था जिसने मेरी जिज्ञासा को शांत करने के बजाय पहले से कहीं अधिक बढ़ा दिया।

मैंने आगे कहा, "यह बहुत ही अजीबोगरीब मामला है; मुझे इसके बारे में और अधिक जानना चाहिए।"

"किसी और वक़्त।"

“नहीं; आज रात! — आज रात!” और जैसे ही वह दरवाजे से मुड़ा, मैंने खुद को दरवाजे और उसके बीच खड़ा कर दिया। वह थोड़ा शर्मिंदा लग रहा था।

मैंने कहा, "जब तक तुम मुझे सब कुछ नहीं बता देते, तब तक तुम बिल्कुल नहीं जाओगे।"

मैं अभी ऐसा नहीं करना चाहूंगा।

“तुम्हें करना ही होगा! — तुम्हें अवश्य करना होगा!”

"मैं चाहूँगा कि डायना या मैरी आपको इस बारे में सूचित करें।"

बेशक, इन आपत्तियों ने मेरी उत्सुकता को चरम पर पहुंचा दिया: मुझे इसे तुरंत पूरा करना था, और वह भी बिना देरी किए; और मैंने उसे यही बताया।

“लेकिन मैंने आपको बताया था कि मैं एक कठोर व्यक्ति हूं,” उसने कहा, “मुझे मनाना मुश्किल है।”

और मैं एक सख्त महिला हूँ, जिसे टालना नामुमकिन है।

और फिर,” उन्होंने आगे कहा, “मैं ठंडा पड़ जाता हूँ: मुझमें कोई उत्साह नहीं होता।”

“मैं तो गर्म हूँ, और आग बर्फ को पिघला देती है। वहाँ की लपटों ने आपके लबादे से सारी बर्फ पिघला दी है; उसी तरह, वह मेरे फर्श पर बह गई है और उसे रौंदी हुई सड़क जैसा बना दिया है। जैसा कि आप आशा करते हैं कि आपको क्षमा कर दिया जाएगा, श्री रिवर्स, एक साफ की हुई रसोई को गंदा करने के इस जघन्य अपराध के लिए, मुझे वह बताएं जो मैं जानना चाहता हूँ।”

“ठीक है,” उसने कहा, “मैं हार मानता हूँ; अगर तुम्हारी लगन के आगे नहीं तो तुम्हारी दृढ़ता के आगे: जैसे पत्थर लगातार गिरने से घिस जाता है। वैसे भी, तुम्हें एक दिन तो पता चलेगा ही, चाहे अभी पता चले या बाद में। तुम्हारा नाम जेन आयर है?”

"बिल्कुल: वह सब पहले ही तय हो चुका था।"

“शायद आपको यह जानकारी नहीं है कि मेरा नाम आपके नाम पर ही रखा गया है? — कि मेरा नाम सेंट जॉन आयर रिवर्स रखा गया था?”

“जी नहीं, बिलकुल! मुझे अब याद आ रहा है कि मैंने आपके नाम के पहले अक्षरों

में 'ई' अक्षर को उन किताबों में देखा था जो आपने मुझे समय-समय पर उधार दी थीं; लेकिन मैंने कभी नहीं पूछा कि इसका क्या मतलब है। लेकिन फिर क्या? ज़रूर—"

मैं रुक गया: मैं अपने आप पर भरोसा नहीं कर पा रहा था कि मैं उस विचार को, और उससे भी कहीं अधिक उसे व्यक्त कर सकूँ जो मेरे मन में उमड़ आया था—जो एक पल में साकार हो उठा था—जो एक प्रबल, ठोस संभावना के रूप में सामने आ गया था। परिस्थितियाँ अपने आप जुड़ गईं, व्यवस्थित हो गईं, क्रम में आ गईं: जो कड़ी अब तक बेतरतीब ढंग से पड़ी थी, वह सीधी हो गई—हर कड़ी एकदम सही थी, जुड़ाव पूरा हो गया था। सेंट जॉन के एक और शब्द कहने से पहले ही, मुझे सहज ज्ञान से पता चल गया था कि मामला क्या है; लेकिन मैं पाठक से ऐसी सहज अनुभूति की अपेक्षा नहीं कर सकता, इसलिए मुझे उनकी व्याख्या को दोहराना होगा।

"मेरी माँ का नाम आयर था; उनके दो भाई थे; एक पादरी थे, जिन्होंने गेट्सहेड की मिस जेन रीड से शादी की थी; दूसरे, जॉन आयर, एस्क्वायर, व्यापारी, जो पहले फंचल, मदीरा में रहते थे। श्री ब्रिग्स, जो श्री आयर के वकील थे, ने पिछले अगस्त में हमें हमारे चाचा की मृत्यु की सूचना देने के लिए पत्र लिखा था, और यह भी बताया था कि उन्होंने अपनी संपत्ति अपने भाई, पादरी की अनाथ बेटी को दे दी है, और हमें नज़रअंदाज़ कर दिया है, क्योंकि उनके और मेरे पिता के बीच एक झगड़ा हुआ था, जो कभी सुलझा नहीं। उन्होंने कुछ हफ़्ते पहले फिर से पत्र लिखकर बताया कि उत्तराधिकारी लापता है, और पूछा कि क्या हम उसके बारे में कुछ जानते हैं। कागज़ की एक पर्ची पर लापरवाही से लिखे गए नाम से मुझे उसका पता लगाने में मदद मिली। बाकी तो आप जानते ही हैं।" वे फिर से जाने लगे, लेकिन मैंने दरवाज़े से पीठ टिका ली।

"मुझे बोलने दीजिए," मैंने कहा; "मुझे सांस लेने और सोचने के लिए एक पल दीजिए।" मैं रुका — वह मेरे सामने टोपी हाथ में लिए, काफी शांत दिख रहे थे। मैंने फिर बोलना शुरू किया —

"तुम्हारी माँ मेरे पिता की बहन थी?"

"हाँ।"

"नतीजतन, मेरी चाची?"

उन्होंने सिर झुकाया।

"क्या मेरे चाचा जॉन आपके चाचा जॉन थे? आप, डायना और मैरी उनकी बहन

की संतान हैं, जैसे मैं उनके भाई की संतान हूँ?”

“निस्संदेह।”

“तो तुम तीनों मेरे चचेरे भाई हो; हमारे खून का आधा हिस्सा दोनों तरफ से एक ही स्रोत से बहता है?”

“हम चचेरे भाई-बहन हैं; हाँ।”

मैंने उसे गौर से देखा। ऐसा लगा जैसे मुझे एक भाई मिल गया हो: एक ऐसा भाई जिस पर मैं गर्व कर सकूँ, एक ऐसा भाई जिससे मैं प्यार कर सकूँ; और दो बहनें, जिनके गुण ऐसे थे कि जब मैं उन्हें केवल अजनबी के रूप में जानता था, तब भी उन्होंने मेरे मन में सच्चा स्नेह और प्रशंसा जगा दी थी। वे दोनों लड़कियाँ, जिन्हें मैंने मूर हाउस के रसोईघर की नीची, जालीदार खिड़की से गीली ज़मीन पर घुटने टेककर देखते हुए, रुचि और निराशा के कड़वे मिश्रण से निहारा था, मेरी करीबी रिश्तेदार थीं; और वह युवा और गरिमामय सज्जन, जिन्होंने मुझे अपने घर की दहलीज पर लगभग मरणासन्न पाया था, मेरे रक्त संबंधी थे। एक अकेले और दुखी व्यक्ति के लिए यह एक शानदार खोज थी! यह सचमुच धन था! - हृदय के लिए धन! - शुद्ध, सौम्य स्नेह का खजाना। यह एक आशीर्वाद था, उज्ज्वल, जीवंत और उत्साहवर्धक; - सोने के भारी उपहार जैसा नहीं: अपने तरीके से समृद्ध और स्वागत योग्य, लेकिन अपने भार से गंभीर। अब मैं अचानक खुशी से ताली बजाने लगा - मेरी नाड़ी तेज़ हो गई, मेरी नसें सिहर उठीं।

“ओह, मुझे खुशी है! — मुझे खुशी है!” मैंने कहा।

सेंट जॉन मुस्कुराया। उसने पूछा, "क्या मैंने यह नहीं कहा था कि तुमने तुच्छ बातों के पीछे भागने के लिए ज़रूरी बातों को नज़रअंदाज़ कर दिया?" "जब मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हें बहुत धन-दौलत मिल गई है, तब तुम गंभीर थे; और अब, एक मामूली बात पर, तुम उत्तेजित हो रहे हो।"

“आपका क्या मतलब है? शायद यह आपके लिए कोई मायने न रखता हो; आपकी बहनें हैं और आपको चचेरे भाई-बहन की परवाह नहीं है; लेकिन मेरा कोई नहीं था; और अब तीन रिश्तेदार, — या दो, अगर आप गिनती में शामिल नहीं होना चाहते, — मेरे जीवन में पूरी तरह से विकसित होकर आए हैं। मैं फिर से कहती हूँ, मैं खुश हूँ!”

मैं कमरे में तेज़ी से चला: मैं रुक गया, विचारों के उमड़ते ही मेरा दम घुटने लगा,

जो इतनी तेज़ी से उठ रहे थे कि मैं उन्हें समझ, ग्रहण और शांत नहीं कर पा रहा था: — वे विचार जो हो सकते थे, हो सकते थे, होंगे और होने चाहिए, और वह भी जल्द ही। मैंने खाली दीवार को देखा: वह ऊपर चढ़ते तारों से भरे आकाश जैसी लग रही थी, — हर तारा मुझे किसी उद्देश्य या आनंद की ओर ले जा रहा था। जिन्होंने मेरी जान बचाई थी, जिन्हें मैंने अब तक निःसंतान प्रेम किया था, अब मैं उन्हें लाभ पहुँचा सकता था। वे बंधनों में जकड़े हुए थे, — मैं उन्हें मुक्त कर सकता था: वे बिखरे हुए थे, — मैं उन्हें फिर से एकजुट कर सकता था: जो स्वतंत्रता, जो समृद्धि मेरी थी, वह उनकी भी हो सकती थी। क्या हम चार नहीं थे? बीस हज़ार पाउंड बराबर बाँटने पर प्रत्येक को पाँच हज़ार मिलेंगे, न्याय होगा — पर्याप्त से अधिक: न्याय होगा, — आपसी सुख सुनिश्चित होगा। अब धन का बोझ मुझ पर नहीं था: अब यह केवल सिक्कों की वसीयत नहीं थी, — यह जीवन, आशा और आनंद की विरासत थी।

जब ये विचार मेरे मन में उथल-पुथल मचा रहे थे, तब मैं कैसा दिख रहा था, यह मैं बता नहीं सकता; लेकिन जल्द ही मैंने महसूस किया कि श्री रिवर्स ने मेरे पीछे एक कुर्सी रख दी थी और मुझे धीरे से उस पर बिठाने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने मुझे शांत रहने की सलाह भी दी; मैंने उनकी बेबसी और विचलित होने की बात को अनसुना कर दिया, उनका हाथ झटक दिया और फिर से चलने लगा।

मैंने कहा, "कल डायना और मैरी को पत्र लिखो और उनसे कहो कि वे सीधे घर आ जाएँ। डायना ने कहा था कि वे दोनों एक हजार पाउंड से खुद को अमीर समझती हैं, इसलिए पाँच हजार पाउंड से उनका काम बहुत अच्छे से चल जाएगा।"

"मुझे बताओ कि मैं तुम्हें एक गिलास पानी कहाँ से दिला सकता हूँ," सेंट जॉन ने कहा; "तुम्हें अपनी भावनाओं को शांत करने के लिए वास्तव में प्रयास करना चाहिए।"

"बकवास! और इस वसीयत का आप पर क्या असर होगा? क्या इससे आप इंग्लैंड में ही रुकेंगे, मिस ओलिवर से शादी करेंगे और एक आम इंसान की तरह बस जाएंगे?"

"तुम भटकने लगते हो: तुम्हारा दिमाग उलझन में पड़ जाता है। मैंने खबर देने में जल्दबाजी कर दी; इसने तुम्हें तुम्हारी सहनशक्ति से परे उत्तेजित कर दिया है।"

"श्री रिवर्स! आपने तो मुझे बिलकुल ही चिढ़ा दिया है: मैं काफी समझदार हूँ; गलती आपकी है, या यों कहें कि आप गलतफहमी का दिखावा कर रहे हैं।"

"शायद, अगर आप अपनी बात को थोड़ा और विस्तार से समझाएं, तो मुझे बेहतर समझ में आएगा।"

“समझाओ! इसमें समझाने जैसी क्या बात है? यह तो आप देख ही सकते हैं कि बीस हजार पाउंड, यानी वह रकम, जिसे हमारे चाचा के भतीजे और तीन भतीजियों में बराबर बाँटा जाए, तो हर एक को पाँच हजार पाउंड मिलेंगे। मैं बस इतना चाहता हूँ कि आप अपनी बहनों को पत्र लिखकर उन्हें उस संपत्ति के बारे में बताएँ जो उन्हें मिली है।”

"तुम्हारा मतलब है, तुमसे।"

मैंने इस मामले पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिया है: मैं कोई और राय रखने में असमर्थ हूँ। मैं न तो निर्मम स्वार्थी हूँ, न अंधाधुंध अन्याय करने वाला, और न ही कृतघ्न। इसके अलावा, मैंने ठान लिया है कि मेरा एक घर और संबंध होंगे। मुझे मूर हाउस पसंद है, और मैं मूर हाउस में रहूँगा; मुझे डायना और मैरी पसंद हैं, और मैं जीवन भर डायना और मैरी से जुड़ा रहूँगा। पाँच हज़ार पाउंड मिलना मेरे लिए सुखदायक और लाभकारी होगा; बीस हज़ार पाउंड मिलना मुझे पीड़ा और बोझिल कर देगा; जो कि न्याय के अनुसार कभी मेरा नहीं हो सकता, भले ही कानून के अनुसार हो। इसलिए, जो मेरे लिए बिल्कुल अनावश्यक है, मैं उसे आप पर छोड़ देता हूँ। कोई विरोध न हो, कोई चर्चा न हो; आइए हम आपस में सहमत हों और इस मुद्दे पर तुरंत निर्णय लें।

"यह तात्कालिक आवेग पर आधारित कार्रवाई है; आपको इस मामले पर विचार करने के लिए कई दिन लेने चाहिए, इससे पहले कि आपके वचन को वैध माना जा सके।"

“ओह! अगर आपको सिर्फ मेरी ईमानदारी पर शक है, तो मुझे कोई चिंता नहीं है: क्या आपको इस मामले की सच्चाई समझ आ रही है?”

मुझे इसमें कुछ हद तक न्यायसंगतता तो दिखती है; लेकिन यह सभी रीति-रिवाजों के विरुद्ध है। इसके अलावा, पूरी संपत्ति पर आपका अधिकार है: मेरे चाचा ने इसे अपने परिश्रम से अर्जित किया था; उन्हें इसे जिसे चाहें उसे देने का पूरा अधिकार था: उन्होंने इसे आपको दिया। आखिरकार, न्याय आपको इसे रखने की अनुमति देता है: आप निःसंकोच इसे पूरी तरह से अपना मान सकते हैं।

मैंने कहा, “मेरे लिए यह जितना अंतरात्मा का मामला है, उतना ही भावनाओं का

भी: मुझे अपनी भावनाओं को व्यक्त करना ही होगा; मुझे ऐसा करने का अवसर बहुत कम मिला है। अगर आप मुझसे एक साल तक बहस करें, आपत्ति जताएं और मुझे परेशान करें, तब भी मैं उस सुखद आनंद को नहीं छोड़ सकता जिसकी एक झलक मुझे मिली है—एक बड़े एहसान को आंशिक रूप से चुकाने का और जीवन भर के लिए दोस्त बनाने का आनंद।"

"तुम्हें अभी ऐसा लगता है," सेंट जॉन ने जवाब दिया, "क्योंकि तुम नहीं जानते कि धन का क्या अर्थ होता है, और परिणामस्वरूप धन का आनंद क्या होता है: तुम यह अंदाजा नहीं लगा सकते कि बीस हजार पाउंड तुम्हें कितना महत्व देंगे; समाज में यह तुम्हें कितना स्थान दिलाएगा; तुम्हारे लिए कौन-कौन से अवसर खुलेंगे: तुम नहीं कर सकते—"

"और आप," मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा, "मेरे अंदर भाई-बहन के प्यार की जो तीव्र चाह है, उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। मेरा कभी कोई घर नहीं था, मेरे कभी भाई-बहन नहीं थे; मुझे अब उनकी ज़रूरत है और मैं उन्हें पाकर रहूँगा: क्या आप मुझे स्वीकार करने और अपना बनाने में हिचकिचा रहे हैं?"

"जेन, मैं तुम्हारा भाई बनूंगा - मेरी बहनें तुम्हारी बहनें होंगी - तुम्हारे उचित अधिकारों के इस बलिदान की शर्त के बिना।"

भाई? हाँ; हज़ार मील की दूरी पर! बहनें? हाँ; अजनबियों के बीच गुलामी करती हुई! मैं, धनी—सोने से लदा हुआ, जिसे मैंने कभी कमाया नहीं और न ही मैं उसका हकदार हूँ! तुम, निर्धन! प्रसिद्ध समानता और भाईचारा! घनिष्ठ संबंध! गहरा लगाव!

लेकिन, जेन, पारिवारिक संबंधों और घरेलू सुख के प्रति आपकी आकांक्षाएं उन तरीकों के अलावा अन्य तरीकों से भी पूरी हो सकती हैं जिनके बारे में आप सोच रही हैं: आप शादी कर सकती हैं।

"फिर से बकवास! शादी करो! मैं शादी नहीं करना चाहता, और कभी शादी नहीं करूंगा।"

"यह कहना कुछ ज़्यादा ही होगा: इस तरह के खतरनाक दावे उस उत्तेजना का प्रमाण हैं जिसके तहत आप काम करते हैं।"

"यह अतिशयोक्ति नहीं है: मैं जानती हूँ कि मैं क्या महसूस करती हूँ, और विवाह के विचार मात्र से ही मेरी कितनी घृणा है। कोई भी मुझे प्रेम के लिए स्वीकार नहीं करेगा; और मैं केवल धन के सौदे के रूप में नहीं देखी जाना चाहती। और मुझे कोई

अजनबी नहीं चाहिए—जो सहानुभूतिहीन हो, पराया हो, मुझसे भिन्न हो; मुझे अपने जैसे लोग चाहिए: जिनके साथ मेरा पूर्ण आत्मीय संबंध हो। फिर से कहो कि तुम मेरे भाई बनोगे: जब तुमने ये शब्द कहे थे, मैं संतुष्ट और प्रसन्न थी; यदि तुम कर सको, तो इन्हें दोहराओ, इन्हें ईमानदारी से दोहराओ।"

"मुझे लगता है मैं कर सकती हूँ। मैं जानती हूँ कि मैंने हमेशा अपनी बहनों से प्यार किया है; और मैं जानती हूँ कि उनके प्रति मेरा स्नेह किस पर आधारित है— उनके गुणों के प्रति सम्मान और उनकी प्रतिभाओं के प्रति प्रशंसा। तुममें भी सिद्धांत और बुद्धि है: तुम्हारी पसंद और आदतें डायना और मैरी से मिलती-जुलती हैं; तुम्हारी उपस्थिति मुझे हमेशा सुखद लगती है; तुम्हारी बातों में मुझे कुछ समय से सुकून मिलता रहा है। मुझे लगता है कि मैं तुम्हें, अपनी तीसरी और सबसे छोटी बहन के रूप में, आसानी से और स्वाभाविक रूप से अपने दिल में जगह दे सकती हूँ।"

"धन्यवाद: इससे आज रात के लिए मेरा मन भर गया। अब आपको जाना चाहिए; क्योंकि अगर आप और देर तक रुके तो शायद किसी संदेह भरी शंका से मुझे फिर से गुस्सा आ जाएगा।"

"और स्कूल, मिस आयर? मुझे लगता है कि अब वह बंद हो गया होगा?"

"नहीं। जब तक आप कोई विकल्प नहीं ढूंढ लेते, मैं अपनी रखैल के पद पर बनी रहूंगी।"

उन्होंने मुस्कुराते हुए सहमति जताई: हमने हाथ मिलाया और वे चले गए।

मुझे विरासत संबंधी मामलों को अपनी इच्छानुसार निपटाने के लिए किए गए संघर्षों और तर्कों का विस्तार से वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। मेरा कार्य अत्यंत कठिन था; परन्तु, जैसा कि मैं पूरी तरह दृढ़ निश्चयी था — जैसा कि मेरे चचेरे भाइयों ने अंततः देखा कि संपत्ति का न्यायसंगत विभाजन करने के लिए मेरा मन वास्तव में और अटल रूप से दृढ़ है — जैसा कि उन्होंने अपने हृदय में मेरी मंशा की निष्पक्षता को महसूस किया होगा; और इसके अतिरिक्त, वे सहज रूप से जानते होंगे कि मेरी जगह वे भी वही करते जो मैं चाहता था — अंततः वे इस मामले को मध्यस्थता के लिए सौंपने पर सहमत हो गए। चुने गए न्यायाधीश श्री ओलिवर और एक सक्षम वकील थे: दोनों मेरी राय से सहमत थे: मेरी बात मान ली गई। हस्तांतरण के दस्तावेज तैयार किए गए: सेंट जॉन, डायना, मैरी और मुझे, प्रत्येक को एक निश्चित हिस्सा प्राप्त हुआ।

अध्याय 34

जब सब कुछ व्यवस्थित हुआ, तब तक क्रिसमस नजदीक आ चुका था: आम छुट्टियों का मौसम आ रहा था। मैंने मॉर्टन स्कूल बंद कर दिया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि मेरी ओर से विदाई नीरस न हो। सौभाग्य हाथों के साथ-साथ दिलों को भी अद्भुत रूप से खोल देता है; और जब हमें बहुत कुछ मिलता है, तो कुछ देना भावनाओं के असामान्य उफान को व्यक्त करने का एक तरीका मात्र होता है। मुझे लंबे समय से इस बात का सुख था कि मेरे कई ग्रामीण छात्र मुझे पसंद करते थे, और जब हमारी विदाई हुई, तो यह भावना और भी पुष्ट हो गई: उन्होंने अपना स्नेह स्पष्ट और दृढ़ता से प्रकट किया। यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि उनके सरल हृदयों में मेरे लिए वास्तव में एक स्थान था: मैंने उनसे वादा किया कि भविष्य में एक भी सप्ताह ऐसा नहीं गुजरेगा जब मैं उनसे मिलने न जाऊं और उन्हें उनके स्कूल में एक घंटे का शिक्षण न दूं।

श्री रिवर्स तब आए जब उन्होंने देखा कि साठ छात्राओं से भरी कक्षाएँ मेरे सामने से बाहर निकलकर दरवाज़ा बंद कर रही हैं। मैं हाथ में चाबी लिए खड़ी थी और अपनी कुछ सबसे होनहार छात्राओं से विदाई के कुछ विशेष शब्द कह रही थी: वे ब्रिटिश किसानों में पाई जाने वाली सबसे सभ्य, सम्मानित, विनम्र और सुशिक्षित युवतियाँ थीं। और यह बहुत बड़ी बात है; क्योंकि अंततः, ब्रिटिश किसान यूरोप में सबसे अधिक शिक्षित, सबसे अच्छे शिष्टाचार वाले और सबसे आत्मसम्मानित हैं: उन दिनों के बाद से मैंने किसान महिलाओं और किसानों को देखा है; और उनमें से सबसे अच्छी भी मुझे मेरी मॉर्टन छात्राओं की तुलना में अज्ञानी, असभ्य और घमंडी लगीं।

उनके जाने के बाद श्री रिवर्स ने पूछा, “क्या आपको लगता है कि आपने एक मौसम की मेहनत का फल पा लिया है? क्या अपने समय और पीढ़ी में कुछ

वास्तविक भलाई करने का अहसास आपको खुशी नहीं देता?"

"निस्संदेह।"

"और आपने तो अभी कुछ ही महीनों की मेहनत की है! क्या अपनी नस्ल के पुनरुत्थान के कार्य में समर्पित जीवन बिताना सार्थक नहीं होगा?"

"हाँ," मैंने कहा; "लेकिन मैं हमेशा के लिए ऐसा नहीं कर सकता: मैं अपनी क्षमताओं का आनंद लेना चाहता हूँ और साथ ही दूसरों की क्षमताओं को भी विकसित करना चाहता हूँ। मुझे अभी इनका आनंद लेना चाहिए; मेरे मन या शरीर को स्कूल की ओर मत बुलाओ; मैं उससे बाहर आ चुका हूँ और पूरी तरह से छुट्टी के लिए तैयार हूँ।"

वह गंभीर दिख रहा था। "अब क्या? यह अचानक इतनी उत्सुकता तुम क्यों दिखा रहे हो? तुम क्या करने वाले हो?"

"सक्रिय रहना: जितना हो सके उतना सक्रिय रहना। और सबसे पहले, मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप हन्ना को रिहा कर दें और किसी और को आपकी सेवा में लगा दें।"

क्या तुम उसे चाहते हो?

"हां, मेरे साथ मूर हाउस चलो। डायना और मैरी एक हफ्ते में घर आ जाएंगी, और मैं उनके आने से पहले सब कुछ व्यवस्थित रखना चाहता हूं।"

"मैं समझ गई। मुझे लगा था कि आप किसी सैर पर जाने वाले हैं। अच्छा ही है: हन्ना आपके साथ जाएगी।"

"उसे कह देना कि वह कल तक तैयार रहे; और यह रही कक्षा की चाबी: मैं तुम्हें सुबह अपनी कुटिया की चाबी दे दूंगा।"

उसने उसे ले लिया। "तुम इसे बड़ी खुशी से छोड़ रहे हो," उसने कहा; "मुझे तुम्हारी इस सहजता का कारण समझ नहीं आ रहा, क्योंकि मैं यह नहीं बता सकता कि तुम जिस नौकरी को छोड़ रहे हो, उसके बदले में तुम कौन सी नौकरी करने का प्रस्ताव रख रहे हो। अब तुम्हारा जीवन में क्या लक्ष्य, क्या उद्देश्य, क्या महत्वाकांक्षा है?"

"मेरा पहला उद्देश्य होगा मूर हाउस को पूरी तरह से साफ़ करना (क्या आप इस अभिव्यक्ति का पूरा अर्थ समझ रहे हैं?) — कमरे से तहखाने तक पूरी तरह से साफ़ करना; दूसरा, मोम, तेल और अनगिनत कपड़ों से उसे तब तक रगड़ना जब तक वह फिर से चमकने न लगे; तीसरा, हर कुर्सी, मेज, बिस्तर, कालीन को गणितीय

सटीकता से व्यवस्थित करना; उसके बाद मैं हर कमरे में अच्छी आग जलाने के लिए कोयले और पीट में आपको लगभग बर्बाद कर दूंगा; और अंत में, जिस दिन आपकी बहनों के आने की उम्मीद है, उससे पहले के दो दिन हन्ना और मैं अंडे फेंटने, किशमिश छांटने, मसाले पीसने, क्रिसमस केक बनाने, मिन्स-पाई के लिए सामग्री काटने और अन्य पाक अनुष्ठानों को संपन्न करने में बिताएंगे, जिनका शब्दों में वर्णन आप जैसे अनभिज्ञ व्यक्ति के लिए अपर्याप्त होगा। संक्षेप में, मेरा उद्देश्य अगले गुरुवार से पहले डायना और मैरी के लिए सब कुछ पूरी तरह से तैयार रखना है; और मेरी महत्वाकांक्षा है कि जब वे आएं तो उनका भव्य स्वागत किया जाए।”

सेंट जॉन ने हल्की सी मुस्कान दी: फिर भी वह असंतुष्ट था।

उन्होंने कहा, "फिलहाल तो सब ठीक है; लेकिन गंभीरता से कहूं तो, मुझे उम्मीद है कि जब शुरुआती उत्साह खत्म हो जाएगा, तो आप घरेलू स्नेह और घर की खुशियों से थोड़ा ऊपर की ओर देखेंगे।"

“दुनिया की सबसे बेहतरीन चीजें!” मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा।

“नहीं, जेन, नहीं: यह दुनिया फलने-फूलने की जगह नहीं है; इसे ऐसा बनाने की कोशिश मत करो: न ही आराम की; आलसी मत बनो।”

मेरा मतलब है, इसके विपरीत, व्यस्त रहना।

जेन, मैं तुम्हें फिलहाल माफ़ करती हूँ: मैं तुम्हें दो महीने का समय देती हूँ ताकि तुम अपनी नई भूमिका का पूरा आनंद ले सको और इस नए रिश्ते के आकर्षण से खुद को तरोताज़ा कर सको; लेकिन फिर, मुझे उम्मीद है कि तुम मूर हाउस और मॉर्टन, बहनों के समूह और सभ्य समृद्धि की स्वार्थी शांति और सुख-सुविधाओं से परे देखना शुरू करोगी। मुझे उम्मीद है कि तब तुम्हारी ऊर्जा एक बार फिर तुम्हें चुनौती देगी।

मैंने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। “सेंट जॉन,” मैंने कहा, “मुझे लगता है कि इस तरह की बातें करना लगभग दुष्टता है। मैं रानी की तरह संतुष्ट रहना चाहती हूँ, और आप मुझे बेचैन करने की कोशिश कर रहे हैं! किसलिए?”

“ईश्वर ने तुम्हें जो प्रतिभाएँ सौंपी हैं, उनका सदुपयोग करो; और एक दिन वह निश्चित रूप से तुमसे उनका हिसाब मांगेगा। जेन, मैं तुम्हें ध्यान से और चिंता से देखूंगी—मैं तुम्हें पहले ही आगाह कर रही हूँ। और अपने आप को साधारण घरेलू सुखों में जिस हद तक लिप्त कर रही हो, उसे संयमित रखने का प्रयास करो।

शारीरिक बंधनों से इतनी मजबूती से मत चिपके रहो; अपनी निष्ठा और उत्साह को किसी उचित उद्देश्य के लिए बचाकर रखो; उन्हें तुच्छ क्षणभंगुर वस्तुओं पर व्यर्थ मत करो। क्या तुम सुन रही हो, जेन?”

“हाँ; बिल्कुल वैसे ही जैसे आप यूनानी भाषा बोल रहे हों। मुझे लगता है कि मेरे पास खुश होने के पर्याप्त कारण हैं, और मैं खुश रहूँगा। अलविदा!”

मूर हाउस में मैं खुश थी और खूब मेहनत कर रही थी; और हन्ना भी। वह मुझे इस बात से बहुत प्रसन्न करती थी कि मैं अस्त-व्यस्त घर की भागदौड़ में भी कितनी खुशमिजाज रह सकती हूँ – कैसे मैं झाड़ू लगा सकती हूँ, धूल झाड़ सकती हूँ, सफाई कर सकती हूँ और खाना बना सकती हूँ। और सच में, एक-दो दिन की उथल-पुथल के बाद, धीरे-धीरे उस अव्यवस्था को व्यवस्थित करना सुखद था जो हमने खुद पैदा की थी। मैं पहले कुछ नया फर्नीचर खरीदने के लिए एस--- गई थी: मेरे चचेरे भाइयों ने मुझे अपनी इच्छानुसार बदलाव करने की पूरी छूट दे दी थी और इसके लिए एक राशि अलग रख दी गई थी। साधारण बैठक और शयनकक्षों को मैंने लगभग वैसे ही छोड़ दिया था: क्योंकि मैं जानती थी कि डायना और मैरी को सबसे आधुनिक चीजों के तमाशे से ज्यादा पुराने सादे मेज, कुर्सियाँ और बिस्तर देखकर आनंद आएगा। फिर भी, कुछ नयापन जरूरी था, ताकि उनके लौटने पर उन्हें वह रोमांच मिले जो मैं चाहती थी। नए, आकर्षक गहरे रंग के कालीन और पर्दे, चीनी मिट्टी और कांसे से बने कुछ सावधानीपूर्वक चुने गए प्राचीन सजावटी सामानों की व्यवस्था, नए कवर, दर्पण और ड्रेसिंग केस, और टॉयलेट टेबल के लिए नए कवर, ये सब मिलकर कमरे को एक नया रूप देते हैं: ये सब बिना भड़कीले लगे ताज़गी भरे दिखते हैं। मैंने एक खाली बैठक और शयनकक्ष को पूरी तरह से नए फर्नीचर से सजाया, जिसमें पुरानी महोगनी और गहरे लाल रंग की गद्दी लगाई। मैंने गलियारे में कैनवास और सीढ़ियों पर कालीन बिछाए। जब सब काम पूरा हो गया, तो मुझे लगा कि मूर हाउस अंदर से उज्ज्वल, सादगीपूर्ण और आरामदायक माहौल का एक पूर्ण आदर्श है, जबकि इस मौसम में यह बाहर से सर्द, वीरान और वीरान उदासी का नमूना है।

अंततः वह घटनापूर्ण गुरुवार आ ही गया। उनके आने की उम्मीद शाम होते-होते थी, और सूर्यास्त से पहले ही ऊपर और नीचे दोनों कमरों में आग जला दी गई थी; रसोई पूरी तरह से सजी-धजी थी; हन्ना और मैं तैयार थे, और सब कुछ तैयार था।

सेंट जॉन सबसे पहले पहुंचे। मैंने उनसे विनती की थी कि जब तक सब कुछ

व्यवस्थित न हो जाए, वे घर से बिल्कुल दूर रहें; और सच में, घर की दीवारों के भीतर चल रहे घिनौने और तुच्छ हंगामे का ख्याल ही उन्हें इतना डरा गया कि वे मुझसे दूर हो गए। उन्होंने मुझे रसोई में पाया, जहाँ मैं चाय के लिए बन रहे कुछ केक की प्रगति देख रही थी। चूल्हे के पास आकर उन्होंने पूछा, "क्या मैं नौकरानी के काम से संतुष्ट हो गया हूँ?" मैंने उन्हें अपने काम के नतीजों का जायजा लेने के लिए अपने साथ चलने का न्योता दिया। बड़ी मुश्किल से मैंने उन्हें घर का दौरा करवाया। उन्होंने बस उन्हीं दरवाजों से अंदर देखा जिन्हें मैंने खोला था; और जब वे ऊपर-नीचे घूम चुके, तो उन्होंने कहा कि इतने कम समय में इतने बड़े बदलाव लाने के लिए मुझे बहुत थकान और मेहनत करनी पड़ी होगी: लेकिन उन्होंने अपने घर के सुधरे हुए रूप पर खुशी जताते हुए एक शब्द भी नहीं कहा।

इस चुप्पी ने मुझे स्तब्ध कर दिया। मैंने सोचा कि शायद इन बदलावों ने उनकी कुछ पुरानी, अनमोल यादों को ठेस पहुँचाई हो। मैंने कुछ उदास स्वर में पूछा कि क्या ऐसा ही है।

बिलकुल नहीं; इसके विपरीत, उन्होंने टिप्पणी की थी कि मैंने हर संबंध का पूरी तरह से सम्मान किया है: वास्तव में, उन्हें डर था कि मैंने इस मामले पर ज़रूरत से ज़्यादा विचार किया होगा। उदाहरण के लिए, मैंने इस कमरे की व्यवस्था का अध्ययन करने में कितने मिनट लगाए होंगे? - वैसे, क्या मैं उन्हें बता सकता हूँ कि ऐसी किताब कहाँ है?

मैंने उसे शेल्फ पर रखी किताब दिखाई: उसने उसे नीचे उतारा, और अपनी आदत के अनुसार खिड़की के कोने में जाकर उसे पढ़ना शुरू कर दिया।

अब, पाठक, मुझे यह बात पसंद नहीं आई। सेंट जॉन एक अच्छे इंसान थे; लेकिन मुझे लगने लगा कि जब उन्होंने खुद को कठोर और भावहीन बताया था, तो उन्होंने अपने बारे में सच ही कहा था। जीवन के मानवीय और सुख-सुविधाओं में उनकी कोई रुचि नहीं थी—शांतिपूर्ण आनंद उन्हें भाता नहीं था। सच कहें तो, वे केवल आकांक्षाओं के लिए जीते थे—निश्चित रूप से अच्छाई और महानता की आकांक्षाओं के लिए; लेकिन फिर भी वे कभी आराम नहीं करते थे, और न ही अपने आसपास के लोगों को आराम करते देखना पसंद करते थे। जब मैंने उनके ऊंचे माथे को देखा, जो सफेद पत्थर की तरह स्थिर और पीला था—उनके सुंदर चेहरे को ध्यान से देखते हुए—तो मुझे तुरंत समझ आ गया कि वे शायद ही एक अच्छे पति बन पाएंगे: उनकी

पत्नी होना एक कठिन अनुभव होगा। मुझे मानो किसी प्रेरणा से, मिस ओलिवर के लिए उनके प्रेम का स्वरूप समझ आया; मैं उनसे सहमत थी कि यह केवल इंद्रियों का प्रेम था। मैं समझ गई कि वे इस प्रेम के उन पर पड़ने वाले तीव्र प्रभाव के कारण खुद से कितनी घृणा करते होंगे; वे इसे कैसे दबाना और नष्ट करना चाहते होंगे; वे इस बात पर कितना अविश्वास करते होंगे कि यह प्रेम कभी भी उनकी या उनकी पत्नी की खुशी का स्थायी कारण बनेगा। मैंने देखा कि वह उस सामग्री से बना था जिससे प्रकृति अपने नायकों - ईसाई और गैर-ईसाई - अपने कानून निर्माताओं, अपने राजनेताओं, अपने विजेताओं को गढ़ती है: महान हितों के लिए एक अडिग स्तंभ; लेकिन, चूल्हे के पास, अक्सर एक ठंडा, बोझिल स्तंभ, उदास और बेमेल।

"यह बैठक कक्ष उसकी जगह नहीं है," मैंने मन ही मन सोचा: "हिमालय की पर्वत श्रृंखला या कैफ्रे का जंगल, यहाँ तक कि महामारी से ग्रस्त गिनी तट का दलदल भी उसके लिए ज़्यादा उपयुक्त होगा। घरेलू जीवन की शांति से उसका नाता टूटना स्वाभाविक है; यह उसके लिए उपयुक्त नहीं है: वहाँ उसकी प्रतिभाएँ अवरुद्ध हो जाती हैं—उनका विकास नहीं हो पाता और न ही वे प्रभावी ढंग से प्रकट हो पाती हैं। संघर्ष और खतरे के माहौल में—जहाँ साहस की परीक्षा होती है, ऊर्जा का प्रयोग होता है और धैर्य की परीक्षा होती है—वह एक नेता और श्रेष्ठ के रूप में बोलेगा और आगे बढ़ेगा। इस चूल्हे पर एक हंसमुख बच्चा उससे कहीं बेहतर होगा। एक धर्म प्रचारक का करियर चुनना उसका सही निर्णय है—अब मुझे यह समझ आ रहा है।"

"वे आ रहे हैं! वे आ रहे हैं!" हन्ना ने बैठक का दरवाज़ा खोलते हुए चिल्लाया। उसी क्षण बूढ़ा कार्लो खुशी से भौंका। मैं बाहर भागा। अब अंधेरा हो चुका था; लेकिन पहियों की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। हन्ना ने जल्दी ही एक लालटेन जलाई। गाड़ी छोटे से दरवाज़े पर रुकी; ड्राइवर ने दरवाज़ा खोला: पहले एक जानी-पहचानी शक्ल, फिर दूसरी, बाहर निकली। एक मिनट में मेरा चेहरा उनकी गाड़ियों के बोनट के नीचे था, पहले मैरी के कोमल गाल से, फिर डायना के लहराते बालों से। वे हँसे—मुझे चूमा—फिर हन्ना ने: कार्लो को थपथपाया, जो खुशी से पागल हो रहा था; उत्सुकता से पूछा कि सब ठीक है या नहीं; और हाँ में जवाब मिलने पर, जल्दी से घर के अंदर चले गए।

व्हिटक्रॉस से लंबी और झटकेदार यात्रा के कारण वे थके हुए थे और ठंडी रात की हवा से कंपकंपी से कांप रहे थे; लेकिन आग की रोशनी में उनके चेहरे खिल उठे। जब

ड्राइवर और हन्नाह बक्से अंदर लाए, तो उन्होंने सेंट जॉन को बुलाया। उसी क्षण वह बैठक से बाहर आए। दोनों ने तुरंत उनके गले में बाहें डाल दीं। उन्होंने दोनों को प्यार से चूमा, धीमी आवाज़ में स्वागत के कुछ शब्द कहे, कुछ देर तक बातचीत सुनी, और फिर यह जताते हुए कि वे जल्द ही बैठक में उनसे मिलेंगी, वहाँ शरण लेने के लिए चले गए।

ऊपर जाने के लिए मैंने उनकी मोमबत्तियाँ जला दी थीं, लेकिन डायना को पहले ड्राइवर को कुछ शिष्टाचार संबंधी निर्देश देने थे; यह हो जाने के बाद, दोनों मेरे पीछे आ गईं। वे अपने कमरों के नवीनीकरण और सजावट से बहुत प्रसन्न थीं; नए पर्दों, ताज़े कालीनों और सुंदर रंगीन चीनी मिट्टी के फूलदानों को देखकर वे बेहद खुश हुईं। उन्होंने अपनी प्रसन्नता खुलकर व्यक्त की। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि मेरी व्यवस्था उनकी इच्छाओं के अनुरूप थी, और मैंने जो किया उससे उनकी आनंदमय घर वापसी में एक अलग ही आकर्षण जुड़ गया।

वह शाम बहुत सुहावनी थी। मेरे चचेरे भाई-बहन उत्साह से भरे हुए थे और अपनी बातों और टिप्पणियों में इतने सधे हुए थे कि उनकी धाराप्रवाहता ने सेंट जॉन की खामोशी को ढक लिया: वह अपनी बहनों को देखकर सचमुच खुश थे; लेकिन उनके उत्साह और आनंद के सैलाब में वह सहानुभूति नहीं दिखा सके। उस दिन की घटना —यानी डायना और मैरी की वापसी—उन्हें प्रसन्न तो कर रही थी; लेकिन उस घटना के साथ होने वाली खुशनुमा हलचल, स्वागत की बकबक और उल्लास भरी बातें उन्हें खल रही थीं: मैंने देखा कि वह शांत कल के आने की कामना कर रहे थे। रात के आनंद के चरम पर, चाय के लगभग एक घंटे बाद, दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी। हन्ना ने यह सूचना देते हुए प्रवेश किया कि "एक बेचारा लड़का इस अजीब समय पर मिस्टर रिवर्स को उनकी माँ से मिलने के लिए लेने आया है, जो वहाँ से जा रही हैं।"

“वह कहाँ रहती है, हन्ना?”

"व्हिटक्रॉस ब्रो पर, जो लगभग चार मील दूर है, मौसम साफ हो जाता है, और उसके बाद पूरा रास्ता दलदली और काई से भरा हुआ है।"

"उसे बता दो कि मैं जाऊँगा।"

“मुझे यकीन है, महोदय, बेहतर होगा कि आप ऐसा न करें। अंधेरा होने के बाद उस रास्ते पर चलना सबसे खतरनाक होता है: दलदल के ऊपर कोई पगडंडी नहीं है। और फिर रात इतनी ठंडी होती है कि आपने इतनी तेज़ हवा कभी महसूस नहीं की

होगी। बेहतर होगा कि आप मुझे संदेश भेज दें, महोदय, कि आप सुबह वहाँ पहुँच जाएँगे।”

लेकिन वह गलियारे में पहुँच चुका था और अपना लबादा ओढ़ रहा था; और बिना किसी आपत्ति या शिकायत के वह चला गया। तब नौ बज रहे थे: वह आधी रात तक नहीं लौटा। भूखा और थका हुआ तो था ही, लेकिन जाते समय से ज़्यादा खुश दिख रहा था। उसने अपना कर्तव्य निभाया था; मेहनत की थी; अपनी क्षमता को पहचाना था और खुद से बेहतर महसूस कर रहा था।

मुझे डर है कि अगले पूरे सप्ताह ने उनके धैर्य की परीक्षा ली। यह क्रिसमस का सप्ताह था: हमने कोई निश्चित काम नहीं किया, बल्कि इसे एक प्रकार की आनंदमय घरेलू मौज-मस्ती में बिताया। दलदली भूमि की हवा, घर की आज़ादी, समृद्धि की सुबह, डायना और मैरी के मन पर किसी जीवनदायिनी अमृत की तरह असर कर रही थी: वे सुबह से दोपहर तक और दोपहर से रात तक प्रसन्न रहती थीं। वे हमेशा बातें करती रहती थीं; और उनकी हास्यपूर्ण, सारगर्भित और मौलिक बातें मुझ पर इतनी मोहित करती थीं कि मैं किसी और काम के बजाय उन्हें सुनना और उनमें भाग लेना पसंद करता था। सेंट जॉन ने हमारी इस जीवंतता पर कोई आपत्ति नहीं जताई; लेकिन वे इससे बच निकले: वे शायद ही कभी घर में रहते थे; उनका पैरिश बड़ा था, आबादी बिखरी हुई थी, और वे अपने दैनिक कार्य में इसके विभिन्न क्षेत्रों में बीमारों और गरीबों से मिलने जाते थे।

एक सुबह नाश्ते के समय, डायना कुछ मिनटों तक थोड़ी उदास दिखने के बाद, उससे पूछा, "क्या उसकी योजनाएँ अभी भी अपरिवर्तित हैं?"

“अपरिवर्तित और अपरिवर्तनीय,” यह उत्तर था। और उन्होंने हमें सूचित किया कि इंग्लैंड से उनका प्रस्थान अब अगले वर्ष के लिए निश्चित रूप से तय हो चुका है।

“और रोज़ामंड ओलिवर?” मैरी ने पूछा, ये शब्द मानो अनजाने में उसके होंठों से निकल गए हों: क्योंकि बोलते ही उसने इशारा किया मानो उन्हें वापस लेना चाहती हो। सेंट जॉन के हाथ में एक किताब थी—खाने के समय पढ़ना उसकी असामाजिक आदत थी—उसने किताब बंद की और ऊपर देखा।

उन्होंने कहा, "रोसामंड ओलिवर की शादी श्री ग्रैनबी से होने वाली है, जो एस- के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित निवासियों में से एक हैं, और सर फ्रेडरिक ग्रैनबी के पोते और उत्तराधिकारी हैं: मुझे यह खबर कल उनके पिता से मिली।"

उनकी बहनों ने एक-दूसरे की ओर और मेरी ओर देखा; हम तीनों ने उनकी ओर देखा: वे कांच की तरह शांत थे।

डायना ने कहा, "यह मैच जल्दबाजी में तय किया गया होगा: वे एक-दूसरे को लंबे समय से नहीं जानते होंगे।"

“लेकिन दो महीने: वे अक्टूबर में एस- में काउंटी बॉल में मिले थे। लेकिन जहां मिलन में कोई बाधा नहीं है, जैसा कि इस मामले में है, जहां संबंध हर तरह से वांछनीय है, वहां देरी अनावश्यक है: जैसे ही सर फ्रेडरिक द्वारा उन्हें दिए गए एस-- प्लेस को उनके स्वागत के लिए तैयार किया जा सकेगा, उनकी शादी हो जाएगी।”

इस बातचीत के बाद जब पहली बार मुझे सेंट जॉन अकेले मिले, तो मेरा मन हुआ कि उनसे पूछ लूँ कि क्या इस घटना से उन्हें दुख हुआ है: लेकिन ऐसा लगा जैसे उन्हें सहानुभूति की ज़रूरत ही नहीं है, इसलिए उन्हें और सहानुभूति देने की हिम्मत करने के बजाय, मुझे अपने पहले से किए गए प्रयास पर शर्मिंदगी महसूस हुई। इसके अलावा, उनसे बात करने का मेरा अभ्यास भी छूट गया था: उनका संकोच फिर से जम गया था, और मेरी स्पष्टवादिता उसके नीचे दब गई थी। उन्होंने मुझे अपनी बहनों की तरह मानने का अपना वादा नहीं निभाया था; वे लगातार हमारे बीच छोटे-छोटे मतभेद पैदा करते रहते थे, जिससे सौहार्दपूर्ण संबंध बनने में कोई मदद नहीं मिलती थी: संक्षेप में, अब जबकि मुझे उनकी रिश्तेदार मान लिया गया था, और मैं उनके साथ एक ही छत के नीचे रहती थी, तो मुझे हमारे बीच की दूरी उस समय से कहीं अधिक महसूस होती थी जब वे मुझे केवल गाँव की शिक्षिका के रूप में जानते थे। जब मुझे याद आता है कि एक समय वे मुझ पर कितना भरोसा करते थे, तो मुझे उनकी वर्तमान उदासीनता समझ में नहीं आती थी।

ऐसी स्थिति में, मुझे काफी आश्चर्य हुआ जब उसने अचानक उस मेज से अपना सिर उठाया जिस पर वह झुका हुआ था, और कहा—

"देखो, जेन, लड़ाई लड़ी जा चुकी है और जीत हासिल हो चुकी है।"

इस प्रकार संबोधित किए जाने पर मैं चौंक गया और तुरंत जवाब नहीं दिया: एक क्षण के संकोच के बाद मैंने उत्तर दिया—

लेकिन क्या आपको यकीन है कि आप उन विजेताओं की स्थिति में नहीं हैं जिनकी जीत की कीमत उन्हें बहुत भारी पड़ी? क्या ऐसी ही एक और जीत आपको बर्बाद नहीं कर देगी?

“मुझे नहीं लगता; और अगर लगता भी है तो इसका कोई खास महत्व नहीं है; मुझे कभी किसी और के लिए लड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी। संघर्ष का नतीजा निर्णायक है: मेरा रास्ता अब साफ है; इसके लिए मैं ईश्वर का शुक्रगुजार हूँ!” इतना कहकर वह अपने कागजातों और मौन में वापस लौट गया।

जैसे-जैसे हमारी आपसी खुशी (यानी डायना, मैरी और मेरी) शांत होती गई और हम अपनी सामान्य आदतों और नियमित पढ़ाई में लौट आए, सेंट जॉन घर पर ही अधिक रहने लगे: वे हमारे साथ एक ही कमरे में बैठते थे, कभी-कभी घंटों तक। मैरी चित्रकारी करती थी, डायना ज्ञानकोशीय अध्ययन में लगी रहती थी, जिसे उसने (मेरे आश्चर्य और विस्मय के साथ) शुरू किया था, और मैं जर्मन भाषा का अध्ययन करता रहता था, वे अपने ही एक रहस्यमय ज्ञान पर चिंतन करते थे: किसी पूर्वी भाषा का ज्ञान, जिसे सीखना वे अपनी योजनाओं के लिए आवश्यक समझते थे।

इस तरह मग्न होकर, वह अपने एकांत स्थान पर चुपचाप और तल्लीन बैठे दिखाई देते थे; लेकिन उनकी नीली आँखें अक्सर उस विचित्र दिखने वाली व्याकरण की किताब से हटकर हम पर, अपने सहपाठियों पर, एक अजीब सी गहन अवलोकन शक्ति के साथ टिक जाती थीं: अगर कोई उन्हें देख लेता, तो वह तुरंत अपनी नज़रें हटा लेते; फिर भी बार-बार हमारी मेज पर खोजपूर्ण ढंग से लौट आतीं। मैं सोचता था कि इसका क्या अर्थ है: मैं इस बात पर भी आश्चर्यचकित होता था कि वह उस अवसर पर भी कितनी संतुष्टि दिखाते थे जो मुझे मामूली लगता था, अर्थात् मॉर्टन स्कूल में मेरी साप्ताहिक यात्रा; और मैं तब और भी उलझन में पड़ जाता था जब, अगर मौसम प्रतिकूल होता, बर्फ़बारी हो रही होती, या तेज़ हवा चल रही होती, और उनकी बहनें मुझे न जाने के लिए कहतीं, तो वह हमेशा उनकी चिंता को नज़रअंदाज़ कर देते और मुझे मौसम की परवाह किए बिना अपना काम पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करते।

“जेन उतनी कमज़ोर नहीं है जितना तुम उसे समझते हो,” वह कहता था: “वह हममें से किसी की तरह ही तेज़ हवा, बारिश या बर्फ़ के कुछ टुकड़ों को सहन कर सकती है। उसका शरीर मज़बूत और लचीला है; — वह कई अधिक तंदुरुस्त लोगों की तुलना में जलवायु के बदलावों को बेहतर ढंग से सहन करने में सक्षम है।”

और जब मैं लौटता था, कभी-कभी काफी थका हुआ और मौसम की मार से थोड़ा झुलसा हुआ, तो मैंने कभी शिकायत करने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि मैंने देखा कि बड़बड़ाना उसे परेशान करना होगा: हर मौके पर धैर्य उसे प्रसन्न करता था; इसके

विपरीत उसे विशेष रूप से झुंझलाहट होती थी।

लेकिन एक दोपहर, मुझे घर पर रहने की छुट्टी मिल गई, क्योंकि मुझे सचमुच सर्दी हो गई थी। उसकी बहनें मेरी जगह मॉर्टन गई थीं: मैं शिलर पढ़ रही थी; वह अपने जटिल प्राच्य ग्रंथों को समझने में लगा हुआ था। जब मैंने एक अनुवाद के बदले एक अभ्यास लिया, तो मेरी नज़र उसकी ओर पड़ी: तभी मैंने खुद को उसकी हमेशा चौकस रहने वाली नीली आँख के प्रभाव में पाया। वह आँख मुझे कितनी देर से बार-बार घूर रही थी, यह मैं बता नहीं सकती: वह इतनी तीक्ष्ण और फिर भी इतनी ठंडी थी कि मुझे उस पल अंधविश्वास सा महसूस हुआ — मानो मैं किसी अजीब चीज़ के साथ कमरे में बैठी हूँ।

"जेन, तुम क्या कर रही हो?"

जर्मन भाषा सीखना।

मैं चाहता हूं कि तुम जर्मन भाषा छोड़ दो और हिंदुस्तानी सीखो।

"क्या आप सच में गंभीर हैं?"

"मैं इसे इतनी गंभीरता से चाहता हूं कि मुझे ऐसा ही चाहिए: और मैं आपको इसका कारण बताऊंगा।"

फिर उन्होंने समझाया कि हिंदुस्तानी वह भाषा है जिसका वे स्वयं इस समय अध्ययन कर रहे हैं; कि जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते हैं, वे शुरुआत को भूलने लगते हैं; कि एक शिष्य का होना उनके लिए बहुत सहायक होगा जिसके साथ वे बार-बार मूल तत्वों का अभ्यास कर सकें और उन्हें अच्छी तरह से आत्मसात कर सकें; कि कुछ समय से वे मेरे और अपनी बहनों के बीच दुविधा में थे; लेकिन उन्होंने मुझे चुना क्योंकि उन्होंने देखा कि मैं तीनों में से सबसे लंबे समय तक किसी कार्य पर ध्यान केंद्रित कर सकती हूँ। क्या मैं उन पर यह उपकार करूँगी? शायद मुझे यह त्याग ज्यादा लंबा नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि उनके जाने में अब केवल तीन महीने ही शेष हैं।

सेंट जॉन को आसानी से मना करना आसान नहीं था: ऐसा लगता था मानो उन पर पड़ने वाला हर प्रभाव, चाहे वह सुख हो या दुख, गहरा और स्थायी होता था। मैंने सहमति दे दी। जब डायना और मैरी लौटीं, तो डायना ने देखा कि उनके शिष्य को उनसे हटाकर उनके भाई को सौंप दिया गया है: वह हँसी, और दोनों ने सहमति जताई कि सेंट जॉन को उन्हें ऐसा कदम उठाने के लिए कभी राजी नहीं करना चाहिए था। उन्होंने शांत भाव से उत्तर दिया—

"मुझे यह पता है।"

मैंने उन्हें बहुत धैर्यवान, सहनशील और फिर भी सख्त स्वामी पाया: वे मुझसे बहुत अपेक्षा रखते थे; और जब मैं उनकी अपेक्षाएँ पूरी करता था, तो वे अपने तरीके से अपनी स्वीकृति पूरी तरह से प्रकट करते थे। धीरे-धीरे, उनका मुझ पर ऐसा प्रभाव हो गया जिसने मेरी मानसिक स्वतंत्रता छीन ली: उनकी प्रशंसा और ध्यान उनकी उदासीनता से कहीं अधिक प्रतिबंधात्मक थे। उनके आस-पास होने पर मैं खुलकर बात या हँस नहीं पाता था, क्योंकि एक लगातार आग्रहपूर्ण प्रवृत्ति मुझे याद दिलाती रहती थी कि चंचलता (कम से कम मुझमें) उन्हें नापसंद थी। मैं इस बात से पूरी तरह अवगत था कि केवल गंभीर मनोदशाएँ और कार्य ही स्वीकार्य थे, इसलिए उनकी उपस्थिति में किसी भी अन्य मनोदशा को बनाए रखने या उसका अनुसरण करने का हर प्रयास व्यर्थ हो जाता था: मैं एक ठंडे सा सन्न में डूब जाता था। जब वे कहते "जाओ," तो मैं चला जाता; "आओ," तो मैं आ जाता; "यह करो," तो मैं कर देता। लेकिन मुझे अपनी गुलामी पसंद नहीं थी: कई बार मेरी इच्छा होती थी कि वे मुझे अनदेखा करते रहें।

एक शाम जब सोने के समय, मैं और उसकी बहनें उसके चारों ओर खड़ी होकर उसे शुभ रात्रि कह रही थीं, तो उसने अपनी आदत के अनुसार हम सभी को चूमा; और अपनी आदत के अनुसार, उसने मुझे अपना हाथ दिया। डायना, जो उस समय चंचल मनोदशा में थी (वह उसकी इच्छा से बुरी तरह बंधी नहीं थी; क्योंकि उसकी इच्छा भी उतनी ही प्रबल थी), ने कहा—

“सेंट जॉन! तुम जेन को अपनी तीसरी बहन कहते थे, लेकिन अब तुम उसके साथ वैसा व्यवहार नहीं करते: तुम्हें उसे भी चूमना चाहिए।”

उसने मुझे उसकी ओर धकेल दिया। मुझे डायना बहुत उत्तेजक लगी और मैं असहज रूप से उलझन में पड़ गई; और जब मैं इस तरह सोच-विचार कर रही थी, तभी सेंट जॉन ने अपना सिर झुकाया; उनका यूनानी चेहरा मेरे चेहरे के सामने आ गया, उनकी आँखें मेरी आँखों में तीक्ष्णता से प्रश्न कर रही थीं - उन्होंने मुझे चूमा। संगमरमर जैसे या बर्फीले चुंबन जैसी कोई चीज़ नहीं होती, या मैं कहूँ कि मेरे पादरी चचेरे भाई का अभिवादन इन्हीं में से एक था; लेकिन प्रयोग के तौर पर किए गए चुंबन हो सकते हैं, और उनका चुंबन एक प्रयोग के तौर पर किया गया चुंबन था। चुंबन देने के बाद, उन्होंने परिणाम जानने के लिए मेरी ओर देखा; यह कोई खास नहीं था: मुझे

यकीन है कि मैं शरमाई नहीं; शायद मैं थोड़ी पीली पड़ गई थी, क्योंकि मुझे ऐसा लगा जैसे यह चुंबन मेरी बेड़ियों पर लगी मुहर हो। इसके बाद उन्होंने कभी भी यह रस्म नहीं छोड़ी, और जिस गंभीरता और शांति से मैंने इसे सहन किया, उससे उनके लिए इसमें एक विशेष आकर्षण आ गया।

मैं प्रतिदिन उसे प्रसन्न करने की और अधिक इच्छा रखती थी; परन्तु ऐसा करने के लिए मुझे प्रतिदिन यह महसूस होता था कि मुझे अपने आधे स्वभाव को त्यागना होगा, अपनी आधी क्षमताओं को दबाना होगा, अपनी रुचियों को उनके मूल स्वरूप से विवश करना होगा, और उन कार्यों को अपनाने के लिए विवश होना होगा जिनके लिए मुझमें कोई स्वाभाविक झुकाव नहीं था। वह मुझे उस ऊँचाई तक पहुँचाना चाहता था जहाँ मैं कभी नहीं पहुँच सकती थी; उसके द्वारा निर्धारित मानक तक पहुँचने की आकांक्षा मुझे हर घंटे पीड़ा देती थी। यह उतना ही असंभव था जितना कि अपने अनियमित चेहरे को उसके सटीक और आदर्श स्वरूप में ढालना, अपनी परिवर्तनशील हरी आँखों को उसकी आँखों की तरह समुद्र-नीला रंग और गंभीर चमक देना।

हालांकि, केवल उसकी तरक्की ही मुझे इस समय अपने वश में नहीं रखे हुए थी। हाल ही में मेरे लिए उदास दिखना काफी आसान हो गया था: मेरे दिल में एक सड़ती हुई बुराई घर कर गई थी और मेरी खुशी को जड़ से खत्म कर रही थी - वह बुराई थी अनिश्चितता की।

पाठक, शायद आपको लगता होगा कि स्थान और भाग्य में आए इन बदलावों के बीच मैं श्री रोचेस्टर को भूल गया था। बिलकुल नहीं। उनका नाम आज भी मेरे मन में बसा हुआ था, क्योंकि वह कोई धुंध नहीं थी जिसे धूप बिखेर दे, न ही कोई रेत से उकेरी गई प्रतिमा जिसे तूफान मिटा दे; वह एक नाम था जो एक पत्थर पर खुदा हुआ था, जिसका अस्तित्व उस संगमरमर के साथ हमेशा के लिए बना रहना तय था जिस पर वह खुदा था। उनके बारे में जानने की उत्सुकता हर जगह मेरा पीछा करती थी; जब मैं मॉर्टन में था, तो हर शाम अपनी कुटिया में लौटकर मैं उनके बारे में सोचता था; और अब मूर हाउस में, मैं हर रात अपने शयनकक्ष में जाकर उनके बारे में सोचता रहता हूँ।

वसीयत के संबंध में श्री ब्रिग्स के साथ आवश्यक पत्राचार के दौरान, मैंने उनसे श्री रोचेस्टर के वर्तमान निवास और स्वास्थ्य के बारे में जानकारी मांगी थी; लेकिन, जैसा कि सेंट जॉन ने अनुमान लगाया था, उन्हें उनके बारे में कुछ भी पता नहीं था। तब मैंने

श्रीमती फेयरफैक्स को पत्र लिखकर इस विषय पर जानकारी मांगी। मुझे पूरा विश्वास था कि इस कदम से मेरी समस्या हल हो जाएगी: मुझे यकीन था कि इससे जल्द ही जवाब मिल जाएगा। जब दो सप्ताह बीत गए और कोई जवाब नहीं आया तो मैं आश्चर्यचकित रह गया; लेकिन जब दो महीने बीत गए, और दिन-प्रतिदिन डाक आती रही और मेरे लिए कुछ भी नहीं आया, तो मैं अत्यधिक चिंता में डूब गया।

मैंने दोबारा लिखा: शायद मेरा पहला पत्र खो गया था। नए प्रयास के बाद नई उम्मीद जगी: कुछ हफ्तों तक यह पहले की तरह चमकी, फिर उसी तरह फीकी पड़ गई, टिमटिमा गई: एक भी पंक्ति, एक भी शब्द मुझ तक नहीं पहुंचा। जब आधा साल व्यर्थ की उम्मीद में बर्बाद हो गया, तो मेरी उम्मीद खत्म हो गई, और तब मुझे सचमुच अंधकार छा गया।

मेरे चारों ओर सुहाना वसंत का मौसम था, जिसका मैं आनंद नहीं ले सका। ग्रीष्म ऋतु निकट आ रही थी; डायना ने मुझे खुश करने की कोशिश की: उसने कहा कि मैं बीमार लग रहा हूँ और वह मेरे साथ समुद्र तट पर जाना चाहती है। सेंट जॉन ने इसका विरोध किया; उसने कहा कि मुझे भोग-विलास नहीं चाहिए, मुझे काम चाहिए; मेरा वर्तमान जीवन उद्देश्यहीन है, मुझे एक लक्ष्य की आवश्यकता है; और, मुझे लगता है, अपनी कमियों को पूरा करने के लिए, उसने हिंदुस्तानी भाषा के मेरे पाठों को और भी लंबा खींच दिया और उन्हें पूरा करने के लिए और भी ज़ोर देने लगा: और मैं, एक मूर्ख की तरह, उसका विरोध करने के बारे में कभी नहीं सोचा - मैं उसका विरोध कर ही नहीं सका।

एक दिन मैं सामान्य से अधिक उदास मन से पढ़ाई करने आया था; मेरी उदासी एक गहरी निराशा के कारण थी। हन्ना ने सुबह मुझे बताया था कि मेरे लिए एक पत्र है, और जब मैं उसे लेने नीचे गया, लगभग इस विश्वास के साथ कि आखिरकार मुझे वह खुशखबरी मिल ही गई जिसका मैं लंबे समय से इंतजार कर रहा था, तो मुझे श्री ब्रिग्स का व्यापारिक संदेश वाला एक साधारण सा नोट ही मिला। इस कड़वी निराशा ने मेरी आँखों से कुछ आँसू निकाल दिए थे; और अब, जब मैं एक भारतीय लेखक की जटिल लिखावट और अलंकरणों को ध्यान से पढ़ रहा था, तो मेरी आँखें फिर से भर आईं।

सेंट जॉन ने मुझे पढ़ने के लिए अपने पास बुलाया; ऐसा करने की कोशिश में मेरी आवाज़ लड़खड़ा गई: शब्द सिसकियों में खो गए। बैठक में हम दोनों ही थे: डायना

ड्राइंग रूम में संगीत का अभ्यास कर रही थी, मैरी बागवानी कर रही थी - मई का दिन बहुत सुहावना था, आसमान साफ, धूप खिली हुई और हल्की हवा चल रही थी। मेरे साथी ने मेरी इस भावना पर कोई आश्चर्य नहीं जताया, न ही उन्होंने मुझसे इसका कारण पूछा; उन्होंने बस इतना कहा -

"जेन, हम कुछ मिनट इंतज़ार करेंगे, जब तक तुम थोड़ा शांत नहीं हो जाती।" और जब मैं अपनी सिसकियों को जल्दी से दबाने की कोशिश कर रही थी, तब वह शांत और धैर्य से अपनी मेज पर झुके बैठे रहे, मानो कोई चिकित्सक किसी मरीज की बीमारी में अपेक्षित और पूरी तरह से समझी गई समस्या को वैज्ञानिक दृष्टि से देख रहा हो। अपनी सिसकियों को दबाकर, आँखें पोंछकर और सुबह तबीयत ठीक न होने के बारे में कुछ बुदबुदाकर, मैंने अपना काम फिर से शुरू किया और उसे पूरा करने में सफल रही। सेंट जॉन ने मेरी और अपनी किताबें समेटीं, अपनी मेज को ताला लगाया और कहा—

"अब, जेन, तुम मेरे साथ टहलने चलोगी।"

मैं डायना और मैरी को फोन करूंगा।

"नहीं; मुझे आज सुबह केवल एक ही साथी चाहिए, और वह तुम ही होगे। अपने कपड़े पहन लो; रसोई के दरवाजे से बाहर जाओ: मार्श ग्लेन के ऊपरी हिस्से की ओर जाने वाली सड़क पकड़ो: मैं थोड़ी देर में तुम्हारे पास आ जाऊँगा।"

मुझे कोई बीच का रास्ता नहीं पता: मैंने अपने जीवन में कभी भी कठोर, दृढ़ चरित्र वाले, अपने से विपरीत स्वभाव वाले लोगों से निपटने में पूर्ण समर्पण और दृढ़ विद्रोह के बीच का कोई बीच का रास्ता नहीं जाना। मैंने हमेशा एक का निष्ठापूर्वक पालन किया है, उस क्षण तक जब मैं कभी-कभी ज्वालामुखी की तरह उग्र होकर दूसरे में विलीन हो जाता था; और चूंकि न तो वर्तमान परिस्थितियाँ इसकी अनुमति देती थीं, और न ही मेरा वर्तमान मन मुझे विद्रोह के लिए प्रेरित करता था, इसलिए मैंने सेंट जॉन के निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन किया; और दस मिनट के भीतर मैं उनके साथ घाटी के जंगली रास्ते पर चल रहा था।

पश्चिम से हवा चल रही थी: पहाड़ियों से होकर आती हुई, झाड़ियों और सरकंडों की मीठी सुगंध लिए; आकाश निर्मल नीला था; घाटी से नीचे उतरती धारा, पिछली बसंत की बारिश से भरी हुई, भरपूर और साफ बह रही थी, सूर्य की सुनहरी चमक और आकाश के नीलम रंग को समेटे हुए। जैसे ही हम आगे बढ़े और पगडंडी से अलग

हुए, हमने एक मुलायम घास पर कदम रखा, जो बारीक काई से ढकी और पन्ना हरे रंग की थी, जिस पर छोटे-छोटे सफेद फूल बारीकी से जड़े हुए थे और एक तारे जैसे पीले फूल से सजी हुई थी: इस बीच, पहाड़ियों ने हमें पूरी तरह से घेर लिया; क्योंकि घाटी, अपने शीर्ष की ओर, उनके बिल्कुल केंद्र तक फैली हुई थी।

“चलो यहीं विश्राम करते हैं,” सेंट जॉन ने कहा, जब हम चट्टानों की एक बटालियन के पहले बचे हुए हिस्सों तक पहुँचे, जो एक प्रकार के दर्रे की रक्षा कर रहे थे, जिसके आगे एक छोटी नदी झरने के रूप में नीचे गिर रही थी; और जहाँ, उससे थोड़ा और आगे, पहाड़ घास और फूलों को त्यागकर, केवल बंजर भूमि और चट्टानों को ही अपना रत्न बना लेता था — जहाँ यह जंगलीपन को बर्बरता में बदल देता था, और ताजगी को भय से बदल देता था — जहाँ यह एकांत की निराशाजनक आशा और मौन के लिए अंतिम शरणस्थली की रक्षा करता था।

मैं बैठ गया: सेंट जॉन मेरे पास खड़े थे। उन्होंने दर्रे की ओर और घाटी की ओर देखा; उनकी दृष्टि धारा के साथ कहीं भटक गई, और फिर उस निर्मल आकाश पर लौट आई जिसने उसे रंगीन बना रखा था: उन्होंने अपनी टोपी उतार दी, हवा को अपने बालों को सहलाने और माथे को छूने दिया। ऐसा लग रहा था मानो वे उस स्थान की आत्मा से समाहित हो गए हों: अपनी आँखों से वे किसी को विदाई दे रहे थे।

“और मैं इसे फिर से देखूंगा,” उसने ऊँची आवाज़ में कहा, “सपनों में जब मैं गंगा के किनारे सोऊंगा: और फिर एक और लंबे समय में — जब एक और नींद मुझ पर हावी हो जाएगी — एक अंधेरी धारा के किनारे!”

एक विचित्र प्रेम के विचित्र शब्द! अपने वतन के लिए एक कठोर देशभक्त का जुनून! वह बैठ गया; आधे घंटे तक हम चुप रहे; न उसने मुझसे और न मैंने उससे: वह अंतराल बीतने के बाद, उसने फिर से बोलना शुरू किया—

"जेन, मैं छह सप्ताह में जा रहा हूँ; मैंने ईस्ट इंडियामैन नामक एक जहाज में अपनी सीट बुक कर ली है जो 20 जून को रवाना होगा।"

मैंने उत्तर दिया, “ईश्वर आपकी रक्षा करेगा; क्योंकि आपने उसका कार्य अपने हाथ में लिया है।”

“हाँ,” उसने कहा, “यही मेरी महिमा और आनंद है। मैं एक अचूक स्वामी का सेवक हूँ। मैं मनुष्यी मार्गदर्शन में, अपने नपुंसक साथी कीड़ों के दोषपूर्ण नियमों और गलत नियंत्रण के अधीन होकर नहीं जा रहा हूँ: मेरा राजा, मेरा नियम निर्माता, मेरा

सेनापति, सर्व-परिपूर्ण है। मुझे यह अजीब लगता है कि मेरे चारों ओर सभी एक ही ध्वज के नीचे एकजुट होने, एक ही कार्य में शामिल होने के लिए उत्सुक नहीं हैं।"

"तुम्हारी जैसी शक्तियां सबके पास नहीं होतीं, और कमजोरों का बलवानों के साथ चलने की इच्छा रखना मूर्खता होगी।"

मैं कमजोरों से बात नहीं करता, न ही उनके बारे में सोचता हूँ: मैं केवल उन्हीं से बात करता हूँ जो इस काम के योग्य हैं और इसे पूरा करने में सक्षम हैं।

"वे संख्या में कम हैं, और उन्हें ढूंढना मुश्किल है।"

"आप सही कहते हैं; लेकिन जब वे मिल जाएं, तो उन्हें प्रेरित करना, उन्हें प्रयास के लिए प्रोत्साहित करना और प्रोत्साहित करना, उन्हें यह दिखाना कि उनके उपहार क्या हैं और वे क्यों दिए गए हैं, उनके कानों में स्वर्ग का संदेश सुनाना, और उन्हें सीधे ईश्वर की ओर से, उनके चुने हुए लोगों की श्रेणी में स्थान प्रदान करना उचित है।"

"अगर वे वाकई इस काम के लिए योग्य हैं, तो क्या उनका दिल ही सबसे पहले उन्हें यह बात नहीं बताएगा?"

मुझे ऐसा लगा जैसे कोई भयानक जादू मुझे घेर रहा हो और मुझ पर हावी हो रहा हो: मैं किसी घातक शब्द के बोले जाने से कांप रहा था जो एक ही पल में उस जादू को घोषित और मजबूत कर देगा।

"और तुम्हारा हृदय क्या कहता है?" सेंट जॉन ने पूछा।

"मेरा दिल खामोश है, मेरा दिल खामोश है," मैंने स्तब्ध और रोमांचित होकर उत्तर दिया।

"तो फिर मुझे ही इसके लिए बोलना होगा," गहरी, दृढ़ आवाज जारी रही। "जेन, मेरे साथ भारत चलो: मेरी साथी और सहकर्मी बनकर आओ।"

घाटी और आकाश घूम उठे: पहाड़ हिल उठे! ऐसा लगा जैसे मुझे स्वर्ग से कोई बुलावा आया हो—जैसे मैसेडोनिया के उस दूत की तरह किसी दिव्य संदेशवाहक ने कहा हो, "आओ और हमारी मदद करो!" लेकिन मैं कोई प्रेरित नहीं था,—मैं उस संदेशवाहक को देख नहीं सकता था,—मैं उसका बुलावा स्वीकार नहीं कर सकता था।

"हे संत जॉन!" मैं चिल्लाया, "थोड़ी दया करो!"

मैंने उस व्यक्ति से अपील की, जो अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए न तो दया जानता था और न ही पश्चाताप। उसने आगे कहा—

"ईश्वर और प्रकृति ने तुम्हें एक मिशनरी की पत्नी बनने के लिए बनाया है। यह

व्यक्तिगत नहीं, बल्कि मानसिक गुण हैं जो उन्होंने तुम्हें दिए हैं: तुम परिश्रम के लिए बनी हो, प्रेम के लिए नहीं। तुम्हें एक मिशनरी की पत्नी बनना ही होगा। तुम मेरी हो जाओगी: मैं तुम पर अपना अधिकार जताता हूँ - अपने सुख के लिए नहीं, बल्कि अपने प्रभु की सेवा के लिए।”

मैंने कहा, "मैं इसके लिए उपयुक्त नहीं हूं: मेरे पास कोई पेशा नहीं है।"

उन्होंने इन शुरुआती आपत्तियों का पहले से ही आकलन कर लिया था: वे इनसे विचलित नहीं हुए। वास्तव में, जब वे अपने पीछे की चट्टान से टेक लगाकर बैठे, अपनी बाहों को अपनी छाती पर मोड़ा और अपने चेहरे पर दृढ़ भाव लिए, तो मैंने देखा कि वे एक लंबे और कठिन संघर्ष के लिए तैयार थे, और उन्होंने अंत तक टिके रहने के लिए पर्याप्त धैर्य का भंडार जमा कर लिया था - हालांकि, उनका दृढ़ संकल्प था कि अंत में उन्हें जीत हासिल करनी होगी।

“जेन, विनम्रता,” उन्होंने कहा, “ईसाई गुणों की बुनियाद है: तुम सही कहती हो कि तुम इस काम के लायक नहीं हो। भला कौन इसके लायक है? या जिसे सचमुच बुलाया गया, उसने खुद को इस बुलावे के योग्य समझा? मैं तो बस धूल और राख हूँ। संत पौलुस के साथ, मैं खुद को सबसे बड़ा पापी मानता हूँ; लेकिन मैं अपनी इस व्यक्तिगत नीचता को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता। मैं अपने मार्गदर्शक को जानता हूँ: कि वह सर्वशक्तिमान होने के साथ-साथ न्यायप्रिय भी है; और यद्यपि उसने एक कमज़ोर साधन को एक महान कार्य करने के लिए चुना है, फिर भी वह अपनी असीम कृपा से साधन की कमी को पूरा करेगा। मेरी तरह सोचो, जेन—मेरी तरह भरोसा रखो। मैं तुमसे युगों के उस चट्टान पर सहारा लेने के लिए कह रहा हूँ: इसमें कोई संदेह नहीं कि वह तुम्हारी मानवीय कमज़ोरी का भार सह लेगी।”

मुझे मिशनरी जीवन समझ में नहीं आता: मैंने कभी मिशनरी कार्यों का अध्ययन नहीं किया है।

“मैं, जो स्वयं में विनम्र हूँ, आपकी हर प्रकार की सहायता कर सकता हूँ: मैं पल-पल आपको आपका कार्य बता सकता हूँ; सदा आपके साथ खड़ा रह सकता हूँ; क्षण-पल आपकी सहायता कर सकता हूँ। शुरुआत में मैं यह कर सकता था: शीघ्र ही (क्योंकि मैं आपकी क्षमताओं को जानता हूँ) आप मेरे समान बलवान और कुशल हो जाएँगे, और आपको मेरी सहायता की आवश्यकता नहीं होगी।”

लेकिन मेरी शक्तियाँ—इस काम के लिए कहाँ हैं? मुझे उनका एहसास नहीं हो

रहा। जब आप बोलते हैं तो मेरे अंदर कुछ भी हलचल नहीं होती। मुझे न तो कोई प्रकाश प्रज्वलित होता है—न ही जीवन का कोई संचार होता है—न ही कोई आवाज़ मुझे सलाह देती है या मेरा हौसला बढ़ाती है। काश, मैं आपको समझा पाती कि इस समय मेरा मन एक अंधकारमय कालकोठरी जैसा है, जिसकी गहराई में एक ही डर जकड़ा हुआ है—यह डर कि आप मुझे किसी ऐसे काम को करने के लिए मना लेंगे जिसे मैं पूरा नहीं कर सकती!

"मेरे पास तुम्हारे लिए एक जवाब है—सुनो। जब से हम पहली बार मिले हैं, मैंने तुम्हें देखा है: मैंने दस महीने तक तुम्हारा अध्ययन किया है। इस दौरान मैंने कई तरह के परीक्षणों से तुम्हारी परीक्षा ली है: और मैंने क्या देखा और क्या पाया? गाँव के विद्यालय में मैंने पाया कि तुम अच्छा प्रदर्शन कर सकते थे, समय के पाबंद, ईमानदार, ऐसे काम में जो तुम्हारी आदतों और रुचियों के अनुकूल नहीं था; मैंने देखा कि तुम उसे क्षमता और चतुराई से कर सकते थे: तुम नियंत्रण रखते हुए जीत सकते थे। जिस शांति से तुमने जाना कि तुम अचानक अमीर हो गए हो, उसमें मैंने एक ऐसा मन देखा जो डेमास के अवगुण से मुक्त था:—धन का तुम पर कोई अनुचित प्रभाव नहीं था। जिस दृढ़ तत्परता से तुमने अपनी संपत्ति को चार हिस्सों में बाँटा, केवल एक हिस्सा अपने पास रखा और बाकी तीन को अमूर्त न्याय के लिए छोड़ दिया, उसमें मैंने एक ऐसी आत्मा को पहचाना जो त्याग की ज्वाला और उत्साह में डूबी हुई थी। जिस सहजता से तुमने मेरी इच्छा पर उस अध्ययन को छोड़ दिया जिसमें तुम्हारी रुचि थी, और दूसरा इसलिए अपनाया क्योंकि उसमें मेरी रुचि थी; उस अथक परिश्रम में जिसके साथ तुमने तब से आपने जिस दृढ़ता और अटूट ऊर्जा और दृढ़ संकल्प के साथ इसकी कठिनाइयों का सामना किया है, उससे मुझे उन सभी गुणों की पूर्णता का एहसास होता है जिनकी मुझे तलाश थी। जेन, आप आज्ञाकारी, परिश्रमी, निस्वार्थ, वफादार, स्थिर और साहसी हैं; बहुत कोमल और बहुत वीर: खुद पर संदेह करना छोड़ दें - मैं आप पर पूर्ण विश्वास कर सकता हूँ। भारतीय स्कूलों की संचालक और भारतीय महिलाओं की सहायक के रूप में, आपकी सहायता मेरे लिए अमूल्य होगी।

मेरे चारों ओर लोहे का कफ़न कसता चला गया; उनकी प्रेरणा धीरे-धीरे और दृढ़ता से आगे बढ़ी। मानो मैंने अपनी आँखें बंद कर ली हों, उनके इन अंतिम शब्दों ने उस रास्ते को, जो अवरुद्ध प्रतीत हो रहा था, अपेक्षाकृत स्पष्ट कर दिया। मेरा काम, जो इतना अस्पष्ट और इतना बिखरा हुआ प्रतीत हो रहा था, उनके आगे बढ़ने के साथ-

साथ सघन होता गया और उनके मार्गदर्शन में एक निश्चित रूप धारण कर लिया। उन्होंने उत्तर की प्रतीक्षा की। मैंने दोबारा उत्तर देने से पहले सोचने के लिए पंद्रह मिनट का समय माँगा।

“बहुत खुशी से,” उसने जवाब दिया; और उठकर, वह दर्रे पर थोड़ी दूर तक चला गया, खुद को झाड़ियों के एक टीले पर गिरा दिया, और वहीं पड़ा रहा।

“मैं वो कर सकती हूँ जो वो मुझसे करवाना चाहता है: मुझे ये देखना और मानना ही होगा,” मैंने मन ही मन सोचा, — “यानी, अगर मेरी जान बच जाए तो। लेकिन मुझे लगता है कि मेरा जीवन भारतीय धूप में लंबे समय तक जीने लायक नहीं है। तो फिर क्या? उसे इसकी परवाह नहीं है: जब मेरा मरने का समय आएगा, तो वो मुझे पूरी शांति और पवित्रता के साथ उस ईश्वर को सौंप देगा जिसने मुझे जन्म दिया है। मामला मेरे सामने बिल्कुल स्पष्ट है। इंग्लैंड छोड़कर, मैं एक प्रिय लेकिन खाली भूमि को पीछे छोड़ जाऊँगी — मिस्टर रोचेस्टर वहाँ नहीं हैं; और अगर वो होते भी, तो मेरे लिए उसका क्या महत्व है, वो मेरे लिए कभी क्या मायने रख सकता है? मेरा काम अब उसके बिना जीना है: दिन-प्रतिदिन घसीटते रहना इतना बेतुका, इतना कमजोर

नहीं है, मानो मैं परिस्थितियों में किसी असंभव बदलाव की प्रतीक्षा कर रही हूँ, जो मुझे उससे फिर से मिला दे। बेशक (जैसा कि सेंट जॉन ने एक बार कहा था) मुझे खोए हुए जीवन की जगह कोई और रुचि तलाशनी होगी: क्या वो काम जो वो अब मुझे दे रहा है, वास्तव में सबसे गौरवशाली काम नहीं है जिसे कोई मनुष्य अपना सकता है या ईश्वर सौंप सकता है? क्या यह अपने महान कार्यों और उदात्त परिणामों के कारण, सबसे उपयुक्त काम नहीं है? टूटे हुए प्रेम और चकनाचूर आशाओं से उत्पन्न खालीपन को भरना? मेरा मानना है कि मुझे हाँ कहना चाहिए—और फिर भी मैं काँप उठता हूँ। हाय! अगर मैं संत जॉन के साथ जाता हूँ, तो मैं अपने आप का आधा हिस्सा खो देता हूँ: अगर मैं भारत जाता हूँ, तो मैं असमय मृत्यु की ओर बढ़ता हूँ। और इंग्लैंड से भारत जाने और भारत से कब्र तक के अंतराल को कैसे भरा जाएगा? ओह, मैं अच्छी तरह जानता हूँ! यह भी मेरी दृष्टि में स्पष्ट है। संत जॉन को संतुष्ट करने के लिए अपनी नस-नस में दर्द होने तक प्रयास करके, मैं उन्हें संतुष्ट करूँगा—उनकी अपेक्षाओं के सूक्ष्मतम बिंदु से लेकर सुदूरतम बाहरी दायरे तक। अगर मैं उनके साथ जाता हूँ—अगर मैं वह बलिदान करता हूँ जो वह आग्रह करते हैं, तो मैं उसे पूरी तरह से करूँगा: मैं सब कुछ वेदी पर न्योछावर कर दूँगा—हृदय, प्राण, संपूर्ण बलिदान। वह मुझसे कभी प्रेम नहीं करेंगे; लेकिन वह मुझे स्वीकार करेंगे; मैं उन्हें ऐसी ऊर्जाएँ दिखाऊँगा जो उन्होंने अभी तक नहीं देखी हैं, ऐसे संसाधन जिनकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की है। हाँ, मैं उनके जितना ही परिश्रम कर सकता हूँ, और बिना किसी संकोच के।

"उसकी मांग मानना मुमकिन है: लेकिन एक बात को छोड़कर—एक भयानक बात। वो ये है कि वो मुझसे पत्नी बनने को कहता है, और मेरे लिए उसके दिल में पति का वो भाव नहीं है, जैसे उस विशाल चट्टान का, जिसके नीचे से नदी दूर घाटी में बह रही है। वो मुझे एक सैनिक की तरह कीमती समझता है, जैसे किसी अच्छे हथियार को; बस इतना ही। उससे शादी न करने पर मुझे कभी दुख नहीं होता; लेकिन क्या मैं उसे अपनी सारी योजनाएँ पूरी करने दूँ—अपनी योजनाओं को ठंडे दिमाग से अमल में लाने दूँ—शादी की रस्में निभाने दूँ? क्या मैं उससे शादी की अंगूठी ले सकूँ, प्यार के सारे दिखावे सह सकूँ (जिनका वो पूरी ईमानदारी से पालन करता होगा) और ये जान सकूँ कि उसमें वो भावना बिल्कुल नहीं थी? क्या मैं ये सह सकूँ कि उसका हर प्यार एक सिद्धांत के नाम पर किया गया बलिदान है? नहीं: ऐसा बलिदान तो

भयानक होगा। मैं इसे कभी नहीं सहूँगी। उसकी बहन के रूप में मैं उसके साथ जा सकती हूँ—पत्नी के रूप में नहीं: मैं उसे ये बता दूँगी।”

मैंने टीले की ओर देखा: वहाँ वह एक लेटे हुए स्तंभ की तरह स्थिर पड़ा था; उसका चेहरा मेरी ओर था: उसकी आँखें चौकस और तीक्ष्ण दृष्टि से चमक रही थीं। वह उठ खड़ा हुआ और मेरी ओर बढ़ा।

"अगर मुझे बिना किसी शुल्क के जाने की अनुमति मिल जाए तो मैं भारत जाने के लिए तैयार हूं।"

उन्होंने कहा, "आपके उत्तर पर टिप्पणी की आवश्यकता है; यह स्पष्ट नहीं है।"

"तुम अब तक मेरे दत्तक भाई रहे हो - मैं तुम्हारी दत्तक बहन: चलो हम ऐसे ही बने रहें: बेहतर होगा कि हम दोनों शादी न करें।"

उसने सिर हिलाया। “इस मामले में गोद ली हुई बहन का रिश्ता काम नहीं चलेगा। अगर तुम मेरी सगी बहन होती तो बात अलग होती: मैं तुम्हें अपना लेता और किसी और से शादी नहीं करता। लेकिन अभी तो या तो हमारा रिश्ता शादी के बंधन में बंधना और पक्का होना चाहिए, वरना यह मुमकिन ही नहीं: व्यावहारिक बाधाएं किसी भी दूसरी योजना के खिलाफ हैं। क्या तुम्हें यह समझ नहीं आ रहा, जेन? ज़रा सोचो—तुम्हारी गहरी समझ तुम्हें रास्ता दिखाएगी।”

मैंने विचार किया; फिर भी मेरी समझ, जैसी भी थी, मुझे केवल यही बताती रही कि हम पति-पत्नी की तरह एक-दूसरे से प्रेम नहीं करते थे: और इसलिए इसने यही निष्कर्ष निकाला कि हमें विवाह नहीं करना चाहिए। मैंने ऐसा कहा। “संत जॉन,” मैंने उत्तर दिया, “मैं आपको भाई मानती हूँ - आप मुझे बहन: तो चलिए आगे बढ़ते हैं।”

“हम ऐसा नहीं कर सकते—हम ऐसा नहीं कर सकते,” उसने संक्षिप्त लेकिन तीखे दृढ़ स्वर में उत्तर दिया: “यह ठीक नहीं होगा। आपने कहा है कि आप मेरे साथ भारत चलेंगी: याद रखिए—आपने यह कहा है।”

“शर्तों के अधीन।”

“अच्छा—अच्छा। मुख्य मुद्दे पर आते हैं—मेरे साथ इंग्लैंड से प्रस्थान करना, मेरे भविष्य के कार्यों में मेरा सहयोग करना—आपको कोई आपत्ति नहीं है। आपने लगभग अपना हाथ हल पर रख दिया है: आप इतने दृढ़ हैं कि पीछे हटना असंभव है। आपका केवल एक ही लक्ष्य है—आपके द्वारा शुरू किए गए कार्य को सर्वोत्तम तरीके से कैसे पूरा किया जाए। अपने जटिल हितों, भावनाओं, विचारों, इच्छाओं, उद्देश्यों को

सरल बनाइए; सभी बातों को एक ही उद्देश्य में समाहित कीजिए: अपने महान गुरु के मिशन को प्रभावी ढंग से—शक्ति के साथ—पूरा करना। ऐसा करने के लिए, आपको एक सहयोगी की आवश्यकता है: भाई नहीं—वह तो एक कमजोर रिश्ता है—बल्कि पति। मुझे भी बहन नहीं चाहिए: बहन किसी भी दिन मुझसे छीनी जा सकती है। मुझे पत्नी चाहिए: एकमात्र साथी जिस पर मैं जीवन में प्रभावी ढंग से प्रभाव डाल सकता हूँ, और जिसे मृत्यु तक पूर्ण रूप से अपने पास रख सकता हूँ।”

जब वह बोल रहा था तो मैं सिहर उठा: मैंने अपने रोंगटे खड़े कर दिए - अपने अंगों पर उसकी पकड़ महसूस की।

"हे संत जॉन, मुझमें नहीं, कहीं और किसी को खोजो: अपने लिए उपयुक्त किसी को खोजो।"

“मेरा मतलब है, मेरे उद्देश्य के अनुरूप— मेरे पेशे के अनुरूप। मैं फिर से कहता हूँ कि मैं किसी तुच्छ निजी व्यक्ति से— उस स्वार्थी मनुष्य से—संबंध नहीं बनाना चाहता: मैं तो किसी धर्म प्रचारक से संबंध बनाना चाहता हूँ।”

“और मैं मिशनरी को अपनी सारी ऊर्जा दे दूंगा—उसे बस यही चाहिए—लेकिन खुद को नहीं: ऐसा करना तो बीज में छिलका और पर्दा मिलाने जैसा होगा। उसका इन ऊर्जाओं से कोई उपयोग नहीं है: मैं इन्हें अपने पास रखूंगा।”

“तुम ऐसा नहीं कर सकते—तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। क्या तुम्हें लगता है कि ईश्वर अधूरी भेंट से संतुष्ट होंगे? क्या वे एक खंडित बलिदान स्वीकार करेंगे? मैं ईश्वर के हित में वकालत करता हूँ: मैं तुम्हें उन्हीं के झंडे तले समर्पित करता हूँ। मैं उनकी ओर से विभाजित निष्ठा स्वीकार नहीं कर सकता: यह पूर्ण होनी चाहिए।”

“ओह! मैं अपना दिल भगवान को दे दूंगी,” मैंने कहा। “तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं है।”

पाठक, मैं यह शपथ नहीं ले सकता कि इस वाक्य को कहने के लहजे और इसके साथ जुड़ी भावना दोनों में दबी हुई व्यंग्य की झलक नहीं थी। अब तक मैं संत जॉन से चुपचाप डरता रहा था, क्योंकि मैं उन्हें समझ नहीं पाया था। उन्होंने मुझे भयभीत कर रखा था, क्योंकि उन्होंने मुझे संदेह में डाल रखा था। उनमें कितना संतत्व था, कितना नश्वरता, यह मैं पहले नहीं बता सकता था: लेकिन इस सम्मेलन में रहस्योद्घाटन हो रहे थे: उनके स्वभाव का विश्लेषण मेरी आँखों के सामने हो रहा था। मैंने उनकी कमज़ोरियाँ देखीं: मैंने उन्हें समझा। मैं समझ गया कि, उस मैदान के किनारे, जहाँ मैं

बैठा था, और उस सुंदर आकृति को अपने सामने पाकर, मैं एक ऐसे व्यक्ति के चरणों में बैठा था जो मेरी तरह ही संवेदनशील था। उनकी कठोरता और निरंकुशता से पर्दा हट गया। उनमें इन गुणों की उपस्थिति को महसूस करके, मैंने उनकी अपूर्णता को महसूस किया और साहस पाया। मैं एक ऐसे व्यक्ति के साथ था जो मेरे बराबर था - जिससे मैं बहस कर सकता था - जिसका, अगर मुझे उचित लगे, तो मैं विरोध कर सकता था।

मेरे आखिरी वाक्य बोलने के बाद वह चुप हो गया, और मैंने थोड़ी देर बाद हिम्मत करके उसकी ओर देखा।

मेरी ओर टकटकी लगाए उसकी निगाहों में एक साथ गंभीर आश्चर्य और गहरी जिज्ञासा झलक रही थी। मानो वह कह रहा हो, "क्या वह व्यंग्य कर रही है, और वह भी मुझसे!" "इसका क्या अर्थ है?"

“हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह एक गंभीर मामला है; ऐसा मामला जिसके बारे में हम पाप किए बिना न तो हल्के में सोच सकते हैं और न ही बात कर सकते हैं। मुझे विश्वास है, जेन, जब तुम कहती हो कि तुम अपना हृदय ईश्वर को समर्पित करोगी, तो तुम सच में गंभीर हो: बस यही मैं चाहता हूँ। एक बार जब तुम अपना हृदय मनुष्य से अलग करके अपने सृष्टिकर्ता पर लगा दोगी, तो पृथ्वी पर उस सृष्टिकर्ता के आध्यात्मिक राज्य की उन्नति ही तुम्हारा मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य होगा; तुम उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए जो कुछ भी करोगी, वह करने को तैयार रहोगी। तुम देखोगी कि विवाह में हमारे शारीरिक और मानसिक मिलन से तुम्हारे और मेरे प्रयासों को कितनी गति मिलेगी: यही एकमात्र मिलन है जो मनुष्य के भाग्य और उद्देश्यों के साथ स्थायी रूप से मेल खाता है; और सभी छोटी-मोटी बातों, भावनाओं की सभी तुच्छ कठिनाइयों और कोमलता, केवल व्यक्तिगत झुकाव की मात्रा, प्रकार, शक्ति या कोमलता के बारे में सभी संशय को दरकिनार करते हुए, तुम तुरंत उस मिलन में प्रवेश करने के लिए तत्पर रहोगी।”

“क्या मैं?” मैंने संक्षेप में कहा; और मैंने उनके चेहरे के भावों को देखा, जो सामंजस्य में सुंदर थे, लेकिन अपनी शांत गंभीरता में अजीब तरह से दुर्जेय थे; उनके माथे को देखा, जो प्रभावशाली थे लेकिन खुले नहीं थे; उनकी आँखों को देखा, जो चमकीली, गहरी और खोजपूर्ण थीं, लेकिन कभी कोमल नहीं थीं; उनके लंबे, प्रभावशाली कद को देखा; और कल्पना में खुद को उनकी पत्नी के रूप में देखा।

ओह! यह बिल्कुल भी ठीक नहीं होगा! उनके सहायक, उनकी सहकर्मी के रूप में, सब ठीक रहेगा: मैं उस पद पर उनके साथ समुद्र पार करूँगी; पूर्वी सूर्यों में, एशियाई रेगिस्तानों में उनके साथ उस पद पर परिश्रम करूँगी; उनके साहस, समर्पण और जोश की प्रशंसा और अनुकरण करूँगी; उनकी स्वामीता को चुपचाप स्वीकार करूँगी; उनकी अटूट महत्वाकांक्षा पर निश्चिंत होकर मुस्कुराऊँगी; ईसाई और मनुष्य में अंतर करूँगी: एक का गहरा सम्मान करूँगी और दूसरे को खुलकर क्षमा करूँगी। मुझे अक्सर कष्ट सहना पड़ेगा, इसमें कोई संदेह नहीं, केवल इसी रूप में उनसे जुड़ी रहने के कारण: मेरा शरीर एक कठोर बंधन में होगा, लेकिन मेरा हृदय और मन स्वतंत्र होंगे। मेरे पास अब भी मेरा निर्मल स्वरूप होगा, जिस पर मैं भरोसा कर सकूँगी: मेरी स्वाभाविक, स्वतंत्र भावनाएँ होंगी जिनसे मैं एकांत के क्षणों में संवाद कर सकूँगी। मेरे मन में कुछ ऐसे कोने होंगे जो केवल मेरे होंगे, जहाँ वह कभी नहीं आ सकेगा, और वहाँ ताज़ी और सुरक्षित भावनाएँ पनपेंगी जिन्हें उसकी कठोरता कभी नष्ट नहीं कर पाएगी, न ही उसका संयमित योद्धा-गति कुचल पाएगी: लेकिन उसकी पत्नी के रूप में—हमेशा उसके साथ, हमेशा संयमित और नियंत्रित—अपनी प्रकृति की अग्नि को निरंतर मंद रखने के लिए मजबूर, उसे अंतर्मन में जलने के लिए विवश करने के लिए, और कभी भी चीख न निकलने देने के लिए, भले ही कैद लौ एक-एक करके प्राणों को भस्म कर दे—यह असहनीय होगा।

जब मैं ध्यान में इतना लीन हो गया, तो मैंने विस्मय से कहा, "संत जॉन!"

“तो?” उसने ठंडे स्वर में उत्तर दिया।

मैं दोहराती हूँ, मैं स्वेच्छा से आपके साथ सह-मिशनरी के रूप में जाने को तैयार हूँ, लेकिन आपकी पत्नी के रूप में नहीं; मैं आपसे विवाह नहीं कर सकती और आपका हिस्सा नहीं बन सकती।

“तुम्हें मेरा एक अंश बनना होगा,” उसने दृढ़ता से उत्तर दिया; “वरना सारा सौदा व्यर्थ हो जाएगा। मैं, जो अभी तीस वर्ष का भी नहीं हूँ, उन्नीस वर्ष की लड़की को अपने साथ भारत कैसे ले जा सकता हूँ, जब तक कि वह मुझसे शादी न कर ले? हम हमेशा के लिए एक साथ कैसे रह सकते हैं—कभी एकांत में, कभी जंगली कबीलों के बीच—और अविवाहित?”

मैंने संक्षेप में कहा, "बहुत अच्छा; इन परिस्थितियों में, यह उतना ही अच्छा है जितना कि अगर मैं आपकी असली बहन होती, या आपकी तरह एक पुरुष और

पादरी होती।"

“यह सर्वविदित है कि तुम मेरी बहन नहीं हो; मैं तुम्हें बहन के रूप में पेश नहीं कर सकता: ऐसा करने से हम दोनों पर अनुचित संदेह पैदा होगा। और वैसे भी, यद्यपि तुम्हारे पास एक पुरुष का तेज दिमाग है, तुम्हारा दिल एक स्त्री का है और – यह ठीक नहीं होगा।”

मैंने कुछ तिरस्कार भरे लहजे में कहा, "बिल्कुल ठीक रहेगा। मेरे पास एक स्त्री का हृदय है, लेकिन तुम्हारे मामले में नहीं; तुम्हारे लिए मेरे पास केवल एक साथी की निष्ठा है; एक साथी सैनिक की स्पष्टवादिता, वफादारी, भाईचारा, अगर तुम चाहो तो; एक नौसिखिए का अपने गुरु के प्रति सम्मान और समर्पण: इससे अधिक कुछ नहीं - डरो मत।"

“यही तो मैं चाहता हूँ,” उसने मन ही मन कहा; “बस यही तो मैं चाहता हूँ। और रास्ते में रुकावटें हैं: उन्हें हटाना होगा। जेन, मुझसे शादी करने पर तुम्हें पछतावा नहीं होगा—इस बात का यकीन रखो; हमें शादी करनी ही होगी। मैं दोहराता हूँ: कोई दूसरा रास्ता नहीं है; और निस्संदेह शादी के बाद इतना प्यार होगा कि यह रिश्ता तुम्हारी नज़रों में भी सही साबित होगा।”

“मैं तुम्हारे प्रेम के विचार को तिरस्कार करती हूँ,” मैं खुद को रोक नहीं पाई और उठकर उसके सामने खड़ी हो गई, चट्टान से पीठ टिकाकर। “मैं तुम्हारे द्वारा प्रस्तुत किए गए नकली भाव को तिरस्कार करती हूँ: जी हाँ, संत जॉन, और जब तुम इसे प्रस्तुत करते हो तो मैं तुम्हें भी तिरस्कार करती हूँ।”

उसने मुझे घूरकर देखा, और ऐसा करते हुए उसने अपने सुगठित होंठों को कसकर दबा लिया। वह क्रोधित था, आश्चर्यचकित था, या कुछ और, यह बताना आसान नहीं था: वह अपने चेहरे के भावों पर पूर्ण नियंत्रण रखता था।

उन्होंने कहा, "मुझे आपसे ऐसी बात सुनने की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। मुझे लगता है कि मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया या कहा है जिसके लिए मैं आपकी निंदा का पात्र बनूं।"

मैं उनकी सौम्य आवाज से प्रभावित हुआ और उनके उच्च, शांत स्वभाव से अभिभूत हो गया।

“मुझे क्षमा करें, संत जॉन; लेकिन यह आपकी ही गलती है कि मैं इतनी बेपरवाही से बोल बैठा। आपने एक ऐसा विषय उठाया है जिस पर हमारे स्वभाव में मतभेद है—

एक ऐसा विषय जिस पर हमें कभी चर्चा नहीं करनी चाहिए: प्रेम का नाम ही हमारे बीच कलह का कारण है। यदि वास्तविकता का सामना करना पड़े, तो हम क्या करेंगे? हमें कैसा महसूस होगा? मेरे प्रिय चचेरे भाई, विवाह की अपनी योजना छोड़ दें —इसे भूल जाएं।”

“नहीं,” उसने कहा; “यह एक लंबे समय से संजोई हुई योजना है, और यही एकमात्र योजना है जो मेरे महान उद्देश्य को पूरा कर सकती है: लेकिन अभी मैं तुम्हें और आग्रह नहीं करूँगा। कल मैं कैम्ब्रिज के लिए घर से निकल रहा हूँ: वहाँ मेरे कई मित्र हैं जिनसे मैं विदाई लेना चाहता हूँ। मैं दो सप्ताह के लिए अनुपस्थित रहूँगा - मेरे प्रस्ताव पर विचार करने के लिए इस समय का सदुपयोग करो: और यह मत भूलो कि यदि तुम इसे अस्वीकार करती हो, तो तुम मुझे नहीं, बल्कि ईश्वर को अस्वीकार कर रही हो। मेरे माध्यम से, वह तुम्हारे लिए एक महान जीवन का द्वार खोलता है; केवल मेरी पत्नी बनकर ही तुम इस जीवन को प्राप्त कर सकती हो। मेरी पत्नी बनने से इनकार करो, और तुम अपने आप को हमेशा के लिए स्वार्थी सुख और बंजर गुमनामी के मार्ग तक सीमित कर लोगी। कांपो कहीं ऐसा न हो कि तुम उन लोगों में गिनी जाओ जिन्होंने धर्म का त्याग किया है, और जो काफिरों से भी बदतर हैं!”

उसने ऐसा कर दिया था। मुझसे मुँह मोड़कर, उसने एक बार फिर

"नदी की ओर देखा, पहाड़ी की ओर देखा।"

लेकिन इस बार उनके सारे भाव उनके हृदय में ही समाए हुए थे: मैं उन्हें सुनने के योग्य नहीं था। जब मैं उनके साथ-साथ घर की ओर चल रहा था, तो उनकी कठोर चुप्पी में मैंने उनके मन की सारी भावनाएँ भली-भांति समझ लीं: एक कठोर और निरंकुश स्वभाव की निराशा, जिसे जहाँ समर्पण की अपेक्षा थी वहाँ प्रतिरोध का सामना करना पड़ा — एक ठंडे, अटल निर्णय की अस्वीकृति, जिसने दूसरे में ऐसी भावनाएँ और विचार देखे जिनके प्रति उसमें सहानुभूति की कोई शक्ति नहीं थी: संक्षेप में, एक मनुष्य के रूप में, वह मुझे आज्ञा मानने के लिए विवश करना चाहते थे: केवल एक सच्चे ईसाई होने के नाते ही उन्होंने मेरे कुटिल स्वभाव को इतने धैर्य से सहन किया और मुझे चिंतन और पश्चाताप के लिए इतना लंबा समय दिया।

उस रात, अपनी बहनों को चूमने के बाद, उसने मुझसे हाथ मिलाना तक भूलकर चुपचाप कमरे से निकल जाना उचित समझा। मैं—जिसके मन में उससे प्रेम तो नहीं था, लेकिन गहरी मित्रता थी—उसकी इस खामोशी से बहुत आहत हुई: इतनी आहत

कि मेरी आँखों में आँसू आ गए।

“जेन, मैंने देखा कि तुम और सेंट जॉन मैदान में टहलते समय झगड़ रहे थे,” डायना ने कहा। “लेकिन उसके पीछे जाओ; वह अब गलियारे में तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है—वह सुलह कर लेगा।”

ऐसी परिस्थितियों में मुझे ज्यादा गर्व नहीं होता: मैं हमेशा गरिमापूर्ण होने की बजाय खुश रहना पसंद करूंगा; और मैं उसके पीछे भागा - वह सीढ़ियों के नीचे खड़ा था।

“शुभ रात्रि, सेंट जॉन,” मैंने कहा।

“शुभ रात्रि, जेन,” उसने शांत भाव से उत्तर दिया।

“तो फिर हाथ मिलाइए,” मैंने कहा।

उन्होंने मेरे हाथों पर कितना ठंडा और बेरुखा स्पर्श किया! उस दिन जो कुछ हुआ था, उससे वे बहुत नाराज़ थे; न तो उनकी विनम्रता काम आई और न ही उनके आँसू। उनसे सुलह की कोई गुंजाइश नहीं थी— न ही कोई मुस्कुराहट या दयालु शब्द: फिर भी वे धैर्यवान और शांत थे; और जब मैंने उनसे पूछा कि क्या वे मुझे माफ़ करते हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें नाराज़गी को याद रखने की आदत नहीं है; उन्हें माफ़ करने की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उन्हें ठेस नहीं पहुँची है।

और यही जवाब देकर वह चला गया। काश उसने मुझे गिरा दिया होता।

अध्याय XXXV

उन्होंने अगले दिन कैम्ब्रिज के लिए प्रस्थान नहीं किया, जैसा कि उन्होंने कहा था। उन्होंने अपना प्रस्थान पूरे एक सप्ताह के लिए टाल दिया, और उस दौरान उन्होंने मुझे यह एहसास दिलाया कि एक नेक लेकिन कठोर, एक कर्तव्यनिष्ठ लेकिन निर्दयी व्यक्ति अपने नाराज व्यक्ति को कितनी कड़ी सजा दे सकता है। बिना किसी प्रत्यक्ष

शत्रुतापूर्ण कार्य या निंदात्मक शब्द के, उन्होंने मुझे क्षण भर में यह विश्वास दिला दिया कि मैं उनकी कृपा से वंचित हो गया हूँ।

ऐसा नहीं था कि सेंट जॉन के मन में कोई अधार्मिक प्रतिशोध की भावना थी— ऐसा नहीं था कि अगर उनके बस में होता तो भी वे मेरे सिर के एक बाल को भी नुकसान पहुंचाते। स्वभाव और सिद्धांत दोनों से ही वे प्रतिशोध की नीच संतुष्टि से श्रेष्ठ थे: उन्होंने मुझे उनके और उनके प्रेम का अपमान करने के लिए क्षमा कर दिया था, लेकिन वे मेरे शब्दों को भूले नहीं थे; और जब तक हम दोनों जीवित रहेंगे, वे उन्हें कभी नहीं भूलेंगे। जब वे मेरी ओर मुड़ते थे, तो उनकी नज़र से ही मुझे पता चल जाता था कि वे शब्द हमेशा मेरे और उनके बीच हवा में अंकित रहते थे; जब भी मैं बोलता, वे शब्द मेरी आवाज़ में उनके कानों तक पहुँचते थे, और उनकी प्रतिध्वनि उनके हर उत्तर में झलकती थी।

उन्होंने मुझसे बातचीत करने से परहेज नहीं किया: वे हर सुबह हमेशा की तरह मुझे अपने डेस्क पर बुलाते थे; और मुझे डर है कि उनके भीतर छिपे भ्रष्ट व्यक्ति को एक ऐसा आनंद मिलता था जो एक सच्चे ईसाई को न तो मिलता है और न ही वह उसे साझा कर पाता है, जब वे अपनी कुशलता से, हमेशा की तरह व्यवहार और बोलते हुए भी, हर काम और हर वाक्य से वही रुचि और स्वीकृति का भाव निकालते थे जो पहले उनकी भाषा और व्यवहार में एक विशेष प्रकार का गंभीर आकर्षण भर देता था। मेरे लिए, वे वास्तव में अब मांस नहीं, बल्कि संगमरमर बन गए थे; उनकी आंखें एक ठंडे, चमकदार, नीले रत्न की तरह थीं; उनकी जीभ एक बोलने का यंत्र मात्र थी— बस इतना ही।

यह सब मेरे लिए यातना थी— एक परिष्कृत, निरंतर चलने वाली यातना। इसने मेरे भीतर आक्रोश की धीमी आग और दुःख की कांपती हुई पीड़ा को बनाए रखा, जिसने मुझे पूरी तरह से सताया और कुचल दिया। मैंने महसूस किया कि अगर मैं उसकी पत्नी होती, तो यह नेक इंसान, जो गहरे निर्मल जलस्रोत की तरह पवित्र है, मुझे बिना मेरी नसों से खून की एक बूंद भी निकाले या अपने निर्मल विवेक पर अपराध का जरा सा भी दाग लगने दिए बिना ही मार सकता था। खासकर जब मैंने उसे मनाने की कोई कोशिश की, तो मुझे यह एहसास हुआ। मेरी दया का कोई जवाब नहीं मिला। उसे अलगाव का कोई कष्ट नहीं हुआ— सुलह की कोई चाह नहीं थी; और यद्यपि, एक से अधिक बार, मेरे तेजी से गिरते आँसुओं ने उस पन्ने को झुलसा दिया

जिस पर हम दोनों झुके हुए थे, उनका उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, मानो उसका हृदय सचमुच पत्थर या धातु का बना हो। इस बीच, अपनी बहनों के प्रति वह सामान्य से कुछ अधिक दयालु था: मानो उसे डर हो कि केवल ठंडा व्यवहार मुझे यह समझाने के लिए पर्याप्त नहीं होगा कि मुझे पूरी तरह से निर्वासित और बहिष्कृत कर दिया गया है, उसने विरोधाभास का बल जोड़ा; और मुझे यकीन है कि उसने ऐसा बलपूर्वक नहीं, बल्कि सिद्धांत के आधार पर किया।

घर छोड़ने से एक रात पहले, सूर्यास्त के समय मैंने उसे बगीचे में टहलते हुए देखा और मुझे याद आया कि यह आदमी, भले ही अब अलग-थलग पड़ गया था, एक समय मेरी जान बचा चुका था और हम करीबी रिश्तेदार थे। तब मुझे उसकी दोस्ती फिर से पाने का आखिरी प्रयास करने की प्रेरणा मिली। मैं बाहर गया और उसके पास पहुँचा, जब वह छोटे से फाटक पर झुका हुआ था; मैंने सीधे मुद्दे पर बात की।

“संत जॉन, मैं दुखी हूँ क्योंकि आप अब भी मुझसे नाराज़ हैं। आइए हम मित्र बन जाएँ।”

"मुझे उम्मीद है कि हम दोस्त हैं," यह भावहीन जवाब था; जबकि वह अभी भी चंद्रमा के उदय को देख रहा था, जिसके बारे में वह मेरे पास आने पर सोच रहा था।

“नहीं, सेंट जॉन, हम अब पहले जैसे दोस्त नहीं हैं। तुम यह जानते हो।”

“क्या हम नहीं हैं? यह गलत है। मेरी ओर से, मैं आपके लिए कोई बुराई नहीं, बल्कि सब कुछ अच्छा चाहता हूँ।”

"मैं आप पर विश्वास करती हूँ, सेंट जॉन; क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि आप किसी का बुरा नहीं चाह सकते; लेकिन, चूंकि मैं आपकी रिश्तेदार हूँ, इसलिए मैं उस तरह की सामान्य परोपकारिता से कुछ अधिक स्नेह की अपेक्षा करूंगी जो आप बिल्कुल अजनबियों के प्रति दिखाते हैं।"

“बिल्कुल,” उन्होंने कहा। “आपकी इच्छा उचित है, और मैं आपको अजनबी बिल्कुल नहीं मानता।”

शांत और संयमित स्वर में कही गई ये बातें मेरे लिए बेहद अपमानजनक और हैरान करने वाली थीं। अगर मैंने अहंकार और क्रोध की भावनाओं पर ध्यान दिया होता, तो मैं तुरंत उसे छोड़कर चला जाता; लेकिन मेरे भीतर कुछ ऐसा था जो उन भावनाओं से कहीं अधिक प्रबल था। मैं अपने चचेरे भाई की प्रतिभा और सिद्धांतों का बहुत आदर करता था। उसकी मित्रता मेरे लिए बहुत मायने रखती थी: उसे खोना मेरे लिए बहुत

कठिन था। मैं उसे पुनः प्राप्त करने का प्रयास इतनी जल्दी नहीं छोड़ूंगा।

“क्या हमें इस तरह अलग होना पड़ेगा, संत जॉन? और जब आप भारत जाएंगे, तो क्या आप मुझे ऐसे ही छोड़ जाएंगे, बिना एक भी दयालु शब्द कहे, जैसा आपने अभी तक कहा है?”

अब वह चांद से पूरी तरह मुंह फेरकर मेरी ओर देखने लगा।

“जब मैं भारत जाऊँगा, जेन, तो क्या मैं तुम्हें छोड़ दूँगा! क्या! तुम भारत नहीं जाओगी?”

"तुमने कहा था कि मैं तुमसे शादी किए बिना ऐसा नहीं कर सकती।"

“और तुम मुझसे शादी नहीं करोगी! क्या तुम अपने इस संकल्प पर अडिग हो?”

पाठक, क्या आप मेरी तरह जानते हैं कि वे निर्मम लोग अपने प्रश्नों की बर्फ में कितना भय भर सकते हैं? हिमस्खलन के गिरने में उनका कितना क्रोध निहित है? क्या उनकी नाराजगी जमे हुए सागर के टूटने में उनका कितना योगदान है?

“नहीं। सेंट जॉन, मैं तुमसे शादी नहीं करूंगी। मैं अपने फैसले पर कायम हूं।”

हिमस्खलन थोड़ा हिलकर आगे खिसक गया था, लेकिन अभी तक नीचे नहीं गिरा था।

“एक बार फिर, इस इनकार का कारण क्या है?” उसने पूछा।

मैंने जवाब दिया, “पहले तो इसलिए क्योंकि तुम मुझसे प्यार नहीं करते थे; अब, मैं जवाब देती हूँ, क्योंकि तुम मुझसे लगभग नफरत करते हो। अगर मैं तुमसे शादी करूँ तो तुम मुझे मार डालोगे। तुम मुझे अभी मार ही रहे हो।”

उसके होंठ और गाल एकदम सफेद पड़ गए - बिलकुल सफेद।

“मुझे तुम्हें मार डालना चाहिए—क्या मैं तुम्हें मार ही रहा हूँ? तुम्हारे शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए: हिंसक, स्त्री-विरोधी और असत्य। वे एक दुर्भाग्यपूर्ण मानसिक स्थिति को दर्शाते हैं: वे कड़ी निंदा के पात्र हैं: वे अक्षम्य प्रतीत होते हैं, लेकिन मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने साथी को सत्तर-सात बार तक क्षमा करे।”

अब मेरा काम पूरा हो चुका था। हालांकि मैं पूरी ईमानदारी से उसके मन से अपने पूर्व अपराध का निशान मिटाना चाहता था, लेकिन मैंने उस दृढ़ सतह पर एक और कहीं अधिक गहरी छाप छोड़ दी थी, मैंने उसे हमेशा के लिए अंकित कर दिया था।

मैंने कहा, “अब तुम मुझसे सचमुच नफरत करोगे। तुम्हें मनाने की कोशिश करना

व्यर्थ है: मुझे लगता है मैंने तुम्हें अपना चिरस्थायी शत्रु बना लिया है।”

इन शब्दों ने एक नया अन्याय कर दिया: और भी बुरा, क्योंकि इन्होंने सच्चाई को छू लिया था। वो निर्जीव होंठ क्षण भर के लिए कांप उठे। मैं जानती थी कि मैंने कितना क्रोध भड़काया है। मेरा हृदय व्याकुल था।

मैंने तुरंत उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, "तुम मेरे शब्दों का बिल्कुल गलत अर्थ निकाल रहे हो। मेरा तुम्हें दुखी करने या पीड़ा पहुंचाने का कोई इरादा नहीं है - वास्तव में, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है।"

उसने बड़ी कड़वाहट से मुस्कुराते हुए अपना हाथ मेरे हाथ से छुड़ा लिया। "तो अब तुम्हें अपना वादा याद आ गया है, और लगता है कि तुम भारत बिल्कुल नहीं जाओगे?" उसने काफी देर रुकने के बाद कहा।

“जी हां, मैं आपके सहायक के रूप में यह काम करूंगा,” मैंने उत्तर दिया।

बहुत देर तक सन्नाटा छाया रहा। इस दौरान उनके भीतर प्रकृति और कृपा के बीच जो संघर्ष चल रहा था, उसे मैं बता नहीं सकता: बस उनकी आँखों में विलक्षण चमक दिखाई दी और उनके चेहरे पर अजीब सी परछाइयाँ छा गईं। अंत में उन्होंने बोलना शुरू किया।

मैंने पहले ही आपको यह साबित कर दिया था कि आपकी उम्र की एक अविवाहित महिला का मेरे अविवाहित पुरुष के साथ विदेश जाने का प्रस्ताव कितना बेतुका है। मैंने इसे ऐसे शब्दों में साबित किया था, जिनसे मुझे उम्मीद थी कि आप भविष्य में कभी इस योजना का जिक्र भी नहीं करेंगी। आपने ऐसा किया, इसके लिए मुझे खेद है - आपके भले के लिए।

मैंने उसे बीच में ही रोक दिया। किसी भी तरह की सीधी फटकार से मुझे तुरंत हिम्मत मिल गई। “समझदारी से काम लो, सेंट जॉन: तुम बेवकूफी की हद पार कर रहे हो। तुम दिखावा कर रहे हो कि मैंने जो कहा उससे तुम्हें झटका लगा है। तुम्हें सच में झटका नहीं लगा है: क्योंकि तुम्हारी बुद्धि इतनी तेज़ है कि तुम न तो इतने मंदबुद्धि हो सकते हो और न ही इतने घमंडी कि मेरी बात को न समझ सको। मैं फिर से कहती हूँ, अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी सहायक बन जाऊँगी, लेकिन तुम्हारी पत्नी कभी नहीं।”

एक बार फिर उसका चेहरा पीला पड़ गया; लेकिन पहले की तरह उसने अपने गुस्से पर पूरी तरह काबू पा लिया। उसने दृढ़तापूर्वक लेकिन शांत भाव से उत्तर दिया

—

“एक महिला पादरी, जो मेरी पत्नी नहीं है, मुझे कभी पसंद नहीं आएगी। इसलिए, लगता है कि आप मेरे साथ नहीं जा सकतीं: लेकिन अगर आप अपने प्रस्ताव में गंभीर हैं, तो मैं शहर में रहते हुए एक विवाहित मिशनरी से बात करूँगा, जिसकी पत्नी को एक सहायक की आवश्यकता है। आपकी अपनी संपत्ति आपको सोसाइटी की सहायता से मुक्त कर देगी; और इस तरह आप अपना वादा तोड़ने और जिस समूह में शामिल होने का आपने वचन दिया था, उसे छोड़ने के अपमान से बच सकती हैं।”

जैसा कि पाठक जानते हैं, मैंने न तो कभी कोई औपचारिक वादा किया था और न ही कोई समझौता किया था; और यह भाषा इस अवसर के लिए बहुत कठोर और निरंकुश थी। मैंने उत्तर दिया—

“इस मामले में न तो कोई अपमान है, न ही कोई वादा तोड़ा गया है, न ही कोई परित्याग है। भारत जाने की मुझ पर ज़रा भी बाध्यता नहीं है, खासकर अजनबियों के साथ। तुम्हारे साथ तो मैं बहुत जोखिम उठा सकती थी, क्योंकि मैं तुम्हारी बहुत इज़्ज़त करती हूँ, तुम पर भरोसा करती हूँ और बहन होने के नाते तुमसे प्यार करती हूँ; लेकिन मुझे यकीन है कि चाहे मैं जब और जिसके साथ भी जाऊँ, उस जलवायु में मैं ज़्यादा दिन जीवित नहीं रह पाऊँगी।”

“अरे! तुम तो खुद से ही डरते हो,” उसने होंठ सिकोड़ते हुए कहा।

“हाँ, मैं हूँ। ईश्वर ने मुझे यह जीवन व्यर्थ नहीं दिया; और आपकी इच्छा के अनुसार करना, मुझे लगता है, आत्महत्या के लगभग बराबर होगा। इसके अलावा, इंग्लैंड छोड़ने का अंतिम निर्णय लेने से पहले, मैं यह निश्चित रूप से जान लूँगा कि क्या यहाँ रहकर मैं इसे छोड़ने की तुलना में अधिक उपयोगी साबित हो सकता हूँ।”

"आपका क्या मतलब है?"

"इसे समझाने का प्रयास व्यर्थ होगा; लेकिन एक ऐसा मुद्दा है जिस पर मुझे लंबे समय से पीड़ादायक संदेह रहा है, और जब तक किसी तरह से वह संदेह दूर नहीं हो जाता, मैं कहीं नहीं जा सकता।"

“मैं जानती हूँ कि तुम्हारा दिल कहाँ जाता है और किससे चिपका रहता है। जिस चीज़ में तुम्हारी दिलचस्पी है, वह अनैतिक और अपवित्र है। तुम्हें इसे बहुत पहले ही कुचल देना चाहिए था: अब तो इसका ज़िक्र करने में भी तुम्हें शर्म आनी चाहिए। क्या तुम मिस्टर रोचेस्टर के बारे में सोच रही हो?”

यह सच था। मैंने मौन रहकर इसे स्वीकार किया।

क्या आप मिस्टर रोचेस्टर से मिलने जा रहे हैं?

मुझे पता लगाना होगा कि उसका क्या हुआ है।

“तो अब मेरा यही कर्तव्य है,” उन्होंने कहा, “कि मैं तुम्हें अपनी प्रार्थनाओं में याद रखूँ और पूरी ईमानदारी से तुम्हारे लिए ईश्वर से विनती करूँ कि तुम सचमुच त्यागे न जाओ। मैंने सोचा था कि तुम चुने हुए लोगों में से एक हो। लेकिन ईश्वर मनुष्य की दृष्टि से नहीं देखता: उसकी इच्छा पूरी हो—”

उसने फाटक खोला, उससे होकर गुजरा और घाटी में दूर चला गया। थोड़ी ही देर में वह नजरों से ओझल हो गया।

बैठक में दोबारा प्रवेश करते ही मैंने डायना को खिड़की पर खड़ी पाया, वह बहुत सोच-विचार में डूबी हुई थी। डायना मुझसे काफी लंबी थी: उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा और झुककर मेरे चेहरे को गौर से देखा।

“जेन,” उसने कहा, “तुम आजकल हमेशा बेचैन और पीली-सी रहती हो। मुझे यकीन है कि कुछ गड़बड़ है। मुझे बताओ कि सेंट जॉन और तुम क्या काम कर रहे हो। मैंने तुम्हें पिछले आधे घंटे से खिड़की से देखा है; मुझे इस तरह जासूसी करने के लिए माफ करना, लेकिन काफी समय से मुझे लग रहा है कि मुझे ठीक से पता नहीं है कि क्या हो रहा है। सेंट जॉन एक अजीब इंसान है—”

वह रुकी— मैंने कुछ नहीं कहा: थोड़ी देर बाद उसने बोलना फिर शुरू किया—

"मुझे यकीन है कि मेरे उस भाई के मन में तुम्हारे बारे में कुछ अजीब से विचार हैं: वह तुम्हें लंबे समय से ऐसी तवज्जो और रुचि से देखता आ रहा है जो उसने किसी और को कभी नहीं दिखाई - किसलिए? काश वह तुमसे प्यार करता - क्या वह करता है, जेन?"

मैंने उसका ठंडा हाथ अपने गर्म माथे पर रखा और कहा, "नहीं, मर जा, बिलकुल भी नहीं।"

“तो फिर वह तुम्हें इतनी निगाहों से क्यों देखता है, इतनी बार तुम्हें अकेले में क्यों ले जाता है, और तुम्हें हर समय अपने पास क्यों रखता है? मैरी और मैंने तो यही निष्कर्ष निकाला था कि वह चाहता है कि तुम उससे शादी कर लो।”

“हाँ, उसने मुझसे शादी करने के लिए कहा है।”

डायना ने ताली बजाई। “बिल्कुल यही तो हम उम्मीद कर रहे थे और सोच रहे थे!

और तुम उससे शादी करोगी, जेन, है ना? और फिर वह इंग्लैंड में ही रहेगा।”

"ऐसा बिलकुल नहीं है, डायना; मुझसे शादी का प्रस्ताव रखने के पीछे उसका एकमात्र उद्देश्य भारत में अपने काम में एक उपयुक्त सहकर्मी ढूंढना है।"

“क्या! वो चाहता है कि तुम भारत जाओ?”

"हाँ।"

“पागलपन!” वह चिल्लाई। “मुझे यकीन है कि तुम वहाँ तीन महीने भी नहीं रह पाओगी। तुम कभी नहीं जाओगी: तुमने सहमति नहीं दी है, है ना, जेन?”

मैंने उससे शादी करने से इनकार कर दिया है—”

"और परिणामस्वरूप हमने उन्हें नाराज कर दिया?" उसने सुझाव दिया।

"गहराई से: मुझे डर है कि वह मुझे कभी माफ नहीं करेगा: फिर भी मैंने उसकी बहन बनकर उसके साथ जाने की पेशकश की।"

“ऐसा करना घोर मूर्खता थी, जेन। उस काम के बारे में सोचो जो तुमने अपने हाथ में लिया था — एक ऐसा काम जिसमें लगातार थकान होती है, जहाँ थकान तो ताकतवर को भी मार देती है, और तुम तो कमज़ोर हो। सेंट जॉन — तुम उन्हें जानती हो — तुम्हें असंभव काम करने के लिए उकसाते थे: उनके साथ गर्मी के घंटों में आराम करने की कोई इजाज़त नहीं होती थी; और दुर्भाग्य से, मैंने देखा है, वह जो भी मांगते हैं, तुम उसे पूरा करने के लिए खुद को मजबूर करती हो। मुझे आश्चर्य है कि तुमने उनका प्रस्ताव ठुकराने की हिम्मत कैसे जुटाई। तो क्या तुम उनसे प्यार नहीं करती, जेन?”

"पति के रूप में नहीं।"

फिर भी वह एक सुंदर व्यक्ति है।

और मैं तो बिल्कुल साधारण हूँ, देखो, मर जाओ। हम दोनों कभी एक-दूसरे के अनुकूल नहीं हो सकते।

“साधारण! तुम? बिलकुल नहीं। तुम इतनी खूबसूरत और इतनी अच्छी हो कि कलकत्ता में जिंदा भुनी जाने के लायक नहीं हो।” और फिर उसने मुझसे पूरी गंभीरता से विनती की कि मैं उसके भाई के साथ बाहर जाने का विचार छोड़ दूं।

“हाँ, मुझे अवश्य ही ऐसा करना चाहिए,” मैंने कहा; “क्योंकि अभी जब मैंने उनके साथ एक डीकन के रूप में सेवा करने का प्रस्ताव दोहराया, तो उन्होंने मेरी अभद्रता पर हैरानी जताई। उन्हें लगा जैसे मैंने अविवाहित रहते हुए उनके साथ जाने का प्रस्ताव

रखकर कोई अनुचित कार्य किया हो: मानो मैंने शुरू से ही उनमें एक भाई पाने की आशा न की हो, और उन्हें हमेशा से ही भाई के रूप में न माना हो।”

"जेन, तुम ऐसा क्यों कह रही हो कि वह तुमसे प्यार नहीं करता?"

“आपको इस विषय पर उनकी बात सुननी चाहिए। उन्होंने बार-बार समझाया है कि वे खुद से नहीं, बल्कि अपने पद से संबंध बनाना चाहते हैं। उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं श्रम के लिए बनी हूँ, प्रेम के लिए नहीं: जो निस्संदेह सच है। लेकिन, मेरी राय में, अगर मैं प्रेम के लिए नहीं बनी हूँ, तो इसका मतलब है कि मैं विवाह के लिए भी नहीं बनी हूँ। क्या यह अजीब नहीं होगा, डाई, कि मैं जीवन भर एक ऐसे पुरुष से बंधी रहूँ जो मुझे केवल एक उपयोगी उपकरण समझता हो?”

“असहनीय— अस्वाभाविक— नामुमकिन!”

“और फिर,” मैंने आगे कहा, “हालाँकि अब मेरे मन में उनके लिए केवल बहन जैसा स्नेह है, फिर भी, अगर मुझे उनकी पत्नी बनने के लिए मजबूर होना पड़ा, तो मैं कल्पना कर सकती हूँ कि मुझे उनसे एक अनचाहा, अजीब, पीड़ादायक प्रेम हो जाएगा, क्योंकि वे बहुत प्रतिभाशाली हैं; और उनके हाव-भाव, व्यवहार और बातचीत में अक्सर एक विशेष वीरता झलकती है। उस स्थिति में, मेरा भाग्य अत्यंत दयनीय हो जाएगा। वे नहीं चाहेंगे कि मैं उनसे प्रेम करूँ; और अगर मैंने यह भावना दिखाई, तो वे मुझे यह एहसास दिला देंगे कि यह एक अनावश्यक चीज़ है, जिसकी उन्हें आवश्यकता नहीं है, जो मुझमें शोभा नहीं देती। मुझे पता है कि वे ऐसा ही करेंगे।”

"फिर भी सेंट जॉन एक अच्छा आदमी है," डायना ने कहा।

“वह एक नेक और महान व्यक्ति है; लेकिन अपने ऊँचे सपनों को पूरा करने के चक्कर में वह आम लोगों की भावनाओं और अधिकारों को बेरहमी से भुला देता है। इसलिए बेहतर यही है कि तुच्छ लोग उसके रास्ते से हट जाएँ, कहीं ऐसा न हो कि अपनी तरक्की के चक्कर में वह उन्हें कुचल दे। देखो, वह आ रहा है! मैं अब तुमसे विदा लेती हूँ, डायना।” और जैसे ही मैंने उसे बगीचे में प्रवेश करते देखा, मैं जल्दी से ऊपर की ओर चल पड़ी।

लेकिन मुझे रात के खाने पर उनसे दोबारा मिलना पड़ा। उस भोजन के दौरान वे हमेशा की तरह शांत और संयमित दिखे। मैंने सोचा था कि वे मुझसे शायद ही बात करेंगे, और मुझे पूरा यकीन था कि उन्होंने शादी की योजना छोड़ दी है: लेकिन बाद में पता चला कि मैं दोनों ही मामलों में गलत थी। उन्होंने मुझसे बिल्कुल अपने सामान्य

अंदाज में बात की, या यूं कहें कि हाल ही में उनका जो सामान्य अंदाज हो गया था - अत्यंत विनम्रता से। निस्संदेह उन्होंने पवित्र आत्मा से प्रार्थना की होगी कि मेरे कारण उनमें जो क्रोध जागा था, वह शांत हो जाए, और अब उन्हें विश्वास हो गया होगा कि उन्होंने मुझे एक बार फिर माफ कर दिया है।

प्रार्थना से पहले शाम के पाठ के लिए, उन्होंने प्रकाशितवाक्य का इक्कीसवाँ अध्याय चुना। उनके मुख से बाइबल के वचन निकलते सुनना हमेशा सुखद होता था: उनकी सुरीली आवाज़ इतनी मधुर और परिपूर्ण कभी नहीं लगी थी - उनका सरल और प्रभावशाली अंदाज़ कभी इतना प्रभावशाली नहीं हुआ था, जितना परमेश्वर के वचन सुनाते समय होता था: और आज रात उनकी आवाज़ में एक गंभीर स्वर था - उनके अंदाज़ में एक रोमांचकारी भाव था - जब वे अपने परिवार के बीच बैठे थे (मई का चाँद बिना पर्दे वाली खिड़की से अंदर आ रहा था, जिससे मेज़ पर रखी मोमबत्ती की रोशनी लगभग अनावश्यक हो गई थी): जब वे वहाँ झुके हुए उस विशाल पुरानी बाइबल पर बैठे थे, और उसके पन्नों से नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के दर्शन का वर्णन कर रहे थे - बता रहे थे कि कैसे परमेश्वर मनुष्यों के साथ निवास करने आएगा, कैसे वह उनकी आँखों से सारे आँसू पोंछ देगा, और वादा किया कि अब न तो मृत्यु होगी, न शोक, न रोना, न ही कोई पीड़ा, क्योंकि अतीत बीत चुका है।

उसके बोले गए अगले शब्दों ने मुझे अजीब तरह से रोमांचित कर दिया: खासकर इसलिए क्योंकि ध्वनि में आए सूक्ष्म, अवर्णनीय परिवर्तन से मुझे ऐसा महसूस हुआ कि उन्हें बोलते समय उसकी नजर मुझ पर पड़ी थी।

“जो विजयी होगा, वह सब कुछ पाएगा; और मैं उसका परमेश्वर रहूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। परन्तु,” धीरे-धीरे, स्पष्ट रूप से पढ़ा गया, “डरपोक, अविश्वासी, इत्यादि, आग और गंधक से जलने वाली झील में अपना हिस्सा पाएंगे, जो दूसरी मृत्यु है।”

अब मुझे पता चल गया था कि सेंट जॉन को मेरे लिए किस भाग्य की आशंका थी।

उस अध्याय के अंतिम गौरवशाली छंदों के उच्चारण में एक शांत, संयमित विजय और गहरी लगन का भाव समाहित था। पाठक को विश्वास था कि उसका नाम मेमने की जीवन पुस्तक में पहले ही लिखा जा चुका है, और वह उस घड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था जो उसे उस नगर में प्रवेश दिलाएगी जहाँ पृथ्वी के राजा अपनी महिमा और सम्मान लाते हैं; जिसे प्रकाशमान करने के लिए सूर्य या चंद्रमा की आवश्यकता नहीं

है, क्योंकि परमेश्वर की महिमा उसे प्रकाशित करती है, और मेमना ही उसका प्रकाश है।

अध्याय के बाद की प्रार्थना में, उनकी सारी ऊर्जा समाहित हो उठी—उनका दृढ़ उत्साह जागृत हुआ: वे पूरी लगन से ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, और विजय प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। उन्होंने दुर्बल हृदय वालों के लिए शक्ति, भटके हुए लोगों के लिए मार्गदर्शन, और संसार और शरीर के प्रलोभनों से विचलित होकर संकीर्ण मार्ग से भटक रहे लोगों के लिए अंतिम समय में भी वापसी की प्रार्थना की। उन्होंने जलती हुई आग से बचाई गई मशाल के वरदान की याचना की, आग्रह किया, दावा किया। लगन हमेशा अत्यंत गंभीर होती है: पहले, जब मैंने वह प्रार्थना सुनी, तो मैं उनकी प्रार्थना पर आश्चर्यचकित हुआ; फिर, जब वह जारी रही और बुलंद होती गई, तो मैं उससे प्रभावित हुआ, और अंत में विस्मयचकित हो गया। उन्होंने अपने उद्देश्य की महानता और अच्छाई को इतनी ईमानदारी से महसूस किया: अन्य लोग जिन्होंने उन्हें इसके लिए प्रार्थना करते सुना, वे भी इसे महसूस किए बिना नहीं रह सके।

प्रार्थना समाप्त होने पर हमने उनसे विदा ली: उन्हें सुबह बहुत जल्दी जाना था। डायना और मैरी ने उन्हें चूमकर कमरे से विदा ली - शायद उनके इशारे पर: मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया और उन्हें सुखद यात्रा की शुभकामनाएं दीं।

“धन्यवाद, जेन। जैसा कि मैंने कहा था, मैं दो सप्ताह में कैम्ब्रिज से लौट आऊंगा: तब तक आपके पास चिंतन करने का समय है। यदि मैं मानवीय अहंकार के आगे झुक जाता, तो मैं आपसे विवाह के बारे में और कुछ नहीं कहता; परन्तु मैं अपने कर्तव्य का पालन करता हूँ और अपने प्रथम उद्देश्य को दृढ़ता से ध्यान में रखता हूँ— ईश्वर की महिमा के लिए सब कुछ करना। मेरे स्वामी धैर्यवान थे: मैं भी वैसा ही रहूंगा। मैं तुम्हें क्रोध का पात्र बनाकर विनाश के हवाले नहीं कर सकता: पश्चाताप करो—संकल्प लो, जब तक समय है। याद रखो, हमें दिन रहते काम करने का आदेश दिया गया है—चेतावनी दी गई है कि ‘रात आती है जब कोई काम नहीं कर सकता।’ धनी के भाग्य को याद रखो, जिसके पास इस जीवन में सब कुछ अच्छा था। ईश्वर तुम्हें वह श्रेष्ठ मार्ग चुनने की शक्ति दे जो तुमसे कभी नहीं छीना जाएगा!”

अंतिम शब्द कहते हुए उन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा। उन्होंने गंभीरता से, लेकिन कोमलता से बात की थी: उनकी नज़र किसी प्रेमी की अपनी प्रेमिका को निहारने जैसी नहीं थी, बल्कि किसी पादरी की अपनी भटकती हुई भेड़ों को याद करने

जैसी थी—या बेहतर कहें तो, किसी संरक्षक देवदूत की, जिसकी ज़िम्मेदारी उस आत्मा पर है। सभी प्रतिभाशाली पुरुषों के, चाहे वे भावुक हों या न हों; चाहे वे उत्साही हों, या महत्वाकांक्षी हों, या निरंकुश हों—बशर्ते वे सच्चे हों—अपने उदात्त क्षण होते हैं, जब वे विजय प्राप्त करते हैं और शासन करते हैं। मुझे संत जॉन के प्रति श्रद्धा का भाव था—इतनी प्रबल श्रद्धा कि उसकी प्रेरणा ने मुझे तुरंत उस बिंदु पर धकेल दिया जिससे मैं इतने लंबे समय से बचता आ रहा था। मुझे उनके साथ संघर्ष करना बंद करने का प्रलोभन हुआ—उनकी इच्छा की धारा में बहकर उनके अस्तित्व की खाई में समा जाने का, और वहाँ अपना अस्तित्व खो देने का। मैं अब भी लगभग उतना ही उनसे घिरा हुआ था जितना पहले, एक अलग तरीके से, किसी और से। मैं दोनों बार मूर्ख था। तब हार मान लेना सिद्धांत की गलती होती; उस समय हार मान लेना निर्णय की त्रुटि होती। इसलिए, जब मैं समय के शांत माध्यम से उस संकट को याद करता हूँ, तो मुझे लगता है कि उस क्षण मैं अपनी मूर्खता से अनभिज्ञ था।

मैं अपने पुरोहित के स्पर्श के नीचे अविचलित खड़ी रही। मेरे इनकार भुला दिए गए —मेरे भय पर विजय प्राप्त हो गई—मेरी सारी उलझनें थम गईं। असंभव—अर्थात संत जॉन से मेरा विवाह—तेजी से संभव होता जा रहा था। सब कुछ अचानक ही पूरी तरह बदल रहा था। धर्म ने पुकारा—देवदूतों ने इशारा किया—ईश्वर ने आज्ञा दी—जीवन एक ग्रंथ की तरह आगे बढ़ता गया—मृत्यु के द्वार खुलते ही अनंत काल का दर्शन हुआ: ऐसा लगा मानो वहाँ की सुरक्षा और आनंद के लिए, यहाँ सब कुछ एक पल में बलिदान हो सकता है। मंद रोशनी से भरा कमरा दृश्यों से भर गया था।

“क्या आप अभी फैसला कर सकते हैं?” मिशनरी ने पूछा। उनका सवाल कोमल स्वर में था: उन्होंने मुझे उसी कोमलता से अपनी ओर आकर्षित किया। ओह, वह कोमलता! वह बल से कहीं अधिक शक्तिशाली है! मैं संत जॉन के क्रोध का विरोध कर सकता था: उनकी दया से मैं एक सरकंडे की तरह नरम हो गया। फिर भी मैं हर पल जानता था कि अगर मैंने अभी हार मान ली, तो एक दिन मुझे अपने पिछले विद्रोह पर पछतावा जरूर होगा। एक घंटे की गंभीर प्रार्थना से उनका स्वभाव नहीं बदला: बल्कि और भी उन्नत हो गया।

मैंने उत्तर दिया, “अगर मुझे पूरा यकीन होता कि तुमसे शादी करना ईश्वर की इच्छा है, तो मैं यहीं और अभी तुमसे शादी करने की कसम खा सकता था – चाहे बाद में कुछ भी हो जाए!”

"मेरी प्रार्थनाएँ सुन ली गईं!" संत जॉन ने स्तुतिपूर्वक कहा। उन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर और भी मजबूती से रखा, मानो मुझे अपना बना रहे हों: उन्होंने मुझे अपनी बाहों में भर लिया, मानो मुझसे प्रेम कर रहे हों (मैं लगभग कह रही हूँ - मैं अंतर जानती थी - क्योंकि मैंने प्रेम का अनुभव किया था; परन्तु, उनकी तरह, मैंने अब प्रेम को दरकिनार कर दिया था, और केवल कर्तव्य के बारे में सोच रही थी)। मैं अपनी आंतरिक दृष्टि की धुंध से जूझ रही थी, जिसके सामने अभी भी बादल छाए हुए थे। मैं सच्चे मन से, गहराई से, पूरी लगन से वही करना चाहती थी जो सही था; और केवल वही। "मुझे मार्ग दिखाओ, मुझे मार्ग दिखाओ!" मैंने स्वर्ग से विनती की। मैं पहले से कहीं अधिक उत्तेजित थी; और आगे जो हुआ वह उत्तेजना का परिणाम था या नहीं, इसका निर्णय पाठक स्वयं करेंगे।

घर में सन्नाटा पसरा हुआ था; मेरा मानना है कि सेंट जॉन और मेरे अलावा बाकी सब आराम करने चले गए थे। जलती हुई मोमबत्ती बुझने लगी थी: कमरा चांदनी से जगमगा रहा था। मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा था: मुझे उसकी धड़कन सुनाई दे रही थी। अचानक एक अवर्णनीय अनुभूति ने उसे झकझोर कर रख दिया, जो तुरंत मेरे सिर और हाथ-पैरों तक फैल गई। यह अनुभूति बिजली के झटके जैसी तो नहीं थी, लेकिन उतनी ही तीव्र, उतनी ही अजीब और उतनी ही चौंकाने वाली थी: इसने मेरी इंद्रियों पर ऐसा प्रभाव डाला मानो अब तक उनकी पूरी सक्रियता केवल सुप्त अवस्था में थी, जिससे उन्हें अब जगाया गया हो। वे आशा से भर उठीं: आंखें और कान प्रतीक्षा कर रहे थे जबकि मेरी हड्डियां कांप रही थीं।

"तुमने क्या सुना? तुमने क्या देखा?" सेंट जॉन ने पूछा। मैंने कुछ नहीं देखा, लेकिन मुझे कहीं से एक आवाज़ सुनाई दी जो रो रही थी—

"जेन! जेन! जेन!" — बस इतना ही।

"हे भगवान! ये क्या है?" मैंने हांफते हुए कहा।

मैंने शायद कहा होगा, "यह कहाँ है?" क्योंकि यह न तो कमरे में थी, न घर में, न बगीचे में; न हवा से, न धरती के नीचे से, न ऊपर से। मैंने इसे सुना था – कहाँ से, या कहाँ से, यह जानना हमेशा के लिए असंभव है! और यह एक इंसान की आवाज़ थी – एक जानी-मानी, प्रिय, अच्छी तरह से याद की जाने वाली आवाज़ – एडवर्ड फेयरफैक्स रोचेस्टर की; और यह दर्द और पीड़ा में, बेतहाशा, रहस्यमय ढंग से, बेचैनी से बोली।

“मैं आ रही हूँ!” मैंने चिल्लाकर कहा। “मेरा इंतज़ार करो! ओह, मैं ज़रूर आऊँगी!” मैं दौड़कर दरवाज़े तक गई और गलियारे में देखा: वहाँ अँधेरा था। मैं दौड़कर बगीचे में गई: वहाँ सन्नाटा पसरा था।

मैंने हैरानी से पूछा, "तुम कहाँ हो?"

मार्श ग्लेन के उस पार की पहाड़ियों से हल्की सी आवाज़ आई - "तुम कहाँ हो?" मैंने सुना। देवदार के पेड़ों में हवा धीरे-धीरे सरसरा रही थी: चारों ओर सुनसान मैदान और आधी रात का सन्नाटा छाया हुआ था।

“अंधविश्वास धराशायी हो!” मैंने कहा, जब द्वार पर काले यू पेड़ के पास वह काली आकृति प्रकट हुई। “यह तुम्हारा छल या जादू-टोना नहीं है: यह प्रकृति का काम है। वह जागृत हुई और उसने – कोई चमत्कार नहीं – बल्कि अपना सर्वोत्तम कार्य किया।”

मैं सेंट जॉन से अलग हो गया, जो मेरा पीछा कर रहा था और मुझे रोकना चाहता था। अब मेरा समय आ गया था कि मैं अपना प्रभुत्व स्थापित करूँ। मेरी शक्तियाँ पूरी तरह से सक्रिय थीं। मैंने उससे कहा कि वह कोई प्रश्न या टिप्पणी न करे; मैंने उससे मुझे अकेला छोड़ने का अनुरोध किया: मुझे अकेले रहना ही था और मैं अकेला ही रहना चाहता था। उसने तुरंत मेरी बात मान ली। जहाँ अच्छी तरह से आदेश देने की शक्ति होती है, वहाँ आज्ञापालन कभी असफल नहीं होता। मैं अपने कमरे में गया; खुद को अंदर बंद कर लिया; घुटनों के बल बैठ गया; और अपने तरीके से प्रार्थना की —सेंट जॉन के तरीके से अलग, लेकिन अपने तरीके से प्रभावी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी सर्वशक्तिमान आत्मा के बहुत करीब पहुँच गया हूँ; और मेरी आत्मा कृतज्ञता से उनके चरणों में विलीन हो गई। मैं धन्यवाद से उठा—एक संकल्प लिया—और निडर, प्रबुद्ध होकर लेट गया—केवल सुबह के उजाले का इंतजार कर रहा था।

अध्याय 36

दिन निकल आया। मैं भोर में उठ गया। मैंने एक-दो घंटे अपने कमरे, दराजों और अलमारी में अपना सामान व्यवस्थित करने में बिताए, ताकि मैं थोड़े समय के लिए बाहर जाने पर उसे उसी क्रम में रख सकूँ। इसी बीच, मैंने सेंट जॉन को अपने कमरे से निकलते सुना। वह मेरे दरवाजे पर रुका: मुझे डर था कि वह दस्तक देगा - नहीं, बल्कि दरवाजे के नीचे से एक पर्ची सरकाई गई। मैंने उसे उठाया। उस पर ये शब्द लिखे थे -

"कल रात तुम मुझे अचानक छोड़कर चले गए। अगर तुम थोड़ी देर और रुकते, तो तुम ईसाई के क्रूस और स्वर्गदूत के मुकुट पर अपना हाथ रख देते। मैं पखवाड़े भर बाद लौटने पर तुम्हारे स्पष्ट निर्णय की प्रतीक्षा करूँगा। इस बीच, सावधान रहो और प्रार्थना करो कि तुम प्रलोभन में न पड़ो: मुझे विश्वास है कि आत्मा तो तैयार है, पर शरीर कमज़ोर है। मैं तुम्हारे लिए हर घंटे प्रार्थना करूँगा। — तुम्हारा, संत जॉन।"

मैंने मन ही मन उत्तर दिया, "मेरी आत्मा सही काम करने के लिए तैयार है; और मुझे आशा है कि मेरा शरीर इतना बलवान है कि एक बार जब मुझे स्वर्ग की इच्छा स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाएगी, तो मैं उसे पूरा कर सकूँगा। किसी भी हालत में, यह इतना बलवान होगा कि संदेह के इस बादल से निकलने का रास्ता खोज सके, और निश्चितता के प्रकाश को पा सके।"

जून का पहला दिन था; फिर भी सुबह आसमान में बादल छाए हुए थे और ठंड थी: बारिश की बूँदें मेरी खिड़की पर तेज़ी से पड़ रही थीं। मैंने सामने का दरवाज़ा खुलते सुना और सेंट जॉन बाहर निकल गया। खिड़की से मैंने उसे बगीचे से गुज़रते देखा। वह धुंध भरे मैदानों से होते हुए व्हिटक्रॉस की ओर चल पड़ा—वहाँ उसकी मुलाकात गाड़ी से होगी।

"कुछ ही घंटों में मैं उस रास्ते पर तुम्हारा स्थान ले लूंगा, चचेरे भाई," मैंने सोचा: "मुझे भी व्हिटक्रॉस में एक कोच से मिलना है। मुझे भी इंग्लैंड में कुछ लोगों से मिलना और उनके बारे में पूछना है, इससे पहले कि मैं हमेशा के लिए विदा हो जाऊं।"

नाश्ते के लिए अभी दो घंटे बाकी थे। मैंने इस बीच अपने कमरे में धीरे-धीरे टहलते हुए और उस घटना पर विचार करते हुए समय बिताया जिसने मेरी योजनाओं को वर्तमान दिशा दी थी। मुझे वह आंतरिक अनुभूति याद आई जिसका मैंने अनुभव किया था: क्योंकि मैं उसे उसकी सारी अकथनीय विचित्रता के साथ याद कर सकता था।

मुझे वह आवाज़ याद आई जो मैंने सुनी थी; मैंने फिर से व्यर्थ ही सवाल किया कि वह कहाँ से आई थी: ऐसा लग रहा था जैसे वह मेरे भीतर थी - बाहरी दुनिया में नहीं। मैंने पूछा कि क्या यह महज़ एक तंत्रिका संबंधी प्रभाव था - एक भ्रम? मैं समझ नहीं पा रहा था और न ही विश्वास कर पा रहा था: यह किसी प्रेरणा की तरह था। भावना का वह अद्भुत झटका उस भूकंप की तरह आया था जिसने पौलुस और सिलास की जेल की नींव हिला दी थी; इसने आत्मा की कोठरी के दरवाजे खोल दिए थे और उसके बंधन तोड़ दिए थे - इसने उसे उसकी नींद से जगा दिया था, जहाँ से वह कांपते हुए, सुनते हुए, भयभीत होकर उछल पड़ी थी; फिर एक चीख तीन बार मेरे चौंके हुए कान में गूंजी, और मेरे कांपते हुए दिल और मेरी आत्मा में गूंज उठी, जो न तो डरी और न ही डगमगाई, बल्कि मानो उस एक प्रयास की सफलता पर खुशी से झूम उठी जिसे करने का सौभाग्य उसे भारी शरीर से मुक्त होकर मिला था।

मैंने अपने विचारों को समाप्त करते हुए कहा, "कुछ ही दिनों में, मुझे उस व्यक्ति के बारे में कुछ पता चल जाएगा जिसकी आवाज़ कल रात मुझे बुला रही थी। पत्रों से कोई लाभ नहीं हुआ है - अब व्यक्तिगत पूछताछ ही एकमात्र उपाय होगा।"

नाश्ते के समय मैंने डायना और मैरी को बताया कि मैं एक यात्रा पर जा रहा हूँ, और कम से कम चार दिनों के लिए अनुपस्थित रहूँगा।

“अकेली हो, जेन?” उन्होंने पूछा।

"हां; यह एक ऐसे मित्र से मिलने या उसके बारे में खबर सुनने के लिए था जिसके बारे में मैं कुछ समय से चिंतित था।"

उन्होंने शायद यही कहा होगा, जैसा कि मुझे पूरा यकीन है कि उन्होंने सोचा होगा, कि उनके सिवा मेरा कोई दोस्त नहीं है; क्योंकि, सच में, मैंने कई बार ऐसा कहा भी था; लेकिन, अपनी स्वाभाविक शालीनता के कारण, उन्होंने कोई टिप्पणी नहीं की, सिवाय इसके कि डायना ने मुझसे पूछा कि क्या मैं यात्रा करने के लिए पूरी तरह स्वस्थ हूँ। उसने कहा कि मैं बहुत पीला दिख रहा था। मैंने जवाब दिया कि मुझे केवल मानसिक चिंता है, जिसे मैं जल्द ही दूर करने की आशा करता हूँ।

आगे की व्यवस्था करना आसान था; क्योंकि मुझे किसी भी प्रकार की पूछताछ या अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं थी। एक बार जब मैंने उन्हें समझा दिया कि मैं अभी अपनी योजनाओं के बारे में स्पष्ट रूप से नहीं बता सकता, तो उन्होंने कृपापूर्वक और बुद्धिमानी से मेरी चुप्पी को स्वीकार कर लिया, क्योंकि मेरे अनुसार यह वही

स्वतंत्रता का अधिकार था जो मुझे समान परिस्थितियों में उन्हें देना चाहिए था।

मैं दोपहर तीन बजे मूर हाउस से निकला, और चार बजने के कुछ ही देर बाद मैं व्हिटक्रॉस के साइनपोस्ट के पास खड़ा होकर उस कोच का इंतज़ार कर रहा था जो मुझे दूर थॉर्नफील्ड ले जाने वाला था। उन सुनसान सड़कों और रेगिस्तानी पहाड़ियों की खामोशी के बीच, मैंने दूर से उसकी आहट सुनी। यह वही गाड़ी थी जिससे एक साल पहले, एक गर्मी की शाम को मैं ठीक इसी जगह पर उतरा था - कितना वीरान, निराशाजनक और उद्देश्यहीन! मेरे इशारे पर वह रुक गई। मैं अंदर बैठ गया - अब मुझे उसकी सुविधा के लिए अपनी सारी दौलत कुर्बान करने की ज़रूरत नहीं थी। एक बार फिर थॉर्नफील्ड की सड़क पर, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं घर लौटता हुआ संदेशवाहक कबूतर हूँ।

यह छत्तीस घंटे का सफर था। मैं मंगलवार की दोपहर को व्हिटक्रॉस से निकला था, और अगले गुरुवार की सुबह तड़के, कोच घोड़ों को पानी पिलाने के लिए रास्ते में पड़ने वाले एक सराय में रुका। यह सराय ऐसे नज़ारे के बीच स्थित थी, जिसकी हरी-भरी झाड़ियाँ, बड़े-बड़े खेत और नीची चरागाह वाली पहाड़ियाँ (मॉर्टन के कठोर उत्तर-मिडलैंड दलदलों की तुलना में कितनी सौम्य और हरी-भरी!) मेरी आँखों के सामने किसी जाने-पहचाने चेहरे की तरह आ गईं। हाँ, मैं इस परिदृश्य को अच्छी तरह जानता था: मुझे पूरा यकीन था कि हम अपनी मंज़िल के पास ही हैं।

मैंने अस्तबल के कर्मचारी से पूछा, "थॉर्नफील्ड हॉल यहाँ से कितनी दूर है?"

"बस दो मील दूर, महोदया, खेतों के उस पार।"

“मेरी यात्रा समाप्त हो गई,” मैंने मन ही मन सोचा। मैं कोच से उतरा, अपने पास मौजूद एक बक्सा अस्तबल के कर्मचारी को सौंप दिया, ताकि वह मेरे बुलाने तक उसे संभाल कर रखे; किराया चुकाया; कोचवान को संतुष्ट किया और चल पड़ा: चमकते सूरज की रोशनी सराय के चिन्ह पर पड़ रही थी, और मैंने सुनहरे अक्षरों में पढ़ा, “द रोचेस्टर आर्म्स।” मेरा दिल उछल पड़ा: मैं अपने मालिक की ज़मीन पर पहुँच गया था। फिर वह धराशायी हो गया: एक विचार मन में आया: —

“हो सकता है कि आपके मालिक खुद ब्रिटिश चैनल के उस पार हों: और अगर वे थॉर्नफील्ड हॉल में हैं, जहाँ आप जल्दी से जा रहे हैं, तो वहाँ उनके अलावा और कौन है? उनकी पागल पत्नी: और आपका उनसे कोई लेना-देना नहीं है: आप उनसे बात करने या उनसे मिलने की हिम्मत न करें। आपकी मेहनत बेकार हो गई है - बेहतर

होगा कि आप आगे न बढ़ें," मॉनिटर ने आग्रह किया। "सराय में लोगों से जानकारी लें; वे आपको वह सब बता सकते हैं जो आप जानना चाहते हैं: वे आपके संदेह तुरंत दूर कर सकते हैं। उस आदमी के पास जाएं और पूछें कि क्या मिस्टर रोचेस्टर घर पर हैं।"

सुझाव तो समझदारी भरा था, फिर भी मैं उस पर अमल करने के लिए खुद को मजबूर नहीं कर सका। मुझे उस जवाब का इतना डर था जो मुझे निराशा से चूर कर देगा। संदेह को लंबा खींचना उम्मीद को लंबा खींचना था। शायद मैं एक बार फिर हॉल को उसके सितारे की रोशनी में देख सकूँ। मेरे सामने वह सीढ़ी थी - वही खेत जिनसे होकर मैं थॉर्नफील्ड से भागने वाली सुबह अंधा, बहरा, प्रतिशोध की आग में जलता हुआ भागा था: इससे पहले कि मुझे ठीक से पता चलता कि मैंने कौन सा रास्ता चुना है, मैं उनके बीचोंबीच था। मैं कितनी तेज़ी से चला! मैं कभी-कभी कैसे दौड़ा! मैं जाने-पहचाने जंगलों की पहली झलक पाने के लिए कितना उत्सुक था! मैं उन पेड़ों का कितनी शिद्दत से स्वागत कर रहा था जिन्हें मैं जानता था, और उनके बीच घास के मैदान और पहाड़ियों की जानी-पहचानी झलकियाँ!

अंततः जंगल ऊपर उठा; कौवों का घोंसला अंधेरे में इकट्ठा था; एक तेज़ कांव-कांव ने सुबह की शांति भंग कर दी। एक अजीब सी खुशी ने मुझे प्रेरित किया: मैं आगे बढ़ गया। एक और खेत पार किया - एक संकरी गली - और वहाँ आंगन की दीवारें थीं - पीछे के दफ्तर: घर खुद, कौवों का घोंसला अभी भी छिपा हुआ था। मैंने ठान लिया, "मैं इसे सबसे पहले सामने से देखूँगी, जहाँ इसकी भव्य प्राचीरें देखते ही आँखों को मोहित कर लेंगी, और जहाँ से मैं अपने स्वामी की खिड़की को पहचान सकूँगी: शायद वह वहाँ खड़े हों—वह सुबह जल्दी उठते हैं: शायद वह अभी बगीचे में टहल रहे हों, या सामने फुटपाथ पर। काश मैं उन्हें देख पाती!—बस एक पल! यकीनन, अगर ऐसा हुआ तो मैं इतनी पागल तो नहीं हो जाऊँगी कि उनके पीछे दौड़ पड़ूँ? मैं कह नहीं सकती—मुझे यकीन नहीं है। और अगर मैंने ऐसा किया—तो फिर क्या होगा? भगवान उनकी आत्मा को शांति दे! फिर क्या होगा? उनके एक नज़र के सुख का एक बार फिर अनुभव करने से किसे दुख होगा? मैं सोच रही हूँ: शायद इस समय वह पाइरेनीज़ पर्वतमाला पर सूर्योदय देख रहे हों, या दक्षिण के शांत समुद्र पर।"

मैं बाग की निचली दीवार के साथ-साथ सरकते हुए आगे बढ़ा—उसका कोना मोड़ा: वहाँ एक द्वार था, जो घास के मैदान में खुलता था, दो पत्थर के खंभों के बीच,

जिनके ऊपर पत्थर के गोले लगे थे। एक खंभे के पीछे से मैं चुपके से हवेली के पूरे सामने के हिस्से को देख सकता था। मैंने सावधानी से अपना सिर आगे बढ़ाया, यह जानने के लिए कि क्या किसी शयनकक्ष की खिड़कियों पर पर्दे लगे हैं: प्राचीर, खिड़कियाँ, लंबा सामने का हिस्सा—इस सुरक्षित स्थान से सब कुछ मेरी नज़र में था।

ऊपर उड़ते कौवे शायद मुझे देख रहे थे जब मैं यह जायजा ले रहा था। पता नहीं उन्होंने क्या सोचा होगा। उन्होंने जरूर सोचा होगा कि मैं पहले तो बहुत सावधान और डरपोक था, और धीरे-धीरे बहुत साहसी और बेपरवाह हो गया। एक झलक, फिर एक लंबी निगाह; फिर अपने ठिकाने से निकलकर घास के मैदान में भटक जाना; और अचानक उस विशाल हवेली के ठीक सामने रुक जाना, और उसे देर तक, दृढ़ता से देखना। "पहले तो यह कैसी बनावटी झिझक थी?" उन्होंने शायद पूछा होगा; "अब यह कैसी मूर्खतापूर्ण बेपरवाही है?"

पाठक, एक उदाहरण सुनिए।

एक प्रेमी अपनी प्रेमिका को काई से ढके किनारे पर सोता हुआ पाता है; वह उसे जगाए बिना उसके सुंदर चेहरे की एक झलक पाना चाहता है। वह दबे पांव घास पर सरकते हुए आगे बढ़ता है, ध्यान रखता है कि कोई आवाज़ न हो; वह रुकता है - यह सोचकर कि वह हिल गई है: वह पीछे हट जाता है: किसी भी कीमत पर वह दिखना नहीं चाहता। सब कुछ शांत है: वह फिर आगे बढ़ता है: वह उसके ऊपर झुकता है; उसके चेहरे पर एक हल्का सा पर्दा है: वह उसे हटाता है, और नीचे झुकता है; अब उसकी आँखें सौंदर्य के दर्शन की प्रतीक्षा कर रही हैं - गर्म, खिलखिलाती, और प्यारी, विश्राम की अवस्था में। उनकी पहली नज़र कितनी जल्दी में पड़ी थी! लेकिन कैसे वे एक-दूसरे पर टिक गईं! वह कैसे चौंक जाता है! कैसे वह अचानक और ज़ोर से दोनों बाहों में उस रूप को थाम लेता है जिसे वह एक क्षण पहले अपनी उंगली से छूने की हिम्मत भी नहीं कर रहा था! कैसे वह ज़ोर से एक नाम पुकारता है, अपना बोझ गिरा देता है, और उसे बेतहाशा देखता है! वह इस तरह पकड़ता है, रोता है, और देखता है, क्योंकि अब उसे अपने किसी भी उच्चारण या हरकत से जागने का डर नहीं है। उसने सोचा था कि उसकी प्रेमिका मीठी नींद सो रही है: उसे पता चलता है कि वह मर चुकी है।

मैंने भयभीत होकर एक भव्य भवन की ओर देखा: मुझे एक काला खंडहर दिखाई दिया।

अब किसी द्वार के पीछे छिपने की कोई ज़रूरत नहीं थी! — न ही कमरों की जालीदार खिड़कियों से झाँकने की, इस डर से कि कहीं उनके पीछे कोई हलचल न हो! न ही दरवाज़े खुलने की आहट सुनने की — न ही पक्की सड़क या कंकड़-पत्थर पर कदमों की आहट की कल्पना करने की! लॉन, ज़मीन रौंदी हुई और बंजर थी: प्रवेश द्वार खाली पड़ा था। सामने का हिस्सा, जैसा मैंने एक बार सपने में देखा था, बस एक कुएँ जैसी दीवार थी, बहुत ऊँची और बहुत नाज़ुक सी, बिना पैनल वाली खिड़कियों से छेदी हुई: न छत, न बुर्ज, न चिमनी — सब ढह गया था।

और वहाँ मृत्यु का सन्नाटा छाया हुआ था: एक सुनसान जंगल का सन्नाटा। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यहाँ के लोगों को संबोधित पत्रों का कभी कोई उत्तर नहीं मिला: मानो किसी गिरजाघर के गलियारे में बने तहखाने में पत्र भेजना ही व्यर्थ था। पत्थरों का भयानक कालापन उस भाग्य को बयां कर रहा था जिसके कारण हॉल का पतन हुआ था - आग लगने से: लेकिन आग कैसे लगी? इस आपदा की कहानी क्या थी? गारे, संगमरमर और लकड़ी के काम के अलावा और क्या नुकसान हुआ था? क्या संपत्ति के साथ-साथ जीवन भी नष्ट हो गया था? यदि हाँ, तो किसका? भयानक प्रश्न: इसका उत्तर देने वाला यहाँ कोई नहीं था - यहाँ तक कि कोई मूक संकेत या मौन संकेत भी नहीं।

टूटी-फूटी दीवारों और तबाह हुए अंदरूनी हिस्से में घूमते हुए, मुझे इस बात के सबूत मिले कि यह आपदा हाल ही में नहीं घटी थी। मुझे लगा कि सर्दियों की बर्फ उस खाली मेहराब से बहकर आई थी, सर्दियों की बारिश उन खोखली खिड़कियों से अंदर आई थी; क्योंकि भीगे हुए मलबे के ढेरों के बीच, वसंत ने हरियाली को पोषित किया था: पत्थरों और गिरे हुए शहतीरों के बीच जगह-जगह घास और खरपतवार उग आए थे। और हे भगवान! इस बीच इस मलबे का बेचारा मालिक कहाँ था? किस देश में? किस संरक्षण में? मेरी नज़र अनायास ही द्वार के पास स्थित धूसर चर्च के टावर पर पड़ी, और मैंने पूछा, "क्या वह डैमर डी रोचेस्टर के साथ, अपने संकरे संगमरमर के घर में शरण लिए हुए है?"

इन सवालों के जवाब तो मिलने ही थे। मुझे वो जवाब सिर्फ उस सराय में ही मिल सकते थे, और जल्द ही मैं वहीं लौट आया। सराय के मालिक खुद मेरे लिए नाश्ता लेकर बैठक में आए। मैंने उनसे दरवाज़ा बंद करके बैठने का अनुरोध किया: मुझे उनसे कुछ सवाल पूछने थे। लेकिन जब उन्होंने मेरी बात मान ली, तो मुझे समझ ही नहीं आ

रहा था कि मैं कैसे शुरू करूँ; संभावित जवाबों से मैं इतना भयभीत था। फिर भी, जिस उजाड़ जगह को मैं अभी-अभी छोड़कर आया था, उसने मुझे कुछ हद तक दुख भरी कहानी सुनाने के लिए तैयार कर दिया था। सराय का मालिक एक सभ्य दिखने वाला, अधेड़ उम्र का आदमी था।

"आप थॉर्नफील्ड हॉल को तो जानते ही होंगे, है ना?" मैंने आखिरकार किसी तरह कहा।

जी हां, महोदया; मैं एक समय वहां रहता था।

"क्या तुमने ऐसा किया?" मैंने सोचा, मेरे समय में तो नहीं: तुम मेरे लिए अजनबी हो।

उन्होंने आगे कहा, "मैं स्वर्गीय श्री रोचेस्टर का बटलर था।"

देर हो गई! ऐसा लगता है कि जिस प्रहार से मैं बचने की कोशिश कर रहा था, वह मुझे पूरी ताकत से लग गया है।

"दिवंगत!" मैंने हांफते हुए कहा। "क्या वह मर गया?"

"मेरा मतलब है, यहाँ मौजूद सज्जन, श्री एडवर्ड के पिता," उन्होंने समझाया। मैंने राहत की साँस ली: मेरे शरीर में रक्त प्रवाह सामान्य हो गया। इन शब्दों से मुझे पूरा यकीन हो गया कि श्री एडवर्ड — मेरे श्री रोचेस्टर (ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे, वे जहाँ भी हों!) — कम से कम जीवित तो हैं: संक्षेप में, "यहाँ मौजूद सज्जन" हैं। कितने सुखद शब्द! ऐसा लगा कि मैं आगे आने वाली हर बात — चाहे जो भी खुलासे हों — अपेक्षाकृत शांति से सुन सकता हूँ। चूंकि वे कब्र में नहीं थे, इसलिए मैंने सोचा कि मैं यह जानकर भी सहन कर सकता हूँ कि वे सुदूर पूर्व में हैं।

"क्या श्री रोचेस्टर अब थॉर्नफील्ड हॉल में रह रहे हैं?" मैंने पूछा, हालांकि मुझे पता था कि जवाब क्या होगा, फिर भी मैं यह सीधा सवाल टालना चाहता था कि वह वास्तव में कहाँ हैं।

"नहीं, महोदया—अरे नहीं! वहाँ कोई नहीं रहता। मुझे लगता है आप इस इलाके में अजनबी हैं, वरना आपने पिछली शरद ऋतु में जो हुआ था, उसके बारे में सुना होता —थॉर्नफील्ड हॉल पूरी तरह खंडहर हो चुका है: फसल कटाई के ठीक समय पर वह जलकर राख हो गया। एक भयानक आपदा! इतनी बड़ी मात्रा में कीमती संपत्ति नष्ट हो गई: फर्नीचर का लगभग कुछ भी नहीं बचाया जा सका। आग आधी रात को लगी, और मिलकोट से अग्निशमन दल के आने से पहले ही इमारत आग की लपटों में घिर

गई थी। यह एक भयावह दृश्य था: मैंने इसे स्वयं देखा था।”

“आधी रात को!” मैंने बुदबुदाया। हाँ, थॉर्नफील्ड में यही समय मौत का कारण होता था। “क्या यह पता है कि इसकी शुरुआत कैसे हुई?” मैंने पूछा।

“उन्होंने अनुमान लगाया, महोदया: उन्होंने अनुमान लगाया। वास्तव में, मैं कहूंगा कि यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुका था। शायद आपको जानकारी नहीं है,” उन्होंने अपनी कुर्सी को मेज के थोड़ा और पास खींचते हुए और धीमी आवाज़ में कहा, “कि उस घर में एक महिला—एक—एक पागल महिला को रखा गया था?”

मैंने इसके बारे में कुछ सुना है।

“उसे बहुत ही गुप्त रखा गया था, महोदया: कई वर्षों तक लोगों को उसके अस्तित्व के बारे में भी पूरी तरह से यकीन नहीं था। किसी ने उसे देखा नहीं था: उन्हें केवल अफवाहों से पता था कि कोई हॉल में है; और वह कौन थी या क्या थी, इसका अनुमान लगाना मुश्किल था। लोगों का कहना था कि श्री एडवर्ड उसे विदेश से लाए थे, और कुछ लोगों का मानना था कि वह उनकी प्रेमिका थी। लेकिन एक साल पहले एक अजीब घटना घटी - बहुत ही अजीब घटना।”

अब मुझे अपनी कहानी सुनाने से डर लग रहा था। मैंने उसे मुख्य तथ्य की याद दिलाने का प्रयास किया।

और ये महिला?

“यह महिला, महोदया,” उसने उत्तर दिया, “श्रीमान रोचेस्टर की पत्नी निकली! यह खुलासा बड़े ही विचित्र तरीके से हुआ। हॉल में एक युवती, जो गवर्नेंस का काम करती थी, उससे श्रीमान रोचेस्टर को प्यार हो गया—”

“लेकिन आग,” मैंने सुझाव दिया।

“मैं उसी बात पर आ रही हूँ, महोदया— कि श्री एडवर्ड को किससे प्रेम हो गया था। नौकरों का कहना है कि उन्होंने किसी को इतना प्रेम में डूबा हुआ नहीं देखा जितना वह था: वह लगातार उसके पीछे पड़ा रहता था। नौकर उसे देखते रहते थे— आप जानती हैं, महोदया— और वह उसे हर चीज़ से बढ़कर मानता था: वैसे, उसके सिवा किसी को भी वह इतनी सुंदर नहीं लगती थी। वे कहते हैं कि वह छोटी सी, नन्ही सी थी, लगभग बच्ची जैसी। मैंने उसे खुद कभी नहीं देखा; लेकिन मैंने घर की नौकरानी लीह से उसके बारे में सुना है। लीह उसे काफी पसंद करती थी। श्री रोचेस्टर लगभग चालीस वर्ष के थे, और यह गवर्नेंस बीस वर्ष से भी कम की थी; और आप

जानती हैं, जब इस उम्र के सज्जन किसी लड़की से प्रेम करते हैं, तो वे अक्सर ऐसे हो जाते हैं जैसे उन पर जादू हो गया हो। खैर, वह उससे शादी कर लेता।”

मैंने कहा, “कहानी का यह हिस्सा आप मुझे किसी और समय बताएँगी; लेकिन अभी मेरे पास आग के बारे में सब कुछ जानने की एक खास वजह है। क्या यह संदेह था कि इस पागल महिला, श्रीमती रोचेस्टर का इसमें कोई हाथ था?”

“आपने बिल्कुल सही कहा, महोदया: यह बिल्कुल निश्चित है कि यह सब उसी ने शुरू किया था, और किसी और ने नहीं। उसकी देखभाल के लिए श्रीमती पूल नाम की एक महिला थी - अपने पेशे में सक्षम और बहुत भरोसेमंद, लेकिन एक गलती के लिए - जो कई नर्सों और गृहिणियों में आम होती है - वह अपने पास जिन की एक निजी बोतल रखती थी, और कभी-कभी ज़रूरत से ज़्यादा पी लेती थी। यह माफ करने योग्य है, क्योंकि उसका जीवन कठिन था: लेकिन फिर भी यह खतरनाक था; क्योंकि जब श्रीमती पूल जिन और पानी पीने के बाद गहरी नींद में सो जाती थीं, तो वह पागल महिला, जो किसी चुड़ैल की तरह चालाक थी, अपनी जेब से चाबियाँ निकालती, अपने कमरे से बाहर निकल जाती, और घर में इधर-उधर घूमती, और जो भी शरारत उसके दिमाग में आती, वह करती। कहते हैं कि उसने एक बार अपने पति को बिस्तर पर लगभग जला ही दिया था: लेकिन मुझे इस बारे में पता नहीं है। हालांकि, उस रात, उसने पहले अपने कमरे के बगल वाले कमरे के पर्दों में आग लगाई, और फिर वह नीचे की मंजिल पर गई, और अपना रास्ता बनाया। वह उस कमरे में गई जो गवर्नेंस का था — (ऐसा लग रहा था जैसे उसे सब कुछ पता हो और वह उससे नाराज़ थी) — और उसने वहाँ पलंग जलाया; लेकिन सौभाग्य से उस पर कोई सो नहीं रहा था। गवर्नेंस दो महीने पहले भाग गई थी; और मिस्टर रोचेस्टर ने उसे ऐसे चाहा जैसे वह दुनिया में उनकी सबसे कीमती चीज़ हो, लेकिन उन्हें उससे कोई खबर नहीं मिली; और वह अपनी निराशा में बहुत गुस्से में आ गए: वह वैसे तो उग्र स्वभाव के नहीं थे, लेकिन उसे खोने के बाद वह खतरनाक हो गए। वह अकेले भी रहने लगे। उन्होंने हाउसकीपर मिसेज फेयरफैक्स को दूर रहने वाले उनके दोस्तों के पास भेज दिया; लेकिन उन्होंने यह बड़े ही अच्छे तरीके से किया, क्योंकि उन्होंने उसके लिए जीवन भर के लिए पेंशन की व्यवस्था कर दी थी: और वह इसकी हकदार थी — वह बहुत अच्छी महिला थी। उनकी देखरेख में रहने वाली मिस एडेल को स्कूल भेज दिया गया। उन्होंने सभी संभ्रांत लोगों से जान-पहचान तोड़ ली और हॉल में एक साधु की तरह खुद को

बंद कर लिया।

"क्या! क्या वह इंग्लैंड छोड़कर नहीं गया?"

"इंग्लैंड छोड़ना? बिलकुल नहीं! वह घर की दहलीज पार नहीं करता था, सिवाय रात के, जब वह मैदानों और बगीचे में भूत की तरह घूमता था, मानो उसने अपना होश खो दिया हो—और मेरा मानना है कि उसने सच में अपना होश खो दिया था; क्योंकि उस छोटी सी गवर्नेंस के आने से पहले जितना जोशीला, साहसी और उत्साही सज्जन आपने कभी नहीं देखा होगा, महोदया। वह कुछ लोगों की तरह शराब, ताश या घुड़दौड़ का शौकीन नहीं था, और वह बहुत सुंदर भी नहीं था; लेकिन अगर किसी इंसान में साहस और दृढ़ इच्छाशक्ति होती है, तो वह उसी में थी। मैं उसे बचपन से जानता हूँ, आप देखिए: और जहाँ तक मेरी बात है, मैंने अक्सर चाहा है कि मिस आयर थॉर्नफील्ड हॉल आने से पहले ही समुद्र में डूब गई होती।"

"तो क्या आग लगने के समय श्री रोचेस्टर घर पर थे?"

जी हाँ, बिल्कुल वही था; जब ऊपर-नीचे सब कुछ जल रहा था, तब वह अटारी में गया और नौकरों को उनके बिस्तरों से उठाया और खुद भी नीचे उतारा, फिर अपनी पागल पत्नी को उसकी कोठरी से बाहर निकालने के लिए वापस गया। तभी लोगों ने उसे पुकार कर बताया कि वह छत पर है, जहाँ वह खड़ी थी, बाहें हिला रही थी, प्राचीरों के ऊपर, और इतनी ज़ोर से चिल्ला रही थी कि उसकी आवाज़ एक मील दूर तक सुनाई दे रही थी: मैंने उसे अपनी आँखों से देखा और सुना। वह एक हष्ट-पुष्ट महिला थी, और उसके लंबे काले बाल थे: जब वह खड़ी थी तो हम उसके बालों को आग की लपटों में लहराते हुए देख सकते थे। मैंने और कई अन्य लोगों ने देखा कि श्री रोचेस्टर रोशनदान से छत पर चढ़े; हमने उन्हें 'बर्था!' पुकारते सुना। हमने उन्हें उसके पास जाते देखा; और फिर, मैडम, वह चीखी और उछल पड़ी, और अगले ही पल वह ज़मीन पर चूर-चूर हो गई।

"मृत?"

“मर गई! हाँ, ठीक वैसे ही मर गई जैसे वे पत्थर जिन पर उसका दिमाग और खून बिखरा हुआ था।”

"अच्छे भगवान!"

“आप ऐसा कह ही सकती हैं, महोदया: यह वाकई भयानक था!”

वह सिहर उठा।

“और उसके बाद?” मैंने पूछा।

"जी महोदया, उसके बाद तो घर पूरी तरह जलकर राख हो गया: अब तो बस दीवारों के कुछ टुकड़े ही बचे हैं।"

"क्या किसी और की जान गई?"

"नहीं—शायद अगर ऐसा होता तो बेहतर होता।"

"आपका क्या मतलब है?"

“बेचारे श्री एडवर्ड!” वह अचानक बोले, “मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं इसे देख पाऊंगा! कुछ लोग कहते हैं कि यह उनके लिए उचित फैसला था क्योंकि उन्होंने

अपनी पहली शादी को गुप्त रखा और एक पत्नी के जीवित रहते हुए दूसरी शादी करना चाहा: लेकिन मुझे उन पर तरस आता है।”

“आपने कहा कि वह जीवित है?” मैंने हैरानी से कहा।

“हां, हां: वह जीवित है; लेकिन कई लोगों का मानना है कि उसका मर जाना ही बेहतर होता।”

“क्यों? कैसे?” मेरा खून फिर से जम गया। “वह कहाँ है?” मैंने पूछा। “क्या वह इंग्लैंड में है?”

"अय—अय—वह इंग्लैंड में है; मुझे लगता है कि वह इंग्लैंड से बाहर नहीं निकल सकता—वह अब यहीं का ठेठ खिलाड़ी बन गया है।"

यह कितनी पीड़ादायक थी! और वह व्यक्ति इसे और लंबा खींचने के लिए दृढ़ संकल्पित प्रतीत हो रहा था।

अंत में उसने कहा, "वह बिल्कुल अंधा है। जी हां, श्री एडवर्ड बिल्कुल अंधे हैं।"

मुझे इससे भी बदतर की आशंका थी। मुझे डर था कि वह पागल हो गया है। मैंने हिम्मत जुटाकर उससे पूछा कि इस विपत्ति का कारण क्या था।

“यह सब उनकी अपनी हिम्मत थी, और एक तरह से कहें तो उनकी दयालुता भी, महोदया: जब तक बाकी सब लोग उनसे पहले घर से बाहर नहीं निकल गए, तब तक वे घर से बाहर नहीं निकले। जब श्रीमती रोचेस्टर के किले की दीवारों से कूदने के बाद वे आखिरकार बड़ी सीढ़ियों से नीचे आए, तो एक ज़ोरदार धमाका हुआ - सब कुछ गिर गया। उन्हें मलबे के नीचे से ज़िंदा निकाला गया, लेकिन बुरी तरह घायल थे: एक बीम इस तरह गिरी थी कि उसने उन्हें कुछ हद तक बचा लिया; लेकिन उनकी एक आँख निकल गई थी, और एक हाथ इतना कुचल गया था कि सर्जन श्री कार्टर को उसे तुरंत काटना पड़ा। दूसरी आँख में सूजन आ गई थी: उन्होंने उसकी रोशनी भी खो दी। अब वे सचमुच बेबस हैं - अंधे और अपाहिज।”

“वह कहाँ है? वह अब कहाँ रहता है?”

"फर्नडेन में, जो लगभग तीस मील दूर स्थित उसके खेत पर बना एक हवेलीनुमा घर है: एक बिलकुल सुनसान जगह।"

उसके साथ कौन है?

“बूढ़े जॉन और उनकी पत्नी: उन्हें इनके अलावा कोई और नहीं चाहिए। लोग कहते हैं कि वे पूरी तरह से टूट चुके हैं।”

"क्या आपके पास आने-जाने का कोई साधन है?"

"हमारे पास एक सोफा है, महोदया, एक बहुत ही सुंदर सोफा।"

"इसे तुरंत तैयार करवाइए; और अगर आपका डाकिया मुझे आज अंधेरा होने से पहले फर्नेंडियन तक पहुंचा दे, तो मैं आप दोनों को आपके द्वारा आमतौर पर मांगे जाने वाले किराए का दुगुना भुगतान करूंगा।"

अध्याय 37

फर्न्डीन का हवेलीनुमा घर काफी प्राचीन, मध्यम आकार का और वास्तुकला की दृष्टि से साधारण था, जो घने जंगल में गहराई में स्थित था। मैंने इसके बारे में पहले भी सुना था। श्री रोचेस्टर अक्सर इसके बारे में बात करते थे और कभी-कभी वहां जाते भी थे। उनके पिता ने शिकारगाहों के लिए यह संपत्ति खरीदी थी। वे घर किराए पर देना चाहते थे, लेकिन इसकी अनुपयुक्त और अस्वस्थ जगह के कारण उन्हें कोई किराएदार नहीं मिला। फर्न्डीन तब से खाली और बिना साज-सज्जा के पड़ा रहा, सिवाय उन दो-तीन कमरों के जिन्हें जमींदार के रहने के लिए तैयार किया गया था जब वह शिकार के मौसम में वहां जाते थे।

मैं इस घर पर अंधेरा होने से ठीक पहले पहुँचा, एक ऐसी शाम में जिसमें उदास आसमान, ठंडी हवा और हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। आखिरी एक मील मैंने पैदल तय किया, क्योंकि मैंने गाड़ी और ड्राइवर को वादा किया हुआ दुगुना पारिश्रमिक देकर विदा कर दिया था। हवेली से कुछ ही दूरी पर पहुँचने पर भी उसका कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, क्योंकि उसके चारों ओर घना और अंधेरा जंगल था। ग्रेनाइट के खंभों के बीच लोहे के फाटकों ने मुझे प्रवेश का रास्ता दिखाया, और उनसे गुज़रते ही मैं घने पेड़ों की धुंधली रोशनी में पहुँच गया। घास से ढका एक रास्ता जंगल के गलियारे से नीचे उतर रहा था, जो बर्फीले और गांठदार पेड़ों के बीच से और शाखाओं

वाले मेहराबों के नीचे से जा रहा था। मैं उस रास्ते पर चलता रहा, यह उम्मीद करते हुए कि जल्द ही घर पहुँच जाऊँगा; लेकिन वह रास्ता दूर-दूर तक फैला हुआ था: न तो किसी के रहने का कोई निशान था और न ही ज़मीन का।

मुझे लगा कि मैं गलत दिशा में मुड़ गया हूँ और रास्ता भटक गया हूँ। प्राकृतिक और वनमय गोधूलि का अंधेरा मुझ पर छा गया। मैंने दूसरी सड़क की तलाश में चारों ओर देखा। कोई सड़क नहीं थी: चारों ओर घने तने, स्तंभनुमा पेड़, घनी गर्मियों की पत्तियाँ थीं - कहीं कोई खुला रास्ता नहीं था।

मैं आगे बढ़ा: आखिरकार मेरा रास्ता खुला, पेड़ थोड़े कम हुए; थोड़ी देर में मुझे एक रेलिंग दिखाई दी, फिर घर — धुंधली रोशनी में पेड़ों से मुश्किल से अलग दिख रहा था; उसकी जर्जर दीवारें इतनी नम और हरी थीं। एक कुंडी से बंद दरवाजे से अंदर जाकर मैं एक बंद मैदान के बीच खड़ा हो गया, जहाँ से जंगल अर्धवृत्ताकार रूप में फैला हुआ था। वहाँ न फूल थे, न क्यारियाँ; केवल एक चौड़ा बजरी का रास्ता था जो घास के मैदान को घेरे हुए था, और यह घने जंगल के बीच स्थित था। घर के सामने दो नुकीले छज्जे थे; खिड़कियाँ जालीदार और संकरी थीं: सामने का दरवाजा भी संकरा था, उस तक पहुँचने के लिए एक सीढ़ी चढ़नी पड़ती थी। पूरा दृश्य, जैसा कि रोचेस्टर आर्म्स के मालिक ने कहा था, "बिल्कुल सुनसान जगह" जैसा लग रहा था। यह सप्ताह के किसी भी दिन चर्च की तरह शांत था: जंगल के पत्तों पर बारिश की बूँदों की आवाज़ ही आसपास सुनाई दे रही थी।

मैंने पूछा, "क्या यहाँ जीवन संभव है?"

हाँ, वहाँ किसी न किसी प्रकार का जीवन था; क्योंकि मैंने एक हलचल सुनी - वह संकरा सामने का दरवाजा खुल रहा था, और कोई आकृति खलिहान से बाहर निकलने वाली थी।

द्वार धीरे-धीरे खुला: एक आकृति धुंधलके में बाहर आई और सीढ़ी पर खड़ी हो गई; एक आदमी जिसके सिर पर टोपी नहीं थी: उसने अपना हाथ ऐसे बढ़ाया मानो यह महसूस करना चाहता हो कि बारिश हो रही है या नहीं। शाम ढल रही थी, फिर भी मैंने उसे पहचान लिया - वह मेरे स्वामी, एडवर्ड फेयरफैक्स रोचेस्टर थे, कोई और नहीं।

मैंने अपने कदम रोक लिए, लगभग अपनी सांसें भी रोक लीं, और उसे देखने के लिए खड़ी हो गई—उसका निरीक्षण करने के लिए, मैं खुद अदृश्य थी, और

अफसोस! वह भी अदृश्य था। यह एक अचानक हुई मुलाकात थी, जिसमें दर्द ने मेरी खुशी को बखूबी काबू में रखा था। मुझे अपनी आवाज को विस्मयबोध से रोकने और जल्दबाजी में आगे बढ़ने से रोकने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

उनका शरीर पहले की तरह ही मजबूत और दृढ़ था: उनका कद अभी भी सीधा था, उनके बाल अभी भी काले थे; उनके चेहरे पर कोई बदलाव या उदासी नहीं आई थी: एक साल के भीतर, किसी भी दुख ने उनकी फुर्ती को कम नहीं किया था और न ही उनकी जवानी को बर्बाद किया था। लेकिन उनके चेहरे पर मैंने एक बदलाव देखा: वह हताश और उदास लग रहा था - जो मुझे किसी सताए हुए और जंजीरों में जकड़े जंगली जानवर या पक्षी की याद दिलाता था, जो अपने गहरे दुख में पास जाने से डरता हो। पिंजरे में बंद बाज, जिसकी सोने की अंगूठियों वाली आंखें क्रूरता से धुंसी हो गई हैं, शायद उस अंधे सैमसन जैसा दिखता हो।

और, पाठक, क्या आपको लगता है कि मैं उसकी अंध क्रूरता से डरती थी? - अगर आप ऐसा सोचते हैं, तो आप मुझे बहुत कम जानते हैं। मेरे दुख में एक कोमल आशा छिपी थी कि जल्द ही मैं उस चट्टानी माथे पर और उसके नीचे सख्ती से बंद उन होठों पर एक चुंबन देने का साहस करूँगी: लेकिन अभी नहीं। मैं अभी उससे बात नहीं करूँगी।

वह एक सीढ़ी नीचे उतरा और धीरे-धीरे, टटोलते हुए घास के मैदान की ओर बढ़ा। अब उसका साहसी कदम कहाँ गया? फिर वह रुक गया, मानो उसे पता ही न हो कि किस ओर मुड़े। उसने अपना हाथ उठाया और पलकें खोलीं; खाली निगाहों से, और बड़ी मुश्किल से, आकाश और पेड़ों के समूह की ओर देखा: सब कुछ उसके लिए अंधकारमय था। उसने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया (बायाँ हाथ, जो कटा हुआ था, उसने अपनी छाती में छिपा रखा था); ऐसा लग रहा था जैसे वह स्पर्श से अपने आस-पास की चीजों का अंदाजा लगाना चाहता हो: लेकिन उसे फिर भी खालीपन ही मिला; क्योंकि पेड़ उससे कुछ गज दूर थे। उसने कोशिश छोड़ दी, बाहें मोड़ लीं और बारिश में चुपचाप खड़ा रहा, जो अब उसके खुले सिर पर तेज़ी से गिर रही थी। इसी क्षण जॉन किसी दिशा से उसके पास आया।

“क्या आप मेरा हाथ थाम लेंगे, महोदय?” उसने कहा; “तेज बारिश होने वाली है: क्या आपके लिए अंदर जाना बेहतर नहीं होगा?”

जवाब मिला, "मुझे अकेला छोड़ दो।"

जॉन ने मुझे देखे बिना ही वहां से चला गया। श्री रोचेस्टर ने अब इधर-उधर घूमने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ ही, सब कुछ अनिश्चित था। वह टटोलते हुए वापस घर की ओर बढ़े और अंदर जाकर दरवाजा बंद कर लिया।

अब मैं पास जाकर दरवाजा खटखटाया: जॉन की पत्नी ने मेरे लिए दरवाजा खोला। मैंने कहा, “मैरी, कैसी हो?”

वह ऐसे चौंक उठी जैसे उसने कोई भूत देख लिया हो: मैंने उसे शांत किया। मैंने उससे जल्दी से पूछा, “क्या सच में आप ही हैं, महोदया, इतनी रात को इस सुनसान जगह पर आई हैं?” मैंने उसका हाथ पकड़कर जवाब दिया; और फिर मैं उसके पीछे रसोई में गई, जहाँ जॉन अब एक अच्छी आग के पास बैठा था। मैंने उन्हें संक्षेप में बताया कि थॉर्नफील्ड छोड़ने के बाद से जो कुछ भी हुआ है, वह सब मैंने सुन लिया है, और मैं मिस्टर रोचेस्टर से मिलने आई हूँ। मैंने जॉन से कहा कि वह नीचे टर्नपाइक-हाउस जाए, जहाँ मैंने गाड़ी खड़ी की थी, और मेरा ट्रंक ले आए, जो मैंने वहाँ छोड़ दिया था: और फिर, जब मैं अपनी टोपी और शॉल उतार रही थी, मैंने मैरी से पूछा कि क्या मुझे रात के लिए मैनर हाउस में ठहराया जा सकता है; और यह जानकर कि इस संबंध में व्यवस्था करना, हालांकि मुश्किल है, असंभव नहीं होगा, मैंने उसे बताया कि मैं यहीं रुकूँगी। ठीक उसी समय बैठक की घंटी बजी।

मैंने कहा, “जब तुम अंदर जाओ, तो अपने मालिक से कहना कि एक व्यक्ति उनसे बात करना चाहता है, लेकिन मेरा नाम मत बताना।”

“मुझे नहीं लगता कि वह आपसे मिलेगा,” उसने जवाब दिया; “वह हर किसी को मना कर देता है।”

जब वह लौटी, तो मैंने उससे पूछा कि उसने क्या कहा था। उसने जवाब दिया, "आपको अपना नाम और अपना व्यवसाय भेजना है।" फिर उसने एक गिलास में पानी भरा और उसे मोमबत्तियों के साथ एक ट्रे पर रख दिया।

मैंने पूछा, "क्या उसने इसी के लिए फोन किया था?"

"हां: वह हमेशा अंधेरा होने पर मोमबत्तियां मंगवाता है, हालांकि वह अंधा है।"

मुझे ट्रे दे दो; मैं इसे अंदर ले जाऊँगा।

मैंने उसके हाथ से ट्रे ले ली: उसने मुझे बैठक के दरवाजे की ओर इशारा किया। ट्रे मेरे हाथ में आते ही कांप उठी; गिलास से पानी छलक गया; मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मैरी ने मेरे लिए दरवाजा खोला और मेरे पीछे बंद कर दिया।

यह बैठक कक्ष उदास लग रहा था: अंगीठी में धीमी आंच पर जलती हुई आग की एक छोटी सी लौ को अनदेखा कर दिया गया था; और उस पर झुके हुए, अपना सिर ऊँची, पुराने ज़माने की शेल्फ पर टिकाए, कमरे का अंधा किरायेदार दिखाई दिया। उसका बूढ़ा कुत्ता, पायलट, एक तरफ लेटा हुआ था, रास्ते से हटकर, और कुंडली मारकर बैठा था मानो अनजाने में कुचले जाने के डर से। जब मैं अंदर आया तो पायलट ने अपने कान खड़े कर लिए: फिर वह चीखते और कराहते हुए उछल पड़ा और मेरी ओर दौड़ा: उसने लगभग मेरे हाथों से ट्रे गिरा ही दी थी। मैंने उसे मेज पर रख दिया; फिर उसे थपथपाया और धीरे से कहा, "लेट जाओ!" श्री रोचेस्टर ने अनायास ही मुड़कर देखा कि क्या शोर हो रहा है: लेकिन जब उन्हें कुछ नहीं दिखा, तो वे वापस लौट आए और आह भरी।

“मुझे पानी दो, मैरी,” उसने कहा।

मैं अब आधे भरे हुए गिलास के साथ उसके पास पहुंचा; पायलट भी मेरे पीछे-पीछे आया, वह अभी भी उत्साहित था।

“क्या बात है?” उसने पूछा।

“पायलट, पानी पी लो!” मैंने फिर कहा। उसने पानी को होठों तक पहुँचने से पहले देखा और मानो मेरी बात सुन ली हो: उसने पानी पिया और गिलास नीचे रख दिया। “यह तुम ही हो, मैरी?”

मैंने जवाब दिया, "मैरी रसोई में है।"

उसने झटपट हाथ बढ़ाया, लेकिन मेरी स्थिति न देख पाने के कारण उसने मुझे छुआ नहीं। “यह कौन है? यह कौन है?” उसने पूछा, मानो उन दृष्टिहीन आँखों से देखने की कोशिश कर रहा हो— एक निष्फल और कष्टदायक प्रयास! “मुझे जवाब दो — फिर से बोलो!” उसने ज़ुबान से और ज़ोर से आदेश दिया।

“क्या आप थोड़ा और पानी देंगे, महोदय? गिलास में जितना पानी था उसका आधा मुझसे गिर गया,” मैंने कहा।

“यह कौन है? यह क्या है? कौन बोल रहा है?”

“पायलट मुझे जानता है, और जॉन और मैरी भी जानते हैं कि मैं यहाँ हूँ। मैं तो आज शाम ही आया हूँ,” मैंने जवाब दिया।

“हे भगवान! मुझ पर क्या भ्रम छा गया है? मुझ पर किस मीठे पागलपन का साया पड़ गया है?”

"कोई भ्रम नहीं - कोई पागलपन नहीं: महोदय, आपका दिमाग भ्रम के लिए बहुत मजबूत है, आपका स्वास्थ्य उन्माद के लिए बहुत अच्छा है।"

“और बोलने वाला कहाँ है? क्या यह सिर्फ़ एक आवाज़ है? ओह! मैं देख नहीं सकती, लेकिन मुझे महसूस करना होगा, वरना मेरा दिल रुक जाएगा और मेरा दिमाग फट जाएगा। जो भी हो—जो भी तुम हो—स्पष्ट रूप से स्पर्श करने योग्य हो, वरना मैं जी नहीं सकती!”

उसने टटोलना शुरू किया; मैंने उसके भटकते हाथ को रोक लिया और उसे अपने दोनों हाथों में कैद कर लिया।

“उसकी उंगलियां!” वह चिल्लाया; “उसकी छोटी, नाजुक उंगलियां! अगर ऐसा है तो उसके और भी अंग होने चाहिए।”

उस बलवान हाथ ने मेरी पकड़ से खुद को छुड़ा लिया; मेरी बांह पकड़ ली गई, मेरा कंधा—गर्दन—कमर—मैं उससे लिपट गई और उसके साथ लिपट गई।

“क्या यह जेन है? यह क्या है? यह उसका आकार है—यह उसका कद है—”

“और ये उसकी आवाज़ है,” मैंने आगे कहा। “वो पूरी तरह से यहाँ है: उसका दिल भी। भगवान आपका भला करे, महोदय! मुझे फिर से आपके इतने करीब आकर बहुत खुशी हो रही है।”

“जेन आयर! — जेन आयर,” उसने बस इतना ही कहा।

“मेरे प्रिय स्वामी,” मैंने उत्तर दिया, “मैं जेन आयर हूँ: मैंने आपको ढूंढ लिया है – मैं आपके पास वापस आ गई हूँ।”

“सचमुच? — साक्षात? मेरी जीती-जागती जेन?”

“आप मुझे स्पर्श कीजिए, महोदय, — आप मुझे पकड़िए, और काफी मजबूती से पकड़िए: मैं न तो लाश की तरह ठंडी हूँ, न ही हवा की तरह खाली, हूँ क्या?”

“मेरी प्यारी जान! ये तो यकीनन उसके अंग हैं, और ये उसके चेहरे के हाव-भाव; लेकिन इतने कष्टों के बाद मैं इतना भाग्यशाली नहीं हो सकता। ये तो एक सपना है; ऐसे सपने जो मुझे रात में आते हैं जब मैं उसे फिर से अपने दिल से लगा लेता हूँ, जैसे अभी लगा रहा हूँ; और उसे चूम लेता हूँ, जैसे ऐसे — और महसूस करता हूँ कि वह मुझसे प्यार करती है, और भरोसा करता हूँ कि वह मुझे छोड़कर नहीं जाएगी।”

"जो मैं आज से कभी नहीं करूंगा, महोदय।"

“कभी नहीं होगा, सपने में कहा गया है? लेकिन मैं हमेशा जागती और इसे एक

खोखला मज़ाक पाती; और मैं अकेली और परित्यक्त होती — मेरा जीवन अंधकारमय, अकेला, निराशाजनक — मेरी आत्मा प्यासी और पीने से वंचित — मेरा हृदय भूखा और कभी तृप्त न होने वाला। कोमल, मधुर स्वप्न, अब मेरी बाहों में सिमटी हुई, तुम भी उड़ोगी, जैसे तुम्हारी सभी बहनें तुमसे पहले उड़ चुकी हैं: लेकिन जाने से पहले मुझे चूम लेना — मुझे गले लगा लेना, जेन।"

"वहाँ, महोदय—और वहाँ!"

मैंने अपने होंठ उसकी कभी चमकती, अब बेजान आँखों से सटा दिए— मैंने उसके माथे से बाल हटाए और उन्हें भी चूमा। वह अचानक जागृत सा हो उठा: इस सब की वास्तविकता का अहसास उसे जकड़ लिया।

"क्या तुम हो, जेन? तुम मेरे पास वापस आ गई हो?"

"मैं हूँ।"

"और क्या तुम किसी नदी के किनारे किसी खाई में मृत नहीं पड़े हो? और क्या तुम अजनबियों के बीच एक दुखी और बेसहारा व्यक्ति नहीं हो?"

नहीं, महोदय! मैं अब एक स्वतंत्र महिला हूँ।

"स्वतंत्र! जेन, तुम्हारा क्या मतलब है?"

"मदीरा में मेरे चाचा का निधन हो गया है, और वह मेरे लिए पांच हजार पाउंड छोड़ गए हैं।"

"आह! ये तो व्यावहारिक है—ये तो सच है!" वो चिल्लाया: "मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। और उसकी आवाज़ भी, कितनी जीवंत और तीखी है, साथ ही कोमल भी: ये मेरे मुरझाए दिल को खुश कर देती है; इसमें जान डाल देती है। — क्या, जेनेट! क्या तुम एक आत्मनिर्भर महिला हो? एक अमीर महिला?"

"अगर आप मुझे अपने साथ रहने नहीं देंगे, तो मैं आपके दरवाजे के पास ही अपना एक घर बना लूंगा, और जब भी आपको शाम को किसी के साथ की जरूरत हो, आप आकर मेरे बैठक कक्ष में बैठ सकते हैं।"

"लेकिन जेन, चूंकि तुम अमीर हो, तो अब तुम्हारे पास निस्संदेह ऐसे दोस्त होंगे जो तुम्हारी देखभाल करेंगे और तुम्हें मुझ जैसे अंधे लंगड़े के पीछे भागने नहीं देंगे?"

मैंने आपको बताया था, महोदय, मैं स्वतंत्र होने के साथ-साथ धनी भी हूं: मैं अपनी खुद की मालकिन हूं।

और तुम मेरे साथ रहोगे?

“ज़रूर—जब तक आपको कोई आपत्ति न हो। मैं आपकी पड़ोसी, आपकी नर्स, आपकी गृहणी बनूँगी। मुझे आप अकेले लग रहे हैं: मैं आपकी साथी बनूँगी—आपको पढ़कर सुनाऊँगी, आपके साथ चलूँगी, आपके साथ बैठूँगी, आपकी सेवा करूँगी, आपकी आँखें और हाथ बनूँगी। मेरे प्रिय स्वामी, इतना उदास मत दिखिए; जब तक मैं जीवित हूँ, आप अकेले नहीं रह जाएँगे।”

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया: वे गंभीर और खोए हुए से लग रहे थे; उन्होंने आह भरी; बोलने के लिए उन्होंने अपने होंठ आधे खोले, फिर बंद कर लिए। मुझे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई। शायद मैंने जल्दबाजी में रूढ़ियों को पार कर लिया था; और संत जॉन की तरह, उन्हें मेरी इस बेपरवाही में कुछ अनुचित लगा। मैंने तो यह सोचकर ही प्रस्ताव रखा था कि वे मुझसे शादी करना चाहते हैं और मुझसे पूछेंगे: यह उम्मीद, भले ही मैंने इसे व्यक्त नहीं किया था, फिर भी पक्की थी, और इसने मुझे हिम्मत दी थी कि वे मुझे तुरंत अपना बना लेंगे। लेकिन उनकी तरफ से ऐसा कोई संकेत नहीं मिला और उनका चेहरा और भी उदास हो गया, तब मुझे अचानक याद आया कि शायद मैं पूरी तरह गलत थी, और अनजाने में ही मूर्खता कर रही थी; और मैंने धीरे से खुद को उनकी बाहों से दूर करना शुरू किया - लेकिन उन्होंने उत्सुकता से मुझे और करीब खींच लिया।

“नहीं—नहीं—जेन; तुम्हें नहीं जाना चाहिए। नहीं—मैंने तुम्हें छुआ है, तुम्हारी आवाज़ सुनी है, तुम्हारी उपस्थिति का सुकून महसूस किया है—तुम्हारे दिलासे की मिठास को महसूस किया है: मैं इन खुशियों को नहीं छोड़ सकता। मुझमें बहुत कम शक्ति बची है—मुझे तुम्हें पाना ही है। दुनिया चाहे हँसे—मुझे मूर्ख, स्वार्थी कहे—पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरी आत्मा तुम्हें चाहती है: या तो वह संतुष्ट होगी, या अपने शरीर पर घातक प्रतिशोध लेगी।”

"जी हाँ, महोदय, मैं आपके साथ ही रहूँगा: मैंने ऐसा कहा है।"

“हाँ—पर मेरे साथ रहकर तुम एक बात समझती हो; और मैं दूसरी। शायद तुम मेरी सेवा में तत्पर हो जाओ—एक दयालु छोटी नर्स की तरह मेरी सेवा करो (क्योंकि तुम्हारा हृदय स्नेहपूर्ण और आत्मा उदार है, जो तुम्हें उन लोगों के लिए त्याग करने को प्रेरित करती है जिन पर तुम्हें दया आती है), और यह मेरे लिए पर्याप्त होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। मुझे लगता है कि अब मेरे मन में तुम्हारे लिए केवल पिता तुल्य भावनाएँ ही होनी चाहिए: क्या तुम भी ऐसा सोचती हो? बताओ।”

"मैं वही सोचूंगी जो आपको ठीक लगे, महोदय: अगर आपको बेहतर लगे तो मैं सिर्फ आपकी नर्स बनकर ही संतुष्ट हूं।"

"लेकिन तुम हमेशा मेरी नर्स नहीं रह सकती, जेनेट: तुम अभी जवान हो - तुम्हें एक दिन शादी करनी ही होगी।"

मुझे शादी करने की परवाह नहीं है।

"तुम्हें परवाह करनी चाहिए, जेनेट: अगर मैं पहले जैसा होता, तो मैं तुम्हें परवाह करवाने की कोशिश करता — लेकिन — तुम तो अंधी हो!"

वह एक बार फिर निराशा में डूब गया। इसके विपरीत, मैं अधिक प्रसन्न हो गया और मुझे नई हिम्मत मिली: इन अंतिम शब्दों से मुझे समस्या की जड़ समझ में आ गई; और चूंकि समस्या मुझसे संबंधित नहीं थी, इसलिए मुझे अपनी पिछली झिझक से पूरी तरह राहत मिली। मैंने बातचीत का लहजा फिर से जीवंत कर दिया।

मैंने उसके घने और लंबे, बिना कटे बालों को हटाते हुए कहा, “अब समय आ गया है कि कोई तुम्हें फिर से इंसान बनाए; क्योंकि मुझे लगता है कि तुम शेर या उसी तरह के किसी प्राणी में बदल रहे हो। तुम्हारे अंदर नबूकदनेज़र की झलक साफ दिखती है: तुम्हारे बाल चील के पंखों जैसे लगते हैं; तुम्हारे नाखून पक्षियों के पंजों जैसे बढ़े हैं या नहीं, यह मैंने अभी तक नहीं देखा है।”

“इस हाथ पर न तो हथेली है और न ही नाखून,” उसने अपनी छाती से कटे हुए हाथ को निकालते हुए और मुझे दिखाते हुए कहा। “यह महज़ एक ठूंठ है – कितना भयानक दृश्य है! क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता, जेन?”

"इसे देखकर दुख होता है; और तुम्हारी आँखों को देखकर भी दुख होता है—और तुम्हारे माथे पर आग का निशान देखकर भी: और सबसे बुरी बात यह है कि इन सब के बावजूद, कोई तुम्हें बहुत ज्यादा प्यार करने और तुम्हें बहुत ज्यादा महत्व देने के खतरे में है।"

"मुझे लगा था कि जब तुम मेरी बांह और मेरे घावों से भरे चेहरे को देखोगी, जेन, तो तुम्हें घिन आएगी।"

“क्या तुमने किया? मुझे ऐसा मत बताओ—कहीं मैं तुम्हारे फैसले पर सवाल न उठा दूं। अब मुझे एक पल के लिए जाने दो, ताकि मैं अच्छी आग जला सकूं और चूल्हा साफ कर सकूं। क्या तुम बता सकते हो कि अच्छी आग कैसी होती है?”

“हां; दाहिनी आंख से मुझे एक चमक दिखाई देती है—एक लालिमा भरी धुंध।”

"और क्या आपको मोमबत्तियां दिख रही हैं?"

"बहुत धुंधले ढंग से - प्रत्येक एक चमकदार बादल है।"

क्या तुम मुझे देख सकते हो?

नहीं, मेरी परी: लेकिन मैं तुम्हें सुनकर और महसूस करके बहुत आभारी हूँ।

आप रात का खाना कब खाते हैं?

मैं कभी रात का खाना नहीं खाता।

"लेकिन आज रात तुम्हें कुछ मिलेगा। मुझे भूख लगी है: मुझे लगता है तुम्हें भी भूख लगी होगी, बस तुम भूल गए हो।"

मैरी को बुलाकर मैंने जल्द ही कमरे को अधिक खुशनुमा बना दिया: मैंने उनके लिए भी एक बढ़िया भोजन तैयार किया। मेरा मन प्रसन्न था, और मैंने भोजन के दौरान और उसके बाद भी काफी देर तक उनसे बड़ी सहजता से बातें कीं। उनके साथ बातचीत में न तो कोई दबाव था, न ही खुशी और उत्साह को दबाने की कोई कोशिश; क्योंकि उनके साथ मैं पूरी तरह सहज थी, क्योंकि मुझे पता था कि मैं उनके अनुकूल हूँ; मेरी हर बात या हरकत उन्हें सांत्वना देती या उनमें नई ऊर्जा भर देती थी। कितना सुखद एहसास! इसने मेरे पूरे स्वभाव को जीवंत कर दिया: उनकी उपस्थिति में मैं पूरी तरह से जीती थी; और वे मेरी उपस्थिति में। दृष्टिहीन होने के बावजूद, उनके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी, उनके माथे पर खुशी की चमक आ गई: उनके चेहरे के भाव कोमल और गर्मजोशी से भर गए।

रात के खाने के बाद, वह मुझसे कई सवाल पूछने लगा, कि मैं कहाँ थी, क्या कर रही थी, मैंने उसे कैसे पहचाना; लेकिन मैंने उसे बहुत संक्षिप्त जवाब ही दिए: उस रात विस्तार से बताने का समय नहीं था। इसके अलावा, मैं उसके दिल में कोई गहरी भावनाएँ नहीं जगाना चाहती थी—उसके दिल में कोई नया झनझनाहट नहीं पैदा करना चाहती थी: मेरा एकमात्र उद्देश्य उसे खुश करना था। जैसा कि मैंने कहा, वह खुश तो हुआ, लेकिन रुक-रुक कर। अगर बातचीत में एक पल की चुप्पी छा जाती, तो वह बेचैन हो जाता, मुझे छूता, और फिर कहता, "जेन।"

“जेन, तुम पूरी तरह से इंसान हो? क्या तुम्हें इस बात का पूरा यकीन है?”

"मैं पूरी ईमानदारी से ऐसा मानता हूं, श्री रोचेस्टर।"

“लेकिन इस अंधेरी और उदास शाम में, तुम अचानक मेरे अकेले चूल्हे पर कैसे आ गईं? मैंने एक मजदूर से पानी का गिलास लेने के लिए हाथ बढ़ाया, और वह मुझे तुमने दिया: मैंने एक सवाल पूछा, जॉन की पत्नी से जवाब की उम्मीद करते हुए, और तुम्हारी आवाज़ मेरे कानों में गूंजी।”

क्योंकि मैं मैरी की जगह थाली लेकर अंदर आई थी।

“और जो एक पल मैं तुम्हारे साथ बिता रहा हूँ, उसमें भी एक जादू है। कौन बता सकता है कि पिछले कुछ महीनों से मैं कितना अंधकारमय, उदास और निराशा से भरा जीवन जी रहा हूँ? कुछ नहीं कर रहा, कुछ उम्मीद नहीं कर रहा; रात दिन में घुलमिल गई; बस ठंड का एहसास होता था जब आग बुझ जाती थी, भूख लगती थी जब खाना भूल जाता था: और फिर एक निरंतर उदासी, और कभी-कभी तो जेन को फिर से देखने की तीव्र इच्छा। हाँ: मैं उसके वापस आने के लिए तड़प रहा था, अपनी खोई हुई दृष्टि के वापस आने से कहीं ज़्यादा। यह कैसे संभव है कि जेन मेरे साथ है, और कहती है कि वह मुझसे प्यार करती है? क्या वह उतनी ही अचानक नहीं चली

जाएगी जितनी अचानक आई थी? मुझे डर है कि कल मैं उसे फिर कभी नहीं पाऊँगा।”

मुझे पूरा यकीन था कि उनकी अशांत सोच से हटकर दिया गया एक सामान्य, व्यावहारिक जवाब ही इस मनोदशा में उनके लिए सबसे अच्छा और सबसे आश्वस्त करने वाला था। मैंने उनकी भौहों पर उंगली फेरते हुए कहा कि वे झुलसी हुई लग रही हैं और मैं कुछ ऐसा लगाऊँगी जिससे वे पहले की तरह चौड़ी और काली हो जाएँगी।

“हे दयालु आत्मा, मुझ पर किसी भी प्रकार से कृपा करने का क्या लाभ है, जब किसी दुर्भाग्यपूर्ण क्षण में तुम मुझे फिर से त्याग दोगे – एक परछाई की तरह गुजर जाओगे, मुझे पता नहीं कहाँ और कैसे, और बाद में मेरे लिए अप्राप्य रहोगे?”

"क्या आपके पास जेब में रखने वाली कंघी है, महोदय?"

“किसलिए, जेन?”

"बस इस उलझे हुए काले बालों को संवारने के लिए। जब मैं तुम्हें करीब से देखती हूँ, तो तुम मुझे काफी डरावने लगते हो: तुम मुझे परी कहते हो, लेकिन मुझे यकीन है कि तुम तो किसी बौने जैसे हो।"

"क्या मैं बदसूरत हूँ, जेन?"

“जी हां, महोदय: आप तो हमेशा से ही ऐसे थे, जानते हैं ना।”

“हम्फ! तुम जहाँ कहीं भी गए हो, तुम्हारे भीतर से दुष्टता दूर नहीं हुई है।”

“फिर भी मैं अच्छे लोगों के साथ रहा हूँ; तुमसे कहीं बेहतर: सौ गुना बेहतर लोग; ऐसे विचार और दृष्टिकोण रखने वाले लोग जो तुमने अपने जीवन में कभी नहीं अपनाए: कहीं अधिक परिष्कृत और उदात्त।”

तुम किसके साथ थे?

"अगर तुम इस तरह से मुड़ोगे तो मैं तुम्हारे सिर के बाल नोच लूंगा; और तब मुझे लगता है कि तुम मेरी वास्तविकता के बारे में संदेह करना बंद कर दोगे।"

"जेन, तुम किसके साथ थीं?"

“आज रात आप मुझसे यह नहीं जान पाएंगे, महोदय; आपको कल तक इंतजार करना होगा; अपनी कहानी अधूरी छोड़ना, आप जानते हैं, एक तरह की गारंटी होगी कि मैं नाश्ते के समय आपके पास आकर उसे पूरा करूँगी। वैसे, मुझे यह ध्यान रखना होगा कि मैं आपके घर केवल एक गिलास पानी लेकर न उठूँ: मुझे कम से कम एक अंडा तो लाना ही होगा, और तला हुआ हैम तो होगा ही।”

“तुम उपहास करने वाले रूपांतरित प्राणी हो – परी से जन्मे और मनुष्य द्वारा पाले-पोसे गए! तुमने मुझे ऐसा महसूस कराया है जैसा मैंने पिछले बारह महीनों में कभी महसूस नहीं किया। अगर शाऊल को तुम उसके दाऊद के रूप में मिल जाते, तो दुष्ट आत्मा वीणा की सहायता के बिना ही निकल जाती।”

लीजिए, महोदय, आप तैयार हो गए हैं। अब मैं आपसे विदा लेता हूँ: मैं पिछले तीन दिनों से यात्रा कर रहा हूँ, और मुझे लगता है कि मैं थक गया हूँ। शुभ रात्रि।

"जेन, बस एक शब्द: क्या जिस घर में तुम गई थी, वहां सिर्फ महिलाएं ही थीं?"

मैं हँसी और भाग निकली, दौड़ते हुए भी मैं ऊपर जा रही थी और हँसती ही जा रही थी। "वाह, बढ़िया विचार है!" मैंने मन ही मन खुशी से सोचा। "लगता है, अब मेरे पास उसे कुछ समय के लिए उसकी उदासी से बाहर निकालने का एक तरीका मिल गया है।"

अगली सुबह तड़के ही मैंने उसे जागते और चहलकदमी करते हुए सुना, वह एक कमरे से दूसरे कमरे में घूम रहा था। मैरी के नीचे आते ही मैंने यह सवाल सुना: “क्या मिस आयर यहाँ हैं?” फिर: “आपने उन्हें किस कमरे में रखा था? क्या वह सूखा था? क्या वह जाग गई हैं? जाकर पूछिए कि क्या उन्हें कुछ चाहिए; और वह कब नीचे आएंगी।”

जैसे ही मुझे नाश्ते की उम्मीद दिखी, मैं नीचे आ गया। कमरे में बहुत धीरे से दाखिल होते ही, मेरी मौजूदगी का पता चलने से पहले ही मैंने उन्हें देख लिया। उस जोशीले व्यक्तित्व को शारीरिक कमजोरी के आगे हारा हुआ देखना वाकई दुखद था। वे अपनी कुर्सी पर बैठे थे—स्थिर, लेकिन आराम नहीं कर रहे थे: स्पष्ट रूप से आशा से भरे हुए; उनके मजबूत चेहरे पर अब आदत बन चुकी उदासी की लकीरें साफ दिख रही थीं। उनका चेहरा बुझे हुए दीपक की याद दिला रहा था, जो दोबारा जलने का इंतज़ार कर रहा हो—और अफसोस! अब उनके चेहरे पर जीवंतता की चमक नहीं थी: वे इसके लिए किसी और पर निर्भर थे! मैं खुश और बेफिक्र रहना चाहता था, लेकिन उस मजबूत इंसान की बेबसी ने मेरे दिल को झकझोर दिया: फिर भी मैंने पूरी जीवंतता के साथ उनसे बात की।

“महोदय, आज सुबह बहुत सुहाना और धूपदार मौसम है,” मैंने कहा। “बारिश रुक गई है और उसके बाद हल्की धूप खिली है: आप जल्द ही सैर पर जा सकते हैं।”

मैंने उसके अंदर की चमक को जगा दिया था: उसके चेहरे पर एक अलग ही आभा

थी।

“ओह, तुम सचमुच यहीं हो, मेरी चिड़िया! मेरे पास आओ। तुम गई नहीं हो, गायब तो नहीं हुई? मैंने तुम्हारे जैसी एक चिड़िया को एक घंटा पहले जंगल के ऊपर ऊँची आवाज़ में गाते हुए सुना था: लेकिन उसका गाना मेरे लिए उतना मधुर नहीं था, जितना उगते सूरज की किरणें होती हैं। धरती का सारा मधुर संगीत मेरी जेन की ज़बान में समाया हुआ है, जो मेरे कानों तक पहुँचती है (मुझे खुशी है कि उसकी ज़बान स्वभाव से शांत नहीं है): मुझे जो भी धूप महसूस होती है, वह सब उसकी मौजूदगी में है।”

उसकी इस निर्भरता की स्वीकारोक्ति सुनकर मेरी आँखों में आँसू आ गए; मानो किसी शाही चील को, जो एक टहनी से जंजीरों में जकड़ी हो, किसी चिड़िया से अपना भोजन लाने की भीख माँगनी पड़े। लेकिन मैं आँसू नहीं बहाना चाहती थी: मैंने आँसू पोंछे और नाश्ता बनाने में जुट गई।

सुबह का अधिकांश समय खुले आसमान के नीचे बीता। मैं उसे गीले और जंगली जंगल से निकालकर कुछ हरे-भरे खेतों में ले गई: मैंने उसे बताया कि वे खेत कितने हरे-भरे थे; फूल और झाड़ियाँ कितनी ताज़गी से खिल उठी थीं; आकाश कितना चमकीला नीला था। मैंने उसके लिए एक छिपी हुई और सुंदर जगह पर, एक सूखे पेड़ के ठूंठ पर बैठने की जगह ढूंढी; और जब वह बैठ गया, तो मैंने उसे मुझे अपनी गोद में बिठाने से मना नहीं किया। भला मैं मना क्यों करती, जब हम दोनों ही अलग रहने की बजाय पास रहकर ज़्यादा खुश थे? पायलट हमारे बगल में लेटा था: सब शांत था। अचानक उसने मुझे बाहों में भरते हुए बोलना शुरू किया—

“क्रूर, निर्दयी भगोड़ी! ओह, जेन, मुझे कैसा लगा जब मुझे पता चला कि तुम थॉर्नफील्ड से भाग गई हो, और जब मैं तुम्हें कहीं नहीं ढूंढ पाई; और, तुम्हारे कमरे की तलाशी लेने के बाद, मुझे पता चला कि तुमने न तो पैसे लिए हैं, न ही कोई ऐसी चीज़ जो उसके बदले में काम आ सके! मोतियों का हार जो मैंने तुम्हें दिया था, अपनी छोटी सी पेटी में वैसे ही पड़ा था; तुम्हारे संदूक वैसे ही बंधे और बंद थे जैसे शादी के जुलूस के लिए तैयार किए गए थे। मेरी प्यारी क्या कर सकती थी, मैंने पूछा, बेसहारा और कंगाल रह गई? और उसने क्या किया? मुझे अभी बताओ।”

इस प्रेरणा से मैंने पिछले एक साल के अपने अनुभव का वृत्तांत शुरू किया। मैंने तीन दिनों के भटकने और भुखमरी से संबंधित बातों को काफी हद तक नरम कर

दिया, क्योंकि उसे सब कुछ बता देना अनावश्यक पीड़ा पहुँचाना होता: मैंने जो थोड़ा-बहुत कहा, उसने उसके विश्वासयोग्य हृदय को मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक गहरा घाव दिया।

मुझे उसे इस हालत में नहीं छोड़ना चाहिए था, उसने कहा, मेरे पास आगे बढ़ने का कोई साधन नहीं था। मुझे उसे अपने इरादे बता देने चाहिए थे। मुझे उस पर भरोसा करना चाहिए था: वह मुझे कभी भी अपनी रखैल बनने के लिए मजबूर नहीं करता। निराशा में वह भले ही हिंसक लग रहा था, लेकिन सच में वह मुझसे इतना गहरा और कोमल प्रेम करता था कि वह मुझ पर अत्याचार नहीं कर सकता था: वह मुझे अपनी आधी संपत्ति दे देता, बदले में एक चुंबन तक की मांग किए बिना, बजाय इसके कि मैं बेसहारा होकर इस विशाल दुनिया में भटकती रहूँ। उसे पूरा यकीन था कि मैंने उससे कहीं अधिक सहा था जितना मैंने उसे बताया था।

“खैर, मेरी जो भी परेशानियाँ थीं, वे बहुत कम समय की थीं,” मैंने उत्तर दिया; और फिर मैंने उन्हें बताया कि मूर हाउस में मेरा स्वागत कैसे हुआ; मुझे शिक्षिका का पद कैसे मिला, इत्यादि। भाग्य का उदय, मेरे रिश्तेदारों का पता चलना, ये सब क्रम से आगे बढ़ा। बेशक, मेरी कहानी के दौरान सेंट जॉन रिवर्स का नाम बार-बार आया। जब मैंने कहानी समाप्त की, तो तुरंत उस नाम का ज़िक्र किया गया।

तो क्या यह सेंट जॉन आपका चचेरा भाई है?

"हाँ।"

“तुमने उसके बारे में अक्सर बात की है: क्या तुम उसे पसंद करते हो?”

“वह बहुत ही अच्छे इंसान थे, महोदय; मैं उन्हें पसंद किए बिना नहीं रह सका।”

“एक अच्छा आदमी। क्या इसका मतलब पचास साल का एक सम्मानित, सुव्यवस्थित व्यक्ति है? या इसका क्या मतलब है?”

"संत जॉन की उम्र केवल उनतीस वर्ष थी, महोदय।"

“फ्रांसीसी लोग कहते हैं, ‘ज्यून एनकोर’। क्या वह कम कद का, शांत और साधारण व्यक्ति है? एक ऐसा व्यक्ति जिसकी अच्छाई उसके सद्गुणों में निपुण होने से अधिक उसके दोषमुक्त होने में निहित है।”

“वह अथक रूप से सक्रिय हैं। महान और उत्कृष्ट कार्यों को करने के लिए ही उनका जीवन समर्पित है।”

लेकिन उसका दिमाग? वह शायद काफी कमजोर है? उसकी नीयत तो अच्छी है,

लेकिन आप उसकी बातें सुनकर कंधे उचका देते हैं?

“वह कम बोलते हैं, महोदय: जो कुछ भी कहते हैं, वह हमेशा सटीक होता है। उनका दिमाग उत्कृष्ट है, मुझे लगता है कि वे आसानी से प्रभावित नहीं होते, बल्कि बहुत सक्रिय हैं।”

तो क्या वह एक सक्षम व्यक्ति है?

"वास्तव में सक्षम।"

“एक पूर्ण शिक्षित व्यक्ति?”

“सेंट जॉन एक कुशल और गहन विद्वान हैं।”

"मुझे लगता है, आपने कहा था कि उनके तौर-तरीके आपको पसंद नहीं हैं? - अभिमानी और रूढ़िवादी?"

मैंने उनके शिष्टाचार का कभी जिक्र नहीं किया; लेकिन, अगर मेरी पसंद बहुत खराब न हो, तो वे इससे मेल खाते होंगे; वे परिष्कृत, शांत और सज्जनतापूर्ण हैं।

“उसकी शक्ल-सूरत, — मुझे याद नहीं आ रहा कि आपने उसकी शक्ल-सूरत का क्या वर्णन किया था; — एक तरह का असभ्य पादरी, अपने सफेद गले के कपड़े से आधा गला घोंटा हुआ, और मोटे तले वाले ऊँची एड़ी के जूतों पर अकड़ा हुआ, है ना?”

“सेंट जॉन अच्छे कपड़े पहनते हैं। वे एक सुंदर व्यक्ति हैं: लंबे, गोरे, नीली आंखों वाले और यूनानी चेहरे वाले।”

(मन ही मन) “धिक्कार है उसे!” — (मुझसे) “क्या तुम्हें वो पसंद था, जेन?”

"जी हां, मिस्टर रोचेस्टर, मुझे वह पसंद आया था: लेकिन आपने मुझसे यह सवाल पहले भी पूछा था।"

मुझे अपने वार्ताकार का इरादा स्पष्ट रूप से समझ आ गया था। ईर्ष्या ने उसे जकड़ लिया था: ईर्ष्या ने उसे चोट पहुंचाई थी; लेकिन यह चोट लाभकारी थी: इसने उसे उदासी के कष्टदायक आक्रमण से कुछ राहत दी। इसलिए मैं तुरंत उस सांप को वश में नहीं करना चाहता था।

"शायद आप अब और मेरी गोद में नहीं बैठना चाहेंगी, मिस आयर?" यह अगली कुछ हद तक अप्रत्याशित टिप्पणी थी।

"क्यों नहीं, श्रीमान रोचेस्टर?"

“आपने जो चित्र अभी बनाया है, वह कुछ ज़्यादा ही विरोधाभास को दर्शाता है।

आपके शब्दों ने अपोलो का बहुत ही सुंदर चित्रण किया है: वह आपकी कल्पना में मौजूद है, लंबा, गोरा, नीली आँखों वाला और यूनानी चेहरे वाला। आपकी नज़र एक वल्कन पर टिकी है, एक असली लोहार, भूरा, चौड़े कंधों वाला: और साथ ही अंधा और लंगड़ा भी।”

मैंने इसके बारे में पहले कभी नहीं सोचा था; लेकिन आप वाकई वल्कन से काफी मिलते-जुलते हैं, महोदय।

“ठीक है, आप जा सकती हैं, महोदया: लेकिन जाने से पहले” (और उन्होंने मुझे पहले से कहीं अधिक मजबूती से पकड़ रखा था), “कृपया मेरे एक-दो सवालों के जवाब दे दीजिए।” वह रुक गए।

“क्या सवाल हैं, श्रीमान रोचेस्टर?”

इसके बाद जिरह हुई।

"क्या सेंट जॉन ने आपको मॉर्टन की स्कूल टीचर तब बनाया था जब उन्हें यह पता भी नहीं था कि आप उनकी चचेरी बहन हैं?"

"हाँ।"

“क्या आप उसे अक्सर देखते थे? क्या वह कभी-कभी स्कूल आता था?”

"दैनिक।"

“क्या वह तुम्हारी योजनाओं को मंज़ूरी देगा, जेन? मुझे पता है कि वे चतुराई भरी होंगी, क्योंकि तुम एक प्रतिभाशाली प्राणी हो!”

"उन्होंने उन्हें मंजूरी दे दी थी - हाँ।"

“वह आपमें कई ऐसी चीजें खोजेगा जिनकी उसने कभी उम्मीद नहीं की होगी? आपकी कुछ उपलब्धियां तो असाधारण हैं।”

मुझे इसके बारे में जानकारी नहीं है।

आपने बताया था कि स्कूल के पास आपकी एक छोटी सी कुटिया थी: क्या वह कभी आपसे मिलने वहां आया था?

"जब तब?"

"शाम के समय?"

एक या दो बार।

एक विराम।

"जब आपके चचेरे भाई-बहन होने का पता चला, उसके बाद आप कितने समय

तक उसके और उसकी बहनों के साथ रहे?"

"पांच महीने।"

क्या रिवर्स अपने परिवार की महिलाओं के साथ काफी समय बिताते थे?

"हां; पिछला कमरा उनका और हमारा दोनों का अध्ययन कक्ष था: वह खिड़की के पास बैठते थे, और हम मेज के पास।"

"क्या उसने खूब पढ़ाई की?"

"अच्छा सौदा।"

"क्या?"

"Hindostanee."

और इस बीच आपने क्या किया?

"मैंने पहले जर्मन भाषा सीखी।"

"क्या उन्होंने तुम्हें सिखाया?"

उन्हें जर्मन भाषा समझ नहीं आती थी।

"क्या उन्होंने तुम्हें कुछ नहीं सिखाया?"

"एक छोटा-सा हिंदुस्तानी।"

"क्या नदियों ने तुम्हें हिंदुस्तानी सिखाई?"

"जी श्रीमान।"

"और उसकी बहनें भी?"

"नहीं।"

"केवल आप?"

"केवल मैं।"

क्या आपने सीखने के लिए कहा था?

"नहीं।"

"क्या वह आपको सिखाना चाहता था?"

"हाँ।"

एक और विराम।

"उसने ऐसा क्यों चाहा? हिंदुस्तानी से तुम्हें क्या फायदा हो सकता है?"

"वह चाहता था कि मैं उसके साथ भारत जाऊं।"

"अरे! अब मुझे असली मुद्दा समझ में आया। वह चाहता था कि तुम उससे शादी

करो?”

“उसने मुझसे शादी करने के लिए कहा।”

"यह एक मनगढ़ंत कहानी है - मुझे परेशान करने के लिए गढ़ी गई एक गुस्ताखी भरी कहानी।"

"माफ़ कीजिएगा, लेकिन यह अक्षरशः सच है: उसने मुझसे एक से अधिक बार पूछा, और अपनी बात मनवाने में वह उतना ही अड़ियल था जितना कोई हो सकता है।"

"मिस आयर, मैं फिर से दोहराता हूँ, आप मुझे छोड़कर जा सकती हैं। मुझे कितनी बार एक ही बात कहनी पड़ेगी? जब मैंने आपको जाने की चेतावनी दे दी है, तो आप हठपूर्वक मेरी गोद में क्यों बैठी हैं?"

क्योंकि मुझे वहां आराम महसूस होता है।

“नहीं, जेन, तुम वहाँ ठीक नहीं रहोगी, क्योंकि तुम्हारा दिल मेरे साथ नहीं है: वह मेरे चचेरे भाई, सेंट जॉन के साथ है। ओह, इस पल तक तो मैं यही सोचती थी कि मेरी प्यारी जेन पूरी तरह मेरी है! मुझे विश्वास था कि जब वह मुझे छोड़कर गई तब भी वह मुझसे प्यार करती थी: वह कड़वाहट में मिठास का एक अंश था। चाहे कितना भी समय बीत गया हो, चाहे मैंने जुदाई पर कितने ही गर्म आँसू बहाए हों, मैंने कभी नहीं सोचा था कि जब मैं उसके लिए शोक मना रही थी, तब वह किसी और से प्यार कर रही थी! लेकिन शोक मनाने का कोई फायदा नहीं। जेन, मुझे छोड़ दो: जाओ और रिवर्स से शादी कर लो।”

"तो मुझे झटक दीजिए, महोदय, मुझे दूर धकेल दीजिए, क्योंकि मैं अपनी मर्जी से आपको छोड़कर नहीं जाऊंगी।"

“जेन, मुझे तुम्हारी आवाज़ का लहजा हमेशा से पसंद है: यह अब भी उम्मीद जगाता है, यह बहुत सच्चा लगता है। जब मैं इसे सुनता हूँ, तो यह मुझे एक साल पीछे ले जाता है। मैं भूल जाता हूँ कि तुमने एक नया रिश्ता बना लिया है। लेकिन मैं मूर्ख नहीं हूँ - जाओ -”

“मुझे कहाँ जाना चाहिए, महोदय?”

"अपनी मनमर्जी से—अपने चुने हुए पति के साथ।"

"कोण है वोह?"

"आप जानते हैं - यह सेंट जॉन रिवर्स है।"

"वह मेरे पति नहीं हैं, और न कभी होंगे। वह मुझसे प्यार नहीं करते: मैं उनसे प्यार नहीं करती। वह (जितना प्यार कर सकते हैं, और वह वैसा प्यार नहीं है जैसा आप करते हैं) रोज़ामंड नाम की एक खूबसूरत युवती से प्यार करते हैं। उन्होंने मुझसे शादी सिर्फ इसलिए की क्योंकि उन्हें लगा कि मैं एक मिशनरी की उपयुक्त पत्नी बनूँगी, जो वह नहीं बन सकती थीं। वह अच्छे और महान हैं, लेकिन कठोर हैं; और मेरे लिए, बर्फ के पहाड़ की तरह ठंडे हैं। वह आपके जैसे नहीं हैं, महोदय: मैं उनके साथ, उनके पास, या उनके साथ रहकर खुश नहीं हूँ। उनमें मेरे लिए कोई स्नेह नहीं है - कोई लगाव नहीं। उन्हें मुझमें कुछ भी आकर्षक नहीं दिखता; यहाँ तक कि जवानी भी नहीं - बस कुछ उपयोगी मानसिक गुण। - तो क्या मुझे आपको छोड़कर उनके पास जाना चाहिए, महोदय?"

मैं अनायास ही सिहर उठा और सहज रूप से अपने अंधे लेकिन प्रिय गुरु से और भी करीब लिपट गया। वह मुस्कुराए।

"क्या, जेन! क्या यह सच है? क्या वाकई तुम्हारे और रिवर्स के बीच यही स्थिति है?"

"बिल्कुल, महोदय! अरे, आपको ईर्ष्या करने की ज़रूरत नहीं है! मैं आपको थोड़ा चिढ़ाना चाहती थी ताकि आपका दुख कम हो जाए: मुझे लगा कि क्रोध शोक से बेहतर होगा। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि मैं आपसे प्रेम करूं, तो बस देख लीजिए कि मैं आपसे कितना प्रेम करती हूं, आप गर्वित और संतुष्ट हो जाएंगे। मेरा सारा हृदय आपका है, महोदय: यह आपका है; और यह आपके पास ही रहेगा, चाहे भाग्य मुझे हमेशा के लिए आपसे दूर कर दे।"

फिर से, जब उसने मुझे चूमा, तो दर्द भरे विचारों ने उसके चेहरे को उदास कर दिया।

"मेरी झुलसी हुई दृष्टि! मेरी पंगु शक्ति!" उसने खेदपूर्वक बुदबुदाया।

मैंने उसे शांत करने के लिए सहलाया। मैं जानती थी कि वह क्या सोच रहा है, और मैं उसके लिए बोलना चाहती थी, लेकिन हिम्मत नहीं कर पाई। जब उसने एक पल के लिए अपना चेहरा दूसरी तरफ मोड़ा, तो मैंने देखा कि बंद पलक के नीचे से एक आंसू निकलकर उसके सुडौल गाल पर बह गया। मेरा दिल भर आया।

"मैं थॉर्नफील्ड के बाग में बिजली गिरने से क्षतिग्रस्त हुए उस पुराने शाहबलूत के पेड़ से बेहतर नहीं हूँ," उन्होंने कुछ देर बाद कहा। "और उस खंडहर को क्या अधिकार

है कि वह एक नई लता को अपनी सड़न को ताजगी से ढकने दे?”

“आप कोई खंडहर नहीं हैं, महोदय – बिजली गिरने से क्षतिग्रस्त वृक्ष नहीं हैं: आप हरे-भरे और जीवंत हैं। आपकी जड़ों के चारों ओर पौधे उगेंगे, चाहे आप उनसे कहें या न कहें, क्योंकि वे आपकी भरपूर छाया में आनंदित होते हैं; और जैसे-जैसे वे बढ़ते हैं, वे आपकी ओर झुकेंगे और आपके चारों ओर लिपटेंगे, क्योंकि आपकी मजबूती उन्हें इतना सुरक्षित सहारा प्रदान करती है।”

फिर वह मुस्कुराया: मैंने उसे सांत्वना दी।

“तुम दोस्तों की बात कर रही हो, जेन?” उसने पूछा।

“हाँ, दोस्तों की बात कर रहा हूँ,” मैंने कुछ हिचकिचाहट के साथ जवाब दिया: क्योंकि मैं जानता था कि मेरा मतलब दोस्तों से कहीं ज़्यादा था, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इसके लिए कौन सा दूसरा शब्द इस्तेमाल करूँ। उन्होंने मेरी मदद की।

“आह! जेन। लेकिन मुझे एक पत्नी चाहिए।”

“क्या आप ऐसा करते हैं, महोदय?”

“हां: क्या यह आपके लिए नई खबर है?”

"बिल्कुल: आपने इसके बारे में पहले कुछ नहीं कहा था।"

क्या यह अप्रिय खबर है?

"यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है, महोदय - आपके निर्णय पर।"

“जेन, जो तुम मेरे लिए बनाओगी। मैं तुम्हारे फैसले का पालन करूंगा।”

"तो फिर चुनिए, महोदय—वह जो आपसे सबसे अधिक प्रेम करती है।"

“मैं कम से कम उसे तो चुनूंगा जिससे मैं सबसे ज्यादा प्यार करता हूं। जेन, क्या तुम मुझसे शादी करोगी?”

"जी श्रीमान।"

“एक बेचारा अंधा आदमी, जिसे आपको हाथ पकड़कर इधर-उधर ले जाना पड़ेगा?”

"जी श्रीमान।"

“एक अपाहिज आदमी, जो तुमसे बीस साल बड़ा है, जिसकी तुम्हें सेवा करनी पड़ेगी?”

"जी श्रीमान।"

"सच में, जेन?"

"जी हां, महोदय।"

ओह! मेरी प्यारी! भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें और तुम्हें इसका भरपूर फल दें!

“श्रीमान रोचेस्टर, अगर मैंने अपने जीवन में कभी कोई अच्छा काम किया हो—अगर कभी कोई अच्छा विचार सोचा हो—अगर कभी कोई सच्ची और निर्दोष प्रार्थना की हो—अगर कभी कोई नेक इच्छा की हो—तो मुझे उसका फल अब मिल गया है। आपकी पत्नी होना मेरे लिए धरती पर सबसे बड़ी खुशी है।”

क्योंकि तुम्हें त्याग में आनंद आता है।

“त्याग! मैं क्या त्याग करता हूँ? भोजन के लिए अकाल, संतोष के लिए अपेक्षा। जो मेरे लिए अनमोल है, उसे गले लगाने का सौभाग्य, जिसे मैं प्यार करता हूँ, उसे चूमने का सौभाग्य, जिस पर मैं भरोसा करता हूँ, उस पर विश्राम करने का सौभाग्य: क्या यह त्याग है? यदि ऐसा है, तो निश्चित रूप से मैं त्याग में आनंदित होता हूँ।”

और मेरी कमजोरियों को सहन करो, जेन: मेरी कमियों को नजरअंदाज करो।

“मेरे लिए तो उनका कोई महत्व नहीं है, महोदय। अब जब मैं वास्तव में आपके लिए उपयोगी हो सकती हूँ, तो मैं आपसे पहले से कहीं अधिक प्रेम करती हूँ, बजाय उस समय के जब आप अहंकारी स्वतंत्रता की अवस्था में थे और दाता और रक्षक के अलावा किसी भी भूमिका को तुच्छ समझते थे।”

अब तक मुझे किसी की मदद लेना—किसी के द्वारा निर्देशित होना—नापसंद था, लेकिन अब से मुझे ऐसा नहीं लगेगा। मुझे किसी नौकर के हाथ में हाथ देना अच्छा नहीं लगता था, लेकिन जेन की नन्ही उंगलियों से उसे छूना कितना सुखद है। नौकरों की निरंतर सेवा के बजाय मुझे पूर्ण एकांत पसंद था; लेकिन जेन की कोमल सेवा मेरे लिए हमेशा आनंददायक रहेगी। जेन मुझे भाती है: क्या मैं उसे भाता हूँ?

"मेरी प्रकृति के सबसे सूक्ष्म अंश तक, महोदय।"

"ऐसी स्थिति में, हमारे पास इंतजार करने के लिए दुनिया में कुछ भी नहीं है: हमें तुरंत शादी कर लेनी चाहिए।"

वह उत्सुकता से देखता और बोलता था: उसका पुराना उग्र स्वभाव फिर से जागृत हो रहा था।

"हमें बिना किसी देरी के एक शरीर बनना होगा, जेन: बस गर्भधारण करने की अनुमति बाकी है - फिर हम शादी कर लेंगे।"

“श्रीमान रोचेस्टर, मुझे अभी पता चला है कि सूर्य अपने मध्याह्न रेखा से काफी नीचे चला गया है, और पायलट वास्तव में अपना भोजन करने के लिए घर चला गया है। मुझे आपकी घड़ी देखने दीजिए।”

"जेनेट, इसे अपनी कमरबंद में बांध लो और आगे से इसे अपने पास रखो: मुझे इसकी कोई जरूरत नहीं है।"

“महोदय, दोपहर के लगभग चार बज रहे हैं। क्या आपको भूख नहीं लग रही?”

“आज से तीसरा दिन हमारी शादी का दिन होगा, जेन। अब महंगे कपड़ों और गहनों की चिंता मत करो: ये सब कुछ भी मायने नहीं रखता।”

“सूरज की गर्मी से बारिश की सारी बूँदें सूख गई हैं, महोदय। हवा बिल्कुल शांत है: बहुत गर्मी है।”

“क्या तुम्हें पता है, जेन, इस समय तुम्हारी छोटी मोतियों की माला मेरी टाई के नीचे मेरे कांसे के स्कार्फ में बंधी हुई है? मैंने इसे उस दिन से पहना है जब मैंने अपना एकमात्र खजाना खो दिया था, उसकी याद में।”

"हम जंगल के रास्ते घर जाएंगे: यही सबसे छायादार रास्ता होगा।"

उसने मेरी बात पर ध्यान दिए बिना अपने ही विचारों में मग्न रहा।

जेन! मुझे लगता है कि तुम मुझे नास्तिक समझती हो, लेकिन इस समय मेरा हृदय इस धरती के दयालु ईश्वर के प्रति कृतज्ञता से भरा हुआ है। वह मनुष्य की तरह नहीं देखता, बल्कि कहीं अधिक स्पष्ट रूप से देखता है; मनुष्य की तरह न्याय नहीं करता, बल्कि कहीं अधिक बुद्धिमानी से न्याय करता है। मैंने गलती की: मैं अपने निर्दोष फूल को कलंकित करना चाहता था—उसकी पवित्रता पर कलंक की साँस लेना चाहता था: सर्वशक्तिमान ने उसे मुझसे छीन लिया। मैंने अपने हठधर्मी विद्रोह में लगभग व्यवस्था को ही शाप दे दिया था: आदेश के आगे झुकने के बजाय, मैंने उसका विरोध किया। ईश्वरीय न्याय ने अपना मार्ग अपनाया; मुझ पर विपत्तियाँ आ पड़ीं: मुझे मृत्यु की छाया की घाटी से गुजरना पड़ा। उसके दंड बहुत कठोर हैं; और एक दंड ने मुझे ऐसा आघात पहुँचाया जिसने मुझे हमेशा के लिए विनम्र बना दिया। तुम जानती हो कि मुझे अपनी शक्ति पर गर्व था: लेकिन अब वह क्या है, जब मुझे उसे किसी बाहरी मार्गदर्शन के हवाले करना पड़ रहा है, जैसे कोई बच्चा अपनी कमजोरी को करता है? हाल ही में, जेन—केवल—केवल हाल ही में—मैंने अपने भाग्य में ईश्वर का हाथ देखना और स्वीकार करना शुरू किया है। मुझे पश्चाताप होने लगा है। पश्चाताप; अपने

सृष्टिकर्ता से मेल-मिलाप की इच्छा। मैंने कभी-कभी प्रार्थना करना शुरू किया: वे बहुत संक्षिप्त प्रार्थनाएँ थीं, लेकिन बहुत सच्ची थीं।

कुछ दिन बीत गए: बल्कि मैं उन्हें गिन सकता हूँ—चार दिन; पिछले सोमवार की रात, मुझ पर एक अजीब सी उदासी छा गई: एक ऐसी उदासी जिसमें उन्माद की जगह शोक ने ले ली—दुःख, उदासी। मुझे लंबे समय से यह आभास था कि चूंकि मैं तुम्हें कहीं नहीं ढूंढ पा रहा था, इसलिए तुम मर चुकी होगी। उस रात देर से—शायद ग्यारह और बारह बजे के बीच—अपनी नीरस नींद में सोने से पहले, मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि यदि उन्हें उचित लगे, तो मुझे जल्द ही इस जीवन से विदा कर उस परलोक में ले जाया जाए, जहाँ जेन से फिर से मिलने की आशा अभी भी बाकी है।

मैं अपने कमरे में था और खुली खिड़की के पास बैठा था: ठंडी रात की हवा का स्पर्श मुझे सुकून दे रहा था; हालाँकि मुझे तारे दिखाई नहीं दे रहे थे और धुंधली सी रोशनी में चाँद की मौजूदगी का एहसास हो रहा था। मैं तुम्हें तड़प रहा था, जेनेट! ओह, मैं तुम्हें आत्मा और शरीर दोनों से तड़प रहा था! मैंने ईश्वर से, पीड़ा और विनम्रता से, प्रार्थना की कि क्या मैं बहुत लंबे समय से अकेला, दुखी और पीड़ित नहीं रहा हूँ; और क्या मैं जल्द ही फिर से सुख और शांति का स्वाद नहीं चख पाऊँगा। मैंने स्वीकार किया कि मैंने जो कुछ सहा, वह सब मेरा ही कर्म था - मैंने प्रार्थना की कि मैं अब और सह नहीं सकता; और मेरे दिल की सारी इच्छाएँ अनायास ही मेरे होंठों से इन शब्दों में फूट पड़ीं - 'जेन! जेन! जेन!'

क्या आपने ये शब्द ज़ोर से बोले?

“मैंने किया, जेन। अगर किसी श्रोता ने मुझे सुना होता, तो वह मुझे पागल समझता: मैंने उन्हें इतनी उन्मादी ऊर्जा के साथ उच्चारित किया था।”

"और यह पिछले सोमवार की रात, लगभग आधी रात के आसपास की बात है?"

“हाँ; लेकिन समय का कोई महत्व नहीं है: इसके बाद जो हुआ वह अजीब बात है। आप मुझे अंधविश्वासी समझेंगे, — कुछ अंधविश्वास मेरे खून में है, और हमेशा से रहा है: फिर भी, यह सच है — कम से कम यह सच है कि मैंने वह सुना जो मैं अब बता रहा हूँ।”

“जैसे ही मैंने ‘जेन! जेन! जेन!’ चिल्लाया, एक आवाज़ आई—मैं यह नहीं बता सकती कि आवाज़ कहाँ से आई, लेकिन मैं जानती हूँ कि यह किसकी आवाज़ थी—उन्होंने जवाब दिया, ‘मैं आ रही हूँ: मेरा इंतज़ार करो;’ और एक पल बाद, हवा में

फुसफुसाते हुए ये शब्द सुनाई दिए— 'तुम कहाँ हो?'"

"अगर मैं बता सकूँ, तो मैं वो विचार, वो तस्वीर बताऊँगा जो इन शब्दों ने मेरे मन में खोली: फिर भी जो मैं कहना चाहता हूँ उसे व्यक्त करना कठिन है। जैसा कि आप देख रहे हैं, फर्नेडियन एक घने जंगल में दफ़न है, जहाँ आवाज़ धीमी पड़ जाती है और बिना गूंजे ही मर जाती है। 'तुम कहाँ हो?' ये शब्द पहाड़ों के बीच बोले गए प्रतीत हुए; क्योंकि मैंने पहाड़ी से आती हुई एक गूंज को इन शब्दों को दोहराते हुए सुना। उस क्षण हवा का झोंका मेरे माथे को छूता हुआ सा लगा, और भी ठंडा और ताज़ा था: मुझे लगा जैसे मैं और जेन किसी सुनसान, वीरान जगह पर मिल रहे हों। आत्मा से, मुझे विश्वास है कि हम ज़रूर मिले होंगे। जेन, तुम उस समय ज़रूर गहरी नींद में सो रही होगी: शायद तुम्हारी आत्मा अपनी कोठरी से निकलकर मेरी आत्मा को सांत्वना देने आई हो; क्योंकि वो तुम्हारे ही लहजे थे – जितना मैं जीवित हूँ, उतना ही यकीन है – कि वो तुम्हारे ही थे!"

पाठक, सोमवार की रात, लगभग आधी रात को, मुझे भी वह रहस्यमय बुलावा आया था: मैंने उन्हीं शब्दों में उसका जवाब दिया था। मैंने श्री रोचेस्टर की कहानी सुनी, लेकिन बदले में कुछ नहीं बताया। यह संयोग मुझे इतना भयानक और समझ से परे लगा कि इसे बताना या इस पर चर्चा करना उचित नहीं था। अगर मैं कुछ कहता, तो मेरी कहानी सुनने वाले के मन पर गहरा प्रभाव डालती: और वह मन, जो अपने दुखों के कारण उदासी से घिरा रहता था, उसे अलौकिक बातों की और अधिक गहराई की आवश्यकता नहीं थी। मैंने इन बातों को अपने मन में रखा और उन पर विचार किया।

"अब आपको आश्चर्य नहीं होना चाहिए," मेरे गुरु ने आगे कहा, "कि जब आप कल रात अचानक मेरे सामने प्रकट हुए, तो मुझे आपको महज़ एक आवाज़ और एक दृश्य के अलावा कुछ और मानना मुश्किल हो रहा था, कुछ ऐसा जो आधी रात की फुसफुसाहट और पहाड़ों की गूंज की तरह खामोशी और विनाश में विलीन हो जाएगा। अब, मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ! मैं जानता हूँ कि ऐसा नहीं है। हाँ, मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ!"

उन्होंने मुझे अपनी गोद से उतारा, उठे और श्रद्धापूर्वक अपने माथे से टोपी उतारकर, अपनी दृष्टिहीन आँखों को धरती की ओर झुकाकर, मौन भक्ति में खड़े रहे। केवल प्रार्थना के अंतिम शब्द ही सुनाई दे रहे थे।

मैं अपने सृष्टिकर्ता का धन्यवाद करता हूँ कि न्याय के बीच भी उन्होंने मुझ पर दया की है। मैं अपने मुक्तिदाता से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे आगे से अब तक के जीवन से भी अधिक पवित्र जीवन जीने की शक्ति प्रदान करें!

फिर उसने आगे बढ़ने के लिए हाथ बढ़ाया। मैंने उसका प्यारा हाथ थाम लिया, एक पल के लिए उसे अपने होठों से लगाया, फिर उसे अपने कंधे पर डाल दिया; उससे कद में छोटा होने के कारण, मैं उसके लिए सहारा और मार्गदर्शक दोनों का काम कर रहा था। हम जंगल में दाखिल हुए और घर की ओर चल पड़े।

अध्याय 38 - निष्कर्ष

पाठक, मैंने उससे शादी कर ली। हमारी शादी सादगी से हुई: हम दोनों, पादरी और क्लर्क ही मौजूद थे। चर्च से लौटने के बाद, मैं हवेली के रसोईघर में गई, जहाँ मैरी खाना बना रही थी और जॉन चाकू साफ़ कर रहा था, और मैंने कहा—

"मैरी, आज सुबह मेरी शादी मिस्टर रोचेस्टर से हो गई है।" हाउसकीपर और उनके पति दोनों ही उस शालीन और शांत स्वभाव के लोग थे, जिन्हें कोई भी कभी भी बिना किसी तीखे उद्गार से कान फाड़े और फिर शब्दों के विस्मय से स्तब्ध किए बिना कोई भी उल्लेखनीय समाचार सुरक्षित रूप से बता सकता था। मैरी ने ऊपर देखा और मुझे घूरने लगी: जिस करछुल से वह आग पर भुन रहे दो मुर्गों पर तेल लगा रही थी, वह लगभग तीन मिनट तक हवा में लटकी रही; और उतने ही समय तक जॉन के चाकू भी पॉलिश होने के बाद आराम कर रहे थे: लेकिन मैरी, भुने हुए मुर्गों पर फिर से झुकते हुए, केवल इतना ही बोली—

"क्या आपने देखा है, महोदया? बिल्कुल!"

कुछ देर बाद उसने कहा, "मैंने तुम्हें मालिक के साथ बाहर जाते देखा था, लेकिन मुझे नहीं पता था कि तुम शादी के लिए चर्च जा रहे हो;" और वह बोलती रही। जब

मैंने जॉन की तरफ देखा, तो वह खुशी से झूम रहा था।

"मैंने मैरी को बता दिया था कि क्या होगा," उसने कहा: "मुझे पता था कि श्री एडवर्ड क्या करेंगे" (जॉन एक पुराना नौकर था, और अपने मालिक को तब से जानता था जब वह घर का नया नौकर था, इसलिए वह अक्सर उसे उसके पहले नाम से पुकारता था) — "मुझे पता था कि श्री एडवर्ड क्या करेंगे; और मुझे यकीन था कि वह ज्यादा देर तक इंतजार भी नहीं करेंगे: और जहाँ तक मुझे पता है, उन्होंने सही किया है। आपको खुशी की शुभकामनाएं, मिस!" और उसने विनम्रता से अपने बालों की लट खींची।

"धन्यवाद, जॉन। श्री रोचेस्टर ने मुझे यह आपको और मैरी को देने के लिए कहा था।" मैंने उनके हाथ में पाँच पाउंड का नोट थमा दिया। और कुछ सुने बिना, मैं रसोई से निकल गया। कुछ समय बाद उस पवित्र स्थान के दरवाजे से गुजरते हुए, मैंने ये शब्द सुने—

"वह उसके लिए किसी भी बड़ी महिला से बेहतर साबित होगी।" और फिर, "अगर वह सबसे खूबसूरत नहीं भी है, तो भी वह भोली और बहुत ही अच्छे स्वभाव की है; और उसकी नज़र में वह बेहद खूबसूरत है, यह तो हर कोई देख सकता है।"

मैंने तुरंत मूर हाउस और कैम्ब्रिज को पत्र लिखकर अपने किए का पूरा विवरण दिया और यह भी बताया कि मैंने ऐसा क्यों किया। डायना और मैरी ने इस कदम का बिना किसी हिचकिचाहट के समर्थन किया। डायना ने कहा कि वह मुझे हनीमून के बाद थोड़ा आराम करने का समय देंगी और फिर मुझसे मिलने आएंगी।

जब मैंने श्री रोचेस्टर को जेन का पत्र पढ़कर सुनाया, तो उन्होंने कहा, "उसे तब तक इंतजार नहीं करना चाहिए, जेन; अगर वह ऐसा करती है, तो बहुत देर हो जाएगी, क्योंकि हमारा हनीमून हमारे जीवन भर चमकता रहेगा: इसकी किरणें केवल तुम्हारी या मेरी कब्र पर ही फीकी पड़ेंगी।"

सेंट जॉन को यह खबर कैसे मिली, मुझे नहीं पता: उन्होंने उस पत्र का कभी जवाब नहीं दिया जिसमें मैंने उन्हें यह बताया था; फिर भी छह महीने बाद उन्होंने मुझे पत्र लिखा, हालांकि उसमें उन्होंने मिस्टर रोचेस्टर का नाम नहीं लिया और न ही मेरी शादी का कोई जिक्र किया। उनका पत्र शांत और गंभीर होने के बावजूद दयालु था। तब से उनका मुझसे नियमित रूप से, हालांकि बहुत बार नहीं, पत्राचार चलता रहा है: उन्हें उम्मीद है कि मैं खुश हूँ और उन्हें विश्वास है कि मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो दुनिया में

ईश्वर के बिना जीते हैं और केवल सांसारिक चीजों की परवाह करते हैं।

पाठक, आप छोटी एडेल को पूरी तरह से भूले तो नहीं हैं, है ना? मैं तो नहीं भूली थी; मैंने तुरंत श्री रोचेस्टर से अनुमति मांगी और उनसे उस स्कूल में जाकर उससे मिलने की अनुमति प्राप्त की जहाँ उन्होंने उसका दाखिला कराया था। मुझे दोबारा देखकर उसकी बेतहाशा खुशी ने मुझे बहुत प्रभावित किया। वह पीली और दुबली-पतली लग रही थी: उसने कहा कि वह खुश नहीं है। मैंने पाया कि उस स्कूल के नियम बहुत सख्त थे, और उसकी उम्र की बच्ची के लिए पाठ्यक्रम बहुत कठिन था: मैं उसे अपने साथ घर ले आई। मेरा इरादा एक बार फिर उसकी गवर्नेंस बनने का था, लेकिन मुझे जल्द ही यह अव्यावहारिक लगा; मेरा समय और देखभाल अब किसी और के लिए आवश्यक थी - मेरे पति को उन सबकी जरूरत थी। इसलिए मैंने एक ऐसे स्कूल की तलाश की जो अधिक उदार प्रणाली पर चलता हो, और इतना पास हो कि मैं उससे अक्सर मिलने जा सकूं और कभी-कभी उसे घर ला सकूं। मैंने इस बात का ध्यान रखा कि उसे कभी भी किसी चीज की कमी न हो जो उसके आराम में योगदान दे सके: वह जल्द ही अपने नए घर में घुलमिल गई, वहाँ बहुत खुश रही और अपनी पढ़ाई में अच्छी प्रगति की। जैसे-जैसे वह बड़ी हुई, एक अच्छी अंग्रेजी शिक्षा ने उसकी फ्रांसीसी भाषा की कमियों को काफी हद तक दूर कर दिया; और जब उसने स्कूल छोड़ा, तो मुझे उसमें एक सुखद और मददगार साथी मिली: विनम्र, सौम्य स्वभाव वाली और सुसिद्ध सिद्धांतों वाली। मेरे और मेरे परिवार के प्रति उसकी कृतज्ञतापूर्ण देखभाल से, उसने मेरे द्वारा उसे दी गई हर छोटी-मोटी भलाई का भरपूर प्रतिफल दिया है।

मेरी कहानी यहीं समाप्त होती है: वैवाहिक जीवन के अपने अनुभव के बारे में एक शब्द और उन लोगों के भाग्य पर एक संक्षिप्त नज़र, जिनके नाम इस वृत्तांत में सबसे अधिक बार सामने आए हैं, और बस इतना ही।

मेरी शादी को अब दस साल हो गए हैं। मैं जानती हूँ कि धरती पर जिसे मैं सबसे ज़्यादा प्यार करती हूँ, उसके लिए और उसके साथ पूरी तरह जीना क्या होता है। मैं खुद को बेहद भाग्यशाली मानती हूँ—इतना भाग्यशाली कि शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता; क्योंकि मैं अपने पति की ज़िंदगी हूँ, ठीक वैसे ही जैसे वो मेरी। कोई भी स्त्री अपने साथी के इतनी करीब नहीं रही जितनी मैं हूँ: कोई भी स्त्री उनकी हड्डी और मांस का इतना अभिन्न अंग नहीं रही। मुझे अपने एडवर्ड की संगति से कभी ऊब नहीं

होती: उन्हें भी मेरी संगति से कभी नहीं ऊब होती, ठीक वैसे ही जैसे हम दोनों अपने-अपने सीने में धड़कते दिल की धड़कन से नहीं ऊबते; इसलिए हम हमेशा साथ रहते हैं। साथ रहना हमारे लिए एकांत में रहने जितना ही आज़ाद और दूसरों के साथ रहने जितना ही खुशमिजाज़ होना है। मुझे लगता है कि हम सारा दिन बातें करते हैं: एक-दूसरे से बात करना एक अधिक जीवंत और सुनाई देने वाला विचार मात्र है। मेरा सारा भरोसा उन पर है, उनका सारा भरोसा मुझ पर है; हम स्वभाव से बिल्कुल मेल खाते हैं—इसका परिणाम पूर्ण सामंजस्य है।

श्री रोचेस्टर हमारे वैवाहिक जीवन के पहले दो वर्षों तक दृष्टिहीन ही रहे; शायद यही वह परिस्थिति थी जिसने हमें इतना करीब ला दिया—जिसने हमें इतना घनिष्ठ बना दिया: क्योंकि मैं तब उनकी दृष्टि थी, और आज भी उनकी दाहिनी भुजा हूँ। सचमुच, मैं (जैसा कि वे अक्सर मुझे कहते थे) उनकी आँखों का तारा थी। वे प्रकृति को देखते थे—किताबों को मेरे माध्यम से देखते थे; और मैं उनके लिए निहारने से कभी नहीं थकी, और खेत, पेड़, शहर, नदी, बादल, सूर्य की किरण—हमारे सामने के परिदृश्य के प्रभाव को शब्दों में व्यक्त करने से—हमारे आसपास के मौसम को—और ध्वनि के माध्यम से उनके कानों तक वह छाप छोड़ने से जो प्रकाश अब उनकी आँखों से नहीं देख सकता था। मैं उनके लिए पढ़ने से कभी नहीं थकी; मैं उन्हें जहाँ वे जाना चाहते थे वहाँ ले जाने से कभी नहीं थकी; उनके लिए वह सब करने से कभी नहीं थकी जो वे चाहते थे। और मेरी सेवाओं में एक अत्यंत पूर्ण, अत्यंत आनंद था, भले ही वह दुखद था—क्योंकि उन्होंने बिना किसी पीड़ादायक शर्म या अपमान के इन सेवाओं का दावा किया। वह मुझसे इतना सच्चा प्यार करता था कि मेरी सेवा का लाभ उठाने में उसे कोई संकोच नहीं था: उसे लगता था कि मैं उससे इतना स्नेह करती हूँ कि उसकी सेवा करना मेरी सबसे प्यारी इच्छाओं को पूरा करने के समान था।

दो साल बीतने के बाद एक सुबह, जब मैं उनके निर्देश पर एक पत्र लिख रही थी, तो वह आए और मेरे ऊपर झुककर बोले - "जेन, क्या तुम्हारे गले में कोई चमकीला आभूषण है?"

मेरे पास सोने की घड़ी की चेन थी: मैंने जवाब दिया "हाँ"।

"और क्या आपने हल्के नीले रंग की पोशाक पहनी है?"

मैंने ऐसा किया था। तब उन्होंने मुझे बताया कि कुछ समय से उन्हें ऐसा लग रहा था कि उनकी एक आंख पर छाया हुआ अंधकार धीरे-धीरे कम हो रहा है; और अब उन्हें इस बात का पूरा यकीन हो गया है।

मैं और वो लंदन गए। उन्होंने एक प्रख्यात नेत्र विशेषज्ञ से सलाह ली; और अंततः उनकी उस एक आँख की रोशनी वापस आ गई। अब उन्हें बहुत स्पष्ट दिखाई नहीं देता; वो ज़्यादा पढ़-लिख नहीं सकते; लेकिन वो बिना किसी की मदद के अपना रास्ता खोज सकते हैं: आकाश अब उनके लिए खाली नहीं है— धरती अब उनके लिए सूनी नहीं है। जब उनके पहले बच्चे को उनकी गोद में रखा गया, तो उन्होंने देखा कि लड़के को उनकी ही आँखें विरासत में मिली हैं, जैसी पहले थीं—बड़ी, चमकदार और काली। उस अवसर पर, उन्होंने एक बार फिर पूरे मन से स्वीकार किया कि ईश्वर ने न्याय में दया का भाव भी मिलाया है।

तो, मैं और मेरा एडवर्ड खुश हैं: और इसलिए भी कि जिन्हें हम सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं, वे भी खुश हैं। डायना और मैरी रिवर्स दोनों विवाहित हैं: बारी-बारी से, साल में एक बार, वे हमसे मिलने आती हैं और हम उनसे मिलने जाते हैं। डायना के पति

नौसेना में कप्तान हैं, एक बहादुर अधिकारी और एक नेक इंसान। मैरी के पति एक पादरी हैं, उनके भाई के कॉलेज के दोस्त हैं, और अपनी योग्यताओं और सिद्धांतों के कारण इस रिश्ते के योग्य हैं। कैप्टन फिट्ज़जेम्स और मिस्टर व्हार्टन दोनों अपनी पत्नियों से प्यार करते हैं, और उनकी पत्नियाँ भी उनसे प्यार करती हैं।

सेंट जॉन रिवर्स की बात करें तो, उन्होंने इंग्लैंड छोड़ दिया: वे भारत चले गए। उन्होंने अपने लिए निर्धारित मार्ग पर चलना शुरू किया; वे आज भी उस पर चल रहे हैं। चट्टानों और खतरों के बीच उनसे अधिक दृढ़, अथक पथरीला कोई पथिक नहीं रहा। दृढ़, निष्ठावान और समर्पित, ऊर्जा, उत्साह और सत्य से परिपूर्ण, वे अपनी जाति के लिए परिश्रम करते हैं; वे उनके उत्थान के कठिन मार्ग को सुगम बनाते हैं; वे धर्म और जाति के पूर्वाग्रहों को, जो उनके मार्ग में बाधा डालते हैं, एक विशालकाय की तरह नष्ट कर देते हैं। वे कठोर हो सकते हैं; वे मांग करने वाले हो सकते हैं; वे महत्वाकांक्षी भी हो सकते हैं; लेकिन उनकी कठोरता उस योद्धा ग्रेटहार्ट की कठोरता है, जो अपोलियन के आक्रमण से अपने तीर्थयात्री काफिले की रक्षा करता है। उनकी मांग उस प्रेरित की है, जो केवल मसीह के लिए बोलता है, जब वह कहता है - "जो कोई मेरे पीछे आना चाहता है, वह अपने आप को त्याग दे, अपना क्रूस उठाए और मेरा अनुसरण करे।" यह सर्वोच्च स्वामी-आत्मा की महत्वाकांक्षा है, जिसका उद्देश्य पृथ्वी से उद्धार पाए हुए लोगों में प्रथम स्थान प्राप्त करना है - जो परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष निर्दोष खड़े हैं, जो मेमने की अंतिम महान विजयों में भागीदार हैं, जो बुलाए गए हैं, चुने गए हैं और वफादार हैं।

संत जॉन अविवाहित हैं: अब उनका विवाह कभी नहीं होगा। उन्होंने अब तक स्वयं ही परिश्रम किया है, और उनका परिश्रम अब समाप्त होने वाला है: उनका गौरवशाली सूर्य अस्त होने की ओर अग्रसर है। उनसे प्राप्त अंतिम पत्र ने मेरी आँखों से आँसू बहा दिए, फिर भी मेरे हृदय को दिव्य आनंद से भर दिया: उन्होंने अपने निश्चित पुरस्कार, अपने अविनाशी मुकुट की पूर्वसूचना कर ली थी। मैं जानता हूँ कि अगला पत्र किसी अजनबी के हाथों से आएगा, जिसमें लिखा होगा कि उस भले और निष्ठावान सेवक को अंततः अपने प्रभु के आनंद में बुला लिया गया है। तो फिर इस पर क्यों रोना? मृत्यु का भय संत जॉन के अंतिम क्षणों को अंधकारमय नहीं कर पाएगा: उनका मन निर्मल होगा, उनका हृदय निडर होगा, उनकी आशा अटूट होगी, उनका विश्वास दृढ़ होगा। उनके अपने शब्द ही इसकी गवाही देते हैं।

“मेरे प्रभु,” वह कहते हैं, “मुझे पहले ही चेतावनी दे चुके हैं। प्रतिदिन वे और भी स्पष्ट रूप से घोषणा करते हैं, ‘निश्चित रूप से मैं शीघ्र आऊंगा!’ और हर घंटे मैं और भी उत्सुकता से उत्तर देता हूं, ‘आमीन; प्रभु यीशु, ऐसा ही हो!’”

शर्ली

यह सामाजिक उपन्यास, जो 1849 में प्रकाशित हुआ था, शार्लोट ब्रोंटे का दूसरा उपन्यास है, जिसे उन्होंने करर बेल उपनाम से भी प्रकाशित किया था। उपन्यास की कहानी 1811-12 के दौरान यॉर्कशायर में घटित होती है, जब नेपोलियन युद्धों और 1812 के युद्ध के परिणामस्वरूप औद्योगिक मंदी फैली हुई थी। उपन्यास की लोकप्रियता के कारण शर्ली नाम महिलाओं के लिए प्रचलित हो गया। उपन्यास में नायिका शर्ली कील्डर को वह नाम दिया गया था जो उसके पिता अपने बेटे को देना चाहते थे। उपन्यास के प्रकाशन से पहले, शर्ली एक असामान्य नाम था - लेकिन स्पष्ट रूप से पुरुषों का नाम - और एक महिला के लिए यह एक असामान्य नाम होता। आज इसे स्पष्ट रूप से महिलाओं का नाम और पुरुषों का एक असामान्य नाम माना जाता है।

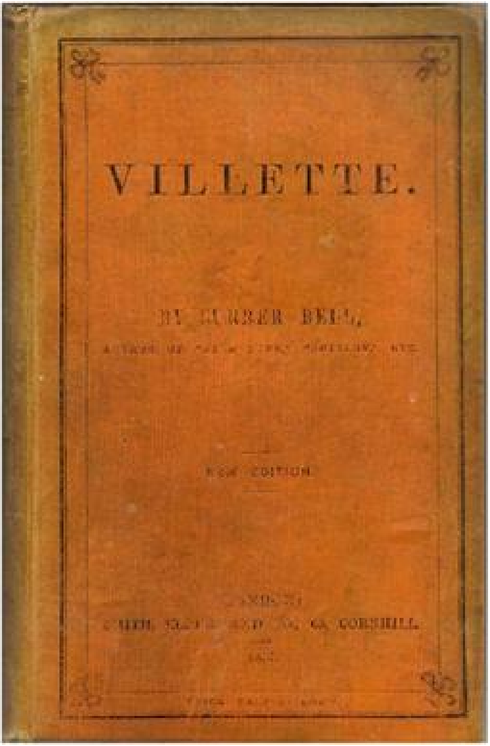

पहला संस्करण

अंतर्वस्तु

अध्याय 1।
लेवीय।
अध्याय II.
वैगन।
अध्याय III.
श्री योर्क।

अध्याय IV.
श्री योर्क (जारी)।
अध्याय V.
हॉलो की कुटिया।
अध्याय VI.
कोरियोलैनस।
अध्याय VII.
चाय पर क्यूरेट।
अध्याय VIII.
नूह और मूसा।
अध्याय 9.
ब्रियारमेन।
अध्याय X.
बूढ़ी कुंवारी औरतें।
अध्याय XI.
फील्डहेड।
अध्याय XII.
शर्ली और कैरोलिन।
अध्याय XIII.
व्यापार संबंधी आगे की जानकारी।
अध्याय 14.
शर्ली अपने कार्यों के माध्यम से मुक्ति पाना चाहती है।
अध्याय पंद्रह।
श्री डोने का पलायन।
अध्याय सोलह।
व्हिटसनटाइड।
अध्याय सत्रह।
स्कूल का भोज।
अध्याय 18वां।

जिसे शिष्ट पाठक को छोड़ देने की सलाह दी जाती है, क्योंकि यहाँ निम्न स्तर के व्यक्तियों का परिचय कराया जा रहा है।

अध्याय XIX.

एक गर्मी की रात।

अध्याय XX.

कल।

अध्याय XXI.

श्रीमती प्रायर।

अध्याय XXII.

दो जिंदगियां।

अध्याय XXIII.

शाम को बाहर घूमने जाना।

अध्याय XXIV.

मृत्यु की छाया की घाटी।

अध्याय XXV.

पश्चिम से हवा चल रही है।

अध्याय XXVI.

पुरानी प्रतियां।

अध्याय XXVII.

पहली ब्लूस्टॉकिंग।

अध्याय XXVIII.

PHŒBE.

अध्याय 29।

लुई मूर।

अध्याय XXX

रशएज — एक स्वीकारोक्ति।

अध्याय XXXI.

चाचा और भतीजी।

अध्याय 32.

स्कूल का लड़का और वन अप्सरा।

अध्याय 33.

मार्टिन की रणनीति।

अध्याय 34.

घरेलू उत्पीड़न का मामला — धार्मिक कर्तव्यों के निर्वहन में धर्मपरायण दृढ़ता का उल्लेखनीय उदाहरण।

अध्याय 35.

जिसमें मामलों में कुछ प्रगति होती है, लेकिन ज्यादा नहीं।

अध्याय 36.

स्कूल के कमरे में लिखा गया।

अध्याय 37.

समापन।

"मूर ने अपनी चचेरी बहन के कंधे पर हाथ रखा, झुका और उसके माथे पर चुंबन दिया।"

अध्याय 1।

लेवीय।

हाल के वर्षों में उत्तरी इंग्लैंड में कई पादरियों की भरमार हो गई है: पहाड़ियों पर इनकी संख्या बहुत अधिक है; हर पल्ली में एक या अधिक पादरी हैं; ये युवा हैं और काफी सक्रिय हैं, और इनसे बहुत अच्छा काम होने की उम्मीद है। लेकिन हम बीते वर्षों की बात नहीं कर रहे हैं; हम इस सदी की शुरुआत में जा रहे हैं: बीते वर्ष - वर्तमान वर्ष धूल भरे, धूप से झुलसे, गर्म और शुष्क हैं; हम दोपहर से बचेंगे, दोपहर की नींद में उसे भूल जाएंगे, दोपहर का समय नींद में बिताएंगे और भोर का सपना देखेंगे।

यदि आप इस प्रस्तावना से यह सोचते हैं कि आपके लिए किसी प्रेम कहानी की तैयारी हो रही है, तो आप बिलकुल गलत हैं। क्या आप भावुकता, कविता और कल्पना की उम्मीद कर रहे हैं? क्या आप जुनून, उत्तेजना और नाटकीयता की अपेक्षा कर रहे हैं? अपनी अपेक्षाओं को शांत कीजिए; उन्हें कम कीजिए। आपके सामने कुछ वास्तविक, शांत और ठोस है; कुछ ऐसा जो सोमवार की सुबह की तरह अरुचिकर है, जब काम पर जाने वाले सभी लोग इस चेतना के साथ जागते हैं कि उन्हें उठकर काम पर जाना है। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा रहा है कि आपको भोजन के मध्य या अंत में शायद ही कोई रोमांचक अनुभव मिलेगा, लेकिन यह तय है कि मेज पर परोसा जाने वाला पहला व्यंजन वह होगा जो एक कैथोलिक - हाँ, यहाँ तक कि एक एंग्लो-कैथोलिक भी - गुड फ्राइडे के दिन पैशन वीक में खा सकता है: यह बिना तेल के ठंडी दाल और सिरका होगा; यह कड़वी जड़ी-बूटियों के साथ बिना खमीर की रोटी होगी, और भुना हुआ मेमना नहीं होगा।

हाल के वर्षों में, मैं कहता हूँ, उत्तरी इंग्लैंड में पादरियों की प्रचुरता रही है; लेकिन अठारह सौ ग्यारह-बारह में ऐसी प्रचुरता नहीं थी। उस समय पादरी दुर्लभ थे: कोई पादरी सहायता संस्था नहीं थी - कोई अतिरिक्त पादरी समिति नहीं थी जो थके-हारे बूढ़े रेक्टरों और पादरियों की मदद कर सके और उन्हें ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज से एक ऊर्जावान युवा सहयोगी को वेतन देने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध करा सके। प्रेरितों के वर्तमान उत्तराधिकारी, डॉ. पुसे के शिष्य और प्रचार के उपकरण, उस समय पालने की चादरों के नीचे पल रहे थे, या हाथ धोने के बेसिन में शिशु-बपतिस्मा द्वारा पुनर्जन्म ले रहे थे। आप उनमें से किसी को भी देखकर यह अनुमान नहीं लगा सकते थे कि उसकी जालीदार टोपी की इतालवी इस्त्री की हुई दोहरी झालरें सेंट पॉल, सेंट

पीटर या सेंट जॉन के पूर्वनिर्धारित, विशेष रूप से पवित्र उत्तराधिकारी के माथे को घेरे हुए हैं; और न ही आप इसके लंबे नाइटगाउन की तहों में उस सफेद सरप्लस की कल्पना कर सकते थे, जिसमें यह आगे चलकर अपने पैरिशवासियों की आत्माओं को क्रूरतापूर्वक प्रभावित करने वाला था, और अजीब तरह से अपने पुराने जमाने के पादरी को उस कमीज जैसे वस्त्र को मंच पर लहराकर अचंभित करने वाला था, जो पहले कभी पढ़ने की मेज से ऊपर नहीं लहराया था।

फिर भी, उस कमी के दौर में भी पादरी मौजूद थे: यह अनमोल पौधा दुर्लभ था, लेकिन मिल जाता था। यॉर्कशायर के वेस्ट राइडिंग के एक खास इलाके में बीस मील के दायरे में तीन पौधों पर एरॉन के फूल खिले होते थे। पाठक, आप उन्हें देखेंगे। व्हिनबरी के बाहरी इलाके में स्थित इस सुंदर बगीचे वाले घर में प्रवेश कीजिए, छोटे से बैठक कक्ष में जाइए। वे वहाँ भोजन कर रहे हैं। मैं आपको उनसे परिचित कराता हूँ: श्री डोने, व्हिनबरी के पादरी; श्री मैलोन, ब्रायफ़ील्ड के पादरी; श्री स्वीटिंग, ननेली के पादरी। ये श्री डोने के आवास हैं, जो एक छोटे कपड़े के व्यापारी जॉन गेल का निवास स्थान है। श्री डोने ने अपने साथियों को भोजन करने के लिए सहर्ष आमंत्रित किया है। आप और मैं भी इस भोज में शामिल होंगे, देखेंगे और सुनेंगे। फिलहाल, वे केवल भोजन कर रहे हैं; और जब वे भोजन करेंगे, हम आपस में बातचीत करेंगे।

ये सज्जन अपनी युवावस्था में हैं; उनमें उस रोमांचक युग की सारी ऊर्जा व्याप्त है — एक ऐसी ऊर्जा जिसे उनके उदास वृद्ध पादरी अपने धार्मिक कर्तव्यों में लगाना चाहते हैं, और अक्सर यह इच्छा व्यक्त करते हैं कि इसे विद्यालयों के सावधानीपूर्वक प्रबंधन और अपने-अपने पारिशों के बीमारों से नियमित रूप से मिलने में व्यतीत किया जाए। परन्तु युवा लेवी इसे नीरस कार्य समझते हैं; वे अपनी ऊर्जा को ऐसे कार्य में लगाना पसंद करते हैं जो, यद्यपि दूसरों की दृष्टि में करघे पर बुनकर के परिश्रम से अधिक उबाऊ और नीरस प्रतीत होता है, उन्हें आनंद और व्यस्तता का निरंतर स्रोत प्रदान करता है।

मैं उनके बीच लगातार आने-जाने की बात कर रहा हूँ, जो वे अपने-अपने आवासों से आते-जाते रहते हैं - यह एक गोल चक्कर नहीं, बल्कि मुलाकातों का एक त्रिकोण है, जो वे साल भर, सर्दी, बसंत, गर्मी और पतझड़ में जारी रखते हैं। मौसम और ऋतु का कोई फर्क नहीं पड़ता; वे समझ से परे उत्साह के साथ बर्फ, ओले, हवा, बारिश, कीचड़ और धूल का सामना करते हुए एक-दूसरे के साथ भोजन करने, चाय पीने या

रात का खाना खाने जाते हैं। उन्हें क्या आकर्षित करता है, यह कहना मुश्किल है। यह दोस्ती नहीं है, क्योंकि जब भी वे मिलते हैं, झगड़ा करते हैं। यह धर्म भी नहीं है - उनके बीच इसका नाम कभी नहीं लिया जाता; वे कभी-कभार धर्मशास्त्र पर चर्चा कर सकते हैं, लेकिन धर्मपरायणता पर कभी नहीं। यह खाने-पीने का शौक भी नहीं है: हर कोई अपने आवास पर उतना ही बढ़िया मीट और हलवा, उतनी ही कड़क चाय और उतना ही स्वादिष्ट टोस्ट पा सकता है, जितना उसे अपने भाई के यहाँ परोसा जाता है। श्रीमती गेल, श्रीमती हॉग और श्रीमती व्हिप - उनकी मकान मालकिनें - कहती हैं कि "यह सब सिर्फ लोगों को परेशान करने के लिए है।" "लोगों" से इन महिलाओं का तात्पर्य निश्चित रूप से स्वयं से है, क्योंकि वास्तव में वे आपसी आक्रमण की इस प्रणाली द्वारा निरंतर "तड़प" की स्थिति में रखी जाती हैं।

जैसा कि मैंने बताया, श्री डोने और उनके मेहमान भोजन कर रहे हैं; श्रीमती गेल उनकी सेवा कर रही हैं, लेकिन रसोई की तेज़ आग की एक चिंगारी उनकी आँखों में चुभ रही है। उन्हें लगता है कि कभी-कभी बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के किसी मित्र को भोजन पर आमंत्रित करने का विशेषाधिकार (जो उनके किराए के समझौते में शामिल है) का उन्होंने हाल ही में काफी इस्तेमाल कर लिया है। यह सप्ताह अभी गुरुवार ही है, और सोमवार को ब्रायर्फ़ील्ड के पादरी श्री मैलोन नाश्ते पर आए और रात के खाने तक रुके; मंगलवार को श्री मैलोन और नननेली के श्री स्वीटिंग चाय पर आए, रात के खाने तक रुके, अतिरिक्त बिस्तर पर सोए, और बुधवार की सुबह नाश्ते में भी श्रीमती गेल के साथ रहे; अब, गुरुवार को, वे दोनों रात के खाने पर यहाँ हैं, और उन्हें लगभग यकीन है कि वे पूरी रात रुकेंगे। अगर वह फ्रेंच बोल पातीं, तो कहतीं, "यह बहुत ज़्यादा है।"

मिस्टर स्वीटिंग अपनी प्लेट में भुने हुए बीफ़ के टुकड़े को बारीक काट रहे हैं और शिकायत कर रहे हैं कि यह बहुत सख्त है; मिस्टर डोने कहते हैं कि बीयर बेस्वाद है। अरे, यही तो सबसे बुरी बात है: अगर वे थोड़ा शिष्ट व्यवहार करते तो श्रीमती गेल को इतनी परवाह नहीं होती, अगर वे जो मिला है उससे संतुष्ट दिखते तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता; लेकिन “ये नौजवान पादरी इतने घमंडी और अभिमानी हैं कि वे सबको अपने से नीचा समझते हैं। वे श्रीमती गेल के साथ शिष्टता से पेश नहीं आते, सिर्फ इसलिए कि वह नौकरानी नहीं रखतीं, बल्कि घर का सारा काम खुद करती हैं, जैसे उनकी माँ करती थीं; फिर वे हमेशा यॉर्कशायर के रीति-रिवाजों और लोगों के खिलाफ

बोलते रहते हैं," और इसी बात से श्रीमती गेल को उनमें से किसी पर भी भरोसा नहीं होता कि वह सच्चा सज्जन है या किसी सभ्य परिवार से है। "बूढ़े पादरी तो कॉलेज के सारे लड़कों से कहीं बेहतर हैं; वे अच्छे शिष्टाचार को जानते हैं और ऊँच-नीच सभी के प्रति दयालु हैं।"

"और रोटी दो!" श्री मैलोन दो शब्दों में चिल्लाते हैं, उनकी आवाज़ भले ही लंबी हो, लेकिन दो शब्द ही काफी हैं, फिर भी यह उन्हें तिपतिया घास और आलू की धरती का मूल निवासी साबित करती है। श्रीमती गेल श्री मैलोन से बाकी दोनों से भी ज़्यादा नफ़रत करती हैं; लेकिन वह उनसे डरती भी हैं, क्योंकि वह लंबे, मज़बूत कद-काठी के व्यक्ति हैं, जिनके पैर और बाँहें बिल्कुल आयरिश हैं, और चेहरा भी उतना ही स्वाभाविक है— माइल्सियन चेहरा नहीं, डैनियल ओ'कोनेल की शैली नहीं, बल्कि ऊँची नैन-नक्श वाला, उत्तर-अमेरिकी-भारतीय जैसा चेहरा, जो आयरिश कुलीन वर्ग के एक खास वर्ग में पाया जाता है, और जिसमें एक कठोर और गर्वित भाव है, जो किसी गुलामों की जागीर के मालिक के लिए ज़्यादा उपयुक्त है, न कि किसी स्वतंत्र किसान के ज़मींदार के लिए। श्री मैलोन के पिता खुद को सज्जन कहते थे: वे गरीब और कर्ज में डूबे हुए थे, और हद से ज़्यादा घमंडी थे; और उनका बेटा भी उन्हीं की तरह था।

श्रीमती गेल ने रोटी पेश की।

"इसे काट दो, औरत," उसकी मेहमान ने कहा; और उस "औरत" ने वैसा ही किया। अगर वह अपनी अंतरात्मा की सुनती, तो वह पादरी को भी काट देती; उसकी यॉर्कशायर वाली आत्मा उसके आदेश देने के तरीके से पूरी तरह से विद्रोह कर रही थी।

पादरी अच्छी भूख रखते थे, और हालाँकि गोमांस "कठोर" था, उन्होंने उसे खूब खाया। उन्होंने "फीकी बीयर" भी ठीक-ठाक मात्रा में पी ली, जबकि यॉर्कशायर पुडिंग की एक थाली और सब्जियों के दो बड़े कटोरे टिड्डियों के सामने पत्तों की तरह गायब हो गए। पनीर पर भी उन्होंने विशेष ध्यान दिया; और मिठाई के रूप में परोसा गया "मसालेदार केक" पलक झपकते ही गायब हो गया और फिर कभी नहीं मिला। श्रीमती गेल के बेटे और वारिस, छह साल के युवक अब्राहम ने रसोई में उसका शोकगीत गाया; उसने उसके उत्तराधिकार की उम्मीद की थी, और जब उसकी माँ खाली थाली लेकर आई, तो वह जोर-जोर से रोने लगा।

इस बीच, पादरी बैठे-बैठे अपनी शराब की चुस्कियाँ ले रहे थे, जो एक साधारण किस्म की शराब थी और जिसका वे संयम से आनंद ले रहे थे। श्री मैलोन वास्तव में व्हिस्की पीना ज़्यादा पसंद करते; लेकिन श्री डोने, एक अंग्रेज होने के नाते, व्हिस्की नहीं रखते थे। चुस्कियाँ लेते हुए वे बहस कर रहे थे, न राजनीति पर, न दर्शन पर, न साहित्य पर—ये विषय अब भी, हमेशा की तरह, उनके लिए पूरी तरह से अरुचिकर थे—यहाँ तक कि धर्मशास्त्र पर भी नहीं, चाहे वह व्यावहारिक हो या सैद्धांतिक, बल्कि चर्च के अनुशासन के छोटे-छोटे बिंदुओं पर, ऐसी तुच्छ बातें जो उन्हें स्वयं को छोड़कर बाकी सभी के लिए खोखली सी लगती थीं। श्री मैलोन, जिन्होंने किसी तरह दो गिलास शराब का इंतजाम कर लिया था, जबकि उनके साथी एक गिलास से ही संतुष्ट हो गए थे, धीरे-धीरे अपने ही अंदाज़ में हँसने लगे; यानी, वे थोड़े उद्दंड हो गए, उपदेशात्मक लहजे में अभद्र बातें कहने लगे और अपनी ही प्रतिभा पर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

उनके सभी साथी बारी-बारी से उनके मज़ाक का निशाना बनते थे। मैलोन के पास चुटकुलों का भंडार था, जिसे वे ऐसे ही सौहार्दपूर्ण अवसरों पर नियमित रूप से सुनाते थे, और अपनी हास्य-व्यंग्य शैली में शायद ही कभी बदलाव करते थे; वास्तव में, इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं थी, क्योंकि वे खुद को कभी नीरस नहीं समझते थे और दूसरों की राय की उन्हें बिल्कुल परवाह नहीं थी। उन्होंने श्री डोने के अत्यधिक दुबलेपन पर व्यंग्य किए, उनकी उठी हुई नाक का ज़िक्र किया, उस फटे-पुराने चॉकलेट रंग के ओवरकोट पर तीखे कटाक्ष किए जिसे वे बारिश होने पर या बारिश होने की संभावना होने पर अक्सर पहनते थे, और श्री डोने की कुछ चुनिंदा कॉकनी मुहावरों और उच्चारण शैलियों की आलोचना की, जो उनकी शैली में निहित सुंदरता और परिष्कार के लिए निश्चित रूप से उल्लेखनीय थीं।

श्री स्वीटिंग के कद को लेकर उनका मज़ाक उड़ाया जाता था - वे एक छोटे कद के आदमी थे, एथलेटिक मैलोन की तुलना में कद और चौड़ाई में एक लड़के मात्र थे; उनकी संगीत प्रतिभा का भी मज़ाक उड़ाया जाता था - उनके पैरिश की कुछ युवतियाँ सोचती थीं कि वे किसी देवदूत की तरह बांसुरी बजाते और भजन गाते थे; उन्हें "महिलाओं का चहेता" कहकर उपहास किया जाता था; उनकी माँ और बहनों के बारे में चिढ़ाया जाता था, जिनके लिए बेचारे श्री स्वीटिंग के मन में अभी भी कुछ स्नेह बचा था, और जिनके बारे में वे कभी-कभी पुजारी पैडी की उपस्थिति में बोलने की

मूर्खता करते थे, जिनके शरीर से स्वाभाविक स्नेह का भाव कहीं न कहीं गायब था।

इन हमलों का सामना पीड़ितों ने अपने-अपने तरीके से किया: श्री डोने ने बनावटी आत्मसंतुष्टि और अर्ध-उदास भाव से, जो उनकी अन्यथा कुछ हद तक कमजोर गरिमा का एकमात्र सहारा था; श्री स्वीटिंग ने एक हल्के-फुल्के, सहज स्वभाव की उदासीनता से, जिसने कभी भी अपनी गरिमा को बनाए रखने का दावा नहीं किया।

जब मैलोन का उपहास कुछ ज़्यादा ही आपत्तिजनक हो गया, जो कि जल्द ही हो गया, तो वे भी उसमें शामिल हो गए और उस पर पलटवार करने की कोशिश करने लगे। उन्होंने उससे पूछा कि जब वह उस सड़क से गुज़र रहा था तो कितने लड़कों ने उसके पीछे "आयरिश पीटर!" चिल्लाया था; यह जानने का अनुरोध किया कि क्या आयरलैंड में पादरियों के लिए अपने धार्मिक दौरों पर जाते समय अपनी जेबों में भरी हुई पिस्तौल और हाथों में एक शिला लेकर चलना आम बात है; वेले, फ़िरम, हेलम, स्टॉर्म जैसे शब्दों का अर्थ पूछा (श्री मैलोन हमेशा वेल, फ़र्म, हेल्म, स्टॉर्म का उच्चारण इसी तरह करते थे), और प्रतिशोध के ऐसे अन्य तरीके अपनाए जो उनके दिमाग की सहज परिष्कृतता ने सुझाए।

यह तो बिलकुल भी ठीक नहीं था। मालोन, जो न तो सौम्य स्वभाव का था और न ही शांत, उस पल भयंकर क्रोध में आ गया। वह चिल्लाया, हाथ-पैर हिलाए; डोने और स्वीटिंग हँसे। उसने अपनी ऊँची सेल्टिक आवाज़ में उन्हें सैक्सन और घमंडी कहकर कोसा; उन्होंने उसे एक पराजित भूमि का मूल निवासी कहकर ताना मारा। उसने अपने "देश" के नाम पर विद्रोह की धमकी दी, अंग्रेज़ी शासन के प्रति अपनी घृणा प्रकट की; उन्होंने फटे-पुराने कपड़ों, भीख मांगने और महामारी की बात की। छोटा सा बैठक कक्ष शोरगुल से भर गया; ऐसा लग रहा था मानो इतनी तीखी गालियों के बाद द्वंद्वयुद्ध होना ही था; यह आश्चर्य की बात थी कि श्रीमान और श्रीमती गेल शोर सुनकर चिंतित नहीं हुए और शांति बनाए रखने के लिए किसी कांस्टेबल को नहीं बुलाया। लेकिन वे ऐसे प्रदर्शनों के आदी थे; वे अच्छी तरह जानते थे कि पादरी बिना थोड़ी-बहुत कसरत किए कभी भी एक साथ भोजन या चाय नहीं पीते थे, और परिणामों के बारे में वे बिल्कुल निश्चिंत थे, यह जानते हुए कि ये पादरी झगड़े जितने शोरगुल वाले होते हैं उतने ही हानिरहित भी होते हैं, इनका कोई परिणाम नहीं निकलता है, और यह कि आज रात पादरी चाहे जिस भी शर्तों पर अलग हों, वे कल सुबह दुनिया के सबसे अच्छे दोस्तों के रूप में मिलेंगे।

जब वे दोनों प्रतिष्ठित व्यक्ति रसोई की आग के पास बैठे थे, मालोन की मुट्ठी के बार-बार बैठक की मेज के महोगनी तल पर पड़ने की गूंजती हुई आवाज सुन रहे थे, और हर प्रहार के बाद डेकैंटर और गिलासों के खनकने और उछलने की आवाज, साथ ही सहयोगी अंग्रेज वाद-विवाद करने वालों की उपहास भरी हंसी, और अकेले बैठे आयरिश व्यक्ति के हकलाते हुए भाषण को सुन रहे थे - तभी बाहरी दरवाजे की सीढ़ी पर किसी के कदम की आवाज सुनाई दी, और खटखटाने वाला एक तीखी आवाज के साथ कांप उठा।

श्री गेल गए और उन्होंने दरवाजा खोला।

"ऊपर बैठक में तुम्हारे साथ कौन है?" एक आवाज ने पूछा - एक काफी उल्लेखनीय आवाज, नाक से निकलने वाली ध्वनि, अचानक उच्चारण वाली आवाज।

“ओह श्रीमान हेलस्टोन, क्या आप ही हैं? अंधेरे के कारण मैं आपको मुश्किल से देख पा रहा था; अब तो बहुत जल्दी अंधेरा हो जाता है। क्या आप अंदर आएंगे, महोदय?”

मैं पहले यह जानना चाहता हूँ कि क्या अंदर जाना मेरे लिए फायदेमंद होगा। ऊपर कौन है?

"पुजारी महोदय।"

“क्या! वे सभी?”

"जी श्रीमान।"

"क्या आप यहाँ खाना खाने आए थे?"

"जी श्रीमान।"

"इससे हो जाएगा।"

इन शब्दों के साथ एक व्यक्ति अंदर आया—एक अधेड़ उम्र का आदमी, काले कपड़े पहने हुए। वह सीधे रसोई के पार एक अंदरूनी दरवाजे तक गया, उसे खोला, अपना सिर आगे झुकाया और सुनने के लिए खड़ा हो गया। सुनने लायक कुछ तो था, क्योंकि ऊपर से आ रहा शोर उस समय पहले से कहीं अधिक तेज़ था।

“अरे!” उसने मन ही मन कहा; फिर मिस्टर गेल की ओर मुड़कर बोला — “क्या आप अक्सर इस तरह का काम करते हैं?”

श्री गेल एक चर्चवार्डन रह चुके थे और पादरियों के प्रति उदार थे।

“वे युवा हैं, महोदय—वे युवा हैं,” उन्होंने तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा।

"युवा! इन्हें बेंत से मारना चाहिए। बुरे लड़के—बुरे लड़के! और अगर तुम एक असंतुष्ट होते, जॉन गेल, एक अच्छे चर्चमैन होने के बजाय, तो वे ऐसा ही करते—वे खुद को बेनकाब कर देते; लेकिन मैं—"

इस वाक्य को समाप्त करते हुए, वह भीतरी दरवाजे से बाहर निकला, उसे अपने पीछे बंद किया और सीढ़ियों पर चढ़ गया। ऊपरी कमरे में पहुँचकर उसने कुछ मिनट तक फिर से सुना। बिना किसी पूर्व सूचना के प्रवेश करते हुए, वह पुरोहितों के सामने खड़ा हो गया।

और वे चुप थे; वे स्तब्ध थे; और आक्रमणकारी भी। वह—कद में छोटा, लेकिन सीधा-सादा, और चौड़े कंधों पर बाज़ के सिर, चोंच और आँख वाला, और उसके ऊपर एक रेहोबोआम या फावड़ा टोपी थी, जिसे उसने अपने सामने खड़े लोगों के सामने उठाना या उतारना ज़रूरी नहीं समझा—उसने अपनी बाहों को अपनी छाती पर मोड़ लिया और अपने युवा मित्रों को, यदि वे मित्र थे, तो बड़े आराम से देखा।

"क्या!" उसने बोलना शुरू किया, उसकी आवाज़ अब नाक से निकलने वाली आवाज़ नहीं थी, बल्कि गहरी थी—गहरी से भी कहीं ज़्यादा—जानबूझकर खोखली और गुफा जैसी बनाई गई थी— "क्या! क्या पेंटेकोस्ट का चमत्कार फिर से दोहराया गया है? क्या जीभें फिर से नीचे आ गई हैं? वे कहाँ हैं? अभी-अभी यह आवाज़ पूरे घर में गूंज उठी। मैंने सत्रह भाषाओं को पूरी तरह से सक्रिय सुना: पार्थियन, मेदी, एलामी, कप्पाडोसिया, पोंटस और एशिया, फ्रिगिया और पम्फिलिया, मिस्र और साइरेन के आसपास के लीबिया के हिस्से, रोम के अजनबी, यहूदी और धर्मान्तरित, क्रीट और अरब; इनमें से प्रत्येक का प्रतिनिधि दो मिनट पहले इस कमरे में रहा होगा।"

"श्रीमान हेलस्टोन, क्षमा करें," श्री डोने ने बात शुरू की; "कृपया बैठिए। क्या आप एक गिलास शराब लेंगे?"

उसकी विनम्रता का कोई जवाब नहीं मिला। काले कोट वाला बाज़ आगे बढ़ा, —

"मैं भाषाओं के वरदान के बारे में क्या कहूँ? वरदान तो सचमुच! मैंने अध्याय, पुस्तक और नियम को ही गलत समझ लिया—सुसमाचार को व्यवस्था, प्रेरितों के कार्य को उत्पत्ति, यरूशलेम नगर को शिनार का मैदान समझ लिया। यह वरदान नहीं, बल्कि भाषाओं का भ्रम था जिसने मुझे बहरा कर दिया। हे प्रेरितों? क्या! तुम तीनों? बिलकुल नहीं; तीन अभिमानी बेबीलोन के राजमिस्त्री—न ज़्यादा न कम!"

"मैं आपको आश्वस्त करता हूँ, महोदय, हम एक सौहार्दपूर्ण रात्रिभोज के बाद एक गिलास वाइन के साथ थोड़ी बातचीत कर रहे थे - असंतुष्टों को शांत करने के लिए!"

"ओह! क्या तुम असंतुष्टों को शांत कर रहे थे? क्या मैलोन असंतुष्टों को शांत कर रहा था? मुझे तो ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने सह-प्रेरितों को शांत कर रहा हो। तुम तीनों आपस में झगड़ रहे थे, लगभग उतना ही शोर मचा रहे थे जितना मूसा बैराक्लॉ, उपदेशक दर्जी, और उसके सभी श्रोता नीचे मेथोडिस्ट चैपल में मचा रहे हैं, जहाँ पुनरुत्थान ज़ोरों पर है। मुझे पता है किसकी गलती है। - तुम्हारी, मैलोन।"

"मेरा, महोदय?"

"महोदय, आपका। आपके आने से पहले डोने और स्वीटिंग शांत थे, और आपके जाने के बाद भी शांत ही रहेंगे। काश, जब आपने इंग्लिश चैनल पार किया था, तो आप अपनी आयरिश आदतें पीछे छोड़ आए होते। डबलिन के छात्र-छात्राओं वाले तौर-तरीके यहाँ नहीं चलेंगे। जो हरकतें कॉनॉट के किसी जंगली दलदली और पहाड़ी इलाके में किसी का ध्यान आकर्षित किए बिना हो सकती हैं, वे किसी सभ्य अंग्रेजी पैरिश में उन्हें करने वालों के लिए कलंक का कारण बनेंगी, और इससे भी कहीं बुरा, उस पवित्र संस्था के लिए भी कलंक का कारण बनेंगी जिसके वे मात्र मामूली अंग हैं।"

उस छोटे कद के बुजुर्ग सज्जन के इन युवकों को डांटने के तरीके में एक विशेष गरिमा थी, हालांकि शायद वह गरिमा उस अवसर के लिए पूरी तरह उपयुक्त नहीं थी। श्री हेलस्टोन, एकदम सीधे खड़े थे और बेहद सतर्क दिख रहे थे। अपने पादरी वाले हैट, काले कोट और गैटर के बावजूद, वे किसी आदरणीय पुजारी की बजाय अपने अधीनस्थों को डांटने वाले एक अनुभवी अधिकारी की तरह लग रहे थे, न कि अपने शिष्यों को धर्म की शिक्षा देने वाले किसी सम्मानित पादरी की तरह। ऐसा प्रतीत होता था कि उनके उस तीखे भूरे चेहरे पर न तो धार्मिक कोमलता का कोई प्रभाव था और न ही आध्यात्मिक दयालुता का। दृढ़ता ने उनके चेहरे पर अपनी छाप छोड़ी थी और बुद्धिमत्ता ने उसे और भी निखार दिया था।

"मैंने सपलहॉफ से मुलाकात की," उन्होंने आगे कहा, "इस गीली रात में कीचड़ में चलते हुए, मिल्डीन विपक्षी सभा में उपदेश देने जा रहे थे। जैसा कि मैंने आपको बताया, मैंने बैराक्लॉ को एक सभा के बीच में पागल बैल की तरह गरजते हुए सुना; और मैं आपको, सज्जनों, अपने आधे पाइंट मैली पोर्ट वाइन पर रुके हुए और क्रोधित

बूढ़ी महिलाओं की तरह डांटते हुए पाता हूँ। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि सपलहॉफ ने एक दिन में सोलह वयस्क धर्मांतरितों को डुबो दिया - जो उसने दो सप्ताह पहले किया था; इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बैराक्लॉ, जैसा कि वह बदमाश और पाखंडी है, सभी बुनकर लड़कियों को अपने फूलों और रिबन से सजे कपड़ों में आकर्षित करता है, यह देखने के लिए कि उसकी मुट्ठियाँ उसके टब के लकड़ी के किनारे से कितनी सख्त हैं; और इसमें भी कोई आश्चर्य नहीं कि आप, जब आप अपने रेक्टरों - मैं, हॉल और बोल्टबी - के समर्थन के बिना अकेले रह जाते हैं, तो अक्सर हमारे चर्च की पवित्र सेवा खाली दीवारों के सामने करते हैं, और क्लर्क, ऑर्गनिस्ट और बीडल को अपना नीरस भाषण पढ़कर सुनाते हैं।" खैर, इस विषय को यहीं समाप्त करते हैं। मैं मैलोन से मिलने आया हूँ। — हे कप्तान, मुझे आपसे एक काम करना है!

"क्या बात है?" मालोन ने असंतुष्ट होकर पूछा। "दिन के इस समय कोई अंतिम संस्कार नहीं हो सकता।"

क्या आपके पास कोई हथियार हैं?

"हाथ, महोदय? — जी हाँ, और पैर भी।" और उन्होंने अपने शक्तिशाली अंगों को आगे बढ़ाया।

"अरे! मेरा मतलब हथियारों से है।"

"मेरे पास वो पिस्तौलें हैं जो तुमने मुझे खुद दी थीं। मैं उन्हें कभी अपने से अलग नहीं करता। मैं उन्हें रात में अपने बिस्तर के पास एक कुर्सी पर तैयार रखता हूँ। मेरे पास मेरा काला काँटा भी है।"

"बहुत बढ़िया। क्या आप हॉलो मिल जाएंगे?"

हॉलो मिल में क्या हलचल मची है?

"अभी तक तो कुछ नहीं, और शायद आगे भी कुछ न हो; लेकिन मूर वहाँ अकेला है। उसने अपने सभी भरोसेमंद कामगारों को स्टिलब्रो भेज दिया है; वहाँ केवल दो महिलाएँ बची हैं। अगर उसके शुभचिंतकों को पता होता कि उनके लिए रास्ता कितना सीधा है, तो उसके लिए उससे मिलने का यह एक अच्छा अवसर होता।"

"मैं उनका शुभचिंतक नहीं हूँ, महोदय। मुझे उनकी परवाह नहीं है।"

"सोह! मैलोन, तुम डर रहे हो।"

"तुम मुझे इससे बेहतर जानते हो। अगर मुझे सच में लगता कि झगड़े की कोई संभावना है तो मैं ज़रूर जाता: लेकिन मूर एक अजीब, शर्मीला आदमी है, जिसे मैं

कभी समझने का दिखावा नहीं करता; और केवल उसकी मधुर संगति के लिए ही मैं एक कदम भी नहीं हिलूंगा।”

“लेकिन झगड़े की संभावना है; अगर कोई बड़ा दंगा नहीं भी होता है — जिसके मुझे अभी तक कोई संकेत नहीं दिख रहे हैं — तब भी यह रात शांति से नहीं गुजरेगी। आप जानते हैं कि मूर ने नई मशीनरी मंगवाने का फैसला कर लिया है, और उन्हें आज शाम स्टिलब्रो से दो वैगन भरकर फ्रेम और कैंची मिलने की उम्मीद है। देखरेख करने वाला स्कॉट और कुछ चुने हुए आदमी उन्हें लेने गए हैं।”

"वे उन्हें सुरक्षित और चुपचाप अंदर ले आएंगे, महोदय।"

मूर ऐसा कहता है और दावा करता है कि उसे किसी की ज़रूरत नहीं है। लेकिन किसी न किसी को तो उसे रखना ही होगा, कम से कम इसलिए कि अगर कुछ हो जाए तो सबूत के तौर पर काम आ सके। मैं उसे बहुत लापरवाह कहता हूँ। वह लेखा-जोखा में खिड़कियाँ खुली रखकर बैठा रहता है; वह रात में इधर-उधर घूमता है, घाटी में दूर तक जाता है, फील्डहेड लेन से नीचे जाता है, बागानों के बीच जाता है, मानो वह मोहल्ले का चहेता हो, या – जैसा कि वह मोहल्ले का अछूत है – मानो उसका जीवन कहानियों में वर्णित ‘भाग्यशाली’ हो। वह पियर्सन के भाग्य से कोई सबक नहीं लेता, न ही आर्मिटेज के भाग्य से – एक को उसके अपने घर में गोली मार दी गई और दूसरे को दलदल में।

“लेकिन उन्हें चेतावनी लेनी चाहिए, महोदय, और सावधानी भी बरतनी चाहिए,” श्री स्वीटिंग ने बीच में कहा; “और मुझे लगता है कि अगर उन्होंने वह सुना होता जो मैंने उस दिन सुना था, तो वे ऐसा ही करते।”

"डेवी, तुमने क्या सुना?"

“क्या आप माइक हार्टली को जानते हैं, महोदय?”

“क्या वह नियमहीन बुनकर है? हाँ।”

"जब माइक कुछ हफ्तों तक लगातार शराब पीता है, तो वह आम तौर पर ननेली विकारेज जाकर मिस्टर हॉल को उनके उपदेशों के बारे में खरी-खोटी सुनाता है, उनके कर्मों के सिद्धांत की भयावह प्रवृत्ति की निंदा करता है, और उन्हें चेतावनी देता है कि वह और उनके सभी श्रोता घोर अंधकार में बैठे हैं।"

"खैर, इसका मूर से कोई लेना-देना नहीं है।"

"एंटीनोमियन होने के अलावा, वह एक हिंसक जैकोबिन और समतावादी भी है,

महोदय।"

“मुझे पता है। जब वो बहुत नशे में होता है, तो उसका दिमाग हमेशा राजाहत्या के बारे में ही सोचता रहता है। माइक इतिहास से अनजान नहीं है, और उसे उन अत्याचारियों की सूची गिनाते हुए सुनना बड़ा दिलचस्प है, जिनके बारे में वो कहता है, ‘खून का बदला लेने वाले ने अपनी संतुष्टि पा ली है।’ ये आदमी राजनीतिक कारणों से किसी भी राजा या शासक की हत्या करने पर अजीब तरह से खुशी मनाता है। मैंने पहले भी सुना है कि उसे मूर के प्रति एक अजीब सी लालसा है। क्या आप इसी ओर इशारा कर रहे हैं, स्वीटिंग?”

“आपने सही शब्द का प्रयोग किया है, महोदय। श्री हॉल का मानना है कि माइक को मूर से कोई व्यक्तिगत द्वेष नहीं है। माइक कहता है कि उसे उससे बात करना और उसके पीछे भागना अच्छा लगता है, लेकिन वह मूर को सबक सिखाना चाहता है। उसने कुछ दिन पहले श्री हॉल के सामने मूर की प्रशंसा करते हुए उसे यॉर्कशायर का सबसे बुद्धिमान चक्की मालिक बताया था, और इसी कारण वह चाहता है कि मूर को बलि के रूप में चुना जाए, एक मीठी भेंट के रूप में। क्या माइक हार्टली होश में है, आपको क्या लगता है, महोदय?” स्वीटिंग ने सीधे-सादे शब्दों में पूछा।

"कह नहीं सकते, डेवी। हो सकता है वह पागल हो, या हो सकता है वह सिर्फ चालाक हो, या शायद दोनों का थोड़ा-थोड़ा मिश्रण हो।"

"वह दिव्य दर्शन होने की बात करता है, महोदय।"

“अरे! दर्शनों के मामले में वह बिल्कुल यहेजकेल या दानियेल जैसा है। पिछले शुक्रवार की रात जब मैं सोने जा रहा था, तभी वह आया और उसने मुझे उस दर्शन के बारे में बताया जो उसे उसी दोपहर नननेली पार्क में दिखाई दिया था।”

“बताइए महोदय। क्या बात थी?” स्वीटिंग ने आग्रह किया।

“डेवी, तुम्हारे दिमाग में आश्चर्य की अपार शक्ति है। देखो, मालोन के पास तो ऐसी कोई शक्ति नहीं है। न तो हत्याओं में उसकी कोई रुचि है और न ही किसी दर्शन में। देखो, इस समय सैफ कितना खाली-खाली सा दिख रहा है।”

“Saph! Who was Saph, sir?”

“मुझे लगा था कि आपको पता नहीं होगा। शायद आपको पता चल जाए। यह बाइबल में लिखा है। मैं उसके नाम और जाति के अलावा उसके बारे में कुछ नहीं जानता; लेकिन बचपन से ही मैंने सैफ को एक व्यक्तित्व के रूप में देखा है। यकीन

मानिए, वह ईमानदार, भारी-भरकम और बदनसीब था। गोब में सिब्बेकै के हाथों उसकी मृत्यु हुई।"

"लेकिन दृष्टि का क्या, महोदय?"

"डेवी, तुम सुनोगे। डोने अपने नाखून चबा रहा है, और मैलोन जम्हाई ले रहा है, इसलिए मैं यह बात सिर्फ तुम्हें ही बताऊँगा। माइक, कई अन्य लोगों की तरह, दुर्भाग्य से बेरोजगार है। सर फिलिप ननेली के प्रबंधक श्री ग्राम ने उसे मठ में एक काम दिया था। उसके अनुसार, माइक दोपहर के काफी देर बाद, अंधेरा होने से पहले, बाड़ लगाने में व्यस्त था, तभी उसने दूर से एक बैंड की आवाज़ सुनी - बिगुल, बांसुरी और तुरही की आवाज़; यह जंगल से आ रही थी, और उसे आश्चर्य हुआ कि वहाँ संगीत कैसे हो सकता है। उसने ऊपर देखा। पेड़ों के बीच उसने हिलती हुई वस्तुएँ देखीं, लाल, जैसे अफीम के फूल, या सफेद, जैसे मई के फूल। जंगल उनसे भरा हुआ था; वे बाहर निकलकर पार्क में भर गए। तब उसने देखा कि वे सैनिक थे - हजारों और दसियों हजारों; लेकिन वे गर्मियों की शाम में मच्छरों के झुंड से ज्यादा शोर नहीं कर रहे थे। उसने पुष्टि की कि वे पंक्तिबद्ध थे, और एक के बाद एक रेजिमेंट पार्क के पार मार्च कर रही थी। वह उनके पीछे गया... ननेली कॉमन; संगीत अभी भी धीमी और दूर से सुनाई दे रहा था। मैदान पर उसने उन्हें कई तरह के करतब करते देखा। लाल वस्त्र पहने एक व्यक्ति बीच में खड़ा होकर उन्हें निर्देश दे रहा था। उसने बताया कि वे पचास एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैले हुए हैं। वे आधे घंटे तक दिखाई दिए; फिर वे बिल्कुल खामोशी से चले गए। पूरे समय उसे न तो कोई आवाज सुनाई दी और न ही कदमों की आहट—केवल धीमी, गंभीर धुन बजती रही।

"वे कहाँ गए, महोदय?"

"ब्रायफ़ील्ड की ओर। माइक उनके पीछे-पीछे गया। वे फ़ील्डहेड से गुज़रते हुए लग रहे थे, तभी तोपखाने से निकलने वाले धुएं के गुबार जैसा एक गुबार चुपचाप खेतों, सड़क और मैदान पर फैल गया और, माइक के अनुसार, नीले और धुंधले धुएं के गुबार की तरह उसके पैरों तक आ गया। जैसे ही धुआं छटा, उसने फिर से सैनिकों को देखा, लेकिन वे गायब हो चुके थे; उसने उन्हें फिर कभी नहीं देखा। माइक, अपनी बुद्धिमत्ता के कारण, न केवल उस दृश्य का वर्णन किया बल्कि उसकी व्याख्या भी की। उसने संकेत दिया कि इसका अर्थ रक्तपात और गृहयुद्ध है।"

"क्या आप इस पर विश्वास करते हैं, महोदय?" स्वीटिंग ने पूछा।

“क्या तुम ऐसा कर रहे हो, डेवी? — लेकिन आओ, मैलोन; तुम अभी तक क्यों नहीं जा रहे हो?”

"मुझे आश्चर्य है, महोदय, कि आप स्वयं मूर के साथ नहीं रुके। आपको इस तरह की चीजें पसंद हैं।"

“तो मैं ऐसा ही करता, अगर दुर्भाग्यवश मैंने बोल्टबी को ननेली में बाइबल सोसाइटी की बैठक से लौटते समय मेरे साथ रात का खाना खाने के लिए न बुलाया होता। मैंने तुम्हें अपने बदले भेजने का वादा किया था; जिसके लिए, वैसे, उसने मुझे धन्यवाद नहीं दिया। पीटर, वह तुम्हें छोड़कर मुझे ज़्यादा पसंद करता। अगर सच में मदद की ज़रूरत पड़ी तो मैं तुम्हारे साथ आ जाऊँगा। चक्की की घंटी चेतावनी देगी। तब तक, जाओ — जब तक (अचानक श्रीमान स्वीटिंग और डोने की ओर मुड़ते हुए) — जब तक डेवी स्वीटिंग या जोसेफ डोने जाना पसंद न करें। — क्या कहते हो सज्जनों? यह ज़िम्मेदारी सम्मानजनक है, लेकिन इसमें थोड़ा वास्तविक खतरा भी है; क्योंकि जैसा कि आप सभी जानते हैं, देश की हालत अजीब है, और मूर, उसकी चक्की और उसकी मशीनरी को काफ़ी बदनामी झेलनी पड़ती है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि तुम्हारी उन जैकेटों के नीचे वीर भावनाएँ और ज़बरदस्त साहस है। शायद मैं अपने पसंदीदा पीटर के प्रति कुछ ज़्यादा ही पक्षपाती हूँ। छोटा डेविड विजेता होगा, या फिर बेदाग जोसेफ। — मैलोन, तुम तुम तो बस एक बड़े से लाचार शाऊल की तरह हो, जो सिर्फ अपना कवच उधार देने के लायक हो। अपने हथियार निकालो; अपनी ढाल ले आओ। वो वहीं कोने में है।

एक बड़ी मुस्कान के साथ मालोन ने अपनी पिस्तौलें निकालीं और अपने सभी साथियों को एक-एक पिस्तौल भेंट की। लेकिन किसी ने भी उन्हें तुरंत नहीं लिया। शालीनता से प्रत्येक सज्जन भेंट किए गए हथियार से एक कदम पीछे हट गए।

“मैं उन्हें कभी नहीं छूता। मैंने कभी भी इस तरह की किसी भी चीज को नहीं छुआ,” श्री डोने ने कहा।

"मैं मिस्टर मूर के लिए लगभग अजनबी हूं," स्वीटिंग ने धीरे से कहा।

“अगर तुमने कभी पिस्तौल को हाथ नहीं लगाया, तो अब इसे चला कर देखो, मिस्र के महान शासक। जहाँ तक उस नन्हे गायक की बात है, वह शायद फ़िलिस्तीनियों का सामना अपनी बांसुरी के अलावा किसी और हथियार के बिना करना पसंद करेगा। — पीटर, उनकी टोपियाँ ले आओ। वे दोनों ही मारे जाएँगे।”

“नहीं, महोदय; नहीं, श्रीमान हेलस्टोन। मेरी माँ को यह पसंद नहीं आएगा,” स्वीटिंग ने विनती की।

“और मैंने यह नियम बना रखा है कि मैं इस तरह के मामलों में कभी शामिल नहीं होता,” डोने ने कहा।

हेलस्टोन ने व्यंग्यात्मक मुस्कान दी; मैलोन ज़ोर से हँसा। फिर उसने अपने हथियार वापस रखे, अपनी टोपी और लाठी उठाई, और यह कहते हुए कि "उसे अपने जीवन में कभी भी किसी पार्टी के लिए इतना तैयार महसूस नहीं हुआ, और वह चाहता है कि बीस चिकने कपड़े धोने वाले उस रात मूर के कमरे में मारपीट करें," वह एक-दो कदम में सीढ़ियाँ पार करते हुए निकल गया, और उसके पीछे दरवाजे के ज़ोर से बंद होने की आवाज़ से पूरा घर हिल गया।

अध्याय II.

वैगन।

शाम घोर अंधेरी थी: तारे और चाँद भूरे बारिश के बादलों में डूबे हुए थे—दिन में तो वे भूरे ही होते; रात में वे काले रंग के दिख रहे थे। मालोन प्रकृति का बारीकी से अवलोकन करने वाला व्यक्ति नहीं था; प्रकृति के परिवर्तन अधिकतर उसकी नज़र से ओझल ही रहते थे। वह अप्रैल के सबसे परिवर्तनशील दिन में मीलों चल सकता था और धरती और आकाश के सुंदर मिलन को कभी नहीं देख पाता—कभी यह नहीं देख पाता कि कब सूर्य की किरण पहाड़ियों की चोटियों को चूमती है, उन्हें हरे प्रकाश में

मुस्कुराती हुई दिखाती है, या कब बारिश उन पर बरसती है, उनकी चोटियों को बादलों की लटकती, बिखरी हुई लटों से ढक देती है। इसलिए, उसने आकाश की तुलना करने की परवाह नहीं की, जैसा कि वह अब दिखाई दे रहा था—एक धुंधला, बहता हुआ गुंबद, पूरी तरह से काला, सिवाय उस जगह के जहाँ पूर्व की ओर, स्टिलब्रो के लौह कारखाने की भट्टियाँ क्षितिज पर एक कांपती हुई भयावह झिलमिलाहट बिखेर रही थीं—एक निर्बल, बर्फीली रात के उसी आकाश से। उसने न तो तारामंडलों और ग्रहों के गायब होने की चिंता की, न ही उस शांत आकाश-महासागर की, जो उन सफेद द्वीपों से घिरा हुआ था, और जिसे अब एक और, अधिक भारी और सघन महासागर, नीचे फैलाकर छिपा रहा था। वह बस दृढ़ता से अपने रास्ते पर चलता रहा, चलते समय थोड़ा आगे की ओर झुका हुआ, और अपनी टोपी सिर के पीछे पहने हुए, जैसा कि उसका आयरिश रिवाज था। "ट्रैम्प, ट्रैम्प," वह उस पुलिया पर चलता रहा, जहाँ सड़क को ऐसी सुविधा का सौभाग्य प्राप्त था; "स्प्लैश, स्प्लैश," कीचड़ से भरे बैलगाड़ी के पहियों के निशानों से, जहाँ झंडे नरम मिट्टी में तब्दील हो गए थे। वह केवल कुछ खास निशानों को देख रहा था - ब्रायर्फ़ील्ड चर्च का शिखर; और आगे, रेडहाउस की रोशनी। यह एक सराय थी; और जब वह वहाँ पहुँचा, तो आधे पर्दे वाली खिड़की से आती आग की चमक, गोल मेज पर रखे गिलासों का दृश्य, और ओक की बेंच पर बैठे मौज-मस्ती करने वालों को देखकर पादरी लगभग अपने काम से हट गया था। उन्हें व्हिस्की और पानी के एक गिलास की बहुत याद आ रही थी। किसी अनजान जगह पर तो उनका यह सपना तुरंत पूरा हो जाता; लेकिन उस रसोई में मौजूद सभी लोग मिस्टर हेलस्टोन के अपने ही चर्च के सदस्य थे; वे सब उन्हें जानते थे। उन्होंने आह भरी और आगे बढ़ गए।

अब मुख्य सड़क को छोड़ना ही था, क्योंकि हॉलो मिल तक की शेष दूरी खेतों से होकर जाने वाले शॉर्टकट से काफी कम हो सकती थी। ये खेत समतल और एक जैसे थे। मैलोन ने झाड़ियों और दीवारों को फांदते हुए सीधे उनके बीच से रास्ता बनाया। यहाँ से वह केवल एक इमारत के पास से गुजरा, जो देखने में बड़ी और हॉल जैसी लग रही थी, हालांकि उसका आकार अनियमित था। उसमें एक ऊँचा गैबल, फिर एक लंबा अग्रभाग, फिर एक नीचा गैबल, और फिर चिमनियों का एक मोटा, ऊँचा ढेर दिखाई दे रहा था। उसके पीछे कुछ पेड़ थे। अँधेरा था; किसी भी खिड़की से मोमबत्ती की रोशनी नहीं आ रही थी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था; छज्जों से टपकती

बारिश की आवाज़ और चिमनियों के चारों ओर और डालियों से होकर बहने वाली हवा की हल्की लेकिन तेज़ सीटी जैसी आवाज़ ही आसपास की एकमात्र आवाज़ें थीं।

यह इमारत पार हो गई, और अब तक समतल रहे खेत तेज़ी से ढलान पर उतरने लगे। स्पष्ट रूप से नीचे एक घाटी थी, जिसमें से पानी के बहने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। गहराई में एक हल्की रोशनी टिमटिमा रही थी। उसी रोशनी की ओर मालोन ने अपना रास्ता तय किया।

वह एक छोटे से सफेद घर के पास आया—घने अंधेरे में भी उसका सफेद रंग साफ दिख रहा था—और उसने दरवाजा खटखटाया। एक सजी-धजी नौकरानी ने दरवाजा खोला। उसके हाथ में पकड़ी मोमबत्ती की रोशनी से एक संकरा रास्ता दिखाई दिया, जो एक संकरी सीढ़ी पर जाकर खत्म होता था। गहरे लाल रंग के कपड़े से ढके दो दरवाजे, सीढ़ियों पर बिछी गहरे लाल रंग की कालीन, हल्के रंग की दीवारों और सफेद फर्श के विपरीत, घर के छोटे से हिस्से को साफ-सुथरा और ताजगी भरा बना रहे थे।

"मुझे लगता है कि मिस्टर मूर घर पर हैं?"

"जी सर, लेकिन वह यहाँ नहीं हैं।"

“अंदर नहीं! फिर वह कहाँ है?”

चक्की में— लेखा-जोखा कक्ष में।

यहां लाल रंग के दरवाजों में से एक दरवाजा खुल गया।

“क्या गाड़ियाँ आ गई हैं, सारा?” एक स्त्री की आवाज़ आई और उसी क्षण एक स्त्री का सिर दिखाई दिया। यह किसी देवी का सिर तो नहीं था—वास्तव में कनपटी के दोनों ओर बालों की लटें इस धारणा को पूरी तरह से नकार रही थीं—लेकिन यह किसी गॉर्गन का सिर भी नहीं था; फिर भी मालोन ने इसे गॉर्गन ही समझा। अपने विशालकाय शरीर के बावजूद, वह इसे देखकर शर्म से पीछे हटकर बारिश में चला गया और “मैं उसके पास जाता हूँ” कहते हुए, घबराते हुए एक छोटी सी गली से होते हुए, एक सुनसान आँगन को पार करके, एक विशाल काली चक्की की ओर चल पड़ा।

काम के घंटे समाप्त हो चुके थे; मजदूर जा चुके थे। मशीनें बंद थीं, चक्की ठप्प थी। मैलोन चक्की के चारों ओर घूमा। उसकी विशाल, धुएँ से सनी दीवार में कहीं उसे रोशनी की एक और किरण दिखाई दी; उसने अपने डंडे के मोटे सिरे से एक और

दरवाजे पर दस्तक दी और उसे जोर से पटका। एक चाबी घूमी; दरवाजा खुल गया।

“क्या यह जो स्कॉट है? वैगनों के बारे में क्या खबर है, जो?”

“नहीं; मैं खुद हूँ। श्री हेलस्टोन मुझे भेजेंगे।”

“ओह! श्रीमान मैलोन।” इस नाम का उच्चारण करते समय आवाज़ में निराशा का हल्का सा भाव था। एक क्षण के विराम के बाद, विनम्रतापूर्वक लेकिन थोड़ी औपचारिकता से आवाज़ जारी रही, —

“श्रीमान मैलोन, आपसे निवेदन है कि आप अंदर आएं। मुझे अत्यंत खेद है कि श्री हेलस्टोन ने आपको इतनी दूर तक परेशान करना आवश्यक समझा। इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी—मैंने उन्हें यह स्पष्ट कर दिया था—और वह भी ऐसी रात में; कृपया आगे आइए।”

एक अंधेरे, अस्पष्ट से दिखने वाले कमरे से गुज़रते हुए, मालोन वक्ता के पीछे-पीछे एक उजाले और चमकदार कमरे में पहुँचा—वास्तव में वह कमरा बहुत ही उजाला और चमकदार लग रहा था, क्योंकि पिछले एक घंटे से वह कमरा रात और कोहरे के घने अंधेरे को भेदने की कोशिश कर रहा था; लेकिन उसकी बेहतरीन आग और मेज पर जल रहे एक सुंदर और चमकीली रोशनी वाले दीपक के अलावा, वह कमरा बहुत ही साधारण था। लकड़ी के फर्श पर कालीन नहीं था; तीन-चार सख्त पीठ वाली, हरे रंग से रंगी कुर्सियाँ किसी फार्महाउस की रसोई की शोभा बढ़ाती हुई प्रतीत होती थीं; एक मजबूत, ठोस बनावट वाली मेज, ऊपर बताई गई मेज और पत्थर के रंग की दीवारों पर लगे कुछ फ्रेम वाले कागज़, जिन पर भवन निर्माण, बागवानी, मशीनरी के डिज़ाइन आदि की योजनाएँ छपी थीं, उस कमरे के साज-सज्जा को पूरा करते थे।

यह देखने में भले ही साधारण था, लेकिन इससे मैलोन संतुष्ट प्रतीत हुआ। उसने अपना गीला ओवरकोट और टोपी उतारकर टांग दी, फिर गठिया से ग्रस्त दिखने वाली कुर्सियों में से एक को चूल्हे के पास खींच लिया और अपने घुटनों को लाल अंगीठी की सलाखों के लगभग भीतर रख दिया।

"आपके लिए यहां आरामदायक कमरे हैं, श्री मूर; और आप यहां पूरी तरह से निश्चिंत होकर रह सकते हैं।"

"हां, लेकिन अगर आप घर में आना पसंद करें तो मेरी बहन आपको देखकर खुश होगी।"

“अरे नहीं! महिलाओं को अकेले ही बेहतर लगता है, मैं कभी महिलाओं का

दीवाना नहीं रहा। कहीं आप मुझे मेरे दोस्त स्वीटिंग तो नहीं समझ रहे, श्रीमान मूर?"

"वाह! इनमें से कौन है? चॉकलेट रंग के ओवरकोट वाला सज्जन, या छोटा सज्जन?"

"वो छोटा सा – ननेली का रहने वाला; मिस साइक्स का आशिक, जिनसे वो पूरी छहों से प्यार करता है, हा! हा!"

"मेरे विचार से, उस मामले में किसी एक से विशेष रूप से प्यार करने की बजाय सभी से सामान्य रूप से प्यार करना बेहतर है।"

"लेकिन वह किसी और से विशेष रूप से प्यार करता है, क्योंकि जब मैंने और डोने ने उसे सुंदरियों के समूह में से किसी एक को चुनने के लिए कहा, तो उसने नाम लिया - आपको क्या लगता है कि वह कौन है?"

एक विचित्र, शांत मुस्कान के साथ श्री मूर ने उत्तर दिया, "बेशक, डोरा या हैरियट।"

"हा! हा! आपका अनुमान बिल्कुल सही है। लेकिन आपको उन दोनों पर नज़र डालने का विचार कैसे आया?"

"क्योंकि वे सबसे लंबे, सबसे सुंदर हैं, और डोरा, कम से कम, सबसे हष्ट-पुष्ट है; और चूंकि आपके मित्र श्री स्वीटिंग थोड़े दुबले-पतले हैं, इसलिए मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि ऐसे मामलों में एक आम नियम के अनुसार, उन्होंने अपने विपरीत स्वभाव वाले व्यक्ति को प्राथमिकता दी।"

"तुम सही कह रहे हो; डोरा ही ठीक है। लेकिन उसके पास कोई मौका नहीं है, है ना, मूर?"

"श्री स्वीटिंग के पास पादरी पद के अलावा और क्या है?"

यह सवाल सुनकर मैलोन को बहुत हंसी आई। जवाब देने से पहले वह पूरे तीन मिनट तक हंसता रहा।

"स्वीटिंग के पास क्या है? डेविड के पास उसका वीणा या बांसुरी है, जो लगभग एक ही बात है। उसके पास एक तरह की पिंचबेक घड़ी है; वैसी ही एक अंगूठी; वैसा ही एक चश्मा। बस यही सब उसके पास है।"

"वह मिस साइक्स को केवल गाउन में ही रखने का प्रस्ताव कैसे रखेगा?"

हा हा! बहुत बढ़िया! अगली बार जब मैं उससे मिलूंगा तो उससे यही पूछूंगा। उसकी इस धृष्टता पर मैं उसे खूब खरी-खोटी सुनाऊंगा। लेकिन इसमें कोई शक नहीं

कि वह उम्मीद कर रहा होगा कि बूढ़ा क्रिस्टोफर साइक्स कुछ शानदार करेगा। वह अमीर है, है ना? वे एक बड़े घर में रहते हैं।

"साइक्स एक व्यापक व्यवसाय का संचालन करता है।"

"तो वह जरूर अमीर होगा, है ना?"

"इसलिए उसके पास अपनी संपत्ति से करने के लिए बहुत कुछ होगा, और इन दिनों में उसके लिए अपने व्यवसाय से पैसा निकालकर अपनी बेटियों को दहेज देने के बारे में सोचना उतना ही संभव है जितना कि मेरे लिए वहां की झोपड़ी को गिराने और उसके खंडहरों पर फील्डहेड जितना बड़ा घर बनाने का सपना देखना।"

"क्या तुम्हें पता है मैंने उस दिन क्या सुना, मूर?"

“नहीं। शायद मैं कुछ ऐसा ही बदलाव लाने वाला था। ब्रायरफील्ड की ये गपशप करने वाली औरतें ऐसी या इससे भी बेवकूफी भरी बातें कह सकती हैं।”

“तुम फील्डहेड को पट्टे पर लेने वाले थे (वैसे, आज रात जब मैं वहाँ से गुज़रा तो मुझे वह जगह बहुत ही वीरान लगी), और तुम्हारा इरादा मिस साइक्स को वहाँ रखैल बनाकर बसाने का था—संक्षेप में, शादी करने का, हा हा! अब, सच क्या है? मुझे यकीन है, डोरा। तुमने कहा था कि वह सबसे खूबसूरत है।”

“मुझे आश्चर्य होता है कि जब से मैं ब्रायरफील्ड आई हूँ, कितनी बार मेरी शादी तय हो चुकी है। उन्होंने बारी-बारी से जिले की हर शादी योग्य अविवाहित महिला को मेरे हवाले कर दिया है। पहले दो मिस विन्न थीं - पहले सांवली, फिर गोरी; अब लाल बालों वाली मिस आर्मिटेज; फिर परिपक्व ऐन पियर्सन। फिलहाल तो आप मिस साइक्स के पूरे परिवार का बोझ मेरे कंधों पर डाल रहे हैं। इस अफवाह का आधार तो भगवान ही जाने। मैं कहीं नहीं जाती; मैं महिलाओं की संगति उतनी ही लगन से तलाशती हूँ जितनी आप, मिस्टर मैलोन। अगर कभी मैं व्हिनबरी जाती भी हूँ, तो सिर्फ साइक्स या पियर्सन से उनके लेखा कार्यालय में मिलने के लिए, जहाँ हमारी चर्चाएँ शादी के अलावा अन्य विषयों पर होती हैं, और हमारे विचार प्रेम-प्रसंग, घर-बार, दहेज जैसी बातों से परे होते हैं। जो कपड़ा हम बेच नहीं सकते, जो मजदूर हम काम पर नहीं रख सकते, जो मिलें हम चला नहीं सकते, और घटनाओं का वह कुटिल क्रम जिसे हम बदल नहीं सकते, ये सब हमारे दिलों को, मेरा मानना है, फिलहाल काफी हद तक भर चुके हैं। प्रेम-संबंध आदि जैसी काल्पनिक बातों का बहिष्कार।

“मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ, मूर। अगर कोई एक धारणा है जिससे मुझे सबसे

ज़्यादा नफ़रत है, तो वह है विवाह की धारणा — मेरा मतलब है विवाह का वह घिसा-पिटा और कमज़ोर अर्थ, महज़ भावनाओं का मामला — दो कंगाल मूर्खों का किसी बेतुके भावनात्मक बंधन में अपनी दरिद्रता को जोड़ने का फ़ैसला। बकवास! लेकिन एक सार्थक संबंध, जो गरिमापूर्ण विचारों और ठोस हितों की स्थिरता के अनुरूप हो, इतना बुरा नहीं है — है ना?"

"नहीं," मूर ने अनमने भाव से उत्तर दिया। इस विषय में उनकी कोई रुचि नहीं थी; उन्होंने इस पर आगे चर्चा नहीं की। कुछ देर तक उदास भाव से आग को निहारते रहने के बाद, उन्होंने अचानक अपना सिर घुमाया।

"सुनो!" उसने कहा। "क्या तुम्हें पहियों की आवाज सुनाई दी?"

उठकर वह खिड़की के पास गया, उसे खोला और सुनने लगा। फिर उसने जल्दी से उसे बंद कर दिया। उसने कहा, "यह तो बस हवा के चलने की आवाज़ है, और छोटी नदी में पानी थोड़ा बढ़ गया है, जो घाटी में तेज़ी से बह रही है। मुझे छह बजे उन गाड़ियों के आने की उम्मीद थी; अभी लगभग नौ बज रहे हैं।"

"सच में, क्या आपको लगता है कि इस नई मशीनरी को लगाने से आप खतरे में पड़ जाएंगे?" मालोन ने पूछा। "हेलस्टोन को तो यही लगता है।"

"मेरी बस यही इच्छा है कि मशीनें—ये ढांचे—यहाँ सुरक्षित रहें और इस चक्की की दीवारों के भीतर ही रहें। एक बार लग जाने के बाद, मैं ढांचे तोड़ने वालों को चुनौती देता हूँ। उन्हें बस मुझसे मिलने आना है और अंजाम भुगतना है। मेरी चक्की ही मेरा किला है।"

"ऐसे नीच बदमाशों से घृणा होती है," मालोन ने गहन चिंतन के स्वर में कहा। "काश आज रात कोई दल आपसे मिलने आता; लेकिन जब मैं यहाँ से गुज़रा तो सड़क एकदम शांत लग रही थी। मुझे कुछ भी हलचल नहीं दिखी।"

"क्या आप रेडहाउस से होकर आए थे?"

"हाँ।"

"उस सड़क पर कुछ भी नहीं होगा। खतरा स्टिलब्रो की दिशा में है।"

"और आपको लगता है कि इसमें जोखिम है?"

"इन लोगों ने दूसरों के साथ जो किया है, वही मेरे साथ भी कर सकते हैं। फर्क सिर्फ इतना है: हमले होने पर ज्यादातर निर्माता पंगु हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, साइक्स, जब उसकी ड्रेसिंग की दुकान में आग लगा दी गई और वह जलकर राख हो

गई, जब उसके टेंट से कपड़ा फाड़कर खेत में टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया, तब भी उसने अपराधियों को पकड़ने या दंडित करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया: वह नेवले के जबड़ों के नीचे खरगोश की तरह चुपचाप आत्मसमर्पण कर दिया। अब मैं, अगर मैं खुद को जानता हूँ, तो अपने व्यापार, अपनी चक्की और अपनी मशीनरी के साथ खड़ा रहूँगा।"

"हेलस्टोन का कहना है कि ये तीनों तुम्हारे देवता हैं; कि 'ऑर्डर्स इन काउंसिल' तुम्हारे लिए सात घातक पापों का दूसरा नाम है; कि कैसलरेघ तुम्हारा एंटीक्राइस्ट है, और युद्ध-दल उसकी सेना है।"

“हाँ; मुझे ये सब चीज़ें नापसंद हैं क्योंकि ये मुझे बर्बाद कर देती हैं। ये मेरे रास्ते में रुकावट बनती हैं। मैं आगे नहीं बढ़ पाता। इनके कारण मैं अपनी योजनाओं को अंजाम नहीं दे पाता। इनके बुरे प्रभावों से मैं हर मोड़ पर खुद को हताश पाता हूँ।”

"लेकिन आप तो अमीर और समृद्ध हैं, मूर?"

मेरे पास बहुत सारा कपड़ा है जिसे मैं बेच नहीं सकता। आपको मेरे गोदाम में आकर देखना चाहिए कि वह कपड़ों के टुकड़ों से छत तक भरा पड़ा है। रोक्स और पियर्सन की भी यही हालत है। अमेरिका कभी उनका बाज़ार हुआ करता था, लेकिन परिषद के आदेशों ने उसे बंद कर दिया है।

मालोन इस तरह की बातचीत को तेज़ी से जारी रखने के लिए तैयार नहीं लग रहा था। वह अपने जूतों की एड़ियों को आपस में टकराने लगा और जम्हाई लेने लगा।

“और फिर सोचो,” श्री मूर, जो अपने विचारों में इतने मग्न लग रहे थे कि अपने मेहमान की ऊब के लक्षणों पर ध्यान ही नहीं दे पा रहे थे, अपनी बात जारी रखते हुए बोले — “सोचो कि व्हिनबरी और ब्रायर्फ़ील्ड की ये बेतुकी गपशप करने वाली औरतें शादी के बारे में मुझे परेशान करती रहेंगी! मानो जीवन में करने के लिए कुछ है ही नहीं सिवाय किसी युवती पर ‘ध्यान देने’ के, जैसा कि वे कहते हैं, उसके साथ चर्च जाने के, फिर शादी के दौरे पर निकलने के, फिर कई मुलाकातों का सिलसिला चलाने के, और फिर, मुझे लगता है, ‘परिवार बसाने’ के। ओह, ये शैतानी मुसीबत!” उन्होंने अपनी उस आकांक्षा को बीच में ही रोक दिया जिसे वे कुछ ऊर्जा के साथ व्यक्त कर रहे थे, और अधिक शांत होकर बोले, “मेरा मानना है कि औरतें केवल इन्हीं चीजों के बारे में बात करती हैं और सोचती हैं, और वे स्वाभाविक रूप से पुरुषों के दिमाग को भी इसी तरह व्यस्त समझती हैं।”

“बिल्कुल—बिल्कुल,” मैलोन ने सहमति जताते हुए कहा; “लेकिन उन्हें छोड़ो।” और उसने सीटी बजाई, बेचैनी से चारों ओर देखा, और ऐसा लगा जैसे उसे किसी चीज़ की बहुत ज़रूरत हो। इस बार मूर ने उसकी बात समझ ली और ऐसा लगा कि वह उसके इशारों को समझ गया है।

“श्रीमान मैलोन,” उसने कहा, “गीली-गीली सैर के बाद आपको जलपान की आवश्यकता होगी। मैं आतिथ्य सत्कार भूल गया हूँ।”

“बिल्कुल नहीं,” मैलोन ने जवाब दिया; लेकिन ऐसा लग रहा था मानो आखिरकार उसे सही बात पता चल गई हो। मूर उठा और उसने एक अलमारी खोली।

“मेरी यही इच्छा है,” उसने कहा, “कि मुझे हर सुविधा अपने पास मिले और खाने-पीने के लिए मुझे उस झोपड़ी में रहने वाली स्त्री पर निर्भर न रहना पड़े। मैं अक्सर शाम यहीं अकेले बिताता हूँ और खाना खाता हूँ, और चक्की में जो स्कॉट के साथ सोता हूँ। कभी-कभी मैं खुद ही पहरेदार बन जाता हूँ। मुझे कम नींद चाहिए और किसी सुहावनी रात में अपनी बंदूक लेकर एक-दो घंटे घाटी में घूमना मुझे अच्छा लगता है। श्रीमान मैलोन, क्या आप मटन चॉप बना सकते हैं?”

"मुझे आजमा कर देखो। मैंने कॉलेज में यह सैकड़ों बार किया है।"

“ये लो एक प्लेट भर के, और ये रहा ग्रिल। इन्हें जल्दी से पलट दो। तुम्हें पता है रस को अंदर ही रखने का राज क्या है?”

“मुझसे कभी मत डरो; तुम देख लोगे। कृपया मुझे एक चाकू और कांटा दीजिए।”

पादरी ने अपने कोट के कफ़ ऊपर मोड़े और पूरी लगन से खाना पकाने में जुट गया। खाना बनाने वाले ने मेज पर प्लेटें, एक पाव रोटी, एक काली बोतल और दो गिलास रखे। फिर उसने एक छोटी तांबे की केतली निकाली - जो अभी भी उसी अच्छी तरह से रखे हुए कोने, उसकी अलमारी से थी - कोने में रखे एक बड़े पत्थर के जार से उसमें पानी भरा, उसे सरसराते चूल्हे के बगल में आग पर रखा, नींबू, चीनी और एक छोटा चीनी मिट्टी का पंच-बाउल लिया; लेकिन जब वह पंच बना रहा था, दरवाजे पर दस्तक ने उसे बुला लिया।

"क्या तुम हो, सारा?"

जी हाँ। क्या आप कृपया रात के खाने पर आएँगे?

“नहीं; मैं आज रात घर पर नहीं रहूँगा; मैं चक्की में सोऊँगा। इसलिए दरवाजे बंद कर दो, और अपनी मालकिन से कहो कि वह सो जाए।”

वह लौटे।

"तुम्हारा घर-बार अच्छे से व्यवस्थित है," मालोन ने प्रशंसा करते हुए कहा, और झुककर अपने सुंदर चेहरे को अंगारों की तरह लाल करते हुए, बड़ी लगन से मटन चॉप्स को पलटते रहे। "तुम बेचारे स्वीटिंग की तरह किसी औरत के अधीन नहीं हो, वो आदमी—उफ़! चर्बी कैसे छलकती है! मेरा हाथ जल गया—औरतों के इशारों पर चलने के लिए ही बना है। अब तुम और मैं, मूर—ये लो तुम्हारे लिए एक बढ़िया भूरी और रसीली चीज़—हम दोनों शादी के बाद अपने अस्तबलों में कोई बूढ़ी घोड़ी नहीं रखेंगे।"

मुझे नहीं पता; मैं इसके बारे में कभी सोचता ही नहीं। अगर भूरी घोड़ी सुंदर और आज्ञाकारी है, तो क्यों नहीं?

"चॉप्स पक गए हैं। क्या पंच तैयार है?"

"एक गिलास भर है। इसे चखो। जब जो स्कॉट और उसके साथी लौटेंगे तो उन्हें भी इसमें से हिस्सा मिलेगा, बशर्ते वे शवों को सही सलामत घर ले आएं।"

मालोन भोजन के दौरान बहुत खुश था। वह छोटी-छोटी बातों पर जोर-जोर से हंसता, भद्दे चुटकुले सुनाता और खुद उनकी सराहना करता, और संक्षेप में कहें तो, वह बेवजह शोर मचाता रहा। इसके विपरीत, उसका मेज़बान पहले की तरह शांत रहा। पाठक, अब समय आ गया है कि आपको इस मेज़बान के रूप-रंग का कुछ अंदाजा हो जाए। मैं मेज़ पर बैठे हुए उसका चित्र बनाने का प्रयास करूंगा।

पहली नज़र में शायद आप उसे कुछ अजीब दिखने वाला आदमी कहेंगे; क्योंकि वह दुबला-पतला, सांवला, पीला-सा, दिखने में बिल्कुल विदेशी है, और उसके माथे पर बिखरे हुए घने बाल हैं। ऐसा लगता है कि वह अपने श्रृंगार पर ज़्यादा समय नहीं बिताता, वरना वह और भी सलीके से तैयार होता। उसे शायद इस बात का एहसास ही नहीं है कि उसके चेहरे की बनावट कितनी सुंदर है, उसमें दक्षिणी समरूपता, स्पष्टता और नियमितता है; और देखने वाले को इस खूबी का एहसास तब तक नहीं होता जब तक वह उसे ध्यान से न देख ले, क्योंकि उसका चिंतित चेहरा और धंसा हुआ, कुछ हद तक मुरझाया हुआ चेहरा सुंदरता की धारणा को चिंता से भर देता है। उसकी आँखें बड़ी, गंभीर और धूसर हैं; उनका भाव एकाग्र और चिंतनशील है, कोमल होने के बजाय खोजपूर्ण, मिलनसार होने के बजाय विचारशील। जब वह मुस्कुराता है, तो उसका चेहरा देखने में अच्छा लगता है—हालांकि वह तब भी स्पष्टवादी या हंसमुख

नहीं होता, फिर भी उसमें एक शांत आकर्षण झलकता है, जो सचमुच या धोखे से, एक विचारशील, शायद दयालु स्वभाव का संकेत देता है, ऐसे भावों का जो घर पर सहज लगते हैं— धैर्यवान, सहनशील, संभवतः वफादार भाव। वह अभी जवान है— तीस साल से अधिक नहीं; उसका कद लंबा है, शरीर दुबला-पतला है। उसके बोलने का तरीका अप्रिय है। उसका लहजा अजीब है, जो उच्चारण और शब्द चयन में जानबूझकर की गई लापरवाही के बावजूद, एक ब्रिटिश, और विशेष रूप से यॉर्कशायर के श्रोता को चुभता है।

श्री मूर वास्तव में आधे ही ब्रिटिश थे, और वह भी मुश्किल से। उनकी माता की ओर से उनका वंश विदेशी था, और उनका जन्म और पालन-पोषण भी आंशिक रूप से विदेशी धरती पर हुआ था। स्वभाव से संकर होने के कारण, संभवतः कई मामलों में उनकी भावनाएँ भी संकर जैसी ही थीं - जैसे देशभक्ति; यह संभव है कि वे किसी दल, संप्रदाय, यहाँ तक कि किसी क्षेत्र या रीति-रिवाज से जुड़ने में असमर्थ थे; यह भी संभव है कि वे किसी भी समुदाय से, जिसमें वे अस्थायी रूप से शामिल होते, खुद को अलग-थलग रखने की प्रवृत्ति रखते थे, और यह भी कि वे रॉबर्ट गेरार्ड मूर के हितों को ही सर्वोपरि मानते थे, और इसके लिए वे जनहित के प्रति परोपकारी विचारों को दरकिनार कर देते थे, क्योंकि वे गेरार्ड मूर को जनहित से काफी हद तक अलग मानते थे। व्यापार श्री मूर का खानदानी पेशा था: एंटवर्प के गेरार्ड परिवार दो शताब्दियों से व्यापारी थे। एक समय वे धनी व्यापारी हुआ करते थे; लेकिन व्यापार की अनिश्चितताओं और उलझनों ने उन्हें घेर लिया था; विनाशकारी सट्टेबाजी ने धीरे-धीरे उनकी साख की नींव को कमजोर कर दिया था। यह घर बारह वर्षों तक लड़खड़ाती नींव पर खड़ा रहा; और अंततः, फ्रांसीसी क्रांति के झटके में, यह पूरी तरह से ध्वस्त हो गया। इसके पतन में एंटवर्प स्थित घर से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई इंग्लैंड और यॉर्कशायर की मूर फर्म भी शामिल थी, जिसके एक साझेदार, एंटवर्प निवासी रॉबर्ट मूर ने होर्टेंस गेरार्ड से इस उम्मीद में शादी की थी कि उनकी दुल्हन को उनके पिता कॉन्स्टेंटाइन गेरार्ड का व्यापार में हिस्सा विरासत में मिलेगा। जैसा कि हमने देखा है, उन्हें केवल फर्म की देनदारियों में उनका हिस्सा ही विरासत में मिला; और ये देनदारियां, हालांकि लेनदारों के साथ एक समझौते द्वारा विधिवत रूप से माफ कर दी गईं, कुछ लोगों का कहना है कि उनके बेटे रॉबर्ट ने इसे विरासत के रूप में स्वीकार कर लिया, और वह एक दिन उन्हें चुकाने और गेरार्ड और मूर के ध्वस्त घर को कम से

कम उसकी पूर्व महानता के बराबर पैमाने पर पुनर्निर्मित करने की आकांक्षा रखते थे। ऐसा भी माना जाता था कि उसने अतीत की घटनाओं को बहुत गंभीरता से लिया था; और यदि एक चिड़चिड़ी माँ की देखरेख में, आने वाली बुराई की आशंका के साये में बीता बचपन, और तूफान के निर्दयी प्रकोप से भीगा और तबाह हुआ वयस्क जीवन किसी के मन पर गहरा प्रभाव डाल सकता है, तो संभवतः उसके मन पर इसका कोई सुनहरा प्रभाव नहीं पड़ा होगा।

लेकिन अगर उनके मन में किसी बड़े पुनर्निर्माण का लक्ष्य था, तो उसे पूरा करने के लिए बड़े-बड़े साधन जुटाना उनके बस में नहीं था। उन्हें छोटी-छोटी चीजों से ही संतोष करना पड़ा। जब वे यॉर्कशायर आए, तो उनके पूर्वजों के पास इस बंदरगाह शहर में गोदाम और उस अंतर्देशीय शहर में कारखाने थे, उनका अपना मकान और ग्रामीण निवास भी था। उनके पास एक सुनसान इलाके के एक कोने में कपड़ा मिल किराए पर लेने के अलावा कोई और रास्ता नहीं बचा था; उन्होंने उससे सटी एक झोपड़ी को अपने निवास के लिए लिया और अपनी संपत्ति में, अपने घोड़े के लिए चरागाह और अपने कपड़े के तंबू लगाने के लिए जगह के तौर पर, उस घाटी के किनारे की कुछ एकड़ ऊबड़-खाबड़ ज़मीन भी जोड़ ली, जहाँ से उनकी मिल से बहने वाली छोटी नदी बहती थी। यह सब उन्होंने फील्डहेड एस्टेट के ट्रस्टियों से कुछ ऊंचे किराए पर लिया था (क्योंकि युद्ध का समय कठिन था और हर चीज महंगी थी), जो उस समय एक नाबालिग की संपत्ति थी।

जब यह इतिहास शुरू होता है, तब रॉबर्ट मूर उस जिले में केवल दो साल से रह रहे थे, और इस दौरान उन्होंने कम से कम अपनी सक्रियता का गुण तो साबित कर ही दिया था। उनकी जर्जर झोपड़ी को एक साफ-सुथरे, सुरुचिपूर्ण निवास में बदल दिया गया था। उन्होंने कुछ उबड़-खाबड़ ज़मीन को बगीचे में बदल दिया था, जिसकी वे असाधारण, यहाँ तक कि फ्लेमिश शैली में, सटीकता और देखभाल से खेती करते थे। चक्की, जो एक पुरानी इमारत थी और पुरानी मशीनों से सुसज्जित थी, जो अब बेकार और अप्रचलित हो चुकी थीं, के प्रति उन्होंने शुरू से ही घोर तिरस्कार दिखाया था। उनका उद्देश्य एक आमूल-चूल परिवर्तन लाना था, जिसे उन्होंने अपनी सीमित पूंजी के अनुसार जितनी जल्दी हो सके पूरा किया; और उस सीमित पूंजी, और परिणामस्वरूप उनकी प्रगति में आई रुकावट, एक ऐसी बाधा थी जिसने उनके मन को बुरी तरह से आहत किया। मूर हमेशा आगे बढ़ना चाहते थे। "आगे बढ़ो" उनके मन में

अंकित था; लेकिन गरीबी ने उन्हें रोक रखा था। कभी-कभी (लाक्षणिक रूप से) जब लगाम बहुत कस दी जाती थी, तो वे उग्र हो जाते थे।

इस मनोस्थिति में, यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह इस बात पर अधिक विचार करेगा कि उसका विकास दूसरों के लिए हानिकारक था या नहीं। न तो वह यहाँ का मूल निवासी था और न ही लंबे समय से आस-पड़ोस में रहता था, इसलिए जब नए आविष्कारों ने पुराने कामगारों को बेरोजगार कर दिया, तो उसे इसकी पर्याप्त परवाह नहीं थी। उसने कभी यह नहीं पूछा कि जिन लोगों को वह अब साप्ताहिक वेतन नहीं देता था, वे अपनी रोजी-रोटी कैसे कमाते थे; और इस लापरवाही में वह उन हजारों लोगों जैसा ही था, जिन पर यॉर्कशायर के भूखे गरीबों का कहीं अधिक अधिकार प्रतीत होता था।

जिस दौर के बारे में मैं लिख रहा हूँ, वह ब्रिटिश इतिहास, और विशेष रूप से उत्तरी प्रांतों के इतिहास में एक अंधकारमय दौर था। उस समय युद्ध अपने चरम पर था। पूरा यूरोप इसमें शामिल था। इंग्लैंड, यदि थका हुआ नहीं था, तो लंबे प्रतिरोध से बुरी तरह टूट चुका था—जी हाँ, और उसकी आधी जनता भी थक चुकी थी और किसी भी कीमत पर शांति की गुहार लगा रही थी। राष्ट्रीय सम्मान महज़ एक खोखला नाम बनकर रह गया था, कई लोगों की नज़रों में उसका कोई मूल्य नहीं था, क्योंकि उनकी दृष्टि भुखमरी से धुंधली हो गई थी; और एक निवाले मांस के लिए वे अपना जन्मसिद्ध अधिकार भी बेच देते।

नेपोलियन के मिलान और बर्लिन के फरमानों से प्रेरित "आदेश परिषद" ने तटस्थ शक्तियों को फ्रांस के साथ व्यापार करने से रोक दिया था। अमेरिका को नाराज करके इसने यॉर्कशायर के ऊनी व्यापार के मुख्य बाजार को काट डाला और परिणामस्वरूप इसे बर्बादी के कगार पर ला खड़ा किया। छोटे विदेशी बाजार माल से भर गए थे और अब और माल लेने को तैयार नहीं थे। ब्राजील, पुर्तगाल और सिसिली में लगभग दो साल की खपत से अधिक स्टॉक जमा हो गया था। इस संकट के समय, उत्तरी क्षेत्रों के प्रमुख विनिर्माण उद्योगों में मशीनरी के कुछ नए आविष्कार किए गए, जिससे आवश्यक श्रमिकों की संख्या में भारी कमी आई, हजारों लोग बेरोजगार हो गए और उनके पास जीवन यापन के वैध साधन नहीं बचे। फसल खराब हो गई। संकट चरम पर पहुंच गया। सहनशीलता की सीमा से बाहर जाकर, भाईचारे ने राजद्रोह का रास्ता अपना लिया। उत्तरी काउंटी की पहाड़ियों के नीचे एक प्रकार के नैतिक भूकंप की

गड़गड़ाहट महसूस की गई। लेकिन, जैसा कि ऐसे मामलों में अक्सर होता है, किसी ने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। जब किसी औद्योगिक शहर में खाद्य दंगा भड़क उठा, जब कोई चक्की जलाकर राख कर दी गई, या किसी निर्माता के घर पर हमला हुआ, फर्नीचर सड़कों पर फेंक दिया गया और परिवार को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा, तो स्थानीय मजिस्ट्रेट द्वारा कुछ स्थानीय उपाय किए गए या नहीं किए गए। एक सरगना पकड़ा गया, या अक्सर उसे पकड़ में आने से रोक दिया गया; अखबारों में इस विषय पर कुछ लेख लिखे गए, और बात वहीं रुक गई। जहाँ तक उन पीड़ितों की बात है, जिनकी एकमात्र विरासत श्रम थी, और जिन्होंने वह विरासत खो दी थी - जिन्हें काम नहीं मिल रहा था, और परिणामस्वरूप मजदूरी नहीं मिल रही थी, और परिणामस्वरूप रोटी नहीं मिल रही थी - उन्हें कष्ट सहने के लिए छोड़ दिया गया, शायद अपरिहार्य रूप से। आविष्कार की प्रगति को रोकना, विज्ञान को उसके सुधारों को हतोत्साहित करके नुकसान पहुँचाना उचित नहीं था; युद्ध समाप्त नहीं किया जा सकता था; प्रभावी राहत नहीं जुटाई जा सकती थी। तब कोई मदद नहीं थी; इसलिए बेरोजगारों ने अपना भाग्य स्वीकार किया - दुख की रोटी खाई और दुख का पानी पिया।

दुःख घृणा उत्पन्न करता है। ये पीड़ित उन मशीनों से घृणा करते थे, जिनके बारे में उनका मानना था कि वे उनसे उनकी रोजी-रोटी छीन लेती हैं; वे उन इमारतों से घृणा करते थे जिनमें वे मशीनें थीं; वे उन निर्माताओं से घृणा करते थे जो उन इमारतों के मालिक थे। ब्रायर्फ़ील्ड के उस इलाके में, जिसके बारे में हम अभी बात करेंगे, हॉलो मिल सबसे घृणित स्थान माना जाता था; गेरार्ड मूर, अपने दोहरे चरित्र - एक तरफ अर्ध-विदेशी और दूसरी तरफ पूर्ण प्रगतिशील - के कारण सबसे अधिक घृणा का पात्र था। और शायद मूर के स्वभाव के अनुकूल ही था कि उससे आम तौर पर घृणा की जाए, खासकर तब जब वह मानता था कि जिस बात के लिए उससे घृणा की जाती है वह एक उचित और आवश्यक बात है; और उस रात वह युद्ध जैसी उत्तेजना के साथ अपने लेखा-गृह में अपने लदे हुए वैगनों के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। शायद मैलोन का आना और उसकी संगति उसे बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। वह अकेला बैठना पसंद करता; क्योंकि उसे एक शांत, गंभीर, असुरक्षित एकांत पसंद था। उसके चौकीदार की बंदूक ही उसके लिए काफी होती; उस गुफा में बहती हुई उफान मारती हुई छोटी नदी लगातार उसके कानों को सबसे सुखद लगने वाली बातें सुनाती रहती।

दुनिया के सबसे विचित्र भाव से निर्माता लगभग दस मिनट तक आयरिश पादरी को देखता रहा, जब वह बेधड़क पंच का इस्तेमाल कर रहा था, तभी अचानक उसकी स्थिर धूसर आँख में एक बदलाव आया, मानो कोई और दृष्टि उसके और मैलोन के बीच आ गई हो। मूर ने अपना हाथ उठाया।

“चुट!” उसने अपने फ्रांसीसी लहजे में कहा, जब मालोन ने अपने गिलास से आवाज़ की। उसने एक पल सुना, फिर उठा, अपनी टोपी पहनी और लेखा-भवन के दरवाजे से बाहर चला गया।

रात एकदम शांत, अंधेरी और स्थिर थी: पानी अभी भी पूरी तेज़ी से बह रहा था; घोर सन्नाटे में उसका बहाव मानो बाढ़ जैसा लग रहा था। तभी मूर के कानों में एक और आवाज़ पड़ी, बहुत दूर से आती हुई, फिर भी अलग, टूटी-फूटी और कर्कश—संक्षेप में, पथरीली सड़क पर भारी पहियों के चलने की आवाज़। वह लेखा-घर लौटा और एक लालटेन जलाई, जिसे लेकर वह चक्की के प्रांगण में गया और फाटक खोलने लगा। बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ आ रही थीं; माल ढोने वाले घोड़ों के विशाल खुरों की आवाज़ कीचड़ और पानी में गूंज रही थी। मूर ने उन्हें आवाज़ दी।

“अरे, जो स्कॉट! सब ठीक है?”

शायद जो स्कॉट इतनी दूर था कि वह सवाल सुन नहीं पाया। उसने जवाब नहीं दिया।

"क्या सब ठीक है?" मूर ने फिर पूछा, जब हाथी जैसे विशालकाय नेता की नाक लगभग उसके नाक को छू गई।

सबसे आगे वाली गाड़ी से कोई कूदकर सड़क पर आ गिरा; एक आवाज जोर से चिल्लाई, “अरे वाह, शैतान! सब ठीक है! हमने उन्हें कुचल दिया।”

और फिर भगदड़ मच गई। गाड़ियाँ वहीं रुक गईं; वे अब वीरान हो चुकी थीं।

“जो स्कॉट!” कोई जवाब नहीं मिला। “मर्गट्रॉयड! पिघिल्स! साइक्स!” कोई उत्तर नहीं। श्री मूर ने अपनी लालटेन उठाई और वाहनों में देखा। न कोई आदमी था, न कोई मशीनरी; वे खाली और वीरान थे।

श्री मूर को अपनी मशीनरी से बेहद लगाव था। उन्होंने अपनी सारी पूंजी इन फ्रेमों और कैंची की खरीद में लगा दी थी, जिनकी आज रात उम्मीद थी। उनके हितों से जुड़े सबसे महत्वपूर्ण सौदे इन्हीं मशीनों के नतीजों पर निर्भर थे। वे मशीनें कहाँ थीं?

“हमने उन्हें कुचल दिया” ये शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे। इस विपत्ति ने उस पर क्या असर डाला? उसके हाथ में पकड़ी लालटेन की रोशनी में उसके चेहरे के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे, जो एक अनोखी मुस्कान में तब्दील हो गए थे—वही मुस्कान जो एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति के चेहरे पर तब आती है जब वह अपने जीवन के ऐसे मोड़ पर पहुँचता है जहाँ उसकी दृढ़ता की परीक्षा होती है, जब उस पर दबाव पड़ता है और उसे या तो सहना पड़ता है या वह टूट जाता है। फिर भी वह चुप रहा, यहाँ तक कि गतिहीन भी; क्योंकि उस क्षण उसे न तो समझ आ रहा था कि क्या कहे और न ही क्या करे। उसने लालटेन को ज़मीन पर रख दिया और बाहें मोड़े खड़ा रहा, नीचे देखते हुए चिंतन करने लगा।

एक घोड़े के उतपदी से पैर पटकने की आवाज सुनकर उसने तुरंत ऊपर देखा। उसकी नजर घोड़े की लगाम के एक हिस्से से जुड़ी किसी सफेद चीज की चमक पर पड़ी। लालटेन की रोशनी में देखने पर पता चला कि वह एक मुड़ा हुआ कागज था - एक पत्र। उस पर बाहर कोई पता नहीं लिखा था; अंदर यह लिखा था: —

"हॉलो की चक्की के शैतान के लिए।"

हम बाकी वर्तनी को हूबहू नहीं लिखेंगे, जो कि बहुत ही विचित्र थी, बल्कि इसे सुपाठ्य अंग्रेजी में अनुवाद करेंगे। यह इस प्रकार थी: —

“तुम्हारी ये भयानक मशीनें स्टिलब्रो मूर पर चकनाचूर हो चुकी हैं और तुम्हारे आदमी सड़क किनारे खाई में हाथ-पैर बंधे पड़े हैं। इसे उन भूखे लोगों की तरफ से एक चेतावनी समझो, जिनकी पत्नियाँ और बच्चे भी भूख से मर रहे हैं। अगर तुम नई मशीनें लाते हो या फिर इसी तरह अपना काम जारी रखते हो, तो तुम्हें हमसे फिर से सुनना पड़ेगा। सावधान रहो!”

“क्या आपसे फिर संपर्क होगा? हाँ, आपसे फिर संपर्क होगा, और आपको भी मुझसे संपर्क होगा। मैं आपसे सीधे बात करूँगा। स्टिलब्रो मूर पर आपको अभी कुछ देर में मुझसे संपर्क होगा।”

वैगनों को फाटक के भीतर ले जाने के बाद, वह झोपड़ी की ओर तेज़ी से बढ़ा। दरवाज़ा खोलकर उसने गलियारे में उससे मिलने दौड़ीं दो महिलाओं से जल्दी-जल्दी लेकिन शांत स्वर में कुछ शब्द कहे। उसने एक महिला की घबराहट को संक्षेप में हुई घटना का वर्णन करके शांत किया; दूसरी से उसने कहा, “चक्की में जाओ, सारा – चाबी वहीं है – और चक्की की घंटी जितनी ज़ोर से बजा सकती हो, बजाओ। उसके

बाद तुम एक और लालटेन लेकर आना और सामने का हिस्सा रोशन करने में मेरी मदद करना।”

अपने घोड़ों के पास लौटकर, उसने उन्हें जल्दी और सावधानी से जोतकर, चारा खिलाया और अस्तबल में बाँध दिया। इस काम में व्यस्त रहते हुए वह बीच-बीच में रुकता, मानो चक्की की घंटी की आवाज़ सुनने की कोशिश कर रहा हो। थोड़ी देर बाद घंटी अनियमित लेकिन तेज़ और डरावनी आवाज़ में बजी। जल्दबाज़ी और उत्तेजित कर देने वाली यह घंटी किसी अनुभवी व्यक्ति द्वारा धीरे-धीरे दी गई पुकार से कहीं ज़्यादा ज़रूरी लग रही थी। उस शांत रात में, उस असामान्य समय पर, उसकी आवाज़ दूर तक सुनाई दी। रेडहाउस की रसोई में मौजूद मेहमान शोर सुनकर चौंक गए और यह कहते हुए कि "हॉलो की चक्की में ज़रूर कुछ असामान्य काम है," उन्होंने लालटेन मंगवाई और एक साथ उस जगह की ओर दौड़ पड़े। और जैसे ही वे अपनी चमकती हुई लालटेन लेकर आँगन में पहुँचे, घोड़ों के चलने की आवाज़ सुनाई दी और एक छोटा आदमी, जो सिर पर फावड़े जैसी टोपी पहने एक खुरदुरे टट्टू की पीठ पर सीधा बैठा था, "हल्के कदमों से अंदर आया," उसके पीछे एक सहायक एक बड़े घोड़े पर सवार था।

इस बीच, श्री मूर ने अपने माल ढोने वाले घोड़ों को अस्तबल में बाँधने के बाद, अपने घोड़े पर काठी कसी और नौकरानी सारा की मदद से अपनी चक्की में रोशनी कर दी। चक्की का चौड़ा और लंबा अग्रभाग अब एक विशाल प्रकाश से जगमगा रहा था, जिससे आँगन में पर्याप्त रोशनी फैल रही थी और अंधेरे से होने वाली किसी भी प्रकार की गड़बड़ी का डर नहीं था। पहले से ही कई आवाजों की गूंज सुनाई देने लगी थी। श्री मैलोन अंततः लेखा-भवन से बाहर आ गए थे, उन्होंने पहले ही एहतियात के तौर पर अपना सिर और चेहरा पत्थर के पानी के जग में डुबो लिया था; और इस एहतियात के साथ-साथ अचानक हुई घबराहट ने उन्हें उन इंद्रियों को लगभग वापस लौटा दिया था जो पंच के कारण आंशिक रूप से विचलित हो गई थीं। वे अपनी टोपी सिर के पीछे रखे और अपनी लाठी को अपने दाहिने हाथ में पकड़े खड़े थे, रेडहाउस से आए नए दल के सवालों के जवाब बेतरतीब ढंग से दे रहे थे। अब श्री मूर प्रकट हुए, और तुरंत ही उनका सामना फावड़े जैसी टोपी और झबरा टट्टू से हुआ।

“अच्छा, मूर, तुम्हें हमसे क्या काम है? मुझे लगा था कि आज रात तुम्हें हमारी ज़रूरत होगी—मुझे और यहाँ मौजूद हेटमैन (अपने टट्टू की गर्दन थपथपाते हुए), और

टॉम और उसके घोड़े की। जब मैंने तुम्हारी चक्की की घंटी सुनी तो मैं और चुप नहीं बैठ सका, इसलिए मैंने बोल्टबी को उसका खाना अकेले खत्म करने के लिए छोड़ दिया। लेकिन दुश्मन कहाँ है? मुझे न तो कोई मुखौटा दिख रहा है और न ही कोई दागदार चेहरा; और तुम्हारी खिड़कियों का एक भी शीशा टूटा हुआ नहीं है। क्या तुम पर हमला हुआ है, या तुम्हें हमले की आशंका है?"

"अरे, बिलकुल नहीं! न तो मुझे घंटी मिली है और न ही मुझे इसकी उम्मीद है," मूर ने शांत भाव से उत्तर दिया। "मैंने घंटी बजाने का आदेश इसलिए दिया है क्योंकि मैं चाहता हूँ कि दो-तीन पड़ोसी यहीं हॉलो में रुकें जबकि मैं और मेरे कुछ साथी स्टिलब्रो मूर चले जाएँ।"

"स्टिलब्रो मूर की ओर! क्या करें? गाड़ियों से मिलने जाएं?"

"गाड़ियाँ एक घंटे पहले घर लौट आई हैं।"

"तो फिर सब ठीक है। आपको और क्या चाहिए?"

"वे खाली हाथ घर लौटे; और जो स्कॉट और उसके साथी दलदल में ही रह गए, और उनके ढाँचे भी। उस लिखावट को ध्यान से पढ़ो।"

श्री हेलस्टोन ने उस दस्तावेज़ को प्राप्त किया और उसका अध्ययन किया जिसकी विषयवस्तु पहले ही दी जा चुकी है।

"हम्म! उन्होंने तो बस तुम्हारी ही सेवा की है, जैसे वे दूसरों की करते हैं। लेकिन, बेचारे खाई में फंसे लोग बेसब्री से मदद की उम्मीद कर रहे होंगे। ऐसी जगह पर रुकने के लिए आज रात बारिश का मौसम ठीक नहीं है। मैं और टॉम तुम्हारे साथ चलेंगे। मैलोन यहीं रुककर चक्की का काम संभाल सकता है। उसे क्या हुआ है? उसकी आँखें जैसे बाहर निकल रही हैं।"

वह मटन चॉप खा रहा है।

"जी हाँ! पीटर ऑगस्टस, सावधान रहो। आज रात मटन चॉप्स मत खाना। तुम्हें इस परिसर की कमान सौंपी गई है – यह एक सम्मानजनक पद है!"

क्या कोई मेरे साथ रुकेगा?

"यहाँ उपस्थित जितने लोग चाहें। — मेरे साथियों, आप में से कितने लोग यहाँ रुकेंगे, और कितने लोग मेरे और श्री मूर के साथ स्टिलब्रो रोड पर थोड़ा आगे चलेंगे, उन लोगों से मिलने के लिए जिन्हें लुटेरों ने रास्ते में रोककर उन पर हमला किया है?"

तीन लोगों ने स्वेच्छा से जाने का फैसला किया; बाकी सब पीछे ही रुकना पसंद

करते थे। जैसे ही श्री मूर अपने घोड़े पर सवार हुए, रेक्टर ने धीमी आवाज़ में उनसे पूछा कि क्या उन्होंने मटन चॉप्स को बंद करके रख दिया है ताकि पीटर ऑगस्टस उन तक न पहुँच सके? निर्माता ने हाँ में सिर हिलाया, और बचाव दल चल पड़ा।

अध्याय III.

श्री योर्क।

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रसन्नता उतनी ही आंतरिक स्थिति पर निर्भर करती है जितनी कि हमारे बाहरी और आसपास की स्थिति पर। मैं यह सामान्य सी बात इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मुझे पता है कि श्री हेलस्टोन और श्री मूर अपने छोटे से समूह के साथ चक्की के प्रांगण के द्वार से अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक निकले थे। जब लालटेन की एक किरण (समूह के तीनों पैदल यात्रियों ने एक-एक लालटेन अपने हाथ में रखी थी) श्री मूर के चेहरे पर पड़ी, तो उनकी आँखों में एक अनोखी, जीवंत चमक दिखाई दी और उनके सांवले चेहरे पर एक नई जीवंतता छा गई; और जब पादरी का चेहरा प्रकाश से जगमगा उठा, तो उनके कठोर चेहरे पर भी खुशी की मुस्कान और चमक दिखाई दी। फिर भी, एक हल्की बारिश वाली रात, एक कुछ हद तक जोखिम भरा अभियान, ऐसी परिस्थितियाँ नहीं थीं जो भीगते हुए साहसिक कार्य में लगे लोगों को उत्साहित कर सकें। अगर स्टिलब्रो मूर पर काम कर रहे दल के किसी सदस्य ने इस दल को देख लिया होता, तो उन्हें दीवार के पीछे से दोनों नेताओं में से किसी एक को गोली मारने में बहुत आनंद आता; और नेता यह जानते थे; और सच तो यह है कि, दोनों ही

दृढ़ निश्चयी और स्थिर हृदय वाले व्यक्ति होने के नाते, इस जानकारी से बहुत खुश थे।

पाठक, मैं भली-भांति जानता हूँ, और आपको मुझे याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है, कि किसी व्यक्ति का युद्धप्रिय होना कितना भयानक होता है; मैं जानता हूँ कि उसे शांतिप्रिय होना चाहिए। मुझे इस बात का कुछ-कुछ आशय है कि मानव जाति के बीच एक पादरी का क्या कर्तव्य होता है, और मुझे स्पष्ट रूप से याद है कि वह किसका सेवक है, किसका संदेश देता है, और किसका उदाहरण उसे अपनाना चाहिए; फिर भी, इन सबके बावजूद, यदि आप पादरी से घृणा करते हैं, तो आप मुझसे यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि मैं आपके हर कदम पर आपके उस अंधकारमय, पतनशील, अईसाई मार्ग पर चलूँ; आप मुझसे यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि मैं आपके उन गहरे अभिशापों में शामिल होऊँ, जो एक साथ इतने संकीर्ण और इतने व्यापक हैं, आपके उस विषैले द्वेष में शामिल होऊँ, जो इतना तीव्र और इतना बेतुका है, "पादरी" के विरुद्ध; सपलहॉफ की तरह अपनी आँखें और हाथ ऊपर उठाऊँ, या बैराक्लॉफ की तरह अपने फेफड़ों को फुलाऊँ, ब्रायरफील्ड के उस शैतानी पादरी के प्रति भय और निंदा में।

वह बिल्कुल भी दुष्ट नहीं थे। बुराई बस इतनी थी कि उन्होंने अपना पेशा नहीं चुना था। उन्हें सैनिक होना चाहिए था, लेकिन परिस्थितियों ने उन्हें पुजारी बना दिया था। इसके अलावा, वह एक कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ निश्चयी, कठोर, बहादुर, सख्त, अटल और निष्ठावान छोटे कद के व्यक्ति थे; एक ऐसे व्यक्ति जिनमें लगभग सहानुभूति की कमी थी, जो सौम्य नहीं थे, पक्षपाती और कठोर थे, लेकिन सिद्धांतों के प्रति सच्चे, सम्माननीय, बुद्धिमान और ईमानदार थे। पाठक, मुझे लगता है कि आप हमेशा लोगों को उनके पेशे के अनुरूप नहीं ढाल सकते, और आपको उन्हें इसलिए कोसना नहीं चाहिए क्योंकि उनका पेशा कभी-कभी उन पर बेढंगे तरीके से हावी हो जाता है। मैं हेलस्टोन को भी कोसूँगा नहीं, भले ही वह एक पादरी कोसैक थे। फिर भी उन्हें कोसा गया, और उनके अपने कई अनुयायियों द्वारा, जबकि अन्य लोग उन्हें पूजते थे - जो कि उन लोगों का अक्सर हश्र होता है जो मित्रता में पक्षपात और शत्रुता में कड़वाहट दिखाते हैं, जो सिद्धांतों से उतने ही जुड़े होते हैं जितने कि पूर्वाग्रहों के प्रति।

हेलस्टोन और मूर दोनों ही बहुत खुश थे और फिलहाल एक ही मकसद से एकजुट थे, इसलिए उम्मीद की जा सकती थी कि साथ-साथ चलते हुए वे सौहार्दपूर्ण बातचीत करेंगे। लेकिन ऐसा नहीं था! ये दोनों ही कठोर और चिड़चिड़े स्वभाव के थे और जब

भी इनका आमना-सामना होता, तो एक-दूसरे का मूड खराब कर देते थे। उनके बीच अक्सर होने वाले झगड़े का कारण युद्ध था। हेलस्टोन कट्टर टोरी थे (उन दिनों टोरी हुआ करते थे), और मूर एक कट्टर व्हिग थे - कम से कम युद्ध-दल के विरोध के मामले में तो व्हिग ही थे, क्योंकि यही मुद्दा उनके अपने हित से जुड़ा था; और केवल इसी मुद्दे पर वे ब्रिटिश राजनीति में अपनी राय रखते थे। वे बोनापार्ट की अजेयता में विश्वास जताकर, इंग्लैंड और यूरोप को उनके प्रयासों की अक्षमता का ताना मारकर, और यह राय देकर हेलस्टोन को चिढ़ाते थे कि बोनापार्ट के सामने जल्दी झुक जाना ही बेहतर है, क्योंकि अंत में उन्हें हर विरोधी को कुचलकर सर्वोच्च शासन करना ही है।

हेलस्टोन इन विचारों को सहन नहीं कर सके। मूर के एक प्रकार से बहिष्कृत और परदेसी होने और उसके रक्त में व्याप्त विदेशी घृणा को कम करने के लिए केवल आधा ही ब्रिटिश रक्त होने के कारण ही उन्होंने वक्ता को बेंत मारने की इच्छा को दबाते हुए उनकी बात सुनने की हिम्मत जुटाई। एक और बात ने भी उनकी घृणा को कुछ हद तक कम किया - इन विचारों को व्यक्त करने के दृढ़ लहजे के प्रति सहानुभूति और मूर के अड़ियल हठ के प्रति सम्मान।

जैसे ही दल स्टिलब्रो की सड़क पर मुड़ा, उन्हें थोड़ी-बहुत हवा का सामना करना पड़ा; बारिश की बूँदें उनके चेहरों पर पड़ रही थीं। मूर पहले अपने साथी को परेशान कर रहा था, और अब, ठंडी हवा से तरोताज़ा होकर, और शायद तेज़ बूंदा-बांदी से चिढ़कर, वह उसे उकसाने लगा।

“क्या प्रायद्वीपीय समाचार अब भी आपको प्रसन्न करते हैं?” उन्होंने पूछा।

“तुम्हारा क्या मतलब है?” पादरी ने चिड़चिड़ेपन से पूछा।

"मेरा मतलब है, क्या आपको अब भी लॉर्ड वेलिंगटन नाम के उस शैतान पर भरोसा है?"

"और अब आपका क्या मतलब है?"

"क्या अब भी आपको विश्वास है कि इंग्लैंड की यह पत्थर के चेहरे और पत्थर के दिल वाली मूर्ति स्वर्ग से आग बरसाकर उस फ्रांसीसी नरसंहार को भस्म करने की शक्ति रखती है जिसे आप अर्पित करना चाहते हैं?"

"मेरा मानना है कि जिस दिन वेलिंगटन का मन करेगा, वह बोनापार्ट के मार्शलों को समुद्र में फेंक देगा।"

लेकिन, महोदय, आप जो कह रहे हैं उसमें गंभीरता नहीं हो सकती। बोनापार्ट के

मार्शल महान पुरुष थे, जो सर्वशक्तिमान ईश्वर के मार्गदर्शन में कार्य करते थे। आपका वेलिंगटन एक साधारण, नीरस और निरर्थक शासक है, जिसकी धीमी, यांत्रिक गतिविधियों को एक अज्ञानी घरेलू सरकार ने और भी बाधित कर दिया है।

"वेलिंगटन इंग्लैंड की आत्मा है। वेलिंगटन एक नेक उद्देश्य का सच्चा समर्थक है, एक शक्तिशाली, दृढ़ निश्चयी, समझदार और ईमानदार राष्ट्र का उपयुक्त प्रतिनिधि है।"

"जहाँ तक मैं समझता हूँ, आपका नेक मकसद बस इतना है कि उस नीच, कमज़ोर फर्डिनेंड को उस सिंहासन पर फिर से बिठाया जाए जिसे उसने बदनाम किया है। ईमानदार जनता का आपका योग्य प्रतिनिधि एक मंदबुद्धि चरवाहा है, जो उससे भी मंदबुद्धि किसान के लिए काम कर रहा है; और इनके विरुद्ध विजयी सर्वोच्चता और अजेय प्रतिभा खड़ी है।"

"वैधता के विरुद्ध अतिक्रमण खड़ा है; अतिक्रमण के विरुद्ध विनम्र, दृढ़ निश्चयी, धर्मपरायण और साहसी प्रतिरोध के विरुद्ध अभिमानी, दोहरी वाणी वाली, स्वार्थी और कपटी महत्वाकांक्षा खड़ी है। ईश्वर सत्य की रक्षा करे!"

ईश्वर अक्सर शक्तिशाली लोगों की रक्षा करता है।

"क्या! मेरा मानना है कि लाल सागर के एशियाई किनारे पर सूखे पैरों से खड़े मुट्ठी भर इस्राएली, अफ्रीकी किनारे पर जमा मिस्रियों की सेना से अधिक शक्तिशाली थे? क्या वे संख्या में अधिक थे? क्या वे बेहतर सुसज्जित थे? संक्षेप में, क्या वे अधिक बलवान थे? अरे? मत बोलो, वरना झूठ बोलोगे, मूर; तुम जानते हो कि तुम झूठ बोलोगे। वे गरीब, दबे-कुचले गुलामों का एक समूह थे। अत्याचारियों ने उन्हें चार सौ वर्षों तक सताया था; महिलाओं और बच्चों के कमजोर मिश्रण ने उनकी पतली सेना को और भी कमजोर कर दिया था; उनके स्वामी, जो विभाजित बाढ़ में उनका पीछा करने के लिए दहाड़ रहे थे, लाड़-प्यार से पाले गए इथियोपियाई लोगों का एक समूह थे, जो लीबिया के शेरों जितने ही बलवान और क्रूर थे। वे सशस्त्र, घुड़सवार और रथों पर सवार थे; बेचारे यहूदी भटकने वाले पैदल थे। संभवतः उनमें से कुछ के पास अपने चरवाहों की लाठियों या राजमिस्त्रियों के औजारों से बेहतर हथियार नहीं थे; उनके विनम्र और शक्तिशाली नेता के पास केवल उनकी छड़ी थी। लेकिन सोचो, रॉबर्ट मूर, न्याय उनके साथ था; ईश्वर युद्ध उनके पक्ष में था। अपराध और खोए हुए महादूत ने फ़राओ की सेनाओं का नेतृत्व किया, और किसकी विजय हुई? यह हम भली-भांति

जानते हैं। ‘उस दिन यहोवा ने इस्राएल को मिस्रियों के हाथ से बचाया, और इस्राएल ने मिस्रियों को समुद्र तट पर मृत देखा’ — हाँ, ‘गहराई ने उन्हें ढक लिया, वे पत्थर की तरह तल में डूब गए।’ यहोवा का दाहिना हाथ सामर्थ्य में महिमामय हो गया; यहोवा के दाहिने हाथ ने शत्रु को टुकड़े-टुकड़े कर दिया!

“आप बिल्कुल सही हैं; बस आप वास्तविक समानता को भूल गए हैं। फ्रांस इज़राइल है, और नेपोलियन मूसा। यूरोप, अपने पुराने अतिभोगित साम्राज्यों और भ्रष्ट राजवंशों के साथ, भ्रष्ट मिस्र है; वीर फ्रांस बारह जनजातियाँ हैं, और उसका नया और शक्तिशाली सत्ता हथियाने वाला होरेब का चरवाहा है।”

मैं आपको जवाब देने से घृणा करता हूँ।

मूर ने तदनुसार स्वयं ही उत्तर दिया - कम से कम, उन्होंने अपनी कही हुई बात में एक अतिरिक्त टिप्पणी धीमी आवाज में जोड़ दी।

“इटली में तो वह किसी मूसा के समान महान था! वहाँ वह बिल्कुल सही व्यक्ति था, राष्ट्रों के पुनरुत्थान के लिए नेतृत्व और व्यवस्था करने के योग्य। मुझे आज तक यह बात समझ नहीं आती कि लोदी का विजेता सम्राट बनने के लिए इतना नीच कैसे हो गया, एक तुच्छ, मूर्ख पाखंडी; और उससे भी अधिक यह कि जो लोग कभी खुद को गणतंत्रवादी कहते थे, वे फिर से गुलामों के स्तर तक कैसे गिर गए। मैं फ्रांस से घृणा करता हूँ! यदि इंग्लैंड सभ्यता की राह पर फ्रांस जितना आगे बढ़ गया होता, तो वह इतनी बेशर्मी से पीछे नहीं हटता।”

"क्या आपका मतलब यह है कि मोहभंग हुए साम्राज्यवादी फ्रांस, खूनी गणतंत्रवादी फ्रांस से किसी भी तरह से बदतर है?" हेलस्टोन ने उग्रता से पूछा।

“मेरा कुछ कहने का इरादा नहीं है, लेकिन मैं जो चाहूँ सोच सकता हूँ, श्री हेलस्टोन, फ्रांस और इंग्लैंड दोनों के बारे में; और क्रांतियों, राजहत्याओं, और सामान्य रूप से पुनर्स्थापनाओं के बारे में; और राजाओं के दैवीय अधिकार के बारे में, जिसके लिए आप अक्सर अपने उपदेशों में जोर देते हैं, और अहिंसा के कर्तव्य के बारे में, और युद्ध की सार्थकता के बारे में, और—”

श्री मूर का वाक्य यहाँ एक बग्घी के तेज़ी से मुड़कर सड़क के बीचोंबीच अचानक रुकने से अधूरा रह गया। वे और पादरी दोनों ही अपनी बातचीत में इतने मशगूल थे कि बग्घी के बिल्कुल पास आने तक उन्हें उसका पता ही नहीं चला।

“नहीं, मालिक; क्या गाड़ियाँ लक्ष्य तक पहुँचीं?” वाहन से एक आवाज आई।

"क्या यह जो स्कॉट हो सकता है?"

“अय, अय!” एक और आवाज़ आई; क्योंकि गाड़ी में दो लोग थे, जैसा कि उसके लैंप की हल्की रोशनी से पता चल रहा था। लालटेन लिए हुए लोग अब पीछे छूट गए थे, या यूँ कहें कि बचाव दल के घुड़सवार पैदल चलने वालों से आगे निकल गए थे। “अय, श्रीमान मूर, यह जो स्कॉट है। मैं उसे बड़ी मुश्किल से आपके पास ला रहा हूँ। मैंने उसे उस पहाड़ी की चोटी पर पाया, वह और तीन अन्य लोग। उसे आपके पास वापस लाने के बदले में आप मुझे क्या देंगे?”

“क्यों, शुक्रिया! मुझे लगता है कि मैं इससे बेहतर आदमी को खो सकता था। मुझे लगता है कि आप ही हैं, मिस्टर यॉर्क, आपकी आवाज़ से तो यही लगता है।”

“अरे, लड़के, मैं हूँ। मैं स्टिलब्रो के बाज़ार से घर आ रहा था, और जैसे ही मैं दलदल के बीचोंबीच पहुँचा, और हवा की तरह तेज़ चाबुक चला रहा था (क्योंकि कहते हैं, ये बुरे शासन की वजह से सुरक्षित समय नहीं है!), मुझे एक कराहने की आवाज़ सुनाई दी। मैं रुक गया। कुछ लोग और भी तेज़ चाबुक चलाते; लेकिन मुझे डरने की कोई बात नहीं है। मुझे नहीं लगता कि इस इलाके में कोई लड़का मुझे नुकसान पहुँचाएगा—कम से कम, अगर कोई ऐसा करने की कोशिश करे तो मैं उसे मुंहतोड़ जवाब दूँगा। मैंने पूछा, ‘कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है?’ ‘हाँ, है,’ किसी ने ज़मीन से बोलते हुए कहा। ‘क्या करें? जल्दी बताओ,’ मैंने आदेश दिया। ‘हममें से चार लोग खाई में पड़े हैं,’ जो ने एकदम शांत स्वर में कहा। मैंने उनसे कहा, ‘उन पर शर्म आती है,’ और उन्हें उठकर आगे बढ़ने को कहा, वरना मैं उन्हें चाबुक से मारूँगा; मुझे लगा कि वे सब नए हैं। जो ने कहा, "हम एक घंटे पहले ही यह काम कर लेते, लेकिन हम थोड़े नशे में थे। इसलिए थोड़ी देर में मैं नीचे उतरा और अपनी छोटी चाकू से उन पर वार किया; और स्कॉट मेरे साथ आया, ताकि मुझे सब कुछ बता सके कि क्या हुआ; और बाकी लोग जितनी जल्दी हो सके आ रहे हैं।"

"खैर, मैं आपका बहुत आभारी हूं, श्री योर्क।"

“क्या तुम हो, मेरे बच्चे? तुम जानते हो कि तुम नहीं हो। खैर, बाकी लोग आ रहे हैं। और देखो, प्रभु की कृपा से, एक और दल अपने घड़ों में रोशनी लिए हुए है, मानो गिदोन की सेना हो; और चूंकि हमारे साथ पादरी हैं, हम – शुभ संध्या, श्री हेलस्टोन – हम चलते हैं।”

श्री हेलस्टोन ने गाड़ी में बैठे व्यक्ति के अभिवादन का जवाब बेहद रूखेपन से

दिया। उस व्यक्ति ने आगे कहा, —

“हम ग्यारह बलवान पुरुष हैं, और हमारे पास घोड़े और रथ दोनों हैं। अगर हम इन भूखे-प्यासे, खूसटों से मिल जाएं, तो हम एक शानदार जीत हासिल कर सकते हैं। हम सब वेलिंगटन बन सकते हैं - श्रीमान हेलस्टोन, इससे आपको खुशी होगी - और अखबारों के लिए जितने पैराग्राफ हम लिख सकते हैं, लिख सकते हैं! ब्रायर्फ़ील्ड मशहूर हो जाएगा। लेकिन इस काम के लिए हमें स्टिलब्रो कूरियर में डेढ़ कॉलम मिल जाएंगे, मुझे पूरा यकीन है। इससे कम की उम्मीद नहीं है।”

“और मैं आपसे इससे कम का वादा नहीं करूंगा, मिस्टर यॉर्क, क्योंकि मैं खुद लेख लिखूंगा,” रेक्टर ने जवाब दिया।

“बिल्कुल! और ध्यान रहे कि आप इस सिफारिश को गंभीरता से लें कि जिन्होंने ढांचे के टुकड़े तोड़े और जो स्कॉट के पैरों में पट्टियाँ बाँधीं, उन्हें बिना किसी पादरी की मदद के फाँसी दी जानी चाहिए। यह फाँसी का मामला है, या होना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं है।”

“अगर मैं उनका न्याय करता तो उन्हें तुरंत सजा दे देता!” मूर चिल्लाया। “लेकिन इस बार मैं उन्हें पूरी तरह से अकेला छोड़ दूंगा, उन्हें काफी छूट दूंगा, मुझे पूरा यकीन है कि अंत में वे खुद ही अपना नुकसान कर लेंगे।”

"क्या तुम उन्हें अकेला छोड़ दोगे, मूर? क्या तुम इसका वादा करते हो?"

“वादा! नहीं। मेरा मतलब सिर्फ इतना है कि मैं उन्हें पकड़ने के लिए कोई खास प्रयास नहीं करूंगा; लेकिन अगर कोई मेरे रास्ते में आ गया तो—”

“आप उसे ज़रूर पकड़ लेंगे। लेकिन आप चाहते हैं कि वे आपके साथ हिसाब-किताब करने से पहले एक गाड़ी रोकने से भी ज़्यादा कुछ बुरा कर दें। खैर, अभी इस विषय पर और बात नहीं करते। हम सब मेरे दरवाज़े पर हैं, सज्जनों, और मुझे उम्मीद है कि आप और आपके साथी अंदर आ जाएँगे। आप में से किसी को भी थोड़ी सी जलपान से कोई नुकसान नहीं होगा।”

मूर और हेलस्टोन ने इस प्रस्ताव को अनावश्यक बताकर इसका विरोध किया। हालाँकि, उनसे इतनी विनम्रता से आग्रह किया गया, और रात भी इतनी खराब थी, तथा जिस घर के सामने वे रुके थे, उसकी मलमल के पर्दों वाली खिड़कियों से आती रोशनी इतनी लुभावनी लग रही थी कि अंततः वे मान गए। श्री यॉर्क, अपनी बग्घी से उतरने के बाद, जिसे उन्होंने अपने आगमन पर एक बाहरी इमारत से निकले एक

व्यक्ति के हवाले कर दिया था, आगे-आगे चलने लगे।

यह बात शायद गौर करने लायक रही होगी कि श्री यॉर्क के बोलने के तरीके में थोड़ा बदलाव आता था। कभी वे यॉर्कशायर की बोली में बोलते थे, तो कभी एकदम शुद्ध अंग्रेज़ी में। उनका व्यवहार भी इसी तरह बदलता रहता था। वे कभी विनम्र और मिलनसार होते थे, तो कभी सीधे और रूखे। ऐसे में उनकी सामाजिक स्थिति का अंदाजा उनकी वाणी और व्यवहार से आसानी से नहीं लगाया जा सकता था। शायद उनके निवास स्थान की बनावट से इसका पता चल सके।

उन्होंने पुरुषों को रसोई के रास्ते जाने की सलाह दी और कहा कि वे "जल्द ही उन्हें कुछ स्वादिष्ट भोजन परोसेंगे।" सज्जनों को मुख्य द्वार से अंदर ले जाया गया। वे एक चटाई से सजे हॉल में पहुँचे, जो लगभग छत तक चित्रों से सजा हुआ था। इसके माध्यम से उन्हें एक बड़े बैठक कक्ष में ले जाया गया, जहाँ अंगीठी में एक शानदार आग जल रही थी - यह कमरा देखने में बेहद खुशनुमा लग रहा था, और जब आप बारीकियों पर गौर करते, तो इसका जीवंत प्रभाव कम नहीं होता था। इसमें कोई भव्यता नहीं थी, लेकिन हर जगह उत्कृष्ट स्वाद था - ऐसा स्वाद, जिसे आप एक अनुभवी यात्री, एक विद्वान और एक सज्जन व्यक्ति का स्वाद कह सकते थे। दीवारों पर इटली के दृश्यों की एक श्रृंखला सजी हुई थी। इनमें से प्रत्येक सच्ची कला का नमूना था। किसी कला पारखी ने इन्हें चुना था; ये असली और अनमोल थे। मोमबत्ती की रोशनी में भी चमकीला साफ आसमान, दूरियाँ, आँखों और पहाड़ियों के बीच लहराती नीली हवा, ताज़गी भरे रंग और सुव्यवस्थित रोशनी और छायाएँ दृश्य को मंत्रमुग्ध कर रही थीं। सभी दृश्य देहाती परिवेश से संबंधित थे, सभी जगह धूप खिली हुई थी। सोफे पर एक गिटार और कुछ संगीत रखा था; सुंदर लघुचित्र थे; शेल्फ पर यूनानी शैली के दिखने वाले फूलदानों का एक सेट था; दो सुरुचिपूर्ण बुककेस में किताबें करीने से सजी हुई थीं।

श्री योर्क ने अपने मेहमानों को बैठने का आदेश दिया। फिर उन्होंने शराब मंगवाई। शराब लाने वाले नौकर को उन्होंने रसोई में काम करने वाले लोगों के लिए भोज का आदेश दिया। पादरी खड़े ही रहे; ऐसा लग रहा था कि उन्हें अपना कमरा पसंद नहीं आया; उन्होंने मेज़बान द्वारा दी गई शराब को छुआ तक नहीं।

“जैसा आप चाहें,” श्री योर्क ने कहा। “मुझे लगता है कि आप पूर्वी रीति-रिवाजों के बारे में सोच रहे हैं, श्री हेलस्टोन, और आप मेरे घर में खाना-पीना नहीं करेंगे, इस

डर से कि हमें दोस्त बनने के लिए मजबूर होना पड़ेगा; लेकिन मैं इतना नखरेबाज़ या अंधविश्वासी नहीं हूँ। आप उस डेकैंटर की सारी शराब पी सकते हैं, और आप मुझे अपने तहखाने की सबसे अच्छी शराब की बोतल दे सकते हैं, और मैं फिर भी हर मोड़ पर आपका विरोध करने के लिए स्वतंत्र महसूस करूँगा — हर चर्च सभा और न्याय सभा में जहाँ भी हमारा आमना-सामना होगा।”

"मिस्टर यॉर्क, मुझे आपसे यही उम्मीद थी।"

"क्या अब आपको यह ठीक लग रहा है, श्री हेलस्टोन, कि आप अपनी उम्र में, एक बरसाती रात में, दंगाइयों का पीछा कर रहे हैं?"

“मुझे हमेशा अपना कर्तव्य निभाना अच्छा लगता है; और इस मामले में मेरा कर्तव्य मेरे लिए पूर्ण आनंद है। कीड़े-मकोड़ों का शिकार करना एक महान पेशा है, जो एक आर्कबिशप के लिए उपयुक्त है।”

“कम से कम तुम्हारे लिए ठीक है। लेकिन पादरी कहाँ है? वह शायद किसी बीमार व्यक्ति से मिलने गया है, या फिर किसी और दिशा में कीड़े-मकोड़ों का शिकार करने गया है।”

वह हॉलो मिल में चौकीदारी का काम कर रहा है।

“मुझे उम्मीद है, बॉब, तुमने उसके लिए एक घूंट शराब छोड़ी होगी, ताकि उसका हौसला बना रहे?” (श्री मूर की ओर मुड़ते हुए)

उन्होंने जवाब का इंतज़ार नहीं किया, बल्कि तेज़ी से बोलते रहे, मूर को संबोधित करते हुए, जो अंगीठी के पास एक पुरानी कुर्सी पर बैठ गया था — “हट जाओ, रॉबर्ट! उठो, मेरे लड़के! यह जगह मेरी है। सोफा ले लो, या तीन और कुर्सियाँ ले लो, लेकिन यह नहीं। यह मेरी है, किसी और की नहीं।”

"मिस्टर यॉर्क, आपको उस कुर्सी से इतना लगाव क्यों है?" मूर ने आदेशों का पालन करते हुए आलस से जगह खाली करते हुए पूछा।

"मेरे पिता मुझसे पहले थे, और यही एकमात्र उत्तर है जो मैं तुम्हें दूंगा; और यह उतना ही अच्छा कारण है जितना श्री हेलस्टोन अपने विचारों की मुख्य निरर्थकता के लिए दे सकते हैं।"

“मूर, क्या तुम जाने के लिए तैयार हो?” रेक्टर ने पूछा।

“नहीं; रॉबर्ट तैयार नहीं है, या यूँ कहूँ कि मैं उससे अलग होने के लिए तैयार नहीं हूँ। वह एक नादान लड़का है, और उसे सुधारने की ज़रूरत है।”

“क्यों, महोदय? मैंने क्या किया है?”

"तुमने अपने चारों ओर शत्रु बना लिए।"

मुझे इससे क्या फर्क पड़ता है? तुम्हारे यॉर्कशायर के बदमाश मुझे पसंद करें या नापसंद करें, इससे मुझे क्या फर्क पड़ता है?

“अरे, ये रहा। ये लड़का हम सबके बीच बिल्कुल अजनबी है। उसके बाप ने कभी इस तरह बात नहीं की होगी। — एंटवर्प वापस जाओ, जहाँ तुम्हारा जन्म और पालन-पोषण हुआ है, बदतमीज़!”

“तुम बेवजह मुश्किल खड़ी कर रहे हो; मैं तो बस अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ; जहाँ तक तुम्हारे उन अनाड़ी किसानों की बात है, मुझे उनकी कोई परवाह नहीं!”

"दूसरी ओर, मेरे लड़के, हमारे गंवार किसान तुम्हारा मजाक उड़ाएंगे; तुम इस बात का यकीन कर सकते हो," यॉर्क ने लगभग उसी शुद्ध फ्रांसीसी लहजे में जवाब दिया जैसा कि गेरार्ड मूर बोलते थे।

“कोई बात नहीं! कोई बात नहीं! और चूंकि मुझे परवाह नहीं है, इसलिए मेरे दोस्तों को भी इसके बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए।”

“तुम्हारे दोस्त! तुम्हारे दोस्त कहाँ हैं?”

मैं भी यही सवाल दोहराता हूँ, वे कहाँ हैं? और मुझे बहुत खुशी है कि सिर्फ़ प्रतिध्वनि ही जवाब देती है। दोस्तों को भाड़ में जाने दो! मुझे आज भी वो पल याद है जब मेरे पिता और मेरे चाचा जेरार्ड ने अपने दोस्तों को बुलाया था, और न जाने कितने दोस्त उनकी मदद के लिए दौड़े थे! देखिए, मिस्टर यॉर्क, ये शब्द, दोस्त, मुझे बहुत परेशान करता है; मुझसे फिर कभी इस बारे में बात मत कीजिए।

"जैसी आपकी इच्छा।"

और यहाँ श्री योर्क चुपचाप बैठे रहे; और जब वे अपनी तीन कोनों वाली नक्काशीदार ओक की कुर्सी पर पीछे की ओर झुककर बैठे थे, तो मैंने इस फ्रेंच भाषी यॉर्कशायर के सज्जन का चित्र बनाने का अवसर लपक लिया।

अध्याय IV.

श्री योर्क (जारी)।

वे हर मायने में एक सच्चे यॉर्कशायर के सज्जन थे; लगभग पचपन वर्ष के, लेकिन पहली नज़र में उससे भी अधिक उम्र के लगते थे, क्योंकि उनके बाल चांदी जैसे सफेद थे। उनका माथा चौड़ा था, ऊंचा नहीं; उनका चेहरा तरोताज़ा और स्वस्थ था; उनके चेहरे की बनावट और आवाज़ में उत्तर की कठोरता झलकती थी; उनका हर गुण पूरी तरह से अंग्रेज़ था—कहीं भी नॉर्मन प्रभाव नहीं था; उनका चेहरा एक भद्दा, गैर-क्लासिक और गैर-कुलीन चेहरा था। सभ्य लोग शायद इसे भद्दा कहते; समझदार लोग इसे विशिष्ट मानते; चतुर लोग इसमें छिपी सारगर्भितता, बुद्धिमत्ता, अक्ल और हर शिकन में झलकने वाली मौलिकता की सराहना करते। लेकिन उनका चेहरा अड़ियल, तिरस्कारपूर्ण और व्यंग्यात्मक था—एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा जिसे नियंत्रित करना मुश्किल और नामुमकिन था। उनका कद लंबा था, वे सुगठित और चुस्त-दुरुस्त थे, और उनके हाव-भाव में एक गरिमा और शालीनता थी; उनमें कहीं भी मसखरेपन का कोई अंश नहीं था।

श्री योर्क के व्यक्तित्व का चित्रण करना मेरे लिए आसान नहीं था, लेकिन उनके मन का वर्णन करना और भी कठिन है। यदि आप उनसे किसी परिपूर्ण व्यक्तित्व या परोपकारी, दयालु बुजुर्ग व्यक्ति की अपेक्षा रखते हैं, तो आप गलत हैं। उन्होंने श्री मूर से कुछ समझदारी और सद्भावना से बात की है, लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि वे हमेशा न्यायपूर्ण और दयालुतापूर्ण बोलते और सोचते थे।

श्री योर्क में सर्वप्रथम, श्रद्धा भाव का अभाव था—यह एक बड़ी कमी थी, जो श्रद्धा की आवश्यकता वाले हर पहलू में व्यक्ति को विफल कर देती है। द्वितीय, उनमें तुलना करने की क्षमता का अभाव था—यह कमी व्यक्ति को सहानुभूति से वंचित कर देती है; और तृतीय, उनमें परोपकार और आदर्शवाद की भावनाएँ अपर्याप्त थीं, जिसने

उनके स्वभाव से महिमा और कोमलता को छीन लिया, और उनके लिए ब्रह्मांड भर में उन दिव्य गुणों को कम कर दिया।

श्रद्धा की कमी ने उन्हें अपने से ऊपर वालों के प्रति असहिष्णु बना दिया था—राजा, कुलीन, पुजारी, राजवंश, संसद और संस्थाएँ, उनके सभी कार्य, उनके अधिकांश कानून, उनके रूप, उनके अधिकार, उनके दावे, सब उनके लिए घृणास्पद, व्यर्थ थे; उन्हें उनमें कोई उपयोग या आनंद नहीं मिलता था, और उनका मानना था कि यदि उनके उच्च पदों को ध्वस्त कर दिया जाए और उनके अधिवासियों को कुचल दिया जाए, तो यह स्पष्ट लाभ होगा और संसार को कोई हानि नहीं होगी। श्रद्धा की कमी ने उन्हें प्रशंसनीय चीजों की प्रशंसा करने के रोमांचकारी आनंद से भी वंचित कर दिया था; इसने आनंद के हजारों शुद्ध स्रोतों को सुखा दिया था; इसने हजारों जीवंत सुखों को मुरझा दिया था। वे अधार्मिक नहीं थे, यद्यपि वे किसी संप्रदाय के सदस्य नहीं थे; परन्तु उनका धर्म उस व्यक्ति का नहीं हो सकता था जो श्रद्धा करना जानता हो। वे ईश्वर और स्वर्ग में विश्वास करते थे; परन्तु उनका ईश्वर और स्वर्ग उस मनुष्य के थे जिसमें भय, कल्पना और कोमलता का अभाव था।

तुलना करने की उनकी कमज़ोरी ने उन्हें असंगत बना दिया; जहाँ एक ओर उन्होंने आपसी सहिष्णुता और सहनशीलता के कुछ उत्कृष्ट सामान्य सिद्धांतों का प्रतिपादन किया, वहीं दूसरी ओर कुछ वर्गों के प्रति उनके मन में घोर घृणा थी। वे "पादरी" और उनसे संबंधित सभी लोगों, "सामंत" और सामंतों के बारे में इतनी कठोरता, कभी-कभी तो इतनी धृष्टता से बात करते थे, जो अन्यायपूर्ण होने के साथ-साथ असहनीय भी थी। वे स्वयं को उन लोगों की स्थिति में नहीं रख सकते थे जिनकी वे निंदा करते थे; वे उनकी गलतियों की तुलना उनके प्रलोभनों से, उनकी कमियों की तुलना उनकी हानियों से नहीं कर सकते थे; वे स्वयं पर ऐसी परिस्थितियों के प्रभाव को समान रूप से नहीं समझ सकते थे, और वे अक्सर उन लोगों के प्रति सबसे क्रूर और अत्याचारी इच्छाएँ व्यक्त करते थे जिन्होंने, उनके विचार में, क्रूरता और अत्याचार से काम किया था। उनकी धमकियों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे स्वतंत्रता और समानता के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए मनमाने, यहाँ तक कि क्रूर, साधनों का भी प्रयोग करते। समानता! हाँ, श्री योर्क समानता की बातें करते थे, लेकिन दिल से वे एक अभिमानी व्यक्ति थे—अपने कामगारों के प्रति बहुत मित्रवत, अपने से नीचे के सभी लोगों के प्रति बहुत दयालु, और चुपचाप अपने अधीन रहना स्वीकार करते थे,

लेकिन दुनिया जिसे भी अपना श्रेष्ठ समझती थी (क्योंकि वे किसी को भी श्रेष्ठ नहीं समझते थे), उसके प्रति वे बेल्ज़ेबूब की तरह घमंडी थे। विद्रोह उनके खून में था: वे नियंत्रण सहन नहीं कर सकते थे; उनके पिता, उनसे पहले उनके दादा भी इसे सहन नहीं कर सकते थे, और उनके बाद उनके बच्चे भी कभी नहीं कर सकते।

सामान्य दयालुता की कमी के कारण वह मूर्खता और उन सभी दोषों के प्रति अत्यंत अधीर हो जाता था जो उसके मजबूत और चतुर स्वभाव को ठेस पहुंचाते थे; इससे उसकी तीखी व्यंग्यपूर्ण टिप्पणियों पर कोई रोक नहीं रहती थी। चूंकि वह दयालु नहीं था, इसलिए वह कभी-कभी बिना यह देखे कि वह कितना दर्द दे रहा है या कितनी गहराई तक चोट पहुंचा रहा है, बार-बार चोट पहुंचाता रहता था।

उनके मन में आदर्शवाद की कमी को दोष कहना शायद ही उचित होगा: संगीत की गहरी समझ, रंग और आकार की सटीक पहचान ने उन्हें सुरुचि का गुण प्रदान किया था; और कल्पना की परवाह कौन करता है? कौन इसे एक खतरनाक, निरर्थक गुण नहीं मानता, जो कमजोरी के समान है, शायद उन्माद का अंश है - मन की एक देन नहीं बल्कि एक बीमारी है?

शायद सभी ऐसा ही सोचते हैं, सिवाय उनके जो इसे पाते हैं, या जो इसे पाने का भ्रम पालते हैं। उनकी बातें सुनकर आपको लगेगा कि अगर वह अमृत उनके आसपास न बहे तो उनके दिल ठंडे पड़ जाएंगे, अगर वह लौ उनकी दृष्टि को निखारे न तो उनकी आंखें धुंधली हो जाएंगी, और अगर यह अजनबी साथी उन्हें छोड़ दे तो वे अकेले पड़ जाएंगे। आपको लगेगा कि यह वसंत को कोई सुखद आशा, ग्रीष्म ऋतु को कोई सुंदर आकर्षण, शरद ऋतु को कोई शांत आनंद, शीत ऋतु को कोई सांत्वना देता है, जिसे आप महसूस नहीं करते। बेशक, यह एक भ्रम है; लेकिन कट्टरपंथी अपने सपने से चिपके रहते हैं और उसे सोने के बदले भी नहीं छोड़ेंगे।

चूंकि श्री यॉर्क स्वयं काव्यात्मक कल्पना से रहित थे, इसलिए वे इसे दूसरों में एक अत्यंत अनावश्यक गुण मानते थे। चित्रकारों और संगीतकारों को वे सहन कर सकते थे, और यहाँ तक कि प्रोत्साहित भी कर सकते थे, क्योंकि वे उनकी कला के परिणामों का आनंद ले सकते थे; वे एक सुंदर चित्र का आकर्षण देख सकते थे, और अच्छे संगीत का सुख अनुभव कर सकते थे; लेकिन एक शांत कवि—चाहे उसके हृदय में कितनी भी शक्ति उमड़ रही हो, कितनी भी अग्नि प्रज्वलित हो—यदि वह लेखा-मंच में बैठे व्यक्ति या सिनेमाघर में बैठे व्यापारी की भूमिका नहीं निभा सकता

था, तो वह हिराम यॉर्क की निगाहों के नीचे तिरस्कृत होकर जी सकता था और अपमानित होकर मर सकता था।

और चूंकि दुनिया में कई हीराम योर्क हैं, इसलिए यह अच्छी बात है कि सच्चा कवि, भले ही वह बाहरी रूप से शांत दिखे, अक्सर अपनी शांति के भीतर उग्र स्वभाव रखता है, और अपनी नम्रता में चतुराई से भरा होता है, और उन लोगों की पूरी हैसियत को परख सकता है जो उसे नीचा समझते हैं, और उन कार्यों के महत्व और मूल्य का सही आकलन कर सकता है जिन्हें न करने के लिए वे उसका तिरस्कार करते हैं। यह सुखद है कि वह अपना स्वयं का आनंद, अपनी महान मित्र और देवी प्रकृति के साथ अपना स्वयं का साथ पा सकता है, उन लोगों से पूरी तरह स्वतंत्र होकर जो उसमें कम आनंद पाते हैं, और जिनमें उसे बिल्कुल भी आनंद नहीं मिलता। यह उचित ही है कि जबकि दुनिया और परिस्थितियां अक्सर उसके प्रति एक अंधकारमय, ठंडा पक्ष प्रदर्शित करती हैं - और यह उचित भी है, क्योंकि वह पहले उनके प्रति एक अंधकारमय, ठंडा, लापरवाह पक्ष प्रदर्शित करता है - उसे अपने हृदय में एक उत्सवपूर्ण चमक और स्नेहपूर्ण आभा बनाए रखने में सक्षम होना चाहिए, जो उसके लिए सब कुछ उज्ज्वल और सुखद बना देता है; जबकि अजनबी, शायद, उसके अस्तित्व को एक ध्रुवीय सर्दी के समान मानते हैं जिसे कभी सूरज की रोशनी नहीं मिलती। सच्चे कवि पर जरा भी दया नहीं आती, और जब कोई गुमराह हमदर्द उसके साथ हुए अन्याय पर रोता है, तो वह मन ही मन हंसता है। यहां तक कि जब उपयोगितावादी उस पर फैसला सुनाते हैं और उसे और उसकी कला को बेकार घोषित करते हैं, तब भी वह उस फैसले को इतनी तीखी उपहास, इतने व्यापक, गहरे, विस्तृत और निर्मम तिरस्कार के साथ सुनता है कि उसे सहानुभूति जताने के बजाय फटकारना ही बेहतर होता है। हालांकि, ये श्री यॉर्क के विचार नहीं हैं, और फिलहाल हमें श्री यॉर्क के विचारों पर ही चर्चा करनी है।

मैंने आपको उनकी कुछ कमियाँ बताई हैं, पाठक: जहाँ तक उनके गुणों की बात है, वे यॉर्कशायर के सबसे सम्मानित और सक्षम व्यक्तियों में से एक थे; यहाँ तक कि जो लोग उन्हें नापसंद करते थे, वे भी उनका सम्मान करने को विवश थे। वे गरीबों के प्रिय थे, क्योंकि वे उनके प्रति अत्यंत दयालु और पिता तुल्य थे। अपने कामगारों के प्रति वे विचारशील और सौहार्दपूर्ण थे। जब वे उन्हें किसी काम से बर्खास्त करते थे, तो वे उन्हें कोई दूसरा काम दिलाने की कोशिश करते थे, या यदि यह संभव न होता,

तो वे उन्हें उनके परिवारों के साथ ऐसे जिले में स्थानांतरित करने में मदद करते थे जहाँ काम मिलने की संभावना हो। यह भी उल्लेखनीय है कि यदि, जैसा कि कभी-कभार होता था, उनके किसी कामगार ने अवज्ञा के लक्षण दिखाए, तो यॉर्क - जो कई लोगों की तरह नियंत्रण से नफरत करते थे, लेकिन सख्ती से नियंत्रण करना जानते थे - विद्रोह को जड़ से कुचलने, उसे खरपतवार की तरह जड़ से उखाड़ फेंकने में माहिर थे, ताकि वह उनके अधिकार क्षेत्र में कभी फैल या पनप न सके। अपनी परिस्थितियों की ऐसी सुखद स्थिति को देखते हुए, वह स्वयं को उन लोगों के बारे में अत्यंत कठोरता से बोलने के लिए स्वतंत्र महसूस करता था जो अलग-अलग परिस्थितियों में थे, उनकी स्थिति में जो कुछ भी अप्रिय था, उसे पूरी तरह से उनकी अपनी गलती के लिए जिम्मेदार ठहराता था, खुद को मालिकों से अलग कर लेता था और श्रमिकों के हितों की खुलकर वकालत करता था।

श्री योर्क का परिवार जिले का सबसे पहला और सबसे पुराना परिवार था; और वे, यद्यपि सबसे धनी नहीं थे, फिर भी सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक थे। उनकी शिक्षा अच्छी हुई थी। युवावस्था में, फ्रांसीसी क्रांति से पहले, उन्होंने यूरोप की यात्रा की थी। वे फ्रांसीसी और इतालवी भाषाओं के पारखी थे। इटली में दो साल के प्रवास के दौरान उन्होंने कई सुंदर चित्र और दुर्लभ कलाकृतियाँ एकत्र की थीं, जिनसे उनका निवास स्थान सुशोभित था। जब वे चाहते थे, तो उनका व्यवहार पुराने जमाने के एक सभ्य सज्जन जैसा होता था; जब वे दूसरों को खुश करना चाहते थे, तो उनकी बातचीत असाधारण रूप से रोचक और मौलिक होती थी; और यदि वे आमतौर पर यॉर्कशायर की बोली में बोलते थे, तो यह उनकी अपनी पसंद थी, क्योंकि वे परिष्कृत शब्दावली के बजाय अपनी मूल डोरिक बोली को प्राथमिकता देते थे। उन्होंने कहा, "यॉर्कशायर की बोली, कॉकनी की तुतलाहट से उतनी ही बेहतर है जितनी बैल की दहाड़ चूहे की चीख से।"

श्री योर्क मीलों दूर तक हर किसी को जानते थे और हर कोई उन्हें जानता था; फिर भी उनके घनिष्ठ परिचित बहुत कम थे। स्वयं अत्यंत मौलिक होने के कारण, उन्हें साधारण चीज़ों में कोई रुचि नहीं थी: चाहे उच्च वर्ग का हो या निम्न वर्ग का, एक उग्र और बेबाक चरित्र उन्हें हमेशा स्वीकार्य था; चाहे कितना भी ऊँचा पद हो, एक परिष्कृत और नीरस व्यक्ति से उन्हें घृणा थी। वे अपने किसी चतुर कारीगर या अपने घर में रहने वाली किसी विचित्र और बुद्धिमान बूढ़ी औरत से खुलकर बात करने में एक

घंटा बिता देते थे, जबकि वे किसी साधारण सज्जन या सबसे फैशनेबल और सुरुचिपूर्ण, भले ही थोड़ी चंचल, महिला से एक पल भी बात करने से कतराते थे। इन मामलों में उनकी प्राथमिकताएँ चरम पर थीं, वे यह भूल जाते थे कि जो लोग मौलिक नहीं हो सकते, उनमें भी मनमोहक और प्रशंसनीय चरित्र हो सकते हैं। फिर भी, उन्होंने अपने ही नियम के अपवाद भी बनाए। उनकी मानसिकता एक विशेष प्रकार की थी - सरल, भोली, शिष्टाचार से रहित, लगभग बौद्धिकता से रहित, और उनमें मौजूद बौद्धिक गुणों को समझने में पूरी तरह असमर्थ। फिर भी, वे उनकी अशिष्टता से कभी घृणा नहीं करते थे, उनके व्यंग्य से आसानी से आहत नहीं होते थे, और उनके कथनों, कार्यों या विचारों का गहन विश्लेषण नहीं करते थे, जिनमें वे विशेष रूप से सहज थे, और इसलिए उन्हें विशेष रूप से पसंद करते थे। ऐसे लोगों में वे एक विशिष्ट व्यक्तित्व थे। वे, यद्यपि उनके प्रभाव में पूरी तरह से ढल जाते थे, उनकी श्रेष्ठता को कभी स्वीकार नहीं करते थे, क्योंकि वे कभी इस पर विचार ही नहीं करते थे; इसलिए वे पूरी तरह से आज्ञाकारी थे, और गुलाम होने का जरा भी खतरा नहीं था। उनकी अविवेकी, सहज, सरल और भोली संवेदनशीलता श्री यॉर्क को उतनी ही स्वीकार्य थी, क्योंकि यह उनके लिए उतनी ही सुविधाजनक थी, जितनी कि वह कुर्सी जिस पर वे बैठते थे या वह फर्श जिस पर वे चलते थे।

यह देखा गया होगा कि श्री मूर के प्रति उनका व्यवहार पूरी तरह से असभ्य नहीं था। उस सज्जन के प्रति उनके मन में थोड़ी सी पसंदगी होने के दो-तीन कारण थे। यह सुनने में अजीब लग सकता है, लेकिन इनमें से पहला कारण यह था कि मूर अंग्रेजी विदेशी लहजे में और फ्रेंच एकदम शुद्ध लहजे में बोलते थे; और उनका सांवला, पतला चेहरा, जिसकी बारीक लेकिन कुछ क्षीण रेखाएं थीं, ब्रिटिश-विरोधी और यॉर्कशायर-विरोधी भाव लिए हुए था। ये बातें तुच्छ लग सकती हैं, यॉर्क जैसे व्यक्ति को प्रभावित करने की संभावना नहीं है; लेकिन सच्चाई यह है कि इनसे पुरानी, शायद सुखद, यादें ताजा हो गईं - ये उनके यात्रा वृत्तांतों, उनके युवा दिनों की याद दिला गईं। उन्होंने इतालवी शहरों और दृश्यों के बीच मूर जैसे चेहरे देखे थे; उन्होंने पेरिस के कैफे और थिएटरों में उनकी जैसी आवाजें सुनी थीं। तब वे युवा थे, और जब उन्होंने उस अजनबी को देखा और सुना, तो वे फिर से युवा प्रतीत हुए।

दूसरे, वह मूर के पिता को जानता था और उनके साथ उसका लेन-देन था। यह संबंध अधिक ठोस था, हालांकि किसी भी तरह से अधिक सुखद नहीं था; क्योंकि

उसकी कंपनी का मूर की कंपनी के साथ व्यापारिक संबंध था, इसलिए वह भी कुछ हद तक उसके नुकसान में शामिल थी।

तीसरी बात, उन्होंने रॉबर्ट को एक चतुर व्यवसायी पाया था। उन्हें यह उम्मीद थी कि रॉबर्ट अंततः किसी न किसी तरीके से धन कमा लेंगे; और वे उनके दृढ़ संकल्प और बुद्धिमत्ता का सम्मान करते थे—शायद उनकी कठोरता का भी। एक चौथी बात जिसने उन्हें करीब लाया, वह यह थी कि श्री यॉर्क उस नाबालिग के संरक्षकों में से एक थे, जिसकी जागीर पर हॉलो मिल स्थित थी; इसलिए मूर को अपने बदलावों और सुधारों के दौरान अक्सर उनसे सलाह लेने की आवश्यकता पड़ती थी।

श्री यॉर्क के बैठक कक्ष में उपस्थित दूसरे अतिथि, श्री हेलस्टोन के बीच, उनके और उनके मेज़बान के बीच दोहरी दुश्मनी थी—प्रकृति की दुश्मनी और परिस्थितियों की दुश्मनी। स्वतंत्र विचारक औपचारिक व्यक्ति से घृणा करता था; स्वतंत्रता प्रेमी अनुशासनप्रिय व्यक्ति से नफरत करता था। इसके अलावा, यह भी कहा जाता था कि बीते वर्षों में वे दोनों एक ही महिला के प्रतिद्वंद्वी प्रेमी थे।

आम तौर पर, युवावस्था में श्री योर्क को चंचल और आकर्षक महिलाओं की ओर आकर्षित होने के लिए जाना जाता था: आकर्षक कद-काठी, तीक्ष्ण बुद्धि और हाजिरजवाबी उन्हें सबसे ज्यादा आकर्षित करती थी। हालांकि, उन्होंने कभी भी इन खूबसूरत महिलाओं में से किसी को शादी का प्रस्ताव नहीं दिया, जिनकी संगति वे चाहते थे; और अचानक ही उन्हें एक ऐसी लड़की से प्रेम हो गया जो अब तक देखी गई सभी लड़कियों से बिल्कुल अलग थी - एक ऐसी लड़की जिसका चेहरा किसी देवी के चेहरे जैसा था; एक ऐसी लड़की जो संगमरमर की बनी थी - मानो शांति की साक्षात मूर्ति हो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि जब वे उससे बात करते थे, तो वह केवल एक-एक शब्द में जवाब देती थी; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उनकी आहें अनसुनी रह जाती थीं, उनकी निगाहें अनसुनी रह जाती थीं, वह कभी उनके विचारों पर प्रतिक्रिया नहीं देती थी, उनके चुटकुलों पर शायद ही कभी मुस्कुराती थी, उन्हें कोई सम्मान या ध्यान नहीं देती थी; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह उन सभी स्त्री गुणों के बिल्कुल विपरीत थी जिनकी उन्होंने अपने पूरे जीवन में प्रशंसा की थी। उनके लिए मैरी केव एकदम सही थी, क्योंकि किसी न किसी कारण से - निस्संदेह उनके पास कोई कारण रहा होगा - वे उससे प्रेम करने लगे थे।

उस समय ब्रायरफील्ड के पादरी श्री हेलस्टोन भी मैरी से प्रेम करते थे—या कम से

कम, उन्हें मैरी पसंद थीं। कई अन्य लोग भी उनकी प्रशंसा करते थे, क्योंकि वह किसी देवदूत की तरह सुंदर थीं; लेकिन पादरी होने के कारण उन्हें प्राथमिकता दी गई—संभवतः उनके पद के कारण ही उनमें विवाह के लिए लुभाने का कुछ आकर्षण था, जो मिस केव को उनके अन्य चाहने वालों, ऊन व्यापारी, में नहीं मिला। श्री हेलस्टोन में न तो श्री यॉर्क जैसा मैरी के प्रति गहरा प्रेम था, और न ही उन्होंने कभी ऐसा होने का दावा किया। उनमें वह विनम्रता और आदर नहीं था जो मैरी के अधिकांश चाहने वालों को वश में कर लेता था; वे मैरी को बाकी लोगों की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट रूप से देखते थे। इसलिए, वे मैरी और स्वयं पर अधिक नियंत्रण रखते थे। मैरी ने पहली ही बार में उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और उनका विवाह हो गया।

प्रकृति ने श्री हेलस्टोन को एक अच्छा पति बनने के लिए नहीं बनाया था, खासकर एक शांत पत्नी के लिए। उनका मानना था कि जब तक स्त्री चुप रहती है, उसे कोई कष्ट नहीं होता और उसे किसी चीज की कमी नहीं होती। यदि वह अकेलेपन की शिकायत नहीं करती, तो चाहे कितना भी अकेलापन रहे, वह उसके लिए कष्टदायक नहीं हो सकता। यदि वह बोलती नहीं, खुद को आगे नहीं बढ़ाती, किसी चीज के प्रति अपनी पसंद या नापसंद व्यक्त नहीं करती, तो समझो उसकी कोई पसंद या नापसंद नहीं है, और उसकी रुचियों पर विचार करना व्यर्थ है। उन्होंने स्त्रियों को समझने या उनकी तुलना पुरुषों से करने का कोई दावा नहीं किया। वे एक अलग, शायद बहुत ही निम्न श्रेणी की प्राणी थीं। एक पत्नी अपने पति की साथी नहीं हो सकती, उसकी विश्वासपात्र तो दूर की बात है, उसका सहारा तो बिल्कुल नहीं। एक-दो साल बाद, उनकी पत्नी उनके लिए किसी भी रूप में कोई खास महत्व नहीं रखती थी; और जब एक दिन, जैसा कि उसने सोचा, अचानक—क्योंकि उसने उसकी कमजोरी पर शायद ही ध्यान दिया था—लेकिन, जैसा कि दूसरों ने सोचा, धीरे-धीरे, उसने उसे और जीवन को अलविदा कह दिया, और वैवाहिक पलंग में केवल मिट्टी का एक शांत, सुंदर चेहरे वाला ढांचा ही बचा रह गया, ठंडा और सफेद, तब उसे अपने शोक का एहसास हुआ—कौन कह सकता है कितना कम? फिर भी, शायद, जितना वह महसूस करता हुआ प्रतीत होता था उससे कहीं अधिक; क्योंकि वह ऐसा व्यक्ति नहीं था जिससे दुःख आसानी से आंसू बहा दे।

उनकी भावहीन और संयमित शोक मुद्रा ने एक बूढ़ी गृहणी और श्रीमती हेलस्टोन की बीमारी के दौरान उनकी सेवा करने वाली एक महिला परिचारिका को झकझोर

दिया। शायद उन्हें दिवंगत महिला के स्वभाव, उनकी भावनाओं और प्रेम करने की क्षमता के बारे में उनके पति से अधिक जानने का अवसर मिला था। वे शव के बारे में गपशप करती रहीं, किस्से सुनाती रहीं, उनकी धीमी गति से हुई बीमारी और उसके वास्तविक या कथित कारण को बढ़ा-चढ़ाकर बताती रहीं। संक्षेप में, वे एक-दूसरे को उस गंभीर छोटे आदमी के प्रति आक्रोशित करती रहीं, जो बगल के कमरे में कागजात देख रहा था, इस बात से अनभिज्ञ कि वह किस प्रकार के अपमान का पात्र बन रहा है।

श्रीमती हेलस्टोन के अंतिम संस्कार के तुरंत बाद ही आस-पड़ोस में यह अफवाह फैलने लगी कि उनकी मृत्यु हृदय विदारक होने से हुई है। ये अफवाहें जल्द ही दुर्व्यवहार की खबरों में तब्दील हो गईं, और अंत में उनके पति द्वारा किए गए कठोर व्यवहार के विवरण तक पहुंच गईं - ये खबरें सरासर झूठी थीं, लेकिन फिर भी लोगों ने इन्हें उत्सुकता से स्वीकार कर लिया। श्री यॉर्क ने इन्हें सुना और कुछ हद तक इन पर विश्वास भी किया। ज़ाहिर है, उनके मन में अपने सफल प्रतिद्वंद्वी के प्रति कोई मित्रता भाव नहीं था। हालांकि अब वे स्वयं विवाहित थे और एक ऐसी महिला से विवाहित थे जो हर मायने में मैरी केव से बिलकुल विपरीत थीं, फिर भी वे अपने जीवन की उस बड़ी निराशा को नहीं भूल पाए थे; और जब उन्होंने सुना कि जो चीज़ उनके लिए इतनी अनमोल होती, उसे किसी और ने उपेक्षित किया है, शायद उसका दुरुपयोग भी किया है, तो उनके मन में उस दूसरे के लिए गहरी और कड़वी दुश्मनी पैदा हो गई।

इस दुश्मनी की प्रकृति और तीव्रता के बारे में श्री हेलस्टोन को पूरी जानकारी नहीं थी। उन्हें न तो यह पता था कि यॉर्क मैरी केव से कितना प्यार करते थे, उन्हें खोने पर उन्हें कितना दुख हुआ था, और न ही उन्हें उनके द्वारा मैरी केव के साथ किए गए व्यवहार के बारे में फैली उन झूठी बातों का एहसास था, जो उनके अलावा आस-पड़ोस में हर किसी को पता थीं। उनका मानना था कि केवल राजनीतिक और धार्मिक मतभेद ही उन्हें और श्री यॉर्क को अलग करते हैं। अगर उन्हें असलियत पता होती, तो वे शायद ही किसी के समझाने पर अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी के घर में कदम रखते।

श्री योर्क ने रॉबर्ट मूर को अपना व्याख्यान पुनः नहीं दिया। कुछ ही देर में बातचीत फिर से सामान्य रूप में शुरू हुई, हालांकि लहजा अभी भी कुछ हद तक वाद-विवाद से

भरा था। देश की अशांत स्थिति और जिले में मिलों की संपत्ति पर हाल ही में हुए विभिन्न अत्याचारों ने असहमति के लिए पर्याप्त सामग्री प्रदान की, विशेष रूप से इसलिए कि उपस्थित तीनों सज्जनों के इन विषयों पर विचार कमोबेश भिन्न थे। श्री हेलस्टोन का मानना था कि मालिक पीड़ित थे और मजदूर अनुचित थे; उन्होंने स्थापित अधिकारियों के प्रति व्यापक असंतोष की भावना और उन बुराइयों को धैर्यपूर्वक सहन न करने की बढ़ती अनिच्छा की कड़ी निंदा की जिन्हें वे अपरिहार्य मानते थे। उन्होंने जो उपाय सुझाए वे थे सरकार का सशक्त हस्तक्षेप, मजिस्ट्रेटों की कड़ी निगरानी; और आवश्यकता पड़ने पर तत्काल सैन्य कार्रवाई।

श्री यॉर्क यह जानना चाहते थे कि क्या यह हस्तक्षेप, सतर्कता और दबाव भूखों को भोजन प्रदान करेगा, बेरोजगारों को काम देगा और जिन्हें कोई काम पर नहीं रखेगा। उन्होंने अपरिहार्य बुराइयों के विचार को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि जनता का धैर्य एक ऊंट के समान है, जिसकी पीठ पर सहन करने योग्य अंतिम कण भी लाद दिया गया है, और अब प्रतिरोध एक कर्तव्य है; स्थापित अधिकारियों के विरुद्ध व्याप्त असंतोष की भावना को उन्होंने समय का सबसे आशाजनक संकेत माना; उन्होंने स्वीकार किया कि स्वामी वास्तव में पीड़ित थे, लेकिन उनकी मुख्य शिकायतें एक "भ्रष्ट, नीच और रक्तपातपूर्ण" सरकार द्वारा उन पर थोपी गई थीं (ये श्री यॉर्क के विशेषण थे)। पिट जैसे पागल, कैसलरेघ जैसे शैतान, पर्सेवल जैसे शरारती मूर्ख, अत्याचारी थे, देश के अभिशाप थे, उसके व्यापार के विनाशक थे। एक अनुचित, निराशाजनक और विनाशकारी युद्ध में उनकी आसक्तिपूर्ण दृढ़ता ने ही राष्ट्र को इस वर्तमान स्थिति में पहुँचाया था। यह उनकी बेहद दमनकारी कराधान प्रणाली थी, यह कुख्यात "ऑर्डर्स इन काउंसिल" था - जिसके रचनाकारों को महाभियोग और फांसी की सजा मिलनी चाहिए थी, अगर कभी किसी सार्वजनिक व्यक्ति को इसकी सजा मिलनी चाहिए थी - जिसने इंग्लैंड के गले में एक बोझ डाल दिया था।

“पर बात करने का क्या फायदा?” उसने पूछा। “ऐसे देश में तर्क की कोई गुंजाइश ही नहीं थी जहाँ राजाओं, पुजारियों और कुलीनों का राज चलता हो; जहाँ एक पागल नाममात्र का राजा हो और एक सिद्धांतहीन व्यभिचारी असली शासक हो; जहाँ वंशानुगत विधायकों जैसी मूर्खता को बर्दाश्त किया जाता हो; जहाँ बिशपों की एक बड़ी समिति जैसी पाखंडी व्यवस्था और एक भ्रष्ट, उत्पीड़क स्थापित चर्च जैसी अहंकारी दुर्व्यवहार को सहन और पूजा जाता हो; जहाँ एक स्थायी सेना रखी जाती हो

और आलसी पादरियों और उनके कंगाल परिवारों को सत्ता की समृद्धि में रखा जाता हो?"

श्री हेलस्टोन उठ खड़े हुए और अपनी फावड़ा टोपी पहनते हुए उत्तर में बोले, "अपने जीवन में उन्होंने दो-तीन ऐसे उदाहरण देखे हैं जहाँ इस प्रकार की भावनाओं को तब तक बड़ी बहादुरी से कायम रखा गया जब तक कि स्वास्थ्य, शक्ति और सांसारिक समृद्धि उनका साथ दे रही थी; लेकिन एक समय आता है," उन्होंने कहा, "सभी मनुष्यों के जीवन में, 'जब घर के रखवालों को कांपना चाहिए; जब उन्हें ऊँचाई से डरना चाहिए, और भय उनके मार्ग में बाधा बन जाए;' और वह समय अराजकता और विद्रोह के समर्थक, धर्म और व्यवस्था के शत्रु की परीक्षा होती है। इससे पहले," उन्होंने पुष्टि की, "उन्हें हमारे चर्च द्वारा बीमारों के लिए निर्धारित प्रार्थनाएँ पढ़ने के लिए कहा गया था, जो चर्च के सबसे कट्टर शत्रुओं में से एक के मरणासन्न शवशय्या पर था; उन्होंने ऐसे व्यक्ति को पश्चाताप से व्याकुल देखा था, पश्चाताप के लिए जगह खोजने के लिए उत्सुक, और आँसू बहाते हुए भी उसे न मिलने पर भी असमर्थ। उन्हें श्री यॉर्क को पहले ही आगाह करना होगा कि ईश्वर और राजा के विरुद्ध निंदा करना एक घातक पाप था, और यह भी कि 'आने वाला न्याय' जैसी कोई बात थी।

श्री यॉर्क को पूरा विश्वास था कि न्याय का दिन अवश्य आएगा। यदि ऐसा न होता, तो यह कल्पना करना कठिन होता कि इस संसार में विजयी प्रतीत होने वाले सभी दुष्ट, जो निर्दोषों के दिलों को बेधड़क तोड़ते थे, अनुचित विशेषाधिकारों का दुरुपयोग करते थे, सम्मानजनक कार्यों को कलंकित करते थे, गरीबों के मुंह से रोटी छीनते थे, विनम्रों को धमकाते थे और धनी और अभिमानी लोगों के सामने नीचता से झुकते थे, उन्हें उनके कर्मों का फल कैसे मिलेगा। लेकिन," उन्होंने आगे कहा, "जब भी वे इस तरह की घटनाओं और इस गंदे ग्रह पर उनकी कथित सफलता से निराश हो जाते, तो वे बस अपनी पुरानी किताब (पुस्तकों की अलमारी में रखी एक बड़ी बाइबिल की ओर इशारा करते हुए) उठाते, उसे संयोगवश खोलते और उन्हें यकीन होता कि उसमें एक ऐसा श्लोक है जो नीले रंग की आग से जल रहा है और सब कुछ ठीक कर देता है। वे जानते थे," उन्होंने कहा, "कि कुछ लोग कहाँ जा रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे कोई सफेद पंखों वाला देवदूत आ गया हो।" मैंने दरवाजे के पत्थर के ऊपर से झुककर उसे बताया।

श्री हेलस्टोन ने अपनी पूरी गरिमा समेटते हुए कहा, "महोदय, मनुष्य का सबसे

बड़ा ज्ञान स्वयं को जानना और उस दिशा को जानना है जिस ओर उसके कदम बढ़ रहे हैं।"

"जी हां। आपको याद होगा, श्रीमान हेलस्टोन, कि अज्ञान को स्वर्ग के द्वार से उठाकर हवा में उड़ाते हुए पहाड़ी के किनारे बने एक दरवाजे से अंदर धकेल दिया गया था, जो सीधे नरक की ओर जाता था।"

"और मैं यह भी नहीं भूला हूँ, श्री यॉर्क, कि व्यर्थ आत्मविश्वास, अपने सामने का रास्ता न देख पाने के कारण, एक गहरे गड्ढे में गिर गया, जिसे मैदान के राजकुमार ने जानबूझकर वहाँ अभिमानी मूर्खों को फंसाने के लिए बनवाया था, और गिरने से वह चकनाचूर हो गया।"

"अब," श्री मूर ने बीच में दखल देते हुए कहा, जो अब तक इस सांसारिक संघर्ष के मूक दर्शक बने हुए थे और पार्टी की राजनीति और आस-पड़ोस की गपशप से बेपरवाह थे। पार्टी की राजनीति के प्रति उनकी उदासीनता ने उन्हें इस तरह के टकराव के गुणों का निष्पक्ष, भले ही उदासीन, निर्णायक बना दिया था। "आप दोनों ने एक-दूसरे को पर्याप्त रूप से बदनाम कर दिया है और साबित कर दिया है कि आप एक-दूसरे से कितनी घृणा करते हैं और एक-दूसरे को कितना दुष्ट समझते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मेरे मन में उन लोगों के प्रति घृणा अभी भी इतनी प्रबल है जिन्होंने मुझे चोट पहुँचाई है कि मेरे निजी जान-पहचान वालों के लिए भी मेरे मन में कोई घृणा नहीं बची है, और किसी संप्रदाय या सरकार जैसी अस्पष्ट चीज़ के लिए तो और भी कम। लेकिन वास्तव में, सज्जनों, आप दोनों अपने व्यवहार से बहुत बुरे प्रतीत होते हैं— जितना मैंने कभी सोचा भी नहीं था उससे कहीं ज़्यादा बुरे।—यॉर्क, मैं तुम्हारे जैसे विद्रोही और ईश्वर-निंदा करने वाले के साथ पूरी रात नहीं रुक सकता; और श्री हेलस्टोन जैसे क्रूर और अत्याचारी पादरी के साथ घर जाने की तो बिल्कुल हिम्मत नहीं कर सकता।"

"मैं जा रहा हूँ, श्री मूर," रेक्टर ने सख्ती से कहा। "मेरे साथ आना या न आना, यह आपकी इच्छा है।"

"नहीं, उसके पास कोई विकल्प नहीं होगा; उसे तुम्हारे साथ ही जाना होगा," योर्क ने उत्तर दिया। "आधी रात हो चुकी है; और मैं अब किसी को भी अपने घर में जागते रहने नहीं दूंगा। तुम सबको जाना ही होगा।"

उसने घंटी बजाई।

“डेब,” उसने दरवाजा खोलने वाले नौकर से कहा, “इन लोगों को रसोई से बाहर निकालो, दरवाजे बंद करो और सोने चले जाओ। — ये रहा आपका रास्ता,” उसने अपने मेहमानों से कहा; और उन्हें गलियारे से बाहर निकालते हुए, उसने उन्हें अपने सामने वाले दरवाजे पर उतार दिया।

उन्होंने अपने साथियों को पीछे के रास्ते से जल्दबाजी में निकलते हुए देखा। उनके घोड़े द्वार पर खड़े थे; वे उन पर सवार हुए और चले गए, मूर उनके अचानक चले जाने पर हंस रहा था, जबकि हेलस्टोन इससे बेहद नाराज था।

अध्याय V.

हॉलो की कुटिया।

अगली सुबह जब मूर उठे तो उनका मूड अभी भी अच्छा था। उन्होंने और जो स्कॉट ने रात मिल में ही बिताई थी, आगे और पीछे के लेखा कक्षों में बने कुछ गुप्त स्थानों में सोने की व्यवस्था की थी। मालिक, जो हमेशा जल्दी उठते थे, आज भी सामान्य से कुछ जल्दी उठ गए थे। उन्होंने अपने नौकर को जगाने के लिए तैयार होते समय एक फ्रांसीसी गीत गाया।

“तो आप यहाँ के ग्राहक नहीं हैं, मालिक?” जो चिल्लाया।

“बिल्कुल नहीं, मेरे बेटे—यानी, उठो, और कामगारों के आने से पहले हम चक्की का एक चक्कर लगा लेते हैं, और मैं तुम्हें अपनी भविष्य की योजनाएँ समझाता हूँ। मशीनरी अभी भी तैयार है, जोसेफ। तुमने शायद ब्रूस के बारे में नहीं सुना होगा?”

और मकड़ी? हाँ, लेकिन मैंने स्कॉटलैंड का इतिहास पढ़ा है, और मुझे इसके बारे में उतना ही पता है जितना आपको; और मैं समझता हूँ कि आप कहना चाहते हैं कि आप दृढ़ रहेंगे।

"मैं करता हूं।"

"क्या तुम्हारे देश में तुम्हारे बनाए हुए बहुत से लोग हैं?" जो ने अपना अस्थायी बिस्तर समेटते और उसे एक तरफ रखते हुए पूछा।

“मेरे देश में! मेरा देश कौन सा है?”

"अरे, यह तो फ्रांस है, है ना?"

“बिल्कुल नहीं! फ्रांसीसियों द्वारा एंटवर्प पर कब्जा कर लेने से, जहाँ मेरा जन्म हुआ था, मैं फ्रांसीसी नहीं बन जाता।”

तो फिर हॉलैंड?

मैं डच नागरिक नहीं हूँ। अब आप एंटवर्प और एम्स्टर्डम को लेकर भ्रमित हो रहे हैं।

“फ़्लैंडर्स?”

“जो, मैं इस आरोप को धिक्कारती हूँ! मैं फ्लेमिश हूँ! क्या मेरा चेहरा फ्लेमिश लोगों जैसा है— वो उभरी हुई नाक, पीछे की ओर झुका हुआ माथा, और वो नीली आँखें जो ‘फूलों जैसी’ दिखती हैं? क्या मैं फ्लेमिश लोगों की तरह सिर्फ़ शरीर हूँ और पैर नहीं? लेकिन तुम नहीं जानते कि वे नीदरलैंडवासी कैसे होते हैं। जो, मैं एनवर्सोइस हूँ। मेरी माँ एनवर्सोइस थीं, हालाँकि उनका वंश फ्रांसीसी था, और यही कारण है कि मैं फ्रेंच बोलती हूँ।”

"लेकिन तुम्हारे पिता यॉर्कशायर के थे, इसलिए तुम भी कुछ हद तक यॉर्कशायर के हो; और हर कोई देख सकता है कि तुम हमसे संबंधित हो, क्योंकि तुम्हें पीतल बनाने और आगे बढ़ने का बहुत शौक है।"

“जो, तुम बड़े ही उद्दंड हो; लेकिन मैं बचपन से ही इस तरह के असभ्य व्यवहार का आदी रहा हूँ। बेल्जियम के ‘क्लास ओउवरिएर’ यानी मेहनतकश लोग अपने मालिकों के प्रति बहुत ही निर्दयी व्यवहार करते हैं; और निर्दयी से मेरा मतलब है ‘क्रूरतापूर्वक’—जिसका सही अनुवाद शायद ‘अशिष्टतापूर्वक’ होना चाहिए।”

“हम इस देश में हमेशा अपने मन की बात कहते हैं; और लंदन के वे युवा पादरी और रईस लोग हमारी ‘अशिष्टता’ पर हैरान होते हैं; और हमें उन्हें हैरान करने में कोई बुराई नहीं लगती, क्योंकि उन्हें अपनी आँखें मूँथते और अपने हाथों को ऐसे फैलाते

देखना हमारे लिए एक खेल है, जैसे उन्हें कोड़ों से छील दिया गया हो, और फिर उन्हें अपने शब्दों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटते हुए यह कहते सुनना, 'अरे! अरे! कितनी गंदी बात है! कितना घटिया!'"

"तुम लोग बर्बर हो, जो। तुम्हें नहीं लगता कि तुम सभ्य हो, है ना?"

"औसत दर्जे का, औसत दर्जे का, महाराज। मेरा मानना है कि हम उत्तर के विनिर्माणकर्मी दक्षिण के किसानों से कहीं अधिक बुद्धिमान और जानकार हैं। व्यापार से बुद्धि तेज होती है; और मेरे जैसे मैकेनिकों को सोचना पड़ता है। आप जानते हैं, मशीनरी और ऐसी ही चीजों की देखभाल करते-करते, मेरी यह आदत हो गई है कि जब मैं कोई परिणाम देखता हूँ, तो मैं तुरंत उसका कारण ढूंढता हूँ, और अक्सर उसे उद्देश्य तक पहुँचाने की कोशिश करता हूँ; फिर मुझे पढ़ना अच्छा लगता है, और मैं यह जानने के लिए उत्सुक रहता हूँ कि जो लोग हम पर शासन करने का दावा करते हैं, वे हमारे लिए और हमारे साथ क्या करना चाहते हैं। और मुझसे भी ज्यादा बुद्धिमान कई लोग हैं; उन चिकने-चुपड़े लोगों में से कई, जिनसे तेल की गंध आती है, और उन नीली और काली चमड़ी वाले रंगसाजों में से कई ऐसे हैं जिनका दिमाग तेज है, और जो यह बता सकते हैं कि कौन सा कानून मूर्खतापूर्ण है, ठीक वैसे ही जैसे आप या पुराने यॉर्क बता सकते हैं, और... क्रिस्टोफर साइक्स ओ' व्हिनबरी जैसे नरम दिल लोगों से बेहतर व्यवहार करो, और हेलस्टोन के क्यूरेट, उस आयरिश पीटर जैसे धूर्त लोगों का अभिवादन करो।"

"मुझे पता है, स्कॉट, तुम खुद को बहुत चतुर समझते हो।"

"हाँ! मैं ठीक-ठाक हूँ। मैं पनीर और चाक में फर्क बता सकता हूँ, और मुझे अच्छी तरह पता है कि मुझे जो भी अवसर मिले हैं, मैंने उनका बेहतर इस्तेमाल किया है, उन लोगों से कहीं बेहतर जो खुद को मुझसे ऊपर समझते हैं; लेकिन यॉर्कशायर में हजारों लोग हैं जो मेरे जितने अच्छे हैं, और एक-तीन तो मुझसे बेहतर भी हैं।"

"तुम महान व्यक्ति हो—एक महान व्यक्तित्व हो; लेकिन तुम बड़े घमंडी और अहंकारी हो, जो! तुम्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि तुमने व्यावहारिक गणित का थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया है, और रंगाई के बर्तन की तलहटी में रसायन विज्ञान के कुछ अंश पा लिए हैं, इसलिए तुम विज्ञान के उपेक्षित व्यक्ति हो; और तुम्हें यह भी नहीं मानना चाहिए कि व्यापार हमेशा सुचारू रूप से नहीं चलता, और तुम जैसे लोग कभी-कभी काम और रोटी की कमी से जूझते हैं, इसलिए तुम्हारा वर्ग शहीद है, और

जिस शासन प्रणाली के तहत तुम रहते हो वह पूरी तरह से गलत है। और तो और, तुम्हें एक पल के लिए भी यह संकेत नहीं देना चाहिए कि सद्गुण झोपड़ियों और पूरी तरह से वीरान पड़े घरों में शरण ले चुके हैं। मैं तुम्हें बता दूं, मुझे इस तरह की बकवास से सख्त नफरत है, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मानव स्वभाव हर जगह एक जैसा होता है, चाहे घर टाइल का हो या छप्पर का, और सांस लेने वाले हर मानव स्वभाव में, बुराई और अच्छाई हमेशा मिश्रित रूप में पाई जाती हैं, चाहे वह कम हो या ज्यादा। अनुपात, और यह कि अनुपात सामाजिक स्थिति से निर्धारित नहीं होता। मैंने अमीर खलनायक भी देखे हैं, गरीब भी देखे हैं, और ऐसे खलनायक भी देखे हैं जो न अमीर थे न गरीब, लेकिन जिन्होंने अगर की इच्छा पूरी की और उचित एवं संयमित जीवन व्यतीत किया। घड़ी में छह बजने वाले हैं। जाओ, जो, और चक्की की घंटी बजाओ।

फरवरी का मध्य आ चुका था; शाम छह बजे तक भोर धीरे-धीरे रात पर छाने लगी थी, उसकी भूरी धुंध को अपनी हल्की किरण से चीरते हुए, उसकी अपारदर्शी छायाओं को अर्ध-पारदर्शी बना रही थी। उस सुबह वह किरण इतनी हल्की थी कि पूरब में कोई रंग नहीं था, कोई चमक नहीं थी। दिन के धीरे-धीरे उठने की धीमी और भारी रोशनी को पहाड़ियों पर बिखेरते हुए देखकर ऐसा लग रहा था मानो पिछली रात की बाढ़ में सूरज की आग बुझ गई हो। उस सुबह की हवा उसके रूप की तरह ठंडी थी; एक ठंडी हवा ने रात के बादलों के समूह को हिला दिया, और धीरे-धीरे ऊपर उठते हुए, क्षितिज के चारों ओर एक रंगहीन, चांदी जैसी चमकती हुई आभा छोड़ते हुए, नीले आकाश को नहीं, बल्कि उसके पार एक हल्की भाप की परत को दिखाया। बारिश रुक चुकी थी, लेकिन धरती गीली थी, और तालाब और छोटी नदियाँ पानी से भरी हुई थीं।

मिल की खिड़कियाँ जगमगा रही थीं, घंटी अभी भी ज़ोर से बज रही थी, और अब छोटे बच्चे दौड़ते हुए अंदर आ रहे थे, इतनी जल्दी में कि शायद उन्हें खराब हवा का ज़्यादा असर महसूस न हो; और वास्तव में, इसके विपरीत, शायद सुबह उन्हें ज़्यादा अनुकूल लग रही थी, क्योंकि वे उस सर्दी में अक्सर बर्फ़ीले तूफ़ानों, भारी बारिश और कड़ाके की ठंड में भी काम पर आते रहे थे।

श्री मूर प्रवेश द्वार पर खड़े होकर उन्हें आते-जाते देखते रहे। वे उनके आने-जाने की गिनती करते रहे। जो लोग देर से आते थे, उन्हें वे फटकार लगाते थे, जिसे देर से आने वालों के काम-कक्ष पहुँचने पर जो स्कॉट और भी सख्ती से दोहराता था। न तो

मालिक और न ही पर्यवेक्षक ने कठोर भाषा का प्रयोग किया। वे दोनों ही क्रूर स्वभाव के नहीं थे, हालाँकि ऐसा प्रतीत होता था कि वे दोनों ही सख्त थे, क्योंकि उन्होंने एक देर से आने वाले कर्मचारी पर जुर्माना लगाया था। श्री मूर ने उसे प्रवेश करने से पहले ही अपना एक पैसा जमा करने को कहा और उसे चेतावनी दी कि अगली बार यह गलती दोहराने पर उसे दो पेंस का जुर्माना देना होगा।

ऐसे मामलों में नियम निःसंदेह आवश्यक हैं, और क्रूर और निर्दयी स्वामी क्रूर और निर्दयी नियम बनाते हैं, जिनका उपयोग वे कम से कम उस समय में अत्याचारपूर्वक करते थे; लेकिन यद्यपि मैं अपूर्ण चरित्रों का वर्णन कर रहा हूँ (इस पुस्तक का प्रत्येक चरित्र कमोबेश अपूर्ण ही होगा, क्योंकि मेरी कलम आदर्श रेखा पर किसी भी चीज़ को चित्रित करने से इनकार करती है), मैंने पतित या अत्यंत कुख्यात लोगों के बारे में लिखने का प्रयास नहीं किया है। बाल-यातना करने वालों, दास मालिकों और चालकों को मैं जेलरों के हवाले करता हूँ। उपन्यासकार को उनके कृत्यों का विवरण देकर अपने पृष्ठ को दूषित करने से छूट दी जा सकती है।

इसलिए, कोड़ों और चाबुकों के प्रभावशाली वर्णनों से अपने पाठक की आत्मा को झकझोरने और उसके आश्चर्य को बढ़ाने के बजाय, मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि श्री मूर या उनके सहायक ने कभी भी अपनी चक्की में किसी बच्चे को नहीं पीटा। वास्तव में, जो ने एक बार अपने ही बेटे को झूठ बोलने और उस पर अड़े रहने के लिए बहुत बुरी तरह पीटा था; लेकिन, अपने मालिक की तरह, वह भी बहुत शांत, संयमी और समझदार व्यक्ति था, इसलिए उसने बच्चों के साथ व्यवहार में शारीरिक दंड को अपवाद के रूप में ही रखा।

श्री मूर अपनी चक्की, चक्की के प्रांगण, रंगाई घर और गोदाम में तब तक घूमते रहे जब तक धुंधली सुबह दिन में नहीं बदल गई। सूरज निकला भी - कम से कम एक सफेद गोला, साफ, रंगहीन और बर्फ की तरह ठंडा, एक पहाड़ी की अंधेरी चोटी से झाँका, ऊपर बादल के पीले किनारे को चाँदी जैसा चमकीला बना दिया, और उस संकरी घाटी पर गंभीरता से नीचे देखा, जिसकी सीमित सीमाओं तक हम फिलहाल सीमित हैं। आठ बज चुके थे; चक्की की सभी बत्तियाँ बुझ चुकी थीं; नाश्ते का संकेत दिया गया; आधे घंटे की छुट्टी पाकर बच्चे अपनी कॉफी से भरे छोटे टिन के डिब्बों और रोटी के छोटे टोकरियों की ओर चल पड़े। उम्मीद है कि उनके पास खाने के लिए पर्याप्त होगा; अगर ऐसा नहीं हुआ तो बहुत दुख की बात होगी।

और अब अंततः श्री मूर मिल-यार्ड से निकले और अपने घर की ओर बढ़े। यह कारखाने से थोड़ी ही दूरी पर था, लेकिन गली के दोनों ओर लगी बाड़ और ऊँची मेड़ें इसे एकांत का आभास देती थीं। यह एक छोटा, सफेदी किया हुआ घर था, जिसके दरवाजे के ऊपर एक हरा बरामदा था; इस बरामदे के पास बगीचे की मिट्टी में और खिड़कियों के नीचे भी कुछ भूरे डंठल दिखाई दे रहे थे - अब ये डंठल कलियों और फूलों से रहित थे, लेकिन गर्मियों में खिलने वाली लताओं की धुंधली झलक दे रहे थे। झोपड़ी के सामने घास का मैदान और क्यारियाँ थीं। क्यारियों में अभी केवल काली मिट्टी ही थी, सिवाय उन सुरक्षित कोनों के जहाँ स्नोड्रॉप या क्रोकस की पहली कोंपलें, पन्ना की तरह हरी, जमीन से झाँक रही थीं। वसंत देर से आया था; सर्दी बहुत भीषण और लंबी थी; पिछली बारिश से ठीक पहले आखिरी गहरी बर्फ पिघली थी; पहाड़ियों पर, वास्तव में, इसके सफेद अवशेष अभी भी चमक रहे थे, घाटियों में बिखरे हुए और चोटियों पर सजे हुए थे; लॉन हरा-भरा नहीं था, बल्कि मुरझाया हुआ था, जैसा कि किनारे की घास और गली में लगी बाड़ के नीचे की घास थी। कुटिया के बगल में तीन पेड़ खूबसूरती से समूह बनाकर खड़े थे। वे बहुत ऊंचे नहीं थे, लेकिन आसपास कोई प्रतिद्वंद्वी न होने के कारण, वे जहां उग रहे थे, वहां सुंदर और प्रभावशाली दिख रहे थे। श्री मूर का घर ऐसा ही था - संतोष और चिंतन के लिए एक आरामदायक आशियाना, लेकिन एक ऐसा घर जिसमें कर्म और महत्वाकांक्षा के पंख लंबे समय तक सिमटे नहीं रह सकते थे।

उस साधारण आरामदेह घर में मालिक को कोई खास आकर्षण नहीं था। घर में तुरंत प्रवेश करने के बजाय, वह एक छोटी सी झोपड़ी से फावड़ा लेकर आया और बगीचे में काम करने लगा। लगभग पंद्रह मिनट तक वह लगातार खुदाई करता रहा। तभी एक खिड़की खुली और एक महिला की आवाज़ ने उसे पुकारा, —

“अच्छा, तो फिर! क्या आप आज सुबह नाश्ता नहीं कर रहे हैं?”

उत्तर और बाकी की बातचीत फ्रेंच में थी; लेकिन चूंकि यह एक अंग्रेजी पुस्तक है, इसलिए मैं इसका अंग्रेजी में अनुवाद करूंगा।

"क्या नाश्ता तैयार है, होर्टेंस?"

"बिल्कुल; यह आधे घंटे से तैयार है।"

“तो मैं भी तैयार हूँ। मेरे अंदर कुत्तों जैसी भूख है।”

उसने अपना फावड़ा नीचे फेंक दिया और घर में प्रवेश किया। संकरा रास्ता उसे

एक छोटे से बैठक कक्ष में ले गया, जहाँ मेज पर कॉफी, ब्रेड और मक्खन का नाश्ता लगा हुआ था, साथ में उबले हुए नाशपाती भी थे, जो कुछ हद तक गैर-अंग्रेज़ी व्यंजन थे। इन व्यंजनों के बीच वही महिला बैठी थी जिसने खिड़की से बात की थी। आगे बढ़ने से पहले मुझे उसका वर्णन करना होगा।

वह श्री मूर से थोड़ी बड़ी लग रही थी—शायद पैंतीस वर्ष की, लंबी और शरीर से संतुलित; उसके बाल गहरे काले थे, जो फिलहाल कर्ल पेपर में बंधे हुए थे; गालों की लाली, छोटी नाक और छोटी काली आँखें। उसके चेहरे का निचला हिस्सा ऊपरी हिस्से की तुलना में बड़ा था; माथा छोटा और थोड़ा झुर्रीदार था; उसके चेहरे पर चिड़चिड़ापन था, हालांकि वह चिड़चिड़ी नहीं थी; उसकी पूरी शक्ल-सूरत में कुछ ऐसा था जिसे देखकर आधा गुस्सा आता था और आधा हंसी आती थी। सबसे अजीब बात थी उसकी पोशाक—एक कपड़े का पेटीकोट और सूती धारीदार कमीज। पेटीकोट छोटा था, जिससे उसके पैर और टखने साफ दिख रहे थे, जो बनावट के लिहाज से बिल्कुल बेमेल थे।

पाठक, आपको लगेगा कि मैंने एक बेहद लापरवाह महिला का चित्रण किया है। बिलकुल नहीं। हॉर्टेंस मूर (वह श्री मूर की बहन थीं) एक बहुत ही व्यवस्थित और मितव्ययी महिला थीं। पेटीकोट, कमीज़ और बालों को कर्ल करने वाले पेपर उनकी सुबह की पोशाक थी, जिसे पहनकर वह दोपहर के समय अपने देश में हमेशा से अपने घरेलू कामों के लिए जाती थीं। उन्होंने इंग्लैंड में रहने के कारण अंग्रेज़ी फैशन नहीं अपनाया; वह अपने पुराने बेल्जियम के तौर-तरीकों पर ही टिकी रहीं, और उन्हें पूरा विश्वास था कि ऐसा करने में कुछ अच्छाई है।

मैडमोजेल अपने बारे में बहुत अच्छी राय रखती थीं—यह राय पूरी तरह से अनुचित भी नहीं थी, क्योंकि उनमें कुछ अच्छे और उत्कृष्ट गुण थे; लेकिन उन्होंने इन गुणों के प्रकार और मात्रा को कुछ ज़्यादा ही आँका और उनके साथ आने वाली कई छोटी-मोटी कमियों को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया। आप उन्हें कभी यह विश्वास नहीं दिला सकते थे कि वह पूर्वाग्रही और संकीर्ण मानसिकता वाली व्यक्ति थीं, कि वह अपनी गरिमा और महत्व के विषय पर बहुत संवेदनशील थीं और छोटी-छोटी बातों पर जल्दी नाराज़ हो जाती थीं; फिर भी यह सब सच था। हालाँकि, जहाँ उनकी विशिष्टता के दावों का विरोध नहीं होता था, और जहाँ उनके पूर्वाग्रहों को ठेस नहीं पहुँचती थी, वहाँ वह काफी दयालु और मित्रवत हो सकती थीं। अपने दोनों भाइयों (रॉबर्ट के

अलावा एक और गेरार्ड मूर भी थे) से उनका गहरा लगाव था। अपने क्षीण हो चुके परिवार के एकमात्र शेष प्रतिनिधि होने के नाते, दोनों ही उनकी दृष्टि में लगभग पवित्र थे। हालाँकि, लुई के बारे में वह रॉबर्ट की तुलना में कम जानती थीं। उन्हें बचपन में ही इंग्लैंड भेज दिया गया था और उन्होंने अपनी शिक्षा एक अंग्रेजी स्कूल में प्राप्त की थी। उनकी शिक्षा उन्हें व्यापार के लिए उपयुक्त नहीं बनाती थी, शायद उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति भी व्यापारिक गतिविधियों की ओर नहीं थी, इसलिए जब वंशानुगत संभावनाओं के संकट ने उन्हें अपना भाग्य आजमाने के लिए मजबूर किया, तो उन्होंने शिक्षक का अत्यंत कठिन और विनम्र पेशा अपनाया। वे एक स्कूल में व्यवस्थापक थे, और अब एक निजी परिवार में शिक्षक बताए जाते हैं। होर्टेंस, जब लुई का जिक्र करती थीं, तो उन्हें "औसत दर्जे का" बताती थीं, लेकिन साथ ही साथ बहुत संकोची और शांत स्वभाव का भी। रॉबर्ट की प्रशंसा में उनका लहजा अलग था, कम शब्दों का प्रयोग किया गया था: उन्हें उन पर बहुत गर्व था; वे उन्हें यूरोप का सबसे महान व्यक्ति मानती थीं; उनकी हर बात और हर काम उनकी नजर में उल्लेखनीय था, और वे दूसरों से भी उन्हें उसी नजरिए से देखने की उम्मीद करती थीं; रॉबर्ट का किसी भी तरफ से विरोध करना, सिवाय खुद उनके विरोध के, इससे ज्यादा तर्कहीन, घृणित और निंदनीय कुछ नहीं हो सकता था।

तदनुसार, जैसे ही उक्त रॉबर्ट नाश्ते की मेज पर बैठा, और उसने उसे उबले हुए नाशपाती का एक हिस्सा दिया और उसके लिए एक अच्छी-खासी बेल्जियन टार्टिन काटी, उसने पिछली रात की घटना, फ्रेम के विनाश पर आश्चर्य और भय का सैलाब उमड़ना शुरू कर दिया।

“क्या विचार है! उन्हें नष्ट कर देना। कितना शर्मनाक काम है! यह स्पष्ट था कि इस देश के मजदूर मूर्ख और दुष्ट दोनों थे। वे बिल्कुल अंग्रेजी नौकरानियों, विशेषकर नौकरानियों की तरह थीं: उदाहरण के लिए, उस सारा जैसी असहनीय कोई नहीं!”

श्री मूर ने टिप्पणी की, "वह साफ-सुथरी और मेहनती दिखती है।"

“देखो! मुझे नहीं पता वो कैसी दिखती है, और मैं ये नहीं कह रहा कि वो एकदम गंदी या आलसी है, लेकिन उसमें बहुत अकड़ है! कल उसने मुझसे गोमांस पकाने को लेकर पंद्रह मिनट तक बहस की; उसने कहा कि मैंने उसे इतना उबाल दिया कि वो बिल्कुल फट गया, कि अंग्रेज लोग हमारे बूइली जैसा व्यंजन कभी नहीं खा पाएंगे, कि शोरबा चिकने गर्म पानी से बेहतर नहीं था, और चोक्रूट के बारे में तो वो कहती है कि

वो उसे छू भी नहीं सकती! तहखाने में रखा वो बैरल—जिसे मैंने अपने हाथों से बड़े चाव से तैयार किया था—उसे सूअरों का खाना कह दिया। मैं उस लड़की से तंग आ चुका हूँ, फिर भी मैं उसे छोड़ नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो कि मुझे उससे भी बुरी लड़की मिल जाए। तुम भी अपने कामगारों के साथ इसी हालत में हो, बेचारे प्यारे भाई!"

"मुझे डर है कि आप इंग्लैंड में बहुत खुश नहीं हैं, होर्टेंस।"

भाई, जहाँ तुम हो वहाँ खुश रहना मेरा फर्ज है; लेकिन इसके अलावा ऐसी हज़ार चीज़ें हैं जिनकी वजह से मुझे अपने पैतृक शहर की याद आती है। यहाँ की सारी दुनिया मुझे बदतमीज़ (mal-élevé) लगती है। मुझे लगता है कि मेरी आदतें हास्यास्पद हैं। अगर तुम्हारी चक्की की कोई लड़की रसोई में आ जाए और मुझे जुपोन और कमीज़ पहने खाना बनाते हुए देखे (क्योंकि तुम जानते हो कि मैं सारा पर खाना बनाने के लिए भरोसा नहीं कर सकता), तो वह मेरा मज़ाक उड़ाती है। अगर मैं चाय पर बाहर जाने का निमंत्रण स्वीकार कर लूँ, जो मैंने एक-दो बार किया है, तो मुझे लगता है कि मुझे बिल्कुल नज़रअंदाज़ कर दिया गया है; मुझे वह ध्यान नहीं दिया जाता जो निश्चित रूप से मेरा हक है। जैसा कि हम जानते हैं, गेरार्ड और मूर परिवार कितने शानदार परिवार हैं! उन्हें सम्मान पाने का पूरा हक है और जब उन्हें वह सम्मान नहीं मिलता तो उन्हें ठेस पहुँचती है। एंटवर्प में मेरे साथ हमेशा सम्मान से पेश आया जाता था; यहाँ, ऐसा लगता है जैसे जब मैं लोगों के बीच बोलता हूँ तो मैं हास्यास्पद लहजे में अंग्रेज़ी बोलता हूँ, जबकि मुझे पूरा यकीन है कि मैं इसे बिल्कुल सही बोलता हूँ।

"हॉर्टेंस, एंटवर्प में हम अमीर के रूप में जाने जाते थे; इंग्लैंड में हम हमेशा गरीब के रूप में ही जाने जाते थे।"

"बिल्कुल सही, और इसी तरह मनुष्य स्वार्थी होते हैं। फिर से, प्रिय भाई, पिछले रविवार, अगर आपको याद हो, तो बहुत बारिश हुई थी; इसलिए मैं अपने साफ-सुथरे काले जूतों में चर्च गया था, ऐसे कपड़े जो किसी फैशनेबल शहर में तो कोई नहीं पहनेगा, लेकिन जिन्हें मैं गाँव में गंदी सड़कों पर चलने के लिए हमेशा से इस्तेमाल करता आया हूँ। यकीन मानिए, जब मैं हमेशा की तरह शांत और स्थिर होकर गलियारे में चल रहा था, तो चार महिलाओं और उतने ही पुरुषों ने हंसकर अपने चेहरे अपनी प्रार्थना-पुस्तकों के पीछे छिपा लिए।"

“वाह! फिर से तलवारबाजी मत करो। मैंने तुम्हें पहले भी बताया था कि मुझे लगता है कि ये इस देश के लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं हैं।”

“लेकिन भाई, ये आम चप्पलें नहीं हैं, जैसी किसान पहनते हैं। मैं तुम्हें बताता हूँ, ये काली चप्पलें हैं, बहुत ही साफ-सुथरी और सुरुचिपूर्ण। मॉन्स और ल्यूज़ में – जो ब्रुसेल्स की शानदार राजधानी से बहुत दूर नहीं हैं – सर्दियों में सभ्य लोग शायद ही कभी कुछ और पहनते हैं। अगर कोई पेरिस की ब्रोडेक्विन चप्पलों में फ्लेमिश जूतों की कीचड़ में चलने की कोशिश करे, तो मुझे लगेगा जैसे कोई नया ही है!”

“मॉन्स, ल्यूज़ और फ्लेमिश चौसीज़ की चिंता मत करो; रोम में रोमवासियों जैसा व्यवहार करो। और कमीसोल और जुपोन के बारे में भी मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं है। मैंने कभी किसी अंग्रेज़ महिला को ऐसे कपड़े पहने नहीं देखा। कैरोलीन हेलस्टोन से पूछ लो।”

“कैरोलीन! मैं कैरोलीन से पूछूं? मैं अपनी पोशाक के बारे में उससे सलाह लूं? हर मामले में तो उसे मुझसे सलाह लेनी चाहिए। वह तो बच्ची है।”

"वह अठारह साल की है, या कम से कम सत्रह साल की - गाउन, पेटीकोट और जूतों के बारे में सब कुछ जानने के लिए काफी बड़ी है।"

“भाई, मैं आपसे विनती करता हूँ, कैरोलीन को बिगाड़िए मत। उसे उसकी क्षमता से अधिक महत्व मत दीजिए। अभी वह विनम्र और सरल स्वभाव की है: आइए उसे वैसा ही रहने दें।”

“मैं पूरे दिल से चाहती हूँ। क्या वह आज सुबह आ रही है?”

वह हमेशा की तरह दस बजे फ्रेंच की क्लास लेने आएगी।

"आपको ऐसा नहीं लगता कि वह आपका उपहास उड़ाती है, है ना?"

“वह ऐसा नहीं करती। वह यहाँ मौजूद किसी भी व्यक्ति से बेहतर मेरी कद्र करती है; लेकिन फिर उसे मुझे बेहतर ढंग से जानने के अधिक घनिष्ठ अवसर प्राप्त हैं। वह देखती है कि मुझमें शिक्षा, बुद्धिमत्ता, शिष्टाचार, सिद्धांत - संक्षेप में, वे सभी गुण हैं जो एक उच्च कुल में जन्मे और सुसंस्कृत व्यक्ति में होने चाहिए।”

क्या आप उसे बिल्कुल भी पसंद करते हैं?

“मैं स्नेह के कारण ऐसा नहीं कह सकता। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो आसानी से किसी के प्रति आकर्षित हो जाते हैं, और इसलिए मेरी मित्रता और भी भरोसेमंद है। मैं उसे अपने रिश्तेदार के रूप में सम्मान देता हूँ; उसकी स्थिति भी मेरे लिए

रुचिकर है, और एक छात्रा के रूप में उसका आचरण अब तक ऐसा रहा है कि अन्य कारणों से उत्पन्न स्नेह को कम करने के बजाय और भी बढ़ाता है।"

"क्या वो कक्षाओं में काफी अच्छा व्यवहार करती है?"

"मुझे तो वह बहुत अच्छे से पेश आती है; लेकिन भाई, तुम जानते हो कि मेरा व्यवहार कुछ ऐसा है जो अत्यधिक आत्मीयता को दूर रखता है, सम्मान दिलाता है और आदर अर्जित करने में सहायक होता है। फिर भी, गहरी समझ होने के कारण, मैं स्पष्ट रूप से समझता हूँ कि कैरोलीन परिपूर्ण नहीं है, उसमें बहुत कुछ सुधार की गुंजाइश है।"

मुझे एक आखिरी कप कॉफी दे दो, और जब मैं इसे पी रहा हूँ तो मुझे उसकी कमियों का ब्यौरा सुनाकर मेरा मनोरंजन करो।

प्रिय भाई, तुम्हें इतनी थका देने वाली रात के बाद बड़े चाव से नाश्ता करते देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। कैरोलीन में कुछ खामियाँ हैं; लेकिन मेरे स्नेह और मातृत्वपूर्ण देखभाल से उसमें सुधार हो सकता है। उसमें कभी-कभी एक तरह की झिझक दिखती है—शायद एक संकोच—जो मुझे पूरी तरह पसंद नहीं आता, क्योंकि वह पर्याप्त रूप से लड़की जैसी और विनम्र नहीं है; और उसके स्वभाव में कभी-कभी बेचैनी और जल्दबाजी भी झलकती है, जो मुझे परेशान करती है। फिर भी वह आमतौर पर बहुत शांत रहती है, हालांकि कभी-कभी वह कुछ ज्यादा ही उदास और विचारशील हो जाती है। समय के साथ, मुझे पूरा विश्वास है, मैं उसे बिना किसी अनावश्यक उदासी के हमेशा शांत और शालीन बना दूंगी। जो बात समझ में न आए, मैं उसे कभी भी स्वीकार नहीं करती।

मुझे आपकी बात बिल्कुल समझ नहीं आई। उदाहरण के लिए, 'अस्थिर जल्दबाजी' से आपका क्या मतलब है?

"शायद एक उदाहरण ही सबसे संतोषजनक स्पष्टीकरण होगा। जैसा कि आप जानते हैं, मैं कभी-कभी उसे उच्चारण के अभ्यास के लिए फ्रांसीसी कविताएँ पढ़ने को कहता हूँ। उसने अपनी कक्षाओं के दौरान कॉर्नेल और रेसीन की कई कविताएँ पढ़ी हैं, और वह भी बहुत ही स्थिर और संयमित भाव से, जैसा कि मुझे पसंद है। कभी-कभी, वास्तव में, उन प्रतिष्ठित लेखकों को पढ़ते समय वह थोड़ी सुस्ती दिखाती थी, गंभीरता की बजाय उदासीनता का भाव दिखाती थी; और उदासीनता वह चीज है जिसे मैं अपने छात्रों में बर्दाश्त नहीं कर सकता - इसके अलावा, मानक ग्रंथों का

अध्ययन करते समय किसी को उदासीन नहीं होना चाहिए। पिछले दिन मैंने उसके हाथों में छोटी-छोटी कविताओं का एक संग्रह दिया। मैंने उसे खिड़की के पास एक कविता याद करने के लिए भेजा, और जब मैंने ऊपर देखा तो मैंने उसे अधीरता से पन्ने पलटते और तिरस्कार से होंठ सिकोड़ते हुए देखा, जैसे वह उन छोटी कविताओं को सरसरी तौर पर देख रही हो। मैंने उसे डांटा। उसने कहा, 'मेरी चचेरी बहन, यह सब मुझे मृत्यु से ऊब देता है।' मैंने उसे बताया कि यह अनुचित है। भाषा। 'हे भगवान!' वह विस्मय से बोली, 'क्या पूरे फ्रांसीसी साहित्य में कविता की दो पंक्तियाँ भी नहीं हैं?' मैंने पूछा कि उसका क्या मतलब है। उसने विनम्रतापूर्वक क्षमा मांगी। थोड़ी देर में वह शांत हो गई। मैंने उसे किताब पर मुस्कुराते हुए देखा। उसने लगन से पढ़ना शुरू कर दिया। आधे घंटे में वह मेरे सामने आकर खड़ी हो गई, किताब पेश की, हमेशा की तरह हाथ जोड़े और शेनियर की उस छोटी सी रचना, 'ला ज्यून कैप्टिव' का पाठ शुरू कर दिया। यदि आपने वह तरीका सुना होता जिससे उसने पाठ किया और पाठ समाप्त होने पर कुछ अटपटी टिप्पणियाँ कीं, तो आप समझ जाते कि 'अस्थिर जल्दबाजी' से मेरा क्या मतलब था। ऐसा लगता था मानो शेनियर, रेसीन और कॉर्नेल की सभी रचनाओं से कहीं अधिक मार्मिक हो। भाई, आपमें इतनी समझदारी है, आप समझ सकते हैं कि यह अत्यधिक प्राथमिकता है। उसका कहना है कि उसका मन अनियंत्रित है; लेकिन वह अपनी गुरु के मामले में भाग्यशाली है। मैं उसे एक प्रणाली, विचार करने का एक तरीका, विचारों का एक समूह दूंगी; मैं उसे उसकी भावनाओं पर पूर्ण नियंत्रण और मार्गदर्शन दूंगी।

"ज़रूर ऐसा करो, होर्टेंस। वो आ रही है। मुझे लगता है कि खिड़की के पास से उसकी परछाई गुज़री।"

"अरे! सच में। वह बहुत जल्दी आ गई है—अपने समय से आधा घंटा पहले।—मेरी बच्ची, नाश्ता करने से पहले तुम यहाँ क्यों आई हो?"

यह प्रश्न उस व्यक्ति से पूछा गया जो अब कमरे में दाखिल हुई, एक युवती, जो सर्दियों के लबादे में लिपटी हुई थी, जिसकी सिलवटें उसकी दुबली-पतली आकृति के चारों ओर बड़ी खूबसूरती से इकट्ठी थीं।

"मैं जल्दी में यह देखने आया था कि तुम कैसी हो, होर्टेंस, और रॉबर्ट कैसा है। मुझे यकीन था कि तुम दोनों कल रात जो हुआ उससे दुखी होगे। मुझे आज सुबह तक कुछ पता नहीं चला। मेरे चाचा ने मुझे नाश्ते के समय बताया।"

“अरे! ये तो असहनीय है। क्या आप हमसे सहानुभूति रखते हैं? क्या आपके चाचा हमसे सहानुभूति रखते हैं?”

“मेरे चाचा बहुत गुस्से में हैं—लेकिन मुझे लगता है कि वे रॉबर्ट के साथ थे, है ना? —क्या वे आपके साथ स्टिलब्रो मूर नहीं गए थे?”

"हां, हमने बहुत ही सैन्य शैली में प्रस्थान किया था, कैरोलिन; लेकिन जिन कैदियों को हम बचाने गए थे, वे हमें आधे रास्ते में मिले।"

"क्या सच में किसी को चोट नहीं लगी?"

"नहीं, बिलकुल नहीं; केवल जो स्कॉट की कलाई ही उसकी पीठ के पीछे बहुत कसकर बांधे जाने के कारण थोड़ी छिल गई थी।"

“आप वहां नहीं थे? जब उन पर हमला हुआ तो आप गाड़ियों के साथ नहीं थे?”

“नहीं। किसी को शायद ही कभी ऐसे अवसरों पर उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त होता है जिनमें वह विशेष रूप से सहायता करना चाहे।”

“आज सुबह तुम कहाँ जा रहे हो? मैंने मुर्गाट्रॉयड को अहाते में तुम्हारे घोड़े पर काठी कसते देखा था।”

“व्हिनबरी के लिए। आज बाजार का दिन है।”

“मिस्टर योर्क भी जा रहे हैं। मैं उनसे उनके कार्यक्रम में मिला था। उनके साथ घर आ जाना।”

"क्यों?"

"एक से दो बेहतर होते हैं, और मिस्टर यॉर्क को कोई नापसंद नहीं करता - कम से कम गरीब लोग तो उन्हें नापसंद नहीं करते।"

"इसलिए वह मेरी रक्षा करेगा, क्योंकि मैं नफरत का पात्र हूँ?"

“जिन्हें गलत समझा गया है। शायद यही सही शब्द है। क्या आपको देर हो जाएगी? — क्या उसे भी देर हो जाएगी, चचेरी बहन हॉर्टेंस?”

“ऐसा होने की काफी संभावना है। उन्हें अक्सर व्हिनबरी में बहुत काम होता है। क्या तुम अपनी अभ्यास पुस्तिका लाए हो, बच्चे?”

“जी हाँ। रॉबर्ट, तुम कितने बजे लौटोगे?”

मैं आमतौर पर सात बजे घर लौटता हूँ। क्या आप चाहते हैं कि मैं जल्दी घर आ जाऊँ?

"कोशिश करो कि छह बजे तक वापस आ जाओ। अब छह बजे पूरी तरह से अंधेरा

नहीं होता, लेकिन सात बजे तक दिन का उजाला पूरी तरह से खत्म हो जाता है।"

"कैरोलीन, जब दिन का उजाला ढल जाता है तो किस खतरे का सामना करना पड़ता है? अंधेरे के साथ आने वाले खतरे के बारे में आपकी क्या राय है?"

"मुझे यकीन नहीं है कि मैं अपने डर को परिभाषित कर सकता हूँ, लेकिन हम सभी को इस समय अपने दोस्तों के बारे में एक निश्चित चिंता है। मेरे चाचा इन समयों को खतरनाक बताते हैं। उनका यह भी कहना है कि मिल मालिक अलोकप्रिय हैं।"

"और मैं सबसे अलोकप्रिय लोगों में से एक हूँ? क्या यह सच नहीं है? आप खुलकर बोलने से हिचकिचाते हैं, लेकिन दिल ही दिल में आप मुझे पियर्सन के भाग्य का पात्र समझते हैं, जिन पर गोली चलाई गई थी - वास्तव में, किसी झाड़ी के पीछे से नहीं, बल्कि उनके अपने घर में, उनकी सीढ़ियों की खिड़की से, जब वे सोने जा रहे थे।"

"ऐनी पियर्सन ने मुझे चैंबर के दरवाजे में फंसी गोली दिखाई थी," कैरोलिन ने गंभीरता से कहा, और अपना लबादा समेटकर साइड टेबल पर रख दिया। "तुम्हें पता है," उसने आगे कहा, "यहाँ से व्हिनबरी तक सड़क के किनारे-किनारे एक बाड़ है, और फील्डहेड के बागान भी पार करने हैं; लेकिन तुम छह बजे तक या उससे पहले वापस आ जाओगी?"

"ज़रूर आएगा," होर्टेंस ने पुष्टि करते हुए कहा। "और अब, मेरे बच्चे, अपने पाठों को दोहराने के लिए तैयार करो, जबकि मैं रात के खाने में प्यूरी बनाने के लिए मटर भिगोने के लिए रख देती हूँ।"

यह कहकर वह कमरे से चली गई।

"तो आपको शक है कि मेरे कई दुश्मन हैं, कैरोलिन," श्री मूर ने कहा, "और निस्संदेह आप जानती हैं कि मेरे कोई दोस्त नहीं हैं?"

"बेबस मत हो, रॉबर्ट। तुम्हारी बहन है, तुम्हारा भाई लुई है, जिसे मैंने कभी नहीं देखा; मिस्टर यॉर्क हैं, और मेरे चाचा हैं - इनके अलावा, बेशक, और भी बहुत से लोग हैं।"

रॉबर्ट मुस्कुराया। उसने कहा, "तुम्हारे 'और भी बहुत से' गुणों का नाम बताना तुम्हारे लिए मुश्किल होगा। लेकिन मुझे अपनी अभ्यास पुस्तिका दिखाओ। लिखने में तुम कितनी मेहनत करती हो! मुझे लगता है मेरी बहन ही तुमसे यह सब करवाती है। वह तुम्हें हर चीज़ में एक फ्लेमिश स्कूली छात्रा की तरह ढालना चाहती है। कैरोलीन,

तुम्हारा भविष्य कैसा होगा? जब तुम फ्रेंच, चित्रकला और अन्य कौशल सीख लोगी, तो उनका क्या करोगी?"

“जब ये सब हासिल हो जाएगा, तब आप बता सकती हैं; क्योंकि जैसा कि आप जानती हैं, जब तक होर्टेंस ने मुझे सिखाना शुरू नहीं किया था, तब तक मुझे बहुत कम जानकारी थी। मेरे भविष्य के बारे में मैं कुछ नहीं कह सकती। मुझे लगता है कि मैं अपने चाचा का घर संभालूंगी जब तक कि...” वह हिचकिचाई।

“कब तक? जब तक वह मर न जाए?”

नहीं। ऐसा कहना कितना कठोर है! मैं कभी उनकी मृत्यु के बारे में नहीं सोचती। उनकी उम्र तो केवल पचपन वर्ष है। लेकिन जब तक—संक्षेप में, जब तक परिस्थितियाँ मुझे अन्य काम न सौंप दें।”

“यह तो बेहद अस्पष्ट संभावना है! क्या आप इससे संतुष्ट हैं?”

“मैं पहले ऐसा ही था। आप जानते हैं, बच्चों में सोचने-समझने की क्षमता कम होती है, या यूं कहें कि उनकी सोच आदर्श विषयों पर आधारित होती है। अब भी ऐसे क्षण आते हैं जब मैं पूरी तरह संतुष्ट नहीं होता।”

"क्यों?"

मैं कोई पैसा नहीं कमा रहा हूँ - मुझे कुछ भी प्राप्त नहीं हो रहा है।

"लीना, तुम सीधे मुद्दे पर आओ। तो फिर तुम भी पैसा कमाना चाहती हो?"

“हाँ, मुझे पसंद है। मैं कोई पेशा अपनाना चाहूँगा; और अगर मैं लड़का होता, तो पेशा ढूँढना इतना मुश्किल नहीं होता। मुझे व्यवसाय सीखने और जीवन में संघर्ष करने का यह कितना आसान और सुखद तरीका नज़र आता है।”

“बताइए। हमें बताइए कि किस तरह से।”

“मैं आपके कपड़े के व्यापार में प्रशिक्षु बन सकता हूँ। हम दूर के रिश्तेदार हैं, इसलिए मैं आपसे यह काम सीख सकता हूँ। मैं लेखा-जोखा, हिसाब-किताब और पत्र-व्यवहार का काम करूँगा, जबकि आप बाज़ार जाएँगे। मुझे पता है कि आप अपने पिता के कर्ज चुकाने के लिए बहुत अमीर बनना चाहते हैं; शायद मैं आपको अमीर बनने में मदद कर सकूँ।”

“मेरी मदद करोगे? तुम्हें तो अपने बारे में सोचना चाहिए।”

मैं अपने बारे में तो सोचता हूँ; लेकिन क्या हमेशा सिर्फ अपने बारे में ही सोचना जरूरी है?

मैं और किसके बारे में सोचूँ? मैं और किसके बारे में सोचने की हिम्मत करूँ? गरीबों के प्रति बड़ी सहानुभूति नहीं रखनी चाहिए; संकीर्ण सोच रखना ही उनका कर्तव्य है।

नहीं, रॉबर्ट — — "

"हाँ, कैरोलीन। गरीबी स्वाभाविक रूप से स्वार्थी, संकुचित, दयनीय और चिंताजनक होती है। कभी-कभी, जब किसी गरीब के दिल पर खुशियाँ और ओस पड़ती हैं, तो वह उस बगीचे में आज के वसंत के दिन खिलती हुई वनस्पति की तरह महक सकता है, उसे लग सकता है कि वह पत्तों से भर जाएगा, शायद खिल भी जाएगा; लेकिन उसे इस सुखद आवेग को बढ़ावा नहीं देना चाहिए; उसे विवेक से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अपनी उस बर्फीली साँस से इसे रोके, जो किसी भी उत्तरी हवा की तरह चुभती है।"

"तब कोई भी झोपड़ी खुश नहीं रहेगी।"

जब मैं गरीबी की बात करता हूँ, तो मेरा तात्पर्य किसी कामगार की स्वाभाविक, आदतन गरीबी से उतना नहीं है, जितना कि कर्ज में डूबे व्यक्ति की दयनीय दरिद्रता से है। मेरा मूल प्रतिकार हमेशा एक तंगहाल, संघर्षरत, चिंताग्रस्त व्यापारी होता है।

"आशा को संजोएं, चिंता को नहीं। कुछ विचार आपके मन में बहुत पक्के हो गए हैं। यह कहना शायद अनुचित हो, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि सुख प्राप्त करने के सर्वोत्तम साधनों के बारे में आपकी धारणाओं में कुछ गड़बड़ है, जैसा कि — — " दूसरी हिचकिचाहट।

"मैं ध्यान से सुन रही हूँ, कैरोलाइन।"

"(हिम्मत रखो! मुझे सच बोलने दो) — अपने तरीके से — ध्यान रहे, मैं सिर्फ तरीका कह रहा हूँ — इन यॉर्कशायर के कामगारों के प्रति।"

"तुम अक्सर मुझे यह बताना चाहते थे, है ना?"

"हां; अक्सर—बहुत अक्सर।"

"मेरे व्यवहार की खामियाँ, मेरे विचार से, केवल नकारात्मक हैं। मैं अभिमानी नहीं हूँ। मुझ जैसे व्यक्ति को अभिमान करने की क्या आवश्यकता है? मैं तो बस कम बोलने वाला, शांत स्वभाव का और आनंदहीन हूँ।"

"ऐसा लगता है मानो तुम्हारे जीवित कपड़े तराशने वाले सब तुम्हारी सिलाई मशीनों की तरह हों। अपने ही घर में तुम अलग ही लगते हो।"

“अपने घर वालों के लिए मैं परदेसी नहीं हूँ, लेकिन इन अंग्रेज़ मसखरों के लिए हूँ। मैं उनके साथ दयालुता का भाव रख सकता था, लेकिन अभिनय करना मेरी खासियत नहीं है। मुझे वे तर्कहीन और विकृत लगते हैं; जब मैं आगे बढ़ना चाहता हूँ तो वे मुझे रोकते हैं। उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करके ही मैं उनके प्रति अपना पूरा कर्तव्य निभाता हूँ।”

"आप उनसे प्यार की उम्मीद तो नहीं करते, है ना?"

और न ही मैं ऐसा चाहता हूँ।

“आह!” निरीक्षक ने सिर हिलाते हुए और गहरी साँस लेते हुए कहा। इस उद्गार से संकेत मिला कि उसे कहीं कुछ गड़बड़ लग रही थी, पर उसे ठीक करना उसके बस में नहीं था। उसने व्याकरण की किताब उठाई और उस दिन के नियम और अभ्यास को ढूँढ़ने लगी।

"मुझे लगता है कि मैं स्नेहशील व्यक्ति नहीं हूँ, कैरोलीन। कुछ ही लोगों का स्नेह मेरे लिए पर्याप्त है।"

"अगर आप चाहें, रॉबर्ट, तो क्या आप जाने से पहले मेरे लिए एक-दो पेन ठीक कर देंगे?"

“पहले मुझे आपकी किताब पर रेखा खींच लेने दीजिए, क्योंकि आप हमेशा रेखाएँ तिरछी खींचते हैं। लीजिए, अब। और अब कलम की बारी। मुझे लगता है आपको एक बढ़िया कलम पसंद है?”

"जैसे कि आप आमतौर पर मेरे और हॉर्टेंस के लिए बनाते हैं; न कि आपके अपने व्यापक विचार।"

"अगर मैं लुई की तरह होता तो शायद घर पर ही रहता और आज सुबह का समय तुम्हें और तुम्हारी पढ़ाई को समर्पित करता, जबकि मुझे यह समय स्काईस के ऊन के गोदाम में बिताना पड़ रहा है।"

आप पैसे कमाएंगे।

"शायद इसे खोने की संभावना अधिक है।"

जैसे ही उसने बाड़ों की मरम्मत पूरी की, एक घोड़ा, जिस पर काठी और लगाम लगी हुई थी, बगीचे के द्वार तक लाया गया।

“वहाँ, फ्रेड मेरा इंतज़ार कर रहा है; मुझे जाना होगा। पहले मैं एक नज़र यह भी देख लूँगा कि दक्षिणी सीमा पर वसंत ऋतु ने क्या किया है।”

वह कमरे से बाहर निकला और चक्की के पीछे बगीचे में चला गया। कारखाने की गर्म दीवार के नीचे, धूप में खिले हुए नए हरे-भरे पौधे और खिलते हुए फूल - स्नोड्रॉप, क्रोकस, यहाँ तक कि प्रिमरोज़ - एक सुंदर कतार में खिले हुए थे। मूर ने इधर-उधर से फूल और पत्तियाँ तोड़ीं, जब तक कि उसने एक छोटा सा गुलदस्ता इकट्ठा नहीं कर लिया। वह बैठक में लौटा, अपनी बहन की टोकरी से रेशम का एक धागा चुराया, फूलों को बाँधा और उन्हें कैरोलीन की मेज पर रख दिया।

"सुप्रभात।"

“धन्यवाद, रॉबर्ट। यह बहुत सुंदर है; यह वहाँ पड़ा हुआ, सूरज की किरणों और नीले आकाश की चमक जैसा दिखता है। सुप्रभात।”

वह दरवाजे तक गया, रुका, बोलने के लिए अपने होंठ खोले, कुछ नहीं बोला और आगे बढ़ गया। वह खिड़की से होते हुए घोड़े पर सवार हो गया। पल भर में ही वह घोड़े से कूद गया, लगाम मुर्गट्रॉयड को सौंप दी और झोपड़ी में वापस चला गया।

“मैं अपने दस्ताने भूल गया,” उसने कहा, और ऐसा लग रहा था जैसे वह साइड टेबल से कुछ उठा रहा हो; फिर अचानक उसके मन में ख्याल आया, “शायद घर पर तुम्हारा कोई ज़रूरी काम नहीं है, कैरोलीन?”

“मैंने कभी नहीं बुने। श्रीमती रैम्सडेन ने यहूदी की टोकरी के लिए कुछ बच्चों के मोजे बुनने का आदेश दिया है; लेकिन वे ठीक रहेंगे।”

“यहूदी की टोकरी—बिक जाए! इससे बेहतर नाम का कोई बर्तन नहीं हो सकता। इससे ज़्यादा यहूदी कुछ और हो ही नहीं सकता—इसमें रखी चीज़ें और उनकी कीमतें—कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन मुझे तुम्हारे होंठों के कोनों पर एक हल्की सी मुस्कान दिख रही है, जो मुझे बताती है कि तुम भी इसके गुणों को उतना ही जानती हो जितना मैं। तो यहूदी की टोकरी को भूल जाओ, और आज का दिन यहीं बिताओ। तुम्हारे चाचा को तुम्हारी गैरमौजूदगी से दुख तो नहीं होगा?”

वह मुस्कुराई। "नहीं।"

“वह बूढ़ा कोसैक! मुझे तो ऐसा नहीं लगता,” मूर ने बुदबुदाते हुए कहा।

“तो फिर यहीं रुकिए और होर्टेंस के साथ भोजन कीजिए; उसे आपकी संगति अच्छी लगेगी। मैं समय पर लौट आऊँगी। शाम को हम थोड़ी देर पढ़ेंगे। चाँद साढ़े आठ बजे उगता है, और मैं नौ बजे आपके साथ पादरी के निवास तक चलूँगी। क्या आप सहमत हैं?”

उसने सिर हिलाया और उसकी आँखें चमक उठीं।

मूर दो मिनट और वहीं रुका रहा। वह कैरोलीन की मेज पर झुका और उसकी व्याकरण की किताब पर नज़र डाली, उसने उसकी कलम को छुआ, उसने उसका गुलदस्ता उठाया और उससे खेलने लगा; उसका घोड़ा बेचैनी से पैर पटक रहा था; फ्रेड मुर्गट्रॉयड द्वार पर हांफता और खांसता रहा, मानो वह सोच रहा हो कि आखिर उसका मालिक क्या कर रहा है। "सुप्रभात," मूर ने फिर कहा और अंत में गायब हो गया।

दस मिनट बाद जब होर्टेंस आई, तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कैरोलिन ने अभी तक अपना व्यायाम शुरू नहीं किया था।

अध्याय VI.

कोरियोलैनस।

उस सुबह मैडमोजेल मूर की एक छात्रा कुछ भुलक्कड़ थी। कैरोलीन बार-बार उसे दी गई व्याख्याओं को भूल जाती थी। फिर भी, अपनी लापरवाही के कारण मिलने वाली डांट को वह शांत भाव से सहन करती थी। खिड़की के पास धूप में बैठी कैरोलीन को धूप की गर्माहट से एक सुखद अनुभूति होती थी, जिससे वह प्रसन्न और प्रसन्न रहती थी। इस अवस्था में वह सबसे सुंदर दिखती थी, और उसका यह सुंदर रूप मनमोहक था।

उन्हें सौंदर्य का वरदान प्राप्त था। उन्हें पसंद करने के लिए उन्हें जानना बिल्कुल आवश्यक नहीं था; वे इतनी सुंदर थीं कि पहली ही नज़र में मोहित हो जाती थीं।

उनका शरीर उनकी उम्र के अनुरूप था: लड़कियों जैसा, हल्का और लचीला; हर वक्र सुडौल, हर अंग सुडौल; उनका चेहरा भावपूर्ण और सौम्य; उनकी आँखें सुंदर थीं, और कभी-कभी उनमें एक ऐसी मोहक चमक होती थी जो दिल में उतर जाती थी, मानो भावनाओं को कोमल भाषा में व्यक्त करती हो। उनका होंठ बहुत सुंदर था; उनकी त्वचा कोमल थी, और उनके भूरे बाल लंबे और सुडौल थे, जिन्हें वे बड़े सलीके से संवारना जानती थीं; घुंघराले बाल उन पर खूब जंचते थे, और उनके पास ऐसे घुंघराले बाल भरपूर मात्रा में थे। उनके पहनावे से पहनने वाले की अच्छी समझ झलकती थी - फैशन में बहुत ही सादा, सामग्री में महंगा नहीं, लेकिन रंग उनके गोरे रंग के साथ मेल खाता था, और बनावट उनके दुबले-पतले शरीर के अनुरूप थी। उनके वर्तमान शीतकालीन वस्त्र मेरिनो ऊन के थे - उनके बालों के समान ही हल्के भूरे रंग के; उसके गले में लगा छोटा सा हार गुलाबी रिबन के ऊपर था और गुलाबी गाँठ से बंधा हुआ था। उसने और कोई आभूषण नहीं पहना था।

कैरोलिन हेलस्टोन की दिखावट के बारे में तो बस इतना ही। उनके चरित्र या बुद्धिमत्ता की बात करें, यदि उनमें ऐसी कोई बुद्धिमत्ता थी भी, तो समय आने पर वह स्वयं ही प्रकट हो जाएगी।

उसके रिश्तों का जल्द ही पता चल जाता है। वह अपने माता-पिता की संतान थी, जो स्वभावगत मतभेदों के कारण उसके जन्म के तुरंत बाद अलग हो गए थे। उसकी माँ श्री मूर के पिता की सौतेली बहन थी; इस प्रकार, हालाँकि रक्त का कोई मिश्रण नहीं था, वह दूर के अर्थ में रॉबर्ट, लुई और हॉर्टेंस की चचेरी बहन थी। उसके पिता श्री हेलस्टोन के भाई थे - एक ऐसे व्यक्ति जिनका चरित्र ऐसा था कि मृत्यु के बाद, जब सभी सांसारिक हिसाब-किताब हो जाते हैं, तो मित्र उन्हें याद नहीं करना चाहते। उन्होंने अपनी पत्नी को दुखी कर दिया था। उनके बारे में जो सच बातें पता थीं, उन्होंने उनके अच्छे सिद्धांतों वाले भाई के बारे में फैलाई गई झूठी बातों को भी विश्वसनीय बना दिया था। कैरोलीन ने अपनी माँ को कभी नहीं देखा था, क्योंकि उसे बचपन में ही उनसे अलग कर दिया गया था और उसके बाद से उसने उन्हें नहीं देखा था; उसके पिता की अपेक्षाकृत कम उम्र में मृत्यु हो गई थी, और उसके चाचा, जो पादरी थे, कुछ वर्षों तक उसके एकमात्र अभिभावक रहे थे। जैसा कि हम जानते हैं, वे स्वभाव या आदतों से एक छोटी लड़की की देखभाल करने के लिए उपयुक्त नहीं थे। उन्होंने उसकी शिक्षा के बारे में ज्यादा ध्यान नहीं दिया था; शायद वह उसे स्वीकार न करता

अगर वह उपेक्षित महसूस करते हुए अपने लिए चिंतित न होती और समय-समय पर थोड़ी सी देखभाल और आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने के साधनों की माँग न करती। फिर भी, उसे यह निराशाजनक एहसास था कि वह हीन है, कि उसकी योग्यताएँ उसकी उम्र और सामाजिक स्थिति की लड़कियों की तुलना में कम हैं; और हॉलो मिल में आने के तुरंत बाद, उसकी चचेरी बहन हॉर्टेंस द्वारा उसे फ्रेंच और कढ़ाई सिखाने के उदार प्रस्ताव को स्वीकार करके वह बहुत प्रसन्न हुई। मैडम मूर को भी यह काम बहुत पसंद आया, क्योंकि इससे उन्हें महत्व मिलता था; उन्हें एक आज्ञाकारी लेकिन होशियार छात्रा पर थोड़ा रौब जमाना अच्छा लगता था। उन्होंने कैरोलिन को ठीक अपने आकलन के अनुसार, एक अनियमित रूप से शिक्षित, यहाँ तक कि अज्ञानी लड़की के रूप में देखा; और जब उन्होंने देखा कि वह तेजी से और उत्साहपूर्वक प्रगति कर रही है, तो उन्होंने इस सुधार का श्रेय छात्रा की प्रतिभा या लगन को नहीं, बल्कि पूरी तरह से अपनी उत्कृष्ट शिक्षण पद्धति को दिया। जब उसे पता चला कि कैरोलीन, जो दिनचर्या में निपुण नहीं थी, का अपना ज्ञान था, भले ही वह बिखरा हुआ था, लेकिन विविध था, तो उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वह अब भी मानती थी कि लड़की ने अनजाने में ही बातचीत से ये ज्ञान प्राप्त कर लिया था। वह यही सोचती थी, यहाँ तक कि जब उसे यह महसूस करना पड़ा कि उसकी छात्रा उन विषयों पर बहुत कुछ जानती है जिनके बारे में उसे बहुत कम जानकारी है। यह विचार तार्किक नहीं था, लेकिन हॉर्टेंस को इस पर पूरा विश्वास था।

मैडमोजेल, जिन्हें अपने "सकारात्मक स्वभाव" पर गर्व था और जो नीरस अध्ययन को प्राथमिकता देती थीं, उन्होंने अपनी युवा चचेरी बहन को भी यथासंभव उसी तरह सोचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कैरोलिन को फ्रेंच व्याकरण का निरंतर अध्ययन कराया और उसे सबसे बेहतर अभ्यास के रूप में अंतहीन "तार्किक विश्लेषण" दिए। ये "विश्लेषण" कैरोलिन को बिल्कुल भी पसंद नहीं थे; उनका मानना था कि वह इनके बिना भी फ्रेंच उतनी ही अच्छी तरह सीख सकती थीं, और उन्हें "प्रस्ताव, मुख्य बातें और घटनाएँ" पर विचार करने, "निर्धारक घटना" और "अनुप्रयुक्त घटना" तय करने, और यह जाँचने में लगने वाले समय से बहुत चिढ़ होती थी कि प्रस्ताव "पूर्ण", "अण्डाकार" या "अस्पष्ट" है या नहीं। कभी-कभी वह भूलभुलैया में खो जाती थी, और जब वह इस तरह खो जाती थी, तो कभी-कभी (जब होर्टेंस ऊपर अपने दराजों में कुछ ढूंढ रही होती थी - एक ऐसा काम जिसमें वह दिन का बड़ा हिस्सा बिताती थी, चीजों

को व्यवस्थित करना, अव्यवस्थित करना, फिर से व्यवस्थित करना और उलट-पुलट करना), वह अपनी किताब लेकर लेखा-जोखा कार्यालय में रॉबर्ट के पास जाती थी और उसकी मदद से उस उलझन को सुलझा लेती थी। श्री मूर का अपना दिमाग बहुत ही शांत और स्पष्ट था। कैरोलिन की छोटी-मोटी परेशानियाँ देखते ही मानो वे गायब हो जाती थीं। दो मिनट में ही वे सब कुछ समझा देते थे, दो शब्दों में पहेली का हल दे देते थे। वह सोचती थी कि अगर होर्टेंस भी उन्हीं की तरह पढ़ा सकती, तो वह कितनी जल्दी सीख जाती! प्रशंसा और कृतज्ञता भरी मुस्कान से उनका आभार व्यक्त करते हुए, जो उनके चेहरे पर उठने के बजाय उनके चरणों में ही गिर जाती थी, वह अनिच्छा से चक्की छोड़कर झोपड़ी में वापस जाती थी, और फिर, जब वह अपना काम पूरा करती या हिसाब लगाती (क्योंकि मैडम मूर ने उसे अंकगणित भी सिखाया था), तो वह कामना करती कि काश प्रकृति ने उसे लड़की के बजाय लड़का बनाया होता, ताकि वह रॉबर्ट से उसे अपना क्लर्क बनने की अनुमति मांग सके और हॉर्टेंस के साथ बैठक में बैठने के बजाय उसके साथ लेखा-गृह में बैठ सके।

कभी-कभार—हालांकि ऐसा बहुत कम होता था—वह हॉलो कॉटेज में शाम बिताती थी। कभी-कभी इन मुलाकातों के दौरान मूर बाज़ार गए होते थे; कभी-कभी वे मिस्टर यॉर्क के यहाँ होते थे; अक्सर वे किसी दूसरे कमरे में किसी पुरुष मेहमान के साथ व्यस्त होते थे; लेकिन कभी-कभी वे घर पर भी होते थे, खाली, कैरोलीन से बात करने के लिए। जब ऐसा होता था, तो शाम के घंटे प्रकाश के पंखों पर उड़ते हुए बीत जाते थे; वे गिनने से पहले ही चले जाते थे। इंग्लैंड में कोई भी कमरा उस छोटे से बैठक कक्ष जितना सुखद नहीं था, जब तीनों चचेरी बहनें उसमें होती थीं। हॉर्टेंस, जब वह पढ़ा नहीं रही होती थी, डांट नहीं रही होती थी, या खाना नहीं बना रही होती थी, तो उसका मिजाज बिल्कुल भी खराब नहीं होता था; शाम होते-होते आराम करना और अपनी युवा अंग्रेज रिश्तेदार के प्रति दयालु होना उसकी आदत थी। उसे खुश करने का एक तरीका भी था, उसे गिटार लेकर गाने और बजाने के लिए प्रेरित करना। तब वह काफी अच्छे स्वभाव की हो जाती थी। और चूंकि वह कुशलता से बजाती थी, और उसकी आवाज सुरीली थी, इसलिए उसे सुनना अप्रिय नहीं लगता था। यह बिल्कुल सुखद होता, सिवाय इसके कि उनके औपचारिक और आत्म-महत्वपूर्ण स्वभाव ने उनके बोलने के लहजे को इस तरह से नियंत्रित किया, जैसे कि इसने उनके तौर-तरीकों को प्रभावित किया और उनके चेहरे के भावों को आकार दिया।

व्यवसाय के बोझ से मुक्त होकर, श्री मूर स्वयं भले ही उतने जीवंत न हों, लेकिन कैरोलीन की जीवंतता के प्रसन्न दर्शक, उनकी बातों के संतुष्ट श्रोता और उनके प्रश्नों के तत्पर उत्तरदाता अवश्य थे। उनके पास बैठना, उनके आसपास मंडराना, उनसे बात करना और उन्हें देखना सुखद अनुभव था। कभी-कभी वे इससे भी बढ़कर लगभग सजीव, अत्यंत सौम्य और मित्रवत होते थे।

लेकिन दिक्कत यह थी कि अगली सुबह तक वह फिर से जम जाता था; और भले ही वह अपने शांत स्वभाव से इन सामाजिक शामों का आनंद लेता हुआ प्रतीत होता था, लेकिन वह शायद ही कभी इन्हें दोबारा आयोजित कर पाता था। इस बात ने उसकी चचेरी बहन के अनुभवहीन दिमाग को उलझन में डाल दिया। उसने सोचा, "अगर मेरे पास खुशी का कोई जरिया होता, तो मैं उसका बार-बार इस्तेमाल करती। मैं उसे हमेशा इस्तेमाल करती रहती, और हफ्तों तक यूं ही पड़े रहने नहीं देती, जब तक कि वह जंग न खा जाए।"

फिर भी वह अपने सिद्धांत को व्यवहार में लाने से बचती थी। हालाँकि उसे कुटीर में शाम को जाना अच्छा लगता था, लेकिन वह बिना बुलाए कभी नहीं जाती थी। अक्सर, जब हॉर्टेंस उसे आने के लिए बार-बार कहती, तो वह मना कर देती, क्योंकि रॉबर्ट उसकी बात का समर्थन नहीं करता था, या बहुत कम करता था। आज सुबह पहली बार उसने अपनी इच्छा से, बिना किसी आग्रह के, उसे आमंत्रित किया था; और उसने इतनी मधुरता से बात की थी कि उसे सुनकर इतनी खुशी हुई कि वह पूरे दिन खुश रही।

सुबह हमेशा की तरह ही गुज़री। मैडमोजेल, जो हमेशा की तरह व्यस्त रहती थीं, रसोई से बैठक तक भाग-दौड़ करती रहीं, कभी सारा को डांटतीं, कभी कैरोलीन के अभ्यास पर नज़र रखतीं या उसकी अभ्यास की क्लास सुनतीं। चाहे सारा ने ये काम कितनी भी कुशलता से पूरे किए हों, वह कभी तारीफ़ नहीं करती थीं: उनका मानना था कि तारीफ़ एक शिक्षक की गरिमा के विपरीत है, और कमोबेश बिना किसी शर्त के निंदा करना उसके लिए अनिवार्य है। वह अपने अधिकार को बनाए रखने के लिए लगातार डांट-फटकार, चाहे वह कठोर हो या हल्की, को अत्यंत आवश्यक मानती थीं; और अगर पाठ में कोई गलती न भी हो, तो विद्यार्थी के हाव-भाव, पहनावे या व्यवहार में सुधार की आवश्यकता होती थी।

खाने को लेकर हमेशा की तरह झगड़ा हुआ। जब साराह आखिरकार खाना कमरे

में लेकर आई, तो उसने लगभग उसे मेज पर पटक दिया, और उसके चेहरे पर साफ दिख रहा था, "मैंने अपनी जिंदगी में कभी ऐसा खाना नहीं खाया; यह कुत्तों के खाने लायक भी नहीं है।" साराह की इस घृणा के बावजूद, खाना काफी स्वादिष्ट था। सूप सूखे मटर की प्यूरी जैसा था, जिसे मैडम ने इस बात पर कड़वी शिकायत करते हुए तैयार किया था कि इंग्लैंड के इस वीरान देश में हरी बीन्स नहीं मिलतीं। फिर मांस का एक व्यंजन आया - जिसका प्रकार अज्ञात था, लेकिन माना जाता है कि वह मिश्रित था - जिसे ब्रेड के टुकड़ों के साथ अनोखे ढंग से काटा गया था, अनोखे मसालों से पकाया गया था, हालांकि मसाले अप्रिय नहीं थे, और एक सांचे में पकाया गया था - एक अजीब लेकिन बिल्कुल भी अरुचिकर व्यंजन नहीं। अजीब तरह से कुचली हुई हरी सब्जियां साथ में परोसी गईं; और मैडम गेरार्ड मूर की "दादी" द्वारा तैयार की गई एक रेसिपी के अनुसार संरक्षित फलों का एक पैटे, जिसके स्वाद से यह प्रतीत होता था कि चीनी के स्थान पर "मिश्रण" का उपयोग किया गया था, ने रात्रिभोज को पूरा किया।

कैरोलीन को इस बेल्जियन खाने से कोई आपत्ति नहीं थी - बल्कि उसे यह बदलाव अच्छा लगा; और यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि अगर उसने इसमें कोई अरुचि दिखाई होती, तो यह बात मैडमोजेल की नजरों में उसकी छवि को हमेशा के लिए खराब कर देती; विदेशी व्यंजनों के प्रति अरुचि दिखाने के लक्षण की तुलना में एक स्पष्ट अपराध को कहीं अधिक आसानी से क्षमा किया जा सकता था।

रात के खाने के तुरंत बाद कैरोलीन ने अपनी गवर्नेंस चचेरी बहन को ऊपर तैयार होने के लिए फुसलाया। इस काम में सूझबूझ की जरूरत थी। यह जवाइन, कमीज़ और कर्ल पेपर को घृणित वस्तुएँ या कम आकर्षक चीज़ें कहना एक अपराध होता। इसलिए उन्हें हटाने का कोई भी जल्दबाज़ी वाला प्रयास नासमझी भरा होता, और इससे संभवतः उन्हें पूरे दिन पहने रहना पड़ता। हालाँकि, चट्टानों और दलदलों से सावधानीपूर्वक बचते हुए, छात्रा ने माहौल बदलने का बहाना बनाकर शिक्षिका को ऊपर ले जाने का प्रबंध किया; और, शयनकक्ष में पहुँचकर, उसने उन्हें समझाया कि वहाँ वापस जाने का कोई फायदा नहीं है, और वह अभी तैयार हो सकती हैं। और जब मैडमोजेल फैशन की सभी फिजूलखर्चियों को नजरअंदाज करने में अपनी असाधारण योग्यता पर गंभीर उपदेश दे रही थीं, तब कैरोलीन ने उनकी कमीज उतार दी, उन्हें एक शालीन गाउन पहनाया, उनके कॉलर, बाल आदि संवारे और उन्हें पूरी तरह से सजग

बना दिया। लेकिन होर्टेंस ने खुद अंतिम रूप दिया, और ये अंतिम रूप गले में बंधे एक मोटे रूमाल और एक बड़े, नौकर जैसे काले एप्रन से मिलकर बना था, जिसने सब कुछ बिगाड़ दिया। मैडमोजेल किसी भी हालत में अपने घर में मोटे रूमाल और बड़े एप्रन के बिना नहीं आतीं। पहला नैतिक रूप से महत्वपूर्ण था - रूमाल न पहनना बिल्कुल अनुचित था; दूसरा एक अच्छी गृहिणी का प्रतीक था - ऐसा लगता था कि वह सोचती थीं कि इसके माध्यम से वह किसी तरह अपने भाई की आय में बड़ी बचत कर रही हैं। उन्होंने अपने हाथों से इसी तरह के सामान बनाकर कैरोलीन को भेंट किए थे; और उनके बीच एकमात्र गंभीर झगड़ा, जो अब भी बड़े चचेरे भाई के मन में एक टीस छोड़ गया था, छोटे चचेरे भाई द्वारा इन सुंदर उपहारों को स्वीकार करने और उनसे लाभ उठाने से इनकार करने के कारण हुआ था।

"मैं ऊँची पोशाक और कॉलर पहनती हूँ," कैरोलिन ने कहा, "और इसके ऊपर रुमाल रखने से तो मुझे घुटन महसूस होगी; और मेरे छोटे एप्रन भी उस लंबे एप्रन की तरह ही काम करते हैं। मैं कोई बदलाव नहीं करना चाहती।"

फिर भी, होर्टेंस अपनी दृढ़ता के बल पर शायद कैरोलीन को बदलाव करने के लिए मजबूर कर देती, अगर संयोगवश मिस्टर मूर ने इस विषय पर हो रही बहस को न सुना होता और यह निर्णय न लिया होता कि कैरोलीन के छोटे एप्रन ही पर्याप्त होंगे, और उनके विचार में, चूंकि वह अभी भी एक बच्ची ही थी, इसलिए वह फिलहाल फिचू के बिना भी काम चला सकती थी, खासकर इसलिए कि उसके बाल लंबे थे और लगभग उसके कंधों को छूते थे।

रॉबर्ट की राय के विरुद्ध कोई अपील नहीं थी, इसलिए उसकी बहन को झुकना पड़ा; लेकिन उसे कैरोलीन की पोशाक की आकर्षक सफ़ाई और उसकी शालीनता बिल्कुल पसंद नहीं आई। उसे कुछ अधिक ठोस और सादा पहनावा "कहीं अधिक उपयुक्त" लगता।

दोपहर का समय सिलाई में व्यतीत हुआ। मैडमोजेल, अधिकांश बेल्जियम की महिलाओं की तरह, सुई-धागे के काम में विशेष रूप से कुशल थीं। वे बारीक कढ़ाई, आँखों को चकाचौंध कर देने वाली लेस-वर्क, अद्भुत नेटिंग और बुनाई, और सबसे बढ़कर, मोजों की जटिल मरम्मत में अनगिनत घंटे बिताने को समय की बर्बादी नहीं समझती थीं। वे किसी भी समय एक मोजे में दो छेदों की मरम्मत के लिए पूरा दिन दे देती थीं, और जब वह इसे पूरा कर लेती थीं तो अपने "मिशन" को महानतापूर्वक

संपन्न मानती थीं। कैरोलिन की एक और परेशानी यह थी कि उन्हें रफू करने की इस विदेशी शैली को सीखने के लिए मजबूर किया गया था, जो एक-एक टाँका करके की जाती थी, ताकि मोजे के कपड़े की हूबहू नकल की जा सके - एक थकाऊ प्रक्रिया, लेकिन होर्टेंस गेरार्ड और उनसे पहले की उनकी कई पीढ़ियों द्वारा इसे "एक महिला के पहले कर्तव्यों" में से एक माना जाता था। खुद कैरोलिन के हाथ में भी एक सुई, कपास और एक बुरी तरह फटा हुआ मोजा तब थमा दिया गया था जब वह अभी भी अपने छोटे काले सिर पर एक बच्चे की टोपी पहने हुए थी; छह साल की उम्र से पहले ही उसने सिलाई के क्षेत्र में अपनी महारत का प्रदर्शन कर लिया था; और जब उसे पहली बार पता चला कि कैरोलिन इस सबसे आवश्यक कौशल से पूरी तरह अनभिज्ञ है, तो वह उसकी बुरी तरह उपेक्षित युवावस्था पर दया से रो सकती थी।

उसने जरा भी समय बर्बाद किए बिना एक बेकार जोड़ी मोजे ढूंढ निकाले, जिनकी एड़ी पूरी तरह से टूट चुकी थी, और उस अनपढ़ अंग्रेज लड़की को उस कमी को ठीक करने का काम सौंप दिया। यह काम दो साल पहले शुरू हुआ था, और कैरोलीन के काम के थैले में अभी भी मोजे पड़े थे। वह अपने पापों के प्रायश्चित के रूप में हर दिन कुछ पंक्तियाँ बुनती थी। वे उसके लिए एक भारी बोझ थे; वह उन्हें आग में जला देना चाहती थी; और एक बार श्री मूर ने, जिन्होंने उसे उन पर बैठकर आहें भरते देखा था, लेखा कार्यालय में चुपके से उन्हें जलाने का प्रस्ताव रखा था; लेकिन कैरोलीन जानती थी कि इस प्रस्ताव को स्वीकार करना उचित नहीं होगा - इसका परिणाम केवल एक नई जोड़ी मोजे ही हो सकता था, जो शायद और भी खराब हालत में होते। इसलिए, उसने उन बुराइयों को ही सहना बेहतर समझा जिन्हें वह जानती थी।

पूरी दोपहर दोनों महिलाएं बैठकर सिलाई करती रहीं, यहाँ तक कि उनमें से एक की आँखें, उंगलियाँ और यहाँ तक कि मन भी थक गया। दोपहर के भोजन के बाद से आसमान में बादल छा गए थे; फिर से बारिश शुरू हो गई थी, और तेज़ हो रही थी। कैरोलीन को धीरे-धीरे यह डर सताने लगा कि कहीं मिस्टर साइक्स या मिस्टर यॉर्क रॉबर्ट को व्हिनबरी में तब तक रुकने के लिए मना न लें जब तक बारिश रुक न जाए, और फिलहाल इसकी कोई संभावना नहीं दिख रही थी। पाँच बज गए, और समय धीरे-धीरे बीतता गया; बादल अभी भी छाए हुए थे। कुटिया की छत पर हवा सरसरा रही थी; ऐसा लग रहा था जैसे दिन ढल रहा हो; बैठक में जल रही आग की साफ चूल्हे पर शाम के समय जैसी लालिमा छाई हुई थी।

“जब तक चांद नहीं निकलेगा, तब तक मौसम ठीक नहीं होगा,” मैडमोजेल मूर ने कहा, “इसलिए मुझे पूरा यकीन है कि मेरा भाई तब तक नहीं लौटेगा। अगर वह लौट भी गया तो मुझे बहुत दुख होगा। हम कॉफी पिएंगे। उसका इंतजार करना व्यर्थ होगा।”

“मैं थक गया हूँ। क्या मैं अब अपना काम छोड़ सकता हूँ, चचेरे भाई?”

“आप ऐसा कर सकते हैं, क्योंकि अब इतना अंधेरा हो जाता है कि ठीक से देखना मुश्किल हो जाता है। इसे मोड़कर सावधानी से अपने बैग में रख लें; फिर रसोई में जाकर सारा से कहें कि वह आपके लिए चाय लेकर आए।”

लेकिन अभी तक छह अंक नहीं आए हैं। वह अभी भी आ सकता है।

“वह ऐसा नहीं करेगा, मैं तुम्हें बता रहा हूँ। मैं उसकी हरकतों का अनुमान लगा सकता हूँ। मैं अपने भाई को समझता हूँ।”

अनिश्चितता कष्टदायी होती है, निराशा कड़वी। दुनिया के हर व्यक्ति ने कभी न कभी यह अनुभव किया है। कैरोलिन, आदेशों का पालन करते हुए, रसोई में चली गई। सारा मेज पर अपने लिए एक पोशाक बना रही थी।

"तुम्हें कॉफी लानी है," युवती ने बेजान स्वर में कहा; और फिर उसने अपना हाथ और सिर रसोई के मेंटलपीस पर टिका दिया, और बेसुध होकर आग के पास खड़ी रही।

आप कितनी उदास लग रही हैं, महोदया! लेकिन ये सब इसलिए है क्योंकि आपकी चचेरी बहन आपको काम के बहुत करीब रखती है। ये तो बहुत दुख की बात है!

“ऐसा कुछ नहीं है, सारा,” संक्षिप्त उत्तर मिला।

“ओह! लेकिन मुझे पता है। तुम अभी रोने ही वाली हो, और इसका कोई कारण नहीं है सिवाय इसके कि तुम पूरे दिन चुपचाप बैठी रही हो। इतना म्याऊं-म्याऊं करने से तो बिल्ली का बच्चा भी उदास हो जाएगा।”

"सारा, क्या बारिश के मौसम में तुम्हारा मालिक अक्सर बाजार से जल्दी घर आ जाता है?"

"कभी नहीं, लगभग कभी नहीं; लेकिन आज किसी कारण से उसने कुछ अलग कर दिखाया है।"

"आपका क्या मतलब है?"

“वह आ गया है। मुझे पक्का यकीन है कि जब मैं पाँच मिनट पहले पंप से पानी लेने गया था, तब मैंने मुर्गट्रॉयड को अपने घोड़े को पिछले रास्ते से आँगन में लाते हुए देखा था। मुझे लगता है कि वह जो स्कॉट के साथ लेखा-जोखा में था।”

"आप गलती कर रहे हैं।"

मुझे किस बात के लिए गलत समझा जा रहा है? मैं उसके घोड़े को तो जरूर पहचानता हूँ?

"लेकिन आपने उसे नहीं देखा?"

मैंने उसे बोलते हुए सुना। वह जो स्कॉट से कुछ कह रहा था कि उसने तौर-तरीकों से संबंधित सभी मामलों को सुलझा लिया है, और एक सप्ताह बीतने से पहले चक्की में नए फ्रेम आ जाएंगे, और इस बार वह गाड़ी की सुरक्षा के लिए स्टिलब्रो बैरक से चार सैनिकों को बुलाएगा।

"सारा, क्या तुम गाउन बना रही हो?"

“हाँ। क्या यह सुंदर है?”

“बहुत सुंदर! कॉफ़ी तैयार रखो। मैं तुम्हारे लिए आस्तीन काट कर तैयार कर दूंगी और साथ में कुछ ट्रिमिंग भी दे दूंगी। मेरे पास पतले सैटिन रिबन हैं जिनका रंग इससे बिल्कुल मेल खाएगा।”

"आप बहुत दयालु हैं, महोदया।"

“जल्दी करो; शाबाश बच्ची। लेकिन पहले अपने मालिक के जूते चूल्हे पर रख दो: अंदर आते ही वो अपने जूते उतार देंगे। मुझे उनकी आहट सुनाई दे रही है; वो आ रहे हैं।”

"मैडम, आप चीजों को गलत तरीके से काट रही हैं।"

“हाँ, मैंने ऐसा ही किया है; लेकिन यह सिर्फ एक छोटा सा कट है। इससे कोई नुकसान नहीं हुआ है।”

रसोई का दरवाजा खुला; श्री मूर अंदर आए, पूरी तरह भीगे और ठंडे। कैरोलीन ने अपने कपड़े सिलने के काम से आधा मुंह मोड़ा, लेकिन एक पल के लिए फिर से उसी काम में लग गई, मानो किसी उद्देश्य के लिए एक मिनट का समय लेना चाहती हो। कपड़े सिलते हुए उसका चेहरा छिपा हुआ था; उसने अपने चेहरे के भावों को छिपाने की कोशिश की, लेकिन असफल रही। जब अंत में उसकी नजर श्री मूर पर पड़ी, तो उसका चेहरा चमक उठा।

“हमें आपकी उम्मीद ही नहीं थी। उन्होंने कहा था कि आप नहीं आएंगे,” उसने कहा।

लेकिन मैंने जल्द लौटने का वादा किया था। मुझे लगता है कि आप मेरा इंतजार कर रहे थे।

“नहीं, रॉबर्ट; जब इतनी तेज़ बारिश हो रही थी तो मेरी हिम्मत नहीं हुई। और तुम भीग गए हो और ठंड से कांप रहे हो। सब कुछ बदल दो। अगर तुम्हें सर्दी लग गई, तो हम दोनों को कुछ हद तक दोषी होना पड़ेगा।”

“मैं पूरी तरह भीगा नहीं हूँ: मेरा घुड़सवारी कोट वाटरप्रूफ है। मुझे बस सूखे जूते चाहिए। लीजिए—कुछ मील तक ठंडी हवा और बारिश का सामना करने के बाद आग के पास बैठना अच्छा लग रहा है।”

वह रसोई के चूल्हे पर खड़ा था; कैरोलीन उसके बगल में खड़ी थी। श्री मूर, उस सुखद रोशनी का आनंद लेते हुए, अपनी निगाहें ऊपर की शेल्फ पर सजे चमकदार पीतल के सामान पर टिकाए हुए थे। एक पल के लिए नीचे देखते ही उनकी नज़र एक उठे हुए चेहरे पर पड़ी, जो लालिमा से लाल, मुस्कुराता हुआ, खुश, रेशमी घुंघराले बालों से ढका हुआ और सुंदर आँखों से दमकता हुआ था। सारा ट्रे लेकर बैठक में चली गई थी; उसकी मालकिन के डांट-फटकार के कारण वह वहीं रुकी हुई थी। मूर ने एक पल के लिए अपनी युवा चचेरी बहन के कंधे पर हाथ रखा, झुका और उसके माथे पर चुंबन दिया।

“ओह!” उसने कहा, मानो होंठ खुल गए हों, “जब मुझे लगा कि तुम नहीं आओगे तो मैं बहुत दुखी थी। अब तो मैं बहुत खुश हूँ। क्या तुम खुश हो, रॉबर्ट? क्या तुम्हें घर आना अच्छा लगता है?”

"मुझे लगता है कि मैं ऐसा कर सकता हूँ - कम से कम आज रात तो।"

"क्या आपको यकीन है कि आप अपने फ्रेम, अपने व्यवसाय और युद्ध के बारे में चिंतित नहीं हैं?"

“अभी नहीं।”

"क्या आपको पूरा यकीन है कि आपको हॉलो की कुटिया अपने लिए बहुत छोटी, संकरी और निराशाजनक नहीं लगती?"

"फिलहाल तो नहीं।"

"क्या आप इस बात की पुष्टि कर सकते हैं कि अमीर और महान लोग आपको भूल

जाते हैं, इसलिए आपके मन में कोई कड़वाहट नहीं है?"

“अब और कोई सवाल नहीं। अगर आपको लगता है कि मैं अमीर और प्रभावशाली लोगों की चापलूसी करने के लिए उत्सुक हूं, तो आप गलत हैं। मुझे बस साधन चाहिए —एक पद—एक करियर।”

“तुम्हारी प्रतिभा और अच्छाई ही तुम्हें जीत दिलाएगी। तुम महान बनने के लिए बने हो; तुम महान बनोगे।”

“अब मैं सोचता हूँ, अगर तुम दिल से ईमानदारी से बोलतीं, तो मुझे इस महानता को प्राप्त करने का क्या नुस्खा बतातीं; लेकिन मैं इसे जानता हूँ—तुमसे भी बेहतर। क्या यह कारगर होगा? क्या यह काम करेगा? हाँ—गरीबी, दुख, दिवालियापन। ओह, लीना, ज़िंदगी वैसी नहीं है जैसा तुम सोचती हो!”

लेकिन तुम वही हो जो मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ।

"मैं नहीं हूँ।"

तो अब आप बेहतर हैं?

"कहीं ज्यादा बुरा।"

“नहीं; बल्कि कहीं बेहतर। मुझे पता है तुम अच्छे हो।”

"आपको कैसे पता?"

"तुम दिखती भी वैसी ही हो, और मुझे लगता है कि तुम वैसी ही हो।"

आपको यह कहाँ महसूस होता है?

"मन ही मन।"

“अरे! लीना, तुम मुझे अपने दिल से आंकती हो: तुम्हें मुझे अपने दिमाग से आंकना चाहिए।”

“हाँ, मुझे तुम पर गर्व है। रॉबर्ट, तुम मेरे सारे विचार नहीं जान सकते।”

श्री मूर के गहरे रंग के चेहरे पर रंगत लौट आई; उनके होंठ मुस्कुराए, फिर भी दबे हुए थे; उनकी आंखें खिलखिला रही थीं, फिर भी उन्होंने दृढ़ता से अपनी भौंहें सिकोड़ लीं।

“मेरे बारे में नीची सोचो, लीना,” उसने कहा। “पुरुष आम तौर पर एक तरह के नीच होते हैं, तुम्हारी धारणा से बिलकुल अलग। मैं अपने साथियों से बेहतर होने का कोई दावा नहीं करता।”

“अगर आप ऐसा करते, तो मैं आपका इतना सम्मान नहीं करता। आपकी विनम्रता

के कारण ही मुझे आपकी योग्यता पर इतना भरोसा है।”

"क्या तुम मेरी चापलूसी कर रही हो?" उसने तीक्ष्णता से उसकी ओर मुड़ते हुए और तीक्ष्ण दृष्टि से उसके चेहरे को निहारते हुए पूछा।

“नहीं,” उसने धीरे से कहा और उसकी अचानक की फुर्ती पर हंस पड़ी। उसे लगा कि इस आरोप का तुरंत खंडन करना अनावश्यक है।

"क्या आपको इस बात की परवाह नहीं है कि मैं आपकी चापलूसी समझूं या नहीं?"

"नहीं।"

"क्या आपको अपने इरादों पर इतना भरोसा है?"

"मुझे ऐसा लगता है।"

“ये क्या हैं, कैरोलाइन?”

"सिर्फ इसलिए कि मैं अपने मन की कुछ बातें एक बार व्यक्त करके खुद को शांत कर सकूं, और फिर आपको अपने आप से बेहतर संतुष्ट महसूस करा सकूं।"

“क्या आप मुझे यह आश्वासन देकर ऐसा कर सकते हैं कि मेरी रिश्तेदार मेरी सच्ची दोस्त है?”

“बिल्कुल सही। मैं तुम्हारा सच्चा दोस्त हूँ, रॉबर्ट।”

और मैं वही हूँ जो संयोग और बदलाव मुझे बना देंगे, लीना।

"लेकिन मेरा दुश्मन नहीं?"

सारा और उसकी मालकिन के कुछ शोर-शराबे के साथ रसोई में आने से बातचीत बीच में ही रुक गई। वे श्री मूर और मिस हेलस्टोन के संवाद में बिताए समय का सदुपयोग "कैफे औ लेट" (कॉफी) के विषय पर एक संक्षिप्त बहस करके कर रही थीं। सारा ने कहा कि यह अब तक का सबसे अजीबोगरीब पेय है और ईश्वर की देन का दुरुपयोग है, क्योंकि "कॉफी की प्रकृति ही पानी में उबालने की होती है।" वहीं मालकिन ने इसे "शानदार पेय" बताया, जो इसे नापसंद करने वाले तुच्छ व्यक्ति के लिए हज़ार गुना बेहतर है।

रसोई में मौजूद लोग अब बैठक कक्ष में चले गए। इससे पहले कि हॉर्टेंस उनके पीछे वहाँ पहुँचती, कैरोलीन को केवल इतना ही पूछने का समय मिला, "रॉबर्ट, तुम मेरे दुश्मन तो नहीं हो?" और मूर ने, एक क्वेकर की तरह, एक और सवाल के साथ जवाब दिया, "क्या मैं हो सकता हूँ?" और फिर, मेज पर बैठते हुए, कैरोलीन को अपने

बगल में बिठा दिया।

कैरोलिन जब उनके पास लौटी तो उसने मैडमोजेल के क्रोध का विस्फोट मुश्किल से ही सुना; "इस दुष्ट प्राणी के घृणित आचरण" के बारे में लंबा भाषण उसके कानों में चीनी मिट्टी के बर्तनों की खड़खड़ाहट की तरह अस्पष्ट रूप से गूंजा। रॉबर्ट ने इस पर बहुत ही दबी हुई हंसी हंसी और फिर, विनम्रतापूर्वक और शांत भाव से अपनी बहन से शांत रहने का आग्रह करते हुए, उसे आश्वासन दिया कि यदि इससे उसे कोई संतुष्टि मिलेगी, तो वह उसकी चक्की में काम करने वाली सभी लड़कियों में से किसी एक को नौकरानी के रूप में चुन सकती है। लेकिन उसे डर था कि वे उसके लिए उपयुक्त नहीं होंगी, क्योंकि उसे बताया गया था कि उनमें से अधिकांश घरेलू कामों से पूरी तरह अनभिज्ञ थीं; और सारा चाहे कितनी भी चंचल और मनमानी करने वाली हो, वह शायद अपनी वर्ग की अधिकांश महिलाओं से कम बुरी नहीं थी।

मैडमोजेल ने इस अनुमान की सत्यता स्वीकार की: उनके अनुसार, "ये अंग्रेज किसान बिल्कुल असहनीय थीं।" वह अपनी वर्ग के अनुरूप ऊँची टोपी, छोटी पेटीकोट और शालीन जूते पहने किसी "अच्छी कुज़िनियर एनवर्सोइस" के लिए क्या कुछ नहीं दे देतीं—वास्तव में, झालरदार गाउन पहने और बिना टोपी के एक अभिमानी नखरेबाज़ से कहीं बेहतर! (ऐसा प्रतीत होता है कि सारा सेंट पॉल के इस मत से सहमत नहीं थीं कि "एक महिला का सिर खुला रखना शर्म की बात है;" बल्कि इसके विपरीत, उन्होंने अपने सुनहरे बालों की घनी लटों को लिनेन या मलमल में कैद करने से दृढ़तापूर्वक इनकार कर दिया, जिन्हें वह अक्सर पीछे कंघी से करीने से बाँधती थीं और रविवार को आगे की ओर कर्ल करके पहनती थीं।)

"क्या मैं आपके लिए एंटवर्प की कोई लड़की ढूंढने की कोशिश करूं?" श्री मूर ने पूछा, जो सार्वजनिक रूप से सख्त दिखने के बावजूद निजी तौर पर काफी दयालु थे।

“धन्यवाद!” जवाब मिला। “एंटवर्प की कोई लड़की यहाँ दस दिन भी नहीं रुकेगी, क्योंकि आपकी फैक्ट्री में सभी नखरेबाज़ लड़कियाँ उसका मज़ाक उड़ाएँगी;” फिर नरमी से बोली, “आप बहुत अच्छे हैं, प्रिय भाई – मेरी नाराज़गी के लिए क्षमा करें – लेकिन सच में मेरी घरेलू परेशानियाँ बहुत कठिन हैं, फिर भी शायद यही मेरा भाग्य है; क्योंकि मुझे याद है कि हमारी पूजनीय माता ने भी इसी तरह की पीड़ाएँ झेली थीं, जबकि उनके पास एंटवर्प के सभी बेहतरीन नौकरों को चुनने का विकल्प था। सभी देशों में नौकरानियाँ बिगड़ी हुई और उद्दंड होती हैं।”

श्री मूर को अपनी पूजनीय माता के कष्टों की कुछ यादें भी सता रही थीं। वह उनके लिए एक अच्छी माँ थीं और वे उनकी स्मृति का सम्मान करते थे; लेकिन उन्हें याद था कि एंटवर्प में उनकी माता का भी उतना ही कठोर वातावरण था जितना कि उनकी वफादार बहन का इंग्लैंड में। इसलिए उन्होंने इस विषय को वहीं छोड़ दिया और जब कॉफी सेट हटा दिया गया, तो उन्होंने हॉर्टेंस को सांत्वना देने के लिए उनकी संगीत की किताब और गिटार लाकर दिए; और बड़े ही शांत और स्नेहपूर्ण भाव से, जो उनके सबसे चिड़चिड़े मन को भी शांत करने में कारगर था, उन्होंने गिटार का रिबन उनके गले में बाँध दिया और उनसे उनकी माँ के कुछ पसंदीदा गीत सुनाने का अनुरोध किया।

स्नेह के समान कोई चीज़ मन को परिष्कृत नहीं करती। पारिवारिक कलह मन को असभ्य बना देती है; पारिवारिक एकता मन को ऊंचा उठाती है। अपने भाई से प्रसन्न और उसके प्रति कृतज्ञ, हॉर्टेंस ने जब गिटार को छुआ तो वह लगभग सुंदर और आकर्षक लग रही थी; उसका रोज़ाना का चिड़चिड़ापन एक पल के लिए गायब हो गया और उसकी जगह एक मधुर मुस्कान आ गई। उसने उसके द्वारा अनुरोधित गीत भावपूर्ण ढंग से गाए; वे गीत उसे अपने उस माता-पिता की याद दिला रहे थे जिनसे उसका सच्चा लगाव था; वे गीत उसे उसके बचपन के दिनों की याद दिला रहे थे। उसने यह भी देखा कि कैरोलीन भोलेपन से सुन रही थी; इससे उसका उत्साह और बढ़ गया; और गीत के अंत में उसका यह उद्गार, "काश मैं भी हॉर्टेंस की तरह गा और बजा पाती!" ने उसे उस शाम के लिए मनमोहक बना दिया।

यह सच है कि कैरोलिन को इच्छाओं की व्यर्थता और प्रयास के कर्तव्य पर एक छोटा सा उपदेश दिया गया। उन्होंने कहा, "जैसे रोम एक दिन में नहीं बना था, वैसे ही मैडमोजेल गेरार्ड मूर की शिक्षा भी एक सप्ताह में या केवल होशियार बनने की इच्छा से पूरी नहीं हुई थी। यह परिश्रम ही था जिसने इस महान कार्य को पूरा किया। वह अपनी लगन और परिश्रम के लिए हमेशा उल्लेखनीय थीं। उनके शिक्षकों ने टिप्पणी की थी कि इतनी प्रतिभा और इतनी दृढ़ता का एक साथ मिलना जितना अद्भुत है, उतना ही दुर्लभ भी है।" एक बार जब मैडमोजेल ने अपनी खूबियों के बारे में बोलना शुरू किया, तो वह धाराप्रवाह बोलने लगीं।

अंततः परम सुख और आत्मसंतुष्टि की गोद में, उसने अपनी बुनाई उठाई और शांति से बैठ गई। खींचे हुए पर्दे, जलती हुई आग और हल्की रोशनी से जगमगाता

दीपक, अब उस छोटे से बैठक कक्ष को उसका सर्वोत्तम, उसकी शाम की सुंदरता प्रदान कर रहे थे। संभवतः वहाँ उपस्थित तीनों ने इस सुंदरता को महसूस किया। वे सभी प्रसन्न दिख रहे थे।

“अब हम क्या करें, कैरोलीन?” श्री मूर ने अपनी चचेरी बहन के बगल में अपनी सीट पर लौटते हुए पूछा।

“हम क्या करें, रॉबर्ट?” उसने शरारती अंदाज़ में दोहराया। “तुम तय करो।”

“शतरंज नहीं खेलते?”

"नहीं।"

“न तो शतरंज, न ही बैकगैमोन?”

“नहीं, नहीं; हम दोनों को ही ऐसे मूक खेल नापसंद हैं जिनमें केवल हाथों को ही व्यस्त रखा जाता है, है ना?”

“मुझे लगता है कि हम ऐसा करते हैं। तो क्या हम घोटाले के बारे में बात करें?”

“किसके बारे में? क्या हम किसी व्यक्ति में इतनी दिलचस्पी रखते हैं कि उसके चरित्र को टुकड़े-टुकड़े करने में आनंद लें?”

“यह एक सीधा-सादा सवाल है। मेरी ओर से, भले ही यह सुनने में अप्रिय लगे, मुझे कहना होगा कि नहीं।”

“और मैं भी। लेकिन यह अजीब है, हालाँकि हम अपने बीच कोई तीसरा— मेरा मतलब है चौथा (उसने जल्दी से और पश्चाताप के साथ होर्टेंस की ओर देखा), जीवित व्यक्ति नहीं चाहते— हम अपनी खुशी में इतने स्वार्थी हैं— हालाँकि हम वर्तमान दुनिया के बारे में सोचना नहीं चाहते, अतीत में लौटना सुखद होगा, उन लोगों को सुनना जो पीढ़ियों से कब्रों में सो रहे हैं जो शायद अब कब्रें नहीं हैं, बल्कि बगीचे और खेत हैं, हमसे बात करें और हमें अपने विचार बताएं, और अपने विचार साझा करें।”

“वक्ता कौन होगा? वह कौन सी भाषा बोलेगा? फ्रेंच?”

“रॉबर्ट, तुम्हारे फ्रांसीसी पूर्वज तुम्हारे अंग्रेज पूर्वजों की तरह न तो इतनी मधुरता से बोलते थे, न ही इतने गंभीर ढंग से, और न ही इतने प्रभावशाली ढंग से। आज रात तुम पूरी तरह से अंग्रेज बन जाओगे। तुम एक अंग्रेजी किताब पढ़ोगे।”

“एक पुरानी अंग्रेजी किताब?”

“हाँ, एक पुरानी अंग्रेज़ी किताब—जो आपको पसंद हो; और मैं उसमें से एक ऐसा अंश चुनूँगा जो आपके भीतर की किसी बात से पूरी तरह मेल खाता हो। यह आपके

स्वभाव को जगाएगी, आपके मन को संगीत से भर देगी; यह एक कुशल हाथ की तरह आपके हृदय पर फिरेगी और उसके तारों को झनझना देगी। आपका हृदय एक वीणा है, रॉबर्ट; लेकिन आपके भाग्य में इसे बजाने वाला कोई गायक नहीं रहा, और यह अक्सर मौन रहता है। गौरवशाली विलियम को पास आने दीजिए और इसे छूने दीजिए। आप देखेंगे कि कैसे वह इसके तारों से अंग्रेज़ी शक्ति और मधुरता को बाहर निकालेंगे।”

“क्या मुझे शेक्सपियर पढ़ना चाहिए?”

“आपको उसकी आत्मा को अपने सामने रखना होगा; आपको अपने मन के कानों से उसकी आवाज सुननी होगी; आपको उसकी आत्मा का कुछ अंश अपने भीतर समाहित करना होगा।”

“क्या इसका उद्देश्य मुझे बेहतर बनाना है? क्या यह उपदेश की तरह काम करेगा?”

“इसका उद्देश्य आपको प्रेरित करना, आपको नई संवेदनाएं देना है। इसका उद्देश्य आपको अपने जीवन को गहराई से महसूस कराना है—न केवल अपने सद्गुणों को, बल्कि अपनी बुराइयों और विकृतियों को भी।”

"हे भगवान! ये क्या कह रही हो?" होर्टेंस चिल्लाई, जो अब तक अपनी बुनाई में टाँके गिन रही थी और उसने कही गई बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था, लेकिन इन दो कड़े शब्दों ने उसके कानों को झकझोर कर रख दिया।

“बहन, उसकी बातों पर ध्यान मत दो; उसे बोलने दो। आज रात उसे जो चाहे बोलने दो। कभी-कभी वह तुम्हारे भाई पर बहुत सख्ती करती है। मुझे तो इसमें मजा आता है, इसलिए उसे अकेला छोड़ दो।”

कैरोलिन, जो कुर्सी पर चढ़कर किताबों की अलमारी में कुछ ढूंढ रही थी, एक किताब लेकर लौटी।

“ये शेक्सपियर हैं,” उसने कहा, “और ये ‘कोरियोलानुस’ है। अब पढ़िए, और पढ़ने से उत्पन्न होने वाली भावनाओं से तुरंत पता लगाइए कि आप कितने निचले और कितने ऊंचे हैं।”

"तो आओ, मेरे पास बैठो, और जब मैं गलत उच्चारण करूं तो मुझे सुधार दो।"

“तो मैं शिक्षक बनूंगा और तुम मेरे शिष्य?”

"ऐसा ही हो!"

"और चूंकि हम शेक्सपियर का अध्ययन करने जा रहे हैं, तो क्या यही हमारा विज्ञान है?"

ऐसा प्रतीत होता है।

"और आप फ्रांसीसी, संशयवादी और उपहास करने वाले नहीं होंगे? क्या आप प्रशंसा करने से इनकार करने को बुद्धिमत्ता का संकेत नहीं मानेंगे?"

"मुझें नहीं पता।"

"अगर तुमने ऐसा किया, रॉबर्ट, तो मैं शेक्सपियर को अपने साथ ले जाऊंगी; और मैं अपने अंदर ही सिमट जाऊंगी, अपनी टोपी पहन लूंगी और घर चली जाऊंगी।"

बैठ जाइए। मैं शुरू करता हूँ।

“एक मिनट रुकिए, भाई,” मैडम ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “जब परिवार का मुखिया पढ़ता है, तो महिलाओं को हमेशा सिलाई करनी चाहिए। — कैरोलिन, प्यारी बच्ची, अपनी कढ़ाई का सामान ले लो। आज रात तुम तीन टहनियाँ पूरी कर सकती हो।”

कैरोलीन हताश दिख रही थी। “मैं दीपक की रोशनी में नहीं देख सकती; मेरी आँखें थक गई हैं, और मैं एक साथ दो काम ठीक से नहीं कर सकती। अगर मैं सिलाई करती हूँ, तो मैं सुन नहीं सकती; अगर मैं सुनती हूँ, तो मैं सिलाई नहीं कर सकती।”

“ठीक है, फिर! ये कैसी बचकानी हरकत है!” हॉर्टेंस ने कहना शुरू किया। श्री मूर ने हमेशा की तरह बड़ी विनम्रता से बीच में दखल दिया।

"आज शाम उसे कढ़ाई को छोड़ देने की अनुमति दें। मैं चाहता हूँ कि उसका पूरा ध्यान मेरे उच्चारण पर केंद्रित हो; और इसे सुनिश्चित करने के लिए, उसे अपनी आँखों से पढ़ना होगा - उसे किताब को देखना होगा।"

उसने उसे उन दोनों के बीच रखा, अपना हाथ कैरोलिन की कुर्सी की पीठ पर टिकाया और इस तरह पढ़ना शुरू कर दिया।

“कोरियोलानस” का पहला दृश्य उनके बौद्धिक मन को बड़ी चतुराई से छू गया, और पढ़ते-पढ़ते उनका मन और भी प्रसन्न हो गया। उन्होंने भूखे नागरिकों के सामने कैयस मार्शियस का अभिमानपूर्ण भाषण बड़े उत्साह से सुनाया; उन्होंने यह तो नहीं कहा कि उन्हें अपना अतार्किक गर्व सही लगता है, लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उन्हें ऐसा ही महसूस हो रहा हो। कैरोलिन ने एक अनोखी मुस्कान के साथ उनकी ओर देखा।

“एक तीखा मुद्दा पहले ही उठाया जा चुका है,” उसने कहा। “तुम उस अभिमानी कुलीन व्यक्ति के प्रति सहानुभूति रखते हो जो अपने भूखे साथियों के प्रति सहानुभूति नहीं रखता और उनका अपमान करता है। ठीक है, आगे बढ़ो।” वह आगे बढ़ा। युद्ध संबंधी अंशों ने उसे अधिक उत्तेजित नहीं किया; उसने कहा कि जो कुछ भी पुराना हो चुका है, या होना चाहिए, वह सब पुराना हो चुका है; प्रदर्शित भावना बर्बर थी; फिर भी मार्शियस और टुलस औफिडियस के बीच एकल संघर्ष में उसे आनंद आया। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ा, वह आलोचना करना भूल गया; यह स्पष्ट था कि वह प्रत्येक अंश की शक्ति, उसकी सच्चाई को समझ रहा था; और निजी पूर्वाग्रहों की संकीर्ण रेखा से बाहर निकलकर, मानव स्वभाव के व्यापक चित्र में डूबने लगा, अपने सामने के पृष्ठ से बोल रहे पात्रों पर अंकित वास्तविकता को महसूस करने लगा।

वह हास्य दृश्यों को ठीक से नहीं पढ़ पा रहा था; और कैरोलीन ने उसके हाथ से किताब लेकर उसके लिए वे अंश पढ़े। ऐसा लग रहा था कि उसे कैरोलीन से ये अंश पढ़कर आनंद आ रहा था, और वास्तव में उसने उन्हें ऐसे उत्साह से पढ़ा जिसकी उससे किसी ने अपेक्षा नहीं की थी, एक ऐसे तीक्ष्ण भाव से जो मानो उसे उस क्षण के लिए ही स्वाभाविक रूप से प्राप्त था। यह भी ध्यान देने योग्य है कि उस शाम उसकी बातचीत का सामान्य स्वरूप, चाहे वह गंभीर हो या चंचल, संजीदा हो या हंसमुख, कुछ अनगढ़, अनपढ़, सहज, क्षणिक सा था—एक बार समाप्त हो जाने पर, उसे वैसे ही पुनः उत्पन्न नहीं किया जा सकता जैसे उल्कापिंड की चमकती किरण, ओस की बूंदों के रंग, सूर्यास्त के बादल का रंग या आकार, या किसी छोटी नदी के प्रवाह को बदलने वाली क्षणिक और चमकती लहर।

गौरवशाली कोरियोलानुस, विपत्ति में कोरियोलानुस, निर्वासित कोरियोलानुस, एक के बाद एक विशाल परछाइयों की तरह उनका पीछा करते रहे। निर्वासित व्यक्ति के दर्शन के सामने मूर की आत्मा थम सी गई। वह औफिडियस के महल की चूल्हे पर खड़ा था, महानता के पतन की छवि के सामने, जो उस निम्न अवस्था में भी पहले से कहीं अधिक महान प्रतीत हो रहा था। उसने "भयानक रूप", "आदेश से परिपूर्ण" अंधकारमय चेहरा, "टूटे हुए साज़िश वाले महान पात्र" को देखा। कैयस मार्शियस के प्रतिशोध के प्रति मूर पूरी तरह से सहानुभूति रखता था; वह इससे विचलित नहीं हुआ; और कैरोलीन ने फिर फुसफुसाते हुए कहा, "यहाँ मुझे भाईचारे की एक और भ्रामक झलक दिखाई देती है।"

रोम पर आक्रमण, माँ की विनती, लंबा प्रतिरोध, अंततः बुरी भावनाओं का अच्छाई के आगे झुकना, जो कि महानता की उपाधि के योग्य स्वभाव में हमेशा होना ही चाहिए, औफिडियस का अपने सहयोगी की कमजोरी समझकर क्रोध, कोरियोलानुस की मृत्यु, उसके महान शत्रु का अंतिम शोक - ये सभी दृश्य सारगर्भित सत्य और शक्ति से बने थे - एक के बाद एक घटित हुए और अपने गहरे, तीव्र प्रवाह में पाठक और श्रोता के हृदय और मन को झकझोर कर रख दिया।

"अब, क्या तुम्हें शेक्सपियर का प्रभाव महसूस हुआ?" कैरोलिन ने अपनी चचेरी बहन द्वारा किताब बंद करने के लगभग दस मिनट बाद पूछा।

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

"और क्या आपने कोरियोलानुस में अपने जैसी कोई चीज महसूस की है?"

"शायद मैंने किया है।"

"क्या वह महान होने के साथ-साथ दोषपूर्ण भी नहीं था?"

मूर ने सिर हिलाया।

“और उसकी गलती क्या थी? किस वजह से वह नागरिकों की नफरत का पात्र बन गया? किस कारण से उसके देशवासियों ने उसे देश निकाला दे दिया?”

"तुम्हें क्या लगता है यह क्या था?"

मैं फिर से पूछता हूँ—
चाहे वह गर्व हो,
जो दैनिक भाग्य से कभी कलंकित होता है
क्या वह व्यक्ति सुखी है? क्या यह निर्णय की कमी है?
उन अवसरों का लाभ उठाने में असफल होना
जिसका वह स्वामी था? या फिर प्रकृति का?
एक ही चीज के अलावा कुछ और न होना, हिलना-डुलना नहीं
टोपी से लेकर तकिए तक, लेकिन शांति का आदेश देते हुए
उसी सादगी और पहनावे के साथ भी
क्या उसने युद्ध को नियंत्रित किया था?

"अच्छा, खुद ही जवाब दे दो, स्फिंक्स।"

"यह सबमें एक मसाला था; और आपको अपने कामगारों पर गर्व नहीं करना चाहिए; आपको उन्हें शांत करने के अवसरों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए; और

आपको कठोर स्वभाव का नहीं होना चाहिए, किसी अनुरोध को इतनी सख्ती से नहीं बोलना चाहिए जैसे कि वह कोई आदेश हो।"

"यही वह नैतिक संदेश है जो आप नाटक से जोड़ते हैं। आपके मन में ऐसे विचार कहाँ से आते हैं?"

"प्रिय रॉबर्ट, मैं तुम्हारी भलाई की कामना करता हूँ, तुम्हारी सुरक्षा के लिए चिंतित हूँ, और हाल ही में सुनी गई कई बातों के कारण मुझे डर है कि तुम्हें कोई नुकसान न पहुँच जाए।"

"आपको ये बातें कौन बताता है?"

मैंने अपने चाचा को तुम्हारे बारे में बात करते सुना है। वे तुम्हारी दृढ़ भावना, तुम्हारे संकल्पित मन, तुम्हारे नीच शत्रुओं के प्रति तुम्हारी घृणा और भीड़ के सामने न झुकने के तुम्हारे दृढ़ निश्चय की प्रशंसा करते हैं, जैसा कि वे कहते हैं।

और क्या आप चाहते हैं कि मैं उनके सामने झुक जाऊं?

"नहीं, बिलकुल नहीं। मैं कभी नहीं चाहता कि आप खुद को नीचा दिखाएं; लेकिन किसी तरह मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकता कि सभी गरीब मेहनतकश लोगों को 'भीड़' जैसे सामान्य और अपमानजनक नाम के अंतर्गत रखना और लगातार उनके बारे में घमंडी रवैया अपनाना अन्यायपूर्ण है।"

"कैरोलीन, तुम तो थोड़ी लोकतांत्रिक हो। अगर तुम्हारे चाचा को पता चले तो वो क्या कहेंगे?"

"जैसा कि आप जानते हैं, मैं अपने चाचा से बहुत कम बात करती हूँ, और ऐसी बातों के बारे में तो कभी नहीं। उनका मानना है कि सिलाई और खाना पकाने को छोड़कर बाकी सब कुछ महिलाओं की समझ से परे है और उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर है।"

और क्या आपको लगता है कि आप उन विषयों को समझते हैं जिन पर आप मुझे सलाह देते हैं?

"जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मैं उसे समझती हूँ। मुझे पता है कि तुम्हारे लिए अपने कामगारों का प्यार पाना, उनसे नफरत पाने से बेहतर होगा, और मुझे यकीन है कि घमंड से ज़्यादा दयालुता से उनका सम्मान मिलेगा। अगर तुम मेरे और हॉर्टेंस के प्रति घमंडी और रूखे होते, तो क्या हम तुमसे प्यार करते? जब तुम मेरे प्रति रूखे होते हो, जैसा कि कभी-कभी होता है, तो क्या मैं बदले में स्नेह दिखाने की हिम्मत कर

सकती हूँ?”

“लीना, अब मैंने भाषा और नैतिकता, साथ ही राजनीति पर भी थोड़ी-बहुत जानकारी प्राप्त कर ली है; अब तुम्हारी बारी है। हॉर्टेंस ने मुझे बताया कि तुमने कुछ दिन पहले आंद्रे शेनियर की एक छोटी सी कविता 'ला ज्यून कैप्टिव' सीखी थी और तुम्हें वह बहुत पसंद आई थी। क्या तुम्हें वह अभी भी याद है?”

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

“तो इसे दोहराइए। आराम से बोलिए और उच्चारण का ध्यान रखिए; खासकर अंग्रेजी के ‘u’ अक्षर का प्रयोग न कीजिए।”

कैरोलिन ने धीमी, कुछ कांपती हुई आवाज़ में गाना शुरू किया, लेकिन जैसे-जैसे वह आगे बढ़ती गई, उसका साहस बढ़ता गया और उसने शेनियर की मधुर कविताएँ दोहराईं। आखिरी तीन छंदों का उसने अच्छी तरह अभ्यास किया।

मेरी खूबसूरत यात्रा अभी अपने अंत से बहुत दूर है!
मैं वहां से चला जाता हूं, और रास्ते के किनारे-किनारे एल्म के पेड़ दिखाई देते हैं।
मैं बड़ी मुश्किल से पहले कुछ को पूरा कर पाया।
जीवन की दावत में, जो अभी शुरू ही हुई है,
एक पल के लिए मेरे होंठ दब गए
मेरे हाथों में जो प्याला है, वह अभी भी भरा हुआ है।
मैं अभी वसंत ऋतु में ही हूँ - मैं फसल देखना चाहता हूँ;
और सूर्य की तरह, ऋतुओं के अनुसार,
मैं अपना साल पूरा करना चाहता हूँ।
मेरे तने पर चमक, और बगीचे का सम्मान
मैंने अभी तक केवल सुबह की आग की चमक ही देखी है।
मैं अपना दिन खत्म करना चाहता हूँ!

मूर पहले तो नज़रें झुकाए सुनता रहा, लेकिन जल्द ही उसने चुपके से अपनी नज़रें ऊपर उठा लीं। कुर्सी पर पीछे झुककर वह कैरोलीन को देख रहा था, और कैरोलीन को पता भी नहीं चल रहा था कि उसकी निगाहें कहाँ टिकी हैं। उसके गालों पर एक अलग ही लाली थी, उसकी आँखों में एक चमक थी, और उसके चेहरे पर आज शाम ऐसा भाव था जो साधारण चेहरे को भी आकर्षक बना देता; लेकिन उसके मामले में सादगी की कोई खामी नहीं थी। सूरज की रोशनी किसी बंजर ज़मीन पर नहीं पड़ रही

थी, बल्कि कोमल फूलों पर पड़ रही थी। चेहरे की हर बनावट में एक अलग ही नज़ाकत थी; उसका पूरा रूप मनमोहक था। इस समय - जीवंत, उत्सुक, भावुक - उसे सुंदर कहा जा सकता था। ऐसा चेहरा न केवल सम्मान की शांत भावना, बल्कि प्रशंसा की दूर की भावना को भी जगा सकता था, बल्कि कुछ और कोमल, सौम्य, अंतरंग भावना को भी - शायद दोस्ती, स्नेह, या रुचि। जब उसने अपनी बात समाप्त की, तो वह मूर की ओर मुड़ी और उसकी आँखों में देखा।

"क्या यह काफी हद तक दोहराया गया है?" उसने एक खुश और विनम्र बच्चे की तरह मुस्कुराते हुए पूछा।

मुझे सच में नहीं पता।

“तुम्हें कैसे नहीं पता? क्या तुमने सुना नहीं?”

“हाँ—और मैंने देखा। लीना, तुम्हें कविताएँ पसंद हैं?”

"जब मुझे सच्ची कविता मिलती है, तो मैं तब तक चैन से नहीं बैठ सकता जब तक कि मैं उसे कंठस्थ न कर लूं और इस प्रकार उसे आंशिक रूप से अपना न बना लूं।"

श्री मूर अब कुछ मिनटों तक चुपचाप बैठे रहे। नौ बज गए। सारा ने प्रवेश किया और कहा कि श्री हेलस्टोन का नौकर मिस कैरोलिन को लेने आया है।

"तो फिर शाम तो बीत ही गई," उसने कहा, "और मुझे लगता है कि यहाँ दोबारा आने में काफी समय लगेगा।"

होर्टेंस कुछ समय से बुनाई करते हुए ऊंघ रही थी; अब वह गहरी नींद में डूब गई थी, इसलिए उसने उस टिप्पणी पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

"क्या आपको शाम को अक्सर यहां आने में कोई आपत्ति नहीं होगी?" रॉबर्ट ने पूछा, और उसने बगल की मेज से, जहां वह अभी भी पड़ी थी, उसका तह किया हुआ लबादा उठाया और सावधानीपूर्वक उसे उसके चारों ओर लपेट दिया।

मुझे यहां आना अच्छा लगता है; लेकिन मैं दखलंदाजी नहीं करना चाहता। मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं कुछ पूछना चाहता हूं; आपको यह समझना होगा।

“ओह! मैं तुम्हें समझती हूँ, बच्ची। लीना, तुम कभी-कभी मुझे अमीर बनने की इच्छा रखने के लिए उपदेश देती हो; लेकिन अगर मैं अमीर होती, तो तुम हमेशा यहीं रहतीं—कम से कम, तुम मेरे साथ रहतीं, चाहे मेरा निवास स्थान कहीं भी हो।”

“यह सुखद होगा; और यदि आप गरीब होते — चाहे कितने भी गरीब हों — तब

भी यह सुखद ही होता। शुभ रात्रि, रॉबर्ट।"

मैंने आपसे वादा किया था कि मैं आपके साथ पादरी के निवास तक चलूंगा।

"मुझे पता है तुमने किया था; लेकिन मुझे लगा कि तुम भूल गए हो, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि तुम्हें याद कैसे दिलाऊं, हालांकि मैं ऐसा करना चाहता था। लेकिन क्या तुम जाना चाहोगे? आज रात बहुत ठंड है, और चूंकि फैनी आ चुकी है, इसलिए जाने की कोई ज़रूरत नहीं है—"

"ये लो तुम्हारा मफ; होर्टेंस को मत जगाओ – आओ।"

पादरी के निवास तक आधा मील का रास्ता जल्दी ही तय हो गया। बगीचे में वे बिना चुंबन के, बस हाथों के हल्के स्पर्श से विदा हुए; फिर भी रॉबर्ट ने अपनी चचेरी बहन को उत्साहित और आनंद से व्याकुल होकर अंदर भेजा। उस दिन वह उसके प्रति असाधारण रूप से दयालु था - शब्दों, प्रशंसा या अभिव्यक्तियों से नहीं, बल्कि अपने व्यवहार, नज़र और कोमल और मैत्रीपूर्ण लहजे से।

वह खुद गंभीर, लगभग उदास होकर घर लौटा। अपने आंगन के द्वार पर झुककर, अकेले ही हल्की चांदनी में, अपने सामने शांत, अंधेरी चक्की और चारों ओर पहाड़ी से घिरे खोखले स्थान को देखते हुए, वह अचानक बोल पड़ा, —

"यह ठीक नहीं है! इसमें कमजोरी है – इसमें सरासर बर्बादी है। हालांकि," उन्होंने अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा, "यह उन्माद बहुत क्षणिक है। मैं इसे अच्छी तरह जानता हूं; मैंने इसे पहले भी अनुभव किया है। यह कल तक चला जाएगा।"

अध्याय VII.

चाय पर क्यूरेट।

कैरोलिन हेलस्टोन महज अठारह वर्ष की थीं, और अठारह वर्ष की उम्र में जीवन की सच्ची कहानी अभी शुरू होनी बाकी होती है। उससे पहले हम एक कहानी सुनते हैं, एक अद्भुत काल्पनिक कथा, कभी मनमोहक, कभी दुखद, लगभग हमेशा अवास्तविक। उससे पहले हमारी दुनिया वीरगाथाओं से भरी होती है, उसके निवासी आधे दिव्य या आधे दानव जैसे होते हैं; उसके दृश्य स्वप्नलोक जैसे होते हैं; प्रकृति में पाए जाने वाले दृश्यों से कहीं अधिक घने जंगल और विचित्र पहाड़ियाँ, चमकीले आकाश, अधिक खतरनाक जल, मीठे फूल, अधिक लुभावने फल, चौड़े मैदान, उजाड़ रेगिस्तान, धूप से भरे खेत, हमारी जादुई पृथ्वी पर फैले होते हैं। उससे पहले हम किस तरह के अद्भुत चंद्रमा को निहारते हैं! उसके रूप को देखकर हमारे हृदय कांपना उसकी अवर्णनीय सुंदरता का साक्षी है! जहाँ तक हमारे सूर्य की बात है, वह एक जलता हुआ स्वर्ग है - देवताओं का लोक।

उस समय, अठारह वर्ष की आयु में, मायावी, खोखले सपनों की सीमाओं के निकट पहुँचते हुए, परियों की भूमि हमारे पीछे छूट जाती है, वास्तविकता के किनारे सामने उठते हैं। ये किनारे अभी भी दूर हैं; वे इतने नीले, कोमल, सौम्य दिखते हैं कि हम उन तक पहुँचने के लिए तरसते हैं। धूप में हम नीले आकाश के नीचे हरियाली देखते हैं, जैसे वसंत ऋतु के घास के मैदान; हमें चाँदी जैसी लकीरों की झलक मिलती है, और हम बहते जल की कल्पना करते हैं। काश हम इस भूमि तक पहुँच पाते, हम सोचते हैं कि फिर भूख-प्यास नहीं रहेगी; जबकि सच्चे आनंद का स्वाद चखने से पहले कई वीरान रास्तों, और अक्सर मृत्यु की बाढ़, या मृत्यु के समान ठंडी और लगभग काली दुःख की धारा को पार करना पड़ता है। जीवन का हर आनंद अर्जित करना पड़ता है; और यह कितना कठिन होता है, यह केवल वही जानते हैं जिन्होंने महान पुरस्कारों के लिए संघर्ष किया है। विजय की माला उसके माथे पर लहराने से पहले योद्धा के माथे पर लाल रक्त की बूंदें चमकनी चाहिए।

अठारह वर्ष की आयु में हमें इसका एहसास नहीं होता। आशा, जब हम पर मुस्कुराती है और आने वाले कल की खुशियों का वादा करती है, तो हम उस पर पूर्ण विश्वास कर लेते हैं; प्रेम, जब किसी खोए हुए देवदूत की तरह हमारे द्वार पर आता है, तो हम तुरंत उसका स्वागत करते हैं, उसे गले लगा लेते हैं। उसका तरकश दिखाई नहीं देता; यदि उसके तीर लगते भी हैं, तो उनका घाव किसी नए जीवन के रोमांच से

भर देता है। विष का कोई भय नहीं होता, न ही उस चुभन का जिसे कोई जोंक भी नहीं निकाल सकती। वह खतरनाक जुनून—जो अपने कुछ रूपों में हमेशा पीड़ादायक होता है; कई रूपों में तो पूरी तरह पीड़ादायक—अकेले ही अच्छा माना जाता है। संक्षेप में, अठारह वर्ष की आयु में अनुभव के विद्यालय में प्रवेश करना होता है, और उसके विनम्र, कुचलने वाले, पीसने वाले, लेकिन फिर भी शुद्ध करने वाले और स्फूर्तिदायक पाठ सीखने होते हैं।

हाय, अनुभव! आपके जैसा कठोर और भावहीन चेहरा किसी और गुरु का नहीं, न ही आपके जैसा काला वस्त्र, न ही आपके जैसा भारी दंड, न ही कोई इतना निर्दयी हाथ से नौसिखिए को उसके कार्य की ओर इतना सख्ती से खींचता है और न ही उसे इतने अप्रतिरोध्य अधिकार से उसे सीखने के लिए विवश करता है। केवल आपके मार्गदर्शन से ही पुरुष या स्त्री जीवन के उफानों में सुरक्षित मार्ग पा सकते हैं; इसके बिना वे कैसे ठोकर खाते हैं, कैसे भटकते हैं! वे किन वर्जित क्षेत्रों में प्रवेश करते हैं, किन भयानक ढलानों पर धकेल दिए जाते हैं!

रॉबर्ट द्वारा घर पहुँचाए जाने के बाद कैरोलीन अपने चाचा के साथ शाम का शेष समय बिताना नहीं चाहती थी। जिस कमरे में वे बैठे थे, वह उसके लिए बहुत पवित्र स्थान था; वह शायद ही कभी वहाँ जाती थी; और आज रात प्रार्थना की घंटी बजने तक वह अलग ही रही। शाम की प्रार्थना सभा का एक हिस्सा श्री हेलस्टोन के घर में प्रचलित पूजा विधि थी। उन्होंने इसे अपनी सामान्य नाक से निकलने वाली, स्पष्ट, ऊँची और नीरस आवाज़ में पढ़ा। प्रार्थना समाप्त होने पर, उनकी भतीजी, अपनी आदत के अनुसार, उनके पास गई।

शुभ रात्रि, चाचा जी।

“अरे! तुम तो सारा दिन इधर-उधर घूमते रहे हो – लोगों से मिलते रहे, बाहर खाना खाते रहे, और न जाने क्या-क्या!”

“केवल कॉटेज में।”

और क्या तुमने सबक सीख लिया है?

"हाँ।"

“और एक शर्ट बनाई?”

"केवल एक भाग।"

“ठीक है, इतना काफी है। सिलाई का काम जारी रखो, कमीज़ बनाना, गाउन

बनाना और पाई क्रस्ट बनाना सीखो, और एक दिन तुम एक समझदार औरत बन जाओगी। अब सो जाओ। मैं यहाँ एक पर्चे पर काम कर रही हूँ।"

इस समय भतीजी अपने छोटे से शयनकक्ष में बंद थी, दरवाजा कुंडी से बंद था, उसने सफेद ड्रेसिंग गाउन पहन रखा था, उसके लंबे बाल खुले हुए थे और घने, मुलायम और लहराते हुए उसकी कमर तक गिर रहे थे; और जैसे ही उसने कंघी करने के काम से आराम किया, उसने अपना गाल हाथ पर टिकाया और अपनी निगाहें कालीन पर टिका दीं, उसके सामने वे दृश्य उभर आए, और उसके चारों ओर सिमट गए जो हम अठारह वर्ष की आयु में देखते हैं।

उसके मन में विचार चल रहे थे, मानो मधुरता से, क्योंकि सुनते हुए वह मुस्कुरा रही थी। ध्यानमग्न अवस्था में वह सुंदर लग रही थी; लेकिन उस कमरे में वह उससे कहीं अधिक उज्ज्वल थी - युवा आशा की आत्मा। इस मीठी भविष्यवाणी के अनुसार, उसे निराशा का सामना नहीं करना था, अब उसे उदासी महसूस नहीं करनी थी; वह ग्रीष्म ऋतु के एक नए दिन में प्रवेश कर चुकी थी - कोई झूठी सुबह नहीं, बल्कि वसंत ऋतु की सच्ची सुबह - और उसका सूरज जल्दी ही उगेगा। अब उसके लिए यह सोचना असंभव था कि वह भ्रम का शिकार है; उसकी उम्मीदें उचित लग रही थीं, जिस आधार पर वे टिकी थीं वह ठोस प्रतीत हो रहा था।

"जब लोग प्यार करते हैं, तो अगला कदम शादी करना होता है," यह उनका तर्क था। "अब, मैं रॉबर्ट से प्यार करती हूँ, और मुझे पूरा यकीन है कि रॉबर्ट भी मुझसे प्यार करता है। मैंने पहले भी कई बार ऐसा सोचा है; आज मैंने इसे महसूस किया। शेनियर की कविता दोहराने के बाद जब मैंने उसकी ओर देखा, तो उसकी आँखों (कितनी खूबसूरत आँखें हैं उसकी!) ने मेरे दिल में सच्चाई उतार दी। कभी-कभी मुझे उससे बात करने में डर लगता है, कहीं मैं बहुत खुलकर न बोल दूँ, कहीं मैं आगे बढ़कर बात करने वाली न लगूँ—क्योंकि मैंने कई बार ज़रूरत से ज़्यादा, अनावश्यक शब्दों पर पछतावा किया है, और मुझे डर था कि मैंने उसकी अपेक्षा से ज़्यादा कह दिया है, और वह मेरी इस नासमझी को नापसंद करेगा; लेकिन आज रात मैं कोई भी बात कहने की हिम्मत कर सकती थी, वह इतना उदार था। गली में चलते हुए वह कितना दयालु था! वह चापलूसी या मूर्खतापूर्ण बातें नहीं करता; उसका प्रेम-प्रसंग (मेरा मतलब मित्रता से है; बेशक मैं अभी उसे अपना प्रेमी नहीं मानती, लेकिन मुझे उम्मीद है कि वह एक दिन ऐसा होगा) वैसा नहीं है जैसा हम किताबों में पढ़ते हैं,—

यह कहीं बेहतर है—मौलिक, शांत, मर्दाना, सच्चा। मैं मुझे वो पसंद है; अगर वो मुझसे शादी करे तो मैं उसकी बेहतरीन पत्नी बनूंगी; मैं उसे उसकी कमियां बताऊंगी (क्योंकि उसमें कुछ कमियां हैं), लेकिन मैं उसकी सुविधा का ख्याल रखूंगी, उसका ख्याल रखूंगी और उसे खुश रखने की पूरी कोशिश करूंगी। अब, मुझे पूरा यकीन है कि कल उसे ठंड नहीं लगेगी। मुझे लगभग पक्का यकीन है कि कल शाम या तो वो यहां आएगा या मुझे वहां चलने के लिए कहेगा।

उसने जलपरी जैसे लंबे बालों में फिर से कंघी करना शुरू किया। बालों को संवारते हुए उसने अपना सिर घुमाया और शीशे में अपना चेहरा और आकृति देखी। ऐसे प्रतिबिंब आम लोगों को गंभीर बना देते हैं: उनकी अपनी आँखें छवि से मोहित नहीं होतीं; उन्हें विश्वास होता है कि दूसरों की आँखों को इसमें कोई आकर्षण नहीं दिखता। लेकिन सुंदरी स्वाभाविक रूप से अन्य निष्कर्ष निकालती है: तस्वीर मनमोहक है, और मनमोहक होनी ही चाहिए। कैरोलीन ने एक आकृति, एक सिर देखा, जो उस मुद्रा और उस भाव के साथ डैगरेओटाइप में कैद होने पर सुंदर लगता। वह इस दृश्य से अपनी आशाओं की पुष्टि पाने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती थी। फिर वह अटूट प्रसन्नता के साथ अपने पलंग की ओर चली गई।

अगले दिन भी वह उतने ही प्रसन्न भाव से उठी। जब वह अपने चाचा के नाश्ते के कमरे में दाखिल हुई और कोमल प्रसन्नता से उन्हें सुप्रभात कहा, तो स्वयं उस हट्टे-कट्टे आदमी को भी एक पल के लिए लगा कि उसकी भतीजी "एक सुंदर लड़की" बन रही है। आम तौर पर वह उनके साथ शांत और संकोची रहती थी—बहुत आज्ञाकारी, लेकिन कम बोलने वाली; लेकिन आज सुबह उसके पास कहने के लिए बहुत कुछ था। उनके बीच केवल मामूली विषयों पर ही चर्चा हो पाती थी; क्योंकि एक महिला—एक लड़की—के साथ श्री हेलस्टोन किसी और विषय पर बात नहीं करते थे। वह सुबह-सुबह बगीचे में टहलने गई थी, और उसने उन्हें बताया कि वहाँ कौन-कौन से फूल खिलने लगे हैं; उसने पूछा कि माली कब आकर क्यारियों की छंटाई करेगा; उसने उन्हें बताया कि कुछ सारस पक्षी गिरजाघर के टावर में अपने घोंसले बनाने लगे हैं (ब्रायरफील्ड चर्च ब्रायरफील्ड रेक्टरी के पास था); उसने आश्चर्य व्यक्त किया कि घंटीघर की घंटियों की आवाज़ उन्हें डराती क्यों नहीं है।

श्री हेलस्टोन ने कहा कि "वे उन अन्य मूर्खों की तरह थे जिन्होंने अभी-अभी जोड़ी बनाई थी - क्षण भर के लिए असुविधा के प्रति असंवेदनशील।" कैरोलिन, शायद

अपने क्षणिक अच्छे मूड से कुछ अधिक साहसी होकर, यहाँ एक ऐसी टिप्पणी करने का साहस कर बैठी जो उसने अपने आदरणीय रिश्तेदार द्वारा की गई टिप्पणियों पर पहले कभी नहीं की थी।

“चाचा जी,” उसने कहा, “जब भी आप शादी की बात करते हैं, तो उसका तिरस्कार करते हैं। क्या आपको लगता है कि लोगों को शादी नहीं करनी चाहिए?”

"अविवाहित रहना निस्संदेह सबसे समझदारी भरा निर्णय है, खासकर महिलाओं के लिए।"

क्या सभी विवाह दुखी होते हैं?

"लाखों विवाह नाखुशहाल हैं। अगर हर कोई सच कबूल कर ले, तो शायद सभी कमोबेश नाखुश हों।"

“जब आपको किसी जोड़े की शादी कराने के लिए बुलाया जाता है तो आप हमेशा परेशान हो जाते हैं। क्यों?”

क्योंकि कोई भी व्यक्ति सरासर मूर्खता के कृत्य में सहायक बनना पसंद नहीं करता।

श्री हेलस्टोन इतनी सहजता से बोल रहे थे मानो उन्हें अपनी भतीजी को इस मुद्दे पर खरी-खोटी सुनाने का मौका पाकर काफी खुशी हो रही हो। अब तक सवालों के जवाब में मिली निश्चिंतता से उत्साहित होकर, भतीजी ने थोड़ा और आगे बढ़कर सवाल पूछे।

"लेकिन," उसने कहा, "यह सरासर मूर्खता क्यों होनी चाहिए? अगर दो लोग एक दूसरे को पसंद करते हैं, तो उन्हें साथ रहने के लिए सहमत क्यों नहीं होना चाहिए?"

“वे एक-दूसरे से ऊब जाते हैं—एक महीने में ही। एक साथी जीवनसाथी नहीं होता; वह तो सहयात्री होता है।”

कैरोलिन की अगली टिप्पणी के पीछे भोलापन या सरलता का भाव बिल्कुल नहीं था; बल्कि यह ऐसे विचारों के प्रति घृणा और उन्हें रखने वाले व्यक्ति के प्रति असंतोष की भावना थी।

“चाचा जी, कोई तो यह सोचेगा कि आपकी कभी शादी ही नहीं हुई। कोई तो यह सोचेगा कि आप एक बूढ़े कुंवारे हैं।”

"व्यवहारिक रूप से, मैं ऐसा ही हूँ।"

लेकिन आपकी शादी हो चुकी है। फिर आपने शादी करके इतनी असंगत स्थिति

क्यों पैदा की?

"हर इंसान अपने जीवन में एक या दो बार पागल हो जाता है।"

"तो तुम मेरी चाची से तंग आ गए थे, और मेरी चाची तुमसे, और तुम दोनों साथ में दुखी थे?"

श्री हेलस्टोन ने अपने व्यंग्यात्मक होंठ बाहर निकाले, अपने भूरे माथे पर झुर्रियां डालीं और एक अस्पष्ट सी आवाज निकाली।

"क्या वह आपको पसंद नहीं आई? क्या उसका स्वभाव अच्छा नहीं था? क्या आप उसके साथ सहज नहीं हो पाए? क्या उसकी मृत्यु पर आपको दुख नहीं हुआ?"

"कैरोलीन," श्री हेलस्टोन ने अपना हाथ धीरे से मेज के एक-दो इंच करीब लाते हुए और फिर अचानक महोगनी की मेज पर पटकते हुए कहा, "यह समझ लो: सामान्य बातों को बारीकियों से जोड़ना भद्दा और बचकाना है। हर मामले में नियम और अपवाद होते हैं। तुम्हारे सवाल बेवकूफी भरे और बचकाने हैं। अगर तुमने नाश्ता कर लिया है तो घंटी बजा दो।"

नाश्ता परोसे जाने के बाद, चाचा-भतीजी का अलग होना और रात के खाने तक दोबारा न मिलना आम रिवाज था; लेकिन आज भतीजी कमरे से बाहर जाने के बजाय खिड़की के पास जाकर बैठ गई। श्री हेलस्टोन ने बेचैनी से एक-दो बार चारों ओर देखा, मानो वह चाहते हों कि वह चली जाए; लेकिन वह खिड़की से बाहर देख रही थी और उन्हें नज़रअंदाज़ करती हुई प्रतीत हुई: इसलिए उन्होंने अपना सुबह का अखबार पढ़ना जारी रखा— संयोग से यह अखबार विशेष रूप से दिलचस्प था, क्योंकि प्रायद्वीप में अभी-अभी नई हलचलें हुई थीं, और अखबार के कुछ कॉलम जनरल लॉर्ड वेलिंगटन के लंबे संदेशों से भरे हुए थे। इस बीच, उन्हें इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उनकी भतीजी के मन में क्या विचार चल रहे थे— वे विचार जो पिछले आधे घंटे की बातचीत ने पुनर्जीवित तो कर दिए थे, लेकिन नए सिरे से उत्पन्न नहीं हुए थे; वे अब छत्ते में परेशान मधुमक्खियों की तरह उथल-पुथल मचा रहे थे, लेकिन वर्षों बीत चुके थे जब उन्होंने पहली बार उनके मस्तिष्क में अपनी कोशिकाएं बनाई थीं।

वह उसके चरित्र, उसके स्वभाव की समीक्षा कर रही थी, विवाह के बारे में उसके विचारों को दोहरा रही थी। उसने पहले भी कई बार इन विचारों की समीक्षा की थी और अपने और उसके मन के बीच की खाई को नापा था; और फिर, उस चौड़ी और

गहरी खाई के दूसरी ओर, उसने देखा था, और अब भी देख रही थी, अपने चाचा के बगल में खड़ी एक और आकृति - एक अजीब सी आकृति, धुंधली, भयावह, लगभग अवास्तविक - उसके अपने पिता, जेम्स हेलस्टोन, मैथ्यूसन हेलस्टोन के भाई की धुंधली सी छवि।

उसके कानों तक उसके पिता के चरित्र के बारे में अफवाहें पहुँच चुकी थीं; पुराने नौकरों ने इशारे किए थे; वह यह भी जानती थी कि वह अच्छा आदमी नहीं था, और वह कभी उसके प्रति दयालु नहीं था। उसे कुछ सप्ताह याद आए—एक भयावह याद—जो उसने किसी बड़े शहर में उसके साथ बिताए थे, जब उसके पास कपड़े पहनाने या उसकी देखभाल करने के लिए कोई नौकरानी नहीं थी; जब उसे दिन-रात एक ऊँची अटारी में बंद रखा जाता था, बिना कालीन के, बिना पर्दे वाले बिस्तर पर, और नाममात्र का कोई अन्य फर्नीचर नहीं था; जब वह हर सुबह जल्दी बाहर जाता था, और अक्सर दिन में उसे खाना देना भूल जाता था, और रात में जब वह लौटता था, तो पागलों जैसा, क्रोधी, भयानक, या—और भी दर्दनाक—मूर्ख, मंदबुद्धि, बेसुध जैसा व्यवहार करता था। वह जानती थी कि वह उस जगह बीमार पड़ गई थी, और एक रात, जब वह बहुत बीमार थी, वह बड़बड़ाते हुए कमरे में आया और कहा कि वह उसे मार डालेगा, क्योंकि वह उसके लिए बोझ थी। उसकी चीखों ने मदद पहुँचाई; और जिस क्षण उसे उससे बचाया गया, उस क्षण से उसने उसे कभी नहीं देखा, सिवाय एक मृत व्यक्ति के रूप में जो अपने ताबूत में पड़ा था।

वह उसके पिता थे। उसकी एक माँ भी थी, हालाँकि श्री हेलस्टोन ने कभी उस माँ के बारे में उससे बात नहीं की, हालाँकि उसे याद नहीं था कि उसने उसे कभी देखा था; लेकिन वह जानती थी कि वह जीवित थी। यह माँ उस शराबी की पत्नी थी। उनका विवाह कैसा रहा था? कैरोलीन, जाली से मुड़कर, जहाँ से वह सारस पक्षियों को देख रही थी (हालाँकि उन्हें देखे बिना), धीमी आवाज़ में, उदास और कड़वे स्वर में, कमरे की चुप्पी तोड़ते हुए बोली, —

"मुझे लगता है कि आपने मेरे माता-पिता के विवाह को देखकर ही इसे दुखद बताया है। अगर मेरी माँ को भी वही सब सहना पड़ा जो मुझे पापा के साथ रहते हुए सहना पड़ा, तो उनका जीवन कितना भयानक रहा होगा।"

इस तरह संबोधित किए जाने पर श्री हेलस्टोन अपनी कुर्सी पर घूम गए और अपने चश्मे के ऊपर से अपनी भतीजी को देखा। वे अचंभित रह गए।

उसके माता-पिता! उसके मन में अपने माता-पिता का ज़िक्र करने की क्या सूझी, जिनके बारे में उसने बारह साल उसके साथ रहने के दौरान कभी उससे बात नहीं की थी? ये विचार उसके अपने थे, या उसके मन में अपने माता-पिता के बारे में कोई यादें या अटकलें थीं, यह वह सोच भी नहीं सकता था।

“तुम्हारे माता-पिता? उनके बारे में तुमसे कौन बात कर रहा है?”

“कोई नहीं; लेकिन मुझे पापा के बारे में कुछ-कुछ याद है, और मुझे मम्मी पर तरस आता है। वो कहाँ हैं?”

"वह कहाँ है?" यह सवाल कैरोलिन के होठों पर सैकड़ों बार पहले भी आ चुका था, लेकिन अब तक उसने इसे कभी नहीं बोला था।

“मुझे ठीक से पता नहीं,” श्री हेलस्टोन ने जवाब दिया; “मैं उससे बहुत कम परिचित था। सालों से उससे कोई बात नहीं हुई है: लेकिन वह जहाँ भी है, वह तुम्हारे बारे में कुछ नहीं सोचती; वह कभी तुम्हारे बारे में पूछताछ नहीं करती। मुझे लगता है कि वह तुमसे मिलना नहीं चाहती। चलो, स्कूल का समय हो गया है। तुम दस बजे अपने चचेरे भाई के पास जाते हो, है ना? समय हो गया है।”

शायद कैरोलीन और भी कुछ कहती; लेकिन फैनी अंदर आकर अपने मालिक को बताया कि चर्च के अधिकारी उनसे चर्च के कमरे में बात करना चाहते हैं। वह जल्दी से उनके पास गए, और उनकी भतीजी तुरंत कुटिया की ओर चल पड़ी।

पादरी के निवास से हॉलो मिल तक का रास्ता ढलान वाला था; इसलिए वह लगभग पूरा रास्ता दौड़ती रही। व्यायाम, ताजी हवा, रॉबर्ट को देखने की उम्मीद, कम से कम उसके घर के पास होने की उम्मीद ने उसके कुछ उदास मन को तुरंत तरोताज़ा कर दिया। सफेद घर के पास पहुँचते ही और चक्की की गड़गड़ाहट और उसके बहते पानी की आवाज़ सुनते ही, उसने सबसे पहले मूर को अपने बगीचे के द्वार पर देखा। वह वहाँ अपनी बेल्ट वाली हॉलैंड ब्लाउज पहने, सिर पर हल्की टोपी लगाए खड़ा था, जो उस पर जँच रही थी। वह गली की ओर देख रहा था, अपने चचेरे भाई के आने की दिशा में नहीं। वह एक विलो पेड़ के पीछे थोड़ा छिपकर रुक गई और उसके हाव-भाव को गौर से देखने लगी।

“उसका कोई मुकाबला नहीं,” उसने सोचा। “वह जितना बुद्धिमान है उतना ही सुंदर भी है। उसकी नज़र कितनी पैनी है! उसके चेहरे के भाव कितने स्पष्ट और जीवंत हैं — पतले और गंभीर, फिर भी आकर्षक! मुझे उसका चेहरा बहुत पसंद है, मुझे

उसका रूप-रंग बहुत पसंद है, मुझे वह बहुत अच्छा लगता है — उन सभी सुस्त पादरियों से कहीं बेहतर — किसी से भी बेहतर; प्यारा रॉबर्ट!"

वह शीघ्र ही "प्यारे रॉबर्ट" के पास जाना चाहती थी। जहाँ तक उसकी बात है, जब उसने उसे देखा, तो मुझे लगता है कि अगर संभव होता तो वह उसकी आँखों के सामने से एक प्रेत की तरह गायब हो जाता; लेकिन एक ठोस वास्तविकता होने के नाते, वह अभिवादन करने के लिए बाध्य था। उसने संक्षिप्त अभिवादन किया। यह चचेरे भाई जैसा, भाई जैसा, मित्र जैसा था, प्रेमी जैसा बिलकुल नहीं। पिछली रात का अनाम आकर्षण उसके व्यवहार से गायब हो गया था: वह अब पहले जैसा आदमी नहीं रहा था: या कम से कम, उसके सीने में पहले जैसा दिल नहीं धड़क रहा था। घोर निराशा, तीखा आघात! पहले तो उत्सुक लड़की इस बदलाव पर विश्वास नहीं कर पाई, हालाँकि उसने इसे देखा और महसूस किया था। उसके हाथ से अपना हाथ हटाना मुश्किल था, जब तक कि उसने कम से कम थोड़ा सा स्नेहपूर्ण स्पर्श न दिया हो; उसकी आँखों से नज़रें हटाना मुश्किल था, जब तक कि उसकी नज़रों ने उस ठंडे स्वागत से कहीं अधिक स्नेहपूर्ण भाव व्यक्त न किया हो।

एक पुरुष प्रेमी इतना निराश हो जाए तो वह बोलकर स्पष्टीकरण मांग सकता है, जबकि एक स्त्री प्रेमी कुछ नहीं कह सकती; अगर वह ऐसा करे तो परिणाम शर्म और पीड़ा, आत्म-विश्वासघात के लिए अंतर्मन का पश्चाताप होगा। प्रकृति ऐसे प्रदर्शन को अपनी प्रवृत्ति के विरुद्ध विद्रोह मानकर प्रतिशोधपूर्वक आत्म-घृणा के वज्रपात से गुप्त रूप से प्रहार करेगी। मामले को जैसा है वैसा ही स्वीकार करो: कोई प्रश्न न पूछो, कोई विरोध न करो; यही तुम्हारी सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता है। तुमने रोटी की उम्मीद की थी, और तुम्हें पत्थर मिला: उसे चबाकर तोड़ दो, और चीखो मत क्योंकि नसें घायल हो गई हैं; इस बात पर संदेह मत करो कि तुम्हारा मानसिक पेट - यदि तुम्हारे पास ऐसा कुछ है - शुतुरमुर्ग की तरह मजबूत है; पत्थर पच जाएगा। तुमने अंडे के लिए हाथ बढ़ाया, और भाग्य ने उसमें बिच्छू डाल दिया। घबराओ मत: उपहार पर अपनी उंगलियां मजबूती से बंद करो; उसे तुम्हारी हथेली में डंक मारने दो। कोई बात नहीं; समय बीतने पर, जब आपके हाथ और बांह पीड़ा से सूजकर कांपने लगेंगे, तब निचोड़ा हुआ बिच्छू मर जाएगा, और आप बिना आंसू बहाए सहन करने का महान पाठ सीख लेंगे। अपने शेष जीवन में, यदि आप इस परीक्षा में सफल होते हैं - कहा जाता है कि कुछ लोग इससे मर जाते हैं - तो आप अधिक मजबूत, अधिक बुद्धिमान

और कम संवेदनशील होंगे। शायद उस समय आपको इसका एहसास न हो, और इसलिए आप उस आशा से साहस नहीं ले सकते। हालांकि, जैसा कि संकेत दिया गया है, प्रकृति ऐसे मामलों में एक उत्कृष्ट मित्र है, जो होठों को बंद कर देती है, बोलने पर रोक लगाती है, और एक शांत दिखावे का आदेश देती है - एक ऐसा दिखावा जो अक्सर पहले सहज और प्रसन्नतापूर्ण लगता है, समय के साथ दुख और उदासी में बदल जाता है, फिर समाप्त हो जाता है, और एक सुविधाजनक संयम छोड़ जाता है, जो आधा कड़वा होने के बावजूद कम मजबूत नहीं होता।

आधा कड़वा! क्या यह गलत है? नहीं; इसे कड़वा ही होना चाहिए: कड़वाहट शक्ति है—यह एक टॉनिक है। तीव्र पीड़ा के बाद मिलने वाली मीठी, सौम्य शक्ति कहीं नहीं मिलती; इसकी बात करना भ्रम है। यातना के बाद उदासीनता और थकावट हो सकती है। यदि ऊर्जा शेष रहती है, तो वह काफी खतरनाक ऊर्जा होगी—अन्याय का सामना करने पर घातक।

किसने "पुइर मैरी ली" की गाथा पढ़ी है— वह पुरानी स्कॉटिश गाथा, जिसे न जाने किस पीढ़ी में और किसने लिखा था? मैरी के साथ बुरा बर्ताव हुआ था—शायद उसे उस सच पर विश्वास दिलाया गया था जो झूठ था। वह शिकायत नहीं कर रही है, लेकिन वह बर्फीले तूफान में अकेली बैठी है, और आप उसके विचारों को सुन सकते हैं। ये विचार उसकी परिस्थितियों में एक आदर्श नायिका के नहीं हैं, बल्कि एक गहरी भावना से भरी, तीव्र आक्रोश वाली किसान लड़की के हैं। पीड़ा ने उसे घर के चूल्हे से दूर बर्फ से ढकी पहाड़ियों पर ला खड़ा किया है। "ठंडी बर्फ" के नीचे दुबकी हुई, वह हर भयानक दृश्य को याद करती है— "पीली-सी दिखने वाली आवारा बिल्ली", "बालों वाला सांप", "चाँद के सामने झुकने वाला बूढ़ा बच्चा", "शाम का भूत", "खट्टा बुलिस्टर", "टेड़ की पीठ पर दूध"। वह इन सबसे नफरत करती है, लेकिन "वह रॉबिन-ए-री से सबसे ज्यादा नफरत करती है।"

"ओह, एक समय था जब मैं उस सुंदर जलप्रपात के किनारे खुशी से रहता था—
पूरी दुनिया मुझसे प्यार करती थी;
लेकिन अब मुझे ठंडी हवा के नीचे बैठकर शोक मनाना होगा।
और काले रॉबिन-ए-री को श्राप दो!
"तो फिर दूर हो जाओ, हे कड़वी, चुभने वाली हवा।"
और घनी छाया वाले पेड़ से सरसराहट की आवाज आई,

और मुझे बर्फ में जल्दी से लपेट दो,
और मुझे कभी सूरज की रोशनी न देखने दो!
"ओह, कभी पिघलना मत, हे बर्फ की माला,"
मेरे लिए ऐसा करना बहुत ही दयालुतापूर्ण है;
लेकिन मुझे उपहास और ठहाकों से बचाओ
ओह, रॉबिन-ए-री जैसे खलनायक!

लेकिन पिछले एक-दो पन्नों में जो कुछ कहा गया है, उसका कैरोलिन हेलस्टोन की भावनाओं या उसके और रॉबर्ट मूर के बीच के संबंधों से कोई लेना-देना नहीं है। रॉबर्ट ने उसके साथ कोई अन्याय नहीं किया था; उसने उससे कोई झूठ नहीं बोला था; अगर किसी को दोषी ठहराया जाना था, तो वह खुद कैरोलिन हेलस्टोन थी। उसके मन में जो कड़वाहट भरी थी, वह उसी के सिर पर उंडेल दी जानी चाहिए थी और उंडेली जाएगी। उसने बिना कहे ही प्यार किया था - एक स्वाभाविक, कभी-कभी अपरिहार्य संयोग, लेकिन दुखों से भरा हुआ।

रॉबर्ट सचमुच कभी-कभी उससे प्रेम करता हुआ प्रतीत होता था; पर क्यों? क्योंकि उसने खुद को उसके लिए इतना आकर्षक बना लिया था कि वह अपने तमाम प्रयासों के बावजूद, अपने मन में उठने वाली भावनाओं को छिपा नहीं सका, जिन्हें उसका विवेक और इच्छाशक्ति स्वीकार नहीं करती थी। वह उससे घनिष्ठ संबंध तोड़ने के लिए दृढ़ संकल्पित था, क्योंकि वह अपने प्रेम को उसमें उलझने नहीं देना चाहता था, और न ही अपनी बुद्धि के विरुद्ध जाकर ऐसे विवाह में बंधना चाहता था जिसे वह अनुचित मानता था। अब, उसे क्या करना था? अपनी भावनाओं के आगे झुक जाना था, या उन्हें पराजित करना था? उसका पीछा करना था, या खुद को ही कोसना था? यदि वह कमजोर है, तो वह पहला उपाय अपनाएगी - उसका सम्मान खो देगी और उसकी घृणा मोल लेगी; यदि वह समझदार है, तो वह अपनी भावनाओं की बागडोर स्वयं संभालेगी, और अपने अशांत क्षेत्र को वश में करने और उसे सही दिशा में लाने का संकल्प लेगी। वह जीवन को यथार्थ रूप से देखने का निश्चय करेगी; इसकी कठोर सच्चाइयों को गंभीरता से सीखना शुरू करेगी, और इसकी पेचीदा समस्याओं का गहन अध्ययन करेगी।

ऐसा प्रतीत हुआ कि उसमें थोड़ी सी भी समझ थी, क्योंकि उसने बिना किसी शिकायत या प्रश्न के, बिना किसी हलचल या आंसू बहाए चुपचाप रॉबर्ट को छोड़

दिया, हमेशा की तरह हॉर्टेंस के अधीन अपनी पढ़ाई में जुट गई, और रात के खाने के समय बिना देर किए घर चली गई।

जब उसने भोजन कर लिया और खुद को पादरी के ड्राइंग रूम में अकेला पाया, अपने चाचा को पोर्ट वाइन का संयमित गिलास पीते हुए छोड़कर, तो उसके मन में जो दुविधा उत्पन्न हुई और जिसने उसे शर्मिंदा कर दिया, वह यह थी, "मैं इस दिन को कैसे गुजारूँगी?"

पिछली रात उसने उम्मीद की थी कि यह भी कल की तरह ही बीतेगी, कि शाम फिर से खुशी और रॉबर्ट के साथ गुजरेगी। आज सुबह उसे अपनी गलती का एहसास हो गया था; फिर भी वह चैन से नहीं बैठ पा रही थी, क्योंकि उसे यकीन था कि हॉलो की कुटिया में वापस जाने या मूर को फिर से उसकी संगति में लाने का कोई मौका नहीं मिलेगा।

चाय के बाद वह एक से अधिक बार उसके चाचा के साथ एक घंटा बिताने के लिए ऊपर आ चुका था। दरवाज़े की घंटी बजी, शाम ढलते ही गलियारे में उसकी आवाज़ सुनाई दी, जब उसे ऐसी खुशी की ज़रा भी उम्मीद नहीं थी; और ऐसा दो बार तब हुआ जब उसने उसके साथ विशेष संयम बरता था; और हालाँकि वह उसके चाचा की उपस्थिति में उससे शायद ही कभी बात करता था, फिर भी अपने प्रवास के दौरान जब वह उसकी काम करने की मेज के सामने बैठा था, तो उसने उसे दया भरी निगाहों से देखा था। उसने उससे जो कुछ शब्द कहे थे, वे सुकून देने वाले थे; शुभ रात्रि कहते समय उसका तरीका सौहार्दपूर्ण था। अब, वह आज शाम आ सकता है, झूठी आशा ने कहा। वह लगभग जानती थी कि यह झूठी आशा ही फुसफुसा रही है, फिर भी उसने सुना।

उसने पढ़ने की कोशिश की - उसके विचार भटकते रहे; उसने सिलाई करने की कोशिश की - हर टांका उसके लिए उबाऊ था, यह काम असहनीय रूप से नीरस था; उसने अपनी डेस्क खोली और एक फ्रेंच निबंध लिखने का प्रयास किया - उसने गलतियों के सिवा कुछ नहीं लिखा।

अचानक दरवाज़े की घंटी ज़ोर से बजी; उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा; वह ड्राइंग रूम के दरवाज़े की ओर दौड़ी, उसे धीरे से खोला और अंदर झाँका। फ़ैनी एक आगंतुक को अंदर आने दे रही थी—एक सज्जन—एक लंबा आदमी—बिल्कुल रॉबर्ट की ऊँचाई का। एक पल के लिए उसने सोचा कि यह रॉबर्ट है—एक पल के लिए वह

खुशी से झूम उठी; लेकिन मिस्टर हेलस्टोन के बारे में पूछने वाली आवाज़ ने उसका भ्रम तोड़ दिया। वह आवाज़ एक आयरिश आवाज़ थी, इसलिए मूर की नहीं, बल्कि पादरी—मैलोन की थी। उसे भोजन कक्ष में ले जाया गया, जहाँ निस्संदेह उसने अपने पादरी को बर्तनों को खाली करने में जल्दी से मदद की।

यह एक उल्लेखनीय तथ्य था कि ब्रायरफील्ड, व्हिनबरी या ननेली के किसी भी घर में जब कोई पादरी भोजन के लिए आता था - चाहे दोपहर का भोजन हो या चाय - तुरंत दूसरा, और अक्सर दो और, उसके पीछे आ जाते थे। ऐसा नहीं था कि वे एक-दूसरे को मिलने का समय बताते थे, बल्कि वे आमतौर पर सभी एक ही समय पर भाग-दौड़ में होते थे; उदाहरण के लिए, जब डोने ने मालोन को उसके आवास पर ढूंढा और वह वहां नहीं मिला, तो उसने पूछा कि वह कहां गया है, और मकान मालकिन से उसके गंतव्य का पता चलने पर, वह पूरी तेजी से उसके पीछे चल पड़ा। यही कारण स्वीटिंग के साथ भी इसी तरह हुआ। इस प्रकार उस दोपहर कैरोलीन के कान तीन बार घंटी की आवाज और अवांछित मेहमानों के आगमन से परेशान हुए; क्योंकि डोने मालोन के पीछे आया था, और स्वीटिंग डोने के पीछे आया था; और तहखाने से भोजन कक्ष में और शराब मंगाई गई (क्योंकि हालांकि बूढ़े हेलस्टोन ने निचले दर्जे के पुरोहितों को उनके अपने तंबुओं में मौज-मस्ती करते हुए देखकर फटकारा था, लेकिन अपने उच्च पदस्थ भोजनालय में वे हमेशा उन्हें अपनी सबसे अच्छी शराब पिलाना पसंद करते थे)। बंद दरवाजों के पीछे से कैरोलीन ने उनकी बचकानी हंसी और उनकी आवाजों की खोखली सी कर्कश आवाज सुनी। उसे डर था कि कहीं वे चाय के लिए न रुक जाएं, क्योंकि उसे उस तिकड़ी के लिए चाय बनाने में कोई आनंद नहीं आता था। लोग कितना भेदभाव करते हैं! ये तीनों पुरुष थे - युवा पुरुष - मूर की तरह शिक्षित पुरुष; फिर भी, उसके लिए कितना बड़ा अंतर था! उनकी संगति उबाऊ थी - उसकी संगति आनंददायक।

न केवल उन्हें उनके पादरियों की संगति का सौभाग्य प्राप्त था, बल्कि भाग्य इस समय उनके लिए चार और मेहमानों को ला रहा था - महिला मेहमान, सभी एक टट्टू गाड़ी में भरी हुई, जो व्हिनबरी से सड़क पर कुछ भारी कदमों से आगे बढ़ रही थी: एक बुजुर्ग महिला और उनकी तीन सुडौल बेटियाँ उनसे "दोस्ताना ढंग से" मिलने आ रही थीं, जैसा कि उस इलाके का रिवाज था। हाँ, चौथी बार घंटी बजी। फैनी यह सूचना लेकर ड्राइंग रूम में आई, -

"श्रीमती साइक्स और तीनों मिस साइक्स।"

जब कैरोलीन के घर कोई मेहमान आने वाला होता था, तो उसकी आदत होती थी कि वह घबराहट में अपने हाथों को मलने लगती थी, उसका चेहरा थोड़ा लाल हो जाता था और वह जल्दी से, लेकिन हिचकिचाते हुए आगे बढ़ती थी, मानो इस बीच वह यरीहो में होना चाहती हो। ऐसे संकट के समय, वह शिष्टाचार में बुरी तरह से पिछड़ जाती थी, हालाँकि वह एक साल स्कूल में पढ़ चुकी थी। इसलिए, इस बार भी, श्रीमती साइक्स के आने का इंतज़ार करते हुए, उसके छोटे-छोटे सफेद हाथ एक-दूसरे से बुरी तरह उलझे हुए थे।

वह महिला अंदर आई, जो लंबी, चिड़चिड़ी और भद्र स्वभाव की थी, और धर्मपरायणता का दिखावा करती थी, और पादरियों के प्रति बहुत आतिथ्य सत्कार रखती थी। उसकी तीन बेटियाँ भी अंदर आईं, जो देखने में आकर्षक थीं, तीनों ही सुविकसित और कमोबेश सुंदर थीं।

इंग्लैंड की ग्रामीण महिलाओं में एक बात ध्यान देने योग्य है। चाहे वे जवान हों या बूढ़ी, सुंदर हों या सादी, सुस्त हों या चंचल, उन सभी (या लगभग सभी) के चेहरे पर एक खास भाव अंकित होता है, जो मानो कहता है, “मैं जानती हूँ – मैं इस पर गर्व नहीं करती, लेकिन मैं जानती हूँ कि मैं ही उचित का मानक हूँ; इसलिए जो भी मेरे पास आता है या मेरे पास आता है, उसे सावधान रहना चाहिए, क्योंकि जिस भी बात में वे मुझसे भिन्न हैं – चाहे वह पहनावे, व्यवहार, राय, सिद्धांत या आचरण में ही क्यों न हो – उसमें वे गलत हैं।”

श्रीमती और मिस साइक्स, इस बात का अपवाद होने के बजाय, इसकी सत्यता का जीता-जागता उदाहरण थीं। मिस मैरी - एक सुंदर, नेक इरादों वाली और कुल मिलाकर अच्छे स्वभाव की लड़की - अपनी संतुष्टि को कुछ शान से दिखाती थीं, हालांकि उसमें कोई कठोरता नहीं थी। मिस हैरियट - एक खूबसूरत महिला - इसे और भी ज्यादा दिखावटी ढंग से धारण करती थीं; उनका चेहरा घमंडी और भावहीन लगता था। मिस हन्ना, जो अभिमानी, तेजतर्रार और महत्वाकांक्षी थीं, अपनी संतुष्टि को सचेत रूप से और खुलेआम प्रदर्शित करती थीं। माँ ने इसे अपनी उम्र और धार्मिक प्रतिष्ठा के अनुरूप गंभीरता से दिखाया।

किसी तरह स्वागत समारोह संपन्न हो गया। कैरोलीन "उन्हें देखकर खुश थी" (एक सरासर झूठ), उसने उम्मीद जताई कि वे सब ठीक होंगे, श्रीमती साइक्स की खांसी

ठीक हो गई होगी (श्रीमती साइक्स को पिछले बीस वर्षों से खांसी थी), और यह भी उम्मीद जताई कि मिस साइक्स ने अपनी बहनों को घर पर सुरक्षित छोड़ा होगा। इस पूछताछ के जवाब में, मिस साइक्स, जो संगीत की कुर्सी के सामने तीन कुर्सियों पर बैठी थीं, जहाँ कैरोलीन अनजाने में आकर बैठ गई थी, कुछ सेकंड तक कुर्सी और एक बड़ी आरामकुर्सी के बीच दुविधा में रहने के बाद, जहाँ उसे अंत में याद आया कि उसे श्रीमती साइक्स को बिठाना चाहिए - और वास्तव में उस महिला ने खुद बैठकर उसकी परेशानी कम कर दी - मिस साइक्स ने कैरोलीन को एक साथ झुककर जवाब दिया, जो बहुत ही राजसी और प्रभावशाली था। इसके बाद एक विराम आया। यह झुकना अगले पांच मिनट तक चुप्पी बनाए रखने के लिए था, और ऐसा ही हुआ। श्रीमती साइक्स ने श्री हेलस्टोन के बारे में पूछताछ की और पूछा कि क्या उन्हें गठिया की समस्या फिर से हो गई है, क्या रविवार को दो बार उपदेश देने से उन्हें थकान होती है, और क्या वे अब भी पूरी प्रार्थना सभा में भाग लेने में सक्षम हैं; और जब उन्हें आश्वासन दिया गया कि वे सक्षम हैं, तो उन्होंने और उनकी सभी बेटियों ने एक स्वर में कहा कि वे "अपनी उम्र के हिसाब से एक अद्भुत व्यक्ति" हैं।

एक सेकंड का विराम।

मिस मैरी ने भी जोश में आकर पूछा कि क्या कैरोलीन ने पिछले गुरुवार की रात ननेली में हुई बाइबल सोसाइटी की बैठक में भाग लिया था। सच्चाई के चलते कैरोलीन को नकारात्मक जवाब देना पड़ा - क्योंकि पिछले गुरुवार की शाम वह घर पर बैठी रॉबर्ट द्वारा उधार दी गई एक उपन्यास पढ़ रही थी - और इस जवाब को सुनकर चारों महिलाओं के चेहरे पर एक साथ हैरानी के भाव आ गए।

“हम सब वहाँ थे,” मिस मैरी ने कहा— “मम्मी और हम सब। हमने पापा को भी जाने के लिए मना लिया था। हन्नाह तो ज़िद कर रही थी। लेकिन जब जर्मन मोरावियन पादरी श्री लैंग्वेलिग बोल रहे थे, तब पापा सो गए। मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई, उन्होंने सिर हिलाकर सहमति जताई।”

“और वहाँ डॉ. ब्रॉडबेंट थे,” हन्ना चिल्लाई — “कितने सुंदर वक्ता थे! उनसे ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती थी, क्योंकि वे देखने में लगभग असभ्य व्यक्ति लगते हैं।”

“लेकिन वह कितना प्यारा आदमी था,” मैरी ने बीच में ही टोकते हुए कहा।

“और कितना अच्छा आदमी था, कितना उपयोगी आदमी था,” उसकी माँ ने आगे कहा।

“देखने में तो वह किसी कसाई जैसा लगता था,” सुंदर और स्वाभिमानी हैरियट ने बीच में टोकते हुए कहा। “मैं उसे देख भी नहीं सकती थी। मैंने आँखें बंद करके उसकी बातें सुनीं।”

मिस हेलस्टोन को अपनी अज्ञानता और अक्षमता का एहसास हुआ। डॉ. ब्रॉडबेंट को देखे बिना, वह अपनी राय नहीं दे सकती थीं। तीसरा विराम शुरू हुआ। इस दौरान, कैरोलीन को अपने दिल में यह महसूस हो रहा था कि वह कितनी स्वप्नद्रष्टा है, कितना अव्यावहारिक जीवन जी रही है, और आम दुनिया से सामान्य मेलजोल के लिए उसमें कितनी कम योग्यता है। उसे यह एहसास हो रहा था कि उसने खुद को हॉलो में स्थित सफेद कुटिया से कितना जोड़ लिया है, और उस कुटिया में रहने वाली एक महिला के जीवन में ही उसने अपना सारा संसार समेट लिया है। उसे यह समझ आ रहा था कि यह ठीक नहीं है, और किसी दिन उसे बदलाव करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। यह नहीं कहा जा सकता कि वह बिल्कुल अपने सामने बैठी महिलाओं जैसी बनना चाहती थी, लेकिन वह अपने वर्तमान स्वरूप से श्रेष्ठ बनना चाहती थी, ताकि उनकी गरिमा से कम भयभीत हो।

बातचीत को फिर से जीवंत करने का एकमात्र उपाय जो उसे सूझा, वह था उनसे चाय पर रुकने का अनुरोध करना; और इस शिष्टाचारपूर्ण कार्य को करने में उसे काफी मशक्कत करनी पड़ी। श्रीमती साइक्स ने कहना शुरू किया, "हम आपके बहुत आभारी हैं, लेकिन..." तभी फैनी एक बार फिर अंदर आ गई।

"महोदया, ये सज्जन आज शाम यहीं रुकेंगे," यह संदेश वह श्री हेलस्टोन की ओर से लेकर आई थी।

“आपके यहाँ कौन-कौन से सज्जन हैं?” श्रीमती साइक्स ने पूछा। उनके नाम बताए गए; उन्होंने और उनकी बेटियों ने एक-दूसरे की ओर देखा। पादरी उनके लिए उतने खास नहीं थे जितने कैरोलीन के लिए थे। श्री स्वीटिंग उनके चहेते थे; यहाँ तक कि श्री मैलोन भी, क्योंकि वे एक पादरी थे। “सच में, चूंकि आपके यहाँ पहले से ही मेहमान हैं, मुझे लगता है कि हम यहीं रुकेंगे,” श्रीमती साइक्स ने कहा। “हम एक छोटी सी खुशनुमा टोली बनेंगे। मुझे हमेशा पादरियों से मिलना अच्छा लगता है।”

अब कैरोलीन को उन्हें ऊपर ले जाना पड़ा, शॉल उतारने में उनकी मदद करनी पड़ी, उनके बाल संवारने पड़े और उन्हें सजने-संवरने में सहायता करनी पड़ी; उन्हें ड्राइंग रूम में वापस ले जाना पड़ा, और उनमें नक्काशी की किताबें या यहूदी टोकरी से

खरीदी गई कुछ चीज़ें बाँटनी पड़ीं। हालाँकि वह दान देने में कंजूस थी, फिर भी उसे खरीदारी करनी पड़ी; और अगर उसके पास बहुत पैसा होता, तो जब वह पैसा पादरी के निवास पर लाया जाता - एक भयानक बोझ! - तो वह एक पिन कुशन देने के बजाय सारा स्टॉक खरीद लेती।

जो लोग "यहूदी टोकरी" और "मिशनरी टोकरी" के रहस्यों से परिचित नहीं हैं, उनके लिए संक्षेप में यह बताना शायद उचित होगा कि ये टोकरियाँ विलो की लकड़ी से बनी होती हैं, जो एक बड़े पारिवारिक कपड़ों की टोकरी के बराबर होती हैं। इनका उद्देश्य घर-घर जाकर पिन कुशन, सिलाई की किताबें, कार्ड रैक, वर्क बैग, बच्चों के कपड़े आदि का विशाल संग्रह पहुँचाना होता है। ये वस्तुएं किसी पल्ली की ईसाई महिलाओं द्वारा स्वेच्छा से या अनिच्छा से बनाई जाती हैं और फिर जबरन वहीं के गैर-ईसाई पुरुषों को अत्यधिक ऊँची कीमतों पर बेची जाती हैं। इस तरह की जबरन बिक्री से प्राप्त धनराशि का उपयोग यहूदियों के धर्म परिवर्तन, दस लुप्त जनजातियों की खोज या विश्व की दिलचस्प अश्वेत आबादी के पुनरुत्थान के लिए किया जाता है। प्रत्येक महिला योगदानकर्ता बारी-बारी से एक महीने के लिए टोकरी को अपने पास रखती है, उसके लिए कपड़े सिलती है और फिर उसकी सामग्री को पुरुषों की घटती संख्या पर थोप देती है। जब बारी आती है, तो वह समय वाकई रोमांचक होता है। कुछ उत्साही और व्यापारिक भावना वाली महिलाएं इसे पसंद करती हैं और कठोर हाथों से ऊन कातने वालों को उनके लिए बेकार की चीज़ों के लिए लागत मूल्य से चार-पांच सौ प्रतिशत अधिक मुनाफा कमाने में बेहद आनंद लेती हैं; वहीं दूसरी ओर, कुछ कमजोर दिल वाली महिलाएं इसका विरोध करती हैं और उस टोकरी को देखने के बजाय किसी भी सुबह अपने दरवाजे पर अंधकार के राजकुमार को देखना पसंद करेंगी, जिस पर लिखा होता है, "श्रीमती राउज़ की ओर से शुभकामनाएँ; और कृपया महोदया, वह कहती हैं कि अब आपकी बारी है।"

मिस हेलस्टोन ने मेजबान के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया, और प्रसन्नता से अधिक चिंतित होकर, वह चाय के बारे में फैनी और एलिजा के साथ संक्षिप्त गुप्त बैठक करने के लिए रसोई में चली गईं।

“इन पर तो बहुत सारा सामान है!” रसोइया एलिज़ा चिल्लाई। “और मैंने आज बेकिंग इसलिए टाल दी थी क्योंकि मुझे लगा था कि सुबह तक पेट भरने के लिए काफी रोटी होगी। लेकिन अब कभी भी पर्याप्त नहीं होगी।”

“क्या यहाँ चाय के साथ खाने वाले केक हैं?” युवा मालकिन ने पूछा।

“सिर्फ तीन और एक रोटी। काश ये भले लोग तब तक घर पर ही रहते जब तक उन्हें बुलाया न जाए; और मैं अपनी टोपी (उसका मतलब बोनट से था) को सजाना खत्म करना चाहती हूँ।”

“तो फिर,” कैरोलिन ने सुझाव दिया, जिसे इस आपातकालीन स्थिति की गंभीरता से एक खास ऊर्जा मिली थी, “फैनी को ब्रायफ़ील्ड जाकर कुछ मफिन, क्रम्पेट और बिस्कुट खरीदने चाहिए। और एलिज़ा, नाराज़ मत हो; अब हम कुछ नहीं कर सकते।”

और हमें चाय के साथ कौन-कौन सी चीजें परोसनी हैं?

“ओह, मुझे लगता है यही सबसे अच्छा है। मैं चांदी के बर्तन निकालती हूँ।” और वह दौड़कर ऊपर बर्तनों की अलमारी में गई और तुरंत चायदानी, मलाई का जग और चीनी का कटोरा नीचे ले आई।

और क्या हमारे पास कलश है?

“हाँ; और अब इसे जितनी जल्दी हो सके तैयार कर लो, क्योंकि जितनी जल्दी चाय परोसी जाएगी उतनी जल्दी ये लोग चले जाएँगे—कम से कम मुझे तो यही उम्मीद है। हे भगवान! काश ये लोग चले जाते,” ड्राइंग रूम में लौटते हुए उसने आह भरी। “फिर भी,” दरवाज़ा खोलने से पहले रुकते हुए उसने सोचा, “अगर रॉबर्ट अभी आ जाए तो कितना अच्छा होगा! अगर वह मौजूद होता तो इन लोगों का मनोरंजन करना कितना आसान होता! उसकी बातें सुनने में मज़ा आता (हालाँकि वह लोगों के बीच ज़्यादा नहीं बोलता) और उसकी मौजूदगी में बात करने में भी। इनमें से किसी की भी बातें सुनने या उनसे बात करने में कोई दिलचस्पी नहीं है। जब पादरी आएँगे तो ये लोग कितना बकबक करेंगे, और मैं उन्हें सुनते-सुनते कितनी थक जाऊँगी! लेकिन मुझे लगता है मैं एक स्वार्थी मूर्ख हूँ। ये बहुत ही सम्मानित सज्जन हैं। मुझे निस्संदेह उनके चेहरे पर गर्व होना चाहिए। मैं यह नहीं कहती कि वे मुझसे कम अच्छे हैं—बिल्कुल नहीं—लेकिन वे मुझसे अलग हैं।”

वह अंदर चली गई।

उन दिनों यॉर्कशायर के लोग मेज के चारों ओर बैठकर चाय पीते थे, मेज पर आराम से बैठते थे और अपने घुटनों को महोगनी की लकड़ी के फर्श पर टिकाते थे। ढेर सारी थालियों में तरह-तरह की और भरपूर मात्रा में ब्रेड और मक्खन होना अनिवार्य था। बीच वाली थाली में मुरब्बे की एक कांच की कटोरी रखना भी उचित

माना जाता था। भोजन में चीज़केक और टार्ट्स का एक छोटा सा संग्रह होना अपेक्षित था। अगर साथ में हरी अजमोद से सजाए हुए गुलाबी हैम के पतले स्लाइस की एक थाली भी हो, तो और भी अच्छा।

रेक्टर की रसोइया एलिज़ा, सौभाग्य से, भोजन परोसने में माहिर थी। आक्रमणकारियों के इतनी अप्रत्याशित और भारी संख्या में आने पर वह पहले तो थोड़ी नाराज़ हुई थी; लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने काम करते ही अपना उत्साह वापस पा लिया, क्योंकि उचित समय पर चाय बड़े ही सलीके से परोसी गई, और उसके साथ परोसी जाने वाली चीज़ों में हैम, टार्ट्स और मुरब्बे की कोई कमी नहीं थी।

इस भव्य भोज में आमंत्रित पादरी प्रसन्नतापूर्वक प्रवेश कर गए; परन्तु जैसे ही उन्होंने उन महिलाओं को देखा जिनकी उपस्थिति के बारे में उन्हें पहले से सूचित नहीं किया गया था, वे द्वार पर ही रुक गए। मालोन दल का नेतृत्व कर रहे थे; वे अचानक रुके और पीछे गिर पड़े, जिससे उनके पीछे चल रहे डोने लगभग गिर ही गए। डोने तीन कदम लड़खड़ाते हुए पीछे हटे और नन्हे स्वीटिंग को पीछे चल रहे बूढ़े हेलस्टोन की बाहों में सौंप दिया। कुछ विरोध हुआ, कुछ हंसी-मजाक हुआ। मालोन को सावधान रहने के लिए कहा गया और आगे बढ़ने का आग्रह किया गया, जो अंततः उन्होंने किया, हालांकि उनके नुकीले माथे का ऊपरी भाग नीला-बैंगनी हो गया था। हेलस्टोन आगे बढ़े, शर्मीले पादरियों को एक तरफ किया, अपनी सभी सुंदर अतिथियों का स्वागत किया, प्रत्येक से हाथ मिलाया और एक-एक मजाक किया, और सुंदर हैरियट और आकर्षक हन्ना के बीच आराम से बैठ गए। उन्होंने मिस मैरी से अपने सामने वाली सीट पर जाने का अनुरोध किया, ताकि यदि वे उनके पास न बैठ सकें तो उन्हें देख सकें। अपने तरीके से वह युवतियों के प्रति हमेशा सहज और विनम्र रहता था, और उनमें वह बेहद लोकप्रिय था; फिर भी दिल से वह न तो स्त्री-पुरुषों का सम्मान करता था और न ही उन्हें पसंद करता था, और जिन युवतियों के साथ परिस्थितिवश उसका घनिष्ठ संबंध बन गया था, वे उससे प्रेम करने के बजाय हमेशा भयभीत रहती थीं।

पादरी अपने हाल पर छोड़ दिए गए। स्वीटिंग, जो तीनों में सबसे कम शर्मिंदा था, श्रीमती साइक्स के पास जाकर बैठ गया, क्योंकि वह जानता था कि श्रीमती साइक्स उसे लगभग अपने बेटे की तरह ही प्यार करती थीं। डोने ने अपने खास अंदाज में झुककर अभिवादन किया और ऊँची, व्यावहारिक आवाज़ में कहा, "कैसी हैं आप,

मिस हेलस्टोन?" और कैरोलीन की बगल वाली कुर्सी पर बैठ गया, जिससे कैरोलीन को बहुत गुस्सा आया, क्योंकि डोने के प्रति उसकी विशेष अरुचि थी, उसके घमंड और संकीर्ण सोच के कारण। मैलोन, बड़ी बेमतलब की मुस्कान के साथ, दूसरी तरफ उसी कुर्सी पर बैठ गया। इस तरह कैरोलीन को दो सहायक मिल गए, जिनके बारे में वह जानती थी कि वे किसी काम के नहीं थे, चाहे बातचीत जारी रखने के लिए हों, कप देने के लिए हों, मफिन परोसने के लिए हों या यहाँ तक कि कूड़ेदान से प्लेट उठाने के लिए भी। छोटा स्वीटिंग, जो कद में छोटा और मासूम सा था, उनमें से बीस के बराबर होता।

मालोन, हालांकि जब केवल पुरुष मौजूद होते थे तो लगातार बोलते रहते थे, लेकिन महिलाओं की उपस्थिति में वे अक्सर चुप हो जाते थे। हालांकि, तीन वाक्य ऐसे थे जो उन्हें पूरी तरह से याद थे और जिन्हें बोलने में वे कभी असफल नहीं होते थे:—

सबसे पहले। "क्या आपने आज सैर की, मिस हेलस्टोन?"

दूसरा, "क्या आपने हाल ही में अपने चचेरे भाई मूर को देखा है?"

तीसरा, "क्या आपकी संडे स्कूल की कक्षा में छात्रों की संख्या स्थिर रहती है?"

कैरोलिन और मैलोन के बीच इन तीन सवालों के पूछे जाने और जवाब दिए जाने के बावजूद, सन्नाटा छाया रहा।

डॉन के साथ मामला कुछ और ही था; वह चिड़चिड़े और परेशान करने वाले थे। उनके पास बातचीत के लिए शब्दों का भंडार था, जो कल्पना से परे घिसे-पिटे और विकृत थे - ब्रायरफील्ड के लोगों की निंदा; आम तौर पर यॉर्कशायर के मूल निवासियों की निंदा; उच्च समाज की कमी की शिकायतें; इन इलाकों में सभ्यता की पिछड़ी स्थिति; उत्तर में निम्न वर्ग के लोगों द्वारा अपने से श्रेष्ठ लोगों के प्रति किए जाने वाले अनादरपूर्ण व्यवहार के खिलाफ बड़बड़ाहट; इन इलाकों के रहन-सहन का मूर्खतापूर्ण उपहास - शैली की कमी, शालीनता का अभाव, मानो डॉन ने वाकई बहुत बड़े-बड़े काम किए हों, एक ऐसा संकेत जिसे उनका कुछ हद तक असभ्य व्यवहार और रूप-रंग साबित नहीं कर पाता था। उन्हें लगता था कि ये आलोचनाएँ मिस हेलस्टोन या उन्हें सुनने वाली किसी भी अन्य महिला की नज़र में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ा देंगी; जबकि कम से कम उनके साथ तो ऐसा ही होता था, ये टिप्पणियाँ उन्हें तिरस्कार से भी नीचे गिरा देती थीं, हालाँकि कभी-कभी वे उन्हें क्रोधित भी कर देती थीं। क्योंकि स्वयं

यॉर्कशायर की रहने वाली होने के नाते, उन्हें किसी दयनीय वक्ता द्वारा यॉर्कशायर की निंदा सुनना कतई पसंद नहीं था; और जब उनका गुस्सा चरम पर पहुँच जाता, तो वे पलटकर कुछ ऐसा कह देतीं जिससे न तो विषय और न ही लहजा श्री डोने को पसंद आता। वे उनसे कहतीं कि दूसरों को अभद्रता के लिए डांटना शिष्टाचार का प्रमाण नहीं है, और न ही अपने अनुयायियों की निरंतर निंदा करना एक अच्छे पादरी की निशानी है। वे उनसे पूछतीं कि उन्होंने चर्च में प्रवेश क्यों किया, जबकि वे शिकायत करते थे कि यहाँ केवल झोपड़ियों में जाना और गरीबों को उपदेश देना ही संभव है—क्या उन्हें केवल आरामदायक वस्त्र पहनने और राजाओं के महलों में बैठने के लिए ही पादरी बनाया गया है? इन प्रश्नों को सभी पादरी अत्यंत दुस्साहसी और अधार्मिक मानते थे।

चाय का कार्यक्रम काफी देर से चल रहा था; सभी मेहमान अपनी मेज़बान की उम्मीद के मुताबिक बातें कर रहे थे। श्री हेलस्टोन बहुत खुश थे—वैसे भी, जब वे किसी समाज में होते थे, खासकर आकर्षक महिलाओं के बीच, तो वे कभी इतने खुशमिजाज क्यों नहीं होते थे? वे केवल अपने परिवार की इकलौती महिला के साथ ही गंभीर चुप्पी साधे रहते थे—वे अपने दाएं-बाएं और बाएं बैठे पड़ोसियों, और यहां तक कि अपनी सामने बैठी मिस मैरी के साथ भी लगातार बेबाक बातें कर रहे थे; हालांकि, मैरी तीनों में सबसे समझदार और कम नखरे वाली थीं, इसलिए बुजुर्ग विधुर श्री हेलस्टोन उन पर सबसे कम ध्यान देते थे। दिल से वे महिलाओं में समझदारी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। वे उन्हें मूर्ख, नासमझ, घमंडी और हंसी का पात्र देखना पसंद करते थे, क्योंकि तब वे वास्तव में वही बन जाती थीं जो वे उन्हें समझते थे और चाहते थे—हीन, खेलने के खिलौने, खाली समय बिताने के लिए और फिर फेंक दिए जाने के लिए।

हन्ना उसकी पसंदीदा थी। हैरियट, हालांकि सुंदर, अहंकारी और आत्मसंतुष्ट थी, फिर भी उसके लिए उतनी कमजोर नहीं थी। उसमें झूठे घमंड के बीच कुछ सच्चा आत्मसम्मान भी था, और अगर वह किसी ज्ञानी की तरह बात नहीं करती थी, तो पागलों की तरह बड़बड़ाती भी नहीं थी; वह खुद को गुड़िया, बच्ची या खिलौने की तरह व्यवहार किए जाने की अनुमति नहीं देती थी; वह चाहती थी कि उसके सामने रानी की तरह सिर झुकाया जाए।

इसके विपरीत, हन्ना सम्मान की नहीं, बल्कि केवल चापलूसी की मांग करती थी। अगर उसके प्रशंसक उसे केवल इतना कह देते कि वह एक देवदूत है, तो वह उन्हें

अपने साथ मूर्ख जैसा व्यवहार करने देती। वह इतनी भोली और नासमझ थी, और जब उसे उचित मात्रा में ध्यान, चापलूसी और प्रशंसा मिलती, तो वह इतनी मूर्ख बन जाती थी कि कई बार हेलस्टोन को दूसरी बार शादी करने और उसे अपनी दूसरी जीवनसाथी बनाने का प्रयोग करने का मन करता था; लेकिन सौभाग्य से, अपने पहले विवाह की नीरसता की सुखद याद, उसके गले में लटके बोझ का प्रभाव, वैवाहिक जीवन की असहनीय बुराइयों के प्रति उसकी दृढ़ भावनाएँ, उसकी कोमलता पर अंकुश का काम करती थीं, उसके पुराने कठोर फेफड़ों से निकलती आह को दबा देती थीं, और उसे हन्ना से ऐसे प्रस्ताव फुसफुसाने से रोकती थीं जिन्हें सुनकर उसे बहुत आनंद और संतुष्टि मिलती।

संभवतः अगर उसने उससे शादी का प्रस्ताव रखा होता तो वह उससे शादी कर लेती; उसके माता-पिता इस रिश्ते को पूरी तरह से स्वीकार कर लेते। उनके लिए उसकी पचपन वर्ष की आयु, उसका उदार हृदय, कोई बाधा नहीं बन सकता था; और चूंकि वह एक पादरी था, एक उत्कृष्ट पद पर आसीन था, एक अच्छे घर में रहता था, और माना जाता था कि उसकी निजी संपत्ति भी थी (हालांकि इस मामले में दुनिया गलत थी; अपने पिता से विरासत में मिले 5,000 पाउंड का एक-एक पैसा उसने लंकाशायर में अपने पैतृक गांव में एक नए चर्च के निर्माण और दान में लगा दिया था - क्योंकि वह जब चाहे उदारता दिखा सकता था, और यदि लक्ष्य उसकी इच्छा के अनुरूप होता, तो उसे प्राप्त करने के लिए बड़ा बलिदान देने से कभी नहीं हिचकिचाता था) - मैं कहता हूं, उसके माता-पिता बिना किसी संकोच के हन्ना को उसकी दयालुता और करुणा के हवाले कर देते; और दूसरी श्रीमती हेलस्टोन, कीटों के अस्तित्व के प्राकृतिक क्रम को उलटते हुए, हनीमून के दौरान एक उज्ज्वल, प्रशंसित तितली की तरह फड़फड़ातीं और अपने बाकी दिन एक घिनौने, कुचले हुए कीड़े की तरह रेंगती रहतीं।

नन्हे मिस्टर स्वीटिंग, मिसेज़ साइक्स और मिस मैरी के बीच बैठे थे, जो दोनों ही उनके प्रति बहुत दयालु थीं। उनके सामने टार्ट्स की एक थाली थी और उनकी प्लेट में मार्मलेड और क्रम्पेट रखे थे। वे किसी सम्राट से भी अधिक संतुष्ट और प्रसन्न दिख रहे थे। उन्हें सभी मिस साइक्स बहुत प्यारी थीं; और वे सभी उन्हें बहुत पसंद करती थीं। वे उन्हें शानदार लड़कियाँ मानते थे, जो उनके कद के अनुरूप थीं। अगर इस सुखद क्षण में उन्हें किसी बात का अफसोस था, तो वह यह था कि मिस डोरा वहाँ नहीं थीं -

डोरा ही वह थीं जिनसे वे मन ही मन एक दिन मिसेज़ डेविड स्वीटिंग बनने की उम्मीद करते थे, जिनके साथ वे ननेली गाँव में एक महारानी की तरह सैर करने का सपना देखते थे; और अगर कद-काठी किसी को महारानी बना सकती, तो वह सचमुच एक महारानी होतीं। वह विशाल और भारी-भरकम थीं। पीछे से देखने पर वे चालीस साल की किसी हष्ट-पुष्ट महिला जैसी लगती थीं; लेकिन फिर भी उनका चेहरा सुंदर था और उनका स्वभाव बिल्कुल भी कठोर नहीं था।

अंततः भोजन समाप्त हुआ। अगर श्री डोने ठंडी चाय से आधा भरा प्याला अपने सामने न रखे होते, तो यह बहुत पहले ही समाप्त हो गया होता। बाकी सब लोग खाना खत्म कर चुके थे और उन्होंने खुद भी उतना ही खाना खा लिया था जितना वे निगल सकते थे। दरअसल, मेज पर बैठे सभी लोगों में अधीरता के लक्षण दिखने लगे थे, कुर्सियाँ हटाई जा रही थीं, बातचीत धीमी पड़ रही थी और सन्नाटा छा रहा था। कैरोलीन ने बार-बार व्यर्थ ही पूछा कि क्या उन्हें एक और प्याला चाहिए, क्या वे थोड़ी गर्म चाय लेंगे, क्योंकि यह तो ठंडी हो गई होगी, इत्यादि; लेकिन उन्होंने न तो चाय पी और न ही उसे छोड़ा। उन्हें लगता था कि इस एकांत स्थान पर बैठने से उन्हें किसी प्रकार का महत्व मिल गया है, कि अंतिम व्यक्ति होना गरिमापूर्ण और शानदार है, कि बाकी सभी को प्रतीक्षा कराना बड़ा गौरव है। वे इतनी देर तक बैठे रहे कि चायदानी की सरसराहट भी बंद हो गई। अंततः, स्वयं पादरी जी, जो अब तक हन्ना के साथ इतने मग्न थे कि उन्हें देरी की परवाह ही नहीं थी, अधीर हो गए।

“हम किसका इंतजार कर रहे हैं?” उसने पूछा।

“मेरे लिए तो यही सही है,” डोने ने आत्मसंतुष्टि से जवाब दिया, मानो वह यह सोच रहा हो कि किसी पार्टी को इस तरह उसकी गतिविधियों पर निर्भर रखना उसके लिए बहुत सम्मान की बात है।

“अरे!” हेलस्टोन चिल्लाया। फिर खड़े होकर उसने कहा, “आइए धन्यवाद दें”; और उसने तुरंत ऐसा किया, और सभी लोग मेज छोड़कर चले गए। डोने, ज़रा भी शर्मिंदा हुए, दस मिनट तक बिल्कुल अकेले बैठे रहे, जिसके बाद श्री हेलस्टोन ने सामान हटाने के लिए घंटी बजा दी। अंततः पादरी को अपना प्याला खाली करने और उस भूमिका को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिसके बारे में उसने सोचा था कि इसने उसे इतना सुखद सम्मान दिलाया था और उसकी इतनी प्रशंसा की थी।

और अब, स्वाभाविक रूप से (कैरोलीन को पहले से ही पता था कि क्या होने

वाला है, इसलिए उसने पियानो खोल दिया था और संगीत की किताबें तैयार रखी थीं), संगीत की माँग हुई। यह मिस्टर स्वीटिंग के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका था। वह शुरू करने के लिए उत्सुक थे। इसलिए, उन्होंने युवतियों को संगीत में साथ देने के लिए मनाने का कठिन कार्य अपने हाथ में लिया। उन्होंने बड़ी विनम्रता से विनती की, प्रार्थना की, बहाने बनाने से परहेज किया, कठिनाइयों को समझाया, और अंत में मिस हैरियट को वाद्य यंत्र के पास जाने के लिए राजी करने में सफल रहे। फिर उन्होंने अपनी बांसुरी निकाली (वह हमेशा उसे अपनी जेब में रखते थे, ठीक वैसे ही जैसे वह अपना रूमाल रखते थे)। उन्हें जोड़ा और व्यवस्थित किया गया, इस बीच मालोन और डोने एक साथ जमा होकर उनका उपहास उड़ा रहे थे, जिसे उस छोटे आदमी ने अपने कंधे के ऊपर से देखा, लेकिन उस पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। उन्हें यकीन था कि उनका व्यंग्य ईर्ष्या से उपजा था। वे महिलाओं के साथ वैसे संगत नहीं कर सकते थे जैसे वह कर सकते थे; वह उन पर विजय प्राप्त करने ही वाला था।

जीत का सिलसिला शुरू हुआ। मालोन, उसे बड़े ही श्रेष्ठ अंदाज़ में बोलते सुनकर बेहद नाराज़ हुआ और उसने ठान लिया कि अगर मुमकिन हो तो वह भी नाम कमाना चाहेगा। उसने तुरंत एक आवारा का रूप धारण कर लिया (जिसका अभिनय उसने पहले भी एक-दो बार किया था, लेकिन जिसमें उसे वो सफलता नहीं मिली थी जिसके वो अपने गुणों के लायक समझ रहा था)। वो मिस हेलस्टोन के सोफे के पास पहुँचा, जहाँ वो बैठी थीं। अपने विशाल आयरिश शरीर को उनके पास टिकाकर उसने एक-दो बढ़िया भाषण देने की कोशिश की, साथ ही साथ बेहद अजीब और समझ से परे मुस्कानें भी बिखेरीं। खुद को खुशनुमा दिखाने की कोशिश में उसने सोफे के दो लंबे और एक चौकोर कुशन हथिया लिए; और फिर उन्हें कुछ देर तक अजीबोगरीब इशारों से घुमाते हुए, उसने अपने और अपनी प्रेमिका के बीच एक तरह की रुकावट खड़ी कर ली। कैरोलीन, जो उन्हें अलग करने के लिए पूरी तरह से इच्छुक थी, ने जल्द ही कमरे के दूसरी तरफ जाने और श्रीमती साइक्स के बगल में बैठने का बहाना ढूंढ लिया, जिनसे उसने सजावटी बुनाई में एक नए टांके के बारे में कुछ निर्देश देने का अनुरोध किया, जो उन्होंने तुरंत दे दिए; और इस प्रकार पीटर ऑगस्टस को बाहर निकाल दिया गया।

जब उसने खुद को अकेला पाया, तो उसका चेहरा बेहद उदास हो गया — उसे एक बड़े सोफे पर, अपने दम पर, तीन छोटे तकियों के सहारे छोड़ दिया गया था।

दरअसल, वह मिस हेलस्टोन से जान-पहचान बढ़ाने के लिए उत्सुक था, क्योंकि वह, दूसरों की तरह, सोचता था कि उसके चाचा के पास पैसा है, और उसने सोचा कि चूंकि उनके कोई बच्चे नहीं हैं, इसलिए वे शायद अपनी भतीजी के लिए ही संपत्ति छोड़ेंगे। गेरार्ड मूर इस मामले में कहीं अधिक जानकार था: उसने उस सुंदर चर्च को देखा था जिसका निर्माण रेक्टर के उत्साह और धन से हुआ था, और उसने कई बार अपने मन में उस खर्चीले खर्च को कोसा था जो उसकी इच्छाओं के विरुद्ध था।

उस कमरे में मौजूद एक व्यक्ति को शाम लंबी लग रही थी। कैरोलीन बीच-बीच में अपनी बुनाई का सामान गोद में रख देती और एक तरह की मानसिक सुस्ती में डूब जाती— अपनी आँखें बंद कर लेती और सिर झुका लेती—जो उसे अपने आसपास की निरर्थक गूंज के कारण लग रही थी— पियानो की बेसुरी, स्वादहीन खड़खड़ाहट, बांसुरी की कर्कश और हांफती हुई धुनें, उसके चाचा, हन्ना और मैरी की हंसी और उल्लास, जिसका स्रोत उसे समझ नहीं आ रहा था, क्योंकि उनकी बातों में उसे कुछ भी हास्यपूर्ण या आनंददायक नहीं सुनाई दे रहा था; और सबसे बढ़कर, श्रीमती साइक्स की अंतहीन गपशप जो उसके कान के पास फुसफुसा रही थी, गपशप जो चार विषयों पर केंद्रित थी— उसका अपना स्वास्थ्य और उसके परिवार के विभिन्न सदस्यों का स्वास्थ्य; मिशनरी और यहूदी टोकरियाँ और उनमें रखी चीजें; ननेली में हुई पिछली बैठक, और अगले सप्ताह व्हिनबरी में होने वाली बैठक।

अंततः अत्यधिक थकावट से चूर होकर, उसने श्री स्वीटिंग के श्रीमती साइक्स से बात करने आने का अवसर पाकर चुपचाप अपार्टमेंट से बाहर निकलकर एकांत में कुछ पल आराम करने का फैसला किया। वह भोजन कक्ष में गई, जहाँ अंगीठी में आग की हल्की, लेकिन अब मंद, बची हुई लौ अभी भी सुलग रही थी। कमरा खाली और शांत था, मेज से गिलास और बर्तन हटा दिए गए थे, कुर्सियाँ अपनी जगह पर वापस रख दी गई थीं, सब कुछ व्यवस्थित था। कैरोलीन अपने चाचा की बड़ी आरामकुर्सी पर बैठ गई, अपनी आँखें आधी बंद कर लीं और आराम करने लगी - कम से कम अपने अंगों, अपनी इंद्रियों, अपनी सुनने की शक्ति, अपनी दृष्टि को आराम दिया - कुछ भी न सुनने और खालीपन को निहारने से थक चुकी थी। जहाँ तक उसके मन की बात है, वह सीधे हॉलो की ओर उड़ गया। वह वहाँ बैठक कक्ष की दहलीज पर रुका, फिर लेखा-भवन की ओर बढ़ा, और सोचने लगा कि रॉबर्ट की उपस्थिति से कौन सा स्थान धन्य है। संयोगवश, दोनों में से किसी भी स्थान को यह सम्मान प्राप्त

नहीं था; रॉबर्ट उन दोनों से आधा मील दूर था, और कैरोलीन के जितना अनुमान था उससे कहीं अधिक उसके करीब था। इस समय वह गिरजाघर के प्रांगण को पार कर पादरी के घर के द्वार की ओर बढ़ रहा था - हालांकि, वह अपनी चचेरी बहन से मिलने नहीं आया था, बल्कि पादरी को एक संक्षिप्त सूचना देने के इरादे से आया था।

हां, कैरोलाइन; तुम्हें घंटी के तार की कंपन सुनाई दे रही है; आज दोपहर यह पांचवीं बार बज रही है। तुम चौंक जाती हो, और अब तुम्हें यकीन हो जाता है कि यह वही है जिसका तुम सपना देखती हो। तुम्हें इतना यकीन क्यों है, यह तुम खुद को नहीं समझा सकतीं, लेकिन तुम जानती हो। तुम आगे झुककर उत्सुकता से सुनती हो जैसे ही फैनी दरवाजा खोलती है। ठीक है! यही आवाज़ है - धीमी, हल्के विदेशी लहजे वाली, लेकिन इतनी मीठी, जैसा तुम सोचती हो। तुम आधी उठ खड़ी होती हो। "फैनी उसे बताएगी कि मिस्टर हेलस्टोन के साथ मेहमान हैं, और फिर वह चला जाएगा।" ओह! वह उसे जाने नहीं दे सकती। अपनी इच्छा के विरुद्ध, अपनी समझ के विरुद्ध, वह कमरे के आधे हिस्से तक जाती है; वह कदम पीछे हटने की स्थिति में तुरंत बाहर निकलने के लिए तैयार खड़ी रहती है; लेकिन वह गलियारे में प्रवेश करता है। "चूंकि तुम्हारे मालिक व्यस्त हैं," वह कहता है, "मुझे भोजन कक्ष में चलने दो। मेरे लिए कलम और स्याही लाओ। मैं एक छोटा सा नोट लिखकर उसके लिए छोड़ दूंगा।"

अब, ये शब्द सुनकर और उसे आगे बढ़ते हुए देखकर, कैरोलीन, अगर भोजन कक्ष में कोई दरवाजा होता, तो उसमें से निकलकर गायब हो जाती। वह खुद को फंसा हुआ, घिरा हुआ महसूस कर रही है; उसे डर है कि उसकी अचानक उपस्थिति उसे नाराज़ कर सकती है। एक पल पहले वह उसके पास दौड़कर जाती; वही पल बीतने पर, वह उससे भाग जाती। वह ऐसा नहीं कर सकती। बचने का कोई रास्ता नहीं है। भोजन कक्ष में केवल एक ही दरवाजा है, जिससे अब उसका चचेरा भाई अंदर आता है। उसके चेहरे पर वह परेशान आश्चर्य का भाव, जिसकी उसे उम्मीद थी, दिखाई दिया, उसे चौंका दिया और फिर गायब हो गया। उसने हकलाते हुए एक तरह से माफी मांगी: —

"मैं थोड़ी देर शांति पाने के लिए बस एक मिनट के लिए ड्राइंग रूम से बाहर निकला था।"

उसके लहजे और हाव-भाव में कुछ ऐसा संकोच और उदासी थी कि कोई भी समझ सकता था कि हाल ही में उसके भविष्य में कोई दुखद बदलाव आया है और

उसका हंसमुख स्वभाव उससे विमुख हो गया है। श्री मूर को शायद याद आया होगा कि पहले वह कितनी सौम्य उत्साह और आशा भरी आत्मविश्वास के साथ उनसे मिलती थी। उन्होंने देखा होगा कि आज सुबह की घटना का क्या असर हुआ है। अगर वह अपनी नई प्रणाली को सुधारना चाहते तो यह उसे प्रभावी ढंग से लागू करने का अवसर था। शायद उन्हें यह प्रणाली दिन के उजाले में, अपने चक्की के प्रांगण में, व्यस्त कामों के बीच, अभ्यास करने में आसान लगी होगी, बजाय इसके कि शाम के समय किसी शांत बैठक में, एकांत में अभ्यास करें। फैनी ने मोमबत्तियाँ जलाईं, जो पहले मेज पर बुझी पड़ी थीं, लिखने का सामान लिया और कमरे से बाहर चली गई। कैरोलीन उसके पीछे जाने ही वाली थी। मूर को अपने कर्तव्य का पालन करते हुए उसे जाने देना चाहिए था; जबकि वह दरवाजे पर खड़े रहे और हाथ बढ़ाकर उसे धीरे से रोक लिया। उन्होंने उसे रुकने के लिए नहीं कहा, लेकिन उसे जाने भी नहीं दिया।

"क्या मैं अपने चाचा को बता दूं कि आप यहां हैं?" उसने उसी दबी हुई आवाज में पूछा।

“नहीं; मैं तुमसे वो सब कह सकता हूँ जो मुझे उससे कहना था। क्या तुम मेरे दूत बनोगे?”

“जी हां, रॉबर्ट।”

“तो आप उसे बता दीजिए कि मुझे उन आदमियों में से कम से कम एक की पहचान का सुराग मिल गया है जिन्होंने मेरे फ्रेम तोड़े थे; वह उसी गिरोह का सदस्य है जिसने साइक्स और पियर्सन की ड्रेसिंग शॉप पर हमला किया था, और मुझे उम्मीद है कि मैं उसे कल हिरासत में ले लूंगा। आपको याद रहेगा?”

“ओह हाँ!” ये दो शब्द उसने पहले से भी ज़्यादा उदास स्वर में कहे; और कहते हुए उसने अपना सिर थोड़ा हिलाया और आह भरी। “क्या तुम उस पर मुकदमा चलाओगे?”

“निस्संदेह।”

नहीं, रॉबर्ट।

"और क्यों नहीं, कैरोलाइन?"

"क्योंकि इससे पूरा पड़ोस पहले से कहीं ज्यादा आपके खिलाफ हो जाएगा।"

“इसका यह मतलब नहीं है कि मैं अपना कर्तव्य न निभाऊं और अपनी संपत्ति की रक्षा न करूं। यह व्यक्ति बड़ा बदमाश है और इसे आगे कोई भी गड़बड़ी करने से

रोका जाना चाहिए।”

लेकिन उसके साथी तुमसे बदला लेंगे। तुम नहीं जानते कि इस देश के लोग कितनी दुर्भावना रखते हैं। उनमें से कुछ लोग इस बात पर गर्व करते हैं कि वे सात साल तक अपनी जेब में पत्थर रख सकते हैं, उस समय के अंत में उसे पलट सकते हैं, सात साल और रख सकते हैं, और अंत में उसे फेंककर अपने लक्ष्य पर लगा सकते हैं।

मूर हंस पड़ा।

“बड़ी ही चुटीली शेखी है,” उसने कहा— “जो तुम्हारे प्यारे यॉर्कशायर के दोस्तों की बहुत इज़्ज़त बढ़ाती है। लेकिन लीना, मेरे लिए चिंता मत करो। मैं तुम्हारे इन भेड़ जैसे साथियों से सावधान हूँ। मेरे बारे में परेशान मत हो।”

“मैं क्या कर सकती हूँ? तुम मेरी चचेरी बहन हो। अगर कुछ हो गया तो—” वह रुक गई।

“कुछ नहीं होगा, लीना। तुम्हारी अपनी भाषा में कहूँ तो, सबसे ऊपर एक ईश्वरीय शक्ति है—है ना?”

“जी हां, प्यारे रॉबर्ट। ईश्वर आपकी रक्षा करे!”

“और अगर प्रार्थनाओं में शक्ति होती है, तो आपकी प्रार्थनाओं से मुझे लाभ होगा। क्या आप कभी-कभी मेरे लिए प्रार्थना करते हैं?”

“कभी-कभार नहीं, रॉबर्ट। तुम्हें, लुई को और हॉर्टेंस को हमेशा याद रखा जाएगा।”

“मैंने अक्सर ऐसा सोचा है। जब मैं थका-हारा और परेशान होकर किसी नास्तिक की तरह बिस्तर पर गया, तो मेरे मन में यह ख्याल आया कि किसी और ने मेरे दिन के लिए क्षमा और मेरी रात के लिए सुरक्षा की प्रार्थना की हो। मुझे नहीं लगता कि ऐसी परोपकारी प्रार्थना से कुछ खास लाभ होगा, लेकिन ये प्रार्थनाएँ सच्चे हृदय से, निर्दोष होठों से निकलती हैं। इन्हें हाबिल की भेंट की तरह स्वीकार किया जाना चाहिए; और निःसंदेह स्वीकार किया जाता, यदि जिसके लिए ये प्रार्थना की गई होती।”

“उस शंका को मिटा दो। वह निराधार है।”

“जब किसी व्यक्ति का पालन-पोषण केवल पैसा कमाने के लिए हुआ हो, और वह केवल पैसा कमाने के लिए ही जीता हो, और मिलों और बाजारों की हवा के अलावा शायद ही कोई और हवा सांस लेता हो, तो प्रार्थना में उसका नाम लेना या उसके विचार को किसी भी दिव्य चीज़ से जोड़ना अजीब लगता है; और यह और भी

विचित्र लगता है कि एक नेक, पवित्र हृदय उसे अपने घर में जगह दे, मानो उस तरह के घोंसले पर उसका कोई अधिकार हो। यदि मैं उस दयालु हृदय का मार्गदर्शन कर पाता, तो मेरा मानना है कि मैं उसे सलाह देता कि वह ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन से बाहर कर दे जिसका एकमात्र उद्देश्य अपनी टूटी हुई दौलत को समेटना और अपने बुर्जुआ पदचिह्न से दिवालियापन के गंदे दाग को मिटाना हो।"

हालांकि यह संकेत इतने कोमल और विनम्र ढंग से दिया गया था (जैसा कि कैरोलिन ने सोचा था), फिर भी इसे गहराई से महसूस किया गया और स्पष्ट रूप से समझा गया।

"सचमुच, मैं तुम्हें सिर्फ़ अपना चचेरा भाई ही समझती हूँ—या समझूँगी," उसने तुरंत जवाब दिया। "रॉबर्ट, जब तुम पहली बार इंग्लैंड आए थे, तब की तुलना में अब मैं चीज़ों को बेहतर समझने लगी हूँ—एक हफ़्ते, एक दिन पहले की तुलना में। मुझे पता है कि तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम सबके साथ घुल-मिल जाओ, और तुम्हारे लिए रोमांटिक होना ठीक नहीं है; लेकिन भविष्य में अगर मैं दोस्ताना लगूँ तो मुझे गलत मत समझना। तुमने आज सुबह मुझे गलत समझा था, है ना?"

आपको ऐसा क्यों लगा?

"तुम्हारा रूप—तुम्हारा व्यवहार।"

लेकिन अब मुझे देखो — —

"ओह! अब तुम अलग हो। इस समय मैं तुमसे बात करने की हिम्मत कर रहा हूँ।"

"फिर भी मैं वही हूँ, सिवाय इसके कि मैंने व्यापारी को घाटी में पीछे छोड़ दिया है। अब तुम्हारे सामने केवल तुम्हारा रिश्तेदार ही खड़ा है।"

"मेरे चचेरे भाई रॉबर्ट - श्री मूर नहीं।"

"मिस्टर मूर का नामोनिशान भी नहीं। कैरोलीन — —"

दूसरे कमरे में कंपनी के लोगों के उठने की आवाज़ सुनाई दी। दरवाज़ा खोला गया; टट्टू गाड़ी मंगवाई गई; शॉल और टोपियाँ माँगी गईं; श्री हेलस्टोन ने अपनी भतीजी को बुलाया।

मुझे जाना होगा, रॉबर्ट।

"हाँ, तुम्हें जाना होगा, नहीं तो वे अंदर आकर हमें यहाँ पा लेंगे; और मैं गलियारे में उन सभी लोगों से मिलने के बजाय खिड़की से निकल जाऊँगी। सौभाग्य से यह दरवाजे की तरह खुलती है। बस एक मिनट – मोमबत्ती को एक पल के लिए नीचे रख

दो – शुभ रात्रि। मैं तुम्हें चूमती हूँ क्योंकि हम चचेरे भाई-बहन हैं, और चचेरे भाई-बहन होने के नाते एक – दो – तीन चुंबन जायज़ हैं। कैरोलीन, शुभ रात्रि।”

अध्याय VIII.

नूह और मूसा।

अगले दिन मूर सूरज उगने से पहले ही उठ गए थे और व्हिनबरी तक जाकर वापस आ गए थे, इससे पहले कि उनकी बहन उनके नाश्ते के लिए कॉफी या टार्टिन बना पाती। वहाँ उन्होंने क्या काम किया, यह उन्होंने अपने तक ही सीमित रखा। हॉर्टेंस ने कोई सवाल नहीं पूछा: उनकी गतिविधियों पर टिप्पणी करना उनकी आदत नहीं थी, न ही उनकी गतिविधियों का ब्यौरा देना। व्यापार के रहस्य—जटिल और अक्सर निराशाजनक रहस्य—उनके मन में दबे हुए थे, और कभी-कभार ही बाहर आते थे, सिवाय कभी-कभार जो स्कॉट को डराने या किसी विदेशी संवाददाता को चौंकाने के लिए। वास्तव में, महत्वपूर्ण मामलों पर चुप्पी साधने की आदत उनके व्यापारिक स्वभाव में ही रची-बसी थी।

नाश्ता करने के बाद, वह अपने लेखा-जोखा कार्यालय में चले गए। जो स्कॉट का नौकर हेनरी पत्र और अखबार लेकर आया; मूर अपनी मेज पर बैठ गए, दस्तावेजों की सील तोड़ी और उन पर सरसरी नजर डाली। सभी पत्र संक्षिप्त थे, लेकिन मीठे नहीं लग रहे थे - बल्कि शायद इसके विपरीत कड़वे थे, क्योंकि जैसे ही मूर ने आखिरी पत्र रखा, उनकी नाक से एक व्यंग्यपूर्ण और चुनौती भरी आवाज निकली, और हालांकि उन्होंने कोई भाषण नहीं दिया, उनकी आंखों में एक ऐसी चमक थी जो शैतान को

बुला रही थी और उन्हें इस पूरे मामले को नरक में भेजने का आदेश दे रही थी। हालांकि, उन्होंने एक कलम उठाई और उंगलियों के गुस्से में (केवल उंगलियों का गुस्सा - उनका चेहरा शांत था) उसकी ऊपरी चमड़ी उतार दी, फटाफट कुछ जवाब लिखे, उन्हें सील किया और फिर बाहर जाकर चक्की में टहलने लगे। वापस आकर वह अखबार पढ़ने बैठ गए।

किताब में लिखी बातें कुछ खास दिलचस्प नहीं लग रही थीं; उसने कई बार उसे अपने घुटनों पर रखा, बाहें मोड़ीं और आग को घूरता रहा; कभी-कभी खिड़की की तरफ सिर घुमाता; बीच-बीच में घड़ी देखता; संक्षेप में, उसका मन कहीं खोया हुआ सा लग रहा था। शायद वह मौसम की खूबसूरती के बारे में सोच रहा था—क्योंकि मौसम के हिसाब से सुबह सुहावनी और हल्की थी—और खेतों में जाकर उसका आनंद लेने की इच्छा कर रहा था। उसके दफ्तर का दरवाजा खुला हुआ था। हवा और धूप बेरोक-टोक अंदर आ रही थीं; लेकिन पहली मेहमान अपने साथ बसंत की खुशबू नहीं ला रही थी, बस मिल की चिमनी से काले रंग के धुएं के गुबार से कभी-कभार गंधक की हल्की सी गंध आ रही थी।

एक गहरे नीले रंग की आकृति (जो स्कॉट की, जो अभी-अभी रंगाई के टैंक से निकला था) क्षण भर के लिए खुले दरवाजे पर प्रकट हुई, उसने "वह आ गया है, महोदय" कहा और गायब हो गई।

श्री मूर ने अखबार से अपनी निगाहें नहीं हटाईं। चौड़े कंधों और मजबूत अंगों वाला एक लंबा-चौड़ा आदमी, फस्टियन वस्त्र और भूरे ऊनी मोजे पहने हुए, अंदर आया। श्री मूर ने सिर हिलाकर उसका स्वागत किया और बैठने की इच्छा जताई। वह बैठ गया और अपनी टोपी (जो बहुत भद्दी थी) उतारकर कुर्सी के नीचे रख दी और टोपी के ऊपरी हिस्से से निकाले गए चित्तीदार सूती रुमाल से अपना माथा पोंछते हुए कहा कि "फरवरी के हिसाब से तो बहुत गर्मी है।" श्री मूर ने सहमति जताई - कम से कम उन्होंने कुछ हल्की सी आवाज तो निकाली, जो अस्पष्ट होते हुए भी सहमति मानी जा सकती थी। आगंतुक ने अब अपने हाथ में पकड़ी हुई एक आधिकारिक दिखने वाली छड़ी को सावधानीपूर्वक अपने बगल के कोने में रख दिया; ऐसा करने के बाद उसने सीटी बजाई, शायद अपनी सहजता दिखाने के लिए।

“मुझे लगता है कि आपके पास जो आवश्यक है वह है?” श्री मूर ने कहा।

“ओह, ओह! सब ठीक है।”

उन्होंने सीटी बजाना फिर से शुरू कर दिया, और श्री मूर ने पढ़ना। अखबार जाहिर तौर पर अधिक दिलचस्प हो गया था। तभी, वे अपनी अलमारी की ओर मुड़े, जो उनकी लंबी बांह की पहुंच में थी, बिना उठे उसे खोला, एक काली बोतल निकाली - वही बोतल जो उन्होंने मैलोन के लिए निकाली थी - एक गिलास और एक जग, उन्हें मेज पर रखा और अपने मेहमान से कहा, -

"आप खुद ही पानी ले लीजिए; कोने में रखे उस जार में पानी है।"

“मुझे नहीं लगता कि इसकी इतनी जरूरत है, क्योंकि सुबह के समय हर कोई प्यासा रहता है,” उस रूढ़िवादी सज्जन ने उठते हुए और अनुरोध के अनुसार करते हुए कहा।

“क्या आप स्वयं कुछ नहीं लेंगे, श्री मूर?” उन्होंने पूछा, और कुशलता से एक भाग मिलाकर, एक गहरा घूंट चखकर, संतुष्ट और शांत भाव से अपनी सीट पर वापस बैठ गए। मूर, कम बोलने वाले, ने एक अभद्र इशारे और धीमी आवाज़ में जवाब दिया।

“हाँ, यह बहुत अच्छा है,” उनके आगंतुक ने आगे कहा; “इससे तुम्हारा पेट भर जाएगा। बेहतरीन हॉलैंड वाइन। मुझे लगता है, यह तुम्हें विदेशों से मिलती है?”

"ओह!"

मेरी सलाह मानो और एक गिलास पी लो। जो लड़के आ रहे हैं, वो तुम्हें घंटों बातें करने पर मजबूर कर देंगे, पता नहीं कब तक। तुम्हें सहारे की ज़रूरत पड़ेगी।

"क्या आपने आज सुबह मिस्टर साइक्स को देखा है?" मूर ने पूछा।

“मैंने उसे डेढ़ घंटे पहले—नहीं, बल्कि पंद्रह मिनट पहले—अपने रवाना होने से ठीक पहले देखा था। उसने कहा कि उसका इरादा यहाँ आने का था, और मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर आपको पुराने हेलस्टोन भी मिल जाएँ। जब मैं पादरी के निवास के पीछे से गुज़र रहा था, तो मैंने उन्हें उसके छोटे घोड़े पर काठी कसते हुए देखा।”

वक्ता सचमुच एक भविष्यवक्ता था, क्योंकि पाँच मिनट बाद ही आँगन में एक छोटे घोड़े के खुरों की आहट सुनाई दी। आहट रुकी और एक जानी-पहचानी नाक से निकलने वाली आवाज़ ज़ोर से बोली, "लड़के" (शायद हैरी स्कॉट को संबोधित करते हुए, जो आमतौर पर सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक परिसर में घूमता रहता था), "मेरे घोड़े को ले जाओ और उसे अस्तबल में ले चलो।"

हेलस्टोन फुर्ती से और सीधे खड़े होकर अंदर आया, वह सामान्य से अधिक भूरा, तेज और जीवंत दिख रहा था।

“सुंदर सुबह, मूर। कैसे हो मेरे लड़के? हा! यहाँ कौन है?” (लाठी लिए व्यक्ति की ओर मुड़ते हुए)। “सुगडेन! क्या! तुम सीधे काम पर लग जाओगे? मेरी बात मानो, देर मत करो। लेकिन मैं स्पष्टीकरण लेने आया हूँ। तुम्हारा संदेश मुझे मिल गया है। क्या तुम्हें यकीन है कि तुम सही सुराग ढूंढ रहे हो? तुम काम कैसे शुरू करने वाले हो? क्या तुम्हारे पास वारंट है?”

“सुगडेन के पास है।”

“तो अब आप उसे ढूंढने जा रहे हैं? मैं आपके साथ चलूंगा।”

“आपको इस परेशानी से मुक्ति मिल जाएगी, महोदय; वह मुझसे मिलने आ रहे हैं। मैं अभी उनके आने की प्रतीक्षा में आराम से बैठा हूँ।”

“और वो कौन है? क्या वो मेरे चर्च का कोई सदस्य है?”

जो स्कॉट चुपके से अंदर आ गया था। अब वह एक बेहद भयावह प्रेत की तरह खड़ा था, उसका आधा शरीर गहरे नीले रंग में रंगा हुआ था, और वह मेज पर टिका हुआ था। रेक्टर के सवाल पर उसके मालिक का जवाब एक मुस्कान थी। जो ने बात समझ ली। शांत लेकिन चालाक सा चेहरा बनाते हुए उसने कहा, —

"यह आपके एक मित्र हैं, श्री हेलस्टोन, एक ऐसे सज्जन जिनका आप अक्सर जिक्र करते हैं।"

“जी हाँ! उसका नाम जो है? आज सुबह आप अच्छे दिख रहे हैं।”

"केवल रेवरेंड मोसेस बैराक्लॉ; मुझे लगता है कि आप उन्हें कभी-कभी 'टब ऑरेटर' कहते हैं।"

“आह!” पादरी ने अपनी नसवार की डिब्बी निकालते हुए और खुद को एक लंबी चुटकी भर नसवार देते हुए कहा — “आह! मैंने सोचा भी नहीं था। अरे, यह नेक आदमी तो कभी आपका कारीगर नहीं था, मूर। वह तो पेशे से दर्जी है।”

"और मेरे मन में उसके प्रति और भी अधिक द्वेष है, क्योंकि उसने हस्तक्षेप किया और मेरे निकाले हुए आदमियों को मेरे खिलाफ भड़का दिया।"

“और क्या मूसा सचमुच स्टिलब्रो मूर की लड़ाई में मौजूद थे? क्या वे वहाँ गए थे, लकड़ी के पैर के साथ?”

जी हां, जो ने कहा; “वह घोड़े पर सवार होकर वहां गया था ताकि किसी को उसके पैर का पता न चले। वह कप्तान था और उसने मुखौटा पहन रखा था। बाकी सबने सिर्फ अपने चेहरे काले रंग से रंगे हुए थे।”

और उसका पता कैसे चला?

“मैं आपको बताता हूँ, महोदय,” जो ने कहा। “मालिक को बात करना ज़्यादा पसंद नहीं है। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। उन्होंने श्री मूर की नौकरानी सारा से प्रेम निवेदन किया था, और ऐसा लगता है कि सारा उनसे कुछ कहना नहीं चाहती थी; या तो उसे उनका लकड़ी का पैर पसंद नहीं था या उसे लगता था कि वह पाखंडी हैं। हो सकता है (औरतें तो अजीब होती हैं; हम यह बात तब कह सकते हैं जब कोई औरत आस-पास न हो) कि वह उनके लकड़ी के पैर और उनके छल के बावजूद, सिर्फ़ समय बिताने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करती। मैंने कुछ ऐसी औरतों को देखा है जो ऐसा करती हैं, और कुछ सबसे सुंदर और मासूम दिखने वाली भी—हाँ, मैंने साफ़-सुथरी, सजी-धजी जवान लड़कियों को देखा है, जो देखने में बिल्कुल मासूम और पवित्र लगती थीं, और समय के साथ पता चलता है कि वे ज़हरीली बिच्छू बूटी के सिवा कुछ नहीं थीं।”

"जो एक समझदार आदमी है," हेलस्टोन ने बीच में कहा।

“खैर, सारा के पास एक और विकल्प था। फ्रेड मुर्गट्रॉयड, हमारे लड़कों में से एक, उसे पसंद करता था; और जैसा कि महिलाएं पुरुषों को उनके चेहरे से परखती हैं - और फ्रेड का चेहरा औसत दर्जे का था, जबकि मूसा उतना सुंदर नहीं था, जैसा कि हम सभी जानते हैं - सारा ने फ्रेड के साथ रिश्ता बना लिया। दो-तीन महीने बाद, मुर्गट्रॉयड और मूसा एक रविवार रात को संयोग से मिले; वे दोनों सारा को अपने साथ थोड़ी देर टहलने के लिए मनाने के इरादे से इस परिसर के आसपास घूम रहे थे। उनमें झगड़ा हुआ, हाथापाई हुई, और फ्रेड हार गया, क्योंकि वह जवान और छोटा था, और बैराक्लॉ, भले ही उसका केवल एक पैर था, लगभग सुग्डेन जितना ही मजबूत था - वास्तव में, जो कोई भी उसे किसी धार्मिक सभा या प्रेम-भोज में दहाड़ते हुए सुनता है, वह निश्चित रूप से कह सकता है कि वह कमजोर नहीं था।”

“जो, तुम हद पार कर रहे हो,” श्री मूर ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “तुम अपनी व्याख्या को ऐसे घुमा-फिराकर पेश कर रहे हो जैसे मूसा अपने उपदेशों को घुमाता है। सीधी बात यह है कि मुर्गट्रॉयड बैराक्लॉ से ईर्ष्या करता था; और कल रात, जब वह और उसका एक दोस्त बारिश से बचने के लिए एक खलिहान में शरण लिए हुए थे, तो उन्होंने मूसा को अंदर कुछ साथियों के साथ बातचीत करते हुए सुना और देखा। उनकी बातचीत से साफ था कि वह न केवल स्टिलब्रो मूर में, बल्कि साइक्स की

संपत्ति पर हमले में भी नेता था। इसके अलावा, उन्होंने आज सुबह मुझसे मिलने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल भेजने की योजना बनाई है, जिसका नेतृत्व दर्जी करेगा, और जो अत्यंत धार्मिक और शांतिपूर्ण भावना से मुझसे विनती करने आया है कि मैं उस दुष्ट को अपने तम्बू से बाहर निकाल दूं। मैं आज सुबह व्हिनबरी गया, एक कांस्टेबल और वारंट ले आया, और अब मैं अपने दोस्त को वह स्वागत देने के लिए तैयार हूं जिसका वह हकदार है। इसी बीच, साइक्स आ रहा है। श्री हेलस्टोन, आपको उसे हिम्मत देनी होगी। वह मुकदमा चलाने के विचार से ही डर रहा है।"

आंगन में एक बग्घी के आने की आवाज सुनाई दी। श्री साइक्स अंदर आए - लगभग पचास वर्ष के लंबे-चौड़े, सुंदर चेहरे वाले, लेकिन दुबले-पतले। वे चिंतित दिख रहे थे।

"क्या वे आए थे? क्या वे चले गए? क्या तुमने उसे पकड़ लिया? क्या सब खत्म हो गया?" उसने पूछा।

"अभी नहीं," मूर ने संयमित स्वर में उत्तर दिया। "हम उनका इंतजार कर रहे हैं।"

"वे नहीं आएंगे; दोपहर होने वाली है। बेहतर होगा कि इसे छोड़ दिया जाए। इससे दुर्भावना पैदा होगी—हंगामा होगा—और शायद घातक परिणाम भी हो सकते हैं।"

"आपको आने की जरूरत नहीं है," मूर ने कहा। "जब वे आएंगे तो मैं उनसे आंगन में मिलूंगा; आप यहीं रह सकते हैं।"

लेकिन कानूनी कार्यवाही में मेरा नाम आना जरूरी है। पत्नी और परिवार, श्री मूर – पत्नी और परिवार होने से इंसान सतर्क हो जाता है।

मूर गुस्से से लाल हो गया। उसने कहा, "कृपया रास्ता छोड़ दें; मुझे अकेला छोड़ दें। मुझे अकेले कार्रवाई करने में कोई आपत्ति नहीं है; बस इतना जान लें कि समर्पण में आपको सुरक्षा नहीं मिलेगी। आपके साथी पियर्सन ने हार मान ली, समझौता कर लिया और सहनशीलता दिखाई। खैर, इससे उन्हें उसके अपने घर में गोली मारने की कोशिश करने से नहीं रोका जा सका।"

"मेरे प्रिय महोदय, थोड़ा सा शराब और पानी पीजिए," श्री हेलस्टोन ने सलाह दी। शराब और पानी असल में हॉलैंड वाइन और पानी था, जैसा कि श्री साइक्स ने तब जाना जब उन्होंने एक पूरा गिलास भरकर पी लिया। दो मिनट में ही उनका रूप बदल गया, उनके चेहरे की रौनक लौट आई और वे कम से कम शब्दों में तो साहसी हो गए। अब उन्होंने घोषणा की कि उन्हें उम्मीद है कि आम लोग उन्हें कुचल नहीं पाएंगे;

उन्होंने मजदूर वर्ग के इस दुर्व्यवहार को और बर्दाश्त न करने का निश्चय कर लिया था; उन्होंने इस बारे में सोच-विचार कर लिया था और हर संभव प्रयास करने का मन बना लिया था; अगर पैसा और हौसला इन दंगाइयों को दबा सकते हैं, तो उन्हें दबा दिया जाएगा; श्री मूर चाहे जो करें, लेकिन वह - क्रिस्टी साइक्स - हारने से पहले कानून पर अपना आखिरी पैसा भी खर्च कर देंगे; वे उन्हें सबक सिखाएंगे, या फिर देखेंगे।

"एक और गिलास ले लो," मूर ने आग्रह किया।

श्री साइक्स को कोई आपत्ति नहीं थी। यह एक ठंडी सुबह थी (सुगडेन को तो गर्म लग रही थी); साल के इस मौसम में सावधानी बरतना ज़रूरी था— नमी से बचाव के लिए कुछ लेना उचित था; उन्हें पहले से ही हल्की खांसी थी (यहाँ उन्होंने खांसकर इस बात की पुष्टि की); इस तरह की कोई चीज़ (काली बोतल उठाते हुए) दवा के तौर पर लेने पर बहुत अच्छी होती है (उन्होंने दवा को अपने गिलास में डाला); वे सुबह-सुबह शराब पीने की आदत नहीं रखते थे, लेकिन कभी-कभी सावधानी बरतना वाकई समझदारी भरा होता था।

मेजबान ने आग्रह किया, "यह बहुत ही समझदारी भरा कदम है, और इन्हें अवश्य ले लें।"

अब श्री साइक्स ने श्री हेलस्टोन को संबोधित किया, जो चूल्हे पर खड़े थे, उनके सिर पर फावड़े के आकार की टोपी थी, और वे अपनी छोटी, तेज आंखों से उन्हें ध्यानपूर्वक देख रहे थे।

“महोदय, एक पादरी होने के नाते,” उन्होंने कहा, “आप शायद भागदौड़ और अफरा-तफरी के माहौल में रहना पसंद न करें, और मैं कहूँ तो खतरे का भी। मुझे यकीन है कि आपके हौसले पस्त हो जाएँगे। आप शांतिप्रिय व्यक्ति हैं, महोदय; लेकिन हम जैसे कारीगर, दुनिया में रहते हुए और हमेशा उथल-पुथल में डूबे रहने के कारण, काफी आक्रामक हो जाते हैं। सचमुच, खतरे के ख्याल से ही मेरे दिल में एक अजीब सी बेचैनी पैदा हो जाती है। जब श्रीमती साइक्स को घर पर हमले और तोड़फोड़ का डर सताता है—जैसा कि उन्हें हर रात सताता है—तो मैं बहुत उत्तेजित हो जाता हूँ। महोदय, मैं आपको अपनी भावनाओं का वर्णन नहीं कर सकता। सचमुच, अगर कोई भी आ जाए—चोर या कुछ भी—तो मुझे लगता है कि मुझे इसमें मजा आएगा, मेरा स्वभाव ही ऐसा है।”

हालांकि संक्षिप्त और धीमी हंसी थी, लेकिन किसी भी तरह से अपमानजनक नहीं

थी, यह पादरी की प्रतिक्रिया थी। मूर उस वीर चक्की मालिक को एक और गिलास पीने के लिए मजबूर करना चाहता था, लेकिन पादरी, जो कभी भी शिष्टाचार की सीमाओं का उल्लंघन नहीं करता था और न ही दूसरों को अपनी उपस्थिति में ऐसा करने देता था, ने उसे रोक दिया।

“जितना काफी है, उतना ही काफी है, है ना, मिस्टर साइक्स?” उन्होंने कहा; और मिस्टर साइक्स ने सहमति जताई, और फिर बैठकर जो स्कॉट को हेलस्टोन के इशारे पर बोतल हटाते हुए देखने लगे, उनके होठों पर आत्मसंतुष्ट मुस्कान थी और आँखों में पछतावे की चमक। मूर को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह उन्हें पूरी तरह से बेवकूफ बनाना चाहता हो। उनकी कोई युवा रिश्तेदार क्या कहती अगर वह अपने प्यारे, अच्छे, महान रॉबर्ट—अपने कोरियोलानुस—को अभी देख पाती? क्या वह उस शरारती, व्यंग्यपूर्ण चेहरे में उसी चेहरे को पहचान पाती जिसे उसने इतने प्यार से देखा था, जो पिछली रात इतनी कोमलता से उसके ऊपर झुका था? क्या वह वही आदमी था जिसने अपनी बहन और चचेरे भाई के साथ इतनी शांत शाम बिताई थी—एक के प्रति इतना विनम्र, दूसरे के प्रति इतना कोमल—शेक्सपियर पढ़ते हुए और शेनियर सुनते हुए?

हाँ, वह वही आदमी था, बस एक अलग रूप में देखा गया था—एक ऐसा रूप जिसे कैरोलीन ने अभी तक पूरी तरह से नहीं देखा था, हालाँकि शायद उसमें इतनी समझदारी थी कि वह इसके अस्तित्व का हल्का सा आभास कर सके। खैर, कैरोलीन में भी, निस्संदेह, कुछ कमियाँ थीं। वह इंसान थी। इसलिए, वह भी बहुत अपूर्ण रही होगी; और अगर उसने मूर को उसके सबसे बुरे रूप में देखा होता, तो शायद वह मन ही मन यही कहती और उसे माफ कर देती। प्रेम नीचता को छोड़कर सब कुछ माफ कर सकता है; लेकिन नीचता प्रेम को मार देती है, यहाँ तक कि स्वाभाविक स्नेह को भी पंगु बना देती है; सम्मान के बिना सच्चा प्रेम नहीं हो सकता। मूर, अपनी सभी कमियों के बावजूद, सम्माननीय था; क्योंकि उसके मन में कोई नैतिक दोष नहीं था, कोई निराशाजनक दूषित दाग नहीं था—उदाहरण के लिए, झूठ का; न ही वह अपनी इच्छाओं का गुलाम था। जिस सक्रिय जीवन में वह पला-बढ़ा था, उसने उसे सुख-सुविधाओं की व्यर्थ खोज में शामिल होने के बजाय कुछ और करने को दिया था। वह एक निर्लज्ज व्यक्ति था, तर्क का अनुयायी था, न कि इंद्रियों का उपासक। यही बात बूढ़े हेलस्टोन के बारे में भी कही जा सकती है। इन दोनों में से कोई भी झूठ नहीं

बोलता, न ही झूठ की कल्पना करता है; क्योंकि उन दोनों पर उस बुरी काली बोतल का कोई असर नहीं था, जिसे अभी-अभी दूर रखा गया था। दोनों ही "सृष्टि के स्वामी" होने के गौरवपूर्ण दावे के हकदार थे, क्योंकि उन पर किसी भी पशुवत दुर्गुण का प्रभुत्व नहीं था; वे दिखने में और असल में भी बेचारे साइक्स से कहीं श्रेष्ठ थे।

आंगन में कुछ लोगों के इकट्ठा होने और पैरों से कुचलने की आवाज़ सुनाई दी, फिर सन्नाटा छा गया। मूर खिड़की की ओर बढ़ा; हेलस्टोन उसके पीछे-पीछे गया। दोनों एक तरफ खड़े हो गए, लंबा जूनियर छोटे कद के सीनियर के पीछे, सावधानी से बाहर देख रहे थे ताकि बाहर से उन्हें कोई देख न सके। उन्होंने जो देखा उस पर उनकी एकमात्र प्रतिक्रिया एक व्यंग्यात्मक मुस्कान थी जो एक-दूसरे की गंभीर आँखों में झलकती थी।

अब एक प्रभावशाली भाषण शैली वाली खांसी सुनाई दी, जिसके बाद "व्हिश्ट!" की आवाज आई, मानो कई आवाजों के शोर को शांत करने के लिए। मूर ने आवाज को और अधिक स्पष्ट रूप से अंदर आने देने के लिए अपनी खिड़की को एक या दो इंच खोल दिया।

"जोसेफ स्कॉट," एक खरखराती हुई आवाज ने कहना शुरू किया — स्कॉट लेखा-गृह के दरवाजे पर पहरा दे रहा था — "क्या हम यह पता लगा सकते हैं कि आपका स्वामी अंदर है और उससे बात करनी है?"

"वो यहीं अंदर है," जो ने बेपरवाही से कहा।

"तो क्या आप कृपया" ("आप" पर जोर देते हुए) "उसे यह बताने की कृपा करेंगे कि बारह सज्जन उससे मिलना चाहते हैं।"

"उसे पता चल जाएगा कि ऐसा क्यों हुआ," जो ने सुझाव दिया। "मैं उसे यह बात उसी समय बता भी देता हूँ।"

"किसी उद्देश्य के लिए," यह उत्तर था। जो अंदर आया।

"कृपया महोदय, बारह सज्जन आपसे किसी उद्देश्य से मिलना चाहते हैं।"

"शाबाश, जो; मैं उनका आदमी हूँ। — सुग्डेन, जब मैं सीटी बजाऊँ तब आना।"

मूर सूखी हंसी हंसते हुए बाहर निकला। वह एक हाथ जेब में और दूसरा अपनी जैकेट में डाले, टोपी का किनारा उसकी आंखों पर टिकाए, उनकी गहरी तिरस्कार भरी निगाहों को कुछ हद तक छुपाए हुए, आंगन में आगे बढ़ा। आंगन में बारह आदमी इंतज़ार कर रहे थे, कुछ कमीज़ की आस्तीनों में, कुछ नीले एप्रन में। उनमें से दो लोग

सबसे आगे चल रहे थे। एक, ऊपर उठी नाक वाला एक छोटा, सलीके से चलने वाला आदमी; दूसरा चौड़े कंधों वाला आदमी, जो अपने शांत चेहरे और बिल्ली जैसी भोली आंखों के साथ-साथ लकड़ी के पैर और मजबूत बैसाखी से भी पहचाना जा सकता था। उसके होठों पर एक अजीब सी घृणा थी; ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी पर दबी आवाज़ में हंस रहा हो; उसका पूरा हावभाव किसी सच्चे आदमी जैसा बिल्कुल नहीं था।

"सुप्रभात, श्रीमान बैराक्लॉ," मूर ने उनके अंदाज़ में बड़े ही शालीनता से कहा।

"आप पर शांति हो!" यह उत्तर था, और इसे देते समय श्री बैराक्लॉ ने अपनी स्वाभाविक रूप से आधी बंद आँखों को पूरी तरह से बंद कर लिया।

“मैं आपका आभारी हूँ। शांति एक बेहतरीन चीज़ है; मैं अपने लिए इससे ज़्यादा कुछ नहीं चाहता। लेकिन मुझे लगता है कि आपको बस इतना ही नहीं कहना है? मेरा मानना है कि शांति आपका उद्देश्य नहीं है।”

“जहाँ तक हमारे उद्देश्य की बात है,” बैराक्लॉ ने कहना शुरू किया, “यह एक ऐसा उद्देश्य है जो आप जैसे लोगों के कानों को अजीब और शायद मूर्खतापूर्ण लग सकता है, क्योंकि इस दुनिया के बच्चे अपनी पीढ़ी में प्रकाश के बच्चों की तुलना में अधिक बुद्धिमान होते हैं।”

"कृपया सीधे मुद्दे पर आइए और मुझे बताइए कि बात क्या है।"

“जी हाँ, महोदय। अगर मैं इसे नहीं हटा सका, तो ग्यारह लोग मेरी मदद कर सकते हैं। यह एक महान उद्देश्य है, और” (अपनी आवाज़ को आधे व्यंग्य से बदलकर गिड़गिड़ाते हुए) “यह स्वयं लॉर्ड का उद्देश्य है, और यह बेहतर है।”

"क्या आप रैंटर के नए चैपल की सदस्यता लेना चाहते हैं, श्रीमान बैराक्लॉ? जब तक आपका काम इस तरह का न हो, मुझे समझ नहीं आता कि इससे आपका क्या लेना-देना है।"

"महोदय, मेरे मन में यह कर्तव्य नहीं था; लेकिन ईश्वर की कृपा से आपने इस विषय का उल्लेख किया है, इसलिए मैं आपकी ओर से आपके पास जो भी थोड़ी-बहुत राशि हो, उसे देने की कोशिश करूंगा; छोटा सा योगदान भी स्वीकार्य होगा।"

इतना कहकर उसने अपनी टोपी उतारी और उसे भीख मांगने वाले डिब्बे की तरह आगे बढ़ाया, साथ ही उसके चेहरे पर एक बेशर्म मुस्कान भी आ गई।

अगर मैं तुम्हें छह पेंस दूं तो तुम उसे पी जाओगे।

बैराक्लॉ ने अपनी हथेलियों और आंखों के सफेद हिस्से को ऊपर उठाया, इस हावभाव में पाखंड का एक मात्र तमाशा प्रदर्शित किया।

"तुम तो बड़े ही चालाक आदमी लगते हो," मूर ने बड़े शांत और रूखे लहजे में कहा; "तुम्हें इस बात की परवाह नहीं कि तुम मुझे दिखाओगे कि तुम पक्के पाखंडी हो, तुम्हारा धंधा धोखेबाजी है। तुम तो मुझे अपनी चालाकी से हँसाना चाहते हो, जिस तरह से तुम अपना भद्दा और हास्यास्पद अभिनय करते हो, जबकि साथ ही साथ तुम सोचते हो कि तुम अपने पीछे खड़े लोगों को धोखा दे रहे हो।"

मूसा का चेहरा उतर गया। उसे एहसास हुआ कि वह हद से आगे बढ़ गया है। वह जवाब देने ही वाला था कि दूसरा नेता, जो अब तक पृष्ठभूमि में रखे जाने से अधीर हो गया था, आगे बढ़ा। यह आदमी देखने में गद्दार जैसा नहीं लग रहा था, हालाँकि उसमें अत्यधिक आत्मविश्वास और घमंड झलक रहा था।

"श्रीमान मूर," उन्होंने अपने गले और नाक से बोलते हुए, प्रत्येक शब्द को बहुत धीरे-धीरे उच्चारित करते हुए बोलना शुरू किया, मानो वे अपने श्रोताओं को उनकी असाधारण भाषा शैली की सराहना करने का समय देना चाहते हों, "शायद यह कहना उचित होगा कि हमारा उद्देश्य शांति से अधिक तर्क है। हम सबसे पहले आपसे तर्क सुनने का अनुरोध करने आए हैं; और यदि आप इनकार करते हैं, तो मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दूं कि ऐसे उपाय किए जाएंगे" (उनका अर्थ था सहारा लेना) "जो संभवतः आपको उस नासमझी, उस मूर्खता का एहसास कराने में परिणत होंगे जो इस देश के औद्योगिक क्षेत्र में एक व्यापारी के रूप में आपके कार्यों का मार्गदर्शन और संरक्षण करती प्रतीत होती है। हे भगवान! मैं यह उल्लेख करना चाहूंगा कि एक विदेशी के रूप में, जो इस पृथ्वी के एक अन्य भाग और गोलार्ध के एक दूर के तट से आया है, जिसे मैं कह सकता हूं, इन तटों - एल्बियन की चट्टानों - पर एक पूर्ण बहिष्कृत के रूप में फेंक दिया गया है - आपके पास उस तरह के शिष्टाचार की समझ नहीं है जो हमारे हित में हो सकती है। मेहनतकश वर्ग। अगर सीधे मुद्दे पर आते हुए, आप इस काम को छोड़कर बिना किसी देरी के सीधे अपने घर, जहाँ आप रहते हैं, चले जाएँ, तो यह बहुत अच्छा होगा। मुझे इस योजना के विरुद्ध कुछ भी नहीं दिखता। — "इस बारे में आपका क्या कहना है, दोस्तों?" प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्यों की ओर मुड़ते हुए, जिन्होंने सर्वसम्मति से उत्तर दिया, "बिल्कुल सही!"

"ब्रेवो, टिम्स का नूह!" श्री मूर के पीछे खड़े जो स्कॉट ने बुदबुदाते हुए कहा। "मूसा

भी इसे नहीं हरा सकता। एल्बियन की चट्टानें, और दूसरा गोलार्ध! मेरी कसम! क्या आप अंटार्कटिक क्षेत्र से आए हैं, महाराज? मूसा तो उससे भी कहीं बेहतर है।”

लेकिन मूसा ने हार मानने से इनकार कर दिया। उसने सोचा कि वह फिर कोशिश करेगा। "नोआ ओ टिम" की ओर कुछ गुस्से भरी नज़र डालते हुए, उसने अपनी बारी ली; और अब वह गंभीर स्वर में बोला, व्यंग्य को त्यागते हुए क्योंकि उसे लगा कि उसका कोई असर नहीं हुआ है।

“श्री मूर, अगर आपने हमारे बीच अपना तम्बू गाड़ दिया होता, तो हम शांति और सुकून से रहते—हाँ, मैं कह सकता हूँ, पूरे प्रेम और सद्भाव से। मैं अभी बूढ़ा नहीं हुआ हूँ, लेकिन मुझे लगभग बीस साल पहले की बात याद है, जब हाथ से काम करने को बढ़ावा और सम्मान दिया जाता था, और किसी भी उपद्रवी ने इन मशीनों को लाने की हिम्मत नहीं की थी, जो इतनी हानिकारक हैं। अब, मैं खुद कपड़ा तराशने वाला नहीं हूँ, बल्कि पेशे से दर्जी हूँ। फिर भी, मेरा दिल कोमल है। मैं बहुत भावुक व्यक्ति हूँ, और जब मैं अपने भाइयों को अपने महान नाम वाले पूर्वज की तरह उत्पीड़ित देखता हूँ, तो मैं उनके लिए खड़ा होता हूँ; इसी उद्देश्य से मैं आज आपसे आमने-सामने बात कर रहा हूँ, और आपको सलाह देता हूँ कि आप अपनी इन मशीनों को त्याग दें और अधिक लोगों को काम पर रखें।”

"अगर मैं आपकी सलाह न मानूं तो क्या होगा, श्रीमान बैराक्लॉ?"

“भगवान आपको क्षमा करें! भगवान आपका हृदय नरम करें, महोदय!”

"क्या अब आपका वेस्लेयन संप्रदाय से कोई संबंध है, श्री बैराक्लॉ?"

“ईश्वर की स्तुति हो! उनके नाम की महिमा हो! मैं मेथोडि का सदस्य बन गया हूँ!”

“इससे तुम शराबी और धोखेबाज होने से नहीं रुकते। एक हफ्ते पहले एक रात, जब मैं स्टिलब्रो के बाजार से लौट रहा था, मैंने तुम्हें सड़क किनारे नशे में धुत पड़ा देखा था; और तुम शांति का उपदेश देते हो, लेकिन तुम्हारा मकसद फूट डालना है। तुम गरीबों की तकलीफों के लिए उतनी ही बेइज्जती करते हो जितनी मेरी। तुम अपने स्वार्थ के लिए उन्हें उत्पात मचाने के लिए उकसाते हो; तिम के नूह नाम का व्यक्ति भी यही करता है। तुम दोनों बेचैन, दखलंदाजी करने वाले, ढीठ बदमाश हो, जिनका मुख्य मकसद स्वार्थी महत्वाकांक्षा है, जो जितनी खतरनाक है उतनी ही बचकानी भी। तुम्हारे पीछे जो लोग हैं, उनमें से कुछ ईमानदार हैं, हालांकि गुमराह हैं; लेकिन तुम दोनों को मैं पूरी तरह से बुरा मानता हूँ।”

बैराक्लॉ बोलने वाले थे।

“चुप रहो! तुम अपनी बात कह चुके हो, अब मैं अपनी बात कहूंगा। तुम्हारे या इस धरती पर किसी भी जैक, जेम या जोनाथन के इशारों पर चलने वाला मैं एक पल भी बर्दाश्त नहीं करूंगा। तुम चाहते हो कि मैं देश छोड़ दूं; तुम मुझसे मेरी मशीनरी छोड़ने का अनुरोध करते हो। अगर मैं मना करता हूं, तो तुम मुझे धमकी देते हो। मैं साफ-साफ मना करता हूं! मैं यहीं रहूंगा, और इस चक्की के पास खड़ा रहूंगा, और इसमें मैं आविष्कारकों द्वारा बनाई गई सबसे बेहतरीन मशीनरी लगाऊंगा। तुम क्या करोगे? तुम ज़्यादा से ज़्यादा क्या कर सकते हो - और यह करने की हिम्मत तुम कभी नहीं करोगे - मेरी चक्की को जला देना, उसके अंदर का सामान नष्ट कर देना और मुझे गोली मार देना। फिर क्या होगा? मान लो कि वह इमारत खंडहर हो गई और मैं एक लाश बन गया - तो फिर क्या होगा, तुम दोनों बदमाशो? क्या इससे आविष्कार रुक जाएगा या विज्ञान खत्म हो जाएगा? एक पल के लिए भी नहीं! इस चक्की के खंडहरों पर एक और बेहतर चक्की खड़ी हो जाएगी, और शायद मेरी जगह कोई और उद्यमी मालिक आ जाएगा। मेरी बात सुनो! मैं अपना कपड़ा अपनी मर्जी से और मेरे पास मौजूद सबसे अच्छी जानकारी के अनुसार बनाऊंगा। इसके निर्माण में मैं... मैं जो चाहूँ वो साधन इस्तेमाल करूँगा। जो कोई भी इसे सुनने के बाद मेरे काम में दखल देने की हिम्मत करेगा, उसे इसके परिणाम भुगतने पड़ेंगे। एक उदाहरण से साबित हो जाएगा कि मैं गंभीर हूँ।

उसने तीखी और तेज़ सीटी बजाई। सुग्डेन, उसके कर्मचारी और वारंट लेकर घटनास्थल पर पहुंचे।

मूर ने बैराक्लॉ की ओर तेज़ी से मुड़कर कहा, “तुम स्टिलब्रो में थे; मेरे पास इसका सबूत है। तुम दलदल में थे, तुमने मुखौटा पहना हुआ था, तुमने अपने ही हाथों से मेरे एक आदमी को गिरा दिया था – तुम! धर्म प्रचारक! – सग्डेन, इसे गिरफ्तार करो!”

मोसेस को पकड़ लिया गया। चीख-पुकार मची और बचाव के लिए अफरा-तफरी मच गई, लेकिन मूर की छाती में छिपा हुआ दाहिना हाथ अचानक प्रकट हुआ और उसने पिस्तौल तान दी।

“दोनों तोपें भरी हुई हैं,” उसने कहा। “मैं पूरी तरह दृढ़ संकल्पित हूँ! दूर रहो!”

पीछे हटते हुए, दुश्मन का सामना करते हुए, वह अपने शिकार को लेखा-जोखागृह तक ले गया। उसने जो स्कॉट को सुग्डेन और कैदी के साथ अंदर जाने और अंदर का

दरवाजा बंद करने का आदेश दिया। वह स्वयं चक्की के सामने आगे-पीछे चलता रहा, ध्यानमग्न होकर जमीन को देखता रहा, उसका हाथ लापरवाही से बगल में लटका हुआ था, लेकिन पिस्तौल अभी भी उसके हाथ में थी। शेष ग्यारह डिप्टी कुछ देर तक उसे देखते रहे, आपस में दबी आवाज़ में बातें करते रहे। अंत में उनमें से एक पास आया। यह आदमी पहले बात करने वाले दोनों से बिल्कुल अलग दिखता था; वह गठीला था, लेकिन विनम्र और मर्दाना दिखता था।

"मुझे मूसा बैराक्लॉ पर ज़्यादा भरोसा नहीं है," उसने कहा, "और मैं आपसे खुद कुछ कहना चाहता हूँ, श्री मूर। मैं यहाँ किसी दुर्भावना से नहीं आया हूँ; बस हालात सुधारने की कोशिश कर रहा हूँ, क्योंकि वे बहुत बिगड़े हुए हैं। आप देख रहे हैं कि हमारी हालत बहुत खराब है—बहुत ही खराब; हमारा परिवार गरीब और कंगाल है। इन मशीनों की वजह से हम बेरोजगार हो गए हैं; हमें कुछ काम नहीं मिल रहा; हम कुछ कमा नहीं पा रहे। क्या करें? क्या हम बस यही कहें कि मर जाओ! और हमें नीचे गिराकर मार दिया जाए? नहीं; श्री मूर, मेरे पास कहने के लिए कोई बड़े शब्द नहीं हैं, लेकिन मुझे लगता है कि किसी समझदार आदमी के लिए गूंगे प्राणी की तरह भूख से मरना एक नीच सिद्धांत होगा। मैं ऐसा नहीं करूँगा। मैं खून बहाने के पक्ष में नहीं हूँ: मैं न तो किसी को मारूँगा और न ही किसी को चोट पहुँचाऊँगा; और मैं मिलों को गिराने और तोड़ने के पक्ष में नहीं हूँ। मशीनें—क्योंकि जैसा कि आप कहते हैं, उस तरह से आगे बढ़ने से आविष्कार कभी नहीं रुकेंगे; लेकिन मैं बोलूंगा—मैं जितना हो सके उतना शोर मचाऊंगा। आविष्कार ठीक हो सकता है, लेकिन मैं जानता हूं कि गरीब लोगों का भूखा मरना ठीक नहीं है। जो शासन करते हैं उन्हें हमारी मदद करने का रास्ता खोजना होगा; उन्हें नए आदेश देने होंगे। आप कहेंगे कि यह करना मुश्किल है। तो हमें और भी जोर से चिल्लाना होगा, क्योंकि संसद सदस्य इस कठिन काम को करने में और भी सुस्त हो जाएंगे।

मूर ने कहा, "संसद सदस्यों को जितना चाहें उतना परेशान करें; लेकिन मिल मालिकों को परेशान करना बेतुका है, और मैं तो इसे बर्दाश्त नहीं करूंगा।"

"आप तो बड़े ही सख्त हैं!" मजदूर ने जवाब दिया। "क्या आप हमें थोड़ा समय नहीं देंगे? क्या आप अपने बदलाव थोड़ा धीरे-धीरे करने के लिए सहमत नहीं होंगे?"

क्या मैं यॉर्कशायर के सभी कपड़ा व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करता हूँ? मुझे इसका उत्तर दीजिए।

"तुम स्वयं हो।"

"और सिर्फ मैं। और अगर मैं एक पल के लिए भी रास्ते में रुक जाऊं, जबकि दूसरे लोग तेजी से आगे बढ़ रहे हों, तो मैं कुचला जाऊंगा। अगर मैं आपकी इच्छा के अनुसार काम करूं, तो एक महीने में दिवालिया हो जाऊंगा; और क्या मेरी दिवालियापन आपके भूखे बच्चों के मुंह में रोटी पहुंचाएगी? विलियम फैरेन, न तो मैं आपके आदेश का पालन करूंगा और न ही किसी और के। मुझसे मशीनरी के बारे में और बात मत करो। मैं अपनी मर्जी से चलूंगा। मैं कल नए फ्रेम मंगवा लूंगा। अगर आपने इन्हें तोड़ दिया, तो भी मैं और मंगवा लूंगा। मैं कभी हार नहीं मानूंगा।"

यहाँ चक्की की घंटी बारह बज उठी। यह भोजन का समय था। मूर अचानक प्रतिनिधिमंडल से मुड़ा और अपने लेखा-गृह में वापस चला गया।

उनके आखिरी शब्दों ने एक बुरा और कठोर प्रभाव छोड़ा था; कम से कम वे तो "अपने हाथ में आए अवसर का सही इस्तेमाल करने में असफल रहे थे।" विलियम फैरेन से विनम्रतापूर्वक बात करके - जो एक बहुत ही ईमानदार व्यक्ति थे, अपने से अधिक खुशहाल लोगों से ईर्ष्या या घृणा नहीं रखते थे, श्रम करके जीवन यापन करने को कोई कठिनाई या अन्याय नहीं मानते थे, और यदि उन्हें काम मिल जाए तो सम्मानजनक रूप से संतुष्ट रहने को तैयार थे - मूर शायद एक मित्र बना सकते थे। यह आश्चर्यजनक था कि वे ऐसे व्यक्ति से बिना किसी सुलह या सहानुभूति के कैसे मुंह मोड़ सकते थे। बेचारे का चेहरा अभाव से मुरझाया हुआ लग रहा था; वह ऐसे व्यक्ति की तरह दिख रहे थे जिसने हफ्तों, शायद महीनों से आराम और समृद्धि का जीवन नहीं जिया था, फिर भी उनके चेहरे पर कोई क्रूरता या दुर्भावना नहीं थी; वह थका हुआ, उदास, कठोर था, लेकिन फिर भी धैर्यवान था। मूर उन्हें इस तरह "मैं कभी हार नहीं मानूंगा" कहकर और सद्भावना, आशा या सहायता का एक शब्द भी कहे बिना कैसे छोड़ सकते थे?

फैरेन जब अपने घर, अपनी कुटिया में लौट रहा था—जो कभी अच्छे दिनों में एक सभ्य, स्वच्छ और सुखद जगह हुआ करती थी, लेकिन अब, हालांकि अभी भी स्वच्छ है, गरीबी के कारण बेहद उदास है—तो उसने अपने मन में यह प्रश्न पूछा। उसने निष्कर्ष निकाला कि विदेशी चक्की मालिक स्वार्थी, संवेदनहीन और, उसके विचार में, मूर्ख व्यक्ति था। उसे लगा कि अगर उसके पास विदेश जाने के साधन होते, तो ऐसे मालिक के अधीन काम करने से बेहतर होता कि वह स्वयं ही देश छोड़ दे। वह बहुत

निराश और लगभग हताश महसूस कर रहा था।

उनके प्रवेश करते ही उनकी पत्नी ने बड़े करीने से उन्हें और बच्चों को उतना ही भोजन परोसा जितना उनके पास था। यह मात्र दलिया था, और वह भी बहुत कम मात्रा में। कुछ छोटे बच्चों ने अपना हिस्सा खाने के बाद और दलिया माँगा - इस विनती ने विलियम को बहुत परेशान किया। उनकी पत्नी ने उन्हें यथासंभव शांत किया, लेकिन फिर भी वे अपनी सीट से उठकर दरवाजे की ओर चले गए। उन्होंने खुशी से सीटी बजाई, लेकिन इससे उनकी भूरी आँखों की पलकों पर एक-दो बूँदें (जो किसी योद्धा के घाव से रिसने वाली बूँदों की तरह नहीं बल्कि किसी तेज बारिश की पहली बूँदों जैसी थीं) जमा हो गईं और दहलीज पर गिर पड़ीं। उन्होंने अपनी आस्तीन से अपना चेहरा पोंछा, और उनका उदास मन शांत होकर एकदम गंभीर हो गया।

वह अब भी चुपचाप सोच में डूबा खड़ा था, तभी काले वस्त्र पहने एक सज्जन व्यक्ति आया—पहली नज़र में ही वह एक पादरी लग रहा था, लेकिन न तो हेलस्टोन, न मालोन, न डोने, न स्वीटिंग। उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष होगी; वह सादा दिखने वाला, सांवला रंग का और कुछ हद तक सफ़ेद बालों वाला व्यक्ति था। वह चलते समय थोड़ा झुकता था। जब वह आगे बढ़ा तो उसके चेहरे पर एक खोई हुई और कुछ उदास सी भाव-भंगिमा थी; लेकिन फैरेन के पास पहुँचते ही उसने ऊपर देखा, और फिर उसके गंभीर चेहरे पर एक प्रसन्नता भरी अभिव्यक्ति उभर आई।

“क्या तुम हो, विलियम? कैसे हो?” उसने पूछा।

“ठीक-ठाक हैं, श्रीमान हॉल। आप कैसे हैं? क्या आप थोड़ा आराम करेंगे?”

श्री हॉल, जिनका नाम पाठक पहले भी देख चुके हैं (और जो वास्तव में ननेली के विकर थे, जिस पैरिश के फैरेन मूल निवासी थे, और जहाँ से वे केवल तीन साल पहले हॉलो मिल के पास रहने की सुविधा के लिए ब्रायफ़ील्ड में रहने के लिए चले गए थे, जहाँ उन्हें काम मिल गया था), कुटिया में दाखिल हुए, और पत्नी और बच्चों का अभिवादन करने के बाद बैठ गए। उन्होंने बड़े उत्साह से उस समय के बारे में बात करना शुरू किया जब से परिवार ने उनके पैरिश को छोड़ा था, और तब से हुए बदलावों के बारे में; उन्होंने अपनी बहन मार्गरेट के बारे में पूछे गए सवालों के जवाब दिए, जिनके बारे में बहुत रुचि से पूछा गया था; उन्होंने भी बारी-बारी से सवाल पूछे, और अंत में, अपने चश्मे से (वे चश्मा पहनते थे, क्योंकि उन्हें कम दिखाई देता था) खाली कमरे और अपने आस-पास बैठे लोगों के दुबले-पतले और मुरझाए चेहरों पर

जल्दी और चिंता से नज़र डालते हुए - क्योंकि बच्चे उनकी गोद में आ गए थे, और माता-पिता उनके सामने खड़े थे - उन्होंने अचानक कहा, -

"आप सब कैसे हैं? आपका जीवन कैसा चल रहा है?"

यह उल्लेखनीय है कि श्री हॉल, यद्यपि एक कुशल विद्वान थे, न केवल उत्तरी लहजे में बोलते थे, बल्कि कभी-कभी उत्तरी क्षेत्र की बोलचाल की भाषा का भी खुलकर प्रयोग करते थे।

"हमारी हालत बहुत खराब है," विलियम ने कहा; "हम सब बेरोजगार हैं। जैसा कि आप देख सकते हैं, मैंने घर का लगभग सारा सामान बेच दिया है; और अब आगे क्या करेंगे, यह तो भगवान ही जाने।"

"क्या मिस्टर मूर ने आपको निराश कर दिया है?"

"उसने हमें निराश कर दिया है; और अब उसके बारे में मेरी ऐसी राय है कि मुझे लगता है कि अगर वह कल मुझे फिर से काम पर रख ले तो मैं उसके लिए काम नहीं करूंगा।"

"विलियम, इस तरह बोलना तुम्हारी आदत नहीं है।"

"मुझे पता है ऐसा नहीं है; लेकिन मैं खुद से अलग होता जा रहा हूँ; मुझे लगता है कि मैं बदल रहा हूँ। अगर बच्चों और पत्नी के पास गुज़ारा करने के लिए पर्याप्त होता तो मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता; लेकिन वे तंगी में हैं—वे तड़प रहे हैं—"

"अच्छा, मेरे बेटे, और तुम भी; मैं देख रहा हूँ। ये बहुत कठिन समय है; मैं जिधर भी देखता हूँ, दुख ही दुख है। विलियम, बैठ जाओ। ग्रेस, बैठ जाओ। चलो इस बारे में बात करते हैं।"

और बेहतर ढंग से बातचीत करने के लिए, श्री हॉल ने सबसे छोटे बच्चे को अपनी गोद में उठाया और उससे छोटे बच्चे के सिर पर हाथ रखा; लेकिन जब नन्हे बच्चे उनसे बातें करने लगे तो उन्होंने उन्हें "चुप रहो!" कहा और अंगीठी पर अपनी निगाहें गड़ाकर, वहाँ जल रहे मुट्ठी भर अंगारों को बड़ी गंभीरता से देखा।

उन्होंने कहा, "दुखद समय है, और यह लंबा चलता है। यह ईश्वर की इच्छा है। उनकी इच्छा पूरी हो। लेकिन वह हमारी हर तरह से परीक्षा लेते हैं।"

उसने फिर विचार किया।

"विलियम, तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं, और तुम्हारे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे बेचकर तुम थोड़ी सी रकम जुटा सको?"

“नहीं। मैंने दराजों वाली अलमारी, घड़ी, महोगनी स्टैंड का एक टुकड़ा, और पत्नी की सुंदर चाय की ट्रे और चीनी के बर्तनों का सेट बेच दिया है, जो उसने हमारी शादी के समय उपहार के रूप में दिए थे।”

और अगर कोई आपको एक या दो पाउंड उधार दे दे, तो क्या आप उसका कोई अच्छा उपयोग कर सकते हैं? क्या आप किसी काम को करने का कोई नया तरीका अपना सकते हैं?

फैरेन ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उनकी पत्नी ने तुरंत कहा, "जी हां, मुझे यकीन है कि वह कर सकता है, महोदय। हमारा विलियम बहुत ही चतुर है। अगर उसके पास दो-तीन पाउंड हों तो वह सामान बेचना शुरू कर सकता है।"

"क्या तुम कर सकते हो, विलियम?"

“भगवान करे,” विलियम ने जानबूझकर जवाब दिया, “मैं किराने का सामान, टेप के टुकड़े, धागा और वो सब कुछ खरीद सकूँ जो मुझे लगता है बिकेगा, और मैं शुरुआत में फेरी लगाना शुरू कर सकूँ।”

“और आप जानते हैं, महोदय,” ग्रेस ने बीच में कहा, “आपको यकीन है कि विलियम न तो शराब पिएगा, न आलस करेगा और न ही किसी भी तरह से फिजूलखर्ची करेगा। वह मेरा पति है, और मुझे उसकी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए; लेकिन मैं इतना जरूर कहूँगी कि इंग्लैंड में उससे ज्यादा संयमी और ईमानदार आदमी कोई नहीं है।”

"ठीक है, मैं एक-दो दोस्तों से बात करूँगा, और मुझे लगता है कि मैं उसे एक-दो दिन में 5 पाउंड देने का वादा कर सकता हूँ - ऋण के रूप में, उपहार के रूप में नहीं। उसे इसे वापस चुकाना होगा।"

“जी हां, महोदय। मुझे इस बात से पूरी तरह सहमति है।”

“इस बीच, ये लो कुछ शिलिंग, ग्रेस, ताकि कस्टम आने तक तुम्हारा काम चलता रहे। — अब, बच्चों, एक कतार में खड़े हो जाओ और अपनी धार्मिक शिक्षा पढ़ो, जबकि तुम्हारी माँ जाकर कुछ खाना खरीद लाती है; क्योंकि मुझे यकीन है कि आज तुमने कुछ खास नहीं खाया है। — तुम शुरू करो, बेन। तुम्हारा नाम क्या है?”

श्री हॉल ग्रेस के लौटने तक वहीं रुके रहे; फिर उन्होंने जल्दी से विदा ली और फैरेन और उनकी पत्नी दोनों से हाथ मिलाया। दरवाजे पर पहुँचकर उन्होंने उन्हें कुछ संक्षिप्त लेकिन अत्यंत गंभीर धार्मिक सांत्वना और उपदेश के शब्द कहे। एक दूसरे को "ईश्वर

आपका भला करे, महोदय!" और "ईश्वर आप दोनों का भला करे, मेरे मित्रों!" कहकर वे अलग हो गए।

अध्याय 9.

ब्रियारमेन।

प्रतिनिधिमंडल को विदा करने के बाद जब श्री मूर उनके पास लौटे, तो श्री हेलस्टोन और श्री साइक्स उनसे बेहद हंसी-मजाक और बधाई देने लगे। हालांकि, उनकी दृढ़ता आदि की प्रशंसा सुनकर भी वे इतने शांत रहे और उनका चेहरा एकदम स्थिर, अंधकारमय दिन जैसा था, मानो न तो प्रकाश हो और न ही हवा। इसलिए, रेक्टर ने उनकी आंखों में चतुराई से देखते हुए अपनी बधाई को अपने कोट के बटन में ही समेट लिया और साइक्स से कहा, जिनकी इंद्रियां इतनी तेज नहीं थीं कि वे खुद ही समझ सकें कि उनकी उपस्थिति और बातचीत कहां बाधा बन रही है, "आइए, महोदय; आपका और मेरा रास्ता लगभग एक ही दिशा में है। क्या हमारे लिए एक-दूसरे का साथ सहना बेहतर नहीं होगा? हम मूर को सुप्रभात कहेंगे और उन्हें उनकी उन सुखद कल्पनाओं में खो जाने देंगे जिनमें वे मग्न प्रतीत होते हैं।"

“और सुगडेन कहाँ है?” मूर ने ऊपर देखते हुए पूछा।

“आह, हा!” हेलस्टोन चिल्लाया। “जब आप व्यस्त थे, तब मैं बिल्कुल भी निष्क्रिय नहीं था। मैंने आपकी थोड़ी मदद की; मुझे लगता है कि मैंने कोई अनुचित काम नहीं किया। मैंने सोचा कि समय बर्बाद न करना ही बेहतर है; इसलिए, जब आप उस उदास दिखने वाले सज्जन से बातचीत कर रहे थे—मुझे लगता है उनका नाम

फैरेन है—मैंने यह पीछे वाली खिड़की खोली, अस्तबल में मौजूद मुर्गट्रॉयड को आवाज़ दी कि श्री साइक्स की गाड़ी ले आए; फिर मैंने सुग्डेन और उसके भाई मूसा—लकड़ी के पैर समेत—को चुपके से उस छेद से अंदर भेजा, और उन्हें गाड़ी पर चढ़ते देखा (हमेशा की तरह हमारे अच्छे दोस्त साइक्स की अनुमति से)। सुग्डेन ने लगाम संभाली —वह जेहू की तरह गाड़ी चलाता है—और पंद्रह मिनट में बैराक्लॉ स्टिलब्रो की जेल में सुरक्षित होगा।"

"बहुत बढ़िया; धन्यवाद," मूर ने कहा; "और सुप्रभात, सज्जनों," उन्होंने आगे कहा और बड़ी विनम्रता से उन्हें दरवाजे तक ले गए और उन्हें अपने परिसर से विदा किया।

दिन भर वह शांत और गंभीर रहे। उन्होंने जो स्कॉट से कोई नोकझोक भी नहीं की, जबकि स्कॉट ने अपने मालिक से केवल वही कहा जो काम को आगे बढ़ाने के लिए बिल्कुल ज़रूरी था, लेकिन वह उन्हें तिरछी निगाहों से देखते रहे, बार-बार हिसाब-किताब में उनके लिए आग को कुरेदते रहे, और एक बार जब वह दिन भर का काम खत्म करके मिल बंद कर रहे थे (व्यापार में मंदी के कारण मिल कम समय के लिए चल रही थी), तो उन्होंने कहा कि यह एक शानदार शाम है, और वह "श्री मूर से कहना चाहेंगे कि वे थोड़ी देर के लिए हॉलो में टहलें। इससे उन्हें अच्छा लगेगा।"

इस सुझाव पर श्री मूर हल्के से हँसे और जो से यह पूछने के बाद कि उनकी इतनी चिंता का क्या मतलब है और क्या वह उन्हें औरत समझ रहे हैं या बच्चा, उनके हाथ से चाबियाँ छीन लीं और उन्हें कंधों से धक्का देकर अपने सामने से बाहर निकाल दिया। हालाँकि, आँगन के द्वार तक पहुँचने से पहले ही उन्होंने उसे वापस बुला लिया।

"जो, क्या तुम उन फैरेन्स को जानते हो? मुझे लगता है कि वे अमीर नहीं हैं?"

"महोदय, वे अच्छी स्थिति में नहीं हो सकते, जब उन्हें तीन महीने से काम नहीं मिला है। आप खुद विलियम के यहाँ जाकर देखेंगे कि वे कितने बदल गए हैं — बिल्कुल अलग। उन्होंने घर का लगभग सारा सामान बेच दिया है।"

"वह बुरा कारीगर नहीं था?"

"जब से आपने व्यापार शुरू किया है, तब से आपको इससे बेहतर कभी नहीं मिला होगा, महोदय।"

और क्या पूरा परिवार सभ्य लोग हैं?

"बिल्कुल भी नहीं। पत्नी एकदम साफ-सुथरी है, और इतनी साफ कि आप घर के

फर्श पर बैठकर दलिया खा सकते हैं। वे बहुत ही घटिया हो गए हैं। काश विलियम को माली या इसी तरह का कोई काम मिल जाता; उसे बागवानी की अच्छी समझ है। वह एक बार एक स्कॉटिश व्यक्ति के साथ रहता था जिसने उसे बागवानी की बारीकियां सिखाई थीं।”

"तो अब तुम जा सकते हो, जो। तुम्हें यहाँ खड़े होकर मुझे घूरने की ज़रूरत नहीं है।"

“क्या आपके पास देने के लिए कोई आदेश नहीं है, महोदय?”

"और कोई चारा नहीं, सिवाय इसके कि तुम खुद को वहां से हटा लो।"

जो ने वैसा ही किया।

बसंत की शामें अक्सर ठंडी और सर्द होती हैं, और हालांकि आज का दिन सुहावना था, सुबह भी गर्म और दोपहर की धूप खिली हुई थी, लेकिन सूर्यास्त के समय हवा ठंडी हो गई, ज़मीन सूख गई, और शाम ढलने से पहले ही पाला धीरे-धीरे बढ़ती घास और खिलती कलियों पर छाने लगा। इसने ब्रायर्मेन्स (श्री यॉर्क का निवास) के सामने के फुटपाथ को सफ़ेद कर दिया, और उनके बगीचे के कोमल पौधों और लॉन के काईदार समतल हिस्से में खामोश तबाही मचा दी। सड़क के सबसे नज़दीक वाले छज्जे की रक्षा करने वाला वह विशाल, मजबूत तने और चौड़ी शाखाओं वाला पेड़, ऐसा लग रहा था मानो बसंत की रात के पाले को भी अपनी अभी तक नंगी शाखाओं को नुकसान पहुंचाने से चुनौती दे रहा हो; और ऐसा ही घर के पीछे ऊंचे उठते अखरोट के पेड़ों का पत्तों से रहित झुरमुट भी कर रहा था।

चाँद रहित, तारों भरी रात के धुंधलके में, खिड़कियों से आती रोशनी चमक रही थी। यह न तो कोई अँधेरा, न ही सुनसान दृश्य था, न ही सन्नाटा। ब्रायर्मेन्स राजमार्ग के पास स्थित था। यह अपेक्षाकृत पुराना स्थान था, और राजमार्ग बनने से पहले ही बना था, जब खेतों से होकर जाने वाली एक घुमावदार गली ही वहाँ तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता थी। ब्रायर्फ़ील्ड लगभग एक मील दूर था; उसकी गुनगुनाहट सुनाई दे रही थी, उसकी चमक स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। ब्रायर् चैपल, एक विशाल, नया, कच्चा वेस्लेयन पूजा स्थल, केवल सौ गज की दूरी पर स्थित था; और चूंकि अभी भी उसकी दीवारों के भीतर एक प्रार्थना सभा चल रही थी, उसकी खिड़कियों की रोशनी सड़क पर एक उज्ज्वल प्रतिबिंब डाल रही थी, जबकि एक असाधारण भजन, जिसे

सुनकर एक क्वेकर भी आध्यात्मिक रूप से प्रेरित होकर नृत्य करने को मजबूर हो जाए, आसपास के सभी लोगों को उत्साह से भर रहा था। शब्द स्पष्ट रूप से सुनाई दे रहे थे। यहाँ विभिन्न धुनों से एक-दो उद्धरण दिए गए हैं; गायक बड़ी सहजता और उत्साह के साथ एक भजन से दूसरे भजन और एक धुन से दूसरी धुन पर जाते रहे:

"अरे! कौन समझा सकता है?"
जीवन के लिए यह संघर्ष,
यह कष्ट और पीड़ा,
यह कंपकंपी और संघर्ष?
महामारी, भूकंप और अकाल
और उथल-पुथल और युद्ध,
अद्भुत आगमन
यीशु की घोषणा करो!
"हर लड़ाई के लिए
यह भयानक और शोरगुल भरा है:
योद्धा का आनंद
यह नरसंहार और रक्तपात है,
उसके शत्रुओं को उखाड़ फेंकते हुए,
जब तक सब कुछ समाप्त न हो जाए:
और यह जलने के साथ है,
और ईंधन, और आग!

इसके बाद भय और कराहों के बीच शोरगुल भरी प्रार्थना का दौर चला। चैपल से "मुझे आज़ादी मिल गई!" "बिल के पिता को आज़ादी मिल गई!" की आवाज़ गूंजी और सारी सभा फिर से बाहर निकल आई।

"यह तो कितनी बड़ी कृपा है!"
कितना आनंदमय स्वर्ग है!
मैं कितनी असीम खुशी महसूस कर रहा हूँ!
समूह में एकत्रित होकर,
तेरे लोगों के नामांकन के साथ,
तेरे लोगों के साथ जीना और मरना!

हे भगवान की कृपा!
किसी मूर्ख को काम पर रखने में
उनकी गौरवपूर्ण श्रद्धांजलि को बढ़ाने के लिए;
उसका ध्वजवाहक बनना,
और विजय की घोषणा करें
उनकी असीम कृपा का भंडार!
ओह, असीम प्रेम
जिसने अनुमोदन करने की कृपा की है
और मेरे हाथों के काम को सफलता मिले।
मेरी देहाती लाठी के साथ
मैं नाले के उस पार गया,
और देखो, मैं पट्टियों में बँट गया हूँ!
मैं आश्चर्य से पूछता हूँ, "कौन?"
क्या तुमने मुझे ये सब दिए हैं?
और पता लगाओ कि वे किस दिशा से आए थे।
मेरा पूरा दिल जवाब देता है,
वे आकाश से उत्पन्न होते हैं,
और यह परमेश्वर और मेमने की महिमा करता है!

चीख-पुकार, चिल्लाहट, उद्गार, उन्मत्त चीखें, पीड़ादायक कराहें के एक और लंबे अंतराल के बाद आने वाला छंद, शोर और उत्साह की चरम सीमा को दर्शाता प्रतीत होता था।

पाप की कगार पर सो रहा है,
टोफेट ने हमें देखने के लिए अपना मुंह खुला छोड़ दिया;
हमारी मदद के लिए दया विमान उड़कर आया।
उसने जाल तोड़ दिया और हमें पार करा दिया।
“यहाँ, शेर की गुफा की तरह,
हम अभी भी अछूते हैं,
जलप्रलय को सुरक्षित रूप से पार करें,
ईश्वर की शरण में रहना।

"यहाँ - - "

(अंतिम छंद को जिस कर्कश चीख में गाया गया था, वह बेहद भयावह और कानों को विचलित करने वाला था।)

“यहाँ हम अपनी आवाज़ को और बुलंद करते हैं,

शोधक की अग्नि में चिल्लाओ,

आग की लपटों के बीच ताली बजाओ,

यीशु के नाम की महिमा हो!

चैपल की छत उड़कर नहीं गई, जो इसकी मजबूत स्लेटिंग की बहुत प्रशंसा करती है।

लेकिन अगर ब्रायर चैपल जीवंत प्रतीत हो रहा था, तो ब्रायरमेन्स भी वैसा ही था, हालांकि यह हवेली मंदिर की तुलना में निश्चित रूप से शांत प्रतीत होती थी। इसकी कुछ खिड़कियाँ भी जगमगा रही थीं; नीचे के खिड़कियाँ लॉन की ओर खुलती थीं; पर्दों ने अंदरूनी हिस्से को छिपा रखा था और उसे रोशन करने वाली मोमबत्तियों की रोशनी को आंशिक रूप से ढक रखा था, लेकिन वे आवाज़ और हँसी की आवाज़ को पूरी तरह से दबा नहीं पा रहे थे। हमें उस मुख्य द्वार से प्रवेश करने और घर के पवित्रतम स्थान तक पहुँचने का सौभाग्य प्राप्त है।

मिस्टर यॉर्क के घर में चहल-पहल का कारण मेहमानों की मौजूदगी नहीं है, क्योंकि उनके परिवार के अलावा वहां कोई नहीं है, और वे सभी दाहिनी ओर के सबसे दूर वाले कमरे, यानी पिछले बैठक कक्ष में एकत्रित हैं।

यह शाम के समय का एक सामान्य बैठक कक्ष है। दिन के उजाले में ये खिड़कियाँ चमकीले रंगीन काँच की बनी हुई दिखाई देती हैं, जिनमें बैंगनी और अंबर रंग प्रमुख हैं, और प्रत्येक खिड़की के केंद्र में एक गहरे रंग के पदक के चारों ओर चमक रही हैं, जो विलियम शेक्सपियर के सौम्य और जॉन मिल्टन के शांत चेहरों को दर्शाते हैं। दीवारों पर कनाडा के कुछ दृश्य टंगे हुए थे - हरे-भरे जंगल और नीले पानी के नज़ारे - और उनके बीच वेसुवियस ज्वालामुखी का रात्रि विस्फोट चमक रहा था; यह बेहद तेज़ी से चमक रहा था, जो झरनों के ठंडे झाग और नीले पानी तथा घने जंगलों की धुंधली गहराई के विपरीत था।

पाठक, इस कमरे को रोशन करने वाली आग ऐसी है कि अगर आप दक्षिणी निवासी हैं, तो आपने इसे किसी निजी अपार्टमेंट के चूल्हे पर जलते हुए अक्सर नहीं

देखा होगा। यह एक साफ, गर्म कोयले की आग है, जो विशाल चिमनी में ढेर सारी जमा है। श्री यॉर्क गर्म गर्मी के मौसम में भी ऐसी आग जलाते हैं। वे हाथ में किताब लिए उसके बगल में बैठे हैं, उनकी कोहनी के पास एक छोटी गोल स्टैंड पर मोमबत्ती रखी है; लेकिन वे पढ़ नहीं रहे हैं - वे अपने बच्चों को देख रहे हैं। उनके सामने उनकी पत्नी बैठी हैं - एक ऐसी शख्सियत जिनका मैं विस्तार से वर्णन कर सकता था, लेकिन मुझे ऐसा करने की कोई इच्छा नहीं है। फिर भी, मैं उन्हें अपने सामने बहुत स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ - एक भारी-भरकम महिला, गंभीर चेहरे वाली, उनके चेहरे और कंधों पर चिंता झलकती है, लेकिन यह अत्यधिक या अपरिहार्य चिंता नहीं है, बल्कि एक स्वैच्छिक, अनुकरणीय बोझ है जिसे वे लोग ढोते हैं जो उदास रहना अपना कर्तव्य समझते हैं। अरे वाह! श्रीमती यॉर्क की भी यही सोच थी, और वे सुबह, दोपहर और रात शनि की तरह गंभीर रहती थीं; और वह सोचती थी कि अगर कोई दुखी इंसान—खासकर स्त्री—उसके सामने अपने चेहरे पर खुशी का भाव दिखाने की हिम्मत करे तो उसे बहुत बुरा लगेगा। उसकी नज़र में, खुश रहना अपवित्रता है, प्रसन्न रहना तुच्छता है। वह कोई भेदभाव नहीं करती थी। फिर भी वह एक बहुत अच्छी पत्नी, एक बहुत ही सजग माँ थी, अपने बच्चों की निरंतर देखभाल करती थी, अपने पति से सच्चा प्रेम रखती थी; बस सबसे बुरी बात यह थी कि अगर उसकी मर्ज़ी चलती तो वह उसे अपने अलावा दुनिया में किसी और से दोस्ती करने की इजाज़त नहीं देती। उसके सभी रिश्तेदार उसे असहनीय लगते थे और वह उनसे दूरी बनाए रखती थी।

श्री योर्क और वह एक-दूसरे के साथ पूरी तरह से सहमत थे, फिर भी वे स्वभाव से एक सामाजिक, आतिथ्यप्रिय व्यक्ति थे, पारिवारिक एकता के समर्थक थे; और जैसा कि कहा गया है, अपनी युवावस्था में उन्हें केवल जीवंत, हंसमुख महिलाएं ही पसंद थीं। उन्होंने उन्हें क्यों चुना, वे एक-दूसरे के अनुकूल कैसे हुए, यह एक पेचीदा सवाल है, लेकिन अगर मामले का विश्लेषण करने के लिए समय हो तो इसका हल जल्द ही निकल सकता है। संक्षेप में, योर्क के चरित्र का एक अंधकारमय पक्ष भी था और एक उज्ज्वल पक्ष भी, और उनके अंधकारमय पक्ष को उनकी पत्नी के हमेशा उदास स्वभाव में सहानुभूति और आत्मीयता मिली। इसके अलावा, वह एक दृढ़ निश्चयी महिला थीं; उन्होंने कभी कोई कमजोर या घिसी-पिटी बात नहीं कही; समाज के प्रति उनके कठोर, लोकतांत्रिक विचार थे, और मानव स्वभाव के प्रति कुछ हद तक निंदक

विचार थे; वह खुद को परिपूर्ण और सुरक्षित मानती थीं, और बाकी दुनिया को पूरी तरह से गलत समझती थीं। उनकी मुख्य कमी सभी पुरुषों, वस्तुओं, पंथों और दलों के प्रति एक गहन, शाश्वत, अटूट संदेह था; यह संदेह उसकी आंखों के सामने धुंध की तरह था, उसके रास्ते में एक झूठा मार्गदर्शक था, चाहे वह कहीं भी देखे, चाहे वह कहीं भी मुड़े।

यह माना जा सकता है कि ऐसे दंपत्ति के बच्चे साधारण और सामान्य स्वभाव के नहीं होंगे; और वे थे भी नहीं। पाठक, आप उनमें से छह को देखिए। सबसे छोटा बच्चा माँ की गोद में है। वह अभी भी पूरी तरह से माँ का अपना है, और उस पर उसने अभी तक संदेह, शक या निंदा नहीं की है; वह अपनी माँ से पोषण पाता है, उससे लिपटा रहता है, उससे प्यार करता है, उसे दुनिया में किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यार करता है। उसे इस बात का पूरा यकीन है, क्योंकि वह माँ के सहारे ही जीवित है, इसलिए ऐसा होना स्वाभाविक है, इसीलिए वह उससे प्यार करती है।

अगली दो बेटियाँ हैं, रोज़ और जेसी; दोनों अब अपने पिता की गोद में बैठी हैं; वे अपनी माँ के पास शायद ही कभी जाती हैं, सिवाय तब जब ऐसा करना ज़रूरी हो। बड़ी बेटी रोज़ बारह साल की है; वह अपने पिता जैसी दिखती है—पूरे समूह में सबसे ज़्यादा उन्हीं जैसी—लेकिन उसका चेहरा किसी पत्थर की तरह कठोर है, मानो हाथीदांत से बना हो; रंग और रेखाएँ सब कुछ कोमल हैं। यॉर्क का चेहरा कठोर है—उनकी बेटी का चेहरा कठोर नहीं है, न ही बहुत सुंदर; यह सरल, मासूमियत से भरा है; गोल गाल खिले हुए हैं: जहाँ तक उसकी धूसर आँखों की बात है, वे मासूमियत से परे हैं; उनमें एक गंभीर आत्मा झलकती है—अभी एक युवा आत्मा है, लेकिन अगर शरीर साथ दे तो परिपक्व हो जाएगी; और न तो पिता और न ही माता की आत्मा इसकी तुलना में कुछ और है। दोनों के सार को ग्रहण करते हुए, यह एक दिन दोनों से बेहतर होगी—मज़बूत, कहीं अधिक पवित्र, अधिक महत्वाकांक्षी। रोज़ अब एक शांत, कभी-कभी ज़िद्दी लड़की है। उसकी माँ उसे अपने जैसी ही स्त्री बनाना चाहती है—एक ऐसी स्त्री जो अंधकारमय और नीरस कर्तव्यों को निभाए; रोज़ का मन विचारों से भरा हुआ है, उन विचारों के बीज से जो उसकी माँ को कभी पता नहीं चले। इन विचारों को कुचला जाना और दबाया जाना उसके लिए अक्सर पीड़ादायक होता है। उसने अभी तक विद्रोह नहीं किया है; लेकिन अगर उसे मजबूर किया गया, तो वह एक दिन विद्रोह करेगी, और फिर यह हमेशा के लिए होगा। रोज़ अपने पिता से प्यार

करती है: उसके पिता उस पर लोहे की छड़ी से शासन नहीं करते; वे उसके प्रति दयालु हैं। कभी-कभी उन्हें डर लगता है कि वह जीवित नहीं रहेगी, क्योंकि उसकी निगाहों से कभी-कभी जो बुद्धि की चिंगारी चमकती है और उसकी वाणी में जो चमक आती है, वह बहुत तेज है। इस विचार से वे अक्सर उसके प्रति उदास और संवेदनशील हो जाते हैं।

उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि नन्ही जेसी कम उम्र में ही मर जाएगी। वह इतनी हंसमुख, बातूनी, चंचल और आज भी इतनी अनोखी है; चिढ़ाने पर भावुक हो जाती है, लेकिन दुलारने पर बेहद स्नेहशील; कभी कोमल तो कभी चंचल; सख्त, फिर भी उदार; निडर - उदाहरण के लिए, अपनी माँ से, जिसके कठोर और सख्त नियमों का उसने अक्सर उल्लंघन किया है - फिर भी मदद करने वाले किसी भी व्यक्ति पर निर्भर। जेसी, अपने छोटे से प्यारे चेहरे, आकर्षक बातों और मनमोहक स्वभाव के साथ, एक लाडली की तरह है, और अपने पिता की लाडली है भी। यह अजीब बात है कि गुड़िया अपनी माँ से हूबहू मिलती-जुलती है, जैसे रोज़ अपने पिता से मिलती है, फिर भी चेहरे की बनावट - कितनी अलग!

श्री योर्क, अगर अब आपके सामने एक जादुई दर्पण रख दिया जाए, और उसमें आपको आपकी दोनों बेटियाँ बीस साल बाद दिखाई दें, तो आप क्या सोचेंगे? जादुई दर्पण यहाँ है: आपको उनके भाग्य का पता चलेगा - और सबसे पहले आपके छोटे से जीवन का, जेसी।

क्या आप इस जगह को जानते हैं? नहीं, आपने इसे कभी नहीं देखा; लेकिन आप इन पेड़ों, इन पत्तियों की प्रकृति को पहचानते हैं— सरू, विलो, यू। इस तरह के पत्थर के क्रॉस आपके लिए अपरिचित नहीं हैं, न ही ये सदाबहार फूलों की धुंधली मालाएँ। यही वह जगह है— हरी घास और एक धूसर संगमरमर का समाधि पत्थर। जेसी नीचे सो रही है। उसने अप्रैल का दिन जिया; वह बहुत प्रिय थी, बहुत प्रेम करने वाली थी। अपने छोटे से जीवन में, वह अक्सर आँसू बहाती थी, उसे अक्सर दुख होते थे; वह बीच-बीच में मुस्कुराती रहती थी, जो भी उसे देखता उसे प्रसन्न कर देती थी। रोज़ की रक्षक बाहों में उसकी मृत्यु शांत और सुखद थी, क्योंकि रोज़ कई कठिनाइयों में उसका सहारा और रक्षक रही थी। उस समय, मरती हुई और उसे देखती हुई अंग्रेज़ लड़कियाँ एक परदेस में अकेली थीं, और उस देश की मिट्टी ने जेसी को कब्र दी।

अब, दो साल बाद रोज़ को देखिए। क्रॉस और मालाएँ अजीब लग रही थीं, लेकिन

इस परिदृश्य की पहाड़ियाँ और जंगल उससे भी ज़्यादा अजीब लगते हैं। यह सचमुच इंग्लैंड से बहुत दूर है; वह तट जो इतना जंगली और हरा-भरा दिखता है, ज़रूर बहुत दूर होगा। यह एक तरह का कुदरती सन्नाटा है। उस जंगल के किनारे अनजान पक्षी मंडरा रहे हैं; यह कोई यूरोपीय नदी नहीं है, जिसके किनारे रोज़ सोच में डूबी बैठी है। यॉर्कशायर की वह छोटी, शांत लड़की दक्षिणी गोलार्ध के किसी क्षेत्र में अकेली प्रवासी है। क्या वह कभी वापस लौटेगी?

परिवार के तीन सबसे बड़े बेटे मैथ्यू, मार्क और मार्टिन हैं। वे तीनों एक कोने में साथ बैठे कोई खेल खेल रहे हैं। उनके तीनों चेहरों को ध्यान से देखिए: पहली नज़र में काफी मिलते-जुलते; दूसरी नज़र में अलग; तीसरी नज़र में एकदम विपरीत। तीनों के बाल काले, आँखें काली और गाल लाल हैं; तीनों के चेहरे पर अंग्रेजी नैन-नक्श हैं; तीनों अपने माता-पिता से मिलते-जुलते हैं; फिर भी हर एक की अपनी एक अलग पहचान है, जो उन्हें एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करती है।

मैं घर के सबसे बड़े बेटे मैथ्यू के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहूँगा, हालाँकि उसे देर तक निहारने और उसके चेहरे में छिपे गुणों या संकेतों के बारे में सोचने से खुद को रोकना नामुमकिन है। वह कोई साधारण लड़का नहीं है: उसके काले घने बाल, सफ़ेद माथा, लाल गाल, उसकी तेज़, गहरी आँखें, ये सब खूबियाँ उसके लिए आकर्षण का केंद्र हैं। ऐसा कैसे हो सकता है कि चाहे आप कितनी भी देर तक देखें, कमरे में केवल एक ही चीज़ है, और वह भी सबसे भयावह, जिससे मैथ्यू का चेहरा जुड़ाव महसूस करता है, और जिसकी याद उसे बार-बार अजीब तरह से आती है - वेसुवियस ज्वालामुखी का विस्फोट? आग और परछाईं उस लड़के की आत्मा के हिस्से लगते हैं - उसमें न दिन का उजाला है, न धूप, और न ही कभी चाँद की ठंडी किरणें। उसका शरीर अंग्रेज़ों जैसा है, लेकिन दिमाग अंग्रेज़ों जैसा नहीं - आप कह सकते हैं, जैसे ब्रिटिश कारीगरी में लिपटा इतालवी हीरा। वह खेल में उलझा हुआ है - उसके गुस्से को देखिए। श्री योर्क यह सब देखते हैं, और वे क्या कहते हैं? धीमी आवाज़ में वे विनती करते हैं, “मार्क और मार्टिन, अपने भाई को नाराज़ मत करो।” और यही लहजा दोनों माता-पिता हमेशा अपनाते हैं। सैद्धांतिक रूप से, वे पक्षपात की निंदा करते हैं—उस घर में उत्तराधिकार का कोई अधिकार नहीं है; लेकिन मैथ्यू को कभी नाराज़ नहीं किया जाना चाहिए, कभी उसका विरोध नहीं किया जाना चाहिए; वे उससे उकसावे को उसी लगन से दूर रखते हैं जैसे बारूद के ढेर से आग को दूर रखते हैं।

“समझौता करो, सुलह करो,” उनका आदर्श वाक्य है जहाँ भी मैथ्यू की बात हो। गणतंत्रवादी अपने ही खून के एक सदस्य को तानाशाह बना रहे हैं। यह बात युवा वंशज जानते और महसूस करते हैं, और दिल ही दिल में वे सभी अन्याय के खिलाफ विद्रोह करते हैं। वे अपने माता-पिता के इरादों को नहीं समझ पाते; वे केवल उनके साथ होने वाले व्यवहार में अंतर देखते हैं। श्री योर्क की युवा शांति की शाखाओं में पहले से ही नासूर के दांत बोए जा चुके हैं; कलह एक दिन फसल का रूप लेगी।

मार्क एक सुंदर दिखने वाला लड़का है, परिवार में सबसे सरल चेहरे वाला। वह बेहद शांत है; उसकी मुस्कान तीक्ष्ण है; वह सबसे शुष्क और चुभने वाली बातें भी शांत स्वर में कह सकता है। उसकी शांति के बावजूद, उसका थोड़ा झुका हुआ माथा उसके गुस्से को दर्शाता है और याद दिलाता है कि शांत पानी हमेशा सुरक्षित नहीं होता। इसके अलावा, वह इतना स्थिर, अविचलित और भावहीन है कि खुश नहीं रह सकता। मार्क के जीवन में कभी कोई खुशी नहीं होगी। जब वह पच्चीस साल का होगा, तब वह सोचेगा कि लोग हंसते क्यों हैं, और खुश दिखने वाले सभी लोगों को मूर्ख समझेगा। मार्क के लिए कविता का कोई अस्तित्व नहीं होगा, न साहित्य में और न ही जीवन में; इसकी सर्वोत्तम रचनाएँ उसे केवल बकवास और निरर्थक लगेंगी। उत्साह उसके लिए घृणा और तिरस्कार का विषय होगा। मार्क में जवानी नहीं होगी; हालांकि वह देखने में किशोर और खिलखिलाता हुआ लगता है, लेकिन मन से वह पहले ही अधेड़ हो चुका होगा। उसका शरीर अभी चौदह वर्ष का है, लेकिन उसकी आत्मा पहले ही तीस वर्ष की हो चुकी है।

तीनों भाइयों में सबसे छोटा मार्टिन, एक अलग ही स्वभाव का है। उसका जीवन छोटा हो भी सकता है और नहीं भी, लेकिन वह निश्चित रूप से शानदार होगा। वह जीवन के सभी भ्रमों से गुजरेगा, उनमें आधा विश्वास करेगा, उनका पूरा आनंद लेगा, और फिर उनसे आगे निकल जाएगा। वह लड़का सुंदर नहीं है—अपने दोनों भाइयों जितना सुंदर नहीं। वह साधारण है; उस पर एक खोल जैसा है, एक सूखा आवरण, जिसे वह लगभग बीस साल की उम्र तक पहने रहेगा, फिर उसे उतार देगा। लगभग उसी समय वह खुद को सुंदर बनाएगा। उस उम्र तक वह असभ्य व्यवहार करेगा, शायद सादे कपड़े पहनेगा; लेकिन कोकून में तितली में बदलने की क्षमता बनी रहेगी, और उचित समय पर ऐसा परिवर्तन होगा। कुछ समय के लिए वह अभिमानी होगा, शायद बिल्कुल बचकाना, सुख का भूखा और प्रशंसा का इच्छुक, ज्ञान का भी प्यासा।

वह दुनिया से मिलने वाली हर चीज चाहेगा, चाहे वह आनंद हो या ज्ञान; शायद वह हर स्रोत से भरपूर घूंट लेगा। वह प्यास तो बुझ गई, अब आगे क्या? मुझे नहीं पता। मार्टिन एक असाधारण व्यक्ति हो सकता है। वह ऐसा होगा या नहीं, यह भविष्यवाणी करना भविष्यवक्ता के बस में नहीं है: इस विषय पर अभी तक कोई स्पष्ट भविष्यवाणी नहीं हुई है।

श्री यॉर्क के परिवार को ही लीजिए: उन छह युवा बच्चों में इतनी बौद्धिक क्षमता, इतनी मौलिकता, इतनी सक्रियता और इतना तेज दिमाग है कि अगर उन्हें छह साधारण परिवारों में बाँट दिया जाए, तो हर बच्चे में औसत से कहीं अधिक समझ और क्षमता होगी। श्री यॉर्क यह जानते हैं और अपने परिवार पर गर्व करते हैं। यॉर्कशायर की पहाड़ियों और मैदानों में ऐसे परिवार जगह-जगह मिलते हैं - अनोखे, जोशीले, ऊर्जावान; उच्च वंश और तेज बुद्धि वाले; अपनी शक्ति के घमंड में थोड़े उग्र और अपनी जन्मजात शक्तियों के बल पर थोड़े अड़ियल; शिष्टाचार, विचारशीलता और विनम्रता की कमी वाले, लेकिन चट्टान पर बैठे चील या मैदान में दौड़ते घोड़े की तरह मजबूत, उत्साही और सच्चे स्वभाव के।

बैठक के दरवाजे पर हल्की सी दस्तक सुनाई देती है; लड़के अपने खेल में इतना शोर मचा रहे थे, और छोटी जेसी अपने पिता के लिए इतना मधुर स्कॉटिश गीत गा रही थी - जो स्कॉटिश और इतालवी गीतों के शौकीन हैं, और उन्होंने अपनी संगीतप्रिय छोटी बेटी को कुछ बेहतरीन गीत सिखाए हैं - कि बाहरी दरवाजे पर हुई घंटी पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

श्रीमती यॉर्क अपनी उस संयमित और गंभीर आवाज़ में बोलीं, जो हमेशा एक मातम भरी उदासी में बदल जाती थी, चाहे बात रसोई में हलवा बनाने का आदेश देने की हो, लड़कों को हॉल में अपनी टोपियाँ टांगने के लिए कहने की हो या लड़कियों को सिलाई के लिए बुलाने की हो— "अंदर आइए!" और रॉबर्ट मूर अंदर आ गए।

मूर की स्वाभाविक गंभीरता और संयम (क्योंकि शाम को जब भी वह आते हैं तो शराब के गिलास कभी नहीं मंगवाते) ने श्रीमती यॉर्क को इतना प्रभावित किया है कि उन्होंने अभी तक अपने पति से उनके बारे में कोई निजी शिकायत नहीं की है; उन्हें अभी तक यह पता नहीं चला है कि वह किसी गुप्त साजिश में फंसे हुए हैं जिसके कारण उनकी शादी नहीं हो पा रही है, या वह भेस बदले हुए भेड़िया हैं - ये वो बातें हैं जो उन्होंने शादी के बाद अपने पति के अधिकांश अविवाहित मित्रों के बारे में जल्दी ही

जान ली थीं और तदनुसार उन्हें अपने भोजन से बाहर कर दिया था; वास्तव में, उनके इस आचरण में न्यायसंगत और समझदारी के साथ-साथ कठोरता भी थी।

"तो, क्या आप ही हैं?" वह मिस्टर मूर से कहती है, जब वह उसके पास आकर अपना हाथ बढ़ाते हैं। "रात के इस समय आप इधर-उधर क्यों घूम रहे हैं? आपको घर पर होना चाहिए।"

"क्या किसी अकेले आदमी को घर वाला कहा जा सकता है, महोदया?" वह पूछता है।

"छी!" श्रीमती यॉर्क कहती हैं, जो अपने पति की तरह ही दिखावटी शिष्टाचार से घृणा करती हैं और उसका पालन भी उतना ही कम करती हैं। उनकी सीधी-सादी बातें कभी-कभी प्रशंसा जगाती हैं, लेकिन अक्सर चिंता पैदा करती हैं — "छी! मुझसे बकवास करने की ज़रूरत नहीं है; एक अविवाहित व्यक्ति चाहे तो घर बसा सकता है। क्या आपकी बहन आपके लिए घर नहीं बसाती?"

"वो नहीं," श्री योर्क ने बीच में कहा। "होर्टेंस एक ईमानदार लड़की है। लेकिन जब मैं रॉबर्ट की उम्र का था, तब मेरी पाँच-छह बहनें थीं, सभी उसकी तरह ही सभ्य और शिष्ट थीं; लेकिन हेस्टर, तुम देखो, इन सब बातों ने मुझे पत्नी ढूंढने से नहीं रोका।"

"और उसे मुझसे शादी करने का बहुत पछतावा है," श्रीमती यॉर्क ने कहा, जिन्हें कभी-कभी शादी पर व्यंग्य करने की आदत थी, भले ही वह खुद पर ही क्यों न हो। "रॉबर्ट मूर, उसे बहुत पछतावा है, जैसा कि आप उसकी सजा देखकर यकीन कर लेंगी" (यहाँ उन्होंने अपने बच्चों की ओर इशारा किया)। "अगर हो सके तो भला कौन ऐसे बदतमीज़ और बिगड़ैल बच्चों की ज़िम्मेदारी उठाएगा? उन्हें दुनिया में लाना ही काफी मुश्किल नहीं है, बल्कि उन्हें खिलाना-पिलाना, कपड़े पहनाना, पालना-पोसना और जीवन में सही राह दिखाना भी है। नौजवान, जब आपको शादी करने का मन करे, तो हमारे चार बेटों और दो बेटियों के बारे में सोचिएगा और कोई भी कदम उठाने से पहले दो बार सोच लीजिएगा।"

"फिलहाल तो मुझे ऐसा करने का मन नहीं है। मुझे लगता है कि ये शादी करने या शादी करवाने का समय नहीं है।"

इस तरह की उदासी भरी भावना श्रीमती यॉर्क की स्वीकृति अवश्य प्राप्त करती। उन्होंने सहमति में सिर हिलाया और आह भरी; लेकिन एक मिनट में ही उन्होंने कहा, "मैं आपके ज़माने के सुलेमान की बुद्धिमत्ता को ज़्यादा महत्व नहीं देती; आपकी पहली

सनक ही उसे चकनाचूर कर देगी। तब तक, बैठ जाइए, महोदय। मुझे लगता है कि आप खड़े-खड़े ही बात कर सकते हैं, बैठे-खड़े भी?"

यह उनके मेहमान को कुर्सी पर बैठने के लिए आमंत्रित करने का उनका तरीका था। मेहमान ने उनकी बात मानी ही थी कि नन्ही जेसी अपने पिता की गोद से कूदकर मिस्टर मूर की बाहों में दौड़ पड़ी, जो तुरंत उन्हें गले लगाने के लिए फैली हुई थीं।

“आप उसकी शादी की बात कर रही हैं,” उसने अपनी माँ से बड़े गुस्से से कहा, जब उसे हल्के से उसकी गोद में उठाया गया, “और वह अब शादीशुदा है, या लगभग शादीशुदा है। उसने पिछली गर्मियों में मुझसे वादा किया था कि मैं उसकी पत्नी बनूँगी, जब उसने मुझे पहली बार मेरी नई सफेद फ्रॉक और नीली कमरबंद में देखा था। है ना, पिताजी?” (ये बच्चे पापा और मम्मा कहने के आदी नहीं थे; उनकी माँ ऐसी किसी भी तरह की झिझक को बर्दाश्त नहीं करती थी।)

“हाँ, मेरी प्यारी बच्ची,” उसने वादा किया; मैं गवाह हूँ। “लेकिन जेसी, उससे यह बात दोबारा कहलवाओ। उसके जैसे लोग तो बस झूठे और बेवकूफ होते हैं।”

"वह झूठा नहीं है। वह इतना सुंदर है कि झूठा हो ही नहीं सकता," जेसी ने अपने लंबे प्रेमी की ओर देखते हुए, उसकी आस्था पर पूर्ण विश्वास के साथ कहा।

“वाह!” श्री योर्क चिल्लाए। “यही कारण है कि वह बदमाश है, और यही इस बात का सबूत है कि वह बदमाश है।”

“पर वह इतने दुखी दिखते हैं कि बनावटी नहीं हो सकते,” पिता की कुर्सी के पीछे से एक धीमी आवाज़ आई। “अगर वह हमेशा हंसते रहते, तो मुझे लगता कि वह वादे जल्दी भूल जाते, लेकिन श्री मूर कभी हंसते ही नहीं।”

"रोज़, तुम्हारा भावुक पैसा सबसे बड़ा धोखा है," श्री योर्क ने टिप्पणी की।

"वह भावुक नहीं है," रोज़ ने कहा।

श्री मूर ने थोड़ा आश्चर्य से उसकी ओर देखा और साथ ही मुस्कुराए।

"रोज़, तुम्हें कैसे पता कि मैं भावुक नहीं हूँ?"

"क्योंकि मैंने एक महिला को यह कहते सुना कि आप नहीं हैं।"

“वाह, ये तो वाकई दिलचस्प है!” श्री यॉर्क ने अपनी कुर्सी आग के पास खींचते हुए कहा। “एक महिला! ये तो काफी रोमांटिक लग रहा है। हमें अंदाज़ा लगाना होगा कि ये कौन है। — रोजी, अपने पिता को धीरे से नाम बताओ। उन्हें पता न चलने देना।”

"रोज़, ज़्यादा बोलने की कोशिश मत करो," श्रीमती यॉर्क ने हमेशा की तरह मज़ा किरकिरा करते हुए बीच में ही टोक दिया, "और न ही जेसी। बड़ों की उपस्थिति में सभी बच्चों, विशेषकर लड़कियों को चुप रहना चाहिए।"

"तो फिर हमें जीभ क्यों दी गई है?" जेस्सी ने चंचलता से पूछा; वहीं रोज़ ने अपनी माँ की ओर ऐसे भाव से देखा मानो कह रही हो कि उसे इस बात को समझना चाहिए और आराम से इस पर विचार करना चाहिए। दो मिनट तक गंभीरता से सोचने के बाद उसने पूछा, "और माँ, खासकर लड़कियों को ही क्यों?"

"पहला कारण तो यह है कि मैं ऐसा कहती हूं; और दूसरा कारण यह है कि विवेक और संयम एक लड़की की सबसे अच्छी बुद्धिमत्ता होती है।"

"मेरी प्रिय महोदया," मूर ने कहा, "आपकी बात बहुत अच्छी है – इससे मुझे मेरी प्यारी बहन की बातें याद आ गईं; लेकिन वास्तव में यह इन नन्हे बच्चों पर लागू नहीं होती। रोज़ और जेसी को मुझसे खुलकर बात करने दीजिए, वरना यहाँ आने का मेरा मुख्य उद्देश्य ही समाप्त हो जाएगा। मुझे उनकी बातें अच्छी लगती हैं; उनसे मुझे सुकून मिलता है।"

"है ना?" जेस्सी ने पूछा। "यह तो उन बदमाश लड़कों के तुम्हारे आसपास आने से कहीं बेहतर है। — आप ही तो उन्हें बदमाश कहती हैं, माँ।"

"हाँ, प्यारी, हज़ार गुना बेहतर। मेरे आस-पास दिन भर में काफी बदमाश लड़के रहते हैं, प्यारे।"

"ऐसे बहुत से लोग हैं जो लड़कों पर ध्यान देते हैं। मेरे सभी चाचा-चाची अपने भतीजों को अपनी भांजियों से बेहतर समझते हैं, और जब सज्जन यहाँ भोजन करने आते हैं, तो हमेशा मैथ्यू, मार्क और मार्टिन से ही बात होती है, रोज़ और मुझसे कभी नहीं। श्री मूर हमारे मित्र हैं, और हम उन्हें अपने मित्र बनाए रखेंगे। — लेकिन ध्यान रखना, रोज़, वह तुम्हारे उतने मित्र नहीं हैं जितने मेरे। वह मेरे निजी परिचित हैं; यह बात याद रखना!" और उसने चेतावनी भरे इशारे से अपना छोटा हाथ ऊपर उठाया।

रोज़ को उस नन्ही सी उंगली से डांट सुनने की आदत हो चुकी थी। उसकी इच्छा रोज़ाना चंचल जेसी के इशारों पर चलती थी। जेसी हर बात में उसका मार्गदर्शन करती थी, उस पर हुकुम चलाती थी। दिखावे और मौज-मस्ती के हर मौके पर जेसी आगे रहती थी और रोज़ चुपचाप पीछे हट जाती थी; वहीं, जब ज़िंदगी की मुश्किलों - काम और अभावों - की बात आती, तो रोज़ अपनी ज़िम्मेदारी के अलावा, अपनी बहन की

ज़िम्मेदारी भी सहजता से उठा लेती थी। जेसी ने मन ही मन ठान लिया था कि जब वह शादी करने लायक हो जाएगी, तो उसकी शादी हो जाएगी; रोज़ ने तय कर लिया था कि उसे कुंवारी ही रहना है, उसके साथ रहना है, उसके बच्चों की देखभाल करनी है और घर संभालना है। दो बहनों के बीच ऐसी स्थिति आम बात है, जहाँ एक सादी और दूसरी सुंदर होती है; लेकिन इस मामले में, अगर बाहरी दिखावट में कोई फ़र्क था, तो रोज़ को फ़ायदा था: उसका चेहरा चुलबुली जेसी के चेहरे से ज़्यादा सुडौल था। लेकिन जेसी को तेज बुद्धि और जीवंत भावनाओं के साथ-साथ सम्मोहन की अद्भुत क्षमता भी प्राप्त थी, वह जब चाहे, जहां चाहे और जिसे चाहे मोहित कर सकती थी। रोज़ को एक नेक, उदार आत्मा, गहन रूप से विकसित महान बुद्धि और लोहे के समान सच्चा हृदय प्राप्त था, लेकिन लोगों को आकर्षित करने का तरीका उसमें नहीं था।

"अब, रोज़, मुझे उस महिला का नाम बताओ जिसने यह मानने से इनकार किया कि मैं भावुक था," श्री मूर ने आग्रह किया।

रोज़ को उत्तेजना का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था, वरना वह उसे कुछ देर तक दुविधा में रखती। उसने संक्षेप में जवाब दिया, "मैं नहीं कर सकती। मुझे उसका नाम नहीं पता।"

“मुझे उसके बारे में बताओ। वह कैसी थी? तुमने उसे कहाँ देखा था?”

"जब मैं और जेसी, केट और सुसान पियर्सन के साथ व्हिनबरी में दिन बिताने गए, जो अभी-अभी स्कूल से घर लौटी थीं, तो श्रीमती पियर्सन के घर पर एक पार्टी थी, और कुछ वयस्क महिलाएं ड्राइंग रूम के एक कोने में बैठकर आपके बारे में बातें कर रही थीं।"

"क्या आप उनमें से किसी को नहीं जानते थे?"

"हन्ना, और हैरियट, और डोरा, और मैरी साइक्स।"

“अच्छा। क्या वे मुझे प्रताड़ित कर रहे थे, रोजी?”

“उनमें से कुछ ऐसे ही थे। उन्होंने तुम्हें मानवद्वेषी कहा। मुझे वह शब्द याद है। घर आकर मैंने उसे शब्दकोश में ढूंढा। इसका मतलब है पुरुष-द्वेषी।”

“इसके अलावा और क्या?”

"हन्ना साइक्स ने कहा था कि तुम एक गंभीर पिल्ला थे।"

“बेहतर!” श्री योर्क हंसते हुए बोले। “वाह, शानदार! हन्ना! वही लाल बालों वाली

लड़की है - अच्छी लड़की है, लेकिन थोड़ी मंदबुद्धि है।”

“लगता है वो मेरे लिए काफी समझदार है,” मूर ने कहा। “सचमुच एक गंभीर पिल्ला! अच्छा, रोज़, आगे बढ़ो।”

"मिस पियर्सन ने कहा कि उनका मानना था कि आपमें काफी बनावटीपन है, और आपके काले बालों और पीले चेहरे के साथ आप उन्हें किसी भावुक व्यक्ति की तरह लगते हैं।"

श्री योर्क फिर हँसे। इस बार श्रीमती योर्क भी उनके साथ हँसने लगीं। उन्होंने कहा, “देखिए, लोग आपकी पीठ पीछे कितनी इज़्ज़त करते हैं; फिर भी मुझे लगता है कि मिस पियर्सन आपको पाना चाहती हैं। जब आप पहली बार इस देश में आए थे, तब से ही वह आप पर मोहित हैं, चाहे वह कितनी भी बूढ़ी क्यों न हों।”

“और रोजी, किसने उसका विरोध किया?” मूर ने पूछा।

“एक महिला जिसे मैं नहीं जानती, क्योंकि वह कभी यहाँ नहीं आती, हालाँकि मैं उसे हर रविवार चर्च में देखती हूँ। वह उपदेश मंच के पास वाली बेंच पर बैठती है। मैं आमतौर पर अपनी प्रार्थना-पुस्तक देखने के बजाय उसे देखती रहती हूँ, क्योंकि वह हमारे भोजन कक्ष में लगी उस तस्वीर जैसी है, हाथ में कबूतर लिए वह महिला - कम से कम उसकी आँखें तो वैसी ही हैं, और नाक भी, एक सीधी नाक, जिससे उसका पूरा चेहरा, किसी तरह, साफ-सुथरा दिखता है।”

“और आप उसे नहीं जानते!” जेसी ने बेहद हैरानी भरे स्वर में कहा। “यह तो बिल्कुल रोज़ जैसी है। मिस्टर मूर, मैं अक्सर सोचती हूँ कि मेरी बहन किस तरह की दुनिया में रहती है। मुझे यकीन है कि वह अपना सारा समय इसी दुनिया में नहीं बिताती। अक्सर पता चलता है कि उसे किसी न किसी छोटी-मोटी बात की जानकारी नहीं होती, जबकि बाकी सभी को होती है। सोचिए, वह हर रविवार को पूरी श्रद्धा से चर्च जाती है, और प्रार्थना के दौरान एक ही व्यक्ति को देखती रहती है, और कभी उसका नाम तक नहीं पूछती। उसका मतलब है कैरोलीन हेलस्टोन, पादरी की भतीजी। मुझे सब याद है। मिस हेलस्टोन, ऐनी पियर्सन से बहुत नाराज़ थीं। उन्होंने कहा था, ‘रॉबर्ट मूर न तो दिखावटी हैं और न ही भावुक; आप लोग उनके चरित्र को पूरी तरह गलत समझ रहे हैं, या यूँ कहें कि आप में से कोई भी उनके बारे में कुछ नहीं जानता।’ अब, क्या मैं आपको बताऊँ कि वह कैसी है? मैं लोगों को और उनके पहनावे को रोज़ से भी बेहतर पहचान सकती हूँ।”

हमें सुनने दीजिए।

“वह सुंदर है; गोरी है; उसका गला पतला और सुडौल है; उसके लंबे घुंघराले बाल हैं, कड़े नहीं — वे खुले और मुलायम हैं, उनका रंग भूरा है, गहरा नहीं; वह शांत और स्पष्ट स्वर में बोलती है; वह चलते समय कभी शोर नहीं करती; वह अक्सर धूसर रेशमी पोशाक पहनती है; वह हर तरह से साफ-सुथरी है — उसके गाउन, जूते और दस्ताने हमेशा उस पर फिट बैठते हैं। मैं उसे एक सभ्य महिला कहती हूँ, और जब मैं उसकी लंबाई की हो जाऊँगी, तो मैं भी उसी की तरह बनना चाहती हूँ। अगर मैं वैसी बन जाऊँ, तो क्या मैं तुम्हें भाऊँगी? क्या तुम मुझसे शादी करोगी?”

मूर ने जेसी के बालों पर हाथ फेरा। एक पल के लिए ऐसा लगा मानो वह उसे अपने करीब खींचना चाहता हो, लेकिन इसके बजाय उसने उसे थोड़ा और दूर कर दिया।

“ओह! तुम मुझे नहीं अपनाओगे? तुम मुझे दूर धकेल रहे हो।”

“क्यों, जेसी, तुम्हें मेरी ज़रा भी परवाह नहीं है। तुम अब कभी भी हॉलो में मुझसे मिलने नहीं आती।”

क्योंकि तुम मुझसे पूछते ही नहीं हो।

इस पर श्री मूर ने दोनों छोटी लड़कियों को अगले दिन उनसे मिलने का निमंत्रण दिया और वादा किया कि चूंकि वे सुबह स्टिलब्रो जा रहे हैं, इसलिए वे दोनों के लिए उपहार खरीदेंगे, उपहार किस प्रकार का होगा यह उन्होंने उस समय नहीं बताया, लेकिन उन्हें आकर देखना होगा। जेसी जवाब देने ही वाली थी कि तभी अचानक एक लड़का बीच में बोल पड़ा, —

“मुझे पता है कि आप सब मिस हेलस्टोन के बारे में इतनी बातें कर रहे हैं। वह बदसूरत लड़की है। मुझे उससे नफरत है। मुझे सभी महिलाओं से नफरत है। मुझे समझ नहीं आता कि वे किसलिए बनी हैं।”

“मार्टिन!” उसके पिता ने कहा, दरअसल मार्टिन ही था। लड़के ने बस अपना व्यंग्यपूर्ण, आधा अकड़ू, आधा उग्र चेहरा पिता की कुर्सी की ओर घुमाकर जवाब दिया। “मार्टिन, मेरे बेटे, तू अभी एक अकड़ू बच्चा है; एक दिन तू एक उद्दंड कुत्ता बन जाएगा। लेकिन अपनी इन भावनाओं पर अडिग रह। देखो, मैं ये शब्द अभी अपनी जेब में लिख लेता हूँ।” (पिता ने चमड़े की जिल्द वाली एक किताब निकाली और जानबूझकर उसमें लिखा।) “दस साल बाद, मार्टिन, अगर उस दिन तू और मैं दोनों

जीवित रहे, तो मैं तुझे उस भाषण की याद दिलाऊँगा।"

"तो मैं भी यही कहूंगा। मेरा इरादा हमेशा से महिलाओं से नफरत करने का है। वे गुड़िया जैसी होती हैं; वे बस सज-धज कर घूमती हैं और लोगों की तारीफ पाने के लिए तैरती रहती हैं। मैं कभी शादी नहीं करूंगा। मैं कुंवारा ही रहूंगा।"

"इस पर डटे रहो! इस पर डटे रहो! — हेस्टर" (अपनी पत्नी को संबोधित करते हुए), "जब मैं उसकी उम्र का था, तब मैं भी उसी की तरह था — एक कट्टर स्त्री-द्वेषी; और देखो! जब मैं तेईस साल का हुआ — उस समय मैं फ्रांस और इटली, और न जाने कहाँ-कहाँ घूम रहा था — मैं हर रात सोने से पहले अपने बालों को कर्ल करता था, कान में बाली पहनता था, और अगर फैशन होता तो नाक में भी पहन लेता, और ये सब इसलिए करता था ताकि मैं महिलाओं को आकर्षित और सुंदर लगूँ। मार्टिन भी ऐसा ही करेगा।"

"क्या मैं पहनूंगा? कभी नहीं! मुझमें ज़्यादा समझ है। पिताजी, आप कितने महान व्यक्ति थे! कपड़ों के मामले में, मैं यह कसम खाता हूँ: मैं कभी भी इससे ज़्यादा सजग नहीं बनूंगा जितना आप मुझे अभी देख रहे हैं। — श्री मूर, मैं सिर से पैर तक नीले कपड़े पहने हुए हूँ, और वे मुझ पर हंसते हैं, और मुझे ग्रामर स्कूल में नाविक कहते हैं। मैं उन पर और ज़ोर से हंसता हूँ, और कहता हूँ कि वे सब मैना और तोते हैं, जिनके कोट एक रंग के, उनकी जैकेट दूसरे रंग की और उनकी पतलून तीसरे रंग की हैं। मैं हमेशा नीले कपड़े पहनूंगा, और नीले कपड़े के अलावा कुछ नहीं। बहुरंगी वस्त्र पहनना मनुष्य की गरिमा के विरुद्ध है।"

"दस साल बाद, मार्टिन, किसी भी दर्जी की दुकान में तुम्हारे तीक्ष्ण स्वाद के लिए पर्याप्त विविधतापूर्ण रंगों का विकल्प नहीं होगा; किसी भी इत्र विक्रेता के पास तुम्हारी नज़ाकत भरी इंद्रियों के लिए पर्याप्त उत्कृष्ट सुगंध नहीं होगी।"

मार्टिन ने तिरस्कार भरी निगाहों से देखा, लेकिन कोई और जवाब नहीं दिया। इसी बीच मार्क, जो कुछ मिनटों से एक साइड टेबल पर किताबों के ढेर में कुछ ढूंढ रहा था, ने बात सुनी। उसने अजीब तरह से धीमी, शांत आवाज में बात की, और उसके चेहरे पर एक ऐसा व्यंग्य भाव था जिसे शब्दों में बयान करना मुश्किल था।

"श्रीमान मूर," उन्होंने कहा, "आपको लगता होगा कि मिस कैरोलिन हेलस्टोन ने आपको भावुक न कहकर शायद आपकी तारीफ की होगी। मुझे लगा कि जब मेरी बहनों ने आपको ये शब्द कहे तो आप उलझन में पड़ गए, मानो आपको अच्छा लगा

हो। आप बिल्कुल लाल हो गए, ठीक वैसे ही जैसे हमारे स्कूल का वो घमंडी लड़का, जो कक्षा में किसी से आगे निकलने पर हमेशा शरमा जाता है। आपकी जानकारी के लिए, श्रीमान मूर, मैंने शब्दकोश में 'भावुक' शब्द का अर्थ देखा है, और मुझे पता चला है कि इसका अर्थ है 'भावुकता से भरा हुआ'। और गहराई से देखने पर, 'भावुकता' का अर्थ विचार, कल्पना या धारणा होता है। इसलिए, एक भावुक व्यक्ति वो होता है जिसके मन में विचार, कल्पना या धारणा होती है; एक भावहीन व्यक्ति वो होता है जिसमें विचार, कल्पना या धारणा नहीं होती।"

और मार्क रुक गया। उसने न तो मुस्कुराया, न ही प्रशंसा पाने के लिए इधर-उधर देखा। उसने अपनी बात कह दी थी और चुप हो गया।

"अरे वाह! मेरे दोस्त," श्री मूर ने योर्क से कहा, "तुम्हारे बच्चे तो सचमुच बहुत ही बुरे हैं!"

मार्क का भाषण ध्यान से सुन रही रोज़ ने जवाब दिया, "विचार, धारणाएँ और विचार कई प्रकार के होते हैं, अच्छे और बुरे। भावुकता का तात्पर्य बुरे से ही होना चाहिए, या मिस हेलस्टोन ने इसे इसी अर्थ में लिया होगा, क्योंकि वह मिस्टर मूर को दोष नहीं दे रही थीं; वह उनका बचाव कर रही थीं।"

"यही तो मेरी प्यारी सी हिमायती है!" मूर ने रोज़ का हाथ पकड़ते हुए कहा।

"वह उसका बचाव कर रही थी," रोज़ ने दोहराया, "अगर मैं उसकी जगह होती तो मैं भी यही करती, क्योंकि दूसरी महिलाएं दुर्भावना से बोल रही थीं।"

"महिलाएं हमेशा द्वेषपूर्ण बातें करती हैं," मार्टिन ने टिप्पणी की। "द्वेषपूर्ण होना महिलाओं का स्वभाव है।"

मैथ्यू ने अब पहली बार अपने होंठ खोले। "मार्टिन कितना मूर्ख है, जो हमेशा उन चीजों के बारे में बकवास करता रहता है जिन्हें वह समझता ही नहीं!"

"एक स्वतंत्र व्यक्ति होने के नाते, मुझे जो भी विषय पसंद हो, उस पर बोलने का विशेषाधिकार प्राप्त है," मार्टिन ने जवाब दिया।

बड़े भाई ने जवाब दिया, "तुम इसका इस हद तक इस्तेमाल करते हो, या यों कहें कि इसका दुरुपयोग करते हो, कि तुम साबित कर देते हो कि तुम्हें गुलाम होना चाहिए था।"

"एक गुलाम! एक गुलाम! वो भी एक यॉर्क का, और एक यॉर्क से! ये आदमी," उसने मेज पर खड़े होकर मैथ्यू की ओर इशारा करते हुए कहा, "ये आदमी भूल गया

है, जो ब्रायरफील्ड का हर किसान जानता है, कि हमारे घर में पैदा हुए सभी लोगों के पैर की एड़ी धनुषाकार होती है जिसके नीचे से पानी बह सकता है – इस बात का सबूत कि पिछले तीन सौ सालों से हमारे खून का कोई गुलाम नहीं रहा है।"

"माउंटबैंक!" मैथ्यू ने कहा।

"बच्चों, चुप रहो!" श्री योर्क ने कहा। "मार्टिन, तुम शरारती हो। अगर तुम न होते तो कोई गड़बड़ नहीं होती।"

"सचमुच! क्या यह सही है? क्या मैंने शुरू किया था, या मैथ्यू ने? क्या मैंने उससे बात की थी जब उसने मुझ पर मूर्खों की तरह बड़बड़ाने का आरोप लगाया था?"

"एक अभिमानी मूर्ख!" मैथ्यू ने दोहराया।

यहां श्रीमती यॉर्क खुद को झुलाने लगीं - यह उनके लिए एक अशुभ संकेत था, क्योंकि इसके बाद कभी-कभी, खासकर जब मैथ्यू किसी संघर्ष में हार जाता था, तो उन्हें हिस्टीरिया का दौरा पड़ जाता था।

"मुझे समझ नहीं आता कि मुझे मैथ्यू योर्क की बदतमीजी क्यों सहन करनी चाहिए, या उसे मेरे प्रति अपशब्दों का प्रयोग करने का क्या अधिकार है," मार्टिन ने कहा।

"उसे कोई अधिकार नहीं है, मेरे बेटे; लेकिन अपने भाई को सत्तर-सात बार तक क्षमा कर दो," श्री योर्क ने शांत भाव से कहा।

"हमेशा एक जैसे, और सिद्धांत और व्यवहार हमेशा एक दूसरे के विपरीत!" मार्टिन ने कमरे से बाहर निकलते हुए बुदबुदाया।

"बेटा, तुम कहाँ जा रहे हो?" पिता ने पूछा।

"कहीं ऐसी जगह जहां मैं अपमान से सुरक्षित रह सकूं, अगर मुझे इस घर में ऐसी कोई जगह मिल सके।"

मैथ्यू ने बड़ी उद्दंडता से हँसा। मार्टिन ने उसे एक अजीब नज़र से देखा और उसका दुबला-पतला शरीर काँप उठा; लेकिन उसने खुद को संयमित रखा।

उन्होंने पूछा, "मुझे लगता है कि मेरे नाम वापस लेने पर कोई आपत्ति नहीं है?"

"नहीं। जाओ, मेरे बेटे; लेकिन याद रखना कि किसी के प्रति द्वेष मत रखना।"

मार्टिन चला गया, और मैथ्यू ने उसके पीछे एक और उद्दंड हंसी हंस दी। रोज़ ने अपना सुंदर सिर मूर के कंधे से उठाया, जिस पर वह कुछ पल के लिए टिका हुआ था, और मैथ्यू पर स्थिर दृष्टि डालते हुए कहा, "मार्टिन दुखी है, और तुम खुश हो;

लेकिन मैं तुम्हारी जगह मार्टिन होना पसंद करूंगी। मुझे तुम्हारा स्वभाव पसंद नहीं है।"

यहां, श्रीमती यॉर्क की सिसकियों से उन्हें जो आशंका हुई थी, उसे टालने या कम से कम उससे बचने के लिए, श्री मूर उठे और जेसी को अपनी गोद से उतारकर उसे और रोज़ को चूमा, साथ ही उन्हें याद दिलाया कि वे कल दोपहर समय पर हॉलो अवश्य आएं; फिर, मेज़बान से विदा लेकर उन्होंने श्री यॉर्क से कहा, "क्या मैं आपसे कुछ बात कर सकता हूँ?" और वे उनके पीछे कमरे से बाहर चले गए। उनकी संक्षिप्त बातचीत हॉल में हुई।

“क्या आपके पास किसी अच्छे कारीगर के लिए रोजगार है?” मूर ने पूछा।

"आज के समय में यह एक निरर्थक प्रश्न है, जब आप जानते हैं कि प्रत्येक मालिक के पास कई अच्छे कारीगर होते हैं जिन्हें वह पूरा रोजगार नहीं दे सकता।"

"यदि संभव हो तो आपको इस व्यक्ति का कार्यभार संभालकर मेरी कृपा करनी होगी।"

"मेरे बेटे, मैं पूरे इंग्लैंड की सेवा करने के लिए और अधिक लोगों को काम पर नहीं रख सकता।"

"इसका कोई मतलब नहीं है; मुझे उसके लिए कहीं न कहीं जगह ढूंढनी ही होगी।"

"कौन है ये?"

“विलियम फैरेन।”

मैं विलियम को जानता हूँ। विलियम एक बिलकुल ईमानदार आदमी है।

“वह तीन महीने से बेरोजगार है। उसका परिवार बड़ा है। हमें यकीन है कि वे बिना वेतन के नहीं रह सकते। वह कपड़ा तराशने वालों के उस प्रतिनिधिमंडल में से एक था जो आज सुबह मुझसे शिकायत करने और धमकी देने आया था। विलियम ने धमकी नहीं दी। उसने बस मुझसे थोड़ा और समय देने को कहा—ताकि मैं अपने काम में थोड़ा और समय लगा सकूँ। आप जानते हैं कि मैं ऐसा नहीं कर सकता: मैं चारों तरफ से तंगी में हूँ, मेरे पास आगे बढ़ने के अलावा कोई चारा नहीं है। मैंने सोचा कि उनसे ज्यादा देर बात करना बेकार होगा। मैंने उनमें से एक बदमाश को गिरफ्तार करके उन्हें वापस भेज दिया, जिसे मैं देश निकाला देने की उम्मीद करता हूँ—वह आदमी कभी-कभी उस चैपल में उपदेश देता है।”

"क्या यह मोसेस बैराक्लॉ नहीं थे?"

"हाँ।"

“अरे! तुमने उसे गिरफ्तार कर लिया? बहुत बढ़िया! अब तुम एक बदमाश को शहीद बनाने जा रहे हो। तुमने बहुत समझदारी का काम किया है।”

मैंने सही काम किया है। संक्षेप में कहें तो, मैं फैरेन को जगह दिलाने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं, और मुझे आप पर भरोसा है कि आप उसे जगह दिलाएंगे।

“लेकिन ये तो कमाल है!” श्री योर्क ने हैरानी से कहा। “तुम्हें क्या हक है कि मैं तुम्हारे निकाले गए मजदूरों का खर्च उठाऊं? मैं तुम्हारे फैरेन्स और विलियम्स के बारे में क्या जानता हूं? मैंने सुना है कि वो ईमानदार आदमी है, लेकिन क्या मुझे यॉर्कशायर के सभी ईमानदार आदमियों का खर्च उठाना पड़ेगा? तुम कह सकते हो कि ये कोई बड़ी जिम्मेदारी नहीं है; लेकिन छोटी हो या बड़ी, मैं ये जिम्मेदारी नहीं लूंगा।”

"आइए, श्री योर्क, आप उसके लिए क्या काम ढूंढ सकते हैं?"

“मुझे मिल गया! तुम मुझसे ऐसी भाषा का प्रयोग करवाओगे जिसका प्रयोग करने की मुझे आदत नहीं है। काश तुम घर चले जाते। ये रहा दरवाजा; चलो।”

मूर हॉल की एक कुर्सी पर बैठ गया।

“आप उसे अपनी चक्की में काम नहीं दे सकते—अच्छी बात है; लेकिन आपके पास ज़मीन है। श्री योर्क, अपनी ज़मीन पर उसके लिए कोई काम ढूंढिए।”

“बॉब, मुझे लगा था कि तुम्हें हमारे किसानों की कोई परवाह नहीं है। मुझे यह बदलाव समझ नहीं आ रहा है।”

“हाँ, मुझे पता है। उस आदमी ने मुझसे सिर्फ सच और समझदारी की बातें कीं। मैंने उसे भी उतनी ही सख्ती से जवाब दिया जितना बाकी लोगों को, जो बेमतलब की बातें कर रहे थे। मैं उस समय कुछ समझ नहीं पाया। उसकी शक्ल-सूरत से उसके हाल के हालात उसके शब्दों से कहीं ज़्यादा साफ बता रही थी; लेकिन समझाने का क्या फायदा? उसे काम करने दो।”

"उसे खुद ही लेने दो। अगर तुम इतने ही गंभीर हो, तो बात को खींच कर रख दो।"

“अगर मेरे मामलों में तनाव पैदा करने की कोई गुंजाइश बची होती, तो मैं उसे तब तक खींचता रहता जब तक वह फिर से टूट न जाए; लेकिन आज सुबह मुझे कुछ पत्र मिले जिनसे मुझे अपनी स्थिति स्पष्ट रूप से पता चल गई है, और मैं बिल्कुल किनारे पर हूँ। कम से कम, मेरा विदेशी बाज़ार भरा पड़ा है। अगर कोई बदलाव नहीं हुआ — अगर शांति की कोई उम्मीद नहीं जगी — अगर कम से कम परिषद के आदेशों को निलंबित नहीं किया गया, ताकि पश्चिम में हमारे लिए रास्ता खुल सके — तो मुझे

नहीं पता कि मैं कहाँ जाऊँगा। मुझे कोई उम्मीद नहीं दिख रही, मानो मैं किसी चट्टान में बंद हूँ, इसलिए किसी को रोज़गार देने का दिखावा करना बेईमानी होगी।"

"चलिए, हम आगे की ओर एक चक्कर लगाते हैं। आज रात तारों भरी है," श्री योर्क ने कहा।

वे बेहोश हो गए, अपने पीछे सामने का दरवाजा बंद कर दिया, और कंधे से कंधा मिलाकर पाले से सफेद पड़े फुटपाथ पर इधर-उधर टहलने लगे।

श्री मूर ने आग्रह किया, "फैरन के बारे में तुरंत फैसला कर लीजिए। यॉर्क मिल्स में आपके पास फलों के बड़े-बड़े बाग हैं। वह एक अच्छा माली है। उसे वहाँ काम दे दीजिए।"

"ठीक है, तो ऐसा ही सही। मैं उसे कल बुलवा लूँगा, फिर देखेंगे। और अब, मेरे बेटे, क्या तुम अपने मामलों की स्थिति को लेकर चिंतित हो?"

"हाँ, दूसरी विफलता - जिसे मैं शायद टाल सकूँ, लेकिन जिसे इस समय पूरी तरह से टालने का मुझे कोई रास्ता नज़र नहीं आता - मूर के नाम को पूरी तरह से कलंकित कर देगी; और आप जानते हैं कि मेरा इरादा हर कर्ज चुकाने और पुरानी कंपनी को उसके पूर्व आधार पर फिर से स्थापित करने का था।"

"आपको पूंजी चाहिए - बस यही आपकी एकमात्र इच्छा है।"

"हाँ; लेकिन आप यह भी कह सकते हैं कि एक मृत व्यक्ति के लिए जीने की एकमात्र इच्छा साँस लेना ही होती है।"

"मैं जानती हूँ—मैं जानती हूँ कि पैसा आसानी से नहीं मिलता; और अगर आप मेरी तरह शादीशुदा होते और आपका परिवार होता, तो मुझे लगता है कि आपकी हालत बहुत ही निराशाजनक होती; लेकिन युवा और स्वतंत्र लोगों के अपने ही अवसर होते हैं। मैं कभी-कभी सुनती हूँ कि आपकी शादी इस लड़की से होने वाली है; लेकिन मुझे लगता है कि इनमें से कुछ भी सच नहीं है।"

"आप ऐसा सोच सकते हैं। मुझे लगता है कि मैं शादी के सपने देखने की स्थिति में नहीं हूँ। शादी! यह शब्द मुझे बिल्कुल पसंद नहीं; यह बहुत ही बेतुका और काल्पनिक लगता है। मैंने यह निश्चित कर लिया है कि शादी और प्यार फिजूल की चीजें हैं, जो केवल अमीरों के लिए हैं, जो आराम से रहते हैं और जिन्हें कल की चिंता करने की कोई जरूरत नहीं होती; या फिर ये हताशा में जी रहे लोगों की आखिरी और बेपरवाह खुशी हैं, जो कभी भी अपनी घोर गरीबी के दलदल से बाहर निकलने की उम्मीद नहीं

रखते।”

"अगर मेरी परिस्थितियाँ आपकी जैसी होतीं, तो मैं ऐसा नहीं सोचता। मुझे लगता है कि मैं कुछ हज़ार डॉलर में ही एक ऐसी पत्नी पा सकता था, जो मेरे और मेरे कामों दोनों के लिए उपयुक्त होती।"

मुझे आश्चर्य है कि कहाँ?

"अगर आपको मौका मिले तो क्या आप कोशिश करेंगे?"

मुझे नहीं पता। संक्षेप में कहें तो, यह कई चीजों पर निर्भर करता है।

"क्या आप किसी बूढ़ी औरत को अपना जीवनसाथी बनाएंगे?"

मुझे सड़क पर पत्थर तोड़ना ज्यादा पसंद है।

“मैं भी ऐसा ही करूंगा। क्या तुम एक बदसूरत वाला लोगे?”

“अरे! मुझे कुरूपता से घृणा है और सुंदरता में आनंद आता है। यॉर्क, मेरी आँखें और दिल एक सुंदर, युवा, गोरे चेहरे को देखकर प्रसन्न होते हैं, जबकि एक कठोर, खुरदुरे, दुबले-पतले चेहरे से मुझे घृणा होती है। कोमल, नाजुक रेखाएँ और रंग मुझे भाते हैं, कठोर रेखाएँ और रंग मुझे पूर्वाग्रहित करते हैं। मैं एक बदसूरत पत्नी नहीं चाहता।”

"अगर वह अमीर होती तो क्या होता?"

“चाहे वो रत्नों से सजी हो, मैं उससे प्यार नहीं कर सकता— मैं उसे पसंद नहीं कर सकता— मैं उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरी रुचि को संतुष्टि मिलनी ही चाहिए, वरना घृणा तानाशाही में बदल जाएगी, या इससे भी बदतर— मैं पूरी तरह से निर्दय हो जाऊंगा।”

“क्या! बॉब, अगर तुम एक ईमानदार, अच्छे स्वभाव वाली और धनी लड़की से शादी कर लो, भले ही वह थोड़ी बदसूरत हो, तो क्या तुम उसकी ऊँची गाल की हड्डियों, थोड़े चौड़े मुँह और लाल बालों को बर्दाश्त नहीं कर पाओगे?”

"मैं कभी कोशिश नहीं करूंगी, मैं तुम्हें बता रही हूं। कम से कम मेरे पास शालीनता तो होगी, और यौवन और सुडौलपन - हां, और जिसे मैं सुंदरता कहती हूं।"

“और गरीबी, और ऐसे बच्चों से भरी एक नर्सरी जिन्हें आप न तो कपड़े पहना सकते हैं और न ही खिला सकते हैं, और बहुत जल्द एक चिंतित, मुरझाई हुई माँ; और फिर दिवालियापन, बदनामी - एक जीवन भर का संघर्ष।”

"मुझे अकेला छोड़ दो, यॉर्क।"

"अगर आप रोमांटिक हैं, रॉबर्ट, और खासकर अगर आप पहले से ही प्यार में हैं, तो बात करने का कोई फायदा नहीं है।"

मैं रोमांटिक नहीं हूँ। मुझमें रोमांस का कोई अंश नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे उस खेत में लगे सफेद तंबू कपड़े से ढके हुए हैं।

“लड़के, हमेशा ऐसे ही मुहावरे इस्तेमाल करो; मैं समझ सकता हूँ। और क्या कोई प्रेम प्रसंग तुम्हारी समझ को प्रभावित कर रहा है?”

मुझे लगा था कि मैंने इस विषय पर पहले ही काफी कुछ कह दिया है। मेरे लिए प्यार? बकवास!

"तो फिर, यदि आप हृदय और मस्तिष्क दोनों से स्वस्थ हैं, तो यदि कोई अच्छा अवसर मिले तो उसका लाभ न उठाने का कोई कारण नहीं है; इसलिए, प्रतीक्षा करें और देखें।"

"आप तो बिल्कुल भविष्यवक्ता हैं, यॉर्क।"

मुझे लगता है कि मैं कुछ हद तक उसी राह पर हूँ। मैं तुमसे कुछ भी वादा नहीं करता और न ही कोई सलाह देता हूँ; लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि हिम्मत रखो और परिस्थितियों के अनुसार चलो।

"मेरे हमनाम, चिकित्सक के पंचांग, इससे अधिक सावधानी से नहीं बोल सकते थे।"

“इस बीच, मुझे तुम्हारी कोई परवाह नहीं है, रॉबर्ट मूर: तुम्हारा मुझसे या तुम्हारे परिवार से कोई नाता है, और चाहे तुम धन कमाओ या खो दो, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। अब घर जाओ। दस बज चुके हैं। मिस हॉर्टेंस सोच रही होंगी कि तुम कहाँ हो।”

अध्याय X.

बूढ़ी कुंवारी औरतें।

समय बीतता गया और वसंत का आगमन हुआ। इंग्लैंड की सतह देखने में सुहावनी लगने लगी: उसके खेत हरे-भरे हो गए, पहाड़ियाँ ताजगी से भरी, बगीचे खिल उठे; लेकिन भीतरी तौर पर उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ था। उसके गरीब अब भी दयनीय थे, उनके मालिक अब भी परेशान थे। व्यापार, अपनी कुछ शाखाओं में, ठप्प होने की कगार पर था, क्योंकि युद्ध जारी था; इंग्लैंड का खून बहाया गया और उसकी दौलत लुटा दी गई - ऐसा प्रतीत होता था कि यह सब अत्यंत अपर्याप्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए था। प्रायद्वीप में कभी-कभार सफलताओं की खबरें आती थीं, लेकिन ये बहुत धीमी गति से आती थीं; इनके बीच लंबे अंतराल होते थे, जिनमें बोनापार्ट की लगातार जीत पर घमंडी आत्म-प्रशंसा के अलावा कोई आवाज नहीं सुनाई देती थी। युद्ध के परिणामों से पीड़ित लोगों को यह थकाऊ और, जैसा कि वे सोचते थे, निराशाजनक संघर्ष, उस शक्ति के विरुद्ध, जिसे उनके भय या उनके हितों ने उन्हें अजेय शक्ति मानने को सिखाया था, अत्यंत असहनीय लगा। उन्होंने किसी भी कीमत पर शांति की मांग की। यॉर्क और मूर जैसे लोग - और ऐसे हजारों लोग थे जिन्हें युद्ध ने उस स्थिति में पहुंचा दिया था जहां वे दिवालियापन के कगार पर कांप रहे थे - हताशा की ऊर्जा के साथ शांति पर जोर देते रहे।

उन्होंने बैठकें कीं, भाषण दिए, याचिकाएँ दायर कीं ताकि इस वरदान को हासिल किया जा सके; उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि यह वरदान किन शर्तों पर दिया गया था।

सभी मनुष्य, व्यक्तिगत रूप से, कमोबेश स्वार्थी होते हैं; और सामूहिक रूप से, वे अत्यंत स्वार्थी होते हैं। ब्रिटिश व्यापारी भी इस नियम का अपवाद नहीं हैं: व्यापारी वर्ग इसका स्पष्ट उदाहरण है। ये वर्ग निश्चित रूप से केवल धन कमाने के बारे में सोचते हैं; वे इंग्लैंड के व्यापार को बढ़ाने के अलावा किसी भी राष्ट्रीय विचार से पूरी तरह बेखबर रहते हैं। उनके हृदय में वीरता, निस्वार्थता, सम्मान का गौरव जैसे भाव लगभग मृत समान हैं। केवल उन्हीं के शासन में रहने वाला देश अक्सर अपमानजनक समर्पण कर बैठता है - यह समर्पण ईसा मसीह की शिक्षाओं से प्रेरित होकर नहीं, बल्कि धन के

लालच से प्रेरित होकर किया जाता है। पिछले युद्ध के दौरान, इंग्लैंड के व्यापारी फ्रांसीसियों के दाएं और बाएं दोनों गालों पर थप्पड़ सह लेते; वे नेपोलियन को अपना लबादा दे देते और फिर विनम्रतापूर्वक अपना कोट भी भेंट कर देते, आग्रह किए जाने पर भी वे अपनी जैकेट नहीं रोकते; वे केवल अपने पर्स की रक्षा के लिए अपने एकमात्र वस्त्र को रखने की अनुमति मांगते। जब तक कोर्सिकन डाकू का हाथ उस प्यारे बटुए पर नहीं पड़ जाता, तब तक उनमें उत्साह की एक चिंगारी भी नहीं दिखती, प्रतिरोध का एक भी लक्षण नहीं दिखता; फिर, शायद, वे तुरंत ब्रिटिश बुलडॉग में परिवर्तित हो जाते, लुटेरे के गले पर झपट पड़ते, और वहीं जकड़ कर तब तक लटके रहते, जब तक खजाना वापस नहीं मिल जाता। व्यापारी, जब युद्ध के विरुद्ध बोलते हैं, तो हमेशा कहते हैं कि वे इससे घृणा करते हैं क्योंकि यह एक रक्तरंजित और बर्बर प्रक्रिया है। उनकी बातें सुनकर ऐसा लगता है कि वे विशेष रूप से सभ्य हैं - अपने साथी मनुष्यों के प्रति विशेष रूप से कोमल और दयालु स्वभाव के हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। उनमें से कई बेहद संकीर्ण और निर्दयी हैं; अपने वर्ग के अलावा किसी और वर्ग के लिए उनके मन में कोई भावना नहीं है; वे सभी दूसरों से दूर, यहाँ तक कि शत्रुतापूर्ण व्यवहार करते हैं; उन्हें बेकार कहते हैं; उनके अस्तित्व के अधिकार पर सवाल उठाते प्रतीत होते हैं; उन्हें साँस लेने के लिए भी हवा से घृणा करते प्रतीत होते हैं, और उनके खाने-पीने और अच्छे घरों में रहने की स्थिति को बिल्कुल अनुचित मानते हैं। वे नहीं जानते कि दूसरे लोग अपनी जाति की मदद करने, उन्हें खुश करने या उन्हें सिखाने के लिए क्या करते हैं; वे जानने की जहमत भी नहीं उठाते। जो कोई व्यापार में नहीं है, उस पर आलस्य का बोझ उठाने और व्यर्थ जीवन जीने का आरोप लगाया जाता है। इंग्लैंड को दुकानदारों का देश बनने में अभी लंबा समय लगे!

हम पहले ही कह चुके हैं कि मूर कोई आत्म-बलिदानी देशभक्त नहीं थे, और हमने यह भी स्पष्ट किया है कि किन परिस्थितियों ने उन्हें विशेष रूप से अपने व्यक्तिगत हितों की पूर्ति के लिए अपना ध्यान और प्रयास केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया; तदनुसार, जब उन्होंने खुद को दूसरी बार बर्बादी के कगार पर पाया, तो उन्हें धकेलने वाले प्रभावों के खिलाफ उनसे ज्यादा संघर्ष किसी ने नहीं किया। उन्होंने उत्तर में युद्ध के खिलाफ आंदोलन को भड़काने के लिए जो कुछ भी कर सकते थे, किया, और उन्होंने उन अन्य लोगों को भी उकसाया जिनके धन और संपर्कों ने उन्हें उनसे कहीं अधिक शक्ति प्रदान की थी। कभी-कभी, क्षणिक रूप से, उन्हें लगता था कि उनकी

पार्टी द्वारा सरकार से की गई मांगों में कोई खास तर्क नहीं था। जब उन्होंने बोनापार्ट द्वारा पूरे यूरोप को खतरे में और पूरे यूरोप को उसका प्रतिरोध करने के लिए हथियारबंद होते सुना; जब उन्होंने रूस को खतरे में देखा, और रूस को अपनी बर्फीली धरती, अपने दास-प्रधान प्रांतों, अपने अंधकारमय देशी निरंकुशता को एक विदेशी विजेता के रौंद, जुए और अत्याचार से बचाने के लिए क्रोधित और दृढ़ होते हुए देखा, तो वे समझ गए कि इंग्लैंड, एक स्वतंत्र राज्य होने के नाते, उस समय अपने बेटों को अन्यायपूर्ण, लालची फ्रांसीसी नेता को रियायतें देने और शर्तें प्रस्तावित करने के लिए नहीं भेज सकता था। जब प्रायद्वीप में इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व कर रहे उस व्यक्ति की गतिविधियों, उसकी एक के बाद एक सफलता की ओर प्रगति की खबरें आती रहीं - वह प्रगति इतनी सोची-समझी लेकिन इतनी अडिग, इतनी सतर्क लेकिन इतनी निश्चित, इतनी "जल्दबाजी रहित" लेकिन इतनी "अशांत"; जब उन्होंने समाचार पत्रों में लॉर्ड वेलिंगटन के स्वयं के संदेश पढ़े, जो सच्चाई के निर्देश पर विनम्रता से लिखे गए थे - मूर ने मन ही मन स्वीकार किया कि ब्रिटेन की सेनाओं के साथ एक ऐसी शक्ति थी, जो सतर्क, सहनशील, सच्ची और दिखावे से रहित थी, जो अंत में अपने नेतृत्व वाली सेना को विजय दिलाएगी। अंत में! लेकिन उसे लगा कि वह अंत अभी बहुत दूर है; और इस बीच, मूर, एक व्यक्ति के रूप में कुचल जाएगा, उसकी सारी उम्मीदें चूर-चूर हो जाएंगी। उसे केवल अपनी देखभाल करनी थी, अपनी उम्मीदों को पूरा करना था; और वह अपने भाग्य को साकार करेगा।

उन्होंने इसे इतनी ज़ोर-शोर से निभाया कि जल्द ही उनका अपने पुराने टोरी मित्र, पादरी से निर्णायक संबंध टूट गया। एक सार्वजनिक सभा में दोनों में तीखी बहस हुई और बाद में अख़बारों में एक-दूसरे पर तीखे पत्र लिखे गए। श्री हेलस्टोन ने मूर को जैकोबिन कहकर निंदा की, उनसे मिलना बंद कर दिया और जब भी मुलाकात हुई तो उनसे बात तक नहीं की। उन्होंने अपनी भतीजी को स्पष्ट रूप से यह भी कहा कि हॉलो कॉटेज से उसका संपर्क फिलहाल बंद होना चाहिए; उसे फ्रेंच की कक्षाएं छोड़ देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह भाषा ज़्यादा से ज़्यादा एक घटिया और तुच्छ भाषा है, और इसमें शामिल अधिकांश रचनाएँ भी घटिया और तुच्छ हैं, जो महिलाओं के कमज़ोर मन पर बेहद हानिकारक प्रभाव डालती हैं। उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया (उन्होंने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा) कि आखिर किस दिमाग़ ने महिलाओं को फ्रेंच सिखाने का चलन शुरू किया। उनके लिए इससे ज़्यादा अनुचित कुछ नहीं हो सकता

था। यह एक कमज़ोर बच्चे को चूने और पानी का दलिया खिलाने जैसा था। कैरोलीन को इसे छोड़ देना चाहिए, और अपने चचेरे भाइयों और बहनों से भी। वे खतरनाक लोग थे।

श्री हेलस्टोन को इस आदेश के विरोध की पूरी उम्मीद थी; उन्हें आंसुओं की आशंका थी। वे कैरोलीन की गतिविधियों के बारे में शायद ही कभी सोचते थे, लेकिन उन्हें हल्का-फुल्का आभास था कि उसे हॉलो कॉटेज जाना पसंद था; साथ ही उन्हें शक था कि उसे रेक्टरी में रॉबर्ट मूर की कभी-कभार उपस्थिति भी अच्छी लगती थी। कोसैक ने गौर किया था कि अगर मालोन शाम को आकर खुद को मिलनसार और आकर्षक दिखाने के लिए किसी बूढ़ी काली बिल्ली के कान नोचता था, जो आमतौर पर मिस हेलस्टोन के पैरों के साथ उनके फुटस्टूल पर बैठती थी, या कोई बंदूक उधार लेकर बगीचे में औजारों के शेड के दरवाजे पर तब तक जोर-जोर से मारता था जब तक दिन की रोशनी रहती थी ताकि वह निशान साफ दिखाई दे, और इस बीच गलियारे और बैठक के दरवाजे असुविधाजनक रूप से खुले रखता था ताकि वह अंदर-बाहर आकर शोर-शराबे के साथ अपनी असफलताओं और सफलताओं की घोषणा कर सके - तो उन्होंने देखा था कि ऐसी मनोरंजक परिस्थितियों में कैरोलीन चुपके से ऊपर चली जाती थी और रात के खाने के लिए बुलाए जाने तक अदृश्य रहती थी। दूसरी ओर, जब रॉबर्ट मूर मेहमान थे, तो उन्होंने बिल्ली से कोई चंचलता तो नहीं दिखाई, बल्कि उसके साथ कुछ भी नहीं किया, सिवाय कभी-कभार उसे स्टूल से उठाकर अपने घुटने पर बिठाने और वहाँ उसे गुर्राने देने, अपने कंधे पर चढ़ने देने और अपना सिर अपने गाल से रगड़ने देने के; हालाँकि उनके ठहरने के दौरान न तो बंदूकों की कान फाड़ने वाली आवाजें थीं, न ही गंधकयुक्त बारूद की गंध, न ही कोई शोर, न ही कोई शेखी बघारना — फिर भी कैरोलीन कमरे में बैठी रही और यहूदी-टोकरी वाले पिन-कुशन सिलने और मिशनरी-टोकरी वाले मोजे बुनने में अद्भुत संतुष्टि पाती हुई प्रतीत हुई।

वह बहुत शांत थी, और रॉबर्ट उस पर ज्यादा ध्यान नहीं देता था, शायद ही कभी उससे बात करता था; लेकिन श्री हेलस्टोन, उन बुजुर्गों में से नहीं थे जो आसानी से भ्रमित हो जाते हैं — बल्कि, हमेशा पूरी तरह से सतर्क रहते थे — उन्होंने उन्हें तब देखा जब वे एक-दूसरे को शुभ रात्रि कह रहे थे। उन्होंने बस एक बार उनकी नज़रें मिलते देखीं — केवल एक बार। कुछ स्वभाव के लोग उस अचानक हुई नज़र से

आनंदित हो जाते, क्योंकि उसमें कोई बुराई नहीं थी और कुछ आनंद भी था। यह किसी भी तरह से आपसी बुद्धिमत्ता की नज़र नहीं थी, क्योंकि उनके बीच आपसी प्रेम के कोई रहस्य नहीं थे। उस समय छल या छिपाव जैसी कोई बात नहीं थी जिससे ठेस पहुंचे: केवल श्री मूर की आंखें, कैरोलीन की आंखों में देखते हुए, स्पष्ट और कोमल महसूस हुईं; और कैरोलीन की आंखें, श्री मूर की आंखों से मिलते हुए, मर्दाना और खोजपूर्ण थीं। दोनों ने अपने-अपने तरीके से इस आकर्षण को स्वीकार किया। मूर हल्के से मुस्कुराए, और कैरोलीन का चेहरा भी हल्का सा लाल हो गया। श्री हेलस्टोन उस समय उन दोनों का आकलन कर सकते थे। वे उन्हें परेशान कर रहे थे। क्यों? कहना असंभव है। अगर आपने उससे पूछा होता कि उस समय मूर किस सजा का हकदार था, तो वह कहता "कोड़े की मार"; अगर आपने कैरोलीन की सजा के बारे में पूछा होता, तो वह उसे कान पर एक घूंसा मारता; और अगर आपने उससे इन सजाओं का कारण पूछा होता, तो वह इश्कबाजी और प्रेम-प्रसंग के खिलाफ भड़क उठता और कसम खाता कि वह अपने घर में ऐसी कोई मूर्खता बर्दाश्त नहीं करेगा।

निजी कारणों के साथ-साथ राजनीतिक कारणों ने भी चचेरे भाई-बहनों को अलग करने के उनके संकल्प को और भी पुख्ता कर दिया। एक शाम जब कैरोलीन ड्राइंग रूम की खिड़की के पास बैठकर काम कर रही थी, तब उन्होंने उसे अपनी वसीयत सुनाई। उसका चेहरा उनकी ओर था और उस पर पूरी रोशनी पड़ रही थी। कुछ मिनट पहले ही उन्हें यह बात समझ में आ गई थी कि वह पहले से ज़्यादा पीली और शांत लग रही थी। यह बात भी उनकी नज़र से नहीं छूटी थी कि पिछले लगभग तीन हफ़्तों से उसने रॉबर्ट मूर का नाम तक नहीं लिया था; और न ही इतने समय में वह पादरी के घर आया था। उनके मन में गुप्त मुलाकातों का संदेह बना हुआ था। महिलाओं के प्रति उदासीन राय होने के कारण, उन्हें हमेशा उन पर शक रहता था। उनका मानना था कि उन पर लगातार नज़र रखनी चाहिए। उन्होंने रूखे और अर्थपूर्ण लहजे में कैरोलीन से कहा कि वह हॉलो में अपनी रोज़ाना की मुलाक़ातें बंद कर दे। उन्हें उम्मीद थी कि कैरोलीन चौंक जाएगी, नाराज़गी भरी नज़र से देखेगी। चौंकी तो सही, लेकिन बहुत हल्की सी; उसकी ओर कोई नज़र नहीं डाली।

“क्या तुम मुझे सुन रहे हो?” उसने पूछा।

जी हां, चाचा जी।

"क्या आप मेरी बातों पर ध्यान देने का इरादा रखते हैं?"

"हां बेशक।"

और तुम्हारी चचेरी बहन हॉर्टेंस को किसी भी प्रकार का पत्र-व्यवहार नहीं होना चाहिए— किसी भी प्रकार का संपर्क नहीं। मैं परिवार के सिद्धांतों को स्वीकार नहीं करता। वे जैकोबिनवादी हैं।

“बहुत अच्छा,” कैरोलिन ने शांत स्वर में कहा। उसने फिर सहमति दे दी। उसके चेहरे पर न तो झुंझलाहट के भाव थे, न ही आँखों में आँसू; श्री हेलस्टोन के बोलने से पहले उसके चेहरे पर छाई हुई गहरी सोच अब भी वैसी ही थी; वह आज्ञाकारी थी।

हाँ, बिलकुल; क्योंकि आदेश उसके अपने पिछले निर्णय से मेल खाता था; क्योंकि अब उसके लिए हॉलो की कुटिया जाना कष्टदायी हो गया था; वहाँ उसे निराशा के सिवा कुछ नहीं मिलता था। आशा और प्रेम उस छोटे से घर से दूर हो गए थे, क्योंकि रॉबर्ट मानो वहाँ से चला गया था। जब भी वह उसके बारे में पूछती—जो वह बहुत कम ही करती थी, क्योंकि उसका नाम सुनते ही उसका चेहरा लाल हो जाता था—तो जवाब होता था, या तो वह घर से बाहर है, या फिर काम में पूरी तरह व्यस्त है। हॉर्टेंस को डर था कि वह काम में इतना डूबा हुआ है कि खुद को थका रहा है। वह घर में शायद ही कभी खाना खाता था; वह लेखा-जोखा कार्यालय में ही रहता था।

चर्च में केवल कैरोलिन को ही उसे देखने का मौका मिलता था, और वहाँ भी वह उसे शायद ही कभी देखती थी। उसे देखना उसके लिए असहनीय पीड़ा और आनंद दोनों था—यह अत्यधिक भावनाओं को जगाता था; और यह बात वह अच्छी तरह समझ चुकी थी कि ये सारी भावनाएँ व्यर्थ थीं।

एक बार, एक अंधेरे, गीले रविवार को, जब चर्च में बहुत कम लोग थे, और खासकर कुछ महिलाएं अनुपस्थित थीं, जिनकी पैनी नज़र और तीखी वाणी से कैरोलीन बहुत प्रभावित थी, तब उसकी नज़र रॉबर्ट की सीट पर पड़ी और कुछ देर तक उस पर टिकी रही। वह वहाँ अकेला था। बारिश और नई वसंत टोपी के कारण होर्टेंस को घर पर ही रखा गया था। प्रवचन के दौरान वह बाहें मोड़े और नज़रें नीचे किए बैठा रहा, बहुत उदास और खोया हुआ लग रहा था। जब वह उदास होता था, तो उसके चेहरे का रंग मुस्कुराते समय से भी ज़्यादा गहरा काला लगता था, और आज उसके गाल और माथे पर जैतून जैसा फीकापन था। कैरोलीन ने उस उदास चेहरे को देखते हुए सहज ही समझ लिया कि उसके विचार किसी परिचित या सौहार्दपूर्ण दिशा में नहीं जा रहे थे; वे न केवल उससे, बल्कि उन सभी चीज़ों से बहुत दूर थे जिन्हें वह

समझ सकती थी या जिनके प्रति वह सहानुभूति रख सकती थी। जिन बातों पर उन्होंने कभी साथ में चर्चा की थी, उनमें से कोई भी बात अब उसके दिमाग में नहीं थी: वह उन रुचियों और जिम्मेदारियों में इतना उलझ गया था कि वह उससे दूर हो गया था, जिनमें उसका कोई हिस्सा होना संभव नहीं था।

कैरोलीन ने अपने तरीके से इस विषय पर मनन किया; उसके भावों, उसके जीवन, उसके भय, उसके भाग्य पर विचार किया; "व्यापार" के रहस्य पर चिंतन किया, उसे अब तक जो बताया गया था उससे कहीं अधिक समझने का प्रयास किया— इसकी पेचीदगियों, दायित्वों, कर्तव्यों, अपेक्षाओं को समझने की कोशिश की; एक "व्यापारी" की मानसिकता को समझने, उसमें प्रवेश करने, उसके भावों को महसूस करने और उसकी आकांक्षाओं को समझने का प्रयास किया। उसकी दिली इच्छा थी कि चीजों को यथार्थ रूप में देखे, न कि भावुकता में डूबे रहने की। अथक प्रयास से उसने कहीं-कहीं सत्य के प्रकाश की झलक पाई और आशा की कि वह छोटी सी किरण ही उसे सही राह दिखाने के लिए पर्याप्त होगी।

“बेहद अलग,” उसने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, “रॉबर्ट की मानसिक स्थिति मुझसे बिल्कुल अलग है। मैं सिर्फ उसी के बारे में सोचती हूँ; उसके पास मेरे बारे में सोचने के लिए कोई जगह नहीं है, कोई फुर्सत नहीं है। प्रेम नाम की भावना पिछले दो वर्षों से मेरे दिल की सबसे प्रबल भावना रही है—हमेशा मौजूद, हमेशा जागृत, हमेशा तल्लीन। बिल्कुल अलग भावनाएँ उसके विचारों को अपने कब्जे में ले लेती हैं और उसकी इंद्रियों को नियंत्रित करती हैं। वह अब उठ रहा है, चर्च से जाने वाला है, क्योंकि प्रार्थना समाप्त हो गई है। क्या वह मेरी ओर देखेगा? नहीं, एक बार भी नहीं। उसने मेरी ओर एक नज़र भी नहीं डाली। यह बहुत कठिन है। एक प्यार भरी नज़र मुझे कल तक खुश कर देती। मुझे वह नहीं मिली; उसने वह नहीं दी; वह चला गया। अजीब बात है कि अब दुख मुझे लगभग गला घोंट रहा है, सिर्फ इसलिए कि किसी दूसरे इंसान की नज़र मेरी आँखों से नहीं मिली।”

उस रविवार शाम को, श्री मैलोन हमेशा की तरह अपने पादरी के साथ समय बिताने आए थे, और चाय के बाद कैरोलीन अपने कमरे में चली गई। फैनी, उसकी आदतों को जानते हुए, उसके लिए एक छोटी सी आग जलाकर उसे सुकून दे रही थी, क्योंकि मौसम बहुत तेज़ हवा वाला और ठंडा था। वहाँ कमरे में चुपचाप और अकेली बैठी, वह सोचने के अलावा और क्या कर सकती थी? वह चुपचाप कालीन पर इधर-

उधर टहल रही थी, उसका सिर झुका हुआ था और हाथ जुड़े हुए थे। बैठना कष्टदायक था; विचारों की धारा उसके मन में तेज़ी से दौड़ रही थी; आज रात वह चुपचाप उत्तेजित थी।

कमरा एकदम शांत था, पूरा घर सन्नाटे में डूबा हुआ था। अध्ययन कक्ष के दोहरे दरवाजे ने सज्जनों की आवाज़ों को दबा दिया था। नौकर रसोई में चुपचाप बैठे थे, अपनी युवा मालकिन द्वारा उधार दी गई किताबों में मग्न थे—वे किताबें जिनके बारे में उन्होंने कहा था कि वे "रविवार को पढ़ने के लिए उपयुक्त" हैं। और स्वयं मालकिन के पास भी उसी तरह की एक किताब मेज पर खुली पड़ी थी, लेकिन वह उसे पढ़ नहीं पा रही थीं। उसका धर्मशास्त्र उनकी समझ से परे था, और उनका अपना मन इतना व्यस्त, विचारों से भरा, भटकता हुआ था कि वे किसी दूसरे के मन की भाषा सुनने के लिए तत्पर नहीं थे।

तब भी, उसकी कल्पना चित्रों से भरी हुई थी - मूर की छवियाँ, वे दृश्य जहाँ वे दोनों साथ थे; सर्दियों में आग के पास बैठकर बनाए गए रेखाचित्र; ननेली वुड की गोद में उसके साथ बिताई गई एक गर्म गर्मी की दोपहर का एक शानदार परिदृश्य; सुहावनी वसंत या मधुर शरद ऋतु के क्षणों के दिव्य दृश्य, जब वह हॉलो कॉप्स में उसके बगल में बैठी थी, मई की कोयल की आवाज सुन रही थी, या सितंबर के मेवों और पके हुए ब्लैकबेरी के खजाने को साझा कर रही थी - एक जंगली मिठाई जिसे सुबह एक छोटी टोकरी में इकट्ठा करना और उसे हरे पत्तों और ताजे फूलों से ढकना उसका आनंद था, और दोपहर में मूर को एक-एक करके बेरी और मेवे खिलाना उसका आनंद था, जैसे कोई पक्षी अपने बच्चे को खिलाता है।

रॉबर्ट के चेहरे और रूप उसके साथ थे; उसकी आवाज़ उसके कानों में साफ़ सुनाई दे रही थी; उसके कुछ स्पर्श मानो नए सिरे से महसूस हो रहे थे। लेकिन ये सारी खुशियाँ खोखली थीं, इसलिए जल्द ही चूर-चूर हो गईं। तस्वीरें धुंधली पड़ गईं, आवाज़ गायब हो गई, उस काल्पनिक आलिंगन से उसके हाथ से ठंडक पिघल गई, और जहाँ होठों की गर्म आहट ने उसके माथे पर निशान छोड़े थे, वहाँ अब ऐसा लग रहा था जैसे बर्फीली बारिश की बूँद गिर गई हो। वह एक जादुई दुनिया से वास्तविक दुनिया में लौट आई: जून के ननेली वुड की जगह उसे अपना छोटा सा कमरा दिखाई दिया; गलियों में पक्षियों के गीतों की जगह उसे अपनी खिड़की पर बारिश की आवाज़ सुनाई दी; दक्षिण की हवा की आह की जगह उदास पूरब की सिसकी सुनाई दी; और

मूर के मर्दाना साथ की जगह उसे दीवार पर अपनी धुंधली परछाई का हल्का सा भ्रम दिखाई दिया। उस धुंधली आकृति से, जिसमें उसकी अपनी ही छवि झलक रही थी, और उसके मंद सिर और रंगहीन बालों में छिपी अपनी तन्मयता से मुंह मोड़कर, वह बैठ गई— निष्क्रियता ही उसकी उस मनोदशा के अनुकूल थी जिसमें वह अब ढल रही थी— उसने मन ही मन कहा, "शायद मुझे सत्तर साल तक जीना है। जहाँ तक मुझे पता है, मेरा स्वास्थ्य अच्छा है; मेरे सामने आधा शतक का जीवन पड़ा है। मैं इसे कैसे व्यतीत करूँगी? मेरे और मृत्यु के बीच फैले इस अंतराल को भरने के लिए मैं क्या करूँगी?"

उसने विचार किया।

"लगता है मेरी शादी नहीं होगी," उसने आगे कहा। "मुझे लगता है, क्योंकि रॉबर्ट को मेरी परवाह नहीं है, इसलिए मुझे कभी प्यार करने वाला पति नहीं मिलेगा, न ही देखभाल करने के लिए छोटे बच्चे। कुछ समय पहले तक मैंने पत्नी और माँ के कर्तव्यों और स्नेह को ही अपना जीवन भर का हिस्सा मान रखा था। मैंने किसी तरह स्वाभाविक रूप से यही मान लिया था कि मैं एक सामान्य भाग्य की ओर बढ़ रही हूँ, और मैंने कभी किसी और भाग्य की तलाश नहीं की; लेकिन अब मुझे साफ-साफ समझ आ रहा है कि शायद मैं गलत थी। शायद मैं कुंवारी ही रहूँगी। मैं रॉबर्ट को किसी और से, किसी अमीर औरत से शादी करते हुए देखूँगी। मेरी कभी शादी नहीं होगी। मुझे आश्चर्य होता है कि मुझे किसलिए बनाया गया था? दुनिया में मेरी जगह कहाँ है?"

वह फिर सोचने लगी।

"आह! मैं समझ गई," उसने थोड़ी देर बाद कहा; "यही वह प्रश्न है जिसका उत्तर खोजने में अधिकांश अविवाहित महिलाएं असमंजस में रहती हैं। दूसरे लोग उनके लिए इसका उत्तर यह कहकर देते हैं, 'तुम्हारा कर्तव्य दूसरों का भला करना, जब भी सहायता की आवश्यकता हो, सहायता करना है।' यह कुछ हद तक सही है, और इसे मानने वालों के लिए एक सुविधाजनक सिद्धांत भी है; लेकिन मैंने देखा है कि कुछ समूह दूसरों से यह अपेक्षा रखते हैं कि वे अपना जीवन उनके नाम और सेवा में समर्पित कर दें, और फिर वे उनकी प्रशंसा करके उन्हें पुरस्कृत करते हैं; वे उन्हें समर्पित और गुणी कहते हैं। क्या इतना ही काफी है? क्या यही जीवन है? क्या उस जीवन में एक भयानक खोखलापन, उपहास, अभाव और लालसा नहीं है जो दूसरों

को समर्पित कर दिया जाता है, क्योंकि आपके पास देने के लिए अपना कुछ नहीं होता? मुझे लगता है कि ऐसा ही है। क्या सद्गुण आत्म-त्याग में निहित है? मुझे ऐसा नहीं लगता। अत्यधिक विनम्रता अत्याचार को जन्म देती है; कमजोर रियायत स्वार्थ को जन्म देती है। विशेष रूप से रोमन कैथोलिक धर्म आत्म-त्याग और दूसरों के प्रति समर्पण सिखाता है, और रोमन कैथोलिक पुरोहितों के बीच जितने लालची अत्याचारी पाए जाते हैं, उतने कहीं और नहीं मिलते। प्रत्येक मनुष्य के अपने अधिकारों का बंटवारा। मुझे लगता है कि अगर हर कोई अपना हिस्सा जान ले और उसे उसी दृढ़ता से निभाए जिस दृढ़ता से कोई शहीद अपने धर्म का पालन करता है, तो सभी की खुशी और कल्याण में योगदान होगा। ये अजीबोगरीब विचार मेरे मन में उमड़ रहे हैं। क्या ये सही विचार हैं? मुझे यकीन नहीं है।

खैर, जीवन वैसे भी छोटा है। कहते हैं सत्तर साल भाप की तरह, जागते ही सपने की तरह बीत जाते हैं; और मनुष्य के कदमों से चला हर रास्ता एक ही सीमा पर आकर समाप्त होता है—कब्र, इस विशाल पृथ्वी की सतह पर एक छोटी सी दरार, वह हल जहाँ शक्तिशाली किसान दरांती से पके हुए तने से तोड़े गए बीज को रखता है; और वहाँ वह गिरता है, सड़ता है, और फिर से उगता है, जब दुनिया कुछ और चक्कर लगा लेती है। शरीर के बारे में इतना ही। इस बीच आत्मा अपनी लंबी उड़ान ऊपर की ओर भरती है, आग और काँच के सागर के किनारे पर अपने पंख समेटती है, और जलती हुई स्पष्टता से नीचे देखते हुए, वहाँ ईसाई धर्म के त्रिविध ईश्वरत्व का प्रतिबिंब पाती है—सर्वोच्च पिता, मध्यस्थ पुत्र, सृष्टिकर्ता आत्मा। कम से कम ऐसे शब्द तो चुने गए हैं जो अवर्णनीय को व्यक्त करने के लिए, उस चीज़ का वर्णन करने के लिए जो वर्णन से परे है। आत्मा के वास्तविक परलोक का अनुमान कौन लगा सकता है?

उसकी आग पूरी तरह बुझ चुकी थी; मैलोन जा चुका था; और अब प्रार्थना के लिए अध्ययन कक्ष की घंटी बजी।

अगले दिन कैरोलीन को बिल्कुल अकेले रहना पड़ा, क्योंकि उसके चाचा अपने मित्र डॉ. बोल्टबी, जो व्हिनबरी के पादरी थे, के साथ भोजन करने गए हुए थे। पूरे समय वह मन ही मन एक ही बात सोचती रही—भविष्य के बारे में सोचती रही, और खुद से पूछती रही कि उसे जीवन में क्या करना है। फैनी, जो बीच-बीच में घर के कामों के लिए कमरे में आती-जाती रही, उसने देखा कि उसकी मालकिन बिल्कुल

शांत बैठी है। वह हमेशा एक ही जगह पर बैठी रहती थी, हमेशा किसी न किसी काम में मग्न रहती थी। उसने फैनी से बात करने के लिए अपना सिर नहीं उठाया, जैसा कि उसकी आदत थी; और जब फैनी ने कहा कि दिन अच्छा है और उसे टहलने जाना चाहिए, तो उसने बस इतना कहा, "ठंड है।"

“आप सिलाई में बहुत मेहनती हैं, मिस कैरोलिन,” लड़की ने अपनी छोटी मेज के पास आते हुए कहा।

मैं इससे तंग आ चुका हूँ, फैनी।

“तो फिर आप इसे क्यों जारी रखते हैं? इसे छोड़ दीजिए। पढ़िए, या कुछ ऐसा कीजिए जिससे आपका मनोरंजन हो।”

“फैनी, इस घर में बहुत अकेलापन है। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?”

“मुझे ऐसा नहीं लगता, महोदया। मैं और एलिज़ा एक-दूसरे के लिए पर्याप्त साथी हैं; लेकिन आप कुछ ज़्यादा ही शांत रहती हैं। आपको ज़्यादा आना-जाना चाहिए। अब, मान जाइए: ऊपर जाइए, अच्छे कपड़े पहनिए, और मिस मान या मिस ऐनली के साथ दोस्ताना अंदाज़ में चाय पीजिए। मुझे पूरा यकीन है कि उन दोनों महिलाओं को आपको देखकर बहुत खुशी होगी।”

लेकिन उनके घर बहुत दयनीय हैं: वे दोनों कुंवारी बुढ़िया हैं। मुझे यकीन है कि कुंवारी बुढ़ियाएँ बहुत दुखी नस्ल होती हैं।

“नहीं, मैडम। वे दुखी नहीं हो सकते; वे अपना इतना ख्याल रखते हैं। वे सब स्वार्थी हैं।”

“मिस ऐनली स्वार्थी नहीं हैं, फैनी। वह हमेशा भलाई करती हैं। जब तक उनकी सौतेली माँ जीवित रहीं, वह उनके प्रति कितनी दयालु थीं; और अब जब वह दुनिया में बिल्कुल अकेली हैं, न भाई है, न बहन, न ही कोई उनकी देखभाल करने वाला, तो वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार गरीबों की कितनी उदारता से सेवा करती हैं! फिर भी कोई उनकी कद्र नहीं करता, न ही उनसे मिलने जाना पसंद करता है; और सज्जन लोग हमेशा उनका उपहास करते हैं!”

“ऐसा नहीं होना चाहिए, महोदया। मेरा मानना है कि वह एक अच्छी महिला हैं। लेकिन सज्जन लोग महिलाओं की सुंदरता के बारे में ही सोचते हैं।”

“मैं उससे मिलने जाऊंगी,” कैरोलिन ने उठते हुए कहा; “और अगर वह मुझे चाय पर रुकने के लिए कहे, तो मैं रुक जाऊंगी। लोगों को सिर्फ इसलिए नज़रअंदाज़

करना कितना गलत है क्योंकि वे सुंदर, जवान और खुशमिजाज़ नहीं हैं! और मैं मिस मान से भी ज़रूर मिलूंगी। वह शायद मिलनसार न हो, लेकिन किस बात ने उसे ऐसा बना दिया है? उसके लिए जीवन का क्या मतलब रहा है?”

फैनी ने मिस हेलस्टोन को उनका काम समेटने में मदद की और बाद में उन्हें कपड़े पहनने में भी सहायता की।

"आप कुंवारी नहीं रहेंगी, मिस कैरोलिन," उसने अपनी भूरे रेशमी फ्रॉक का कमरबंद बांधते हुए कहा, इससे पहले उसने अपने मुलायम, घने और चमकदार बालों को संवारा था; "आपमें कुंवारी होने का कोई संकेत नहीं है।"

कैरोलीन ने अपने सामने रखे छोटे से दर्पण में देखा और उसे कुछ संकेत दिखाई दिए। वह देख सकती थी कि पिछले एक महीने में उसमें बदलाव आ गया था; उसके रंग की आभा फीकी पड़ गई थी, उसकी आँखें बदल गई थीं—उनमें एक पीलापन छाया हुआ सा लग रहा था; उसका चेहरा उदास था—संक्षेप में, वह अब उतनी सुंदर या उतनी जीवंत नहीं रही थी जितनी पहले हुआ करती थी। उसने दबे स्वर में फैनी को यह बात बताई, लेकिन फैनी ने कोई सीधा जवाब नहीं दिया, बस इतना कहा कि लोगों के रूप-रंग में बदलाव तो आता ही है, पर उसकी उम्र में थोड़ा-बहुत बदलाव कोई मायने नहीं रखता; वह जल्द ही पहले जैसी हो जाएगी और पहले से भी ज्यादा गोल-मटोल और गुलाबी हो जाएगी। यह आश्वासन देने के बाद, फैनी ने उसे गर्म शॉल और रूमालों में लपेटने में असाधारण उत्साह दिखाया, यहाँ तक कि कैरोलीन, लगभग वजन से दबकर, और अधिक लपेटे जाने का विरोध करने लगी।

वह उनसे मिलने जाती थी—सबसे पहले मिस मान से, क्योंकि यही सबसे मुश्किल काम था। मिस मान यकीनन कोई प्यारी इंसान नहीं थीं। अब तक कैरोलीन हमेशा बेझिझक कहती थी कि वह उन्हें नापसंद करती है, और कई बार तो वह अपने चचेरे भाई रॉबर्ट के साथ उनकी कुछ अजीब आदतों पर हंस चुकी थी। मूर आमतौर पर व्यंग्य नहीं करते थे, खासकर अपने से कमतर या तुच्छ लोगों पर; लेकिन एक-दो बार ऐसा हुआ था कि जब मिस मान उनकी बहन से मिलने आई थीं, तो वह कमरे में मौजूद थे। उनकी बातें सुनने और कुछ देर उनके चेहरे के हाव-भाव देखने के बाद, वह बगीचे में चले गए, जहां उनकी छोटी चचेरी बहन उनके कुछ पसंदीदा फूलों की देखभाल कर रही थी। पास खड़े होकर उन्हें देखते हुए, उन्होंने कोमल और आकर्षक युवा स्त्री की तुलना मुरझाई हुई, पीली और प्रेमहीन बुढ़ापे से की, और मुस्कुराती हुई

लड़की को एक सड़ी हुई कुंवारी बुढ़िया की कड़वी बातें मजाक में दोहराईं। एक बार ऐसे ही एक मौके पर कैरोलिन ने उस लता से नज़रें उठाकर, जिसे वह फ्रेम से बांध रही थी, उससे कहा, "अरे! रॉबर्ट, तुम्हें कुंवारी बुढ़ियाएँ पसंद नहीं हैं। अगर मैं भी कुंवारी बुढ़िया होती, तो मुझे भी तुम्हारे व्यंग्य का सामना करना पड़ता।"

"तुम कुंवारी हो!" उसने जवाब दिया। "तुम्हारे होंठों के रंग और बनावट को देखकर यह ख्याल तो आता ही है। वैसे, मैं तुम्हें चालीस की उम्र में भी सादे कपड़ों में, पीली और मुरझाई हुई, लेकिन फिर भी सीधी नाक, सफेद माथे और कोमल आँखों के साथ कल्पना कर सकता हूँ। मुझे लगता है कि तुम्हारी आवाज़ भी वैसी ही रहेगी, जो मिस मान की कर्कश, गहरी आवाज़ से बिल्कुल अलग है। हिम्मत रखो, कैरी! पचास की उम्र में भी तुम बदसूरत नहीं लगोगी।"

"मिस मान ने खुद को नहीं बनाया, न ही अपनी आवाज को सुर में ढाला, रॉबर्ट।"

"प्रकृति ने उसे उसी मनोदशा में बनाया है जिसमें वह अपने कंटीले और कांटेदार पौधे बनाती है; जबकि कुछ स्त्रियों की रचना के लिए वह मई की सुबह के घंटे आरक्षित रखती है, जब प्रकाश और ओस के साथ वह घास से प्रिमरोज़ और जंगल की काई से लिली को लुभाती है।"

मिस मान के छोटे से बैठक कक्ष में प्रवेश करते ही कैरोलिन ने उन्हें हमेशा की तरह पूर्ण स्वच्छता, सफाई और आराम से घिरा पाया (आखिरकार, क्या यह अविवाहित महिलाओं का गुण नहीं है कि एकांत उन्हें शायद ही कभी लापरवाह या अव्यवस्थित बनाता है?) - उनके पॉलिश किए हुए फर्नीचर पर न धूल थी, न कालीन पर, मेज पर फूलदान में ताजे फूल थे, अंगीठी में तेज आग जल रही थी। वह स्वयं एक गद्देदार झूला कुर्सी पर सलीके से और कुछ हद तक गंभीर रूप से बैठी थीं, उनके हाथ बुनाई में व्यस्त थे। यह उनका पसंदीदा काम था, क्योंकि इसमें सबसे कम मेहनत लगती थी। कैरोलिन के प्रवेश करते ही वह मुश्किल से उठीं। उत्तेजना से बचना मिस मान के जीवन के उद्देश्यों में से एक था। सुबह नीचे आने के बाद से ही वह खुद को शांत करने की कोशिश कर रही थीं, और अभी-अभी एक प्रकार की सुस्त शांति की स्थिति में पहुंची ही थीं कि आगंतुक की दस्तक ने उन्हें चौंका दिया और उनके दिन भर के काम को बर्बाद कर दिया। इसलिए, मिस हेलस्टोन को देखकर वह बिल्कुल भी खुश नहीं थीं। उसने संयम से उसका स्वागत किया, उसे संयम से बैठने को कहा, और जब वह

उसके सामने बैठ गई, तो उसने उसे अपनी निगाहों से घूर कर देखा।

मिस मान की निगाहों में घिर जाना कोई साधारण दुर्भाग्य नहीं था। रॉबर्ट मूर एक बार इस स्थिति से गुज़र चुके थे और उस घटना को कभी नहीं भूले थे।

वह इसे मेडुसा के किसी भी कार्य के बराबर मानता था। उसने संदेह जताया कि उस पीड़ा के बाद उसका शरीर पहले जैसा हो गया था या नहीं—कहीं उसमें कुछ पथरीलापन तो नहीं आ गया था। उस दृष्टि का उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा था कि वह तुरंत अपार्टमेंट और घर से बाहर निकल गया; यहाँ तक कि वह सीधे पादरी के निवास पर चला गया, जहाँ वह कैरोलीन के सामने एक अजीब से चेहरे के साथ उपस्थित हुआ और उसे आश्चर्यचकित करते हुए उससे तुरंत एक चचेरे भाई की तरह अभिवादन करने की मांग की, ताकि उसे हुए नुकसान की भरपाई की जा सके।

निस्संदेह, मिस मान की नज़र कोमल स्त्रियों पर बहुत गहरी थी। उनकी नज़रें स्पष्ट थीं, उनमें सफ़ेदी साफ़ झलकती थी, और वे आपको इतनी स्थिर और बिना पलक झपकाए देखती थीं मानो उनके सिर में लोहे की गेंद जड़ी हो; और जब देखते-देखते वे एक अवर्णनीय शुष्क, नीरस स्वर में बोलने लगतीं—एक ऐसा स्वर जिसमें कोई कंपन या उतार-चढ़ाव नहीं होता—तो ऐसा लगता मानो कोई दुष्ट आत्मा आपसे बात कर रही हो। लेकिन यह सब उनकी कल्पना मात्र थी, ऊपरी दिखावा। मिस मान की भयानक गंभीरता सैकड़ों सुंदरियों की देवदूत जैसी मधुरता से कहीं अधिक गहरी थी। वे एक पूर्णतः ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ महिला थीं, जिन्होंने अपने समय में ऐसे कर्तव्य निभाए थे जिनके गहन दुख को देखकर कई हिरनी जैसी आँखों वाली, रेशमी बालों वाली और मीठी ज़बान वाली महिलाएं भयभीत हो जातीं। वह अकेले ही पीड़ा के लंबे दृश्यों से गुज़री थी, कठोर आत्म-संयम का अभ्यास किया था, उन लोगों के लिए समय, धन और स्वास्थ्य का बड़ा बलिदान दिया था जिन्होंने उसे केवल कृतघ्नता से चुकाया था, और अब उसका मुख्य - लगभग एकमात्र - दोष यह था कि वह आलोचनात्मक थी।

वह निःसंदेह आलोचनात्मक थीं। कैरोलिन के बैठने के पाँच मिनट भी नहीं बीते थे कि उसकी मेज़बान, जो अब भी उस पर अपने खौफनाक और डरावनी निगाहों का साया डाले हुए थी, पड़ोस के कुछ परिवारों की धज्जियाँ उड़ाने लगी। वह इस काम में बड़ी ही शांत और सधी हुई लगन से जुटी, मानो कोई सर्जन किसी निर्जीव वस्तु पर अपने स्केलपेल से अभ्यास कर रहा हो। वह बहुत कम भेद करती थीं; वह शायद ही

किसी को अच्छा मानती थीं; वह अपने लगभग सभी परिचितों का निष्पक्ष रूप से विश्लेषण करती थीं। अगर उनकी श्रोता कभी-कभार कोई नरम बात कहतीं, तो वह उसे कुछ तिरस्कार के साथ अनसुना कर देती थीं। फिर भी, नैतिक विश्लेषण में इतनी निर्दयी होने के बावजूद, वह चुगली करने वाली नहीं थीं। उन्होंने कभी भी कोई दुर्भावनापूर्ण या खतरनाक खबरें नहीं फैलाईं। असल में, उनका दिल नहीं, बल्कि उनका स्वभाव ही बिगड़ा हुआ था।

कैरोलीन ने आज पहली बार इस बात का पता लगाया और इससे उसे उस चिड़चिड़ी बुढ़िया के बारे में अपने द्वारा किए गए कई अनुचित निर्णयों पर पछतावा हुआ। उसने उससे नरमी से बात करना शुरू किया, सहानुभूति भरे शब्दों में नहीं, बल्कि सहानुभूति भरी आवाज़ में। उसकी अकेली स्थिति ने उसकी आगंतुक को एक नए रूप में प्रभावित किया, साथ ही उसकी कुरूपता का चरित्र भी - रक्तहीन पीलापन और चेहरे पर गहरी झुर्रियाँ। लड़की को उस अकेली और दुखी महिला पर दया आई; उसकी नज़रें उसके मन की बात कह रही थीं। एक मधुर चेहरा तब और भी मधुर लगता है जब एक भावुक हृदय उसे करुणा और कोमलता से भर देता है। मिस मान ने ऐसा चेहरा देखकर, जो उसकी ओर उठा हुआ था, स्वयं भी भावुक हो गईं। उन्होंने अपने प्रति अप्रत्याशित रूप से दिखाई गई रुचि के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, जो आमतौर पर केवल ठंडेपन और उपहास का सामना करती थीं, खुलकर जवाब दिया। वह आमतौर पर अपने निजी मामलों के बारे में ज्यादा बात नहीं करती थीं, क्योंकि कोई उनकी बात सुनना नहीं चाहता था; लेकिन आज वह वैसी ही हो गई, और उसकी विश्वासपात्र उसकी बातें सुनकर रो पड़ी, क्योंकि उसने क्रूर, धीरे-धीरे कमजोर करने वाले, हठी कष्टों के बारे में बताया। वह मुर्दे जैसी लग सकती थी; वह गंभीर दिख सकती थी और कभी मुस्कुरा नहीं सकती थी; वह उत्तेजना से बचने और शांत रहने की इच्छा रख सकती थी! कैरोलिन, जब उसे सब पता चला, तो उसने स्वीकार किया कि मिस मान को उदासी के लिए दोषी ठहराने के बजाय उनकी सहनशीलता की प्रशंसा की जानी चाहिए। पाठक! जब आप किसी ऐसे व्यक्ति को देखें जिसके निरंतर उदासी और गुस्से का कारण आप नहीं समझ पाते, जिसका अविभाज्य भाव आपको उसकी स्पष्ट अकारणता से परेशान करता है, तो निश्चित रूप से समझ लें कि कहीं न कहीं कोई दोष है, और वह दोष छिपा होने के कारण उतना ही गहरा है।

मिस मान को लगा कि उन्हें आंशिक रूप से समझा गया है, और वे और अधिक

समझे जाने की इच्छा रखती थीं; क्योंकि चाहे हम कितने भी बूढ़े, साधारण, विनम्र, उदास या पीड़ित क्यों न हों, जब तक हमारे हृदय में जीवन की सबसे कमजोर चिंगारी जीवित रहती है, तब तक वह उस फीकी लौ के पास कांपती हुई, प्रशंसा और स्नेह की भूखी, प्रेत जैसी तड़प को भी संजोए रखती है। इस कमजोर प्रेत को शायद साल में एक बार भी रोटी का टुकड़ा नहीं मिलता, लेकिन जब भूख और प्यास से बेहाल कोई व्यक्ति—जब सारी मानवता एक जीर्ण-शीर्ण घर के मरते हुए निवासी को भूल जाती है—परमेश्वर की दया शोक करने वाले को याद करती है, और उन होठों पर मन्ना की वर्षा होती है जिन्हें अब सांसारिक पोषण नहीं मिलने वाला। बाइबल के वादे, जो पहले स्वस्थ अवस्था में सुने जाते हैं, लेकिन फिर अनसुने कर दिए जाते हैं, बीमारी के बिस्तर पर फुसफुसाते हुए आते हैं; ऐसा महसूस होता है कि एक दयालु ईश्वर उस सब को देख रहा है जिसे सारी मानवता ने त्याग दिया है। यीशु की कोमल करुणा को याद किया जाता है और उस पर भरोसा किया जाता है; धुंधली आँख, समय से परे देखती हुई, अनंत काल में एक घर, एक मित्र, एक शरण देखती है।

अपने श्रोता की शांत एकाग्रता को देखकर, मिस मान ने अपने अतीत की घटनाओं का जिक्र करना शुरू किया। वह एक सच्चे वक्ता की तरह बोल रही थीं - सरलता से और कुछ संयम के साथ; उन्होंने न तो शेखी मारी और न ही अतिशयोक्ति की। कैरोलीन ने पाया कि वह अविवाहित महिला एक अत्यंत समर्पित बेटी और बहन थीं, मृत्युशय्या पर बैठे लोगों की अथक देखभाल करने वाली; बीमारों की निरंतर और अथक सेवा के कारण ही वह बीमारी उनके जीवन को भी दूषित कर रही थी; एक दुखी रिश्तेदार के लिए वह स्वयं द्वारा अर्जित अपमान की गहराई में सहारा और सहायता थीं, और आज भी उन्हीं के हाथों ने उसे घोर दरिद्रता से बचाया था। मिस हेलस्टोन पूरी शाम वहीं रहीं, अपनी दूसरी तय मुलाकात को छोड़ दिया; और जब वह मिस मान से विदा हुईं, तो उन्होंने भविष्य में उनकी गलतियों को माफ करने का दृढ़ निश्चय किया; उनकी विशिष्टताओं को फिर कभी हल्के में नहीं लेंगी और न ही उनके सरल स्वभाव पर हँसेंगी। और सबसे बढ़कर, उसकी उपेक्षा न करना, बल्कि सप्ताह में एक बार आना और कम से कम एक मानवीय हृदय से उसे स्नेह और सम्मान का आदर अर्पित करना। उसे लगा कि अब वह सच्चे मन से उसे इन सभी भावनाओं का एक छोटा सा आदर दे सकती है।

कैरोलीन ने लौटकर फैनी से कहा कि उसे बहुत खुशी हुई कि वह बाहर गई थी,

क्योंकि उसे वहाँ से जाने के बाद बहुत अच्छा महसूस हुआ। अगले दिन वह मिस ऐनली से मिलने गई। मिस ऐनली की आर्थिक स्थिति मिस मान से भी तंग थी और उनका घर भी साधारण था। हालाँकि, संभव हो तो, उनका घर और भी ज़्यादा साफ़-सुथरा था, हालाँकि वृद्ध महिला नौकर रखने का खर्च नहीं उठा सकती थी, इसलिए वह खुद ही अपना काम करती थी और पास की एक झोपड़ी में रहने वाली एक छोटी लड़की कभी-कभार ही उसकी मदद करती थी।

मिस ऐनली न केवल गरीब थीं, बल्कि दूसरी कुंवारी बुढ़िया से भी कहीं अधिक बदसूरत थीं। जवानी में तो वह ज़रूर बदसूरत रही होंगी; अब पचास साल की उम्र में तो वह बेहद बदसूरत थीं। पहली नज़र में, असाधारण रूप से संयमित दिमाग वाले लोगों को छोड़कर बाकी सभी लोग उनकी बदसूरत शक्ल-सूरत के कारण उनसे चिढ़कर मुंह फेर लेते थे, उनके प्रति पूर्वाग्रह पाल लेते थे। फिर उनका पहनावा और व्यवहार भी सलीकेदार था; वह देखने, बोलने और चलने में पूरी तरह से एक कुंवारी बुढ़िया जैसी लगती थीं।

कैरोलिन का उनका स्वागत औपचारिक था, यहाँ तक कि उसमें विनम्रता भी झलक रही थी—क्योंकि वह वास्तव में दयालु थीं; लेकिन मिस हेलस्टोन ने इसे माफ कर दिया। वह उस कड़क रुमाल के पीछे छिपे दयालु हृदय को अच्छी तरह जानती थीं; पूरा पड़ोस—कम से कम वहाँ की सभी महिलाएँ—इस बात को जानती थीं। मिस ऐनली के खिलाफ कोई नहीं बोलता था सिवाय कुछ उत्साही नौजवानों और कुछ नासमझ बूढ़े लोगों के, जो उन्हें बदसूरत बताते थे।

कैरोलीन उस छोटे से बैठक कक्ष में जल्द ही सहज हो गई। एक दयालु हाथ ने उससे उसका शॉल और टोपी ले ली और उसे आग के पास सबसे आरामदायक कुर्सी पर बिठा दिया। युवा और परिपक्व महिला तुरंत ही मधुर बातचीत में मग्न हो गईं, और जल्द ही कैरोलीन को इस बात का एहसास हो गया कि एक अत्यंत शांत, निस्वार्थ और दयालु मन उन लोगों पर कितना प्रभाव डाल सकता है जिनके लिए वह विकसित हुआ है। वह कभी अपने बारे में बात नहीं करती थी, हमेशा दूसरों के बारे में बात करती थी। उनकी गलतियों को वह नजरअंदाज कर देती थी। उसका विषय उनकी ज़रूरतें थीं, जिन्हें वह पूरा करना चाहती थी; उनके दुख, जिन्हें वह कम करना चाहती थी। वह धार्मिक थी, धर्म की अध्यापिका - जिसे कुछ लोग "संत" कहेंगे; और वह अक्सर धर्म का उल्लेख स्वीकृत भाषा में करती थी - ऐसी भाषा जिसे हास्यास्पदता

को समझने वाले, लेकिन चरित्र का सही-सही परीक्षण और न्याय करने की क्षमता न रखने वाले लोग निश्चित रूप से व्यंग्य का विषय, नकल और हंसी का विषय मानते। वे अपनी इस कोशिश में बहुत बड़ी गलती करते। ईमानदारी कभी हास्यास्पद नहीं होती; यह हमेशा सम्मानजनक होती है। चाहे सत्य—चाहे वह धार्मिक सत्य हो या नैतिक सत्य—स्पष्ट और सुविचारित भाषा में व्यक्त हो या न हो, उसकी वाणी को आदरपूर्वक सुनना चाहिए। जो लोग पाखंड और सच्चाई के स्वरों में स्पष्ट और निश्चित रूप से अंतर नहीं कर सकते, उन्हें कभी भी हँसने का साहस नहीं करना चाहिए, अन्यथा वे दुर्भाग्यवश गलत जगह पर हँस देंगे और अपनी चतुराई का प्रदर्शन करते हुए अधार्मिक कार्य कर बैठेंगे।

कैरोलिन ने मिस ऐनली के अच्छे कामों के बारे में खुद तो नहीं सुना था, लेकिन फिर भी वह उनके बारे में बहुत कुछ जानती थी। उनकी परोपकारिता ब्रायर्फ़ील्ड के गरीबों के बीच आम चर्चा का विषय थी। ये दान-पुण्य के काम नहीं थे। वह बुढ़िया इतनी गरीब थी कि ज्यादा दान नहीं दे सकती थी, हालांकि जरूरत पड़ने पर थोड़ा-बहुत योगदान देने के लिए वह खुद को सीमित रखती थी। ये एक सिस्टर ऑफ चैरिटी के काम थे - जो एक लेडी बाउंटीफुल के कामों से कहीं ज्यादा मुश्किल थे। वह किसी भी बीमार के बिस्तर के पास खड़ी रहती थी; ऐसा लगता था जैसे उसे किसी बीमारी से डर नहीं लगता। वह उन सबसे गरीब लोगों की भी देखभाल करती थी जिनकी देखभाल कोई और नहीं करता था। वह हर परिस्थिति में शांत, विनम्र, दयालु और संतुलित स्वभाव की थीं।

इस नेक काम के लिए उन्हें इस जीवन में बहुत कम प्रतिफल मिला। कई गरीब लोग उनकी सेवाओं के इतने आदी हो गए थे कि उन्होंने शायद ही कभी उनका धन्यवाद किया हो। अमीरों ने उनके बलिदानों का जिक्र सुनकर आश्चर्य तो किया, लेकिन चुप रहे, क्योंकि उनके बलिदानों और अपने बलिदानों के बीच के अंतर को देखकर उन्हें शर्मिंदगी महसूस होती थी। हालांकि, कई महिलाएं उनका बहुत सम्मान करती थीं। वे ऐसा करने से खुद को रोक नहीं सकती थीं। केवल एक सज्जन ने ही उन्हें अपनी मित्रता और पूर्ण विश्वास दिया। ये थे ननेली के पादरी श्री हॉल। उन्होंने कहा, और यह बात बिल्कुल सच थी, कि उनका जीवन ईसा मसीह के जीवन के सबसे करीब था, जितना कि उन्होंने आज तक किसी भी अन्य इंसान का जीवन नहीं देखा था। पाठक, आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि मिस ऐनली के चरित्र का गलत

चित्रण करके मैं कल्पना की उपज को चित्रित कर रहा हूँ। नहीं। हम ऐसे चित्रों के मूल स्वरूप को केवल वास्तविक जीवन में ही खोजते हैं।

मिस हेलस्टोन ने मिस ऐनली के मन और हृदय का गहन अध्ययन किया। उन्हें उनमें प्रशंसा करने लायक कोई उच्च बुद्धि नहीं मिली—वह बुढ़िया मात्र समझदार थी—पर उन्होंने इतनी अच्छाई, इतनी उपयोगिता, इतनी कोमलता, धैर्य और सच्चाई पाई कि उन्होंने अपना मन मिस ऐनली के सामने श्रद्धा से झुका लिया। प्रकृति के प्रति उनका प्रेम, सौंदर्यबोध, उनकी विविध और तीव्र भावनाएँ, चिंतन की गहरी शक्ति, और समझने की व्यापक क्षमता, इस नेक महिला की व्यावहारिक उत्कृष्टता के सामने क्या ही थी? क्षण भर के लिए, वे सब स्वार्थपूर्ण आनंद के सुंदर रूप मात्र प्रतीत हुए; मन ही मन उन्होंने उन्हें कुचल दिया।

यह सच है कि उसे अब भी इस बात का गहरा दुख था कि जिस जीवन ने मिस ऐनली को खुश रखा, वह उसे खुश नहीं रख सका। हालाँकि वह जीवन पवित्र और सक्रिय था, फिर भी उसके दिल में वह उसे बेहद नीरस मानती थी, क्योंकि उसमें प्रेम की कमी थी—उसके विचार में, वह बेहद अकेलापन भरा था। फिर भी, उसने सोचा, निस्संदेह, इसे किसी के लिए भी व्यावहारिक और सुखद बनाने के लिए केवल आदत की ही आवश्यकता थी। उसे लगता था कि भावुक होकर उदास रहना, गुप्त दुःखों को संजोना, व्यर्थ की यादों में खो जाना, निष्क्रिय रहना, जवानी को पीड़ादायक सुस्ती में बर्बाद करना, और बुढ़ापे में कुछ न करते हुए बीत जाना घृणित था।

“मैं खुद को प्रेरित करूंगी,” उसने दृढ़ निश्चय किया, “और अगर मैं अच्छी नहीं बन सकती तो बुद्धिमान बनने की कोशिश करूंगी।”

उसने मिस ऐनली से पूछा कि क्या वह उसकी किसी तरह से मदद कर सकती हैं। मिस ऐनली, एक सहायक पाकर खुश थीं, उन्होंने कहा कि वह मदद कर सकती हैं और ब्रायर्फ़ील्ड में कुछ गरीब परिवारों के बारे में बताया, जहाँ उसे जाना चाहिए। साथ ही, उसके अनुरोध पर, उन्होंने कुछ गरीब महिलाओं के लिए काम भी दिया, जिनके कई बच्चे थे और जो खुद सिलाई-कढ़ाई में कुशल नहीं थीं।

कैरोलीन घर गई, अपनी योजनाएँ बनाईं और ठान लिया कि वह उनसे विचलित नहीं होगी। उसने अपने समय का एक निश्चित हिस्सा अपनी विभिन्न पढ़ाई के लिए और एक निश्चित हिस्सा मिस ऐनली के निर्देशों के अनुसार किसी भी काम के लिए निर्धारित किया। शेष समय व्यायाम में व्यतीत करना था; पिछले रविवार की शाम को

जिन उत्तेजक विचारों ने उसे विवश कर दिया था, उनके लिए एक पल भी नहीं छोड़ना था।

न्यायसंगत रूप से कहें तो, उन्होंने अपनी योजनाओं को पूरी निष्ठा और लगन से अंजाम दिया। शुरुआत में यह बहुत कठिन था - अंत तक भी कठिन बना रहा - लेकिन इससे उन्हें अपने दुख को दबाने और शांत करने में मदद मिली; इसने उन्हें काम में व्यस्त रखा; इसने उन्हें चिंतन करने से रोका; और जब उन्हें लगा कि उन्होंने कुछ अच्छा किया है, किसी को खुशी दी है या किसी के दुख को कम किया है, तो उनके नीरस जीवन में संतोष की झलक दिखाई दी।

फिर भी मुझे सच बोलना ही होगा। इन प्रयासों से न तो उसे शारीरिक स्वास्थ्य मिला और न ही मन की शांति। इनसे वह और भी कमजोर होती गई, उदास और मुरझाई हुई होती गई; इन सबके साथ ही उसकी स्मृति में रॉबर्ट मूर का नाम गूंजता रहा; बीते समय का शोकगीत उसके कानों में लगातार गूंजता रहा; एक शोकपूर्ण आंतरिक चीख उसे सताती और परेशान करती रही; टूटे हुए मन का भारीपन और कमजोर होती इंद्रियों का बोझ धीरे-धीरे उसकी जीवंत जवानी पर हावी होता गया। ऐसा लग रहा था मानो सर्दी उसकी जवानी पर हावी हो रही हो; मन की भूमि और उसके खजाने धीरे-धीरे बंजर होकर जमते जा रहे थे।

अध्याय XI.

फील्डहेड।

फिर भी कैरोलिन ने आसानी से हार मानने से इनकार कर दिया। उसके अंदर एक

सहज साहस था और उसने उसका इस्तेमाल किया। पुरुष और महिलाएं कभी भी इतना कठिन संघर्ष नहीं करते जितना कि अकेले संघर्ष करते समय, बिना किसी गवाह, सलाहकार या विश्वासपात्र के, बिना प्रोत्साहन, बिना सलाह और बिना किसी दया के।

मिस हेलस्टोन इसी स्थिति में थीं। उनके कष्ट ही उनकी एकमात्र प्रेरणा थे, और इतने वास्तविक और तीव्र होने के कारण, उन्होंने उनकी आत्मा को झकझोर कर रख दिया था। एक जानलेवा पीड़ा पर विजय पाने के लिए दृढ़ संकल्पित, उन्होंने उसे शांत करने का भरसक प्रयास किया। उन्हें इतना व्यस्त, इतना अध्ययनशील और सबसे बढ़कर इतना सक्रिय पहले कभी नहीं देखा गया था। वह हर मौसम में सैर पर निकलती थीं, एकांत रास्तों पर लंबी सैर। दिन-प्रतिदिन वह शाम को लौटतीं, पीली और थकी हुई सी दिखतीं, फिर भी मानो थकी हुई नहीं लगती थीं; क्योंकि जैसे ही वह अपनी टोपी और शॉल उतारतीं, आराम करने के बजाय अपने कमरे में चहलकदमी करने लगतीं। कभी-कभी वह तब तक नहीं बैठतीं जब तक कि सचमुच बेहोश न हो जाएं। उन्होंने कहा कि वह ऐसा खुद को अच्छी तरह थकाने के लिए करती हैं, ताकि रात को चैन से सो सकें। लेकिन अगर यही उनका उद्देश्य था, तो वह पूरा नहीं हुआ; क्योंकि रात में, जब दूसरे सो रहे होते थे, वह अपने तकिये पर करवटें बदलती रहती थीं, या अंधेरे में अपने पलंग के पास बैठी रहती थीं, मानो आराम करने की आवश्यकता को भूल गई हों। अक्सर, अभागी लड़की! वह रो रही थी - एक असहनीय निराशा में रो रही थी, जो उस पर हावी होते ही उसकी ताकत को खत्म कर देती थी और उसे एक बच्चे जैसी असहायता में बदल देती थी।

जब वह इस तरह हताश थी, तो प्रलोभन उसे घेरने लगे। कमजोर सुझाव उसके थके हुए दिल में फुसफुसा रहे थे कि वह रॉबर्ट को लिखे और कहे कि वह दुखी है क्योंकि उसे रॉबर्ट और हॉर्टेंस से मिलने की मनाही है, और उसे डर है कि वह उससे अपनी दोस्ती (प्यार नहीं) तोड़ लेगा और उसे पूरी तरह भूल जाएगा, और उससे विनती करे कि वह उसे याद रखे और कभी-कभी उसे पत्र लिखे। उसने सचमुच ऐसे एक-दो पत्र लिखे, लेकिन उसने उन्हें कभी नहीं भेजा: शर्म और विवेक ने उसे ऐसा करने से रोक दिया।

अंततः उसका जीवन उस मोड़ पर पहुँच गया जहाँ उसे लगा कि वह इसे और सहन नहीं कर सकती, कि उसे किसी न किसी तरह बदलाव लाना ही होगा, अन्यथा उसका

हृदय और मस्तिष्क उस तनाव के कारण टूट जाएँगे। वह ब्रायर्फ़ील्ड छोड़कर किसी दूर स्थान पर जाना चाहती थी। वह कुछ और चाहती थी—अपनी माँ को जानने और समझने की गहरी, गुप्त, बेचैन तड़प दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी; लेकिन इस इच्छा के साथ एक संदेह, एक भय भी जुड़ा था—यदि वह उसे जान भी लेती, तो क्या वह उससे प्रेम कर पाती? इस बिंदु पर झिझक और आशंका का कारण था। उसने अपने जीवन में कभी भी अपनी माँ की प्रशंसा नहीं सुनी थी; जो भी उनका ज़िक्र करता, वह ठंडे लहजे में करता। उसके चाचा अपनी भाभी को एक प्रकार की मौन घृणा से देखते थे; एक बूढ़ी नौकरानी, जो श्रीमती जेम्स हेलस्टोन के साथ उनकी शादी के बाद कुछ समय तक रही थी, जब भी अपनी पूर्व मालकिन का ज़िक्र करती, तो ठंडे लहजे में बोलती—कभी वह उन्हें "अजीब" कहती, कभी कहती कि वह उन्हें समझ नहीं पाती। ये बातें बेटी के दिल को बर्फ़ की तरह जम गईं; उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि शायद उसके माता-पिता को कभी न जानना, उसे जानने और उसे नापसंद करने से बेहतर था।

लेकिन एक ऐसा प्रोजेक्ट था जिसे पूरा करने से उसे कुछ राहत मिलने की उम्मीद थी: एक गवर्नेंस की नौकरी करना; उसके पास और कोई विकल्प नहीं था। एक छोटी सी घटना ने उसे इस मुकाम तक पहुँचाया, जब उसने हिम्मत जुटाकर अपने चाचा को अपनी योजना बताई।

जैसा कि कहा गया है, उसकी लंबी और देर रात की सैर हमेशा सुनसान रास्तों पर होती थी; लेकिन वह चाहे जिस भी दिशा में भटकती, चाहे स्टिलब्रो मूर के उजाड़ किनारों पर हो या ननेली कॉमन के धूप से भरे मैदान पर, उसका घर लौटने का रास्ता हमेशा इस तरह बना होता था कि वह खोखले स्थान के पास पहुँच जाती थी। वह शायद ही कभी उस खोखले स्थान में उतरती थी, लेकिन वह लगभग नियमित रूप से गोधूलि बेला के किनारे पर जाती थी, जैसे ही तारे पहाड़ियों की चोटियों पर उगते थे। उसका विश्राम स्थल एक पुराने कांटेदार झाड़ी के नीचे एक खास सीढ़ी पर था। वहाँ से वह कुटिया, चक्की, ओस से भीगी हुई बगीचे की ज़मीन, शांत और गहरे बांध को देख सकती थी; वहीं से प्रसिद्ध लेखा-भवन की खिड़की दिखाई देती थी, जिसके शीशों से एक निश्चित समय पर अचानक, चमकीली रोशनी निकलती थी, जैसे कि वह प्रसिद्ध दीपक हो। उसका काम इस किरण की तलाश करना था, और इसे पकड़ना ही उसका इनाम था, कभी साफ हवा में चमकती हुई, कभी धुंध में झिलमिलाती हुई, और

कभी-कभी बारिश की तिरछी रेखाओं के बीच टूटती हुई चमकती हुई - क्योंकि वह हर मौसम में आती थी।

कुछ रातें ऐसी भी होती थीं जब वह दिखाई नहीं देता था। तब वह जान जाती थी कि रॉबर्ट घर से बाहर है, और दुगने उदास होकर चली जाती थी; जबकि उसकी चमक उसे आनंदित कर देती थी, मानो उसमें किसी अनिश्चित आशा की किरण दिखाई देती हो। अगर उसकी निगाहों के बीच रोशनी और जाली के बीच कोई परछाई झुकती, तो उसका दिल उछल पड़ता। वह ग्रहण रॉबर्ट था; उसने उसे देख लिया था। वह सुकून पाकर घर लौटती, उसके चेहरे की स्पष्ट छवि, उसकी आवाज़, उसकी मुस्कान, उसके हाव-भाव की स्पष्ट याद लिए; और इन यादों के साथ अक्सर एक मीठी सी तसल्ली भी होती थी कि अगर वह उसके पास पहुँच जाए, तो शायद उसका दिल उसकी मौजूदगी का स्वागत करे, शायद इस पल वह अपना हाथ बढ़ाकर उसे गले लगा ले, और उसे अपनी बाहों में वैसे ही पनाह दे जैसे वह पहले देता था। उस रात, भले ही वह हमेशा की तरह रोती, उसे अपने आँसू कम चुभते हुए लगते; जिस तकिए पर वे भीग रहे थे, वह थोड़ा नरम लगता; उस तकिए से सटी कनपटी में दर्द कम होता।

हॉलो से रेक्टरी तक का सबसे छोटा रास्ता एक हवेली के पास से होकर गुजरता था, वही हवेली जिसकी अकेली दीवारों के नीचे से मालोन उस रात की यात्रा के दौरान गुजरा था जिसका जिक्र इस कृति के पहले अध्याय में किया गया है - वह पुरानी और खाली हवेली जिसे फील्डहेड कहा जाता था। मालिक के बिना यह दस साल से खाली पड़ी थी, लेकिन यह खंडहर नहीं थी। श्री यॉर्क ने इसे अच्छी तरह से रखा हुआ देखा था, और एक बूढ़ा माली और उसकी पत्नी इसमें रहते थे, जमीन की खेती करते थे और घर को रहने लायक बनाए रखते थे।

यदि फील्डहेड इमारत में अन्य खूबियाँ कम होतीं, तो भी इसे कम से कम सुरम्य तो कहा ही जा सकता था। इसकी नियमित वास्तुकला और समय के साथ फीके पड़ चुके भूरे और काई जैसे रंग इसे इस विशेषण का पूर्ण हकदार बनाते थे। पुरानी जालीदार खिड़कियाँ, पत्थर का बरामदा, दीवारें, छत, चिमनियाँ, सब कुछ चमकीले रंगों और भूरी छायाओं से परिपूर्ण था। पीछे के पेड़ सुंदर, घने और फैले हुए थे; सामने लॉन में लगा देवदार का पेड़ भव्य था; और बगीचे की दीवार पर लगे ग्रेनाइट के कलश, प्रवेश द्वार का नक्काशीदार मेहराब, किसी कलाकार के लिए आँखों को तृप्त करने वाले सौंदर्य के समान थे।

मई की एक सुहावनी शाम को, लगभग चाँद निकलने के समय, कैरोलीन थकी हुई थी, फिर भी घर जाने की अनिच्छा महसूस कर रही थी, जहाँ उसे केवल काँटों का बिस्तर और शोक की रात का सामना करना था। वह फाटक के पास काईदार ज़मीन पर बैठ गई और देवदार के पेड़ों और हवेली की ओर देखने लगी। रात एकदम शांत थी - ओस से भीगी, बादलों से रहित; पश्चिम की ओर मुड़ी हुई छतें सामने के क्षितिज के स्वच्छ सुनहरे रंग को प्रतिबिंबित कर रही थीं; पीछे के बलूत के पेड़ काले थे; देवदार का पेड़ और भी काला था। उसकी घनी, काली शाखाओं के नीचे से आसमान का एक झलक दिखाई दिया, जो गंभीर नीले रंग का था। वह चाँद से जगमगा रहा था, जो उस घने आसमान के नीचे से कैरोलीन को गंभीरता और कोमलता से देख रहा था।

उसे यह रात और यह दृश्य उदासी से भरा और सुंदर लग रहा था। वह चाहती थी कि वह खुश रहे; वह चाहती थी कि उसे आंतरिक शांति मिले; उसे आश्चर्य हुआ कि ईश्वर उस पर दया क्यों नहीं कर रहा, और न ही उसकी मदद या उसे सांत्वना दे रहा है। पुराने गीतों में वर्णित प्रेमियों के सुखद मिलन की यादें उसके मन में लौट आईं; उसने सोचा कि ऐसे दृश्य में ऐसा मिलन कितना आनंदमय होगा। रॉबर्ट अब कहाँ है? उसने पूछा। वह हॉलो में नहीं था; उसने बहुत देर तक उसके दीपक का इंतज़ार किया था, लेकिन वह उसे नहीं दिखा। उसने मन ही मन सोचा कि क्या उसका और मूर का कभी फिर से मिलना और बात करना नियति में लिखा है। अचानक हॉल के पत्थर के बरामदे का दरवाज़ा खुला, और दो आदमी बाहर आए - एक बूढ़ा और सफ़ेद बालों वाला, दूसरा जवान, काले बालों वाला और लंबा। वे लॉन पार करके बगीचे की दीवार में बने एक द्वार से बाहर निकल गए। कैरोलीन ने उन्हें सड़क पार करते, सीढ़ी से नीचे उतरते, खेतों में जाते देखा; उसने उन्हें गायब होते देखा। रॉबर्ट मूर अपने मित्र श्री यॉर्क के साथ उसके सामने से गुज़रे थे। दोनों में से किसी ने भी उसे नहीं देखा था।

वह दृश्य क्षणिक था—लगभग दिखाई देने के बाद गायब हो गया; लेकिन उसके विद्युतीय प्रभाव ने उसकी नसों में जोश भर दिया, उसकी आत्मा को विद्रोही बना दिया। उसने उसे हताश पाया, उसने उसे बेबस छोड़ दिया—दो अलग-अलग अवस्थाएँ।

“काश, वो अकेला होता! काश उसने मुझे देख लिया होता!” वो रो पड़ी। “वो कुछ कहता। वो मुझे अपना हाथ देता। वो मुझसे थोड़ा प्यार करता है, ज़रूर करता होगा। वो स्नेह का कोई संकेत ज़रूर देता। उसकी आँखों में, उसके होठों में, मुझे सांत्वना

दिखती; पर वो मौका हाथ से निकल गया। हवा, बादल की छाया, उससे ज़्यादा खामोशी से, उससे ज़्यादा खालीपन से नहीं गुज़रती। मेरा मज़ाक उड़ाया गया है, और स्वर्ग कितना क्रूर है!”

इस प्रकार, तीव्र लालसा और निराशा की बीमारी में डूबी हुई वह घर लौट गई।

अगली सुबह नाश्ते के समय, जब वह भूत देखने वाली किसी महिला की तरह पीली गालों वाली और दुखी लग रही थी, उसने मिस्टर हेलस्टोन से पूछा, "चाचा जी, क्या आपको मेरे किसी परिवार में नौकरी पाने की कोशिश करने पर कोई आपत्ति है?"

उसके चाचा, जो अपनी भतीजी के साथ हुए और हो रहे सभी कष्टों से पूरी तरह अनभिज्ञ थे, उन्हें अपने कानों पर मुश्किल से विश्वास हो रहा था।

“अब ये कैसी सनक है?” उसने पूछा। “क्या तुम पर जादू हो गया है? तुम्हारा मतलब क्या है?”

उन्होंने कहा, "मेरी तबीयत ठीक नहीं है और मुझे बदलाव की जरूरत है।"

उसने उसका निरीक्षण किया। उसने पाया कि उसमें कुछ बदलाव आ चुका था। उसकी जानकारी के बिना ही, गुलाब मुरझाकर एक साधारण स्नोड्रॉप जैसा रह गया था; उसकी रौनक गायब हो गई थी, शरीर कमजोर हो गया था; वह उसके सामने झुकी हुई, रंगहीन और दुबली-पतली बैठी थी। उसकी भूरी आँखों की कोमल अभिव्यक्ति, उसके चेहरे की नाजुक रेखाएँ और उसके लहराते बालों के अलावा, उसे सुंदर कहना उचित नहीं था।

“आखिर तुम्हें क्या हुआ है?” उसने पूछा। “क्या परेशानी है? तुम्हें क्या रोग है?”

कोई जवाब नहीं; केवल भूरी आँखें भर आईं, हल्के रंग के होंठ काँपने लगे।

“किसी परिस्थिति से सावधान रहो! तुम किस परिस्थिति के लिए उपयुक्त हो? तुम अपने साथ क्या कर रहे हो? तुम ठीक नहीं हो।”

"अगर मैं घर से बाहर जाऊं तो मैं ठीक हो जाऊंगा।"

“ये औरतें समझ से परे हैं। इनमें अप्रिय आश्चर्यों से चौंका देने की अजीबोगरीब कला है। आज आप उन्हें चुस्त-दुरुस्त, भरे-पूरे, चेरी की तरह लाल और सेब की तरह गोल-मटोल देखते हैं; कल वे मुरझाई हुई घास की तरह कमजोर, पीली और टूटी-फूटी नज़र आती हैं। और इसका कारण क्या है? यही तो पहेली है। हमेशा की तरह उसे खाना, आज़ादी, रहने के लिए अच्छा घर और पहनने के लिए अच्छे कपड़े मिलते हैं। कुछ समय पहले तक इतना ही उसे सुंदर और खुश रखने के लिए काफी था, और अब

वह एक बेचारी, छोटी, पीली, रोती हुई बच्ची बनकर बैठी है। कितना परेशान करने वाला! फिर सवाल उठता है, क्या किया जाए? मुझे लगता है कि मुझे सलाह लेनी चाहिए। क्या तुम डॉक्टर को बुलाओगी, बच्ची?"

"नहीं, चाचा जी, मुझे डॉक्टर नहीं चाहिए। डॉक्टर से मुझे कोई फायदा नहीं होगा। मुझे बस हवा और माहौल में बदलाव चाहिए।"

"ठीक है, अगर यही इच्छा है तो पूरी कर दी जाएगी। तुम एक जल-स्थल पर जाओगे। मुझे खर्च की कोई परवाह नहीं है। फैनी तुम्हारे साथ आएगी।"

"लेकिन चाचा जी, एक दिन मुझे अपने लिए कुछ करना ही होगा; मेरे पास कोई दौलत नहीं है। बेहतर होगा कि मैं अभी से शुरुआत कर दूं।"

"जब तक मैं जीवित हूँ, कैरोलिन, तुम कभी भी गवर्नेंस नहीं बनोगी। मैं यह कभी नहीं सुनूँगी कि मेरी भतीजी गवर्नेंस है।"

"लेकिन चाचा जी, जीवन में जितनी देर से इस तरह का बदलाव किया जाता है, उतना ही मुश्किल और कष्टदायक होता है। मैं आराम और स्वतंत्रता की आदतें बनने से पहले इस बोझ को सहना सीखना चाहूंगा।"

"कैरोलीन, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे परेशान न करें। मैं आपका ख्याल रखूँगा। मैंने हमेशा से आपका ख्याल रखने का इरादा किया है। मैं पेंशन योजना खरीदूँगा। भगवान मेरी मदद करें! मैं अभी सिर्फ पचपन साल का हूँ; मेरा स्वास्थ्य और सेहत बहुत अच्छी है। बचत करने और ज़रूरी कदम उठाने के लिए अभी बहुत समय है। भविष्य को लेकर चिंता न करें। क्या यही बात आपको परेशान करती है?"

"नहीं, चाचा जी; लेकिन मुझे बदलाव की बहुत इच्छा है।"

वह हँसा। "यही तो स्त्री बोल रही है!" वह चिल्लाया, "वही स्त्री! एक बदलाव! एक बदलाव! हमेशा कल्पनाशील और मनमौजी! खैर, यह तो उसके स्वभाव में है।"

"लेकिन यह कोई कल्पना या मनगढ़ंत कहानी नहीं है, चाचा।"

"तो वो क्या है?"

"मुझे लगता है, यह मजबूरी है। मैं पहले से कमजोर महसूस कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मुझे और भी बहुत कुछ करना चाहिए।"

वाह! वह कमजोर महसूस कर रही है, इसलिए उसे कड़ी मेहनत करनी चाहिए - 'क्लियर कोम ले जोर', जैसा कि मूर ने कहा था - मूर को धिक्कार है! तुम क्लिफ ब्रिज जाओ; और वहाँ एक नई फ्रॉक खरीदने के लिए दो गिनी हैं। आओ, कैरी, चिंता

मत करो। हमें गिलियड में मरहम मिल जाएगा।

“चाचा जी, काश आप इतने उदार न होते और इतने अधिक...”

“और क्या?”

कैरोलीन के होंठों पर सहानुभूति का भाव था, लेकिन उसने ये शब्द नहीं कहे। उसने समय रहते खुद को रोक लिया। अगर ये नरम-दिल शब्द उसके मुंह से निकल जाता तो उसके चाचा ज़रूर हंसते। उसे चुप देखकर उन्होंने कहा, "सच तो ये है कि तुम्हें ठीक से पता नहीं कि तुम क्या चाहती हो।"

"केवल एक गवर्नेस बनने के लिए।"

“छी! बिलकुल बकवास! मुझे गवर्नेंस बनने की कोई ज़रूरत नहीं। दोबारा इसका ज़िक्र मत करना। यह कुछ ज़्यादा ही स्त्री-सुलभ शौक है। मैंने नाश्ता कर लिया है। घंटी बजाओ। अपने दिमाग से सारी उलझनें निकाल दो और भाग जाओ और अपना मनोरंजन करो।”

"किसलिए? मेरी गुड़िया से?" कैरोलिन ने कमरे से बाहर निकलते हुए खुद से पूछा।

एक-दो सप्ताह बीत गए; उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में न तो कोई सुधार हुआ और न ही कोई कमी आई। अब वे ठीक उसी अवस्था में थीं, जब यदि उनके शरीर में क्षय रोग, दुर्बलता या धीमी बुखार के लक्षण होते, तो वे रोग तेजी से विकसित हो जाते और उन्हें जल्द ही चुपचाप इस संसार से विदा कर देते। लोग केवल प्रेम या दुःख से ही नहीं मरते, यद्यपि कुछ लोग जन्मजात बीमारियों से मर जाते हैं, जिन्हें इन भावनाओं की पीड़ा समय से पहले ही विनाशकारी रूप ले लेती है। स्वभाव से स्वस्थ लोग भी इन पीड़ाओं से गुजरते हैं, व्याकुल, कांपते और बिखर जाते हैं; उनकी सुंदरता और उमंग क्षीण हो जाती है, परन्तु जीवन अछूता रहता है। वे एक निश्चित स्तर तक जीर्ण-शीर्ण हो जाते हैं; वे पीले पड़ जाते हैं, दुर्बल और कमजोर हो जाते हैं। लोग उन्हें सुस्त और सुस्त अवस्था में देखकर सोचते हैं कि वे जल्द ही बीमार बिस्तर पर चले जाएंगे, वहीं मर जाएंगे और स्वस्थ और सुखी लोगों के बीच से विरक्त हो जाएंगे। ऐसा नहीं होता। वे जीवित रहते हैं; और यद्यपि वे यौवन और उमंग को पुनः प्राप्त नहीं कर सकते, वे शक्ति और शांति को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। मार्च की हवा जिस फूल को झटक देती है, लेकिन उड़ा नहीं पाती, वह पतझड़ के अंत तक पेड़ पर मुरझाए हुए सेब के रूप में लटका रह सकता है: वसंत के आखिरी पाले का सामना

करने के बाद, यह सर्दियों के पहले पाले का भी सामना कर सकता है।

मिस हेलस्टोन के रूप में आए बदलाव को सबने देखा और अधिकतर लोगों ने कहा कि उनकी मृत्यु निकट है। स्वयं उन्हें ऐसा कभी नहीं लगा। उन्हें मृत्यु के कोई लक्षण नहीं थे; न उन्हें कोई दर्द था, न कोई बीमारी। उनकी भूख कम हो गई थी; वे इसका कारण जानती थीं। यह इसलिए था क्योंकि वे रात को बहुत रोती थीं। उनकी शक्ति कम हो गई थी; वे इसका कारण समझ सकती थीं। नींद आना मुश्किल था; सपने कष्टदायक और डरावने थे। दूर भविष्य में उन्हें अभी भी एक ऐसे समय की आशा थी जब दुख का यह दौर समाप्त हो जाएगा और वे फिर से शांत हो जाएंगी, हालांकि शायद फिर कभी खुश न हों।

इसी बीच उसके चाचा ने उसे अपने परिचितों के बार-बार आने के निमंत्रणों को स्वीकार करने के लिए कहा। लेकिन वह ऐसा करने से बचती रही। वह लोगों के बीच खुश नहीं रह पाती थी; उसे लगता था कि लोग उसे सहानुभूति से ज़्यादा जिज्ञासा से देख रहे हैं। बूढ़ी औरतें हमेशा उसे सलाह देती रहती थीं, कोई न कोई नुस्खा सुझाती रहती थीं; जवान लड़कियाँ उसे ऐसे देखती थीं जिसे वह समझ जाती थी और जिससे वह असहज महसूस करती थी। उनकी आँखों में लिखा होता था कि वे जानती हैं कि वह "निराश" हुई है, जैसा कि आम तौर पर कहा जाता है; किससे, यह वे निश्चित नहीं थीं।

आम युवतियाँ भी आम युवकों की तरह ही कठोर और स्वार्थी हो सकती हैं। जो लोग कष्ट भोग रहे हैं, उन्हें इनसे दूर रहना चाहिए। ये दुःख और विपत्ति को तुच्छ समझती हैं; मानो इन्हें ईश्वर का दंड मानती हों। इनके लिए "प्रेम" का अर्थ केवल एक अच्छा साथी ढूंढने की योजना बनाना है; "निराश" होना उनकी योजना के विफल होने और नाकाम होने जैसा है। ये प्रेम के विषय में दूसरों की भावनाओं और योजनाओं को अपने समान समझती हैं और उसी के अनुसार उनका मूल्यांकन करती हैं।

कैरोलिन यह सब जानती थी, कुछ सहज ज्ञान से, कुछ अवलोकन से। वह अपने ज्ञान के अनुसार अपना व्यवहार नियंत्रित करती थी, अपने पीले चेहरे और दुबले-पतले शरीर को यथासंभव लोगों की नज़रों से दूर रखती थी। इस प्रकार पूर्ण एकांत में रहते हुए, उसे आस-पड़ोस की छोटी-मोटी बातों की भी जानकारी नहीं मिलती थी।

एक सुबह उसके चाचा बैठक में आए, जहाँ वह हॉलो फील्ड्स के ऊपरी हिस्से में एक झाड़ी के नीचे इकट्ठे हुए जंगली फूलों के एक छोटे समूह को चित्रित करने में

आनंद खोजने की कोशिश कर रही थी, और उन्होंने अपने कठोर लहजे में उससे कहा, "आओ, बच्ची, तुम हमेशा पैलेट, किताब या सैंपलर पर झुकी रहती हो; रंग भरने का काम छोड़ दो। वैसे, क्या तुम रंग भरते समय अपनी पेंसिल होठों पर लगाती हो?"

"कभी-कभी, चाचा जी, जब मैं भूल जाता हूँ।"

“तो फिर यही चीज़ तुम्हें ज़हर दे रही है। ये रंग हानिकारक हैं, बच्चे। इनमें सफ़ेद सीसा, लाल सीसा, हरा सीसा, गम्बोज और बीस-बीस अन्य ज़हर हैं। इन्हें बंद कर दो! बंद कर दो! जल्दी करो। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ एक मुलाक़ात करो।”

“आपके साथ, चाचा?”

यह सवाल उसने हैरानी भरे लहजे में पूछा। उसे अपने चाचा से फोन पर बात करने की आदत नहीं थी। वह कभी भी उनके साथ बाहर घूमने या सवारी करने नहीं गई थी।

“जल्दी करो! जल्दी करो! मैं हमेशा व्यस्त रहती हूँ, तुम्हें पता ही है। मेरे पास समय नहीं है।”

उसने जल्दी से अपना सामान इकट्ठा किया और साथ ही यह भी पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं।

"फील्डहेड की ओर।"

“फील्डहेड! क्या! बूढ़े माली जेम्स बूथ को देखना? क्या वह बीमार है?”

हम मिस शर्ली कील्डर से मिलने जा रहे हैं।

“मिस कील्डर! क्या वह यॉर्कशायर आ रही हैं? क्या वह फील्डहेड में हैं?”

“हाँ, वो है। उसे वहाँ आए एक हफ़्ता हो गया है। कल रात एक पार्टी में मेरी उससे मुलाक़ात हुई थी – उसी पार्टी में जिसमें तुम नहीं गए थे। मुझे वो अच्छी लगी। मैं चाहता हूँ कि तुम उससे मिलो। इससे तुम्हें फ़ायदा होगा।”

"मुझे लगता है कि अब वह बालिग हो गई है?"

“वह बालिग हो चुकी है और कुछ समय के लिए अपनी संपत्ति पर रहेगी। मैंने उसे इस विषय पर समझाया; मैंने उसे उसका कर्तव्य समझाया। वह जिद्दी नहीं है। बल्कि वह एक अच्छी लड़की है; वह आपको जीवंत स्वभाव का होना सिखाएगी। उसमें जरा भी सुस्ती नहीं है।”

मुझे नहीं लगता कि वह मुझसे मिलना चाहेगी, या मुझसे परिचय करवाना चाहेगी। मैं उसका क्या भला कर सकता हूँ? मैं उसका मनोरंजन कैसे कर सकता हूँ?

“छी! अपना सिर ढक लो।”

“क्या उसे गर्व है, चाचा?”

पता नहीं। मुझे लगता है कि आप शायद ही कल्पना कर सकते हैं कि वह मेरे सामने अपना घमंड दिखाएगी? ऐसी लड़की अपने चर्च के पादरी के सामने अकड़ दिखाने की हिम्मत तो कभी नहीं करेगी, चाहे वह कितनी भी अमीर क्यों न हो।

नहीं। लेकिन वह दूसरे लोगों के साथ कैसा व्यवहार करती थी?

मैंने ध्यान नहीं दिया। वह सिर ऊंचा करके चलती है, और शायद जहां हिम्मत हो वहां बेबाक भी हो सकती है। वरना वह औरत नहीं कहलाएगी। लो! अब जल्दी से अपनी टोपी उतारो!

स्वभाव से आत्मविश्वासहीन, शारीरिक शक्ति की कमी और मन की उदासी ने कैरोलिन की सूझबूझ और व्यवहार में सहजता को कम कर दिया था, और अजनबियों का सामना करने का साहस भी नहीं दिया था। अपने आप को समझाने के बावजूद, वह कांप रही थी जब वह और उसके चाचा फील्डहेड के प्रवेश द्वार से उसके बरामदे तक जाने वाले चौड़े, पक्के रास्ते पर चल रहे थे। अनिच्छा से वह मिस्टर हेलस्टोन के पीछे उस बरामदे से होते हुए उस उदास पुराने गलियारे में चली गई।

यह बहुत ही उदास और गंभीर था—लंबा, विशाल और अंधेरा; एक जालीदार खिड़की से हल्की रोशनी आ रही थी। चौड़ी पुरानी चिमनी में अब आग नहीं थी, क्योंकि मौजूदा गर्म मौसम में इसकी आवश्यकता नहीं थी; इसके बजाय उसमें विलो की शाखाएँ भरी हुई थीं। प्रवेश द्वार के सामने, ऊपर की गैलरी केवल धुंधली सी दिखाई दे रही थी, क्योंकि छत की ओर बढ़ते हुए यह हॉल इतना छायादार हो गया था। असली सींगों वाले तराशे हुए हिरणों के सिर दीवारों से विचित्र ढंग से नीचे देख रहे थे। यह न तो कोई भव्य घर था और न ही आरामदायक; अंदर और बाहर से यह प्राचीन, फैला हुआ और असुविधाजनक था। इसकी एक हजार वार्षिक आय की संपत्ति थी, जो पुरुष उत्तराधिकारियों के अभाव में एक महिला को विरासत में मिली थी। जिले में ऐसे व्यापारी परिवार थे जिनकी आय इससे दोगुनी थी, लेकिन कील्डार परिवार, अपनी प्राचीनता और जागीर के स्वामी होने के कारण, सबसे आगे था।

श्रीमान और श्रीमती हेलस्टोन को एक बैठक कक्ष में ले जाया गया। जैसा कि ऐसी पुरानी गॉथिक शैली की बैरक में अपेक्षित था, यह बैठक कक्ष ओक की लकड़ी से बना था: सुंदर, गहरे, चमकदार पैनलों ने दीवारों को भव्य और रहस्यमय ढंग से घेरा हुआ था। पाठक, ये चमकदार भूरे पैनल बहुत ही सुंदर हैं, रंग में बेहद सौम्य और

प्रभाव में सुरुचिपूर्ण हैं, लेकिन - यदि आप जानते हैं कि "वसंत सफाई" क्या होती है - तो ये बेहद घृणित और अमानवीय हैं। जिस किसी में भी थोड़ी सी भी मानवीय भावना है, जिसने मई के गर्म दिन में मोम लगे कपड़ों से इन पॉलिश की हुई लकड़ी की दीवारों को रगड़ते हुए नौकरों को देखा है, वह यह स्वीकार करेगा कि यह "असहनीय और सहन करने योग्य नहीं है।" और मैं उस परोपकारी बर्बर व्यक्ति की गुप्त रूप से प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता जिसने फील्डहेड के एक और बड़े कमरे - यानी ड्राइंग रूम, जो पहले एक ओक का कमरा भी था - को नाजुक गुलाबी सफेद रंग से रंग दिया था, जिससे उसने खुद को एक हूण का चरित्र दिलाया, लेकिन अपने निवास के उस हिस्से की प्रसन्नता को बहुत बढ़ा दिया, और भविष्य की नौकरानियों को बहुत मेहनत से बचा लिया।

भूरे रंग के पैनल वाली बैठक पूरी तरह से पुराने ढंग से सजी हुई थी, और उसमें असली पुराना फर्नीचर था। ऊँचे मेंटलपीस के दोनों ओर ओक की दो प्राचीन कुर्सियाँ थीं, जो जंगल के सिंहासनों की तरह ठोस थीं, और इनमें से एक पर एक महिला बैठी थी। लेकिन अगर यह मिस कील्डर थीं, तो वह कम से कम बीस साल पहले बालिग हो चुकी होंगी। उनका रूप-रंग गंभीर था, और यद्यपि उन्होंने कोई टोपी नहीं पहनी थी, और उनके बाल बिल्कुल साफ भूरे रंग के थे, जो उनके छोटे और स्वाभाविक रूप से युवा दिखने वाले चेहरे को ढक रहे थे, फिर भी उनमें युवावस्था का कोई भाव नहीं था, और न ही ऐसा दिखने की कोई इच्छा थी। आप चाहते कि उनके कपड़े आधुनिक फैशन के होते। एक सुगठित, अच्छी तरह से सिले हुए गाउन में उनकी उपस्थिति बिल्कुल भी भद्दी नहीं होती। यह समझना मुश्किल था कि इतने सुंदर कपड़े को इतनी कम तहों में क्यों रखा गया है, और इतने पुराने फैशन में क्यों बनाया गया है। आपको तुरंत ही पहनने वाली को कुछ सनकी समझने का मन हुआ।

इस महिला ने औपचारिकता और संकोच के मिश्रित भाव से आगंतुकों का स्वागत किया, जो पूरी तरह से अंग्रेज़ों जैसा था। कोई भी अधेड़ उम्र की महिला, जो अंग्रेज़ न हो, ठीक वैसा व्यवहार नहीं कर सकती थी—ऐसा व्यवहार जो स्वयं पर, अपनी खूबियों पर, और दूसरों को खुश करने की अपनी क्षमता पर इतना अनिश्चित था, फिर भी इतना उचित और संभव हो तो, अधिक मिलनसार होने की चाहत रखता था। हालांकि, इस मामले में, संकोची अंग्रेज़ महिलाओं की तुलना में कहीं अधिक झिझक दिखाई दी। मिस हेलस्टोन ने इसे महसूस किया, अजनबी के प्रति सहानुभूति जताई,

और अपने अनुभव से जानती थीं कि संकोची लोगों के लिए क्या अच्छा होता है, इसलिए चुपचाप उनके पास बैठ गईं और उनसे सहजता से बातचीत शुरू कर दी, जो उस क्षणिक रूप से उनके मुकाबले कम संकोची व्यक्ति की उपस्थिति से संभव हो पाई थी।

अगर वो और ये महिला अकेले होते, तो दोनों की आपस में तुरंत बहुत अच्छी दोस्ती हो जाती। उस महिला की आवाज़ बेहद साफ़ थी—चालीस साल की उम्र के हिसाब से कहीं ज़्यादा कोमल और सुरीली—और उसका शरीर थोड़ा मोटा था। कैरोलीन को ये आवाज़ अच्छी लगी; इससे उसके औपचारिक, लेकिन सही लहजे और भाषा की कमी पूरी हो जाती थी। वो महिला भी जल्द ही समझ जाती कि उसे कैरोलीन की आवाज़ पसंद है, और दस मिनट में ही दोनों दोस्त बन जाते। लेकिन मिस्टर हेलस्टोन कालीन पर खड़े होकर उन दोनों को देख रहे थे, खासकर उस अजनबी महिला को अपनी व्यंग्यात्मक, पैनी नज़रों से, जिनमें उसकी ठंडी औपचारिकता पर उनकी नाराज़गी और आत्मविश्वास की कमी साफ़ झलक रही थी। उनकी कठोर निगाहें और कर्कश आवाज़ उस महिला को और भी ज़्यादा असहज कर रही थीं। फिर भी उसने मौसम, देश के नज़ारे वगैरह के बारे में छोटे-छोटे भाषण देने की कोशिश की; लेकिन अव्यावहारिक मिस्टर हेलस्टोन को जल्द ही लगा जैसे वो बहरे हो गए हों। वो जो कुछ भी कहती, वो जानबूझकर अनसुना कर देते, और कैरोलीन को अपने हर बेतुके भाषण को दो बार दोहराना पड़ता। जल्द ही यह प्रयास उसके लिए असहनीय हो गया। वह घबराहट में उठ खड़ी हुई थी और धीरे से बुदबुदा रही थी कि उसे नहीं पता कि मिस कील्डर को क्या रोके हुए है, वह जाकर उन्हें ढूंढेगी, तभी मिस कील्डर अचानक प्रकट होकर उसकी परेशानी दूर कर दी। कम से कम यह तो अनुमान लगाया जा सकता था कि बगीचे से कांच के दरवाजे से अंदर आने वाली महिला का नाम यही था।

सहज व्यवहार में सच्ची गरिमा होती है, और बूढ़े हेलस्टोन ने भी ऐसा ही महसूस किया जब एक सीधी, दुबली-पतली लड़की उनके पास आई, अपने बाएं हाथ में फूलों से भरा अपना छोटा रेशमी एप्रन पकड़े हुए, और अपना दाहिना हाथ बढ़ाते हुए प्रसन्नता से बोली, "मुझे पता था कि आप मुझसे मिलने आएंगे, हालांकि आप सोचते हैं कि मिस्टर यॉर्क ने मुझे जैकोबिन बना दिया है। सुप्रभात।"

“लेकिन हम तुम्हें जैकोबिन नहीं बनने देंगे,” उसने जवाब दिया। “नहीं, मिस शर्ली;

वे मेरे इलाके की सबसे प्रतिभाशाली लड़की को मुझसे नहीं छीन सकते। अब जब तुम हमारे बीच हो, तो तुम राजनीति और धर्म में मेरी शिष्या बनोगी; मैं तुम्हें दोनों विषयों पर सही शिक्षा दूँगा।"

"श्रीमती प्रायर ने आपसे पहले ही जवाब दे दिया है," उन्होंने बुजुर्ग महिला की ओर मुड़ते हुए कहा। "श्रीमती प्रायर, जैसा कि आप जानती हैं, मेरी गवर्नेंस थीं और आज भी मेरी दोस्त हैं; और सभी कट्टर और कट्टरपंथी टोरी नेताओं में वे रानी हैं; सभी धर्मनिष्ठ चर्च महिलाओं में वे सबसे आगे हैं। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ, श्री हेलस्टोन, कि मुझे धर्मशास्त्र और इतिहास दोनों का अच्छा ज्ञान है।"

रेक्टर ने तुरंत श्रीमती प्रायर के सामने बहुत झुककर प्रणाम किया और उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

पूर्व गवर्नेंस ने राजनीतिक या धार्मिक विवादों में अपनी कुशलता से इनकार किया, यह स्पष्ट किया कि वह ऐसे मामलों को महिलाओं के लिए उपयुक्त नहीं मानतीं, लेकिन सामान्य शब्दों में स्वयं को व्यवस्था और निष्ठा की समर्थक बताया और कहा कि वह सत्ता प्रतिष्ठान के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। उन्होंने आगे कहा कि वह किसी भी परिस्थिति में बदलाव से हमेशा कतराती रही हैं, और नए विचारों को तुरंत अपना लेने के अत्यधिक खतरे के बारे में कुछ अस्पष्ट शब्दों के साथ उन्होंने अपना वाक्य समाप्त किया।

"मुझे उम्मीद है कि मिस कील्डर भी आपकी ही तरह सोचती हैं, मैडम।"

"उम्र और स्वभाव के अंतर से भावनाओं में भी अंतर आ जाता है," जवाब मिला। "यह उम्मीद करना मुश्किल है कि उत्साही और युवा लोग शांत और अधेड़ उम्र के लोगों की राय से सहमत हों।"

"अरे! अरे! हम स्वतंत्र हैं; हम अपने लिए खुद सोचते हैं!" श्री हेलस्टोन चिल्लाए। "हम थोड़े से जैकोबिन हैं, जहाँ तक मुझे पता है — थोड़े से स्वतंत्र विचारक, पूरी ईमानदारी से। आइए यहीं पर अपने विश्वास की घोषणा करें।"

और उसने उत्तराधिकारी के दोनों हाथ पकड़ लिए - जिससे उसके हाथों में पकड़े हुए सारे फूल गिर गए - और उसे अपने पास सोफे पर बैठा दिया।

"अपनी आस्था बताओ," उसने आदेश दिया।

"प्रेरितों का पंथ?"

"हाँ।"

उसने बच्चों की तरह कहा।

अब बारी है सेंट एथेनासियस की। यही असली परीक्षा है!

“मुझे अपने फूल समेटने दो। देखो, तातार आ रहा है; वह इन पर पैर रखेगा।”

टार्टर एक बड़ा, ताकतवर और खूंखार दिखने वाला कुत्ता था, जो देखने में बेहद बदसूरत था और मास्टिफ और बुलडॉग की मिश्रित नस्ल का था। ठीक उसी क्षण वह कांच के दरवाजे से अंदर आया और सीधे कालीन पर जाकर वहाँ बिखरे ताजे फूलों को सूंघने लगा। ऐसा लग रहा था मानो वह उन्हें भोजन समझकर तुच्छ समझ रहा हो; लेकिन शायद यह सोचकर कि उनकी मखमली पंखुड़ियाँ बिछाने के काम आ सकती हैं, वह उन पर अपना भारी-भरकम शरीर रखने के लिए मुड़ने ही वाला था कि मिस हेलस्टोन और मिस कील्डर एक साथ झुककर उसकी मदद करने के लिए आगे आईं।

“धन्यवाद,” वारिस ने कहा और कैरोलिन को फूल भरने के लिए अपना छोटा एप्रन फिर से आगे बढ़ाया। “क्या यह आपकी बेटी है, श्रीमान हेलस्टोन?” उसने पूछा।

मेरी भतीजी कैरोलिन।

मिस कील्डर ने उनसे हाथ मिलाया और फिर उनकी ओर देखा। कैरोलीन ने भी अपनी मेज़बान की ओर देखा।

शर्ली कील्डर (उनका कोई ईसाई नाम नहीं था, केवल शर्ली: उनके माता-पिता, जो एक पुत्र चाहते थे, आठ साल के विवाह के बाद, जब उन्हें केवल एक पुत्री मिली, तो उन्होंने उन्हें वही पुरुष उपनाम दिया जो वे एक पुत्र को देते यदि उन्हें पुत्र का आशीर्वाद प्राप्त होता) - शर्ली कील्डर कोई बदसूरत उत्तराधिकारी नहीं थीं। वह देखने में मनमोहक थीं। उनकी लंबाई और कद-काठी मिस हेलस्टोन से मिलती-जुलती थी; शायद कद में वह एक-दो इंच लंबी थीं। उनका शरीर सुडौल था, और उनका चेहरा भी उतना ही आकर्षक था जितना किसी और का। उनका रंग स्वाभाविक रूप से हल्का पीला था, लेकिन बुद्धिमान और भावपूर्ण था। वह कैरोलीन की तरह गोरी नहीं थीं। उनके चेहरे की रंगत में स्पष्टता और गहराई थी। उनका चेहरा और माथा साफ था, उनकी आंखें गहरे भूरे रंग की थीं (उनमें कोई हरी चमक नहीं थी - पारदर्शी, शुद्ध, तटस्थ भूरा), और उनके बाल गहरे भूरे रंग के थे। उसके चेहरे की बनावट विशिष्ट थी—मेरा मतलब यह नहीं है कि वह ऊँची, हड्डीदार और रोमन जैसी थी, बल्कि वास्तव में वह छोटी और थोड़ी उभरी हुई थी, बल्कि वह कुछ फ्रांसीसी शब्दों में कहें तो "फिन्स, ग्रेसियस, स्पिरिटुअल्स" थी—गतिशील और बोलचाल वाली; लेकिन उसके

भावों को एक बार में समझना और उसकी भाषा को समझना संभव नहीं था। उसने कैरोलिन को गंभीरता से देखा, अपना सिर थोड़ा एक तरफ झुकाते हुए, विचारमग्न भाव से।

"देखिए, वह तो बस एक कमजोर सी बच्ची है," श्री हेलस्टोन ने टिप्पणी की।

"वह जवान दिखती है—मुझसे भी जवान।—आपकी उम्र कितनी है?" उसने ऐसे लहजे में पूछा जो अगर बेहद गंभीर और सरल न होता तो थोड़ा अपमानजनक लगता।

"अठारह साल और छह महीने।"

और मेरी उम्र इक्कीस साल है।

उसने और कुछ नहीं कहा। उसने अपने फूल मेज पर रख दिए थे और उन्हें सजाने में व्यस्त थी।

"और सेंट एथेनासियस का पंथ?" रेक्टर ने पूछा। "आप इस पर पूरा विश्वास करते हैं, है ना?"

मुझे सब कुछ ठीक से याद नहीं है। श्री हेलस्टोन, जब मैं आपकी भतीजी को फूलों का गुलदस्ता दे दूंगी, तब मैं आपको भी एक गुलदस्ता दूंगी।

उसने एक छोटा सा गुलदस्ता चुना था जिसमें एक चमकीला और दो-तीन नाज़ुक फूल थे, साथ में गहरे हरे रंग की एक टहनी भी थी। उसने उसे अपने वर्क-बॉक्स से रेशम के धागे से बांधा और कैरोलीन की गोद में रख दिया; फिर उसने अपने हाथ पीछे कर लिए और अपनी मेहमान की ओर थोड़ा झुककर खड़ी हो गई, उसे निहारती रही, एक गंभीर लेकिन कुछ हद तक वीर घुड़सवार की मुद्रा में। उसके चेहरे के इस क्षणिक भाव को उसके बालों की शैली ने और भी निखार दिया था, जो एक कनपटी से अलग होकर माथे के ऊपर चमकदार ढंग से कंघी किए हुए थे, जहाँ से वे घुंघराले होकर गिर रहे थे जो देखने में स्वाभाविक लग रहे थे, उनकी लहराती हुई लहरें इतनी सहज थीं।

"क्या आप पैदल चलकर थक गए हैं?" उसने पूछा।

"नहीं—बिल्कुल नहीं। यह बहुत कम दूरी है—सिर्फ एक मील।"

"आप तो बिल्कुल पीली लग रही हैं। — क्या वह हमेशा इतनी पीली ही रहती हैं?" उसने पादरी की ओर मुड़ते हुए पूछा।

वह कभी तुम्हारे सबसे लाल फूल की तरह गुलाबी हुआ करती थी।

"उसमें इतना बदलाव क्यों आया है? उसका रंग पीला क्यों पड़ गया है? क्या वह बीमार थी?"

वह मुझसे कहती है कि वह बदलाव चाहती है।

“उसे एक मिलना चाहिए। आपको उसे एक देना चाहिए। आपको उसे समुद्र तट पर भेज देना चाहिए।”

"मैं गर्मी खत्म होने से पहले ऐसा कर दूंगा। इस बीच, अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं उसे आपसे मिलवाने का इरादा रखता हूं।"

“मुझे पूरा यकीन है कि मिस कील्डर को कोई आपत्ति नहीं होगी,” श्रीमती प्रायर ने कहा। “मुझे लगता है कि मैं यह कहने का साहस कर सकती हूँ कि फील्डहेड में मिस हेलस्टोन की नियमित उपस्थिति को एक उपकार माना जाएगा।”

“आपने बिल्कुल मेरे मन की बात कह दी, महोदया,” शर्ली ने कहा, “और मुझे पहले से ही यह बात कहने के लिए धन्यवाद। — मैं आपको बता दूं,” उसने कैरोलीन की ओर मुड़ते हुए कहा, “कि आपको मेरी गवर्नेंस का भी धन्यवाद करना चाहिए। हर किसी का स्वागत वह इस तरह नहीं करतीं जैसे उन्होंने आपका किया है। आप जितना सोचती हैं उससे कहीं अधिक विशिष्ट हैं। आज सुबह, आपके जाते ही, मैं श्रीमती प्रायर से आपके बारे में राय लूंगी। मैं उनके चरित्र-भेद के आकलन पर भरोसा करती हूं, क्योंकि अब तक मैंने उन्हें आश्चर्यजनक रूप से सटीक पाया है। मुझे पहले से ही अपने सवालों का अनुकूल जवाब मिलने की उम्मीद है। — क्या मैं सही अनुमान नहीं लगा रही, श्रीमती प्रायर?”

"मेरी प्यारी, तुमने कहा था कि मिस हेलस्टोन के जाने के बाद अब तुम मेरी राय पूछोगी। मैं शायद ही उनकी उपस्थिति में अपनी राय दूंगी।"

“नहीं; और शायद इसे पाने में काफी समय लग जाए। — श्री हेलस्टोन, श्रीमती प्रायर की अत्यधिक सावधानी मुझे कभी-कभी बहुत परेशान करती है। उनके फैसले सही होने चाहिए, क्योंकि वे अक्सर लॉर्ड चांसलर के फैसलों की तरह ही देर से आते हैं। कुछ लोगों के चरित्र पर तो मैं उनसे कोई राय नहीं ले पाती, चाहे मैं कितनी भी विनती कर लूँ।”

श्रीमती प्रायर मुस्कुराईं।

“जी हां,” उसकी शिष्या ने कहा, “मैं समझ गई कि उस मुस्कान का क्या मतलब है। आप मेरे सज्जन-किरायेदार के बारे में सोच रही हैं। — क्या आप हॉलो के मिस्टर मूर को जानते हैं?” उसने मिस्टर हेलस्टोन से पूछा।

“अरे! अरे! आपका किरायेदार— जी हाँ। जब से आप आए हैं, आपने उसे काफी

बार देखा होगा, इसमें कोई शक नहीं?”

मुझे उनसे मिलना पड़ा। कुछ काम था। काम! सच में, यह शब्द मुझे एहसास दिलाता है कि मैं अब लड़की नहीं, बल्कि एक औरत और उससे भी कहीं ज़्यादा हूँ। मैं एक एस्क्वायर हूँ! शर्ली कील्डर, एस्क्वायर, यही मेरी उपाधि और पदवी होनी चाहिए। उन्होंने मुझे एक पुरुष का नाम दिया है; मैं एक पुरुष का पद धारण करती हूँ। यह मुझे मर्दानगी का एहसास दिलाने के लिए काफी है; और जब मैं अपने सामने उस गरिमामय एंग्लो-बेल्जियन - गेरार्ड मूर - जैसे लोगों को देखती हूँ, जो मुझसे गंभीरता से काम की बातें कर रहे हैं, तो सच में मुझे एक सज्जन व्यक्ति जैसा महसूस होता है। श्री हेलस्टोन, अगली बार जब आप नए चर्चवार्डन चुनें, तो मुझे ही चुनना चाहिए। मुझे मजिस्ट्रेट और योमनरी का कप्तान बना देना चाहिए। टोनी लम्पकिन की माँ कर्नल थीं, और उनकी चाची शांति न्यायाधीश थीं। तो मैं क्यों न बनूँ?

“पूरी ईमानदारी से। अगर आप इस विषय पर कोई अनुरोध पत्र तैयार करना चाहें, तो मैं हस्ताक्षरकर्ताओं की सूची में अपना नाम सबसे ऊपर रखने का वादा करता हूँ। लेकिन आप मूर की बात कर रहे थे?”

“अहा! हाँ। मुझे श्री मूर को समझना थोड़ा मुश्किल लगता है, उनके बारे में क्या सोचूँ, उन्हें पसंद करूँ या नहीं। वे ऐसे किरायेदार लगते हैं जिन पर कोई भी मकान मालिक गर्व कर सकता है—और इस लिहाज़ से मुझे उन पर गर्व है; लेकिन पड़ोसी के तौर पर वे कैसे हैं? मैंने श्रीमती प्रायर से बार-बार उनके बारे में अपनी राय बताने की विनती की है, लेकिन वे अब तक सीधा जवाब देने से बचती रही हैं। मुझे उम्मीद है कि आप इतने रहस्यमय नहीं होंगे, श्री हेलस्टोन, और सीधे-सीधे बता देंगे। क्या आप उन्हें पसंद करते हैं?”

“बिल्कुल नहीं, अभी तो नहीं। मेरा नाम पूरी तरह से मेरी नज़रों से मिट चुका है।”

“क्या बात है? उसने क्या किया है?”

“मेरे चाचा और उनके बीच राजनीति को लेकर मतभेद हैं,” कैरोलिन की धीमी आवाज़ बीच में ही रुक गई। उसे उस समय नहीं बोलना चाहिए था। बातचीत में मुश्किल से ही हिस्सा लेने के बाद, अब बोलना उचित नहीं था। बोलते ही उसे घबराहट के साथ इस बात का एहसास हुआ और उसकी आँखें लाल हो गईं।

"मूर की राजनीतिक विचारधारा क्या है?" शर्ली ने पूछा।

“एक व्यापारी की सोच तो संकीर्ण, स्वार्थी और देशद्रोही है। वह व्यक्ति युद्ध जारी

रखने के खिलाफ लगातार लिखता और बोलता रहता है। मुझे उससे कोई हमदर्दी नहीं है।”

“युद्ध से उनके व्यापार को नुकसान हो रहा है। मुझे याद है उन्होंने कल ही यह बात कही थी। लेकिन आपको उनसे और क्या आपत्ति है?”

"वह पर्याप्त है।"

"मेरी समझ से वह एक सज्जन व्यक्ति लगते हैं," शर्ली ने आगे कहा, "और यह सोचकर मुझे खुशी होती है कि वह वास्तव में ऐसे ही हैं।"

कैरोलीन ने अपने गुलदस्ते में मौजूद इकलौते चमकीले फूल की पंखुड़ियों को नोंचते हुए स्पष्ट स्वर में उत्तर दिया, "निस्संदेह वह है।" इस साहसी कथन को सुनकर शर्ली ने अपनी गहरी, भावपूर्ण आँखों से वक्ता की ओर एक तीखी, खोजपूर्ण दृष्टि डाली।

“कम से कम तुम उसके दोस्त तो हो ही,” उसने कहा। “तुम उसकी अनुपस्थिति में उसका बचाव करोगे।”

“मैं उनका दोस्त भी हूँ और रिश्तेदार भी,” तुरंत जवाब आया। “रॉबर्ट मूर मेरे चचेरे भाई हैं।”

"अच्छा, तो फिर आप मुझे उसके बारे में सब कुछ बता सकते हैं। बस मुझे उसके चरित्र का एक संक्षिप्त विवरण दे दीजिए।"

जब यह मांग रखी गई तो कैरोलीन को असहनीय शर्मिंदगी महसूस हुई। वह इसका पालन नहीं कर सकी और न ही उसने ऐसा करने का प्रयास किया। उसकी चुप्पी को श्रीमती प्रायर ने तुरंत संभाल लिया और पड़ोस के एक-दो परिवारों के बारे में श्री हेलस्टोन से कई सवाल पूछने लगीं, जिनके दक्षिणी हिस्से में रहने वाले लोगों से वह जान-पहचान होने का दावा कर रही थीं। शर्ली ने जल्द ही मिस हेलस्टोन के चेहरे से अपनी नज़रें हटा लीं। उसने अपने सवाल दोबारा नहीं पूछे, बल्कि अपने फूलों की ओर लौटकर रेक्टर के लिए एक गुलदस्ता चुनने लगी। उसने विदा लेते समय उन्हें गुलदस्ता भेंट किया और बदले में उन्हें हाथ पर अभिवादन मिला।

"मेरी खातिर इसे जरूर पहनना," उसने कहा।

“अगला नंबर मेरे दिल का है,” हेलस्टोन ने जवाब दिया। — “श्रीमती प्रायर, इस भावी मजिस्ट्रेट, इस भावी चर्चवार्डन, इस योमनरी के कप्तान, इस युवा ब्रायर्फ़ील्ड ज़मींदार का ध्यान रखें। उसे ज़्यादा ज़ोर न लगाने दें; शिकार में उसकी गर्दन न तोड़

दें; और विशेष रूप से, उसे ध्यान रखने को कहें कि वह हॉलो के पास उस खतरनाक पहाड़ी से नीचे कैसे उतरे।”

"मुझे ढलान पसंद है," शर्ली ने कहा; "मुझे इसे तेजी से पार करना पसंद है; और खासकर मुझे वह रोमांटिक हॉलो दिल से बहुत पसंद है।"

"रोमांटिक, जिसमें एक चक्की भी हो?"

"इसमें एक चक्की का होना एक रोमांटिक अनुभव है। पुरानी चक्की और सफेद कुटीर दोनों ही अपने-अपने तरीके से प्रशंसनीय हैं।"

“और लेखा-परीक्षा विभाग, श्री कील्डर?”

“मेरा लेखा-जोखा विभाग मेरे रंगीन ड्राइंग रूम से कहीं बेहतर है। मुझे लेखा-जोखा विभाग बहुत पसंद है।”

और व्यापार? कपड़ा, चिकना ऊन, प्रदूषण फैलाने वाले रंगाई के टैंक?

"इस पेशे का पूरी तरह से सम्मान किया जाना चाहिए।"

“और वो व्यापारी हीरो है? बहुत बढ़िया!”

मुझे यह सुनकर खुशी हुई। मुझे तो वह कारीगर वाकई वीर लग रहा था।

जब वह बूढ़े कोसैक के साथ शब्दों की बौछार कर रही थी, तो उसके चेहरे पर शरारत, जोश और उल्लास की चमक साफ झलक रही थी, और बूढ़ा कोसैक भी इस बहस का लगभग उतना ही आनंद ले रहा था।

“कैप्टन कील्डर, आपकी रगों में व्यापार का कोई खून नहीं है। फिर भी आपको व्यापार से इतना लगाव क्यों है?”

"क्योंकि मैं एक मिल मालिक हूँ, ज़ाहिर है। मेरी आधी आमदनी उस हॉलो में स्थित कारखानों से आती है।"

"साझेदारी में मत पड़ो - बस इतना ही।"

“आपने इसे मेरे दिमाग में बिठा दिया! आपने इसे मेरे दिमाग में बिठा दिया!” वह खुशी से हंसते हुए बोली। “यह कभी नहीं निकलेगा। धन्यवाद।” और अपना हाथ लहराते हुए, जो लिली की तरह सफेद और परी की तरह कोमल था, वह बरामदे में गायब हो गई, जबकि पादरी और उनकी भतीजी मेहराबदार द्वार से बाहर निकल गए।

अध्याय XII.

शर्ली और कैरोलिन।

शर्ली ने कैरोलीन की संगति पाकर अपनी सच्ची भावना को दर्शाया; और सच तो यह है कि अगर वह उसकी संगति न भी चाहती, तो उसे कभी मिलती ही नहीं, क्योंकि मिस हेलस्टोन नए लोगों से जल्दी जान-पहचान नहीं बनाती थीं। वह हमेशा इस सोच से घिरी रहती थीं कि लोग उन्हें नहीं चाहेंगे, कि वह उनका मनोरंजन नहीं कर पाएंगी; और फील्डहेड की वारिस जैसी प्रतिभाशाली, खुशमिजाज और युवा कैरोलीन उन्हें अपने जैसे नीरस समाज से इतनी अलग-थलग लगती थीं कि उन्हें लगता ही नहीं था कि कैरोलीन का स्वागत होगा।

शर्ली शायद प्रतिभाशाली और संभवतः खुशमिजाज भी थीं, लेकिन कोई भी सौहार्दपूर्ण संगति के बिना नहीं रह सकता; और यद्यपि लगभग एक महीने में ही उन्होंने आसपास के अधिकांश परिवारों से जान-पहचान कर ली थी और सभी मिस साइक्स, सभी मिस पियर्सन और वाल्डेन हॉल की दो उत्कृष्ट मिस विन्न के साथ उनके काफी सहज संबंध थे, फिर भी, ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्हें उनमें से कोई भी बहुत सौहार्दपूर्ण नहीं लगी: उनके अपने शब्दों में कहें तो, उन्होंने उनमें से किसी के साथ भी मेलजोल नहीं रखा। यदि उन्हें वास्तव में शर्ली कील्डर, एस्क्वायर, ब्रायफ़ील्ड जागीर की स्वामी होने का सौभाग्य प्राप्त होता, तो इस और आसपास के दो परगनों में एक भी ऐसी सुंदर स्त्री नहीं होती जिसे वह श्रीमती कील्डर, जागीर की मालकिन बनने का अनुरोध करना चाहतीं। यह बात उन्होंने श्रीमती प्रायर से कही, जिन्होंने इसे बड़ी शांति से सुना, जैसा कि वे अपनी शिष्या के अधिकांश अनौपचारिक भाषणों के साथ करती थीं, और जवाब में कहा, "मेरी प्यारी, अपने आप को सज्जन कहने की इस आदत को कायम मत रहने दो। यह एक अजीब आदत है। जो लोग तुम्हें नहीं

जानते, वे तुम्हें इस तरह बोलते हुए सुनकर सोचेंगे कि तुम दिखावटी मर्दाना व्यवहार कर रही हो।"

शर्ली ने अपनी पूर्व गवर्नेंस पर कभी नहीं हँसी; उस महिला की छोटी-छोटी औपचारिकताएँ और हानिरहित आदतें भी उसकी नज़र में सम्मानजनक थीं। अगर ऐसा न होता, तो वह तुरंत ही कमज़ोर चरित्र वाली साबित हो जाती; क्योंकि केवल कमज़ोर लोग ही चुपचाप मज़ाक का पात्र बनते हैं। इसलिए उसने उसकी फटकार को चुपचाप सह लिया। वह खिड़की के पास चुपचाप खड़ी रही, अपने लॉन में लगे विशाल देवदार के पेड़ को देखती रही, जो उसकी निचली शाखाओं में से एक पर एक पक्षी को देख रहा था। थोड़ी देर बाद उसने पक्षी को चहचहाना शुरू किया; जल्द ही उसकी चहचहाहट और स्पष्ट हो गई; थोड़ी देर में वह सीटी बजाने लगी; सीटी एक धुन में बदल गई, और बहुत ही मधुरता और कुशलता से बजाई गई।

"मेरी प्यारी!" श्रीमती प्रायर ने विरोध जताया।

"क्या मैं सीटी बजा रही थी?" शर्ली ने कहा। "मैं भूल गई थी। क्षमा कीजिए, महोदया। मैंने आपके सामने सीटी न बजाने का निश्चय किया था।"

"लेकिन, मिस कील्डर, आपने सीटी बजाना कहाँ से सीखा? यॉर्कशायर आने के बाद से ही आपको यह आदत पड़ गई होगी। मैंने आपको इससे पहले कभी ऐसा करते नहीं देखा।"

"ओह! मैंने तो बहुत पहले सीटी बजाना सीख लिया था।"

"आपको किसने सिखाया?"

"किसी ने नहीं सुना। मैंने इसे सुनकर सीखा था, और फिर छोड़ दिया था। लेकिन हाल ही में, कल शाम, जब मैं अपनी गली से आ रहा था, तो मैंने बाड़ के दूसरी तरफ खेत में एक सज्जन को वही धुन सीटी बजाते हुए सुनी, और इससे मुझे याद आ गया।"

"वह कौन से सज्जन थे?"

"इस क्षेत्र में हमारे पास केवल एक ही सज्जन हैं, महोदया, और वे हैं श्री मूर — कम से कम वे एकमात्र ऐसे सज्जन हैं जिनके बाल सफेद नहीं हुए हैं। मेरे दो आदरणीय प्रिय, श्री हेलस्टोन और श्री यॉर्क, यह सच है कि वे शानदार बुजुर्ग हैं, और इन मूर्ख नौजवानों से कहीं बेहतर हैं।"

श्रीमती प्रायर चुप रहीं।

“क्या आपको मिस्टर हेलस्टोन पसंद नहीं हैं, महोदया?”

"मेरे प्रिय, श्री हेलस्टोन का पद उन्हें आलोचना से बचाता है।"

"जब उनके नाम की घोषणा होती है, तो आप आमतौर पर कमरे से बाहर निकलने का प्रयास करते हैं।"

"क्या तुम आज सुबह बाहर जा रही हो, मेरी प्यारी?"

"हाँ, मैं पादरी के निवास पर जाऊँगा, कैरोलीन हेलस्टोन को ढूँढूँगा और उसे थोड़ा व्यायाम करवाऊँगा। वह नननेली कॉमन पर ताज़ी हवा में टहलेगी।"

"अगर तुम उस दिशा में जाओ, मेरी प्यारी, तो कृपया मिस हेलस्टोन को याद दिला देना कि वह अच्छे से कपड़े पहन लें, क्योंकि तेज हवा चल रही है, और मुझे लगता है कि उन्हें देखभाल की जरूरत है।"

"श्रीमती प्रायर, आपकी बात का पूरी तरह से पालन किया जाएगा। इस बीच, क्या आप स्वयं हमारे साथ नहीं चलेंगी?"

नहीं, मेरी प्रिय; मैं तुम्हारे लिए बाधा बन जाऊँगी। मैं हृष्ट-पुष्ट हूँ, और उतनी तेज़ी से नहीं चल सकती जितनी तुम चाहोगी।

शर्ली ने कैरोलिन को आसानी से अपने साथ चलने के लिए मना लिया, और जब वे ननेली कॉमन के विशाल और सुनसान इलाके को पार करते हुए शांत सड़क पर काफी दूर निकल आईं, तो उसने बड़ी आसानी से कैरोलिन को बातचीत में शामिल कर लिया। शुरुआती झिझक दूर होते ही, कैरोलिन को मिस कील्डर से बात करने में खुशी महसूस हुई। शुरुआती कुछ छोटी-छोटी बातों से ही दोनों को एक-दूसरे के बारे में अंदाजा हो गया। शर्ली ने कहा कि उसे कॉमन की हरी-भरी घास बहुत पसंद है, और उससे भी ज्यादा उसकी पहाड़ियों पर उगी झाड़ियाँ, क्योंकि झाड़ियाँ उसे दलदली भूमि की याद दिलाती हैं। उसने स्कॉटलैंड के पास सीमावर्ती इलाकों में यात्रा करते समय दलदली भूमि देखी थी। उसे खास तौर पर एक इलाका याद है जिसे उसने गर्मी के उमस भरे लेकिन धूप रहित दिन में एक लंबी दोपहर में तय किया था। उन्होंने दोपहर से सूर्यास्त तक, गहरी झाड़ियों के एक अथाह रेगिस्तान में यात्रा की, और उन्हें जंगली भेड़ों के अलावा कुछ नहीं दिखा, जंगली पक्षियों की आवाजों के अलावा कुछ नहीं सुनाई दिया।

कैरोलिन ने कहा, "मैं जानती हूँ कि ऐसे दिन मैदान कैसा दिखेगा; बैंगनी-काला - आसमान के रंग से भी गहरा, और वह भयानक होगा।"

"हाँ, बिल्कुल पीलापन लिए, बादलों के किनारे पीतल जैसे चमकीले थे, और जगह-जगह एक सफेद चमक थी, जो उस भयावह रंग से भी कहीं अधिक भयानक थी, जिसे देखकर आपको क्षण भर के लिए लगा कि वह चकाचौंध कर देने वाली बिजली में बदल जाएगी।"

क्या बिजली कड़की थी?

"दूर से हल्की गड़गड़ाहट की आवाजें आ रही थीं, लेकिन तूफान शाम तक नहीं रुका, जब तक हम अपने सराय में नहीं पहुंच गए - वह सराय पहाड़ों की एक श्रृंखला की तलहटी में स्थित एक एकांत घर था।"

क्या आपने पहाड़ों के ऊपर से बादलों को नीचे आते देखा?

“मैंने देखा। मैं एक घंटे तक खिड़की पर खड़ा होकर उन्हें देखता रहा। पहाड़ एक उदास धुंध में लिपटे हुए प्रतीत हो रहे थे, और जब बारिश सफेद चादरों की तरह बरसने लगी, तो अचानक वे दृश्य से ओझल हो गए; वे दुनिया से मिट गए।”

मैंने यॉर्कशायर के पहाड़ी इलाकों में ऐसे तूफान देखे हैं; और जब वे अपने चरम पर थे, आसमान जलप्रपात से भरा था, धरती बाढ़ से लथपथ थी, तब मुझे प्रलय की याद आ गई।

"ऐसे तूफानों के बाद शांति की वापसी का एहसास होना और बादलों के छंटने से मिलने वाली सांत्वनादायक किरण को प्राप्त करना, जो धीरे से इस बात की गवाही देती है कि सूरज अभी बुझा नहीं है, यह एक अनोखा स्फूर्तिदायक अनुभव है।"

"मिस कील्डर, अब बस स्थिर खड़ी हो जाइए और ननेली घाटी और जंगल को नीचे से देखिए।"

वे दोनों मैदान की हरी-भरी ढलान पर रुक गए। उन्होंने नीचे मई के ऋतुओं से सजी गहरी घाटी को देखा; विभिन्न प्रकार के घास के मैदानों को देखा, कुछ डेज़ी फूलों से सजे थे, और कुछ किंग-कप फूलों से सुनहरे। आज यह सारी नई हरियाली धूप में खिल उठी; पारदर्शी पन्ना और अंबर की चमक उस पर खेल रही थी। ननवुड पर—एक ऐसे क्षेत्र में प्राचीन ब्रिटिश जंगल का एकमात्र अवशेष, जिसके निचले इलाके कभी घने जंगलों से भरे थे, जैसे ऊंचे इलाके छाती तक घनी झाड़ियों से ढके थे—एक बादल की छाया सो रही थी; दूर की पहाड़ियाँ चित्तीदार थीं, क्षितिज सीप की तरह छायादार और रंगीन था; चांदी जैसे नीले, कोमल बैंगनी, क्षणभंगुर हरे और गुलाबी रंग, सभी नीले बर्फ की तरह शुद्ध सफेद बादलों की परतों में घुलते हुए, स्वर्ग

की नींव की एक दूरस्थ झलक की तरह आँखों को आकर्षित कर रहे थे। ढलान पर बहने वाली हवा ताज़ी, मीठी और स्फूर्तिदायक थी।

शर्ली ने कहा, "हमारा इंग्लैंड एक खूबसूरत द्वीप है, और यॉर्कशायर इसके सबसे खूबसूरत कोनों में से एक है।"

"क्या आप भी यॉर्कशायर की लड़की हैं?"

“मैं रक्त और जन्म से यॉर्कशायर का हूँ। मेरी पीढ़ी की पाँच पीढ़ियाँ ब्रायर्फ़ील्ड चर्च की गलियों के नीचे सो रही हैं। मैंने अपनी पहली साँस हमारे पीछे स्थित उस पुराने काले हॉल में ली थी।”

इस पर कैरोलिन ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, जिसे सहर्ष स्वीकार कर लिया गया और हाथ मिलाया गया। उसने कहा, "हम देशवासी हैं।"

“हां,” शर्ली ने गंभीरता से सिर हिलाते हुए सहमति जताई।

“और वो,” मिस कील्डर ने जंगल की ओर इशारा करते हुए पूछा— “क्या वो ननवुड है?”

"यह है।"

क्या आप कभी वहां थे?

"बहुत बार।"

"इसके बिल्कुल केंद्र में?"

"हाँ।"

"यह किस तरह का है?"

“यह अनाक के वनवासियों के शिविर जैसा है। पेड़ विशाल और पुराने हैं। जब आप उनकी जड़ों के पास खड़े होते हैं, तो चोटियाँ किसी दूसरे ही क्षेत्र में प्रतीत होती हैं। तने खंभों की तरह स्थिर और दृढ़ रहते हैं, जबकि शाखाएँ हर हवा के झोंके के साथ लहराती हैं। घोर शांति में भी उनके पत्ते पूरी तरह शांत नहीं होते, और तेज़ हवा में बाढ़ सी आ जाती है, मानो ऊपर समुद्र गरज रहा हो।”

"क्या यह रॉबिन हुड के पसंदीदा ठिकानों में से एक नहीं था?"

“जी हां, और उनकी निशानियां अभी भी मौजूद हैं। ननवुड में प्रवेश करना, मिस कील्डर, पुराने धुंधले दिनों में वापस जाने जैसा है। क्या आपको जंगल के बीचोंबीच कोई दरार दिखाई दे रही है?”

“हां, बिल्कुल।”

“वह दर्रा एक घाटी है— एक गहरा, खोखला प्याला, जिसके किनारे पर इस मैदान की तरह हरी और छोटी घास बिछी है। सबसे पुराने पेड़, विशालकाय ओक के पेड़, इस घाटी के किनारे पर घने झुंड में खड़े हैं। तल में एक नन आश्रम के खंडहर स्थित हैं।”

“हम चलेंगे—सिर्फ़ तुम और मैं, कैरोलीन—किसी सुहावनी गर्मी की सुबह, और वहाँ पूरा दिन बिताएँगे। हम पेंसिल, स्केचबुक और अपनी पसंद की कोई भी रोचक किताब ले जा सकते हैं; और हाँ, खाने-पीने का सामान भी ले जाएँगे। मेरे पास दो छोटी टोकरियाँ हैं, जिनमें मेरी गृहणी श्रीमती गिल हमारा सामान पैक कर देंगी, और हम दोनों अपना-अपना सामान ले जा सकते हैं। इतनी दूर चलने में तुम्हें ज़्यादा थकान तो नहीं होगी?”

“अरे नहीं; खासकर अगर हम पूरा दिन जंगल में आराम करें। और मुझे सभी सबसे सुखद स्थान पता हैं। मुझे पता है कि अखरोट तोड़ने के मौसम में हमें कहाँ अखरोट मिल सकते हैं; मुझे पता है कि जंगली स्ट्रॉबेरी कहाँ बहुतायत में पाई जाती हैं; मुझे कुछ एकांत, बिल्कुल अनछुए मैदान पता हैं, जो अजीबोगरीब काई से ढके हैं, कुछ सुनहरी पीली, कुछ सादी भूरी, कुछ रत्न-जैसी हरी। मुझे पेड़ों के ऐसे समूह पता हैं जो अपनी परिपूर्ण, चित्रमयता से आँखों को मोहित कर लेते हैं - खुरदरा ओक, कोमल बर्च, चमकदार बीच, विपरीतता में गुच्छों में; और शाऊल की तरह राजसी राख के पेड़, अकेले खड़े; और चमकीली आइवी की चादरों में लिपटे वृद्ध जंगल के विशालकाय पेड़। मिस कील्डर, मैं आपका मार्गदर्शन कर सकती हूँ।”

"क्या मेरे अकेले रहने पर तुम नीरस हो जाओगे?"

“मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। मुझे लगता है कि हम एक-दूसरे के अनुकूल होंगे; और ऐसा कौन सा तीसरा व्यक्ति है जिसकी उपस्थिति हमारे आनंद को खराब नहीं करेगी?”

“वास्तव में, मुझे हमारी उम्र के आसपास किसी के बारे में जानकारी नहीं है—कम से कम कोई महिला तो नहीं; और जहाँ तक पुरुषों की बात है—”

"जब पार्टी में सज्जन लोग शामिल होते हैं तो भ्रमण का अनुभव बिल्कुल अलग हो जाता है," कैरोलिन ने बात काटते हुए कहा।

मैं आपसे सहमत हूं - यह हमारे प्रस्ताव से बिल्कुल अलग बात है।

"हम तो बस पुराने पेड़ों, पुराने खंडहरों को देखने जा रहे थे; पुराने समय में एक

दिन बिताने के लिए, पुरानी खामोशी से घिरे रहने के लिए, और सबसे बढ़कर शांति के लिए।"

“आप सही कह रहे हैं; और सज्जनों की उपस्थिति से आखिरी आकर्षण भी मिट जाता है, मुझे लगता है। अगर वे गलत किस्म के हों, जैसे आपके मैलोन, आपके युवा साइक्स और विनेस, तो शांति की जगह चिड़चिड़ाहट आ जाती है। अगर वे सही किस्म के हों, तो भी बदलाव आता है; मैं ठीक से बता नहीं सकता कि कैसा बदलाव – एक ऐसा बदलाव जिसे महसूस करना आसान है, लेकिन वर्णन करना मुश्किल।”

"हम सबसे पहले प्रकृति को भूल जाते हैं।"

और फिर प्रकृति हमें भूल जाती है, अपने विशाल शांत माथे को एक धुंधले घूंघट से ढक लेती है, अपना चेहरा छुपा लेती है, और उस शांतिपूर्ण आनंद को वापस ले लेती है जिससे, यदि हम केवल उसकी पूजा करने से ही संतुष्ट होते, तो वह हमारे दिलों को भर देती।

“इसके बदले वह हमें क्या देती है?”

"अधिक उल्लास और अधिक चिंता; एक उत्तेजना जो घंटों को तेजी से चुरा लेती है, और एक परेशानी जो उनके मार्ग को अस्त-व्यस्त कर देती है।"

“मेरा मानना है कि खुश रहने की हमारी शक्ति काफी हद तक हमारे भीतर ही निहित है,” कैरोलिन ने समझदारी से कहा। “मैं एक बड़े समूह के साथ ननवुड गई थी—सभी पादरी और उस इलाके के कुछ अन्य प्रतिष्ठित लोग, साथ ही कई महिलाएं—और मुझे वह आयोजन बेहद उबाऊ और बेतुका लगा; और मैं बिल्कुल अकेली भी गई थी, या केवल फैनी के साथ, जो लकड़हारे की झोपड़ी में बैठकर सिलाई करती थी या घर की मालकिन से बातें करती थी, जबकि मैं इधर-उधर घूमती, रेखाचित्र बनाती या पढ़ती थी; और मैंने पूरे दिन एक शांत प्रकार की खुशी का आनंद लिया। लेकिन यह तब की बात है जब मैं जवान थी—दो साल पहले की।”

"क्या आप कभी अपने चचेरे भाई रॉबर्ट मूर के साथ गए थे?"

“हां; एक बार।”

"ऐसे मौकों पर वह किस तरह का साथी साबित होता है?"

"आप जानते हैं, चचेरा भाई या बहन एक अजनबी से अलग होते हैं।"

मुझे इस बात का एहसास है; लेकिन चचेरे भाई-बहन, अगर वे मूर्ख हों, तो अजनबियों से भी ज़्यादा असहनीय होते हैं, क्योंकि आप उन्हें इतनी आसानी से दूर

नहीं रख सकते। लेकिन आपका चचेरा भाई मूर्ख नहीं है?

"नहीं, लेकिन - - "

"कुंआ?"

“जैसा कि आप कहते हैं, यदि मूर्खों की संगति चिढ़ाती है, तो बुद्धिमानों की संगति भी अपना ही कष्ट देती है। जहाँ आपके मित्र की अच्छाई या प्रतिभा निर्विवाद और सर्वोपरि हो, वहाँ अक्सर उसके साथ रहने की आपकी योग्यता पर ही प्रश्न उठने लगता है।”

ओह! मैं आपकी बात समझ नहीं पा रही। ये सनक तो मेरे बस की बात नहीं। मैं खुद को अच्छे सज्जनों की संगति में रहने के लायक समझती हूँ, हालाँकि ये कहना थोड़ा ज़्यादा होगा। जहाँ अच्छे लोग होते हैं, वहाँ बहुत अच्छे होते हैं, मेरा मानना है। वैसे, आपके चाचा जी एक अच्छे बुजुर्ग सज्जन हैं। मुझे हमेशा उनका सांवला, तेज और समझदार चेहरा देखकर खुशी होती है, चाहे वो मेरे घर में हों या कहीं और। क्या आप उन्हें पसंद करती हैं? क्या वो आपके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं? अब सच बताइए।

“उन्होंने मुझे बचपन से पाला-पोसा है, इसमें कोई शक नहीं, ठीक वैसे ही जैसे वे अपनी बेटी को पालते, अगर उनकी कोई बेटी होती; और यही दयालुता है। लेकिन मैं उन्हें पसंद नहीं करती। मैं उनकी मौजूदगी से दूर रहना ज़्यादा पसंद करूंगी।

"अजीब बात है, जब उसे खुद को इतना मनभावन बनाने की कला आती है।"

“हाँ, लोगों के बीच तो वह गंभीर रहते हैं; लेकिन घर पर वे सख्त और शांत हो जाते हैं। जैसे वे पादरी के महल में अपनी छड़ी और टोपी एक तरफ रख देते हैं, वैसे ही वे अपनी जीवंतता को किताबों की अलमारी और अध्ययन-मेज में बंद कर लेते हैं: माथे पर शिकन और संक्षिप्त शब्द आग के पास बैठकर बोलते हैं; मुस्कान, मजाक और हाजिरजवाबी समाज के लिए होती है।”

क्या वह अत्याचारी है?

बिल्कुल नहीं। वह न तो अत्याचारी हैं और न ही पाखंडी। वह बस एक ऐसे व्यक्ति हैं जो सौम्य स्वभाव से कहीं अधिक उदार हैं, मिलनसार स्वभाव से कहीं अधिक प्रतिभाशाली हैं, और वास्तव में न्यायप्रिय होने के बजाय अधिक निष्ठावान और निष्पक्ष हैं - यदि आप ऐसे सूक्ष्म अंतरों को समझ सकते हैं।

“ओह हाँ! अच्छे स्वभाव का अर्थ है उदारता, जो उनमें नहीं है; सौहार्द, हृदय की

गर्मजोशी, जो उनमें नहीं है; और सच्चा न्याय सहानुभूति और विचारशीलता की उपज है, जिसके बारे में, मैं अच्छी तरह से समझ सकता हूँ, मेरा बूढ़ा मित्र बिल्कुल अनभिज्ञ है।"

"शर्ली, मैं अक्सर सोचता हूँ कि क्या घरेलू संबंधों में अधिकांश पुरुष मेरे चाचा जैसे होते हैं; क्या उनकी नज़रों में सुखद या सम्माननीय दिखने के लिए उनके लिए नया और अपरिचित होना आवश्यक है; और क्या उनके स्वभाव में यह असंभव है कि वे उन लोगों के प्रति निरंतर रुचि और स्नेह बनाए रखें जिन्हें वे हर दिन देखते हैं।"

"मुझे नहीं पता। मैं आपके संदेह दूर नहीं कर सकती। मैं खुद भी कभी-कभी ऐसे ही सवालों में उलझ जाती हूँ। लेकिन, एक राज़ बताऊँ, अगर मुझे यकीन हो जाए कि वे हमसे स्वाभाविक रूप से और हर जगह अलग हैं—चंचल, जल्दी ही कठोर हो जाने वाले, सहानुभूतिहीन—तो मैं कभी शादी नहीं करूँगी। मैं यह नहीं जानना चाहूँगी कि जिसे मैं प्यार करती हूँ, वह मुझे प्यार नहीं करता, मुझसे ऊब चुका है, और उसे खुश करने के लिए मैं जो भी कोशिश करूँ, वह बेकार से भी बदतर होगी, क्योंकि उसका स्वभाव ही है कि वह बदल जाए और उदासीन हो जाए। एक बार यह पता चल जाए, तो मैं किस चीज़ की चाह रखूँगी? दूर चले जाने की, उस जगह से दूर जाने की जहाँ मेरा साथ मुझे आनंद नहीं देता।"

लेकिन अगर आप शादीशुदा होते तो ऐसा नहीं कर पाते।

"नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती। बस यही बात है। मैं अब कभी भी अपनी खुद की मालकिन नहीं बन सकती। कितना भयानक विचार है! यह मुझे घुटन महसूस कराता है! बोझ और उबाऊ होने का विचार मुझे सबसे ज्यादा परेशान करता है—एक अपरिहार्य बोझ, एक अंतहीन उबाऊपन! अब, जब मुझे लगता है कि मेरी संगति अनावश्यक है, तो मैं अपनी स्वतंत्रता को चादर की तरह ओढ़ सकती हूँ, अपने अहंकार को घूंघट की तरह उतार सकती हूँ और एकांत में जा सकती हूँ। अगर मेरी शादी हो जाती, तो ऐसा संभव नहीं होता।"

"मुझे आश्चर्य होता है कि हम सब अविवाहित रहने का फैसला क्यों नहीं कर लेते," कैरोलीन ने कहा। "अगर हम अनुभव की सीख मानें तो हमें ऐसा करना चाहिए। मेरे चाचा हमेशा शादी को बोझ बताते हैं; और मुझे लगता है कि जब भी उन्हें किसी पुरुष के विवाहित होने की खबर मिलती है, तो वे उसे मूर्ख या कम से कम मूर्खतापूर्ण काम करने वाला समझते हैं।"

लेकिन, कैरोलिन, सभी पुरुष तुम्हारे चाचा जैसे नहीं होते। बिलकुल नहीं। मुझे उम्मीद है कि ऐसा नहीं होगा।

वह रुकी और सोचने लगी।

कैरोलिन ने सुझाव दिया, "मुझे लगता है कि शादी होने तक हम सभी को अपने प्रियजन में कोई न कोई अपवाद मिल ही जाता है।"

“मुझे लगता है ऐसा ही है। और हम मानते हैं कि यह अपवाद उत्कृष्ट गुणों से बना है। हम इसे अपने जैसा ही समझते हैं; हम सामंजस्य की भावना का अनुभव करते हैं। हमें लगता है कि उसकी आवाज़ एक ऐसे हृदय का सबसे कोमल, सच्चा वादा करती है जो हमारे प्रति कभी कठोर नहीं होगा; हम उसकी आँखों में वह निष्ठापूर्ण भावना—स्नेह—देखते हैं। कैरोलीन, मुझे नहीं लगता कि हमें उस पर बिल्कुल भी भरोसा करना चाहिए जिसे वे जुनून कहते हैं। मेरा मानना है कि यह सूखी लकड़ियों की आग मात्र है, जो भड़कती है और बुझ जाती है। लेकिन हम उसे देखते हैं, और पाते हैं कि वह जानवरों, छोटे बच्चों, गरीबों के प्रति दयालु है। वह हमारे प्रति भी दयालु, अच्छा और विचारशील है। वह महिलाओं की चापलूसी नहीं करता, लेकिन उनके साथ धैर्य रखता है, और उनकी उपस्थिति में सहज प्रतीत होता है, और उनकी संगति उसे सुखद लगती है। वह उन्हें केवल व्यर्थ और स्वार्थी कारणों से ही नहीं, बल्कि हमारी तरह—क्योंकि हम उसे पसंद करते हैं—पसंद करते हैं। फिर हम देखते हैं कि वह न्यायप्रिय है, वह हमेशा सच बोलता है, वह कर्तव्यनिष्ठ है। जब वह कमरे में आता है तो हमें खुशी और शांति का अनुभव होता है; जब वह चला जाता है तो हमें उदासी और बेचैनी होती है। हम जानते हैं कि यह व्यक्ति एक दयालु रहा है। बेटे, वह एक दयालु भाई है। क्या कोई मुझे यह कहने की हिम्मत कर सकता है कि वह एक दयालु पति नहीं होगा?

मेरे चाचा बिना किसी झिझक के इस बात की पुष्टि करते थे। वे कहते थे, 'एक महीने में वह तुमसे तंग आ जाएगा।'

"श्रीमती प्रायर भी गंभीरतापूर्वक यही संकेत देंगी।"

"श्रीमती यॉर्क और मिस मान भी दबे स्वर में यही सुझाव देंगी।"

"यदि वे सचमुच भविष्यवाणियां हैं, तो कभी प्यार में न पड़ना ही अच्छा है।"

"बहुत अच्छा, अगर आप इससे बच सकते हैं।"

मैं उनकी सच्चाई पर संदेह करना चुनता हूं।

मुझे डर है कि इससे साबित होता है कि आप पहले ही पकड़े जा चुके हैं।

“मैं नहीं। लेकिन अगर मैं होता, तो क्या आप जानते हैं कि मैं किन ज्योतिषियों से सलाह लेता?”

मुझे सुनने दो।

“न तो पुरुष, न स्त्री, न बूढ़ा, न जवान: वह छोटा आयरिश भिखारी जो नंगे पैर मेरे दरवाजे पर आता है; वह चूहा जो दीवार की दरार से चुपके से निकल आता है; वह पक्षी जो पाले और बर्फ में मेरी खिड़की पर एक टुकड़ा चुगता है; वह कुत्ता जो मेरा हाथ चाटता है और मेरे घुटने के पास बैठता है।”

"क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जो इन चीजों के प्रति दयालु हो?"

"क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जिस पर इस तरह की चीजें सहज रूप से निर्भर करती हों, या जो इन चीजों का अनुसरण करता हो?"

“हमारे पादरी के निवास पर एक काली बिल्ली और एक बूढ़ा कुत्ता है। मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसकी गोद में वह काली बिल्ली चढ़ना पसंद करती है, जिसके कंधे और गाल से लगकर वह म्याऊँ करती है। बूढ़ा कुत्ता हमेशा अपने पिंजरे से बाहर आता है, अपनी पूंछ हिलाता है और जब कोई पास से गुजरता है तो प्यार से म्याऊँ करता है।”

और वह व्यक्ति क्या करता है?

वह चुपचाप बिल्ली को सहलाता है और जब तक संभव होता है उसे बैठने देता है; और जब उसे उठकर उसे परेशान करना पड़ता है, तो वह उसे धीरे से नीचे रखता है और कभी भी उसे ज़ोर से नहीं फेंकता। वह हमेशा कुत्ते को सीटी बजाकर बुलाता है और उसे प्यार से सहलाता है।

“क्या वह है? क्या वह रॉबर्ट नहीं है?”

लेकिन यह रॉबर्ट है।

“वाह, कितना सुंदर लड़का है!” शर्ली ने उत्साह से कहा। उसकी आँखें चमक उठीं।

“क्या वह सुंदर नहीं है? क्या उसकी आंखें सुंदर नहीं हैं, चेहरे की बनावट सुडौल नहीं है, और उसका माथा साफ और राजसी नहीं है?”

“उसके पास ये सब कुछ है, कैरोलीन। भगवान उसका भला करे! वह शालीन और नेक दोनों है।”

मुझे पूरा यकीन था कि आप यह देख लेंगे कि वह कौन है। जब मैंने पहली बार आपका चेहरा देखा, तभी मुझे पता चल गया था कि आप यह देख लेंगे।

“उसे देखने से पहले ही मेरा मन उसके प्रति आकर्षित था। उसे देखने के बाद तो मैं उसे पसंद करने लगी। अब तो मैं उसकी प्रशंसा करती हूँ। सुंदरता में ही अपना आकर्षण होता है, कैरोलीन; जब उसमें अच्छाई का भी समावेश हो जाता है, तो उसका आकर्षण और भी बढ़ जाता है।”

"जब दिमाग भी शामिल हो जाए, शर्ली?"

इसका विरोध कौन कर सकता है?

"मेरे चाचा, श्रीमती प्रायर, यॉर्क और मान को याद रखना।"

“मिस्र के मेंढकों की टर्राहट को याद करो। वह एक महान प्राणी है। मैं तुमसे कहता हूँ कि जब वे अच्छे होते हैं, तो वे सृष्टि के स्वामी होते हैं—वे ईश्वर के पुत्र होते हैं। अपने सृष्टिकर्ता की छवि में ढाले गए, उनकी आत्मा की सूक्ष्म चिंगारी उन्हें लगभग नश्वरता से ऊपर उठा देती है। निःसंदेह, एक महान, अच्छा, सुंदर पुरुष सृजित वस्तुओं में प्रथम है।”

"हमारे ऊपर?"

“मैं उससे साम्राज्य के लिए संघर्ष करने से घृणा करूंगा—मैं इससे घृणा करूंगा। क्या मेरा बायां हाथ मेरे दाहिने हाथ से प्राथमिकता के लिए संघर्ष करेगा? क्या मेरा हृदय मेरी नब्ज़ से झगड़ा करेगा? क्या मेरी नसें उस रक्त से ईर्ष्या करेंगी जो उनमें बहता है?”

"पुरुष और महिलाएं, पति और पत्नियां, बुरी तरह से झगड़ते हैं, शर्ली।"

“बेचारे! बेचारे, पतित, भ्रष्ट प्राणी! ईश्वर ने उन्हें किसी और उद्देश्य के लिए, किसी और भावनाओं के लिए बनाया था।”

लेकिन क्या हम पुरुषों के बराबर हैं, या नहीं?

"मुझे किसी भी चीज़ से उतना आनंद नहीं आता जितना कि अपने वरिष्ठ अधिकारी से मिलने पर आता है - एक ऐसा वरिष्ठ अधिकारी जो मुझे वास्तव में यह एहसास दिलाता है कि वह मेरा वरिष्ठ अधिकारी है।"

क्या आप उनसे कभी मिले थे?

मुझे उसे किसी भी दिन देखकर खुशी होगी। जितना ऊपर हो, उतना ही अच्छा। झुकना अपमानजनक है; ऊपर देखना गौरवपूर्ण है। मुझे इस बात से चिढ़ होती है कि

जब मैं सम्मान करने की कोशिश करता हूँ, तो मैं निराश हो जाता हूँ; जब धार्मिक प्रवृत्ति होती है, तो पूजा करने के लिए केवल झूठे देवता ही मिलते हैं। मैं मूर्तिपूजक होने से घृणा करता हूँ।

"मिस कील्डर, क्या आप अंदर आएंगी? हम पादरी के निवास के द्वार पर हैं।"

आज नहीं, कल मैं तुम्हें अपने साथ शाम बिताने के लिए ले आऊंगा। कैरोलीन हेलस्टोन, अगर तुम सचमुच वैसी ही हो जैसी मुझे अभी लग रही हो, तो हम दोनों एक-दूसरे के लिए बिल्कुल सही हैं। मैंने अपने पूरे जीवन में कभी किसी युवती से इस तरह बात नहीं की, जैसे आज सुबह तुमसे की। मुझे चूम लो - और अलविदा।

श्रीमती प्रायर भी कैरोलीन से जान-पहचान बढ़ाने के लिए उतनी ही उत्सुक थीं जितनी शर्ली। कैरोलीन कहीं और नहीं जाती थीं, इसलिए एक दिन सुबह-सुबह पादरी के घर गईं। वह दोपहर में आईं, जब पादरी घर से बाहर थे। मौसम थोड़ा तनावपूर्ण था; गर्मी से उनका चेहरा लाल हो गया था, और एक अनजान घर में आने से वह घबराई हुई भी लग रही थीं, क्योंकि उनकी आदतें काफी एकांतप्रिय और शांत थीं। जब मिस हेलस्टोन भोजन कक्ष में उनके पास गईं, तो उन्होंने उन्हें सोफे पर बैठी कांपती हुई, रूमाल से हवा करती हुई और घबराहट से जूझती हुई पाया, जो हिस्टीरिया में बदलने की कगार पर थी।

कैरोलीन को अपनी उम्र की एक महिला में आत्म-नियंत्रण की इस असामान्य कमी पर थोड़ा आश्चर्य हुआ, और साथ ही उस लगभग स्वस्थ दिखने वाली महिला में वास्तविक शक्ति की कमी पर भी। श्रीमती प्रायर ने अपनी अस्थायी अस्वस्थता के कारणों के रूप में चलने की थकान, धूप की गर्मी आदि का हवाला देने में जल्दबाजी की; और जैसे-जैसे वह जल्दबाजी में और बेतरतीब ढंग से बार-बार अपनी थकान के इन कारणों को गिनाती रहीं, कैरोलीन ने धीरे से उनका शॉल खोलकर और उनकी टोपी उतारकर उन्हें राहत देने की कोशिश की। श्रीमती प्रायर इस तरह की मदद हर किसी से स्वीकार नहीं करतीं। आम तौर पर वह स्पर्श या नज़दीकी से दूर हट जाती थीं, शर्मिंदगी और शीतलता के मिश्रण के साथ, जो उनकी मदद करने वालों के लिए बिल्कुल भी सुखद नहीं था। हालांकि, मिस हेलस्टोन के छोटे से कोमल हाथ के सामने वह आसानी से झुक गईं और उसके स्पर्श से शांत हो गईं। कुछ ही मिनटों में उनका कांपना बंद हो गया और वह शांत और स्थिर हो गईं।

अपने सामान्य अंदाज़ में लौटकर, उन्होंने आम विषयों पर बातचीत शुरू की। विविध लोगों की संगति में श्रीमती प्रायर शायद ही कभी बोलती थीं, या यदि बोलना भी पड़ता था, तो संयम से बोलती थीं, और परिणामस्वरूप अच्छी तरह से नहीं बोल पाती थीं; संवाद में वे एक कुशल वक्ता थीं। उनकी भाषा, जो हमेशा थोड़ी औपचारिक होती थी, सलीके से चुनी हुई होती थी; उनके विचार सटीक होते थे; उनकी जानकारी विविध और सटीक होती थी। कैरोलीन को उन्हें सुनना सुखद लगा, जितना उसने सोचा भी नहीं था उससे कहीं अधिक सुखद।

जिस सोफे पर वे बैठे थे, उसके सामने वाली दीवार पर तीन तस्वीरें टंगी थीं - बीच वाली, जो मेंटलपीस के ऊपर थी, एक महिला की थी; बाकी दो पुरुषों के चित्र थे।

“यह तो बहुत ही खूबसूरत चेहरा है,” श्रीमती प्रायर ने आधे घंटे की जीवंत बातचीत के बाद आए संक्षिप्त विराम को तोड़ते हुए कहा। “चेहरे की बनावट को परिपूर्ण कहा जा सकता है; किसी मूर्तिकार की छेनी से भी इसमें कोई सुधार नहीं हो सकता। मेरा अनुमान है कि यह किसी व्यक्ति का बनाया हुआ चित्र है।”

"यह श्रीमती हेलस्टोन का चित्र है।"

“श्रीमती मैथ्यूसन हेलस्टोन की? आपके चाचा की पत्नी की?”

“यह एक अच्छी प्रतिकृति है, और ऐसा कहा जाता है। शादी से पहले वह जिले की सबसे खूबसूरत महिला मानी जाती थी।”

मुझे कहना चाहिए कि वह इस सम्मान की हकदार थीं। चेहरे की हर आकृति में कितनी सटीकता है! हालांकि, यह एक भावहीन चेहरा है। मूल चेहरा वैसा नहीं रहा होगा जिसे आम तौर पर 'एक उत्साही महिला' कहा जाता है।

"मेरा मानना है कि वह एक बेहद शांत और मौन स्वभाव की व्यक्ति थीं।"

“मेरी प्यारी, किसी को शायद ही उम्मीद रही होगी कि तुम्हारे चाचा ने इस तरह की जीवनसाथी को चुना होगा। क्या उन्हें मजेदार बातचीत करना पसंद नहीं है?”

"लोगों की संगति में तो वो काफी मुखर होते हैं। लेकिन वो हमेशा कहते हैं कि उन्हें बातूनी पत्नी बिल्कुल पसंद नहीं। उन्हें घर पर शांति चाहिए। वो कहते हैं, 'बाहर जाकर गपशप करते हैं; घर आकर पढ़ते और मनन करते हैं।'"

"श्रीमती मैथ्यूसन अपनी शादी के बाद कुछ ही साल जीवित रहीं, मुझे लगता है मैंने ऐसा सुना है?"

लगभग पांच साल।

“खैर, मेरी प्यारी,” श्रीमती प्रायर ने उठते हुए कहा, “मुझे उम्मीद है कि आप समझ गई होंगी कि आप अक्सर फील्डहेड आएंगी। मुझे आशा है कि आप आएंगी। घर में कोई महिला रिश्तेदार न होने के कारण आपको यहाँ अकेलापन महसूस होता होगा; आपको अपना अधिकांश समय एकांत में ही बिताना पड़ता होगा।”

मुझे इसकी आदत हो गई है। मैं अकेले ही पली-बढ़ी हूँ। क्या मैं आपके लिए शॉल का इंतजाम कर दूँ?

श्रीमती प्रायर ने सहायता प्राप्त करने का अनुरोध किया।

उन्होंने कहा, "यदि आपको अपनी पढ़ाई में कभी भी मदद की आवश्यकता हो, तो आप मुझसे संपर्क कर सकते हैं।"

कैरोलाइन ने अपनी इस तरह की दयालुता का भाव व्यक्त किया।

मुझे उम्मीद है कि हम अक्सर बातचीत करेंगे। मैं आपके लिए उपयोगी साबित होना चाहूंगा।

मिस हेलस्टोन ने फिर से धन्यवाद दिया। उन्होंने सोचा कि उनकी मेहमान की ऊपरी तौर पर दिखाई देने वाली रूखेपन के पीछे कितना दयालु हृदय छिपा है। यह देखकर कि श्रीमती प्रायर कमरे में चलते हुए एक बार फिर चित्रों की ओर रुचि से देख रही थीं, कैरोलीन ने सहजता से समझाया: "खिड़की के पास टंगी हुई तस्वीर, आप देखेंगी, मेरे चाचा की है, जो बीस साल पहले ली गई थी; दूसरी, जो मेंटलपीस के बाईं ओर है, उनके भाई जेम्स, मेरे पिता की है।"

श्रीमती प्रायर ने कहा, "वे कुछ हद तक एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं; फिर भी उनके चेहरे और मुंह की अलग-अलग बनावट में चरित्र का अंतर देखा जा सकता है।"

“क्या फर्क है?” कैरोलिन ने दरवाजे तक उसका साथ देते हुए पूछा। “जेम्स हेलस्टोन — यानी मेरे पिता — को आम तौर पर दोनों में सबसे सुंदर माना जाता है। मैंने देखा है कि अजनबी हमेशा कहते हैं, ‘कितने सुंदर आदमी हैं!’ क्या आपको उनकी तस्वीर सुंदर लगती है, श्रीमती प्रायर?”

"यह आपके चाचा की तुलना में कहीं अधिक कोमल या सुंदर है।"

लेकिन चरित्र में वह अंतर क्या है जिसका आपने जिक्र किया? मुझे बताइए। मैं देखना चाहता हूँ कि आपका अनुमान सही है या नहीं।

“मेरी प्यारी, तुम्हारे चाचा सिद्धांतों के पक्के इंसान हैं। उनका माथा और होंठ दृढ़ हैं, और उनकी आंखें स्थिर हैं।”

अच्छा, और दूसरा? मुझे नाराज करने से मत डरो। मुझे हमेशा सच पसंद है।

"क्या तुम्हें सच पसंद है? यह तुम्हारे लिए अच्छा है। इसी पसंद पर कायम रहो—कभी इससे विचलित मत होना। दूसरे, मेरी प्यारी, अगर वह अब जीवित होते, तो शायद अपनी बेटी को बहुत कम सहारा देते। फिर भी, उनका सिर सुंदर है—मुझे लगता है कि जवानी में ही बना होगा। मेरी प्यारी" (अचानक मुड़ते हुए), "क्या तुम सिद्धांतों के अमूल्य महत्व को मानती हो?"

मुझे पूरा यकीन है कि इसके बिना किसी भी किरदार का सच्चा महत्व नहीं हो सकता।

"क्या आप अपनी कही बात को महसूस करते हैं? क्या आपने इस विषय पर विचार किया है?"

"अक्सर। परिस्थितियाँ ऐसी बनीं कि मुझे शुरू में ही इस ओर ध्यान देना पड़ा।"

"यह सबक व्यर्थ नहीं गया, भले ही यह समय से पहले मिल गया। मुझे लगता है कि मिट्टी न तो हल्की है और न ही पथरीली, वरना उस मौसम में गिरने वाले बीज कभी फल नहीं देते। मेरी प्यारी, दरवाजे की खुली हवा में मत खड़ी रहो; तुम्हें ठंड लग जाएगी। शुभ दोपहर।"

मिस हेलस्टोन की नई जान-पहचान जल्द ही उनके लिए महत्वपूर्ण हो गई: उनकी संगति को एक सौभाग्य माना जाने लगा। उन्हें एहसास हुआ कि राहत के इस अवसर को गंवाना, इस सुखद बदलाव का लाभ न उठाना वास्तव में एक बड़ी गलती होती। इससे उनके विचारों को एक नई दिशा मिली; उनके लिए एक नया मार्ग खुल गया, जिसने कम से कम कुछ विचारों को उस एक ही दिशा से मोड़ दिया जिसमें अब तक सभी विचार जा रहे थे, उनकी उग्रता को कम किया और एक ही घिसे-पिटे बिंदु पर उनके दबाव को भी घटा दिया।

जल्द ही वह फील्डहेड में पूरा दिन बिताने में संतुष्ट हो गई, बारी-बारी से शर्ली या श्रीमती प्रायर की इच्छा के अनुसार काम करती; कभी एक उसे बुलाती, कभी दूसरी। बड़ी उम्र की महिला की दोस्ती दिखावटी नहीं थी, लेकिन साथ ही साथ वह बेहद सतर्क, मेहनती और अथक भी थी। मैंने संकेत दिया है कि वह एक विलक्षण व्यक्तित्व थीं, और उनकी विलक्षणता कैरोलीन के प्रति उनकी रुचि में सबसे अधिक स्पष्ट थी। वह कैरोलीन की हर हरकत पर नज़र रखती थीं; ऐसा लगता था मानो वह उसके हर कदम की रक्षा कर रही हों। मिस हेलस्टोन द्वारा सलाह और सहायता के

लिए उनसे संपर्क करने पर उन्हें खुशी होती थी। जब उनसे सहायता मांगी जाती, तो वह इतनी शांत लेकिन स्पष्ट खुशी के साथ सहायता प्रदान करतीं कि कैरोलीन को जल्द ही उन पर निर्भर रहने में आनंद आने लगा।

श्रीमती प्रायर के प्रति शर्ली कील्डर की पूर्ण आज्ञाकारिता ने पहले तो मिस हेलस्टोन को आश्चर्यचकित कर दिया था, और उससे भी अधिक आश्चर्य इस बात का था कि पूर्व गवर्नेंस इतनी शांत स्वभाव की थीं और अपनी युवा शिष्या के निवास में इतनी सहज और आरामदायक थीं, जहाँ वे इतनी शांत स्वतंत्रता के साथ एक अत्यंत महत्वपूर्ण पद को निभा रही थीं; लेकिन जल्द ही उन्हें पता चल गया कि इस रहस्य को पूरी तरह समझने के लिए दोनों महिलाओं को जानना ही पर्याप्त था। उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि जो भी श्रीमती प्रायर को जानता है, वह उन्हें पसंद करता है, उनसे प्रेम करता है और उनका सम्मान करता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह लगातार पुराने जमाने के गाउन पहनती थीं; कि उनकी वाणी औपचारिक और व्यवहार शांत था; कि उनके बीस ऐसे छोटे-छोटे तौर-तरीके थे जो किसी और में नहीं थे: फिर भी वह इतनी सहायक, इतनी सलाहकार, इतनी सच्ची और इतनी दयालु थीं कि कैरोलीन के विचार में, एक बार उनकी उपस्थिति के आदी हो जाने के बाद कोई भी आसानी से उनके बिना नहीं रह सकता था।

निर्भरता या अपमान की बात करें तो, कैरोलीन को शर्ली के साथ अपने व्यवहार में ऐसा कुछ भी महसूस नहीं हुआ, और श्रीमती प्रायर को क्यों होना चाहिए था? उत्तराधिकारी धनी थी - अपनी नई सहेली की तुलना में बहुत धनी: एक के पास सालाना हज़ार डॉलर की आमदनी थी, दूसरी के पास एक पैसा भी नहीं; फिर भी, उसके समाज में समानता का एक सुरक्षित भाव था, जो ब्रायफ़ील्ड और व्हिनबरी के आम संभ्रांत लोगों के समाज में कभी नहीं देखा गया था।

कारण यह था कि शर्ली का ध्यान धन और पद से कहीं अधिक अन्य बातों पर केंद्रित था। वह संपत्ति के मामले में स्वतंत्र होने से प्रसन्न थी; कभी-कभी तो वह जागीर की मालकिन होने, किरायेदार रखने और एक संपत्ति होने के विचार से भी प्रफुल्लित हो जाती थी। जब उसे हॉलो में स्थित "उस सारी संपत्ति" की याद आती, जिसमें "एक उत्कृष्ट कपड़ा मिल, रंगाई कारखाना, गोदाम, साथ ही मकान, बगीचे और अन्य इमारतें शामिल थीं, जिसे हॉलो कॉटेज कहा जाता था", तो वह विशेष रूप से सुखद आत्मसंतुष्टि से भर जाती थी; लेकिन उसकी यह प्रसन्नता बिल्कुल स्पष्ट थी

और आश्चर्यजनक रूप से सौम्य थी; और उसके गंभीर विचार कहीं और केंद्रित थे। महान लोगों की प्रशंसा करना, अच्छे लोगों का आदर करना और मिलनसार लोगों के साथ आनंदित रहना शर्ली की आत्मा का मूल स्वभाव था: इसलिए वह अपनी सामाजिक श्रेष्ठता पर विचार करने की तुलना में इस मूल स्वभाव का पालन करने के साधनों पर अधिक बार चिंतन करती थी।

कैरोलीन में मिस कील्डर की पहली रुचि इसलिए जागी क्योंकि वह शांत, अंतर्मुखी, नाज़ुक सी दिखती थी और ऐसा लगता था मानो उसे किसी देखभाल करने वाले की ज़रूरत हो। उनकी यह पसंद तब और भी बढ़ गई जब उन्हें पता चला कि उनकी सोच और बोलने का तरीका इस नई परिचित द्वारा समझा और स्वीकार किया जाता है। उन्होंने इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नहीं की थी। उन्हें लगता था कि मिस हेलस्टोन का चेहरा बहुत सुंदर था, उनके तौर-तरीके और आवाज़ बहुत कोमल थी, इसलिए वे सामान्य ज्ञान और योग्यताओं में असाधारण नहीं हो सकती थीं; और उन्हें यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उनके कोमल चेहरे पर उनके द्वारा किए गए कुछ व्यंग्यात्मक ताने-बाने पर कितनी चमक आ जाती थी; और उन्हें यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि उस मासूम, घुंघराले बालों वाले सिर में कितना ज्ञान छिपा था और कितने अनगढ़ विचार चल रहे थे। कैरोलीन की रुचि भी उन्हीं की तरह थी। जिन पुस्तकों को मिस कील्डर ने बड़े चाव से पढ़ा था, वे मिस हेलस्टोन को भी बहुत पसंद थीं। उनमें कई चीजों के प्रति समान नापसंदगी भी थी, और वे झूठी भावुकता और आडंबरपूर्ण दिखावे वाली रचनाओं पर एक साथ हंसने का आनंद ले सकते थे।

शर्ली के मन में यह विचार आया कि बहुत कम पुरुषों या महिलाओं में कविता की सही समझ होती है, उनमें वास्तविक और असत्य के बीच अंतर करने की सही क्षमता होती है। उसने बार-बार बहुत बुद्धिमान लोगों को किसी कवि की किसी रचना को अत्यंत प्रशंसनीय बताते सुना था, जिसे जब वह पढ़ती थी, तो उसकी आत्मा उसे पाखंड, आडंबर और दिखावटीपन के अलावा कुछ और मानने से इनकार कर देती थी, या अधिक से अधिक अलंकृत शब्दों का प्रयोग, जो जिज्ञासु, चतुर, विद्वतापूर्ण, शायद कल्पना के आकर्षक रंगों से रंगा हुआ हो, परन्तु ईश्वर ही जानता है, वास्तविक कविता से उतना ही भिन्न होता है जितना कि मोज़ेक से बना भव्य और भारी फूलदान शुद्ध धातु के छोटे प्याले से भिन्न होता है; या, पाठकों को उपमाओं का विकल्प देने के लिए, जैसे किसी कारीगर की कृत्रिम माला खेत से तोड़ी गई ताज़ी लिली से भिन्न

होती है।

कैरोलीन को असली अयस्क का महत्व पता था और वह दिखावटी और घटिया चीज़ों के धोखे को भलीभांति जानती थी। दोनों लड़कियों के विचार एक-दूसरे से सामंजस्य बिठाते हुए अक्सर मधुरता से मेल खाते थे।

एक शाम वे संयोगवश ओक की लकड़ी से बने बैठक कक्ष में अकेले थे। उन्होंने एक लंबा, बारिश भरा दिन बिना ऊबे साथ बिताया था। अब अंधेरा होने वाला था; मोमबत्तियाँ अभी तक नहीं जलाई गई थीं; जैसे-जैसे गोधूलि बेला गहरी होती गई, दोनों ही चिंतनशील और मौन होते चले गए। पश्चिम से आती तेज़ हवा हॉल में गर्जना कर रही थी, दूर-दराज के समुद्र से तूफानी बादल और बारिश ला रही थी; प्राचीन जालीदार खिड़कियों के बाहर सब कुछ तूफ़ान जैसा था, लेकिन अंदर सब कुछ गहरी शांति थी। शर्ली खिड़की पर बैठी आसमान में हलचल और धरती पर कोहरे को देख रही थी, और आंधी की कुछ आवाज़ें सुन रही थी जो बेचैन आत्माओं की तरह गुनगुना रही थीं - ऐसी आवाज़ें, अगर वह इतनी युवा, हंसमुख और स्वस्थ न होती, तो उसकी कांपती नसों को किसी अपशगुन, किसी पूर्वसूचना गीत की तरह झकझोर देतीं। अपने जीवन के इस यौवन और सुंदरता के चरम पर, उन्होंने केवल जीवंतता को उदासी में बदल दिया। मधुर गीतों के अंश उसके कानों में गूंज रहे थे; कभी-कभी वह एक छंद गाती थी। उसके स्वर हवा के अनियमित आवेग का अनुसरण करते थे; हवा के झोंकों के साथ वे फूलते गए और दूर जाते ही मुरझा गए। कैरोलीन कमरे के सबसे दूर और अंधेरे कोने में दुबकी हुई थी, उसकी आकृति बुझी हुई आग की माणिक जैसी चमक में मुश्किल से दिखाई दे रही थी। वह इधर-उधर टहल रही थी और अपने मन में पुरानी यादों से भरी कविता की कुछ पंक्तियाँ गुनगुना रही थी। वह बहुत धीमी आवाज़ में बोल रही थी, लेकिन शर्ली ने उसे सुना; और धीरे-धीरे गाते हुए वह सुन रही थी। यह थी कविता की पंक्ति: —

"सबसे धुंधली रात में आकाश समाहित था,"
अटलांटिक महासागर की लहरें गरज उठीं।
जब मुझ जैसा नियति का अभागा,
जहाज से सीधे पानी में बह गया,
दोस्तों की, आशा की, सभी शोक संतप्तों की,
उसका तैरता हुआ घर हमेशा के लिए छूट गया।"

यहां पर गीत का अंश रुक गया, क्योंकि शर्ली का गीत, जो पहले कुछ हद तक जीवंत और रोमांचक था, अब धीरे-धीरे मंद पड़ गया था।

“आगे बढ़ो,” उसने कहा।

“तो आप भी आगे बढ़ते रहिए। मैं तो बस ‘द कास्टअवे’ दोहरा रहा था।”

मुझे पता है। अगर आपको सब कुछ याद है, तो सब कुछ कह दीजिए।

और चूंकि लगभग अंधेरा हो चुका था, और आखिरकार, मिस कील्डर कोई बहुत कुशल श्रोता नहीं थीं, इसलिए कैरोलीन ने इसे पूरा किया। उसने इसे वैसे ही पूरा किया जैसे उसे करना चाहिए था। उग्र समुद्र, डूबता हुआ नाविक, तूफान में बहता हुआ अनिच्छुक जहाज, आपने सुना होगा कि उसने इन सब का अनुभव किया; और उससे भी अधिक स्पष्ट रूप से कवि के हृदय का अनुभव हुआ, जिसने "द कास्टअवे" के लिए आंसू नहीं बहाए, बल्कि जिसने आँसूहीन पीड़ा के एक क्षण में, उस मनुष्य-त्यागे नाविक के भाग्य में अपनी स्वयं की ईश्वर-त्यागी पीड़ा की झलक देखी, और उस गहराई से रोया जहाँ वह संघर्ष कर रहा था, —

किसी भी दिव्य वाणी ने तूफान को शांत नहीं किया।
कोई शुभ प्रकाश नहीं चमका।
जब, सभी प्रभावी सहायता से वंचित होकर,
हम सब अकेले ही मर गए!
लेकिन मैं एक उबड़-खाबड़ समुद्र के नीचे हूँ,
और वह उससे भी गहरे संकटों में डूबा हुआ था।"

कैरोलिन ने कहा, "मुझे उम्मीद है कि विलियम काउपर अब स्वर्ग में सुरक्षित और शांत होंगे।"

"क्या आपको उस पर दया आती है जो उसने धरती पर झेला?" मिस कील्डर ने पूछा।

“उस पर तरस खाऊं, शर्ली? मैं और क्या कर सकता हूं? जब उसने वह कविता लिखी थी, तब उसका दिल लगभग टूट चुका था, और उसे पढ़कर भी दिल लगभग टूट जाता है। लेकिन उसे कविता लिखने में सुकून मिला—मुझे पता है कि मिला था; और कविता का वह वरदान—मनुष्य को दिया गया सबसे दिव्य वरदान—मुझे लगता है, भावनाओं को शांत करने के लिए दिया गया है जब उनकी तीव्रता नुकसान पहुंचाने की धमकी देती है। मुझे लगता है, शर्ली, कि किसी को भी बुद्धि या उपलब्धि दिखाने

के लिए कविता नहीं लिखनी चाहिए। भला उस तरह की कविता की परवाह कौन करता है? ज्ञान की परवाह कौन करता है—कविता में सुंदर शब्दों की परवाह कौन करता है? और भावना की परवाह कौन नहीं करता—वास्तविक भावना—चाहे उसे कितनी भी सरलता से, यहां तक कि बेरुखी से ही क्यों न व्यक्त किया गया हो?”

“ऐसा लगता है कि आपको इसकी परवाह है; और निश्चित रूप से, उस कविता को सुनकर यह पता चलता है कि कूपर उस प्रबल प्रेरणा से प्रेरित थे जो जहाज को चलाने वाली हवा की तरह होती है—एक ऐसी प्रेरणा जो उन्हें एक भी छंद में अलंकरण जोड़ने के लिए रुकने नहीं देती थी, लेकिन उन्हें पूरी कविता को पूर्णता से रचने की शक्ति प्रदान करती थी। कैरोलीन, आपने इसे स्थिर स्वर में सुनाया। मुझे इस पर आश्चर्य है।”

“कॉपर के हाथ इन पंक्तियों को लिखते समय ज़रा भी नहीं काँपे। तो फिर इन्हें दोहराते समय मेरी आवाज़ क्यों काँपे? यकीन मानो, शर्ली, ‘द कास्टअवे’ की पांडुलिपि पर एक भी आँसू नहीं बहा। मुझे उसमें दुख की कोई सिसकी नहीं सुनाई देती, केवल निराशा की चीख सुनाई देती है; लेकिन, मुझे विश्वास है कि वह चीख उनके दिल से निकल गई, वे जी भर कर रोए और उन्हें सांत्वना मिली।”

शर्ली ने अपना लोकगीत गायन फिर से शुरू किया। रुकते हुए, उसने कुछ देर बाद कहा, "कोई कूपर से प्यार कर सकता था, अगर सिर्फ इसलिए कि उसे सांत्वना देने का सौभाग्य प्राप्त होता।"

“तुम कभी कूपर से प्यार नहीं कर पातीं,” कैरोलिन ने तुरंत जवाब दिया। “वह औरतों के प्यार के लायक नहीं बना था।”

"आपका क्या मतलब है?"

“मैं जो कहता हूँ, मैं जानता हूँ कि दुनिया में एक खास तरह के स्वभाव होते हैं—और बहुत ही नेक, उच्च स्वभाव वाले भी—जिनके पास प्रेम कभी नहीं पहुँचता। आप कूपर को प्रेम करने के इरादे से खोज सकते थे, और आप उसे देखते, उस पर दया करते, और फिर उसे छोड़ देते, असंभव, असंगत की भावना से विवश होकर, जैसे चालक दल के सदस्यों को उनके डूबते साथी से ‘भयंकर तूफान’ ने अलग कर दिया था।”

“हो सकता है आप सही हों। आपको यह किसने बताया?”

“जो बात मैं कूपर के बारे में कह रही हूँ, वही बात मैं रूसो के बारे में भी कहूँगी।

क्या रूसो को कभी प्यार मिला? उन्होंने बेहद शिद्दत से प्यार किया; लेकिन क्या उनके प्यार का कभी जवाब मिला? मुझे यकीन है, कभी नहीं। और अगर कोई महिला कूपर या रूसो होतीं, तो मैं उनके बारे में भी यही कहती।”

“मैं पूछता हूँ, आपको यह किसने बताया? क्या मूर ने बताया?”

“मुझे यह बात किसी ने क्यों बताई होती? क्या मुझमें कोई सहज ज्ञान नहीं है? क्या मैं तुलना करके अनुमान नहीं लगा सकता? मूर ने मुझसे कभी कूपर, रूसो या प्रेम के बारे में बात नहीं की। एकांत में सुनाई देने वाली आवाज़ ने मुझे इन विषयों पर सब कुछ बता दिया।”

"कैरोलीन, क्या तुम्हें रूसो शैली के किरदार पसंद हैं?"

“बिल्कुल नहीं, कुल मिलाकर। मैं उनके कुछ गुणों से गहरी सहानुभूति रखता हूँ। उनके स्वभाव में कुछ दिव्य चिंगारियाँ मेरी आँखों को चकाचौंध कर देती हैं और मेरी आत्मा को प्रज्वलित कर देती हैं। फिर भी, मैं उनसे घृणा करता हूँ। वे मिट्टी और सोने के बने हैं। अपशिष्ट और अयस्क मिलकर कमजोरी का ढेर बनाते हैं: कुल मिलाकर, मुझे वे अप्राकृतिक, अस्वस्थ और घृणित लगते हैं।”

"कैरी, मैं कह सकता हूँ कि मैं रूसो के प्रति तुमसे कहीं अधिक सहनशील हूँगा। तुम तो विनम्र और चिंतनशील हो, तुम्हें कठोर और व्यावहारिक लोग पसंद हैं। वैसे, अब जब तुम दोनों कभी मिलते ही नहीं, तो तुम्हें अपने चचेरे भाई रॉबर्ट की बहुत याद आती होगी।"

"मैं करता हूं।"

“और वो तुम्हें जरूर याद करता होगा?”

“वह ऐसा नहीं करता।”

"मैं कल्पना भी नहीं कर सकती," शर्ली ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, जिसे हाल ही में बातचीत में मूर का नाम लेने की आदत पड़ गई थी, भले ही वहां उसका कोई मतलब न हो - "मैं यह कल्पना ही कर सकती हूं कि वह आपको पसंद नहीं करता था, क्योंकि उसने आपका इतना ध्यान रखा, आपसे बात की और आपको इतना कुछ सिखाया।"

“वह मुझसे कभी प्यार नहीं करता था; उसने कभी यह जताने की कोशिश भी नहीं की कि वह मुझसे प्यार करता है। उसने यह साबित करने की पूरी कोशिश की कि वह मुझे सिर्फ बर्दाश्त करता था।”

कैरोलिन, अपनी चचेरी बहन के प्रति अपने स्नेह का आकलन करते समय अतिशयोक्ति न करने के दृढ़ निश्चय के साथ, अब हमेशा इस बारे में सोचती और बहुत कम शब्दों में इसका उल्लेख करती थी। भविष्य के बारे में आशावादी दृष्टिकोण रखने में पहले से कहीं अधिक निराशावादी होने और अतीत की सुखद यादों में कम रुचि रखने के उसके अपने कारण थे।

"तो फिर, बिल्कुल," मिस कील्डर ने कहा, "आपने बदले में उसे केवल बर्दाश्त किया?"

“शर्ली, मर्द और औरतें कितने अलग होते हैं; उनकी परिस्थितियाँ कितनी भिन्न होती हैं। औरतों के पास सोचने के लिए बहुत कम चीज़ें होती हैं, मर्दों के पास बहुत सारी। हो सकता है कि तुम किसी मर्द से दोस्ती करो, जबकि वो तुम्हारे प्रति लगभग उदासीन हो। हो सकता है कि तुम्हारे जीवन की बहुत सी खुशियाँ उस पर निर्भर हों, जबकि उसकी नज़रों में तुम्हारे लिए कोई भी भावना या रुचि मायने न रखती हो। रॉबर्ट को लंदन जाने की आदत थी, कभी-कभी एक हफ़्ते या दो हफ़्ते के लिए। खैर, जब वो दूर होता था, तो मुझे उसकी कमी खलती थी। कुछ अधूरा सा लगता था; ब्रायरफील्ड नीरस लगता था। बेशक, मेरे रोज़मर्रा के काम तो थे ही; फिर भी मुझे उसकी याद आती थी। शाम को जब मैं अकेली बैठी होती थी, तो मुझे एक अजीब सी निश्चितता का एहसास होता था जिसे मैं बयान नहीं कर सकती, कि अगर उस पल कोई जादूगर या कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति मुझे प्रिंस अली की ट्यूब (तुम्हें 'अरेबियन नाइट्स' में याद है?) दे देता, और अगर उसकी मदद से मैं रॉबर्ट को देख पाती—देख पाती कि वो कहाँ है, किस काम में व्यस्त है—तो मैं चौंकाने वाले तरीके से जान जाती कि उसकी ज़िंदगी कितनी गहरी है। मेरे और उसके जैसे लोगों के बीच जो खाई थी, मैं उसे समझ सकता था। मुझे पता था कि मेरे विचार चाहे उससे कितने भी जुड़े हों, उसके विचार मुझसे पूरी तरह अलग थे।

मिस कील्डर ने अचानक पूछा, "कैरोलीन, क्या तुम नहीं चाहती कि तुम्हारा कोई पेशा हो - कोई हुनर हो?"

“मैं दिन में पचास बार यही कामना करता हूँ। वैसे भी, मैं अक्सर सोचता हूँ कि मैं इस दुनिया में किसलिए आया हूँ। मैं कुछ ऐसा चाहता हूँ जो मेरे दिमाग और हाथों को व्यस्त रखे और मेरे विचारों को प्रभावित करे, जो मुझे पूरी तरह से अपने वश में कर ले।”

क्या केवल श्रम करने से ही मनुष्य प्रसन्न हो सकता है?

नहीं; लेकिन यह कई प्रकार के दर्द दे सकता है, और हमें एक ही अत्याचारी स्वामी की यातना से दिल टूटने से बचा सकता है। इसके अलावा, सफल परिश्रम का अपना प्रतिफल होता है; एक खाली, थका हुआ, अकेला, निराशाहीन जीवन का कोई प्रतिफल नहीं होता।

लेकिन उनका कहना है कि कड़ी मेहनत और विद्वतापूर्ण पेशे महिलाओं को मर्दाना, असभ्य और स्त्रीत्वहीन बना देते हैं।

“और इससे क्या फर्क पड़ता है कि अविवाहित और कभी शादी न करने वाली महिलाएं बदसूरत और भद्दी हैं या नहीं? बशर्ते वे शालीन, सलीकेदार और साफ-सुथरी हों, बस इतना ही काफी है। कुंवारी महिलाओं से पहनावे के मामले में बस इतना ही अपेक्षित होना चाहिए कि वे सड़क पर चलते समय पुरुषों की निगाहों को बिल्कुल भी ठेस न पहुंचाएं; इसके अलावा, उन्हें बिना किसी खास तिरस्कार के, अपनी मर्जी से गंभीर, शांत, सादे दिखने वाली और सादे कपड़े पहनने की छूट दी जानी चाहिए।”

"कैरोलीन, तुम खुद भी कुंवारी हो सकती हो, जिस तरह से तुम गंभीरता से बोल रही हो।"

मैं उनमें से एक बनूंगी। यही मेरा भाग्य है। मैं कभी मालोन या साइक्स से शादी नहीं करूंगी; और न ही कोई और मुझसे कभी शादी करेगा।

यहां एक लंबा सन्नाटा छा गया। शर्ली ने इसे तोड़ा। एक बार फिर, जिस नाम से वह मानो मोहित हो गई थी, वही नाम उसके होठों पर सबसे पहले आया।

“लीना — क्या मूर कभी-कभी तुम्हें लीना कहकर नहीं बुलाता था?”

"हां। उनके मूल देश में कभी-कभी इसे कैरोलिन के संक्षिप्त रूप में प्रयोग किया जाता है।"

"अच्छा, लीना, क्या तुम्हें याद है कि एक दिन मैंने तुम्हारे बालों में एक असमानता देखी थी - दाहिनी तरफ एक घुंघराले बाल कम थे - और तुमने मुझे बताया था कि यह रॉबर्ट की गलती थी, क्योंकि उसने एक बार उसमें से एक लंबी लट काट दी थी?"

"हाँ।"

"अगर वह तुम्हारे प्रति उतना ही उदासीन है, जितना तुम कहती हो, और हमेशा से ही था, तो उसने तुम्हारे बाल क्यों चुराए?"

“मुझे नहीं पता—हाँ, मुझे पता है। ये सब मेरी गलती थी, उसकी नहीं। इस तरह

की हर चीज़ हमेशा मेरी ही गलती होती थी। वो घर से जा रहा था—हमेशा की तरह लंदन; और उसके जाने से एक रात पहले, मुझे उसकी बहन के वर्कबॉक्स में काले बालों का एक गुच्छा मिला—एक छोटा, गोल घुंघराले बाल। हॉर्टेंस ने मुझे बताया कि ये उसके भाई के हैं, और एक यादगार चीज़ हैं। वो मेज़ के पास बैठा था। मैंने उसके सिर की तरफ देखा। उसके बाल बहुत घने थे; कनपटी पर ऐसे कई गोल घुंघराले बाल थे। मैंने सोचा कि वो मुझे एक दे सकता है। मुझे पता था कि मुझे वो बाल चाहिए, और मैंने उससे मांग लिए। उसने कहा, इस शर्त पर कि उसे मेरे सिर से एक लट चुनने की छूट होगी। तो उसने मेरे बालों का एक लंबा गुच्छा ले लिया, और मैंने उसके बालों का एक छोटा गुच्छा ले लिया। मैंने उसका बाल रखा है, लेकिन मुझे लगता है कि उसने मेरा बाल खो दिया होगा। ये सब मेरी गलती थी, और उन मूर्खतापूर्ण कामों में से एक है जो दिल को दुखी करते हैं और चेहरे को लाल कर देते हैं; उन छोटी लेकिन तीखी यादों में से एक जो लौटकर आती हैं, आपके आत्मसम्मान को छोटे-छोटे घावों की तरह चीर देती हैं। "पेननाइफ की तरह बातें करना, और अकेले बैठे हुए अपने होठों से अचानक, पागलपन भरी लगने वाली बातें निकलवाना।"

“कैरोलीन!”

“शर्ली, मैं सचमुच कुछ मामलों में खुद को मूर्ख समझता हूँ; मैं खुद से घृणा करता हूँ। लेकिन मैंने कहा था कि मैं तुम्हें अपना राज़दार नहीं बनाऊँगा, क्योंकि तुम कमजोरी का बदला कमजोरी से नहीं ले सकतीं; तुम कमजोर नहीं हो। अब तुम मुझे कितनी ध्यान से देख रही हो! अपनी पैनी, तेज, चील जैसी निगाहें हटा लो; इस तरह मुझ पर टिकाए रखना मेरा अपमान है।”

“तुम तो चरित्र का एक अद्भुत नमूना हो – कमज़ोर, बेशक, लेकिन उस अर्थ में नहीं जैसा तुम सोचते हो! – अंदर आओ!”

दरवाजे पर दस्तक के जवाब में यह कहा गया। मिस कील्डर उस समय वहीं पास में थीं, कैरोलीन कमरे के दूसरे छोर पर। उन्होंने शर्ली के हाथों में एक नोट रखा हुआ देखा और ये शब्द सुने, "श्री मूर की ओर से, महोदया।"

"मोमबत्तियां ले आओ," मिस कील्डर ने कहा।

कैरोलाइन उम्मीद भरी निगाहों से बैठी थी।

“व्यापार संबंधी एक सूचना,” उत्तराधिकारी ने कहा; लेकिन जब मोमबत्तियाँ लाई गईं, तो उसने न तो उसे खोला और न ही पढ़ा। थोड़ी देर बाद पादरी की पत्नी के आने

की घोषणा हुई और पादरी की भतीजी घर चली गई।

अध्याय XIII.

व्यापार संबंधी आगे की जानकारी।

शर्ली के स्वभाव में कभी-कभी सहज आलस्य व्याप्त रहता था। ऐसे क्षण भी होते थे जब वह पूर्ण निष्क्रियता में आनंदित होती थी - ऐसे पल जब उसके विचार, उसका सरल अस्तित्व, उसके चारों ओर संसार और ऊपर आकाश की उपस्थिति, उसे इतनी परिपूर्ण खुशी प्रदान करती थी कि उसे आनंद बढ़ाने के लिए एक उंगली भी हिलाने की आवश्यकता नहीं होती थी। अक्सर, एक सक्रिय सुबह के बाद, वह धूप भरी दोपहर किसी छायादार पेड़ की तलहटी में घास पर बिना हिले-डुले लेटी रहती थी। उसे कैरोलीन के सिवा किसी संगति की आवश्यकता नहीं थी, और यदि वह आस-पास होती तो यह पर्याप्त होता; वह गहरे नीले आकाश और उसके ऊपर दूर-दूर तक तैरते बादलों के अलावा किसी और दृश्य की कामना नहीं करती थी; मधुमक्खी की भिनभिनाहट और पत्तों की सरसराहट के सिवा किसी ध्वनि की कामना नहीं करती थी। ऐसे क्षणों में उसकी एकमात्र पुस्तक स्मृतियों का धुंधला वृत्तांत या भविष्य की आशाओं से भरा पृष्ठ होता था। उसकी नन्ही आँखों से प्रत्येक पुस्तक पर पढ़ने के लिए एक शानदार प्रकाश पड़ता था; कभी-कभी उसके होठों पर एक मुस्कान खिल उठती थी, जो कहानी या भविष्यवाणी की झलक दिखाती थी। यह उदास या निराशाजनक नहीं थी। भाग्य उस आनंदित स्वप्नद्रष्टा पर मेहरबान रहा था और एक बार फिर उसका साथ देने का वादा करता था। उसके अतीत में मधुर क्षण थे, और

भविष्य में सुनहरी आशाएँ थीं।

लेकिन एक दिन जब कैरोलिन उसे जगाने के लिए उसके पास गई, यह सोचकर कि वह काफी देर तक सो चुकी है, तो उसने नीचे देखा तो पाया कि शर्ली का गाल ओस की बूंदों से भीगा हुआ था; उसकी सुंदर आंखें नम और लबालब चमक रही थीं।

“शर्ली, तुम क्यों रोती हो?” कैरोलिन ने अनजाने में तुम पर दबाव डालते हुए पूछा।

मिस कील्डर मुस्कुराईं और अपना सुंदर चेहरा प्रश्नकर्ता की ओर घुमाया। उन्होंने कहा, "क्योंकि मुझे रोने में बहुत आनंद आता है। मेरा हृदय दुखी भी है और प्रसन्न भी। लेकिन हे अच्छे, धैर्यवान बच्चे, तुम मेरा साथ क्यों नहीं देते? मैं तो बस सुखद आँसू बहाती हूँ, जो जल्दी ही मिट जाते हैं; तुम चाहो तो कड़वे आँसू बहा सकते हो।"

मुझे क्यों रोना चाहिए?

“साथीहीन, अकेला पक्षी!” यही एकमात्र उत्तर था।

"और क्या तुम भी अकेली नहीं हो, शर्ली?"

"दिल से कहूं तो - नहीं।"

“अरे! वहाँ कौन लेटा है, शर्ली?”

लेकिन इस सवाल पर शर्ली केवल खिलखिलाकर हंसी और फुर्ती से उठ खड़ी हुई।

उसने कहा, "मैंने सपना देखा है, बस एक दिवास्वप्न—निश्चित रूप से उज्ज्वल, शायद निराधार!"

इस समय तक मिस हेलस्टोन भ्रमों से काफी हद तक मुक्त हो चुकी थीं: उन्होंने भविष्य के बारे में काफी गंभीर दृष्टिकोण अपना लिया था और उन्हें लगता था कि वे अच्छी तरह जानती हैं कि उनका और कुछ अन्य लोगों का भाग्य किस ओर बढ़ रहा है। फिर भी पुरानी यादें उन पर अपना प्रभाव बनाए रखती थीं, और इन्हीं यादों और आदत के बल पर वे अक्सर शाम को खेत में बने चबूतरे और उस पुराने कांटेदार झाड़ी के पास चली जाती थीं जो घाटी के ऊपर स्थित थी।

एक रात, उस चिट्ठी वाली घटना के बाद वाली रात, वह अपनी रोज़ाना की जगह पर थी, अपनी रोशनी का इंतज़ार कर रही थी— व्यर्थ ही: उस शाम कोई दीपक नहीं जला था। उसने तब तक इंतज़ार किया जब तक कुछ नक्षत्रों के उदय ने उसे देर होने की चेतावनी नहीं दी और उसने अपना हस्ताक्षर कर दिया। लौटते समय फील्डहेड से

गुज़रते हुए, चाँदनी में उसकी सुंदरता ने उसकी नज़र को आकर्षित किया और उसे एक पल के लिए रोक दिया। पेड़ और हॉल रात के साफ़ आसमान के नीचे शांति से खड़े थे; मोती जैसी हल्की चमक ने इमारत को सुनहरा बना दिया था; उसके चारों ओर हल्का भूरा अंधेरा छाया हुआ था; ओक के पेड़ों से घिरी छत के ऊपर गहरे हरे रंग की परछाइयाँ मंडरा रही थीं। सामने का चौड़ा फुटपाथ भी हल्का चमक रहा था; ऐसा लग रहा था मानो किसी जादू ने काले ग्रेनाइट को चमकते हुए परियन में बदल दिया हो। चाँदी जैसी चमक वाली जगह पर दो काली परछाइयाँ सो रही थीं, जो दो मानव आकृतियों से स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। ये आकृतियाँ पहली बार देखने पर गतिहीन और मूक थीं; थोड़ी देर बाद वे एक साथ कदम मिलाकर चलने लगीं और धीमी, मधुर आवाज़ में बोलने लगीं। देवदार के पेड़ के तने के पीछे से निकलते ही उन्हें घूरती निगाहें गंभीर थीं। "क्या ये मिसेज प्रायर और शर्ली हैं?"

निश्चित रूप से यह शर्ली ही है। भला किसका शरीर इतना सुडौल, गर्वित और आकर्षक हो सकता है? और उसका चेहरा भी साफ दिखाई दे रहा है—उसका चेहरा बेफिक्र, विचारशील, चिंतनशील, हंसमुख, और कोमल भावों से भरा है। ओस से बेपरवाह, उसने अपना सिर नहीं ढका है; उसके घुंघराले बाल खुले हैं—वे उसकी गर्दन को ढकते हैं और अपने लच्छों से उसके कंधे को सहलाते हैं। उसके सीने पर लिपटे दुपट्टे की आधी तहों से सोने का एक आभूषण चमक रहा है, और उसे थामे हुए उसके सफेद हाथ पर एक बड़ा चमकदार रत्न जगमगा रहा है। जी हाँ, यह शर्ली ही है।

तो उनकी साथी, ज़ाहिर है, श्रीमती प्रायर हैं?

जी हाँ, अगर श्रीमती प्रायर की लंबाई छह फीट है, और अगर उन्होंने अपनी शालीन विधवा की पोशाक को पुरुष के वेश में बदल लिया है। मिस कील्डर के साथ चल रहा व्यक्ति एक पुरुष है - एक लंबा, युवा, गरिमापूर्ण पुरुष; यह उनका किरायेदार रॉबर्ट मूर है।

दोनों धीमी आवाज़ में बात कर रहे हैं; उनके शब्द स्पष्ट रूप से सुनाई नहीं दे रहे हैं। एक पल रुककर उन्हें निहारना छुपकर सुनना नहीं है; और चूंकि चंद्रमा की रोशनी इतनी स्पष्ट है और उनके चेहरे इतने साफ दिखाई दे रहे हैं, भला कौन इस आकर्षण का विरोध कर सकता है? कैरोलीन, ऐसा लगता है, नहीं कर सकती, क्योंकि वह वहीं रुकी रहती है।

एक समय था जब गर्मियों की रातों में मूर अपनी चचेरी बहन के साथ टहलना

किया करता था, जैसे वह अब उत्तराधिकारी के साथ टहल रहा था। अक्सर वह सूर्यास्त के बाद उसके साथ उस घाटी में जाया करती थी, जहाँ एक गहरी खाई के किनारे एक संकरी चबूतरे पर सुगंधित घास की चादर बिछी होती थी, और उस खाई के अंधेरे में एक ऐसी ध्वनि सुनाई देती थी मानो किसी अकेले जलधारा की आत्मा अपने गीले पत्थरों के बीच, खरपतवारों से ढके किनारों के बीच और एल्डर के घने पेड़ों के नीचे सिसक रही हो।

"लेकिन मैं पहले उसके ज्यादा करीब हुआ करती थी," कैरोलिन ने सोचा। "उन्हें मेरे प्रति सम्मान दिखाने की कोई बाध्यता महसूस नहीं हुई; मुझे केवल स्नेह की आवश्यकता थी। वे मेरा हाथ थामते थे; अब वे उसका हाथ नहीं छूते। फिर भी शर्ली अपने प्रेम में अभिमान नहीं करती। अब उसके चेहरे पर कोई घमंड नहीं है, बस उसके हावभाव में थोड़ा सा है—जो उसके स्वभाव का है और उससे अविभाज्य है, जो वह अपने सबसे लापरवाह और सबसे सतर्क क्षणों में भी बनाए रखती है। रॉबर्ट को भी मेरी तरह ही लग रहा होगा कि वह इस समय एक सुंदर चेहरे को निहार रहा है; और उसे यह एक पुरुष के मस्तिष्क से सोचना चाहिए, मेरे मस्तिष्क से नहीं। उसकी आँखों में एक ऐसी उदार और कोमल अग्नि है। वह मुस्कुराती है—उसकी मुस्कान इतनी मधुर क्यों है? मैंने देखा कि रॉबर्ट ने उसकी सुंदरता को महसूस किया, और उसने इसे अपने पुरुष हृदय से महसूस किया होगा, न कि मेरी मंद स्त्री दृष्टि से। वे मुझे दो महान प्रसन्न आत्माओं की तरह लगते हैं। वह चांदी जैसा चमकीला फुटपाथ मुझे उस सफेद किनारे की याद दिलाता है जिसे हम मृत्यु-बाढ़ के पार मानते हैं। वे वहाँ पहुँच चुके हैं; वे वहाँ एक साथ चलते हैं। और मैं क्या हूँ, यहाँ छाया में खड़ी, छिपती हुई, मेरा मन क्या यह मेरे छिपने की जगह से भी ज़्यादा अँधेरा है? मैं इस दुनिया की ही एक सदस्य हूँ, कोई आत्मा नहीं – एक बेचारी अभागी नश्वर प्राणी, जो अज्ञानता और निराशा में पूछती है कि उसका जन्म क्यों हुआ, वह किसलिए जी रही है; जिसका मन सदा इस प्रश्न में उलझा रहता है कि अंत में उसका सामना किससे होगा और मृत्यु के दौरान उसे कौन सहारा देगा।

"यह अब तक का सबसे कठिन दौर है; फिर भी मैं इसके लिए पूरी तरह तैयार थी। मैंने रॉबर्ट को त्याग दिया और उसे शर्ली को सौंप दिया, जिस दिन मुझे पता चला कि वह आ रही है, जिस पल मैंने उसे देखा - धनी, युवा और सुंदर। अब वह उसके पास है। वह उसका प्रेमी है। वह उसकी लाडली है। शादी के बाद वह उसकी और भी

लाडली होगी। रॉबर्ट जितना शर्ली को जानेगा, उसका दिल उतना ही उससे जुड़ता जाएगा। वे दोनों खुश रहेंगे, और मुझे उनकी खुशी से कोई ईर्ष्या नहीं है; लेकिन मैं अपने दुख से कराह रही हूँ। मेरा कुछ दुख बहुत तीव्र है। सच में, मुझे पैदा ही नहीं होना चाहिए था; मुझे पहली ही चीख पर गला घोंट देना चाहिए था।”

यहां, शर्ली ओस से भीगा फूल तोड़ने के लिए एक तरफ हट गई और फिर अपनी साथी के साथ गेट के पास वाले रास्ते पर मुड़ गई। उनकी बातचीत का कुछ हिस्सा सुनाई देने लगा। कैरोलीन सुनने के लिए नहीं रुकी। वह चुपचाप चली गई, और चांदनी ने उस दीवार को चूम लिया जिसे उसकी परछाई ने धुंधला कर दिया था। पाठक को यह सौभाग्य प्राप्त है कि वह यहीं रुके और इस बातचीत को समझने का प्रयास करे।

"मैं यह समझ नहीं पा रही हूं कि प्रकृति ने तुम्हें बुलडॉग का सिर क्यों नहीं दिया, क्योंकि तुममें बुलडॉग जैसी दृढ़ता है," शर्ली ने कहा।

“यह कोई प्रशंसनीय विचार नहीं है। क्या मैं इतना नीच हूँ?”

और आपमें भी उसी जानवर के चुपचाप काम करने के तरीके की कुछ झलक है। आप कोई चेतावनी नहीं देते; आप चुपचाप पीछे से आते हैं, कसकर पकड़ लेते हैं और थामे रहते हैं।

“यह सिर्फ अनुमान है। आपने मेरी ओर से ऐसा कोई कारनामा नहीं देखा है। आपकी उपस्थिति में मैं कोई अड़ियल कुत्ता नहीं रहा हूँ।”

“तुम्हारी चुप्पी ही तुम्हारी जाति का संकेत देती है। तुम आम तौर पर बहुत कम बोलते हो, फिर भी कितनी गहरी साजिशें रचते हो! तुम दूरदर्शी हो; तुम हिसाब-किताब रखने वाले हो।”

“मैं इन लोगों के तौर-तरीकों से वाकिफ हूँ। मैंने उनके इरादों की जानकारी जुटा ली है। कल रात मैंने आपको अपने पत्र में बताया था कि बैराक्लॉ का मुकदमा उनकी दोषसिद्धि और निर्वासन की सजा के साथ समाप्त हो गया है। उनके साथी बदला लेने की साजिश रचेंगे। मैं अपनी योजना इस तरह बनाऊँगा जिससे मैं उनकी योजनाओं का मुकाबला कर सकूँ या कम से कम उनके लिए तैयार रहूँ—बस इतना ही। अब जब मैंने आपको यथासंभव स्पष्ट रूप से समझा दिया है, तो क्या मैं यह समझूँ कि जो मैं करने का प्रस्ताव कर रहा हूँ, उसके लिए आपको मेरी स्वीकृति है?”

“जब तक आप रक्षात्मक रुख अपनाते रहेंगे, मैं आपके साथ खड़ा रहूंगा। हां।”

“बहुत बढ़िया! बिना किसी सहायता के—भले ही आपका विरोध या अस्वीकृति होती—मुझे विश्वास है कि मैं ठीक वही करता जो मैं अब करने का इरादा रखता हूँ, लेकिन एक अलग भावना के साथ। अब मैं संतुष्ट महसूस कर रहा हूँ। कुल मिलाकर, मुझे यह पद अच्छा लग रहा है।”

“मुझे पूरा यकीन है कि आप ऐसा करते हैं। यह स्पष्ट है। आप अपने सामने मौजूद काम का उतना आनंद लेते हैं जितना कि सेना की वर्दी के लिए सरकारी आदेश के निष्पादन का नहीं।”

मुझे तो यह जगह बिल्कुल अनुकूल लगती है।

“बूढ़े हेलस्टोन भी ऐसा ही करते। यह सच है कि आपके इरादों में थोड़ा-सा अंतर है—शायद कई अंतर। क्या मैं श्री हेलस्टोन से बात करूँ? अगर आप चाहें तो मैं करूँगा।”

“आप जैसा चाहें वैसा करें। मिस कील्डर, आपका विवेक ही आपको सही राह दिखाएगा। मैं खुद भी इससे कठिन संकट में इस पर भरोसा कर सकता था। लेकिन मैं आपको सूचित करना चाहूंगा कि श्री हेलस्टोन इस समय मेरे प्रति कुछ पूर्वाग्रह रखते हैं।”

मुझे सब पता है—मैंने आप दोनों के मतभेदों के बारे में सब कुछ सुन लिया है। यकीन मानिए, वे दूर हो जाएंगे। मौजूदा हालात में वह गठबंधन के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सकता।

मुझे उसे पाकर खुशी होगी; वह सचमुच एक नेक इंसान है।

मुझे भी ऐसा ही लगता है।

"एक पुराना ब्लेड, और थोड़ा जंग लगा हुआ, लेकिन इसकी धार और मजबूती अभी भी उत्कृष्ट है।"

"ठीक है, आप उसे पा सकते हैं, मिस्टर मूर - बशर्ते मैं उसे जीत सकूँ।"

आप किसे नहीं जीत सकते?

"शायद पादरी नहीं; लेकिन मैं कोशिश जरूर करूंगा।"

“प्रयास करो! वह एक शब्द या एक मुस्कान के लिए मान जाएगा।”

“बिल्कुल नहीं। इसमें मुझे कई कप चाय, कुछ टोस्ट और केक, और ढेर सारे निवेदन, स्पष्टीकरण और समझाने-बुझाने में समय लगेगा। मौसम काफी ठंडा होता जा रहा है।”

“मुझे महसूस हो रहा है कि तुम कांप रही हो। क्या तुम्हें यहाँ रोककर मैं गलत कर रही हूँ? फिर भी यहाँ इतनी शांति है—मुझे तो गर्माहट भी महसूस हो रही है—और तुम्हारे जैसे लोगों का साथ मेरे लिए एक दुर्लभ सुख है। अगर तुम मोटी शॉल में लिपटी होतीं—”

“हो सकता है मैं और देर तक रुक जाऊं और भूल जाऊं कि कितना समय हो गया है, जिससे श्रीमती प्रायर नाराज हो जाएंगी। श्री मूर, हम फील्डहेड में सुबह जल्दी और नियमित समय पर उठते हैं; और मुझे यकीन है कि आपकी बहन भी कॉटेज में ऐसा ही करती होगी।”

"हां; लेकिन हॉर्टेंस और मेरे बीच दुनिया की सबसे सुविधाजनक समझ है कि हम दोनों अपनी-अपनी मर्जी से काम करेंगे।"

आप क्या करना चाहेंगे?

"हफ्ते में तीन रातें मैं चक्की में सोता हूँ - लेकिन मुझे ज्यादा आराम की जरूरत नहीं होती - और जब चांदनी होती है और मौसम सुहाना होता है तो मैं अक्सर भोर तक उस घाटी में घूमता रहता हूँ।"

“जब मैं बहुत छोटी बच्ची थी, तब मेरी नर्स, मिस्टर मूर, मुझे उस घाटी में परियों के दिखने की कहानियाँ सुनाया करती थीं। यह मेरे पिता द्वारा चक्की बनाने से पहले की बात है, जब वह बिल्कुल सुनसान घाटी हुआ करती थी। आप भी उस जादू के प्रभाव में आ जाएँगी।”

"मुझे डर है कि यह हो चुका है," मूर ने धीमी आवाज में कहा।

"लेकिन परियों से भी बदतर चीजें हैं जिनसे सावधान रहने की जरूरत है," मिस कील्डर ने आगे कहा।

उन्होंने आगे कहा, "और भी खतरनाक चीजें।"

“कहीं ज़्यादा। उदाहरण के लिए, आप उस सनकी कैल्विनिस्ट और जैकोबिन बुनकर माइकल हार्टली से मिलना चाहेंगे? कहते हैं कि उसे अवैध शिकार की लत है और वह अक्सर रात में अपनी बंदूक लेकर बाहर जाता है।”

मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। एक रात हमारी काफी देर तक बहस हुई। यह एक अजीब सी घटना थी; मुझे यह अच्छी लगी।

“पसंद आया? आपकी पसंद की मैं तारीफ़ करता हूँ! माइकल का दिमाग ठीक नहीं है। आप उससे कहाँ मिले थे?”

घाटी के सबसे गहरे, छायादार स्थान पर, जहाँ पानी कम बहता है, झाड़ियों के नीचे। हम उस तख़्ते वाले पुल के पास बैठ गए। चाँदनी थी, लेकिन बादल छाए हुए थे और बहुत तेज़ हवा चल रही थी। हमने बातें कीं।

“राजनीति पर?”

“और धर्म। मुझे लगता है कि उस रात पूर्णिमा थी, और माइकल लगभग पागलों जैसी हालत में था। उसने अपने नास्तिक अंदाज में अजीबोगरीब ईशनिंदा की।”

"माफ़ कीजिए, लेकिन मुझे लगता है कि आप भी लगभग उतने ही पागल रहे होंगे जितने कि वह, जो उसकी बातें सुनते रहे।"

“उसकी बातों में एक अजीब सी दिलचस्पी है। अगर वह पूरी तरह पागल न होता, तो आधा कवि होता; और अगर वह अय्याश न होता, तो शायद पैगंबर भी होता। उसने मुझे गंभीरता से बताया कि नरक मेरा अपरिहार्य भाग्य है; कि उसने मेरे माथे पर शैतान का निशान पढ़ लिया है; कि मैं शुरू से ही बहिष्कृत था। उसने कहा कि ईश्वर का प्रतिशोध मेरे लिए तैयार हो रहा है, और उसने दावा किया कि रात के सपने में उसने मेरे विनाश का तरीका और साधन देखा था। मैं और जानना चाहता था, लेकिन उसने मुझे ये शब्द कहकर छोड़ दिया, ‘अंत अभी नहीं आया है।’”

"क्या आपने उसके बाद उसे कभी देखा है?"

लगभग एक महीने बाद, बाज़ार से लौटते समय, मेरी मुलाक़ात उससे और मूसा बैराक्लॉ से हुई, दोनों ही नशे की चरम अवस्था में थे। वे सड़क किनारे उन्माद में प्रार्थना कर रहे थे। उन्होंने मुझे शैतान कहकर पुकारा, मुझे वहाँ से चले जाने को कहा और प्रलोभन से मुक्ति दिलाने की गुहार लगाई। फिर, कुछ ही दिन पहले, माइकल ने लेखा कार्यालय के दरवाज़े पर बिना टोपी के, अपनी कमीज़ की आस्तीनों में हाज़िर होने की जहमत उठाई - उसका कोट और कांटा गिरवी रखे पब में था। उसने यह तसल्ली भरी बात कही कि वह श्री मूर से अपने घर को ठीक करने की कामना कर सकता है, क्योंकि उसकी आत्मा को जल्द ही उससे ले लिया जाएगा।

क्या आप इन बातों को हल्के में लेते हैं?

"वह बेचारा कई हफ्तों से शराब पी रहा था, और उसकी हालत ऐसी थी जैसे वह प्रलाप (डेलीरियम ट्रेमेन्स) के कगार पर हो।"

“तो फिर क्या? उसके द्वारा अपनी ही भविष्यवाणियों को पूरा करने का प्रयास करने की संभावना और भी अधिक है।”

"इस तरह की घटनाओं को अपने तंत्रिका तंत्र पर असर डालने देना उचित नहीं होगा।"

“श्री मूर, घर जाइए!”

"इतनी जल्दी?"

"खेतों से सीधे नीचे जाओ, नाले और बागानों के चक्कर से मत घूमो।"

अभी तो बहुत जल्दी है।

"काफी देर हो चुकी है। मैं तो अंदर जा रहा हूँ। क्या तुम मुझसे वादा करोगे कि आज रात हॉलो में नहीं भटकोगे?"

"अगर आप चाहें तो।"

“मैं यही चाहता हूँ। क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि क्या आप जीवन को मूल्यहीन मानते हैं?”

बिल्कुल नहीं। इसके विपरीत, हाल ही में मैं अपने जीवन को अमूल्य मानता हूँ।

"विलंब से?"

“आज मेरे लिए जीवन न तो लक्ष्यहीन है और न ही निराशाजनक, जबकि तीन महीने पहले ऐसा ही था। मैं उस समय डूब रहा था और चाहता था कि ऑपरेशन जल्दी खत्म हो जाए। अचानक एक हाथ मेरी ओर बढ़ा - इतना कोमल हाथ कि मुझे उस पर भरोसा करने की हिम्मत ही नहीं हुई; लेकिन उसकी ताकत ने मुझे विनाश से बचा लिया।”

"क्या आपको सचमुच बचा लिया गया है?"

“फिलहाल के लिए। आपकी सहायता ने मुझे एक और मौका दिया है।”

“जीते समय का भरपूर आनंद उठाओ। माइकल हार्टली को अपना निशाना मत बनने दो; और शुभ रात्रि!”

मिस हेलस्टोन को अगले दिन की शाम फील्डहेड में बिताने का वादा किया गया था। उन्होंने अपना वादा निभाया। इस बीच के कुछ घंटे उन्होंने उदासी में बिताए। अधिकांश समय उन्होंने अपने कमरे में बंद रहकर बिताया, केवल अपने चाचा के साथ भोजन करने के लिए ही बाहर निकलती थीं, और फैनी के सवालों से बचने के लिए उसे बताती थीं कि वह एक ड्रेस में बदलाव कर रही हैं और व्यवधान से बचने के लिए ऊपर के कमरे में सिलाई करना पसंद करती हैं।

वह सिलाई करती थी। वह लगातार, बिना रुके, अपनी सुई चलाती रहती थी, लेकिन उसका दिमाग उसकी उंगलियों से कहीं ज़्यादा तेज़ी से काम करता था। एक बार फिर, और पहले से कहीं ज़्यादा ज़ोर से, वह एक स्थिर काम चाहती थी, चाहे वह कितना भी कठिन या थकाऊ क्यों न हो। उसे अपने चाचा से एक बार फिर विनती करनी होगी, लेकिन पहले वह श्रीमती प्रायर से सलाह लेगी। उसका दिमाग़ योजनाएँ बनाने में उतनी ही लगन से लगा रहता था, जितनी लगन से उसके हाथ उस पतले मलमल के गर्मियों के कपड़े को गूंथने और सिलने में लगे रहते थे, जो उस छोटे से सफ़ेद सोफे पर बिछा था जिसके चरणों में वह बैठी थी। कभी-कभी, इस तरह दोहरी व्यस्तता में, उसकी आँखों में आँसू भर आते और उसके व्यस्त हाथों पर गिर जाते; लेकिन भावनाओं का यह संकेत दुर्लभ था और जल्दी ही मिट जाता था। तीखा दर्द बीत जाता; उसकी दृष्टि से धुंधलापन दूर हो जाता। वह अपनी सुई में धागा डालती, टक और ट्रिमिंग को ठीक करती और काम पर लग जाती।

दोपहर ढलने के बाद उसने कपड़े बदले। वह फील्डहेड पहुँची और जैसे ही चाय परोसी गई, वह ओक के बैठक कक्ष में आ पहुँची। शर्ली ने उससे पूछा कि वह इतनी देर से क्यों आई।

"क्योंकि मैं अपनी ड्रेस खुद बना रही थी," उसने कहा। "इन सुहावने धूप भरे दिनों में मुझे अपनी सर्दियों की मेरिनो ऊन की ड्रेस पर शर्म आने लगी थी, इसलिए मैंने एक हल्की ड्रेस तैयार कर ली है।"

"तुम बिल्कुल वैसी ही दिख रही हो जैसी मैं तुम्हें देखना पसंद करती हूँ," शर्ली ने कहा। "कैरोलीन, तुम एक सभ्य और शालीन बच्ची हो। — क्या वह नहीं हैं, श्रीमती प्रायर?"

श्रीमती प्रायर कभी किसी की तारीफ नहीं करती थीं, और न ही कभी किसी के रूप-रंग पर कोई टिप्पणी करती थीं, चाहे वह अच्छी हो या बुरी। उस मौके पर उन्होंने कैरोलीन के गालों से उसके घुंघराले बालों को हटाया और उसके पास बैठते हुए उसके गोल चेहरे को सहलाते हुए कहा, "मेरी प्यारी, तुम थोड़ी दुबली और पीली पड़ गई हो। क्या तुम अच्छी नींद सोती हो? तुम्हारी आँखें कुछ उदास लग रही हैं।" और फिर उन्होंने कैरोलीन को चिंता से देखा।

"कभी-कभी मुझे उदास सपने आते हैं," कैरोलिन ने उत्तर दिया; "और अगर मैं रात में एक-दो घंटे जागती रहती हूँ, तो लगातार पादरी के निवास को एक नीरस और

पुरानी जगह समझती रहती हूँ। आप जानती हैं कि यह कब्रिस्तान के बहुत पास है। घर का पिछला हिस्सा बहुत प्राचीन है, और कहा जाता है कि वहाँ की रसोई कभी कब्रिस्तान में ही थी, और उसके नीचे कब्रें हैं। मेरा तो पादरी के निवास को छोड़ने का बहुत मन करता है।"

"मेरी प्यारी, तुम अंधविश्वासी तो नहीं हो?"

नहीं, श्रीमती प्रायर; लेकिन मुझे लगता है कि मैं घबराहट का शिकार हो रहा हूँ। मुझे चीजें पहले से कहीं अधिक भयावह नजरिए से दिखाई देती हैं। मुझे ऐसे डर सता रहे हैं जो पहले कभी नहीं सताते थे - भूतों से नहीं, बल्कि अपशकुनों और विपत्तियों से; और मेरे मन पर एक ऐसा असहनीय बोझ है जिसे मैं पूरी दुनिया को दे देने के लिए भी तैयार हूँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पा रहा हूँ।

"अजीब!" शर्ली चिल्लाई। "मुझे ऐसा कभी महसूस नहीं होता।" श्रीमती प्रायर ने कुछ नहीं कहा।

"सुहावना मौसम, खुशनुमा दिन, मनमोहक दृश्य, ये सब मुझे आनंद नहीं दे पाते," कैरोलाइन ने आगे कहा। "शांत शामें भी मुझे शांत नहीं लगतीं। चांदनी, जिसे मैं पहले सौम्य समझती थी, अब उदास सी लगती है। क्या यह मन की कमजोरी है, श्रीमती प्रायर, या कुछ और? मैं कुछ नहीं कर सकती। मैं अक्सर इससे जूझती हूँ। मैं तर्क करती हूँ; लेकिन तर्क और प्रयास से कोई फर्क नहीं पड़ता।"

श्रीमती प्रायर ने कहा, "आपको अधिक व्यायाम करना चाहिए।"

"व्यायाम करो! मैं पर्याप्त व्यायाम करता हूँ। मैं तब तक व्यायाम करता हूँ जब तक मैं पूरी तरह थककर गिर न जाऊँ।"

"मेरी प्यारी, तुम्हें घर से चले जाना चाहिए।"

"श्रीमती प्रायर, मैं घर से बाहर जाना चाहती हूँ, लेकिन किसी व्यर्थ यात्रा या सैर पर नहीं। मैं आपकी तरह एक गवर्नेंस बनना चाहती हूँ। अगर आप इस विषय पर मेरे चाचा से बात कर लें तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

"बकवास!" शर्ली बीच में बोली। "कैसा विचार है! गवर्नेंस बनना! इससे बेहतर है कि सीधे गुलाम बन जाओ। इसकी क्या ज़रूरत है? ऐसे कष्टदायक कदम का सपना क्यों देख रहे हो?"

श्रीमती प्रायर ने कहा, "मेरी प्यारी बेटी, तुम अभी गवर्नेंस बनने के लिए बहुत छोटी हो और तुम्हारी सेहत भी पर्याप्त अच्छी नहीं है। गवर्नेंस के कर्तव्य अक्सर बहुत कठिन

होते हैं।"

और मेरा मानना है कि मैं अपने जीवन में गंभीर जिम्मेदारियां निभाना चाहता हूं।

“काम में लग जाओ!” शर्ली चिल्लाई। “तुम कब खाली रहती हो? मैंने तुमसे ज़्यादा मेहनती लड़की कभी नहीं देखी। तुम हमेशा काम में लगी रहती हो। आओ,” उसने आगे कहा — “आओ और मेरे पास बैठो, और चाय पीकर तरोताज़ा हो जाओ। क्या तुम्हें मेरी दोस्ती की परवाह नहीं है, तभी तो तुम मुझे छोड़कर जाना चाहती हो?”

"जी हां, शर्ली; और मैं तुम्हें छोड़ना नहीं चाहता। मुझे तुम्हारे जैसा प्रिय मित्र कभी नहीं मिलेगा।"

इन शब्दों को सुनकर मिस कील्डर ने सहज स्नेहपूर्ण ढंग से अपना हाथ कैरोलिन के हाथ में रख दिया, जिसे उनके चेहरे के भावों ने बखूबी प्रतिध्वनित किया।

“अगर तुम ऐसा सोचते हो, तो बेहतर होगा कि तुम मेरा ख्याल रखो,” उसने कहा, “और मुझसे दूर मत भागो। जिनसे मेरा लगाव हो जाता है, उनसे बिछड़ना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। श्रीमती प्रायर कभी-कभी मुझे छोड़ने की बात करती हैं और कहती हैं कि मैं उनसे ज़्यादा बेहतर रिश्ता बना सकती हूँ। मुझे पुराने ख्यालों वाली माँ को छोड़कर किसी आधुनिक और स्टाइलिश माँ को अपनाने में कोई हिचक नहीं है। जहाँ तक तुम्हारी बात है – मैं तो खुद को ये तसल्ली देने लगी थी कि हम पक्के दोस्त हैं; कि तुम शर्ली को लगभग उतना ही पसंद करते हो जितना शर्ली तुम्हें पसंद करती है, और वो अपना स्नेह दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ती।”

मुझे शर्ली पसंद है। मुझे वो दिन-ब-दिन और भी ज्यादा पसंद आती जा रही है। लेकिन इससे मैं मजबूत या खुश नहीं हो जाता।

“क्या अजनबियों के बीच आश्रित बनकर रहने से तुम मजबूत या खुश हो जाओगी? बिलकुल नहीं। और यह प्रयोग नहीं करना चाहिए; मैं तुम्हें बता रही हूँ, यह असफल होगा। आम तौर पर दाई का जीवन जो एकांत में बीतता है, उसे सहना तुम्हारे स्वभाव में नहीं है; तुम बीमार पड़ जाओगी। मैं यह सब बर्दाश्त नहीं करूँगी।”

मिस कील्डर ने इस निषेध को दृढ़ता से कहने के बाद कुछ देर के लिए विराम लिया। थोड़ी देर बाद उन्होंने फिर बोलना शुरू किया, उनका चेहरा अभी भी थोड़ा सजी-धजी लग रहा था, “अरे, अब तो मुझे हर दिन गली में पेड़ों के बीच से झांकती हुई उस छोटी सी कुटिया की टोपी और रेशमी स्कार्फ को देखना अच्छा लगता है, और यह जानकर खुशी होती है कि मेरी शांत, समझदार, विचारशील साथी और मार्गदर्शक

मेरे पास वापस आ रही है; कि वह कमरे में बैठी होगी, जिसे मैं देख सकूँगी, उससे बात कर सकूँगी या उसे अकेला छोड़ दूँगी, जैसा हम दोनों चाहें। यह शायद स्वार्थी भाषा है - मैं जानती हूँ - लेकिन यही भाषा स्वाभाविक रूप से मेरे होठों से निकलती है, इसलिए मैं इसे बोलती हूँ।"

मैं तुम्हें पत्र लिखूंगा, शर्ली।

"और पत्र क्या होते हैं? बस एक तरह का संदेशवाहक। चाय पी लो, कैरोलीन। कुछ खा लो - तुम कुछ मत खाओ। हंसो और खुश रहो, और घर पर रहो।"

मिस हेलस्टोन ने सिर हिलाया और आह भरी। उन्हें एहसास हुआ कि अपने जीवन में उस बदलाव को लाने के लिए किसी को भी मनाना कितना मुश्किल होगा, जिसे वह वांछनीय मानती थीं। उन्होंने सोचा कि अगर वह सिर्फ अपने विवेक का पालन करें, तो शायद उन्हें अपने कष्टों का कोई कठोर लेकिन कारगर इलाज मिल जाए। लेकिन यह निर्णय, जो उन परिस्थितियों पर आधारित था जिन्हें वह किसी को भी, खासकर शर्ली को, पूरी तरह से समझा नहीं सकती थीं, उनकी अपनी नज़रों के अलावा सभी की नज़रों में समझ से परे और अकल्पनीय लग रहा था, और इसलिए इसका विरोध किया गया।

फिलहाल कैरोलीन को अपना आरामदायक घर छोड़कर नौकरी करने की कोई आर्थिक ज़रूरत नहीं थी; और पूरी संभावना थी कि उसके चाचा किसी न किसी तरह से उसकी स्थायी देखभाल कर देंगे। उसके दोस्तों का यही मानना था, और जहाँ तक उन्हें समझ थी, उनका अनुमान सही था; लेकिन कैरोलीन की उन अजीब पीड़ाओं के बारे में, जिनसे वह इतनी बेसब्री से छुटकारा पाना चाहती थी, उन्हें कोई जानकारी नहीं थी; उसकी दर्द भरी रातों और निराशा भरे दिनों का उन्हें कोई आभास नहीं था। इसे समझाना नामुमकिन और निराशाजनक था; बस इंतज़ार करना और सहना ही उसका एकमात्र उपाय था। बहुत से लोग जो भोजन और वस्त्र से वंचित हैं, उनका जीवन उससे कहीं अधिक खुशहाल और भविष्य उज्ज्वल है; गरीबी से पीड़ित बहुत से लोग उससे कम कष्ट में हैं।

"अब, क्या आपका मन शांत हो गया है?" शर्ली ने पूछा। "क्या आप घर पर ही रहने के लिए सहमत होंगे?"

"मैं इसे अपने दोस्तों की सहमति के विरुद्ध नहीं छोड़ूंगा," जवाब मिला; "लेकिन मुझे लगता है कि समय आने पर उन्हें भी मेरी तरह ही सोचना पड़ेगा।"

इस बातचीत के दौरान श्रीमती प्रायर बिल्कुल भी सहज नहीं लग रही थीं। उनकी अत्यधिक संकोची स्वभाव के कारण वे शायद ही कभी खुलकर बात कर पाती थीं या दूसरों से गहन पूछताछ कर पाती थीं। उनके मन में अनेक प्रश्न होते थे जिन्हें वे कभी पूछने का साहस नहीं करती थीं, वे मन ही मन सलाह देती रहती थीं जिसे वे कभी बोल नहीं पाती थीं। यदि वे कैरोलीन के साथ अकेली होतीं, तो शायद वे कुछ काम की बात कह देतीं: मिस कील्डर की उपस्थिति, जिसकी उन्हें आदत थी, ने उनके होंठों को बंद कर दिया। अब, हजारों अन्य अवसरों की तरह, एक अनकही घबराहट ने उन्हें हस्तक्षेप करने से रोक रखा था। उन्होंने केवल अप्रत्यक्ष रूप से मिस हेलस्टोन के लिए अपनी चिंता व्यक्त की, उनसे यह पूछकर कि क्या आग से उन्हें ज्यादा गर्मी लग रही है, उनकी कुर्सी और चूल्हे के बीच एक पर्दा लगाकर, उस खिड़की को बंद करके जहाँ से उन्हें लगता था कि ठंडी हवा आ रही है, और बार-बार बेचैनी से उनकी ओर देखकर। शर्ली ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "तुम्हारी योजना को नाकाम करने के बाद," उसने कहा, "मुझे उम्मीद है कि मैंने ऐसा कर दिया है, मैं अपनी एक नई योजना बनाऊंगी। हर गर्मियों में मैं सैर पर जाती हूँ। इस मौसम में मैं दो महीने स्कॉटलैंड की झीलों या इंग्लैंड की झीलों में बिताने का प्रस्ताव रखती हूँ—अर्थात्, मैं वहाँ तभी जाऊंगी जब तुम मेरे साथ चलने के लिए सहमत होगे। यदि तुम इनकार करोगे, तो मैं एक कदम भी नहीं रखूंगी।"

"तुम बहुत अच्छी हो, शर्ली।"

"अगर आप मुझे इजाज़त दें तो मैं बहुत अच्छा व्यवहार करूँगा। मुझमें अच्छा व्यवहार करने की पूरी क्षमता है। मुझे पता है कि यह मेरी बदकिस्मती और आदत है कि मैं खुद को दूसरों से श्रेष्ठ समझता हूँ; लेकिन इस मामले में कौन मेरे जैसा नहीं है? हालाँकि, जब कैप्टन कील्डर को आराम मिलता है, उनकी सभी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं, जिनमें एक समझदार और मिलनसार साथी भी शामिल है, तो उन्हें अपने बचे हुए समय को उस साथी को खुश करने में लगाना बहुत अच्छा लगता है। और क्या हम हाइलैंड्स में खुश नहीं रहेंगे, कैरोलीन? हम हाइलैंड्स जाएँगे। अगर आप समुद्री यात्रा सहन कर सकती हैं, तो हम द्वीपों पर भी जाएँगे - हेब्राइड्स, शेटलैंड, ओर्कनी द्वीप। क्या आपको यह पसंद नहीं आएगा? मुझे लगता है कि आपको पसंद आएगा। - श्रीमती प्रायर, मैं आपको गवाह बनाकर कहूँगी। इस बात का ज़िक्र होते ही उनके चेहरे पर खुशी की चमक आ जाती है।"

“मुझे यह बहुत पसंद आएगा,” कैरोलीन ने जवाब दिया, जिसके लिए वास्तव में, इस तरह के दौरे का विचार न केवल सुखद था, बल्कि बेहद स्फूर्तिदायक भी था। शर्ली ने अपने हाथ मले।

“आइए; मैं एक उपकार कर सकती हूँ,” उसने उत्साह से कहा। “मैं अपने पैसों से एक नेक काम कर सकती हूँ। मेरे सालाना हज़ार डॉलर सिर्फ़ गंदे नोटों और पीले पड़े गिनी सिक्कों का मामला नहीं है (हालाँकि मैं दोनों का सम्मानपूर्वक उल्लेख करूँगी, क्योंकि मैं उन्हें बहुत पसंद करती हूँ), बल्कि यह उदास लोगों को स्वास्थ्य, कमज़ोरों को शक्ति और दुखी लोगों को सांत्वना दे सकता है। मैंने ठान लिया है कि मैं इससे कुछ ऐसा करूँगी जो रहने के लिए एक आलीशान पुराने घर से, पहनने के लिए रेशमी गाउन से, परिचितों से सम्मान और गरीबों से श्रद्धा पाने से कहीं बेहतर हो। यहीं से शुरुआत होती है। इस गर्मी में, कैरोलीन, श्रीमती प्रायर और मैं उत्तरी अटलांटिक में, शेटलैंड से आगे, शायद फ़ारो द्वीप समूह तक जाएँगे। हम सुडेरो में सील देखेंगे, और निस्संदेह, स्ट्रोमो में जलपरियाँ देखेंगे। — कैरोलीन हँस रही है, श्रीमती प्रायर। मैंने उसे हँसाया; मैंने उसका भला किया।”

“मैं जाना चाहूँगी, शर्ली,” मिस हेलस्टोन ने फिर कहा। “मैं लहरों की आवाज़ सुनने के लिए तरस रही हूँ—समुद्री लहरों की आवाज़—और उन्हें वैसे देखने के लिए जैसे मैंने सपनों में कल्पना की है, हरे प्रकाश के उछलते किनारों की तरह, जो लिली से भी ज़्यादा सफ़ेद झाग के गुच्छों से सजे हों, जो कभी गायब होते हैं और कभी फिर प्रकट होते हैं। मुझे उन एकाकी चट्टानी द्वीपों के किनारों से गुज़रने में आनंद आएगा जहाँ समुद्री पक्षी बिना किसी बाधा के रहते और प्रजनन करते हैं। हम पुराने स्कैंडिनेवियाई लोगों—नॉर्स लोगों—के पदचिह्नों पर चलेंगे। हम लगभग नॉर्वे के तटों को देख पाएँगे। यह एक बहुत ही अस्पष्ट आनंद है जो मुझे आपके प्रस्ताव से महसूस हो रहा है, लेकिन यह आनंद है।”

"क्या अब जब आप रात को जागते रहेंगे, तो आपको फिटफुल हेड की याद आएगी, उसके चारों ओर चीखती हुई सीगल की, और उस पर टकराती हुई लहरों की, बजाय इसके कि आप पादरी के घर के पीछे की रसोई के नीचे बनी कब्रों के बारे में सोचें?"

मैं कोशिश करूँगा; और कफ़न के अवशेषों, ताबूतों के टुकड़ों, मानव हड्डियों और मिट्टी के बारे में सोचने के बजाय, मैं सुनसान किनारों पर धूप में लेटी हुई सीलों की

कल्पना करूँगा, जहाँ न तो मछुआरा आता है और न ही शिकारी; समुद्री शैवाल में जमे मोती जैसे अंडों से भरी चट्टानों की दरारों की; और निडर पक्षियों के झुंडों की जो सफेद रेत को ढक लेते हैं।

और आपके मन पर जो अवर्णनीय बोझ था, उसका क्या होगा?

“मैं इस बात को भूलने की कोशिश करूँगा कि विशाल गहरे सागर का वह दबदबा कितना गहरा है, जहाँ व्हेलों का झुंड जमे हुए क्षेत्र से उग्र और तरल गर्जना के बीच से तेज़ी से नीचे आ रहा है—शायद सौ व्हेलें, एक विशालकाय नर व्हेल के पीछे लोट-पोट हो रही हैं, चमक रही हैं, लुढ़क रही हैं, जो इतना बड़ा है कि बाढ़ से पहले पैदा हुआ होगा, ऐसा ही प्राणी जैसा बेचारे स्मार्ट के मन में था जब उन्होंने कहा था,—

ज्वार-भाटे के विरुद्ध भी शक्तिशाली, विशालकाय व्हेल

जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे उभरता है।

“मुझे उम्मीद है कि हमारी नाव किसी ऐसे झुंड या समूह से नहीं टकराएगी, जैसा कि तुम कहती हो, कैरोलीन। (मुझे लगता है कि तुम उन समुद्री मैमथों की कल्पना कर रही हो जो ‘शाश्वत पहाड़ियों’ की तलहटी में चरते हैं और विशाल घाटियों में अजीबोगरीब चारा चरते हैं, जिनके बीच और ऊपर समुद्री लहरें उठती हैं।) मैं नहीं चाहूंगी कि मेरा जहाज उस विशाल बैल के हाथों पलट जाए।”

"मुझे लगता है कि तुम जलपरियों को देखने की उम्मीद कर रही हो, शर्ली?"

“उनमें से एक, कम से कम — मैं इससे कम पर सौदा नहीं करूँगा — और वह कुछ इस तरह प्रकट होगी। मैं अगस्त की एक शाम को देर से डेक पर अकेला टहल रहा हूँगा, पूर्णिमा के चाँद को देख रहा हूँगा और वह मुझे देख रहा होगा। समुद्र की सतह पर कुछ सफेद उठेगा, जिसके ऊपर वह चाँद चुपचाप उगता है और शानदार ढंग से चमकता है। वस्तु चमकती है और डूब जाती है। वह फिर से उठती है। मुझे लगता है कि मैं उसे एक स्पष्ट आवाज में पुकारते हुए सुनता हूँ; मैं तुम्हें केबिन से बुलाता हूँ; मैं तुम्हें एक छवि दिखाता हूँ, संगमरमर की तरह सुंदर, धुंधली लहर से उभरती हुई। हम दोनों लंबे बाल, उठा हुआ और झागदार सफेद हाथ, तारे की तरह चमकीला अंडाकार दर्पण देखते हैं। वह पास आता है; एक मानवीय चेहरा स्पष्ट रूप से दिखाई देता है — तुम्हारे जैसा चेहरा — जिसके सीधे, शुद्ध (क्षमा करें, यह शब्द उपयुक्त है) — जिसके सीधे, शुद्ध नैन-नक्श पीलेपन से विकृत नहीं होते। वह हमें देखता है, लेकिन तुम्हारी आँखों से नहीं। मैं उसकी धूर्त निगाह में एक अलौकिक आकर्षण देखता हूँ।

वह इशारा करता है। अगर हम पुरुष होते, तो हम... संकेत मिलते ही हम उछल पड़े —शीतमयी लहरों का सामना उस निर्मम जादूगरनी के लिए किया जाएगा; स्त्री होने के नाते हम सुरक्षित हैं, हालांकि निर्भय नहीं। वह हमारी स्थिर निगाहों को समझती है; वह स्वयं को शक्तिहीन महसूस करती है; क्रोध उसके चेहरे पर झलकता है; वह हमें मोहित नहीं कर सकती, लेकिन वह हमें भयभीत कर देगी; वह ऊँचाई पर उठती है, और अंधेरी लहरों के शिखर पर पूरी तरह प्रकट होकर फिसलती है। मोहक-आतंक! हमारा ही विकृत रूप! क्या तुम खुश नहीं हो, कैरोलीन, जब अंत में, एक भयानक चीख के साथ, वह गोता लगाती है?

लेकिन, शर्ली, वह हमारे जैसी नहीं है। हम न तो मोहक हैं, न ही डरावनी हैं, और न ही राक्षस हैं।

"कहा जाता है कि हममें से कुछ लोग तीनों गुणों से युक्त होते हैं। ऐसे पुरुष भी हैं जो सामान्यतः 'स्त्री' को ऐसे ही गुणों से युक्त मानते हैं।"

"मेरे प्यारे बच्चों," श्रीमती प्रायर ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "क्या आपको यह नहीं लगता कि पिछले दस मिनटों से आपकी बातचीत कुछ ज्यादा ही काल्पनिक रही है?"

"लेकिन हमारी कल्पनाओं में कोई बुराई नहीं है, है ना, महोदया?"

“हम जानते हैं कि जलपरियां अस्तित्व में नहीं हैं; फिर उनके बारे में ऐसे क्यों बात करते हैं जैसे वे हों? एक निरर्थक चीज़ के बारे में बात करने में आपको क्या दिलचस्पी हो सकती है?”

“मुझे नहीं पता,” शर्ली ने कहा।

“मेरी प्यारी, मुझे लगता है कोई आ रहा है। जब तुम बात कर रही थी, तब मैंने गली में किसी के कदमों की आहट सुनी; और क्या वह बगीचे का फाटक नहीं है जो चरमरा रहा है?”

शर्ली खिड़की के पास गई।

“हाँ, कोई तो है,” उसने चुपचाप मुँह फेरते हुए कहा; और जैसे ही वह अपनी सीट पर बैठी, उसके चेहरे पर एक हल्की सी लाली छा गई, और उसकी आँखों में एक झिलमिलाती हुई चमक आ गई। उसने अपना हाथ ठुड्डी पर रखा, नज़रें नीचे झुकाईं और इंतज़ार करते हुए सोचने लगी।

नौकर ने श्री मूर के आने की सूचना दी, और श्री मूर को दरवाजे पर देखकर शर्ली

मुड़ गई। प्रवेश करते ही उनका कद काफी लंबा लग रहा था, और तीनों महिलाओं के विपरीत, जिनमें से कोई भी औसत से अधिक लंबी नहीं थी। वे स्वस्थ दिख रहे थे, पिछले बारह महीनों में वे जितने अच्छे दिखते थे, उससे कहीं बेहतर। उनकी आँखों और चेहरे पर एक नई जवानी की चमक थी, और उनके हाव-भाव में एक नई आशा और दृढ़ संकल्प झलक रहा था। उनके चेहरे पर दृढ़ता झलक रही थी, लेकिन कठोरता नहीं। उनका चेहरा जितना खुशमिजाज था, उतना ही गंभीर भी।

उन्होंने मिस कील्डर का अभिवादन करते हुए कहा, "मैं अभी-अभी स्टिलब्रो से लौटा हूँ, और मैंने सोचा कि मैं आपसे मिलने आऊँ और आपको अपने मिशन का परिणाम बताऊँ।"

“आपने मुझे सस्पेंस में न रखकर सही किया,” उसने कहा, “और आपका आना बिल्कुल सही समय पर हुआ है। बैठ जाइए। हमारी चाय अभी खत्म नहीं हुई है। क्या आप इतने अंग्रेज हैं कि चाय का आनंद ले सकें, या आप कॉफी के ही पक्के समर्थक हैं?”

मूर ने चाय स्वीकार की।

उन्होंने कहा, "मैं एक स्वाभाविक अंग्रेज बनना सीख रहा हूँ; मेरी विदेशी आदतें धीरे-धीरे छूट रही हैं।"

अब उन्होंने श्रीमती प्रायर को सम्मानपूर्वक प्रणाम किया, और बड़ी शालीनता से, उनकी उम्र के हिसाब से, जो उनके लिए उपयुक्त थी। फिर उन्होंने कैरोलीन की ओर देखा—हालांकि, यह पहली बार नहीं था: उनकी नज़र पहले भी उन पर पड़ चुकी थी। जब वह बैठी थीं, तो वे उनकी ओर झुके, उन्हें अपना हाथ दिया और उनका हालचाल पूछा। खिड़की से आती रोशनी मिस हेलस्टोन पर नहीं पड़ रही थी; उनकी पीठ खिड़की की ओर थी। एक शांत, हालांकि कुछ धीमी आवाज़ में दिया गया उत्तर, एक स्थिर भाव, और शाम के धुंधलके की मित्रतापूर्ण सुरक्षा ने उनके हर भाव को छुपाए रखा। कोई भी यह पुष्टि नहीं कर सकता था कि वह कांपी थीं या शरमाई थीं, कि उनका दिल कांप उठा था या उनकी नसें फड़क उठी थीं; कोई भी उनकी भावनाओं को साबित नहीं कर सकता था; इससे कम भावुक अभिवादन कभी नहीं हुआ था। मूर उनके पास, मिस कील्डर के सामने वाली खाली कुर्सी पर बैठ गए। उन्होंने खुद को सही जगह पर बैठाया था। अपने पड़ोस की निकटता के कारण उसकी नजरों से बचा हुआ और हर पल गहराते अंधेरे से और भी सुरक्षित, उसका पड़ोसी जल्द ही न केवल

दिखावटी बल्कि वास्तविक रूप से उन भावनाओं पर काबू पा लेता है जो उसके नाम की पहली घोषणा के साथ ही विद्रोह में बदल गई थीं।

उन्होंने अपनी बातचीत मिस कील्डर से की।

उन्होंने कहा, “मैं बैरक गया और कर्नल राइड से मुलाकात की। उन्होंने मेरी योजनाओं को मंजूरी दे दी और मुझे मनचाही सहायता देने का वादा किया। दरअसल, उन्होंने मेरी जरूरत से कहीं ज्यादा सैनिक देने की पेशकश की – आधे दर्जन ही काफी होंगे। मैं लाल वर्दी वाले सैनिकों से घिरना नहीं चाहता। उनकी जरूरत सिर्फ दिखावे के लिए है, किसी और चीज के लिए नहीं। मेरी पूरी निर्भरता अपने ही नागरिकों पर है।”

“और उनके कप्तान पर,” शर्ली ने बीच में टोकते हुए कहा।

“क्या, कैप्टन कील्डर?” मूर ने हल्की मुस्कान के साथ पूछा, और अपनी आँखें ऊपर नहीं उठाईं। उनके इस कथन में व्यंग्य का भाव बहुत ही सम्मानजनक और संयमित था।

"नहीं," शर्ली ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया; "कैप्टन गेरार्ड मूर, जो अपने दाहिने हाथ की ताकत पर बहुत भरोसा करते हैं, मेरा मानना है।"

“अपने लेखा-जोखा रखने वाले रूलर के साथ,” मूर ने आगे कहा। अपनी सामान्य गंभीरता को दोहराते हुए उन्होंने कहा, “आज शाम डाक से मुझे गृह सचिव का मेरे पत्र के उत्तर में एक पत्र मिला है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे उत्तर में यहाँ की स्थिति से चिंतित हैं; वे विशेष रूप से मिल मालिकों की निष्क्रियता और कायरता की निंदा करते हैं। वे कहते हैं, जैसा कि मैं हमेशा कहता आया हूँ, कि वर्तमान परिस्थितियों में निष्क्रियता एक अपराध है, और कायरता क्रूरता है, क्योंकि दोनों ही केवल अव्यवस्था को बढ़ावा दे सकती हैं और अंततः रक्तपात को जन्म दे सकती हैं। यह रहा पत्र - मैं इसे आपके अवलोकन के लिए लाया हूँ; और साथ में कुछ समाचार पत्र भी हैं, जिनमें नॉटिंघम, मैनचेस्टर और अन्य जगहों की कार्यवाही का विस्तृत विवरण है।”

उन्होंने पत्र और डायरी निकालीं और मिस कील्डर के सामने रख दीं। जब वह उन्हें पढ़ रही थीं, तब उन्होंने चुपचाप चाय पी; हालांकि उनकी जुबान बंद थी, लेकिन उनकी अवलोकन क्षमता बिल्कुल भी निष्क्रिय नहीं लग रही थी। पीछे बैठी श्रीमती प्रायर उनकी नजर में नहीं आईं, लेकिन दोनों युवा महिलाओं को उनकी नजर का पूरा लाभ मिला।

ठीक सामने बैठी मिस कील्डर को देखना आसान था। जब उनकी नज़रें उठीं, तो

सबसे पहले उन्हीं पर पड़ीं; और जैसे-जैसे दिन का बचा हुआ प्रकाश—पश्चिम की सुनहरी रोशनी—उन पर पड़ रहा था, उनकी आकृति पीछे के अंधेरे पैनल से उभरकर सामने आ रही थी। शर्ली के साफ़ गालों पर अभी भी वही लालिमा थी जो कुछ मिनट पहले आई थी। पढ़ते समय नीचे झुकी उनकी पलकें, उनकी भौहों की धुंधली लेकिन नाज़ुक रेखा, उनके घुंघराले बालों की लगभग काली चमक, उनके निखरे रंग को एक लाल जंगली फूल की तरह सुंदर बना रही थीं। उनके हाव-भाव में स्वाभाविक शालीनता थी, और उनके रेशमी वस्त्र की भरपूर और चमकदार तहों में कलात्मक प्रभाव था—एक ऐसा पहनावा जो सादगी से बना था, लेकिन उसके रंग की बदलती चमक से लगभग भव्य लग रहा था, ताना-बाना गहरे और बदलते रंगों का था, जैसे तीतर की गर्दन का रंग। उनकी बांह पर चमकता हुआ कंगन सोने और हाथीदांत का विरोधाभास पैदा कर रहा था। पूरे दृश्य में कुछ चमक थी। ऐसा माना जा सकता है कि मूर ने ऐसा ही सोचा होगा, क्योंकि उनकी नज़र उस पर काफी देर तक टिकी रही, लेकिन वे शायद ही कभी अपने भावों या विचारों को अपने चेहरे पर प्रकट होने देते थे। उनके स्वभाव में एक निश्चित संयम था, और वे किसी भी अन्य रूप की तुलना में एक शांत, सौम्य नहीं, बल्कि गंभीर रूप को प्राथमिकता देते थे।

सीधे सामने देखते हुए वह कैरोलिन को नहीं देख पा रहा था, क्योंकि वह उसके पास ही बैठी थी। इसलिए, उसे अपनी दृष्टि सीमा में लाने के लिए उसे थोड़ा सा हिलना-डुलना पड़ा। वह अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गया और उसे नीचे देखने लगा। मिस हेलस्टोन में न तो उसे और न ही किसी और को कोई चमक दिखाई दी। छाया में बैठी, बिना फूलों या गहनों के, सादे मलमल के वस्त्र में, जिसमें हल्के नीले रंग की पतली पट्टी के अलावा कोई रंग नहीं था, उसका चेहरा शांत और भावहीन था, उसके बाल और आँखों का भूरापन भी इस धुंधली रोशनी में दिखाई नहीं दे रहा था। उत्तराधिकारी की तुलना में, वह एक सुंदर पेंसिल स्केच और एक जीवंत पेंटिंग जैसी लग रही थी। रॉबर्ट ने उसे आखिरी बार देखने के बाद से उसमें बहुत बड़ा बदलाव आ गया था। क्या उसने इसे महसूस किया, यह पता नहीं चल सका। उसने इस बारे में कुछ नहीं कहा।

“होर्टेंस कैसी है?” कैरोलिन ने धीरे से पूछा।

“बहुत अच्छा; लेकिन वह बेरोजगार होने की शिकायत करती है। वह तुम्हें याद करती है।”

"उसे बताना कि मुझे उसकी याद आती है, और मैं हर दिन फ्रेंच का कुछ हिस्सा लिखता और पढ़ता हूं।"

“वह पूछेगी कि क्या तुमने अपना प्यार भेजा था; वह इस बात को लेकर हमेशा बहुत सतर्क रहती है। तुम्हें पता है कि उसे ध्यान आकर्षित करना पसंद है।”

“मेरी सबसे प्यारी – मेरी सबसे प्रिय। और उससे कहना कि जब भी उसे समय मिले, मुझे एक छोटा सा पत्र लिख दे, तो मुझे उससे सुनकर बहुत खुशी होगी।”

"अगर मैं भूल जाऊं तो क्या होगा? मैं तारीफें पहुंचाने में उतना माहिर नहीं हूं।"

“नहीं, रॉबर्ट, यह मत भूलो। यह कोई प्रशंसा नहीं है; यह पूरी गंभीरता से कहा गया है।”

और इसलिए, इसे समय पर पहुंचाया जाना चाहिए।

"यदि आप कृपा करके।"

“होर्टेन्स की आंखों में आंसू आ जाएंगे। वह अपने शिष्य के प्रति बहुत संवेदनशील है; फिर भी वह कभी-कभी तुम्हें अपने चाचा के आदेशों का अक्षरशः पालन करने के लिए फटकारती है। स्नेह, प्रेम की तरह, कभी-कभी अन्यायपूर्ण भी हो सकता है।”

कैरोलीन ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया; दरअसल उसका दिल बहुत परेशान था, और अगर हिम्मत होती तो वो अपनी आँखों के सामने अपना रुमाल उठा लेती। अगर हिम्मत होती तो वो ये भी कह देती कि हॉलो कॉटेज के बगीचे के फूल भी उसे कितने प्यारे थे; उस घर का छोटा सा कमरा उसके लिए धरती का स्वर्ग था; वो वहाँ वापस जाने के लिए कितनी तड़प रही थी, ठीक वैसे ही जैसे पहली स्त्री अपने निर्वासन में ईडन में वापस जाने के लिए तरस रही होगी। लेकिन ये सब कहने की हिम्मत न होने के कारण वो चुप रही; वो रॉबर्ट के पास चुपचाप बैठी रही, उसके कुछ और कहने का इंतज़ार करती रही। उसे इतने लंबे समय से ये नज़दीकी नहीं मिली थी—इतने लंबे समय से उसकी आवाज़ ने उसे संबोधित नहीं किया था; अगर वो किसी भी तरह से ये कल्पना कर सकती कि इस मुलाकात से उसे खुशी मिली है, तो उसे इससे बहुत आनंद मिलता। फिर भी, इस संदेह के बावजूद कि उसे खुशी मिली है या नहीं, इस डर के साथ कि कहीं उसे बुरा न लगे, उसने इस मुलाकात को उसी तरह स्वीकार किया जैसे पिंजरे में बंद पक्षी को धूप मिलने पर खुशी मिलती है। वर्तमान सुख की अनुभूति के विरुद्ध तर्क-वितर्क करना व्यर्थ था; रॉबर्ट के निकट रहना ही पुनर्जीवन के समान था।

मिस कील्डर ने कागजात नीचे रख दिए।

"और इन सभी बुरी खबरों से आप खुश हैं या दुखी?" उसने अपने किरायेदार से पूछा।

“बिल्कुल नहीं; लेकिन मुझे निर्देश जरूर मिले हैं। मैं समझता हूँ कि हमारी एकमात्र योजना दृढ़ रहना है। मैं समझता हूँ कि प्रभावी तैयारी और दृढ़ रवैया ही रक्तपात को रोकने का सबसे अच्छा तरीका है।”

फिर उन्होंने पूछा कि क्या उन्होंने कोई विशेष अनुच्छेद देखा है, जिस पर उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया, और वे उन्हें दिखाने के लिए उठ खड़े हुए। उन्होंने उनके सामने खड़े होकर बातचीत जारी रखी। उनकी बातों से स्पष्ट प्रतीत हुआ कि दोनों को ब्रायर्फ़ील्ड के आसपास अशांति की आशंका थी, हालांकि वे किस रूप में अशांति की आशंका जता रहे थे, यह स्पष्ट नहीं किया गया था। न तो कैरोलीन और न ही श्रीमती प्रायर ने कोई प्रश्न पूछा। ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि यह विषय खुलकर चर्चा के लिए उपयुक्त था; इसलिए महिला और उनकी किरायेदार को अपने श्रोताओं की जिज्ञासा से बेपरवाह रहते हुए, विवरण अपने तक ही सीमित रखने दिया गया।

मिस कील्डर, मिस्टर मूर से बात करते समय, एक साथ जीवंत और गरिमामय, गोपनीय और आत्मसम्मान से भरी हुई थीं। लेकिन जब मोमबत्तियाँ लाई गईं, आग तेज की गई और भरपूर रोशनी से उनके चेहरे के भाव स्पष्ट हो गए, तो आप देख सकते थे कि वे पूरी तरह से रुचि, जीवंतता और गंभीरता से भरी हुई थीं। उनके व्यवहार में जरा भी नखरे नहीं थे; मूर के लिए उनके मन में जो भी भावनाएँ थीं, वे उन्हें गंभीरता से महसूस करती थीं। और मूर की भावनाएँ भी गंभीर थीं, और उनके विचार भी दृढ़ थे, क्योंकि उन्होंने आकर्षित करने, चकाचौंध करने या प्रभावित करने का कोई छोटा-मोटा प्रयास नहीं किया। फिर भी, उन्होंने थोड़ा दबदबा बनाने की कोशिश की; क्योंकि उनकी गहरी आवाज़, चाहे कितनी भी सौम्य क्यों न हो, और उनका थोड़ा कठोर मन, कभी-कभी, अनजाने में ही सही, किसी आदेशात्मक वाक्य या लहजे से शर्ली के कोमल और संवेदनशील स्वभाव को दबा देता था। मिस कील्डर उनसे बातचीत करते हुए खुश नजर आ रही थीं, और उनकी खुशी दोहरी प्रतीत हो रही थी - अतीत और वर्तमान की खुशी, स्मृति और आशा की खुशी।

मैंने अभी जो कुछ कहा है, वो कैरोलीन के उस जोड़े के बारे में विचार हैं। उसने वही महसूस किया जो अभी बताया गया है। इस तरह महसूस करते हुए उसने कष्ट न

सहने की कोशिश की, फिर भी उसे तीव्र पीड़ा हुई। वास्तव में, उसे बहुत कष्ट हुआ। कुछ ही मिनट पहले उसके भूखे दिल को पोषण की एक बूँद और एक टुकड़ा मिला था, जो अगर उसे भरपूर मात्रा में मिलता, तो उसके जीवन में फिर से खुशियाँ भर देता; लेकिन वह भरपूर दावत उससे छीन ली गई, दूसरे के सामने परोस दी गई, और वह उस भोज में केवल एक दर्शक बनकर रह गई।

घड़ी में नौ बज चुके थे; कैरोलीन के घर जाने का समय हो गया था। उसने अपना सारा काम समेटा, कढ़ाई का सामान, कैंची और अंगुली रखने वाला यंत्र अपने थैले में रख लिया। उसने श्रीमती प्रायर को शांति से शुभ रात्रि कहा, और श्रीमती प्रायर ने हमेशा की तरह गर्मजोशी से उसका हाथ छुआ। वह मिस कील्डर के पास गई।

शुभ रात्रि, शर्ली!

शर्ली चौंक गई। "क्या! इतनी जल्दी? क्या तुम अभी जा रहे हो?"

“नौ बज चुके हैं।”

“मैंने घड़ी की आवाज़ नहीं सुनी। तुम कल फिर आओगे, और आज रात खुश रहोगे, है ना? हमारी योजनाओं को याद रखना।”

“हां,” कैरोलिन ने कहा; “मैं भूली नहीं हूं।”

उसके मन में यह आशंका थी कि न तो वे योजनाएँ और न ही कोई अन्य योजना उसकी मानसिक शांति को स्थायी रूप से बहाल कर सकती हैं। उसने रॉबर्ट की ओर देखा, जो उसके ठीक पीछे खड़ा था। जैसे ही उसने ऊपर देखा, मेंटलपीस पर रखी मोमबत्तियों की रोशनी सीधे उसके चेहरे पर पड़ी। उसके चेहरे की सारी पीलापन, सारा बदलाव, उसका सारा उदास अर्थ स्पष्ट रूप से प्रकट हो गया। रॉबर्ट की आँखें तेज़ थीं, और अगर वह चाहता तो शायद इसे देख लेता; उसने देखा या नहीं, इसका कोई संकेत नहीं था।

"शुभ रात्रि!" उसने कांपते हुए कहा, मानो पत्ते की तरह कांप रही हो, और उससे जल्दी विदा होने की बेचैनी में उसने अपना पतला हाथ जल्दबाजी में आगे बढ़ाया।

“तुम घर जा रही हो?” उसने उसका हाथ छुए बिना पूछा।

"हाँ।"

क्या फैनी तुम्हें लेने आई है?

"हाँ।"

"मैं आपके साथ एक कदम चल सकता हूँ; लेकिन पादरी के निवास तक नहीं,

कहीं ऐसा न हो कि मेरा पुराना दोस्त हेलस्टोन मुझे खिड़की से गोली मार दे।"

वह हँसा और अपनी टोपी उतार ली। कैरोलीन ने बेवजह की परेशानी की बात कही; उसने उसे अपनी टोपी और शॉल पहनने को कहा। वह जल्दी से तैयार हो गई और जल्द ही दोनों खुली हवा में आ गए। मूर ने अपने पुराने अंदाज़ में उसका हाथ अपनी बांह के नीचे रख लिया—वही अंदाज़ जो उसे हमेशा बहुत दयालु लगता था।

"फैनी, तुम दौड़ती रहो," उसने नौकरानी से कहा; "हम तुम्हें पकड़ लेंगे।" और जब लड़की थोड़ी आगे निकल गई, तो उसने कैरोलीन का हाथ अपने हाथ में लिया और कहा कि उसे यह जानकर खुशी हुई कि वह फील्डहेड में एक जानी-पहचानी मेहमान है। उसने आशा जताई कि मिस कील्डर के साथ उसकी घनिष्ठता बनी रहेगी; ऐसा साथ सुखद और लाभकारी होगा।

कैरोलिन ने जवाब दिया कि उसे शर्ली पसंद है।

"और इसमें कोई शक नहीं कि पसंद आपसी है," मूर ने कहा। "अगर वह दोस्ती का दावा करती है, तो यकीन मानिए कि वह सच्ची है। वह दिखावा नहीं कर सकती; वह पाखंड से नफरत करती है। और, कैरोलीन, क्या हम तुम्हें हॉलो कॉटेज में फिर कभी नहीं देखेंगे?"

"मुझे नहीं लगता, जब तक कि मेरे चाचा अपना मन न बदल लें।"

"क्या आप आजकल बहुत अकेले रहते हैं?"

"हां, काफी हद तक। मुझे मिस कील्डर के अलावा किसी और के साथ रहने में कोई खास आनंद नहीं आता।"

"क्या आप आजकल ठीक हैं?"

"अत्यंत।"

"आपको अपना ख्याल रखना चाहिए। व्यायाम करना न भूलें। क्या आपको पता है कि मुझे आपमें कुछ बदलाव नज़र आया – आप थोड़े मुरझाए हुए और पीले लग रहे थे। क्या आपके चाचा आपसे अच्छा व्यवहार करते हैं?"

"हां; वह बिल्कुल वैसा ही है जैसा वह हमेशा से रहा है।"

"बहुत ज्यादा कोमल मत बनो, मतलब बहुत ज्यादा सुरक्षात्मक और ध्यान देने वाली भी नहीं। और तुम्हें क्या तकलीफ है? बताओ, लीना।"

"कुछ नहीं, रॉबर्ट।" लेकिन उसकी आवाज लड़खड़ा गई।

"कहने का मतलब है, जो कुछ भी तुम मुझे बताओगे नहीं। मुझ पर भरोसा नहीं

किया जा सकता। क्या अलगाव का मतलब हमें और भी अलग कर देना है?"

मुझे नहीं पता। कभी-कभी तो मुझे लगभग डर लगता है कि ऐसा ही है।

लेकिन इसका ऐसा प्रभाव नहीं होना चाहिए। क्या पुराने परिचितों और बीते दिनों को भुला देना चाहिए?

“रॉबर्ट, मैं भूलता नहीं हूँ।”

"कैरोलीन, मुझे लगता है कि तुम्हें कॉटेज में आए हुए दो महीने हो गए हैं।"

"चूंकि मैं इसके दायरे में था - हां।"

"क्या आप कभी टहलते हुए उस रास्ते से गुजरे हैं?"

“मैं कभी-कभी शाम के समय खेतों के ऊपर आकर नीचे देखता था। एक बार मैंने होर्टेंस को बगीचे में अपने फूलों को पानी देते हुए देखा था, और मुझे पता है कि आप लेखा-भवन में किस समय अपना दीपक जलाती हैं। मैं कभी-कभी उसके चमकने का इंतज़ार करता था, और मैंने आपको दीपक और खिड़की के बीच झुकते हुए देखा था। मैं जानता था कि यह आप ही हैं; मैं लगभग आपकी आकृति की रूपरेखा देख सकता था।”

मुझे आश्चर्य है कि मेरी आपसे कभी मुलाकात नहीं हुई। मैं कभी-कभी सूर्यास्त के बाद हॉलो के खेतों के ऊपरी हिस्से तक पैदल जाता हूँ।

“मुझे पता है तुम ऐसा करते हो। एक रात मैं तुमसे बात करने ही वाला था, तुम मेरे बहुत करीब से गुज़रे थे।”

“क्या मैंने देखा? मैं तुम्हारे पास से गुजरा था, और मैंने तुम्हें नहीं देखा! क्या मैं अकेला था?”

मैंने तुम्हें दो बार देखा, और दोनों बार तुम अकेले नहीं थे।

"मेरा साथी कौन था? शायद जो स्कॉट के अलावा कोई नहीं, या चांदनी रात में मेरी अपनी परछाई।"

“नहीं; न तो जो स्कॉट, न ही तुम्हारी परछाई, रॉबर्ट। पहली बार तुम मिस्टर यॉर्क के साथ थे; और दूसरी बार जिसे तुम अपनी परछाई कहते हो, वह एक आकृति थी जिसका माथा सफेद था, काले घुंघराले बाल थे और गले में एक चमकीला हार था। लेकिन मैंने तुम्हें और उस परी जैसी परछाई को बस एक झलक ही देखी; मैंने तुम्हारी बातचीत सुनने का इंतजार नहीं किया।”

“ऐसा लगता है जैसे तुम अदृश्य होकर चलते हो। आज शाम मैंने तुम्हारे हाथ में

एक अंगूठी देखी; क्या यह गाइगेस की अंगूठी हो सकती है? अब से, जब मैं लेखा-गृह में अकेला बैठा रहूंगा, शायद आधी रात को, तो मैं यह कल्पना करने की अनुमति दूंगा कि कैरोलीन मेरे कंधे पर झुककर मेरे साथ वही किताब पढ़ रही होगी, या मेरे बगल में बैठकर अपने किसी काम में लगी होगी, और कभी-कभी अपनी अदृश्य आँखें मेरे चेहरे की ओर उठाकर मेरे विचारों को पढ़ रही होगी।"

"तुम्हें ऐसी किसी पीड़ा से डरने की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारे पास नहीं आता; मैं बस दूर खड़ा होकर देखता रहता हूँ कि तुम्हारा क्या होगा।"

"जब चक्की बंद होने के बाद शाम को मैं झाड़ियों के किनारे टहलने निकलता हूँ, या रात में जब मैं चौकीदार की ड्यूटी करता हूँ, तो मुझे हर छोटे पक्षी का अपने घोंसले पर फड़फड़ाना, हर पत्ते की सरसराहट, तुम्हारी हर हरकत महसूस होती है; पेड़ों की परछाइयाँ तुम्हारा रूप धारण कर लेती हैं; सफेद कंटीली झाड़ियों में मैं तुम्हारी झलक देखता हूँ। लीना, तुम मुझे सताती रहोगी।"

मैं कभी भी वहां नहीं रहूंगा जहां आप मुझे नहीं देखना चाहते, न ही मैं वह देखूंगा और न ही सुनूंगा जो आप अनदेखा और अनसुना करना चाहते हैं।

"मैं तुम्हें अपनी चक्की में दिन दहाड़े देखूंगा। वास्तव में, मैंने तुम्हें वहाँ एक बार देखा है। लेकिन एक सप्ताह पहले मैं अपने एक लंबे कमरे के ऊपरी हिस्से में खड़ा था; लड़कियाँ दूसरे छोर पर काम कर रही थीं, और उनमें से लगभग आधा दर्जन इधर-उधर घूम रही थीं, तभी मुझे तुम्हारी जैसी एक आकृति दिखाई दी। यह किसी अस्पष्ट प्रकाश या छाया, या चकाचौंध कर देने वाली धूप का प्रभाव था। मैं उस समूह के पास गया। जिसे मैं खोज रहा था, वह गायब हो गया था; मैंने खुद को दो सुडौल युवतियों के बीच पाया, जिन्होंने एप्रन पहन रखे थे।"

"रॉबर्ट, मैं तुम्हारे चक्की में तुम्हारे साथ तब तक नहीं आऊंगा जब तक तुम मुझे वहाँ नहीं बुलाओगे।"

"और यह इकलौता मौका नहीं है जब मेरी कल्पना ने मुझे धोखा दिया हो। एक रात, जब मैं बाजार से देर से घर लौटी, तो मैं होर्टेंस को ढूंढने की उम्मीद में झोपड़ी के बैठक कक्ष में गई; लेकिन उसके बजाय मुझे लगा कि मैंने तुम्हें पाया है। कमरे में कोई मोमबत्ती नहीं थी; मेरी बहन रोशनी ऊपर ले गई थी। खिड़की का पर्दा नहीं लगा था, और चौड़ी चाँदनी खिड़कियों से अंदर आ रही थी। तुम वहाँ थी, लीना, खिड़की के पास, थोड़ा एक तरफ झुकी हुई, जैसा कि तुम अक्सर करती हो। तुमने सफेद कपड़े

पहने थे, जैसा मैंने तुम्हें शाम की पार्टी में देखा था। आधे पल के लिए तुम्हारा ताजा, जीवंत चेहरा मेरी ओर मुड़ा हुआ, मुझे देखता हुआ प्रतीत हुआ; आधे पल के लिए मेरा विचार था कि जाकर तुम्हारा हाथ पकड़ लूँ, तुम्हारी लंबे समय से अनुपस्थिति के लिए तुम्हें डांटूँ और तुम्हारे आने का स्वागत करूँ। दो कदम आगे बढ़ते ही यह भ्रम टूट गया। पोशाक का आकार बदल गया; चेहरे की रंगत घुल गई, और आकारहीन हो गई। वास्तव में, जैसे ही मैं उस जगह पर पहुँची, वहाँ एक सफेद मलमल के पर्दे के अलावा कुछ भी नहीं बचा था, और एक एक गमले में लगा बलसम का पौधा, फूलों से लबालब भरा हुआ। 'Sic transit,' इत्यादि।

"तो क्या वह मेरी आत्मा नहीं थी? मुझे तो लगभग यही लगा था।"

"नहीं; केवल जालीदार कपड़ा, मिट्टी के बर्तन और गुलाबी फूल — सांसारिक भ्रमों का एक नमूना।"

मुझे आश्चर्य होता है कि आपके पास ऐसे भ्रमों के लिए समय कैसे मिल जाता है, जबकि आपका दिमाग तो हमेशा व्यस्त रहता होगा।

"मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ। लेकिन लीना, मुझे अपने अंदर दो स्वभाव दिखाई देते हैं—एक दुनिया और व्यापार के लिए, और दूसरा घर और आराम के लिए। गेरार्ड मूर एक सख्त मिजाज इंसान है, जो मिल और बाजार में पला-बढ़ा है; जिसे तुम अपना चचेरा भाई रॉबर्ट कहती हो, वह कभी-कभी एक स्वप्नदृष्टा होता है, जो क्लॉथ-हॉल और लेखा-घर से परे कहीं और रहता है।"

"आपकी दोनों विशेषताएं आप पर खूब जंचती हैं। मुझे लगता है कि आप अच्छे मूड और सेहत में हैं। आपके चेहरे से वह परेशान करने वाला भाव पूरी तरह गायब हो गया है, जिसे कुछ महीने पहले देखकर अक्सर दुख होता था।"

"क्या आपने यह देखा? निश्चित रूप से मैं कुछ कठिनाइयों से मुक्त हो गया हूँ। मैं कुछ बाधाओं से बच निकला हूँ, और मेरे पास समुद्र में अधिक जगह है।"

"और, अनुकूल हवा के साथ, अब आप एक सफल यात्रा की उम्मीद कर सकते हैं?"

"मैं इसकी आशा तो कर सकता हूँ—हाँ—पर आशा भ्रामक होती है। हवा या लहरों का कोई नियंत्रण नहीं होता। हवा के झोंके और ज्वार-भाटे नाविक के मार्ग को निरंतर बाधित करते रहते हैं; वह अपने मन से तूफान की आशंका को दूर नहीं कर सकता।"

लेकिन आप हल्की हवा के लिए तैयार हैं; आप एक अच्छे नाविक हैं, एक सक्षम कमांडर हैं। आप एक कुशल पायलट हैं, रॉबर्ट; आप तूफान का सामना कर लेंगे।

मेरी रिश्तेदार हमेशा मेरे बारे में अच्छी राय रखती है, लेकिन मैं उसकी बातों को शुभ संकेत मानूंगा। मैं यह मानूंगा कि आज रात उससे मिलकर मेरी मुलाकात उन पक्षियों में से एक से हुई है, जिनका दिखना नाविक के लिए सौभाग्य का संदेशवाहक होता है।

"वह जो कुछ नहीं कर सकती, जिसके पास कोई शक्ति नहीं है, वह सौभाग्य की बुरी सूचक है। मैं अपनी अक्षमता को महसूस करती हूँ। यह कहना व्यर्थ है कि मेरे पास आपकी सेवा करने की इच्छा है जब मैं इसे साबित नहीं कर सकती। फिर भी मेरे पास वह इच्छा है। मैं आपकी सफलता की कामना करती हूँ। मैं आपके लिए अपार समृद्धि और सच्ची खुशी की कामना करती हूँ।"

"तुमने मुझे इससे ज़्यादा कुछ चाहा ही कब? फैनी किस बात का इंतज़ार कर रही है? मैंने उसे आगे चलने को कहा था। ओह! हम कब्रिस्तान पहुँच गए। तो लगता है हमें यहीं अलग होना पड़ेगा। अगर वो लड़की हमारे साथ न होती तो हम कुछ मिनट चर्च के बरामदे में बैठ सकते थे। रात कितनी सुहावनी है, गर्मी की तरह हल्की और शांत, मुझे अभी हॉलो लौटने की कोई खास इच्छा नहीं है।"

"लेकिन हम अभी बरामदे में नहीं बैठ सकते, रॉबर्ट।"

कैरोलिन ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मूर उसे उस ओर घुमा रही थी।

"शायद नहीं। लेकिन फैनी को अंदर जाने के लिए कहो। कहो कि हम आ रहे हैं। कुछ मिनटों से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

गिरजाघर की घड़ी में दस बज गए।

"मेरे चाचा अपनी नियमित गश्त लगाने के लिए बाहर आएंगे, और वे हमेशा चर्च और कब्रिस्तान का जायजा लेते हैं।"

और अगर वो आ भी जाए तो? अगर फैनी न होती, जिसे पता है कि हम यहाँ हैं, तो मुझे उससे बच निकलने और उसे चकमा देने में मज़ा आता। जब वो बरामदे में हो, तो हम पूरब की खिड़की के नीचे छिप सकते थे; जैसे ही वो उत्तर की तरफ आता, हम दक्षिण की ओर मुड़ सकते थे; ज़रूरत पड़ने पर हम किसी स्मारक के पीछे भी छिप सकते थे। विनेस की वो विशाल इमारत हमें पूरी तरह से छिपा देती।

"रॉबर्ट, तुम कितने खुश हो! जाओ! जाओ!" कैरोलिन ने जल्दी से कहा। "मुझे

सामने के दरवाजे की आवाज सुनाई दे रही है—”

मैं जाना नहीं चाहता; बल्कि मैं यहीं रहना चाहता हूँ।

“तुम्हें पता है मेरे चाचा बहुत गुस्सा होंगे। उन्होंने मुझे तुमसे मिलने से मना किया है क्योंकि तुम जैकोबिन हो।”

“एक विचित्र जैकोबिन!”

"जाओ, रॉबर्ट, वह आ रहा है; मुझे उसकी खांसी की आवाज सुनाई दे रही है।"

“अरे बाप रे! ये तो अजीब है – मुझे यहाँ रहने की कितनी प्रबल इच्छा हो रही है!”

“तुम्हें याद है उसने फैनी के साथ क्या किया था—” कैरोलीन ने कहना शुरू किया और अचानक रुक गई। “प्रेमी” वह शब्द था जो उसे बोलना चाहिए था, लेकिन वह बोल नहीं पाई। ऐसा लग रहा था कि यह शब्द उन विचारों को इंगित करने के लिए बनाया गया था जिन्हें वह व्यक्त नहीं करना चाहती थी— भ्रामक और परेशान करने वाले विचार। मूर कम संकोची था। “फैनी का प्रेमी?” उसने तुरंत कहा। “उसने उसे पंप के नीचे नहलाया था, है ना? मुझे यकीन है कि वह मेरे लिए भी ऐसा ही करेगा, खुशी-खुशी। मैं उस बूढ़े तुर्क को उकसाना चाहता हूँ—लेकिन तुम्हारे खिलाफ नहीं। लेकिन वह चचेरे भाई और प्रेमी में फर्क करेगा, है ना?”

“अरे, वो तुम्हारे बारे में ऐसा नहीं सोचेगा, बिलकुल नहीं; तुम्हारा उससे झगड़ा पूरी तरह से राजनीतिक है। फिर भी मैं नहीं चाहता कि दरार और चौड़ी हो, और वो बहुत चिड़चिड़ा है। देखो, वो बगीचे के द्वार पर खड़ा है। अपनी और मेरी भलाई के लिए, रॉबर्ट, जाओ!”

विनती भरे शब्दों के साथ-साथ एक और भी विनती भरा इशारा और नज़र भी थी। मूर ने एक पल के लिए उसके जुड़े हुए हाथों को अपने हाथों में लिया, ऊपर की ओर इशारा करते हुए नीचे की ओर हाथ बढ़ाया, नज़र से "शुभ रात्रि!" कहा और चला गया।

कैरोलिन पलक झपकते ही फैनी के पीछे रसोई के दरवाजे पर पहुँच गई। ठीक उसी क्षण फावड़े जैसी टोपी की छाया चाँदनी में डूबी एक कब्र पर पड़ी। पादरी अपने बगीचे से सीधे खड़े होकर निकले और अपने हाथ पीछे करके धीरे-धीरे कब्रिस्तान की ओर चल दिए। मूर लगभग पकड़ा ही गया था। उसे आखिरकार "बचना" पड़ा, चर्च के चारों ओर घूमना पड़ा और अंत में विन्न्स के भव्य स्मारक के पीछे छिपना पड़ा। वहाँ उसे पूरे दस मिनट तक छिपना पड़ा, एक घुटना घास पर रखकर, टोपी उतारकर,

उसके घुंघराले बाल ओस में भीगे हुए, उसकी गहरी आँख चमक रही थी और वह अपनी स्थिति पर मन ही मन हँस रहा था; क्योंकि इस बीच पादरी उससे तीन फीट की दूरी पर खड़े होकर शांत भाव से तारों को निहार रहे थे और तंबाकू का सेवन कर रहे थे।

लेकिन हुआ यूं कि श्री हेलस्टोन को ज़रा भी शक नहीं था; क्योंकि उन्हें अपनी भतीजी की गतिविधियों की जानकारी आमतौर पर अस्पष्ट ही रहती थी और वे उनका बारीकी से पीछा करना उचित नहीं समझते थे, इसलिए उन्हें पता ही नहीं था कि वह उस दिन बाहर गई थी। उन्होंने सोचा कि वह अपने कमरे में किताब या काम में व्यस्त होगी - और वास्तव में, वह उस समय वहीं थी, हालांकि वह उस शांत काम में मग्न नहीं थी जैसा उन्होंने सोचा था, बल्कि धड़कते दिल के साथ खिड़की पर खड़ी थी, परदे के पीछे से बेचैनी से झाँक रही थी, अपने चाचा के वापस आने और अपने चचेरे भाई के भागने का इंतज़ार कर रही थी। और अंत में उसकी इच्छा पूरी हुई। उसने श्री हेलस्टोन को अंदर आते सुना; उसने रॉबर्ट को कब्रों की ओर चलते और दीवार फांदते देखा; फिर वह प्रार्थना करने नीचे चली गई। जब वह अपने कमरे में लौटी, तो उसे रॉबर्ट की याद सता रही थी। नींद का आगमन काफी देर तक टल गया। वह काफी देर तक अपनी खिड़की पर बैठी रही, पुराने बगीचे और पुराने चर्च को, चाँदनी में साफ और शांत दिख रही कब्रों को निहारती रही। वह रात के कदमों पर चलती रही, तारों से जगमगाते रास्ते पर, रात के अंधेरे में बहुत दूर तक। वह हर पल मूर के साथ थी, मानो उसके बगल में हो; वह उसकी आवाज़ सुन रही थी; उसने अपना हाथ उसके हाथ में रखा; उसका हाथ उसकी उंगलियों में गर्माहट से भर गया। जब चर्च की घड़ी बजी, जब कोई और आवाज़ सुनाई दी, जब उसके कमरे का एक छोटा सा चूहा - एक घुसपैठिया जिसके लिए वह फैनी को कभी जाल बिछाने नहीं देती - उसके लॉकेट की चेन, उसकी एक अंगूठी और टॉयलेट टेबल पर रखे एक-दो और गहनों के बीच खड़खड़ाहट करता हुआ आया और उसके लिए रखे बिस्कुट का एक टुकड़ा कुतरने लगा, तो उसने ऊपर देखा, मानो पल भर के लिए वास्तविकता में लौट आई हो। फिर उसने धीमी आवाज़ में कहा, मानो किसी अनदेखे और अनसुने निगरानीकर्ता के आरोप को नकार रही हो, "मैं प्रेम के सपने नहीं देख रही हूँ; मैं बस इसलिए सोच रही हूँ क्योंकि मुझे नींद नहीं आ रही है। बेशक, मुझे पता है कि वह शर्ली से शादी करेगा।"

लौटती शांति के साथ, घंटियों की मधुर ध्वनि के साथ, और अपने छोटे, अनछुए

और अनजान शिष्य के पीछे हटने के साथ, वह फिर से सपने में खो गई, उस कल्पना के पास सिमटकर—उसे सुनती, उससे बातें करती। अंततः वह धुंधली पड़ गई। जैसे-जैसे भोर करीब आई, डूबते तारों और उगते सूरज ने कल्पना की रचना को मंद कर दिया; पक्षियों के चहचहाने ने उसकी फुसफुसाहट को शांत कर दिया। आग से भरी, उत्सुकता से ओतप्रोत कहानी, सुबह की हवा में उड़कर, एक अस्पष्ट बड़बड़ाहट बन गई। वह आकृति, जो चाँदनी में जीवित, धड़कन से भरी, गतिमान, स्वास्थ्य की चमक और यौवन की ताजगी से परिपूर्ण दिखाई देती थी, सूर्योदय के लाल रंग के सामने ठंडी और भूतिया धूसर हो गई। वह नष्ट हो गई। अंततः वह अकेली रह गई। वह ठंड और निराशा से कांपते हुए अपने सोफे पर रेंग कर गई।

अध्याय 14.

शर्ली अपने कार्यों के माध्यम से मुक्ति पाना चाहती है।

"बेशक, मुझे पता है कि वह शर्ली से शादी करेगा," सुबह उठते ही उसके पहले शब्द थे। "और उसे उससे शादी करनी ही चाहिए। वह उसकी मदद कर सकती है," उसने दृढ़ता से कहा। "लेकिन शादी के बाद मुझे भुला दिया जाएगा," यह क्रूर विचार उसके मन में आया। "ओह! मैं तो पूरी तरह भुला दी जाऊंगी! और जब रॉबर्ट मुझसे पूरी तरह अलग हो जाएगा, तो मैं क्या करूंगी? मैं कहां जाऊंगी? मेरा रॉबर्ट! काश मैं उसे अपना कह पाती। लेकिन मैं दरिद्र और अक्षम हूं; शर्ली धन और शक्ति है। और वह सुंदरता और प्रेम भी है। मैं इससे इनकार नहीं कर सकती। यह कोई घटिया प्रस्ताव नहीं है। वह उससे प्रेम करती है - तुच्छ भावनाओं से नहीं। वह प्रेम करती है, या

करेगी, जैसे उसे प्रेम किए जाने पर गर्व महसूस होता होगा। इस पर कोई वैध आपत्ति नहीं की जा सकती। तो फिर उनकी शादी हो जाए। लेकिन उसके बाद मैं उसके लिए कुछ भी नहीं रहूंगी। उसकी बहन होने और इन सब बातों से मुझे घृणा है। रॉबर्ट जैसे आदमी के लिए मैं या तो सब कुछ रहूंगी या कुछ भी नहीं; कोई कमजोर दिखावा या झूठा ढोंग बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। एक बार जब वह जोड़ा एक हो जाए, तो मैं निश्चित रूप से उन्हें छोड़ दूंगी। जहां तक इधर-उधर भटकने, पाखंडी बनने और दोस्ती की भावनाओं को शांत करने का दिखावा करने की बात है, जब मेरी आत्मा अन्य भावनाओं से छलनी होगी, तो मैं ऐसी नीचता पर नहीं उतरूंगी। मैं उनके आपसी मित्र का स्थान भी नहीं भर सकती। उनके सबसे बड़े दुश्मन के बीच मैं खड़ी नहीं हो सकती थी, बल्कि उन्हें कुचल सकती थी। रॉबर्ट मेरी नज़र में एक बेहतरीन इंसान है। मैंने उससे प्यार किया है, करती हूँ और करती रहूँगी। अगर मुमकिन होता तो मैं उसकी पत्नी बन जाती; लेकिन चूंकि मैं ऐसा नहीं कर सकती, मुझे वहाँ जाना होगा जहाँ मैं उसे कभी नहीं देख पाऊँगी। मेरे पास बस एक ही रास्ता है - या तो उससे इस तरह जुड़ जाऊँ जैसे मैं उसका एक हिस्सा हूँ, या उससे गोले के दो ध्रुवों की तरह अलग हो जाऊँ। - हे ईश्वर, मुझे अलग कर दो। हमें जल्दी से अलग कर दो।

दोपहर ढलते ही कुछ ऐसी ही आकांक्षाएँ उसके मन में फिर से जाग उठीं, जब उसके विचारों में छाए रहने वाले एक पात्र की छवि बैठक कक्ष की खिड़की से गुजरी। मिस कील्डर धीरे-धीरे टहलती हुई गुजरीं, उनकी चाल, उनका चेहरा, उदासी और बेफिक्री के उस मिश्रण से सजी थी, जो शांत रहने पर उनके चेहरे और हाव-भाव का स्वाभाविक रूप था। जब वे उत्साहित होतीं, तो बेफिक्री पूरी तरह गायब हो जाती, उदासी एक सौम्य उल्लास में घुलमिल जाती, जिससे उनकी हंसी, मुस्कान और निगाहों में एक अनूठा भाव आ जाता, और उनकी हंसी कभी भी "बर्तन के नीचे कांटों की चटकने" जैसी नहीं लगती थी।

"तुमने जैसा वादा किया था, वैसा करके आज दोपहर मुझसे मिलने क्यों नहीं आई?" कमरे में प्रवेश करते ही उसने कैरोलिन से यह कहा।

"मैं उस मूड में नहीं थी," मिस हेलस्टोन ने बिल्कुल सच कहा।

शर्ली ने पहले ही उस पर पैनी नजर डाल रखी थी।

“नहीं,” उसने कहा; “मुझे लगता है कि तुम मुझसे प्यार करने के मूड में नहीं हो। तुम अपने उन उदास और चिड़चिड़े मूड में हो, जब किसी इंसान की मौजूदगी तुम्हें

अच्छी नहीं लगती। तुम ऐसे मूड में रहते हो। क्या तुम्हें इसका एहसास है?”

"क्या तुम यहाँ लंबे समय तक रुकने का इरादा रखती हो, शर्ली?"

“जी हां। मैं चाय पीने आया हूं, और जाने से पहले मुझे चाय पीनी ही होगी। इसलिए, बिना पूछे ही मैं अपनी टोपी उतारने की अनुमति ले रहा हूं।”

और उसने ऐसा ही किया, और फिर अपने हाथ पीछे करके कालीन पर खड़ी हो गई।

“तुम्हारे चेहरे पर कितना प्यारा भाव है,” वह कैरोलिन को अभी भी ध्यान से देख रही थी, हालांकि उसकी निगाहें शत्रुतापूर्ण नहीं थीं, बल्कि दया से भरी थीं। “तुम तो कमाल की आत्मनिर्भर दिख रही हो, एकांत की तलाश में निकली घायल हिरनी। क्या तुम्हें डर है कि अगर शर्ली को पता चला कि तुम घायल हो और खून बह रहा है, तो वह तुम्हें परेशान करेगी?”

मुझे शर्ली से कभी डर नहीं लगता।

लेकिन कभी-कभी तुम उसे नापसंद करती हो; अक्सर उससे बचती हो। शर्ली को महसूस हो जाता है जब उसका अपमान किया जाता है और उसे नज़रअंदाज़ किया जाता है। अगर तुम कल रात उन लोगों के साथ घर नहीं लौटी होती, तो आज तुम एक अलग लड़की होती। तुम पादरी के घर कितने बजे पहुँची थीं?

“दस से।”

“हम्म! एक मील चलने में तुम्हें पौने घंटे लग गए। क्या तुम इतने धीमे चल रहे थे या मूर?”

"शर्ली, तुम बकवास करती हो।"

“उसने बेतुकी बातें कीं—इसमें मुझे कोई शक नहीं; या फिर वो देखने में बेतुका लग रहा था, जो हज़ार गुना ज़्यादा बुरा है। इस समय मुझे तुम्हारी माथे पर उसकी आँखों का प्रतिबिंब दिखाई दे रहा है। अगर कोई भरोसेमंद साथी मिल जाए तो मेरा मन कर रहा है कि मैं उसे खरी-खोटी सुना दूँ। मैं बुरी तरह चिढ़ गई हूँ। कल रात भी मुझे ऐसा ही महसूस हुआ था और आज भी ऐसा ही महसूस हो रहा है।”

“तुम मुझसे यह मत पूछो कि क्यों,” उसने कुछ देर रुककर कहा, “तुम छोटे से चुप रहने वाले, हद से ज़्यादा संकोची इंसान; और तुम इस लायक नहीं हो कि मैं बिना बुलाए अपने सारे राज़ तुम्हारे सामने खोल दूँ। कसम से, कल शाम मैं मूर का पीछा करने के लिए पूरी तरह से तैयार थी। मेरे पास पिस्तौलें हैं, और मैं उनका इस्तेमाल

कर सकती हूँ।”

“अरे शर्ली! तुम किसे गोली मारतीं—मुझे या रॉबर्ट को?”

“दोनों में से कोई नहीं, शायद। शायद मैं खुद—ज़्यादा संभावना है कि मैं कोई चमगादड़ या पेड़ की डाल हूँ। वह एक पिल्ला है, तुम्हारा चचेरा भाई—एक शांत, गंभीर, समझदार, विवेकशील, महत्वाकांक्षी पिल्ला। मैं उसे अपने सामने खड़ा देखता हूँ, अपनी आधी सख्त, आधी नरम बातें करते हुए, अपने दृढ़ संकल्प से मुझे दबाते हुए (जैसा कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वह कर रहा है); और फिर—मुझे उससे कोई सब्र नहीं रहता!”

मिस कील्डर ने कमरे में तेजी से टहलना शुरू किया और पूरे जोश के साथ दोहराया कि उन्हें आम तौर पर पुरुषों से और विशेष रूप से अपने किरायेदार से कोई हमदर्दी नहीं है।

“आप गलत समझ रहे हैं,” कैरोलिन ने थोड़ी घबराहट के साथ कहा। “रॉबर्ट कोई भोला-भाला या आवारा नहीं है; मैं इस बात की गवाही दे सकती हूँ।”

“आप इसकी गारंटी दीजिए! क्या आपको लगता है कि मैं इस विषय पर आपकी बात मान लूंगा? आपकी गवाही से पहले मैं किसी और की गवाही पर विश्वास नहीं करूंगा। मूर की संपत्ति बढ़ाने के लिए आप अपना दाहिना हाथ भी काट सकते हैं।”

"लेकिन झूठ मत बोलो। और अगर मैं सच कहूँ तो, मुझे आपको यह विश्वास दिलाना होगा कि कल रात वह मेरे साथ बस सभ्य व्यवहार कर रहा था - बस इतना ही।"

“मैंने कभी नहीं पूछा कि वह कौन था। मैं अनुमान लगा सकती हूँ। मैंने खिड़की से देखा कि उसने मेरे गेट से बाहर जाते समय तुम्हारी लंबी उंगलियों में तुम्हारा हाथ पकड़ा।”

“यह तो कुछ भी नहीं है। मैं कोई अजनबी नहीं हूँ, आप जानते हैं। मैं आपका पुराना परिचित हूँ, और उसका चचेरा भाई हूँ।”

“मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है, बस यही बात है,” मिस कील्डर ने जवाब दिया। उन्होंने आगे कहा, “उसकी हरकतों से मेरी सारी खुशी छिन गई है। वह बार-बार तुम्हारे और मेरे बीच आ जाता है। उसके बिना हम अच्छे दोस्त होते; लेकिन उसकी बचकानी हरकतें हमारी दोस्ती पर लगातार ग्रहण लगा देती हैं। बार-बार वह उस चीज़ को ढक लेता है जिसे मैं हमेशा साफ़ देखना चाहती हूँ; और कभी-कभी वह मुझे तुम्हारे लिए

एक उबाऊ और परेशानी बना देता है।”

नहीं, शर्ली, नहीं।

“हाँ, बिल्कुल।” आज दोपहर आप मेरी संगति नहीं चाहते थे, और मुझे इसका बहुत दुख है। आप स्वभाव से थोड़े संकोची हैं, लेकिन मैं एक सामाजिक व्यक्ति हूँ, जो अकेले नहीं रह सकता। अगर हमें कोई परेशान न करे, तो मैं आपका इतना सम्मान करता हूँ कि मैं आपको हमेशा अपनी उपस्थिति में सहन कर सकता हूँ, और एक पल के लिए भी मैं आपसे छुटकारा नहीं चाहता। आप मेरे बारे में ऐसा नहीं कह सकते।

"शर्ली, मैं तुम्हारी कोई भी इच्छा पूरी कर सकता हूँ। शर्ली, मैं तुम्हें पसंद करता हूँ।"

"कल यरीहो में तुम मुझे याद करना, लीना।"

“मैं ऐसा नहीं करूँगा। मैं दिन-प्रतिदिन तुम्हारे साथ और अधिक सहज होता जा रहा हूँ—तुम्हें और अधिक पसंद करने लगा हूँ। तुम जानती हो कि मैं इतना अंग्रेज हूँ कि एक पल में किसी से गहरी दोस्ती नहीं कर लेता; लेकिन तुम आम युवतियों से कहीं बेहतर हो—तुम रोज़मर्रा की युवतियों से बिल्कुल अलग हो—मैं तुम्हारा सम्मान करता हूँ, तुम्हें महत्व देता हूँ; तुम मेरे लिए कभी बोझ नहीं हो—कभी नहीं। क्या तुम मेरी बात पर विश्वास करती हो?”

“कुछ हद तक,” मिस कील्डर ने थोड़ी अविश्वास भरी मुस्कान के साथ जवाब दिया; “लेकिन आप एक विलक्षण व्यक्तित्व हैं। आप भले ही शांत दिखते हों, लेकिन आपके भीतर कहीं एक ऐसी शक्ति और गहराई छिपी है जिसे आसानी से समझा या महसूस नहीं किया जा सकता। तो निश्चित रूप से आप खुश नहीं हैं।”

“और दुखी लोग शायद ही कभी अच्छे होते हैं। क्या आपका यही मतलब है?”

“बिल्कुल नहीं। मेरा मतलब यह है कि दुखी लोग अक्सर किसी बात में उलझे रहते हैं और मेरे जैसे लोगों से बात करने के मूड में नहीं होते। इसके अलावा, एक तरह का दुख ऐसा होता है जो न केवल निराश करता है, बल्कि खोखला कर देता है; और मुझे डर है कि यही तुम्हारा हिस्सा है। क्या दया दिखाने से तुम्हें कोई फायदा होगा, लीना? अगर होगा, तो शर्ली से थोड़ी दया ले लो; वह खुलकर दया दिखाती है और इस लेख की सच्चाई की गारंटी देती है।”

“शर्ली, मेरी कोई बहन नहीं थी— तुम्हारी भी कोई बहन नहीं थी; लेकिन इस पल

मुझे यह एहसास हो रहा है कि बहनें एक-दूसरे के लिए कैसा महसूस करती हैं— स्नेह उनके जीवन से जुड़ा होता है, जिसे भावनाओं का कोई आघात नहीं तोड़ सकता, छोटी-मोटी लड़ाइयाँ बस एक पल के लिए दबती हैं, और दबाव हटते ही वह और भी ताज़ा हो उठता है; ऐसा स्नेह जिसकी बराबरी कोई जुनून नहीं कर सकता, यहाँ तक कि प्रेम भी शक्ति और सच्चाई में उससे आगे नहीं बढ़ सकता। प्रेम हमें बहुत पीड़ा देता है, शर्ली। यह बहुत कष्टदायी, बहुत कष्टदायक होता है, और अपनी लौ से हमारी शक्ति को जला देता है। स्नेह में न दर्द है, न आग, केवल सहारा और मरहम। जब तुम —यानी सिर्फ तुम—मेरे पास होती हो, शर्ली, तो मुझे सहारा और सुकून मिलता है। क्या अब तुम मेरी बात मानती हो?"

"जब धर्म मुझे पसंद आता है तो मैं आसानी से विश्वास कर लेता हूँ। तो लीना, क्या हम वाकई दोस्त हैं, उस काले ग्रहण के बावजूद?"

"हम सचमुच ऐसा ही करेंगे," दूसरी ने शर्ली को अपनी ओर खींचते हुए और उसे बिठाते हुए कहा, "जो भी हो, किस्मत साथ देगी।"

"तो चलिए, हम उपद्रवी के अलावा किसी और विषय पर बात करते हैं।" लेकिन इसी क्षण पादरी अंदर आ गए, और मिस कील्डर जिस "किसी और विषय" के बारे में बात करने वाली थीं, उसका ज़िक्र उनके जाने तक दोबारा नहीं हुआ। फिर वह गलियारे में कुछ मिनट रुककर बोली, "कैरोलीन, मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ कि मेरे मन पर बहुत बोझ है; मेरा अंतरात्मा इतना बेचैन है मानो मैंने कोई अपराध किया हो या करने जा रही हूँ। तुम्हें समझना होगा कि यह मेरा निजी अंतरात्मा का दर्द नहीं है, बल्कि एक जमींदार और जागीरदार होने के नाते मेरा अंतरात्मा का दर्द है। मैं लोहे के पंजों वाले बाज के चंगुल में फँस गई हूँ। मैं एक कठोर प्रभाव में आ गई हूँ, जिसे मैं मुश्किल से ही स्वीकार करती हूँ, लेकिन विरोध भी नहीं कर सकती। मुझे डर है कि जल्द ही कुछ ऐसा होगा जिसके बारे में सोचना भी मुझे अच्छा नहीं लगता। अपने मन को शांत करने और जहाँ तक हो सके नुकसान को रोकने के लिए, मैं अच्छे कामों की एक श्रृंखला शुरू करने जा रही हूँ। इसलिए, अगर तुम मुझे अचानक बहुत उदार होते हुए देखो तो आश्चर्यचकित मत होना। मुझे नहीं पता कि शुरुआत कैसे करूँ, लेकिन तुम्हें मुझे कुछ सलाह देनी होगी। हम इस विषय पर कल और बात करेंगे; और कृपया उस उत्कृष्ट व्यक्ति, मिस ऐनली से अनुरोध है कि वे फील्डहेड आ जाएँ। मेरे मन में कुछ विचार है कि मैं मैं खुद को उनकी देखरेख में रखूंगा। क्या उन्हें एक अनमोल

शिष्य नहीं मिलेगा? लीना, उन्हें यह संकेत दे दो कि मैं भले ही नेक इरादे वाला हूं, लेकिन एक उपेक्षित व्यक्ति हूं, और फिर कपड़ों की सोसाइटियों और ऐसी चीजों के बारे में मेरी अज्ञानता पर उन्हें कम आपत्ति होगी।

अगले दिन कैरोलीन ने शर्ली को अपनी मेज पर गंभीर मुद्रा में बैठे पाया। उसके सामने एक हिसाब-किताब की किताब, नोटों का एक बंडल और एक भरा हुआ पर्स रखा था। वह बेहद गंभीर लग रही थी, लेकिन थोड़ी उलझन में भी थी। उसने बताया कि वह हॉल में साप्ताहिक घरेलू खर्चों पर नज़र रख रही थी, यह पता लगाने की कोशिश कर रही थी कि वह कहाँ कटौती कर सकती है; उसने यह भी बताया कि उसने अभी-अभी रसोइया श्रीमती गिल से मुलाकात की थी और उन्हें यह सोचकर विदा किया था कि उसका (शर्ली का) दिमाग ज़रूर खराब हो गया है। "मैंने उसे सावधानी बरतने के कर्तव्य पर उपदेश दिया," उसने कहा, "एक ऐसे तरीके से जो उसके लिए बिल्कुल नया था। मितव्ययिता के विषय पर मैं इतनी प्रभावशाली थी कि मैं खुद हैरान रह गई; क्योंकि, आप देखिए, यह बिल्कुल नया विचार है। मैंने हाल तक इस विषय पर कभी सोचा भी नहीं था, बोलना तो दूर की बात है। लेकिन यह सब सैद्धांतिक है; क्योंकि जब मैं व्यावहारिक पहलू पर आई तो मैं कुछ भी कम नहीं कर सकी। मुझमें एक पौंड मक्खन कम करने या टपकते हुए तेल, चर्बी, रोटी, ठंडा मांस या रसोई के किसी भी अन्य सामान के भाग्य की जाँच करने की हिम्मत नहीं थी। मुझे पता है कि हम फील्डहेड में कभी रोशनी नहीं लगाते, लेकिन मैं कई पौंड मोमबत्तियों का मतलब नहीं पूछ सकी। हम पैरिश के लिए कपड़े नहीं धोते, फिर भी मैंने चुपचाप साबुन और ब्लीचिंग पाउडर की उन वस्तुओं को देखा जो इन वस्तुओं के संबंध में हमारी स्थिति के बारे में सबसे उत्सुक जिज्ञासु की चिंता को भी संतुष्ट कर सकती थीं। मैं मांसाहारी नहीं हूँ, न ही श्रीमती प्रायर हैं, न ही श्रीमती गिल स्वयं हैं, फिर भी मैंने केवल... और जब मैंने कसाई के बिल देखे, जिनके आंकड़े उस बात को साबित करते प्रतीत हो रहे थे—मेरा मतलब है, झूठ—तो मेरी आँखें थोड़ी चौड़ी हो गईं। कैरोलीन, तुम मुझ पर हँस सकती हो, लेकिन मुझे बदल नहीं सकती। मैं कुछ मामलों में डरपोक हूँ; मुझे यह महसूस होता है। मेरे स्वभाव में नैतिक कायरता का घिनौना मिश्रण है। श्रीमती गिल के सामने मैं शर्म से लाल हो गई और सिर झुका लिया, जबकि उन्हें मुझसे अपने गुनाह कबूल करने चाहिए थे। मुझे उनके सामने यह कहने की हिम्मत भी नहीं हुई कि वे धोखेबाज़ हैं, और यह साबित करना तो दूर की बात है। मुझमें न तो

शांत गरिमा है, न ही सच्चा साहस।

"शर्ली, यह किस तरह का आत्म-अन्याय है? मेरे चाचा, जो महिलाओं की तारीफ करने के आदी नहीं हैं, कहते हैं कि इंग्लैंड में दस हजार पुरुष भी तुम्हारे जितने निडर नहीं हैं।"

“मैं शारीरिक रूप से निडर हूँ; मैं खतरे से कभी नहीं घबराती। जब मैं अकेले काउस्लिप के मैदान को पार कर रही थी, तब मिस्टर विने का विशाल लाल बैल मेरे सामने दहाड़ते हुए उठा, अपना मैला, उदास सिर झुकाया और मेरी ओर दौड़ा, तब भी मैं अपने आत्म-नियंत्रण से नहीं हिली; लेकिन मुझे श्रीमती गिल को शर्मिंदा और अपमानित होते देखने का डर था। कैरोलीन, कुछ मामलों में तुम्हारा मानसिक बल मुझसे दुगुना - दस गुना - अधिक है। तुम, जिसे कोई भी समझा-बुझाकर बैल को पार करने के लिए राजी नहीं कर सकता, चाहे वह कितना भी शांत क्यों न दिखे, मेरी गृहणी को दृढ़ता से दिखा देती कि उसने गलत किया है; फिर तुम उसे प्यार से और समझदारी से समझाती; और अंत में, मुझे विश्वास है, अगर वह पश्चाताप करती, तो तुम उसे बहुत प्यार से माफ कर देती। मैं इस तरह का व्यवहार करने में असमर्थ हूँ। हालाँकि, अत्यधिक खर्च के बावजूद, मुझे लगता है कि हम अपनी आय के अनुसार ही जीवन यापन करते हैं। मेरे पास पैसा है, और मुझे वास्तव में इसका कुछ अच्छा उपयोग करना चाहिए। ब्रायर्फ़ील्ड के गरीब लोग बुरी हालत में हैं; उनकी मदद करनी चाहिए। क्या मुझे क्या करना चाहिए, लीना? क्या मुझे तुरंत ही पैसे बांट देने चाहिए?

“नहीं, बिल्कुल नहीं, शर्ली; तुम ठीक से काम नहीं संभाल पाओगी। मैंने अक्सर देखा है कि दान के नाम पर तुम्हारा एकमात्र विचार लापरवाही से, खुले दिल से शिलिंग और हाफ-क्राउन देना है, जिसका लगातार दुरुपयोग होने की संभावना है। तुम्हें एक प्रधानमंत्री की ज़रूरत है, वरना तुम कई मुसीबतों में फँस जाओगी। तुमने खुद मिस ऐनली का नाम सुझाया था; मैं मिस ऐनली से संपर्क करूँगा। और, इस बीच, चुप रहने और अपना पैसा बर्बाद न करने का वादा करो। तुम्हारे पास कितना पैसा है, शर्ली! तुम्हें तो बहुत अमीर महसूस होता होगा?”

“हाँ; मैं खुद को महत्वपूर्ण महसूस करता हूँ। यह कोई बहुत बड़ी रकम नहीं है, लेकिन इसके प्रबंधन की ज़िम्मेदारी मुझे महसूस होती है; और सच में, यह ज़िम्मेदारी मेरे मन पर उम्मीद से कहीं ज़्यादा भारी पड़ रही है। लोग कहते हैं कि ब्रायरफील्ड में कुछ परिवार भुखमरी से मर रहे हैं। मेरे अपने कुछ कॉटेज मालिक भी दयनीय हालत

में हैं। मुझे उनकी मदद करनी ही होगी और मैं ज़रूर करूँगा।”

"कुछ लोग कहते हैं कि हमें गरीबों को दान नहीं देना चाहिए, शर्ली।"

“वे अपने प्रयासों के लिए बड़े मूर्ख हैं। जो भूखे नहीं हैं, उनके लिए दान-पुण्य की बदनामी आदि पर चर्चा करना आसान है; लेकिन वे जीवन की क्षणभंगुरता के साथ-साथ उसकी कड़वाहट को भी भूल जाते हैं। हममें से किसी को भी जीने की तीव्र इच्छा नहीं है। आइए, हम व्यर्थ के दार्शनिक विचारों की परवाह किए बिना, अभाव और दुख के समय में एक-दूसरे की यथासंभव सहायता करें।”

"लेकिन तुम दूसरों की मदद करती हो, शर्ली। तुम वैसे भी बहुत कुछ देती हो।"

“काफ़ी नहीं। मुझे और देना होगा, वरना, मैं तुम्हें बता दूँ, एक दिन मेरे भाई का खून मेरे विरुद्ध स्वर्ग में पुकारेगा। आख़िरकार, अगर राजनीतिक भड़काऊ लोग यहाँ आकर आस-पड़ोस में आग भड़काएँ और मेरी संपत्ति पर हमला हो, तो मैं शेरनी की तरह उसकी रक्षा करूँगी—मुझे पता है मैं करूँगी। जब तक दया मेरे पास है, मैं उसकी आवाज़ सुनूँगी। अगर एक बार उसकी आवाज़ गुंडों के शोर में दब जाए, तो मैं प्रतिरोध करने और उसे शांत करने के लिए प्रेरित हो जाऊँगी। अगर एक बार गरीब लोग इकट्ठा होकर भीड़ का रूप धारण कर लें, तो मैं एक कुलीन की तरह उनके विरुद्ध खड़ी हो जाऊँगी; अगर वे मुझे धमकाएँ, तो मुझे चुनौती देनी होगी; अगर वे हमला करें, तो मुझे प्रतिरोध करना होगा, और मैं करूँगी।”

तुम रॉबर्ट की तरह बात करते हो।

“मैं खुद को रॉबर्ट जैसा महसूस करता हूँ, बस उससे भी ज़्यादा उग्र। अगर कोई रॉबर्ट, उसकी चक्की या उसके हितों में दखल देगा, तो मैं उनसे नफ़रत करूँगा। फिलहाल मैं न तो कुलीन हूँ और न ही अपने आस-पास के गरीबों को आम आदमी समझता हूँ; लेकिन अगर एक बार भी वे मुझ पर या मेरे परिवार पर अत्याचार करें और फिर हमें हुकुम चलाने की हिम्मत करें, तो मैं उनकी दयनीयता पर दया और उनकी गरीबी पर सम्मान को पूरी तरह भूल जाऊँगा, उनकी अज्ञानता पर तिरस्कार करूँगा और उनकी धृष्टता पर क्रोधित हो जाऊँगा।”

"शर्ली, तुम्हारी आँखें कितनी चमकती हैं!"

"क्योंकि मेरी आत्मा जल रही है। क्या आप भी मेरी तरह रॉबर्ट को संख्याओं के बोझ तले दबने देंगे?"

“अगर मेरे पास रॉबर्ट की मदद करने की आपकी शक्ति होती, तो मैं उसका

उपयोग उसी तरह करता जैसे आप करना चाहते हैं। अगर मैं उसका वैसा ही दोस्त बन पाता जैसा आप बन सकते हैं, तो मैं उसके साथ, जैसे आप उसके साथ रहना चाहते हैं, मृत्यु तक खड़ा रहता।"

"और अब, लीना, हालाँकि तुम्हारी आँखों में चमक नहीं है, लेकिन वे दमक रही हैं। तुम अपनी पलकें झुका रही हो; लेकिन मैंने एक सुलगती हुई चिंगारी देखी। हालाँकि, अभी लड़ाई की नौबत नहीं आई है। मैं बस बुराई को रोकना चाहता हूँ। मैं दिन-रात यह नहीं भूल सकता कि गरीबों की अमीरों के प्रति ये कड़वाहट भरी भावनाएँ दुख से उपजी हैं: अगर वे हमें खुद से इतना सुखी न समझते, तो वे न तो हमसे नफरत करते और न ही ईर्ष्या करते। इस दुख को कम करने और इस नफरत को घटाने के लिए, मैं अपनी संपत्ति में से उदारतापूर्वक दान करूँ; और ताकि दान का अधिक से अधिक लाभ हो, इसे समझदारी से किया जाए। इसके लिए, हमें अपनी बैठकों में कुछ स्पष्ट, शांत और व्यावहारिक सोच लानी होगी। तो जाओ और मिस ऐनली को बुला लाओ।"

कैरोलीन ने बिना कुछ कहे अपनी टोपी पहनी और चली गई। शायद यह अजीब लगे कि न तो उसने और न ही शर्ली ने अपनी योजना के बारे में श्रीमती प्रायर से सलाह ली; लेकिन उनका ऐसा न करना बुद्धिमानी थी। उनसे सलाह लेना—और यह वे सहज रूप से जानती थीं—केवल उन्हें असहज स्थिति में डालना होता। वह मिस ऐनली से कहीं अधिक जानकार, पढ़ी-लिखी और गहरी सोच वाली थीं, लेकिन प्रशासनिक क्षमता और कार्यकारी कौशल उनमें बिल्कुल नहीं था। वह किसी धर्मार्थ कार्य में अपना छोटा सा दान सहर्ष दे देतीं—गुप्त दान उन्हें भाता था; लेकिन बड़े पैमाने पर सार्वजनिक योजनाओं में उनका कोई योगदान नहीं था; और उन्हें शुरू करने की बात तो नामुमकिन थी। शर्ली यह जानती थी, इसलिए उसने श्रीमती प्रायर को व्यर्थ की चर्चाओं में उलझाया नहीं, जिनसे उन्हें केवल अपनी कमियों का ही एहसास होता और कोई लाभ नहीं होता।

मिस ऐनली के लिए वह एक खुशनुमा दिन था जब उन्हें फील्डहेड में उन परियोजनाओं पर विचार-विमर्श करने के लिए बुलाया गया जो उनके लिए अत्यंत रुचिकर थीं; उन्हें पूरे सम्मान और आदर के साथ एक मेज पर बैठाया गया, जहाँ कागज, कलम, स्याही और सबसे अच्छी बात यह थी कि उनके सामने नकद राशि रखी थी, और उनसे ब्रायर्फ़ील्ड के निर्धन गरीबों को राहत प्रदान करने के लिए एक नियमित योजना तैयार करने का अनुरोध किया गया। वह उन सभी को जानती थीं,

उनकी ज़रूरतों का अध्ययन कर चुकी थीं, बार-बार यह महसूस कर चुकी थीं कि उनकी सबसे अच्छी मदद कैसे की जा सकती है, और अगर मदद के साधन मिल सकें तो वह इस कार्य के लिए पूरी तरह सक्षम थीं। उनके दयालु हृदय में एक सौम्य उल्लास उमड़ आया जब उन्होंने खुद को उन दो युवा लड़कियों द्वारा पूछे गए उत्सुक प्रश्नों का स्पष्ट और शीघ्रता से उत्तर देने में सक्षम पाया, क्योंकि उन्होंने अपने उत्तरों में यह दिखाया कि उन्होंने अपने आसपास के साथी मनुष्यों की स्थिति के बारे में कितना और उपयोगी ज्ञान प्राप्त किया है।

शर्ली ने उन्हें 300 पाउंड दिए, और पैसे देखते ही मिस ऐनली की आँखों में खुशी के आँसू आ गए; क्योंकि उन्होंने पहले ही भूखों को भोजन, नंगों को वस्त्र और बीमारों को सांत्वना मिलते देख लिया था। उन्होंने तुरंत इसके खर्च के लिए एक सरल और व्यावहारिक योजना बनाई; और उन्होंने उन्हें आश्वस्त किया कि अब बेहतर समय आएगा, क्योंकि उन्हें फील्डहेड की महिला के उदाहरण का अनुसरण करने में कोई संदेह नहीं था। उन्हें अतिरिक्त चंदा इकट्ठा करने और एक कोष बनाने का प्रयास करना चाहिए; लेकिन पहले उन्हें पादरियों से परामर्श करना होगा। जी हाँ, इस मामले में उनका रुख स्पष्ट था। श्री हेलस्टोन, डॉ. बोल्टबी, श्री हॉल से परामर्श करना आवश्यक था (क्योंकि न केवल ब्रायर्फ़ील्ड को राहत देनी थी, बल्कि व्हिनबरी और ननेली को भी)। उन्होंने कहा कि उनकी अनुमति के बिना एक भी कदम उठाना उनकी गुस्ताखी होगी।

मिस ऐनली की नज़रों में पादरी पवित्र थे; व्यक्ति चाहे कितना भी तुच्छ क्यों न हो, उसका पद उसे पवित्र बना देता था। यहाँ तक कि पादरी भी—जो अपने तुच्छ अहंकार में उनके कपड़े की डोरी बाँधने, सूती छाता उठाने या ऊनी शॉल ओढ़ाने के भी लायक नहीं थे—उन्हें भी वह अपने शुद्ध और सच्चे उत्साह में संत मानती थीं। चाहे उनके छोटे-मोटे दोष और बड़ी-बड़ी मूर्खताएँ उन्हें कितनी ही स्पष्ट रूप से बताई जातीं, वह उन्हें देख नहीं पाती थीं; वह चर्च की कमियों को देख नहीं पाती थीं; सफेद चोगा अनेकों पापों को छुपा लेता था।

शर्ली, अपने नव निर्वाचित प्रधानमंत्री के इस हानिरहित मोह को भलीभांति जानती थी, इसलिए उसने स्पष्ट रूप से यह शर्त रखी कि धन के निपटान में पादरियों का कोई दखल नहीं होना चाहिए, और वे इसमें हस्तक्षेप नहीं करेंगे। बेशक, पादरी सर्वोपरि थे, और उन पर भरोसा किया जा सकता था। उनके पास कुछ अनुभव, कुछ दूरदर्शिता

थी, और कम से कम श्री हॉल के मन में अपने साथी मनुष्यों के प्रति सहानुभूति और प्रेम था; लेकिन उनके अधीन काम करने वाले युवाओं को अलग रखा जाना चाहिए, उन्हें दबाकर रखा जाना चाहिए, और उन्हें सिखाया जाना चाहिए कि उनकी उम्र और क्षमता के अनुसार अधीनता और मौन ही सबसे उपयुक्त हैं।

मिस ऐनली ने ये भाषा सुनकर काफी हैरानी जताई। हालांकि, कैरोलीन ने बीच में आकर मिस्टर स्वीटिंग की तारीफ में कुछ नरम शब्द कहे और उन्हें शांत कर दिया। स्वीटिंग वास्तव में उनके पसंदीदा थे। वह मिस्टर मैलोन और डोने का सम्मान करने की कोशिश करती थीं, लेकिन जब भी स्वीटिंग उनकी छोटी सी कुटिया में उनसे मिलने आते थे, तो वह उन्हें स्पंज केक के टुकड़े और काउस्लिप या प्रिमरोज़ वाइन के गिलास देती थीं, और ये सब वह सच्चे मातृत्व भाव से ही देती थीं। यही सादा नाश्ता उन्होंने एक बार मैलोन को भी दिया था; लेकिन उस व्यक्ति ने इस भेंट का इतना खुलेआम तिरस्कार किया कि उन्होंने दोबारा ऐसा करने की हिम्मत नहीं की। डोने को वह हमेशा यह दावत देती थीं, और उन्हें यह देखकर खुशी होती थी कि वह इसे बिना किसी संदेह के पसंद करते थे, क्योंकि वह आमतौर पर केक के दो टुकड़े खा लेते थे और तीसरा अपनी जेब में रख लेते थे।

भलाई के कार्यों में अथक परिश्रम करने वाली मिस ऐनली तुरंत तीनों रेक्टरों से मिलने के लिए दस मील की पैदल यात्रा पर निकल पड़तीं, ताकि वे अपनी योजना बता सकें और विनम्रतापूर्वक उनकी स्वीकृति प्राप्त कर सकें; लेकिन मिस कील्डर ने इस पर रोक लगा दी और एक संशोधन के रूप में प्रस्ताव रखा कि उसी शाम फील्डहेड में पादरियों की एक छोटी सी विशेष सभा आयोजित की जाए। मिस ऐनली को उनसे मिलना था और इस योजना पर पूरी गुप्त परिषद में चर्चा होनी थी।

शर्ली ने वरिष्ठ पादरियों को किसी तरह इकट्ठा कर लिया और उस बुज़ुर्ग महिला के आने से पहले ही उसने सभी सज्जनों को बेहद खुशनुमा बना दिया था। उसने खुद डॉ. बोल्टबी और श्री हेलस्टोन का ख्याल रखा। डॉ. बोल्टबी एक ज़िद्दी, गुस्सैल, अपनी राय पर अड़े रहने वाले और हठी, लेकिन साथ ही अच्छे काम करने वाले व्यक्ति थे, हालांकि वे इसके बारे में शोर मचाते भी थे। श्री हेलस्टोन के बारे में तो हम जानते ही हैं। शर्ली को दोनों के लिए, खासकर बूढ़े हेलस्टोन के लिए, काफी दोस्ताना भाव था; और उनके साथ खुशमिजाज़ व्यवहार करने में उसे कोई परेशानी नहीं हुई। वह उन्हें बगीचे में घुमाने ले गई; उनके लिए फूल तोड़े; वह उनके लिए एक दयालु बेटी की तरह

थी। श्री हॉल की ज़िम्मेदारी उसने कैरोलीन को सौंप दी - या यूं कहें कि श्री हॉल ने खुद को कैरोलीन की देखरेख में सौंप दिया था।

वह आम तौर पर हर उस पार्टी में कैरोलीन को ढूंढता था जहाँ वह और कैरोलीन मौजूद होते थे। वह आम तौर पर महिलाओं के बीच लोकप्रिय नहीं था, हालाँकि सभी महिलाएं उसे पसंद करती थीं; वह कुछ हद तक किताबी कीड़ा था, कमज़ोर नज़र वाला, चश्मा पहनने वाला और कभी-कभी खोया-खोया सा रहता था। बुजुर्ग महिलाओं के प्रति वह बेटे जैसा स्नेह रखता था। हर पेशे और वर्ग के पुरुषों को वह स्वीकार्य था। उसके व्यवहार की सच्चाई, सादगी और स्पष्टवादिता, उसकी ईमानदारी की महानता और उसकी धार्मिकता की वास्तविकता और उच्चता ने उसे हर वर्ग में मित्र बना दिया था। उसका गरीब क्लर्क और कब्रिस्तान का रखवाला उससे बहुत प्यार करते थे; उसके पद का सम्मानित संरक्षक उसका बहुत सम्मान करता था। केवल युवा, सुंदर, फैशनेबल और स्टाइलिश महिलाओं के साथ ही वह थोड़ा झिझकता था। स्वयं एक साधारण व्यक्ति होने के कारण - दिखने में साधारण, व्यवहार में साधारण, बोलने में साधारण - वह उनकी चकाचौंध, शालीनता और दिखावे से डरता हुआ प्रतीत होता था। लेकिन मिस हेलस्टोन में न तो चकाचौंध थी और न ही दिखावा, और उसकी स्वाभाविक शालीनता बहुत ही शांत थी - ज़मीन पर उगने वाले झाड़ी के फूल की सुंदरता की तरह शांत। वह धाराप्रवाह, हंसमुख और सुखद वक्ता था। कैरोलीन भी आमने-सामने की बातचीत में बहुत अच्छी तरह बात कर सकती थी। उसे पसंद था कि मिस्टर हॉल किसी पार्टी में आकर उसके बगल में बैठें, ताकि वह पीटर ऑगस्टस मैलोन, जोसेफ डोने या जॉन साइक्स से बच सके; और मिस्टर हॉल जब भी संभव होता, इस विशेषाधिकार का लाभ उठाने से कभी नहीं चूकते थे। एक अविवाहित सज्जन द्वारा एक अविवाहित महिला को दिखाई गई ऐसी प्राथमिकता, सामान्य परिस्थितियों में, निश्चित रूप से गपशप का कारण बन जाती; लेकिन सिरिल हॉल पैंतालीस वर्ष के थे, थोड़े गंजे और थोड़े सफेद बालों वाले थे, और किसी ने कभी नहीं कहा या सोचा था कि उनकी शादी मिस हेलस्टोन से होगी। न ही उन्होंने खुद ऐसा सोचा था। वे पहले से ही अपनी किताबों और अपने चर्च से जुड़े हुए थे। उनकी दयालु बहन मार्गरेट, जो उन्हीं की तरह चश्मा पहनती थीं और विद्वान थीं, उन्हें उनके अविवाहित जीवन में खुश रखती थीं; उन्हें लगता था कि अब बदलाव का समय नहीं आया है। इसके अलावा, वे कैरोलीन को एक प्यारी सी छोटी बच्ची के रूप में जानते

थे। वह कई बार उनकी गोद में बैठी थी; उन्होंने उसे खिलौने और किताबें खरीदकर दी थीं; उन्हें लगता था कि उनके प्रति कैरोलीन की मित्रता में एक प्रकार का पारिवारिक सम्मान भी शामिल था; वह उसके भावों को कोई दूसरा रंग देने का प्रयास करने के लिए खुद को तैयार नहीं कर सका, और उसका शांत मन प्रतिबिंब से उसकी गहराई को विचलित किए बिना एक सुंदर छवि को प्रतिबिंबित कर सकता था।

जब मिस ऐनली पहुंचीं, तो सभी ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। श्रीमती प्रायर और मार्गरेट हॉल ने अपने बीच सोफे पर उनके लिए जगह बनाई; और जब तीनों बैठ गईं, तो उन्होंने एक ऐसी तिकड़ी बनाई जिसे खुशमिजाज और लापरवाह लोग शायद तुच्छ और अनाकर्षक समझकर तिरस्कार करते — एक अधेड़ उम्र की विधवा और दो साधारण, चश्मा पहने बूढ़ी अविवाहित महिलाएं — फिर भी इस तिकड़ी का अपना एक अलग ही महत्व था, जैसा कि कई दुखी और बेसहारा इंसान जानते थे।

शर्ली ने कारोबार शुरू किया और योजना दिखाई।

“मैं उस व्यक्ति को जानता हूँ जिसने यह योजना बनाई है,” श्री हॉल ने मिस ऐनली की ओर देखते हुए और सौम्य मुस्कान के साथ कहा। उनकी सहमति तुरंत मिल गई। बोल्टबी ने यह सुना और माथे पर शिकन और होंठ बाहर निकालकर विचार किया। उन्हें लगा कि उनकी सहमति इतनी महत्वपूर्ण है कि इसे जल्दबाजी में देना उचित नहीं होगा। हेलस्टोन ने सतर्क और संदेह भरी नज़रों से चारों ओर देखा, मानो उन्हें आभास हो गया हो कि कोई स्त्री चालाकी कर रही है और कोई छुपकर बहुत अधिक प्रभाव हासिल करने और खुद को बहुत महत्वपूर्ण बनाने की कोशिश कर रही है। शर्ली ने उनकी बात समझ ली। “यह योजना कुछ भी नहीं है,” उसने लापरवाही से कहा। “यह केवल एक रूपरेखा है – महज़ एक सुझाव। आप सज्जनों से अनुरोध है कि आप अपने नियम स्वयं बनाएँ।”

और वह तुरंत अपना लिखने का बक्सा ले आई, मेज पर झुकते हुए वह मन ही मन अजीब सी मुस्कान बिखेर रही थी। उसने एक कागज़ और एक नया पेन निकाला, एक कुर्सी खींचकर मेज के पास लाई और बूढ़े हेलस्टोन की ओर हाथ बढ़ाते हुए उसे बैठने की अनुमति मांगी। एक पल के लिए वह थोड़ा अकड़ा हुआ खड़ा रहा और अपने तांबे जैसे रंग के माथे को अजीब तरह से सिकोड़ता रहा। अंत में वह बुदबुदाया, "ठीक है, तुम न तो मेरी पत्नी हो और न ही मेरी बेटी, इसलिए मैं एक बार तुम्हारी बात मान

लेता हूँ; लेकिन ध्यान रखना - मुझे पता है कि मैं तुम्हारी बात मान रहा हूँ। तुम्हारी ये छोटी-मोटी स्त्री चालें मुझे अंधा नहीं कर सकतीं।"

"ओह!" शर्ली ने कलम को स्याही में डुबोते हुए और उसे उनके हाथ में थमाते हुए कहा, "आज आपको मुझे कैप्टन कील्डर समझना होगा। यह पूरी तरह से एक सज्जन व्यक्ति का मामला है - पूरी तरह से आपका और मेरा, डॉक्टर" (उन्होंने पादरी को यही नाम दिया था)। "वहाँ मौजूद महिलाएं केवल हमारी सहायक होंगी, और जब तक हम सारा मामला सुलझा नहीं लेते, तब तक वे बोलने का जोखिम नहीं उठाएंगी।"

वह थोड़ा गंभीर भाव से मुस्कुराया और लिखने लगा। थोड़ी देर बाद उसने रुककर प्रश्न पूछे और अपने साथियों से सलाह ली। उसने दोनों लड़कियों के घुंघराले बालों और बुजुर्ग महिलाओं की शालीन टोपियों को तिरस्कारपूर्वक पार करते हुए, पादरियों के चमकते चश्मे और भूरे बालों पर नज़र डाली। चर्चा के दौरान, तीनों सज्जनों ने अपने-अपने क्षेत्रों के गरीबों से भली-भांति परिचित होने का परिचय दिया—उनकी अलग-अलग ज़रूरतों का उन्हें पूरा ज्ञान था। प्रत्येक पादरी जानता था कि कपड़ों की कहाँ आवश्यकता है, भोजन कहाँ सबसे उपयुक्त होगा, और धन कहाँ दिया जा सकता है ताकि उसका सही उपयोग हो सके। जहाँ भी उनकी याददाश्त कमज़ोर पड़ती, मिस ऐनली या मिस हॉल, अगर उनसे पूछा जाता, तो मदद कर सकती थीं; लेकिन दोनों महिलाएं तब तक नहीं बोलती थीं जब तक उनसे बात न की जाए। उनमें से कोई भी आगे नहीं रहना चाहती थी, बल्कि दोनों ही वास्तव में उपयोगी बनना चाहती थीं; और पादरी वर्ग ने उन्हें उपयोगी बनाने की सहमति दी—जिससे वे संतुष्ट थीं।

शर्ली पादरियों के पीछे खड़ी थी, बीच-बीच में उनके कंधों पर झुककर नियमों और मामलों की सूची पर नज़र डालती, उनकी हर बात सुनती और बीच-बीच में अपनी अनोखी मुस्कान बिखेरती रहती—यह मुस्कान दुर्भावनापूर्ण नहीं, बल्कि अर्थपूर्ण थी—इतनी अर्थपूर्ण कि आम तौर पर इसे सौहार्दपूर्ण नहीं समझा जा सकता था। पुरुष अपने ऐसे साथियों को कम ही पसंद करते हैं जो उनके अंतर्मन को इतनी स्पष्टता और सच्चाई से समझ लेते हैं। विशेषकर महिलाओं के लिए कोमल अंधापन होना अच्छा होता है; उनकी आंखें सौम्य और धुंधली होती हैं, जो कभी भी सतही बातों से नीचे नहीं उतरतीं—जो हर चीज़ को उसके वास्तविक स्वरूप में देखती हैं। हजारों लोग यह जानते हुए भी अपनी पलकें झुकाए रखते हैं; लेकिन सबसे उदास नज़र में भी एक

ऐसा छेद होता है, जिसके माध्यम से वह कभी-कभी जीवन का अवलोकन कर सकती है। मुझे याद है एक बार मैंने नीली आँखों की एक जोड़ी देखी थी, जिन्हें आमतौर पर नींद में डूबी हुई समझा जाता था, लेकिन वे चुपके से चौकस थीं। उनकी भाव-भंगिमा ने मेरे रोंगटे खड़े कर दिए, क्योंकि उस क्षेत्र में यह इतना आश्चर्यजनक था - कि वर्षों से वे चुपचाप आत्माओं को पढ़ने की आदी थीं। दुनिया उन नीली आँखों की मालकिन को 'बोन पेटिट फेम' कहती थी (वह अंग्रेज महिला नहीं थीं)। बाद में मैंने उनके स्वभाव को जाना - उसे कंठस्थ कर लिया - उसके सबसे गहरे, सबसे छिपे कोनों का अध्ययन किया। वह यूरोप की सबसे कुशल, सबसे गहरी, सबसे सूक्ष्म योजनाकार थीं।

जब अंततः मिस कील्डर के मन में सब कुछ ठीक हो गया, और पादरी वर्ग ने उनकी योजनाओं का इतना समर्थन किया कि उन्होंने चंदे की सूची में प्रत्येक ने 50 पाउंड के हस्ताक्षर कर दिए, तो उन्होंने रात्रिभोज परोसने का आदेश दिया। इससे पहले उन्होंने श्रीमती गिल को इस भोजन की तैयारी में अपनी पूरी कुशलता का प्रयोग करने का निर्देश दिया था। श्री हॉल कोई विलासिताप्रिय व्यक्ति नहीं थे - वे स्वभाव से संयमी थे और विलासिता के प्रति उदासीन थे; लेकिन बोल्टबी और हेलस्टोन दोनों को अच्छा खाना पसंद था। इसलिए, इस शानदार रात्रिभोज ने उन्हें बहुत प्रसन्न किया। उन्होंने भोजन का भरपूर आनंद लिया, हालांकि एक सभ्य तरीके से - उस तरह से नहीं जैसे श्री डोने उपस्थित होते तो लेते। एक गिलास उत्तम शराब का भी स्वाद लिया गया, जिसे बड़े ही सलीके से और समझदारी से चखा गया। कैप्टन कील्डर की पसंद की प्रशंसा की गई; इस प्रशंसा से वे प्रसन्न हुए। उनका उद्देश्य अपने पुरोहित अतिथियों को प्रसन्न और संतुष्ट करना था। वे सफल रहे और प्रसन्नता से प्रफुल्लित थे।

अध्याय पंद्रह।

श्री डोने का पलायन।

अगले दिन शर्ली ने कैरोलिन से कहा कि वह इस बात से कितनी खुश है कि छोटी सी पार्टी इतनी अच्छी तरह से संपन्न हुई।

"मुझे सज्जनों के समूह का मनोरंजन करना अच्छा लगता है," उसने कहा। "यह देखना मनोरंजक होता है कि वे सलीके से तैयार किए गए भोजन का आनंद कैसे लेते हैं। आप जानते हैं, हमारे लिए ये चुनिंदा वाइन और ये वैज्ञानिक व्यंजन कोई मायने नहीं रखते; लेकिन सज्जन भोजन के प्रति बच्चों जैसी भोली भावना रखते हैं, और उन्हें प्रसन्न करना अच्छा लगता है—अर्थात्, जब वे हमारे प्रशंसनीय रेक्टरों की तरह शालीन और उपयुक्त आत्म-नियंत्रण दिखाते हैं। मैं कभी-कभी मूर को देखती हूँ, यह जानने की कोशिश में कि उन्हें कैसे प्रसन्न किया जा सकता है; लेकिन उनमें बच्चों जैसी सरलता नहीं है। क्या आपको कभी उनकी वह बात समझ आई, कैरोलीन? आपने उन्हें मुझसे ज़्यादा देखा है।"

"कम से कम, यह मेरे चाचा और डॉ. बोल्टबी जैसा तो बिल्कुल नहीं है," कैरोलिन मुस्कुराते हुए बोली। अपने चचेरे भाई के चरित्र पर चर्चा करते समय मिस कील्डर का अनुसरण करने में उसे हमेशा एक तरह की शर्मिंदगी भरी खुशी महसूस होती थी। अगर उसे अकेला छोड़ दिया जाता, तो वह इस विषय पर कभी बात नहीं करती; लेकिन जब उसे आमंत्रित किया जाता, तो जिसके बारे में वह हमेशा सोचती रहती थी, उसके बारे में बात करने का प्रलोभन अनियंत्रित हो जाता था। "लेकिन," उसने आगे कहा, "मुझे सच में नहीं पता कि यह क्या है, क्योंकि मैंने अपने जीवन में कभी रॉबर्ट को ध्यान से नहीं देखा, लेकिन मेरी जांच उस समय विफल हो गई जब मैंने पाया कि वह मुझे देख रहा था।"

"ये रहा!" शर्ली ने हैरानी से कहा। "तुम उस पर नज़रें नहीं टिका सकतीं, लेकिन उसकी निगाहें तुम पर ही टिकी रहती हैं। वह कभी बेखबर नहीं रहता। वह तुम्हें कोई मौका नहीं देगा। यहाँ तक कि जब वह तुम्हारी तरफ नहीं देखता, तब भी उसके विचार तुम्हारे ही विचारों में उलझे रहते हैं, तुम्हारे शब्दों और हरकतों के स्रोत का पता लगाते

हैं, और तुम्हारे इरादों पर आराम से विचार करते हैं। ओह! मैं इस तरह के चरित्र को जानती हूँ, या कुछ इसी तरह के चरित्र को। यह मुझे बेहद आकर्षित करता है। इसका तुम पर क्या असर होता है?”

यह सवाल शर्ली के तीखे और अचानक बदलते जवाबों का एक नमूना था। कैरोलीन पहले तो उनके ऐसे जवाबों से घबरा जाती थी, लेकिन अब वह एक नन्ही क्वेक्रेस की तरह इन सीधे-सादे सवालों का जवाब देने में माहिर हो गई थी।

“क्या इससे आपको गुस्सा आता है? किस तरह से आता है?” उसने कहा।

“देखो, वो आ रहा है!” शर्ली अचानक चिल्लाई, बात अधूरी छोड़ते हुए, उठ खड़ी हुई और खिड़की की ओर भागी। “देखो, एक मज़ेदार चीज़ आ रही है। मैंने तुम्हें अपनी हाल ही में की गई एक शानदार जीत के बारे में कभी नहीं बताया – उन पार्टियों में जहाँ मैं तुम्हें कभी अपने साथ आने के लिए मना नहीं पाती; और ये सब मैंने बिना किसी कोशिश या इरादे के किया है – मैं कसम खाती हूँ। ये रही घंटी – और, हे भगवान! ये तो दो हैं। क्या ये कभी जोड़े में ही शिकार करते हैं? लीना, तुम एक ले लो, और अपनी पसंद चुन लो। मुझे उम्मीद है कि मैं उदार हूँ। टार्टर की बात सुनो!”

काले थूथन वाला, भूरे रंग का कुत्ता, जिसकी एक झलक उस अध्याय में देखने को मिली थी जिसमें पाठक को उसकी मालकिन से पहली बार परिचित कराया गया था, यहाँ हॉल में भौंक रहा था, जिसके खालीपन में उसकी गहरी भौंकने की आवाज़ गूंज रही थी। भौंकने से भी अधिक भयानक, गरजते हुए बादल की तरह डरावनी एक गुर्राहट सुनाई दी।

“सुनो!” शर्ली हंसते हुए फिर चिल्लाई। “ऐसा लगता है जैसे ये किसी खूनी हमले की शुरुआत है। वे डर जाएंगे। वे पुराने तातार को उतना नहीं जानते जितना मैं जानती हूँ। उन्हें पता नहीं है कि उसका शोर-शराबा सिर्फ शोर-शराबा है, जिसका कोई मतलब नहीं!”

कुछ हलचल सुनाई दी। "नीचे बैठ जाइए, महोदय, नीचे बैठ जाइए!" एक ऊँची, दबंग आवाज़ ने कहा, और फिर बेंत या चाबुक की एक जोरदार चोट सुनाई दी। तुरंत ही चीख-पुकार मच गई - भगदड़ मच गई - भागदौड़ मच गई - मानो पूरा कोलाहल हो गया हो।

"ओह मैलोन, मैलोन!"

“नीचे! नीचे! नीचे!” ऊँची आवाज़ में पुकारा गया।

“वह वाकई उन्हें परेशान कर रहा है!” शर्ली ने हैरानी से कहा। “उन्होंने उसे मारा है। उसे मार खाने की आदत नहीं है और वह इसे बर्दाश्त नहीं करेगा।”

वह भाग निकली। एक सज्जन ओक की सीढ़ियों पर तेजी से भाग रहे थे, दीर्घा या कमरों में शरण लेने के लिए बेतहाशा दौड़ रहे थे; दूसरा तेजी से सीढ़ियों के नीचे आ रहा था, एक गांठदार छड़ी को बेतहाशा लहराते हुए, साथ ही बार-बार चिल्ला रहा था, "नीचे! नीचे! नीचे!" जबकि भूरा कुत्ता उस पर भौंकता, चिल्लाता और गुर्राता रहा, और रसोई से नौकरों का एक समूह भागता हुआ आया। कुत्ते ने छलांग लगाई; दूसरा सज्जन पीछे मुड़ा और अपने साथी के पीछे भागा। पहला सज्जन पहले ही एक शयनकक्ष में सुरक्षित था; उसने अपने साथी के खिलाफ दरवाजा थाम लिया - डर से ज्यादा निर्दयी कुछ नहीं होता। लेकिन दूसरा भगोड़ा जोर से संघर्ष कर रहा था; दरवाजा उसकी ताकत के आगे झुकने ही वाला था।

मिस कील्डर की मधुर लेकिन कांपती हुई आवाज़ में कहा गया, "सज्जनों, कृपया मेरे बालों को मत छूइए। शांत हो जाइए! नीचे आइए! टार्टर को देखिए; वह एक बिल्ली को भी नुकसान नहीं पहुंचाएगा।"

वह उस तातार को सहला रही थी। वह उसके पैरों के पास दुबका हुआ था, उसके अगले पंजे फैले हुए थे, उसकी पूंछ अभी भी धमकी भरे अंदाज़ में फड़फड़ा रही थी, उसके नथुने फड़फड़ा रहे थे, उसकी बुलडॉग जैसी आँखों में एक मंद-मंद आग सी जल रही थी। वह एक ईमानदार, शांत, मूर्ख, लेकिन जिद्दी कुत्ता था। वह अपनी मालकिन और जॉन (वह आदमी जो उसे खाना खिलाता था) से प्यार करता था, लेकिन बाकी दुनिया से उसे कोई मतलब नहीं था। वह काफी शांत रहता था, सिवाय तब जब उसे मारा जाता या छड़ी से धमकाया जाता, और ऐसा होते ही वह तुरंत गुस्से से पागल हो जाता था।

“श्रीमान मैलोन, आप कैसे हैं?” शर्ली ने मुस्कुराते हुए अपना चेहरा गैलरी की ओर उठाते हुए पूछा। “यह ओक पार्लर का रास्ता नहीं है; यह श्रीमती प्रायर का कमरा है। कृपया अपने मित्र श्री डोने से कहें कि वे कमरा खाली कर दें। मुझे उन्हें नीचे के कमरे में स्वागत करने में अत्यंत प्रसन्नता होगी।”

“हा! हा!” मालोन खोखली हंसी हंसते हुए दरवाजे से बाहर निकला और विशाल रेलिंग पर झुक गया। “सचमुच उस जानवर ने डोने को डरा दिया। वह थोड़ा डरपोक है,” उसने खुद को समेटते हुए और सीढ़ियों की ओर चुस्त-दुरुस्त चलते हुए कहा।

“मैंने सोचा कि उसका पीछा करना बेहतर होगा, ताकि उसे दिलासा दे सकूं।”

“लगता है आपने कर लिया। अच्छा, कृपया नीचे आ जाइए। — जॉन” (अपने नौकर की ओर मुड़ते हुए), “ऊपर जाइए और श्री डोने को रिहा कीजिए। — ध्यान रखिएगा, श्री मैलोन; सीढ़ियाँ फिसलन भरी हैं।”

वास्तव में वे पॉलिश किए हुए ओक की लकड़ी के बने थे। मालोन को थोड़ी देर से आगाह हुई। वह अपनी शान से उतरते समय पहले ही फिसल चुका था, और केवल रेलिंग को कसकर पकड़ने से ही गिरने से बचा, जिससे पूरी संरचना फिर से चरमरा उठी।

टार्टर को लगा कि आगंतुक का उतरना अनावश्यक धूमधाम से हुआ है, और इसलिए वह एक बार फिर गुर्राया। लेकिन मालोन डरपोक नहीं था। कुत्ते की छलांग ने उसे चौंका दिया था, लेकिन अब वह डर के बजाय दबी हुई क्रोध से उसके पास से गुजरा। अगर एक नज़र से ही टार्टर का गला घोंटा जा सकता, तो उसकी सांसें थम जातीं। अपने उग्र क्रोध में शिष्टाचार को भूलकर, मालोन मिस कील्डर के सामने बैठक में घुस गया। उसने मिस हेलस्टोन पर एक नज़र डाली; वह मुश्किल से ही उनके सामने झुक सका। उसने दोनों महिलाओं को घूरा। ऐसा लग रहा था मानो अगर उनमें से कोई भी उसकी पत्नी होती, तो वह उस पल एक शानदार पति साबित होता। ऐसा लग रहा था मानो वह दोनों हाथों में से किसी एक को पकड़कर जान से मार देना चाहता हो।

लेकिन शर्ली को दया आ गई। उसने हंसना बंद कर दिया; और कैरोलीन इतनी नेक महिला थी कि वह किसी के भी अपमान पर मुस्कुरा नहीं सकती थी। टार्टर को जाने दिया गया; पीटर ऑगस्टस शांत हो गया—क्योंकि शर्ली के हाव-भाव और लहजे में एक बैल को भी शांत करने की क्षमता थी। उसे समझ आ गया कि चूंकि वह कुत्ते के मालिक को चुनौती नहीं दे सकता, इसलिए बेहतर होगा कि वह विनम्र रहे। और उसने विनम्र रहने की कोशिश की; और उसके प्रयासों को सराहा गया, तो वह तुरंत बहुत विनम्र और फिर से सामान्य हो गया। दरअसल, वह खुद को आकर्षक और मोहक बनाने के उद्देश्य से ही आया था। फील्डहेड में पहली बार प्रवेश करने पर उसे बुरे संकेत मिले थे; लेकिन वह दौर बीत गया, और उसने आकर्षक और मोहक बने रहने का निश्चय कर लिया। मार्च की तरह, जो शेर की तरह आया था, वह मेमने की तरह जाना चाहता था।

ऐसा प्रतीत हुआ कि हवा के लिए, या शायद किसी नई आपात स्थिति उत्पन्न होने पर तुरंत निकलने के लिए, वह बैठ गया - सोफे पर नहीं, जहाँ मिस कील्डर ने उसे बैठने का प्रस्ताव दिया था, न ही आग के पास, जहाँ कैरोलीन ने दोस्ताना इशारे से उसे बैठने के लिए आमंत्रित किया था, बल्कि दरवाजे के पास एक कुर्सी पर। अब उदास या क्रोधित न होकर, वह अपने स्वभाव के अनुसार संयमित और असहज हो गया। वह महिलाओं से रुक-रुक कर बात करता रहा, विषयों के लिए सबसे सामान्य विषयों का चयन करता रहा। वह हर वाक्य के अंत में गहरी, अर्थपूर्ण आह भरता था; वह हर विराम में आह भरता था; वह मुंह खोलने से पहले आह भरता था। अंत में, अपने अन्य आकर्षणों में सहजता जोड़ने की इच्छा से, उसने अपनी सहायता के लिए एक बड़ा रेशमी रूमाल निकाला। यह वह सुंदर खिलौना था जिससे उसके खाली हाथ खेलेंगे। वह कुछ ऊर्जा के साथ काम पर लग गया। उसने लाल और पीले रंग के वर्गाकार रूमाल को कोनों से मोड़ा; उसने झटके से उसे खोल दिया; फिर उसे और भी संकरा करके मोड़ दिया; और उससे एक सुंदर पट्टी बना ली। वह इस पट्टी को किस उद्देश्य से बांधने वाला था? क्या वह इसे अपने गले या सिर पर लपेटेगा? क्या यह कोई रुमाल होगा या पगड़ी? दोनों में से कुछ नहीं। पीटर ऑगस्टस में एक अनोखी, मौलिक प्रतिभा थी। वह महिलाओं को कुछ ऐसा दिखाने वाला था जिसमें नवीनता का आकर्षण तो ज़रूर होगा। वह कुर्सी पर अपने फुर्तीले आयरिश पैरों को मोड़कर बैठ गया, और उसी मुद्रा में उसने इन पैरों को बंदना से घेरकर कसकर बांध दिया। यह स्पष्ट था कि उसे यह युक्ति दोहराने लायक लगी; उसने इसे एक से अधिक बार दोहराया। दूसरी बार जब उसने इसे देखा तो शर्ली खिड़की के पास चली गई, और चुपचाप, लेकिन अनियंत्रित रूप से हंसने लगी; कैरोलीन ने अपना सिर एक तरफ घुमा लिया, ताकि उसके लंबे घुंघराले बाल उसके चेहरे पर फैली मुस्कान को छुपा सकें। मिस हेलस्टोन वास्तव में पीटर के व्यवहार के कई पहलुओं से बहुत प्रभावित हुईं। वह इस बात से प्रसन्न हुई कि उसका सारा ध्यान अचानक, हालांकि पूरी तरह से, उससे हटकर उत्तराधिकारी की ओर चला गया। 5,000 पाउंड की वह संपत्ति, जिसके बारे में उसका अनुमान था कि वह एक दिन उत्तराधिकारी को विरासत में मिलेगी, मिस कील्डर की संपत्ति और महल के मुकाबले तौलने लायक नहीं थी। उसने अपनी गणनाओं और चालों को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की। उसने विचारों में क्रमिक परिवर्तन का दिखावा नहीं किया; वह एकदम से पलट गया। छोटी संपत्ति की खोज

को उसने खुलेआम छोड़ दिया और बड़ी संपत्ति की खोज में जुट गया। वह किस आधार पर अपनी खोज में सफल होने की उम्मीद कर रहा था, यह वह स्वयं ही बेहतर जानता था; निश्चित रूप से कुशल प्रबंधन से तो नहीं।

बीते समय को देखकर ऐसा प्रतीत हुआ कि जॉन को श्री डोने को नीचे आने के लिए मनाने में कुछ कठिनाई हो रही थी। अंततः, वह सज्जन आ ही गए; और जब वे ओक की लकड़ी से बने बैठक कक्ष के द्वार पर पहुँचे, तो वे ज़रा भी शर्मिंदा या भ्रमित नहीं दिखे—बिल्कुल भी नहीं। वास्तव में, डोने उस ठंडे, भावहीन, आत्मसंतुष्ट और अत्यधिक आत्म-संतुष्ट स्वभाव के थे, जिन्हें शर्म का कोई एहसास ही नहीं होता। वे जीवन भर कभी शरमाए नहीं थे; कोई भी अपमान उन्हें लज्जित नहीं कर सकता था; उनकी नसें इतनी संवेदनशील नहीं थीं कि उनमें कोई हलचल पैदा कर सकें और उनके गालों पर लाली ला सकें; उनके खून में कोई जोश नहीं था और उनकी आत्मा में कोई लज्जा नहीं थी; वे एक निर्भीक, अभिमानी, दिखावटी और साधारण व्यक्ति थे—घमंडी, मूर्ख, नीरस; और इस सज्जन के मन में मिस कील्डर को रिझाने का विचार था! हालाँकि, उन्हें यह नहीं पता था कि इस काम को कैसे शुरू किया जाए, मानो वे लकड़ी में तराशी गई कोई मूर्ति हों। उसे प्रेम निराधार था, न ही प्रेम निवेदन में किसी के दिल को जीतने का। उसका इरादा था कि जब वह उससे कुछ बार औपचारिक रूप से मिल ले, तो उसे शादी का प्रस्ताव देते हुए एक पत्र लिखेगा। फिर उसने सोचा कि वह उसके पद के प्रति प्रेम के कारण उसे स्वीकार कर लेगी; फिर उनकी शादी हो जाएगी; फिर वह फील्डहेड का मालिक बन जाएगा; और वह बहुत आराम से जीवन बिताएगा, उसके अधीन नौकर होंगे, वह बेहतरीन खाना-पीना करेगा और एक महान व्यक्ति बनेगा। जब उसने अपनी होने वाली दुल्हन को अभद्र, आहत लहजे में संबोधित किया, तो आप उसके इरादों का अंदाजा भी नहीं लगा सकते थे - "यह तो बहुत खतरनाक कुत्ता है, मिस कील्डर। मुझे आश्चर्य है कि आप ऐसा जानवर पालती हैं।"

“क्या आप ऐसा मानते हैं, श्रीमान डोने? शायद आपको और भी आश्चर्य होगा जब मैं आपको बताऊँगा कि मैं उन्हें बहुत पसंद करता हूँ।”

"मुझे लगता है कि आप अपने दावे में गंभीर नहीं हैं। मुझे नहीं लगता कि कोई महिला उस दरिंदे को पसंद करेगी - वह इतना बदसूरत है - मानो किसी गाड़ीवान का कुत्ता हो। कृपया उसे फांसी दे दो।"

"मुझे जो पसंद है उसे छोड़ दो!"

और उसकी जगह कोई प्यारा सा पिल्ला या पूडल खरीद लें—जो महिलाओं के लिए उपयुक्त हो। महिलाओं को आमतौर पर गोद में बैठने वाले कुत्ते पसंद होते हैं।

"शायद मैं एक अपवाद हूं।"

"अरे नहीं, ऐसा हो ही नहीं सकता। इन मामलों में सभी महिलाएं एक जैसी होती हैं। यह सर्वत्र मान्य है।"

“मिस्टर डोने, टार्टर ने आपको बहुत डरा दिया था। मुझे उम्मीद है कि आपको कोई नुकसान नहीं होगा।”

“हाँ, मैं ज़रूर करूँगा। उसने मुझे ऐसा झटका दिया जिसे मैं जल्दी नहीं भूलूँगा। जब मैंने उसे उछलते हुए देखा” (श्री डोने का उच्चारण कुछ ऐसा ही था) “तो मुझे लगा कि मैं बेहोश हो जाऊँगा।”

"हो सकता है कि आप बेडरूम में बेहोश हो गए हों; आप वहां काफी देर तक रहे।"

“नहीं; मैंने हिम्मत इसलिए जुटाई ताकि मैं दरवाजा मजबूती से पकड़े रह सकूँ। मैंने ठान लिया था कि किसी को भी अंदर नहीं आने दूँगा। मैंने सोचा कि मैं अपने और दुश्मन के बीच एक दीवार खड़ी कर दूँगा।”

लेकिन अगर आपके दोस्त मिस्टर मैलोन चिंतित होते तो क्या होता?

“मैलोन को अपना ख्याल खुद रखना होगा। आपके आदमी ने मुझे यह कहकर बाहर आने के लिए मना लिया कि कुत्ता अपने पिंजरे में जंजीर से बंधा हुआ है। अगर मुझे इस बात का यकीन न होता, तो मैं सारा दिन कमरे में ही बैठा रहता। लेकिन अब क्या? मैं साफ कहता हूँ कि उस आदमी ने झूठ बोला है! कुत्ता वहीं है!”

और सचमुच, टार्टर हमेशा की तरह अकड़ा हुआ, भूरे रंग का और काले थूथन वाला, बगीचे की ओर खुलने वाले कांच के दरवाजे से गुजरा। वह अब भी खराब मूड में लग रहा था। वह फिर से गुर्रा रहा था और एक दबी हुई सीटी बजा रहा था, जो उसके पूर्वजों में बुलडॉग नस्ल की देन थी।

“और भी मेहमान आ रहे हैं,” शर्ली ने उस चिढ़ाने वाली शीतलता के साथ कहा, जो अक्सर खूंखार दिखने वाले कुत्तों के मालिक तब दिखाते हैं जब उनके जानवर गुस्से में भौंक रहे होते हैं। टार्टर ज़ोर से दहाड़ते हुए फुटपाथ पर गेट की ओर भागा। उसकी मालकिन ने चुपचाप कांच का दरवाज़ा खोला और चहचहाते हुए बाहर निकली। उसकी दहाड़ पहले ही शांत हो चुकी थी, और वह नए आने वालों से थपथपाने के लिए अपना विशाल, कुंद, मूर्ख सिर उठा रहा था।

“क्या! टार्टर, टार्टर!” एक हंसमुख, बल्कि बचकानी सी आवाज ने कहा, “क्या तुम हमें नहीं जानते? सुप्रभात, दोस्त!”

और नन्हा श्री स्वीटिंग, जिसका नेक स्वभाव उसे किसी भी पुरुष, स्त्री, बच्चे या जानवर से अपेक्षाकृत निर्भीक बनाता था, द्वार से अंदर आया और रक्षक को सहलाने लगा। उसका पादरी, श्री हॉल, उसके पीछे-पीछे आया। उसे भी टार्टर से कोई भय नहीं था, और टार्टर के मन में भी उसके प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी। उसने दोनों सज्जनों को चारों ओर सूंघा, और फिर, मानो यह सोचकर कि वे हानिरहित हैं और उन्हें जाने दिया जा सकता है, वह हॉल के धूप वाले सामने वाले हिस्से में चला गया, और द्वार को खाली छोड़ दिया। श्री स्वीटिंग उसके पीछे गया और उसके साथ खेलना चाहता था; लेकिन टार्टर ने उसके स्पर्श पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसे केवल अपनी प्रेमिका के हाथ का स्पर्श ही सुख देता था; बाकी सभी के प्रति वह हठपूर्वक असंवेदनशील बना रहा।

शर्ली, श्री हॉल और श्री स्वीटिंग से मिलने के लिए आगे बढ़ीं और सौहार्दपूर्वक उनसे हाथ मिलाया। वे उन्हें निधि के लिए चंदा जुटाने के आवेदनों में उस सुबह मिली कुछ सफलताओं के बारे में बताने आए थे। श्री हॉल की आँखें चश्मे के बावजूद दयालुता से चमक रही थीं, उनका सरल चेहरा सौम्यता से बेहद आकर्षक लग रहा था; और जब कैरोलीन ने उन्हें आते देख दौड़कर उनसे मिलने आई और अपने दोनों हाथ उनके हाथों में रख दिए, तो उन्होंने कोमल, शांत और स्नेहपूर्ण भाव से उन्हें निहारते हुए एक मुस्कुराते हुए उदास व्यक्ति का रूप धारण कर लिया।

घर में दोबारा प्रवेश करने के बजाय, वे बगीचे में घूमने लगीं, दोनों महिलाएं मिस्टर हॉल के दोनों ओर चल रही थीं। वह एक सुहावना धूप वाला दिन था; हवा ने लड़कियों के गालों को तरोताज़ा कर दिया और उनके घुंघराले बालों को खूबसूरती से बिखेर दिया। दोनों ही सुंदर लग रही थीं - एक हंसमुख। मिस्टर हॉल अपनी प्रतिभाशाली साथी से ज़्यादा बात करते थे और शांत स्वभाव वाली को बार-बार देखते थे। मिस कील्डर ने खिले हुए फूलों की कई गुच्छियाँ तोड़ीं जिनकी खुशबू पूरे बगीचे में फैली हुई थी। उन्होंने कुछ फूल कैरोलीन को दिए और उसे मिस्टर हॉल के लिए एक गुलदस्ता चुनने को कहा; और अपनी गोद में नाज़ुक और सुंदर फूलों से भरी कैरोलीन एक ग्रीष्मकालीन घर की सीढ़ियों पर बैठ गई। पादरी उसके पास अपनी छड़ी के सहारे खड़े थे।

शर्ली, जो कभी भी असभ्य नहीं हो सकती थी, ने अब ओक के बैठक कक्ष में उपेक्षित जोड़े को आवाज़ दी। वह डोने को उसके कट्टर शत्रु टार्टर के पास से ले गई, जो दोपहर के सूरज के नीचे अपने अगले पंजों पर नाक टिकाए खर्राटे ले रहा था। डोने आभारी नहीं था - वह कभी भी दया और ध्यान के लिए आभारी नहीं होता था - लेकिन वह सुरक्षा पाकर खुश था। मिस कील्डर, निष्पक्ष रहने की इच्छा से, क्यूरेट को फूल भेंट किए। उन्होंने उन्हें स्वाभाविक झिझक के साथ स्वीकार किया। मालोन विशेष रूप से असमंजस में लग रहा था, जब एक हाथ में गुलदस्ता था और दूसरे में उसकी लाठी। डोने का "धन्यवाद!" सुनना बहुत ही भावुक कर देने वाला था। यह सबसे मूर्खतापूर्ण और अहंकारी आवाज़ थी, जिसका अर्थ था कि वह इस भेंट को अपने गुणों के प्रति सम्मान और उत्तराधिकारी द्वारा उसके अनमोल स्नेह को पाने का प्रयास समझ रहा था। केवल स्वीटिंग ने ही उस गुलदस्ते को एक चतुर, समझदार छोटे आदमी की तरह स्वीकार किया, जैसा कि वह था, और उसे बड़े ही सलीके से अपने बटनहोल में लगा लिया।

उसके अच्छे व्यवहार के इनाम के तौर पर, मिस कील्डर ने उसे एक तरफ बुलाकर कुछ काम दिया, जिससे उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं। वह झटपट आंगन से होते हुए रसोई की ओर चल पड़ा। उसे रास्ता बताने की ज़रूरत नहीं थी; वह हर जगह सहज महसूस करता था। थोड़ी देर में वह एक गोल मेज़ लेकर लौटा, जिसे उसने देवदार के पेड़ के नीचे रख दिया; फिर उसने बगीचे के अलग-अलग कोनों और क्यारियों से छह कुर्सियाँ लाकर उन्हें एक घेरे में लगा दिया। नौकरानी (मिस कील्डर के पास कोई नौकर नहीं था) रुमाल से ढकी ट्रे लेकर बाहर आई। स्वीटिंग की फुर्तीली उंगलियों ने गिलास, प्लेट, चाकू और कांटे लगाने में मदद की; उसने ठंडे चिकन, हैम और टार्ट्स से बना एक सुंदर दोपहर का भोजन परोसने में भी उसकी सहायता की।

इस तरह की अचानक दावतें देना शर्ली को बहुत पसंद था; और स्वीटिंग जैसे एक चुस्त-दुरुस्त, मददगार छोटे दोस्त का उसके हाथ पर हाथ रखकर खेलना, उसकी मेहमाननवाज़ी के इशारों को खुशी-खुशी सुनना और फुर्ती से निभाना उसे सबसे ज़्यादा प्रसन्न करता था। डेविड और शर्ली के बीच बहुत अच्छे संबंध थे; और उत्तराधिकारी के प्रति उसकी निष्ठा निस्वार्थ थी, क्योंकि इससे शानदार डोरा साइक्स के प्रति उसकी वफादारी पर कोई असर नहीं पड़ता था।

भोज अत्यंत आनंदमय रहा। डॉन और मैलोन ने वास्तव में इसकी जीवंतता में

नगण्य योगदान दिया, क्योंकि उनकी मुख्य भूमिका चाकू, कांटे और शराब के गिलास से संबंधित थी; लेकिन जब श्री हॉल, डेविड स्वीटिंग, शर्ली और कैरोलिन जैसे चार व्यक्तित्व स्वस्थ और सौहार्दपूर्ण वातावरण में, हरे-भरे मैदान में, धूप से जगमगाते आकाश के नीचे, फूलों के बीच एकत्रित हों, तो नीरसता का कोई सवाल ही नहीं उठता।

बातचीत के दौरान श्री हॉल ने महिलाओं को याद दिलाया कि व्हिट्सनटाइड (शाम का त्योहार) नजदीक आ रहा है, जब ब्रायफ़ील्ड, व्हिनबरी और ननेली के तीनों परगनों का संयुक्त संडे स्कूल चाय-पीड़ा और जुलूस निकाला जाएगा। उन्होंने कहा कि उन्हें पता है कि कैरोलीन शिक्षिका के रूप में अपने पद पर होंगी और उन्हें उम्मीद है कि मिस कील्डर भी मौजूद रहेंगी। उन्होंने आशा जताई कि वह उस समय सबके सामने पहली बार सार्वजनिक रूप से उपस्थित होंगी। शर्ली इस तरह के अवसर को चूकने वाली नहीं थीं। उन्हें उत्सव का उत्साह, खुशियों का जमावड़ा, सुखद विवरणों का संयोजन, प्रसन्न चेहरों की भीड़ और आनंदित हृदयों का मिलन बहुत पसंद था। उन्होंने श्री हॉल से कहा कि वे उन पर पूरी तरह भरोसा कर सकते हैं। उन्हें नहीं पता कि उन्हें क्या करना होगा, लेकिन वे उन्हें अपनी इच्छानुसार नियुक्त कर सकते हैं।

“और,” कैरोलिन ने कहा, “क्या आप मुझसे वादा करेंगे कि आप मेरी मेज पर आएंगे और मेरे पास बैठेंगे, मिस्टर हॉल?”

“ईश्वर की कृपा से मैं असफल नहीं होऊंगा,” उन्होंने कहा। — “पिछले छह वर्षों से इन विशाल चाय-पार्टियों में मैं उनके दाहिनी ओर बैठता रहा हूँ,” उन्होंने मिस कील्डर की ओर मुड़ते हुए कहा। “जब वह बारह साल की छोटी बच्ची थीं, तब उन्हें संडे स्कूल की शिक्षिका बना दिया गया था। जैसा कि आपने देखा होगा, वह स्वभाव से बहुत आत्मविश्वासी नहीं हैं; और पहली बार जब उन्हें सार्वजनिक रूप से चाय बनानी पड़ी, तो वह दयनीय रूप से कांप रही थीं और उनका चेहरा लाल हो गया था। मैंने उनकी खामोश घबराहट, छोटे हाथों में कांपते कप और चायदानी में ज़रूरत से ज़्यादा भरी चाय को देखा। मैं उनकी मदद के लिए आगे आया, उनके पास बैठ गया, चायदानी और बर्तन संभाला, और वास्तव में किसी भी बूढ़ी औरत की तरह उनके लिए चाय बनाई।”

“मैं आपकी बहुत आभारी थी,” कैरोलिन ने बीच में कहा।

“तुम थीं। तुमने मुझे यह बात पूरी ईमानदारी से बताई, जिसका मुझे बहुत अच्छा

फल मिला, क्योंकि तुम बारह साल की उन छोटी बच्चियों जैसी नहीं थीं, जिनकी तुम चाहे कितनी भी मदद करो और दुलार करो, उन्हें तुम्हारे किए गए और सार्थक किए गए एहसान का एहसास उतनी जल्दी नहीं होता, मानो वे मांस और नसों की जगह मोम और लकड़ी की बनी हों। मिस कील्डर, वह शाम भर मेरे साथ रहीं, मेरे साथ उस मैदान में घूमती रहीं जहाँ बच्चे खेल रहे थे; जब सभी को चर्च में बुलाया गया तो वह मेरे पीछे-पीछे वेस्ट्री में आईं; मुझे लगता है कि अगर मैंने पहले से ही सावधानी बरतते हुए उन्हें पादरी के कमरे की सीट पर न बिठाया होता, तो वह मेरे साथ उपदेश मंच पर भी चढ़ जातीं।"

कैरोलिन ने कहा, "और तब से वह मेरा दोस्त है।"

"मैं हमेशा उसकी मेज पर, उसकी थाली के पास बैठता था और प्याले देता था—बस यही मेरी सेवाएँ हैं। उसके लिए मैं अगला काम यही करूँगा कि किसी दिन उसकी शादी किसी पादरी या चक्की मालिक से करवा दूँगा।—लेकिन ध्यान रखना, कैरोलीन, मैं दूल्हे के चरित्र के बारे में पता लगाऊँगा; और अगर वह ऐसा सज्जन नहीं है जो उस ननली कॉमन पर मेरे साथ हाथ में हाथ डालकर चलने वाली उस छोटी लड़की को खुश रख सके, तो मैं शादी नहीं करवाऊँगा। इसलिए सावधान रहना।"

"सावधानी का कोई फायदा नहीं। मैं शादी नहीं करने वाली। मैं आपकी बहन मार्गरेट की तरह अविवाहित रहूंगी, श्रीमान हॉल।"

"बहुत खूब। इससे बुरा भी हो सकता था। मार्गरेट दुखी नहीं है। उसके पास पढ़ने के लिए किताबें हैं, चिंता करने के लिए उसका भाई है, और वह संतुष्ट है। अगर कभी तुम्हें घर की ज़रूरत पड़े, अगर कभी ऐसा दिन आए जब ब्रायफ़ील्ड रेक्टरी तुम्हारा न रहे, तो ननेली विकारेज आ जाना। अगर बुढ़िया और कुंवारे तब तक ज़िंदा रहे, तो वे तुम्हारा हार्दिक स्वागत करेंगे।"

"ये रहे तुम्हारे फूल। अब," कैरोलिन ने कहा, जिसने उसके लिए चुने हुए फूलों का गुलदस्ता अब तक संभाल कर रखा था, "तुम्हें गुलदस्ता पसंद नहीं है, लेकिन तुम्हें इसे मार्गरेट को देना होगा; बस – थोड़ी भावुकता दिखाते हुए – वह छोटा सा फॉरगेट-मी-नॉट फूल अपने पास रख लो, जो मैंने घास से तोड़ा है; और – और भी भावुकता दिखाते हुए – मुझे दो-तीन नीले फूल लेने दो और उन्हें अपने स्मृति चिन्ह में रख लेने दो।"

और उसने तामचीनी आवरण और चांदी की कुंडी वाली एक छोटी सी किताब

निकाली, जिसे खोलकर उसने उसमें फूल रखे और उनके चारों ओर पेंसिल से लिखा, “मेरे मित्र रेव. सिरिल हॉल की याद में रखा जाए। मई — , 18 —।”

रेवरेंड सिरिल हॉल ने भी अपनी ओर से एक छोटी सी धार्मिक पुस्तक के पन्नों के बीच एक टहनी को सुरक्षित रख दिया। उन्होंने हाशिये पर केवल "कैरोलाइन" लिखा।

“अब,” उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, “मुझे उम्मीद है कि हम काफी रोमांटिक हैं। मिस कील्डर,” उन्होंने आगे कहा (वैसे, इस बातचीत के दौरान पादरी अपने-अपने चुटकुलों में इतने मशगूल थे कि उन्हें मेज के दूसरे छोर पर चल रही बातों का पता ही नहीं चला), “मुझे उम्मीद है कि आप इस बूढ़े, सफ़ेद बालों वाले पादरी के इस ‘भावुक’ स्वभाव पर हंस रही होंगी; लेकिन सच तो यह है कि मैं आपकी इस युवा मित्र की हर बात मानने का इतना आदी हो गया हूँ कि जब वह मुझसे कुछ करने को कहती है तो मुझे मना करना नहीं आता। आप कहेंगी कि फूलों और फ़ॉरगेट-मी-नॉट का लेन-देन करना मेरे बस की बात नहीं है; लेकिन देखिए, जब भावुक होने के लिए कहा जाता है, तो मैं आज्ञाकारी हो जाता हूँ।”

“वह स्वभाव से ही काफी भावुक हैं,” कैरोलिन ने कहा। “मार्गरेट ने मुझे बताया था, और मैं जानती हूँ कि उन्हें क्या पसंद है।”

“क्या आप अच्छे और सुखी रहेंगे? हाँ; यही मेरी सबसे बड़ी खुशियों में से एक है। ईश्वर आपको शांति और पवित्रता का आशीर्वाद लंबे समय तक प्रदान करें! मेरा तात्पर्य तुलनात्मक पवित्रता से है; क्योंकि मैं भली-भांति जानता हूँ कि उनकी दृष्टि में कोई भी शुद्ध नहीं है। जो हमारी मानवीय दृष्टि में स्वर्गदूतों की तरह बेदाग दिखता है, वह उनके लिए केवल कमजोरी है, जिसे शुद्ध करने के लिए उनके पुत्र के रक्त और सहारा देने के लिए उनकी आत्मा की शक्ति की आवश्यकता है। आइए हम सभी विनम्रता को अपनाएँ—मैं भी, और आप भी, मेरे युवा मित्रों; और हम ऐसा तब कर सकते हैं जब हम अपने हृदय में झाँकें और वहाँ प्रलोभन, असंगतताएँ, प्रवृत्तियाँ देखें, जिन्हें पहचानकर हम भी शर्म से लाल हो जाते हैं। और न तो यौवन, न ही सुंदर रूप, न ही अनुग्रह, और न ही कोई कोमल बाहरी आकर्षण ईश्वर की दृष्टि में सुंदरता या अच्छाई का कारण बनता है।— युवतियों, जब आपका दर्पण या पुरुषों की ज़ुबानें आपकी चापलूसी करें, तो याद रखें कि अपने सृष्टिकर्ता की दृष्टि में, मैरी ऐनली—एक ऐसी स्त्री जिसकी न तो दर्पण ने और न ही होंठों ने कभी प्रशंसा की है—इन दोनों से कहीं अधिक सुंदर और श्रेष्ठ हैं। “वह सचमुच वैसी ही हैं,” उन्होंने कुछ देर रुककर

कहा, “वह सचमुच वैसी ही हैं। तुम नौजवान, जो स्वार्थ और सांसारिक आशाओं में डूबे हो, शायद ही मसीह की तरह जीवन जीते हो। हो सकता है कि तुम अभी ऐसा न कर पाओ, जब तक जीवन इतना सुखद है और धरती तुम पर इतनी मेहरबान है; यह बहुत अधिक अपेक्षा होगी। वह नम्र हृदय और उचित श्रद्धा के साथ अपने मुक्तिदाता के पदचिन्हों पर चलती हैं।”

यहां मिस्टर हॉल के सौम्य स्वर में डोने की कर्कश आवाज सुनाई दी। "अहम!" उन्होंने अपना गला साफ करते हुए कहा, जाहिर तौर पर किसी महत्वपूर्ण भाषण से पहले — "अहम! मिस कील्डर, कृपया एक पल के लिए ध्यान दें।"

“अच्छा,” शर्ली ने बेपरवाही से कहा, “क्या बात है? मैं सुनती हूँ। मेरा सारा शरीर कान है, आँख नहीं।”

“मुझे उम्मीद है कि आपका कुछ हिस्सा हाथ भी है,” डोने ने अपने अशिष्ट, अभिमानी और परिचित अंदाज़ में जवाब दिया, “और कुछ हिस्सा पर्स भी। मैं हाथ और पर्स से ही अपील करने वाला हूँ। मैं आज सुबह यहाँ आपसे विनती करने आया हूँ —”

आपको श्रीमती गिल के पास जाना चाहिए था; वह मेरी दान-पुण्य प्रबंधक हैं।

“मैं आप सभी से एक स्कूल के लिए चंदा देने का अनुरोध करता हूँ। मैं और डॉ. बोल्टबी, व्हिनबरी के हमारे विकरेज के अंतर्गत आने वाले एक्लेफिग नामक छोटे से गाँव में एक स्कूल बनाना चाहते हैं। बैपटिस्ट समुदाय ने उस ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया है। उनका वहाँ एक चैपल है, और हम उस ज़मीन को लेकर विवाद करना चाहते हैं।”

लेकिन मेरा एक्लेफिग से कोई लेना-देना नहीं है। वहां मेरी कोई संपत्ति नहीं है।

“इसका क्या मतलब है? आप एक चर्च जाने वाली महिला हैं, है ना?”

“वाह, कितना अद्भुत प्राणी है!” शर्ली ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाया। “बेहतरीन वाक्पटुता! शानदार शैली! वह मुझे कितना आनंदित करता है!” फिर ज़ोर से बोली, “मैं एक धार्मिक महिला हूँ, बिल्कुल।”

“तो फिर आप इस मामले में योगदान देने से इनकार नहीं कर सकते। एक्लेफिग की आबादी तो बिल्कुल ही असभ्य है; हम उन्हें सभ्य बनाना चाहते हैं।”

“धर्म प्रचारक कौन होगा?”

"शायद मैं खुद।"

"अपने अनुयायियों के प्रति सहानुभूति की कमी के कारण आप असफल नहीं होंगे।"

“मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा—मुझे सफलता की उम्मीद है; लेकिन हमें पैसों की ज़रूरत है। वो अखबार है। कृपया अच्छी-खासी रकम दीजिए।”

जब भी शिर्ली से पैसे मांगे जाते, तो वह शायद ही कभी हिचकिचाती थी। उसने 5 पाउंड देने का आदेश दिया। हाल ही में दिए गए 300 पाउंड और लगातार दिए जा रहे छोटे-छोटे दानों के बाद, फिलहाल उसकी आर्थिक स्थिति इतनी ही थी। डोने ने इसे देखा, चंदे को "घटिया" बताया और और अधिक की मांग करने लगी। मिस कील्डर को थोड़ी नाराजगी और उससे भी ज्यादा हैरानी हुई।

“फिलहाल मैं और कुछ नहीं दूंगी,” उसने कहा।

“इससे ज़्यादा मत दो! अरे, मुझे तो उम्मीद थी कि तुम सौ रुपये देकर लिस्ट में सबसे ऊपर रहोगे। तुम्हारी संपत्ति को देखते हुए, तुम्हें इससे कम में कभी हस्ताक्षर नहीं करने चाहिए।”

वह चुप रही।

डॉन ने आगे कहा, "दक्षिण में, एक हजार पाउंड सालाना कमाने वाली महिला भी किसी सार्वजनिक कार्य के लिए पांच पाउंड देने में शर्म महसूस करेगी।"

शर्ली, जो शायद ही कभी घमंडी दिखती थी, आज वैसी ही लग रही थी। उसका दुबला-पतला शरीर तनावग्रस्त हो गया; उसके प्रतिष्ठित चेहरे पर तिरस्कार की चमक उभर आई।

“अजीब टिप्पणियाँ?” उसने कहा — “बेहद असंवेदनशील! इनाम के बदले निंदा करना अनुचित है।”

“इनाम! क्या आप पाँच पाउंड को इनाम कहते हैं?”

“हाँ, मैं करता हूँ; और यह दान, यदि मैंने इसे डॉ. बोल्टबी के प्रस्तावित स्कूल को न दिया होता, जिसके निर्माण का मैं समर्थन करता हूँ, और उनके सहायक पादरी को किसी भी प्रकार से न दिया होता, जो चंदा मांगने या बल्कि जबरदस्ती वसूलने के अपने तरीके में नासमझ प्रतीत होते हैं - यह दान, मैं दोहराता हूँ, जिसे इस कारण के बिना मैं तुरंत वापस कर देता।”

डॉन का स्वभाव कठोर था। वक्ता के लहजे, हावभाव और नज़र से जो कुछ भी व्यक्त हुआ, वह उन्हें पूरी तरह से या आंशिक रूप से भी महसूस नहीं हुआ। उन्हें यह

भी नहीं पता था कि उनका पक्ष किस आधार पर लिया जा रहा है।

"यॉर्कशायर कितनी दयनीय जगह है," उन्होंने आगे कहा। "अगर मैंने इसे न देखा होता तो मैं इस देश के बारे में कभी कोई विचार ही न बना पाता। और यहाँ के लोग—अमीर और गरीब—कैसे ही लोग हैं! कितने असभ्य और गंवार! इन्हें तो दक्षिण में खोज निकाला जा सकता था।"

शर्ली मेज पर आगे की ओर झुक गई, उसके नथुने थोड़े फैल गए, उसकी पतली उंगलियां आपस में गुंथी हुई थीं और एक दूसरे को कसकर दबा रही थीं।

"अमीर लोग," मोहित और बेसुध डॉन ने आगे कहा, "कंजूसों का झुंड हैं, कभी भी उस तरह से नहीं जीते जैसे उनकी आमदनी के हिसाब से जीना चाहिए। आप शायद ही कभी" — (पाठक, श्री डॉन के उच्चारण के लिए क्षमा करें; यह बहुत ही चुनिंदा था; वह इसे सभ्य मानते थे और अपने दक्षिणी लहजे पर गर्व करते थे; उत्तरी कानों को उनके कुछ शब्दों का उच्चारण अजीब लगता था) — "आप शायद ही कभी कोई ऐसा परिवार देखते हैं जहाँ एक उचित गाड़ी या शाही बटला रखा जाता हो; और गरीबों की बात करें तो — ज़रा उन्हें देखिए जब वे किसी शादी या अंत्येष्टि के अवसर पर चर्च के दरवाजों पर भीड़ लगाते हैं, लकड़ी के जूतों में खड़खड़ाहट करते हुए; पुरुष अपनी कमीज की आस्तीन और ऊन कंघी करने वाले के एप्रन में, महिलाएं भीड़ की टोपी और बिस्तर के गाउन में। वे सचमुच इस लायक हैं कि उनके बीच एक पागल गाय छोड़ दी जाए ताकि उनकी भीड़ तितर-बितर हो जाए। हा हा! कितना मज़ा आएगा!"

"लो! तुम चरम सीमा पर पहुँच गए हो," शर्ली ने धीमी आवाज़ में कहा। "तुम चरम सीमा पर पहुँच गए हो," उसने अपनी चमकती नज़र उसकी ओर घुमाते हुए दोहराया। "तुम इससे आगे नहीं जा सकते, और," उसने ज़ोर देकर कहा, "मेरे घर में तो बिल्कुल नहीं।"

वह उठ खड़ी हुई - अब कोई उसे नियंत्रित नहीं कर सकता था, क्योंकि वह बहुत गुस्से में थी - वह सीधे अपने बगीचे के द्वार की ओर चली और उसे चौड़ा खोल दिया।

उसने कठोर स्वर में कहा, "यहाँ से जल्दी से निकल जाओ, और फिर कभी इस फुटपाथ पर कदम मत रखना।"

डॉन चकित रह गया। वह तो हमेशा यही सोचता रहा था कि वह एक उच्च कोटि के, ऊंचे दर्जे के व्यक्ति के रूप में अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन कर रहा है; उसे लगता था

कि वह लोगों पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। क्या उसने यॉर्कशायर की हर चीज़ के प्रति तिरस्कार नहीं जताया था? इससे अधिक निर्णायक प्रमाण क्या हो सकता था कि वह वहाँ की हर चीज़ से श्रेष्ठ था? और फिर भी, उसे यॉर्कशायर के एक बगीचे से कुत्ते की तरह बाहर निकाला जाने वाला था! ऐसी परिस्थितियों में, "तदनुसार जुड़ाव" कहाँ था?

"तुरंत मुझसे छुटकारा पाओ - तुरंत!" शर्ली ने दोहराया, जब वह वहीं रुका रहा।

“महोदया – एक पादरी! एक पादरी को बुलाओ!”

“चले जाओ! अगर तुम आर्कबिशप भी होते तो तुमने खुद को एक सज्जन व्यक्ति साबित नहीं किया होता, और तुम्हें जाना ही होगा। जल्दी करो!”

वह पूरी तरह दृढ़ थी। उसके साथ कोई खिलवाड़ नहीं किया जा सकता था। इसके अलावा, टार्टर फिर से सक्रिय हो रहा था; उसने गड़बड़ी के संकेत भांप लिए थे; उसने उसमें शामिल होने की इच्छा प्रकट की। जाहिर तौर पर जाने के अलावा कोई चारा नहीं था, और डोने ने प्रस्थान किया, उत्तराधिकारी ने द्वार बंद करते हुए उसे झुककर गहरा प्रणाम किया।

"उस घमंडी पादरी की हिम्मत कैसे हुई अपने अनुयायियों का अपमान करने की! उस तुतलाते हुए कॉकनी की हिम्मत कैसे हुई यॉर्कशायर को कोसने की!" मेज पर लौटते हुए उसने इस घटना पर बस यही टिप्पणी की।

कुछ ही देर में वह छोटा सा समूह समाप्त हो गया; मिस कील्डर की झुर्रीदार और काली पड़ी भौंहें, मुड़े हुए होंठ और क्रोधित आंखें आगे किसी भी सामाजिक आनंद के लिए कोई निमंत्रण नहीं दे रही थीं।

अध्याय सोलह।

कोष फलता-फूलता रहा। मिस कील्डर के उदाहरण, तीनों रेक्टरों के अथक प्रयासों और उनकी अविवाहित और चश्माधारी सहायकों, मैरी एन ऐनली और मार्गरेट हॉल की कुशल एवं शांत सहायता से एक अच्छी खासी रकम जुटाई गई; और इस धन का विवेकपूर्ण प्रबंधन करके, इसने फिलहाल बेरोजगार गरीबों की पीड़ा को काफी हद तक कम किया। आस-पड़ोस शांत होता प्रतीत हुआ। पिछले दो हफ्तों से कोई कपड़ा नष्ट नहीं हुआ था; तीनों पारिशों में किसी मिल या हवेली पर कोई हमला नहीं हुआ था। शर्ली को पूरा भरोसा था कि जिस बुराई को वह टालना चाहती थी, वह लगभग टल गई है, कि मंडराता तूफान गुजर रहा है। गर्मी के आगमन के साथ, उसे पूरा विश्वास था कि व्यापार में सुधार होगा - ऐसा हमेशा होता है; और फिर यह थका देने वाला युद्ध हमेशा के लिए नहीं चल सकता; शांति एक दिन जरूर लौटेगी। शांति से व्यापार को कितना बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा!

जब भी वह अपने किरायेदार गेरार्ड मूर से मिलती और बातचीत कर पाती, तो उसकी टिप्पणियाँ आमतौर पर इसी लहजे में होती थीं; और मूर बड़ी खामोशी से सुनता था—इतनी खामोशी कि वह संतुष्ट नहीं होती थी। फिर वह अपनी अधीर निगाहों से उससे कुछ और माँगती—कोई स्पष्टीकरण, या कम से कम कोई अतिरिक्त टिप्पणी। अपने खास अंदाज में मुस्कुराते हुए, अपने चेहरे पर एक खास मिठास लिए, जबकि उसका माथा गंभीर बना रहता, वह जवाब देता कि वह खुद भी युद्ध की सीमित प्रकृति में विश्वास रखता है; दरअसल, इसी आधार पर उसकी आशाओं का सहारा है; इसी पर उसकी अटकलें टिकी हैं। “आप जानते ही हैं,” वह आगे कहते, “कि मैं अब हॉलो मिल को पूरी तरह से सट्टेबाजी पर चला रहा हूँ। मैं कुछ भी नहीं बेचता; मेरे माल का कोई बाज़ार नहीं है। मैं भविष्य के लिए उत्पादन करता हूँ। मैं पहले अवसर का लाभ उठाने के लिए खुद को तैयार रखता हूँ। तीन महीने पहले यह मेरे लिए असंभव था; मेरा कर्ज़ और पूंजी दोनों खत्म हो गए थे। आप अच्छी तरह जानते हैं कि कौन मेरी मदद के लिए आया, किससे मुझे वह ऋण मिला जिसने मुझे बचाया। उसी ऋण के बल पर मैं वह साहसिक खेल जारी रख पा रहा हूँ, जिसके बारे में कुछ समय पहले मुझे डर था कि मैं इसे फिर कभी नहीं खेल पाऊँगा। मुझे पता है कि नुकसान के बाद पूर्ण बर्बादी होगी, और मुझे पता है कि लाभ अनिश्चित है; लेकिन मैं पूरी तरह से खुश

हूँ। जब तक मैं सक्रिय रह सकता हूँ, जब तक मैं प्रयास कर सकता हूँ, संक्षेप में, जब तक मेरे हाथ बंधे नहीं हैं, तब तक मेरे लिए निराश होना असंभव है। जैतून के शासन का एक वर्ष - नहीं, केवल छह महीने - और मैं सुरक्षित हूँ; क्योंकि, जैसा कि आप कहते हैं, शांति व्यापार को बढ़ावा देगी। इसमें आप सही हैं; लेकिन पड़ोस की बहाल शांति के बारे में, मुझे संदेह है कि आपके दान कोष का कोई स्थायी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। दान-आधारित राहत से श्रमिक वर्ग को कभी शांति नहीं मिली—इससे उनमें कृतज्ञता नहीं जागी; यह मानवीय स्वभाव में नहीं है। मेरा मानना है कि यदि सब कुछ ठीक होता, तो उन्हें इस अपमानजनक राहत की आवश्यकता नहीं होती; और वे इसे महसूस करते हैं। यदि हम ऐसी स्थिति में होते, तो हम भी इसे महसूस करते। इसके अलावा, वे किसके प्रति कृतज्ञ हों? शायद आपके प्रति, या पादरियों के प्रति, लेकिन हम चक्की मालिकों के प्रति नहीं। वे हमसे पहले से भी अधिक नफरत करते हैं। फिर यहाँ के असंतुष्ट लोग अन्यत्र के असंतुष्ट लोगों से मेल खाते हैं। नॉटिंघम उनका एक मुख्यालय है, मैनचेस्टर दूसरा, बर्मिंघम तीसरा। अधीनस्थ अपने वरिष्ठों से आदेश प्राप्त करते हैं; वे अच्छे अनुशासन में हैं; बिना सोचे-समझे कोई प्रहार नहीं किया जाता। उमस भरे मौसम में आपने दिन-प्रतिदिन आकाश में गरजने का खतरा देखा होगा, और फिर भी रात-दर-रात बादल छंट जाते हैं, और सूर्य शांति से अस्त हो जाता है; लेकिन खतरा टला नहीं था—यह केवल टल गया था। लंबे समय से मंडरा रहा तूफान अंततः अवश्य ही आएगा। इसमें समानता है। नैतिक और भौतिक वातावरण के बीच।"

“अच्छा, श्री मूर,” (इन सम्मेलनों का अंत अक्सर इसी तरह होता था), “अपना ख्याल रखना। अगर आपको लगता है कि मैंने कभी आपका कोई भला किया है, तो मुझे यह वादा करके पुरस्कृत करें कि आप भी अपना ख्याल रखेंगे।”

“हाँ, मैं करता हूँ; मैं पूरी सावधानी से अपना ख्याल रखूँगा। मैं जीना चाहता हूँ, मरना नहीं। भविष्य मेरे सामने स्वर्ग के समान खुला है; और फिर भी, जब मैं अपने स्वर्ग के अंधकार में गहराई से देखता हूँ, तो मुझे एक ऐसा दृश्य दिखाई देता है जो मुझे किसी देवदूत या फरिश्ते के दूर-दराज के नज़ारों में उड़ने से कहीं अधिक प्रिय है।”

“क्या सच में? कृपया बताएं, आपका क्या दृष्टिकोण है?”

"अच्छा ऐसा है - - "

नौकरानी चाय के बर्तन लेकर तेजी से अंदर आई।

जैसा कि हमने देखा है, मई के शुरुआती दिनों में मौसम सुहावना था; मध्य भाग में बारिश हुई; लेकिन अंतिम सप्ताह में, चंद्रमा के परिवर्तन के समय, मौसम फिर से साफ हो गया। एक ताज़ी हवा चांदी जैसे सफेद, घने वर्षा बादलों को उड़ा ले गई, उन्हें एक के बाद एक पूर्वी क्षितिज की ओर ले गई, जिसके किनारे पर वे छोटे होते गए और जिसके पीछे वे गायब हो गए, पीछे का आकाश शुद्ध नीले रंग का खुला छोड़ गए, जो ग्रीष्म ऋतु के सूर्य के उदय के लिए तैयार था। वह सूर्य व्हिटसनटाइड पर पूरी तरह से उगा। स्कूलों के इकट्ठा होने का संकेत शानदार मौसम से मिला।

व्हिट-ट्यूजडे एक बड़ा उत्सव था, जिसकी तैयारी में ब्रायर्फ़ील्ड के दो बड़े स्कूल कक्ष, जो वर्तमान रेक्टर द्वारा मुख्यतः अपने खर्च पर बनवाए गए थे, साफ़ किए गए, सफ़ेदी से पुते गए, फिर से रंगे गए और फूलों और सदाबहार पौधों से सजाए गए - कुछ रेक्टर के बगीचे से, दो गाड़ी भर फील्डहेड से और एक ठेला भर श्री विन्न के निवास स्थान डी वाल्डेन के छोटे से इलाके से। इन स्कूल कक्षों में बीस मेजें लगाई गईं, जिनमें से प्रत्येक में बीस मेहमानों के बैठने की व्यवस्था थी, उनके चारों ओर बेंचें थीं और उन पर सफ़ेद कपड़े बिछे थे। उनके ऊपर कम से कम बीस पिंजरे लटकाए गए थे, जिनमें उतने ही कैनरी पक्षी थे, जैसा कि उस क्षेत्र की एक खास पसंद थी, जिसे श्री हेलस्टोन के क्लर्क विशेष रूप से पसंद करते थे, जो इन पक्षियों के तीखे गीत से आनंदित होते थे और जानते थे कि भाषाओं के भ्रम के बीच भी वे हमेशा सबसे ऊँची आवाज़ में गाते हैं। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि ये मेजें तीन पारिशों से एकत्रित होने वाले बारह सौ छात्रों के लिए नहीं लगाई गई थीं, बल्कि केवल स्कूलों के संरक्षकों और शिक्षकों के लिए थीं। बच्चों का भोज खुले में आयोजित किया जाना था। एक बजे सैनिकों को आना था; दो बजे उन्हें व्यवस्थित किया जाना था; चार बजे तक वे पल्ली में परेड करेंगे; फिर भोज होगा, और उसके बाद गिरजाघर में संगीत और भाषणों के साथ सभा होगी।

ब्रायरफील्ड को मिलन स्थल—उत्सव स्थल—के रूप में क्यों चुना गया, यह स्पष्ट किया जाना चाहिए। इसका कारण यह नहीं था कि यह सबसे बड़ा या सबसे अधिक आबादी वाला पैरिश था—इस मामले में व्हिनबरी इससे कहीं आगे था; न ही इसका कारण यह था कि यह सबसे पुराना था, भले ही यहाँ का प्राचीन चर्च और रेक्टरी कितने ही पुराने थे—नन्नेली का कम छत वाला मंदिर और काई से ढका पादरी का

घर, जो दोनों ही समकालीन ओक के पेड़ों में दबे हुए थे और ननवुड के उत्कृष्ट प्रहरी थे, उससे भी पुराने थे। इसका कारण केवल यह था कि श्री हेलस्टोन की यही इच्छा थी, और श्री हेलस्टोन की इच्छा बोल्टबी या हॉल की इच्छा से कहीं अधिक प्रबल थी; पूर्वोक्त अपने दृढ़ और अभिमानी भाई के साथ वरीयता के मुद्दे पर विवाद नहीं कर सकते थे, और बाद वाले नहीं करना चाहते थे। उन्होंने उन्हें नेतृत्व करने और शासन करने दिया।

यह महत्वपूर्ण वर्षगांठ कैरोलिन हेलस्टोन के लिए हमेशा से एक कठिन दिन रहा था, क्योंकि यह उन्हें मजबूरीवश सार्वजनिक रूप से उपस्थित होने के लिए प्रेरित करता था, जिससे उन्हें आस-पड़ोस के सभी धनी, सम्मानित और प्रभावशाली लोगों का सामना करना पड़ता था; जिनके सामने, श्री हॉल के दयालु चेहरे के बिना, वह असहाय प्रतीत होतीं। प्रमुखता से उपस्थित होने के लिए बाध्य; रेक्टर की भतीजी और प्रथम कक्षा की पहली शिक्षिका होने के नाते, अपने समूह के आगे चलने के लिए बाध्य; महिलाओं और पुरुषों की मिश्रित भीड़ के लिए पहली मेज पर चाय बनाने के लिए बाध्य, और यह सब माँ, चाची या किसी अन्य संरक्षक के बिना करना - इस बीच, वह एक घबराई हुई महिला थीं, जो प्रचार से बेहद डरती थीं - यह समझा जा सकता है कि, इन परिस्थितियों में, वह व्हिटसनटाइड के आगमन से कांप रही थीं।

लेकिन इस साल शर्ली उसके साथ थी, और इससे मुकदमे का स्वरूप पूरी तरह बदल गया—बिल्कुल ही बदल गया। अब यह कोई मुकदमा नहीं रहा—यह लगभग एक आनंद बन गया था। मिस कील्डर अकेले में भी आम दोस्तों की भीड़ से कहीं बेहतर थीं। पूरी तरह आत्म-नियंत्रित, हमेशा उत्साही और सहज; अपनी सामाजिक अहमियत से वाकिफ, फिर भी कभी उसका घमंड नहीं करती थीं—उन्हें बस एक नज़र देखना ही हिम्मत देता था। बस एक ही डर था कि कहीं उत्तराधिकारी तय समय पर न पहुँचे। वह अक्सर समय से देर कर देती थीं, और कैरोलीन जानती थी कि उसके चाचा किसी का एक पल भी इंतज़ार नहीं करेंगे। चर्च की घड़ी में दो बजते ही घंटियाँ बजने लगतीं और जुलूस शुरू हो जाता। इसलिए, उसे इस मामले में शर्ली का ध्यान रखना होगा, वरना उसकी अपेक्षित साथी उसे धोखा दे देगी।

मंगलवार को वह लगभग सूर्योदय के साथ ही उठ गई। वह, फैनी और एलिज़ा पूरी सुबह रेक्टरी के बैठक कक्षों को बेहतरीन ढंग से सजाने और भोजन कक्ष के साइडबोर्ड पर ठंडे पेय पदार्थ - शराब, फल, केक - परोसने में व्यस्त रहीं। फिर उन्हें

अपने सबसे ताज़े और सुंदर सफेद मलमल के वस्त्र पहनने पड़े: दिन की उत्तम सुंदरता और अवसर की गंभीरता के लिए ऐसे वस्त्र आवश्यक थे। उनका नया कमरबंद - मार्गरेट हॉल का जन्मदिन का उपहार, जिसके बारे में उन्हें पूरा विश्वास था कि इसे सिरिल ने स्वयं खरीदा था, और जिसके बदले में उन्होंने वास्तव में उन्हें एक सुंदर डिब्बे में कैम्ब्रिक बैंड का एक सेट दिया था - फैनी की कुशल उंगलियों से बांधा गया, जिसे अपनी सुंदर युवा मालकिन को इस अवसर के लिए तैयार करने में बहुत आनंद आता था। उनकी साधारण टोपी को उनके कमरबंद के अनुरूप सजाया गया था; उनका सुंदर लेकिन सस्ता सफेद क्रेप का स्कार्फ उनकी पोशाक के साथ जंच रहा था। तैयार होने पर वह एक ऐसी छवि प्रस्तुत करती थीं, जो चकाचौंध करने के लिए पर्याप्त चमकदार नहीं थी, लेकिन रुचि जगाने के लिए पर्याप्त सुंदर थी; बेहद आकर्षक तो नहीं, लेकिन अत्यंत कोमल और मनमोहक चित्र—एक ऐसा चित्र जिसमें रंगों की मिठास, वातावरण की शुद्धता और चेहरे की सुंदरता ने भव्य आकृति और भव्य आकृति की कमी को पूरा कर दिया। उसकी भूरी आँखें और साफ माथा उसके मन की झलक दिखाते थे, जो उसके पहनावे और चेहरे के अनुरूप था—विनम्र, सौम्य और चिंतनशील होते हुए भी सामंजस्यपूर्ण। ऐसा प्रतीत होता था कि न तो मेमने को और न ही कबूतर को उससे डरने की आवश्यकता है, बल्कि उसकी सरल और कोमल दृष्टि में वे अपने स्वभाव या उन स्वभावों के प्रति सहानुभूति का स्वागत करेंगे जो हम उन्हें प्रदान करते हैं।

आखिरकार, वह एक अपूर्ण, त्रुटिपूर्ण इंसान थी, रूप, रंग और पहनावे में काफी सुंदर थी, लेकिन, जैसा कि सिरिल हॉल ने कहा था, वह न तो उतनी अच्छी थी और न ही उतनी महान जितनी मुरझाई हुई मिस ऐनली, जो अब अपनी संकीर्ण कुटिया के कमरे में अपना सबसे अच्छा काला गाउन और क्वेकर ड्रेब शॉल और बोनट पहन रही थी।

कैरोलीन कुछ एकांत खेतों और कुछ छिपी हुई गलियों से होते हुए फील्डहेड की ओर चल पड़ी। वह हरी झाड़ियों और हरे-भरे मैदानों के नीचे से तेज़ी से गुज़री। उसके बेदाग़ वस्त्रों के किनारे को गंदा करने या उसकी पतली सैंडल को गीला करने के लिए न तो धूल थी, न ही नमी। पिछली बारिश के बाद सब कुछ साफ़ था, और इस चमकते सूरज के नीचे सब कुछ सूखा था। फिर वह निडर होकर डेज़ी और घास के मैदानों पर और घने बागानों से गुज़री; वह फील्डहेड पहुँची और मिस कील्डर के ड्रेसिंग रूम में

दाखिल हुई।

अच्छा हुआ कि वह आ गई, वरना शर्ली को बहुत देर हो जाती। जल्दी तैयार होने के बजाय, वह सोफे पर लेटकर पढ़ने में मग्न थी। श्रीमती प्रायर पास ही खड़ी उसे उठकर कपड़े पहनने के लिए व्यर्थ ही कह रही थीं। कैरोलीन ने एक शब्द भी व्यर्थ नहीं कहा। उसने तुरंत उससे किताब ले ली और अपने हाथों से उसके कपड़े उतारने और फिर से पहनाने का काम शुरू कर दिया। गर्मी से सुस्त और अपनी जवानी और खुशमिजाज स्वभाव के कारण शर्ली बातें करना, हंसना और देर तक रुकना चाहती थी; लेकिन कैरोलीन समय पर पहुंचने की चिंता में, उसे कपड़े पहनाने में इतनी तेज़ी से जुटी रही जितनी तेज़ी से उंगलियां डोरियां बांध सकती थीं या पिन लगा सकती थीं। अंत में, जब उसने हुक और आई की आखिरी पंक्ति लगा दी, तो उसे शर्ली को डांटने का समय मिला और उसने कहा कि वह इतनी समय की पाबंद न होकर बहुत शरारती है, वह अभी भी घोर लापरवाही की मूर्ति लग रही है; और शर्ली सचमुच ऐसी ही थी, बस उस थकाऊ आदत की एक प्यारी सी तस्वीर।

कैरोलीन से बिल्कुल अलग, वह बेहद खूबसूरत थी। उसके कपड़े की हर तह और हर आकृति में एक अलग ही अंदाज था। साधारण पोशाक की तुलना में रेशमी कपड़ा उस पर कहीं अधिक जंच रहा था; कढ़ाईदार दुपट्टा उस पर खूब जंच रहा था। उसने उसे लापरवाही से, लेकिन शालीनता से पहना था। उसकी टोपी पर लगा हार उसके सौंदर्य को और भी बढ़ा रहा था। फैशन के प्रति उसका सजगता भाव, पोशाक के हर हिस्से में सलीके से किया गया आभूषण, सब कुछ उस पर खूब जंच रहा था। ये सब उस पर खूब जंच रहा था, जैसे उसकी आँखों की चमक, होठों पर खिलखिलाती मुस्कान, उसका सीधा-सादा शरीर और फुर्तीली चाल। कपड़े पहनने के बाद कैरोलीन ने उसका हाथ पकड़ा, उसे जल्दी से नीचे ले गई और बाहर निकल गई; और इस तरह वे खेतों में दौड़ती हुई, हँसती हुई जा रही थीं, मानो एक बर्फ़-सफ़ेद कबूतरी और रत्न-जड़ित स्वर्ग की चिड़िया एक साथ उड़ रही हों।

मिस हेलस्टोन की तत्परता के कारण वे समय पर पहुँच गए। हालाँकि चर्च अभी भी पेड़ों से ढका हुआ था, उन्होंने घंटी की धीमी लेकिन ज़ोरदार आवाज़ सुनी जो सभी को इकट्ठा होने का संकेत दे रही थी। लोगों के आने की आहट, कई कदमों की धमक और कई आवाज़ों की गुनगुनाहट भी सुनाई दे रही थी। एक ऊँची जगह से, उन्होंने व्हिनबरी रोड पर व्हिनबरी स्कूल को आते देखा। उसमें पाँच सौ छात्र थे। रेक्टर और

क्यूरेट, बोल्टबी और डोने, इसके प्रमुख थे - बोल्टबी पूरी तरह से धार्मिक वस्त्रों में सजे हुए, एक सम्मानित पुजारी की तरह चल रहे थे, सिर पर एक टोपी थी, एक विशाल समूह की गरिमा के साथ, सबसे चौड़े और विशाल काले कोट की शोभा बढ़ा रहे थे, और एक मजबूत सोने की नोक वाली छड़ी का सहारा लिए हुए थे। डॉक्टर चलते समय, कभी-कभी अपनी छड़ी को हल्के से लहराते थे और अपने सहायक की ओर अपने टोपी को एक धार्मिक संकेत के साथ झुकाते थे। वह सहायक—यानी डोने —अपने मुख्य पादरी के विशाल शरीर की तुलना में दुबला-पतला होने के बावजूद, एक पादरी जैसा दिखता था। उसकी हर चीज़ व्यावहारिक और आत्मसंतुष्ट थी, उसकी उठी हुई नाक और ऊँची ठुड्डी से लेकर उसके पादरी वाले काले गैटर, कुछ छोटे, बिना पट्टियों वाले पतलून और चौकोर नोक वाले जूतों तक।

आगे बढ़िए, श्रीमान डोने! आपकी जांच हो चुकी है। आपको लगता है कि आप ठीक दिख रहे हैं। लेकिन क्या उस पहाड़ी से आपको देख रहे सफेद और बैंगनी रंग के लोग ऐसा सोचते हैं, यह एक अलग सवाल है।

रेजिमेंट के मार्च करने के बाद ये लोग दौड़ते हुए नीचे आते हैं। गिरजाघर बच्चों और शिक्षकों से भरा हुआ है, सभी अपने सबसे अच्छे छुट्टी के कपड़ों में सजे हुए हैं; और, भले ही इलाका बदहाल है, भले ही हालात खराब हैं, यह देखकर आश्चर्य होता है कि उन्होंने कितने सम्मानजनक और सुंदर ढंग से खुद को कपड़े पहनाए हैं। शालीनता के प्रति ब्रिटिश प्रेम चमत्कार कर सकता है। वह गरीबी जो एक आयरिश लड़की को फटेहाल बना देती है, एक अंग्रेजी लड़की को उसके आत्मसम्मान के लिए आवश्यक साफ-सुथरे कपड़ों से वंचित नहीं कर सकती। इसके अलावा, जागीर की मालकिन - वह शर्ली, जो अब इस सजे-धजे और खुश दिखने वाले समूह को देखकर प्रसन्न है - ने वास्तव में उनका भला किया है। उसकी समयोचित उदारता ने कई गरीब परिवारों को आने वाली छुट्टी के लिए सांत्वना दी है, और कई बच्चों को इस अवसर के लिए एक नई फ्रॉक या टोपी प्रदान की है। वह यह जानती है, और इस बात से प्रसन्न है - खुश है कि उसके धन, उदाहरण और प्रभाव ने वास्तव में, ठोस रूप से, उसके आसपास के लोगों को लाभ पहुँचाया है। वह मिस ऐनली की तरह दानशील नहीं हो सकती: यह उसके स्वभाव में नहीं है। उसे यह जानकर राहत मिलती है कि दान करने का एक और तरीका है, जो अन्य पात्रों के लिए और अन्य परिस्थितियों में भी व्यावहारिक है।

कैरोलिन भी प्रसन्न है, क्योंकि उसने भी अपने छोटे से प्रयास से अच्छा काम

किया है - उसने अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को कपड़े, रिबन या कॉलर जैसी कई ऐसी चीजें दीं जिन्हें वह मजबूरी में दे सकती थी; और चूंकि वह पैसे नहीं दे सकती थी, इसलिए उसने मिस ऐनली के उदाहरण का अनुसरण करते हुए बच्चों के लिए सिलाई करने में अपना समय और मेहनत दी है।

न केवल गिरजाघर का प्रांगण भरा हुआ है, बल्कि पादरी के घर का बगीचा भी लोगों से खचाखच भरा है। जोड़े और पुरुष समूह लहराते हुए लिली और लेबर्नम के फूलों के बीच टहलते हुए दिखाई दे रहे हैं। घर भी भरा हुआ है: खुली बैठक की खिड़कियों पर खुशमिजाज समूह खड़े हैं। ये संरक्षक और शिक्षक हैं, जो जुलूस में शामिल होने वाले हैं। पादरी के घर के पीछे, पादरी के छोटे से घर में, तीनों पैरिश बैंड के संगीतकार अपने वाद्ययंत्रों के साथ मौजूद हैं। फैनी और एलिजा, बेहतरीन टोपी और गाउन तथा सफेद एप्रन पहने, उनके बीच घूम रही हैं और बीयर के क्वार्ट परोस रही हैं, जिसका स्टॉक कुछ सप्ताह पहले पादरी के आदेश पर और उनकी विशेष देखरेख में बहुत ही बढ़िया और मजबूत बनाया गया था। जिस भी काम में उनका हाथ होता था, उसे अच्छे से पूरा करना होता था। उनकी अनुमति से किसी भी प्रकार के "घटिया काम" को बर्दाश्त नहीं किया जाता था। किसी सार्वजनिक भवन, गिरजाघर, विद्यालय या न्यायालय के निर्माण से लेकर भोजन पकाने तक, वे हमेशा भव्य, उदार और प्रभावी व्यवस्था का समर्थन करते थे। मिस कील्डर भी इस मामले में उन्हीं की तरह थीं, और वे दोनों एक-दूसरे की व्यवस्थाओं से सहमत थीं।

कैरोलीन और शर्ली जल्द ही समूह के बीच आ गईं। कैरोलीन का उनसे मिलना-जुलना उनके स्वभाव के अनुरूप ही सहज था। अपनी आदत के अनुसार किसी एकांत कोने में बैठने या जुलूस के व्यवस्थित होने तक अपने कमरे में चले जाने के बजाय, वह तीनों बैठक कक्षों में घूमीं, बातचीत की और मुस्कुराईं, बिना कुछ बोले ही उन्होंने एक-दो बार बात की और संक्षेप में कहें तो, वह बिल्कुल बदल गई थीं। शर्ली की उपस्थिति ने ही उनमें ऐसा बदलाव लाया था; मिस कील्डर के तौर-तरीकों को देखकर उन्हें बहुत अच्छा लगा। शर्ली को अपने जैसे लोगों से कोई डर नहीं था, उनसे दूर रहने या उनसे बचने की कोई प्रवृत्ति नहीं थी। सभी मनुष्य - पुरुष, महिलाएँ या बच्चे - जिन्हें निम्न स्तर की परवरिश या अभद्र व्यवहार से कोई आपत्ति नहीं होती थी, उनके लिए स्वागत योग्य थे - कुछ तो दूसरों की तुलना में कहीं अधिक, बेशक; लेकिन, सामान्यतः, जब तक कोई व्यक्ति निर्विवाद रूप से बुरा और उपद्रवी साबित न हो

जाए, शर्ली उसे अच्छा और अपना साथी मानती थीं और उसके साथ उसी के अनुरूप व्यवहार करती थीं। इस स्वभाव के कारण वह सबकी चहेती बन गईं, क्योंकि इससे उनकी चुटीली बातों का तीखापन भी खत्म हो जाता था और उनकी गंभीर या हंसमुख बातचीत में एक अलग ही आकर्षण आ जाता था; और इससे उनकी घनिष्ठ मित्रता का महत्व भी कम नहीं हुआ, जो इस सामाजिक परोपकार से बिल्कुल अलग थी — वास्तव में, यह उनके चरित्र के एक बिल्कुल अलग पहलू पर निर्भर करती थी। मिस हेलस्टोन उनकी स्नेह और बुद्धिमत्ता की प्रिय थीं; मिस पियर्सन, साइक्स, विन आदि तो केवल उनके अच्छे स्वभाव और जीवंतता का लाभ उठाने वाली थीं।

डोने संयोगवश ड्राइंग रूम में आए, जबकि शर्ली सोफे पर बैठी एक अपेक्षाकृत चौड़े घेरे के केंद्र में थीं। वह उनके प्रति अपनी नाराजगी भूल चुकी थीं और उन्होंने झुककर प्रसन्नतापूर्वक मुस्कुराया। तब उस व्यक्ति का स्वभाव सामने आया। वह न तो गरिमा के साथ प्रस्ताव को अस्वीकार करना जानते थे, जैसे कि किसी के स्वाभिमान को ठेस पहुंची हो, और न ही स्पष्टवादिता के साथ उसका सामना करना जानते थे, जैसे कि कोई भूलने और क्षमा करने के लिए तैयार हो। अपने दंड ने उनमें शर्म की कोई भावना नहीं जगाई थी, और अपने दंडदाता से मिलने पर भी उन्हें यह भावना महसूस नहीं हुई। वह बुराई में इतने उग्र नहीं थे कि सक्रिय रूप से द्वेषपूर्ण हो सकें - वह बस संकोची ढंग से, तिरछी नज़र से देखते हुए, वहाँ से गुजर गए। कोई भी चीज़ उन्हें उनके शत्रु से फिर कभी नहीं मिला सकती थी; जबकि इससे भी अधिक तीखे और अपमानजनक कष्टों के लिए भी उनके मन में आक्रोश की कोई भावना नहीं थी।

“वो किसी काम का नहीं था!” शर्ली ने कैरोलिन से कहा। “मैं कितनी मूर्ख थी! बेचारे डोने की यॉर्कशायर के प्रति की गई बेहूदा नफरत का बदला लेना, गैंडे की खाल पर हमला करने वाले मच्छर को कुचलने जैसा था। अगर मैं सभ्य होती, तो मुझे लगता है कि मैं उसे शारीरिक बल से वहाँ से भगा देती। अब मुझे खुशी है कि मैंने सिर्फ नैतिक हथियार का इस्तेमाल किया। लेकिन अब उसे मेरे पास नहीं आना चाहिए। मैं उसे पसंद नहीं करती। वो मुझे चिढ़ाता है। उससे मनोरंजन का कोई जरिया भी नहीं है। मैलोन उससे कहीं बेहतर है।”

ऐसा लग रहा था मानो मैलोन अपनी पसंद को सही ठहराना चाहते हों, क्योंकि वक्ता के मुँह से शब्द निकले ही थे कि पीटर ऑगस्टस भव्य पोशाक में, दस्ताने पहने

और सुगंधित इत्र लगाए, बालों में तेल लगाकर और कंघी करके, एक हाथ में खिले हुए पाँच-छह गोभी-गुलाबों का एक बड़ा गुच्छा लिए हुए आ गए। उन्होंने ये फूल उत्तराधिकारी को इतनी शालीनता से भेंट किए कि किसी भी कुशल कलम से उनका वर्णन अधूरा रह जाता। और इसके बाद कौन यह कहने की हिम्मत कर सकता था कि पीटर महिलाओं के दीवाने नहीं थे? उन्होंने फूल इकट्ठा किए और भेंट किए; उन्होंने प्रेम या धन के मंदिर में एक भावुक, एक काव्यात्मक श्रद्धांजलि अर्पित की। चरखा पकड़े हुए हरक्यूलिस, गुलाब लिए हुए पीटर का एक धुंधला प्रतीक मात्र था। उन्होंने स्वयं भी यही सोचा होगा, क्योंकि वे अपने किए पर चकित प्रतीत हो रहे थे। वे बिना कुछ कहे पीछे हट गए; वे आत्मसंतुष्टि भरी हल्की हँसी के साथ जा रहे थे; फिर उन्हें रुककर मुड़ने का ख्याल आया, ताकि वे अपनी आँखों से देखकर यह सुनिश्चित कर सकें कि उन्होंने वास्तव में एक गुलदस्ता भेंट किया था। हाँ, बैंगनी साटन की गोद में छह लाल पत्तागोभी रखी थीं, एक बेहद सफेद हाथ, उंगलियों में कुछ सोने की अंगूठियाँ, जो उन्हें हल्के से जोड़े हुए थीं, और लहराते घुंघराले बाल, हँसते हुए चेहरे को आधा छुपाते हुए, उन पर झुके हुए थे। बस आधा छुपा हुआ! पीटर ने हँसी देखी; यह स्पष्ट थी। उसका मज़ाक उड़ाया गया था; उसकी वीरता, उसका शौर्य, एक पेटीकोट के लिए - दो पेटीकोट के लिए - मज़ाक का विषय बन गया था: मिस हेलस्टोन भी मुस्कुरा रही थीं। इसके अलावा, उसे लगा कि उसकी असलियत सामने आ गई है, और पीटर गुस्से से लाल हो गया। जब शर्ली ने ऊपर देखा, तो एक तीखी नज़र उस पर टिकी हुई थी। मालोन में कम से कम नफरत की काफी ऊर्जा थी। उसने उसकी नज़र में यह देखा।

"पीटर एक शानदार दृश्य के लायक है, और अगर वह चाहे तो एक दिन उसे वह दृश्य जरूर मिलेगा," उसने अपनी सहेली से फुसफुसाते हुए कहा।

और अब—चेहरे भले ही सौम्य दिख रहे थे, लेकिन रंग में गंभीर और उदास—तीनों पादरी भोजन कक्ष के द्वार पर आ पहुँचे। वे अब तक चर्च में व्यस्त थे और अब जुलूस शुरू होने से पहले थोड़ा जलपान करने आए थे। डॉ. बोल्टबी के लिए मोरोक्को चमड़े की बड़ी आरामकुर्सी खाली रखी गई थी। उन्हें उस पर बैठाया गया और कैरोलीन, शर्ली के कहने पर, जिसने उसे मेज़बानी करने का समय बताया था, अपने चाचा के विशाल, आदरणीय और कुल मिलाकर योग्य मित्र को एक गिलास वाइन और मैकरून की एक थाली देने के लिए जल्दी से आगे बढ़ी। बोल्टबी के चर्च वार्डन,

जो संडे स्कूल के संरक्षक थे (जैसा कि वे खुद कहते थे), पहले से ही उनके पास थे; श्रीमती साइक्स और उनकी मंडली की अन्य महिलाएं उनके दाहिनी और बाईं ओर थीं, यह आशा जताते हुए कि वे थके हुए नहीं होंगे और यह आशंका जताते हुए कि दिन उनके लिए बहुत गर्म होगा। श्रीमती बोल्टबी, जिनका मानना था कि जब उनके पति अच्छे भोजन के बाद सो जाते थे तो उनका चेहरा किसी देवदूत के चेहरे जैसा हो जाता था, उनके ऊपर झुकी हुई थीं और कोमलता से उनके माथे से पसीना पोंछ रही थीं, चाहे वह असली हो या काल्पनिक। संक्षेप में, बोल्टबी अपने पूरे शौर्य में थे और एक सुरीली, भारी आवाज़ में उन्होंने सभी के ध्यान और अपने अच्छे स्वास्थ्य के आश्वासन के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। कैरोलीन के पास आने पर उन्होंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया, सिवाय इसके कि उसने जो कुछ भी दिया, उसे स्वीकार कर लिया। उन्होंने उसे नहीं देखा - उन्होंने उसे कभी नहीं देखा; उन्हें शायद ही पता था कि ऐसी कोई व्यक्ति भी है। हालाँकि, उन्होंने मैकरून देखे और मिठाई के शौकीन होने के कारण उन्होंने उनमें से कुछ मुट्ठी भर ले लिए। श्रीमती बोल्टबी ने जोर देकर कहा कि शराब को गर्म पानी में मिलाया जाए और उसमें चीनी और जायफल मिलाया जाए।

श्री हॉल एक खुली खिड़की के पास खड़े होकर ताजी हवा और फूलों की खुशबू का आनंद ले रहे थे और मिस ऐनली से भाई की तरह बातें कर रहे थे। कैरोलाइन ने प्रसन्नता से उनकी ओर ध्यान दिया। “वह उनके लिए क्या लाए? उन्हें खुद से कुछ नहीं लेना चाहिए—उन्हें परोसना चाहिए।” और उसने अपने लिए एक छोटी सी थाली तैयार कर ली, ताकि वह उन्हें अलग-अलग तरह के व्यंजन परोस सके। मार्गरेट हॉल भी उनके साथ शामिल हो गईं; मिस कील्डर भी। चारों महिलाएं अपने प्रिय पादरी के चारों ओर खड़ी थीं। उन्हें ऐसा लग रहा था मानो वे किसी धरती के देवदूत के चेहरे को देख रही हों। सिरिल हॉल उनके लिए पोप के समान थे, उनके लिए अचूक, जैसे डॉ. थॉमस बोल्टबी अपने प्रशंसकों के लिए। ब्रायफ़ील्ड के रेक्टर के चारों ओर भी भीड़ जमा थी—बीस या उससे अधिक लोग उनके चारों ओर जमा थे; और पुराने हेलस्टोन से अधिक प्रभावशाली कोई पादरी कभी नहीं रहा। सहायक पादरी, अपने-अपने तरीके से एक साथ झुंड बनाकर, तीन छोटे ग्रहों के समूह की तरह लग रहे थे। कई युवतियां उन्हें दूर से देख रही थीं, लेकिन पास आने की हिम्मत नहीं कर रही थीं।

श्री हेलस्टोन ने अपनी घड़ी निकाली। “दो बजने में दस मिनट बाकी हैं,” उन्होंने

ज़ोर से घोषणा की। “सभी लोग लाइन में लग जाएँ। आइए।” उन्होंने अपनी टोपी उठाई और चल दिए। सभी उठे और एक साथ उनके पीछे चल दिए।

बारह सौ बच्चों को चार-चार सौ बच्चों के तीन समूहों में बाँटा गया; प्रत्येक समूह के पीछे एक बैंड तैनात था; हर बीस बच्चों के बीच एक अंतराल था, जिसमें हेलस्टोन ने शिक्षकों को दो-दो के जोड़े में तैनात किया। उसने सेना के अग्रिम मोर्चे पर बुलाया, —

"ग्रेस बोल्टबी और मैरी साइक्स व्हिनबरी को मैदान में लेकर आईं।"

मार्गरेट हॉल और मैरी एन ऐनली ननेली का संचालन करती हैं।

“कैरोलिन हेलस्टोन और शर्ली कील्डर ब्रायरफील्ड की प्रमुख हैं।”

फिर उसने दोबारा आदेश दिया, —

श्री डोने व्हिनबरी के लिए; श्री स्वीटिंग नननेली के लिए; श्री मैलोन ब्रायफ़ील्ड के लिए।

और ये सज्जन महिला जनरलों के सामने खड़े हो गए।

पादरी सबसे आगे निकल गए; पल्ली के क्लर्क एकदम पीछे रह गए। हेलस्टोन ने अपनी टोपी उठाई। पलक झपकते ही मीनार की आठों घंटियाँ बज उठीं, वाद्ययंत्रों की गूँज तेज़ हो गई, बांसुरी की थाप सुनाई दी और तुरही ने उसका जवाब दिया, ढोल की गूँज गूंजी और वे चल पड़े।

चौड़ी सफेद सड़क लंबी शोभायात्रा के सामने फैली हुई थी, सूरज और आसमान साफ थे, हवा पेड़ों की डालियों को झुला रही थी, और बारह सौ बच्चे और एक सौ चालीस वयस्क, जिनमें जुलूस शामिल था, ताल और लय में, प्रसन्न चेहरों और खुश दिलों के साथ आगे बढ़ रहे थे। यह एक आनंदमय दृश्य था, और एक ऐसा दृश्य जो नेक काम करने के लिए प्रेरित करता था। यह अमीर और गरीब दोनों के लिए खुशी का दिन था - यह सबसे पहले ईश्वर का और फिर पादरियों का काम था। इंग्लैंड के पादरियों को उनका हक मिलना चाहिए। वे कुछ मामलों में त्रुटिपूर्ण हैं, क्योंकि वे भी हम सब की तरह आम इंसान हैं; लेकिन उनके बिना देश की हालत खराब हो जाएगी। अगर चर्च गिर गया तो ब्रिटेन को अपने चर्च की बहुत कमी खलेगी। ईश्वर इसकी रक्षा करे! ईश्वर इसका सुधार भी करे!

अध्याय सत्रह।

स्कूल का भोज।

न तो युद्ध के इरादे से, न ही शत्रुओं की तलाश में, यह पुरोहित के नेतृत्व वाली और महिला अधिकारियों वाली टुकड़ी थी; फिर भी उनके संगीत में युद्ध की धुनें थीं, और कुछ लोगों की आँखों और हाव-भाव से, उदाहरण के लिए मिस कील्डर, यह आभास होता था कि ये धुनें, यदि युद्ध की भावना नहीं तो, एक लालसा भरी भावना को जगाती थीं। बूढ़े हेलस्टोन ने संयोगवश मुड़कर उनका चेहरा देखा; और वे हँसे, और वे भी उन पर हँसीं।

उन्होंने कहा, "अभी किसी लड़ाई की कोई संभावना नहीं है; हमारा देश नहीं चाहता कि हम उसके लिए लड़ें। कोई शत्रु या अत्याचारी हमारी स्वतंत्रता पर सवाल नहीं उठा रहा है और न ही उसे धमकी दे रहा है। कुछ किया नहीं जा सकता। हम बस टहल रहे हैं। कप्तान, लगाम थामे रहो और उस जोश को शांत रखो। इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, यही तो दुख की बात है।"

"अपनी ही सलाह मानो, डॉक्टर," शर्ली ने जवाब दिया। कैरोलिन से उसने धीरे से कहा, "मैं कल्पना से वो सहारा लूंगी जो हकीकत मुझे नहीं दे सकती। हम सैनिक नहीं हैं—खून-खराबा मेरी इच्छा नहीं है—या अगर हैं भी, तो हम क्रूस के सैनिक हैं। समय सैकड़ों साल पीछे चला गया है, और हम फ़िलिस्तीन की तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं। लेकिन नहीं; यह बहुत काल्पनिक है। मुझे एक कठोर सपने की ज़रूरत है। हम स्कॉटलैंड के मैदानी इलाकों के निवासी हैं, एक वाचाधारी कप्तान के पीछे पहाड़ियों में जा रहे हैं ताकि सताने वाले सैनिकों की पहुँच से दूर एक सभा कर सकें। हम जानते हैं कि प्रार्थना के बाद युद्ध हो सकता है; और जैसा कि हम मानते हैं कि युद्ध के सबसे बुरे

परिणाम में स्वर्ग ही हमारा इनाम होगा, हम अपने खून से दलदली ज़मीन को लाल करने के लिए तैयार और इच्छुक हैं। वह संगीत मेरी आत्मा को झकझोर देता है; यह मेरे पूरे जीवन को जगा देता है; यह मेरे दिल को धड़का देता है—अपनी सामान्य दैनिक धड़कन से नहीं, बल्कि एक नई, रोमांचकारी ऊर्जा से। मैं लगभग खतरे के लिए तरस रही हूँ—एक आस्था, एक ज़मीन, या कम से कम एक प्रेमी की रक्षा करने के लिए।”

“देखो, शर्ली!” कैरोलिन ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “स्टिलब्रो ब्रो के ऊपर वह लाल धब्बा क्या है? तुम्हारी नज़र मुझसे कहीं ज़्यादा तेज़ है। ज़रा अपनी पैनी नज़र उस पर डालो।”

मिस कील्डर ने देखा। “मैं समझ गई,” उन्होंने कहा; फिर तुरंत आगे बोलीं, “लाल रंग की एक पंक्ति है। वे सैनिक हैं – घुड़सवार सैनिक,” उन्होंने जल्दी से बात पूरी की। “वे तेज़ गति से घोड़े दौड़ा रहे हैं। वे छह हैं। वे हमें पार कर जाएंगे। नहीं; वे दाईं ओर मुड़ गए हैं। उन्होंने हमारा जुलूस देखा और चक्कर लगाकर उससे बच गए। वे कहाँ जा रहे हैं?”

"शायद वे सिर्फ अपने घोड़ों को व्यायाम करा रहे हैं।"

“शायद ऐसा ही हो। अब हम उन्हें और नहीं देखते।”

श्री हेलस्टोन ने यहाँ भाषण दिया।

उन्होंने कहा, "हम रॉयड लेन से होकर शॉर्टकट रास्ते से ननेली कॉमन पहुंचेंगे।"

और वे रॉयड लेन की संकरी गलियों में घुस गए। यह बहुत संकरी गली थी—इतनी संकरी कि दोनों ओर बनी खाई में गिरे बिना केवल दो लोग ही साथ-साथ चल सकते थे। वे गली के मध्य में पहुँचे ही थे कि पादरियों के बीच उत्तेजना स्पष्ट हो गई। बोल्टबी का चश्मा और हेलस्टोन का रेहोबोम हिलने लगे; पादरी एक-दूसरे को कोहनी मारने लगे; श्री हॉल महिलाओं की ओर मुड़े और मुस्कुराए।

“क्या बात है?” यह सवाल पूछा गया।

उसने अपनी छड़ी से उनके सामने वाली गली के अंत की ओर इशारा किया। और देखो! एक और, विपक्षी, जुलूस वहाँ प्रवेश कर रहा था, जिसका नेतृत्व काले वस्त्र पहने हुए लोग कर रहे थे, और जैसा कि वे अब सुन सकते थे, उनके पीछे संगीत भी बज रहा था।

"क्या यह हमारा हमशक्ल है?" शर्ली ने पूछा, "क्या यह हमारा अनेक रूपों वाला

प्रेत है? यहाँ एक कार्ड पलटा हुआ है।"

"अगर तुम लड़ाई चाहते हो, तो तुम्हें शायद वो मिल ही जाएगी - कम से कम निगाहों की लड़ाई तो ज़रूर," कैरोलिन ने हंसते हुए फुसफुसाया।

“वे हमें पार नहीं कर पाएंगे!” सभी पादरी एकमत से चिल्लाए; “हम पीछे नहीं हटेंगे!”

“रास्ता दो!” हेलस्टोन ने सख्ती से पलटते हुए कहा; “रास्ता देने की बात कौन करता है? तुम लोग, संभलकर रहो। मुझे पता है, महिलाएं दृढ़ रहेंगी। मुझे उन पर भरोसा है। यहां कोई भी महिला ऐसी नहीं है जो इन लोगों के सामने डटी न रहे, पंथ की प्रतिष्ठा के लिए। — मिस कील्डर क्या कहती हैं?”

वह पूछती है कि यह क्या है।

"डिसेंटिंग और मेथोडिस्ट स्कूलों, बैपटिस्ट, इंडिपेंडेंट और वेस्लेयन ने एक अपवित्र गठबंधन में शामिल होकर, हमारे मार्च में बाधा डालने और हमें पीछे धकेलने के इरादे से जानबूझकर इस रास्ते में प्रवेश किया।"

“बदतमीज़ी!” शर्ली ने कहा, “और मुझे बदतमीज़ी से नफ़रत है। ज़ाहिर है, उन्हें सबक सिखाना ही होगा।”

शांति के सर्वथा समर्थक श्री हॉल ने सुझाव दिया, "यह शिष्टाचार का पाठ है, न कि असभ्यता का उदाहरण।"

ओल्ड हेलस्टोन आगे बढ़ा। अपने कदमों को तेज़ करते हुए, वह अपनी टुकड़ी से कुछ गज आगे निकल गया। वह लगभग दूसरे काले रंग के नेताओं के पास पहुँच ही गया था कि तभी एक व्यक्ति, जो शत्रु सेनापति की तरह व्यवहार कर रहा था - एक बड़ा, चिकना आदमी, जिसके काले बाल माथे पर चपटे किए हुए थे - ने रुकने का आदेश दिया। जुलूस थम गया। उसने एक भजन-पुस्तिका निकाली, एक श्लोक सुनाया, धुन बजाई, और सबने मिलकर सबसे दुख भरा भजन गाना शुरू कर दिया।

हेलस्टोन ने अपने बैंड को आदेश दिया। उन्होंने पूरे जोश के साथ वाद्य यंत्रों की गड़गड़ाहट की। उन्होंने उनसे "रूल, ब्रिटानिया!" बजाने को कहा और बच्चों को भी साथ गाने का आदेश दिया, जिसे उन्होंने उत्साहपूर्वक किया। शत्रु को गीत गाकर पराजित किया गया, उसका भजन शांत हो गया। शोर-शराबे के मामले में, उसे परास्त कर दिया गया।

“अब मेरे पीछे आओ!” हेलस्टोन ने कहा; “दौड़ते हुए नहीं, बल्कि स्थिर और तेज

गति से चलो। हर बच्चा और हर औरत संभलकर रहो। साथ रहो। जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे के वस्त्रों को पकड़ लो।”

और वह इतने दृढ़ और सधे हुए कदमों से आगे बढ़ा, और इसके अलावा, उसके शिष्यों और शिक्षकों ने भी उसका बखूबी साथ दिया, जिन्होंने ठीक वैसा ही किया जैसा उसने उन्हें बताया था, न तो भागे और न ही लड़खड़ाए, बल्कि शांत और दृढ़ गति से आगे बढ़ते रहे। पादरी भी ऐसा ही करने को विवश थे, क्योंकि वे दो तरफ से घिरे हुए थे - हेलस्टोन और मिस कील्डर, दोनों ही किसी भी विचलन पर पैनी नजर रखे हुए थे, और आदेश के जरा से भी उल्लंघन, जरा से भी स्वतंत्र या अनियमित प्रदर्शन को फटकारने के लिए तैयार थे - कि असंतुष्टों का समूह पहले तो चकित हुआ, फिर भयभीत हुआ, फिर दबाव में आकर पीछे हट गया, और अंत में उन्हें पीछे मुड़ने और रॉयड लेन से निकलने का रास्ता खाली छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। बोल्टबी को इस हमले में कष्ट हुआ, लेकिन हेलस्टोन और मालोन ने मिलकर उसे संभाला और उसे इस कार्य से सुरक्षित बाहर निकाला, हालांकि हवा के कारण उसे काफी परेशानी हुई।

भजन सुनाने वाला मोटा-ताज़ा डिसेंटर खाई में बैठा रह गया। वह पेशे से शराब का व्यापारी था, नॉनकॉन्फॉर्मिस्टों का नेता था, और कहा जाता था कि उसने उस एक दोपहर में उतना पानी पी लिया जितना उसने पिछले बारह महीनों में कभी नहीं पिया था। मिस्टर हॉल ने कैरोलीन का ख्याल रखा था, और कैरोलीन ने उनका। बाद में उन्होंने और मिस ऐनली ने इस घटना पर आपस में चुपचाप कुछ बातें कीं। जब पूरा समूह गली से निकल गया, तो मिस कील्डर और मिस्टर हेलस्टोन ने गर्मजोशी से हाथ मिलाया। पादरी खुशी से झूम उठे, लेकिन मिस्टर हेलस्टोन ने तुरंत उनकी मासूमियत पर लगाम लगा दी। उन्होंने कहा कि उनमें कभी भी यह समझ नहीं होती कि क्या बोलना है, और बेहतर होगा कि वे चुप रहें; और उन्होंने उन्हें याद दिलाया कि यह मामला उनके बस की बात नहीं है।

लगभग साढ़े तीन बजे जुलूस वापस मुड़ गया और चार बजे एक बार फिर शुरुआती स्थान पर पहुँच गया। विद्यालय के चारों ओर साफ-सुथरे खेतों में बेंचों की लंबी कतारें लगाई गई थीं। वहाँ बच्चों को बैठाया गया और सफेद कपड़ों से ढकी बड़ी-बड़ी टोकरियाँ और बड़े-बड़े धुआँ छोड़ते टिन के बर्तन बाहर लाए गए। भोजन वितरण शुरू होने से पहले, श्री हॉल ने एक संक्षिप्त प्रार्थना की और बच्चों ने उसे

गाया। खुली हवा में उनकी नन्ही आवाज़ें मधुर और भावपूर्ण लग रही थीं। फिर उदारता के भाव से बड़े-बड़े किशमिश वाले बन और गर्म, मीठी चाय परोसी गई। कम से कम इस दिन तो कंजूसी की कोई गुंजाइश नहीं थी; प्रत्येक बच्चे के लिए यह नियम था कि उसे उसकी क्षमता से लगभग दोगुना भोजन दिया जाए, ताकि उम्र, बीमारी या किसी अन्य बाधा के कारण भोज में शामिल न हो पाने वाले बच्चों के लिए घर ले जाने के लिए कुछ भोजन बचा रहे। इस बीच, संगीतकारों और चर्च के गायकों के बीच बन और बीयर बाँटी गई; बाद में बेंचें हटा दी गईं, और उन्हें लाइसेंस प्राप्त खेल में अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए छोड़ दिया गया।

घंटी बजने पर शिक्षक, अभिभावक और संरक्षिकाएँ स्कूल के कमरे में आ गए। मिस कील्डर, मिस हेलस्टोन और कई अन्य महिलाएँ पहले से ही वहाँ मौजूद थीं, अपनी-अपनी थालियों और मेजों की व्यवस्था पर नज़र डाल रही थीं। आस-पड़ोस की अधिकांश महिला नौकरानियाँ, साथ ही क्लर्कों, गायकों और संगीतकारों की पत्नियाँ, दिनभर सेवा में लगी हुई थीं। हर कोई अपने सजग और सुरुचिपूर्ण पहनावे में एक-दूसरे से होड़ कर रही थी, और युवा महिलाओं में कई आकर्षक रूप दिखाई दे रहे थे। लगभग पचास महिलाएँ ब्रेड और मक्खन काट रही थीं, और लगभग बीस महिलाएँ रेक्टर के रसोईघर के तांबे के बर्तनों से गर्म पानी ला रही थीं। सफेद दीवारों को सजाने वाले फूलों और सदाबहार पौधों की बहुतायत, मेजों पर सजी चांदी की चायदानियों और चमकदार चीनी मिट्टी के बर्तनों की शोभा, हर जगह लहराते हुए सक्रिय व्यक्ति, प्रसन्न चेहरे, रंग-बिरंगे कपड़े, सब मिलकर एक ताजगी भरा और जीवंत दृश्य बना रहे थे। हर कोई बातें कर रहा था, बहुत ज़ोर से नहीं, लेकिन खुशी से, और कैनरी पक्षी अपने ऊँचे पिंजरों में तीखे स्वर में गा रहे थे।

रेक्टर की भतीजी होने के नाते कैरोलिन ने तीन मुख्य मेजों में से एक पर अपनी जगह ली; श्रीमती बोल्टबी और मार्गरेट हॉल ने बाकी मेजों पर व्यवस्था संभाली। इन मेजों पर सभा के विशिष्ट लोगों का स्वागत किया जाना था, क्योंकि ब्रायर्फ़ील्ड में भी समानता के सख्त नियम अन्य जगहों की तरह प्रचलित नहीं थे। मिस हेलस्टोन ने गर्मी से राहत पाने के लिए अपनी टोपी और दुपट्टा उतार दिया। उनके लंबे घुंघराले बाल गर्दन पर गिर रहे थे, मानो घूंघट का काम कर रहे हों; और उनकी मलमल की पोशाक को नन के वस्त्र की तरह शालीनता से बनाया गया था, जिससे उन्हें शॉल ओढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

कमरा भर रहा था। श्री हॉल कैरोलीन के बगल में बैठ गए थे, जो अब अपने सामने रखे प्यालों और चम्मचों को ठीक करते हुए धीमी आवाज़ में उन्हें दिन भर की घटनाओं के बारे में बता रही थी। रॉयड लेन में जो कुछ हुआ था, उसे लेकर वे थोड़े गंभीर लग रहे थे, और कैरोलीन ने उनकी गंभीरता को कम करने के लिए मुस्कुराने की कोशिश की। मिस कील्डर पास ही बैठी थीं - आश्चर्य की बात यह थी कि न तो वे हंस रही थीं और न ही कुछ बोल रही थीं; इसके विपरीत, वे एकदम शांत थीं और चारों ओर सतर्कता से देख रही थीं। ऐसा लग रहा था कि उन्हें डर था कि कहीं कोई घुसपैठिया उनकी बगल वाली सीट पर न बैठ जाए, जिसे वे शायद अपने लिए आरक्षित रखना चाहती थीं। वे बार-बार अपनी साटन की पोशाक को बेंच के एक हिस्से पर फैला देतीं, या अपने दस्ताने या कढ़ाई वाला रूमाल उस पर रख देतीं। कैरोलीन ने आखिरकार इस दृश्य को देखा और उनसे पूछा कि वे किस मित्र का इंतज़ार कर रही हैं। शर्ली उसकी ओर झुकी, अपने गुलाबी होंठों से लगभग उसका कान छू लिया, और मधुरता से फुसफुसाते हुए बोली, जो अक्सर उसकी आवाज़ की विशेषता होती थी जब उसकी कही हुई बात उसके दिल में किसी मीठे, गुप्त भाव को ज़रा सा भी जगा देती थी, “मैं श्री मूर का इंतज़ार कर रही हूँ। मैंने उन्हें कल रात देखा था, और मैंने उनसे वादा लिया था कि वे अपनी बहन के साथ आएंगे और हमारी मेज़ पर बैठेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि वे मुझे निराश नहीं करेंगे; लेकिन मुझे डर है कि वे बहुत देर से आएंगे और हमसे बिछड़ जाएंगे। यहाँ एक नया दल आ रहा है; हर जगह भर जाएगी। कितना निराशाजनक है!”

दरअसल, मजिस्ट्रेट श्री विन्न, उनकी पत्नी, उनके बेटे और उनकी दो बेटियाँ बड़े ठाठ-बाठ से अंदर आए। वे ब्रायर्फ़ील्ड के संभ्रांत थे। ज़ाहिर है, उनकी जगह पहली मेज़ पर थी, और वहाँ ले जाए जाने पर उन्होंने बाकी सारी जगह भर दी। मिस कील्डार को तसल्ली देने के लिए, श्री सैम विन्न ने खुद को उसी खाली जगह पर बिठा लिया जो उन्होंने मूर के लिए रखी थी, और उनकी गाउन, दस्तानों और रूमाल पर मजबूती से टिक गए। श्री सैम उनकी घृणा के पात्रों में से एक थे, और इसलिए भी क्योंकि उन्होंने उनके हाथ पर निशाना साधने के गंभीर लक्षण दिखाए। उस बूढ़े सज्जन ने सार्वजनिक रूप से यह भी घोषणा की थी कि फील्डहेड एस्टेट और डी वाल्डेन एस्टेट बेहद आकर्षक हैं - एक ऐसी गलतफहमी जिसे अफवाह ने शर्ली को बार-बार बताया था।

कैरोलीन के कानों में अभी भी वह रोमांचक फुसफुसाहट गूंज रही थी, "मैं श्री मूर की प्रतीक्षा कर रही हूँ," उसका दिल अभी भी धड़क रहा था और उसके गाल अभी भी खुशी से दमक रहे थे, तभी उस जगह के शोरगुल के बीच ऑर्गन की एक मधुर ध्वनि सुनाई दी। डॉ. बोल्टबी, श्री हेलस्टोन और श्री हॉल उठे, और वहाँ मौजूद सभी लोग भी उठ गए, और संगीत की संगत में प्रार्थना की गई; और फिर चाय का दौर शुरू हुआ। वह कुछ देर तक अपने कार्यालय के काम में इतनी व्यस्त रही कि उसे चारों ओर देखने का समय नहीं मिला, लेकिन आखिरी कप भर जाने के बाद, उसने बेचैनी से कमरे पर एक नज़र डाली। कुछ महिलाएं और कई सज्जन अभी भी बिना बैठने की जगह के खड़े थे। एक समूह के बीच उसने अपनी अविवाहित सहेली, मिस मान को पहचाना, जिसे सुहावने मौसम ने लुभाया था, या किसी ज़रूरी दोस्त ने राजी किया था, कि वह एक घंटे के सामाजिक आनंद के लिए अपनी नीरस एकांतता को छोड़कर बाहर आ जाए। मिस मान खड़े-खड़े थकी हुई लग रही थी; पीले रंग की टोपी पहने एक महिला उनके लिए कुर्सी ले आई। कैरोलीन उस पीले रंग की सैटिन टोपी को अच्छी तरह जानती थी; वह काले बालों को पहचानती थी, और उनके नीचे छिपे दयालु, लेकिन कुछ हद तक दृढ़ और अड़ियल से दिखने वाले चेहरे को भी; वह उस काले रेशमी वस्त्र को पहचानती थी, यहाँ तक कि उस भूरे सूती कपड़े को भी; संक्षेप में, वह हॉर्टेंस मूर को पहचानती थी, और वह उछलकर उसके पास दौड़कर उसे चूमना चाहती थी—खुद के लिए एक आलिंगन और अपने भाई के लिए दो आलिंगन। वह सचमुच दबी हुई खुशी के साथ लगभग उठ खड़ी हुई, और शायद—इच्छा इतनी प्रबल थी—वह कमरे के उस पार दौड़कर उसे सलाम भी कर लेती; लेकिन किसी ने उसे वापस उसकी सीट पर बिठा दिया, और उसके पीछे से एक आवाज़ फुसफुसाई, "चाय के बाद तक रुको, लीना, फिर मैं उसे तुम्हारे पास ले आऊँगी।"

और जब उसे ऊपर देखने का मौका मिला, तो उसने देखा और वहाँ रॉबर्ट खुद उसके ठीक पीछे था, उसकी उत्सुकता पर मुस्कुरा रहा था, पहले से कहीं अधिक सुंदर दिख रहा था - वास्तव में, उसकी कमजोर आँखों को वह इतना आकर्षक लग रहा था कि उसने दोबारा देखने की हिम्मत ही नहीं की; क्योंकि उसकी छवि उसकी दृष्टि में एक दर्दनाक चमक के साथ कौंध गई, और उसकी स्मृति में इतनी स्पष्टता से अंकित हो गई मानो किसी तेज पेंसिल से उसकी तस्वीर खींची गई हो।

वह आगे बढ़ा और मिस कील्डर से बात करने लगा। सैम विने की कुछ अप्रिय

हरकतों और उस सज्जन के अभी भी उसके दस्तानों और रूमाल पर बैठे रहने से चिढ़कर, और शायद मूर की समय की पाबंदी की कमी से भी, शर्ली का मूड बिल्कुल भी अच्छा नहीं था। पहले तो उसने कंधे उचकाए, और फिर उसकी "असहनीय देरी" के बारे में कुछ कड़वे शब्द कहे। मूर ने न तो माफी मांगी और न ही कोई जवाब दिया। वह चुपचाप उसके पास खड़ा रहा, मानो यह देखने के लिए इंतजार कर रहा हो कि क्या वह अपना आपा खो देगी; और तीन मिनट से कुछ अधिक समय में ही वह शांत हो गई, और अपना हाथ बढ़ाकर उसने अपना गुस्सा दिखाया। मूर ने मुस्कुराते हुए उसका हाथ थाम लिया, उसका चेहरा आधा सुधारा हुआ और आधा कृतज्ञता से भरा था। सिर को हल्के से हिलाने से उसकी कृतज्ञता झलक रही थी; संभवतः हल्के से हाथ दबाने से कृतज्ञता का भाव भी झलक रहा था।

"आप जहां भी जगह मिले बैठ जाइए, श्री मूर," शर्ली ने मुस्कुराते हुए कहा। "देखिए, यहां आपके लिए एक इंच भी जगह नहीं है; लेकिन मुझे श्रीमती बोल्टबी की मेज पर, मिस आर्मिटेज और मिस बर्टव्हिस्टल के बीच काफी जगह दिख रही है। जाइए! जॉन साइक्स आपके सामने बैठेंगे, और आप हमारी तरफ पीठ करके बैठिएगा।"

लेकिन मूर वहीं ठहरे रहना पसंद करते थे। कभी-कभी वे उस लंबे कमरे में थोड़ा आगे बढ़ते, रुक-रुक कर अपनी ही तरह की असमंजस भरी स्थिति में फंसे अन्य सज्जनों से अभिवादन करते; लेकिन फिर भी वे अंत में उसी चुंबक, शर्ली के पास लौट आते, और हर बार लौटते समय कुछ ऐसी बातें लेकर आते जिन्हें उन्हें उसके कान में फुसफुसाना ज़रूरी लगता था।

इस बीच बेचारे सैम विन की हालत बहुत खराब लग रही थी। उनकी खूबसूरत पड़ोसी, उनके हाव-भाव से लग रहा था कि वे बेहद बेचैन और चिड़चिड़ी हैं। वे दो पल भी एक जगह नहीं बैठ पा रही थीं। उन्हें बहुत गर्मी लग रही थी; वे खुद को पंखा कर रही थीं; हवा और जगह की कमी की शिकायत कर रही थीं। उन्होंने कहा कि उनकी राय में, जब लोग अपनी चाय खत्म कर लें तो उन्हें मेज छोड़ देनी चाहिए, और साफ-साफ कहा कि अगर यही हाल रहा तो वे बेहोश हो जाएंगी। मिस्टर सैम ने उन्हें खुली हवा में ले जाने की पेशकश की; लेकिन उन्होंने आरोप लगाया कि यह उन्हें ठंड से मौत देने का एक तरीका है। संक्षेप में, उनकी स्थिति असहनीय हो गई थी; और अपनी चाय पीने के बाद, उन्होंने वहां से चले जाना ही उचित समझा।

मूर को वहीं मौजूद होना चाहिए था, जबकि वह कमरे के दूसरे छोर पर क्रिस्टोफर साइक्स के साथ गहन चर्चा में मशगूल थे। संयोगवश, एक बड़े अनाज व्यापारी, टिमोथी रैम्सडेन, पास ही थे; खड़े-खड़े थक जाने पर वे खाली सीट पर बैठने के लिए आगे बढ़े। शर्ली की तरकीब काम आई। उनके स्कार्फ के एक झटके से उनकी चाय का प्याला गिर गया: चाय का पानी बेंच और उनकी साटन की पोशाक पर बिखर गया। ज़ाहिर है, इस गड़बड़ी को ठीक करने के लिए वेटर को बुलाना ज़रूरी हो गया। श्री रैम्सडेन, एक हट्टे-कट्टे, मोटे-ताज़े सज्जन, जो कद-काठी और संपत्ति में भी उतने ही बड़े थे, इस हंगामे से दूर रहे। शर्ली, जो आमतौर पर पोशाक आदि से जुड़ी छोटी-मोटी दुर्घटनाओं के प्रति लगभग बेपरवाह रहती थीं, ने अब ऐसा हंगामा किया जो उनकी उम्र की सबसे नाज़ुक और संवेदनशील महिला को भी विचलित कर सकता था। मिस्टर रैम्सडेन ने अपना मुंह खोला, धीरे-धीरे पीछे हटे, और जैसे ही मिस कील्डर ने फिर से "बेहोश होने" और मौके पर ही गिर जाने का इरादा जताया, वह मुड़े और तेजी से पीछे हट गए।

अंततः मूर लौट आया। शांत भाव से हलचल का जायजा लेते हुए और कुछ जिज्ञासा से शर्ली के रहस्यमय चेहरे को निहारते हुए, उसने कहा कि वास्तव में यह कमरे का सबसे गर्म कोना है, यहाँ का वातावरण केवल उसी जैसे शांत स्वभाव वाले लोगों के लिए अनुकूल है; और वेटर, नैपकिन, साटन का वस्त्र—संक्षेप में, सारी हलचल—को एक तरफ रखते हुए, वह उस स्थान पर बैठ गया जहाँ नियति ने उसे बैठने के लिए निर्धारित किया था। शर्ली शांत हो गई; उसके चेहरे की बनावट बदल गई; उठी हुई सिकुड़ी हुई भौंहें और होंठों का रहस्यमय घुमाव फिर से सीधा हो गया; उसकी ज़िद्दीपन और शरारत की जगह दूसरे भाव आ गए; और वे सभी कोणीय हरकतें जिनसे उसने सैम विन की आत्मा को व्याकुल कर दिया था, मानो जादू से शांत हो गईं। फिर भी मूर पर उसकी कोई कृपा दृष्टि नहीं पड़ी। इसके विपरीत, उन पर उसे बहुत परेशान करने का आरोप लगाया गया और उन पर श्री रैम्सडेन के सम्मान और श्री सैमुअल विने की अमूल्य मित्रता से वंचित करने का गंभीर आरोप लगाया गया।

"मैं किसी भी कीमत पर दोनों सज्जनों को नाराज़ नहीं करना चाहती थी," उसने कहा। "मैं हमेशा से दोनों के साथ अत्यंत सम्मानपूर्वक व्यवहार करती आई हूँ, और देखो, तुम्हारी वजह से उनके साथ कैसा बर्ताव हुआ है! जब तक मैं इसकी भरपाई नहीं कर लेती, मुझे चैन नहीं मिलेगा। मैं तब तक खुश नहीं रहती जब तक मैं अपने

पड़ोसियों से दोस्ती नहीं कर लेती। इसलिए कल मुझे रॉयड अनाज चक्की जाना होगा, चक्की वाले को मनाना होगा और अनाज की तारीफ करनी होगी; और अगले दिन मुझे डी वाल्डेन जाना होगा — जहाँ जाना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं — और अपने पर्स में आधा ओटकेक ले जाना होगा ताकि मैं मिस्टर सैम के प्यारे कुत्तों को दे सकूँ।"

"मुझे इसमें कोई शक नहीं कि तुम हर युवक के दिल तक पहुँचने का सबसे अचूक रास्ता जानती हो," मूर ने शांत स्वर में कहा। वह अंततः अपनी वर्तमान स्थिति सुरक्षित कर लेने से बहुत संतुष्ट प्रतीत हो रहा था; लेकिन उसने अपनी संतुष्टि को अभिव्यक्त करने वाला कोई लंबा-चौड़ा भाषण नहीं दिया और न ही उसने अपनी ओर से किए गए कष्ट के लिए कोई क्षमा याचना की। उसका संयम उस पर अद्भुत रूप से शोभा दे रहा था। इससे वह और भी आकर्षक लग रहा था, वह इतना शांत था; इससे उसका परिवेश सुखद हो गया था, इतना शांतिदायक। उसे देखकर कोई यह नहीं सोच सकता था कि वह एक धनी महिला के बगल में बैठा एक गरीब, संघर्षरत व्यक्ति है; समानता की शांति उसके चेहरे पर व्याप्त थी; शायद वह शांति उसकी आत्मा में भी व्याप्त थी। कभी-कभी, जिस तरह से वह मिस कील्डर को संबोधित करते हुए उन्हें नीचा देखता था, उससे ऐसा लगता था मानो उसका रुतबा और कद दोनों ही उससे कहीं अधिक ऊँचा हो। कभी-कभी उसके माथे पर लगभग कठोर भाव उभर आते थे और उसकी आँखों में चमक दिखाई देती थी। उनकी बातचीत जीवंत हो उठी थी, हालाँकि वह धीमी गति से चल रही थी; वह उससे सवाल पूछकर उसे उकसा रही थी —स्पष्ट रूप से उसने उसकी जिज्ञासा को पूरा करने से इनकार कर दिया। उसने एक बार उसकी आँखों में आँखें डालकर देखा। उसकी कोमल लेकिन उत्सुकता भरी नज़रों में स्पष्ट उत्तरों की चाह थी। मूर ने सुखद मुस्कान दी, लेकिन उसके होंठ बंद ही रहे। फिर वह चिढ़ गई और मुँह फेर लिया; लेकिन दो मिनट में ही उसने उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। ऐसा लग रहा था जैसे वह वादे कर रहा हो, जिन्हें उसने जानकारी के बदले में स्वीकार करने के लिए उसे शांत किया।

ऐसा प्रतीत हुआ कि कमरे की गर्मी मिस हेलस्टोन को रास नहीं आ रही थी। चाय बनाने की प्रक्रिया जैसे-जैसे लंबी खिंचती गई, उनका चेहरा पीला पड़ता गया। धन्यवाद का जवाब मिलते ही वह मेज छोड़कर अपनी चचेरी बहन हॉर्टेंस के पीछे-पीछे चली गईं, जो मिस मान के साथ पहले ही खुली हवा में चली गई थीं। रॉबर्ट मूर भी उनके साथ ही उठे थे - शायद वह उनसे कुछ कहना चाहते थे; लेकिन मिस कील्डर से

विदाई की कुछ बातें अभी बाकी थीं, और जब वह बातें कही जा रही थीं, तभी कैरोलीन गायब हो गईं।

होर्टेंस ने अपनी पूर्व छात्रा का गर्मजोशी से नहीं बल्कि गरिमापूर्ण ढंग से स्वागत किया। वह श्री हेलस्टोन की हरकतों से बेहद आहत थी और हमेशा से कैरोलिन को ही दोषी मानती रही थी क्योंकि उसने अपने चाचा की बात को अक्षरशः मान लिया था।

"तुम तो बिलकुल अजनबी हो," उसने कठोर स्वर में कहा, जब उसकी शिष्या ने उसका हाथ थामकर दबाया। शिष्या उसे इतनी अच्छी तरह जानती थी कि उसने विरोध या ठंडेपन की शिकायत नहीं की। उसने अपनी इस नज़ाकत को नज़रअंदाज़ कर दिया, उसे पूरा विश्वास था कि उसका स्वाभाविक सौम्य स्वभाव (मैं इस फ्रांसीसी शब्द का प्रयोग इसलिए कर रही हूँ क्योंकि यह मेरे कहने का अर्थ स्पष्ट करता है - न तो अच्छाई और न ही अच्छा स्वभाव, बल्कि दोनों के बीच का कुछ) जल्द ही हावी हो जाएगा। और ऐसा ही हुआ। हॉर्टेंस ने उसके चेहरे को ध्यान से देखा और उसके कुछ मुरझाए हुए चेहरे में आए बदलाव को भांपते ही उसका भाव नरम पड़ गया। उसके दोनों गालों पर चुंबन करते हुए उसने उत्सुकता से उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। कैरोलीन ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया। हालाँकि, अगर मिस मान ने प्रश्नकर्ता का ध्यान घर ले जाने का अनुरोध करके न हटाया होता, तो उसे इस विषय पर एक लंबी पूछताछ और फिर एक अंतहीन व्याख्यान का सामना करना पड़ता। बेचारी बीमार पहले से ही थकी हुई थी। उसकी थकान ने उसे चिड़चिड़ा बना दिया था - इतना चिड़चिड़ा कि वह कैरोलीन से बात भी नहीं कर पा रही थी; और इसके अलावा, उस युवती की सफेद पोशाक और चंचल चेहरा मिस मान को भा गया। भूरे या धूसर गिंघम के रोज़मर्रा के कपड़े और उदासी का भाव उस अकेली अविवाहित महिला को ज़्यादा शोभा देते थे; आज रात वह अपनी उस युवा सहेली को पहचान भी नहीं पाएगी, और उसने ठंडे स्वर में सिर हिलाकर उसे विदा किया। हॉर्टेंस ने उसे घर तक छोड़ने का वादा किया, और वे दोनों साथ चली गईं।

कैरोलाइन ने शर्ली को ढूंढने के लिए चारों ओर देखा। उसने इंद्रधनुषी रंग का स्कार्फ और बैंगनी रंग की पोशाक पहने महिला को महिलाओं की भीड़ के बीच में देखा। ये सभी महिलाएं उसे अच्छी तरह से जानती थीं, लेकिन वे सभी उसी संप्रदाय की थीं जिनसे वह हमेशा बचने की कोशिश करती थी। कभी-कभी वह अधिक शर्मीली होती थी, और इस समय उसमें इस समूह में शामिल होने का बिल्कुल भी साहस नहीं

था। हालांकि, वह वहां अकेली नहीं खड़ी रह सकती थी जहां बाकी सभी जोड़े या समूह में जा रहे थे; इसलिए वह अपनी कुछ शिष्याओं, बड़ी छात्राओं, या कहें कि युवा महिलाओं के एक समूह के पास गई, जो सैकड़ों छोटे बच्चों को अंधाधुंध खेल खेलते हुए देख रही थीं।

मिस हेलस्टोन जानती थीं कि ये लड़कियाँ उन्हें पसंद करती हैं, फिर भी स्कूल के बाहर भी वे उनके साथ शर्मीली रहती थीं। वे उनसे उतनी ही भयभीत नहीं थीं जितनी वे उनसे। अब वे उनके करीब आती थीं, उनकी संगति में सुरक्षा पाने के लिए, न कि उन पर एहसान जताने के लिए। किसी सहज ज्ञान से वे उनकी कमजोरी को जानती थीं, और स्वाभाविक विनम्रता से उसका सम्मान करती थीं। जब वे उन्हें पढ़ाती थीं तो उनका ज्ञान उनके सम्मान का पात्र बनता था; उनकी कोमलता उन्हें आकर्षित करती थी; और क्योंकि वे उन्हें ड्यूटी पर बुद्धिमान और अच्छी मानती थीं, इसलिए ड्यूटी से छुट्टी के समय वे उनकी स्पष्ट झिझक को अनदेखा कर देती थीं। उन्होंने इसका फायदा नहीं उठाया। किसान लड़कियाँ होने के नाते, उनमें हमारी अपनी अंग्रेजी संवेदनशीलता इतनी अधिक थी कि वे ऐसी भद्दी गलती करने की दोषी नहीं थीं। वे उनके चारों ओर शांत, विनम्र और मित्रवत खड़ी रहती थीं, उनकी हल्की मुस्कान और बातचीत शुरू करने के उनके थोड़े जल्दबाजी वाले प्रयासों को अच्छे भाव और अच्छे शिष्टाचार के साथ स्वीकार करती थीं - यह आखिरी गुण पहले गुण का परिणाम था - जिससे वे जल्द ही सहज हो जाती थीं।

श्री सैम विन बड़ी जल्दी में आकर छोटी बच्चियों के साथ-साथ बड़ी बच्चियों को भी खेल में शामिल होने के लिए कहने लगे, जिससे कैरोलीन फिर अकेली रह गई। वह घर लौटने के बारे में सोच ही रही थी कि तभी दूर से उसकी तन्हाई भांपकर शर्ली उसके पास दौड़कर आई।

“चलो खेतों के ऊपरी हिस्से में चलते हैं,” उसने कहा। “मुझे पता है कि तुम्हें भीड़ पसंद नहीं है, कैरोलीन।”

लेकिन शर्ली, आपको इन सभी अच्छे लोगों से दूर ले जाना आपके लिए एक आनंद से वंचित करना होगा, जो आपकी संगति पाने के लिए इतनी लगन से प्रयास करते हैं, और जिनके लिए आप बिना किसी कला या प्रयास के खुद को इतना सुखद बना लेती हैं।

“बिना मेहनत के तो नहीं; मैं पहले ही इस मेहनत से थक चुका हूँ। ब्रायरफील्ड के

भले-भले लोगों के साथ बातें करना और हँसना तो बस नीरस और बेजान काम है। मैं पिछले दस मिनट से तुम्हारी सफेद पोशाक को ढूंढ रहा हूँ। मुझे भीड़ में अपने प्रियजनों को देखना और उनकी तुलना दूसरों से करना अच्छा लगता है। मैंने तुम्हारी तुलना भी इसी तरह की है। लीना, तुम बाकियों से बिल्कुल अलग हो। यहाँ कुछ चेहरे तुमसे भी ज़्यादा सुंदर हैं। तुम हैरियट साइक्स जैसी आदर्श सुंदर तो नहीं हो - उनके सामने तो तुम लगभग नगण्य लगती हो - लेकिन तुम मनमोहक, विचारशील और दिलचस्प लगती हो।"

"चुप रहो, शर्ली! तुम मेरी तारीफ कर रही हो।"

मुझे इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि आपके विद्वान आपको पसंद करते हैं।

"बकवास है, शर्ली! किसी और विषय पर बात करो।"

"तो हम मूर के बारे में बात करेंगे और उस पर नज़र रखेंगे। मैं उसे अभी भी देख रहा हूँ।"

"कहाँ?" कैरोलिन ने यह सवाल पूछते हुए खेतों की ओर नहीं, बल्कि मिस कील्डर की आँखों में देखा, जैसा कि वह अक्सर तब करती थी जब शर्ली दूर दिखाई देने वाली किसी वस्तु का ज़िक्र करती थी। उसकी सहेली की दृष्टि उससे कहीं तेज़ थी, और कैरोलिन को लगता था कि उसकी इस तीक्ष्ण दृष्टि का रहस्य उसकी गहरी भूरी पुतलियों में छिपा हो सकता है, या शायद वह केवल उन चमकीली और पारखी पुतलियों से ही मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहती थी।

"वो रहा मूर," शर्ली ने उस विशाल मैदान की ओर इशारा करते हुए कहा, जहाँ हज़ार बच्चे खेल रहे थे और अब लगभग हज़ार वयस्क दर्शक इधर-उधर घूम रहे थे। "वो देखो—क्या तुम उसकी लंबी कद-काठी और सीधी मुद्रा को नज़रअंदाज़ कर सकते हो? वो अपने चारों ओर मौजूद लोगों के बीच ऐसे दिखता है जैसे साधारण चरवाहों के बीच एलियाब—जैसे किसी युद्ध-सभा में शाऊल; और अगर मैं गलत नहीं हूँ तो यह एक युद्ध-सभा ही है।"

"ऐसा क्यों, शर्ली?" कैरोलिन ने पूछा, जिसकी नज़र आखिरकार उस चीज़ पर पड़ी जिसे वह ढूंढ रही थी। "रॉबर्ट अभी मेरे चाचा से बात कर रहे हैं, और वे हाथ मिला रहे हैं। उनका सुलह हो गया है।"

"यह सुलह बिना किसी ठोस कारण के नहीं हुई है, इस पर यकीन मानिए – किसी साझा दुश्मन के खिलाफ एकजुट होकर काम करना। और आप क्या सोचते हैं,

श्रीमान विने, साइक्स, आर्मिटेज और रैम्सडेन उनके चारों ओर इतने करीब से क्यों इकट्ठा हुए हैं? और मालोन को उनके साथ शामिल होने के लिए क्यों बुलाया गया है? जहाँ उसे बुलाया जाता है, वहाँ निश्चित रूप से एक मजबूत हाथ की आवश्यकता होती है।”

यह सब देखते हुए शर्ली बेचैन हो गई; उसकी आँखों में चमक आ गई।

“वे मुझ पर भरोसा नहीं करेंगे,” उसने कहा। “जब ऐसी स्थिति आती है तो हमेशा यही होता है।”

"किस बारे में?"

“क्या आपको महसूस नहीं हो रहा? कोई रहस्य मंडरा रहा है; किसी घटना की आशंका है; मुझे यकीन है कि कोई तैयारी की जानी है। मैंने आज शाम श्री मूर के हावभाव में यह सब देखा। वे उत्तेजित थे, फिर भी कठोर थे।”

"क्या यह तुम्हारे लिए मुश्किल है, शर्ली?"

"हां, मेरे लिए। वह अक्सर मेरे प्रति कठोर रहता है। हम शायद ही कभी आमने-सामने बातचीत करते हैं, लेकिन मुझे ऐसा महसूस कराया जाता है कि उसका चरित्र नरम दिल का नहीं है।"

फिर भी ऐसा लग रहा था कि वह आपसे नरमी से बात कर रहा है।

“क्या ऐसा नहीं था? बहुत ही सौम्य स्वर और शांत स्वभाव। फिर भी वह व्यक्ति कठोर और रहस्यमय है: उसका रहस्य मुझे परेशान करता है।”

"हां, रॉबर्ट एक रहस्य है।"

"उसे मेरे साथ रहने का शायद ही कोई अधिकार है, खासकर तब जब उसने शुरुआत में मुझ पर भरोसा जताया था। मैंने ऐसा कुछ नहीं किया जिससे वह भरोसा टूटे, इसलिए उसे वापस नहीं लिया जाना चाहिए; लेकिन मुझे लगता है कि संकट की घड़ी में मुझ पर भरोसा करने लायक मुझे इतना मजबूत नहीं समझा जाता।"

"शायद उसे डर है कि इससे आपको बेचैनी होगी।"

“यह अनावश्यक सावधानी है। मैं लचीली चीज़ों से बनी हूँ, आसानी से कुचली नहीं जा सकती। उसे यह पता होना चाहिए। लेकिन वह आदमी घमंडी है। उसमें कमियाँ तो हैं, चाहे तुम कुछ भी कहो, लीना। देखो वह समूह कितना मग्न दिख रहा है। उन्हें पता नहीं कि हम उन्हें देख रहे हैं।”

"अगर हम सतर्क रहें, शर्ली, तो शायद हमें उनके रहस्य का सुराग मिल जाए।"

“जल्द ही कुछ असामान्य हलचलें दिखाई देंगी—शायद कल, संभवतः आज रात। लेकिन मेरी आंखें और कान पूरी तरह से खुले हैं। श्री मूर, आप पर नजर रखी जाएगी। लीना, आप भी सतर्क रहें।”

“मैं करूँगा। रॉबर्ट जा रहा है; मैंने उसे मुड़ते हुए देखा। मुझे लगता है उसने हमें देख लिया। वे हाथ मिला रहे हैं।”

शर्ली ने आगे कहा, "वे जोर देकर हाथ मिला रहे थे, मानो वे किसी गंभीर संधि और समझौते की पुष्टि कर रहे हों।"

उन्होंने देखा कि रॉबर्ट समूह से अलग हो गया, एक फाटक से गुजरा और गायब हो गया।

“और उसने हमें अलविदा भी नहीं कहा,” कैरोलिन ने धीरे से कहा।

उसके होंठों से शब्द निकले ही थे कि उसने मुस्कुराकर उस निराशा को छुपाने की कोशिश की जो उन शब्दों में छिपी हुई प्रतीत हो रही थी। एक अनचाही आभा ने क्षण भर के लिए उसकी आँखों को कोमल और चमकदार बना दिया।

“ओह, इसका तो जल्द ही समाधान हो जाएगा!” शर्ली ने कहा: “हम उसे हमसे अलविदा कहलवा देंगे।”

“उसे मजबूर करो! यह एक ही बात नहीं है,” जवाब मिला।

“यह वही बात होगी।”

लेकिन वह जा चुका है; आप उसे पकड़ नहीं सकते।

“मुझे उससे छोटा रास्ता पता है जो उसने लिया है। हम उसे रोक लेंगे।”

"लेकिन, शर्ली, मैं जाना नहीं चाहूंगी।"

कैरोलीन ने ये कहा, तभी मिस कील्डर ने उसका हाथ पकड़ा और उसे जल्दी से खेतों की ओर ले गईं। बहस करना व्यर्थ था। जब शर्ली कोई बात मन में ठान लेती थी, तो उससे ज़्यादा ज़िद्दी कोई नहीं होता था। कैरोलीन को पता भी नहीं चला और वह भीड़ की नज़रों से ओझल हो गई, और उसे एक संकरी, छायादार जगह पर ले जाया गया, जो ऊपर कंटीली झाड़ियों से घिरी थी और नीचे डेज़ी के फूलों से ढकी थी। उसने शाम के सूरज की चमकती घास पर ध्यान नहीं दिया, न ही उसे उस समय पेड़-पौधों से निकलती शुद्ध सुगंध का एहसास हुआ; उसने बस एक छोर पर विकेट खुलने की आवाज़ सुनी और जान गई कि रॉबर्ट आ रहा है। उनके सामने फैली कंटीली झाड़ियों की लंबी डालियाँ एक आड़ का काम कर रही थीं। उन्होंने उसे देख लिया,

इससे पहले कि वह उन्हें देख पाता। एक नज़र में कैरोलीन ने समझ लिया कि उसकी सामाजिक चहल-पहल गायब हो गई थी; वह उसे स्कूल के चारों ओर आनंद से भरे खेतों में पीछे छोड़ आया था। अब बस उसका गंभीर, शांत, काम में डूबा हुआ चेहरा ही बचा था। जैसा कि शर्ली ने कहा था, उसके हावभाव में एक प्रकार की कठोरता थी, जबकि उसकी आँखें उत्तेजित थीं, लेकिन गंभीर थीं। शर्ली की यह वर्तमान सनक और भी अधिक अनुपयुक्त समय पर हुई थी। यदि वह छुट्टियों की खुशी के मूड में होता, तो इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता; लेकिन अब—

"मैंने तुमसे कहा था कि मत आना," कैरोलीन ने कुछ कड़वाहट से अपनी सहेली से कहा। वह सचमुच परेशान लग रही थी। रॉबर्ट के जीवन में इस तरह दखल देना, उसकी इच्छा और उसकी उम्मीद के विरुद्ध, और जब वह स्पष्ट रूप से देरी नहीं करना चाहता था, उसे बहुत बुरा लगा। मिस कील्डर को इससे ज़रा भी गुस्सा नहीं आया। वह आगे बढ़ी और अपने किरायेदार के सामने खड़ी हो गई, उसका रास्ता रोकते हुए बोली, "तुमने हमें अलविदा कहना भूल गए।"

"तुम्हें अलविदा कहना भूल गया! तुम कहाँ से आए हो? क्या तुम परियाँ हो? मैंने तुम्हारे जैसी दो परियों को, एक बैंगनी और एक सफेद रंग की, चार खेतों की दूरी पर एक टीले के ऊपर खड़े छोड़ा था, बस एक मिनट पहले।"

"तुम हमें वहाँ छोड़कर यहाँ आ गए। हम तुम्हें देखते रहे हैं और आगे भी देखते रहेंगे। एक दिन तुमसे पूछताछ जरूर होगी, लेकिन अभी नहीं। फिलहाल तुम्हें बस शुभ रात्रि कहना है और चले जाना है।"

मूर ने बिना अपना चेहरा बदले एक से दूसरे की ओर देखा। "उत्सव के दिनों के अपने विशेषाधिकार होते हैं, और जोखिम भरे दिनों के भी," उन्होंने गंभीरता से कहा।

"चलो, उपदेश मत दो। शुभ रात्रि कहो और चले जाओ," शर्ली ने आग्रह किया।

"क्या मुझे आपको शुभ रात्रि कहना चाहिए, मिस कील्डर?"

"हां, और कैरोलीन को भी। मुझे उम्मीद है कि यह कोई नई बात नहीं है। आप दोनों ने पहले भी हमें शुभ रात्रि कहा है।"

उसने उसका हाथ पकड़ा, उसे अपने एक हाथ में थाम लिया और दूसरे हाथ से उसे ढक लिया। उसने गंभीरता, दयालुता और फिर भी दृढ़ निश्चय के साथ उसकी ओर देखा। उत्तराधिकारी इस पुरुष को अपना वश में नहीं कर सकती थी। उसके तेजस्वी चेहरे पर उसकी निगाहों में न तो चापलूसी थी, न ही सम्मान; बल्कि रुचि और स्नेह

था, जो एक अन्य भावना से और भी तीव्र हो गया था। उसकी आवाज़ और शब्दों में कुछ ऐसा था जो कृतज्ञता की भावना को दर्शाता था।

"आपके देनदार की ओर से आपको शुभ रात्रि! आशा है आप सुबह तक शांति और सुकून से सोएंगे।"

"और आप, श्री मूर—आप क्या करने वाले हैं? श्री हेलस्टोन से आपने क्या कहा, जिनसे मैंने आपको हाथ मिलाते देखा? वे सभी सज्जन आपके चारों ओर क्यों जमा हो गए? एक बार संकोच छोड़िए। मुझसे खुलकर बात कीजिए।"

"आपका विरोध कौन कर सकता है? मैं स्पष्टवादी हूँ। कल, अगर कुछ बताने लायक होगा, तो आप सुन लेंगे।"

"अभी के अभी," शर्ली ने विनती की; "देरी मत करो।"

लेकिन मैं आधी बात ही बता सकता था। और मेरा समय सीमित है; मेरे पास एक पल भी फालतू नहीं है। अब से मैं स्पष्टवादिता से देरी की भरपाई करूँगा।

लेकिन क्या तुम घर जा रहे हो?

"हाँ।"

"क्या इसे आज रात और नहीं टालना चाहिए?"

"बिल्कुल नहीं। फिलहाल आप दोनों को अलविदा।"

वह कैरोलीन का हाथ पकड़कर उसे उसी तरह थाम लेना चाहता था जैसे उसने शर्ली का हाथ थामा था, लेकिन किसी तरह कैरोलीन इसके लिए तैयार नहीं थी। वह कुछ कदम पीछे हट गई थी। मूर के अलविदा कहने पर कैरोलीन ने बस सिर झुकाया और एक सौम्य, गंभीर मुस्कान दी। उसने और कोई औपचारिक संकेत नहीं चाहा। उसने फिर कहा, "अलविदा," और उन दोनों को छोड़कर चला गया।

"लो! अब तो सब खत्म हो गया," उसके जाने के बाद शर्ली ने कहा। "हमने उसे शुभ रात्रि कहलवा दिया है, और मुझे लगता है कि हमने उसकी नजरों में अपनी जगह नहीं खोई है, कैरी।"

"मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा," यह संक्षिप्त उत्तर था।

"मैं तुम्हें बहुत शर्मीली और संकोची समझती हूँ," मिस कील्डर ने कहा। "जब मूर ने तुम्हें अपना हाथ दिया था, तो तुमने क्यों नहीं दिया? वह तुम्हारा चचेरा भाई है; तुम उसे पसंद करती हो। क्या तुम्हें शर्म आती है कि वह तुम्हारे स्नेह को प्रकट करे?"

"वह उन सभी चीजों को समझता है जिनमें उसकी रुचि होती है। भावनाओं का

प्रदर्शन करने की कोई आवश्यकता नहीं है।”

“तुम बहुत कम बोलती हो; अगर हो सके तो तुम संयमी बनोगी। क्या तुम्हारी नज़र में प्यार एक अपराध है, कैरोलीन?”

“प्यार एक अपराध है! नहीं, शर्ली; प्यार एक दिव्य गुण है। लेकिन इस शब्द को चर्चा में क्यों घसीटना? यह बिल्कुल अप्रासंगिक है।”

“बहुत बढ़िया!” शर्ली ने कहा।

दोनों लड़कियां चुपचाप हरी-भरी पगडंडी पर टहल रही थीं। कैरोलिन ने पहले बोलना शुरू किया।

“अतिशयता अपराध है, धृष्टता अपराध है, और दोनों ही घृणित हैं; लेकिन प्रेम! किसी पवित्रतम देवदूत को भी प्रेम करने में शर्म नहीं आती। और जब मैं किसी पुरुष या स्त्री को प्रेम के साथ शर्म जोड़ते हुए देखता या सुनता हूँ, तो मैं समझ जाता हूँ कि उनका मन कुटिल है, उनके संबंध निम्न स्तर के हैं। बहुत से लोग जो स्वयं को सभ्य भद्र और भद्र समझते हैं, और जिनके होठों पर ‘अश्लीलता’ शब्द सदा मंडराता रहता है, वे ‘प्रेम’ का नाम लेते ही अपनी जन्मजात और मूर्खतापूर्ण नीचता को प्रकट कर देते हैं। उनकी नज़र में यह एक नीच भावना है, जो उनके लिए केवल निम्न विचारों से जुड़ी है।”

"कैरोलीन, तुम दुनिया के तीन-चौथाई हिस्से का वर्णन कर रही हो।"

“वे निर्दयी हैं—वे कायर हैं—वे इस विषय पर मूर्ख हैं, शर्ली! उन्होंने कभी प्यार नहीं किया—उन्हें कभी प्यार नहीं मिला!”

“लीना, तुम सही कह रही हो। और अपनी घोर अज्ञानता में वे उस जीवित अग्नि की निंदा करते हैं, जो दिव्य वेदी से देवदूतों द्वारा लाई गई है।”

"वे इसे टोफेट से उठने वाली चिंगारियों से भ्रमित कर देते हैं।"

यहां अचानक और आनंदमयी घंटियों की गूंज ने सभी को गिरजाघर में बुलाकर संवाद को रोक दिया।

अध्याय 18वां।

जिसे शिष्ट पाठक को छोड़ देने की सलाह दी जाती है, क्योंकि यहाँ निम्न स्तर के व्यक्तियों का परिचय कराया जा रहा है।

शाम शांत और गर्म थी; उमस भरी और उमस भरी होने का आभास भी हो रहा था। ढलते सूरज के चारों ओर बादल बैंगनी रंग में चमक रहे थे; गर्मियों के रंग, जो अंग्रेजी से अधिक भारतीय लग रहे थे, क्षितिज पर छाए हुए थे और पहाड़ी, घर के सामने, पेड़ों के तने, घुमावदार सड़क और लहरदार चारागाह पर गुलाबी परछाईं बना रहे थे। दोनों लड़कियां धीरे-धीरे खेतों से नीचे उतरीं। जब तक वे गिरजाघर पहुंचीं, घंटियां शांत हो चुकी थीं; भीड़ गिरजाघर में इकट्ठा हो गई थी। पूरा दृश्य सुनसान था।

"यह कितना सुखद और शांत है!" कैरोलिन ने कहा।

"और चर्च में कितनी गर्मी होगी!" शर्ली ने जवाब दिया। "और डॉ. बोल्टबी का भाषण कितना उबाऊ और लंबा होगा! और पादरी अपने तैयार भाषणों को कितनी जोर-शोर से दोहराएंगे! मैं तो अंदर जाना ही नहीं चाहती।"

लेकिन अगर मेरे चाचा को हमारी अनुपस्थिति का पता चलेगा तो वे नाराज हो जाएंगे।

मैं उसके क्रोध का सामना करूँगा; वह मुझे खा नहीं जाएगा। मुझे उसके तीखे भाषण की कमी खलेगी। मैं जानता हूँ कि वह चर्च के लिए पूरी तरह से समझदारी भरा होगा, और फूट डालने वालों के लिए पूरी तरह से कटु होगा। वह रॉयड लेन की लड़ाई नहीं भूलेगा। मुझे श्री हॉल के सच्चे और मैत्रीपूर्ण उपदेश से भी आपको वंचित करने का दुख होगा, जिसमें यॉर्कशायर के सभी रोचक मुहावरे शामिल हैं; लेकिन मुझे यहीं रहना होगा। धूसर चर्च और उससे भी धूसर कब्रें इस लालिमा भरी चमक के साथ दिव्य प्रतीत होती हैं। प्रकृति अब अपनी शाम की प्रार्थना कर रही है; वह उन लाल पहाड़ियों के सामने घुटने टेक रही है। मैं उसे अपनी वेदी की बड़ी सीढ़ियों पर लेटे हुए देखता हूँ, समुद्र में नाविकों के लिए, रेगिस्तानों में यात्रियों के लिए, मैदानों में मेमनों

के लिए, और जंगलों में अजन्मे पक्षियों के लिए एक सुखद रात की प्रार्थना करते हुए। कैरोलीन, मैं उसे देखता हूँ, और मैं तुम्हें बताता हूँ कि वह कैसी है। वह वैसी ही है जैसी हव्वा तब थी जब वह और आदम पृथ्वी पर अकेले खड़े थे।

और यह मिल्टन की पूर्व संध्या नहीं है, शर्ली।

“मिल्टन की पूर्व संध्या! मिल्टन की पूर्व संध्या! मैं फिर से कहता हूँ। नहीं, ईश्वर की पवित्र माँ की कसम, वह नहीं है! कैरी, हम अकेले हैं; हम जो चाहें कह सकते हैं। मिल्टन महान थे; लेकिन क्या वे अच्छे थे? उनका दिमाग सही था; उनका दिल कैसा था? उन्होंने स्वर्ग देखा; उन्होंने नरक को देखा। उन्होंने शैतान को, उसकी पुत्री पाप को और उनकी भयानक संतान मृत्यु को देखा। स्वर्गदूतों ने उनके सामने अपनी टुकड़ियाँ खड़ी कीं; वज्र की ढालों की लंबी कतारों ने उनकी अंधी आँखों में स्वर्ग की अकथनीय भव्यता को प्रतिबिंबित किया। शैतानों ने उनकी दृष्टि में अपनी सेनाएँ एकत्रित कीं; उनकी धुंधली, विहीन और कलंकित सेनाएँ उनके सामने पंक्तिबद्ध होकर गुजरीं। मिल्टन ने पहली स्त्री को देखने की कोशिश की; लेकिन, कैरी, उन्होंने उसे नहीं देखा।”

"ऐसा कहने की तुम्हारी हिम्मत तो देखो, शर्ली।"

“वफादार से ज्यादा साहसी नहीं। उसने अपने रसोइए को देखा; या जैसा कि मैंने उसे देखा है, वह श्रीमती गिल थीं, जो गर्मी के मौसम में ठंडी डेयरी में, जालीदार खिड़की के चारों ओर गुलाब और नास्टर्टियम के पेड़ों के बीच, रेक्टरों के लिए ठंडा नाश्ता तैयार कर रही थीं - मुरब्बे और 'मधुर क्रीम'; वह इस बात से परेशान थीं कि 'सबसे स्वादिष्ट व्यंजन के लिए क्या चुनें; ऐसा क्रम कैसे बनाएं जिससे स्वाद आपस में न मिलें, बेमेल न लगें, भद्दा न लगें, बल्कि एक के बाद एक स्वाद आते रहें, जो बड़े ही मधुर बदलाव के साथ बरकरार रहें।'”

"सब ठीक है, शर्ली।"

मैं उनसे यह याद दिलाना चाहूंगा कि पृथ्वी के पहले मनुष्य टाइटन थे, और ईव उनकी माता थीं; उनसे ही सैटर्न, हाइपेरियन, ओशनस का जन्म हुआ; उन्होंने ही प्रोमेथियस को जन्म दिया — — “

“तुम तो मूर्तिपूजक हो! इसका क्या अर्थ है?”

“मैं कहता हूँ, उन दिनों पृथ्वी पर विशालकाय लोग थे—ऐसे विशालकाय लोग जो स्वर्ग को छूने का प्रयास करते थे। इस संसार में जीवन से परिपूर्ण प्रथम स्त्री के स्तन

ने वह साहस प्रदान किया जो सर्वशक्तिमान से प्रतिस्पर्धा कर सकता था, वह शक्ति जो हज़ार वर्षों के बंधन को सहन कर सकती थी, वह जीवन शक्ति जो अनगिनत युगों तक उस गिद्ध जैसी मृत्यु को पाल सकती थी, वह अक्षय जीवन और निष्कलंक उत्कृष्टता, अमरता की सहेलियाँ, जिसने सहस्राब्दियों के अपराधों, संघर्षों और विपत्तियों के बाद एक मसीहा को गर्भ धारण किया और जन्म दिया। प्रथम स्त्री स्वर्ग से जन्मी थी। वह हृदय विशाल था जिससे राष्ट्रों के रक्त का स्रोत फूटा, और वह निष्कलंक सिर भव्य था जहाँ सृष्टि का मुकुट विराजमान था।"

"उसने सेब की लालसा की, और एक साँप ने उसे धोखा दिया; लेकिन तुमने धर्मग्रंथों और पौराणिक कथाओं का ऐसा घालमेल कर रखा है कि तुम्हारी बात समझ में नहीं आती। तुमने अभी तक मुझे यह भी नहीं बताया कि तुमने उन पहाड़ियों पर घुटने टेकते हुए क्या देखा।"

"मैंने देखा—अब मैं देख पा रही हूँ—एक विशालकाय स्त्री। उसका नीले रंग का वस्त्र मैदान के बाहरी किनारों तक फैला है, जहाँ दूर भेड़ों का झुंड चर रहा है; हिमस्खलन की तरह सफेद घूंघट उसके सिर से पैरों तक फैला है, और उसकी सीमाओं पर बिजली की लपटें उठ रही हैं। उसके सीने के नीचे मैं उसकी योनि देख पा रही हूँ, जो क्षितिज की तरह बैंगनी है; उसकी लालिमा से शाम का तारा चमक रहा है। उसकी स्थिर आँखों का मैं वर्णन नहीं कर सकती। वे निर्मल हैं, झीलों की तरह गहरी हैं, ऊपर उठी हुई हैं और आराधना से भरी हैं, प्रेम की कोमलता और प्रार्थना की चमक से कांप रही हैं। उसका माथा बादल की तरह फैला है, और सुबह के चाँद से भी अधिक पीला है, जो अंधेरा होने से बहुत पहले उग आता है। वह अपना सीना स्टिलब्रो मूर की पहाड़ी पर टिकाए हुए है; उसके शक्तिशाली हाथ उसके नीचे जुड़े हुए हैं। इस प्रकार घुटने टेककर, आमने-सामने वह ईश्वर से बात कर रही है। कि हव्वा यहोवा की पुत्री है, जैसे आदम उसका पुत्र था।"

"वह बहुत अस्पष्ट और कल्पनाशील है। चलो, शर्ली, हमें चर्च चलना चाहिए।"

"कैरोलीन, मैं नहीं रुकूँगा; मैं यहीं अपनी माँ ईव के साथ, प्रकृति के इन दिनों में रहूँगा। मैं उनसे प्रेम करता हूँ - अमर, महान सत्ता! स्वर्ग में गिरने पर उनके माथे से स्वर्ग भले ही मिट गया हो, लेकिन पृथ्वी पर जो कुछ भी गौरवशाली है, वह वहाँ आज भी चमक रहा है। वह मुझे अपनी गोद में ले रही हैं और मुझे अपना हृदय दिखा रही हैं। चुप रहो, कैरोलीन! अगर हम दोनों चुप रहें, तो तुम भी उन्हें देख पाओगी और वैसा ही

महसूस कर पाओगी जैसा मैं कर रहा हूँ।”

मैं तुम्हारी बात मान लूंगा; लेकिन दस मिनट पूरे होने से पहले ही तुम फिर से बोलना शुरू कर दोगे।

मिस कील्डर, जिन पर गर्म ग्रीष्म संध्या का कोमल उत्साह अप्रत्याशित शक्ति से अपना प्रभाव डाल रहा था, एक खड़ी समाधि के सहारे झुक गईं; उनकी निगाहें पश्चिम की ओर चमकते सूरज पर टिकी थीं और वे एक सुखद तल्लीनता में डूब गईं। कैरोलीन, थोड़ा अलग हटकर, पादरी के घर के बगीचे की दीवार के नीचे इधर-उधर टहल रही थी, अपने तरीके से सपने देख रही थी। शर्ली ने "माँ" शब्द का उल्लेख किया था। उस शब्द ने कैरोलीन की कल्पना में शर्ली के सपनों की शक्तिशाली और रहस्यमयी माँ की छवि नहीं, बल्कि एक कोमल मानवीय रूप की छवि को जन्म दिया - वह रूप जो उसने अपनी माँ के लिए अपनाया था - अज्ञात, अनचाही, लेकिन जिसकी चाहत अनसुनी नहीं थी।

काश वो दिन आ जाए जब उसे अपने बच्चे की याद आए! काश मैं उसे जान सकूँ, और जानकर उससे प्यार कर सकूँ!

यही उसकी आकांक्षा थी।

उसके बचपन की तड़प फिर से उसके दिल में जाग उठी। वह इच्छा जिसने कई रातों को उसे पालने में जगाए रखा था, और जिसके निरर्थक होने के डर ने हाल के वर्षों में लगभग बुझा दिया था, अचानक फिर से जागृत हो गई और उसके दिल में गर्मजोशी से चमक उठी। वह चाहती थी कि किसी शुभ दिन उसकी माँ आए, उसे अपने पास बुलाए, स्नेह भरी निगाहों से उसे देखे और कोमल स्वर में उससे कहे, “कैरोलीन, मेरी बच्ची, तुम्हारे लिए मेरे पास एक घर है; तुम मेरे साथ रहोगी। वह सारा प्यार जिसकी तुम्हें बचपन से ज़रूरत थी, लेकिन जो तुम्हें नहीं मिला, मैंने तुम्हारे लिए सहेज कर रखा है। आओ; अब यह तुम्हें प्यार देगा।”

सड़क पर आई एक आवाज़ ने कैरोलीन को उसकी पारिवारिक उम्मीदों से और शर्ली को उसके विशालकाय सपनों से जगा दिया। उन्होंने ध्यान से सुना और घोड़ों के चलने की आहट सुनी। उन्होंने देखा और पेड़ों के बीच से एक चमक दिखाई दी। पत्तों के बीच से उन्हें वीर लाल रंग की झलक मिली; हेलमेट चमक रहा था, पंख लहरा रहा था। चुपचाप और व्यवस्थित रूप से, छह सैनिक धीरे से आगे बढ़ गए।

“वही जो हमने आज दोपहर देखा,” शर्ली ने फुसफुसाते हुए कहा। “वे अब तक

कहीं छिपे हुए हैं। वे जितना हो सके कम ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, और लोगों के चर्च में होने के इस शांत समय में अपने मिलने की जगह ढूंढ रहे हैं। क्या मैंने नहीं कहा था कि हम जल्द ही कुछ असामान्य चीजें देखेंगे?"

सैनिकों की आवाज और नजरें अभी ओझल हुई ही थीं कि एक और, कुछ अलग तरह की हलचल ने रात की खामोशी को भंग कर दिया—एक बच्चे की बेचैन चीख। उन्होंने देखा। एक आदमी गिरजाघर से बाहर निकला, अपनी बाहों में एक शिशु को लिए हुए—लगभग दो साल का एक हट्टा-कट्टा, लाल-लाल सा बच्चा—जो पूरी ताकत से रो रहा था। शायद वह अभी-अभी गिरजाघर में सोकर उठा था। उसके पीछे नौ और दस साल की दो छोटी लड़कियां भी थीं। ताजी हवा के असर और एक कब्र से तोड़े गए कुछ फूलों के आकर्षण से बच्चा जल्द ही शांत हो गया। वह आदमी उसे गोद में लेकर बैठ गया और उसे उतनी ही कोमलता से अपनी गोद में झुलाने लगा जैसे कोई औरत करती है; दोनों छोटी लड़कियां एक-एक करके दोनों तरफ बैठ गईं।

"शुभ संध्या, विलियम," शर्ली ने उस आदमी को ध्यान से देखने के बाद कहा। उसने उसे पहले भी देखा था और जाहिर तौर पर पहचाने जाने का इंतजार कर रहा था। अब उसने अपनी टोपी उतारी और खुशी से मुस्कुराया। वह सख्त चेहरे वाला, खुरदुरा और गंभीर व्यक्ति था, बूढ़ा तो नहीं, लेकिन काफी अनुभवी। उसके कपड़े शालीन और साफ थे; उसके बच्चों के कपड़े तो बेहद साफ-सुथरे थे। यह हमारा पुराना दोस्त फैरेन था। युवतियाँ उसके पास गईं।

"तुम चर्च में नहीं जा रहे?" उसने उन्हें निश्चिंत भाव से देखते हुए पूछा, लेकिन उसकी आँखों में थोड़ी शर्म भी झलक रही थी—यह भाव उनकी प्रतिष्ठा के प्रति श्रद्धा का परिणाम नहीं था, बल्कि उनकी शालीनता और युवावस्था की प्रशंसा का था। मूर या हेलस्टोन जैसे सज्जनों के सामने विलियम अक्सर थोड़ा अड़ियल हो जाता था; अभिमानी या उद्दंड महिलाओं के साथ भी वह बिल्कुल अनियंत्रित हो जाता था, कभी-कभी बहुत नाराज़ भी हो जाता था; लेकिन वह अच्छे स्वभाव और शिष्टाचार के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील और विनम्र था। उसका स्वभाव जिद्दी था और दूसरों के कठोर स्वभाव से उसे चिढ़ होती थी; इसी कारण वह अपने पूर्व स्वामी मूर को कभी पसंद नहीं कर पाया था; और उस सज्जन की अपने बारे में अच्छी राय और मिस्टर यॉर्क के यहाँ माली के रूप में उसकी सिफारिश करके और इस तरह आस-पड़ोस के अन्य परिवारों के बीच उसकी सिफारिश करके किए गए उसके गुप्त कार्य से अनभिज्ञ

होकर, वह उसकी कठोरता के प्रति द्वेष रखता रहा। हाल ही में उसने फील्डहेड में अक्सर काम किया था। मिस कील्डर का स्पष्ट और आतिथ्य सत्कारपूर्ण व्यवहार उन्हें बेहद भाता था। कैरोलीन को वे बचपन से जानते थे; अनजाने में ही वे उनके लिए आदर्श महिला थीं। उनका सौम्य व्यवहार, चाल-ढाल, हाव-भाव, व्यक्तित्व और पहनावे की शालीनता उनके किसान हृदय में कलात्मक भावना को जागृत कर देती थी। उन्हें कैरोलीन को देखने में उतना ही आनंद आता था जितना दुर्लभ फूलों को निहारने या मनमोहक दृश्यों को देखने में। दोनों महिलाएं विलियम को पसंद करती थीं; उन्हें किताबें देना, पौधे भेंट करना उन्हें बेहद प्रसन्नता देता था; और वे विलियम की बातचीत को अपने से कहीं अधिक ऊंचे ओहदे वाले, कठोर और दिखावटी लोगों की बातचीत से भी कहीं बेहतर मानती थीं।

"विलियम, जब तुम बाहर आए तो कौन बोल रहा था?" शर्ली ने पूछा।

"मिस शर्ली, आप एक सज्जन व्यक्ति को बहुत महत्व देती हैं - श्री डोने।"

“विलियम, तुम काफी जानकार लग रहे हो। तुम्हें कैसे पता चला कि मैं मिस्टर डोने को कितना पसंद करता हूँ?”

"जी हां, मिस शर्ली, कभी-कभी आपकी आंखों में एक चमक आ जाती है जो आपकी पोल खोल देती है। जब मिस्टर डोने आस-पास होते हैं तो आप कभी-कभी तिरस्कार भरी नजरों से नीचे देखती हैं।"

"क्या तुम खुद उसे पसंद करते हो, विलियम?"

मैं? मैं तो पादरियों से तंग आ चुका हूँ, और मेरी पत्नी भी। उनमें ज़रा भी शिष्टाचार नहीं है। वे गरीबों से ऐसे बात करते हैं मानो उन्हें अपने से नीचा समझते हों। वे हमेशा अपने पद का बखान करते हैं। काश उनका पद उन्हें और भी महान बना पाता; पर ऐसा कुछ नहीं होता। मुझे घमंड से सख्त नफ़रत है।

“लेकिन तुम भी अपने तरीके से बहुत घमंडी हो,” कैरोलीन ने बीच में कहा। “तुम खुद को घर-गृहस्थी का बहुत ज्यादा ख्याल रखने वाली कहती हो: तुम्हें हर चीज सुंदर रखना पसंद है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है मानो तुम्हें अपनी तनख्वाह लेने में भी शर्म आती हो। जब तुम बेरोजगार थी, तब भी तुम्हें उधार पर कुछ भी लेने में इतनी झिझक होती थी। लेकिन अपने बच्चों के लिए, मुझे लगता है कि तुम बिना पैसे के दुकान जाने के बजाय भूखे रहना पसंद करती; और जब मैं तुम्हें कुछ देना चाहती थी, तो तुम्हें उसे लेने के लिए मनाना कितना मुश्किल होता था!”

“यह बात कुछ हद तक सच है, मिस कैरोलिन। मैं किसी भी दिन लेना नहीं, बल्कि देना पसंद करूँगा, खासकर आप जैसी से। हमारे बीच का अंतर देखिए। आप एक छोटी, युवा, दुबली-पतली लड़की हैं, और मैं एक बड़ा, बलवान आदमी हूँ; मेरी उम्र आपकी उम्र से लगभग दोगुनी है। इसलिए, मुझे लगता है कि आपसे कुछ लेना—आप पर एहसानमंद होना—मेरा काम नहीं है। और उस दिन आप हमारे घर आईं, मुझे दरवाजे पर बुलाया, और मुझे पाँच शिलिंग देने की पेशकश की, जो मुझे संदेह है कि आप दे सकती थीं—क्योंकि मुझे पता है कि आपके पास कोई दौलत नहीं है—उस दिन मैं एक विद्रोही, एक कट्टरपंथी, एक बागी था; और आपने ही मुझे ऐसा बनाया था। मुझे शर्म आती है कि काम करने के लिए इच्छुक और सक्षम होने के बावजूद, मैं ऐसी स्थिति में था कि मेरी सबसे बड़ी बेटी की उम्र की एक युवा लड़की को आकर मुझे अपना थोड़ा सा पैसा देना जरूरी लगा।”

"मुझे लगता है कि तुम मुझसे नाराज़ थे, विलियम?"

“मैं लगभग वैसा ही था, एक तरह से। लेकिन मैंने तुम्हें बहुत जल्दी माफ कर दिया। तुम्हारा इरादा अच्छा था। हाँ, मैं घमंडी हूँ, और तुम भी; लेकिन तुम्हारा और मेरा घमंड एकदम साफ-सुथरा है—जिसे हम यॉर्कशायर में 'साफ-सुथरा घमंड' कहते हैं—जिसके बारे में मिस्टर मैलोन और मिस्टर डोने को कुछ पता नहीं। उनका घमंड तो गंदा है। अब, मैं अपनी बेटियों को मिस शर्ली की तरह घमंडी होना सिखाऊँगा, और अपने बेटों को मेरी तरह घमंडी होना सिखाऊँगा; लेकिन मैं उनमें से किसी को भी पादरियों जैसा बनने की हिम्मत नहीं करने दूँगा। अगर मैंने छोटे माइकल को उस भावना का कोई भी संकेत दिखाते देखा, तो मैं उसे पीट दूँगा।”

“विलियम, क्या फर्क है?”

“तुम लोग फर्क अच्छी तरह जानते हो, फिर भी तुम चाहते हो कि मैं बोलना बंद कर दूं। श्री मैलोन और श्री डोने इतने अहंकारी हैं कि वे अपने लिए कुछ भी नहीं कर सकते; हम भी इतने अहंकारी हैं कि किसी को अपने लिए कुछ भी करने नहीं देते। पादरी तो उनसे भी शिष्टाचार से बात नहीं कर पाते जिन्हें वे अपने से नीचा समझते हैं; हम भी उनसे अभद्र शब्द सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकते जो खुद को हमसे श्रेष्ठ समझते हैं।”

“अब, विलियम, कृपया मुझे सच-सच बताओ कि तुम दुनिया में कैसे हो। क्या तुम्हारी आर्थिक स्थिति अच्छी है?”

“मिस शर्ली, मैं बहुत खुशहाल हूँ। जब से मैंने श्री योर्क की मदद से बागवानी का काम शुरू किया है, और जब से श्री हॉल (एक और ईमानदार व्यक्ति) ने मेरी पत्नी को एक छोटी सी दुकान खोलने में मदद की है, तब से मुझे कोई शिकायत नहीं है। मेरे परिवार के पास खाने-पीने और पहनने के लिए पर्याप्त कपड़े हैं। मेरा स्वाभिमान मुझे कभी-कभार बुरे समय के लिए कुछ पैसे बचाने के लिए प्रेरित करता है; क्योंकि मुझे लगता है कि मैं इस गाँव में आने से पहले मरना पसंद करूँगा; और मैं और मेरा परिवार संतुष्ट हैं। लेकिन पड़ोस के लोग अभी भी गरीब हैं। मैं बहुत कष्ट देखता हूँ।”

"और, परिणामस्वरूप, मुझे लगता है कि अभी भी असंतोष है?" मिस कील्डर ने पूछा।

परिणामस्वरूप—आप सही कह रहे हैं—परिणामस्वरूप। ज़ाहिर है, भूखे लोग संतुष्ट या स्थिर नहीं हो सकते। देश की स्थिति सुरक्षित नहीं है—मैं यह बात साफ़-साफ़ कह सकता हूँ!

लेकिन क्या किया जा सकता है? उदाहरण के लिए, मैं और क्या कर सकता हूँ?

“करूँ? तुम कुछ नहीं कर सकती, बेचारी युवती! तुमने अपनी पूरी कोशिश की है; तुमने अच्छा किया है। अगर तुम अपने किरायेदार, मिस्टर मूर को बॉटनी बे भेज सको, तो शायद और भी अच्छा होगा। लोग उससे नफरत करते हैं।”

“विलियम, तुम्हें शर्म आनी चाहिए!” कैरोलीन ने जोश से कहा। “अगर लोग उससे नफरत करते हैं, तो यह उनकी शर्म की बात है, उसकी नहीं। श्री मूर खुद किसी से नफरत नहीं करते। वह तो बस अपना कर्तव्य निभाना चाहते हैं और अपने अधिकारों की रक्षा करना चाहते हैं। तुम्हारा ऐसा कहना गलत है।”

मैं जो सोचता हूँ वही बोलता हूँ। उस मूर का दिल ठंडा और भावनाहीन है।

लेकिन,” शर्ली ने बीच में टोकते हुए कहा, “मान लीजिए कि मूर को देश से निकाल दिया गया और उसकी चक्की को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया गया, तो क्या लोगों को अधिक काम मिलेगा?”

“उनके पास कम ही होगा। मैं यह जानता हूँ, और वे भी यह जानते हैं; और कई ईमानदार लड़के इस निश्चितता से हताश हो जाते हैं कि वे चाहे जिस भी राह पर मुड़ें, उनका भला नहीं हो सकता; और उन्हें शैतान की ओर ले जाने वाले बेईमान लोगों की भी भरमार है, ऐसे बदमाश जो खुद को ‘जनता का मित्र’ समझते हैं, लेकिन जनता के बारे में कुछ नहीं जानते, और शैतान की तरह ही कपटी हैं। मैं चालीस साल से अधिक

समय से इस दुनिया में जी रहा हूँ, और मेरा मानना है कि ‘जनता’ के सच्चे मित्र केवल स्वयं और उन दो-तीन अच्छे लोगों के अलावा कभी नहीं होंगे जो अलग-अलग परिस्थितियों में हैं और पूरी दुनिया के मित्र हैं। मानव स्वभाव, अगर समग्र रूप से देखा जाए, तो स्वार्थ के सिवा कुछ नहीं है। यह कुछ ही लोगों में अत्यधिक होता है, यह बस कभी-कभार, कभी-कभार होने वाला अपवाद है, जैसे कि तुम दोनों नौजवान और मैं, जो अलग-अलग परिवेश में होते हुए भी एक-दूसरे को समझ सकते हैं, और बिना किसी स्वार्थ या अहंकार के मित्र बन सकते हैं।” जो लोग राजनीतिक स्वार्थ के लिए अपने से निचले वर्ग के लोगों से दोस्ती का दिखावा करते हैं, उन पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता; वे हमेशा अपने से कमतर लोगों को मोहरा बनाने की कोशिश करते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मैं किसी की खुशी के लिए न तो किसी के बहकावे में आऊँगा और न ही किसी के बहकावे में आऊँगा। हाल ही में मुझे कुछ ऐसे प्रस्ताव मिले जो मुझे धोखे भरे लगे, और मैंने उन्हें ठुकरा दिया।

"आप हमें ये नहीं बताएंगे कि किस तरह के प्रस्ताव रखे गए हैं?"

मैं ऐसा नहीं करूंगा। इससे कोई फायदा नहीं होगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। संबंधित लोग अपना ख्याल खुद रख सकते हैं।

“अरे, हम सबका ख्याल रखेंगे,” एक और आवाज आई। जो स्कॉट ताजी हवा लेने के लिए चर्च से बाहर टहलते हुए आया था और वहीं खड़ा हो गया।

“मैं तुम्हें इस बात की गारंटी देता हूँ, जो,” विलियम ने मुस्कुराते हुए कहा।

“और मैं अपने मालिक की गारंटी देता हूँ,” जवाब मिला। — “युवा देवियों,” जो ने एक शाही अंदाज़ में कहा, “आप बेहतर होगा कि घर के अंदर चली जाएँ।”

"पता नहीं क्यों?" शर्ली ने पूछा, जो चौकीदार के कुछ हद तक व्यावहारिक व्यवहार से परिचित थी और अक्सर उससे झगड़ती रहती थी; क्योंकि जो, आम तौर पर महिलाओं के बारे में घमंडी विचार रखता था, अपने मन में इस बात से बहुत नाराज़ था कि उसका मालिक और उसकी चक्की एक तरह से किसी के अधीन चल रहे थे, और हॉलो के लेखा कार्यालय की उत्तराधिकारी की कुछ व्यावसायिक यात्राओं को वह कड़वी आग और ज़हर के समान मानता था।

"क्योंकि ऐसा कोई अगेट पत्थर नहीं है जो महिलाओं के लिए उपयुक्त हो और जिसे वे पहन सकें।"

“सचमुच! उस गिरजाघर में प्रार्थना और उपदेश का अद्भुत माहौल है। क्या हमें इस

बात की चिंता नहीं है?”

“अगर मैंने सही समझा है, तो महोदया, आप न तो प्रार्थना में और न ही उपदेश में उपस्थित थीं। मेरा इशारा राजनीति की ओर था। अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो विलियम फैरेन यहाँ उसी विषय पर बात कर रहे थे।”

“तो फिर क्या? राजनीति तो हमारी नियमित पढ़ाई है, जो। क्या तुम्हें पता है कि मैं हर दिन एक अखबार पढ़ता हूँ, और रविवार को दो अखबार?”

"मुझे लगता है कि आप शायद शादियों, हत्याओं, दुर्घटनाओं और इसी तरह की अन्य खबरें पढ़ेंगी, महोदया?"

“जो, मैं प्रमुख लेख पढ़ता हूँ, विदेशी खुफिया जानकारी देखता हूँ और बाजार की कीमतों पर नजर रखता हूँ। संक्षेप में, मैं वही पढ़ता हूँ जो सज्जन लोग पढ़ते हैं।”

जो को ऐसा लग रहा था मानो वह इस बात को किसी पाई की खड़खड़ाहट जैसा समझ रहा हो। उसने तिरस्कारपूर्ण चुप्पी साधकर इसका जवाब दिया।

मिस कील्डर ने आगे कहा, "जो, मैं आज तक ठीक से यह पता नहीं लगा पाई हूँ कि आप व्हिग हैं या टोरी। कृपया बताइए कि आप किस पार्टी के समर्थक हैं?"

“जहां आपको यकीन हो कि कोई समझ ही नहीं पाएगा, वहां समझाना कहीं ज्यादा मुश्किल है,” जो ने घमंडी लहजे में जवाब दिया; “लेकिन जहां तक टोरी होने की बात है, मैं बूढ़ी औरत या जवान औरत होना ज्यादा पसंद करूंगा, जो कि उससे भी कहीं ज्यादा कमजोर बात है। युद्ध को जारी रखने और व्यापार को बर्बाद करने वाले तो टोरी ही हैं; और अगर मैं किसी पार्टी का सदस्य हूं – हालांकि राजनीतिक दल सब बकवास हैं – तो मैं उस पार्टी का सदस्य हूं जो शांति के लिए सबसे ज्यादा अनुकूल है, और परिणामस्वरूप, इस देश के व्यापारिक हितों के लिए भी।”

“मैं भी, जो,” शर्ली ने जवाब दिया, जिसे उस पर्यवेक्षक को चिढ़ाने में काफी आनंद आता था, क्योंकि वह उन विषयों पर लगातार बात करती रहती थी जिन पर वह मानता था कि एक महिला होने के नाते उसे दखल देने का कोई अधिकार नहीं है — “कम से कम आंशिक रूप से तो नहीं। मेरा झुकाव भी कृषि क्षेत्र की ओर है; और इसका उचित कारण भी है, क्योंकि मैं नहीं चाहती कि इंग्लैंड फ्रांस के अधीन हो जाए, और यदि मेरी आय का एक हिस्सा हॉलो मिल से आता है, तो उससे भी बड़ा हिस्सा उसके आसपास की जमींदारी संपत्ति से आता है। किसानों के लिए कोई भी हानिकारक कदम उठाना उचित नहीं होगा, जो, मुझे लगता है?”

जो ने कहा, "इस समय ओस महिलाओं के लिए हानिकारक होती है।"

“अगर आपने मुझमें दिलचस्पी दिखाते हुए यह बात कही है, तो मैं आपको बस इतना ही बता सकता हूँ कि मुझे ठंड नहीं लगती। मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी अगर मैं किसी गर्मी की रात में आपकी बंदूक लेकर चक्की की रखवाली करने की बारी ले लूँ, जो।”

जो स्कॉट की ठुड्डी हमेशा से ही काफी उभरी हुई थी। इस भाषण के दौरान उन्होंने इसे सामान्य से कुछ इंच अधिक बाहर निकाला।

“लेकिन—अपनी भेड़ों की बात पर लौटते हुए,” उसने आगे कहा—“मैं एक किसान होने के साथ-साथ कपड़ा व्यापारी और चक्की मालिक भी हूँ, फिर भी मेरे मन में यह विचार बार-बार आता है कि हम निर्माता और व्यापारी कभी-कभी थोड़े—बहुत थोड़े—स्वार्थी और दूरदर्शी नहीं होते, और मानवीय पीड़ा के प्रति कुछ हद तक उदासीन और लाभ की लालसा में निर्दयी हो जाते हैं। क्या आप मुझसे सहमत नहीं हैं, जो?”

“मैं वहां बहस नहीं कर सकता जहां मुझे समझा नहीं जा सकता,” यही जवाब फिर से मिला।

“रहस्यमय व्यक्ति! जो, तुम्हारा मालिक कभी-कभी मुझसे बहस करता है। वह तुम्हारी तरह कठोर नहीं है।”

"शायद नहीं। हम सबके अपने-अपने तरीके हैं।"

"जो, क्या तुम्हें सच में लगता है कि दुनिया की सारी बुद्धिमत्ता पुरुषों की खोपड़ियों में समाई हुई है?"

"मुझे लगता है कि महिलाएं एक चंचल और जिद्दी पीढ़ी हैं; और मैं संत पॉल के तिमोथी को लिखे पहले पत्र के दूसरे अध्याय में दिए गए सिद्धांतों का बहुत सम्मान करता हूं।"

“कौन से सिद्धांत, जो?”

“‘स्त्री को पूरी अधीनता के साथ चुपचाप सीखना चाहिए। मैं किसी स्त्री को सिखाने या पुरुष पर अधिकार जमाने की अनुमति नहीं देता, बल्कि उसे चुप रहना चाहिए। क्योंकि पहले आदम की रचना हुई, फिर हव्वा की।’”

“इसका कारोबार से क्या लेना-देना है?” शर्ली ने बीच में ही कहा। “यह तो उत्तराधिकार के अधिकारों की बू आ रही है। जब भी श्री योर्क इन अधिकारों के

खिलाफ आवाज उठाएंगे, मैं उनसे इस बारे में बात करूंगी।”

“और,” जो स्कॉट ने आगे कहा, “आदम को धोखा नहीं दिया गया था, लेकिन स्त्री को धोखा दिया गया था और वह पाप में लिप्त थी।”

“आदम के लिए और भी शर्म की बात है कि उसने आँखें खोलकर पाप किया!” मिस कील्डर चिल्लाईं। “सच कहूँ तो, जो, उस अध्याय को लेकर मेरा मन कभी भी शांत नहीं रहा। यह मुझे उलझन में डालता है।”

“यह तो बिल्कुल स्पष्ट है, महोदया। जो दौड़ता है वह पढ़ भी सकता है।”

“हो सकता है वो इसे अपने तरीके से पढ़े,” कैरोलिन ने कहा, जो अब पहली बार बातचीत में शामिल हुई थी। “मुझे लगता है, जो, तुम निजी निर्णय के अधिकार को स्वीकार करते हो?”

“मैं यह शपथ लेता हूँ! मैं पवित्र ग्रंथ की प्रत्येक पंक्ति के लिए इसकी अनुमति देता हूँ और दावा करता हूँ।”

"क्या महिलाएं भी पुरुषों की तरह इसका प्रयोग कर सकती हैं?"

“नहीं। महिलाओं को राजनीति और धर्म दोनों ही मामलों में अपने पतियों की राय लेनी चाहिए। यही उनके लिए सबसे अच्छा है।”

“ओह! ओह!” शर्ली और कैरोलिन दोनों ने एक साथ कहा।

“बिल्कुल; इसमें कोई शक नहीं,” जिद्दी पर्यवेक्षक ने अपनी बात पर जोर दिया।

“ऐसी मूर्खतापूर्ण टिप्पणी के लिए खुद को शर्मिंदा समझो और पछताओ,” मिस कील्डर ने कहा। “तुम तो यही कह रहे हो कि पुरुषों को अपने पुजारियों की राय बिना जांचे-परखे मान लेनी चाहिए। इस तरह अपनाए गए धर्म का क्या मूल्य होगा? यह तो केवल अंधा और सनकी अंधविश्वास होगा।”

"और मिस हेलस्टोन, सेंट पॉल के इन शब्दों के बारे में आपकी क्या राय है?"

“हम्म! मैं—मैं इन्हें इस तरह समझाता हूँ। उन्होंने वह अध्याय एक विशेष ईसाई मंडली के लिए, विशेष परिस्थितियों में लिखा था; और इसके अलावा, मुझे यकीन है कि अगर मैं मूल ग्रीक पढ़ पाता, तो मुझे पता चलता कि कई शब्दों का गलत अनुवाद किया गया है, शायद उन्हें पूरी तरह से गलत समझा गया है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि थोड़ी सी चतुराई से इस अंश को पूरी तरह से उलटा अर्थ दिया जा सकता है—इसे इस तरह बनाया जा सकता है, ‘स्त्री जब चाहे आपत्ति जता सकती है, बोल सकती है।’ ‘स्त्री को जितना संभव हो उतना सिखाने और अधिकार का प्रयोग करने

की अनुमति है। इस बीच, पुरुष के लिए चुप रहना ही बेहतर है;' इत्यादि।"

"यह ठीक नहीं है, महोदया।"

"मुझे पूरा यकीन है कि ऐसा ही होगा। मेरे विचार तुम्हारे विचारों से कहीं ज़्यादा पक्के हैं, जो। मिस्टर स्कॉट, आप तो एकदम कट्टरपंथी हैं, और हमेशा से रहे हैं। मुझे विलियम तुमसे ज़्यादा पसंद है।"

"जो अपने घर में बिल्कुल ठीक है," शर्ली ने कहा। "मैंने उसे घर पर एकदम शांत देखा है। ब्रायरफील्ड में उससे बेहतर और दयालु पति कोई नहीं है। वह अपनी पत्नी पर कोई दबाव नहीं डालता।"

मेरी पत्नी एक मेहनती, सीधी-सादी महिला है; समय और मेहनत ने उसका सारा अहंकार दूर कर दिया है। लेकिन तुम दोनों, युवतियों, ऐसी नहीं हो। और तुम तो खुद को बहुत ज्ञानी समझती हो; मेरे विचार से तुम सिर्फ सतही घमंड से ही परिचित हो। मैं तुम्हें बता सकता हूँ - एक साल पहले की बात है - एक दिन मिस कैरोलिन हमारे लेखा-जोखा कार्यालय में आईं, जब मैं बड़ी मेज के पीछे कुछ समेट रहा था। उन्होंने मुझे देखा नहीं और एक स्लेट पर लिखी रकम लेकर मालिक के पास गईं। असल में वह रकम बहुत कम थी, जिसे हमारा हैरी दो मिनट में हल कर देता। वह नहीं कर पाईं। श्री मूर को उन्हें हल करना सिखाना पड़ा। और जब उन्होंने उन्हें सिखाया भी, तो वह समझ ही नहीं पाईं।

"बकवास है, जो!"

नहीं, ये कोई बकवास नहीं है। और मिस शर्ली वहाँ मालिक की बातें इतनी ध्यान से सुनती हैं, मानो वो उनके शब्द-दर-शब्द सुन रही हों, जैसे किसी महिला के लिए शीशे में लिखी बातें साफ़-साफ़ सुनाई दे रही हों; और इस सब के दौरान वो खिड़की से झाँकती रहती हैं कि कहीं घोड़ी शांत तो नहीं खड़ी है; फिर उसकी घुड़सवारी की स्कर्ट पर लगे छींटे देखती हैं; फिर अपने लेखा-जोखा के जालों और धूल पर तिरछी नज़र डालती हैं, और सोचती हैं कि हम कितने गंदे लोग हैं, और ननेली कॉमन के ऊपर से उनकी सवारी कितनी शानदार होगी। वो मिस्टर मूर की और कोई बात नहीं सुनतीं, न ही ये कि वो हिब्रू बोलते हैं या नहीं।

"जो, तुम तो बड़े ही चुगलखोर हो। मैं तुम्हें जवाब दे ही देता, पर लोग चर्च से बाहर आ रहे हैं। हमें तुम्हें यहीं छोड़ना होगा। पूर्वाग्रही व्यक्ति, अलविदा। — विलियम, अलविदा। — बच्चों, कल फील्डहेड आना, और श्रीमती गिल के भंडारगृह में से जो

तुम्हें सबसे अच्छा लगे, चुन लेना।”

अध्याय XIX.

एक गर्मी की रात।

अब संध्याकाल हो रहा था। स्वच्छ हवा के कारण तारे चमकने लगे थे।

"घर का रास्ता दिखाने के लिए पर्याप्त रोशनी होगी," मिस कील्डर ने कहा, जब वह पादरी के घर के बगीचे के दरवाजे पर कैरोलिन से विदा लेने की तैयारी कर रही थीं।

"शर्ली, तुम्हें अकेले नहीं जाना चाहिए; फैनी तुम्हारे साथ जाएगी।"

“ऐसा नहीं होगा। मुझे अपने ही इलाके में किस बात का डर होना चाहिए? मैं किसी भी सुहाना ग्रीष्मकाल की रात को, आज से तीन घंटे बाद भी, फील्डहेड से चर्च तक पैदल जा सकता हूँ, केवल तारों को देखने के आनंद और किसी परी से मिलने की उम्मीद में।”

"लेकिन भीड़ के हटने तक इंतजार कीजिए।"

“सहमत हूँ। ये रही पाँचों मिस आर्मिटेज एक के बाद एक। ये रही श्रीमती साइक्स की फैटन, श्री विन्न की छोटी गाड़ी, श्रीमती बर्टव्हिस्टल की कार। मैं इन सबको अलविदा कहने की औपचारिकता में नहीं पड़ना चाहता, इसलिए हम बगीचे में चलते हैं और थोड़ी देर के लिए लेबर्नम के पौधों के बीच शरण लेते हैं।”

अब पादरी, उनके सहायक पादरी और उनके चर्च वार्डन चर्च के बरामदे से बाहर निकले। वहाँ खूब बातचीत हुई, लोगों ने हाथ मिलाए, भाषणों की सराहना की, रात

की ठंडी हवा से सावधान रहने की सलाह दी गई, आदि। धीरे-धीरे भीड़ छंट गई और गाड़ियाँ चली गईं। मिस कील्डर अभी अपने फूलों से घिरे बरामदे से बाहर ही निकल रही थीं कि श्री हेलस्टोन बगीचे में आए और उनसे मिले।

"ओह, मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है!" उसने कहा। "मुझे लगा था कि तुम चली गई हो। — कैरोलाइन, इधर आओ।"

कैरोलीन, शर्ली की तरह, चर्च में अनुपस्थित रहने के बारे में उपदेश सुनने की उम्मीद लेकर आई थी। हालाँकि, पादरी के मन में अन्य विषय ही चल रहे थे।

"मैं आज रात घर पर नहीं सोऊंगा," उसने आगे कहा। "अभी-अभी एक पुराने दोस्त से मिला था और उसके साथ जाने का वादा किया है। मैं शायद कल दोपहर करीब लौट आऊंगा। क्लर्क थॉमस व्यस्त है और मैं उसे घर पर सोने के लिए मना नहीं सकता, जैसा कि मैं आमतौर पर रात भर बाहर रहने पर करता हूं। अब—"

"अब," शर्ली ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "आप चाहते हैं कि मैं एक सज्जन व्यक्ति के रूप में—संक्षेप में, ब्रायर्फ़ील्ड का प्रथम सज्जन व्यक्ति—आपकी अनुपस्थिति में आपका स्थान ग्रहण करूँ, पादरी के निवास का स्वामी बनूँ और आपकी भतीजी और दासियों का संरक्षक बनूँ?"

"बिल्कुल सही, कप्तान। मुझे लगा था कि यह पद आपके लिए उपयुक्त रहेगा। क्या आप कैरोलीन के लिए एक रात के लिए मेहमान बनकर रहेंगे? क्या आप फील्डहेड वापस जाने के बजाय यहीं रुकेंगे?"

और श्रीमती प्रायर क्या करेंगी? उन्हें तो मेरे घर आने की उम्मीद है।

मैं उसे संदेश भेज दूँगा। आओ, रुकने का मन बना लो। रात हो रही है; ओस तेज़ी से गिर रही है। मुझे पूरा यकीन है कि तुम और कैरोलीन एक-दूसरे की संगति का आनंद लोगे।

"तो मैं तुमसे वादा करती हूँ कि मैं कैरोलाइन के साथ रहूँगी," शर्ली ने जवाब दिया। "जैसा तुमने कहा, हम एक-दूसरे की संगति का आनंद लेंगे। आज रात हम अलग नहीं होंगे। अब तुम अपनी पुरानी दोस्त से मिलो, और हमारे लिए चिंता मत करो।"

"अगर रात में कोई गड़बड़ी हो जाए, कप्तान; अगर आपको ताला तोड़ने की आवाज़ सुनाई दे, कांच का शीशा काटने की आवाज़ सुनाई दे, घर के आसपास दबे पांव कदमों की आहट सुनाई दे (और मैं आपको यह बताने से नहीं डरती, क्योंकि

आप अपनी लड़की की कमरबंद के नीचे एक शांत, साहसी हृदय रखती हैं, कि आजकल ऐसी छोटी-मोटी घटनाएं बहुत संभव हैं), तो आप क्या करेंगी?”

पता नहीं; शायद बेहोश हो जाऊँगा—गिर जाऊँगा, और फिर मुझे उठाना पड़ेगा। लेकिन, डॉक्टर साहब, अगर आप मुझे सम्मान का पद देते हैं, तो आपको मुझे हथियार देने होंगे। आपके गढ़ में कौन-कौन से हथियार हैं?

“क्या तुम तलवार नहीं चला सकते?”

“नहीं; मैं नक्काशी वाले चाकू को बेहतर ढंग से संभाल सकता हूँ।”

"आपको डाइनिंग रूम के साइडबोर्ड में एक अच्छा चाकू मिल जाएगा - एक महिला का चाकू, संभालने में हल्का और एक खंजर की तरह तेज।"

“यह कैरोलिन को पसंद आएगा। लेकिन आपको मुझे दो पिस्तौलें देनी होंगी। मुझे पता है कि आपके पास पिस्तौलें हैं।”

मेरे पास दो जोड़ी हैं। एक जोड़ी मैं आपको दे सकता हूँ। आप उन्हें मेरे अध्ययन कक्ष के मेंटलपीस के ऊपर कपड़े के डिब्बों में टंगे हुए पाएंगे।

"भरा हुआ?"

“हाँ, लेकिन मुर्गे पर नहीं। सोने से पहले इन्हें तैयार कर लेना। कप्तान, इन्हें आपको देना आपके लिए एक बड़ा सम्मान है। अगर आप अनाड़ी दस्ते में होते तो ये आपके पास नहीं होते।”

“मैं ध्यान रखूंगी। अब आपको देर करने की ज़रूरत नहीं है, श्री हेलस्टोन। आप अब जा सकते हैं। — उन्होंने मुझे अपनी पिस्तौलें उधार देकर मुझ पर बहुत कृपा की है,” उन्होंने कहा, जब रेक्टर बगीचे के द्वार से बाहर निकले। “लेकिन आइए, लीना,” उन्होंने आगे कहा, “चलिए अंदर चलते हैं और कुछ खाना खा लेते हैं। श्री सैम विन के आसपास चाय के समय मैं इतनी परेशान थी कि कुछ खा नहीं पाई, और अब मुझे सचमुच भूख लगी है।”

घर में प्रवेश करते ही वे अंधेरे भोजन कक्ष में चले गए, जिसकी खुली खिड़कियों से शाम की हवा अंदर आ रही थी, जिसमें बगीचे के फूलों की खुशबू, सड़क से दूर से आती कदमों की धीमी आवाज और एक हल्की, अस्पष्ट बड़बड़ाहट थी, जिसका स्रोत कैरोलिन ने खिड़की पर खड़े होकर सुनते हुए कहा, "शर्ली, मुझे हॉलो में बहने वाली छोटी नदी की आवाज सुनाई दे रही है।"

फिर उसने घंटी बजाई, मोमबत्ती और कुछ रोटी-दूध माँगा—मिस कील्डर का रोज़

का खाना और उसका अपना खाना। फैनी जब ट्रे लेकर आई, तो खिड़कियाँ और शटर बंद कर देना चाहती थी, लेकिन उसे अभी ऐसा न करने के लिए कहा गया। शाम का समय बहुत शांत था, उसकी हवा इतनी सुखद थी कि उसे बंद करना संभव नहीं था। उन्होंने चुपचाप खाना खाया। कैरोलीन एक बार उठी और साइडबोर्ड पर रखे फूलों के गुलदस्ते को खिड़की की चौखट पर रख दिया, क्योंकि फूलों की सुगंध कमरे की उमस के लिए कुछ ज़्यादा तेज़ थी। लौटते समय उसने एक दराज आधा खोला और उसमें से कुछ निकाला जो उसके हाथ में चमक रहा था।

"तो तुमने ही तो ये मुझे सौंपा था, शर्ली? ये चमकीला, तेज़ धार वाला, बारीक नुकीला है; ये खतरनाक दिखता है। मुझे आज तक कभी ऐसी इच्छा नहीं हुई कि मैं इसे किसी साथी प्राणी पर चलाऊँ। ये सोचना मुश्किल है कि परिस्थितियाँ मुझे इस लंबे चाकू से वार करने की हिम्मत देंगी।"

"मुझे ऐसा करना बिल्कुल पसंद नहीं होगा," शर्ली ने जवाब दिया, "लेकिन मुझे लगता है कि मैं ऐसा कर सकती हूँ, अगर कुछ ऐसी मजबूरियाँ आ जाएँ जिनकी मैं कल्पना कर सकती हूँ।" और मिस कील्डर चुपचाप अपने गिलास से ताजा दूध की एक घूंट पीती रहीं, कुछ सोच में डूबी हुई और थोड़ी पीली सी लग रही थीं; हालाँकि, सच में, वह कब पीली नहीं दिखती थीं? वह कभी भी लाल-पीली नहीं दिखती थीं।

दूध पीकर और रोटी खाकर, फैनी को फिर बुलाया गया। उसे और एलिज़ा को सोने की सलाह दी गई, जिसे वे सहर्ष स्वीकार कर रही थीं, क्योंकि वे दिनभर की मेहनत से थक चुकी थीं, किशमिश वाले बन्स काटने, चायदानी और केतली भरने और ट्रे लेकर इधर-उधर भागने से उन्हें बहुत थकान हो गई थी। कुछ ही देर में नौकरानियों के कमरे का दरवाजा बंद होने की आवाज सुनाई दी। कैरोलीन ने एक मोमबत्ती ली और चुपचाप पूरे घर में घूमकर यह सुनिश्चित किया कि हर खिड़की बंद है और हर दरवाजा ताला लगा हुआ है। उसने भूतिया रसोई और तहखाने को भी नहीं छोड़ा। वहाँ जाकर वह वापस लौट आई।

"इस समय घर में न तो कोई आत्मा है और न ही कोई शरीर," उसने कहा, "जो यहाँ नहीं होना चाहिए। अब लगभग ग्यारह बज चुके हैं, सोने का समय हो गया है; फिर भी अगर आपको कोई आपत्ति न हो, शर्ली, तो मैं थोड़ी देर और जागना चाहूँगी। लीजिए," उसने आगे कहा, "मैं अपने चाचा के अध्ययन कक्ष से पिस्तौलें ले आई हूँ। आप फुर्सत में इन्हें देख सकती हैं।"

उसने उन्हें अपनी सहेली के सामने मेज पर रख दिया।

"आप और देर तक क्यों बैठना पसंद करेंगे?" मिस कील्डर ने बंदूकें उठाते हुए, उनकी जांच करते हुए और फिर उन्हें नीचे रखते हुए पूछा।

क्योंकि मेरे दिल में एक अजीब सी, रोमांचक भावना उमड़ रही है।

"तो मेरे पास है।"

"क्या नींद न आने और बेचैनी की यह स्थिति हवा में मौजूद किसी विद्युतीय चीज के कारण है, मुझे आश्चर्य होता है?"

“नहीं; आकाश साफ है, अनगिनत तारे हैं। यह एक सुहावनी रात है।”

"लेकिन एकदम शांत। मुझे हॉलो कॉप्स में पथरीले तल पर पानी की कलकल की आवाज इतनी स्पष्ट रूप से सुनाई देती है मानो वह कब्रिस्तान की दीवार के नीचे बह रहा हो।"

मुझे खुशी है कि रात इतनी शांत है। अगर हवा की सरसराहट या बारिश की तेज आवाज होती तो इस समय मुझे बुखार आ जाता।

"क्यों, शर्ली?"

"क्योंकि इससे सुनने के मेरे प्रयास विफल हो जाएंगे।"

"क्या आप खोखले की ओर सुनते हैं?"

“हां; अभी हमें सिर्फ इसी तरफ से आवाज सुनाई दे रही है।”

"एकमात्र एक, शर्ली।"

वे दोनों खिड़की के पास बैठे थे, अपनी बांहें चौखट पर टिकाए हुए थे और अपने सिर खुली जाली की ओर झुकाए हुए थे। तारों की रोशनी और जून की धुंधली शाम में, जो पश्चिम से पूरी तरह गायब नहीं होती और पूर्व में भोर होने तक बनी रहती है, वे एक-दूसरे के युवा चेहरों को देख रहे थे।

“श्री हेलस्टोन को लगता है कि हमें पता नहीं है कि वह किस दिशा में गए हैं,” मिस कील्डर ने धीरे से कहा, “न ही यह कि वह किस काम से गए हैं, न ही उनकी क्या उम्मीदें हैं, और न ही वे कितनी तैयार हैं। लेकिन मुझे तो काफी कुछ पता है; क्या आपको नहीं लगता?”

मुझे लगता है कुछ तो होगा।

"वे सभी सज्जन - जिनमें आपका चचेरा भाई मूर भी शामिल है - सोचते हैं कि आप और मैं इस समय अपने बिस्तरों में बेहोश होकर सो रहे हैं।"

कैरोलिन ने आगे कहा, "उनके बारे में बिल्कुल भी परवाह नहीं करना - उनके लिए कोई उम्मीद या डर नहीं रखना।"

दोनों पूरे आधे घंटे तक चुप रहे। रात भी सन्नाटे में थी; केवल गिरजाघर की घड़ी ही चौथाई-चौथाई समय बता रही थी। हवा की ठंडक के बारे में कुछ बातें हुईं। उन्होंने अपने स्कार्फ़ को और कसकर लपेट लिया, अपनी उतारी हुई टोपियाँ फिर से पहन लीं और दोबारा देखने लगीं।

आधी रात के करीब, घर के कुत्ते के चिढ़ाने वाले, नीरस भौंकने से उनकी शांति भंग हो गई। कैरोलीन उठी और चुपचाप अंधेरे गलियारों से होते हुए रसोई की ओर गई, उसका इरादा उसे रोटी का एक टुकड़ा देकर शांत करने का था। वह सफल रही। भोजन कक्ष में लौटने पर उसने देखा कि सब जगह अंधेरा था, मिस कील्डर ने मोमबत्ती बुझा दी थी। खुली खिड़की के पास उसकी आकृति की हल्की सी झलक दिखाई दे रही थी, वह बाहर की ओर झुकी हुई थी। मिस हेलस्टोन ने कोई सवाल नहीं किया; वह चुपके से उसके पास चली गई। कुत्ता फिर से ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। अचानक वह रुक गया और मानो कुछ सुन रहा हो। भोजन कक्ष में बैठे लोग भी सुनने लगे, और अब केवल चक्की से बहने वाली धारा की आवाज़ ही नहीं। नीचे कब्रिस्तान के पास सड़क पर एक धीमी, लेकिन पास आती हुई आवाज़ सुनाई दी - एक लयबद्ध, धड़कने वाली, पास आती हुई आवाज़ - चलते हुए पैरों की धीमी आहट।

वह नज़दीक आ रहा था। जो लोग धीरे-धीरे सुन रहे थे, उन्हें उसकी व्यापकता का एहसास होने लगा। वह दो, बारह या बीस आदमियों के कदमों की आहट नहीं थी; वह सैकड़ों आदमियों के कदमों की आहट थी। उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था; बगीचे की ऊँची झाड़ियों ने उनके और सड़क के बीच पत्तों की आड़ बना रखी थी। लेकिन केवल सुनना ही काफ़ी नहीं था, और यह बात उन्हें तब महसूस हुई जब सैनिकों का समूह आगे बढ़ा और ऐसा लगा जैसे वे सचमुच पादरी के निवास के पास से गुज़र रहे हों। उन्हें यह एहसास तब और भी ज़्यादा हुआ जब एक मानवीय आवाज़ ने—भले ही उस आवाज़ ने केवल एक शब्द कहा हो—रात के सन्नाटे को तोड़ दिया।

“रुको!”

इसके बाद ठहराव आ गया। मार्च रुक गया। फिर एक धीमी आवाज़ में बातचीत हुई, जिसकी कोई भी बात भोजन कक्ष के शोर में सुनाई नहीं दे रही थी।

“हमें यह सुनना ही होगा,” शर्ली ने कहा।

वह मुड़ी, मेज से अपनी पिस्तौलें उठाईं, चुपचाप भोजन कक्ष की बीच वाली खिड़की से बाहर निकल गई, जो वास्तव में एक कांच का दरवाजा था, चुपके से बगीचे की दीवार तक गई और लिली के फूलों के नीचे छिपकर सुनने लगी। अगर कैरोलिन अकेली होती तो वह घर नहीं छोड़ती, लेकिन जहाँ शर्ली जाती, वह भी वहीं जाती। उसने साइडबोर्ड पर रखे हथियार पर एक नज़र डाली, लेकिन उसे वहीं छोड़ दिया और तुरंत अपनी सहेली के पास खड़ी हो गई। वे देखे जाने के डर से दीवार के ऊपर से देखने की हिम्मत नहीं कर पा रही थीं; उन्हें दीवार के पीछे छिपना पड़ा। उन्होंने ये शब्द सुने, —

“यह एक पुरानी, फैली हुई इमारत जैसी दिखती है। उस धिक्कार है पादरी के अलावा इसमें और कौन रहता है?”

"केवल तीन महिलाएं - उनकी भतीजी और दो नौकरानियां।"

क्या आपको पता है कि वे कहाँ सोते हैं?

पीछे वाली लड़कियां; सामने वाले कमरे में भतीजी।

“और हेलस्टोन?”

“वहाँ उसका कमरा है। वह एक दीपक जला रहा था, लेकिन अब मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।”

"आप इसमें कहाँ प्रवेश करेंगे?"

“अगर मुझे उनका काम करने का आदेश दिया जाता — और वे इसके हकदार हैं — तो मैं उस लंबी खिड़की से कोशिश करता; वह भोजन कक्ष में खुलती है। मैं टटोलते हुए ऊपर जा सकता था, और मैं उनका कमरा जानता हूँ।”

"आप महिलाओं के बारे में कैसे व्यवस्था करेंगे?"

“उन्हें अकेला छोड़ दो, सिवाय इसके कि वे चीखें, और अगर वे चीखे तो मैं उन्हें तुरंत चुप करा दूंगा। काश वह बूढ़ा आदमी सो रहा होता। अगर वह जाग गया तो खतरनाक हो सकता है।”

क्या उसके पास हथियार हैं?

“हथियार, हमेशा — और हमेशा भरी हुई।”

“तो फिर हमें यहाँ रोकना मूर्खता होगी। एक गोली चलने से ही सबको चेतावनी मिल जाएगी। इससे पहले कि हम मुड़ पाते, मूर हम तक पहुँच जाएगा। हम अपने मुख्य लक्ष्य से चूक जाएँगे।”

"आप आगे बढ़ सकते हैं, मैं आपको बताता हूँ। मैं अकेले हेलस्टोन से ही मुकाबला करूँगा।"

एक पल का विराम। दल के किसी सदस्य ने कोई हथियार गिरा दिया, जिसकी आवाज पत्थर के पुल पर गूंजी। इस आवाज को सुनकर पादरी का कुत्ता फिर से उग्रता से भौंका - बेहद उग्रता से।

“सब कुछ बर्बाद हो गया!” आवाज़ ने कहा। “वह जाग जाएगा। ऐसी आवाज़ मुर्दों को भी जगा सकती है। तुमने यह नहीं बताया था कि यहाँ कुत्ता है। धिक्कार है तुम पर! आगे बढ़ो!”

वे आगे बढ़े — धड़ाम-धड़ — एक साथ कई लोगों के समूह के कदमों की धीमी, कतारबद्ध चाल के साथ। वे चले गए।

शर्ली सीधी खड़ी हुई, दीवार के ऊपर से सड़क की ओर देखने लगी।

“अब वहां कोई भी जीवित नहीं बचा,” उसने कहा।

वह खड़ी होकर सोचने लगी। फिर उसने कहा, "भगवान का शुक्र है!"

कैरोलाइन ने वही बात दोहराई—लेकिन इस बार उसकी आवाज़ उतनी स्थिर नहीं थी। वह बुरी तरह कांप रही थी। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था; उसका चेहरा ठंडा था, और माथा पसीने से भीगा हुआ था।

“भगवान का शुक्र है कि हम बच गए!” उसने दोहराया। “लेकिन बाकी जगहों पर क्या होगा? उन्होंने हमें इसलिए छोड़ दिया ताकि वे दूसरों को सुरक्षित कर सकें।”

“उन्होंने अच्छा किया,” शर्ली ने शांत भाव से जवाब दिया। “बाकी लोग अपना बचाव कर लेंगे। वे कर सकते हैं। वे उनके लिए तैयार हैं। हमारे साथ मामला अलग है। मेरी उंगली इस पिस्तौल के ट्रिगर पर थी। अगर वह आदमी अंदर आ जाता, तो मैं उसे ऐसी मार देती जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी; लेकिन उसके पीछे तीन सौ लोग थे। मेरे पास न तो तीन सौ हाथ थे और न ही तीन सौ हथियार। मैं न तो आपकी, न अपनी, और न ही उस छत के नीचे सो रही उन दो बेचारी औरतों की रक्षा कर पाती। इसलिए मैं एक बार फिर ईश्वर का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ कि मैं अपमान और खतरे से बच गई।”

एक पल रुकने के बाद उसने आगे कहा: “अब मुझे आगे क्या करना चाहिए, यह मेरा कर्तव्य और बुद्धिमत्ता है? मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि मैं यहाँ निष्क्रिय नहीं बैठी रहूँगी, बल्कि निश्चित रूप से, हॉलो की ओर चलूँगी।”

"क्या तुम हॉलो में चलोगी, शर्ली?"

"खोखले स्थान पर। क्या तुम मेरे साथ चलोगे?"

“वे लोग कहाँ चले गए?”

“वे राजमार्ग पर चले गए हैं; हमें उनसे सामना नहीं करना पड़ेगा। खेतों के ऊपर से गुजरने वाली सड़क उतनी ही सुरक्षित, शांत और एकांत है जितनी कि हवा में उड़ने वाला रास्ता। क्या आप चलेंगे?”

"हाँ," यह जवाब यंत्रवत रूप से दिया गया, इसलिए नहीं कि वक्ता जाना चाहती थी या जाने के लिए तैयार थी, या वास्तव में जाने की संभावना से डरी हुई नहीं थी, बल्कि इसलिए कि उसे लगा कि वह शर्ली को नहीं छोड़ सकती।

“तो फिर हमें इन खिड़कियों को अच्छी तरह बंद कर देना चाहिए और जितना हो सके सुरक्षित होकर पीछे छोड़ देना चाहिए। क्या तुम जानते हो कि हम क्या करने जा रहे हैं, कैरी?”

"हां - नहीं - क्योंकि आप ऐसा चाहते हैं।"

बस इतना ही? और क्या तुम मेरी एक मामूली सनक के आगे इतनी आज्ञाकारी हो? एक सख्त पति के लिए तुम कितनी आज्ञाकारी पत्नी बनोगी! इस समय चाँद का चेहरा भी तुम्हारे चेहरे से ज़्यादा सफ़ेद नहीं है, और द्वार पर लगा एस्पेन का पेड़ भी तुम्हारी व्यस्त उंगलियों से ज़्यादा नहीं काँप रहा है; और फिर भी, आज्ञाकारी, भयभीत, निराश और समर्पित होकर, तुम मेरे पीछे असली खतरे के बीचोंबीच चली जाओगी! कैरी, मुझे तुम्हारी वफ़ादारी का एक मकसद देने दो। हम मूर के लिए जा रहे हैं - यह देखने के लिए कि क्या हम उसके किसी काम आ सकते हैं, उसे आने वाले खतरे के बारे में आगाह करने की कोशिश करने के लिए।

“ज़रूर! मैं एक अंधा, कमज़ोर मूर्ख हूँ, और तुम तेज़ और समझदार हो, शर्ली। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा; मैं खुशी-खुशी तुम्हारे साथ चलूँगा!”

मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है। तुम मेरे लिए बिना सोचे-समझे और विनम्रता से मर जाओगे, लेकिन मूर के लिए तुम समझदारी से और खुशी-खुशी मर जाओगे। लेकिन, सच तो यह है कि आज रात मौत का कोई सवाल ही नहीं है; हमें कोई खतरा नहीं है।

कैरोलाइन ने झटपट शटर और जाली बंद कर दी। “डरिए मत कि मेरे पास उतनी तेज़ी से दौड़ने के लिए साँस नहीं बचेगी जितनी तेज़ी से तुम दौड़ सकती हो, शर्ली। मेरा हाथ पकड़ो। चलो सीधे खेतों के पार चलते हैं।”

लेकिन आप दीवारों पर नहीं चढ़ सकते?

"आज रात मैं कर सकता हूँ।"

"क्या तुम झाड़ियों से डरते हो, और उस नाले से भी जिसे हमें पार करना ही पड़ेगा?"

मैं इसे पार कर सकता हूँ।

वे दौड़े। कई दीवारें उनके रास्ते में रुकावट बनीं, पर उन्हें रोक नहीं पाईं। शर्ली के पैर पक्के थे और वह फुर्तीली थी; जब चाहे हिरण की तरह उछल सकती थी। कैरोलीन, जो थोड़ी डरपोक और कम कुशल थी, एक-दो बार गिरी और उसे चोट लगी; लेकिन वह तुरंत उठ खड़ी हुई और बोली कि उसे कोई चोट नहीं आई है। आखिरी खेत के किनारे घनी झाड़ी थी; उसमें रास्ता ढूंढने में उन्हें समय लग गया। जब रास्ता मिला, तो वह संकरा था, लेकिन वे किसी तरह उसमें से निकल गए। उनके लंबे बाल, कोमल त्वचा, रेशम और मलमल के कपड़े भीग गए; लेकिन सबसे ज्यादा अफसोस इस बात का था कि इस मुश्किल की वजह से उनकी रफ्तार धीमी हो गई थी। दूसरी तरफ उन्हें एक छोटी सी नदी मिली, जो गहरे पानी में उबड़-खाबड़ तल पर बह रही थी। इस जगह पर एक संकरा तख्ता ही नदी पार करने का एकमात्र पुल था। शर्ली पहले भी कई बार इस तख्ते को सफलतापूर्वक और निडरता से पार कर चुकी थी; कैरोलीन ने अभी तक इसे पार करने का जोखिम नहीं उठाया था।

“मैं तुम्हें पार करा दूंगी,” मिस कील्डर ने कहा। “तुम हल्की हो, और मैं कमजोर नहीं हूँ। मुझे कोशिश करने दो।”

“अगर मैं पानी में गिर जाऊं, तो तुम मुझे निकाल लेना,” जवाब मिला, और कृतज्ञता से उसका हाथ हल्के से दबा दिया गया। कैरोलीन बिना रुके कांपते हुए तख्ते पर ऐसे आगे बढ़ी जैसे वह ठोस घास का ही हिस्सा हो। उसके पीछे आ रही शर्ली ने भी उतनी ही दृढ़ता या सावधानी से उसे पार नहीं किया। उनके वर्तमान मूड में, उनके वर्तमान काम को देखते हुए, एक तेज़ और उफनती हुई नदी भी उनके लिए बाधा नहीं बन सकती थी। इस समय वे न तो आग के नियंत्रण में थे और न ही पानी के। अलाव से जगमगाता स्टिलब्रो मूर भी उन्हें नहीं रोक पाता, न ही बाढ़ में गरजता हुआ काल्डर या ऐरे। फिर भी एक आवाज़ ने उन्हें रोक दिया। जैसे ही उन्होंने ठोस विपरीत किनारे पर कदम रखा, उत्तर से एक गोली की आवाज़ गूंजी। एक सेकंड बीता। थोड़ी दूर दक्षिण में भी वैसी ही आवाज़ आई। तीन मिनट के भीतर पूर्व और पश्चिम में भी इसी

तरह की आवाज़ें गूंजीं।

“पहले धमाके में ही मुझे लगा कि हम सब मर गए,” शर्ली ने लंबी साँस लेते हुए कहा। “मुझे कनपटी पर चोट लगी और मुझे लगा कि तुम्हारा दिल छलनी हो गया है; लेकिन बार-बार सुनाई देने वाली आवाज़ ने सच्चाई बता दी। ये संकेत हैं—यह उनका तरीका है—हमला नज़दीक ही होगा। काश हमारे पास पंख होते। हमारे पैर हमें इतनी तेज़ी से नहीं ले जा पाए।”

अब झाड़ियों के एक हिस्से को साफ़ करना बाकी था। जब वे उससे बाहर निकले तो चक्की ठीक उनके नीचे थी। वे नीचे इमारतों, आँगन को देख सकते थे; उन्हें आगे सड़क दिखाई दे रही थी। और उस दिशा में पहली नज़र डालते ही शर्ली को यकीन हो गया कि उसका अनुमान सही था। चेतावनी देने में पहले ही बहुत देर हो चुकी थी। खेतों के बीच से होकर जाने वाले शॉर्टकट में मौजूद विभिन्न बाधाओं को पार करने में उन्हें अनुमान से कहीं अधिक समय लग गया था।

सफेद रंग की होनी चाहिए थी वह सड़क, हलचल भरे जनसमूह के कारण अंधेरी थी। दंगाई बंद प्रांगण के द्वारों के सामने जमा थे, और अंदर एक अकेला व्यक्ति खड़ा था, मानो उन्हें संबोधित कर रहा हो। चक्की पूरी तरह से काली और स्थिर थी। उसके आसपास न तो जीवन था, न प्रकाश, न ही हलचल।

"ज़रूर वह तैयार होगा। क्या सच में मूर उनसे अकेले मिलने जा रहा है?" शर्ली ने फुसफुसाते हुए कहा।

“हाँ, ऐसा ही है। हमें उसके पास जाना होगा। मैं उसके पास जाऊँगा।”

"तुम ऐसा नहीं करोगे।"

“तो फिर मैं क्यों आया? मैं तो सिर्फ उसके लिए आया था। मैं उससे मिलूंगा।”

"सौभाग्य से यह आपके बस में नहीं है। आंगन में प्रवेश का कोई रास्ता नहीं है।"

“सामने के दरवाजों के अलावा पीछे की तरफ एक छोटा सा प्रवेश द्वार है। यह एक गुप्त विधि से खुलता है जिसे मैं जानता हूँ। मैं इसे आजमाऊंगा।”

मेरी अनुमति के बिना नहीं।

मिस कील्डर ने दोनों हाथों से उसकी कमर कसकर पकड़ ली और उसे पीछे धकेल दिया। “एक कदम भी मत हिलना,” उन्होंने अधिकारपूर्वक कहा। “इस समय मूर को बहुत बड़ा झटका लगेगा और शर्मिंदगी भी होगी अगर वह तुम्हें या मुझे देख ले। असली खतरे के समय पुरुष कभी भी महिलाओं को अपने पास नहीं चाहते।”

“मैं उसे परेशान नहीं करूंगा — मैं उसकी मदद करूंगा,” यह जवाब मिला।

“कैसे? — उसे वीरता से प्रेरित करके? छी! ये तो शूरवीरता के दिन नहीं हैं। हम किसी टूर्नामेंट में हिस्सा लेने नहीं जा रहे हैं, बल्कि पैसे, भोजन और जीवन के लिए संघर्ष करने जा रहे हैं।”

"यह स्वाभाविक है कि मैं उनके साथ रहूँ।"

“क्या वो उसके दिल की रानी है? उसकी चक्की ही उसकी प्रेमिका है, कैरी! अपने कारखाने और मशीनों के सहारे, उसे वो सारी प्रेरणा मिलती है जो वो चाहता है या पा सकता है। वो प्यार या सुंदरता के लिए नहीं, बल्कि हिसाब-किताब और कपड़े के लिए भाला तोड़ने जा रहा है। भावुक मत बनो; रॉबर्ट ऐसा नहीं है।”

मैं उसकी मदद कर सकता हूँ; मैं उससे संपर्क करूँगा।

“तो फिर जाओ—मैं तुम्हें जाने देता हूँ—मूर को ढूंढो। तुम्हें वह नहीं मिलेगा।”

उसने अपनी पकड़ ढीली कर दी। कैरोलिन झुकी हुई धनुष से निकले सीधे तीर की तरह तेज़ी से भागी; उसके पीछे एक मज़ाकिया, व्यंग्यात्मक हंसी गूंजी। "ध्यान से देखो, कोई गलती नहीं है!" यह चेतावनी दी गई।

लेकिन एक गलती हो गई थी। मिस हेलस्टोन रुकीं, झिझकीं, गौर से देखने लगीं। वह आकृति अचानक द्वार से पीछे हट गई थी और तेजी से चक्की की ओर भाग रही थी।

“जल्दी करो, लीना!” शर्ली चिल्लाई; “उसके अंदर आने से पहले उससे मिलो।”

कैरोलिन धीरे-धीरे लौटी। उसने कहा, "यह रॉबर्ट नहीं है। इसकी लंबाई, कद-काठी और हाव-भाव, सब कुछ रॉबर्ट जैसा नहीं है।"

“जब मैंने तुम्हें जाने दिया, तब मैंने देखा कि वह रॉबर्ट नहीं था। तुम ऐसा कैसे सोच सकते हो? वह एक साधारण सिपाही की दुबली-पतली सी आकृति थी; उसे संतरी के रूप में तैनात किया गया था। वह अब मिल में सुरक्षित है। मैंने दरवाजा खुलते और उसे अंदर आते देखा। मेरा मन शांत हो गया है। रॉबर्ट तैयार है। हमारी चेतावनी देना बेकार होता; और अब मैं शुक्रगुजार हूँ कि हम चेतावनी देने में बहुत देर कर चुके थे। इससे हम एक तमाशे से बच गए। लेखा-जोखा में एकदम चुपके से घुसना और खुद को श्रीमान आर्मिटेज और रैम्सडेन को सिगरेट पीते हुए, मालोन को अकड़ते हुए, तुम्हारे चाचा को ताना मारते हुए, श्रीमान साइक्स को शरबत पीते हुए और मूर को अपने ठंडे, कारोबारी अंदाज में देखना कितना अच्छा होता! मुझे खुशी है

कि हम इन सब से बच गए।"

"मुझे आश्चर्य है कि चक्की में कितने लोग होंगे, शर्ली!"

"इसकी रक्षा के लिए पर्याप्त सबूत हैं। आज हमने जिन सैनिकों को दो बार देखा, वे निस्संदेह वहीं जा रहे थे, और खेतों में आपके चचेरे भाई को घेरे हुए हमने जिस समूह को देखा, वह उसके साथ होगा।"

"अब वे क्या कर रहे हैं, शर्ली? यह कैसी आवाज़ है?"

"आंगन के फाटकों पर कुल्हाड़ी और लोहे की छड़ें पड़ी हैं। वे उन्हें जबरदस्ती तोड़ रहे हैं। क्या तुम डर रहे हो?"

"नहीं; लेकिन मेरा दिल तेजी से धड़क रहा है। मुझे खड़े होने में दिक्कत हो रही है। मैं बैठ जाऊँगा। क्या आप अप्रभावित हैं?"

"ऐसा तो नहीं है; लेकिन मुझे खुशी है कि मैं आया। हम अपनी आँखों से देखेंगे कि क्या होता है। हम यहाँ मौजूद हैं, और किसी को पता नहीं है। पादरी, कपड़े वाले और अनाज व्यापारी को मंच पर रोमांटिक अंदाज़ में चौंकाने के बजाय, हम इस शांत रात, इसके मूक तारों और इन फुसफुसाते पेड़ों के साथ अकेले खड़े हैं, जिनकी खबर लेने हमारे दोस्त नहीं आएंगे।"

"शर्ली, शर्ली, द्वार टूट गए हैं! वह धमाका ऐसा था मानो बड़े-बड़े पेड़ काट दिए गए हों। अब वे अंदर घुस रहे हैं। वे चक्की के दरवाज़े भी तोड़ देंगे जैसे उन्होंने द्वार तोड़ा है। इतने सारे लोगों के सामने रॉबर्ट क्या कर सकता है? काश मैं उसके थोड़ा और करीब होती—उसकी आवाज़ सुन पाती—उससे बात कर पाती! अपनी इच्छाशक्ति—उसकी सेवा करने की अपनी ललक—के साथ मैं उसके रास्ते में बेकार बोझ नहीं बन सकती; मैं किसी काम आ सकती हूँ।"

"आगे बढ़ो!" शर्ली चिल्लाई। "कितनी दृढ़ता से वे आगे बढ़ रहे हैं! उनकी कतारों में अनुशासन है। मैं यह नहीं कहूँगी कि उनमें साहस है—सैकड़ों का दसियों से मुकाबला साहस का प्रमाण नहीं होता—लेकिन" (उसने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए) "उनमें पीड़ा और हताशा काफी है। ये प्रेरणाएँ उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।"

"रॉबर्ट के खिलाफ फॉरवर्ड खिलाड़ी; और वे उससे नफरत करते हैं। शर्ली, क्या उनके जीतने की कोई संभावना है?"

हम देखेंगे। मूर और हेलस्टोन 'धरती के प्रथम रक्त' के हैं — कोई नासमझ नहीं

एक जोरदार धमाका— चकनाचूर— कंपकंपी—ने उनकी फुसफुसाहट को रोक दिया। पत्थरों की एक साथ फेंकी गई बौछार ने चक्की के चौड़े अग्रभाग और उसकी सभी खिड़कियों को सलाम किया था; और अब हर जाली का हर शीशा चकनाचूर होकर टुकड़ों में बिखर गया था। इस प्रदर्शन के बाद एक चीख सुनाई दी— दंगाइयों की चीख— उत्तरी इंग्लैंड की, यॉर्कशायर की, वेस्ट राइडिंग की, यॉर्कशायर के वेस्ट राइडिंग कपड़ा जिले के दंगाइयों की चीख।

पाठक, आपने शायद वह आवाज़ कभी नहीं सुनी होगी? यह आपके कानों के लिए अच्छा ही है—शायद आपके दिल के लिए भी, क्योंकि अगर वह खुद से, या उन लोगों या सिद्धांतों से, जिन्हें आप पसंद करते हैं, या जिनके हितों की आप भलाई चाहते हैं, नफरत से भर जाए, तो क्रोध घृणा की पुकार से जाग उठता है; शेर अपनी गर्दन हिलाता है और लकड़बग्घे की दहाड़ पर उठ खड़ा होता है; जाति जाति के विरुद्ध क्रोधित होकर खड़ी हो जाती है; और मध्यम वर्ग की आक्रोशित, पीड़ित आत्मा भूखे और क्रोधित श्रमिक वर्ग पर जोश और तिरस्कार के साथ टूट पड़ती है। ऐसे क्षणों में सहनशील होना, न्यायपूर्ण होना कठिन हो जाता है।

कैरोलीन उठी; शर्ली ने अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया: वे दो पेड़ों के सीधे तनों की तरह स्थिर खड़ी रहीं। वह चीख बहुत देर तक गूंजती रही, और जब वह शांत हुई तो रात अभी भी भीड़ के झूमने और फुसफुसाने की आवाज़ों से भरी हुई थी।

“अब आगे क्या?” श्रोताओं का प्रश्न था। अभी तक कुछ नहीं हुआ था। चक्की एक मकबरे की तरह खामोश पड़ी रही।

“वह अकेला नहीं हो सकता!” कैरोलिन ने फुसफुसाते हुए कहा।

"मैं अपनी सारी संपत्ति दांव पर लगा सकती हूं कि वह जितना डरा हुआ है, उतना ही अकेला भी नहीं है," शर्ली ने जवाब दिया।

दंगाइयों ने गोलियां चलाईं। क्या रक्षकों ने इसी संकेत का इंतजार किया था? ऐसा ही लग रहा था। अब तक शांत पड़ी चक्की अचानक जाग उठी; उसकी खाली खिड़कियों से आग की लपटें निकलीं; गोलियों की बौछार से पूरा गर्जना गूँज उठा।

“आखिरकार मूर बोल पड़ा!” शर्ली ने कहा, “और ऐसा लगता है जैसे उसे भाषाओं का वरदान प्राप्त है। वह एक अकेली आवाज नहीं थी।”

“वह धैर्यवान रहे हैं। कोई उन पर जल्दबाज़ी का आरोप नहीं लगा सकता,”

कैरोलीन ने आरोप लगाया। “उनकी बर्खास्तगी उनसे पहले हुई थी। उन्होंने उनके फाटक और खिड़कियाँ तोड़ दीं। उन्होंने उनकी चौकी पर गोलियाँ चलाईं, इससे पहले कि वह उन्हें खदेड़ पाते।”

अब क्या हो रहा था? अंधेरे में कुछ समझ पाना मुश्किल लग रहा था; लेकिन कुछ भयानक, एक लगातार बढ़ता हुआ कोलाहल स्पष्ट था— भयंकर हमले, हताशा भरे प्रतिकार। चक्की का प्रांगण, चक्की स्वयं, युद्ध की हलचल से भरा हुआ था। गोलियों की आवाजें लगभग रुक ही नहीं रही थीं; और उनके बीच धक्का-मुक्की, धक्का-मुक्की, कुचलना और चीख-पुकार मची हुई थी। हमलावरों का उद्देश्य चक्की में प्रवेश करना था, और रक्षकों का उन्हें खदेड़ना। उन्होंने विद्रोही नेता को चिल्लाते हुए सुना, “पीछे हट जाओ, लड़कों!” उन्होंने एक आवाज को जवाब देते हुए सुना, “आओ, हम तुमसे मिलेंगे।”

“गणना घर में जाओ!” एक बार फिर आदेश आया।

“स्वागत है! हम आपको वहाँ रखेंगे!” यह जवाब मिला। और इसके तुरंत बाद, जब दंगाइयों की भीड़ मतगणना भवन की ओर दौड़ी, तो वहाँ से अब तक की सबसे भीषण आग और अब तक की सबसे तेज़ गड़गड़ाहट फूट पड़ी।

बोलने वाली आवाज़ मूर की ही थी। उसकी आवाज़ के लहजे से वे समझ गए थे कि उसका मन इस संघर्ष से उथल-पुथल में घिरा हुआ है; वे अनुमान लगा सकते थे कि वहाँ संघर्ष कर रहे हर व्यक्ति के भीतर लड़ने वाला जानवर जागृत हो गया था, और उस क्षण वह तर्कसंगत मनुष्य से कहीं अधिक प्रबल था।

दोनों लड़कियों के चेहरे लाल हो गए और उनकी धड़कनें तेज़ हो गईं; दोनों जानती थीं कि भीड़ में कूदने से कोई फायदा नहीं होगा। वे न तो किसी को मारना चाहती थीं और न ही खुद मार खाना चाहती थीं; लेकिन वे भाग भी नहीं सकती थीं—कैरोलीन और शर्ली दोनों ही नहीं; वे बेहोश भी नहीं हो सकती थीं; वे उस धुंधले, भयानक दृश्य से—बादलों के समूह से, धुएं से, बंदूक की बिजली से—अपनी नज़रें हटा भी नहीं सकती थीं।

“यह सब कब और कैसे खत्म होगा?” यह सवाल उनकी धड़कती धड़कनों में गूंज रहा था। “क्या कोई ऐसा मौका आएगा जब वे उपयोगी साबित हो सकें?” यही वे देखना चाहते थे; क्योंकि हालांकि शर्ली ने उनके देर से आने को मजाक में टाल दिया था और वह हमेशा अपनी या किसी और की उत्सुकता का उपहास करने के लिए

तैयार रहती थी, फिर भी वह किसी अच्छे काम में योगदान देने के अवसर के लिए अपनी सबसे अच्छी जमीन भी कुर्बान कर देती।

उसे यह मौका नहीं मिला; जिस अवसर का इंतज़ार था, वह कभी नहीं आया। ऐसा होना असंभव था। मूर को इस हमले की आशंका कई दिनों से, शायद हफ़्तों से थी; वह हर तरह से तैयार था। उसने अपनी चक्की को किलेबंद कर दिया था और उसमें सैनिकों की तैनाती कर दी थी, जो अपने आप में एक मज़बूत इमारत थी। वह एक शांत और साहसी व्यक्ति था; उसने अडिग दृढ़ता से अपनी रक्षा की। उसके साथ मौजूद लोगों ने भी उसकी भावना को आत्मसात कर लिया और उसी के अनुरूप व्यवहार किया। दंगाइयों का ऐसा सामना उन्होंने पहले कभी नहीं किया था। जिन अन्य चक्कियों पर उन्होंने हमला किया था, वहाँ उन्हें कोई प्रतिरोध नहीं मिला था; एक संगठित, दृढ़ रक्षा का सामना करने का उन्होंने कभी सपना भी नहीं देखा था। जब उनके नेताओं ने चक्की से लगातार हो रही गोलीबारी देखी, उसके मालिक की शांति और दृढ़ संकल्प को देखा, खुद को खुलेआम चुनौती देते और मौत के मुंह में धकेलते हुए सुना, और अपने आदमियों को अपने चारों ओर घायल गिरते देखा, तो उन्हें लगा कि अब कुछ नहीं किया जा सकता। जल्दबाजी में उन्होंने अपनी सेना को इकट्ठा किया और उन्हें इमारत से दूर ले गए। हाजिरी ली गई, जिसमें आदमियों ने नामों के बजाय अंकों में जवाब दिया। वे खेतों में दूर-दूर तक फैल गए, अपने पीछे सन्नाटा और तबाही छोड़ गए। हमला शुरू होने से लेकर खत्म होने तक एक घंटे से भी कम समय में पूरा हो गया था।

इस समय तक दिन ढलने लगा था; पश्चिम में धुंध छाई हुई थी, जबकि पूर्व में हल्की रोशनी दिखाई देने लगी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि इस संघर्ष को देख चुकी लड़कियाँ अब विजेताओं के पास जाने की जल्दी करेंगी, जिनके पक्ष में उनका सारा हित जुड़ा हुआ था; लेकिन वे बड़ी सावधानी से अब जर्जर हो चुकी चक्की के पास पहुँचीं, और जब अचानक आँगन में खुलने वाले बड़े दरवाजे पर कई सैनिक और सज्जन दिखाई दिए, तो वे तुरंत एक शेड में चली गईं, जो पुराने लोहे और लकड़ी का भंडार था, जहाँ से वे बिना दिखाई दिए देख सकती थीं।

यह कोई उत्साहवर्धक दृश्य नहीं था। यह परिसर अब ग्रीष्म ऋतु की ताज़ी सुबह में वीरानगी के एक धब्बे मात्र रह गया था। घाटी के ऊपर का सारा जंगल छायादार और ओस से भीगा हुआ था, उसके शीर्ष पर स्थित पहाड़ी हरी-भरी थी; लेकिन ठीक यहीं,

इस सुंदर घाटी के केंद्र में, रात में बेकाबू होकर निकले डिस्कॉर्ड ने अपने खुरों से ज़मीन को रौंद डाला था और उसे उजाड़ कर चूर-चूर कर दिया था। चक्की खंडहर की हालत में खड़ी थी, उसके फ्रेम पर पॉलिश नहीं थी; आँगन पत्थरों और ईंटों से भरा पड़ा था; और चक्की के ठीक नीचे, टूटी खिड़कियों के चमकते टुकड़ों के साथ, बंदूकें और अन्य हथियार इधर-उधर पड़े थे। बजरी पर गहरे लाल रंग के कई धब्बे दिखाई दे रहे थे, द्वार के पास एक मानव शरीर औंधे मुँह पड़ा था, और पाँच-छह घायल आदमी खून से सनी धूल में तड़प रहे थे और कराह रहे थे।

यह दृश्य देखकर मिस कील्डर के चेहरे का भाव बदल गया। यह युद्ध की पीड़ा का एहसास था, जिसमें उत्साह और परिश्रम की जगह मृत्यु और दर्द ने ले ली थी। यह उस अंधकार का आभास था जो तेज आग अपनी लौ बुझने, अपनी गर्माहट खोने और अपनी चमक फीकी पड़ने पर छोड़ जाती है।

"मैं यही रोकना चाहती थी," उसने ऐसी आवाज़ में कहा जिसकी लय उसके दिल की बदली हुई भावना को बयां कर रही थी।

“पर तुम इसे रोक नहीं सकीं; तुमने अपनी पूरी कोशिश की – सब व्यर्थ गया,” कैरोलिन ने दिलासा देते हुए कहा। “दुखी मत हो, शर्ली।”

“मुझे उन बेचारे लोगों के लिए बहुत दुख है,” उसने जवाब दिया, और उसकी निगाहों की चमक ओस की तरह फीकी पड़ गई। “क्या चक्की के अंदर किसी को चोट लगी है? क्या वह आपके चाचा हैं?”

“हाँ, और वहाँ मिस्टर मैलोन हैं; और, ओ शर्ली, वहाँ रॉबर्ट हैं!”

“अच्छा,” (अपनी पुरानी आवाज़ में), “अपनी उंगलियाँ मेरे हाथ में इतनी ज़ोर से मत दबाओ। मैं समझ गई। इसमें कुछ भी अद्भुत नहीं है। हम जानते थे कि कम से कम वह तो यहाँ था, चाहे जो भी अनुपस्थित हो।”

“वह हमारी तरफ आ रहा है, शर्ली!”

"वह पंप की ओर जा रहा है, यानी अपने हाथ और माथे को धोने के लिए, जिस पर मुझे एक खरोंच दिखाई दे रही है।"

“उसे खून बह रहा है, शर्ली। मुझे मत पकड़ो। मुझे जाना होगा।”

एक कदम भी नहीं।

“वह घायल है, शर्ली!”

“बकवास!”

लेकिन मुझे उसके पास जाना ही होगा। मेरी बहुत इच्छा है। मैं खुद को रोक नहीं सकती।

“किसलिए?”

"उनसे बात करने के लिए, उनका हालचाल पूछने के लिए और यह जानने के लिए कि मैं उनके लिए क्या कर सकता हूँ।"

“उसे चिढ़ाने और परेशान करने के लिए; उन सैनिकों के सामने खुद को और उसे तमाशा बनाने के लिए, मिस्टर मैलोन, आपके चाचा, इत्यादि। क्या उसे यह पसंद आएगा, आपको क्या लगता है? क्या आप एक हफ्ते बाद इसे याद रखना चाहेंगे?”

“क्या मुझे हमेशा दबाकर और कुचलकर ही रखा जाएगा?” कैरोलिन ने थोड़ी भावुकता से पूछा।

“उसके लिए, हाँ; और उससे भी बढ़कर तुम्हारे लिए। मैं तुमसे कहता हूँ, अगर तुमने अभी खुद को दिखाया तो एक घंटे बाद तुम्हें पछतावा होगा, और रॉबर्ट को भी।”

"तुम्हें लगता है कि उसे यह पसंद नहीं आएगा, शर्ली?"

"उसे हमारी ओर से उसे रोककर शुभ रात्रि कहने की बात बिल्कुल भी पसंद नहीं आएगी, जिस पर आप बहुत नाराज़ थे।"

"लेकिन वह सब खेल था; उसमें कोई खतरा नहीं था।"

और यह एक गंभीर काम है; उसे किसी भी तरह की परेशानी से मुक्त रखा जाना चाहिए।

मैं उसके पास सिर्फ इसलिए जाना चाहता हूँ क्योंकि वह मेरा चचेरा भाई है - आप समझ रहे हैं ना?

“मैं समझ गया। लेकिन अब, उसे देखो। उसने अपना माथा धो लिया है, और खून बहना बंद हो गया है। उसकी चोट तो बस मामूली खरोंच है; मैं यहाँ से देख सकता हूँ। वह घायलों की देखभाल करने जा रहा है।”

तदनुसार, श्री मूर और श्री हेलस्टोन ने आँगन का चक्कर लगाया और प्रत्येक घायल व्यक्ति की जाँच की। फिर उन्होंने घायलों को उठाकर चक्की में ले जाने का निर्देश दिया। यह कार्य पूरा होने पर, जो स्कॉट को अपने मालिक के घोड़े और श्री हेलस्टोन के टट्टू पर काठी कसने का आदेश दिया गया, और दोनों सज्जन अलग-अलग दिशाओं में शल्य चिकित्सा सहायता प्राप्त करने के लिए पूरी गति से घोड़े दौड़ाते हुए निकल पड़े।

कैरोलिन अभी भी शांत नहीं हुई थी।

"शर्ली, शर्ली, काश मैं उसके जाने से पहले उससे एक शब्द कह पाती," उसने गुनगुनाते हुए कहा, जबकि उसकी आँखों में आँसू चमक रहे थे।

“लीना, तुम क्यों रो रही हो?” मिस कील्डर ने थोड़ी सख्ती से पूछा। “तुम्हें दुखी होने की बजाय खुश होना चाहिए। रॉबर्ट किसी गंभीर चोट से बच गया है; वह विजयी है; उसने युद्ध में शांत और बहादुरी दिखाई; अब वह जीत के बाद विचारशील है। क्या यह रोने का समय है—क्या ये रोने के कारण हैं?”

“तुम नहीं जानती कि मेरे दिल में क्या है,” दूसरी ने विनती करते हुए कहा— “कितना दर्द है, कितनी बेचैनी है—और ये सब कहाँ से पैदा हुआ है। मैं समझ सकती हूँ कि तुम रॉबर्ट की महानता और अच्छाई पर गर्व करती हो; एक तरह से मैं भी करती हूँ, लेकिन दूसरी तरफ मैं बहुत दुखी भी हूँ। मैं उससे बहुत दूर हो गई हूँ। पहले मैं उसके बहुत करीब थी। मुझे अकेला छोड़ दो, शर्ली। मुझे कुछ मिनट रोने दो; इससे मुझे राहत मिलती है।”

मिस कील्डर ने कैरोलिन को बुरी तरह कांपते हुए देखकर उससे बहस करना बंद कर दिया। वह शेड से बाहर चली गईं और उसे शांति से रोने के लिए छोड़ दिया। यही सबसे अच्छा उपाय था। कुछ ही मिनटों में कैरोलिन वापस उनके पास आई, काफी शांत होकर। उसने अपने स्वाभाविक, विनम्र और सौम्य लहजे में कहा, “चलो, शर्ली, अब हम घर चलते हैं। मैं वादा करती हूँ कि जब तक रॉबर्ट मुझसे मिलने नहीं आएगा, मैं उससे मिलने की कोशिश नहीं करूँगी। मैं कभी भी उस पर दबाव नहीं डालूँगी। अभी मुझे रोकने के लिए आपका धन्यवाद।”

"मैंने यह अच्छे इरादे से किया था," मिस कील्डर ने जवाब दिया।

“अब, प्यारी लीना,” उसने आगे कहा, “चलो सुबह की ठंडी हवा की ओर मुंह करके चुपचाप पादरी के घर वापस चलें। हम वैसे ही चुपके से अंदर जाएंगे जैसे चुपके से निकले थे। किसी को पता नहीं चलेगा कि हम कहाँ थे या आज रात हमने क्या देखा; इसलिए न तो कोई ताना मारेगा और न ही कोई गलतफहमी फैलाएगा। कल हम रॉबर्ट से मिलेंगे और खुश होंगे; लेकिन मैं अब और कुछ नहीं कहूंगी, कहीं मैं भी रोने न लगूँ। मैं तुम्हारे प्रति कठोर लग रही हूँ, लेकिन मैं ऐसी नहीं हूँ।”

अध्याय XX.

कल।

दोनों लड़कियाँ पादरी के निवास स्थान लौटते समय किसी भी जीवित प्राणी से नहीं मिलीं। वे चुपचाप अंदर चली गईं; वे बिना किसी को सुनाई दिए ऊपर चढ़ गईं— भोर की हल्की रोशनी ने उन्हें वह सब कुछ दे दिया जिसकी उन्हें ज़रूरत थी। शर्ली तुरंत अपने पलंग पर चली गई; और यद्यपि कमरा उसके लिए अनजान था—क्योंकि वह पहले कभी पादरी के निवास स्थान पर नहीं सोई थी—और यद्यपि हाल ही में जो दृश्य हुआ था वह रोमांच और आतंक से भरपूर था, जैसा उसने पहले कभी नहीं देखा था, फिर भी जैसे ही उसने अपना सिर तकिये पर रखा, एक गहरी, ताज़गी भरी नींद ने उसकी आँखें बंद कर लीं और उसकी इंद्रियों को शांत कर दिया।

शर्ली का स्वास्थ्य उत्तम था, जो एक अनमोल वरदान था। दयालु और सहानुभूतिशील होने के बावजूद, वह कभी घबराती नहीं थी; तीव्र भावनाएँ भी उसे झकझोर नहीं पाती थीं। तूफ़ान ने उसे कुछ देर तक परेशान किया और हिलाकर रख दिया, लेकिन उसकी लचीलता और ताजगी बरकरार रही। जैसे हर दिन उसके लिए नई भावनाएँ लेकर आता था, वैसे ही हर रात उसे सुकून भरी नींद देती थी। कैरोलाइन अब उसे सोते हुए देखती थी और उसके प्रसन्न चेहरे की सुंदरता में उसके मन की शांति को पढ़ लेती थी।

अपने अलग स्वभाव के कारण, वह सो नहीं पा रही थी। चाय पीने और स्कूल के जमावड़े की सामान्य उत्तेजना ही उसे रात भर बेचैन रखने के लिए काफी थी; उसकी आँखों के सामने अभी-अभी घटी भयावह घटना का असर कई दिनों तक उस पर बना रहने वाला था। लेटने की कोशिश भी व्यर्थ थी; वह शर्ली के बगल में बैठी रही, धीरे-

धीरे बीतते मिनटों को गिनती रही और जून के सूरज को आकाश में चढ़ते हुए देखती रही।

कैरोलीन ने हाल ही में जिस तरह की जागरण की अवस्थाएं जीं, वैसी ही अवस्थाएं अक्सर जीनी पड़ती थीं, उनमें जीवन तेजी से नष्ट हो जाता है। इन जागरणों के दौरान मन को पोषण देने के लिए कोई सुखद भोजन नहीं मिलता, आशा की कोई किरण नहीं मिलती, सुखद यादों का कोई शहद नहीं मिलता, और वह इच्छाओं के तुच्छ आहार पर जीने का प्रयास करता है। जब उसे उनसे न तो आनंद मिलता है और न ही सहारा, और वह लालसा से मरणासन्न महसूस करता है, तो वह दर्शन, संकल्प और त्याग की ओर मुड़ता है; इन सभी देवताओं से सहायता के लिए प्रार्थना करता है, व्यर्थ ही - अनसुनी रह जाती है, कोई सहायता नहीं मिलती, और वह क्षीण हो जाता है।

कैरोलीन एक ईसाई थीं; इसलिए संकट के समय उन्होंने ईसाई धर्म के अनुसार अनेक प्रार्थनाएँ कीं, पूरी श्रद्धा से उनका पालन किया, धैर्य, शक्ति और राहत की याचना की। परन्तु हम सब जानते हैं कि यह संसार परीक्षा और परख का स्थान है; और उनकी प्रार्थनाओं का अब तक कोई अनुकूल परिणाम न निकला हो, ऐसा लगता था मानो उन्हें अनसुना कर दिया गया हो। कभी-कभी उन्हें लगता था कि ईश्वर ने उनसे मुँह मोड़ लिया है। कभी-कभी वे कैल्विनवादी बन जाती थीं, और धार्मिक निराशा के गहरे अंधकार में डूबते हुए उन्हें अपने ऊपर निंदा का अंधकार दिखाई देता था।

अधिकांश लोगों के जीवन में ऐसे दौर आते हैं जब वे स्वयं को अकेला और निराश महसूस करते हैं—जब लंबे समय तक आशा की किरण न मिलने के बावजूद, उनका हृदय अत्यंत दुखी हो उठता है। यह एक भयानक घड़ी होती है, लेकिन अक्सर यही वह अंधकारमय क्षण होता है जो सूर्योदय से पहले आता है—वर्ष का वह मोड़ जब जनवरी की बर्फीली हवा वीरान भूमि पर एक साथ विदा होती सर्दी का शोकगीत और आने वाली वसंत ऋतु की भविष्यवाणी लेकर आती है। लेकिन मरते हुए पक्षी उस ठंडी हवा को नहीं समझ पाते जिसके सामने वे कांपते हैं; और इसी प्रकार पीड़ा की चरम सीमा पर पहुँच चुकी आत्मा भी अपने उद्धार की सुबह को नहीं पहचान पाती। फिर भी, जो भी दुखी हो, उसे ईश्वर के प्रति प्रेम और आस्था बनाए रखनी चाहिए। ईश्वर कभी धोखा नहीं देता, कभी भी अंत में उसे नहीं छोड़ता। "जिससे वह प्रेम करता है, उसे वह दंडित भी करता है।" ये शब्द सत्य हैं, और इन्हें कभी नहीं भूलना चाहिए।

आखिरकार घर में हलचल मच गई; नौकर उठ गए; खिड़कियों के शटर खुल गए।

कैरोलीन, जब उस पलंग से उठी, जो उसके लिए काँटों जैसा था, तो उसने मन में एक नई ताजगी महसूस की, जो दिन के लौटने और काम शुरू होने से मिलती है, सिवाय उन लोगों के जो पूरी तरह से निराश हैं या सचमुच मर रहे हैं। उसने हमेशा की तरह बड़े ध्यान से कपड़े पहने, अपने बालों और कपड़ों को इस तरह संवारा कि उसके दिल में बसी उदासी बाहर से दिखाई न दे। कपड़े पहनने के बाद वह शर्ली जितनी ही तरोताज़ा लग रही थी, बस फर्क इतना था कि मिस कील्डर की आँखें जीवंत थीं और मिस हेलस्टोन की सुस्त।

"आज मुझे मूर से बहुत कुछ कहना है," ये शर्ली के पहले शब्द थे; और उसके चेहरे पर साफ दिख रहा था कि उसकी जिंदगी दिलचस्पी, उम्मीदों और व्यस्तता से भरी हुई थी। "उसे पूछताछ का सामना करना पड़ेगा," उसने आगे कहा। "मुझे लगता है कि वह सोचता है कि उसने मुझे चालाकी से मात दे दी है। और मर्द औरतों से ऐसे ही पेश आते हैं — उनसे खतरा छुपाते हैं — शायद उन्हें तकलीफ से बचाने के लिए। उन्हें लगा कि हमें पता नहीं था कि वे आज रात कहां थे। हम जानते हैं कि उन्हें अंदाजा भी नहीं था कि हम कहां थे। मुझे लगता है कि मर्द औरतों के दिमाग को बच्चों जैसा समझते हैं। लेकिन यह एक गलतफहमी है।"

यह बात उसने शीशे के पास खड़े होकर कही, जब वह अपनी स्वाभाविक रूप से लहराती बालों को उंगलियों से घुमाकर कर्ल बना रही थी। पांच मिनट बाद, जब कैरोलिन अपनी ड्रेस का बटन लगा रही थी और कमरबंद कस रही थी, तब उसने फिर से इसी विषय को उठाया।

"अगर पुरुष हमें वैसे देख पाते जैसे हम वास्तव में हैं, तो वे थोड़ा आश्चर्यचकित हो जाते; लेकिन सबसे चतुर, सबसे समझदार पुरुष भी अक्सर स्त्रियों के बारे में भ्रम में रहते हैं। वे उन्हें सही परिप्रेक्ष्य में नहीं देखते; वे उन्हें अच्छाई और बुराई दोनों के लिए गलत समझते हैं। उनकी अच्छी स्त्री एक विचित्र वस्तु होती है, आधी गुड़िया, आधी परी; उनकी बुरी स्त्री लगभग हमेशा एक राक्षसी होती है। फिर उन्हें एक-दूसरे की रचनाओं के प्रति श्रद्धा में डूबते हुए सुनना—किसी कविता, उपन्यास, नाटक की नायिका की पूजा करना—उसे उत्तम, दिव्य समझना! उत्तम और दिव्य हो सकता है, लेकिन अक्सर बिल्कुल कृत्रिम—मेरे सबसे अच्छे बोनट में लगे गुलाब की तरह झूठा। अगर मैं इस विषय पर अपने सारे विचार व्यक्त करूँ, अगर मैं कुछ उत्कृष्ट कृतियों में उत्कृष्ट महिला पात्रों के बारे में अपनी सच्ची राय बताऊँ, तो मैं कहाँ होऊँगी? आधे घंटे

में प्रतिशोध लेने वाले पत्थरों के ढेर के नीचे मरी हुई।”

“शर्ली, तुम इतनी बकबक करती हो कि मैं तुम्हें बांध नहीं सकती। शांत रहो। और वैसे भी, लेखकों की नायिकाएँ लगभग उतनी ही अच्छी होती हैं जितनी लेखिकाओं के नायक।”

बिलकुल नहीं। औरतें मर्दों को मर्दों से ज़्यादा सही ढंग से समझती हैं। मैं किसी दिन समय मिलने पर किसी पत्रिका में यह साबित करूँगा; लेकिन वह कभी छपेगा नहीं। उसे 'धन्यवाद सहित अस्वीकार' कर दिया जाएगा और प्रकाशक के पास मेरे लिए छोड़ दिया जाएगा।

“बिल्कुल सही। तुम इतनी चतुराई से नहीं लिख सकतीं। तुम्हें पर्याप्त ज्ञान नहीं है। तुम विद्वान नहीं हो, शर्ली।”

"भगवान जानता है कि मैं तुम्हारा खंडन नहीं कर सकता, कैरी; मैं पत्थर की तरह अज्ञानी हूँ। हालांकि, एक बात तसल्ली की है: तुम भी मुझसे कुछ खास बेहतर नहीं हो।"

वे नाश्ता करने के लिए नीचे उतरे।

“पता नहीं श्रीमती प्रायर और हॉर्टेंस मूर ने रात कैसे बिताई होगी,” कैरोलिन ने कॉफी बनाते हुए कहा। “मैं स्वार्थी हूँ, इसलिए मैंने अभी तक उनके बारे में सोचा ही नहीं। उन्होंने सारा शोर सुना होगा, फील्डहेड और कॉटेज तो पास ही हैं; और हॉर्टेंस ऐसे मामलों में डरपोक है—और श्रीमती प्रायर भी शायद वैसी ही होंगी।”

"मेरी बात मानो, लीना, मूर ने अपनी बहन को रास्ते से हटाने का कोई न कोई तरीका निकाल लिया होगा। वह मिस मान के साथ घर चली गई है। उसने उसे रात भर वहीं ठहराया होगा। जहाँ तक श्रीमती प्रायर की बात है, मैं मानती हूँ कि मुझे उनके बारे में चिंता है; लेकिन आधे घंटे में हम उनके पास होंगे।"

इस समय तक हॉलो में हुई घटना की खबर पूरे मोहल्ले में फैल चुकी थी। फैनी, जो दूध लाने फील्डहेड गई थी, हांफते-हांफते जल्दी से लौटी और खबर लाई कि रात में मिस्टर मूर की चक्की पर लड़ाई हुई थी और कुछ लोगों का कहना था कि बीस लोग मारे गए थे। फैनी की अनुपस्थिति में एलिजा को कसाई के लड़के ने बताया था कि चक्की पूरी तरह जलकर राख हो गई थी। दोनों महिलाएं बैठक में दौड़कर आईं और बाकी महिलाओं को ये भयानक तथ्य बताए। अपनी बात को स्पष्ट और सटीक तरीके से खत्म करते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा यकीन है कि मालिक इसमें जरूर

शामिल रहा होगा। उन्हें पूरा विश्वास था कि वह और क्लर्क थॉमस पिछली रात मिस्टर मूर और सैनिकों से मिलने गए होंगे। मिस्टर मैलोन का भी कल दोपहर से उनके घर पर कोई पता नहीं चला था; और जो स्कॉट की पत्नी और परिवार बहुत परेशान थे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उनके मुखिया का क्या हुआ।

यह सूचना अभी दी ही गई थी कि रसोई के दरवाजे पर दस्तक हुई और फील्डहेड का संदेशवाहक आ गया। वह श्रीमती प्रायर का पत्र लेकर जल्दबाजी में पहुंचा था। पत्र जल्दी-जल्दी लिखा गया था और उसमें मिस कील्डर से तुरंत लौटने का आग्रह किया गया था, क्योंकि आस-पड़ोस और घर में अफरा-तफरी मची होने की संभावना थी और ऐसे आदेश देने होंगे जिन्हें केवल हॉल की मालकिन ही नियंत्रित कर सकती थीं। पत्र के अंत में यह निवेदन किया गया कि मिस हेलस्टोन को रेक्टरी में अकेला न छोड़ा जाए। सुझाव दिया गया कि उन्हें मिस कील्डर के साथ जाना चाहिए।

"इस मामले में कोई दो राय नहीं है," शर्ली ने अपनी टोपी बांधते हुए कहा और फिर कैरोलीन की टोपी लाने के लिए दौड़ पड़ी।

“लेकिन फैनी और एलिजा क्या करेंगी? और अगर मेरे चाचा वापस आ गए तो?”

“तुम्हारे चाचा अभी नहीं लौटेंगे; उन्हें और भी काम हैं। वे दिनभर ब्रायर्फ़ील्ड से स्टिलब्रो तक घोड़ों पर सवार होकर आते-जाते रहेंगे, अदालत में मजिस्ट्रेटों और बैरकों में तैनात अधिकारियों को उकसाते रहेंगे; और फ़ैनी और एलिज़ा के साथ जो स्कॉट और क्लर्क की पत्नियाँ भी रहेंगी। इसके अलावा, ज़ाहिर है, अभी कोई वास्तविक खतरा नहीं है। दंगाइयों को दोबारा इकट्ठा होने या कोई और योजना बनाने में कई सप्ताह लग जाएँगे; और अगर मूर और श्री हेलस्टोन पिछली रात के दंगे का फ़ायदा उठाकर उन्हें पूरी तरह से शांत नहीं करेंगे, तो मैं बहुत बड़ी ग़लती हूँ। वे स्टिलब्रो के अधिकारियों को सख़्त कदम उठाने पर मजबूर कर देंगे। मुझे बस यही उम्मीद है कि वे ज़्यादा सख़्त नहीं होंगे – बेबस लोगों का बहुत सख्ती से पीछा नहीं करेंगे।”

“रॉबर्ट क्रूर नहीं होगा। हमने कल रात यही देखा,” कैरोलिन ने कहा।

"लेकिन वह सख्त होगा," शर्ली ने पलटकर जवाब दिया; "और तुम्हारा चाचा भी वैसा ही होगा।"

जैसे ही वे घास के मैदान और बागान के रास्ते से फील्डहेड की ओर तेज़ी से बढ़े, उन्होंने दूर राजमार्ग को घुड़सवारों और पैदल यात्रियों की असामान्य भीड़ से भरा हुआ देखा, जो आमतौर पर सुनसान रहने वाले हॉलो की ओर जा रहे थे। हॉल पहुँचकर

उन्होंने देखा कि पिछवाड़े के द्वार खुले थे, और आंगन और रसोई उत्साहित दूध लाने वालों - पुरुषों, महिलाओं और बच्चों - से भरे हुए प्रतीत हो रहे थे, जिन्हें गृहस्वामी श्रीमती गिल व्यर्थ ही अपने दूध के डिब्बे लेकर जाने के लिए मनाती हुई प्रतीत हो रही थीं। (वैसे, उत्तरी इंग्लैंड में यह प्रथा थी कि किसी जमींदार की जागीर में रहने वाले लोग जागीर के डेयरी से दूध और मक्खन प्राप्त करते थे, जिसके चरागाहों पर पड़ोस की सुविधा के लिए दुधारू गायों का झुंड पाला जाता था। मिस कील्डर के पास भी ऐसा ही एक झुंड था - सभी गहरे गलफड़ों वाली, क्रेवन नस्ल की गायें, जिन्हें सुंदर एयरडेल के मीठे घास और साफ पानी में पाला गया था; और उन्हें उनके सुंदर रूप और उच्च स्थिति पर बहुत गर्व था।) अब स्थिति को देखते हुए, और यह देखते हुए कि परिसर को खाली करना वांछनीय था, शर्ली गपशप कर रहे समूहों के बीच चली गई। उसने एक निश्चित सहजता और सरलता से उन्हें सुप्रभात कहा - यह उसका स्वाभाविक व्यवहार था जब वह कई लोगों से बात करती थी, खासकर यदि वे श्रमिक वर्ग के हों; वह अपने समकक्षों के बीच शांत रहती थी, और अपने से ऊपर वालों के प्रति कुछ गर्वित रहती थी। फिर उसने उनसे पूछा कि क्या उन सभी ने अपना दूध नाप लिया है; और यह जानकर कि वे ऐसा कर चुके हैं, उसने आगे कहा कि वह "आश्चर्यचकित थी कि वे किस चीज का इंतजार कर रहे थे।"

“मालकिन, हम आपकी चक्की पर हुए उस युद्ध के बारे में थोड़ी बात कर रहे हैं,” एक आदमी ने जवाब दिया।

“कितनी बातें करते हो! बिलकुल तुम्हारी तरह!” शर्ली ने कहा। “यह अजीब बात है कि पूरी दुनिया को घटनाओं पर बातें करने का इतना शौक है। किसी की अचानक मौत हो जाए तो भी बातें करते हो; आग लग जाए तो भी बातें करते हो; चक्की मालिक दिवालिया हो जाए तो भी बातें करते हो; उसकी हत्या हो जाए तो भी बातें करते हो। तुम्हारी बातों से क्या फायदा?”

निचले तबके के लोगों को सीधे-सादे मज़ाकिया अभिवादन से ज़्यादा कुछ पसंद नहीं होता। चापलूसी से उन्हें घोर घृणा होती है; जबकि सच्ची गाली-गलौज में उन्हें आनंद आता है। वे इसे स्पष्टवादिता कहते हैं और इसका शिकार होने में उन्हें सच्ची खुशी मिलती है। मिस कील्डर के सीधे-सादे लेकिन कठोर अभिवादन ने पल भर में ही पूरे समूह का ध्यान आकर्षित कर लिया।

“हम न तो युद्ध हैं और न ही कोई ऐसी चीज जो हमसे ऊपर हो, हैं क्या?” एक

आदमी ने मुस्कुराते हुए पूछा।

“बिल्कुल भी बेहतर नहीं। तुम, जिन्हें मेहनती होना चाहिए, आलसी लोगों की तरह ही गपशप करने के शौकीन हो। अच्छे, अमीर लोग जिनके पास करने को कुछ नहीं होता, उन्हें अपना समय यूं ही बर्बाद करने के लिए कुछ हद तक माफ किया जा सकता है; लेकिन तुम, जिन्हें अपनी रोजी-रोटी मेहनत से कमानी पड़ती है, कतई माफ करने लायक नहीं हो।”

“ये तो अजीब बात है, मालकिन। क्या हमें सिर्फ इसलिए कभी छुट्टी नहीं मिलेगी क्योंकि हम कड़ी मेहनत करते हैं?”

“कभी नहीं,” तुरंत जवाब मिला; “जब तक,” मालकिन ने मुस्कुराते हुए कहा, जो उनकी बात की गंभीरता को कुछ हद तक झुठला रही थी — “जब तक कि आप इसका बेहतर इस्तेमाल करना न जानते हों, बजाय इसके कि अगर आप महिलाएं हैं तो रम और चाय के साथ, या अगर आप पुरुष हैं तो बीयर और पाइप के साथ इकट्ठा होकर अपने पड़ोसियों की बुराई करें। आइए, दोस्तों,” उन्होंने सीधे-सीधे अपनी बात से विनम्रता में बदलते हुए कहा, “कृपया अपने कैन लेकर घर चलें। आज कई लोग आने वाले हैं, और घर के रास्ते में भीड़भाड़ होना असुविधाजनक होगा।”

यॉर्कशायर के लोग समझाने-बुझाने पर जितने आसानी से मान जाते हैं, ज़बरदस्ती के आगे उतने ही अड़ियल होते हैं। पाँच मिनट में ही पूरा आँगन खाली हो गया।

"धन्यवाद, और अलविदा दोस्तों," शर्ली ने एक शांत आंगन के द्वार बंद करते हुए कहा।

अब, ज़रा सोचिए, सबसे सभ्य कॉकनी भी यॉर्कशायर के तौर-तरीकों में कमी निकालने की हिम्मत कैसे कर सकता है। अगर सही मायने में देखा जाए, तो वेस्ट राइडिंग के ज़्यादातर लड़के-लड़कियाँ पूरी तरह से सज्जन और शिष्ट हैं। वे तो सिर्फ़ दिखावटी और व्यर्थ के आडंबर के खिलाफ़ विद्रोह करते हैं।

पीछे के रास्ते से प्रवेश करते हुए, युवतियाँ रसोई (या घर, जैसा कि भीतरी रसोई को कहा जाता है) से होते हुए हॉल में पहुँचीं। श्रीमती प्रायर उनसे मिलने के लिए ओक की सीढ़ियों से दौड़ती हुई नीचे आईं। वह बहुत घबराई हुई थीं; उनका स्वभाव से हंसमुख चेहरा पीला पड़ गया था; उनकी आमतौर पर शांत, हालांकि संकोची, नीली आँखें इधर-उधर भटक रही थीं, बेचैन और भयभीत थीं। हालाँकि, उन्होंने कोई विस्मयबोधक वाक्य नहीं कहा, न ही जो कुछ हुआ था उसका जल्दबाजी में वर्णन

किया। रात भर और आज सुबह भी, उनके मन में यही असंतोष था कि वह इस अवसर की मांगों के प्रति अधिक दृढ़, शांत और सक्षम नहीं हो सकीं।

"आपको पता है," उसने कांपती हुई आवाज़ में कहना शुरू किया, फिर भी अपनी बात को बढ़ा-चढ़ाकर न कहने की पूरी कोशिश करते हुए, "कि आज रात दंगाइयों के एक समूह ने श्री मूर की चक्की पर हमला कर दिया। हमने यहाँ गोलीबारी और अफरा-तफरी की आवाज़ें बहुत स्पष्ट रूप से सुनीं; हममें से कोई भी सो नहीं पाया। वह एक दुखद रात थी। सुबह से ही घर में लोगों का आना-जाना लगा रहा। नौकरों ने मुझसे आदेश और निर्देश मांगे, जिन्हें देना मुझे उचित नहीं लगा। मुझे लगता है कि श्री मूर ने बचाव कार्य में लगे सैनिकों और अन्य लोगों के लिए जलपान और घायलों के लिए कुछ सुविधाओं का इंतजाम करवाया है। मैं आदेश देने या कदम उठाने की जिम्मेदारी नहीं ले सकती थी। मुझे डर है कि कुछ मामलों में देरी नुकसानदायक साबित हो सकती थी; लेकिन यह मेरा घर नहीं है। आप अनुपस्थित थीं, मेरी प्रिय मिस कील्डर। मैं क्या कर सकती थी?"

"क्या कोई जलपान नहीं भेजा गया?" शर्ली ने पूछा, जबकि उसका चेहरा, जो अब तक इतना स्पष्ट, सौम्य और शांत था, यहाँ तक कि दूध लाने वालों को देखते समय भी, अचानक उदास और क्रोधित हो गया।

मुझे नहीं लगता, मेरी प्यारी।

"और घायलों के लिए कुछ भी नहीं—न चादर, न शराब, न बिस्तर?"

"मुझे नहीं लगता। मैं यह नहीं बता सकती कि श्रीमती गिल ने क्या किया; लेकिन उस समय मुझे यह असंभव लगा कि मैं सैनिकों को रसद भेजकर आपकी संपत्ति का निपटान करूँ। सैनिकों की एक टुकड़ी के लिए राशन का इंतजाम करना बहुत बड़ी बात है। मैंने यह नहीं पूछा कि कितने सैनिक हैं; लेकिन मैं उन्हें घर लूटने की अनुमति देने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। मेरा इरादा सही काम करने का था, फिर भी मैं स्वीकार करती हूँ कि मुझे मामला पूरी तरह से स्पष्ट नहीं था।"

संक्षेप में कहें तो, इन सैनिकों ने मेरी संपत्ति की रक्षा में अपनी जान जोखिम में डाली है: मुझे लगता है कि वे मेरे आभार के पात्र हैं। घायल हमारे ही जैसे इंसान हैं: मुझे लगता है कि हमें उनकी मदद करनी चाहिए। — श्रीमती गिल!

वह मुड़ी और एक ऐसी आवाज़ में पुकारा जो कोमल नहीं बल्कि स्पष्ट थी। उसकी आवाज़ हॉल और रसोई के दरवाजों की मोटी ओक की लकड़ी से होकर घंटी की

पुकार से भी अधिक प्रभावशाली ढंग से गूंजी। श्रीमती गिल, जो रोटी बनाने में मग्न थीं, खाना पकाने के डिब्बे में हाथ और एप्रन डाले हुए आईं, क्योंकि उन्होंने आटे को गूंथने या मैदा झाड़ने के लिए रुकने की हिम्मत नहीं की थी। उनकी मालकिन ने इससे पहले कभी किसी नौकर को इस आवाज़ में नहीं बुलाया था, सिवाय एक बार के, और वह तब था जब उन्होंने खिड़की से टार्टर को दो वाहकों के कुत्तों के साथ पूरी ताकत से लड़ते देखा था, जिनमें से प्रत्येक आकार में उससे कम नहीं था, भले ही साहस में नहीं, और उनके मालिक पास खड़े होकर अपने जानवरों को प्रोत्साहित कर रहे थे, जबकि उनका कुत्ता अकेला था। तब उन्होंने जॉन को ऐसे बुलाया था मानो कयामत का दिन निकट हो। उसने जॉन के आने का इंतज़ार भी नहीं किया, बल्कि बिना टोपी पहने ही गली में निकल गई और सामान ढोने वालों को बताया कि वह उन्हें उन तीन दरिंदों से कहीं कमज़ोर समझती है जो उनके सामने धूल में लोट-पोट हो रहे थे। फिर उसने सबसे बड़े कुत्ते की मोटी गर्दन पकड़ ली और अपनी पूरी ताकत से उसे टार्टर की फटी और खून बहती आंख से गला घोंटने की कोशिश की, ठीक उसी आंख के ऊपर और नीचे जहां उसके नुकीले दांत गड़े हुए थे। पांच-छह आदमी तुरंत उसकी मदद के लिए आ गए, लेकिन उसने उनमें से किसी को भी धन्यवाद नहीं दिया। उसने कहा, "अगर उनकी इच्छा अच्छी होती तो वे पहले आ सकते थे।" दिन भर उसने किसी से एक शब्द भी नहीं कहा, बल्कि शाम तक हॉल की आग के पास बैठी रही और टार्टर की देखभाल करती रही, जो खून से लथपथ, अकड़ी हुई और सूजी हुई उसके पैरों के पास चटाई पर पड़ी थी। वह कभी-कभी चुपके से उसके लिए रोती थी, और दया और स्नेह के कोमल शब्द बुदबुदाती थी, जिसकी मधुरता को बूढ़ा, ज़ख्मी, योद्धा कुत्ता अपने लाल घावों के साथ बारी-बारी से उसका हाथ या चप्पल चाटकर स्वीकार करता था। जहाँ तक जॉन की बात है, उसकी प्रेमिका ने उसके साथ एक सप्ताह तक कोई संबंध नहीं रखा।

श्रीमती गिल को यह छोटी सी घटना याद आ गई और वे कांप उठीं, जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा। दृढ़ और संक्षिप्त स्वर में मिस कील्डर ने प्रश्न पूछना और आदेश देना शुरू किया। ऐसे समय में फील्डहेड का एक कंजूस की झोपड़ी जैसा आतिथ्य सत्कार दिखाना उनके अभिमानी मन को बुरी तरह आहत कर गया; और उनके हृदय की तीव्र धड़कन में उनके अभिमान का विद्रोह स्पष्ट दिखाई दिया, जो रेशम और जाली के आवरण के नीचे तूफान की तरह उमड़ रहा था।

"मिल से वह संदेश आए हुए कितना समय हो गया है?"

“अभी एक घंटा भी नहीं हुआ है, महोदया,” नौकरानी ने शांत भाव से उत्तर दिया।

“एक घंटा भी नहीं! आप तो मानो एक दिन भी नहीं कह सकते थे। तब तक वे कहीं और आवेदन कर चुके होंगे। तुरंत एक आदमी भेजकर उन्हें बता दो कि इस घर में जो कुछ भी है, वह श्री मूर, श्री हेलस्टोन और सैनिकों के पास है। पहले यही करो।”

जब आदेश पर अमल हो रहा था, शर्ली अपने दोस्तों से दूर चली गई और हॉल की खिड़की पर चुपचाप, एकांत में खड़ी हो गई। जब श्रीमती गिल वापस आईं, तो वह मुड़ी। पीड़ादायक उत्तेजना से पीले गालों पर उभरने वाली लालिमा उसके चेहरे पर भी झलक रही थी; नाखुशी से काली आँखों में उठने वाली चिंगारी उसकी निगाहों में चमक रही थी।

“भंडार और शराबखाने का सारा सामान ऊपर लाया जाए, भूसे से भरी गाड़ियों में भरकर घाटी में ले जाया जाए। अगर घर में रोटी या मांस कम हो तो कसाई और बेकर के पास जाकर उनसे जो भी उनके पास हो, भेजने का अनुरोध करें। लेकिन मैं खुद देख लूंगा।”

वह चली गई।

“सब कुछ जल्द ही ठीक हो जाएगा; वह एक घंटे में ठीक हो जाएगी,” कैरोलिन ने श्रीमती प्रायर से फुसफुसाते हुए कहा। “ऊपर जाइए, प्रिय महोदया,” उसने स्नेहपूर्वक कहा, “और जितना हो सके शांत और सहज रहने की कोशिश कीजिए। सच तो यह है कि दिन खत्म होने से पहले शर्ली आपसे ज़्यादा खुद को दोषी ठहराएगी।”

कुछ और कोमल आश्वासनों और समझाने-बुझाने के बाद, मिस हेलस्टोन ने उत्तेजित महिला को शांत करने में कामयाबी हासिल की। उन्हें उनके कमरे तक छोड़ने और स्थिति सामान्य होने पर उनसे दोबारा मिलने का वादा करने के बाद, कैरोलीन यह देखने के लिए चली गईं कि क्या वह कुछ उपयोगी हो सकती हैं। उन्हें जल्द ही पता चल गया कि वह बहुत उपयोगी हो सकती हैं; क्योंकि फील्डहेड में नौकरों की संख्या बहुत अधिक नहीं थी, और इस समय उनकी मालकिन के पास अपने सभी नौकरों और खुद के लिए भी पर्याप्त काम था। कैरोलीन की कोमल दयालुता और फुर्तीली कार्यकुशलता ने गृहस्वामी और नौकरानियों की मदद की - जो सभी अपनी मालकिन के असामान्य मिजाज से कुछ हद तक डरी हुई थीं - और इससे तुरंत बहुत लाभ हुआ;

इसने सहायकों की मदद की और गृहस्वामी को शांत किया। कैरोलीन की एक आकस्मिक नज़र और मुस्कान ने शर्ली को तुरंत मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया। कैरोलीन तहखाने की सीढ़ियों से एक भारी टोकरी ले जा रही थीं।

"यह तो बहुत बुरा हुआ!" शर्ली चिल्लाते हुए उसके पास दौड़ी। "इससे तुम्हारी बांह पर ज़ोर पड़ेगा।"

उसने उससे वह वस्तु ले ली और स्वयं उसे आंगन में ले गई। लौटकर आने पर उसके क्रोध का बादल छंट गया; उसकी आँखों की चमक गायब हो गई; उसके माथे का दुख भी दूर हो गया। उसने अपने आसपास के लोगों के साथ अपना सामान्य हंसमुख और सौहार्दपूर्ण व्यवहार फिर से शुरू कर दिया, अपने पिछले अनुचित क्रोध पर थोड़ी सी शर्मिंदगी के साथ अपने नए उत्साह को संतुलित करते हुए।

वह अभी भी गाड़ी में सामान लादने की देखरेख कर रही थी, तभी एक सज्जन व्यक्ति आंगन में दाखिल हुए और उनके पास आ गए, इससे पहले कि उन्हें उनकी उपस्थिति का एहसास होता।

"आशा है कि आज सुबह मिस कील्डर ठीक होंगी?" उसने कहा, और काफी ध्यान से उसके अभी भी लाल चेहरे को गौर से देखा।

उसने उसे एक नज़र देखा और फिर बिना कुछ कहे अपने काम में लग गई। उसके होठों पर एक प्यारी सी मुस्कान थी, लेकिन उसने उसे छिपा लिया। सज्जन ने झुककर फिर से अभिवादन किया ताकि वह आसानी से उसके कानों तक पहुँच सके।

"ठीक है, अगर वह अच्छी हो," जवाब मिला; "और मुझे लगता है कि मिस्टर मूर भी अच्छे ही हैं। सच कहूँ तो, मुझे उनकी चिंता नहीं है; कोई मामूली दुर्भाग्य तो उनके लिए स्वाभाविक ही होगा। उनका व्यवहार – अभी के लिए हम इसे अजीब कहेंगे, जब तक कि हम इसे और सटीक रूप से परिभाषित न कर लें। इस बीच, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि वे यहाँ क्यों आए हैं?"

श्री हेलस्टोन और मुझे अभी-अभी आपका संदेश मिला है कि फील्डहेड में सब कुछ हमारी सेवा में है। आपके विनम्र संदेश के विस्तृत शब्दों को देखकर हमें लगा कि आप अपने लिए अनावश्यक परेशानी खड़ी कर रहे होंगे। मुझे लगता है कि हमारा अनुमान सही निकला। याद रखिए, हम कोई रेजिमेंट नहीं हैं - केवल लगभग आधा दर्जन सैनिक और उतने ही नागरिक हैं। कृपया मुझे इन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध संसाधनों में से कुछ कटौती करने की अनुमति दें।

मिस कील्डर शर्म से लाल हो गईं, और अपनी अति उत्साही उदारता और बेतुके अनुमानों पर हंस पड़ीं। मूर भी धीरे से हंसे; और उतनी ही धीमी आवाज़ में उन्होंने गाड़ी से एक-एक करके टोकरियाँ उतारने और बर्तनों को तहखाने में वापस भेजने का आदेश दिया।

“इस बारे में रेक्टर को जरूर पता चलेगा,” उन्होंने कहा; “वो इसे एक बढ़िया कहानी बना देंगे। मिस कील्डर कितनी शानदार सेना ठेकेदार साबित होतीं!” फिर हंसते हुए उन्होंने कहा, “बिल्कुल वैसा ही हुआ जैसा मैंने अनुमान लगाया था।”

“तुम्हें शुक्रगुजार होना चाहिए,” शर्ली ने कहा, “मेरा मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए। मैं क्या कर सकती थी? मैं तुम्हारी भूख का अंदाज़ा कैसे लगा सकती थी या तुम्हारे समूह की गिनती कैसे कर सकती थी? जहाँ तक मुझे पता था, कम से कम पचास लोग तो होंगे ही जिन्हें भोजन देना था। तुमने मुझे कुछ नहीं बताया; और फिर सैनिकों के लिए भोजन की व्यवस्था करने का अनुरोध तो स्वाभाविक रूप से बड़े-बड़े विचारों को जन्म देता है।”

“ऐसा ही लगता है,” मूर ने घबराई हुई शर्ली पर अपनी तीखी, शांत नज़र डालते हुए कहा। — “अब,” उन्होंने गाड़ीवान से कहा, “मुझे लगता है कि आप बचा हुआ सामान हॉलो ले जा सकते हैं। आपका बोझ मिस कील्डर द्वारा आपको सौंपे गए बोझ से कुछ हल्का होगा।”

जैसे ही गाड़ी आंगन से बाहर निकली, शर्ली ने हिम्मत जुटाते हुए पूछा कि घायलों का क्या हुआ।

जवाब मिला, "हमारी तरफ से एक भी आदमी घायल नहीं हुआ।"

“तुम्हें भी चोट लगी है, कनपटी पर,” कैरोलीन की एक तेज़, धीमी आवाज़ सुनाई दी—जो दरवाज़े की छाया में, श्रीमती गिल के बड़े शरीर के पीछे छिपकर अब तक मूर की नज़र से बची हुई थी। जब उसने बोलना शुरू किया, तो मूर की नज़रें उसके छिपने की जगह के अंधेरे में उसे ढूँढ़ने लगीं।

“क्या आपको ज्यादा चोट लगी है?” उसने पूछा।

“जैसे सिलाई करते समय सुई से उंगली में खरोंच लग जाती है।”

अपने बाल ऊपर उठाओ और हमें देखने दो।

उसने अपनी टोपी उतार दी और आदेश का पालन किया, जिससे केवल आंगन की प्लास्टर की एक पतली सी पट्टी दिखाई दी। कैरोलीन ने सिर को हल्के से हिलाकर

अपनी संतुष्टि का संकेत दिया और कमरे के स्पष्ट अंधेरे में गायब हो गई।

“उसे कैसे पता चला कि मुझे चोट लगी है?” मूर ने पूछा।

“अफवाहों से, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन वह इतनी अच्छी है कि तुम्हारे बारे में चिंता नहीं करेगी। जहाँ तक मेरी बात है, जब मैंने घायलों के बारे में पूछताछ की थी, तो मैं तुम्हारे पीड़ितों के बारे में ही सोच रहा था। तुम्हारे विरोधियों को कितना नुकसान हुआ है?”

"दंगाइयों में से एक, या जैसा कि आप उन्हें पीड़ित कहते हैं, मारा गया और छह घायल हो गए।"

आपने उनके साथ क्या किया?

“आप इसे पूरी तरह से स्वीकार करेंगे। चिकित्सा सहायता तुरंत उपलब्ध करा दी गई है; और जैसे ही हमें कुछ ढकी हुई गाड़ियाँ और कुछ साफ भूसा मिल जाएगा, उन्हें स्टिलब्रो ले जाया जाएगा।”

“अरे! आपको बिस्तर और बिस्तर की चादरें तो चाहिए ही। मैं अपना वैगन तुरंत भेजूंगा, पूरी तरह से सुसज्जित; और मुझे पूरा विश्वास है कि मिस्टर यॉर्क भी अपना भेजेंगे।”

“आपने बिल्कुल सही अनुमान लगाया; उन्होंने स्वेच्छा से अपनी सेवाएं देने का फैसला कर लिया है। और श्रीमती यॉर्क—जो आपकी ही तरह दंगाइयों को शहीद और मुझे, और विशेष रूप से श्री हेलस्टोन को हत्यारा मानती हैं—इस समय, मेरा मानना है, बिस्तर, तकिए, गद्दी, कंबल आदि से उसे सजाने में पूरी लगन से लगी हुई हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि पीड़ितों को किसी भी प्रकार की देखभाल की कमी नहीं है। आपके प्रिय पादरी श्री हॉल सुबह छह बजे से ही उनके साथ हैं, उन्हें प्रोत्साहित कर रहे हैं, उनके साथ प्रार्थना कर रहे हैं और किसी नर्स की तरह उनकी सेवा कर रहे हैं; और कैरोलीन की अच्छी दोस्त, मिस ऐनली, वह सीधी-सादी बुढ़िया, ने रुई और लिनेन का इतना स्टॉक भेजा है, जो किसी अन्य महिला के गोमांस और शराब के भत्ते के अनुपात में है।”

“बस इतना काफी है। तुम्हारी बहन कहाँ है?”

“उसकी अच्छी देखभाल की गई। मैंने उसे मिस मान के पास सुरक्षित रूप से रखा था। आज सुबह ही दोनों वर्मवुड वेल्स [एक प्रसिद्ध जल-स्थल] के लिए रवाना हुए हैं और वहां कुछ सप्ताह रुकेंगे।”

तो श्री हेलस्टोन ने मुझे पादरी के निवास में ठहरा दिया! आप लोग खुद को कितना चतुर समझते हैं! मैं इस विचार का हार्दिक स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि इस पर विचार करते हुए आपको आनंद मिलेगा। आप तो बड़े बुद्धिमान और चतुर हैं, सर्वज्ञ क्यों नहीं? आपकी नाक के नीचे ऐसी घटनाएँ कैसे घटित हो जाती हैं जिनकी आपको कोई आशय नहीं होता? ऐसा होना ही चाहिए, वरना आपको मात देने का इतना बड़ा संतोष मुझे पता ही नहीं चलता। आह, मित्र, आप मेरे चेहरे को निहार सकते हैं, लेकिन उसे पढ़ नहीं सकते।

वास्तव में, मूर को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह ऐसा कर ही नहीं सकता।

“तुम मुझे अपनी जाति की एक खतरनाक महिला समझते हो। है ना?”

"कम से कम एक विचित्र मामला तो है ही।"

"लेकिन कैरोलिन—क्या वह अजीब है?"

"उसके तरीके से - हाँ।"

“उसका तरीका! उसका तरीका क्या है?”

आप उसे उतना ही अच्छी तरह जानते हैं जितना मैं जानता हूँ।

और उसे जानने के बाद, मैं कह सकता हूँ कि वह न तो सनकी है और न ही उसे नियंत्रित करना मुश्किल है। क्या वह है?

"कि निर्भर करता है - - "

"लेकिन, उसमें मर्दानापन जैसा कुछ भी नहीं है?"

“उस पर इतना जोर क्यों दिया जा रहा है? क्या आप उसे इस मामले में अपने से भिन्न मानते हैं?”

“हाँ, इसमें कोई शक नहीं; लेकिन इसका कोई महत्व नहीं है। कैरोलीन न तो मर्दाना है, न ही उन महिलाओं में से है जिन्हें जोशीली महिलाएँ कहा जाता है।”

मैंने उसे गुस्से में भड़कते हुए देखा है।

“मैंने भी ऐसा ही किया, लेकिन मर्दाना जोश के साथ नहीं। यह एक छोटी, जीवंत, कांपती हुई चमक थी, जो उठी, जगमगाई और गायब हो गई—”

और उसने खुद को अपने दुस्साहस पर भयभीत कर लिया। आप कैरोलिन के अलावा अन्य लोगों का भी वर्णन करते हैं।

मैं जो बात स्थापित करना चाहता हूँ वह यह है कि मिस हेलस्टोन, यद्यपि सौम्य, आज्ञाकारी और स्पष्टवादी हैं, फिर भी वह मिस्टर मूर की भेद्यता को भी चुनौती देने में

पूरी तरह सक्षम हैं।

"तुम और वो क्या कर रहे थे?" मूर ने अचानक पूछा।

"क्या आपने नाश्ता कर लिया है?"

“आप दोनों के बीच का साझा रहस्य क्या है?”

“अगर आपको भूख लगी है, तो श्रीमती गिल आपको यहाँ कुछ खाने को देंगी। ओक के कमरे में आइए और घंटी बजाइए। आपको सराय की तरह भोजन परोसा जाएगा; या, अगर आपको बेहतर लगे, तो वापस हॉलो चले जाइए।”

“मेरे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है; मुझे वापस जाना होगा। सुप्रभात। जैसे ही मुझे फुर्सत मिलेगी, मैं आपसे फिर मिलूंगा।”

अध्याय XXI.

श्रीमती प्रायर।

जब शर्ली मूर से बात कर रही थी, कैरोलीन ऊपर श्रीमती प्रायर के पास लौट आई। उसने पाया कि वह महिला बहुत उदास थी। वह यह तो नहीं कह रही थी कि मिस कील्डर की जल्दबाजी ने उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई है, लेकिन यह स्पष्ट था कि उनके भीतर एक गहरा घाव था। किसी और के लिए, जो मिलनसार स्वभाव का न हो, वह मिस हेलस्टोन द्वारा दिए जा रहे शांत और कोमल व्यवहार के प्रति असंवेदनशील प्रतीत होती; लेकिन कैरोलीन जानती थी कि, देखने में भले ही वह अविचलित लग रही थी या थोड़ी विचलित, लेकिन वह उन व्यवहारों को महसूस कर रही थी, उनकी कद्र कर रही थी और उनसे उसे सुकून मिल रहा था।

अंत में उसने कहा, “मुझमें आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता की कमी है। ये गुण मुझमें हमेशा से ही कम रहे हैं। फिर भी मुझे लगता है कि मिस कील्डर को अब तक मेरे स्वभाव को अच्छी तरह जान लेना चाहिए था और उन्हें पता होना चाहिए था कि मैं हमेशा सही करने और सबके भले के लिए काम करने के लिए बेहद उत्सुक रहती हूँ। मेरे निर्णय पर पड़ने वाली इस असामान्य चुनौती ने मुझे उलझन में डाल दिया, खासकर रात के उस भयानक दृश्य के बाद। मैं किसी और के लिए तुरंत कार्रवाई करने का साहस नहीं कर सकी; लेकिन मुझे उम्मीद है कि मेरी इस ढिलाई से कोई गंभीर नुकसान नहीं होगा।”

दरवाजे पर हल्की सी दस्तक सुनाई दी। दरवाजा आधा खुला हुआ था।

“कैरोलीन, इधर आओ,” एक धीमी आवाज ने कहा।

मिस हेलस्टोन बाहर चली गईं। गैलरी में शर्ली खड़ी थी, पश्चाताप से भरी, शर्मिंदा और दुखी लग रही थी, जैसे कोई भी पश्चातापी बच्चा होता है।

“श्रीमती प्रायर कैसी हैं?” उसने पूछा।

कैरोलिन ने कहा, "काफी उदास लग रही है।"

“मैंने उसके साथ बहुत ही शर्मनाक, बहुत ही कंजूस और बहुत ही कृतघ्न व्यवहार किया है,” शर्ली ने कहा। “कितनी गुस्ताखी मुझसे हुई कि मैंने उस पर इस तरह का आरोप लगाया, जबकि असल में उसमें कोई गलती नहीं थी — बस उसकी ओर से ज़रूरत से ज़्यादा कर्तव्यपरायणता थी। लेकिन मुझे अपनी गलती का बहुत अफ़सोस है। उसे यह बता देना और उससे माफ़ी माँग लेना।”

कैरोलीन ने बड़े हर्ष के साथ अपना काम पूरा किया। श्रीमती प्रायर उठीं और दरवाजे तक आईं। उन्हें तमाशा पसंद नहीं था; वे सभी डरपोक लोगों की तरह इससे भी घबराती थीं। उन्होंने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा, "अंदर आ जाओ, मेरी प्यारी।"

शर्ली कुछ उतावलेपन के साथ अंदर आई। उसने अपनी गवर्नेंस को गले लगाया और उसे दिल से चूमते हुए कहा, "श्रीमती प्रायर, आपको मुझे माफ करना ही होगा। अगर आप और मेरे बीच कोई गलतफहमी हो जाती, तो मैं बिल्कुल भी ठीक से रह नहीं पाती।"

“मुझे कुछ भी क्षमा करने की आवश्यकता नहीं है,” जवाब मिला। “कृपया इसे अभी छोड़ दें। इस घटना का अंतिम परिणाम यह है कि यह पहले से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से साबित करता है कि मैं कुछ संकटों से निपटने में कितना असमर्थ हूँ।”

और यही वह पीड़ादायक अनुभूति थी जो श्रीमती प्रायर के मन में हमेशा बनी रहेगी। शर्ली या कैरोलीन के किसी भी प्रयास से यह भावना मिट नहीं सकती थी। वह अपनी दोषी छात्रा को तो क्षमा कर सकती थीं, लेकिन स्वयं को नहीं।

सुबह के समय लगातार अनुरोधों का सामना करने के लिए बाध्य मिस कील्डर को थोड़ी देर बाद फिर से नीचे बुलाया गया। सबसे पहले रेक्टर ने उन्हें बुलाया। उनका जोरदार स्वागत हुआ और उससे भी जोरदार फटकार लगाई गई। उन्हें दोनों की उम्मीद थी, और वे बहुत खुश थे, इसलिए उन्होंने दोनों को समान रूप से स्वीकार किया।

अपनी संक्षिप्त यात्रा के दौरान वे अपनी भतीजी का हालचाल पूछना ही भूल गए; दंगा, दंगाइयों, चक्की, मजिस्ट्रेटों और उत्तराधिकारी ने उनके सारे विचारों को इस कदर घेर लिया था कि पारिवारिक रिश्ते उनके दिमाग से ओझल हो गए थे। उन्होंने हॉलो की रक्षा में स्वयं और पादरी द्वारा निभाई गई भूमिका का भी जिक्र किया।

उन्होंने कहा, "इस मामले में हमारी हिस्सेदारी के लिए फरीसियों के क्रोध की मदिराशि हमारे सिर पर उंडेल दी जाएगी।" “परन्तु मैं हर निंदक को चुनौती देता हूँ। मैं वहाँ केवल कानून का समर्थन करने, एक मनुष्य और एक ब्रितानी के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए था; ये दोनों गुण मुझे पुजारी और लेवी के गुणों के साथ पूर्णतः संगत लगते हैं। आपका किरायेदार मूर,” उन्होंने आगे कहा, “मेरी प्रशंसा का पात्र है। मैं इससे अधिक निर्भीक और दृढ़ निश्चयी कमांडर नहीं देखना चाहूँगा। इसके अलावा, इस व्यक्ति ने विवेक और समझदारी दिखाई है - पहले तो घटित घटना के लिए पूरी तरह से तैयार रहने में; और बाद में, जब उसकी सुनियोजित योजनाओं ने उसे सफलता दिलाई, तो अपनी जीत का दुरुपयोग किए बिना उसका उपयोग करने में। कुछ मजिस्ट्रेट अब बुरी तरह डरे हुए हैं, और सभी कायरों की तरह क्रूर होने की प्रवृत्ति दिखा रहे हैं। मूर उन्हें प्रशंसनीय विवेक से नियंत्रित करता है। वह अब तक आस-पड़ोस में बहुत अलोकप्रिय रहा है; लेकिन, मेरी बात ध्यान से सुनो, अब जनमत उसके पक्ष में मुड़ेगा। लोगों को पता चलेगा कि उन्होंने उसकी सराहना नहीं की है, और वे अपनी गलती सुधारने में तत्पर रहेंगे; और जब वह देखेगा कि जनता उसके गुणों को स्वीकार करने के लिए तैयार है, वह अब तक हमारे प्रति दिखाए गए व्यवहार की तुलना में अधिक सौम्य व्यवहार प्रदर्शित करेगा।

श्री हेलस्टोन अपने भाषण में मिस कील्डर को उनकी प्रतिभाशाली किरायेदार के प्रति कथित पक्षपात के विषय पर कुछ मज़ाकिया और कुछ गंभीर चेतावनी देने ही

वाले थे कि तभी दरवाजे पर घंटी बजी, जिससे एक और मेहमान के आने की सूचना मिली, और उनका मज़ाक रुक गया; और जैसे ही वह दूसरा मेहमान एक सफेद बालों वाले बुजुर्ग सज्जन के रूप में प्रकट हुआ, जो कुछ हद तक उग्र चेहरे और तिरस्कारपूर्ण आँखों के साथ थे - संक्षेप में, हमारे पुराने परिचित और रेक्टर के पुराने दुश्मन, श्री यॉर्क - पुजारी और लेवी ने अपनी टोपी पकड़ी, और मिस कील्डर को संक्षिप्त विदाई और उनके मेहमान को कड़े शब्दों में सिर हिलाकर अचानक चले गए।

श्री योर्क का मिजाज बिल्कुल भी नरम नहीं था, और उन्होंने उस रात की घटनाओं पर अपनी राय स्पष्ट शब्दों में व्यक्त की। मूर, मजिस्ट्रेट, सैनिक, भीड़ के नेता, हर कोई उनके कटु आलोचनाओं के दायरे में आया; लेकिन उन्होंने अपने सबसे कड़े शब्दों का प्रयोग — और वे सचमुच यॉर्कशायर के तीखे व्यंग्यात्मक विशेषण थे — झगड़ालू पादरियों, "खून-खराबे वाले, विक्षिप्त" रेक्टर और क्यूरेट के लिए किया। उनके अनुसार, चर्च के गुनाहों का प्याला अब पूरी तरह भर चुका था।

उन्होंने कहा, “चर्च अब एक बड़ी मुसीबत में फंस गया था। अब समय आ गया था कि इसे गिरा दिया जाए, जब पादरी सैनिकों के बीच अकड़ दिखाने लगे, गोलियों और बारूद से अंधाधुंध फायरिंग करने लगे और अपने से कहीं अधिक ईमानदार लोगों की जान लेने लगे।”

"अगर किसी ने मूर की मदद नहीं की होती तो वह क्या करता?" शर्ली ने पूछा।

"उसने जितनी शराब बनाई थी, उतना ही पिया, उसने जितना पकाया था, उतना ही खाया।"

“इसका मतलब है कि तुम उसे उस भीड़ का सामना करने के लिए अकेला छोड़ देते। अच्छा! उसमें बहुत साहस है, लेकिन किसी एक व्यक्ति के सीने में मौजूद वीरता का सबसे बड़ा अंश भी दो सौ लोगों के सामने शायद ही काम आता।”

"उसके पास सैनिक थे, वे बेचारे गुलाम थे जो अपना खून किराए पर देते थे और पैसे के लिए दूसरों का खून बहाते थे।"

आप सैनिकों को लगभग उतना ही बुरा-भला कहते हैं जितना पादरियों को। आपकी नज़र में लाल कोट पहनने वाले सभी लोग देश के निकम्मे हैं, और काले कोट पहनने वाले सभी लोग देश के धोखेबाज़ हैं। आपके अनुसार, श्री मूर ने सैन्य सहायता लेकर गलती की, और किसी भी अन्य सहायता को स्वीकार करके उससे भी बड़ी गलती की। आपकी बात का सार यह है: उन्हें अपनी चक्की और अपना जीवन कुछ

गुमराह पागलों के हाथों में सौंप देना चाहिए था, और श्री हेलस्टोन और उस इलाके के हर सज्जन को बस देखते रहना चाहिए था, इमारत को ढहाते और उसके मालिक को मरते हुए देखना चाहिए था, और उन्हें बचाने के लिए एक उंगली भी नहीं हिलानी चाहिए थी।

"अगर मूर ने शुरू से ही अपने आदमियों के साथ एक मालिक की तरह व्यवहार किया होता, तो उनके मन में उसके प्रति वर्तमान भावनाएँ कभी नहीं होतीं।"

“आपके लिए बोलना आसान है,” मिस कील्डर ने कहा, जो अपने किरायेदार के पक्ष में भावुक होने लगी थीं — “आप, जिनका परिवार छह पीढ़ियों से ब्रायर्मेन्स में रह रहा है, जिनके लोग पचास वर्षों से परिचित हैं, जो उनके सभी रीति-रिवाजों, पूर्वाग्रहों और पसंदों को जानते हैं — आपके लिए उन्हें नाराज़ न करने के लिए व्यवहार करना वास्तव में आसान है। लेकिन श्री मूर इस क्षेत्र में एक अजनबी के रूप में आए; वे यहाँ गरीब और बेसहारा आए, उनके पास अपने दम पर आगे बढ़ने के लिए केवल अपनी ऊर्जा थी, उनके सम्मान, उनकी प्रतिभा और उनकी मेहनत के अलावा कुछ नहीं था। यह वास्तव में एक घोर अपराध है कि ऐसी परिस्थितियों में, वे अपने स्वाभाविक रूप से गंभीर और शांत स्वभाव को तुरंत लोकप्रिय नहीं बना सके; वे एक अजनबी किसान के साथ आपके जैसे हंसमुख, खुले और सौहार्दपूर्ण नहीं हो सके! यह एक अक्षम्य अपराध है कि जब उन्होंने सुधार किए तो उन्होंने सबसे अधिक राजनीतिक तरीके से काम नहीं किया, अपने बदलावों को उतनी बारीकी से नहीं किया जितना एक अमीर पूंजीपति करता! इस तरह की गलतियों के लिए उन्हें ही जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। क्या वह भीड़ के अत्याचार का शिकार है? क्या उसे अपना बचाव करने का विशेषाधिकार भी नहीं दिया जाना चाहिए? क्या वे लोग जिनके हृदय में मानवता है (और श्री हेलस्टोन, आप उनके बारे में जो चाहें कहें, उनके पास ऐसी मानवता है) को अपराधियों की तरह बदनाम किया जाना चाहिए क्योंकि वे उसका साथ देते हैं, क्योंकि वे दो सौ के खिलाफ एक व्यक्ति का पक्ष लेने का साहस करते हैं?

"चलो, चलो अब, शांत हो जाओ," श्री योर्क ने मुस्कुराते हुए कहा, क्योंकि शर्ली ने बड़ी गंभीरता से तेजी से कई प्रश्न पूछे थे।

“वाह! क्या मुझे सरासर बकवास—खतरनाक बकवास—को चुपचाप सुनना चाहिए? नहीं। जैसा कि आप जानते हैं, श्री योर्क, मैं आपको बहुत पसंद करता हूँ,

लेकिन आपके कुछ सिद्धांत मुझे बिल्कुल पसंद नहीं हैं। सैनिकों और पादरियों के बारे में वह सारी पाखंडी बातें—क्षमा कीजिए, लेकिन मैं यह शब्द दोहरा रहा हूँ—मेरे कानों को बेहद बुरी लगती हैं। एक वर्ग की बेतुकी, तर्कहीन प्रशंसा, चाहे वह अभिजात वर्ग हो या लोकतंत्रवादी—दूसरे वर्ग की निंदा, चाहे वह पादरी हो या सैनिक—व्यक्तियों के साथ अन्याय करना, चाहे वह राजा हो या भिक्षु—मुझे सचमुच घृणित लगता है; एक वर्ग के विरुद्ध दूसरे वर्ग की हिंसा, दलगत द्वेष, स्वतंत्रता के वेश में छिपी हुई तानाशाही—मैं इन सबसे दूर भागता हूँ और इनसे अपना हाथ धो लेता हूँ। आप सोचते हैं कि आप परोपकारी हैं; आप सोचते हैं कि आप स्वतंत्रता के हिमायती हैं; लेकिन मैं आपको बता दूँ—ननेली के पादरी श्री हॉल, ब्रायर्फ़ील्ड के सुधारक हीराम योर्क से कहीं अधिक मनुष्य और स्वतंत्रता के मित्र हैं।"

अगर श्री यॉर्क किसी पुरुष से इस तरह की भाषा सुनते तो वे शायद ही धैर्य से सहन कर पाते, और कुछ महिलाओं से तो वे इसे बर्दाश्त ही नहीं करते; लेकिन वे शर्ली को ईमानदार और सुंदर मानते थे, और उसका स्पष्टवादी क्रोध उन्हें अच्छा लगता था। इसके अलावा, अपने किरायेदार का बचाव करते हुए उसे सुनना उन्हें मन ही मन आनंद देता था, क्योंकि जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, रॉबर्ट मूर का हित उनके दिल में बहुत गहरा था। इतना ही नहीं, अगर वे उसकी कठोरता का बदला लेना चाहते, तो उन्हें पता था कि साधन उनके हाथ में है: उनका मानना था कि एक शब्द ही उसे शांत करने और चुप कराने के लिए काफी होगा, उसके खुले माथे को शर्म की गुलाबी छाया से ढकने के लिए, और उसकी झुकी हुई पलकों और भौहों के नीचे उसकी आंखों की चमक को छिपाने के लिए।

"तुम्हें और क्या कहना है?" उसने पूछा, जब वह रुकी, ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सांस लेने के लिए रुकी थी, न कि इसलिए कि उसका विषय या उसका उत्साह समाप्त हो गया था।

"सुनो, श्री योर्क!" उत्तर था, वक्ता इस बीच ओक के बैठक कक्ष की एक दीवार से दूसरी दीवार तक तेज़ी से चलते हुए बोला — "कहिए? मुझे बहुत कुछ कहना है, अगर मैं उसे स्पष्ट क्रम में कह पाता, जो मैं कभी नहीं कर पाता। मुझे कहना है कि आपके विचार, और अधिकांश अतिवादी राजनेताओं के विचार, ऐसे हैं जिनका समर्थन केवल गैर-जिम्मेदार पदों पर बैठे व्यक्ति ही कर सकते हैं; वे विशुद्ध रूप से विरोधात्मक विचार हैं, जिनका केवल चर्चा के लिए उद्देश्य है, और उन पर अमल करने का कोई

इरादा नहीं है। कल आपको इंग्लैंड का प्रधानमंत्री बना दिया जाए, तो आपको उन्हें छोड़ना पड़ेगा। आप मूर की चक्की का बचाव करने के लिए उसकी निंदा करते हैं। यदि आप मूर की जगह होते, तो आप सम्मान या विवेक के साथ उससे अलग कार्य नहीं कर सकते थे। आप श्री हेलस्टोन की हर बात के लिए निंदा करते हैं। श्री हेलस्टोन में कमियाँ हैं; वे कभी-कभी गलत करते हैं, लेकिन अक्सर सही करते हैं। यदि आपको ब्रायर्फ़ील्ड का पादरी नियुक्त किया जाता, तो आपको अपने पूर्ववर्ती द्वारा परिनियोजित और निरंतर जारी रखी गई पल्ली के लाभ के लिए सभी सक्रिय योजनाओं को बनाए रखना आसान काम नहीं लगता। मुझे आश्चर्य है कि लोग एक-दूसरे और स्वयं का अधिक निष्पक्ष मूल्यांकन क्यों नहीं कर पाते। जब मैं सुनता हूँ श्रीमान मैलोन और डोने चर्च के अधिकार, पुरोहित वर्ग की गरिमा और दावों, और पादरी के रूप में उनके प्रति अपेक्षित सम्मान के बारे में बकवास करते रहते हैं; जब मैं असंतुष्टों के प्रति उनकी छोटी-मोटी दुर्भावनाओं को सुनता हूँ; जब मैं उनकी मूर्खतापूर्ण, संकीर्ण ईर्ष्याओं और धारणाओं का साक्षी बनता हूँ; जब रीति-रिवाजों, परंपराओं और अंधविश्वासों के बारे में उनकी बकवास मेरे कानों में गूँजती है; जब मैं गरीबों के प्रति उनके उद्दंड रवैये, और अमीरों के प्रति उनकी अक्सर नीच चापलूसी को देखता हूँ - तो मुझे लगता है कि स्थापित व्यवस्था वास्तव में बुरी हालत में है, और उसे और उसके बेटों दोनों को सुधार की सख्त जरूरत है। गिरजाघर के शिखर और गाँव के मीनार से दुखी होकर मुँह मोड़ते हुए - हाँ, ठीक वैसे ही दुखी जैसे कोई चर्च वार्डन सफेदी की आवश्यकता महसूस करता है और उसके पास चूना खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं - मुझे 'मोटे बिशप', 'लाड़-प्यार वाले पादरी', 'पुरानी मदर चर्च' आदि पर आपके बेतुके व्यंग्य याद आते हैं। मुझे आपसे असहमत होने वाले सभी लोगों पर आपकी कड़ी आलोचना, वर्गों और व्यक्तियों की आपकी व्यापक निंदा याद आती है, बिना किसी भी तरह की परिस्थितियों या प्रलोभनों को ध्यान में रखते हुए; और फिर, श्री योर्क, मेरे मन में यह संदेह गहराता है कि क्या ऐसे मनुष्य भी मौजूद हैं जो इतने दयालु, तर्कसंगत और न्यायप्रिय हों कि उन्हें सुधार का कार्य सौंपा जा सके। मुझे नहीं लगता कि आप उनमें से एक हैं।

"आप मेरे बारे में गलत राय रखती हैं, मिस शर्ली। आपने पहले कभी मुझे अपने मन की इतनी बातें नहीं बताईं।"

मुझे कभी मौका नहीं मिला। लेकिन मैं कई शामें ब्रायर्मेन्स के पिछले कमरे में

आपकी कुर्सी के पास जेसी के स्टूल पर बैठी रही हूँ, आपकी बातें बड़े चाव से सुनती रही हूँ, कभी आपकी बातों की तारीफ करती हूँ तो कभी उनसे असहमत होती हूँ। मुझे लगता है आप एक शानदार यॉर्कशायरवासी हैं, महोदय। मुझे गर्व है कि मेरा जन्म आपके ही ज़िले और इलाके में हुआ है। आप सच्चे, ईमानदार और स्वतंत्र हैं, जैसे समुद्र के नीचे टिकी चट्टान; लेकिन आप कठोर, असभ्य, संकीर्ण और निर्दयी भी हैं।

"गरीबों के लिए नहीं, लड़की, न ही धरती के नम्र लोगों के लिए; केवल अभिमानी और अहंकारी लोगों के लिए।"

“महोदय, आपको इस तरह का भेदभाव करने का क्या अधिकार है? आपसे अधिक अभिमानी, उच्च विचारों वाला व्यक्ति तो कोई है ही नहीं। आप अपने से नीचे वालों से सहजता से बात करते हैं; आप इतने घमंडी, इतने महत्वाकांक्षी और इतने ईर्ष्यालु हैं कि अपने से ऊपर वालों के प्रति शिष्टाचार नहीं दिखा पाते। लेकिन आप सब एक जैसे ही हैं। हेलस्टोन भी अभिमानी और पक्षपाती है। मूर, यद्यपि आपसे या रेक्टर से अधिक न्यायप्रिय और विचारशील है, फिर भी अभिमानी, कठोर और सार्वजनिक रूप से स्वार्थी है। यह सौभाग्य की बात है कि श्री हॉल जैसे लोग कभी-कभार मिल जाते हैं - बड़े और दयालु हृदय वाले लोग, जो अपनी पूरी जाति से प्रेम कर सकते हैं, जो दूसरों को उनके मुकाबले अधिक धनी, अधिक समृद्ध या अधिक शक्तिशाली होने के लिए क्षमा कर सकते हैं। ऐसे लोगों में शायद आपसे कम मौलिकता और कम दृढ़ चरित्र हो, लेकिन वे मानवता के लिए बेहतर मित्र हैं।”

“और यह कब होगा?” श्री योर्क ने उठते हुए कहा।

“क्या बनना है, कब बनना है?”

"शादी।"

“किसकी शादी?”

"केवल रॉबर्ट गेरार्ड मूर, एस्क्वायर, हॉलो कॉटेज के निवासी, और मिस कील्डर, फील्डहेड हॉल के दिवंगत चार्ल्स केव कील्डर की पुत्री और उत्तराधिकारी, का विवाह ही मान्य है।"

शर्ली का चेहरा लाल हो उठा और उसने प्रश्नकर्ता की ओर देखा। लेकिन उसकी आँखों की चमक फीकी नहीं पड़ी; वह लगातार चमक रही थी—हाँ, वह गहराई से जल रही थी।

“यही तुम्हारा बदला है,” उसने धीरे से कहा; फिर बोली, “क्या यह एक बुरा

मुकाबला होगा, जो दिवंगत चार्ल्स केव कील्डर के प्रतिनिधि के योग्य नहीं होगा?”

"मेरी प्रियतमा, मूर एक सज्जन व्यक्ति हैं; उनका रक्त उतना ही शुद्ध और प्राचीन है जितना मेरा या तुम्हारा।"

“और हम दोनों अपने पुराने वंश को महत्व देते हैं? हमें पारिवारिक गौरव है, भले ही हममें से कम से कम एक रिपब्लिकन हो?”

यॉर्क ने उसके सामने झुककर प्रणाम किया। उसके होंठ मौन थे, लेकिन उसकी आँखों में अभियोग के भाव स्पष्ट थे। हाँ, उसमें पारिवारिक गौरव था; यह उसके पूरे हावभाव में झलक रहा था।

“मूर एक सज्जन व्यक्ति हैं,” शर्ली ने प्रसन्नता से सिर उठाते हुए कहा। उसने खुद को रोका। शब्द उसकी ज़बान पर उमड़ रहे थे। वह उन्हें बोलना नहीं चाहती थी; लेकिन उसकी नज़रें उस पल बहुत कुछ कह रही थीं। क्या, यॉर्क ने पढ़ने की कोशिश की, लेकिन पढ़ नहीं पाया। भाषा वहाँ थी, दिखाई दे रही थी, लेकिन अनुवाद योग्य नहीं थी—एक कविता, एक जोशीला गीत, एक अनजान भाषा में। हालाँकि, यह कोई साधारण कहानी नहीं थी, भावनाओं का कोई सरल उफान नहीं था, कोई साधारण प्रेम-स्वीकृति नहीं थी—यह तो स्पष्ट था। यह कुछ और था, गहरा, उससे कहीं अधिक जटिल जितना उसने अनुमान लगाया था। उसे लगा कि उसका बदला कारगर नहीं हुआ है। उसे लगा कि शर्ली विजयी हुई है। उसने उसे दोषी ठहराया, उसे हैरान कर दिया, उसे उलझन में डाल दिया। वह उस पल का आनंद ले रही थी, वह नहीं।

और अगर मूर एक सज्जन व्यक्ति हैं, तो आप केवल एक महिला हो सकती हैं; इसलिए——

इसलिए हमारे संघ में कोई असमानता नहीं होगी।

"कोई नहीं।"

“आपकी स्वीकृति के लिए धन्यवाद। जब मैं कील्डर का नाम छोड़कर मूर का नाम अपना लूंगा, तो क्या आप मुझे विदा करेंगे?”

श्री योर्क ने जवाब देने के बजाय, बड़ी हैरानी से उसकी ओर देखा। वह समझ नहीं पा रहे थे कि उसकी नज़र का क्या अर्थ है—क्या वह गंभीरता से बोल रही है या मज़ाक कर रही है। उसके चेहरे के भावों में उद्देश्य और भावना, हंसी-मज़ाक और उपहास, सब कुछ मिला हुआ था।

“मैं तुम्हें समझ नहीं पा रहा,” उसने मुंह फेरते हुए कहा।

वह हंस पड़ी। “हिम्मत रखिए, महोदय; आप अपनी अज्ञानता में अकेले नहीं हैं। लेकिन मुझे लगता है कि अगर मूर मुझे समझ जाए तो काफी होगा, है ना?”

"मूर आगे से अपने मामले खुद ही सुलझा सकता है; मैं न तो उनमें दखल दूंगा और न ही उनमें और हस्तक्षेप करूंगा।"

उसके मन में एक नया विचार आया। उसका चेहरा जादुई ढंग से बदल गया। आँखों में अचानक गुस्सा भरते हुए और चेहरे पर गंभीर भाव लाते हुए उसने पूछा, "क्या आपको हस्तक्षेप करने के लिए कहा गया है? क्या आप किसी और के प्रतिनिधि के रूप में मुझसे पूछताछ कर रहे हैं?"

भगवान हमारी रक्षा करें! जो भी तुमसे शादी करे, उसे सोच-समझकर फैसला लेना चाहिए! अपने सारे सवाल रॉबर्ट से पूछो; मैं अब उनका जवाब नहीं दूंगा। शुभ दिन, युवती!

दिन सुहाना था, या कम से कम मौसम अच्छा था - क्योंकि नरम बादलों ने सूरज को ढक रखा था, और पहाड़ियों पर एक धुंधली लेकिन ठंडी या पानी जैसी धुंध नहीं थी - कैरोलिन ने, जब शर्ली अपने आगंतुकों के साथ व्यस्त थी, श्रीमती प्रायर को अपनी टोपी और गर्मियों की शॉल पहनने और उसके साथ हॉलो के संकरे छोर की ओर टहलने के लिए राजी कर लिया था।

यहाँ घाटी के विपरीत छोर, एक-दूसरे के करीब आते हुए और झाड़ियों और बौने बलूत के पेड़ों से ढके हुए, एक जंगली दर्रे का निर्माण करते थे, जिसके तल पर चक्की की धारा उबड़-खाबड़, अशांत प्रवाह में बहती थी, कई पत्थरों से जूझती, ऊबड़-खाबड़ किनारों से रगड़ खाती, टेढ़ी-मेढ़ी पेड़ों की जड़ों से उलझती, झाग छोड़ती, कलकल करती, संघर्ष करती हुई आगे बढ़ती थी। यहाँ, जब आप चक्की से आधा मील दूर भटक जाते, तो आपको एक गहरे एकांत का अनुभव होता—यह एकांत में डूबे पेड़ों की छाया में मिलता, कई पक्षियों के चहचहाने में मिलता, जिनके लिए वह छाया घर बना लेती थी। यह कोई घिसा-पिटा रास्ता नहीं था। जंगली फूलों की ताजगी इस बात की गवाही देती थी कि मनुष्य के पैर उन पर शायद ही कभी पड़े हों; प्रचुर मात्रा में उगे जंगली गुलाब ऐसे लगते थे मानो वे एकांत की निगरानी में कलियाँ बनाते, खिलते और मुरझाते हों, मानो किसी सुल्तान के हरम में। यहां आपने नीले रंग के फूलों की मधुर नीली छटा देखी, और घास पर बिखरे हुए मोती जैसे सफेद

फूलों में अंतरिक्ष में किसी तारों से जगमगाते स्थान का एक साधारण सा रूप पहचाना।

श्रीमती प्रायर को शांत सैर पसंद थी। वह हमेशा मुख्य सड़कों से दूर रहती थीं और सुनसान गलियों और संकरे रास्तों की तलाश करती थीं। उन्हें अकेलेपन से बेहतर एक साथी चाहिए था, क्योंकि अकेलेपन में वह घबरा जाती थीं; अप्रिय मुलाकातों का एक अस्पष्ट डर एकांत सैर के आनंद को भंग कर देता था। लेकिन कैरोलीन के साथ उन्हें कोई डर नहीं था। जब वह मानव बस्तियों से दूर निकलकर अपनी इस युवा सहेली के साथ प्रकृति के शांत क्षेत्र में प्रवेश करतीं, तो मानो उनके मन में एक सुखद परिवर्तन आ जाता और उनके चेहरे पर एक अलग ही चमक आ जाती। कैरोलीन के साथ - और केवल कैरोलीन के साथ - ऐसा लगता था मानो उनका दिल बोझ से उतर गया हो, उनके माथे से पर्दा हट गया हो, और उनकी आत्मा भी बंधन से मुक्त हो गई हो। उसके साथ वह खुश रहती थीं; कभी-कभी उसके साथ वह कोमल भी हो जाती थीं; वह उसे अपना ज्ञान देती थीं, अपने अनुभवों की झलकियाँ दिखाती थीं, उसे यह अनुमान लगाने का अवसर देती थीं कि उसने कैसा जीवन जिया है, उसके मन को कैसी शिक्षा मिली है, उसकी बुद्धि किस स्तर की है, और उसकी भावनाएँ कहाँ और कैसे संवेदनशील हैं।

उदाहरण के लिए, आज जब वे साथ चल रही थीं, श्रीमती प्रायर अपनी सहेली से पेड़ों पर चहचहाते विभिन्न पक्षियों के बारे में बात कर रही थीं, उनकी प्रजातियों में अंतर बता रही थीं और उनके रहन-सहन और विशेषताओं के बारे में कुछ कह रही थीं। उन्हें इंग्लैंड का प्राकृतिक इतिहास परिचित लग रहा था। उनके रास्ते के चारों ओर उगने वाले सभी जंगली फूल उन्हें पहचान में आ रहे थे; पत्थरों के पास उगने वाले और पुरानी दीवारों की दरारों से झांकते छोटे-छोटे पौधे—ऐसे पौधे जिन्हें कैरोलीन ने पहले शायद ही कभी देखा था—उन्हें नाम और उनके गुणों की जानकारी मिल गई। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने इंग्लैंड के खेतों और जंगलों की वनस्पति का गहन अध्ययन किया था। घाटी के शीर्ष पर पहुँचकर, वे दोनों एक ऊँची हरी पहाड़ी के आधार से निकली हुई धूसर और काईदार चट्टान की एक कगार पर बैठ गईं, जो उनके ऊपर स्थित थी। उन्होंने अपने चारों ओर देखा और आस-पास के क्षेत्र के बारे में बात की जैसा कि उन्होंने इसे बहुत पहले देखा था। उसने इसके परिवर्तनों का जिक्र किया और इंग्लैंड के अन्य हिस्सों के साथ इसकी तुलना की, वर्णन के शांत, अचेतन स्पर्शों में

एक सुरम्य बोध, सुंदर या सामान्य की सराहना, जंगली की तुलना सुसंस्कृत से, भव्य की तुलना साधारण से करने की क्षमता प्रकट की, जिसने उसके भाषण को एक ऐसा सजीव आकर्षण प्रदान किया जो जितना सुखद था उतना ही सरल भी था।

कैरोलिन जिस श्रद्धापूर्ण आनंद से सुन रही थी—वह भावपूर्ण, शांत और फिर भी स्पष्ट था—उसने उस बुजुर्ग महिला के मन में एक कोमल भावना जागृत कर दी। अपने ठंडे, अरुचिकर बाहरी रूप, संकोची स्वभाव और कम बोलने की आदत के कारण, शायद ही कभी उसने यह अनुभव किया हो कि जिसे वह स्वयं प्यार करती है, उसमें सच्ची स्नेह और प्रशंसा की भावनाएँ जगाना कितना सुखद होता है। निःसंदेह, यह जानकर उसे बहुत आनंद आया कि एक युवती, जिसके प्रति उसकी आँखों और चेहरे के भावों से ऐसा प्रतीत होता था कि उसका हृदय एक स्नेहपूर्ण आवेग से भर गया है, उसे एक गुरु के रूप में देखती है और एक मित्र के रूप में उससे जुड़ी रहती है। अपनी रुचि के लहजे में, जो वह अक्सर इस्तेमाल नहीं करती थी, उसने झुककर अपनी युवा सहेली की ओर देखते हुए कहा, और कंघी से छूटकर माथे से निकली एक हल्की भूरी लट को हटाते हुए बोली, "मुझे उम्मीद है कि पहाड़ी से बहने वाली यह मीठी हवा तुम्हें अच्छी लगेगी, मेरी प्यारी कैरोलीन। काश मैं तुम्हारे गालों में थोड़ा और रंग देख पाती; लेकिन शायद तुम कभी लालिमा से भरी नहीं थीं?"

"एक समय मेरे गाल लाल हुआ करते थे," मिस हेलस्टोन ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "मुझे याद है एक-दो साल पहले, जब मैं शीशे में देखती थी, तो मुझे वहाँ एक अलग चेहरा दिखाई देता था, जो अब मुझे नहीं दिखता — गोल-मटोल और गुलाबी। लेकिन जब हम जवान होते हैं," अठारह साल की लड़की ने आगे कहा, "हमारा मन बेफिक्र होता है और जीवन आसान होता है।"

श्रीमती प्रायर ने बड़ी मुश्किल से उस झिझक को काबू में रखते हुए कहा, "क्या आप अपनी उम्र में भविष्य की चिंताओं से परेशान होती हैं? यकीन मानिए, ऐसा न करना ही बेहतर है। कल की चिंता उसे खुद करने दीजिए।"

"जी हां, महोदया। मुझे भविष्य की चिंता नहीं है। आज की बुराई कभी-कभी बहुत कष्टदायक होती है - हद से ज्यादा - और मैं इससे छुटकारा पाना चाहता हूं।"

"यही तो आज की बुराई है—यही तो शायद आपके चाचा को समझ नहीं आ रहा —आपको यह समझना मुश्किल लग रहा है—वह इसकी कद्र नहीं करते—"

श्रीमती प्रायर अपने अधूरे वाक्यों को पूरा नहीं कर पा रही थीं; वह यह सवाल नहीं

उठा पा रही थीं कि क्या श्री हेलस्टोन अपनी भतीजी के साथ बहुत कठोर व्यवहार कर रहे थे। लेकिन कैरोलीन समझ गई थी।

"अरे, ये तो कुछ भी नहीं है," उसने जवाब दिया। "मेरे चाचा और मैं बहुत अच्छे से रहते हैं। हम कभी झगड़ा नहीं करते—मैं उन्हें कठोर नहीं कहती—वे मुझे कभी डांटते नहीं। कभी-कभी मुझे लगता है कि काश दुनिया में कोई तो मुझसे प्यार करता, लेकिन मैं यह नहीं कह सकती कि मैं उनसे और ज़्यादा स्नेह की कामना करती हूँ। बचपन में शायद मुझे ध्यान की कमी महसूस होती, केवल नौकर ही मेरे प्रति दयालु थे; लेकिन जब लोग लंबे समय तक हमारे प्रति उदासीन रहते हैं, तो हम भी उनकी उदासीनता के प्रति उदासीन हो जाते हैं। मेरे चाचा का स्वभाव है कि वे महिलाओं और लड़कियों की परवाह नहीं करते, सिवाय उन महिलाओं के जिनसे वे किसी सभा में मिलते हैं। वे बदल नहीं सकते, और जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं भी नहीं चाहती कि वे बदलें। मुझे लगता है कि अगर वे अब मेरे प्रति स्नेह दिखाएँगे तो मुझे केवल गुस्सा आएगा और डर लगेगा। लेकिन आप जानती हैं, श्रीमती प्रायर, पादरी के घर में जिस तरह से मैं समय बिताती हूँ, वह जीना नहीं है। घंटे बीत जाते हैं, और मैं उन्हें किसी तरह गुजार लेती हूँ, लेकिन मैं जीती नहीं हूँ। मैं अस्तित्व को सहती हूँ, लेकिन शायद ही कभी उसका आनंद लेती हूँ। जब से मिस कील्डर और आप आई हैं, मैं—मैं कहने ही वाली थी अधिक खुश, लेकिन यह सच नहीं होगा। वह थोड़ी देर रुकी।

"यह कितना झूठ है? तुम मिस कील्डर को पसंद करते हो, है ना, मेरे प्रिय?"

मैं शर्ली को बहुत पसंद करता हूँ। मैं उसे प्यार भी करता हूँ और उसकी प्रशंसा भी करता हूँ। लेकिन मेरी परिस्थितियाँ बहुत कष्टदायक हैं। एक ऐसे कारण से जिसे मैं समझा नहीं सकता, मैं इस जगह से दूर जाना चाहता हूँ और इसे भूल जाना चाहता हूँ।

"तुमने मुझे पहले बताया था कि तुम गवर्नेस बनना चाहती हो; लेकिन, मेरी प्यारी, अगर तुम्हें याद हो, तो मैंने इस विचार को बढ़ावा नहीं दिया था। मैं खुद भी अपने जीवन का अधिकांश समय गवर्नेस के रूप में बिता चुकी हूँ। मिस कील्डर के साथ काम करके मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानती हूँ। उनकी प्रतिभा और उनका वास्तव में मधुर स्वभाव मेरे काम को आसान बना देता है; लेकिन जब मैं जवान थी, शादी से पहले, मेरी मुश्किलें बहुत कठिन और पीड़ादायक थीं। मैं नहीं चाहूँगी कि तुम्हें भी ऐसी ही मुश्किलों का सामना करना पड़े। मेरा भाग्य एक ऐसे परिवार में प्रवेश करना था जो

उच्च कुल और बौद्धिक श्रेष्ठता का दावा करता था, और जिसके सदस्य यह भी मानते थे कि उन पर 'ईसाई गुणों' का एक असाधारण वरदान दिखाई देता है; कि उनके सभी हृदय पुनर्जीवित हैं, और उनकी आत्माएं एक विशेष अनुशासन में हैं। मुझे बचपन से ही यह समझ में आ गया था कि 'चूँकि मैं उनके बराबर नहीं थी,' इसलिए मैं 'उनकी सहानुभूति' की उम्मीद नहीं कर सकती थी। मुझसे यह बात किसी भी तरह से छिपी नहीं थी कि मुझे 'समाज में एक बोझ और बंधन' माना जाता था। मैंने पाया कि सज्जनों, मुझे एक 'वर्जित महिला' माना जाता था, जिसे 'महिलाओं के सामान्य विशेषाधिकार देने से मना किया गया था', और फिर भी 'मैं बार-बार उनके रास्ते में आकर उन्हें परेशान करती थी'। महिलाओं ने भी साफ कह दिया कि वे मुझे 'उबाऊ' समझती थीं। नौकरों के बारे में कहा जाता था कि वे 'मुझसे नफरत करते थे'; क्यों, यह मैं कभी समझ नहीं पाई। मुझे बताया गया कि मेरे विद्यार्थी, 'चाहे वे मुझसे कितना भी प्यार करें, और मैं उनमें कितनी भी गहरी रुचि रखूं, मेरे दोस्त नहीं हो सकते।' यह संकेत दिया गया कि मुझे 'अकेले रहना चाहिए, और उस अदृश्य लेकिन कठोर रेखा को कभी पार नहीं करना चाहिए जो मेरे और मेरे मालिकों के बीच अंतर स्थापित करती है।' इस घर में मेरा जीवन गतिहीन, एकाकी, विवश, आनंदहीन और श्रमसाध्य था। इस स्थिति के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली जीवंतता का भयानक दमन, निरंतर व्याप्त मित्रहीनता और बेघरपन की भावना ने जल्द ही मेरे स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव डालना शुरू कर दिया। मैं बीमार पड़ गई। घर की मालकिन ने मुझे ठंडे लहजे में बताया कि मैं 'घायल' की शिकार थी। 'अहंकार।' उसने संकेत दिया कि अगर मैंने अपनी 'ईश्वर-विरोधी असंतोष' को शांत करने, 'ईश्वर की नियुक्ति के विरुद्ध बड़बड़ाना' बंद करने और अपनी स्थिति के अनुरूप गहरी विनम्रता विकसित करने का प्रयास नहीं किया, तो मेरा मन उस चट्टान पर 'टुकड़े-टुकड़े' हो जाएगा जिसने मेरी अधिकांश सहेलियों को नष्ट कर दिया - अस्वस्थ आत्म-सम्मान - और मैं एक पागलखाने में मर जाऊंगी।

मैंने श्रीमती हार्डमैन से कुछ नहीं कहा—यह व्यर्थ होता; लेकिन एक दिन मैंने उनकी सबसे बड़ी बेटी से कुछ बातें कहीं, जिनका उन्होंने इस प्रकार उत्तर दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि गवर्नेंस के पद में कठिनाइयाँ होती हैं। 'निस्संदेह उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ता था; लेकिन,' उन्होंने उस अंदाज़ में कहा जिसे याद करके अब मुझे हंसी आती है— 'लेकिन ऐसा होना ही चाहिए।' (मिस एच.) 'उनकी

इन समस्याओं के समाधान की न तो कोई दृष्टि थी, न कोई आशा थी, और न ही कोई इच्छा थी; क्योंकि अंग्रेजी आदतों, भावनाओं और पूर्वाग्रहों की अंतर्निहित संरचना में इसकी कोई संभावना ही नहीं थी। गवर्नेंस को,' उन्होंने कहा, 'हमेशा एक प्रकार के एकांत में रखा जाना चाहिए। अंग्रेजी शिष्टाचार और अंग्रेजी परिवारों की मर्यादा के लिए आवश्यक दूरी बनाए रखने का यही एकमात्र तरीका है।'

मुझे याद है कि जब मिस हार्डमैन मेरे बिस्तर के पास से गईं तो मैंने आह भरी। उन्होंने मेरी आह सुनी और मुड़कर सख्ती से कहा, 'मुझे डर है, मिस ग्रे, आपने हमारी पतित प्रकृति का सबसे बुरा पाप - अहंकार का पाप - पूरी तरह से विरासत में पाया है। आप अहंकारी हैं, और इसलिए आप कृतघ्न भी हैं। माँ आपको अच्छा वेतन देती हैं, और यदि आपमें थोड़ी भी समझ होती तो आप कृतज्ञतापूर्वक वह सब कुछ सह लेतीं जो थका देने वाला और कष्टदायक है, क्योंकि यह आपके लिए बहुत ही सार्थक है।'

"मिस हार्डमैन, मेरी प्रियतमा, एक बेहद दृढ़ निश्चयी और विलक्षण प्रतिभाओं से परिपूर्ण युवती थीं। आप जानते हैं, कुलीन वर्ग शारीरिक, नैतिक और मानसिक रूप से सर्वथा श्रेष्ठ होता है; एक कट्टर टोरी होने के नाते मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ। जिस तरह से उन्होंने मुझसे बात की, उनकी आवाज़ और हावभाव की गरिमा का वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकता; फिर भी, मुझे लगता है कि वह स्वार्थी थीं, मेरी प्रियतमा।"

श्रीमती प्रायर ने कुछ देर रुककर आगे कहा, "मुझे मिस एच. की एक और बात याद है, जिसे वह बड़े ही शान से कहा करती थीं। वह कहती थीं, 'हमें कुछ पिताओं की नादानियों, फिजूलखर्चियों, गलतियों और अपराधों की ज़रूरत होती है ताकि हम उन बीज को बो सकें जिनसे हमें गवर्नेंस की फसल मिलती है। व्यापारियों की बेटियाँ, चाहे कितनी भी अच्छी तरह से पढ़ी-लिखी हों, स्वाभाविक रूप से कम संस्कारी होती हैं और इसलिए हमारे घरों में रहने या हमारे बच्चों के मन और व्यक्तित्व की संरक्षक बनने के योग्य नहीं होतीं। हम हमेशा अपने बच्चों के आसपास उन्हीं को रखना पसंद करेंगे जो हमारे जैसी ही शालीनता के साथ पैदा हुए और पले-बढ़े हों।'"

"श्रीमती हार्डमैन स्वयं को अपने साथियों से श्रेष्ठ समझती होंगी, महोदया, क्योंकि उनका मानना था कि उनकी विपत्तियाँ और यहाँ तक कि अपराध भी उनके लाभ के लिए आवश्यक थे। आप कहती हैं कि वह धार्मिक थीं। उनका धर्म उस फरीसी जैसा

रहा होगा जो ईश्वर का धन्यवाद करता था कि वह अन्य मनुष्यों के समान नहीं है, और न ही उस कर वसूलने वाले के समान है।"

मेरी प्यारी, हम इस मुद्दे पर चर्चा नहीं करेंगे। मैं तुम्हें अपने जीवन से असंतुष्टि या अपने वरिष्ठों के प्रति ईर्ष्या या अवज्ञा की भावना पैदा करने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं रखूंगी। अधिकारियों के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता, अपने से श्रेष्ठों के प्रति पूर्ण सम्मान (जिसमें मैं निश्चित रूप से समाज के उच्च वर्गों को शामिल करती हूं), मेरी राय में, हर समुदाय के कल्याण के लिए अपरिहार्य है। मेरी बस यही इच्छा है, मेरी प्यारी, कि तुम गवर्नेंस बनने का प्रयास न करो, क्योंकि इस पद के कर्तव्य तुम्हारे लिए बहुत कठिन होंगे। मैं श्रीमती या मिस हार्डमैन के प्रति एक शब्द भी अनादरपूर्ण नहीं कहूंगी; बस, अपने अनुभव को याद करते हुए, मैं यह महसूस किए बिना नहीं रह सकती कि यदि तुम उनके संरक्षण में होती, तो तुम कुछ समय तक साहसपूर्वक अपने भाग्य का सामना करती, फिर तुम कमजोर पड़ जाती और काम करने में असमर्थ हो जाती; तुम घर लौटती - यदि तुम्हारा घर बचा भी होता - तो पूरी तरह से टूट चुकी होती। उसके बाद वे कष्ट भरे वर्ष आते जिनका अनुभव केवल बीमार और उसके करीबी दोस्त ही कर पाते हैं। हृदय रोग और उसके बोझ को जानो। क्षय रोग या पतन जीवन का अंत कर देंगे। कई जिंदगियों का यही इतिहास रहा है। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारा भी ऐसा ही हो। प्रियतम, अगर तुम चाहो तो अब हम थोड़ी देर टहलेंगे।

वे दोनों उठे और धीरे-धीरे खाई के किनारे स्थित एक हरे-भरे प्राकृतिक चबूतरे पर चलने लगे।

"मेरी प्यारी," श्रीमती प्रायर ने कुछ देर बाद फिर से बोलना शुरू किया, उनके बोलने के तरीके में एक प्रकार की संकोची, शर्मिंदगी भरी जल्दबाजी झलक रही थी, "युवा, विशेषकर वे जिन्हें प्रकृति ने अनुकूल बनाया है, अक्सर शादी को अपने जीवन का अंतिम लक्ष्य मानते हैं।"

और वह रुक गई। कैरोलिन ने तुरंत उसकी मदद की, और इस गंभीर विषय पर उसने कैरोलिन की तुलना में कहीं अधिक संयम और साहस दिखाया।

"हाँ, बिल्कुल," उसने शांत स्वर में उत्तर दिया, जिससे श्रीमती प्रायर चौंक गईं। "वे अपने प्रिय व्यक्ति से विवाह को अपने लिए सबसे उज्ज्वल, एकमात्र उज्ज्वल भविष्य मानती हैं। क्या वे गलत हैं?"

"ओह, मेरी प्यारी!" श्रीमती प्रायर ने हाथ जोड़ते हुए कहा; और फिर रुक गईं।

कैरोलीन ने अपनी सहेली के चेहरे पर गहरी, उत्सुक नज़र डाली: उसका चेहरा बहुत विचलित था। “मेरी प्यारी,” उसने धीरे से कहा, “जीवन एक भ्रम है।”

लेकिन प्यार नहीं! प्यार ही असली है—सबसे असली, सबसे स्थायी, सबसे मधुर और फिर भी सबसे कड़वी चीज जिसे हम जानते हैं।

“मेरे प्रिय, यह बहुत कड़वा है। कहते हैं यह बहुत शक्तिशाली है—मृत्यु के समान शक्तिशाली! जीवन के अधिकांश धोखे शक्तिशाली होते हैं। जहाँ तक उनकी मिठास की बात है, तो कुछ भी इतना क्षणभंगुर नहीं होता; उसका समय एक पल का होता है, पलक झपकते ही बीत जाता है। लेकिन उसका दर्द सदा बना रहता है। यह भले ही अनंत काल के उदय के साथ मिट जाए, लेकिन यह समय के साथ-साथ उसकी सबसे गहरी रात तक पीड़ा देता रहता है।”

“हां, यह समय के साथ पीड़ा देता है,” कैरोलिन ने सहमति जताते हुए कहा, “सिवाय तब जब यह आपसी प्रेम हो।”

“आपसी प्रेम! मेरी प्रियतमा, प्रेम कहानियां हानिकारक होती हैं। आशा है तुम उन्हें नहीं पढ़ती हो?”

"कभी-कभी—जब भी मुझे मौका मिलता है, मैं पढ़ती हूँ। लेकिन प्रेम कहानियों के लेखकों को प्रेम के बारे में शायद कुछ पता ही नहीं होता, जिस तरह से वे प्रेम का वर्णन करते हैं, उससे तो यही लगता है।"

“बिल्कुल नहीं, मेरी प्यारी,” श्रीमती प्रायर ने उत्सुकता से सहमति जताते हुए कहा, “न ही विवाह के बारे में; और इन विषयों पर जो झूठी तस्वीरें पेश की जाती हैं, उनकी कड़ी निंदा की जानी चाहिए। वे वास्तविकता से बिल्कुल अलग हैं। वे आपको केवल दलदल की हरी-भरी, लुभावनी सतह दिखाती हैं, और नीचे की दलदली भूमि का ज़रा भी सच्चा या विश्वसनीय संकेत नहीं देतीं।”

“लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता,” कैरोलीन ने आपत्ति जताते हुए कहा। “खुशहाल विवाह भी होते हैं। जहाँ स्नेह पारस्परिक और सच्चा हो, और मन सामंजस्यपूर्ण हों, वहाँ विवाह सुखी होना चाहिए।”

“यह कभी भी पूरी तरह से सुखद नहीं होता। दो लोग कभी भी सचमुच एक नहीं हो सकते। शायद कुछ विशेष परिस्थितियों में, जो बहुत कम ही देखने को मिलती हैं, संतोष की संभावना हो सकती है; लेकिन बेहतर यही है कि जोखिम न लें—आप घातक गलतियाँ कर सकते हैं। संतुष्ट रहो, प्रिय। सभी अविवाहित लोग अपनी

स्वतंत्रता से संतुष्ट रहें।"

"तुम मेरे चाचा की ही बातें दोहरा रही हो!" कैरोलिन ने निराशा भरे स्वर में कहा। "तुम श्रीमती यॉर्क की तरह सबसे उदास क्षणों में बोल रही हो, मिस मान की तरह जब वह सबसे चिड़चिड़ी और रोग-ग्रस्त होती हैं। यह तो भयानक है!"

"नहीं, यह बिल्कुल सच है। हे बच्चे, तुमने अभी जीवन की सुखद सुबह ही जी है; भीषण, थका देने वाली दोपहर, उदास शाम और सूरजविहीन रात अभी तुम्हारे लिए बाकी हैं। तुम कहते हो कि श्री हेलस्टोन मेरी तरह बोलते हैं; और मुझे आश्चर्य होता है कि अगर श्रीमती मैथ्यूसन हेलस्टोन जीवित होतीं तो वे कैसे बोलतीं। उनकी मृत्यु हो गई! उनकी मृत्यु हो गई!"

"और, हाय! मेरे अपने माता-पिता—" कैरोलीन ने एक दुखद याद से स्तब्ध होकर कहा।

उनका क्या होगा?

"क्या मैंने तुम्हें कभी नहीं बताया कि वे अलग हो गए थे?"

मैंने यह सुना है।

"तो फिर वे बहुत दुखी रहे होंगे।"

आप देख सकते हैं कि सभी तथ्य मेरी बात को साबित करते हैं।

"इस मामले में तो विवाह जैसी कोई चीज ही नहीं होनी चाहिए।"

"मेरे प्रिय, इससे केवल यही सिद्ध होना चाहिए कि यह जीवन मात्र एक परीक्षा की अवस्था है, जिसमें न तो विश्राम मिलता है और न ही कोई प्रतिफल।"

"लेकिन आपका अपना विवाह, श्रीमती प्रायर?"

श्रीमती प्रायर सिहर उठीं और कांप उठीं, मानो किसी कठोर उंगली ने उनकी नंगी नस को दबा दिया हो। कैरोलीन को लगा जैसे उसने किसी ऐसी चीज को छू लिया हो जो जरा सा भी स्पर्श सहन नहीं कर सकती।

"मेरी शादीशुदा जिंदगी खुशहाल नहीं थी," महिला ने आखिरकार हिम्मत जुटाते हुए कहा; "लेकिन फिर भी—" वह हिचकिचाई।

"लेकिन फिर भी," कैरोलिन ने सुझाव दिया, "क्या यह पूरी तरह से दुखद नहीं है?"

"कम से कम इसके परिणामों में तो नहीं। नहीं," उसने नरम स्वर में कहा; "ईश्वर सबसे कष्टदायी दुखों में भी दया का मरहम मिला देता है। वह घटनाओं को इस प्रकार

मोड़ सकता है कि जिस अंधाधुंध, जल्दबाज़ी भरे कृत्य से हमारे आधे जीवन का अभिशाप उत्पन्न हुआ, उसी से शेष जीवन का आशीर्वाद प्राप्त हो सकता है। फिर मैं एक विलक्षण स्वभाव की हूँ—मैं यह स्वीकार करती हूँ—सरल नहीं, अकुशल नहीं, कुछ मामलों में सनकी। मुझे कभी शादी नहीं करनी चाहिए थी। मेरा स्वभाव ऐसा नहीं है कि मुझे आसानी से कोई हमसफ़र मिल जाए या मैं किसी विपरीत स्वभाव वाले व्यक्ति के साथ घुलमिल जाऊँ। मैं अपनी अयोग्यता से भली-भांति अवगत थी; और यदि मैं एक गवर्नेंस के रूप में इतनी दुखी न होती, तो मैं कभी शादी न करती; और फिर—"

कैरोलिन की आँखों ने उसे आगे बढ़ने के लिए कहा। उनकी आँखों ने उससे विनती की कि वह निराशा के उस घने बादल को चीर दे जो उसके पिछले शब्दों ने जीवन पर फैला दिया था।

और फिर, मेरी प्रियतमा, श्रीमान—अर्थात, जिनसे मैंने विवाह किया—शायद एक औसत व्यक्ति से कहीं अधिक असाधारण व्यक्ति थे। मुझे आशा है कि कम ही लोगों का अनुभव मेरे जैसा रहा होगा, या कम ही लोगों ने मेरे जैसी पीड़ा झेली होगी। इसने लगभग मेरे मन को झकझोर दिया था; राहत की कोई उम्मीद नहीं थी, न्याय मिलना लगभग असंभव था। लेकिन, मेरी प्रियतमा, मैं तुम्हें हतोत्साहित नहीं करना चाहती; मैं केवल तुम्हें चेतावनी देना चाहती हूँ, और यह साबित करना चाहती हूँ कि अविवाहित लोगों को अपनी स्थिति बदलने के लिए बहुत उत्सुक नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह स्थिति बदतर हो सकती है।

"धन्यवाद, महोदया। मैं आपकी नेक मंशा को भलीभांति समझता/समझती हूँ, लेकिन मुझे उस गलती में पड़ने का कोई डर नहीं है जिसका आप जिक्र कर रही हैं। कम से कम, मेरे मन में विवाह का कोई विचार नहीं है, और इसी कारण मैं किसी अन्य तरीके से अपनी स्थिति मजबूत करना चाहता/चाहती हूँ।"

"मेरी प्रिय, मेरी बात सुनो। जो मैं कहने जा रहा हूँ, उस पर मैंने बहुत सोच-विचार किया है, वास्तव में जब से तुमने नौकरी पाने की इच्छा जताई है, तब से मैं इस विषय पर विचार कर रहा हूँ। तुम जानती हो कि मैं इस समय मिस कील्डर के साथ साथी के रूप में रहता हूँ। यदि उनकी शादी हो जाती है (और कई परिस्थितियाँ मुझे यही निष्कर्ष निकालने पर मजबूर करती हैं कि उनकी शादी जल्द ही हो जाएगी), तो इस रूप में मेरी उन्हें आवश्यकता नहीं रहेगी। मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि मेरे पास थोड़ी-बहुत

आत्मनिर्भरता है, जो आंशिक रूप से मेरी अपनी बचत से और आंशिक रूप से कुछ वर्ष पहले मुझे मिली विरासत से प्राप्त हुई है। जब भी मैं फील्डहेड छोड़ूँगा, मैं अपना खुद का घर ले लूँगा। मैं अकेले रहना सहन नहीं कर सकता। मेरे कोई रिश्तेदार नहीं हैं जिनसे मैं घनिष्ठ संबंध रखना चाहूँ; क्योंकि, जैसा कि तुमने देखा होगा, और जैसा कि मैंने पहले भी स्वीकार किया है, मेरी आदतें और पसंद अलग-अलग हैं। मेरी प्रिय, तुमसे मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैं तुमसे जुड़ा हुआ हूँ; तुम्हारे साथ मैं किसी भी जीवित प्राणी के साथ रहने से अधिक खुश हूँ" (यह बात उन्होंने विशेष जोर देकर कही)। "तुम्हारा साथ मेरे लिए एक बहुत बड़ा सौभाग्य है—एक अमूल्य सौभाग्य, एक सुकून, एक आशीर्वाद। तो फिर तुम मेरे पास आओगी। कैरोलीन, क्या तुम मुझे अस्वीकार करती हो? मुझे उम्मीद है कि तुम मुझसे प्यार करोगी?"

और इन दो अचानक पूछे गए सवालों के साथ ही वह रुक गई।

"हाँ, मैं तुमसे प्यार करता हूँ," जवाब मिला। "मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ। लेकिन तुम बहुत दयालु हो।"

श्रीमती प्रायर ने आगे कहा, "मेरी सारी संपत्ति मैं तुम्हें दे दूंगी। तुम्हारा भरण-पोषण हो जाएगा। लेकिन फिर कभी यह मत कहना कि मैं बहुत दयालु हूँ। तुमने मेरा दिल छलनी कर दिया है, बच्ची!"

लेकिन, मेरी प्रिय महोदया— इस उदारता पर मेरा कोई अधिकार नहीं है—

चुप रहो! इसके बारे में बात मत करो। कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें हम सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकते। ओह! अब तो बहुत देर हो चुकी है, लेकिन शायद मैं कुछ साल और जी सकूँ। मैं अतीत को कभी मिटा नहीं सकता, लेकिन शायद भविष्य में कुछ पल मेरे हो सकें।

श्रीमती प्रायर बेहद परेशान लग रही थीं। उनकी आँखों में बड़े-बड़े आँसू उमड़ रहे थे और गालों पर बह रहे थे। कैरोलाइन ने उन्हें कोमल और प्यार भरे अंदाज़ में चूमा और धीरे से कहा, "मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ। रोना मत।"

लेकिन महिला का पूरा शरीर कांप उठा। वह बैठ गई, अपना सिर घुटने पर टिका लिया और जोर-जोर से रोने लगी। जब तक उसके भीतर का तूफान शांत नहीं हुआ, तब तक कोई भी उसे सांत्वना नहीं दे सका। अंत में, उसकी पीड़ा अपने आप शांत हो गई।

"बेचारी!" उसने कैरोलिन के चुंबन का जवाब देते हुए धीरे से कहा, "बेचारी

अकेली भेड़! लेकिन आओ," उसने अचानक कहा — "आओ; हमें घर जाना होगा।"

थोड़ी दूर तक श्रीमती प्रायर बहुत तेज़ी से चलीं। हालाँकि, धीरे-धीरे वे शांत हो गईं और अपनी सामान्य चाल में लौट आईं—जो उनकी हर चाल की तरह ही एक अनोखी चाल थी—और जब तक वे फील्डहेड पहुँचे, तब तक वे अपने आप में खो चुकी थीं। बाहर से वे हमेशा की तरह शांत और संकोची लग रही थीं।

अध्याय XXII.

दो जिंदगियां।

मूर की सक्रियता और दृढ़ संकल्प का केवल आधा हिस्सा ही चक्की की रक्षा में दिखाई दिया; उन्होंने दूसरा आधा हिस्सा (और वह भी बेहद भयानक) दंगे के नेताओं का पीछा करने में अथक और निरंतर लगन से दिखाया। भीड़, उनके मात्र अनुयायियों को उन्होंने छोड़ दिया। शायद न्याय की सहज भावना ने उन्हें बताया कि झूठी सलाह से गुमराह और अभावों से त्रस्त लोग प्रतिशोध के योग्य नहीं हैं, और जो पीड़ित के झुके हुए सिर पर भी हिंसात्मक प्रहार करता है, वह अत्याचारी है, न्यायाधीश नहीं। फिर भी, यद्यपि वह उनमें से कई को जानते थे, क्योंकि उन्होंने उन्हें हमले के अंतिम चरण में, जब दिन निकलने लगा था, पहचान लिया था, फिर भी उन्होंने उन्हें बिना किसी चेतावनी या धमकी के प्रतिदिन सड़कों पर अपने पास से गुजरने दिया।

जिन नेताओं को वह नहीं जानता था, वे अजनबी थे—बड़े शहरों से आए दूत। इनमें से अधिकतर श्रमिक वर्ग के सदस्य नहीं थे। वे मुख्यतः दिवालिया, हमेशा कर्ज में डूबे और अक्सर शराब पीने वाले लोग थे, जिनके पास खोने के लिए कुछ नहीं था,

लेकिन चरित्र, धन और ईमानदारी के रूप में पाने के लिए बहुत कुछ था। मूर इन लोगों का किसी खोजी कुत्ते की तरह पीछा करता था, और उसे यह काम बहुत पसंद था। इसका रोमांच उसके स्वभाव को भाता था। उसे कपड़ा बनाने से भी ज्यादा यह काम अच्छा लगता था।

उसके घोड़े को ये दिन ज़रूर नापसंद रहे होंगे, क्योंकि उसे लगातार और बहुत ज़्यादा दौड़ाया जाता था। वह लगभग सड़क पर ही रहता था, और ताज़ी हवा उसके फेफड़ों के लिए उतनी ही सुकून देने वाली थी जितनी पुलिसवाले की तलाशी उसके मिजाज के लिए; वह इसे रंग कारखानों की भाप से बेहतर मानता था। ज़िले के मजिस्ट्रेट उससे ज़रूर डरते होंगे। वे धीमे और डरपोक लोग थे; उसे उन्हें डराना और उकसाना दोनों पसंद था। उसे उन्हें एक खास तरह का डर दिखाना पसंद था, जिससे वे अपने संकल्प में डगमगाते और कार्रवाई से पीछे हटते - सीधे शब्दों में कहें तो, हत्या का डर। दरअसल, यही वह खौफ था जिसने अब तक ज़िले के हर निर्माता और लगभग हर सार्वजनिक व्यक्ति को रोक रखा था। केवल हेलस्टोन ही इसे रोक पाया था। बूढ़ा कोसैक अच्छी तरह जानता था कि उसे गोली मारी जा सकती है। वह जानता था कि जोखिम है; लेकिन ऐसी मौत से उसके मन को कोई डर नहीं था। अगर उसे विकल्प मिलता, तो वह यही चुनता।

मूर भी अपने खतरे को भलीभांति जानता था। इसका परिणाम यह हुआ कि जिस क्षेत्र से ऐसे खतरे की आशंका थी, उसके प्रति उसके मन में घोर घृणा थी। हत्यारों का पीछा करने की चेतना ही उसके दृढ़ निश्चय को और भी बल देती थी। भय की बात करें तो, वह इतना स्वाभिमानी, इतना कठोर स्वभाव का (यदि आप चाहें तो), इतना शांत स्वभाव का व्यक्ति था कि उसे डर ही नहीं लगता था। कई बार वह देर रात तक खुले मैदानों में, चाहे चांदनी हो या अमावस्या, घुड़सवारी करता था, और उसके मन में लेखा-जोखा के सुरक्षित और स्थिर वातावरण की तुलना में कहीं अधिक उत्साह और तरोताजा भाव होता था। चार नेताओं का पता लगाना बाकी था। दो को पखवाड़े भर में स्टिलब्रो के पास घेर लिया गया; शेष दो को और दूर जाकर खोजना पड़ा। माना जाता था कि उनका ठिकाना बर्मिंघम के पास था।

इस बीच, कपड़ा व्यापारी ने अपनी जर्जर चक्की की उपेक्षा नहीं की। इसकी मरम्मत को एक आसान काम समझा गया, केवल बढ़ई और कांच का काम ही आवश्यक था। दंगाइयों के अंदर प्रवेश करने में असफल होने के कारण, उसकी धातु

की कीमती मशीनें - मशीनें - क्षति से बच गई थीं।

इस व्यस्त जीवन के दौरान—चाहे कठोर न्याय और कठिन व्यवसाय ने उनकी ऊर्जा को छीन लिया हो और उनके विचारों को परेशान किया हो—क्या उन्होंने कभी-कभार एक पल दिया हो, एक प्रयास समर्पित किया हो, ताकि वे उन कोमल भावनाओं को जीवित रख सकें जो विनाश के मंदिर में सुलग रही हैं, यह पता लगाना आसान नहीं था। वे शायद ही कभी फील्डहेड के पास जाते थे; यदि जाते भी थे, तो उनकी यात्राएँ संक्षिप्त होती थीं। यदि वे पादरी के निवास पर जाते भी थे, तो केवल उनके अध्ययन कक्ष में पादरी के साथ बैठकें करने के लिए। उन्होंने अपने कठोर मार्ग को अत्यंत दृढ़ता से बनाए रखा। इस बीच, वर्ष का इतिहास उथल-पुथल भरा रहा। युद्ध के तूफान में कोई विराम नहीं था; उसका लंबा बवंडर अभी भी महाद्वीप को अपनी चपेट में लिए हुए था। शांत मौसम का कोई संकेत नहीं था, "युद्ध की धूल और धुएँ के बादलों" के बीच कोई खुलापन नहीं था, जैतून के पेड़ों के लिए सुखद ओस की कोई वर्षा नहीं थी, और उस लाल वर्षा का कोई विराम नहीं था जो विनाशकारी और गौरवशाली लॉरेल को पोषित करती है। इस बीच, मूर के पैरों के नीचे रुइन के सैपर और माइनर काम पर लगे हुए थे, और चाहे वह सवारी करे या पैदल चले, चाहे वह केवल अपने लेखा-गृह के चूल्हे को पार करे या उदास रशएज पर सरपट दौड़े, उसे एक खोखली प्रतिध्वनि का एहसास होता था, और उसे अपने कदमों से जमीन हिलती हुई महसूस होती थी।

इस तरह मूर के साथ ग्रीष्म ऋतु बीत गई, तो शर्ली और कैरोलीन के साथ यह कैसे गुज़री? चलिए पहले उत्तराधिकारी के बारे में बात करते हैं। वह कैसी दिखती है? क्या वह किसी प्रेम में डूबी हुई युवती की तरह है, पीली पड़ी हुई और अपने उपेक्षित प्रेमी के लिए तड़पती हुई? क्या वह दिन भर किसी निष्क्रिय काम में झुकी रहती है? क्या उसके हाथ में हमेशा कोई किताब रहती है, या घुटनों पर सिलाई का काम, और उसकी नज़रें बस उसी पर टिकी रहती हैं, उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं होता, और उसके विचार अनकहे रहते हैं?

बिलकुल नहीं। शर्ली बिल्कुल ठीक है। अगर उसके चेहरे की उदासी अभी भी बरकरार है, तो उसकी बेफिक्र मुस्कान भी गायब नहीं हुई है। वह अपनी हंसमुख उपस्थिति से अपने पुराने, अंधेरे हवेलीनुमा घर को रोशन और जीवंत बनाए रखती है। गैलरी और उसमें खुलने वाले कम छत वाले कमरों में उसकी आवाज़ की गूंज सुनाई

देती है; मंद रोशनी वाले प्रवेश कक्ष में, जिसकी एक ही खिड़की है, रेशमी पोशाक की सरसराहट की सुखद अनुभूति होने लगी है, जब उसे पहनने वाली एक कमरे से दूसरे कमरे में आती-जाती है, कभी फूलों को लेकर उस भव्य आड़ू के फूलों वाले सैलून में जाती है, कभी भोजन कक्ष में जाकर खिड़कियाँ खोलकर मिग्नॉनेट और स्वीट ब्रायर की खुशबू अंदर आने देती है, और फिर सीढ़ियों की खिड़की से पौधे लाकर खुले बरामदे के दरवाजे पर धूप में रख देती है।

वह कभी-कभार ही सिलाई का काम करती है; लेकिन किसी दुर्भाग्यवश, वह पाँच मिनट से अधिक समय तक स्थिर होकर सिलाई नहीं कर पाती। उसकी अंगुली पर अंगुली का आभूषण मुश्किल से ही लगा होता है, सुई में धागा भी मुश्किल से ही डाला होता है कि अचानक एक विचार उसे ऊपर बुला लेता है। शायद वह किसी पुरानी हाथीदांत की जिल्द वाली सिलाई की किताब या चीनी मिट्टी के ढक्कन वाले पुराने वर्कबॉक्स को ढूंढने जाती है, जिसकी उसे अभी-अभी याद आई हो, जिसकी उसे बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं है, लेकिन उस समय वह उसे अपरिहार्य लगती है; शायद अपने बालों को संवारने के लिए, या उस दराज को खोलने के लिए जिसे उसने उस सुबह अजीब सी उलझन में देखा था; शायद बस किसी खास खिड़की से किसी खास दृश्य को देखने के लिए, जहाँ से ब्रायफ़ील्ड चर्च और पादरी का निवास वृक्षों से घिरे सुखद नज़ारों में दिखाई देते हैं। वह मुश्किल से ही लौटी होती है, और कैम्ब्रिक का टुकड़ा या आधा बुना हुआ कैनवास का चौकोर टुकड़ा फिर से उठाती है, तभी बरामदे के दरवाजे पर टार्टर की तेज़ आवाज़ और घुटती हुई सीटी सुनाई देती है, और उसे उसके लिए दरवाजा खोलने के लिए दौड़ना पड़ता है। यह एक गर्म दिन है; वह हाँफते हुए अंदर आता है; उसे उसे रसोई तक ले जाना होगा और अपनी आँखों से देखना होगा कि उसका पानी का कटोरा भर गया है। रसोई के खुले दरवाजे से आंगन दिखाई देता है, जो धूप से जगमगा रहा है, और लोग टर्की और उनके चूजों, मोरनियों और उनके बच्चों, मोती जैसे चमकीले गिनी फाउल और कई तरह के शुद्ध सफेद, बैंगनी गर्दन वाले, नीले और दालचीनी रंग के कबूतरों के साथ हैं। शर्ली के लिए यह एक अनूठा नजारा था! वह एक ब्रेड लेने के लिए पेंट्री की ओर दौड़ती है और दरवाजे की सीढ़ी पर खड़े होकर ब्रेड के टुकड़े बिखेरती है। उसके चारों ओर उसके उत्सुक, गोल-मटोल, खुश पंख वाले साथी जमा हैं। जॉन अस्तबल में है, और उसे जॉन से बात करनी है, और उसकी घोड़ी को देखना है। जब गायें दूध दुहने के लिए आती हैं, तब

भी वह उसे सहला रही होती है। यह महत्वपूर्ण है; शर्ली को रुककर उन सभी का जायजा लेना होगा। शायद कुछ छोटे बछड़े हों, कुछ नए जन्मे मेमने हों - हो सकता है कि जुड़वाँ हों, जिनकी माताओं ने उन्हें अस्वीकार कर दिया हो। जॉन को मिस कील्डर से उनका परिचय कराना होगा, और उन्हें अपने कुशल सहायक के मार्गदर्शन में अपने हाथों से उन्हें भोजन कराने का अवसर देना होगा। इसी बीच जॉन कुछ "क्रॉफ्ट्स", "इंग्स" और "होम्स" की खेती के बारे में संदेह भरे सवाल उठाता है, और उसकी मालकिन को अपनी बगीचे की टोपी - एक जिप्सी स्ट्रॉ - लाकर उसके साथ बाड़ के ऊपर से और हेजरो के किनारे-किनारे जाना पड़ता है, ताकि वह मौके पर ही उन "क्रॉफ्ट्स", "इंग्स" और "होम्स" को अपनी निगरानी में रखते हुए पूरे कृषि मामले का निष्कर्ष सुन सके। इस प्रकार सुहाना दोपहर धीरे-धीरे शाम में बदल जाता है, और वह देर से चाय पीने के लिए घर आती है, और चाय के बाद वह कभी सिलाई नहीं करती।

चाय के बाद शर्ली पढ़ती है, और वह अपनी किताब से उतनी ही लगन से चिपकी रहती है जितनी कि अपनी सुई से। उसका अध्ययन कक्ष गलीचा है, उसका आसन एक पायदान है, या शायद श्रीमती प्रायर के पैरों के पास का कालीन ही है: बचपन में उसने हमेशा वहीं से पढ़ाई की थी, और पुरानी आदतें उस पर बहुत हावी हैं। तातार का सांवला और शेर जैसा भारी शरीर हमेशा उसके बगल में फैला रहता है, उसका नीग्रो थूथन उसके अगले पंजों पर टिका रहता है - सीधे, मजबूत और सुडौल, जैसे किसी पहाड़ी भेड़िये के अंग। मालकिन का एक हाथ आमतौर पर उस प्यारे दास के खुरदुरे सिर पर टिका रहता है, क्योंकि अगर वह हाथ हटाती है तो वह कराहता है और असंतुष्ट हो जाता है। शर्ली का मन अपनी किताब में डूबा रहता है। वह अपनी आँखें नहीं उठाती; वह न हिलती है और न बोलती है - सिवाय इसके कि श्रीमती प्रायर को संक्षिप्त और सम्मानजनक उत्तर दे, जो कभी-कभी उसके लिए अपमानजनक शब्द बोलती हैं।

"मेरी प्यारी, बेहतर होगा कि तुम उस बड़े कुत्ते को अपने इतने पास न रखो; वह तुम्हारी पोशाक के किनारे को कुचल रहा है।"

“अरे, ये तो सिर्फ मलमल का कपड़ा है। मैं कल एक साफ कपड़ा पहन लूंगी।”

"मेरी प्यारी, काश तुम पढ़ते समय मेज पर बैठने की आदत डाल पाती।"

"मैं कभी न कभी कोशिश करूंगा, महोदया; लेकिन हमेशा की तरह वही करना ज्यादा आरामदायक होता है।"

“मेरी प्यारी, मैं तुमसे विनती करती हूँ कि वह किताब नीचे रख दो। तुम इस धुंधली रोशनी में अपनी आँखें थका रही हो।”

"नहीं महोदया, बिल्कुल नहीं; मेरी आंखें कभी नहीं थकतीं।"

अंततः, खिड़की से पन्ने पर हल्की रोशनी पड़ती है। वह देखती है; चाँद निकल आया है। वह किताब बंद करती है, उठती है और कमरे में टहलती है। शायद उसकी किताब अच्छी रही है; इसने उसके दिल को तरोताज़ा, फिर से जीवंत और गर्म कर दिया है; इसने उसके दिमाग को झकझोर दिया है, उसके मन को चित्रों से भर दिया है। शांत बैठक, साफ चूल्हा, गोधूलि आकाश की ओर खुलती खिड़की, जिसमें उसका "सुंदर राजा" नए सिंहासन पर विराजमान और शानदार दिखाई दे रहा है, ये सब शर्ली के लिए धरती को स्वर्ग और जीवन को कविता बना देते हैं। उसकी युवा नसों में एक शांत, गहरा, सहज आनंद चमक रहा है, जो अछूता, निर्मल है, जिसे मानवीय हस्तक्षेप से छुआ या नष्ट नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह किसी मानवीय हस्तक्षेप से नहीं दिया गया है - ईश्वर का अपने प्राणी को दिया गया शुद्ध उपहार, प्रकृति का अपने बच्चे को दिया गया निस्वार्थ वरदान। यह आनंद उसे एक दिव्य जीवन का अनुभव कराता है। हरे-भरे रास्तों और आनंदमय पहाड़ियों से गुज़रते हुए, चारों ओर हरियाली और प्रकाश से परिपूर्ण, वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचती है जो उस स्थान से थोड़ा ही नीचे है जहाँ से देवदूत बेथेल के स्वप्नद्रष्टा को देख रहे थे। उसकी आँखें जीवन के उस दर्शन को खोजती हैं और उसकी आत्मा उसे प्राप्त कर लेती है जैसा वह चाहती है। नहीं, जैसा वह चाहती है वैसा नहीं; उसके पास चाहने का समय ही नहीं है। तीव्र वैभव फैलता है, बहता है और प्रज्वलित करता है, और अपनी भव्यता को इतनी तेज़ी से बढ़ाता है कि विचार अपने संयोजन भी नहीं कर पाते, आकांक्षा अपनी इच्छाओं को व्यक्त भी नहीं कर पाती। जब तक वह समाधि की अवस्था में होती है, शर्ली कुछ नहीं कहती—वह बिल्कुल मौन रहती है; लेकिन अगर श्रीमती प्रायर अब उससे बात करती हैं, तो वह चुपचाप बाहर चली जाती है और धुंधली गैलरी में ऊपर की ओर अपना चलना जारी रखती है।

अगर शर्ली आलसी, लापरवाह और अज्ञानी न होती, तो ऐसे क्षणों में, या कम से कम जब तक वे क्षण उसके मन में ताज़ा होते, वह कलम उठा लेती। वह उस दृश्य को पकड़ लेती, उसे संजो लेती, उस दर्शन को लिख देती जो उसे प्रकट हुआ था। अगर उसके दिमाग में थोड़ी सी भी लालच की भावना होती, उसके स्वभाव में संपत्ति के

प्रति थोड़ा सा भी प्रेम होता, तो वह एक बड़े कागज़ पर अपनी विचित्र लेकिन स्पष्ट और सुपाठ्य लिखावट में, सुनाई गई कहानी, गाए गए गीत को साफ-साफ लिख देती और इस तरह अपनी रचना को अपना बना लेती। लेकिन वह आलसी है, लापरवाह है और घोर अज्ञानी है; क्योंकि वह नहीं जानती कि उसके सपने दुर्लभ हैं, उसकी भावनाएँ अनोखी हैं। वह नहीं जानती, कभी नहीं जानी, और बिना जाने ही मर जाएगी, उस झरने का पूरा मूल्य जिसकी उज्ज्वल, ताज़ी कलकल उसके हृदय को हरा-भरा रखती है।

शर्ली जीवन को सहजता से लेती है। क्या यह बात उसकी आँखों में नहीं झलकती? क्या उसके शांत स्वभाव में उसकी आँखें उतनी ही कोमल और सुकून भरी नहीं होतीं, जितनी कि उसके क्रोध के क्षणों में वह प्रचंड आग की तरह चमक उठती है? उसका स्वभाव उसकी आँखों में झलकता है। जब तक वह शांत रहती है, आलस्य, भोग-विलास, विनोद और कोमलता उस विशाल धूसर आँख में समाई रहती हैं; उसे क्रोधित करो, ओस को चीरती हुई एक लाल किरण निकलती है और पल भर में आग का गोला बन जाती है।

जुलाई का महीना बीतने से पहले, मिस कील्डर शायद कैरोलिन के साथ उस उत्तरी यात्रा पर निकल चुकी होतीं, जिसकी उन्होंने योजना बनाई थी; लेकिन ठीक उसी समय फील्डहेड पर आक्रमण हो गया। एक सभ्य समूह ने शर्ली को उसके महल में घेर लिया और उसे आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर दिया। दक्षिण से एक चाचा, एक चाची और दो चचेरी बहनें - सिम्पसन ग्रोव के एक श्रीमान, एक श्रीमती और दो मिस सिम्पसन - शाही अंदाज में उसके पास पहुँचे। आतिथ्य सत्कार के नियमों के अनुसार उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा, जिसे उसने इतनी आसानी से स्वीकार कर लिया कि कैरोलिन थोड़ी हैरान रह गई, क्योंकि वह जानती थी कि वह अपनी इच्छा पूरी करने के लिए तुरंत कार्रवाई करती है और हर संभव प्रयास में निपुण रहती है। मिस हेलस्टोन ने उससे यह भी पूछा कि उसने इतनी आसानी से आत्मसमर्पण कैसे कर दिया। उसने उत्तर दिया, पुरानी भावनाएँ अपना प्रभाव रखती हैं; उसने अपनी युवावस्था के दो साल सिम्पसन ग्रोव में बिताए थे।

“उसे अपने रिश्तेदार कैसे लगते थे?”

उसने जवाब दिया कि उसका उनसे कोई लेना-देना नहीं था। दरअसल, परिवार का इकलौता बेटा छोटा हैरी सिम्पसन अपनी बहनों से बिल्कुल अलग था, और वह पहले

उसे बहुत पसंद करती थी; लेकिन वह यॉर्कशायर नहीं आ रहा था - कम से कम अभी तो नहीं।

अगले रविवार को ब्रायर्फ़ील्ड चर्च के फ़ील्डहेड बेंच पर एक सलीकेदार, चुस्त-दुरुस्त, बुज़ुर्ग सज्जन बैठे थे, जो हर तीन मिनट में अपना चश्मा ठीक करते और अपनी जगह बदलते रहते थे; भूरे साटन के वस्त्र पहने एक धैर्यवान, शांत दिखने वाली बुज़ुर्ग महिला; और सलीकेदार पोशाक और सलीकेदार व्यवहार वाली दो युवतियाँ भी बैठी थीं। इस समूह के बीच शर्ली एक काले हंस या सफेद कौवे जैसी लग रही थी और उसका चेहरा बेहद उदास था। उसे सभ्य समाज में लाकर, हम उसे कुछ समय के लिए यहीं छोड़ देंगे और मिस हेलस्टोन का ख्याल रखेंगे।

फिलहाल मिस कील्डर से अलग होकर, क्योंकि वह अपने संभ्रांत रिश्तेदारों के बीच उन्हें ढूंढ नहीं पा रही थी, जो नए मेहमानों के आने से मची हलचल के कारण फील्डहेड से भाग गए थे, कैरोलिन एक बार फिर से धूसर पादरी के निवास तक ही सीमित रह गई थी। वह सुनसान पगडंडियों पर सुबह की अकेली सैर करती, दोपहर ढलते सूरज के नीचे छिपे शांत कमरे में लंबी, एकाकी दोपहर बिताती, या बगीचे के उस कोने में बैठती जहाँ उसकी चमक तेज, फिर भी उदास, बेलों पर चढ़ी पकती लाल करौंदे की बेलों और उनके बीच लिपटे सुंदर मासिक गुलाबों पर पड़ती थी, और उनके बीच से छनकर कैरोलिन पर पड़ती थी, जो अपनी सफेद गर्मियों की पोशाक में बगीचे की मूर्ति की तरह स्थिर बैठी थी। वहाँ वह अपने चाचा के पुस्तकालय से लाई पुरानी किताबें पढ़ती थी। ग्रीक और लैटिन भाषाएँ उसके किसी काम की नहीं थीं, और उसके हल्के-फुल्के साहित्य का संग्रह मुख्य रूप से उसकी चाची मैरी की अलमारी में रखा था—कुछ पुरानी लेडीज़ मैगज़ीन, जो कभी अपनी मालकिन के साथ समुद्री यात्रा पर गई थीं, तूफ़ान का सामना कर चुकी थीं, और जिनके पन्ने खारे पानी से सने हुए थे; कुछ सनकी मेथोडिस्ट मैगज़ीन, जो चमत्कारों और प्रेत-दर्शनों, अलौकिक चेतावनियों, अशुभ सपनों और उन्मादी कट्टरता से भरी थीं; श्रीमती एलिज़ाबेथ रोवे के मृतकों से जीवितों को लिखे गए उतने ही सनकी पत्र; कुछ पुरानी अंग्रेज़ी क्लासिक्स। बचपन में कैरोलीन ने इन मुरझाए फूलों से शहद निकाला था; अब ये उसके लिए बेस्वाद थे। बदलाव के तौर पर, और कुछ अच्छा करने के लिए भी, वह सिलाई करती—अच्छी मिस ऐनली के निर्देशानुसार गरीबों के लिए कपड़े सिलती। कभी-कभी, जब वह अपने काम पर धीरे-धीरे गिरते आँसुओं को महसूस करती और देखती, तो वह

सोचती कि जिस नेक महिला ने उसके लिए कपड़े काटे और सजाए थे, वह अपने एकांत में इतनी शांत और स्थिर कैसे रह पाती थी।

"मैंने मिस ऐनली को कभी भी निराशा से ग्रस्त या शोक में डूबी हुई नहीं पाया," उसने सोचा; फिर भी उसकी कुटिया एक शांत, धुंधली सी छोटी सी जगह है, और दुनिया में उसके पास कोई उज्ज्वल आशा या करीबी दोस्त नहीं है। मुझे याद है, उसने एक बार मुझसे कहा था कि उसने अपने विचारों को स्वर्ग की ओर उन्मुख करना सीख लिया है। उसने माना कि इस दुनिया में उसके लिए बहुत कम आनंद है, और शायद वह आने वाली दुनिया के सुख की ओर देख रही है। ननें भी ऐसा ही करती हैं, अपनी तंग कोठरी, लोहे के दीपक, कफ़न जैसे कसे हुए वस्त्र और ताबूत जैसे संकरे बिस्तर के साथ। वह अक्सर कहती है कि उसे मृत्यु का कोई भय नहीं है - कब्र का कोई डर नहीं है; निस्संदेह, सेंट सिमियन स्टाइलिट्स को भी इतना ही भय नहीं था, जिन्हें जंगल में उनके विशाल स्तंभ पर भयानक रूप से ऊपर उठाया गया था; न ही उस हिंदू भक्त को, जो लोहे की कीलों वाले पलंग पर लेटा हुआ है। इन दोनों ने प्रकृति का उल्लंघन किया है, इसलिए उनकी स्वाभाविक पसंद और नापसंद उलट गई हैं; वे पूरी तरह से रोगग्रस्त हो गए हैं। मुझे अभी भी मृत्यु से डर लगता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह इसलिए है क्योंकि मैं अभी जवान हूँ। बेचारी मिस ऐनली जीवन से और अधिक जुड़ी रहतीं अगर जीवन में उनके लिए और अधिक आकर्षण होते। ईश्वर ने हमें केवल मृत्यु की कामना करने के उद्देश्य से तो नहीं बनाया और न ही हमें ऐसा जीवन दिया। मैं हृदय से मानता हूँ कि हमारा उद्देश्य जीवन का महत्व समझना और जब तक यह हमारे पास है, इसका आनंद लेना था। अस्तित्व का मूल उद्देश्य कभी भी वह निरर्थक, खाली, नीरस और धीमी गति से चलने वाली वस्तु नहीं था जो अक्सर कई लोगों के लिए बन जाता है, और मेरे साथ-साथ बाकी लोगों के लिए भी बन रहा है।

"कोई नहीं," वह आगे बोलीं— "मेरी नज़र में, इस स्थिति के लिए कोई विशेष रूप से ज़िम्मेदार नहीं है; और मैं चाहे कितना भी सोच-विचार कर लूँ, यह नहीं बता सकती कि इन्हें बेहतर कैसे बनाया जा सकता है; लेकिन मुझे लगता है कि कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है। मेरा मानना है कि अविवाहित महिलाओं को और अधिक काम मिलना चाहिए—उन्हें अभी की तुलना में अधिक रुचिकर और लाभदायक रोज़गार के बेहतर अवसर मिलने चाहिए। और जब मैं ऐसा बोलती हूँ, तो मुझे ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि मैं अपने शब्दों से ईश्वर को नाराज़ कर रही हूँ; न ही मैं अधर्मी या अधीर, न ही

धर्महीन या धर्म-विरोधी हूँ। मेरा संतोष तो यही है कि ईश्वर अनेक आहें सुनता है और अनेक दु:खों पर दया करता है, जिन्हें मनुष्य अनसुना कर देता है या नपुंसक तिरस्कार से देखता है। मैं नपुंसक इसलिए कह रही हूँ, क्योंकि मैंने देखा है कि समाज जिन शिकायतों का आसानी से समाधान नहीं कर सकता, उन्हें कहने से मना कर देता है, क्योंकि ऐसा करने पर वह तिरस्कार का सामना करता है, और यह तिरस्कार तो उसकी कुरूप कमज़ोरी को छुपाने का एक दिखावा मात्र है। लोग उन बुराइयों की याद दिलाए जाने से नफ़रत करते हैं जिनका वे समाधान करने में असमर्थ या अनिच्छुक होते हैं। इस तरह की याद दिलाना, उन पर अपनी अक्षमता का बोध थोपना, या किसी अप्रिय प्रयास को करने के दायित्व का अधिक कष्टदायक बोध कराना, उनकी शांति भंग करता है और उनके आत्मसंतुष्टि को झकझोर देता है। बूढ़ी कुंवारी महिलाओं को, बेघर और बेरोजगार गरीबों की तरह, दुनिया में जगह और काम नहीं मांगना चाहिए; यह मांग सुखी और धनी लोगों को भी परेशान करती है—यह माता-पिता को भी परेशान करती है। इस पड़ोस में लड़कियों के कई परिवारों को देखिए—आर्मिटेज, बर्टविस्टल, साइक्स। इन लड़कियों के सभी भाई व्यवसाय या पेशे में हैं; उनके पास कुछ न कुछ काम है। उनकी बहनों के पास घरेलू काम और सिलाई के अलावा कोई सांसारिक रोजगार नहीं है, व्यर्थ की मुलाकातों के अलावा कोई सांसारिक सुख नहीं है, और अपने पूरे जीवन में बेहतर की कोई आशा नहीं है। चीजों की यह स्थिर स्थिति उनके स्वास्थ्य को खराब कर देती है। वे कभी स्वस्थ नहीं रहतीं, और उनके मन और विचार आश्चर्यजनक रूप से संकीर्ण हो जाते हैं। उनमें से प्रत्येक की सबसे बड़ी इच्छा, एकमात्र लक्ष्य शादी करना है, लेकिन अधिकांश कभी शादी नहीं करेंगी; वे जैसे जी रही हैं वैसे ही मर जाएंगी। वे योजनाएँ बनाती हैं, साजिशें रचती हैं, सजती-संवरती हैं स्त्रियाँ पतियों को फंसा लेती हैं। सज्जन पुरुष उनका उपहास उड़ाते हैं; वे उन्हें नहीं चाहते; वे उन्हें बहुत तुच्छ समझते हैं। वे कहते हैं—मैंने उन्हें कई बार उपहास भरी हंसी के साथ कहते सुना है—कि वैवाहिक बाजार में बहुत अधिक स्त्रियाँ हैं। पिता भी ऐसा ही कहते हैं, और जब वे अपनी बेटियों की चालें देखते हैं तो उन पर गुस्सा करते हैं—वे उन्हें घर पर रहने का आदेश देते हैं। वे उनसे घर पर क्या करने की अपेक्षा करते हैं? यदि आप पूछें, तो वे उत्तर देंगे, सिलाई और खाना बनाना। वे उनसे यही अपेक्षा करते हैं, और केवल यही, संतुष्ट होकर, नियमित रूप से, बिना शिकायत किए, जीवन भर, मानो उनमें किसी और चीज के लिए कोई क्षमता ही न हो—यह मानना उतना ही

तर्कसंगत है जितना यह मानना कि पिताओं के पास अपनी बेटियों द्वारा पकाए गए भोजन को खाने या उनके द्वारा सिले गए कपड़े पहनने के अलावा कोई क्षमता नहीं है। क्या पुरुष स्वयं इस प्रकार जी सकते हैं? क्या वे बहुत थक नहीं जाएंगे? और जब उनकी थकान दूर नहीं होगी, बल्कि जरा सी भी अभिव्यक्ति पर केवल निंदा ही मिलेगी, तो क्या उनकी थकान समय के साथ उन्माद में परिवर्तित नहीं हो जाएगी? लुक्रेटिया सूत कात रही है। आधी रात को अपनी दासियों के बीच, और सुलेमान की सदाचारी स्त्रियों को अक्सर इस बात के आदर्श के रूप में उद्धृत किया जाता है कि 'स्त्री जाति' कैसी होनी चाहिए। मुझे नहीं पता। मैं कह सकती हूँ कि ल्यूक्रेटिया एक बहुत ही नेक इंसान थीं, मेरी चचेरी बहन हॉर्टेंस मूर की तरह; लेकिन वह अपनी नौकरानियों को बहुत देर तक जगाए रखती थीं। मैं उन दासियों में शामिल होना पसंद नहीं करती। अगर हॉर्टेंस कर सकतीं, तो वह मुझे और सारा को भी उसी तरह काम करवातीं, और हम दोनों में से कोई भी इसे सहन नहीं कर पाती। फिर से, 'सदाचारी स्त्री' अपने घरवालों को आधी रात तक जगाए रखती थीं; जैसा कि श्रीमती साइक्स कहती हैं, वह सुबह एक बजे से पहले ही नाश्ता तैयार कर लेती थीं; लेकिन उनके पास सूत कातने और परोसने के अलावा भी बहुत काम था। वह एक निर्माता थीं - वह बढ़िया लिनेन बनाती और बेचती थीं; वह एक कृषक थीं - वह जागीरें खरीदती थीं और अंगूर के बाग लगाती थीं। वह महिला एक कुशल प्रबंधक थीं। यहाँ की महिलाएं उन्हें 'एक चतुर महिला' कहती हैं। कुल मिलाकर, मैं मुझे वो ल्यूक्रेटिया से कहीं ज़्यादा पसंद है; लेकिन मुझे नहीं लगता कि मिस्टर आर्मिटेज या मिस्टर साइक्स सौदे में उससे बेहतर प्रदर्शन कर पाते। फिर भी मुझे वो पसंद है। 'शक्ति और सम्मान उसके वस्त्र थे; उसके पति का हृदय उस पर पूरी तरह से भरोसा करता था। उसने ज्ञान से भरी बातें कहीं; उसकी ज़ुबान में दया का भाव था; उसके बच्चे उठ खड़े हुए और उसे धन्य कहा; उसके पति ने भी उसकी प्रशंसा की।' हे इस्राएल के राजा! आपकी स्त्री का आदर्श एक सराहनीय आदर्श है! लेकिन क्या हम, इन दिनों, उसके समान बनने के लिए पाले-पोसे जा रहे हैं? यॉर्कशायर के पुरुषों! क्या आपकी बेटियाँ इस शाही स्तर तक पहुँचती हैं? क्या वे पहुँच सकती हैं? क्या आप उन्हें पहुँचने में मदद कर सकते हैं? क्या आप उन्हें ऐसा क्षेत्र दे सकते हैं जिसमें उनकी प्रतिभा का विकास हो सके? इंग्लैंड के पुरुषों! अपनी बेचारी लड़कियों को देखिए, उनमें से कई आपके आस-पास मुरझा रही हैं, तपेदिक या कमज़ोरी से मर रही हैं; या, इससे भी बदतर, ईर्ष्यालु,

चुगली करने वाली, दुखी बूढ़ी कुंवारी बन रही हैं, क्योंकि जीवन उनके लिए रेगिस्तान है; या, सबसे बुरा, संघर्ष करने के लिए मजबूर हो रही हैं, विवाह के माध्यम से वह पद और सम्मान प्राप्त करने के लिए, जो ब्रह्मचर्य में नहीं मिलता, वे नज़ाकत भरी नखरेबाज़ी और नीच छल-कपट का सहारा लेते हैं। हे पिताओ! क्या आप इन बातों को नहीं बदल सकते? शायद एक साथ नहीं; लेकिन जब यह मामला आपके सामने आए, तो इस पर अच्छी तरह विचार करें, इसे चिंतन के योग्य विषय के रूप में स्वीकार करें; इसे व्यर्थ के मजाक या कायरतापूर्ण अपमान से खारिज न करें। आप अपनी बेटियों पर गर्व करना चाहेंगे, न कि उनके लिए शर्मिंदा होना; तो उनके लिए कोई ऐसा काम और रुचि खोजें जो उन्हें नखरेबाज़, चालाक और चुगली करने वाली लड़कियों से ऊपर उठाए। अपनी बेटियों के दिमाग को संकीर्ण और बंधनों में बांधे रखें; वे फिर भी आपके लिए मुसीबत और चिंता का विषय, कभी-कभी शर्मिंदगी का कारण बनेंगी। उनका पालन-पोषण करें - उन्हें अवसर और काम दें; वे स्वास्थ्य में आपकी सबसे खुशमिजाज साथी, बीमारी में आपकी सबसे कोमल देखभाल करने वाली और बुढ़ापे में आपकी सबसे वफादार सहारा बनेंगी।

अध्याय XXIII.

शाम को बाहर घूमने जाना।

एक सुहावने गर्मी के दिन, जब कैरोलीन पूरी तरह अकेली थी (उसके चाचा व्हिनबरी में थे), और जिसके लंबे, चमकीले, शांत, हवा रहित, बादल रहित घंटे (सूर्योदय के बाद से कितने लंबे लग रहे थे!) उसके लिए इतने वीरान थे मानो वे सहारा के

छायाहीन और पथहीन रेगिस्तान में उसके सिर के ऊपर से गुजर रहे हों, न कि किसी अंग्रेजी घर के खिलते हुए बगीचे में, वह आले में बैठी थी - उसका काम उसके घुटने पर था, उसकी उंगलियां लगन से सुई चला रही थीं, उसकी आंखें उनकी गतिविधियों का अनुसरण और विनियमन कर रही थीं, उसका दिमाग बेचैनी से काम कर रहा था - तभी फैनी दरवाजे पर आई, लॉन और किनारों पर चारों ओर देखा, और जिसे वह ढूंढ रही थी उसे न देखकर, पुकारा, "मिस कैरोलीन!"

एक धीमी आवाज़ ने जवाब दिया, "फैनी!" यह आले से आई थी, और फैनी तेज़ी से वहाँ पहुँची, उसके हाथ में एक नोट था, जिसे उसने उन उंगलियों को थमा दिया जिनमें उसे थामे रखने की शायद ही हिम्मत थी। मिस हेलस्टोन ने यह नहीं पूछा कि यह कहाँ से आया, और न ही उन्होंने इसे देखा; उन्होंने इसे अपने काम की तहों के बीच गिरा दिया।

“इसे जो स्कॉट का बेटा हैरी लाया था,” फैनी ने कहा।

वह लड़की कोई जादूगरनी नहीं थी और न ही उसे कोई जादू आता था; फिर भी उसकी कही बातों का उसकी युवा मालकिन पर लगभग जादुई असर हुआ। जैसे ही उसे होश आया, उसने तेज़ी से अपना सिर उठाया; उसने फैनी की ओर सुस्त नहीं, बल्कि सजीव और प्रश्नवाचक दृष्टि डाली।

“हैरी स्कॉट! उसे किसने भेजा?”

वह खोखले स्थान से आया था।

गिरा हुआ नोट तुरंत उठा लिया गया, सील टूट गई और दो सेकंड में पढ़ लिया गया। हॉर्टेंस का स्नेहपूर्ण पत्र, जिसमें उसने अपनी युवा चचेरी बहन को बताया कि वह वॉर्मवुड वेल्स से लौट आई है; कि आज वह अकेली है, क्योंकि रॉबर्ट व्हिनबरी बाजार गया है; कि कैरोलिन के साथ चाय पीने से उसे बहुत खुशी होगी, और उस भली महिला ने आगे कहा कि उसे पूरा विश्वास है कि यह बदलाव कैरोलिन के लिए बहुत सुखद और फायदेमंद होगा, जो रॉबर्ट और मिस्टर हेलस्टोन के बीच गलतफहमी के कारण अपनी "सबसे अच्छी दोस्त, हॉर्टेंस गेरार्ड मूर" से अलग होने के बाद से सुरक्षित मार्गदर्शन और अच्छे समाज के अभाव में बहुत दुखी होगी। अंत में, उसे अपना बोनट पहनकर तुरंत नीचे आने के लिए कहा गया।

कैरोलीन को किसी आदेश की ज़रूरत नहीं थी। वह यहूदी टोकरी के लिए जिस भूरे रंग की हॉलैंड चाइल्ड स्लिप को सजा रही थी, उसे एक तरफ रखकर, जल्दी से

ऊपर जाने, अपने घुंघराले बालों को अपने स्ट्रॉ बोनट से ढकने और अपने कंधों पर काले रेशमी स्कार्फ को डालने में प्रसन्न थी, जिसका सरल आवरण उसके शरीर पर उतना ही अच्छा लग रहा था जितना कि उसका गहरा रंग उसके वस्त्र की पवित्रता और उसके चेहरे की सुंदरता को निखार रहा था; वह कुछ घंटों के लिए अपने जीवन के एकांत, उदासी और दुःस्वप्न से बचने में प्रसन्न थी; हॉलो की ओर ढलान वाली हरी पगडंडी पर दौड़ने और काई-गुलाब या लिली की सुगंध से भी मीठी झाड़ी के फूलों की खुशबू को महसूस करने में प्रसन्न थी। सच है, वह जानती थी कि रॉबर्ट कुटिया में नहीं था; लेकिन उस जगह जाना जहाँ वह हाल ही में गया था, उसे बहुत खुशी दे रहा था। इतने लंबे समय तक, उससे पूरी तरह अलग रहने के बाद, केवल उसका घर देखना, उस कमरे में प्रवेश करना जहाँ वह उस सुबह बैठा था, एक पुनर्मिलन जैसा लगा। इस तरह इसने उसे पुनर्जीवित कर दिया; और फिर भ्रम एक बार फिर पेरी मास्क में उसका पीछा करने लगा। पंखों की कोमल फड़फड़ाहट ने उसके गालों को सहलाया, और नीले ग्रीष्म आकाश से आती हवा में एक फुसफुसाती आवाज सुनाई दी, "हो सकता है जब तुम रॉबर्ट के घर में हो, तब वह घर आ जाए, और तब, कम से कम, तुम उसका चेहरा देख सकोगी - कम से कम तुम उसे अपना हाथ दे सकोगी; शायद, एक पल के लिए, तुम उसके बगल में बैठ सकोगी।"

"चुप रहो!" यह उसका कठोर जवाब था; लेकिन उसे दिलासा और सांत्वना बहुत पसंद थी।

मिस मूर ने शायद खिड़की से बगीचे की घनी झाड़ियों के बीच से कैरोलीन के सफेद कपड़ों की चमक और फड़फड़ाहट देखी होगी, क्योंकि वह उससे मिलने के लिए कुटिया के बरामदे से आगे बढ़ीं। हमेशा की तरह सीधी, अडिग और शांत, वह आगे बढ़ीं। उनके हाव-भाव में न तो कोई जल्दबाजी थी और न ही कोई उमंग; बल्कि वह मुस्कुराईं, अपनी शिष्या की खुशी देखकर, उसके चुंबन और कोमल, सौहार्दपूर्ण आलिंगन को महसूस करके उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने उसे प्यार से अंदर बुलाया, आधा भ्रमित और पूरी तरह से खुश। आधा भ्रमित! अगर ऐसा न होता तो शायद वह उसे बाहर निकाल देतीं। अगर उन्हें स्पष्ट रूप से पता होता कि इस मासूमियत भरी खुशी का मुख्य हिस्सा किसके लिए है, तो होर्टेंस शायद सदमे और गुस्से से भर जाती। बहनों को यह पसंद नहीं आता कि युवतियां उनके भाइयों से प्यार करें। यह अगर अभिमानपूर्ण नहीं तो मूर्खतापूर्ण, कमजोर, भ्रम, एक बेतुकी गलती

लगती है। वे इन सज्जनों से प्रेम नहीं करतीं—चाहे उनके मन में उनके प्रति बहन जैसा स्नेह ही क्यों न हो—और दूसरों का प्रेम उन्हें एक तरह के अटपटे रोमांस से भर देता है। संक्षेप में, ऐसी जानकारी मिलने पर उनकी पहली प्रतिक्रिया (जैसे कई माता-पिता को अपने बच्चों के प्रेम में होने पर होती है) अधीरता और तिरस्कार का मिश्रण होती है। यदि वे तर्कसंगत व्यक्ति हैं, तो तर्क समय रहते इस गलत भावना को सुधार लेता है; लेकिन यदि वे अतार्किक हैं, तो यह कभी नहीं सुधरती, और बेटी या भाभी अंत तक नापसंद बनी रहती हैं।

"मेरे नोट में जो लिखा है, उससे तो यही लगता होगा कि मैं अकेली ही मिलूंगी," मिस मूर ने कैरोलिन को बैठक की ओर ले जाते हुए कहा; "लेकिन यह नोट आज सुबह लिखा गया था: खाने के बाद से मेहमान आ गए हैं।"

दरवाजा खोलते ही उसने अंगीठी के पास रखी आरामदायक कुर्सी पर फैली लाल रंग की स्कर्टों का विशाल घेरा दिखाया, और उनके ऊपर, गरिमा के साथ, एक टोपी रखी थी जो किसी मुकुट से भी अधिक भयानक थी। वह टोपी कभी भी बोनट के नीचे नहीं लाई गई थी; नहीं, उसे एक विशाल थैले में, या यूँ कहें कि काले रेशम के एक मध्यम आकार के गुब्बारे में लाया गया था, जिसे व्हेल की हड्डी से चौड़ा किया गया था। टोपी की झालर, या फ्रिल, पहनने वाले के चेहरे के चारों ओर एक चौथाई गज चौड़ी थी। सिर के चारों ओर लहराता हुआ रिबन, जिसे प्रेम रिबन कहा जाता है, उस प्रकार का था। वह रिबन काफी मात्रा में था, बल्कि बहुत अधिक मात्रा में था। श्रीमती यॉर्क ने वह टोपी पहनी - वह उन पर जँच रही थी; उन्होंने गाउन भी पहना - वह भी उन पर उतना ही अच्छा लग रहा था।

वह महान महिला, मिस मूर के साथ चाय पीने के लिए सौहार्दपूर्ण ढंग से आई थीं। यह लगभग उतना ही बड़ा और दुर्लभ अवसर था, मानो रानी बिना बुलाए अपनी किसी प्रजा के साथ चाय-कॉफी पीने चली जाएं। इससे अधिक सम्मान का वे प्रमाण नहीं दे सकती थीं - क्योंकि वे आम तौर पर मेहमानों के घर जाने और चाय पीने से परहेज करती थीं, और आस-पास की हर नौकरानी और महिला को नीच और "गपशप करने वाली" कहकर कलंकित करती थीं।

लेकिन इसमें कोई शक नहीं था; मिस मूर उनकी चहेती थीं। उन्होंने इस बात को कई बार साबित किया था—रविवार को चर्च के प्रांगण में उनसे रुककर बात करना; उन्हें लगभग आतिथ्य सत्कार के साथ ब्रायर्मेन्स आने का निमंत्रण देना; और आज

खुद आकर उनसे मिलने की कृपा करना। खुद के बताए अनुसार, मिस मूर को पसंद करने का कारण यह था कि उनका व्यवहार शांत और स्थिर था, उनकी बातचीत या आचरण में जरा भी चंचलता नहीं थी; और विदेशी होने के कारण उन्हें एक ऐसे मित्र की आवश्यकता महसूस होती होगी जो उनका साथ दे। वह यह भी कह सकती थीं कि उनका सादा रूप, साधारण और सलीकेदार पहनावा और शांत, अनाकर्षक व्यवहार भी उन्हें बहुत पसंद थे। यह निश्चित है कि सुंदरता, जीवंत व्यवहार और सुरुचिपूर्ण पहनावे जैसी विपरीत गुणों वाली महिलाओं को श्रीमती यॉर्क शायद ही कभी पसंद करती थीं। पुरुषों को महिलाओं में जो भी गुण पसंद आते थे, श्रीमती यॉर्क उनकी निंदा करती थीं; और जिन गुणों को वे अनदेखा या तुच्छ समझते थे, उन्हें वे संरक्षण देती थीं।

कैरोलिन कुछ झिझक के साथ उस शक्तिशाली महिला के पास गई। वह श्रीमती यॉर्क के बारे में ज्यादा नहीं जानती थी, और एक पादरी की भतीजी होने के नाते, उसे संदेह था कि उसका स्वागत कैसा होगा। उसका स्वागत बहुत ठंडा हुआ, और उसने अपनी झिझक छिपाने के लिए अपना बोनट उतारने का फैसला किया। बैठते ही, उसे नीले रंग की फ्रॉक और कमरबंद पहने एक छोटी सी लड़की ने घेर लिया, जो उस महिला की कुर्सी के किनारे से किसी परी की तरह उठ खड़ी हुई, जहाँ वह एक फुटस्टूल पर बैठी थी और अपने चौड़े लाल गाउन की तहों से दिखाई नहीं दे रही थी। वह दौड़कर मिस हेलस्टोन के पास गई और बिना किसी औपचारिकता के उसके गले में बाहें डालकर चुंबन मांगा।

याचिकाकर्ता ने मुस्कुराते हुए अभिवादन स्वीकार करते हुए कहा, “मेरी माँ आपसे शिष्टाचारपूर्वक व्यवहार नहीं करतीं, और रोज़ तो आपकी ओर ध्यान ही नहीं देती; यही उनका तरीका है। अगर आपकी जगह तारों का मुकुट पहने कोई श्वेत देवदूत कमरे में आ जाए, तो माँ बस औपचारिकता से सिर हिला देंगी, और रोज़ तो अपना सिर भी नहीं उठाएगी; लेकिन मैं आपकी मित्र बनूँगी - मैं आपको हमेशा से पसंद करती आई हूँ।”

"जेसी, अपनी ज़बान पर लगाम लगाओ, और अपनी उद्दंडता को रोको!" श्रीमती यॉर्क ने कहा।

“लेकिन माँ, आप तो एकदम ठंडी पड़ गई हैं!” जेसी ने नाराज़गी जताते हुए कहा। “मिस हेलस्टोन ने आपको कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया; आप उनके साथ नरमी से क्यों नहीं पेश आतीं? आप इतनी अकड़ी हुई बैठी हैं, इतनी ठंडी लग रही हैं, और

इतनी रूखी बातें कर रही हैं—क्यों? आप मिस शर्ली कील्डर और हमारे घर आने वाली हर युवती के साथ ऐसा ही बर्ताव करती हैं। और रोज़ तो बिल्कुल मशीन जैसी है—मुझे शब्द याद नहीं आ रहा, लेकिन इसका मतलब है इंसान के रूप में एक मशीन। खैर, आप दोनों मिलकर ब्रायर्मेन्स से हर किसी को भगा देंगी; मार्टिन अक्सर ऐसा कहता है।”

“मैं एक मशीन हूँ? अच्छा! तो मुझे अकेला छोड़ दो,” रोज़ ने कहा, जो एक कोने में किताबों की अलमारी के नीचे कालीन पर बैठी थी और उसकी गोद में एक किताब खुली पड़ी थी। — “मिस हेलस्टोन, आप कैसी हैं?” उसने संबोधित व्यक्ति की ओर एक संक्षिप्त नज़र डालते हुए कहा, और फिर अपनी भूरी, अद्भुत आँखों को किताब पर टिकाकर उसके पन्नों को पढ़ने में मग्न हो गई।

कैरोलिन ने चुपके से उसकी ओर देखा, उसके युवा, तल्लीन चेहरे पर टकटकी लगाए रही, और पढ़ते समय उसके होंठों की एक अचेतन हरकत को गौर से देखा—एक ऐसी हरकत जो व्यक्तित्व से भरपूर थी। कैरोलिन में समझदारी और गहरी अंतर्दृष्टि थी। उसे लगा कि रोज़ यॉर्क एक विलक्षण बच्ची है—अद्वितीय; वह जानती थी कि उसके साथ कैसा व्यवहार करना है। चुपचाप पास आकर, वह उसके बगल में कालीन पर घुटनों के बल बैठ गई, और उसके छोटे से कंधे के ऊपर से उसकी किताब को देखा। यह श्रीमती रेडक्लिफ का एक प्रेम उपन्यास था— "द इटैलियन"।

कैरोलाइन बिना कुछ कहे उसके साथ पढ़ती रही। थोड़ी देर बाद, पन्ना पलटने से पहले, रोज़ ने ध्यान देते हुए पूछा, "क्या तुम तैयार हो?"

कैरोलाइन ने केवल सिर हिलाया।

“क्या तुम्हें यह पसंद आया?” थोड़ी देर बाद रोज़ ने पूछा।

"बहुत समय पहले, जब मैंने इसे बचपन में पढ़ा था, तब मैं इससे बहुत प्रभावित हुआ था।"

"क्यों?"

"ऐसा लग रहा था कि इसकी शुरुआत बहुत ही आशाजनक थी - एक बेहद विचित्र कहानी के सामने आने का ऐसा पूर्वाभास था।"

"और इसे पढ़ते समय आपको ऐसा महसूस होता है मानो आप इंग्लैंड से बहुत दूर - वास्तव में इटली में - एक अलग तरह के आकाश के नीचे - दक्षिण के उस नीले आकाश के नीचे जिसका वर्णन यात्री करते हैं।"

"क्या तुम्हें इस बात का एहसास है, रोज़?"

"मिस हेलस्टोन, इसे देखकर मेरा भी यात्रा करने का मन कर रहा है।"

"जब आप एक महिला होंगी, तो शायद आप अपनी इच्छा पूरी कर सकेंगी।"

“मैं इसके लिए कोई रास्ता ज़रूर निकालूंगा, अगर मेरे लिए कोई रास्ता नहीं बना है। मैं हमेशा ब्रायरफील्ड में नहीं रह सकता। सृष्टि की तुलना में पूरी दुनिया बहुत बड़ी नहीं है। कम से कम मुझे अपने इस गोल ग्रह के बाहर का नजारा तो देखना ही होगा।”

"इसका कितना हिस्सा बाहर की ओर है?"

“पहले यह गोलार्ध जहाँ हम रहते हैं; फिर दूसरा। मैंने ठान लिया है कि मेरा जीवन एक सार्थक जीवन होगा। न तो संगमरमर में दबे मेंढक की तरह काली बेहोशी; न ही ब्रायफ़ील्ड रेक्टरी में तुम्हारी तरह लंबी, धीमी मौत।”

“बिल्कुल मेरे जैसा! तुम्हारा क्या मतलब है, बच्चे?”

“क्या उस पुराने मकान में हमेशा के लिए बंद रहने से बेहतर यह नहीं होगा कि तुम धीरे-धीरे मर जाओ? वह जगह, जिसके पास से गुजरते समय मुझे हमेशा खिड़कियों वाली कब्र की याद आती है। मुझे दरवाजे के आसपास कोई हलचल नहीं दिखती। मुझे दीवार से कोई आवाज नहीं सुनाई देती। मुझे लगता है कि चिमनियों से कभी धुआं नहीं निकलता। तुम वहां क्या करते हो?”

मैं सिलाई करती हूँ, मैं पढ़ती हूँ, मैं सबक सीखती हूँ।

"क्या तुम खुश हो?"

"क्या मुझे भी आपकी तरह अकेले ही अनजान देशों में घूमने में खुशी महसूस करनी चाहिए?"

“अगर तुम सिर्फ घूमती भी रहो तो भी तुम बहुत खुश रहोगी। लेकिन याद रखना, मेरा एक मकसद है; पर अगर तुम किसी परीकथा की जादुई राजकुमारी की तरह बस चलती ही रहो, तो शायद तुम अभी से ज्यादा खुश रहोगी। एक दिन की सैर में तुम कई पहाड़ियों, जंगलों और जलधाराओं को पार करोगी, जिनका नजारा सूरज की रोशनी या बादलों के छाए रहने पर, मौसम के बारिश या धूप, अंधेरे या उजाले के हिसाब से बदलता रहेगा। ब्रायफ़ील्ड रेक्टरी में कुछ नहीं बदलता। बैठक की छतों का प्लास्टर, दीवारों पर लगा वॉलपेपर, पर्दे, कालीन, कुर्सियाँ, सब कुछ वैसा ही है।”

क्या खुशी के लिए बदलाव जरूरी है?

"हाँ।"

क्या यह इसका पर्यायवाची है?

मुझे नहीं पता; लेकिन मुझे नीरसता और मृत्यु लगभग एक जैसी लगती हैं।

यहां जेसी बोली।

“क्या वह पागल नहीं है?” उसने पूछा।

"लेकिन, रोज़," कैरोलिन ने आगे कहा, "मुझे डर है कि एक घुमक्कड़ का जीवन, कम से कम मेरे लिए, उस कहानी की तरह समाप्त होगा जिसे तुम पढ़ रही हो - निराशा, घमंड और मन की पीड़ा में।"

क्या ‘द इटैलियन’ का अंत इसी तरह होता है?

"जब मैंने इसे पढ़ा तो मुझे भी ऐसा ही लगा।"

“सब कुछ आजमाकर व्यर्थ साबित होना, कुछ भी न आजमाकर जीवन को खाली छोड़ देने से बेहतर है। ऐसा करना उस व्यक्ति के पाप के समान है जिसने अपनी प्रतिभा को रुमाल में दबा दिया हो – धिक्कार है आलसी!”

श्रीमती यॉर्क ने कहा, "रोज़, सच्ची संतुष्टि केवल अपने कर्तव्य का पालन करने से ही प्राप्त की जा सकती है।"

“जी हां, मां! और अगर मेरे स्वामी ने मुझे दस प्रतिभाएं दी हैं, तो मेरा कर्तव्य है कि मैं उनसे व्यापार करूं और दस प्रतिभाएं और कमाऊं। मैं सिक्कों को घर के दराजों की धूल में नहीं गाड़ूंगी। मैं उन्हें टूटी हुई टोंटी वाली चायदानी में नहीं रखूंगी और न ही चाय के बर्तनों के बीच चीनी मिट्टी के बर्तनों की अलमारी में बंद करूंगी। मैं उन्हें आपकी काम करने की मेज पर ऊनी मोजों के ढेर में दबने के लिए नहीं रखूंगी। मैं उन्हें लिनेन की अलमारी में नहीं रखूंगी ताकि वे चादरों के बीच कफ़न की तरह न मिलें। और सबसे कम, मां” (वह फर्श से उठी) — “मैं उन्हें ठंडे आलू के कटोरे में नहीं छिपाऊंगी, ताकि उन्हें रोटी, मक्खन, पेस्ट्री और हैम के साथ भंडारघर की अलमारियों पर सजा कर रख सकूं।”

वह रुकी, फिर बोली, “माँ, जिस प्रभु ने हममें से प्रत्येक को हमारी प्रतिभाएँ दी हैं, वह एक दिन घर लौटेंगे और सभी से हिसाब माँगेंगे। चायदानी, पुराना मोजा, सूती कपड़ा, विलो की नक्काशी वाला सूप का पात्र, अनेक घरों में अपना खाली खजाना छोड़ देंगे। कम से कम अपनी बेटियों को अपना पैसा साहूकारों के पास रखने दो, ताकि प्रभु के आने पर वे उन्हें उनका हक सूद के रूप में दे सकें।”

"रोज़, क्या तुम अपना सैम्पलर साथ लाई हो, जैसा मैंने तुम्हें बताया था?"

"हाँ माँ।"

बैठ जाओ और एक लाइन खींचो।

रोज़ तुरंत बैठ गई और आदेशानुसार काम करने लगी। दस मिनट के व्यस्त विराम के बाद, उसकी माँ ने पूछा, "क्या अब तुम खुद को पीड़ित या दबी हुई महसूस करती हो?"

"कोई मां नहीं।"

"लेकिन, जहाँ तक मुझे आपके तीखे भाषण का मतलब समझ आया, यह महिलाओं से जुड़े और घरेलू कामों के खिलाफ एक विरोध था।"

“माँ, आपने गलत समझा। मुझे सिलाई न सीखने का अफसोस होगा। मुझे सिखाकर और मुझसे काम करवाकर आप सही कर रही हैं।”

“क्या तुम अपने भाइयों के मोजे सिलने और चादरें बनाने तक का काम करोगे?”

"हाँ।"

"तो फिर इस बारे में बड़बड़ाने और शोर मचाने का क्या फायदा है?"

“क्या मुझे बस यही करना है? मैं यही करूँगा, और फिर और भी करूँगा। माँ, मैंने अपनी बात कह दी है। अभी मैं बारह साल का हूँ, और सोलह साल का होने तक मैं प्रतिभाओं के बारे में फिर कभी बात नहीं करूँगा। चार साल तक मैं एक मेहनती शिष्य बनकर आपसे सब कुछ सीखने के लिए प्रतिबद्ध हूँ।”

“देखिए मेरी बेटियाँ कैसी हैं, मिस हेलस्टोन,” श्रीमती यॉर्क ने कहा; “अपनी ही कल्पनाओं में कितनी बुद्धिमान हैं! ‘मुझे यह पसंद है, मुझे वह पसंद है’ — जेसी का ऐसा ही मधुर गीत है; जबकि रोज़ कहीं अधिक साहसी स्वर में कहती है, ‘मैं करूँगी भी और नहीं भी!’”

“माँ, मैं कारण बता रहा हूँ; वैसे भी, अगर मेरी पुकार साहसी है, तो वह साल में केवल एक बार ही सुनी जाती है। हर जन्मदिन के आसपास, आत्मा मुझे अपने स्वयं के मार्गदर्शन और प्रबंधन के बारे में एक संदेश देने के लिए प्रेरित करती है। मैं उसे बोलकर छोड़ देता हूँ; माँ, यह आप पर निर्भर करता है कि आप सुनें या न सुनें।”

श्रीमती यॉर्क ने आगे कहा, "मैं सभी युवतियों को सलाह दूंगी कि शादी से पहले और अपने बच्चे पैदा करने से पहले, वे जिन बच्चों से मिलें, उनके चरित्र का अध्ययन करें, ताकि वे अच्छी तरह से विचार कर सकें कि लापरवाह बच्चों का मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी, जिद्दी बच्चों को समझाने का श्रम, और सर्वश्रेष्ठ बच्चों को प्रशिक्षित

करने का निरंतर बोझ और कार्य उन्हें कैसा लगेगा।"

“लेकिन प्यार के साथ यह इतना मुश्किल नहीं होता,” कैरोलिन ने बीच में कहा। “माताएं अपने बच्चों को सबसे ज्यादा प्यार करती हैं—लगभग खुद से भी ज्यादा।”

“बड़ी-बड़ी बातें! बहुत भावुक! अभी तो तुम्हारे लिए जीवन का कठिन और व्यावहारिक हिस्सा भी आना बाकी है, नन्हीं बच्ची।”

लेकिन, श्रीमती यॉर्क, अगर मैं किसी नन्हे बच्चे को अपनी गोद में ले लूँ—उदाहरण के लिए, किसी गरीब औरत के शिशु को—तो मुझे उस असहाय प्राणी से एक विशेष प्रकार का प्रेम महसूस होता है, भले ही मैं उसकी माँ न हूँ। अगर उसे पूरी तरह से मेरी देखरेख में सौंप दिया जाए—अगर वह पूरी तरह से मुझ पर निर्भर हो—तो मैं उसके लिए खुशी-खुशी लगभग कुछ भी कर सकती हूँ।

“तुम महसूस करती हो! हाँ, हाँ! मैं कह सकती हूँ, अब। तुम अपनी भावनाओं से बहुत प्रभावित होती हो, और तुम खुद को बहुत संवेदनशील समझती हो, इसमें कोई शक नहीं। क्या तुम्हें पता है कि इन सभी रोमांटिक विचारों के चलते तुमने अपने चेहरे पर एक आदतन उदासीन भाव को ढाल लिया है, जो किसी उपन्यास की नायिका के लिए ज़्यादा उपयुक्त है, बजाय उस महिला के जो वास्तविक दुनिया में अपनी राह बनाने के लिए सामान्य ज्ञान का इस्तेमाल करती है?”

“नहीं; मुझे इस बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं है, श्रीमती यॉर्क।”

"अपने ठीक पीछे लगे शीशे में देखो। वहां दिख रहे चेहरे की तुलना किसी भी सुबह जल्दी उठने वाली, मेहनती दूधवाली के चेहरे से करो।"

मेरा चेहरा पीला है, लेकिन यह भावुक नहीं है; और अधिकांश दूधवाली महिलाएं, चाहे वे कितनी भी लाल और तंदुरुस्त क्यों न हों, मुझसे कहीं अधिक मूर्ख और दुनिया में अपना रास्ता बनाने के लिए कम व्यावहारिक हैं। मैं आम तौर पर दूधवाली महिलाओं की तुलना में अधिक सोचती हूँ, और अधिक सही सोचती हूँ; इसलिए, जहाँ वे अक्सर बिना सोचे-समझे कमज़ोरी से काम करती हैं, वहीं मैं सोच-समझकर काम करती हूँ और विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करती हूँ।

“अरे नहीं! तुम अपनी भावनाओं से प्रभावित हो जाओगे; तुम आवेगों द्वारा निर्देशित हो जाओगे।”

“निःसंदेह, मैं अक्सर अपनी भावनाओं से प्रभावित होती हूँ। ये भावनाएँ मुझे इसी उद्देश्य से दी गई हैं। मेरी भावनाएँ मुझे जिनसे प्रेम करना सिखाती हैं, मैं उनसे प्रेम

अवश्य करूँगी; और मुझे आशा है कि यदि कभी मेरा पति और बच्चे हों, तो मेरी भावनाएँ मुझे उनसे प्रेम करने के लिए प्रेरित करेंगी। मुझे आशा है कि उस स्थिति में, मेरी सभी प्रेरणाएँ मुझे प्रेम करने के लिए प्रबल रूप से प्रेरित करेंगी।”

कैरोलीन को ये बात ज़ोर देकर कहने में आनंद आ रहा था; उसे श्रीमती यॉर्क की उपस्थिति में ये कहने का साहस करने में भी आनंद आ रहा था। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि जवाब में उस पर किस तरह के अनुचित व्यंग्य किए जाएँगे। जब उस अप्रिय महिला ने शांत भाव से उत्तर दिया, "अपने नाटकीय प्रभाव को व्यर्थ मत करो। तुमने अच्छा कहा - बहुत बढ़िया था; लेकिन दो महिलाओं - एक बूढ़ी औरत और एक कुंवारी औरत - पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वहाँ एक अविवाहित सज्जन को उपस्थित होना चाहिए था। - क्या आपको लगता है, मिस मूर, मिस्टर रॉबर्ट कहीं पर्दे के पीछे छिपे हुए हैं?", तो कैरोलीन का चेहरा लाल हो गया।

होर्टेंस, जो बातचीत के अधिकांश समय रसोई में चाय की तैयारियों की देखरेख कर रही थी, अभी तक बातचीत का सार पूरी तरह से नहीं समझ पाई थी। उसने उलझन भरे लहजे में जवाब दिया कि रॉबर्ट व्हिनबरी में है। श्रीमती यॉर्क अपनी विशिष्ट छोटी सी हंसी हंस पड़ीं।

“सीधी-सीधी बात करने वाली मिस मूर!” उसने बड़े ही नखरे से कहा। “मेरी बात को इतनी शाब्दिक रूप से समझना और उसका इतना सरल जवाब देना आपकी आदत है। आपका दिमाग साज़िशों को नहीं समझता। आपके आस-पास अजीबोगरीब चीज़ें घटित हो सकती हैं, लेकिन आपको पता भी नहीं चलेगा; आप उस श्रेणी की नहीं हैं जिन्हें दुनिया तेज़ दिमाग वाली कहती है।”

ये अस्पष्ट प्रशंसाएं हॉर्टेंस को पसंद नहीं आईं। उसने खुद को समेटा, अपनी काली भौहें सिकोड़ीं, लेकिन फिर भी वह असमंजस में दिख रही थी।

"बचपन से ही मैं अपनी बुद्धिमत्ता और विवेकशीलता के लिए जानी जाती रही हूँ," उसने जवाब दिया; क्योंकि वास्तव में, इन गुणों के होने पर उसे विशेष गर्व था।

"मुझे पूरा यकीन है कि आपने कभी पति पाने के लिए कोई साजिश नहीं रची," श्रीमती यॉर्क ने आगे कहा; "और आपके पास दूसरों की साजिशों को पहचानने में मदद करने के लिए पूर्व अनुभव का लाभ भी नहीं है।"

कैरोलीन ने दयालु वक्ता के इस कोमल शब्दों को ठीक उसी जगह महसूस किया जहाँ वे चाहते थे कि वह महसूस करे—अपने हृदय में। वह इन हमलों का जवाब भी

नहीं दे सकी; वह इस समय असहाय थी। उत्तर देना मानो यह स्वीकार करना होता कि बात उस पर सही बैठती है। श्रीमती यॉर्क, कैरोलीन को परेशान, झुकी हुई आँखों और दर्द से जलते गालों के साथ बैठी देख रही थीं, जिसका झुका हुआ शरीर और अनजाने में कांपना उसके द्वारा अनुभव किए गए सभी अपमान और पीड़ा को व्यक्त कर रहा था। श्रीमती यॉर्क को लगा कि पीड़ित उसके लिए आसान शिकार है। उस अजनबी महिला को संकोची, संवेदनशील स्वभाव—एक चिड़चिड़े मिजाज—से स्वाभाविक घृणा थी; और न ही एक सुंदर, कोमल और युवा चेहरा उसके स्नेह का पात्र था। ऐसा बहुत कम होता था कि उसे ये सभी अप्रिय गुण एक ही व्यक्ति में एक साथ मिलें; और इससे भी कम ऐसा होता था कि वह व्यक्ति उसकी दया पर हो, ऐसी परिस्थितियों में जहाँ वह उसे कुचल सके। आज दोपहर वह विशेष रूप से चिड़चिड़ी और उदास थी—किसी भी दुष्ट "भीड़ की माँ" की तरह हिंसक होने को तैयार। अपना बड़ा सिर झुकाकर उसने एक नया आरोप लगाया।

“आपकी चचेरी बहन हॉर्टेंस एक बेहतरीन बहन हैं, मिस हेलस्टोन। हॉलो कॉटेज में अपनी किस्मत आजमाने आने वाली महिलाएं, थोड़ी सी चतुराई से घर की मालकिन को मना सकती हैं और सब कुछ अपने हाथ में कर सकती हैं। मुझे यकीन है कि आपको अपनी चचेरी बहन की संगति पसंद है, मिस?”

“किस चचेरे भाई का?”

"ओह, बिल्कुल, उस महिला की।"

"होर्टेंस मेरे प्रति बहुत दयालु है, और हमेशा से रही है।"

"जिस भी बहन का कोई योग्य अविवाहित भाई हो, उसे उसकी अविवाहित सहेलियाँ सबसे दयालु मानती हैं।"

“श्रीमती यॉर्क,” कैरोलिन ने धीरे-धीरे अपनी आँखें उठाते हुए कहा, उसकी नीली पुतलियाँ परेशानी से मुक्त होकर स्थिर और परिपूर्ण चमकने लगीं, जबकि शर्म की चमक उसके गालों से गायब हो गई और उनका रंग पीला पड़ गया और स्थिर हो गया — “श्रीमती यॉर्क, क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आपका क्या मतलब है?”

"आपको सत्यनिष्ठा की संस्कृति का पाठ पढ़ाने के लिए, आपको छल और झूठी भावनाओं से घृणा दिलाने के लिए।"

क्या मुझे इस पाठ की आवश्यकता है?

“आजकल की ज़्यादातर युवतियों को इसकी ज़रूरत है। तुम तो काफ़ी आधुनिक

युवती हो—भावुक, नाज़ुक, एकांत पसंद करने का दिखावा करने वाली; जिसका मतलब शायद यही है कि तुम्हें आम दुनिया में सहानुभूति के लायक़ कुछ नहीं दिखता। आम दुनिया—रोज़मर्रा के ईमानदार लोग—तुम्हारे अंदाज़े से कहीं बेहतर हैं, किसी भी किताबी, रोमांटिक लड़की से कहीं ज़्यादा बेहतर, जो शायद ही कभी अपने चाचा, जो पादरी हैं, के बगीचे की दीवार के ऊपर से झाँकती हो।”

परिणामस्वरूप, जिनके बारे में आप कुछ नहीं जानते। मुझे क्षमा करें—वास्तव में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप मुझे क्षमा करें या नहीं—आपने बिना किसी उकसावे के मुझ पर हमला किया है; मैं बिना किसी माफी के अपना बचाव करूंगी। मेरे दो चचेरे भाइयों के साथ मेरे संबंधों के बारे में आप अनभिज्ञ हैं। चिड़चिड़ेपन में आकर आपने निराधार आरोपों से उन्हें बदनाम करने की कोशिश की है, जो उन सभी आरोपों से कहीं अधिक धूर्त और झूठे हैं जिनका आप मुझ पर उचित आरोप लगा सकते हैं। मेरा पीला पड़ जाना और कभी-कभी संकोची दिखना आपका काम नहीं है; मुझे किताबें पसंद हैं और मैं आम गपशप में रुचि नहीं रखती, यह तो और भी कम आपका काम है; मेरा 'रोमांस करने वाली लड़की' होना आपकी ओर से केवल एक अनुमान है। मैंने कभी आपके साथ या आपके किसी परिचित के साथ रोमांस नहीं किया। पादरी की भतीजी होना कोई अपराध नहीं है, भले ही आप इसे ऐसा समझने के लिए काफी संकीर्ण मानसिकता वाले हों। आप मुझे नापसंद करते हैं। आपके पास मुझे नापसंद करने का कोई उचित कारण नहीं है; इसलिए अपनी घृणा को अपने तक ही सीमित रखें। यदि कभी भी भविष्य में यदि आप इसे परेशान करने वाले तरीके से प्रकट करते हैं, तो मैं अभी की तुलना में और भी कम सावधानी से जवाब दूंगा।

वह चुप हो गई और सफेद रंग की, शांत उत्तेजना में बैठी रही। उसने एकदम साफ स्वर में बात की थी, न तेज और न ही ऊँची; फिर भी उसके मधुर उच्चारण ने कानों को झकझोर दिया। उसकी नसों में बहने वाली ऊर्जा उस समय इतनी तीव्र थी कि दिखाई नहीं दे रही थी।

श्रीमती यॉर्क फटकार से जरा भी नाराज नहीं हुईं, क्योंकि उनके शब्दों में एक ऐसी सादगी और गंभीरता थी जो उनके शांत स्वाभिमान से झलकती थी। मिस मूर की ओर शांत भाव से मुड़ते हुए, उन्होंने अपनी टोपी को सहमति में हिलाते हुए कहा, "आखिरकार, उनमें हिम्मत तो है ही। हमेशा उतनी ही ईमानदारी से बोलो जितनी तुमने अभी बोली है," उन्होंने आगे कहा, "और तुम सफल हो जाओगी।"

“मैं इस तरह की आपत्तिजनक सलाह को अस्वीकार करता/करती हूँ,” उसी शुद्ध स्वर और स्पष्ट दृष्टि से उत्तर दिया गया। “मैं इशारों से भरी सलाह को नकारता/ठुकराती हूँ। मुझे अपनी इच्छानुसार बोलने का अधिकार है; मुझे आपके आदेशानुसार बोलने के लिए कोई बाध्यता नहीं है। अभी मैंने जिस तरह से बोला है, वैसा मैं हमेशा नहीं बोलता, और मैं कभी भी किसी से इतने कठोर स्वर या इतनी कठोर भाषा में बात नहीं करूँगा, सिवाय तब जब मुझे किसी ने बिना उकसावे के मेरा अपमान किया हो।”

“माँ, आपको अपनी बराबरी मिल गई है,” छोटी जेसी ने कहा, जिसे यह दृश्य बहुत अच्छा लगा। रोज़ ने सब कुछ बिना भाव बदले सुना। अब उसने कहा, “नहीं; मिस हेलस्टोन मेरी माँ के बराबर नहीं हैं, क्योंकि वह आसानी से नाराज़ हो जाती हैं। मेरी माँ उन्हें कुछ ही हफ्तों में थका देंगी। शर्ली कील्डर बेहतर संभालती हैं। — माँ, आपने अभी तक मिस कील्डर की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाई है। उन्होंने रेशमी पोशाक के नीचे ऐसा कवच पहन रखा है जिसे आप भेद नहीं सकतीं।”

श्रीमती यॉर्क अक्सर शिकायत करती थीं कि उनके बच्चे विद्रोही हैं। यह अजीब बात थी कि अपनी सारी सख्ती और अपने सारे "दृढ़ निश्चय" के बावजूद, वे उन पर कोई नियंत्रण नहीं कर पाती थीं। उनके पिता की एक नज़र ही उन पर उनकी किसी भी डांट से ज़्यादा असर डालती थी।

मिस मूर—जिनके लिए एक ऐसे झगड़े की गवाह बनना बेहद अप्रिय था जिसमें उन्होंने कोई भाग नहीं लिया था, क्योंकि यह एक महत्वहीन गौण भूमिका थी—अब अपनी गरिमा को संभालते हुए, एक ऐसा भाषण देने के लिए तैयार थीं जो दोनों पक्षों को गलत साबित कर दे और प्रत्येक विवादकर्ता को यह स्पष्ट कर दे कि उन्हें अपने आप पर शर्म आनी चाहिए और उन्हें अपने सामने वाले व्यक्ति की श्रेष्ठता को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए। सौभाग्य से, उनके भाषण के दस मिनट भी पूरे नहीं हुए थे कि सारा के चाय की ट्रे लेकर आने से उनका ध्यान आकर्षित हुआ। पहले तो उनका ध्यान इस बात पर गया कि उस युवती के बालों में सोने की कंघी और गले में लाल हार था, और फिर उन्होंने चाय बनाने के कर्तव्य की ओर तीखे शब्दों में फटकार लगाई। भोजन के बाद, रोज़ ने अपना गिटार लाकर और एक गीत गाने का अनुरोध करके उन्हें प्रसन्न किया, और बाद में गिटार बजाने और संगीत के बारे में उनसे बुद्धिमत्तापूर्ण और तीखे प्रश्न पूछे।

इस बीच, जेसी ने अपना सारा ध्यान कैरोलीन पर लगाया। उसके पैरों के पास एक स्टूल पर बैठकर, उसने उससे पहले धर्म और फिर राजनीति के बारे में बात की। जेसी को घर पर अपने पिता की इन विषयों पर कही गई बातों को ध्यान से सुनने की आदत थी, और बाद में दूसरों के सामने, उनकी राय, नापसंद और पसंद को बड़ी चतुराई और धाराप्रवाह तरीके से, न कि संयम या विवेक के साथ, सुनाने की आदत थी। उसने कैरोलीन को स्थापित चर्च की सदस्य होने और एक पादरी चाचा होने के लिए खूब खरी-खोटी सुनाई। उसने उसे बताया कि वह देहात में रहती है और उसे अपनी जीविका के लिए ईमानदारी से काम करना चाहिए, न कि बेकार जीवन गुजारना और दान के रूप में आलस्य की रोटी खाना। फिर जेसी ने उस समय के पदस्थ पादरियों की समीक्षा और उनके आचरण पर विचार करना शुरू किया। उसने लॉर्ड कैसलरेघ और श्री पर्सेवल के नामों का बार-बार जिक्र किया। उसने इन दोनों व्यक्तियों को ऐसे चरित्र से सजाया जो अलग-अलग मोलोक और बेलियाल के लिए उपयुक्त हो सकते थे। उन्होंने युद्ध को व्यापक हत्या करार दिया और लॉर्ड वेलिंगटन को "किराए का कसाई" बताया।

उसकी ऑडिटर ने अत्यंत ज्ञानवर्धक ढंग से सुना। जेसी में हास्य की प्रतिभा का कुछ अंश स्वाभाविक रूप से मौजूद था। उसके पिता की निंदाओं को उनकी घबराहट भरी उत्तरी डोरिक भाषा में दोहराते हुए सुनना अत्यंत हास्यपूर्ण था; एक छोटी जैकोबिन लड़की मलमल की फ्रॉक और कमरबंद में अपने विद्रोही स्वभाव को छिपाए हुए थी। स्वभाव से द्वेषपूर्ण न होने के कारण, उसकी भाषा कड़वी नहीं बल्कि चुटीली थी, और उसके भावपूर्ण छोटे चेहरे ने हर वाक्य में एक ऐसी तीक्ष्णता भर दी थी जो सुनने वाले की रुचि को बांधे रखती थी।

कैरोलिन ने लॉर्ड वेलिंगटन के बारे में उसकी आलोचना करने पर उसे डांटा; लेकिन बाद में प्रिंस रीजेंट के खिलाफ़ दिए गए तीखे भाषण को उसने बड़े चाव से सुना। जेसी ने सुनने वाले की आँखों की चमक और होठों पर मंडराती हँसी से तुरंत समझ लिया कि आखिरकार उसे एक ऐसा विषय मिल गया है जो उसे पसंद आया। उसने अपने पिता के नाश्ते की मेज पर कई बार उस मोटे-ताज़े "पचास साल के एडोनिस" के बारे में चर्चा सुनी थी, और अब उसने मिस्टर यॉर्क की उसी विषय पर की गई टिप्पणियों को दोहराया - मानो वे यॉर्कशायर के अपने मुँह से निकली हों।

लेकिन, जेसी, मैं अब तुम्हारे बारे में और नहीं लिखूंगा। यह पतझड़ की शाम है,

नम और तूफानी। आसमान में केवल एक बादल है, लेकिन वह उसे एक छोर से दूसरे छोर तक ढके हुए है। हवा थम नहीं रही; वह धुंध और कोहरे से रंगहीन, उदास पहाड़ियों पर सिसकती हुई तेज़ी से बह रही है। उस गिरजाघर के मीनार पर दिन भर बारिश होती रही है। यह उसके कब्रिस्तान के पथरीले घेरे से काले रंग में उठती है। बिच्छू-बूटी, लंबी घास और कब्रें सब भीगी हुई हैं। यह शाम मुझे कुछ साल पहले की एक और शाम की याद दिलाती है - एक तूफानी, बरसाती पतझड़ की शाम - जब कुछ लोग, जिन्होंने उस दिन एक विधर्मी कब्रिस्तान में बनी एक नई कब्र की तीर्थयात्रा की थी, एक अनजान घर के चूल्हे पर लकड़ी की आग के पास बैठे थे। वे खुश और मिलनसार थे, लेकिन वे सभी जानते थे कि उनके बीच एक ऐसा खालीपन आ गया है, जिसे कभी भरा नहीं जा सकता। वे जानते थे कि उन्होंने कुछ ऐसा खो दिया है जिसकी कमी उनके जीवन भर पूरी तरह से पूरी नहीं हो सकती; और वे जानते थे कि तेज़ बारिश उनकी खोई हुई प्रेमिका को ढकने वाली गीली मिट्टी में समा रही थी, और उदास, सिसकती हुई आंधी उसके दफन सिर पर मातम मना रही थी। आग उन्हें गर्मी दे रही थी; जीवन और मित्रता अभी भी उन्हें आशीर्वाद दे रहे थे; लेकिन जेसी ठंडी, ताबूत में, अकेली पड़ी थी - केवल मिट्टी ही उसे तूफान से बचा रही थी।

श्रीमती यॉर्क ने अपनी बुनाई का सामान समेटा, संगीत की कक्षा और राजनीति पर व्याख्यान को छोटा किया, और झोपड़ी में अपना दौरा समय से काफी पहले समाप्त कर दिया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह सूर्यास्त की लालिमा पूरी तरह से मिटने से पहले या खेतों की ओर जाने वाला रास्ता शाम की ओस से पूरी तरह भीगने से पहले ब्रायर्मेन्स लौट सकें।

महिला और उसकी बेटियों के चले जाने के बाद, कैरोलीन को लगा कि उसे भी अपना स्कार्फ़ फिर से लपेट लेना चाहिए, अपनी चचेरी बहन के गाल पर चुंबन करना चाहिए और घर की ओर चल देना चाहिए। अगर वह ज़्यादा देर तक रुकती तो शाम हो जाती और फैनी को उसे लेने आने की परेशानी उठानी पड़ती। उसे याद आया कि पादरी के घर में आज बेकिंग और इस्त्री करने का दिन था - फैनी व्यस्त होगी। फिर भी, वह छोटे से बैठक कक्ष की खिड़की पर अपनी जगह नहीं छोड़ पा रही थी। पश्चिम का नज़ारा उस जाली से कहीं ज़्यादा सुंदर दिखता था, जिसके चारों ओर चमेली की माला लटकी हुई थी, जिसके सफेद तारे और हरे पत्ते अब धूसर पेंसिल की रूपरेखा

जैसे लग रहे थे - आकार में सुंदर, लेकिन रंगहीन - गर्मी की शाम के सुनहरे रंग के सामने - अगस्त के आसमान के रात आठ बजे के आग जैसे नीले रंग के सामने।

कैरोलीन ने छोटे से फाटक की ओर देखा, जिसके बगल में ऊँचे-ऊँचे हॉली-ओक के पेड़ खड़े थे। उसने बगीचे में प्रिवेट और लॉरेल की घनी बाड़ को देखा; उसकी आँखें उस सीमित दृश्य से हटने से पहले झाड़ियों से कुछ अधिक देखने के लिए तरस रही थीं। वे एक खास कद-काठी के किसी इंसान को बाड़ पार करके फाटक से अंदर आते देखना चाहती थीं। आखिरकार उसने एक इंसान को देखा - नहीं, दो लोगों को। फ्रेडरिक मुर्गट्रॉयड पानी की बाल्टी लिए हुए जा रहा था; जो स्कॉट चक्की की चाबियाँ अपनी तर्जनी उंगली पर लटकाए उसके पीछे-पीछे चल रहा था। वे रात के लिए चक्की और अस्तबल बंद करने जा रहे थे, और फिर अपने घर लौटेंगे।

"मुझे भी ऐसा ही करना होगा," कैरोलिन ने आधा उठते हुए और आह भरते हुए सोचा।

“यह सब मूर्खता है—दिल तोड़ने वाली मूर्खता,” उसने आगे कहा। “पहली बात तो यह है कि चाहे मैं अंधेरा होने तक रुकूँ, उसका आगमन नहीं होगा; क्योंकि मुझे अपने दिल में महसूस होता है कि भाग्य ने अपनी शाश्वत पुस्तक के आज के पन्ने पर लिख दिया है कि मुझे वह सुख नहीं मिलेगा जिसकी मुझे चाह है। दूसरी बात यह है कि अगर वह इस पल यहाँ आ भी जाए, तो मेरी उपस्थिति उसे खलेगी, और यह सोचकर कि ऐसा ही होगा, मेरा आधा खून जम जाएगा। शायद उसका हाथ ढीला और ठंडा रहेगा अगर मैं अपना हाथ उसके हाथ में रखूँ; उसकी आँखें धुंधली हो जाएँगी अगर मैं उनकी आँखों में चमक ढूँढूँ। मैं उस चिंगारी को ढूँढूँगी, कुछ ऐसा जो मैंने बीते दिनों में देखा है, जब मेरा चेहरा, या मेरी भाषा, या मेरा स्वभाव किसी सुखद क्षण में उसे प्रसन्न करता था; मुझे केवल अंधेरा ही मिलेगा। बेहतर है कि मैं घर चली जाऊँ।”

उसने मेज पर रखी अपनी टोपी उठाई और जैसे ही वह रिबन बांध रही थी, तभी होर्टेंस ने उसी मेज पर रखे एक सुंदर फूलों के गुलदस्ते की ओर ध्यान दिलाते हुए बताया कि मिस कील्डर ने उन्हें उसी सुबह फील्डहेड से भेजा था; और फिर उस महिला के यहाँ मौजूद मेहमानों और हाल ही में उसके व्यस्त जीवन के बारे में टिप्पणी करने लगी; उसने कई तरह के अनुमान लगाए कि उसे यह सब पसंद नहीं आ रहा था, और इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि उत्तराधिकारी जैसी अपनी मनमौजी स्वभाव वाली महिला अपने रिश्तेदारों के इस समूह से जल्द छुटकारा पाने का कोई उपाय क्यों

नहीं ढूंढ रही थी।

“लेकिन लोग कहते हैं कि वह मिस्टर सिम्पसन और उनके परिवार को जाने नहीं देंगी,” उन्होंने आगे कहा। “वे पिछले हफ्ते दक्षिण लौटना चाहते थे, ताकि अपने इकलौते बेटे के स्वागत के लिए तैयार रहें, जो दौरे से घर लौटने वाला है। वह ज़िद कर रही हैं कि उनके चचेरे भाई हेनरी यहाँ यॉर्कशायर में आकर अपने दोस्तों के साथ शामिल हों। मुझे लगता है कि वह यह सब रॉबर्ट और मुझे खुश करने के लिए कर रही हैं।”

“रॉबर्ट और आपकी इच्छा कैसे पूरी की जाए?” कैरोलिन ने पूछा।

“अरे, मेरे बच्चे, तुम तो बड़े मंदबुद्धि हो। क्या तुम्हें पता नहीं— तुमने अक्सर सुना होगा—”

"कृपया, महोदया," सारा ने दरवाजा खोलते हुए कहा, "जो मुरब्बा आपने मुझे गुड़ में उबालने के लिए कहा था - जिसे आप कॉन्फिटर कहती हैं - वह सब कड़ाही में जल गया है।"

“जाम! जल गए? ओह, कितनी घोर लापरवाही! शरारती रसोइया, असहनीय लड़की!”

और मैडमोजेल ने जल्दी से दराज से एक बड़ा लिनेन का एप्रन निकाला और उसे अपने काले एप्रन के ऊपर बांधकर रसोई में दौड़ पड़ी, जहाँ से, सच कहें तो, भुनी हुई मिठाइयों की एक ऐसी गंध आ रही थी जो नमकीन की तुलना में कहीं अधिक तीव्र थी।

मालकिन और नौकरानी पूरे दिन कुछ खास तरह की काली चेरी को संरक्षित करने के विषय पर झगड़ती रहीं। ये चेरी कंचे जैसी सख्त और बेर जैसी खट्टी थीं। सारा का मानना था कि इस प्रक्रिया में चीनी ही एकमात्र पारंपरिक मसाला है; वहीं मालकिन का कहना था - और उन्होंने अपनी माँ, दादी और परदादी के अनुभव और अभ्यास से इसे साबित भी कर दिया था - कि गुड़ कहीं ज़्यादा बेहतर है। सारा को संरक्षण पात्र की ज़िम्मेदारी सौंपकर उन्होंने नासमझी की थी, क्योंकि उसमें मौजूद सामग्री के प्रति सहानुभूति न होने के कारण सारा ने उन्हें संरक्षित करते समय लापरवाही बरती, जिसका नतीजा यह हुआ कि चेरी जलकर राख हो गईं। इसके बाद खूब शोर-शराबा हुआ; खूब डांट-फटकार हुई और सिसकियाँ इतनी तेज़ थीं कि गहरी या वास्तविक नहीं थीं।

कैरोलिन एक बार फिर छोटे से दर्पण की ओर मुड़कर, अपने घुंघराले बालों को गालों से हटाकर अपनी कॉटेज बोनट के नीचे समेट रही थी, उसे पूरा यकीन था कि यहाँ और देर रुकना न केवल बेकार होगा बल्कि अप्रिय भी होगा। तभी, पीछे का दरवाजा अचानक खुलते ही रसोई में सन्नाटा छा गया। सबकी ज़ुबानें थम गईं, मानो लगाम कस दी गई हो। “क्या यह – क्या यह – रॉबर्ट था?” वह अक्सर – लगभग हमेशा – बाज़ार से लौटते समय रसोई के रास्ते से ही आता था। नहीं; यह तो जो स्कॉट था, जिसने तीन बार ज़ोर से रुककर – हर बार रुककर वह झगड़ालू महिलाओं को करारा जवाब दे रहा था – कहा, “अब, मुझे लगा जैसे कोई चटकने की आवाज़ आई हो?”

किसी ने जवाब नहीं दिया।

“और,” उन्होंने व्यावहारिक लहजे में आगे कहा, “चूंकि मालिक आ चुके हैं और इस गलियारे से प्रवेश करेंगे, इसलिए मैंने आपको सूचित करना उचित समझा। महिलाओं से भरे घर में बिना सूचना दिए आना उचित नहीं होता। ये रहे वो। — आगे बढ़िए, महोदय। वे अजीब तरह से हंगामा कर रही थीं, लेकिन मुझे लगता है मैंने उन्हें शांत कर दिया है।”

अब एक और व्यक्ति के प्रवेश की आवाज सुनाई दी। जो स्कॉट ने अपनी फटकार जारी रखी।

“अंधेरे में होने का क्या मतलब है? सारा, हे चुड़ैल, क्या तुम एक मोमबत्ती भी नहीं जला सकती? सूर्यास्त हुए अभी एक घंटा ही हुआ है। वो तुम्हारे बर्तनों, मेजों और अन्य सामानों से टकराकर अपनी टांगें तोड़ लेगा। — ज़रा इस बेकिंग बाउल पर ध्यान दीजिए, महोदय; उन्होंने इसे जानबूझकर आपके रास्ते में रखा है, मानो दुर्भावना से।”

जो की बातों के बाद एक अजीब सी खामोशी छा गई, जिसे कैरोलिन, हालांकि वह ध्यान से सुन रही थी, समझ नहीं पाई। यह खामोशी बहुत ही संक्षिप्त थी। एक चीख ने इसे तोड़ा - आश्चर्य की आवाज़, जिसके बाद एक चुंबन की आवाज़ आई; फिर कुछ अस्पष्ट, लेकिन अधूरी-अधूरी बातें सुनाई दीं।

“हे भगवान! हे भगवान! क्या मैंने इसकी उम्मीद की थी?” ये वे शब्द थे जिन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

“और आप अब भी ठीक हैं, प्यारी बहन?” एक और आवाज ने पूछा—निश्चित रूप से रॉबर्ट की आवाज थी।

कैरोलीन असमंजस में थी। एक ऐसी सहज प्रवृत्ति का पालन करते हुए, जिस पर उसे विचार करने का समय नहीं मिला, वह रास्ता साफ करने के लिए छोटे से बैठक कक्ष से निकल गई और ऊपर की ओर दौड़कर रेलिंग के शीर्ष पर खड़ी हो गई, जहाँ से वह खुद को प्रकट करने से पहले और अधिक अवलोकन कर सकती थी। अब सूर्यास्त काफी बीत चुका था; गलियारे में धुंध छाई हुई थी, लेकिन इतनी गहरी धुंध नहीं थी कि वह रॉबर्ट और हॉर्टेंस को वहाँ से गुजरते हुए न देख सके।

कुछ ही क्षण बाद होर्टेंस ने पुकारा, “कैरोलीन! कैरोलीन! आओ मेरे भाई से मिलो!”

“अजीब बात है,” मिस हेलस्टोन ने टिप्पणी की, “बेहद अजीब! बाज़ार से लौटने जैसी रोज़मर्रा की घटना पर इस तरह की असामान्य उत्तेजना का क्या मतलब है? कहीं उसने अपना होश तो नहीं खो दिया? कहीं जली हुई गुड़ ने उसे पागल तो नहीं कर दिया?”

वह दबी हुई घबराहट के साथ नीचे उतरी। लेकिन उसकी घबराहट तब और बढ़ गई जब होर्टेंस ने बैठक के दरवाजे पर उसका हाथ पकड़ लिया और उसे रॉबर्ट के पास ले गई, जो खिड़की के सामने लंबा और सांवला खड़ा था। रॉबर्ट ने घबराहट और औपचारिकता के मिले-जुले भाव से उसका परिचय कराया, मानो वे बिल्कुल अजनबी हों और यह उनकी पहली मुलाकात हो।

रहस्य और गहराता जा रहा था! उसने कुछ अजीब तरह से झुककर अभिवादन किया और अजनबी जैसी झिझक के साथ उससे मुंह फेर लिया, खिड़की से आती धुंधली रोशनी में उसकी नज़रें मिलीं। रोशनी उसके चेहरे पर पड़ी और सपने का रहस्य (जो मानो एक सपना ही था) अपने चरम पर पहुंच गया। उसने एक ऐसा चेहरा देखा जो रॉबर्ट जैसा भी था और उससे बिल्कुल अलग भी - एक तरफ रॉबर्ट जैसा भी नहीं।

“क्या बात है?” कैरोलाइन ने कहा। “क्या मेरी नज़र कमजोर हो गई है? क्या यह मेरे चचेरे भाई की वजह से है?”

"निश्चित रूप से यह तुम्हारी चचेरी बहन है," होर्टेंस ने जोर देकर कहा।

तो फिर अब गलियारे से कौन आ रहा था—अब कमरे में कौन दाखिल हो रहा था? कैरोलिन ने चारों ओर देखा और उसे एक नया रॉबर्ट दिखाई दिया—असली रॉबर्ट, जैसा कि उसे तुरंत महसूस हुआ।

“अच्छा,” उसने उसके प्रश्नप्रवंचित, आश्चर्यचकित चेहरे को देखकर मुस्कुराते हुए

कहा, “कौन सा क्या है?”

“अरे, ये तो आप हैं!” जवाब मिला।

वह हँसा। “मुझे लगता है कि यह मैं ही हूँ। और क्या आप जानते हैं कि वह कौन है? आपने उसे पहले कभी नहीं देखा, लेकिन उसके बारे में सुना तो होगा ही।”

अब उसे होश आ गया था।

"यह केवल एक ही व्यक्ति हो सकता है - आपका भाई, क्योंकि वह बिल्कुल आपके जैसा दिखता है; मेरा दूसरा चचेरा भाई, लुई।"

“चालाक ओडिपस! तुमने तो स्फिंक्स को भी चकमा दे दिया होता! लेकिन अब, हमें साथ देखो। — जगह बदलो; फिर से जगह बदलो, उसे भ्रमित करने के लिए, लुई। — अब पुराना प्यार कौन सा है, लीना?”

“जैसे कि बोलते समय गलती हो ही सकती है! तुम्हें होर्टेंस से पूछना चाहिए था। लेकिन तुम दोनों में इतनी समानता नहीं है। सिर्फ तुम्हारी लंबाई, कद-काठी और रंग-रूप ही मिलते-जुलते हैं।”

"और मैं रॉबर्ट हूँ, है ना?" नवागंतुक ने अपनी स्वाभाविक शर्म को दूर करने का पहला प्रयास करते हुए पूछा।

कैरोलिन ने धीरे से अपना सिर हिलाया। उसकी आँखों से निकली एक कोमल, भावपूर्ण किरण रॉबर्ट के वास्तविक व्यक्तित्व पर पड़ी। इसने बहुत कुछ कह दिया।

उसे अपने चचेरे भाइयों को जल्दी छोड़ने की अनुमति नहीं थी। रॉबर्ट ने उसे वहीं रहने के लिए बाध्य करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अपने व्यवहार में प्रसन्न, सरल और मिलनसार (कम से कम उस रात के लिए तो प्रसन्न), उस समय हल्के-फुल्के और खुशमिजाज मूड में, वह उस झोपड़ी के समूह में इतनी सुखद सदस्य थी कि उनमें से कोई भी उसे आसानी से छोड़ना नहीं चाहता था। लुई स्वभाव से गंभीर, शांत और अंतर्मुखी व्यक्ति प्रतीत होता था; लेकिन उस शाम की कैरोलीन, जो (जैसा कि आप जानते हैं, पाठक) हर दिन की कैरोलीन नहीं थी, ने उसके संकोच को पिघला दिया और उसकी गंभीरता को तुरंत दूर कर दिया। वह उसके पास बैठ गया और उससे बातें करने लगा। वह पहले से ही जानती थी कि उसका पेशा शिक्षक का था। उसे अब पता चला कि वह कुछ वर्षों से मिस्टर सिम्पसन के बेटे का शिक्षक था; कि वह उसके साथ यात्रा कर रहा था और उसके साथ उत्तर की ओर गया था। उसने पूछा कि क्या उसे अपना काम पसंद है, लेकिन जवाब में उसे एक ऐसी नज़र मिली जिससे आगे कोई

प्रश्न पूछने की गुंजाइश नहीं थी। उस नज़र ने कैरोलीन की सहानुभूति जगा दी। उसने सोचा कि लुई जैसे संवेदनशील चेहरे पर इस तरह का भाव आना बहुत दुखद है; रॉबर्ट के चेहरे के पास देखने पर, उसने सोचा कि उसका चेहरा समझदार तो था, लेकिन सुंदर नहीं था। उसने तुलना करने के लिए मुड़कर देखा। रॉबर्ट उसके थोड़ा पीछे दीवार से टिका हुआ था, नक्काशी की एक किताब के पन्ने पलट रहा था, और शायद साथ ही साथ उसके और लुई के बीच की बातचीत भी सुन रहा था।

"मैं उन्हें एक जैसा कैसे समझ सकती थी?" उसने खुद से पूछा। "अब मुझे समझ आ रहा है कि लुई रॉबर्ट से नहीं, बल्कि हॉर्टेंस से मिलती-जुलती है।"

और यह बात कुछ हद तक सच भी थी। उसकी नाक छोटी और ऊपरी होंठ उसकी बहन की तरह लंबे थे, न कि उसके भाई की तरह सुंदर। उसके होंठ और ठोड़ी का आकार भी उसी की तरह था—युवा चक्की मालिक की तुलना में ये सब कम निर्णायक, सटीक और स्पष्ट थे। उसका हावभाव, हालांकि सजग और विचारशील था, फिर भी उसे फुर्तीला और तीक्ष्ण नहीं कहा जा सकता था। उसके पास बैठकर और उसे ऊपर देखते हुए आपको ऐसा महसूस होता था कि बड़े मूर की तुलना में उसका स्वभाव धीमा और शायद अधिक दयालु था, जिससे आपके मन में शांति छा जाती थी।

रॉबर्ट—शायद इस बात से अवगत था कि कैरोलीन की नज़र उस पर पड़ी थी और ठहर गई थी, हालाँकि उसने न तो नज़रें मिलाई थीं और न ही जवाब दिया था—ने नक्काशी की किताब नीचे रख दी और पास आकर उसके बगल में बैठ गया। उसने लुई के साथ अपनी बातचीत फिर से शुरू की, लेकिन उससे बात करते समय उसके विचार कहीं और थे। उसका दिल उस तरफ धड़क रहा था जिस तरफ उसका चेहरा आधा मुड़ा हुआ था। उसने लुई में एक स्थिर, मर्दाना और दयालु स्वभाव देखा; लेकिन वह रॉबर्ट की गुप्त शक्ति के आगे नतमस्तक हो गई। उसके इतने करीब होना—हालाँकि वह चुप था, हालाँकि उसने उसके दुपट्टे की झालर या उसकी पोशाक के सफेद किनारे को भी नहीं छुआ—उस पर जादू जैसा असर कर रहा था। अगर उसे केवल उससे ही बात करनी होती, तो यह शांत हो जाता, लेकिन किसी और से बात करने की आज़ादी ने उसे उत्साहित कर दिया। उसकी बातें बेरोक-टोक बह रही थीं; वे हंसमुख, चंचल और वाक्पटु थीं। उसके श्रोता की स्नेहपूर्ण नज़र और शांत व्यवहार ने उसे सहज होने के लिए प्रोत्साहित किया; उसकी मुस्कान में व्यक्त गंभीर आनंद ने

उसके स्वभाव की सारी चमक को बाहर निकाल दिया। उसे लगा कि आज शाम वह बेहतर दिख रही है, और चूंकि रॉबर्ट दर्शक था, इसलिए यह एहसास उसे संतुष्ट कर रहा था। अगर उसे कहीं जाना पड़ता, तो उत्तेजना के बाद तुरंत ही पतन हो जाता।

लेकिन उसकी खुशी ज्यादा देर तक नहीं टिक पाई; जल्द ही एक संकट मंडरा उठा।

होर्टेंस, जो कुछ समय से रात के खाने का ऑर्डर देने में व्यस्त थी और अब ट्रे के लिए जगह बनाने के लिए छोटी मेज से कुछ किताबें आदि हटा रही थी, ने रॉबर्ट का ध्यान फूलों के गिलास की ओर आकर्षित किया, जिसकी पंखुड़ियों का गहरा लाल, बर्फीला और सुनहरा रंग मोमबत्ती की रोशनी में वास्तव में चमकदार लग रहा था।

“ये फील्डहेड से आए हैं,” उसने कहा, “निस्संदेह आपके लिए उपहार के रूप में। हम जानते हैं कि वहाँ सबसे पसंदीदा कौन है; मैं तो बिल्कुल नहीं, मुझे यकीन है।”

होर्टेंस को मजाक करते सुनना एक आश्चर्य की बात थी - यह इस बात का संकेत था कि वह वास्तव में बहुत खुश थी।

"तो क्या हमें यह समझना चाहिए कि रॉबर्ट ही पसंदीदा उम्मीदवार है?" लुई ने टिप्पणी की।

“मेरी प्यारी,” होर्टेंस ने उत्तर दिया, “रॉबर्ट – वह दुनिया की सबसे अनमोल चीज है; उसके आगे बाकी सारी मानवता तुच्छ है। – क्या मैं सही नहीं कह रही, मेरी बच्ची?” उसने कैरोलिन से विनती करते हुए कहा।

कैरोलिन को मजबूरन "हाँ" कहना पड़ा और उसकी उम्मीद की किरण बुझ गई। उसके बोलते ही उसका सितारा डूब गया।

“तुम भी, रॉबर्ट?” लुई ने पूछा।

“जब तुम्हें मौका मिले, तो उससे पूछ लेना,” शांत भाव से जवाब मिला। कैरोलिन ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि उसका चेहरा लाल हुआ या पीला पड़ गया। उसे पता चला कि काफी देर हो चुकी है और उसे घर जाना है। वह घर जाएगी; अब तो रॉबर्ट भी उसे रोक नहीं सकता था।

अध्याय XXIV.

मृत्यु की छाया की घाटी।

कभी-कभी भविष्य धीमी आवाज़ में आने वाली घटनाओं की चेतावनी देता प्रतीत होता है, मानो कोई दूर स्थित तूफ़ान मंडरा रहा हो, जो हवा की लय में, आकाश के उफान में, और अजीब तरह से फटे बादलों में, समुद्र को जहाज़ों के मलबे से भर देने वाले एक शक्तिशाली झटके की घोषणा करता हो; या मानो कोहरे में महामारी का पीलापन लिए पश्चिमी द्वीपों को पूरब की विषैली साँसों से ढक रहा हो, और भारतीय प्लेग की साँसों से अंग्रेज़ी घरों की दीवारों को धुंधला कर रहा हो। कभी-कभी यह भविष्य अचानक फूट पड़ता है, मानो कोई चट्टान फट गई हो, और उसमें से एक कब्र खुल गई हो, जिसमें से सोए हुए का शरीर निकला हो। इससे पहले कि आप संभलें, आप एक छिपी हुई और अनसोची विपत्ति - एक नए लाजरस - के सामने खड़े हो जाते हैं।

कैरोलिन हेलस्टोन हॉलो कॉटेज से स्वस्थ होकर घर लौटी, जैसा कि उसने सोचा था। अगली सुबह जागने पर उसे असामान्य सुस्ती महसूस हुई। नाश्ते में, और अगले दिन के हर भोजन में, उसे भूख का कोई एहसास नहीं हुआ। स्वादिष्ट भोजन भी उसके लिए राख और बुरादे जैसा था।

“क्या मैं बीमार हूँ?” उसने पूछा और शीशे में खुद को देखा। उसकी आँखें चमक रही थीं, पुतलियाँ फैली हुई थीं, उसके गाल पहले से ज़्यादा गुलाबी और भरे हुए लग रहे थे। “मैं ठीक लग रही हूँ; फिर भी मुझे भूख क्यों नहीं लग रही?”

उसे अपनी कनपटी में धड़कन तेज़ महसूस हुई; साथ ही, उसे अपने दिमाग में अजीब सी हलचल भी महसूस हुई। उसका मनोबल बढ़ गया; सैकड़ों व्यस्त और बिखरे हुए लेकिन शानदार विचार उसके मन में उमड़ रहे थे। उन विचारों पर एक चमक थी, जिसने उसके चेहरे को भी निखार दिया।

इसके बाद एक गर्म, प्यास से भरी, बेचैन रात गुज़री। सुबह होते-होते एक भयानक सपने ने उसे बाघ की तरह जकड़ लिया; जब वह जागी, तो उसे महसूस हुआ और उसे पता चल गया कि वह बीमार है।

उसे बुखार कैसे लगा (बुखार ही था), यह वह बता नहीं सकती थी। शायद देर रात घर लौटते समय, शहद और दुर्गंध से भरी कोई मीठी, जहरीली हवा उसके फेफड़ों और नसों में प्रवेश कर गई, और वहाँ पहले से ही मानसिक उत्तेजना का बुखार, लंबे संघर्ष की सुस्ती और आदतन उदासी को पाकर, उस चिंगारी को आग में बदल दिया और अपने पीछे एक धधकती आग छोड़ गई।

लेकिन ऐसा लग रहा था मानो यह एक हल्की सी आग हो। दो गर्म दिनों और चिंता भरी रातों के बाद, लक्षणों में कोई तेज़ी नहीं आई थी, और न ही उसके चाचा, न फैनी, न डॉक्टर, और न ही मिस कील्डर (जब वह मिलने आई थीं) को उसकी कोई चिंता थी। सभी को विश्वास था कि कुछ दिनों में वह ठीक हो जाएगी।

कुछ दिन बीत गए, और—हालांकि अब भी यही उम्मीद थी कि इसमें ज्यादा देर नहीं लगेगी—सुधार शुरू नहीं हुआ था। श्रीमती प्रायर, जो रोज़ उनसे मिलने आती थीं—एक सुबह जब वह दो सप्ताह से बीमार थीं, तब भी उनके कमरे में मौजूद थीं—कुछ मिनटों तक उन्हें ध्यान से देखती रहीं। उन्होंने उनका हाथ पकड़ा और अपनी उंगली उनकी कलाई पर रखी; फिर चुपचाप कमरे से निकलकर श्री हेलस्टोन के अध्ययन कक्ष में चली गईं। उनके साथ वह काफी देर तक—आधी सुबह तक—अकेले रहीं। अपनी बीमार सहेली के पास लौटकर उन्होंने शॉल और टोपी उतार दी। वह कुछ देर तक बिस्तर के पास खड़ी रहीं, एक हाथ दूसरे में रखे, धीरे-धीरे खुद को आगे-पीछे झुलाती रहीं, अपनी आदत के अनुसार। अंत में उन्होंने कहा, "मैंने फैनी को फील्डहेड भेजा है मेरे लिए कुछ सामान लाने के लिए, जो मुझे यहां थोड़े समय के प्रवास के दौरान चाहिए होंगे। मेरी इच्छा है कि जब तक आप ठीक न हो जाएं, मैं आपके साथ रहूं। आपके चाचा ने कृपा करके मुझे यहां रहने की अनुमति दी है। क्या आपको यह ठीक लगेगा, कैरोलीन?"

मुझे खेद है कि आपको इतनी अनावश्यक परेशानी उठानी पड़ रही है। मैं बहुत बीमार नहीं हूँ, लेकिन मैं दृढ़ता से मना नहीं कर सकती। यह जानकर मुझे बहुत सुकून मिलेगा कि आप घर में हैं, कभी-कभी आपको कमरे में देख पाऊँगी; लेकिन मेरी वजह से खुद को सीमित न रखें, प्रिय श्रीमती प्रायर। फैनी मेरी बहुत अच्छी देखभाल कर

रही है।

श्रीमती प्रायर, उस नन्ही सी बच्ची के ऊपर झुकी हुई थीं, और टोपी के नीचे उसके बालों को संवार रही थीं और धीरे से उसका तकिया उठा रही थीं। जब वह ये सब कर रही थीं, तो कैरोलाइन मुस्कुराते हुए अपना चेहरा ऊपर उठाकर उन्हें चूमने लगी।

"क्या आपको दर्द नहीं हो रहा है? क्या आप काफी आराम से हैं?" यह सवाल धीमी, गंभीर आवाज में पूछा गया, जब स्वयंभू नर्स ने उस स्पर्श के आगे घुटने टेक दिए।

मुझे लगता है कि मैं लगभग खुश हूँ।

“क्या आप पीना चाहते हैं? आपके होंठ तो सूखे हैं।”

उसने ठंडे पेय से भरा गिलास अपने मुंह से लगाया।

"कैरोलीन, क्या तुमने आज कुछ खाया है?"

"मैं नहीं खा सकते हैं।"

"लेकिन जल्द ही आपकी भूख वापस आ जाएगी; यह अवश्य वापस आएगी - यानी, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ऐसा ही हो।"

उसे दोबारा सोफे पर लिटाते हुए, उसने उसे अपनी बाहों में भर लिया; और ऐसा करते हुए, एक ऐसी हरकत से जो शायद ही स्वैच्छिक प्रतीत होती थी, उसने उसे अपने दिल से लगा लिया, और एक पल के लिए उसे कसकर थामे रखा।

कैरोलिन ने कहा, "मैं शायद ही कभी ठीक होने की कामना करूंगी, ताकि मैं तुम्हें हमेशा अपने पास रख सकूं।"

श्रीमती प्रायर ने इस भाषण पर मुस्कुराया नहीं। उनके चेहरे पर एक कंपकंपी छाई हुई थी, जिसे कुछ मिनटों तक दबाने में वे तल्लीन रहीं।

“आप मुझसे ज़्यादा फैनी के आदी हैं,” उसने कुछ देर बाद कहा। “मुझे लगता है कि मेरी उपस्थिति आपको अजीब या दखलंदाज़ी वाली लग सकती है?”

“नहीं; बिलकुल स्वाभाविक, और बहुत सुकून देने वाला। आप बीमार लोगों की सेवा करने की आदी होंगी, महोदया। आप कमरे में इतनी कोमलता से चलती हैं, इतनी धीमी आवाज़ में बोलती हैं, और मुझे इतने प्यार से छूती हैं।”

"मैं किसी भी चीज में निपुण नहीं हूँ, प्रिय। तुम मुझे अक्सर अनाड़ी पाओगे, लेकिन कभी लापरवाह नहीं।"

वह बिल्कुल भी लापरवाह नहीं थीं। उस क्षण से फैनी और एलिज़ा बीमार के कमरे

में बेजान सी हो गईं। श्रीमती प्रायर ने उसे अपना क्षेत्र बना लिया; उन्होंने उसके सभी कर्तव्य निभाए; वह दिन-रात वहीं रहीं। मरीज़ ने शुरू में तो धीरे-धीरे विरोध किया, लेकिन जल्द ही बिल्कुल भी नहीं। अब उनके बिस्तर से अकेलापन और उदासी गायब हो गई थी; उनकी जगह सुरक्षा और सांत्वना ने ले ली थी। वह और उनकी नर्स एक अद्भुत बंधन में बंध गईं। कैरोलीन को आमतौर पर अधिक देखभाल की आवश्यकता या उसे प्राप्त करना कष्टदायी लगता था। सामान्य परिस्थितियों में, श्रीमती प्रायर को छोटी-मोटी सेवाएँ करने की न तो आदत थी और न ही कला; लेकिन अब सब कुछ इतनी सहजता से, इतनी स्वाभाविक रूप से हो रहा था कि मरीज़ उतनी ही खुशी से देखभाल चाहती थी जितनी नर्स देखभाल करने के लिए तत्पर थी; नर्स में थकान का कोई संकेत भी नर्स को यह याद नहीं दिलाता था कि उसे चिंतित होना चाहिए। वास्तव में, कोई बहुत कठिन कर्तव्य नहीं था; लेकिन एक वेतनभोगी कर्मचारी को यह कठिन लग सकता था।

इतनी देखभाल के बावजूद बीमार लड़की का ठीक न होना अजीब लग रहा था; फिर भी यही सच था। वह पिघलती बर्फ की माला की तरह मुरझा रही थी; सूखे में खिले फूल की तरह सूख रही थी। मिस कील्डर, जिनके मन में खतरे या मृत्यु का ख्याल शायद ही कभी आता था, ने पहले तो अपनी सहेली के लिए कोई डर नहीं जताया था; लेकिन जब भी वह उनसे मिलने जातीं, उन्हें उसकी हालत बिगड़ती और कमजोर होती देखकर डर सताने लगा। वह मिस्टर हेलस्टोन के पास गईं और इतनी दृढ़ता से अपनी बात रखी कि आखिरकार उन्हें अनिच्छा से ही सही, यह मानना पड़ा कि उनकी भतीजी को माइग्रेन से कहीं ज्यादा गंभीर बीमारी है; और जब मिसेज प्रायर आईं और चुपचाप डॉक्टर को बुलाने की मांग की, तो उन्होंने कहा कि अगर वह चाहें तो दो डॉक्टर बुला सकती हैं। एक डॉक्टर आया, लेकिन वह तो मानो भविष्यवक्ता था। उसने एक रहस्यमयी बात कही जिसका रहस्य भविष्य ही सुलझाएगा, कुछ दवाइयां लिखीं, कुछ निर्देश दिए - और यह सब उसने बड़े ही अधिकारपूर्ण लहजे में किया - अपनी फीस जेब में डाली और चला गया। शायद वह अच्छी तरह जानता था कि वह कुछ भी अच्छा नहीं कर सकता, लेकिन वह यह कहना पसंद नहीं करता था।

फिर भी, आस-पड़ोस में किसी गंभीर बीमारी की अफवाह नहीं फैली। हॉलो कॉटेज में यही माना गया कि कैरोलीन को केवल ज़ुकाम हुआ है, क्योंकि उसने इस बारे में हॉर्टेंस को एक पत्र लिखा था; और मैडमोजेल ने किशमिश के जैम के दो डिब्बे,

हर्बल चाय की एक रेसिपी और सलाह का एक पत्र भेजकर संतोष कर लिया।

श्रीमती यॉर्क को जब बताया गया कि एक चिकित्सक को बुलाया गया है, तो उन्होंने धनी और आलसी लोगों की रोगनिराशाजनक कल्पनाओं पर उपहास किया, जिनके बारे में उन्होंने कहा कि उनके पास अपने अलावा सोचने के लिए कुछ नहीं है, इसलिए अगर उनकी छोटी उंगली में भी दर्द होता है तो उन्हें डॉक्टर को बुलाना ही पड़ता है।

कैरोलिन के रूप में प्रतिनिधित्व किए गए "अमीर और आलसी" लोग, इस बीच तेजी से पतन की स्थिति में गिर रहे थे, जिसकी शीघ्रता से घटित हुई दुर्बलता ने इसे देखने वाले सभी लोगों को चकित कर दिया, सिवाय एक के; क्योंकि उस एक ने ही यह विचार किया कि कैसे कमजोर ढांचा अचानक विनाश में ढह सकता है।

बीमार लोगों के अक्सर ऐसे ख्याल होते हैं जिन्हें आम देखभाल करने वाले समझ नहीं पाते, और कैरोलीन का भी एक ऐसा ही ख्याल था जिसे उसकी कोमल नर्स भी पहले नहीं समझा पाई। हफ्ते के एक खास दिन, एक खास समय पर, चाहे उसकी हालत कैसी भी हो, वह उठकर कपड़े पहनने और खिड़की के पास अपनी कुर्सी पर बैठने की गुहार लगाती। वह दोपहर तक इसी स्थिति में बैठी रहती। चाहे उसकी कमजोरी या थकावट उसके पीले चेहरे पर कितनी भी झलकती, वह फिर भी आराम करने के लिए किसी भी आग्रह को चुपचाप टाल देती, जब तक कि चर्च की घड़ी में ठीक दोपहर के 12 बज न जाते। 12 बजते ही वह शांत हो जाती और विनम्रता से लेट जाती। पलंग पर वापस आने पर, वह अक्सर अपना चेहरा तकिये में छिपा लेती और चादर को अपने चारों ओर कसकर लपेट लेती, मानो दुनिया और सूरज से खुद को दूर रखना चाहती हो, जिनसे वह थक चुकी थी। कई बार, जब वह इस तरह लेटी होती, तो बिस्तर में एक हल्की सी हलचल होती और एक धीमी सी सिसकी सन्नाटे को तोड़ देती। श्रीमती प्रायर ने इन बातों पर ध्यान दिया था।

एक मंगलवार की सुबह, हमेशा की तरह, उसने उठने की अनुमति मांगी थी, और अब वह अपने सफेद ड्रेसिंग गाउन में लिपटी हुई, आरामकुर्सी पर आगे की ओर झुकी हुई, जाली से स्थिर और धैर्यपूर्वक देख रही थी। श्रीमती प्रायर थोड़ा पीछे बैठी थीं, मानो बुनाई कर रही हों, लेकिन वास्तव में उन्हें देख रही थीं। उनके पीले, उदास माथे पर एक बदलाव आया, जिससे उसकी उदासी दूर हो उठी; उनकी धुंधली आँखों में एक चमक आ गई, जिससे उनकी दमक फिर से जाग उठी; वह आधी उठीं और

गंभीरता से बाहर देखने लगीं। श्रीमती प्रायर धीरे से पास आकर, अपने कंधे के ऊपर से देखा। इस खिड़की से कब्रिस्तान दिखाई दे रहा था, उसके आगे सड़क; और वहाँ, तेज़ी से घोड़े पर सवार एक व्यक्ति दिखाई दिया। वह आकृति अभी इतनी दूर नहीं थी कि उसे पहचाना न जा सके। श्रीमती प्रायर की नज़र दूर तक जाती थी; वह श्री मूर को जानती थीं। जैसे ही एक ऊँची पहाड़ी ने उन्हें नज़र से ओझल किया, घड़ी में बारह बज गए।

"क्या मैं दोबारा लेट सकती हूँ?" कैरोलाइन ने पूछा।

उनकी नर्स ने उन्हें बिस्तर तक लेटाया। उन्हें लिटाकर पर्दा खींच देने के बाद, वह पास खड़ी होकर सुनने लगीं। छोटा सा पलंग काँप रहा, दबी हुई सिसकी हवा में गूँज उठी। श्रीमती प्रायर के चेहरे पर पीड़ा का भाव आ गया; उन्होंने अपने हाथ मल लिए; उनके होंठों से एक हल्की सी कराह निकल गई। उन्हें अब याद आया कि मंगलवार को व्हिनबरी का बाज़ार लगता है। श्री मूर को उस दिन दोपहर से ठीक पहले वहाँ जाते समय हमेशा पादरी के निवास के पास से गुज़रना पड़ता है।

कैरोलीन हमेशा अपने गले में रेशम की एक पतली चोटी पहनती थी, जिसमें कोई गहना लगा हुआ था। श्रीमती प्रायर ने सोने के उस टुकड़े की चमक देखी थी, लेकिन उसे ठीक से देख नहीं पाई थीं। उनकी मरीज़ उसे कभी नहीं छोड़ती थी। कपड़े पहनते समय वह उसे अपनी छाती में छिपा लेती थी; बिस्तर पर लेटते समय वह हमेशा उसे अपने हाथ में रखती थी। उस मंगलवार की दोपहर, नींद से ज़्यादा सुस्ती जैसी लगने वाली वह क्षणिक ऊंघ, जो कभी-कभी लंबे दिनों को छोटा कर देती थी, उस पर छा गई थी। मौसम गर्म था। बुखार की बेचैनी में करवट बदलते हुए उसने चादर को थोड़ा सा हटा दिया था। श्रीमती प्रायर उन्हें वापस बिछाने के लिए झुकीं। बीमार लड़की की छाती पर बेजान पड़ा उसका छोटा, कमजोर हाथ, हमेशा की तरह अपने बड़े प्यार से सहेजे हुए खजाने को थामे हुए था। जिन उंगलियों की कमजोरी देखकर दर्द होता था, वे अब नींद में आराम कर रही थीं। श्रीमती प्रायर ने धीरे से चोटी खोली और उसमें से एक छोटा सा लॉकेट निकाला - एक मामूली सी चीज़, जिसे खरीदना उनके छोटे से बजट के हिसाब से ठीक था। इसके क्रिस्टल जैसे चेहरे के नीचे काले बालों का एक गुच्छा दिखाई दिया, जो इतना छोटा और कुरकुरा था कि किसी महिला के सिर से काटा हुआ नहीं लग रहा था।

किसी हलचल से रेशमी चेन में हल्की सी झनझनाहट हुई। सोई हुई महिला

चौंककर जाग गई। जागने पर उसके विचार आमतौर पर बिखरे हुए होते थे और उसकी नज़रें इधर-उधर भटकती रहती थीं। डर के मारे आधा उठते हुए वह बोली, “इसे मुझसे मत छीनो, रॉबर्ट! मत छीनो! यह मेरा आखिरी सहारा है; मुझे इसे अपने पास रखने दो। मैं किसी को नहीं बताऊंगी कि ये किसके बाल हैं; मैं इसे कभी नहीं दिखाऊंगी।”

श्रीमती प्रायर पहले ही पर्दे के पीछे गायब हो चुकी थीं। पलंग के पास एक गहरी कुर्सी पर पीछे की ओर झुकी हुई, वे नज़रों से ओझल हो गई थीं। कैरोलीन ने कमरे में चारों ओर देखा; उसे लगा कि कमरा खाली है। जैसे-जैसे उसके बिखरे हुए विचार धीरे-धीरे लौटते गए, हर विचार अपने कमज़ोर पंखों को मन के उदास किनारे पर समेटे हुए, थके हुए पक्षियों की तरह, शून्य को देखते हुए और अपने चारों ओर सन्नाटा महसूस करते हुए, उसे लगा कि वह अकेली है। वह अभी भी शांत नहीं थी; शायद स्वस्थ आत्म-संयम और आत्म-नियंत्रण अब उसके पास नहीं रहेगा; शायद वह दुनिया जिसमें बलवान और समृद्ध लोग रहते हैं, हमेशा के लिए उसके पैरों तले से खिसक गई है। कम से कम, अक्सर उसे ऐसा ही लगता था। स्वस्थ अवस्था में वह कभी ज़ोर से सोचने की आदी नहीं थी, लेकिन अब शब्द अनजाने में उसके होठों से निकल रहे थे।

“काश, सब कुछ खत्म होने से पहले मैं उसे एक बार फिर देख सकूँ! भगवान की कृपा मुझ पर इतनी तो बनी रहे!” वह रो पड़ी। “हे भगवान, मरने से पहले मुझे थोड़ी शांति प्रदान कीजिए!” यह उसकी विनम्र प्रार्थना थी।

लेकिन जब तक मैं मर नहीं जाऊंगी, तब तक उसे पता नहीं चलेगा कि मैं बीमार हूं, और वह तब आएगा जब वे मुझे लिटा चुके होंगे, और मैं बेहोश, ठंडी और अकड़ी हुई होऊंगी।

“तो मेरी दिवंगत आत्मा क्या महसूस कर सकती है? क्या वह देख सकती है या जान सकती है कि मिट्टी का क्या होता है? क्या आत्माएं किसी माध्यम से जीवित शरीर से संवाद कर सकती हैं? क्या मृत आत्माएं अपने बिछड़े हुए लोगों से दोबारा मिल सकती हैं? क्या वे प्रकृति के तत्वों में आ सकती हैं? क्या हवा, पानी, आग मुझे मूर तक का रास्ता दिखाएंगे?”

क्या यह व्यर्थ है कि हवा कभी-कभी लगभग सुरीली आवाज़ में सुनाई देती है—जैसे मैंने हाल ही में रात में उसे गाते हुए सुना है—या खिड़की से सिसकते हुए गुज़रती है, मानो आने वाले दुख के लिए? क्या तब कुछ भी उसे सताता नहीं, कुछ भी उसे प्रेरित नहीं करता?

"अरे, एक रात अचानक मेरे मन में कुछ शब्द आए; एक ऐसी धुन निकली जिसे मैं लिख सकता था, लेकिन मैं भयभीत था और मंद रोशनी में पेंसिल और कागज लेने के लिए उठने की हिम्मत नहीं कर पाया।"

“वह बिजली क्या है जिसकी वे बात करते हैं, जिसके बदलाव हमें स्वस्थ या अस्वस्थ बनाते हैं, जिसकी कमी या अधिकता विस्फोट करती है, जिसका संतुलन हमें पुनर्जीवित करता है? वातावरण में हमारे चारों ओर मौजूद वे सभी प्रभाव क्या हैं, जो हमारी नसों पर तार वाले वाद्ययंत्रों पर उंगलियों की तरह बजते रहते हैं, और कभी मधुर स्वर, कभी विलाप, कभी उल्लासपूर्ण उभार, और फिर सबसे उदास लय उत्पन्न करते हैं?”

“दूसरा लोक कहाँ है? दूसरा जीवन कैसा होगा? मैं ये क्यों पूछ रहा हूँ? क्या मुझे ये सोचने का कोई कारण नहीं है कि वो घड़ी बहुत तेज़ी से आ रही है जब मेरे लिए पर्दा हट जाएगा? क्या मैं नहीं जानता कि वो महान रहस्य समय से पहले ही मुझ पर प्रकट होने वाला है? हे महान आत्मा, जिसकी कृपा पर मैं भरोसा करता हूँ, जिसे मैंने अपने पिता के रूप में बचपन से ही रात-दिन प्रार्थना की है, हे प्रभु, अपनी इस निर्बल रचना की सहायता कीजिए! मुझे उस कठिन परीक्षा से बचाइए जिसका मुझे डर है और जिसे मुझे सहना ही होगा! मुझे शक्ति दीजिए! मुझे धैर्य दीजिए! मुझे—हे प्रभु, मुझे विश्वास दीजिए!”

वह अपने तकिए पर वापस गिर पड़ी। श्रीमती प्रायर ने चुपके से कमरे से निकलने का रास्ता खोज लिया। थोड़ी देर बाद वह कमरे में वापस आ गईं, मानो उन्होंने यह अजीबोगरीब एकालाप सुना ही न हो।

अगले दिन कई लोग मिलने आए। सबको पता चल गया था कि मिस हेलस्टोन की हालत और बिगड़ गई है। मिस्टर हॉल और उनकी बहन मार्गरेट भी आए। दोनों ही मरीज़ के कमरे में कुछ देर रहने के बाद रोते हुए बाहर निकले; उन्होंने पाया कि मरीज़ की हालत उनकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा बदल गई थी। हॉर्टेंस मूर भी आईं। कैरोलीन उनकी मौजूदगी से उत्साहित लग रही थीं। उन्होंने मुस्कुराते हुए उन्हें भरोसा दिलाया कि उनकी हालत गंभीर नहीं है; उन्होंने धीमी आवाज़ में, लेकिन खुशी से उनसे बात की। उनके रहने के दौरान, उत्साह से उनके चेहरे की लाली और बढ़ गई; वह पहले से बेहतर लग रही थीं।

"मिस्टर रॉबर्ट कैसे हैं?" श्रीमती प्रायर ने पूछा, जब होर्टेंस जाने की तैयारी कर रही

थी।

"जब वह अस्पताल से निकले तब उनकी हालत बहुत अच्छी थी।"

“बाएं! क्या वह घर से चला गया है?”

तब यह बताया गया कि जिन दंगाइयों का वह पीछा कर रहा था, उनके बारे में पुलिस को मिली कुछ खुफिया जानकारी के कारण उसे उस सुबह बर्मिंघम जाना पड़ा था, और शायद उसके लौटने में दो सप्ताह का समय लग सकता है।

“क्या उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है कि मिस हेलस्टोन बहुत बीमार हैं?”

“अरे नहीं! उसने भी मेरी तरह यही सोचा था कि उसे बस हल्की-फुल्की सर्दी लगी है।”

इस मुलाकात के बाद, श्रीमती प्रायर ने एक घंटे से अधिक समय तक कैरोलिन के पलंग के पास जाने से परहेज किया। उन्होंने उसे रोते हुए सुना था, और उनके आंसुओं को देखने की हिम्मत नहीं कर पाईं।

जैसे-जैसे शाम ढलने लगी, वह उसके लिए चाय लेकर आई। कैरोलिन ने नींद से जागते हुए अपनी आँखें खोलीं और अपनी नर्स को एक अपरिचित नज़र से देखा।

“इस गर्मी की सुबह जब मैं लेखा कार्यालय की खिड़की पर खड़ी थी, तो मुझे घाटी में हनीसकल की खुशबू महसूस हुई,” उसने कहा।

फीके होंठों से निकले ऐसे विचित्र शब्द किसी स्नेही श्रोता के हृदय को लोहे से भी अधिक गहराई से भेद देते हैं। किताबों में शायद ये शब्द रोमांटिक लगते हों; लेकिन असल जिंदगी में ये बेहद पीड़ादायक होते हैं।

"मेरी प्यारी, क्या तुम मुझे जानती हो?" श्रीमती प्रायर ने कहा।

“मैं रॉबर्ट को नाश्ते के लिए बुलाने अंदर गई थी। मैं उसके साथ बगीचे में थी। उसने मुझे जाने के लिए कहा था। ओस की तेज बौछार ने फूलों को ताजगी दी है। आड़ू पक रहे हैं।”

“मेरे प्यारे! मेरे प्यारे!” नर्स बार-बार यही दोहराती रही।

मुझे लगा था कि दिन का उजाला हो गया है - सूर्योदय के काफी देर बाद। अब तो अंधेरा लग रहा है। क्या अब चंद्रमा अस्त हो गया है?

वह चाँद, जो अभी-अभी उगा था, पूरी तरह से सौम्य दृष्टि से उस पर टकटकी लगाए हुए था। गहरे नीले आकाश में तैरता हुआ, वह उसे निर्मल रूप से देख रहा था।

“तो क्या अभी सुबह नहीं हुई है? मैं कुटिया में नहीं हूँ? ये कौन है? मुझे अपने

बिस्तर के पास एक आकृति दिखाई दे रही है।”

“मैं खुद हूँ— तुम्हारी दोस्त हूँ— तुम्हारी नर्स हूँ— तुम्हारी—— अपना सिर मेरे कंधे पर टिका लो। खुद को संभालो।” धीमी आवाज़ में— “हे भगवान, दया करो! उसे जीवन दो, और मुझे शक्ति दो! मुझे हिम्मत दो! मुझे शब्द सिखाओ!”

कुछ मिनट खामोशी में बीत गए। मरीज नर्स की कांपती बाहों में, उसकी धड़कती छाती पर, मूक और निष्क्रिय पड़ा रहा।

“अब मैं बेहतर महसूस कर रही हूँ,” कैरोलाइन ने अंत में फुसफुसाते हुए कहा, “काफी बेहतर। मुझे अपनी जगह का एहसास हो रहा है। ये श्रीमती प्रायर मेरे पास हैं। मैं सपना देख रही थी। सपने से जागने पर मैं बातें करती हूँ; बीमारी में लोग अक्सर ऐसा करते हैं। आपका दिल कितनी तेजी से धड़क रहा है, महोदया! डरिए मत।”

“डर नहीं है बेटा—बस थोड़ी सी घबराहट है, जो जल्द ही दूर हो जाएगी। मैं तुम्हारे लिए चाय लाया हूँ, कैरी। तुम्हारे चाचा ने खुद बनाई है। तुम्हें पता है वो कहते हैं कि वो किसी भी गृहिणी से बेहतर चाय बना सकते हैं। चख कर देखो। उन्हें यह सुनकर चिंता हुई कि तुम बहुत कम खाते हो; अगर तुम्हारी भूख बढ़ जाए तो उन्हें बहुत खुशी होगी।”

मुझे प्यास लगी है। मुझे पानी पीने दो।

उसने बड़े चाव से पिया।

“मैडम, कितने बजे हैं?” उसने पूछा।

“नौ बज चुके हैं।”

“बाद में नहीं? ओह! अभी तो मुझे बहुत लंबी रात बितानी है। लेकिन चाय ने मुझे ताकत दे दी है। मैं जागता रहूंगा।”

श्रीमती प्रायर ने उसे उठाया और उसके तकिए ठीक से लगाए।

“भगवान का शुक्र है! मैं हमेशा इतना दुखी, बीमार और निराश नहीं रहता। हॉर्टेंस के जाने के बाद से दोपहर का मौसम खराब रहा है; शायद शाम बेहतर हो। मुझे लगता है कि आज रात सुहाना मौसम है? चाँद साफ चमक रहा है।”

“बहुत बढ़िया — एक आदर्श ग्रीष्म ऋतु की रात। पुराने गिरजाघर का शिखर लगभग चांदी की तरह सफेद चमक रहा है।”

"और क्या कब्रिस्तान शांत दिखता है?"

“हां, और बगीचा भी। पत्तियों पर ओस की बूंदें चमक रही हैं।”

“क्या आपको कब्रों के बीच बहुत सारे लंबे खरपतवार और बिच्छू घास दिखाई दे रहे हैं? या वे घास-फूस से ढके और फूलों वाले दिखते हैं?”

“मुझे कुछ टीलों पर बंद डेज़ी के फूल मोतियों की तरह चमकते हुए दिखाई दे रहे हैं। थॉमस ने डॉक के पत्ते और उगी हुई घास काट दी है और सब कुछ साफ कर दिया है।”

“मुझे हमेशा यह काम करवाना अच्छा लगता है; जगह को व्यवस्थित देखकर मन को शांति मिलती है। और, मैं कह सकता हूँ, अभी चर्च के अंदर चाँदनी उतनी ही कोमल है जितनी मेरे कमरे में। यह पूर्वी खिड़की से हेलस्टोन स्मारक पर सीधी पड़ेगी। जब मैं आँखें बंद करता हूँ तो मुझे सफेद संगमरमर पर काले अक्षरों में लिखे बेचारे पापा के शिलालेख दिखाई देते हैं। नीचे अन्य शिलालेखों के लिए काफी जगह है।”

“विलियम फैरेन आज सुबह आपके फूलों की देखभाल करने आए थे। उन्हें डर था कि अब जब आप खुद उनकी देखभाल नहीं कर सकतीं, तो उनकी उपेक्षा हो जाएगी। इसलिए वे आपके दो पसंदीदा पौधे घर ले गए हैं ताकि उनकी अच्छी तरह देखभाल कर सकें।”

“अगर मैं वसीयत बनाऊं, तो मैं विलियम को अपने सारे पौधे दे दूंगी; शर्ली को अपने गहने दे दूंगी—सिवाय एक के, जिसे मैं अपने गले से कभी नहीं उतारूंगी; और आपको, महोदया, मेरी किताबें।” कुछ देर रुककर— “श्रीमती प्रायर, मुझे किसी चीज़ की बहुत तीव्र इच्छा है।”

“किसलिए, कैरोलाइन?”

“तुम्हें पता है मुझे तुम्हारा गाना सुनना कितना अच्छा लगता है। अभी मुझे एक भजन सुनाओ। वो भजन सुनाओ जो इस तरह शुरू होता है, —

‘हे हमारे ईश्वर, जो बीते युगों में हमारे सहायक रहे हैं,
आने वाले वर्षों के लिए हमारी आशा,
तूफानी आंधी से हमारा आश्रय,
हमारा आश्रय, हमारा आश्रय, हमारा घर!

श्रीमती प्रायर ने तुरंत बात मान ली।

इसमें कोई हैरानी नहीं कि कैरोलाइन को उसका गाना सुनना अच्छा लगता था। उसकी आवाज़, बोलते समय भी, मधुर और सुरीली थी; गाने में तो मानो दिव्य थी। न तो बांसुरी और न ही डलसिमर की आवाज़ इतनी शुद्ध होती है। लेकिन आवाज़ तो

गौण थी, उस भाव के आगे जो उसके अंदर से निकलता था—एक भावुक हृदय से निकली कोमल कंपकंपी।

रसोई में मौजूद नौकरों ने धुन सुनकर सीढ़ियों के नीचे छिपकर सुनना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि बूढ़े हेलस्टोन भी, जो बगीचे में टहलते हुए महिलाओं के रहस्यमय और कमज़ोर स्वभाव पर विचार कर रहे थे, अपनी क्यारियों के बीच रुक गए ताकि उस उदास धुन को और स्पष्ट रूप से सुन सकें। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि यह धुन उन्हें अपनी भूली हुई मृत पत्नी की याद क्यों दिला रही थी; और न ही यह कि कैरोलीन के ढलते बचपन के लिए वे अब तक जितने चिंतित थे, उससे कहीं ज़्यादा चिंतित क्यों थे। उन्हें यह याद करके खुशी हुई कि उन्होंने उस शाम मजिस्ट्रेट विने से मिलने का वादा किया था। उदासी और निराशावादी विचार उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं थे। जब वे उन पर हावी होते, तो वे आमतौर पर उन्हें तेज़ी से भगाने का उपाय ढूंढ लेते थे। खेतों को पार करते समय भजन की हल्की आवाज़ उनका पीछा करती रही। वे अपनी आदत के अनुसार तेज़ कदमों से चलने लगे ताकि वे उस धुन से दूर हो सकें।

“तेरा वचन हमारे शरीर को मिट्टी में मिल जाने का आदेश देता है,”
‘हे मनुष्यों के पुत्रों, लौट आओ;’
सभी राष्ट्रों की उत्पत्ति सर्वप्रथम पृथ्वी से हुई।
और फिर से धरती की ओर मुड़ें।
"हजार युगों तक तेरी दृष्टि में"
जैसे कोई शाम बीत गई हो —
रात खत्म करने वाली घड़ी जितनी छोटी।
सूर्योदय से पहले।
समय, एक निरंतर बहने वाली धारा की तरह,
अपने सभी पुत्रों को अपने साथ ले जाता है;
वे एक सपने की तरह, भुला दिए गए, उड़ते हैं।
उद्घाटन के दिन ही उनकी मृत्यु हो जाती है।
“फूलों से भरे खेतों की तरह, राष्ट्र खड़े हैं,
सुबह की रोशनी में ताजगी;
घास काटने वाली मशीन के हाथ के नीचे फूल
रात होने से पहले मुरझा जाओ।

“हे हमारे ईश्वर, जो बीते युगों में हमारे सहायक रहे हैं,

आने वाले वर्षों के लिए हमारी आशा,

जब तक संकट बने रहें, हे प्रभु, हमारे रक्षक बनो।

हे पिता, आप ही हमारा घर बनिए!

भजन समाप्त होने पर कैरोलिन ने सुझाव दिया, "अब एक गीत गाओ - एक स्कॉटिश गीत - 'ये बैंक्स एंड ब्रेज़ ओ' बोनी डून'।"

श्रीमती प्रायर ने एक बार फिर आज्ञा का पालन किया, या यूं कहें कि आज्ञा का पालन करने का प्रयास किया। पहले छंद के अंत में वह रुक गईं। वह आगे नहीं बढ़ सकीं। उनका हृदय भावनाओं से भर गया था।

“तुम माहौल की उदासी पर रो रही हो। इधर आओ, मैं तुम्हें दिलासा देती हूँ,” कैरोलिन ने दया भरे लहजे में कहा। श्रीमती प्रायर आईं। वह अपने मरीज़ के बिस्तर के किनारे बैठ गईं और उसकी कमजोर बाहों को अपने चारों ओर लपेट लिया।

“तुम अक्सर मुझे दिलासा देती हो; मुझे भी तुम्हें दिलासा देने दो,” छोटी लड़की ने उसके गाल पर चुंबन करते हुए धीरे से कहा। “मुझे उम्मीद है,” उसने आगे कहा, “तुम मेरे लिए तो नहीं रो रही हो?”

कोई जवाब नहीं मिला।

“क्या आपको लगता है कि मैं ठीक नहीं हो पाऊंगा? मुझे बहुत ज्यादा बीमारी नहीं है—बस कमजोरी महसूस हो रही है।”

"लेकिन तुम्हारा मन, कैरोलिन—तुम्हारा मन चकनाचूर हो गया है। तुम्हारा दिल लगभग टूट चुका है; तुम्हें इतनी उपेक्षा, इतना तिरस्कार और इतना अकेला छोड़ दिया गया है।"

“मेरा मानना है कि दुःख ही मेरी सबसे बुरी बीमारी है, और हमेशा से रही है। कभी-कभी मुझे लगता है कि अगर मुझ पर अपार प्रसन्नता की लहर आ जाए तो शायद मैं फिर से जीवित हो जाऊं।”

क्या तुम जीना चाहते हो?

मेरे जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है।

“क्या तुम मुझसे प्यार करती हो, कैरोलाइन?”

"बहुत हद तक—सचमुच—कभी-कभी अवर्णनीय रूप से। अभी मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं तुम्हारे दिल में जगह बना सकता हूँ।"

"मैं अभी लौट आती हूँ, प्यारी," श्रीमती प्रायर ने कैरोलिन को नीचे लिटाते हुए कहा।

उसे छोड़कर, वह धीरे से दरवाजे की ओर बढ़ी, ताले में चाबी घुमाई, यह सुनिश्चित किया कि ताला ठीक से बंद है, और वापस आ गई। वह उसके ऊपर झुकी। उसने चांदनी को और अधिक अंदर आने देने के लिए पर्दा हटा दिया। उसने ध्यान से उसके चेहरे को देखा।

“तो, अगर तुम मुझसे प्यार करते हो,” उसने जल्दी-जल्दी और बदली हुई आवाज़ में कहा; “अगर तुम्हें ऐसा लगता है, जैसा कि तुमने खुद कहा था, कि तुम ‘मेरे दिल में बस सकते हो’, तो यह जानकर तुम्हें न तो कोई सदमा लगेगा और न ही कोई तकलीफ होगी कि मेरा दिल ही वह स्रोत है जिससे तुम्हारा दिल भरा है; कि मेरी रगों से ही वह धारा निकली है जो तुम्हारे दिल में बहती है; कि तुम मेरे हो – मेरी बेटी – मेरी अपनी संतान।”

श्रीमती प्रायर — — “

“मेरा अपना बच्चा!”

“यानी—इसका मतलब है—आपने मुझे गोद ले लिया है?”

“इसका अर्थ यह है कि, यदि मैंने तुम्हें और कुछ नहीं दिया, तो कम से कम जीवन तो दिया; मैंने तुम्हें जन्म दिया, तुम्हारा पालन-पोषण किया; मैं तुम्हारी सच्ची माँ हूँ। कोई और स्त्री इस उपाधि का दावा नहीं कर सकती; यह मेरी है।”

"लेकिन श्रीमती जेम्स हेलस्टोन—लेकिन मेरे पिता की पत्नी, जिन्हें मैंने कभी देखा भी नहीं है, क्या वह मेरी माँ हैं?"

“वह तुम्हारी माँ है। जेम्स हेलस्टोन मेरे पति थे। मैं कहती हूँ कि तुम मेरी हो। मैंने इसे साबित कर दिया है। मुझे लगा था कि शायद तुम पूरी तरह से उनकी हो, जो मेरे लिए एक क्रूरता होती। लेकिन ऐसा नहीं है। ईश्वर ने मुझे अपनी संतान के मन का पालन-पोषण करने का अवसर दिया है। यह मेरा है; यह मेरी संपत्ति है—मेरा अधिकार है। ये चेहरे के भाव जेम्स के हैं। जब वह जवान थे, तब उनका चेहरा सुंदर था, और किसी भी तरह की विकृति से प्रभावित नहीं हुआ। पापा, मेरी प्यारी, उन्होंने तुम्हें तुम्हारी नीली आँखें और कोमल भूरे बाल दिए; उन्होंने तुम्हें तुम्हारे चेहरे का अंडाकार आकार और तुम्हारी चेहरे की बनावट की नियमितता दी—बाहरी रूप तो उन्होंने दिया; लेकिन हृदय और मस्तिष्क मेरे हैं। ये गुण मुझसे आए हैं, और ये निखर

कर उत्कृष्टता तक पहुँचे हैं। मैं अपनी संतान का उतना ही सम्मान और अनुमोदन करती हूँ जितना मैं उससे अत्यंत प्रेम करती हूँ।”

“क्या जो मैं सुन रहा हूँ वह सच है? क्या यह कोई सपना तो नहीं है?”

"काश, यह बात भी उतनी ही सच होती कि तुम्हारे गालों पर स्वास्थ्य की चमक और रौनक लौट आए।"

“मेरी अपनी माँ! क्या मैं उनसे उतना ही स्नेह रख सकती हूँ जितना आपसे? मुझे बताया गया है कि लोग उन्हें आम तौर पर पसंद नहीं करते थे।”

“उन्होंने तुम्हें यह बताया था? अच्छा, अब तुम्हारी माँ तुम्हें बताती है कि आम तौर पर लोगों को खुश करने की कला न होने के कारण, उन्हें उनकी प्रशंसा की परवाह नहीं है। उनका सारा ध्यान अपने बच्चे पर केंद्रित है। क्या वह बच्चा उनका स्वागत करता है या उन्हें अस्वीकार करता है?”

लेकिन अगर तुम मेरी माँ हो, तो मेरे लिए दुनिया पूरी तरह बदल जाएगी। यकीनन मैं जी सकता हूँ। मैं ठीक होना चाहूँगा—

“तुम्हें ठीक होना ही होगा। जब तुम एक नन्ही, प्यारी बच्ची थीं, तब तुमने मेरी गोद से जीवन और शक्ति पाई थी। तुम्हारी नीली आँखों को देखकर मैं अक्सर रो पड़ती थी, क्योंकि मुझे डर लगता था कि तुम्हारी सुंदरता में ही मुझे उन गुणों की झलक दिख रही है जो लोहे की तरह मेरे दिल में उतर गए हैं और तलवार की तरह मेरी आत्मा को भेद गए हैं। बेटी! हम बहुत दिनों से बिछड़े हुए हैं; अब मैं तुम्हें फिर से प्यार करने के लिए लौटी हूँ।”

उसने उसे अपने सीने से लगा लिया; उसने उसे अपनी बाहों में झुलाया; उसने उसे धीरे-धीरे हिलाया, मानो किसी छोटे बच्चे को सुला रही हो।

“मेरी माँ — मेरी अपनी माँ!”

नन्ही बच्ची अपने माता-पिता से लिपट गई; माता-पिता ने स्नेह और प्रेम की भावना को महसूस करते हुए उसे और भी करीब खींच लिया। उन्होंने उसे बिना आवाज़ किए चूमना शुरू कर दिया; उन्होंने उस पर प्यार भरे स्वर में फुसफुसाया, जैसे कोई तकिया अपने बच्चे को प्यार से सहलाता है।

कमरे में काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा।

क्या मेरे चाचा को पता है?

“तुम्हारे चाचा को पता है। जब मैं पहली बार तुम्हारे साथ रहने आया था, तब मैंने उन्हें बताया था।”

"जब हम पहली बार फील्डहेड में मिले थे, तो क्या आपने मुझे पहचाना था?"

"ऐसा कैसे हो सकता था? श्रीमान और श्रीमती हेलस्टोन के आगमन की घोषणा होते ही, मैं अपने बच्चे को देखने के लिए तैयार थी।"

“तो यही वो बात थी जिसने आपको प्रभावित किया। मैंने आपको परेशान देखा।”

“कैरोलीन, तुमने कुछ नहीं देखा; मैं अपनी भावनाओं को छुपा सकता हूँ। तुम कभी नहीं बता सकतीं कि तुम्हारे नाम की सूचना मिलने और तुम्हारे आने के बीच बीते उन दो मिनटों में मैंने कितनी अजीब अनुभूतियाँ झेलीं। तुम कभी नहीं बता सकतीं कि तुम्हारी नज़र, तुम्हारा हावभाव, तुम्हारा व्यवहार, इन सबने मुझे कितना झकझोर दिया।”

“क्यों? क्या आप निराश थे?”

“वह कैसी होगी? मैंने खुद से यह सवाल पूछा था; और जब मैंने तुम्हें देखा, तो मैं मानो गिर ही गई थी।”

“मम्मी, क्यों?”

“मैं तुम्हारी उपस्थिति में कांप उठा। मैंने कहा, मैं उसे कभी अपना नहीं बनाऊंगा; वह मुझे कभी नहीं जान पाएगी।”

"लेकिन मैंने कुछ भी उल्लेखनीय कहा या किया नहीं। अजनबियों से परिचय कराने के विचार से मुझे थोड़ी झिझक महसूस हुई - बस इतना ही।"

“मैंने जल्द ही देख लिया कि तुम संकोची हो। यही पहली बात थी जिसने मुझे आश्वस्त किया। अगर तुम देहाती, मसखरे, अनाड़ी भी होते, तो भी मैं संतुष्ट होता।”

तुम मुझे उलझन में डाल देते हो।

“मुझे बाहर की खूबसूरती से डरने, लोगों के व्यवहार पर शक करने और प्रतिष्ठा, शालीनता और शिष्टाचार से कांपने का कारण था। सुंदरता और मिलनसारिता मेरे रास्ते में तब आई जब मैं एकांतप्रिय, अकेली, युवा और अज्ञानी थी—एक परिश्रमी दाई जो निर्धन परिश्रम से मर रही थी, समय से पहले ही टूट रही थी। कैरोलीन, जब ये मुझ पर मुस्कुराईं, तो मैंने इन्हें देवदूत समझ लिया। मैं उनके पीछे घर चली गई; और जब मैंने बिना किसी संकोच के अपने भविष्य के सुख का सारा मौका उनके हाथों में सौंप दिया, तो घर की चूल्हे पर एक रूपांतरण देखना मेरा भाग्य था—सफेद मुखौटा

हटते देखना, चमकीला भेस उतरते देखना, और मेरे सामने बैठते देखना—हे भगवान, मैंने कितना कष्ट सहा है!”

वह तकिए पर धंस गई।

“मैंने बहुत कष्ट सहा! किसी ने नहीं देखा—किसी को पता नहीं था। न कोई सहानुभूति थी, न कोई मुक्ति, न कोई न्याय!”

“हिम्मत रखो, माँ। अब सब खत्म हो गया है।”

“यह सब समाप्त हो गया है, और व्यर्थ नहीं। मैंने उनके धैर्य के वचन का पालन करने का प्रयास किया। उन्होंने मेरी पीड़ा के दिनों में मेरी रक्षा की। मैं भयभीत थी—मैं परेशान थी। भीषण कष्टों के माध्यम से उन्होंने मुझे इस अंतिम समय में प्रकट उद्धार तक पहुँचाया। मेरे भय में पीड़ा थी; उन्होंने उसे दूर कर दिया है। उन्होंने उसके स्थान पर मुझे परिपूर्ण प्रेम दिया है। लेकिन, कैरोलीन—”

इस प्रकार कुछ देर रुकने के बाद उसने अपनी बेटी को पुकारा।

"माँ!"

“मैं तुमसे आग्रह करता हूँ, जब अगली बार तुम अपने पिता के स्मारक को देखो, तो वहाँ खुदे हुए नाम का आदर करना। उन्होंने तुम्हारे साथ केवल भलाई ही की। उन्होंने तुम्हें अपने सारे गुण दिए, उनमें कोई दोष नहीं जोड़ा। उनसे तुम्हें जो कुछ भी मिला है, वह उत्तम है। तुम उनके ऋणी हो। हमारे आपसी हिसाब-किताब को उनके और मेरे बीच ही रहने दो। दखल मत दो। ईश्वर ही निर्णायक है। इस संसार के नियम कभी हमारे पास नहीं आए—कभी नहीं! वे मेरी रक्षा करने में सड़े हुए सरकंडे की तरह शक्तिहीन थे—उन्हें रोकने में मूर्खों की बकवास की तरह शक्तिहीन थे! जैसा तुमने कहा, अब सब कुछ समाप्त हो गया है; कब्र हमारे बीच है। वह उस गिरजाघर में सो रहे हैं। आज रात मैं उनकी अस्थियों से वह कहता हूँ जो मैंने पहले कभी नहीं कहा, ‘जेम्स, शांति से सो जाओ! देखो! तुम्हारा भयानक ऋण माफ हो गया है! देखो! मैं अपने हाथों से तुम्हारा लंबा, काला हिसाब मिटा देता हूँ! जेम्स, तुम्हारा बच्चा प्रायश्चित कर रहा है। तुम्हारी यह सजीव छवि—तुम्हारे सुंदर चेहरे वाली यह वस्तु—तुम्हारा दिया हुआ यह एकमात्र अच्छा उपहार स्नेह से मेरे पास है। मेरे दिल में बस गई और मुझे प्यार से “मां” कहकर पुकारा। पतिदेव, अब आपको क्षमा मिल गई है!

“प्यारी माँ, यह सही है! क्या पापा की आत्मा हमारी बातें सुन पा रही है? क्या उन्हें यह जानकर तसल्ली मिल रही है कि हम अब भी उनसे प्यार करते हैं?”

“मैंने प्रेम की कोई बात नहीं कही। मैंने क्षमा की बात की। सच्चाई को याद रखो, बच्चे; मैंने प्रेम की कोई बात नहीं कही! अनंत काल की दहलीज पर, यदि वह मुझे प्रवेश करते हुए देखने के लिए वहां मौजूद हो, तो क्या मैं इस बात को कायम रखूंगी।”

“हे माँ, तुम्हें अवश्य कष्ट सहना पड़ा होगा!”

“हे बच्चे, मनुष्य का हृदय पीड़ा सह सकता है! यह सागर के जल से भी अधिक आँसू धारण कर सकता है। हम कभी नहीं जान पाते कि यह कितना गहरा और कितना विशाल है, जब तक कि दुःख अपने बादलों को खोलकर इसे प्रचंड अंधकार से भर नहीं देता।”

"मां, भूल जाओ।"

“भूल जाओ!” उसने एक अजीबोगरीब हंसी के साथ कहा। “उत्तरी ध्रुव दक्षिण की ओर तेजी से बढ़ जाएगा, और यूरोप के तटवर्ती इलाके ऑस्ट्रेलिया की खाड़ियों में समा जाएंगे, इससे पहले कि मैं भूल पाऊं।”

“चुप रहो, माँ! आराम करो! शांति से रहो!”

और बच्चे ने माता-पिता को सुलाया, जैसे माता-पिता ने बच्चे को सुलाया था। अंत में श्रीमती प्रायर रो पड़ीं। फिर वे शांत हुईं। उन्होंने उन कोमल भावनाओं को फिर से जगाया जिन्हें घबराहट ने कुछ पल के लिए रोक दिया था। अपनी बेटी को सोफे पर लिटाकर, उन्होंने तकिया ठीक किया और चादर बिछाई। बिखरे हुए मुलायम बालों को उन्होंने संवारा, और नम माथे पर ठंडी, सुगंधित इत्र लगाई।

“माँ, मोमबत्ती मंगवाइए ताकि मैं आपको देख सकूँ; और मेरे चाचा से कहिए कि थोड़ी देर में इस कमरे में आएँ। मैं उनसे यह सुनना चाहती हूँ कि मैं आपकी बेटी हूँ। और माँ, यहीं खाना खा लीजिए। आज रात मुझे एक मिनट के लिए भी अकेला मत छोड़िए।”

“ओ कैरोलाइन, अच्छा है कि तुम इतनी कोमल हो! तुम मुझसे कहोगी, जाओ, और मैं जाऊंगी; आओ, और मैं आऊंगी; यह करो, और मैं वह करूंगी। तुम्हें एक खास तरह का व्यवहार और कुछ खास विशेषताएं विरासत में मिली हैं। आदेश देने से पहले हमेशा ‘मम्मा’ ही कहोगी—हालांकि, शुक्र है, तुम बहुत ही कोमल स्वर में बोलती हो! खैर,” उसने धीमी आवाज़ में कहा, “वह भी एक बार बहुत कोमल स्वर में बोला था, जैसे बांसुरी से कोमलता निकल रही हो; और फिर, जब दुनिया आसपास नहीं होती थी, तो वह ऐसी बेसुरी आवाज़ें निकालता था जो नसों को चीर देती थीं और खून जमा

देती थीं—ऐसी आवाज़ें जो पागलपन पैदा कर देती थीं।”

“माँ, आपसे ये और वो माँगना कितना स्वाभाविक लगता है। मैं नहीं चाहूँगी कि आपके सिवा कोई और मेरे पास रहे या मेरे लिए कुछ भी करे। लेकिन मुझे परेशान मत करना। अगर मैं आपकी सीमा पार करने की कोशिश करूँ तो मुझे रोक देना।”

“तुम्हें मुझ पर निर्भर नहीं रहना चाहिए कि मैं तुम्हें नियंत्रित करूँ; तुम्हें खुद पर नज़र रखनी होगी। मुझमें नैतिक साहस की कमी है; यही मेरी कमजोरी है। इसी ने मुझे एक अस्वाभाविक माता-पिता बना दिया है—इसी ने मुझे अपने बच्चे से उन दस वर्षों के दौरान अलग रखा है जो मेरे पति की मृत्यु के बाद बीत गए जब मुझे उसे अपना कहने की स्वतंत्रता मिली थी। यही वह बात थी जिसने सबसे पहले मेरी बाहों को कमजोर कर दिया और उस शिशु को, जिसे मैं कुछ और समय तक अपने पास रख सकती थी, समय से पहले ही मेरी बाहों से छीन लिया।”

“कैसे, माँ?”

“मैंने तुम्हें बचपन में ही जाने दिया, क्योंकि तुम सुंदर थी, और मैं तुम्हारी सुंदरता से डरती थी, उसे विकृति की निशानी समझती थी। उन्होंने मुझे तुम्हारा आठ साल की उम्र में लिया गया चित्र भेजा; उस चित्र ने मेरे डर की पुष्टि कर दी। अगर उसमें धूप से झुलसी हुई एक छोटी सी देहाती बच्ची दिखाई देती — एक भारी-भरकम, सपाट चेहरे वाली, साधारण बच्ची — तो मैं तुम्हें तुरंत अपना बना लेती; लेकिन वहाँ, उस सुनहरे कागज़ के नीचे, मैंने एक कुलीन फूल की कोमलता खिलती देखी — हर विशेषता पर ‘छोटी लड़की’ लिखा हुआ था। मैं अभी-अभी उस सभ्य सज्जन के बंधन से बाहर निकली थी — घायल, कुचली हुई, लकवाग्रस्त, मरणासन्न अवस्था से बच निकली थी — इसलिए मैं उसकी और भी सुंदर और परी जैसी प्रतिनिधि से मिलने की हिम्मत नहीं कर सकती थी। मेरी प्यारी छोटी लड़की ने मुझे विस्मित कर दिया; उसकी सहज शालीनता ने मेरी रूह कंपा दी। मेरे अनुभव में मैंने सच्चाई, विनम्रता, अच्छे सिद्धांतों को सुंदरता के साथ नहीं देखा था। मैंने तर्क दिया कि इतना सीधा और सुंदर रूप एक विकृत और क्रूर मन को छुपाता होगा। मुझे शिक्षा की शक्ति पर ज़रा भी भरोसा नहीं था कि वह ऐसे मन को सुधार सकती है; या यूँ कहूँ कि मुझे खुद पर ही शक था कि मैं उसे प्रभावित कर पाऊँगी। कैरोलाइन, तुम्हें पालने-पोसने की हिम्मत मुझमें नहीं थी। मैंने तुम्हें तुम्हारे चाचा के हाथों में छोड़ने का निश्चय किया था। मैथ्यूसन हेलस्टोन, मैं जानती थी, भले ही वह कठोर स्वभाव के थे, लेकिन एक ईमानदार व्यक्ति थे। मेरे

इस अजीब, मातृत्वहीन संकल्प के कारण वह और पूरी दुनिया मुझे तुच्छ समझती थी, और मैं गलत समझे जाने की ही हकदार थी।

"मम्मा, आपने खुद को मिसेज प्रायर क्यों कहना शुरू कर दिया?"

"यह मेरी माँ के परिवार का नाम था। मैंने इसे इसलिए अपनाया ताकि मैं बिना किसी उत्पीड़न के जी सकूँ। मेरा विवाहित नाम मेरे वैवाहिक जीवन की याद दिलाता था; मैं उसे सहन नहीं कर सकती थी। इसके अलावा, मुझे गुलामी में वापस धकेलने की धमकियाँ भी दी गईं। ऐसा नहीं हो सकता था। बल्कि, बिस्तर की जगह अर्थी, घर की जगह कब्र। मेरे नए नाम ने मुझे आश्रय दिया। मैंने इसकी आड़ में अध्यापन का अपना पुराना पेशा फिर से शुरू किया। शुरुआत में इससे जीवनयापन के साधन मुश्किल से ही मिल पाते थे; लेकिन जब मैं शांति से उपवास करती थी तो भूख कितनी सुखद लगती थी! जब आतंक की कोई भयावह छवि उस वीरान जगह को लाल न करती हो, तो बुझी हुई आग का अंधेरा और ठंडक कितनी सुरक्षित लगती थी! जब मुझे हिंसा और बुराई के आक्रमण का डर न हो, तो एकांत कितना शांत होता था!"

"लेकिन, माँ, आप पहले भी इस मोहल्ले में आ चुकी हैं। ऐसा कैसे हुआ कि जब आप मिस कील्डर के साथ यहाँ दोबारा आईं तो आपको किसी ने पहचाना नहीं?"

"बीस साल पहले, दुल्हन बनकर, मैंने बस कुछ समय के लिए ही यहाँ का दौरा किया था, और तब मैं आज से बहुत अलग थी — दुबली-पतली, लगभग उतनी ही दुबली जितनी मेरी बेटी आज है। मेरा रंग-रूप, मेरी हर एक नैन-नक्श बदल गई है; मेरे बाल, मेरे पहनावे का तरीका — सब कुछ बदल गया है। आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि मैं कभी दुबली-पतली, सफेद मलमल के कम कपड़ों में, नंगी बाहों के साथ, मोतियों के कंगन और हार पहने, और माथे के ऊपर गोल ग्रीक शैली में सजे बालों वाली एक युवती थी?"

"तुम तो वाकई अलग ही रही होगी। माँ, मैंने सामने का दरवाजा खुलते सुना। अगर मेरे चाचा अंदर आ रहे हैं, तो उनसे कहो कि वे ऊपर आ जाएँ, और मुझे उनकी यह तसल्ली सुनने दो कि मैं सचमुच जाग रही हूँ और होश में हूँ, सपने में नहीं हूँ या बेहोश नहीं हूँ।"

रेक्टर अपनी मर्जी से सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे, और श्रीमती प्रायर ने उन्हें अपनी भतीजी के कमरे में बुलाया।

"उम्मीद है उसकी हालत और खराब नहीं हुई होगी?" उसने जल्दबाजी में पूछा।

मुझे लगता है कि वह बेहतर है। वह बातचीत करने के लिए तैयार रहती है; वह पहले से ज्यादा मजबूत लगती है।

“वाह!” वह कमरे में झटपट घुसते हुए बोला। — “हा, कैरी! कैसे हो? क्या तुमने मेरी चाय पी? मैंने तुम्हारे लिए बिल्कुल वैसे ही बनाई है जैसे मुझे खुद पसंद है।”

“मैंने इसे एक-एक बूंद पी लिया, चाचा जी। इससे मुझे बहुत फायदा हुआ; इसने मुझे एकदम तरोताजा कर दिया है। मुझे किसी के साथ की ज़रूरत है, इसलिए मैंने श्रीमती प्रायर से आपको बुलाने का अनुरोध किया है।”

आदरणीय पादरी प्रसन्न तो दिखे, लेकिन साथ ही थोड़े असहज भी। अपनी बीमार भतीजी की इच्छावश, वे उसे दस मिनट का समय देने के लिए तैयार थे; पर उसके मनोरंजन के लिए क्या उपाय करें, यह उन्हें समझ नहीं आ रहा था। वे झिझक रहे थे —बेचैनी मचा रहे थे।

“तुम पल भर में ठीक हो जाओगे,” उसने कुछ कहते हुए कहा। “यह थोड़ी-सी कमजोरी जल्दी ही दूर हो जाएगी; फिर तुम्हें पोर्ट वाइन पीनी चाहिए—अगर हो सके तो पाइप से—और जंगली जानवरों का मांस और सीपियाँ खानी चाहिए। अगर कहीं मिलें तो मैं तुम्हारे लिए ले आऊँगा। भगवान भला करे! हम तुम्हें सैमसन जितना ताकतवर बना देंगे।”

"चाचा जी, आपके बगल में पलंग के पास खड़ी वह महिला कौन है?"

“हे भगवान!” वह चौंक उठा। “वह कहीं भटक तो नहीं रही है, है ना, महोदया?”

श्रीमती प्रायर मुस्कुराईं।

“मैं एक सुखद दुनिया में घूम रही हूँ,” कैरोलिन ने कोमल, प्रसन्न स्वर में कहा, “और मैं चाहती हूँ कि आप मुझे बताएँ कि यह वास्तविक है या काल्पनिक। वह कौन सी महिला है? चाचा जी, उसका नाम बताइए।”

“हमें डॉ. राइले को फिर से बुलाना होगा, महोदया; या उससे भी बेहतर, मैकटर्क। वह कम पाखंडी है। थॉमस को घोड़े पर काठी कसनी चाहिए और उसके लिए निकलना चाहिए।”

“नहीं; मुझे डॉक्टर नहीं चाहिए। मेरी माँ ही मेरी एकमात्र चिकित्सक होंगी। अब समझे चाचा?”

श्री हेलस्टोन ने अपने चश्मे को नाक से माथे तक ऊपर किया, अपनी नसवार की

डिब्बी को हाथ में लिया और उसमें से थोड़ी सी नसवार पी ली। इस तरह ताज़गी पाकर उन्होंने संक्षेप में उत्तर दिया, “मुझे उजाला दिखाई दे रहा है। तो आपने उन्हें बता दिया है, महोदया?”

“और क्या यह सच है?” कैरोलिन ने तकिए पर उठते हुए पूछा। “क्या वह सचमुच मेरी माँ है?”

"अगर मैं 'हां' कह दूं तो तुम रोओगे नहीं, कोई हंगामा नहीं करोगे, या हिस्टीरिकल नहीं हो जाओगे?"

“रोओ! अगर तुमने ना कह दिया तो मैं रो दूंगी। अभी निराश होना बहुत बुरा होगा। लेकिन उसका नाम तो रखो। उसे क्या नाम से पुकारोगे?”

“मैं इस हष्टमधुर महिला को, जिसने एक विचित्र काली पोशाक पहनी है और जो देखने में इतनी युवा लगती है कि अगर वह चाहे तो और भी अधिक सजग वस्त्र पहन सकती है – मैं उसे एग्नेस हेलस्टोन कहती हूँ। उसने मेरे भाई जेम्स से शादी की थी और वह उसकी विधवा है।”

"और मेरी मां?"

“कितनी छोटी संशयवादी है ये! देखो तो ज़रा, मिसेज़ प्रायर, ये छोटा सा चेहरा, मेरी हथेली से भी छोटा, तीक्ष्णता और उत्साह से भरा हुआ।” कैरोलीन से — “कम से कम तुम्हें इस दुनिया में लाने की उसने कितनी तकलीफ उठाई। ध्यान रखना, जल्दी ठीक होकर और इन गालों की लालिमा को सुधारकर उसके प्रति अपना कर्तव्य निभाना। — हे भगवान! ये तो पहले गोल-मटोल हुआ करती थी। अब उसने अपने इन गालों का क्या हाल कर लिया है, ये मेरी समझ से परे है।”

“अगर ठीक होने की कामना करने से मुझे मदद मिलेगी, तो मैं ज्यादा दिन बीमार नहीं रहूँगा। आज सुबह मेरे पास ऐसा चाहने का न तो कोई कारण था और न ही कोई ताकत।”

फैनी ने दरवाजे पर दस्तक दी और कहा कि खाना तैयार है।

“चाचा जी, अगर आप चाहें तो मुझे थोड़ा सा खाना भेज दीजिए—आपकी थाली में से जो भी आपको पसंद हो। इतना हंगामा करने से तो यह ज्यादा समझदारी की बात है, है ना?”

“कैरी, तुम तो किसी ज्ञानी व्यक्ति की तरह बोल रहे हो। देखो, मैं तुम्हारे लिए कितना समझदारी से काम लेता हूँ। जब औरतें समझदार और सबसे बढ़कर, बोधगम्य

होती हैं, तो मैं उनसे सहजता से पेश आ सकता हूँ। बस उनकी अस्पष्ट, अति सूक्ष्म भावनाएँ और बेहद जटिल धारणाएँ ही मुझे परेशान करती हैं। चाहे कोई औरत मुझसे खाने-पीने की कोई चीज़ माँगे—चाहे वह एक रोक का अंडा हो या हारून का कवच, सेंट जॉन के टिड्डों और शहद का एक हिस्सा हो या उनकी कमरबंद—मैं कम से कम उनकी माँग समझ सकता हूँ; लेकिन जब वे किसी ऐसी चीज़ के लिए तड़पती हैं जिसके बारे में उन्हें पता ही नहीं—सहानुभूति, भावनाएँ, या ऐसी ही कुछ अस्पष्ट अमूर्त चीज़ें—तो मैं उन्हें पूरा नहीं कर सकता; मैं उन्हें नहीं जानता; मेरे पास वे नहीं हैं। — महोदया, मेरा हाथ थाम लो।"

श्रीमती प्रायर ने संकेत दिया कि वह उस शाम अपनी बेटी के साथ रहेंगी। हेलस्टोन ने उन्हें वहीं छोड़ दिया। वह थोड़ी देर बाद अपने पवित्र हाथों में एक थाली लेकर लौट आया।

"यह तो चिकन है," उन्होंने कहा, "लेकिन कल हम तीतर खाएँगे। — इसे उठाओ और इस पर शॉल डाल दो। सच में, मुझे स्तनपान करना आता है। — अब, यह वही छोटा सा चाँदी का कांटा है जिसका इस्तेमाल तुमने पादरी के घर में पहली बार आने पर किया था। यह मुझे एक सुखद विचार लगता है — एक कोमल ध्यान। इसे लो, कैरी, और मजे से खाओ।"

कैरोलीन ने अपनी पूरी कोशिश की। उसकी सीमित क्षमताओं को देखकर उसके चाचा नाराज़ हो गए। फिर भी उन्होंने भविष्य के लिए बड़ी-बड़ी बातें कही; और जब उसने उनके लाए हुए निवाले की तारीफ की और उनके चेहरे पर कृतज्ञता से मुस्कुराई, तो वे उसके तकिए पर झुके, उसे चूमा और टूटी-फूटी, कर्कश आवाज़ में बोले, "शुभ रात्रि, मेरी प्यारी बच्ची! भगवान तुम्हारा भला करे!"

उस रात कैरोलिन को अपनी माँ की बाहों में लिपटी और उनकी छाती से लगी हुई इतनी शांतिपूर्ण नींद आई कि वह किसी और तरह के आराम की इच्छा ही भूल गई; और यद्यपि नींद में उसे एक से अधिक बुखार भरे सपने आए, फिर भी जब वह हांफते हुए उठी, तो होश में आने के साथ ही उसे इतनी खुशी और संतुष्टि का एहसास हुआ कि उसकी बेचैनी महसूस होते ही लगभग शांत हो गई।

जहां तक मां की बात है, उसने याकूब की तरह पेनियल में रात बिताई। भोर होने तक वह ईश्वर से व्यथापूर्वक प्रार्थना करती रही।

अध्याय XXV.

पश्चिम से हवा चल रही है।

जो लोग इस तरह के दिव्य संघर्ष का साहस करते हैं, वे हमेशा विजयी नहीं होते। रात-दर-रात पीड़ा का पसीना माथे पर काला पड़ सकता है; प्रार्थना करने वाला उस मौन स्वर में दया की भीख मांग सकता है जो आत्मा अदृश्य से अपील करते समय निकालती है। "मेरे प्रियतम को बख्श दो," वह विनती कर सकता है। "मेरे जीवन के जीवन को ठीक कर दो। मुझसे उस गहरे स्नेह को मत छीनो जो मेरे पूरे स्वभाव से जुड़ा हुआ है। हे स्वर्ग के ईश्वर, झुक जाओ, सुनो, दयालु बनो!" और इस पुकार और संघर्ष के बाद सूर्य उदय हो सकता है और उसे पराजित देख सकता है। वह भोर, जो कभी हल्की हवाओं की सरसराहट और चिड़ियों के मधुर गीत से उसका स्वागत करती थी, अपने पहले स्वर में उन प्यारे होठों से कह सकती है, जिनका रंग और गर्मी अब गायब हो चुकी है, "ओह! मेरी रात कष्टदायक गुज़री। आज सुबह मेरी हालत और भी खराब है। मैंने उठने की कोशिश की। मैं उठ नहीं पा रहा। मुझे ऐसे सपने आ रहे हैं जिनकी मुझे आदत नहीं है।"

फिर देखने वाला रोगी के तकिए के पास जाता है, और परिचित चेहरे की एक नई और विचित्र आकृति देखता है, तुरंत महसूस करता है कि असहनीय क्षण निकट आ रहा है, जानता है कि यह ईश्वर की इच्छा है कि उसकी मूर्ति टूट जाएगी, और अपना सिर झुकाता है, और अपनी आत्मा को उस सजा के अधीन कर लेता है जिसे वह टाल नहीं सकता और जिसे वह मुश्किल से सहन कर सकता है।

हे श्रीमती प्रायर! वह अब भी प्रार्थना कर रही थीं, इस बात से बेखबर कि गर्मियों

का सूरज पहाड़ियों के ऊपर चमक रहा था, तभी उनकी गोद में उनका बच्चा धीरे से जाग उठा। उनके जागने से पहले कोई दयनीय, बेसुध सी कराह नहीं सुनाई दी—वह आवाज़ जो हमारी सारी शक्ति को नष्ट कर देती है, यहाँ तक कि अगर हमने दृढ़ रहने की कसम भी खाई हो, तो भी अनियंत्रित आँसुओं का सैलाब उस कसम को बहा ले जाता है। न ही उसके बाद उदासीनता का कोई क्षण आया। बोले गए पहले शब्द ऐसे व्यक्ति के नहीं थे जो इस दुनिया से विमुख हो रहा हो, और जिसे कभी-कभी जीवितों से परे लोकों में भटकने की अनुमति मिल चुकी हो। कैरोलीन को स्पष्ट रूप से याद था कि क्या हुआ था।

“मम्मी, मैं बहुत अच्छी तरह सोई। मैंने सिर्फ दो बार सपना देखा और नींद से जागी।”

श्रीमती प्रायर चौंककर उठ खड़ी हुईं, ताकि उनकी बेटी उस स्नेहपूर्ण शब्द "मम्मा" और उसके बाद मिलने वाले सुखद आश्वासन से उनकी आंखों में आए खुशी के आंसुओं को न देख सके।

कई दिनों तक माँ कांपते हुए ही खुशी मनाने की हिम्मत कर पाई। वह पहली जागृति बुझते हुए दीपक की टिमटिमाहट जैसी थी। अगर एक पल लौ तेज चमकती, तो अगले ही पल वह मंद पड़ जाती। उत्साह के तुरंत बाद ही थकावट छा गई।

बेहतर दिखने का हमेशा एक मार्मिक प्रयास होता था, लेकिन अक्सर क्षमता इच्छाशक्ति का साथ नहीं देती थी; अक्सर सहन करने का प्रयास विफल हो जाता था। खाने, बात करने, खुश दिखने का प्रयास भी असफल रहा। कई घंटे ऐसे बीते जब श्रीमती प्रायर को यह डर सताता रहा कि जीवन के बंधन कभी मजबूत नहीं हो पाएंगे, भले ही उनके टूटने का समय कुछ समय के लिए टल जाए।

इस दौरान मां और बेटी आस-पड़ोस में लगभग अकेली रह गई थीं। अगस्त का महीना खत्म होने वाला था; मौसम सुहावना था—यानी बहुत शुष्क और धूल भरा, क्योंकि पिछले महीने पूरब से शुष्क हवा चल रही थी; आसमान बिल्कुल साफ था, हालांकि वातावरण में छाई हल्की धुंध आसमान के नीले रंग की गहराई, धरती की हरियाली की ताजगी और दिन के उजाले की चमक को मानो छीन रही थी। ब्रायफ़ील्ड के लगभग सभी परिवार घूमने गए हुए थे। मिस कील्डर और उनकी सहेलियां समुद्र किनारे थीं; श्रीमती यॉर्क का परिवार भी वहीं था। श्री हॉल और लुई मूर, जिनके बीच एक सहज घनिष्ठता विकसित हो गई थी—संभवतः विचारों और स्वभाव की समानता

के कारण—झीलों की पैदल यात्रा पर उत्तर की ओर गए हुए थे। हॉर्टेंस, जो घर पर रहकर कैरोलिन की देखभाल में श्रीमती प्रायर की सहायता करना चाहती थी, मिस मान के आग्रह पर एक बार फिर वर्मवुड वेल्स चलने के लिए इतनी विनम्रता से राजी हो गई कि उसे भी ऐसा करना पड़ा। खराब मौसम के कारण कैरोलिन की पीड़ा कम हो सकती थी। हॉर्टेंस को यह आग्रह मानना ही पड़ा; दरअसल, ऐसे अनुरोध को ठुकराना उसके स्वभाव में नहीं था जो उसके दयालु हृदय को छूता हो और निर्भरता स्वीकार करने से उसके आत्मसम्मान को भी संतुष्ट करता हो। रॉबर्ट बर्मिंघम से लंदन चला गया था और अभी भी वहीं रह रहा था।

जब तक एशियाई रेगिस्तानों की ठंडी हवा कैरोलीन के होंठों को सुखाती और उसकी नसों में बुखार पैदा करती रही, तब तक उसका शारीरिक स्वास्थ्य उसकी लौटती मानसिक शांति के साथ तालमेल नहीं बिठा पाया; लेकिन एक दिन ऐसा आया जब पादरी के निवास के पूर्वी हिस्से और चर्च की खिड़की पर हवा का सिसकना बंद हो गया। पश्चिम में एक आदमी के हाथ के आकार का छोटा सा बादल उठा; उसी दिशा से आती हवा के झोंकों ने उसे आगे बढ़ाया और फैला दिया; कुछ देर तक नमी और आंधी छाई रही। जब यह सब थम गया तो सूरज खिल उठा, आकाश फिर से नीला हो गया और धरती हरी हो गई; प्रकृति के चेहरे से हैजा का पीलापन गायब हो गया; पहाड़ क्षितिज के चारों ओर साफ दिखाई देने लगे, मलेरिया के उस पीले धुंध से मुक्त।

कैरोलीन की जवानी अब उसके काम आ सकती थी, और उसकी माँ का पालन-पोषण भी। ईश्वर के आशीर्वाद से परिपूर्ण, खुली खिड़की से आती हुई पश्चिम की हल्की हवा ने उसकी लंबे समय से मुरझाई ऊर्जा को फिर से जगा दिया। अंततः श्रीमती प्रायर को आशा की किरण दिखाई दी: सचमुच, शारीरिक रूप से स्वास्थ्य लाभ शुरू हो गया था। केवल कैरोलीन की मुस्कान ही नहीं खिल उठी थी, न ही उसका मनोबल बढ़ा था, बल्कि उसके चेहरे और आँखों से एक विशेष भाव गायब हो गया था - एक भयानक और अवर्णनीय भाव, जिसे गंभीर बीमारी के दौर से गुज़रे लोग आसानी से याद कर सकते हैं। उसके चेहरे की दुबली-पतली रूपरेखा के फिर से जीवंत होने या उसकी खोई हुई रौनक लौटने से बहुत पहले, एक सूक्ष्म परिवर्तन हुआ; सब कुछ नरम और गर्म हो गया। संगमरमर जैसे मुखौटे और काँच जैसी आँखों के बजाय, श्रीमती प्रायर ने तकिए पर एक पीला और काफी मुरझाया हुआ चेहरा देखा,

शायद पहले की तुलना में अधिक थका हुआ, लेकिन कम भयानक; क्योंकि वह एक बीमार, जीवित लड़की थी, न कि केवल एक सफेद सांचा या मूर्ति का कोई कठोर टुकड़ा।

अब वो हमेशा पानी के लिए गिड़गिड़ाती नहीं थी। "मुझे बहुत प्यास लगी है" ये शब्द अब उसकी शिकायत नहीं रह गए थे। कभी-कभी, जब वो एक निवाला निगल लेती, तो कहती कि इससे उसे ताजगी मिली है। खाने की हर चीज अब उसे एक जैसी नापसंद नहीं थी; कभी-कभी वो अपनी पसंद भी बता देती थी। उसकी नर्स कितनी खुशी और चिंता के साथ वो खाना तैयार करती थी जो वो चुनती थी! वो उसे खाते हुए कितनी निगाहों से देखती रहती थी!

पोषण मिलने से उसे ताकत मिली। वह बैठ सकी। फिर उसे ताजी हवा में सांस लेने, अपने फूलों को देखने और फलों के पकने की कामना हुई। उसके चाचा, जो हमेशा उदार थे, ने खास उसके लिए एक बगीचे की कुर्सी खरीदी थी। उन्होंने उसे अपनी बाहों में उठाकर नीचे लाया और खुद उसे कुर्सी पर बिठाया, और विलियम फैरेन उसे बगीचे में घुमाने, उसके पौधों के बीच किए गए काम दिखाने और आगे के काम के लिए उससे सुझाव लेने के लिए वहाँ मौजूद थे।

विलियम और उसे बात करने के लिए बहुत कुछ मिल गया। उनके पास एक दर्जन ऐसे विषय थे जिन पर उनकी राय एक जैसी थी - जो उनके लिए दिलचस्प थे, लेकिन बाकी दुनिया के लिए महत्वहीन थे। जानवरों, पक्षियों, कीड़ों और पौधों में उनकी रुचि एक जैसी थी; निम्न प्राणियों के प्रति मानवता के बारे में उनके विचार भी एक जैसे थे, और प्राकृतिक इतिहास के पहलुओं पर उनकी सूक्ष्म अवलोकनशीलता भी एक जैसी थी। एक पुराने चेरी के पेड़ के नीचे घास में बिल बनाकर रहने वाली कुछ मधुमक्खियों का घोंसला और उनकी गतिविधियाँ उनकी रुचि का एक विषय था; कुछ विशेष प्रकार की चिड़ियों के ठिकाने और कुछ मोती जैसे अंडों और नन्हे-मुन्ने बच्चों का कल्याण दूसरा विषय था।

यदि उन दिनों चैम्बर्स जर्नल मौजूद होता, तो यह निस्संदेह मिस हेलस्टोन और फैरेन का पसंदीदा पत्रिका होता। वह इसकी सदस्यता लेतीं और फैरेन को हर अंक नियमित रूप से उधार दिया जाता; दोनों को इस पत्रिका पर पूरा भरोसा होता और पशुओं की बुद्धिमत्ता से भरे इसके अद्भुत किस्सों में उन्हें बहुत आनंद मिलता।

यह विषयांतर है, लेकिन यह समझाने के लिए पर्याप्त है कि कैरोलिन को अपनी

कुर्सी को चलाने के लिए विलियम के अलावा किसी और के हाथ की आवश्यकता क्यों नहीं थी, और क्यों विलियम की संगति और बातचीत उसके बगीचे में टहलने को रुचिकर बनाने के लिए पर्याप्त थी।

पास से गुजर रही श्रीमती प्रायर को आश्चर्य हुआ कि उनकी बेटी एक आम आदमी के साथ इतनी सहज कैसे हो सकती है। उसे उससे बात करना लगभग नामुमकिन लग रहा था, वह उससे केवल औपचारिकता से ही बात कर पाती थी। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसकी और उसकी जाति में बहुत बड़ा अंतर है, और उसे पार करना या उससे समझौता करना खुद को नीचा दिखाना होगा। उन्होंने कैरोलिन से धीरे से पूछा, "मेरी प्यारी, क्या तुम्हें उस व्यक्ति से इतनी बेझिझक बात करने में डर नहीं लगता? कहीं वह अहंकार न कर ले और बहुत ज्यादा बकबक करने लगे।"

“विलियम को इतना घमंड क्यों है, माँ? आप उसे नहीं जानतीं। वह कभी घमंड नहीं करता। वह इतना स्वाभिमानी और संवेदनशील है कि ऐसा कभी नहीं करेगा। विलियम के दिल में बहुत गहरी भावनाएँ हैं।”

और श्रीमती प्रायर ने उस खुरदुरे हाथों वाले, खुरदुरे दिमाग वाले, फस्टियन के कपड़े पहने हुए विदूषक के "अच्छी भावनाओं" होने की भोली धारणा पर संदेह भरी मुस्कान बिखेरी।

फैरेन ने श्रीमती प्रायर के सामने केवल एक बेहद नाराज़गी भरा चेहरा दिखाया। वह जानता था कि उसके बारे में क्या राय है, और जो लोग उसे उसका हक नहीं देते थे, उनके प्रति वह अक्सर उग्र हो जाता था।

शाम ढलते ही कैरोलिन पूरी तरह अपनी माँ के करीब आ गई, और श्रीमती प्रायर को शाम अच्छी लगी; क्योंकि तब, अपनी बेटी के साथ अकेले में, उनके और उनके प्रिय के बीच कोई मानवीय साया नहीं था। दिन के समय उनका व्यवहार हमेशा की तरह गंभीर और शांत रहता था। उनके और श्री हेलस्टोन के बीच बहुत सम्मानजनक लेकिन बेहद औपचारिक संबंध बना रहता था। थोड़ी सी भी आत्मीयता इन दोनों में से किसी एक या दोनों के मन में तुरंत तिरस्कार पैदा कर देती; लेकिन सख्त शिष्टाचार और बनाए रखी गई दूरी के कारण उनका तालमेल बहुत सहज रहा।

नौकरों के प्रति श्रीमती प्रायर का व्यवहार असभ्य तो नहीं था, लेकिन शर्मीला, ठंडा और उदासीन था। शायद यह अहंकार के बजाय संकोच था जिसके कारण वह इतनी अभिमानी प्रतीत होती थीं; लेकिन, जैसा कि अपेक्षित था, फैनी और एलिजा

इस अंतर को समझ नहीं पाईं, और इसी कारण वह उनके बीच अलोकप्रिय हो गईं। उन्होंने इसके प्रभाव को महसूस किया; इससे वह कभी-कभी अपनी उन कमियों के लिए स्वयं से असंतुष्ट हो जाती थीं जिन्हें वह ठीक नहीं कर सकती थीं, और बाकी सभी के प्रति उदास, उदासीन और मौन हो जाती थीं।

कैरोलिन के प्रभाव से ही उसका यह भाव बदल गया, और केवल उसी के प्रभाव से। अपनी नन्ही परी के प्रति उसका स्नेह, उसकी स्वाभाविक ममता, उस पर सहजता से छा गई। उसकी रूखी त्वचा पिघल गई, उसका कठोर स्वभाव नरम पड़ गया; वह मुस्कुराने लगी और कोमल हो गई। ऐसा नहीं था कि कैरोलिन ने शब्दों में प्रेम का इज़हार किया हो—यह श्रीमती प्रायर को भाता नहीं; वह इसे कपट का प्रमाण मानतीं—लेकिन वह सहजता से उस पर निर्भर रही; उसने निडरता से उस पर भरोसा किया। इन बातों से माँ का हृदय संतुष्ट हो गया।

उसे अपनी बेटी को यह कहते हुए सुनना अच्छा लगता था, “मम्मा, यह करो;”, “प्लीज, मम्मा, मुझे वह ला दो;”, “मम्मा, मुझे पढ़कर सुनाओ;”, “थोड़ा सा गा दो, मम्मा।”

किसी और ने—एक भी जीवित प्राणी ने—कभी भी उसकी सेवाओं का इतना दावा नहीं किया था, न ही कभी उससे मदद मांगी थी। दूसरे लोग हमेशा उसके साथ कमोबेश संकोची और सख्त रहते थे, जैसे वह उनके साथ संकोची और सख्त रहती थी; दूसरे लोग उसकी कमजोरियों के प्रति सचेत और चिढ़े रहते थे। कैरोलिन अब भी उतनी ही चुभने वाली बुद्धिमत्ता या निंदात्मक संवेदनशीलता नहीं दिखाती थी जितनी वह तीन महीने की बच्ची होने पर दिखाती थी।

फिर भी कैरोलीन में खामियां ढूंढने की आदत थी। असाध्य जन्मजात दोषों से अनजान, वह उन आदतों को भली-भांति देखती थी जिन्हें सुधारा जा सकता था। कुछ मामलों पर वह बड़ी सहजता से अपने माता-पिता को उपदेश देती थी; और माता-पिता को आहत होने के बजाय, यह देखकर खुशी होती थी कि लड़की उन्हें उपदेश देने की हिम्मत कर रही है, कि वह उनके साथ इतनी सहज है।

“मम्मी, मैंने ठान लिया है कि आप वो पुराना गाउन अब और नहीं पहनेंगी। उसका फैशन अब जंचता नहीं; उसका स्कर्ट बहुत तंग है। आप हर दोपहर अपनी काली रेशमी ड्रेस पहनेंगी। उसमें आप अच्छी लगती हैं; वो आप पर जंचती है। और रविवार के लिए आपके पास एक काली सैटिन की ड्रेस होगी—असली सैटिन, नकली सैटिन या कोई

और चीज़ नहीं। और मम्मी, जब आपको नई ड्रेस मिल जाए, तो उसे ज़रूर पहनना।”

"मेरी प्यारी, मैंने सोचा कि काला रेशम कई वर्षों तक मेरे लिए सबसे अच्छी पोशाक के रूप में काम करेगा, और मैं तुम्हारे लिए कई चीजें खरीदना चाहती थी।"

“बकवास है ना, माँ। मेरे चाचा मुझे मनचाही चीज़ें खरीदने के लिए पैसे देते हैं। आप जानती हैं कि वो कितने उदार हैं; और मैं आपको काले साटन की पोशाक में देखना चाहती हूँ। जल्दी से ले आइए, और मेरी पसंद की दर्जी से सिलवाइए। पैटर्न मुझे चुनने दीजिए। आप हमेशा दादी माँ की तरह कपड़े पहनना चाहती हैं। आप तो किसी को भी यकीन दिला देंगी कि आप बूढ़ी और बदसूरत हैं। बिलकुल नहीं! इसके विपरीत, जब आप अच्छे कपड़े पहनती हैं और खुश रहती हैं, तो आप सचमुच बहुत सुंदर लगती हैं; आपकी मुस्कान बहुत प्यारी है, आपके दाँत एकदम सफेद हैं, आपके बाल अभी भी उतने ही प्यारे हल्के रंग के हैं। और फिर आप एक युवती की तरह बोलती हैं, इतनी साफ और मधुर आवाज़ में, और आप जितनी भी युवतियों को मैंने सुना है, उनसे कहीं बेहतर गाती हैं। माँ, आप ऐसे कपड़े और टोपियाँ क्यों पहनती हैं, जैसे कोई और नहीं पहनता?”

"क्या इससे तुम्हें चिढ़ होती है, कैरोलाइन?"

“हाँ, बिल्कुल; मुझे तो इससे चिढ़ भी होती है। लोग कहते हैं कि आप कंजूस हैं; पर आप नहीं हैं, क्योंकि आप गरीबों और धार्मिक संस्थाओं को उदारतापूर्वक दान देती हैं—हालाँकि आपके दान इतने गुप्त और चुपचाप दिए जाते हैं कि प्राप्तकर्ताओं के अलावा किसी को पता ही नहीं चलता। लेकिन मैं स्वयं आपकी दासी बनूँगी। जब मैं थोड़ी स्वस्थ हो जाऊँगी तो काम पर लग जाऊँगी, और आपको अच्छी तरह से पेश आना होगा, माँ, और मेरी बात माननी होगी।”

और कैरोलिन, अपनी मां के पास बैठी हुई, अपने मलमल के रूमाल को ठीक कर रही थी और अपने बालों को संवार रही थी।

“मेरी अपनी माँ,” फिर वह अपने रिश्ते के बारे में सोचकर खुश होते हुए बोली, “जो मेरी है, और जिसकी मैं हूँ! अब मैं एक अमीर लड़की हूँ। मेरे पास कुछ ऐसा है जिसे मैं दिल से प्यार कर सकती हूँ, और प्यार करने से डरती नहीं हूँ। माँ, यह छोटा सा ब्रोच आपको किसने दिया? मुझे इसे खोलकर देखने दीजिए।”

श्रीमती प्रायर, जो आमतौर पर दखलंदाजी करने वाले हाथों और निकट संपर्क से कतराती थीं, ने इस छूट को सहजता से स्वीकार कर लिया।

“क्या पापा ने आपको ये दिया है, मम्मी?”

“मेरी बहन ने मुझे यह दिया था — मेरी इकलौती बहन, कैरी ने। काश तुम्हारी चाची कैरोलिन अपनी भतीजी को यह देखने के लिए जीवित होती!”

“क्या तुम्हारे पास पापा की कोई चीज नहीं है—न कोई गहना, न उनका कोई उपहार?”

मेरे पास एक चीज है।

"क्या आप उसे महत्व देते हैं?"

"मैं इसे महत्व देता हूँ।"

"कीमती और सुंदर?"

"मेरे लिए अमूल्य और प्रिय।"

“दिखाओ, माँ। यह यहाँ है या फील्डहेड पर?”

“यह अब मुझसे बात कर रहा है, मुझ पर झुक रहा है। इसकी बाहें मेरे चारों ओर लिपटी हुई हैं।”

“अरे माँ, आपका मतलब आपकी उस शरारती बेटी से है, जो आपको कभी अकेला नहीं छोड़ती; जो आपके कमरे में जाते ही आपको ढूंढने के लिए दौड़ पड़ती है; जो कुत्ते की तरह आपके पीछे-पीछे ऊपर-नीचे जाती है।”

“जिनके चेहरे के हाव-भाव आज भी मुझे कभी-कभी एक अजीब सा रोमांच देते हैं। मुझे आज भी तुम्हारी सुंदर सूरत से थोड़ा डर लगता है, बच्ची।”

“तुम नहीं कर सकतीं; तुम नहीं कर सकतीं। माँ, मुझे अफ़सोस है कि पापा अच्छे नहीं थे। काश वो अच्छे होते। दुष्टता सभी सुखद चीजों को बिगाड़ देती है और उनमें ज़हर घोल देती है। यह प्रेम को मार देती है। अगर हम दोनों एक-दूसरे को दुष्ट समझते, तो क्या हम एक-दूसरे से प्यार कर सकते थे?”

"और अगर हम एक-दूसरे पर भरोसा नहीं कर सकते, कैरी?"

“हम कितने दुखी होते! माँ, आपको जानने से पहले मुझे यह आशंका थी कि आप अच्छी नहीं हैं—कि मैं आपका सम्मान नहीं कर सकता। उस डर ने आपसे मिलने की मेरी इच्छा को दबा दिया था। और अब मेरा दिल खुशी से झूम रहा है क्योंकि मैं आपको लगभग परिपूर्ण पाता हूँ; दयालु, बुद्धिमान, प्यारी। आपकी एकमात्र कमी यह है कि आप पुराने ख्यालों की हैं, और मैं इसे दूर कर दूँगा। माँ, अपना काम छोड़ो; मुझे पढ़कर सुनाओ। मुझे आपका दक्षिणी लहजा पसंद है; यह बहुत शुद्ध, बहुत कोमल है।

इसमें कोई कर्कशता नहीं है, कोई नाक से निकलने वाली आवाज़ नहीं है, जैसा कि उत्तर में लगभग हर किसी की आवाज़ में होता है। मेरे चाचा और श्री हॉल कहते हैं कि आप एक अच्छी पाठक हैं, माँ। श्री हॉल ने कहा कि उन्होंने किसी भी महिला को इतने सलीके से और इतने शुद्ध लहजे में पढ़ते हुए कभी नहीं सुना।"

"काश मैं आपकी प्रशंसा का प्रतिफल दे पाता, कैरी; लेकिन, सच कहूँ तो, जब मैंने पहली बार आपके इस उत्कृष्ट मित्र को पढ़ते और उपदेश देते सुना, तो मैं उनकी उत्तरी बोली को समझ नहीं पाया।"

"क्या आप मुझे समझ पाईं, माँ? क्या मेरी आवाज़ रूखी लग रही थी?"

"नहीं। मैं लगभग यही चाहती थी कि तुम ऐसी होतीं, जैसे मैं चाहती थी कि तुम थोड़ी असभ्य दिखो। तुम्हारे पिता, कैरोलीन, स्वाभाविक रूप से अच्छी तरह बोलते थे, तुम्हारे आदरणीय चाचा से बिल्कुल अलग — सही ढंग से, विनम्रता से, सहजता से। यह प्रतिभा तुम्हें विरासत में मिली है।"

"बेचारे पापा! जब वे इतने मिलनसार थे, तो अच्छे बच्चे क्यों नहीं थे?"

"वह जैसा था वैसा क्यों था—और सौभाग्य से, हे बच्चे, तुम इस बारे में कोई कल्पना भी नहीं कर सकते—यह मैं नहीं बता सकता। यह एक गहरा रहस्य है। इसका उत्तर उसके रचयिता के हाथों में है। मैं इसे यहीं छोड़ता हूँ।"

"माँ, तुम सिलाई करती रहोगी, करती रहोगी। सिलाई छोड़ दो; मुझे यह पसंद नहीं है। यह तुम्हारी गोद में बोझ बन रही है, और मुझे इसे अपने सिर पर रखना है; यह तुम्हारी आँखों को व्यस्त रख रही है, और मुझे उन्हें किताब के लिए रखना है। ये लो तुम्हारी पसंदीदा किताब — कूपर।"

ये ज़िदें माँ को बहुत पसंद थीं। अगर कभी वह उनकी बात मानने में देरी करती, तो सिर्फ़ इसलिए कि वह उन्हें बार-बार सुन सके और अपनी बच्ची की कोमल, थोड़ी चंचल, थोड़ी नखरीली ज़िद का आनंद ले सके। और फिर, जब वह मान जाती, तो कैरोलाइन नखरे से कहती, "आप मुझे बिगाड़ देंगी, माँ। मैंने हमेशा सोचा था कि मुझे बिगाड़ा जाना अच्छा लगेगा, और मुझे यह बहुत प्यारा लगता है।" श्रीमती प्रायर को भी ऐसा ही लगता था।

अध्याय XXVI.

पुरानी प्रतियां।

जब तक फील्डहेड दल ब्रायर्फ़ील्ड लौटा, कैरोलिन लगभग ठीक हो चुकी थी। मिस कील्डर, जिन्हें डाक द्वारा अपनी सहेली के स्वास्थ्य लाभ की खबर मिली थी, घर पहुँचने और पादरी के यहाँ पहली बार जाने के बीच एक घंटे का समय भी नहीं बीतने दिया।

बारिश की हल्की फुहार देर से खिले फूलों और भूरे रंग की शरदकालीन झाड़ियों पर पड़ रही थी, तभी बगीचे की खिड़की खुलने की आवाज़ सुनाई दी और शर्ली की जानी-पहचानी आकृति खिड़की से गुज़री। उसके प्रवेश करते ही उसके भाव उसके अपने विशिष्ट अंदाज़ में प्रकट हुए। जब वह गंभीर भय या आनंद से व्याकुल होती थी, तो वह ज़्यादा बातूनी नहीं होती थी। तीव्र भावनाएँ शायद ही कभी उसकी ज़ुबान पर हावी होती थीं, और यहाँ तक कि उसकी आँखें भी भावनाओं को एक गुप्त और क्षणिक विजय से ज़्यादा व्यक्त नहीं कर पाती थीं। उसने कैरोलीन को अपनी बाहों में लिया, उसे एक नज़र देखा, एक चुंबन दिया, फिर कहा, "तुम ठीक हो।"

और एक मिनट बाद, “मुझे लगता है कि अब आप सुरक्षित हैं; लेकिन अपना ख्याल रखें। ईश्वर करे कि आपका स्वास्थ्य अब और कोई झटका न सह सके!”

वह यात्रा के बारे में धाराप्रवाह बोलने लगी। जीवंत बातचीत के बीच उसकी नज़र बार-बार कैरोलिन पर टिकी हुई थी। उसकी नज़र की रोशनी में गहरी चिंता, कुछ परेशानी और कुछ विस्मय झलक रहा था।

“हो सकता है कि वह बेहतर हो गई हो,” उसने कहा, “लेकिन वह अभी भी कितनी कमजोर है! उसने कितने बड़े खतरे का सामना किया है!”

अचानक उसकी नजर श्रीमती प्रायर पर पड़ी। उस नजर ने उसे भेद डाला।

“मेरी देखभाल करने वाली कब वापस आएगी?” उसने पूछा।

“क्या मैं उसे सब कुछ बता सकती हूँ?” कैरोलिन ने अपनी माँ से पूछा। इशारों से जाने का संकेत मिलते ही, शर्ली को उसकी अनुपस्थिति में हुई घटनाओं के बारे में पता चल गया।

“बहुत बढ़िया,” यह एक सहज टिप्पणी थी — “बहुत बढ़िया! लेकिन यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं है।”

"तुम क्या जानते हो?"

मुझे इस पूरे मामले का काफी पहले से ही अंदाजा था। मैंने श्रीमती प्रायर के इतिहास के बारे में कुछ सुना था—उनसे नहीं, बल्कि दूसरों से। श्री जेम्स हेलस्टोन के करियर और चरित्र की हर छोटी-बड़ी बात मुझे पता थी। मिस मान के साथ एक दोपहर की मुलाकात और बातचीत ने मुझे इससे अच्छी तरह परिचित करा दिया था; साथ ही, वह श्रीमती यॉर्क के चेतावनी भरे उदाहरणों में से एक हैं—उन खूनी लाल रोशनी में से एक जिसे वह युवा महिलाओं को शादी से डराने के लिए इस्तेमाल करती हैं। मुझे लगता है कि मुझे उन उंगलियों से खींची गई तस्वीर की सच्चाई पर संदेह होना चाहिए था—ये दोनों महिलाएं जीवन के काले पक्ष को दिखाने में एक अजीब सा आनंद लेती हैं—लेकिन मैंने इस विषय पर श्री यॉर्क से पूछा, और उन्होंने कहा, 'शर्ली, मेरी महिला, अगर तुम उस जेम्स हेलस्टोन के बारे में कुछ भी जानना चाहती हो, तो मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि वह एक शेर जैसा आदमी था। वह सुंदर, व्यभिचारी, कोमल, धोखेबाज, विनम्र, क्रूर था—'रो मत, कैरी; हम इसके बारे में और कुछ नहीं कहेंगे।'

“मैं रो नहीं रही हूँ, शर्ली; या अगर रो भी रही हूँ, तो बस मामूली बात है। रो लो; अगर तुम मुझसे सच छुपाओगी तो तुम मेरी दोस्त नहीं हो। मुझे सच को छिपाने और उसे तोड़-मरोड़कर पेश करने की यह झूठी योजना बिल्कुल पसंद नहीं।”

"सौभाग्य से मैंने लगभग वह सब कुछ कह दिया है जो मुझे कहना था, सिवाय इसके कि आपके चाचा ने स्वयं श्री यॉर्क के शब्दों की पुष्टि की; क्योंकि वह भी झूठ से घृणा करते हैं, और उन पारंपरिक छल-कपटों का सहारा नहीं लेते जो झूठ से भी बदतर हैं।"

लेकिन पापा तो मर चुके हैं; अब उन्हें अकेला छोड़ देना चाहिए।

“उन्हें रोना चाहिए; और हम उसे अकेला छोड़ देंगे। जी भर के रो लो, कैरी; इससे

तुम्हें अच्छा लगेगा। स्वाभाविक आँसुओं को रोकना गलत है। इसके अलावा, मैं खुद को यह विचार साझा करके प्रसन्न करना चाहता हूँ जो इस समय तुम्हारी माँ की आँखों में चमक रहा है जब वह तुम्हें देख रही है। हर बूँद एक पाप को मिटा देती है। रोओ! तुम्हारे आँसुओं में वह शक्ति है जो दमिश्क की नदियों में नहीं थी। जॉर्डन की तरह, वे एक कोढ़ी स्मृति को भी साफ कर सकते हैं।"

"महोदया," उसने श्रीमती प्रायर को संबोधित करते हुए कहा, "क्या आपको लगा कि मैं आपको और आपकी बेटी को रोज़ाना एक साथ देखने की आदी हो जाऊँगी—आप दोनों में कई मामलों में अद्भुत समानता देखकर, (क्षमा कीजिए) आपकी बेटी की उपस्थिति में और उससे भी अधिक अनुपस्थिति में आपके अनियंत्रित भावों को देखकर—और अपने खुद के अनुमान न लगाऊँ? मैंने अनुमान लगाए हैं, और वे अक्षरशः सही हैं। अब मैं खुद को चतुर समझने लगूँगी।"

"और तुमने कुछ नहीं कहा?" कैरोलिन ने हैरानी से कहा, जिसने जल्द ही अपनी भावनाओं पर शांत नियंत्रण पा लिया।

"कुछ नहीं। मुझे इस विषय पर एक शब्द भी बोलने का कोई अधिकार नहीं था। यह मेरा मामला नहीं था; मैंने इसे अपना मामला बनाने से परहेज किया।"

"आपने इतने गहरे रहस्य का अनुमान लगा लिया, और आपने इस बात का जरा भी संकेत नहीं दिया कि आपने इसका अनुमान लगा लिया है?"

क्या यह इतना मुश्किल है?

"यह तुम्हारे जैसा नहीं है।"

"आपको कैसे मालूम?"

आप संकोची नहीं हैं; आप खुलकर संवाद करते हैं।

मैं मिलनसार तो हूँ, लेकिन यह भी जानता हूँ कि कहाँ रुकना है। अपने खजाने को दिखाते हुए, मैं शायद एक-दो अनमोल रत्नों को छुपा कर रखूँ—एक अनोखा, अनमोल नक्काशीदार पत्थर—एक ताबीज जिसकी रहस्यमयी चमक की एक झलक भी मैं शायद ही कभी खुद को देखने देता हूँ। शुभ दिन।

इस प्रकार कैरोलिन को शर्ली के चरित्र का एक नया दृष्टिकोण प्राप्त हुआ। कुछ ही समय में यह संभावना फिर से जागृत हुई; यह उसके सामने खुल गई।

जैसे ही उसने माहौल में बदलाव—एक छोटे से समाज के रोमांच—को सहने की पर्याप्त शक्ति प्राप्त की, मिस कील्डर ने फील्डहेड में उसकी उपस्थिति के लिए

प्रतिदिन अनुरोध करना शुरू कर दिया। क्या शर्ली अपने सम्मानित रिश्तेदारों से ऊब गई थी, यह ज्ञात नहीं है। उसने ऐसा कहा तो नहीं; लेकिन उसने कैरोलिन को अपने साथ रखने के लिए इतनी उत्सुकता दिखाई जिससे यह सिद्ध हो गया कि उस प्रतिष्ठित मंडली में एक नए सदस्य का आना उसे बुरा नहीं लगा।

सिम्पसन परिवार चर्च से जुड़ा हुआ था। स्वाभाविक रूप से, पादरी की भतीजी का उन्होंने आदरपूर्वक स्वागत किया। श्री सिम्पसन एक बेदाग़ प्रतिष्ठावान, चिड़चिड़े स्वभाव के, धार्मिक सिद्धांतों वाले और सांसारिक विचारों वाले व्यक्ति साबित हुए; उनकी पत्नी एक बहुत ही अच्छी महिला थीं - धैर्यवान, दयालु और सुसंस्कृत। उनका पालन-पोषण संकीर्ण विचारों के साथ हुआ था, कुछ पूर्वाग्रहों तक ही सीमित था - मुट्ठी भर कड़वी जड़ी-बूटियाँ; कुछ चुनिंदा पसंद, जिन्हें तब तक भिगोया जाता था जब तक उनका प्राकृतिक स्वाद न निकल जाए और खाना पकाने में कोई मसाला न डाला जाए; कुछ उत्कृष्ट सिद्धांत, जो कट्टरता की एक कठोर परत में लिपटे हुए थे, जिसे पचाना मुश्किल था। वह इतनी आज्ञाकारी थीं कि इस आहार की शिकायत करने या इससे कुछ अधिक माँगने की उनकी कोई गुंजाइश नहीं थी।

उनकी बेटियाँ अपनी जाति के लिए एक मिसाल थीं। वे लंबी थीं और उनकी नाक रोमन शैली की थी। उनकी शिक्षा त्रुटिहीन थी। वे जो भी करतीं, उसे बखूबी निभातीं। इतिहास और सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों ने उनके मन को संवारा था। उनके सिद्धांत और विचार ऐसे थे जिन्हें सुधारा नहीं जा सकता था। उनसे अधिक सुव्यवस्थित जीवन, भावनाएँ, शिष्टाचार और आदतें कहीं और मिलना मुश्किल था। उन्हें भाषा, व्यवहार आदि के नियमों की एक विशेष संहिता कंठस्थ थी; वे स्वयं कभी भी इसके सूक्ष्म व्यावहारिक प्रावधानों से विचलित नहीं होती थीं और दूसरों में किसी भी विचलन को वे दबी आवाज़ में भय से देखती थीं। विनाश की घृणा उनके लिए कोई रहस्य नहीं थी; उन्होंने उस अकथनीय तत्व को उस विशेषता में खोज लिया था जिसे दूसरे मौलिकता कहते हैं। वे इस बुराई के संकेतों को तुरंत पहचान लेती थीं; और जहाँ कहीं भी उन्हें इसका आभास होता था—चाहे वह रूप, शब्द या कर्म में हो; चाहे वे इसे किसी पुस्तक की ताज़गी भरी, सशक्त शैली में पढ़ें या इसे रोचक, अपरंपरागत, शुद्ध और अभिव्यंजक भाषा में सुनें—वे काँप उठती थीं, पीछे हट जाती थीं। उनके सिर पर खतरा मंडरा रहा था, उनके कदमों में संकट मंडरा रहा था। यह अजीबोगरीब चीज क्या थी? समझ से परे होने के कारण यह अवश्य ही बुरी चीज होगी। इसकी निंदा की जाए और इसे

जंजीरों में बांध दिया जाए।

हेनरी सिम्पसन, परिवार का इकलौता बेटा और सबसे छोटा बच्चा, पंद्रह साल का लड़का था। वह आमतौर पर अपने शिक्षक के साथ रहता था। जब वह शिक्षक से अलग होता, तो अपनी चचेरी बहन शर्ली से मिलने जाता। यह लड़का अपनी बहनों से अलग था। वह छोटा, लंगड़ा और पीला था; उसकी बड़ी-बड़ी आँखें एक फीकी सी चमक में कुछ सुस्त सी लगती थीं। वास्तव में, वे आमतौर पर कुछ धुंधली सी ही रहती थीं, लेकिन उनमें चमकने की क्षमता थी। कभी-कभी वे न केवल चमकती थीं, बल्कि दमक उठती थीं। आंतरिक भावनाएँ उसके गालों को रंगत और उसके लंगड़ेपन भरे कदमों को दृढ़ता प्रदान कर सकती थीं। हेनरी की माँ उससे प्यार करती थी; वह सोचती थी कि उसकी ये विशिष्टताएँ ईश्वर द्वारा चुनी गई हैं। वह दूसरे बच्चों जैसा नहीं था, वह मानती थी। वह मानती थी कि वह पुनर्जन्म लिया हुआ है - एक नया सैमुअल - जिसे जन्म से ही ईश्वर ने बुलाया है। उसे पादरी बनना था। श्रीमान और श्रीमती सिम्पसन, उस लड़के को न समझ पाने के कारण, उसे ज़्यादातर अकेला छोड़ देते थे। शर्ली ने उसे अपना लाडला बना लिया और उसने शर्ली को अपना खेल का साथी बना लिया।

इस पारिवारिक दायरे के बीच में, या यूं कहें कि इसके बाहर, शिक्षक - एक उपग्रह - की तरह घूम रहा था।

हाँ, लुई मूर सिम्पसन परिवार का एक हिस्सा थे—जुड़े हुए भी अलग; हमेशा साथ रहते हुए भी, हमेशा दूर। उस सभ्य परिवार के हर सदस्य ने उनके साथ उचित सम्मान का व्यवहार किया। पिता गंभीर और शिष्ट थे, कभी-कभी चिड़चिड़े भी; माँ एक दयालु महिला थीं, ध्यान देने वाली लेकिन औपचारिक; बेटियाँ उन्हें एक अमूर्त व्यक्तित्व मानती थीं, न कि एक इंसान। उनके व्यवहार से ऐसा लगता था कि उनके भाई के शिक्षक उनके लिए नहीं जीते थे। वे विद्वान थीं; वे भी विद्वान थे—लेकिन उनके लिए नहीं। वे निपुण थीं; उनमें भी प्रतिभाएँ थीं, जो उनकी इंद्रियों को दिखाई नहीं देती थीं। उनकी उंगलियों से बना सबसे जीवंत रेखाचित्र भी उनकी आँखों के लिए निरर्थक था; उनके होठों से निकली सबसे मौलिक टिप्पणी भी उनके कानों तक नहीं पहुँचती थी। उनके व्यवहार की शालीनता की कोई सीमा नहीं थी।

मुझे कहना चाहिए था कि इसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था; लेकिन मुझे एक बात याद है जिसने कैरोलिन हेलस्टोन को अजीब तरह से आश्चर्यचकित कर दिया

था। वह यह थी कि फील्डहेड में उसके चचेरे भाई का कोई हमदर्द दोस्त नहीं था; मिस कील्डर के लिए वह महज़ एक शिक्षक था, उतना ही कम सज्जन, उतना ही कम मर्द, जितना कि आदरणीय मिस सिम्पसन के लिए।

दयालु हृदय वाली शर्ली को आखिर क्या हो गया था कि वह अपने घर में अकेले रह रहे एक साथी की दयनीय स्थिति के प्रति इतनी उदासीन हो गई थी? शायद वह उसके प्रति घमंडी नहीं थी, लेकिन उसने कभी उस पर ध्यान नहीं दिया - उसे अकेला छोड़ दिया। वह आता-जाता, बोलता या चुप रहता, और वह शायद ही कभी उसके अस्तित्व को महसूस करती थी।

लुई मूर स्वयं इस जीवन के अभ्यस्त प्रतीत होते थे और उन्होंने इसे कुछ समय तक सहने का निश्चय कर लिया था। उनकी क्षमताएँ मानो उनके भीतर समाई हुई थीं और अपनी कैद में मौन थीं। वे कभी हँसते नहीं थे; वे शायद ही कभी मुस्कुराते थे; वे शिकायत नहीं करते थे। वे अपने कर्तव्यों का पूर्णतया निर्धनतापूर्वक निर्वाह करते थे। उनका शिष्य उनसे प्रेम करता था; वे संसार से शिष्टाचार के सिवा कुछ नहीं चाहते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वे इससे अधिक कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे—कम से कम उस घर में तो नहीं; क्योंकि जब उनकी चचेरी बहन कैरोलीन ने मित्रता का प्रस्ताव रखा, तो उन्होंने उसे प्रोत्साहित नहीं किया—उन्होंने उससे संपर्क करने की बजाय उससे दूरी बनाए रखी। अपने पीले, अपाहिज शिष्य के अलावा, घर में केवल एक ही जीवित प्राणी था जिसे वह प्यार से सहलाता था, और वह था बदमाश टार्टर, जो दूसरों के प्रति उदासीन और असंवेदनशील होने के बावजूद, उससे विशेष लगाव रखता था - यह लगाव इतना स्पष्ट था कि कभी-कभी, जब मूर को भोजन के लिए बुलाया जाता और वह कमरे में आकर बिना स्वागत के बैठ जाता, तो टार्टर शर्ली के पैरों के पास अपने ठिकाने से उठकर उस शांत शिक्षक के पास चला जाता। एक बार - केवल एक बार - उसने उसे जाते हुए देखा, और अपना सफेद हाथ बढ़ाकर, धीरे से बोलते हुए, उसे वापस बुलाने की कोशिश की। टार्टर ने देखा, लार टपकाई और आह भरी, जैसा कि उसका स्वभाव था, लेकिन फिर भी उसने निमंत्रण को अनसुना कर दिया, और लुई मूर के बगल में अपने पिछले पैरों पर आराम से बैठ गया। उस सज्जन ने कुत्ते के बड़े, काले थूथन वाले सिर को अपने घुटने पर रखा, उसे थपथपाया और मन ही मन एक छोटी सी मुस्कान दी।

एक पैनी नज़र रखने वाले व्यक्ति ने उसी शाम यह गौर किया होगा कि जब टार्टर

ने शर्ली के प्रति अपनी वफादारी फिर से दोहराई और एक बार फिर उसके पायदान के पास बैठ गया, तो उस साहसी शिक्षक ने एक शब्द और हावभाव से उसे फिर से मोहित कर लिया। शब्द सुनते ही उसके कान खड़े हो गए; हावभाव पर वह सीधा खड़ा हो गया और प्यार से सिर झुकाकर अपेक्षित दुलार पाने के लिए आगे आया। जैसे ही दुलार मिला, मूर के शांत चेहरे पर एक बार फिर वही भावपूर्ण मुस्कान फैल गई।

एक दिन जब कैरोलिन और वे दोनों ग्रीष्मकालीन घर में अकेले बैठे थे, तो कैरोलिन ने कहा, "शर्ली, क्या तुम जानती हो कि सिम्पसन परिवार के यहाँ आने से पहले मेरा चचेरा भाई लुई तुम्हारे चाचा के परिवार में ट्यूटर था?"

शर्ली का जवाब उतना शीघ्र नहीं था जितना कि वह आमतौर पर देती थी, लेकिन अंत में उसने जवाब दिया, "हाँ - बिल्कुल; मुझे यह अच्छी तरह से पता था।"

मुझे लगा कि आपको इस परिस्थिति की जानकारी होगी।

“तो फिर क्या?”

मुझे यह समझ नहीं आ रहा कि ऐसा कैसे हुआ कि आपने इसके बारे में मुझसे कभी बात नहीं की।

"इससे आपको हैरानी क्यों होनी चाहिए?"

“यह अजीब लगता है। मुझे इसका कारण समझ नहीं आ रहा। आप बहुत बोलते हैं—आप खुलकर बोलते हैं। उस परिस्थिति का जिक्र कभी क्यों नहीं हुआ?”

"क्योंकि ऐसा कभी था ही नहीं," और शर्ली हंस पड़ी।

“तुम तो बिल्कुल अनोखी हो!” उसकी सहेली ने कहा। “मुझे लगा था कि मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूँ; अब मुझे अपनी गलती का एहसास होने लगा है। श्रीमती प्रायर के बारे में तुम एकदम चुप थीं, और अब फिर से एक और राज़ खुल गया है। लेकिन तुमने इसे राज़ क्यों रखा, यह मेरे लिए एक रहस्य है।”

“मैंने इसे कभी छिपाया नहीं; ऐसा करने का मेरे पास कोई कारण नहीं था। अगर आपने मुझसे पूछा होता कि हेनरी का ट्यूटर कौन था, तो मैं आपको बता देती। वैसे भी, मुझे लगा कि आप जानते ही होंगे।”

“इस मामले में मुझे कई बातों को लेकर उलझन है। आपको बेचारा लुई पसंद नहीं है। क्यों? क्या आप उसकी दयनीय स्थिति से नाराज़ हैं? क्या आप चाहते हैं कि रॉबर्ट

का भाई ऊंचे पद पर होता?"

"सचमुच रॉबर्ट का भाई!" यह विस्मयादिबोधक शब्द तिरस्कार भरे लहजे में बोला गया; और गर्व और अधीरता के साथ शर्ली ने खुली जाली से झांकती एक शाखा से एक गुलाब तोड़ लिया।

"हाँ," कैरोलिन ने हल्के दृढ़ स्वर में दोहराया, "रॉबर्ट का भाई। इस प्रकार वह हॉलो के गेरार्ड मूर से घनिष्ठ रूप से संबंधित है, हालाँकि प्रकृति ने उसे अपने रिश्तेदार की तरह सुंदर रूप या कुलीन स्वभाव नहीं दिया है; लेकिन उसका वंश उतना ही उत्तम है, और यदि वह स्वतंत्र होता तो उतना ही सज्जन होता।"

"समझदार, विनम्र, धर्मपरायण कैरोलीन!" शर्ली ने व्यंग्यपूर्वक कहा। "हे पुरुषों और देवदूतों, उसकी बात सुनो! हमें साधारण चेहरे या मेहनती लेकिन ईमानदार पेशे को तुच्छ नहीं समझना चाहिए, है ना? अपनी प्रशंसा के पात्र को देखो। वह बगीचे में है," उसने लताओं के गुच्छों में एक छेद की ओर इशारा करते हुए कहा; और उस छेद से लुई मूर धीरे-धीरे रास्ते से नीचे आते हुए दिखाई दिए।

"वह बदसूरत नहीं है, शर्ली," कैरोलीन ने विनती करते हुए कहा; "वह नीच नहीं है। वह उदास है; मौन उसके मन को सन्नाटे में रखता है। लेकिन मुझे विश्वास है कि वह बुद्धिमान है; और यकीन मानिए, अगर उसके स्वभाव में कुछ प्रशंसनीय गुण न होते, तो मिस्टर हॉल कभी भी उसकी संगति नहीं चाहते।"

शर्ली हँसी; वह फिर हँसी, हर बार थोड़ी व्यंग्यात्मक लहजे में। "वाह वाह," उसने कहा। "इस बहाने से कि वह आदमी सिरिल हॉल का दोस्त और रॉबर्ट मूर का भाई है, हम उसकी मौजूदगी को बर्दाश्त कर लेंगे; है ना, कैरी? तुम्हें लगता है कि वह बुद्धिमान है, है ना? बिल्कुल मूर्ख तो नहीं है - है ना? उसके स्वभाव में कुछ तो सराहनीय है! - यानी, वह बिल्कुल बदमाश नहीं है। अच्छा! तुम्हारी बातों का मुझ पर असर हुआ है; और यह साबित करने के लिए कि ऐसा हुआ है, अगर वह इधर आया तो मैं उससे बात करूँगी।"

वह ग्रीष्मकालीन आवास के पास पहुँचा। उसे इस बात का एहसास नहीं था कि उसमें कोई रहता है, इसलिए वह सीढ़ी पर बैठ गया। टार्टर, जो अब उसका नियमित साथी था, उसके पीछे-पीछे आया और उसके पैरों पर बैठ गया।

"मेरे दोस्त!" लुई ने अपना भूरा कान खींचते हुए कहा, या यूँ कहें कि उस अंग के क्षत-विक्षत अवशेषों को, जो सौ लड़ाइयों में फट और चबाए जा चुके थे, "पतझड़ का

सूरज हम पर भी उतना ही सुखद चमकता है जितना कि सबसे सुंदर और धनी लोगों पर। यह बगीचा हमारा नहीं है, लेकिन हम इसकी हरियाली और सुगंध का आनंद लेते हैं, है ना?”

वह चुपचाप बैठा रहा, टार्टर को सहलाता रहा, जो अत्यधिक स्नेह से लार टपका रहा था। आसपास के पेड़ों में हल्की चहचहाहट शुरू हुई। पत्तों की तरह हल्की कोई चीज़ नीचे गिरी। वे छोटे पक्षी थे, जो थोड़ी दूरी पर घास पर उतरकर, मानो किसी उम्मीद से फुदक रहे थे।

“छोटे भूरे बौनों को याद है कि मैंने उन्हें कल खाना खिलाया था,” लुई ने फिर से मन ही मन कहा। “वे और बिस्कुट चाहते हैं। आज मैं एक टुकड़ा बचाना भूल गया। उत्सुक नन्हे परियों, मेरे पास तुम्हारे लिए एक टुकड़ा भी नहीं है।”

उसने अपना हाथ जेब में डाला और खाली हाथ बाहर निकाला।

"एक ऐसी ज़रूरत जिसे आसानी से पूरा किया जा सकता है," मिस कील्डर ने फुसफुसाते हुए कहा, जो सुन रही थीं।

उसने अपने पर्स से मीठे केक का एक टुकड़ा निकाला; क्योंकि उस पर्स में मुर्गियों, बत्तखों या गौरैयों को खिलाने के लिए हमेशा कुछ न कुछ रहता था। उसने उसे मसलकर उसके कंधे पर झुककर उसके हाथ में चूरा रख दिया।

“देखो,” उसने कहा— “लापरवाह लोगों के लिए भी ईश्वर का दंड होता है।”

"सितंबर की यह दोपहर सुहावनी है," लुई मूर ने कहा, और जरा भी विचलित हुए बिना, उन्होंने शांति से रोटी के टुकड़े घास पर फेंक दिए।

“क्या तुम्हारे लिए भी?”

"यह मेरे लिए उतना ही सुखद है जितना किसी भी सम्राट के लिए।"

"आप प्रकृति के तत्वों और निर्जीव तथा निम्न स्तर की सजीव रचनाओं से आनंद प्राप्त करने में एक प्रकार की कठोर, एकाकी विजय प्राप्त करते हैं।"

“अकेला, पर कठोर नहीं। जानवरों के साथ मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं आदम का पुत्र हूँ, उस पिता का वंशज जिसे ‘पृथ्वी पर चलने वाले हर जीव’ पर प्रभुत्व दिया गया था। आपका कुत्ता मुझे पसंद करता है और मेरे पीछे-पीछे चलता है। जब मैं उस आँगन में जाता हूँ, तो आपके कबूतरखाने के कबूतर मेरे पैरों पर फड़फड़ाते हैं। अस्तबल में आपकी घोड़ी मुझे उतना ही जानती है जितना आपको, और मेरी बात और भी अच्छे से मानती है।”

और मेरे गुलाबों की सुगंध तुम्हें मीठी लगती है, और मेरे पेड़ तुम्हें छाया देते हैं। और," लुई ने आगे कहा, "कोई भी सनक इन सुखों को मुझसे छीन नहीं सकती; ये मेरे हैं।"

वह चला गया। टार्टर उसके पीछे-पीछे गया, मानो कर्तव्य और स्नेह से बंधा हो, और शर्ली ग्रीष्मकालीन घर की सीढ़ी पर खड़ी रही। कैरोलीन ने उस असभ्य शिक्षक को देखते हुए उसका चेहरा देखा। वह पीला पड़ गया था, मानो उसका स्वाभिमान अंदर ही अंदर चूर-चूर हो गया हो।

कैरोलिन ने क्षमाप्रार्थी लहजे में कहा, "देखिए, उसकी भावनाएं इतनी बार आहत होती हैं कि वह उदास हो जाता है।"

"देखो," शर्ली ने क्रोध से जवाब दिया, "वह एक ऐसा विषय है जिस पर अगर हम बार-बार चर्चा करेंगे तो हम दोनों में झगड़ा होगा; इसलिए अब से और हमेशा के लिए इस विषय को छोड़ दो।"

"मुझे लगता है कि उसने एक से ज़्यादा बार ऐसा व्यवहार किया होगा," कैरोलीन ने मन ही मन सोचा, "और इसी वजह से शर्ली उससे इतनी दूर हो गई है। फिर भी मुझे हैरानी होती है कि वह उसके स्वभाव और परिस्थितियों को नज़रअंदाज़ क्यों नहीं कर पाती। मुझे आश्चर्य होता है कि उसकी सामान्य विनम्रता, मर्दानगी और ईमानदारी उसके पक्ष में शर्ली को प्रभावित क्यों नहीं करती। वह अक्सर इतनी असंवेदनशील और चिड़चिड़ी नहीं होती।"

कैरोलीन की दो सहेलियों द्वारा अपने चचेरे भाई के चरित्र के बारे में दी गई मौखिक गवाही ने उनके प्रति कैरोलीन की सकारात्मक राय को और मजबूत कर दिया। विलियम फैरेन, जिनकी कुटिया में वे श्री हॉल के साथ गए थे, ने उन्हें "वास्तविक सज्जन" बताया; ब्रायफ़ील्ड में उनके जैसा दूसरा कोई नहीं था। विलियम ने कहा, "मैं उस आदमी के लिए कुछ भी कर सकता था। और फिर यह देखना कितना सुखद था कि बच्चे उन्हें कितना पसंद करते थे, और उनकी पत्नी ने उन्हें देखते ही कैसे अपना बना लिया। वह जब भी किसी घर में जाते, बच्चे तुरंत उनके पास दौड़ पड़ते थे। ऐसा लगता था मानो उनमें बड़ों से भी ज्यादा गहरी समझ हो, लोगों के स्वभाव को समझने में।"

मिस हेलस्टोन के इस सवाल के जवाब में कि वह लुई मूर के बारे में क्या सोचते

हैं, श्री हॉल ने तुरंत जवाब दिया कि कैम्ब्रिज छोड़ने के बाद से वह सबसे अच्छे व्यक्ति थे जिनसे वह मिले थे।

“लेकिन वह तो बहुत गंभीर हैं,” कैरोलिन ने आपत्ति जताई।

“ग्रेव! दुनिया की सबसे बेहतरीन संगत! अनोखे, शांत और बेमिसाल हास्य से भरपूर। मैंने अपने जीवन में कभी किसी यात्रा का इतना आनंद नहीं लिया जितना उनके साथ झीलों की यात्रा का। उनकी समझ और रुचियां इतनी श्रेष्ठ हैं कि उनके प्रभाव में रहना ही किसी के लिए लाभकारी होता है; और उनके स्वभाव और व्यवहार की तो मैं तारीफ ही करूंगा।”

"फील्डहेड में वह उदास दिखते हैं, और मेरा मानना है कि उनमें मानवद्वेषी होने के लक्षण दिखाई देते हैं।"

“ओह! मुझे लगता है कि वह वहाँ बिल्कुल बेमेल है—गलत जगह पर है। सिम्पसन परिवार बहुत ही सम्माननीय लोग हैं, लेकिन वे लुई को समझने वाले लोग नहीं हैं। वे रीति-रिवाजों और औपचारिकताओं के बारे में बहुत सोचते हैं, जो लुई के लिए बिल्कुल समझ से परे हैं।”

मुझे नहीं लगता कि मिस कील्डर उन्हें पसंद करती हैं।

"वह उसे नहीं जानती - वह उसे नहीं जानती; अन्यथा उसमें उसके गुणों के साथ न्याय करने की पर्याप्त समझ होती।"

“खैर, मुझे लगता है कि वह उसे नहीं जानती,” कैरोलीन ने मन ही मन सोचा, और इस अनुमान के सहारे उसने उस बात को समझने की कोशिश की जो समझ से परे लग रही थी। लेकिन इस समस्या का इतना सरल समाधान उसके पास ज़्यादा देर तक नहीं रहा। उसे मिस कील्डर के पूर्वाग्रह के इस नकारात्मक बहाने को भी अस्वीकार करना पड़ा।

एक दिन संयोगवश वह हेनरी सिम्पसन के साथ कक्षा में थी, जिसके मिलनसार और स्नेही स्वभाव ने उसे तुरंत ही अपना प्रिय बना लिया था। लड़का किसी यांत्रिक उपकरण पर काम कर रहा था; लंगड़ापन होने के कारण उसे एक जगह बैठकर काम करना पसंद था। वह अपने शिक्षक की मेज पर मोम या धागे का एक टुकड़ा ढूंढने लगा जो उसके काम के लिए आवश्यक था। संयोगवश मूर वहां नहीं थे। दरअसल, श्री हॉल ने उन्हें टहलने के लिए बुलाया था। हेनरी को अपनी खोज की वस्तु तुरंत नहीं मिली। उसने एक-एक करके हर डिब्बे को खंगाला; और अंत में, एक भीतरी दराज

खोलते ही उसे मिला - न तो धागे का गोला और न ही मोम का टुकड़ा, बल्कि टेप से बंधी संगमरमर के रंग की छोटी-छोटी नोटबुक्स का एक छोटा सा बंडल। हेनरी ने उन्हें देखा। "श्री मूर अपनी मेज में कितना फालतू सामान जमा करते हैं!" उसने कहा। "काश वह मेरे पुराने अभ्यास पत्रों को इतनी सावधानी से न रखते हों।"

"यह क्या है?"

“पुरानी प्रतियां।”

उसने बंडल कैरोलिन की ओर फेंक दिया। पैकेट बाहर से इतना साफ-सुथरा दिख रहा था कि कैरोलिन को उसके अंदर की चीज़ें देखने की उत्सुकता हुई।

"अगर ये सिर्फ प्रतियां हैं, तो शायद मैं इन्हें खोल सकता हूँ?"

"जी हां, बिलकुल निःस्वार्थ भाव से। श्री मूर की मेज का आधा हिस्सा मेरा है - क्योंकि वे मुझे उसमें तरह-तरह की चीजें रखने की अनुमति देते हैं - और मैं आपको इसकी अनुमति देता हूं।"

जांच-परख करने पर पता चला कि ये फ्रांसीसी रचनाएँ थीं, जो एक विशिष्ट लेकिन सुगठित और बेहद साफ-सुथरी लिखावट में लिखी गई थीं। लिखावट पहचानी जा सकती थी। प्रत्येक गीत के अंत में लिखे नाम से यह पता लगाना मुश्किल था कि ये किसके हैं। फिर भी, उस नाम ने उन्हें चौंका दिया — “शर्ली कील्डर, सिम्पसन ग्रोव, — — शायर” (एक दक्षिणी काउंटी), और तारीख चार साल पुरानी थी।

उसने पैकेट को बांधा और उसे हाथ में थामे हुए उस पर विचार करने लगी। उसे आधा-अधूरा ऐसा महसूस हो रहा था मानो उसे खोलकर उसने किसी के भरोसे को तोड़ दिया हो।

“ये शर्ली के हैं, समझ गए ना,” हेनरी ने लापरवाही से कहा।

“क्या आपने उन्हें मिस्टर मूर को दिया था? मुझे लगता है कि उन्होंने उन्हें मिसेज प्रायर के साथ मिलकर लिखा था?”

“जब वह हमारे साथ सिम्पसन ग्रोव में रहती थी, तब उसने ये लेख मेरे स्कूल के कमरे में लिखे थे। श्री मूर ने उसे फ्रेंच सिखाई थी; यह उनकी मातृभाषा है।”

“मुझे पता है। क्या वह एक अच्छी छात्रा थी, हेनरी?”

वह एक चंचल, हंसमुख लड़की थी, लेकिन कमरे में उसकी मौजूदगी सुखद थी। वह क्लास के समय को खुशनुमा बना देती थी। वह बहुत जल्दी सीख जाती थी - यह बताना मुश्किल था कि कब और कैसे। फ्रेंच उसके लिए कुछ भी नहीं थी। वह इसे

बहुत तेज़ी से बोलती थी - मिस्टर मूर की तरह ही तेज़।

“क्या वह आज्ञाकारी थी? क्या उसने कोई परेशानी खड़ी की?”

"उसने एक तरह से काफी परेशानी खड़ी की। वह चंचल थी, लेकिन मुझे वह पसंद थी। मैं शर्ली को बहुत पसंद करता हूँ।"

“बेहद शौकीन हो – तुम छोटे मूर्ख! तुम्हें पता नहीं कि तुम क्या बोल रहे हो।”

“मैं उससे बेहद प्यार करता हूँ। वह मेरी आँखों का तारा है। मैंने कल रात मिस्टर मूर से यही कहा था।”

"वह आपको बढ़ा-चढ़ाकर बोलने के लिए फटकार लगाएगा।"

“उन्होंने ऐसा नहीं किया। वो लड़कियों की देखभाल करने वाली महिलाओं की तरह कभी डांटते-फटकारते नहीं हैं। वो पढ़ रहे थे, और बस अपनी किताब में मुस्कुराते हुए बोले कि अगर मिस कील्डर इससे ज़्यादा कुछ नहीं हैं, तो वो उतनी अच्छी नहीं हैं जितना वो उन्हें समझते हैं; क्योंकि मैं तो बस कमज़ोर आँखों वाला, कमज़ोर नज़र वाला छोटा बच्चा हूँ। मुझे अफ़सोस है कि मैं एक बेचारा बदनसीब हूँ, मिस कैरोलीन हेलस्टोन। आप जानती हैं, मैं अपाहिज हूँ।”

"कोई बात नहीं, हेनरी, तुम बहुत प्यारे छोटे बच्चे हो; और अगर भगवान ने तुम्हें स्वास्थ्य और शक्ति नहीं दी है, तो उसने तुम्हें एक अच्छा स्वभाव और एक उत्कृष्ट हृदय और मस्तिष्क दिया है।"

“मुझे तिरस्कृत किया जाएगा। कभी-कभी मुझे लगता है कि शर्ली और तुम दोनों ही मुझे तिरस्कृत करते हो।”

“सुनो, हेनरी। आम तौर पर मुझे स्कूली लड़के पसंद नहीं आते। मुझे उनसे बहुत घृणा होती है। वे मुझे छोटे बदमाश लगते हैं, जो पक्षियों, कीड़ों, बिल्ली के बच्चों और अपने से कमजोर हर जीव को मारने और सताने में आनंद लेते हैं। लेकिन तुम उनसे बिल्कुल अलग हो, इसलिए मैं तुम्हें बहुत पसंद करती हूँ। तुममें लगभग एक आदमी जितनी समझ है (कई आदमियों से कहीं ज़्यादा, भगवान जाने,” उसने मन ही मन बुदबुदाया; “तुम्हें पढ़ना पसंद है, और तुम जो पढ़ते हो उसके बारे में समझदारी से बात कर सकते हो।”

मुझे पढ़ना बहुत पसंद है। मुझे पता है कि मुझमें समझ है और मुझे पता है कि मुझमें भावनाएं भी हैं।

मिस कील्डर ने प्रवेश किया।

“हेनरी,” उसने कहा, “मैं तुम्हारा दोपहर का भोजन यहाँ लाई हूँ। मैं इसे तुम्हारे लिए स्वयं तैयार करूँगी।”

उसने मेज पर ताजा दूध का एक गिलास, चमड़े जैसी दिखने वाली किसी चीज की एक प्लेट और टोस्टिंग फोर्क जैसी दिखने वाली एक कटोरी रखी।

“तुम दोनों मिस्टर मूर की मेज क्यों तहस-नहस कर रहे हो?” उसने आगे कहा, “तुम दोनों मिस्टर मूर की मेज क्यों खंगाल रहे हो?”

“तुम्हारी पुरानी कॉपियाँ देख रही हूँ,” कैरोलिन ने जवाब दिया।

“मेरी पुरानी प्रतियां?”

“फ्रांसीसी अभ्यास पुस्तिकाएँ। यहाँ देखिए! इन्हें अनमोल समझा जाता होगा; इन्हें बहुत सावधानी से रखा जाता है।”

उसने बंडल दिखाया। शर्ली ने झट से उसे उठा लिया। “मुझे पता ही नहीं था कि ऐसा कोई बंडल भी होता है,” उसने कहा। “मुझे लगा था कि ये सारे बंडल या तो रसोई में आग जलाने के काम आ गए होंगे या सिम्पसन ग्रोव में नौकरानी के बालों को संवारने के काम आ गए होंगे। हेनरी, तुमने इन्हें क्यों रखा था?”

“यह मेरी गलती नहीं है। मैंने इसके बारे में सोचा भी नहीं था। मेरे मन में कभी यह ख्याल ही नहीं आया कि कॉपियों की कोई कीमत हो सकती है। श्री मूर ने उन्हें अपनी डेस्क के अंदरूनी दराज में रख दिया था। शायद वह उन्हें भूल गए हों।”

“यही तो है। वह उन्हें भूल गया होगा, इसमें कोई शक नहीं,” शर्ली ने दोहराया। “वे बेहद अच्छे से लिखे गए हैं,” उसने आत्मसंतुष्टि से कहा।

“शर्ली, उन दिनों तुम कितनी चंचल और चुलबुली थीं! मुझे तुम अच्छी तरह याद हो। दुबली-पतली, फुर्तीली लड़की, जिसे मैं इतनी लंबी होने के बावजूद ज़मीन से उठा सकती थी। मुझे याद है तुम्हारे कंधों पर लंबे, घने बाल और लहराता हुआ कमरबंद। तुम मिस्टर मूर को खुश कर देती थीं—शुरुआत में तो ऐसा ही था। मुझे लगता है कुछ समय बाद तुम उन्हें दुखी करने लगीं।”

शर्ली ने घनी लिखावट वाले पन्ने पलटे और कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर बाद उसने कहा, "यह किसी सर्दी की दोपहर में लिखा गया था। यह बर्फ के दृश्य का वर्णन था।"

“मुझे याद है,” हेनरी ने कहा। “श्री मूर ने जब इसे पढ़ा, तो वे चिल्ला उठे, ‘वाह, फ्रांसीसी जीत गए!’ उन्होंने कहा कि यह बहुत अच्छा लिखा गया है। बाद में आपने उनसे उस परिदृश्य का सेपिया रंग में चित्र बनाने को कहा जिसका आपने वर्णन किया

था।”

"तो तुम भूले नहीं हो, हैल?"

बिल्कुल नहीं। उस दिन हम सबको डांट पड़ी थी क्योंकि बुलाए जाने पर हम चाय के लिए नीचे नहीं आए थे। मुझे याद है मेरे शिक्षक अपने ईज़ल पर बैठे थे, और आप उनके पीछे मोमबत्ती पकड़े खड़े थे, और उन्हें बर्फीली चट्टान, चीड़ का पेड़, उसके नीचे बैठा हिरण और ऊपर लटकता आधा चाँद बनाते हुए देख रहे थे।

“हैरी, उसकी चित्रकारी कहाँ है? कैरोलिन को उन्हें देखना चाहिए।”

“उनके पोर्टफोलियो में। लेकिन उस पर ताला लगा हुआ है; चाबी उनके पास है।”

जब वह अंदर आए तो उससे इसके बारे में पूछ लेना।

“तुम्हें उससे पूछना चाहिए, शर्ली। अब तुम उससे शर्माती हो। तुम उसके सामने एक अभिमानी महिला बन गई हो; मैंने यह देखा है।”

“शर्ली, तुम सचमुच एक रहस्य हो,” कैरोलिन ने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा। “मुझे रोज़ाना कितनी अजीबोगरीब बातें पता चलती हैं! — मैं, जिसने कभी सोचा था कि तुम्हें मुझ पर पूरा भरोसा है। तुम तो एक रहस्यमयी प्राणी हो! यहाँ तक कि यह लड़का भी तुम्हें कोसता है।”

"हैरी, तुम देखो, मैं 'ऑल्ड लैंग साइन' भूल गई हूँ," मिस कील्डर ने युवा सिम्पसन को जवाब देते हुए कहा, और कैरोलिन की बात पर ध्यान नहीं दिया।

“जो तुम्हें कभी नहीं करना चाहिए था। अगर तुम्हारी याददाश्त इतनी कमजोर है तो तुम किसी पुरुष की सुबह की तारा बनने के लायक नहीं हो।”

“सचमुच, मनुष्य का सूर्योदय का तारा! और ‘मनुष्य’ से आपका तात्पर्य है, आदरणीय आप? आइए, अपना ताजा दूध गरम रहते हुए पीजिए।”

वह युवक उठा और लंगड़ाते हुए आग की ओर बढ़ा; उसने अपनी बैसाखी शेल्फ के पास ही छोड़ दी थी।

"मेरे बेचारे लंगड़े प्यारे!" शर्ली ने अपनी सबसे कोमल आवाज में बुदबुदाते हुए उसकी मदद की।

"शर्ली, तुम्हें मैं या मिस्टर सैम विन में से कौन ज्यादा पसंद है?" लड़के ने पूछा, जब उसने उसे एक आरामकुर्सी में बिठाया।

"ओह हैरी, सैम विने से मुझे नफरत है; तुम मेरे चहेते हो।"

“मैं या मिस्टर मैलोन?”

"तुम फिर से, हजार बार।"

"फिर भी वे बड़ी-बड़ी मूंछों वाले प्राणी हैं, जिनमें से प्रत्येक छह फीट ऊंचा है।"

"जबकि, जब तक तुम जीवित रहोगे, हैरी, तुम एक छोटे से पीले रंग के लैमेटर से ज्यादा कुछ नहीं बन पाओगे।"

"हाँ मुझे पता है।"

"तुम्हें दुखी होने की ज़रूरत नहीं है। क्या मैंने तुम्हें अक्सर यह नहीं बताया है कि कौन तुम्हारे जितना ही छोटा, पीला और पीड़ित था, फिर भी एक दैत्य के समान शक्तिशाली और शेर के समान बहादुर था?"

"एडमिरल होराटियो?"

"एडमिरल होराटियो, विस्काउंट नेल्सन और ड्यूक ऑफ ब्रोंटे; टाइटन के समान महान ह्रदय वाले; विश्व और शिष्टता के युग के समान वीर और साहसी; इंग्लैंड की शक्ति के नेता; गहरे समुद्र में उसकी ताकत के सेनापति; बाढ़ पर उसकी गर्जना करने वाले।"

"एक महान व्यक्ति। लेकिन मैं युद्धप्रिय नहीं हूँ, शर्ली; फिर भी मेरा मन इतना बेचैन है कि मैं दिन-रात जलता रहता हूँ—कि मैं क्या कह सकता हूँ—होने के लिए—करने के लिए—पीड़ित होने के लिए, मुझे लगता है।"

"हैरी, यह तुम्हारा मन है, जो तुम्हारे शरीर से कहीं अधिक शक्तिशाली और प्राचीन है, जो तुम्हें परेशान कर रहा है। यह एक कैदी है; यह शारीरिक बंधन में जकड़ा हुआ है। लेकिन यह स्वयं ही अपना उद्धार करेगा। केवल पुस्तकों का ही नहीं, बल्कि संसार का भी ध्यानपूर्वक अध्ययन करो। तुम्हें प्रकृति से प्रेम है; उससे निःसंकोच प्रेम करो। धैर्य रखो - समय के प्रवाह का इंतजार करो। हेनरी, तुम सैनिक या नाविक नहीं बनोगे; लेकिन यदि तुम जीवित रहे तो - मेरी भविष्यवाणी सुनो - तुम एक लेखक बनोगे, शायद एक कवि।"

"एक लेखक! यह मेरे लिए एक पल भर की रोशनी की चमक है! मैं लिखूंगा - मैं लिखूंगा! मैं एक किताब लिखूंगा जिसे मैं आपको समर्पित कर सकूंगा।"

"तुम इसे लिखोगे ताकि तुम्हारी आत्मा को स्वाभाविक मुक्ति मिल सके। हे भगवान! मैं क्या कह रहा हूँ? जितना मैं समझता हूँ, उससे कहीं अधिक, जितना मैं विश्वास करता हूँ, या जिसे मैं साकार कर सकता हूँ। लो, हैल – ये रहा तुम्हारा टोस्टेड ओटकेक; खाओ और जियो!"

“हाँ, ज़रूर!” खुली खिड़की के बाहर से एक आवाज़ आई। “मैं आटे की रोटी की इस खुशबू को पहचानती हूँ। मिस कील्डर, क्या मैं अंदर आकर इसे खा सकती हूँ?”

“श्रीमान हॉल”—यह श्रीमान हॉल थे, और उनके साथ लुई मूर भी थे, जो सैर से लौट आए थे—“भोजन कक्ष में बढ़िया दोपहर का भोजन लगा हुआ है और उसके चारों ओर सभ्य लोग बैठे हैं। यदि आप चाहें तो आप भी उस समूह में शामिल हो सकते हैं और भोजन का आनंद ले सकते हैं; लेकिन यदि आपकी अनियंत्रित रुचियां आपको अनियंत्रित व्यवहार को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करती हैं, तो यहां आएं और हमारे जैसा ही करें।”

“मुझे यह इत्र पसंद है, इसलिए मैं अपनी नाक के इशारे पर ही इसे सूंघूंगा,” श्री हॉल ने जवाब दिया, जो लुई मूर के साथ थोड़ी देर बाद अंदर आए। उस सज्जन की नज़र अपनी खाली पड़ी मेज पर पड़ी।

“चोर!” उसने कहा। — “हेनरी, तुम लाठी के लायक हो।”

"इसे शर्ली और कैरोलिन को दे दो; उन्होंने ही किया है," ऐसा आरोप लगाया गया, जिसमें सच्चाई से ज्यादा प्रभाव पर ध्यान दिया गया था।

“गद्दार और झूठी गवाह!” दोनों लड़कियाँ चिल्लाईं। “हमने कभी किसी चीज़ को हाथ नहीं लगाया, सिवाय सराहनीय जाँच की भावना से!”

“बिल्कुल सही,” मूर ने अपनी दुर्लभ मुस्कान के साथ कहा। “और आपने अपनी ‘प्रशंसनीय खोज की भावना’ से क्या पता लगाया है?”

उसने देखा कि अंदर का दराज खुला हुआ है।

“यह खाली है,” उसने कहा। “किसने लिया है?”

“लो, लो!” कैरोलीन ने जल्दी से कहा और उस छोटे पैकेट को वापस उसकी जगह पर रख दिया। उसने उसे बंद कर दिया; उसने उसे अपनी चौकी पर लगी एक छोटी चाबी से ताला लगा दिया; उसने बाकी कागजों को व्यवस्थित किया, भंडारगृह को बंद किया और बिना कुछ और कहे बैठ गया।

“मुझे लगा था कि आप और भी ज्यादा डांटेंगे, महोदय,” हेनरी ने कहा। “लड़कियों को फटकार मिलनी ही चाहिए।”

मैं उन्हें उनके अंतरात्मा के भरोसे छोड़ देता हूँ।

“इसमें उन पर जानबूझकर और जानबूझकर किए गए अपराधों का आरोप लगाया गया है, महोदय। अगर मैं यहां नहीं होता, तो वे आपके पोर्टफोलियो के साथ भी वही

करते जो उन्होंने आपकी डेस्क के साथ किया है; लेकिन मैंने उनसे कहा कि उस पर ताला लगा हुआ है।”

"और क्या आप हमारे साथ दोपहर का भोजन करेंगे?" यहाँ शर्ली ने मूर को संबोधित करते हुए बीच में टोकते हुए कहा, और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह बातचीत का रुख बदलना चाहती थी।

"ज़रूर, अगर मुझे अनुमति हो तो।"

"आपको केवल ताजे दूध और यॉर्कशायर ओटकेक तक ही सीमित रहना होगा।"

“जाओ—ताजा दूध के लिए!” लुई ने कहा। “लेकिन अपने ओटकेक के लिए!” और उसने मुंह बनाया।

हेनरी ने कहा, "वह इसे खा नहीं सकता। उसे लगता है कि यह खट्टी खमीर से तैयार किया गया चोकर जैसा है।"

"तो फिर आइए; विशेष अनुमति से हम उसे कुछ क्रैकनेल (एक प्रकार का व्यंजन) खाने की अनुमति देंगे, लेकिन इससे कम स्वादिष्ट कुछ भी नहीं।"

मेज़बान ने घंटी बजाई और अपने संक्षिप्त आदेश दिए, जिनका तुरंत पालन किया गया। उन्होंने खुद दूध नापा और उस आरामदायक घेरे में रोटी बाँटी, जो अब उस छोटी सी स्कूल की रोशन कोठरी की आग के चारों ओर बना हुआ था। फिर उन्होंने टोस्टर-जनरल का पद संभाला और कालीन पर घुटने टेककर, हाथ में कांटा लिए, बड़ी कुशलता से अपना काम किया। श्री हॉल, जिन्हें आम रीति-रिवाजों में किसी भी तरह के नए प्रयोग पसंद थे और जिनके लिए कुरकुरा ओटकेक परंपरा से अमृत के समान था, बहुत खुश नज़र आ रहे थे। वे खुलकर बातें कर रहे थे और हँस रहे थे - कभी कैरोलीन से, जिसे उन्होंने अपने पास बिठा रखा था, कभी शर्ली से, और कभी लुई मूर से। लुई भी उनसे उतने ही सौहार्दपूर्ण भाव से मिले। वे ज़्यादा नहीं हँसते थे, लेकिन शांत स्वर में बड़ी-बड़ी हास्यप्रद बातें कहते थे। गंभीर वाक्य, अप्रत्याशित मोड़ों और एक ताज़गी भरे अंदाज़ व मार्मिकता से भरे, उनके होठों से सहजता से निकलते थे। उन्होंने खुद को साबित कर दिया - जैसा कि श्री हॉल ने उनके बारे में कहा था - एक बेहतरीन साथी। कैरोलाइन उनके हास्यबोध से चकित थी, लेकिन उससे भी कहीं अधिक उनके पूर्ण आत्म-संयम से। वहाँ उपस्थित किसी भी व्यक्ति से उन्हें किसी प्रकार की अप्रिय जकड़न का आभास नहीं हो रहा था। कोई भी उन्हें उबाऊ, बाधा या नीरस नहीं लग रहा था; और फिर भी वहाँ शांत और गरिमामयी मिस कील्डर अग्नि के

सामने, लगभग उनके चरणों में, घुटनों के बल बैठी थीं।

लेकिन शर्ली अब उतनी अभिमानी और घमंडी नहीं रही थी, कम से कम इस समय तो नहीं। वह अपनी वर्तमान स्थिति की विनम्रता से अनभिज्ञ प्रतीत होती थी; या यदि सचेत भी थी, तो केवल उसकी सादगी में ही एक आकर्षण महसूस कर रही थी। उसके स्वाभिमान को इस बात से कोई ठेस नहीं पहुंची कि जिस समूह की वह स्वेच्छा से सेविका के रूप में सेवा कर रही थी, उसमें उसके चचेरे भाई का शिक्षक भी शामिल था। उसे इस बात से भी भय नहीं हुआ कि जब वह बाकियों को रोटी और दूध दे रही थी, तो उसे उसे भी देना पड़ा; और मूर ने उसके हाथ से अपना हिस्सा इतनी शांति से लिया मानो वह उसके बराबर ही हो।

जब उसने कुछ देर तक कांटा पकड़े रखा, तो उसने कहा, "अब तुम बहुत गर्म हो गई हो; मुझे तुम्हें आराम देने दो।"

और उसने एक प्रकार के शांत अधिकार के साथ उससे वह चीज ले ली, जिसके आगे वह निष्क्रिय रूप से झुक गई, न तो उसने उसका विरोध किया और न ही उसे धन्यवाद दिया।

जब शानदार दोपहर के भोजन की चर्चा हो रही थी, तब कैरोलिन ने कहा, "लुईस, मैं आपकी तस्वीरें देखना चाहूंगी।" - "क्या आप नहीं देखना चाहेंगे, मिस्टर हॉल?"

"तुम्हें खुश करने के लिए, मैं ऐसा करता; लेकिन, जहाँ तक मेरी बात है, मैंने उसे एक कलाकार के रूप में देखा है। कंबरलैंड और वेस्टमोर्लैंड में उस रूप में मैंने उसे काफी देख लिया था। पहाड़ों में कई बार हम भीग गए क्योंकि वह कैंप की कुर्सी पर बैठा रहता था, बारिश के बादलों, जमा होते कोहरे, रुक-रुक कर आने वाली धूप और न जाने क्या-क्या के प्रभाव को पकड़ता रहता था।"

"यह रहा पोर्टफोलियो," हेनरी ने एक हाथ में इसे लाते हुए और दूसरे हाथ से अपनी बैसाखी पर झुकते हुए कहा।

लुई ने उसे ले लिया, लेकिन वह ऐसे बैठा रहा मानो किसी और के बोलने का इंतज़ार कर रहा हो। ऐसा लग रहा था मानो वह उसे तब तक नहीं खोलेगा जब तक कि अभिमानी शर्ली प्रदर्शनी में रुचि न दिखाए।

उन्होंने कहा, "वह हमारी जिज्ञासा को बढ़ाने के लिए हमें इंतजार करवाते हैं।"

“तुम्हें इसे खोलना आता है,” लुई ने चाबी देते हुए कहा। “तुमने एक बार मेरे लिए ताला खराब कर दिया था; अब कोशिश करो।”

उसने उसे पकड़ रखा था। उसने उसे खोला और, सारी सामग्री पर अपना अधिकार जमाते हुए, हर रेखाचित्र को सबसे पहले खुद देखा। उसने इस आनंद का (अगर इसे आनंद कहा जा सकता है तो) चुपचाप, बिना कुछ कहे, लुत्फ़ उठाया। मूर उसकी कुर्सी के पीछे खड़ा रहा और उसके कंधे के ऊपर से देखता रहा, और जब वह देख चुकी थी और बाकी लोग अभी भी देख रहे थे, तो वह अपनी जगह से उठा और कमरे में चहलकदमी करने लगा।

गली में एक गाड़ी की आवाज सुनाई दी— द्वार की घंटी बजी। शर्ली चौंक गई।

“कुछ लोग आए हैं,” उसने कहा, “मुझे कमरे में बुलाया जाएगा। मैं एक सुंदर आकृति हूँ – जैसा कि लोग कहते हैं – मुझे मेहमानों का स्वागत करना है। मैं और हेनरी सुबह से बगीचे में फल तोड़ रहे हैं। काश, मुझे अपनी ही अंगूर की बेल और अंजीर के पेड़ के नीचे आराम करने का मौका मिलता! भारतीय सरदार की दासी कितनी खुशनसीब होती है, क्योंकि उसे ड्राइंग रूम में कोई काम नहीं करना पड़ता, बल्कि वह आराम से चटाई बुन सकती है, मोतियों की माला बना सकती है और अपने छोटे बच्चे का सिर शांति से अपने झोपड़ी के एक कोने में दबा सकती है। मैं पश्चिमी जंगलों में जाकर बस जाऊंगी।”

लुई मूर हँस पड़ा।

"किसी श्वेत बादल या विशाल भैंस से विवाह करना, और विवाह के बाद अपने स्वामी के मक्के के खेत की खुदाई के कोमल कार्य में स्वयं को समर्पित करना, जबकि वह अपनी पाइप पीता हो या शराब पीता हो।"

शर्ली जवाब देने ही वाली थी कि तभी स्कूल के कमरे का दरवाजा खुला और मिस्टर सिम्पसन अंदर आ गए। आग के चारों ओर बैठे लोगों को देखकर वे दंग रह गए।

“मुझे लगा आप अकेली हैं, मिस कील्डर,” उन्होंने कहा। “मुझे तो यहाँ काफी लोग मिले हैं।”

और जाहिर तौर पर उनके स्तब्ध और आक्रोशित हावभाव से यह स्पष्ट था कि यदि उन्होंने दल में से एक व्यक्ति को पादरी के रूप में न पहचाना होता, तो वे अपनी भतीजी की असाधारण आदतों पर एक तात्कालिक भाषण दे देते: पादरी के प्रति सम्मान ने उन्हें वश में कर लिया।

“मैं बस यह घोषणा करना चाहता था,” उन्होंने ठंडे स्वर में कहा, “कि डी वाल्डेन

हॉल का परिवार, श्रीमान, श्रीमती, कुमारी और श्रीमान सैम विन, ड्राइंग रूम में उपस्थित हैं।” और उन्होंने झुककर अभिवादन किया और चले गए।

“डी वाल्डेन हॉल का परिवार! इससे बुरा परिवार हो ही नहीं सकता,” शर्ली ने बुदबुदाते हुए कहा।

वह चुपचाप बैठी रही, थोड़ी अड़ियल लग रही थी और हिलने-डुलने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं थी। आग की गर्मी से उसका चेहरा लाल हो गया था। उस दिन सुबह की हवा से उसके काले बाल कई बार बिखर चुके थे। उसने मलमल की एक हल्की, साफ-सुथरी, लेकिन भरपूर बहने वाली पोशाक पहनी थी; बगीचे में ओढ़ी हुई शॉल अभी भी लापरवाही से उसके चारों ओर लिपटी हुई थी। आलसी, मनमौजी, आकर्षक और असाधारण रूप से सुंदर उसका चेहरा था - सामान्य से भी अधिक सुंदर, मानो किसी कोमल आंतरिक भावना ने, न जाने कैसे, उसके चेहरे को एक नई रौनक और अभिव्यक्ति दे दी हो।

“शर्ली, शर्ली, तुम्हें जाना चाहिए,” कैरोलिन ने फुसफुसाते हुए कहा।

"मुझे आश्चर्य है क्योंकि?"

उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और चिमनी के ऊपर लगे शीशे में मिस्टर हॉल और लुई मूर दोनों को गंभीरता से उसकी ओर देखते हुए देखा।

“अगर,” उसने मुस्कुराते हुए कहा— “अगर यहाँ मौजूद लोगों में से अधिकांश का मानना है कि डी वाल्डेन हॉल के लोगों को मेरे प्रति शिष्टता का अधिकार है, तो मैं अपने कर्तव्य के प्रति अपनी भावनाओं को दबा दूंगी। जो लोग सोचते हैं कि मुझे चले जाना चाहिए, वे अपने हाथ उठा लें।”

दोबारा दर्पण में देखने पर पता चला कि सर्वसम्मति से उसके खिलाफ मतदान हुआ था।

श्री हॉल ने कहा, “आपको जाना होगा, और शिष्टाचार का भी पालन करना होगा। समाज के प्रति आपके कई कर्तव्य हैं। आपको केवल अपनी इच्छा पूरी करने की अनुमति नहीं है।”

लुई मूर ने धीमी आवाज़ में "वाह वाह!" कहकर सहमति जताई।

कैरोलिन उसके पास आकर, उसके लहराते बालों को संवारा, उसके पहनावे को कम कलात्मक और अधिक घरेलू शालीनता प्रदान की, और शर्ली को कमरे से बाहर भेज दिया गया, जो अब भी अपने होंठों को फुलाकर अपने निष्कासन का विरोध कर

रही थी।

उसके जाने के बाद श्री हॉल ने कहा, "उसमें एक अनोखा आकर्षण है।" उन्होंने आगे कहा, "और अब मुझे जाना होगा; क्योंकि स्वीटिंग अपनी माँ से मिलने जा रहा है, और दो अंत्येष्टि हैं।"

"हेनरी, अपनी किताबें ले आओ; पढ़ाई का समय हो गया है," मूर ने अपनी डेस्क पर बैठते हुए कहा।

“अजीब जादू!” शिष्य ने दोहराया, जब वह और उसका गुरु अकेले रह गए। “सच है। क्या वह एक प्रकार की सफेद जादूगरनी नहीं है?” उसने पूछा।

"आप किसके बारे में बात कर रहे हैं, महोदय?"

मेरी चचेरी बहन शर्ली के बारे में।

“अनावश्यक प्रश्न न पूछें; शांति से अध्ययन करें।”

श्री मूर ने सख्त लहजे में देखा और बोला - कड़वे स्वर में। हेनरी इस मनोदशा को जानता था। उसके शिक्षक का ऐसा व्यवहार दुर्लभ था; लेकिन जब भी ऐसा होता, वह इससे भयभीत हो जाता था। उसने आज्ञा का पालन किया।

अध्याय XXVII.

पहली ब्लूस्टॉकिंग।

मिस कील्डर और उनके चाचा के स्वभाव आपस में मेल नहीं खाते थे, कभी मेल नहीं खाए थे। वह चिड़चिड़े स्वभाव के थे, और वह उत्साही थीं। वह निरंकुश थे, और उन्हें स्वतंत्रता पसंद थी। वह दुनियादारी में माहिर थे, और वह शायद रोमांटिक थीं।

वह बिना किसी उद्देश्य के यॉर्कशायर नहीं आया था। उसका मिशन स्पष्ट था और वह उसे पूरी निष्ठा से निभाना चाहता था। वह अपनी भतीजी की शादी करवाना चाहता था, उसके लिए एक उपयुक्त जीवनसाथी ढूंढना चाहता था, उसे एक योग्य पति के हवाले करना चाहता था और हमेशा के लिए उससे अपना नाता तोड़ना चाहता था।

दुर्भाग्यवश, बचपन से ही शर्ली और उनके बीच "उपयुक्त" और "सही" शब्दों के अर्थ को लेकर मतभेद थे। उन्होंने कभी भी उनकी परिभाषा को स्वीकार नहीं किया था; और यह संदेहजनक था कि अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण मोड़ पर वह इसे स्वीकार करेंगी या नहीं।

जल्द ही मुकदमा शुरू हो गया।

श्री विने ने अपने बेटे सैमुअल फॉथ्रोप विने के लिए औपचारिक रूप से शादी का प्रस्ताव रखा।

“बिल्कुल उपयुक्त! एकदम सही!” श्री सिम्पसन ने कहा। “एक शानदार, बिना किसी बोझ वाली संपत्ति, वास्तविक सामर्थ्य, अच्छे संबंध। इसे करना ही होगा!”

उसने अपनी भतीजी को ओक के कमरे में बुलवाया; उसने खुद को उसके साथ अकेले कमरे में बंद कर लिया; उसने प्रस्ताव रखा; उसने अपनी राय दी; उसने उसकी सहमति मांगी।

इसे रोक दिया गया था।

“नहीं; मैं सैमुअल फॉथ्रोप विन से शादी नहीं करूंगी।”

मैं पूछता हूँ क्यों? मुझे कोई कारण तो चाहिए। हर लिहाज से वह तुम्हारे लायक से कहीं अधिक है।

वह चूल्हे पर खड़ी थी। उसका रंग उसके पीछे मौजूद सफेद संगमरमर की पटिया और कंगनी की तरह पीला था; उसकी आँखें बड़ी, फैली हुई और भावहीन लग रही थीं।

और मैं पूछती हूँ कि वह युवक किस मायने में मेरे योग्य है?

उसके पास आपसे दोगुना पैसा है, आपसे दोगुनी समझदारी है, आपके बराबर संपर्क हैं, आपके बराबर सम्मान है।

"अगर उसने मेरे पैसों को अस्सी बार भी गिना होता, तो भी मैं उससे प्यार करने की कसम नहीं खाती।"

कृपया अपनी आपत्तियां बताएं।

“उसने घिनौनी, सामान्य दर्जे की फिजूलखर्ची का रास्ता अपनाया है। इसे ही मेरा उसे ठुकराने का पहला कारण मान लीजिए।”

"मिस कील्डर, आपने मुझे चौंका दिया!"

“उसका आचरण ही उसे घोर हीनता की खाई में धकेल देता है। उसकी बुद्धि मेरी साख के किसी भी स्तर तक नहीं पहुँचती: एक और बाधा है। उसके विचार संकीर्ण हैं, उसकी भावनाएँ कुंद हैं, उसकी रुचियाँ भद्दी हैं, उसका व्यवहार अशिष्ट है।”

“वह व्यक्ति एक सम्मानित और धनी व्यक्ति है! उसे मना करना आपकी ओर से गुस्ताखी होगी।”

मैं साफ इनकार करता हूँ! इस विषय पर मुझे परेशान करना बंद करो; मैं इसकी मनाही करता हूँ!

क्या आपका कभी शादी करने का इरादा है; या आप ब्रह्मचर्य को प्राथमिकता देते हैं?

मैं उस प्रश्न का उत्तर मांगने के आपके अधिकार को अस्वीकार करता हूं।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्या आपको उम्मीद है कि कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति - कोई कुलीन व्यक्ति - आपसे शादी का प्रस्ताव रखेगा?"

मुझे शक है कि जिस सहकर्मी पर मैं यह उपाधि प्रदान करूंगा, वह सांस भी ले ले।

"अगर परिवार में कोई पागलपन होता, तो मैं तुम्हें पागल मान लेता। तुम्हारी सनक और अहंकार उन्माद की हद तक पहुँच जाते हैं।"

"शायद, मेरे समाप्त करने से पहले ही, आप मुझे इसे पार करते हुए देखेंगे।"

मुझे इससे कम की उम्मीद नहीं थी। उतावली और अव्यावहारिक लड़की! सावधान रहो! हिम्मत है तो हमारे नाम को कलंकित करने की!

“हमारा नाम! क्या मेरा नाम सिम्पसन है?”

“शुक्रिया कि तुम नहीं हो! लेकिन सावधान रहना; मेरे साथ खिलवाड़ करना ठीक नहीं है!”

"सामान्य कानून और सामान्य ज्ञान के नाम पर, आप क्या करेंगे या कर सकते हैं यदि मेरी इच्छा मुझे ऐसा विकल्प चुनने के लिए प्रेरित करती है जिसे आप अस्वीकार करते हैं?"

“ध्यान रखना! ध्यान रखना!” उसने कांपती हुई आवाज और कांपते हुए हाथों से उसे चेतावनी दी।

“क्यों? मुझ पर तुम्हारा कौन सा अधिकार है? मुझे तुमसे क्यों डरना चाहिए?”

अपना ख्याल रखना, महोदया!

"मैं पूरी सावधानी बरतूँगी, श्रीमान सिम्पसन। शादी से पहले मैंने आदर करने, प्रशंसा करने और प्रेम करने का दृढ़ संकल्प लिया है।"

“बेहद हास्यास्पद! अशोभनीय, स्त्रीत्वहीन!”

“पूरे दिल से प्यार करना। मैं जानता हूँ कि मैं एक अनजान भाषा में बोल रहा हूँ; लेकिन मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि मुझे समझा जा रहा है या नहीं।”

और अगर तुम्हारा यह प्यार किसी भिखारी पर पड़ जाए तो?

“भिखारी पर यह कभी नहीं गिरेगा। भीख मांगना प्रशंसनीय नहीं है।”

“एक मामूली क्लर्क, एक नाटककार, एक नाटककार, या — या — —“

“हिम्मत रखिए, मिस्टर सिम्पसन! वरना क्या?”

"कोई भी साहित्यकार, या घटिया, शिकायत करने वाला कलाकार।"

“मुझे उन निकम्मे, मैले-कुचले, शिकायत करने वालों में कोई रुचि नहीं है; साहित्य और कला में मेरी रुचि है। और मुझे आश्चर्य होता है कि आपका फॉथ्रोप विन मेरे लिए कैसा रहेगा। वह वर्तनी की गलतियों के बिना एक पत्र भी नहीं लिख सकता; वह केवल खेल समाचार पत्र पढ़ता है; वह स्टिलब्रो के प्राथमिक विद्यालय का मूर्ख था!”

“यह भाषा महिलाओं के लिए अशोभनीय है! हे भगवान! वह किसलिए जाएगी?” उसने हाथ और आँखें ऊपर उठाईं।

"कभी भी सैम विने के साथ कौमार्य की वेदी पर मत जाओ।"

“वह किसलिए आएगी? कानून इतने सख्त क्यों नहीं हैं कि मैं उसे तर्क सुनने के लिए मजबूर कर सकूँ?”

“आप खुद को तसल्ली दीजिए, चाचा जी। अगर ब्रिटेन एक दास राज्य होता और आप ज़ार होते, तब भी आप मुझे यह कदम उठाने के लिए मजबूर नहीं कर सकते थे। मैं श्री विन्न को पत्र लिखूंगा। इस विषय पर और अधिक चिंता न कीजिए।”

भाग्य को कहावत के अनुसार परिवर्तनशील कहा जाता है, फिर भी उसकी मनमानी अक्सर एक ही क्षेत्र में बार-बार एक ही तरह का सौभाग्य दोहराने का रूप ले लेती है। ऐसा प्रतीत होता था कि मिस कील्डर - या उनका भाग्य - इस समय तक जिले में सनसनी मचा चुका था और उन क्षेत्रों में भी अपनी छाप छोड़ चुका था जिनके

बारे में उन्होंने सोचा भी नहीं था। श्री विन्न के प्रस्ताव के बाद कम से कम तीन प्रस्ताव आए, सभी कमोबेश उपयुक्त थे। ये सभी प्रस्ताव उनके चाचा ने एक-एक करके उन पर थोपे और उन्होंने एक-एक करके सभी को अस्वीकार कर दिया। फिर भी उनमें एक से अधिक ऐसे सज्जन थे जिनका चरित्र बेदाग होने के साथ-साथ पर्याप्त धनवान भी था। उनके चाचा के अलावा कई लोगों ने पूछा कि उनका मतलब क्या है और वह किसे फंसाना चाहती हैं कि वह इतनी नखरेबाजी कर रही हैं।

अंततः गपशप करने वालों को लगा कि उन्हें उसके आचरण की कुंजी मिल गई है, और उसके चाचा को इस बात का पूरा यकीन था; और इतना ही नहीं, इस खोज ने उनकी भतीजी को उनके सामने एक बिल्कुल नए रूप में प्रस्तुत किया, और उन्होंने तदनुसार उसके प्रति अपना पूरा व्यवहार बदल दिया।

हाल ही में फील्डहेड में हालात इतने बिगड़ गए थे कि उन दोनों को संभालना मुश्किल हो गया था। उनकी सौम्य चाची भी उन्हें शांत नहीं कर पा रही थीं; बेटियाँ उनके झगड़े देखकर सहम जाती थीं। गर्ट्रूड और इसाबेला घंटों अपने ड्रेसिंग रूम में फुसफुसाती रहती थीं और अगर कभी उन्हें अपनी उद्दंड चचेरी बहन के साथ अकेला छोड़ दिया जाता तो वे शिष्टतापूर्ण भय से कांप उठती थीं। लेकिन, जैसा कि मैंने कहा, स्थिति बदल गई। श्री सिम्पसन शांत हो गए और उनका परिवार भी शांत हो गया।

नुननेली गाँव का ज़िक्र किया जा चुका है—उसके पुराने गिरजाघर, उसके जंगल, उसके मठ के खंडहरों का। उसका अपना एक हॉल भी था, जिसे प्रायरी कहा जाता था—जो ब्रायर्फ़ील्ड या व्हिनबरी के किसी भी निवास से पुराना, बड़ा और अधिक भव्य था; और तो और, उसका अपना एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था—एक बैरोनेट, जिसका दावा न तो ब्रायर्फ़ील्ड और न ही व्हिनबरी कर सकते थे। यह संपत्ति—उसकी सबसे गौरवशाली और बहुमूल्य संपत्ति—वर्षों से केवल नाममात्र की ही रही थी। वर्तमान बैरोनेट, एक युवा व्यक्ति जो अब तक एक दूरस्थ प्रांत में रहता था, अपने यॉर्कशायर एस्टेट में अज्ञात था।

मिस कील्डर जब क्लिफब्रिज के मशहूर बार में ठहरी थीं, तब उनकी और उनकी सहेलियों की मुलाकात सर फिलिप ननेली से हुई और उनसे परिचय कराया गया। वे उनसे अक्सर रेत पर, चट्टानों पर, अलग-अलग रास्तों पर, और कभी-कभी उस जगह के सार्वजनिक समारोहों में भी मिलती थीं। वे एकांतप्रिय प्रतीत होते थे। उनका व्यवहार बहुत ही सरल था - इतना सीधा-सादा कि उन्हें मिलनसार कहना मुश्किल था;

वे गर्व से कहीं अधिक संकोची थे। वे उनकी संगति को महत्व नहीं देते थे; बल्कि उन्हें इसमें आनंद आता था।

किसी भी सहज व्यक्ति से शर्ली आसानी से और जल्दी से जान-पहचान बना लेती थी। वह सर फिलिप के साथ टहलती और बातें करती थी; वह, उसकी चाची और चचेरे भाई-बहन कभी-कभी उनकी नौका में सैर पर जाते थे। वह उन्हें पसंद करती थी क्योंकि वह उन्हें दयालु और विनम्र मानती थी, और उन्हें खुश करने की क्षमता पाकर उसे आनंद मिलता था।

एक छोटी सी कमी तो थी ही—इसके बिना दोस्ती कैसी?— सर फिलिप को साहित्य में रुचि थी। वे कविताएँ लिखते थे—सॉनेट, छंद, गाथागीत। शायद मिस कील्डर को लगता था कि उन्हें इन रचनाओं को पढ़ने और सुनाने का कुछ ज़्यादा ही शौक था; शायद वे चाहती थीं कि तुकबंदी में और सटीकता हो, लय में और संगीत हो, अलंकारों में और ताजगी हो, प्रेरणा में और जोश हो। खैर, जब भी वे अपनी कविताओं का ज़िक्र करते, मिस कील्डर हमेशा असहज हो जातीं और बातचीत को किसी और दिशा में मोड़ने की पूरी कोशिश करतीं।

वह उसे बहला-फुसलाकर चांदनी रात में पुल पर टहलने ले जाता, मानो उसका एकमात्र उद्देश्य यही हो कि वह उसके कानों में अपने सबसे लंबे गीत सुनाए। वह उसे एकांत देहाती जगहों पर ले जाता, जहाँ से लहरों के रेत से टकराने की मधुर और सुकून देने वाली आवाज़ सुनाई देती; और जब वह पूरी तरह से उसके साथ होती, समुद्र उनके सामने होता, बगीचों की सुगंधित छाया चारों ओर फैली होती, और ऊँची चट्टानें उनके पीछे खड़ी होतीं, तब वह अपने अंतिम सॉनेट निकालता और उन्हें भावुकता से कांपती आवाज़ में पढ़ता। ऐसा लगता था मानो उसे यह पता ही न हो कि भले ही वे तुकबंदी वाले हों, लेकिन कविता नहीं हैं। शर्ली की झुकी हुई आँखों और परेशान चेहरे से ऐसा प्रतीत होता था कि वह यह जानती थी, और इस भले और मिलनसार सज्जन की इस एक कमी से उसे बहुत दुख हुआ था।

वह अक्सर अत्यंत कोमल भाव से उसे कला की देवियों के प्रति इस अंधभक्ति से दूर करने का प्रयास करती थी। यह उसका जुनून था; सामान्य विषयों पर वह काफी समझदार था, और वह भी उसे सामान्य विषयों में ही मग्न रखना चाहती थी। वह कभी-कभी उससे ननेली में अपने स्थान के बारे में पूछता था; वह उसके प्रश्नों का विस्तार से उत्तर देने में अत्यंत प्रसन्न होती थी। वह प्राचीन मठ, हरे-भरे वन उद्यान,

प्राचीन गिरजाघर और छोटे से गाँव का वर्णन करते-करते कभी नहीं थकती थी; और न ही वह उसे अपने पैतृक भवन में आकर अपने परिवार को इकट्ठा करने की सलाह देने से चूकती थी।

उन्हें कुछ हद तक आश्चर्य हुआ, जब सर फिलिप ने उनकी सलाह का अक्षरशः पालन किया और वास्तव में, सितंबर के अंत में, मठ में पहुँच गए।

उन्होंने जल्द ही फील्डहेड का दौरा किया, और उनकी पहली मुलाकात आखिरी नहीं थी। उन्होंने आस-पड़ोस का चक्कर लगाने के बाद कहा कि उन्हें ब्रायर्फ़ील्ड के विशाल ओक के बीमों वाले भूरे रंग के हवेलीनुमा घर के नीचे जैसा सुखद आश्रय कहीं और नहीं मिला; हालांकि यह उनके अपने घर की तुलना में तंग और साधारण सा घर था, लेकिन उन्हें यह पसंद आया।

फिलहाल, शर्ली के साथ उसके सजे-धजे बैठक कक्ष में बैठना पर्याप्त नहीं था, जहाँ अन्य लोग आते-जाते रहते थे और जहाँ उसे अपनी कला की नवीनतम रचनाएँ दिखाने के लिए शायद ही कभी एकांत क्षण मिलता था; उसे उसे सुखद चरागाहों में ले जाना और शांत जलधाराओं के किनारे सैर कराना आवश्यक था। वह अकेले घूमने-फिरने से कतराती थी, इसलिए वह उसके लिए अपने ही मैदानों, अपने शानदार जंगल में, और दूर-दराज के स्थानों पर - व्हार्फ नदी से विभाजित जंगलों में, और ऐरे नदी से सिंचित घाटियों में - यात्राएँ आयोजित करता था।

मिस कील्डर की ऐसी लगन ने उन्हें विशिष्टता प्रदान की। उनके चाचा की दूरदर्शी आत्मा ने एक उज्ज्वल भविष्य की कल्पना की। उन्होंने दूर ही उस समय को भांप लिया था जब वे सहज भाव से, अपने दाहिने घुटने पर बायां पैर रखकर, अपने "भतीजे बैरोनेट" का बड़े ही सहजता से जिक्र कर सकेंगे। अब उनकी भतीजी उन्हें "पागल लड़की" नहीं, बल्कि "अत्यंत समझदार महिला" लगने लगी थी। श्रीमती सिम्पसन के साथ गोपनीय बातचीत में उन्होंने उन्हें "वास्तव में एक श्रेष्ठ व्यक्ति; विलक्षण, लेकिन बहुत बुद्धिमान" बताया। वे उनके प्रति अत्यंत आदरपूर्ण व्यवहार करते थे; उनके लिए दरवाजे खोलने और बंद करने के लिए श्रद्धापूर्वक उठते थे; दस्ताने, रूमाल और अन्य बिखरी हुई चीजें, जिन पर शर्ली का आमतौर पर अनिश्चित अधिकार होता था, उठाने के लिए झुकते-झुकते उनका चेहरा लाल हो जाता था और उन्हें सिरदर्द हो जाता था। वे पुरुष की बुद्धिमत्ता पर स्त्री की बुद्धि की श्रेष्ठता के बारे में रहस्यमय चुटकुले सुनाते थे; फील्डहेड से सौ मील से भी कम दूरी पर स्थित एक

व्यक्ति की सेनापति क्षमता और रणनीति के संबंध में की गई अपनी घोर गलती के लिए अस्पष्ट माफी मांगना शुरू कर दिया। संक्षेप में, वह मानो किसी "मुर्गे की तरह खुश" प्रतीत हो रहा था।

उनकी भतीजी ने उनकी चालों को देखा और उनके इशारों को शांत भाव से सुना; जाहिर तौर पर वह उनके इरादों को पूरी तरह समझ नहीं पाई। जब उस पर सीधे तौर पर बैरोनेट की पसंदीदा होने का आरोप लगाया गया, तो उसने कहा कि उसे विश्वास है कि वह उसे पसंद करते हैं, और बदले में वह भी उन्हें पसंद करती है। उसने कभी नहीं सोचा था कि एक प्रतिष्ठित व्यक्ति - एक गर्वित, स्नेही माँ का इकलौता बेटा, लाड़ली बहनों का इकलौता भाई - इतना अच्छा और कुल मिलाकर इतना समझदार हो सकता है।

समय ने सचमुच साबित कर दिया कि सर फिलिप उसे पसंद करते थे। शायद उन्हें उसमें वह "अनोखा आकर्षण" मिल गया था जिसका जिक्र मिस्टर हॉल ने किया था। वह उसकी मौजूदगी को और अधिक से अधिक चाहने लगे, और अंत में इतनी बार कि यह उनके लिए एक अनिवार्य प्रेरणा बन गई थी। इसी समय फील्डहेड के आसपास अजीबोगरीब भावनाएं मंडरा रही थीं; बेचैन उम्मीदें और चिंताएं उसके कुछ कमरों में छाई हुई थीं। हवेली के चारों ओर शांत खेतों में कुछ निवासी बेचैनी से घूम रहे थे; एक उम्मीद का भाव था जो नसों को तनाव में रखता था।

एक बात तो स्पष्ट थी: सर फिलिप को तुच्छ नहीं समझा जा सकता था। वे मिलनसार थे; यदि वे अत्यधिक बुद्धिमान नहीं थे, तो भी वे समझदार थे। मिस कील्डर उनके बारे में वह बात नहीं कह सकती थीं जो उन्होंने सैम विन के बारे में इतनी कड़वाहट से कही थी, कि उनकी भावनाएँ कठोर थीं, उनकी रुचियाँ भद्दी थीं और उनके तौर-तरीके अशिष्ट थे। उनके स्वभाव में संवेदनशीलता थी; कलाओं के प्रति उनका प्रेम सच्चा था, भले ही वह बहुत विवेकपूर्ण न हो; उनके व्यवहार में एक सच्चे अंग्रेज सज्जन की झलक थी। जहाँ तक उनके वंश और धन की बात है, वे दोनों ही उनकी अपेक्षाओं से कहीं अधिक थे।

उसकी शक्ल-सूरत देखकर हंसमुख शर्ली ने पहले तो कुछ हंसी-मजाक किया, हालांकि उसकी टिप्पणियां बुरी नहीं थीं। वह लड़कपन वाला था। उसके चेहरे के भाव सादे और दुबले-पतले थे, बाल सुनहरे थे और कद छोटा था। लेकिन उसने जल्द ही इस बात पर अपना व्यंग्य रोक लिया; अगर कोई और इस बारे में ऐसी टिप्पणी करता

तो वह भड़क उठती। उसने कहा, "उसका चेहरा मनमोहक था; और उसके दिल में कुछ ऐसा था जो तीन रोमन नाक, अबशालोम के बालों या शाऊल के कद से भी बेहतर था।" उसकी कविता लिखने की अभागी प्रवृत्ति पर उसने एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी की; लेकिन यहां भी वह अपने अलावा किसी और के व्यंग्य को बर्दाश्त नहीं करती थी।

संक्षेप में, मामला उस बिंदु पर पहुंच गया था जो श्री यॉर्क द्वारा उस समय ट्यूटर लुई से की गई टिप्पणी को पूरी तरह से उचित ठहराता प्रतीत होता था।

“तुम्हारा वो भाई रॉबर्ट मुझे या तो मूर्ख लगता है या पागल। दो महीने पहले तक तो मुझे ऐसा लगता था मानो सारी सत्ता उसी के हाथ में हो; और अब वो देश चला रहा है, और हफ़्तों तक लंदन में डेरा डाले रहता है, और जब वापस आएगा तो खुद को हारा हुआ पाएगा। लुई, ‘मनुष्यों के जीवन में एक ऐसा मोड़ आता है, जिसे अगर सही समय पर पकड़ा जाए तो सफलता मिलती है, लेकिन एक बार हाथ से निकल जाने पर फिर कभी नहीं लौटती।’ अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो रॉबर्ट को पत्र लिखकर उसे यह बात याद दिलाता।”

"क्या रॉबर्ट की मिस कील्डर के बारे में कोई राय थी?" लुई ने पूछा, मानो यह विचार उसके लिए नया हो।

"ये विचार मैंने खुद उसे सुझाए थे, और हो सकता है कि उसने इन्हें समझ भी लिया हो, क्योंकि वह उसे पसंद करती थी।"

"पड़ोसी के तौर पर?"

“इतना ही नहीं। मैंने देखा है कि उसका नाम सुनते ही उसके चेहरे का रंग और रंग बदल जाता है। मैं कहती हूँ, उस लड़के को लिखो और उसे घर आने के लिए कहो। आखिर वह इस छोटे से बैरोनेट से कहीं ज्यादा नेक इंसान है।”

"क्या आपको यह बात नहीं लगती, श्री योर्क, कि एक बिल्कुल निर्धन साहसी व्यक्ति का किसी धनी महिला से विवाह करने की इच्छा रखना धृष्टतापूर्ण - निंदनीय है?"

“ओह, अगर आप ऊंचे विचारों और अतिरंजित भावनाओं में विश्वास रखते हैं, तो मुझे कुछ नहीं कहना। मैं खुद एक सीधा-सादा, व्यावहारिक व्यक्ति हूँ, और अगर रॉबर्ट उस शाही पुरस्कार को अपने प्रतिद्वंद्वी लड़के—अभिजात वर्ग के एक नादान लड़के—को देने को तैयार है, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। उसकी उम्र में, उसकी

जगह पर, उसके प्रलोभनों के साथ, मैं अलग तरह से व्यवहार करता। न तो बैरोनेट, न ड्यूक, न राजकुमार बिना संघर्ष के मेरी प्रेमिका को मुझसे छीन सकते थे। लेकिन आप शिक्षक इतने गंभीर व्यक्ति हैं; आपसे परामर्श करना लगभग किसी पादरी से बात करने जैसा है।”

हालांकि शर्ली को अभी-अभी खूब चापलूसी और खुशामद मिली थी, लेकिन ऐसा प्रतीत होता था कि वह पूरी तरह से बिगड़ी हुई नहीं थी - कि उसका अच्छा स्वभाव अभी भी बरकरार था। सर्वत्र यह चर्चा थी कि अब उसका नाम मूर के साथ नहीं जोड़ा जाता था, और यह चुप्पी अनुपस्थित व्यक्ति के प्रति उसकी स्वयं की स्पष्ट विस्मृति से समर्थित प्रतीत होती थी; लेकिन यह कि वह उसे पूरी तरह से भूली नहीं थी - कि वह अब भी उसे, यदि प्रेम से नहीं, तो रुचि से देखती थी - यह इस बात से सिद्ध होता प्रतीत होता था कि इस समय अचानक बीमारी के प्रकोप के कारण उसने रॉबर्ट के उस शिक्षक-भाई के प्रति जो अधिक ध्यान दिखाया, जिसके प्रति वह आमतौर पर कभी शांत और कभी विनम्र सम्मान का भाव रखती थी - अब वह धनी उत्तराधिकारी और भावी लेडी ननेली की पूरी गरिमा के साथ उसके पास से गुजरी, और तुरंत उससे इस तरह बात करने लगी जैसे शर्म से लाल हुई स्कूली छात्राएं अपने सख्त प्रोफेसरों से बात करती हैं; अपनी हाथीदांत जैसी गर्दन को सजाते हुए और अपने गहरे लाल होंठों को सिकोड़ते हुए, यदि वह एक पल के लिए उसकी निगाहों का सामना करता, और अगले ही पल उसकी आंखों की गंभीर फटकार को उतनी ही पश्चाताप के साथ स्वीकार कर लेता मानो उसके पास अवज्ञा के मामले में दंड देने की शक्ति हो।

लुई मूर को शायद बुखार हो गया था, जिसने उन्हें कुछ दिनों तक बीमार रखा। यह बुखार उन्हें जिले की किसी गरीब झोपड़ी में लगा था, जहाँ वे, उनका लंगड़ा शिष्य और श्री हॉल अक्सर साथ-साथ जाया करते थे। खैर, वे बीमार पड़ गए और एक-दो दिन तक चुपचाप बीमारी से लड़ते रहने के बाद, उन्हें अपने कमरे में ही रहना पड़ा।

एक शाम वह अपने कांटों भरे पलंग पर करवटें बदल रहा था, हेनरी, जो उसे छोड़ने को तैयार नहीं था, वफादारी से उसके बगल में बैठा देख रहा था, तभी एक हल्की सी दस्तक - जो श्रीमती गिल या नौकरानी की नहीं हो सकती थी - ने युवा सिम्पसन को दरवाजे पर बुलाया।

"आज रात मिस्टर मूर कैसे हैं?" अंधेरी गैलरी से एक धीमी आवाज ने पूछा।

"अंदर आइए और खुद उसे देख लीजिए।"

क्या वह सो रहा है?

“काश वो सो पाता। आओ और उससे बात करो, शर्ली।”

उन्हें यह पसंद नहीं आएगा।

लेकिन वक्ता ने हस्तक्षेप किया, और हेनरी ने उसे दहलीज पर हिचकिचाते हुए देखकर उसका हाथ पकड़ा और उसे सोफे पर खींच लिया।

धुंधली रोशनी में मिस कील्डर का रूप पूरी तरह से नहीं दिख रहा था; फिर भी उनके सुरुचिपूर्ण वस्त्रों की झलक साफ दिखाई दे रही थी। नीचे एक समूह इकट्ठा था, जिसमें सर फिलिप ननेली भी शामिल थे; महिलाएं अब ड्राइंग रूम में थीं, और उनकी मेज़बान हेनरी के शिक्षक से मिलने के लिए चुपके से चली गई थीं। उनकी शुद्ध सफेद पोशाक, उनकी सुंदर भुजाएँ और गर्दन, उनके गले में लटकती और छाती पर थरथराती सोने की माला, बीमार कमरे के अंधेरे में अजीब तरह से चमक रही थी। उनका चेहरा गंभीर और विचारशील था। उन्होंने धीरे से बात की।

"श्री मूर, आज रात आप कैसे हैं?"

मैं ज्यादा बीमार नहीं था, और अब बेहतर महसूस कर रहा हूं।

मैंने सुना है कि आपको प्यास लगी है। मैं आपके लिए कुछ अंगूर लाया हूँ; क्या आप एक चख सकते हैं?

नहीं; लेकिन मुझे याद रखने के लिए आपका धन्यवाद।

"बस एक ठो।"

उसके हाथ में पकड़ी छोटी टोकरी में भरे हुए स्वादिष्ट फलों के गुच्छे में से उसने एक बेर तोड़ा और उसे उसके होठों पर लगाया। उसने अपना सिर हिलाया और अपना शर्म से लाल चेहरा दूसरी तरफ कर लिया।

“लेकिन फिर मैं आपके लिए क्या लाऊं? आपको फल खाने की इच्छा नहीं है; फिर भी मैं देख रहा हूं कि आपके होंठ प्यासे हैं। आप कौन सा पेय पीना पसंद करेंगे?”

"श्रीमती गिल मुझे टोस्ट और पानी देती हैं। मुझे यही सबसे अच्छा लगता है।"

कुछ मिनटों तक सन्नाटा छा गया।

क्या आपको तकलीफ है? क्या आपको दर्द है?

"ज़रा सा।"

“आपको किस वजह से बीमारी हुई?”

मौन।

मुझे आश्चर्य है कि इस बुखार का कारण क्या है? आप इसे किस कारण से मानते हैं?

"शायद दूषित हवाएँ - मलेरिया। यह पतझड़ का मौसम है, बुखारों के लिए उपजाऊ मौसम।"

मैंने सुना है कि आप अक्सर ब्रायफ़ील्ड और ननेली में मिस्टर हॉल के साथ बीमारों से मिलने जाते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए; जल्दबाजी करना बुद्धिमानी नहीं है।

“यह सुनकर मुझे याद आया, मिस कील्डर, शायद आपके लिए इस कमरे में न आना और इस पलंग के पास न आना ही बेहतर होगा। मुझे नहीं लगता कि मेरी बीमारी संक्रामक है। मुझे ज़रा भी डर नहीं है”—थोड़ी सी मुस्कान के साथ—“कि आपको यह बीमारी लग जाएगी; लेकिन आप ज़रा सा भी जोखिम क्यों लेंगी? मुझे अकेला छोड़ दीजिए।”

“धैर्य रखिए, मैं जल्दी ही चला जाऊंगा; लेकिन जाने से पहले मैं आपके लिए कुछ करना चाहूंगा— कोई भी छोटी सी सेवा—”

"नीचे वाले लोग तुम्हें बहुत याद करेंगे।"

“नहीं; सज्जन अभी भी मेज पर बैठे हैं।”

“वे ज्यादा देर तक नहीं रुकेंगे। सर फिलिप ननेली शराब के शौकीन नहीं हैं, और मैंने अभी-अभी उन्हें भोजन कक्ष से ड्राइंग कक्ष की ओर जाते हुए सुना है।”

यह एक सेवक है।

“ये सर फिलिप हैं; मैं उनके कदमों की आहट पहचानता हूँ।”

आपकी सुनने की क्षमता बहुत तेज है।

“यहाँ कभी नीरसता नहीं होती, और आजकल तो इंद्रियाँ और भी तीव्र हो गई हैं। सर फिलिप कल रात चाय पर आए थे। मैंने सुना कि तुमने उनके लिए कोई गाना गाया था जो वे तुम्हारे लिए लाए थे। मैंने सुना कि जब वे रात ग्यारह बजे जाने लगे, तो उन्होंने तुम्हें शाम के तारे को देखने के लिए फुटपाथ पर बुलाया।”

"आप बहुत ज्यादा संवेदनशील होंगे।"

मैंने उसे तुम्हारा हाथ चूमते हुए सुना।

"असंभव!"

“नहीं: मेरा कमरा हॉल के ऊपर है, सामने के दरवाजे के ठीक ऊपर वाली खिड़की; खिड़की का चौखट थोड़ा ऊपर उठा हुआ था, क्योंकि मुझे बुखार था। तुम उसके साथ सीढ़ियों पर दस मिनट तक खड़े रहे। मैंने तुम्हारी हर बात सुनी, एक-एक शब्द, और मैंने अभिवादन भी सुना। — हेनरी, मुझे थोड़ा पानी दो।”

मुझे इसे उसे देने दो।

लेकिन वह युवा सिम्पसन से गिलास लेने के लिए आधा उठा और उसकी सेवा लेने से इनकार कर दिया।

और क्या मैं कुछ भी नहीं कर सकता?

"कुछ नहीं; क्योंकि आप मुझे एक रात की शांतिपूर्ण नींद की गारंटी नहीं दे सकते, और इस समय मुझे बस यही चाहिए।"

“क्या आपको अच्छी नींद नहीं आती?”

मुझे नींद नहीं आ रही है।

"लेकिन आपने कहा था कि आप बहुत बीमार नहीं थे?"

"जब मैं स्वस्थ होता हूँ तो मुझे अक्सर नींद नहीं आती है।"

"अगर मेरे पास शक्ति होती, तो मैं तुम्हें सबसे शांत नींद में सुला देता - एकदम गहरी और खामोश नींद में, बिना किसी सपने के।"

“पूर्ण विनाश! मैं ऐसा नहीं चाहता।”

"उन सभी सपनों के साथ जो आप सबसे ज्यादा चाहते हैं।"

“भयानक भ्रम! नींद तो प्रलाप जैसी होगी, जागते हुए मृत्यु के समान।”

"आपकी इच्छाएं इतनी काल्पनिक नहीं हैं; आप कोई दूरदर्शी नहीं हैं।"

"मिस कील्डर, मुझे लगता है कि आप ऐसा ही सोचती हैं; लेकिन शायद मेरा चरित्र आपके लिए उतना स्पष्ट नहीं है जितना कि किसी नए उपन्यास का पृष्ठ हो सकता है।"

“यह संभव है। लेकिन यह नींद—मैं इसे आपके तकिये पर लाना चाहता हूँ, इसका अनुग्रह प्राप्त करना चाहता हूँ। अगर मैं एक किताब लेकर बैठ जाऊँ और कुछ पन्ने पढ़ूँ? मैं आराम से आधा घंटा निकाल सकता हूँ।”

"धन्यवाद, लेकिन मैं आपको हिरासत में नहीं लूंगा।"

मैं धीरे-धीरे पढ़ता था।

“यह ठीक नहीं है। मुझे इतना बुखार है और मैं इतनी संवेदनशील हूँ कि कान के पास कोई कोमल, मधुर, कंपन करती हुई आवाज़ बर्दाश्त नहीं कर सकती। बेहतर

होगा कि आप मुझे अकेला छोड़ दें।”

ठीक है, मैं जाऊंगा।

और शुभ रात्रि भी नहीं?

“जी हाँ, जी हाँ। श्री मूर, शुभ रात्रि।” (शर्ली चली जाती है।)

“हेनरी, मेरे बेटे, अब सोने जाओ; अब तुम्हें आराम करने की जरूरत है।”

"महोदय, मुझे पूरी रात आपके बिस्तर के पास बैठकर पहरा देना अच्छा लगेगा।"

“इससे कम की जरूरत नहीं थी। मैं ठीक हो रहा हूँ। बस, यही काफी है।”

"मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए, महोदय।"

"भगवान आपका भला करे, मेरे सबसे अच्छे शिष्य!"

"तुम मुझे कभी अपना सबसे प्रिय शिष्य नहीं कहते!"

नहीं, और न ही कभी होगा।

संभवतः मिस कील्डर को अपने पूर्व शिक्षक द्वारा उनकी विनम्रता को ठुकराए जाने का दुख था। यह निश्चित है कि उन्होंने दोबारा ऐसा प्रस्ताव नहीं दिया। दिनभर में जब भी उनके हल्के कदम गैलरी से गुज़रते, तो वे फिर कभी उनके दरवाजे पर नहीं रुके; और न ही उनकी "मधुर, कांपती हुई आवाज़" ने बीमार के कमरे की शांति को दोबारा भंग किया। वास्तव में, वह कमरा जल्द ही बीमार का कमरा नहीं रह गया; श्री मूर का अच्छा स्वास्थ्य उनकी बीमारी पर जल्दी ही हावी हो गया। कुछ ही दिनों में वे ठीक हो गए और शिक्षक के रूप में अपने कर्तव्यों को फिर से शुरू कर दिया।

यह बात कि "पुराने जमाने की कहावत" गुरु और शिष्य दोनों के लिए अभी भी उतनी ही प्रासंगिक थी, इस बात से सिद्ध होती थी कि वह कभी-कभी उनके बीच आमतौर पर रखी जाने वाली दूरी को तुरंत पार कर लेता था और अपने दृढ़, शांत हाथों से उसके उच्च संकोच को दबा देता था।

एक दोपहर सिम्पसन परिवार अपनी गाड़ी को हवा में सुखाने के लिए बाहर गया था। शर्ली, जो उनके साथ समय बिताने का मौका पाकर कभी नहीं हिचकिचाती थी, कुछ काम के कारण वहीं रुक गई थी, जैसा कि उसने बताया। गाड़ी के आंगन के द्वार बंद होते ही उसका काम - कुछ पत्र-व्यवहार - जल्द ही पूरा हो गया; मिस कील्डर बगीचे में चली गईं।

यह शरद ऋतु का एक शांत दिन था। ग्रीष्म ऋतु की सुनहरी धूप दूर-दूर तक फैले

चरागाहों को सुशोभित कर रही थी। भूरे रंग के जंगल कटाई के लिए तैयार थे, लेकिन अभी भी पत्तों से भरे हुए थे। पहाड़ियों पर बैंगनी रंग के फूल खिले हुए थे, जो मुरझाए तो थे लेकिन सूखे नहीं थे। एक छोटी नदी शांत इलाके से होते हुए घाटी की ओर बह रही थी; न तो हवा उसके साथ बह रही थी और न ही उसके जंगली किनारों को छू रही थी। खेतों के बगीचों पर धीरे-धीरे क्षय की छाप थी। उस सुबह साफ किए गए रास्तों पर पीले पत्ते फिर से गिर पड़े थे। फूलों और फलों का समय समाप्त हो चुका था; लेकिन कुछ सेब पेड़ों की शोभा बढ़ा रहे थे। मुरझाए पत्तों के बीच कहीं-कहीं एक-आध फूल खिल रहा था, जो पीला और नाजुक सा लग रहा था।

ये इकलौते फूल—अपनी प्रजाति के आखिरी बचे हुए—शर्ली ने क्यारियों के बीच घूमते हुए सोच-विचार करते हुए चुन लिए। वह अपनी कमरबंद में एक रंगहीन और सुगंधहीन गुलदस्ता बाँध ही रही थी कि हेनरी सिम्पसन लंगड़ाते हुए घर से बाहर आते हुए उसे पुकारने लगा।

"शर्ली, अगर आपके पास कोई और जरूरी काम नहीं है, तो श्री मूर आपको स्कूल में देखकर और आपको थोड़ा फ्रेंच पढ़ते हुए सुनकर बहुत खुश होंगे।"

संदेशवाहक ने अपना आदेश बड़ी सरलता से दिया, मानो यह कोई सामान्य प्रक्रिया हो।

"क्या मिस्टर मूर ने आपको ऐसा कहने के लिए कहा था?"

“ज़रूर; क्यों नहीं? और अब, आइए, हम एक बार फिर सिम्पसन ग्रोव जैसे बन जाएँ। उन दिनों हमारे स्कूल के घंटे बहुत सुखद हुआ करते थे।”

मिस कील्डर ने शायद सोचा होगा कि तब से परिस्थितियाँ बदल गई होंगी; हालाँकि, उन्होंने कोई टिप्पणी नहीं की, बल्कि थोड़ा सोचने के बाद चुपचाप हेनरी के पीछे चली गईं।

स्कूल के कमरे में प्रवेश करते ही उसने पहले की तरह ही शालीनता से सिर झुकाया। उसने अपनी टोपी उतारी और हेनरी की टोपी के पास टांग दी। लुई मूर अपनी मेज पर बैठा था, अपने सामने खुली किताब के पन्ने पलट रहा था और पेंसिल से कुछ अंशों पर निशान लगा रहा था। उसने उसके अभिवादन के जवाब में बस थोड़ा सा हिल-डुल किया, लेकिन उठा नहीं।

“कुछ रात पहले आपने मुझे पढ़कर सुनाने का प्रस्ताव रखा था,” उन्होंने कहा। “तब मैं आपको सुन नहीं पाया था। अब मेरा ध्यान आपकी ओर है। फ्रेंच का थोड़ा

अभ्यास करना शायद आपके लिए फायदेमंद ही रहेगा। मैंने देखा है कि आपका उच्चारण थोड़ा कमजोर पड़ने लगा है।”

मुझे कौन सी किताब लेनी चाहिए?

“ये सेंट पियरे की मरणोपरांत प्रकाशित रचनाएँ हैं। ‘फ्रैग्मेंट्स डे ल’अमेज़न’ के कुछ पृष्ठ पढ़ें।”

उसने उस कुर्सी पर बैठना स्वीकार कर लिया जो उसने अपनी कुर्सी के पास तैयार रखी थी; पुस्तक उसकी मेज पर पड़ी थी—उन दोनों के बीच केवल एक ही मेज थी; उसके लहराते बाल इतने नीचे तक लटके हुए थे कि पृष्ठ उससे छिपा हुआ था।

“अपने बाल वापस लगा लो,” उसने कहा।

एक पल के लिए शर्ली असमंजस में पड़ गई कि वह अनुरोध मानेगी या उसे अनसुना कर देगी। उसकी आँखों की एक झलक प्रोफेसर के चेहरे पर चुपके से चमक उठी। शायद अगर वह उसे कठोर या संकोची नज़रों से देख रहे होते, या उनके चेहरे पर कोई अनिश्चितता का भाव होता, तो वह विद्रोह कर देती और पाठ वहीं समाप्त हो जाता; लेकिन वह केवल उसके आज्ञापालन की प्रतीक्षा कर रहे थे—संगमरमर की तरह शांत और स्थिर। उसने अपने बालों का पर्दा कान के पीछे कर लिया। यह अच्छा था कि उसके चेहरे की बनावट सुशोभित थी, और उसके गालों में जवानी की चमक और गोलाई थी, वरना इस कोमलता के अभाव में चेहरे की सुंदरता फीकी पड़ जाती। लेकिन आज के समाज में इसकी क्या परवाह? न तो कैलिप्सो और न ही यूकारिस को मेंटर को मोहित करने की परवाह थी।

उसने पढ़ना शुरू किया। भाषा उसकी ज़बान के लिए अजनबी सी हो गई थी; वह अटक-अटक कर बोल रही थी; व्याख्यान अनियमित रूप से आगे बढ़ रहा था, तेज़ साँसों से बाधित हो रहा था, अंग्रेज़ी लहजे से टूट रहा था। वह रुक गई।

“मैं ऐसा नहीं कर सकता। कृपया मुझे एक पैराग्राफ पढ़कर सुनाइए, श्री मूर।”

उसने जो पढ़ा, वही उसने दोहराया। उसने तीन मिनट में ही उसका लहजा पहचान लिया।

“बहुत बढ़िया,” यह टिप्पणी रचना के अंत में प्रशंसात्मक ढंग से कही गई।

"ऐसा लगता है जैसे फ्रांसीसी व्यक्ति फंस गया हो, है ना?"

"क्या आप अब पहले की तरह फ्रेंच नहीं लिख सकते?"

“अरे नहीं! अब तो मुझे अपने सामंजस्य को अजीबोगरीब ढंग से संभालना

पड़ेगा।”

“क्या आप ‘प्रथम विद्वान महिला’ नामक असाइनमेंट की रचना नहीं कर सकते थे?”

क्या तुम्हें वह बकवास अभी भी याद है?

"हर पंक्ति।"

"मुझे तुम पर शक है।"

मैं इसे शब्दशः दोहराने का वचन देता हूँ।

"आप पहली पंक्ति पर ही रुक जाएंगे।"

मुझे इस प्रयोग के लिए चुनौती दें।

"मैं तुम्हें चुनौती देता हूं।"

उन्होंने आगे निम्नलिखित पाठ पढ़ा। उन्होंने इसे फ्रेंच में पढ़ा, लेकिन हमें इसका अनुवाद करना होगा, अन्यथा कुछ पाठकों को यह समझ में नहीं आएगा।

“और जब पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ने लगी और उनके पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं, तो परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों की पुत्रियों को सुंदर पाया; और उन्होंने उनमें से जिन्हें चाहा, उन्हें अपनी पत्नियाँ बना लिया।”

यह समय की शुरुआत का समय था, सुबह के तारे अस्त होने से पहले का, और जब वे अभी भी एक साथ गाते थे।

वह युग इतना दूर है, सुबह की धुंध और ओस से भीगी धुंध उसे इतनी अस्पष्टता से ढक लेती है कि रीति-रिवाजों की हर विशिष्ट विशेषता, स्थान की हर स्पष्ट रेखा, दृष्टि से ओझल हो जाती है और शोध को विफल कर देती है। इतना जानना ही पर्याप्त है कि उस समय दुनिया अस्तित्व में थी; मनुष्य उसमें निवास करते थे; मनुष्य का स्वभाव, अपनी भावनाओं, सहानुभूति, पीड़ाओं और सुखों के साथ, उस ग्रह को आकार देता था और उसे आत्मा प्रदान करता था।

एक खास जनजाति ने पृथ्वी के एक खास स्थान पर अपना उपनिवेश स्थापित किया; यह जनजाति किस नस्ल की थी, यह अज्ञात है; वह स्थान किस क्षेत्र में था, यह भी अनकहा है। उस समय की घटनाओं का जिक्र करते समय हम आमतौर पर पूर्व की ओर सोचते हैं; लेकिन कौन कह सकता है कि पश्चिम, दक्षिण या उत्तर में जीवन नहीं था? इस बात को कौन गलत साबित कर सकता है कि यह जनजाति

एशिया में ताड़ के पेड़ों के नीचे डेरा डालने के बजाय, यूरोप के हमारे ही समुद्रों में जड़े हुए द्वीपीय ओक के जंगलों में भटकती रही हो?

यह कोई रेतीला मैदान नहीं है, न ही कोई सीमित और विरल नखलिस्तान जैसा मुझे प्रतीत होता है। चट्टानी किनारों और घने पेड़ों से बनी गहरी भूरी छाया वाली एक वन घाटी मेरे सामने गहराई तक उतरती है। यहाँ मनुष्य रहते तो हैं, पर बहुत कम, और घनी शाखाओं वाली और मेहराबदार गलियों में, जहाँ उनकी आवाज़ न सुनाई देती है और न दिखाई देती है। क्या वे जंगली हैं? निःसंदेह। वे लाठी और धनुष से अपना जीवन यापन करते हैं; आधे चरवाहे, आधे शिकारी, उनके झुंड उनके शिकार की तरह ही जंगली घूमते हैं। क्या वे खुश हैं? नहीं, आज के समय में हमसे ज़्यादा खुश नहीं। क्या वे अच्छे हैं? नहीं, हमसे बेहतर नहीं। उनका स्वभाव हमारा स्वभाव है - दोनों ही मानवीय। इस कबीले में एक बच्ची है जो अक्सर दुखी रहती है - एक ऐसी बच्ची जिसने अपने माता-पिता दोनों को खो दिया है। कोई उसकी परवाह नहीं करता। उसे कभी-कभी खाना मिल जाता है, लेकिन अक्सर उसे भुला दिया जाता है। उसे शायद ही कभी कोई झोपड़ी मिलती है; खोखला पेड़ और ठंडी गुफा ही उसका घर है। त्यागी हुई, खोई हुई और भटकती हुई, वह अपने जैसे लोगों की बजाय जंगली जानवरों और पक्षियों के साथ ज़्यादा रहती है। भूख और ठंड उसके साथी हैं; उदासी उस पर छाई रहती है, और अकेलापन उसे चारों ओर से जकड़ लेता है। उपेक्षित और महत्वहीन, उसे मर जाना चाहिए था; लेकिन वह जीती भी है और बढ़ती भी है। हरा-भरा जंगल उसका पालन-पोषण करता है, और उसके लिए माँ बन जाता है; उसे रसीले बेर, मीठी जड़ और मेवे खिलाता है।

इस क्षेत्र की हवा में कुछ ऐसा है जो जीवन को सौम्यता से पोषित करता है। इसकी ओस में भी कुछ ऐसा है जो अद्भुत मरहम की तरह घावों को भर देता है। यहाँ के शांत मौसमों में किसी प्रकार का आवेश या भावना का अतिशयोक्ति नहीं होती; यहाँ का तापमान सामंजस्यपूर्ण रहता है; यहाँ की हवाएँ मानो स्वर्ग से शुद्ध विचार और उससे भी शुद्ध भावों का बीज लेकर आती हैं। चट्टानों और वनस्पतियों के आकार विचित्र नहीं हैं, न ही फूलों और पक्षियों के रंग भड़कीले हैं। इन जंगलों की सारी भव्यता में शांति है; इनकी ताजगी में कोमलता है।

फूल और वृक्षों को प्राप्त कोमल आकर्षण, हिरण और कबूतरों को मिला वह आकर्षण मानव शिशु को भी प्राप्त है। एकांत में पली-बढ़ी वह सीधी और सुंदर है।

प्रकृति ने उसके चेहरे को एक सुंदर सांचे में ढाला है; रोग के आघात से अप्रभावित, उसकी शुद्ध और सटीक प्रारंभिक रेखाएं परिपक्व हुई हैं। किसी तेज शुष्क हवा ने उसके शरीर को कठोर नहीं बनाया; किसी जलते सूरज ने उसके बालों को झुलसाया या मुरझाया नहीं। पेड़ों के बीच से उसका रूप हाथीदांत की तरह सफेद चमकता है; उसके बाल घने, लंबे और चमकदार हैं; उसकी आंखें तेज धूप से चकाचौंध नहीं होतीं, छाया में बड़ी, खुली, भरी हुई और ओस से भरी हुई चमकती हैं। जब हवा उसके माथे को छूती है, तो उन आंखों के ऊपर एक सुंदर और विशाल विस्तार दिखाई देता है - एक स्पष्ट, निर्मल पृष्ठ, जिस पर ज्ञान, यदि कभी आए, तो एक सुनहरा अभिलेख लिख सकता है। आप उस निर्जन युवा जंगली में कुछ भी दुष्ट या खोखला नहीं देखते। वह जंगल में हानिरहित और विचारशील भाव से घूमती रहती है, हालांकि इतनी अनपढ़ व्यक्ति क्या सोच सकती है, इसका अनुमान लगाना आसान नहीं है।

प्रलय से पहले, एक गर्मी के दिन की शाम को, वह बिल्कुल अकेली थी—क्योंकि उसके कबीले के सभी लोग उससे बिछड़ गए थे, जो मीलों दूर भटक गए थे, वह नहीं जानती थी कि वे कहाँ गए थे—वह घाटी से ऊपर उठी, दिन को ढलते और रात को आते देखने के लिए। एक चट्टान, जो पेड़ों से ढकी थी, उसका ठिकाना थी। ओक की जड़ें, घास और काई से आच्छादित, बैठने की जगह देती थीं; ओक की घनी पत्तियों वाली शाखाएँ एक छतरी की तरह फैली हुई थीं।

दिन धीरे-धीरे और भव्यता से ढल गया, बैंगनी आग की तरह चमकता हुआ, और जंगलों से आती एक जंगली, धीमी आवाज़ के साथ विदाई हुई। फिर रात आ गई, मृत्यु के समान शांत। हवा थम गई, पक्षियों ने गाना बंद कर दिया। अब हर घोंसले में खुशहाल जोड़े थे, और हिरण और हिरनी अपनी मांद में आनंदपूर्वक सुरक्षित नींद सो रहे थे।

लड़की बैठी रही, उसका शरीर स्थिर था, आत्मा अशांत थी; हालाँकि, वह सोचने से ज़्यादा महसूस करने में, आशा करने से ज़्यादा इच्छा करने में, कल्पना करने से ज़्यादा कल्पना में मग्न थी। उसने संसार, आकाश, रात को असीम रूप से शक्तिशाली महसूस किया। उसे स्वयं अपने आप में जीवन का केंद्र प्रतीत हुआ—जीवन का एक छोटा, भुला हुआ कण, आत्मा की एक चिंगारी, महान सृजनात्मक स्रोत से अनजाने में निकली हुई, और अब एक काले खोखलेपन के हृदय में निर्धन होकर जल रही है। उसने पूछा, क्या वह भी इसी प्रकार जलकर नष्ट हो जाएगी, उसका जीवन प्रकाश

व्यर्थ हो जाएगा, कभी दिखाई नहीं देगा, कभी ज़रूरत नहीं पड़ेगी—एक ऐसे आकाश में एक तारा जो अन्यथा ताराहीन है, जिसे न तो चरवाहा, न यात्री, न ऋषि, न पुजारी मार्गदर्शक के रूप में देखता है और न ही भविष्यवाणी के रूप में पढ़ता है? क्या ऐसा हो सकता है, उसने पूछा, जब उसकी बुद्धि की लौ इतनी तीव्र जल रही थी; जब उसका जीवन इतना सच्चा, वास्तविक और शक्तिशाली था; जब उसके भीतर कुछ बेचैन होकर हलचल मचा रहा था, और ईश्वर प्रदत्त शक्ति का दावा कर रहा था, जिसके लिए वह आग्रह कर रही थी कि उसे अभ्यास करना चाहिए?

उसने आकाश और संध्या को निहारा। आकाश और संध्या ने भी उसे देखा। वह नीचे झुकी, किनारे, पहाड़ी, नदी, नीचे फैले धुंधले वातावरण को निहारने लगी। उसके हर प्रश्न का उत्तर उसे दिव्य ज्ञान से मिला। उसने सुना—वह प्रभावित हुई; पर वह समझ नहीं पाई। उसने अपने हाथों को जोड़कर सिर के ऊपर उठाया।

“मार्गदर्शन—सहायता—सांत्वना—आओ!” वह पुकार रही थी।

न तो कोई आवाज थी, न ही किसी ने जवाब दिया।

वह घुटनों के बल बैठी, स्थिर दृष्टि से ऊपर देखती रही। दूर का आकाश सन्नाटा छाया हुआ था; गंभीर तारे अजनबी और दूर-दूर से चमक रहे थे।

अंततः उसकी पीड़ा का एक खिंचा हुआ तार थम गया; उसने सोचा मानो ऊपर से कोई दया आ गई हो; उसे ऐसा लगा जैसे दूर से कोई चीज़ पास आ रही हो; उसे ऐसा लगा जैसे खामोशी बोल रही हो। कोई भाषा नहीं थी, कोई शब्द नहीं था, बस एक स्वर था।

फिर से— एक मधुर, परिपूर्ण, उदात्त स्वर, एक गहरी, कोमल ध्वनि, जैसे कोई तूफान फुसफुसा रहा हो, जिसने गोधूलि बेला को लहरा दिया।

एक बार फिर, अधिक गहन, अधिक निकट, अधिक स्पष्ट रूप से, यह सामंजस्यपूर्ण ढंग से प्रवाहित हुआ।

एक बार फिर—स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक विशिष्ट आवाज सुनाई दी।

“ईवा!”

अगर इस महिला का नाम ईवा न होता, तो उसका कोई नाम ही न होता। वह उठी और बोली, "मैं यहाँ हूँ।"

“ईवा!”

“हे रात्रि (केवल रात्रि ही बोल सकती है), मैं यहाँ हूँ!”

आवाज नीचे उतरती हुई पृथ्वी तक पहुंची।

“ईवा!”

“हे प्रभु,” वह रोते हुए बोली, “अपनी दासी को देखो!”

उसका अपना धर्म था—सभी जनजातियों का कोई न कोई पंथ होता था।

मैं आता हूँ— एक दिलासा देने वाला!

हे प्रभु, शीघ्र आओ!

शाम आशा से सराबोर थी; हवा हांफ रही थी; चंद्रमा - जो पहले ही उग चुका था - विशाल रूप में ऊपर उठा, लेकिन उसकी रोशनी ने कोई आकृति नहीं दिखाई।

"मेरी ओर झुक जाओ, ईवा। मेरी बाहों में आ जाओ; इस तरह आराम करो।"

“इस प्रकार मैं झुकता हूँ, हे अदृश्य परन्तु अनुभव किए जाने योग्य! और तुम क्या हो?”

“एवा, मैं स्वर्ग से जीवनदायी पेय लाया हूँ। हे मनुष्य की पुत्री, मेरा प्याला पियो!”

“मैं पीता हूँ: ऐसा लगता है मानो मीठी ओस की बूँदें मेरे होठों पर बह रही हों। मेरा सूखा दिल तरोताज़ा हो जाता है; मेरा दुख हल्का हो जाता है; मेरी तंगी और संघर्ष दूर हो जाते हैं। और रात बदल जाती है! जंगल, पहाड़, चाँद, विशाल आकाश—सब कुछ बदल जाता है!”

“सब कुछ बदलता है, और हमेशा के लिए। मैं तुम्हारी दृष्टि से अंधकार दूर करता हूँ; मैं तुम्हारी इंद्रियों से बंधन तोड़ता हूँ! मैं तुम्हारे मार्ग में आने वाली बाधाओं को समतल करता हूँ; मैं अपनी उपस्थिति से रिक्त स्थान भरता हूँ। मैं जीवन के खोए हुए कण को अपना मानता हूँ। मैं आत्मा की उस चिंगारी को ग्रहण करता हूँ—जो अब तक बुझी हुई थी!”

“ओह, मुझे ले चलो! ओह, मुझे अपना बना लो! यह एक देवता है।”

“यह ईश्वर का पुत्र है—वह जो जीवन के उस हिस्से में स्वयं को महसूस करता है जो आपको प्रेरित करता है। उसे अपने लोगों को पुनः प्राप्त करने और उनका पालन-पोषण और सहायता करने का अवसर दिया गया है ताकि वे निराशा में नष्ट न हो जाएँ।”

“मैं ईश्वर का पुत्र हूँ! क्या मैं सचमुच चुना हुआ हूँ?”

“इस धरती पर केवल तू ही है। मैंने तुझे देखा और तुझे सुंदर पाया; मैंने तुझे जाना और तुझे अपना बनाया। मुझे अपनों की रक्षा करने, उनका पालन-पोषण करने और

उन्हें प्यार करने का दायित्व सौंपा गया है। मुझमें उस देवदूत को पहचान ले जिसे पृथ्वी पर प्रतिभा का नाम दिया गया है।”

“मेरे महिमावान दूल्हे! स्वर्ग से आए सच्चे प्रभात! जो कुछ मैं चाहती थी, अंततः मुझे मिल गया। मुझे एक रहस्योद्घाटन प्राप्त हुआ। बचपन से मुझे परेशान करने वाले अंधकारमय संकेत, अस्पष्ट फुसफुसाहट का अर्थ स्पष्ट हो गया। तू ही वह है जिसे मैं खोज रही थी। ईश्वर के पुत्र, मुझे अपनी दुल्हन के रूप में स्वीकार कर ले!”

“मैं विनम्र हुए बिना अपना हक ले सकता हूँ। क्या मैंने ही वेदी से वह लौ नहीं दी जिसने हव्वा के जीवन को प्रज्वलित किया? उस स्वर्ग में लौट आओ जहाँ से तुम्हें भेजा गया था।”

वह अदृश्य लेकिन शक्तिशाली उपस्थिति उसे भेड़ के बच्चे की तरह अपने बाड़े में समेट लेती थी; वह कोमल लेकिन सर्वव्यापी आवाज उसके हृदय में संगीत की तरह गूंजती थी। उसकी आंखों को कोई छवि दिखाई नहीं दी; फिर भी उसकी दृष्टि और मस्तिष्क में निर्मल वायु की शांति, विशाल सागरों की शक्ति, गतिमान तारों की भव्यता, टकराते तत्वों की ऊर्जा, विशाल आधार वाली पहाड़ियों की अटूट दृढ़ता और सबसे बढ़कर, रात्रि पर विजय प्राप्त करते हुए वीर सौंदर्य की चमक का आभास होता था, जो उसके अंधकार को दिव्य सूर्य की तरह पराजित करता था।

प्रतिभा और मानवता का ऐसा ही वैवाहिक क्षण था। उनके मिलन के बाद की कहानी कौन सुनाएगा? उसके सुख और दुख का वर्णन कौन करेगा? कौन बताएगा कि कैसे ईश्वर ने जिसके और स्त्री के बीच शत्रुता स्थापित की, उसने इस बंधन को तोड़ने या इसकी पवित्रता को अपवित्र करने के लिए घातक षड्यंत्र रचे? सर्प और देवदूत के बीच लंबे संघर्ष का वर्णन कौन करेगा: — कैसे झूठ के पिता ने अच्छाई में बुराई, ज्ञान में अहंकार, महिमा में अशिष्टता, आनंद में पीड़ा और वासना में विष मिलाया? कैसे "भयंकर देवदूत" ने चुनौती दी, प्रतिरोध किया और प्रतिकर्षित किया? कैसे उसने बार-बार दूषित प्याले को शुद्ध किया, पतित भावना को ऊंचा उठाया, विकृत आवेग को सुधारा, छिपे हुए विष को पहचाना, निर्भीक प्रलोभन को विफल किया — शुद्ध किया, न्यायसंगत ठहराया, निगरानी की और डटे रहे? कैसे अपने धैर्य, अपनी शक्ति और ईश्वर से प्राप्त उस अकथनीय उत्कृष्टता से — अपने मूल स्रोत से — इस निष्ठावान देवदूत ने समय के साथ मानवता के लिए एक सार्थक संघर्ष किया; और जब समय का चक्र समाप्त हुआ और अंत में मृत्यु का सामना हुआ, जिसने

निर्जीव भुजा से अनंत काल के द्वार बंद कर दिए, तब भी उस प्रतिभा ने अपनी मरणासन्न दुल्हन को कैसे थामे रखा, उसे इस पीड़ा से उबारा, उसे विजयी रूप से अपने घर, स्वर्ग में ले गया; उसे उद्धारित करके उसके सृष्टिकर्ता यहोवा को सौंप दिया; और अंत में, स्वर्गदूतों और महादूतों के समक्ष, उसे अमरता का मुकुट पहनाया?

इन सब बातों का इतिहास कौन लिखेगा?

मूर के समापन पर शर्ली ने कहा, "मैं उस रचना को कभी सुधार नहीं सकी। आपकी सेंसर-पेंसिल ने उस पर निंदात्मक पंक्तियाँ उकेर दी थीं, जिनका अर्थ समझने का मैंने व्यर्थ ही प्रयास किया।"

उसने शिक्षक की मेज से एक क्रेयॉन लिया था और किताब के हाशिये पर छोटे-छोटे पत्ते, खंभों के टुकड़े और टूटे हुए क्रॉस बना रही थी।

“फ्रेंच भले ही आधी भूली जा चुकी हो, लेकिन फ्रेंच पाठ की आदतें अभी भी बरकरार हैं, मैं देख रहा हूँ,” लुई ने कहा। “मेरी किताबें अब भी पहले की तरह आपके पास सुरक्षित नहीं रहेंगी। मेरी नई जिल्द वाली सेंट पियरे की किताब जल्द ही मेरी रेसीन की किताब जैसी हो जाएगी—मिस कील्डर की छाप हर पन्ने पर दिखाई देगी।”

शर्ली ने अपना क्रेयॉन ऐसे गिरा दिया मानो उसकी उंगलियां जल गई हों।

“मुझे बताइए उस लिखित दस्तावेज में क्या कमियां थीं?” उसने पूछा। “क्या वे व्याकरण संबंधी त्रुटियां थीं, या आपको उसकी मूल सामग्री पर आपत्ति थी?”

“मैंने कभी नहीं कहा कि मैंने जो रेखाएँ खींचीं, वे किसी भी तरह से दोषों का संकेत थीं। आप ऐसा मान रहे हैं, और मैंने इसका खंडन करने से परहेज किया।”

“वे और क्या दर्शाते थे?”

अब कोई फर्क नहीं पड़ता।

हेनरी चिल्लाया, "मिस्टर मूर, शर्ली से उन कुछ पंक्तियों को दोहराने के लिए कहिए जिन्हें वह पहले इतनी आसानी से सुना देती थी।"

"अगर मैं कुछ मांगूंगा, तो वह 'ले शेवाल डोम्प्टे' होगा," मूर ने कहा, और अपनी कलम के चाकू से उस पेंसिल को काट-छांट कर छोटा कर दिया जिसे मिस कील्डर ने घिसकर ठूंठ बना दिया था।

उसने अपना सिर एक तरफ घुमाया; गर्दन और साफ गाल, जो प्राकृतिक आवरण से मुक्त हो गए थे, गर्माहट से लाल होते हुए दिखाई दिए।

“अहा! आप देखिए, वह भूली नहीं है,” हेनरी ने प्रसन्नता से कहा। “उसे पता है कि वह कितनी शरारती थी।”

एक मुस्कान, जिसे शर्ली खुलकर नहीं फैलने देना चाहती थी, उसके होंठों को कांपने पर मजबूर कर दिया; उसने अपना चेहरा झुकाया और उसे आधा बाहों से, आधा अपने घुंघराले बालों में छिपा लिया, जो झुकते ही फिर से खुल गए। "निश्चित रूप से मैं एक विद्रोही थी," उसने उत्तर दिया।

“एक विद्रोही!” हेनरी ने दोहराया। “हाँ; तुम्हारा और पापा का बहुत बुरा झगड़ा हुआ था, और तुमने पापा, मम्मी, मिसेज़ प्रायर और सबको चुनौती दे दी थी। तुमने कहा था कि उन्होंने तुम्हारा अपमान किया था—”

“उसने मेरा अपमान किया था,” शर्ली ने बीच में टोकते हुए कहा।

“और तुम सिम्पसन ग्रोव से तुरंत निकलना चाहती थी। तुमने अपना सामान पैक किया, और पापा ने उसे तुम्हारे ट्रंक से बाहर फेंक दिया; मम्मी रोईं, मिसेज़ प्रायर रोईं; दोनों हाथ मलते हुए तुमसे धैर्य रखने की विनती कर रही थीं; और तुम अपने सामान और उलटे हुए बक्से के साथ ज़मीन पर घुटनों के बल बैठी थीं, देख रही थीं, शर्ली, देख रही थीं—क्यों, अपने किसी आवेश में। ऐसे आवेश में तुम्हारे चेहरे के भाव विकृत नहीं होते; वे स्थिर होते हैं, लेकिन बेहद खूबसूरत। तुम मुश्किल से ही गुस्से में दिखती हो, बस दृढ़ निश्चयी और कुछ जल्दबाजी में; फिर भी ऐसा लगता है कि ऐसे समय में तुम्हारे रास्ते में आने वाली कोई भी बाधा बिजली की तरह टूट जाएगी। पापा का दिल टूट गया, और उन्होंने मिस्टर मूर को बुलाया।”

बस करो, हेनरी।

“नहीं, यह काफी नहीं है। मुझे ठीक से नहीं पता कि मिस्टर मूर ने कैसे किया, बस इतना याद है कि उन्होंने पापा से कहा कि बेचैनी से उनके गठिया का दर्द बढ़ जाएगा; फिर उन्होंने महिलाओं से धीरे से बात की और उन्हें वहाँ से जाने के लिए कहा; और बाद में उन्होंने आपसे, मिस शर्ली, कहा कि अभी बात करने या उपदेश देने का कोई फायदा नहीं है, क्योंकि चाय का सामान अभी-अभी स्कूलरूम में लाया गया है, और उन्हें बहुत प्यास लगी है, और उन्हें खुशी होगी अगर आप अभी अपना सामान पैक करना छोड़कर आएं और उनके और मेरे लिए एक कप चाय बना दें। आप आईं; पहले तो आपने बात नहीं की, लेकिन जल्द ही आप नरम पड़ गईं और खुश हो गईं। मिस्टर मूर ने हमें महाद्वीप, युद्ध और बोनापार्ट के बारे में बताना शुरू किया - ऐसे विषय जिन्हें

हम दोनों सुनना पसंद करते थे। चाय के बाद उन्होंने कहा कि हम दोनों उस शाम उन्हें छोड़कर न जाएं; वह हमें अपनी नजरों से ओझल नहीं होने देंगे, कहीं हम फिर से कोई शरारत न कर बैठें। हम उनके दोनों ओर एक-एक करके बैठे थे। हम बहुत खुश थे। मैंने कभी इतनी सुखद शाम नहीं बिताई थी। अगले दिन उन्होंने आपको, मिस, एक घंटे का व्याख्यान दिया।" और अंत में, सजा के तौर पर तुम्हें बॉसुएट की एक रचना 'ले शेवाल डोम्प्टे' सीखने को दी गई। तुमने सामान पैक करने के बजाय उसे सीख लिया, शर्ली। फिर हमने तुम्हारे भाग जाने के बारे में कुछ नहीं सुना। मिस्टर मूर एक साल तक इस विषय पर तुम्हें चिढ़ाते रहते थे।

मूर ने आगे कहा, "उन्होंने इससे पहले कभी इतने उत्साह से कोई पाठ नहीं पढ़ाया था। फिर उन्होंने मुझे पहली बार एक अंग्रेज लड़की द्वारा बिना किसी उच्चारण दोष के मेरी मातृभाषा बोलते हुए सुनने का सौभाग्य दिया।"

हेनरी के मन में यह बात बैठ गई: "उसके बाद एक महीने तक वह गर्मियों की चेरी की तरह मीठी रही। एक अच्छी-खासी लड़ाई हमेशा शर्ली के मिजाज को पहले से बेहतर बना देती थी।"

"आप मेरे बारे में ऐसे बात कर रही हैं जैसे मैं यहाँ मौजूद ही न हूँ," मिस कील्डर ने कहा, जिन्होंने अभी तक अपना चेहरा ऊपर नहीं उठाया था।

"क्या आप वाकई यहाँ मौजूद हैं?" मूर ने पूछा। "यहाँ आने के बाद से कई बार मेरा मन हुआ है कि मैं फील्डहेड की मालकिन से पूछूँ कि मेरी पूर्व छात्रा का क्या हुआ।"

वह अब यहां है।

"मैं उसे देखता हूँ, और वह काफी विनम्र है; लेकिन मैं न तो हैरी को और न ही दूसरों को उस विनम्रता पर पूरी तरह से विश्वास करने की सलाह दूंगा जो एक पल में एक विनम्र छोटे बच्चे की तरह अपना शरमाया हुआ चेहरा छिपा सकती है, और अगले ही पल संगमरमर की जूनो की तरह अपना पीला और ऊंचा चेहरा उठा सकती है।"

"कहा जाता है कि पुराने समय में एक व्यक्ति ने अपनी तराशी हुई मूर्ति में जीवन शक्ति भर दी थी; दूसरों के पास इसके विपरीत, जीवन को पत्थर में बदलने की प्रतिभा हो सकती है।"

इस टिप्पणी पर मूर ने कुछ देर रुककर जवाब दिया। उनकी नज़रें, जो एक साथ विस्मय और चिंतन का भाव लिए हुए थीं, कह रही थीं, "यह एक अजीब वाक्यांश है; इसका क्या अर्थ हो सकता है?" उन्होंने इस पर गहराई से और धीरे-धीरे विचार किया,

मानो कोई जर्मन दार्शनिक तत्वमीमांसा पर चिंतन कर रहा हो।

अंत में उसने कहा, "तुम्हारा मतलब है कि कुछ पुरुष घृणा उत्पन्न करते हैं, और इस प्रकार दयालु हृदय को भयभीत कर देते हैं।"

“शानदार!” शर्ली ने जवाब दिया। “अगर आपको यह व्याख्या पसंद है, तो आप इसे मान्य मान सकते हैं। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।”

और इसके साथ ही उसने अपना सिर उठाया, जो देखने में भव्य और रंग में मूर्ति के समान था, जैसा कि लुई ने वर्णन किया था।

“देखो यह रूपांतरण! इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, लेकिन अब यह साकार हो चुका है: एक साधारण अप्सरा एक शक्तिशाली देवी में बदल जाती है। लेकिन हेनरी को अपने पाठ से निराश नहीं होना चाहिए, और ओलंपिया उसकी कृपा करेंगी। चलिए शुरू करते हैं।”

मैं पहली पंक्ति ही भूल गया हूँ।

“जो मुझमें नहीं है। मेरी याददाश्त धीमी है, लेकिन अच्छी है। मैं जानबूझकर ज्ञान और रुचि दोनों अर्जित करता हूँ। यह अर्जित ज्ञान मेरे मस्तिष्क में और भावना मेरे हृदय में गहराई से समा जाती है; और यह उस तेजी से उगने वाले फल की तरह नहीं है जो जड़हीन होने के कारण कुछ समय के लिए खूब फलता-फूलता है, लेकिन जल्द ही मुरझा जाता है। ध्यान दो, हेनरी! मिस कील्डर तुम्हें आशीर्वाद देने के लिए तैयार हैं। ‘Voyez ce cheval ardent et impétueux,’ इस तरह यह शुरू होता है।”

मिस कील्डर ने प्रयास करने की सहमति तो दी, लेकिन जल्द ही उन्होंने प्रयास करना बंद कर दिया।

"जब तक मैं पूरी बात दोबारा नहीं सुन लेती, मैं आगे नहीं बढ़ सकती," उसने कहा।

“लेकिन यह बात जल्दी ही समझ में आ गई कि ‘जल्दी पाया, जल्दी खोया’,” शिक्षक ने उपदेशात्मक लहजे में कहा। उन्होंने उस अंश को जानबूझकर, सटीक रूप से, धीमी और प्रभावशाली लय में सुनाया।

जैसे-जैसे वह बोलता गया, शर्ली धीरे-धीरे उसकी ओर ध्यान देने लगी। उसका चेहरा, जो पहले उससे दूर था, फिर उसकी ओर मुड़ गया। जब वह रुका, तो उसने मानो उसके होंठों से शब्द उठा लिए हों; उसने उसकी आवाज़ को हूबहू पकड़ लिया; उसने उसके उच्चारण को हूबहू पकड़ लिया; उसने विराम चिह्नों को वैसे ही बोला जैसे

उसने बोले थे; उसने उसके हाव-भाव, उसके उच्चारण, उसके चेहरे के भावों को हूबहू दोहरा दिया।

अब याचिका दायर करने की बारी उनकी थी।

उन्होंने विनती करते हुए कहा, "'ले सोंगे डी'अथली' को याद कीजिए और उसे कहिए।"

उसने ये शब्द उसके लिए कहे। उसने उनसे ये शब्द लिए; उसे उनकी भाषा को अपना बनाने में एक अलग ही रोमांच महसूस हुआ। उसने और छूट मांगी; स्कूल के सारे पुराने पाठ फिर से जीवंत हो उठे, और उनके साथ ही शर्ली के पुराने स्कूली दिन भी।

उन्होंने रेसीन और कॉर्नेल की कुछ बेहतरीन रचनाओं का पाठ किया था, और फिर लड़की की आवाज़ में अपनी ही गहरी आवाज़ की गूंज सुनी, जो हूबहू उनकी आवाज़ में ढल रही थी। ला फॉन्टेन की सबसे खूबसूरत कहानी "ले चेन एट ले रोजो" को शिक्षक ने बड़ी कुशलता से सुनाया था, और छात्रा ने बड़े उत्साह से पाठ का आनंद लिया था। शायद अब उन दोनों को एक साथ यह एहसास हुआ कि उनका उत्साह एक ऐसी ज्वाला में बदल गया है जिसे फ्रांसीसी कविता की हल्की सी लौ अब और नहीं जला पा रही है; शायद वे चाहते थे कि क्रिसमस पर भस्म कर देने वाली आग में जलाने के लिए अंग्रेजी ओक का एक तना डाल दिया जाए। मूर ने कहा, "और ये हमारी सबसे बेहतरीन रचनाएँ हैं! और हमारे पास इससे ज़्यादा नाटकीय, भावुक, स्वाभाविक कुछ भी नहीं है!"

फिर वह मुस्कुराया और चुप हो गया। उसका पूरा स्वभाव शांत और प्रसन्न प्रतीत हो रहा था। वह चूल्हे पर खड़ा था, अपनी कोहनी शेल्फ पर टिकाए हुए, बड़े आनंद से सोच रहा था।

शरद ऋतु का ढलता हुआ दिन ढल रहा था। कक्षा की खिड़कियाँ - बेलों से ढकी हुई थीं, जिन पर अक्टूबर की तेज़ हवाओं ने अभी तक सूखी पत्तियों को नहीं हटाया था - उनमें से आकाश की हल्की सी झलक ही दिखाई दे रही थी; लेकिन आग की रोशनी में बातचीत करने के लिए पर्याप्त प्रकाश था।

और अब लुई मूर ने अपनी छात्रा से फ्रेंच में बात की, और उसने पहले तो हँसते हुए हिचकिचाहट और टूटे-फूटे शब्दों में जवाब दिया। मूर ने उसे प्रोत्साहित किया और साथ ही उसकी गलतियों को सुधारा। हेनरी भी पाठ में शामिल हो गया; दोनों छात्र

गुरु के सामने खड़े थे, एक-दूसरे की कमर में बाहें डाले हुए। टार्टर, जिसने बहुत पहले प्रवेश की इच्छा जताई थी और उसे प्रवेश मिल गया था, कालीन के बीचोंबीच समझदारी से बैठा था, लाल राख के बीच कोयले के टुकड़ों से रुक-रुक कर फूटती आग को घूर रहा था। समूह काफी खुश था, लेकिन—

“सुख अफीम के फूलों की तरह फैलते हैं;

आप फूल को तोड़ते हैं - उसकी सुंदरता मुरझा जाती है।"

आंगन में फुटपाथ पर पहियों की धीमी, गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दे रही थी।

"गाड़ी वापस आ गई है," शर्ली ने कहा; "और खाना लगभग तैयार होगा, और मैंने कपड़े नहीं पहने हैं।"

एक नौकर मिस्टर मूर की मोमबत्ती और चाय लेकर आया; क्योंकि शिक्षक और उनका शिष्य आमतौर पर दोपहर के भोजन के समय साथ में भोजन करते थे।

उन्होंने कहा, "श्री सिम्पसन और महिलाएं वापस आ गए हैं, और सर फिलिप ननेली उनके साथ हैं।"

“शर्ली, तुम कितनी चौंक गई थी और तुम्हारा हाथ कितना काँप रहा था!” नौकरानी के शटर बंद करके चले जाने के बाद हेनरी ने कहा। “लेकिन मैं जानती हूँ क्यों—क्या आप नहीं जानते, मिस्टर मूर? मैं जानती हूँ पापा का इरादा क्या है। वो सर फिलिप तो बड़े ही बदसूरत आदमी हैं। काश वो न आए होते। काश बहनें और बाकी सब लोग डी वाल्डेन हॉल में ही खाना खाने रुक जाते। मिस्टर मूर, शर्ली को एक बार फिर आपके और मेरे लिए चाय बनानी चाहिए थी और हमारी शाम कितनी खुशनुमा होती।”

मूर अपना डेस्क बंद कर रहा था और अपनी सेंट पियरे की किताब समेट रहा था। "यही तो तुम्हारी योजना थी, है ना, मेरे लड़के?"

“क्या आप इसे स्वीकार नहीं करते, महोदय?”

मैं किसी भी काल्पनिक विचार का समर्थन नहीं करता। जीवन के कठोर चेहरे को देखो; वास्तविकता के दिखावटी स्वरूप को परख कर देखो। चाय बना दो, हेनरी; मैं एक मिनट में वापस आता हूँ।

वह कमरे से बाहर निकल गया; शर्ली भी दूसरे दरवाजे से बाहर निकल गई।

अध्याय XXVIII.

PHŒBE.

उस शाम शर्ली का सर फिलिप के साथ शायद अच्छा तालमेल रहा होगा, क्योंकि अगली सुबह वह बहुत अच्छे मूड में थी।

नाश्ते के बाद उसने पूछा, "मेरे साथ कौन टहलना चाहेगा? इसाबेला और गर्ट्रूड, क्या तुम दोनों चलोगी?"

मिस कील्डर द्वारा अपनी महिला चचेरी बहनों को ऐसा निमंत्रण मिलना इतना दुर्लभ था कि उन्होंने इसे स्वीकार करने से पहले हिचकिचाहट दिखाई। हालाँकि, उनकी माँ ने इस योजना में अपनी सहमति जताते हुए, उन्होंने अपनी टोपियाँ लीं और तीनों निकल पड़ीं।

इन तीनों युवतियों को एक साथ ज्यादा समय बिताना पसंद नहीं था। मिस कील्डर को कुछ ही महिलाओं की संगति पसंद थी; वास्तव में, श्रीमती प्रायर और कैरोलिन हेलस्टोन के अलावा उन्हें किसी और की संगति में विशेष आनंद नहीं मिलता था। वह विनम्र, दयालु और यहां तक कि अपनी चचेरी बहनों के प्रति भी ध्यान देने वाली थीं; फिर भी वह आमतौर पर उनसे ज्यादा बात नहीं करती थीं। उस खास सुबह के खुशनुमा माहौल में, उन्होंने मिस सिम्पसन को भी अपने साथ शामिल करने का प्रबंध किया। उनसे केवल सामान्य विषयों पर चर्चा करने के अपने सामान्य नियम से विचलित हुए बिना, उन्होंने उन विषयों में असाधारण रुचि पैदा कर दी; उनके शब्दों में उनकी आत्मा की चमक झलक रही थी।

किस बात ने उसे इतना प्रसन्न किया? इसका सारा कारण शायद उसी के भीतर था। दिन उजाला नहीं था। धुंधला था—पतझड़ का एक फीका, ढलता हुआ पतझड़

का दिन। धुंधले जंगलों में घूमना नम था; वातावरण भारी था, आकाश बादलों से घिरा था; फिर भी ऐसा लग रहा था मानो शर्ली के हृदय में इटली का सारा प्रकाश और नीलापन बसा हो, और उसकी सारी उमंग उसकी धूसर अंग्रेजी आँखों में खिलखिला रही हो।

अपने फोरमैन जॉन को कुछ निर्देश देने के कारण वह अपने चचेरे भाइयों से थोड़ी देर पीछे रह गई, क्योंकि वे फील्डहेड लौटते समय उनके पास पहुँच रहे थे। उनसे अलग होने और घर में वापस आने के बीच लगभग बीस मिनट का अंतराल रहा। इस दौरान उसने जॉन से बात की और फिर गेट के पास गली में कुछ देर रुकी रही। दोपहर के भोजन के लिए बुलावा आया। उसने भोजन से मना कर दिया और ऊपर चली गई।

"क्या शर्ली दोपहर के भोजन पर नहीं आ रही है?" इसाबेला ने पूछा। "उसने कहा कि उसे भूख लगी है।"

एक घंटे बाद भी जब वह अपने कमरे से बाहर नहीं निकली, तो उसकी एक चचेरी बहन उसे ढूंढने वहाँ गई। वह पलंग के पास बैठी मिली, उसका सिर उसके हाथ पर टिका हुआ था; वह काफी पीली, बहुत सोच में डूबी हुई और लगभग उदास लग रही थी।

"क्या आप बीमार तो नहीं हैं?" यह सवाल पूछा गया।

"थोड़ी बीमार," मिस कील्डर ने उत्तर दिया।

इसमें कोई शक नहीं कि दो घंटे पहले की तुलना में वह बिल्कुल भी नहीं बदली थी।

यह बदलाव, जिसे केवल उन तीन शब्दों में समझाया जा सकता था, इसके अलावा और कुछ स्पष्ट नहीं कर सका; यह बदलाव—चाहे कहीं से भी आया हो, केवल दस मिनट में घटित हुआ—गर्मी के हल्के बादल की तरह गायब हो गया। जब वह अपने दोस्तों के साथ रात के खाने पर बैठी तो उसने हमेशा की तरह बातें कीं। वह शाम भर उनके साथ रही। जब उससे दोबारा उसकी सेहत के बारे में पूछा गया, तो उसने कहा कि वह पूरी तरह से ठीक हो गई है। यह महज़ एक क्षणिक बेहोशी थी, एक पल भर का एहसास, जिस पर ध्यान देने की कोई ज़रूरत नहीं थी; फिर भी शर्ली में कुछ बदलाव महसूस हुआ।

अगले दिन—उस दिन, उस सप्ताह, उस पखवाड़े के बाद—मिस कील्डर के अंदाज़ में, यह नया और विचित्र सा साया उनके चेहरे पर छाया रहा। उनकी नज़र, उनकी

हरकतें, उनकी आवाज़ तक में एक अजीब सी खामोशी छा गई। यह बदलाव इतना स्पष्ट नहीं था कि इस पर बार-बार सवाल उठाए जा सकें, फिर भी यह मौजूद था और दूर नहीं हो रहा था। यह उन पर एक ऐसे बादल की तरह छाया हुआ था जिसे हवा भी हिला या हटा नहीं सकती थी। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि इस बदलाव पर ध्यान देना उन्हें नाराज़ करना था। पहले तो वह टिप्पणी करने से कतराती थीं; और अगर कोई ज़िद करता, तो वह अपने खास घमंड के साथ उसे ठुकरा देती थीं। "क्या वह बीमार थीं?" जवाब दृढ़ता से आया।

"मैं नहीं हूँ।"

क्या उसके मन में कोई बात खटक रही थी? क्या कुछ ऐसा हुआ था जिससे उसके मनोबल पर असर पड़ा हो?

उसने इस विचार का तिरस्कारपूर्वक उपहास किया। "आत्माओं से उनका क्या मतलब था? उसके पास कोई आत्मा नहीं थी, न काली, न सफेद, न नीली, न भूरी, जिस पर वह प्रभाव डाल सके।"

"ज़रूर कुछ गड़बड़ है — वह इतनी बदल गई थी।"

"उसे लगता था कि उसे अपनी मर्जी से बदलने का अधिकार है। वह जानती थी कि वह पहले से ही साधारण है। अगर उसे बदसूरत होना ठीक लगता है, तो दूसरों को इस विषय पर क्यों परेशान होना चाहिए?"

“इस बदलाव का कोई कारण तो जरूर होगा। वह क्या था?”

उसने दृढ़तापूर्वक अनुरोध किया कि उसे अकेला छोड़ दिया जाए।

फिर वह पूरी कोशिश करती कि सब कुछ ठीक लगे, और उसे इस बात पर खुद पर गुस्सा आता था कि वह पूरी तरह सफल नहीं हो पा रही थी। अकेले में उसके होंठों से अचानक खुद को कोसने वाले शब्द निकल पड़ते थे। “मूर्ख! कायर!” वह खुद को कहती। “डरपोक!” वह कहती, “अगर कांपना ही है तो छुपकर कांपो! ऐसी जगह दुबको जहां कोई तुम्हें देख न सके!”

“तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई,” वह खुद से पूछती थी — “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई अपनी कमजोरी दिखाने की और अपनी मूर्खतापूर्ण चिंताओं को उजागर करने की? इन्हें झटक दो; इनसे ऊपर उठो। अगर तुम ऐसा नहीं कर सकती, तो इन्हें छुपा लो।”

और उन्हें छुपाने के लिए उसने अपनी पूरी कोशिश की। लोगों के बीच वह एक बार फिर दृढ़ता से जीवंत हो उठी। जब परिश्रम से थककर उसे आराम करने की इच्छा

होती, तो वह एकांत की तलाश करती - अपने कमरे का एकांत नहीं (वह चार दीवारों के बीच बंद होकर उदास नहीं रहना चाहती थी), बल्कि वह खुले आसमान के नीचे का एकांत, जिसका पीछा वह अपनी घोड़ी ज़ोई पर सवार होकर कर सकती थी। वह आधे दिन की लंबी घुड़सवारी करती। उसके चाचा को यह पसंद नहीं था, लेकिन उन्होंने विरोध करने की हिम्मत नहीं की। शर्ली के गुस्से का सामना करना कभी सुखद नहीं होता था, यहाँ तक कि जब वह स्वस्थ और खुशमिजाज थी तब भी नहीं; लेकिन अब जब उसका चेहरा पतला दिखने लगा था और उसकी बड़ी आँखें धँसी हुई लग रही थीं, तो उस चेहरे के कालेपन और उस आँख की चमक में कुछ ऐसा था जो दिल को छू लेने के साथ-साथ भयभीत भी कर देता था।

उन सभी अनजान लोगों को, जो उसके मन में आए बदलावों से अनभिज्ञ होकर, उसके रूप-रंग में आए बदलावों पर टिप्पणी करते थे, उसका एक ही जवाब होता था,

—

मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ; मुझे कोई बीमारी नहीं है।

और वाकई, उसका स्वास्थ्य अच्छा रहा होगा, तभी तो वह इस मौसम का सामना करने में सक्षम थी। चाहे बारिश हो या धूप, मौसम शांत हो या तूफान, वह प्रतिदिन स्टिलब्रो मूर पर अपनी सवारी करती थी, टार्टर भेड़िये जैसी फुर्ती से, लंबी और अथक दौड़ लगाते हुए, उसके साथ-साथ चलता था।

दो-तीन बार, गपशप करने वालों की निगाहों ने—वे निगाहें जो हर जगह मौजूद हैं, गुप्त स्थानों में और पहाड़ी की चोटी पर—देखा कि वह स्टिलब्रो मूर की सबसे ऊँची चोटी रशएज की ओर मुड़ने के बजाय, सीधे कस्बे की ओर चली गईं। उनके गंतव्य का पता लगाने में जासूसों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। यह पता चला कि वह ननेली के पादरी के रिश्तेदार, वकील श्री पियर्सन हॉल के घर पर उतरीं। यह सज्जन और उनके पूर्वज कई पीढ़ियों से कील्डर परिवार के प्रतिनिधि रहे थे। कुछ लोगों का कहना था कि मिस कील्डर हॉलो मिल से जुड़े व्यापारिक सौदों में शामिल हो गई थीं—कि उन्हें नुकसान हुआ था और उन्हें अपनी ज़मीन गिरवी रखनी पड़ी थी। कुछ अन्य लोगों का अनुमान था कि उनकी शादी होने वाली थी और समझौते की तैयारियाँ चल रही थीं।

श्री मूर और हेनरी सिम्पसन कक्षा में साथ थे। शिक्षक पाठ की प्रतीक्षा कर रहे थे, जबकि छात्र तैयारी में व्यस्त प्रतीत हो रहा था।

“हेनरी, जल्दी करो। दोपहर ढल रही है।”

"क्या सच में?"

“ज़रूर। क्या आप उस पाठ के लिए लगभग तैयार हैं?”

"नहीं।"

"क्या अभी पूरी तरह से तैयार नहीं हैं?"

मैंने किसी भी पंक्ति की व्याख्या नहीं की है।

मिस्टर मूर ने ऊपर देखा। लड़के का लहजा कुछ अजीब सा था।

“हेनरी, इस काम में कोई कठिनाई नहीं है; या अगर कोई कठिनाई हो तो मुझे बता देना। हम मिलकर काम करेंगे।”

“श्री मूर, मैं कोई काम नहीं कर सकता।”

“मेरे बेटे, तुम बीमार हो।”

"महोदय, मेरी शारीरिक सेहत सामान्य से खराब नहीं है, लेकिन मेरा दिल भारी है।"

“किताब बंद करो। इधर आओ, हैरी। आग के पास आओ।”

हैरी लंगड़ाते हुए आगे बढ़ा। उसके शिक्षक ने उसे कुर्सी पर बिठाया; उसके होंठ काँप रहे थे, आँखों में आँसू भरे थे। उसने अपनी बैसाखी ज़मीन पर रख दी, सिर झुकाया और रोने लगा।

"हैरी, तुम कहते हो कि यह पीड़ा शारीरिक दर्द के कारण नहीं है? तुम्हें कोई दुःख है; मुझे बताओ।"

“महोदय, मुझे ऐसा दुख है जैसा पहले कभी नहीं हुआ। काश किसी तरह इससे राहत मिल पाती; मैं इसे मुश्किल से सहन कर पा रहा हूँ।”

"कौन जाने, अगर हम इस पर बात करें तो शायद इसका समाधान हो जाए? इसका कारण क्या है? यह किससे संबंधित है?"

“महोदय, इसका कारण शर्ली है; यह शर्ली से संबंधित है।”

“क्या सच में? आपको लगता है कि वह बदल गई है?”

"जो भी उसे जानते हैं, वे सब सोचते हैं कि वह बदल गई है - आप भी, मिस्टर मूर।"

"गंभीरता से नहीं—नहीं। मुझे कोई ऐसा बदलाव नहीं दिख रहा जो कुछ हफ्तों में ठीक न हो जाए; इसके अलावा, उसकी अपनी बात का भी कुछ महत्व है: वह कहती

है कि वह ठीक है।"

“जी हाँ, महोदय। जब तक वह कहती रही कि वह ठीक है, मैंने उसकी बात पर विश्वास किया। जब मैं उसकी नजरों से दूर उदास होता था, तो उसकी उपस्थिति में मैं तुरंत ठीक हो जाता था। अब — —”

“अच्छा, हैरी, अब बताओ। क्या उसने तुमसे कुछ कहा? तुम और वह आज सुबह दो घंटे बगीचे में साथ थे। मैंने उसे बात करते देखा और तुम सुन रहे थे। अब, मेरे प्यारे हैरी, अगर मिस कील्डर ने कहा है कि वह बीमार है और तुम्हें उसका राज़ छुपाने को कहा है, तो उसकी बात मत मानो। उसकी जान की खातिर, सब कुछ बता दो। बोलो, मेरे बच्चे।”

“वह कहती है कि वह बीमार है! मुझे विश्वास है, महोदय, अगर वह मर रही होती, तो वह मुस्कुराती और कहती, ‘मुझे कुछ भी तकलीफ नहीं है।’”

“तो आपने क्या सीखा? कौन सी नई परिस्थिति?”

मुझे पता चला है कि उसने अभी-अभी अपनी वसीयत बनाई है।

“क्या उसने अपनी वसीयत बनाई थी?”

शिक्षक और छात्र दोनों चुप थे।

कुछ मिनट बीत जाने के बाद मूर ने पूछा, "उसने तुम्हें यह बताया?"

“उसने मुझे बड़ी प्रसन्नता से बताया, किसी अशुभ परिस्थिति के रूप में नहीं, जैसा कि मुझे लग रहा था। उसने कहा कि उसके वकील पियर्सन हॉल, श्री हेलस्टोन और श्री यॉर्क के अलावा मैं ही एकमात्र व्यक्ति था जिसे इसके बारे में कुछ पता था; और उसने संकेत दिया कि वह विशेष रूप से मुझे इसके प्रावधानों के बारे में समझाना चाहती थी।”

"आगे बढ़ो, हैरी।"

“‘क्योंकि,’ उसने अपनी खूबसूरत आँखों से मेरी ओर देखते हुए कहा— ओह! कितनी खूबसूरत हैं, मिस्टर मूर! मुझे ये बहुत प्यारी लगती हैं! मुझे वो बहुत प्यारी लगती है! वो मेरी स्टार है! स्वर्ग उसे नहीं ले जा सकता! वो इस दुनिया में प्यारी है, और इसी दुनिया के लिए बनी है। शर्ली कोई परी नहीं है; वो एक औरत है, और वो मर्दों के साथ रहेगी। देवदूत उसे नहीं पा सकते! मिस्टर मूर, अगर ‘ईश्वर के पुत्रों’ में से एक, जिसके पंख आकाश की तरह चौड़े और चमकीले हों, समुद्र की तरह नीले और गहरे हों, उसे सुंदर देखकर उस पर अपना अधिकार जताने के लिए नीचे उतरे, तो

उसके दावे का विरोध होना चाहिए—मेरे द्वारा— मेरे जैसे लड़के और अपाहिज द्वारा।"

"हेनरी सिम्पसन, जब मैं तुम्हें बताऊं तो तुम आगे बढ़ो।"

"'क्योंकि,' उसने कहा, 'अगर मैंने वसीयत नहीं बनाई और तुमसे पहले मर गई, हैरी, तो मेरी सारी संपत्ति तुम्हें मिल जाएगी; और मैं ऐसा नहीं चाहती, भले ही तुम्हारे पिता ऐसा चाहते हों। लेकिन,' उसने कहा, 'तुम्हें उनकी पूरी जागीर मिलेगी, जो बहुत बड़ी है—फील्डहेड से भी बड़ी। तुम्हारी बहनों को कुछ नहीं मिलेगा; इसलिए मैंने उनके लिए कुछ पैसे छोड़े हैं, हालाँकि मैं उन दोनों से उतना प्यार नहीं करती जितना तुम्हारे सुनहरे बालों की एक लट से करती हूँ।' उसने ये शब्द कहे और मुझे अपना 'डार्लिंग' कहकर पुकारा और मुझे चूमने दिया। उसने मुझे आगे बताया कि उसने कैरोलीन हेलस्टोन के लिए भी कुछ पैसे छोड़े हैं; कि यह हवेली, अपने फर्नीचर और किताबों के साथ, उसने मुझे वसीयत में दी है, क्योंकि वह अपने खून के रिश्ते से पुरानी पारिवारिक संपत्ति नहीं लेना चाहती थी; और उसकी बाकी सारी संपत्ति, जो लगभग बारह हजार पाउंड है, मेरी बहनों और मिस हेलस्टोन को दी गई वसीयतों को छोड़कर, उसने मुझे नहीं दी है, क्योंकि मैं पहले से ही अमीर था, बल्कि एक अच्छे आदमी को दी है, जो इसका सबसे अच्छा उपयोग कर सके। इसका उपयोग कोई भी इंसान कर सकता है— एक ऐसा पुरुष, उसने कहा, जो कोमल और बहादुर, बलवान और दयालु हो— एक ऐसा पुरुष जो भले ही धर्मपरायण होने का दावा न करे, लेकिन वह जानती थी कि उसके पास ईश्वर के समक्ष शुद्ध और निष्कलंक धर्म का रहस्य है। प्रेम और शांति की भावना उसके साथ थी। वह अनाथों और विधवाओं की पीड़ा में उनकी सहायता करता था और स्वयं को संसार से दूर रखता था। फिर उसने पूछा, 'हैरी, क्या तुम मेरे इस कार्य को स्वीकार करते हो?' मैं उत्तर नहीं दे सका। मेरे आँसुओं ने मुझे रुंधे रखा, जैसा कि अब भी होता है।

श्री मूर ने अपने छात्र को अपनी भावनाओं से निपटने और उन पर काबू पाने के लिए कुछ क्षण दिए। फिर उन्होंने पूछा, "उसने और क्या कहा?"

जब मैंने उसकी वसीयत की शर्तों पर अपनी पूरी सहमति दे दी, तो उसने मुझसे कहा कि मैं एक उदार लड़का हूँ और उसे मुझ पर गर्व है। 'और अब,' उसने आगे कहा, 'अगर कुछ हो जाए, तो तुम्हें पता होगा कि जब दुर्भावना तुम्हारे कान में बुरी बातें फुसफुसाएगी, ये इशारा करेगी कि शर्ली ने तुम्हारे साथ अन्याय किया है, कि उसने तुमसे प्यार नहीं किया, तो तुम्हें क्या कहना है। तुम्हें पता होगा कि मैंने तुमसे

प्यार किया, हैरी; कोई बहन तुमसे इतना प्यार नहीं कर सकती थी - तुम मेरे अनमोल हो।' श्री मूर, जब मुझे उसकी आवाज़ और उसकी नज़र याद आती है, तो मेरा दिल ऐसे धड़कता है जैसे तार टूट जाएँगे। वह मुझसे पहले स्वर्ग जा सकती है - अगर ईश्वर की यही इच्छा है, तो उसे जाना ही होगा; लेकिन मेरा शेष जीवन - और मेरा जीवन लंबा नहीं होगा, मुझे अब इस बात की खुशी है - उसके पदचिन्हों पर एक सीधा, तेज़ और विचारशील सफर होगा। मैंने सोचा था कि मैं उससे पहले कील्डर्स के मकबरे में प्रवेश कर जाऊँगा। अगर ऐसा न हो, तो मेरा ताबूत शर्ली के बगल में रख देना।'

मूर ने उसे गंभीर और शांत भाव से उत्तर दिया, जो लड़के के उत्तेजित उत्साह के विपरीत एक विचित्र विरोधाभास प्रस्तुत करता था।

"तुम दोनों गलत हो—तुम एक दूसरे को नुकसान पहुंचाते हो। अगर जवानी एक बार किसी अंधेरे डर के प्रभाव में आ जाए, तो उसे लगता है कि फिर कभी पूरी रोशनी नहीं मिलेगी; उसे लगता है कि उसकी पहली विपत्ति जीवन भर रहेगी। उसने और क्या कहा? कुछ और?"

"हमने आपस में परिवार से जुड़े एक-दो मामलों को सुलझा लिया।"

मैं यह जानना चाहूंगा कि — — "

लेकिन, श्री मूर, आप मुस्कुरा रहे हैं। शर्ली को ऐसे मूड में देखकर मैं मुस्कुरा नहीं सकता।

"मेरे बेटे, मैं न तो घबराया हुआ हूँ, न ही कवित्री हूँ, और न ही अनुभवहीन हूँ। मैं चीजों को वैसे ही देखता हूँ जैसी वे हैं; तुम अभी तक नहीं देख पाते। मुझे परिवार से जुड़े ये मुद्दे बताओ।"

"महोदय, उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं खुद को सबसे ज्यादा कील्डर मानता हूँ या सिम्पसन; और मैंने जवाब दिया कि मैं दिल से और हड्डियों तक कील्डर हूँ। उन्होंने कहा कि उन्हें यह जानकर खुशी हुई; क्योंकि उनके अलावा इंग्लैंड में मैं ही इकलौता कील्डर बचा था। और फिर हम कुछ बातों पर सहमत हो गए।"

"कुंआ?"

"जी महोदय, यदि मैं अपने पिता की संपत्ति और उनके घर का उत्तराधिकारी बनता, तो मैं कील्डर नाम अपनाता और फील्डहेड को अपना निवास स्थान बनाता। मैंने कहा था कि मैं हेनरी शर्ली कील्डर कहलाऊंगा; और मैं यही कहलाऊंगा। उनका नाम और उनका हवेलीनुमा घर सदियों पुराने हैं, जबकि सिम्पसन और सिम्पसन ग्रोव

बीते जमाने की बात हैं।"

“आओ, तुम दोनों अभी स्वर्ग नहीं जाओगे। मुझे तुम दोनों से बहुत उम्मीदें हैं, तुम्हारी गर्वित विशेषताओं के साथ – जैसे अधपके चीलों के जोड़े से। अब, तुमने मुझे जो कुछ बताया है, उससे तुम्हारा क्या निष्कर्ष निकलता है? इसे शब्दों में व्यक्त करो।”

"शर्ली को लगता है कि वह मरने वाली है।"

"क्या उसने अपनी सेहत का जिक्र किया था?"

“एक बार भी नहीं; लेकिन मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि वह बहुत कमजोर हो रही है। उसके हाथ काफी पतले हो गए हैं, और उसके गाल भी।”

क्या वह कभी तुम्हारी मां या बहनों से शिकायत करती है?

“कभी नहीं। जब वे उससे सवाल करते हैं तो वह उन पर हंसती है। श्री मूर, वह एक विचित्र प्राणी है, इतनी सुंदर और लड़की जैसी - बिलकुल भी मर्दाना औरत नहीं, कोई ताकतवर योद्धा नहीं, और फिर भी मदद और सहानुभूति दोनों से ऊपर उठकर अपना सिर ऊंचा रखती है।”

“हेनरी, क्या तुम्हें पता है कि वह अभी कहाँ है? क्या वह घर में है या बाहर घोड़े पर सवार होकर जा रही है?”

“बिल्कुल नहीं, महोदय। बहुत तेज बारिश हो रही है।”

"सच है; लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह इस समय रशएज पर सरपट नहीं दौड़ रही होगी। हाल ही में उसने मौसम को अपनी सवारी में बाधा नहीं बनने दिया है।"

“आपको याद है, श्रीमान मूर, पिछले बुधवार को कितनी बारिश और तूफान था—इतना भयानक कि उसने ज़ोई पर काठी कसने की भी अनुमति नहीं दी? फिर भी, जिस तूफान को वह अपनी घोड़ी के लिए बहुत तेज़ समझ रही थी, उसका सामना उसने खुद पैदल किया; उस दोपहर वह लगभग ननेली तक पैदल चली। जब वह अंदर आई, तो मैंने उससे पूछा कि क्या उसे सर्दी लगने का डर नहीं है। उसने कहा, ‘बिल्कुल नहीं। मेरे लिए तो यह बहुत बड़ी खुशनसीब होगी। मुझे नहीं पता, हैरी, लेकिन मेरे लिए सबसे अच्छी बात यही होगी कि मुझे अच्छी खासी सर्दी और बुखार हो जाए, और मैं बाकी ईसाइयों की तरह मर जाऊं।’ आप देख रहे हैं, वह कितनी लापरवाह है।”

“सचमुच लापरवाह! जाओ और पता लगाओ कि वह कहाँ है, और अगर तुम्हें बिना ध्यान आकर्षित किए उससे बात करने का मौका मिले, तो उससे एक मिनट के लिए यहाँ आने का अनुरोध करो।”

"जी श्रीमान।"

उसने अपनी बैसाखी उठाई और जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

“हैरी!”

वह लौटे।

"संदेश को औपचारिक रूप से न दें। इसे उसी तरह लिखें जैसे पुराने समय में आप विद्यालय में बुलावे के लिए संदेश देते थे।"

“मैं समझ गया, महोदय। उसके आज्ञा मानने की संभावना अधिक होगी।”

और, हैरी — — “

"महोदय?"

“जब मुझे तुम्हारी ज़रूरत होगी, मैं तुम्हें बुलाऊँगा। तब तक तुम्हें पढ़ाई से छूट है।”

वह चला गया। श्री मूर अकेले रह गए और अपनी डेस्क से उठ खड़े हुए।

उन्होंने कहा, "मैं हेनरी के साथ बहुत ही शांत और बहुत ही घमंडी हो सकता हूं।" “मैं उसकी आशंकाओं को हल्के में ले सकता हूँ, और उसके युवा जोश को अपनी शान से कमतर दिखा सकता हूँ। मैं उससे ऐसे बात कर सकता हूँ जैसे मेरी नज़रों में वे दोनों बच्चे हों। देखते हैं कि क्या मैं उसके साथ भी यही भूमिका निभा सकता हूँ। मुझे वह पल याद है जब मैं इसे भूलने ही वाला था, जब भ्रम और समर्पण मुझे अपने कोमल अत्याचार से कुचलने वाले थे, जब मेरी ज़बान लड़खड़ा गई थी, और मैंने लगभग अपना आवरण गिरा दिया था, और उसकी उपस्थिति में, स्वामी नहीं - नहीं - बल्कि कुछ और ही खड़ा था। मुझे विश्वास है कि मैं फिर कभी ऐसी मूर्खता नहीं करूँगा। सर फिलिप ननेली के लिए उसकी आँखों में देखते ही लाल हो जाना स्वाभाविक है। वह समर्पण की छूट ले सकता है। वह बिना किसी शर्म के, उसके हाथ को छूते समय अपने हाथ को कांपने भी दे सकता है; लेकिन अगर उसका कोई किसान खुद को संवेदनशील और भावुक दिखाए, तो वह केवल यह साबित करेगा कि उसे सख्त जैकेट की ज़रूरत है। अब तक मैंने हमेशा बहुत अच्छा किया है। वह मेरे पास बैठी है, और मैं हिला नहीं हूँ। — मेरी डेस्क से भी कहीं ज़्यादा। मैंने उसकी नज़रें और मुस्कानें देखी हैं — क्यों, एक शिक्षक की तरह, जैसा कि मैं हूँ। मैंने उसका

हाथ कभी नहीं छुआ — कभी उस परीक्षा से नहीं गुज़रा। मैं उसका किसान या नौकर नहीं हूँ — न ही कभी उसका दास या नौकर रहा हूँ; लेकिन मैं गरीब हूँ, और यह मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने आत्मसम्मान का ध्यान रखूँ — उसका एक इंच भी समझौता न करूँ। ठंडे लोगों के उस संकेत से उसका क्या मतलब था जो मांस को संगमरमर में बदल देते हैं? मुझे यह अच्छा लगा — मुझे ठीक से पता नहीं क्यों; मैं खुद को पूछने की अनुमति नहीं देता। मैं कभी भी उसकी भाषा या चेहरे की बारीकी से जाँच नहीं करता; क्योंकि अगर मैं ऐसा करता, तो कभी-कभी मैं सामान्य ज्ञान को भूलकर रोमांस में विश्वास कर लेता। एक अजीब, गुप्त आनंद कभी-कभी मेरी नसों में दौड़ जाता है। मैं इसे बढ़ावा नहीं दूँगा — मैं इसे याद नहीं रखूँगा। मैं दृढ़ संकल्पित हूँ, जब तक संभव हो, पॉल के साथ यह कहने का अधिकार बनाए रखूँगा, 'मैं पागल नहीं हूँ, बल्कि सत्य और संयम के शब्द बोलता हूँ।'

वह रुका और सुनने लगा।

"क्या वह आएगी या नहीं आएगी?" उसने पूछा। "वह इस संदेश को कैसे लेगी? भोलेपन से या तिरस्कार से? एक बच्चे की तरह या एक रानी की तरह? दोनों ही बातें उसके स्वभाव में हैं।"

"अगर वह आती है, तो मैं उससे क्या कहूँ? सबसे पहले, उसकी निजता का क्या औचित्य हो? क्या मुझे उससे माफ़ी माँगनी चाहिए? मैं पूरी विनम्रता से माफ़ी माँग सकता हूँ; लेकिन क्या माफ़ी माँगने से हम इस मामले में अपनी वास्तविक स्थिति में आ जाएँगे? मुझे अपना व्यवहार बनाए रखना होगा, वरना—— मुझे एक दरवाज़े की आहट सुनाई दे रही है।"

वह इंतजार करता रहा। कई मिनट बीत गए।

"वह मुझे मना कर देगी। हेनरी उससे आने की विनती कर रहा है; वह मना कर रही है। मेरी विनती उसकी नज़र में गुस्ताखी है। बस आ जाइए, मैं उसे सबक सिखा सकता हूँ। काश वह थोड़ी ज़िद्दी होती; इससे मुझे और मज़बूती मिलेगी। मुझे पसंद है जब वह घमंड से लदी हो, ताने मारने में माहिर हो। उसका तिरस्कार मुझे सपनों से जगा देता है; मैं खुद खड़ा हो जाता हूँ। उसकी आँखों या होंठों से निकला एक व्यंग्य मेरे हर नस-नस में ताकत भर देता है। किसी के कदम आ रहे हैं, और हेनरी के नहीं।"

दरवाजा खुला; मिस कील्डर अंदर आईं। ऐसा प्रतीत हुआ कि संदेश उन्हें सुई-धागे पर काम करते हुए मिला था; वह अपना काम हाथ में लिए हुए थीं। उस दिन वह

घुड़सवारी के लिए बाहर नहीं गई थीं; जाहिर है उन्होंने दिन शांति से बिताया था। उन्होंने अपने साफ-सुथरे घर के कपड़े और रेशमी एप्रन पहन रखे थे। वह खेतों की किसी थलस्ट्रिस जैसी नहीं थीं, बल्कि चूल्हे के पास बैठी एक शांत घरेलू महिला थीं। श्री मूर को उन पर पूरा भरोसा था। उन्हें उनसे तुरंत गंभीर लहजे में और सख्त हावभाव से बात करनी चाहिए थी। शायद वह ऐसा करते, अगर वह चंचल दिखतीं; लेकिन उनके हावभाव में कभी भी झिझक की कमी नहीं थी। एक कोमल प्रकार की युवावस्था की शर्म उनके चेहरे पर छाई हुई थी। शिक्षक चुपचाप खड़े रहे।

वह दरवाजे और उसकी मेज के बीच में रुक गई।

“क्या आपको मेरी जरूरत थी, महोदय?” उसने पूछा।

"मैंने हिम्मत करके आपको बुलवाया, मिस कील्डर, यानी आपसे कुछ मिनटों के लिए मुलाकात का अनुरोध किया।"

वह इंतजार करती रही; वह अपनी सुई चलाती रही।

“अच्छा, महोदय,” (आँखें उठाए बिना), “किस बारे में?”

“पहले बैठ जाइए। मैं जिस विषय पर बात करने जा रहा हूँ, वह काफी महत्वपूर्ण है। शायद मुझे इस विषय पर बात करने का अधिकार भी नहीं है। हो सकता है मुझे माफी मांगनी पड़े; या हो सकता है कोई माफी मुझे माफ न कर पाए। मैंने जो यह बात कही है, वह हेनरी से हुई बातचीत के कारण है। वह लड़का आपकी सेहत को लेकर दुखी है; आपके सभी दोस्त भी इस विषय पर दुखी हैं। मैं आपकी सेहत के बारे में ही बात करना चाहता हूँ।”

उन्होंने संक्षेप में कहा, "मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

“फिर भी बदल गया।”

“इससे सिर्फ मुझे ही फर्क पड़ता है। हम सब बदलते हैं।

“क्या आप बैठेंगी? पहले, मिस कील्डर, मेरा आप पर कुछ प्रभाव था: क्या अब भी है? क्या मैं यह समझ सकता हूँ कि मैं जो कह रहा हूँ उसे सकारात्मक अनुमान नहीं माना जा रहा है?”

"श्री मूर, मुझे कुछ फ्रेंच पढ़ने दीजिए, या मैं लैटिन व्याकरण का भी अध्ययन कर लूँगी, और आइए हम स्वच्छता संबंधी सभी चर्चाओं को स्थगित कर दें।"

“नहीं, नहीं। अब चर्चा का समय आ गया है।”

“तो आप इस पर चर्चा कर सकते हैं, लेकिन मुझे अपने लेख का विषय न बनाएं।

मैं एक स्वस्थ विषय हूं।”

"क्या आपको नहीं लगता कि जो बात मूल रूप से असत्य है, उसे बार-बार दोहराना गलत है?"

मैं कहता हूँ कि मैं ठीक हूँ। मुझे न तो खांसी है, न दर्द है और न ही बुखार है।

“क्या उस कथन में कोई अस्पष्टता नहीं है? क्या यह बिल्कुल सच है?”

"स्पष्ट सत्य।"

लुई मूर ने उसे गंभीरता से देखा।

उन्होंने कहा, "मुझे खुद में किसी वास्तविक बीमारी के लक्षण नहीं दिखते। लेकिन फिर आपमें ये बदलाव क्यों आया है?"

क्या मुझमें कोई बदलाव आया है?

हम कोशिश करेंगे। हम सबूत जुटाएंगे।

"कैसे?"

सबसे पहले तो मैं यह पूछना चाहता हूं, क्या आप पहले की तरह ही सोते हैं?

“मैं नहीं जानता; लेकिन इसका कारण यह नहीं है कि मैं बीमार हूँ।”

"क्या अब भी आपको उतनी ही भूख लगती है जितनी पहले लगती थी?"

“नहीं; लेकिन ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि मैं बीमार हूँ।”

“तुम्हें मेरी घड़ी की चेन में लगी ये छोटी सी अंगूठी याद है? ये मेरी माँ की थी, और मेरी छोटी उंगली के जोड़ में भी नहीं आती। तुमने कई बार शरारत में इसे चुरा लिया था। ये तुम्हारी तर्जनी उंगली में फिट हो जाती थी। अब कोशिश करो।”

उसने परीक्षण की अनुमति दी। दुबली-पतली उंगली से अंगूठी गिर गई। लुई ने उसे उठाया और चेन में वापस लगा दिया। उसके माथे पर बेचैनी के भाव उभर आए। शर्ली ने फिर कहा, "यह मेरी बीमारी की वजह से नहीं है।"

“तुम्हारी नींद, भूख और सेहत में ही कमी नहीं आई है,” मूर ने आगे कहा, “बल्कि तुम्हारा मनोबल भी हमेशा कम रहता है। इसके अलावा, तुम्हारी आँखों में घबराहट और बेचैनी झलकती है, तुम्हारे हाव-भाव में भी घबराहट दिखती है। ये लक्षण पहले तुममें नहीं थे।”

“श्री मूर, हम यहाँ थोड़ी देर रुकेंगे। आपने बिल्कुल सही कहा। मैं घबरा रहा हूँ। अब, किसी और बात पर आते हैं। कितना गीला मौसम है – लगातार मूसलाधार बारिश हो रही है!”

“क्या आप घबराई हुई हैं? हाँ; और अगर मिस कील्डर घबराई हुई हैं, तो इसका कोई कारण ज़रूर है। मुझे पता लगाने दीजिए। मुझे और करीब से देखने दीजिए। यह बीमारी शारीरिक नहीं है। मुझे पहले से ही इसका शक था। यह एक पल में आ गई। मुझे वह दिन याद है। मैंने बदलाव महसूस किया था। आपका दर्द मानसिक है।”

बिल्कुल नहीं। यह इतनी गरिमापूर्ण बात नहीं है - बस घबराहट है। अरे! इस विषय को छोड़ दीजिए।

“जब तक यह पूरी तरह से खत्म न हो जाए; तब तक नहीं। घबराहट और डर के बारे में हमेशा बताना चाहिए, ताकि वे दूर हो सकें। काश मुझमें समझाने की कला होती, और मैं आपको स्वेच्छा से बोलने के लिए मना पाता। मेरा मानना है कि आपके मामले में, स्वीकारोक्ति ही इलाज के आधे बराबर होगी।”

“नहीं,” शर्ली ने अचानक कहा। “काश ऐसा होना संभव होता; लेकिन मुझे डर है कि ऐसा नहीं है।”

उसने एक पल के लिए अपना काम रोक दिया। अब वह बैठ गई थी। मेज पर कोहनी टिकाकर उसने अपना सिर हाथ पर रख लिया। श्री मूर को देखकर ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने इस कठिन राह में आखिरकार कुछ सहारा पा लिया हो। वह गंभीर थी, और उसकी इच्छा में एक महत्वपूर्ण स्वीकारोक्ति छिपी थी; इसके बाद वह यह दावा नहीं कर सकती थी कि उसे कोई तकलीफ नहीं है।

शिक्षक ने उसे कुछ मिनटों के विश्राम और चिंतन का समय दिया, फिर वह अपने शिक्षण कार्य पर वापस लौटा। एक बार उसके होंठ बोलने के लिए उठे, लेकिन उसने अपना इरादा बदल दिया और मौन को लंबा खींच दिया। शर्ली ने अपनी नज़रें उसकी ओर उठाईं। यदि उसने अनुचित भावना प्रकट की होती, तो शायद वह हठपूर्वक मौन धारण कर लेता; लेकिन वह शांत, दृढ़ और भरोसेमंद लग रहा था।

“मेरी चाची, मेरे चचेरे भाई-बहन या मेरे चाचा से बेहतर है कि मैं तुम्हें बताऊँ। वे सब बहुत शोर मचाएँगे, और मुझे उसी शोर-शराबे से डर लगता है—वह घबराहट, वह हड़बड़ी, वह हंगामा। संक्षेप में, मुझे कभी भी घर के छोटे-मोटे हंगामे का केंद्र बनना पसंद नहीं था। तुम थोड़ा सा झटका सह सकती हो—है ना?”

"जरूरत पड़ने पर एक बेहतरीन वाला।"

उस आदमी के शरीर की एक भी मांसपेशी नहीं हिली, फिर भी उसका विशाल हृदय उसकी गहरी छाती में तेज़ी से धड़क रहा था। वह उसे क्या बताने वाली थी?

क्या कोई अपूरणीय क्षति हो चुकी थी?

“अगर मुझे लगता कि आपके पास जाना सही होगा, तो मैं इस मामले को एक पल के लिए भी नहीं छुपाती,” उसने आगे कहा। “मैं आपको तुरंत बता देती और सलाह मांगती।”

“मेरे पास आना सही क्यों नहीं था?”

“हो सकता है यह सही हो—मेरा मतलब यह नहीं है; लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे लगता है कि आपको परेशान करने का मुझे कोई हक नहीं है। यह घटना सिर्फ मुझसे संबंधित थी। मैं इसे अपने तक ही रखना चाहता था, और लोग मुझे ऐसा करने नहीं दे रहे हैं। मैं आपको बता दूं, मुझे चिंता का विषय बनना या गांव की गपशप का विषय बनना बिल्कुल पसंद नहीं है। इसके अलावा, हो सकता है इसका कोई नतीजा न निकले—भगवान जाने!”

मूर, हालांकि अनिश्चितता से व्याकुल थे, उन्होंने तुरंत स्पष्टीकरण की मांग नहीं की। उन्होंने न तो किसी हावभाव, न ही किसी नज़र, न ही किसी शब्द से अपनी अधीरता ज़ाहिर होने दी। उनकी शांति ने शर्ली को शांत किया; उनके आत्मविश्वास ने उसे आश्वस्त किया।

“मामूली कारणों से भी बड़े परिणाम निकल सकते हैं,” उसने अपनी कलाई से कंगन उतारते हुए कहा। फिर, अपनी आस्तीन खोलकर उसे थोड़ा ऊपर उठाते हुए बोली, “देखिए, श्रीमान मूर।”

उसने अपनी सफेद बांह पर एक निशान दिखाया - बल्कि एक गहरा, हालांकि ठीक हो चुका गड्ढा - जो जलने और कटने के बीच का कुछ था।

"मैं इसे ब्रायरफील्ड में आपके अलावा किसी और को नहीं दिखाऊंगा, क्योंकि आप इसे चुपचाप सहन कर सकते हैं।"

"निश्चित रूप से उस छोटे से निशान में चौंकाने वाली कोई बात नहीं है। इसका इतिहास ही सब कुछ स्पष्ट कर देगा।"

"भले ही यह छोटा सा निशान हो, इसने मेरी नींद छीन ली है और मुझे घबराया हुआ, दुबला-पतला और मूर्ख बना दिया है; क्योंकि उस छोटे से निशान की वजह से मुझे एक ऐसी संभावना का सामना करना पड़ रहा है जिसमें डर छिपा है।"

आस्तीन को दोबारा ठीक किया गया, कंगन को वापस लगा दिया गया।

"क्या तुम्हें पता है कि तुम मेरी परीक्षा ले रहे हो?" उसने मुस्कुराते हुए कहा। "मैं

वैसे तो धैर्यवान व्यक्ति हूँ, लेकिन मेरी धड़कन तेज़ हो रही है।"

"चाहे कुछ भी हो जाए, क्या आप मुझसे दोस्ती करेंगे, श्री मूर? क्या आप मुझे अपना संयम दिखाएंगे, और मुझे उत्तेजित कायरों के भरोसे नहीं छोड़ेंगे?"

मैं अभी कोई वादा नहीं करता। मुझे पूरी कहानी बताओ, और फिर जो भी वादा करना चाहो, कर लो।

"यह एक बहुत छोटी कहानी है। लगभग तीन सप्ताह पहले, एक दिन मैं इसाबेला और गर्ट्रूड के साथ टहलने निकली थी। वे मुझसे पहले घर पहुँच गईं; मैं जॉन से बात करने के लिए पीछे रुक गई। उससे विदा लेने के बाद, मैं गली में कुछ देर रुककर सुकून महसूस करने लगी, जहाँ सब कुछ एकदम शांत और छायादार था। मैं लड़कियों से बातें करते-करते थक गई थी, और उनसे दोबारा मिलने की कोई जल्दी नहीं थी। जब मैं फाटक के खंभे से टेक लगाकर खड़ी थी, अपने भविष्य के जीवन के बारे में कुछ बहुत सुखद विचार सोच रही थी — क्योंकि उस सुबह मैंने कल्पना की थी कि घटनाएँ उसी तरह घटने लगी हैं जैसा मैं लंबे समय से चाहती थी —

"अरे! ननेली तो पिछली शाम उसके साथ थी!" मूर ने मन ही मन सोचा।

"मुझे हांफने की आवाज़ सुनाई दी; एक कुत्ता गली में दौड़ता हुआ आया। मैं इस मोहल्ले के ज़्यादातर कुत्तों को जानता हूँ। यह मिस्टर सैम विन के कुत्तों में से एक, फोएबे थी। बेचारी अपना सिर नीचे किए, जीभ बाहर लटकाए दौड़ रही थी; ऐसा लग रहा था जैसे पूरे शरीर पर चोट के निशान हों। मैंने उसे आवाज़ दी। मेरा इरादा उसे घर में लाने और पानी व खाना खिलाने का था। मुझे पूरा यकीन था कि उसके साथ बुरा बर्ताव हुआ होगा। मिस्टर सैम अक्सर अपने कुत्तों को बेरहमी से पीटते हैं। वह इतनी घबराई हुई थी कि मुझे पहचान ही नहीं पाई; और जब मैंने उसके सिर पर हाथ फेरने की कोशिश की, तो वह मुड़ी और मेरी बांह पर झपटी। उसने इतनी ज़ोर से काटा कि खून निकल आया, फिर हांफती हुई भाग गई। तुरंत बाद, मिस्टर विन का रखवाला बंदूक लिए हुए आया। उसने पूछा कि क्या मैंने कोई कुत्ता देखा है। मैंने उसे बताया कि मैंने फोएबे को देखा है।"

"'महाराज, बेहतर होगा कि आप टार्टर को जंजीरों में बांध दें,' उसने कहा, 'और अपने लोगों को घर के अंदर रहने के लिए कह दें। मैं फोएबे को गोली मारने के लिए उसके पीछे गया हूँ, और दूल्हा दूसरे रास्ते चला गया है। वह गुस्से से पागल हो गई है।'"

श्री मूर अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गए और अपनी बाहों को अपनी छाती पर मोड़ लिया। मिस कील्डर ने रेशमी कैनवास का अपना चौकोर टुकड़ा फिर से उठाया और पार्मेस वायलेट की माला बनाना जारी रखा।

“और तुमने किसी को नहीं बताया, किसी से मदद नहीं मांगी, कोई इलाज नहीं करवाया? तुम मेरे पास नहीं आए?”

“मैं कक्षा के दरवाजे तक तो पहुँच गया; लेकिन वहाँ मेरा साहस टूट गया। मैंने मामले को टालना ही बेहतर समझा।”

“क्यों? इस दुनिया में आपके काम आने से बेहतर मैं और क्या मांग सकता हूँ?”

मेरा कोई दावा नहीं था।

“भयानक! और तुमने कुछ नहीं किया?”

“हाँ। मैं सीधे कपड़े धोने के कमरे में चली गई, जहाँ वे हफ्ते भर कपड़े इस्त्री करते रहते हैं, क्योंकि अब घर में बहुत सारे मेहमान आते हैं। जब नौकरानी कपड़ों में कर्लिंग या स्टार्च लगाने में व्यस्त थी, तो मैंने चूल्हे से एक इटैलियन इस्त्री निकाली और उसकी हल्की लाल चमकती नोक को अपनी बांह पर लगाया। मैंने उसे अच्छी तरह से अंदर तक घुसाया। इससे छोटा सा घाव जल गया। फिर मैं ऊपर चली गई।”

"मुझे यकीन है कि आपने कभी आह नहीं भरी?"

“मुझे यकीन है कि मुझे नहीं पता। मैं बहुत दुखी थी—बिल्कुल भी दृढ़ या शांत नहीं थी, मुझे लगता है। मेरे मन में कोई शांति नहीं थी।”

“आपमें एक शांति थी। मुझे याद है कि दोपहर के भोजन के दौरान मैं लगातार सुनती रही कि क्या आप ऊपर वाले कमरे में हिल-डुल रहे हैं। सब कुछ शांत था।”

मैं बिस्तर के नीचे बैठा था और यही सोच रहा था कि काश फोएबे ने मुझे न काटा होता।

और अकेले। तुम्हें एकांत पसंद है।

"मुझे क्षमा करें।"

आप सहानुभूति को तुच्छ समझते हैं।

"क्या मैं ऐसा करूँ, श्री मूर?"

"अपने शक्तिशाली दिमाग के साथ आपको मदद, सलाह और समाज से स्वतंत्र महसूस करना चाहिए।"

"ऐसा ही हो, क्योंकि इससे आपको प्रसन्नता होती है।"

वह मुस्कुराई। वह सावधानीपूर्वक और तेज़ी से अपनी कढ़ाई करती रही, लेकिन उसकी पलकें झपकीं, फिर चमकीं और फिर एक बूंद गिरी।

श्री मूर अपनी डेस्क पर आगे की ओर झुके, अपनी कुर्सी को हिलाया, और अपनी मुद्रा में बदलाव किया।

“अगर ऐसा नहीं है,” उसने अपनी आवाज में एक अजीब, मधुर बदलाव के साथ पूछा, “तो फिर ऐसा कैसे हो सकता है?”

"मुझें नहीं पता।"

“तुम जानते तो हो, पर बोलोगे नहीं। सब कुछ अपने अंदर ही बंद रखना होगा।”

क्योंकि इसे साझा करने लायक नहीं है।

क्योंकि आपके भरोसे के लिए जो कीमत आप मांगते हैं, वह कोई नहीं दे सकता। कोई इतना अमीर नहीं है कि उसे खरीद सके। किसी के पास वह सम्मान, बुद्धि, शक्ति नहीं है जो आप अपने सलाहकार में चाहते हैं। इंग्लैंड में ऐसा कोई कंधा नहीं है जिस पर आप सहारा लेने के लिए हाथ रख सकें, और उससे भी कहीं कम कोई ऐसा सीना है जिस पर आप अपना सिर रख सकें। बेशक, आपको अकेले ही रहना होगा।

“जरूरत पड़ने पर मैं अकेले रह सकता हूँ। लेकिन सवाल यह नहीं है कि कैसे जिएं, बल्कि यह है कि अकेले कैसे मरें। यह बात मुझे कहीं ज्यादा भयावह लगती है।”

“क्या आप वायरस के प्रभावों को लेकर चिंतित हैं? क्या आप अनिश्चित काल तक चलने वाले, भयावह विनाश की आशंका जता रहे हैं?”

उसने सिर झुकाया।

"तुम बहुत घबराई हुई और स्त्री जैसी हो।"

"आपने दो मिनट पहले मेरी तेज बुद्धि की तारीफ की थी।"

“आप बहुत ही स्त्री-सुलभ हैं। अगर इस पूरे मामले की निष्पक्ष रूप से जांच और चर्चा की जाए, तो मुझे पूरा विश्वास है कि यह पता चलेगा कि आपकी मृत्यु का कोई खतरा नहीं है।”

“आमीन! अगर ईश्वर की इच्छा हो तो मैं जीने के लिए पूरी तरह से तैयार हूँ। मैंने जीवन का आनंद लिया है।”

“तुम्हारे गुणों और स्वभाव को देखते हुए यह और मीठा कैसे हो सकता है? क्या तुम्हें सचमुच उम्मीद है कि तुम जलभराव से ग्रसित हो जाओगे और पागलों की तरह

मर जाओगे?”

मुझे इसकी उम्मीद थी, और मुझे इसका डर भी था। लेकिन अभी मुझे किसी बात का डर नहीं है।

“और मैं भी आपकी वजह से ऐसा नहीं सोचता। मुझे संदेह है कि वायरस का एक छोटा सा कण भी आपके खून में मिला होगा; और अगर मिला भी है, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप युवा, स्वस्थ और पूरी तरह से ठीक हैं, इसलिए आपको कोई नुकसान नहीं होगा। बाकी के लिए, मैं पता लगाऊंगा कि क्या कुत्ता सचमुच पागल था। मेरा मानना है कि वह पागल नहीं था।”

"किसी को मत बताना कि उसने मुझे काट लिया।"

“मैं ऐसा क्यों करूँ, जब मुझे विश्वास है कि यह काटना उतना ही हानिरहित है जितना इस पेननाइफ से लगा एक छोटा सा घाव? निश्चिंत रहो। मैं निश्चिंत हूँ, हालाँकि मैं तुम्हारे जीवन को उतना ही महत्व देता हूँ जितना कि अनंत काल में सुख पाने के अपने अवसर को। ऊपर देखो।”

“क्यों, श्री मूर?”

मैं देखना चाहता हूँ कि क्या तुम खुश होते हो। अपना काम छोड़ दो; अपना सिर ऊपर उठाओ।

"वहाँ - - "

“मेरी तरफ देखो। धन्यवाद। और क्या बादल टूट गया है?”

मुझे किसी चीज से डर नहीं लगता।

क्या आपका मन अपनी स्वाभाविक धूप भरी जलवायु में वापस आ गया है?

मैं बहुत संतुष्ट हूँ; लेकिन मुझे आपका वादा चाहिए।

“हुक्म चलाओ।”

“जानती हो, अगर मेरी आशंका के मुताबिक सबसे बुरा हुआ, तो वे मुझे गला घोंटकर मार डालेंगे। तुम्हें मुस्कुराने की ज़रूरत नहीं है। वे ऐसा करेंगे; वे हमेशा ऐसा ही करते हैं। मेरे चाचा डर, कमजोरी और बेचैनी से भर उठेंगे; और यही एक उपाय उन्हें सूझेगा। घर में तुम्हारे सिवा कोई भी शांत नहीं रहेगा। अब मुझसे दोस्ती करने का वादा करो—मिस्टर सिम्पसन को मुझसे दूर रखो, हेनरी को मेरे पास मत आने दो, कहीं मैं उसे चोट न पहुँचा दूँ। ध्यान रखना—अपना ख्याल भी रखना। लेकिन मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाऊँगी; मुझे पता है मैं नहीं पहुँचाऊँगी। सर्जनों के लिए कमरे का

दरवाज़ा बंद कर दो; अगर वे अंदर आ जाएँ तो उन्हें बाहर निकाल दो। न तो जवान और न ही बूढ़े मैकटर्क को मुझ पर हाथ लगाने दो; न ही उनके साथी मिस्टर ग्रीव्स को; और अंत में, अगर मैं परेशान करूँ, तो अपने हाथों से मुझे एक तेज़ नशीली दवा दे देना—लाउडैनम की इतनी पक्की खुराक कि कोई गलती न रह जाए। वादा करो कि तुम ऐसा करोगी।”

मूर अपनी मेज से उठे और कमरे में एक-दो चक्कर लगाने के लिए थोड़ा आराम किया। शर्ली की कुर्सी के पीछे रुककर, वे उसके ऊपर झुके और धीमी, दृढ़ आवाज में बोले, "मैं वादा करता हूँ कि तुम जो भी मांगोगी, बिना किसी टिप्पणी या संकोच के, मैं वह सब कुछ दूंगा।"

“अगर किसी महिला की मदद की ज़रूरत हो, तो मेरी नौकरानी, श्रीमती गिल को बुला लेना। अगर मेरी मृत्यु हो जाए, तो मुझे अंतिम संस्कार के लिए वही तैयार करना। वह मुझसे बहुत लगाव रखती है। उसने बार-बार मेरा दुखड़ा रोया, और मैंने बार-बार उसे माफ़ किया। अब वह मुझसे प्यार करती है, और मुझसे एक पिन भी नहीं छीनेगी। विश्वास ने उसे ईमानदार बनाया है; सहनशीलता ने उसे दयालु बनाया है। आज मैं उसकी ईमानदारी, उसके साहस और उसके स्नेह पर पूरा भरोसा कर सकता हूँ। उसे बुला लेना; लेकिन मेरी अच्छी चाची और मेरे डरपोक चचेरे भाइयों को दूर रखना। एक बार फिर, वादा करो।”

"मैं वादा करता हूँ।"

"यह बात तुममें अच्छी है," उसने ऊपर उसकी ओर देखते हुए मुस्कुराते हुए कहा, जब वह उसकी ओर झुका हुआ था।

“क्या यह अच्छा है? क्या इससे सुकून मिलता है?”

"बहुत ज्यादा।"

“मैं और श्रीमती गिल, हर उस मुश्किल घड़ी में आपके साथ रहेंगे, जहाँ शांति और निष्ठा की आवश्यकता होगी। कोई भी उतावला या कायर हाथ दखल नहीं देगा।”

"फिर भी आप मुझे बचकाना समझते हैं?"

"मैं करता हूं।"

“अरे! तुम मुझसे घृणा करते हो।”

क्या हम बच्चों से नफरत करते हैं?

“सच कहूँ तो, श्री मूर, मैं न तो उतना बलवान हूँ और न ही मुझे अपने बल पर

उतना घमंड है जितना लोग सोचते हैं; और न ही मैं सहानुभूति के प्रति इतना उदासीन हूँ। लेकिन जब मुझे कोई दुख होता है, तो मैं उसे अपने प्रियजनों से साझा करने से डरता हूँ, कहीं उन्हें दुख न पहुँचे; और जिन लोगों के प्रति मैं उदासीनता का भाव रखता हूँ, उनसे शिकायत करने की तो बात ही छोड़ दीजिए। आख़िरकार, आपको मुझे बचकाना कहकर ताना नहीं मारना चाहिए, क्योंकि अगर आप भी पिछले तीन हफ़्तों से मेरी तरह दुखी होते, तो आपको भी किसी दोस्त की ज़रूरत होती।”

हम सभी को एक दोस्त चाहिए होता है, है ना?

हम सभी जिनके स्वभाव में कुछ अच्छाई है।

"ठीक है, आपके पास कैरोलिन हेलस्टोन हैं।"

“जी हां। और आपके पास मिस्टर हॉल भी हैं।”

जी हां। श्रीमती प्रायर एक बुद्धिमान और नेक महिला हैं। जब आपको सलाह की जरूरत हो, तो वह आपको सलाह दे सकती हैं।

"आपकी तरफ से, आपके पास आपका भाई रॉबर्ट है।"

“किसी भी तरह के मतभेद के लिए, रेवरेंड मैथ्यूसन हेलस्टोन, एम.ए., मौजूद हैं; किसी भी तरह के मतभेद के लिए हिराम यॉर्क, एस्क्वायर मौजूद हैं। दोनों एल्डर आपको सम्मान देते हैं।”

“मैंने श्रीमती यॉर्क को किसी भी युवक के प्रति इतना ममतामयी कभी नहीं देखा जितना वह तुम्हारे प्रति हैं। मुझे नहीं पता तुमने उनका दिल कैसे जीता, लेकिन वह अपने बेटों से भी ज़्यादा तुम्हारे प्रति स्नेह रखती हैं। इसके अलावा, तुम्हारी बहन हॉर्टेंस भी है।”

"ऐसा लगता है कि हम दोनों के पास पर्याप्त सुविधाएं हैं।"

ऐसा प्रतीत होता है।

हमें कितना आभारी होना चाहिए!

"हाँ।"

“कितना संतोष मिला!”

"हाँ।"

मैं फिलहाल लगभग संतुष्ट और बहुत आभारी हूँ। कृतज्ञता एक दिव्य भावना है। यह हृदय को भर देती है, लेकिन इतना नहीं कि वह फट जाए; यह उसे गर्माहट देती है, लेकिन इतना नहीं कि बुखार हो जाए। मुझे आनंद का स्वाद धीरे-धीरे लेना अच्छा

लगता है। जल्दबाजी में ग्रहण करने पर मुझे उसका स्वाद नहीं पता चलता।

मिस कील्डर की कुर्सी के पीछे झुके हुए मूर, उनकी उंगलियों की तेज़ गति को देख रहे थे, जैसे-जैसे उनके नीचे हरे और बैंगनी रंग की माला बढ़ती जा रही थी। कुछ देर रुकने के बाद, उन्होंने फिर पूछा, "क्या परछाई पूरी तरह गायब हो गई है?"

“बिल्कुल। दो घंटे पहले मैं जिस स्थिति में था और अब जिस स्थिति में हूँ, ये दो अलग-अलग अवस्थाएँ हैं। मेरा मानना है, श्री मूर, चुपचाप पाले गए दुख और भय टाइटन के शिशुओं की तरह बढ़ते हैं।”

"क्या तुम अब ऐसी भावनाओं को चुपचाप संजोकर नहीं रखोगे?"

"अगर मैं बोलने की हिम्मत करूं तो नहीं।"

“‘हिम्मत’ शब्द का प्रयोग करके आप किसका संकेत दे रहे हैं?”

"आपको।"

“यह मुझ पर कैसे लागू होता है?”

"आपकी सादगी और शर्म की वजह से।"

मैं इतना संयमी और शर्मीला क्यों हूँ?

क्योंकि तुम्हें गर्व है।

मुझे गर्व क्यों है?

मैं जानना चाहूंगा। क्या आप कृपया मुझे बता पाएंगे?

"शायद, इसका एक कारण यह है कि मैं गरीब हूँ। गरीबी और स्वाभिमान अक्सर साथ-साथ चलते हैं।"

“यह तो बहुत ही बढ़िया कारण है। मुझे तो बहुत खुशी होगी अगर मुझे कोई और ऐसा कारण मिल जाए जो इसके साथ मेल खाए। उस कछुए का जोड़ा बनाइए, मिस्टर मूर।”

“तुरंत। आपको क्या लगता है कि संयमी गरीबी और उसके अनेक रंगों वाले मनमौजी स्वभाव से शादी करना कैसा रहेगा?”

क्या तुम मनमौजी हो?

"तुम हो।"

“यह मानहानि का आरोप है। मैं चट्टान की तरह अडिग हूँ, ध्रुव तारे की तरह स्थिर हूँ।”

“मैं सुबह-सुबह आसमान की ओर देखता हूँ और एक सुंदर, परिपूर्ण इंद्रधनुष

देखता हूँ, जो आशा की किरण से जगमगाता हुआ, जीवन के बादलों से घिरे आकाश को भव्यता से फैलाए हुए है। एक घंटे बाद मैं फिर देखता हूँ: आधा इंद्रधनुष गायब हो चुका है और बाकी धुंधला हो गया है। और भी देर बाद, कठोर आकाश इस बात से इनकार करता है कि उसने कभी आशा का इतना सौम्य प्रतीक धारण किया था।”

"खैर, श्री मूर, आपको अपने इन बदलते मिजाज से लड़ना चाहिए। यही आपकी सबसे बड़ी कमजोरी है। कोई नहीं जानता कि आप किस मूड में होंगे।"

“मिस कील्डर, एक बार दो साल तक मेरी एक छात्रा थी जो मुझे बहुत प्रिय हो गई थी। हेनरी प्रिय है, लेकिन वह उससे भी अधिक प्रिय थी। हेनरी मुझे कभी परेशान नहीं करता; वह—खैर, वह करती थी। मुझे लगता है कि वह चौबीसों घंटे में से तेईस घंटे मुझे तंग करती थी—”

वह आपके साथ तीन घंटे से अधिक या ज़्यादा से ज़्यादा छह घंटे तक ही रहती थी।

“वह कभी-कभी मेरे प्याले से पेय गिरा देती थी और मेरी थाली से खाना चुरा लेती थी; और जब उसने मुझे एक दिन भूखा रखा (और यह मुझे पसंद नहीं आया, क्योंकि मैं उचित रुचि के साथ भोजन करने और भौतिक सुख-सुविधाओं के तर्कसंगत आनंद को उचित महत्व देने का आदी हूं) — —“

“मुझे पता है। मैं बता सकती हूँ कि आपको किस तरह का खाना सबसे ज्यादा पसंद है—बिल्कुल सही-सही। मुझे ठीक-ठीक पता है कि आपको कौन से व्यंजन पसंद हैं—”

“उसने इन व्यंजनों का स्वाद बिगाड़ दिया और मुझे भी मूर्ख बना दिया। मुझे अच्छी नींद पसंद है। अपने शांत दिनों में, जब मैं अपनी मर्ज़ी का मालिक था, मैं कभी रात के लंबे होने पर शिकायत नहीं करता था, न ही अपने बिस्तर के कांटों को कोसता था। उसने सब कुछ बदल दिया।”

श्री मूर — — “

“और मुझसे मन की शांति और जीवन की सहजता छीनकर, उसने मुझसे खुद को भी छीन लिया—बिल्कुल बेरहमी से, मानो उसके जाने के बाद दुनिया मेरे लिए वैसी ही रहेगी। मुझे पता था कि मैं उससे कभी न कभी फिर मिलूंगा। दो साल बाद, संयोग से हम फिर से उसके घर में मिले, जहाँ वह मालकिन थी। आपको क्या लगता है, उसने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया होगा, मिस कील्डर?”

“जैसे कोई व्यक्ति आपसे सीखे गए पाठों से खूब लाभ उठा चुका हो।”

“उसने मेरा अभिमानपूर्ण ढंग से स्वागत किया। उसने हमारे बीच काफी दूरी बनाए रखी और अपने संयमित हावभाव, कभी-कभार मिलने वाली उदासीन निगाहों और शांत, विनम्र शब्दों से मुझे अलग रखा।”

“वह एक उत्कृष्ट छात्रा थी! आपको दूर-दूर देखकर उसने तुरंत पीछे हटना सीख लिया। महोदय, कृपया उसके इस आत्मविश्वास में अपने स्वयं के शीतलतापन की तुलना में एक सावधानीपूर्वक सुधार की सराहना करें।”

"अंतरात्मा, सम्मान और सबसे निरंकुश आवश्यकता ने मुझे उससे अलग कर दिया और भारी बेड़ियों से मुझे अलग रखा। वह स्वतंत्र थी: वह दयालु हो सकती थी।"

"उन्हें कभी भी अपने आत्मसम्मान से समझौता करने या उस जगह जाने की आजादी नहीं थी जहां उन्हें ठुकरा दिया गया था।"

“फिर उसका व्यवहार अस्थिर हो गया; वह पहले की तरह ही मुझे लुभाती रही। जब मुझे लगा कि मैंने उसे केवल एक ऊंचे दर्जे की अजनबी के रूप में ही देखा है, तब वह अचानक मुझे प्रेमपूर्ण सरलता की ऐसी झलक दिखाती—वह मुझे पुनर्जीवन देने वाली सहानुभूति की ऐसी किरण से भर देती, वह अपने कोमल, प्रसन्न और दयालु वार्तालाप से एक घंटे को आनंदमय बना देती—कि मैं उसके प्रति अपने दिल में वैसी ही बंदिश नहीं रख पाता, जैसे मैं उसके सामने अपना दरवाजा बंद नहीं कर पाता। समझाओ कि वह मुझे इतना परेशान क्यों करती थी।”

वह पूरी तरह से बहिष्कृत रहना बर्दाश्त नहीं कर सकती थी; और फिर कभी-कभी, किसी ठंडे, गीले दिन, उसके मन में यह विचार आता था कि स्कूल का कमरा कोई खुशनुमा जगह नहीं है, और उसे लगता था कि उसे जाकर देखना चाहिए कि क्या आप और हेनरी ने आग अच्छी तरह से जला रखी है; और एक बार वहाँ पहुँचने के बाद, उसे वहाँ रहना अच्छा लगता था।

लेकिन उसे अपना व्यवहार नहीं बदलना चाहिए। अगर वह आती भी है, तो उसे अक्सर आना चाहिए।

"घुसपैठ जैसी भी कोई चीज होती है।"

"कल तुम वैसे नहीं रहोगे जैसे आज हो।"

मुझे नहीं पता। क्या आप बता सकते हैं?

“मैं पागल नहीं हूँ, परम आदरणीय बेरेनिस! हम एक दिन सपने देखने में बिता

सकते हैं, लेकिन अगले दिन हमें जागना ही होगा; और जिस सुबह आपका विवाह सर फिलिप ननेली से होगा, उस सुबह मैं अपने उद्देश्य के लिए जाग जाऊँगा। आग की रोशनी आप और मुझ पर पड़ रही है, और मिस कील्डर, शीशे में हम दोनों साफ़ दिखाई दे रहे हैं; और मैं बात करते-करते लगातार तस्वीर को ही देख रहा हूँ। ऊपर देखो! तुम्हारे और मेरे सिर में कितना फ़र्क है! मैं तीस साल की उम्र में भी बूढ़ा दिखता हूँ!"

"तुम बहुत गंभीर हो; तुम्हारा माथा चौकोर है; और तुम्हारा चेहरा पीला पड़ गया है। मैं तुम्हें कभी जवान आदमी नहीं मानता, न ही रॉबर्ट का छोटा बेटा।"

"क्या ऐसा नहीं है? मुझे तो लगा ही था। कल्पना कीजिए रॉबर्ट का साफ-सुथरा, आकर्षक चेहरा मेरे कंधे के ऊपर से झाँक रहा है। क्या वह आभास मेरे भारी-भरकम शरीर की अस्पष्ट बनावट को स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं करता? देखो!" (वह चौंक गया), "मैं पिछले आधे घंटे से उस तार के कंपन की उम्मीद कर रहा था।"

खाने की घंटी बजी और शर्ली उठ खड़ी हुई।

"श्री मूर," उसने अपने रेशमी वस्त्र समेटते हुए कहा, "क्या आपने हाल ही में अपने भाई से बात की है? क्या आप जानते हैं कि वह इतने लंबे समय तक शहर में क्यों रुका हुआ है? क्या वह लौटने की बात कर रहा है?"

"वह लौटने की बात करता है; लेकिन उसकी लंबी अनुपस्थिति का कारण मैं नहीं बता सकता। सच कहूँ तो, मुझे लगा कि यॉर्कशायर में आपसे बेहतर कोई नहीं जानता कि वह घर लौटने में इतना अनिच्छुक क्यों है।"

मिस कील्डर के गालों पर एक लालिमा छा गई।

"उसे पत्र लिखकर आने का आग्रह करो," उसने कहा। "मैं जानती हूँ कि अब तक उसकी अनुपस्थिति को टालने में कोई अन्याय नहीं हुआ है। जब तक व्यापार इतना खराब है, चक्की को चालू रखना ठीक है; लेकिन उसे काउंटी छोड़कर नहीं जाना चाहिए।"

"मुझे पता है," लुई ने कहा, "कि जाने से एक शाम पहले उनकी आपसे मुलाकात हुई थी, और मैंने उन्हें उसके बाद फील्डहेड से निकलते देखा था। मैंने उनके चेहरे के हाव-भाव पढ़े, या पढ़ने की कोशिश की। उन्होंने मुझसे मुंह फेर लिया। मुझे समझ आ गया कि वे लंबे समय तक दूर रहेंगे। कुछ सुंदर, कोमल उंगलियां किसी आदमी के नाजुक स्वाभिमान को चूर-चूर करने में माहिर होती हैं। मुझे लगता है कि रॉबर्ट ने

अपनी मर्दाना सुंदरता और स्वाभाविक सज्जनता पर बहुत ज्यादा भरोसा कर लिया था। वे लोग बेहतर स्थिति में होते हैं जो सुविधाओं से वंचित होते हैं और भ्रम नहीं पाल सकते। लेकिन मैं लिखूंगा और आपको बता दूंगा कि आप उन्हें वापस लौटने की सलाह दें।”

"यह मत कहो कि मैं उसकी वापसी की सलाह देता हूँ, बल्कि यह कहो कि उसकी वापसी उचित है।"

दूसरी घंटी बजी और मिस कील्डर ने उसकी पुकार का पालन किया।

अध्याय 29।

लुई मूर।

लुई मूर को शांत जीवन जीने की आदत थी। शांत स्वभाव का होने के कारण वह इसे अधिकांश लोगों की तुलना में बेहतर ढंग से सहन कर लेता था। अपने मन और हृदय में अपनी एक विशाल दुनिया होने के कारण, वह वास्तविक दुनिया के एक छोटे, शांत कोने में कैद को बहुत धैर्य से सह लेता था।

आज शाम फील्डहेड में कितनी खामोशी छाई है! मूर को छोड़कर सभी - मिस कील्डर, सिम्पसन परिवार के सभी सदस्य, यहाँ तक कि हेनरी भी - ननेली चले गए हैं। सर फिलिप चाहते थे कि वे आएं; वे उन्हें अपनी माँ और बहनों से मिलवाना चाहते थे, जो इस समय मठ में हैं। बैरोनेट की दयालुता के कारण, उन्होंने ट्यूटर को भी बुलाया; लेकिन ट्यूटर ननेली वन के सबसे घने, सबसे काले, सबसे पुराने ओक के पेड़ की छाँव में, अर्ल ऑफ हंटिंगडन के भूत और उसके साथियों के एक धुंधले समूह

से मिलने का समय तय करना ज़्यादा पसंद करते। हाँ, वे उस खंडहर हो चुके पवित्र स्थान के गीले और खरपतवार से ढके अवशेषों के बीच, जंगल के भीतर सड़ते हुए, किसी प्रेत मठाध्यक्षा या धुंध से पीली पड़ी नन से गुप्त मुलाकात करना ज़्यादा पसंद करते। लुई मूर आज रात अपने पास किसी के होने के लिए तरस रहे हैं; लेकिन न तो बालक बैरोनेट, न ही उसकी दयालु लेकिन कठोर माँ, न ही उसकी कुलीन बहनें, और न ही सिम्पसन परिवार का कोई सदस्य।

यह रात शांत नहीं है; विषुव अभी भी अपने तूफानों से जूझ रहा है। दिन की मूसलाधार बारिश थम गई है; विशाल बादल छंटकर आकाश से दूर चला गया है, मानो नीले रंग का सागर छोड़कर चला गया हो, लेकिन एक निरंतर, लंबी, तेज़ गति वाली चांदनी की आंधी में उछलता हुआ। चंद्रमा शानदार ढंग से राज कर रहा है, आंधी से प्रसन्न, मानो उसने प्रेम से स्वयं को उसके प्रचंड स्पर्श में सौंप दिया हो। आज रात कोई एंडिमियन अपनी देवी की प्रतीक्षा नहीं करेगा। पहाड़ों पर कोई भेड़-बकरियां नहीं हैं; और यह अच्छा है, क्योंकि आज रात वह इओलस का स्वागत कर रही है।

स्कूल के कमरे में बैठे मूर ने दूसरे चबूतरे और हॉल के सामने से आती हुई आंधी की गर्जना सुनी। यह छोर सुरक्षित था। उसे किसी आश्रय की आवश्यकता नहीं थी; उसे न तो दबी हुई आवाज़ों की चाह थी और न ही किसी छिपी हुई जगह की।

“सभी बैठक कक्ष खाली हैं,” उसने कहा। “मैं इस कोठरी से बहुत दुखी हूँ।”

वह उसे छोड़कर उस जगह चला गया जहाँ की खिड़कियाँ, उसके अपने कमरे की जालीदार खिड़कियों से कहीं अधिक बड़ी और खुली थीं, और शरद ऋतु की रात के आकाश के गहरे नीले, चाँदी जैसे रंग के, मनमोहक और विस्तृत दृश्य को निर्बाध रूप से प्रकट कर रही थीं। उसके पास कोई मोमबत्ती नहीं थी; न ही दीपक की आवश्यकता थी और न ही आग की। बादलों से घिरी और उतार-चढ़ाव वाली चंद्रमा की चौड़ी और स्पष्ट किरणें हर मंजिल और दीवार पर चमक रही थीं।

मूर सभी कमरों में घूमता है। ऐसा लगता है मानो वह किसी प्रेत का पीछा करते हुए एक बैठक से दूसरी बैठक तक जा रहा हो। ओक के कमरे में वह रुक जाता है। यह कमरा बैठक कक्ष की तरह ठंडा, चमकीला और अग्निविहीन नहीं है। चूल्हा गर्म और लाल है; अंगारे अपनी स्पष्ट चमक की तीव्र गर्मी में झनझना रहे हैं; कालीन के पास एक छोटी सी मेज है, उस पर एक डेस्क है और उसके पास एक कुर्सी है।

क्या मूर द्वारा खोजी गई छवि उस कुर्सी पर विराजमान है? अगर आप उसे उसके

सामने खड़े देखें तो आपको ऐसा ही लगेगा। उसकी आँखों में अब उतनी ही रुचि और चेहरे पर उतना ही महत्व है, मानो इस एकांत में उसे कोई जीवित साथी मिल गया हो और वह उससे बात करने जा रहा हो।

वह नई-नई चीज़ें खोजता है। एक थैला—एक छोटा सा साटन का थैला—कुर्सी की पीठ पर टंगा है। मेज खुली है, चाबियाँ ताले में लगी हैं। एक सुंदर मुहर, एक चांदी का पेन, हरे पत्ते पर पके हुए फलों के एक-दो गहरे लाल बेर, एक छोटा, साफ, नाजुक दस्ताना—ये छोटी-छोटी चीज़ें एक साथ उस स्टैंड को सजाती भी हैं और अव्यवस्थित भी करती हैं जिस पर वे बिखरी हैं। व्यवस्था किसी तस्वीर में बारीकियों की अनुमति नहीं देती—वह उन्हें बड़े करीने से समेट कर रखती है; लेकिन बारीकियाँ ही आकर्षण बढ़ाती हैं।

मूर ने बात की।

“उसकी छाप,” उसने कहा। “यहाँ वो रही है—लापरवाह, आकर्षक!—शायद जल्दबाजी में चली गई और वापस आकर सब ठीक करना भूल गई। वो अपने पदचिह्नों में आकर्षण क्यों छोड़ जाती है? उसे ये बेपरवाह रहने और कभी किसी को ठेस न पहुँचाने का गुण कहाँ से मिला? उसमें हमेशा कुछ न कुछ डांटने लायक होता है, और डांट कभी दिल में असंतोष नहीं भरती, बल्कि उसके प्रेमी या पति के लिए, जब शब्दों में कुछ देर तक रिसने के बाद, उसके होठों से चुंबन में घुल जाती है। किसी भी दूसरी औरत की प्रशंसा या तारीफ में पूरा दिन बिताने से बेहतर है कि उससे आधा घंटा बहस करने में बिताया जाए। क्या मैं बड़बड़ा रहा हूँ? आत्म-प्रशंसा कर रहा हूँ? बस करो।”

उसने इसे रोक दिया। वह सोच-विचार करता रहा, और फिर उसने अपनी शाम के आराम के लिए एक व्यवस्था की।

उसने चौड़ी खिड़की और राजसी चाँद पर पर्दे गिरा दिए। उसने राजा, दरबार और तारों की सेनाओं को बाहर कर दिया; उसने तेज़ लेकिन जल्दी बुझती आग में और ईंधन डाला; उसने मेज पर रखी दो मोमबत्तियों में से एक जलाई; उसने वर्कस्टैंड के पास उसके सामने एक और कुर्सी रखी; और फिर वह बैठ गया। उसका अगला काम अपनी जेब से खाली पन्नों की एक छोटी, मोटी किताब निकालना, पेंसिल निकालना और तंग, सघन लिखावट में लिखना शुरू करना था। पाठक, ज़रूर पास आओ। शर्माओ मत। निडर होकर उसके कंधे पर झुक जाओ और जैसे-जैसे वह लिखता जाए, पढ़ो।

"नौ बज गए हैं; मुझे यकीन है कि गाड़ी ग्यारह बजे से पहले नहीं लौटेगी। तब तक मेरी आजादी है; तब तक मैं उसके कमरे में रह सकती हूँ, उसकी कुर्सी के सामने बैठ सकती हूँ, अपनी कोहनी उसकी मेज पर टिका सकती हूँ, और उसकी छोटी-छोटी यादगार चीजें अपने पास रख सकती हूँ।"

मुझे एकांत बहुत पसंद था—मैं उसे कुछ शांत और गंभीर, फिर भी सुंदर अप्सरा समझता था; एक ओरेड, जो एकांत पर्वतीय दर्रों से मेरे पास उतरती थी, उसके वस्त्रों में पहाड़ियों की नीली धुंध का अंश और उसकी सांसों में उनकी ठंडी हवा का एहसास होता था, लेकिन उसके हावभाव में उनकी गंभीर सुंदरता भी झलकती थी। मैं एक समय उससे शांतिपूर्वक प्रेम निवेदन करता था, और कल्पना करता था कि जब मैं उसे अपने हाथों में थामता था तो मेरा दिल हल्का हो जाता था—बिल्कुल मौन, फिर भी राजसी।

"उस दिन से जब मैंने एस. को कक्षा में बुलाया, और वह आकर मेरे पास बैठ गई; जब से उसने अपने मन की पीड़ा मुझसे साझा की, मेरी सुरक्षा मांगी, मेरी शक्ति की अपील की — उस क्षण से मुझे एकांत से घृणा होने लगी है। निर्मम भाव, मांसहीन कंकाल, पुत्री, माता और मृत्यु की साथी!"

"अपने दिल के सबसे करीब और प्रिय विषय के बारे में लिखना सुखद है। कोई भी मुझसे यह छोटी सी किताब नहीं छीन सकता, और इस कलम के माध्यम से मैं इसमें वह सब कह सकता हूँ जो मैं कहना चाहता हूँ - वह सब जो मैं किसी जीवित प्राणी से कहने की हिम्मत नहीं करता - वह सब जो मैं ज़ोर से सोचने की हिम्मत नहीं करता।"

उस शाम के बाद से हमारी मुलाक़ात बहुत कम हुई है। एक बार, जब मैं ड्राइंग रूम में अकेला था और हेनरी की कोई किताब ढूंढ रहा था, तभी वह स्टिलब्रो में होने वाले कॉन्सर्ट के लिए तैयार होकर अंदर आई। शर्म - उसकी शर्म, मेरी नहीं - ने हमारे बीच एक पर्दा सा बना दिया था। मैंने 'कुंवारी लड़की की शालीनता' के बारे में बहुत कुछ सुना और पढ़ा है, लेकिन सही इस्तेमाल करने पर, और घिसे-पिटे शब्दों से दूर, ये शब्द अच्छे और उपयुक्त हैं। जब उसने मुझे चुपचाप लेकिन शालीनता से पहचानते हुए खिड़की की ओर प्रस्थान किया, तो मैं उसे अपने मन में 'निर्मल कुंवारी' के अलावा कुछ नहीं कह सका। मेरी नज़र में, एक कोमल वैभव ने उसे ढँक रखा था, और लड़की की शालीनता उसके आभामंडल की तरह थी। मैं शायद सबसे मूर्ख हूँ, क्योंकि मैं सबसे साधारण पुरुषों में से एक हूँ, लेकिन सच में उसकी उस शर्म ने मुझे बहुत

गहराई से छुआ; इसने मेरी भावनाओं को झकझोर दिया। मैं शायद एक मूर्ख सा दिख रहा था। मैं स्वर्ग के जीवन से भर गया था, जब उसने अपनी नज़र मेरी नज़र से हटाई, और धीरे से अपना सिर झुकाकर उस आभा को छुपाया। उसके गाल का।

“मैं जानता हूँ कि ये एक स्वप्नद्रष्टा की बातें हैं— एक भावुक, रोमांटिक पागल की। मैं सपने देखता हूँ। मैं कभी-कभार सपने देखता हूँ; और अगर उसने मेरी साधारण रचना में रोमांस भर दिया है, तो मैं इसमें क्या कर सकता हूँ?”

कभी-कभी तो वो बिल्कुल बच्ची जैसी लगती है! कितनी भोली, अनपढ़! मैं उसे अभी अपने चेहरे की ओर देखते हुए देख रही हूँ, मानो मुझसे विनती कर रही हो कि मैं उन्हें उसे गला घोंटकर मारने से रोकूँ और उसे कोई तेज़ नशीली दवा ज़रूर दूँ। मैं उसे यह स्वीकार करते हुए देख रही हूँ कि वो उतनी आत्मनिर्भर, उतनी सहानुभूतिहीन नहीं थी जितना लोग सोचते थे। मैं उसकी पलकों से चुपके से एक आँसू टपकते हुए देख रही हूँ। उसने कहा कि मैं उसे बचकाना समझती हूँ, और मैं समझती भी थी। उसने सोचा कि मैं उससे नफ़रत करती हूँ। नफ़रत! उसके पास और उससे ऊपर होने का एहसास कितना सुखद था—उसका सहारा बनने का एक स्वाभाविक अधिकार और शक्ति का एहसास होना, जैसे एक पति अपनी पत्नी का सहारा बनता है।

मैं उसकी खूबियों की पूजा करता हूँ; लेकिन उसकी कमियाँ, या कम से कम उसकी खामियाँ ही हैं जो उसे मेरे करीब लाती हैं, उसे मेरे दिल में बसाती हैं, उसे मेरे प्यार से घेर लेती हैं, और इसका कारण बेहद स्वार्थी लेकिन स्वाभाविक है। ये कमियाँ ही वो सीढ़ियाँ हैं जिनसे मैं उस पर प्रभुत्व प्राप्त करता हूँ। अगर वह बिना किसी असमानता के एक सुव्यवस्थित, कृत्रिम टीले की तरह खड़ी होती, तो उस पर चढ़ने वाले को क्या लाभ मिलता? यह तो प्राकृतिक पहाड़ी है, अपनी काईदार दरारों और गड्ढों के साथ, जिसकी ढलान चढ़ाई के लिए आमंत्रित करती है, जिसके शिखर पर पहुँचना आनंददायी है।

रूपक को छोड़ दें तो, उसे देखना मेरी आँखों को भाता है। वह मुझे भाती है। अगर मैं राजा होता और वह मेरे महल की सीढ़ियाँ साफ करने वाली नौकरानी होती, तो हमारे बीच की उस दूरी के बावजूद मेरी आँखें उसके गुणों को पहचान लेतीं; मेरे दिल में उसके लिए एक सच्ची धड़कन धड़कती, भले ही हमारे बीच की खाई के कारण जान-पहचान असंभव होती। अगर मैं सज्जन होता और वह मेरी सेवा करती, तो भी मैं उस शर्ली को पसंद किए बिना नहीं रह पाता। उसकी शिक्षा, उसके गहने, उसके

शानदार वस्त्र, सभी बाहरी सुख-सुविधाएँ, उसकी सारी सुंदरता, सिवाय उसके सुडौल शरीर के कारण स्वाभाविक लगने वाली सुंदरता के, उससे अलग कर दें; उसे एक झोपड़ी के दरवाजे पर, सादे गाउन में मेरे सामने पेश करें; वह मुझे वहाँ पानी का एक घूँट दे, उसी मुस्कान के साथ, उसी गर्मजोशी और सद्भावना के साथ, जिसके साथ वह अब शाही मेहमाननवाज़ी करती है—मैं उसे पसंद करता। मैं एक घंटा रुकना चाहता; मैं उस देहाती लड़की से बात करने के लिए कुछ देर ठहरता। मुझे वैसा महसूस नहीं होता जैसा अब होता है; मुझे उसमें कुछ भी दिव्य नहीं मिलता; लेकिन जब भी मैं उस युवा किसान से मिलता, तो मैं उससे प्यार करता। मुझे खुशी मिलती थी; जब भी मैं उसे छोड़कर जाता, तो मुझे अफसोस होता था।

"कितनी बड़ी लापरवाही है उसकी मेज खुली छोड़ने की, जहाँ मुझे पता है उसके पास पैसे हैं! ताले में उसके सारे खजाने, यहाँ तक कि उसके गहनों के डिब्बे की भी चाबियाँ लटकी हैं। उस छोटे से सैटिन के थैले में एक पर्स है; मुझे चाँदी के मोतियों का गुच्छा बाहर लटकता दिख रहा है। यह नजारा मेरे भाई रॉबर्ट को गुस्सा दिला देगा। मुझे पता है उसकी सारी छोटी-छोटी कमियाँ उसे चिढ़ाती होंगी। अगर ये कमियाँ मुझे परेशान करती हैं तो यह एक बड़ा सुखद कष्ट है। मुझे उसे गलती करते देखकर बहुत खुशी होती है; और अगर मैं हमेशा उसके साथ रहती, तो मुझे पता है कि वह मेरी इस खुशी को बढ़ाने में कंजूसी नहीं करती। वह मुझे कुछ न कुछ करने को दे देती, सुधारने को – मेरे ट्यूटर के लेक्चर का विषय। मैं हेनरी को कभी लेक्चर नहीं देती, कभी ऐसा करने का मन नहीं करता। अगर वह कुछ गलत करता है – और ऐसा बहुत कम होता है, प्यारे, अच्छे लड़के! – तो एक शब्द ही काफी होता है। अक्सर मैं बस अपना सिर हिला देती हूँ। लेकिन जैसे ही उसकी छोटी सी बगावत मेरी नज़र में आती है, मेरे होठों पर गुस्से भरे शब्द उमड़ आते हैं।" मुझे लगता है कि वह मुझे एक शांत स्वभाव के व्यक्ति से बातूनी बना देगी। मुझे उसकी बातों में इतना आनंद कहाँ से आता है? यह कभी-कभी मुझे खुद भी हैरान कर देता है। उसका मिजाज जितना उग्र, चंचल और बेबाक होता है, उतना ही वह मुझे नापसंदगी जताने का मौका देती है, और जितना मैं उसे चाहता हूँ, उतना ही वह मुझे पसंद आती है। वह अपने वस्त्र और टोपी में सबसे ज्यादा उग्र होती है, और जब वह और ज़ोई पहाड़ियों पर हवा के साथ दौड़ लगाकर आती हैं, तब वह सबसे ज्यादा बेकाबू होती हैं; और मैं यह स्वीकार करता हूँ - इस मूक सेवक से मैं यह स्वीकार कर सकता हूँ - मैंने दरबार में एक घंटा उसके लौटने का

इंतजार किया है, और उससे भी ज्यादा कीमती मौका उसे घोड़े से उतारकर अपनी बाहों में लेने का। मैंने गौर किया है (फिर से, यह बात मैं सिर्फ इस सेवक से ही कहूँगा) कि वह मेरे अलावा किसी और पुरुष को उसकी मदद करने की इजाजत नहीं देती। मैंने उसे सर फिलिप ननेली की मदद को विनम्रता से मना करते देखा है। वह हमेशा अपने युवा बैरोनेट के साथ बहुत कोमल रहती है, उसकी भावनाओं के प्रति बहुत संवेदनशील है, और वास्तव में, उसके प्रति भी। अत्यंत संवेदनशील आत्मसम्मान। मैंने उसे सैम विने के प्रस्ताव को घमंड से ठुकराते हुए देखा है। अब मैं जानता हूँ—मेरा हृदय जानता है, क्योंकि उसने इसे महसूस किया है—कि वह अनिच्छा से ही मेरे प्रति समर्पित है। क्या उसे इस बात का एहसास है कि मेरी शक्ति उसकी सेवा करने में कितनी प्रसन्न होती है? मैं स्वयं उसका दास नहीं हूँ—मैं यह स्पष्ट करता हूँ—पर मेरी शक्तियाँ उसकी सुंदरता की ओर आकर्षित होती हैं, जैसे जिन्न दीपक की चमक की ओर। मेरा सारा ज्ञान, मेरा सारा विवेक, मेरा सारा धैर्य और मेरी सारी शक्ति उसकी उपस्थिति में विनम्रतापूर्वक किसी कार्य की प्रतीक्षा में खड़ी रहती है। आदेश मिलने पर वे कितने प्रसन्न होते हैं! वह जो कार्य सौंपती है, उसमें उन्हें कितना आनंद आता है! क्या वह यह जानती है?

मैंने उसे लापरवाह कहा है। यह उल्लेखनीय है कि उसकी लापरवाही कभी भी उसके शालीनता को कमज़ोर नहीं करती। वास्तव में, चरित्र की इसी खामी से उसकी शालीनता की वास्तविकता, गहराई और प्रामाणिकता का पता लगाया जा सकता है। कभी-कभी पूरा वस्त्र दुबलेपन और कुरूपता को छुपा लेता है; फटी हुई आस्तीन से एक सुंदर गोल भुजा दिखाई दे सकती है। मैंने उसकी कई चीज़ें देखी और छुई हैं, क्योंकि वे अक्सर इधर-उधर पड़ी रहती हैं। मैंने कभी भी ऐसी कोई चीज़ नहीं देखी जो उस महिला की पहचान न बताती हो - कुछ भी गंदा या मैला नहीं। एक अर्थ में वह उतनी ही सजग है, जितना दूसरे अर्थ में वह लापरवाह है। एक किसान लड़की होने के नाते, वह हमेशा साफ-सुथरी और सलीके से रहती थी। इस छोटे से दस्ताने के शुद्ध चमड़े को देखो, थैली के ताज़े, बेदाग साटन को देखो।

“एस. और उस मोती सी.एच. में कितना फर्क है! कैरोलीन, मुझे लगता है, कर्तव्यनिष्ठा और समय की पाबंदी की साक्षात मूर्ति है। वह मेरे एक खास नज़ाकत पसंद रिश्तेदार की घरेलू आदतों के लिए एकदम उपयुक्त है— इतनी नाज़ुक, कुशल, अनोखी, फुर्तीली, शांत— हर काम मिनट-दर-मिनट, हर चीज़ एक-एक करके

व्यवस्थित। वह रॉबर्ट के लिए भी उपयुक्त है। लेकिन इतनी लगभग दोषरहित चीज़ का मैं क्या कर सकता हूँ? वह मेरी बराबर है, मेरी ही तरह गरीब। वह निश्चित रूप से सुंदर है: उसका सिर राफेल जैसा है—नक्श राफेल जैसे, भाव-भंगिमा पूरी तरह से अंग्रेज़, पूरी तरह से एकांत और पवित्रता से भरी; लेकिन उसमें बदलने, सहने, डांटने या चिंता करने लायक कुछ है ही नहीं? वह एक घाटी की लिली की तरह है, बिना रंग की, जिसे किसी रंग की ज़रूरत नहीं। कौन सा बदलाव उसे निखार सकता है? कौन सी पेंसिल उसे रंगने की हिम्मत करेगी? मेरी प्रेमिका, अगर कभी मेरी कोई प्रेमिका हुई, तो वह गुलाब के ज़्यादा करीब होगी— एक मीठा, जीवंत आनंद जो कांटों के खतरे से घिरा हुआ है। मेरी पत्नी, अगर मेरी कभी शादी हुई, तो मुझे अपने विशाल शरीर को समय-समय पर चुभन से जगाना होगा; उसे अपने पति के विशाल धैर्य का सदुपयोग करना होगा। मैं मेमने के साथ रहने के लिए इतना सहनशील नहीं बना हूँ; मुझे एक युवा शेरनी या तेंदुए की देखभाल में अधिक सुखद जिम्मेदारी मिलेगी। मुझे मीठी चीजें कम पसंद हैं, लेकिन तीखी भी - चमकदार चीजें कम पसंद हैं, लेकिन गर्म भी। मुझे गर्मी का दिन पसंद है, जिसकी धूप फलों को लाल कर देती है और अनाज को सफेद कर देती है। सुंदरता कभी इतनी सुंदर नहीं होती जितनी तब, जब मैं उसे छेड़ता हूँ, तो वह जोश के साथ मुझ पर पलटवार करती है। आकर्षण कभी इतना शाही नहीं होता जितना तब, जब उत्तेजित और आधे क्रोधित होकर, वह उग्रता में बदलने की धमकी देती है। मुझे डर है कि मैं मेमने की मूक, नीरस मासूमियत से ऊब जाऊँगा; मैं जल्द ही अपने सीने में कभी न हिलने वाले कबूतर के बच्चे की तरह बोझिल महसूस करूँगा; लेकिन मेरा धैर्य बेचैन मर्लिन की फड़फड़ाहट को शांत करने और उसकी ऊर्जा को प्रशिक्षित करने में आनंदित होगा। मुश्किल से काबू में आने वाले जानवर की जंगली प्रवृत्ति को संभालने में। मेरी शक्तियां आनंदित होंगी।

"ओ मेरी शिष्या! ओ पेरी! स्वर्ग के लिए बहुत विद्रोही, नरक के लिए बहुत निर्दोष, मैं तुम्हें देखने, तुम्हारी पूजा करने और तुम्हारे लिए कामना करने के अलावा और कुछ नहीं कर पाऊँगी। हाय! यह जानते हुए कि मैं तुम्हें सुखी बना सकती हूँ, क्या यह मेरा दुर्भाग्य होगा कि मैं तुम्हें उन लोगों के वश में देखूँ जिनके पास यह शक्ति नहीं है?"

"हाथ कितना भी दयालु क्यों न हो, यदि वह कमजोर है, तो वह शर्ली को झुका नहीं सकता; और उसे झुकाना ही होगा। वह उसे नियंत्रित नहीं कर सकता; और उसे नियंत्रित करना ही होगा।"

"सावधान रहें, सर फिलिप ननेली! मैंने आपको कभी उसके बगल में चलते या बैठे हुए नहीं देखा, और न ही उसके होंठों को दबा हुआ या माथे को तना हुआ देखा है, जो आपके चरित्र के किसी ऐसे गुण के प्रति दृढ़ सहनशीलता का प्रदर्शन करते हैं जिसे वह न तो पसंद करती है और न ही सराहती है, या किसी ऐसी कमजोरी के प्रति दृढ़ सहनशीलता का प्रदर्शन करते हैं जिसे वह किसी सद्गुण से पार पा चुकी मानती है, लेकिन फिर भी वह उसे परेशान करती है; मैंने कभी उसके चेहरे की गंभीर चमक, उसकी आँखों की भावहीन चमक, या उसके पूरे शरीर के हल्के से पीछे हटने को नहीं देखा जब आप थोड़ा ज़्यादा पास आते हैं, थोड़ा ज़्यादा भावपूर्ण ढंग से देखते हैं, और थोड़ा ज़्यादा गर्मजोशी से फुसफुसाते हैं - मैंने इन चीजों को कभी नहीं देखा, बल्कि मुझे सेमेले की कहानी का उल्टा रूप याद आता है।"

"मैं कैडमियस की पुत्री को नहीं देख रहा हूँ, न ही मुझे उसकी देवत्वमयी ज्योति को देखने की घातक लालसा का एहसास है। मेरे सामने खड़ा यह जूनो का पुजारी है, जो आर्गिव मंदिर में एक वेदी पर देर रात तक अकेला बैठा है। वर्षों से एकाकी सेवा करते हुए वह स्वप्नों के सहारे जी रहा है। उस पर दिव्य उन्माद छाया हुआ है। वह अपनी मूर्ति से प्रेम करता है और दिन-रात प्रार्थना करता है कि उसका उन्माद शांत हो जाए और बैल-आँखों वाली देवी अपने भक्त पर कृपा करे। उसने सुन लिया है; वह कृपा करेगी। सारा आर्गोस सो रहा है। मंदिर के द्वार बंद हैं; पुजारी वेदी पर प्रतीक्षा कर रहा है।"

"आकाश और पृथ्वी का एक झटक महसूस होता है— सोए हुए शहर को नहीं, बल्कि उस अकेले पहरेदार को, जो अपने कट्टरपन में साहसी और अडिग है। सन्नाटे के बीच, बिना किसी पूर्व संकेत के, वह अचानक प्रकाश में घिर जाता है। छत से, ऊपर फैले हुए, विशाल, सफेद-चमकते नीले आकाश के बीच से, एक अद्भुत प्रकाश उतरता है, जो तारों के गिरने के समान भयानक है। उसे वह मिल गया जो उसने माँगा था। पीछे हट जाओ— देखना छोड़ दो— मैं अंधा हो गया हूँ। मुझे उस मंदिर में एक अकथनीय ध्वनि सुनाई देती है। काश मैं उसे न सुन पाता! मुझे खंभों के बीच एक असहनीय महिमा भयंकर रूप से जलती हुई दिखाई देती है। हे भगवान, दया करो और इसे बुझा दो!"

"एक धर्मनिष्ठ अर्गिव सुबह की ठंडी भोर में अर्पण करने के लिए प्रवेश करता है। रात में गरज हुई थी; बिजली यहीं गिरी थी। मंदिर कांप उठा है, चारों ओर संगमरमर

का फर्श फटकर काला पड़ गया है। सैटर्निया की प्रतिमा पवित्र, भव्य और अक्षुण्ण खड़ी है; उसके चरणों में राख का ढेर पीला पड़ा है। कोई पुजारी नहीं बचा; जो पहरा दे रहा था, वह अब कभी दिखाई नहीं देगा।”

“गाड़ी रही! मैं डेस्क को बंद करके चाबियाँ जेब में रख लेता हूँ। वह कल उन्हें ढूँढ़ेगी; उसे मेरे पास आना ही पड़ेगा। मुझे उसकी आवाज़ सुनाई दे रही है: ‘मिस्टर मूर, क्या आपने मेरी चाबियाँ देखी हैं?’”

“तो वह अपनी साफ आवाज में, अनिच्छा से, शर्मिंदा होकर, यह जानते हुए कि यह बीसवीं बार पूछना है, कहेगी। मैं उसे तड़पाऊंगा, उसे अपने पास रखूंगा, उम्मीद और संदेह के साथ; और जब मैं उन्हें लौटाऊंगा, तो बिना उपदेश दिए नहीं। ये रहा थैला, और पर्स; दस्ताना—कलम—सीम। वह धीरे-धीरे और अलग-अलग मुझसे ये सब निचोड़ लेगी—केवल स्वीकारोक्ति, पश्चाताप और विनती से। मैं कभी उसका हाथ, उसके बालों की लट, या उसके कपड़े का रिबन नहीं छू सकता, लेकिन मैं अपने लिए विशेषाधिकार बना लूंगा। उसके चेहरे की हर विशेषता, उसकी चमकीली आंखें, उसके होंठ, मेरे आनंद के लिए अपने हर रूप से गुजरेंगे—दृष्टि और वक्र की हर सुंदरता को प्रदर्शित करेंगे, मुझे प्रसन्न करने, रोमांचित करने, शायद और भी निराशाजनक रूप से मुझे जकड़ने के लिए। अगर मुझे उसका गुलाम बनना ही है, तो मैं अपनी आजादी व्यर्थ नहीं खोऊंगा।”

उसने डेस्क को लॉक किया, सारा सामान जेब में रखा और चला गया।

अध्याय XXX

सब लोग कह रहे थे कि मिस्टर मूर के घर लौटने का समय आ गया है। ब्रायफ़ील्ड के सभी लोग उनकी अजीब अनुपस्थिति पर आश्चर्यचकित थे, और क्विनबरी और ननेली ने भी अपनी-अपनी हैरानी ज़ाहिर की।

क्या यह पता था कि वह क्यों दूर रहा? हाँ। यह बात बीस-चालीस बार पता थी, क्योंकि इस अनसुलझी परिस्थिति के लिए कम से कम चालीस तर्कसंगत कारण बताए गए थे। गपशप करने वालों का मानना था कि यह कोई व्यापारिक मामला नहीं था। वह जिस काम के लिए निकला था, उसे उसने बहुत पहले ही पूरा कर लिया था। उसने अपने चारों सरगनाओं को जल्द ही पहचान लिया और पकड़ लिया था। वह उनके मुकदमे में उपस्थित था, उनकी दोषसिद्धि और सजा सुनी थी, और निर्वासन से पहले उन्हें सुरक्षित जहाज पर जाते हुए देखा था।

यह बात ब्रायरफील्ड में सबको पता थी। अखबारों में इसकी खबर छपी थी। स्टिलब्रो कूरियर ने तो विस्तार से सारी जानकारी दी थी। किसी ने भी उसकी लगन की सराहना नहीं की और न ही उसकी सफलता का जश्न मनाया, हालांकि मिल मालिक इससे खुश थे, उन्हें भरोसा था कि कानून के तहत मिली सफलता से अब असंतोष की भयावहता पर विराम लग जाएगा। फिर भी, असंतोष अपने आप से कुछ बुदबुदा रहा था। वह शराबखानों की नशीली बीयर पर अशुभ कसमें खाता और तीखी ब्रिटिश जिन में अजीबोगरीब टोस्ट पीता।

एक रिपोर्ट में इस बात की पुष्टि की गई कि मूर यॉर्कशायर आने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था; वह जानता था कि अगर वह आया तो उसकी जान एक घंटे के लिए भी कीमती नहीं होगी।

जब उनके फोरमैन ने अफवाह का जिक्र किया तो श्री योर्क ने कहा, "मैं उसे यह बात बता दूंगा; और अगर इससे वह पूरी रफ्तार से घर नहीं लौटता, तो फिर कुछ भी नहीं कर पाएगा।"

या तो यही कारण था या कोई और वजह, जिसके चलते अंततः उन्हें वापस बुला लिया गया। उन्होंने जो स्कॉट को स्टिलब्रो पहुँचने का दिन बताया और जॉर्ज होटल में अपने ठहरने के लिए एक घोड़ागाड़ी भेजने का अनुरोध किया। जो स्कॉट ने श्री योर्क को सूचित किया, तो वे उनसे मिलने के लिए निकल पड़े।

बाजार का दिन था। मूर समय पर पहुँचकर बाजार के भोज में अपनी नियमित जगह पर बैठ गए। एक अजनबी होने के नाते, और एक प्रतिष्ठित और कर्मठ व्यक्ति होने के कारण, वहाँ मौजूद व्यापारियों ने उनका विशेष सम्मान के साथ स्वागत किया। कुछ लोग, जो सार्वजनिक रूप से शायद ही उनसे जान-पहचान का ज़िक्र करते, इस डर से कि कहीं उनके प्रति मन में बसी नफरत और बदले की भावना का कुछ अंश उन पर भी न आ जाए, निजी तौर पर उन्हें अपना आदर्श मानकर उनका अभिनंदन करते थे। जब शराब का दौर समाप्त हुआ, तो उनका सम्मान उत्साह में बदल जाता, लेकिन मूर की अडिग बेफिक्री ने उसे मंद, धीमी और दबी हुई अवस्था में ही रखा।

इन भोजों के स्थायी अध्यक्ष श्री योर्क अपने युवा मित्र के व्यवहार को अत्यंत सहजता से देखते रहे। यदि कोई एक बात उनके क्रोध को भड़का सकती थी या उनके मन में घृणा उत्पन्न कर सकती थी, तो वह थी किसी व्यक्ति को चापलूसी में मूर्ख बनते देखना या लोकप्रियता से उत्साहित होते देखना। यदि कोई एक बात उन्हें विशेष रूप से शांत, संतुष्ट और आकर्षित करती थी, तो वह थी किसी सार्वजनिक हस्ती को अपनी प्रसिद्धि का आनंद न लेते देखना—बिल्कुल भी नहीं, मैं कह रहा हूँ। तिरस्कार तो उन्हें और क्रोधित कर देता; उदासीनता ही उनके कठोर स्वभाव को शांत करती थी।

रॉबर्ट अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुके हुए, शांत और लगभग चिड़चिड़े भाव से बैठे थे, जबकि कपड़ा व्यापारी और कंबल बनाने वाले उनकी कुशलता का बखान कर रहे थे और उनके कारनामों का बखान कर रहे थे—उनमें से कई लोग अपनी चापलूसी के बीच-बीच में कामगार वर्ग के खिलाफ भद्दी गालियाँ भी दे रहे थे—यह दृश्य श्री यॉर्क के लिए एक सुखद दृश्य था। उनका हृदय इस सुखद विश्वास से भर गया कि ये भद्दी प्रशंसाएँ मूर को बहुत शर्मिंदा कर रही थीं और उन्हें अपने आप से और अपने काम से आधा तिरस्कार करने पर मजबूर कर रही थीं। गाली-गलौज, निंदा और बदनामी पर मुस्कुराना आसान है; लेकिन वास्तव में उन लोगों की प्रशंसा करना कष्टदायक होता है जिन्हें हम तुच्छ समझते हैं। मूर ने अक्सर शत्रुतापूर्ण चुनावी सभाओं से चिल्लाती भीड़ के ऊपर चमकते चेहरे के साथ देखा था। उन्होंने अलोकप्रियता के तूफान का बहादुरी और उत्साह से सामना किया था; लेकिन वे उन अधूरे कारीगरों की प्रशंसा के आगे अपना सिर झुका लेते थे और उनकी बधाईयों के सामने शर्मिंदा होकर सिकुड़ जाते थे।

यॉर्क ने उससे पूछे बिना नहीं रह सका कि उसे उसके समर्थक कैसे लगते हैं, और

क्या उसे नहीं लगता कि वे उसके उद्देश्य को सम्मान दे रहे हैं। “लेकिन यह अफ़सोस की बात है, लड़के,” उसने आगे कहा, “कि तुमने इन चार गंदे लोगों को फांसी नहीं दी। अगर तुम ऐसा कर पाते, तो यहाँ के रईस लोग तुम्हारी गाड़ी से घोड़े निकालकर, बीस गधों के साथ जोतकर, तुम्हें एक विजयी सेनापति की तरह स्टिलब्रो में घसीटकर ले जाते।”

मूर ने जल्द ही शराब छोड़ दी, समूह से अलग हो गया और सड़क पर निकल पड़ा। पांच मिनट से भी कम समय में श्री यॉर्क उसके पीछे-पीछे आ गए। वे दोनों एक साथ स्टिलब्रो से निकल गए।

घर लौटने का समय अभी नहीं हुआ था, लेकिन फिर भी दिन ढल चुका था। सूरज की आखिरी किरण बादलों के किनारों से ओझल हो चुकी थी, और अक्टूबर की रात दलदली भूमि पर उसके आने की आहट की छाया डाल रही थी।

श्री योर्क, थोड़ी शराब के नशे में चूर और युवा मूर को यॉर्कशायर में फिर से देखकर प्रसन्न थे, और घर वापसी की लंबी यात्रा में उन्हें अपना साथी पाकर भी उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। उन्होंने बातचीत को अपने ही अंदाज़ में मोड़ दिया। उन्होंने संक्षेप में, लेकिन उपहासपूर्वक, मुकदमों और दोषसिद्धि का ज़िक्र किया; फिर वे आस-पड़ोस की गपशप पर आ गए, और जल्द ही उन्होंने मूर पर उनके निजी मामलों को लेकर हमला बोल दिया।

“बॉब, मुझे लगता है कि तुम हार गए हो, और तुम इसके हकदार हो। सब कुछ ठीक चल रहा था। किस्मत को तुमसे प्यार हो गया था। उसने तुम्हें अपने चक्र का पहला इनाम चुना था—बीस हज़ार पाउंड; उसकी बस यही शर्त थी कि तुम अपना हाथ आगे बढ़ाओ और उसे ले लो। और तुमने क्या किया? तुमने एक घोड़ा मंगवाया और वारविकशायर में शिकार पर निकल पड़े। तुम्हारी प्रेमिका—मेरा मतलब है किस्मत—पूरी तरह से उदार थी। उसने कहा, ‘मैं उसे माफ़ कर देती हूँ; वह जवान है।’ वह ‘किसी स्मारक पर धैर्य’ की तरह तब तक इंतज़ार करती रही जब तक शिकार खत्म नहीं हो गया और कीड़े-मकोड़े पकड़ लिए गए। उसे उम्मीद थी कि तुम तब वापस आओगे और एक अच्छे लड़के की तरह व्यवहार करोगे। तब शायद तुम्हें उसका पहला इनाम मिल जाता।”

“यह देखकर उसे और मुझे भी गहरा सदमा लगा कि तूफ़ानी घोड़े पर सवार होकर घर लौटने और उसके चरणों में अपनी जीत का जश्न मनाने के बजाय, तूने बड़ी शांति

से लंदन के लिए कोच ले लिया। तूने वहाँ क्या किया, यह तो शैतान ही जानता है; मुझे लगता है कि तूने वहाँ बैठकर रूठने के अलावा कुछ नहीं किया। तेरा चेहरा पहले कभी इतना सुंदर नहीं था, अब तो जैतून जैसा हरा हो गया है। तू अब उतना आकर्षक नहीं रहा, यार।"

और जिस पुरस्कार के बारे में आप इतनी बातें करते हैं, वह किसे मिलेगा?

"सिर्फ एक बैरोनेट; बस इतना ही। मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि आपने उसे खो दिया है। क्रिसमस से पहले वह लेडी ननेली बन जाएगी।"

"हम्म! काफी हद तक संभव है।"

लेकिन ऐसा होना जरूरी नहीं था। बेवकूफ लड़का! कसम से, तुम उसे पा सकते थे।

"किस आधार पर, श्री योर्क?"

"हर संकेत से—उसकी आँखों की चमक से, उसके गालों की लाली से। तुम्हारे नाम का जिक्र होते ही उसके गाल और लाल हो जाते थे, हालांकि आम तौर पर वे फीके रहते हैं।"

"मुझे लगता है कि मेरा मौका अब खत्म हो गया है?"

"ऐसा होना चाहिए। लेकिन कोशिश करो; कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं है। मैं इसे सर फिलिप के लिए दूध और पानी जैसा कहता हूँ। और फिर वो कविताएँ लिखते हैं, लोग कहते हैं - टैग राइम। बॉब, तुम इन सबसे ऊपर हो।"

"क्या आप मुझे सलाह देंगे कि मैं, मिस्टर यॉर्क, इतनी देर हो जाने के बावजूद, आखिरी समय में शादी का प्रस्ताव रखूं?"

"रॉबर्ट, तुम बस एक प्रयोग करके देखो। अगर उसे तुम पसंद हो—और मैं अपनी अंतरात्मा की कसम खाकर कहता हूँ कि उसे तुम पसंद हो या थे—तो वह बहुत कुछ माफ कर देगी। लेकिन, मेरे बच्चे, तुम हंस रहे हो। क्या मुझ पर? बेहतर होगा कि तुम अपनी ही मूर्खता पर हंसो। वैसे, मुझे लगता है कि तुम गलत तरफ हंस रहे हो। इस समय तुम्हारा चेहरा इतना कड़वा है जितना कोई देखना चाहेगा।"

"मैंने खुद से बहुत झगड़ा किया है, यॉर्क। मैंने बहुत संघर्ष किया है, तंग जैकेट में छटपटाया है, हथकड़ियों में जकड़कर अपनी कलाई तोड़ दी है, और अपने कठोर सिर को एक सख्त दीवार से टकराकर चोट पहुँचाई है।"

"हा! यह सुनकर खुशी हुई। बढ़िया कसरत थी! उम्मीद है इससे आपको फायदा

हुआ होगा — आपका कुछ अहंकार कम हुआ होगा?”

“अहंकार? ये क्या होता है? आत्मसम्मान, आत्म-सहनशीलता भी, ये सब क्या हैं? क्या आप लेख बेचते हैं? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो बेचता हो? ज़रा बताइए। उन्हें मुझमें एक उदार व्यक्ति मिलेगा। मैं अभी इसी वक्त अपना आखिरी पैसा भी आपको खरीदने के लिए दे दूंगा।”

“क्या तुम्हारे साथ भी ऐसा ही है, रॉबर्ट? मुझे तो ये बात दिलचस्प लगती है। मुझे ऐसे पुरुष पसंद हैं जो अपने मन की बात खुलकर कहें। आखिर क्या गड़बड़ हुई है?”

"मेरे पूरे स्वभाव की मशीनरी; इस मानवीय चक्की की पूरी मशीनरी; वह बॉयलर, जिसे मैं हृदय मानता हूँ, फटने के कगार पर है।"

“इसे छपवाना चाहिए; यह बहुत प्रभावशाली है। यह लगभग मुक्त छंद जैसा है। तुम अभी से कविता में मग्न हो जाओगे। अगर प्रेरणा आए, तो रास्ता दे दो, रॉबर्ट। मेरी परवाह मत करना; मैं इसे इस बार झेल लूँगा।”

“भयानक, घृणित, नीच भूल! आप एक पल में वह कर बैठ सकते हैं जिसका आपको वर्षों तक पछतावा होगा—जिसे जीवन भी मिटा नहीं सकता।”

“बेटा, बोलो। मैं इसे पाई, मेवे, चीनी-कैंडी कहता हूँ। मुझे इसका स्वाद बहुत पसंद है। बोलो। बात करने से तुम्हें फायदा होगा। अब हमारे सामने बंजर भूमि है, और कई मील तक कोई जीव-जंतु नहीं है।”

मैं बोलूंगी। मुझे बताने में कोई शर्म नहीं है। मेरे भीतर एक जंगली बिल्ली है, और मैं चाहती हूं कि आप सुनें कि वह कैसे चीख सकती है।

मेरे लिए तो यह संगीत है। तुम और लुई की आवाज़ें कितनी शानदार हैं! जब लुई गाता है—एक कोमल, गहरी घंटी की तरह—तो मुझे फिर से कंपकंपी महसूस होती है। रात शांत है। वह सुनती है। वह तुम्हारे पास झुकती है, जैसे कोई काला पुजारी किसी गहरे पापी के पास। कबूल करो, लड़के। कुछ भी छुपाओ मत। एक सिद्ध, न्यायसंगत, पवित्र मेथोडिस्ट की तरह स्पष्टवादी बनो, जैसे कोई अनुभव सभा में होता है। खुद को बेल्ज़ेबूब जितना दुष्ट बना लो। इससे तुम्हारा मन शांत होगा।

"तुम कहोगे, धन के देवता की तरह कंजूस। योर्क, अगर मैं घोड़े से उतरकर सड़क पर लेट जाऊं, तो क्या तुम इतनी मेहरबानी करोगे कि मेरे ऊपर से बीस बार आगे-पीछे सरपट दौड़ोगे?"

"अगर कोरोनर की जांच जैसी कोई चीज ही न होती, तो जीवन के सारे सुख

होते।"

"हीराम यॉर्क, मुझे पूरा यकीन था कि वह मुझसे प्यार करती थी। मैंने भीड़ में मुझे देखकर उसकी आँखों में एक अलग ही चमक देखी है; जब उसने मुझे अपना हाथ बढ़ाया और कहा, 'आप कैसे हैं, मिस्टर मूर?' तो उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया था।"

"मेरा नाम उस पर जादुई असर डालता था। जब दूसरे उसका नाम लेते, तो उसके चेहरे के भाव बदल जाते थे—मुझे पता है, ऐसा होता था। वह खुद भी मेरा नाम अपनी सुरीली आवाज़ में लेती थी। वह मुझसे बहुत प्यार करती थी; वह मुझमें दिलचस्पी लेती थी; वह मेरे बारे में चिंतित रहती थी; वह मेरा भला चाहती थी; वह मेरी मदद करने का हर मौका ढूंढती थी, उसे लपक लेती थी। मैंने सोचा, रुका, देखा, परखा, हैरान हुआ। मैं बस एक ही नतीजे पर पहुंचा—यही तो प्यार है।"

"मैंने उसे देखा, यॉर्क। मैंने उसमें जवानी और एक खास तरह की सुंदरता देखी। मैंने उसमें शक्ति देखी। उसकी दौलत ने मुझे मेरे सम्मान और प्रतिष्ठा की बहाली का मौका दिया। मैं उसका ऋणी था। उसने मुझे पाँच हज़ार पाउंड का ऋण देकर मेरी काफ़ी मदद की थी। क्या मुझे ये बातें याद थीं? क्या मैं विश्वास कर सकता था कि वह मुझसे प्यार करती थी? क्या मैं उस ज्ञान की आवाज़ सुन सकता था जो मुझे उससे शादी करने के लिए प्रेरित कर रहा था, और हर कीमती अवसर को नज़रअंदाज़ करने, हर चापलूसी भरी सलाह पर अविश्वास करने, हर सोची-समझी सलाह को ठुकराने, और उसे छोड़कर चले जाने के लिए कह रहा था? जवान, सुंदर, दयालु - मेरी उपकारिणी, मुझसे जुड़ी हुई, मुझसे मोहित। मैं खुद से ऐसा कहा करता था; इस शब्द पर मनन करता था; इसे बार-बार दोहराता था; एक सुखद, दिखावटी आत्मसंतुष्टि से फूल जाता था, एक ऐसी प्रशंसा से जो पूरी तरह से खुद के लिए समर्पित थी, और उसके प्रति सम्मान से भी अप्रभावित थी; वास्तव में, मैं उसकी भोलापन और सादगी पर गहरी मुस्कान बिखेरता था कि वह पहली थी जिसने प्यार किया और उसे दिखाया। तुम्हारा वह चाबुक ऐसा लगता है यॉर्क, एक अच्छा भारी हैंडल होना चाहिए; अगर तुम चाहो तो इसे अपने सिर के चारों ओर घुमाकर मुझे घोड़े से गिरा सकते हो। मुझे तो ज़ोरदार थप्पड़ खाने में मज़ा आएगा।

"धैर्य रखो, रॉबर्ट, जब तक चाँद न निकल आए और मैं तुम्हें देख न लूँ। साफ़-साफ बताओ—क्या तुम उससे प्यार करते थे या नहीं? मैं जानना चाहती हूँ। मुझे

जिज्ञासा हो रही है।”

“महोदय—महोदय—मैं कहता हूँ—वह अपने अनोखे अंदाज़ में बेहद खूबसूरत और आकर्षक हैं। कभी-कभी तो उनका रूप ऐसा लगता है मानो आग और हवा से बनी कोई चीज़ हो, जिसे देखकर मैं अचंभित रह जाता हूँ, बिना उसे गले लगाने या चूमने का ख्याल आए। मुझे उनमें एक शक्तिशाली चुंबक की तरह आकर्षण महसूस हुआ, जो मेरी रुचि और अहंकार को अपनी ओर खींचता था। मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि प्रकृति ने उन्हें मेरा दूसरा और बेहतर रूप बनाने के लिए चुना है। जब यह सवाल मेरे मन में उठा, तो मैंने उसे झटक दिया और दृढ़ता से कहा कि मैं उनके साथ अमीर हो जाऊँगा और उनके बिना बर्बाद—यह कसम खाते हुए कि मैं व्यावहारिक रहूँगा, रोमांटिक नहीं।”

“बहुत ही समझदारी भरा फैसला। इससे क्या नुकसान हुआ, बॉब?”

“इसी दृढ़ निश्चय के साथ मैं पिछली अगस्त की एक रात फील्डहेड गया। यह बर्मिंघम के लिए मेरे प्रस्थान की पूर्व संध्या थी; क्योंकि, दरअसल, मैं फॉर्च्यून का शानदार पुरस्कार प्राप्त करना चाहता था। मैंने पहले ही एक निजी मुलाकात का अनुरोध करते हुए एक पत्र भेजा था। मैंने उसे घर पर अकेले पाया।”

“उसने बिना किसी झिझक के मेरा स्वागत किया, क्योंकि उसे लगा कि मैं काम के सिलसिले में आया हूँ। मैं काफी शर्मिंदा था, लेकिन दृढ़ निश्चयी था। मुझे मुश्किल से ही पता है कि मैंने ऑपरेशन कैसे पूरा किया; लेकिन मैं पूरी लगन और दृढ़ता से काम पर लग गया — सच कहूँ तो, काफी डरावना था। मैंने अपने आप को — अपने अच्छे शरीर को — अपने कर्जों के साथ, समझौते के तौर पर पेश किया।”

“मुझे यह देखकर बहुत गुस्सा आया, मेरा क्रोध भड़क उठा, कि वह न तो शरमाई, न कांपी और न ही उसने नज़रें नीचे कीं। उसने जवाब दिया, 'मुझे संदेह है कि क्या मैं आपको समझ पाई हूँ, श्री मूर।'

“और मुझे पूरा प्रस्ताव दो बार दोहराना पड़ा, और उसे इतनी सरल भाषा में समझाना पड़ा जैसे ए बी सी, तब जाकर उसने उसे पूरी तरह समझा। और फिर उसने क्या किया? मीठी सी 'हाँ' कहने या थोड़ी देर चुप रहने (जो कि ठीक ही होता) के बजाय, वह एकदम से उठ खड़ी हुई, कमरे में दो बार तेज़ी से चली, ठीक उसी अंदाज़ में जैसे सिर्फ़ वही चलती है, और कोई दूसरी औरत नहीं, और बोली, 'भगवान मेरा भला करे!'”

“यॉर्क, मैं चूल्हे पर खड़ी थी, मेंटलपीस का सहारा लेकर; मैं उस पर झुक गई और हर चीज़ के लिए तैयार हो गई। मुझे अपनी नियति का पता था, और मैं खुद को जानती थी। उसके हावभाव और आवाज़ को लेकर कोई गलतफहमी नहीं थी। वह रुकी और मेरी तरफ देखा।”

“‘भगवान मेरा भला करे!’ उसने दुखी, आहत और फिर भी उदास स्वर में दयनीय ढंग से दोहराया। ‘आपने एक अजीब प्रस्ताव रखा है—आपसे तो यह अजीब ही है; और अगर आपको पता होता कि आपने इसे कितने अजीब शब्दों में कहा है और यह कितना अजीब लग रहा है, तो आप खुद पर हैरान हो जाते। आपने एक डाकू की तरह बात की है जो मेरा पर्स मांग रहा हो, न कि एक प्रेमी की तरह जो मेरा दिल मांग रहा हो।’

“यह एक विचित्र वाक्य था, है ना, यॉर्क? और मुझे पता था, जैसे ही उसने इसे कहा, यह विचित्र रूप से सच था। उसके शब्द एक दर्पण थे जिसमें मैंने खुद को देखा।”

मैंने उसे देखा, मैं अवाक और भेड़िया जैसी थी। उसने मुझे एक साथ क्रोधित और शर्मिंदा कर दिया।

“‘गेरार्ड मूर, तुम जानते हो कि तुम शर्ली कील्डर से प्यार नहीं करते।’ मैं झूठी कसम खा सकता था—कसम खा सकता था कि मैं उससे प्यार करता हूँ; लेकिन मैं उसके पवित्र चेहरे के सामने झूठ नहीं बोल सकता था। मैं उसकी सच्चाई के सामने झूठी कसम नहीं खा सकता था। इसके अलावा, ऐसी खोखली कसमें व्यर्थ ही होतीं। वह मुझ पर उतना ही विश्वास करती जितना वह जूडास के भूत पर करती, अगर वह रात के अंधेरे से निकलकर उसके सामने खड़ा हो जाता। उसके स्त्री हृदय में इतनी गहरी समझ थी कि वह मेरे आधे रूखे, आधे ठंडेपन भरे प्रेम को सच्चे, मर्दाना प्रेम समझने की गलती नहीं कर सकती थी।”

“आगे क्या हुआ? आप पूछेंगे, श्री योर्क।”

“अरे, वो खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गई और रोने लगी। वो फूट-फूटकर रोई। उसकी आँखों से न सिर्फ़ आँसू बह रहे थे, बल्कि उनमें चमक भी थी। उसकी आँखें खुली, बड़ी, गहरी, अभिमानी सी मुझ पर चमक उठीं। उन्होंने कहा, ‘तुमने मुझे दुख पहुँचाया है; तुमने मेरा अपमान किया है; तुमने मुझे धोखा दिया है।’”

"उसने अपनी निगाहों के साथ-साथ शब्द भी जोड़ दिए।"

“‘मैं आपका सम्मान करती थी—मैं आपकी प्रशंसा करती थी—मैं आपको पसंद करती थी,’ उसने कहा—‘हाँ, उतना ही जितना कि आप मेरे भाई हों; और आप—आप मेरा हिसाब-किताब करना चाहते हैं। आप मुझे उस चक्की में जला देना चाहते हैं, अपने मोलोच में!’”

“मैंने बहानेबाजी का कोई शब्द न कहने, सांत्वना देने का कोई प्रयास न करने की समझदारी दिखाई। मैं तिरस्कार का पात्र बनने के लिए तैयार था।”

"कुछ समय के लिए शैतान के हाथों में बिका हुआ, मैं निश्चित रूप से मोहित था। जब मैंने बात की, तो आपको क्या लगता है मैंने क्या कहा?"

“‘मेरी अपनी भावनाएँ जो भी रही हों, मुझे इस बात का पूरा यकीन था कि आप मुझसे प्यार करती हैं, मिस कील्डर।’

“सुंदर था ना? वह बिल्कुल अचंभित होकर बैठी थी। ‘क्या यह रॉबर्ट मूर बोल रहा है?’ मैंने उसे बुदबुदाते हुए सुना। ‘क्या यह कोई पुरुष है—या कोई नीच प्राणी?’

“‘क्या तुम्हारा मतलब है,’ उसने ऊँची आवाज़ में पूछा— ‘क्या तुम्हारा मतलब यह है कि तुमने सोचा था कि मैं तुमसे वैसे ही प्यार करती हूँ जैसे हम उन लोगों से प्यार करते हैं जिनसे हम शादी करना चाहते हैं?’”

"मेरा यही मतलब था, और मैंने ऐसा कहा भी था।"

“‘तुमने एक ऐसा विचार गढ़ा है जो एक स्त्री की भावनाओं को ठेस पहुँचाता है,’ उसने उत्तर दिया। ‘तुमने इसे ऐसे तरीके से घोषित किया है जो एक स्त्री की आत्मा को झकझोर देता है। तुम यह संकेत दे रहे हो कि मैंने तुम्हारे प्रति जो भी स्पष्ट दया दिखाई है, वह एक पति को फंसाने की एक जटिल, साहसी और बेशर्म चाल थी। तुम यह जता रहे हो कि अंत में तुम यहाँ दया के कारण मुझे अपना हाथ देने आए हो, क्योंकि मैंने तुम्हें प्रपोज किया है। मैं यह कहना चाहती हूँ: तुम्हारी दृष्टि पीली पड़ गई है; तुमने गलत देखा है। तुम्हारा दिमाग विकृत है; तुमने गलत निर्णय लिया है। तुम्हारी ज़बान तुम्हारा साथ नहीं देती; अब तुम गलत बोलते हो। मैंने तुम्हें कभी प्यार नहीं किया। यहीं निश्चिंत रहो। मेरा हृदय तुम्हारे लिए उतना ही निर्मल है जितना तुम्हारा हृदय मेरे लिए स्नेहहीन है।’

"मुझे उम्मीद है कि मेरे सवाल का जवाब मिल गया होगा, योर्क?"

“‘मैं एक अंधे, मदहोश किस्म के व्यक्ति जैसा लगता हूँ,’ मैंने यह टिप्पणी की थी।’”

"'मैंने तुमसे प्यार किया!' वह चिल्लाई। 'क्यों, मैं तुम्हारे साथ एक बहन की तरह खुलकर पेश आई हूँ—मैंने तुम्हें कभी नहीं ठुकराया, कभी तुमसे डरी नहीं।' उसने विजयी भाव से कहा—'तुम मुझे अपने आने से डरा नहीं सकते, न ही अपने प्रभाव से मेरी धड़कन तेज कर सकते हो।'

मैंने आरोप लगाया कि अक्सर जब वह मुझसे बात करती थी, तो वह शर्मा जाती थी, और मेरा नाम सुनकर वह भावुक हो जाती थी।

"'तुम्हारे लिए नहीं!' उसने संक्षेप में कहा। मैंने स्पष्टीकरण मांगा, लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला।"

"'जब मैं स्कूल के उत्सव में तुम्हारे बगल में बैठा था, क्या तुम्हें तब लगा था कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ? जब मैंने तुम्हें मेथॉर्न लेन में रोका था, क्या तुम्हें तब लगा था कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ? जब मैंने तुम्हें लेखा कार्यालय में बुलाया था, जब मैं तुम्हारे साथ फुटपाथ पर चला था, क्या तुम्हें तब लगा था कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ?'

"तो उसने मुझसे सवाल किया; और मैंने कहा कि मैंने किया था।"

हे भगवान! यॉर्क, वह उठी, वह लंबी हुई, वह फैल गई और लगभग ज्वाला की तरह परिष्कृत हो गई। उसके पूरे शरीर में कंपन था, जैसे जलते हुए कोयले में होता है जब उसका चमकीला सिंदूरी रंग सबसे गर्म होता है।

"'इसका अर्थ यह है कि आप मेरे बारे में सबसे बुरी राय रखते हैं; कि आप मुझे उन सभी चीजों से वंचित करते हैं जिन्हें मैं सबसे अधिक महत्व देती हूँ। इसका अर्थ यह है कि मैं अपनी सभी बहनों के साथ विश्वासघात कर रही हूँ; कि मैंने ऐसा काम किया है जो कोई भी स्त्री स्वयं को और अपनी जाति को अपमानित किए बिना नहीं कर सकती; कि मैंने उस जगह की तलाश की है जहाँ मेरे जैसे पवित्र लोग स्वाभाविक रूप से जाने से घृणा करते हैं।' वह और मैं कई मिनट तक चुप रहे। 'ल्यूसिफर, सुबह का तारा,' वह आगे बोली, 'तुम गिर गए हो! तुम, जो कभी मेरी नज़रों में ऊँचे थे, नीचे गिरा दिए गए हो; तुम, जो कभी मेरी घनिष्ठ मित्रता में थे, बाहर निकाल दिए गए हो। जाओ!'

"मैं नहीं गई। मैंने उसकी आवाज कांपती सुनी थी, उसके होंठ थरथराते देखे थे। मुझे पता था कि आंसुओं का एक और तूफान आएगा, और फिर मुझे विश्वास हो गया कि कुछ शांति और कुछ धूप जरूर आएगी, और मैं उसका इंतजार करूंगी।"

"पहले की तरह तेज़, लेकिन पहले से ज़्यादा शांत, गर्म बारिश बरस रही थी।

उसके रोने में एक अलग ही आवाज़ थी—एक धीमी, ज़्यादा पछतावे भरी आवाज़। जब मैं देख रहा था, उसकी आँखें मेरी तरफ उठीं, एक ऐसी नज़र जो घमंड से ज़्यादा निंदा भरी थी, क्रोध से ज़्यादा शोक भरी थी।”

“‘ओह मूर!’ उसने कहा। यह ‘एट टू, ब्रूट!’ से भी बदतर था।”

“मैंने आह भरकर राहत महसूस की, लेकिन वह एक कराह में बदल गई। कैन जैसी उदासी ने मेरे सीने में दर्द पैदा कर दिया।”

मैंने कहा, “‘मैंने जो किया है उसमें गलती हुई है, और इसके लिए मुझे कड़वा प्रतिफल मिला है, जिसे मैं उससे दूर जाकर खर्च करूंगा जिसने मुझे ये दिया है।’”

“मैंने अपनी टोपी उतार ली। मैं इस तरह जाने को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था, और मुझे यकीन था कि वह मुझे जाने नहीं देगी। और वह जाने भी नहीं देती, सिवाय उस जानलेवा पीड़ा के जो मैंने उसके स्वाभिमान को पहुँचाई थी, जिसने उसकी करुणा को कुचल दिया और उसे चुप करा दिया।”

“जब मैं दरवाजे पर पहुंचा तो मुझे अपनी मर्जी से वापस मुड़ना पड़ा, उसके पास जाना पड़ा और कहना पड़ा, ‘मुझे माफ कर दीजिए।’”

“‘मैं ऐसा कर सकती थी, अगर मुझे खुद को भी माफ न करना होता,’ उसने जवाब दिया; ‘लेकिन एक समझदार आदमी को इतनी दूर तक गुमराह करना मेरे लिए गलत बात होगी।’”

“मैं अचानक कुछ बड़बड़ाने लगा, मुझे याद नहीं। मुझे पता है कि वह भावपूर्ण था, और मेरी इच्छा और उद्देश्य उसे खुद से निर्दोष साबित करना था। दरअसल, उसके मामले में आत्म-आरोप एक भ्रम मात्र था।”

अंततः उसने अपना हाथ बढ़ाया। पहली बार मेरा मन हुआ कि मैं उसे अपनी बाहों में भर लूँ और चूम लूँ। मैंने कई बार उसके हाथ को चूमा।

“‘एक दिन हम फिर से दोस्त बन जाएंगे,’ उसने कहा, ‘जब तुम्हें मेरे कार्यों और इरादों को सही परिप्रेक्ष्य में समझने का समय मिलेगा, और तुम उन्हें इतनी बुरी तरह से गलत नहीं समझोगे। समय तुम्हें सब कुछ समझने की सही कुंजी दे सकता है। तब शायद तुम मुझे समझ पाओगे, और तब हमारा मेल-मिलाप हो जाएगा।’”

विदाई की बूँदें धीरे-धीरे उसके गालों पर लुढ़क गईं। उसने उन्हें पोंछ दिया।

“‘जो कुछ हुआ उसके लिए मुझे बहुत खेद है—गहरा खेद है,’ वह सिसकते हुए बोली। मुझे भी, भगवान ही जानता है! इस तरह हम अलग हो गए।”

“एक विचित्र कहानी!” श्री योर्क ने टिप्पणी की।

“मैं अब ऐसा नहीं करूँगा,” उसके साथी ने कसम खाई; “जब तक मुझे प्यार न हो, मैं किसी औरत से शादी की बात नहीं करूँगा। अब से साख और व्यापार अपने आप चलेंगे। दिवालियापन जब चाहे तब आ सकता है। मैंने विपत्ति के डर को त्याग दिया है। मेरा इरादा है कि मैं लगन से काम करूँ, धैर्य से इंतज़ार करूँ, और धैर्य बनाए रखूँ। चाहे कुछ भी बुरा हो जाए, मैं अपनी कुल्हाड़ी और प्रवासी का ठिकाना लेकर लुई के साथ पश्चिम चला जाऊँगा; हम दोनों ने यह तय कर लिया है। कोई औरत मुझे फिर कभी उस नज़र से नहीं देखेगी जिस नज़र से मिस कील्डार देखती थी, न ही कोई औरत मेरे लिए वैसा महसूस करेगी जैसा मिस कील्डार करती थी। किसी औरत के सामने मैं फिर कभी एक साथ इतना मूर्ख और इतना धूर्त, इतना क्रूर और इतना बचकाना नहीं बनूँगा।”

“छी!” शांत स्वभाव वाले योर्क ने कहा, “तुम इसे बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हो; लेकिन फिर भी, मैं हैरान हूँ। पहली बात तो यह कि वह तुमसे प्यार नहीं करती थी; और दूसरी बात यह कि तुम उससे प्यार नहीं करते थे। तुम दोनों जवान हो; तुम दोनों सुंदर हो; तुम दोनों बुद्धि और स्वभाव से भी काफी अच्छे हो — सही पक्ष लो। आखिर ऐसी क्या समस्या थी कि तुम दोनों सहमत नहीं हो सके?”

“यॉर्क, हम कभी एक-दूसरे के साथ सहज नहीं रहे, न ही कभी हो सकते थे। दूर से हम एक-दूसरे की कितनी भी प्रशंसा करते हों, पास आने पर हम असहज हो जाते थे। मैं कमरे के एक कोने में बैठकर उसे दूसरे कोने में देखता रहा हूँ, शायद किसी उत्साहित, खुशनुमा पल में, जब उसके आस-पास उसके कुछ खास लोग होते थे— जैसे उसके पुराने प्रेमी, तुम और हेलस्टोन, जिनके साथ वह इतनी चंचल, खुशमिजाज और वाक्पटु है। मैंने उसे तब देखा है जब वह सबसे सहज, सबसे जीवंत और सबसे प्यारी थी; मेरे विचार से वह सुंदर थी। वह कभी-कभी सुंदर होती है, जब उसका मूड और पहनावा शानदार होता है। मैं थोड़ा और पास गया, यह सोचकर कि हमारी जान-पहचान ने मुझे पास आने का अधिकार दिया है। मैं उसके चारों ओर बैठे लोगों के समूह में शामिल हो गया, उसकी नज़रें अपनी ओर खींचीं और उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया; फिर हमने बातचीत की; और दूसरे लोग, शायद मुझे विशेष रूप से भाग्यशाली समझकर, धीरे-धीरे पीछे हट गए और हमें अकेला छोड़ दिया। क्या हम इस तरह अकेले रहकर खुश थे? मैं खुद कहूँ तो, नहीं। हमेशा एक बंधन का भाव हावी

हो जाता था। मैं तो हमेशा से ही सख्त और अजीब स्वभाव का था। हम राजनीति और व्यापार की बातें करते थे। घरेलू आत्मीयता की कोई कोमल भावना कभी हमारे दिलों को नहीं खोल पाई, न ही हमारी ज़ुबान को नरम और सहज बना पाई। अगर हमारे बीच कोई राज़ थे भी, तो वे हिसाब-किताब से जुड़े थे, दिल के नहीं। उसके स्नेह ने मुझमें कोई सुधार या नरमी नहीं लाई; उसने तो बस मेरे दिमाग को झकझोर दिया और मेरी तीक्ष्ण बुद्धि को और तेज़ कर दिया। वह कभी मेरे दिल में नहीं उतरी और न ही उसकी धड़कन को प्रभावित किया; और इसका कारण शायद यही था कि मुझे उसे प्यार करने का तरीका नहीं पता था।

“खैर, बेटा, ये तो अजीब बात है। मैं तुझ पर हंस सकता था और तेरे नज़ाकत को तुच्छ समझ सकता था; लेकिन चूंकि रात का अंधेरा है और हम अकेले हैं, तो मैं तुझे ये बताने में कोई संकोच नहीं करता कि तेरी बातें मुझे अपने बीते जीवन की एक झलक दिला देती हैं। पच्चीस साल पहले मैंने एक खूबसूरत औरत को मुझसे प्यार करने के लिए मनाने की कोशिश की थी, लेकिन उसने मना कर दिया। मुझे उसके स्वभाव की समझ नहीं थी; वो मेरे लिए एक पत्थर की दीवार थी, जिसमें न दरवाज़ा था न खिड़की।”

"लेकिन तुम उससे प्यार करते थे, योर्क; तुम मैरी केव की पूजा करते थे। आखिरकार, तुम्हारा आचरण एक पुरुष का था - किसी धन-लोभी का नहीं।"

“हाँ, मैं उससे प्यार करता था; लेकिन वह उस चाँद की तरह खूबसूरत थी जो आज रात दिखाई नहीं देता। आजकल उसके जैसी कोई नहीं है। मिस हेलस्टोन शायद उससे मिलती-जुलती दिखती हो, लेकिन कोई और नहीं।”

"किसकी शक्ल उससे मिलती-जुलती है?"

“उस काले कोट वाले अत्याचारी की भतीजी—वह शांत, कोमल मिस हेलस्टोन। कई बार मैंने चर्च में उस लड़की को देखने के लिए चश्मा लगाया है, क्योंकि उसकी नीली आँखें कोमल हैं, पलकें लंबी हैं; और जब वह छाया में बैठती है, एकदम शांत और पीली पड़ जाती है, और संयोग से उपदेश की लंबाई और चर्च की गर्मी से सो जाने वाली होती है, तो वह कैनोवा की संगमरमर की मूर्तियों में से एक जैसी लगती है।”

"क्या मैरी केव इसी शैली में थीं?"

“कहीं अधिक भव्य! — कम लड़की जैसी और कम शारीरिक। आप सोचते होंगे

कि उसके पंख और मुकुट क्यों नहीं थे। मेरी मैरी एक राजसी, शांत देवदूत थी।”

और आप उसे आपसे प्यार करने के लिए राजी नहीं कर सके?

"मैंने अपनी पूरी कोशिश की, फिर भी मैं सफल नहीं हो सका, हालांकि मैंने कई बार घुटने टेककर स्वर्ग से मदद के लिए प्रार्थना की।"

“मैरी केव वैसी नहीं थीं जैसा आप उन्हें समझते हैं, यॉर्क। मैंने उनकी तस्वीर पादरी के निवास पर देखी है। वह कोई देवदूत नहीं थीं, बल्कि एक गोरी, सुडौल चेहरे वाली, कम बोलने वाली महिला थीं—मेरी पसंद के हिसाब से कुछ ज़्यादा ही गोरी और बेजान। लेकिन, मान लीजिए कि वह जैसी थीं उससे कुछ बेहतर होतीं—”

“रॉबर्ट,” यॉर्क ने बात काटते हुए कहा, “मैं इस समय तुम्हें घोड़े से गिरा सकता हूँ। लेकिन मैं खुद को रोक रहा हूँ। मेरा विवेक कहता है कि तुम सही हो और मैं गलत। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरे अंदर जो जुनून अभी भी है, वह महज़ एक भ्रम का अवशेष है। अगर मिस केव में थोड़ी भी भावना या समझ होती, तो वह मेरे प्रति इतनी निर्भीक नहीं होतीं जितना उन्होंने दिखाया; वह उस कठोर चेहरे वाले तानाशाह के बजाय मुझे ही चुनतीं।”

मान लीजिए, यॉर्क, कि वह शिक्षित होती (उन दिनों महिलाओं को शिक्षित नहीं किया जाता था); मान लीजिए कि उसके पास एक विचारशील, मौलिक बुद्धि होती, ज्ञान के प्रति प्रेम होता, सूचना की प्यास होती, जिसे वह आपके होठों से सुनकर और आपके हाथों से नापकर प्राप्त करके सहज आनंद लेती; मान लीजिए कि जब वह आपके पास बैठती, तो उसकी बातचीत फलदायी, विविध, एक मनमोहक सुंदरता और सौम्य रुचि से भरी, शांत लेकिन स्पष्ट और उदार होती; मान लीजिए कि जब आप संयोग से उसके पास खड़े होते, या जब आप जानबूझकर उसके पास बैठते, तो आराम तुरंत आपका वातावरण बन जाता, और संतोष आपका तत्व; मान लीजिए कि जब भी उसका चेहरा आपकी निगाहों के नीचे होता, या उसका विचार आपके मन में भर जाता, तो आप धीरे-धीरे कठोर और चिंतित होना छोड़ देते, और शुद्ध स्नेह, घर के प्रति प्रेम, मधुर वार्तालाप की प्यास, रक्षा और पालन-पोषण की निस्वार्थ लालसा, आपके व्यापार की घिनौनी, सड़ाने वाली गणनाओं का स्थान ले लेती; मान लीजिए, इन सबके साथ, कि कई बार, जब आप अपनी मैरी का छोटा हाथ थामने के लिए इतने भाग्यशाली होते, तो आपने उसे थामते समय कांपते हुए महसूस किया होता, ठीक वैसे ही जैसे एक नन्ही सी चिड़िया अपने घोंसले से निकालते ही कांप उठती है;

मान लीजिए कि कमरे में प्रवेश करते ही आपने उसे पीछे हटते हुए देखा होता, फिर भी यदि आप उसे उसके एकांत में ढूंढते, तो वह आपका स्वागत एक सुंदर कुंवारी चेहरे पर आने वाली सबसे प्यारी मुस्कान से करती, और अपनी आँखें आपसे इसलिए फेर लेती ताकि उनकी स्पष्टता बहुत कुछ प्रकट न कर दे; संक्षेप में, मान लीजिए कि आपकी मैरी ठंडी नहीं, बल्कि विनम्र होती; खाली नहीं, बल्कि चिंतनशील होती; मंदबुद्धि नहीं, बल्कि संवेदनशील होती; नासमझ नहीं, बल्कि मासूम होती; संकोची नहीं, बल्कि पवित्र होती, — तो क्या आप उसे छोड़कर किसी दूसरी स्त्री से उसके धन के लिए प्रेम करते?

मिस्टर यॉर्क ने अपनी टोपी उठाई और अपने रूमाल से अपना माथा पोंछा।

“चाँद निकल आया है,” यह उसकी पहली, कुछ हद तक बेतुकी टिप्पणी थी, उसने चाबुक से मैदान की ओर इशारा करते हुए कहा। “देखो, वो धुंध में ऊपर उठ रही है, एक अजीब लाल गुस्से से हमें घूर रही है। वो उतनी ही बेजान है जितनी बूढ़े हेलस्टोन का माथा हाथीदांत का। रशएज पर अपना गाल उस तरह टिकाकर, और हमें घूरती हुई धमकी भरी निगाहों से देखकर उसका क्या मतलब है?”

"यॉर्क, अगर मैरी ने तुम्हें चुपचाप लेकिन निष्ठापूर्वक, पवित्रता से लेकिन जोश से प्यार किया होता, जैसा कि तुम अपनी पत्नी से प्यार की उम्मीद करते हो, तो क्या तुम उसे छोड़ देते?"

“रॉबर्ट!” — उसने अपना हाथ उठाया, उसे हवा में लटकाए रखा और रुक गया — “रॉबर्ट! यह एक अजीब दुनिया है, और इंसान अराजकता के उथल-पुथल में पैदा हुए सबसे अजीब अवशेषों से बने हैं। मैं बड़ी-बड़ी कसमें खा सकता हूँ — ऐसी कसमें जिन्हें सुनकर शिकारी सोचेंगे कि बिलबेरी मॉस में कोई कड़वा पक्षी दहाड़ रहा है — कि, जैसा तुम कह रहे हो, मौत ही मुझे मैरी से अलग कर सकती थी। लेकिन मैं पचपन साल से इस दुनिया में जी रहा हूँ; मुझे इंसानी स्वभाव का अध्ययन करने के लिए मजबूर होना पड़ा है; और, एक कड़वी सच्चाई कहूँ तो, संभावना यह है कि अगर मैरी ने मुझसे प्यार किया होता और मुझे ठुकराया न होता, अगर मुझे उसके स्नेह का भरोसा होता, उसकी वफादारी का यकीन होता, किसी भी संदेह से परेशान न हुआ होता, किसी भी अपमान से आहत न हुआ होता — संभावना यह है” (उसने अपना हाथ काठी पर भारी कर दिया) — “संभावना यह है कि मैं उसे छोड़ देता!”

वे चुपचाप कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे थे। दोबारा बोलने से पहले ही वे रशएज

के दूसरी ओर पहुँच चुके थे। ब्रायर्फ़ील्ड की रोशनी दलदली भूमि के बैंगनी रंग को चकाचौंध कर रही थी। रॉबर्ट, जो सबसे छोटा था और अपने साथी की तुलना में अतीत की घटनाओं से कम प्रभावित था, ने सबसे पहले चलना शुरू किया।

"मेरा मानना है—और मैं इसे प्रतिदिन सिद्ध होते देखता हूँ—कि इस संसार में हमें कुछ भी ऐसा नहीं मिलता जो सहेज कर रखने लायक हो, यहाँ तक कि कोई सिद्धांत या दृढ़ विश्वास भी नहीं, सिवाय शुद्धिकरण की अग्नि से या सशक्त बनाने वाले संकट से। हम गलती करते हैं, गिरते हैं, विनम्र होते हैं; फिर हम अधिक सावधानी से चलते हैं। हम लालच से बुराई के सुनहरे प्याले से या लोभ के भिखारी के बटुए से जहर खाते-पीते हैं। हम बीमार पड़ते हैं, पतित होते हैं; हमारे भीतर की हर अच्छाई हमारे विरुद्ध विद्रोह करती है; हमारी आत्माएँ हमारे शरीर के विरुद्ध कड़वी आक्रोश से उठ खड़ी होती हैं; एक गृहयुद्ध का दौर आता है; यदि आत्मा में शक्ति हो, तो वह उसके बाद विजय प्राप्त करती है और शासन करती है।"

"अब तुम क्या करने वाले हो, रॉबर्ट? तुम्हारी क्या योजनाएँ हैं?"

"अपनी निजी योजनाओं को मैं अपने तक ही सीमित रखूंगा—जो कि बहुत आसान है, क्योंकि फिलहाल मेरी कोई निजी योजना नहीं है। मेरी जैसी स्थिति में, एक कर्जदार व्यक्ति के लिए निजी जीवन का कोई अधिकार नहीं है। सार्वजनिक योजनाओं के बारे में मेरे विचार थोड़े बदल गए हैं। बर्मिंघम में रहते हुए मैंने वास्तविकता को थोड़ा गहराई से समझा, इस देश की मौजूदा समस्याओं के कारणों का गहराई से अध्ययन किया और उनकी जड़ तक जाकर उनका विश्लेषण किया। लंदन में भी मैंने यही किया। गुमनाम रहकर मैं जहां चाहूं जा सकता था, जिससे चाहूं मिल सकता था। मैं वहां गया जहां भोजन, ईंधन और कपड़ों की कमी थी; जहां कोई काम नहीं था और कोई उम्मीद नहीं थी। मैंने कुछ लोगों को देखा, जिनमें स्वाभाविक रूप से उच्च प्रवृत्ति और अच्छे भाव थे, लेकिन वे घोर अभाव और कष्टदायक दुखों के बीच दबे हुए थे। मैंने कई ऐसे लोगों को देखा जो जन्म से ही निम्न थे, और जिनके पास शिक्षा की कमी के कारण केवल पशुवत इच्छाएं ही बची थीं, वे उन इच्छाओं में निराश, भूखे-प्यासे और भूखे जानवरों की तरह हताश थे। मैंने वह देखा जिसने मेरे मस्तिष्क को एक नया सबक सिखाया और मेरे हृदय को नई भावनाओं से भर दिया। अब तक मैंने जितनी कोमलता या भावुकता दिखाई है, उससे अधिक दिखाने का मेरा कोई इरादा नहीं है; विद्रोह और महत्वाकांक्षा मैं उन्हें वैसे ही देखता हूँ जैसे हमेशा

देखता आया हूँ। मैं पहले की तरह ही एक दंगाई भीड़ का सामना करूँगा; मैं पहले की तरह ही उत्सुकता से भागे हुए सरगना का पीछा करूँगा, उसे बेरहमी से पकड़ूँगा और उसे उतनी ही सख्ती से सज़ा दूँगा; लेकिन अब मैं यह मुख्य रूप से उन लोगों की भलाई और सुरक्षा के लिए करूँगा जिन्हें उसने गुमराह किया है। यॉर्क, कुछ ऐसा है जिस पर ध्यान देना चाहिए, जो मनुष्य के व्यक्तिगत स्वार्थ से परे है, सुनियोजित योजनाओं की उन्नति से परे है, यहाँ तक कि बकाया ऋणों के भुगतान से भी परे है। स्वयं का सम्मान करने के लिए, मनुष्य को यह विश्वास करना चाहिए कि वह अपने साथी मनुष्यों के साथ न्याय कर रहा है। जब तक मैं अज्ञानता के प्रति अधिक विचारशील और पीड़ा के प्रति अधिक सहनशील नहीं हो जाता, तब तक मैं स्वयं को घोर अन्यायी मानूँगा। — अब क्या?" उसने अपने घोड़े से कहा, जो पानी की लहर की आवाज़ सुनकर और प्यासा होकर रास्ते के किनारे एक कुंड की ओर मुड़ गया, जहाँ चाँद की किरणें एक क्रिस्टल जैसी लहर में खेल रही थीं।

"यॉर्क," मूर ने आगे कहा, "आगे बढ़ो; मुझे उसे पीने देना होगा।"

योर्क धीरे-धीरे आगे बढ़ा, और दूर तक फैली अनेक रोशनी में से ब्रायर्मेन्स की रोशनी को पहचानने में व्यस्त रहा। स्टिलब्रो मूर पीछे छूट गया; दोनों ओर शाम के धुंधलके में बागान दिखाई देने लगे; वे पहाड़ी से नीचे उतर रहे थे; उनके नीचे घनी आबादी वाली घाटी फैली हुई थी: उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वे अपने घर में आ गए हों।

अब चारों ओर बंजर भूमि न होने के कारण, श्री यॉर्क के लिए टोपी उठते देखना और दीवार के पीछे से किसी की आवाज़ सुनना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। हालाँकि, शब्द विचित्र थे।

"जब दुष्ट का नाश होता है, तो शोर मचता है," उसने कहा; और आगे कहा, "जैसे बवंडर गुजर जाता है, वैसे ही दुष्ट का भी नाश हो जाता है" (गहरी गर्जना के साथ): "भय उसे जल के समान जकड़ लेता है; नरक उसके सामने नंगा हो जाता है। वह अज्ञान से मर जाएगा।"

एक तेज रोशनी और तीखी आवाज ने रात की शांति भंग कर दी। यॉर्क को मुड़ने से पहले ही पता चल गया था कि बर्मिंघम के चारों दोषियों का बदला ले लिया गया है।

अध्याय XXXI.

चाचा और भतीजी।

फैसला हो चुका था। सर फिलिप ननेली को पता था; शर्ली को पता था; मिस्टर सिम्पसन को पता था। उस शाम, जब फील्डहेड परिवार के सभी सदस्य ननेली प्रायरी में भोजन कर रहे थे, तब मामला तय हो गया।

दो-तीन बातों ने बैरोनेट को एक खास मोड़ पर ला खड़ा किया। उन्होंने देखा कि मिस कील्डर उदास और नाज़ुक लग रही थीं। उनके व्यवहार के इस नए रूप ने उनके अंदर छिपी काव्यात्मक भावना को झकझोर दिया। उनके मन में एक सहज कविता का विचार आया; और जब वह विचार उनके मन में पनप ही रहा था, तभी उनकी एक बहन ने उनकी प्रेमिका को पियानो पर बैठने और एक गीत गाने के लिए मना लिया - सर फिलिप के ही गीतों में से एक। यह गीत सबसे सरल, सबसे कम बनावटी था - उनकी अनेक रचनाओं में से सबसे उत्तम।

संयोगवश, कुछ ही क्षण पहले शर्ली खिड़की से पार्क को निहार रही थी। उसने उस तूफानी चांदनी को देखा जिसे शायद उसी क्षण "प्रोफेसर लुई" अपने ओक की लकड़ी के बैठक कक्ष की जाली से निहार रहे थे; उसने उस क्षेत्र के एकांत वृक्षों को देखा - चौड़े, मजबूत, फैले हुए ओक के वृक्ष और ऊंचे-ऊंचे वीर बीच के वृक्ष - जो आंधी से जूझ रहे थे। उसके कानों में नीचे जंगल की पूरी गर्जना सुनाई दी; बादलों की तेज़ आवाजाही, आंखों के सामने से तेज़ी से गुज़रता चांद, ये सब उसकी दृष्टि में समा गए। वह दृश्य और ध्वनि से हट गई - भावविभोर, यदि मंत्रमुग्ध नहीं; जागृत, यदि प्रेरित नहीं।

अनुरोध के अनुसार उसने गीत गाया। उस गाथागीत में प्रेम के बारे में बहुत कुछ था — सच्चा प्रेम जो अपने साथी को कभी नहीं छोड़ता; ऐसा प्रेम जिसे आपदा भी नहीं हिला सकती; ऐसा प्रेम जो विपत्ति में और भी गहरा हो जाता है, और गरीबी में और भी मज़बूती से जुड़ा रहता है। गीत के बोल एक मधुर पुरानी धुन पर आधारित थे; वे अपने आप में सरल और मधुर थे। शायद, पढ़ने पर उनमें कुछ शक्ति की कमी महसूस होती थी; लेकिन जब उन्हें खूबसूरती से गाया जाता है, तो उनमें कोई कमी नहीं रह जाती। शर्ली ने उन्हें बहुत अच्छे से गाया। उसने भावनाओं में कोमलता भर दी; उसने जुनून को शक्ति से भर दिया। उस शाम उसकी आवाज़ मधुर थी, और भाव नाटकीय। उसने सभी को प्रभावित किया, और एक को मंत्रमुग्ध कर दिया।

वाद्य यंत्र छोड़कर वह आग के पास गई और एक आसन पर बैठ गई—जो आधा स्टूल और आधा गद्दी जैसा था। महिलाएँ उसके चारों ओर थीं; उनमें से कोई नहीं बोली। मिस सिम्पसन और मिस ननेली उसे ऐसे देख रही थीं जैसे शांत मुर्गियाँ किसी बगुले, आइबिस या किसी अन्य अजनबी पक्षी को देखती हैं। आखिर वह ऐसा क्यों गा रही थी? वे कभी ऐसा नहीं गाती थीं। क्या इतने भावपूर्ण, इतनी मौलिकता के साथ गाना उचित था—जो किसी स्कूली छात्रा से बिल्कुल अलग था? बिलकुल नहीं। यह अजीब था, यह असामान्य था। जो अजीब है वह गलत होना चाहिए; जो असामान्य है वह अनुचित होना चाहिए। शर्ली का मूल्यांकन किया जा रहा था।

इसके अलावा, बूढ़ी ननेली अपनी विशाल कुर्सी पर बैठी, जो चूल्हे के पास थी, उसे पत्थर की तरह घूर रही थी। उसकी निगाहें कह रही थीं, "यह औरत मेरी या मेरी बेटियों की तरह नहीं है। मैं इसे अपने बेटे की पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं करती।"

उसके बेटे ने उसकी नज़र को भांप लिया और उसका अर्थ समझ गया। वह घबरा गया। जिस चीज़ को वह इतनी शिद्दत से जीतना चाहता था, उसे खोने का खतरा मंडरा रहा था। उसे जल्दी करनी होगी।

जिस कमरे में वे थे, वह कभी एक चित्र-दीर्घा हुआ करता था। सर फिलिप के पिता - सर मोनकटन - ने इसे एक बैठक कक्ष में बदल दिया था; लेकिन फिर भी इसमें एक रहस्यमय, रहस्यमय सा माहौल था। एक गहरी खिड़की वाला कोना - जिसमें एक सोफा, एक मेज और एक छोटी सी अलमारी थी - एक कमरे के भीतर एक कमरा जैसा लग रहा था। वहाँ खड़े दो लोग आपस में बातचीत कर सकते थे, और अगर बातचीत न लंबी हो और न ही तेज़, तो किसी को कुछ पता नहीं चलता।

सर फिलिप ने अपनी दो बहनों को युगल गीत गाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने मिस सिम्पसन को व्यस्त रखा। बड़ी उम्र की महिलाएं आपस में बातचीत कर रही थीं। उन्होंने देखा कि इसी बीच शर्ली तस्वीरें देखने के लिए उठ खड़ी हुई, यह देखकर उन्हें खुशी हुई। उन्हें अपनी एक पूर्वज के बारे में एक कहानी सुनानी थी, जिनकी सांवली सुंदरता दक्षिण के फूल जैसी थी। वे उसके पास गए और कहानी सुनाने लगे।

उस आले को सजाने वाली अलमारी में उसी महिला की स्मृति चिन्ह रखे थे; और जब शर्ली जड़ाऊ शेल्फ पर रखी प्रार्थना पुस्तक और माला को देखने के लिए झुकी हुई थी, और जब मिस ननेली एक लंबी चीख में मग्न थीं, जो भावहीन, मौलिकता से रहित, पूरी तरह से पारंपरिक और बिल्कुल अर्थहीन थी, सर फिलिप भी झुके और कुछ जल्दबाजी में फुसफुसाए। पहले तो मिस कील्डर इतनी शांत हो गईं कि ऐसा लगा मानो उस फुसफुसाहट ने उन्हें किसी जादू से मूर्ति बना दिया हो; लेकिन थोड़ी देर बाद उन्होंने ऊपर देखा और जवाब दिया। वे अलग हो गए। मिस कील्डर आग के पास लौट आईं और अपनी जगह पर बैठ गईं। बैरोनेट उन्हें देखते रहे, फिर जाकर अपनी बहनों के पीछे खड़े हो गए। श्री सिम्पसन - केवल श्री सिम्पसन - ने इस मूक अभिनय को देखा।

उस सज्जन ने अपने स्वयं के निष्कर्ष निकाल लिए। यदि वे उतने ही तीक्ष्ण बुद्धि वाले होते जितने कि वे दखलंदाजी कर रहे थे, उतने ही गहन होते जितने कि वे ताक-झांक कर रहे थे, तो शायद उन्हें सर फिलिप के चेहरे में कुछ ऐसा मिल जाता जिससे वे अपने निष्कर्ष को सुधार सकते थे। हमेशा की तरह सतही, जल्दबाज़ और निश्चित, वे बड़े हर्षोल्लास में घर लौट गए।

वह राज़ छुपाने में माहिर नहीं थे। किसी विषय पर उत्साहित होते ही वे उसके बारे में बात करने से खुद को रोक नहीं पाते थे। अगली सुबह, अपने बेटे के ट्यूटर को सचिव के रूप में नियुक्त करने का अवसर मिलने पर, उन्होंने बड़ी मुश्किल से, दिखावटी लहजे में और बनावटी ढंग से, उन्हें यह बताया कि उन्हें जल्द ही दक्षिण लौटने की तैयारी कर लेनी चाहिए, क्योंकि जिस महत्वपूर्ण काम के कारण उन्हें (श्री सिम्पसन) यॉर्कशायर में इतने लंबे समय तक रुकना पड़ा था, वह अब सौभाग्यपूर्ण ढंग से पूरा होने वाला था। उनके अथक परिश्रम का अंततः सुखद फल मिलने वाला था। परिवार में एक योग्य सदस्य जुड़ने वाला था।

“क्या सर फिलिप ननेली में?” लुई मूर ने अनुमान लगाया।

इसके बाद श्री सिम्पसन ने एक साथ चुटकी भर तंबाकू का सेवन किया और खिलखिलाकर हँसे, जिसे उन्होंने अचानक अपनी गरिमा के कारण रोक लिया और शिक्षक को अपना काम जारी रखने का आदेश दिया।

एक-दो दिन तक श्री सिम्पसन तेल की तरह शांत रहे, लेकिन साथ ही वे बहुत बेचैन भी लग रहे थे, और चलते समय उनकी चाल किसी गर्म तवे पर पैर रखती मुर्गी जैसी थी। वे लगातार खिड़की से बाहर देखते रहते और रथों के पहियों की आहट सुनते रहते। ब्लूबीयर्ड की पत्नी - सिसरा की माँ - उनके लिए कुछ भी मायने नहीं रखती थीं। वे उस समय का इंतज़ार कर रहे थे जब औपचारिक रूप से मामला खोला जाएगा, जब उनसे सलाह ली जाएगी, जब वकीलों को बुलाया जाएगा, जब समझौते की चर्चाएँ और दुनियावी तामझाम का सारा सिलसिला शुरू होगा।

आखिरकार एक पत्र आया। उसने खुद थैले से निकालकर मिस कील्डर को दिया। वह लिखावट पहचानता था; वह मुहर पर बने चिह्न को भी पहचानता था। उसने पत्र को खुलते और पढ़ते हुए नहीं देखा, क्योंकि शर्ली उसे अपने कमरे में ले गई थी; न ही उसने पत्र का उत्तर देखा, क्योंकि उसने अपना उत्तर छुपाकर लिखा था, और वह भी बहुत लंबा-चौड़ा—लगभग पूरा दिन लग गया था। उसने उससे पूछा कि क्या पत्र का उत्तर दिया गया है; उसने जवाब दिया, "हाँ।"

फिर से वह इंतज़ार करता रहा— खामोशी से इंतज़ार करता रहा, बोलने की हिम्मत बिल्कुल नहीं कर पा रहा था, शर्ली के चेहरे पर कुछ ऐसा था जिसने उसे चुप करा दिया था—एक बहुत ही भयानक चीज़—जो उसके लिए बेलशज़र के लिए दीवार पर लिखे संदेश की तरह समझ से परे थी। उसे कई बार लुई मूर के रूप में डैनियल को फोन करके अनुवाद पूछने का मन हुआ; लेकिन उसकी गरिमा ने उसे अंतरंग होने से रोक दिया। शायद डैनियल को भी उस पेचीदा अनुवाद से जुड़ी अपनी निजी परेशानियाँ थीं; वह एक ऐसे छात्र की तरह लग रहा था जिसके लिए व्याकरण खाली और शब्दकोश मूक हैं।

श्री सिम्पसन कुछ समय के लिए बाहर गए थे, ताकि डी वाल्डेन हॉल में अपने दोस्तों के साथ कुछ चिंताजनक पल बिता सकें। वे उम्मीद से थोड़ा जल्दी लौट आए। उनका परिवार और मिस कील्डर ओक के बैठक कक्ष में एकत्रित थे। उन्होंने मिस कील्डर से बात करते हुए उनसे अनुरोध किया कि वे उनके साथ दूसरे कमरे में चलें। वे

उनसे "पूरी तरह से निजी बातचीत" करना चाहते थे।

वह बिना कोई सवाल पूछे और बिना कोई हैरानी जताए उठ खड़ी हुई।

“बहुत खूब, महोदय,” उसने दृढ़ स्वर में कहा, मानो उसे पता चला हो कि दंत चिकित्सक उसका वह बड़ा सा दोहरा दाँत निकालने आया है, जिससे वह पिछले पूरे महीने असहनीय पीड़ा झेल रहा था। उसने अपनी सिलाई का सामान और अंगुली खिड़की के पास ही छोड़ दी और अपने चाचा के पीछे-पीछे चल पड़ी, जहाँ वे उसे ले जा रहे थे।

ड्राइंग रूम में बंद होकर, दोनों आमने-सामने रखी एक-एक आर्मचेयर पर बैठ गए, उनके बीच कुछ गज की दूरी थी।

“मैं डी वाल्डेन हॉल गया था,” श्री सिम्पसन ने कहा। वे थोड़ी देर रुके। मिस कील्डर की निगाहें सुंदर सफेद और हरे रंग के कालीन पर टिकी थीं। इस जानकारी के लिए किसी प्रतिक्रिया की आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

“मैंने सीखा है,” वह धीरे-धीरे बोलने लगा — “मैंने एक ऐसी बात सीखी है जो मुझे आश्चर्यचकित करती है।”

अपनी तर्जनी उंगली पर गाल टिकाकर, वह यह जानने के लिए इंतजार कर रही थी कि क्या परिस्थिति है।

ऐसा लगता है कि ननेली प्रायरी बंद है — परिवार वापस अपने घर — — शायर चला गया है। ऐसा लगता है कि बैरोनेट — सर फिलिप स्वयं अपनी माँ और बहनों के साथ गए हैं।

“बिल्कुल!” शर्ली ने कहा।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्या आप भी मेरी तरह इस खबर को सुनकर आश्चर्यचकित हैं?"

"जी नहीं, महोदय।"

क्या यह आपके लिए नई खबर है?

"जी श्रीमान।"

“मेरा मतलब है—मेरा मतलब है,” श्री सिम्पसन अपनी कुर्सी पर बेचैनी से हिलते-डुलते हुए बोले, अब तक के अपने संक्षिप्त और स्पष्ट शब्दों को छोड़कर, वे अपने हमेशा के लंबे, उलझे हुए और चिड़चिड़े अंदाज़ में लौट आए— “मुझे पूरी तरह से स्पष्टीकरण चाहिए। मुझे टाला नहीं जा सकता। मैं—मैं—अपनी बात सुनाए जाने पर

ज़ोर दूंगा, और—अपनी बात मनवाने पर ज़ोर दूंगा। मेरे सवालों के जवाब मिलने ही चाहिए। मुझे स्पष्ट और संतोषजनक जवाब चाहिए। मेरे साथ खिलवाड़ नहीं किया जा सकता। (चुपचाप।)

“यह एक अजीब और असाधारण घटना है — एक बहुत ही अनोखी — एक बेहद विचित्र घटना! मुझे लगा सब ठीक है, मुझे कुछ और पता ही नहीं था; और अचानक — परिवार गायब हो गया!”

"मुझे लगता है, महोदय, उन्हें जाने का अधिकार था।"

“सर फिलिप चले गए!” (जोर देते हुए)।

शर्ली ने अपनी भौहें उठाईं। "शुभ यात्रा!" उसने कहा।

“यह ठीक नहीं है; इसमें बदलाव करना होगा, महोदया।”

उसने अपनी कुर्सी आगे खींची; उसने उसे पीछे धकेला; वह पूरी तरह से क्रोधित और पूरी तरह से असहाय लग रहा था।

“अरे, अरे चाचा जी,” शर्ली ने विनती करते हुए कहा, “गुस्से में मत आइए, वरना बात अधूरी रह जाएगी। जो जानना चाहते हो पूछिए। मैं भी आपकी तरह ही समझाने को तैयार हूँ। मैं आपको सच-सच जवाब देने का वादा करती हूँ।”

“मैं जानना चाहता हूँ — मैं यह जानना चाहता हूँ, मिस कील्डर, कि क्या सर फिलिप ने आपको कोई प्रस्ताव दिया है?”

"उसके पास है।"

“क्या आप इसे स्वीकार करते हैं?”

मैं इसे स्वीकार करता हूँ। लेकिन अब, आगे बढ़ो। इस मुद्दे को सुलझा हुआ समझो।

"क्या उसने उस रात आपको कोई प्रस्ताव दिया था जब हमने मठ में भोजन किया था?"

“इतना कहना ही काफी है कि उसने यह कर दिखाया। आगे बढ़ो।”

"उन्होंने उस कमरे में, जो पहले एक चित्र-दीर्घा हुआ करता था, यह प्रस्ताव रखा कि सर मोनकटन उसे एक सैलून में बदल दें?"

कोई जवाब नहीं।

“आप दोनों एक कैबिनेट की जांच कर रहे थे। मैंने सब कुछ देखा। मेरी दूरदर्शिता में कोई कमी नहीं थी—यह कभी नहीं होती। बाद में आपको उनसे एक पत्र मिला।

किस विषय पर—उसमें क्या लिखा था?”

"बात नहीं।"

“मैडम, क्या आप मुझसे इसी तरह बात करती हैं?”

शर्ली का पैर कालीन पर तेजी से थपथपा रहा था।

"तुम वहाँ चुपचाप और उदास बैठे हो - तुम जिसने सच बोलने का वादा किया था।"

“महोदय, मैंने अब तक आपके सवालों का जवाब दे दिया है। आप आगे बढ़िए।”

मैं वह पत्र देखना चाहूंगा।

"तुम यह नहीं देख सकते।"

"मुझे ऐसा करना ही होगा, महोदया; मैं आपका अभिभावक हूँ।"

"अब मैं किसी की देखरेख में नहीं हूं, इसलिए मेरा कोई अभिभावक नहीं है।"

“अकृतज्ञ प्राणी! जिसे मैंने अपनी बेटी की तरह पाला-पोसा — —“

“एक बार फिर, चाचा जी, कृपया मुद्दे पर ही रहें। हम दोनों शांत रहें। मैं तो गुस्से में नहीं आना चाहता; लेकिन आप जानते हैं, अगर आप मुझे हद से ज़्यादा उकसा दें, तो मुझे अपनी बातों की परवाह नहीं रहती – मैं फिर जल्दी काबू में नहीं आता। सुनिए! आपने मुझसे पूछा था कि क्या सर फिलिप ने मुझे कोई प्रस्ताव दिया था। उस सवाल का जवाब मिल गया है। अब आप आगे क्या जानना चाहते हैं?”

मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपने उसे स्वीकार किया या अस्वीकार किया, और मुझे यह पता चल जाएगा।

“बिल्कुल, आपको यह पता होना चाहिए। मैंने उसे मना कर दिया।”

“उन्हें मना कर दिया! तुमने— तुमने, शर्ली कील्डर, सर फिलिप ननेली को मना कर दिया?”

“मैंने किया।”

वह बेचारा सज्जन अपनी कुर्सी से उछल पड़ा, और पहले दौड़कर और फिर कमरे में इधर-उधर भागने लगा।

“ये रहा! ये रहा! ये रहा!”

"सच कहूं तो, मुझे खेद है, चाचा जी, आप इतने निराश हैं।"

कुछ लोगों पर माफी या पश्चाताप का कोई असर नहीं होता। नरमी और सुलह कराने के बजाय, ये उन्हें और भी उग्र और कठोर बना देते हैं। श्री सिम्पसन भी उन्हीं में

से एक थे।

“क्या मैंने निराश किया? इससे मुझे क्या लेना-देना है? क्या इसमें मेरी कोई दिलचस्पी है? शायद आप यह इशारा कर रहे हैं कि मेरे कुछ इरादे हैं?”

"ज्यादातर लोगों के कार्यों के पीछे किसी न किसी प्रकार का मकसद होता है।"

“वह मेरे सामने ही मुझ पर आरोप लगाती है! मैं, जो उसकी अभिभावक रही हूँ, मुझ पर बुरे इरादों का आरोप लगाती है!”

मैंने बुरे इरादों की बात नहीं कही।

और अब तुम बहाने बना रहे हो; तुम्हारे पास कोई सिद्धांत नहीं हैं!

“चाचा जी, आप मुझे थका देते हैं। मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ।”

“तुम नहीं जाओगी! मुझे जवाब चाहिए। मिस कील्डर, आपकी क्या मंशा है?”

“किस संदर्भ में?”

“विवाह के संदर्भ में?”

"चुप रहना और अपनी मर्जी से सब कुछ करना।"

"जैसा आप चाहें! ये शब्द अत्यंत अशोभनीय हैं।"

“श्री सिम्पसन, मैं आपको सलाह देता हूं कि आप अपमानजनक भाषा का प्रयोग न करें। आप जानते हैं कि मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूंगा।”

“तुम फ्रेंच पढ़ते हो। तुम्हारा दिमाग फ्रेंच उपन्यासों से दूषित हो चुका है। तुमने फ्रेंच सिद्धांतों को आत्मसात कर लिया है।”

“जिस जमीन पर तुम चल रहे हो, उसके नीचे से एक गहरी खोखली आवाज आ रही है। सावधान रहो!”

“इसका अंत बदनामी में ही होगा, चाहे देर से ही सही। मुझे इसका पहले से ही अंदाजा था।”

"क्या आप यह दावा कर रहे हैं, महोदय, कि जिस मामले में मैं शामिल हूं उसका अंत बदनामी में होगा?"

“हाँ, ऐसा ही होगा—हाँ, ऐसा ही होगा। अभी तुमने कहा था कि तुम अपनी मर्जी से काम करोगे। तुम किसी नियम को नहीं मानते—किसी सीमा को नहीं मानते।”

"बेवकूफी भरी बातें, और बेहद अश्लील!"

"शिष्टाचार की परवाह किए बिना, आप मर्यादा का उल्लंघन करने को तैयार हैं।"

"आप मुझे थका देते हैं, चाचा।"

"क्या, महोदया— सर फिलिप को मना करने के आपके क्या कारण हो सकते हैं?"

“अंत में एक और समझदारी भरा सवाल आया है; मुझे इसका जवाब देने में खुशी होगी। सर फिलिप मुझसे बहुत छोटे हैं। मैं उन्हें एक लड़के की तरह मानती हूँ। उनके सभी रिश्तेदार—खासकर उनकी माँ—मुझसे नाराज़ हो जाएँगे अगर वे मुझसे शादी कर लें। ऐसा करने से वे उनके झमेले में फँस जाएँगे। दुनिया की नज़र में मैं उनके बराबर नहीं हूँ।”

"बस इतना ही?"

"हमारे स्वभाव एक दूसरे के अनुकूल नहीं हैं।"

"इतना मिलनसार सज्जन तो कभी हुआ ही नहीं।"

“वह बहुत ही मिलनसार, बहुत ही उत्कृष्ट और वास्तव में प्रशंसनीय हैं; लेकिन मेरे स्वामी नहीं—किसी भी मायने में नहीं। मैं उनकी खुशी की जिम्मेदारी खुद पर नहीं ले सकती। हजारों के बदले भी मैं उनकी रक्षा का जिम्मा नहीं उठाऊंगी। मैं ऐसे किसी भी व्यक्ति का हाथ नहीं स्वीकारूंगी जो मुझे नियंत्रण में न रख सके।”

मुझे लगा था कि तुम अपनी मर्जी से काम करना पसंद करते हो। तुम तो बेहद अस्थिर हो।

“जब मैं आज्ञा मानने का वादा करता हूँ, तो यह इस विश्वास के साथ होता है कि मैं उस वादे को निभा सकता हूँ। मैं सर फिलिप जैसे युवक की आज्ञा नहीं मान सकता। इसके अलावा, वह मुझे कभी आदेश नहीं देगा। वह मुझसे हमेशा शासन करने—मार्गदर्शन करने—की अपेक्षा करेगा, और मुझे इस पद में ज़रा भी रुचि नहीं है।”

"क्या तुम्हें शेखी बघारने, वश में करने, आदेश देने और शासन करने में कोई रुचि नहीं है?"

“मेरे पति नहीं; केवल मेरे चाचा।”

“अंतर कहाँ है?”

"थोड़ा सा अंतर तो है ही—यह निश्चित है। और मैं यह भली-भांति जानती हूँ कि जो भी पुरुष मेरे साथ पति के रूप में सुख-सुविधाओं से रहना चाहता है, उसे मुझ पर नियंत्रण रखना आना चाहिए।"

"काश तुम्हारे पास एक असली तानाशाह होता।"

“एक अत्याचारी मुझे एक दिन के लिए भी, एक घंटे के लिए भी बंदी नहीं बना सकता। मैं विद्रोह कर दूंगी—उससे अलग हो जाऊंगी—उसकी अवहेलना कर दूंगी।”

क्या आप अपने आत्म-विरोध से किसी के दिमाग को चकित करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं?

"यह स्पष्ट है कि मैं आपके दिमाग को चकरा देता हूँ।"

“आप सर फिलिप के युवा होने की बात कर रहे हैं। वह तो बाईस वर्ष के हैं।”

"मेरे पति की उम्र तीस होनी चाहिए, लेकिन उनमें चालीस साल की समझ होनी चाहिए।"

"बेहतर होगा कि तुम किसी बूढ़े आदमी को चुन लो - किसी सफेद बालों वाले या गंजे युवक को।"

"नहीं धन्यवाद।"

"तुम किसी दीवाने मूर्ख को अपने साथ ले जा सकते हो; तुम उसे अपने लबादे से चिपका सकते हो।"

“मैं किसी लड़के के साथ ऐसा कर सकती हूँ; लेकिन यह मेरा पेशा नहीं है। क्या मैंने यह नहीं कहा कि मैं एक गुरु को प्राथमिकता देती हूँ—एक ऐसा गुरु जिसकी उपस्थिति में मैं विनम्र और अच्छा व्यवहार करने के लिए प्रेरित महसूस करूँ; एक ऐसा गुरु जिसका नियंत्रण मेरे अधीर स्वभाव को स्वीकार करना पड़े; एक ऐसा व्यक्ति जिसकी स्वीकृति मुझे पुरस्कृत करे, और जिसकी नाराज़गी मुझे दंडित करे; एक ऐसा व्यक्ति जिससे मुझे प्रेम न करना असंभव लगे, और जिससे डरना बहुत संभव हो?”

“सर फिलिप के साथ ये सब करने में आपको क्या बाधा है? वो एक बैरोनेट हैं—एक ऐसे व्यक्ति जिनका रुतबा, संपत्ति और संबंध आपसे कहीं अधिक ऊंचे हैं। अगर आप बुद्धि की बात करें तो वो एक कवि हैं—वो कविताएं लिखते हैं; जो आप, मेरी समझ से, अपनी सारी चतुराई के बावजूद नहीं कर सकते।”

“न तो उनकी उपाधि, न धन-दौलत, न वंश, और न ही कविता उन्हें वह शक्ति प्रदान कर सकती है जिसका मैंने वर्णन किया है। ये सब क्षणभंगुर हैं; इन्हें स्थिरता की आवश्यकता है। ठोस, व्यावहारिक सूझबूझ का थोड़ा सा ज्ञान मेरे लिए उनके लिए कहीं अधिक लाभदायक होता।”

“तुम और हेनरी कविता के दीवाने हो! जब तुम छोटी लड़की थी, तब इस विषय पर तुम्हारी आवाज़ में जैसे आग लग जाती थी।”

“हे चाचा, इस संसार में वास्तव में कुछ भी मूल्यवान नहीं है, आने वाले संसार में कुछ भी गौरवशाली नहीं है जो कविता न हो!”

"तो भगवान के नाम पर, एक कवि से शादी कर लो!"

"उसे मुझे दिखाओ, और मैं दिखा दूंगा।"

“सर फिलिप।”

बिलकुल नहीं। आप लगभग उतने ही अच्छे कवि हैं जितने कि वह।

"महोदया, आप मुद्दे से भटक रही हैं।"

“जी हाँ, चाचा जी, मैं यही चाहता था, और मुझे आपको अपने साथ ले जाने में खुशी होगी। हम आपस में नाराज़ न हों; इससे कोई फायदा नहीं होगा।”

“क्या आप गुस्से में हैं, मिस कील्डर! मुझे यह जानकर खुशी होगी कि कौन गुस्से में है।”

मैं अभी तक नहीं हूँ।

"यदि आपका तात्पर्य यह संकेत देना है कि मैं ऐसा हूँ, तो मैं इसे आपकी धृष्टता मानता हूँ।"

"अगर तुम इसी रफ्तार से चलते रहे तो जल्द ही तुम भी वैसे ही हो जाओगे।"

“ये रहा! अपनी तीक्ष्ण जुबान से तो तुम तो जॉब के धैर्य की भी परीक्षा ले लोगे।”

मुझे पता है मुझे ऐसा करना चाहिए।

“मज़ाक मत कीजिए, महोदया! यह हँसी-मज़ाक का मामला नहीं है। यह एक ऐसा मामला है जिसकी मैं पूरी तरह से जाँच करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ, मुझे पूरा विश्वास है कि इसके पीछे कुछ गड़बड़ है। आपने अभी-अभी अपनी उम्र और लिंग के हिसाब से बहुत ही खुलेपन से बताया कि आप किस तरह के पति को पसंद करेंगी। कृपया बताइए, क्या आपने यह सब देखकर लिखा है?”

शर्ली ने अपने होंठ खोले, लेकिन बोलने के बजाय वह गुलाब की तरह लाल हो गई।

"मुझे उस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा," श्री सिम्पसन ने इस भ्रम के लक्षण के बल पर अपार साहस और प्रभाव का प्रदर्शन करते हुए दृढ़ता से कहा।

“चाचा जी, यह एक ऐतिहासिक तस्वीर थी, जो कई मूल तस्वीरों से बनाई गई थी।”

“कई मौलिक रचनाएँ! वाह!”

मुझे कई बार प्यार हो चुका है।

यह निंदनीय है।

"कई देशों के नायकों के साथ।"

अब आगे क्या होगा?

और दार्शनिकों को भी।

वह पागल है — —

“घंटी मत बजाओ, चाचा जी; इससे मेरी चाची घबरा जाएंगी।”

“आपकी प्यारी चाची, उनकी भतीजी कितनी प्यारी है!”

एक समय था जब मैं सुकरात से प्यार करता था।

"छी! ये कोई मामूली बात नहीं है, महोदया।"

मैं थेमिस्टोक्लेस, लियोनिडास और एपामिनोंडास का प्रशंसक था।

मिस कील्डर — — “

कुछ शताब्दियों को छोड़ दें तो, वाशिंगटन एक साधारण व्यक्ति थे, लेकिन मैं उन्हें पसंद करता था; लेकिन वर्तमान समय की बात करें तो—

“आह! असल वर्तमान।”

"अस्पष्ट स्कूली कल्पनाओं को त्यागकर वास्तविकता का सामना करना।"

“वास्तविकता! यही वो परीक्षा है जिसका सामना आपको करना पड़ेगा, महोदया।”

“यह स्वीकार करना कि मैं अब किस वेदी के समक्ष घुटने टेक रहा हूँ — अपनी आत्मा की वर्तमान मूर्ति को प्रकट करना —”

"कृपया जल्दी करें। दोपहर के भोजन का समय नजदीक है, और आपको स्वीकार करना ही होगा।"

मुझे कबूल करना ही होगा। मेरा दिल इस राज़ से भरा है। इसे बोलना ही होगा। काश आप मिस्टर सिम्पसन की जगह मिस्टर हेलस्टोन होते; आप मुझसे बेहतर सहानुभूति रखते।

"महोदया, यह सामान्य ज्ञान और विवेक का मामला है, सहानुभूति और भावनाओं आदि का नहीं। क्या आपने कहा कि वह श्री हेलस्टोन थे?"

"बिल्कुल सटीक तो नहीं, लेकिन यथासंभव मिलते-जुलते हैं; वे काफी हद तक एक जैसे हैं।"

मुझे नाम पता होगा; मुझे पूरी जानकारी मिल जाएगी।

“वे सचमुच काफी हद तक एक जैसे हैं। उनके चेहरे भी लगभग एक जैसे हैं — मानो बाज की तरह तेज और निडर हों — और दोनों ही गंभीर, सीधे और दृढ़ हैं। लेकिन मेरा नायक दोनों में कहीं अधिक शक्तिशाली है। उसका मन गहरे समुद्र की तरह स्पष्ट है, उसकी चट्टानों की तरह धैर्यवान है और उसकी लहरों की तरह शक्तिशाली है।”

“बकवास और बेतुकी बात!”

मैं दावे से कह सकता हूँ कि वह आरी की धार की तरह कठोर और भूखे कौवे की तरह कर्कश हो सकता है।

"मिस कील्डर, क्या वह व्यक्ति ब्रायर्फ़ील्ड में रहता है? कृपया मुझे इसका उत्तर दें।"

"चाचा जी, मैं आपको बताने जा रही हूँ; उसका नाम मेरी ज़बान पर कांप रहा है।"

“बोलो, लड़की!”

“आपने सही कहा, चाचा जी। ‘बोलो, बेटी!’ यह बहुत दुखद है। इंग्लैंड ने इस आदमी के खिलाफ़ ज़बरदस्त विरोध किया है, चाचा जी, और एक दिन वह उस पर विजय का जश्न मनाएगा। वह इस विरोध से ज़रा भी नहीं डरा है, और न ही इस शोर से उत्साहित होगा।”

मैंने कहा था कि वह पागल है। वह है भी।

“यह देश उसके प्रति अपने व्यवहार में बार-बार बदलेगा; लेकिन वह देश के प्रति अपने कर्तव्य में कभी नहीं बदलेगा। आइए, चाचा जी, गुस्सा करना बंद कीजिए, मैं आपको उसका नाम बता देता हूँ।”

तुम मुझे बताओगे, वरना——

“सुनो! आर्थर वेलेस्ली, लॉर्ड वेलिंगटन।”

श्री सिम्पसन क्रोधित होकर उठ खड़े हुए। वे कमरे से बाहर निकल गए, लेकिन तुरंत वापस आकर दरवाजा बंद कर दिया और अपनी सीट पर बैठ गए।

"मैडम, आप मुझे यह बताएंगी। क्या आपके सिद्धांत आपको एक ऐसे व्यक्ति से शादी करने की अनुमति देंगे जिसके पास पैसा नहीं है - एक ऐसा व्यक्ति जो आपसे नीचा है?"

"मुझसे नीचे कोई आदमी नहीं।"

(ऊँची आवाज़ में) "क्या आप, मिस कील्डर, एक गरीब आदमी से शादी करेंगी?"

"श्रीमान सिम्पसन, आपको मुझसे यह पूछने का क्या अधिकार है?"

मैं यह जानने पर जोर देता हूं।

आपको यह जानने का कोई तरीका नहीं है।

"मेरे परिवार की प्रतिष्ठा से कोई समझौता नहीं किया जाएगा।"

“अच्छा संकल्प है; इसे कायम रखें।”

"महोदया, इसे संभाल कर रखना आपकी जिम्मेदारी है।"

"यह असंभव है, महोदय, क्योंकि मैं आपके परिवार का हिस्सा नहीं हूं।"

क्या आप हमें त्याग देते हैं?

मैं आपकी तानाशाही से घृणा करता हूँ।

"आप किससे शादी करेंगी, मिस कील्डर?"

"श्री सैम विन नहीं, क्योंकि मैं उनका तिरस्कार करता हूँ; सर फिलिप ननेली भी नहीं, क्योंकि मैं उनका केवल सम्मान करता हूँ।"

“तुम किसे निशाना बना रहे हो?”

"चार अस्वीकृत उम्मीदवार।"

"इतनी हठधर्मिता तभी संभव थी जब आप अनुचित प्रभाव में थे।"

“तुम्हारा क्या मतलब है? कुछ ऐसे वाक्य होते हैं जो मुझे बहुत गुस्सा दिलाते हैं। अनुचित प्रभाव! ये किस बुढ़िया की हंसी है?”

"क्या आप एक युवती हैं?"

"मैं हजार गुना बेहतर हूं: मैं एक ईमानदार महिला हूं, और मेरे साथ इसी तरह का व्यवहार किया जाएगा।"

“क्या आप जानते हैं?” (रहस्यमय ढंग से आगे झुकते हुए और भयावह गंभीरता से बोलते हुए) — “क्या आप जानते हैं कि पूरे मोहल्ले में आपके और आपके दिवालिया किरायेदार, विदेशी मूर के बारे में अफवाहें फैली हुई हैं?”

"क्या यह?"

“हाँ, ऐसा ही है। हर किसी की जुबान पर तुम्हारा नाम है।”

"यह जिन होठों को छूता है, उन्हें सम्मान देता है, और मैं देवताओं से प्रार्थना करता हूं कि यह उन्हें पवित्र करे।"

क्या वह व्यक्ति ही है जिसके पास आपको प्रभावित करने की शक्ति है?

"उन सभी से परे जिनके हित की आपने वकालत की है।"

क्या तुम उसी से शादी करोगी?

वह सुंदर, मर्दाना और प्रभावशाली है।

“तुम मेरे सामने ही यह बात कहो! फ्लेमिश धूर्त! नीच व्यापारी!”

“वह प्रतिभाशाली, साहसी और दृढ़ निश्चयी है। उसके माथे पर राजकुमार की शान है और उसके आचरण में शासक की झलक दिखती है।”

वह इसमें गर्व महसूस करती है! वह कुछ भी नहीं छुपाती! न शर्म, न डर!

“जब हम मूर का नाम लेते हैं, तो शर्म को भुला देना चाहिए और भय को त्याग देना चाहिए। मूर परिवार केवल सम्मान और साहस को जानता है।”

मुझे लगता है कि वह पागल है।

“तुमने मुझे इतना ताना मारा है कि मेरा खून खौल उठा है; तुमने मुझे इतना परेशान किया है कि मैं वापस लौट आया हूँ।”

“वो मूर मेरे बेटे के ट्यूटर का भाई है। क्या आप अटेंडेंट को आपको बहन कहने देंगी?”

जब शर्ली ने अपनी आंखें प्रश्नकर्ता पर टिकाईं तो उसकी आंखें चमकीली और चौड़ी हो गईं।

“नहीं, नहीं; किसी प्रांत पर अधिकार के लिए नहीं, एक सदी के जीवन के लिए भी नहीं।”

आप पति को उसके परिवार से अलग नहीं कर सकते।

"तो क्या?"

"आप श्री लुई मूर की बहन बनेंगी।"

श्रीमान सिम्पसन, मैं इस सब बेतुकी बातों से तंग आ चुका हूँ; अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता। आपके विचार मेरे विचारों से अलग हैं, आपके लक्ष्य मेरे लक्ष्यों से अलग हैं, आपके देवता मेरे देवताओं से अलग हैं। हम चीजों को एक ही नजरिए से नहीं देखते; हम उन्हें एक ही मापदंड से नहीं मापते; हमारी भाषा भी एक जैसी नहीं है। चलिए अलग हो जाते हैं।

“ऐसा नहीं है,” उसने उत्तेजित होकर फिर कहा— “ऐसा नहीं है कि मैं तुमसे नफ़रत करती हूँ; तुम अच्छे इंसान हो। शायद तुम्हारा इरादा नेक हो। लेकिन हम एक-दूसरे के अनुकूल नहीं हो सकते; हम हमेशा एक-दूसरे से असहमत रहते हैं। तुम छोटी-छोटी बातों में दखल देकर, छोटे-मोटे अत्याचार करके मुझे परेशान करते हो; तुम मेरा

गुस्सा बढ़ाते हो और मुझे चिढ़ाते रहते हो। जहाँ तक तुम्हारे छोटे-मोटे सिद्धांतों, संकीर्ण नियमों, पूर्वाग्रहों, घृणाओं और हठधर्मिता की बात है, उन्हें छोड़ दो। श्री सिम्पसन, जाओ, उन्हें उस देवता को अर्पित कर दो जिसकी तुम पूजा करते हो; मुझे उनमें से कुछ नहीं चाहिए। मैं इन सबसे अपना नाता तोड़ लेती हूँ। मैं तुमसे अलग पंथ, प्रकाश, विश्वास और आशा पर चलती हूँ।”

“एक और पंथ! मेरा मानना है कि वह नास्तिक है।”

"तुम अपने धर्म के प्रति अविश्वासी हो, अपने ईश्वर के प्रति नास्तिक हो।"

“एक नास्तिक!!!”

“महोदय, आपका ईश्वर संसार है। मेरी दृष्टि में आप भी, यदि नास्तिक नहीं तो कम से कम मूर्तिपूजक तो हैं। मेरा मानना है कि आप अज्ञानता से पूजा करते हैं; हर बात में आप मुझे अति अंधविश्वासी प्रतीत होते हैं। महोदय, आपका ईश्वर, आपका महान बेल, आपका मछली की पूंछ वाला डैगन, मेरे सामने एक राक्षस के रूप में प्रकट होता है। आपने और आप जैसे लोगों ने उसे सिंहासन पर बिठाया है, उसे मुकुट पहनाया है, उसे राजदंड दिया है। देखिए वह कितनी क्रूरता से शासन करता है! देखिए वह अपने सबसे पसंदीदा काम में व्यस्त है - विवाह कराना। वह युवाओं को बूढ़ों से, बलवानों को मंदबुद्धि से बांधता है। वह मेज़ेंटियस की भुजा फैलाता है और मृतकों को जीवितों से जंजीरों में जकड़ देता है। उसके राज्य में घृणा है - गुप्त घृणा; घृणा है - अनकही घृणा; विश्वासघात है - पारिवारिक विश्वासघात; बुराई है - गहरी, घातक घरेलू बुराई। उसके राज्य में ऐसे माता-पिता के बीच बच्चे प्रेमहीन हो जाते हैं जिन्होंने कभी प्रेम नहीं किया; शिशुओं को जन्म से ही धोखे पर पाला जाता है; वे झूठ से दूषित वातावरण में पले-बढ़े। तुम्हारा देवता राजाओं के विवाह समारोह में शासन करता है; अपने राजवंशों को देखो! तुम्हारा देवता विदेशी अभिजात वर्ग का देवता है; स्पेन के कुलीन वर्ग का विश्लेषण करो! तुम्हारा देवता फ्रांस का कौमार्य है; फ्रांसीसी घरेलू जीवन कैसा है? उसके चारों ओर सब कुछ क्षय की ओर अग्रसर है; उसके राजदंड के नीचे सब कुछ पतन और पतित हो जाता है। तुम्हारा देवता नकाबपोश मृत्यु है।

“यह भाषा बहुत ही भयानक है! मेरी बेटियों और आपको अब और मेलजोल नहीं रखना चाहिए, मिस कील्डर; इस तरह की संगति खतरनाक है। अगर मैं आपको थोड़ा पहले जान लेती — लेकिन, हालांकि मैंने आपको असाधारण समझा था, मैं विश्वास नहीं कर सकती थी —”

“अब, महोदय, क्या आपको यह एहसास होने लगा है कि मेरे लिए षड्यंत्र रचना व्यर्थ है; ऐसा करके आप बवंडर बोने के समान हैं? मैं आपके जालबद्ध षड्यंत्रों को अपने मार्ग से हटा देता हूँ, ताकि मैं बेदाग आगे बढ़ सकूँ। मैं एक ऐसे संकल्प पर अडिग हूँ जिसे आप हिला नहीं सकते। मेरा हृदय और मेरा विवेक ही मेरे हाथों का मार्गदर्शन करेंगे—केवल वे ही। अंततः यह जान लीजिए।”

श्री सिम्पसन थोड़े असमंजस में पड़ रहे थे।

“मैंने ऐसी भाषा कभी नहीं सुनी!” वह बार-बार बुदबुदाया; “जीवन में मुझे कभी इस तरह संबोधित नहीं किया गया — कभी इस तरह इस्तेमाल नहीं किया गया!”

“आप काफी भ्रमित हैं, महोदय। बेहतर होगा कि आप पीछे हट जाएं, अन्यथा मैं हट जाऊंगा।”

वह जल्दी से उठा। "हमें यह जगह छोड़नी होगी; उन्हें तुरंत अपना सामान समेटना होगा।"

"मेरी चाची और चचेरे भाइयों को जल्दी मत करो; उन्हें समय दो।"

"अब और यौन संबंध नहीं; वह ठीक नहीं है।"

वह दरवाजे की ओर बढ़ा। रुमाल लेने के लिए वापस आया। उसने अपनी नसवार की डिब्बी गिरा दी, जिससे उसका सारा सामान कालीन पर बिखर गया; वह लड़खड़ाते हुए बाहर निकला। टार्टर बाहर चटाई पर लेटा हुआ था; श्री सिम्पसन लगभग उस पर गिर पड़े। गुस्से के चरम पर उसने कुत्ते को गाली दी और अपनी मालकिन को अपशब्द कहे।

“बेचारे मिस्टर सिम्पसन! वो तो कमज़ोर और गंवार दोनों हैं,” शर्ली ने मन ही मन कहा। “मेरा सिर दुख रहा है और मैं थकी हुई हूँ,” उसने आगे कहा; और अपना सिर एक तकिये पर टिकाकर, वह धीरे-धीरे उत्तेजना से शांत होकर आराम की अवस्था में चली गई। एक व्यक्ति, पंद्रह मिनट बाद कमरे में दाखिल हुआ, तो उसने उसे सोते हुए पाया। जब शर्ली बेचैन होती थी, तो वह आमतौर पर इस प्राकृतिक आराम का सहारा लेती थी; यह उसके बुलावे पर मिल जाता था।

घुसपैठिया उसकी बेहोशी की हालत में कुछ देर रुका और बोला, "मिस कील्डर।"

शायद उसकी आवाज़ उसके किसी सपने से मेल खा रही थी जिसमें वह खोई हुई थी। इससे वह चौंकी नहीं, न ही उसकी नींद टूटी। आँखें खोले बिना, उसने बस अपना सिर थोड़ा सा घुमाया, जिससे उसका गाल और चेहरा, जो पहले उसकी बांह से ढका

हुआ था, दिखाई देने लगा। वह गुलाबी, खुश और हल्की मुस्कुराती हुई लग रही थी, लेकिन उसकी पलकें नम थीं। वह नींद में रोई थी; या शायद, सोने से पहले, उस अपमानजनक शब्द को सुनकर उसकी आँखों से कुछ स्वाभाविक आँसू बह गए थे। कोई भी पुरुष - कोई भी स्त्री - हमेशा मजबूत नहीं होता, हमेशा अन्यायपूर्ण राय, अपमानजनक शब्द को सहने में सक्षम नहीं होता। निंदा, यहाँ तक कि एक मूर्ख के मुँह से भी, कभी-कभी बेखबर भावनाओं को ठेस पहुँचाती है। शर्ली एक ऐसे बच्चे की तरह लग रही थी जिसने शरारत की हो और उसे सज़ा मिली हो, लेकिन अब उसे माफ़ कर दिया गया हो और वह शांत हो।

"मिस कील्डर," फिर वही आवाज़ आई। इस बार आवाज़ ने उन्हें जगा दिया। उन्होंने ऊपर देखा और अपने बगल में लुई मूर को पाया—बिल्कुल पास नहीं, बल्कि रुके हुए कदमों से दो-तीन गज की दूरी पर खड़ा हुआ।

"ओह मिस्टर मूर!" उसने कहा। "मुझे डर था कि कहीं मेरे चाचा फिर से न आ जाएं: उनसे मेरा झगड़ा हो गया है।"

"श्री सिम्पसन को आपको अकेला छोड़ देना चाहिए," जवाब मिला। "क्या उन्हें यह नहीं दिख रहा कि आप अभी तक पूरी तरह स्वस्थ नहीं हैं?"

मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि उन्होंने मुझे कमजोर नहीं पाया। जब वह यहां थे तो मैं रोई नहीं।

"वह फील्डहेड को खाली करने वाला है—ऐसा उसका कहना है। वह अब अपने परिवार को आदेश दे रहा है। वह स्कूल के कमरे में आदेश जारी कर रहा है, और मेरा मानना है कि यह उसी तरह का आदेश जारी रखने का तरीका है जिससे उसने आपको परेशान किया है।"

"क्या तुम और हेनरी जाओगे?"

"मुझे लगता है, जहाँ तक हेनरी का सवाल है, उसके अस्पष्ट निर्देशों का यही सार था; लेकिन हो सकता है कल उसका रवैया बदल जाए। वह अभी इसी मनोदशा में है, जब आप लगातार दो घंटे तक उसकी स्थिरता पर भरोसा नहीं कर सकते। मुझे संदेह है कि वह अभी हफ्तों तक आपको छोड़ेगा। उसने मुझसे कुछ शब्द कहे हैं जिन पर मुझे बाद में थोड़ा ध्यान और टिप्पणी करनी होगी, जब मुझे उन पर विचार करने का समय मिलेगा। जिस समय वह अंदर आया, मैं श्री योर्क से मिले एक नोट में व्यस्त था - इतना व्यस्त कि मैंने उससे बातचीत अचानक ही समाप्त कर दी। मैंने उसे बड़बड़ाते

हुए छोड़ दिया। यह रहा नोट। मैं चाहता हूँ कि आप इसे देखें। यह मेरे भाई रॉबर्ट के बारे में है।" और उसने शर्ली की ओर देखा।

मुझे उसकी खबर सुनकर खुशी होगी। क्या वह घर लौट रहा है?

“वह आ गए हैं। वह यॉर्कशायर में हैं। श्री योर्क कल उनसे मिलने स्टिलब्रो गए थे।”

“श्री मूर, कुछ गड़बड़ है—”

“क्या मेरी आवाज कांप रही थी? वह इस समय ब्रियारमेन्स में है, और मैं उससे मिलने जा रहा हूँ।”

“क्या हुआ है?”

"अगर तुम्हारा चेहरा इतना पीला पड़ गया तो मुझे अपने बोलने का पछतावा होगा। इससे बुरा भी हो सकता था। रॉबर्ट मरा नहीं है, लेकिन उसे बहुत चोट लगी है।"

“हे महोदय, आप ही पीले पड़ गए हैं। मेरे पास बैठ जाइए।”

“नोट पढ़ो। मुझे इसे खोलने दो।”

मिस कील्डर ने नोट पढ़ा। उसमें संक्षेप में लिखा था कि पिछली रात रॉबर्ट मूर पर मिल्डीन प्लांटेशन की दीवार के पीछे से, ब्रो के तलहटी में, गोली चलाई गई थी; उन्हें गंभीर चोटें आई थीं, लेकिन उम्मीद थी कि जानलेवा नहीं। हमलावर या हमलावरों के बारे में कुछ भी पता नहीं चला था; वे भाग गए थे। श्री यॉर्क ने कहा, "निस्संदेह, यह बदले की भावना से किया गया था। यह दुख की बात है कि कभी दुश्मनी पनपी थी; लेकिन अब इसका कोई उपाय नहीं था।"

"वह मेरा इकलौता भाई है," लुई ने कहा, जब शर्ली ने नोट लौटाया। "मैं यह सुनकर स्तब्ध नहीं रह सकता कि बदमाशों ने घात लगाकर उस पर हमला किया और उसे किसी जंगली जानवर की तरह दीवार के पीछे से गोली मार दी।"

"हिम्मत रखिए; उम्मीद बनाए रखिए। वह ठीक हो जाएगा - मुझे पता है वह ठीक हो जाएगा।"

शर्ली, जो उन्हें शांत करने के लिए उत्सुक थी, ने अपना हाथ मिस्टर मूर के हाथ पर रख दिया, जो कुर्सी के आर्मरेस्ट पर रखा था। उसने बस हल्के से छुआ, लगभग न के बराबर।

“अच्छा, मुझे अपना हाथ दो,” उसने कहा। “यह पहली बार होगा; यह विपत्ति के क्षण में हो रहा है। मुझे दे दो।”

बिना सहमति या अस्वीकृति की प्रतीक्षा किए, उसने वही लिया जो उसने मांगा था।

“मैं अब ब्रायर्मेन्स जा रहा हूँ,” उन्होंने आगे कहा। “मैं चाहता हूँ कि तुम पादरी के निवास पर जाओ और कैरोलिन हेलस्टोन को सब कुछ बताओ। क्या तुम ऐसा करोगी? वह तुमसे ही बेहतर सुन पाएगी।”

“तुरंत,” शर्ली ने विनम्रतापूर्वक कहा। “क्या मुझे यह कहना चाहिए कि कोई खतरा नहीं है?”

"तो कहते हैं।"

“तुम जल्द वापस आओगे और मुझे और जानकारी दोगे?”

मैं या तो आऊंगा या लिखूंगा।

“कैरोलीन का ख्याल रखने के लिए मुझ पर भरोसा रखें। मैं आपकी बहन से भी बात करूँगा; लेकिन शायद वह पहले से ही रॉबर्ट के साथ होगी?”

“निस्संदेह, या जल्द ही होगा। सुप्रभात।”

"चाहे कुछ भी हो जाए, तुम सहन कर लोगे।"

हम यह देखेंगे।

शर्ली की उंगलियां मजबूरी में ट्यूटर के हाथों से अलग हो गईं। लुई को भी मजबूरी में अपना वह हाथ छोड़ना पड़ा जो उसके हाथ में लिपटा हुआ था, छिपा हुआ था।

“मुझे लगा था कि मुझे उसका सहारा बनना पड़ेगा,” ब्रायरमैन्स की ओर चलते हुए उसने कहा, “लेकिन उसी ने मुझे मजबूत बनाया है। वो दया भरी निगाहें, वो कोमल स्पर्श! कोई रुई इतनी कोमल नहीं थी, कोई अमृत इतना शक्तिशाली नहीं था! वो बर्फ के टुकड़े की तरह थी; वो बिजली की तरह सिहर उठी। हज़ार बार मैंने उस हाथ को पाने की, उसे अपने हाथों में लेने की चाह की। मैंने उसे पा लिया; पाँच मिनट के लिए उसे थामे रखा। उसकी उंगलियाँ और मेरी उंगलियाँ अब कभी अजनबी नहीं हो सकतीं। एक बार मिलने के बाद उन्हें फिर मिलना ही होगा।”

अध्याय 32.

स्कूल का लड़का और वन अप्सरा।

हॉलो की तुलना में ब्रायरमेन्स नज़दीक होने के कारण, श्री यॉर्क अपने युवा साथी को वहाँ ले गए थे। उन्होंने उसे घर के सबसे अच्छे पलंग पर इतनी सावधानी से लिटाया था मानो वह उनका अपना बेटा हो। धोखे से लगे घाव से बहते उसके खून को देखकर, वह सचमुच यॉर्कशायर के सज्जन के दिल का बेटा बन गया था। अचानक हुई इस घटना का दृश्य, सड़क पर गर्व से झुके हुए लंबे, सीधे शरीर का, धूल में पड़े उस सुंदर दक्षिणी सिर का, और उस जवान युवक का उनके सामने पीला, बेजान, असहाय पड़ा होना—यही परिस्थितियाँ थीं जो पीड़ित के प्रति श्री यॉर्क की गहरी रुचि जगाने के लिए पर्याप्त थीं।

सहायता के लिए कोई दूसरा हाथ नहीं था, विनम्रता से सवाल करने के लिए कोई दूसरी आवाज़ नहीं थी, उपाय तय करने के लिए कोई दूसरा दिमाग नहीं था; उसे सब कुछ खुद ही करना था। मूक, घायल युवक (जिसे वह युवक ही मानता था) की उसकी दया पर पूर्ण निर्भरता ने उसकी दया को पूरी तरह से सफल बना दिया। श्री यॉर्क को सत्ता रखना और उसका उपयोग करना बहुत पसंद था। अब उसके हाथों में एक साथी इंसान के जीवन पर अधिकार था। यह उसे भाता था।

यह घटना उनकी गंभीर स्वभाव वाली पत्नी के लिए भी उतनी ही उपयुक्त थी। यह घटना उनके स्वभाव और पसंद के बिल्कुल अनुरूप थी। कुछ महिलाएं तो किसी खून से लथपथ व्यक्ति को अपने घर में लाकर, रात के अंधेरे में अपने हॉल में लिटाए जाने पर भयभीत हो जातीं। आप सोचेंगे कि यह तो उन्माद का कारण बन सकता है। लेकिन नहीं। श्रीमती यॉर्क तब उन्माद में चली गईं जब जेसी उनके बुनाई के काम के लिए बगीचे से बाहर नहीं निकली, या जब मार्टिन ने मैथ्यू के अत्याचार से मुक्ति पाने और स्वतंत्रता हासिल करने के उद्देश्य से ऑस्ट्रेलिया जाने का प्रस्ताव रखा; लेकिन उनके दरवाजे के पास हुई हत्या की कोशिश - उनके सबसे अच्छे बिस्तर पर अधमरा

पड़ा व्यक्ति - ने उन्हें शांत कर दिया, उनका मनोबल बढ़ाया और उनके आत्मविश्वास को और भी बढ़ा दिया।

श्रीमती यॉर्क एक ऐसी महिला थीं जो एक साधारण नौकरानी के श्रमसाध्य जीवन को दयनीय बना देती थीं, वहीं प्लेग के रोगियों से भरे अस्पताल में किसी वीरांगना की तरह उनकी सेवा करती थीं। वह लगभग मूर से प्रेम करती थीं। जब उन्होंने मूर को अपनी देखरेख में पाया, तो उनका कठोर हृदय भी उसके लिए तड़प उठा - उसे उनकी बाहों में छोड़ दिया गया था, मानो वह पालने में अपने सबसे छोटे बच्चे की तरह उन पर निर्भर था। अगर उन्होंने किसी नौकरानी या अपनी किसी बेटी को उसे पानी पिलाते या तकिया ठीक करते देखा होता, तो वह उस घुसपैठिए के कान पर एक घूंसा मार देतीं। उन्होंने जेसी और रोज़ को घर के ऊपरी हिस्से से बाहर निकाल दिया; उन्होंने नौकरानियों को वहाँ कदम रखने से मना कर दिया।

अब, अगर यह हादसा पादरी के घर के द्वार पर हुआ होता, और बूढ़े हेलस्टोन ने उस शहीद को शरण दी होती, तो न तो योर्क और न ही उसकी पत्नी उस पर दया करते। वे उसे उसके अत्याचार और दखलंदाजी के लिए उचित दंड देते। लेकिन फिलहाल, वह उनकी आँखों का तारा बन गया।

अजीब बात है! लुई मूर को आने की अनुमति दी गई थी— पलंग के किनारे बैठने और तकिये पर झुकने की; अपने भाई का हाथ पकड़ने और अपने भाई जैसे होठों से उसके पीले माथे को छूने की; और श्रीमती यॉर्क ने इसे सहजता से सहन किया। उन्होंने उसे आधे दिन तक वहाँ रहने दिया; एक बार तो उन्होंने उसे पूरी रात कमरे में जागते रहने दिया; नवंबर की एक गीली सुबह पाँच बजे वह स्वयं उठीं और अपने हाथों से रसोई में आग जलाई, भाइयों के लिए नाश्ता बनाया और उन्हें स्वयं परोसा। एक लंबे फलालैन के लबादे, शॉल और अपनी नाइट कैप में सजी-धजी, वह बैठी रहीं और उन्हें खाते हुए देखती रहीं, जैसे कोई मुर्गी अपने चूजों को दाना चुगते हुए देखती है। फिर भी उन्होंने उस दिन रसोइए को मिस्टर मूर के लिए साबूदाने का दलिया बनाने और ले जाने की हिम्मत करने पर चेतावनी दी; और नौकरानी ने अपना भरोसा खो दिया क्योंकि जब श्री लुई विदा हो रहे थे, तो वह रसोई से उनका ओवरकोट (पैंट) धोकर लाई और अपनी "उत्सुकता" के कारण उसे पहनने में उनकी मदद की, और बदले में एक मुस्कान, "धन्यवाद, मेरी बच्ची," और एक शिलिंग स्वीकार कर ली। एक दिन दो महिलाएं आईं, पीली पड़ी हुई और चिंतित, और उन्होंने विनम्रतापूर्वक श्री मूर

से एक पल के लिए मिलने की अनुमति मांगी। श्रीमती यॉर्क ने अपना हृदय कठोर कर लिया और उन्हें फटकार लगाते हुए वापस भेज दिया।

लेकिन जब हॉर्टेंस मूर आईं तो क्या हुआ? उम्मीद से ज़्यादा बुरा नहीं था। मूर परिवार श्रीमती यॉर्क को इतना पसंद आया कि कोई और परिवार उन्हें इतना पसंद नहीं आया था। हॉर्टेंस और श्रीमती यॉर्क नौकरों की भ्रष्ट प्रवृत्तियों पर अंतहीन चर्चा करती रहती थीं। नौकरों के बारे में उनके विचार एक जैसे थे; वे उन्हें एक ही संदेह से देखती थीं और एक ही सख्ती से उनका मूल्यांकन करती थीं। हॉर्टेंस ने शुरू से ही रॉबर्ट के प्रति श्रीमती यॉर्क के स्नेह को लेकर कोई ईर्ष्या नहीं दिखाई - उन्होंने श्रीमती यॉर्क को नर्स का पद बिना ज़्यादा दखल दिए संभालने दिया; और खुद घर में इधर-उधर भाग-दौड़ करने, रसोई पर नज़र रखने, वहाँ होने वाली हर बात की रिपोर्ट करने और संक्षेप में, हर काम में खुद को व्यस्त रखती थीं। दोनों ने मिलकर बीमार के कमरे में आगंतुकों को आने से रोकने का पक्का इरादा कर लिया था। उन्होंने युवा चक्की मालिक को वहीं कैद कर रखा था और उसे न तो सांस लेने देती थीं और न ही धूप पड़ने देती थीं।

श्री मैकटर्क, जो सर्जन थे और जिनके हाथों मूर का मामला सौंपा गया था, ने उनके घाव को गंभीर बताया, लेकिन उन्हें भरोसा था कि यह लाइलाज नहीं है। पहले तो वे अपनी पसंद की एक नर्स को उनके साथ रखना चाहते थे; लेकिन श्रीमती यॉर्क और हॉर्टेंस ने इस बात को मानने से इनकार कर दिया। उन्होंने निर्देशों का पूरी निष्ठा से पालन करने का वादा किया। इसलिए, फिलहाल उन्हें उन्हीं के भरोसे छोड़ दिया गया।

निःसंदेह उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार कर्तव्य का निर्वाह किया; लेकिन कुछ गड़बड़ हो गई। पट्टियाँ हट गईं या उनके साथ छेड़छाड़ की गई; परिणामस्वरूप अत्यधिक रक्तस्राव हुआ। मैकटर्क को बुलाए जाने पर वे पूरी तेज़ी से घोड़े पर सवार होकर आए। वे उन सर्जनों में से एक थे जिन्हें नाराज़ करना खतरनाक होता था—अच्छे मूड में भी वे चिड़चिड़े होते थे, और बुरे मूड में क्रूर। मूर की हालत देखकर उन्होंने कुछ अलंकारिक शब्दों का प्रयोग करके अपनी भावनाओं को व्यक्त किया, जिनका वर्णन इस पृष्ठ पर करना उचित नहीं है। एक-दो उत्तम फूलों के गुलदस्ते श्री ग्रेव्स के सिर पर गिरे, जो उनके साथ रहने वाले एक शांत स्वभाव के युवा सहायक थे; एक और गुलदस्ता उन्होंने अपने साथ चल रहे एक अन्य युवक को भेंट किया—जो वास्तव में उनका अपना बेटा था और उनकी हूबहू प्रतिकृति था; लेकिन खिले हुए फूलों का

पूरा गुलदस्ता दखल देने वाली महिलाओं के हिस्से में आ गया।

एक सर्दी की रात के अधिकांश समय तक वह और उसके साथी मूर के इर्द-गिर्द ही घूमते रहे। उसके बिस्तर के पास, उसके कमरे में अकेले बंद होकर, वे उसके थके-हारे शरीर को लेकर आपस में बहस और झगड़ा करते रहे। वे तीनों बिस्तर के एक तरफ थे, और मृत्यु दूसरी तरफ। संघर्ष तीव्र था; यह सुबह होने तक चलता रहा, जब दोनों पक्षों के बीच संतुलन इतना बराबर लग रहा था कि कोई भी पक्ष जीत का दावा कर सकता था।

भोर होते ही ग्रेव्स और युवा मैकटर्क को मरीज की देखभाल का जिम्मा सौंपा गया, जबकि वरिष्ठ नर्स स्वयं अतिरिक्त सहायता की तलाश में गए और अपने स्टाफ की सर्वश्रेष्ठ नर्स श्रीमती हॉर्सफॉल को नियुक्त किया। उन्होंने मूर को मरीज की देखभाल का जिम्मा सौंपा और उन्हें इस जिम्मेदारी के प्रति सख्त हिदायतें दीं। उन्होंने इस जिम्मेदारी को उसी दृढ़ता से निभाया, जैसे उन्होंने पलंग के सिरहाने रखी आरामकुर्सी को संभाला था। उसी क्षण से उनका शासन शुरू हुआ।

श्रीमती हॉर्सफॉल में एक गुण था - मैकटर्क से मिले आदेशों का वे अक्षरशः पालन करती थीं। दस आज्ञाएँ उनके लिए उनके सर्जन के आदेश से कम बाध्यकारी थीं। अन्य मामलों में वे स्त्री नहीं, बल्कि अजगर थीं। हॉर्टेंस मूर उनके सामने दब गईं; श्रीमती यॉर्क कुचलकर पीछे हट गईं; फिर भी ये दोनों महिलाएँ अपनी नज़र में गरिमापूर्ण और दूसरों की नज़र में प्रभावशाली थीं। श्रीमती हॉर्सफॉल की चौड़ाई, ऊँचाई, हड्डियों और बल के आगे पूरी तरह से दबी हुई, वे पीछे के कमरे में चली गईं। वे जब चाहतीं ऊपर बैठतीं और जब पसंद करतीं नीचे। वे दिन में तीन बार शराब पीतीं और चार बार तंबाकू का सेवन करतीं।

मूर के बारे में अब कोई पूछताछ करने की हिम्मत नहीं करता था। श्रीमती हॉर्सफॉल उसकी देखभाल करती थीं। उन्हीं की वजह से उसका अंत हुआ और अब यही अनुमान लगाया जा रहा था कि उन्होंने ही उसे मार डाला।

मैकटर्क सुबह-शाम उससे मिलने आता था। एक नई विपत्ति से उसका मामला और भी जटिल हो गया था, और सर्जन की नज़र में यह मामला दिलचस्प बन गया था। वह उसे एक क्षतिग्रस्त पुर्ज़े की तरह देखता था, जिसे ठीक करना उसकी कुशलता का प्रमाण था। ग्रेव्स और युवा मैकटर्क - मूर के एकमात्र अन्य आगंतुक - उसे उसी नज़रिए से देखते थे जिस नज़रिए से वे स्टिलब्रो अस्पताल के चीर-फाड़ कक्ष में मौजूद

किसी भी व्यक्ति को देखते थे।

रॉबर्ट मूर का समय सुखद था—दर्द में, खतरे में, हिलने-डुलने में असमर्थ, लगभग बोलने में भी असमर्थ, एक विशालकाय महिला जैसी उसकी रखवाली कर रही थी, और तीन सर्जन ही उसके इकलौते साथी थे। इस प्रकार वह नवंबर के पूरे उदास महीने के ढलते दिनों और लंबी होती रातों में पड़ा रहा।

कैद की शुरुआत में मूर श्रीमती हॉर्सफॉल का कमज़ोर विरोध करता था। उसे उनका भारी-भरकम शरीर देखना भी पसंद नहीं था और उनके कठोर हाथों का स्पर्श भी उसे डराता था; लेकिन उन्होंने पल भर में उसे आज्ञाकारी बना दिया। उनके छह फीट लंबे कद, उनकी मर्दाना मांसपेशियों और नसों की उन्हें कोई परवाह नहीं थी; वे उन्हें बिस्तर पर ऐसे पलटती थीं जैसे कोई औरत पालने में बच्चे को पलटती है। जब वह अच्छा व्यवहार करता था तो वे उसे "मेरे प्यारे" और "हनी" कहकर पुकारती थीं, और जब वह बुरा व्यवहार करता था तो कभी-कभी उसे झटक देती थीं। अगर वह मैकटर्क के सामने बोलने की कोशिश करता, तो वे अपना हाथ उठाकर उसे "चुप रहो!" कह देतीं, जैसे कोई नर्स शरारती बच्चे को रोकती है। अगर वह सिगरेट न पीतीं, अगर वह जिन न पीतीं, तो शायद बेहतर होता, उसने सोचा; लेकिन वह दोनों ही करती थीं। एक बार, उनकी अनुपस्थिति में, उसने मैकटर्क को बताया कि "वह औरत शराब की आदी है।"

“छी! मेरे प्रिय महोदय, वे सभी ऐसी ही हैं,” उनकी इस कोशिश के बदले उन्हें यही जवाब मिला। “लेकिन हॉर्सफॉल में यह खूबी है,” सर्जन ने आगे कहा — “चाहे वह नशे में हो या होश में, वह हमेशा मेरी बात मानती है।”

अंततः शरद ऋतु का उत्तरार्ध बीत गया; इसके कोहरे और बारिश ने इंग्लैंड से शोक और आँसू वापस ले लिए; इसकी हवाएँ दूर-दूर तक बहती हुई सिसकियाँ भरती गईं। नवंबर के बाद गहरी सर्दी आई - स्पष्टता, शांति और पाला।

एक शांत दिन ढलकर निर्मल शाम में बदल गया था। दुनिया उत्तरी ध्रुव के रंगों में रंगी हुई थी; इसकी सभी रोशनी और रंग सफेद, बैंगनी या हल्के हरे रत्नों की परावर्तनशीलता की तरह लग रहे थे। पहाड़ बैंगनी नीले रंग में रंगे थे; डूबते सूरज के लाल रंग में बैंगनी रंग झलक रहा था; आकाश बर्फ जैसा नीला था, मानो चांदी जैसा चमक रहा हो; जब तारे निकले, तो वे सोने के नहीं, बल्कि सफेद क्रिस्टल के थे;

धूसर, नीला या हल्का पन्ना रंग - शीतल, शुद्ध और पारदर्शी - परिदृश्य को रंगे हुए थे।

पाठक, मुझे इसके बराबर का कोई अंग्रेज़ी शब्द बता दीजिए, और मैं फ्रांसीसी शब्द का इस्तेमाल नहीं करूँगा। "Reflections" शब्द नहीं चलेगा।

इस जंगल में, जो अब हरा नहीं रहा, यहाँ तक कि भूरा भी नहीं, बल्कि एक तटस्थ रंग का है, यह गहरा नीला गतिशील पिंड अपने आप में क्या है? अरे, यह तो एक स्कूली छात्र है - ब्रायफ़ील्ड ग्रामर स्कूल का एक लड़का - जो अपने साथियों को पीछे छोड़कर, अब मुख्य सड़क से होते हुए घर की ओर जा रहा है और एक खास पेड़ की तलाश में है, जिसकी जड़ में काई का एक टीला है, जो बैठने के लिए सुविधाजनक है। वह यहाँ क्यों रुका है? हवा ठंडी है और समय बीत रहा है। वह बैठ जाता है। वह क्या सोच रहा है? क्या उसे आज रात प्रकृति का पवित्र आकर्षण महसूस हो रहा है? धूसर पेड़ों के बीच से मोती जैसा सफेद चाँद मुस्कुरा रहा है; क्या उसे उसकी मुस्कान पसंद है?

कुछ कहना असंभव है; क्योंकि वह चुप है, और उसके चेहरे के भाव कुछ नहीं कहते। अभी तक उसका चेहरा भावनाओं को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण नहीं, बल्कि उन्हें छिपाने वाला मुखौटा है। यह लड़का पंद्रह साल का है—दुबला-पतला, और अपनी उम्र के हिसाब से लंबा। उसके चेहरे पर विनम्रता की कमी नहीं, बल्कि चापलूसी झलकती है; उसकी आँखें उसे नियंत्रित करने या उस पर हावी होने के किसी भी प्रयास को भांपने के लिए तैयार लगती हैं; और उसके चेहरे के बाकी भाव प्रतिरोध के लिए तत्परता दिखाते हैं। समझदार व्यवस्थापक उस लड़के के साथ अनावश्यक हस्तक्षेप से बचते हैं। उसे सख्ती से वश में करना व्यर्थ प्रयास होगा; चापलूसी से उसे जीतना तो और भी व्यर्थ होगा। उसे अकेला छोड़ देना ही बेहतर है। समय उसे शिक्षित करेगा और अनुभव उसे प्रशिक्षित करेगा।

मार्टिन यॉर्क (ज़ाहिर है, यह युवा यॉर्क की बात हो रही है) कविता के नाम को रौंदते हैं। उनसे भावुकता की बात कीजिए, तो आपको व्यंग्य ही सुनने को मिलेगा। यहाँ वे अकेले भटक रहे हैं, प्रकृति की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जबकि प्रकृति उनकी ध्यानमग्न दृष्टि के नीचे कठोर, मौन और गंभीर कविता का एक पन्ना खोल रही है।

बैठते ही उसने अपने थैले से एक किताब निकाली—लैटिन व्याकरण की नहीं, बल्कि चोरी-छिपे परियों की कहानियों का एक संग्रह। अभी एक घंटे तक पर्याप्त रोशनी रहेगी जिससे उसकी तेज युवा दृष्टि को रोशनी मिलती रहेगी। इसके अलावा,

चाँद उसका इंतज़ार कर रहा है; उसकी किरणें, जो अभी धुंधली और अस्पष्ट हैं, उस खुले मैदान को रोशन कर रही हैं जहाँ वह बैठा है।

वह पढ़ रहा है। उसे एक सुनसान पहाड़ी क्षेत्र में ले जाया जाता है; उसके चारों ओर सब कुछ उजाड़, वीरान, आकारहीन और लगभग रंगहीन है। उसे हवा में घंटियों की झंकार सुनाई देती है। धुंध की आकारहीन परतों से एक अद्भुत दृश्य प्रकट होता है - हरे वस्त्र पहने एक महिला, बर्फ जैसे सफेद घोड़े पर सवार। वह उसके वस्त्र, उसके गहने और उसके घोड़े को देखता है। वह उससे कोई रहस्यमयी प्रश्न पूछकर उसे वश में कर लेती है। वह मंत्रमुग्ध हो जाता है और उसके पीछे-पीछे परीलोक में चला जाता है।

एक दूसरी कथा उसे समुद्र तट तक ले जाती है। वहाँ तेज़ लहरें उठती हैं, ऊँची-ऊँची चट्टानों के आधार पर उफनती हुई। बारिश और तेज़ हवाएँ चल रही हैं। काली और खुरदरी चट्टानों की एक श्रृंखला समुद्र में दूर तक फैली हुई है। इन चट्टानों के ऊपर, इनके बीच और इनके साथ-साथ, बर्फीली फुहारों की लहरें टकराती, चमकती, बहती और उछलती हैं। कोई अकेला यात्री इन चट्टानों पर है, गीली, जंगली समुद्री शैवाल पर सावधानी से कदम रखते हुए; नीचे उन गड्ढों में झाँक रहा है जहाँ खारा पानी कई गुना गहरा और पन्ना जैसा साफ है, और वहाँ ज़मीन पर पाई जाने वाली वनस्पतियों से कहीं अधिक जंगली, विचित्र और विशाल वनस्पति देख रहा है, जिसमें हरे, बैंगनी और मोती जैसे शंखों का खजाना है, जो साँप जैसे पौधों की लताओं में गुच्छों में बसे हैं। उसे एक चीख सुनाई देती है। ऊपर और आगे देखते हुए, वह चट्टान के सुनसान छोर पर एक लंबी, पीली सी चीज़ देखता है - जो मनुष्य जैसी दिखती है, लेकिन फुहारों से बनी है - पारदर्शी, काँपती हुई, भयानक। वह अकेली नहीं है। वे सभी मानव आकृतियाँ हैं जो चट्टानों में विचरण करती हैं - झागदार महिलाओं की भीड़ - सफेद, क्षणभंगुर नेरीड्स का एक समूह।

चुप रहो! किताब बंद करो; इसे थैले में छुपा दो। मार्टिन को कदमों की आहट सुनाई देती है। वह ध्यान से सुनता है। नहीं—हाँ। एक बार फिर सूखे पत्ते, हल्के से कुचले हुए, जंगल के रास्ते पर सरसराते हैं। मार्टिन देखता है; पेड़ हटते हैं, और एक महिला बाहर आती है।

वह गहरे रेशमी वस्त्र पहने एक महिला है, जिसका चेहरा घूंघट से ढका हुआ है। मार्टिन ने इस जंगल में पहले कभी किसी महिला से मुलाकात नहीं की थी—न ही

किसी स्त्री से, सिवाय कभी-कभार मेवे इकट्ठा करने आई गांव की किसी लड़की के। आज रात वह आकृति उसे अप्रिय नहीं लगती। जैसे ही वह उसके पास आती है, वह देखता है कि वह न तो बूढ़ी है और न ही बदसूरत, बल्कि इसके विपरीत, बहुत युवा है; और अगर अब वह उसे पहचान न पाता जिसे उसने अक्सर जानबूझकर बदसूरत कहा था, तो वह उस घूंघट के पतले पर्दे के पीछे सुंदरता के लक्षण देख पाता।

वह उसके पास से गुज़रती है और कुछ नहीं कहती। उसे पता था कि वह ऐसा ही करेगी। सभी औरतें घमंडी बंदरों जैसी होती हैं, और कैरोलीन हेलस्टोन से ज़्यादा अभिमानी कोई और नहीं थी। उसके मन में यह विचार अभी आया भी नहीं था कि वह महिला दो कदम पीछे हटकर वापस आ गई, अपना घूंघट उठाकर, उसकी ओर देखती हुई धीरे से पूछती है, "क्या आप श्री यॉर्क के बेटों में से एक हैं?"

कोई भी मानवीय प्रमाण मार्टिन योर्क को यह विश्वास दिलाने में सक्षम नहीं होता कि इस तरह संबोधित किए जाने पर वह शरमा गए थे; फिर भी, सुनने में तो ऐसा ही लगता था कि वह शरमा गए थे।

"मैं हूँ," उसने सीधे-सीधे कहा, और खुद को बड़े घमंड से यह सोचने के लिए प्रोत्साहित किया कि आगे क्या होगा।

इसके बाद यह टिप्पणी आई, "मुझे लगता है कि आप मार्टिन हैं?"

इससे अधिक उपयुक्त कुछ हो ही नहीं सकता था। यह एक सरल वाक्य था—बहुत ही सहजता से, थोड़ी झिझक के साथ बोला गया; लेकिन यह युवक के स्वभाव के साथ पूरी तरह मेल खाता था। इसने उसे संगीत की एक मधुर धुन की तरह शांत कर दिया।

मार्टिन को अपने व्यक्तित्व की गहरी समझ थी; उसे यह उचित और तर्कसंगत लगता था कि लड़की उसे उसके भाइयों से अलग समझे। अपने पिता की तरह, उसे औपचारिकताएँ नापसंद थीं। किसी महिला द्वारा उसे "मार्टिन" कहकर संबोधित करना स्वीकार्य था, न कि "मिस्टर मार्टिन" या "मास्टर मार्टिन", क्योंकि ऐसा करने से वह महिला हमेशा के लिए उसकी कृपा खो देती। औपचारिकता से भी बदतर, अगर संभव हो तो, लापरवाही भरी आत्मीयता की दूसरी चरम सीमा थी। थोड़ी सी शर्म और न के बराबर झिझक को वह पूरी तरह से उचित मानता था।

उन्होंने कहा, "मैं मार्टिन हूं।"

“क्या आपके पिताजी और माताजी ठीक हैं?” (यह अच्छा हुआ कि उसने पापा

और मम्मा नहीं कहा; नहीं तो सब गड़बड़ हो जाता); “और रोज़ और जेसी?”

"मुझे ऐसा लगता है।"

“मेरी चचेरी बहन होर्टेंस अभी भी ब्रायर्मेन्स में है?”

"ओह हां।"

मार्टिन ने एक हास्यास्पद आधी मुस्कान और आधी आह भरी। उस आधी मुस्कान का जवाब उस महिला ने दिया, जो समझ गई थी कि युवा यॉर्क परिवार के मन में हॉर्टेंस के बारे में किस तरह की धारणा होगी।

क्या तुम्हारी माँ उसे पसंद करती है?

"नौकरों के मामले में वे दोनों इतने अच्छे से घुलमिल गए हैं कि वे एक-दूसरे को पसंद करने से खुद को रोक नहीं पाते।"

आज रात ठंड है।

तुम इतनी देर रात तक बाहर क्यों हो?

मैं इस जंगल में रास्ता भटक गया था।

अब, वास्तव में, मार्टिन ने खुद को तिरस्कार भरी एक ताजगी भरी हंसी हंसने की अनुमति दी।

"ब्रायर्मेन्स के विशाल जंगल में रास्ता भटक गए हो! अब तुम्हें इसे ढूंढने की सबसे ज्यादा जरूरत है।"

“मैं यहाँ पहले कभी नहीं आया था, और मुझे लगता है कि अब मैं अतिक्रमण कर रहा हूँ। अगर तुम चाहो तो मेरे खिलाफ शिकायत दर्ज करा सकते हो, मार्टिन, और मुझ पर जुर्माना लगवा सकते हो। यह तुम्हारे पिता का जंगल है।”

मुझे लगता है कि मुझे यह पता था। लेकिन चूंकि तुम इतने भोले हो कि रास्ता भटक जाओगे, इसलिए मैं तुम्हें रास्ता दिखा दूंगा।

“आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। मैं अब सही रास्ते पर आ गया हूँ। मैं ठीक हो जाऊँगा। मार्टिन,” (थोड़ी जल्दी से), “मिस्टर मूर कैसे हैं?”

मार्टिन ने कुछ अफवाहें सुनी थीं; उसे लगा कि एक प्रयोग करना मनोरंजक हो सकता है।

“मरने वाला है। उसे कोई नहीं बचा सकता। सारी उम्मीदें खत्म हो गईं!”

उसने अपना घूंघट एक तरफ हटा दिया। उसने उसकी आँखों में देखा और कहा, "मरना!"

“मर जाना। सारी औरतें, मेरी माँ और बाकी सब। उन्होंने उसकी पट्टियों के साथ कुछ ऐसा किया जिससे सब कुछ खत्म हो गया। अगर वे ऐसा न करते तो वह ठीक हो जाता। मुझे यकीन है कि उन्हें गिरफ्तार किया जाना चाहिए, उन पर मुकदमा चलाया जाना चाहिए और कम से कम उन्हें बॉटनी बे जेल में लाया जाना चाहिए।”

प्रश्न पूछने वाली ने शायद यह फैसला सुना ही नहीं। वह स्तब्ध खड़ी रही। दो मिनट में, बिना कुछ कहे, वह आगे बढ़ गई; न शुभ रात्रि कहा, न ही कोई और पूछताछ की। यह न तो मनोरंजक था, न ही मार्टिन ने ऐसा सोचा था। उसे कुछ नाटकीय और प्रदर्शनकारी की उम्मीद थी। अगर लड़की बदले में उसका मनोरंजन नहीं करेगी, तो उसे डराने का कोई फायदा नहीं था। उसने पुकारा, "मिस हेलस्टोन!"

उसने न तो सुना और न ही मुड़ी। वह तेजी से उसके पीछे भागा और उसे पकड़ लिया।

"आइए; क्या मेरी कही बात से आपको बेचैनी हो रही है?"

"तुम्हें मौत के बारे में कुछ नहीं पता, मार्टिन; तुम इस विषय पर मुझसे बात करने के लिए बहुत छोटे हो।"

“क्या आपको मेरी बात पर यकीन था? ये सब बकवास है! मूर तीन आदमियों जितना खाता है। उसके लिए हमेशा साबूदाना, टैपिओका या कुछ और बढ़िया चीज़ बनती रहती है। मैं कभी रसोई में नहीं जाता, लेकिन चूल्हे पर एक तश्तरी रखी होती है, जिसमें उसके लिए कुछ स्वादिष्ट पक रहा होता है। मुझे लगता है मैं भी पुराने सिपाही की तरह व्यवहार करूंगा और उसी की तरह बढ़िया खाना खाऊंगा।”

“मार्टिन! मार्टिन!” यहाँ उसकी आवाज़ काँप उठी और वह रुक गई।

“यह तुम्हारी बेहद बड़ी गलती है, मार्टिन। तुमने लगभग मुझे मार ही डाला था।”

वह फिर रुक गई। वह एक पेड़ से टिक गई, कांप रही थी, थरथरा रही थी और उसका चेहरा मौत की तरह पीला पड़ गया था।

मार्टिन असीम जिज्ञासा से उसे निहार रहा था। एक तरह से, जैसा कि वह खुद कहता, यह देखना उसके लिए "पागलपन" जैसा था। इससे उसे बहुत कुछ पता चल रहा था, और उसे रहस्य जानने में बहुत आनंद आने लगा था। दूसरी ओर, यह उसे उस पल की याद दिला रहा था जब उसने एक चिड़िया को अपने बच्चों के लिए विलाप करते सुना था, जिन्हें मैथ्यू ने पत्थर से कुचल दिया था, और वह एक अप्रिय अनुभूति थी। उसे सांत्वना देने के लिए कुछ उचित न सूझने पर, वह सोचने लगा कि वह क्या

कर सकता है। वह मुस्कुराया। लड़के की मुस्कान ने उसके चेहरे को अद्भुत पारदर्शिता प्रदान की।

“यूरेका!” वह चिल्लाया। “मैं अभी सब ठीक कर दूंगा। अब आप ठीक हैं, मिस कैरोलिन। आगे बढ़िए,” उसने आग्रह किया।

यह न समझते हुए कि दीवार पर चढ़ना या झाड़ी को पार करना मिस हेलस्टोन के लिए खुद से ज़्यादा मुश्किल होगा, उन्होंने उन्हें एक शॉर्टकट से ले गए जो किसी गेट तक नहीं जाता था। नतीजा यह हुआ कि उन्हें कुछ बड़ी बाधाओं को पार करने में उनकी मदद करनी पड़ी, और हालांकि उन्होंने उनकी बेबसी पर नाराज़गी जताई, लेकिन उन्हें खुद को उपयोगी महसूस करने में बहुत आनंद आया।

"मार्टिन, हमारे अलग होने से पहले, मुझे गंभीरता से और अपने वचन पर आश्वस्त करो कि मिस्टर मूर की हालत बेहतर है।"

"मूर, तुम इसके बारे में कितना सोचते हो!"

"नहीं—लेकिन—उनके कई दोस्त मुझसे पूछ सकते हैं, और मैं एक प्रामाणिक उत्तर देने में सक्षम होना चाहता हूँ।"

“आप उन्हें बता सकते हैं कि वह काफी स्वस्थ है, बस आलसी है। आप उन्हें बता सकते हैं कि वह रात के खाने में मटन चॉप्स खाता है और रात के खाने में सबसे बढ़िया अरारोट खाता है। एक रात मैंने खुद ऊपर जाते समय एक कटोरा बचा लिया था और उसका आधा हिस्सा खा लिया था।”

“और उसकी सेवा कौन करता है, मार्टिन? उसकी देखभाल कौन करता है?”

“उसकी देखभाल कौन करता है? बड़ा बच्चा! अरे, एक औरत जो हमारे सबसे बड़े पानी के टैंक जितनी गोल-मटोल और बड़ी है—एक खुरदरी, सख्त चेहरे वाली बूढ़ी औरत। मुझे इसमें कोई शक नहीं कि वह उसे एक शानदार ज़िंदगी देती है। किसी और को उसके पास नहीं जाने दिया जाता। वह ज़्यादातर अंधेरे में ही रहता है। मेरा मानना है कि वह उस कमरे में उसे बुरी तरह पीटती है। मैं कभी-कभी बिस्तर पर लेटे-लेटे दीवार के पास कान लगाकर सुनता हूँ, और मुझे लगता है कि मैं उसे पीटते हुए सुन रहा हूँ। आपको उसकी मुट्ठी देखनी चाहिए। वह अपनी एक हथेली में तुम्हारे जैसे आधे दर्जन हाथ पकड़ सकती है। आख़िरकार, उसे जो भी चॉप्स और जेली मिलती हैं, मैं उसकी जगह नहीं होना चाहूँगा। असल में, मेरा निजी मत है कि वह मिस्टर मूर के लिए परोसे जाने वाले ज़्यादातर खाने को खा जाती है। काश वह उसे भूखा न रख रही

हो।”

कैरोलिन की ओर से गहन मौन और ध्यान, और मार्टिन की ओर से एक धूर्त सतर्कता।

"मुझे लगता है, मार्टिन, तुम उसे कभी नहीं देखते हो?"

“मैं? नहीं। मैं खुद उसे देखना नहीं चाहता।”

फिर सन्नाटा छा गया।

"क्या आप लगभग पांच सप्ताह पहले श्रीमती प्रायर के साथ उनके बारे में पूछने के लिए हमारे घर नहीं आए थे?" मार्टिन ने फिर पूछा।

"हाँ।"

"मुझे लगता है कि आप ऊपर जाना चाहते थे?"

“हम तो यही चाहते थे। हमने विनती भी की थी; लेकिन आपकी माँ ने मना कर दिया।”

“अरे! उसने मना कर दिया। मैंने सब सुन लिया। उसने आपके साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा वह कभी-कभार आने वाले मेहमानों के साथ करती है। उसने आपके साथ बदतमीजी और सख्ती से पेश आई।”

“वह दयालु नहीं थी; क्योंकि तुम जानते हो, मार्टिन, हम रिश्तेदार हैं, और यह स्वाभाविक है कि हम मिस्टर मूर में रुचि लें। लेकिन अब हमें अलग होना पड़ेगा; हम तुम्हारे पिता के द्वार पर हैं।”

“अच्छा, तो क्या हुआ? मैं तुम्हारे साथ घर चलूँगा।”

वे तुम्हें याद करेंगे और सोचेंगे कि तुम कहाँ हो।

"उन्हें करने दो। मुझे लगता है मैं अपना ख्याल खुद रख सकता हूँ।"

मार्टिन जानता था कि उसे पहले ही डांट सुनने और रात के खाने में सूखी रोटी खाने की सजा मिल चुकी है। कोई बात नहीं; शाम ने उसे एक रोमांचक अनुभव दे दिया था। यह मफिन और टोस्ट से तो बेहतर ही था।

वह कैरोलीन के साथ घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसने मिस्टर मूर से मिलने का वादा किया, भले ही उनके कमरे की रखवाली करने वाला अजगर वहाँ मौजूद था, और अगले दिन एक समय तय किया जब कैरोलीन को ब्रायर्मेन्स वुड आकर उससे मिलने का आदेश दिया गया। वह उससे एक खास पेड़ के पास मिलने वाला था। यह योजना सफल नहीं हुई; फिर भी उसे यह अच्छी लगी।

घर पहुँचते ही उसे सूखी रोटी और उपदेश दोनों दिए गए, और उसे जल्दी ही सोने भेज दिया गया। उसने अपने दंड को अत्यंत धैर्य के साथ स्वीकार किया।

अपने कमरे में जाने से पहले, उन्होंने चुपके से भोजन कक्ष का दौरा किया, जो एक शांत, ठंडा, भव्य कमरा था, जिसका उपयोग शायद ही कभी होता था, क्योंकि परिवार आमतौर पर पीछे के बैठक कक्ष में भोजन करता था। वे शेल्फ के सामने खड़े हुए और अपनी मोमबत्ती को ऊपर टंगी दो तस्वीरों की ओर उठाया - महिलाओं के चेहरे: एक, शांत सुंदरता का प्रतीक, खुश और मासूम; दूसरी, अधिक सुंदर, लेकिन अकेली और हताश।

"वह ऐसी दिखती थी," उसने बाद वाले रेखाचित्र को देखते हुए कहा, "जब वह रोती थी, उसका चेहरा पीला पड़ जाता था और वह पेड़ से टेक लगाकर खड़ी हो जाती थी।"

“मुझे लगता है,” उसने अपने कमरे में पहुँचकर, अपने पलंग के किनारे पर बैठते हुए कहा, “मुझे लगता है कि वह ‘प्यार में’ है—हाँ, बगल वाले कमरे में उस लंबे आदमी के प्यार में। छी! क्या हॉर्सफॉल उसे धक्का दे रही है? मुझे आश्चर्य है कि वह चिल्ला क्यों नहीं रही। ऐसा लग रहा है जैसे वह उस पर दाँतों और नाखूनों से गिर पड़ी हो; लेकिन मुझे लगता है कि वह पलंग ठीक कर रही है। मैंने उसे एक बार ऐसा करते देखा था। वह गद्दों पर ऐसे मार रही थी जैसे मुक्केबाजी कर रही हो। यह अजीब है, ज़िला (वे उसे ज़िला कहते हैं)— ज़िला हॉर्सफॉल एक महिला है, और कैरोलीन हेलस्टोन एक महिला है; वे एक ही प्रजाति की दो व्यक्ति हैं—हालाँकि बहुत मिलती-जुलती नहीं हैं। क्या वह कैरोलीन सुंदर लड़की है? मुझे लगता है कि वह है; देखने में बहुत अच्छी—उसके चेहरे में कुछ स्पष्ट है, उसकी आँखों में कुछ कोमल है। मुझे अच्छा लगता है जब वह मुझे देखती है; इससे मुझे अच्छा लगता है। उसकी पलकें लंबी हैं। उनकी छाया जहाँ वह देखती है, वहाँ ठहरती हुई प्रतीत होती है, और शांति प्रदान करती है। मैंने सोचा। अगर वो अच्छा बर्ताव करे और आज की तरह मुझे खुश करती रहे, तो मैं उसका भला कर सकता हूँ। मुझे अपनी माँ और उस बूढ़ी औरत हॉर्सफॉल को चकमा देने का ख्याल अच्छा लग रहा है। ऐसा नहीं है कि मुझे मूर को खुश करना पसंद है; लेकिन मैं जो भी करूँ, मुझे उसका फल मिलेगा, और वो भी मेरी मर्ज़ी से। मुझे पता है कि मैं क्या इनाम माँगूँगा - ऐसा इनाम जो मूर को नापसंद हो, और मुझे पसंद आए।

वह बिस्तर की ओर मुड़ गया।

अध्याय 33.

मार्टिन की रणनीति।

मार्टिन की योजना के अनुसार उस दिन उसका घर पर रहना आवश्यक था। इसलिए, उसे नाश्ते की भूख नहीं थी, और स्कूल जाने के समय के आसपास उसके दिल में तेज दर्द हुआ, जिससे यह उचित लगा कि मार्क के साथ स्कूल जाने के बजाय, वह अपने पिता की आग के पास वाली कुर्सी पर बैठ जाए और सुबह का अखबार पढ़े। यह बात ठीक से तय हो जाने पर, मार्क के मिस्टर समर की कक्षा में चले जाने और मैथ्यू और मिस्टर यॉर्क के लेखा-जोखा कार्यालय में चले जाने के बाद, तीन और कारनामे - बल्कि चार - करने बाकी थे।

इनमें से पहला काम था उस नाश्ते का एहसास करना जिसका स्वाद उसने अभी तक नहीं चखा था, और जिसे पंद्रह साल की उम्र में उसकी भूख बर्दाश्त नहीं कर सकती थी; दूसरा, तीसरा, चौथा काम था अपनी माँ, मिस मूर और श्रीमती हॉर्सफॉल को उस दोपहर चार बजे से पहले सफलतापूर्वक रास्ते से हटा देना।

फिलहाल, पहला काम सबसे ज्यादा जरूरी था, क्योंकि उसके सामने जो काम था, उसके लिए उतनी ऊर्जा की जरूरत थी, जितनी उसके युवा पेट की मौजूदा खाली स्थिति से मिलने की संभावना नहीं थी।

मार्टिन भंडारगृह का रास्ता जानता था, और यह रास्ता जानते हुए वह उसी रास्ते पर चल पड़ा। नौकर रसोई में बंद दरवाजों के पीछे गंभीर भाव से नाश्ता कर रहे थे;

उसकी माँ और मिस मूर लॉन में टहल रही थीं और ऊपर बताए गए बंद दरवाजों के बारे में चर्चा कर रही थीं। भंडारगृह में सुरक्षित पहुँचकर मार्टिन ने उसमें से सावधानीपूर्वक चयन किया। उसका नाश्ता देर से हुआ था; उसने ठान लिया था कि उसे शानदार नाश्ता चाहिए। उसे लगा कि रोटी और दूध के अपने सामान्य कुछ फीके नाश्ते में विविधता वांछनीय और उचित दोनों है; उसने सोचा कि स्वादिष्ट और पौष्टिक दोनों का मिश्रण हो सकता है। एक शेल्फ पर भूसे में रखे गुलाबी सेबों का ढेर था; उसने तीन सेब चुने। एक थाली में पेस्ट्री रखी थी; उसने एक खुबानी पफ और एक डैमसन टार्ट चुना। साधारण घरेलू रोटी पर उसकी नज़र नहीं पड़ी; लेकिन उसने कुछ किशमिश वाले चाय के केक को पसंद किया और उनमें से एक को चुनने की कृपा की। अपने चाकू की बदौलत, वह मुर्गे का एक पंख और हैम का एक टुकड़ा लेने में सक्षम था; उसने सोचा कि ठंडी कस्टर्ड-पुडिंग की एक छोटी बोतल इन वस्तुओं के साथ मेल खाएगी; और अपनी लूट में यह अंतिम वस्तु जोड़ने के बाद, वह अंततः हॉल में चला गया।

वह आधा रास्ता पार कर चुका था—तीन कदम और चलने पर वह पीछे वाले कमरे में पहुँच जाता—तभी सामने का दरवाजा खुला और मैथ्यू खड़ा था। बेहतर होता अगर वह बूढ़ा सज्जन होता, सींगों, खुरों और पूंछ के पूरे साजो-सामान के साथ।

संशयवादी और उपहास करने वाले मैथ्यू ने हृदय के उस दर्द पर तुरंत विश्वास करने से पहले ही इनकार कर दिया था। उसने कुछ शब्द बुदबुदाए थे, जिनमें से "ढोंगी अब्राहम" वाक्यांश स्पष्ट रूप से सुनाई दिया था, और कुर्सी और अखबार की ओर बढ़ते ही उसे मानसिक दौरे पड़ने लगे थे। अब उसके सामने जो दृश्य था - सेब, टार्ट, चाय के केक, मुर्गी, हैम और पुडिंग - वह सबूत तो पेश कर रहा था, लेकिन उसकी अपनी बुद्धिमत्ता के बारे में उसकी राय को बढ़ाने के लिए बहुत ही सोच-समझकर तैयार किया गया था।

मार्टिन एक मिनट, एक पल के लिए रुका; अगले ही पल उसे अपनी स्थिति का एहसास हुआ और उसने कहा कि सब ठीक है। अभिजात वर्ग की सच्ची दूरदर्शिता के साथ, उसने तुरंत समझ लिया कि पहली नज़र में अप्रिय लगने वाली इस घटना को कैसे एक बेहतरीन अवसर में बदला जा सकता है। उसने देखा कि इसे इस तरह से संभाला जा सकता है जिससे उसका दूसरा काम पूरा हो जाए—अर्थात, अपनी माँ का निपटारा। वह जानता था कि उसके और मैथ्यू के बीच टकराव हमेशा श्रीमती यॉर्क को

हिस्टीरिया के दौरे का संकेत देता था। वह यह भी जानता था कि तूफ़ान के बाद शांति आती है, इसलिए हिस्टीरिया से भरी सुबह के बाद उसकी माँ दोपहर में बिस्तर पर ही पड़ी रहेगी। यह उसके लिए बिल्कुल उपयुक्त होगा।

हॉल में टकराव होना तय था। एक सूखी हंसी, एक अपमानजनक उपहास, एक तिरस्कारपूर्ण ताना, और फिर एक बेपरवाह लेकिन बेहद तीखा जवाब - ये सब संकेत थे। वे झपट पड़े। मार्टिन, जो आमतौर पर ऐसे मौकों पर कम शोर मचाता था, उसने आज खूब हंगामा किया। नौकरानियां, श्रीमती यॉर्क, मिस मूर, अंदर आ गईं। कोई भी महिला उन्हें अलग नहीं कर सकी। श्री यॉर्क को बुलाया गया।

“बेटों,” उसने कहा, “अगर ऐसा दोबारा हुआ तो तुममें से किसी एक को मेरी छत छोड़नी होगी। मैं यहाँ कैन और एबेल जैसा झगड़ा नहीं चाहता।”

अब मार्टिन ने खुद को ले जाने की अनुमति दे दी। उसे चोट लगी थी; वह सबसे छोटा और दुबला-पतला था। वह बिल्कुल शांत था, उसमें कोई आवेश नहीं था; यहाँ तक कि वह मुस्कुरा भी रहा था, इस बात से संतुष्ट था कि उसने जो काम अपने हाथ में लिया था, उसका सबसे कठिन हिस्सा पूरा हो चुका था।

एक बार सुबह के दौरान वह थका हुआ सा प्रतीत हुआ।

“कैरोलीन के लिए खुद को परेशान करने का कोई फायदा नहीं,” उसने कहा। लेकिन पंद्रह मिनट बाद वह फिर से भोजन कक्ष में था, बिखरे बालों और निराशा से भरी आँखों वाली मुखिया को देख रहा था।

“हाँ,” उसने कहा, “मैंने उसे रुला दिया, कंपकंपा दिया, लगभग बेहोश कर दिया। मैं उससे निपटने से पहले उसकी मुस्कान देखूंगा; इसके अलावा, मैं इन सभी स्त्रियों को मात देना चाहता हूँ।”

रात के खाने के तुरंत बाद, श्रीमती यॉर्क अपने बेटे की योजना के अनुसार अपने कमरे में चली गईं। अब बारी है हॉर्टेंस की।

वह महिला अभी-अभी पीछे वाले कमरे में मोज़े सिलने में आराम से बैठी ही थी कि मार्टिन ने सोफे पर फैली एक किताब को नीचे रखते हुए (उसके अपने बयान के अनुसार वह अभी भी अस्वस्थ था), जिसे वह एक अनुभवहीन प्रेमी की तरह बड़े आराम से पढ़ रहा था, आलस से हॉलो में काम करने वाली नौकरानी सारा के बारे में कुछ बातें शुरू कर दीं। बहुत सारी बातों को घुमा-फिराकर कहने के दौरान उसने यह जानकारी दी कि उस लड़की के तीन चाहने वाले थे - फ्रेडरिक मुर्गट्रॉयड, जेरेमिया

पिघिल्स और जॉन-ऑफ-मैलीज़-ऑफ-हन्नाज़-ऑफ-डेब्स; और मिस मान ने कहा था कि उन्हें यह बात पक्के तौर पर पता है कि अब जब उस लड़की को अकेले ही झोपड़ी की देखभाल का जिम्मा सौंपा गया है, तो वह अक्सर अपने चाहने वालों को खाने पर बुलाती है और उन्हें घर की सबसे अच्छी चीज़ों से दावत देती है।

अब और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी। हॉर्टेंस इन घिनौने लेन-देन के स्थल पर जाकर स्वयं स्थिति का जायज़ा लिए बिना एक घंटा भी नहीं जी सकती थी। श्रीमती हॉर्सफॉल वहीं रहीं।

अब मैदान का उस्ताद बन चुका मार्टिन, अपनी माँ की टोकरी से चाबियों का एक गुच्छा निकाला; इनसे उसने साइडबोर्ड की अलमारी खोली, उसमें से एक काली बोतल और एक छोटा गिलास निकाला, उन्हें मेज पर रखा, फुर्ती से सीढ़ियाँ चढ़ीं, मिस्टर मूर के दरवाजे की ओर बढ़ा, दस्तक दी; नर्स ने दरवाजा खोला।

"यदि आप चाहें, महोदया, तो आप पीछे वाले कमरे में आकर कुछ जलपान कर सकती हैं। आपको परेशान नहीं किया जाएगा; परिवार के लोग बाहर गए हुए हैं।"

उसने उसे नीचे तक देखा; उसने उसे अंदर जाते हुए देखा; और खुद दरवाजा बंद कर लिया। उसे पता था कि वह सुरक्षित है।

मेहनत तो हो गई थी; अब आनंद का समय था। उसने अपनी टोपी झट से उठाई और लकड़ी की ओर चल पड़ा।

अभी साढ़े तीन ही बजे थे। सुबह सुहावनी थी, लेकिन अब आसमान काला दिख रहा था। बर्फ़बारी शुरू हो रही थी; ठंडी हवा चल रही थी; जंगल उदास लग रहा था, बूढ़ा पेड़ गंभीर दिख रहा था। फिर भी मार्टिन को अपने रास्ते पर पड़ रही छाया अच्छी लग रही थी। उसे उस मुरझाए हुए ओक के पेड़ के रहस्यमय रूप में एक अलग ही आकर्षण नज़र आ रहा था।

उसे इंतजार करना पड़ा। वह इधर-उधर चलता रहा, जबकि बर्फ के टुकड़े तेजी से गिरने लगे; और हवा, जो पहले केवल धीमी आवाज में चल रही थी, अब दयनीय रूप से गरजने लगी।

"उसे आने में बहुत देर हो गई है," उसने संकरे रास्ते पर नज़र डालते हुए बुदबुदाया। "मुझे आश्चर्य है," उसने आगे कहा, "मैं उसे इतना क्यों देखना चाहता हूँ? वह मेरे लिए तो नहीं आ रही है। लेकिन मेरा उस पर अधिकार है, और मैं चाहता हूँ कि वह आए ताकि मैं उस अधिकार का उपयोग कर सकूँ।"

वह चलता रहा।

कुछ और समय बीत जाने के बाद, उसने फिर कहा, "अब अगर वह नहीं आई, तो मैं उससे नफरत करूंगा और उसका तिरस्कार करूंगा।"

चार बज चुके थे। दूर से चर्च की घड़ी की आवाज़ सुनाई दी। एक तेज़, हल्का कदम, जो पत्तों की सरसराहट के बिना लकड़ी के रास्ते पर मुश्किल से सुनाई देता, ने उसकी बेचैनी को शांत कर दिया। हवा अब ज़ोरों से चल रही थी, और घना होता सफेद तूफान और भी भयानक होता जा रहा था; लेकिन वह आगे बढ़ता रहा, और रुका नहीं।

“तो, मार्टिन,” उसने उत्सुकता से कहा, “वह कैसा है?”

“यह अजीब है कि वह उसके बारे में कैसे सोचती है,” मार्टिन ने सोचा। “मुझे लगता है कि तेज़ बर्फ़बारी और कड़ाके की ठंड उसके लिए कुछ भी नहीं है; फिर भी वह एक ‘भोली-भाली लड़की’ है, जैसा कि मेरी माँ कहा करती थीं। काश मेरे पास उसे ओढ़ाने के लिए एक चादर होती।”

इस प्रकार मन ही मन सोचते हुए उन्होंने मिस हेलस्टोन के सवालों का जवाब देना भूल गए।

“क्या आपने उसे देखा है?”

"नहीं।"

“ओह! आपने वादा किया था कि आप ऐसा करेंगे।”

“मैं तुम्हारे साथ इससे बेहतर व्यवहार करने का इरादा रखती हूँ। क्या मैंने यह नहीं कहा था कि मुझे उससे मिलने में कोई दिलचस्पी नहीं है?”

“लेकिन अब मुझे उसके बारे में कुछ भी निश्चित रूप से जानने में बहुत लंबा समय लगेगा, और मैं इंतज़ार करते-करते थक गई हूँ। मार्टिन, उससे मिलो और उसे कैरोलिन हेलस्टोन का नमस्कार कहना, और कहना कि वह जानना चाहती थी कि वह कैसा है, और क्या उसकी भलाई के लिए कुछ किया जा सकता है।”

मैं ऐसा नहीं करूंगा।

तुम बदल गए हो। कल रात तो तुम बहुत मिलनसार थे।

"चलो, हमें इस जंगल में नहीं रुकना चाहिए; यहाँ बहुत ठंड है।"

"लेकिन जाने से पहले मुझसे वादा करो कि तुम कल खबर लेकर वापस आओगे।"

“ऐसा कुछ नहीं है। मैं सर्दियों के मौसम में इस तरह की मुलाकातें करने और

निभाने के लिए बहुत नाज़ुक हूँ। अगर आपको पता होता कि आज सुबह मेरे सीने में कितना दर्द था, मैंने नाश्ता नहीं किया था और ऊपर से मैं गिर भी गई थी, तो आपको बर्फ में मुझे यहाँ लाने की बात समझ आती। आइए, मैं कहती हूँ।”

"क्या तुम वाकई बहुत नाजुक हो, मार्टिन?"

क्या मैं ऐसा नहीं दिखता?

तुम्हारे गाल गुलाबी हैं।

“यह तो बहुत व्यस्तता भरा होगा। क्या आप आएंगे या नहीं?”

"कहाँ?"

“मेरे साथ। मैं लबादा नहीं लाया, यह मेरी मूर्खता थी। मैं तुम्हें आराम से रख पाता।”

“तुम घर जा रहे हो; मेरी सबसे नज़दीकी सड़क विपरीत दिशा में है।”

"अपना हाथ मेरे हाथ में डालो; मैं तुम्हारा ख्याल रखूंगा।"

"लेकिन दीवार - वह झाड़ी - उस पर चढ़ना बहुत कठिन काम है, और तुम इतनी दुबली-पतली और जवान हो कि खुद को चोट पहुंचाए बिना मेरी मदद नहीं कर सकती।"

तुम फाटक से होकर जाओगे।

"लेकिन - - "

"लेकिन, लेकिन—क्या तुम मुझ पर भरोसा करोगे या नहीं?"

उसने उसके चेहरे की ओर देखा।

मुझे लगता है मैं ऐसा ही करूंगा। जिस चिंता के साथ मैं आया था, उसी चिंता के साथ वापस लौटने से बेहतर कुछ भी हो सकता है।

मैं इसका जवाब नहीं दे सकता। लेकिन मैं आपसे यह वादा करता हूँ: मेरे अधीन रहो, और तुम खुद ही मूर को देख लोगे।

"क्या मैं उसे खुद देखूं?"

"अपने आप को।"

"लेकिन, प्यारे मार्टिन, क्या उसे पता है?"

“आह! अब तो मैं महंगा पड़ गया हूँ। नहीं, उसे पता नहीं है।”

और तुम्हारी माँ और बाकी लोग?

सब ठीक है।

कैरोलिन लंबे समय तक मौन चिंतन में डूबी रही, लेकिन फिर भी वह अपने मार्गदर्शक के साथ चलती रही। वे ब्रियारमेन्स के दर्शन करने लगे।

“क्या आपने अपना मन बना लिया है?” उसने पूछा।

वह चुप रही।

“फैसला करो; हम अभी यहीं हैं। मैं उससे नहीं मिलूंगा—यह मैं तुम्हें बता रहा हूं—सिर्फ तुम्हारे आने की सूचना देने के लिए।”

“मार्टिन, तुम एक अजीब लड़के हो, और यह एक अजीब कदम है; लेकिन मैं जो कुछ भी महसूस करता हूँ, वह लंबे समय से अजीब ही रहा है। मैं उससे मिलूंगा।”

"यह सब कहने के बाद, आप न तो संकोच करेंगे और न ही पीछे हटेंगे?"

"नहीं।"

“तो चलिए, हम यहाँ हैं। बैठक की खिड़की से बाहर निकलने से मत डरिए; आपको कोई नहीं देखेगा। मेरे पिता और मैथ्यू चक्की पर हैं, मार्क स्कूल में है, नौकर पीछे की रसोई में हैं, मिस मूर कॉटेज में हैं, मेरी माँ अपने बिस्तर पर हैं, और श्रीमती हॉर्सफॉल स्वर्ग में हैं। ध्यान दीजिए—मुझे घंटी बजाने की ज़रूरत नहीं है। मैं दरवाज़ा खोलता हूँ; हॉल खाली है, सीढ़ियाँ शांत हैं; गैलरी भी शांत है। पूरा घर और उसके सभी निवासी एक जादू के प्रभाव में हैं, जिसे मैं आपके जाने तक नहीं तोड़ूँगा।”

“मार्टिन, मुझे तुम पर भरोसा है।”

“तुमने इससे बेहतर शब्द कभी नहीं कहे। मुझे अपना शॉल दे दो। मैं इस पर से बर्फ झाड़कर सुखा दूंगी। तुम्हें ठंड लग रही है और तुम भीगी हुई हो। कोई बात नहीं; ऊपर आग जल रही है। क्या तुम तैयार हो?”

"हाँ।"

"मेरे पीछे आओ।"

उसने अपने जूते चटाई पर ही छोड़ दिए और नंगे पैर सीढ़ियाँ चढ़ गया। कैरोलाइन दबे पांव उसके पीछे-पीछे चुपचाप चली। वहाँ एक गैलरी थी और एक गलियारा; उस गलियारे के अंत में मार्टिन एक दरवाजे के सामने रुका और खटखटाया। उसे दो बार - तीन बार खटखटाना पड़ा। अंत में एक जानी-पहचानी आवाज ने कहा, "अंदर आ जाओ।"

लड़का फुर्ती से अंदर आया।

“श्री मूर, एक महिला आपसे हालचाल पूछने आई थीं। कोई भी महिला घर पर

नहीं थी। आज कपड़े धोने का दिन है और नौकरानियाँ पीछे की रसोई में साबुन के झाग में लथपथ हैं, इसलिए मैंने उनसे आगे आने को कहा।”

“ऊपर, महोदय?”

"ऊपर ही रहिए, महोदय; लेकिन यदि आपको आपत्ति है, तो वह वापस नीचे चली जाएगी।"

"क्या यह कोई जगह है या मैं कोई व्यक्ति हूं जहां किसी महिला को लाया जा सके, तुम मूर्ख लड़के?"

“नहीं; तो मैं उसे हटा दूंगा।”

“मार्टिन, तुम यहीं रुकोगे। वह कौन है?”

"आपकी दादी, जो शेल्ड्ट नदी के किनारे स्थित उस महल में रहती थीं, जिसके बारे में मिस मूर बात कर रही हैं।"

दरवाजे पर सबसे धीमी फुसफुसाहट सुनाई दी, "मार्टिन, मूर्खता मत करो।"

“क्या वह वहाँ है?” मूर ने जल्दी से पूछा। उसे एक अस्पष्ट आवाज़ सुनाई दी थी।

“वह वहीं खड़ी है, बेहोश होने वाली है। वह चटाई पर खड़ी है, आपके पुत्रवत स्नेह की कमी से स्तब्ध है।”

“मार्टिन, तुम एक दुष्ट शैतान और नौकर का मिलाजुला रूप हो। वह कैसी है?”

"मुझसे ज़्यादा मिलती-जुलती है, तुमसे नहीं; क्योंकि वह जवान और खूबसूरत है।"

“तुम्हें उसे आगे ले जाना है। क्या तुम सुन रहे हो?”

"आइए, मिस कैरोलिन।"

“मिस कैरोलिन!” मूर ने दोहराया।

और जब मिस कैरोलिन ने प्रवेश किया तो कमरे के बीच में ही उनका सामना एक लंबे, पतले, कमजोर कद के व्यक्ति से हुआ, जिसने उनके दोनों हाथ पकड़ लिए।

“मैं तुम्हें पंद्रह मिनट का समय देता हूँ,” मार्टिन ने जाते हुए कहा, “इससे ज़्यादा नहीं। इस समय में जो कहना है कह लो। समय बीतने तक मैं गैलरी में इंतज़ार करूँगा; कोई पास नहीं आ सकता; मैं तुम्हें सुरक्षित विदा करूँगा। अगर तुम ज़्यादा देर तक रुकने की ज़िद करोगे, तो मैं तुम्हें तुम्हारे हाल पर छोड़ दूँगा।”

उसने दरवाजा बंद कर दिया। गैलरी में वह राजा की तरह आनंदित था। उसने पहले कभी किसी ऐसे साहसिक कार्य में भाग नहीं लिया था जो उसे इतना पसंद आया हो, क्योंकि किसी भी साहसिक कार्य ने उसे इतना महत्व नहीं दिया था और न ही उसमें

इतनी रुचि जगाई थी।

"आखिरकार तुम आ ही गई," दुबले-पतले आदमी ने अपनी आगंतुक को खोखली आँखों से देखते हुए कहा।

क्या आपको पहले से मेरी उम्मीद थी?

"लगभग एक महीने से, दो महीने से हम बहुत करीब रहे हैं; और मैं बहुत दर्द, खतरे और पीड़ा में रहा हूँ, कैरी।"

"मैं आ नहीं पाया।"

“क्या आप नहीं कर सकते? लेकिन पादरी का निवास और ब्रियरमेन्स बहुत पास हैं—दो मील से भी कम दूरी पर।”

इन अप्रत्यक्ष निंदाओं को सुनते हुए लड़की के चेहरे पर दर्द और खुशी दोनों के भाव थे। खुद का बचाव करना मीठा भी था और कड़वा भी।

“जब मैं कहती हूँ कि मैं नहीं आ सकी, तो मेरा मतलब है कि मैं आपसे मिल नहीं सकी; क्योंकि मैं माँ के साथ उसी दिन आई थी जिस दिन हमें घटना के बारे में पता चला था। श्री मैकटर्क ने तब हमसे कहा था कि किसी भी अजनबी को अंदर आने देना असंभव है।”

लेकिन उसके बाद—पिछले कई हफ्तों से हर सुहावनी दोपहर को मैं इंतज़ार करता और सुनता रहा हूँ। कैरी, मेरे अंदर कुछ ऐसा है,”— अपना हाथ अपनी छाती पर रखते हुए— “जिसने मुझे बताया कि यह नामुमकिन है कि तुम मेरे बारे में न सोचो। ऐसा नहीं है कि मैं सोचने लायक हूँ; बल्कि हम पुराने परिचित हैं— हम चचेरे भाई हैं।”

“मैं फिर से आई, रॉबर्ट; मैं और मेरी माँ फिर से आए।”

“क्या सच में? आइए, यह तो सुनने लायक है। चूंकि आप दोबारा आए हैं, तो चलिए बैठकर इस बारे में बात करते हैं।”

वे बैठ गए। कैरोलाइन ने अपनी कुर्सी उसके पास खींच ली। हवा अब बर्फ से काली हो चुकी थी; आइसलैंड से आ रही तेज़ हवा बर्फ को बेतहाशा उड़ा रही थी। इस जोड़े ने न तो बर्फ की तेज़ आवाज़ सुनी, न ही उसके साथ उड़ती बर्फ का सफेद ढेर देखा। दोनों को बस एक ही बात का एहसास था - एक-दूसरे की मौजूदगी।

“तो मम्मी और तुम फिर से आ गए?”

और श्रीमती यॉर्क ने हमारे साथ अजीब व्यवहार किया। हमने आपसे मिलने की

विनती की। उन्होंने कहा, 'नहीं, मेरे घर में नहीं। मैं इस समय उसकी जान की ज़िम्मेदारी संभाल रही हूँ; आधे घंटे की बेकार की गपशप के लिए इसे दांव पर नहीं लगाया जा सकता।' लेकिन मैं आपको उनकी सारी बातें नहीं बता सकती; यह बहुत अप्रिय था। फिर भी, हम दोबारा आए - माँ, मिस कील्डर और मैं। इस बार हमने सोचा कि हम जीत जाएँगे, क्योंकि हम तीन के मुकाबले एक थे, और शर्ली हमारे साथ थी। लेकिन श्रीमती यॉर्क ने तो जैसे हमला ही कर दिया।

मूर मुस्कुराया। "उसने क्या कहा?"

“ऐसी बातें जिन्होंने हमें चौंका दिया। शर्ली आखिरकार हँसी; मैं रो पड़ी; माँ बहुत नाराज़ हो गईं। हम तीनों को खेत से निकाल दिया गया। तब से मैं दिन में केवल एक बार ही घर के पास से गुज़रती हूँ, सिर्फ़ आपकी खिड़की को देखने की तसल्ली के लिए, जिसे मैं खींचे हुए पर्दों से पहचान लेती थी। सच में, अंदर आने की हिम्मत ही नहीं होती थी।”

मैंने तुम्हारे लिए दुआ की है, कैरोलाइन।

मुझे यह पता नहीं था; मैंने सपने में भी कभी नहीं सोचा था कि तुम मेरे बारे में सोचोगे। अगर मैंने दूर से भी ऐसी संभावना की कल्पना की होती तो...

"श्रीमती यॉर्क फिर भी तुम्हें हरा देतीं।"

“वह ऐसा नहीं करती। अगर समझाने-बुझाने से बात नहीं बनती, तो चाल चलनी चाहिए थी। मैं रसोई के दरवाजे तक आती; नौकर मुझे अंदर आने देते और मैं सीधे ऊपर चली जाती। असल में, श्रीमती यॉर्क के डर से कहीं ज़्यादा मुझे घुसपैठ का डर —खुद का डर—परेशान कर रहा था।”

"कल रात ही तो मुझे लगा कि शायद मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगी। कमजोरी ने मुझमें भयानक अवसाद पैदा कर दिया है - भयानक अवसाद।"

और आप अकेले बैठे हैं?

अकेले रहने से भी बदतर।

"लेकिन आप बिस्तर से उठ पा रहे हैं, तो इसका मतलब है कि आपकी सेहत में सुधार हो रहा है?"

मुझे संदेह है कि मैं जीवित रह पाऊंगा या नहीं। इतनी थकावट के बाद मुझे पतन के अलावा कोई और रास्ता नजर नहीं आता।

"तुम—तुम हॉलो में अपने घर जाओगे।"

"उदासी छाई रहती थी, कोई भी खुशनुमा चीज मेरे पास नहीं आती थी।"

मैं इसे बदल दूँगा। इसे बदल दिया जाएगा, चाहे दस श्रीमती यॉर्क भी युद्ध करने के लिए मौजूद हों।

"कैरी, तुम मुझे मुस्कुराने पर मजबूर कर देते हो।"

"मुस्कुराइए; फिर से मुस्कुराइए। क्या मैं आपको बताऊं कि मुझे क्या पसंद है?"

“मुझे कुछ भी बताओ—बस बोलते रहो। मैं शाऊल हूँ; संगीत के बिना तो मैं मर जाऊँगा।”

मैं चाहूँगा कि तुम्हें पादरी के निवास स्थान पर लाया जाए और मुझे और मेरी माँ को सौंप दिया जाए।

“एक अनमोल तोहफा! गोली लगने के बाद से लेकर अब तक मैं हंसा नहीं था।”

“क्या तुम्हें दर्द होता है, रॉबर्ट?”

“अब उतना दर्द नहीं है; लेकिन मैं बेहद कमजोर हूँ, और मेरी मानसिक स्थिति अवर्णनीय है — अंधकारमय, बंजर, शक्तिहीन। क्या तुम यह सब मेरे चेहरे पर नहीं पढ़ सकते? मैं तो बस एक भूत जैसा दिखता हूँ।”

“बदला हुआ सा लग रहा है; फिर भी मैं तुम्हें कहीं भी पहचान लेता। लेकिन मैं तुम्हारी भावनाओं को समझता हूँ; मैंने भी कुछ ऐसा ही अनुभव किया है। जब से हम मिले हैं, मैं भी बहुत बीमार रहा हूँ।”

"बहुत बीमार?"

“मुझे लगा कि मैं मर जाऊँगा। ऐसा लगा जैसे मेरे जीवन की कहानी पूरी हो चुकी है। हर रात, ठीक आधी रात को, मैं भयानक सपनों से जाग जाता था; और किताब मेरे सामने आखिरी पन्ने पर खुली पड़ी होती थी, जहाँ ‘समाप्त’ लिखा होता था। मुझे अजीब सी भावनाएँ होती थीं।”

“आप मेरे अनुभव को बयां कर रहे हैं।”

मुझे लगा था कि मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगी; और मैं इतनी दुबली हो गई थी—बिल्कुल तुम्हारी तरह। मैं अपने लिए कुछ भी नहीं कर सकती थी—न उठ सकती थी, न लेट सकती थी; और मैं खा भी नहीं सकती थी। फिर भी तुम देख सकते हो कि मैं अब बेहतर हूँ।

“सांत्वना देने वाले—दुख में भी मधुरता। मैं अपने मन की बात कहने के लिए बहुत कमजोर हूँ; लेकिन जब आप बोलते हैं तो मुझे महसूस होता है।”

“मैं यहाँ तुम्हारे पास हूँ, जहाँ मैंने कभी होने की उम्मीद नहीं की थी। मैं यहाँ तुमसे बात कर रहा हूँ। मैं देख रहा हूँ कि तुम मुझे ध्यान से सुन रहे हो — मुझे प्यार से देख रहे हो। क्या मैंने इस पर भरोसा किया था? मैं निराश था।”

मूर ने आह भरी—इतनी गहरी आह कि वह लगभग कराह जैसी थी। उसने अपने हाथ से अपनी आँखें ढक लीं।

"मुझे प्रायश्चित करने के लिए कुछ समय दिया जाए।"

यही उनकी प्रार्थना थी।

और किसलिए?

“हम अभी इस विषय पर बात नहीं करेंगे, कैरी; मैं इतना कमजोर हूँ कि ऐसे विषय पर बात करने की हिम्मत नहीं कर सकता। क्या श्रीमती प्रायर आपकी बीमारी के दौरान आपके साथ थीं?”

“हां” — कैरोलाइन ने मुस्कुराते हुए कहा — “तुम्हें पता है कि वह मां है?”

“मैंने सुना है—होर्टेंस ने मुझे बताया था; लेकिन वह कहानी भी मैं आपसे ही सुनूंगा। क्या वह आपकी खुशी में इजाफा करती है?”

“क्या! माँ? वह मुझे बहुत प्यारी हैं; कितनी प्यारी हैं, यह मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती। मैं पूरी तरह से थक गई थी, और उन्होंने मुझे सहारा दिया।”

"जब मैं मुश्किल से अपना हाथ अपने सिर तक उठा पा रही हूँ, उस समय मुझे यह सुनने का हक है। मैं इसकी हकदार हूँ।"

"यह आपके खिलाफ कोई आरोप नहीं है।"

“ये मेरे सिर पर रखे हुए अंगारे के समान है; और तुम्हारे कहे हर शब्द और तुम्हारे प्यारे चेहरे की हर नज़र भी वैसी ही है। ज़रा और करीब आओ, लीना; और मुझे अपना हाथ दो—अगर मेरी पतली उंगलियाँ तुम्हें डराती नहीं हैं तो।”

उसने अपनी नन्ही उंगलियों को अपने दोनों छोटे हाथों के बीच लिया; उसने अपना सिर झुकाया और अपने होंठों को हिलाया। (मैंने इसे फ्रेंच में लिखा है क्योंकि 'एफ़्ल्यूरर' एक सुंदर शब्द है।) मूर बहुत भावुक हो गया। उसकी पिचकी हुई गालों पर एक-दो बड़े आंसू बह गए।

"मैं इन बातों को अपने दिल में संजो कर रखूंगी, कैरी; उस चुंबन को मैं भुला दूंगी, और एक दिन तुम इसके बारे में फिर से सुनोगे।"

“बाहर आओ!” मार्टिन ने दरवाजा खोलते हुए चिल्लाकर कहा, “चले जाओ; तुम्हें

पंद्रह मिनट के बजाय बीस मिनट मिले हैं।”

“वह अभी हिलेगी नहीं, हे भांग के बीज।”

"मैं अब और नहीं रुक सकता, रॉबर्ट।"

"क्या आप वापस आने का वादा कर सकते हैं?"

“नहीं, वह ऐसा नहीं कर सकती,” मार्टिन ने जवाब दिया। “यह आदत नहीं बननी चाहिए। मैं परेशान नहीं हो सकता। एक बार के लिए ठीक है; मैं इसे दोबारा नहीं होने दूंगा।”

"इसे दोबारा नहीं होने दिया जाएगा।"

“चुप रहो! उसे परेशान मत करो; उसके बिना आज हमारी मुलाकात नहीं हो सकती थी। लेकिन अगर आप चाहें तो मैं फिर आऊंगा।”

"यह मेरी इच्छा है - मेरी एकमात्र इच्छा - लगभग एकमात्र इच्छा जो मैं महसूस कर सकता हूँ।"

“अभी इसी वक्त आइए। मेरी माँ को खांसी आई, वो उठीं और अपने पैर ज़मीन पर रख दिए। मिस कैरोलीन, उन्हें सीढ़ियों पर ही आपसे मिलने दीजिए। आपको उन्हें अलविदा नहीं कहना है”— उनके और मूर के बीच में आकर— “आपको चलना है।”

"मेरी शॉल, मार्टिन।"

“मेरे पास है। जब आप हॉल में होंगे तो मैं इसे आपके लिए लगा दूंगा।”

उसने उन्हें अलग कर दिया। वह केवल इशारों से ही विदाई व्यक्त करना चाहता था। उसने कैरोलीन को आधा उठाकर सीढ़ियों से नीचे उतारा। हॉल में उसने उसका शॉल उसके चारों ओर लपेट दिया, और अगर तभी गैलरी में उसकी माँ के कदमों की आहट सुनाई न दी होती, और अगर उसके मन में संकोच की भावना—जो उसके लड़के के दिल की स्वाभाविक, उचित और इसलिए नेक भावना थी—ने उसे रोक न दिया होता, तो वह अपना इनाम मांग लेता; वह कहता, "अब, मिस कैरोलीन, इन सबके बदले मुझे एक चुंबन दो।" लेकिन उसके होंठों से शब्द निकलने से पहले ही वह बर्फीली सड़क पार कर चुकी थी, मानो बर्फ में चलने के बजाय उस पर फिसलती हुई जा रही हो।

वह मेरी देनदार है, और मुझे उसका भुगतान कर दिया जाएगा।

उसने खुद को यह कहकर दिलासा दिया कि उसकी असफलता का कारण अवसर था, न कि दुस्साहस। उसने अपने स्वभाव की गुणवत्ता को गलत समझा और उसे

उसकी वास्तविक क्षमता से कमतर आंका।

अध्याय 34.

घरेलू उत्पीड़न का मामला — धार्मिक कर्तव्यों के निर्वहन में धर्मपरायण दृढ़ता का उल्लेखनीय उदाहरण।

मार्टिन, रोमांच का स्वाद चख चुका था, उसे एक और घूंट चाहिए था; सत्ता का गौरव महसूस कर चुका था, इसलिए उसे इसे छोड़ना अच्छा नहीं लग रहा था। मिस हेलस्टोन—वह लड़की जिसे वह हमेशा बदसूरत कहता था, और जिसका चेहरा अब दिन-रात, अंधेरे-उज्ज्वल में, उसकी आँखों के सामने रहता था—एक बार उसके जीवन में आई थी। यह सोचकर वह परेशान था कि शायद यह मुलाकात फिर कभी न हो पाए।

हालांकि वह एक स्कूली छात्र था, लेकिन वह कोई साधारण छात्र नहीं था; उसका अद्वितीय होना तय था। कुछ वर्षों बाद उसने खुद को दुनिया के बाकी लोगों के अनुरूप ढालने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह कभी सफल नहीं हुआ; उस पर हमेशा एक अनूठी छाप बनी रही। अब वह प्राथमिक विद्यालय में अपनी डेस्क पर खाली बैठा रहता था, अपने अधूरे प्रेम प्रसंग में एक और अध्याय जोड़ने के तरीके खोजता रहता था। उसे अभी यह नहीं पता था कि कितने अधूरे प्रेम प्रसंग पहले या ज़्यादा से ज़्यादा दूसरे अध्याय से आगे नहीं बढ़ पाते। शनिवार की आधी छुट्टी वह जंगल में परियों की कहानियों की किताब और अपनी कल्पना की उस दूसरी अनलिखी किताब के साथ बिताता था।

मार्टिन को रविवार के आने से धार्मिक रूप से घृणा होती थी। उनके माता-पिता, भले ही धार्मिक व्यवस्था से अपना संबंध न रखते हों, फिर भी पवित्र दिन पर ब्रायफ़ील्ड चर्च में अपनी बड़ी सीट को अपने पूरे परिवार से भर देते थे। सैद्धांतिक रूप से, श्री यॉर्क सभी संप्रदायों और चर्चों को एक समान मानते थे। श्रीमती यॉर्क मोरावियन और क्वेकर संप्रदायों को श्रेष्ठ मानती थीं, क्योंकि ये लोग विनम्रता का प्रतीक थे। हालाँकि, उनमें से किसी को भी कभी किसी धार्मिक सभा में जाते हुए नहीं देखा गया।

मार्टिन को रविवार नापसंद था, क्योंकि सुबह की प्रार्थना सभा लंबी होती थी और उपदेश आमतौर पर उसे पसंद नहीं आता था। लेकिन इस शनिवार दोपहर को, जंगल में विचार करते हुए उसे आने वाले दिन में एक नया आकर्षण दिखाई दिया।

वह दिन भारी बर्फबारी से भरा था—इतनी गहरी कि नाश्ते के दौरान श्रीमती यॉर्क ने घोषणा की कि बच्चे, लड़के और लड़कियां दोनों, घर पर ही बेहतर रहेंगे; और उन्होंने फैसला किया कि चर्च जाने के बजाय, वे दो घंटे तक पीछे वाले कमरे में चुपचाप बैठे रहेंगे, जबकि रोज़ और मार्टिन बारी-बारी से जॉन वेस्ली के "उपदेश" पढ़ेंगे। जॉन वेस्ली एक समाज सुधारक और आंदोलनकारी होने के नाते, श्रीमती यॉर्क और उनके पति दोनों के प्रिय थे।

"रोज़ वही करेगी जो उसे पसंद है," मार्टिन ने कहा, किताब से नज़रें उठाए बिना, जिसे वह अपनी रोटी और दूध के साथ पढ़ रहा था, जैसा कि वह तब और परलोक में भी करता था।

"रोज़ वही करेगी जो उसे कहा जाएगा, और मार्टिन भी," मां ने कहा।

"मैं चर्च के लिए जा रहा हूँ।"

तो उसके बेटे ने एक सच्चे यॉर्क की अकथनीय शांति के साथ उत्तर दिया, जो अपनी इच्छा और उसे प्राप्त करने के साधनों को जानता है, और जो, यदि दीवार से सटा दिया जाए, तो खुद को कुचलकर मरने देगा, बशर्ते बचने का कोई रास्ता न मिले, लेकिन कभी आत्मसमर्पण नहीं करेगा।

पिता ने कहा, "यह मौसम ठीक नहीं है।"

कोई जवाब नहीं मिला। युवक लगन से पढ़ रहा था; उसने धीरे-धीरे रोटी तोड़ी और दूध पिया।

श्रीमती यॉर्क ने कहा, "मार्टिन को चर्च जाना बिल्कुल पसंद नहीं है, लेकिन उसे

आज्ञा मानना उससे भी कहीं ज्यादा नापसंद है।"

"मुझे लगता है कि मैं विशुद्ध विकृति से प्रभावित हूँ?"

"हां आप ही।"

“माँ, मैं नहीं हूँ।”

तो फिर आप किससे प्रभावित होते हैं?

"विभिन्न उद्देश्यों की जटिलता के कारण, जिसकी पेचीदगियों को मैं आपको समझाने के बारे में उतना ही जल्दी सोचूंगा जितना कि अपने शरीर की आंतरिक कार्यप्रणाली को प्रदर्शित करने के लिए खुद को उलट-पुलट कर देना।"

“मार्टिन की बात सुनो! उसकी बात सुनो!” श्री योर्क चिल्लाए। “मुझे अपने इस बेटे को वकालत के पेशे में देखना और उसे तैयार करवाना ही होगा। कुदरत ने उसे ज़ुबान के दम पर जीने के लिए बनाया है। हेस्टर, तुम्हारा तीसरा बेटा तो ज़रूर वकील बनेगा; उसमें वो सारे गुण हैं जो वकील बनने के लिए ज़रूरी हैं – धृष्टता, आत्मविश्वास और शब्दों का दबदबा।”

“रोज़, थोड़ी रोटी दे दीजिए,” मार्टिन ने अत्यंत गंभीरता, शांति और संयम के साथ निवेदन किया। लड़के की आवाज़ स्वभाव से ही धीमी और उदास थी, जो उसके “उदास मिजाज” में किसी महिला की फुसफुसाहट से भी धीमी हो जाती थी। उसका मिजाज जितना कठोर होता था, आवाज़ उतनी ही धीमी और उदास होती जाती थी। उसने घंटी बजाई और धीरे से अपने चलने वाले जूते मांगे।

“लेकिन, मार्टिन,” उसके पिता ने आग्रह किया, “हर तरफ बर्फ ही बर्फ है; कोई आदमी उसमें से मुश्किल से ही चल पाएगा। लेकिन, बेटा,” उन्होंने आगे कहा, जब उन्होंने देखा कि चर्च की घंटी बजते ही लड़का उठ खड़ा हुआ, “यह ऐसा मामला है जिसमें मैं उसके हठी इरादे को किसी भी कीमत पर नहीं रोकूंगा। हर हाल में चर्च जाओ। तेज़ हवा चल रही है, बर्फ़बारी हो रही है, और नीचे ज़मीन भी बहुत गहरी है। बाहर निकलो, क्योंकि तुम्हें गर्म आग के पास बैठने से ज़्यादा अच्छा लगता है।”

मार्टिन ने चुपचाप अपना लबादा, कंबल और टोपी ली और जानबूझकर बाहर चला गया।

“मेरे पिता मेरी माँ से ज़्यादा समझदार हैं,” उन्होंने कहा। “औरतें इस बात को कितनी आसानी से भूल जाती हैं! वे मांस में कील ठोकती हैं, यह सोचकर कि वे बेजान पत्थर पर हथौड़ा चला रही हैं।”

वह चर्च जल्दी पहुंच गया।

“अब, अगर मौसम उसे डराता है (और यह सचमुच दिसंबर का तूफ़ान है), या अगर श्रीमती प्रायर उसके बाहर जाने पर आपत्ति जताती हैं, और मैं उससे मिलने नहीं जा पाऊँ, तो मुझे बुरा लगेगा; लेकिन चाहे तूफ़ान हो या बवंडर, ओले पड़ें या बर्फ़, उसे आना चाहिए, और अगर उसका मन उसकी आँखों और चेहरे के लायक है तो वह ज़रूर आएगी। वह मुझे देखने के लिए यहाँ आएगी, जैसे मैं उसे देखने के लिए यहाँ हूँ। वह अपने उस बेचारे प्रेमी के बारे में कुछ जानना चाहेगी, जैसे मैं जीवन के सार का एक और स्वाद चखना चाहता हूँ—अस्तित्व का एक ऐसा अनुभव, जिसमें आत्मा बसी हो, न कि नष्ट हो गई हो। रोमांच ठहराव के लिए वैसा ही है जैसा शैम्पेन फीकी शराब के लिए होता है।”

उसने चारों ओर देखा। गिरजाघर ठंडा, शांत और खाली था, सिवाय एक बूढ़ी औरत के। जैसे ही घंटियों की आवाज़ धीमी हुई और अकेली घंटी धीरे-धीरे बजती रही, एक के बाद एक कई बुजुर्ग श्रद्धालु आते गए और खाली सीटों पर बैठ गए। सबसे कमज़ोर, सबसे बूढ़े और सबसे गरीब लोग ही सबसे खराब मौसम का सामना करते हैं, ताकि वे अपने प्रिय पुराने गिरजाघर के प्रति अपनी निष्ठा को साबित और कायम रख सकें। इस तूफानी सुबह में एक भी अमीर परिवार नहीं आया, एक भी गाड़ी वाला नहीं आया - सभी गद्देदार बेंच खाली थे; केवल सादी ओक की सीटों पर ही सफ़ेद बालों वाले बुज़ुर्ग और कमज़ोर गरीब बैठे थे।

“अगर वो नहीं आई तो मैं उसका अपमान करूँगा,” मार्टिन ने गुस्से में बड़बड़ाते हुए कहा। पादरी की टोपी बरामदे से गुज़र चुकी थी। श्री हेलस्टोन और उनके क्लर्क चर्च के बैठक कक्ष में थे।

घंटियाँ बजना बंद हो गईं — पढ़ने की मेज भर गई — दरवाजे बंद हो गए — प्रार्थना शुरू हुई। पादरी के कमरे की बेंच खाली थी — वह वहाँ नहीं थी। मार्टिन ने उसे तिरस्कार किया।

“बेकार चीज़! नीरस चीज़! साधारण पाखंडी! बाकी लड़कियों की तरह ही—कमज़ोर, स्वार्थी, खोखली!”

यही मार्टिन की धार्मिक विधि थी।

“वह हमारी तस्वीर जैसी नहीं है। उसकी आँखें बड़ी और भावपूर्ण नहीं हैं; उसकी नाक सीधी, कोमल, यूनानी शैली की नहीं है; उसके मुँह में वह आकर्षण नहीं है जो

मैंने सोचा था, जिसके बारे में मैंने कल्पना की थी कि वह मेरे सबसे बुरे मूड में भी मेरी उदासी को दूर कर देगा। वह क्या है? एक धागे से बनी गुड़िया, एक खिलौना, संक्षेप में, एक लड़की।”

वह नौजवान इतना मग्न था कि उचित समय पर घुटनों के बल से उठना ही भूल गया, और प्रार्थना समाप्त होने के बाद जब पहला भजन गाया गया, तब भी वह भक्ति की आदर्श मुद्रा में ही था। इस तरह पकड़े जाने से उसे कोई राहत नहीं मिली। वह शर्म से लाल हो गया (क्योंकि वह किसी भी लड़की की तरह उपहास के प्रति संवेदनशील था)। स्थिति और बिगड़ गई क्योंकि चर्च का दरवाजा फिर से खुल गया था, और गलियारे भर रहे थे: सौ नन्हे-नन्हे कदमों की आहट सुनाई दी। ये रविवार के विद्यार्थी थे। ब्रायफ़ील्ड की सर्दियों की परंपरा के अनुसार, इन बच्चों को अब तक गर्म चूल्हे के पास रखा जाता था, और केवल भोज और प्रवचन से ठीक पहले ही चर्च में लाया जाता था।

सबसे पहले छोटे बच्चों को बिठाया गया, और अंत में, जब लड़के और छोटी लड़कियाँ सब अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए—जब ऑर्गन की धुन ऊँची हो गई, और गायक मंडली और मंडली एक आध्यात्मिक गीत गाने के लिए उठ खड़ी हुई—तभी युवा महिलाओं का एक लंबा समूह चुपचाप अंदर आया, और जुलूस का अंत हो गया। उनकी शिक्षिका ने उन्हें बैठे हुए देखकर पादरी के आसन पर बैठ गईं। मार्टिन उस फ्रांसीसी-धूसर चोगे और छोटी बीवर टोपी को पहचानता था; यही वह पोशाक थी जिसे देखने के लिए उसकी आँखें तरस रही थीं। मिस हेलस्टोन ने तूफान को अपने रास्ते में बाधा नहीं बनने दिया। आखिरकार, वह चर्च आई थीं। मार्टिन ने शायद अपनी भजन पुस्तिका में अपनी संतुष्टि फुसफुसाई होगी; खैर, उसने दो मिनट के लिए अपना चेहरा छुपा लिया।

चाहे वह संतुष्ट हो या न हो, प्रवचन समाप्त होने से पहले ही उसे उस पर दोबारा बहुत गुस्सा करने का समय मिल गया। उसने एक बार भी उसकी ओर नहीं देखा था; कम से कम वह इतना भाग्यशाली नहीं था कि उसे उसकी ओर एक नज़र भी देखने को मिल जाए।

“अगर,” उसने कहा— “अगर वह मेरी तरफ ध्यान नहीं देती, अगर वह दिखाती है कि मैं उसके विचारों में नहीं हूँ, तो उसके बारे में मेरी राय पहले से भी बदतर, और भी घटिया हो जाएगी। उन भोले-भाले संडे स्कॉलर्स के लिए आना, न कि मेरे लिए या

उस लंबे कंकाल जैसे मूर के लिए, बेहद घिनौना होगा।”

प्रवचन समाप्त हुआ; प्रार्थना की गई; सभा में उपस्थित लोग चले गए। वह उसके पास नहीं थी।

अब, वास्तव में, जैसे ही मार्टिन ने घर की ओर अपना रुख किया, उसने महसूस किया कि ओले तेज थे और पूर्वी हवा ठंडी थी।

उसका सबसे नज़दीकी रास्ता कुछ खेतों से होकर जाता था। यह खतरनाक था, क्योंकि इस पर ज़्यादा लोग नहीं चले थे। उसे परवाह नहीं थी; वह इसी रास्ते से जाएगा। दूसरी सीढ़ी के पास पेड़ों का एक झुंड दिखाई दिया। क्या वहाँ कोई छाता इंतज़ार कर रहा था? हाँ, एक छाता, जिसे वह तेज़ हवा से बड़ी मुश्किल से पकड़े हुए था; उसके पीछे एक फ्रांसीसी-धूसर रंग का लबादा लहरा रहा था। मार्टिन मुस्कुराते हुए उस ऊबड़-खाबड़, पथरीले खेत पर चढ़ रहा था, जो एटना पर्वत के ऊपरी इलाकों की ढलान की तरह ही कठिन था। सीढ़ी पार करते ही उसके चेहरे पर एक अनोखा भाव था, जब वह वहाँ आराम से बैठ गया और इस तरह एक ऐसी बातचीत शुरू की जिसे वह अनिश्चित काल तक जारी रखना चाहता था।

मुझे लगता है कि आपको सौदा कर लेना चाहिए। मुझे श्रीमती प्रायर के बदले में छोड़ दीजिए।

“मुझे यकीन नहीं था कि तुम इस तरफ आओगे, मार्टिन, लेकिन मैंने सोचा कि एक बार कोशिश कर ही लेता हूँ। गिरजाघर या कब्रिस्तान में चुपचाप बात करना नामुमकिन है।”

“क्या आप सहमत होंगे? — श्रीमती प्रायर को मेरी माँ बना दें, और मुझे उनकी पोशाक पहना दें?”

“जैसे कि मैं तुम्हें समझ सकता हूँ! श्रीमती प्रायर तुम्हारे दिमाग में क्यों हैं?”

आप उसे ‘मम्मा’ कहकर बुलाते हैं, है ना?

वह मेरी मां हैं।

“यह संभव नहीं है—या फिर कितनी नासमझ, कितनी लापरवाह माँ है! मैं तो पाँच गुना बेहतर माँ बन सकती हूँ। आप हँस सकती हैं। मुझे आपको हँसते हुए देखकर कोई आपत्ति नहीं है। आपके दाँत—मुझे बदसूरत दाँत बिल्कुल पसंद नहीं; लेकिन आपके दाँत मोतियों के हार जितने सुंदर हैं, और वो भी ऐसे हार के जिसके मोती बेहद सुंदर, एक जैसे और आपस में सजे-धजे हों।”

“मार्टिन, अब क्या? मुझे लगा था कि योर्क परिवार कभी तारीफ नहीं करता?”

“उन्होंने इस पीढ़ी तक ऐसा नहीं किया है; लेकिन मुझे ऐसा लगता है जैसे यॉर्क वंश की एक नई किस्म को जन्म देना मेरा कर्तव्य है। मैं अपने पूर्वजों से ऊब चुका हूँ। हमारे पास चार पीढ़ियों से चली आ रही परंपराएँ हैं - हीराम की कहानियाँ, जो हीराम का पुत्र था, जो सैमुअल का पुत्र था, जो जॉन का पुत्र था, जो ज़ेरूबबेल यॉर्क का पुत्र था। ज़ेरूबबेल से लेकर अंतिम हीराम तक, सभी मेरे पिता जैसे ही थे। उससे पहले एक गॉडफ्रे थे। हमारे पास उनकी तस्वीर है; वह मूर के शयनकक्ष में टंगी है; वह बिल्कुल मेरे जैसे दिखते हैं। उनके चरित्र के बारे में हम कुछ नहीं जानते; लेकिन मुझे यकीन है कि वह उनके वंशजों से अलग रहे होंगे। उनके लंबे, घुंघराले काले बाल हैं; उन्होंने सलीके से और बेपरवाही से कपड़े पहने हैं। यह कहने के बाद कि वह मेरे जैसे दिखते हैं, यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि वह सुंदर भी हैं।”

"तुम सुंदर नहीं हो, मार्टिन।"

“नहीं; लेकिन थोड़ी देर रुकिए—मुझे अपना समय लेने दीजिए। मेरा इरादा आज से ही इसे संवारने, निखारने का है, और फिर हम देखेंगे।”

“मार्टिन, तुम बहुत ही विचित्र और रहस्यमय लड़के हो। लेकिन यह मत सोचना कि तुम कभी सुंदर बनोगे; तुम बन ही नहीं सकते।”

“मैं कोशिश तो करूंगी। लेकिन हम श्रीमती प्रायर के बारे में बात कर रहे थे। वह दुनिया की सबसे अजीब मां होंगी, जो इतनी बेपरवाही से अपनी बेटी को इस मौसम में बाहर आने देती हैं। मेरी मां तो इतनी गुस्से में थीं कि मैं चर्च चली गई थी; उनका मन कर रहा था कि वह मेरे पीछे रसोई का झाड़ू फेंक दें।”

“माँ को मेरी बहुत चिंता थी; लेकिन मुझे डर है कि मैं जिद्दी था। मैं जाना ही चाहता था।”

"मुझे देखने के लिए?"

“बिल्कुल सही; मुझे और कुछ सूझा ही नहीं। मुझे बहुत डर था कि बर्फ़बारी की वजह से आप नहीं आ पाएँगे। आपको अकेले चर्च की बेंच पर देखकर मुझे कितनी खुशी हुई, यह आप नहीं जानते।”

मैं अपना कर्तव्य निभाने और पैरिश के लिए एक अच्छा उदाहरण पेश करने आया था। तो तुम जिद्दी थे, है ना? मैं तुम्हें जिद्दी देखना चाहता हूँ, सच में। अगर तुम मेरे होते तो क्या मैं तुम्हें अनुशासन में नहीं रखता? मुझे छाता लेने दो।

मैं दो मिनट भी नहीं रुक सकता; हमारा खाना तैयार हो जाएगा।

“और हमारे यहाँ भी ऐसा ही होगा; और हम रविवार को हमेशा गरमागरम खाना खाते हैं। आज भुना हुआ हंस है, साथ में सेब की पाई और चावल की खीर भी। मैं हमेशा खाने की सूची जानने की कोशिश करता हूँ। वैसे, मुझे ये चीज़ें बहुत पसंद हैं; लेकिन अगर आप चाहें तो मैं ये त्याग करने को तैयार हूँ।”

“हमने ठंडा खाना खाया। मेरे चाचा रविवार को अनावश्यक खाना पकाने की अनुमति नहीं देते। लेकिन मुझे लौटना ही होगा; अगर मैं नहीं पहुँचा तो घर में हंगामा मच जाएगा।”

“ब्रायर्मेन्स, भगवान आपका भला करे! मुझे लगता है कि मैं अपने पिता को चौकीदार और पाँच रंगसाज़ों को अपने खोए हुए बेटे के शव को बर्फ में छह दिशाओं में खोजने के लिए भेजते हुए सुन रहा हूँ; और मेरी माँ मेरे जाने के बाद मेरे प्रति अपने अनेक कुकर्मों के लिए पश्चाताप कर रही है।”

“मार्टिन, मिस्टर मूर कैसे हैं?”

"तुम तो बस यही शब्द कहने के लिए आए थे।"

"जल्दी बताओ।"

“उसे फांसी दे दो! उसकी हालत पहले जैसी ही खराब है; बस उसके साथ पहले जैसा ही बुरा बर्ताव किया जा रहा है – उसे पिंजरे में बंद करके अकेले कारावास में रखा जाता है। वे उसे या तो मंदबुद्धि या पागल बनाना चाहते हैं और उसके खिलाफ पागलपन का मुकदमा चलाना चाहते हैं। हॉर्सफॉल उसे भूखा रखता है; तुमने देखा ही होगा कि वह कितना दुबला-पतला था।”

"तुम उस दिन बहुत अच्छे थे, मार्टिन।"

“कौन सा दिन? मैं तो हमेशा अच्छी रहती हूँ — एक मॉडल।”

“तुम दोबारा इतने अच्छे कब बनोगे?”

मैं समझ गया हूँ कि तुम क्या चाहते हो; लेकिन तुम मुझे बहला-फुसला नहीं पाओगे— मैं कोई मोहरा नहीं हूँ।

लेकिन यह करना ही होगा। यह बिल्कुल सही और आवश्यक बात है।

“तुम इस तरह अतिक्रमण कर रहे हो! याद रखो, मैंने पहले भी अपनी स्वतंत्र इच्छा से इस मामले को संभाला था।”

और तुम फिर से ऐसा करोगे।

“मैं ऐसा नहीं करूंगा। इस व्यवसाय ने मुझे बहुत परेशान किया है। मुझे आराम पसंद है।”

"मिस्टर मूर मुझसे, मार्टिन से मिलना चाहते हैं, और मैं भी उनसे मिलना चाहता हूं।"

“मैं कह सकता हूँ” (शांत भाव से)।

"तुम्हारी माँ का उसके दोस्तों को बाहर कर देना बहुत गलत बात है।"

उसे बता दो।

"उसके अपने रिश्तेदार।"

"आओ और उसे उड़ा दो।"

“तुम्हें पता है इससे कुछ भी हासिल नहीं होगा। खैर, मैं अपनी बात पर अड़ा रहूंगा। मैं उससे मिलूंगा। अगर तुम मेरी मदद नहीं करोगे, तो मैं बिना मदद के ही काम चला लूंगा।”

“करो; आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन जैसा कुछ नहीं है।”

“अभी मेरे पास आपसे तर्क करने का समय नहीं है; लेकिन मुझे लगता है कि आप उकसा रहे हैं। सुप्रभात।”

वह छाता बंद करके चली गई, क्योंकि वह हवा के विपरीत उसे ले जा नहीं सकती थी।

“वह नीरस नहीं है; वह सतही नहीं है,” मार्टिन ने कहा। मैं देखना चाहूँगा और गौर करूँगा कि वह बिना किसी मदद के कैसे अपना रास्ता बनाएगी। अगर तूफान बर्फ का न होकर आग का होता—जैसा कि मैदानी शहरों पर ताज़गी भरी बारिश होती है—तो भी वह मूर से पाँच मिनट का भाषण निकलवाने के लिए उसमें से गुज़र जाती। अब, मुझे लगता है कि मेरी सुबह अच्छी गुज़री है। निराशाओं ने समय को और बढ़ा दिया; डर और गुस्से के दौरों ने उस छोटे से भाषण को और भी सुखद बना दिया, जब वह आखिरकार आया। उसे उम्मीद थी कि वह मुझे तुरंत मना लेगी। वह एक बार में ऐसा नहीं कर पाएगी। वह बार-बार आएगी। मुझे उसे क्रोधित करना—उसे रुलाना—अच्छा लगेगा। मैं यह जानना चाहता हूँ कि वह अपनी इच्छा पूरी करवाने के लिए कितनी दूर तक जाएगी—वह क्या करेगी और क्या करने की हिम्मत करेगी। यह अजीब और नया लगता है कि एक इंसान दूसरे के बारे में उतना ही सोचता है जितना वह मूर के बारे में सोचती है। लेकिन अब घर जाने का समय हो गया है; मेरी भूख मुझे बता रही है। क्या

मैं उस हंस से नहीं टकरा जाऊँगा? और हम देखेंगे कि आज सेब पाई का सबसे बड़ा टुकड़ा मैथ्यू को मिलेगा या मुझे।

अध्याय 35.

जिसमें मामलों में कुछ प्रगति होती है, लेकिन ज्यादा नहीं।

मार्टिन ने अच्छी योजना बनाई थी। उसने अपने निजी मनोरंजन के लिए बड़ी चतुराई से एक सुनियोजित योजना तैयार की थी। लेकिन उससे कहीं अधिक अनुभवी और समझदार योजनाकारों की बेहतरीन योजनाएँ भी अक्सर भाग्य के अचानक झाड़ू से नष्ट हो जाती हैं, उस क्रूर गृहिणी के लाल हाथ से जिसे कोई वश में नहीं कर सकता। इस मामले में यह झाड़ू मूर के दृढ़ संकल्प के मजबूत रेशों से बनी थी, जो उसकी इच्छाशक्ति से मजबूती से बंधी थी। अब वह अपनी ताकत फिर से हासिल कर रहा था और श्रीमती हॉर्सफॉल के खिलाफ अजीबोगरीब हरकतें कर रहा था। हर सुबह वह उस महिला को एक नए आश्चर्य से चकित कर देता था। पहले उसने उसे नौकर के कर्तव्यों से मुक्त कर दिया; वह खुद कपड़े पहनने लगा। फिर उसने उसके द्वारा लाई गई कॉफी लेने से इनकार कर दिया; वह परिवार के साथ नाश्ता करने लगा। अंत में, उसने उसे अपने कमरे में आने से मना कर दिया। उसी दिन, वहाँ की सभी महिलाओं के शोर-शराबे के बीच, वह घर से बाहर निकल गया। अगली सुबह, वह मिस्टर यॉर्क के पीछे-पीछे उनके कार्यालय गया और रेड हाउस इन से एक गाड़ी लाने के लिए एक दूत भेजने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि वे उसी दोपहर हॉलो स्थित अपने घर लौटने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। श्री योर्क ने विरोध करने के बजाय उनका समर्थन किया।

गाड़ी मंगवाई गई, हालांकि श्रीमती योर्क ने कहा कि यह कदम उनके लिए मृत्यु के समान होगा। और गाड़ी आ गई। मूर, जो कम बोलने के इच्छुक थे, उन्होंने अपने पर्स से अपनी बात मनवाई। उन्होंने अपने सिक्कों की खनक से नौकरों और श्रीमती हॉर्सफॉल के प्रति आभार व्यक्त किया। श्रीमती हॉर्सफॉल ने उनकी इस बात को पूरी तरह समझा और स्वीकार किया; इससे उनके पिछले सभी अपमानों की भरपाई हो गई। वे और उनके मरीज दुनिया के सबसे अच्छे दोस्त बनकर विदा हुए।

रसोई में जाकर शांत होने के बाद मूर बैठक में चले गए। उन्हें श्रीमती यॉर्क को मनाना था; यह काम नौकरानियों को शांत करने जितना आसान नहीं था। वह वहाँ उदास और नाराज़ बैठी थीं, मनुष्य की कृतघ्नता की गहराइयों पर उनके विचार छाए हुए थे। वह उनके पास गए और झुक गए; उन्हें ऊपर देखना पड़ा, कम से कम उन्हें "चले जाओ" कहने के लिए। उनके पीले, मुरझाए चेहरे में अभी भी सुंदरता थी; उनकी धंसी हुई आँखों में गंभीरता और एक प्रकार की मिठास थी—क्योंकि वह मुस्कुरा रहे थे।

“अलविदा!” उसने कहा, और बोलते ही उसकी मुस्कान चमक उठी और फिर गायब हो गई। अब उसका अपनी भावनाओं पर कोई नियंत्रण नहीं था; उसकी वर्तमान कमजोर अवस्था में एक तुच्छ भावना प्रकट हो गई।

“और तुम हमें छोड़कर किसलिए जा रहे हो?” उसने पूछा। “हम तुम्हें अपने पास रखेंगे और तुम्हारे लिए दुनिया का हर काम करेंगे, बस तुम तब तक रुक जाओ जब तक तुम ठीक नहीं हो जाते।”

“अलविदा!” उसने फिर कहा; और जोड़ा, “तुम मेरे लिए माँ समान रही हो; अपने जिद्दी बेटे को एक बार गले लगा लो।”

एक अजनबी होने के नाते, उसने पहले अपना एक गाल, फिर दूसरा गाल उसकी ओर बढ़ाया। उसने उसे चूमा।

“मैंने तुम्हें कितनी परेशानी दी है—मैं तुम्हारे लिए कितना बोझ रहा हूँ!” उसने बुदबुदाते हुए कहा।

“अब तो तुम ही सबसे बड़ी मुसीबत हो, जिद्दी नौजवान!” जवाब मिला। “पता नहीं हॉलो की कुटिया में तुम्हारी देखभाल कौन करेगा? तुम्हारी बहन हॉर्टेंस को इन मामलों में एक बच्चे से ज़्यादा कुछ नहीं पता।”

“भगवान का शुक्र है! क्योंकि मुझे जीवन भर के लिए पर्याप्त नर्सिंग सेवा मिल

चुकी है।”

तभी छोटी बच्चियाँ अंदर आईं—जेसी रो रही थी, रोज़ शांत लेकिन गंभीर थी। मूर उन्हें शांत करने, सहलाने और चूमने के लिए हॉल में ले गया। वह जानता था कि उनकी माँ के स्वभाव में यह बात नहीं थी कि वह अपने अलावा किसी और जीवित प्राणी को दुलारते हुए देखे। अगर वह उसकी मौजूदगी में किसी बिल्ली के बच्चे को भी सहलाता, तो वह नाराज़ हो जाती।

जब मूर गाड़ी में दाखिल हुए तो लड़के उसके आसपास खड़े थे; लेकिन उन्होंने उनसे विदाई नहीं ली। मिस्टर यॉर्क से उन्होंने बस इतना कहा, “अच्छा हुआ कि आप मुझसे छुटकारा पा गए। यॉर्क, वह गोली आपके लिए दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुई; उसने ब्रायर्मेन्स को अस्पताल में बदल दिया। जल्द ही कॉटेज में आकर मुझसे मिलिएगा।”

उसने गिलास समेटा; गाड़ी अपने आप चलने लगी। आधे घंटे में वह अपने बगीचे के छोटे से बरामदे पर उतरा। ड्राइवर को किराया देकर गाड़ी को विदा करते हुए वह एक पल के लिए उस बरामदे पर टिका, आराम करने और सोचने के लिए।

“छह महीने पहले मैं इसी द्वार से निकला था,” उसने कहा, “एक अभिमानी, क्रोधित और निराश व्यक्ति। अब मैं दुखी और समझदार होकर लौटा हूँ; कमज़ोर तो हूँ, पर चिंतित नहीं। चारों ओर एक ठंडी, धूसर, फिर भी शांत दुनिया है – एक ऐसी दुनिया जहाँ, अगर मैं कम आशा रखता हूँ, तो मुझे किसी बात का डर नहीं है। शर्मिंदगी के सारे डर मुझसे दूर हो गए हैं। चाहे कुछ भी बुरा हो जाए, मैं जो स्कॉट की तरह सम्मानजनक जीवन यापन के लिए काम कर सकता हूँ; ऐसी नियति में भी मुझे कुछ कठिनाई तो दिखती है, पर कोई अपमान नहीं। पहले, आर्थिक बर्बादी मेरी नज़र में व्यक्तिगत अपमान के बराबर थी। अब ऐसा नहीं है; मैं अंतर जानता हूँ। बर्बादी एक बुराई है, लेकिन जिसके लिए मैं तैयार हूँ; जिसके आने का दिन मुझे पता है, क्योंकि मैंने गणना कर ली है। मैं इसे छह महीने और टाल सकता हूँ – एक घंटा भी ज़्यादा नहीं। अगर तब तक हालात बदल जाएँ, जो कि संभव नहीं है; अगर हमारे व्यापार से वो बंधन, जो अब अटूट लगते हैं, खुल जाएँ (जो कि होने की सबसे कम संभावना है), तो भी मैं इस लंबे संघर्ष में जीत हासिल कर सकता हूँ – मैं कर सकता हूँ – हे भगवान!” मैं क्या नहीं कर सकती? लेकिन यह विचार क्षणिक पागलपन है; मुझे चीजों को समझदारी से देखना चाहिए। विनाश आएगा, मेरी किस्मत की जड़ों पर अपनी कुल्हाड़ी चलाएगा और उन्हें काट डालेगा। मैं एक पौधा तोड़ लूंगी, समुद्र पार

करूंगी और उसे अमेरिकी जंगलों में लगाऊंगी। लुई मेरे साथ जाएगा। क्या लुई के अलावा कोई और नहीं जाएगा? मैं नहीं कह सकती - मुझे पूछने का कोई अधिकार नहीं है।

वह घर में दाखिल हुआ।

दोपहर का समय था, बाहर अभी भी हल्की धुंध छाई हुई थी—बिना तारों और बिना चाँद वाली धुंध; क्योंकि सूखी, काली बर्फ से कड़ाके की ठंड पड़ रही थी, फिर भी आसमान जमे हुए बादलों से ढका हुआ था। चक्की का बांध भी जम गया था। घाटी एकदम शांत थी। घर के अंदर अंधेरा हो चुका था। सारा ने बैठक में अच्छी आग जलाई थी; वह रसोई में चाय बना रही थी।

"होर्टेंस," मूर ने कहा, जैसे ही उसकी बहन उसका लबादा उतारने में मदद करने के लिए दौड़ी, "मुझे घर आकर खुशी हुई है।"

होर्टेंस को अपने भाई के इस कथन में कोई नवीनता महसूस नहीं हुई, क्योंकि उसने पहले कभी उस कुटिया को अपना घर नहीं कहा था और उसे हमेशा से ही उसकी सीमित सीमाएँ सुरक्षात्मक से अधिक प्रतिबंधात्मक लगती थीं। फिर भी, जो भी उसकी खुशी में योगदान देता था, वह उसे प्रसन्न करता था और उसने इसी बात को व्यक्त किया।

वह बैठ गया, लेकिन थोड़ी देर बाद फिर उठ गया। वह खिड़की के पास गया; फिर आग के पास लौट आया।

“होर्टेन्स!”

"अलावा?"

"यह छोटा सा बैठक कक्ष बहुत साफ-सुथरा और सुखद दिखता है - किसी तरह असामान्य रूप से चमकदार भी।"

“यह सच है, भाई; आपकी अनुपस्थिति में मैंने पूरे घर की अच्छी तरह से और सावधानीपूर्वक सफाई करवा दी है।”

"बहन, मुझे लगता है कि घर लौटने के इस पहले दिन आपको एक-दो दोस्तों को चाय पर बुलाना चाहिए, कम से कम यह देखने के लिए कि आपने इस छोटे से घर को कितना ताजा और सुंदर बना दिया है।"

“जी हां भाई। अगर देर न हुई होती तो मैं मिस मान को बुलवा लेता।”

"तो आप ऐसा कर सकते हैं; लेकिन उस भली महिला को परेशान करने में वाकई

बहुत देर हो चुकी है, और शाम इतनी ठंडी है कि वह बाहर नहीं आ सकती।"

“प्रिय गेरार्ड, आपने कितनी समझदारी दिखाई! हमें इसे किसी और दिन के लिए टाल देना चाहिए।”

"आज मुझे कोई चाहिए, प्यारी बहन - कोई शांत मेहमान, जो हम दोनों को थका न दे।"

“मिस ऐनली?”

“लोग कहते हैं कि वह बहुत अच्छी इंसान हैं; लेकिन वह बहुत दूर रहती हैं। हैरी स्कॉट से कहिए कि वह पादरी के घर जाकर आपसे अनुरोध करें कि कैरोलिन हेलस्टोन आकर आपके साथ शाम बिताएं।”

“प्रिय भाई, क्या कल बेहतर नहीं होगा?”

"मैं चाहूंगी कि वह इस जगह को अभी जैसी है वैसी देखे; इसकी शानदार स्वच्छता और परिपूर्ण साफ-सफाई का पूरा श्रेय आपको जाता है।"

"इससे उसे उदाहरण पेश करने में फायदा हो सकता है।"

"ऐसा हो सकता है और होना ही चाहिए; उसे आना चाहिए।"

वह रसोई में चला गया।

“सारा, चाय को आधा घंटा देर से परोसना।” फिर उन्होंने सारा को हैरी स्कॉट को पादरी के घर भेजने का आदेश दिया और उन्हें अपने द्वारा पेंसिल से जल्दबाजी में लिखा हुआ एक टेढ़ा-मेढ़ा नोट थमा दिया, जिस पर “मिस हेलस्टोन” लिखा था।

सारा को अपने पहले से तैयार टोस्ट के खराब होने के डर से अधीर होने का मुश्किल से ही समय मिला था कि संदेशवाहक लौट आया, और उसके साथ आमंत्रित अतिथि भी था।

वह रसोई से अंदर आई, चुपचाप सारा की सीढ़ियों पर चढ़कर अपना बोनट और फर का कोट उतारा, और उतनी ही खामोशी से नीचे उतरी। उसके खूबसूरत घुंघराले बाल करीने से संवारे हुए थे, उसकी सुंदर मेरिनो ड्रेस और नाजुक कॉलर एकदम साफ-सुथरे थे, और उसके हाथ में उसका प्यारा सा छोटा सा वर्क-बैग था। वह सारा से कुछ देर रुकी, उससे प्यार से बातें कीं, रसोई के चूल्हे पर धूप सेंक रही नई कछुए के खोल जैसी बिल्ली के बच्चे को देखा, और कैनरी चिड़िया से बात की, जो अचानक आग की लपटों से अपने ठिकाने पर चौंक गई थी; और फिर वह बैठक में चली गई।

सौम्य अभिवादन और मैत्रीपूर्ण स्वागत का आदान-प्रदान इतने शांत ढंग से हुआ,

जैसा कि चचेरे भाई-बहनों की मुलाकात के लिए उपयुक्त होता है; एक सुखद अनुभूति, सुगंध की तरह सूक्ष्म और शांत, कमरे में फैल गई; नव प्रज्वलित दीपक तेज रोशनी से जगमगा उठा; ट्रे और मधुर कलश को अंदर लाया गया।

श्री मूर ने दोहराया, "घर आकर मुझे खुशी हो रही है।"

वे सब मेज के चारों ओर इकट्ठा हो गए। हॉर्टेंस ने मुख्य रूप से बात की। उसने कैरोलीन को उसके स्वास्थ्य में आए स्पष्ट सुधार पर बधाई दी। उसने कहा कि उसका रंग और उसके गोल-मटोल गाल फिर से खिल उठे हैं। यह सच था। मिस हेलस्टोन में एक स्पष्ट बदलाव आया था। वह बिल्कुल लचीली लग रही थी; उदासी, डर, अकेलापन सब गायब हो गए थे। अब वह दबी हुई, दुखी, सुस्त और मुरझाई हुई नहीं लग रही थी, बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे उसने मन को शांति का अमृत चखा हो और आशा के पंखों पर सवार हो गई हो।

चाय के बाद हॉर्टेंस ऊपर चली गई। उसने पिछले एक महीने से अपनी दराजें नहीं खंगाली थीं, और अब ऐसा करने की तीव्र इच्छा हो रही थी। उसकी अनुपस्थिति में बातचीत कैरोलिन के हाथ में आ गई। उसने सहजता से बातचीत शुरू की; वह अपने सबसे अच्छे अंदाज़ में बात करने लगी। भाषा की सहजता और शालीनता ने परिचित विषयों को नया आकर्षण दिया; हमेशा मधुर रहने वाली उसकी आवाज़ में एक नया संगीत था जिसने श्रोता को धीरे से आश्चर्यचकित किया और मनमोहक ढंग से मंत्रमुग्ध कर दिया; भावों के अनपेक्षित उतार-चढ़ाव ने युवा चेहरे को व्यक्तित्व से भर दिया और उसे जीवंत बना दिया।

"कैरोलीन, ऐसा लग रहा है जैसे तुमने कोई अच्छी खबर सुनी हो," मूर ने कुछ मिनट तक गंभीरता से उसकी ओर देखने के बाद कहा।

क्या मैं ऐसा करता हूँ?

मैंने आज शाम आपको इसलिए बुलवाया था ताकि मेरा मन बहल जाए; लेकिन आपने मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा मेरा मन बहल दिया।

मुझे इस बात की खुशी है। और मैं वास्तव में आपका उत्साहवर्धन करता हूँ?

आप बेहद खुशमिजाज दिखते हैं, उत्साह से चलते हैं और मधुरता से बोलते हैं।

"यहाँ दोबारा आकर अच्छा लग रहा है।"

“सचमुच यह सुखद है; मुझे ऐसा महसूस हो रहा है। और तुम्हारे चेहरे पर स्वास्थ्य और आँखों में आशा देखना सुखद है, कैरी; लेकिन यह आशा क्या है, और तुम्हारे

आस-पास मुझे जो यह धूप दिखाई दे रही है, उसका स्रोत क्या है?”

“एक बात तो यह है कि मैं अपनी माँ के साथ खुश हूँ। मैं उनसे बहुत प्यार करती हूँ, और वे भी मुझसे बहुत प्यार करती हैं। उन्होंने लंबे समय तक बड़े प्यार से मेरी देखभाल की। अब, जब उनकी देखभाल से मैं ठीक हो गई हूँ, तो मैं सारा दिन उनके साथ बिता सकती हूँ। मैं कहती हूँ कि अब मेरी बारी है उनकी देखभाल करने की; और मैं करती भी हूँ। मैं उनकी नौकरानी भी हूँ और उनकी बच्ची भी। मुझे बहुत अच्छा लगता है—अगर आपको पता चले कि मुझे उनके लिए कपड़े सिलने में कितना आनंद आता है, तो आप हँस पड़ेंगे। अब वे बहुत सुंदर दिखती हैं, रॉबर्ट; मैं उन्हें पुराने ज़माने का नहीं रहने दूँगी। और फिर, उनसे बात करना कितना अच्छा लगता है—ज्ञान से भरपूर, समझदार, जानकारियों से भरी, उनकी गहरी समझ ने चुपचाप ज्ञान का भंडार जमा कर रखा है। उनके साथ बिताया हर दिन मुझे वे और भी प्यारी लगती हैं, मैं उनका और भी सम्मान करती हूँ, और उनसे और भी प्यार करती हूँ।”

“तो फिर, कैरी, तुम ‘मम्मा’ के बारे में जिस तरह से बात करते हो, उससे उस बुढ़िया से ईर्ष्या होने लगती है।”

“वह बूढ़ी नहीं है, रॉबर्ट।”

"तो फिर उस युवती की बात करते हैं।"

वह जवान होने का दिखावा नहीं करती।

“अच्छा, मैट्रन की बात करते हैं। लेकिन आपने कहा था कि ‘मम्मा’ का स्नेह एक ऐसी चीज है जो आपको खुश करती है; अब दूसरी चीज के बारे में बात करते हैं।”

मुझे खुशी है कि आप बेहतर हैं।

“इसके अलावा और क्या?”

मुझे खुशी है कि हम दोस्त हैं।

"हम तुम?"

“हां। मुझे एक समय लगता था कि हमें कभी ऐसा नहीं होना चाहिए।”

"कैरी, एक दिन मैं तुम्हें अपने बारे में एक ऐसी बात बताऊंगा जो मेरे लिए गर्व की बात नहीं होगी, और इसलिए तुम्हें पसंद नहीं आएगी।"

“अरे नहीं! मैं तुम्हारे बारे में बुरा सोचना बर्दाश्त नहीं कर सकता।”

और मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि आप मेरे बारे में मेरी योग्यता से कहीं बेहतर सोचें।

"खैर, लेकिन मैं आपकी 'चीज़' के बारे में आधा-अधूरा जानता हूँ; वास्तव में, मुझे लगता है कि मैं इसके बारे में सब कुछ जानता हूँ।"

"आप नहीं।"

मुझे लगता है कि मैं ऐसा करता हूँ।

"मेरे अलावा इससे और क्या लेना-देना है?"

वह रंग में रंगने लगी; वह हिचकिचाई; वह चुप रही।

“बोलो, कैरी! यह किससे संबंधित है?”

उसने नाम बोलने की कोशिश की, लेकिन बोल नहीं पाई।

“मुझे बताओ; यहाँ हमारे सिवा कोई और मौजूद नहीं है। खुलकर बताओ।”

लेकिन अगर मेरा अनुमान गलत हो तो?

“मैं माफ कर दूंगा। धीरे से बोलो, कैरी।”

उसने अपना कान उसके होठों के पास किया। फिर भी वह स्पष्ट रूप से कुछ नहीं बोल पाई, या शायद बोल नहीं सकी। यह देखकर कि मूर प्रतीक्षा कर रहा है और कुछ सुनने के लिए दृढ़ संकल्पित है, उसने अंततः कहा, "लगभग एक सप्ताह पहले मिस कील्डर ने पादरी के निवास पर एक दिन बिताया था। शाम बहुत सर्द थी, और हमने उन्हें पूरी रात रुकने के लिए मना लिया।"

"और तुमने और उसने साथ में अपने बाल कर्ल किए थे?"

"आप यह कैसे जानते हैं?"

और फिर तुम बड़बड़ाने लगे, और उसने तुम्हें बताया — —

"यह बालों को कर्ल करने का समय नहीं था, इसलिए आप उतने बुद्धिमान नहीं हैं जितना आप सोचते हैं; और, इसके अलावा, उसने मुझे बताया भी नहीं।"

"क्या आप दोनों ने बाद में साथ में रात बिताई?"

“हम एक ही कमरे और बिस्तर पर सोए। हमें ज्यादा नींद नहीं आई; हमने पूरी रात बातें कीं।”

“मैं कसम खाकर कहता हूँ कि तुमने ऐसा किया था! और फिर सब कुछ सामने आ गया – धिक्कार है। काश तुमने यह बात मुझसे ही सुनी होती।”

“आप बिलकुल गलत हैं। उसने मुझे वो बात नहीं बताई जिसका आपको शक है — वो ऐसी बातें कहने वाली व्यक्ति नहीं है; फिर भी मैंने उसकी बातों के कुछ अंशों से कुछ अनुमान लगाया। मैंने अफवाहों से और बाकी बातें अपने अंतर्ज्ञान से समझीं।”

लेकिन अगर उसने आपको यह नहीं बताया कि मैं उससे उसके पैसों के लिए शादी करना चाहता था, और उसने मुझे गुस्से और तिरस्कार से मना कर दिया (आपको न तो चौंकने की ज़रूरत है, न ही शर्मिंदा होने की; और न ही अपनी कांपती उंगलियों में सुई चुभोने की। यही सीधा सच है, चाहे आपको पसंद हो या न हो) - अगर उसकी गंभीर बातों का विषय यह नहीं था, तो फिर वे बातें किस बारे में थीं? आप कहते हैं कि आपने पूरी रात बातें कीं; किस बारे में?

"ऐसी बातें जिन पर हमने पहले कभी खुलकर चर्चा नहीं की, जबकि हम घनिष्ठ मित्र रहे हैं; लेकिन आप शायद ही उम्मीद करते हैं कि मैं आपको बताऊँगा?"

"हां, हां, कैरी; तुम मुझे बताओगे। तुमने कहा था कि हम दोस्त हैं, और दोस्तों को हमेशा एक-दूसरे पर भरोसा करना चाहिए।"

लेकिन क्या आपको यकीन है कि आप इसे दोहराएंगे नहीं?

"यकीन के साथ।"

"लुई को नहीं?"

“लुई को भी नहीं। लुई को युवतियों के रहस्यों से क्या लेना-देना?”

“रॉबर्ट, शर्ली एक जिज्ञासु और उदार स्वभाव की इंसान हैं।”

मैं कह सकता हूँ। मैं कल्पना कर सकता हूँ कि उसके बारे में कुछ विचित्र और कुछ शानदार बातें होंगी।

"मैंने उसे अपनी भावनाओं को प्रकट करने में संकोच करते हुए पाया है; लेकिन जब वे नदी की तरह उमड़ पड़ती हैं और आपके सामने पूरी शक्ति के साथ बहती हैं - लगभग उसकी अनुमति के बिना - तो आप निहारते हैं, आश्चर्यचकित होते हैं; आप प्रशंसा करते हैं, और - मुझे लगता है - उससे प्यार करते हैं।"

"क्या आपने यह नजारा देखा?"

"हाँ; आधी रात के सन्नाटे में, जब पूरा घर शांत था, और तारों की रोशनी और बर्फ से पड़ने वाली ठंडी परावर्तन हमारे कमरे में झिलमिला रही थी, तब मैंने शर्ली का दिल देखा।"

“उसके दिल की गहराई? क्या आपको लगता है कि उसने आपको वह दिखाया?”

"उसके दिल की गहराई।"

और यह कैसा रहा?

“यह एक पवित्र स्थान की तरह था, क्योंकि यह पवित्र था; बर्फ की तरह था,

क्योंकि यह शुद्ध था; आग की तरह था, क्योंकि यह गर्म था; मृत्यु की तरह था, क्योंकि यह शक्तिशाली था।”

“क्या वह प्यार कर सकती है? मुझे बताओ।”

आप क्या सोचते हैं?

"जिन्होंने उससे प्यार किया है, उसने उनमें से किसी से भी प्यार नहीं किया है।"

“वे कौन-कौन हैं जिन्होंने उससे प्रेम किया है?”

उन्होंने कई सज्जनों के नाम गिनाए, और अंत में सर फिलिप नननेली का नाम लिया।

उसने इनमें से किसी से भी प्यार नहीं किया।

फिर भी उनमें से कुछ स्त्री के स्नेह के योग्य थे।

"कुछ महिलाओं की, लेकिन शर्ली की नहीं।"

क्या वह अपनी ही जाति की अन्य महिलाओं से बेहतर है?

"वह विचित्र है, और जल्दबाजी में उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करना अधिक खतरनाक है।"

मैं इसकी कल्पना कर सकता हूँ।

“उसने तुम्हारे बारे में बात की थी—”

“अरे, उसने किया! मुझे लगा था कि तुमने इससे इनकार किया था।”

“उसने उस तरह से बात नहीं की जैसा आप सोच रहे हैं; लेकिन मैंने उससे पूछा, और मैं उससे यह जानना चाहती थी कि वह आपके बारे में क्या सोचती है, या यूं कहें कि आपके प्रति उसके क्या विचार हैं। मैं जानना चाहती थी; मैं लंबे समय से जानना चाहती थी।”

“मैंने भी यही सोचा था; लेकिन चलिए सुनते हैं। वह नीचता से सोचती है, वह तिरस्कारपूर्ण भावना रखती है, निस्संदेह?”

“वह आपके बारे में लगभग उतना ही अच्छा सोचती है जितना कोई स्त्री किसी पुरुष के बारे में सोच सकती है। आप जानते हैं कि वह कितनी वाक्पटु है। मुझे अभी भी कल्पना में उन शब्दों की चमक महसूस होती है जिनमें उसने अपनी राय व्यक्त की थी।”

लेकिन उसे कैसा महसूस होता है?

"जब तक तुमने उसे चौंकाया नहीं (उसने कहा कि तुमने उसे चौंका दिया था,

लेकिन उसने मुझे यह नहीं बताया कि कैसे), तब तक वह वैसा ही महसूस करती थी जैसा एक बहन अपने भाई के प्रति महसूस करती है, जिससे वह एक साथ स्नेह और गर्व महसूस करती है।"

“कैरी, मैं उसे अब और झटका नहीं दूँगा, क्योंकि उस झटके का मुझ पर इतना बुरा असर हुआ कि मैं फिर से लड़खड़ा गया। लेकिन भाई-बहन वाली तुलना बिलकुल बकवास है। वह इतनी अमीर और घमंडी है कि मेरे लिए उसके मन में भाईचारे की भावनाएँ रखने की कोई गुंजाइश ही नहीं है।”

“रॉबर्ट, तुम उसे नहीं जानते; और मुझे अब ऐसा लगता है (पहले मेरे विचार अलग थे) कि तुम उसे जान ही नहीं सकते। तुम दोनों की बनावट ऐसी नहीं है कि तुम एक-दूसरे को पूरी तरह समझ सको।”

“ऐसा हो सकता है। मैं उसका आदर करता हूँ, उसकी प्रशंसा करता हूँ; फिर भी उसके बारे में मेरी धारणाएँ कठोर हैं—शायद अनुचित भी। उदाहरण के लिए, मेरा मानना है कि वह प्रेम करने में असमर्थ है—”

शर्ली प्रेम करने में असमर्थ है!

“वह कभी शादी नहीं करेगी। मुझे लगता है कि वह अपने स्वाभिमान से समझौता करने, अपनी शक्ति छोड़ने और अपनी संपत्ति साझा करने से ईर्ष्या करती होगी।”

"शर्ली ने आपके आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाई है।"

"उसने मुझे चोट पहुंचाई; हालांकि मेरे मन में उसके लिए न तो कोमलता की कोई भावना थी और न ही जुनून की कोई चिंगारी।"

"तो फिर, रॉबर्ट, उससे शादी करने की तुम्हारी इच्छा बहुत ही दुष्टतापूर्ण थी।"

“और बहुत ही नीच, मेरे नन्हे पादरी, मेरी प्यारी पुजारिन। मैंने अपने जीवन में कभी मिस कील्डर को चूमने की इच्छा नहीं की, हालाँकि उनके होंठ सुंदर हैं, पके हुए चेरी की तरह लाल और गोल; या, अगर मैंने कभी ऐसा चाहा भी, तो वह केवल आँखों की लालसा थी।”

मुझे अब संदेह हो रहा है कि आप सच बोल रहे हैं या नहीं। अंगूर या चेरी खट्टे हैं - 'बहुत ऊँचाई पर लटकाए जाने के कारण'।

“उसका शरीर सुंदर है, चेहरा सुंदर है, बाल भी खूबसूरत हैं। मैं उसकी सारी खूबियों को मानता हूँ, लेकिन उनमें से किसी को भी महसूस नहीं करता, या फिर उन्हें इस तरह महसूस करता हूँ जैसे वह उन्हें तुच्छ समझेगी। मुझे लगता है कि मैं सचमुच

उसके दिखावे के जाल में फंस गया था। कैरोलीन, तुम्हारा रॉबर्ट कितना नेक इंसान है - महान, अच्छा, निस्वार्थ और इतना पवित्र!”

"लेकिन वह परिपूर्ण नहीं थे। उन्होंने एक बार बहुत बड़ी गलती की थी, और हम इसके बारे में फिर कभी नहीं सुनेंगे।"

“क्या हम इसके बारे में और न सोचें, कैरी? क्या हम उसे अपने दिल में तुच्छ न समझें—जो सौम्य लेकिन न्यायप्रिय, दयालु लेकिन ईमानदार है?”

“कभी नहीं! हम याद रखेंगे कि जिस पैमाने से हम मापेंगे, उसी पैमाने से हमें भी मापा जाएगा, इसलिए हम तिरस्कार नहीं करेंगे, केवल स्नेह दिखाएंगे।”

“इससे संतुष्टि नहीं मिलेगी, मैं आपको पहले ही चेतावनी दे देता हूँ। स्नेह के अलावा कुछ और—कुछ कहीं अधिक मजबूत, मधुर, गर्मजोशी भरा—एक दिन मांगा जाएगा। क्या वह देने के लिए मौजूद है?”

कैरोलिन भावुक हो गई, बहुत भावुक हो गई।

“शांत रहो, लीना,” मूर ने शांत भाव से कहा। “मेरा तुम्हें परेशान करने का कोई इरादा नहीं है, और न ही मुझे इसका कोई अधिकार है, न अभी और न ही आने वाले महीनों में। ऐसा मत दिखाओ जैसे तुम मुझे छोड़कर जा रही हो। हम अब और कोई उत्तेजित करने वाली बातें नहीं करेंगे; हम अपनी गपशप जारी रखेंगे। कांपो मत; मेरी आँखों में देखो। देखो मैं कितना बेचारा, पीला, भयानक सा प्रेत हूँ—भयानक से कहीं अधिक दयनीय।”

वह शरमाते हुए बोली, "तुम्हारा पीलापन अभी भी तुममें कुछ दुर्जेयता है," और उसकी नज़रें उसकी आँखों से मिल गईं।

“शर्ली की बात पर वापस आते हुए,” मूर ने आगे पूछा: “क्या आपकी राय में उसके कभी शादी करने की संभावना है?”

वह प्यार करती है।

“प्लेटोनिक रूप से—सैद्धांतिक रूप से—सब बकवास है!”

वह जिसे मैं सच्ची भावना कहती हूँ, उससे प्यार करती है।

“क्या उसने ऐसा कहा था?”

“मैं इस बात की पुष्टि नहीं कर सकता कि उसने ऐसा कहा था। ‘मैं इस या उस आदमी से प्यार करती हूँ’ जैसी कोई बात उसने नहीं कही।”

"मैंने सोचा नहीं।"

लेकिन वो भावना उसके बावजूद प्रकट हो गई, और मैंने उसे देख लिया। उसने एक आदमी के बारे में ऐसी आवाज़ में बात की जिसे गलत समझा नहीं जा सकता था। उसकी आवाज़ ही काफी सबूत थी। तुम्हारे चरित्र के बारे में उससे राय निकलवाने के बाद, मैंने दूसरे व्यक्ति के बारे में दूसरी राय मांगी, जिसके बारे में मेरे कुछ अनुमान थे, भले ही वे दुनिया के सबसे उलझे और पेचीदा अनुमान थे। मैं उसे बुलवाना चाहता था। मैंने उसे हिलाया, उसे डांटा, जब उसने अपने अजीबोगरीब उकसाने वाले अंदाज़ में ताने और मज़ाक करके मुझे टालने की कोशिश की, तो मैंने उसकी उंगलियां चुटकी से दबाईं, और आखिरकार वो बात निकल ही गई। मैं कहता हूं, आवाज़ ही काफी थी; मुश्किल से फुसफुसाहट से थोड़ी ऊंची, फिर भी उसमें एक कोमल लेकिन ज़बरदस्त तीव्रता थी। उसमें कोई कबूलनामा नहीं था, कोई भरोसा नहीं था। इन बातों को वो समझ नहीं सकती; लेकिन मुझे यकीन है कि इंसान की खुशी उसके लिए अपनी जान से भी ज़्यादा प्यारी है।

"कौन है भाई?"

मैंने उस पर आरोप लगाया। उसने इनकार नहीं किया, उसने स्वीकार नहीं किया, बल्कि मेरी ओर देखा। बर्फ की चमक में मैंने उसकी आँखें देखीं। इतना ही काफी था। मैंने उस पर निर्दयतापूर्वक विजय प्राप्त की।

“तुम्हें जीतने का क्या अधिकार था? क्या तुम्हारा मतलब यह है कि तुम पूरी तरह से स्वतंत्र हो?”

मैं चाहे जो भी हूँ, शर्ली एक दासी है। शेरनी, उसे अपना बंदी मिल गया है। वह अपने आसपास के सभी लोगों की स्वामिनी हो सकती है, लेकिन वह खुद की स्वामिनी नहीं है।

"तो क्या तुम इतनी सुंदर और शाही महिला में अपने साथी गुलाम को पहचानकर प्रसन्न हुए?"

“मैंने किया; रॉबर्ट, तुम सही कहते हो, इतने सुंदर और शाही स्थान में।”

“तुम यह स्वीकार करते हो— एक साथी गुलाम?”

“मैं कुछ भी स्वीकार नहीं करती; लेकिन मैं कहती हूँ कि अभिमानी शर्ली, हागर से अधिक स्वतंत्र नहीं है।”

और, कृपया बताएं, वह अब्राहम कौन है, वह कुलपति का नायक जिसने ऐसी विजय प्राप्त की है?

"तुम अब भी तिरस्कारपूर्ण, निंदनीय और कठोर भाषा बोलते हो; लेकिन मैं तुमसे निपटने से पहले तुम्हारा लहजा बदल दूंगा।"

हम देखेंगे। क्या वह इस कामदेव से शादी कर सकती है?

“क्यूपिडॉन! वह उतना ही क्यूपिडॉन है जितना तुम एक साइक्लोप्स हो।”

क्या वह उससे शादी कर सकती है?

"आप देखेंगे।"

मैं उसका नाम जानना चाहता हूँ, कैरी।

"इसका अनुमान लगाएं।"

क्या इस मोहल्ले में कोई है?

"हां, ब्रायरफील्ड पैरिश में।"

“तो फिर वह व्यक्ति उसके लायक नहीं है। मुझे ब्रियरफील्ड पैरिश में उसके बराबर का कोई नहीं दिखता।”

"अनुमान लगाना।"

"असंभव। मुझे लगता है कि वह भ्रम में है, और अंततः किसी बेतुकी बात में पड़ जाएगी।"

कैरोलाइन मुस्कुराई।

"क्या आप इस चुनाव को स्वीकार करते हैं?" मूर ने पूछा।

"बिल्कुल, बिल्कुल।"

“तो फिर मैं असमंजस में हूँ; क्योंकि जिसके सिर पर ये सुनहरे घुंघराले बालों का गुच्छा है, वह एक उत्कृष्ट छोटी सी विचार मशीन है, जो अपने काम में बेहद सटीक है। इसमें सही और स्थिर निर्णय लेने की क्षमता है, जो मुझे लगता है कि उसे ‘माँ’ से विरासत में मिली है।”

"और मुझे यह बहुत पसंद आया, और माँ भी इससे बहुत प्रभावित हुईं।"

“‘मम्मा’ ने जादू कर दिया – श्रीमती प्रायर! तो फिर यह रोमांटिक नहीं हो सकता?”

"यह रोमांटिक है, लेकिन यह सही भी है।"

"मुझे बताओ, कैरी—मुझे दया करके बताओ; मैं इतना कमजोर हूँ कि बहकावे में नहीं आ सकता।"

"तुम्हें चिढ़ाया जाएगा - इससे तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा; तुम उतने कमजोर

नहीं हो जितना तुम दिखावा करते हो।"

"आज शाम को दो बार मेरे मन में यह विचार आया कि मैं आपके चरणों में गिर जाऊं।"

"बेहतर होगा कि आप ऐसा न करें। मैं आपको उठाने में मदद करने से इनकार कर दूंगा।"

और मैं आपकी सच्ची आराधना करूंगी। मेरी माँ रोमन कैथोलिक थीं। आप उनकी वर्जिन मैरी की सबसे सुंदर तस्वीर जैसी दिखती हैं। मुझे लगता है कि मैं उनके धर्म को अपनाऊंगी और घुटने टेककर आपकी पूजा करूंगी।

“रॉबर्ट, रॉबर्ट, शांत बैठो; बेवकूफी मत करो। अगर तुमने फिजूलखर्ची की तो मैं होर्टेंस के पास जाऊंगी।”

“तुमने मेरी इंद्रियों को वश में कर लिया है। इस समय मेरे मन में पवित्र कुंवारी मरियम की स्तुतियों के सिवा कुछ नहीं आ रहा। हे स्वर्गिक गुलाब, देवदूतों की रानी!”

“टूर डी आइवोर, मैसन डी ओर — क्या ये कोई तकनीकी शब्दजाल नहीं है? अच्छा, चुपचाप बैठ जाइए और अपनी पहेली का हल निकालिए।”

लेकिन ‘मम्मा’ ने जादू कर दिया – यही तो पहेली है।

मैं आपको बताती हूँ कि जब मैंने माँ को यह बात बताई तो उन्होंने क्या कहा। ‘मेरी प्यारी, इस बात पर यकीन मानिए, ऐसा चुनाव मिस कील्डर के जीवन की खुशियाँ तय कर देगा।’

“मैं सिर्फ एक बार अनुमान लगाऊंगा, और इससे ज्यादा नहीं। यह पुरानी हेलस्टोन है। वह तुम्हारी चाची बनने वाली है।”

“मैं अपने चाचा को बताऊंगी; मैं शर्ली को बताऊंगी!” कैरोलिन खुशी से हंसते हुए बोली। “फिर से अनुमान लगाओ, रॉबर्ट; तुम्हारी गलतियां बहुत प्यारी होती हैं।”

“यह पादरी हॉल है।”

"बिल्कुल नहीं; वह मेरा ही है, अगर आप चाहें तो।"

“तुम्हारा! अरे, ब्रायरफील्ड की सारी औरतें उस पादरी को पूजती हैं। मुझे समझ नहीं आता क्यों; वो तो गंजे हैं, उनकी आंखों में रेत जम जाती है और उनके बाल सफेद हो गए हैं।”

"अगर तुम जल्दी नहीं करोगे, तो पहेली सुलझाने से पहले ही फैनी मुझे लेने यहाँ आ जाएगी।"

“मैं अब और अनुमान नहीं लगाऊँगी—मैं थक चुकी हूँ; और फिर मुझे परवाह भी नहीं है। मिस कील्डर मेरे लिए उस महान तुर्क से शादी कर सकती हैं।”

"क्या मुझे फुसफुसाना पड़ेगा?"

“तुम्हें ऐसा करना ही होगा, और जल्दी। होर्टेंस आ रही है; पास आओ, थोड़ा और पास, मेरी प्यारी लीना। मुझे शब्दों से ज़्यादा फुसफुसाहट पसंद है।”

उसने फुसफुसाते हुए कहा। रॉबर्ट चौंक गया, उसकी आँखों में एक चमक आई और वह हल्की सी हँसी हँसा। मिस मूर अंदर आईं और सारा उनके पीछे-पीछे यह सूचना लेकर आई कि फैनी आ गई है। बातचीत का समय समाप्त हो गया।

रॉबर्ट को कुछ और फुसफुसाते हुए वाक्य बोलने का मौका मिल गया। वह सीढ़ियों के नीचे इंतजार कर रहा था जब कैरोलीन शॉल ओढ़कर नीचे उतरी।

“क्या अब मुझे शर्ली को एक महान प्राणी कहना चाहिए?” उसने पूछा।

"यदि आप सच बोलना चाहते हैं, तो निश्चित रूप से।"

"क्या मुझे उसे माफ करना होगा?"

“उसे माफ़ कर दूँ? शरारती रॉबर्ट! क्या गलती उसकी थी, या तुम्हारी?”

"क्या मुझे अंततः उससे खुलकर प्यार करना ही होगा, कैरी?"

कैरोलिन ने उत्सुकता से ऊपर देखा और उसकी ओर एक ऐसी हरकत की, जो प्रेम और चिड़चिड़ेपन के बीच की थी।

"बस आप कह दीजिए, मैं आपका पालन करने की कोशिश करूंगा।"

"सचमुच, तुम्हें उससे प्रेम नहीं करना चाहिए; यह विचार ही विकृत है।"

लेकिन वह बेहद खूबसूरत है, असाधारण रूप से खूबसूरत। उसकी सुंदरता धीरे-धीरे मोहित हो जाती है। पहली बार देखने पर वह आपको केवल शालीन लगती है; लेकिन एक साल तक उसे जानने के बाद ही आपको उसकी असली सुंदरता का पता चलता है।

“ये बातें कहने का अधिकार तुम्हें नहीं है। अब, रॉबर्ट, अच्छे बच्चे बनो।”

“ओ कैरी, मेरे पास देने के लिए प्रेम नहीं है। यदि सौंदर्य की देवी भी मुझे रिझाने की कोशिश करे, तो मैं उसके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर पाऊँगी। इस हृदय में ऐसा कोई हृदय नहीं है जिसे मैं अपना कह सकूँ।”

“यह तो और भी अच्छा है; आप इसके बिना कहीं ज्यादा सुरक्षित हैं। शुभ रात्रि।”

"लीना, तुम हमेशा ठीक उसी क्षण क्यों चली जाती हो जब मैं सबसे ज्यादा चाहती

हूं कि तुम रुको?"

"क्योंकि जब आपको हारने का सबसे अधिक संदेह होता है, तभी आप उसे बनाए रखना चाहते हैं।"

“सुनो; एक और बात। अपने दिल का ख्याल रखो—क्या तुम मुझे सुन रहे हो?”

कोई खतरा नहीं है।

मुझे इस बात पर यकीन नहीं है। उदाहरण के लिए, प्लेटो के पादरी को ही ले लीजिए।

“कौन— मैलोन?”

“सिरिल हॉल। उस इलाके को लेकर मेरे मन में एक से ज़्यादा बार ईर्ष्या की भावना आती है।”

“जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम मिस मान के साथ इश्कबाजी कर रही हो। उन्होंने मुझे कुछ दिन पहले वह पौधा दिखाया जो तुमने उन्हें दिया था। — फैनी, मैं तैयार हूँ।”

अध्याय 36.

स्कूल के कमरे में लिखा गया।

लुई मूर को श्री सिम्पसन द्वारा फील्डहेड को तुरंत खाली कराने के बारे में जो संदेह था, वह बिल्कुल सही साबित हुआ। सर फिलिप ननेली को लेकर हुए बड़े झगड़े के ठीक अगले दिन चाचा और भतीजी के बीच किसी तरह सुलह हो गई। शर्ली, जो कभी भी मेहमाननवाज़ी में खलल नहीं डाल सकती थी (श्री डोने के एक मामले को छोड़कर),

ने सभी से थोड़ी देर और रुकने की विनती की। उसने इतनी गंभीरता से विनती की कि स्पष्ट था कि वह किसी कारण से ऐसा चाहती थी। उन्होंने उसकी बात मान ली। दरअसल, चाचा उसे अकेला नहीं छोड़ सकते थे - उसे रॉबर्ट मूर से शादी करने की पूरी आज़ादी थी, जैसे ही वह सज्जन (श्री सिम्पसन ने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की कि ऐसा कभी न हो) उससे शादी करने का अपना दावा फिर से पेश कर सकें। वे सभी वहीं रुक गए।

मूर परिवार के प्रति अपने पहले गुस्से में, श्री सिम्पसन ने श्री लुई के साथ ऐसा व्यवहार किया था कि वह सज्जन - जो परिश्रम और कष्ट सहने में तो धैर्यवान थे, लेकिन अभद्रता को बर्दाश्त नहीं कर पाते थे - ने तुरंत अपने पद से इस्तीफा दे दिया था, और अब उन्हें केवल तब तक पद पर बने रहने के लिए राजी किया जा सका जब तक कि परिवार यॉर्कशायर छोड़कर नहीं चला जाता। श्रीमती सिम्पसन की विनती ने उन्हें यहाँ तक प्रभावित किया; अपने शिष्य के प्रति उनका लगाव रियायत देने का एक अतिरिक्त कारण था; और संभवतः उनके पास एक तीसरा कारण भी था, जो अन्य दो से कहीं अधिक मजबूत था। शायद उनके लिए इस समय फील्डहेड छोड़ना बहुत मुश्किल होता।

कुछ समय तक सब कुछ सुचारू रूप से चलता रहा। मिस कील्डर का स्वास्थ्य ठीक हो गया; उनका उत्साह फिर से लौट आया। मूर ने उनकी हर मानसिक चिंता को दूर करने का उपाय खोज लिया था; और वास्तव में, जिस क्षण उन्होंने मूर पर भरोसा जताया, मानो उनका हर डर दूर हो गया हो। उनका हृदय इतना हल्का और उनका व्यवहार इतना लापरवाह हो गया, जैसे किसी छोटे बच्चे का होता है, जो अपने जीवन या मृत्यु की परवाह किए बिना, सारी जिम्मेदारी अपने माता-पिता पर सौंप देता है। वह और विलियम फैरेन—जिनके माध्यम से उन्होंने फोएबे की स्थिति के बारे में पूछताछ की—इस बात पर सहमत थे कि कुत्ता पागल नहीं था, बल्कि दुर्व्यवहार के कारण ही वह घर से भागा था; क्योंकि यह सिद्ध हो चुका था कि उसका मालिक अक्सर उसे हिंसक रूप से दंडित करता था। उनका यह दावा सच हो भी सकता था और नहीं भी। ग्रूम और गेमकीपर ने इसके विपरीत दावा किया—दोनों का कहना था कि अगर यह हाइड्रोफोबिया का स्पष्ट मामला नहीं है, तो ऐसी कोई बीमारी होती ही नहीं है। लेकिन लुई मूर ने इस सबूत पर अविश्वास जताया। उन्होंने शर्ली को केवल उत्साहवर्धक बातें ही बताईं। शर्ली ने उन पर विश्वास किया; और, सही हो या गलत,

यह निश्चित है कि उसके मामले में काटने का प्रभाव हानिरहित साबित हुआ।

नवंबर बीत गया; दिसंबर आ गया। सिम्पसन परिवार अब सचमुच विदा हो रहा था। क्रिसमस तक उन्हें घर पहुंचना अनिवार्य था। उनके सामान की तैयारी चल रही थी; उन्हें कुछ ही दिनों में रवाना होना था। एक सर्दी की शाम, उनके ठहरने के आखिरी सप्ताह के दौरान, लुई मूर ने फिर से अपनी छोटी खाली किताब निकाली और उससे इस प्रकार बातें कीं: —

“वह पहले से भी अधिक सुंदर हो गई है। उस छोटे से बादल के छंटने के बाद से सारी क्षणिक उदासी और मुरझाहट गायब हो गई है। यह देखना अद्भुत था कि कैसे यौवन की जादुई ऊर्जा ने उसकी लचीलता को शीघ्र ही पुनर्जीवित कर दिया और उसकी रौनक वापस ला दी।”

आज सुबह नाश्ते के बाद, जब मैंने उसे देखा, उसकी बातें सुनीं और मानो अपने शरीर के हर कण में उसे महसूस किया, तो मैं उसकी धूप भरी उपस्थिति से निकलकर ठंडे ड्राइंग रूम में चला गया। एक छोटी सी सुनहरी किताब उठाते हुए, मैंने पाया कि उसमें गीतों का संग्रह था। मैंने एक-दो कविताएँ पढ़ीं; पता नहीं वो जादू मुझमें था या कविताओं में, लेकिन मेरा दिल खुशी से भर गया, मेरी धड़कन तेज़ हो गई। ठंडी हवा के बावजूद मैं दमक उठा। मैं भी अभी जवान हूँ। हालाँकि उसने कहा कि उसने मुझे कभी जवान नहीं समझा, मैं अभी मुश्किल से तीस साल का हूँ। ऐसे क्षण आते हैं जब जीवन, केवल मेरी जवानी के कारण, मुझ पर मधुर रंगों की बौछार करता है।

“स्कूल जाने का समय हो गया था। मैं चला गया। वही स्कूल का कमरा सुबह के समय काफी सुखद होता है। सूरज की किरणें नीची जाली से छनकर आती हैं; किताबें करीने से रखी होती हैं; कागज इधर-उधर बिखरे नहीं होते; आग साफ और स्वच्छ जल रही होती है; न तो चिंगारियां गिरी होती हैं, न ही राख जमा होती है। मैंने हेनरी को वहाँ पाया, और वह अपने साथ मिस कील्डर को लाया था। वे दोनों साथ थे।”

“मैंने कहा था कि वह पहले से भी अधिक सुंदर लग रही है। वह सचमुच सुंदर है। उसके गालों पर एक सुंदर गुलाब खिला है, गहरा नहीं, बल्कि कोमल। उसकी आंखें, जो हमेशा गहरी, निर्मल और बोलती हुई होती थीं, अब एक ऐसी भाषा बोल रही हैं जिसे मैं व्यक्त नहीं कर सकता; यह वह वाणी है, जिसे सुना नहीं जा सकता, जिसके माध्यम से स्वर्गदूतों ने उस समय संवाद किया होगा जब स्वर्ग में सन्नाटा छाया हुआ

था। उसके बाल हमेशा रात के अंधेरे जैसे और रेशम जैसे कोमल थे, उसकी गर्दन हमेशा सुंदर, लचीली और चिकनी थी; लेकिन अब दोनों में एक नया आकर्षण है। उसकी लटें छाया की तरह कोमल हैं, और जिन कंधों पर वे गिरती हैं, उनमें देवी जैसी गरिमा है। एक समय था जब मैं केवल उसकी सुंदरता देखता था, अब मैं उसे महसूस करता हूँ।”

“हेनरी मुझे पाठ देने से पहले उसे दोहरा रहा था। उसका एक हाथ किताब में व्यस्त था; दूसरा हाथ उसने पकड़ रखा था। उस लड़के को उसकी औकात से ज़्यादा सुविधाएँ मिलती हैं; वह दुलार करने की हिम्मत करता है और उसे दुलार मिलता है। वह उस पर कितना स्नेह और दया दिखाती है! हद से ज़्यादा। अगर ऐसा ही चलता रहा, तो कुछ सालों में, जब हेनरी की आत्मा परिपक्व हो जाएगी, तो वह उसे उसकी वेदी पर अर्पित कर देगा, जैसे मैंने अपनी आत्मा अर्पित की है।”

जब मैं अंदर आया तो मैंने उसकी पलकें झपकते देखीं, लेकिन उसने ऊपर नहीं देखा; अब तो वह मुश्किल से ही मुझे देखती है। वह चुप भी होती जा रही है; मुझसे वह शायद ही कभी बोलती है, और जब मैं मौजूद होता हूँ, तो दूसरों से भी कम बोलती है। अपने उदासी भरे पलों में मैं इस बदलाव को उदासीनता, अरुचि, या न जाने क्या-क्या मान लेता हूँ? अपने खुशनुमा पलों में मैं इसे एक अलग अर्थ देता हूँ। मैं कहता हूँ, अगर मैं उसके बराबर होता, तो मैं इस शर्म में लज्जा और उस लज्जा में प्रेम पा सकता था। लेकिन अब, क्या मैं इसे खोजने की हिम्मत करूँ? अगर यह मिल भी जाए तो मैं इसके साथ क्या करूँगा?

“आज सुबह मैंने कम से कम उसके और मेरे लिए एक घंटे का संवाद निकालने का साहस किया; मैंने न केवल उससे मिलने की इच्छा की बल्कि उसे पाने का प्रयास भी किया। मैंने एकांत को हम दोनों की रक्षा के लिए बुलाने का साहस किया। मैंने दृढ़ता से हेनरी को दरवाजे पर बुलाया। बिना किसी झिझक के मैंने कहा, 'जहाँ चाहो जाओ, मेरे बेटे; लेकिन जब तक मैं तुम्हें न बुलाऊँ, यहाँ वापस मत आना।'”

“हेनरी, मैं देख सकती थी, अपनी बर्खास्तगी से नाखुश था। वह लड़का जवान है, पर विचारशील है; उसकी चिंतनशील आँखें कभी-कभी मुझ पर अजीब तरह से चमकती हैं। वह आधा-अधूरा महसूस करता है कि मुझे शर्ली से क्या जोड़ता है; वह आधा अनुमान लगाता है कि मेरे साथ जिस संयम से व्यवहार किया जाता है, उसमें उसे मिलने वाले सभी स्नेह से कहीं अधिक आनंद है। वह जवान, लंगड़ा,

अधोविकसित शेर कभी-कभी मुझ पर गुर्राता, क्योंकि मैंने उसकी शेरनी को वश में कर लिया है और मैं उसकी रखवाली करने वाली हूँ, अगर अनुशासन की आदत और स्नेह की सहज प्रवृत्ति उसे वश में न रखती। जाओ, हेनरी; तुम्हें जीवन की कड़वाहट का अपना हिस्सा सहना सीखना होगा, आदम की उन सभी संतानों के साथ जो तुमसे पहले आई हैं या तुम्हारे बाद आएंगी। तुम्हारा भाग्य आम लोगों से अलग नहीं हो सकता; शुक्रगुजार रहो कि तुम्हारे प्यार को इतनी जल्दी नजरअंदाज कर दिया गया है, इससे पहले कि वह किसी भी तरह की वासना का रूप ले सके। एक घंटे की बेचैनी, ईर्ष्या की एक चुभन, तुम्हारे मन को व्यक्त करने के लिए काफी है। ईर्ष्या रेखा के ऊपर सूर्य की तरह तीव्र, क्रोध उष्णकटिबंधीय तूफान की तरह विनाशकारी, जलवायु... आपकी संवेदनाओं को अभी तक नजरअंदाज किया जा रहा है।

मैं हमेशा की तरह अपने डेस्क पर अपनी जगह पर बैठ गया। मुझे यह शक्ति प्राप्त है कि मैं अपने भीतर के सारे उफान को बाहरी शांति से छुपा लेता हूँ। जो भी मेरे शांत चेहरे को देखता है, वह मेरे हृदय में उठने वाले उस भंवर का अनुमान नहीं लगा सकता जो विचारों को निगल जाता है और विवेक को नष्ट कर देता है। यह कितना सुखद है कि मुझे बिना किसी असामान्य हरकत के शांतिपूर्वक और सशक्त रूप से अपने मार्ग पर आगे बढ़ने का वरदान प्राप्त है। मेरा इरादा उससे प्रेम का एक शब्द भी कहने का नहीं था, न ही उस आग की एक झलक दिखाने का जिसमें मैं जल रहा था। मैं कभी अभिमानी नहीं रहा; न ही कभी अभिमानी होऊंगा। स्वार्थी और मतलबी दिखने के बजाय, मैं दृढ़ता से उठूंगा, कमर कस लूंगा, उससे विदा लूंगा और दुनिया के दूसरे छोर पर एक नए जीवन की तलाश करूंगा, जो उस चट्टान की तरह ठंडा और बंजर होगा जिसे खारे पानी की लहरें प्रतिदिन धोती हैं। आज सुबह मेरा इरादा उसका बारीकी से परीक्षण करना था - उसके हृदय के पन्ने की एक पंक्ति पढ़ना था। जाने से पहले मैंने यह जानने का निश्चय किया कि मैं क्या जा रहा था।

“मेरे पास कलम बनाने के लिए कुछ पंख थे। जब दिल इतना भावुक होता है तो अधिकतर पुरुषों के हाथ कांपने लगते हैं; मेरा हाथ स्थिर रूप से चलता रहा, और जब मैंने इसे बोलने का प्रयास किया तो मेरी आवाज दृढ़ रही।”

“‘इस सप्ताह आप फील्डहेड में अकेली रहेंगी, मिस कील्डर।’”

“हां: मुझे लगता है कि मेरे चाचा का जाने का इरादा अब पक्का हो चुका है।”

“‘वह आपको असंतुष्ट छोड़ देता है।’”

"'वह मुझसे प्रसन्न नहीं है।'"

"'वह जिस तरह आया था, उसी तरह चला गया—अपनी यात्रा से उसमें कोई सुधार नहीं हुआ। यह बेहद शर्मनाक है।'"

मुझे विश्वास है कि उनकी योजनाओं की विफलता से उनमें नई योजनाएँ बनाने की सारी इच्छा समाप्त हो जाएगी।

"'श्री सिम्पसन ने अपने तरीके से ईमानदारी से आपकी भलाई की कामना की। उन्होंने जो कुछ भी किया या करने का इरादा किया, उनका मानना था कि वह सब सर्वोत्तम था।'"

"'आप उस व्यक्ति का बचाव करने का बीड़ा उठा रही हैं जिसने आपके साथ इतना दुस्साहस करने की अनुमति दी है, यह आपकी दयालुता है।'"

"'मैं कभी भी अपने चरित्र के अनुरूप कही गई बातों से आहत नहीं होता, न ही उनके प्रति द्वेष रखता हूँ; और आपके पर विजय प्राप्त करने के बाद मेरे विरुद्ध किया गया वह अभद्र और हिंसक हमला मेरे चरित्र के बिल्कुल अनुरूप था।'

"'अब आप हेनरी के शिक्षक नहीं रहेंगे?'"

"'मैं कुछ समय के लिए हेनरी से अलग हो जाऊंगी (अगर हम दोनों जीवित रहे तो किसी न किसी तरह फिर मिलेंगे, क्योंकि हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं) और सिम्पसन परिवार से हमेशा के लिए अलग हो जाऊंगी। सौभाग्य से यह बदलाव मुझे बेसहारा नहीं छोड़ता; यह तो बस लंबे समय से बनी हुई असमय हत्या की योजनाओं को गति देता है।'

"'कोई भी बदलाव आपको अचंभित नहीं कर सकता। मुझे यकीन था, आपके शांत स्वभाव में, आप अचानक होने वाले परिवर्तन के लिए तैयार रहेंगे। मैं हमेशा सोचता हूँ कि आप दुनिया में एक जंगल में अकेले लेकिन सतर्क, विचारशील तीरंदाज की तरह खड़े हैं। और आपके कंधे पर तरकश में एक से अधिक तीर हैं; आपके धनुष में एक दूसरी डोरी भी लगी है। आपके भाई का भी यही स्वभाव है। आप दोनों बेघर शिकारी बनकर पश्चिम के सबसे सुनसान जंगलों में जा सकते हैं; सब ठीक रहेगा। कटा हुआ पेड़ आपकी झोपड़ी बना देगा, साफ किया हुआ जंगल अपनी सूखी गोद से आपको खेत देगा, भैंस आपकी बंदूक की गोली महसूस करेगी, और झुके हुए सींगों और कूबड़ के साथ आपके चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करेगी।'

"'और क्या ब्लैकफीट या फ्लैटहेड जैसी कोई भारतीय जनजाति हमें दुल्हन दे

सकती है?'"

"'नहीं' (हिचकिचाते हुए), 'मुझे नहीं लगता। वह बर्बर नीच है। मुझे लगता है—अर्थात् मुझे आशा है—कि आप दोनों में से कोई भी उस व्यक्ति के साथ अपना घर साझा नहीं करेगा जिसे आप अपना दिल नहीं दे सकते।'

"'मिस कील्डर, आपके मन में वाइल्ड वेस्ट का विचार कैसे आया? क्या आप मेरी उपस्थिति में तब भी मेरे साथ थीं जब मैं आपको देख नहीं पा रहा था? क्या आप मेरे दिवास्वप्नों में प्रवेश कर चुकी हैं और मेरे मस्तिष्क को भविष्य की योजनाओं पर काम करते हुए देख चुकी हैं?'"

"उसने मोमबत्ती जलाने के लिए कागज की एक पर्ची को टुकड़ों में अलग कर लिया था—जिसे 'छलकना' कहते हैं। उसने टुकड़ों को एक-एक करके आग में फेंका और उन्हें जलते हुए ध्यान से देखती रही। वह कुछ नहीं बोली।"

"'मेरी मंशाओं के बारे में आपको जो कुछ भी पता है, वह आपको कैसे पता चला?'"

"'मुझे कुछ नहीं पता। मैं इन्हें अभी खोज रहा हूँ। मैंने बिना सोचे-समझे बोल दिया।'"

"'तुम्हारा अनुमान भविष्यवाणी जैसा लगता है। मैं फिर कभी शिक्षक नहीं बनूँगा; हेनरी और तुम्हारे बाद कभी किसी शिष्य को नहीं पढ़ाऊँगा; फिर कभी किसी दूसरे आदमी की मेज पर आदतन नहीं बैठूँगा—अब कभी किसी परिवार का आश्रित नहीं बनूँगा। मैं अब तीस साल का हो चुका हूँ; दस साल की उम्र से मैं कभी आज़ाद नहीं रहा। मुझे आज़ादी की इतनी प्यास है, उसे जानने और उसे अपना बनाने की इतनी गहरी चाहत है, उसे पाने और अपना बनाने की इतनी तमन्ना है कि मैं उसके लिए अटलांटिक महासागर पार करने से भी इनकार नहीं करूँगा; मैं उसका पीछा करते हुए घने जंगलों में चला जाऊँगा। किसी जंगली लड़की को गुलाम बनाना मेरा काम नहीं होगा—वह पत्नी नहीं बन सकती। मैं किसी ऐसी श्वेत स्त्री को नहीं जानता जिससे मैं प्यार करता हूँ और जो मेरे साथ आए; लेकिन मुझे यकीन है कि स्वतंत्रता चीड़ के पेड़ के नीचे बैठी मेरा इंतज़ार कर रही होगी। जब मैं उसे बुलाऊँगा, वह मेरे लकड़ी के घर में आएगी, और मेरी बाहों में समा जाएगी।'

"वह मेरी बात इतनी शांत भाव से सुन नहीं पा रही थी, जबकि वह वास्तव में भावुक हो गई थी। यह सही था—मेरा इरादा उसे भावुक करने का था। वह मुझे जवाब

नहीं दे सकी, न ही मेरी ओर देख सकी। अगर वह ऐसा कर पाती तो मुझे अफसोस होता। उसका गाल ऐसे चमक रहा था मानो किसी लाल फूल की पंखुड़ियों से सूरज की रोशनी छनकर उस पर पड़ रही हो। उसकी झुकी हुई आँख की सफेद पलकों और काली पलकों पर आधी पीड़ादायक, आधी सुखदायक शर्म की भावना का एक अनूठा सा सौंदर्य कंपकंप रहा था।”

“जल्द ही उसने अपने भावों पर काबू पा लिया और अपनी सारी भावनाओं को नियंत्रण में कर लिया। मैंने देखा कि उसके अंदर विद्रोह की भावना जागृत हो रही थी और वह साम्राज्य की ओर बढ़ रही थी। वह बैठ गई। उसके चेहरे पर कुछ ऐसा भाव था जिसे मैं समझ सकती थी। वह भाव कह रहा था, मैं अपनी सीमा रेखा देख रही हूँ; कोई भी मुझे इसे पार नहीं करा सकता। मैं जानती हूँ कि मैं अपनी भावनाओं को कितनी दूर तक प्रकट कर सकती हूँ और कब मुझे अपनी भावनाओं को दबाना होगा। मैं एक निश्चित दूरी तक आगे बढ़ चुकी हूँ, जहाँ तक मेरी जाति की सच्ची, संप्रभु और निर्मल प्रकृति मुझे अनुमति देती है; अब मैं यहाँ जड़ जमाए खड़ी हूँ। अगर मेरा दिल टूट जाए तो टूट सकता है; टूटने दो। यह मुझे कभी अपमानित नहीं करेगा; यह मुझमें मौजूद मेरी बहनों को कभी अपमानित नहीं करेगा। अपमान से पहले पीड़ा! विश्वासघात से पहले मृत्यु!”

मैंने अपनी ओर से कहा, ‘अगर वह गरीब होती, तो मैं उसके चरणों में गिर जाता; अगर वह नीची होती, तो मैं उसे अपनी बाहों में भर लेता। उसका सोना और उसकी हैसियत दो ऐसे घातों की तरह हैं जो उसकी रक्षा करते हैं। प्रेम देखता है, तरसता है, पर हिम्मत नहीं करता; वासना चारों ओर मंडराती है, पर काबू में रहती है; सत्य और भक्ति भयभीत हैं। उसे पाने में कुछ भी खोने को नहीं है, कोई बलिदान नहीं देना है। यह पूरी तरह से लाभ है, और इसलिए अकल्पनीय रूप से कठिन है।’

“मुश्किल हो या न हो, कुछ तो करना ही होगा, कुछ तो कहना ही होगा। मैं उस सारी सुंदरता को अपने सामने विनम्रतापूर्वक मौन बैठे हुए देखकर चुप नहीं बैठ सकता था, और न ही बैठना चाहता था। मैंने इस प्रकार कहा, और अभी भी शांत भाव से बोला। मेरे शब्द भले ही शांत थे, लेकिन मैं सुन सकता था कि वे एक स्पष्ट, मधुर और गहरी ध्वनि में गिरे।”

फिर भी, मैं जानती हूँ कि उस पर्वतीय अप्सरा लिबर्टी के साथ मेरा अजीब सा मेल नहीं होगा। मुझे शक है कि वह उस एकांत से मिलती-जुलती है जिसे मैंने कभी चाहा

था, और जिससे अब मैं नाता तोड़ना चाहती हूँ। ये ओरेड्स अनोखी हैं। ये किसी तारों भरी शाम की तरह, एक अलौकिक आकर्षण के साथ आती हैं; ये एक जंगली, लेकिन उमंग रहित आनंद जगाती हैं; इनकी सुंदरता आत्माओं की सुंदरता है; इनका आकर्षण जीवन का नहीं, बल्कि प्रकृति के ऋतुओं या दृश्यों का है। इनमें सुबह की ओस भरी बहार, शाम की सुस्त चमक, चाँद की शांति, बादलों की परिवर्तनशीलता है। मैं कुछ अलग चाहती हूँ और पाऊँगी। यह परी जैसी भव्यता मेरी दृष्टि में ठंडी लगती है, और मेरे स्पर्श से जमी हुई महसूस होती है। मैं कवि नहीं हूँ; मैं अमूर्त विचारों के साथ नहीं रह सकती। मिस कील्डर, आपने कभी-कभी अपने व्यंग्य में मुझे भौतिकवादी दार्शनिक कहा है, और यह संकेत दिया है कि मैं ठोस चीजों के लिए ही जीती हूँ। निश्चित रूप से मैं सिर से पैर तक भौतिकवादी महसूस करती हूँ; और प्रकृति जितनी गौरवशाली है, और मैं उसकी जितनी गहराई से पूजा करती हूँ, एक ठोस शक्ति के साथ। मेरे दिल, मैं उसे ओलंपस की सर्वोच्च देवी के उग्र नेत्रों के बजाय एक प्रिय और प्यारी पत्नी की कोमल मानवीय आँखों से देखना अधिक पसंद करूँगा।

"'जूनो भैंस का स्टेक वैसे नहीं पका सकती जैसे तुम चाहते हो,' उसने कहा।

"वह ऐसा नहीं कर सकती थी; लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कौन कर सकता था – कोई युवा, बेसहारा, अनाथ लड़की। काश मुझे ऐसी कोई मिल जाए – इतनी सुंदर कि मैं उससे प्यार कर सकूँ, जिसका मन और हृदय मेरे स्वाद के अनुकूल हो; अशिक्षित न हो – ईमानदार और विनम्र हो। मुझे शैक्षणिक उपलब्धियों की परवाह नहीं है, लेकिन मैं उन मधुर प्राकृतिक गुणों का अंश पाना चाहता हूँ जिनकी बराबरी कोई अर्जित शक्ति नहीं कर सकती; भाग्य चाहे जो भी स्वभाव तय करे – मैं उसे भी संभाल सकता हूँ। ऐसी लड़की का मैं पहले गुरु और फिर पति बनना चाहूँगा। मैं उसे अपनी भाषा, अपनी आदतें और अपने सिद्धांत सिखाऊँगा, और फिर उसे अपने प्यार से नवाजूँगा।"

"'सृष्टि के स्वामी, उसे पुरस्कृत करो—उसे पुरस्कृत करो!'" उसने होंठ सिकोड़ते हुए कहा।

"और तुम्हें इसका हजार गुना प्रतिफल मिलेगा।"

"'यदि वह ऐसा चाहती है, महामहिम।'"

"और उसे ऐसा चाहना चाहिए।"

"'आपने भाग्य की इच्छा के अनुसार किसी भी स्वभाव को स्वीकार कर लिया है।

विवशता एक पत्थर की तरह है और कुछ आत्माओं की धातु पर चोट पहुँचाती है।'

"और इससे उत्पन्न होने वाली चिंगारी से प्यार करो।"

"'उस प्यार की परवाह कौन करता है जो महज़ एक चिंगारी है—देखी गई, ऊपर की ओर उड़ी और चली गई?'"

"'मुझे अपनी अनाथ बेटी को ढूंढना ही होगा। मुझे बताइए कैसे, मिस कील्डर।'"

"'विज्ञापन दें; और योग्यता का वर्णन करते समय यह अवश्य जोड़ें कि वह एक अच्छी और सरल रसोइया होनी चाहिए।'

"मुझे उसे ढूंढना ही होगा; और जब मैं उसे ढूंढ लूंगा तो उससे शादी कर लूंगा।"

"'तुम नहीं!' और उसकी आवाज में अचानक एक अजीब तरह का तिरस्कार का भाव आ गया।"

"मुझे यह अच्छा लगा। मैंने उसे उस चिंतनशील मनोदशा से जगा दिया था जिसमें मैंने उसे पहली बार पाया था। मैं उसे और भी उत्तेजित करूँगा।"

"'इस पर संदेह क्यों करें?'"

"'तुम शादी करो!'"

"'हाँ, बिल्कुल; इससे अधिक स्पष्ट और कुछ नहीं हो सकता कि मैं कर सकता हूँ और करूँगा।'"

"'इसके विपरीत स्पष्ट है, श्री मूर।'"

"उसने मुझे अपने इस मूड में मोहित कर लिया - तिरस्कारपूर्ण, आधा अपमानजनक; गर्व, क्रोध, उपहास, उसकी बड़ी सुंदर आंखों में मिश्रित थे, जिनमें अभी-अभी मर्लिन की झलक थी।"

"'मिस कील्डर, कृपया मुझे इस राय के लिए अपने कारण बताएं।'"

"'मुझे आश्चर्य है कि तुम शादी कैसे कर पाओगे?'"

"'जब मुझे सही व्यक्ति मिल जाएगा, तो मैं इसे आसानी और तेजी से संभाल लूंगा।'"

"'ब्रह्मचर्य स्वीकार करो!' (और उसने हाथ से ऐसा इशारा किया जैसे वह मुझे कुछ दे रही हो) 'इसे अपना अभिशाप समझो!'

"नहीं; आप मुझे वह नहीं दे सकते जो मेरे पास पहले से है। मैं तीस वर्षों से ब्रह्मचर्य का पालन कर रहा हूँ। यदि आप मुझे कोई उपहार, विदाई भेंट, स्मृति चिन्ह देना चाहते हैं, तो आपको वरदान बदलना होगा।"

"'तो फिर और भी बुरा सहो!'"

"'कैसे—क्या?'"

अब मैं उत्तेजित महसूस कर रहा था, देख रहा था और बोल रहा था। एक पल के लिए भी अपनी शांति भंग करना मेरी मूर्खता थी; इससे मुझे एक लाभ से वंचित होना पड़ा और वह लाभ उसे मिल गया। क्रोध की छोटी सी चिंगारी व्यंग्य में घुल गई और उसके चेहरे पर एक उपहासपूर्ण मुस्कान की लहरों के रूप में छा गई।

"'ऐसी पत्नी से विवाह करो जिसने तुम्हारी मर्यादा बनाए रखने के लिए तुम्हें रिझाने का प्रयास किया हो, और तुम्हारे संशय को दूर करने के लिए स्वयं को तुम पर विवश किया हो।'

"'मुझे बस यह दिखाओ कि कहाँ।'"

"'कोई भी हष्ट-पुष्ट विधवा जिसके पहले से ही कुछ पति हो चुके हों और जो इन चीजों को संभाल सके।'"

"'तो फिर वो अमीर नहीं होगी। ओह, ये धन-दौलत!'"

"'तुम कभी भी सोने से लदे बगीचे की उपज नहीं इकट्ठा कर पाते। तुममें उस अचेतन अजगर का सामना करने का साहस नहीं है; तुममें एटलस की सहायता लेने की चतुराई नहीं है।'

"'तुम बहुत आकर्षक और अभिमानी लग रही हो।'"

"'और तुम तो कहीं अधिक अभिमानी हो। तुम्हारा अहंकार इतना भयानक है कि वह विनम्रता का ढोंग करता है।'

"'मैं आश्रित हूँ; मुझे अपनी जगह पता है।'"

"'मैं एक महिला हूँ; मैं अपनी पहचान जानती हूँ।'"

"'मैं गरीब हूँ; मुझे गर्व होना चाहिए।'"

"'मुझे अध्यादेश प्राप्त हुए हैं, और मैं तुम्हारे समान ही कठोर दायित्वों का पालन करता हूँ।'"

"अब हम एक नाजुक मोड़ पर पहुँच चुके थे, और हम रुककर एक-दूसरे को देखने लगे। मुझे लगा कि वह हार नहीं मानेगी। इसके आगे मुझे न तो कुछ महसूस हुआ और न ही कुछ दिखाई दिया। कुछ पल अभी मेरे थे। अंत आ रहा था—मैंने उसकी आहट सुनी—लेकिन आया नहीं था। मैं ढिलाई करता, इंतज़ार करता, बातें करता, और जब आवेग आता तो मैं कार्य करता। मैं कभी जल्दी में नहीं रहता; मैंने अपने पूरे जीवन में

कभी जल्दी नहीं की। जल्दबाज़ी करने वाले लोग जीवन के अमृत को झुलसा देने वाले गर्म रूप में पीते हैं; मैं इसे ओस की तरह ठंडा महसूस करता हूँ। मैंने आगे कहा: 'लगता है, मिस कील्डर, आपकी शादी होने की संभावना मेरी ही तरह कम है। मुझे पता है कि आपने तीन—नहीं, चार—सुविधाजनक प्रस्ताव ठुकरा दिए हैं, और मुझे लगता है कि पाँचवाँ भी। क्या आपने सर फिलिप ननेली को भी अस्वीकार कर दिया है?'

मैंने यह सवाल अचानक और तुरंत पूछा।

"'क्या आपको लगता है कि मुझे उसे ले जाना चाहिए?'"

"'मुझे लगा कि शायद तुम।'

"'मैं पूछना चाहूँगा कि किन आधारों पर?'"

"'पद और आयु की अनुरूपता, स्वभाव का सुखद विरोधाभास — क्योंकि वह सौम्य और मिलनसार है — बौद्धिक रुचियों का सामंजस्य।'

"वाह, कितना सुंदर वाक्य है! चलिए इसे टुकड़ों में बाँटते हैं। "पद की समानता।" वह मुझसे बहुत ऊँचा है। कृपया मेरे फार्महाउस की तुलना उसके महल से कीजिए। उसके सगे-संबंधी मुझे तुच्छ समझते हैं। "उम्र की अनुकूलता।" हम दोनों एक ही वर्ष में पैदा हुए थे; इसलिए वह अभी भी लड़का है, जबकि मैं एक स्त्री हूँ—हर मायने में उससे दस साल बड़ी। "स्वभाव का अंतर।" वह सौम्य और मिलनसार है; मैं—क्या? मुझे बताइए।"

"'चित्तीदार, चमकीले, फुर्तीले, उग्र तेंदुए की बहन।'"

"'और तुम मुझे एक बच्चे से मिलाना चाहते हो — जबकि सहस्राब्दी अभी भी मानवजाति से लाखों सदियाँ दूर है; जबकि तुम अभी भी सातवें स्वर्ग में विराजमान एक महादूत हो, जिसे नीचे उतरने का अधिकार नहीं है? अन्यायपूर्ण बर्बर! "बौद्धिक रुचियों का सामंजस्य।" उसे कविता पसंद है, और मुझे इससे नफरत है — —'

"'क्या सच में? यह तो खबर है।'"

"'जब भी मैं मठ में या फील्डहेड में सर फिलिप के यहाँ होता हूँ, तो छंदों को देखकर या तुकबंदी की आवाज़ सुनकर मैं बिल्कुल कांप उठता हूँ। वाकई, सामंजस्य! मैंने कब शब्दांशों से भरे सॉनेट या कांच के टुकड़ों की तरह नाजुक छंद रचे थे? और मैंने कब यह विश्वास किया था कि वे पैसे के मोती असली हीरा थे?'"

"'आपको उसे उच्च स्तर तक ले जाने, उसकी रुचियों में सुधार करने की संतुष्टि

मिल सकती है।'"

"'नेतृत्व करना और सुधारना! सिखाना और मार्गदर्शन करना! सहन करना और धैर्य रखना! छी! मेरे पति मेरे बच्चे नहीं बनने वाले। मुझे उन्हें रोज़ाना सबक नहीं देना है और यह सुनिश्चित नहीं करना है कि वे उसे सीखें, और अच्छा व्यवहार करने पर उन्हें मिठाई देना है, और बुरा व्यवहार करने पर धैर्यपूर्वक, गंभीर और दयनीय व्याख्यान देना है। लेकिन "शिक्षण से मिलने वाली संतुष्टि" की बात करना तो शिक्षक जैसा है। मुझे लगता है कि आप इसे दुनिया का सबसे अच्छा काम मानते हैं। मैं नहीं मानती। मैं इसे अस्वीकार करती हूँ। पति को सुधारना! नहीं। मैं इस बात पर ज़ोर दूंगी कि मेरे पति मुझे सुधारें, वरना हम अलग हो जाएंगे।'

"'भगवान जानता है कि इसकी जरूरत है!'"

"'आपका इससे क्या मतलब है, श्री मूर?'"

"'मैं जो कहता हूँ, सुधार की सख्त जरूरत है।'"

"'अगर आप एक महिला होतीं तो आप महाशय, आपके पति को बड़े ही आकर्षक ढंग से शिक्षित करतीं। यह आपके लिए बिल्कुल उपयुक्त होता; शिक्षा देना ही आपका पेशा है।'"

"'क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्या आप अपने वर्तमान न्यायपूर्ण और सौम्य स्वभाव में मुझे शिक्षक होने का ताना मारना चाहते हैं?'"

"'हाँ, कड़वाहट से; और आप जो चाहें उससे—कोई भी कमी जिसके बारे में आप बहुत पीड़ादायक रूप से सचेत हों।'

"'उदाहरण के लिए, गरीब होने के साथ?'"

"'बेशक; इससे तुम्हें दुख होगा। तुम अपनी गरीबी से दुखी हो; तुम उसी के बारे में सोचते रहते हो।'"

"'क्या मेरे पास उस महिला को देने के लिए एक बहुत ही साधारण व्यक्ति के अलावा कुछ भी नहीं है जो मेरे दिल को जीत सकती है?'"

"बिल्कुल सही। तुम्हें खुद को साधारण कहने की आदत है। तुम अपने चेहरे की बनावट को लेकर बहुत संवेदनशील हो क्योंकि वो अपोलो के आदर्शों जैसी नहीं है। तुम ज़रूरत से ज़्यादा ही उसे नीचा दिखाती हो, इस धुंधली सी उम्मीद में कि शायद दूसरे उसकी तारीफ में कुछ कह दें—जो कि कभी नहीं होगा। तुम्हारा चेहरा गर्व करने लायक बिल्कुल नहीं है—उसमें न तो कोई सुंदर रेखा है और न ही कोई सुंदर रंगत।"

"'इसकी तुलना अपने आप से करो।'"

"'यह मिस्र के किसी देवता जैसा दिखता है—रेत में दबा हुआ एक विशाल पत्थर का सिर; या यूँ कहूँ कि मैं इसकी तुलना किसी भव्य चीज़ से नहीं करूँगा। यह तातार जैसा दिखता है। तुम मेरे मास्टिफ़ कुत्ते के चचेरे भाई हो। मुझे लगता है कि तुम उससे उतने ही मिलते-जुलते हो जितना कोई इंसान कुत्ते से मिल सकता है।'

"'टार्टर आपका प्रिय साथी है। गर्मियों में, जब आप सुबह जल्दी उठकर खेतों में जाती हैं, ओस से अपने पैरों को भीगने देती हैं, हवा से अपने गालों को तरोताज़ा करती हैं और अपने बालों को खोलती हैं, तो आप हमेशा उसे अपने पीछे आने के लिए बुलाती हैं। कभी-कभी आप उसे उस सीटी से बुलाती हैं जो आपने मुझसे सीखी है। अपने जंगल के एकांत में, जब आपको लगता है कि टार्टर के अलावा कोई नहीं सुन रहा है, तो आप वही धुनें सीटी बजाकर गाती हैं जो आपने मेरे होठों से नकल की हैं, या वही गीत गाती हैं जो आपने मेरी आवाज़ से सुनकर सीखे हैं। मैं यह नहीं पूछता कि इन गीतों में आप जो भावना उड़ेलती हैं, वह कहाँ से आती है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह आपके दिल से निकलती है, मिस कील्डर। सर्दियों की शामों में टार्टर आपके चरणों में लेट जाता है। आप उसे अपना सिर अपनी सुगंधित गोद में रखने देती हैं; आप उसे अपने रेशमी वस्त्रों के किनारों पर आराम करने देती हैं। उसकी खुरदरी खाल आपके हाथों के स्पर्श से परिचित है। मैंने एक बार आपको उसके चौड़े माथे पर उस बर्फ जैसे सफेद तिल पर चुंबन करते देखा था। यह कहना खतरनाक है कि मैं टार्टर जैसा हूँ; इससे मुझे टार्टर जैसा व्यवहार पाने का हक मिलता है।'

"शायद, महोदय, जब आप अपनी उस निर्धन और बेसहारा युवा अनाथ लड़की को ढूंढ लेंगे, तो आप उससे भी उतनी ही रकम वसूल सकते हैं।"

"काश, मुझे वो मिल जाए जैसी मैं कल्पना करता हूँ! पहले उसे वश में करना, फिर सिखाना; उसे वश में करना, और फिर दुलारना। उस निर्धन, अभिमानी को गरीबी से बाहर निकालना; उसके चंचल मिजाज पर अधिकार स्थापित करना और फिर उसे सहर्ष स्वीकारना, जो पहले कभी प्रभावित नहीं हुए थे और न ही कभी सहिष्णु हुए थे; उसे चौबीस घंटों में लगभग बारह बार चिढ़ते और शांत होते देखना; और शायद, अंततः, जब उसका प्रशिक्षण पूरा हो जाए, तो उसे लगभग एक दर्जन बच्चों की अनुकरणीय और धैर्यवान माँ के रूप में देखना, जो कभी-कभार छोटे लुई को उसके पिता के भारी कर्ज के ब्याज के रूप में एक हल्का सा थप्पड़ मारती हो। ओह' (मैं

आगे बोला), 'मेरी अनाथ बेटी मुझे ढेरों चुंबन देगी; वह शाम को मेरे घर आने का इंतज़ार करती रहेगी; वह मेरी बाहों में दौड़कर आएगी; वह मेरे चूल्हे को उतना ही रोशन रखेगी जितना उसे गर्म करेगी। भगवान इस प्यारे विचार को आशीर्वाद दें! मुझे उसे ढूंढना ही होगा।'

उसकी आँखों में उत्सुकता की चमक दिखाई दी, उसके होंठ खुले; लेकिन उसने उन्हें फिर से बंद कर लिया और जल्दबाजी में मुँह फेर लिया।

"'मुझे बताओ, मुझे बताओ कि वह कहाँ है, मिस कील्डर!'"

"एक और आंदोलन, जो पूरी तरह से अहंकार, जोश और आवेग से भरा हुआ है।"

"'मुझे जानना ही होगा। तुम मुझे बता सकते हो; तुम्हें मुझे बताना ही होगा।'"

"'मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा।'"

"वह मुझसे विदा लेने के लिए मुड़ी। क्या मैं अब उसे वैसे ही जाने दे सकता था जैसे वह हमेशा मुझसे विदा लेती थी? नहीं। मैं इतना आगे बढ़ चुका था कि इसे पूरा किए बिना नहीं रह सकता था; मैं अंत के इतना करीब आ चुका था कि इसे अंत तक पहुंचाए बिना नहीं रह सकता था। संदेह का सारा बोझ, अनिर्णय का सारा कचरा, एक ही बार में हटा देना चाहिए, और स्पष्ट सत्य का पता लगाना चाहिए। उसे अपना पक्ष लेना होगा, और मुझे बताना होगा कि वह क्या था; मुझे अपना पक्ष लेना होगा और उस पर कायम रहना होगा।"

"'एक मिनट, महोदया,' मैंने दरवाजा खोलने से पहले अपना हाथ दरवाजे के हैंडल पर रखते हुए कहा। 'आज सुबह हमारी लंबी बातचीत हुई है, लेकिन आखिरी शब्द अभी नहीं बोला गया है। अब आखिरी शब्द आपको बोलना है।'"

"'क्या मैं अंदर जा सकता हूँ?'"

"'नहीं; मैं दरवाजे की रखवाली करता हूँ। मैं तुम्हें अभी जाने देने से बेहतर मरना पसंद करूँगा, बिना वह शब्द बोले जो मैं चाहता हूँ।'"

"'तुम मुझसे क्या कहने की उम्मीद करते हो?'"

"'मैं जो सुनने के लिए मर रहा हूँ और मर रहा हूँ; जो मुझे सुनना ही होगा और मैं सुनूँगा; जिसे अब तुम दबाने की हिम्मत नहीं कर सकते।'

"'श्री मूर, मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कहना चाहते हैं। आप अपने जैसे नहीं लग रहे हैं।'"

मुझे लगता है कि मैं अपने सामान्य स्वभाव में नहीं था, क्योंकि मैंने उसे डरा दिया

था - यह मैं देख सकता था। यह सही था: उसे जीतने के लिए डरना ही होगा।

"'आप जानते हैं कि मेरा क्या मतलब है, और पहली बार मैं स्वयं आपके सामने खड़ा हूँ। मैंने ट्यूटर को हटा दिया है, और आपसे उस व्यक्ति का परिचय कराने का अनुरोध करता हूँ। और याद रखिए, वह एक सज्जन व्यक्ति हैं।'"

वह कांप उठी। उसने अपना हाथ मेरे हाथ पर ऐसे रखा मानो ताले से उसे छुड़ाने की कोशिश कर रही हो। मानो वह अपने कोमल स्पर्श से धातु को धातु से जोड़ने की कोशिश कर रही हो। उसे लगा कि वह शक्तिहीन है, और पीछे हट गई; और फिर से कांप उठी।

"मुझमें जो परिवर्तन आया, उसे मैं समझा नहीं सकता, लेकिन उसकी भावनाओं से मुझमें एक नई आत्मा का संचार हुआ। मैं न तो उसकी ज़मीनों और सोने से अभिभूत हुआ और न ही उत्साहित; मैंने उनके बारे में सोचा, न ही उनकी परवाह की। वे मेरे लिए कुछ भी नहीं थे - ऐसी तुच्छ चीज़ें जो मुझे विचलित नहीं कर सकती थीं। मैंने केवल उसे ही देखा - उसका युवा सुंदर रूप, उसकी सुंदरता, उसकी भव्यता, उसकी नश्वरता की विनम्रता।"

मैंने कहा, 'मेरे शिष्य।'

"'मेरे स्वामी,' यह धीमी आवाज में उत्तर दिया गया।"

"'मुझे तुम्हें कुछ बताना है।'"

वह झुकी हुई भौंहों और लटके हुए घुंघराले बालों के साथ इंतजार कर रही थी।

"मुझे तुम्हें बताना होगा कि चार वर्षों से तुम अपने गुरु के दिल में जगह बना रही हो, और अब तुम वहाँ जड़ जमा चुकी हो। मुझे यह घोषणा करनी होगी कि तुमने मुझे मोहित कर लिया है, समझ, अनुभव और सामाजिक स्थिति के अंतर के बावजूद। तुमने जिस तरह से देखा, बोला और व्यवहार किया; तुमने मुझे अपनी कमियाँ और गुण दिखाए — बल्कि सुंदरता, क्योंकि वे गुणों जितनी कठोर नहीं होतीं — कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ — अपने जीवन और शक्ति से तुमसे प्यार करता हूँ। अब यह बात मैं कह चुका हूँ।"

वह क्या कहे, यह सोच रही थी, लेकिन उसे शब्द नहीं मिल रहे थे। उसने खुद को संभालने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। मैंने पूरे जोश से दोहराया कि मैं उससे प्यार करता हूँ।

"'अच्छा, मिस्टर मूर, फिर क्या?' मुझे यही जवाब मिला, जो ऐसे स्वर में कहा

गया था जो अगर लड़खड़ाता न होता तो चिड़चिड़ा लगता।

"'क्या तुम्हारे पास मुझसे कहने के लिए कुछ नहीं है? क्या तुम्हें मुझसे कोई प्यार नहीं है?'"

"'थोड़ा सा।'

"मुझे प्रताड़ित नहीं किया जाना चाहिए। मैं फिलहाल खेलूंगा भी नहीं।"

"'मैं खेलना नहीं चाहता; मैं जाना चाहता हूँ।'"

"'मुझे आश्चर्य है कि तुम इस समय जाने की हिम्मत कैसे करते हो। तुम जाओगे! क्या! मेरा दिल अपने हाथ में लेकर, उसे अपने श्रृंगार पर रखकर अपनी पिनों से छेदोगे? मेरी उपस्थिति से दूर नहीं जाओगे, मेरी पहुँच से बाहर नहीं जाओगे, जब तक मुझे एक बंधक न मिल जाए—वादे के बदले वादा—तुम्हारा दिल मेरे दिल के बदले।'

"'जो चीज तुम ढूंढ रहे हो, वह कहीं खो गई है—काफी समय पहले गुम हो गई थी। मुझे जाकर उसे ढूंढने दो।'"

"'घोषणा करें कि आपकी चाबियां अक्सर यहीं रहती हैं — मेरे पास।'"

"'आपको पता होना चाहिए। और मेरी चाबियां कहां हैं, मिस्टर मूर? सचमुच मैंने उन्हें फिर से खो दिया है; और श्रीमती गिल को कुछ पैसे चाहिए, और मेरे पास इस छह पेंस के अलावा कुछ नहीं है।'

"उसने अपने एप्रन की जेब से सिक्का निकाला और उसे अपनी हथेली में दिखाया। मैं उससे मजाक कर सकता था, लेकिन यह उचित नहीं था; जीवन और मृत्यु दांव पर लगी थी। सिक्के और उसे पकड़े हुए हाथ पर तुरंत नियंत्रण पाते हुए, मैंने पूछा, 'क्या मैं तुम्हारे बिना मर जाऊँगा, या तुम्हारे लिए जीऊँगा?'"

"'जैसा चाहो वैसा करो। मैं तुम्हारे चुनाव को निर्धारित करने का अधिकार नहीं रखता।'"

"तुम स्वयं अपने मुख से बताओगे कि तुम मुझे निर्वासन की सजा देते हो या आशा की ओर बुलाते हो।"

"'जाओ; मैं अकेले रहना बर्दाश्त कर सकता हूँ।'"

"'शायद मैं भी तुम्हें छोड़कर जाने का दुख सहन कर सकता हूँ। लेकिन जवाब दो, शर्ली, मेरी शिष्या, मेरी महारानी— जवाब दो।'

"'अगर तुम चाहो तो मेरे बिना मर जाओ; अगर हिम्मत है तो मेरे लिए जियो।'

"'मैं तुमसे नहीं डरता, मेरी तेंदुआ। मैं तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ जीने का

साहस रखता हूँ, इस पल से लेकर अपनी मृत्यु तक। अब, तुम मेरी हो। मैं तुम्हें कभी जाने नहीं दूँगा। मेरा घर चाहे जो भी हो, मैंने अपनी पत्नी को चुन लिया है। अगर मैं इंग्लैंड में रहूँ, तो तुम भी इंग्लैंड में रहोगी; अगर मैं अटलांटिक महासागर पार करूँ, तो तुम भी पार करोगी। हमारा जीवन एक दूसरे से जुड़ा हुआ है, हमारा भाग्य आपस में गुंथा हुआ है।'

"'तो क्या हम बराबर हैं, महोदय? क्या हम अंततः बराबर हैं?'"

"'तुम मुझसे छोटे, कमजोर, दुर्बल और अज्ञानी हो।'"

"'क्या तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार करोगे, और कभी अत्याचार नहीं करोगे?'"

"'क्या तुम मुझे सांस लेने दोगे, और मुझे भ्रमित नहीं करोगे? तुम्हें अभी मुस्कुराना नहीं चाहिए। दुनिया मेरे चारों ओर घूम रही है और बदल रही है। सूरज एक चकाचौंध कर देने वाली लाल ज्वाला है, आकाश मेरे ऊपर घूमता हुआ एक बैंगनी भंवर है।'"

"मैं एक बलवान पुरुष हूँ, फिर भी बोलते-बोलते लड़खड़ा गया। सृष्टि की हर चीज़ अतिशयोक्तिपूर्ण लग रही थी। रंग और भी चटख हो गए, गति और भी तीव्र हो गई, जीवन और भी जीवंत हो गया। मैंने उसे एक पल के लिए भी मुश्किल से देखा, लेकिन उसकी आवाज़ सुनी—निर्दयी रूप से मधुर। वह करुणा में भी अपने आकर्षण को कम नहीं करना चाहती थी। शायद उसे पता ही नहीं था कि मैं क्या महसूस कर रहा हूँ।"

"'मेरा नाम 'तेंदुआ' रखो। याद रखना, 'तेंदुआ' पालतू नहीं होती,' उसने कहा।

"'चाहे तुम शांत हो या उग्र, जंगली हो या वश में, तुम मेरी हो।'"

"मुझे खुशी है कि मैं अपने रक्षक को जानता हूँ और उससे अभ्यस्त हूँ। मैं केवल उसकी आवाज़ का अनुसरण करूँगा; केवल उसका हाथ ही मुझे संभालेगा; केवल उसके चरणों में ही मैं विश्राम करूँगा।"

"मैं उसे वापस उसकी सीट पर ले गया और उसके बगल में बैठ गया। मैं उसे फिर से बोलते हुए सुनना चाहता था। मुझे उसकी आवाज़ और उसके शब्दों से कभी भी तृप्ति नहीं हो सकती थी।"

मैंने पूछा, 'तुम मुझसे कितना प्यार करते हो?'

"'अरे! तुम्हें पता है। मैं तुम्हें खुश नहीं करूंगा—मैं तुम्हारी चापलूसी नहीं करूंगा।'"

"'मुझे आधा भी नहीं पता; मेरा दिल तृप्त होने के लिए तड़प रहा है। अगर आपको पता होता कि यह कितना भूखा और उग्र है, तो आप एक-दो मीठे शब्दों से इसे शांत

करने में जल्दी करते।'

"'बेचारा टार्टर!' उसने मेरा हाथ छूते और थपथपाते हुए कहा— 'बेचारा, सच्चा दोस्त, शर्ली का लाडला और पसंदीदा, लेट जाओ!'

"लेकिन जब तक मुझे एक मीठा शब्द सुनने को न मिल जाए, मैं लेटूंगा नहीं।"

और अंत में उसने दे दी।

"'प्रिय लुई, मेरे प्रति वफादार रहना; मुझे कभी मत छोड़ना। मुझे जीवन की परवाह नहीं है जब तक मैं इसे तुम्हारे साथ न बिता सकूँ।'"

"'कुछ अधिक।'

"उसने मुझे एक मौका दिया; एक ही व्यंजन को दो बार परोसना उसकी आदत नहीं थी।"

"'महोदय,' वह चौंकते हुए बोली, 'आपने दोबारा कभी भी पैसे, गरीबी या असमानता जैसी घिनौनी बातों का ज़िक्र नहीं किया तो यह आपके लिए बेहद खतरनाक होगा। इन पागलपन भरे संदेहों से मुझे सताना बेहद खतरनाक होगा। मैं आपको चुनौती देती हूँ कि आप ऐसा करके दिखाएँ।'"

मेरा चेहरा लाल हो गया। मैंने एक बार फिर चाहा कि काश मैं इतना गरीब न होता या वह इतनी अमीर न होती। उसने मेरी क्षणिक पीड़ा को देखा; और फिर, सचमुच, उसने मुझे प्यार से सहलाया। पीड़ा के साथ-साथ, मैंने परमानंद का अनुभव किया।

"'श्रीमान मूर,' उसने मधुर, खुले और गंभीर चेहरे से ऊपर देखते हुए कहा, 'मुझे अच्छा बनना सिखाएँ और मेरी मदद करें। मैं आपसे संपत्ति के सभी बोझ और कर्तव्यों को अपने कंधों से उतारने के लिए नहीं कह रही हूँ, बल्कि आपसे इस बोझ को साझा करने और मुझे अपना हिस्सा बखूबी निभाने का तरीका दिखाने के लिए कह रही हूँ। आपका विवेक संतुलित है, आपका हृदय दयालु है, आपके सिद्धांत सुदृढ़ हैं। मैं जानती हूँ कि आप बुद्धिमान हैं; मैं महसूस करती हूँ कि आप परोपकारी हैं; मुझे विश्वास है कि आप कर्तव्यनिष्ठ हैं। जीवन भर मेरे साथी बनें; जहाँ मैं अज्ञानी हूँ, वहाँ मेरे मार्गदर्शक बनें; जहाँ मैं गलती करती हूँ, वहाँ मेरे गुरु बनें; हमेशा मेरे मित्र बने रहें!'"

"'ईश्वर मेरी मदद करे, मैं ऐसा करूंगा!'"

एक बार फिर, यदि आप चाहें तो खाली किताब से एक अंश, पाठक; यदि आपको यह पसंद नहीं है, तो इसे छोड़ दें: —

“सिम्पसन चले गए, लेकिन जाने से पहले इसका पता चल गया और उन्होंने इसका स्पष्टीकरण भी दे दिया। मेरे हाव-भाव या मेरी नज़र ने ज़रूर कुछ ज़ाहिर कर दिया होगा। मैं चुप था, लेकिन कभी-कभी सावधान रहना भूल जाता था। मैं कमरे में सामान्य से ज़्यादा देर रुका रहा; मैं उसकी मौजूदगी से दूर नहीं रह सकता था; मैं वापस कमरे में जाता और उसमें ऐसे मग्न हो जाता जैसे तातार सूरज में। अगर वह ओक के बैठक कक्ष से निकलती, तो मैं भी सहज रूप से उठकर चला जाता। उसने इस आदत के लिए मुझे एक से ज़्यादा बार डांटा। मैं यह सब हॉल या कहीं और उससे बात करने के एक अस्पष्ट, नासमझ इरादे से करता था। कल शाम ढलते समय हॉल की आग के पास पाँच मिनट के लिए वह मेरे साथ थी। हम अगल-बगल खड़े थे; वह मुझ पर चिल्ला रही थी और मैं उसकी आवाज़ का आनंद ले रहा था। युवतियाँ वहाँ से गुज़रीं और हमें देखा; हम अलग नहीं हुए। थोड़ी देर बाद वे फिर से गुज़रीं और फिर देखा। श्रीमती सिम्पसन आईं; हम हिले भी नहीं। श्री सिम्पसन ने भोजन कक्ष का दरवाज़ा खोला। शर्ली ने उनकी जासूसी भरी नज़र का पूरा बदला उन्हें दे दिया। उसने अपने होंठ सिकोड़े और उसने अपने बालों को झटक दिया। उसकी नज़र में एक साथ स्पष्टीकरण और चुनौती दोनों झलक रही थी। वह कह रही थी: 'मुझे मिस्टर मूर की संगति पसंद है, और मैं तुम्हें चुनौती देती हूँ कि मेरे स्वाद में कोई कमी निकाल कर दिखाओ।'

मैंने पूछा, ‘क्या आप चाहते हैं कि वह समझ जाए कि मामले कैसे हैं?’

“‘हाँ,’ उसने कहा; ‘लेकिन मैं घटनाक्रम को संयोग पर छोड़ देती हूँ। एक दृश्य अवश्य होगा। मैं न तो इसे आमंत्रित करती हूँ और न ही इससे डरती हूँ; बस, आपको उपस्थित रहना होगा, क्योंकि मैं अकेले उसका सामना करते-करते बेहद थक चुकी हूँ। मुझे उसे क्रोध में देखना पसंद नहीं है। तब वह अपने सभी शिष्टाचार और पारंपरिक वेशों को त्याग देता है, और उसके भीतर का असली इंसान वह होता है जिसे आप सामान्य, सपाट, नीच कहेंगे — दुष्ट और थोड़ा क्रूर। उसके विचार स्वच्छ नहीं हैं, श्री मूर; उन्हें कोमल साबुन और मिट्टी से साफ करने की आवश्यकता है। मुझे लगता है, अगर वह अपनी कल्पना को श्रीमती गिल की टोकरी में मिला दे, और उन्हें इसे अपने तांबे के बर्तन में बारिश के पानी और ब्लीचिंग पाउडर के साथ उबालने दे (मुझे उम्मीद है कि आप मुझे एक ठीक-ठाक धोबिन समझेंगे), तो इससे उसे बहुत लाभ होगा।’

आज सुबह, मुझे लगा कि वह कुछ जल्दी नीचे उतर गई है, इसलिए मैं तुरंत नीचे

चला गया। मैं धोखा नहीं खाया था। वह नाश्ते के कमरे में काम में व्यस्त थी, जहाँ नौकरानी व्यवस्था पूरी कर रही थी और धूल झाड़ रही थी। वह हेनरी के लिए कोई छोटा सा तोहफा बनाने के लिए जल्दी उठ गई थी। मुझे बस ठंडा सा स्वागत मिला, जिसे मैंने तब तक स्वीकार किया जब तक वह चली नहीं गई, और चुपचाप अपनी किताब खिड़की के पास वाली सीट पर रख दी। जब हम अकेले थे तब भी मैंने उसे परेशान नहीं किया। उसकी नज़रों के सामने बैठना एक खुशी थी, और सुबह-सुबह की सही खुशी - शांत, अपूर्ण, लेकिन प्रगतिशील। अगर मैं दखल देता, तो मुझे पता था कि मुझे अस्वीकृति का सामना करना पड़ता। उसके माथे पर लिखा था, 'प्रस्तावों के लिए घर पर नहीं हूँ'। इसलिए मैं पढ़ता रहा, बीच-बीच में उसकी ओर देखता रहा, उसके चेहरे को नरम और खिलते हुए देखता रहा क्योंकि उसे महसूस हुआ कि मैं उसके मूड का सम्मान करता हूँ, और उस पल की सौम्य संतुष्टि का आनंद लेता रहा।

हमारे बीच की दूरी कम होती गई, और हल्की बर्फ धीरे-धीरे पिघलने लगी। एक घंटा भी नहीं बीता था कि मैं उसके पास पहुँच गया, उसे सिलाई करते हुए देख रहा था, उसकी प्यारी मुस्कान और हंसमुख शब्दों को महसूस कर रहा था, जो मुझ पर भरपूर बरस रहे थे। हम बैठे थे, जैसे बैठने का हमारा अधिकार था, अगल-बगल; मेरा हाथ उसकी कुर्सी पर टिका था; मैं उसके इतने करीब था कि उसके काम के टांके गिन सकूँ और उसकी सुई की नोक देख सकूँ। अचानक दरवाजा खुल गया।

"मुझे लगता है, अगर मैं उसी समय उससे दूर हो जाता, तो वह मुझे तुच्छ समझती। मेरे शांत स्वभाव के कारण, मैं शायद ही कभी विचलित होता हूँ। जब मैं अच्छी स्थिति में होता हूँ, आराम से होता हूँ, तो मैं जल्दी विचलित नहीं होता। मैं बहुत अच्छी स्थिति में था - इसलिए अटल था। मेरे शरीर में कोई हलचल नहीं हुई। मैंने दरवाजे की ओर मुश्किल से ही देखा।"

"'सुप्रभात, चाचा जी,' उसने उस व्यक्ति को संबोधित करते हुए कहा, जो दहलीज पर सन्नाटे की अवस्था में रुक गया था।"

"'क्या आप काफी देर से नीचे मिस्टर मूर के साथ अकेली थीं, मिस कील्डर?'"

"हां, बहुत लंबा समय हो गया था। हम दोनों सुबह जल्दी नीचे आ गए थे; तब तो मुश्किल से उजाला हुआ था।"

"'यह कार्यवाही अनुचित है—'

"'शुरुआत में तो मैं काफी नाराज़ और असभ्य था; लेकिन आप देखेंगे कि अब हम

दोस्त हैं।'"

"'मैं जितना आप चाहते हैं उससे कहीं अधिक समझता हूँ।'

"'बिल्कुल नहीं, महोदय,' मैंने कहा; 'हमारे पास कोई भेस नहीं है। क्या आप मुझे यह संकेत देने की अनुमति देंगे कि यदि आपको आगे कोई टिप्पणी करनी हो तो वह मुझसे ही की जा सकती है? अब से मैं मिस कील्डर और सभी परेशानियों के बीच खड़ा रहूंगा।'"

"'तुम! मिस कील्डर से तुम्हारा क्या लेना-देना है?'"

"'उसकी रक्षा करना, उस पर नज़र रखना, उसकी सेवा करना।'"

"'आप, महोदय — आप, शिक्षक?'"

"'महोदय, अपमान का एक भी शब्द नहीं,' उसने बीच में कहा; 'इस घर में श्री मूर के प्रति अनादर का एक भी शब्द नहीं।'"

"'क्या आप उसका पक्ष लेते हैं?'

"'उसका हिस्सा? ओह हाँ!'"

"वह अचानक स्नेहपूर्ण भाव से मेरी ओर मुड़ी, जिसका जवाब मैंने अपनी बांह से उसे घेरकर दिया। हम दोनों उठ खड़े हुए।"

"'हे भगवान!' दरवाजे पर कांपती हुई मॉर्निंग गाउन पहने महिला की आवाज आई। मुझे लगता है कि गेद, मिस्टर सिम्पसन के लारेस का उपनाम होगा। जब भी वह मुश्किल में पड़ते हैं, तो हमेशा इसी आदर्श का आह्वान करते हैं।"

"'आगे आइए, चाचा जी; आपको सब कुछ सुनना होगा। — लुई, उसे सब कुछ बता दीजिए।'"

"'हिम्मत है तो बोल कर दिखाओ – भिखारी! धूर्त! पाखंडी ढोंगी! नीच, छल करने वाला, बदनाम नौकर! – मेरी भतीजी से दूर रहो, महोदय। उसे जाने दो!'"

"वह पूरी ताकत से मुझसे लिपट गई। उसने कहा, 'मैं अपने होने वाले पति के पास हूँ। कौन हिम्मत करेगा उसे या मुझे छूने की?'"

"'उसका पति!' उसने अपने हाथ उठाए और फैलाए। वह एक कुर्सी पर बैठ गया।"

"'कुछ समय पहले तुम यह जानने के लिए बहुत उत्सुक थे कि मैं किससे शादी करने जा रही हूँ। मेरा इरादा तब बन चुका था, लेकिन बताने लायक परिपक्व नहीं था। अब यह परिपक्व, धूप में पका हुआ, एकदम सही है। लो वो लाल आड़ू — लो लुई मूर!'"

"'परन्तु' (क्रूरतापूर्वक) 'तुम उसे नहीं पा सकोगे; वह तुम्हें नहीं पा सकेगा।'

"'मैं दूसरा बच्चा पैदा करने से पहले मरना पसंद करूंगी। अगर मुझे वह न मिले तो मैं मर जाऊंगी।'"

उन्होंने ऐसे शब्द कहे जिनसे यह पृष्ठ कभी दूषित नहीं होगा।

"उसका चेहरा मौत की तरह पीला पड़ गया; वह पूरी तरह कांप रही थी; उसकी सारी ताकत खत्म हो गई थी। मैंने उसे सोफे पर लिटाया; बस यह देखने के लिए देखा कि कहीं वह बेहोश तो नहीं हो गई — जिस पर उसने एक दिव्य मुस्कान के साथ मुझे आश्वस्त किया। मैंने उसे चूमा; और फिर, अगर मैं मर जाऊं, तो अगले पांच मिनट में जो कुछ हुआ, उसका स्पष्ट वर्णन मैं नहीं कर सकता। उसने तब से — आंसुओं, हंसी और कांपते हुए — मुझे बताया है कि मैं भयानक हो गया था, और मैंने खुद को शैतान के हवाले कर दिया था। वह कहती है कि मैं उसे छोड़कर कमरे में एक छलांग लगाकर चला गया; कि मिस्टर सिम्पसन दरवाजे से ऐसे गायब हो गए जैसे तोप से दागा गया हो। मैं भी गायब हो गया, और उसने मिसेज गिल की चीख सुनी।"

जब मुझे होश आया, तब भी श्रीमती गिल चीख रही थीं। मैं उस समय दूसरे कमरे में थी—शायद ओक के कमरे में। मैंने सिम्पसन को अपने सामने कुर्सी पर जकड़ रखा था और मेरा हाथ उसकी टाई पर था। उसकी आँखें ऊपर-नीचे घूम रही थीं; मुझे लगता है मैं उसका गला घोंट रही थी। नौकरानी हाथ मलते हुए मुझसे विनती कर रही थी कि मैं रुक जाऊं। मैं उसी क्षण रुक गई और एकदम शांत हो गई। लेकिन मैंने श्रीमती गिल से कहा कि वह तुरंत रेड-हाउस इन की गाड़ी लाएं और श्री सिम्पसन को बता दिया कि गाड़ी आते ही उन्हें फील्डहेड से निकल जाना होगा। हालांकि वह आधे डरे हुए थे, फिर भी उन्होंने मना कर दिया। पहले वाले आदेश को दोहराते हुए, मैंने एक कांस्टेबल को बुलाने का आदेश भी दे दिया। मैंने कहा, 'तुम्हें जाना ही होगा, चाहे जैसे भी हो।'

"उसने मुकदमा करने की धमकी दी; मुझे कोई परवाह नहीं थी। मैं पहले भी एक बार उसके ऊपर खड़ा हो चुका था, इतना कठोर तो नहीं, लेकिन उतना ही सख्त। एक रात की बात है जब सिम्पसन ग्रोव स्थित घर में चोरों ने घुसपैठ की कोशिश की थी, और अपनी दयनीय कायरता में उसने बचाव करने की हिम्मत किए बिना, व्यर्थ ही शोर मचा दिया होता। तब मुझे उसके परिवार और उसके घर की रक्षा के लिए उसे काबू में करना पड़ा था - और मैं सफल रहा था। अब मैं उसके साथ तब तक रहा जब तक

गाड़ी नहीं आ गई। मैंने उसे गाड़ी तक पहुंचाया, वह पूरे रास्ते मुझे डांटता रहा। वह बुरी तरह घबराया हुआ था, साथ ही क्रोधित भी। वह मेरा विरोध करना चाहता था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे करे। उसने अपनी पत्नी और बेटियों को बुलाया। मैंने कहा कि वे तैयार होते ही उसके पीछे आ जाएं। उसके चेहरे पर जो गुस्सा, क्रोध और बेचैनी थी, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता था, लेकिन वह ऐसा क्रोध था जो किसी काम को अंजाम देने में असमर्थ था। उस आदमी को, अगर ठीक से संभाला जाए, तो वह हमेशा के लिए शक्तिहीन रहेगा। मुझे पता है कि वह कानून के नाम पर कभी मेरे खिलाफ कार्रवाई नहीं करेगा। मुझे पता है उनकी पत्नी, जिन पर वे छोटी-छोटी बातों पर अत्याचार करते हैं, महत्वपूर्ण मामलों में उनका मार्गदर्शन करती हैं। मैंने उनके बेटे के प्रति अपनी निष्ठा से उनकी अमर माँ का आभार लंबे समय से अर्जित किया है। हेनरी की कुछ बीमारियों में मैंने उनकी देखभाल की है - उन्होंने कहा, किसी भी महिला से बेहतर। वे इसे कभी नहीं भूलेंगी। आज वे और उनकी बेटियाँ मौन क्रोध और व्याकुलता में मुझे छोड़कर चली गईं; लेकिन वे मेरा सम्मान करती हैं। जब मैंने हेनरी को गाड़ी में उठाया और उन्हें उनके बगल में बिठाया, तो वह मेरी गर्दन से लिपट गया, जब मैंने उन्हें गर्म रखने के लिए उनके कपड़े ठीक किए, हालाँकि उन्होंने अपना सिर मुझसे फेर लिया, मैंने उनकी आँखों में आँसू आते देखे। अब वे और भी जोश से मेरा समर्थन करेंगी क्योंकि वे मुझसे क्रोधित होकर चली गई हैं। मुझे इस बात की खुशी है - अपने लिए नहीं, बल्कि अपने जीवन और आदर्श - मेरी शर्ली के लिए।

एक सप्ताह बाद, वह फिर लिखते हैं: — "मैं अब स्टिलब्रो में हूँ। मैंने एक मित्र के साथ अस्थायी ठिकाना बना लिया है — एक पेशेवर व्यक्ति, जिसके व्यवसाय में मैं उपयोगी हो सकता हूँ। हर दिन मैं फील्डहेड जाता हूँ। कब तक मैं उस जगह को अपना घर और उसकी प्रेमिका को अपना कह पाऊँगा? मैं सहज नहीं हूँ, शांत नहीं हूँ; मैं बेचैन हूँ, कभी-कभी पीड़ा से भरा हुआ। उसे अब देखकर ऐसा लगता है मानो उसने कभी अपना गाल मेरे कंधे पर नहीं लगाया हो, या कोमलता या विश्वास से मुझसे लिपटी न हो। मैं असुरक्षित महसूस करता हूँ; वह मुझे दुखी कर देती है। जब मैं उससे मिलने जाता हूँ तो वह मुझसे दूर रहती है; वह मेरी पहुँच से बाहर हो जाती है। आज एक बार मैंने उसका चेहरा ऊपर उठाया, उसकी गहरी, काली आँखों में पूरी तरह से देखने का निश्चय किया। वहाँ मैंने जो पढ़ा उसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है!

पैंथर! सुंदर वन-जन्मी! धूर्त, निर्लज्ज, अद्वितीय स्वभाव! वह अपनी जंजीर कुतरती है; मैं उसके सफेद दाँतों को स्टील पर काम करते देखता हूँ! वह अपने जंगली जंगलों के सपने देखती है और कुंवारी स्वतंत्रता के लिए तड़पती है। काश सिम्पसन फिर से आ जाए।" और उसे फिर से अपनी बाहों में भरने के लिए विवश करूँ। काश, उसे मुझे खोने का खतरा होता, जैसे मुझे उसे खोने का खतरा है। नहीं; मुझे अंतिम हानि का डर नहीं है, बल्कि लंबे विलंब का डर है।

"अब रात हो चुकी है—आधी रात। मैंने दोपहर और शाम फील्डहेड में बिताई। कुछ घंटे पहले वह मेरे पास से गुजरी, ओक की सीढ़ियों से नीचे हॉल की ओर आते हुए। उसे नहीं पता था कि मैं गोधूलि बेला में, सीढ़ियों की खिड़की के पास, पाले से चमकते तारामंडलों को देख रहा था। वह कितनी करीब से रेलिंग से सटकर चल रही थी! उसकी बड़ी-बड़ी आँखें कितनी शर्मीली होकर मुझ पर चमक रही थीं! वह कितनी क्षणभंगुर, चंचल और अस्थिर लग रही थी—उत्तरी धारा की तरह पतली और तेज!"

मैं उसके पीछे-पीछे ड्राइंग रूम में गई। श्रीमती प्रायर और कैरोलिन हेलस्टोन दोनों वहाँ थीं; उसने उन्हें कुछ देर के लिए अपने साथ रहने के लिए बुलाया था। अपनी सफेद शाम की पोशाक में, लहराते लंबे बालों के साथ, शांत कदमों से, पीले गालों से, रात और बिजली से भरी आँखों से, वह मुझे किसी आत्मा जैसी लग रही थी—तत्वों से बनी कोई वस्तु, हवा और ज्वाला की संतान, किरण और वर्षा की बूंद की पुत्री—ऐसी वस्तु जिसे कभी पकड़ा, रोका या स्थिर नहीं किया जा सकता। काश मैं उसकी ओर देखने से बच पाती, जब वह इधर-उधर घूम रही थी, लेकिन यह असंभव था। मैंने अन्य महिलाओं से यथासंभव बात की, लेकिन फिर भी मैं उसे देखती रही। वह बहुत शांत थी; मुझे लगता है उसने मुझसे कभी बात नहीं की—यहाँ तक कि जब उसने मुझे चाय की पेशकश की तब भी नहीं। संयोग से श्रीमती गिल ने उसे एक मिनट के लिए बाहर बुलाया। मैं चाँदनी रात वाले हॉल में गई, इस इरादे से कि जब वह वापस आए तो उससे कुछ बात कर सकूँ; और इसमें मैं असफल नहीं हुई।

"'मिस कील्डर, एक पल रुकिए,' मैंने उनसे मिलते हुए कहा।

"'क्यों? हॉल बहुत ठंडा है।'"

"'मुझे ठंड नहीं लग रही; मेरे पास तुम्हें भी ठंड नहीं लगनी चाहिए।'"

लेकिन मुझे कंपकंपी आ रही है।

"'डर के साथ, मैं विश्वास करता हूँ। तुम्हें मुझसे डर क्यों लगता है? तुम शांत और

दूर-दूर रहते हो। क्यों?’

“‘मुझे चांदनी रात में किसी विशालकाय काले जिन्न से मिलने का डर लग सकता है।’”

“‘नहीं—नहीं आगे बढ़ो! थोड़ी देर मेरे साथ रुको। चलो कुछ शांत बातें करते हैं। तीन दिन हो गए हैं जब मैंने तुमसे अकेले में बात की थी। ऐसे बदलाव बहुत क्रूर होते हैं।’”

“‘मैं क्रूर नहीं बनना चाहती,’ उसने बड़ी नरमी से जवाब दिया। वास्तव में उसके पूरे व्यवहार में कोमलता थी—उसके चेहरे में, उसकी आवाज़ में; लेकिन साथ ही एक संकोच भी था, और एक क्षणभंगुर, लुप्त होती, अगोचर सी अनुभूति भी थी।”

“‘तुम मुझे वाकई तकलीफ दे रही हो,’ मैंने कहा। ‘अभी एक हफ्ता भी नहीं बीता जब तुमने मुझे अपना भावी पति कहा था और मेरे साथ वैसा ही व्यवहार किया था। अब मैं एक बार फिर तुम्हारा शिक्षक बन गया हूँ। मुझे मिस्टर मूर और सर कहकर संबोधित किया जाता है। तुम्हारे होंठ लुई को भूल चुके हैं।’”

“‘नहीं, लुई, नहीं। यह एक आसान, सहज नाम है - जिसे जल्दी भुलाया नहीं जा सकता।’”

“‘तो लुई के प्रति सौहार्दपूर्ण व्यवहार करो; उसके पास जाओ—उसे आने दो।’

“‘मैं सौहार्दपूर्ण हूँ,’ उसने एक सफेद छाया की तरह अलग-थलग खड़े होकर कहा।

“‘आपकी आवाज बहुत मधुर और बहुत धीमी है,’ मैंने धीरे से आगे बढ़ते हुए उत्तर दिया। ‘आप शांत लग रही हैं, लेकिन फिर भी चौंकी हुई हैं।’”

“‘नहीं—बिल्कुल शांत, और किसी चीज से नहीं डरती,’ उसने मुझे आश्वस्त किया।”

“‘केवल आपके भक्त का।’

मैंने उसके पैरों के पास पड़े झंडों के सामने घुटने टेक दिए।

“‘देखिए, मैं एक नई दुनिया में हूँ, श्री मूर। मैं खुद को नहीं जानती; मैं आपको नहीं जानती। लेकिन उठिए। जब आप उठेंगे तो मुझे बेचैनी और परेशानी महसूस होगी।’

मैंने आज्ञा का पालन किया। उस रवैये को लंबे समय तक बनाए रखना मेरे लिए उचित नहीं होता। मैंने उसके लिए शांति और विश्वास की कामना की, और यह व्यर्थ नहीं था। उसने मुझ पर फिर से भरोसा किया और मुझसे लिपट गई।

“‘अब, शर्ली,’ मैंने कहा, ‘तुम समझ सकती हो कि मैं अपनी वर्तमान अनिश्चित,

अस्थिर स्थिति में बिल्कुल भी खुश नहीं हूँ।'"

"'ओह हाँ, तुम खुश हो!' वह जल्दी से चिल्लाई। 'तुम्हें पता नहीं है कि तुम कितने खुश हो। कोई भी बदलाव बुरा ही होगा।'

"'खुश हो या न हो, मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता। आप इतने उदार हैं कि इसकी मांग नहीं करते।'"

"'समझदारी से काम लो, लुई; धैर्य रखो! मुझे तुम इसलिए पसंद हो क्योंकि तुम धैर्यवान हो।'"

"'मुझे अब और पसंद मत करो; इसके बजाय मुझसे प्यार करो। हमारी शादी की तारीख तय करो; आज रात इस बारे में सोचो और फैसला करो।'"

"उसने एक धीमी सी आवाज़ निकाली, अस्पष्ट लेकिन भावपूर्ण; मेरी बाहों से निकल गई, या मानो पिघल गई हो - और मैंने उसे खो दिया।"

अध्याय 37.

समापन।

जी हाँ, पाठक, अब हमें हिसाब-किताब करना होगा। मुझे बस संक्षेप में उन कुछ व्यक्तियों के अंतिम भाग्य का वर्णन करना है जिनसे हमारा परिचय इस वृत्तांत में हुआ है, और फिर हम दोनों को हाथ मिलाना होगा और फिलहाल के लिए अलग होना होगा।

आइए अब पुरोहितों की ओर रुख करें—उन लोगों की ओर जो बेहद प्रिय हैं, लेकिन लंबे समय से उपेक्षित रहे हैं। आगे आइए, हे विनम्र प्रतिभा! मुझे लगता है कि

मैलोन तुरंत इस आह्वान का उत्तर देते हैं। वे अपने बारे में सुनकर ही पहचान लेते हैं।

नहीं, पीटर ऑगस्टस; हम आपसे कुछ नहीं कह सकते। यह ठीक नहीं है। आपके कर्मों और नियति की मार्मिक कहानी सुनाना हमारे लिए असंभव है। क्या आप नहीं जानते, पीटर, कि एक विवेकशील जनता की अपनी कुछ नक़लें होती हैं; कि बिना लाग-लपेट के सच काम नहीं आता; कि सीधे-सादे तथ्य पचते नहीं? क्या आप नहीं जानते कि असली सूअर की चीख आज भी उतनी ही अप्रिय है जितनी पहले हुआ करती थी? अगर मैं आपके जीवन और बातचीत की त्रासदी बता दूँ, तो जनता चीख-पुकार मचाते हुए उन्माद में चली जाएगी, और जले हुए पंखों और नमक के लिए बेतहाशा शोर मचेगा। कहीं "असंभव!" कहा जाएगा; कहीं "झूठ!"; कहीं "कलात्मक नहीं!" कहा जाएगा। ध्यान से सुनो। जब भी आप वास्तविक, सरल सत्य प्रस्तुत करते हैं, तो किसी न किसी तरह उसे हमेशा झूठ करार दिया जाता है - वे इसे अस्वीकार कर देते हैं, इसे त्याग देते हैं, इसे चर्च पर थोप देते हैं; जबकि तुम्हारी अपनी कल्पना की उपज, मात्र एक मनगढ़ंत कहानी, सरासर काल्पनिक रचना को अपनाया जाता है, दुलार किया जाता है, सुंदर, उचित, मधुर और स्वाभाविक कहा जाता है – उस छोटे, नासमझ बच्चे को सारी सुख-सुविधाएँ मिलती हैं, और ईमानदार, नेक बच्चे को सारी मार पड़ती है। यही संसार का नियम है, पीटर; और चूंकि तुम एक जायज़, असभ्य, गंदे और शरारती बच्चे हो, इसलिए तुम्हें चुप रहना होगा।

मिस्टर स्वीटिंग के लिए रास्ता बनाइए।

ये रहे वो, अपनी पत्नी के साथ - यॉर्कशायर की सबसे खूबसूरत और सबसे प्रभावशाली महिला - श्रीमती स्वीटिंग, जिनका पहले नाम मिस डोरा साइक्स था। उनका विवाह अत्यंत सुखद परिस्थितियों में हुआ, क्योंकि श्री स्वीटिंग को हाल ही में एक अच्छी-खासी संपत्ति मिली थी और श्री साइक्स के पास डोरा को एक अच्छा-खासा हिस्सा देने की आर्थिक क्षमता थी। वे अपने पैरिशवासियों और मित्रों के विशाल समूह के प्रिय बनकर लंबे समय तक सुखी रहे।

वाह! मुझे लगता है वार्निश बहुत अच्छे से लगाया गया है।

श्रीमान डोने, आगे बढ़िए।

यह सज्जन असाधारण निकले—पाठक, हम दोनों ने उनकी अपेक्षा से कहीं बेहतर। उन्होंने भी एक अत्यंत समझदार, शांत और शालीन महिला से विवाह किया। यह विवाह उनके लिए वरदान साबित हुआ। वे एक आदर्श गृहस्थ बने और एक सक्रिय

पादरी (उन्होंने अपने अंतिम दिन तक पादरी का पद ग्रहण करने से स्वेच्छापूर्वक इनकार किया)। वे प्यालों और थालियों को बेहतरीन पॉलिश पाउडर से चमकाते थे; वेदी और मंदिर के फर्नीचर की देखभाल एक असबाबवाले की लगन और एक फर्नीचर निर्माता की सावधानी से करते थे। उनका छोटा विद्यालय, उनका छोटा गिरजाघर, उनका छोटा पादरी निवास, सब उन्हीं की देन थे; और उन्होंने उनका गौरव बढ़ाया। प्रत्येक अपने आप में एक आदर्श था। यदि वास्तुकला में एकरूपता और सुरुचि, धर्म में निरंतरता और निष्ठा के समान होती, तो श्री डोने ईसाई समुदाय के कितने महान चरवाहे होते! एक कला ऐसी थी जिसमें श्री डोने से बढ़कर कोई मनुष्य नहीं था: वह थी भीख माँगने की कला। उन्होंने अपने दम पर, बिना किसी सहायता के, अपनी सभी परियोजनाओं के लिए धन जुटाया। इस मामले में उनकी योजना और कार्यशैली बिल्कुल अनूठी थी। उन्होंने हर किसी से भीख मांगी—गरीब झोपड़ी के लड़के से लेकर राजमहल के ड्यूक तक। उन्होंने दूर-दूर तक भीख मांगने वाले पत्र भेजे—वृद्ध महारानी शार्लट को, उनकी बेटियों राजकुमारियों को, उनके बेटों राजमहल के ड्यूकों को, प्रिंस रीजेंट को, लॉर्ड कैसलरेघ को, और उस समय पद पर आसीन हर मंत्री को; और इससे भी अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि उन्होंने इन सभी व्यक्तियों से कुछ न कुछ हासिल कर लिया। यह दर्ज है कि उन्होंने कंजूस महारानी शार्लट से पांच पाउंड और उनके अय्याश बड़े बेटे से दो गिनी प्राप्त किए। जब श्री डोने भीख मांगने निकलते थे, तो वे पीतल के कवच से पूरी तरह लैस होते थे। अगर आपने कल सौ पाउंड दिए थे, तो उनके लिए यह कोई कारण नहीं था कि आप आज दो सौ पाउंड न दें। वे आपसे सीधे मुंह पर ऐसा कहते थे, और दस में से एक बार में आपसे पैसे निकलवा लेते थे। लोग उससे छुटकारा पाना चाहते थे। आखिरकार, उसने पैसों का कुछ अच्छा इस्तेमाल किया था। वह अपने समय और पीढ़ी में उपयोगी था।

शायद मुझे यह बताना चाहिए कि श्री मैलोन के ब्रायरफील्ड पैरिश से असमय और अचानक चले जाने पर (पाठक, आप नहीं जान सकते कि यह कैसे हुआ; सुंदर और मनभावन चीजों के प्रति आपके अनूठे प्रेम के कारण आपकी जिज्ञासा को दबाना पड़ेगा), उनके उत्तराधिकारी के रूप में एक और आयरिश पादरी, श्री मैकार्थी आए। मुझे आपको सच्चाई से यह बताते हुए खुशी हो रही है कि इस सज्जन ने अपने देश को उतना ही गौरव दिलाया जितना मैलोन ने उसे बदनाम किया था। उन्होंने स्वयं को उतना ही सभ्य, शालीन और कर्तव्यनिष्ठ साबित किया जितना पीटर उद्दंड, शोरगुल

करने वाला और... - यह अंतिम विशेषण मैं नहीं लिख रहा हूँ, क्योंकि इससे राज़ खुल जाएगा। उन्होंने पैरिश में पूरी निष्ठा से काम किया। उनके नेतृत्व में रविवार और दिन के स्कूल, दोनों ही हरे-भरे पेड़ों की तरह फले-फूले। मनुष्य होने के नाते, उनमें भी कुछ कमियाँ थीं। हालाँकि, ये उचित, स्थिर और पादरी संबंधी कमियाँ थीं - जिन्हें कई लोग सद्गुण कहेंगे। किसी असंतुष्ट के साथ चाय पर आमंत्रित होने की स्थिति उन्हें एक सप्ताह के लिए विचलित कर देती थी। चर्च में एक क्वेकर को टोपी पहने देखना, एक गैर-बपतिस्माधारी व्यक्ति को ईसाई रीति-रिवाजों के साथ दफनाए जाने का विचार— ये सब बातें श्री मैकार्थी के शारीरिक और मानसिक संतुलन में अजीब उथल-पुथल मचा सकती थीं। अन्यथा वे समझदार और तर्कसंगत, मेहनती और परोपकारी थे।

मुझे पूरा यकीन है कि न्यायप्रिय जनता ने इससे पहले यह टिप्पणी की होगी कि मैंने अब तक श्री रॉबर्ट मूर के हत्यारे का पीछा करने, उसे पकड़ने और उसे उचित दंड दिलाने में घोर लापरवाही बरती है। यहाँ मेरे इच्छुक पाठकों को एक ऐसे नृत्य में ले जाने का बढ़िया अवसर था, जो एक साथ शालीन और रोमांचक था - कानून और धर्म का नृत्य, कालकोठरी, कटघरे और फांसी के फंदे का नृत्य। पाठक, आपको यह पसंद आ सकता था, लेकिन मुझे नहीं। मैं और मेरा विषय तुरंत झगड़ पड़ते, और फिर मैं टूट जाता। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तथ्यों ने मुझे इस प्रयास से पूरी तरह बरी कर दिया। हत्यारे को कभी दंडित नहीं किया गया, क्योंकि वह कभी पकड़ा ही नहीं गया - और यह इस तथ्य का परिणाम था कि उसका कभी पीछा नहीं किया गया। मजिस्ट्रेट ऐसे हिले-डुले, मानो वे उठकर कोई वीर कार्य करने वाले हों; लेकिन चूंकि मूर स्वयं, पहले की तरह उन्हें प्रेरित करने और नेतृत्व करने के बजाय, अपनी छोटी सी कुटिया के सोफे पर चुपचाप लेटा रहा, दबी आवाज में हंसता रहा और अपने पीले, विदेशी चेहरे के हर भाव से उपहास करता रहा, इसलिए उन्होंने इस मामले को यहीं समाप्त करने का निर्णय लिया और कुछ अनिवार्य औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद, बुद्धिमानी से इसे चुपचाप छोड़ देने का फैसला किया, और उन्होंने ऐसा ही किया।

मिस्टर मूर जानते थे कि उन्हें गोली किसने मारी थी, और ब्रायर्फ़ील्ड के सभी लोग भी यही जानते थे। वह कोई और नहीं बल्कि माइकल हार्टली था, वही सनकी बुनकर जिसका ज़िक्र पहले भी हो चुका है, धर्म में कट्टर विरोधी और राजनीति में सनकी समतावादी। मूर पर हमले के एक साल बाद उस बेचारे की मौत दिल दहला देने वाले

मानसिक आघात से हो गई, और रॉबर्ट ने उसकी दुखी विधवा को उसके अंतिम संस्कार के लिए एक गिनी दी।

सर्दी का मौसम बीत चुका है; वसंत ऋतु अपने सुखद और सुखद अंदाज़ में लौट आई है, जिसमें कभी धूप तो कभी छाया रहती है। अब हम ग्रीष्म ऋतु के चरम पर हैं—जून के मध्य में—यानी जून 1812 में।

यह झुलसा देने वाला मौसम है। हवा गहरे नीले और लाल-सुनहरे रंग की है। यह समय के अनुकूल है; यह युग के अनुकूल है; यह राष्ट्रों की वर्तमान भावना के अनुकूल है। उन्नीसवीं सदी अपनी विशाल किशोरावस्था में अय्याशी कर रही है; टाइटन बालक अपने खेल में पहाड़ों को उखाड़ फेंकता है और अपने जंगली खेल में चट्टानों को उछालता है। इस ग्रीष्म ऋतु में बोनापार्ट घोड़े पर सवार है; वह और उसकी सेना रूसी रेगिस्तानों को छान रही है। उसके साथ फ्रांसीसी और पोलिश, इतालवी और राइन नदी के बच्चे हैं, जिनकी संख्या छह लाख है। वह पुराने मॉस्को की ओर कूच करता है। पुराने मॉस्को की दीवारों के नीचे एक असभ्य कोसैक उसका इंतजार कर रहा है। बर्बर और दृढ़ निश्चयी! वह असीम विनाश के भय से मुक्त होकर प्रतीक्षा कर रहा है। वह एक बर्फीले बादल पर भरोसा रखता है; जंगल, हवा और ओलावृष्टि उसकी शरण हैं; उसके सहयोगी तत्व हैं - हवा, आग, पानी। और ये कौन हैं? तीन भयानक महादूत जो यहोवा के सिंहासन के सामने सदा विराजमान रहते हैं। वे सफेद वस्त्र पहने, सुनहरी कमरबंद से बंधे खड़े हैं; वे परमेश्वर के क्रोध से भरे प्याले उठाते हैं। उनका समय प्रतिशोध का दिन है; उनका संकेत, सेनाओं के प्रभु का वचन है, जो "उनकी महिमा की वाणी से गर्जना करता है।"

“क्या तू बर्फ के खजाने में प्रवेश कर चुका है? या क्या तूने ओलों के खजाने देखे हैं, जिन्हें मैंने संकट के समय, युद्ध और लड़ाई के दिन के लिए सुरक्षित रखा है?”

“अपने-अपने रास्ते जाओ। परमेश्वर के क्रोध के पात्र पृथ्वी पर उंडेल दो।”

यह हो चुका है। धरती आग से झुलस गई है; समुद्र "मृत व्यक्ति के रक्त के समान" हो गया है; द्वीप गायब हो गए हैं; पहाड़ नहीं मिलते।

इसी वर्ष लॉर्ड वेलिंगटन ने स्पेन की बागडोर संभाली। उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए उन्हें सेनापति बनाया। इसी वर्ष उन्होंने बडाजोस पर कब्जा किया, विटोरिया के मैदान में युद्ध लड़ा, पम्पेलुना पर कब्जा किया, सैन सेबेस्टियन पर आक्रमण किया;

इसी वर्ष उन्होंने सलामांका पर विजय प्राप्त की।

मैनचेस्टर के लोगों, युद्ध से जुड़े तथ्यों के इस संक्षिप्त विवरण के लिए क्षमा चाहता हूँ, लेकिन इसका कोई महत्व नहीं है। लॉर्ड वेलिंगटन आपके लिए अब केवल एक बूढ़े और कमजोर व्यक्ति हैं। मुझे लगता है कि आपमें से कुछ लोगों ने उन्हें "बुजुर्ग" कहा है; आपने उनकी उम्र और शारीरिक शक्ति के क्षय को लेकर उनका उपहास किया है। आप स्वयं कितने बड़े वीर हैं! आप जैसे लोगों को एक महान व्यक्तित्व के नश्वर पहलू को कुचलने का पूरा अधिकार है। जितना चाहें उतना उपहास करें; आपका तिरस्कार उनके महान हृदय को कभी नहीं तोड़ सकता।

लेकिन आओ, मित्रों, चाहे आप क्वेकर हों या कपास छापने वाले, आइए हम एक शांति सम्मेलन आयोजित करें और चुपचाप अपना गुस्सा निकालें। हम खूनी लड़ाइयों और कत्लेआम करने वाले जनरलों के बारे में अनुचित उत्साह से बात करते रहे हैं; अब हम आपके पक्ष में एक विजय की बात करते हैं। 18 जून 1812 को परिषद के आदेश रद्द कर दिए गए और अवरुद्ध बंदरगाह खोल दिए गए। आप अच्छी तरह जानते हैं - आपमें से जो इसे याद रखने के लिए काफी उम्रदराज हैं - आपने उस अवसर पर अपने जयकारे से यॉर्कशायर और लंकाशायर को हिला दिया था। ब्रायफ़ील्ड घंटाघर में घंटियाँ बजाने वालों ने घंटी तोड़ दी; यह आज तक बेसुरा है। व्यापारियों और निर्माताओं के संघ ने स्टिलब्रो में एक साथ भोजन किया, और सभी ऐसे दयनीय हालत में घर लौटे जिसे उनकी पत्नियाँ फिर कभी नहीं देखना चाहेंगी। लिवरपूल गरज से अपने सरकंडों के बीच जाग उठे नदी के घोड़े की तरह चौंक गया और हिनहिनाया। कुछ अमेरिकी व्यापारियों को लकवा मार गया और वे खून बहाने को तैयार हो गए— सभी, बुद्धिमानों की तरह, समृद्धि के इस पहले क्षण में, सट्टेबाजी की दुनिया में उतरने और नई मुश्किलों में फंसने के लिए तैयार हो गए, जिनमें वे भविष्य में कभी खो सकते थे। वर्षों से जमा हुआ स्टॉक पल भर में, एक झटके में, गायब हो गया। गोदाम खाली हो गए, जहाज माल से भर गए; काम की भरमार हो गई, मजदूरी बढ़ गई; ऐसा लगा जैसे अच्छा समय आ गया हो। ये संभावनाएं भ्रामक हो सकती थीं, लेकिन वे शानदार थीं— कुछ लोगों के लिए तो वे सच भी थीं। उस युग में, जून के उस एक महीने में, कई लोगों ने बड़ी दौलत कमाई।

जब पूरा प्रांत खुशी मनाता है, तो उसके सबसे साधारण निवासी भी उत्सव की

भावना से भर जाते हैं; सार्वजनिक घंटियों की ध्वनि सबसे एकांत घरों को भी जगा देती है, मानो खुशी मनाने का आह्वान कर रही हो। और कैरोलिन हेलस्टोन ने भी यही सोचा, जब उन्होंने इस व्यापारिक विजय के दिन सामान्य से अधिक सावधानी से कपड़े पहने और अपनी सबसे सुंदर मलमल की पोशाक में फील्डहेड में दोपहर बिताने के लिए गईं, जहाँ उन्हें एक बड़े आयोजन के लिए कुछ टोपी संबंधी तैयारियों की देखरेख करनी थी, इन मामलों में अंतिम निर्णय उनकी बेदाग पसंद का ही था। उन्होंने पुष्पांजलि, घूंघट और वेदी पर पहने जाने वाले वस्त्रों का चयन किया। उन्होंने सामान्य अवसरों के लिए विभिन्न वस्त्र और फैशन चुने, दुल्हन की राय पर ज्यादा ध्यान दिए बिना - दरअसल, दुल्हन कुछ अव्यावहारिक मनोदशा में थी।

लुई ने कठिनाइयों का पूर्वाभास कर लिया था, और उसे वे कठिनाइयाँ मिल भी गईं - वास्तव में, उसकी प्रेमिका ने खुद को बेहद उत्तेजक साबित किया, दिन-ब-दिन, सप्ताह-दर-सप्ताह, महीने-दर-महीने अपनी शादी को टालती रही, पहले तो टालमटोल के मीठे बहाने बनाकर उसे फुसलाती रही, और अंत में उसके पूरे सधे हुए लेकिन दृढ़ स्वभाव को उसकी तानाशाही के खिलाफ विद्रोह करने के लिए उकसा दिया, जो एक साथ इतनी मधुर और इतनी असहनीय थी।

उसे इस स्थिति तक लाने के लिए एक तरह के तूफान जैसे झटके की ज़रूरत थी; लेकिन अंततः वह वहीं थी, एक निश्चित दिन से बंधी हुई। वह वहीं पड़ी थी, प्रेम से पराजित और एक प्रतिज्ञा से बंधी हुई।

इस प्रकार पराजित और प्रतिबंधित होकर, वह रेगिस्तान के अन्य जंजीरों में जकड़े निवासियों की तरह तड़पती रही। केवल उसका बंदी बनाने वाला ही उसे सांत्वना दे सकता था; केवल उसका साथ ही स्वतंत्रता के खोए हुए विशेषाधिकार की भरपाई कर सकता था। उसकी अनुपस्थिति में वह अकेली बैठी या घूमती रहती, कम बोलती और कम खाती।

उसने अपनी शादी की कोई तैयारी नहीं की; लुई को ही सारी व्यवस्थाएँ खुद संभालनी पड़ीं। नाममात्र का स्वामी बनने से कुछ सप्ताह पहले ही वह वस्तुतः फील्डहेड का स्वामी बन चुका था—वह सबसे कम अभिमानी और सबसे दयालु स्वामी था, लेकिन अपनी पत्नी के प्रति उसका पूर्ण अधिकार था। उसने बिना कुछ कहे या विरोध किए पद त्याग दिया। जब उससे आदेश मांगे गए, तो उसका जवाब था, "श्री मूर के पास जाइए, श्री मूर से पूछिए।" किसी धनी दुल्हन के प्रेमी को कभी

भी अधीनस्थ भूमिका से इतना मुक्त नहीं किया गया था, और उसे कभी भी सर्वोच्च भूमिका निभाने के लिए इतना बाध्य नहीं किया गया था।

इन सबमें मिस कील्डर ने कुछ हद तक अपने स्वभाव के अनुसार काम किया; लेकिन एक साल बाद उनकी एक टिप्पणी से यह साबित हुआ कि उन्होंने कुछ हद तक व्यवस्था के अनुसार भी काम किया। उन्होंने कहा, "अगर उन्होंने शासन करना बंद न किया होता, तो लुई कभी शासन करना नहीं सीख पाते। सम्राट की अक्षमता ने प्रधानमंत्री की शक्तियों को बढ़ा दिया था।"

यह तय किया गया था कि आगामी शादी में मिस हेलस्टोन दुल्हन की सहेली की भूमिका निभाएंगी, लेकिन भाग्य ने उनके लिए एक और ही भूमिका तय कर रखी थी।

वह समय पर घर लौटी और अपने पौधों को पानी दिया। उसने यह छोटा सा काम पूरा कर लिया था। आखिरी फूल जिसे उसने पानी दिया, वह घर के पीछे एक शांत हरे-भरे कोने में खिला हुआ गुलाब का पौधा था। इस पौधे को ताज़ा पानी की बौछार मिल चुकी थी; अब वह एक मिनट आराम कर रही थी। दीवार के पास तराशे हुए पत्थर का एक टुकड़ा खड़ा था - एक साधु का अवशेष - शायद कभी किसी क्रॉस का आधार रहा होगा। वह उस पर चढ़ गई ताकि वह नज़ारे को बेहतर ढंग से देख सके। उसके एक हाथ में अभी भी पानी का बर्तन था; दूसरे हाथ से उसने अपनी सुंदर पोशाक को हल्के से एक तरफ रखा हुआ था ताकि पानी की बूँदें न टपकें। उसने दीवार के ऊपर से कुछ सुनसान खेतों को देखा; तीन शाम के पेड़ों के पार, जो आकाश के सामने अगल-बगल उग रहे थे; दूर एक सुनसान गली के सिरे पर एक अकेला काँटेदार पेड़। उसने शाम के दलदली इलाकों का जायजा लिया, जहाँ अलाव जल रहे थे। गर्मी की शाम सुहावनी थी; घंटियों की आवाज़ आनंददायक थी; आग का नीला धुआँ कोमल लग रहा था, उसकी लाल लौ चमकीली थी। उनके ऊपर, आकाश में जहाँ से सूर्य गायब हो गया था, एक चाँदी का बिंदु टिमटिमा रहा था - प्रेम का तारा।

उस शाम कैरोलिन दुखी नहीं थी—बल्कि इसके विपरीत वह बहुत खुश थी; लेकिन जैसे ही उसने देखा, उसने आह भरी, और उसकी आह के साथ ही एक हाथ उसके चारों ओर घूमकर उसकी कमर पर धीरे से टिक गया। कैरोलिन को लगा कि वह जानती है कि कौन उसके पास आया है; उसने उस स्पर्श को बिना चौंके स्वीकार किया।

“मैं शुक्र ग्रह को देख रहा हूँ, माँ। देखो, वह कितनी सुंदर है। अलाव की गहरी

लालिमा के मुकाबले उसकी चमक कितनी सफेद है!"

जवाब में एक और नज़दीकी स्पर्श मिला; कैरोलिन मुड़ी और उसने श्रीमती प्रायर के गंभीर चेहरे की बजाय एक गहरे रंग के पुरुषोचित चेहरे को देखा। उसने अपना पानी का घड़ा गिरा दिया और चबूतरे से नीचे उतर गई।

"मैं 'मम्मी' के साथ एक घंटे से बैठा हूँ," घुसपैठिए ने कहा। "मेरी उनसे काफी देर तक बातचीत हुई है। इस बीच तुम कहाँ थे?"

"फील्डहेड के लिए। रॉबर्ट, शर्ली हमेशा की तरह शरारती है। वह किसी भी सवाल का जवाब न हां में देती है, न ना में। वह अकेली बैठी रहती है। मैं समझ नहीं पा रहा कि वह उदास है या बेपरवाह। अगर तुम उसे जगाओगे या डांटोगे, तो वह तुम्हें आधी उदास, आधी बेपरवाह निगाहों से देखती है, जिससे तुम भी उसी की तरह अजीब और पागलों की तरह वहां से भाग जाते हो। लुई उसके बारे में क्या सोचेगा, मैं नहीं कह सकता। जहां तक मेरी बात है, अगर मैं एक सज्जन होता, तो शायद मैं उससे पंगा लेने की हिम्मत नहीं करता।"

"उनकी परवाह मत करो। वे एक-दूसरे के लिए ही बने थे। लुई, अजीब बात है, इन अजीबोगरीब लोगों के बावजूद उसे और भी ज्यादा पसंद करता है। अगर कोई उसे संभाल सकता है, तो वह लुई ही है। हालांकि, वह उसे आज़माती है। इतने शांत स्वभाव वाली लड़की के लिए उसका प्रेम प्रसंग तूफानी रहा है; लेकिन आप देख ही रहे हैं कि अंत में उसकी ही जीत होती है। कैरोलीन, मैं तुमसे मिलने आया था। ये घंटियाँ क्यों बज रही हैं?"

"तुम्हारे उस भयानक कानून को रद्द करने के लिए— उन आदेशों को जिनसे तुम इतनी नफरत करते हो। तुम खुश हो, है ना?"

"कल शाम इसी समय मैं समुद्री यात्रा के लिए कुछ किताबें पैक कर रहा था। कपड़ों, बीजों, जड़ों और औजारों के अलावा, मेरे पास बस यही सामान था, जिसे मैं कनाडा ले जाने में स्वतंत्र महसूस कर रहा था। मैं तुम्हें यहीं छोड़ने वाला था।"

"मुझे छोड़कर चले जाओगे? मुझे छोड़कर चले जाओगे?"

उसकी छोटी उंगलियां उसकी बांह पर जकड़ गईं; वह बोली और डरी हुई सी दिखी।

"अभी नहीं—अभी नहीं। मेरे चेहरे को गौर से देखो—हाँ, मुझे ध्यान से देखो। क्या बिछड़ने की निराशा उस पर स्पष्ट दिखाई दे रही है?"

उसने एक प्रकाशमान चेहरे की ओर देखा, जिसके सभी भाव चमक रहे थे, हालांकि पृष्ठ पर धुंध छाई हुई थी। अपने गुणों की भव्यता से परिपूर्ण इस चेहरे ने उस पर आशा, स्नेह और आनंद की वर्षा कर दी।

"क्या इस निरसन से आपको फायदा होगा - बहुत फायदा, तत्काल फायदा?" उसने पूछा।

“सरकारी आदेश रद्द होने से मेरी जान बच गई। अब मैं दिवालिया नहीं होऊंगा; अब मुझे अपना कारोबार नहीं छोड़ना पड़ेगा; अब मुझे इंग्लैंड नहीं छोड़ना पड़ेगा; अब मैं गरीब नहीं रहूंगा; अब मैं अपने कर्ज चुका सकता हूं; अब मेरे गोदामों में रखा सारा कपड़ा बिक जाएगा और मुझे उससे कहीं ज्यादा के ऑर्डर मिलेंगे। आज का दिन मेरे भाग्य की एक मजबूत नींव रखता है, जिस पर मैं अपने जीवन में पहली बार सुरक्षित रूप से अपना भविष्य बना सकता हूं।”

कैरोलाइन ने उसके शब्दों को ध्यान से सुना; उसने उसका हाथ अपने हाथ में थाम लिया; उसने एक लंबी सांस ली।

“क्या आप बच गए? क्या आपकी भारी परेशानियां दूर हो गईं?”

“उन्हें राहत मिली है। मैं चैन की सांस ले सकती हूं। मैं अभिनय कर सकती हूं।”

“आखिरकार! ईश्वर की कृपा है! ईश्वर का धन्यवाद करो, रॉबर्ट।”

मैं ईश्वर का आभारी हूं।

“और मैं भी, तुम्हारे लिए!” उसने श्रद्धापूर्वक ऊपर देखा।

“अब मैं और अधिक कामगार रख सकता हूँ, बेहतर वेतन दे सकता हूँ, अधिक समझदारी और उदार योजनाएँ बना सकता हूँ, कुछ अच्छा कर सकता हूँ, कम स्वार्थी हो सकता हूँ। अब, कैरोलाइन, मेरे पास एक घर हो सकता है - एक ऐसा घर जिसे मैं सचमुच अपना कह सकता हूँ - और अब - —”

वह रुक गया, क्योंकि उसकी गहरी आवाज रुक गई थी।

“और अब,” उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा— “अब मैं शादी के बारे में सोच सकता हूँ, अब मैं पत्नी की तलाश कर सकता हूँ।”

यह उसके बोलने का समय नहीं था। वह नहीं बोली।

“क्या कैरोलीन, जो विनम्रतापूर्वक क्षमा की आशा रखती है, जैसे वह क्षमा करती है—क्या वह उन सभी कष्टों को क्षमा कर देगी जो मैंने उसे दिए हैं, उस लंबे दर्द को जो मैंने उसे दुष्टतापूर्वक पहुँचाया है, उस शारीरिक और मानसिक बीमारी को जो उसने

मेरी वजह से झेली है? क्या वह मेरी तुच्छ महत्वाकांक्षा, मेरी घिनौनी योजनाओं को भूल जाएगी? क्या वह मुझे इन सब बातों का प्रायश्चित करने देगी? क्या वह मुझे यह साबित करने देगी कि जिस प्रकार मैंने कभी क्रूरता से त्याग दिया, लापरवाही से उपहास किया, नीचता से चोट पहुँचाई, उसी प्रकार अब मैं निष्ठापूर्वक प्रेम कर सकता हूँ, स्नेहपूर्वक संजो सकता हूँ, कोमल भाव से संजो सकता हूँ?"

उसका हाथ कैरोलिन की भट्टी में था; एक हल्के दबाव ने उसे जवाब दिया।

"क्या कैरोलीन मेरी है?"

कैरोलिन तुम्हारी है।

मैं उसे हमेशा संजो कर रखूंगा। उसका महत्व मेरे हृदय में बसा हुआ है; उसकी संगति मेरे जीवन का अभिन्न अंग है। जिस रक्त के प्रवाह से मेरी धड़कनें चलती हैं, उससे कहीं अधिक मैं उसकी खुशी और खुशहाली के लिए चिंतित रहूंगा।

"मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ, रॉबर्ट, और तुम्हारी पूरी निष्ठा से देखभाल करूंगी।"

"क्या तुम मेरी सच्ची देखभाल करोगी? सच्ची देखभाल! मानो वह गुलाब इस कठोर धूसर पत्थर को तूफ़ान से बचाने का वादा करे! लेकिन वह अपनी तरह से मेरी देखभाल करेगी। ये हाथ मुझे हर तरह का सुकून देंगे। मैं जानती हूँ कि जिस सत्ता से मैं जुड़ना चाहती हूँ, वह मुझे सांत्वना, प्रेम और पवित्रता प्रदान करेगी, जिससे मैं स्वयं अनजान हूँ।"

अचानक कैरोलिन परेशान हो गई; उसके होंठ कांपने लगे।

"मेरी कबूतरी को क्या हो गया है?" मूर ने पूछा, जैसे ही वह उससे लिपट गई और फिर बेचैनी से उससे दूर हट गई।

"बेचारी माँ! मैं ही तो माँ का सहारा हूँ। क्या मुझे उसे छोड़कर जाना पड़ेगा?"

"तुम्हें पता है, मैंने उस समस्या के बारे में सोचा था। मैंने और 'मम्मी' ने इस बारे में चर्चा की है।"

"मुझे बताओ तुम्हारी क्या इच्छा है, तुम क्या चाहते हो, और मैं इस पर विचार करूँगा कि क्या मैं तुम्हारी बात मान सकता हूँ। लेकिन मैं उसे तुम्हारे लिए भी नहीं छोड़ सकता। मैं उसका दिल तुम्हारे लिए भी नहीं तोड़ सकता।"

"जब मैं बेवफा था तब वह वफादार थी—क्या वह नहीं थी? मैं कभी तुम्हारे बीमार बिस्तर के पास नहीं गया, और वह लगातार उसकी निगरानी करती रही।"

मुझे क्या करना चाहिए? उसे छोड़ने के अलावा कुछ भी।

मेरी इच्छा है कि तुम उसे कभी न छोड़ो।

"क्या वह हमारे बहुत पास रहती है?"

“हमारे साथ—केवल उसके पास अपने कमरे और नौकर होंगे। इसके लिए उसने स्वयं यह शर्त रखी है।”

"आपको पता है कि उसकी आमदनी है, और उसकी आदतों को देखते हुए वह काफी आत्मनिर्भर है?"

"उसने मुझे यह बात एक सौम्य गर्व के साथ बताई, जिसने मुझे किसी और की याद दिला दी।"

वह बिल्कुल भी दखलंदाजी नहीं करती और गपशप करने में असमर्थ है।

“मैं उसे जानती हूँ, कैरी। लेकिन अगर वह संयम और विवेक की प्रतीक होने के बजाय, बिल्कुल विपरीत स्वभाव की होती, तो मुझे उससे डर नहीं लगता।”

“लेकिन वो तुम्हारी सास बनेंगी?” वक्ता ने थोड़ा सा सिर हिलाकर सहमति जताई। मूर मुस्कुराईं।

“कैरी, लुई और मैं उन लोगों में से नहीं हैं जो अपनी सास से डरते हैं। हमारे दुश्मन कभी भी हमारे घर के लोग नहीं रहे हैं, न ही होंगे। मुझे पूरा यकीन है कि मेरी सास मुझे बहुत खरी-खोटी सुनाएगी।”

“हाँ, वो ऐसा करेगी—अपने शांत तरीके से, तुम्हें पता है। वो अपनी भावनाओं को ज़ाहिर नहीं करती; और जब तुम उसे चुप या शांत देखो, तो ये मत समझना कि वो नाराज़ है; ये तो बस उसका स्वभाव है। जब भी वो तुम्हें उलझन में डाले, तो मुझे उसके लिए अनुवाद करने देना; रॉबर्ट, हमेशा मेरी बात पर विश्वास करना।”

“ओह, बिल्कुल! मज़ाक छोड़िए, मुझे लगता है कि हम दोनों एक-दूसरे के लिए बिल्कुल सही हैं — on ne peut mieux. हॉर्टेंस, जैसा कि आप जानती हैं, बहुत संवेदनशील है — हमारे फ्रांसीसी अर्थ में — और शायद उसकी ज़रूरतें हमेशा तर्कसंगत नहीं होतीं; फिर भी, प्यारी, ईमानदार लड़की, मैंने कभी भी उसके दिल को ठेस नहीं पहुँचाई या उससे कभी कोई गंभीर झगड़ा नहीं किया।”

नहीं; आप उसके प्रति बहुत ही उदार, बल्कि बेहद दयालु और स्नेहपूर्ण हैं; और आप माँ के प्रति भी दयालु रहेंगे। रॉबर्ट, आप दिल से एक सच्चे सज्जन हैं, और अपने घर में आप सबसे अधिक परिपूर्ण सज्जन प्रतीत होते हैं।

“मुझे यह प्रशंसा पसंद आई; यह बहुत मधुर है। मुझे बहुत खुशी है कि मेरी

कैरोलिन मुझे इस नजरिए से देखती है।”

"मम्मी भी तुम्हारे बारे में वैसे ही सोचती हैं जैसे मैं सोचती हूं।"

"उम्मीद है, ऐसा नहीं होगा?"

“वह तुमसे शादी नहीं करना चाहती – घमंड मत करो; लेकिन उसने मुझे कुछ दिन पहले कहा था, ‘मेरे प्रिय, श्री मूर का व्यवहार बहुत अच्छा है; मैंने कुछ ही ऐसे सज्जन देखे हैं जो विनम्रता और ईमानदारी का अनूठा मेल रखते हैं।’”

“‘मम्मा’ तो काफी मानवद्वेषी हैं, है ना? क्या यह स्त्रीत्व के बारे में सबसे अच्छी राय नहीं है?”

“वह उन सभी को समग्र रूप से आंकने से बचती है, लेकिन कुछ अपवाद भी हैं जिनकी वह प्रशंसा करती है — लुई और मिस्टर हॉल, और हाल ही में, आप। एक समय था जब वह आपको पसंद नहीं करती थी; मुझे यह पता था, क्योंकि वह कभी आपके बारे में बात नहीं करती थी। लेकिन, रॉबर्ट — —”

"तो अब क्या? नया विचार क्या है?"

“क्या आपने मेरे चाचा को अभी तक नहीं देखा?”

“मैंने कर लिया है। ‘मम्मा’ ने उसे कमरे में बुलाया। वह कुछ शर्तों पर राजी हुआ है। अगर मैं साबित कर दूं कि मैं पत्नी को संभाल सकता हूं, तो वह मेरी हो जाएगी; और मैं उसे उससे कहीं बेहतर तरीके से संभाल सकता हूं जितना वह सोचता है—जितना मैं डींग मारना चाहता हूं उससे कहीं बेहतर।”

“अगर तुम अमीर हो जाओगे तो अपने पैसे का सदुपयोग करोगे, रॉबर्ट?”

“मैं अच्छा काम करूँगा; तुम मुझे बताओगी कैसे। दरअसल, मेरी अपनी कुछ योजनाएँ हैं, जिनके बारे में हम एक दिन अपने घर में बैठकर बात करेंगे। मैंने अच्छा काम करने की आवश्यकता देखी है; मैंने स्वार्थी होने की घोर मूर्खता को समझा है। कैरोलीन, मैं जो अब कह रहा हूँ, उसका मुझे पूर्वाभास है। यह युद्ध जल्द ही समाप्त हो जाएगा। आने वाले कुछ वर्षों तक व्यापार में समृद्धि आने की संभावना है। इंग्लैंड और अमेरिका के बीच थोड़े समय के लिए गलतफहमी हो सकती है, लेकिन वह ज्यादा समय तक नहीं चलेगी। अगर एक दिन—शायद अगले दस साल बीतने से पहले—लुई और मैं ब्रायर्फ़ील्ड पैरिश को आपस में बाँट लें, तो तुम क्या सोचोगी? लुई, किसी भी हालत में, सत्ता और संपत्ति के प्रति आश्वस्त है। वह अपनी प्रतिभा को छिपाएगा नहीं। वह एक परोपकारी व्यक्ति है, और इसके अलावा, उसकी बुद्धि भी

असाधारण है। उसका दिमाग धीमा है लेकिन मजबूत है। उसे काम करना ही होगा। भले ही वह सोच-समझकर काम करे, लेकिन वह अच्छा काम करेगा। उसे जिले का मजिस्ट्रेट बनाया जाएगा—शर्ली कहती है कि उसे बनाया जाएगा। वह जल्दबाजी में और समय से पहले ही यह पद प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ेगी। उसके लिए यह सम्मान, अगर वह उसे ऐसा करने देता, लेकिन वह नहीं करेगा। हमेशा की तरह, वह कोई जल्दी नहीं करेगा। फील्डहेड का स्वामी बनने के एक साल के भीतर ही पूरा जिला उसके शांत प्रभाव को महसूस करेगा और उसकी विनम्रतापूर्ण श्रेष्ठता को स्वीकार करेगा। एक मजिस्ट्रेट की आवश्यकता है; समय आने पर, वे स्वेच्छा से और बिना किसी हिचकिचाहट के उसे इस पद पर नियुक्त कर देंगे। हर कोई उसकी भावी पत्नी की प्रशंसा करता है, और समय आने पर हर कोई उसे पसंद करेगा। वह आम तौर पर स्वीकृत पाटे का है, बोन कोम ले पेन - सबसे ज्यादा नखरे करने वालों के लिए भी रोजी रोटी, शिशु और वृद्धों के लिए अच्छा, गरीबों के लिए पौष्टिक और अमीरों के लिए स्वास्थ्यवर्धक। शर्ली, अपनी सनक और विचित्रताओं, अपनी चालबाज़ियों और देरी के बावजूद, उसके प्रति आसक्त स्नेह रखती है। वह एक दिन उसे उतना ही सर्वप्रिय देखेगी जितना वह खुद भी चाह सकती है। वह भी सर्वत्र सम्मानित, विचारित, परामर्शित और निर्भर होगा - बहुत अधिक। उसकी सलाह हमेशा विवेकपूर्ण होगी, उसकी मदद हमेशा सौम्य होगी। जल्द ही दोनों असुविधाजनक अनुरोध में। उसे प्रतिबंध लगाने पड़ेंगे। जहाँ तक मेरी बात है, अगर मैं अपने इरादे के मुताबिक सफल हो जाता हूँ, तो मेरी सफलता से उसकी और शर्ली की आय में वृद्धि होगी। मैं उनकी मिल संपत्ति का मूल्य दोगुना कर सकता हूँ। मैं उस बंजर घाटी को झोपड़ियों की कतारों और झोपड़ीनुमा बगीचों की पंक्तियों से भर सकता हूँ।

“रॉबर्ट! और झाड़ियों को उखाड़ दें?”

“पांच साल बीतने से पहले ही यह झुरमुट जलाऊ लकड़ी बन जाएगा। यह खूबसूरत जंगली घाटी एक सुगम ढलान में बदल जाएगी; हरी-भरी प्राकृतिक सीढ़ीदार ज़मीन पक्की सड़क बन जाएगी। अंधेरी घाटी में झोपड़ियाँ होंगी, और सुनसान ढलानों पर भी झोपड़ियाँ होंगी। यह ऊबड़-खाबड़ कंकड़ वाला रास्ता एक समतल, मजबूत, चौड़ा, काला, कालिख से सना हुआ रास्ता बन जाएगा, जो मेरी चक्की की राख से ढका होगा; और मेरी चक्की, कैरोलीन—मेरी चक्की अपने वर्तमान प्रांगण को भर देगी।”

“भयानक! आप हमारी नीली पहाड़ी हवा को स्टिलब्रो के धुएं वाले वातावरण में बदल देंगे।”

मैं ब्रायरफील्ड की घाटी में पैक्टोलस का जल उंडेलूंगा।

मुझे वह छोटी नदी हजार गुना ज्यादा पसंद है।

मैं नन्नेली कॉमन की घेराबंदी करने और उसे खेतों में विभाजित करने के लिए एक अधिनियम पारित करवाऊंगा।

“लेकिन स्टिलब्रो मूर, भगवान का शुक्र है, आपको चुनौती देता है! बिलबेरी मॉस में आप क्या उगा सकते हैं? रशएज पर क्या फलेगा-फूलेगा?”

“कैरोलीन, बेघर, भूखे, बेरोजगार लोग दूर-दूर से हॉलो मिल में आएंगे; और जो स्कॉट उन्हें काम देगा, और लुई मूर, एस्क्वायर, उन्हें एक मकान किराए पर देगा, और श्रीमती गिल उन्हें पहले वेतन दिवस तक एक हिस्सा देंगी।”

उसने उसकी ओर देखकर मुस्कुरा दिया।

"कैरी, तुम जो भी संडे स्कूल चलाओगे! जो भी चंदा इकट्ठा करोगे! और जो भी डे स्कूल तुम, शर्ली और मिस ऐनली मिलकर चलाओगे! मिल मालिक और शिक्षिका के वेतन का इंतजाम करेगी, और जमींदार या कपड़ा व्यापारी हर तीन महीने में एक दावत देगा।"

उसने चुपचाप चुंबन की पेशकश की - एक ऐसी पेशकश जिसका अनुचित लाभ उठाया गया और उससे लगभग सौ चुंबन जबरन वसूले गए।

“ये तो बड़े-बड़े सपने हैं,” मूर ने आह भरते हुए और मुस्कुराते हुए कहा, “लेकिन शायद इनमें से कुछ सच भी हो जाएं। तब तक ओस गिर रही है। श्रीमती मूर, मैं आपको अंदर ले चलता हूँ।”

अगस्त का महीना है। घंटियाँ एक बार फिर गूंज रही हैं, न केवल यॉर्कशायर में, बल्कि पूरे इंग्लैंड में। स्पेन से तुरही की आवाज़ लंबे समय से सुनाई दे रही है; अब यह और तेज़ होती जा रही है; यह सलामांका की जीत की घोषणा कर रही है। आज रात ब्रायर्फ़ील्ड जगमगा उठेगा। इस दिन फील्डहेड के किरायेदार एक साथ भोजन करेंगे; हॉलो मिल के कामगार भी इसी तरह के उत्सव के लिए एकत्रित होंगे; स्कूलों में एक भव्य दावत होगी। आज सुबह ब्रायर्फ़ील्ड चर्च में दो विवाह संपन्न हुए - लुई गेरार्ड मूर, एस्क्वायर, एंटवर्प निवासी, का विवाह फील्डहेड निवासी स्वर्गीय चार्ल्स केव कील्डर,

एस्क्वायर की पुत्री शर्ली से हुआ; और रॉबर्ट गेरार्ड मूर, हॉलो मिल निवासी, का विवाह ब्रायफ़ील्ड के रेक्टर रेव. मैथ्यूसन हेलस्टोन, एम.ए. की भतीजी कैरोलिन से हुआ।

पहली बार विवाह समारोह श्री हेलस्टोन द्वारा संपन्न कराया गया, जबकि ब्रायर्मेन्स के हीराम यॉर्क, एस्क्वायर ने दुल्हन का कन्यादान किया। दूसरी बार ननेली के विकर श्री हॉल ने समारोह संपन्न कराया। बारात में सबसे अधिक ध्यान आकर्षित करने वाले दो व्यक्ति युवा दूल्हे के साथी हेनरी सिम्पसन और मार्टिन यॉर्क थे।

मुझे लगता है कि रॉबर्ट मूर की भविष्यवाणियाँ, कम से कम आंशिक रूप से, पूरी हो गईं। कुछ दिन पहले मैं हॉलो से गुज़रा, जिसके बारे में परंपरा कहती है कि वह कभी हरा-भरा, सुनसान और जंगली इलाका हुआ करता था; और वहाँ मैंने निर्माताओं के सपनों को ठोस पत्थर, ईंट और राख में साकार होते देखा - राख से काली सड़क, झोपड़ियाँ और झोपड़ियों के बगीचे; वहाँ मैंने एक विशाल चक्की और बाबेल के टावर जितनी महत्वाकांक्षी चिमनी देखी। घर लौटकर मैंने अपनी पुरानी गृहणी को बताया कि मैं कहाँ गया था।

“हाँ,” उसने कहा, “इस दुनिया में अजीबोगरीब बदलाव होते रहते हैं। मुझे याद है जब पुरानी चक्की बनी थी—पूरे इलाके में वह पहली चक्की थी; और फिर मुझे याद है जब उसे गिरा दिया गया था, और मैं अपनी सहेलियों के साथ नई चक्की की नींव रखने गई थी। मिस्टर मूर्स ने इस पर खूब शोर मचाया था। वे दोनों वहाँ थे, और उनके अलावा कई अच्छे लोग और उनकी पत्नियाँ भी थीं; वे बहुत सुंदर और भव्य दिख रही थीं। लेकिन श्रीमती लुईस सबसे भव्य थीं; वह हमेशा बहुत सुंदर कपड़े पहनती थीं। श्रीमती रॉबर्ट थोड़ी शांत स्वभाव की थीं। श्रीमती लुईस बात करते समय मुस्कुराती थीं। उनके चेहरे पर एक सच्ची, खुशमिजाज, प्रसन्न और मिलनसार मुस्कान थी; लेकिन उनकी निगाहें किसी को भी भेद सकती थीं। आजकल ऐसी महिलाएं नहीं मिलतीं।”

"उस समय हॉलो कैसा था, मार्था?"

“यह अब जैसा है उससे बिल्कुल अलग था; लेकिन मैं इसे और भी अलग रूप में बता सकता हूँ, जब यहाँ न चक्की थी, न झोपड़ी, न महल, सिवाय फील्डहेड के, जो यहाँ से दो मील के दायरे में था। मुझे याद है, पचास साल पहले, एक गर्मी की शाम को, मेरी माँ लगभग अँधेरे में दौड़ती हुई आई, मानो होश खो बैठी हो, और कह रही

थी कि उसने फील्डहेड हॉलो में एक परी देखी है; और वह इस इलाके में देखी गई आखिरी परी थी (हालाँकि पिछले चालीस वर्षों में उनके बारे में सुना गया है)। वह एक सुनसान जगह थी, और एक सुंदर जगह भी, जो बलूत और अखरोट के पेड़ों से भरी थी। अब यह बदल गया है।”

कहानी सुना दी गई है। मुझे लगता है कि अब समझदार पाठक चश्मा लगाकर नैतिक सीख की तलाश कर रहा है। उसे निर्देश देना उसकी बुद्धिमत्ता का अपमान होगा। मैं बस इतना ही कहूंगा, ईश्वर उसकी खोज में उसका साथ दे!

समाप्त।

विलेट

यह उपन्यास 1853 में प्रकाशित हुआ था। एक अज्ञात पारिवारिक त्रासदी के बाद, नायिका लूसी स्नो काल्पनिक शहर विलेट जाती है, जहाँ वह एक बालिका विद्यालय में पढ़ाने लगती है। वहाँ वह अनजाने में रोमांच और प्रेम दोनों में उलझ जाती है। यह उपन्यास अपनी कहानी के लिए उतना प्रसिद्ध नहीं है, जितना कि लूसी के मनोवैज्ञानिक चित्रण के लिए, विशेष रूप से ब्रोंटे द्वारा गोथिक शैली में दोहरीकरण का उपयोग करके नायिका के आंतरिक कष्टों को बाहरी रूप से दर्शाने के लिए।

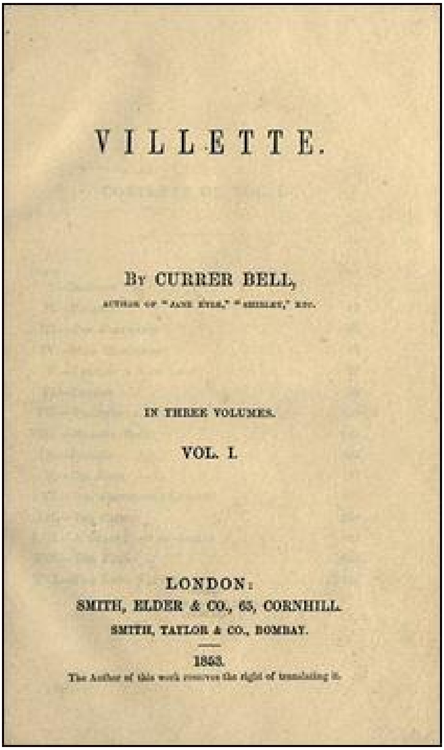

VILLETTE.

BY CURRER BELL,

AUTHOR OF "JANE EYRE," "SHIRLEY," ETC.

IN THREE VOLUMES.

VOL. I.

LONDON:

SMITH, ELDER & CO., 65, CORNHILL.

SMITH, TAYLOR & CO., BOMBAY.

1853.

The Author of this work reserves the right of translating it.

मूल शीर्षक पृष्ठ

विषय-सूची

अध्याय 1।

अध्याय II.

अध्याय III.

अध्याय IV.

अध्याय V.

अध्याय VI.

अध्याय VII.

अध्याय VIII.

अध्याय 9.

अध्याय X.

अध्याय XI.

अध्याय XII.

अध्याय XIII.

अध्याय 14.

अध्याय पंद्रह।

अध्याय सोलह।

अध्याय सत्रह।

अध्याय 18वां।

अध्याय XIX.

अध्याय XX.

अध्याय XXI.

अध्याय XXII.

अध्याय XXIII.

अध्याय XXIV.

अध्याय XXV.

अध्याय XXVI.

अध्याय XXVII.

अध्याय XXVIII.

अध्याय 29।

अध्याय XXX

अध्याय XXXI.

अध्याय 32.

अध्याय 33.

अध्याय 34.

अध्याय XXXV

अध्याय 36.

अध्याय 37.

अध्याय 38.

अध्याय 39.

अध्याय XL.

अध्याय XLI.

अध्याय 12.

अध्याय 1।

ब्रेटन।

मेरी धर्ममाता ब्रेटन के स्वच्छ और प्राचीन कस्बे में एक सुंदर घर में रहती थीं। उनके पति का परिवार पीढ़ियों से वहीं रहता था, और वास्तव में उनका नाम उनके जन्मस्थान के नाम पर ही रखा गया था - ब्रेटन ऑफ ब्रेटन: यह संयोग था या इसलिए कि उनके किसी दूर के पूर्वज इतने महत्वपूर्ण व्यक्ति रहे होंगे कि उन्होंने अपने मोहल्ले को अपना नाम दे दिया, यह मैं नहीं जानती।

जब मैं छोटी बच्ची थी, तब साल में लगभग दो बार ब्रेटन जाया करती थी, और मुझे वह यात्रा बहुत पसंद थी। वह घर और उसमें रहने वाले लोग मुझे विशेष रूप से भाते थे। बड़े-बड़े शांत कमरे, करीने से सजा हुआ फर्नीचर, चौड़ी-चौड़ी साफ खिड़कियाँ, बाहर बालकनी, जहाँ से एक सुंदर प्राचीन गली दिखाई देती थी, जहाँ रविवार और छुट्टियाँ हमेशा गुलजार रहती थीं—वहाँ का वातावरण इतना शांत था, फुटपाथ इतना साफ था—ये सब बातें मुझे बहुत अच्छी लगती थीं।

एक ऐसे घर में जहां वयस्क लोगों की संख्या अधिक हो, वहां एक बच्चे को आमतौर पर बहुत लाड़-प्यार दिया जाता है, और श्रीमती ब्रेटन ने चुपचाप मुझ पर काफी ध्यान दिया, जो मेरे जानने से पहले ही विधवा हो गई थीं, उनके साथ उनका एक बेटा था; उनके पति, जो एक चिकित्सक थे, का निधन तब हो गया था जब वह अभी भी एक युवा और सुंदर महिला थीं।

मेरी याद में वह जवान नहीं थीं, लेकिन फिर भी सुंदर, लंबी, सुगठित थीं। हालांकि एक अंग्रेज महिला के हिसाब से उनका रंग सांवला था, फिर भी उनके भूरे गालों में हमेशा सेहत की चमक और उनकी खूबसूरत, हंसमुख काली आंखों में जीवंतता झलकती थी। लोगों को इस बात का बहुत अफसोस था कि उन्होंने अपने बेटे को अपना रंग नहीं दिया था। उनके बेटे की आंखें नीली थीं—हालांकि बचपन में भी बहुत तीक्ष्ण थीं—और उनके लंबे बालों का रंग ऐसा था कि दोस्त उसे सुनहरा कहने की हिम्मत नहीं करते थे, सिवाय तब जब सूरज की रोशनी उन पर पड़ती थी। हालांकि,

उन्हें अपनी मां के चेहरे की बनावट विरासत में मिली थी; साथ ही उनके अच्छे दांत, उनका कद (या उनके कद की संभावना, क्योंकि वह अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुए थे), और इससे भी बेहतर, उनकी बेदाग सेहत और उनके ऐसे सकारात्मक और समान स्वभाव जो धन-दौलत से भी बढ़कर होते हैं।

उस वर्ष के पतझड़ के मौसम में— मैं ब्रेटन में रह रही थी; मेरी धर्ममाता स्वयं मुझे अपने उन रिश्तेदारों से लेने आई थीं जिनके साथ मेरा स्थायी निवास तय था। मेरा मानना है कि उन्होंने उस समय आने वाली घटनाओं को स्पष्ट रूप से देख लिया था, जिनकी आभास भी मुझे मुश्किल से ही हुई थी; फिर भी उस हल्की सी आशंका ने ही मेरे मन में एक बेचैनी और उदासी भर दी थी, और मुझे जगह और समाज बदलने की खुशी हुई।

मेरी धर्ममाता के साथ समय हमेशा सहजता से बीतता था; उथल-पुथल भरी तेज़ी से नहीं, बल्कि शांत भाव से, जैसे किसी मैदान में बहती हुई नदी। उनके यहाँ मेरा समय बिताना क्रिश्चियन और होपफुल के किसी रमणीय नदी किनारे बिताए समय जैसा था, जिसके दोनों किनारों पर हरे-भरे पेड़ थे और साल भर लिली के फूलों से सजे मैदान थे। वहाँ विविधता का आकर्षण नहीं था, न ही घटनाओं का रोमांच; लेकिन मुझे शांति इतनी पसंद थी और मैं उत्तेजना की इतनी कम तलाश करता था कि जब उत्तेजना आती थी तो मुझे लगभग एक बाधा सी लगती थी और मैं चाहता था कि वह अभी भी दूर ही रहे।

एक दिन एक पत्र मिला जिसकी सामग्री ने श्रीमती ब्रेटन को आश्चर्यचकित और कुछ चिंतित कर दिया। पहले तो मुझे लगा कि यह घर से आया है और मैं डर गई, यह सोचकर कि कहीं कोई बुरी खबर तो नहीं है: लेकिन मुझे ऐसा कुछ नहीं लगा और चिंता का बादल छंट गया।

अगले दिन, लंबी सैर से लौटने पर, जब मैं अपने बेडरूम में दाखिल हुआ, तो मुझे एक अप्रत्याशित बदलाव नज़र आया। छायादार कोने में रखे मेरे फ्रेंच बेड के अलावा, एक कोने में सफेद कपड़े से ढका एक छोटा सा पालना दिखाई दिया; और मेरी महोगनी की दराजों वाली अलमारी के अलावा, मुझे एक छोटी सी रोज़वुड की पेटी भी दिखाई दी। मैं वहीं खड़ा रहा, देखता रहा और सोचता रहा।

मैंने पूछा, "ये चीजें किस बात के संकेत और प्रतीक हैं?" जवाब स्पष्ट था। "एक और मेहमान आ रहे हैं: श्रीमती ब्रेटन को अन्य मेहमानों के आने की उम्मीद है।"

भोजन के लिए नीचे उतरते ही स्पष्टीकरण का सिलसिला शुरू हुआ। मुझे बताया गया कि एक छोटी बच्ची जल्द ही मेरी साथी होगी: स्वर्गीय डॉ. ब्रेटन के एक मित्र और दूर के रिश्तेदार की बेटी। यह भी बताया गया कि इस बच्ची ने हाल ही में अपनी माँ को खो दिया था; हालाँकि, श्रीमती ब्रेटन ने कुछ ही देर बाद स्पष्ट किया कि यह क्षति उतनी बड़ी नहीं थी जितनी पहली नज़र में लग सकती है। श्रीमती होम (ऐसा लगता है कि उनका नाम होम था) बहुत सुंदर थीं, लेकिन चंचल और लापरवाह महिला थीं, जिन्होंने अपनी बच्ची की उपेक्षा की और अपने पति को निराश और हतोत्साहित किया। उनका वैवाहिक जीवन इतना प्रतिकूल साबित हुआ कि अंततः अलगाव हो गया - आपसी सहमति से, किसी कानूनी प्रक्रिया के बाद नहीं। इस घटना के कुछ ही समय बाद, एक बॉल पार्टी में अत्यधिक परिश्रम करने के कारण, उन्हें सर्दी लग गई, बुखार आया और कुछ ही समय की बीमारी के बाद उनकी मृत्यु हो गई। उनके पति, स्वभाव से बेहद संवेदनशील व्यक्ति थे और इस खबर के अचानक मिलने से उन्हें गहरा सदमा लगा था। अब उन्हें शायद ही यकीन हो रहा था कि उनकी कुछ अति कठोरता—धैर्य और उदारता की कमी—ने उनकी मृत्यु को शीघ्र कर दिया था। वे इस विचार पर तब तक सोचते रहे जब तक उनका मनोबल बुरी तरह गिर नहीं गया; डॉक्टरों ने इलाज के तौर पर यात्रा करने पर जोर दिया, और इस बीच श्रीमती ब्रेटन ने उनकी छोटी बच्ची की देखभाल करने की पेशकश की। अंत में मेरी धर्ममाता ने कहा, "और मुझे उम्मीद है कि बच्ची अपनी माँ जैसी नहीं होगी; इतनी नासमझ और चंचल, ऐसी चंचल बच्ची जिससे कोई समझदार आदमी शादी करने की हिम्मत कर सकता है। क्योंकि," उन्होंने कहा, "श्री होम अपने तरीके से समझदार व्यक्ति हैं, हालांकि बहुत व्यावहारिक नहीं हैं: उन्हें विज्ञान से प्रेम है, और वे अपना आधा जीवन प्रयोगशाला में प्रयोग करते हुए बिताते हैं—ऐसी चीज जिसे उनकी चंचल पत्नी न तो समझ सकती थी और न ही सहन कर सकती थी; और वास्तव में," मेरी धर्ममाता ने स्वीकार किया, "मुझे भी यह पसंद नहीं आता।"

मेरे एक प्रश्न के उत्तर में, उन्होंने मुझे आगे बताया कि उनके दिवंगत पति कहा करते थे कि श्री होम को यह वैज्ञानिक प्रवृत्ति अपने एक मामा, एक फ्रांसीसी विद्वान से मिली थी; क्योंकि ऐसा लगता है कि वे मिश्रित फ्रांसीसी और स्कॉटिश मूल के थे, और उनके कुछ रिश्तेदार अब फ्रांस में रहते हैं, जिनमें से एक से अधिक लोग अपने नाम के आगे 'दे' लिखते थे और खुद को कुलीन कहते थे।

उसी शाम नौ बजे, एक नौकर को उस गाड़ी को लेने भेजा गया जिससे हमारी छोटी मेहमान के आने की उम्मीद थी। श्रीमती ब्रेटन और मैं ड्राइंग रूम में अकेले बैठकर उनके आने का इंतज़ार कर रहे थे; जॉन ग्राहम ब्रेटन अपने एक सहपाठी से मिलने गाँव गए हुए थे। मेरी धर्ममाता इंतज़ार करते हुए शाम का अखबार पढ़ रही थीं; मैं सिलाई कर रही थी। वह एक गीली रात थी; बारिश खिड़कियों पर ज़ोर से पड़ रही थी और हवा उग्र और बेचैन लग रही थी।

श्रीमती ब्रेटन बीच-बीच में कहती थीं, "बेचारी बच्ची! यात्रा के लिए यह कैसा मौसम है! काश वह यहाँ सुरक्षित होती।"

दस बजने से कुछ ही पहले दरवाजे की घंटी ने वॅरिन के लौटने की सूचना दी। दरवाजा खुलते ही मैं दौड़कर हॉल में गया; वहाँ एक संदूक और कुछ बैंड बॉक्स रखे थे, उनके बगल में एक नर्स जैसी दिखने वाली महिला खड़ी थी, और सीढ़ियों के नीचे वॅरिन अपनी बाहों में शॉल से लिपटा हुआ एक बंडल लिए खड़ा था।

मैंने पूछा, "क्या यह वही बच्चा है?"

"हाँ मिस।"

मैं शॉल खोलकर चेहरा देखने की कोशिश करता, लेकिन उसे जल्दी से मेरी तरफ से हटाकर वॅरिन के कंधे पर कर दिया गया।

“मुझे नीचे उतार दीजिए,” वॅरिन के ड्राइंग रूम का दरवाज़ा खोलते ही एक छोटी सी आवाज़ आई, “और यह शॉल उतार दीजिए,” बोलने वाले ने अपनी छोटी सी सुई से पिन निकालते हुए और बड़ी सावधानी से उस भद्दे शॉल को उतारते हुए कहा। अब जो प्राणी प्रकट हुआ, उसने शॉल को मोड़ने की कोशिश की; लेकिन शॉल इतना भारी और बड़ा था कि उसे हाथों और बाहों से उठाना या हिलाना मुश्किल था। “इसे हैरियट को दे दीजिए,” फिर निर्देश आया, “वह इसे रख देंगी।” इतना कहकर वह मुड़ा और श्रीमती ब्रेटन पर अपनी निगाहें गड़ा दीं।

“इधर आओ, नन्ही सी बच्ची,” उस महिला ने कहा। “आओ और मुझे देखने दो कि तुम्हें ठंड लग रही है या तुम भीगी हुई हो: आओ और मैं तुम्हें आग के पास गर्म कर देती हूँ।”

बच्ची तेज़ी से आगे बढ़ी। लपेटे से मुक्त होने पर वह बेहद छोटी लग रही थी; लेकिन वह एक सुगठित, संपूर्ण आकृति थी, हल्की, पतली और सीधी। मेरी धर्ममाता की विशाल गोद में बैठी वह बिल्कुल गुड़िया जैसी लग रही थी; उसकी मोम जैसी

कोमल गर्दन और रेशमी घुंघराले बालों ने, मुझे लगा, उसकी समानता को और बढ़ा दिया।

श्रीमती ब्रेटन बच्चे के हाथों, बांहों और पैरों को सहलाते हुए प्यार भरे छोटे-छोटे शब्दों में बातें कर रही थीं; पहले तो बच्चा उन्हें उदास निगाहों से देखता रहा, लेकिन जल्द ही मुस्कुराते हुए जवाब देता था। श्रीमती ब्रेटन आम तौर पर स्नेह दिखाने वाली महिला नहीं थीं: अपने बेहद प्यारे बेटे के साथ भी उनका व्यवहार शायद ही कभी भावुक होता था, अक्सर इसके विपरीत ही होता था; लेकिन जब उस नन्हे अजनबी ने उन्हें देखकर मुस्कुराया, तो उन्होंने उसे चूमते हुए पूछा, "मेरे नन्हे बच्चे का नाम क्या है?"

"मिस्सी।"

लेकिन मिस्सी के अलावा?

"पॉली, पापा उसे इसी नाम से बुलाते हैं।"

"क्या पॉली मेरे साथ रहने से संतुष्ट होगी?"

“हमेशा नहीं; लेकिन जब तक पापा घर नहीं आ जाते। पापा चले गए हैं।” उसने भावपूर्ण ढंग से सिर हिलाया।

वह या तो पॉली के पास लौट जाएगा, या उसे बुलवा लेगा।

“क्या वह ऐसा करेगा, महोदया? क्या आपको पता है कि वह करेगा?”

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

लेकिन हैरियट ऐसा नहीं सोचती: कम से कम काफी समय तक तो नहीं। वह बीमार है।

उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने श्रीमती ब्रेटन के हाथ से अपना हाथ छुड़ाया और उनकी गोद से उठने की कोशिश की; पहले तो उसने हिचकिचाया, लेकिन फिर बोली, "कृपया, मैं जाना चाहती हूँ: मैं एक स्टूल पर बैठ सकती हूँ।"

उसे घुटनों के बल बैठने की अनुमति दी गई, और एक फुटस्टूल लेकर वह उसे एक कोने में ले गई जहाँ गहरी छाया थी, और वहाँ बैठ गई। श्रीमती ब्रेटन, वैसे तो एक दबंग और गंभीर मामलों में तो सख्त मिजाज महिला थीं, लेकिन छोटी-मोटी बातों में अक्सर शांत रहती थीं: उन्होंने बच्ची को अपनी मर्जी से चलने दिया। उन्होंने मुझसे कहा, "अभी ध्यान मत दो।" लेकिन मैंने ध्यान दिया: मैंने देखा कि पॉली ने अपनी छोटी कोहनी अपने छोटे घुटने पर और सिर अपने हाथ पर टिका रखा था; मैंने देखा

कि उसने अपनी गुड़िया की स्कर्ट की जेब से एक-दो इंच का रूमाल निकाला, और फिर मैंने उसे रोते हुए सुना। दुख या दर्द में दूसरे बच्चे बिना शर्म या संकोच के जोर-जोर से रोते हैं; लेकिन यह बच्ची रो रही थी: उसकी हल्की सी सिसकी उसकी भावनाओं को बयां कर रही थी। श्रीमती ब्रेटन ने उसे नहीं सुना: जो कि अच्छा ही था। थोड़ी देर बाद, कोने से एक आवाज आई - "हैरियट के लिए घंटी बजाई जाए!"

मैंने घंटी बजाई; नर्स को बुलाया गया और वह आ गई।

“हैरियट, मुझे बिस्तर पर लेटना होगा,” उसकी छोटी मालकिन ने कहा। “तुम्हें मुझसे पूछना होगा कि मेरा बिस्तर कहाँ है।”

हैरियट ने संकेत दिया कि वह पहले ही यह पूछताछ कर चुकी है।

"मुझसे पूछो कि क्या तुम मेरे साथ सोओगी, हैरियट।"

“नहीं, मिस्सी,” नर्स ने कहा: “आपको इस युवती के कमरे में रहना होगा,” और उसने मेरी ओर इशारा किया।

मिस्सी अपनी सीट से नहीं उठी, लेकिन मैंने देखा कि उसकी निगाहें मुझे ढूंढ रही थीं। कुछ मिनटों तक चुपचाप मुझे निहारने के बाद, वह अपने कोने से बाहर निकली।

“मैडम, आपको शुभ रात्रि,” उसने श्रीमती ब्रेटन से कहा; लेकिन वह मेरी ओर मूक होकर गुजरी।

“शुभ रात्रि, पॉली,” मैंने कहा।

“शुभ रात्रि कहने की कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि हम एक ही कमरे में सोते हैं,” यह जवाब देते हुए वह ड्राइंग रूम से गायब हो गई। हमने हैरियट को उसे ऊपर ले जाने का प्रस्ताव देते सुना। “कोई ज़रूरत नहीं,” उसका फिर से जवाब था — “कोई ज़रूरत नहीं, कोई ज़रूरत नहीं” और उसके छोटे-छोटे कदम थके-हारे सीढ़ियों पर चढ़ गए।

एक घंटे बाद जब मैं सोने गई, तो मैंने देखा कि वह अभी भी जाग रही थी। उसने अपने तकिए इस तरह लगाए थे कि उसका छोटा सा शरीर बैठने की मुद्रा में टिका हुआ था: उसके हाथ एक दूसरे के अंदर रखे हुए चादर पर शांति से टिके हुए थे, मानो किसी पुराने जमाने की तरह शांत और बचकाना न हो। मैंने कुछ देर तक उससे बात नहीं की, लेकिन बत्ती बुझाने से ठीक पहले मैंने उसे लेट जाने की सलाह दी।

जवाब था, "थोड़ी देर में।"

"लेकिन तुम्हें सर्दी लग जाएगी, मिस्सी।"

उसने अपने पालने के पास रखी कुर्सी से कपड़े का एक छोटा सा टुकड़ा उठाया

और उससे अपने कंधों को ढक लिया। मैंने उसे ऐसा करने दिया। अंधेरे में कुछ देर सुनने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि वह अब भी रो रही थी, - संयमित होकर, चुपचाप और सावधानी से रो रही थी।

दिन की रोशनी से जागते ही पानी की हल्की-हल्की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। देखो! वह उठ खड़ी हुई थी और वॉशस्टैंड के पास एक स्टूल पर बैठी थी, बड़ी मुश्किल से उस कलश को झुका रही थी (जिसे वह उठा नहीं सकती थी) ताकि उसका पानी बेसिन में डाल सके। उसे नहाते और कपड़े पहनते देखना बड़ा ही अनोखा था, वह इतनी छोटी, व्यस्त और शांत थी। ज़ाहिर है, उसे खुद से नहाने-धोने की आदत नहीं थी; और बटन, डोरियाँ, हुक और हुक उसके लिए मुश्किलें पैदा कर रहे थे, जिन्हें उसने बड़ी लगन से संभाला, जो देखने लायक था। उसने अपनी नाइट-ड्रेस को तह किया, अपने पलंग के पर्दे को बड़े करीने से समेटा; एक कोने में जाकर, जहाँ सफेद पर्दे ने उसे छिपा लिया, वह शांत हो गई। मैं आधा उठा और यह देखने के लिए अपना सिर आगे बढ़ाया कि वह क्या कर रही है। घुटनों के बल बैठी, माथे को हाथों पर टिकाए, मैंने देखा कि वह प्रार्थना कर रही थी।

उसकी नर्स ने दरवाजे पर दस्तक दी। वह उठ खड़ी हुई।

“मैंने कपड़े पहन लिए हैं, हैरियट,” उसने कहा; “मैंने कपड़े तो पहन लिए हैं, लेकिन मुझे अच्छा नहीं लग रहा। मुझे अच्छे से तैयार कर दो!”

"तुमने खुद को क्यों तैयार किया, मिस्सी?"

“चुप रहो! धीरे बोलो, हैरियट, कहीं लड़की जाग न जाए” (मतलब मैं, जो अब आँखें बंद करके लेटी थी)। “मैंने ये कपड़े इसलिए पहने हैं ताकि जब तुम मुझे छोड़कर जाओ, तब तक मैं इन्हें पहनकर पढ़ सकूँ।”

"क्या आप चाहते हैं कि मैं जाऊं?"

"जब तुम नाराज होते हो, तो कई बार मेरा मन करता है कि तुम चले जाओ, लेकिन अभी नहीं।"

मेरी कमरबंद सीधी बांधो; मेरे बाल भी अच्छे से संवारो, प्लीज़।

“तुम्हारी कमरबंद एकदम सीधी है। तुम तो बिल्कुल नन्ही सी हो!”

“इसे दोबारा बांधना होगा। कृपया इसे बांध दें।”

“ठीक है, फिर। मेरे जाने के बाद तुम उस युवती से अपने कपड़े बदलवा लेना।”

"किसी भी कारण से नहीं।"

“क्यों? वह बहुत अच्छी युवती है। मुझे उम्मीद है कि आप उसके साथ अच्छा व्यवहार करेंगी, मिस, और अपना घमंड नहीं दिखाएंगी।”

वह मुझे किसी भी हालत में कपड़े नहीं पहनाएगी।

“मज़ेदार छोटी सी चीज़!”

"हैरियट, तुम मेरे बालों में कंघी सीधी नहीं चला रही हो; इससे रेखा टेढ़ी हो जाएगी।"

“हाँ, आपको खुश करना मुश्किल है। क्या यह ठीक है?”

“ठीक है। अब जब मैंने कपड़े पहन लिए हैं, तो मुझे कहाँ जाना चाहिए?”

मैं आपको नाश्ते के कमरे में ले चलूंगा।

"तब आओ।"

वे दरवाजे की ओर बढ़े। वह रुक गई।

“ओह! हैरियट, काश ये पापा का घर होता! मैं इन लोगों को नहीं जानती।”

"अच्छी बच्ची बनो, मिस्सी।"

“मैं ठीक हूँ, लेकिन यहाँ दर्द हो रहा है;” उसने अपना हाथ अपने दिल पर रखा और कराहते हुए बार-बार कहा, “पापा! पापा!”

मैंने खुद को संभाला और उठ खड़ा हुआ, ताकि इस दृश्य को तब तक देख सकूं जब तक यह मेरे लिए संभव हो।

“इस युवती को सुप्रभात कहो,” हैरियट ने निर्देश दिया। उसने कहा, “सुप्रभात,” और फिर अपनी नर्स के पीछे कमरे से बाहर चली गई। हैरियट उसी दिन कुछ समय के लिए अपने पड़ोस में रहने वाले दोस्तों के पास चली गई।

नीचे उतरने पर मैंने पॉलिना (बच्ची खुद को पॉली कहती थी, लेकिन उसका पूरा नाम पॉलिना मैरी था) को श्रीमती ब्रेटन के बगल में नाश्ते की मेज पर बैठे पाया; उसके सामने दूध का एक मग रखा था, रोटी का एक टुकड़ा उसके हाथ में था, जो मेजपोश पर निष्क्रिय पड़ा था: वह खा नहीं रही थी।

श्रीमती ब्रेटन ने मुझसे कहा, "हम इस नन्ही सी बच्ची को कैसे मनाएंगे, मुझे नहीं पता: इसे कुछ भी स्वाद नहीं आ रहा है, और इसके हावभाव से लगता है कि यह सोई नहीं है।"

मैंने समय और दयालुता के प्रभावों में अपना विश्वास व्यक्त किया।

"अगर उसे घर में किसी पर भी पसंद आ जाए, तो वह जल्द ही शादी कर लेगी;

लेकिन तब तक नहीं," श्रीमती ब्रेटन ने उत्तर दिया।

अध्याय II.

पॉलिना।

कुछ दिन बीत गए, और ऐसा प्रतीत हुआ कि घर में शायद ही कोई उसे पसंद करेगा। वह न तो शरारती थी और न ही जिद्दी: वह अवज्ञाकारी तो बिलकुल नहीं थी; लेकिन उसके जैसी निर्दयी और शांत स्वभाव वाली किसी को भी अपने सामने रखना असंभव था। वह उदास बैठी रहती थी: कोई वयस्क व्यक्ति भी इतनी उदासी को उससे बेहतर ढंग से नहीं दिखा सकता था; यूरोप के सुदूर छोर पर स्थित किसी वयस्क के चेहरे पर, जो यूरोप के लिए तरस रहा हो, घर की याद के इतने स्पष्ट लक्षण शायद ही किसी और के चेहरे पर दिखाई देते हों। वह बूढ़ी और रहस्यमयी सी लगने लगी थी। मैं, लूसी स्नो, इस अभिशाप, यानी अति उत्साही और कल्पनाशील सोच से मुक्त हूँ; लेकिन जब भी मैं किसी कमरे का दरवाजा खोलती और उसे कोने में अकेले बैठी, अपने छोटे से हाथ में सिर रखे हुए पाती, तो वह कमरा मुझे निर्जन नहीं, बल्कि प्रेतवाधित सा लगता था।

और फिर, जब चांदनी रातों में, जागने पर, मैंने उसकी आकृति को देखा, जो रात के वस्त्र में सफेद और स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी, बिस्तर पर सीधे घुटनों के बल बैठी हुई, किसी कैथोलिक या मेथोडिस्ट उत्साही की तरह प्रार्थना कर रही थी - किसी विलक्षण कट्टरपंथी या असमय संत की तरह - मुझे शायद ही पता है कि मेरे मन में क्या विचार आए; लेकिन वे उस बच्ची के मन की तुलना में शायद ही अधिक तर्कसंगत और स्वस्थ रहे होंगे।

मैं उसकी प्रार्थनाओं का एक शब्द भी मुश्किल से सुन पाता था, क्योंकि वे धीमी

आवाज़ में फुसफुसाती थीं: कभी-कभी तो वे फुसफुसाती भी नहीं थीं, बल्कि अनकही रह जाती थीं; जो कुछ वाक्य मेरे कानों तक पहुँचते थे, उनमें भी यही भाव होता था, "पापा; मेरे प्यारे पापा!" मैंने महसूस किया कि यह उसका एक ही विचार पर केंद्रित स्वभाव था; यह उस सनकी प्रवृत्ति को दर्शाता था जिसे मैंने हमेशा से ही मनुष्य या स्त्री के लिए सबसे दुर्भाग्यपूर्ण अभिशाप माना है।

अगर यह चिंता बिना रोक-टोक के जारी रहती तो इसका क्या अंत होता, इसका केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है; हालांकि, इसमें अचानक एक नया मोड़ आ गया।

एक दोपहर, श्रीमती ब्रेटन ने उसे कोने में उसकी सामान्य जगह से उठाकर खिड़की के पास वाली सीट पर बिठा दिया और उसका ध्यान भटकाने के लिए उसे यात्रियों को देखने और यह गिनने को कहा कि दिए गए समय में कितनी महिलाएं सड़क पार करेंगी। वह बेसुध बैठी थी, मुश्किल से देख रही थी और गिन भी नहीं रही थी, तभी मेरी नज़र उसकी आँखों पर पड़ी और मैंने उसकी पुतली में एक चौंकाने वाला परिवर्तन देखा। ये अचानक, खतरनाक स्वभाव - जिन्हें संवेदनशील कहा जाता है - उन लोगों के लिए कई विचित्र दृश्य प्रस्तुत करते हैं जिनका स्वभाव शांत होता है और जो उनकी विचित्रताओं में शामिल होने से बच जाते हैं। उसकी स्थिर और भारी निगाहें डगमगाईं, कांपीं, फिर आग की तरह चमक उठीं; उसका छोटा, उदास माथा साफ हो गया; उसके तुच्छ और उदास चेहरे में चमक आ गई; उसका उदास चेहरा गायब हो गया और उसकी जगह अचानक एक उत्सुकता, एक तीव्र उम्मीद दिखाई दी। "यही है!" ये उसके शब्द थे।

किसी चिड़िया या तीर की तरह, या किसी भी तेज़ चीज़ की तरह, वह कमरे से गायब हो गई। उसने घर का दरवाज़ा कैसे खोला, यह मैं नहीं बता सकता; शायद वह थोड़ा खुला हुआ था; हो सकता है वॉरेन रास्ते में था और उसने उसकी बात मान ली हो, जो कि जल्दबाजी में किया गया काम था। मैं खिड़की से शांति से देख रहा था और मैंने उसे, अपनी काली फ्रॉक और छोटी सी गुंथी हुई एप्रन (उसे एप्रन से नफरत थी) में, आधी गली दौड़ते हुए देखा; और जैसे ही मैं मुड़कर श्रीमती ब्रेटन को चुपचाप बताने वाला था कि बच्ची पागल होकर बाहर भाग गई है और उसे तुरंत ढूंढना चाहिए, मैंने देखा कि उसे पकड़ लिया गया है, और वह मेरी शांत निगरानी और यात्रियों की आश्चर्यचकित निगाहों से तुरंत दूर हो गई है। एक सज्जन ने यह भलाई की थी, और

अब, उसे अपने लबादे से ढककर, उसे उस घर में वापस ले जाने के लिए आगे बढ़े जहाँ से उन्होंने उसे निकलते देखा था।

मैंने सोचा कि वह उसे किसी नौकर के भरोसे छोड़कर चला जाएगा; लेकिन वह अंदर आया: थोड़ी देर नीचे रुकने के बाद वह ऊपर आया।

उनके स्वागत से तुरंत ही यह स्पष्ट हो गया कि श्रीमती ब्रेटन उन्हें जानती थीं। उन्होंने उन्हें पहचान लिया; उन्होंने उनका अभिवादन किया, फिर भी वे घबराई हुई, हैरान और अचंभित थीं। उनकी नज़र और हावभाव में एक तरह का अभिशाप था; और उनके शब्दों के बजाय, इन्हीं के जवाब में उन्होंने कहा, — “महोदया, मैं कुछ नहीं कर सकता था: मेरे लिए यह असंभव था कि मैं अपनी आँखों से देखे बिना देश छोड़ दूं कि वह कैसे बसती हैं।”

लेकिन इससे वह परेशान हो जाएगी।

मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा। और पापा की छोटी पॉली कैसी है?

यह सवाल उसने पॉलिना से पूछा, और फिर बैठते हुए उसे धीरे से अपने सामने जमीन पर बिठा दिया।

"पॉली के पापा कैसे हैं?" यह जवाब मिला, जब वह उनकी गोद में झुक गई और उनके चेहरे की ओर देखने लगी।

यह न तो शोरगुल भरा दृश्य था, न ही शब्दों का अंबार; इसके लिए मैं आभारी था; लेकिन यह भावनाओं से लबालब भरा दृश्य था, और चूंकि प्याला न तो उफान मार रहा था और न ही उग्र रूप से छलक रहा था, इसलिए यह और भी अधिक बोझिल लग रहा था। उग्र, अनियंत्रित विस्तार के सभी अवसरों पर, थके हुए दर्शक को तिरस्कार या उपहास की भावना से राहत मिलती है; जबकि मुझे हमेशा उस प्रकार की संवेदनशीलता सबसे अधिक बोझिल लगी है जो अपनी इच्छा से झुक जाती है, अच्छे विवेक के प्रभाव में एक विशाल गुलाम की तरह।

श्री होम का चेहरा गंभीर था—शायद मुझे कहना चाहिए कि उनका चेहरा कठोर था: उनका माथा उभरा हुआ था और गाल की हड्डियाँ स्पष्ट और उभरी हुई थीं। उनके चेहरे की बनावट बिल्कुल स्कॉटिश थी; लेकिन उनकी आँखों में भावनाएँ थीं और उनके अब उत्तेजित चेहरे पर भाव स्पष्ट थे। उनके बोलने का उत्तरी लहजा उनके चेहरे की बनावट से मेल खाता था। वे एक साथ गर्वित और सरल दिखते थे। उन्होंने बच्चे के उठे हुए सिर पर हाथ रखा। बच्ची ने कहा— “पॉली को चूमो।”

उसने उसे चूमा। मेरी इच्छा थी कि वह कोई चीख निकाले, जिससे मुझे राहत मिले और मैं निश्चिंत हो जाऊं। उसने बहुत कम आवाज़ की: ऐसा लग रहा था मानो उसे जो चाहिए था, वह मिल गया हो—सब कुछ, और वह संतुष्टि की गहरी अवस्था में थी। न तो हाव-भाव में और न ही चेहरे में यह स्त्री अपने पिता जैसी थी, फिर भी वह उन्हीं की थी: उसका मन उन्हीं के विचारों से भरा हुआ था, जैसे प्याला मदिरादान से।

इसमें कोई शक नहीं कि मिस्टर होम में मर्दाना आत्म-संयम था, चाहे कुछ मामलों में उनके मन में कुछ भी चल रहा हो। अपनी छोटी बेटी को देखते हुए उन्होंने कहा, "पॉली, हॉल में जाओ; तुम्हें पापा का ओवरकोट कुर्सी पर पड़ा दिखेगा; जेब में हाथ डालो, तुम्हें वहाँ एक रुमाल मिलेगा; उसे मेरे पास ले आओ।"

उसने आज्ञा मानी; गई और फुर्ती से लौट आई। जब वह लौटी तो वह श्रीमती ब्रेटन से बात कर रहा था, और वह हाथ में रूमाल लिए इंतज़ार कर रही थी। अपने आप में, उसे देखना एक अद्भुत दृश्य था, अपने छोटे कद और सुडौल शरीर के साथ उसके घुटने के पास खड़ी देखना। यह देखकर कि वह बात करता रहा, मानो उसे उसकी वापसी का एहसास ही न हुआ हो, उसने उसका हाथ पकड़ा, उसकी उंगलियों को खोला, उनमें रूमाल धीरे से डाला और एक-एक करके उंगलियां बंद कर लीं। वह अब भी उसे देख या महसूस नहीं कर रहा था; लेकिन धीरे-धीरे उसने उसे अपने घुटने पर उठा लिया; वह उससे लिपट गई, और यद्यपि अगले एक घंटे तक न तो किसी ने एक-दूसरे को देखा और न ही बात की, मुझे लगता है कि दोनों संतुष्ट थे।

चाय के दौरान, उस छोटी सी चीज की हरकतें और व्यवहार हमेशा की तरह आंखों को पूरी तरह से व्यस्त रखे हुए थे। पहले उसने वॉरेन को निर्देश दिए, जब वह कुर्सियाँ लगा रहा था।

“पापा की कुर्सी यहाँ रख दो, और मेरी कुर्सी उसके पास, पापा और मिसेज़ के बीच में।”

ब्रेटन: मुझे उनकी चाय देनी होगी।

वह अपनी सीट पर बैठ गई और अपने पिता को हाथ से इशारा किया।

"मेरे पास रहो, जैसे हम घर पर हों, पापा।"

और फिर, जब वह गुजरते हुए उनके कप को रोकती, और खुद चीनी मिलाती और मलाई डालती, तो कहती, "मैं हमेशा घर पर आपके लिए यही करती थी, पापा: कोई भी इसे इतनी अच्छी तरह से नहीं कर सकता था, यहां तक कि आप खुद भी नहीं।"

पूरे भोजन के दौरान उसका ध्यान इधर-उधर भटकता रहा: उसकी हरकतें कुछ हद तक अटपटी थीं। चीनी का चिमटा उसके एक हाथ के लिए बहुत चौड़ा था, इसलिए उसे दोनों हाथों का इस्तेमाल करना पड़ा; चांदी के मदिरा पात्र, ब्रेड और बटर की प्लेटें, यहाँ तक कि कप और तश्तरी का वजन भी उसकी अपर्याप्त ताकत और कुशलता के कारण चुनौती भरा था; फिर भी वह कभी यह उठाती, कभी वह देती, और सौभाग्य से इन सबके बावजूद उसने कुछ भी नहीं तोड़ा। सच कहूँ तो, मुझे वह थोड़ी दखलंदाज़ लगी; लेकिन उसके पिता, जो अन्य माता-पिता की तरह अंधे थे, उसे अपनी सेवा करने देने में पूरी तरह संतुष्ट थे, और यहाँ तक कि उसकी इन हरकतों से उन्हें बहुत सुकून भी मिला।

“वह मेरी सहारा है!” वह श्रीमती ब्रेटन से कहे बिना नहीं रह सका। उस महिला के पास अपना एक अलग ही सहारा था, जो उससे कहीं अधिक बड़ा और अद्वितीय था, और फिलहाल अनुपस्थित था; इसलिए उसने उसकी इस कमजोरी पर सहानुभूति जताई।

यह दूसरी "सुकून" शाम के समय मंच पर आई। मुझे पता था कि उनके लौटने के लिए यही दिन तय किया गया था, और मुझे यह भी पता था कि श्रीमती ब्रेटन पूरे दिन उनका इंतज़ार कर रही थीं। चाय के बाद हम सब आग के चारों ओर बैठे थे, तभी ग्राहम हमारे साथ शामिल हो गए: बल्कि यूँ कहूँ कि उन्होंने हमारे बीच हलचल मचा दी — क्योंकि ज़ाहिर है, उनके आने से सब लोग चहल-पहल करने लगे; और फिर, चूंकि श्री ग्राहम उपवास कर रहे थे, इसलिए जलपान का इंतज़ाम करना पड़ा। वह और श्री होम पुराने परिचितों की तरह मिले; उन्होंने कुछ देर तक उस छोटी लड़की पर ध्यान ही नहीं दिया।

खाना खत्म होने और माँ के कई सवालों के जवाब मिलने के बाद, वह मेज़ से उठकर चूल्हे की ओर मुड़ा। जहाँ वह बैठा था, उसके ठीक सामने मिस्टर होम बैठे थे और उनके बगल में बच्ची बैठी थी। जब मैं बच्ची कहती हूँ, तो मैं एक अनुपयुक्त और अवर्णनीय शब्द का प्रयोग कर रही हूँ - एक ऐसा शब्द जो शोक वस्त्र और सफेद कमीज़ पहने उस शांत छोटी बच्ची की छवि को नहीं दर्शाता, जो शायद किसी गुड़िया पर भी फिट बैठती - जो अब एक ऊँची कुर्सी पर बैठी थी, जिसके बगल में एक स्टैंड था, जिस पर उसका सफेद पॉलिश किया हुआ लकड़ी का खिलौना बॉक्स रखा था, और उसके हाथों में एक रूमाल का टुकड़ा था, जिसे वह सिला हुआ दिखाने का नाटक

कर रही थी, और जिस पर वह लगातार एक सुई से छेद कर रही थी, जो उसकी उंगलियों में लगभग एक सींक की तरह लग रही थी, बार-बार खुद को चुभो रही थी, जिससे कपड़े पर छोटे-छोटे लाल बिंदु बन रहे थे; कभी-कभी वह चौंक जाती थी जब वह नुकीला हथियार - उसके नियंत्रण से बाहर होकर - सामान्य से अधिक गहरा घाव कर देता था; लेकिन फिर भी शांत, मेहनती, तल्लीन, स्त्रीत्व से भरी हुई।

उस समय ग्राहम सोलह वर्ष का एक सुंदर, बेवफ़ा दिखने वाला युवक था। मैं उसे बेवफ़ा इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि उसका स्वभाव वास्तव में बहुत कपटी था, बल्कि इसलिए कि यह विशेषण मुझे उसके सुंदर, सेल्टिक (सैक्सन नहीं) स्वरूप का वर्णन करने के लिए उपयुक्त लगता है; उसके लहराते हल्के भूरे बाल, सुगठित शरीर, बार-बार मुस्कुराना, और उसकी मुस्कान में आकर्षण और सूक्ष्मता की कोई कमी नहीं थी (बुरे अर्थ में नहीं)। उन दिनों वह एक बिगड़ा हुआ, मनमौजी लड़का था।

कुछ देर तक चुपचाप अपने सामने खड़ी छोटी सी आकृति को निहारने के बाद, और जब श्री होम के कमरे से अस्थायी रूप से चले जाने से उनकी आधी-अधूरी हंसी वाली शर्म दूर हो गई, जो कि उनके लिए संकोच का एकमात्र रूप था, तो उन्होंने कहा, "माँ, मैं आज के समाज में एक युवती को देख रहा हूँ जिससे मेरा परिचय नहीं कराया गया है।"

"मेरा मतलब शायद मिस्टर होम की छोटी बच्ची से है," उसकी मां ने कहा।

“जी हां, महोदया,” उनके बेटे ने उत्तर दिया, “मुझे आपका यह कथन अत्यंत असभ्य लगता है: मुझे निश्चित रूप से मिस होम कहना चाहिए था, जब मैं उस महिला के बारे में बोलने का साहस कर रहा था जिसका मैं जिक्र कर रहा हूं।”

“अब, ग्राहम, मैं उस बच्ची को चिढ़ाने नहीं दूँगा। यह मत सोचो कि मैं तुम्हें उसे अपना निशाना बनाने दूँगा।”

“मिस होम,” ग्राहम ने अपनी माँ की आपत्तियों से बेपरवाह होकर कहा, “क्या मुझे अपना परिचय देने का सम्मान प्राप्त होगा, क्योंकि ऐसा लगता है कि कोई और आपको और मुझे यह सेवा प्रदान करने के लिए तैयार नहीं है? आपका दास, जॉन ग्राहम ब्रेटन।”

उसने उसकी ओर देखा; वह उठा और अत्यंत गंभीरता से झुककर अभिवादन किया। उसने जानबूझकर अंगुली, कैंची और काम की चीजें नीचे रख दीं; सावधानी से अपनी जगह से नीचे उतरी और अत्यंत गंभीरता से झुककर पूछा, "आप कैसे हैं?"

“मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि मेरा स्वास्थ्य ठीक है, बस लंबी यात्रा के कारण थोड़ी थकान है। आशा है, महोदया, आप ठीक होंगी?”

“बेहद शानदार,” उस छोटी महिला ने महत्वाकांक्षी जवाब दिया और अब उसने अपनी पूर्व जैसी ऊँचाई फिर से प्राप्त करने का प्रयास किया, लेकिन यह देखकर कि बिना चढ़े और ज़ोर लगाए यह संभव नहीं था — जो शिष्टाचार का घोर उल्लंघन था — और एक अजनबी युवक की उपस्थिति में किसी की सहायता लेने से पूरी तरह कतराते हुए, उसने ऊँची कुर्सी छोड़कर एक नीची स्टूल पर बैठना शुरू कर दिया: ग्राहम अपनी कुर्सी को उस नीची स्टूल की ओर खींच लाया।

“मुझे उम्मीद है, महोदया, आपको मेरा वर्तमान निवास स्थान, मेरी माँ का घर, रहने के लिए सुविधाजनक लगता होगा?”

“खास तौर पर नहीं; मैं घर जाना चाहता हूँ।”

“यह एक स्वाभाविक और प्रशंसनीय इच्छा है, महोदया; लेकिन फिर भी,

मैं विरोध करने की पूरी कोशिश करूंगा। मुझे विश्वास है कि मैं तुमसे बच निकल पाऊंगा।

उस अनमोल वस्तु, मनोरंजन का थोड़ा सा अंश, जो माँ और

"श्रीमती स्नो, आप मुझे वहाँ संतुष्ट करने में असफल रहेंगी।"

मुझे जल्द ही पापा के साथ जाना होगा: मैं तुम्हारी माँ के घर ज्यादा देर नहीं रुकूँगी।

“जी हां, जी हां; मुझे पूरा यकीन है कि तुम मेरे साथ ही रहोगी। मेरे पास एक टट्टू है जिस पर तुम सवारी करोगी, और तुम्हें दिखाने के लिए ढेरों चित्रयुक्त किताबें भी हैं।”

क्या अब आप यहीं रहने वाले हैं?

“मैं हूँ। क्या इससे आपको खुशी हुई? क्या आप मुझे पसंद करते हैं?”

"नहीं।"

"क्यों?"

मुझे लगता है तुम समलैंगिक हो।

“मेरा चेहरा, महोदया?”

"आपका चेहरा और आपके बारे में सब कुछ: आपके लंबे लाल बाल हैं।"

“अगर आप चाहें तो कहिए, मेरे बाल भूरे हैं: माँ, इसे भूरा या सुनहरा कहती हैं,

और उनकी सभी सहेलियाँ भी यही कहती हैं। लेकिन अपने 'लंबे लाल बालों' के साथ भी" (और उन्होंने अपने बालों को एक तरह की जीत के साथ लहराया - वह खुद अच्छी तरह जानते थे कि वे भूरे रंग के हैं, और उन्हें अपने उस शेर जैसे रंग पर गर्व था), "मैं आपकी महोदया से ज़्यादा विचित्र नहीं हो सकता।"

"तुम मुझे समलैंगिक कहते हो?"

"निश्चित रूप से।"

(थोड़ी देर रुककर), "मुझे लगता है कि मुझे सोने जाना चाहिए।"

"तुम्हारे जैसी छोटी सी बच्ची को तो कई घंटे पहले ही बिस्तर पर सो जाना चाहिए था; लेकिन शायद तुम मुझे देखने की उम्मीद में जागती रही?"

"जी नहीं, बिलकुल नहीं।"

"तुम निश्चित रूप से मेरी संगति का आनंद लेना चाहते थे। तुम्हें पता था कि मैं घर आ रहा हूँ, और तुम मुझे देखने के लिए इंतजार करते थे।"

मैं पापा के लिए उठी थी, तुम्हारे लिए नहीं।

"बहुत बढ़िया, मिस होम। मैं सबकी चहेती बनने वाली हूँ: मुझे लगता है जल्द ही पापा से भी ज़्यादा पसंद की जाने लगूँगी।"

उसने श्रीमती ब्रेटन और मुझे शुभ रात्रि कहा; वह शायद दुविधा में थी कि क्या ग्राहम को भी उतना ही सम्मान मिलना चाहिए, तभी ग्राहम ने उसे एक हाथ से उठाया और उसी एक हाथ से उसे अपने सिर के ऊपर हवा में थामे रखा। उसने खुद को चिमनी के ऊपर लगे शीशे में इस तरह हवा में ऊपर उठते देखा। अचानक हुई यह हरकत, यह आज़ादी और इस तरह का अनादर उसके लिए असहनीय था।

"शर्म करो, मिस्टर ग्राहम!" वह गुस्से से चिल्लाई, "मुझे नीचे उतारो!" और जब वह फिर से खड़ी हुई, तो बोली, "मुझे आश्चर्य है कि अगर मैं आपके साथ ऐसा व्यवहार करूं, आपको अपने हाथ से उठाऊं (उस विशाल अंग को उठाते हुए) "जैसे वॉरेन छोटी बिल्ली को उठाता है, तो आप मेरे बारे में क्या सोचेंगे।"

इतना कहकर वह चली गई।

अध्याय III.

प्लेमेट्स।

श्री होम दो दिन तक रुके। अपने प्रवास के दौरान उन्हें बाहर जाने के लिए मनाना असंभव था: वे सारा दिन आग के पास बैठे रहे, कभी चुप रहते, कभी श्रीमती ब्रेटन की बातों को सुनते और उनका जवाब देते, जो उनके उदास मन के लिए बिल्कुल उपयुक्त थीं - न तो अत्यधिक सहानुभूतिपूर्ण, न ही बहुत अरुचिकर, बल्कि संवेदनशील; और उनमें मातृत्व का भी पुट था - श्रीमती उनसे उम्र में काफी बड़ी थीं, इसलिए उन्हें यह पुट रखने की अनुमति थी।

पॉलिना की बात करें तो, बच्ची एक ही समय में खुश और चुप, व्यस्त और चौकस थी।

उसके पिता अक्सर उसे अपनी गोद में उठा लेते थे; वह तब तक वहीं बैठी रहती थी जब तक...

उसे लगा या उसने कल्पना की कि वह बेचैन हो गया है; फिर उसने कहा - "पापा, मुझे नीचे उतारो;

मैं अपने वजन से तुम्हें थका दूंगा।

और भारी बोझ कालीन पर सरक गया, और पापा के पैरों के ठीक पास कालीन या स्टूल पर टिक गया, फिर सफेद काम करने का डिब्बा और लाल धब्बों वाला रूमाल काम में आ गए। ऐसा लगता है कि यह रूमाल पापा के लिए एक यादगार के तौर पर था, और उनके जाने से पहले इसे पूरा करना ज़रूरी था; इसलिए दर्जी की मेहनत पर बहुत दबाव था (वह आधे घंटे में लगभग बीस टाँके लगा देती थी)।

उस शाम, ग्राहम को उसकी मां के घर वापस लाकर (उसके दिन स्कूल में बीत रहे थे), हमारे जीवन में एक नई जीवंतता लाई गई - एक ऐसा गुण जो उसके और मिस पॉलिना के बीच होने वाले दृश्यों की प्रकृति से कम नहीं हुआ।

उसके आगमन की पहली शाम को उसके साथ हुए अपमान के परिणामस्वरूप उसका व्यवहार उदासीन और अभिमानी हो गया था: जब वह उससे बात करता, तो

उसका सामान्य उत्तर होता था - "मैं आपकी बात नहीं सुन सकती; मुझे और भी बातों पर ध्यान देना है।" यह पूछे जाने पर कि किन बातों पर:

"व्यापार।"

ग्राहम उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए अपनी मेज खोलकर उस पर रखी अनेकों चीज़ें प्रदर्शित करने का प्रयास करता था: मुहरें, चमकीली मोम की छड़ें, कलम-चाकू, और तरह-तरह की नक्काशीदार आकृतियाँ—जिनमें से कुछ रंग-बिरंगी थीं—जो उसने समय-समय पर एकत्र की थीं। और यह ज़बरदस्त प्रलोभन पूरी तरह व्यर्थ भी नहीं गया: उसकी नज़रें, चुपके से अपने काम से उठकर, बिखरी हुई तस्वीरों से सजी लेखन-मेज की ओर बार-बार जाती थीं। एक ब्लेंहेम स्पैनियल के साथ खेलते हुए बच्चे की एक नक्काशीदार आकृति संयोगवश ज़मीन पर गिर पड़ी।

"कितना प्यारा छोटा कुत्ता है!" उसने प्रसन्नता से कहा।

ग्राहम ने समझदारी से इस पर ध्यान नहीं दिया। थोड़ी देर बाद, अपने कोने से चुपके से निकलकर, वह खजाने को और करीब से देखने के लिए पास आई। कुत्ते की बड़ी-बड़ी आंखें और लंबे कान, और बच्चे की टोपी और पंख, बेहद आकर्षक थे।

“बहुत अच्छी तस्वीर है!” यह उनकी सकारात्मक प्रतिक्रिया थी।

"ठीक है—हो सकता है कि यह आपके पास हो," ग्राहम ने कहा।

वह हिचकिचाई। उसे पाने की इच्छा प्रबल थी, लेकिन स्वीकार करना गरिमा से समझौता होता। नहीं। उसने उसे नीचे रख दिया और मुँह फेर लिया।

"तो फिर, पॉली, तुम्हें यह नहीं मिलेगा?"

"मैं ऐसा नहीं करना चाहूंगा, धन्यवाद।"

"अगर आप तस्वीर लेने से इनकार करते हैं, तो मैं इसका क्या करूंगा, यह मैं आपको बताऊं?"

वह सुनने के लिए आधा मुड़ी।

"मोमबत्ती जलाने के लिए इसे पट्टियों में काट लें।"

"नहीं!"

लेकिन मैं ऐसा करूंगा।

कृपया ऐसा न करें।

विनती भरे लहजे को सुनकर ग्राहम का गुस्सा और बढ़ गया; उसने अपनी माँ की टोकरी से कैंची उठा ली।

“लो शुरू करते हैं!” उसने धमकी भरे अंदाज़ में कहा। “सीधे फिडो के सिर में छेद कर, और नन्हे हैरी की नाक तोड़ते हुए।”

"नहीं, नहीं, नहीं!"

“तो मेरे पास आओ। जल्दी आओ, वरना सब खत्म हो जाएगा।”

वह हिचकिचाई, कुछ देर रुकी, लेकिन अंत में मान गई।

"अब, क्या तुम इसे लोगी?" उसने उससे पूछा, जब वह उसके सामने खड़ी थी।

"कृपया।"

लेकिन मुझे भुगतान चाहिए होगा।

"कितना?"

"एक चुम्बन।"

"पहले तस्वीर मुझे दे दो।"

यह कहते हुए पॉली का चेहरा भी कुछ अविश्वासी सा लग रहा था। ग्राहम ने उसे जाने दिया। वह कर्जदार से भाग निकली, अपने पिता के पास दौड़ी और उनकी गोद में शरण ली। ग्राहम बनावटी क्रोध में उठा और उसके पीछे गया। उसने अपना चेहरा मिस्टर होम की जैकेट में छिपा लिया।

“पापा – पापा – इसे दूर भेज दो!”

“मुझे यहाँ से नहीं भेजा जाएगा,” ग्राहम ने कहा।

अपना चेहरा दूसरी ओर किए हुए, उसने उसे दूर रखने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

“तो मैं हाथ चूमूंगा,” उसने कहा; लेकिन उसी क्षण वह हाथ एक छोटी मुट्ठी में बदल गया, और उसने उसे चुंबन के बजाय एक छोटे सिक्के के रूप में भुगतान किया।

ग्राहम—अपने छोटे साथी की तरह ही चालाक था—बेहद परेशान होकर पीछे हट गया; वह सोफे पर लेट गया और तकिये पर सिर टिकाकर दर्द से कराहने वाले की तरह लेट गया। पॉली ने उसे चुप देखकर थोड़ी देर बाद उस पर नज़र डाली। उसकी आँखें और चेहरा हाथों से ढके हुए थे। वह अपने पिता की गोद में मुड़ी और अपने दुश्मन को चिंता से देर तक देखती रही। ग्राहम कराह उठा।

“पापा, क्या बात है?” उसने फुसफुसाते हुए पूछा।

"पॉली, बेहतर होगा कि तुम उससे पूछ लो।"

“क्या उसे चोट लगी है?” (दूसरी बार आह भरी आवाज़)

"वह ऐसी आवाज निकालता है मानो वह हो," श्री होम ने कहा।

“माँ,” ग्राहम ने कमजोर स्वर में कहा, “मुझे लगता है कि आपको डॉक्टर को बुला लेना चाहिए। ओह मेरी आँख!” (फिर से सन्नाटा छा गया, जो केवल ग्राहम की आहों से टूटा।)

“अगर मैं अंधा हो जाऊं तो—?” आखिरी सवाल ने यही संकेत दिया।

उसे दंडित करने वाली महिला इस सुझाव को सहन नहीं कर सकी। वह तुरंत उसके बगल में आ गई।

“मुझे तुम्हारी आँख देखने दो: मेरा इरादा उसे छूने का नहीं था, केवल तुम्हारा मुँह छूने का था; और

मुझे नहीं लगा था कि मैंने इतनी जोर से मारा था।

खामोशी ने उसे जवाब दिया। उसके चेहरे के भाव स्पष्ट थे, मानो वह कह रही हो, "मुझे खेद है; मुझे खेद है!"

फिर भावुकता हावी हो गई, लड़खड़ाती हुई; रोने लगी।

"मैंने उस बच्चे, ग्राहम, पर मुकदमा चलाकर देख लिया है," श्रीमती ब्रेटन ने कहा।

“यह सब बकवास है, मेरे प्यारे,” श्री होम चिल्लाए।

और ग्राहम ने एक बार फिर उसे ऊपर उठा लिया, और उसने फिर उसे दंडित किया; और उसके शेर जैसे बालों को खींचते हुए, उसने उसे "अब तक का सबसे शरारती, असभ्य, सबसे बुरा, सबसे झूठा व्यक्ति" कहा।

* * * * *

मिस्टर होम के जाने की सुबह, वह और उनकी बेटी खिड़की के एक कोने में अकेले में कुछ बातचीत कर रहे थे; मैंने उसका कुछ हिस्सा सुना।

“क्या मैं अपना सामान पैक करके आपके साथ नहीं जा सकती, पापा?” उसने फुसफुसाते हुए गंभीरता से पूछा।

उसने उसके सिर को हिलाकर रख दिया।

क्या मुझे आपके लिए परेशानी का कारण बनना चाहिए?

“हां, पॉली।”

“क्योंकि मैं छोटी हूँ?”

“क्योंकि तुम छोटी और कोमल हो। यात्रा तो केवल महान और बलवान लोगों को

ही करनी चाहिए। लेकिन उदास मत दिखो, मेरी प्यारी बच्ची; इससे मेरा दिल टूट जाता है। पापा जल्द ही अपनी पॉली के पास लौट आएंगे।"

"जी हां, जी हां, मैं दुखी नहीं हूं, बिलकुल भी नहीं।"

"पॉली को पापा को तकलीफ देने में बुरा लगेगा, है ना?"

मुझे बेहद खेद है।

"तो फिर पॉली को खुश रहना चाहिए: बिछड़ने पर रोना नहीं चाहिए; बाद में परेशान नहीं होना चाहिए।"

उसे दोबारा मिलने की उम्मीद रखनी चाहिए और इस बीच खुश रहने की कोशिश करनी चाहिए।

क्या वह ऐसा कर सकती है?

वह कोशिश करेगी।

मुझे लगता है वो आ जाएगी। अलविदा। अब जाने का समय हो गया है।

"अभी? — अभी इसी वक्त?"

"बस अब।"

उसने कांपते हुए होंठ ऊपर उठाए। उसके पिता रो रहे थे, लेकिन मैंने गौर किया कि वह नहीं रोई। उसे नीचे उतारकर उन्होंने वहां मौजूद बाकी लोगों से हाथ मिलाया और चले गए।

जब गली का दरवाजा बंद हुआ, तो वह एक कुर्सी पर घुटनों के बल गिर पड़ी और चिल्लाई - "पापा!"

उसकी आवाज़ धीमी और लंबी थी; मानो वह कह रही हो, "तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया?" अगले कुछ मिनटों तक मैंने महसूस किया कि वह पीड़ा से गुज़र रही थी। अपने बचपन के उस छोटे से समय में उसने ऐसी भावनाएँ महसूस कीं जो कुछ लोग कभी महसूस नहीं करते; यह उसके स्वभाव में था: अगर वह जीवित रहती तो उसे ऐसे और भी पल मिलते। किसी ने कुछ नहीं कहा। श्रीमती ब्रेटन, एक माँ होने के नाते, एक-दो आँसू बहा बैठीं। ग्राहम, जो लिख रहा था, उसने अपनी नज़रें ऊपर उठाईं और उसे निहारा। मैं, लूसी स्नो, शांत थी।

इस प्रकार, बिना किसी उत्पीड़न के, उस नन्ही सी प्राणी ने वह किया जो कोई और नहीं कर सकता था - उसने एक असहनीय भावना का सामना किया; और कुछ समय बाद, उसे कुछ हद तक दबा भी लिया। उस दिन उसने किसी से भी सांत्वना स्वीकार

नहीं की; न ही अगले दिन: उसके बाद वह और भी निष्क्रिय हो गई।

तीसरी शाम, जब वह थकी-हारी और चुपचाप ज़मीन पर बैठी थी, तभी ग्राहम अंदर आया और बिना कुछ कहे उसे धीरे से उठा लिया। उसने कोई विरोध नहीं किया: बल्कि थकी हुई सी उसकी बाहों में सिमट गई। जब वह बैठ गया, तो उसने अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया; कुछ ही मिनटों में वह सो गई; वह उसे ऊपर कमरे में बिस्तर पर ले गया। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ कि अगली सुबह उसने सबसे पहले यही पूछा, "मिस्टर ग्राहम कहाँ हैं?"

संयोगवश ग्राहम नाश्ते की मेज पर नहीं आ रहा था; उसे उस सुबह की कक्षा के लिए कुछ अभ्यास लिखने थे, और उसने अपनी माँ से अध्ययन कक्ष में एक कप चाय भेजने का अनुरोध किया था। पॉली ने चाय लाने की ज़िम्मेदारी ले ली: वह किसी न किसी काम में व्यस्त होगी, किसी की देखभाल कर रही होगी। चाय का कप उसे सौंप दिया गया; क्योंकि वह बेचैन तो थी ही, साथ ही सावधान भी। चूंकि अध्ययन कक्ष नाश्ते के कमरे के सामने था, और दोनों के दरवाजे गलियारे के पार खुलते थे, इसलिए मेरी नज़र उसका पीछा करती रही।

"तुम क्या कर रहे हो?" उसने दहलीज पर रुकते हुए पूछा।

ग्राहम ने कहा, "लेखन।"

"तुम अपनी मम्मी के साथ नाश्ता करने क्यों नहीं आते?"

"अति व्यस्त।"

"क्या आप नाश्ता करना चाहेंगे?"

"बिल्कुल।"

“तो फिर।”

और उसने प्याला कालीन पर रख दिया, जैसे कोई जेलर कैदी के पानी का घड़ा उसकी कोठरी के दरवाजे से अंदर रख देता है, और पीछे हट गई। थोड़ी देर बाद वह लौट आई।

"चाय के अलावा आप क्या लेंगे—खाने के लिए क्या लेंगे?"

“कुछ भी अच्छा लाओ। मेरे लिए कुछ खास अच्छा लाओ; वह एक दयालु महिला है।”

वह श्रीमती ब्रेटन के पास वापस आ गई।

"महोदया, अपने बेटे के लिए कुछ अच्छा भेजिए।"

"पॉली, तुम उसके लिए चुनोगी; मेरे बेटे को क्या मिलेगा?"

उसने मेज पर जो सबसे अच्छा था, उसमें से एक हिस्सा चुना; और थोड़ी देर बाद फुसफुसाते हुए मुरब्बे की माँग लेकर लौटी, जो वहाँ नहीं था। हालाँकि, मुरब्बा मिलने पर (क्योंकि श्रीमती ब्रेटन ने उन दोनों को किसी भी चीज़ के लिए मना नहीं किया), ग्राहम को थोड़ी देर बाद उसकी खूब तारीफ करते हुए सुना गया; उसने वादा किया कि जब उसका अपना घर होगा, तो वह उसकी गृहणी होगी, और शायद—अगर उसमें खाना पकाने की प्रतिभा हो—तो उसकी रसोइया भी होगी; और, क्योंकि वह वापस नहीं लौटी, और मैं उसे देखने गया, तो मैंने ग्राहम और उसे नाश्ता करते हुए पाया—वह उसके बगल में खड़ी थी, और उसके साथ खाना खा रही थी: मुरब्बे को छोड़कर, जिसे उसने बड़ी नज़ाकत से छूने से मना कर दिया, कहीं ऐसा न लगे कि उसने इसे अपने लिए भी उतना ही खरीदा है जितना ग्राहम के लिए। वह लगातार अपनी इन सूक्ष्म समझ और कोमल प्रवृत्तियों का प्रदर्शन करती थी।

इस तरह बनी जान-पहचान का रिश्ता जल्दी टूटा नहीं; बल्कि इसके विपरीत, ऐसा लगता था कि समय और परिस्थितियाँ इसे ढीला करने के बजाय और मज़बूत कर रही थीं। उम्र, लिंग, रुचियों आदि में एक-दूसरे से बिल्कुल अलग होने के बावजूद, वे किसी न किसी तरह एक-दूसरे से बहुत कुछ कह लेते थे। पॉलिना के बारे में मैंने देखा कि उसका छोटा सा स्वभाव युवा ब्रेटन के अलावा कभी खुलकर सामने नहीं आया। जैसे-जैसे वह घर में घुलमिल गई और अभ्यस्त हो गई, वह श्रीमती ब्रेटन के साथ काफी मिलनसार साबित हुई; लेकिन वह सारा दिन उस महिला के पैरों के पास एक स्टूल पर बैठी रहती, अपना काम सीखती, सिलाई करती या स्लेट पर पेंसिल से चित्र बनाती रहती, और कभी भी अपनी मौलिकता नहीं दिखाती, न ही अपने स्वभाव की कोई झलक दिखाती। मैंने ऐसी परिस्थितियों में उसे देखना बंद कर दिया: वह दिलचस्प नहीं थी। लेकिन शाम को जैसे ही ग्राहम की दस्तक सुनाई देती, एक बदलाव आ जाता; वह तुरंत सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुँच जाती। आमतौर पर उसका स्वागत डांट या धमकी से होता था।

“तुमने चटाई पर अपने जूते ठीक से नहीं पोंछे हैं। मैं तुम्हारी मम्मी को बता दूंगी।”

“छोटी सी दखलंदाज़! क्या तुम वहाँ हो?”

“हाँ—और तुम मुझ तक नहीं पहुँच सकते: मैं तुमसे ज़्यादा ऊँचाई पर हूँ” (रेल की रेलिंग के बीच से झाँकते हुए; वह उनके ऊपर से नहीं देख सकती थी)।

“पॉली!”

“मेरे प्यारे बेटे!” (यह उसके लिए उसके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों में से एक था, जिसे उसने उसकी माँ की नकल करते हुए अपनाया था।)

“मैं थकान से बेहोश होने वाला हूँ,” ग्राहम ने गलियारे की दीवार से टेक लगाते हुए, मानो पूरी तरह थक गया हो, कहा। “डॉक्टर डिग्बी” (प्रधानमंत्री) ने मुझे ज़रूरत से ज़्यादा काम देकर बिल्कुल थका दिया है। ज़रा नीचे आइए और मेरी किताबें ऊपर ले जाने में मेरी मदद कीजिए।”

“अरे! तुम तो बड़े चालाक हो!”

“बिल्कुल नहीं, पॉली—यह बिल्कुल सच है। मैं एकदम कमजोर हूँ। शांत हो जाओ।”

"तुम्हारी आंखें बिल्ली की तरह शांत हैं, लेकिन तुम उछल पड़ोगे।"

“वसंत? ऐसा कुछ नहीं: मेरे अंदर वह है ही नहीं। नीचे आओ।”

"शायद मैं ऐसा कर सकती हूँ - अगर आप वादा करें कि आप मुझे नहीं छुएंगे - मुझे नहीं उठाएंगे, और मुझे गोल-गोल नहीं घुमाएंगे।"

“मैं? मैं तो ये कर ही नहीं सकता!” (कुर्सी पर बैठते हुए)

फिर किताबों को पहली सीढ़ी पर रख दो और तीन गज दूर चले जाओ।

यह सब हो जाने पर, वह सावधानी से नीचे उतरी, और अपनी निगाहें कमज़ोर ग्राहम से हटाए बिना। ज़ाहिर है, उसके आने से ग्राहम में हमेशा एक नई और चंचल ऊर्जा आ जाती थी: खेल-कूद का सिलसिला शुरू होना तय था। कभी-कभी वह नाराज़ हो जाती; कभी-कभी मामला शांति से टल जाता, और जब वह उसे ऊपर ले जा रही थी, तो हम उसे यह कहते हुए सुन सकते थे: "अब, मेरे प्यारे बच्चे, आओ और चाय पी लो - मुझे यकीन है कि तुम्हें कुछ चाहिए होगा।"

ग्राहम के भोजन करते समय उसके बगल में बैठी उसे देखना काफी हास्यास्पद था। उसकी अनुपस्थिति में वह एकदम शांत रहती थी, लेकिन उसके साथ वह हद से ज़्यादा दखलअंदाज़ी और बेचैन हो जाती थी। मैं अक्सर सोचती थी कि काश वह शांत रहती; लेकिन नहीं—उसके सामने वह खुद को भूल जाती थी: उसकी जितनी भी सेवा की जाए, वह कम ही लगती थी; उसकी नज़र में वह किसी दंपत्ति से कम नहीं था। वह धीरे-धीरे उसके सामने अलग-अलग प्लेटें सजाती जाती, और जब ऐसा लगता कि उसकी हर इच्छा पूरी हो चुकी है, तब वह कुछ और ढूंढ लेती: “महोदया,” वह श्रीमती

ब्रेटन से फुसफुसाती, “शायद आपके बेटे को थोड़ा सा केक पसंद आएगा—मीठा केक, आप जानती हैं—वहाँ कुछ रखा है” (साइडबोर्ड की अलमारी की ओर इशारा करते हुए)। श्रीमती ब्रेटन आमतौर पर चाय के साथ मीठा केक पसंद नहीं करती थीं, लेकिन फिर भी उसने ज़िद की— “एक छोटा सा टुकड़ा—सिर्फ़ उसके लिए—क्योंकि वह स्कूल जाता है: हम जैसी लड़कियों को तो मिठाई की ज़रूरत नहीं होती, लेकिन उसे पसंद आएगा।”

ग्राहम को यह बहुत पसंद था, और लगभग हमेशा उसे यह मिल ही जाता था। उसके साथ न्याय करते हुए, वह अपना इनाम उस लड़की के साथ बाँटना चाहता था जिसका वह ऋणी था; लेकिन इसकी कभी अनुमति नहीं थी: ज़िद करना उसे शाम के लिए नाराज़ कर देता। उसके घुटने के पास खड़े रहना, उसकी बातों और ध्यान पर एकाधिकार रखना ही वह इनाम था जो वह चाहती थी - केक में हिस्सा नहीं।

वह बड़ी उत्सुकता से ग्राहम की रुचियों के विषयों में खुद को ढाल लेती थी। ऐसा लगता था मानो उस बच्ची का अपना कोई दिमाग या जीवन ही न हो, बल्कि वह किसी और के सहारे ही जीती, चलती और अपना अस्तित्व रखती हो। अब जब उसके पिता उससे बिछड़ गए थे, तो वह ग्राहम से लिपट जाती थी और मानो उसके भावों को महसूस करती हो: मानो उसके अस्तित्व में ही जीती हो। उसने उसके सभी सहपाठियों के नाम पल भर में सीख लिए: ग्राहम के मुख से निकले उनके चरित्र उसे कंठस्थ याद हो गए: किसी एक व्यक्ति का एक ही वर्णन उसके लिए पर्याप्त लगता था। वह कभी भूलती नहीं थी और न ही पहचान को लेकर भ्रमित होती थी: वह पूरी शाम ग्राहम से उन लोगों के बारे में बात करती रहती थी जिन्हें उसने कभी देखा भी नहीं था, और ऐसा लगता था मानो वह उनके रूप-रंग, तौर-तरीकों और स्वभाव को पूरी तरह से समझती हो। कुछ की नकल करना उसने सीख लिया था: एक शिक्षक, जो छोटी ब्रेटन को बिल्कुल पसंद नहीं था, उसकी कुछ ऐसी आदतें थीं, जिन्हें उसने ग्राहम के वर्णन से तुरंत सीख लिया और ग्राहम के मनोरंजन के लिए उनका अभ्यास करती थी; हालाँकि, श्रीमती ब्रेटन को यह पसंद नहीं था और उन्होंने इसे मना कर दिया था।

दोनों के बीच शायद ही कभी झगड़ा होता था; फिर भी एक बार उनके बीच दरार आ गई, जिससे उसकी भावनाओं को गहरा आघात पहुंचा।

एक दिन ग्राहम के जन्मदिन पर, उसके कुछ हमउम्र दोस्त उसके साथ भोजन करने आए थे। पॉलिना को इन दोस्तों के आने में बहुत दिलचस्पी थी; उसने उनके बारे में

अक्सर सुना था; वे उन लोगों में से थे जिनके बारे में ग्राहम अक्सर बात करता था। भोजन के बाद, वे युवक भोजन कक्ष में अकेले रह गए, जहाँ वे जल्द ही खूब मस्ती करने लगे और शोर मचाने लगे। संयोग से हॉल से गुजरते हुए, मैंने पॉलिना को सीढ़ियों के सबसे निचले पायदान पर अकेले बैठे देखा, उसकी निगाहें भोजन कक्ष के दरवाजे के चमकदार पैनलों पर टिकी हुई थीं, जहाँ हॉल के लैंप की रोशनी चमक रही थी; उसकी छोटी सी भौंहें चिंता और सोच में सिकुड़ी हुई थीं।

"पॉली, तुम क्या सोच रही हो?"

“कुछ खास नहीं; बस मेरी इच्छा है कि वह दरवाजा पारदर्शी कांच का होता—ताकि मैं उसके आर-पार देख पाती। लड़के बहुत खुश लग रहे हैं, और मैं उनके पास जाना चाहती हूँ: मैं ग्राहम के साथ रहना चाहती हूँ, और उसके दोस्तों को देखना चाहती हूँ।”

आपको जाने से क्या रोक रहा है?

मुझे डर लग रहा है: लेकिन क्या मैं कोशिश कर सकता हूँ, आपको क्या लगता है? क्या मैं दरवाजा खटखटाकर अंदर आने की अनुमति मांग सकता हूँ?

मैंने सोचा कि शायद उन्हें उसे एक साथी के रूप में रखने पर कोई आपत्ति नहीं होगी, और इसलिए मैंने इस प्रयास को प्रोत्साहित किया।

उसने दस्तक दी—शुरू में इतनी धीमी आवाज में कि सुनाई नहीं दी, लेकिन दूसरी कोशिश में दरवाजा खुल गया; ग्राहम का सिर बाहर आया; वह बहुत खुश लग रहा था, लेकिन अधीर भी था।

"तुम्हें क्या चाहिए, नन्हे बंदर?"

"आपके पास आने के लिए।"

“क्या सच में? जैसे कि मैं तुमसे परेशान होना चाहूँगी! जाओ माँ और मालकिन स्नो के पास, और उनसे कहो कि तुम्हें सुला दें।” भूरे बालों वाला सिर और चमकता हुआ चेहरा गायब हो गया, और दरवाज़ा ज़ोर से बंद हो गया। वह स्तब्ध रह गई।

“वह ऐसे क्यों बोल रहा है? वह पहले कभी ऐसे नहीं बोलता था,” उसने घबराहट में कहा। “मैंने क्या कर दिया?”

“कुछ नहीं, पॉली; लेकिन ग्राहम अपने स्कूल के दोस्तों के साथ व्यस्त है।”

और वो उन्हें मुझसे ज्यादा पसंद करता है! उनके आने के बाद तो वो मुझे ठुकरा देता है!

मैंने उसे सांत्वना देने और दर्शनशास्त्र के उन सिद्धांतों को समझाने का सोचा, जिनका मुझे हमेशा से अच्छा-खासा ज्ञान था। लेकिन जैसे ही मैंने कुछ कहा, उसने अपने कानों में उंगलियां डाल लीं और फिर चटाई पर मुंह के बल लेट गई; न तो वॉरेन और न ही रसोइया उसे उस स्थिति से उठा पाए; इसलिए उसे तब तक लेटे रहने दिया गया जब तक वह स्वयं उठ न जाए।

उसी शाम ग्राहम अपना धैर्य भूल गया और अपने दोस्तों के चले जाने के बाद हमेशा की तरह उससे बात करने ही वाला था कि उसने अपना हाथ छुड़ा लिया; उसकी आँखें गुस्से से लाल हो उठीं; उसने उसे शुभ रात्रि नहीं कहा; उसने उसकी ओर देखा तक नहीं। अगले दिन उसने उसके साथ उदासीनता से व्यवहार किया और वह संगमरमर की तरह कठोर हो गई। उसके अगले दिन उसने उससे पूछा कि क्या बात है; उसके होंठ नहीं खुले। ज़ाहिर है, वह अपने अंदर कोई वास्तविक गुस्सा नहीं महसूस कर सकता था: हर तरह से दोनों के बीच का रिश्ता बहुत असमान था; उसने उसे शांत करने और मनाने की कोशिश की। “वह इतनी नाराज़ क्यों थी? उसने क्या किया था?” धीरे-धीरे आँसुओं ने उसे जवाब दिया; उसने उसे प्यार से सहलाया और वे दोस्त बन गए। लेकिन वह ऐसी थी जिस पर ऐसी घटनाओं का कोई असर नहीं हुआ: मैंने गौर किया कि इस अपमान के बाद उसने कभी भी ग्राहम से मिलने की कोशिश नहीं की, न ही उसके पीछे गई, और न ही किसी भी तरह से उसका ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की। मैंने एक बार उससे कहा कि जब ग्राहम अपने अध्ययन कक्ष में बंद हो तो उसे कोई किताब या कोई और चीज़ दे दे।

“मैं उसके बाहर आने तक इंतजार करूंगी,” उसने गर्व से कहा; “मैं उसे दरवाजा खोलने के लिए उठने की परेशानी नहीं देना चाहती।”

युवा ब्रेटन का एक पसंदीदा टट्टू था जिस पर वह अक्सर सवारी करने जाता था; वह खिड़की से हमेशा उसके जाने और लौटने को देखती रहती थी। उसकी दिली इच्छा थी कि उसे उस टट्टू पर बैठकर आंगन का चक्कर लगाने की अनुमति मिल जाए; लेकिन ऐसी विनती करना उसके बस की बात नहीं थी। एक दिन वह उसे टट्टू से उतरते देखने के लिए आंगन में गई; जैसे ही वह फाटक से टिकी, उसकी आँखों में सवारी करने की तीव्र इच्छा झलक उठी।

"आओ, पॉली, क्या तुम थोड़ी देर दौड़ोगी?" ग्राहम ने आधे-अधूरे मन से पूछा।

मुझे लगता है कि उसने सोचा होगा कि वह बहुत लापरवाह था।

"नहीं, धन्यवाद," उसने अत्यंत निर्भीकता से मुंह फेरते हुए कहा।

“तुम्हें ऐसा करना ही चाहिए,” उसने आगे कहा। “मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हें यह पसंद आएगा।”

"मुझे नहीं लगता कि मुझे इसकी जरा भी परवाह करनी चाहिए," यह जवाब मिला।

“यह सच नहीं है। आपने लूसी स्नो को बताया था कि आप सवारी करने के लिए तरस रहे थे।”

मैंने उसे कहते सुना, "लूसी स्नो एक फटेहाल औरत है" (उसकी अस्पष्ट उच्चारण शैली ही उसकी सबसे कम बुद्धिमानी वाली बात थी); और इतना कहकर वह घर में चली गई।

कुछ ही देर बाद अंदर आकर ग्राहम ने अपनी माँ से कहा, “माँ, मुझे लगता है कि वह प्राणी एक रूप बदलने वाली है: वह विचित्रताओं का एक संपूर्ण संग्रह है; लेकिन उसके बिना मैं नीरस हो जाऊँगा: वह मुझे आपसे या लूसी स्नो से कहीं अधिक मनोरंजन देती है।”

* * * * *

पॉलिना ने मुझसे कहा (उसे अब रात में जब हम अपने कमरे में अकेले होते थे, तो कभी-कभार मुझसे बातचीत करने की आदत हो गई थी), "मिस स्नो, क्या आप जानती हैं कि सप्ताह के किस दिन मुझे ग्राहम सबसे ज्यादा पसंद है?"

“मैं इतनी अजीब बात कैसे जान सकता हूँ? क्या सात दिनों में से कोई एक दिन ऐसा होता है जब वह बाकी छह दिनों से अलग व्यवहार करता है?”

“बिल्कुल! क्या आप देख नहीं सकते? क्या आप नहीं जानते? मुझे वह रविवार को सबसे बेहतरीन लगता है; तब वह पूरे दिन हमारे साथ रहता है, शांत रहता है, और शाम को बहुत दयालु होता है।”

यह अवलोकन पूरी तरह निराधार नहीं था: चर्च जाना आदि ग्राहम को रविवार को शांत रखता था, और शाम को वह आमतौर पर बैठक कक्ष में आग के पास बैठकर शांतिपूर्ण, हालांकि कुछ हद तक आलसी ढंग से समय बिताता था। वह सोफे पर बैठ जाता और फिर पॉली को बुलाता।

ग्राहम बाकी लड़कों से थोड़ा अलग था; उसकी सारी खुशी काम में ही नहीं थी: वह

चिंतन के क्षण भी व्यतीत करता था; उसे पढ़ने में भी आनंद आता था, और किताबों का उसका चुनाव भी पूरी तरह से अंधाधुंध नहीं था: उसकी पसंद में एक विशिष्ट प्रकार की झलक थी, और यहाँ तक कि सहज रुचि भी दिखाई देती थी। यह सच है कि वह शायद ही कभी अपनी पढ़ी हुई किताबों पर टिप्पणी करता था, लेकिन मैंने उसे बैठकर उनके बारे में सोचते हुए देखा है।

पॉली उसके पास ही, एक छोटे से तकिये या कालीन पर घुटने टेककर बैठ जाती थी, और उनके बीच धीमी, लेकिन सुनाई न देने वाली फुसफुसाहट शुरू हो जाती थी। मुझे कभी-कभार उनकी आवाज़ का कुछ अंश सुनाई देता था; और सच कहूँ तो, रोज़मर्रा की ज़िंदगी से कहीं बेहतर और सूक्ष्म प्रभाव, ऐसे समय में ग्राहम को शांत और सौम्य बना देता था।

"पॉली, क्या तुमने इस सप्ताह कोई भजन सीखा है?"

मैंने एक बहुत ही सुंदर कविता सीखी है, जिसमें चार छंद हैं। क्या मैं इसे सुनाऊं?

"तो फिर विनम्रता से बात करें: जल्दबाजी न करें।"

भजन का अभ्यास, या यूँ कहें कि आधा-अधूरा गायन, धीमी आवाज़ में किया जा रहा था। ग्राहम उस तरीके पर आपत्ति जताते और उसे पाठ का पाठ पढ़ाने लगते। वह सीखने में तेज़ थी, नकल करने में निपुण थी; और इसके अलावा, ग्राहम को खुश करना ही उसकी खुशी थी: वह एक होशियार छात्रा साबित हुई। भजन के बाद कुछ पढ़ना होता—शायद बाइबिल का कोई अध्याय; यहाँ सुधार की शायद ही कभी ज़रूरत पड़ती थी, क्योंकि बच्ची किसी भी सरल कथा अध्याय को बहुत अच्छी तरह पढ़ लेती थी; और जब विषय ऐसा होता जिसे वह समझ सकती थी और उसमें रुचि ले सकती थी, तो उसकी अभिव्यक्ति और उच्चारण अद्भुत होते थे। यूसुफ को गड्ढे में फेंका जाना; शमूएल को बुलाना; दानियेल को शेरों की गुफा में डालना;—ये उसके पसंदीदा अंश थे: विशेष रूप से पहले अंश में वह करुणा को पूरी तरह से महसूस करती थी।

“बेचारा याकूब!” वह कभी-कभी कांपते होंठों से कहती। “वह अपने बेटे यूसुफ से कितना प्यार करता था! उतना ही,” उसने एक बार आगे कहा — “ग्राहम, जितना मैं तुमसे प्यार करती हूँ: अगर तुम मर जाओ” (और उसने किताब दोबारा खोली, वह आयत ढूंढी और पढ़ी), “तो मैं सांत्वना स्वीकार करने से इनकार कर दूंगी और शोक मनाते हुए तुम्हारी कब्र में उतर जाऊंगी।”

इन शब्दों के साथ उसने ग्राहम को अपनी छोटी बाहों में भर लिया और उसके लंबे बालों वाले सिर को अपनी ओर खींच लिया। मुझे याद है, यह हरकत मुझे अजीब तरह से जल्दबाज़ी वाली लगी; ऐसा लगा जैसे किसी जानवर को, जो स्वभाव से खतरनाक हो और कला से आधा-अधूरा पालतू बना लिया गया हो, लापरवाही से दुलारते हुए देखकर मन में आता है। ऐसा नहीं था कि मुझे डर था कि ग्राहम उसे चोट पहुँचाएगा या बहुत सख्ती से रोकेगा; लेकिन मुझे लगा कि उसे ऐसी लापरवाह, अधीर प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ सकता है, जो उसके लिए किसी चोट से भी बदतर होगी। कुल मिलाकर, इन सभी भावों को उसने निष्क्रियता से सहन किया: कभी-कभी तो उसकी सच्ची स्नेहता पर एक तरह का संतुष्ट आश्चर्य भी उसकी आँखों में मुस्कान के रूप में झलकता था। एक बार उसने कहा: — "तुम मुझे लगभग उतना ही प्यार करती हो जितना मेरी छोटी बहन को, पॉली।"

"ओह! मुझे तुम बहुत पसंद हो," उसने कहा; "मुझे तुम बहुत अच्छे लगते हो।"

मुझे इस चरित्र-विश्लेषण के आनंद का ज़्यादा समय नहीं मिला। ब्रेटन में आए हुए उसे मुश्किल से दो महीने ही हुए थे कि मिस्टर होम का एक पत्र आया, जिसमें उन्होंने बताया कि वे अब महाद्वीप में अपने ननिहाल परिवार के साथ बस गए हैं; कि इंग्लैंड अब उन्हें बिल्कुल भी पसंद नहीं आ रहा था, इसलिए शायद कई सालों तक उनका यहाँ लौटने का कोई इरादा नहीं था; और वे चाहते थे कि उनकी छोटी बेटी तुरंत उनके साथ आ जाए।

"मुझे आश्चर्य है कि वह इस खबर पर कैसी प्रतिक्रिया देगी?" श्रीमती ब्रेटन ने पत्र पढ़ने के बाद कहा। मुझे भी आश्चर्य हुआ, और मैंने उसे यह बात बताने का बीड़ा उठाया।

ड्राइंग रूम में जाकर—जहाँ उसे अकेले रहना बहुत पसंद था और जहाँ उस पर पूरा भरोसा किया जा सकता था, क्योंकि वह किसी चीज़ को छूती नहीं थी, या यूँ कहें कि छूती भी नहीं थी—मैंने उसे पास की खिड़की के लटकते पर्दों की छाया में सोफे पर बैठी पाया, मानो कोई छोटी ओडालिस्क हो। वह खुश लग रही थी; उसके सारे काम की चीज़ें उसके आस-पास थीं; सफेद लकड़ी का वर्कबॉक्स, मलमल के कुछ टुकड़े, और गुड़िया के लिए टोपी बनाने के लिए इकट्ठा किए गए रिबन के कुछ सिरे। गुड़िया, जिसे ठीक से नाइट कैप और नाइट गाउन पहनाया गया था, अपने पालने में पड़ी थी; वह उसे सुलाने के लिए झुला रही थी, मानो उसे गुड़िया की चेतना और नींद की

इंद्रियों पर पूरा विश्वास हो; साथ ही, उसकी आँखें उसकी गोद में खुली एक चित्र पुस्तक पर टिकी थीं।

"मिस स्नो," उसने फुसफुसाते हुए कहा, "यह एक अद्भुत किताब है। कैंडिस" (वह गुड़िया, जिसका नाम ग्राहम ने रखा था; दरअसल, उसके मैले रंग के कारण वह काफी हद तक इथियोपियाई जैसी दिखती थी) — "कैंडिस अभी सो रही है, और मैं आपको इसके बारे में बता सकती हूँ; बस हमें धीरे बोलना होगा, कहीं वह जाग न जाए। यह किताब मुझे ग्राहम ने दी थी; इसमें दूर-दराज के देशों के बारे में बताया गया है, जो इंग्लैंड से बहुत दूर हैं, जहाँ कोई भी यात्री समुद्र में हजारों मील की यात्रा किए बिना नहीं पहुँच सकता। मिस स्नो, इन देशों में जंगली लोग रहते हैं, जो हमारे लोगों से अलग कपड़े पहनते हैं: दरअसल, उनमें से कुछ तो ठंड से बचने के लिए लगभग न के बराबर कपड़े पहनते हैं, क्योंकि वहाँ बहुत गर्मी होती है। यहाँ एक तस्वीर है जिसमें हजारों लोग एक सुनसान जगह पर इकट्ठा हैं — एक मैदान, जो रेत से ढका है — एक काले कपड़े पहने आदमी के चारों ओर — एक नेक अंग्रेज — एक मिशनरी, जो उन्हें ताड़ के पेड़ के नीचे उपदेश दे रहा है।" (उसने इस बात का एक छोटा सा रंगीन चित्र दिखाया।) "और ये तस्वीरें हैं," (वह आगे बोली) "उससे भी ज़्यादा अजीब," (व्याकरण कभी-कभी भूल जाती थी) "ये चीन की अद्भुत महान दीवार है; ये एक चीनी महिला है, जिसका पैर मेरे पैर से भी छोटा है। ये टार्टरी का एक जंगली घोड़ा है; और ये, सबसे अजीब बात – बर्फ और हिम का एक इलाका है, जहाँ हरे-भरे खेत, जंगल या बगीचे नहीं हैं। इस इलाके में उन्हें कुछ विशालकाय हड्डियों के अवशेष मिले: अब वहाँ विशालकाय जानवर नहीं हैं। आप नहीं जानते कि वह क्या था; लेकिन मैं आपको बता सकती हूँ, क्योंकि ग्राहम ने मुझे बताया था। एक विशाल, राक्षस जैसा प्राणी, इस कमरे जितना ऊँचा और हॉल जितना लंबा; लेकिन ग्राहम के अनुसार, वह कोई खूंखार, मांस खाने वाला जीव नहीं था। उसका मानना है कि अगर मैं जंगल में उससे मिलूँ, तो वह मुझे नहीं मारेगा, जब तक कि मैं बिल्कुल उसके रास्ते में न आ जाऊँ; जब मैं उसके रास्ते में आ जाऊँगी, तो वह मुझे झाड़ियों के बीच कुचल देगा, जैसे मैं अनजाने में घास के मैदान में टिड्डे पर पैर रख दूँ।"

इस प्रकार वह बोलती रही।

मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा, "पॉली, क्या तुम यात्रा करना चाहोगी?"

"अभी नहीं," समझदारी भरा जवाब था; "लेकिन शायद बीस साल बाद, जब मैं

श्रीमती ब्रेटन जितनी लंबी होकर एक महिला बन जाऊंगी, तब मैं ग्राहम के साथ यात्रा कर सकती हूं। हम स्विट्जरलैंड जाने और माउंट ब्लैंक पर चढ़ने का इरादा रखते हैं; और किसी दिन हम दक्षिण अमेरिका के लिए नाव से रवाना होंगे और किम-किम-बोराज़ो की चोटी तक पैदल चलेंगे।”

"लेकिन अगर तुम्हारे पापा तुम्हारे साथ होते तो तुम अब कैसे यात्रा करना पसंद करते?"

कुछ देर रुकने के बाद दिया गया उसका जवाब, उसके स्वभाव के उन अप्रत्याशित मोड़ों में से एक को दर्शाता है जो उसकी खासियत हैं।

“इस तरह की बेवकूफी भरी बातें करने का क्या फायदा?” उसने कहा। “तुम पापा का ज़िक्र क्यों कर रही हो? पापा तुम्हारे लिए क्या हैं? मैं अभी-अभी खुश होना शुरू हुई थी और उनके बारे में ज्यादा नहीं सोच रही थी; और अब सब कुछ फिर से करना पड़ेगा!”

उसके होंठ कांप रहे थे। मैंने जल्दी से उसे पत्र मिलने की बात बताई और यह भी बताया कि उसे और हैरियट को तुरंत अपने प्यारे पापा के पास वापस जाने के निर्देश दिए गए हैं। "अब, पॉली, क्या तुम खुश नहीं हो?" मैंने पूछा।

उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसने अपनी किताब नीचे रख दी और गुड़िया को झुलाना बंद कर दिया; वह गंभीरता और लगन से मेरी ओर देखने लगी।

"क्या तुम पापा के पास नहीं जाना चाहोगे?"

“ज़रूर,” उसने आखिरकार उसी तीखे अंदाज़ में कहा, जैसा वह मुझसे बात करते समय अक्सर इस्तेमाल करती थी; और जो श्रीमती ब्रेटन के साथ उसके व्यवहार से बिल्कुल अलग था, और ग्राहम के साथ उसके व्यवहार से भी बिल्कुल अलग था। मैं उसके विचार और जानना चाहता था, लेकिन नहीं: उसने और बात नहीं की। श्रीमती ब्रेटन के पास जल्दी से जाकर, उसने उनसे पूछताछ की और मेरी खबर की पुष्टि प्राप्त की। इस खबर के महत्व और गंभीरता ने उसे पूरे दिन गंभीर बनाए रखा। शाम को, जैसे ही नीचे ग्राहम के आने की आहट सुनाई दी, मैंने उसे अपने पास पाया। उसने मेरे गले में लॉकेट-रिबन को ठीक करना शुरू किया, मेरे बालों में कंघी को बार-बार बदला; इसी काम में व्यस्त रहते हुए ग्राहम अंदर आया।

“उसे धीरे से बता देना,” उसने फुसफुसाते हुए कहा; “उसे बता देना कि मैं जा रही हूँ।”

चाय के समय मैंने उससे बात कर ली। संयोगवश, ग्राहम उस समय स्कूल के किसी पुरस्कार के लिए बहुत चिंतित था, जिसके लिए वह प्रतियोगिता में भाग ले रहा था। खबर को दो बार बताना पड़ा, तब जाकर उसका ध्यान उस ओर गया, और तब भी उसने उस पर बस कुछ पल ही ध्यान दिया।

“पॉली जा रही है? कितना दुख की बात है! प्यारी छोटी माउसी, मुझे उसे खोने का बहुत दुख होगा: उसे फिर से हमारे पास आना होगा, माँ।”

जल्दी से चाय पीकर, उसने अपने लिए एक मोमबत्ती और एक छोटी सी मेज ली और अपनी किताबें रखीं, और जल्द ही अध्ययन में लीन हो गया।

"छोटी सी चूज़ी" रेंगकर उसके पास आई और उसके पैरों के पास कालीन पर लेट गई, उसका चेहरा ज़मीन की ओर था; चुपचाप और बिना हिले-डुले वह सोने के समय तक उसी स्थिति में रही। एक बार मैंने ग्राहम को देखा - जो उसकी निकटता से पूरी तरह बेखबर था - उसने अपने बेचैन पैर से उसे धक्का दिया। वह एक-दो इंच पीछे हट गई। एक मिनट बाद उसका एक छोटा सा हाथ उसके चेहरे के नीचे से निकला, जिससे उसका चेहरा सटा हुआ था, और उसने बेपरवाह पैर को धीरे से सहलाया। जब उसकी नर्स ने उसे बुलाया तो वह उठी और हम सबको धीमी आवाज़ में शुभ रात्रि कहकर बड़ी आज्ञाकारी होकर चली गई।

मैं यह तो नहीं कहूँगी कि एक घंटे बाद मुझे सोने जाने से डर लग रहा था; फिर भी मैं इस बेचैन आशंका के साथ सोई कि कहीं वह बच्ची चैन से सो न रही हो। मेरी आशंका सच साबित हुई, जब मैंने उसे बिस्तर के बाहर एक सफेद चिड़िया की तरह ठंडी और चौकस बैठी हुई पाया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उससे कैसे बात करूँ; उसे दूसरे बच्चों की तरह संभालना मुमकिन नहीं था। लेकिन उसने मुझसे बात की। जैसे ही मैंने दरवाजा बंद किया और ड्रेसिंग टेबल पर लाइट जलाई, वह मेरी तरफ मुड़ी और बोली: — “मैं सो नहीं सकती — सो नहीं सकती; और इस तरह मैं जी नहीं सकती — जी नहीं सकती!”

मैंने उससे पूछा कि उसे क्या तकलीफ है।

"बेहद दयनीय मिज़-ए-वाई!" उसने अपनी दयनीय तुतलाहट के साथ कहा।

"क्या मैं श्रीमती ब्रेटन को बुलाऊं?"

“यह तो बिलकुल बेवकूफी है,” उसने चिड़चिड़ेपन से जवाब दिया; और सच में, मैं अच्छी तरह जानती थी कि अगर उसने श्रीमती ब्रेटन के कदमों की आहट भी सुनी

होती, तो वह चुपचाप चादर के नीचे दुबक जाती। मेरे सामने अपनी सनकें बेपरवाही से दिखाते हुए—जिसके लिए वह नाममात्र का भी स्नेह नहीं दिखाती थी—उसने मेरी धर्ममाता को अपने भीतर की कोई झलक नहीं दिखाई: उनके लिए, वह एक सीधी-सादी, कुछ हद तक विचित्र छोटी लड़की से ज्यादा कुछ नहीं थी। मैंने उसे गौर से देखा; उसका गाल लाल था; उसकी फैली हुई आंखें परेशान और चमकती हुई थीं, और दर्द से बेचैन थीं: इस हालत में यह स्पष्ट था कि उसे सुबह तक नहीं छोड़ा जा सकता। मैं समझ गई कि मामला क्या था।

मैंने पूछा, "क्या आप ग्राहम को फिर से शुभ रात्रि कहना चाहेंगे? वह अभी तक अपने कमरे में नहीं गए हैं।"

उसने तुरंत अपने छोटे-छोटे हाथ फैला दिए ताकि मुझे उसे गोद में उठा लिया जाए। मैंने उसके चारों ओर शॉल लपेटकर उसे वापस ड्राइंग रूम में ले गई। ग्राहम अभी बाहर आ रहा था।

मैंने कहा, “तुम्हें देखे और तुमसे बात किए बिना वो सो नहीं सकती। उसे तुम्हें छोड़कर जाने का ख्याल भी अच्छा नहीं लगता।”

“मैंने उसे बिगाड़ दिया है,” उसने बड़े ही प्रसन्न भाव से उसे मुझसे लेते हुए कहा और उसके नन्हे से गर्म चेहरे और जलते हुए होंठों को चूमा। “पॉली, अब तुम पापा से भी ज़्यादा मेरी परवाह करती हो—”

“मैं तुम्हारी परवाह करती हूँ, लेकिन तुम मेरी बिल्कुल परवाह नहीं करते,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

उसे इसके विपरीत आश्वासन दिया गया, फिर से चूमा गया, मुझे वापस सौंप दिया गया, और मैं उसे अपने साथ ले गया; लेकिन, अफसोस! उसे शांति नहीं मिली।

जब मुझे लगा कि वह मेरी बात सुन सकती है, तो मैंने कहा - "पॉलिना, तुम्हें इस बात का दुख नहीं करना चाहिए कि ग्राहम तुम्हारी उतनी परवाह नहीं करता जितनी तुम उसकी करती हो। ऐसा होना ही है।"

उसकी उठी हुई और प्रश्नप्रवंचित आँखों ने पूछा, क्यों?

क्योंकि वह लड़का है और तुम लड़की हो; वह सोलह साल का है और तुम सिर्फ छह साल की हो; उसका स्वभाव मजबूत और हंसमुख है, और तुम्हारा स्वभाव इसके विपरीत है।

लेकिन मैं उससे बहुत प्यार करती हूँ; उसे भी मुझसे थोड़ा प्यार करना चाहिए।

“हाँ, वो करता है। वो तुम्हें बहुत पसंद करता है। तुम उसकी सबसे प्यारी हो।”

"क्या मैं ग्राहम का पसंदीदा हूँ?"

"हां, मेरी जानकारी में मौजूद किसी भी छोटे बच्चे से कहीं ज्यादा।"

इस आश्वासन से उसे राहत मिली; वह अपनी पीड़ा में भी मुस्कुराई।

“लेकिन,” मैंने आगे कहा, “चिंता मत करो, और उससे बहुत ज्यादा उम्मीद मत रखो, वरना वह तुम्हें परेशानी का सबब समझेगा, और फिर सब कुछ खत्म हो जाएगा।”

“हर जगह!” उसने धीमी आवाज़ में कहा; “तो मैं अच्छी बच्ची बनूँगी। मैं अच्छी बच्ची बनने की कोशिश करूँगी।”

लूसी स्नो।"

मैंने उसे बिस्तर पर लिटा दिया।

जब मैं अपने कपड़े उतार रही थी, तब उसने पूछा, "क्या वह मुझे इस बार माफ कर देगा?" मैंने उसे भरोसा दिलाया कि वह माफ कर देगा; कि अभी तक वह मुझसे बिल्कुल भी नाराज नहीं हुआ है; कि उसे बस भविष्य के लिए सावधान रहना होगा।

उसने कहा, "कोई भविष्य नहीं है। मैं जा रही हूँ। क्या इंग्लैंड छोड़ने के बाद मैं उसे कभी दोबारा देख पाऊँगी?"

मैंने उत्साहवर्धक जवाब दिया। मोमबत्ती बुझ गई और आधा घंटा बीत गया। मुझे लगा कि वह सो रही है, तभी पालने में वह नन्ही-सी सफेद आकृति फिर उठी और एक छोटी सी आवाज़ ने पूछा - "क्या आपको ग्राहम पसंद है, मिस स्नो?"

“बिल्कुल उसकी तरह! हाँ, थोड़ा-बहुत।”

“बस थोड़ा सा! क्या तुम भी उसे उतना ही पसंद करते हो जितना मैं करती हूँ?”

मुझे नहीं लगता। नहीं: जैसा आप सोचते हैं वैसा नहीं।

क्या तुम उसे बहुत पसंद करते हो?

मैंने तुमसे कहा था कि मुझे वो थोड़ा पसंद है। उसकी इतनी परवाह करने का क्या फायदा? वो तो दोषों से भरा पड़ा है।

"क्या वह है?"

“सभी लड़के ऐसे ही होते हैं।”

"लड़कियों से ज़्यादा?"

"बिल्कुल संभव है। बुद्धिमान लोग कहते हैं कि किसी को भी परिपूर्ण समझना

मूर्खता है; और पसंद-नापसंद की बात करें तो हमें सभी के प्रति मित्रतापूर्ण व्यवहार रखना चाहिए और किसी की पूजा नहीं करनी चाहिए।"

क्या आप एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं?

मैं ऐसा करने की कोशिश करूंगा। सो जाओ।

“मुझे नींद नहीं आ रही है। क्या तुम्हें यहाँ दर्द नहीं हो रहा?” (अपना हाथ अपनी छाती पर रखते हुए) “जब तुम्हें लगता है कि तुम्हें ग्राहम को छोड़ना पड़ेगा; क्योंकि तुम्हारा घर यहाँ नहीं है?”

“पॉली, तुम्हें इतना दुख नहीं होना चाहिए, क्योंकि तुम बहुत जल्द अपने पिता से मिलने वाली हो। क्या तुम उन्हें भूल गई हो? क्या अब तुम उनकी छोटी सी साथी नहीं बनना चाहती?”

इस प्रश्न के उत्तर में सन्नाटा छा गया।

मैंने बच्चे से आग्रह किया, "बेटा, लेट जाओ और सो जाओ।"

“मेरा बिस्तर ठंडा है,” उसने कहा। “मैं इसे गर्म नहीं कर पा रही हूँ।”

मैंने उस नन्ही सी बच्ची को कांपते देखा। “मेरे पास आओ,” मैंने कहा, मेरी इच्छा तो थी, पर शायद ही उम्मीद थी कि वह मान जाएगी: क्योंकि वह बहुत ही अजीब, नखरे वाली छोटी सी बच्ची थी, और खासकर मेरे साथ उसका व्यवहार बहुत ही चंचल था। लेकिन वह तुरंत मेरे पास आ गई, जैसे कोई छोटा भूत कालीन पर रेंगता हुआ आया हो। मैंने उसे गले लगा लिया। वह ठंडी थी: मैंने उसे अपनी बाहों में गर्म किया। वह घबराकर कांप रही थी; मैंने उसे शांत किया। इस तरह शांत और प्यार से भरी हुई वह आखिरकार सो गई।

“कितनी अनोखी बच्ची है,” मैंने सोचा, जब मैंने टिमटिमाती चाँदनी में उसके सोते हुए चेहरे को निहारा और धीरे से अपने रूमाल से उसकी चमकती पलकों और गीले गालों को पोंछा। “वह इस दुनिया में कैसे टिकेगी, या इस जीवन से कैसे लड़ेगी? वह उन आघातों, तिरस्कारों, अपमानों और निराशाओं को कैसे सहन करेगी, जिनके बारे में किताबें और मेरा अपना विवेक मुझे बताते हैं कि वे सभी मनुष्यों के लिए निर्धारित हैं?”

वह अगले दिन चली गई; विदा लेते समय वह पत्ते की तरह कांप रही थी, लेकिन उसने आत्म-संयम बरता।

अध्याय IV.

मिस मार्चमोंट।

पॉलिना के जाने के कुछ हफ़्तों बाद ही मैंने ब्रेटन छोड़ दिया था—तब मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मैं फिर कभी वहाँ नहीं जा पाऊँगी; फिर कभी उसकी शांत पुरानी गलियों में कदम नहीं रख पाऊँगी—छह महीने बाद मैं घर लौट आई। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मैं अपने परिवार के बीच लौटकर बहुत खुश थी। खैर! यह प्यारा सा अनुमान कोई नुकसान नहीं पहुँचाता, इसलिए इसे बिना खंडन किए छोड़ा जा सकता है। बल्कि, मैं पाठक को अगले आठ वर्षों तक मेरी कल्पना करने की अनुमति देती हूँ, जैसे कोई नाव शांत मौसम में, शीशे की तरह स्थिर बंदरगाह में सो रही हो—चालक छोटे से डेक पर लेटा हुआ, चेहरा आसमान की ओर, आँखें बंद: मानो किसी लंबी प्रार्थना में लीन। बहुत सी औरतें और लड़कियाँ अपना जीवन कुछ इसी तरह बिताती हैं; तो मैं भी क्यों न?

उस समय मेरी कल्पना कीजिए, मैं आराम से धूप सेंक रहा था, मोटा-ताज़ा और खुश, गद्देदार डेक पर लेटा हुआ, लगातार धूप की गर्मी का आनंद ले रहा था, और हल्की-हल्की हवाओं के झिलमिला रहा था। लेकिन यह बात छिपी नहीं रह सकती कि उस स्थिति में, मैं किसी तरह जहाज से गिर गया होता, या अंत में जहाज डूब गया होता। मुझे वह समय अच्छी तरह याद है - एक लंबा समय - ठंड, खतरे और झगड़ों से भरा। आज भी, जब मुझे वह बुरा सपना आता है, तो मेरे गले में खारे पानी की लहरों का उमड़ना और उनका बर्फीला दबाव मेरे फेफड़ों पर फिर से उभर आता है। मुझे यह भी याद है कि एक तूफान आया था, और वह एक घंटे या एक दिन का नहीं था। कई दिनों और रातों तक न सूरज दिखाई दिया, न तारे; हमने अपने हाथों से जहाज से रस्सियाँ बाहर फेंकीं; एक भयंकर आंधी हम पर छा गई; हमारे बचने की

सारी उम्मीदें खत्म हो गईं। अंत में, जहाज डूब गया, चालक दल के सभी सदस्य मारे गए।

जहां तक मुझे याद है, मैंने इन परेशानियों के बारे में किसी से शिकायत नहीं की। सच तो यह है कि मैं किससे शिकायत कर सकती थी? श्रीमती ब्रेटन से तो मेरा संपर्क ही टूट चुका था। दूसरों द्वारा खड़ी की गई बाधाओं ने वर्षों पहले हमारे आपसी मेलजोल में रुकावट डाल दी थी और उसे पूरी तरह से खत्म कर दिया था। इसके अलावा, समय ने उनके जीवन में भी बदलाव ला दिए थे: उनके बेटे के लिए जिस बड़ी संपत्ति की वह संरक्षक बनी थीं, और जिसका अधिकांश हिस्सा किसी संयुक्त शेयर बाजार में निवेश किया गया था, वह कथित तौर पर अपने मूल मूल्य के एक अंश तक ही सिमट गई थी। मुझे छिटपुट अफवाहों से पता चला कि ग्राहम ने एक पेशा अपना लिया था; वह और उनकी मां दोनों ब्रेटन छोड़कर लंदन चले गए थे। इस प्रकार, दूसरों पर निर्भर रहने की कोई गुंजाइश नहीं बची थी; मुझे केवल खुद पर ही निर्भर रहना था। मुझे नहीं पता कि मैं आत्मनिर्भर या सक्रिय स्वभाव की थी; लेकिन आत्मनिर्भरता और परिश्रम मुझ पर परिस्थितियों के कारण ही थोपे गए थे, जैसे हजारों अन्य लोगों पर थोपे जाते हैं; और जब हमारे पड़ोस की एक अविवाहित महिला, मिस मार्चमोंट ने मुझे बुलवाया, तो मैंने उनकी बात मान ली, इस उम्मीद में कि वह मुझे कोई ऐसा काम सौंप देंगी जिसे मैं कर सकूं।

मिस मार्चमोंट एक धनी महिला थीं और एक सुंदर घर में रहती थीं; लेकिन वे गठिया से पीड़ित थीं, उनके पैर और हाथ दोनों काम नहीं करते थे, और पिछले बीस वर्षों से वे इसी हालत में थीं। वे हमेशा ऊपर की मंजिल पर बैठती थीं: उनका ड्राइंग रूम उनके बेडरूम से सटा हुआ था। मैंने मिस मार्चमोंट और उनकी विलक्षणताओं के बारे में अक्सर सुना था (उनका स्वभाव कुछ हद तक सनकी था), लेकिन अब तक मैंने उन्हें कभी नहीं देखा था। मैंने उन्हें झुर्रियों वाली, सफ़ेद बालों वाली, एकांत से गंभीर, लंबे समय से चले आ रहे कष्ट से कठोर, चिड़चिड़ी और शायद सख्त मिजाज की महिला पाया। ऐसा प्रतीत हुआ कि उनकी एक नौकरानी, या कहें कि उनकी सहेली, जो कई वर्षों से उनकी सेवा कर रही थी, की शादी होने वाली थी; और मेरी इस दुखद स्थिति के बारे में सुनकर उन्होंने मुझे बुलवाया था, इस विचार से कि मैं उसकी जगह ले सकूँ। चाय के बाद, जब हम दोनों उनके चूल्हे के पास अकेले बैठे थे, तब उन्होंने मुझसे यह प्रस्ताव रखा।

“यह आसान जीवन नहीं होगा,” उसने स्पष्टवादिता से कहा, “क्योंकि मुझे बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होगी, और आपको बहुत सीमित रहना पड़ेगा; फिर भी, शायद, आपके हाल के जीवन की तुलना में, यह सहनीय प्रतीत हो सकता है।”

मैंने सोचा। बेशक यह सहनीय लगना चाहिए था, मैंने मन ही मन तर्क किया; लेकिन किसी अजीब दुर्भाग्य से, ऐसा नहीं हो रहा था। इस तंग कमरे में, दुखों का साक्षी बनकर, कभी-कभी शायद गुस्से का शिकार बनकर, अपनी जवानी के आने वाले सभी दिनों को जीना; जबकि जो कुछ भी बीत चुका था, वह कम से कम सुखद नहीं था! मेरा दिल एक पल के लिए डूब गया, फिर संभल गया; क्योंकि हालांकि मैंने खुद को बुराइयों को समझने के लिए मजबूर किया, मुझे लगता है कि मैं इतना नीरस था कि उन्हें आदर्श नहीं बना सका, और परिणामस्वरूप उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर दिया।

मैंने कहा, "मुझे संदेह है कि क्या मुझमें इस कार्य को करने की शक्ति होगी या नहीं।"

“यह मेरी अपनी दुविधा है,” उसने कहा; “क्योंकि तुम एक थके-हारे प्राणी की तरह दिखते हो।”

तो मैंने ऐसा ही किया। मैंने खुद को शीशे में देखा, अपने शोक वस्त्रों में, एक धुंधली, खोखली आँखों वाली छवि। फिर भी मैंने उस फीके दृश्य पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। मेरा मानना था कि यह उदासी मुख्य रूप से बाहरी थी: मुझे अभी भी जीवन के स्रोतों में जीवन का अनुभव हो रहा था।

"और क्या-क्या आपके दिमाग में चल रहा है - कुछ भी?"

"अभी तक कुछ स्पष्ट नहीं है: लेकिन हो सकता है मुझे कुछ पता चल जाए।"

“तो आप कल्पना कीजिए: शायद आप सही हैं। तो फिर आप अपना तरीका आजमाइए; और अगर वह सफल न हो, तो मेरा तरीका आजमाइए। मैंने जो मौका आपको दिया है, वह तीन महीने तक आपके लिए खुला रहेगा।”

यह मेरी दयालुता थी। मैंने उसे यह बताया और अपना आभार व्यक्त किया। जब मैं बोल ही रहा था, तभी उसे तेज दर्द का दौरा पड़ा। मैंने उसकी देखभाल की; उसके निर्देशों के अनुसार आवश्यक दवाइयाँ लगाईं, और जब तक उसे आराम मिला, तब तक हमारे बीच एक तरह की आत्मीयता स्थापित हो चुकी थी। मैंने उसके इस दर्द को सहने के तरीके से यह जान लिया था कि वह एक दृढ़ और धैर्यवान महिला थी

(शारीरिक दर्द में तो धैर्य रखती थी, लेकिन लंबे समय तक मानसिक पीड़ा रहने पर शायद कभी-कभी उत्तेजित हो जाती थी); और उसने, मेरी सद्भावना से उसकी मदद करके, यह जान लिया कि वह मेरी सहानुभूति को प्रभावित कर सकती है (जो भी मेरी सहानुभूति थी)। उसने अगले दिन मुझे बुलवाया; लगातार पाँच-छह दिनों तक वह मेरे साथ रहना चाहती थी। घनिष्ठ परिचय से, जहाँ एक ओर उसकी कुछ कमियाँ और विलक्षणताएँ सामने आईं, वहीं दूसरी ओर मुझे उसके चरित्र की एक ऐसी झलक मिली जिसका मैं सम्मान कर सकता था। हालांकि वह कभी-कभी सख्त और उदास भी हो जाती थीं, फिर भी मैं उनकी सेवा कर सकता था और उनके बगल में उस शांति के साथ बैठ सकता था जो हमें तब मिलती है जब हम यह महसूस करते हैं कि हमारा व्यवहार, उपस्थिति और संपर्क हमारे सेवकों को प्रसन्न और शांत करता है। यहां तक कि जब वह मुझे डांटती थीं - जो वह कभी-कभार, बहुत तीखे ढंग से करती थीं - तब भी उनका तरीका ऐसा होता था जिससे मुझे अपमानित महसूस न हो और कोई ठेस न पहुंचे; यह किसी कठोर मालकिन द्वारा आश्रित को उपदेश देने की बजाय एक गुस्सैल माँ द्वारा अपनी बेटी को डांटने जैसा था: वास्तव में, वह उपदेश नहीं दे सकती थीं, हालांकि वह कभी-कभी क्रोधित हो जाती थीं। इसके अलावा, उनके क्रोध में हमेशा तर्क की झलक रहती थी: वह उग्र होने पर भी तार्किक थीं। जल्द ही, उनके प्रति बढ़ते लगाव ने उनके साथ एक साथी के रूप में रहने के विचार को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना शुरू कर दिया; एक और सप्ताह में मैं उनके साथ रहने के लिए सहमत हो गया।

इस प्रकार दो गर्म, तंग कमरे मेरी दुनिया बन गए; और एक अपाहिज बूढ़ी औरत, मेरी प्रेमिका, मेरी सहेली, मेरा सब कुछ। उसकी सेवा मेरा कर्तव्य था—उसका दर्द, मेरा दुख—उसकी राहत, मेरी आशा—उसका क्रोध, मेरा दंड—उसका स्नेह, मेरा पुरस्कार। मैं भूल गई थी कि इस बीमार कमरे की धुंधली दीवारों के बाहर खेत, जंगल, नदियाँ, समुद्र, एक निरंतर बदलता हुआ आकाश है; मैं लगभग इसे भूलने में ही संतुष्ट थी। मेरे भीतर सब कुछ मेरे भाग्य तक सिमट गया था। आदत से शांत और स्थिर, नियति द्वारा अनुशासित, मैंने ताजी हवा में सैर की कोई इच्छा नहीं की; मेरी भूख बीमारों के लिए परोसे जाने वाले छोटे भोजन से अधिक कुछ नहीं चाहती थी। इसके अलावा, उसने मुझे अपने चरित्र की मौलिकता का अध्ययन करने का अवसर दिया: मैं यह भी कहूँगी कि उसके गुणों की स्थिरता, उसकी भावनाओं की शक्ति, प्रशंसा करने

का अवसर दिया; उसकी भावनाओं की सच्चाई पर भरोसा करने का अवसर दिया। ये सभी चीजें उसके पास थीं, और इन्हीं चीजों के कारण मैं उससे जुड़ी रही।

इन सब बातों के लिए मैं उसके साथ बीस साल तक रेंगता रहता, अगर उसकी सहनशीलता बीस साल और बढ़ जाती। लेकिन कुछ और ही लिखा था। ऐसा लगा जैसे मुझे किसी तरह प्रेरित होना ही पड़ेगा। मुझे उकसाया जाना होगा, मजबूर किया जाना होगा, आघात पहुँचाया जाना होगा, ऊर्जा से भर जाना होगा। मेरा वह छोटा सा मानवीय स्नेह, जिसे मैं किसी ठोस मोती की तरह संजो कर रखता था, मेरी उंगलियों से पिघलकर ओले की तरह फिसल जाना था। मेरा वह छोटा सा कर्तव्य, जिसे मैंने अपना लिया था, मेरी सहज संतुष्टि वाली अंतरात्मा से छीन लिया जाना था। मैं भाग्य से समझौता करना चाहता था: कभी-कभार होने वाली बड़ी पीड़ाओं से बचने के लिए पूरे जीवन भर अभाव और छोटे-मोटे कष्ट सहना चाहता था। लेकिन भाग्य ऐसे शांत नहीं हुआ; न ही ईश्वर ने मेरी इस दबी हुई सुस्ती और कायरतापूर्ण आलस्य को स्वीकार किया।

फरवरी की एक रात—मुझे वह रात अच्छी तरह याद है—मिस मार्चमोंट के घर के पास एक आवाज़ आई, जिसे घर के सभी सदस्यों ने सुना, लेकिन शायद केवल एक ने ही उसका अनुवाद किया। शांत सर्दियों के बाद, तूफ़ान वसंत का स्वागत कर रहे थे। मैंने मिस मार्चमोंट को सुला दिया था; मैं चूल्हे के पास बैठकर सिलाई कर रही थी। हवा खिड़कियों पर ज़ोर से टकरा रही थी; वह दिन भर टकराती रही थी; लेकिन जैसे-जैसे रात गहरी होती गई, उसका स्वर बदल गया—एक तीखा, चुभने वाला, लगभग कानों को चुभने वाला; एक विलाप, जो नसों को झकझोर देने वाला और निराशाजनक था, हर हवा के झोंके के साथ गूंज रहा था।

“ओह, चुप रहो! चुप रहो!” मैंने अपने अशांत मन से कहा, अपना काम छोड़कर, और उस सूक्ष्म, भेदक पुकार को अनसुना करने की व्यर्थ कोशिश की। मैंने वह आवाज़ पहले भी सुनी थी, और बार-बार देखने से मुझे यह अनुमान लगाने पर मजबूर होना पड़ा कि वह किस बात का संकेत दे रही है। अपने जीवन में तीन बार, घटनाओं ने मुझे सिखाया था कि तूफान में ये अजीब स्वर—यह बेचैन, निराशा भरी पुकार—जीवन के लिए प्रतिकूल वातावरण की आने वाली स्थिति का संकेत देते हैं। मेरा मानना था कि महामारी अक्सर हांफती, सिसकती, पीड़ादायक, लंबे समय तक विलाप करती पूर्वी हवा से पहले आती है। इसलिए, मैंने अनुमान लगाया, बंशी की

किंवदंती का जन्म हुआ। मैंने यह भी देखा था—लेकिन मैं इतना दार्शनिक नहीं था कि यह जान सकूं कि परिस्थितियों के बीच कोई संबंध है या नहीं—कि हम अक्सर उसी समय दुनिया के दूर-दराज के हिस्सों में ज्वालामुखी विस्फोट की खबरें सुनते हैं; नदियों के अचानक अपने किनारों से ऊपर बहने की; और निचले समुद्री तटों पर उग्र रूप से बहने वाली अजीब ऊंची लहरों की। मैंने मन ही मन कहा था, "हमारी पृथ्वी ऐसे समय में खंडित और अव्यवस्थित प्रतीत होती है; हमारे बीच के कमजोर लोग इसके दूषित श्वास में मुरझा जाते हैं, जो उबलते ज्वालामुखियों से गर्म होकर बहता है।"

मैंने सुना और मैं कांप उठा; मिस मार्चमोंट सो रही थीं।

लगभग आधी रात को, आधे घंटे में ही तूफान एकदम शांत हो गया। जो आग बुझ चुकी थी, वह फिर से तेज हो उठी। मैंने हवा में बदलाव महसूस किया और वह ठंडी और तीखी हो गई। मैंने पर्दा और पर्दा उठाकर बाहर देखा और तारों में तेज ठंड की चमक देखी।

जब मैंने मुंह फेरा, तो मेरी नजर मिस मार्चमोंट पर पड़ी जो जाग चुकी थीं, तकिए से अपना सिर उठा रही थीं और असामान्य गंभीरता से मेरी ओर देख रही थीं।

“क्या आज रात मौसम सुहाना है?” उसने पूछा।

मैंने सकारात्मक उत्तर दिया।

“मुझे भी यही लगा था,” उसने कहा; “क्योंकि मैं बहुत तंदुरुस्त और स्वस्थ महसूस कर रही हूँ। मुझे उठा लो। आज रात मैं जवान महसूस कर रही हूँ,” उसने आगे कहा; “जवान, हंसमुख और खुश। क्या होगा अगर मेरी बीमारी में सुधार आने वाला हो और मैं अभी भी स्वस्थ रहूँ? यह तो चमत्कार होगा!”

“ये चमत्कारों का ज़माना नहीं है,” मैंने मन ही मन सोचा और उसकी इस तरह की बातें सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। वह अपनी बातचीत को अतीत की ओर मोड़ती रही और ऐसा लग रहा था मानो वह उस अतीत की घटनाओं, दृश्यों और व्यक्तियों को असाधारण स्पष्टता के साथ याद कर रही हो।

“आज रात मुझे स्मृति से प्रेम हो रहा है,” उसने कहा: “मैं उसे अपनी सबसे अच्छी दोस्त मानती हूँ। वह अभी मुझे एक गहरा आनंद दे रही है: वह मेरे हृदय में गर्मजोशी और सुंदरता से भरी वास्तविकताओं को वापस ला रही है—महज़ खोखले विचार नहीं, बल्कि वे वास्तविकताएँ जो कभी सच थीं, और जिन्हें मैं लंबे समय से क्षीण, विलीन, मिट्टी में मिल जाने वाला समझती थी। अभी मेरे पास मेरी जवानी के पल, विचार,

आशाएँ हैं। मैं अपने जीवन के प्रेम को नवीकृत कर रही हूँ—इसका एकमात्र प्रेम—लगभग इसका एकमात्र स्नेह; क्योंकि मैं कोई खास अच्छी स्त्री नहीं हूँ: मैं मिलनसार नहीं हूँ। फिर भी मेरे पास अपनी भावनाएँ थीं, प्रबल और एकाग्र; और इन भावनाओं का अपना लक्ष्य था; जो अपने आप में मेरे लिए प्रिय था, जैसा कि अधिकांश पुरुषों और महिलाओं के लिए, वे अनगिनत बिंदु हैं जिन पर वे अपना स्नेह बिखेरते हैं। जब मैंने प्रेम किया, और जब मुझे प्रेम मिला, मैंने कैसा जीवन जिया! मुझे वह शानदार वर्ष याद है—वह कितना उज्ज्वल होकर मेरे सामने लौट आता है! वह जीवंत वसंत—वह गर्म, आनंदमय ग्रीष्मकाल—वह कोमल चाँदनी, जो शरद ऋतु की शामों को चाँदी की तरह चमकाती थी—वह शक्ति जो मुझे प्रिय थी।" उस साल की सर्दी में जमी बर्फ और पाले से ढके खेतों के नीचे आशा की किरण! उस पूरे साल मेरा दिल फ्रैंक के दिल के साथ धड़कता रहा। हे मेरे प्यारे फ्रैंक— मेरे वफादार फ्रैंक— मेरे अच्छे फ्रैंक! मुझसे कहीं बेहतर— हर बात में उनका आदर्श कहीं ऊँचा! अब मैं यह देख और कह सकती हूँ: अगर बहुत कम महिलाओं ने उनके जाने का उतना दुख सहा है जितना मैंने सहा, तो बहुत कम महिलाओं ने उनके प्यार का उतना आनंद लिया है जितना मैंने सहा। यह आम प्यार से कहीं बेहतर था; मुझे इस पर या उन पर कोई शक नहीं था: यह ऐसा प्यार था जो सम्मान देता था, रक्षा करता था और ऊँचा उठाता था, साथ ही जिसे यह मिलता था उसे आनंदित भी करता था। अब, ठीक इसी क्षण, जब मेरा मन इतना शांत है, मैं यह पूछना चाहती हूँ— कि यह मुझसे क्यों छीन लिया गया? बारह महीने के सुख के बाद, मुझे किस अपराध के लिए तीस साल के दुख को सहने की सजा मिली?

कुछ देर रुककर उसने आगे कहा, "मुझे नहीं पता, मैं कारण नहीं समझ पा रही; फिर भी इस समय मैं पूरी ईमानदारी से वो बात कह सकती हूँ जो मैंने पहले कभी नहीं कही, हे परम गूढ़ ईश्वर, तेरी इच्छा पूरी हो! और इस क्षण मैं विश्वास कर सकती हूँ कि मृत्यु मुझे फ्रैंक से मिला देगी। मैंने आज तक कभी इस पर विश्वास नहीं किया था।"

"तो क्या वह मर गया?" मैंने धीमी आवाज में पूछा।

"मेरी प्यारी बच्ची," उसने कहा, "एक खुशनुमा क्रिसमस की पूर्व संध्या पर मैंने खुद को सजाया-संवारा, इस उम्मीद में कि मेरा प्रेमी, जो जल्द ही मेरा पति बनने वाला था, उस रात मुझसे मिलने आएगा। मैं इंतज़ार करने बैठ गई। वह पल मुझे फिर

से याद आ गया — मुझे खिड़की से आती बर्फीली शाम की हल्की रोशनी दिखाई दी, जिस पर पर्दा नहीं गिरा था, क्योंकि मैं उसे सफेद रास्ते पर घोड़े पर सवार होकर आते देखना चाहती थी; मुझे आग की नरम रोशनी महसूस हो रही थी, जो मेरी रेशमी पोशाक पर पड़ रही थी और बीच-बीच में मुझे शीशे में मेरी युवा आकृति दिखा रही थी। मुझे एक शांत सर्दियों की रात का चाँद दिखाई दिया, जो घने झाड़ियों और मेरे बगीचे की चांदी जैसी घास के ऊपर, पूर्ण, साफ और ठंडा तैर रहा था। मैं अपनी धड़कनों में थोड़ी बेचैनी के साथ, लेकिन अपने दिल में पूरी तरह से बेचैनी लिए इंतज़ार कर रही थी। आग की लपटें बुझ चुकी थीं, लेकिन फिर भी वह चमकदार थी; चाँद ऊपर चढ़ रहा था, लेकिन वह अभी भी जाली से दिखाई दे रहा था; घड़ी में लगभग दस बजने वाले थे; वह शायद ही कभी इससे देर करता था, लेकिन एक-दो बार उसे इतनी देर हो गई थी।"

"क्या वह एक बार भी मुझे धोखा देगा? नहीं—एक बार भी नहीं; और अब वह आ रहा था—और तेज़ी से आ रहा था—बीते समय की भरपाई करने के लिए। 'फ्रैंक! तुम उग्र घुड़सवार,' मैंने मन ही मन कहा, उसकी आती हुई सरपट दौड़ को खुशी से, फिर भी चिंता से सुनते हुए, 'तुम्हें इसके लिए फटकार मिलेगी: मैं तुम्हें बता दूँगी कि तुम मेरी गर्दन को खतरे में डाल रहे हो; क्योंकि जो कुछ भी तुम्हारा है, वह एक और भी प्यारे और कोमल अर्थ में मेरा है।' वह वहाँ था: मैंने उसे देखा; लेकिन मुझे लगता है कि मेरी आँखों में आँसू थे, मेरी दृष्टि इतनी धुंधली थी। मैंने घोड़े को देखा; मैंने उसके पैर पटकने की आवाज़ सुनी—मैंने कम से कम एक पिंड देखा; मैंने एक शोर सुना। क्या वह घोड़ा था? या वह कौन सी भारी, घिसटती हुई चीज़ थी, जो अजीब तरह से अंधेरे में मैदान पार कर रही थी। मैं अपने सामने चाँदनी में उस चीज़ का नाम कैसे बता सकती थी? या मैं अपनी आत्मा में उठ रही भावना को कैसे व्यक्त कर सकती थी?"

"मैं बस बाहर भाग सकता था। एक विशाल जानवर—वास्तव में, फ्रैंक का काला घोड़ा—दरवाजे के सामने कांपता, हांफता और हिनहिनाता खड़ा था; मुझे लगा कि कोई आदमी उसे पकड़े हुए है—फ्रैंक।"

"'क्या बात है?' मैंने पूछा। मेरे नौकर थॉमस ने तीखे स्वर में उत्तर दिया, 'महोदया, घर के अंदर जाइए।' और फिर दूसरे नौकर को पुकारा, जो रसोई से किसी सहज प्रवृत्ति से प्रेरित होकर भागा आया, 'रूथ, मालकिन को तुरंत घर के अंदर ले चलो।'

लेकिन मैं बर्फ में घुटनों के बल बैठी थी, वहाँ कुछ पड़ा था—कुछ जिसे मैंने ज़मीन पर घसीटते हुए देखा था—कुछ जो आहें भर रहा था, मेरी छाती पर कराह रहा था, जब मैंने उसे उठाया और अपनी ओर खींच लिया। वह मरा नहीं था; वह पूरी तरह बेहोश भी नहीं था। मैंने उसे अंदर ले जाने को कहा; मैंने किसी के आदेश मानने और उससे दूर धकेले जाने से इनकार कर दिया। मैं इतनी संयमित थी कि न केवल अपनी बल्कि दूसरों की भी स्वामिनी बन सकूँ। उन्होंने पहले तो मेरे साथ बच्चे जैसा व्यवहार करने की कोशिश की, जैसा कि वे हमेशा ईश्वर की कृपा से पीड़ित लोगों के साथ करते हैं; लेकिन मैंने सर्जन के अलावा किसी को भी जगह नहीं दी; और जब उसने अपना काम कर लिया, तो मैंने अपने मरते हुए फ्रैंक को अपने पास ले लिया। उसमें मुझे अपनी बाहों में समेटने की शक्ति थी; उसमें मेरा नाम लेने की सामर्थ्य थी; उसने मेरी प्रार्थना सुनी।” मैंने बहुत धीरे से उसके ऊपर हाथ फेरा; उसने महसूस किया कि मैं उसे कोमलता और स्नेह से दिलासा दे रही हूँ।

“‘मारिया,’ उन्होंने कहा, ‘मैं स्वर्ग में मर रहा हूँ।’ उन्होंने मेरे लिए विश्वास भरे शब्दों में अपनी अंतिम साँस ली। जब क्रिसमस की सुबह हुई, तो मेरा फ्रैंक ईश्वर के साथ था।”

“और वो सब,” उसने आगे कहा, “तीस साल पहले हुआ था। तब से मैं कष्ट झेल रही हूँ। मुझे शक है कि मैंने अपनी सारी विपत्तियों का सही इस्तेमाल किया है। कोमल, सौम्य स्वभाव को तो वे संत बना देतीं; शक्तिशाली, दुष्ट आत्माओं को तो वे राक्षस बना देतीं; जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो बस एक दुखी और स्वार्थी औरत बनकर रह गई हूँ।”

मैंने कहा, "आपने बहुत अच्छा काम किया है," क्योंकि वह उदारतापूर्वक दान देने के लिए प्रसिद्ध थीं।

“तुम्हारा मतलब है कि मैंने दुख कम करने के लिए पैसे देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इसमें क्या बुराई है? देने में मुझे कोई तकलीफ या कष्ट नहीं हुआ। लेकिन मुझे लगता है कि आज से मैं बेहतर मन की स्थिति में आ रही हूँ, फ्रैंक से दोबारा मिलने की तैयारी कर रही हूँ। देखो, मैं अब भी भगवान से ज़्यादा फ्रैंक के बारे में सोचती हूँ; और अगर यह न माना जाए कि उस प्राणी से इतना ज़्यादा, इतने लंबे समय तक और इतने विशेष रूप से प्रेम करके मैंने कम से कम सृष्टिकर्ता का अपमान तो किया ही है, तो मेरे उद्धार की संभावना बहुत कम है। लूसी, इन बातों के बारे में तुम्हारा क्या विचार

है? मेरी मार्गदर्शक बनो और मुझे बताओ।”

इस सवाल का जवाब मैं नहीं दे सका: मेरे पास शब्द ही नहीं थे। ऐसा लगा जैसे उसे लगा कि मैंने जवाब दे दिया है।

“बिल्कुल सही कहा, मेरी बच्ची। हमें ईश्वर को दयालु मानना चाहिए, लेकिन यह भी कि वह हमेशा हमारी समझ में नहीं आता। हमें अपनी किस्मत को, चाहे जैसी भी हो, स्वीकार करना चाहिए और दूसरों को खुश करने की कोशिश करनी चाहिए। क्या हमें ऐसा नहीं करना चाहिए? अच्छा, कल से मैं तुम्हें खुश करने की कोशिश शुरू करूँगी। मैं तुम्हारे लिए कुछ करने का प्रयास करूँगी, लूसी: कुछ ऐसा जिससे तुम्हें मेरे मरने के बाद लाभ हो। बहुत ज्यादा बोलने से मेरा सिर दुख रहा है; फिर भी मैं खुश हूँ। सो जाओ। घड़ी में दो बज गए हैं। तुम कितनी देर तक जागती हो; या यूँ कहूँ कि मैं अपने स्वार्थ में तुम्हें कितनी देर तक जगाए रखती हूँ। लेकिन अब जाओ; मेरे लिए चिंता मत करो; मुझे लगता है कि मैं अच्छी तरह सो जाऊँगी।”

वह सोने के लिए तैयार हो गई। मैं भी उसके कमरे में बने एक छोटे से कमरे में अपनी चारपाई पर लेट गया। रात शांति से गुज़री; लगता है आखिरकार चुपचाप ही उसकी मृत्यु आ गई: शांतिपूर्वक और बिना किसी दर्द के: सुबह जब मैं उसे देखा तो वह बेजान, लगभग ठंडी, लेकिन एकदम शांत और अविचलित थी। उसकी पहले की उमंग और मनोदशा में बदलाव एक दौरे की शुरुआत थी; एक ही झटके ने इतने लंबे समय से पीड़ा से जूझ रहे जीवन के धागे को तोड़ दिया।

अध्याय V.

एक नई शुरुआत।

मेरी मालकिन की मृत्यु हो जाने और एक बार फिर अकेली हो जाने के कारण मुझे

एक नई जगह की तलाश करनी पड़ी। इस समय मैं थोड़ा - बहुत थोड़ा - घबराई हुई थी। मैं मानती हूँ कि मैं अच्छी नहीं दिख रही थी, बल्कि इसके विपरीत, दुबली-पतली, थकी हुई और धँसी हुई आँखों वाली थी; रात भर जागने वाली किसी महिला की तरह, किसी परेशान नौकर की तरह, या कर्ज में डूबे बेघर व्यक्ति की तरह। हालाँकि, मैं कर्ज में डूबी नहीं थी; न ही पूरी तरह गरीब थी; क्योंकि हालाँकि मिस मार्चमोंट के पास मुझे कुछ देने का समय नहीं था, जैसा कि उन्होंने उस आखिरी रात को कहा था कि उनका इरादा था, फिर भी, अंतिम संस्कार के बाद, मेरे वेतन का भुगतान उनके दूसरे चचेरे भाई, उत्तराधिकारी, एक लालची दिखने वाले व्यक्ति द्वारा किया गया, जिसकी नाक पिचकी हुई और कनपटी संकरी थी, और वास्तव में, मैंने बहुत बाद में सुना कि वह एक घोर कंजूस निकला: अपनी उदार रिश्तेदार के बिल्कुल विपरीत, और उसकी स्मृति के विपरीत, जिसे आज भी गरीब और जरूरतमंद लोग संजो कर रखते हैं। पंद्रह पाउंड की संपत्ति, स्वस्थ, हालाँकि कमजोर, लेकिन टूटी हुई नहीं, और वैसी ही अच्छी स्थिति में मनोबल के साथ; मैं अभी भी... कई लोगों की तुलना में, मुझे एक सराहनीय स्थिति में माना जा सकता है। हालांकि, साथ ही यह एक शर्मनाक स्थिति भी थी; जैसा कि मैंने एक दिन बड़ी तीव्रता से महसूस किया, जिसके बाद अगले सप्ताह मुझे अपने वर्तमान निवास से विदा होना था, जबकि मेरे पास कोई दूसरा निवास स्थान उपलब्ध नहीं था।

इस दुविधा में, मैंने अंतिम और एकमात्र उपाय के रूप में, अपने परिवार की एक पुरानी नौकरानी से मिलने और सलाह लेने का फैसला किया; जो कभी मेरी नर्स थी, अब मिस मार्चमोंट के घर से कुछ ही दूरी पर स्थित एक भव्य हवेली में गृहणी थी। मैंने उसके साथ कुछ घंटे बिताए; उसने मुझे सांत्वना दी, लेकिन वह मुझे सलाह नहीं दे पा रही थी। भीतरी अंधकार में डूबी हुई, मैं शाम ढलते ही उससे विदा हुई; मेरे सामने दो मील की पैदल यात्रा थी; वह एक साफ, बर्फीली रात थी। अपने अकेलेपन, गरीबी और उलझन के बावजूद, मेरा दिल, जो अभी तेईस साल भी पूरे न कर पाने वाली जवानी के जोश से पोषित और मजबूत था, हल्का धड़क रहा था, कमजोर नहीं। मुझे यकीन है कि कमजोर नहीं, वरना मैं उस सुनसान रास्ते पर कांप जाती, जो शांत खेतों से होकर गुजरता था, और न तो किसी गांव, न ही किसी फार्महाउस, न ही किसी झोपड़ी से होकर जाता था: मैं चांदनी के अभाव में डर जाती, क्योंकि केवल तारों के मार्गदर्शन से ही मैं धुंधले रास्ते का पता लगा पा रही थी; आज रात उत्तर दिशा में

चमकती उस रहस्यमयी रोशनी - ऑरोरा बोरेलिस - की अप्रत्याशित उपस्थिति से मुझे और भी अधिक भयभीत हो जाना चाहिए था। लेकिन इस गंभीर अजनबी ने मेरे भय के बजाय मुझ पर अलग तरह से प्रभाव डाला। ऐसा लगा जैसे यह कोई नई शक्ति लेकर आया हो। इसके मार्ग पर बहने वाली हल्की, तेज हवा से मैंने ऊर्जा ग्रहण की। मेरे मन में एक साहसिक विचार आया; मेरा मन उसे ग्रहण करने के लिए मजबूत हो गया।

मुझसे कहा गया, “इस जंगल को छोड़कर यहाँ से चले जाओ।”

“कहाँ?” यही सवाल था।

मुझे ज्यादा दूर तक देखने की जरूरत नहीं थी; इंग्लैंड के उस समतल, समृद्ध मध्य भाग में स्थित इस ग्रामीण इलाके से देखते हुए - मैंने मानसिक रूप से वह चीज अपनी पहुंच के भीतर देखी जिसे मैंने अभी तक अपनी शारीरिक आंखों से नहीं देखा था: मैंने लंदन को देखा।

अगले दिन मैं फिर से हॉल में लौटा और हाउसकीपर से मिलने की अनुमति मांगते हुए मैंने उसे अपनी योजना के बारे में बताया।

श्रीमती बैरेट एक गंभीर और विवेकशील महिला थीं, हालाँकि उन्हें मुझसे ज्यादा दुनियादारी की समझ नहीं थी; लेकिन अपनी गंभीरता और विवेकशीलता के बावजूद उन्होंने मुझे नासमझ नहीं कहा; और वास्तव में, मेरा अपना एक संयमित स्वभाव था जो अब तक मेरे लिए भूरे रंग के लबादे और टोपी के समान ही सुखदायी रहा था, क्योंकि इसके सहारे मैं बिना किसी दंड के, और यहाँ तक कि प्रशंसा प्राप्त करके भी, ऐसे कार्य करने में सक्षम रहा था, जिन्हें यदि उत्तेजित और अशांत भाव से करने का प्रयास किया जाता, तो कुछ लोग मुझे स्वप्नद्रष्टा और कट्टरपंथी मान लेते।

नौकरानी मुरब्बे के लिए संतरे के छिलके तैयार करते हुए धीरे-धीरे कुछ कठिनाइयाँ बता रही थी, तभी एक बच्चा खिड़की के पास से दौड़ता हुआ कमरे में आ आया। वह एक प्यारा बच्चा था, और जैसे ही वह हँसते-खेलते नाचता हुआ मेरे पास आया - क्योंकि हम अजनबी नहीं थे (और वास्तव में, उसकी माँ भी - घर की एक युवा विवाहित बेटी - अजनबी नहीं थी) - मैंने उसे अपनी गोद में बिठा लिया।

हालांकि अब हमारी सामाजिक स्थिति अलग-अलग थी, लेकिन इस बच्ची की मां और मैं स्कूल में साथ पढ़ते थे, जब मैं दस साल की लड़की थी और वह सोलह साल की युवती थी; और मुझे वह सुंदर, लेकिन सुस्त और मुझसे निचले वर्ग की याद थी।

मैं उस लड़के की खूबसूरत काली आँखों की तारीफ कर रहा था, तभी उसकी माँ, युवा श्रीमती ली, अंदर आईं। भोली-भाली और आकर्षक, लेकिन बुद्धिहीन लड़की कितनी सुंदर और दयालु दिखने लगी थी! पत्नी और मातृत्व ने उन्हें इस तरह बदल दिया था, जैसा कि मैंने बाद में देखा है कि इससे भी कम होनहार महिलाओं में भी बदलाव आ गया है। मुझे तो वह भूल ही गई थीं। मैं भी बदल गया था, हालाँकि मुझे डर है कि यह बदलाव बेहतर नहीं था। मैंने उन्हें याद दिलाने की कोई कोशिश नहीं की; मैं क्यों करता? वह अपने बेटे को सैर पर साथ ले जाने के लिए आईं, और उनके पीछे एक नर्स एक शिशु को गोद में लिए चल रही थी। मैं इस घटना का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि नर्स से बात करते हुए श्रीमती ली फ्रेंच में बोलीं (वैसे, उनकी फ्रेंच बहुत खराब थी, और उच्चारण भी इतना खराब था कि मुझे फिर से हमारे स्कूल के दिनों की याद आ गई): और मुझे पता चला कि वह महिला विदेशी थी। छोटा लड़का भी फ्रेंच में खूब बातें कर रहा था। जब सभी लोग चले गए, तो श्रीमती बैरेट ने टिप्पणी की कि उनकी युवती दो साल पहले महाद्वीपीय यात्रा से लौटते समय उस विदेशी नर्स को अपने साथ घर लाई थी; कि उसके साथ लगभग एक गवर्नेंस जैसा व्यवहार किया जाता था, और उसे बच्चे के साथ बाहर घूमने और मास्टर चार्ल्स के साथ फ्रेंच में बातचीत करने के अलावा कुछ नहीं करना होता था; और, श्रीमती बैरेट ने आगे कहा, "वह कहती है कि विदेशी परिवारों में कई अंग्रेज महिलाएं उसकी तरह ही अच्छी स्थिति में हैं।"

मैंने इस मामूली सी जानकारी को सहेज कर रख लिया, ठीक वैसे ही जैसे सावधान गृहिणियाँ उन छोटी-छोटी चीज़ों को सहेज कर रखती हैं जो देखने में तो बेकार लगती हैं, लेकिन भविष्य में उनके दूरदर्शी दिमाग में उनके काम आ सकती हैं। अपनी पुरानी दोस्त से विदा लेने से पहले, उसने मुझे शहर में एक प्रतिष्ठित, पुराने ज़माने के सराय का पता दिया, जिसके बारे में उसने बताया कि मेरे चाचा लोग पहले अक्सर वहाँ जाया करते थे।

लंदन जाने में मैंने उतना जोखिम नहीं उठाया और न ही उतनी साहसिकता दिखाई जितना पाठक सोच सकते हैं। वास्तव में, दूरी मात्र पचास मील थी। मेरे पास वहाँ जाने, कुछ दिन ठहरने और अगर मुझे वहाँ रुकने का कोई कारण न मिले तो वापस आने के लिए पर्याप्त साधन थे। मैंने इसे जीवन-मरण के रोमांच के बजाय एक संक्षिप्त अवकाश के रूप में देखा, जो मुझे काम से थकी हुई इंद्रियों को एक बार

आराम करने का अवसर देता है। हर काम को संयम से करने में ही भलाई है: यह मन और शरीर को शांत रखता है; जबकि आडंबरपूर्ण विचार दोनों को बेचैन कर देते हैं।

उस समय पचास मील की दूरी तय करने में एक दिन लगता था (क्योंकि मैं बीते हुए समय की बात कर रहा हूँ: मेरे बाल, जो कुछ समय तक ठंड की मार झेलते रहे, अब अंततः सफेद हो गए हैं और एक सफेद टोपी के नीचे ऐसे पड़े हैं जैसे बर्फ के नीचे बर्फ)। फरवरी की एक गीली रात को लगभग नौ बजे मैं लंदन पहुँचा।

मुझे पता है कि मेरा पाठक ऐसा व्यक्ति है जो मेरे द्वारा की गई पहली भावपूर्ण अनुभूतियों के विस्तृत वर्णन के लिए मेरा आभारी नहीं होगा; और यह ठीक भी है, क्योंकि मेरे पास ऐसी अनुभूतियों को संजोने के लिए न तो समय था और न ही मनोदशा; क्योंकि मैं एक अंधेरी, ठंडी और बरसाती शाम को देर से पहुँचा था, एक ऐसे बाबुल और वीरान स्थान पर, जिसकी विशालता और विचित्रता ने स्पष्ट चिंतन और स्थिर आत्म-संयम की उन सभी शक्तियों की पूरी तरह से परीक्षा ली, जो प्रकृति ने मुझे अधिक प्रतिभाशाली क्षमताओं के अभाव में प्रदान की होंगी।

जब मैं बस से उतरा, तो आस-पास इंतज़ार कर रहे टैक्सी ड्राइवरों और अन्य लोगों की अजीबोगरीब बोली मुझे किसी विदेशी भाषा की तरह अटपटी लगी। मैंने पहले कभी अंग्रेज़ी को इस तरह से टूटा-फूटा नहीं सुना था। फिर भी, मैं किसी तरह समझ पाया और अपनी बात समझा पाया, ताकि मैं और मेरा सामान उस पुराने सराय तक सुरक्षित पहुँच सकें जिसका पता मेरे पास था। मेरी यह यात्रा कितनी कठिन, कितनी बोझिल और कितनी उलझन भरी लग रही थी! पहली बार लंदन में; पहली बार किसी सराय में; सफ़र की थकान से थका हुआ; अंधेरे से भ्रमित; ठंड से बेहाल; बिना किसी अनुभव या सलाह के जो मुझे बता सके कि क्या करना है, और फिर भी – मजबूरी में वही करना पड़ा।

मैंने यह मामला अपनी अंतरात्मा के हवाले कर दिया। लेकिन मेरी अंतरात्मा भी मेरी बाकी सभी इंद्रियों की तरह ठंडी और भ्रमित थी, और एक अत्यावश्यक आवश्यकता के दबाव में ही उसने मजबूरी में अपना वादा निभाया। इस तरह मजबूर होकर उसने कुली को पैसे दिए: संकट को देखते हुए, मुझे उसे बहुत ज्यादा दोष नहीं देना चाहिए था कि उसके साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ था; उसने वेटर से एक कमरा मांगा; उसने डरते-डरते नौकरानी को बुलाया; और तो और, जब वह युवती आई, तो उसने उसके बेहद घमंडी व्यवहार को बिना पूरी तरह विचलित हुए सहन किया।

मुझे याद है कि यही नौकरानी शहर की खूबसूरती और सजगता की मिसाल थी। उसकी कमर, टोपी, पोशाक - सब कुछ इतना सलीके से बना था कि मैं सोचती थी कि ये सब कैसे बने होंगे। उसकी बोली में एक ऐसा लहजा था जो अपनी बनावटी वाक्पटुता से मानो अधिकारपूर्वक मेरी बोली को फटकार रहा हो; उसके सलीकेदार पहनावे से मेरे साधारण देहाती कपड़ों को एक सहज तिरस्कार झलकता था।

मैंने सोचा, "खैर, अब कुछ नहीं किया जा सकता, और फिर दृश्य और परिस्थितियाँ भी नई हैं; मुझे इससे फायदा ही होगा।"

उस अभिमानी छोटी नौकरानी के प्रति अत्यंत शांत व्यवहार बनाए रखते हुए, और बाद में उसी तरह काले कोट और सफेद गले के वस्त्र पहने हुए पादरी जैसे दिखने वाले वेटर के प्रति भी वैसा ही व्यवहार करते हुए, मुझे जल्द ही उनसे शिष्टाचार प्राप्त हुआ। मेरा मानना है कि पहले तो उन्होंने मुझे नौकर समझा; लेकिन थोड़ी देर में उनका विचार बदल गया, और वे संरक्षण और विनम्रता के बीच दुविधापूर्ण स्थिति में आ गए।

कुछ जलपान करने, आग के पास बैठकर खुद को गर्म करने और अपने कमरे में पूरी तरह से बंद हो जाने तक मैं ठीक-ठाक रहा; लेकिन जैसे ही मैं बिस्तर के पास बैठा और तकिये पर अपना सिर और बाहें टिकाईं, एक भयानक उदासी मुझ पर छा गई। अचानक मेरी स्थिति एक भूत की तरह मेरे सामने आ गई। अजीब, वीरान, लगभग उम्मीदों से खाली। मैं इस विशाल लंदन में अकेला क्या कर रहा था? कल मैं क्या करूँगा? जीवन में मेरी क्या संभावनाएं थीं? इस धरती पर मेरे कौन दोस्त थे? मैं कहाँ से आया था? मुझे कहाँ जाना चाहिए? मुझे क्या करना चाहिए?

बहते आँसुओं से मेरा तकिया, बाहें और बाल भीग गए। इस आंसुओं के बाद गहरे अंधकार में कड़वे विचारों का दौर छा गया; लेकिन मुझे उठाए गए कदम पर कोई पछतावा नहीं था, न ही मैं उसे वापस लेना चाहती थी। एक प्रबल, अस्पष्ट दृढ़ विश्वास कि पीछे जाने से आगे बढ़ना बेहतर है, और मैं आगे बढ़ सकती हूँ—कि कोई न कोई रास्ता, चाहे कितना भी संकरा और कठिन क्यों न हो, समय आने पर खुल जाएगा—अन्य भावनाओं पर हावी हो गया: इसके प्रभाव ने उन्हें इतना शांत कर दिया कि अंततः मैं इतनी शांत हो गई कि प्रार्थना कर सकी और अपने पलंग पर जा सकी। मैंने अभी अपनी मोमबत्ती बुझाई ही थी और लेट गई थी, तभी रात में एक गहरी, धीमी, शक्तिशाली ध्वनि गूंजी। पहले तो मैं उसे पहचान नहीं पाई; लेकिन वह बारह बार बोली गई, और बारहवीं विशाल गूंज और कांपती घंटी की आवाज पर मैंने कहा: "मैं

सेंट पॉल की छाया में लेटी हूँ।"

अध्याय VI.

लंदन।

अगले दिन, मार्च का पहला दिन था, और जब मैं जागा, उठा और पर्दा खोला, तो मैंने उगते सूरज को कोहरे से जूझते हुए देखा। मेरे सिर के ऊपर, घरों की छतों के ऊपर, लगभग बादलों के बराबर ऊँचाई पर, मैंने एक गंभीर, गोलाकार आकृति देखी, गहरे नीले रंग की और धुंधली - गुंबद। जब मैं देख रहा था, मेरा अंतर्मन हिल गया; मेरी आत्मा ने अपने हमेशा बंधे हुए पंखों को थोड़ा ढीला किया; मुझे अचानक ऐसा लगा जैसे मैं, जिसने अभी तक सचमुच जीवन नहीं जिया था, आखिरकार जीवन का स्वाद चखने वाला हूँ। उस सुबह मेरी आत्मा योना के लौकी की तरह तेज़ी से बढ़ी।

"अच्छा हुआ कि मैं यहाँ आ गया," मैंने जल्दी और सावधानी से कपड़े पहनते हुए कहा। "मुझे इस महान लंदन की वो भावना बहुत पसंद है जो मैं अपने चारों ओर महसूस कर रहा हूँ। भला कौन कायर ही अपना पूरा जीवन छोटे-छोटे गाँवों में बिताएगा और अपनी प्रतिभा को हमेशा के लिए गुमनामी की जंग में डूबने देगा?"

कपड़े पहनकर मैं नीचे गया; थकावट और यात्रा की थकान से व्याकुल नहीं, बल्कि तरोताज़ा और चुस्त-दुरुस्त। जब वेटर मेरा नाश्ता लेकर आया, तो मैंने उससे शांत और प्रसन्नतापूर्वक बात की; हमारी दस मिनट तक बातचीत हुई, जिसके दौरान हम एक-दूसरे को अच्छे से जान पाए।

वह सफ़ेद बालों वाले, बुज़ुर्ग व्यक्ति थे; और ऐसा लगता था कि वे बीस साल से यहीं रह रहे थे। यह पता चलने पर मुझे पूरा यकीन हो गया कि उन्हें मेरे दो चाचा, चार्ल्स और विल्मोट, ज़रूर याद होंगे, जो पंद्रह साल पहले यहाँ अक्सर आते थे। मैंने

उनके नाम लिए; उन्हें वे नाम पूरी तरह से याद थे, और उन्होंने आदर दिखाया। अपना रिश्ता बता देने के बाद, उनकी नज़र में मेरी स्थिति अब स्पष्ट और सही हो गई थी। उन्होंने कहा कि मैं अपने चाचा चार्ल्स जैसा हूँ: मुझे लगता है कि उन्होंने सच ही कहा था, क्योंकि श्रीमती बैरेट भी अक्सर यही कहती थीं। उनके पहले के असहज और शंकालु स्वभाव की जगह अब सहज और विनम्र व्यवहार ने ले ली थी; अब मुझे किसी भी समझदारी भरे सवाल का शालीन जवाब देने में कोई परेशानी नहीं होगी।

जिस गली की खिड़की मेरे छोटे से बैठक कक्ष की ओर खुलती थी, वह संकरी, एकदम शांत और साफ थी: कुछ ही यात्री थे, जो आमतौर पर छोटे शहरों में देखने को मिलते हैं: यहाँ कुछ भी खतरनाक नहीं था; मुझे पूरा यकीन था कि मैं अकेले बाहर निकल सकती हूँ।

नाश्ता करने के बाद मैं बाहर निकल गया। मेरे दिल में उमंग और खुशी थी: लंदन में अकेले घूमना अपने आप में एक रोमांच जैसा लग रहा था। थोड़ी देर में मैं पैटरनोस्टर रो में पहुँच गया – यह एक क्लासिक जगह थी। मैं जोन्स नाम के एक व्यक्ति की किताबों की दुकान में घुसा: मैंने एक छोटी सी किताब खरीदी – एक ऐसी विलासिता जिसे मैं मुश्किल से ही खरीद सकता था; लेकिन मैंने सोचा कि एक दिन मैं इसे श्रीमती बैरेट को उपहार में दे दूंगा या भेज दूंगा। श्री जोन्स, एक अनुभवी व्यवसायी, अपनी मेज के पीछे खड़े थे: वे मुझे सबसे महान व्यक्तियों में से एक और मैं सबसे खुश इंसानों में से एक लग रहा था।

उस सुबह मैंने जीवन का भरपूर अनुभव किया। सेंट पॉल चर्च के सामने पहुँचकर मैं अंदर गया; गुंबद पर चढ़ा: वहाँ से मैंने लंदन को देखा, उसकी नदी, उसके पुल और उसके गिरजाघर; मैंने प्राचीन वेस्टमिंस्टर और हरे-भरे टेंपल गार्डन देखे, जिन पर सूरज की रोशनी पड़ रही थी, और ऊपर वसंत ऋतु का नीला आसमान था; और उनके और उसके बीच, हल्का-फुल्का धुंध का बादल था।

नीचे उतरते हुए, मैं आज़ादी और आनंद के एक शांत उन्माद में भटकता चला गया, जहाँ भी किस्मत मुझे ले जाए; और मैं—पता नहीं कैसे—शहर के जीवन के केंद्र में पहुँच गया। मैंने आखिरकार लंदन को देखा और महसूस किया: मैं स्ट्रैंड पहुँचा; मैं कॉर्नहिल गया; मैं वहाँ की चहल-पहल में घुलमिल गया; मैंने नदी पार करने के खतरों का सामना किया। ऐसा करना, और वह भी पूरी तरह अकेले, मुझे शायद एक अतार्किक, लेकिन सच्चा आनंद दिया। उन दिनों के बाद से, मैंने वेस्ट एंड, पार्क, सुंदर

चौक देखे हैं; लेकिन मुझे शहर कहीं ज़्यादा पसंद है। शहर कहीं ज़्यादा जीवंत लगता है: उसका कारोबार, उसकी भागदौड़, उसका शोर, ये सब बहुत गंभीर दृश्य और ध्वनियाँ हैं। शहर अपनी आजीविका कमा रहा है—लेकिन वेस्ट एंड अपने आनंद का लुत्फ़ उठा रहा है। वेस्ट एंड में आप शायद मनोरंजन कर सकते हैं, लेकिन शहर में आप गहराई से रोमांचित हो जाते हैं।

आखिरकार थकी-हारी और भूखी (इतने सालों बाद मुझे इतनी अच्छी भूख लगी थी), मैं लगभग दो बजे अपने अंधेरे, पुराने और शांत सराय में लौटी। मैंने दो व्यंजन खाए - एक साधारण मांस का टुकड़ा और सब्ज़ियाँ; दोनों ही बहुत स्वादिष्ट थे: मिस मार्चमोंट की रसोइया मेरी दयालु, दिवंगत मालकिन और मेरे लिए जो छोटे-छोटे, स्वादिष्ट भोजन भेजा करती थी, उनसे तो ये कहीं बेहतर थे, और जिनके बारे में बात करने की भी हमें ज़रा भी भूख नहीं लगती थी! सुखद रूप से थकी हुई, मैं तीन कुर्सियों पर एक घंटे के लिए लेट गई (कमरे में सोफा नहीं था)। मैं सो गई, फिर उठी और दो घंटे तक सोचती रही।

मेरी मनस्थिति और उससे जुड़ी सभी परिस्थितियाँ इस समय ऐसी थीं कि एक नया, दृढ़ और साहसी—शायद हताशा भरा—रास्ता अपनाने के लिए सबसे ज़्यादा अनुकूल थीं। मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं था। बीते हुए उजाड़ जीवन से असहनीय घृणा ने मुझे वापस लौटने से रोक दिया था। अगर मैं अपने इस नए प्रयास में असफल हो जाता, तो मेरे सिवा और कौन दुख झेलता? अगर मैं इंग्लैंड से दूर—घर से दूर—जहाँ मैं घर कहना चाहता था, लेकिन मेरा कोई घर ही नहीं था—मर जाता, तो फिर कौन रोता?

मुझे कष्ट सहना पड़ सकता था; मैं कष्ट सहने का आदी हो चुका था: मुझे लगता था कि मृत्यु का भय मुझ पर उतना नहीं था जितना कोमल हृदय वालों पर होता है। इससे पहले, मैंने मृत्यु के विचार को शांत भाव से देखा था। इसलिए, किसी भी परिणाम के लिए तैयार होकर, मैंने एक योजना बनाई।

उसी शाम मैंने अपने मित्र, वेटर से, बोउ-मरीन नामक एक निश्चित महाद्वीपीय बंदरगाह के लिए जहाजों के प्रस्थान के बारे में जानकारी प्राप्त की। मुझे लगा कि अब समय बर्बाद करने का कोई रास्ता नहीं है: मुझे उसी रात अपने बर्थ पर पहुँचना था। मैं जहाज पर चढ़ने से पहले सुबह तक इंतजार कर सकता था, लेकिन देर होने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था।

“महोदया, आप तुरंत अपनी सीट पर बैठ जाइए,” वेटर ने सलाह दी। मैं उससे सहमत हो गई, और बिल चुकाने के बाद, मैंने अपने मित्र की सेवाओं के लिए धन्यवाद दिया, जो मुझे अब पता है कि बहुत अधिक था और उसकी नज़र में हास्यास्पद रहा होगा — और वास्तव में, पैसे जेब में रखते हुए, उसने हल्की सी मुस्कान दी जिससे दानकर्ता की समझदारी के प्रति उसकी राय झलकती थी — और फिर उसने एक कोच बुलाया। उसने ड्राइवर को मेरा नाम भी सुझाया, और साथ ही मुझे, मुझे लगता है, घाट तक ले जाने और नाविकों के भरोसे न छोड़ने का निर्देश दिया; उस ड्राइवर ने वादा किया कि वह ऐसा करेगा, लेकिन अपना वादा निभाने में विफल रहा: इसके विपरीत, उसने मुझे बलि के रूप में पेश किया, मुझे एक भुने हुए मांस की तरह परोसा, और मुझे नाविकों की भीड़ के बीच में उतार दिया।

यह एक असहज संकट था। रात अंधेरी थी। कोचवान ने किराया मिलते ही तुरंत गाड़ी चला दी: नाविकों ने मेरे और मेरे संदूक के लिए संघर्ष शुरू कर दिया। इस समय मुझे उनकी गालियाँ सुनाई दे रही हैं: उन्होंने मेरी सोच को उस रात, अकेलेपन या उस दृश्य की विचित्रता से भी ज़्यादा झकझोर दिया। एक नाविक ने मेरे संदूक पर हाथ रखा। मैं चुपचाप देखता रहा और इंतज़ार करता रहा; लेकिन जब दूसरे ने मुझ पर हाथ रखा, तो मैं बोला, उसका स्पर्श झटक दिया, तुरंत एक नाव में चढ़ गया और दृढ़ता से विनती की कि संदूक मेरे पास रख दिया जाए — “बस वहीं,” — और ऐसा तुरंत कर दिया गया; क्योंकि जिस नाव को मैंने चुना था उसका मालिक अब मेरा सहयोगी बन गया था: मुझे नाव में बिठाकर ले जाया गया।

नदी स्याही की धारा की तरह काली थी; चारों ओर बनी इमारतों से रोशनी उस पर पड़ रही थी, जहाज उसकी गोद में डोल रहे थे। वे मुझे कई जहाजों के पास ले गए; मैंने लालटेन की रोशनी में गहरे रंग की पृष्ठभूमि पर बड़े सफेद अक्षरों में लिखे उनके नाम पढ़े। "द ओशन," "द फीनिक्स," "द कंसोर्ट," "द डॉल्फिन," बारी-बारी से बताए गए; लेकिन "द विविड" मेरा जहाज था, और ऐसा लग रहा था कि वह कहीं नीचे स्थित है।

हम काले पानी में बहते हुए आगे बढ़ रहे थे, मुझे स्टिक्स नदी और कैरन की याद आ रही थी जो किसी अकेले व्यक्ति को स्वर्गलोक ले जा रहा था। उस विचित्र दृश्य के बीच, ठंडी हवा मेरे चेहरे पर लग रही थी और आधी रात के बादल मेरे सिर पर बारिश बरसा रहे थे; मेरे साथ दो असभ्य नाविक थे जिनकी पागलपन भरी गालियाँ

अभी भी मेरे कानों को चुभ रही थीं, मैंने खुद से पूछा कि क्या मैं दुखी हूँ या डरा हुआ। मैं न तो दुखी था और न ही भयभीत। अपने जीवन में कई बार मैं अपेक्षाकृत सुरक्षित परिस्थितियों में भी इससे कहीं अधिक भयभीत रहा हूँ। "यह कैसे हो रहा है?" मैंने कहा। "मुझे लगता है कि मैं उदास और आशंकित होने के बजाय उत्साहित और सतर्क हूँ?" मैं बता नहीं सकता था कि ऐसा क्यों था।

अंततः काली रात में से "द विविड" सफेद और चमकदार रोशनी के साथ प्रकट हुआ। — "ये लीजिए!" नाविक ने कहा और तुरंत छह शिलिंग की मांग की।

“तुम बहुत ज़्यादा माँग रहे हो,” मैंने कहा। वह जहाज़ से उतर गया और कसम खाकर बोला कि जब तक मैं पैसे नहीं चुका दूँगा, वह मुझे जहाज़ पर नहीं चढ़ाएगा। एक नौजवान, जो बाद में मुझे पता चला कि जहाज़ का प्रबंधक था, जहाज़ के किनारे से झाँक रहा था; वह आने वाली प्रतियोगिता की उम्मीद में मुस्कुरा रहा था; उसे निराश करने के लिए, मैंने पैसे चुका दिए। उस दोपहर तीन बार मैंने शिलिंग की जगह क्राउन दे दिए थे; लेकिन मैंने खुद को यह सोचकर तसल्ली दी, “यह अनुभव की कीमत है।”

जब मैं जहाज पर चढ़ा तो अटेंडेंट ने खुशी से कहा, "उन्होंने आपको धोखा दिया है!"

मैंने शांत भाव से उत्तर दिया कि "मुझे पता था," और नीचे चला गया।

महिलाओं के केबिन में एक हष्ट-पुष्ट, आकर्षक और दिखावटी महिला थी। मैंने अपना बर्थ दिखाने को कहा; उसने मुझे घूरकर देखा, कुछ बुदबुदाई कि यात्रियों का इस समय जहाज पर आना असामान्य है, और उसका रवैया कुछ असभ्य सा लग रहा था। उसका चेहरा कैसा था - इतना सुंदर - इतना अभिमानी और इतना स्वार्थी!

“अब जब मैं जहाज पर सवार हो गया हूँ, तो मैं निश्चित रूप से यहीं रुकूंगा,” यह मेरा जवाब था।

मैं आपको परेशान करूंगा अगर आप मुझे मेरा बर्थ दिखा दें।

उसने बात मान ली, लेकिन रूठे हुए। मैंने अपनी टोपी उतारी, अपना सामान समेटा और लेट गया। कुछ मुश्किलें पार हो गई थीं; एक तरह की जीत मिल गई थी: मेरे बेघर, बेसहारा, सहारेहीन मन को फिर से थोड़े आराम का मौका मिल गया था। जब तक "विविड" बंदरगाह पर नहीं पहुँच जाती, तब तक मुझे और कुछ करने की ज़रूरत नहीं थी; लेकिन फिर... ओह! मैं आगे की ओर नहीं देख सकता था। परेशान, थका

हुआ, मैं आधी बेहोशी की हालत में लेटा रहा।

एयर होस्टेस रात भर बातें करती रही; मुझसे नहीं, बल्कि अपने बेटे जैसे दिखने वाले युवा एयर होस्टेस से। वह बार-बार केबिन में आता-जाता रहा: वे बहस करते, झगड़ते और फिर रात भर में बीस बार सुलह कर लेते। उसने कहा कि वह घर चिट्ठी लिख रही है—अपने पिता से; वह चिट्ठी के कुछ अंश ज़ोर से पढ़ती रही, मेरी तरफ़ बिल्कुल ध्यान नहीं दे रही थी—शायद उसे लगा कि मैं सो रहा हूँ। चिट्ठी के कई अंश पारिवारिक रहस्यों से भरे प्रतीत होते थे, और उनमें विशेष रूप से "शार्लोट" नाम की एक छोटी बहन का ज़िक्र था, जो चिट्ठी के लहजे से ऐसा लग रहा था कि एक नासमझी भरी प्रेम कहानी को अंजाम देने वाली है; इस बड़ी बहन ने इस अप्रिय रिश्ते का ज़ोरदार विरोध किया। आज्ञाकारी बेटे ने अपनी माँ की चिट्ठियों का उपहास उड़ाया। उसने उनका बचाव किया और उस पर खूब चिल्लाई। वे एक अजीब जोड़ी थे। वह उनतीस या चालीस साल की लग रही थी, लेकिन बीस साल की लड़की की तरह भरी-पूरी और खिलखिलाती हुई थी। कठोर, मुखर, अभिमानी और अशिष्ट, उसका मन और शरीर दोनों ही निर्भीक और अविनाशी प्रतीत होते थे। मुझे लगता है कि बचपन से ही वह सार्वजनिक जीवन जीती रही होगी; और संभवतः युवावस्था में वह एक बारमेड रही होगी।

सुबह होते-होते उनकी बातचीत एक नए विषय पर केंद्रित हो गई: "वॉटसन परिवार," यात्रियों का एक खास परिवार, जिसे वे जानती थीं और उनके किराए से होने वाले अच्छे मुनाफे के कारण उनका बहुत सम्मान करती थीं। उन्होंने कहा, "जब भी यह परिवार यात्रा करता था, तो यह उनके लिए किसी छोटी-मोटी दौलत से कम नहीं होता था।"

भोर होते ही सब जाग उठे और सूर्योदय तक यात्री जहाज पर आ गए। एयर होस्टेस ने "वॉटसन" दंपत्ति का ज़ोरदार स्वागत किया और उनके सम्मान में खूब धूमधाम मचाई गई। वे चार लोग थे, दो पुरुष और दो महिलाएं। उनके अलावा, केवल एक और यात्री थी - एक युवती, जिसे एक सज्जन, हालांकि सुस्त दिखने वाला व्यक्ति साथ लेकर आया था। दोनों समूहों में स्पष्ट अंतर था। वॉटसन दंपत्ति निस्संदेह धनी थे, क्योंकि उनके व्यवहार में धन का आत्मविश्वास झलक रहा था; महिलाएं - दोनों ही युवा थीं, और उनमें से एक शारीरिक सुंदरता के लिहाज से बेहद खूबसूरत थी - भव्य, रंगीन और परिस्थितियों के हिसाब से बिल्कुल बेमेल पोशाक में सजी हुई थीं।

उनके चमकीले फूलों वाले बोनट, मखमली लबादे और रेशमी पोशाकें किसी पार्क या सैरगाह के लिए ज़्यादा उपयुक्त लग रही थीं, न कि किसी नम डेक के लिए। पुरुष छोटे कद के, सादे, मोटे और असभ्य थे; सबसे बूढ़ा, सबसे सादा, सबसे चिकना, सबसे चौड़ा, मुझे जल्द ही पता चला कि वह उस खूबसूरत लड़की का पति था—शायद दूल्हा, क्योंकि वह बहुत छोटी थी। इस खोज पर मुझे गहरा आश्चर्य हुआ; और उससे भी गहरा तब जब मैंने देखा कि ऐसे रिश्ते में बुरी तरह दुखी होने के बजाय, वह खुशी से झूम रही थी। मैंने सोचा, "उसकी हंसी तो बस निराशा का उन्माद है।" और जब यह विचार मेरे मन में चल ही रहा था, मैं चुपचाप जहाज के किनारे पर टिका खड़ा था, तभी वह एक अजनबी की तरह मेरे पास आई, उसके हाथ में एक कैंप स्टूल था, और मुस्कुराते हुए, जिसकी चंचलता ने मुझे हैरान और चौंका दिया, हालांकि उसके दांत एकदम सही दिख रहे थे, उसने मुझे उस स्टूल पर बैठने की पेशकश की। मैंने बेशक, पूरी विनम्रता के साथ मना कर दिया; वह बेफिक्र और हल्के-फुल्के अंदाज में चली गई। वह जरूर अच्छे स्वभाव की रही होगी; लेकिन किस बात ने उसे उस व्यक्ति से शादी करने के लिए मजबूर किया, जो कम से कम एक इंसान होने के बजाय एक तेल के बैरल जैसा अधिक था?

दूसरी महिला यात्री, अपने साथी सज्जन के साथ, बेहद सुंदर और आकर्षक थीं: उनकी सादी प्रिंट वाली पोशाक, बिना किनारी वाली भूसे की टोपी और बड़ा शॉल, बड़े सलीके से पहने हुए, एक साधारण सी पोशाक थी जो क्वेकरवाद के लिए उपयुक्त थी, फिर भी उन पर काफी जँच रही थी। सज्जन के जाने से पहले, मैंने देखा कि उन्होंने सभी यात्रियों पर एक नज़र डाली, मानो यह पता लगाने के लिए कि उनकी साथी को किसके साथ छोड़ा जाएगा। बेहद असंतुष्ट भाव से उनकी नज़र रंग-बिरंगे फूलों वाली महिलाओं से हटी; उन्होंने मेरी ओर देखा, और फिर अपनी बेटी, भतीजी, या जो भी वह थीं, से बात की: उन्होंने भी मेरी ओर देखा, और अपने छोटे, सुंदर होंठों को थोड़ा सा सिकोड़ा। हो सकता है यह मैं ही थी, या हो सकता है यह मेरी सादी शोक पोशाक थी, जिसने इस तिरस्कार का भाव पैदा किया; अधिक संभावना है, दोनों ही। एक घंटी बजी; उनके पिता (बाद में मुझे पता चला कि वह उनके पिता थे) ने उन्हें चूमा, और वापस किनारे पर चले गए। जहाज़ चल पड़ा।

विदेशियों का कहना है कि केवल अंग्रेज़ लड़कियाँ ही अकेले यात्रा करने के लिए भरोसेमंद होती हैं, और वे अंग्रेज़ माता-पिता और अभिभावकों के इस साहसी

आत्मविश्वास पर गहरा आश्चर्य व्यक्त करते हैं। जहाँ तक "युवा लड़कियों" की बात है, कुछ लोग उनके इस साहस को मर्दाना और "असुविधाजनक" मानते हैं, जबकि अन्य उन्हें एक ऐसी शैक्षिक और धार्मिक व्यवस्था का शिकार समझते हैं जो उचित "निगरानी" को जानबूझकर नज़रअंदाज़ करती है। क्या यह युवती उस तरह की थी जिसे बिना निगरानी के सबसे सुरक्षित रूप से छोड़ा जा सकता था, यह मुझे नहीं पता: या, बल्कि तब पता नहीं था; लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि एकांत का आनंद उसे पसंद नहीं था। वह डेक पर एक-दो बार आगे-पीछे टहली; उसने रेशम और मखमल के भड़कीले वस्त्रों और उन पर नाचते हुए भालुओं को थोड़ी सी तिरस्कार भरी नज़र से देखा, और अंततः वह मेरे पास आई और बोली।

"क्या आपको समुद्री यात्रा पसंद है?" उसने पूछा।

मैंने समझाया कि समुद्री यात्रा के प्रति मेरी रुचि अभी तक अनुभव की कसौटी पर खरी नहीं उतरी है; मैंने कभी समुद्री यात्रा नहीं की है।

"ओह, कितना मनमोहक!" वह बोली। "मुझे आपकी इस नवीनता से बहुत ईर्ष्या हो रही है: पहली छाप कितनी सुखद होती है, आप जानते हैं। अब तो मैंने इतनी सारी छापें बना ली हैं कि मैं पहली छाप भूल ही जाती हूँ: समुद्र और इन सब चीजों के प्रति तो मैं बिल्कुल उदासीन हो गई हूँ।"

मैं मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।

"तुम मुझ पर क्यों हंसते हो?" उसने स्पष्ट और चिड़चिड़ेपन से पूछा, जो मुझे उसकी बाकी बातों से कहीं ज्यादा पसंद आया।

"क्योंकि तुम अभी इतने छोटे हो कि किसी भी बात को लेकर उदासीन नहीं हो सकते।"

"मैं सत्रह साल का हूँ" (थोड़ा चिढ़कर)।

"तुम सोलह साल की भी नहीं लगती। क्या तुम्हें अकेले यात्रा करना पसंद है?"

"अरे! मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है। मैं दस बार अकेले इंग्लिश चैनल पार कर चुका हूँ; लेकिन मैं हमेशा अकेले रहने का ध्यान रखता हूँ: मैं हमेशा दोस्त बना लेता हूँ।"

"मुझे लगता है कि इस यात्रा में आप शायद ही ज्यादा दोस्त बना पाएंगे" (वॉटसन समूह की ओर देखते हुए, जो अब डेक पर हंस रहे थे और काफी शोर मचा रहे थे)।

"उन घृणित पुरुषों और महिलाओं में से किसी में भी नहीं," उसने कहा: "ऐसे

लोगों को तो निचले दर्जे के यात्री होना चाहिए। क्या तुम स्कूल जा रहे हो?”

"नहीं।"

"आप कहां जा रहे हैं?"

मुझे इस बारे में जरा भी जानकारी नहीं है — कम से कम बोउ-मरीन बंदरगाह के अलावा तो बिल्कुल भी नहीं।

वह घूरती रही, फिर लापरवाही से दौड़ पड़ी:

मैं स्कूल जा रही हूँ। अरे, मैंने अपनी ज़िंदगी में कितने विदेशी स्कूलों में पढ़ाई की है! और फिर भी मैं बिल्कुल अनपढ़ हूँ। मुझे कुछ नहीं पता—दुनिया में कुछ भी नहीं—मैं आपको यकीन दिलाती हूँ; सिवाय इसके कि मैं बहुत सुंदर खेलती और नाचती हूँ, और फ्रेंच और जर्मन बोलना तो मुझे आता है; लेकिन मैं उन्हें ठीक से पढ़ या लिख नहीं सकती। क्या आपको पता है, एक दिन उन्होंने मुझसे एक आसान जर्मन किताब का एक पन्ना अंग्रेज़ी में अनुवाद करने को कहा था, और मैं नहीं कर पाई। पापा बहुत शर्मिंदा हुए: उन्होंने कहा कि ऐसा लग रहा है जैसे एम. डी बासोम्पियर—मेरे गॉडपापा, जो मेरे स्कूल के सारे बिल भरते हैं—ने अपना सारा पैसा बर्बाद कर दिया हो। और फिर, जानकारी के मामलों में—इतिहास, भूगोल, गणित, वगैरह में, मैं बिल्कुल बच्ची हूँ; और मैं अंग्रेज़ी बहुत बुरी तरह लिखती हूँ—वे कहते हैं कि मेरी स्पेलिंग और ग्रामर बहुत खराब है। इसके अलावा, मैं अपना धर्म भी पूरी तरह भूल चुकी हूँ; वे मुझे प्रोटेस्टेंट कहते हैं, आप जानते हैं, लेकिन सच में मुझे यकीन नहीं है कि मैं प्रोटेस्टेंट हूँ या नहीं: मुझे रोमन कैथोलिक धर्म और प्रोटेस्टेंट धर्म में अंतर भी ठीक से नहीं पता। और प्रोटेस्टेंट धर्म। हालाँकि, मुझे इससे ज़रा भी मतलब नहीं है। मैं एक समय बॉन में लूथरन थी — प्यारा बॉन! — मनमोहक बॉन! — जहाँ इतने सारे सुंदर छात्र थे। हमारे स्कूल की हर अच्छी लड़की का कोई न कोई चाहने वाला होता था; उन्हें हमारे बाहर घूमने जाने का समय पता होता था, और वे लगभग हमेशा सैरगाह पर हमसे मिलते थे: 'सुंदर लड़की,' हम उन्हें कहते सुनते थे। मैं बॉन में बहुत खुश थी!

मैंने पूछा, "और तुम अभी कहाँ हो?"

“ओह! चुना,” उसने कहा।

अब, मिस जिनेवरा फैंसहावे (इस युवती का यही नाम था) ने असली नाम को अस्थायी रूप से भुलाने के लिए "चुना" शब्द का प्रयोग किया। यह उनकी आदत थी:

बातचीत में हर मोड़ पर "चुना" शब्द आ जाता था— किसी भी भाषा में, जो वह उस समय बोल रही होती थीं, किसी भी छूटे हुए शब्द के लिए यह एक सुविधाजनक विकल्प था। फ्रांसीसी लड़कियाँ अक्सर ऐसा करती हैं; उन्होंने यह रिवाज़ उनसे ही सीखा था। हालाँकि, मैंने पाया कि इस संदर्भ में "चुना" शब्द विलेट के लिए था— लाबासेकुर के महान राज्य की राजधानी।

मैंने पूछा, "क्या तुम्हें विलेट पसंद है?"

"काफी अच्छा है। यहाँ के लोग, आप जानते हैं, बेहद मूर्ख और अशिष्ट हैं; लेकिन कुछ अच्छे अंग्रेज परिवार भी हैं।"

क्या आप किसी स्कूल में हैं?

"हाँ।"

"अच्छा वाला?"

“अरे नहीं! कितना भयानक है: लेकिन मैं हर रविवार को बाहर जाता हूँ, और मुझे शिक्षिकाओं, शिक्षकों या विद्यार्थियों की कोई परवाह नहीं होती, और मैं शैतान को सबक सिखाता हूँ (अंग्रेज़ी में ऐसा कहने की हिम्मत नहीं होती, लेकिन फ्रेंच में यह बिल्कुल सही लगता है); और इस तरह मैं बड़े मज़े से अपना काम चला लेता हूँ... क्या तुम फिर से मुझ पर हंस रहे हो?”

“नहीं— मैं तो बस अपने ही विचारों पर मुस्कुरा रहा हूँ।”

“ये क्या हैं?” (उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना) — “अब मुझे बताइए कि आप कहाँ जा रहे हैं।”

"किस्मत मुझे जहाँ भी ले जाए, मेरा काम है जहाँ भी मुझे जीविका कमाने का मौका मिले, कमाना।"

“कमाने के लिए!” (घबराहट में) “तो क्या तुम गरीब हो?”

"जॉब जितना गरीब।"

(थोड़ी देर रुककर) — “अरे! कितना अप्रिय! लेकिन मैं जानती हूँ कि गरीब होना क्या होता है: घर पर तो सब ही बहुत गरीब हैं — पापा और मम्मी, और हम सब। पापा का नाम कैप्टन फैंशॉ है; वो आधी तनख्वाह पर एक अधिकारी हैं, लेकिन अच्छे खानदान के हैं, और हमारे कुछ रिश्तेदार काफी अच्छे हैं; लेकिन मेरे चाचा और गॉडपापा डी बासोम्पियर, जो फ्रांस में रहते हैं, वही हमारी मदद करते हैं: वही हम लड़कियों को पढ़ाते हैं। मेरी पाँच बहनें और तीन भाई हैं। धीरे-धीरे हमारी शादी होगी

— शायद कुछ उम्रदराज सज्जनों से, जिनके पास पैसा हो: पापा और मम्मी इसका इंतजाम करते हैं। मेरी बहन ऑगस्टा की शादी अब पापा से कहीं ज्यादा उम्रदराज दिखने वाले आदमी से हो गई है। ऑगस्टा बहुत खूबसूरत है — मेरी पसंद की नहीं — लेकिन सांवली है; उसके पति, मिस्टर डेविस को भारत में पीलिया हो गया था, और उनका रंग अभी भी गिनी के सिक्के जैसा है; लेकिन वो अमीर हैं, और ऑगस्टा का अपना रहन-सहन और घर है, और हम सब सोचते हैं कि उसने बहुत अच्छा किया है। अब, यह 'गुज़ारा करने' से बेहतर है, जैसा कि आप कहते हैं। वैसे, क्या तुम होशियार हो?

"नहीं बिलकुल नहीं।"

"क्या आप बजा सकते हैं, गा सकते हैं और तीन या चार भाषाएँ बोल सकते हैं?"

"बिल्कुल नहीं।"

"फिर भी मुझे लगता है कि तुम चतुर हो" (एक विराम और एक जम्हाई)।

"क्या आपको समुद्री बीमारी हो जाएगी?"

"आप करेंगे?"

"ओह, बहुत ज़्यादा! जैसे ही हमें समुद्र दिखाई देता है: मुझे तो अभी से ही इसका एहसास होने लगा है। मैं नीचे जाऊँगी; और उस मोटी, घिनौनी एयर होस्टेस को ज़रूर आदेश दूँगी! Heureusement je sais faire aller mon monde."

वह नीचे गिर गई।

कुछ ही देर में बाकी यात्री भी उसके पीछे-पीछे आ गए: पूरी दोपहर मैं डेक पर अकेला ही रहा। जब मैं उन घंटों के शांत और खुशनुमा माहौल को याद करता हूँ, और साथ ही अपनी स्थिति को भी याद करता हूँ; उस खतरनाक - कुछ लोग तो उसे निराशाजनक भी कहते - स्वरूप को; तो मुझे लगता है कि जैसे-जैसे -

पत्थर की दीवारें जेल नहीं बनातीं।

न ही लोहे की सलाखें - एक पिंजरा,

इसलिए खतरा, अकेलापन, अनिश्चित भविष्य दमनकारी बुराइयाँ नहीं हैं, जब तक शरीर स्वस्थ है और इंद्रियाँ सक्रिय हैं; विशेष रूप से तब तक, जब तक स्वतंत्रता हमें अपने पंख देती है और आशा हमें अपने तारे से मार्गदर्शन करती है।

मार्गेट से आगे निकलने के काफी देर बाद तक मैं बीमार नहीं पड़ा, और समुद्र की ठंडी हवा में मुझे अपार आनंद मिला; जलडमरूमध्य की उठती लहरों, उनकी चोटियों

पर बैठे समुद्री पक्षियों, दूर तक फैले सफेद पाल वाले जहाजों, और चारों ओर छाए शांत लेकिन बादलों से घिरे आकाश से मुझे दिव्य आनंद प्राप्त हुआ। अपनी कल्पना में, मुझे दूर यूरोप महाद्वीप दिखाई दिया, मानो कोई विशाल स्वप्नलोक हो। उस पर धूप पड़ रही थी, मानो लंबी तटरेखा सोने की एक रेखा हो; घनी आबादी वाले कस्बों और बर्फ से चमकते टावरों, घने जंगलों, नुकीली चोटियों, समतल चरागाहों और बहती धाराओं की सूक्ष्म आकृतियाँ धातु की तरह चमकते दृश्य को और भी सुंदर बना रही थीं। पृष्ठभूमि में, एक गंभीर और गहरा नीला आकाश फैला हुआ था, और - शाही वादों से भरपूर, मोहक रंगों से कोमल - उत्तर से दक्षिण की ओर ईश्वर द्वारा तराशा हुआ एक धनुष, आशा का एक मेहराब फैला हुआ था।

पाठक, कृपया इसे पूरी तरह रद्द कर दें — या बल्कि इसे रहने दें, और इससे एक नैतिक सीख लें — एक अनुप्रासपूर्ण, हस्तलिखित प्रतिलिपि —

दिवास्वप्न शैतान के भ्रम होते हैं।

अत्यधिक बीमार होकर मैं लड़खड़ाते हुए केबिन में उतर गया।

मिस फैंशॉ का बर्थ संयोगवश मेरे बगल में ही था; और मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि हमारी आपसी परेशानी के पूरे समय में उन्होंने मुझे निर्मम स्वार्थ से सताया। उनकी अधीरता और चिड़चिड़ाहट की कोई सीमा नहीं थी। वॉटसन, जो स्वयं भी बहुत बीमार थे और जिनकी देखभाल एयर होस्टेस ने बेशर्मी से पक्षपातपूर्ण ढंग से की, उनके सामने तो वे बिल्कुल शांत थे। मैंने कई बार देखा है कि जिनेवरा फैंशॉ के हल्के-फुल्के, लापरवाह स्वभाव और सुंदर, कोमल सौंदर्य शैली वाली महिलाओं में सहनशीलता की पूर्ण अक्षमता होती है: वे विपत्ति में ऐसे मुरझा जाती हैं जैसे गरज के सामने हल्की बीयर। जो पुरुष ऐसी स्त्री को अपनी पत्नी बनाता है, उसे उसके लिए एक सुखमय जीवन की गारंटी देने के लिए तैयार रहना चाहिए। अंततः उनकी चिड़चिड़ी और चिड़चिड़ी बातों से तंग आकर, मैंने उनसे कठोर शब्दों में कहा, "चुप रहो।" इस फटकार से उन्हें अच्छा लगा, और यह स्पष्ट था कि उन्हें मुझ पर कोई बुरा नहीं लगा।

जैसे-जैसे रात गहरी होती गई, समुद्र और भी उबड़-खाबड़ होता गया: बड़ी-बड़ी लहरें जहाज़ के किनारों से ज़ोर से टकराने लगीं। यह सोचना अजीब था कि चारों ओर अंधेरा और पानी ही अंधेरा था, और शोर, लहरों और तेज़ तूफ़ान के बावजूद जहाज़ अपने पथहीन रास्ते पर सीधा आगे बढ़ता जा रहा था। फर्नीचर के सामान गिरने लगे,

और उन्हें अपनी जगह पर बांधना ज़रूरी हो गया; यात्री पहले से कहीं ज़्यादा बीमार हो गए; मिस फैंसहावे ने कराहते हुए कहा कि उन्हें मरना होगा।

"अभी नहीं, प्रिय," एयर होस्टेस ने कहा। "हम अभी बंदरगाह पर ही पहुँचे हैं।" और ठीक पंद्रह मिनट बाद, हम सब पर शांति छा गई; और लगभग आधी रात को यात्रा समाप्त हो गई।

मुझे खेद था: हाँ, मुझे खेद था। मेरा विश्राम समय बीत चुका था; मेरी कठिनाइयाँ—मेरी गंभीर कठिनाइयाँ—फिर से शुरू हो गईं। जब मैं डेक पर गया, तो ठंडी हवा और रात के काले घने कोहरे ने मुझे वहाँ होने की मेरी धृष्टता के लिए फटकार लगाई: विदेशी बंदरगाह के चारों ओर टिमटिमाती विदेशी बंदरगाह की रोशनी अनगिनत धमकी भरी आँखों की तरह मेरा सामना कर रही थी। वॉटसन परिवार का स्वागत करने के लिए मित्र जहाज पर आए; मित्रों का पूरा परिवार मिस फैंशॉ को घेरकर ले गया; मैं—लेकिन मैंने एक पल के लिए भी स्थितियों की तुलना करने का साहस नहीं किया।

लेकिन मैं कहाँ जाऊँ? मुझे कहीं तो जाना ही होगा। मजबूरी में नरमी बरतना मुश्किल है। जब मैंने एयर होस्टेस को उसका किराया दिया - और वह शायद इस बात से हैरान थी कि उसे इतनी कीमत का सिक्का मिला, जितना उसने शायद अपनी मोटी-मोटी गणनाओं में नहीं सोचा था - तो मैंने कहा, "कृपा करके मुझे किसी शांत, अच्छे सराय का पता बता दीजिए, जहाँ मैं रात बिता सकूँ।"

उसने न केवल मुझे आवश्यक दिशा-निर्देश दिए, बल्कि एक कमीशन अधिकारी को बुलाया और उसे मेरा जिम्मा लेने के लिए कहा, और मेरे सामान का नहीं, क्योंकि वह तो सीमा शुल्क केंद्र में जा चुका था।

मैं उस आदमी के पीछे-पीछे एक कच्ची सड़क पर चला, जो अब चाँदनी की हल्की-हल्की रोशनी से जगमगा रही थी; वह मुझे सराय तक ले आया। मैंने उसे छह पेंस दिए, जिसे उसने लेने से इनकार कर दिया; यह सोचकर कि यह काफी नहीं है, मैंने उसे एक शिलिंग में बदल दिया; लेकिन उसने इसे भी लेने से मना कर दिया और मुझसे कुछ तीखी आवाज़ में, एक ऐसी भाषा में बोला जो मुझे समझ नहीं आई। लैंप से रोशन सराय के गलियारे में आकर एक वेटर ने टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में मुझे याद दिलाया कि मेरे पैसे विदेशी हैं, यहाँ नहीं चलते। मैंने उसे एक सोने का सिक्का बदलने के लिए दिया। यह छोटी सी बात सुलझने के बाद, मैंने एक कमरा माँगा; मैं रात का खाना नहीं खा सका: मैं अभी भी समुद्री बीमारी से परेशान और घबराया हुआ था,

और मेरा पूरा शरीर काँप रहा था। मुझे कितनी राहत मिली जब आखिरकार एक छोटे से कमरे का दरवाजा मेरे और मेरी थकावट पर बंद हो गया। मैं फिर से आराम कर सकता था: हालाँकि कल संदेह का बादल पहले की तरह ही घना होगा; मेहनत की ज़रूरत और भी ज़्यादा होगी, दरिद्रता का खतरा और भी करीब होगा, और जीवन के लिए संघर्ष और भी कठिन होगा।

अध्याय VII.

विलेट।

अगली सुबह जब मैं उठा तो मेरा साहस फिर से जागृत हो गया था और मेरा मन तरोताजा था: शारीरिक दुर्बलता अब मेरे निर्णय को प्रभावित नहीं कर रही थी; मेरा दिमाग चुस्त और स्पष्ट महसूस हो रहा था।

जैसे ही मैंने कपड़े पहनना समाप्त किया, दरवाजे पर दस्तक हुई: मैंने कहा, "अंदर आओ," मुझे नौकरानी की उम्मीद थी, लेकिन एक असभ्य आदमी अंदर आया और बोला, —

"मुझे अपनी चाबियां दे दो, मीस।"

मैंने पूछा, "क्यों?"

“गिफ!” उसने बेसब्री से कहा; और जैसे ही उसने उन्हें मेरे हाथ से आधा छीन लिया, उसने आगे कहा, “ठीक है! जल्दी ही तुम्हारा ट्रोंक ले लेना।”

सौभाग्यवश सब ठीक ही हुआ: वह कस्टम स्टेशन से था। नाश्ता कहाँ मिलेगा, यह मुझे समझ नहीं आ रहा था; लेकिन मैं हिचकिचाते हुए नीचे उतरने लगा।

अब मैंने वह बात देखी जो पिछली रात अपनी अत्यधिक थकान के कारण मैं नहीं देख पाया था, यानी कि यह सराय वास्तव में एक बड़ा होटल था; और जैसे ही मैं

धीरे-धीरे चौड़ी सीढ़ियों से नीचे उतरा, हर पायदान पर रुकते हुए (क्योंकि मुझे नीचे उतरने की बिल्कुल भी जल्दी नहीं थी), मैंने अपने ऊपर की ऊंची छत, चारों ओर की रंगीन दीवारों, घर को रोशनी से भर देने वाली चौड़ी खिड़कियों, और जिस संगमरमर पर मैं चल रहा था उस पर पड़ी नसों को निहारा (क्योंकि सारी सीढ़ियाँ संगमरमर की थीं, हालांकि उन पर कालीन नहीं बिछा था और वे बहुत साफ नहीं थीं), और इन सब की तुलना मुझे दिए गए कमरे के आकार और उसकी अत्यंत सादगी से करते हुए, मैं दार्शनिक चिंतन में डूब गया।

मेहमानों के अनुरूप कमरे उपलब्ध कराने में वेटरों और नौकरानियों की सूझबूझ देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। सराय के नौकर और जहाज़ की परिचारिकाएँ एक नज़र में कैसे बता देती थीं कि मैं, उदाहरण के लिए, कोई सामाजिक महत्व का व्यक्ति नहीं हूँ और मेरे पास पैसों की भी कमी नहीं है? ज़ाहिर है, वे यह जानते थे: मैंने अच्छी तरह देखा कि वे सभी एक पल में ही मुझे लगभग एक ही मूल्य का समझ लेते थे। यह बात मुझे विचित्र और अर्थपूर्ण लगी: मैं अपने आप से इस बात को छुपा नहीं सका कि यह क्या संकेत दे रही थी, फिर भी मैंने इसके दबाव में भी अपना मनोबल बनाए रखा।

आखिरकार रोशनदान की तेज़ रोशनी से भरे एक विशाल हॉल में पहुँचकर, मैं किसी तरह उस कमरे तक पहुँचा जो कॉफ़ी रूम निकला। यह बात तो तय है कि इस कमरे में घुसते ही मैं थोड़ा काँप उठा; अनिश्चितता, अकेलापन और उदासी महसूस हुई; काश मुझे पता होता कि मैं सही कर रहा हूँ या गलत; मुझे पूरा यकीन था कि मैं गलत ही कर रहा हूँ, पर मैं खुद को रोक नहीं पाया। भाग्यवादी की तरह शांत भाव से, मैं एक छोटी सी मेज पर बैठ गया, जहाँ थोड़ी देर में एक वेटर मेरे लिए नाश्ता ले आया; और मैंने उस भोजन को ऐसे मन से खाया जो पाचन के लिए अनुकूल नहीं था। कमरे में कई और लोग दूसरी मेजों पर नाश्ता कर रहे थे; अगर उनमें से कोई महिला दिख जाती तो मुझे ज़्यादा खुशी होती; लेकिन वहाँ एक भी महिला नहीं थी - सभी पुरुष ही मौजूद थे। लेकिन किसी को भी ऐसा नहीं लगा कि मैं कुछ अजीब कर रहा हूँ; एक-दो सज्जनों ने कभी-कभार मेरी तरफ देखा, लेकिन किसी ने भी घूरकर नहीं देखा: मुझे लगता है कि अगर कुछ अजीब था भी, तो उन्होंने इसे "अंग्रेज़ी!" शब्द से समझा होगा।

नाश्ता खत्म हो गया, अब मुझे फिर चलना होगा— किस दिशा में? “विलेट

जाओ," एक अंतर्मन की आवाज़ ने कहा; शायद मिस फैंसहावे द्वारा विदाई के समय लापरवाही से बोले गए इस छोटे से वाक्य की याद आने से प्रेरित होकर: "काश तुम मैडम बेक के यहाँ आ जाते; उनके पास कुछ मरमोट हैं जिनकी तुम देखभाल कर सकते हो; उन्हें एक अंग्रेज़ गवर्नेंट की ज़रूरत है, या दो महीने पहले थी।"

मैडम बेक कौन थीं, कहाँ रहती थीं, मुझे नहीं पता था; मैंने पूछा था, लेकिन सवाल अनसुना रह गया: मिस फैंसहावे, अपने दोस्तों के साथ जल्दी में चली गईं, और उन्होंने जवाब नहीं दिया। मैंने अनुमान लगाया कि विलेट उनका निवास स्थान है - मैं विलेट जाऊँगी। दूरी चालीस मील थी। मुझे पता था कि मैं एक बेकार सी उम्मीद पर टिकी हूँ; लेकिन जिस विशाल और उथल-पुथल भरे माहौल में मैं थी, वहाँ तो मैं मकड़ी के जाले पर भी टिक सकती थी। विलेट जाने के साधनों के बारे में पूछताछ करने और ट्रेन में सीट पक्की करने के बाद, मैं इस रूपरेखा - इस अधूरी योजना - के सहारे रवाना हुई। पाठक, इससे पहले कि आप इस कदम की जल्दबाजी पर कोई राय दें, उस बिंदु पर वापस नज़र डालें जहाँ से मैंने शुरुआत की थी; उस रेगिस्तान पर विचार करें जिसे मैंने पीछे छोड़ दिया था, ध्यान दें कि मैंने कितना कम जोखिम उठाया था: मेरा खेल ऐसा था जिसमें खिलाड़ी हार नहीं सकता था और जीत सकता था।

मैं अपने स्वभाव को कलात्मक नहीं मानता; फिर भी मुझमें कलाकार की तरह वर्तमान सुख का भरपूर आनंद उठाने की क्षमता अवश्य है: यानी, जब वह मेरी पसंद का हो। उस दिन मुझे आनंद आया, भले ही हमारी यात्रा धीमी थी, भले ही ठंड थी, भले ही बारिश हो रही थी। हमारा मार्ग कुछ हद तक बंजर, सपाट और वृक्षहीन था; और सड़क के किनारे कीचड़ से भरी नहरें, सुस्त हरे साँपों की तरह रेंग रही थीं; और औपचारिक रूप से छंटे हुए विलो के पेड़, रसोई के बगीचे की क्यारियों की तरह जोते गए समतल खेतों के किनारे लगे थे। आकाश भी नीरस रूप से धूसर था; वातावरण स्थिर और उमस भरा था; फिर भी इन सभी निराशाजनक प्रभावों के बीच, मेरी कल्पना में नई जान आ गई और मेरा हृदय धूप से नहा गया। हालाँकि, इन भावनाओं को चिंता की गुप्त लेकिन निरंतर चेतना ने अच्छी तरह से नियंत्रित रखा था, जो जंगल में दुबके बाघ की तरह आनंद की प्रतीक्षा कर रही थी। उस शिकारी जानवर की साँसें हमेशा मेरे कानों में गूंजती रहीं; उसका प्रचंड हृदय मेरे हृदय से सटा हुआ धड़कता रहा; वह अपने ठिकाने में जरा भी नहीं हिला, लेकिन मुझे उसकी मौजूदगी का एहसास हुआ: मुझे पता था कि वह सूर्यास्त का ही इंतजार कर रहा था ताकि भूख से बेहाल

होकर अपने घात से बाहर निकल सके।

मुझे उम्मीद थी कि हम रात होने से पहले विलेट पहुँच जाएँगे, और इस तरह मैं उस गहरी शर्मिंदगी से बच जाऊँगा जो किसी अनजान जगह पर पहली बार पहुँचने पर पैदा होती है; लेकिन, हमारी धीमी गति और लंबे ठहरावों के कारण - घने कोहरे और हल्की, तेज़ बारिश के कारण - जब तक हम शहर के बाहरी इलाकों में पहुँचे, तब तक शहर पर लगभग महसूस होने वाला अंधेरा छा चुका था।

मुझे पता है कि हम एक ऐसे द्वार से गुज़रे जहाँ सैनिक तैनात थे—दीवार की रोशनी में इतना तो मैं देख ही सका; फिर, कीचड़ से लथपथ चौसी को पीछे छोड़ते हुए, हम एक अजीब तरह से खुरदुरे और पथरीले फुटपाथ पर खड़खड़ाते हुए आगे बढ़े। एक दफ्तर के पास, काम रुका और यात्री उतर गए। मेरा पहला काम अपना सामान लेना था; यह एक छोटी सी बात थी, लेकिन मेरे लिए महत्वपूर्ण थी। यह समझते हुए कि सामान के लिए ज़िद या ज़्यादा जल्दबाज़ी न करना ही बेहतर है, बल्कि चुपचाप इंतज़ार करना और दूसरे बक्सों को आते देखना, जब तक कि मुझे मेरा बक्सा न दिख जाए, और फिर तुरंत उसे ले लेना और सुरक्षित कर लेना, मैं एक तरफ खड़ा हो गया; मेरी नज़र गाड़ी के उस हिस्से पर टिकी थी जहाँ मैंने अपना छोटा सा सूटकेस सुरक्षित रखा हुआ देखा था, और जिस पर अब अतिरिक्त थैलों और बक्सों के ढेर लगे हुए थे। एक-एक करके, मैंने उन्हें निकालते, नीचे उतारते और उठाते देखा।

मुझे पूरा यकीन था कि अब तक मेरा सामान दिख जाना चाहिए था: लेकिन ऐसा नहीं था। मैंने दिशा-निर्देश कार्ड को हरे रिबन से बांध रखा था ताकि मैं उसे एक नज़र में पहचान सकूँ: लेकिन हरे रंग का एक भी टुकड़ा या किनारा नज़र नहीं आ रहा था। हर पैकेट हटा दिया गया; हर टिन का डिब्बा और भूरे कागज़ का पार्सल; ऑइलक्लॉथ का कवर हटा दिया गया; मैंने साफ़-साफ़ देखा कि वहाँ न तो छाता था, न लबादा, न छड़ी, न टोपी रखने का डिब्बा और न ही बैंड रखने का डिब्बा।

और मेरा सूटकेस, जिसमें मेरे थोड़े से कपड़े और मेरी छोटी सी पर्स थी, जिसमें मेरे पंद्रह पाउंड के बचे हुए पैसे थे, वे सब कहाँ गए?

मैं यह सवाल अब पूछ रहा हूँ, लेकिन तब नहीं पूछ सका। मैं कुछ भी नहीं बोल सका; मुझे फ्रेंच का एक शब्द भी नहीं आता था: और यह फ्रेंच ही थी, और सिर्फ फ्रेंच ही, ऐसा लग रहा था जैसे पूरी दुनिया मेरे चारों ओर बड़बड़ा रही हो। मैं क्या करता? कंडक्टर के पास जाकर, मैंने बस अपना हाथ उसके हाथ पर रखा, एक ट्रंक की ओर

इशारा किया, फिर डिलिजेंस-रूफ की ओर, और अपनी आँखों से सवाल पूछने की कोशिश की। उसने मुझे गलत समझा, इशारा किए गए ट्रंक को उठाया, और उसे गाड़ी पर लादने ही वाला था।

“इसे छोड़ दो—क्या तुम छोड़ोगे?” एक अच्छी अंग्रेज़ी बोलने वाली आवाज़ ने कहा; फिर सुधार करते हुए, “तुम क्या कर रहे हो? यह संदूक मेरा है।”

लेकिन मैंने वहां के लोगों के लहजे सुने थे; उन्हें सुनकर मेरा मन प्रसन्न हो गया; मैं मुड़ा और अजनबी से विनती करते हुए बोला, “महोदय,” अपनी व्याकुलता में मैंने ध्यान ही नहीं दिया कि वह कैसा दिखता है, “मैं फ्रेंच नहीं बोल सकता। क्या आप कृपया इस आदमी से पूछ सकते हैं कि उसने मेरे संदूक का क्या किया है?”

इस बात पर बिना भेद किए कि मेरी निगाहें किस चेहरे पर टिकी थीं, मैंने उस चेहरे के भाव में अपनी अपील पर आधा आश्चर्य और हस्तक्षेप की बुद्धिमत्ता पर आधा संदेह महसूस किया।

मैंने कहा, "उनसे पूछिए; मैं आपके लिए उतना ही करूंगा।"

मुझे नहीं पता कि वह मुस्कुराया या नहीं, लेकिन उसने एक सज्जनतापूर्ण लहजे में कहा - यानी, एक ऐसा लहजा जो कठोर या डरावना नहीं था - "तुम्हारा संदूक किस तरह का था?"

मैंने उसका वर्णन किया, जिसमें हरे रिबन का भी जिक्र था। और तुरंत ही उसने कंडक्टर को अपने हाथ में ले लिया, और मुझे लगा कि उसके बाद फ्रेंच भाषा में हुई तमाम गालियों के बीच उसने उसे आगे-पीछे से खूब घसीटा। थोड़ी देर बाद वह मेरे पास लौटा।

“उस व्यक्ति का कहना है कि उस पर ज़रूरत से ज़्यादा सामान लादा गया था, और वह स्वीकार करता है कि आपके द्वारा सामान लादे जाने के बाद उसने आपका ट्रंक उतार लिया और उसे अन्य पार्सलों के साथ बू-मरीन में छोड़ दिया है; हालाँकि, उसने इसे कल भेजने का वादा किया है; इसलिए, परसों आपको यह इस कार्यालय में सुरक्षित मिल जाएगा।”

मैंने कहा, "धन्यवाद," लेकिन मेरा दिल बैठ गया।

इस बीच मुझे क्या करना चाहिए? शायद उस अंग्रेज सज्जन ने मेरे चेहरे पर साहस की कमी देख ली थी; उन्होंने विनम्रता से पूछा, "क्या इस शहर में आपके कोई दोस्त हैं?"

"नहीं, और मुझे नहीं पता कि मुझे कहाँ जाना है।"

कुछ देर का विराम हुआ, और जब वह ऊपर जल रहे दीपक की रोशनी की ओर मुड़ा, तो मैंने देखा कि वह एक युवा, प्रतिष्ठित और सुंदर व्यक्ति था; मुझे लगा कि वह कोई लॉर्ड हो सकता है: प्रकृति ने उसे राजकुमार के लिए पर्याप्त रूप से योग्य बनाया था। उसका चेहरा बहुत ही मनमोहक था; वह गंभीर दिखता था लेकिन घमंडी नहीं, मर्दाना था लेकिन अभिमानी नहीं। मैं उससे मुंह फेर रहा था, इस गहरी चेतना के साथ कि ऐसे व्यक्ति से आगे किसी भी प्रकार की सहायता की अपेक्षा करना व्यर्थ था।

"क्या तुम्हारा सारा पैसा तुम्हारी गाड़ी की डिग्गी में था?" उसने मुझे रोकते हुए पूछा।

मैं कितना आभारी था कि मैं सच-सच जवाब दे सका — “नहीं। मेरे पर्स में इतने पैसे हैं” (क्योंकि मेरे पास लगभग बीस फ्रैंक थे) “कि मैं परसों तक किसी शांत सराय में ठहर सकूँ; लेकिन मैं विलेट में बिल्कुल अजनबी हूँ, और मुझे यहाँ की गलियों और सराय के बारे में कुछ नहीं पता।”

“मैं आपको आपकी पसंद के किसी भी सराय का पता दे सकता हूँ,” उसने कहा; “और यह ज़्यादा दूर नहीं है: मेरे बताए रास्ते पर चलकर आप इसे आसानी से पा लेंगे।”

उन्होंने अपनी जेब से एक पन्ना फाड़ा, उस पर कुछ शब्द लिखे और मुझे दे दिया। मुझे वे वाकई दयालु लगे; और उन पर, उनकी सलाह पर या उनके व्यवहार पर अविश्वास करने की बात तो बाइबल पर अविश्वास करने जैसी ही थी। उनके चेहरे पर अच्छाई झलक रही थी और उनकी चमकीली आँखों में सम्मान।

“सबसे छोटा रास्ता तो बुलेवार्ड से होते हुए पार्क पार करना होगा,” उन्होंने आगे कहा; “लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है और अंधेरा भी है, इसलिए एक महिला के लिए अकेले पार्क से होकर जाना संभव नहीं है; मैं आपके साथ यहीं तक चलूंगा।”

वह आगे बढ़ गया, और मैं उसके पीछे-पीछे अंधेरे और हल्की-हल्की बारिश में चलता रहा। बुलेवार्ड बिल्कुल सुनसान था, उसका रास्ता कीचड़ से भरा था, पेड़ों से पानी टपक रहा था; पार्क आधी रात की तरह काला था। पेड़ों और कोहरे के घने अंधेरे में, मैं अपने मार्गदर्शक को नहीं देख पा रहा था; मैं केवल उसके कदमों के निशान का अनुसरण कर सकता था। मुझे ज़रा भी डर नहीं था: मुझे विश्वास है कि मैं उस निर्भीक कदमों का अनुसरण करते हुए, लगातार रात में, दुनिया के अंत तक चला जाता।

"अब," पार्क पार करने के बाद उसने कहा, "आप इस चौड़ी सड़क पर तब तक चलते रहिए जब तक आपको सीढ़ियाँ न दिखें; दो लैंप आपको सीढ़ियाँ दिखाएंगे: इन सीढ़ियों से नीचे उतरिए: नीचे एक संकरी गली है; उसके बाद, अंत में आपको आपका सराय मिल जाएगा। वहाँ अंग्रेज़ी बोली जाती है, इसलिए आपकी मुश्किलें अब लगभग खत्म हो गई हैं। शुभ रात्रि।"

"शुभ रात्रि महोदय," मैंने कहा, "मेरी हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिए।" और हम विदा हो गए।

उनके चेहरे की याद, जो मुझे यकीन है कि बेसहारा लोगों के प्रति दयालुता से भरपूर था — उनकी आवाज़ की गूंज, जो जरूरतमंदों, कमजोरों, युवाओं और सुंदरियों के प्रति भी शिष्टतापूर्ण व्यवहार दर्शाती थी — मेरे लिए लंबे समय तक एक सुकून का काम करती रही। वे एक सच्चे युवा अंग्रेज सज्जन थे।

मैं एक भव्य सड़क और चौक से तेज़ी से आगे बढ़ता रहा, चारों ओर आलीशान घर थे, और उनके बीच कई विशाल और प्रभावशाली इमारतों की रूपरेखा दिखाई दे रही थी; जो महल या गिरजाघर हो सकती थीं - मैं निश्चित नहीं कह सकता था। जैसे ही मैं एक बरामदे से गुज़रा, दो मूंछों वाले आदमी अचानक खंभों के पीछे से निकले; वे सिगार पी रहे थे: उनके पहनावे से लगता था कि वे सज्जन हैं, लेकिन बेचारे! वे दिल से बिल्कुल साधारण थे। वे अक्खड़पन से बात कर रहे थे, और मेरी तेज़ चाल के बावजूद, वे काफी दूर तक मेरे साथ-साथ चलते रहे। अंत में मेरी मुलाकात एक गश्ती दल से हुई, और मेरे खूंखार पीछा करने वाले पीछे हट गए; लेकिन वे मुझे मेरी समझ से परे भगा चुके थे: जब मुझे होश आया, तो मुझे पता नहीं था कि मैं कहाँ हूँ; मैं सीढ़ियों को कब से पार कर चुका था। घबराया हुआ, हाँफता हुआ, मेरी नसें बेचैनी से धड़क रही थीं, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जाऊँ। उन दाढ़ी वाले, उपहास करने वाले मूर्खों से फिर से मिलने का ख्याल ही भयानक था; लेकिन उस रास्ते पर फिर से चलना होगा और उन कदमों के निशान ढूंढने होंगे।

अंततः मैं एक पुरानी और जर्जर सीढ़ी पर पहुँचा, और यह मानकर कि यही वह सीढ़ी होगी जिसका मुझे संकेत दिया गया था, मैं नीचे उतर गया। जिस गली में वह जाती थी वह वास्तव में संकरी थी, लेकिन उसमें कोई सराय नहीं थी। मैं आगे बढ़ता रहा। एक बहुत ही शांत और अपेक्षाकृत साफ-सुथरी और अच्छी तरह से बनी हुई गली में, मैंने एक बड़े घर के दरवाजे के ऊपर एक जलती हुई बत्ती देखी, जो आसपास के

घरों से एक मंजिल ऊँचा था। शायद यही वह सराय थी। मैं जल्दी से आगे बढ़ा: मेरे घुटने अब काँप रहे थे: मैं पूरी तरह से थक चुका था।

यह कोई सराय नहीं थी। विशाल बरामदे पर पीतल की एक प्लेट लगी हुई थी।

"पेंशननेट डी डेमोइसेलेज़" शिलालेख था; और नीचे, एक नाम,

“मैडम बेक।”

मैंने शुरुआत की। एक पल में मेरे मन में सौ-चार विचार उमड़ पड़े। फिर भी मैंने कुछ भी योजना नहीं बनाई, न ही कुछ सोचा: मेरे पास समय नहीं था। नियति ने कहा, "यहीं रुक जाओ; यही तुम्हारा ठिकाना है।" भाग्य ने मुझे अपने शक्तिशाली हाथों में थाम लिया; मेरी इच्छाशक्ति पर नियंत्रण कर लिया; मेरे कार्यों को निर्देशित किया: मैंने दरवाजे की घंटी बजाई।

प्रतीक्षा करते हुए मैंने कुछ नहीं सोचा। मैं सड़क के पत्थरों को टकटकी लगाकर देखता रहा, जहाँ दरवाजे की बत्ती की रोशनी पड़ रही थी, उन्हें गिनता रहा, उनकी आकृतियों को देखता रहा और उनके कोनों पर नमी की चमक को निहारता रहा। मैंने फिर घंटी बजाई। आखिरकार उन्होंने दरवाजा खोला। एक सुंदर टोपी पहने एक महिला मेरे सामने खड़ी थी।

मैंने पूछा, "क्या मैं मैडम बेक से मिल सकता हूँ?"

मुझे लगता है कि अगर मैं फ्रेंच बोलता तो वह मुझे अंदर नहीं आने देती; लेकिन, चूंकि मैं अंग्रेजी बोलता था, उसने यह निष्कर्ष निकाला कि मैं पेंशन से संबंधित काम के सिलसिले में आया हुआ एक विदेशी शिक्षक हूं, और इतनी देर रात होने के बावजूद, उसने बिना किसी हिचकिचाहट या संकोच के मुझे अंदर आने दिया।

अगले ही पल मैं एक ठंडे, चमकदार कक्ष में बैठा था, जहाँ चीनी मिट्टी का चूल्हा बुझा हुआ था, उस पर सोने की परत चढ़ी सजावटें थीं और फर्श पॉलिश किया हुआ था। शेल्फ पर टंगी एक पेंडुलम ने नौ बजने की आवाज़ की।

पंद्रह मिनट बीत गए। मेरे शरीर की हर धड़कन कितनी तेज़ हो गई! मैं बारी-बारी से ठंड और गर्मी महसूस कर रहा था! मेरी नज़रें दरवाजे पर टिकी थीं - एक बड़ा सा सफेद तह वाला दरवाजा, जिस पर सुनहरी नक्काशी थी: मैं देखता रहा कि कहीं कोई पल्ला हिलकर खुल न जाए। सब कुछ शांत था: एक चूहा भी नहीं हिला था; सफेद दरवाजे बंद और स्थिर थे।

“क्या तुम अंग्रेज हो?” मेरे बगल से एक आवाज आई। मैं लगभग उछल पड़ा,

क्योंकि आवाज इतनी अप्रत्याशित थी; मुझे पूरा यकीन था कि मैं अकेला हूँ।

मेरे बगल में कोई भूत नहीं खड़ा था, न ही कोई प्रेतवाधित रूप; बस एक ममतामयी, छोटी सी दुबली-पतली महिला थी, जिसने एक बड़ी शॉल, एक लबादा और एक साफ-सुथरी, सुव्यवस्थित नाइट कैप पहन रखी थी।

मैंने कहा कि मैं अंग्रेज़ हूँ, और तुरंत ही, बिना किसी भूमिका के, हमारी बातचीत बेहद दिलचस्प हो गई। मैडम बेक (मेरा नाम मैडम बेक ही था - वह मेरे पीछे एक छोटे से दरवाजे से अंदर आई थीं, और मौन के जूतों में लिपटी होने के कारण मैंने न तो उनके आने की आहट सुनी और न ही उनके आने की) - मैडम बेक ने अपनी स्थानीय भाषा पर पकड़ खो दी थी जब उन्होंने कहा, "आप अंग्रेज़ हैं," और अब वह अपनी भाषा में तेज़ी से बोलने लगीं। मैंने अपनी भाषा में जवाब दिया। वह मुझे कुछ हद तक समझ गईं, लेकिन चूंकि मैं उन्हें बिल्कुल नहीं समझ पाया - हालांकि हम दोनों मिलकर एक भयानक शोर मचा रहे थे (मैडम की बोलने की कला जैसी कोई चीज मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी और न ही कल्पना की थी) - इसलिए हमारी बातचीत में कोई खास प्रगति नहीं हुई। थोड़ी देर बाद उन्होंने मदद के लिए घंटी बजाई; जो एक "मैत्रेसे" के रूप में आई, जिसने आंशिक रूप से आयरिश कॉन्वेंट में शिक्षा प्राप्त की थी, और अंग्रेजी भाषा में निपुण मानी जाती थी। यह मालकिन बड़ी धूर्त औरत थी—सिर से पैर तक लाबासेकुरियन (पारंपरिक अल्बियन) थी: और उसने अल्बियन भाषा का कितना कुतर्क किया! खैर, मैंने उसे एक सीधी-सादी कहानी सुनाई, जिसका उसने अनुवाद किया। मैंने उसे बताया कि कैसे मैंने अपना देश ज्ञान बढ़ाने और रोजी-रोटी कमाने के इरादे से छोड़ा था; कैसे मैं कोई भी उपयोगी काम करने को तैयार थी, बशर्ते वह गलत या अपमानजनक न हो; कैसे मैं बच्चों की दाई या नौकरानी बनना चाहती थी, और अपनी क्षमता के अनुसार घरेलू काम करने से भी इनकार नहीं करती थी। यह सुनकर, मैडम ने उसके चेहरे के भाव देखकर लगभग मान लिया कि कहानी ने उसका ध्यान खींच लिया है।

उन्होंने कहा, "इस तरह के साहसिक कार्य केवल अंग्रेज महिलाएं ही कर सकती हैं: क्या ये महिलाएं वाकई इतनी निडर हैं!"

उसने मेरा नाम और उम्र पूछी; वह बैठ गई और मुझे देखती रही—न दया भाव से, न रुचि से: साक्षात्कार के दौरान उसके चेहरे पर सहानुभूति या करुणा की एक झलक भी नहीं दिखी। मुझे लगा कि वह अपनी भावनाओं से ज़रा भी प्रभावित होने वाली

नहीं थी: गंभीर और विचारशील, वह मुझे देखती रही, अपने विवेक से विचार करती रही और मेरी कहानी का अध्ययन करती रही। तभी घंटी बजी।

“वोइला पोर ला प्रेयर डू सोइर!” उसने कहा और उठ खड़ी हुई। अपने दुभाषिए के माध्यम से उसने मुझे अभी जाने और कल वापस आने के लिए कहा; लेकिन यह मुझे ठीक नहीं लगा: मैं अंधेरे और सड़क के खतरों में वापस नहीं जाना चाहती थी। मैंने पूरी ऊर्जा के साथ, फिर भी संयमित और नियंत्रित लहजे में, मालकिन को संबोधित किए बिना, सीधे उससे कहा: “महोदया, निश्चिंत रहें कि मेरी सेवाएं तुरंत लेने से आपके हितों की रक्षा होगी, उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा: आप मुझे एक ऐसी व्यक्ति पाएंगी जो अपने काम के बदले अपनी मजदूरी का पूरा मूल्य देने को तैयार होगी; और यदि आप मुझे काम पर रखती हैं, तो बेहतर होगा कि मैं आज रात यहीं रुकूँ: विलेट में मेरा कोई परिचित नहीं है, और मुझे वहां की भाषा नहीं आती, तो मैं रहने की जगह कैसे पाऊँगी?”

“यह सच है,” उसने कहा; “लेकिन कम से कम आप एक संदर्भ तो दे सकते हैं?”

"कोई नहीं।"

उसने मेरे सामान के बारे में पूछा: मैंने उसे बताया कि वह कब आएगा। वह सोचने लगी। उसी क्षण प्रवेश कक्ष में एक आदमी के कदमों की आहट सुनाई दी, जो तेज़ी से बाहरी दरवाजे की ओर बढ़ रहा था। (मैं अपनी कहानी के इस हिस्से को ऐसे जारी रखूंगा जैसे मुझे सब कुछ समझ आ गया हो; क्योंकि हालांकि उस समय यह मेरे लिए मुश्किल से समझ में आया था, मैंने बाद में इसका अनुवाद सुना था)।

कदमों की आहट सुनते हुए मैडम बेक ने पूछा, "अब कौन बाहर जाएगा?"

“एम. पॉल,” शिक्षक ने उत्तर दिया। “वे आज शाम पहली कक्षा के बच्चों को पाठ पढ़ाने आए थे।”

“इस समय मैं जिस व्यक्ति से सबसे अधिक मिलना चाहता हूँ, वही है। उसे बुलाओ।”

शिक्षक दौड़कर हॉल के दरवाजे तक गए। एम. पॉल को बुलाया गया। वे अंदर आए: एक छोटे कद के, सांवले और दुबले-पतले व्यक्ति, चश्मा पहने हुए।

“मेरे चचेरे भाई,” मैडम ने कहना शुरू किया, “मैं आपकी राय जानना चाहती हूँ। हम जानते हैं कि आपको चेहरे के भाव पहचानने में महारत हासिल है; अब इसका इस्तेमाल कीजिए। उस चेहरे को पढ़िए।”

उस छोटे कद के व्यक्ति ने अपनी चश्मे की नज़र मुझ पर टिका दी: होठों को दृढ़ता से सिकोड़ना और माथे को सिकोड़ना, मानो यह कहना चाह रहा हो कि वह मुझे भेदकर देखना चाहता है, और उसके लिए कोई पर्दा नहीं होगा।

उन्होंने कहा, "मैंने इसे पढ़ा है।"

"और आप क्या सोचते हैं?"

"लेकिन—कई बातें," यह रहस्यमयी उत्तर था।

"बुरा या अच्छा?"

“निस्संदेह, हर प्रकार के,” ज्योतिषी ने आगे कहा।

"क्या कोई उसकी बात पर भरोसा कर सकता है?"

"क्या आप किसी महत्वपूर्ण मामले पर बातचीत कर रहे हैं?"

"वह चाहती है कि मैं उसे एक अच्छी या सत्ताधारी के रूप में नियुक्त करूं; वह ईमानदारी से भरी कहानी सुनाती है, लेकिन कोई संदर्भ नहीं देती।"

“क्या वह अजनबी है?”

"जैसा कि आप देख सकते हैं, यह एक अंग्रेज महिला है।"

“क्या वह फ्रेंच बोलती है?”

एक शब्द भी नहीं।

“क्या वह इसे समझती है?”

"नहीं।"

“तो क्या कोई उसकी उपस्थिति में स्पष्ट रूप से बोल सकता है?”

“निस्संदेह।”

उसने स्थिर निगाहों से देखा। "क्या आपको उसकी सेवाओं की आवश्यकता है?"

मुझे उनकी जरूरत है। आप जानते हैं कि मैं मैडम स्विनी से कितनी घृणा करता हूँ।

फिर भी उसने बारीकी से जांच की। अंततः जब फैसला आया, तो वह भी पहले के फैसलों की तरह ही अनिश्चित था।

“उससे बात करो। अगर उस स्वभाव में अच्छाई प्रबल है, तो कर्म का फल अवश्य मिलेगा; अगर बुराई – तो कोई बात नहीं! मेरी चचेरी बहन, यह हमेशा एक अच्छा काम साबित होगा।” और झुककर “शुभ संध्या” कहते हुए, मेरे भाग्य का यह अस्पष्ट निर्णायक गायब हो गया।

और मैडम ने उसी रात मुझे काम पर रख लिया - भगवान की कृपा से मुझे उस

सुनसान, नीरस और शत्रुतापूर्ण सड़क पर दोबारा जाने की जरूरत नहीं पड़ी।

अध्याय VIII.

मैडम बेक।

मुझे मालकिन के हवाले कर दिया गया और एक लंबे संकरे गलियारे से होते हुए एक अजीबोगरीब रसोई में ले जाया गया, जो बहुत साफ-सुथरी थी लेकिन बहुत ही विचित्र थी। ऐसा लग रहा था कि उसमें खाना पकाने का कोई साधन नहीं था—न चूल्हा, न ओवन; मुझे समझ नहीं आया कि एक कोने में रखी बड़ी काली भट्टी इन दोनों का कारगर विकल्प थी। बेशक, मेरे दिल में अहंकार की भावना जाग उठी थी; फिर भी मुझे राहत महसूस हुई जब मुझे रसोई में छोड़ने के बजाय, जैसा कि मुझे आधा-अधूरा आभास था, एक छोटे से अंदरूनी कमरे में ले जाया गया जिसे "कैबिनेट" कहा जाता था। जैकेट, छोटी पेटीकोट और बूट पहने एक रसोइया मेरा रात का खाना लेकर आया: यानी—कुछ मांस, अज्ञात प्रजाति का, एक अजीब और खट्टी, लेकिन स्वादिष्ट चटनी में परोसा गया; कुछ कटे हुए आलू, जिन्हें पता नहीं किससे स्वादिष्ट बनाया गया था: सिरका और चीनी, मुझे लगता है; एक टार्टिन, या ब्रेड और मक्खन का एक टुकड़ा, और एक भुना हुआ नाशपाती। भूखा होने के कारण मैंने खाया और आभारी था।

शाम की प्रार्थना के बाद, मैडम खुद मुझे दोबारा देखने आईं। उन्होंने मुझे ऊपर चलने के लिए कहा। कई छोटे-छोटे अजीब से कमरों से गुज़रते हुए—जिनके बारे में मुझे बाद में पता चला कि वे कभी ननों के कमरे हुआ करते थे, क्योंकि इमारत का कुछ हिस्सा प्राचीन था—और प्रार्थना कक्ष से होते हुए—एक लंबा, नीचा, अंधेरा कमरा, जहाँ दीवार पर एक सूली सूली लटकी हुई थी और दो मोमबत्तियाँ मंद रोशनी

में जल रही थीं—वे मुझे एक कमरे में ले गईं जहाँ तीन बच्चे तीन छोटे-छोटे पलंगों में सो रहे थे। चूल्हे की गर्मी से कमरे की हवा घुटन भरी हो गई थी; और स्थिति को और खराब करने के लिए, वहाँ एक तेज़ गंध फैली हुई थी: एक ऐसी सुगंध, जो वास्तव में परिस्थितियों के हिसाब से बिल्कुल आश्चर्यजनक और अप्रत्याशित थी, जो धुएँ और किसी मादक पदार्थ के मिश्रण जैसी थी—संक्षेप में, व्हिस्की की गंध।

एक मेज के बगल में, जिस पर मोमबत्ती का बचा हुआ हिस्सा सॉकेट में सुलग रहा था, एक भद्दी सी दिखने वाली महिला, चौड़ी धारीदार भड़कीली रेशमी पोशाक और एक मोटे कपड़े का एप्रन पहने, कुर्सी पर सो रही थी। दृश्य को पूरा करने और स्थिति के बारे में कोई संदेह न छोड़ने के लिए, सोई हुई महिला की कोहनी के पास एक बोतल और एक खाली गिलास रखा था।

मैडम ने इस अद्भुत दृश्य को बड़ी शांति से देखा; न तो वह मुस्कुराईं और न ही उन्होंने तेवर दिखाए; क्रोध, घृणा या आश्चर्य का कोई भी भाव उनके गंभीर चेहरे पर नहीं आया; उन्होंने उस महिला को जगाया तक नहीं! शांति से चौथे पलंग की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि यह मेरा पलंग है; फिर मोमबत्ती बुझाकर उसकी जगह एक रात का दीपक जलाकर वह एक भीतरी दरवाजे से अंदर चली गईं, जिसे उन्होंने थोड़ा खुला छोड़ दिया था - यह उनके अपने कमरे का प्रवेश द्वार था, एक बड़ा, सुसज्जित कमरा; जैसा कि खुले दरवाजे से दिखाई दे रहा था।

उस रात मेरी सारी प्रार्थनाएँ कृतज्ञता से भरी थीं। सुबह से ही मुझे अजीब तरह से मार्गदर्शन मिला था—अचानक ही मेरी ज़रूरतों का इंतज़ाम हो गया था। मुझे मुश्किल से ही विश्वास हो रहा था कि लंदन छोड़े हुए मुझे अड़तालीस घंटे भी नहीं बीते थे, और मेरे साथ केवल वही सुरक्षा थी जो किसी यात्री पक्षी की रक्षा करती है—और मेरे सामने आशा की धुंधली सी चादर के सिवा कोई उम्मीद नहीं थी।

मैं हल्की नींद सोता था; आधी रात को अचानक मेरी नींद खुल गई। चारों ओर सन्नाटा था, लेकिन कमरे में एक सफेद आकृति खड़ी थी - मैडम अपनी नाइट ड्रेस में। बिना किसी आवाज के, वह तीनों बच्चों के पास गईं जो तीनों बिस्तरों पर सो रहे थे; वह मेरे पास आईं: मैंने सोने का नाटक किया, और उन्होंने मुझे काफी देर तक देखा। एक छोटा सा मूक अभिनय हुआ, जो काफी दिलचस्प था। मुझे लगता है कि वह मेरे बिस्तर के किनारे पर पंद्रह मिनट तक बैठी रहीं, मेरे चेहरे को निहारती रहीं। फिर वह और करीब आईं, मेरे ऊपर झुक गईं; मेरी टोपी को थोड़ा ऊपर उठाया, और उसका

किनारा पीछे कर दिया ताकि मेरे बाल दिखें; उन्होंने मेरे हाथ को देखा जो चादर पर पड़ा था। यह करने के बाद, वह उस कुर्सी की ओर मुड़ीं जहाँ मेरे कपड़े रखे थे: वह बिस्तर के निचले हिस्से में थी। उनके छूने और उठाने की आवाज सुनकर, मैंने सावधानी से अपनी आँखें खोलीं, क्योंकि मैं यह जानने के लिए उत्सुक था कि उनकी खोज की प्रवृत्ति उन्हें कहाँ तक ले जाएगी। यह उन्हें काफी दूर तक ले गई: उन्होंने हर चीज का निरीक्षण किया। मैंने इस कार्य के पीछे उनका मकसद समझ लिया, अर्थात्... कपड़ों से पहनने वाली महिला, उसकी सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, साफ-सफाई आदि के बारे में राय बनाने की इच्छा। मकसद बुरा नहीं था, लेकिन तरीके शायद ही उचित या न्यायसंगत थे। मेरी पोशाक में एक जेब थी; उसने उसे अच्छे से उलट-पलट कर देखा: उसने मेरे पर्स में रखे पैसे गिने; उसने एक छोटी सी मेमोरेंडम-बुक खोली, उसके अंदर लिखी बातों को ध्यान से पढ़ा और पन्नों के बीच से मिस मार्चमोंट के भूरे बालों की एक छोटी सी गुंथी हुई लट निकाली। मेरे ट्रंक, डेस्क और वर्क-बॉक्स की तीन चाबियों के गुच्छे पर उसने विशेष ध्यान दिया: वास्तव में, इन्हीं चाबियों के साथ वह एक पल के लिए अपने कमरे में चली गई। मैं धीरे से अपने बिस्तर से उठी और अपनी नज़र से उसका पीछा किया: पाठक, ये चाबियां तब तक वापस नहीं लाई गईं जब तक कि उन्होंने बगल वाले कमरे के शौचालय पर मोम से अपनी चाबियों की छाप नहीं छोड़ दी। इस तरह सब कुछ शालीनता और व्यवस्थित तरीके से हो जाने के बाद, मेरा सामान अपनी जगह पर वापस रख दिया गया, मेरे कपड़े सावधानी से तह करके रख दिए गए। इस जांच से क्या निष्कर्ष निकाले गए? क्या वे अनुकूल थे या प्रतिकूल? व्यर्थ प्रश्न। मैडम का पत्थर जैसा चेहरा (क्योंकि रात के इस समय में वह पत्थर जैसा ही दिख रहा था: सैलून में वह मानवीय और, जैसा कि मैंने पहले कहा था, मातृत्वपूर्ण था) कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखा रहा था।

अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद—मुझे लगा कि उनकी नज़र में यह काम एक कर्तव्य था—वह परछाई की तरह चुपचाप उठीं: वह अपने कमरे की ओर बढ़ीं; दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने मुड़कर उस शराबी नायिका पर नज़र डाली, जो अभी भी सो रही थी और ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रही थी। श्रीमती स्विनी (मेरा अनुमान है कि यह श्रीमती स्विनी थीं, अंग्रेज़ी या आयरिश भाषा में, स्वीनी)— मैडम बेक की आँखों में श्रीमती स्वीनी का विनाश साफ़ दिख रहा था—उस आँख में एक अटल इरादा झलक रहा था: मैडम की कमियों को सुधारने की कोशिशें धीमी हो सकती थीं, लेकिन निश्चित थीं।

यह सब बहुत ही अ-अंग्रेज़ी था: सचमुच मैं एक विदेशी धरती पर था।

अगले दिन श्रीमती स्वेनी से मेरी और जान-पहचान हुई। ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने वर्तमान मालिक को अपना परिचय एक गरीब अंग्रेज महिला के रूप में दिया था: वास्तव में, मिडलसेक्स की मूल निवासी, जो शुद्ध शहरी लहजे में अंग्रेजी बोलने का दावा करती थीं। मैडम - समय रहते सच्चाई का पता लगाने के अपने अचूक तरीकों पर भरोसा करते हुए - बिना सोचे-समझे नौकर रखने में असाधारण साहस रखती थीं (जैसा कि मेरे मामले में भी स्पष्ट रूप से साबित हुआ)। उन्होंने श्रीमती स्वेनी को अपने तीन बच्चों की देखभाल करने वाली के रूप में नियुक्त किया। पाठक को यह बताने की शायद ही आवश्यकता है कि यह महिला वास्तव में आयरलैंड की मूल निवासी थीं; उनकी सामाजिक स्थिति के बारे में मैं कुछ नहीं कहूँगा: उन्होंने बेझिझक कहा कि उन्होंने "एक मार्क्विस के बेटे और बेटी का पालन-पोषण किया है।" मुझे लगता है कि वह शायद किसी आयरिश परिवार में आश्रिता, नर्स, पालक या धोबिन रही होंगी: उनकी बोली दबी हुई थी, जिसमें अजीब तरह से बनावटी कॉकनी लहजे की झलक थी। किसी न किसी तरह उसने एक बेहद शानदार और संदिग्ध वस्त्रों का संग्रह हासिल कर लिया था, और अब उसे अपने कब्जे में रखे हुए थी—कठोर और महंगे रेशम के गाउन, जो उस पर ठीक से फिट नहीं होते थे और ऐसा लगता था मानो किसी और कद-काठी के लिए बने हों; असली लेस की किनारी वाली टोपियाँ, और—इस संग्रह की सबसे खास वस्तु, जिससे वह पूरे घर में एक अलग ही दबदबा बना लेती थी, यहाँ तक कि तिरस्कारपूर्ण रवैया रखने वाले शिक्षकों और नौकरों को भी शांत कर देती थी, और जब तक उसके चौड़े कंधे उस भव्य वस्त्र की तहों से ढके रहते थे, तब तक मैडम को भी प्रभावित करती थी—एक असली भारतीय शॉल—जिसे मैडम बेक ने पूर्ण श्रद्धा और आश्चर्य के साथ "एक सच्चा कश्मीरी शॉल" कहा था। मुझे पूरा यकीन है कि इस "कश्मीरी शॉल" के बिना वह पेंशन में दो दिन भी नहीं टिक पाती: केवल इसी शॉल की बदौलत वह एक महीने तक टिकी रही।

लेकिन जब श्रीमती स्वेनी को पता चला कि मैं उनकी जगह लेने आई हूँ, तब उन्होंने अपना असली रूप दिखाया—तभी वे मैडम बेक पर पूरी ताकत से टूट पड़ीं—और फिर अपना सारा बल मुझ पर बरसा दिया। मैडम ने इस खुलासे और हमले को इतनी अच्छी तरह, इतने धैर्य से सहन किया कि शर्म के मारे मैं भी शांत ही रही। एक पल के लिए मैडम बेक कमरे से गायब हो गईं; दस मिनट बाद, पुलिस का एक एजेंट

हमारे बीच आ खड़ा हुआ। श्रीमती स्वेनी और उनका सामान वहाँ से ले जाया गया। इस पूरे घटनाक्रम के दौरान मैडम के माथे पर कोई शिकन नहीं आई—उनके होंठों से एक भी तीखा शब्द नहीं निकला।

बर्खास्तगी का यह छोटा-सा मामला नाश्ते से पहले ही पूरी तरह से सुलझ गया: मार्च करने का आदेश दिया गया, पुलिसकर्मी को बुलाया गया, विद्रोही को निष्कासित कर दिया गया; "चैंबर डी'एनफैंस" को धुआं देकर साफ किया गया, खिड़कियां खोल दी गईं, और निपुण श्रीमती स्वेनी का हर निशान - यहां तक कि वह सूक्ष्म और आध्यात्मिक सुगंध भी जो उनके अपराध के सिर और सामने के हिस्से का इतना सूक्ष्म और घातक संकेत देती थी - रू फॉसेट से मिटा दिया गया: मैं कहता हूं, यह सब मैडम बेक के अपने कमरे से ऑरोरा की तरह बाहर निकलने और उस क्षण के बीच किया गया जब वह शांति से बैठकर अपनी पहली कप कॉफी डालने लगीं।

दोपहर के करीब मुझे मैडम को तैयार करने के लिए बुलाया गया। (ऐसा लग रहा था कि मेरी भूमिका एक गौवर्नेंट और लेडीज़-मेड के बीच की थी।) दोपहर तक, वह अपने गाउन, शॉल और बिना आवाज़ वाली चप्पलों में घर में घूमती रहीं। एक अंग्रेजी स्कूल की प्रमुख महिला इस प्रथा को कैसे स्वीकार करतीं?

उसके बालों को संवारने का तरीका मुझे समझ नहीं आया; उसके बाल तो भरपूर थे: भूरे, बिल्कुल सफ़ेद नहीं, जबकि उसकी उम्र चालीस साल थी। मेरी झिझक देखकर उसने कहा, "क्या तुम अपने देश में कभी नौकरानी रही हो?" और मेरे हाथ से कंघी लेकर, मुझे एक तरफ़ हटाकर, बिना किसी रूखेपन या अनादर के, उसने खुद ही मेरे बाल संवारे। बाकी के काम करते समय भी, वह मुझे आधा निर्देश देती और आधा मदद करती रही, ज़रा भी नखरे या अधीरता दिखाए। नोट: यह पहली और आखिरी बार था जब मुझे उसे संवारना पड़ा। इसके बाद, यह ज़िम्मेदारी दरबान रोज़ीन पर आ गई।

सजने-संवरने पर मैडम बेक कद में छोटी और मोटी लगती थीं, फिर भी अपने अनोखे अंदाज़ में बेहद आकर्षक थीं; यानी, उनके शरीर के अंगों के अनुपात से उत्पन्न होने वाली सुंदरता उनमें झलकती थी। उनका रंग साफ और चमकीला था, बहुत लालिमा लिए नहीं; उनकी आंखें नीली और शांत थीं; उनकी गहरे रंग की रेशमी पोशाक उन पर इतनी सजी-धजी थी मानो कोई फ्रांसीसी दर्जी ही बना सकता हो; वह देखने में अच्छी लगती थीं, हालांकि थोड़ी संभ्रांत थीं; वास्तव में, वह संभ्रांत ही थीं।

मुझे नहीं पता कि उनके पूरे व्यक्तित्व में किस प्रकार का सामंजस्य था; फिर भी उनका चेहरा विरोधाभासी भी था: उनके चेहरे की विशेषताएं ऐसी नहीं थीं जो आमतौर पर इतनी ताजगी और शांति से भरे चेहरे के साथ देखी जाती हैं: उनकी आकृति सख्त थी: उनका माथा ऊंचा लेकिन संकरा था; यह क्षमता और कुछ हद तक परोपकार को दर्शाता था, लेकिन विशालता को नहीं; न ही उनकी शांत लेकिन चौकस आंखों में कभी हृदय में प्रज्वलित अग्नि या उससे बहने वाली कोमलता झलकती थी। उनका मुंह सख्त था: कभी-कभी थोड़ा कठोर भी लगता था; उनके होंठ पतले थे। संवेदनशीलता और प्रतिभा के साथ-साथ उनकी कोमलता और साहस को देखते हुए, मुझे किसी तरह लगा कि मैडम पेटीकोट में मिनोस की भूमिका के लिए बिल्कुल सही होंगी।

अंततः मुझे पता चला कि पेटीकोट में भी वह कुछ और ही थी। उसका नाम मोडेस्ट मारिया बेक था, जन्म से किंट: उसका नाम इग्नासिया होना चाहिए था। वह एक दयालु महिला थी और उसने बहुत अच्छे काम किए। उससे ज़्यादा सौम्य शासन करने वाली कोई और शिक्षिका नहीं थी। मुझे बताया गया कि उसने असहनीय श्रीमती स्वेनी को कभी फटकारा नहीं, उनकी शराबखोरी, अव्यवस्था और लापरवाही के बावजूद; फिर भी श्रीमती स्वेनी को जैसे ही जाने का मौका मिला, तुरंत जाना पड़ा। मुझे यह भी बताया गया कि उस संस्थान में न तो शिक्षकों और न ही प्रधानाचार्यों में कोई कमी पाई जाती थी; फिर भी शिक्षक और प्रधानाचार्य अक्सर बदलते रहते थे: वे गायब हो जाते और उनकी जगह दूसरे आ जाते, कोई भी ठीक से यह नहीं समझा पाता था कि ऐसा कैसे होता था।

यह संस्थान एक पेंशन और एक एक्सटर्नैट (छात्र-छात्रों का समूह) दोनों था: दिन में आने वाले विद्यार्थियों की संख्या सौ से अधिक थी; बोर्डिंग में रहने वाले विद्यार्थियों की संख्या लगभग बीस थी। मैडम के पास निश्चित रूप से उच्च प्रशासनिक क्षमता रही होगी: वह इन सभी के साथ-साथ चार शिक्षकों, आठ मास्टरों, छह नौकरों और तीन बच्चों का भी संचालन करती थीं, और साथ ही विद्यार्थियों के माता-पिता और मित्रों को भी बड़ी कुशलता से संभालती थीं; और यह सब बिना किसी स्पष्ट प्रयास के; बिना किसी भागदौड़, थकान, बुखार या किसी भी प्रकार की उत्तेजना के: वह हमेशा व्यस्त रहती थीं - व्यस्तता बहुत कम ही होती थी। यह सच है कि मैडम के पास इस विशाल व्यवस्था को प्रबंधित और विनियमित करने की अपनी एक प्रणाली थी; और वह एक बहुत ही कुशल प्रणाली थी: पाठक ने मेरी जेब को उलट-पलट कर मेरे निजी

दस्तावेजों को पढ़कर इसका एक नमूना देखा है। "निगरानी," "जासूसी," - ये उनके मूलमंत्र थे।

फिर भी, मैडम ईमानदारी को जानती थीं और उसे पसंद करती थीं—अर्थात्, जब तक वह उनकी इच्छा और हितों के आड़े न आती हो। उन्हें इंग्लैंड के प्रति सम्मान था; और जहाँ तक अंग्रेजों की बात है, अगर संभव हो तो वह अपने बच्चों के आसपास किसी और देश की महिलाओं को नहीं रखना चाहती थीं।

अक्सर शाम को, दिन भर साजिशें रचने, जासूसी करने और जासूसों की रिपोर्टें प्राप्त करने के बाद, वह मेरे कमरे में आतीं—उनके माथे पर थकान के स्पष्ट निशान होते—और बैठ जातीं और बच्चों की अंग्रेजी में कही गई छोटी-छोटी प्रार्थनाएँ सुनतीं: प्रभु की प्रार्थना और "कोमल यीशु" से शुरू होने वाला भजन, इन नन्हे कैथोलिकों को मेरी गोद में दोहराने की अनुमति थी; और, जब मैं उन्हें सुला देता, तो वह मुझसे इंग्लैंड और अंग्रेज़ महिलाओं के बारे में, और उनकी श्रेष्ठ बुद्धिमत्ता और अधिक वास्तविक एवं विश्वसनीय ईमानदारी के कारणों के बारे में बात करतीं (मैंने जल्द ही इतनी फ्रेंच सीख ली कि मैं उनकी बात समझ सकूँ और यहाँ तक कि उन्हें जवाब भी दे सकूँ)। वह अक्सर बहुत अच्छी समझ दिखातीं; अक्सर बहुत ठोस राय रखतीं: ऐसा लगता था कि वह जानती थीं कि लड़कियों को अविश्वासपूर्ण नियंत्रण में, अज्ञानता में, और ऐसी निगरानी में रखना जहाँ उन्हें एकांत के लिए कोई क्षण या कोना न मिले, उन्हें ईमानदार और विनम्र महिलाएँ बनाने का सबसे अच्छा तरीका नहीं था; लेकिन उसने ज़ोर देकर कहा कि अगर महाद्वीपीय बच्चों के साथ कोई और तरीका आज़माया गया तो विनाशकारी परिणाम होंगे: वे संयम के इतने आदी थे कि ढील, चाहे कितनी भी सावधानी से दी जाए, गलत समझी जाएगी और उस पर घातक रूप से भरोसा किया जाएगा। वह कहती थी कि वह अपने द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे तरीकों से तंग आ चुकी है, लेकिन उन्हें इस्तेमाल करना ही होगा; और मुझसे अक्सर गरिमा और कोमलता से बात करने के बाद, वह अपने "मौन के प्यालों" पर चली जाती और भूत की तरह घर में इधर-उधर घूमती, हर जगह देखती और जासूसी करती, हर ताले के छेद से झाँकती, हर दरवाजे के पीछे सुनती।

आखिरकार, मैडम की व्यवस्था बुरी नहीं थी—चलिए, मैं उनके साथ न्याय करूँ। उनके विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए किए गए सभी इंतज़ाम बेमिसाल थे। किसी भी विद्यार्थी पर अत्यधिक बोझ नहीं डाला जाता था: पाठों का वितरण

सुव्यवस्थित था और उन्हें सीखने वाले के लिए अत्यंत सरल बनाया गया था; मनोरंजन की स्वतंत्रता थी और व्यायाम का प्रावधान था जिससे लड़कियाँ स्वस्थ रहती थीं; भोजन भरपूर और स्वादिष्ट था: रू फॉसेट में कहीं भी कोई पीला या कमज़ोर चेहरा नज़र नहीं आता था। वह कभी भी छुट्टी देने में आनाकानी नहीं करती थीं; वह सोने, कपड़े पहनने, नहाने और खाने के लिए पर्याप्त समय देती थीं; इन सभी मामलों में उनका तरीका सरल, उदार, लाभकारी और तर्कसंगत था: कई सख्त अंग्रेज़ स्कूल शिक्षिकाओं को उनका अनुकरण करना चाहिए—और मेरा मानना है कि अगर सख्त अंग्रेज़ माता-पिता उन्हें ऐसा करने दें तो कई शिक्षिकाएँ ऐसा करने में प्रसन्न होंगी।

मैडम बेक जासूसी के बल पर राज करती थीं, इसलिए उनके पास जासूसों की एक टीम थी। उन्हें अपने इस्तेमाल किए जाने वाले औजारों की गुणवत्ता की पूरी जानकारी थी, और हालांकि वे गंदे कामों के लिए सबसे गंदे औजारों का इस्तेमाल करने में भी संकोच नहीं करती थीं—संतरे को निचोड़ने के बाद बचे हुए छिलके की तरह उन्हें फेंक देती थीं—लेकिन मैंने उन्हें साफ-सुथरे कामों के लिए शुद्ध धातु चुनने में बहुत सावधानी बरतते देखा है; और जब कभी उन्हें कोई जंगरहित और बेदाग औजार मिल जाता था, तो वे उसे रेशम और रुई में लपेटकर बड़ी सावधानी से रखती थीं। फिर भी, उस आदमी या औरत का बुरा हाल होता था जो उन पर भरोसा करने की हद से आगे बढ़ जाता था: स्वार्थ ही मैडम के स्वभाव की कुंजी थी—उनके इरादों का मूल —उनके जीवन का सार। मैंने उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाते हुए देखा है, और मैंने उन लोगों पर आधी दया और आधी तिरस्कार भरी मुस्कान बिखेरी है। लेकिन कोई भी उस तरीके से उनका विश्वास नहीं जीत पाया, न ही उनके इरादे को बदल पाया। इसके विपरीत, उसके दिल को छूने की कोशिश करना उसकी घृणा को जगाने और उसे अपना गुप्त शत्रु बनाने का सबसे पक्का तरीका था। इससे उसे यह साबित हो गया कि उसका दिल छूने लायक नहीं है: इससे उसे अपनी शक्तिहीनता और निष्क्रियता का एहसास हुआ। दान और दया के बीच का अंतर उससे बेहतर कहीं नहीं दिखता था। सहानुभूति से रहित होते हुए भी, उसमें पर्याप्त तर्कसंगत परोपकारिता थी: वह उन लोगों को भी तुरंत दान दे देती थी जिन्हें उसने कभी देखा भी नहीं था — हालाँकि, व्यक्तियों की तुलना में वर्गों को अधिक। “गरीबों के लिए,” वह अपना पर्स खुले दिल से खोल देती थी — आम तौर पर, गरीबों के लिए वह इसे बंद रखती थी। समाज के हित में परोपकारी योजनाओं में वह खुशी-खुशी भाग लेती थी; कोई निजी दुख उसे छू

नहीं पाता था: किसी एक हृदय में केंद्रित पीड़ा का कोई भी बल या समूह उसके दिल को भेद नहीं सकता था। न तो गेथसेमानी की पीड़ा, न ही कलवारी पर मृत्यु, उसकी आँखों से एक भी आँसू निकाल सकती थी।

मैं फिर से कहता हूँ, मैडम एक बहुत महान और अत्यंत सक्षम महिला थीं। उस स्कूल ने उनकी क्षमताओं के लिए उन्हें बहुत सीमित दायरा दिया था; उन्हें एक राष्ट्र पर शासन करना चाहिए था: उन्हें एक अशांत विधान सभा की नेता होना चाहिए था। कोई भी उन्हें डरा नहीं सकता था, कोई भी उनके धैर्य को भंग नहीं कर सकता था, न ही उनकी चतुराई को चुनौती दे सकता था। अपने आप में, वह एक प्रथम मंत्री और एक पुलिस अधीक्षक के कर्तव्यों को निभा सकती थीं। बुद्धिमान, दृढ़, विश्वासहीन; रहस्यमय, चालाक, भावहीन; सतर्क और रहस्यमय; तीक्ष्ण और संवेदनहीन — और साथ ही पूर्णतः शालीन — इससे अधिक क्या चाहा जा सकता है?

समझदार पाठक यह नहीं सोचेगा कि मैंने यहाँ संक्षेपित की गई सारी जानकारी एक महीने या छह महीने में प्राप्त कर ली है। नहीं! मैंने सबसे पहले एक विशाल और समृद्ध शिक्षण संस्थान का जीवंत वातावरण देखा। यह एक बड़ा विद्यालय था, जो स्वस्थ, जीवंत लड़कियों से भरा हुआ था, सभी सलीके से कपड़े पहने हुए थीं और उनमें से कई सुंदर थीं, जो बिना किसी कठिन परिश्रम या व्यर्थ ऊर्जा की बर्बादी के, एक अद्भुत सरल विधि से ज्ञान प्राप्त कर रही थीं; शायद किसी भी विषय में बहुत तेजी से प्रगति नहीं कर रही थीं; आराम से रह रही थीं, लेकिन फिर भी हमेशा व्यस्त थीं और कभी भी दबाव में नहीं थीं। यहाँ शिक्षकों और प्रधानाचार्यों का एक दल था, जिन्हें अधिक सख्ती से काम सौंपा गया था, क्योंकि विद्यार्थियों को बचाने के लिए सारा मुख्य कार्यभार उन्हीं को करना था, फिर भी उनके कर्तव्यों को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया था कि जब भी काम अधिक होता था, वे एक दूसरे को तुरंत राहत देते थे: संक्षेप में, यह एक विदेशी विद्यालय था; जिसका जीवन, गतिविधि और विविधता इसे उसी प्रकार के कई अंग्रेजी संस्थानों से बिल्कुल अलग और बेहद आकर्षक बनाती थी।

घर के पीछे एक बड़ा बगीचा था, और गर्मियों में विद्यार्थी लगभग खुले में ही गुलाब की झाड़ियों और फलों के पेड़ों के बीच रहते थे। विशाल और लताओं से ढके बरसेउ के नीचे, मैडम गर्मियों की दोपहरों में बैठती थीं और बारी-बारी से कक्षाओं को अपने चारों ओर बैठने, सिलाई करने और पढ़ने के लिए बुलाती थीं। इस बीच, शिक्षक आते-

जाते रहते थे, पाठ पढ़ाने के बजाय संक्षिप्त और जीवंत व्याख्यान देते थे, और विद्यार्थी अपनी इच्छा अनुसार निर्देशों के नोट्स बनाते थे या नहीं बनाते थे; उन्हें यह विश्वास था कि लापरवाही की स्थिति में वे अपने साथियों के नोट्स की नकल कर सकते हैं। नियमित मासिक अवकाश के अलावा, कैथोलिक त्योहारों के कारण पूरे वर्ष कई छुट्टियाँ होती थीं; और कभी-कभी किसी चमकदार गर्मी की सुबह या सुहावनी गर्मी की शाम को, बोर्डिंग में रहने वाले विद्यार्थियों को ग्रामीण इलाकों में लंबी सैर के लिए ले जाया जाता था, जहाँ उन्हें गौफ्रेस और वाइन ब्लैंक, या ताजा दूध और पेन बिस, या पिस्टोलेट्स औ बटर (रोल्स) और कॉफी से दावत दी जाती थी। यह सब बहुत सुखद प्रतीत हो रहा था, और मैडम स्वयं अच्छाई की साक्षात मूर्ति लग रही थीं; और शिक्षक भी उतने बुरे नहीं थे, लेकिन वे इससे भी बुरे हो सकते थे; और विद्यार्थी, शायद थोड़े शोरगुल वाले और उद्दंड थे, लेकिन स्वास्थ्य और प्रसन्नता के प्रतीक थे।

इस प्रकार, दूरी के आकर्षण से देखा गया दृश्य प्रतीत हुआ; लेकिन एक समय ऐसा आया जब मेरे लिए दूरी मिटने वाली थी - जब मुझे अपने उस निगरानी कक्ष से नीचे बुलाया जाना था, जहाँ से मैंने अब तक अपने अवलोकन किए थे, और मुझे रू फॉसेट की इस छोटी सी दुनिया के साथ घनिष्ठ संपर्क में आने के लिए विवश होना था।

एक दिन मैं हमेशा की तरह ऊपर कमरे में बैठी बच्चों की अंग्रेज़ी की पढ़ाई सुन रही थी और साथ ही मैडम के लिए एक रेशमी पोशाक सिल रही थी, तभी वो अपने उसी गंभीर भाव और गहरी सोच से भरे माथे के साथ कमरे में आईं, जो कभी-कभी उनके चेहरे पर दिखता था और जिससे वो बिल्कुल भी मिलनसार नहीं लगती थीं। मेरी कुर्सी के सामने वाली कुर्सी पर बैठते ही वो कुछ मिनट चुप रहीं। सबसे बड़ी बेटी डेज़िरे मुझे श्रीमती बारबॉल्ड का एक छोटा सा निबंध पढ़कर सुना रही थी और मैं उसे पढ़ते समय अंग्रेज़ी से फ्रेंच में अनुवाद करने के लिए कह रही थी, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसे समझ आ रहा है कि वो क्या पढ़ रही है: मैडम सुन रही थीं।

बिना किसी भूमिका या भूमिका के, उसने लगभग आरोप लगाने वाले लहजे में कहा, "मेस, क्या आप इंग्लैंड में एक गवर्नेस थीं?"

“नहीं, महोदया,” मैंने मुस्कुराते हुए कहा, “आप गलत समझ रही हैं।”

"क्या यह शिक्षण के क्षेत्र में आपका पहला प्रयास है - मेरे बच्चों के साथ यह कोशिश?"

मैंने उसे यकीन दिलाया कि ऐसा ही है। वह फिर चुप हो गई; लेकिन जब मैंने तकिये से एक पिन उठाई, तो ऊपर देखते ही मैंने पाया कि मैं उसकी जांच का विषय बन गई हूँ: वह मुझे घूर रही थी; ऐसा लग रहा था जैसे वह मुझे अपने विचारों में घुमा रही हो - किसी उद्देश्य के लिए मेरी उपयुक्तता का आकलन कर रही हो, किसी योजना में मेरे मूल्य को तौल रही हो। इससे पहले, मैडम ने मेरी हर चीज की बारीकी से जांच की थी, और मेरा मानना है कि वह मेरे बारे में बहुत कुछ जानती थीं; लेकिन उस दिन से, लगभग दो सप्ताह तक, उन्होंने मुझे नए तरीकों से परखा। जब मैं बच्चों के साथ नर्सरी में बंद होती थी, तो वह दरवाजे पर कान लगाकर सुनती थीं; जब मैं उनके साथ बाहर जाती थी, तो वह सावधानीपूर्वक दूरी बनाए रखती थीं, और जब भी पार्क या सड़क के पेड़ पर्याप्त आड़ प्रदान करते थे, तो वह चुपके से मेरे पास आ जाती थीं: इस प्रकार एक सख्त प्रारंभिक प्रक्रिया का पालन करने के बाद, उन्होंने आगे कदम बढ़ाया।

एक सुबह अचानक, और हड़बड़ी का दिखावा करते हुए, उसने कहा कि वह एक छोटी सी दुविधा में फंस गई है। अंग्रेजी के शिक्षक श्री विल्सन अपने तय समय पर नहीं आए थे; उसे आशंका थी कि वे बीमार हैं; विद्यार्थी कक्षा में इंतजार कर रहे थे; पढ़ाने वाला कोई नहीं था; क्या मुझे एक बार के लिए भी एक छोटा सा श्रुतलेख अभ्यास देने में कोई आपत्ति करनी चाहिए, ताकि विद्यार्थी यह न कह सकें कि उन्होंने अंग्रेजी का पाठ छोड़ दिया था?

“क्लास में हैं, मैडम?” मैंने पूछा।

“हां, कक्षा में: द्वितीय श्रेणी में।”

“जहाँ साठ विद्यार्थी हैं,” मैंने कहा; क्योंकि मुझे संख्या पता थी, और अपनी हमेशा की कायरतापूर्ण आदत के कारण, मैं एक घोंघे की तरह अपने आलस्य में सिमट गया, और काम से बचने के बहाने अपनी अक्षमता और अव्यवहारिकता का हवाला दिया। अगर मुझे अपने हाल पर छोड़ दिया जाता, तो मैं निश्चित रूप से इस अवसर को हाथ से जाने देता। साहसिक न होते हुए, व्यावहारिक महत्वाकांक्षाओं से रहित, मैं बीस साल तक शिशुओं को हॉर्नबुक पढ़ाते हुए, रेशमी कपड़े बनाते हुए और बच्चों के फ्रॉक सिलते हुए बैठ सकता था। ऐसा नहीं था कि सच्ची संतुष्टि इस मोहभंग भरी त्याग की भावना को शोभा देती थी: मेरे काम में न तो मेरी रुचि थी, न ही वह मुझे आकर्षित करता था; लेकिन मुझे भारी चिंता से मुक्त होना और घनिष्ठ कष्टों से राहत पाना एक

बड़ी बात लगती थी: गंभीर पीड़ा का अभाव ही मेरे लिए सुख के सबसे करीब था। इसके अलावा, ऐसा लगता था कि मैं दो जीवन जी रहा हूँ - एक चिंतन का जीवन, और दूसरा वास्तविकता का जीवन; और, यदि पहले वाले को कल्पना के विचित्र जादू-टोने वाले सुखों की पर्याप्त मात्रा से पोषित किया जाता है, तो बाद वाले के विशेषाधिकार दैनिक रोटी, घंटेवार काम और आश्रय की छत तक ही सीमित रह सकते हैं।

“आइए,” मैडम ने कहा, जब मैं एक बच्चे के एप्रन की कटिंग करने में पहले से कहीं अधिक व्यस्तता से झुकी हुई थी, “वह काम छोड़ दीजिए।”

"लेकिन फिफाइन इसे चाहती है, मैडम।"

"फ़िफ़ाइन को भी यही चाहिए होगा, क्योंकि मैं तुम्हें चाहता हूँ।"

और जैसा कि मैडम बेक वास्तव में चाहती थीं और मुझे अपने शिक्षक के रूप में रखने के लिए दृढ़ संकल्पित थीं - क्योंकि वे लंबे समय से अंग्रेजी शिक्षक से असंतुष्ट थीं, उनकी समय की पाबंदी की कमी और उनकी लापरवाह शिक्षण पद्धति से - और जैसा कि उनमें दृढ़ संकल्प और व्यावहारिकता की कमी नहीं थी, चाहे मुझमें हो या न हो - उन्होंने बिना किसी देरी के मुझसे अंगुली और सुई ले ली; मेरा हाथ उन्होंने थाम लिया और मुझे नीचे ले गईं। जब हम कैरे (घर और पेंशननेट के बीच का एक बड़ा चौकोर हॉल) में पहुँचे, तो वे रुकीं, मेरा हाथ छोड़ा, मेरी ओर मुड़ीं और मुझे ध्यान से देखा। मेरा चेहरा लाल हो गया था और मैं सिर से पैर तक कांप रही थी: सच कहूँ तो, मुझे लगता है मैं रो रही थी। वास्तव में, मेरे सामने आने वाली कठिनाइयाँ पूरी तरह से काल्पनिक नहीं थीं; उनमें से कुछ तो वास्तविक थीं; और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि मुझे उस माध्यम पर महारत हासिल नहीं थी जिसके माध्यम से मुझे पढ़ाना था। वास्तव में, मैंने विलेट आने के बाद से ही फ्रेंच का गहन अध्ययन किया था; मैं दिन में इसका अभ्यास सीखता था, और रात में हर खाली समय में, घर के नियमों के अनुसार जितनी देर तक मोमबत्ती की रोशनी की अनुमति होती थी, उतनी देर तक इसका सिद्धांत सीखता था; लेकिन मैं अभी भी अपनी मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता पर भरोसा करने से बहुत दूर था।

मैडम स्टर्नली ने कहा, "मुझे बताइए, क्या आप वाकई बहुत कमजोर महसूस कर रहे हैं?"

मैं शायद "हाँ" कह देता और गुमनामी की दुनिया में लौट जाता, और शायद वहीं

अपनी बाकी ज़िंदगी गुज़ारता; लेकिन मैडम की ओर देखते हुए, मैंने उनके चेहरे पर कुछ ऐसा देखा जिसने मुझे फैसला करने से पहले दो बार सोचने पर मजबूर कर दिया। उस पल उनमें एक स्त्री का नहीं, बल्कि एक पुरुष का भाव झलक रहा था। उनके हर भाव में एक खास तरह की शक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी, और वह शक्ति मेरे जैसी नहीं थी: न सहानुभूति, न सौहार्द, न ही समर्पण, ये वो भावनाएँ थीं जो उसने मेरे मन में जगाईं। मैं वहीं खड़ा रह गया - न शांत हुआ, न जीता, न ही अभिभूत हुआ। ऐसा लगा जैसे विपरीत गुणों के बीच शक्ति की चुनौती दी गई हो, और मुझे अचानक अपने संकोच का सारा अपमान - अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने में अपनी सुस्ती की सारी कायरता का एहसास हुआ।

"क्या तुम पीछे जाओगे या आगे?" उसने हाथ से इशारा करते हुए कहा, पहले उसने घर से जुड़ने वाले छोटे दरवाजे की ओर और फिर कक्षाओं या स्कूल के कमरों के बड़े दोहरे द्वार की ओर इशारा किया।

मैंने कहा, "आगे बढ़ो।"

लेकिन," उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, जैसे-जैसे मैं उत्तेजित होता गया, उसका चेहरा ठंडा होता गया, और वह मुझे उसी घृणा से घूरती रही जिससे मुझे शक्ति और दृढ़ संकल्प मिलता था, "क्या तुम कक्षाओं का सामना कर पाओगे, या तुम बहुत ज्यादा उत्साहित हो?"

यह कहते हुए उसने थोड़ा व्यंग्य किया: मैडम को घबराहट और उत्तेजना बिल्कुल पसंद नहीं थी।

मैंने अपने पैर के अंगूठे से झंडे को थपथपाते हुए कहा, "मैं इस पत्थर से ज़्यादा उत्साहित नहीं हूँ," और उसकी ओर देखते हुए मैंने आगे कहा, "और न ही तुमसे।"

"ठीक है! लेकिन मैं आपको बता दूं कि ये शांत, शालीन, अंग्रेज़ लड़कियाँ नहीं हैं जिनसे आपका सामना होने वाला है। ये लाबासेकुरियन हैं, सुडौल, स्पष्टवादी, उद्दंड और कुछ हद तक विद्रोही हैं।"

मैंने कहा: "मैं जानता हूँ; और मैं यह भी जानता हूँ कि यद्यपि मैंने यहाँ आने के बाद से फ्रेंच का खूब अध्ययन किया है, फिर भी मैं इसे बहुत हिचकिचाहट के साथ बोलता हूँ—इतनी कम सटीकता के साथ कि मैं उनका सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता। मैं ऐसी गलतियाँ करूँगा जिनसे मैं सबसे अज्ञानी लोगों के उपहास का पात्र बन जाऊँगा। फिर भी मैं यह पाठ अवश्य पढ़ाऊँगा।"

उन्होंने कहा, "वे हमेशा डरपोक शिक्षकों को दरकिनार कर देते हैं।"

“मैं यह भी जानती हूँ, मैडम; मैंने सुना है कि कैसे उन्होंने मिस टर्नर के खिलाफ विद्रोह किया और उन्हें सताया”— एक गरीब, बेसहारा अंग्रेजी शिक्षिका, जिसे मैडम ने नियुक्त किया था और फिर लापरवाही से निकाल दिया था; और जिसका दयनीय इतिहास मेरे लिए कोई अजनबी नहीं था।

“यह सच है,” उसने शांत भाव से कहा। “मिस टर्नर का उन पर उतना ही नियंत्रण था जितना रसोई के किसी नौकर का होता। वह कमज़ोर और अस्थिर थी; उसमें न तो सूझबूझ थी, न बुद्धि, न निर्णय लेने की क्षमता, न ही गरिमा। मिस टर्नर इन लड़कियों के लिए बिलकुल भी उपयुक्त नहीं थीं।”

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि बंद स्कूल के कमरे के दरवाजे की ओर बढ़ गया।

“आप मुझसे या किसी और से मदद की उम्मीद नहीं कर सकते,” मैडम ने कहा। “ऐसा करने से आप अपने पद के लिए अयोग्य साबित हो जाएंगे।”

मैंने दरवाजा खोला, उसे शिष्टाचारपूर्वक अंदर जाने दिया और उसके पीछे-पीछे चला गया। वहाँ तीन बड़े-बड़े कक्षाकक्ष थे। द्वितीय श्रेणी का कक्ष, जहाँ मुझे उपस्थित होना था, बाकी दोनों कक्षों की तुलना में सबसे बड़ा था और उसमें कहीं अधिक संख्या में, उग्र और अनियंत्रित छात्र बैठते थे। बाद में, जब मैं स्थिति से बेहतर परिचित हो गया, तो मैं कभी-कभी सोचता था (यदि ऐसी तुलना की अनुमति हो), कि शांत, सुसंस्कृत और संयमित प्रथम श्रेणी, उग्र, उत्पातपूर्ण और प्रदर्शनकारी द्वितीय श्रेणी के लिए वैसी ही थी, जैसे इंग्लैंड की हाउस ऑफ लॉर्ड्स, हाउस ऑफ कॉमन्स के लिए है।

पहली नज़र में ही मुझे पता चल गया कि कई छात्राएँ महज़ लड़कियाँ नहीं थीं, बल्कि काफ़ी युवा महिलाएँ थीं; मैं जानती थी कि उनमें से कुछ कुलीन परिवार से थीं (जैसा कि लाबासेकोर में कुलीनता का चलन है), और मुझे पूरा यकीन था कि उनमें से कोई भी मैडम के घर में मेरी स्थिति से अनजान नहीं थी। जैसे ही मैं एस्ट्राडे (एक नीचा चबूतरा, जो फर्श से एक सीढ़ी ऊपर उठा हुआ था) पर चढ़ी, जहाँ शिक्षिका की कुर्सी और मेज रखी थी, मेरे सामने आँखों और भौंहों की एक ऐसी पंक्ति दिखाई दी जो तूफ़ानी मौसम का संकेत दे रही थी — अभिमानी चमक से भरी आँखें, और संगमरमर की तरह कठोर और निर्मल भौंहें। महाद्वीपीय "महिला" उसी उम्र और वर्ग

की द्वीपीय "महिला" से बिलकुल अलग होती है: मैंने इंग्लैंड में कभी ऐसी आँखें और भौंहें नहीं देखीं। मैडम बेक ने एक शांत वाक्य में मेरा परिचय कराया, कमरे से चली गईं, और मुझे मेरी शान में अकेला छोड़ दिया।

मैं उस पहले पाठ को कभी नहीं भूलूँगी, न ही जीवन और चरित्र के उन सभी अंतर्धाराओं को जो उसने मेरे लिए खोलीं। तभी मुझे उपन्यासकार और कवि की आदर्श "युवा लड़की" और वास्तविक "युवा लड़की" के बीच का व्यापक अंतर सही ढंग से समझ में आने लगा।

ऐसा लगता है कि पहली पंक्ति में बैठी तीन कुलीन रानियों ने पहले से ही तय कर लिया था कि कोई भी अच्छी शिक्षिका उन्हें अंग्रेजी नहीं पढ़ाएगी। वे जानती थीं कि वे पहले भी अप्रिय शिक्षकों को निकालने में सफल रही थीं; वे जानती थीं कि मैडम किसी भी समय स्कूल में अलोकप्रिय होने वाले किसी भी प्रोफेसर या टीचर को निकाल देंगी - कि वह कभी भी किसी कमजोर अधिकारी को अपना पद बनाए रखने में मदद नहीं करती थीं - कि अगर उसमें लड़ने की ताकत या अपनी बात मनवाने की चतुराई नहीं है, तो वह नीचे गिर जाएगा: "मिस स्नो" को देखकर, उन्होंने खुद को एक आसान जीत का आश्वासन दिया।

श्रीमती ब्लांश, वर्जिनी और एंजेलिक ने हल्की फुसफुसाहट और कानाफूसी से इस अभियान की शुरुआत की; ये फुसफुसाहट जल्द ही बड़बड़ाहट और छोटी-छोटी ठहाकों में बदल गईं, जिन्हें दूर की बेंचों पर बैठे लोगों ने भी सुना और वे और भी ज़ोर से गूंजने लगीं। एक के विरुद्ध साठ लोगों का यह बढ़ता विद्रोह जल्द ही इतना दमनकारी हो गया कि फ्रेंच भाषा पर मेरा अधिकार बहुत सीमित था और वह भी इतनी कठोर पाबंदियों के तहत।

अगर मैं अपनी मातृभाषा में बोल पाता, तो मुझे लगता कि शायद मेरी बात सुनी जाती; क्योंकि, पहली बात तो यह कि यद्यपि मैं जानता था कि मैं एक दयनीय प्राणी जैसा दिखता हूँ, और कई मायनों में वास्तव में ऐसा ही था, फिर भी प्रकृति ने मुझे ऐसी आवाज़ दी थी जो उत्तेजना में उठने या भावनाओं से भर जाने पर अपनी बात मनवा सकती थी। दूसरी बात यह कि, सामान्य परिस्थितियों में तो मेरे पास बोलने की कोई धारा नहीं थी, बस भाषा की एक धीमी और रुक-रुक कर बहने वाली धारा थी, फिर भी - उस समय के विद्रोही समूह में व्याप्त उत्तेजना के तहत - मैं अंग्रेजी में आसानी से ऐसे वाक्य बोल सकता था जो उनके कार्यों को उसी तरह कलंकित करते

जैसे वे कलंकित होने के योग्य थे; और फिर कुछ व्यंग्य के साथ, सरगनाओं के प्रति तिरस्कारपूर्ण कड़वाहट से लथपथ और कमजोर लेकिन कम धूर्त अनुयायियों के लिए हल्के-फुल्के मज़ाक के साथ, मुझे लगता था कि शायद इस जंगली झुंड पर नियंत्रण पाया जा सकता है और उन्हें कम से कम प्रशिक्षित किया जा सकता है। अब मेरे पास बस इतना ही विकल्प था कि मैं ब्लैंच—मैडमोजेल डी मेल्सी, एक युवा बैरोनेस—सबसे बड़ी, सबसे लंबी, सबसे सुंदर और सबसे दुष्ट—के पास जाऊं, उसकी मेज के सामने खड़ा हो जाऊं, उसके हाथ के नीचे से उसकी अभ्यास पुस्तिका छीन लूं, एस्ट्रेड पर वापस चढ़ जाऊं, जानबूझकर उस रचना को पढ़ूं, जो मुझे बहुत ही मूर्खतापूर्ण लगी, और उतनी ही जानबूझकर, और पूरे स्कूल के सामने, उस धब्बेदार पृष्ठ को दो टुकड़ों में फाड़ दूं।

इस कार्रवाई से ध्यान आकर्षित करने और शोर कम करने में मदद मिली। एक अकेली लड़की, बिल्कुल पीछे, पूरी ऊर्जा के साथ दंगे में डटी रही। मैंने उसे ध्यान से देखा। उसका चेहरा पीला था, बाल रात जैसे घने, चौड़ी और मजबूत भौहें, दृढ़ चेहरे के भाव और एक गहरी, विद्रोही, भयावह आँख थी। मैंने देखा कि वह एक छोटे से दरवाजे के पास बैठी थी, जो कि मुझे अच्छी तरह पता था कि एक छोटी सी कोठरी में खुलता था जहाँ किताबें रखी जाती थीं। वह अपने शोर को और अधिक ऊर्जा के साथ जारी रखने के लिए खड़ी हुई थी। मैंने उसकी कद-काठी का अंदाज़ा लगाया और उसकी ताकत का अनुमान लगाया। वह लंबी और दुबली-पतली लग रही थी; लेकिन, चूंकि संघर्ष संक्षिप्त था और हमला अप्रत्याशित था, मुझे लगा कि मैं उसे काबू कर सकता हूँ।

जितना हो सके शांत और बेपरवाह दिखते हुए, कमरे में आगे बढ़ते हुए, मैंने दरवाज़े को थोड़ा सा धक्का दिया और पाया कि वह थोड़ा खुला हुआ था। पलक झपकते ही, तेज़ी से, मैं उसकी ओर मुड़ गया। अगले ही पल वह कोठरी में घुस गई, दरवाज़ा बंद हो गया और चाबी मेरी जेब में थी।

ऐसा हुआ कि डोलोरेस नाम की यह लड़की, जो कैटालोनिया की रहने वाली थी, अपने सभी साथियों के बीच एक ऐसी शख्सियत थी जिससे सब डरते और नफरत करते थे; ऊपर वर्णित त्वरित न्याय का तरीका लोकप्रिय साबित हुआ: वहाँ मौजूद हर व्यक्ति ऐसा था जो मन ही मन ऐसा होते देखना चाहता था। वे एक पल के लिए शांत हो गए; फिर एक मुस्कान - हंसी नहीं - एक डेस्क से दूसरे डेस्क तक फैल गई: फिर

- जब मैं गंभीरता और शांति से वापस डेस्क पर लौटा, विनम्रतापूर्वक मौन का अनुरोध किया, और मानो कुछ हुआ ही न हो, श्रुतलेख शुरू किया - कलम शांतिपूर्वक पन्नों पर चलने लगीं, और शेष पाठ सुचारू रूप से और लगन से संपन्न हुआ।

जब मैं गर्मी से बेहाल और थोड़ी थकी हुई कक्षा से बाहर निकली, तो मैडम बेक ने कहा, "यह ठीक है। लेकिन यह बुरा है।"

वह पूरे समय एक छेद से झाँककर सुन रही थी और देख रही थी।

उस दिन से मैंने नर्सरी की देखभाल करने वाली शिक्षिका का पद छोड़ दिया और अंग्रेजी शिक्षिका बन गई। मैडम ने मेरा वेतन बढ़ा दिया; लेकिन उन्हें मुझसे श्री विल्सन से मिलने वाले काम से तीन गुना अधिक काम आधे खर्च पर मिल रहा था।

अध्याय 9.

इसिडोर।

मेरा समय अब अच्छी तरह से और सार्थक रूप से भरा हुआ था। दूसरों को पढ़ाने और स्वयं गहन अध्ययन करने के कारण मेरे पास शायद ही कोई खाली समय होता था। यह सुखद था। मुझे लग रहा था कि मैं प्रगति कर रहा हूँ; स्थिर अवस्था में सड़ नहीं रहा था, बल्कि निरंतर अभ्यास से अपनी क्षमताओं को निखार रहा था और उन्हें तेज धार दे रहा था। मेरे सामने एक विशिष्ट प्रकार का अनुभव था, जो संकीर्ण दायरे में नहीं था। विलेट एक बहुसांस्कृतिक शहर है, और इस विद्यालय में लगभग हर यूरोपीय देश की लड़कियाँ थीं, और जीवन में विभिन्न स्तरों की भी। लाबासेकोर में समानता का भरपूर पालन किया जाता है; हालाँकि यह रूप में गणतंत्रात्मक नहीं है, लेकिन सार में लगभग वैसा ही है, और मैडम बेक के संस्थान में युवा काउंटेस और युवा बुर्जुआ एक साथ बैठती थीं। बाहरी संकेतों से यह तय करना हमेशा संभव नहीं था कि

कौन कुलीन है और कौन आम आदमी; सिवाय इसके कि वास्तव में, बाद वालों का व्यवहार अक्सर अधिक स्पष्ट और विनम्र होता था, जबकि पहले वाले अपनी धृष्टता और छल के नाजुक संतुलन के कारण सबसे अलग दिखते थे। पहले वाले में अक्सर दलदली कफ के साथ तेज फ्रांसीसी रक्त मिला हुआ होता था: मुझे यह कहते हुए खेद है कि इस जीवंत तरल पदार्थ का प्रभाव मुख्य रूप से उस चिकनी-चुपड़ी बातों में प्रकट होता था जिसके साथ चापलूसी और झूठ जुबान से निकलते थे, और एक हल्के और जीवंत तरीके से, लेकिन पूरी तरह से हृदयहीन और कपटी।

सभी पक्षों के साथ न्याय करने के लिए, ईमानदार आदिवासी लाबासेकोरिएन्स में भी अपना एक पाखंड था; लेकिन वह इतना घटिया था कि कुछ ही लोग उसे धोखा दे पाते थे। जब भी उन्हें झूठ बोलना पड़ता, वे उसे बड़ी सहजता और बेपरवाही से बोल देते थे, अंतरात्मा की डांट की परवाह किए बिना। मैडम बेक के घर में, रसोई के नौकर से लेकर स्वयं निदेशिका तक, कोई भी ऐसा नहीं था जो झूठ बोलने से शर्मिंदा न हो; वे इसे कुछ भी नहीं समझते थे: झूठ बोलना शायद कोई सद्गुण न हो, लेकिन यह सबसे मामूली गलती थी। "मैंने कई बार झूठ बोला है," यह हर लड़की और महिला के मासिक स्वीकारोक्ति का एक हिस्सा होता था: पुजारी बिना किसी हैरानी के सुनता और बिना किसी हिचकिचाहट के क्षमा कर देता था। अगर वे चर्च नहीं जातीं या किसी उपन्यास का एक अध्याय पढ़ लेतीं, तो यह दूसरी बात थी: ये ऐसे अपराध थे जिनके लिए डांट और प्रायश्चित अचूक उपाय थे।

हालाँकि मैं अभी इस स्थिति से पूरी तरह वाकिफ नहीं था और इसके परिणामों से अनभिज्ञ भी था, फिर भी मैंने अपने नए क्षेत्र में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। शुरुआती कुछ कठिन पाठों के बाद, जो खतरे के बीच और नैतिक उथल-पुथल के चरम पर दिए गए थे, जिससे मेरे पैरों तले चिंगारियाँ और गर्म धुआँ मेरी आँखों में घुस रहा था, वह उग्र भावना मेरे लिए शांत होती प्रतीत हुई। मेरा मन सफलता के लिए दृढ़ संकल्पित था: मैं जीवन में आगे बढ़ने के इस पहले प्रयास में मात्र अनुशासनहीन असंतोष और मनमानी अवज्ञा से विफल होने का विचार सहन नहीं कर सकता था। रात के कई घंटे मैं जागता रहता था, यह सोचता रहता था कि इन बागियों पर काबू पाने और इस हठी समूह को स्थायी रूप से अपने वश में करने के लिए मुझे कौन सी योजना अपनानी चाहिए। सबसे पहले, मैंने स्पष्ट रूप से देखा कि मैडम से किसी भी रूप में सहायता की उम्मीद नहीं की जा सकती थी: उनकी उचित योजना शिक्षकों के लिए न्याय या

आराम की कीमत पर भी विद्यार्थियों के बीच अपनी लोकप्रियता बनाए रखना थी। किसी भी अनुशासनहीनता के संकट में किसी शिक्षिका का उनसे सहयोग मांगना, स्वयं को विद्यालय से निष्कासित करवाने के समान था। अपने विद्यार्थियों के साथ व्यवहार में, मैडम केवल सुखद, सौम्य और प्रशंसनीय बातों को ही अपनाती थीं; अपने सहायकों से हर अप्रिय संकट के लिए पर्याप्त तैयारी की सख्त अपेक्षा रखती थीं, जहाँ समय पर कार्रवाई न करना अलोकप्रिय माना जाता था। इसलिए, मुझे केवल स्वयं पर ही निर्भर रहना होगा।

सबसे पहले तो यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि इस मूर्ख भीड़ को बलपूर्वक नहीं चलाया जा सकता था। उन्हें खुश रखना था, धैर्यपूर्वक सहन करना था: विनम्र और शांत व्यवहार उन्हें प्रभावित करता था; कभी-कभार की गई हल्की-फुल्की हंसी भी काम आती थी। वे कठोर या निरंतर मानसिक परिश्रम सहन नहीं कर सकते थे, या करना नहीं चाहते थे: स्मृति, तर्क और ध्यान पर पड़ने वाले भारी दबाव को वे सिरे से नकार देते थे। जहाँ एक औसत क्षमता और आज्ञाकारिता वाली अंग्रेज़ लड़की चुपचाप किसी विषय को लेकर उसे समझने और उसमें महारत हासिल करने के कार्य में जुट जाती, वहीं एक अंग्रेज़ लड़की आपके चेहरे पर हंसती और यह कहते हुए बात पलट देती, "हे भगवान! यह कितना कठिन है! मैं इसे नहीं करना चाहती। इससे मुझे बहुत ऊब हो रही है।"

एक शिक्षिका जो अपने काम को बखूबी समझती थी, बिना किसी झिझक, विरोध या आपत्ति के तुरंत अपनी बात वापस ले लेती थी—हर मुश्किल को सुलझाने के लिए हद से ज़्यादा सावधानी बरतती थी, उसे उनकी समझ के स्तर तक ले आती थी, फिर उसे संशोधित करके उन्हें लौटा देती थी और तीखे व्यंग्य से उन पर प्रहार करती थी। उन्हें चुभन महसूस होती थी, शायद वे थोड़ा सिकुड़ भी जाते थे; लेकिन वे इस तरह के हमले के प्रति कोई द्वेष नहीं रखते थे, बशर्ते व्यंग्य कड़वा न होकर हार्दिक हो, और स्पष्ट, हल्के और बोल्ड अक्षरों में लिखा हो, ताकि कोई भी भागता हुआ व्यक्ति उनकी अक्षमता, अज्ञानता और आलस्य को पढ़ सके। वे पाठ में तीन अतिरिक्त पंक्तियों के लिए हंगामा कर देते थे; लेकिन मैंने उन्हें कभी भी अपने आत्मसम्मान पर लगी चोट के विरुद्ध विद्रोह करते नहीं देखा: उनके पास जो थोड़ा-बहुत आत्मसम्मान था, वह कुचलने के लिए प्रशिक्षित था, और उसे किसी कठोर एड़ी का दबाव ज़्यादा पसंद था।

धीरे-धीरे, जैसे-जैसे मुझे उनकी भाषा में धाराप्रवाह और सहजता प्राप्त होती गई,

और मैं उनकी परिस्थितियों के अनुसार उसके कुछ संवेदनशील मुहावरों का प्रयोग करने में सक्षम होता गया, बड़ी और अधिक बुद्धिमान लड़कियाँ मुझे अपने तरीके से पसंद करने लगीं: मैंने देखा कि जब भी किसी छात्रा के मन में योग्य प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत होती थी, या ईमानदारी से शर्मिंदगी का एहसास होता था, तो वह उसी क्षण से मेरी शिष्या बन जाती थी। अगर मैं एक बार भी उनके (आमतौर पर बड़े) कानों को उनके घने चमकदार बालों के नीचे झकझोर पाता, तो सब कुछ अपेक्षाकृत अच्छा हो जाता था। धीरे-धीरे सुबह मेरी मेज पर फूलों के गुलदस्ते रखे जाने लगे; इस छोटे से विदेशी ध्यान के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए, मैं कभी-कभी अवकाश के दौरान कुछ चुनिंदा लोगों के साथ टहलने जाता था। बातचीत के दौरान एक-दो बार ऐसा हुआ कि मैंने अनजाने में उनके कुछ विकृत सिद्धांतों को सुधारने का प्रयास किया; विशेष रूप से मैंने झूठ की बुराई और नीचता के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। एक अनमने क्षण में, मैंने गलती से कह दिया कि, दो गलतियों में से; मैं झूठ को चर्च में कभी-कभार अनुपस्थित रहने से भी बदतर समझता था। बेचारी लड़कियों को सिखाया जाता था कि प्रोटेस्टेंट शिक्षक जो कुछ भी कहें, उसे कैथोलिक लोगों को बताएँ। इसका एक शिक्षाप्रद परिणाम निकला। कुछ - एक अदृश्य, एक अनिश्चित, एक अनाम - कुछ ऐसा था जिसने मेरे और मेरी इन सबसे उत्तम छात्राओं के बीच से रास्ता बना लिया: फूलों के गुलदस्ते तो दिए जाते रहे, लेकिन उसके बाद बातचीत असंभव हो गई। जब मैं गलियों में टहलता या कुर्सी पर बैठा होता, तो कोई लड़की कभी मेरे पास नहीं आती, बल्कि एक शिक्षिका, मानो जादू से, मेरे बाईं ओर प्रकट हो जाती। और यह बताना भी आश्चर्यजनक है कि, मैडम के मौन के जूते उन्हें लगातार मेरे पीछे ले आते थे, इतनी तेज़ी से, इतनी खामोशी से और अचानक, जैसे कोई हल्की हवा चल रही हो।

एक बार मेरी कैथोलिक परिचित ने मेरे आध्यात्मिक भविष्य के बारे में कुछ भोलेपन से अपनी राय व्यक्त की। एक पेंशनभोगी महिला, जिसकी मैंने थोड़ी-बहुत सेवा की थी, एक दिन मेरे बगल में बैठी बोली, "महोदया, कितना अफ़सोस की बात है कि आप प्रोटेस्टेंट हैं!"

“क्यों, इसाबेल?”

क्योंकि जब तुम मरोगे तो सीधे नरक में जलोगे।

क्या आपको इस पर विश्वास है?

"बेशक मैं इस पर विश्वास करता हूँ: यह बात तो सभी जानते हैं; और इसके अलावा, पादरी ने भी मुझे यही बताया था।"

इसाबेल एक अजीब, बेबाक और छोटी सी लड़की थी। उसने दबी आवाज़ में कहा, "ऊपर स्वर्ग में तुम्हारी मुक्ति सुनिश्चित करने के लिए, बेहतर होगा कि हम तुम्हें यहाँ नीचे ज़िंदा जला दें।"

मैं हँस पड़ा, क्योंकि वास्तव में इसके अलावा कुछ और करना असंभव था।

* * * * *

क्या पाठक मिस जिनेवरा फैंशॉ को भूल गए हैं? यदि ऐसा है, तो मुझे उस युवती का पुनः परिचय देने की अनुमति दी जानी चाहिए, जो मैडम बेक की एक प्रतिभाशाली छात्रा थीं; वास्तव में, वे थीं भी। मेरे वहाँ अचानक बसने के दो-तीन दिन बाद, जब वे रू फॉसेट पहुँचीं, तो उन्होंने मुझे देखकर ज़रा भी आश्चर्य नहीं किया। उनके स्वभाव में स्वाभाविक गुण रहे होंगे, क्योंकि उनसे अधिक सहज, स्वाभाविक और बेपरवाह कोई डचेस नहीं थी: आश्चर्य की अनुभूति के नाम पर उन्हें बस एक कमज़ोर, क्षणिक विस्मय का ही ज्ञान था। उनकी अन्य क्षमताएँ भी कुछ इसी तरह कमज़ोर प्रतीत होती थीं: उनकी पसंद-नापसंद, उनका प्रेम-घृणा, सब कुछ मकड़ी के जाले और रेशम के धागे के समान था; लेकिन उनमें एक बात ऐसी थी जो काफी मज़बूत और टिकाऊ प्रतीत होती थी, और वह थी - उनका स्वार्थ।

वह घमंडी नहीं थी; और - मैं एक भोला-भाला बच्चा था - वह मुझे तुरंत अपना दोस्त और राजदार बना लेती। वह स्कूल के झगड़ों और घर के खर्चों के बारे में हज़ार बेतुकी शिकायतें करके मुझे चिढ़ाती रहती थी: खाना बनाना उसे पसंद नहीं था; उसके आस-पास के लोग, शिक्षक और छात्र, उसे तुच्छ लगते थे, क्योंकि वे विदेशी थे। मैंने शुक्रवार की नमकीन मछली और सख्त अंडों के बारे में उसकी गालियाँ - सूप, ब्रेड, कॉफ़ी के बारे में उसकी कटु आलोचना - कुछ समय तक धैर्य से सहन की; लेकिन अंत में, बार-बार दोहराई जाने वाली बातों से तंग आकर, मेरा गुस्सा फूट पड़ा और मैंने उसे खरी-खोटी सुना दी: यह काम मुझे शुरू में ही कर देना चाहिए था, क्योंकि मेरी खरी-खोटी हमेशा उसे पसंद आती थी।

मुझे अब और भी लंबे समय तक उसके काम से जुड़ी मांगों को सहना पड़ा। बाहरी वस्त्रों के मामले में उसका वर्चव सुव्यवस्थित और सुरुचिपूर्ण था; लेकिन अन्य वस्त्र

इतने सलीके से नहीं रखे गए थे: जो भी उसके पास था, उसे बार-बार मरम्मत की आवश्यकता होती थी। उसे खुद सिलाई-कढ़ाई से नफरत थी, और वह अपने मोजे आदि ढेरों में मेरे पास मरम्मत के लिए लाती थी। कुछ हफ्तों तक ऐसा करने से वह असहनीय रूप से उबाऊ हो गई, इसलिए मैंने अंततः उससे साफ-साफ कह दिया कि उसे अपने कपड़े खुद ही सिलने होंगे। यह सुनकर वह रो पड़ी और मुझ पर दोस्ती तोड़ने का आरोप लगाया; लेकिन मैं अपने फैसले पर अडिग रही और उसके इस हंगामे को जैसे भी बीतता, बीतने दिया।

इन कमियों और अन्य अनेक कमियों के बावजूद—जिनका वर्णन करना अनावश्यक है—जो किसी भी तरह से परिष्कृत या उच्च कोटि की नहीं थीं—वह कितनी सुंदर थी! धूप से भरे रविवार की सुबह जब वह सजे-धजे, प्रसन्नमिजाज, हल्के बैंगनी रंग के रेशमी वस्त्र में, अपने सुनहरे लंबे बालों को अपने सफेद कंधों पर लहराते हुए नीचे आती थी, तो वह कितनी मनमोहक लगती थी! रविवार का दिन उसके लिए छुट्टी का दिन होता था, जिसे वह हमेशा शहर में रहने वाले दोस्तों के साथ बिताती थी; और इन दोस्तों में से एक ऐसा था जो उससे कुछ अधिक बनना चाहता था। संकेतों और इशारों से मुझे पता चला, और उसकी नज़र और व्यवहार की सामान्य उमंग से जल्द ही यह सिद्ध हो गया कि उसके मन में गहरी प्रशंसा—शायद सच्चा प्यार—था। वह अपने प्रेमी को "इसिडोर" कहकर पुकारती थी: हालाँकि, उसने संकेत दिया कि यह उसका असली नाम नहीं था, बल्कि वह नाम था जो उसने उसे देना उचित समझा—उसका अपना नाम, उसने इशारा किया, "बहुत सुंदर" नहीं था। एक बार जब वह "इसिडोर" के प्रति अपने तीव्र लगाव के बारे में डींगें मार रही थी, तो मैंने उससे पूछा कि क्या वह भी बदले में उससे प्यार करती है।

“Comme cela,” उसने कहा: “वह सुंदर है, और वह मुझसे हद से ज्यादा प्यार करता है, जिससे मेरा खूब मनोरंजन होता है। Ca suffit.”

मैंने देखा कि वह अपनी चंचल पसंद के कारण मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक समय तक इस मामले को खींचती रही, इसलिए एक दिन मैंने गंभीरता से यह पता लगाने का निर्णय लिया कि क्या वह सज्जन उसके माता-पिता, और विशेष रूप से उसके चाचा (जिन पर वह आश्रित प्रतीत होती थी) को पसंद आएंगे। उसने स्वीकार किया कि यह बहुत ही संदिग्ध था, क्योंकि उसे विश्वास नहीं था कि "इसिडोर" के पास बहुत पैसा है।

मैंने पूछा, "क्या आप उसे प्रोत्साहित करते हैं?"

“कभी-कभी उग्रता,” उसने कहा।

"क्या आपको उससे शादी करने की अनुमति मिलेगी, इस बात की निश्चितता के बिना?"

“अरे, तुम तो कितनी पुरानी सोच की हो! मैं शादी नहीं करना चाहती। मैं अभी बहुत छोटी हूँ।”

लेकिन अगर वह आपसे उतना ही प्यार करता है जितना आप कहती हैं, और फिर भी अंत में कुछ नहीं होता, तो वह दुखी हो जाएगा।

"बेशक उसका दिल टूट जाएगा। अगर ऐसा नहीं हुआ तो मुझे हैरानी और निराशा होगी।"

मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि क्या यह श्रीमान इसिडोर मूर्ख है?"

“मेरे बारे में तो वो ऐसा ही है; लेकिन दूसरी बातों में वो बहुत बुद्धिमान है, जैसा कि लोग कहते हैं। श्रीमती चोलमोंडली उसे बेहद होशियार मानती हैं: वो कहती हैं कि वो अपनी प्रतिभा के बल पर अपना रास्ता बना लेगा; मुझे बस इतना पता है कि मेरी मौजूदगी में वो आहें भरने के अलावा कुछ नहीं करता, और मैं उसे अपनी उंगली पर नचा सकती हूँ।”

प्रेम में डूबे श्री इसिडोर के बारे में और अधिक स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने की इच्छा से, जिनकी स्थिति मुझे अत्यंत अनिश्चित प्रतीत होती थी, मैंने उनसे एक व्यक्तिगत विवरण देने का अनुरोध किया; परन्तु वे वर्णन नहीं कर सकीं: उनके पास न तो शब्द थे और न ही उन्हें सजीव रूप देने की क्षमता। ऐसा प्रतीत होता था मानो उन्होंने उन्हें ठीक से देखा भी न हो: उनके रूप-रंग, उनके चेहरे के भावों में आए बदलावों में से कुछ भी उनके हृदय को नहीं छू सका या उनकी स्मृति में नहीं बसा — वे बस इतना ही कह सकीं कि वे "सुंदर थे, लेकिन एक सुंदर लड़के से कहीं अधिक आकर्षक पुरुष थे"। मेरी सहनशीलता अक्सर टूट जाती और उनकी बातें सुनने में मेरी रुचि कम हो जाती, सिवाय एक बात के। उनके द्वारा दिए गए सभी संकेत, उनके द्वारा दिए गए सभी विवरण अनजाने में ही, मेरे विचार से, यह सिद्ध करते थे कि श्री इसिडोर का प्रेम नि:संकोच और सम्मान के साथ अर्पित किया गया था। मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से बताया कि मुझे लगता है कि वे उनके लिए बहुत अच्छे हैं, और उतनी ही स्पष्टता से यह भी कहा कि मुझे लगता है कि वे केवल एक अभिमानी और नखरेबाज़ हैं। वह हंसी,

अपनी आंखों से बालों की लटें झटककर हटाईं और ऐसे नाचती हुई चली गई मानो मैंने उसकी तारीफ की हो।

मिस जिनेवरा की स्कूली पढ़ाई नाममात्र की थी; वह केवल तीन चीजों का ही लगन से अभ्यास करती थीं, संगीत, गायन और नृत्य; साथ ही बढ़िया कैम्ब्रिक रूमालों पर कढ़ाई करना, जिन्हें वह तैयार खरीदने का सामर्थ्य नहीं रखती थीं। इतिहास, भूगोल, व्याकरण और अंकगणित जैसे मामूली विषयों को वह या तो छोड़ देती थीं या दूसरों से करवा लेती थीं। उनका अधिकांश समय घूमने-फिरने में व्यतीत होता था। मैडम जानती थीं कि स्कूल में उनका समय अब एक निश्चित अवधि तक ही सीमित है, जिसे उनकी प्रगति हो या न हो, बढ़ाया नहीं जा सकता, इसलिए उन्होंने इस मामले में उन्हें काफी छूट दी थी। श्रीमती चोलमोंडली - उनकी अभिभावक - एक हंसमुख और फैशनेबल महिला, जब भी उनके घर कोई मेहमान आता था, उन्हें आमंत्रित करती थीं और कभी-कभी उन्हें अपने परिचितों के घरों में शाम की पार्टियों में भी ले जाती थीं। जिनेवरा को यह तरीका पूरी तरह से पसंद था: इसमें केवल एक ही असुविधा थी; उन्हें अच्छे कपड़े पहनने पड़ते थे, और उनके पास तरह-तरह के कपड़े खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। उनके सारे विचार इसी कठिनाई पर केंद्रित रहते थे। उसका पूरा मन इस समस्या के समाधान के उपायों में लगा हुआ था। इस विषय पर उसके आमतौर पर सुस्त दिमाग की सक्रियता देखना अद्भुत था, और आवश्यकता की भावना और चमकने की इच्छा से प्रेरित होकर उसने जिस साहस और निडरता का परिचय दिया, वह भी सराहनीय था।

उसने श्रीमती चोलमोंडली से निडरतापूर्वक विनती की — निडरतापूर्वक, मैं कहती हूँ: अनिच्छापूर्ण शर्मिंदगी के भाव से नहीं, बल्कि इस लहजे में: —

“मेरी प्यारी श्रीमती सी., अगले हफ्ते आपकी पार्टी में पहनने के लिए मेरे पास दुनिया में कुछ भी उपयुक्त नहीं है; आपको मुझे एक बुक-मलमल की पोशाक और फिर एक नीले रंग की कमरबंद देनी होगी: वाह – एक परी जैसी लग रही है! क्या आप देंगी?”

"प्रिय श्रीमती सी." पहले तो मान गईं; लेकिन जैसे-जैसे उनकी माँगें पूरी होती गईं, वैसे-वैसे बढ़ती गईं, तो जल्द ही उन्हें भी, मिस फैंसहावे की सभी सहेलियों की तरह, इस अतिक्रमण का विरोध करना पड़ा। कुछ समय बाद मुझे श्रीमती चोलमोंडली के उपहारों के बारे में कोई खबर नहीं मिली; फिर भी, आना-जाना जारी रहा और बेहद

ज़रूरी कपड़े मिलते रहे: साथ ही कई छोटी-छोटी महंगी चीज़ें भी - दस्ताने, फूलों के गुलदस्ते, यहाँ तक कि गहने भी। ये चीज़ें, उनकी आदत और स्वभाव के विपरीत - क्योंकि वह रहस्य नहीं रखती थीं - कुछ समय के लिए बड़ी सावधानी से छुपाई जाती थीं; लेकिन एक शाम, जब वह एक बड़ी पार्टी में जा रही थीं, जिसके लिए पोशाक की विशेष देखभाल और भव्यता की आवश्यकता थी, तो वह अपने पूरे वैभव के साथ मेरे कमरे में आने से खुद को रोक नहीं पाईं।

वह बेहद खूबसूरत लग रही थी: इतनी युवा, इतनी ताजगी भरी, और उसकी त्वचा की कोमलता और शरीर की लचक पूरी तरह से अंग्रेजी थी, जो महाद्वीपीय महिलाओं के आकर्षण में नहीं पाई जाती। उसका पहनावा नया, महंगा और एकदम सही था। मैंने एक नज़र में ही देख लिया कि उसमें उन सभी बारीकियों की कमी नहीं थी, जिन पर इतना खर्च होता है और जो पूरे पहनावे को एक सुरुचिपूर्ण पूर्णता प्रदान करती हैं।

मैंने उसे सिर से पैर तक देखा। वह बड़ी सहजता से घूमी ताकि मैं उसे चारों ओर से देख सकूँ। अपनी खूबसूरती से वाकिफ, वह बहुत खुश थी: उसकी छोटी-छोटी नीली आँखें खुशी से चमक रही थीं। वह अपनी स्कूली लड़की वाली अदा से मुझे चुंबन देने ही वाली थी, लेकिन मैंने कहा, "शांत रहो! हमें शांत रहना चाहिए, और समझना चाहिए कि हम क्या कर रहे हैं, और अपनी भव्यता का अर्थ समझना चाहिए" - और इस तरह मैंने उसे थोड़ी दूरी पर रोक दिया, ताकि मैं उसे और गौर से देख सकूँ।

"क्या मैं करूँ?" यह उसका सवाल था।

मैंने कहा, "करना?" "करने के कई तरीके होते हैं; और कसम से, मुझे तुम्हारा तरीका समझ नहीं आया।"

लेकिन मैं कैसी दिख रही हूँ?

आप अच्छे कपड़े पहने हुए लग रहे हैं।

उन्हें लगा कि तारीफ काफी नहीं है, और उन्होंने अपना ध्यान अपने पहनावे की विभिन्न सजावटी चीजों की ओर दिलाया। उन्होंने कहा, "इस आभूषण के सेट को देखिए। ब्रोच, झुमके, कंगन: स्कूल में किसी के पास ऐसा सेट नहीं है - खुद मैडम के पास भी नहीं।"

“मैं उन सभी को देख रहा हूँ।” (विराम) “क्या एम. डी बासोम्पियर ने आपको वे गहने दिए थे?”

मेरे चाचा को उनके बारे में कुछ नहीं पता।

"क्या ये श्रीमती चोलमोंडली की ओर से उपहार थे?"

"बिल्कुल नहीं। श्रीमती चोलमोंडली एक मतलबी और कंजूस औरत हैं; वह अब मुझे कभी कुछ नहीं देतीं।"

मैंने आगे कोई सवाल न पूछने का फैसला किया और अचानक मुंह फेर लिया।

“अब, बूढ़े क्रस्टी— बूढ़े डायोजेन्स” (जब हम असहमत होते थे तो वह मुझे इसी नाम से पुकारती थी), “अब क्या बात है?”

"यहाँ से चले जाओ। मुझे तुम्हें या तुम्हारे आभूषणों को देखने में कोई आनंद नहीं है।"

एक पल के लिए, वह आश्चर्यचकित सी लग रही थी।

“अब क्या हुआ, ज्ञान की देवी? मैंने इसके लिए कोई कर्ज नहीं लिया है—मतलब, न गहनों के लिए, न दस्तानों के लिए, न ही फूलों के गुलदस्ते के लिए। मेरी पोशाक का तो भुगतान भी नहीं हुआ है, लेकिन चाचा डी बासोम्पियर बिल में इसका भुगतान कर देंगे: वो कभी छोटी-छोटी चीजों पर ध्यान नहीं देते, बस कुल राशि देखते हैं; और वो इतने अमीर हैं कि कुछ गिनी कम या ज्यादा होने से किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता।”

“क्या तुम जाओगी? मैं दरवाजा बंद करना चाहता हूँ… जिनेवरा, लोग तुम्हें उस बॉल-वेड में बहुत सुंदर कह सकते हैं; लेकिन मेरी नज़र में, तुम कभी भी उतनी सुंदर नहीं लगोगी जितनी तुम उस गिंघम गाउन और सादे स्ट्रॉ बोनट में लगी थीं जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था।”

"दूसरे लोगों की पसंद तुम्हारी तरह रूढ़िवादी नहीं है," उसने गुस्से में जवाब दिया।

और वैसे भी, मुझे नहीं लगता कि आपको मुझे उपदेश देने का कोई अधिकार है।

“बिल्कुल! मुझे तो कोई हक नहीं है; और शायद आपको भी नहीं, मेरे कमरे में इतराते-पड़ते आने का, मानो आप किसी और के पंखों में लिपटी कोई चिड़िया हों। मिस फैंसहावे, मुझे आपके पंखों की ज़रा भी परवाह नहीं है; और खासकर उस मोर की आँखों की जिसे आप आभूषण कहती हैं: अगर आपने उन्हें अपने खुद के पैसों से खरीदा होता, जिन्हें आप आसानी से खर्च कर सकती थीं, तो वे बहुत सुंदर होतीं, लेकिन मौजूदा हालात में तो बिलकुल भी सुंदर नहीं हैं।”

"ऑन एस्ट ला पोर मैडमोजेल फैंशॉ!" द्वारपाल ने घोषणा की, और वह लड़खड़ाते हुए चली गई।

इस अर्ध-रहस्यमय वस्तु संग्रह का समाधान दो-तीन दिन बाद तक नहीं हो पाया, जब वह स्वेच्छा से अपना अपराध स्वीकार करने आई।

“आपको मुझसे नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं है,” उसने कहना शुरू किया, “इस सोच के साथ कि मैं किसी को, पापा को या एम. डी बासोम्पियर को, गहरे कर्ज में डुबो रही हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि कुछ भी बकाया नहीं है, सिवाय उन कुछ कपड़ों के जो मैंने हाल ही में बनवाए हैं; बाकी सब कुछ चुका दिया गया है।”

मैंने सोचा, "रहस्य यहीं छिपा है; क्योंकि ये चीजें आपको श्रीमती चोलमोंडली ने नहीं दी थीं, और आपके पास सीमित साधन हैं, जो कुछ शिलिंग तक ही सीमित हैं, जिनके बारे में मैं जानता हूं कि आप उनका बहुत सावधानी से इस्तेमाल करते हैं।"

“सुनो!” वह मेरे करीब आकर और अपने सबसे गोपनीय और विनम्र स्वर में बोली; क्योंकि मेरा “रूठना” उसे पसंद नहीं था: वह चाहती थी कि मैं बोलने और सुनने के मूड में रहूँ, भले ही मैं केवल डांटने के लिए बोलूँ और शिकायत सुनने के लिए। “सुनो, प्यारी दादी! मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगी कि यह कैसे और किस बारे में है; और तब तुम न केवल यह देखोगी कि यह सब कितना सही है, बल्कि कितनी चतुराई से किया गया है। सबसे पहले, मुझे बाहर जाना होगा। पापा ने खुद कहा था कि वह चाहते हैं कि मैं दुनिया देखूँ; उन्होंने श्रीमती चोलमोंडली से विशेष रूप से कहा था कि हालाँकि मैं काफी प्यारी बच्ची हूँ, मुझमें एक साधारण, स्कूली लड़की जैसा अंदाज़ है; और उनकी विशेष इच्छा थी कि इंग्लैंड में अपना पहला कदम रखने से पहले, यहाँ के समाज से परिचय कराकर मैं इस अंदाज़ से छुटकारा पा लूँ। तो फिर, अगर मैं बाहर जाती हूँ, तो मुझे सज-धज कर जाना चाहिए। श्रीमती चोलमोंडली की हालत खराब है, और वह अब कुछ नहीं देंगी; मेरे चाचा के लिए यह बहुत मुश्किल होगा कि मैं उनसे मेरी ज़रूरतों का सारा खर्चा उठाऊँ: यह बात तुम इनकार नहीं कर सकतीं - यह तुम्हारे अपने उपदेशों से मेल खाती है। खैर, लेकिन किसी ने मुझे (बिल्कुल संयोग से, मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ) श्रीमती चोलमोंडली से मेरी शिकायत करते हुए सुन लिया। मेरी दयनीय परिस्थितियों और एक-दो गहनों के लिए मुझे जिन मुश्किलों का सामना करना पड़ा, उसे देखते हुए, कोई व्यक्ति उपहार देने में कंजूसी करने के बजाय, कुछ मामूली सी चीज़ भेंट करने की अनुमति मिलने पर बहुत प्रसन्न हुआ। आपको देखना चाहिए था कि जब उसने पहली बार इसके बारे में बात की तो वह कितना घबराया हुआ लग रहा था: वह कैसे झिझका, उसका चेहरा लाल हो गया और वह ठुकराए जाने के डर से

सचमुच कांप रहा था।

“ठीक है, मिस फैंसहावे। मेरा मानना है कि श्री इसिडोर ही इसके दाता हैं: आपने उनसे ही वह कीमती आभूषण लिए हैं; और वही आपके फूलों के गुलदस्ते और दस्ताने उपलब्ध कराते हैं?”

"आप जिस तरह से अपनी बात कह रहे हैं, वह इतना अप्रिय है कि समझ में नहीं आता कि क्या उत्तर दिया जाए; मेरा कहने का मतलब यह है कि मैं कभी-कभी इसिडोर को एक छोटी सी भेंट देकर अपनी श्रद्धा व्यक्त करने का सुख और सम्मान देती हूँ।"

बात वही है... अब, जिनेवरा, सच कहूँ तो, मुझे इन मामलों की ज़्यादा समझ नहीं है; लेकिन मुझे लगता है कि तुम बहुत बड़ी गलती कर रही हो—गंभीर गलती। हालाँकि, शायद अब तुम्हें पूरा यकीन हो गया होगा कि तुम एम. इसिडोर से शादी कर पाओगी; तुम्हारे माता-पिता और चाचा ने अपनी सहमति दे दी है, और तुम भी उनसे पूरी तरह प्यार करती हो।

“बिल्कुल नहीं!” (जब भी उसे कोई बेहद निर्मम और घिनौनी बात कहनी होती, तो वह हमेशा फ्रेंच भाषा का सहारा लेती थी।) “मैं उसकी रानी हूँ, लेकिन वह मेरा राजा नहीं है।”

"क्षमा कीजिए, मुझे लगता है कि यह भाषा सरासर बकवास और नखरेबाजी है।"

आपमें कोई महानता नहीं है, फिर भी आप इससे लाभ उठाने से ऊपर हैं।

उस व्यक्ति का अच्छा स्वभाव और उसका धन-दौलत, जिसके प्रति आप पूर्णतः उदासीन हैं।

आप एम. इसिडोर से जितना सोचते हैं या स्वीकार करते हैं, उससे कहीं अधिक प्यार करते हैं।"

“नहीं। पिछली रात मैंने एक नौजवान पुलिस अधिकारी के साथ नृत्य किया, जिसे मैं उससे हज़ार गुना ज़्यादा प्यार करती हूँ। मैं अक्सर सोचती हूँ कि मुझे इसिडोर के प्रति इतनी उदासीनता क्यों महसूस होती है, जबकि हर कोई कहता है कि वह सुंदर है, और दूसरी महिलाएं भी उसकी प्रशंसा करती हैं; लेकिन, किसी तरह, वह मुझे उबाऊ लगता है: चलो अब देखते हैं कि क्या बात है...।”

और ऐसा लग रहा था कि वह चिंतन करने का प्रयास कर रही है। मैंने इस बात के लिए उसे प्रोत्साहित किया।

“हाँ!” मैंने कहा, “अपने मन की स्थिति को स्पष्ट रूप से समझने की कोशिश करो। मुझे तो यह बहुत अस्त-व्यस्त लग रहा है – जैसे फटे-पुराने कपड़ों का ढेर।”

“बात कुछ इस तरह की है,” वह थोड़ी देर बाद चिल्लाई: “वह आदमी बहुत ही रोमांटिक और भावुक है, और मुझसे मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक उम्मीद रखता है। वह मुझे परिपूर्ण समझता है: हर तरह के उत्कृष्ट गुणों और दृढ़ सद्गुणों से परिपूर्ण, जो मुझमें कभी नहीं थे, और न ही मैं उन्हें पाना चाहती हूँ। अब, उसकी उपस्थिति में, उसके अच्छे विचार को सही ठहराने की कोशिश किए बिना रहना असंभव है; और अच्छा बनकर, समझदारी की बातें करना बहुत थका देने वाला होता है, क्योंकि वह सचमुच मुझे समझदार समझता है। मैं तुम्हारे साथ कहीं अधिक सहज महसूस करती हूँ, बूढ़ी औरत - तुम, तुम प्यारी चिड़चिड़ी - जो मुझे मेरे सबसे बुरे हाल में समझती हो, और मुझे नखरे वाली, अज्ञानी, चुलबुली, चंचल, नासमझ, स्वार्थी और उन सभी मीठी बातों में जानती हो जिन्हें तुमने और मैंने मेरे चरित्र का हिस्सा माना है।”

“यह सब ठीक है,” मैंने अपनी गंभीरता और संयम को बनाए रखने की पूरी कोशिश करते हुए कहा, जो इस चंचल स्पष्टवादिता से हिलने का खतरा था, “लेकिन इससे उपहारों का वह घिनौना मामला नहीं बदलता। जिनेवरा, एक अच्छी और ईमानदार लड़की की तरह, इन्हें पैक करो और वापस भेज दो।”

“बिल्कुल नहीं,” उसने दृढ़ता से कहा।

“तो आप एम. इसिडोर को धोखा दे रहे हैं। यह तर्कसंगत है कि उनके उपहार स्वीकार करके आप उन्हें यह समझा रहे हैं कि एक दिन उन्हें भी आपके प्रति वैसा ही उपहार मिलेगा…”

"लेकिन वह ऐसा नहीं करेगा," उसने बात काटते हुए कहा: "उसे अब इसका समकक्ष मिल गया है, मुझे उन्हें पहने हुए देखने का आनंद - उसके लिए काफी है: वह तो बस बुर्जुआ है।"

इस वाक्य ने, अपने निरर्थक अहंकार में, मेरी उस अस्थायी कमजोरी को पूरी तरह से दूर कर दिया, जिसके कारण मैंने अपने लहजे और हावभाव को शिथिल कर दिया था। वह बड़बड़ाती रही:

“मेरा वर्तमान उद्देश्य जवानी का आनंद लेना है, न कि किसी पुरुष से वादा या प्रतिज्ञा करके खुद को बांधना। जब मैंने पहली बार इसिडोर को देखा, तो मुझे लगा कि वह मुझे इसका आनंद लेने में मदद करेगा। मुझे लगा कि वह मेरे एक सुंदर लड़की

होने से संतुष्ट रहेगा; और हम मिलेंगे, बिछड़ेंगे, दो तितलियों की तरह इधर-उधर उड़ेंगे और खुश रहेंगे। देखो! मैं उसे कभी-कभी न्यायाधीश की तरह गंभीर, गहरे भावों वाला और विचारशील पाती हूँ। धत्! विचारक, गहरे भावों वाले और भावुक लोग मेरे स्वाद के नहीं हैं। कर्नल अल्फ्रेड डी हमाल मुझे कहीं बेहतर लगते हैं। सुंदर और आकर्षक लोगों के लिए! आनंद और खुशियाँ जिंदाबाद! महान जुनून और कठोर गुणों को भूल जाओ!"

उसने इस तीखी आलोचना का जवाब ढूंढने की कोशिश की। मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

उन्होंने आगे कहा, "मैं अपने हैंडसम कर्नल से प्यार करती हूं, लेकिन मैं उनके प्रतिद्वंदी से कभी प्यार नहीं करूंगी।"

मैं कभी भी बुर्जुआ पत्नी नहीं बनूंगी!

मैंने अब यह संकेत दिया कि मेरे कमरे को उसकी उपस्थिति के सम्मान से मुक्त करना अत्यंत आवश्यक है: वह हंसते हुए चली गई।

अध्याय X.

डॉ. जॉन।

मैडम बेक एक अत्यंत स्थिर स्वभाव की महिला थीं; वे समस्त संसार के प्रति सहनशील थीं, परन्तु किसी के प्रति कोमल नहीं थीं। उनके अपने बच्चे भी उनके शांत और स्थिर स्वभाव से कभी विचलित नहीं हुए। वे अपने परिवार के प्रति चिंतित रहती थीं, उनके हितों और शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखती थीं; परन्तु ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि उन्हें कभी अपने नन्हे बच्चों को गोद में लेने, उनके गुलाबी होठों को अपने होठों से छूने, उन्हें स्नेहपूर्वक आलिंगन करने, उन पर कोमल स्पर्श और प्रेम भरे शब्दों

की वर्षा करने की इच्छा हुई हो।

मैंने उसे कई बार बगीचे में बैठे हुए देखा है, दूर से नन्ही मधुमक्खियों को निहारते हुए, जो अपनी प्यारी ट्रिनेट के साथ एक दूर की गली में चल रही थीं; उसके हावभाव में चिंता और समझदारी झलकती थी। मैं जानती हूँ कि वह अक्सर अपने "भविष्य" के बारे में चिंता से सोचती रहती थी; लेकिन अगर सबसे छोटा, दुबला-पतला लेकिन प्यारा बच्चा, उसे देखकर अपनी माँ से अलग होकर लड़खड़ाता हुआ रास्ते से नीचे आता और उत्सुकता से हंसता-हंसता और हांफता हुआ उसके घुटने से लिपट जाता, तो मैडम शांति से एक हाथ आगे बढ़ा देतीं, ताकि बच्चे के अचानक उछलने से होने वाली किसी भी अप्रिय चोट से बचा जा सके: "ध्यान रखना, मेरे बच्चे!" वह बिना विचलित हुए कहतीं, धैर्यपूर्वक उसे कुछ क्षणों के लिए अपने पास खड़े रहने देतीं, और फिर बिना मुस्कुराए, बिना चूमे, या बिना किसी स्नेह भरे शब्द के, उठकर उसे वापस ट्रिनेट के पास ले जातीं।

सबसे बड़ी बेटी के प्रति उसका व्यवहार एक और मायने में भी उतना ही विशिष्ट था। वह एक शरारती बच्ची थी। "यह डेज़िरे कितनी पेचीदा है! यह बच्ची कितनी ज़हरीली है!" ये शब्द रसोई और स्कूल दोनों जगह उसके लिए इस्तेमाल किए जाते थे। अपनी अन्य प्रतिभाओं के अलावा, वह उकसाने की कला में माहिर थी, जिससे कभी-कभी उसकी प्रेमिका और नौकर लगभग पागल हो जाते थे। वह चुपके से अटारी में जाती, दराज और बक्से खोलती, उनकी सबसे अच्छी टोपियाँ फाड़ देती और उनके सबसे अच्छे शॉल गंदे कर देती; वह भोजनालय के बुफे पर कब्ज़ा करने का मौका ढूंढती, जहाँ वह चीनी मिट्टी या कांच की चीज़ें तोड़ देती—या भंडारगृह की अलमारी में जाती, जहाँ वह संरक्षित खाद्य पदार्थों को लूट लेती, मीठी शराब पी जाती, जार और बोतलें तोड़ देती, और इस तरह से साजिश रचती कि शक का बोझ रसोइया और रसोई की नौकरानी पर आ जाए। जब मैडम ने यह सब देखा और जब उन्हें इसकी सूचना मिली, तो उन्होंने अत्यंत शांत भाव से केवल एक ही बात कही:

“डेज़िरे को विशेष निगरानी की आवश्यकता है।” इसलिए वह सुलह का यह आशाजनक संकेत हमेशा अपने पास रखती थी। मुझे लगता है कि उसने कभी भी ईमानदारी से उसे उसकी कमियों के बारे में नहीं बताया, ऐसी आदतों की बुराई नहीं समझाई और न ही इसके परिणामों को दिखाया। निगरानी ही पूरी तरह से इलाज का काम करेगी। बेशक, यह विफल रही। डेज़िरे को नौकरों से कुछ हद तक दूर रखा गया,

लेकिन इसके बजाय वह अपनी माँ को चिढ़ाती और लूटती रही। मैडम की काम करने की मेज या शौचालय से जो कुछ भी उसके हाथ लगता, वह चुराकर छिपा देती। मैडम यह सब देखती रहीं, लेकिन फिर भी अनदेखा करने का नाटक करती रहीं: उनमें इतनी ईमानदारी नहीं थी कि वे बच्ची को उसकी बुराइयों के बारे में बता सकें। जब कोई ऐसी वस्तु गायब हो जाती जिसकी कीमत इतनी अधिक होती कि उसे वापस करना आवश्यक होता, तो वह यह बहाना बनाती कि डेज़िरे ने उसे खेल-खेल में ले लिया है और उसे वापस करने की विनती करती। डेज़िरे को इस तरह धोखा नहीं दिया जा सकता था: उसने चोरी में झूठ का सहारा लेना सीख लिया था और वह ब्रोच, अंगूठी या कैंची को छूने से भी इनकार कर देती थी। इसी खोखले जाल में फंसकर माँ शांति से विश्वास का भाव दिखाती और फिर लगातार बच्ची पर नज़र रखती और उसका पीछा करती जब तक कि वह उसे ढूंढ न लेती: उसके छिपने की जगहों तक—जैसे बगीचे की दीवार में कोई छेद, अटारी या बाहरी कमरे में कोई दरार या कोना। ऐसा करने के बाद, मैडम डेज़िरे को अपनी सहेली के साथ टहलने भेज देती और उसकी अनुपस्थिति का फायदा उठाकर चोर को लूट लेती। डेज़िरे ने अपनी चतुर माँ की सच्ची बेटी होने का प्रमाण दिया, क्योंकि नुकसान का पता चलने पर भी उसने अपने चेहरे या हावभाव पर ज़रा भी पछतावा नहीं दिखाया।

दूसरी संतान, फिफाइन, अपने मृत पिता की तरह थी। बेशक, माँ ने उसे अपना स्वस्थ शरीर, नीली आँखें और लाल गाल तो दिए थे, लेकिन उसका नैतिक स्वभाव माँ से नहीं आया था। वह एक ईमानदार, हंसमुख नन्ही सी आत्मा थी: एक जोशीली, मिलनसार और चंचल प्राणी भी थी, और ऐसी थी जो अक्सर खतरों और कठिनाइयों में पड़ जाती थी। एक दिन उसने पत्थर की सीढ़ियों की एक खड़ी उड़ान से ऊपर से नीचे तक गिरने का सोचा; और जब मैडम ने शोर सुनकर (वह हमेशा हर शोर सुनती थीं), भोजन कक्ष से बाहर आकर उसे उठाया, तो उन्होंने धीरे से कहा, — "इस बच्चे की हड्डी टूट गई है।"

पहले तो हमें उम्मीद थी कि ऐसा नहीं होगा। लेकिन ऐसा ही हुआ, और वह भी कतई सच: एक छोटी सी गोल-मटोल बांह बेजान लटकी हुई थी।

"मुझे उसे ले जाने दो," मैडम ने कहा; "और चलो तुरंत एक टैक्सी लेते हैं।"

घबराहट में आकर वह तुरंत, लेकिन सराहनीय धैर्य और आत्मसंयम के साथ, एक सर्जन को लाने के लिए रवाना हो गई।

ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे पारिवारिक सर्जन घर पर नहीं मिला; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा: उसने तब तक खोज की जब तक उसे अपनी पसंद का कोई दूसरा सर्जन नहीं मिल गया, और उसे अपने साथ ले आई। इसी बीच मैंने बच्चे की आस्तीन काटकर उसे कपड़े उतारकर बिस्तर पर लिटा दिया।

मुझे लगता है कि हममें से किसी ने भी (हमसे मेरा मतलब है बोन, रसोइया, दरबान और मैं, ये सभी लोग उस छोटे और गर्म कमरे में इकट्ठा थे) नए डॉक्टर के कमरे में आते ही उसे गौर से नहीं देखा। कम से कम मैं तो फिफ़ाइन को शांत करने में व्यस्त थी; उसकी चीखें (क्योंकि उसके फेफड़े ठीक थे) सुनना बहुत कष्टदायक था। जैसे ही अजनबी उसके बिस्तर के पास पहुँचा, उसकी चीखें और तेज़ हो गईं; जब उसने उसे उठाया, तो वह अपनी टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में (क्योंकि वह बाकी बच्चों की तरह अंग्रेज़ी बोलती थी) गुस्से से चिल्लाई, "छोड़ो मत! मैं तुम्हें नहीं देखूँगी: मैं डॉक्टर पिल्लुल को देखूँगी!"

“और डॉ. पिल्लुले मेरे बहुत अच्छे दोस्त हैं,” उन्होंने एकदम सही अंग्रेज़ी में जवाब दिया; “लेकिन वे तीन मील दूर एक जगह पर व्यस्त हैं, और मैं उनकी जगह आया हूँ। तो अब, जब हम थोड़ा शांत हो जाएँगे, तो हमें काम शुरू करना होगा; और हम जल्द ही उस बदकिस्मत छोटी सी बांह पर पट्टी बांधकर उसे ठीक कर देंगे।”

इसके बाद उन्होंने मीठा पानी मंगवाया, फिफ़ाइन को चम्मच भर मीठा पानी पिलाया (फ़िफ़ाइन एक स्पष्टवादी खाने की शौकीन थी; कोई भी उसके स्वाद से उसका दिल जीत सकता था), ऑपरेशन खत्म होने पर और पानी देने का वादा किया और तुरंत काम पर लग गए। कुछ मदद की ज़रूरत थी, इसलिए उन्होंने रसोइया से मदद मांगी, जो एक हष्ट-पुष्ट और मजबूत बांहों वाली महिला थी; लेकिन वह, चौकीदार और नर्स तुरंत भाग गईं। मुझे उस छोटे, पीड़ादायक अंग को छूना अच्छा नहीं लगा, लेकिन यह सोचकर कि कोई और विकल्प नहीं है, मेरा हाथ पहले से ही आवश्यक काम करने के लिए बढ़ा हुआ था। मुझसे पहले ही मैडम बेक ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया था: उनका हाथ स्थिर था जबकि मेरा कांप रहा था।

“Ca vaudra mieux,” डॉक्टर ने मेरी ओर से उसकी ओर मुड़ते हुए कहा।

उन्होंने अपने चुनाव में बुद्धिमत्ता दिखाई। मेरा चुनाव बनावटी संयम और दिखावटी दृढ़ता का होता। उनका चुनाव न तो बनावटी था और न ही दिखावटी।

“धन्यवाद महोदया; बहुत बढ़िया, उत्कृष्ट!” ऑपरेटर ने काम समाप्त करते हुए

कहा। “यह संयम का बहुत ही सटीक प्रदर्शन है, और यह अनुचित भावनाओं के हज़ारों विस्फोटों से कहीं अधिक मूल्यवान है।”

वह उसकी दृढ़ता से प्रसन्न था, और वह उसकी प्रशंसा से। यह भी संभव था कि उसका संपूर्ण रूप-रंग, उसकी आवाज़, हाव-भाव और व्यवहार, उसके पक्ष में प्रभाव डाल रहे थे। वास्तव में, जब आप उसे ध्यान से देखते, और जब शाम हो रही होती और अंधेरा छाने लगता, तो आप देखते कि अगर मैडम बेक स्त्रीत्व से कम न होतीं, तो ऐसा होना स्वाभाविक ही था। इस युवा डॉक्टर (वह वाकई युवा था) का रूप-रंग साधारण नहीं था। उस छोटे से कमरे में और डच महिलाओं के उस समूह के बीच उसका कद प्रभावशाली रूप से लंबा लग रहा था; उसका चेहरा स्पष्ट, सुंदर और भावपूर्ण था: शायद उसकी नज़रें एक चेहरे से दूसरे चेहरे पर कुछ ज़्यादा ही तेज़ी से और बार-बार घूम रही थीं; लेकिन उसकी नज़रों में एक बड़ा सा भाव था, और उसके होंठों में भी; उसकी ठुड्डी भरी हुई, गठीली, यूनानी शैली की और एकदम सही थी। जहाँ तक उसकी मुस्कान की बात है, तो उसे किस विशेषण से वर्णित किया जाए, यह तुरंत तय करना मुश्किल था; उसमें कुछ ऐसा था जो सुखद था, लेकिन कुछ ऐसा भी था जो मन में सारी कमज़ोरियाँ और खामियाँ उभार देता था: वो सब कुछ जो हँसी का पात्र बन सकता था। फिर भी फिफ़िन को यह संदेह भरी मुस्कान अच्छी लगी और उसने मालिक को मिलनसार समझा: हालाँकि उसने उसे चोट पहुँचाई थी, फिर भी उसने उसे शुभ रात्रि कहने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। उसने उसके छोटे से हाथ को प्यार से थपथपाया, और फिर वह और मैडम साथ में नीचे चले गए; वह पूरे जोश और वाक्पटुता के साथ बातें कर रही थी, और वह सौम्य भाव से सुन रहा था, जिसमें अनजाने में एक शरारती सी चंचलता झलक रही थी जिसे शब्दों में बयान करना मेरे लिए मुश्किल है।

मैंने गौर किया कि हालाँकि वह फ्रेंच अच्छी तरह बोलते थे, लेकिन अंग्रेज़ी उससे भी बेहतर बोलते थे; उनका रंग-रूप, आँखें और कद-काठी भी अंग्रेज़ों जैसी थी। मैंने और भी बहुत कुछ देखा। जब वह कमरे से निकलते हुए मेरे पास से गुज़रे, तो एक पल के लिए उन्होंने अपना चेहरा मेरी ओर मोड़ा—मुझसे बात करने के लिए नहीं, बल्कि मैडम से बात करने के लिए, फिर भी इस तरह खड़े थे कि मुझे लगभग मजबूरन उनकी ओर देखना पड़ा—एक याद जो उनकी आवाज़ सुनने के पहले ही पल से मेरी स्मृति में बनने के लिए संघर्ष कर रही थी, एकदम स्पष्ट हो गई। ये वही सज्जन

थे जिनसे मैंने दफ्तर में बात की थी; जिन्होंने संदूक के मामले में मेरी मदद की थी; जिन्होंने अंधेरे, गीले पार्क में मेरा मार्गदर्शन किया था। जब वह लंबे गलियारे से होते हुए सड़क पर निकले, तो मैंने उनकी चाल पहचान ली: यह वही दृढ़ और स्थिर कदम थे जिनका मैंने टपकते पेड़ों के नीचे पीछा किया था।

* * * * *

निष्कर्ष यही निकला कि इस युवा सर्जन-चिकित्सक की रू फॉसेट की पहली यात्रा ही अंतिम होगी। आदरणीय डॉ. पिल्लुले के अगले दिन घर लौटने की उम्मीद थी, इसलिए कोई कारण नहीं था कि उनका अस्थायी प्रतिनिधि फिर से उनका प्रतिनिधित्व करे; लेकिन भाग्य ने इसके विपरीत ही फैसला सुनाया था।

डॉ. पिल्लुले को बोउक्विन-मोइसी के प्राचीन विश्वविद्यालय शहर में एक धनी, वृद्ध और रोगग्रस्त व्यक्ति को देखने के लिए बुलाया गया था, और जब उन्होंने ताज़ी हवा में बदलाव और यात्रा को उपचार के रूप में सुझाया, तो उन्हें कुछ हफ्तों के दौरे पर उस डरपोक रोगी के साथ जाने के लिए नियुक्त किया गया; इसलिए, नए डॉक्टर के लिए केवल रू फॉसेट में अपनी सेवाएं जारी रखना बाकी था।

जब वह आता था, मैं उसे अक्सर देखती थी; क्योंकि मैडम उस छोटी बीमार बच्ची को ट्रिनेट के भरोसे नहीं छोड़ना चाहती थीं, बल्कि मुझसे ही नर्सरी में ज़्यादा समय बिताने को कहती थीं। मुझे लगता है कि वह कुशल था। फिफाइन उसकी देखभाल में जल्दी ठीक हो गई, फिर भी उसकी सेहत में सुधार होने के बावजूद उसे जल्दी नहीं निकाला गया। ऐसा लगता था जैसे किस्मत और मैडम बेक एक ही तरकीब पर थे, और दोनों ने ही तय किया था कि उसे रू फॉसेट के प्रवेश कक्ष, निजी सीढ़ियों और ऊपरी कमरों से अच्छी तरह वाकिफ होना चाहिए।

फिफाइन के उसके हाथों से निकलते ही डेज़िरे ने खुद को बीमार घोषित कर दिया। उस चंचल बच्ची में दिखावा करने की अद्भुत कला थी, और बीमार के कमरे में मिलने वाले स्नेह और आराम से मोहित होकर उसने यह निष्कर्ष निकाला कि बीमारी उसके लिए एकदम उपयुक्त रहेगी, और उसने उसी के अनुसार बिस्तर पर लेट गई। उसने अच्छा अभिनय किया, और उसकी माँ ने उससे भी बेहतर; क्योंकि मैडम बेक के लिए सारा मामला दिन के उजाले की तरह स्पष्ट था, फिर भी उन्होंने इसे आश्चर्यजनक रूप से आत्मविश्वास और गंभीरता के साथ संभाला।

मुझे आश्चर्य इस बात पर हुआ कि डॉ. जॉन (युवक अंग्रेज ने फिफाइन को उन्हें इसी नाम से पुकारना सिखाया था, और हम सभी ने उनसे इस नाम से उन्हें पुकारने की आदत अपना ली, यहाँ तक कि यह एक स्थापित रिवाज बन गया, और रू फॉसेट में उन्हें कोई और नहीं जानता था) - डॉ. जॉन ने चुपचाप मैडम की चालों को अपना लिया और उनके दांव-पेचों में शामिल हो गए। उन्होंने सचमुच कुछ देर तक हास्यास्पद संदेह का भाव दिखाया, बच्चे से माँ की ओर एक-दो बार तेजी से देखा, कुछ देर आत्म-चिंतन किया, लेकिन अंत में सहजता से इस तमाशे में अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार हो गए। डेज़िरे कौवे की तरह खाती थी, दिन-रात अपने बिस्तर पर उछल-कूद करती थी, चादरों और कंबलों से तंबू लगाती थी, तकियों और गद्दों के बीच तुर्क की तरह आराम करती थी, अपने जूतों को अपनी टोपी पर फेंककर और अपनी बहनों पर मुंह बनाकर अपना मनोरंजन करती थी - संक्षेप में, वह अयोग्य स्वास्थ्य और बुरी आत्माओं से लबालब भरी हुई थी; जब उसकी माँ और डॉक्टर दिन में उससे मिलने आते थे, तभी वह उदास रहती थी। मुझे पता था कि मैडम बेक किसी भी कीमत पर अपनी बेटी को बिस्तर पर आराम से रखना चाहती थीं ताकि वह किसी भी तरह की शरारतों से दूर रहे; लेकिन मुझे आश्चर्य होता था कि डॉक्टर जॉन इस काम से क्यों नहीं थकते थे।

हर दिन, बस एक बहाने से, वह समय पर हाजिरी लगाता था; मैडम हमेशा उसका उसी स्नेह, उसी सकारात्मक भाव और अपने बच्चे के लिए उसी बनावटी चिंता के भाव से स्वागत करती थीं। डॉ. जॉन मरीज़ के लिए हानिरहित दवाइयाँ लिखते थे और उसकी माँ को बड़ी चतुराई से चमकती नज़रों से देखते थे। मैडम उनकी इन तड़कती निगाहों को बिना नाराज़ हुए सह लेती थीं - उनमें इतनी समझदारी थी कि वे ऐसा नहीं कर सकती थीं। हालाँकि युवा डॉक्टर देखने में लचीला लगता था, फिर भी कोई उसे तुच्छ नहीं समझ सकता था - यह लचीलापन स्पष्ट रूप से अपने मालिक को खुश करने के लिए नहीं अपनाया गया था: हालाँकि उसे पेंशननेट में अपना कार्यालय पसंद था और वह रू फॉसेट में अजीब तरह से घूमता रहता था, फिर भी वह वहाँ अपने व्यवहार में स्वतंत्र और लगभग लापरवाह था; और फिर भी, वह अक्सर विचारशील और मग्न रहता था।

शायद यह मेरा काम नहीं था कि मैं उसके व्यवहार के रहस्य को देखूँ, या उसके कारण या उद्देश्य का पता लगाऊँ; लेकिन, मेरी स्थिति ऐसी थी कि मैं खुद को रोक

नहीं पाया। कमरे में मेरी उपस्थिति के अनुसार, उसने खुद को मेरे अवलोकन के लिए इस तरह प्रस्तुत किया, जैसे मेरे जैसे बाहरी रूप वाले व्यक्ति को आमतौर पर अपेक्षित ध्यान और महत्व दिया जाता है: यानी, साधारण फर्नीचर, साधारण कारीगरी वाली कुर्सियों और बिना किसी खास डिज़ाइन वाले कालीनों को जितना महत्व दिया जाता है, उतना ही। अक्सर, मैडम का इंतज़ार करते हुए, वह एक ऐसे व्यक्ति की तरह सोचता, मुस्कुराता, देखता या सुनता, जैसे वह खुद को अकेला समझता हो। इस बीच, मैं उसके चेहरे और हाव-भाव पर विचार करने और यह सोचने के लिए स्वतंत्र था कि उस विशेष रुचि और लगाव का क्या अर्थ हो सकता है - जो संदेह और विचित्रता से भरा हुआ था, और किसी रहस्यमय जादू से नियंत्रित था - जिसने उसे राजधानी के घनी आबादी वाले केंद्र में स्थित इस एकांत स्थान से बांध रखा था। मेरा मानना है कि उसे कभी याद ही नहीं आया कि मेरे सिर में आँखें हैं, और उन्हें चलाने के लिए दिमाग तो बिल्कुल भी नहीं।

और उन्हें यह कभी पता भी नहीं चलता, लेकिन एक दिन, जब वे धूप में बैठे थे और मैं उनके बालों, मूंछों और चेहरे के रंग को निहार रही थी—उनका पूरा व्यक्तित्व एक ऐसे रंग का था जिसे तेज रोशनी में कुछ खतरनाक प्रभाव के साथ उभारा जा सकता है (दरअसल, मुझे याद है कि मैं उनके चमकदार सिर की तुलना राजा नबूकदनेज़र द्वारा स्थापित "सुनहरी मूर्ति" से करने के लिए विवश हो गई थी), तभी एक नया, अचानक और चौंकाने वाला विचार मेरे ध्यान को अत्यधिक शक्ति और आकर्षण से जकड़ लिया। मुझे आज तक याद नहीं कि मैंने उन्हें कैसे देखा: आश्चर्य और दृढ़ विश्वास के बल पर मैं खुद को भूल गई थी; और मुझे सामान्य चेतना तभी वापस आई जब मैंने देखा कि उनकी नज़र मुझ पर टिक गई है, और खिड़की के कोने में लगे एक छोटे से अंडाकार दर्पण में मेरी हरकत कैद हो गई है—जिस परावर्तक की सहायता से मैडम अक्सर नीचे बगीचे में चलने वाले लोगों पर चुपके से नज़र रखती थीं। हालांकि उनका स्वभाव हंसमुख और आशावादी था, फिर भी उनमें एक तरह की घबराहट और संवेदनशीलता थी, जिसकी वजह से सीधी और जिज्ञासु निगाहों के सामने वे असहज हो जाते थे। मुझे इस तरह आश्चर्यचकित करते हुए, उन्होंने मुड़कर विनम्रता से भरे लहजे में कहा, जिसमें थोड़ी झुंझलाहट भी झलक रही थी और साथ ही फटकार का भाव भी, “महोदया मुझ पर रहम नहीं करती: मैं इतना घमंडी नहीं हूँ कि यह सोचूँ कि मेरी खूबियों की वजह से उनका ध्यान आकर्षित होता है; अगर ऐसा

है तो ज़रूर कोई कमी होगी। क्या मैं पूछने की हिम्मत करूँ— वो क्या है?”

जैसा कि पाठक अनुमान लगा सकते हैं, मैं स्तब्ध था, फिर भी इतना स्तब्ध नहीं था कि उससे उबरना असंभव हो; क्योंकि मैं जानता था कि यह फटकार न तो किसी असावधान प्रशंसा की भावना से, न ही अनुचित जिज्ञासा से प्रेरित थी। मैं मौके पर ही खुद को निर्दोष साबित कर सकता था, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। मैं कुछ नहीं बोला। मुझे उससे बात करने की आदत नहीं थी। उसे जो चाहे सोचने और मुझ पर जो चाहे आरोप लगाने देने के लिए, मैंने अपना कुछ अधूरा काम फिर से शुरू किया और उसके ठहरने के शेष समय तक उस पर सिर झुकाए रहा। मन की एक विकृत अवस्था होती है जो गलतफहमी से चिढ़ने के बजाय शांत हो जाती है; और ऐसी जगहों पर जहाँ हमें कभी सही ढंग से नहीं जाना जा सकता, मुझे लगता है कि हम पूरी तरह से अनदेखा किए जाने में आनंद लेते हैं। भला कौन सा ईमानदार आदमी, गलती से चोर समझे जाने पर, झुंझलाहट के बजाय आनंदित नहीं होगा?

अध्याय XI.

द पोर्ट्रेस कैबिनेट।

गर्मी का मौसम था और बहुत तेज़ धूप थी। मैडम बेक की सबसे छोटी बेटी, जॉर्जेट को बुखार हो गया। डेज़िरे, जो अचानक ठीक हो गई थी, को फिफाइन के साथ संक्रमण से बचाव के लिए एहतियात के तौर पर गाँव के बोन-ममन भेज दिया गया। अब वास्तव में चिकित्सा सहायता की आवश्यकता थी, और मैडम ने एक सप्ताह से घर पर रहे डॉक्टर पिल्लुल की वापसी को नज़रअंदाज़ करते हुए, उनके अंग्रेज़ प्रतिद्वंद्वी को अपने दौरे जारी रखने के लिए कहा। एक-दो पेंशनभोगियों ने सिरदर्द की शिकायत की, और अन्य मामलों में वे जॉर्जेट की बीमारी में थोड़ा-बहुत योगदान देते हुए प्रतीत

हुए। "अब, आखिरकार," मैंने सोचा, "डॉक्टर पिल्लुल को वापस बुलाना ही होगा: समझदार निदेशिका कभी भी इतने युवा व्यक्ति को विद्यार्थियों की देखभाल करने की अनुमति देने का जोखिम नहीं उठाएगी।"

स्कूल की निदेशक बहुत ही समझदार थीं, लेकिन वे निडर और साहसी भी हो सकती थीं। उन्होंने वास्तव में डॉ. जॉन को परिसर के स्कूल विभाग से परिचित कराया और उन्हें अभिमानी और आकर्षक ब्लांश डी मेल्सी और उनकी सहेली, नकचढ़ी और चंचल एंजेलिक की देखरेख में नियुक्त किया। मुझे लगा कि डॉ. जॉन इस भरोसे से काफी संतुष्ट थे; और अगर विवेकपूर्ण व्यवहार इस कदम को उचित ठहरा सकता, तो वे इसे पूरी तरह से उचित ठहराते। लेकिन यहाँ, मठों और धार्मिक केंद्रों की इस भूमि में, उनकी जैसी उपस्थिति को "युवाओं के लिए बने पेंशन" में अनदेखा नहीं किया जा सकता था। स्कूल में गपशप होने लगी, रसोई में कानाफूसी होने लगी, शहर में अफवाह फैल गई, माता-पिता ने पत्र लिखे और विरोध जताने के लिए मुलाकातें कीं। अगर मैडम कमजोर होतीं, तो अब तक उनका अस्तित्व खतरे में पड़ चुका होता: एक दर्जन प्रतिद्वंद्वी शिक्षण संस्थान उनके इस गलत कदम का फायदा उठाने के लिए तैयार थे - अगर यह गलत कदम था भी तो - उन्हें बर्बाद करने के लिए। लेकिन मैडम कमजोर नहीं थीं, और भले ही वह एक छोटी जेसुइट थीं, फिर भी मैंने दिल से ताली बजाई और अपनी आवाज से "शाबाश!" कहा, जब मैंने इस अवसर पर उनके सक्षम व्यवहार, कुशल प्रबंधन, स्वभाव और दृढ़ता को देखा।

उसने घबराए हुए माता-पिता से हंसमुख और सहज स्वभाव से मुलाकात की, क्योंकि उसके जैसा कोई नहीं था, पता नहीं मैं कहूँ कि उसमें एक खास तरह की "अच्छी महिला का आत्मविश्वास और सहजता" थी; जिसने कई मौकों पर तुरंत और पूरी तरह से अपना लक्ष्य हासिल कर लिया, जहाँ गंभीर सोच और तर्क-वितर्क शायद नाकाम हो जाते।

“बेचारे डॉक्टर जीन!” वह खिलखिलाते हुए और अपने मोटे-मोटे सफेद हाथों को खुशी से मलते हुए कहतीं; “प्यारे नौजवान! दुनिया के सबसे अच्छे प्राणी!” और फिर बतातीं कि कैसे उन्होंने अपने बच्चों के लिए उन्हें ही चुना था, जो उनसे इतने प्यार करते थे कि किसी दूसरे डॉक्टर के बारे में सोचकर ही चीखने लगते थे; कैसे, जब उन्हें अपने बच्चों पर भरोसा था, तो दूसरों पर भरोसा करना उन्हें स्वाभाविक लगता था, और वैसे भी, यह दुनिया का सबसे अस्थायी उपाय था; ब्लैंच और एंजेलिक को

माइग्रेन था; डॉक्टर जॉन ने पर्ची लिख दी थी; बस!

माता-पिता चुप थे। ब्लांश और एंजेलिक ने अपने चिकित्सक की प्रशंसा में ज़ोर-ज़ोर से युगल गीत गाकर मैडम की सारी परेशानी दूर कर दी; अन्य विद्यार्थियों ने भी उनका साथ दिया और सर्वसम्मति से घोषणा की कि जब वे बीमार होंगे तो वे केवल डॉ. जॉन के पास ही जाएंगे; और मैडम हँसीं, और माता-पिता भी हँसे। लाबासेकुरियन परिवार में संतान प्रेम की भावना प्रबल होनी चाहिए: कम से कम वे संतानों को हद से ज़्यादा लाड़-प्यार करते हैं; अधिकांश घरों में बच्चों की इच्छा ही नियम होती है। मैडम को इस अवसर पर मातृत्व भाव से काम करने का श्रेय मिला: वे सफल रहीं; लोग उन्हें एक अनुदेशिका के रूप में पहले से कहीं अधिक पसंद करने लगे।

आज तक मुझे पूरी तरह समझ नहीं आया कि उसने डॉ. जॉन के लिए अपने हितों को इस तरह दांव पर क्यों लगाया। लोगों की बातें तो मुझे अच्छी तरह पता हैं: पूरा घर—छात्र, शिक्षक, नौकर सब—इस बात पर अड़ा था कि वह उससे शादी करेगी। उन्होंने यह तय कर लिया था; उम्र का अंतर उनकी नज़र में कोई बाधा नहीं था: शादी होनी ही थी।

यह मानना पड़ेगा कि बाहरी दिखावे से यह विचार पूरी तरह खारिज नहीं होता था; मैडम उनकी सेवाएं बनाए रखने के लिए इतनी दृढ़ थीं कि अपने पूर्व शिष्य पिल्लुल को भूल चुकी थीं। वह स्वयं उनसे मिलने जाती थीं और उनके प्रति हमेशा हंसमुख, प्रसन्न और दयालु रहती थीं। इसके अलावा, इस समय के आसपास उन्होंने अपने पहनावे पर विशेष ध्यान दिया: सुबह के अस्त-व्यस्त कपड़े, रात की टोपी और शॉल को त्याग दिया गया; डॉ. जॉन की शुरुआती मुलाकातों में वह हमेशा सलीके से संवारी हुई भूरी चोटियों, करीने से फिट रेशमी पोशाक और चप्पलों के स्थान पर सुंदर लेस वाले जूतों में नज़र आती थीं: संक्षेप में, उनका पूरा श्रृंगार किसी आदर्श की तरह पूर्ण और खिले हुए फूल की तरह ताजा था। हालांकि, मुझे नहीं लगता कि उनका इरादा इससे आगे बढ़कर सिर्फ एक बेहद खूबसूरत आदमी को यह दिखाना था कि वह साधारण महिला नहीं थीं; और वह थीं भी नहीं। चेहरे की सुंदरता या शरीर की लज्जा के बिना भी, वह आकर्षक थीं। यौवन और उसके चंचल आकर्षण के बिना भी, वह मनमोहक थीं। उसे देखकर कभी थकान नहीं होती थी: वह कभी नीरस, बेजान, रंगहीन या सपाट नहीं थी। उसके कभी मुरझाए न बाल, उसकी नीली आँखों की सौम्य चमक, उसके गालों की फल जैसी ताजगी भरी लालिमा—ये सब चीजें संयम से,

लेकिन निरंतरता के साथ मन को भाती थीं।

क्या वह सचमुच डॉ. जॉन को पति के रूप में अपनाने, उन्हें अपने आलीशान घर में ले जाने, अपनी बचत (जो कि एक ठीक-ठाक जीवनयापन के लिए पर्याप्त मानी जाती थी) से उन्हें नवाज़ने और उनके जीवन भर आराम से गुजारने का सपना देख रही थी? क्या डॉ. जॉन को उसके ऐसे सपनों का शक था? मैंने उसे उसके पास से निकलते हुए देखा है, उसके होठों पर एक शरारती सी मुस्कान थी और उसकी आँखों में मर्दाना घमंड की एक झलक थी। अपने अच्छे रूप और अच्छे स्वभाव के बावजूद, वह परिपूर्ण नहीं था; अगर वह ऐसे लक्ष्यों को बढ़ावा देता था जिन्हें वह कभी सफल नहीं बनाना चाहता था, तो वह बहुत अपूर्ण रहा होगा। लेकिन क्या वह उन्हें सफल बनाना नहीं चाहता था? लोग कहते थे कि उसके पास पैसे नहीं थे, वह पूरी तरह से अपने पेशे पर निर्भर था। मैडम - हालांकि शायद वह उससे लगभग चौदह साल बड़ी थी - फिर भी वह ऐसी महिला थी जो कभी बूढ़ी नहीं होती, कभी मुरझाती नहीं, कभी टूटती नहीं। वे निश्चित रूप से अच्छे संबंध रखते थे। शायद वह प्यार में नहीं था; लेकिन इस दुनिया में कितने लोग प्यार करते हैं, या कम से कम प्यार के लिए शादी करते हैं? हमने अंत तक इंतजार किया।

वह किस बात का इंतज़ार कर रहा था, यह मुझे नहीं पता, न ही वह क्या देख रहा था; लेकिन उसके हाव-भाव की विशिष्टता, उसकी आशा भरी, सतर्क, तल्लीन, उत्सुक नज़र कभी कम नहीं हुई: बल्कि और तीव्र हो गई। वह कभी भी मेरी समझ से परे नहीं था, और मुझे लगता है कि वह मेरी समझ से और भी दूर होता चला गया।

एक सुबह छोटी जॉर्जेट को तेज़ बुखार था और परिणामस्वरूप वह ज़्यादा चिड़चिड़ी हो गई थी; वह रो रही थी और शांत नहीं हो रही थी। मुझे लगा कि उसे दी गई कोई खास दवा उसे रास नहीं आई और मुझे संदेह था कि क्या उसे जारी रखना चाहिए; मैंने डॉक्टर से सलाह लेने के लिए उनके आने का बेसब्री से इंतज़ार किया।

दरवाजे की घंटी बजी, उसे अंदर आने दिया गया; मुझे इस बात का पूरा यकीन था, क्योंकि मैंने उसकी आवाज चौकीदार से सुनी थी। उसकी आदत थी कि वह सीधे बच्चों के कमरे में जाता, सीढ़ियों की तीन सीढ़ियाँ एक ही बार में चढ़ता और अचानक हमारे सामने आ जाता। पाँच मिनट बीत गए—दस—और मैंने उसे न देखा, न सुना। वह क्या कर रहा होगा? शायद नीचे गलियारे में इंतज़ार कर रहा होगा। छोटी जॉर्जेट अभी भी दर्द भरी आवाज़ में रो रही थी, मुझे अपने जाने-पहचाने नाम "मिन्नी, मिन्नी,

मुझे बहुत तकलीफ हो रही है!" से पुकार रही थी, जिससे मेरा दिल दुख रहा था। मैं यह पता लगाने के लिए नीचे गई कि वह क्यों नहीं आया। गलियारा खाली था। वह कहाँ गायब हो गया? क्या वह भोजनालय में मैडम के साथ था? असंभव: मैं तो कुछ ही देर पहले उसे उसके कमरे में कपड़े बदलते हुए छोड़कर आई थी। मैंने ध्यान से सुना। उस समय तीन विद्यार्थी पास-पास के तीन कमरों में जमकर अभ्यास कर रहे थे — भोजन कक्ष और बड़े और छोटे ड्राइंग रूम। इन कमरों और गलियारे के बीच केवल चौकीदार का कमरा था जो सैलून से जुड़ा हुआ था और मूल रूप से एक शयनकक्ष के लिए बनाया गया था। थोड़ी दूर, प्रार्थना कक्ष में एक चौथे कमरे में, एक दर्जन से अधिक विद्यार्थियों की एक पूरी कक्षा गायन का पाठ ले रही थी, और उसी समय वे एक "बारकारोल" (मुझे लगता है कि वे इसे यही कहते थे) में शामिल हो गए, जिसके ये शब्द मुझे अभी भी याद हैं: "फ्रैशे," "ब्रिसे," और "वेनिसे।" इन परिस्थितियों में, मैं क्या सुन सकता था? निश्चित रूप से बहुत कुछ; अगर यह उद्देश्यपूर्ण होता।

हाँ; मैंने ऊपर बताए गए छोटे से कैबिनेट में, जिसके दरवाज़े के ठीक पास मैं खड़ा था, एक तेज़, तीखी हँसी सुनी — वह दरवाज़ा आधा खुला हुआ था; एक आदमी की आवाज़, कोमल, गहरी, विनती भरी स्वर में, कुछ शब्द बोले, जिनमें से मैंने केवल इतना ही सुना, "भगवान के लिए!" फिर, एक पल के विराम के बाद, डॉ. जॉन बाहर आए, उनकी आँखें चमक रही थीं, लेकिन न तो खुशी से और न ही जीत से; उनके गोरे अंग्रेज़ गाल लाल थे; उनके माथे पर उलझन, पीड़ा, चिंता और फिर भी एक कोमल भाव था।

खुला दरवाजा मेरे लिए एक आड़ का काम कर रहा था; लेकिन अगर मैं पूरी तरह से उसके रास्ते में होती, तो मुझे लगता है कि वह मुझे देखे बिना ही निकल जाता। उसके मन में कुछ अपमान, कुछ तीव्र झुंझलाहट थी: या यूँ कहूँ, उस समय की अपनी भावनाओं को अब लिखते हुए, मैं कहूँगी कि कुछ दुःख, कुछ अन्याय का बोध था। मुझे ऐसा नहीं लगा कि उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची थी, बल्कि ऐसा लगा जैसे उसकी भावनाओं को ठेस पहुँची हो—मुझे तो ऐसा लगा जैसे बेरहमी से चोट पहुँची हो। लेकिन यातना देने वाला कौन था? उस घर में कौन सी हस्ती थी जिसने उसे इतना वश में कर रखा था? मुझे लगता है कि मैडम अपने कमरे में थीं; जिस कमरे से वह निकला था, वह तो केवल द्वारपाल के लिए ही था; और वह, रोसीन मातो, एक सिद्धांतहीन लेकिन सुंदर छोटी फ्रांसीसी महिला, चंचल, नखरीली, दिखावटी,

अभिमानी और लालची—क्या यह निश्चित रूप से उसी के कारण था कि उसे इस कष्ट से गुजरना पड़ा?

लेकिन जब मैं सोच रहा था, तभी उसकी आवाज़, साफ़, हालांकि थोड़ी तीखी, एक मधुर फ्रांसीसी गीत में बदल गई, जो अभी भी थोड़ा खुला दरवाज़ा से गूंज रही थी: मैंने अंदर झाँका, अपनी इंद्रियों पर संदेह करते हुए। वहाँ मेज पर वह "जैकोनास रोज़" की एक सुंदर पोशाक पहने बैठी थी, और एक छोटी सुनहरी टोपी को संवार रही थी: कमरे में उसके अलावा कोई भी जीवित प्राणी नहीं था, सिवाय एक कांच के गोले में कुछ सुनहरी मछलियों, गमलों में कुछ फूलों और जुलाई की तेज़ धूप के।

यहां एक समस्या थी: लेकिन मुझे दवा के बारे में पूछने के लिए ऊपर जाना होगा।

डॉ. जॉन जॉर्जेट के बिस्तर के पास कुर्सी पर बैठे थे; मैडम उनके सामने खड़ी थीं; नन्ही बच्ची की जांच हो चुकी थी और उसे शांत किया जा चुका था, अब वह अपनी पालना में आराम से लेटी थी। जब मैं अंदर आया, तो मैडम बेक डॉक्टर के स्वास्थ्य के बारे में बात कर रही थीं, उनके चेहरे में आए किसी वास्तविक या काल्पनिक बदलाव पर टिप्पणी कर रही थीं, उन पर अधिक काम करने का आरोप लगा रही थीं और आराम करने और ताज़ी हवा लेने की सलाह दे रही थीं। डॉक्टर उनकी बात अच्छे मन से सुन रहे थे, लेकिन हंसते हुए उदासीनता से कह रहे थे कि वह "बहुत अच्छी" हैं और वह पूरी तरह से स्वस्थ महसूस कर रहे हैं। मैडम ने मुझसे बात करने की अपील की - डॉ. जॉन उनकी हरकतों को धीमी नज़र से देख रहे थे, मानो किसी मामूली बात का ज़िक्र होने पर उन्हें हैरानी हो रही हो।

“मिस लूसी, आपको क्या लगता है?” मैडम ने पूछा। “क्या वह पहले से ज्यादा पीला और पतला नहीं दिख रहा?”

डॉ. जॉन की उपस्थिति में मैं शायद ही कभी एक शब्द से अधिक बोलता था; वे ऐसे व्यक्ति थे जिनके साथ मैं हमेशा वही तटस्थ और निष्क्रिय बना रहता था जैसा वे मुझे समझते थे। लेकिन अब, मैंने एक वाक्य में उत्तर देने की छूट ली: और वह वाक्य मैंने जानबूझकर काफी अर्थपूर्ण बनाया।

“इस समय वह अस्वस्थ लग रहे हैं; लेकिन शायद यह किसी अस्थायी कारण से है: डॉ. जॉन शायद परेशान या तंग आ चुके होंगे।” मैं नहीं बता सकती कि उन्होंने मेरी बात को कैसे समझा, क्योंकि मैंने जानकारी के लिए कभी उनका चेहरा नहीं देखा। तभी जॉर्गेट ने अपनी टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में मुझसे पूछा कि क्या उन्हें एक गिलास मीठा

पानी मिल सकता है। मैंने उन्हें अंग्रेज़ी में जवाब दिया। मुझे लगता है कि पहली बार उन्होंने ध्यान दिया कि मैं उनकी भाषा बोल रही हूँ; अब तक वह हमेशा मुझे एक विदेशी समझते थे, मुझे “मैडमोजेल” कहकर संबोधित करते थे और बच्चों के इलाज के बारे में ज़रूरी निर्देश फ्रेंच में देते थे। ऐसा लग रहा था कि वह कुछ कहने ही वाले थे; लेकिन फिर उन्होंने चुप रहना ही बेहतर समझा।

मैडम ने उन्हें फिर से सलाह देना शुरू कर दिया; उन्होंने हंसते हुए अपना सिर हिलाया, उठे और शिष्टाचारपूर्वक, लेकिन फिर भी उस व्यक्ति के लापरवाह रवैये के साथ, जिसे अत्यधिक अवांछित ध्यान से ऊब और बिगड़ने का अनुभव हो रहा था, उन्हें सुप्रभात कहा।

जब वह चला गया, तो मैडम उसी कुर्सी पर बैठ गईं जिसे वह अभी-अभी छोड़कर गए थे; उन्होंने अपनी ठुड्डी हाथ पर टिका ली; उनके चेहरे से सारी जीवंतता और सौम्यता गायब हो गई: वह पत्थर जैसी और कठोर लग रही थीं, मानो अपमानित और उदास हों। उन्होंने एक गहरी आह भरी। सुबह के स्कूल की घंटी ज़ोर से बजी। वह उठीं; जब वह शीशे वाली ड्रेसिंग टेबल के पास से गुज़रीं, तो उन्होंने उसमें अपना प्रतिबिंब देखा। उनके भूरे बालों में एक सफ़ेद बाल था; उन्होंने कांपते हुए उसे नोच लिया। गर्मियों की तेज़ धूप में, उनका चेहरा, हालांकि अभी भी रंगत लिए हुए था, स्पष्ट रूप से जवानी की चमक खो चुका था; और फिर, जवानी की आकृति कहाँ गई? आह, मैडम! आप बुद्धिमान होते हुए भी, आप भी कमज़ोरी जानती थीं। मैंने पहले कभी मैडम पर दया नहीं की थी, लेकिन जब उन्होंने शीशे से नज़रें हटाईं तो मेरा दिल उनके लिए नरम पड़ गया। उन पर कोई विपत्ति आ पड़ी थी। उस चुड़ैल जैसी निराशा ने एक भयानक "जय हो" कहकर उसका स्वागत किया, और उसकी आत्मा ने उस आत्मीयता को अस्वीकार कर दिया।

लेकिन रोसीन! मेरी हैरानी शब्दों में बयान नहीं की जा सकती। उस दिन मुझे उसके क्लिनिक के पास से गुजरने के पाँच मौके मिले, ताकि मैं उसकी खूबसूरती को निहार सकूँ और उसके प्रभाव का राज जान सकूँ। वह सुंदर, जवान थी और उसने बढ़िया पोशाक पहनी थी। ये सभी खूबियाँ थीं, और मुझे लगता है कि किसी भी दार्शनिक के लिए, डॉ. जॉन जैसे नौजवान की किसी भी तरह की पीड़ा और बेचैनी को समझने के लिए ये काफी थीं। फिर भी, मेरे मन में यह इच्छा जाग उठी कि काश वह डॉक्टर मेरा भाई होता; या कम से कम उसकी कोई बहन या माँ होती जो उसे प्यार से

समझा देती। मैं आधी इच्छा कह रहा हूँ; मैंने उसे तोड़ दिया और पूरी इच्छा बनने से पहले ही फेंक दिया, क्योंकि मुझे समय रहते उसकी मूर्खता का एहसास हो गया था। मैंने सोचा, "कोई तो मैडम को उनके युवा डॉक्टर के बारे में समझा दे: और इससे क्या फायदा होगा?"

मुझे लगता है कि मैडम ने खुद को ही उपदेश दिया। उन्होंने न तो कमजोरी दिखाई और न ही खुद को किसी भी तरह से हास्यास्पद बनाया। यह सच है कि न तो उन्हें किसी प्रबल भावना को दबाना पड़ा और न ही किसी कोमल भावना से दुखी होना पड़ा। यह भी सच है कि उनका एक महत्वपूर्ण शौक था, एक वास्तविक व्यवसाय जो उनके समय को भरता था, उनके विचारों को आकर्षित करता था और उनकी रुचियों को बांटता था। यह विशेष रूप से सच है कि उनमें एक सच्ची समझदारी थी जो सभी महिलाओं और सभी पुरुषों में नहीं होती; और इन सभी खूबियों के कारण उन्होंने बुद्धिमानी से व्यवहार किया - उन्होंने अच्छा व्यवहार किया। शाबाश! एक बार फिर, मैडम बेक! मैंने आपको एक कट्टर विरोधी के सामने खड़ा देखा; आपने अच्छी लड़ाई लड़ी और जीत हासिल की!

अध्याय XII.

ताबूत।

रू फॉसेट स्थित घर के पीछे एक बगीचा था - शहर के बीचोंबीच होने के बावजूद काफी बड़ा, और आज भी मुझे वह बगीचा सुखद लगता है: लेकिन समय, दूरी की तरह, कुछ दृश्यों को इतना कोमल बना देता है; और जहाँ चारों ओर पत्थर ही पत्थर हों, खाली दीवार और गर्म फुटपाथ हो, वहाँ एक छोटा सा पौधा कितना अनमोल लगता है, घिरा हुआ और पौधों से भरा हुआ ज़मीन का टुकड़ा कितना प्यारा लगता है!

एक परंपरा प्रचलित थी कि पुराने समय में मैडम बेक का घर एक मठ हुआ करता था। सदियों पहले—कितने साल पहले, यह तो मैं नहीं बता सकता, लेकिन मुझे लगता है कि कुछ सदियाँ बीत चुकी होंगी—जब शहर इस इलाके में फैला नहीं था, और यह खेती योग्य ज़मीन, पगडंडी और घने हरे-भरे एकांत से घिरा हुआ था, जैसा कि किसी धार्मिक स्थल के लिए उपयुक्त होता है—इस स्थान पर कुछ ऐसा घटित हुआ था जिसने भय और आतंक फैलाकर इस जगह को एक भूतिया कहानी की विरासत दे दी थी। एक अस्पष्ट कहानी प्रचलित थी कि एक काली-सफेद नन कभी-कभी, साल की किसी रात या रातों में, इस इलाके के किसी हिस्से में देखी जाती थी। भूत का अस्तित्व तो सदियों पहले ही खत्म हो गया होगा, क्योंकि अब चारों ओर घर बन चुके हैं; लेकिन कुछ मठ के अवशेष, पुराने और विशाल फलदार पेड़ों के रूप में, अभी भी इस स्थान को पवित्र बनाए हुए हैं। और, एक विशाल नाशपाती के पेड़ के नीचे—जो मर चुका था, बस कुछ ही शाखाएँ बची थीं जो वसंत ऋतु में अपनी सुगंधित बर्फ और शरद ऋतु में शहद जैसी मीठी लटकती पत्तियों को फिर से जीवंत कर देती थीं—आप आधी नंगी जड़ों के बीच की काई वाली मिट्टी को खुरचते हुए, एक चिकनी, कठोर और काली शिला की झलक देखते थे। यह किंवदंती प्रचलित थी, हालांकि इसकी पुष्टि नहीं हुई थी और न ही इसका कोई प्रमाण था, कि यह एक तहखाने का द्वार था, जिसके नीचे उस जमीन की गहराई में, जिस पर घास उगती थी और फूल खिलते थे, एक लड़की की हड्डियाँ कैद थीं, जिसे मध्य युग के एक उदास मठवासी समूह ने अपनी प्रतिज्ञा के उल्लंघन के लिए यहाँ जिंदा दफना दिया था। उसकी छाया ही वह थी जिससे कांपते हुए लोग पीढ़ियों तक डरते रहे, उसके निर्धन शरीर के धूल में मिल जाने के बाद भी; उसका काला वस्त्र और सफेद घूंघट, जो डरपोक आँखों के लिए चाँदनी और छाया का मज़ाक उड़ाते थे, जैसे वे बगीचे की झाड़ियों में रात की हवा में लहराते थे।

रोमांटिक बातों से परे, उस पुराने बगीचे का अपना अलग ही आकर्षण था। गर्मियों की सुबह मैं जल्दी उठकर अकेले ही उसका आनंद लेता था; गर्मियों की शामों में, मैं अकेले ही ठहरता था, उगते चाँद से वाकिफ़ होने के लिए, या शाम की हवा के एक हल्के स्पर्श को महसूस करने के लिए, या ओस की गिरती ताज़गी को महसूस करने के बजाय कल्पना करने के लिए। घास हरी-भरी थी, कंकड़ वाले रास्ते सफ़ेद थे; सूरज की रोशनी में चमकते नास्टर्टियम के फूल पुराने, मुरझाए हुए विशाल पेड़ों की

जड़ों के चारों ओर खूबसूरती से गुच्छों में खिले थे। वहाँ एक बड़ा सा मंडप था, जिसके ऊपर बबूल की छाया फैली हुई थी; वहाँ एक छोटा, एकांत मंडप था, जो एक ऊँची और धूसर दीवार के साथ-साथ फैली लताओं के बीच बसा हुआ था, जो अपनी लताओं को सुंदरता की एक गाँठ में समेटे हुए थीं, और चमेली और आइवी के मिलने और आपस में जुड़ने वाली पसंदीदा जगह के चारों ओर अपने गुच्छों को प्रेमपूर्वक लटकाए हुए थीं।

दोपहर के समय, जब मैडम बेक का बड़ा स्कूल पूरी तरह से गुलजार होता था, और छात्र-छात्राएं और पेंशनभोगी लड़के-छात्राएं पास के लड़कों के कॉलेज के छात्रों से होड़ करते हुए अपनी पूरी ताकत और मेहनत से खेल रहे होते थे, तब वह बगीचा निस्संदेह एक नीरस और भीड़भाड़ वाली जगह होती थी। लेकिन सूर्यास्त के समय या सुबह के समय, जब छात्र-छात्राएं घर चले जाते थे और बोर्डिंग छात्र अपनी पढ़ाई में मग्न होते थे; तब शांत गलियों में घूमना और सेंट जीन बैपटिस्ट की घंटियों की मधुर, कोमल और बुलंद आवाज़ सुनना कितना सुखद होता था।

एक शाम मैं टहल रहा था, और हमेशा की तरह शाम ढलने से पहले ही मैं और आगे बढ़ गया था, क्योंकि चारों ओर गहरी शांति छाई हुई थी, हल्की ठंडक थी, और फूलों की खुशबूदार महक थी, जिन्हें सूरज की रोशनी भी नहीं जीत सकती थी, अब ओस की बूंदों की महक उन्हें लुभा रही थी। प्रार्थना कक्ष की खिड़की से आती रोशनी में मैंने देखा कि कैथोलिक परिवार शाम की प्रार्थना के लिए इकट्ठा हुआ था - एक ऐसा अनुष्ठान, जिसमें मैं, एक प्रोटेस्टेंट होने के नाते, कभी-कभी शामिल नहीं होता था।

“बस एक पल और रुकिए,” एकांत और ग्रीष्म ऋतु के चाँद ने फुसफुसाते हुए कहा, “हमारे साथ रहिए: अब सचमुच सब शांत है; अगले पंद्रह मिनट तक आपकी उपस्थिति की कमी महसूस नहीं होगी: दिन की गर्मी और भागदौड़ ने आपको थका दिया है; इन अनमोल पलों का आनंद लीजिए।”

इस बगीचे में बने घरों के खिड़कीविहीन पिछले हिस्से, और विशेष रूप से एक तरफ का पूरा हिस्सा, इमारतों की एक लंबी कतार के पीछे से घिरा हुआ था - जो पड़ोसी कॉलेज के बोर्डिंग हाउस थे। हालाँकि, यह पिछला हिस्सा पूरी तरह से पत्थर का बना हुआ था, सिवाय ऊपर की ओर कुछ अटारी के छोटे-छोटे छेदों के, जो महिला नौकरानियों के सोने के कमरों से खुलते थे, और एक निचली मंजिल पर एक खिड़की

के, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह किसी शिक्षक का कमरा या अध्ययन कक्ष था। लेकिन, इस तरह सुरक्षित होने के बावजूद, बगीचे के उस तरफ की बहुत ऊंची दीवार के समानांतर चलने वाली एक गली में विद्यार्थियों का प्रवेश वर्जित था। इसे वास्तव में "सुरक्षित गली" कहा जाता था, और कोई भी लड़की अगर वहाँ कदम रखती, तो उसे मैडम बेक के संस्थान के सौम्य नियमों के अनुसार कड़ी से कड़ी सजा भुगतनी पड़ती। शिक्षक वास्तव में वहाँ बिना किसी डर के जा सकते थे; लेकिन चूंकि रास्ता संकरा था, और उपेक्षित झाड़ियाँ दोनों ओर बहुत घनी और पास-पास उगी हुई थीं, जो ऊपर शाखाओं और पत्तियों की एक छत बुन रही थीं, जिसमें से सूर्य की किरणें केवल कभी-कभार ही छनकर आती थीं, इसलिए इस गली में दिन के समय भी शायद ही कभी कोई प्रवेश करता था, और शाम ढलने के बाद तो इससे पूरी तरह से परहेज किया जाता था।

शुरू से ही मेरा मन करता था कि मैं इस नियम का अपवाद बन जाऊं: इस रास्ते का एकांत, यहाँ का अंधकारमय वातावरण मुझे आकर्षित करता था। लंबे समय तक, अलग दिखने का डर मुझे डराता रहा; लेकिन धीरे-धीरे, जैसे-जैसे लोग मुझे और मेरी आदतों को, और मेरे स्वभाव में बसी उन विलक्षणताओं को समझने लगे—ये विलक्षणताएं निश्चित रूप से इतनी आकर्षक नहीं थीं कि लोगों का ध्यान आकर्षित करें, और शायद इतनी स्पष्ट भी नहीं थीं कि किसी को ठेस पहुंचे, बल्कि ये मुझमें जन्मजात थीं और मेरे साथ ही जन्मी थीं, और मेरी पहचान से अलग नहीं हो सकती थीं—धीरे-धीरे मैं इस संकरे रास्ते पर नियमित रूप से चलने लगा। मैंने घनी झाड़ियों के बीच उगने वाले कुछ रंगहीन फूलों की देखभाल करना शुरू कर दिया; मैंने पिछली शरद ऋतुओं के अवशेषों को साफ किया, जो दूर छोर पर एक देहाती आसन को ढक रहे थे। गोटन से रसोइया, एक बाल्टी पानी और एक ब्रश उधार लेकर, मैंने उस आसन को साफ किया। मैडम ने मुझे काम करते देखा और मुस्कुराकर मेरी सराहना की: चाहे वह ईमानदारी से मुस्कुराई हों या नहीं, मुझे नहीं पता; लेकिन वह ईमानदार लग रही थीं।

“देखो तो सही,” वह चिल्लाई, “मिस लूसी कितनी साफ-सुथरी हैं! क्या तुम्हें यह गली पसंद है, मीस?” “हाँ,” मैंने कहा, “यह शांत और छायादार है।”

“यह ठीक है,” उसने बड़े ही सौम्य भाव से कहा; और उसने मुझे सलाह दी कि मैं जितना चाहूँ उतना ही इस काम में लगा रहूँ, क्योंकि मुझे निगरानी का काम नहीं सौंपा

गया था, इसलिए मुझे विद्यार्थियों के साथ चलने की ज़रूरत नहीं है: बस मैं उसके बच्चों को वहाँ आने और मेरे साथ अंग्रेज़ी में बात करने की अनुमति दे दूँ।

उस रात, मैं फफूंद और काई से मुक्त एक छिपी हुई सीट पर बैठी थी, और शहर की दूर से आती हुई आवाज़ें सुन रही थी। सच तो यह था कि वे आवाज़ें दूर नहीं थीं: यह विद्यालय शहर के केंद्र में था; इसलिए, पार्क तक पैदल पाँच मिनट का रास्ता था, और आलीशान इमारतों तक मुश्किल से दस मिनट। पास ही चौड़ी सड़कें थीं जो जगमगाती रोशनी से भरी थीं, और उस समय जीवन से भरपूर थीं: गाड़ियाँ उनमें से होकर नृत्य-कला या ओपेरा के लिए जा रही थीं। वही समय जो हमारे मठ के लिए कर्फ्यू का समय था, जो हर दीपक को बुझा देता था और हर सोफे के चारों ओर पर्दा गिरा देता था, हमारे चारों ओर के जीवंत शहर के लिए उत्सवपूर्ण आनंद का आह्वान था। हालाँकि, मैंने इस विरोधाभास के बारे में नहीं सोचा: मेरे स्वभाव में आनंद की भावनाएँ कम थीं; मैंने कभी नृत्य-कला या ओपेरा नहीं देखा था; और यद्यपि मैंने अक्सर उनके वर्णन सुने थे, और उन्हें देखने की इच्छा भी की थी, यह उस व्यक्ति की इच्छा नहीं थी जो किसी आनंद को पाने की आशा रखता हो - जो किसी उज्ज्वल दूर के क्षेत्र में चमकने के लिए खुद को योग्य समझता हो, यदि वह वहाँ अपना रास्ता बना ले; यह कुछ पाने की लालसा नहीं थी, न ही कुछ चखने की भूख; बस एक नई चीज को देखने की शांत इच्छा थी।

आकाश में चाँद था, पूरा चाँद नहीं, बल्कि एक नन्हा अर्धचंद्र। मैंने उसे ऊपर पेड़ों की डालियों के बीच से देखा। वह और उसके बगल में दिखाई देने वाले तारे, उस जगह पर अजनबी नहीं थे जहाँ बाकी सब कुछ अजनबी था: मेरा बचपन उन्हें जानता था। मैंने उस सुनहरे चिन्ह को, जिसके घुमावदार हिस्से में एक गहरा गोला नीले आकाश पर झुका हुआ था, पुराने इंग्लैंड में एक पुराने खेत के ऊपर एक पुराने कंटीले पेड़ के पास देखा था, ठीक वैसे ही जैसे अब वह इस महाद्वीपीय राजधानी में एक भव्य मीनार के पास झुका हुआ था।

ओह, मेरा बचपन! मुझमें भावनाएँ थीं: मैं निष्क्रिय जीवन जीती थी, कम बोलती थी, ठंडी निगाहों से देखती थी, बीते दिनों को याद करके मैं उन्हें महसूस कर सकती थी। वर्तमान के बारे में, संयमी रहना बेहतर था; भविष्य के बारे में - मेरे जैसे भविष्य के बारे में - मर जाना ही बेहतर था। और एक तरह की बेहोशी और गहरी समाधि की अवस्था में, मैं अपने स्वभाव के सार को ध्यानपूर्वक थामे रखती थी।

उस समय मुझे हर वो बात अच्छी तरह याद है जो मुझे उत्तेजित कर सकती थी—उदाहरण के लिए, मौसम की कुछ दुर्घटनाएँ तो मेरे लिए लगभग खौफ का कारण थीं, क्योंकि वे मेरे उस अंतर्मन को जगा देती थीं जिसे मैं हमेशा शांत रखने की कोशिश करता था, और एक ऐसी तीव्र लालसा को जन्म देती थीं जिसे मैं संतुष्ट नहीं कर सकता था। एक रात आंधी-तूफान आ गया; एक तरह के बवंडर ने हमें हमारे बिस्तरों में हिला दिया: कैथोलिक घबराकर उठ खड़े हुए और अपने संतों से प्रार्थना करने लगे। जहाँ तक मेरी बात है, उस आंधी ने मुझे अत्याचार की तरह जकड़ लिया: मैं बुरी तरह से जागा और जीने के लिए विवश हो गया। मैं उठा और कपड़े पहने, और अपने बिस्तर के पास वाली खिड़की से बाहर रेंगते हुए, उसकी चौखट पर बैठ गया, अपने पैर पास की एक निचली इमारत की छत पर रखे। चारों ओर नमी थी, तूफान था, घोर अंधेरा था। छात्रावास के अंदर वे रात के दीपक के चारों ओर घबराकर इकट्ठा हो गए और जोर-जोर से प्रार्थना करने लगे। मैं अंदर नहीं जा सका: उस तूफानी पल में, जो काला और गरज से भरा था, ठहर जाने का आनंद इतना अप्रतिरोध्य था, मानो वह एक ऐसी कविता रच रहा हो जिसे भाषा ने कभी मनुष्य तक नहीं पहुँचाया हो - बादलों का वह दृश्य इतना भयानक और शानदार था, जो सफेद और चकाचौंध कर देने वाली बिजली की कड़ियों से फटकर छेदित हो रहे थे।

उस पल से लेकर उसके बाद चौबीस घंटों तक, मैं बड़ी बेसब्री से तड़पता रहा कि कोई मुझे मेरे वर्तमान जीवन से बाहर निकाल दे और मुझे ऊपर और आगे ले जाए। इस तड़प और इसी तरह की सभी तड़पों को कुचलना आवश्यक था; और मैंने वही किया, प्रतीकात्मक रूप से, जैसे जाएल ने सिसेरा के साथ किया था, उनकी कनपटी में कील ठोककर। सिसेरा के विपरीत, वे मरे नहीं: वे क्षण भर के लिए अचेत हो गए, और बीच-बीच में विद्रोही भाव से कील पर छटपटाते रहे: तब कनपटी से खून बहने लगा और मस्तिष्क अंदर तक कांप उठा।

आज रात मैं न तो इतना विद्रोही था और न ही इतना दुखी। मेरा सिसरा तम्बू में शांति से सो रहा था; और अगर नींद में भी उसका दर्द थोड़ा-बहुत महसूस हो रहा था, तो मानो कोई देवदूत—आदर्श—उसके पास घुटनों के बल बैठा हो, उसके शांत माथे पर मरहम लगा रहा हो, उसकी बंद आँखों के सामने एक जादुई दर्पण रखे हो, जिसमें मीठे, गंभीर दृश्य सपनों में दोहराए जाते थे, और अपने चाँदनी जैसे पंखों और वस्त्र से उस सोए हुए व्यक्ति पर, तम्बू की दहलीज पर, और बाहर के पूरे परिदृश्य पर प्रकाश

डाल रहा हो। कठोर स्त्री जैल अलग बैठी थी, अपने बंदी पर कुछ नरम पड़ रही थी; लेकिन हेबर के घर लौटने की अटूट उम्मीद में डूबी हुई थी। इन शब्दों से मेरा तात्पर्य यह है कि रात की शीतल शांति और ओस भरी मिठास ने मुझे आशा से भर दिया: किसी निश्चित बिंदु पर आशा नहीं, बल्कि प्रोत्साहन और मन की शांति का एक सामान्य भाव।

क्या ऐसा मधुर, शांत और अप्रत्याशित वातावरण शुभ संकेत नहीं होना चाहिए था? अफसोस, कुछ भी अच्छा नहीं हुआ! तभी अचानक कठोर वास्तविकता फूट पड़ी - अपनी पूरी दुष्टता और घिनौनेपन के साथ, जैसा कि वह अक्सर होती है।

पगडंडी, पेड़ों और ऊंची दीवार के ऊपर बने उस पत्थर के ढेर की गहरी शांति के बीच, मुझे एक आवाज़ सुनाई दी; एक खिड़की (यहाँ सभी खिड़कियाँ कब्ज़ों पर खुलने वाली खिड़कियाँ हैं) चरमरा उठी। इससे पहले कि मैं ऊपर देखकर समझ पाता कि किस मंजिल पर, कहाँ या किसने खिड़की खोली है, ऊपर का एक पेड़ हिल गया, मानो किसी चीज़ से टकराया हो; कोई वस्तु मेरे पैरों के पास आकर गिर पड़ी।

सेंट जीन बैपटिस्ट की घड़ी में नौ बज रहे थे; दिन ढल रहा था, लेकिन अंधेरा नहीं था: अर्धचंद्र की रोशनी कुछ खास मदद नहीं कर रही थी, लेकिन आकाश के उस बिंदु की गहरी सुनहरी चमक जहाँ सूर्य की किरणें अंतिम बार पड़ रही थीं, और ऊपर फैले विशाल आकाश की निर्मल स्पष्टता ने ग्रीष्म ऋतु की धुंधली रोशनी को बनाए रखा था; अपनी अंधेरी सैर में भी, एक खुले स्थान के पास पहुँचकर, मैं छोटे अक्षरों में छपी हुई कोई चीज़ पढ़ सकता था। तब यह देखना आसान था कि वह वस्तु एक डिब्बा थी, सफेद और रंगीन हाथीदांत का एक छोटा सा डिब्बा; उसका ढीला ढक्कन मेरे हाथ में खुल गया; उसके अंदर वायलेट फूल थे, वायलेट फूलों ने गुलाबी कागज के एक कसकर मोड़े हुए टुकड़े को ढक रखा था, जिस पर एक नोट लिखा था, "Pour la robe grise" (ग्रे रंग की पोशाक के लिए)। मैंने वास्तव में फ्रेंच ग्रे रंग की पोशाक पहनी हुई थी।

अच्छा। क्या यह प्रेम पत्र था? मैंने इसके बारे में सुना तो था, लेकिन अब तक इसे देखने या छूने का सौभाग्य नहीं मिला था। क्या इस समय मेरी उंगली और अंगूठे के बीच यही वस्तु थी?

लगभग: मैंने एक पल के लिए भी ऐसा सपना नहीं देखा था। किसी प्रेमी या चाहने वाले का ख्याल तो मेरे मन में कभी आया ही नहीं था। सभी शिक्षकों के मन में किसी

न किसी प्रेमी का सपना होता था; एक (हालांकि वह स्वभाव से भोली थी) तो भावी पति पर विश्वास करती थी। चौदह वर्ष से अधिक आयु के सभी विद्यार्थियों को किसी न किसी भावी दूल्हे के बारे में पता था; दो-तीन की सगाई तो उनके माता-पिता ने बचपन से ही कर दी थी: लेकिन ऐसी संभावनाओं से उत्पन्न होने वाली भावनाओं और आशाओं के दायरे में मेरी अटकलों, और तो और मेरे अनुमानों का भी कभी कोई स्थान नहीं था। यदि अन्य शिक्षक शहर जाते, या सड़कों पर टहलते, या केवल प्रार्थना सभा में जाते, तो उन्हें (उनके द्वारा बताई गई बातों के अनुसार) किसी न किसी "विपरीत लिंग" के व्यक्ति से मिलने का पूरा यकीन होता था, जिसकी मंत्रमुग्ध कर देने वाली, गंभीर निगाहें उन्हें अपनी आकर्षण शक्ति का एहसास कराती थीं। मैं यह नहीं कह सकती कि इस मामले में मेरा अनुभव उनसे मेल खाता था। मैं चर्च जाती थी और टहलती थी, और मुझे पूरा विश्वास है कि किसी ने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। रू फॉसेट में शायद ही कोई लड़की या औरत ऐसी थी जिसने हमारे युवा डॉक्टर की नीली आँखों से कभी न कभी प्रशंसा भरी किरण न पाई हो। मुझे, चाहे यह कितना भी विनम्रता भरा लगे, खुद को छोड़कर यह कहना पड़ रहा है: जहाँ तक मेरा सवाल था, वे नीली आँखें निर्दोष और आकाश की तरह शांत थीं, जिनके रंग से वे मिलती-जुलती प्रतीत होती थीं। इसलिए ऐसा हुआ कि मैंने दूसरों को बात करते सुना, उनकी प्रसन्नता, आत्मविश्वास और आत्मसंतुष्टि पर अक्सर आश्चर्य किया, लेकिन मैंने ऊपर देखने और उस रास्ते पर नज़र डालने की जहमत नहीं उठाई जिस पर वे इतने आत्मविश्वास से चल रहे थे। तो यह कोई प्रेम पत्र नहीं था; और इसके विपरीत दृढ़ विश्वास के साथ ही मैंने चुपचाप इसे खोला। यह इस प्रकार था — मैं अनुवाद करता हूँ: —

“मेरे सपनों की परी! वादा निभाने के लिए हज़ार-हज़ार धन्यवाद: मैंने तो इसकी पूर्ति की उम्मीद भी नहीं की थी। मुझे लगा था कि तुम मज़ाक कर रही हो; और फिर तुम्हें लगा कि यह काम इतने खतरों से भरा है - समय इतना असमय है, गली इतनी सुनसान है - अक्सर, जैसा कि तुमने कहा था, उस अजगर, अंग्रेज़ी शिक्षिका, का साया रहता है - une véritable bégueule Britannique à ce que vous dites - espèce de monstre, brusque et rude comme un vieux caporal de grenadiers, et revêche comme une religieuse” (पाठक मेरी विनम्रता को क्षमा करेंगे कि मैंने अपने इस सौम्य व्यक्तित्व के इस प्रशंसात्मक

वर्णन में मूल भाषा का हल्का सा आवरण बनाए रखा है)। "आपको पता है," इस अनमोल भावपूर्ण लेखन में आगे लिखा गया, "कि नन्हा गुस्ताव, अपनी बीमारी के कारण, एक स्वामी के कमरे में ले जाया गया है— उस विशेष कमरे में, जिसकी जाली से आपका कारागार दिखाई देता है। वहाँ, मैं, दुनिया का सबसे अच्छा चाचा, उससे मिलने गया हूँ। मैं कितनी कांपते हुए खिड़की के पास पहुँचा और आपके स्वर्ग में झाँका— मेरे लिए तो स्वर्ग है, लेकिन आपके लिए रेगिस्तान!— मुझे कितना डर लगा कि कहीं मुझे खालीपन या ऊपर बताए गए अजगर का सामना न करना पड़े! मेरा दिल खुशी से कितना धड़क उठा जब ईर्ष्यालु डालियों के बीच से मैंने आपकी सुंदर भूसे की टोपी की चमक और आपकी धूसर पोशाक की लहराती हुई झलक देखी — वह पोशाक जिसे मैं हज़ारों में भी पहचान सकता हूँ। लेकिन क्यों, मेरी परी, आप ऊपर नहीं देख रही हैं? कितनी क्रूरता है मुझे उन मनमोहक आँखों की एक किरण से भी वंचित करना!— एक नज़र ही मुझे कितना सुकून दे देती! मैं यह सब जल्दबाजी में लिख रहा हूँ; जब चिकित्सक गुस्ताव की जाँच कर रहा था, मैंने मौका पाकर इसे एक छोटे से पत्र में बंद कर दिया। ताबूत, फूलों के गुलदस्ते के साथ, सबसे मधुर फूल जो खिलते हैं - फिर भी तुमसे कम मधुर, मेरी पेरी - मेरी सर्वप्रिय! सदा तुम्हारी - तुम भली-भांति जानती हो कि कौन!

"काश मुझे पता होता कि यह किसने लिखा है," मैंने कहा; और मेरी यह इच्छा इस दस्तावेज़ में संबोधित व्यक्ति से कहीं अधिक संबंधित थी, न कि इसके लेखक से। शायद यह सगाईशुदा छात्राओं में से किसी एक के मंगेतर का संदेश था; और अगर ऐसा था, तो कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ था और न ही ऐसा कोई इरादा था — बस एक छोटी सी अनियमितता थी। कई लड़कियों के, बल्कि अधिकांश के, भाई या चचेरे भाई पास के कॉलेज में पढ़ते थे। लेकिन "ग्रे रंग की पोशाक, पुआल की टोपी," यहाँ एक संकेत था — एक बहुत ही भ्रामक संकेत। पुआल की टोपी एक साधारण बगीचे की टोपी थी, जो मेरे अलावा लगभग बीस और लोगों के पास थी। धूसर रंग की पोशाक से भी कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिल रहा था। मैडम बेक खुद भी आजकल धूसर रंग की पोशाक पहनती थीं; एक अन्य शिक्षिका और तीन पेंशनभोगी छात्राओं ने भी मेरे जैसी ही धूसर रंग और कपड़े की पोशाकें खरीदी थीं: यह उस समय चलन में रहने वाला एक तरह का रोज़मर्रा का पहनावा था।

इसी बीच, सोचते-सोचते मुझे एहसास हुआ कि मुझे अंदर जाना ही होगा।

छात्रावास में जलती-बुझती बत्तियाँ बता रही थीं कि प्रार्थना समाप्त हो गई है और विद्यार्थी सोने जा रहे हैं। आधा घंटा और, फिर सारे दरवाजे बंद हो जाएँगे और सारी बत्तियाँ बुझ जाएँगी। सामने का दरवाजा अभी भी खुला था, ताकि गर्म कमरे में गर्मी की रात की ठंडक अंदर आ सके; पास ही स्थित चौकीदार की अलमारी से एक दीपक चमक रहा था, जिससे लंबा प्रवेश द्वार दिखाई दे रहा था, जिसके एक तरफ दो पल्लों वाला ड्राइंग रूम का दरवाजा था और दूसरी तरफ बड़ा मुख्य द्वार था।

अचानक, घंटी तेज़ी से बजी—तेज़, लेकिन ज़ोर से नहीं—एक सधी हुई झंकार—एक तरह की चेतावनी भरी धातु की फुसफुसाहट। रोज़ीन अपनी अलमारी से झट से निकली और दरवाज़ा खोलने दौड़ी। जिस व्यक्ति को उसने अंदर आने दिया, वह दो मिनट तक उससे बातचीत करता रहा: मानो कोई झिझक हो, कोई देरी हो। रोज़ीन हाथ में लैंप लिए बगीचे के दरवाज़े पर पहुँची; वह सीढ़ियों पर खड़ी हो गई, लैंप उठाकर, चारों ओर अस्पष्ट रूप से देखने लगी।

"क्या कहानी है!" वह नखरे भरी हंसी के साथ चिल्लाई। "वहाँ कोई नहीं गया है।"

"मुझे जाने दो," एक जानी-पहचानी आवाज़ ने विनती की: "मैं बस पाँच मिनट माँग रहा हूँ;" और एक परिचित आकृति, लंबी और भव्य (जैसा कि हम सभी रू फॉसेट के निवासी सोचते थे), घर से निकली और क्यारियों और पगडंडियों के बीच से गुज़रने लगी। यह एक तरह का पाप था—उस जगह पर, उस समय किसी पुरुष का प्रवेश; लेकिन वह खुद को विशेषाधिकार प्राप्त समझता था, और शायद उसे रात के शांत वातावरण पर भरोसा था। वह गलियों में भटकता रहा, इधर-उधर देखता रहा—वह झाड़ियों में खो गया, फूलों को रौंदता और डालियों को तोड़ता हुआ—आखिरकार वह उस "वर्जित पगडंडी" में पहुँच गया। वहाँ मेरी उससे मुलाक़ात हुई, मानो किसी भूत की तरह।

"डॉक्टर जॉन! यह मिल गया है।"

उन्होंने यह नहीं पूछा कि किसने बनाया, क्योंकि अपनी तेज नजर से उन्होंने देख लिया था कि वह मेरे हाथ में है।

"उसके साथ विश्वासघात मत करो," उसने मेरी ओर ऐसे देखते हुए कहा मानो मैं सचमुच कोई अजगर हूँ।

"अगर मुझमें कभी विश्वासघात करने की इच्छा भी होती, तो भी मैं उस बात का

खुलासा नहीं करता जिसके बारे में मुझे पता ही नहीं," मेरा जवाब था। "नोट पढ़ो, और तुम्हें पता चल जाएगा कि उसमें कितनी कम जानकारी दी गई है।"

"शायद तुमने इसे पढ़ा होगा," मैंने मन ही मन सोचा; फिर भी मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने इसे लिखा है: यह तो उसकी शैली हो ही नहीं सकती थी; इसके अलावा, मैं इतना मूर्ख था कि मैंने सोचा कि मुझे इस तरह के नामों से पुकारने में उसे कुछ तकलीफ तो होगी। उसके चेहरे के हाव-भाव ने ही उसकी बात को सही साबित कर दिया; पढ़ते-पढ़ते उसका चेहरा लाल हो गया और वह उत्तेजित हो गया।

"यह तो वाकई हद से ज्यादा है: यह क्रूरता है, यह अपमानजनक है," ये शब्द उसके मुंह से निकले।

उसके चेहरे पर इतना भाव देखकर मुझे लगा कि यह बहुत क्रूर था। चाहे वह दोषी हो या न हो; मुझे ऐसा लगा कि कोई और उससे भी ज्यादा दोषी होना चाहिए।

"तुम इसके बारे में क्या करोगे?" उसने मुझसे पूछा। "क्या तुम मैडम को बताओगे?"

बेक, तुमने जो पाया है, उससे हलचल मचा दो - एक रहस्य?

मैंने सोचा कि मुझे बताना चाहिए, और मैंने ऐसा कहा भी; साथ ही यह भी कहा कि मुझे नहीं लगता कि इससे कोई हंगामा या राज़ खुलेगा: मैडम अपने प्रतिष्ठान से जुड़े इस तरह के मामले को लेकर शोर मचाने के लिए बहुत ही समझदार थीं।

वह नीचे देखते हुए ध्यानमग्न खड़े थे। वे इतने स्वाभिमानी और इतने ईमानदार थे कि उस बात पर मुझसे गोपनीयता की भीख नहीं मांग रहे थे, जिसे बताना स्पष्ट रूप से मेरा कर्तव्य था। मैं न्याय करना चाहता था, फिर भी उन्हें दुखी या आहत नहीं करना चाहता था। तभी रोसीन ने खुले दरवाजे से बाहर झांका; वह हमें नहीं देख सकीं, हालांकि पेड़ों के बीच से मैं उन्हें साफ देख सकता था: उनकी पोशाक मेरी तरह ही धूसर थी। इस घटना को पिछली घटनाओं के साथ मिलाकर देखने पर मुझे लगा कि शायद यह मामला, चाहे कितना भी दुखद क्यों न हो, ऐसा था जिसमें मुझे दखल देने की कोई ज़रूरत नहीं थी। इसलिए मैंने कहा, "यदि आप मुझे आश्वस्त कर सकते हैं कि मैडम बेक के किसी भी छात्र का इस मामले में कोई हाथ नहीं है, तो मैं किसी भी तरह के हस्तक्षेप से दूर रहना पसंद करूंगा। संदूक, गुलदस्ता और पत्र ले जाइए; मैं इस पूरे मामले को खुशी-खुशी भूल जाता हूं।"

"वहाँ देखो!" उसने अचानक फुसफुसाते हुए कहा, जैसे ही उसका हाथ मेरे द्वारा दी

गई चीज़ पर पहुंचा, और उसी समय उसने शाखाओं के बीच से इशारा किया।

मैंने देखा। देखो, मैडम शॉल, गाउन और चप्पलों में, धीरे से सीढ़ियों से उतर रही थीं और बगीचे में बिल्ली की तरह फुर्ती से चक्कर लगा रही थीं: दो मिनट में ही वो डॉ. जॉन के पास पहुँच जातीं। लेकिन अगर वो बिल्ली जैसी थीं, तो वो तेंदुए की तरह लग रहे थे: जब वो चाहते थे, तो उनके कदमों की आहट किसी से कम नहीं थी। वो उन्हें देख रहे थे, और जैसे ही वो एक कोने से मुड़ीं, वो दो खामोश छलांगों में बगीचे में चले गए। वो फिर से दिखाई दीं, और वो गायब हो गए। रोसीन ने उनकी मदद की, तुरंत उनके और उनकी शिकारिन के बीच दरवाजा लगा दिया। मैं भी बच सकता था, लेकिन मैंने मैडम से खुलेआम मिलना बेहतर समझा।

हालांकि शाम के समय बगीचे में समय बिताना मेरी एक नियमित और सर्वविदित आदत थी, फिर भी आज तक मैं इतनी देर तक कभी नहीं रुका था। मुझे पूरा यकीन था कि मैडम ने मुझे याद किया होगा—मेरी तलाश में आई होंगी, और अब अचानक मुझ पर झपटने की योजना बना रही होंगी। मुझे डांट की उम्मीद थी। लेकिन नहीं। मैडम पूरी तरह से दयालु थीं। उन्होंने कोई आपत्ति तक नहीं जताई; उन्होंने जरा भी हैरानी नहीं दिखाई। अपनी उस बेजोड़ चतुराई से, जिसमें मेरा मानना है कि उनका कोई मुकाबला नहीं था, उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि वह बस शाम की हल्की ठंड का आनंद लेने के लिए बाहर गई थीं।

“कितनी सुंदर रात है!” उसने तारों की ओर देखते हुए कहा — चाँद अब जीन बैपटिस्ट के विशाल टावर के पीछे छिप चुका था। “यह अच्छा है? क्योंकि हवा ताज़ी है!”

और मुझे अंदर भेजने के बजाय, उसने मुझे रोक लिया और मुख्य गली में कुछ देर उसके साथ घूमने लगी। जब हम दोनों वापस अंदर आए, तो उसने दरवाज़े की सीढ़ियाँ चढ़ते समय सहारा देने के लिए मेरे कंधे पर अपना हाथ रख दिया; विदाई के समय, उसने अपना गाल मेरे होठों से लगाया और "शुभ संध्या, मेरी प्यारी; अच्छी नींद लेना!" कहकर रात के लिए अपना स्नेहपूर्ण अलविदा कहा।

मैं अपने सोफे पर लेटा हुआ, जागता हुआ और सोच में डूबा हुआ था, तभी मैंने खुद को मुस्कुराते हुए पाया—मैडम को देखकर मुस्कुरा रहा था। उनके व्यवहार की शालीनता और सौम्यता, उन्हें जानने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए, इस बात का पक्का संकेत थी कि उनके मन में किसी न किसी तरह का संदेह चल रहा था। किसी

न किसी नज़रिए से, किसी पेड़ की शाखा से या खुली खिड़की से, उन्होंने निस्संदेह उस रात की घटनाओं की एक झलक देखी होगी, चाहे वह दूर से हो या पास से, धोखे से हो या जानकारी देने वाली। निगरानी की कला में निपुण होने के कारण, यह लगभग असंभव था कि कोई संदूक उनके बगीचे में फेंका जाए, या कोई घुसपैठिया उसे ढूंढने के लिए उनके रास्ते से गुजरे, और उन्हें हिलती हुई शाखा, गुजरती हुई छाया, अप्रत्याशित कदमों की आहट या धीमी फुसफुसाहट (और हालांकि डॉ. जॉन ने मुझसे जो कुछ शब्द कहे थे, वे बहुत धीमे थे, फिर भी मुझे लगा कि उनकी आवाज की गूंज पूरे मठ परिसर में गूंज रही थी)—बिना किसी बात के, कि उन्हें अपने परिसर में घटित हो रही असाधारण घटनाओं का आभास न हुआ हो। वह किन चीजों को शायद देख भी न पाती, या उस समय खोज भी न पाती; लेकिन एक स्वादिष्ट, उलझी हुई साजिश उसे सुलझाने के लिए लुभा रही थी; और उसी के बीच, मकड़ी के जालों में लिपटी हुई, क्या उसने "मीस लूसी" को मूर्ख मक्खी की तरह अनाड़ीपन से फंसा नहीं लिया था?

अध्याय XIII.

बेमौसम छींक आना।

पिछले अध्याय में वर्णित उस छोटे से दृश्य के चौबीस घंटे के भीतर ही मुझे मैडम पर फिर से मुस्कुराने का - बल्कि हंसने का - अवसर मिला।

विलेट की जलवायु किसी भी अंग्रेज़ शहर की तरह परिवर्तनशील है, हालांकि उतनी उमस भरी नहीं। उस सुहावने सूर्यास्त के बाद तेज़ हवाओं वाली रात आई, और अगला पूरा दिन शुष्क तूफ़ान जैसा रहा—अंधेरा, बादलों से घिरा, फिर भी बारिश नहीं हुई—सड़कें रेत और धूल से धुंधली थीं, जो चौराहों से उड़कर आई थी। मुझे नहीं पता कि

सुहावने मौसम में भी मैं पढ़ाई और मनोरंजन के लिए वह शाम वहीं बिताता जहाँ मैंने कल बिताई थी। मेरी गली, और वास्तव में, बगीचे के सभी रास्ते और झाड़ियाँ, एक नए, लेकिन अप्रिय आकर्षण में तब्दील हो गई थीं; उनका एकांत अब अनिश्चित हो गया था; उनकी शांति—अस्थिर। वह खिड़की जिससे बर्फ़ गिरती थी, उसने उस कभी प्यारे कोने को भद्दा बना दिया था जिस पर वह नज़र रखती थी; और कहीं और, फूलों की आँखों में चमक आ गई थी, और पेड़ों के तनों की गांठें गुप्त कानों की तरह सुन रही थीं। वहाँ कुछ पौधे सचमुच डॉ. जॉन के उजाले में कुचले गए थे, और उनकी जल्दबाजी और लापरवाही भरी प्रगति को देखते हुए, मैं उन्हें सहारा देना, पानी देना और पुनर्जीवित करना चाहती थी; उन्होंने क्यारियों पर भी कुछ पदचिह्न छोड़े थे: लेकिन तेज हवा के बावजूद, मैंने सुबह-सुबह ही कुछ समय निकालकर उन्हें मिटा दिया, इससे पहले कि आम लोगों की नज़र उन पर पड़ती। एक तरह की गंभीर संतुष्टि के साथ, मैं अपनी मेज पर बैठकर जर्मन पढ़ने लगी, जबकि छात्र अपनी शाम की कक्षाओं में लग गए; और अन्य शिक्षिकाएँ अपने कढ़ाई के काम में जुट गईं।

शाम की पढ़ाई का स्थान हमेशा भोजन कक्ष होता था, जो तीनों कक्षाओं या स्कूल के कमरों से काफी छोटा कमरा था; क्योंकि यहाँ बोर्डिंग छात्रों के अलावा किसी को भी प्रवेश नहीं दिया जाता था, और उनकी संख्या भी केवल बीस ही थी। दो मेजों के ऊपर छत से दो दीपक लटके हुए थे; ये शाम ढलते ही जलाए जाते थे, और इनके जलने से संकेत मिलता था कि स्कूल की किताबें एक तरफ रख दी जाएँ, गंभीर मुद्रा अपनाई जाए, सामान्य मौन स्थापित किया जाए, और फिर "ला लेक्चर पियूज़" (अतिशयोक्तिपूर्ण पाठ) शुरू हो। मैंने जल्द ही पाया कि यह "अतिशयोक्तिपूर्ण पाठ" मुख्य रूप से बुद्धि को स्वस्थ रूप से कष्ट देने, तर्क को उपयोगी रूप से अपमानित करने और सामान्य ज्ञान के लिए एक ऐसी खुराक के रूप में तैयार किया गया था जिसे वह आराम से पचा सके और जितना हो सके उतना फले-फूले।

प्रकाशित पुस्तक (जिसे कभी बदला नहीं गया, बल्कि पूरा होने पर फिर से शुरू किया गया) एक आदरणीय ग्रंथ थी, जो पहाड़ों जितनी पुरानी और होटल डी विले जितनी धूसर थी।

उस किताब को एक बार अपने हाथों में लेने, उसके पवित्र पीले पन्नों को पलटने, उसका शीर्षक जानने और अपनी आँखों से उन विशाल काल्पनिक कहानियों को पढ़ने के लिए मैं दो फ्रैंक भी दे देता, जिन्हें एक अयोग्य विधर्मी होने के नाते मुझे केवल

अपने विस्मित कानों से सुनने की अनुमति थी। इस किताब में संतों की कथाएँ थीं। हे भगवान! (मैं ये शब्द श्रद्धापूर्वक कह रहा हूँ) कैसी कथाएँ थीं! वे संत कितने घमंडी और दुष्ट रहे होंगे, जिन्होंने पहले इन कारनामों का बखान किया या इन चमत्कारों को गढ़ा। हालाँकि, ये कथाएँ मठवासी फिजूलखर्ची से अधिक कुछ नहीं थीं, जिन पर मन ही मन हँसी आती थी; इसके अलावा, इसमें पुरोहितों से संबंधित बातें भी थीं, और किताब की पुरोहिती तो इसकी मठवासीता से कहीं अधिक बुरी थी। रोम द्वारा किए गए नैतिक बलिदानों की कहानियाँ सुनते-सुनते मेरे दोनों कान जलने लगे; उन धर्मगुरुओं के खौफनाक दावे, जिन्होंने अपने पद का घोर दुरुपयोग करते हुए उच्च कुल की महिलाओं को घोर अपमानित किया, और काउंटेस और राजकुमारियों को दुनिया की सबसे प्रताड़ित गुलाम बना दिया। कॉनरैड और हंगरी की एलिजाबेथ जैसी कहानियां बार-बार सामने आती रहीं, अपनी सारी भयावह क्रूरता, घिनौने अत्याचार और घोर अधार्मिकता के साथ: ये कहानियां उत्पीड़न, अभाव और पीड़ा के दुःस्वप्न थीं।

मैंने कुछ रातों तक यथासंभव चुपचाप और शांति से इस “व्याख्यान” को सहन किया; केवल एक बार अनजाने में मेरी कैंची की नोकें मेरे सामने रखी कीड़े लगी मेज के तख्ते में थोड़ी गहराई तक धंसने से टूट गईं। लेकिन, अंत में, इसने मुझे इतना उत्तेजित कर दिया, मेरी कनपटी, मेरा दिल और मेरी कलाई इतनी तेजी से धड़कने लगीं, और उसके बाद मेरी नींद उत्तेजना से इतनी टूट गई कि मैं और बैठ नहीं सकी। विवेक ने यही उचित समझा कि जैसे ही वह पुरानी किताब निकाली जाए, मैं तुरंत उस जगह से निकल जाऊं। माउस हेडरिग को सार्जेंट बोथवेल के खिलाफ गवाही देने की इतनी तीव्र इच्छा कभी नहीं हुई होगी, जितनी मुझे इस “व्याख्यान” के मामले में अपने विचार व्यक्त करने की। हालांकि, मैंने किसी तरह खुद को संयमित और नियंत्रित किया; और हालांकि जैसे ही रोसीन दीपक जलाने आती, मैं तुरंत कमरे से निकल जाती, फिर भी मैंने चुपचाप ऐसा किया; सन्नाटे से पहले की उस हल्की-फुल्की हलचल का फायदा उठाते हुए, और बोर्डिंग छात्रों द्वारा अपनी किताबें समेटने के दौरान गायब हो जाना।

जब मैं गायब हो जाता था—अंधेरे में ही गायब होता था; मोमबत्तियाँ ले जाना मना था, और जो शिक्षक भोजन कक्ष छोड़ देता था, उसके पास शरण के लिए केवल अंधेरा हॉल, कक्षा कक्ष या शयनकक्ष ही बचता था। सर्दियों में मैं लंबी कक्षाओं में

जाता था और खुद को गर्म रखने के लिए उनमें तेज़ी से चक्कर लगाता था—अगर चाँद चमकता था तो मैं खुद को भाग्यशाली समझता था, और अगर केवल तारे होते थे, तो मैं उनकी धुंधली चमक या उनकी अनुपस्थिति के पूर्ण ग्रहण से भी संतुष्ट हो जाता था। गर्मियों में कभी पूरी तरह अंधेरा नहीं होता था, और तब मैं ऊपर अपने कमरे में जाता था, अपनी खिड़की खोलता था (वह कमरा पाँच बड़ी खिड़कियों से रोशन होता था), और बाहर झुककर बगीचे के पार शहर को देखता था, और पार्क या महल के चौक से बैंड का संगीत सुनता था, इस बीच अपने ही विचारों में खोया रहता था, अपने ही शांत, छायादार संसार में अपना जीवन जीता था।

आज शाम, पोप और उनके कार्यों से हमेशा की तरह बेखबर, मैं सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा, शयनकक्ष के पास पहुँचा और चुपचाप दरवाजा खोला, जो हमेशा सावधानी से बंद रहता था और इस घर के हर दूसरे दरवाजे की तरह, बिना आवाज किए, अच्छी तरह से तेल लगे कब्जों पर घूमता था। देखने से पहले ही, मुझे महसूस हुआ कि उस बड़े कमरे में जीवन है, जो आमतौर पर खाली रहता था: ऐसा नहीं था कि वहाँ कोई हलचल या साँस थी, या कोई सरसराहट थी, बल्कि सन्नाटा था, एकांत का अभाव था। सभी सफेद पलंग - जिन्हें काव्यात्मक रूप से "लिट्स डी'एन्ज" कहा जाता था - एक नज़र में दिखाई दे रहे थे; सभी खाली थे: कोई भी उन पर नहीं सो रहा था। एक दराज के धीरे से खुलने की आवाज मेरे कानों में पड़ी; थोड़ा एक तरफ हटकर, मेरी दृष्टि बिना गिरते पर्दों के अवरोध के, पूरी तरह से खुल गई। अब मैं अपने बिस्तर और अपने शौचालय का स्वामी था, जिस पर एक ताला लगा हुआ वर्क-बॉक्स था और उसके नीचे ताला लगे दराज थे।

बहुत बढ़िया। एक दुबली-पतली, ममतामयी महिला, शालीन शॉल और एकदम साफ नाइट कैप पहने, इस शौचालय के सामने खड़ी थी, मानो मेरे लिए "कमरे को व्यवस्थित" करने का काम कर रही हो। वर्क-बॉक्स का ढक्कन खुला था, ऊपर का दराज खुला था; एक-एक करके सभी दराज एक-एक करके खोले गए: उनमें रखी हर वस्तु को उठाया और खोला गया, हर कागज पर एक नज़र डाली गई, हर छोटा डिब्बा खोला गया; और उनकी कुशलता अद्भुत थी, जिस सावधानी से उन्होंने खोजबीन की, वह अनुकरणीय थी। मैडम एक सच्चे सितारे की तरह काम कर रही थीं, "बिना जल्दबाजी के फिर भी बिना रुके"। मैं यह नहीं नकारूंगा कि उन्हें देखकर मुझे मन ही मन खुशी हो रही थी। अगर मैं एक सज्जन होता, तो मुझे यकीन है कि मैडम मेरी

नजरों में बस जातीं, क्योंकि वह हर काम में इतनी कुशल, साफ-सुथरी और निपुण थीं: कुछ लोगों की हरकतें अपनी ढीली-ढाली बेढंगीपन से आत्मा को झकझोर देती हैं, लेकिन उनकी हरकतें - उनकी सुव्यवस्थितता से संतुष्टि देती थीं। संक्षेप में, मैं मंत्रमुग्ध खड़ा था; लेकिन इस जादू को तोड़ने के लिए प्रयास करना आवश्यक था, पीछे हटना ही था। तलाशी करने वाला पलटकर मुझे पकड़ सकता था; तब एक तमाशा होता और हम दोनों को एक साथ, अचानक टकराव के साथ, एक-दूसरे को पूरी तरह से जान लेना पड़ता: रूढ़िवादिता धरी रह जाती, भेस उतर जाता, और मैं उसकी आँखों में देखता, और वह मेरी आँखों में—हम जान जाते कि अब हम साथ नहीं रह सकते, और इस जीवन में हमेशा के लिए अलग हो जाते।

ऐसी विपत्ति को न्योता देने का क्या फायदा था? मैं क्रोधित नहीं था, और उसे छोड़ने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी। मुझे शायद ही कोई ऐसा दूसरा मालिक मिलता जिसका काम इतना आसान और सहज होता; और सच कहूँ तो, मुझे मैडम की गहरी समझ पसंद थी, चाहे मैं उनके सिद्धांतों के बारे में कुछ भी सोचूँ: जहाँ तक उनकी कार्यप्रणाली की बात है, उससे मुझे कोई नुकसान नहीं था; वह चाहे जितना भी मुझसे काम करवा लें, कुछ नहीं होगा। प्रेमहीन और प्रेम की उम्मीद न रखने वाला, मैं अपने हृदयहीनता में जासूसों से उतना ही सुरक्षित था, जितना कोई भिखारी अपने खाली बटुए में चोरों से। फिर मैं मुड़ा और भाग गया; सीढ़ियों से इतनी तेज़ी और खामोशी से उतरा जैसे मकड़ी उसी क्षण रेलिंग से नीचे भागती है।

जब मैं स्कूल के कमरे में पहुँची तो मुझे कितनी हंसी आई! अब मुझे पता था कि उसने बगीचे में डॉक्टर जॉन को ज़रूर देखा होगा; मुझे पता था कि उसके मन में क्या चल रहा है। एक शंकालु स्वभाव का अपने ही भ्रमों में फंसा होना मुझे बहुत अच्छा लगा। लेकिन जैसे ही हंसी रुकी, एक तरह का क्रोध मुझ पर हावी हो गया, और फिर कड़वाहट छा गई: ऐसा लगा जैसे चट्टान पर चोट लगी हो और मेरिबा का पानी उफान मार रहा हो। उस शाम एक घंटे तक मैंने अपने भीतर ऐसा अजीब और विरोधाभासी उथल-पुथल पहले कभी महसूस नहीं किया था: दर्द, हंसी, आग और दु:ख, सब मेरे दिल में उमड़ रहे थे। मैं फूट-फूटकर रोई: इसलिए नहीं कि मैडम को मुझ पर शक था - मुझे उनके शक की ज़रा भी परवाह नहीं थी - बल्कि कुछ और कारणों से। उलझे हुए, बेचैन कर देने वाले विचारों ने मेरे पूरे मन की शांति भंग कर दी। हालांकि, वह उथल-पुथल शांत हो गई: अगले दिन मैं फिर से लूसी स्नो बन गई।

अपनी दराजों को दोबारा देखने पर मैंने पाया कि वे सभी सुरक्षित रूप से बंद थीं; बाद में बारीकी से जांच करने पर भी किसी वस्तु की स्थिति में कोई बदलाव या गड़बड़ी नहीं दिखी। मेरी कुछ पोशाकें वैसे ही तह की हुई थीं जैसे मैंने उन्हें छोड़ा था; सफेद वायलेट का एक छोटा सा गुच्छा, जो कभी एक अजनबी ने मुझे चुपचाप भेंट किया था (मेरे लिए अजनबी, क्योंकि हमारी कभी बातचीत नहीं हुई थी), और जिसे मैंने उसकी मीठी सुगंध के लिए अपनी सबसे अच्छी पोशाक की तहों के बीच सुखाकर रखा था, वहीं पड़ा था; मेरा काला रेशमी स्कार्फ, मेरी लेस वाली कमीज और कॉलर, बिल्कुल भी सिकुड़े हुए नहीं थे। अगर उसने एक भी वस्तु को मोड़ा होता, तो मैं मानती हूँ कि मुझे उसे माफ करने में बहुत अधिक कठिनाई होती; लेकिन सब कुछ साफ-सुथरा और व्यवस्थित देखकर मैंने कहा, "जो हुआ सो हुआ। मुझे कोई नुकसान नहीं हुआ है: मुझे क्यों द्वेष रखना चाहिए?"

* * * * *

एक बात थी जिसने मुझे उलझन में डाल दिया था, और मैं उस पहेली का हल ढूंढने के लिए उतनी ही लगन से दिमाग लगा रहा था जितनी लगन से मैडम मेरे टॉयलेट के दराजों में उपयोगी जानकारी ढूंढती थीं। अगर डॉ. जॉन उस ताबूत को बगीचे में गिराने में शामिल नहीं थे, तो उन्हें कैसे पता चला कि वह गिरा है, और वे उसे ढूंढने के लिए इतनी जल्दी मौके पर कैसे पहुंच गए? इस बात को जानने की मेरी इच्छा इतनी प्रबल थी कि मेरे मन में यह साहसिक विचार आया: "अगर मुझे कभी मौका मिले, तो मैं डॉ. जॉन से ही इस संयोग का कारण क्यों न पूछ लूं?"

और जब तक डॉ. जॉन अनुपस्थित थे, मुझे वास्तव में विश्वास था कि मुझमें उनसे ऐसा प्रश्न पूछकर उनकी परीक्षा लेने का साहस है।

छोटी जॉर्जेट अब स्वस्थ हो रही थी; और इसलिए उसके चिकित्सक ने उससे मिलना बहुत कम कर दिया था: वास्तव में, अगर मैडम ने बच्चे के पूरी तरह ठीक होने तक कभी-कभार मिलने पर जोर न दिया होता, तो वह मिलना पूरी तरह बंद कर देता।

एक शाम, जब मैंने जॉर्जेट की तुतलाती और टूटी-फूटी प्रार्थना सुन ली थी और उसे सुला दिया था, तब वह नर्सरी में आई। छोटी बच्ची का हाथ पकड़कर उसने कहा, "इस बच्ची में अभी भी थोड़ी सी बेचैनी है।" और थोड़ी देर बाद, अपनी शांत आँखों से मेरी ओर देखते हुए, जो आमतौर पर नहीं होती थी, उसने पूछा, "क्या डॉक्टर जॉन ने

उसे हाल ही में देखा है? नहीं, है ना?"

बेशक, घर में बाकी सभी लोगों से बेहतर वह यह बात जानती थी। "ठीक है," उसने आगे कहा, "मैं कुछ काम से बाहर जा रही हूँ। मैं डॉक्टर जॉन से मिलूंगी और उन्हें बच्चे के पास भेजूंगी। मैं चाहती हूँ कि वह आज शाम उसे देख लें; उसके गाल लाल हैं, उसकी नाड़ी तेज़ है; आप उनका स्वागत कीजिएगा — मैं घर से बाहर रहूंगी।"

अब बच्चा काफी हद तक ठीक था, बस जुलाई की गर्मी से थोड़ा झुलसा हुआ था; अंतिम संस्कार के लिए पुजारी को बुलाना उतना ही जरूरी था जितना डॉक्टर से दवा लिखवाना; और मैडम शाम को शायद ही कभी "कोर्स" करती थीं, जैसा कि वह उन्हें कहती थीं: इसके अलावा, यह पहली बार था जब उन्होंने डॉक्टर जॉन के आने पर अनुपस्थित रहना चुना था। पूरी व्यवस्था किसी योजना की ओर इशारा कर रही थी; यह मैंने देखा, लेकिन बिना किसी चिंता के। "हा! हा! मैडम," भिखारी लाइट-हार्ट हँसा, "आपकी चालाक बुद्धि गलत दिशा में जा रही है।"

वह बेहद सलीके से सजी-धजी, एक कीमती शॉल और एक कोमल हरे रंग की टोपी पहने चली गई—जिसका रंग उसके रंग से कम गोरे रंग वाले किसी भी व्यक्ति के लिए खतरनाक हो सकता था, लेकिन उस पर वह जंच रही थी। मैं सोच रहा था कि उसका इरादा क्या है: क्या वह सचमुच डॉ. जॉन को भेजेगी या नहीं; या क्या वह आएगा भी या नहीं: हो सकता है वह पहले से ही किसी काम में व्यस्त हो।

मैडम ने मुझे हिदायत दी थी कि डॉक्टर के आने तक जॉर्जेट को सोने न दूं; इसलिए मैं उसे बचपन की कहानियां सुनाने और उसकी छोटी-छोटी भाषा में उससे बातें करने में व्यस्त थी। मुझे जॉर्जेट से बहुत लगाव था; वह एक संवेदनशील और प्यारी बच्ची थी: उसे अपनी गोद में लेना या अपनी बाहों में उठाना मेरे लिए एक सुखद अनुभव था। आज रात वह चाहती थी कि मैं अपना सिर उसके पालने के तकिए पर रखूं; उसने तो अपनी छोटी-छोटी बाहें मेरी गर्दन में भी डाल दीं। उसकी पकड़ और जिस प्यार से उसने अपना गाल मेरे गाल से सटाया, उससे मुझे कोमल दर्द से लगभग रोना आ गया। उस घर में किसी भी तरह की भावना का अभाव था; एक पवित्र स्रोत से निकली यह छोटी सी पवित्र बूंद बहुत मीठी थी: यह दिल में गहराई तक उतर गई, दिल को वश में कर लिया और आंखों में आंसू भर आए। आधा घंटा या एक घंटा बीत गया; जॉर्जेट ने अपनी धीमी तुतलाहट में कहा कि उसे नींद आ रही है। "और तुम सो

जाओगी," मैंने सोचा, "भले ही मम्मी और डॉक्टर दस मिनट में न आएं।"

सुनो! घंटी बजी, और कदमों की आहट, सीढ़ियों को अपनी फुर्ती से चकित कर दिया। रोसीन ने डॉ. जॉन का परिचय कराया, और अपने उस सहज अंदाज़ में, जो पूरी तरह से उसका अपना नहीं था, बल्कि विलेट के नौकरों की आम विशेषता थी, वह उनकी बात सुनने के लिए रुक गई। मैडम की उपस्थिति उसे अपने निजी कमरे, यानी रिसेप्शन और अलमारी में वापस भेज देती - क्योंकि उसे मेरी या किसी अन्य शिक्षक या छात्र की कोई परवाह नहीं थी। चुस्त-दुरुस्त और फुर्तीली, वह अपने रंगीन भूरे रंग के एप्रन की दोनों जेबों में हाथ डाले खड़ी थी, और डॉ. जॉन को ऐसे देख रही थी मानो वह कोई चित्र हो, न कि कोई जीता-जागता सज्जन।

“Le marmot n’a rien, nest-ce pas?” उसने अपनी ठुड्डी को झटका देते हुए जॉर्जेट की ओर इशारा करते हुए कहा।

"ज़्यादा नहीं," यह जवाब मिला, और डॉक्टर ने जल्दबाज़ी में अपनी पेंसिल से कुछ हानिरहित नुस्खे लिख दिए।

“अरे वाह!” रोसीन ने उसके पास आते हुए पूछा, जबकि वह अपनी पेंसिल समेटे बैठा था। “और डिब्बा—क्या आपको मिल गया? महाशय पिछली रात अचानक चले गए; मुझे उनसे पूछने का समय ही नहीं मिला।”

“मुझे मिल गया: हाँ।”

“तो फिर इसे किसने फेंका?” रोसीन ने बड़ी सहजता से वही शब्द कहे जो मैं कहना तो चाहती थी, लेकिन कहने की हिम्मत या वाक्पटुता नहीं थी: कुछ लोग किसी मुकाम तक पहुँचने का रास्ता कितना छोटा बना देते हैं, जो दूसरों के लिए नामुमकिन सा लगता है!

"शायद यही मेरा रहस्य है," डॉ. जॉन ने संक्षेप में जवाब दिया, लेकिन बिना किसी तरह के अहंकार के: ऐसा लग रहा था कि वह रोसीन या ग्रिसेट चरित्र को अच्छी तरह से समझते हैं।

“लेकिन आखिरकार,” उसने बिना किसी झिझक के आगे कहा, “महाशय को पता था कि इसे फेंका गया है, क्योंकि वह इसे ढूंढने आए थे - उन्हें कैसे पता चला?”

उन्होंने कहा, "मैं पास के कॉलेज में एक छोटे से मरीज की देखभाल कर रहा था, और मैंने देखा कि यह उसके कमरे की खिड़की से गिर गया था, इसलिए मैं इसे उठाने आया।"

पूरी व्याख्या कितनी सरल है! उस नोट में एक चिकित्सक द्वारा "गुस्ताव" की जांच किए जाने का उल्लेख किया गया था।

“अरे वाह!” रोसीन ने आगे कहा; “तो इसके नीचे कुछ भी नहीं है: कोई रहस्य नहीं, कोई रोमांस नहीं, उदाहरण के लिए?”

“Pas plus que sur ma main,” डॉक्टर ने अपनी हथेली दिखाते हुए जवाब दिया।

“कितनी अफ़सोस की बात है!” उस महिला ने जवाब दिया, “और मैं—जो इन सब बातों से कुछ विचार पाने लगी थी।”

“सच में! इसका भुगतान तो आप ही करेंगे,” डॉक्टर ने बड़े ही शांत भाव से जवाब दिया।

उसने मुंह फुला लिया। डॉक्टर उसकी इस तरह की बनावटी मुस्कान देखकर हँसे बिना नहीं रह सके: जब वे हँसते थे, तो उनके चेहरे पर एक अजीब सी सौम्यता और सौम्यता झलकती थी। मैंने देखा कि उनका हाथ उनकी जेब की ओर बढ़ा।

“पिछले एक महीने में आपने मेरे लिए कितनी बार दरवाजा खोला है?” उसने पूछा।

"महाशय को इसका हिसाब रखना चाहिए था," रोसीन ने बड़ी सहजता से कहा।

“जैसे कि मेरे पास करने के लिए कुछ बेहतर काम न हो!” उसने पलटकर जवाब दिया; लेकिन मैंने उसे उसे सोने का एक टुकड़ा देते हुए देखा, जिसे उसने बेशर्मी से ले लिया, और फिर दरवाजे की घंटी का जवाब देने के लिए चली गई, जो हर पांच मिनट में बज रही थी, क्योंकि विभिन्न नौकर आधे-बोर्डिंग करने वालों को लेने आ रहे थे।

पाठक को रोसीन के बारे में बहुत कठोर विचार नहीं रखना चाहिए; कुल मिलाकर, वह एक बुरी किस्म की इंसान नहीं थी, और उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि जो कुछ भी उसे मिल सके उसे हथियाने में कोई शर्म की बात हो सकती है, या ईसाई जगत के सबसे अच्छे सज्जन के सामने बेहिसाब बकबक करने में कोई धृष्टता हो सकती है।

ऊपर के दृश्य से मुझे हाथीदांत के डिब्बे के अलावा भी कुछ और पता चला: कि डॉ. जॉन का दिल तोड़ने का दोष न तो गुलाबी या भूरे रंग के रोब डे जैकोनास पर था, न ही झालरदार और जेबदार एप्रन पर: ये पोशाकें जॉर्जेट की छोटी नीली ट्यूनिक की तरह ही निर्दोष थीं। और यह अच्छी बात है। लेकिन फिर असली दोषी कौन था? इस

पूरे मामले की जड़ क्या थी—इसकी उत्पत्ति क्या थी—इसका सटीक स्पष्टीकरण क्या था? कुछ बिंदु स्पष्ट हो गए थे, लेकिन कितने ही बिंदु अभी भी अंधेरे की तरह अस्पष्ट थे!

“लेकिन,” मैंने मन ही मन कहा, “इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है;” और जिस चेहरे पर मैं अनजाने में सवालिया निगाहों से टकटकी लगाए देख रही थी, उससे नज़रें हटाकर मैंने खिड़की से नीचे बगीचे की ओर देखा। इस बीच, डॉ. जॉन, बिस्तर के पास खड़े होकर धीरे-धीरे अपने दस्ताने पहन रहे थे और अपनी नन्ही मरीज़ को देख रहे थे, जैसे ही उसकी आँखें बंद होने लगीं और नींद आने पर उसके गुलाबी होंठ खुलने लगे। मैंने उनके हमेशा की तरह जल्दी से झुककर और मुश्किल से “शुभ रात्रि” कहकर चले जाने का इंतज़ार किया। जैसे ही उन्होंने अपनी टोपी उतारी, बगीचे की सीमा पर बने ऊँचे घरों पर टिकी मेरी नज़रों ने एक जाली देखी, जो पहले से ही दिखाई दे रही थी, धीरे से खुली; उस छेद से एक हाथ और एक सफेद रूमाल निकला; दोनों लहराए गए। मुझे नहीं पता कि हमारे घर के किसी अनदेखे कोने से उस संकेत का जवाब मिला या नहीं; लेकिन तुरंत बाद जाली से एक गिरती हुई वस्तु, सफेद और हल्की - बेशक, दूसरी वस्तु, गिरी।

“लो!” मैंने अनजाने में ही वीर्यपात कर दिया।

“कहाँ?”, डॉ. जॉन ने जोश से पूछा और सीधे खिड़की की ओर बढ़ गए।

"यह क्या है?"

“उन्होंने फिर वही कर दिया,” मैंने जवाब दिया। “एक रुमाल लहराया और कुछ गिरा:” और मैंने जाली की ओर इशारा किया, जो अब बंद थी और पाखंडी ढंग से खाली दिख रही थी।

“तुरंत जाओ; इसे उठाओ और यहाँ ले आओ,” उसने तुरंत निर्देश दिया; और आगे कहा, “कोई तुम्हारी तरफ ध्यान नहीं देगा: मुझे दिखना चाहिए।”

मैं सीधे चला गया। थोड़ी खोजबीन के बाद, मुझे एक झाड़ी की निचली शाखा पर एक मुड़ा हुआ कागज मिला; मैंने उसे उठाया और सीधे डॉ. जॉन के पास ले गया। इस बार, मुझे लगता है कि रोसीन ने भी मुझे नहीं देखा।

उसने चिट्ठी को बिना पढ़े ही तुरंत छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़ दिया। "तुम्हें याद रखना चाहिए कि इसमें उसकी ज़रा भी गलती नहीं है," उसने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

मैंने पूछा, “किसकी गलती है? कौन है?”

"तो आपको अभी तक पता नहीं है?"

"कम से कम नहीं।"

"क्या आपको कोई अनुमान नहीं है?"

"कोई नहीं।"

"अगर मैं आपको बेहतर तरीके से जानता, तो शायद मैं कुछ भरोसा करने का जोखिम उठाता, और इस तरह आपको एक बेहद मासूम और उत्कृष्ट, लेकिन कुछ हद तक अनुभवहीन प्राणी का संरक्षक नियुक्त कर देता।"

“क्या तुम एक गृहिणी हो?” मैंने पूछा।

“हाँ,” उसने अनमने भाव से कहा। “उसके चारों ओर कैसे-कैसे जाल बिछे हैं!” उसने सोचते हुए आगे कहा: और अब, निश्चित रूप से पहली बार, उसने मेरे चेहरे को गौर से देखा, शायद उत्सुकता से यह देखने के लिए कि क्या मेरे चेहरे पर कोई दयालु भाव है, जो उसे किसी ऐसे अलौकिक प्राणी की देखभाल और दया की सिफारिश करने का औचित्य प्रदान करेगा, जिसके खिलाफ अंधकार की शक्तियाँ साजिश रच रही थीं। मुझे अलौकिक प्राणियों की निगरानी करने की कोई विशेष इच्छा नहीं थी; लेकिन दफ्तर के दृश्य को याद करते हुए, मुझे लगा कि मुझे उसका एहसान चुकाना चाहिए: अगर मैं उसकी मदद कर सकता हूँ तो मैं ज़रूर करूँगा, और यह तय करना मेरे हाथ में नहीं था कि कैसे। जितना हो सके कम संकोच के साथ, मैंने कहा कि “मैं किसी भी ऐसे व्यक्ति की देखभाल करने के लिए तैयार हूँ जिसमें उसकी रुचि हो।”

“मैं तो बस एक दर्शक हूँ,” उन्होंने बड़ी विनम्रता से कहा, जो मुझे देखकर बहुत अच्छा लगा। “मैं उस व्यक्ति के तुच्छ चरित्र से परिचित हूँ, जिसने सामने वाले घर से दो बार इस जगह की पवित्रता भंग की है; मैं उस व्यक्ति से भी मिल चुका हूँ जिस पर ये घटिया हरकतें की जा रही हैं। उसकी असाधारण श्रेष्ठता और सहज शालीनता को देखकर तो ऐसा लगता है कि उसे बदतमीज़ी करने का ख्याल भी नहीं आना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं है; और वह भोली-भाली और संदेह से परे है, अगर मैं कर सकता तो उसे बुराई से बचाता। लेकिन व्यक्तिगत रूप से, मैं कुछ नहीं कर सकता; मैं उसके पास नहीं जा सकता”— वे रुके।

“ठीक है, मैं आपकी मदद करने को तैयार हूँ,” मैंने कहा, “बस मुझे बताइए कैसे।” और मन ही मन मैं अपने सभी मरीज़ों की सूची पर नज़र डालने लगा, उस आदर्श, उस अनमोल रत्न, उस बेदाग़ हीरा को ढूँढ़ने लगा। “यह मैडम ही होनी

चाहिए," मैंने निष्कर्ष निकाला। "हम सब में से केवल वही श्रेष्ठ दिखने की कला जानती हैं: लेकिन जहाँ तक उनके भोलेपन, अनुभवहीनता आदि की बात है, डॉ. जॉन को इस बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। खैर, यह तो बस उनकी इच्छा है, और मैं उनका विरोध नहीं करूँगा; उन्हें संतुष्ट किया जाएगा: उनका दूत एक दूत ही रहेगा।"

"बस उस विभाग को सूचित कर दीजिए जहाँ मुझे भेजा जाना है," मैंने गंभीरता से कहा; हालाँकि, मैडम बेक या उनके किसी भी विद्यार्थी की देखरेख करने की ज़िम्मेदारी के बारे में सोचकर मैं मन ही मन मुस्कुरा रहा था। डॉ. जॉन बहुत ही संवेदनशील थे और उन्होंने सहज ज्ञान से वह बात समझ ली जो किसी और कम समझदार व्यक्ति को समझ नहीं आती; यानी, मैं उन पर थोड़ा हँस रहा था। उनके गाल लाल हो गए; हल्की सी मुस्कान के साथ वे मुड़े और अपनी टोपी उठाई – वे जा रहे थे। मेरा दिल बैठ गया।

मैंने उत्सुकता से कहा, "मैं आपकी मदद करूँगा। मैं आपकी इच्छा पूरी करूँगा। मैं आपकी परी की रक्षा करूँगा; मैं उसका ख्याल रखूँगा, बस मुझे बता दीजिए कि वह कौन है।"

"परन्तु तुम्हें यह जानना ही होगा," उसने फिर गंभीरता से, लेकिन बहुत धीमी आवाज़ में कहा। "इतनी निर्मल, इतनी अच्छी, इतनी असीम रूप से सुंदर! यह असंभव है कि एक ही घर में उसके जैसी दो हों। मेरा तात्पर्य है—"

यहां मैडम बेक के कमरे के दरवाजे (जो नर्सरी में खुलता था) की कुंडी अचानक खटक उठी, मानो उसे पकड़े हुए हाथ में हल्की सी ऐंठन आ गई हो; एक अनियंत्रित छींक दबी हुई सी फूट पड़ी। ऐसी छोटी-मोटी दुर्घटनाएं तो हम सबके साथ हो ही जाती हैं। मैडम - एक बेहतरीन महिला! - उस समय ड्यूटी पर थीं। वह चुपचाप घर आई थीं, दबे पांव सीढ़ियों से ऊपर चढ़ी थीं; वह अपने कमरे में थीं। अगर उन्हें छींक न आती, तो वह सब कुछ सुन लेतीं, और मैं भी सुन लेता; लेकिन उस दुर्भाग्यपूर्ण छींक ने डॉ. जॉन को बेहाल कर दिया। जब वह स्तब्ध खड़े थे, तब मैडम सतर्क, शांत और बेहद सौम्य भाव से आगे आईं: उनकी आदतों से परिचित कोई भी व्यक्ति यह सोचे बिना नहीं रह सकता था कि वह अभी-अभी अंदर आई हैं, और उन्होंने इस बात को सिरे से खारिज कर दिया कि उनका कान कम से कम दस मिनट तक चाबी के छेद से चिपका रहा होगा। उन्होंने फिर से छींकने का नाटक किया, कहा कि उन्हें छींक आ रही है, और फिर अपने "अस्त-व्यस्त अनुभवों" का बखान करने लगीं। प्रार्थना की घंटी बजी

और मैंने उसे डॉक्टर के पास छोड़ दिया।

अध्याय 14.

पार्टी।

जॉर्जेट के ठीक होते ही मैडम ने उसे गाँव भेज दिया। मुझे बहुत दुख हुआ; मैं उस बच्ची से बहुत प्यार करती थी, और उसके जाने से मैं पहले से भी ज़्यादा गरीब हो गई। लेकिन मुझे शिकायत नहीं करनी चाहिए। मैं एक जीवंत घर में रहती थी; मेरे साथी हो सकते थे, लेकिन मैंने एकांत को चुना। एक-एक करके सभी शिक्षकों ने मुझसे घनिष्ठता का प्रस्ताव रखा; मैंने सभी को आजमाया। एक मुझे ईमानदार महिला लगी, लेकिन संकीर्ण सोच वाली, कठोर स्वभाव की और अहंकारी। दूसरी पेरिस की रहने वाली थी, बाहरी तौर पर सभ्य—लेकिन दिल से भ्रष्ट—बिना किसी पंथ, बिना किसी सिद्धांत, बिना किसी स्नेह के: इस चरित्र की शालीनता की बाहरी परत को भेदने पर, आपको उसके नीचे एक दलदल दिखाई देगा। उसे उपहारों का बहुत शौक था; और इस मामले में, तीसरी शिक्षक—जो वैसे तो चरित्रहीन और महत्वहीन थी—उससे काफी मिलती-जुलती थी। इस आखिरी वाली में एक और खास गुण था—लालच। उसके मन में केवल धन के लिए प्रेम था। सोने का एक टुकड़ा देखते ही उसकी आँखों में एक अनोखी हरी चमक आ जाती थी। एक बार, विशेष कृपा के प्रतीक के रूप में, वह मुझे ऊपर ले गई और एक गुप्त दरवाजा खोलकर मुझे सिक्कों का एक खजाना दिखाया—मोटे, बड़े सिक्कों का ढेर—लगभग पंद्रह गिनी, पाँच-पाँच फ्रैंक के नोटों में। वह इस खजाने से उतना ही प्यार करती थी जितना कोई चिड़िया अपने अंडों से। ये उसकी बचत थी। वह आकर मुझसे इनके बारे में ऐसे मोहित और लगन से बातें करती थी, जो पच्चीस साल से कम उम्र की किसी लड़की में देखना

अजीब लगता था।

दूसरी ओर, पेरिस की रहने वाली महिला फिजूलखर्ची और अय्याशी करती थी (स्वभाव से, हालांकि उसके कार्यों के बारे में मुझे नहीं पता)। उसका यह अय्याशी भरा स्वभाव मुझे केवल एक बार ही दिखा, बड़ी सावधानी से। झलक देखकर तो वह किसी अजीब से सरीसृप जैसा लग रहा था; उसकी नवीनता ने मेरी जिज्ञासा बढ़ा दी: अगर वह खुलकर सामने आती, तो शायद मैं दार्शनिक रूप से अपनी जगह पर डटा रहता और उसकी दोमुंही जीभ से लेकर पपड़ीदार पूंछ तक की लंबी आकृति को शांति से देखता; लेकिन वह तो बस एक घटिया उपन्यास के पन्नों में सरसरा रही थी; और क्रोध के एक जल्दबाजी भरे और नासमझ प्रदर्शन का सामना करते ही वह पीछे हट गई और फुफकारते हुए गायब हो गई। उस दिन से वह मुझसे नफरत करने लगी।

यह पेरिसवासी महिला हमेशा कर्ज में डूबी रहती थी; उसकी तनख्वाह न केवल कपड़ों पर, बल्कि इत्र, सौंदर्य प्रसाधन, मिठाई और मसालों पर भी खर्च हो जाती थी। वह हर चीज में कितनी निर्मम और बेरहम थी! मैं उसे अब भी देख सकती हूँ। दुबली-पतली काया, पीलापन लिए, चेहरे की बनावट सधी हुई, एकदम सही दाँत, पतले होंठ, बड़ी और उभरी हुई ठुड्डी, खुली हुई, लेकिन जमी हुई आँखें, जिनमें लालसा और कृतघ्नता दोनों झलकती थीं। उसे काम से सख्त नफरत थी और वह जिसे सुख कहती थी, उससे प्यार करती थी; जो समय की एक नीरस, हृदयहीन और बुद्धिहीन बर्बादी थी।

मैडम बेक इस महिला के चरित्र को भली-भांति जानती थीं। एक बार उन्होंने मुझसे उसके बारे में बात की, जिसमें भेदभाव, उदासीनता और घृणा का अजीब मिश्रण था। मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने उसे संस्थान में क्यों रखा है। उन्होंने स्पष्ट रूप से उत्तर दिया, "क्योंकि ऐसा करना उनके हित में था;" और एक तथ्य की ओर इशारा किया जिसे मैंने पहले ही देख लिया था, अर्थात्, मैडमोजेल सेंट पियरे में अपने अनुशासनहीन छात्रों के बीच व्यवस्था बनाए रखने की लगभग अद्वितीय क्षमता थी। एक प्रकार का भयकारक प्रभाव उनके साथ रहता था और उन्हें घेरे रहता था: बिना किसी आवेश, शोर या हिंसा के, वह उन्हें उसी प्रकार नियंत्रण में रखती थीं जैसे ठंडी हवा किसी उफनती धारा को शांत कर देती है। ज्ञान के संचार के मामले में वह कुछ खास उपयोगी नहीं थीं, लेकिन नियमों की कड़ी निगरानी और पालन के लिए वह अमूल्य थीं। "मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि उनमें न तो सिद्धांत हैं, न ही शायद रीति-रिवाज,"

मैडम ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया; लेकिन दर्शन के साथ जोड़ा गया, "बेटा मेनटेन एन क्लास इस्ट टूजॉर्स कंवेनेबल एट रेम्पली मेम डी'यून श्योरिटी डिग्निटी: सी'एस्ट टाउट सी क्विल फॉउट। नी लेस एलेव्स नी लेस पेरेंट्स नी रिगार्ड प्लस लोइन; नी, पर परिणामी, मोई नॉन प्लस।"

* * * * *

यह विद्यालय एक विचित्र, चंचल, शोरगुल से भरी छोटी सी दुनिया थी: जंजीरों को फूलों से छुपाने का पूरा प्रयास किया जाता था: हर व्यवस्था में रोमनवाद का सूक्ष्म सार व्याप्त था: आध्यात्मिक संयम के विपरीत, कामुक भोग-विलास की भरपूर छूट दी गई थी। प्रत्येक मन को गुलामी में पाला जा रहा था; लेकिन, इस तथ्य पर चिंतन को रोकने के लिए, शारीरिक मनोरंजन के हर बहाने का भरपूर लाभ उठाया जाता था। वहाँ, और अन्य जगहों की तरह, चर्च अपने बच्चों को शरीर से बलवान, आत्मा से दुर्बल, मोटे, लालिमा लिए, स्वस्थ, आनंदित, अज्ञानी, अविवेकी और प्रश्नरहित बनाने का प्रयास करता था। “खाओ, पियो और जियो!” वह कहती है। “अपने शरीर का ध्यान रखो; अपनी आत्माओं को मुझ पर छोड़ दो। मैं उनका इलाज करती हूँ - उनका मार्ग दिखाती हूँ: मैं उनके अंतिम भाग्य की गारंटी देती हूँ।” एक ऐसा सौदा, जिसमें हर सच्चा कैथोलिक खुद को लाभप्रद मानता है। ल्यूसिफर भी ठीक यही शर्तें रखता है: “यह सारी शक्ति और इसकी महिमा मैं तुझे दूंगा; क्योंकि यह मुझे सौंपी गई है, और जिसे चाहूं उसे दे सकता हूं। इसलिए, यदि तू मेरी उपासना करेगा, तो सब कुछ तेरा हो जाएगा!”

लगभग इसी समय—गर्मियों की सुनहरी धूप में—मैडम बेक का घर किसी स्कूल की तरह ही खुशनुमा हो गया था। दिन भर चौड़े तह वाले दरवाजे और दो पल्लों वाली खिड़कियाँ खुली रहती थीं: धूप मानो वातावरण में घुलमिल गई थी; बादल दूर समुद्र में तैर रहे थे, शायद इंग्लैंड जैसे द्वीपों के आसपास ठहरे हुए थे—कोहरे की उस प्यारी भूमि के आसपास—लेकिन सूखे महाद्वीप से पूरी तरह अलग-थलग। हम छत के नीचे रहने की बजाय बगीचे में ज़्यादा समय बिताते थे: कक्षाएँ और भोजन "ग्रैंड बर्सेउ" (बड़े बगीचे) में ही होते थे। इसके अलावा, छुट्टियों की तैयारियों का माहौल था, जिसने लगभग आज़ादी को मनमानी में बदल दिया था। शरद ऋतु की लंबी छुट्टियाँ बस दो महीने दूर थीं; लेकिन उससे पहले, एक बड़ा दिन—एक महत्वपूर्ण समारोह—मैडम

का उत्सव—मनाया जाना था।

इस उत्सव के संचालन की मुख्य जिम्मेदारी मैडमोजेल सेंट पियरे पर थी: ऐसा माना जाता था कि मैडम स्वयं इससे अलग-थलग, उदासीन भाव से, अपने सम्मान में होने वाली गतिविधियों से अनभिज्ञ थीं। विशेष रूप से, उन्हें कभी पता नहीं चला, न ही उन्हें जरा भी संदेह हुआ, कि एक सुंदर उपहार खरीदने के लिए पूरे स्कूल से प्रतिवर्ष चंदा लिया जाता था। पाठक की विनम्रता को ध्यान में रखते हुए, मैडम के निजी कक्ष में इस विषय पर हुई संक्षिप्त, गुप्त चर्चा का उल्लेख न किया जाए तो बेहतर होगा।

"इस साल आप क्या लेंगी?" यह सवाल उनके पेरिस स्थित लेफ्टिनेंट ने पूछा।

“अरे, कोई बात नहीं! इसे छोड़ो। बेचारे बच्चों को उनके फ्रैंक रखने दो।”

और मैडम सौम्य और विनम्र दिख रही थीं।

सेंट पियरे यहाँ अपनी ठुड्डी आगे निकालती थी; वह मैडम को अच्छी तरह जानती थी; वह हमेशा उनके "बोंटे" (सुंदर) हाव-भाव को "डेस ग्रिमेसेस" (भड़कीले चेहरे) कहती थी। उसने कभी एक पल के लिए भी उनका सम्मान करने का दावा नहीं किया।

“जल्दी करो!” वह ठंडे लहजे में कहती। “वस्तु का नाम बताओ। गहने चाहिए या चीनी मिट्टी के बर्तन, सिलाई का सामान चाहिए या चांदी?”

अच्छा! दो या तीन चम्मच और उतने ही चांदी के कांटे।

और परिणामस्वरूप एक सुंदर बक्सा तैयार हुआ, जिसमें 300 फ्रैंक मूल्य की प्लेटें थीं।

उत्सव दिवस के कार्यक्रम में ये चीज़ें शामिल थीं: भोजन परोसा जाना, बगीचे में भोज, नाट्य प्रस्तुति (जिसमें विद्यार्थी और शिक्षक कलाकार थे), नृत्य और रात्रिभोज। मुझे अच्छी तरह याद है कि यह सब बहुत ही भव्य प्रतीत हुआ था। ज़ेली सेंट पियरे इन बातों को समझती थीं और उन्होंने इन्हें कुशलतापूर्वक संभाला था।

नाटक ही मुख्य बिंदु था; इसके लिए एक महीने पहले से अभ्यास करना आवश्यक था। अभिनेताओं का चयन भी ज्ञान और सावधानी पर आधारित था; फिर वाक्पटुता और हावभाव के पाठ हुए, और फिर अनगिनत पूर्वाभ्यासों की थकान। इन सबके लिए, जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता है, सेंट पियरे पर्याप्त नहीं थीं: यहाँ उनके अलावा अन्य प्रबंधन और अन्य कौशल की आवश्यकता थी। ये कौशल एक गुरु - साहित्य के प्रोफेसर एम. पॉल इमानुएल - के रूप में उपलब्ध हुए। मुझे कभी एम.

पॉल के अभिनय पाठों में उपस्थित होने का सौभाग्य नहीं मिला, लेकिन मैंने उन्हें अक्सर कैरे (घर और विद्यालय के बीच का एक चौकोर हॉल) से गुजरते हुए देखा था। मैंने उन्हें गर्म शामों में खुले दरवाजों के सामने व्याख्यान देते हुए भी सुना था, और उनका नाम, उनके किस्सों के साथ, चारों ओर से कानों में गूंजता था। विशेषकर हमारी पूर्व परिचित, मिस जिनेवरा फैंसहावे, जिन्हें नाटक में एक प्रमुख भूमिका निभाने के लिए चुना गया था, अपने खाली समय का एक बड़ा हिस्सा मुझे देते हुए, अक्सर उनकी बातों और कार्यों का जिक्र करती थीं। वह उन्हें बेहद साधारण समझती थीं और कहती थीं कि उनके कदमों की आहट या आवाज सुनकर वह लगभग हिस्टीरिया की स्थिति तक डर जाती थीं। वह वाकई एक सांवले, छोटे कद के व्यक्ति थे; तीखे और कठोर। यहां तक कि मुझे भी वह एक कठोर आकृति लगते थे, उनके छोटे-छोटे काले बाल, चौड़ा, पीला माथा, पतला गाल, चौड़ी और कांपती नाक, पैनी नजर और जल्दबाजी भरी चाल। वह चिड़चिड़े स्वभाव के थे; यह बात तब सुनाई देती थी जब वह अपने अधीन काम कर रहे अनाड़ी दल को गुस्से से फटकारते थे। कभी-कभी वह इन अनुभवहीन अभिनेत्रियों पर उनकी बनावटी सोच, भावनाओं की ठंडक और प्रस्तुति की कमजोरी पर अधीरता से भड़क उठते थे। "सुनो!" वह चिल्लाते थे; और फिर उसकी आवाज तुरही की तरह पूरे परिसर में गूंज उठी; और जब उसकी नकल करते हुए जिनेवरा, मैथिल्डे या ब्लैंच की छोटी सी बांसुरी की आवाज आई, तो समझ में आया कि क्यों तिरस्कार की खोखली कराह या क्रोध की भयंकर फुफकार ने उस शांत प्रतिध्वनि को पुरस्कृत किया।

“तो तुम सब बस गुड़िया हो,” मैंने उसे गरजते हुए सुना। “तुममें कोई भावना नहीं है। क्या तुम्हें कुछ भी महसूस नहीं होता? तुम्हारा शरीर बर्फ जैसा ठंडा है, तुम्हारा खून बर्फ जैसा! मैं चाहता हूँ कि यह सब प्रज्वलित हो, इसमें जीवन आ जाए, एक आत्मा आ जाए!”

व्यर्थ का संकल्प! और जब अंततः उसे पता चला कि यह व्यर्थ है, तो उसने अचानक सारा मामला ही बदल दिया। अब तक वह उन्हें एक भव्य त्रासदी पढ़ा रहा था; उसने त्रासदी को टुकड़ों में बाँट दिया, और अगले दिन एक संक्षिप्त, छोटी-सी हास्य रचना लेकर आया। इसे उन्होंने अधिक रुचिकर पाया; उसने तुरंत ही इसे उनके चिकने, गोल दिमागों में ठूँस दिया।

मैडमोजेल सेंट पियरे हमेशा एम. इमैनुएल के पाठों की अध्यक्षता करती थीं, और

मुझे बताया गया था कि उनके व्यवहार की शालीनता, उनका दिखावटी ध्यान, उनकी चतुराई और शिष्टाचार ने उस सज्जन को बहुत प्रभावित किया था। वास्तव में, उनमें किसी को भी कुछ समय के लिए प्रसन्न करने की कला थी; लेकिन वह भावना क्षणिक होती थी: एक घंटे में ओस की तरह सूख जाती थी, रेशम की तरह गायब हो जाती थी।

मैडम के उत्सव से एक दिन पहले का दिन उत्सव जितना ही उत्सव जैसा था। पूरा दिन तीनों स्कूल के कमरों की सफाई, व्यवस्था और सजावट में लगा रहा। अंदर हर तरफ चहल-पहल थी; ऊपर या नीचे, किसी शांत और एकांतप्रिय व्यक्ति को अपने पैरों को आराम देने की जगह नहीं मिल रही थी; इसलिए मैंने बगीचे में शरण ली। पूरा दिन मैं वहीं अकेले घूमती या बैठी रही, धूप में गर्माहट पाती रही, पेड़ों की छांव में सुकून पाती रही और अपने विचारों में एक तरह का साथ पाती रही। मुझे अच्छी तरह याद है कि उस दिन मैंने किसी भी जीवित प्राणी से केवल दो वाक्य ही बोले: ऐसा नहीं था कि मुझे अकेलापन महसूस हो रहा था; मैं शांत रहकर खुश थी। किसी दर्शक के लिए, कमरों से एक या दो बार गुजरना ही काफी था, यह देखने के लिए कि क्या बदलाव किए जा रहे थे, कैसे एक ग्रीन-रूम और एक ड्रेसिंग-रूम तैयार किया जा रहा था, दृश्यों के साथ एक छोटा मंच कैसे बनाया जा रहा था, कैसे एम. पॉल इमानुएल, मैडमोजेल सेंट पियरे के साथ मिलकर, सभी का निर्देशन कर रहे थे, और कैसे छात्रों का एक उत्साही समूह, जिनमें जिनेवरा फैंसहावे भी शामिल थीं, उनके मार्गदर्शन में खुशी-खुशी काम कर रहा था।

वह महान दिन आ गया। सूरज तेज धूप के साथ निकला और शाम तक उसी तरह चमकता रहा। सभी दरवाजे और खिड़कियाँ खुली थीं, जिससे गर्मी की आज़ादी का सुखद एहसास हो रहा था—और ऐसा लग रहा था मानो उस दिन पूर्ण स्वतंत्रता ही मुख्य थी। शिक्षक और विद्यार्थी ड्रेसिंग गाउन और कर्ल पेपर पहने नाश्ते के लिए नीचे उतरे: शाम के श्रृंगार की उम्मीद में, वे सुबह के समय लापरवाही के विलासितापूर्ण माहौल में आनंद ले रहे थे; मानो वे किसी दावत की तैयारी में उपवास कर रहे पार्षद हों। सुबह लगभग नौ बजे, एक महत्वपूर्ण पदाधिकारी, "बाल संवारने वाला", आया। अपने पद का अपमान करते हुए, उसने अपना मुख्यालय प्रार्थना कक्ष में स्थापित किया और वहाँ, आशीर्वाद, मोमबत्ती और क्रूस की उपस्थिति में, अपनी कला के रहस्यों का अनुष्ठान किया। प्रत्येक लड़की को बारी-बारी से उसके हाथों से बाल

संवारने के लिए बुलाया गया; उनमें से निकलते हुए, उनका सिर सीप की तरह चिकना था, जिस पर बेदाग सफेद रेखाएं बनी हुई थीं, और उनके चारों ओर यूनानी शैली की चोटियां थीं जो मानो वार्निश की हुई चमक रही थीं। मैंने भी बाकियों के साथ अपनी बारी ली, और बाद में जब मैंने शीशे से जानकारी लेने की कोशिश की तो मुझे अपनी बात पर मुश्किल से ही यकीन हुआ; बुने हुए भूरे बालों की भव्य माला ने मुझे चकित कर दिया - मुझे डर था कि ये मेरे अपने बाल नहीं हैं, और इसके विपरीत यकीन दिलाने के लिए मुझे कई बार शीशे को खींचना पड़ा। तब मैंने उस हेयर स्टाइलिस्ट में एक उत्कृष्ट कलाकार को पहचाना - जिसने वाकई साधारण चीजों का भी बेहतरीन इस्तेमाल किया था।

प्रार्थना कक्ष बंद हो गया, छात्रावास स्नान, वस्त्र-संवरन और अलंकरण की विचित्र रूप से विस्तृत प्रक्रिया का केंद्र बन गया। मेरे लिए यह एक रहस्य था, और हमेशा रहेगा, कि वे इतने कम काम में इतना समय कैसे व्यतीत करते थे। प्रक्रिया गहन, जटिल और लंबी प्रतीत होती थी: परिणाम सरल। एक स्पष्ट सफेद मलमल की पोशाक, एक नीली कमरबंद (वर्जिन मैरी के रंग), सफेद या भूसे के रंग के चमड़े के दस्ताने - यही उत्सव की वर्दी थी, जिसे धारण करने के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों से भरे उस कमरे ने तीन घंटे समर्पित किए। यद्यपि यह सरल था, यह मानना पड़ेगा कि पोशाक परिपूर्ण थी - फैशन, फिटिंग और ताजगी में परिपूर्ण; प्रत्येक सिर को भी अत्यंत सूक्ष्मता और एक विशेष संयमित शैली के साथ सजाया गया था - लाबासेकुरियन आकृति की पूर्ण, दृढ़ सुंदरता के अनुरूप, हालांकि किसी अधिक प्रवाहमय और लचीली सौंदर्य शैली के लिए कुछ अधिक कठोर - कुल मिलाकर प्रभाव प्रशंसनीय था।

इस पारदर्शी और बर्फीले आवरण को निहारते हुए, मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं स्वयं को प्रकाश के मैदान में एक धुंधले धब्बे के समान महसूस कर रही थी; मुझमें पारदर्शी सफेद पोशाक पहनने का साहस नहीं था: मुझे कुछ पतला ही पहनना था - मौसम और कमरे इतने गर्म थे कि मोटे कपड़े पहनने की गुंजाइश नहीं थी, इसलिए मैंने दर्जनों दुकानों में खोजबीन की, तब जाकर मुझे बैंगनी-भूरे रंग का एक क्रेप जैसा कपड़ा मिला - संक्षेप में, वह रंग खिले हुए मैदान पर फैली धुंध जैसा था। मेरी सिलाई करने वाली ने इसे यथासंभव अच्छे से बनाया था: क्योंकि, जैसा कि उसने समझदारी से कहा था, "जितना उदास, उतना ही सुंदर", फैशन में सावधानी बरतना उतना ही

ज़रूरी था: यह अच्छा हुआ कि उसने इस मामले को इस तरह समझा, क्योंकि मेरे पास न तो कोई फूल था, न कोई गहना जो इसे सजा सके: और तो और, मेरा रंग भी स्वाभाविक रूप से गुलाबी नहीं था।

हम रोजमर्रा की नीरस दिनचर्या में इन कमियों के प्रति उदासीन हो जाते हैं, लेकिन ये कमियां उन उज्ज्वल अवसरों पर हम पर अपना अवांछित खालीपन थोप देंगी जब सुंदरता चमकनी चाहिए।

हालांकि, इसी छायादार गाउन में मुझे घर जैसा और सहज महसूस हुआ; यह लाभ मुझे किसी और चमकदार या आकर्षक पोशाक में शायद ही मिलता। मैडम बेक भी मुझे देखती रहीं; उनकी पोशाक भी लगभग मेरी ही तरह सादी थी, सिवाय इसके कि उन्होंने एक कंगन और सोने और कीमती पत्थरों से जड़ा एक बड़ा ब्रोच पहना हुआ था। सीढ़ियों पर हमारी मुलाकात संयोग से हुई और उन्होंने मुझे देखकर मुस्कुरा दिया। ऐसा नहीं था कि उन्हें लगा कि मैं अच्छी लग रही हूँ - यह बात शायद ही उनकी दिलचस्पी जगाती - लेकिन उन्होंने मुझे "सभ्य" और "सभ्य" समझा, और सादगी और शालीनता मैडम के पूजनीय दो देवता थे। उन्होंने एक पल रुककर अपना दस्ताने वाला हाथ, जिसमें कढ़ाई किया हुआ और सुगंधित रूमाल था, मेरे कंधे पर रखा और मेरे कान में दूसरे शिक्षकों पर कटाक्ष किया (जिनकी उन्होंने अभी-अभी उनके सामने प्रशंसा की थी)। "इतना बेतुका कुछ भी नहीं," उसने कहा, "जहां तक 'पंद्रह साल की लड़कियों की तरह खुद को तैयार करने' की बात है' - क्वांट ए ला। सेंट पियरे, एले ए एल'एयर डी'उने विएले कोक्वेट क्वि फेट एल'इंगेन्यू।"

बाकी सब लोगों से कम से कम दो घंटे पहले तैयार होकर, मुझे खुद को उस ओर जाने में आनंद महसूस हुआ - बगीचे में नहीं, जहाँ नौकर लंबी मेजें लगाने, कुर्सियाँ बिछाने और भोजन की तैयारी में कपड़े बिछाने में व्यस्त थे, बल्कि स्कूल के कमरों में, जो अब खाली, शांत, ठंडे और साफ थे; उनकी दीवारें ताज़ा रंगी हुई थीं, उनके तख्तों के फर्श ताज़ा धुले हुए थे और मुश्किल से सूखे थे; गमलों में ताज़ा तोड़े गए फूल कोनों को सजा रहे थे, और ताज़ा लटके हुए पर्दे बड़ी खिड़कियों की शोभा बढ़ा रहे थे।

पहले कमरे में जाकर, जो बाकी कमरों से छोटा और साफ-सुथरा था, मैंने शीशे की अलमारी से, जिसकी चाबी मैंने अपने पास रखी थी, एक किताब निकाली जिसका शीर्षक कुछ दिलचस्प लग रहा था, और पढ़ने बैठ गया। इस कमरे का शीशे का दरवाजा बड़े से बरामदे में खुलता था; बबूल की डालियाँ उसके शीशों को छूती हुई

सामने की चौखट पर खिले गुलाब के पौधे से मिलती थीं: इस गुलाब के पौधे में मधुमक्खियाँ चहचहा रही थीं और खुश थीं। मैंने पढ़ना शुरू किया। जैसे ही शांत भिनभिनाहट, घनी छाया, और मेरे एकांत की गर्म, अकेली शांति पन्नों से अर्थ, मेरी आँखों से दृष्टि छीनने लगी और मुझे कल्पना की राह पर, सपनों की गहरी घाटी में खींचने लगी — ठीक उसी समय, गली के दरवाजे की घंटी की सबसे तेज़ आवाज़ ने, जिस पर उस आजमाए हुए यंत्र ने कभी रोमांचित किया था, मुझे वापस होश में ला दिया।

सुबह से घंटी बजती आ रही थी, क्योंकि मजदूर, नौकर, हेयरड्रेसर या कढ़ाई करने वाली महिलाएं अपने-अपने कामों के लिए आती-जाती रहती थीं। इतना ही नहीं, दोपहर भर घंटी बजने की पूरी उम्मीद थी, क्योंकि लगभग सौ बाहरी लोग अभी भी गाड़ियों या ठेलों में आने वाले थे। शाम को भी घंटी बजना बंद नहीं होना था, जब माता-पिता और दोस्त नाटक देखने के लिए उमड़ पड़ेंगे। इन परिस्थितियों में घंटी बजना - चाहे कितनी भी तेज़ क्यों न हो - स्वाभाविक था: फिर भी इस बार की घंटी की एक अलग ही ध्वनि थी, जिसने मेरे सपनों को तोड़ दिया और मेरी किताब को मेरे घुटनों से गिरा दिया।

मैं आखिरी चीज़ उठाने के लिए झुक ही रहा था कि— दृढ़, तेज़, सीधा— सीधे प्रवेश द्वार से होते हुए— गलियारे से गुज़रते हुए, चौराहे को पार करते हुए, पहले भाग से, दूसरे भाग से, बड़े कमरे से होते हुए— एक कदम बढ़ा, तेज़, नियमित, इरादे से। पहले कमरे का बंद दरवाज़ा— मेरा आश्रय— कोई बाधा नहीं बना; वह अचानक खुल गया, और एक पैलेटोट और एक ग्रीक बोनट ने उस खालीपन को भर दिया; साथ ही दो आँखें पहले धुंधली सी मुझ पर पड़ीं, और फिर भूखी निगाहों से मुझ पर गड़ गईं।

“बस!” एक आवाज़ ने कहा। “मैं उसे जानती हूँ: वह अंग्रेज़ है। तो ठीक है। चाहे वह अंग्रेज़ हो, और इसी वजह से कितनी भी नखरेबाज़ हो—वह मेरे लिए बिल्कुल ठीक रहेगी, वरना मुझे पता चल जाएगा कि क्यों।”

फिर, एक निश्चित कठोरता और विनम्रता के साथ (मुझे लगता है कि उन्होंने सोचा होगा कि मैं उनकी पिछली असभ्य बड़बड़ाहट का मतलब नहीं समझ पाया था), और अब तक सुनी गई सबसे घृणित भाषा में, "मेस — — , तुम्हें खेलना ही होगा: मैं वहाँ तैनात हूँ।"

“मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ, श्रीमान पॉल इमानुएल?” मैंने पूछा: श्रीमान

यह इमानुएल था, और वह काफी उत्तेजित अवस्था में था।

“खेलना ही होगा। मैं तुम्हें पीछे हटने, मुंह बनाने या संकोच करने नहीं दूंगा। जिस रात तुम आए थे, मैंने तुम्हारे दिमाग को पढ़ लिया था; मैं तुम्हारे अंदर की भावनाएं देख सकता हूं: तुम खेल सकते हो; खेलना ही होगा।”

“लेकिन कैसे, एम पॉल? आपका मतलब क्या है?”

“समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है,” उन्होंने आगे कहा, अब वे फ्रेंच में बोल रहे थे; “और आइए हम सभी अनिच्छाओं, सभी बहानों, सभी छल-कपटों को दरकिनार कर दें। आपको इसमें भाग लेना ही होगा।”

"वाडेविल में?"

“वाडेविल में। आपने सही कहा है।”

मैं भयभीत होकर हांफने लगा। उस छोटे आदमी का क्या मतलब था?

“सुनो!” उसने कहा। “मामला बताया जाएगा, और फिर तुम मुझे हां या ना में जवाब दोगे; और तुम्हारे जवाब के आधार पर ही मैं तुम्हारा मूल्यांकन करूंगा।”

उसके चिड़चिड़े स्वभाव की दबी हुई उग्रता उसके गालों पर चमक रही थी, उसकी तीखी निगाहें उसे और भी भड़का रही थीं। ऐसा स्वभाव—जो नासमझ, भावुक, संकोची, उदास, बनावटी और सबसे बढ़कर अड़ियल था—जल्दी ही हिंसक और निर्दयी बन सकता था। मौन और ध्यान ही सबसे अच्छा उपाय था: मैंने सुना।

“सारा मामला नाकाम होने वाला है,” उसने कहना शुरू किया। “लुईस वेंडरकेल्कोव बीमार पड़ गई है—कम से कम उसकी बेवकूफ माँ तो यही कहती है; जहाँ तक मेरी बात है, मुझे पूरा यकीन है कि अगर वो चाहे तो खेल सकती है: बस सद्भावना की कमी है। उसे एक भूमिका सौंपी गई है, जैसा कि आप जानते हैं, या नहीं जानते—यह बराबर की बात है: उस भूमिका के बिना नाटक रुक जाएगा। अब इसे सीखने के लिए बस कुछ ही घंटे बचे हैं: इस स्कूल की कोई भी लड़की तर्क नहीं सुनेगी और यह काम स्वीकार नहीं करेगी। सच में, यह कोई दिलचस्प या सुखद भूमिका नहीं है; उनका घिनौना आत्मसम्मान—औरतों में पाई जाने वाली वो नीच प्रवृत्ति—इससे विद्रोह कर देगी। अंग्रेज़ औरतें या तो अपनी जाति में सबसे अच्छी होती हैं या सबसे बुरी। भगवान जानता है कि मैं उनसे आम तौर पर नफरत करता हूँ” (उसके कायर दाँतों के बीच)। “मैं एक अंग्रेज़ औरत से मदद की गुहार लगाता हूँ।

उसका जवाब क्या होगा—हाँ या ना?”

मेरे मन में हजारों आपत्तियां उमड़ पड़ीं। विदेशी भाषा, सीमित समय, सार्वजनिक प्रदर्शन... इच्छाशक्ति पीछे हट गई, क्षमता डगमगा उठी, आत्मसम्मान (वह "नीच गुण") कांप उठा। "नहीं, नहीं, नहीं!" ये सब बातें मेरे मुंह से निकलीं; लेकिन एम. पॉल की ओर देखते हुए, और उनकी व्यथित, उग्र और खोजी आंखों में, उसकी धमकी के पीछे एक तरह की अपील देखकर, मेरे होंठों से "हां" निकल गया। एक पल के लिए उनका कठोर चेहरा संतुष्टि की एक हल्की सी सिहरन से नरम पड़ गया: लेकिन जल्दी ही फिर से सीधा होकर, वे आगे बोले, —

“जल्दी करो! ये रही किताब; ये रही तुम्हारी भूमिका: पढ़ो।” और मैंने पढ़ा। उन्होंने कोई प्रशंसा नहीं की; कुछ अंशों पर वे तेवर चढ़ाते और पैर पटकते रहे। उन्होंने मुझे एक सबक दिया: मैंने लगन से उनका अनुकरण किया। यह एक अप्रिय भूमिका थी—एक पुरुष की—एक खाली दिमाग वाले दिखावटी व्यक्ति की। इसमें न तो दिल लगाया जा सकता था और न ही आत्मा: मुझे इससे नफरत थी। नाटक—महज एक मामूली नाटक—मुख्य रूप से दो प्रतिद्वंद्वियों के एक सुंदर चंचल स्त्री का हाथ पाने के प्रयासों पर आधारित था। एक प्रेमी को “हमारा” कहा जाता था, एक अच्छा और वीर, लेकिन अपरिष्कृत व्यक्ति, एक अनमोल हीरे जैसा; दूसरा चंचल, बातूनी और धोखेबाज था: और मुझे चंचल, बातूनी और धोखेबाज की भूमिका निभानी थी।

मैंने अपनी पूरी कोशिश की—जो कि बुरी थी, मैं जानता हूँ: इससे एम. पॉल भड़क गए; वे आग बबूला हो गए। मैंने पूरी मेहनत से काम करते हुए अपनी पूरी कोशिश से भी बेहतर करने का प्रयास किया; मुझे लगता है कि उन्होंने मेरी अच्छी नीयत को समझा; उन्होंने कुछ हद तक संतुष्ट होने का दिखावा किया। “का इरा!” वे चिल्लाए; और जैसे ही बगीचे से आवाज़ें आने लगीं, और पेड़ों के बीच सफेद पोशाकें लहराने लगीं, उन्होंने आगे कहा: “तुम्हें पीछे हटना होगा: इसे सीखने के लिए तुम्हें अकेले रहना होगा। मेरे साथ आओ।”

मुझे सोचने-समझने का समय या शक्ति दिए बिना ही, पल भर में मुझे एक बवंडर की तरह ऊपर ले जाया गया, दो सीढ़ियाँ, बल्कि वास्तव में तीन सीढ़ियाँ (क्योंकि यह जोशीला छोटा आदमी मानो सहज ज्ञान से हर जगह अपना रास्ता जानता था); मुझे एकांत और ऊँचे अटारी में ले जाया गया, अंदर रखा गया और ताला लगा दिया गया, चाबी दरवाजे में थी, और वह चाबी वह अपने साथ ले गया और गायब हो गया।

अटारी कोई सुखद जगह नहीं थी: मुझे लगता है कि उसे इसकी अप्रियता का अंदाज़ा नहीं था, वरना वह मुझे इतनी बेरुखी से अंदर बंद न करता। इस गर्मी में, यह अफ्रीका की तरह गर्म थी; और सर्दियों में, यह हमेशा ग्रीनलैंड की तरह ठंडी रहती थी। बक्से और लकड़ियाँ अटारी में भरी पड़ी थीं; पुराने कपड़े इसकी बेदाग दीवार पर लटके थे - मकड़ी के जाले इसकी बिना साफ की हुई छत पर जमे थे। यह बात सर्वविदित थी कि यहाँ चूहे, काले भृंग और तिलचट्टे रहते हैं - बल्कि, अफवाह यह भी थी कि बगीचे की प्रेतवाधित नन को कभी यहाँ देखा गया था। एक छोर पर आंशिक अंधेरा छाया हुआ था, जिसके पार, मानो और भी गहरे रहस्य के लिए, एक पुराना भूरा पर्दा लगा हुआ था, जो सर्दियों के लबादों की एक उदास पट्टी को परदे की तरह छिपा रहा था, हर लबादा अपनी पिन से इस तरह लटका हुआ था जैसे कोई अपराधी अपने फांसी के फंदे से लटका हो। कहा जाता था कि इन लबादों के बीच से, और उस पर्दे के पीछे से, नन निकलती थी। मुझे इस पर विश्वास नहीं था, न ही मुझे इसके बारे में कोई आशंका थी; लेकिन मैंने एक बहुत बड़े, काले रंग के चूहे को, जिसकी लंबी पूंछ थी, उस गंदी सी जगह से रेंगते हुए निकलते देखा; और तो और, मेरी नज़र फर्श पर बिखरे हुए कई काले भृंगों पर पड़ी। इन चीज़ों ने मुझे शायद ज़रूरत से ज़्यादा बेचैन कर दिया, जैसा कि उस जगह की धूल, लकड़ी और घुटन भरी गर्मी ने भी किया। अगर मैंने रोशनदान को खोलकर ऊपर उठाने का कोई तरीका न ढूंढा होता, जिससे कुछ ताज़ी हवा अंदर आ सके, तो यह असुविधा जल्द ही असहनीय हो जाती। इस रोशनदान के नीचे मैंने एक बड़ा खाली संदूक रखा, और उस पर एक छोटा बक्सा रखकर, दोनों से धूल पोंछकर, मैंने अपने कपड़े (पाठक को याद होगा कि ये मेरे सबसे अच्छे कपड़े थे, और इसलिए इनकी देखभाल करना जायज़ था) बड़े ध्यान से अपने चारों ओर समेटे, इस अस्थायी सिंहासन पर चढ़ी, और बैठते ही अपना काम शुरू कर दिया; मैं जो सीख रहा था, उसे इस बात का ध्यान रखते हुए कि मैं काले भृंगों और तिलचट्टों पर भी कड़ी नजर रखूं, जिनसे मुझे चूहों से भी कहीं ज्यादा, शायद, बहुत डर लगता था।

पहले तो मुझे लगा कि मैंने जो काम हाथ में लिया है, वह करना नामुमकिन है, और मैंने बस यही ठान लिया कि मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूँगा और असफलता को स्वीकार कर लूँगा। लेकिन जल्द ही मुझे पता चला कि इतने छोटे नाटक का एक हिस्सा याद रखना कुछ ही घंटों में संभव है। मैंने बार-बार सीखा, पहले धीरे से, फिर

ज़ोर से। किसी के सामने न होते हुए, मैंने अटारी के कीड़े-मकोड़ों के सामने अपना किरदार निभाया। तिरस्कार और अधीरता से भरे भाव से, मैंने उस खालीपन, तुच्छता और झूठ में प्रवेश किया और उस "मोटे" से बदला लिया, उसे जितना हो सके उतना मूर्ख बनाकर।

इस अभ्यास में दोपहर बीत गई: दिन ढलकर शाम में बदलने लगा; और मैं, जिसने नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया था, अत्यधिक भूखा हो गया। अब मुझे उस नाश्ते का ख्याल आया, जिसे निस्संदेह वे लोग नीचे बगीचे में मजे से खा रहे होंगे। (मैंने प्रवेश कक्ष में क्रीम से बने छोटे-छोटे पैटे से भरी एक टोकरी देखी थी, जो मुझे पाक कला में सबसे अच्छी लगी थी)। मुझे लगा कि एक पैटे या केक का एक टुकड़ा बहुत उपयुक्त रहेगा; और जैसे-जैसे उन स्वादिष्ट व्यंजनों के प्रति मेरी रुचि बढ़ती गई, मुझे यह थोड़ा कठिन लगने लगा कि मैं अपनी छुट्टियाँ उपवास और कैद में बिताऊँ। हालाँकि अटारी मुख्य द्वार और प्रवेश कक्ष से दूर थी, फिर भी लगातार बजने वाली घंटी की हल्की सी आवाज़ यहाँ सुनाई दे रही थी; और साथ ही उबड़-खाबड़ फुटपाथ पर पहियों की निरंतर गड़गड़ाहट भी। मुझे पता था कि घर और बगीचा लोगों से भरा हुआ था, और नीचे सब कुछ खुशहाल और आनंदमय था; यहाँ शाम ढलने लगी थी: भृंग मेरी नज़रों से ओझल हो रहे थे; मुझे डर सता रहा था कि कहीं वे चुपके से मुझ पर हमला न कर दें, बिना देखे मेरे सिंहासन पर न चढ़ जाएं और बिना शक के मेरे परदे पर धावा न बोल दें। बेचैन और चिंतित होकर मैंने समय बिताने के लिए अपने हिस्से का अभ्यास फिर से शुरू कर दिया। जैसे ही मैं अभ्यास समाप्त कर रही थी, ताले में चाबी की खड़खड़ाहट की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी - यह कोई अप्रिय आवाज़ नहीं थी। श्रीमान पॉल (मैं धुंध में से देख पा रही थी कि यह श्रीमान पॉल ही हैं, क्योंकि अभी भी इतनी रोशनी थी कि उनके छोटे-छोटे बालों वाले सिर का मखमली कालापन और उनके माथे का पीलापन साफ दिखाई दे रहा था) अंदर झाँक रहे थे।

“वाह!” उसने दरवाजा खुला रखते हुए और दहलीज पर खड़े रहते हुए चिल्लाकर कहा। “मैंने सब कुछ सुना। बहुत बढ़िया है। एक बार फिर!”

एक पल के लिए मैं झिझक गया।

“फिर से!” उसने सख्ती से कहा। “और अब और मुंह मत बनाओ! शर्म को दूर भगाओ!”

मैंने उस हिस्से को दोबारा पढ़ा, लेकिन उतनी अच्छी तरह से नहीं जितना कि मैंने

उसे अकेले बोलते समय पढ़ा था।

“आखिरकार, उसे समझ आ गया,” उसने आधे असंतुष्ट भाव से कहा, “और इन परिस्थितियों में कोई ज्यादा बारीकी या सख्ती नहीं बरत सकता।” फिर उसने आगे कहा, “तैयारी के लिए आपके पास अभी भी बीस मिनट हैं: अलविदा!” और वह चला गया।

मैंने हिम्मत जुटाकर पुकारा, "महाशय!"

“अच्छा! क्या बात है, महोदया?”

"मुझे बहुत भूख लगी है।"

“क्या, तुम्हें भूख लगी है?! कुछ हल्का-फुल्का खाओगे?”

मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता। मैंने इसे नहीं देखा है, मैं यहीं चुप बैठा हूँ।

“अरे! बिल्कुल सही,” वह चिल्लाया।

पल भर में मेरा सिंहासन छिन गया, अटारी खाली हो गई; जिस प्रेरणा ने मुझे अटारी तक पहुँचाया था, उसी का उल्टा असर मुझे तुरंत नीचे – नीचे – सीधे रसोई में ले आया। मुझे लगा था कि मैं तहखाने में चला गया हूँ। रसोइए को खाना लाने का आदेश दिया गया, और मुझे भी उतनी ही सख्ती से खाने का आदेश दिया गया। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि खाना सिर्फ़ कॉफ़ी और केक था: मुझे शराब और मिठाइयों का डर था, जो मुझे पसंद नहीं थीं। मुझे नहीं पता कि उसे कैसे पता चला कि मुझे पेटिट पाटे आ ला क्रीम पसंद आएगा; लेकिन वह बाहर गया और कहीं से मेरे लिए एक ले आया। मैंने बड़े चाव से खाया-पिया, पेटिट पाटे को आखिर तक बचाकर रखा, मानो वह एक स्वादिष्ट मिठाई हो। एम. पॉल मेरे खाने पर नज़र रख रहे थे, और उन्होंने लगभग मेरी क्षमता से ज़्यादा खाना मुझ पर थोप दिया।

“आओ शुभ समय पर,” वह चिल्लाया, जब मैंने इशारा किया कि मैं अब और नहीं सह सकती, और हाथ उठाकर उससे विनती की कि मुझे वह अतिरिक्त रोटी न दी जाए जिस पर उसने अभी-अभी मक्खन लगाया था। “तुम मुझे एक अत्याचारी और घमंडी शासक समझोगी, जो महिलाओं को तहखाने में भूखा रखता है; जबकि, सच तो यह है कि मैं ऐसा बिल्कुल नहीं हूँ। अब, महोदया, क्या आपमें बाहर आने का साहस और शक्ति है?”

मैंने कहा, मुझे लगा कि मैंने किया था; हालाँकि, सच तो यह था कि मैं पूरी तरह से भ्रमित था, और मुश्किल से बता सकता था कि मैं कैसा महसूस कर रहा था:

लेकिन यह छोटा आदमी उन प्राणियों में से था जिनका विरोध नहीं किया जाना चाहिए, जब तक कि आपके पास उसे एक ही बार में कुचलने के लिए पर्याप्त सर्वशक्तिशाली बल न हो।

“तो फिर आइए,” उसने हाथ बढ़ाते हुए कहा।

मैंने उसे अपना दे दिया, और वह तेज़ी से चलने लगा, जिससे मुझे उसके साथ कदम मिलाकर चलने के लिए दौड़ना पड़ा। गलियारे में वह एक पल के लिए रुका: वह बड़े-बड़े लैंपों से जगमगा रहा था; कक्षाओं के चौड़े दरवाजे खुले थे, और उतने ही चौड़े बगीचे के दरवाजे भी; गमलों में लगे संतरे के पेड़ और गमलों में लगे लंबे फूल दोनों ओर इन दरवाजों की शोभा बढ़ा रहे थे; शाम के परिधान में सजे महिलाओं और पुरुषों के समूह फूलों के बीच खड़े और चल रहे थे। भीतर, स्कूल के कमरों का लंबा दृश्य एक भीड़भाड़ वाली, लहराती, गुनगुनाती, लहराती, बहती हुई भीड़ को प्रस्तुत कर रहा था, जो गुलाबी, नीले और अर्ध-पारदर्शी सफेद रंग की थी। ऊपर चमकती बत्तियाँ जल रही थीं; दूर एक मंच था, एक गंभीर हरा पर्दा, और पैरों के लिए लगी रोशनियों की एक कतार।

“क्या यह सुंदर नहीं है?” मेरे साथी ने पूछा।

मुझे कहना चाहिए था कि हाँ, लेकिन मेरा दिल घबरा गया। एम. पॉल को इस बात का पता चल गया और उन्होंने मुझे तिरछी नज़र से देखा और थोड़ा धक्का भी दिया।

मैंने कहा, "मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा, लेकिन काश यह सब खत्म हो जाता।" फिर मैंने पूछा, "क्या हमें उस भीड़ के बीच से होकर गुजरना होगा?"

"बिल्कुल नहीं: मैं मामलों को बेहतर ढंग से संभालता हूँ: हम यहाँ से बगीचे से होकर गुजरते हैं।"

पलक झपकते ही हम बाहर आ गए: ठंडी, शांत रात ने मुझे कुछ ताज़गी दी। चाँद नहीं था, लेकिन कई जगमगाती खिड़कियों से आती रोशनी से आंगन जगमगा रहा था, और यहाँ तक कि गलियाँ भी हल्की रोशनी से जगमगा रही थीं। आसमान बादलों से रहित था, और अपनी जीवंत अग्नि की झिलमिलाहट से भव्य लग रहा था। महाद्वीप की रातें कितनी कोमल होती हैं! कितनी सुखद, आरामदायक और सुरक्षित! न समुद्री कोहरा, न ठंडक देने वाली नमी: दोपहर की तरह साफ़, और सुबह की तरह ताज़ा।

आंगन और बगीचे को पार करते हुए हम प्रथम श्रेणी के काँच के दरवाजे तक पहुँचे। उस रात बाकी सभी दरवाजों की तरह वह भी खुला था; हम अंदर गए और

फिर मुझे एक छोटे से कमरे में ले जाया गया, जो प्रथम श्रेणी को भव्य कक्ष से अलग करता था। वह कमरा इतना प्रकाश से भरा था कि मेरी आँखें चौंधिया गईं; शोरगुल से भरा होने के कारण मेरी आँखें सुन्न हो गईं; और इतनी गर्मी, घुटन और भीड़भाड़ के कारण मेरा दम घुट गया।

"व्यवस्था बनाए रखें! शांत हो जाएं!" एम. पॉल चिल्लाए। "क्या यह अराजकता है?", उन्होंने पूछा; और सन्नाटा छा गया। कुछ शब्दों और उतने ही इशारों से उन्होंने उपस्थित लोगों में से आधे को बाहर निकाल दिया और शेष को कतार में खड़े होने का आदेश दिया। जो लोग बचे थे, वे सभी वेशभूषा में थे: वे कलाकार थे, और यह ग्रीन-रूम था। एम. पॉल ने मेरा परिचय कराया। सभी घूरने लगे और कुछ हल्के से हँसे। यह एक आश्चर्य था: उन्होंने उम्मीद नहीं की थी कि एक अंग्रेज महिला वाडेविल में अभिनय करेगी। जिनेवरा फैंसहावे, अपने किरदार के लिए खूबसूरती से सजी हुई और बेहद खूबसूरत लग रही थीं, उन्होंने मोतियों जैसी गोल आँखों से मेरी ओर देखा। पूरे जोश में, भय या शर्म से बेपरवाह, सैकड़ों लोगों के सामने चमकने के विचार से वास्तव में प्रसन्न - मेरे प्रवेश ने मानो उनकी खुशी के बीच उन्हें विस्मित कर दिया। वह चीखने ही वाली थीं, लेकिन एम. पॉल ने उन्हें और बाकी सभी को रोके रखा।

पूरी टुकड़ी का सर्वेक्षण और आलोचना करने के बाद, वह मेरी ओर मुड़ा।

आपको भी अपनी भूमिका के अनुसार कपड़े पहनने होंगे।

"कपड़े पहने हुए—एक आदमी की तरह कपड़े पहने हुए!" ज़ेली सेंट पियरे ने आगे बढ़ते हुए कहा; और बड़े ही औपचारिक अंदाज़ में जोड़ा, "मैं उसे खुद कपड़े पहनाऊँगी।"

पुरुष की तरह कपड़े पहनना मुझे अच्छा नहीं लगा, और यह मेरे लिए उचित भी नहीं था। मैंने पुरुष का नाम और रूप धारण करने की सहमति दी थी; लेकिन उसके पहनावे की बात छोड़ो! मैं अपने कपड़े हर हाल में पहनूंगी, चाहे कुछ भी हो जाए। एम. पॉल चाहे कितना भी क्रोधित हों, चाहे कितना भी गुस्सा दिखाएं, मैं अपने कपड़े पहनूंगी। मैंने ये शब्द दृढ़ निश्चय से भरे स्वर में कहे, जो धीमा और शायद थोड़ा लड़खड़ाता हुआ था।

उन्होंने तुरंत कोई प्रतिक्रिया नहीं दी या क्रोधित नहीं हुए, जैसा कि मैंने पूरी तरह से सोचा था कि वे होंगे; वे चुपचाप खड़े रहे। लेकिन ज़ेली ने फिर से हस्तक्षेप किया।

"वह एक शानदार छोटी शिक्षिका बनेगी। ये रहे सारे वस्त्र — सब पूरे हैं: थोड़े बड़े

हैं, लेकिन — मैं सब ठीक कर दूंगी। आओ, मेरी प्यारी दोस्त — सुंदर अंग्रेज़!"

और उसने मेरा उपहास उड़ाया, क्योंकि मैं "सुंदर" नहीं थी। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया, वह मुझे खींचकर ले जा रही थी। एम. पॉल अविचलित - तटस्थ खड़ी रही।

"तुम्हें विरोध नहीं करना चाहिए," सेंट पियरे ने कहा—जबकि मैंने विरोध किया। "तुम सब कुछ बिगाड़ दोगे, नाटक का आनंद, सभा का मज़ा, सब कुछ अपने आत्मसम्मान के लिए कुर्बान कर दोगे। यह बहुत बुरा होगा—महाशय, क्या ऐसा कभी होने देंगे?"

उसने उसकी ओर देखने की कोशिश की। मैंने भी, एक नज़र पाने के लिए, उसे देखा। उसने उसे एक नज़र दी, और फिर मुझे। "रुको!" उसने धीरे से कहा, सेंट पियरे को रोकते हुए, जो मुझे अपने पीछे खींचने की कोशिश करती रही। सभी लोग फैसले का इंतजार कर रहे थे। वह न तो क्रोधित था, न ही चिढ़; मैंने यह महसूस किया और मुझे तसल्ली मिली।

"तुम्हें ये कपड़े पसंद नहीं आए?" उसने मर्दाना वस्त्रों की ओर इशारा करते हुए पूछा।

मुझे उनमें से कुछ पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मैं उन सभी को स्वीकार नहीं करूंगा।

"तो फिर यह कैसे हो सकता है? एक पुरुष की भूमिका स्वीकार करके, एक महिला के वेश में मंच पर जाना? यह एक शौकिया मामला है, यह सच है - एक पेंशनभोगी का वाडेविल; कुछ बदलावों को मैं स्वीकार कर सकता हूँ, फिर भी आपको कुछ ऐसा पहनना होगा जो आपको उच्च कोटि की स्त्री के रूप में प्रकट करे।"

"हाँ, मैं ऐसा ही करूँगी, महोदय; लेकिन यह सब मेरे अपने तरीके से होना चाहिए: किसी को दखल नहीं देना चाहिए; मुझ पर कोई दबाव नहीं डालना चाहिए। बस मुझे खुद कपड़े पहनने दीजिए।"

महोदय ने बिना कुछ कहे सेंट पियरे से पोशाक ली, मुझे दी और मुझे ड्रेसिंग रूम में जाने की अनुमति दी। अंदर जाते ही मैं शांत हो गई और संयम से काम में जुट गई। मैंने अपनी महिला पोशाक को बिना किसी बदलाव के रखा, बस एक छोटी सी बनियान, एक कॉलर, एक टाई और एक छोटा सा पैलेटोट पहन लिया; यह पूरी पोशाक एक विद्यार्थी के भाई की थी। मैंने अपनी चोटियाँ खोलीं, पीछे के लंबे बालों को अच्छे से बाँधा और आगे के बालों को एक तरफ कंघी किया, फिर अपनी टोपी

और दस्ताने हाथ में लेकर बाहर आई। एम. पॉल और बाकी लोग इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने मेरी तरफ देखा। "यह पेंशन में चल जाएगा," उन्होंने कहा। फिर उन्होंने नरमी से कहा, "हिम्मत रखो, मेरे दोस्त! थोड़ा धैर्य रखो - थोड़ा आत्मविश्वास रखो, एम. लुसिएन, और सब ठीक हो जाएगा।"

सेंट पियरे ने एक बार फिर अपने ठंडे, सर्पाकार अंदाज में उपहास किया।

मैं उत्तेजित होने के कारण चिड़चिड़ा हो गया था, और मैं खुद को रोक नहीं पाया और उस पर भड़क कर कहा कि अगर वह एक महिला और मैं एक सज्जन न होते, तो मैं उसे सबके सामने बेइज्जत करने को तैयार होता।

“नाटक के बाद, नाटक के बाद,” एम. पॉल ने कहा। “तब मैं अपनी पिस्तौलें तुम दोनों में बाँट दूँगा, और हम इस विवाद को विधिवत रूप से सुलझा लेंगे: यह केवल फ्रांस और इंग्लैंड का पुराना झगड़ा होगा।”

लेकिन अब प्रस्तुति शुरू होने का समय आ गया था। एम. पॉल ने हमें अपने सामने खड़ा किया और एक सेनापति की तरह, जो आक्रमण करने वाले सैनिकों को संबोधित कर रहा हो, संक्षेप में हमें संबोधित किया। मुझे नहीं पता उन्होंने क्या कहा, सिवाय इसके कि उन्होंने हममें से प्रत्येक को अपनी तुच्छता का अहसास करने की सलाह दी। भगवान जानता है कि मुझे यह सलाह हममें से कुछ के लिए अनावश्यक लगी। एक घंटी बजी। मुझे और दो अन्य लोगों को मंच पर बुलाया गया। घंटी फिर बजी। मुझे सबसे पहले बोलना था।

“भीड़ की तरफ मत देखो, न ही उसके बारे में सोचो,” एम. पॉल ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा। “कल्पना करो कि तुम अटारी में हो और चूहों के लिए अभिनय कर रहे हो।”

वह गायब हो गया। पर्दा उठा—छत तक सिकुड़ा हुआ: तेज़ रोशनी, लंबा कमरा, जीवंत भीड़, हम पर टूट पड़ी। मैंने काले भृंगों, पुराने बक्सों, कीड़े लगे दराजों के बारे में सोचा। मैंने अपनी बात ठीक से नहीं कही; लेकिन कही तो सही। वह पहला भाषण ही मुश्किल था; इसने मुझे यह एहसास दिलाया कि मुझे भीड़ से उतना डर नहीं लगता था जितना अपनी आवाज़ से। अजनबी और परदेसी, भीड़ मेरे लिए कुछ भी नहीं थी। न ही मैंने उनके बारे में सोचा। जब मेरी ज़बान एक बार खुल गई, और मेरी आवाज़ ने अपना सही स्वर पा लिया, और अपनी स्वाभाविक लय में आ गई, तो मैंने उस किरदार के अलावा और कुछ नहीं सोचा जिसे मैं निभा रहा था—और एम. पॉल के

बारे में, जो किनारे पर सुन रहे थे, देख रहे थे और मार्गदर्शन कर रहे थे।

धीरे-धीरे, सही ऊर्जा का अहसास होने लगा—अंदर से वसंत ऋतु में उमंग उमड़ रही थी—मैं इतना शांत हो गया कि अपने साथी कलाकारों पर ध्यान दे सकूँ। उनमें से कुछ ने बहुत अच्छा अभिनय किया; विशेष रूप से जिनेवरा फैंसहावे, जिन्हें दो प्रेमियों के बीच नखरे दिखाने थे, और उन्होंने इसे बखूबी निभाया: वास्तव में वह अपने किरदार में पूरी तरह ढली हुई थीं। मैंने देखा कि उन्होंने एक-दो बार मेरे प्रति—उस दिखावटी व्यक्ति के प्रति—एक तरह का स्नेह और पक्षपात दिखाया। उन्होंने इतने ज़ोर और उत्साह से मेरी ओर देखा, इतनी निगाहें तालियाँ बजा रही भीड़ की ओर घुमाईं कि मुझे—जो उन्हें जानता था—जल्द ही समझ आ गया कि वह किसी के लिए अभिनय कर रही हैं; और मैंने उनकी आँखों, उनकी मुस्कान, उनके हाव-भाव का अनुसरण किया, और जल्द ही पता चला कि उन्होंने कम से कम अपने तीरों के लिए एक सुंदर और विशिष्ट लक्ष्य चुन लिया था; उन तीरों के ठीक रास्ते में—अन्य दर्शकों से लंबा, और इसलिए उन्हें लगने की अधिक संभावना वाला—शांत लेकिन एकाग्र मुद्रा में खड़ा था एक जाना-पहचाना चेहरा—डॉ. जॉन का।

यह दृश्य किसी न किसी तरह संकेतपूर्ण प्रतीत हुआ। डॉ. जॉन की नज़र में कुछ भाषा छिपी थी, हालाँकि मैं यह नहीं बता सकता कि उन्होंने क्या कहा; इसने मुझे प्रेरित किया: मैंने उससे एक इतिहास निकाला; मैंने अपने विचार को अपने द्वारा निभाए गए किरदार में ढाला; मैंने इसे जिनेवरा को रिझाने के अपने प्रयास में शामिल किया। "हमारा", या सच्चे प्रेमी के रूप में, मैंने डॉ. जॉन को देखा। क्या मुझे उन पर पहले की तरह दया आई? नहीं, मैंने अपना हृदय कठोर कर लिया, उनसे प्रतिस्पर्धा की और उन्हें मात दी। मैं जानता था कि मैं केवल एक दिखावटी व्यक्ति हूँ, लेकिन जहाँ वह बहिष्कृत थे, वहाँ मैं उन्हें प्रसन्न कर सकता था। अब मैं जानता हूँ कि मैंने ऐसा व्यवहार किया मानो मैं जीतने और विजय प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित और इच्छुक था। जिनेवरा ने मेरा साथ दिया; हम दोनों ने मिलकर भूमिका का स्वरूप आधा बदल दिया, उसे ऊपर से नीचे तक सोने से सजा दिया। दृश्यों के बीच, एम. पॉल ने हमसे कहा कि उन्हें नहीं पता कि हम पर क्या हावी हो गया है, और आधा-अधूरा विरोध जताया। उन्होंने कहा, "यह शायद आपके आदर्श से अधिक सुंदर है, लेकिन यह उचित नहीं है।" मुझे भी नहीं पता कि मुझ पर क्या बीत रहा था; लेकिन किसी तरह, मेरी दिली तमन्ना "हमारे" यानी डॉ. जॉन को पीछे छोड़ने की थी।

जिनेवरा कोमल थी; भला मैं कैसे शूरवीर न बन पाता? पत्र को संभाल कर रखते हुए, मैंने भूमिका की भावना को बेपरवाही से बदल दिया। बिना दिल के, बिना रुचि के, मैं इसे निभा ही नहीं सकता था। इसे निभाना ही था – उसमें वो तड़का लग गया जिसकी मुझे चाह थी – और इस तरह मिले इस अवसर पर, मैंने इसे बड़े चाव से निभाया।

उस रात मैंने जो महसूस किया और जो किया, उसकी मुझे उतनी ही अकल्पनीय अपेक्षा थी जितनी कि सातवें आसमान पर पहुँचने की। ठंडे, अनिच्छुक और आशंकित होकर मैंने किसी और को खुश करने के लिए एक भूमिका स्वीकार की थी: कुछ ही समय में, मेरा मन गर्म हुआ, मुझे रुचि हुई, हिम्मत आई और मैंने खुद को खुश करने के लिए अभिनय किया। फिर भी अगले दिन, जब मैंने इस पर विचार किया, तो मुझे ये शौकिया प्रदर्शन बिल्कुल भी पसंद नहीं आए; और यद्यपि मुझे खुशी थी कि मैंने एम. पॉल की बात मानी और एक बार अपनी प्रतिभा को आजमाया, मैंने दृढ़ निश्चय किया कि मैं फिर कभी ऐसे किसी काम में नहीं पड़ूँगा। नाटकीय अभिव्यक्ति के प्रति तीव्र रुचि मेरे स्वभाव का हिस्सा बन गई थी; इस नई मिली प्रतिभा को संजोना और उसका उपयोग करना मुझे असीम आनंद दे सकता था, लेकिन जीवन को केवल देखने वाले के लिए यह पर्याप्त नहीं था: शक्ति और लालसा को त्यागना होगा; और मैंने उन्हें त्याग दिया, और उन्हें एक ऐसे दृढ़ संकल्प के ताले में जकड़ दिया जिसे न तो समय और न ही प्रलोभन खोल पाए हैं।

नाटक समाप्त होते ही, और वह भी काफी देर बाद, क्रोधी और मनमानी करने वाले एम. पॉल में एक बदलाव आ गया। प्रबंधकीय ज़िम्मेदारी का उनका समय समाप्त हो चुका था, और उन्होंने तुरंत अपनी गंभीर और सख्त शैली को त्याग दिया; पल भर में वे हमारे बीच खड़े हो गए, जीवंत, दयालु और मिलनसार, हम सभी से हाथ मिलाया, अलग-अलग धन्यवाद दिया और घोषणा की कि आने वाले नृत्य कार्यक्रम में हममें से प्रत्येक बारी-बारी से उनका साथी बनेगा। जब उन्होंने मुझसे वादा मांगा, तो मैंने उनसे कहा कि मैं नृत्य नहीं करती। "आज एक बार तो करना ही पड़ेगा," उनका जवाब था; और अगर मैं चुपचाप किनारे न हटती और उनके रास्ते से न हटती, तो वे मुझे इस दूसरे प्रदर्शन के लिए मजबूर कर देते। लेकिन मैंने एक शाम के लिए काफी अभिनय कर लिया था; अब समय आ गया था कि मैं अपने आप में और अपने सामान्य जीवन में लौट जाऊं। मंच पर पैलेटोट के नीचे मेरी हल्के भूरे रंग की पोशाक ठीक लग रही थी, लेकिन वाल्ट्ज़ या क्वाड्रिल के लिए उपयुक्त नहीं थी। एक शांत

कोने में जाकर, जहाँ से कोई मुझे देख नहीं सकता था, मैं नृत्य कार्यक्रम, उसकी भव्यता और उसके आनंद को एक तमाशे की तरह अपने सामने से गुजरते हुए देख सकती थी।

एक बार फिर जिनेवरा फैंसहावे सबसे खूबसूरत, सबसे प्यारी और सबसे प्रसन्नमिजाज उपस्थित थीं; उन्हें भोज की शुरुआत करने के लिए चुना गया था: वह बेहद प्यारी लग रही थीं, बेहद शालीनता से नाच रही थीं, और बेहद खुशी से मुस्कुरा रही थीं। ऐसे दृश्य उनकी जीत थे - वह आनंद की देवी थीं। काम या कष्ट उन्हें उदास और निराश कर देते थे, शक्तिहीन और दुखी; लेकिन उल्लास उनके तितली जैसे पंखों को फैला देता था, उनमें सुनहरी चमक और उज्ज्वल बिंदु पैदा कर देता था, उन्हें रत्न की तरह चमका देता था और फूल की तरह खिलने देता था। साधारण भोजन और सादे पेय को देखकर वह मुंह बना लेती थीं; लेकिन क्रीम और आइसक्रीम पर वह ऐसे टूट पड़ती थीं जैसे कोई चिड़िया शहद पर टूट पड़ती है: मीठी शराब उनकी पसंदीदा थी, और मीठा केक उनका रोज़ का भोजन। जिनेवरा ने अपना पूरा जीवन भोज में बिताया; कहीं और वह उदास और निराश रहती थीं।

हे पाठक, यह मत सोचो कि वह केवल अपने साथी एम. पॉल के लिए इस प्रकार खिल उठी और चमक उठी, या उसने उस रात अपनी सारी सुंदरता केवल अपने साथियों या उन माता-पिता और दादा-दादी को प्रसन्न करने के लिए दिखाई, जो हॉल में बैठे थे; ऐसे नीरस और सीमित हालातों में, इतने ठंडे और बेजान इरादों के साथ, जिनेवरा शायद ही एक कदम भी चलने की जहमत उठाती, और उत्साह और प्रसन्नता की जगह थकान और चिड़चिड़ाहट ने ले ली होती, लेकिन उसने उस नीरस उत्सव में एक ऐसी ऊर्जा पाई जिसने उसे रोशन कर दिया; उसने एक ऐसा मसाला चखा जिसने उसमें स्वाद भर दिया; उसने अपने सबसे आकर्षक रूप को प्रदर्शित करने के औचित्य को समझा।

डांस हॉल में, सचमुच, एम. पॉल को छोड़कर, एक भी पुरुष दर्शक ऐसा नहीं था जो विवाहित और पिता न हो। वह सज्जन भी अपनी जाति के इकलौते पुरुष थे जिन्हें किसी छात्रा को नृत्य के लिए ले जाने की अनुमति थी; और यह विशेष भूमिका उन्हें आंशिक रूप से पुरानी परंपरा के कारण दी गई थी (क्योंकि वह मैडम बेक के रिश्तेदार थे और उनके विशेष विश्वासपात्र थे), आंशिक रूप से इसलिए कि वह हमेशा अपनी मनमानी करते थे और अपनी मर्जी के मुताबिक काम करते थे, और आंशिक रूप से

इसलिए कि - चाहे वह कितने भी जिद्दी, भावुक और पक्षपाती क्यों न हों - वह सम्मान की मूर्ति थे और उन पर सबसे सुंदर और पवित्र लड़कियों की टोली का पूरा भरोसा किया जा सकता था; इस विश्वास के साथ कि उनके नेतृत्व में उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि कई लड़कियां - यह बात कोष्ठक में लिखी जा सकती है - बिल्कुल भी पवित्र नहीं थीं, बल्कि इसके विपरीत थीं; लेकिन वे एम. पॉल की उपस्थिति में अपनी स्वाभाविक अशिष्टता को प्रकट करने का साहस नहीं कर सकते, ठीक वैसे ही जैसे वे जानबूझकर उनके पैरों पर पैर रखने, किसी उग्र संबोधन के दौरान उनके चेहरे पर हंसने, या किसी चिड़चिड़ेपन के दौर में जब उनके मानवीय चेहरे पर एक बुद्धिमान बाघ का मुखौटा आ गया हो, तब धीमी आवाज़ में बोलने का साहस नहीं कर सकते। इसलिए, एम. पॉल जिसके साथ चाहें नृत्य कर सकते थे - और जो भी उनके नृत्य में बाधा डालता, उसका बुरा हाल होता।

वहाँ मौजूद अन्य लोगों को दर्शक के रूप में प्रवेश दिया गया था— (स्पष्ट रूप से) अनिच्छा से, प्रार्थनाओं के माध्यम से, प्रभाव से, प्रतिबंधों के तहत, मैडम बेक के दयालु स्वभाव के विशेष और कठिन प्रयोग से। मैडम ने पूरी शाम उन्हें—अपनी व्यक्तिगत निगरानी में—कैरे के सबसे दूरस्थ, सबसे सुनसान, सबसे ठंडे, सबसे अंधेरे कोने में दूर रखा—युवाओं का एक छोटा, अकेला समूह; ये सभी सबसे अच्छे परिवारों के थे, उपस्थित माताओं के वयस्क पुत्र थे, और जिनकी बहनें स्कूल में पढ़ती थीं। पूरी शाम मैडम इन युवाओं के साथ ड्यूटी पर थीं—एक माँ की तरह उनकी देखभाल करती थीं, लेकिन उनके साथ एक अजगर की तरह सख्त थीं। उनके सामने एक घेरा बना हुआ था, जिसे पार करने की अनुमति के लिए वे उनसे प्रार्थना करते-करते थक जाते थे, और उस "सुंदर गोरी", या उस "सुंदर भूरी", या "सुंदर काले बालों वाली उस खूबसूरत युवती" के साथ एक नृत्य करके खुद को तरोताज़ा कर लेते थे।

“चुप रहो!” मैडम ने वीरतापूर्वक और दृढ़ता से उत्तर दिया। “तुम मेरे शव के ऊपर से गुजरे बिना आगे नहीं बढ़ सकते, और तुम बगीचे में केवल नन के साथ ही नृत्य करोगे” (किंवदंती का जिक्र करते हुए)। और वह भूरे रंग के रेशमी गाउन में एक छोटी बोनापार्ट की तरह, उनके उदास और अधीर कतार के बीच शान से इधर-उधर चलती रहीं।

मैडम को दुनियादारी की अच्छी समझ थी; उन्हें मानव स्वभाव की गहरी जानकारी थी। मुझे नहीं लगता कि विलेट में कोई और डायरेक्ट्रेस किसी युवा पुरुष को अपने

यहाँ आने देने की हिम्मत करती; लेकिन मैडम जानती थीं कि ऐसे मौके पर उन्हें प्रवेश देकर एक साहसिक कदम उठाया जा सकता है और एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की जा सकती है।

पहली बात तो यह है कि माता-पिता को इस कृत्य में भागीदार बना दिया गया, क्योंकि यह सब उन्हीं की मध्यस्थता से संभव हो पाया था। दूसरी बात यह है कि इन आकर्षक और खतरनाक रैटलस्नेक को अंदर आने देने से मैडम का सबसे सशक्त रूप सामने आया—एक कुशल निगरानीकर्ता का रूप। तीसरी बात यह है कि उनकी उपस्थिति ने मनोरंजन में एक अनूठा तड़का लगा दिया: विद्यार्थी इसे जानते और देखते थे, और दूर चमकते उन सुनहरे सेबों को देखकर उनमें एक ऐसा उत्साह भर जाता था जो किसी और परिस्थिति से नहीं आ सकता था। बच्चों की खुशी माता-पिता तक भी फैल गई; नृत्य-कक्ष में जीवन और उल्लास का माहौल छा गया; स्वयं युवा, हालांकि संयमित थे, फिर भी आनंदित थे: क्योंकि मैडम ने उन्हें कभी नीरस नहीं होने दिया—और इस प्रकार मैडम बेक का उत्सव प्रतिवर्ष देश की किसी भी अन्य संचालिका के उत्सव से कहीं अधिक सफल रहा।

मैंने देखा कि डॉ. जॉन को शुरू में कक्षाओं में स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति दी गई थी: उनके चेहरे पर एक मर्दाना, जिम्मेदार भाव था, जो उनकी युवावस्था को सार्थकता प्रदान करता था और उनकी सुंदरता की कमी को कुछ हद तक पूरा करता था; लेकिन जैसे ही नृत्य शुरू हुआ, मैडम उनके पास दौड़कर गईं।

“आओ, भेड़िया; आओ,” वह हंसते हुए बोली: “तुम भेड़ों के भेष में हो, लेकिन फिर भी तुम्हें झुंड छोड़ना होगा। आओ; मेरे पास यहाँ चौक में बीस जानवरों का एक बढ़िया संग्रह है: मुझे तुम्हें अपने संग्रह में शामिल करने दो।”

"लेकिन पहले मुझे अपनी पसंद की एक छात्रा के साथ एक बार नृत्य करने की अनुमति दें।"

“क्या तुममें ऐसी बात पूछने की हिम्मत है? यह पागलपन है: यह अधार्मिकता है।”

बाहर निकलो, जितनी जल्दी हो सके बाहर निकलो।

वह उसे अपने आगे-आगे ले गई और जल्द ही उसे घेराबंदी के भीतर घेर लिया।

मुझे लगता है कि जिनेवरा नाचते-नाचते थक गई थी, इसलिए वह मेरे पास आकर रुक गई। वह मेरे बगल वाली बेंच पर बैठ गई और (एक ऐसा प्रदर्शन जिसकी मुझे बिल्कुल ज़रूरत नहीं थी) उसने अपनी बाहें मेरी गर्दन में डाल दीं।

“लूसी स्नो! लूसी स्नो!” वह लगभग सिसकते हुए, आधे उन्मादी स्वर में चिल्लाई।

मैंने रूखेपन से कहा, "आखिर बात क्या है?"

“मैं कैसी दिख रही हूँ—आज रात मैं कैसी दिख रही हूँ?” उसने पूछा।

मैंने कहा, "हमेशा की तरह; हद से ज्यादा घमंडी।"

“कठोर प्राणी! तुम मेरे लिए कभी एक शब्द भी अच्छा नहीं बोलते; लेकिन तुम्हारे और सभी ईर्ष्यालु आलोचकों के बावजूद, मैं जानती हूँ कि मैं सुंदर हूँ; मैं इसे महसूस करती हूँ, मैं इसे देखती हूँ — क्योंकि ड्रेसिंग रूम में एक बड़ा सा दर्पण है, जहाँ मैं सिर से पैर तक अपना पूरा रूप देख सकती हूँ। क्या तुम अब मेरे साथ चलोगे, और हम दोनों इसके सामने खड़े हो जाएँगे?”

"जी हां, मिस फैंसहावे: आपको आपकी इच्छा के चरम तक प्रसन्न किया जाएगा।"

ड्रेसिंग रूम बहुत पास था, और हम अंदर चले गए। उसने अपना हाथ मेरे हाथ में डालकर मुझे दर्पण के पास खींच लिया। बिना किसी प्रतिरोध, आपत्ति या टिप्पणी के, मैं खड़ा रहा और उसके आत्म-प्रेम को उसकी जीत का आनंद लेने दिया: यह देखने के लिए उत्सुक था कि वह कितना निगल सकता है - क्या यह तृप्ति तक पहुँच सकता है - क्या दूसरों के लिए थोड़ी सी भी सहानुभूति उसके दिल में उतर सकती है और उसके घमंड को कम कर सकती है।

बिलकुल नहीं। उसने मुझे और खुद को घुमाया; उसने हम दोनों को चारों ओर से देखा; वह मुस्कुराई, उसने अपने घुंघराले बालों को लहराया, उसने अपनी कमरबंद को ठीक किया, उसने अपनी पोशाक फैलाई, और अंत में, मेरा हाथ छोड़कर, और बनावटी सम्मान के साथ झुकते हुए उसने कहा: "मैं किसी भी कीमत पर तुम्हारी जगह नहीं लेना चाहूंगी।"

वह टिप्पणी इतनी भोली थी कि उससे किसी को गुस्सा नहीं आया; मैंने बस इतना कहा: "बहुत बढ़िया।"

“और मेरी जगह होने के लिए तुम क्या दोगे?” उसने पूछा।

“बुरा नहीं है छह पेंस—भले ही यह अजीब लगे,” मैंने जवाब दिया। “तुम तो बस एक बेचारे प्राणी हो।”

"आप अपने दिल से ऐसा नहीं सोचते।"

“नहीं; क्योंकि मेरे हृदय में तुम्हारा कोई स्थान अंकित नहीं है: मैं तुम्हें कभी-कभार

ही अपने मस्तिष्क में याद करता हूँ।”

"अच्छा, लेकिन," उसने चिढ़ाने वाले लहजे में कहा, "हमारे विचारों के अंतर को सुनो, और फिर देखो कि मैं कितनी खुश हूँ और तुम कितने दुखी हो।"

"बोलिए; मैं सुन रहा हूँ।"

“सबसे पहले तो: मैं एक प्रतिष्ठित परिवार की बेटी हूँ, और हालाँकि मेरे पिता अमीर नहीं हैं, फिर भी मुझे अपने चाचा से उम्मीदें हैं। फिर, मैं अभी अठारह साल की हूँ, जो सबसे अच्छी उम्र होती है। मैंने महाद्वीपीय शिक्षा प्राप्त की है, और हालाँकि मुझे वर्तनी नहीं आती, फिर भी मुझमें बहुत सारी उपलब्धियाँ हैं। मैं सुंदर हूँ; आप इससे इनकार नहीं कर सकते; मैं जितने चाहूँ उतने चाहने वाले पा सकती हूँ। आज रात मैंने दो सज्जनों का दिल तोड़ा है, और अभी-अभी उनमें से एक की मरणासन्न निगाहों ने मुझे इतना उत्साहित कर दिया है। मुझे उन्हें लाल और पीला पड़ते देखना, और उन्हें एक-दूसरे पर गुस्से से घूरते और मुझे व्याकुल निगाहों से देखते देखना बहुत अच्छा लगता है। ये मैं हूँ - खुश मैं; अब तुम्हारी बारी, बेचारे!”

“मुझे लगता है कि तुम किसी की बेटी नहीं हो, क्योंकि जब तुम पहली बार विलेट आई थी तो छोटे बच्चों की देखभाल करती थी: तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं है; तेईस साल की उम्र में तुम खुद को जवान नहीं कह सकती; तुममें कोई आकर्षक गुण नहीं हैं—न ही खूबसूरती। जहाँ तक चाहने वालों की बात है, तुम शायद ही जानती हो कि वे क्या होते हैं; तुम इस विषय पर बात भी नहीं कर सकती: जब दूसरे शिक्षक अपने प्रेम प्रसंगों के बारे में बताते हैं तो तुम चुपचाप बैठी रहती हो। मेरा मानना है कि तुमने कभी प्यार नहीं किया, और न ही कभी करोगी: तुम्हें उस एहसास का पता नहीं है, और यही अच्छा है, क्योंकि भले ही तुम्हारा दिल टूट जाए, तुम कभी किसी का दिल नहीं तोड़ पाओगी। क्या यह सब सच नहीं है?”

“इसमें से काफी कुछ सच है, और साथ ही साथ समझदारी भरा भी। जिनेवरा, तुममें अच्छाई जरूर है, तभी तो तुम इतनी ईमानदारी से बोलती हो; वो धूर्त ज़ेली सेंट पियरे वो नहीं बोल सकती जो तुमने बोला है। फिर भी, मिस फैंसहावे, तुम्हारी बातों को देखते हुए, मैं तुम्हें तन-मन से खरीदने के लिए एक पैसा भी नहीं दूंगा।”

"सिर्फ इसलिए कि मैं होशियार नहीं हूँ, और तुम बस यही सोचते हो। दुनिया में तुम्हारे सिवा किसी को भी होशियारी की परवाह नहीं है।"

इसके विपरीत, मैं आपको अपने तरीके से चतुर मानता हूँ—वास्तव में बहुत

होशियार। लेकिन आप दिल तोड़ने की बात कर रहे थे—वह शिक्षाप्रद मनोरंजन जिसके गुणों में मैं पूरी तरह से नहीं जाता; भला आप अपने घमंड के कारण किसे मारना चाहते हैं?

उसने अपने होंठ मेरे कान के पास लाकर फुसफुसाते हुए कहा, "क्या इसिडोर और अल्फ्रेड डी हमाल दोनों यहाँ हैं?"

“अरे! क्या वे सच में वहां हैं? मैं उन्हें देखना चाहूंगी।”

“देखो, एक प्यारा प्राणी! तुम्हारी जिज्ञासा आखिरकार जाग उठी है। मेरे पीछे आओ।”

मैं उन्हें इंगित कर दूंगा।

वह गर्व से आगे-आगे चलने लगी — “लेकिन कक्षाओं से उन्हें ठीक से नहीं देखा जा सकता,” उसने मुड़ते हुए कहा, “मैडम उन्हें बहुत दूर रखती हैं। चलिए बगीचे को पार करके गलियारे से अंदर चलते हैं और उनके पीछे से उनके करीब पहुँचते हैं: अगर हमें देख लिया गया तो हमें डांट पड़ेगी, लेकिन कोई बात नहीं।”

इस बार मुझे कोई आपत्ति नहीं थी। हम बगीचे से होकर गुजरे - एक शांत निजी प्रवेश द्वार से गलियारे में प्रवेश किया, और गलियारे की छाया में रहते हुए, "युवा लोगों" के समूह का नज़दीकी दृश्य प्राप्त किया।

मुझे लगता है कि मैं बिना किसी निर्देश के भी विजयी डी हमाल को पहचान सकती थी। वह सीधी नाक वाला, बेहद सलीकेदार चेहरे वाला एक छोटा सा सजग व्यक्ति था। मैं उसे छोटा सजग इसलिए कह रही हूँ, क्योंकि कद में वह औसत दर्जे से छोटा नहीं था; लेकिन उसके चेहरे के हाव-भाव छोटे थे, और उसके हाथ-पैर भी छोटे थे; और वह सुंदर, चिकना और गुड़िया की तरह चुस्त-दुरुस्त था: इतने अच्छे कपड़े पहने हुए, इतने अच्छे से घुंघराले बाल, इतने अच्छे बूट, दस्ताने और टाई पहने हुए - वह सचमुच आकर्षक था। मैंने ऐसा कहा। "वाह, कितना प्यारा व्यक्ति!" मैं चिल्लाई और जिनेवरा की पसंद की दिल से तारीफ की; और उससे पूछा कि उसे क्या लगता है कि डी हमाल ने उसके टूटे हुए दिल के उन कीमती टुकड़ों का क्या किया होगा - क्या उसने उन्हें किसी इत्र की शीशी में रखा होगा, या गुलाबों के ओटो में सहेज कर रखा होगा? मैंने गहरी प्रशंसा के साथ यह भी देखा कि कर्नल के हाथ मिस फैंशॉ के हाथों से मुश्किल से ही बड़े थे, और सुझाव दिया कि यह बात सुविधाजनक हो सकती है, क्योंकि जरूरत पड़ने पर वह उसके दस्ताने पहन सकता है। मैंने उसके प्यारे घुंघराले

बालों के बारे में उससे कहा कि मैं उस पर मोहित हो गई थी; और उसके झुके हुए, यूनानी माथे और उत्कृष्ट शास्त्रीय मुकुट के बारे में, मैंने स्वीकार किया कि मेरे पास ऐसी पूर्णता का वर्णन करने के लिए शब्द नहीं थे।

"और अगर वह तुम्हारा प्रेमी होता तो?" क्रूरता से भरी उल्लासपूर्ण जिनेवरा ने सुझाव दिया।

“ओह! हे भगवान, कितना आनंद है!” मैंने कहा; “लेकिन निर्दयी मत बनो, मिस फैंसहावे: मेरे दिमाग में ऐसे विचार डालना बेचारे बहिष्कृत केन को स्वर्ग की एक दूर की झलक दिखाने जैसा है।”

तो फिर, तुम उसे पसंद करती हो?

मुझे मिठाई, जैम, कुम्हार और बगीचे में खिले फूल पसंद हैं।

जिनेवरा को मेरी पसंद बहुत अच्छी लगती थी, क्योंकि ये सभी चीजें उसकी पसंदीदा थीं; इसलिए वह आसानी से मान सकती थी कि ये चीजें मेरी भी पसंदीदा हैं।

“अब इसिडोर की बारी,” मैंने आगे कहा। मैं मानता हूँ कि मुझे उसके प्रतिद्वंदी से भी ज़्यादा उसे देखने की उत्सुकता थी; लेकिन जिनेवरा तो बाद वाले में ही मग्न थी।

“अल्फ्रेड को आज रात यहाँ उसकी चाची, मैडम ला बैरोन डी डोरलोडॉट के प्रभाव से प्रवेश मिला; और अब, उसे देखकर, क्या आप नहीं समझ सकते कि मैं पूरी शाम इतनी खुश क्यों थी, इतना अच्छा अभिनय क्यों कर रही थी, इतनी जीवंतता से क्यों नाच रही थी, और अब मैं रानी की तरह खुश क्यों हूँ? हे भगवान! हे भगवान! पहले उसे और फिर दूसरे को देखना और उन दोनों को पागल कर देना कितना मजेदार था।”

लेकिन वो दूसरा कहाँ है? मुझे इसिडोर को दिखाओ।

मुझे पसंद नहीं है।

"क्यों नहीं?"

मुझे उस पर शर्म आती है।

"किस कारण के लिए?"

“क्योंकि—क्योंकि” (फुसफुसाते हुए) “उसकी मूंछें ऐसी हैं—ऐसी, नारंगी—लाल—वहाँ देखो!”

मैंने बीच में कहा, "हत्या का आरोप तो हट ही गया है। कोई बात नहीं, उसे दिखा दो; मैं बेहोश नहीं होने का वादा करता हूँ।"

उसने चारों ओर देखा। तभी मेरे और उसके पीछे से एक अंग्रेजी आवाज सुनाई दी।

“आप दोनों ठंडी हवा में खड़े हैं; आपको यह गलियारा छोड़ देना चाहिए।”

“डॉक्टर जॉन, यहाँ कोई हवा का झोंका नहीं है,” मैंने मुड़ते हुए कहा।

“उसे सर्दी बहुत जल्दी लग जाती है,” उसने जिनेवरा की ओर अत्यंत दयालुता से देखते हुए कहा। “वह नाज़ुक है; उसकी देखभाल करनी होगी: उसके लिए एक शॉल लाओ।”

मिस फैंशॉ ने बड़े ही घमंड से कहा, "मुझे खुद फैसला करने दीजिए। मुझे शॉल नहीं चाहिए।"

"तुम्हारी पोशाक पतली है, तुम नाच रही हो, तुम्हें गर्मी लग रही है।"

“हमेशा उपदेश देते रहते हैं,” उसने पलटवार किया; “हमेशा लाड़-प्यार करते और डांटते रहते हैं।”

डॉक्टर जॉन जो जवाब देना चाहते थे, वह नहीं मिला; उनकी आँखों में दुख झलक रहा था; उदास, दुखी और पीड़ा से भरी आँखों से वे थोड़ा एक तरफ मुड़ गए, लेकिन धैर्य बनाए रखा। मुझे पता था कि आस-पास बहुत सारे शॉल पड़े हैं; मैं दौड़ा और एक ले आया।

“अगर मुझमें उसे पहनाने की ताकत रही तो वो इसे पहनेगी,” मैंने कहा और उसे उसकी मलमल की पोशाक के चारों ओर अच्छे से लपेट दिया, जिससे उसका गला और बाहें सावधानी से ढक गईं। “क्या ये इसिडोर है?” मैंने कुछ गुस्से भरी फुसफुसाहट में पूछा।

उसने अपने होंठ ऊपर उठाए, मुस्कुराई और सिर हिलाया।

“क्या यह इसिडोर है?” मैंने उसे झटकते हुए दोहराया: मैं उसे एक दर्जन बार झटक सकता था।

“सेस्ट लुई-मेम,” उसने कहा। “वह कितना असभ्य है, दूसरों की तुलना में।”

कर्नल-काउंट! और फिर — ओह सिएल! — वो मूंछें!

डॉ. जॉन का निधन हो गया।

“कर्नल-काउंट!” मैंने भी यही बात दोहराई। “वह गुड़िया—वह कठपुतली—वह पुतली—वह बेचारी तुच्छ प्राणी! डॉ. जॉन, उनके नौकर, उनकी चमची! क्या यह संभव है कि वह नेक और उदार सज्जन—जो किसी सपने की तरह सुंदर हैं—आपको अपना सम्माननीय हाथ और वीर हृदय प्रदान करें, और जीवन के तूफानों और संघर्षों में आपकी कमजोर काया और नासमझ मन की रक्षा करने का वादा करें—और आप

पीछे हट जाएं—आप उनका तिरस्कार करें, उन्हें ठेस पहुंचाएं, उन्हें यातना दें! क्या आपमें ऐसा करने की शक्ति है? आपको यह शक्ति किसने दी? यह कहां है? क्या यह सब आपकी सुंदरता में निहित है—आपके गुलाबी और सफेद रंग और आपके पीले बालों में? क्या यह उनकी आत्मा को आपके चरणों में बांधता है, और उनकी गर्दन को आपके अधीन झुकाता है? क्या यह आपके लिए उनका स्नेह, उनकी कोमलता, उनके विचार, उनकी आशाएं, उनकी रुचि, उनका महान, हार्दिक प्रेम खरीदता है—और क्या आप इसे नहीं चाहतीं? क्या आप इसका तिरस्कार करती हैं? आप केवल दिखावा कर रही हैं: आप गंभीर नहीं हैं: आप उनसे प्यार करती हैं; आप उन्हें पाने के लिए तरसती हैं; लेकिन आप उनके दिल से खिलवाड़ कर रही हैं ताकि वह निश्चित रूप से आपके हो जाएं?"

"अरे! तुम तो बहुत बोलते हो! मुझे तुम्हारी आधी बातें भी समझ नहीं आईं।"

इससे पहले मैं उसे बगीचे में ले आई थी। अब मैंने उसे एक आसन पर बिठा दिया और उससे कहा कि जब तक वह यह स्पष्ट न कर दे कि अंत में वह किसे स्वीकार करेगी - आदमी को या बंदर को - तब तक वह हिलेगी नहीं।

"तुम जिसे आदमी कह रही हो," उसने कहा, "वह बुर्जुआ है, सुनहरे बालों वाला है, और उसका नाम जॉन है! — बस इतना ही काफी है: मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। कर्नल डी हमाल एक उच्च संपर्कों वाला, उत्तम शिष्टाचार वाला, आकर्षक दिखने वाला, गोरा, दिलचस्प चेहरा और इटैलियन जैसे बाल और आँखें वाला सज्जन है। फिर भी, वह सबसे सुखद संगति वाला व्यक्ति है — बिल्कुल मेरे जैसा; दूसरों की तरह संवेदनशील और गंभीर नहीं; बल्कि एक ऐसा व्यक्ति जिसके साथ मैं बराबरी के स्तर पर बात कर सकती हूँ — जो मुझे उन गहराइयों, ऊँचाइयों, भावनाओं और प्रतिभाओं से परेशान और ऊबा नहीं करता जिनमें मेरी कोई रुचि नहीं है। बस करो। मुझे इतना कसकर मत पकड़ो।"

मैंने अपनी पकड़ ढीली कर दी, और वह झट से भाग गई। मुझे उसका पीछा करने की कोई इच्छा नहीं थी।

किसी तरह मैं डॉ. जॉन की एक और झलक पाने के लिए गलियारे की ओर वापस जाने से खुद को रोक नहीं पाया; लेकिन मेरी मुलाकात उनसे बगीचे की सीढ़ियों पर हुई, जहाँ खिड़की से आती रोशनी उन पर पड़ रही थी। उनका सुगठित शरीर स्पष्ट था, क्योंकि मुझे संदेह है कि उस समूह में उनके जैसा कोई और था। उन्होंने अपनी टोपी

हाथ में पकड़ी हुई थी; उनका खुला सिर, चेहरा और सुडौल माथा बेहद आकर्षक और मर्दाना लग रहे थे। उनके चेहरे के भाव न तो कोमल थे, न ही किसी स्त्री के समान हल्के, और न ही ठंडे, तुच्छ और कमजोर; हालांकि वे सुगठित थे, लेकिन इतने तराशे हुए या इतने व्यर्थ नहीं थे कि अर्थहीन समरूपता के कारण भाव और अर्थ खो दें। कभी-कभी उनके भावों में गहरी भावनाएं झलकती थीं, और उनकी आँखों में उससे भी अधिक खामोश रहती थीं। कम से कम मेरे मन में उनके बारे में यही विचार थे: मुझे वे ऐसे ही प्रतीत हुए। इस व्यक्ति को देखकर मेरे मन में विस्मय का एक अवर्णनीय भाव उमड़ आया, और मैंने सोचा कि उन्हें हल्के में नहीं लिया जा सकता।

बगीचे में मेरा उनसे संपर्क करने या बात करने का कोई इरादा नहीं था, हमारी जान-पहचान इतनी नहीं थी कि ऐसा करना उचित हो; मैं तो बस भीड़ में उन्हें देखना चाहती थी - बिना किसी को दिखे: जब मैंने उन्हें इस तरह अकेले देखा, तो मैं पीछे हट गई। लेकिन वह मुझे, या यूँ कहें कि मेरे साथ जो थी, उसे ढूंढ रहे थे: इसलिए वह सीढ़ियों से नीचे उतरे और मेरे पीछे-पीछे गली में आ गए।

“क्या आप मिस फैंसहावे को जानते हैं? मैं अक्सर आपसे पूछना चाहता था कि क्या आप उन्हें जानते हैं,” उन्होंने कहा।

“हां: मैं उसे जानती हूं।”

“घनिष्ठता से?”

"बिल्कुल उतनी ही अंतरंगता से जितनी मैं चाहता हूँ।"

अब तुमने उसके साथ क्या किया है?

“क्या मैं उसका रखवाला हूँ?” मैंने पूछने का मन बनाया; लेकिन मैंने बस इतना ही जवाब दिया, “मैंने उसे अच्छी तरह से हिलाया है, और उसे और भी अच्छे से हिलाता, लेकिन वह मेरे हाथों से छूटकर भाग गई।”

“क्या आप मेरी मदद करेंगे,” उसने पूछा, “कि आप आज शाम उस पर नजर रखें और ध्यान रखें कि वह कोई भी अविवेकी काम न करे—उदाहरण के लिए, नाचने के तुरंत बाद रात की ताज़ी हवा में बाहर न निकल जाए?”

"हो सकता है मैं उसकी थोड़ी देखभाल कर लूँ; क्योंकि आप ऐसा चाहते हैं; लेकिन उसे अपनी मनमानी इतनी पसंद है कि वह आसानी से किसी के नियंत्रण में नहीं आएगी।"

उन्होंने कहा, "वह बहुत छोटी है, बिल्कुल भोली है।"

मैंने जवाब दिया, "मेरे लिए वह एक रहस्य है।"

“क्या वह है?” उसने बड़ी उत्सुकता से पूछा। “कैसे?”

"यह कहना मुश्किल होगा कि कैसे—कम से कम आपको यह बताना मुश्किल होगा कि कैसे।"

और मुझे ही क्यों?

मुझे आश्चर्य है कि वह इस बात से इतनी खुश क्यों नहीं है कि तुम उसकी इतनी अच्छी दोस्त हो।

लेकिन उसे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है कि मैं उसकी कितनी गहरी दोस्त हूँ। यही वो बात है जो मैं उसे नहीं सिखा सकती। क्या मैं पूछ सकती हूँ कि क्या उसने कभी आपके सामने मेरे बारे में बात की थी?

“‘इसिडोर’ के नाम से वह आपके बारे में अक्सर बात करती रही है; लेकिन मुझे यह भी बताना होगा कि पिछले दस मिनट में ही मुझे पता चला है कि आप और ‘इसिडोर’ एक ही व्यक्ति हैं। डॉ. जॉन, उस थोड़े से समय में ही मुझे पता चला है कि जिनेवरा फैंसहावे ही वह शख्सियत है, जो इस छत के नीचे रहती है और जिसमें आपकी लंबे समय से दिलचस्पी रही है – वही वह चुंबक है जो आपको रू फॉसेट की ओर खींच लाती है, उसी के लिए आप इस बगीचे में आते हैं और प्रतिद्वंद्वियों द्वारा गिराए गए ताबूतों की तलाश करते हैं।”

"क्या तुम सब जानते हो?"

मुझे बहुत कुछ पता है।

“एक साल से ज़्यादा समय से मैं उनसे सामाजिक समारोहों में मिलता रहा हूँ। उनकी सहेली श्रीमती चोलमोंडली मेरी परिचित हैं; इसलिए मैं उनसे हर रविवार को मिलता हूँ। लेकिन आपने गौर किया कि वे अक्सर ‘इसिडोर’ नाम से मेरे बारे में बात करती थीं: क्या मैं—आपकी गोपनीयता भंग किए बिना—यह जानना चाहूँगा कि उनकी बातों का लहजा और भाव क्या था? मैं थोड़ा चिंतित हूँ, क्योंकि मुझे इस बात की अनिश्चितता सता रही है कि उनके साथ मेरे संबंध कैसे हैं।”

"ओह, वह कितनी परिवर्तनशील है: वह हवा की तरह बदलती और रूपांतरित होती रहती है।"

फिर भी, आपको कुछ सामान्य जानकारी तो मिल ही सकती है — ?

मैंने सोचा, “मैं कर सकता हूँ, लेकिन तुम्हें यह सामान्य विचार बताना ठीक नहीं

होगा। इसके अलावा, अगर मैंने कहा कि वह तुमसे प्यार नहीं करती, तो मुझे पता है कि तुम मेरी बात पर विश्वास नहीं करोगे।”

“तुम चुप हो,” उसने आगे कहा। “मुझे लगता है तुम्हारे पास बताने के लिए कोई अच्छी खबर नहीं है। कोई बात नहीं। अगर वह मेरे प्रति पूरी तरह से उदासीनता और घृणा महसूस करती है, तो यह इस बात का संकेत है कि मैं उसके लायक नहीं हूँ।”

क्या तुम्हें खुद पर शक है? क्या तुम खुद को दूसरों से कमतर समझते हो?

कर्नल डी हमाल?

“मैं मिस फैंशॉ को डी हमाल से कहीं ज़्यादा प्यार करता हूँ, जितना कि डी हमाल किसी भी इंसान को करता है, और मैं उसकी देखभाल और सुरक्षा उससे कहीं बेहतर करूँगा। डी हमाल के बारे में, मुझे डर है कि वह गलतफहमी में जी रही है; उस आदमी का चरित्र मुझे पता है, उसका सारा इतिहास, उसकी सारी मुसीबतें। वह तुम्हारी खूबसूरत युवा दोस्त के लायक नहीं है।”

मैंने कहा, “मेरी ‘सुंदर युवती’ को यह जानना चाहिए, और यह भी जानना या महसूस करना चाहिए कि उसके योग्य कौन है। यदि उसकी सुंदरता या बुद्धिमत्ता अब तक उसके काम नहीं आ रही है, तो वह अनुभव के कड़वे सबक की हकदार है।”

"क्या आप थोड़े कठोर नहीं हैं?"

“मैं हद से ज़्यादा कठोर हूँ—जितना मैं आपको दिखाना नहीं चाहता, उससे भी ज़्यादा कठोर। आपको मेरी ‘सुंदर युवा मित्र’ के प्रति मेरे कठोर रवैये को सुनना चाहिए, और आप उसकी कोमल प्रकृति के प्रति मेरी संवेदनहीनता को देखकर अकल्पनीय रूप से स्तब्ध रह जाएँगे।”

“वह इतनी प्यारी है कि कोई भी उससे प्यार किए बिना नहीं रह सकता। तुम—उससे बड़ी हर महिला—उस सरल, मासूम, नन्ही परी के लिए माँ जैसी या बड़ी बहन जैसी स्नेह भावना रखती होगी। सुंदर परी! जब वह तुम्हारे कानों में अपने भोले-भाले, मासूम मन की बातें फुसफुसाती है, तो क्या तुम्हारा दिल उसके लिए तड़प नहीं उठता? तुम कितनी भाग्यशाली हो!” और उसने आह भरी।

“मैं कभी-कभी अपनी ये बातें अचानक ही खत्म कर देता हूँ,” मैंने कहा। “लेकिन माफ कीजिए, डॉ. जॉन, क्या मैं एक पल के लिए विषय बदल सकता हूँ? डी हमाल तो मानो भगवान के समान हैं! उनके चेहरे पर नाक कितनी सुंदर है – एकदम सही! अगर आप मिट्टी या सांचे में भी एक मॉडल बना लें, तो इससे बेहतर, सीधी या साफ-

सुथरी नाक नहीं बन सकती; और फिर, उनके होंठ और ठोड़ी कितने सुंदर हैं – और उनका हावभाव – कितना अद्भुत है।"

"डी हमाल एक बेहद मासूम पिल्ला है, साथ ही साथ एक बेहद डरपोक हीरो भी है।"

"डॉ. जॉन, आप और उनसे कम परिष्कृत स्वभाव के हर व्यक्ति को उनके प्रति एक प्रकार का प्रशंसात्मक स्नेह अवश्य महसूस करना चाहिए, जैसा कि मंगल और अन्य कठोर देवताओं ने युवा, सुंदर अपोलो के प्रति रखा होगा।"

"एक सिद्धांतहीन, जुआरी छोटा बदमाश!" डॉ. जॉन ने संक्षिप्त लहजे में कहा, "जिसे मैं किसी भी दिन एक हाथ से कमरबंद पकड़कर उठा सकता हूँ और अगर चाहूँ तो उसे कुत्ते के पिंजरे में डाल सकता हूँ।"

"हे प्यारे देवदूत!" मैंने कहा। "यह कितना क्रूर विचार है! क्या आप थोड़े कठोर नहीं हैं, डॉ. जॉन?"

और अब मैं रुक गया। उस रात दूसरी बार मैं अपनी सीमाओं से परे जा रहा था—अपनी स्वाभाविक आदतों से बाहर निकल रहा था—बिना सोचे-समझे, आवेगपूर्ण लहजे में बोल रहा था, जिसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। उस सुबह उठते समय, क्या मैंने सोचा था कि रात होने से पहले मैं एक वाडेविल में एक समलैंगिक प्रेमी की भूमिका निभाऊंगा; और एक घंटे बाद, डॉ. जॉन के साथ खुलकर उनके दुर्भाग्यपूर्ण मुकदमे पर चर्चा करूंगा, और उनके भ्रमों को दूर करूंगा? मैंने ऐसे कारनामों की कल्पना भी नहीं की थी, ठीक वैसे ही जैसे मैंने कभी गुब्बारे में उड़ान भरने या केप हॉर्न की यात्रा की कल्पना नहीं की थी।

डॉक्टर और मैं, कुछ देर टहलते हुए वापस लौट रहे थे; खिड़की से आती रोशनी की परछाईं ने उनके चेहरे को फिर से रोशन कर दिया: वे मुस्कुराए, लेकिन उनकी आँखों में उदासी थी। काश उन्हें मन की शांति मिल पाती! मुझे कितना दुख हुआ कि वे दर्द के बारे में इतना सोच रहे थे, और वो भी इतने बुरे कारण से! इतनी सारी खूबियों के बावजूद उनका प्यार व्यर्थ! तब मुझे यह नहीं पता था कि निराशा का सामना करना कुछ लोगों के लिए सबसे अच्छा होता है; और न ही मैंने यह सोचा था कि कुछ जड़ी-बूटियाँ, "साबुत होने पर भले ही गंधहीन हों, लेकिन कुचलने पर सुगंध देती हैं।"

"दुखी मत हो, शोक मत करो," मैंने फूट-फूटकर कहा। "अगर जिनेवरा में तुम्हारे

स्नेह के योग्य एक भी अंश है, तो वह बदले में भक्ति महसूस करेगी—उसे अवश्य ही करनी चाहिए। खुश रहो, आशा रखो, डॉ. जॉन। अगर तुम नहीं, तो और कौन आशा रखेगा?”

इस भाषण के बदले मुझे जो मिला—जो शायद मैं उचित ही था—आश्चर्य भरी नज़रें: मुझे कुछ नाराज़गी का भी आभास हुआ। हम अलग हुए और मैं ठंड से कांपते हुए घर में चला गया। घड़ियों में आधी रात के 12 बज चुके थे और घंटियाँ बज रही थीं; लोग जल्दी-जल्दी जा रहे थे: उत्सव समाप्त हो चुका था; दीपक बुझ रहे थे। एक घंटे के भीतर पूरा घर और पूरा गेस्ट हाउस अंधेरा और सन्नाटे में डूब गया। मैं भी बिस्तर पर था, लेकिन नींद नहीं आ रही थी। इतने रोमांचक दिन के बाद मुझे सोना आसान नहीं था।

अध्याय पंद्रह।

लंबी छुट्टी।

मैडम बेक के उत्सव के बाद, जिसमें तीन सप्ताह आराम के, बारह घंटे की संक्षिप्त हंसी-मजाक और मौज-मस्ती के बाद एक दिन पूर्ण सुस्ती छाई रही, एक प्रतिक्रिया का दौर आया; दो महीने गंभीर लगन और गहन अध्ययन के। ये दो महीने, शैक्षणिक वर्ष के अंतिम महीने होने के कारण, वास्तव में वर्ष के एकमात्र वास्तविक कार्य-प्रणाली वाले महीने थे। इन्हीं महीनों में, शिक्षकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों द्वारा पुरस्कार वितरण से पहले होने वाली परीक्षाओं की तैयारी का मुख्य भार डाला जाता था। पुरस्कार के उम्मीदवारों को पूरी लगन से काम करना पड़ता था; शिक्षकों और अध्यापकों को भी पूरी मेहनत करनी पड़ती थी, पिछड़ने वालों को प्रोत्साहित करना होता था और होनहार विद्यार्थियों की लगन से सहायता और प्रशिक्षण करना होता था।

जनता के लिए एक भव्य प्रदर्शन आयोजित किया जाना आवश्यक था, और इसके लिए सभी साधन उपयुक्त थे।

मैंने शायद ही ध्यान दिया कि अन्य शिक्षक कैसे काम पर लग गए; मुझे अपने काम पर ध्यान देना था; और मेरा काम जरा भी कठिन नहीं था, बस लगभग नब्बे विद्यार्थियों के दिमागों में अंग्रेजी भाषा के उस जटिल और कठिन विज्ञान का उचित ज्ञान भरना था, जिसे वे अत्यंत जटिल और कठिन मानते थे; और नब्बे ज़ुबानों को उस उच्चारण में प्रशिक्षित करना था, जो उनके लिए लगभग असंभव था - द्वीपों के तुतलाते और फुफकारते दंत उच्चारण।

परीक्षा का दिन आ गया। भयानक दिन! बड़ी चिंता से तैयारी की गई, चुपचाप जल्दी से कपड़े पहने गए — अब कुछ भी हल्का-फुल्का या लहराता हुआ नहीं — न सफेद जालीदार कपड़ा, न नीले रंग की झालरें; गंभीर, सलीके से, संयमित रूप से तैयार होना ही उचित था। मुझे लगा कि आज का दिन मेरे लिए विशेष रूप से अशुभ है — सभी महिला शिक्षकों में से सारा बोझ और परीक्षा केवल मुझ पर ही थी। बाकी शिक्षकों से उनके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों की परीक्षा लेने की अपेक्षा नहीं की गई थी; साहित्य के प्रोफेसर, एम. पॉल ने यह ज़िम्मेदारी स्वयं पर ले ली थी। वह, स्कूल का यह निरंकुश शिक्षक, सभी को अपने एक हाथ की मुट्ठी में समेटे हुए था; उसने किसी भी सहकर्मी को गुस्से से अस्वीकार कर दिया; वह किसी की मदद नहीं चाहता था। स्वयं मैडम, जो स्पष्ट रूप से भूगोल की परीक्षा लेना चाहती थीं — उनका पसंदीदा विषय, जिसे वह बखूबी पढ़ाती थीं — उन्हें भी झुकना पड़ा और अपने निरंकुश रिश्तेदार के निर्देशों का पालन करना पड़ा। उन्होंने सभी पुरुष और महिला शिक्षकों को दरकिनार कर दिया और अकेले ही परीक्षक की कुर्सी पर खड़े रहे। उसे इस बात से चिढ़ थी कि उसे इस नियम का एक अपवाद बनाना पड़ा। वह अंग्रेज़ी में अच्छा नहीं था: उसे शिक्षा की यह शाखा अंग्रेज़ी शिक्षक के हाथों में छोड़नी पड़ी; और उसने ऐसा किया, थोड़ी भोली ईर्ष्या के साथ।

स्वयं को छोड़कर बाकी सभी मनुष्यों के आत्मसम्मान के विरुद्ध निरंतर अभियान चलाना इस सक्षम, लेकिन उग्र और लालची छोटे कद के व्यक्ति की सनक थी। उसे स्वयं के सार्वजनिक प्रदर्शन में गहरी रुचि थी, परन्तु किसी और के ऐसे प्रदर्शन से उसे घोर घृणा थी। वह जहाँ तक संभव होता, दमन करता, और जब ऐसा नहीं कर पाता, तो वह दबी हुई आग की तरह भड़क उठता था।

परीक्षा के दिन से एक शाम पहले, मैं अन्य शिक्षकों और सभी छात्रावासवासियों के साथ बगीचे में टहल रहा था। एम. इमानुएल भी मेरे साथ "एली डेफेंड्यू" (बचाव मार्ग) पर चल रहे थे; उनके होठों पर सिगार था; उनका पैलेटोट (एक विशिष्ट आकार का विशिष्ट वस्त्र) गहरा और भयावह लग रहा था; उनकी ग्रीक टोपी का टैसल उनके बाएं कनपटी पर कड़ा सा छाया डाल रहा था; उनकी काली मूंछें एक क्रोधित बिल्ली की तरह मुड़ी हुई थीं; उनकी नीली आंख की चमक में एक उदासी छाई हुई थी।

“तो,” उसने अचानक मेरी ओर मुड़कर और मुझे अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहना शुरू किया, “तुम एक रानी की तरह राज करोगी; कल—मेरे साथ राज करोगी? इसमें कोई शक नहीं कि तुम पहले से ही सत्ता के सुखों का आनंद ले रही हो। मुझे लगता है कि मैं तुममें कुछ चमक देख रहा हूँ, छोटी महत्वाकांक्षी लड़की!”

असल बात तो यह थी कि वह पूरी तरह गलत था। मैं कल के श्रोताओं की प्रशंसा या उनके प्रति अच्छी राय का उतना अनुमान नहीं लगा सकता था जितना वह लगाते थे। अगर उस श्रोताओं में मेरे उतने ही निजी मित्र और परिचित होते जितने उनके थे, तो पता नहीं क्या होता: मैं उस समय की स्थिति बता रहा हूँ। मेरे लिए स्कूल की जीतें एक फीकी चमक मात्र थीं। मैं सोचता था - और अब भी सोचता हूँ - कि उनके लिए वे चूल्हे की गर्माहट और दमक की तरह क्यों चमकती थीं। शायद वह उनकी बहुत ज्यादा परवाह करते थे; मैं, शायद, बहुत कम। हालाँकि, मेरी भी अपनी कल्पनाएँ थीं, जैसे उनकी। उदाहरण के लिए, मुझे एम. इमानुएल को ईर्ष्यालु देखना अच्छा लगता था; इससे उनका स्वभाव चमक उठता था और उनकी आत्मा जागृत हो जाती थी; इससे उनके सांवले चेहरे और उनकी बैंगनी-नीली आँखों पर तरह-तरह की अजीबोगरीब रोशनी और परछाइयाँ पड़ जाती थीं (वह कहा करते थे कि उनके काले बाल और नीली आँखें उनकी सुंदरताओं में से एक हैं)। उनके क्रोध में एक आनंद था; यह सरल, गंभीर, बिल्कुल अतार्किक था, लेकिन कभी भी पाखंडी नहीं था। मैंने उस समय उस आत्मसंतुष्टि का खंडन नहीं किया जिसका उसने मुझ पर आरोप लगाया था; मैंने बस इतना पूछा कि अंग्रेजी की परीक्षा का क्या महत्व है - दिन की शुरुआत में या अंत में?

उन्होंने कहा, "मैं दुविधा में हूँ कि क्या शुरुआत में, जब बहुत से लोग नहीं आए हों और आपकी महत्वाकांक्षी प्रकृति एक बड़े श्रोता समूह से संतुष्ट न हो, या बिल्कुल अंत में, जब हर कोई थक चुका हो और केवल एक थका हुआ और क्षीण श्रोता समूह

ही आपकी सेवा में हो।"

“आप कितने कठोर हैं, महोदय!” मैंने निराशा का भाव दिखाते हुए कहा।

“तुम्हारे साथ ‘डर’ से पेश आना चाहिए। तुम उन प्राणियों में से हो जिन्हें दबाकर रखना ही चाहिए। मैं तुम्हें जानता हूँ! मैं तुम्हें जानता हूँ! इस घर के बाकी लोग तुम्हें आते-जाते देखते हैं और सोचते हैं जैसे कोई रंगहीन परछाई गुजर गई हो। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने तुम्हारा चेहरा एक बार गौर से देखा, और बस इतना ही काफी था।”

"क्या आप इस बात से संतुष्ट हैं कि आप मुझे समझ गए हैं?"

सीधे जवाब दिए बिना, उन्होंने आगे कहा, “क्या आपको उस वाडेविल में सफलता मिलने पर खुशी नहीं हुई? मैंने आपको देखा और आपके चेहरे पर जीत के लिए एक जोशीला उत्साह देखा। आपकी निगाहों में कैसी आग थी! महज़ रोशनी नहीं, बल्कि ज्वाला: je me tiens pour averti□”

“उस अवसर पर मेरे मन में जो भावनाएँ थीं, महोदय—और क्षमा करें, यदि मैं कहूँ कि आप उनकी गुणवत्ता और मात्रा दोनों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे हैं—वे बिल्कुल अमूर्त थीं। मुझे वाडेविल में कोई दिलचस्पी नहीं थी। आपने मुझे जो भूमिका सौंपी थी, उससे मुझे घृणा थी। मंच के नीचे बैठे दर्शकों के प्रति मेरे मन में ज़रा भी सहानुभूति नहीं थी। वे निस्संदेह अच्छे लोग हैं, लेकिन क्या मैं उन्हें जानता हूँ? क्या वे मेरे लिए कुछ मायने रखते हैं? क्या मैं कल फिर से उनके सामने आने की परवाह करूँगा? क्या परीक्षा मेरे लिए एक कार्य के अलावा कुछ और होगी—एक ऐसा कार्य जिससे मैं जल्द से जल्द छुटकारा पाना चाहता हूँ?”

"क्या मैं इसे आपके हाथों से ले लूँ?"

"पूरे दिल से; अगर आपको असफलता का डर नहीं है।"

“लेकिन मैं तो फेल हो जाऊँगा। मुझे अंग्रेज़ी के सिर्फ़ तीन वाक्य और कुछ शब्द ही पता हैं: par exemple, de sonn, de mone, de stares — est-ce bien dit? मेरा मानना है कि बेहतर होगा कि मैं इसे पूरी तरह छोड़ ही दूँ: अंग्रेज़ी की परीक्षा ही न दूँ, है ना?”

"अगर मैडम सहमत हैं, तो मैं भी सहमत हूँ।"

“दिल से?”

"बहुत हार्दिक रूप से।"

वह चुपचाप सिगार पीता रहा। फिर अचानक मुड़ा।

“Donnez-moi la main,” उसने कहा, और उसके चेहरे से द्वेष और ईर्ष्या गायब हो गई, और उसके स्थान पर एक उदार दयालुता झलकने लगी।

“चलो, हम प्रतिद्वंदी नहीं, मित्र बनेंगे,” उसने आगे कहा। “परीक्षा होगी, और मैं एक अच्छा समय चुनूंगा; और दस मिनट पहले जैसा मेरा मन कर रहा था कि तुम्हें परेशान करूं और बाधा डालूं—क्योंकि मेरे मन में कभी-कभी बुरे भाव आते हैं: बचपन से ही ऐसा होता आया है—उसके बजाय मैं तुम्हारी पूरी ईमानदारी से मदद करूंगा। आखिर तुम अकेले हो, अजनबी हो, और तुम्हें अपना जीवन यापन करना है; यह अच्छा होगा कि तुम पहचाने जाओ। हम मित्र बनेंगे: क्या तुम सहमत हो?”

"दिल से कह रहा हूँ, महोदय। मुझे मित्र पाकर खुशी है। मुझे यह किसी जीत से भी अधिक अच्छा लगता है।"

“पावरेट?” उसने कहा और मुड़कर गली से बाहर चला गया।

परीक्षा अच्छे से संपन्न हुई; एम. पॉल ने अपना वादा निभाया और मेरी परीक्षा को आसान बनाने की पूरी कोशिश की। अगले दिन पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम था; वह भी अच्छे से संपन्न हुआ; स्कूल की छुट्टी हो गई; छात्र घर चले गए और अब लंबी छुट्टियां शुरू हो गईं।

वो छुट्टियाँ! क्या मैं उन्हें कभी भूल पाऊँगी? मुझे नहीं लगता। मैडम बेक छुट्टियों के पहले दिन ही समुद्र किनारे अपने बच्चों के पास चली गईं; तीनों शिक्षकों के माता-पिता या मित्र उनके साथ शरण लिए हुए थे; सभी प्रोफेसर शहर छोड़कर चले गए; कुछ पेरिस गए, कुछ बू-मरीन; एम. पॉल रोम की तीर्थयात्रा पर निकल पड़े; घर बिल्कुल खाली हो गया था, सिवाय मेरे, एक नौकरानी के, और एक गरीब, कुरूप और मंदबुद्धि छात्रा के, जो एक तरह से मंदबुद्धि थी, जिसे उसकी सौतेली माँ दूर के प्रांत में घर लौटने नहीं दे रही थी।

मेरा दिल मानो मर ही गया था; दुख भरी चाहतों ने उसकी धड़कनें तेज़ कर दीं। सितंबर के दिन कितने लंबे थे! कितने शांत, कितने निर्जीव! वह वीरान परिसर कितना विशाल और खाली लग रहा था! वह सुनसान बगीचा कितना उदास था—गर्मियों के बीत जाने के बाद अब धूल से धूसर हो चुका था। उन आठ हफ़्तों की शुरुआत को देखते हुए, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं अंत तक कैसे जी पाऊँगा। मेरा मनोबल धीरे-धीरे गिर रहा था; अब जब रोज़गार का सहारा छिन गया, तो वह तेज़ी से गिर गया। आगे देखना भी आशा की किरण नहीं था: मूक भविष्य कोई सांत्वना नहीं दे रहा

था, कोई वादा नहीं कर रहा था, भविष्य की अच्छाई पर भरोसा करके वर्तमान बुराई को सहने की कोई प्रेरणा नहीं दे रहा था। जीवन के प्रति एक दुखद उदासीनता अक्सर मुझ पर हावी हो जाती थी—सभी सांसारिक चीजों के अंत तक पहुँचने की निराशा। हाय! जब मुझे जीवन को उस नज़रिए से देखने का पूरा समय मिला, जिस नज़रिए से मुझ जैसे लोगों को जीवन को देखना चाहिए, तो मैंने इसे एक निराशाजनक रेगिस्तान पाया: सुनसान रेत, न हरे-भरे खेत, न ताड़ का पेड़, न कोई कुआँ। जवानी की वो उम्मीदें जो उसे सहारा देती हैं और आगे बढ़ाती हैं, मैं उन्हें न तो जानता था और न ही जानने की हिम्मत कर पाया। अगर कभी-कभार वे मेरे दिल को छू भी लेतीं, तो मुझे अंदर ही अंदर एक कठोर दीवार खड़ी करनी पड़ती थी। जब वे इस तरह ठुकरा दी जातीं, तो कभी-कभी बहुत दुख भरे आंसू बह निकलते थे: पर कुछ किया नहीं जा सकता था: मैं ऐसे मेहमानों को अपने घर में जगह देने की हिम्मत नहीं कर पाता था। मुझे घमंड के पाप और कमजोरी से इतना डर लगता था।

धार्मिक पाठक, आप मेरे लिखे हुए विषय पर मुझे लंबा-चौड़ा उपदेश देंगे, और आप भी, नैतिकतावादी; और आप भी, गंभीर ऋषि; आप भी, संयमी, भौंहें चढ़ाएंगे; आप भी, निंदक, उपहास करेंगे; आप भी, भोगी, हँसेंगे। खैर, हर कोई इसे अपने-अपने तरीके से ले। मैं उपदेश स्वीकार करता हूँ, भौंहें चढ़ाता हूँ, उपहास करता हूँ और हँसता हूँ; शायद आप सब सही हों: और शायद, मेरी तरह परिस्थितियों में, आप भी मेरी तरह गलत होते। पहला महीना सचमुच मेरे लिए लंबा, अंधकारमय और बोझिल महीना था।

वह मंदबुद्धि दुखी नहीं लग रही थी। मैंने उसे अच्छे से खिलाने और गर्म रखने की पूरी कोशिश की, और वह केवल भोजन और धूप मांगती थी, या जब ये नहीं मिलते थे, तो आग मांगती थी। उसकी कमजोर इंद्रियों को निष्क्रियता पसंद थी: उसका दिमाग, उसकी आंखें, उसके कान, उसका दिल चैन से सो रहे थे; वे काम करने के लिए जाग नहीं सकते थे, इसलिए आलस्य ही उनका स्वर्ग था।

उस छुट्टी के तीन सप्ताह गर्म, सुहावने और शुष्क रहे, लेकिन चौथा और पाँचवाँ सप्ताह तूफ़ानी और बारिश से भरा था। मुझे नहीं पता कि वातावरण में उस बदलाव ने मुझ पर इतना कठोर प्रभाव क्यों डाला, क्यों उस भयंकर तूफान और मूसलाधार बारिश ने मुझे उस स्थिति से भी कहीं अधिक घातक रूप से पंगु बना दिया, जब वातावरण शांत था; लेकिन ऐसा ही हुआ; और मेरा तंत्रिका तंत्र उस विशाल खाली घर

में कई दिनों और रातों तक जो कुछ सहना पड़ा, उसे सहन नहीं कर पा रहा था। मैं ईश्वर से सांत्वना और सहारा के लिए कितनी प्रार्थना करता था! यह विश्वास कितनी भयानक शक्ति से मुझे जकड़ लेता था कि भाग्य मेरा चिरस्थायी शत्रु है, जिससे कभी सुलह नहीं हो सकती। मैंने अपने मन में इसके लिए ईश्वर की दया या न्याय पर कोई दोष नहीं लगाया; मैंने इसे उनकी महान योजना का हिस्सा माना कि कुछ लोगों को अपने जीवनकाल में गहरा कष्ट सहना पड़ता है, और मैं इस निश्चितता से रोमांचित हो गया कि मैं भी उनमें से एक था।

एक दिन जब उस मंदबुद्धि व्यक्ति की एक दयालु बुढ़िया, एक चाची आई और मेरी उस अजीब, कुरूप साथी को अपने साथ ले गई, तो मुझे थोड़ी राहत मिली। उस बेचारी को संभालना कभी-कभी बहुत मुश्किल होता था; मैं उसे बगीचे से बाहर नहीं ले जा सकती थी और एक मिनट के लिए भी उसे अकेला नहीं छोड़ सकती थी: क्योंकि उसका बेचारा दिमाग, उसके शरीर की तरह, विकृत था: उसकी प्रवृत्ति बुराई की ओर थी। शरारत करने की एक अस्पष्ट प्रवृत्ति, एक लक्ष्यहीन दुर्भावना, ने निरंतर सतर्कता को अनिवार्य बना दिया था। चूंकि वह बहुत कम बोलती थी और घंटों तक उदास बैठी रहती थी, घास काटती रहती थी और अपने चेहरे को अवर्णनीय भावों से बिगाड़ती रहती थी, इसलिए उसके साथ समय बिताना किसी इंसान के साथ रहने की बजाय किसी अजीब, बेकाबू जानवर के साथ कैद होने जैसा था। फिर उसकी देखभाल करने के लिए व्यक्तिगत देखभाल की आवश्यकता होती थी जिसके लिए अस्पताल की नर्स जैसी हिम्मत चाहिए होती थी; मेरा संकल्प इतना कमजोर पड़ जाता था कि कभी-कभी वह बिल्कुल कमजोर पड़ जाता था। ये कर्तव्य मुझ पर नहीं पड़ने चाहिए थे; एक नौकरानी, जो अब अनुपस्थित है, अब तक ये काम करती आ रही थी, और छुट्टियों के जाने की जल्दबाजी में, इस काम के लिए कोई विकल्प नहीं रखा गया था। यह कर और मुकदमा मेरे जीवन में अब तक के सबसे तुच्छ अनुभवों में से नहीं थे। फिर भी, भले ही वे तुच्छ और अरुचिकर थे, मेरा मानसिक कष्ट कहीं अधिक कष्टदायी और कष्टदायक था। उस मूर्ख की सेवा में लगे रहने से अक्सर मेरी भूख और इच्छाशक्ति भंग हो जाती थी, और मैं बेहोश होकर ताजी हवा में, या आंगन में स्थित कुएँ या फव्वारे के पास चला जाता था; लेकिन इस कर्तव्य ने कभी मेरे हृदय को नहीं मरोड़ा, न ही मेरी आँखों में आँसू भरे, और न ही मेरे गाल पिघले हुए धातु की तरह गर्म आँसुओं से झुलसे।

उस मूर्ख के चले जाने से मैं बाहर निकलने के लिए स्वतंत्र हो गया। पहले तो मुझमें रू फॉसेट से बहुत दूर जाने का साहस नहीं था, लेकिन धीरे-धीरे मैं शहर के द्वार की ओर बढ़ा, उसे पार किया और फिर दूर-दूर तक गलियों, खेतों, कब्रिस्तानों (कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों), खेतों, छोटी-छोटी गलियों और जंगलों में भटकता चला गया, और न जाने कहाँ-कहाँ। एक प्रेरणा मुझे आगे बढ़ाती रही, बुखार ने मुझे आराम नहीं करने दिया; साथ की कमी ने मेरी आत्मा में एक भयानक अकाल जैसी लालसा को बनाए रखा। मैं अक्सर पूरे दिन चलता रहता, चिलचिलाती दोपहर और शुष्क दोपहर में, और शाम ढलने पर वापस आता।

अकेले घूमते हुए, मैं कभी-कभी अपने परिचितों की वर्तमान संभावित स्थिति की कल्पना करता था। मैडम बेक अपने बच्चों, अपनी माँ और दोस्तों के पूरे समूह के साथ किसी खुशनुमा बार में थीं, जो उसी तरह आराम करने आए थे। ज़ेली सेंट पियरे अपने रिश्तेदारों के साथ पेरिस में थीं; बाकी शिक्षक अपने-अपने घरों में थे। जिनेवरा फैंसहावे भी थीं, जिन्हें उनके कुछ परिचित दक्षिण की सुखद यात्रा पर ले गए थे। जिनेवरा मुझे सबसे खुश लग रही थीं। वह सुंदर दृश्यों वाले रास्ते पर थीं; सितंबर की ये धूप उनके लिए उपजाऊ मैदानों पर चमक रही थी, जहाँ फसल और अंगूर उनकी कोमल किरणों में पक रहे थे। नीले क्षितिज पर लहराते सुनहरे और क्रिस्टल जैसे चाँद उनकी दृष्टि में उभर रहे थे।

लेकिन यह सब कुछ भी नहीं था; मैंने भी उन पतझड़ के सूरज को महसूस किया और उन फसल के चाँद को देखा, और मेरी लगभग यही इच्छा थी कि मैं मिट्टी और घास में लिपट जाऊँ, उनके प्रभाव से पूरी तरह दूर हो जाऊँ; क्योंकि मैं उनकी रोशनी में नहीं रह सकती थी, न ही उन्हें अपना साथी बना सकती थी, न ही उन्हें स्नेह दे सकती थी। लेकिन जिनेवरा के साथ एक ऐसी आत्मा थी, जो निरंतर शक्ति और सांत्वना देने, दिन के उजाले को आनंदित करने और अंधकार को शांत करने में सक्षम थी; मानवता की रक्षा करने वाले सबसे अच्छे जिन्न ने अपने पंखों से उसे ढक लिया था, और अपने झुके हुए रूप से उसके सिर को आच्छादित कर दिया था। सच्चे प्रेम से जिनेवरा का अनुसरण होता था: वह कभी अकेली नहीं रह सकती थी। क्या वह इस उपस्थिति से बेखबर थी? यह मुझे असंभव लगता था: मैं ऐसी निर्जीवता को समझ नहीं सकती थी। मैंने कल्पना की कि वह मन ही मन आभारी है, अब संयम से प्रेम कर रही है; लेकिन एक दिन अपने प्रेम का इज़हार करने का निश्चय करते हुए: मैंने उसके

वफ़ादार नायक की कल्पना की, जो उसकी दबी हुई मोहब्बत से आधा वाकिफ़ था और उस वाकिफ़ियत से सुकून पा रहा था: मैंने उनके बीच सहानुभूति का एक विद्युतीय तार, आपसी समझ की एक महीन कड़ी, सौ मील की दूरी के बावजूद उनके मिलन को बनाए रखने वाली, टीलों और घाटियों के पार प्रार्थना और इच्छा के द्वारा संवाद स्थापित करने वाली एक कड़ी की कल्पना की। जिनेवरा धीरे-धीरे मेरे लिए एक तरह की नायिका बन गई। एक दिन, इस बढ़ते भ्रम को भांपते हुए, मैंने कहा, "मुझे सच में लगता है कि मेरी नसें बहुत ज़्यादा तनावग्रस्त हो रही हैं: मेरे दिमाग पर कुछ ज़्यादा ही बोझ पड़ गया है, एक बीमारी उस पर हावी हो रही है - मैं क्या करूँ? मैं खुद को कैसे ठीक रखूँ?"

सचमुच, इन परिस्थितियों में स्वस्थ रहना असंभव था। अंततः एक दिन और एक रात बेहद पीड़ादायक अवसाद के बाद शारीरिक बीमारी हुई और मुझे मजबूरी में बिस्तर पर लेटना पड़ा। लगभग इसी समय ग्रीष्म ऋतु समाप्त हुई और विषुवतीय तूफान शुरू हुए; और नौ अंधेरे और गीले दिनों तक, जिनके घंटे अशांत, बहरे, अस्त-व्यस्त और गरजते तूफान से व्याकुल होकर बीतते रहे, मैं नसों और रक्त के एक अजीब बुखार में पड़ा रहा। नींद पूरी तरह से गायब हो गई। मैं रात में उठता, उसे ढूंढता, उससे वापस आने की विनती करता। खिड़की की खड़खड़ाहट, तेज हवा की आवाज ही जवाब देती - नींद कभी नहीं आई!

मैं गलती कर बैठा। वह एक बार आई, लेकिन गुस्से में। मेरी ज़िद से तंग आकर वह अपने साथ एक प्रतिशोधी सपना लेकर आई। संत जीन बैपटिस्ट की घड़ी के अनुसार, वह सपना मुश्किल से पंद्रह मिनट ही चला—एक छोटा सा समय, लेकिन मेरे पूरे शरीर को एक अनजानी पीड़ा से निचोड़ने के लिए काफी था; एक ऐसा अनाम अनुभव देने के लिए जिसमें अनंत काल से आए किसी प्रेत का रंग, रूप, आतंक और स्वर था। उस रात बारह और एक बजे के बीच एक प्याला मेरे होठों पर जबरदस्ती लगाया गया, काला, तेज़, अजीब, किसी कुएँ से नहीं निकाला गया, बल्कि एक अथाह और असीम सागर से उबलता हुआ भरा हुआ। क्षणिक या गणना योग्य मात्रा में पका हुआ और नश्वर होठों के लिए मिलाया गया दुख, इस दुख के स्वाद जैसा नहीं होता। पीने और जागने के बाद, मैंने सोचा कि सब कुछ खत्म हो गया है: अंत आ गया और बीत गया। भय से कांपते हुए—जैसे ही होश लौटा—मैं किसी साथी से मदद की गुहार लगाने को तैयार थी, लेकिन मुझे पता था कि कोई भी साथी इतना पास नहीं था

कि मेरी पुकार सुन सके—दूर अटारी में बैठी गोटन सुन नहीं सकती थी—मैं बिस्तर पर घुटनों के बल उठी। कुछ भयानक घंटे मुझ पर छा गए: मेरा मन बुरी तरह से टूट गया था, व्याकुल और दबा हुआ था। उस सपने की भयावहता के बीच मुझे लगता है कि सबसे बुरा यहीं था। मुझे लगा कि मेरे प्रिय मृत, जिन्होंने जीवन में मुझसे बहुत प्यार किया था, कहीं और मुझसे मिले हैं, पराया: भविष्य के बारे में अवर्णनीय निराशा ने मेरी आत्मा को क्षत-विक्षत कर दिया था। मेरे पास ठीक होने या जीने की इच्छा रखने का कोई कारण नहीं था; और फिर भी मृत्यु की निर्मम और अभिमानी आवाज असहनीय थी जिसमें उसने मुझे अपने अज्ञात भय का सामना करने की चुनौती दी थी। जब मैंने प्रार्थना करने की कोशिश की तो मैं केवल ये शब्द ही कह सकी: "बचपन से ही मैंने तेरे भय को व्याकुल मन से सहा है।"

यह बात बिल्कुल सच थी।

अगली सुबह जब गोटन मेरे लिए चाय लेकर आया, तो उसने मुझसे डॉक्टर को बुलाने का आग्रह किया।

मैं ऐसा नहीं करता: मुझे लगता था कि कोई डॉक्टर मुझे ठीक नहीं कर सकता।

एक शाम—और मैं बेहोश नहीं था: मैं होश में था, मैं उठा—मैंने कपड़े पहने, कमज़ोर और कांपता हुआ। लंबे शयनकक्ष का एकांत और सन्नाटा अब और सहन नहीं किया जा सकता था; भयानक सफेद बिस्तर प्रेतों में तब्दील हो रहे थे—हर बिस्तर का मुकुट एक विशाल और धूप से फीका पड़ा हुआ, मौत के सिर जैसा लग रहा था—एक प्राचीन दुनिया और एक शक्तिशाली जाति के मृत सपने उनकी चौड़ी खुली आँखों में जमे हुए थे। उस शाम ने मेरे मन में पहले से कहीं अधिक दृढ़ता से यह विश्वास बिठा दिया कि भाग्य पत्थर का है, और आशा एक झूठी मूर्ति है—अंधी, रक्तहीन, और ग्रेनाइट की बनी हुई। मैंने यह भी महसूस किया कि ईश्वर द्वारा मेरे लिए निर्धारित परीक्षा अपने चरम पर पहुँच रही थी, और अब इसे मेरे अपने हाथों से, गर्म, कमज़ोर, कांपते हुए, मोड़ना होगा। बारिश अभी भी हो रही थी, और हवा चल रही थी; लेकिन मुझे लगा कि दिन भर की मूसलाधार बारिश और प्रचंडता की तुलना में अधिक नरमी से। गोधूलि बेला ढल रही थी, और मुझे उसका प्रभाव दयनीय लगा; जाली से मैंने रात के बादलों को नीचे लटकते झंडों की तरह आते देखा। मुझे लगा मानो इस समय ऊपर स्वर्ग में धरती पर हो रहे सभी कष्टों के लिए स्नेह और शोक है; मेरे भयानक सपने का बोझ हल्का हो गया—प्यार न मिलने का, अपना न होने का,

विपरीत आशा के आगे आधा झुक जाने का वह असहनीय विचार—मुझे यकीन था कि अगर मैं इस घर की छत से, जो किसी कब्र की तरह भारी थी, निकल कर शहर से बाहर खेतों में दूर स्थित एक शांत पहाड़ी पर जाऊं तो यह आशा और भी स्पष्ट हो जाएगी। एक लबादा ओढ़कर (मैं बेहोश नहीं हो सकता था, क्योंकि मुझे गर्म कपड़े पहनने की समझ और याद थी), मैं चल पड़ा। गुजरते समय एक गिरजाघर की घंटियों ने मुझे रोक लिया; ऐसा लगा मानो वे मुझे प्रार्थना के लिए बुला रही हों, और मैं अंदर चला गया। कोई भी गंभीर अनुष्ठान, सच्ची पूजा का कोई भी दृश्य, ईश्वर से प्रार्थना करने का कोई भी अवसर उस समय मेरे लिए उतना ही स्वागत योग्य था जितना किसी जरूरतमंद के लिए रोटी। मैं दूसरों के साथ पत्थर के फर्श पर घुटने टेककर बैठ गया। यह एक पुराना, गंभीर गिरजाघर था, जिसका गहरा अंधकार रंगीन कांच से छनकर आने वाली रोशनी से जगमगा रहा था, न कि बैंगनी रंग का हो गया था।

कुछ ही श्रद्धालु एकत्रित थे, और अभिवादन के बाद उनमें से आधे चले गए। मुझे जल्द ही पता चला कि जो बचे थे वे पाप स्वीकार करने के लिए रुके थे। मैं हिला तक नहीं। चर्च के सभी दरवाजे सावधानीपूर्वक बंद कर दिए गए; एक पवित्र शांति छा गई, और हमारे चारों ओर एक गंभीर छाया बन गई। कुछ देर बाद, प्रार्थना में लीन और थकी हुई एक पश्चात्तापी महिला पाप स्वीकार करने के लिए आई। मैंने उसे देखा। उसने धीरे से अपने पाप स्वीकार किए; उसकी प्रार्थना भी धीरे से दोहराई गई; वह सांत्वना पाकर लौट गई। एक और गई, फिर एक और। मेरे पास घुटनों के बल बैठी एक पीली सी महिला ने धीमी, दयालु आवाज में कहा: — “अब आप जाइए, मैं अभी पूरी तरह तैयार नहीं हूँ।”

बिना सोचे-समझे, मैं उठा और चला गया। मुझे पता था कि मैं क्या कर रहा हूँ; मेरे दिमाग ने बिजली की गति से अपना इरादा तय कर लिया था। यह कदम उठाने से मेरी हालत और खराब नहीं हो सकती थी; बल्कि इससे मुझे सुकून मिल सकता था।

कन्फेशन रूम में मौजूद पादरी ने मेरी ओर देखा तक नहीं; उन्होंने चुपचाप अपना कान मेरे होंठों की ओर झुकाया। वे भले ही अच्छे इंसान हों, लेकिन यह कर्तव्य उनके लिए एक औपचारिकता मात्र बन गया था: वे इसे एक रीति-रिवाज की तरह निभा रहे थे। मैं झिझका; मुझे पाप स्वीकार करने के तौर-तरीकों की जानकारी नहीं थी: इसलिए, सामान्य प्रस्तावना से शुरू करने के बजाय, मैंने कहा: — “मेरे पिता, मैं प्रोटेस्टेंट हूँ।”

वह सीधे मुड़ा। वह कोई स्थानीय पादरी नहीं था: उस वर्ग के पादरियों का चेहरा लगभग हमेशा ही चापलूसी भरा होता है: मैंने उसके चेहरे और माथे से देखा कि वह एक फ्रांसीसी था; हालांकि उसके बाल सफेद हो गए थे और वह उम्रदराज था, मुझे नहीं लगता कि उसमें भावना या बुद्धि की कमी थी। उसने बड़े ही विनम्र लहजे में पूछा कि मैं प्रोटेस्टेंट होते हुए भी उसके पास क्यों आया हूँ?

मैंने कहा कि मुझे सलाह का एक शब्द या सांत्वना का एक शब्द सुनने की सख्त जरूरत है। मैं कुछ हफ्तों से बिलकुल अकेला रह रहा था; मैं बीमार था; मेरे मन पर इतना गहरा दुख का बोझ था कि वह इसे और सहन नहीं कर पा रहा था।

"क्या यह पाप था, अपराध था?" उसने कुछ चौंकते हुए पूछा। मैंने उसे आश्वस्त किया और जहाँ तक संभव हो सका, मैंने उसे अपने अनुभव की संक्षिप्त जानकारी दी।

वह सोच में डूबा हुआ, हैरान और उलझन में दिख रहा था। उसने कहा, "तुमने मुझे अचानक चौंका दिया। मेरे सामने ऐसा मामला पहले कभी नहीं आया: आमतौर पर हम अपनी दिनचर्या जानते हैं और तैयार रहते हैं; लेकिन यह स्वीकारोक्ति की सामान्य प्रक्रिया में एक बड़ा व्यवधान है। मेरे पास इस परिस्थिति के अनुकूल वकील भी नहीं हैं।"

बेशक, मुझे उनसे ऐसी उम्मीद नहीं थी; लेकिन एक ऐसे कान से संवाद करने मात्र से ही मुझे राहत मिली जो मानवीय और संवेदनशील था, फिर भी पवित्र था— लंबे समय से संचित, दबी हुई पीड़ा का कुछ अंश एक ऐसे पात्र में बह निकला जहाँ से वह फिर कभी बाहर नहीं निकल सकती थी— मुझे सुकून मिला। मुझे पहले से ही शांति मिल गई थी।

"क्या मुझे जाना ही होगा, पिताजी?" मैंने उनसे पूछा, क्योंकि वे चुपचाप बैठे थे।

"मेरी बेटी," उन्होंने विनम्रता से कहा—और मुझे यकीन है कि वे एक दयालु व्यक्ति थे: उनकी नज़र में करुणा थी—"अभी के लिए बेहतर होगा कि तुम चली जाओ: लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हारे शब्दों ने मुझे झकझोर दिया है। पश्चाताप, अन्य बातों की तरह, आदत के साथ औपचारिक और तुच्छ हो जाता है। तुम आई हो और तुमने अपने दिल की बात कह दी है; ऐसा बहुत कम होता है। मैं तुम्हारे मामले पर विचार करना चाहता हूँ, और इसे अपने प्रार्थना कक्ष में ले जाना चाहता हूँ। यदि तुम हमारे धर्म की होतीं तो मुझे पता होता कि क्या कहना है—ऐसा व्याकुल मन

केवल एकांतवास और नियमित धार्मिक अभ्यास में ही शांति पा सकता है। यह सर्वविदित है कि संसार में ऐसे स्वभाव वाले लोगों के लिए कोई संतुष्टि नहीं है। पवित्र पुरुषों ने तुम जैसे पश्चात्तापी लोगों को तपस्या, आत्म-त्याग और कठिन पुण्य कर्मों द्वारा अपने आध्यात्मिक उत्थान के मार्ग पर शीघ्रता से आगे बढ़ने का आदेश दिया है। आँसू उन्हें यहाँ भोजन और पेय के रूप में दिए जाते हैं—दुख की रोटी और दुख का जल—उनका प्रतिफल परलोक में आता है। मेरा स्वयं का विश्वास है कि जिन भावनाओं से तुम आहत हो रही हो, वे तुम्हें शांति प्रदान करेंगी। हम परमेश्वर के दूत हैं जो तुम्हें सच्चे चर्च में वापस ला रहे हैं। तुम हमारे विश्वास के लिए बनी हो: विश्वास रखो, केवल हमारा विश्वास ही तुम्हें ठीक कर सकता है और तुम्हारी मदद कर सकता है— प्रोटेस्टेंटवाद तुम्हारे लिए बहुत नीरस, ठंडा और उबाऊ है। जैसे-जैसे मैं इस मामले की गहराई में जाता हूँ, मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि यह सामान्य व्यवस्था से बिल्कुल अलग है। मैं किसी भी कीमत पर तुम्हें नहीं छोडूंगा। जाओ, मेरी बेटी, अभी के लिए; लेकिन फिर मेरे पास लौट आना।

मैं उठा और मैंने उन्हें धन्यवाद दिया। मैं जाने ही वाला था कि उन्होंने मुझे वापस आने का इशारा किया।

"आपको इस चर्च में नहीं आना चाहिए," उसने कहा। "मैं देख रहा हूँ कि आप बीमार हैं, और यह चर्च बहुत ठंडा है; आपको मेरे घर आना चाहिए: मैं रहता हूँ ——" (और उसने मुझे अपना पता दिया)। "कल सुबह दस बजे वहाँ पहुँच जाना।"

इस नियुक्ति के जवाब में, मैंने केवल सिर झुकाया; और अपना घूंघट नीचे खींचकर, और अपने लबादे को अपने चारों ओर लपेटकर, मैं वहां से चली गई।

क्या मैंने, पाठक, उस आदरणीय पुजारी के पास दोबारा जाने का सोचा था? ऐसा सोचना तो मानो किसी भट्टी में कदम रखने जैसा था। उस पुजारी के हाथ मुझ पर असर डाल सकते थे: वह स्वभाव से दयालु थे, एक भावुक फ्रांसीसी दयालुता से भरे हुए, जिसकी कोमलता से मैं पूरी तरह प्रभावित नहीं हो पाता था। कुछ प्रकार के स्नेह को छोड़कर, शायद ही कोई ऐसा स्नेह था जिसकी जड़ वास्तविकता में हो, जिस पर मैं अपनी पूरी ताकत से काबू पा सकूँ। अगर मैं उनके पास जाता, तो वह मुझे सच्चे पोप के अंधविश्वास में छिपी हर कोमल, सुकून देने वाली और सौम्य बात दिखाते। फिर वह मुझमें अच्छे कामों के उत्साह को जगाने, बढ़ाने और प्रेरित करने की कोशिश करते। मुझे नहीं पता कि इसका अंत क्या होता। हम सब खुद को कुछ मामलों में

मजबूत समझते हैं; हम सब कई मामलों में खुद को कमजोर जानते हैं; संभावना यही है कि अगर मैं तय समय और दिन पर रुए डेस मेजेस स्थित नंबर 10 पर गया होता, तो शायद आज मैं यह विधर्मी वृत्तांत लिखने के बजाय विलेट के क्रेसी बुलेवार्ड पर स्थित किसी कार्मेलाइट मठ की कोठरी में माला जप रहा होता। उस दयालु बूढ़े पादरी में फेनेलोन की कुछ झलक थी; और उनके अधिकांश साथी चाहे जैसे भी हों, और मैं उनके चर्च और पंथ के बारे में चाहे जो भी सोचूँ (और मुझे दोनों ही पसंद नहीं हैं), उनके प्रति मेरी कृतज्ञता हमेशा बनी रहेगी। जब मुझे दया की ज़रूरत थी, तब उन्होंने मुझ पर दया दिखाई; उन्होंने मेरा भला किया। ईश्वर उन्हें आशीर्वाद दें!

गोधूलि बेला रात में बदल चुकी थी, और उस अंधकारमय गिरजाघर से बाहर निकलते ही गलियों में दीपक जल उठे थे। अब मेरे लिए वापस लौटना संभव हो गया था; शहर की दीवारों से दूर उस छोटी पहाड़ी पर अक्टूबर की इस ठंडी हवा में सांस लेने की तीव्र इच्छा अब एक बाध्यकारी आवेग नहीं रही थी, बल्कि एक ऐसी इच्छा में बदल गई थी जिसे तर्क संभाल सकता था: मैंने उसे दबा दिया, और मैंने सोचा कि मैं रू फॉसेट की ओर मुड़ जाऊं। लेकिन मैं शहर के एक ऐसे हिस्से में फंस गया था जिससे मैं परिचित नहीं था; यह पुराना हिस्सा था, और सुरम्य, प्राचीन और जीर्ण-शीर्ण घरों वाली संकरी गलियों से भरा हुआ था। मैं इतना कमजोर था कि संयम नहीं रख पा रहा था, और अपनी सुरक्षा और भलाई के प्रति इतना लापरवाह था कि सावधान भी नहीं हो पा रहा था; मैं घबरा गया; मैं अनजान मोड़ों के जाल में उलझ गया। मैं खो गया था और किसी भी यात्री से रास्ता पूछने का साहस नहीं था।

सूर्यास्त के समय अगर तूफान थोड़ा शांत हुआ था, तो अब उसने उसकी भरपाई कर दी। उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर तेज़ और क्षैतिज हवा गरज रही थी; यह फुहारों की तरह बारिश ला रही थी, और कभी-कभी गोलियों की तरह ओले भी पड़ रहे थे: यह इतनी ठंडी थी कि मेरे भीतरी हिस्से तक चुभ रही थी। मैंने अपना सिर झुकाकर उसका सामना करने की कोशिश की, लेकिन उसने मुझे पीछे धकेल दिया। इस संघर्ष में मेरा दिल ज़रा भी नहीं घबराया; मेरी बस यही इच्छा थी कि काश मेरे पास पंख होते और मैं उस आंधी में उड़ पाता, अपने पंख फैलाकर उसकी शक्ति पर आराम कर पाता, उसके मार्ग पर उड़ पाता, जहाँ वह ले जाए वहाँ बह पाता। यही सोचते हुए, मुझे अचानक वहाँ और ज़्यादा ठंड लगने लगी जहाँ पहले ठंड थी, और वहाँ और ज़्यादा लाचार महसूस होने लगा जहाँ पहले कमज़ोरी थी। मैंने पास की एक

बड़ी इमारत के बरामदे तक पहुँचने की कोशिश की, लेकिन इमारत का विशाल अग्रभाग और विशाल शिखर मेरी आँखों से ओझल हो गए। जैसा मैंने सोचा था, सीढ़ियों पर गिरने के बजाय, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी खाई में सिर के बल गिर रहा हूँ। इसके बाद मुझे कुछ याद नहीं।

अध्याय सोलह।

ऑल्ड लैंग साइन।

उस बेहोशी के दौरान मेरी आत्मा कहाँ गई, यह मैं नहीं बता सकती। उस अजीब रात में उसने जो कुछ भी देखा, या जहाँ कहीं भी वह समाधि में गई, उसने अपना रहस्य गुप्त रखा; स्मृति से एक शब्द भी फुसफुसाए बिना, और अटूट मौन से कल्पना को भ्रमित करते हुए। हो सकता है वह ऊपर की ओर गई हो, और अपने शाश्वत घर के दर्शन कर रही हो, अब विश्राम की आशा में, और यह सोचकर कि पदार्थ के साथ उसका पीड़ादायक बंधन अंततः टूट गया है। जब वह ऐसा सोच रही थी, तभी शायद किसी देवदूत ने उसे स्वर्ग के द्वार से दूर रहने की चेतावनी दी हो, और रोती हुई उसे नीचे ले जाकर, कांपती हुई और अनिच्छुक अवस्था में, एक बार फिर उस निर्जीव, ठंडे और क्षीण शरीर से बाँध दिया हो, जिसकी संगति से वह बहुत ऊब चुकी थी।

मैं जानता हूँ कि वह दर्द, अनिच्छा, कराह और कंपकंपी के साथ अपनी कैद में लौटी। बिछड़े हुए साथी, आत्मा और पदार्थ, का पुनर्मिलन कठिन था: उन्होंने एक-दूसरे का आलिंगन नहीं, बल्कि एक कष्टदायक संघर्ष के साथ स्वागत किया। मेरी दृष्टि लाल रंग में लौटी, मानो खून में तैर रही हो; रुकी हुई श्रवण शक्ति गड़गड़ाहट की तरह तेज़ होकर वापस आई; चेतना भय से जागृत हुई: मैं भयभीत होकर बैठ गया, यह सोचकर कि मैं किस लोक में, किन विचित्र प्राणियों के बीच जाग रहा हूँ। पहले तो

मुझे कुछ भी समझ नहीं आया: दीवार दीवार नहीं थी - दीपक दीपक नहीं था। मुझे भूत को भी उतना ही समझना चाहिए था जितना कि आम वस्तु को: यानी मेरी नज़र जिस पर भी पड़ी, वह प्रेत जैसी लगी। लेकिन जल्द ही सभी इंद्रियाँ अपनी-अपनी जगह पर स्थिर हो गईं; जीवन-यंत्र ने तुरंत अपना सामान्य और नियमित कार्य फिर से शुरू कर दिया।

फिर भी, मुझे पता नहीं था कि मैं कहाँ हूँ; बस कुछ समय बाद मुझे एहसास हुआ कि मुझे उस जगह से हटा दिया गया था जहाँ मैं गिरा था: मैं किसी बरामदे की सीढ़ी पर नहीं था; दीवारें, खिड़कियाँ और छत ने रात और आंधी को रोक रखा था। मुझे किसी घर में ले जाया गया था - लेकिन किस घर में?

मैं केवल रू फॉसेट में स्थित पेंशननेट के बारे में सोच पा रही थी। अभी भी आधी नींद में, मैं यह पता लगाने की कोशिश कर रही थी कि मुझे किस कमरे में रखा गया है; क्या वह बड़ा कमरा था, या कोई छोटा कमरा। मैं उलझन में थी, क्योंकि मुझे जो फर्नीचर दिखाई दे रहा था, वह इन कमरों के बारे में मेरे ज्ञान से मेल नहीं खा रहा था। खाली सफेद बिस्तर गायब थे, और बड़ी खिड़कियों की लंबी कतार भी। "ज़रूर," मैंने सोचा, "मुझे मैडम बेक के कमरे में तो नहीं ले जाया गया है!" और तभी मेरी नज़र नीले दमास्क से ढकी एक आरामकुर्सी पर पड़ी। उसी रंग के गद्दीदार अन्य कुर्सियाँ धीरे-धीरे मेरी नज़र में आईं; और अंत में मैंने एक सुखद बैठक को पूरी तरह से देखा, जिसमें एक साफ-सुथरे चूल्हे पर लकड़ी की आग जल रही थी, एक कालीन जिस पर चमकीले नीले रंग की अरबी डिज़ाइन हल्के भूरे रंग की पृष्ठभूमि को उभार रही थी; पीली दीवारें जिन पर नीले रंग के फॉरगेट-मी-नॉट फूलों की एक छोटी लेकिन अंतहीन माला अनगिनत सुनहरे पत्तों और लताओं के बीच उलझी हुई सी फैली हुई थी। दो खिड़कियों के बीच एक सोने का पानी चढ़ा दर्पण लगा था, जिन पर नीले रंग के मोटे पर्दे लगे थे। इस दर्पण में मैंने खुद को बिस्तर पर नहीं, बल्कि सोफे पर लेटे हुए देखा। मैं प्रेत जैसी लग रही थी; मेरी आँखें बड़ी और धँसी हुई थीं, मेरे बाल सामान्य से अधिक काले थे, जो मेरे पतले और मुरझाए चेहरे के बिल्कुल विपरीत थे। न केवल फर्नीचर से, बल्कि खिड़कियों, दरवाजों और चिमनी की स्थिति से भी यह स्पष्ट था कि यह किसी अनजान घर का कोई अनजान कमरा था।

यह बात भी स्पष्ट थी कि मेरा दिमाग अभी तक स्थिर नहीं हुआ था; क्योंकि जैसे ही मैंने नीली आर्मचेयर को देखा, वह मुझे जानी-पहचानी सी लगने लगी; एक खास

तरह का सोफा भी, और उससे भी कम नहीं, नीले कवर वाली गोल सेंटर टेबल, जिसके किनारों पर पतझड़ के रंगों वाले पत्ते बने थे; और सबसे बढ़कर, नक्काशीदार कवर वाली दो छोटी-छोटी फुटस्टूलें, और एक छोटी सी आबनूस की फ्रेम वाली कुर्सी, जिसकी सीट और पीठ पर भी गहरे रंग की पृष्ठभूमि पर चमकीले फूलों के समूह उकेरे गए थे।

इन चीजों से प्रभावित होकर, मैंने और खोजबीन की। आश्चर्य की बात है, मेरे चारों ओर पुराने परिचित मौजूद थे, और हर कोने से पुरानी यादें मुस्कुरा रही थीं। मेंटलपीस के ऊपर दो अंडाकार लघुचित्र थे, जिनके ऊँचे और पाउडरयुक्त "सिरों" पर लगे मोती; सफेद गले के चारों ओर लिपटा मखमल; भरे हुए मलमल के रूमालों का उभार; और आस्तीनों पर लगे लेस के झालरों का पैटर्न मुझे मुंह ज़बानी याद था। मेंटल शेल्फ पर दो चीनी मिट्टी के फूलदान, एक छोटे से चाय सेट के कुछ अवशेष, जो तामचीनी की तरह चिकने और अंडे के छिलके की तरह पतले थे, और एक सफेद केंद्रीय आभूषण, अलबास्टर में बना एक क्लासिक समूह, कांच के नीचे संरक्षित था। इन सभी चीजों की विशेषताओं को मैं किसी भविष्यवक्ता की तरह बता सकता था, खामियों या दरारों को गिन सकता था। सबसे ऊपर, हाथों पर लगाने वाले दो स्क्रीन थे, जिन पर विस्तृत पेंसिल से रेखाचित्र बनाए गए थे, जो रेखाचित्रों की तरह पूर्ण थे; इन्हें दोबारा देखकर मेरी आंखें दुखने लगीं, उन घंटों की याद आ गई जब मैंने एक-एक स्ट्रोक और एक-एक स्पर्श से उस थकाऊ, कमजोर, नज़ाकत भरी, स्कूली छात्रा जैसी पेंसिल को अपनी कंकाल जैसी उंगलियों में पकड़ा हुआ था।

मैं कहाँ था? न केवल दुनिया के किस कोने में, बल्कि प्रभु के किस वर्ष में? क्योंकि ये सभी वस्तुएँ बीते दिनों की और एक दूर देश की थीं। दस साल पहले मैंने उन्हें अलविदा कहा था; चौदह वर्ष की आयु के बाद से हम दोनों की कभी मुलाकात नहीं हुई थी। मैंने गहरी साँस लेते हुए कहा, "मैं कहाँ हूँ?"

अब तक अनदेखी एक आकृति हिली, उठी, आगे आई: वातावरण से बेमेल एक आकृति, जो पहेली को और भी जटिल बना रही थी। यह एक साधारण सी देसी महिला थी, जिसने आम सी टोपी और प्रिंटेड ड्रेस पहनी हुई थी। वह न तो फ्रेंच बोलती थी और न ही अंग्रेजी, और मैं उसकी बोली के कुछ शब्द न समझ पाने के कारण उससे कुछ भी नहीं समझ सका। लेकिन उसने मेरे कनपटी और माथे को ठंडे और सुगंधित पानी से धोया, फिर उसने उस तकिये को ऊंचा किया जिस पर मैं लेटा था,

मुझे इशारे से बताया कि मुझे बोलना नहीं है, और सोफे के निचले हिस्से में अपनी जगह पर वापस चली गई।

वह बुनाई में व्यस्त थी; उसकी नज़रें मुझसे हटकर उस पर टिकी हुई थीं, जिससे मैं बिना किसी रुकावट के उसे निहार सकती थी। मैं बहुत हैरान थी कि वह वहाँ कैसे आई, या उन दृश्यों से उसका क्या संबंध था, या मेरे बचपन के दिनों से उसका क्या लेना-देना था। और उससे भी ज़्यादा मैं इस बात से अचंभित थी कि अब उन दृश्यों और दिनों का मुझसे क्या संबंध हो सकता है।

रहस्य को गहराई से समझने की मेरी कमजोरी के कारण, मैंने इसे एक गलती, एक सपना, बुखार का दौरा बताकर सुलझाने की कोशिश की; फिर भी मैं जानती थी कि कोई गलती नहीं हो सकती, मैं सो नहीं रही थी, और मुझे विश्वास था कि मैं होश में थी। काश कमरा इतना रोशन न होता, ताकि मैं छोटी-छोटी तस्वीरें, गहने, पर्दे, नक्काशीदार कुर्सी इतनी स्पष्ट रूप से न देख पाती। ये सभी वस्तुएँ, साथ ही नीले दमिश्क के कपड़े, वास्तव में बिल्कुल वैसी ही थीं, हर एक छोटी से छोटी बात में, जैसी मुझे अच्छी तरह याद थीं, और जिनसे मेरा ब्रेटन स्थित मेरी धर्ममाता के घर के ड्राइंग रूम में बहुत गहरा लगाव था। मुझे लगा कि केवल कमरा बदला है, क्योंकि उसका आकार और माप अलग है।

मैंने बेदरेद्दीन हसन के बारे में सोचा, जो नींद में ही काहिरा से दमिश्क के द्वार तक पहुँच गए थे। क्या किसी देवदूत ने अपना काला पंख उस तूफान पर झुकाया था जिसके दबाव में मैं आ गया था, और मुझे गिरजाघर की सीढ़ियों से उठाकर, पूर्वी कथाओं के अनुसार, "ऊँची उड़ान भरकर", मुझे ज़मीन और समुद्र के ऊपर से ले जाकर, पुराने इंग्लैंड के चूल्हे के पास शांति से लिटा दिया था? लेकिन नहीं; मैं जानता था कि उस चूल्हे की आग अब उसके देवता के सामने नहीं जल रही थी - वह बहुत पहले बुझ चुकी थी, और घर के देवी-देवताओं को कहीं और ले जाया जा चुका था।

वह बुन्ने मेरी ओर मुड़ी और मुझे देखने लगी। मेरी आँखें खुली देखकर, और शायद उनमें घबराहट और उत्तेजना का भाव देखकर, उसने बुनाई का काम रोक दिया। मैंने उसे एक छोटे से स्टॉल पर कुछ करते देखा; उसने पानी डाला और एक शीशी से बूँदें नापीं: हाथ में गिलास लिए वह मेरे पास आई। अब वह मुझे कौन सा गहरा रंग का पेय पिलाने वाली थी? कोई जिन्न-अमृत या जादूगर-आसुत?

पूछताछ करने में बहुत देर हो चुकी थी—मैंने इसे चुपचाप, और तुरंत ही निगल

लिया था। शांत विचारों की एक लहर अब धीरे-धीरे मेरे मस्तिष्क को सहलाने लगी; प्रवाह और भी कोमल होता गया, हल्की लहरों के साथ जो मरहम से भी अधिक कोमल थीं। कमजोरी का दर्द मेरे अंगों से दूर हो गया, मेरी मांसपेशियां सो गईं। मैंने हिलने-डुलने की शक्ति खो दी; लेकिन, इच्छा खो जाने के बावजूद, यह कोई अभाव नहीं था। उस दयालु महिला ने मेरे और दीपक के बीच एक पर्दा लगा दिया; मैंने उसे ऐसा करने के लिए उठते देखा, लेकिन मुझे याद नहीं कि मैंने उसे वापस अपनी जगह पर बैठते देखा हो: इन दोनों घटनाओं के बीच, मैं सो गया।

* * * * *

जागते ही, देखो! सब कुछ फिर से बदल गया था। दिन का उजाला मुझे चारों ओर से घेरे हुए था; वास्तव में, यह कोई गर्म, गर्मी की रोशनी नहीं थी, बल्कि कड़ाके की ठंड और तूफानी पतझड़ का गहरा अंधकार था। अब मुझे यकीन हो गया था कि मैं अपने छोटे से घर में हूँ - खिड़की पर बरसती बारिश से; पेड़ों के बीच हवा की सरसराहट से, जो बाहर एक बगीचे का संकेत दे रही थी; उस ठंड, सफेदी और सन्नाटे से, जिसके बीच मैं लेटा हुआ था। मैं सफेदी इसलिए कह रहा हूँ - क्योंकि फ्रेंच बेड के सामने गिरे हुए डिमिटी के पर्दों ने मेरी दृष्टि को सीमित कर दिया था।

मैंने उन्हें उठाया; मैंने बाहर देखा। मेरी आँखें, जो एक लंबे, विशाल और सफेदी किए हुए कमरे के विशाल विस्तार को देखने के लिए तैयार थीं, एक छोटी सी अलमारी के सीमित क्षेत्र को देखकर अचंभित रह गईं - एक ऐसी अलमारी जिसकी दीवारें समुद्री हरे रंग की थीं; साथ ही, पाँच चौड़ी और खुली खिड़कियों के स्थान पर, मलमल की झालरों से ढकी एक ऊँची जाली थी: रंगे हुए लकड़ी के दो दर्जन छोटे स्टैंड, जिनमें से प्रत्येक पर एक बेसिन और एक जग रखा होता था, के स्थान पर एक श्रृंगार मेज थी, जो किसी नृत्य-कलाकार के लिए तैयार सफेद वस्त्र और गुलाबी स्कर्ट से सजी हुई थी; उस पर एक बड़ा और चमकदार शीशा लगा था, और लेस से सजी एक सुंदर पिन-कुशन उसे सुशोभित कर रही थी। यह श्रृंगार मेज, एक छोटी, नीची, हरे और सफेद रंग की चिंट्ज़ की कुर्सी, संगमरमर की पटिया से ढका एक वॉशस्टैंड, और हल्के हरे रंग के बर्तनों से सुसज्जित, उस छोटे से कमरे को पर्याप्त रूप से सुसज्जित कर रही थी।

पाठक, मैं घबरा गया! आप पूछेंगे, क्यों? इस साधारण और कुछ हद तक सुंदर से

कमरे में ऐसा क्या था जो सबसे डरपोक को भी चौंका दे? बस यही बात थी - ये फर्नीचर के सामान असली, ठोस आर्मचेयर, शीशे और वॉशस्टैंड नहीं हो सकते थे - ये तो ऐसी ही वस्तुओं के भूत होने चाहिए; या, अगर इस परिकल्पना को बहुत ही बेतुका मानकर नकार दिया जाए - और मैं इतना भ्रमित था कि मैंने इसे नकार ही दिया - तो यही निष्कर्ष निकलता था कि मैं स्वयं एक असामान्य मानसिक स्थिति में चला गया था; संक्षेप में, मैं बहुत बीमार और प्रलाप में था: और तब भी, प्रलाप ने किसी पीड़ित को जिस तरह से परेशान किया था, यह सबसे अजीब कल्पना थी।

मैं जानता था—मुझे जानना ही था—उस छोटी सी कुर्सी का हरा चिंट्ज़ कपड़ा; वह आरामदायक छोटी सी कुर्सी, उस गिलास का नक्काशीदार, चमकदार काला, पत्तों वाला फ्रेम; स्टैंड पर रखे चीनी मिट्टी के बर्तनों का चिकना, दूधिया हरा रंग; और वह स्टैंड भी, जिसका धूसर संगमरमर का ऊपरी हिस्सा एक कोने से टूटा हुआ था;—इन सभी को पहचानना और उनका अभिनंदन करना मेरे लिए अनिवार्य था, ठीक वैसे ही जैसे पिछली रात मैंने मजबूरी में ड्राइंग रूम के रोज़वुड, पर्दे और चीनी मिट्टी के बर्तनों को पहचाना और उनका अभिनंदन किया था।

ब्रेटन! ब्रेटन! और दस साल पहले की यादें उस दर्पण में चमक उठीं। और ब्रेटन और मेरा चौदहवाँ साल मुझे इस तरह क्यों सता रहे थे? अगर वे आए भी तो पूरी तरह क्यों नहीं लौटे? मेरी धुंधली दृष्टि के सामने केवल फर्नीचर ही क्यों मंडरा रहा था, जबकि कमरे और इलाका गायब हो चुके थे? जहाँ तक उस लाल साटन के तकिये की बात है, जो सोने के मोतियों से सजा था और धागे की लेस से झालरदार था, मुझे उसे जानने का उतना ही अधिकार था जितना कि पर्दों को जानने का - मैंने उसे खुद बनाया था। बिस्तर से अचानक उठकर मैंने तकिये को हाथ में लिया और उसे देखा। उस पर सोने की धारियों में "एल.एल.बी." लिखा था, और उसके चारों ओर सफेद रेशम से कढ़ाई की हुई एक अंडाकार माला थी। ये मेरी धर्ममाता के नाम के शुरुआती अक्षर थे - लोनिसा लूसी ब्रेटन।

“क्या मैं इंग्लैंड में हूँ? क्या मैं ब्रेटन में हूँ?” मैंने बुदबुदाया; और जल्दी से उस पर्दे को ऊपर खींचकर, जिससे जाली ढकी हुई थी, मैंने यह पता लगाने की कोशिश की कि मैं कहाँ हूँ; सेंट ऐन स्ट्रीट की शांत, पुरानी, सुंदर इमारतों और साफ-सुथरे भूरे फुटपाथ को देखने और अंत में मिनस्टर के टावरों को देखने के लिए आधा तैयार था: या, अगर ऐसा नहीं था, तो कहीं न कहीं शहर का नज़ारा देखने की पूरी उम्मीद थी,

विलेट की कोई गली, अगर किसी सुखद और प्राचीन अंग्रेजी शहर की कोई सड़क नहीं तो।

इसके विपरीत, मैंने ऊँची जाली के चारों ओर घनी पत्तियों के बीच से देखा, और वहाँ से आगे एक घास के मैदान जैसी समतल भूमि दिखाई दी, एक लॉन-टेरेस जिसके आगे नीचे से पेड़ उग रहे थे—ऊँचे-ऊँचे जंगल के पेड़, जिन्हें मैंने कई दिनों से नहीं देखा था। वे अब अक्टूबर की तेज़ हवा में कराह रहे थे, और उनके तनों के बीच मैंने एक रास्ते की रेखा देखी, जहाँ पीले पत्ते ढेरों और टीलों में पड़े थे, या पश्चिम की ओर से आती तेज़ हवा में अकेले-अकेले उड़ रहे थे। आगे जो भी भूदृश्य रहा होगा, वह समतल ही रहा होगा, और इन ऊँचे बीच के पेड़ों ने उसे छिपा रखा था। वह जगह सुनसान लग रही थी, और मेरे लिए बिल्कुल अजीब थी: मैं उसे बिल्कुल नहीं जानता था।

मैं एक बार फिर लेट गई। मेरा बिस्तर एक छोटे से आले में था; दीवार की ओर चेहरा करके, कमरे की सारी चीज़ें मुझसे अलग हो गईं। अलग? नहीं! क्योंकि जैसे ही मैंने इस आशा में अपनी जगह बनाई, देखो, विभाजित और ऊपर की ओर मुड़े हुए पर्दों के बीच की हरी जगह पर, एक चौड़ा, सुनहरे रंग का चित्र-फ्रेम लटका हुआ था, जिसमें एक चित्र था। यह जलरंगों से बना था - अच्छी तरह से बना हुआ, हालांकि एक रेखाचित्र मात्र - एक सिर, एक लड़के का सिर, ताजा, सजीव, बोलता हुआ और जीवंत। यह सोलह साल का एक युवक लग रहा था, गोरा रंग, चेहरे पर चमक; लंबे बाल, काले नहीं, और सुनहरे रंग की चमक; भेदक आँखें, घुमावदार होंठ और एक हंसमुख मुस्कान। कुल मिलाकर, देखने में बहुत ही मनमोहक चेहरा, खासकर उन लोगों के लिए जो उस युवक के स्नेह के हकदार थे - जैसे माता-पिता या बहनें। कोई भी रोमांटिक छोटी स्कूली लड़की शायद इस चित्र को फ्रेम में ही पसंद कर लेती। उनकी आँखें ऐसी लग रही थीं मानो कुछ उम्र बढ़ने पर प्रेम के प्रति बिजली की तरह चमक उठेंगी: मैं नहीं कह सकता कि उनमें आस्था की अटूट चमक छिपी थी या नहीं। चाहे जो भी भावना उनके सामने सरलता से प्रकट हुई हो, उनके होंठों से खूबसूरती से, लेकिन निश्चित रूप से, चंचलता और हल्के सम्मान का भाव झलक रहा था।

हर नई खोज को यथासंभव चुपचाप स्वीकार करने का प्रयास करते हुए, मैंने अपने आप से फुसफुसाया—

आह! वो तस्वीर नाश्ते के कमरे में, मेंटलपीस के ऊपर टंगी रहती थी: मुझे लगता

था कि वो कुछ ज़्यादा ही ऊँची थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं उसे उतारने के लिए संगीत की कुर्सी पर चढ़ जाती थी, उसे हाथ में पकड़ती थी और उन सुंदर आँखों में झाँकती थी, जिनकी भूरी पलकों के नीचे की झलक किसी पेंसिल से बनी हँसी जैसी लगती थी; और मुझे गालों का रंग और होंठों के भाव देखना बहुत अच्छा लगता था। मुझे यकीन ही नहीं होता था कि कल्पना उस होंठों या ठोड़ी की बनावट को और बेहतर बना सकती है; मेरी नासमझी भी जानती थी कि दोनों ही सुंदर थे, और मैं इस शंका में उलझी रहती थी: "ऐसा कैसे हो सकता है कि जो चीज़ इतनी मोहक हो, वही साथ ही इतना दर्द भी दे?" एक बार, परीक्षण के तौर पर, मैं छोटी मिस्सी को घर ले गई और उसे गोद में उठाकर तस्वीर देखने को कहा।

"पॉली, क्या तुम्हें यह अच्छा लग रहा है?" मैंने पूछा। उसने कोई जवाब नहीं दिया, बस देर तक देखती रही, और अंत में उसकी संवेदनशील आँखों में एक उदासी छा गई, और उसने कहा, "मुझे नीचे उतार दो।" तो मैंने उसे नीचे उतार दिया, और मन ही मन कहा: "बच्ची को भी यह महसूस हो रहा है।"

अब मैं इन सभी बातों पर विचार करते हुए कहता हूँ, "उसमें कुछ कमियाँ थीं, फिर भी उससे बेहतर स्वभाव शायद ही किसी का रहा हो; उदार, सौम्य और भावुक।" मेरे विचार एक ज़ोरदार शब्द में समाप्त हुए, "ग्राहम!"

"ग्राहम!" अचानक बिस्तर के पास से एक आवाज गूंजी। "क्या तुम ग्राहम को चाहते हो?"

मैंने देखा। मामला और भी पेचीदा होता जा रहा था; आश्चर्य अपने चरम पर पहुँच रहा था। दीवार पर उस जानी-पहचानी तस्वीर को देखना अजीब था, लेकिन उससे भी अजीब था सामने खड़ी उतनी ही जानी-पहचानी जीवित आकृति को देखना—एक महिला, एक सभ्य महिला, अत्यंत वास्तविक और प्रभावशाली, लंबी, सलीके से सजी, विधवा का रेशमी वस्त्र पहने, और एक ऐसी टोपी जो उनकी मातृत्वपूर्ण चोटी पर खूब जंच रही थी। उनका चेहरा भी सुंदर था; शायद अब सुंदरता के लिए थोड़ा अधिक चिह्नित, लेकिन समझ और चरित्र के लिए नहीं। उनमें थोड़ा ही बदलाव आया था; कुछ अधिक दृढ़, कुछ अधिक मजबूत—लेकिन वह मेरी धर्ममाता थीं: श्रीमती ब्रेटन की स्पष्ट छवि अभी भी मेरे सामने थी।

मैं चुप रहा, फिर भी अंदर ही अंदर बहुत बेचैन था: मेरी नाड़ी तेज हो गई, और मेरे गाल से खून गायब हो गया, जो ठंडा पड़ गया।

“महोदया, मैं कहाँ हूँ?” मैंने पूछा।

"एक बेहद सुरक्षित शरणालय में; फिलहाल अच्छी तरह से संरक्षित; जब तक आप थोड़ा बेहतर महसूस न करें, तब तक निश्चिंत रहें; आज सुबह आप बीमार लग रहे हैं।"

मैं पूरी तरह से भ्रमित हूँ, मुझे नहीं पता कि मैं अपनी इंद्रियों पर बिल्कुल भरोसा कर सकता हूँ या नहीं, या वे मुझे हर बात में गुमराह कर रही हैं: लेकिन आप अंग्रेजी बोलती हैं, है ना, मैडम?

मुझे लगता है कि आप यह बात सुन सकते हैं: मुझे फ्रेंच में लंबा भाषण देना मुश्किल लगेगा।

“आप इंग्लैंड से नहीं आए हैं?”

मैं अभी हाल ही में वहाँ पहुँचा हूँ। क्या आप इस देश में लंबे समय से हैं? ऐसा लगता है कि आप मेरे बेटे को जानते हैं?

“क्या मैं करता हूँ, महोदया? शायद करता हूँ। आपका बेटा—वहाँ तस्वीर में दिख रहा है?”

“यह उनकी युवावस्था की तस्वीर है। इसे देखते हुए आपने उनका नाम लिया।”

“ग्राहम ब्रेटन?”

उसने सिर हिलाया।

“मैं श्रीमती ब्रेटन से बात कर रहा हूँ, जो पहले ब्रेटन, — — शायर की निवासी थीं?”

"बिल्कुल सही; और मुझे बताया गया है कि आप यहां एक विदेशी स्कूल में अंग्रेजी शिक्षक हैं: मेरे बेटे ने आपको इसी रूप में पहचाना।"

“मुझे कैसे ढूंढा गया, महोदया, और किसने ढूंढा?”

“मेरा बेटा तुम्हें यह बात थोड़ी देर में बता देगा,” उसने कहा; “लेकिन अभी तुम बातचीत करने के लिए बहुत भ्रमित और कमजोर हो: नाश्ता करने की कोशिश करो, और फिर सो जाओ।”

मैंने जो कुछ भी सहा था—शारीरिक थकान, मन की बेचैनी, मौसम की मार—उसके बावजूद ऐसा लग रहा था कि मैं बेहतर हो रहा हूँ: बुखार, जो असल में मुझे जकड़े हुए था, कम हो रहा था; क्योंकि पिछले नौ दिनों से मैंने कुछ भी ठोस भोजन नहीं किया था और लगातार प्यास से परेशान था, लेकिन आज सुबह नाश्ता मिलते ही मुझे भूख लगने लगी: एक अंदरूनी कमजोरी ने मुझे उस महिला द्वारा दी गई चाय को

उत्सुकता से पीने और साथ में दिए गए सूखे टोस्ट के टुकड़े को खाने के लिए प्रेरित किया। वह सिर्फ एक टुकड़ा था, लेकिन काफी था; इसने मुझे लगभग दो-तीन घंटे बाद तक ताकत दी, जब उस महिला ने मेरे लिए एक छोटी कटोरी सूप और एक बिस्कुट लाया।

जैसे-जैसे शाम ढलने लगी, ठंडी और तेज़ हवाएँ चलती रहीं और मूसलाधार बारिश होती रही, मैं बिस्तर से बहुत ऊब गई। कमरा सुंदर तो था, पर छोटा था: मुझे घुटन महसूस हो रही थी; मैं बदलाव चाहती थी। बढ़ती ठंड और छाते अंधेरे ने भी मुझे उदास कर दिया; मैं आग की रोशनी देखना चाहती थी—उसे महसूस करना चाहती थी। इसके अलावा, मैं उस लंबी महिला के बेटे के बारे में सोचती रही: मैं उसे कब देख पाऊँगी? निश्चित रूप से अपने कमरे से बाहर निकले बिना तो नहीं।

अंततः मेरी सहेली रात के लिए मेरा बिस्तर लगाने आई। उसने मुझे कंबल में लपेटने और छोटी सी चिंट्ज़ कुर्सी पर बिठाने की तैयारी की; लेकिन, मैंने इन सब बातों को अस्वीकार करते हुए खुद ही कपड़े पहन लिए:

काम पूरा हो चुका था और मैं सांस लेने के लिए बैठ ही रहा था कि तभी श्रीमती ब्रेटन एक बार फिर प्रकट हुईं।

“तैयार हो!” उसने मुस्कुराते हुए कहा, वही जानी-पहचानी मुस्कान जो मुझे अच्छी तरह याद है—एक सुखद मुस्कान, हालांकि कोमल नहीं। “तो अब तुम काफी बेहतर हो? काफी मजबूत हो—है ना?”

वह मुझसे इतनी बातें कर रही थी जैसे पहले करती थी कि मुझे लगभग ऐसा लगने लगा जैसे वह मुझे जानने लगी हो। उसकी आवाज़ और व्यवहार में वही स्नेह था जो बचपन में मुझे उससे हमेशा मिलता था—एक ऐसा स्नेह जिसके आगे मैं झुक जाती थी और जिसे मैं पसंद भी करती थी; यह श्रेष्ठ धन या प्रतिष्ठा के पारंपरिक आधार पर नहीं था (बाद वाले मामले में तो कभी कोई असमानता थी ही नहीं; उसकी प्रतिष्ठा मेरी ही थी); बल्कि शारीरिक लाभ के प्राकृतिक कारणों पर आधारित था: यह वह आश्रय था जो पेड़ जड़ी-बूटी को देता है। मैंने बिना किसी औपचारिकता के उससे अनुरोध किया।

"मुझे नीचे जाने दीजिए, महोदया; मुझे यहां बहुत ठंड और उदासी महसूस हो रही है।"

“अगर तुम बदलाव सहने की हिम्मत रखते हो, तो मुझे इससे बेहतर कुछ नहीं

चाहिए," उसने जवाब दिया। "तो आओ; ये लो एक बांह।" और उसने मुझे अपनी बांह बढ़ा दी: मैंने उसे थाम लिया, और हम कालीन बिछी सीढ़ियों की एक सीढ़ी उतरकर एक चबूतरे पर पहुँचे जहाँ एक ऊँचा दरवाज़ा खुला हुआ था और नीले दमिश्क के कमरे में प्रवेश द्वार था। उस कमरे में घरेलू सुख-सुविधाओं का कितना सुखद वातावरण था! उसकी सुनहरी दीपक की रोशनी और लाल रंग की आग की चमक कितनी गर्मजोशी भरी थी! दृश्य को और भी सुंदर बनाने के लिए, मेज पर चाय तैयार रखी थी — एक अंग्रेजी चाय, जिसकी पूरी चमकदार सेवा मुझे परिचित सी लग रही थी; प्राचीन डिज़ाइन के ठोस चांदी के कलश और उसी धातु के भारी बर्तन से लेकर बैंगनी रंग से गहरे और सुनहरे रंग से सजे पतले चीनी मिट्टी के प्यालों तक। मैं उस खास आकार के, खास सांचे में पके हुए सीड-केक को अच्छी तरह जानता था, जो हमेशा ब्रेटन की चाय की मेज पर रहता था। ग्राहम को वह पसंद था, और वह हमेशा की तरह ग्राहम की थाली के सामने चांदी के चाकू और कांटे के साथ रखा हुआ था। इसके बाद ग्राहम के चाय पीने की उम्मीद थी: ग्राहम शायद अब घर में ही होगा; कुछ ही मिनटों में मैं उसे देख पाऊंगा।

"बैठ जाओ—बैठ जाओ," मेरी गाइड ने कहा, जब चूल्हे की ओर जाते समय मेरा कदम थोड़ा लड़खड़ाया। उन्होंने मुझे सोफे पर बैठाया, लेकिन मैं जल्दी ही उसके पीछे चली गई, यह कहते हुए कि आग बहुत तेज़ है; उसकी छाया में मुझे एक और कुर्सी मिल गई जो मुझे ज़्यादा अच्छी लगी। श्रीमती ब्रेटन कभी किसी व्यक्ति या किसी बात पर ज़्यादा हंगामा नहीं करती थीं; बिना कुछ कहे उन्होंने मुझे अपनी मर्ज़ी से काम करने दिया। उन्होंने चाय बनाई और अखबार उठा लिया। मुझे अपनी धर्ममाता की हर हरकत देखना अच्छा लगता था; उनकी हर हरकत इतनी युवा थी: उनकी उम्र अब पचास से ऊपर रही होगी, फिर भी न तो उनकी मांसपेशियों पर और न ही उनके उत्साह पर उम्र का कोई असर दिखता था। हालांकि उनका शरीर भरा हुआ था, फिर भी वे चौकस थीं, और हालांकि वे शांत थीं, फिर भी कभी-कभी उग्र हो जाती थीं—अच्छी सेहत और उत्तम स्वभाव ने उन्हें हमेशा जवान और तरोताज़ा रखा था।

जब वह पढ़ रही थी, तो मैंने महसूस किया कि वह सुन रही थी—अपने बेटे की आवाज़ सुन रही थी। वह ऐसी महिला नहीं थी जो कभी अपनी बेचैनी स्वीकार करती हो, लेकिन मौसम में अभी भी शांति नहीं थी, और अगर ग्राहम उस कर्कश हवा में बाहर होता—जो अभी भी असंतुष्ट होकर गरज रहा होता—तो मैं अच्छी तरह जानती

थी कि उसकी माँ का दिल भी उसके साथ बाहर आ जाता।

“वह अपने तय समय से दस मिनट पीछे है,” उसने अपनी घड़ी देखते हुए कहा; फिर, एक मिनट बाद, उसने पन्ने से अपनी नज़रें उठाईं और अपना सिर थोड़ा दरवाज़े की ओर झुकाया, जिससे पता चला कि उसे कोई आवाज़ सुनाई दी। थोड़ी देर में उसकी भौंहें तन गईं; और फिर मेरे जैसे कम अभ्यस्त कान ने भी दरवाज़े के लोहे के खुलने की आवाज़, बजरी पर कदमों की आहट और अंत में दरवाज़े की घंटी सुनी। वह आ गया था। उसकी माँ ने चायदानी में चाय भरी, उसने चूल्हे के पास नीली गद्देदार कुर्सी खींची - यह कुर्सी उसकी अपनी थी, लेकिन मैंने देखा कि कोई ऐसा भी था जो बिना किसी डर के इस पर कब्ज़ा कर सकता था। और जब वह सीढ़ियों से ऊपर आया - जो वह जल्द ही आ गया, शायद उस तूफानी और गीली रात के कारण ज़रूरी कुछ तैयार होने के बाद, और सीधे अंदर चला गया -

"क्या तुम हो, ग्राहम?" उसकी माँ ने खुशी भरी मुस्कान छुपाते हुए और संक्षिप्त लहजे में कहा।

"और कौन हो सकता है, माँ?" समय के पाबंद न होने वाले व्यक्ति ने अनादरपूर्वक त्यागे गए सिंहासन पर कब्जा करते हुए पूछा।

"देर से आने के लिए क्या तुम्हें ठंडी चाय नहीं मिलनी चाहिए?"

"मुझे मेरा हक नहीं मिलेगा, क्योंकि कलश प्रसन्नता से गीत गा रहा है।"

"खुद को व्हीलचेयर पर बिठाकर मेज पर आओ, आलसी लड़के: मेरे सिवा कोई और कुर्सी तुम्हारे लिए नहीं है; अगर तुममें जरा भी शिष्टाचार की भावना होती, तो तुम हमेशा उस कुर्सी को बुढ़िया के लिए छोड़ देते।"

“हाँ, मुझे करना ही चाहिए; बस मेरी प्यारी बुढ़िया इसे मेरे लिए ही छोड़ने पर तुली हुई है। माँ, आपका मरीज़ कैसा है?”

“क्या वह आगे आकर खुद बोलेगी?” श्रीमती ब्रेटन ने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा; और इस आमंत्रण पर मैं आगे बढ़ा। ग्राहम ने शिष्टाचारपूर्वक उठकर मेरा अभिवादन किया। वह चूल्हे के पास लंबा खड़ा था, उसकी शख्सियत उसकी माँ के खुले गर्व को सही ठहरा रही थी।

“तो आप नीचे आ गए हैं,” उसने कहा; “आप बेहतर होंगे — बहुत बेहतर। मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि हमारी मुलाकात इस तरह या यहाँ होगी। कल रात मैं बहुत घबरा गया था, और अगर मुझे एक मरणासन्न मरीज के पास जल्दी न जाना

पड़ता, तो मैं आपको छोड़कर नहीं जाता; लेकिन मेरी माँ स्वयं एक कुशल चिकित्सक हैं, और मार्था एक बेहतरीन नर्स हैं। मैंने देखा कि मामला बेहोशी का था, जो जरूरी नहीं कि खतरनाक हो। इसका कारण क्या था, यह मुझे अभी पता लगाना है, और सारी जानकारी भी; इस बीच, मुझे उम्मीद है कि आप वास्तव में बेहतर महसूस कर रहे होंगे?”

मैंने शांत भाव से कहा, "काफी बेहतर। बहुत बेहतर, आपका धन्यवाद, डॉ. जॉन।"

पाठक, यह लंबा-चौड़ा युवक—यह प्यारा बेटा—मेरा यह मेज़बान—यह ग्राहम ब्रेटन, डॉ. जॉन ही थे: वही, और कोई नहीं; और तो और, मुझे उनकी पहचान जानकर ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। इतना ही नहीं, जब मैंने सीढ़ियों पर ग्राहम के कदमों की आहट सुनी, तो मैं समझ गया कि किस तरह का व्यक्ति अंदर आएगा, और मुझे किसकी शक्ल देखने के लिए तैयार रहना होगा। यह खोज आज की नहीं थी, इसकी भोर बहुत पहले ही मेरे मन में बस चुकी थी। बेशक, मुझे युवा ब्रेटन अच्छी तरह याद थे; और यद्यपि दस साल (सोलह से छब्बीस वर्ष) लड़के को परिपक्व होकर आदमी बनाते समय बहुत बदल देते हैं, फिर भी वे इतना बड़ा बदलाव नहीं ला सकते जो मेरी आँखों को पूरी तरह से अंधा कर दे या मेरी याददाश्त को चकनाचूर कर दे। डॉ. जॉन ग्राहम ब्रेटन में अभी भी सोलह साल के युवक की झलक थी: उनकी आँखें वैसी ही थीं; उनके चेहरे की कुछ विशेषताएं वैसी ही थीं; यानी, चेहरे का वह सुंदर निचला हिस्सा; मैंने उन्हें जल्द ही पहचान लिया। मैंने उसे पहली बार उस अवसर पर पहचाना था, जिसका उल्लेख कुछ अध्याय पहले किया गया है, जब मेरी अनमने ढंग से टिकी हुई निगाहों ने मुझे एक अप्रत्यक्ष फटकार की शर्मिंदगी का एहसास कराया था। बाद के अवलोकन ने हर तरह से उस शुरुआती अनुमान की पुष्टि की। मैंने उसके हाव-भाव, चाल-ढाल और आदतों में उसके बचपन की सारी उम्मीदें देखीं। मैंने उसकी अब गहरी हो चुकी आवाज़ में पुराने दिनों का लहजा सुना। कुछ मुहावरे, जो पहले उसकी खासियत थे, अब भी उसकी खासियत थे; और आँखों और होंठों की कई चालें, कई मुस्कानें, उसके सुडौल माथे के नीचे से अचानक निकलने वाली कई किरणें भी वैसी ही थीं।

इस विषय पर कुछ भी कहना, अपनी खोज का संकेत देना, मेरे विचार-विमर्श के नियमों के अनुकूल नहीं था, न ही मेरी भावनाओं के अनुरूप था। इसके विपरीत, मैंने इस मामले को अपने तक ही सीमित रखना बेहतर समझा। मुझे उसके सामने एक

ऐसे आवरण में लिपटे रहना अच्छा लगता था जिसे वह देख न सके, जबकि वह मेरे सामने एक विशेष प्रकाश की किरण के नीचे खड़ा था जो उसके सिर पर आंशिक रूप से चमक रही थी, उसके पैरों के आसपास कांप रही थी और उससे आगे प्रकाश नहीं फैला रही थी।

मुझे पता था कि अगर मैं आगे आकर कह भी दूं, “यह लूसी स्नो है!” तो भी उन्हें कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। इसलिए मैं अपने शिक्षक की जगह पर ही बैठी रही; और चूंकि उन्होंने कभी मेरा नाम नहीं पूछा, इसलिए मैंने भी कभी नहीं बताया। उन्होंने मुझे “मिस” और “मिस लूसी” कहते सुना; उन्होंने कभी मेरा उपनाम “स्नो” नहीं सुना। जहां तक मुझे पहचानने की बात है—हालांकि शायद मैं उनसे कम बदली थी—यह ख्याल उनके मन में कभी आया ही नहीं, और मैं क्यों सोचती?

चाय के समय, डॉ. जॉन हमेशा की तरह विनम्र थे; खाना खत्म होने और थाली ले जाने के बाद, उन्होंने सोफे के एक कोने में कुशनों को बड़े आराम से सजाकर मुझे भी बैठने के लिए कहा। वे और उनकी माँ भी आग के पास बैठ गए, और अभी दस मिनट भी नहीं हुए थे कि मैंने देखा कि उनकी नज़रें मुझ पर टिकी हुई हैं। कुछ मामलों में औरतें वाकई मर्दों से ज़्यादा तेज़ होती हैं।

“वाह!” उसने तुरंत कहा, “मैंने इससे पहले इतनी सटीक प्रतिकृति शायद ही कभी देखी हो! ग्राहम, क्या तुमने इसे देखा है?”

“क्या देखा? बुढ़िया को अब क्या हो गया है? आप कैसे घूर रही हैं, माँ! ऐसा लगता है जैसे आपको भविष्य देखने की शक्ति मिल गई हो।”

“मुझे बताओ, ग्राहम, वह युवती तुम्हें किसकी याद दिलाती है?” उसने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा।

“माँ, आपने उसका अपमान किया। मैं अक्सर आपसे कहती हूँ कि आपका रूखा व्यवहार आपकी गलती है; यह भी याद रखें कि वह आपके लिए अजनबी है और आपके तौर-तरीकों से परिचित नहीं है।”

"अब, जब वह नीचे देखती है; अब, जब वह बगल में मुड़ती है, तो वह किसके जैसी लगती है, ग्राहम?"

"जी हां, मां, चूंकि आपने पहेली रखी है, मुझे लगता है कि आपको ही इसे हल करना चाहिए!"

“और आप कहते हैं कि आप उसे कुछ समय से जानते हैं — जब से आपने पहली

बार रू फॉसेट में स्कूल जाना शुरू किया था: — फिर भी आपने मुझे उस विलक्षण समानता के बारे में कभी नहीं बताया!”

“मैं उस बात का जिक्र नहीं कर सकता जिसके बारे में मैंने कभी सोचा ही नहीं और जिसे मैं अब स्वीकार नहीं करता। आपका क्या मतलब है?”

“बेवकूफ लड़के! उसे देखो।”

ग्राहम ने देखा तो था, लेकिन यह सहन करने योग्य नहीं था; मुझे पता था कि इसका अंत कैसे होगा, इसलिए मैंने पहले से ही अनुमान लगाना बेहतर समझा।

मैंने कहा, "सेंट ऐन्स स्ट्रीट में हमारी आखिरी विदाई के समय जब हमने हाथ मिलाया था, तब से डॉ. जॉन के पास इतना कुछ करने और सोचने के लिए था कि, हालांकि मैंने कुछ महीने पहले श्री ग्राहम ब्रेटन को आसानी से पहचान लिया था, लेकिन मुझे कभी यह संभव नहीं लगा कि वह लूसी स्नो को पहचान लेंगे।"

“लूसी स्नो! मुझे लगा ही था! मुझे पता था!” श्रीमती ब्रेटन चिल्लाईं। और वह तुरंत चूल्हे के पार आईं और मुझे चूम लिया। कुछ महिलाएं शायद ऐसी खोज पर बिना खास खुशी जताए ही बहुत हलचल मचा देतीं; लेकिन मेरी धर्ममाता की आदत हलचल मचाने की नहीं थी, और वह सभी भावुक प्रदर्शनों को शांत और सौम्य तरीके से करना पसंद करती थीं। इसलिए हम दोनों ने कुछ ही शब्दों और एक अभिवादन से हैरानी को दूर कर लिया; फिर भी मुझे यकीन है कि वह खुश थीं, और मैं तो थी ही। जब हम पुरानी यादें ताज़ा कर रहे थे, सामने बैठे ग्राहम चुपचाप अपनी हैरानी को शांत कर रहे थे।

“मम्मी मुझे बेवकूफ लड़का कहती हैं, और मुझे लगता है कि मैं सच में बेवकूफ हूँ,” उसने आखिर में कहा; “क्योंकि कसम से, मैंने तुम्हें कितनी ही बार देखा है, मुझे कभी इस बात का शक नहीं हुआ: और फिर भी अब मुझे सब समझ आ गया है। लूसी स्नो! बिल्कुल! मुझे वो अच्छी तरह याद है, और वो वहीं बैठी है; इसमें कोई शक नहीं। लेकिन,” उसने आगे कहा, “तुम मुझे हमेशा से एक पुराने परिचित के रूप में तो नहीं जानती रही हो, और तुमने कभी इसका ज़िक्र भी नहीं किया।”

“हाँ, मेरे पास है,” यह मेरा जवाब था।

डॉ. जॉन ने कोई टिप्पणी नहीं की। मुझे लगता है कि उन्होंने मेरी चुप्पी को सनकीपन समझा होगा, लेकिन उन्होंने आलोचना न करके उदारता दिखाई। मुझे यह भी लगता है कि मुझसे बहुत गहराई से पूछताछ करना, मेरी चुप्पी का कारण और

वजह पूछना उनके लिए अनुचित होता; और यद्यपि उन्हें थोड़ी जिज्ञासा हो सकती थी, लेकिन मामले की गंभीरता इतनी नहीं थी कि जिज्ञासा विवेक पर हावी हो जाए।

मैंने तो बस यह जानने की हिम्मत की कि क्या उन्हें वह घटना याद है जब मैंने एक बार उन्हें बहुत ही टकटकी लगाकर देखा था; क्योंकि उस मौके पर उन्होंने जो थोड़ी सी झुंझलाहट दिखाई थी, वह अभी भी मेरे मन में खटक रही थी।

“मुझे लगता है मैंने किया!” उसने कहा, “मुझे लगता है मैं तुमसे नाराज़ भी था।”

“शायद आप मुझे थोड़ा साहसी समझते थे?” मैंने पूछा।

"बिल्कुल नहीं। बस, आपके सामान्य व्यवहार के बावजूद, जो शर्मीला और अंतर्मुखी था, मुझे आश्चर्य हुआ कि मुझमें ऐसी कौन सी व्यक्तिगत या चेहरे की विशालता थी जो आपकी आमतौर पर तिरछी निगाहों को इतना आकर्षित करती थी।"

"अब आपको समझ आ गया होगा कि यह कैसा था?"

"बिल्कुल सही।"

और तभी श्रीमती ब्रेटन ने अतीत के बारे में अनेकों प्रश्न पूछना शुरू कर दिया; और उनकी संतुष्टि के लिए मुझे बीते हुए कष्टों का सहारा लेना पड़ा, प्रतीत होने वाली दूरी के कारणों को समझाना पड़ा, जीवन, मृत्यु, दुःख और भाग्य के साथ अकेले संघर्ष का जिक्र करना पड़ा। डॉ. जॉन चुपचाप सुनते रहे, ज्यादा कुछ नहीं बोले। फिर उन्होंने और श्रीमती ब्रेटन ने मुझे अपने जीवन में आए बदलावों के बारे में बताया: उनके साथ भी सब कुछ सहज नहीं रहा था, और भाग्य ने उनके कभी प्रचुर उपहारों को समेट लिया था। लेकिन इतनी साहसी माँ, अपने बेटे जैसे आदर्श के साथ, दुनिया से डटकर मुकाबला करने और अंततः विजयी होने के लिए पूरी तरह से सक्षम थीं। डॉ. जॉन स्वयं उन लोगों में से थे जिन पर कृपालु ग्रहों ने अवश्य ही कृपा की थी। विपत्ति भले ही उनके विरुद्ध अपना सबसे कठोर रूप धारण कर ले, वे उसे अपनी मुस्कान से हराने वाले व्यक्ति थे। मजबूत, हंसमुख, दृढ़ और विनम्र; उतावले नहीं, फिर भी साहसी; वे स्वयं भाग्य को रिझाने और उसकी कठोर आँखों से लगभग प्रेममयी किरण जीतने के आकांक्षी थे।

अपने पेशे में उनकी सफलता अब लगभग निश्चित थी। पिछले तीन महीनों में ही उन्होंने यह घर लिया था (मुझे बताया गया था कि यह एक छोटा सा महल है, जो पोर्ट डे क्रेसी से लगभग आधा लीग की दूरी पर स्थित है); यह ग्रामीण इलाका उन्होंने अपनी माँ के स्वास्थ्य के लिए चुना था, क्योंकि शहर की हवा अब उन्हें रास नहीं आ

रही थी। उन्होंने श्रीमती ब्रेटन को यहाँ आमंत्रित किया था, और इंग्लैंड छोड़ते समय वह अपने साथ सेंट ऐन्स स्ट्रीट वाले पुराने घर का बचा हुआ फर्नीचर ले आई थीं, जिसे उन्होंने बिना बेचे रखना उचित समझा था। इसीलिए कुर्सियों के भूतों, शीशों, चायदानियों और चाय के प्यालों के प्रेतों को देखकर मैं अचंभित रह गया था।

जैसे ही घड़ी में ग्यारह बजे, डॉ. जॉन ने अपनी माँ को रोक दिया।

“मिस स्नो को अब आराम करना चाहिए,” उन्होंने कहा; “उनका चेहरा बहुत पीला पड़ गया है। कल मैं उनकी सेहत बिगड़ने का कारण जानने के लिए उनसे कुछ सवाल पूछने की हिम्मत करूंगा। पिछले जुलाई से उनमें वाकई बहुत बदलाव आ गया है, जब मैंने उन्हें एक बेहद प्रभावशाली सज्जन की भूमिका बड़े जोश के साथ निभाते देखा था। कल रात की घटना के बारे में मुझे पूरा यकीन है कि उसमें कुछ छिपा हुआ है, लेकिन आज शाम हम इस बारे में और पूछताछ नहीं करेंगे। शुभ रात्रि, मिस लूसी।”

और इसलिए उन्होंने कृपापूर्वक मुझे दरवाजे तक पहुंचाया, और हाथ में मोमबत्ती लिए हुए, मुझे सीढ़ियों की एक उड़ान तक रोशनी दिखाई।

जब मैंने अपनी प्रार्थनाएँ पूरी कर लीं और कपड़े उतारकर लेट गया, तब मुझे एहसास हुआ कि मेरे अभी भी मित्र हैं। ऐसे मित्र जो तीव्र लगाव नहीं जताते, न ही अनुकूल और सौहार्दपूर्ण संबंध का कोमल सहारा देते हैं; इसलिए, उनसे केवल संयमित स्नेह की अपेक्षा की जा सकती थी, उनसे केवल संयमित उम्मीदें ही रखी जा सकती थीं; लेकिन जिनके प्रति मेरा हृदय सहज रूप से कोमल हो गया और एक तीव्र कृतज्ञता से भर गया, जिसे मैंने समय रहते ही विवेक से नियंत्रित करने का आग्रह किया।

“मुझे उनके बारे में बार-बार, बार-बार, बार-बार न सोचने दो,” मैंने विनती की: “मुझे इस जीवनदायिनी धारा के संयमित घूंट से ही संतुष्ट रहने दो: मुझे प्यासा न रहने दो, और इसके स्वागत योग्य जल के लिए बेताब न होने दो: मुझे उनमें धरती के झरनों से भी मीठा स्वाद न देखने दो। हे भगवान! काश मुझे कभी-कभार, सौहार्दपूर्ण, दुर्लभ, संक्षिप्त, नीरस और शांत मुलाकातों से ही पर्याप्त तृप्ति मिल जाए: बिलकुल शांत!”

इस शब्द को बार-बार दोहराते हुए, मैं अपने तकिए की ओर मुड़ा; और इसे दोहराते हुए, मैंने उस तकिए को आंसुओं से भिगो दिया।

अध्याय सत्रह।

छत।

अपने स्वभाव और हृदय की प्रबल सहज प्रवृत्ति से ये संघर्ष व्यर्थ और निरर्थक प्रतीत हो सकते हैं, परन्तु अंत में इनका लाभ ही होता है। ये कर्मों और आचरण को, चाहे थोड़ा ही सही, वह मोड़ देते हैं जिसे तर्क स्वीकार करता है और जिसका भावना अक्सर विरोध करती है: ये निश्चित रूप से जीवन की सामान्य दिशा में अंतर लाते हैं और उसे अधिक सुव्यवस्थित, अधिक समतापूर्ण और सतही रूप से शांत बनाते हैं; और सामान्य दृष्टि केवल सतही रूप पर ही पड़ती है। जहाँ तक अंतर्मन की बात है, उसे ईश्वर पर छोड़ दें। मनुष्य, जो आपके समान है, आपके समान दुर्बल है और आपका न्याय करने के योग्य नहीं है, उसे इससे बाहर रखा जा सकता है: इसे अपने सृष्टिकर्ता के पास ले जाएँ - उन्हें उस आत्मा के रहस्य बताएँ जो उन्होंने आपको दी है - उनसे पूछें कि आप उनके द्वारा निर्धारित कष्टों को कैसे सहन करेंगे - उनकी उपस्थिति में घुटने टेकें और अंधकार में प्रकाश, दयनीय दुर्बलता में शक्ति और अत्यधिक आवश्यकता में धैर्य के लिए विश्वास के साथ प्रार्थना करें। निश्चित रूप से, किसी समय, यद्यपि शायद वह आपका समय न हो, प्रतीक्षारत जल में हलचल होगी; किसी न किसी रूप में, शायद उस रूप में नहीं जिसका आपने सपना देखा था, जिसे आपका दिल प्यार करता था और जिसके लिए आपका दिल तड़पता था, चंगाई का दूत उतरेगा, अपंग, अंधे, गूंगे और प्रेतबाधित लोगों को स्नान करने के लिए ले जाया जाएगा। दूत, जल्दी आओ! हजारों लोग तालाब के चारों ओर रोते और निराश होकर बैठे हैं, इसे वर्षों से ठहरा हुआ देखकर। स्वर्ग के काल लंबे हैं: देवदूतों के मार्ग नश्वर दृष्टि से विशाल प्रतीत होते हैं; वे युगों को घेर सकते हैं: एक प्रस्थान और वापसी का चक्र अनगिनत पीढ़ियों को जकड़ सकता है; और धूल, थोड़े समय के कष्टमय जीवन को प्रज्वलित करती है, और दर्द से गुजरकर वापस धूल में मिल जाती है, इस बीच

स्मृति से बार-बार मिट सकती है। कितने ही अपंग और शोकग्रस्त लाखों लोगों के लिए पहला और एकमात्र देवदूत आगंतुक है, जिसे पूर्वी लोग अज़राएल कहते हैं!

मैंने अगली सुबह उठने की कोशिश की, लेकिन जब मैं कपड़े पहन रही थी और बीच-बीच में अपने वॉशस्टैंड पर रखे जग से ठंडा पानी पी रही थी, ताकि उस कांपती हुई कमजोरी को दूर कर सकूं जिसकी वजह से कपड़े पहनना इतना मुश्किल हो रहा था, तभी श्रीमती ब्रेटन अंदर आ गईं।

“ये तो सरासर बेतुकापन है!” सुबह-सुबह उसने मुझसे यही कहा। “ऐसा नहीं है,” उसने आगे कहा और तुरंत अपने उसी रूखे और जोशीले अंदाज़ में मुझसे पेश आई — वही अंदाज़ जिसे मैं पहले उसके बेटे पर इस्तेमाल होते देखना पसंद करता था और जिसका वह ज़ोरदार विरोध करता था — और दो मिनट में ही उसने मुझे फ्रेंच बेड पर बांध दिया।

“दोपहर तक यहीं लेटे रहो,” उसने कहा। “मेरे बेटे ने जाने से पहले यही आदेश दिया था, और मैं तुम्हें यकीन दिला सकती हूँ कि मेरा बेटा मालिक है और उसकी बात माननी ही होगी। अभी नाश्ता कर लो।”

अभी-अभी वह खाना लेकर आई—अपने हाथों से खुद लाकर—मुझे नौकरों के भरोसे नहीं छोड़ा। जब मैं खाना खा रहा था, वह बिस्तर पर बैठ गई। अब, हमारे आदरणीय मित्रों और सम्मानित परिचितों में भी, हर कोई ऐसा नहीं होता जिसे हम अपने पास रखना पसंद करते हैं, जिसे हम अपनी देखभाल करते हुए, अपनी सेवा करते हुए, किसी मरीज के पास नर्स की तरह आते हुए देखना पसंद करते हैं। हर मित्र ऐसा नहीं होता जिसकी आंखें बीमार के कमरे में रोशनी हों, जिसकी उपस्थिति सुकून देती हो: लेकिन श्रीमती ब्रेटन मेरे लिए ये सब थीं; ये हमेशा से थीं। खाना या पीना मुझे उतना अच्छा कभी नहीं लगा जितना उनके हाथों से आने पर लगता था। मुझे याद नहीं कि कभी उनके कमरे में आने से वह कमरा खुशनुमा न हुआ हो। हमारी प्रकृति की अपनी पसंद और नापसंद दोनों ही अजीब होती हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनसे हम चुपके से दूर रहते हैं, जिनसे हम व्यक्तिगत रूप से बचना चाहते हैं, भले ही तर्क यह मानता हो कि वे अच्छे लोग हैं: कुछ ऐसे भी होते हैं जिनमें स्वभाव आदि की खामियां स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, फिर भी हम उनके साथ संतुष्ट रहते हैं, मानो उनके आसपास का वातावरण हमें अच्छा महसूस कराता हो। मेरी धर्ममाता की जीवंत काली आँखें और साफ भूरे गाल, उनका गर्मजोशी भरा और फुर्तीला हाथ, उनका

आत्मनिर्भर स्वभाव, उनका दृढ़ आचरण, ये सब मेरे लिए किसी सुखदायक वातावरण के समान लाभकारी थे। उनका बेटा उन्हें "बुजुर्ग महिला" कहकर पुकारता था; यह देखकर मुझे सुखद आश्चर्य होता था कि उनमें और उनके आसपास आज भी पच्चीस वर्ष की उम्र की फुर्ती और शक्ति व्याप्त थी।

"मैं अपना काम यहाँ ले आती," उसने मुझसे खाली चाय का प्याला लेते हुए कहा, "और सारा दिन तुम्हारे साथ बैठती, अगर उस दबंग जॉन ग्राहम ने ऐसा करने पर रोक न लगाई होती। 'अब, माँ,' उसने बाहर जाते हुए कहा, 'ध्यान रखना, अपनी धर्मपुत्री को गपशप से परेशान मत करना,' और उसने विशेष रूप से मुझसे कहा कि मैं अपने कमरे में ही रहूँ और तुम्हें अपनी अच्छी संगति से बचाऊँ। वह कहता है, लूसी, तुम्हारे चेहरे को देखकर उसे लगता है कि तुम्हें घबराहट का बुखार है, — क्या सच में ऐसा है?"

मैंने उत्तर दिया कि मुझे ठीक से पता नहीं था कि मेरी बीमारी क्या थी, लेकिन यह निश्चित रूप से सच है कि मुझे बहुत कष्ट हुआ था, खासकर मानसिक रूप से। इसके अलावा, इस विषय पर विस्तार से चर्चा करना मुझे उचित नहीं लगा, क्योंकि मेरे साथ जो कुछ हुआ था, उसका विवरण मेरे जीवन का वह हिस्सा था जिसमें मेरी धर्ममाता की भागीदारी की मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी। ऐसा विश्वास उस स्वस्थ, शांत स्वभाव वाली महिला को किस नए क्षेत्र में ले जाता! मेरे और उनके बीच का अंतर उस भव्य जहाज से समझा जा सकता है जो शांत समुद्र में अपने पूरे दल के साथ सुरक्षित रूप से चल रहा है, जिसका कप्तान हंसमुख, साहसी, और दूरदर्शी है; और उस जीवनरक्षक नाव से, जो साल के अधिकांश दिन एक पुराने, अंधेरे नौकागृह में सूखी और अकेली पड़ी रहती है, केवल तभी समुद्र में उतरती है जब तूफानी मौसम में लहरें ऊंची उठती हैं, जब बादल पानी से टकराते हैं, जब खतरा और मृत्यु गहरे समुद्र पर अपना वर्चस्व स्थापित करते हैं। नहीं, "लुईसा ब्रेटन" कभी भी ऐसी रात में और ऐसे दृश्य में बंदरगाह से बाहर नहीं निकली थी: उसका दल इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था; इसलिए अधमरा लाइफबोट वाला व्यक्ति अपने मन में ही बात रखता है और कोई कहानी नहीं सुनाता।

वह मुझे छोड़कर चली गई, और मैं बिस्तर पर संतुष्ट होकर लेटा रहा: ग्राहम ने जाने से पहले मुझे याद किया, यह अच्छी बात थी।

मेरा दिन अकेलापन भरा था, लेकिन शाम के आने की उम्मीद ने इसे छोटा और

खुशनुमा बना दिया। तब भी, मैं कमजोर महसूस कर रहा था, और आराम करना अच्छा लग रहा था; और सुबह के घंटे बीत जाने के बाद, - वे घंटे जो हमेशा, खाली बैठे लोगों को भी, कुछ करने की इच्छा, कुछ पूरे होने की प्रतीक्षा, और किसी काम में लगने की अस्पष्ट ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाते हैं - जब यह हलचल भरा समय बीत गया, और दोपहर की शांत नौकरानियों के कदमों की आहट सीढ़ियों और कमरों में सुनाई दी, तब मैं एक सुखद स्वप्निल अवस्था में चला गया।

मेरा शांत छोटा कमरा मानो समुद्र में बनी किसी गुफा जैसा लग रहा था। उसमें सफेद और हल्के हरे रंग के अलावा कोई रंग नहीं था, जो झाग और गहरे पानी का आभास दे रहा था; फीकी छत की कंगनी शंख के आकार के आभूषणों से सजी थी, और छत के कोनों में डॉल्फ़िन जैसी सफेद नक्काशी थी। लाल साटन के तकिये में दिखाई देने वाला हल्का सा रंग भी मूंगे से मिलता-जुलता था; यहाँ तक कि वह गहरा, चमकदार शीशा भी मानो किसी जलपरी का प्रतिबिंब दिखा रहा हो। जब मैंने अपनी आँखें बंद कीं, तो मुझे एक तेज़ हवा सुनाई दी, जो धीरे-धीरे शांत हो रही थी, घर के सामने ऐसे आ रही थी जैसे कोई लहर चट्टान पर आकर ठहर रही हो। मैंने उसे दूर-दूर तक खिंचते और लौटते सुना, जैसे कोई ज्वार ऊपरी दुनिया के किनारे से लौट रहा हो - एक ऐसी दुनिया जो इतनी ऊँची थी कि उसकी सबसे ऊँची लहरों की गर्जना, उसके सबसे भयंकर तूफ़ानों की आवाज़, इस पानी के नीचे वाले घर में केवल गुनगुनाहट और लोरी की तरह सुनाई दे रही थी।

इन सपनों के बीच शाम हुई, और फिर मार्था एक रोशनी लेकर आई; उसकी मदद से मैंने जल्दी से कपड़े पहने, और अब सुबह की तुलना में अधिक मजबूत होकर, मैं बिना किसी सहायता के नीले रंग के सैलून की ओर चल पड़ा।

ऐसा प्रतीत होता है कि डॉ. जॉन ने अपने पेशेवर दौरे सामान्य से पहले ही समाप्त कर लिए थे; बैठक में प्रवेश करते ही सबसे पहले मेरी नज़र उन्हीं पर पड़ी; वे दरवाजे के सामने वाली खिड़की के कोने में खड़े होकर ढलते सूरज की धुंधली रोशनी में अखबार पढ़ रहे थे। आग की रोशनी साफ दिखाई दे रही थी, लेकिन मेज पर रखा दीपक अभी तक जलाया नहीं गया था और चाय भी नहीं परोसी गई थी।

मेरी धर्ममाता श्रीमती ब्रेटन, जो सक्रिय थीं और बाद में मुझे पता चला कि वे दिनभर खुली हवा में थीं, अपनी गद्देदार कुर्सी पर आधी लेटी हुई थीं और गहरी नींद में डूबी हुई थीं। मुझे देखकर उनका बेटा आगे आया। मैंने गौर किया कि वह संभलकर

चल रहा था ताकि सोई हुई को जगा न दे; वह धीमी आवाज़ में बोल रहा था: उसकी मधुर आवाज़ में कभी कोई तीखापन नहीं होता था; इस समय उसकी आवाज़ इतनी सधी हुई थी कि नींद को जगाने के बजाय उसे और शांत करने का काम करती थी।

खिड़की के पास बैठने का न्योता देने के बाद उन्होंने कहा, “यह एक शांत छोटा सा महल है। पता नहीं आपने सैर के दौरान इसे देखा होगा या नहीं: वैसे, चॉसी से यह दिखाई नहीं देता; पोर्ट डे क्रेसी से बस एक मील आगे, आप एक गली में मुड़ते हैं जो जल्द ही एक एवेन्यू बन जाती है, और वह आपको घास के मैदान और छाया से होते हुए सीधे इस घर के दरवाजे तक ले जाती है। यह कोई आधुनिक जगह नहीं है, बल्कि बासे-विले की पुरानी शैली में बनी है। यह महल से ज़्यादा एक मैनोइर (महल) है; इसे 'ला टेरेस' कहते हैं, क्योंकि इसका सामने का हिस्सा एक चौड़े घास के मैदान से शुरू होता है, जहाँ से सीढ़ियाँ घास की ढलान से नीचे एवेन्यू तक जाती हैं। देखो वहाँ! चाँद निकल रहा है: वह पेड़ों के तनों के बीच से बहुत सुंदर दिख रहा है।”

सच में, चाँद कहाँ अच्छा नहीं लगता? ऐसा कौन सा दृश्य है, चाहे वह सीमित हो या विशाल, जिसे उसका गोला रोशन न करे? गुलाबी या अग्निमय, वह अब पास के किनारे के ऊपर चढ़ रही थी; जैसे ही हम उसकी लालिमा भरी चढ़ाई देख रहे थे, वह सुनहरी हो उठी, और बहुत कम समय में, निर्मल होकर अब शांत आकाश में तैर गई। क्या चाँदनी ने डॉ. ब्रेटन को कोमल या उदास कर दिया? क्या इसने उन्हें रोमांस से भर दिया? मुझे लगता है कि ऐसा ही हुआ। हालाँकि आहें भरने की कोई इच्छा नहीं थी, फिर भी उन्होंने इसे देखते हुए आह भरी: चुपचाप अपने मन में आह भरी। उस आह के कारण या उसके स्वरूप पर विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं थी; मैं जानता था कि वह सुंदरता से प्रेरित थी; मैं जानता था कि वह जिनेवरा का पीछा कर रही थी। यह जानते हुए, मेरे मन में यह विचार आया कि किसी न किसी रूप में मेरा कर्तव्य है कि मैं उस नाम का उल्लेख करूँ जिसका वे चिंतन कर रहे थे। बेशक वे इस विषय के लिए तैयार थे: मैंने उनके चेहरे पर टिप्पणी, प्रश्न और रुचि की प्रचुरता देखी; भाषा और भावनाओं का एक दबाव था, जिसे शायद शुरुआत करने की झिझक ने ही रोक रखा था। उसे इस शर्मिंदगी से बचाना ही मेरा सबसे अच्छा, बल्कि एकमात्र उद्देश्य था। मुझे बस उस आदर्श का नाम लेना था, और प्रेम की कोमल स्तुति अपने आप उमड़ पड़ती। मुझे अभी-अभी एक उपयुक्त वाक्य मिला था, "आप जानते हैं कि मिस फैंसहावे चोलमोंडेलीज़ के साथ दौरे पर गई हैं," और मैं बोलने ही वाली थी कि

उसने एक और विषय उठाकर मेरी योजना को चकनाचूर कर दिया।

“आज सुबह सबसे पहले,” उसने अपनी भावनाओं को जेब में रखते हुए, चाँद से मुँह मोड़कर बैठते हुए कहा, “मैं रू फॉसेट गया और रसोइया को बताया कि तुम सुरक्षित हो और अच्छे हाथों में हो। तुम्हें पता है कि उसे अभी तक तुम्हारे घर से गायब होने का पता ही नहीं चला था: उसे लगा कि तुम बड़े शयनकक्ष में सुरक्षित हो। तुम्हारी कितनी अच्छी तरह से सेवा की गई होगी!”

“ओह! ये सब तो बिल्कुल मुमकिन है,” मैंने कहा। “गोटन मेरे लिए बस थोड़ी सी हर्बल चाय और रोटी का एक टुकड़ा ही ला सकती थी, और मैंने पिछले हफ्ते इन दोनों को इतनी बार ठुकरा दिया था कि वह भली-भांति घर की रसोई से स्कूल के छात्रावास तक के बेकार के चक्करों से तंग आ गई थी, और दिन में सिर्फ एक बार दोपहर में मेरा बिस्तर लगाने आती थी। हालांकि, मुझे यकीन है कि वह एक नेक दिल इंसान है, और अगर मैं खा सकता तो वह मुझे कोटेलेट्स डी माउटन बनाकर खिलाने में बहुत खुश होती।”

"मैडम बेक का आपको अकेला छोड़ने का क्या मतलब था?"

"मैडम बेक यह अनुमान नहीं लगा पाई थीं कि मैं बीमार पड़ जाऊंगी।"

"क्या आपके तंत्रिका तंत्र को भी काफी कष्ट सहना पड़ा?"

"मुझे ठीक से पता नहीं है कि मेरी तंत्रिका प्रणाली कैसी है, लेकिन मैं बेहद उदास था।"

“इस वजह से मैं आपको गोली या दवा से मदद नहीं कर सकती। दवा से किसी का मन नहीं भरता। मेरी कला हाइपोकॉन्ड्रिया (बीमारी का डर) की दहलीज पर आकर रुक जाती है: वह बस अंदर देखती है और उसे यातना कक्ष दिखाई देता है, लेकिन वह कुछ कह या कर नहीं सकती। खुशनुमा संगति फायदेमंद होगी; आपको जितना हो सके कम अकेला रहना चाहिए; आपको खूब व्यायाम करना चाहिए।”

इन टिप्पणियों के बाद सहमति और एक विराम का भाव आया। मुझे लगा कि ये बातें ठीक लग रही थीं, और इन्हें परंपरा की सुरक्षित स्वीकृति और उपयोग की पुरानी छाप प्राप्त थी।

डॉ. जॉन ने फिर से बात शुरू की - मेरी सेहत, खासकर तंत्रिका तंत्र से जुड़ी समस्या, अब कुछ हद तक राहत की बात थी क्योंकि उसका समाधान हो चुका था - "क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि आपका धर्म क्या है? क्या आप कैथोलिक हैं?"

मैंने कुछ हैरानी से ऊपर देखा — “एक कैथोलिक? नहीं! ऐसा सुझाव क्यों दे रहे हो?”

"जिस तरह से तुम्हें कल रात मेरे हवाले किया गया, उससे मुझे संदेह होने लगा।"

“मैंने खुद को आपके हवाले किया था? लेकिन, सच में, मैं भूल गया हूँ। मुझे अभी यह जानना बाकी है कि मैं आपके हाथों में कैसे आया।”

“क्यों, ऐसी परिस्थितियों में जो मुझे हैरान कर रही थीं। कल सारा दिन मैं एक बेहद दिलचस्प और गंभीर मामले में व्यस्त था; बीमारी दुर्लभ थी और उसका इलाज संदिग्ध था: मैंने पेरिस के एक अस्पताल में ऐसा ही और भी बेहतर मामला देखा था; लेकिन उसमें आपकी कोई दिलचस्पी नहीं होगी। आखिरकार मरीज के सबसे गंभीर लक्षणों (तीव्र दर्द भी एक लक्षण है) में कुछ राहत मिलने पर मुझे राहत मिली और मैं घर की ओर चल पड़ा। मेरा सबसे छोटा रास्ता बासे-विले से होकर जाता था, और चूंकि रात बहुत अंधेरी, तूफानी और गीली थी, इसलिए मैंने वही रास्ता चुना। बेगुइन्स समुदाय से संबंधित एक पुराने चर्च के पास से गुजरते हुए, मैंने प्रवेश द्वार के बरामदे या गहरे मेहराब के ऊपर जलते हुए दीपक की रोशनी में एक पादरी को अपनी बाहों में कुछ उठाते हुए देखा। दीपक इतना तेज था कि पादरी का चेहरा साफ दिखाई दे रहा था, और मैंने उसे पहचान लिया; वह एक ऐसा व्यक्ति था जिससे मैं अक्सर अमीर और गरीब, दोनों तरह के बीमारों के बिस्तरों के पास मिलता रहा हूँ; और खासकर गरीबों के पास। मुझे लगता है कि वह एक अच्छा बुजुर्ग व्यक्ति है, इस देश में अपने वर्ग के अधिकांश लोगों से कहीं बेहतर; वास्तव में श्रेष्ठ।” हर तरह से, वह अधिक जानकार और कर्तव्यनिष्ठ था। हमारी नज़रें मिलीं; उसने मुझे रुकने का इशारा किया: वह जिस महिला को सहारा दे रहा था, वह बेहोश या मरणासन्न थी। मैं नीचे उतर गया।

उन्होंने कहा, “‘यह महिला तुम्हारी ही देश की है, अगर वह मरी नहीं है तो उसे बचाओ।’”

"जांच करने पर पता चला कि मेरी देशवासी मैडम बेक के पेंशननेट में अंग्रेजी की शिक्षिका थीं। वह पूरी तरह से बेहोश थीं, उनमें बिल्कुल भी खून नहीं था और उनका शरीर लगभग ठंडा पड़ गया था।"

“‘इसका क्या मतलब है?’ यही मेरा सवाल था।”

“उन्होंने एक विचित्र विवरण दिया; कि आप उस शाम उनके पास पश्चात्ताप करने

गए थे; कि आपकी थकी हुई और पीड़ित उपस्थिति, साथ ही आपने जो कुछ कहा था —”

“मैंने क्या-क्या कहा था? मुझे आश्चर्य है कि मैंने क्या-क्या कहा था!”

“निस्संदेह भयानक अपराध थे; लेकिन उन्होंने मुझे यह नहीं बताया कि क्या थे: आप जानते हैं, स्वीकारोक्ति की गोपनीयता ने उनकी वाक्पटुता और मेरी जिज्ञासा को रोक दिया। हालाँकि, आपके भरोसे ने उस भले पादरी को शत्रु नहीं बनाया; ऐसा लगता है कि वह इतने आहत और दुखी थे कि आप ऐसी रात में अकेले बाहर थीं, कि उन्होंने चर्च से निकलते ही आप पर नज़र रखना अपना ईसाई कर्तव्य समझा और यह सुनिश्चित किया कि आप घर पहुँचने तक उनकी नज़रों से ओझल न हों। शायद उस नेक इंसान ने, आधे-अधूरे मन से, इस प्रक्रिया में अपनी उच्च वर्ग की कुछ चालाकी भी दिखाई हो: हो सकता है कि उनका इरादा आपके घर का पता जानना रहा हो - क्या आपने अपने स्वीकारोक्ति में यह बताया था?”

“मैंने ऐसा नहीं किया: इसके विपरीत, मैंने किसी भी संकेत की छाया से सावधानीपूर्वक परहेज किया: और जहाँ तक मेरे कबूलनामे की बात है, डॉ. जॉन, मुझे लगता है कि आप मुझे ऐसा कदम उठाने के लिए पागल समझेंगे, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता था: मुझे लगता है कि यह सब आपके द्वारा बताए गए मेरे ‘तंत्रिका तंत्र’ की गलती थी। मैं इस मामले को शब्दों में बयान नहीं कर सकता, लेकिन मेरे दिन-रात असहनीय हो गए थे: एक क्रूर उदासी ने मेरे मन को पीड़ा दी: एक ऐसी भावना जो अपना रास्ता बना लेगी, बाहर निकल जाएगी, या मुझे मार डालेगी — ठीक वैसे ही (और यह आप समझेंगे, डॉ. जॉन) जैसे हृदय से होकर गुजरने वाली धारा, और जो, यदि धमनीविस्फार या कोई अन्य रोगजन्य कारण इसके प्राकृतिक मार्गों को अवरुद्ध कर दे, तो असामान्य निकास की तलाश करती है। मुझे साथ चाहिए था, मुझे दोस्ती चाहिए थी, मुझे सलाह चाहिए थी। मुझे इनमें से कुछ भी एकांतवास या कक्ष में नहीं मिला, इसलिए मैं चर्च और स्वीकारोक्ति कक्ष में गया और उनकी तलाश की। जहाँ तक मैंने जो कहा, वह कोई गोपनीय बात नहीं थी, कोई कहानी नहीं थी। मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है: मेरा जीवन किसी भी बुरे काम के लिए पर्याप्त सक्रिय नहीं रहा है, चाहे वह प्रेम से जुड़ा हो या वास्तविकता से: मैंने जो कुछ भी कहा वह एक एक नीरस, हताश शिकायत।"

“लूसी, तुम्हें लगभग छह महीने के लिए यात्रा करनी चाहिए: अरे, तुम्हारा शांत

स्वभाव तो बहुत उत्तेजित हो रहा है! मैडम बेक को धिक्कार है! क्या उस छोटी सी हष्ट-पुष्ट विधवा में इतनी हिम्मत नहीं है कि वह अपनी सबसे अच्छी शिक्षिका को एकांत कारावास में डाल दे?”

मैंने कहा, "यह मैडम बेक की गलती नहीं थी; यह किसी भी जीवित प्राणी की गलती नहीं है, और मैं किसी को भी दोषी ठहराए जाने की बात नहीं सुनूंगा।"

"तो फिर गलती किसकी है, लूसी?"

"मैं - डॉ. जॉन - मैं; और एक महान अमूर्त आकृति जिसके विशाल कंधों पर मैं उन दोषों के पहाड़ों को रखना पसंद करता हूँ जिन्हें वह वहन करने के लिए गढ़ा गया था: मैं और भाग्य।"

“मुझे भविष्य में और अधिक सावधानी बरतनी चाहिए,” डॉ. जॉन ने मुस्कुराते हुए कहा, शायद मेरी खराब व्याकरण पर।

“हवा बदलो—नज़ारा बदलो; यही मेरी सलाह है,” उस व्यावहारिक युवा डॉक्टर ने आगे कहा। “लेकिन अपनी बात पर लौटते हैं, लूसी। अभी तक, पेरे सिलास, अपनी सारी चतुराई के बावजूद (कहते हैं कि वह एक जेसुइट हैं), उतना बुद्धिमान नहीं है जितना तुम उन्हें समझती हो; क्योंकि, रू फॉसेट लौटने के बजाय, तुम्हारी बुखार भरी भटकन—ज़रूर तुम्हें तेज़ बुखार रहा होगा—”

"नहीं, डॉ. जॉन: उस रात बुखार का प्रकोप बढ़ गया था - अब, यह मत कहिए कि मैं बेहोश थी, क्योंकि मुझे पता है कि ऐसा नहीं था।"

“अच्छा! इस समय तुम भी मेरी ही तरह शांत थे, इसमें कोई शक नहीं। तुम्हारी भटकन पेंशननेट (अस्पताल) से विपरीत दिशा में चली गई थी। बेगिनगे के पास, बाढ़ और तेज हवाओं के बीच, और अंधेरे की उलझन में, तुम बेहोश होकर गिर पड़े थे। पुजारी तुम्हारी सहायता के लिए आए, और जैसा कि हमने देखा है, चिकित्सक भी बाद में आए। हम दोनों ने मिलकर एक फियाक्रे (शवगृह) का इंतजाम किया और तुम्हें यहाँ ले आए। पिता सिलास, चाहे कितने भी बूढ़े हों, तुम्हें ऊपर ले जाते और खुद उस पलंग पर लिटा देते। वे निश्चित रूप से तुम्हारे साथ तब तक रहते जब तक कि तुम्हारी चेतना वापस नहीं आ जाती: और मैं भी रहता, लेकिन, उसी समय, जिस मरणासन्न रोगी को मैं अभी-अभी छोड़कर आया था, वहाँ से एक जल्दबाज़ी में संदेशवाहक आया - अंतिम संस्कार का समय आ गया था - चिकित्सक का अंतिम दर्शन और पुजारी का अंतिम संस्कार; अंतिम संस्कार को टाला नहीं जा सकता था। पिता

सिलास और मैं साथ चले गए, मेरी माँ शाम बाहर बिता रही थीं; हमने तुम्हें मार्था के हवाले कर दिया, और निर्देश दिए, जिनका उसने पालन किया। सफलतापूर्वक। अब, क्या आप कैथोलिक हैं?

“अभी नहीं,” मैंने मुस्कुराते हुए कहा। “और कभी भी पेरे सिलास को यह मत बताना कि मैं कहाँ रहता हूँ, वरना वो मुझे धर्म परिवर्तन कराने की कोशिश करेंगे; लेकिन जब आप उनसे मिलें तो उन्हें मेरी ओर से हार्दिक धन्यवाद देना, और अगर मैं कभी अमीर हो जाऊँ तो उनके दान-पुण्य के लिए उन्हें पैसे भेजूँगा। देखिए, डॉक्टर जॉन, आपकी माँ जाग गई हैं; आपको चाय के लिए घंटी बजानी चाहिए।”

और उसने ऐसा ही किया; और जैसे ही श्रीमती ब्रेटन उठ बैठीं - अपने द्वारा किए गए इस दुराचार के लिए खुद पर आश्चर्यचकित और क्रोधित, और यह मानने से पूरी तरह इनकार करने के लिए तैयार कि वह सोई ही नहीं थीं - उनके बेटे ने खुशी-खुशी उन पर हमला बोल दिया।

“चुप रहो, माँ! फिर से सो जाओ। सोते समय तुम बिल्कुल मासूम दिखती हो।”

“मेरी नींद, जॉन ग्राहम! तुम किस बारे में बात कर रहे हो? तुम्हें पता है मैं दिन में कभी नहीं सोता: यह बस हल्की सी झपकी थी।”

“बिल्कुल सही! एक देवदूत की कोमल चूक— एक परी का सपना। माँ, ऐसी परिस्थितियों में, आप हमेशा मुझे टाइटेनिया की याद दिलाती हैं।”

"ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम खुद बॉटम से बहुत मिलते-जुलते हो।"

"मिस स्नो - क्या आपने कभी माँ जैसी हाजिरजवाबी सुनी है? वह अपनी उम्र और कद के हिसाब से बेहद फुर्तीली महिला हैं।"

“अपनी तारीफें अपने तक ही रखें, महोदय, और अपने शरीर के आकार को नज़रअंदाज़ न करें: जो मुझे लगता है काफी बढ़ रहा है। लूसी, क्या वह उभरते हुए जॉन बुल की तरह नहीं दिख रहा? वह पहले मछली की तरह दुबला-पतला था, और अब मुझे उसमें एक भारी-भरकम योद्धा जैसी प्रवृत्ति दिखती है - मांस खाने की आदत। ग्राहम, ध्यान रखना! अगर तुम मोटे हो गए तो मैं तुम्हें त्याग दूंगी।”

“जैसे कि तुम अपनी ही शख्सियत को नकार नहीं सकती! लूसी, मैं उस बुढ़िया की खुशी के लिए अपरिहार्य हूँ। अगर मेरे छह फीट के पाप उसे डांटने के लिए न होते, तो वह उदासी और निराशा में डूबकर मर जाती। यह उसे जीवंत रखता है - यह उसके मन में सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखता है।”

अब वे दोनों एक-दूसरे के आमने-सामने, चूल्हे के दोनों ओर खड़े थे; उनके शब्द बहुत स्नेहपूर्ण नहीं थे, लेकिन उनकी आपसी निगाहें शब्दों की कमी को पूरा कर रही थीं। कम से कम, श्रीमती ब्रेटन के जीवन का सबसे अनमोल खजाना निश्चित रूप से उनके बेटे की गोद में था; उनकी सबसे प्यारी धड़कन उसके दिल में धड़क रही थी। जहाँ तक उसकी बात है, बेशक एक और प्रेम उसके मन में पुत्र प्रेम के साथ-साथ चल रहा था, और निस्संदेह, क्योंकि यह नया प्रेम सबसे नया था, इसलिए उसने इसे अपनी भावनाओं में बेंजामिन का हिस्सा मान लिया। जिनेवरा! जिनेवरा! क्या श्रीमती ब्रेटन को अभी तक पता था कि उनके अपने युवा आदर्श ने किसके चरणों में अपना आदर अर्पित किया था? क्या वह इस चुनाव को स्वीकार करेंगी? मैं कह नहीं सकता; लेकिन मैं अच्छी तरह से अनुमान लगा सकता था कि अगर वह ग्राहम के प्रति मिस फैंसहावे के व्यवहार को जानतीं: उनकी शीतलता और फुसलाने, और अस्वीकृति और प्रलोभन के बीच का उतार-चढ़ाव; अगर उन्हें जरा भी अंदाजा होता कि उन्होंने उसे कितनी पीड़ा पहुँचाई थी; अगर वह भी मेरी तरह देख पातीं कि उसका उत्तम मनोबल दबा हुआ और क्षुद्रित था, उससे कमतर को उससे ऊपर तरजीह दी जा रही थी, उसके अधीनस्थ को उसके अपमान का साधन बनाया जा रहा था — तो श्रीमती ब्रेटन जिनेवरा को मंदबुद्धि, या विकृत, या दोनों ही कह देतीं। खैर — मैंने भी यही सोचा था।

वह दूसरी शाम भी पहली शाम की तरह ही सुखद गुज़री, बल्कि उससे भी ज़्यादा सुखद: हमारे बीच विचारों का आदान-प्रदान सहज रहा; पुरानी परेशानियाँ फिर नहीं उठीं, जान-पहचान और भी गहरी हो गई; मैं ज़्यादा खुश, सहज और घर जैसा महसूस कर रहा था। उस रात - रोते-रोते सोने के बजाय - मैं सुखद विचारों से घिरे रास्ते से सपनों की दुनिया में चला गया।

अध्याय 18वां।

हम झगड़ते हैं।

टेरेस में अपने शुरुआती दिनों में, ग्राहम कभी मेरे पास नहीं बैठे, न ही कमरे में इधर-उधर घूमते हुए उस तरफ आए जहाँ मैं बैठी थी, न ही वे किसी सोच में डूबे हुए दिखे, न ही सामान्य से अधिक गंभीर। लेकिन मैं मिस फैंशॉ के बारे में सोचती रही और उम्मीद करती रही कि उनका नाम उनके होंठों से निकलेगा। मैंने अपने कान और मन को उस कोमल विषय के लिए हमेशा तैयार रखा; मैंने अपने धैर्य को हमेशा संयमित रखा और अपनी सहानुभूति को हमेशा भरपूर और उमड़ने के लिए तैयार रखा। आखिरकार, और एक छोटे से आंतरिक संघर्ष के बाद, जिसे मैंने देखा और सम्मान किया, उन्होंने एक दिन उस विषय पर बात शुरू की। इसे बड़ी ही नज़ाकत से, मानो गुमनाम तरीके से, शुरू किया गया था।

"मैंने सुना है कि तुम्हारी दोस्त अपनी छुट्टियां घूमने-फिरने में बिता रही है?"

“सचमुच!” मैंने मन ही मन सोचा: लेकिन विरोध करना उचित नहीं था; उसे अपनी बात मनवानी ही थी; मुझे अपनी बात माननी ही पड़ी: दोस्त, रहने दो। फिर भी, प्रयोग के तौर पर, मैं यह पूछे बिना नहीं रह सका कि उसका मतलब किससे था?

वह मेरी काम करने वाली मेज पर बैठ गया; अब उसने धागे की रील उठाई और उसे लापरवाही से खोलना शुरू कर दिया।

“जिनेवरा – मिस फैंसहावे, क्या आप चोलमोंडेली परिवार के साथ दक्षिणी फ्रांस के दौरे पर गई थीं?”

"उसके पास।"

"क्या आप दोनों के बीच पत्राचार होता है?"

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैंने उस विशेषाधिकार के लिए आवेदन करने के बारे में कभी सोचा भी नहीं।

“क्या आपने उसके लिखे पत्र देखे हैं?”

“हां; उसके चाचा को कई।”

“उनमें बुद्धि और भोलेपन की कमी नहीं होगी; उनकी आत्मा में इतनी चमक है, और कला की इतनी कमी है?”

“जब वह एम. डी बासोम्पियर को पत्र लिखती है, तो वह पर्याप्त रूप से विस्तृत

लिखती है: जो दौड़ता है वह पढ़ सकता है।” (वास्तव में, जिनेवरा के अपने धनी रिश्तेदार को लिखे पत्र आम तौर पर व्यापारिक दस्तावेज होते थे, नकदी के लिए स्पष्ट आवेदन।)

और उसकी लिखावट? मुझे लगता है कि वह सुंदर, हल्की और शालीन होगी?

ऐसा ही था, और मैंने ऐसा कहा भी था।

“मुझे पूरा विश्वास है कि वह जो भी करती है, बहुत अच्छे से करती है,” डॉ. जॉन ने कहा; और चूंकि मैं इस टिप्पणी पर तुरंत अपनी सहमति जताने के लिए उत्सुक नहीं था, तो उन्होंने आगे कहा, “आप, जो उसे जानते हैं, क्या आप उसकी कोई ऐसी कमी बता सकते हैं?”

“वह कई काम बहुत अच्छे से करती है।” (“बाकी कामों में से एक है छेड़छाड़ करना,” मैंने मन ही मन सोचा।)

“आपको क्या लगता है कि वह कब शहर लौटेगी?” उसने तुरंत पूछा।

"क्षमा कीजिए, डॉ. जॉन, मुझे स्पष्टीकरण देना होगा। आप मुझे मिस फैंसहावे के साथ इतनी घनिष्ठता का श्रेय देकर मेरा अत्यधिक सम्मान कर रहे हैं, जबकि मुझे ऐसी घनिष्ठता का सौभाग्य प्राप्त नहीं है। मैं कभी भी उनकी योजनाओं और रहस्यों का ज्ञाता नहीं रहा हूँ। उनके खास मित्र आपको मेरे से अलग दायरे में मिलेंगे: उदाहरण के लिए, चोलमोंडेली परिवार में।"

उन्हें तो सचमुच लगा कि मुझे भी वैसी ही ईर्ष्या की पीड़ा हो रही है जैसी उन्हें हो रही है!

“उसे माफ़ कर दो,” उसने कहा; “उसके प्रति नरमी बरतो; फैशन की चकाचौंध उसे बहका रही है, लेकिन वह जल्द ही जान जाएगी कि ये लोग खोखले हैं, और वह और भी अधिक लगाव और पुख्ता विश्वास के साथ तुम्हारे पास लौट आएगी। मैं चोलमोंडेली परिवार के बारे में कुछ जानता हूँ: सतही, दिखावटी, स्वार्थी लोग; यकीन मानो, दिल से जिनेवरा तुम्हें ऐसे बीस लोगों से कहीं ज़्यादा महत्व देती है।”

मैंने संक्षेप में कहा, "आप बहुत दयालु हैं।"

मेरे होठों पर उन भावनाओं के प्रति खंडन का भाव था जो मुझसे जुड़ी हुई हैं, लेकिन

मैंने लौ बुझा दी। मैंने खुद को इस रूप में देखे जाने के लिए स्वीकार कर लिया।

अपमानित, त्यागा हुआ और अब प्रतिष्ठित व्यक्ति का दुखी विश्वासपात्र

मिस फैंशॉ: लेकिन, पाठक, यह एक कठिन प्रस्तुति थी।

"लेकिन देखिए," ग्राहम ने आगे कहा, "जबकि मैं आपको दिलासा दे रहा हूँ, मैं खुद को वही दिलासा नहीं दे सकता; मुझे उम्मीद नहीं है कि वह मेरे साथ न्याय करेगी। डी हमाल बिल्कुल निकम्मा है, फिर भी मुझे डर है कि वह उसे पसंद है: धिक्कार है इस भ्रम पर!"

मेरा धैर्य सचमुच टूट गया, और अचानक ही। मुझे लगता है कि बीमारी और कमजोरी ने इसे कमजोर और नाजुक बना दिया था।

"डॉ. ब्रेटन," मैं भड़क उठा, "आपकी तरह का भ्रम किसी और में नहीं है। एक बात को छोड़कर आप हर मामले में सच्चे इंसान हैं, स्पष्टवादी, स्वस्थ, सही सोच वाले और दूरदर्शी हैं; इस एक अपवाद में तो आप गुलाम मात्र हैं। मैं स्पष्ट कहता हूँ, मिस फैंसहावे के मामले में आप सम्मान के लायक नहीं हैं; और न ही मैं आपका सम्मान करता हूँ।"

मैं उठा और बहुत उत्साहित होकर कमरे से बाहर निकल गया।

यह छोटी सी घटना सुबह घटी; मुझे शाम को उनसे दोबारा मिलना था, और तब मुझे एहसास हुआ कि मैंने गड़बड़ कर दी है। वह साधारण मिट्टी के बने नहीं थे, साधारण सामग्रियों से नहीं बने थे; जबकि उनके स्वभाव की रूपरेखा व्यापकता और शक्ति से गढ़ी गई थी, बारीकियों में लगभग स्त्री जैसी कोमलता झलकती थी: इतनी सूक्ष्म, इतनी सूक्ष्म, जितनी आप कल्पना भी नहीं कर सकते; इतनी सूक्ष्म, जितनी वर्षों की जान-पहचान के बाद भी आप विश्वास नहीं कर सकते। वास्तव में, जब तक उनकी नसों के साथ किसी तीव्र संपर्क ने, अपने प्रभावों से, उनकी तीव्र संवेदनशीलता को उजागर नहीं किया, तब तक इस जटिल संरचना को नजरअंदाज किया जा सकता था; और विशेष रूप से इसलिए क्योंकि उनमें सहानुभूति की क्षमता प्रमुख नहीं थी: महसूस करना, और दूसरे की भावनाओं को तुरंत समझना, अलग-अलग गुण हैं; कुछ लोगों में ये दोनों गुण होते हैं, कुछ में नहीं। डॉ. जॉन में यह गुण पूर्ण रूप से मौजूद था; और चूंकि मैंने यह स्वीकार किया है कि उनमें दूसरे गुण समान रूप से नहीं थे, इसलिए पाठक कृपया अतिवादी होने और उन्हें असंवेदनशील या भावनाहीन घोषित करने से बचें: इसके विपरीत, वे एक दयालु और उदार व्यक्ति थे। अपनी ज़रूरत बताइए, उनका हाथ हमेशा खुला रहता था। अपने दुख को शब्दों में व्यक्त कीजिए, वे अनसुना नहीं करते थे। सूक्ष्म ज्ञान और अंतर्ज्ञान की अपेक्षा रखिए, और निराशा ही

हाथ लगेगी। आज रात, जब डॉ. जॉन कमरे में दाखिल हुए और शाम के दीपक से उनकी नज़रें मिलीं, तो मैंने उनकी पूरी कार्यप्रणाली को एक नज़र में ही स्पष्ट रूप से देख लिया।

जिसने उसे “दास” कहा था और हर बात पर उसका सम्मान करने से मना किया था, उसके प्रति अब उसके मन में कुछ अजीब भावनाएँ होंगी। यह विशेषण शायद सही था और यह प्रतिबंध न्यायसंगत था; उसने इस बात से इनकार नहीं किया: उसके मन में इस निराशाजनक संभावना का स्पष्ट रूप से विचार भी आया। वह इस आरोप में उस असफलता का कारण ढूँढ़ रहा था जिसने उसकी मानसिक शांति को बुरी तरह से जकड़ लिया था: आत्म-निंदा से भरे एकालाप की चिंता के बीच, उसका व्यवहार मुझे और उसकी माँ दोनों को गंभीर, शायद ठंडा सा लगा। फिर भी उसके चेहरे पर कोई दुर्भावना, कोई द्वेष, कोई कटुता, कोई हीनता नहीं थी, जो उदासी में भी एक पुरुष की सर्वोत्तम सुंदरता से परिपूर्ण था। जब मैंने नौकर के आने की उम्मीद में जल्दी से उसकी कुर्सी मेज पर रखी, और जब मैंने काँपते हुए सावधानी से उसे चाय दी, तो उसने अपनी मधुर और मधुर आवाज़ में कहा: “धन्यवाद, लूसी,” जैसा मधुर स्वर मैंने पहले कभी नहीं सुना था।

मेरे लिए तो बस एक ही योजना थी; मुझे अपने दोषी क्रोध का प्रायश्चित करना ही था, वरना मैं उस रात सो नहीं पाती। यह बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं था; मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती थी: मैं इस स्थिति में युद्ध लड़ने की क्षमता का दिखावा भी नहीं कर सकती थी। स्कूल का एकांत, मठ का मौन और ठहराव, डॉ. जॉन के साथ उलझे रहने से बेहतर कुछ भी लगता था। जहाँ तक जिनेवरा की बात है, वह कबूतर के चाँदी के पंख या किसी भी उड़ने वाले पक्षी के पंख लेकर सीधे सबसे ऊँचे स्थान पर, सबसे ऊँचे तारों के बीच पहुँच सकती है, जहाँ उसके प्रेमी की कल्पना की सबसे ऊँची उड़ान ने उसके आकर्षण के नक्षत्र को स्थापित किया है: इस व्यवस्था पर अब और विवाद करने का कोई अधिकार नहीं। मैंने बहुत देर तक उसकी नज़रें अपनी ओर खींचने की कोशिश की। बार-बार उसकी नज़रें मेरी आँखों से मिलतीं; लेकिन कुछ न कह पाने के कारण, वह पीछे हट जाती, और मैं अचंभित रह जाती। चाय के बाद, वह उदास और चुपचाप एक किताब पढ़ रहा था। काश मैं हिम्मत करके उनके पास जाकर बैठ पाती, लेकिन ऐसा लग रहा था कि अगर मैंने ऐसा करने की हिम्मत की, तो वे निश्चित रूप से शत्रुता और आक्रोश दिखाएंगे। मैं खुलकर बोलना चाहती थी, लेकिन फुसफुसाने

की भी हिम्मत नहीं कर पा रही थी। उनकी माँ कमरे से चली गईं; फिर असहनीय अफसोस से व्याकुल होकर मैंने बस इतना ही कहा, "डॉ. ब्रेटन।"

उन्होंने अपनी किताब से नज़रें ऊपर उठाईं; उनकी आँखें ठंडी या द्वेषपूर्ण नहीं थीं, उनका मुखड़ा व्यंग्यपूर्ण नहीं था; वे मेरी बात सुनने के लिए तैयार और इच्छुक थे: उनका स्वभाव इतना सौम्य और उदार था कि एक झटके में कड़वा नहीं हो सकता था।

“डॉ. ब्रेटन, मेरे जल्दबाजी में कहे गए शब्दों के लिए मुझे क्षमा करें: कृपया, कृपया उन्हें क्षमा करें।”

जैसे ही मैंने ये कहा, वो मुस्कुरा उठा। “शायद मैं इनके लायक ही था, लूसी। अगर तुम मेरा सम्मान नहीं करतीं, तो मुझे यकीन है कि इसका कारण यही है कि मैं सम्माननीय नहीं हूँ। मुझे डर है कि मैं एक अनाड़ी मूर्ख हूँ: मैं किसी न किसी तरह से बुरी तरह से ही काम चला रहा हूँ, क्योंकि जहाँ मैं खुश करना चाहता हूँ, वहाँ मैं खुश नहीं कर पाता।”

“इस बात का आप यकीन नहीं कर सकते; और अगर ऐसा है भी, तो क्या यह आपके चरित्र की गलती है, या दूसरों की धारणाओं की? लेकिन अब, मुझे गुस्से में कही हुई अपनी बात वापस लेने दीजिए। एक बात में, और हर बात में, मैं आपका बहुत सम्मान करता हूँ। अगर आप खुद को कम और दूसरों को ज़्यादा समझते हैं, तो यह एक खूबी के अलावा और क्या है?”

"क्या मैं जिनेवरा के बारे में बहुत ज्यादा सोच सकता हूँ?"

“मुझे लगता है कि आप कर सकते हैं; आपको लगता है कि आप नहीं कर सकते। चलिए हम अपने मतभेदों पर सहमत हो जाते हैं। मुझे क्षमा कर दीजिए; मैं यही विनती करता हूँ।”

"क्या आपको लगता है कि मैं एक मीठे शब्द के लिए दुर्भावना पालता हूँ?"

“मैं देख रही हूँ कि तुम ऐसा नहीं कर सकतीं; लेकिन बस इतना कह दो, ‘लूसी, मैं तुम्हें माफ करती हूँ!’ बस इतना कह दो, ताकि मेरे दिल का दर्द कम हो जाए।”

“अपने दिल का दर्द दूर कर लो, जैसे मैं अपना दूर कर रही हूँ; क्योंकि तुमने मुझे थोड़ा दुख पहुँचाया था, लूसी। अब, जब दर्द चला गया है, तो मैं तुम्हें पूरी तरह से माफ कर देती हूँ: मैं एक सच्चे शुभचिंतक की तरह आभारी महसूस करती हूँ।”

मैं आपका सच्चा शुभचिंतक हूं: आप सही हैं।

इस प्रकार हमारा झगड़ा समाप्त हो गया।

पाठकगण, यदि इस कार्य के दौरान आपको लगे कि डॉ. जॉन के बारे में मेरी राय में कुछ बदलाव आया है, तो कृपया इस असंगति के लिए क्षमा करें। मैंने उस समय जो महसूस किया, वही व्यक्त किया है; मैंने उनके चरित्र के बारे में वही बताया है जो मुझे उस समय पता चला था।

उस गलतफहमी के बाद मुझसे पहले से ज़्यादा दयालु होकर उन्होंने अपने स्वभाव की अच्छाई दिखाई। बल्कि, जिस घटना से मेरे हिसाब से हम दोनों के बीच दूरियां आ जानी चाहिए थीं, उसी ने हमारे रिश्ते को कुछ हद तक बदल दिया; लेकिन उस तरह से नहीं जैसा मैंने बेसब्री से सोचा था। एक अदृश्य, लेकिन ठंडी सी भावना, बहुत हल्की, बहुत पारदर्शी, लेकिन बहुत निर्मल: मानो बर्फ की एक परत ने अब तक, हमारे दोनों जीवन में, उस माध्यम को ढक रखा था जिसके ज़रिए हम एक-दूसरे से बातचीत करते थे। वे कुछ गर्म शब्द, भले ही सिर्फ़ गुस्से से भरे थे, उस कमज़ोर बर्फीले घेरे पर असर डाल रहे थे; इसी समय, उसमें विघटन का संकेत दिखाई दिया। मुझे लगता है उस दिन से, जब तक हम दोस्त रहे, उन्होंने कभी भी मुझसे औपचारिक विषयों पर बात नहीं की। उन्हें लगता था कि अगर वे सिर्फ़ अपने बारे में और उन चीज़ों के बारे में बात करें जिनमें उनकी सबसे ज़्यादा दिलचस्पी है, तो मेरी उम्मीद हमेशा पूरी होगी, मेरी इच्छा हमेशा संतुष्ट होगी। स्वाभाविक रूप से, मैं "जिनेवरा" के बारे में बहुत कुछ सुनती रही।

“जिनेवरा!” वह उसे इतना सुंदर, इतना अच्छा समझता था; वह उसके आकर्षण, उसकी मधुरता, उसकी मासूमियत के बारे में इतने प्यार से बोलता था कि, वास्तविकता के मेरे सीधे-सादे ज्ञान के बावजूद, उसके विचार पर एक तरह की चमक छाने लगी, यहाँ तक कि मुझ पर भी। फिर भी, पाठक, मैं यह स्वीकार करने के लिए स्वतंत्र हूँ कि वह अक्सर बेतुकी बातें करता था; लेकिन मैंने उसके साथ हमेशा धैर्य बनाए रखने का प्रयास किया। मुझे सबक मिल चुका था: मैंने सीख लिया था कि उसे नाराज़ करने, उसे दुखी करने या उसे निराश करने का दर्द मेरे लिए कितना असहनीय था। एक अजीब और नए अर्थ में, मैं अत्यंत स्वार्थी हो गई थी, और उसके मिजाज को संतुष्ट करने और उसकी इच्छा के आगे झुकने के आनंद से खुद को वंचित करने में पूरी तरह असमर्थ थी। वह मुझे तब भी सबसे हास्यास्पद लगता था जब वह हठपूर्वक संदेह करता था, और अंत में मिस फैंसहावे का दिल जीतने की अपनी क्षमता के बारे में निराश हो जाता था। मेरे मन में यह धारणा पहले से कहीं अधिक दृढ़ता से बैठ गई थी कि वह केवल उसे चिढ़ाने के लिए नखरे कर रही थी, और वास्तव में, वह उसके हर

शब्द और हर नज़र की लालसा रखती थी। कभी-कभी, मेरे सहन करने और सुनने के दृढ़ संकल्प के बावजूद, वह मुझे परेशान करता था; इस तरह सहन करने और सुनने के अवर्णनीय आनंद के बीच, वह मेरी दृढ़ता की नींव पर इस तरह प्रहार करता था कि वह बार-बार आग उगल देती थी। एक दिन, उसकी अधीरता को शांत करने के उद्देश्य से, मैंने कहा कि मुझे अपने मन में पूरा विश्वास है कि मिस फैंसहावे अंततः उसे स्वीकार कर लेंगी।

“सकारात्मक! ऐसा कहना तो आसान था, लेकिन क्या मेरे पास इस तरह के आश्वासन का कोई आधार था?”

"सबसे बेहतरीन जगह।"

"अब, लूसी, मुझे बताओ क्या हुआ!"

“आप उन्हें मुझसे बेहतर जानते हैं; और, डॉ. जॉन, उन्हें जानने के बाद, मुझे सचमुच आश्चर्य होता है कि आप उनकी निष्ठा पर पूरी तरह से भरोसा नहीं करते। इन परिस्थितियों में संदेह करना लगभग अपमान के समान है।”

"अब आप तेजी से बोलने लगे हैं और छोटी-छोटी सांसें लेने लगे हैं; लेकिन थोड़ा और तेजी से बोलिए और थोड़ी छोटी सांसें लीजिए, जब तक कि आप पूरी तरह से स्पष्टीकरण न दे दें: मुझे वह चाहिए।"

“आप ऐसा करेंगे, डॉ. जॉन। कुछ मामलों में, आप एक उदार, दानशील व्यक्ति हैं: आप एक ऐसे उपासक हैं जो मन्नत की भेंट चढ़ाने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं; यदि पेरे सिलास कभी आपको परिवर्तित कर दें, तो आप उनके गरीबों के लिए भरपूर दान देंगे, आप उनकी वेदी को मोमबत्तियों से सजाएंगे, और अपने प्रिय संत के मंदिर को समृद्ध बनाने के लिए आप अपनी पूरी कोशिश करेंगे: जिनेवरा, डॉ. जॉन।”

“चुप रहो!” उसने कहा, “आगे मत बोलो।”

“चुप रहो, मैं नहीं चुप रहूँगी: और बोलती रहूँगी: जिनेवरा को तुम्हारे हाथों से अनगिनत उपहार मिले हैं। तुमने उसके लिए सबसे महंगे फूल मंगवाए हैं; तुमने सबसे नाज़ुक उपहारों को चुनने में अपना दिमाग खपाया है: ऐसे उपहार, जिन्हें देखकर लगता है कि केवल एक महिला ही सोच सकती है; और इसके अलावा, मिस फैंसहावे के पास गहनों का एक सेट है, जिसे खरीदने में तुम्हारी उदारता फिजूलखर्ची की हद तक पहुँच गई होगी।”

जिनेवरा ने इस मामले में कभी भी जो विनम्रता नहीं दिखाई थी, वह अब उसके

प्रशंसक के चेहरे पर साफ झलक रही थी।

“बकवास!” उसने मेरी कैंची से रेशम के एक गुच्छे को तोड़ते हुए कहा। “मैंने उन्हें अपनी खुशी के लिए भेंट किया था: मुझे लगा कि उन्हें स्वीकार करके उसने मुझ पर एहसान किया है।”

"उन्होंने सिर्फ एक एहसान से कहीं बढ़कर किया, डॉ. जॉन: उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा दांव पर लगा दी कि वह आपको कुछ न कुछ प्रतिफल देंगी; और यदि वह स्नेह से आपको प्रतिफल नहीं दे सकतीं, तो उन्हें सोने के सिक्कों के कुछ गठ्ठे के रूप में एक उचित प्रतिफल देना चाहिए।"

"लेकिन आप उसे नहीं समझते; वह मेरी प्रतिभाओं के प्रति बिल्कुल उदासीन है, और इतनी भोली है कि उनका मूल्य नहीं जानती।"

मैं खिलखिलाकर हंस पड़ा: मैंने उसे हर गहने की कीमत का आकलन करते सुना था; और मैं अच्छी तरह जानता था कि पैसों की तंगी, पैसों से जुड़ी योजनाएँ, पैसों का मूल्य और आपूर्ति हासिल करने के प्रयास, उसकी कम उम्र के बावजूद, वर्षों से उसके विचारों के सबसे लगातार और पसंदीदा प्रेरक रहे थे।

उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, “जब भी मैं उसकी गोद में कोई मामूली सी चीज़ रखता, तो तुम्हें उसे देखना चाहिए था; कितनी शांत, कितनी भावहीन: उसे लेने की कोई उत्सुकता नहीं, यहाँ तक कि उसे देखकर भी कोई आनंद नहीं। मुझे दुखी न करने की सौम्य अनिच्छा के कारण, वह गुलदस्ते को अपने पास रखने देती, और शायद उसे ले जाने के लिए भी मान जाती। या, अगर मैं किसी तरह उसकी हाथीदांत जैसी कलाई पर कंगन पहना देता, चाहे वह कितना भी सुंदर क्यों न हो (और मैं हमेशा ध्यान से वही चुनता था जो मुझे सुंदर लगता था, और जो बेशक बेकार नहीं होता था), उसकी चमक उसकी चमकदार आँखों को कभी चकाचौंध नहीं करती थी: वह मेरे उपहार पर मुश्किल से एक नज़र डालती।”

"तो फिर, ज़ाहिर है, इसकी कद्र न करते हुए, वह इसे खोलकर आपको लौटा देगी?"

नहीं; ऐसे अस्वीकार के बावजूद वह बहुत ही सौम्य स्वभाव की थी। वह ऐसा दिखावा करने को तैयार हो गई कि उसने मेरी गलती भुला दी है और बड़ी सहजता से भेंट स्वीकार कर ली। ऐसे में कोई व्यक्ति अपने उपहार की स्वीकृति को शुभ संकेत मानकर कैसे भरोसा कर सकता है? जहाँ तक मेरी बात है, अगर मैं उसे अपना सब

कुछ दे दूँ और वह उसे स्वीकार कर ले, तो भी तुच्छ बातों से प्रभावित न होने की उसकी क्षमता को देखते हुए, मैं यह मानने की हिम्मत नहीं करूँगा कि इस लेन-देन से मुझे कोई लाभ हुआ है।

“डॉक्टर जॉन,” मैंने कहना शुरू किया, “प्यार अंधा होता है;” लेकिन तभी डॉक्टर जॉन की आंख से एक नीली, हल्की सी किरण निकली: इसने मुझे पुराने दिनों की याद दिला दी, इसने मुझे उनकी तस्वीर की याद दिला दी: इसने मुझे आधा सोचने पर मजबूर कर दिया कि मिस फैंसहावे की भोली-भाली होने के उनके दावे का कुछ हिस्सा दिखावा था; इसने मुझे संदेह से यह अनुमान लगाने पर मजबूर कर दिया कि शायद, उनकी सुंदरता के प्रति उनके जुनून के बावजूद, उनकी कमियों के प्रति उनकी समझ, उनके सामान्य शब्दों से कहीं अधिक स्पष्ट और सटीक हो सकती है। आखिरकार, यह महज़ एक आकस्मिक नज़र हो सकती है, या ज़्यादा से ज़्यादा एक क्षणिक प्रभाव का संकेत। संयोग हो या जानबूझकर, वास्तविक हो या काल्पनिक, इसने बातचीत समाप्त कर दी।

अध्याय XIX.

क्लियोपेट्रा।

मेरी छुट्टियां समाप्त होने के बाद ला टेरेस में मेरा प्रवास दो सप्ताह तक बढ़ गया। श्रीमती ब्रेटन के दयालु प्रबंधन के कारण मुझे यह राहत मिली। एक दिन उनके बेटे ने कहा कि "लूसी अभी उस तंग कमरे में वापस जाने के लिए पर्याप्त स्वस्थ नहीं है," तो वह तुरंत रू फॉसेट गईं, वहां की निदेशक से मिलीं और यह कहकर छूट प्राप्त कर ली कि पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए लंबे समय तक आराम और बदलाव आवश्यक है। हालाँकि, इसके बाद मुझे एक ऐसी बात का सामना करना पड़ा जिसकी मुझे बिल्कुल

भी आवश्यकता नहीं थी - मैडम बेक का एक विनम्र निमंत्रण।

एक दिन वह महिला सचमुच बड़े उत्साह से महल तक आ गई। मेरा मानना है कि उसने यह देखने का निश्चय कर लिया था कि डॉ. जॉन किस तरह के घर में रहते हैं। जाहिर है, वह सुंदर स्थान और साफ-सुथरा आंतरिक सज्जा उसकी अपेक्षाओं से कहीं अधिक सुखद थी; उसने जो कुछ भी देखा उसकी प्रशंसा की, नीले रंग के बैठक कक्ष को "एक शानदार कमरा" बताया, मुझे "बहुत ही योग्य, मिलनसार और सम्माननीय" मित्र मिलने पर हार्दिक बधाई दी, और डॉ. जॉन के आते ही, अत्यंत उत्साह से उनके पास दौड़ पड़ी, और साथ ही उनकी बातों की बौछार कर दी, उनकी "महल" (महोदया की माँ, एक योग्य महलवासी) और उनके रूप-रंग की भी; जो वास्तव में बहुत ही आकर्षक था, और उस समय उनके सौम्य लेकिन विनोदी मुस्कान से और भी सुशोभित था, जिसके साथ वे हमेशा मैडम की धाराप्रवाह और अलंकृत फ्रेंच सुनते थे। संक्षेप में कहें तो, उस दिन मैडम अपने सबसे बेहतरीन रूप में थीं, और प्रशंसा, प्रसन्नता और सौहार्द से भरी एक जीवंत चक्ररेखा की तरह आती-जाती रहीं। आधे इरादे से, और आधे स्कूल के काम के बारे में कुछ पूछने के लिए, मैं उनके पीछे-पीछे गाड़ी तक गया, और उनके बैठने और दरवाज़ा बंद होने के बाद अंदर झाँका। उस थोड़े से समय में कितना बड़ा बदलाव आ गया था! एक पल पहले, वह खिलखिलाती और हँसमुख थीं, अब वह किसी न्यायाधीश से भी अधिक गंभीर और किसी ऋषि से भी अधिक संजीदा बैठी थीं। अजीब सी महिला!

मैं वापस गई और मैडम की उनके प्रति दीवानगी को लेकर डॉ. जॉन को चिढ़ाया। वो कितना हँसे! उनकी आँखों में कितनी खुशी झलक रही थी जब उन्होंने मैडम के कुछ बेहतरीन भाषणों को याद किया और उनकी वाक्पटुता की नकल करते हुए उन्हें दोहराया! उनमें हास्य की गहरी समझ थी और वो दुनिया के सबसे अच्छे साथी थे — जब वो मिस फैंसहावे को भूल पाते थे।

* * * * *

कहा जाता है कि "धूप में शांत और सुखद बैठना" कमजोर लोगों के लिए बहुत अच्छा होता है; यह उन्हें जीवन शक्ति प्रदान करता है। जब छोटी जॉर्जेट बेक अपनी बीमारी से उबर रही थी, तो मैं उसे अपनी बाहों में लेकर घंटों बगीचे में टहलती थी, एक ऐसी दीवार के नीचे जिस पर अंगूर लटके हुए थे और जिन्हें दक्षिणी सूरज पका

रहा था: वह सूरज उसके छोटे से पीले शरीर को उतनी ही प्रभावी ढंग से पोषण देता था जितना कि वह गुच्छों में लगे फलों को पकाकर फुला देता था।

कुछ लोगों का स्वभाव सौम्य, प्रफुल्लित और सौम्य होता है, जिनके प्रभाव में रहना उदास मन वालों के लिए उतना ही सुखद होता है जितना कि दुर्बल शरीर वालों के लिए दोपहर की धूप का आनंद लेना। डॉ. ब्रेटन और उनकी माता का स्वभाव भी निश्चित रूप से ऐसे ही विशिष्ट स्वभावों में से एक था। वे दूसरों को प्रसन्नता देना उतना ही पसंद करते थे जितना कुछ लोग दूसरों को दुखी करना: वे यह सहजता से करते थे; बिना किसी दिखावे के, और लगभग बिना किसी जागरूकता के; प्रसन्नता देने के उपाय उनके मन में स्वतः ही उत्पन्न हो जाते थे। जब तक मैं उनके साथ रहा, हर दिन कोई न कोई छोटी-मोटी योजना बनाई जाती थी जिससे हमें आनंद मिलता था। डॉ. जॉन का समय कितना भी व्यस्त क्यों न हो, वे फिर भी हमारे साथ हर छोटी सैर पर जाने का समय निकाल लेते थे। मैं ठीक से बता नहीं सकता कि वे अपने कामों को कैसे संभालते थे; वे बहुत सारे होते थे, फिर भी एक व्यवस्थित तरीके से वे उन्हें इस क्रम में रखते थे कि उन्हें प्रतिदिन कुछ खाली समय मिल जाता था। मैंने उन्हें अक्सर कड़ी मेहनत करते देखा, फिर भी वे शायद ही कभी अत्यधिक तनावग्रस्त होते थे, और कभी चिढ़ते, भ्रमित या परेशान नहीं होते थे। उन्होंने जो कुछ भी किया, वह असीम शक्ति की सहजता और शालीनता से, अटूट ऊर्जा की प्रचुर प्रसन्नता से संपन्न हुआ। उनके मार्गदर्शन में, उस एक सुखद पखवाड़े में, मैंने विलेट, उसके आसपास के इलाकों और उसके निवासियों को उतना देखा जितना मैंने अपने पिछले आठ महीनों के निवास में भी नहीं देखा था। वे मुझे शहर के उन दर्शनीय स्थलों पर ले गए, जिनके नाम मैंने पहले कभी नहीं सुने थे; वे उत्साह और लगन से कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ साझा करते थे। उन्हें मुझसे बात करना कभी बोझिल नहीं लगता था, और मुझे यकीन है कि मुझे भी उन्हें सुनना कभी बोझिल नहीं लगा। विषयों को ठंडे और अस्पष्ट ढंग से निपटाना उनका स्वभाव नहीं था; वे शायद ही कभी सामान्यीकरण करते थे, कभी उपदेशात्मक बातें नहीं करते थे। ऐसा लगता था कि उन्हें बारीक विवरण उतने ही पसंद थे जितने मुझे: वे चरित्र का गहन अवलोकन करते थे, और वह भी सतही अवलोकन नहीं। इन्हीं बातों ने उनके प्रवचन को रुचिकर बना दिया। और उनका अपने स्वयं के ज्ञान से बोलना, न कि किताबों से उधार लेना या चुराना—कहीं कोई नीरस तथ्य, कहीं कोई घिसा-पिटा मुहावरा, और कहीं कोई पुरानी राय—ने एक ऐसी ताजगी सुनिश्चित

की, जो जितनी दुर्लभ थी उतनी ही सुखद भी। मेरी आँखों के सामने ही, उनका स्वभाव एक नए रूप में प्रकट होता प्रतीत हुआ; एक नए दिन की ओर अग्रसर होता हुआ, एक नई और अधिक गौरवशाली सुबह की ओर बढ़ता हुआ।

उनकी माता में परोपकार की अच्छी भावना थी, लेकिन उनमें उससे भी कहीं अधिक और व्यापक भावना थी। जब मैं उनके साथ बासे-विले (शहर का गरीब और भीड़भाड़ वाला इलाका) गया, तो मैंने पाया कि वहाँ उनके कार्य एक चिकित्सक के साथ-साथ एक परोपकारी व्यक्ति के भी थे। मुझे शीघ्र ही समझ आ गया कि वे प्रसन्नतापूर्वक, नियमित रूप से और अपने कार्यों में किसी विशेष गुण की परवाह किए बिना, अत्यंत दयनीय आबादी के बीच सक्रिय रूप से भलाई का कार्य कर रहे थे। निम्न वर्ग के लोग उन्हें पसंद करते थे; अस्पतालों में उनके गरीब मरीज उनका उत्साहपूर्वक स्वागत करते थे।

लेकिन रुकिए—मुझे एक निष्ठावान कथावाचक होने के नाते पक्षपातपूर्ण प्रशंसा करने वाले की भूमिका में नहीं आना चाहिए। मैं भली-भांति जानता हूँ कि डॉ. जॉन परिपूर्ण नहीं थे, ठीक वैसे ही जैसे मैं परिपूर्ण नहीं हूँ। मानवीय त्रुटियाँ उनमें हर जगह व्याप्त थीं: उनके साथ बिताए समय का शायद ही कोई क्षण ऐसा रहा हो जब उनके कार्यों, वाणी या दृष्टि में कुछ ऐसा न झलका हो जो किसी देवता के स्वभाव से मेल न खाता हो। किसी देवता में डॉ. जॉन जैसा क्रूर घमंड और कभी-कभी उनकी चंचलता नहीं हो सकती। वर्तमान के अलावा हर चीज़ को भूल जाने की उनकी क्षणिक अवस्था में कोई अमर व्यक्ति उनके समान नहीं हो सकता था— उस वर्तमान के प्रति उनका क्षणिक जुनून; यह जुनून भौतिक सुख-सुविधाओं में लिप्त होकर नहीं, बल्कि स्वार्थवश, अपने पुरुष प्रेम को पोषित करने के लिए उससे जो कुछ भी मिल सकता था, उसे निचोड़कर प्रकट होता था: उनका आनंद उस लालची भावना को तृप्त करने में था, भोजन की कीमत की परवाह किए बिना, या उसे उत्तम और लाड़-प्यार से रखने के खर्च की चिंता किए बिना।

पाठकों से अनुरोध है कि वे ग्राहम ब्रेटन के दो चित्रों में दिखाई देने वाले विरोधाभास पर ध्यान दें — सार्वजनिक और निजी — बाहरी और आंतरिक दृश्य। पहले, सार्वजनिक चित्र में, उन्हें आत्म-विस्मृत दिखाया गया है; अपनी ऊर्जाओं के प्रदर्शन में उतने ही विनम्र, और उनके उपयोग में उतने ही गंभीर। दूसरे, अग्नि-गृहस्थी वाले चित्र में, उनके पास जो कुछ है और वे जो हैं, उसके प्रति उनकी जागरूकता

व्यक्त होती है; प्रशंसा पाने में आनंद, प्रशंसा पाने में कुछ हद तक बेपरवाही, और वही प्रशंसा प्राप्त करने में कुछ हद तक गर्व। दोनों चित्र सही हैं।

डॉ. जॉन की इच्छा को चुपचाप और गुप्त रूप से पूरा करना लगभग असंभव था। जब आप सोचते कि उनके उपयोग के लिए बनाई गई कोई छोटी-मोटी चीज़ किसी को पता चले बिना तैयार हो गई है, और अन्य लोगों की तरह, वे भी उसे तैयार मिलते ही इस्तेमाल कर लेंगे और कभी नहीं पूछेंगे कि वह कहाँ से आई है, तो वे मुस्कुराते हुए एक-दो बातें कहकर आपको चौंका देते थे, जिससे साबित हो जाता था कि उनकी नज़र काम पर शुरू से अंत तक थी: उन्होंने डिज़ाइन पर ध्यान दिया था, उसकी प्रगति पर नज़र रखी थी और उसके पूरा होने का ब्यौरा दिया था। उन्हें इस तरह सेवा पाकर प्रसन्नता होती थी और उनकी खुशी उनकी आँखों में झलकती थी और उनके होंठों से झलकती थी।

यह सब ठीक होता, अगर उसने अपने इस सौम्य और शांत स्वभाव के साथ-साथ अपने तथाकथित कर्जों को चुकाने में कुछ मनमानी न दिखाई होती। जब उसकी माँ उसके यहाँ काम करती थी, तो वह उसे अपने उमंग भरे व्यवहार से चुकाता था, और अपने हंसमुख, चिढ़ाने वाले, प्यार भरे स्वभाव से भी कहीं अधिक धन-दौलत लुटाता था। अगर लूसी स्नो के ऐसे किसी काम में शामिल होने का पता चलता, तो उसने बदले में उसके लिए कोई सुखद मनोरंजन की योजना बनाई थी।

मैं अक्सर विलेट के बारे में उनके पूर्ण ज्ञान को देखकर चकित रह जाता था; उनका ज्ञान केवल उसकी खुली गलियों तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उसकी सभी दीर्घाओं, कमरों और अलमारियों तक फैला हुआ था: हर उस दरवाजे के बारे में, जिसमें देखने लायक कोई वस्तु बंद थी, हर संग्रहालय के बारे में, कला या विज्ञान के लिए समर्पित हर हॉल के बारे में, मानो उन्हें सब कुछ पता था। विज्ञान में मेरी कोई रुचि नहीं थी, लेकिन एक अज्ञानी, अंधा, प्रेमपूर्ण सहज ज्ञान मुझे कला की ओर खींचता था। मुझे चित्र दीर्घाओं में जाना अच्छा लगता था, और मुझे वहाँ अकेले रहना बेहद पसंद था। भीड़ में, मेरी एक अजीब सी आदत मुझे कुछ भी देखने या महसूस करने से रोकती थी। अपरिचित लोगों के बीच, जहाँ उपस्थित विषयों पर बातचीत जारी रखना आवश्यक होता था, आधे घंटे में ही मैं शारीरिक थकान और मानसिक अक्षमता के मिले-जुले दबाव से थक जाता था। मैंने आज तक किसी भी सुसंस्कृत बच्चे को, और उससे भी अधिक शिक्षित वयस्क को, ऐसा नहीं देखा जो चित्रों, ऐतिहासिक स्थलों या

इमारतों, या सार्वजनिक महत्व के किसी भी महत्वपूर्ण व्यक्ति के वार्तालापपूर्ण और सामाजिक भ्रमण के दौरान अपने व्यवहार की निरंतर बुद्धिमत्ता से मुझे शर्मिंदा न कर सके। डॉ. ब्रेटन मेरे जैसे ही मार्गदर्शक थे; वे मुझे सुबह-सुबह, गैलरी भरने से पहले ही ले जाते, मुझे वहाँ दो-तीन घंटे के लिए छोड़ देते और अपने काम पूरे होने पर मुझे बुला लेते। इस बीच, मैं खुश था; खुश, हमेशा प्रशंसा करने में नहीं, बल्कि जाँच-पड़ताल करने, प्रश्न पूछने और निष्कर्ष निकालने में। इन यात्राओं की शुरुआत में, कुछ गलतफहमी और परिणामस्वरूप इच्छाशक्ति और शक्ति के बीच संघर्ष हुआ। इच्छाशक्ति उन चीजों की स्वीकृति चाहती थी जिनकी प्रशंसा करना रूढ़िवादी माना जाता था; शक्ति इस कर को चुकाने में अपनी पूर्ण असमर्थता का बखान करती थी; तब उस पर उपहास किया जाता, उसे प्रोत्साहित किया जाता, उसके स्वाद को निखारने और उसके उत्साह को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाता। लेकिन जितना अधिक उसे डांटा जाता, उतना ही वह प्रशंसा नहीं करता। धीरे-धीरे यह महसूस करते हुए कि इन अथक प्रयासों से एक अद्भुत थकान उत्पन्न हो रही है, मैंने सोचना शुरू किया कि क्या मैं इस भारी श्रम को छोड़ सकता हूँ, और अंततः इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मैं ऐसा कर सकता हूँ, और इसलिए प्रदर्शित सौ में से निन्यानवे तस्वीरों के सामने शांति के आनंद में डूब गया।

मुझे ऐसा लगा कि एक मौलिक और अच्छी तस्वीर उतनी ही दुर्लभ है जितनी एक मौलिक और अच्छी किताब; और अंत में, कुछ नामी कृतियों के सामने खड़े होकर, मैंने स्वयं से यह कहने में संकोच नहीं किया, "ये प्रकृति से जरा भी मेल नहीं खातीं। प्रकृति के दिन के उजाले का रंग कभी ऐसा नहीं था: न तो तूफान से और न ही बादलों से इतना धुंधला हुआ था जितना कि यहाँ नीले आकाश के नीचे फैला हुआ है: और वह नीला आकाश नहीं है; और उस पर चिपकी हुई काली घासें पेड़ नहीं हैं।" कई बेहद अच्छी तरह से बनाई गई और संतुष्ट दिखने वाली मोटी महिलाओं को देखकर मुझे ऐसा बिल्कुल नहीं लगा कि वे खुद को देवी समझती हैं। दर्जनों अद्भुत ढंग से तैयार की गई छोटी फ्लेमिश तस्वीरें, और साथ ही रेखाचित्र, जो फैशन-पुस्तकों के लिए उत्कृष्ट थे और जिनमें सबसे सुंदर सामग्रियों में विभिन्न प्रकार के परिधान प्रदर्शित किए गए थे, सराहनीय परिश्रम और सनकीपन का प्रमाण देते थे। फिर भी, यहाँ-वहाँ सत्य के अंश थे जो अंतरात्मा को संतुष्ट करते थे, और प्रकाश की किरणें थीं जो दृष्टि को प्रसन्न करती थीं। प्रकृति की शक्ति यहाँ एक पहाड़ी हिमपात में प्रकट

हुई; और वहाँ एक धूप भरे दक्षिणी दिन में उसकी भव्यता झलक रही थी। इस चित्र में एक भाव ने चरित्र की स्पष्ट झलक दिखाई; उस ऐतिहासिक चित्र में एक चेहरा, अपनी जीवंत पारिवारिक समानता से, आश्चर्यजनक रूप से आपको याद दिलाता था कि प्रतिभा ने उसे जन्म दिया है। ये अपवाद मुझे प्रिय थे: वे दोस्तों की तरह प्यारे हो गए।

एक दिन, सुबह-सुबह, मैं एक खास गैलरी में लगभग अकेला था, जहाँ एक विशाल और प्रभावशाली चित्र, बेहतरीन रोशनी में स्थापित था, जिसके सामने सुरक्षा घेरा बना हुआ था, और उसके ठीक सामने एक गद्देदार बेंच रखी थी ताकि कला के पारखी लोग आराम से बैठ सकें, जो उसे निहारते-निहारते थक जाएँ और फिर अपना काम पूरा करना चाहें: ऐसा लग रहा था मानो यह चित्र खुद को संग्रह की रानी समझता हो।

यह एक महिला का चित्र था, जो मुझे लगा कि असलियत से कहीं अधिक विशाल थी। मैंने अनुमान लगाया कि अगर इस महिला को किसी भारी वस्तु को रखने लायक तराजू पर रखा जाए, तो उसका वजन निश्चित रूप से चौदह से सोलह स्टोन हो जाएगा। वह सचमुच बहुत अच्छी तरह से पोषित थी: उसने बहुत सारा मांस खाया होगा - रोटी, सब्जियां और तरल पदार्थों की तो बात ही छोड़िए - उस चौड़ाई और ऊंचाई, उस मांसपेशियों की प्रचुरता और उस मांसल शरीर को पाने के लिए। वह सोफे पर आधी लेटी हुई थी: क्यों, यह कहना मुश्किल होगा; उसके चारों ओर दिन का उजाला चमक रहा था; वह स्वस्थ प्रतीत हो रही थी, इतनी मजबूत कि दो साधारण रसोइयों का काम कर सकती थी; वह रीढ़ की हड्डी कमजोर होने का बहाना नहीं बना सकती थी; उसे खड़ा होना चाहिए था, या कम से कम सीधा बैठना चाहिए था। उसे दोपहर सोफे पर आलस करने का कोई काम नहीं था। उसे शालीन कपड़े भी पहनने चाहिए थे; एक गाउन जो उसे ठीक से ढके, वह नहीं था: बहुत सारा कपड़ा होने के बावजूद—लगभग सत्ताईस गज (मैं कहूँगी)—उसने किसी तरह से बेढंगा वस्त्र बना लिया था। फिर, उसके चारों ओर फैली भयानक अव्यवस्था के लिए कोई बहाना नहीं हो सकता था। बर्तन—शायद मुझे फूलदान और गिलास कहना चाहिए—सामने इधर-उधर बिखरे पड़े थे; उनके बीच फूलों का एक बेतरतीब ढेर मिला हुआ था, और पर्दे की गद्दी का एक बेतुका और अव्यवस्थित ढेर सोफे को ढके हुए था और फर्श पर बोझ बना रहा था। कैटलॉग देखने पर मुझे पता चला कि इस उल्लेखनीय कृति का नाम "क्लियोपेट्रा" था।

खैर, मैं वहाँ बैठकर इस चित्र को निहार रहा था (चूँकि वहाँ बेंच थी, मैंने सोचा कि क्यों न इसका लाभ उठा लूँ), और सोच रहा था कि कुछ बारीकियाँ—जैसे गुलाब, सोने के प्याले, गहने आदि—बहुत खूबसूरती से चित्रित थीं, लेकिन कुल मिलाकर यह एक सरासर बेतुकी रचना थी; जब मैं कमरे में दाखिल हुआ तो कमरा लगभग खाली था, लेकिन अचानक भर गया। इस बात पर ध्यान न देते हुए (क्योंकि वास्तव में इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था) मैं अपनी जगह पर बैठा रहा; इस विशाल, सांवली रंगत वाली जिप्सी रानी का अध्ययन करने के बजाय आराम करने के लिए; जिससे मैं जल्द ही ऊब गया, और कुछ सुंदर छोटे-छोटे स्थिर चित्रों को निहारने लगा: जंगली फूल, जंगली फल, काई से ढके जंगल के घोंसले, अंडे जो साफ हरे समुद्री पानी में से झाँकते मोतियों जैसे दिखते थे; ये सभी उस भद्दे और बेतुके कैनवास के नीचे सादगी से लटके हुए थे।

अचानक मेरे कंधे पर हल्की सी थपकी पड़ी। चौंककर मुड़ते ही मेरी नज़र एक ऐसे चेहरे पर पड़ी जो मेरी ओर झुका हुआ था; वह चेहरा गुस्से से भरा हुआ था, लगभग सदमे में था।

“तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” एक आवाज़ ने कहा।

लेकिन, महोदय, मुझे मजा आ रहा है।

“तुम्हें बहुत मज़ा आ रहा है! और किस चीज़ में, कृपया बताइए? लेकिन पहले, कृपया उठ जाइए; मेरा हाथ पकड़िए, और चलिए दूसरी तरफ चलते हैं।”

मैंने ठीक वही किया जो मुझे आदेश दिया गया था। एम. पॉल इमानुएल (वही थे) रोम से लौटे, और अब एक अनुभवी व्यक्ति होने के नाते, इस अतिरिक्त सम्मान से सम्मानित होने से पहले की तुलना में अवज्ञा के प्रति कम सहनशील होने की संभावना नहीं थी।

"मुझे आपको आपकी पार्टी तक ले जाने की अनुमति दें," उसने कहा, जब हम कमरे को पार कर रहे थे।

मेरी कोई पार्टी नहीं है।

"आप अकेले नहीं हैं?"

"जी श्रीमान।"

क्या आप यहां अकेले आए हैं?

“नहीं, महोदय। डॉ. ब्रेटन मुझे यहाँ लाए हैं।”

"डॉ. ब्रेटन और उनकी माता मैडम, बिल्कुल?"

“नहीं; केवल डॉ. ब्रेटन।”

"और उसने तुम्हें वह तस्वीर देखने के लिए कहा?"

"बिल्कुल नहीं; मैंने खुद इसका पता लगाया है।"

एम. पॉल के बाल इतने छोटे कटे हुए थे जैसे कौवे के पंख हों, वरना मुझे लगता है कि वे उनके सिर पर गुच्छे जैसे लगते। अब मुझे उनकी मंशा समझ आने लगी थी, इसलिए शांत रहकर उन्हें उकसाने में मुझे एक तरह का आनंद आ रहा था।

“बेहद संकीर्ण और दुस्साहस!” प्रोफेसर चिल्लाए। “ये अंग्रेज़ औरतें वाकई विलक्षण हैं!”

“क्या बात है, महोदय?”

“अरे! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, एक नौजवान होकर, इतने शांत भाव से, एक गंवार की तरह, उस तस्वीर को देखने की?”

"यह एक बहुत ही भद्दी तस्वीर है, लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि मुझे इसे क्यों नहीं देखना चाहिए।"

“बॉन! बॉन! इसके बारे में और बात मत करो। लेकिन तुम्हें यहां अकेले नहीं रहना चाहिए।”

लेकिन अगर मेरा कोई समाज न हो—जैसा कि आप कहते हैं, कोई दल न हो? तो फिर, इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैं अकेला हूँ या किसी के साथ? कोई भी मेरे मामलों में दखल नहीं देता।

“चुप रहो, और वहीं बैठो—वहाँ!”—उन्होंने एक बेहद नीरस कोने में, बेहद उबाऊ “कार्यकर्ताओं” की एक श्रृंखला के सामने, जोर देकर एक कुर्सी रख दी।

लेकिन, महोदय?

"लेकिन, मैडम, बैठ जाइए, और हिलिए मत—क्या आप सुन रही हैं?—जब तक कोई आपको लेने न आ जाए, या जब तक मैं आपको अनुमति न दे दूं।"

“कितनी उदास जगह है!” मैंने कहा, “और कितनी भद्दी तस्वीरें हैं!”

और सचमुच, वे "महिलाओं" के चित्र थे; चार चित्रों का एक समूह, जिसे कैटलॉग में "ला वी डी'उन फेम" नाम दिया गया था। उन्हें एक उल्लेखनीय शैली में चित्रित किया गया था - सपाट, निर्जीव, फीकी और औपचारिक। पहले चित्र में एक "युवा लड़की" को चर्च के दरवाजे से बाहर आते हुए दिखाया गया है, उसके हाथ में प्रार्थना

की किताब है, उसका पहनावा बेहद सलीकेदार है, उसकी आँखें झुकी हुई हैं, उसका मुँह सिकुड़ा हुआ है - एक बेहद शातिर, कम उम्र की पाखंडी लड़की की छवि। दूसरे चित्र में एक "मैरी" को लंबे सफेद घूंघट के साथ अपने कमरे में प्रार्थना के लिए घुटनों के बल बैठे हुए दिखाया गया है, उसके हाथ उंगलियों से जुड़े हुए हैं और उसकी आँखों की पुतलियाँ बेहद चिढ़ाने वाले ढंग से दिखाई दे रही हैं। तीसरे चित्र में एक "युवा माँ" को एक मिट्टी जैसे और फूले हुए बच्चे पर उदास झुके हुए दिखाया गया है, जिसका चेहरा अस्वस्थ पूर्णिमा के चंद्रमा जैसा है। चौथी महिला, जिसे "वेउवे" कहा जाता है, एक अश्वेत महिला है, जो एक छोटी अश्वेत लड़की का हाथ पकड़े हुए है, और दोनों किसी आलीशान महल के कोने में स्थापित एक भव्य फ्रांसीसी स्मारक का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर रही हैं। ये चारों "एन्जेस" चोरों की तरह गंभीर और धूसर थीं, और भूतों की तरह ठंडी और भावहीन थीं। इनके साथ रहना कैसा है! बेईमान, चिड़चिड़ी, भावनाहीन, बुद्धिहीन और महत्वहीन! अपने तरीके से उतनी ही बुरी जितनी आलसी बंजारा क्लियोपेट्रा अपने तरीके से थी।

इन उत्कृष्ट कृतियों पर लंबे समय तक ध्यान केंद्रित रखना असंभव था, इसलिए धीरे-धीरे मैंने मुड़कर गैलरी का जायजा लिया।

इस समय तक शेरनी के चारों ओर दर्शकों की एक अच्छी-खासी भीड़ जमा हो चुकी थी, जिसके आसपास से मुझे निकाल दिया गया था; इस भीड़ में लगभग आधी महिलाएं थीं, लेकिन एम. पॉल ने बाद में मुझसे कहा कि ये "महिलाएं" थीं, और उनके लिए उस चीज़ को देखना बिल्कुल उचित था जिस पर किसी "महिला" को नज़र नहीं डालनी चाहिए। मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से कहा कि मैं इस सिद्धांत से सहमत नहीं हूँ और मुझे इसमें कोई अर्थ नहीं दिखता; जिस पर, अपने हमेशा के निरंकुश रवैये के साथ, उन्होंने केवल मुझे चुप रहने का अनुरोध किया, और साथ ही साथ मेरी मिली-जुली जल्दबाजी और अज्ञानता की निंदा भी की। एम. पॉल से अधिक निरंकुश छोटा आदमी कभी प्रोफेसर की कुर्सी पर नहीं बैठा। वैसे, मैंने देखा कि वह स्वयं भी बड़ी सहजता से और काफी देर तक तस्वीर को देख रहे थे: हालांकि, उन्होंने समय-समय पर मेरी ओर देखना नहीं छोड़ा, शायद यह सुनिश्चित करने के लिए कि मैं आदेशों का पालन कर रहा हूँ और सीमा का उल्लंघन नहीं कर रहा हूँ। कुछ देर बाद, उन्होंने फिर मुझसे बात की।

“क्या मैं बीमार नहीं था?” वह जानना चाहता था: “उसे पता था कि मैं बीमार

था।”

"हां, लेकिन अब मैं काफी ठीक हो चुका था।"

मैंने छुट्टियाँ कहाँ बिताई थीं?

"मुख्यतः रू फॉसेट में; कुछ हद तक मैडम ब्रेटन के साथ।"

“उन्होंने सुना था कि मुझे रू फॉसेट में अकेला छोड़ दिया गया था; क्या ऐसा ही था?”

“बिल्कुल अकेली नहीं: मैरी ब्रोक” (वह मूर्ख) “मेरे साथ थी।”

उन्होंने अपने कंधे उचका दिए; उनके चेहरे पर तरह-तरह के विरोधाभासी भाव तेज़ी से बदलते रहे। मैरी ब्रोक को एम. पॉल अच्छी तरह जानते थे; उन्होंने तीसरी कक्षा (जिसमें सबसे कमज़ोर विद्यार्थी थे) में कभी भी ऐसा पाठ नहीं पढ़ाया, जिसमें मैरी ब्रोक ने उनके मन में परस्पर विरोधी भावनाओं का तीव्र संघर्ष न पैदा किया हो। उनका रूप-रंग, उनका अप्रिय व्यवहार, उनका अक्सर अनियंत्रित स्वभाव, उनके गुस्से को भड़काते थे और उनके मन में तीव्र घृणा उत्पन्न करते थे; यह भावना उनके मन में तब अक्सर पैदा होती थी जब उनकी पसंद को ठेस पहुँचती थी या उनकी इच्छा पूरी नहीं होती थी। दूसरी ओर, मैरी की विपत्तियाँ उनके धैर्य और करुणा की प्रबल मांग करती थीं - ऐसी मांग जिसे नकारना उनके स्वभाव में नहीं था; इसलिए लगभग हर दिन एक तरफ अधीरता और घृणा, तो दूसरी तरफ दया और न्याय की भावना के बीच संघर्ष होता था; जिसमें, उनकी प्रशंसा के योग्य, यह बहुत कम ही होता था कि अधीरता और घृणा हावी हों: लेकिन जब ऐसा होता था, तो एम. पॉल अपने चरित्र का एक ऐसा पहलू दिखाते थे जो भयावह होता था। उनकी भावनाएँ प्रबल थीं, उनकी घृणाएँ और आसक्ति दोनों ही स्पष्ट थीं; इन दोनों को नियंत्रित रखने के लिए वे जो बल लगाते थे, उससे देखने वाले के मन में इनकी तीव्रता का स्पष्ट आभास होता था। ऐसी प्रवृत्तियों के कारण, यह स्वाभाविक है कि वे आम लोगों के मन में भय और अरुचि उत्पन्न करते थे; फिर भी उनसे डरना व्यर्थ था: किसी आशंकित और अविश्वासी आत्मा की कंपकंपी से बढ़कर उन्हें कोई और चीज इतनी बेचैन नहीं करती थी; और कोमलता से युक्त विश्वास से बढ़कर उन्हें कोई और चीज शांत नहीं करती थी। इन भावनाओं को समझने के लिए उनके स्वभाव को पूरी तरह से समझना आवश्यक था; और उनका स्वभाव इतना जटिल था कि उसे समझना लगभग असंभव था।

कुछ मिनटों की चुप्पी के बाद उन्होंने पूछा, "मैरी ब्रोक के साथ आपका कैसा

अनुभव रहा?"

"महाशय, मैंने अपनी पूरी कोशिश की; लेकिन उसके साथ अकेले रहना बहुत भयानक था!"

“तो फिर तुम्हारा दिल कमजोर है! तुममें साहस की कमी है; और शायद, दया की भी नहीं।”

आपमें वे गुण नहीं हैं जो सिस्टर ऑफ मर्सी बनने के लिए आवश्यक हों।

[वह अपने तरीके से एक धार्मिक छोटा आदमी था: कैथोलिक धर्म के आत्म-त्याग और आत्म-बलिदान वाले हिस्से ने उसकी आत्मा को श्रद्धा से भर दिया था।]

"सच कहूं तो मुझे नहीं पता: मैंने उसकी यथासंभव अच्छी देखभाल की; लेकिन जब उसकी चाची उसे लेने आई, तो मुझे बहुत राहत मिली।"

“अरे! तुम तो अहंकारी हो। ऐसी महिलाएं भी हैं जिन्होंने अस्पतालों में ऐसे ही दुर्भाग्यपूर्ण रोगियों की देखभाल की है। क्या तुम ऐसा नहीं कर सकतीं?”

"क्या महाशय स्वयं यह कर सकते हैं?"

"जो महिलाएं इस नाम के योग्य हैं, उन्हें ऐसे कर्तव्यों का निर्वाह करने की क्षमता में हमारी असभ्य, त्रुटिपूर्ण और आत्म-भोगी जाति से कहीं अधिक श्रेष्ठ होना चाहिए।"

मैंने उसे नहलाया, उसे साफ रखा, उसे खाना खिलाया, उसका मनोरंजन करने की कोशिश की; लेकिन वह बोलने के बजाय मुझ पर मुंह बनाती रही।

"क्या आपको लगता है कि आपने महान काम किए हैं?"

नहीं; लेकिन जितना मैं कर सकता था उतना अच्छा किया।

"तो फिर तुम्हारी शक्तियां सीमित हैं, क्योंकि एक मूर्ख की देखभाल करते-करते तुम बीमार पड़ गए।"

"नहीं, महोदय; मुझे घबराहट का बुखार था: मेरा दिमाग बीमार था।"

“सचमुच! आप उतने खास नहीं हैं। आप वीर स्वभाव के नहीं हैं; आपका साहस आपको एकांत में सहारा नहीं देगा; यह केवल आपको क्लियोपेट्रा की तस्वीरों को शांत भाव से देखने का साहस देता है।”

उस छोटे आदमी के चिढ़ाने वाले और शत्रुतापूर्ण लहजे पर गुस्सा दिखाना आसान होता। लेकिन मैं उससे कभी नाराज़ नहीं हुआ था, और न ही फिलहाल नाराज़ होने की कोई इच्छा थी।

“क्लियोपेट्रा!” मैंने धीमी आवाज़ में दोहराया। “महाशय भी देख रहे हैं।”

क्लियोपेट्रा; वह उसके बारे में क्या सोचता है?

“वह किसी काम की नहीं,” उसने जवाब दिया। “बेहद खूबसूरत महिला—किसी महारानी जैसी काया, जूनो जैसी सुडौल आकृति—लेकिन ऐसी जिसे मैं पत्नी, बेटी या बहन के रूप में नहीं चाहूँगा। इसलिए अब तुम उसकी तरफ़ दोबारा नज़र भी नहीं डालोगी।”

"लेकिन जब महाशय बोल रहे थे, तब मैंने उन्हें कई बार देखा है: मैं उन्हें इस कोने से अच्छी तरह देख सकता हूँ।"

"दीवार की ओर मुड़ें और एक महिला के जीवन की अपनी चार तस्वीरों का अध्ययन करें।"

"क्षमा कीजिए, श्रीमान पॉल; वे बहुत ही भद्दे हैं: लेकिन यदि आप उनकी प्रशंसा करते हैं, तो मुझे अपनी सीट खाली करने दीजिए और आपको उनके चिंतन के लिए छोड़ दीजिए।"

“मैडम,” उसने आधे-अधूरे मुस्कुराते हुए कहा, या यूँ कहें कि मुस्कान दिखाने की कोशिश की, पर वह एक गंभीर और जल्दबाज़ी भरी अभिव्यक्ति मात्र थी। “प्रोटेस्टेंट धर्म की ये नन्ही-मुन्नियाँ मुझे आश्चर्यचकित करती हैं। तुम बेखबर अंग्रेज़ औरतें धधकते हल के बीच शांति से चलती हो और जलने से बच जाती हो। मेरा मानना है कि अगर तुममें से कुछ को नबूकदनेज़र की सबसे गर्म भट्टी में फेंक दिया जाए, तो तुम आग की गंध से भी अछूती बाहर निकलोगी।”

"क्या महोदय थोड़ी सी भी कृपा करके एक तरफ हट जाएंगे?"

“अरे! अब तुम किस बात पर टकटकी लगाए देख रहे हो? क्या तुम उन युवाओं के समूह में किसी परिचित को नहीं पहचान पा रहे हो?”

“मुझे ऐसा लगता है—हां, मुझे वहां एक ऐसा व्यक्ति दिख रहा है जिसे मैं जानता हूं।”

दरअसल, मेरी नज़र एक ऐसे सिर पर पड़ी जो इतना सुंदर था कि किसी और का नहीं बल्कि आदरणीय कर्नल डी हमाल का ही हो सकता था। क्या ही सुंदर, कितना सलीके से संवारा हुआ छोटा सा सिर था! क्या ही आकर्षक कद-काठी थी, एकदम सलीके से! क्या ही स्त्री जैसे पैर और हाथ! कितनी नज़ाकत से उन्होंने अपनी एक आँख में गिलास पकड़ा हुआ था! कितनी प्रशंसा से वे क्लियोपेट्रा को निहार रहे थे! और फिर, कितनी मोहक हंसी के साथ उन्होंने अपने बगल में बैठे एक दोस्त से

फुसफुसाकर बात की! ओह, कितना समझदार आदमी! ओह, कितना परिष्कृत, उत्कृष्ट स्वाद और सूझबूझ वाला सज्जन! मैंने उन्हें लगभग दस मिनट तक देखा और पाया कि वे नील नदी की इस सांवली और सुडौल वीनस पर पूरी तरह मोहित हो गए थे। मैं उनके हाव-भाव में इतना मग्न था, उनकी नज़रों और हरकतों से उनके चरित्र को समझने में इतना मग्न था कि मैं कुछ समय के लिए एम. पॉल को भूल गया; इसी बीच एक समूह उस सज्जन और मेरे बीच आ गया; या शायद मेरी वर्तमान तल्लीनता से उसकी संशय को एक और भी बुरा झटका लगा हो, जिसके कारण वह स्वेच्छा से पीछे हट गया हो: खैर, जब मैंने दोबारा मुड़कर देखा, तो वह जा चुका था।

खोजबीन करते हुए मेरी नज़र उस पर नहीं पड़ी, बल्कि एक दूसरे, उससे बिल्कुल अलग व्यक्ति पर पड़ी, जो भीड़ में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, क्योंकि कद और हावभाव दोनों ही उसे अलग-अलग पहचान दे रहे थे। डॉ. जॉन इस ओर आ रहे थे, चेहरे, कद-काठी और रंग-रूप में, वे उस काले, कड़वे और कटु स्वभाव वाले छोटे प्रोफेसर से इतने अलग थे, जैसे हेस्पेराइड्स के फल जंगली झाड़ियों में उगने वाले बेर से अलग होते हैं; जैसे ऊँचे हौसले वाला लेकिन आज्ञाकारी अरबी, असभ्य और जिद्दी "शेल्टी" से अलग होता है। वे मुझे ढूंढ रहे थे, लेकिन अभी तक उस कोने की जाँच नहीं की थी जहाँ स्कूल मास्टर ने मुझे अभी-अभी रखा था। मैं चुप रहा; एक मिनट और देखता रहा।

वह डी हमाल के पास पहुंचा; उसके पास रुका; मुझे लगा कि उसे उसके सिर के ऊपर से देखने में आनंद आ रहा है; डॉ. ब्रेटन भी क्लियोपेट्रा को निहार रहे थे। मुझे संदेह है कि यह उनकी पसंद का था: वह छोटे काउंट की तरह मुस्कुरा नहीं रहे थे; उनका मुंह सलीके से सजा हुआ लग रहा था, आंखें शांत थीं; बिना कुछ कहे वह एक तरफ हट गए, दूसरों को आने का रास्ता देते हुए। अब मैंने देखा कि वह प्रतीक्षा कर रहे थे, और उठकर मैं भी उनके पास चला गया।

हमने गैलरी का एक चक्कर लगाया; ग्राहम के साथ ऐसा चक्कर लगाना बहुत सुखद था। मुझे हमेशा चित्रों या किताबों के बारे में उनकी बातें सुनना बहुत पसंद था; क्योंकि वे खुद को कला पारखी होने का दिखावा किए बिना, हमेशा अपने विचार व्यक्त करते थे, और वे विचार हमेशा ताज़ा होते थे: अक्सर वे सटीक और सारगर्भित भी होते थे। उन्हें कुछ ऐसी बातें बताना भी सुखद था जो उन्हें नहीं पता थीं - वे बड़ी विनम्रता से, सीखने की इच्छा से सुनते थे; उन्हें इस बात की कोई चिंता नहीं होती थी

कि कहीं किसी महिला की अस्पष्ट और हकलाती हुई व्याख्या को सुनने के लिए अपना सुंदर सिर झुकाना उनकी मर्दानगी को ठेस न पहुँचाए। और जब वे बदले में जानकारी देते थे, तो उनकी बुद्धिमत्ता इतनी स्पष्ट होती थी कि उनके सारे शब्द स्मृति में अंकित हो जाते थे; उनके द्वारा दी गई कोई भी व्याख्या, उनके द्वारा बताई गई कोई भी बात, मैं कभी नहीं भूलती थी।

जब हम गैलरी से बाहर निकले, तो मैंने उनसे पूछा कि उन्हें क्लियोपेट्रा कैसी लगी (उन्हें यह बताकर हंसाने के बाद कि प्रोफेसर इमानुएल ने मुझे सही जगह भेजा था, और उन्हें उन प्यारी तस्वीरों की श्रृंखला दिखाने ले गया था जिनकी मुझे सलाह दी गई थी)।

"छी!" उसने कहा। "मेरी माँ ज़्यादा सुंदर महिला है। मैंने कुछ सुना है।"

फ़्रेंच फ़ॉप्स, उधर, उसे 'ले टाइप डू वॉलुप्ट्यूक्स' के रूप में नामित कर रहे हैं; यदि ऐसा है,

मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि 'ले वोलुप्ट्यूक्स' मुझे कुछ खास पसंद नहीं है। इसकी तुलना करें तो...

जिनेवरा के साथ मुलाटो!

अध्याय XX.

संगीत समारोह।

एक सुबह, श्रीमती ब्रेटन तुरंत मेरे कमरे में आईं और मुझसे मेरी दराजें खोलने और उन्हें मेरे कपड़े दिखाने के लिए कहा; जो मैंने बिना कुछ कहे कर दिया।

"बस इतना ही काफी है," उसने उन्हें पलटते हुए कहा। "आपको एक नया चाहिए होगा।"

वह बाहर चली गई। थोड़ी देर बाद वह एक दर्जी के साथ लौटी। उसने मेरा नाप लिया। उसने कहा, "मेरा मतलब है, मैं अपनी पसंद के अनुसार चलना चाहती हूँ, और इस छोटे से मामले में अपनी मर्ज़ी से काम करना चाहती हूँ।"

दो दिन बाद घर लौटी — एक गुलाबी ड्रेस!

मैंने जल्दी से कहा, "यह मेरे लिए नहीं है," मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं किसी उच्च कोटि की चीनी महिला की पोशाक पहनना ज़्यादा पसंद करूंगी।

“हम देखेंगे कि यह तुम्हारे लिए उपयुक्त है या नहीं,” मेरी धर्ममाता ने जवाब दिया और अपने दृढ़ निश्चय के साथ कहा: “मेरी बात याद रखना। तुम्हें इसे आज शाम ही पहनना होगा।”

मैंने सोचा कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए; मैंने सोचा कि कोई भी मानवीय शक्ति मुझे इसे पहनाने में सक्षम नहीं होगी। एक गुलाबी पोशाक! मैं इसे नहीं जानती थी। यह मुझे नहीं जानती थी। मैंने इसे साबित नहीं किया था।

मेरी धर्ममाता ने आदेश दिया कि मुझे उसी रात उनके और ग्राहम के साथ एक संगीत कार्यक्रम में जाना है: उन्होंने बताया कि यह एक भव्य आयोजन था जो प्रमुख संगीत मंडली के विशाल हॉल में होने वाला था। संगीत विद्यालय के सबसे प्रतिभाशाली छात्र प्रस्तुति देने वाले थे; इसके बाद गरीबों के लिए लॉटरी निकाली जानी थी; और सबसे खास बात यह थी कि लाबासेकोर के राजा, रानी और राजकुमार भी उपस्थित रहने वाले थे। ग्राहम ने टिकट भेजते समय शाही परिवार के प्रति सम्मान के रूप में पोशाक पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया था; उन्होंने सात बजे तक समय पर पहुँचने की भी सलाह दी थी।

लगभग छह बजे, मुझे ऊपर ले जाया गया। बिना किसी दबाव के, मैंने खुद को किसी और की इच्छा के अनुसार निर्देशित और प्रभावित पाया, बिना सलाह लिए, बिना मनाए, चुपचाप अनसुना कर दिया गया। संक्षेप में, गुलाबी पोशाक पहन ली गई, जिस पर काले लेस की कुछ परत चढ़ी हुई थी। मुझे भव्य पोशाक में घोषित किया गया और शीशे में देखने का अनुरोध किया गया। मैंने कुछ डर और कांपते हुए ऐसा किया; और भी अधिक डर और कांपते हुए, मैं मुँह फेर लिया। सात बज गए; डॉ. ब्रेटन आ गए थे; मेरी धर्ममाता और मैं नीचे गए। उन्होंने भूरे मखमल का वस्त्र पहना हुआ था; जब मैं उनकी छाया में चल रही थी, तो मुझे उनकी गंभीर, गहरी भव्यता की सिलवटों से कितनी ईर्ष्या हुई! ग्राहम ड्राइंग रूम के दरवाजे पर खड़े थे।

"मुझे उम्मीद है कि वह यह नहीं सोचेगा कि मैंने ध्यान आकर्षित करने के लिए खुद को सजाया-संवारा है," यह मेरी बेचैन सी आकांक्षा थी।

“लो, लूसी, ये कुछ फूल हैं,” उसने मुझे गुलदस्ता देते हुए कहा। उसने मेरी पोशाक पर बस एक प्यारी सी मुस्कान और संतुष्टि भरी सहमति से ध्यान दिया, जिससे मेरी शर्म और उपहास का डर तुरंत शांत हो गया। बाकी, पोशाक बेहद सादगी से बनी थी, उसमें कोई झालर या सजावट नहीं थी; बस उसका हल्का कपड़ा और चमकीला रंग ही मुझे डरा रहा था, और चूंकि ग्राहम को उसमें कुछ भी अटपटा नहीं लगा, इसलिए मेरी आंखें भी जल्द ही उससे सहमत हो गईं।

मुझे लगता है कि जो लोग हर रात सार्वजनिक मनोरंजन स्थलों पर जाते हैं, वे उस ताज़गी भरे उल्लास को शायद ही समझ पाते हैं जिसके साथ ओपेरा या संगीत कार्यक्रम का आनंद वे लोग उठाते हैं जिनके लिए यह एक दुर्लभ अवसर होता है। मुझे यकीन नहीं है कि संगीत कार्यक्रम से मुझे बहुत आनंद की उम्मीद थी, क्योंकि मुझे इसके बारे में बहुत कम जानकारी थी, लेकिन मुझे वहाँ तक का सफर बहुत अच्छा लगा। ठंडी, लेकिन सुहावनी रात में बंद गाड़ी का आरामदायक सफर, हंसमुख और मित्रवत साथियों के साथ निकलने का आनंद, सड़क पर चलते हुए पेड़ों के बीच से टिमटिमाते तारों का नजारा; फिर खुली गाड़ी में उतरते ही रात के आसमान का खुलापन, शहर के द्वारों से गुजरना, वहाँ जलती हुई बत्तियाँ, तैनात पहरेदार, निरीक्षण का बहाना, जिसे हमने स्वीकार किया और जिसने हमें बहुत आनंदित किया - इन सभी छोटी-छोटी बातों में, अपनी नवीनता के कारण, मेरे लिए एक अनोखा रोमांच था। इसमें से कितना मेरे चारों ओर फैली मित्रता के माहौल के कारण था, यह मैं नहीं जानता: डॉ. जॉन और उनकी माँ दोनों ही बहुत अच्छे मूड में थे, पूरे रास्ते एक-दूसरे से जोशपूर्वक बहस करते रहे, और मेरे प्रति उतने ही खुले दिल से दयालु थे मानो मैं उनके परिवार का सदस्य होता।

हमारा रास्ता विलेट की कुछ बेहतरीन गलियों से होकर गुज़रता था, जो जगमगाती रोशनी से भरी थीं और दोपहर के समय की तुलना में कहीं अधिक जीवंत थीं। दुकानें कितनी शानदार लग रही थीं! चौड़े फुटपाथ पर जीवन की धारा कितनी प्रसन्न, प्रसन्न और भरपूर बह रही थी! देखते ही मुझे रू फॉसेट की याद आ गई - चारदीवारी वाले बगीचे और स्कूल-भवन की, और उन अंधेरे, विशाल "कक्षाओं" की, जहाँ ठीक इसी समय, मेरी आदत थी कि मैं अकेले घूमता, ऊँची, बिना पर्दों वाली खिड़कियों से तारों

को निहारता, और भोजन कक्ष में नीरसता से "लेक्चर पियूज़" (पाठक की किताब) पढ़ रहे पाठक की दूर से आती आवाज़ सुनता। मुझे जल्द ही फिर से इसी तरह सुनना और घूमना होगा; और भविष्य की यह छाया समयोचित गंभीरता के साथ इस उज्ज्वल वर्तमान पर छा गई।

तब तक हम गाड़ियों के एक ऐसे काफिले में शामिल हो चुके थे जो सभी एक ही दिशा में जा रही थीं, और जल्द ही हमारे सामने एक विशाल रोशन इमारत का अग्रभाग चमक उठा। इस इमारत के अंदर मुझे क्या देखने को मिलेगा, इसका मुझे पहले ही अस्पष्ट अंदाजा था; क्योंकि सार्वजनिक मनोरंजन के किसी भी स्थान पर जाने का सौभाग्य मुझे पहले कभी नहीं मिला था।

हम एक बरामदे के नीचे उतरे जहाँ बहुत चहल-पहल और भीड़ थी, लेकिन मुझे आगे की बातें स्पष्ट रूप से याद नहीं हैं, जब तक कि मैंने खुद को एक भव्य सीढ़ी पर चढ़ते हुए नहीं पाया जो चौड़ी और चढ़ने में आसान थी, गहरे और मुलायम लाल रंग के कालीन से ढकी हुई थी, जो बड़े दरवाजों तक जाती थी जो गंभीरता से बंद थे, और जिनके पैनल भी लाल रंग से ढके हुए थे।

मुझे शायद ही पता चला कि ये दरवाजे किस जादू से खुल गए थे - डॉ. जॉन ने ये सब किया था; लेकिन वे खुल गए और भीतर एक भव्य, विशाल और ऊँचा हॉल दिखाई दिया, जिसकी गोलाकार दीवारें और गुंबदनुमा खोखली छत मुझे मानो मृत सोने जैसी लग रही थीं (उसे बड़ी ही कलात्मकता से रंगा गया था), जिस पर कॉर्निसिंग, फ्लूटिंग और मालाओं की सजावट थी, जो या तो चमकीले सोने की तरह चमकदार थीं, या अलबास्टर की तरह बर्फ़-सफ़ेद, या सुनहरे पत्तों और बेदाग लिली के हारों में सफेद और सोने का मिश्रण थीं: जहाँ कहीं भी पर्दे लटके थे, जहाँ कहीं भी कालीन बिछे थे, या तकिए रखे थे, वहाँ केवल गहरा लाल रंग ही इस्तेमाल किया गया था। गुंबद से एक ऐसी वस्तु लटक रही थी जिसने मुझे चकाचौंध कर दिया - मुझे लगा, वह चट्टानी क्रिस्टल की वस्तु थी, जो फलकों से जगमगा रही थी, बूंदों से बह रही थी, तारों से जगमगा रही थी, और पिघले हुए रत्नों की ओस या इंद्रधनुष के टुकड़ों से खूबसूरती से रंगी हुई थी। पाठक, यह तो केवल झूमर ही था, लेकिन मुझे ऐसा लगा मानो यह पूर्वी देवताओं का काम हो: मैंने लगभग यह देखने की कोशिश की कि कहीं कोई विशाल, काला, बादल जैसा हाथ - दीपक के दास का हाथ - गुंबद के चमकदार और सुगंधित वातावरण में मंडरा तो नहीं रहा है, जो इसके अद्भुत खजाने की

रक्षा कर रहा हो।

हम आगे बढ़ गए—मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि हम कहाँ जा रहे हैं—लेकिन एक मोड़ पर अचानक हमारी नज़र विपरीत दिशा से आती हुई एक और टोली पर पड़ी। अभी-अभी मुझे वह समूह दिखाई दिया, मानो एक पल के लिए मेरी आँखों के सामने से गुजरा हो। गहरे मखमली वस्त्र पहने एक खूबसूरत अधेड़ उम्र की महिला; एक सज्जन जो शायद उनका बेटा था—मैंने सोचा, अब तक का सबसे सुंदर चेहरा, सबसे आकर्षक कद-काठी; एक तीसरा व्यक्ति गुलाबी पोशाक और काले लेस वाले लबादे में।

मैंने उन सभी को देखा—तीसरे व्यक्ति को भी और बाकी दो को भी—और एक पल के लिए मुझे लगा कि वे सब अजनबी हैं, इस तरह मुझे उनके रूप-रंग का निष्पक्ष आभास हुआ। लेकिन यह आभास मुश्किल से ही महसूस हुआ और स्थिर नहीं हुआ, इससे पहले कि मुझे यह एहसास हुआ कि मैं एक विशाल दर्पण के सामने खड़ा हूँ, जो दो खंभों के बीच के एक हिस्से को भर रहा है, और इस एहसास ने उसे दूर कर दिया: यह हमारा अपना ही समूह था। इस प्रकार, अपने जीवन में पहली बार, और शायद एकमात्र बार, मुझे स्वयं को दूसरों की नज़रों से देखने का "उपहार" प्राप्त हुआ। परिणाम पर विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसने कलह का एक झंझट, पछतावे की एक कसक पैदा कर दी; यह सुखद नहीं था, फिर भी, आखिरकार, मुझे आभारी होना चाहिए; यह और भी बुरा हो सकता था।

अंततः, हमें ऐसी जगहें मिल गईं जहाँ से उस विशाल और चकाचौंध भरे, लेकिन गर्मजोशी और आनंद से भरपूर हॉल का अच्छा नज़ारा दिखाई दे रहा था। हॉल पहले से ही भरा हुआ था, और एक शानदार समूह से भरा हुआ था। मुझे नहीं पता कि वे महिलाएं बहुत सुंदर थीं, लेकिन उनके कपड़े इतने उत्तम थे; और विदेशी, यहाँ तक कि वे भी जो घरेलू एकांत में भद्दे लगते हैं, सार्वजनिक रूप से शालीन दिखने की कला जानते हैं: चाहे पेग्नॉयर और पैपिलोट से जुड़े उनके रोजमर्रा के और घरेलू हाव-भाव कितने भी भद्दे और शोरगुल भरे क्यों न हों, उनके चेहरे पर एक लचक, एक झुकाव, सिर और बाहों का एक विशेष भाव, मुँह और आँखों का एक विशेष भाव होता है, जिसे विशेष अवसरों के लिए सहेज कर रखा जाता है - हमेशा भव्य श्रृंगार के साथ प्रकट किया जाता है, और "पार्यूर" के साथ विधिवत सजाया जाता है।

यहाँ-वहाँ कुछ सुंदर आकृतियाँ थीं, एक विशिष्ट सौंदर्य शैली की मिसालें; एक ऐसी

शैली, जो मेरे विचार से इंग्लैंड में पहले कभी नहीं देखी गई; एक ठोस, दृढ़, मूर्तिकला शैली। इन आकृतियों में कोई कोण नहीं हैं: संगमरमर की एक कैरिएटिड लगभग उतनी ही लचीली होती है; एक फिडियन देवी एक निश्चित शांत और राजसी रूप में इतनी परिपूर्ण नहीं होती। उनमें वे विशेषताएं हैं जो डच चित्रकार अपनी मैडोनाओं को देते हैं: निचले इलाकों की क्लासिक विशेषताएं, नियमित लेकिन गोल, सीधी लेकिन स्थिर; और उनकी भावहीन शांति, भावहीन स्थिरता की गहराई के लिए, केवल एक ध्रुवीय बर्फीला मैदान ही एक आदर्श उदाहरण हो सकता है। इस श्रेणी की महिलाओं को किसी आभूषण की आवश्यकता नहीं होती, और वे शायद ही कभी कोई आभूषण पहनती हैं; चिकने बाल, घनी चोटी में गुंथे हुए, चिकने गाल और माथे के साथ पर्याप्त विपरीतता प्रदान करते हैं; पोशाक बहुत सरल नहीं हो सकती; गोल भुजा और परिपूर्ण गर्दन को न तो कंगन की आवश्यकता होती है और न ही चेन की।

एक बार मुझे इन्हीं सुंदरियों में से एक के साथ पूर्ण रूप से परिचित होने का सौभाग्य और आनंद प्राप्त हुआ था: उसके भीतर निहित गहरे, स्थिर प्रेम की शक्ति अद्भुत थी; इसकी तुलना केवल किसी अन्य जीवित प्राणी के प्रति उसकी अभिमानी अक्षमता से ही की जा सकती थी। उसकी ठंडी नसों में रक्त का प्रवाह न के बराबर था; शांत लसीका उसकी धमनियों में भरा हुआ था और लगभग उन्हें अवरुद्ध कर रहा था।

मैंने जिस जूनो का वर्णन किया है, वह हमारे सामने पूरी तरह से बैठी थी - मानो सबकी निगाहों का केंद्र हो, और इस बात से भली-भांति अवगत थी कि वह ऐसी ही है, लेकिन निगाहों या नज़र के चुंबकीय प्रभाव से अप्रभावित थी: ठंडी, गोल, सुनहरे बालों वाली, और उस सफेद स्तंभ की तरह सुंदर, जिसके शीर्ष पर सोने की परत चढ़ी थी, जो उसके बगल में खड़ा था।

मैंने देखा कि डॉ. जॉन का ध्यान उस महिला की ओर बहुत आकर्षित हो रहा था, इसलिए मैंने धीमी आवाज़ में उनसे विनती की, "ईश्वर की कृपा से अपने हृदय की रक्षा करो। तुम्हें उस महिला से प्रेम नहीं करना चाहिए," मैंने कहा, "क्योंकि मैं तुम्हें पहले ही बता देता हूँ, तुम उसके चरणों में मर सकते हो, और वह तुम्हें फिर कभी प्रेम नहीं करेगी।"

"बहुत खूब," उसने कहा, "और आपको कैसे पता कि उसकी घोर असंवेदनशीलता का तमाशा मेरे लिए श्रद्धा का सबसे बड़ा कारण नहीं हो सकता?

मुझे लगता है कि हताशा का दर्द मेरी भावनाओं को बहुत उत्तेजित करता है: लेकिन" (कंधे उचकाते हुए) "आपको इन सब बातों का कुछ पता नहीं; मैं अपनी माँ से बात करूँगा। माँ, मैं बहुत मुश्किल में हूँ।"

"जैसे कि मुझे इसमें कोई दिलचस्पी हो!" श्रीमती ब्रेटन ने कहा।

"हाय! मेरी किस्मत कितनी क्रूर है!" उसके बेटे ने जवाब दिया। "किसी भी आदमी की माँ मेरी माँ से ज़्यादा भावहीन नहीं हो सकती: उसे कभी यह ख्याल ही नहीं आता कि बहू होने के नाते उस पर ऐसी विपत्ति आ सकती है।"

"अगर मैं ऐसा नहीं करती, तो इसका कारण यह नहीं है कि मेरे सिर पर वही विपत्ति मंडरा नहीं रही है: तुमने पिछले दस सालों से मुझे उसी से धमकाया है। 'मम्मा, मेरी जल्द ही शादी होने वाली है!' यह चीख तब सुनाई देती थी जब तुम्हारे जैकेट पहनने के दिन भी पूरी तरह से खत्म नहीं हुए थे।"

"पर, माँ, एक दिन ऐसा अवश्य होगा। अचानक, जब तुम सोचोगी कि तुम सबसे सुरक्षित हो, मैं याकूब या एसाव या किसी अन्य कुलपति की तरह निकलूँगा और अपने लिए एक पत्नी लाऊँगा: शायद इस देश की पुत्रियों में से ही कोई।"

"अपने जोखिम पर, जॉन ग्राहम! बस इतना ही।"

"मेरी ये माँ मुझे बूढ़ा कुंवारा ही रखना चाहती है। कितनी ईर्ष्यालु बुढ़िया है ये! लेकिन अब ज़रा उस खूबसूरत महिला को देखो, जिसने हल्के नीले रंग की सैटिन की पोशाक पहनी है, और उसके बाल हल्के भूरे रंग के हैं, जिन पर उसकी पोशाक की तरह ही सैटिन की चमक है। माँ, अगर मैं उस देवी को किसी दिन घर ले आऊँ और तुम्हें श्रीमती ब्रेटन जूनियर के रूप में मिलवाऊँ, तो क्या तुम्हें गर्व नहीं होगा?"

"तुम ला टेरेस में कोई देवी नहीं लाओगे: वह छोटा सा महल दो रखेलों को नहीं समा पाएगा; खासकर अगर दूसरी उस लकड़ी, मोम, चमड़े और साटन से बनी विशाल गुड़िया की तरह कद, आकार और परिधि वाली हो।"

"मम्मी, वो आपकी नीली कुर्सी पर कितनी खूबसूरती से बैठेगी!"

"मेरी कुर्सी भरोगे? मैं विदेशी हथियाने वाले को चुनौती देता हूँ! उसके लिए यह कुर्सी दुखद ही होगी: लेकिन चुप रहो, जॉन ग्राहम! अपनी ज़बान पर लगाम रखो, और अपनी आँखों का इस्तेमाल करो।"

उपरोक्त झड़प के दौरान, हॉल, जो मुझे प्रवेश द्वार पर भरा हुआ लग रहा था, लगातार लोगों के समूहों को अंदर आने देता रहा, यहाँ तक कि मंच के सामने का

अर्धवृत्ताकार भाग फर्श से छत तक फैले हुए लोगों के घने समूह में तब्दील हो गया। मंच, या यूँ कहें कि चौड़ा अस्थायी मंच, जो आधे घंटे पहले किसी भी मंच से बड़ा था, अब जीवन से भरपूर था; केंद्र के आसपास रखे दो भव्य पियानो के चारों ओर, संगीत विद्यालय की छात्राओं का एक सफेद झुंड चुपचाप इकट्ठा हो गया था। मैंने उनके इकट्ठा होने पर तब ध्यान दिया था जब ग्राहम और उसकी माँ नीले साटन की सुंदरी के बारे में चर्चा कर रहे थे, और मैंने उन्हें तैयार करने और व्यवस्थित करने की प्रक्रिया को दिलचस्पी से देखा था। दो सज्जन, जिनमें से प्रत्येक में मैंने एक परिचित को पहचाना, इस नए समूह का नेतृत्व कर रहे थे। एक, कलात्मक दिखने वाला, दाढ़ी वाला और लंबे बालों वाला व्यक्ति, एक प्रसिद्ध पियानोवादक था, और विलेट का पहला संगीत शिक्षक भी था; वह सप्ताह में दो बार मैडम बेक के पेंशननेट में उपस्थित होते थे, जहाँ वे उन कुछ विद्यार्थियों को पढ़ाते थे जिनके माता-पिता इतने धनी थे कि अपनी बेटियों को उनकी शिक्षा प्राप्त करने का विशेषाधिकार दे सकें; उनका नाम एम. जोसेफ इमानुएल था, और वे एम. पॉल के सौतेले भाई थे: यह प्रभावशाली व्यक्तित्व अब दूसरे सज्जन के व्यक्तित्व में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

एम. पॉल ने मुझे खूब हंसाया; उन्हें देखते हुए मैं मन ही मन मुस्कुराया, वे अपने ही अंदाज़ में थे—एक विशाल और भव्य सभा के बीच खड़े होकर, लगभग सौ युवतियों को व्यवस्थित कर रहे थे, उन्हें नियंत्रित कर रहे थे और उन पर अपना दबदबा बनाए हुए थे। वे पूरी तरह गंभीर थे—ऊर्जावान, एकाग्र और सबसे बढ़कर, पूर्ण निश्चयी: फिर भी उनका वहाँ क्या काम था? संगीत या संगीत विद्यालय से उनका क्या लेना-देना था—जो एक सुर को दूसरे से अलग भी नहीं पहचान पाते थे? मैं जानता था कि दिखावे और अधिकार के प्रति उनके प्रेम ने ही उन्हें वहाँ पहुँचाया था—यह प्रेम आपत्तिजनक नहीं था, बस इसलिए कि यह भोला था। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि उनके भाई, एम. जोसेफ, भी उतने ही उनके वश में थे जितनी कि लड़कियाँ। एम. पॉल जैसा धूर्त और चालाक आदमी तो कभी हुआ ही नहीं! कुछ ही देर में, कुछ प्रसिद्ध गायक और संगीतकार मंच पर आ गए: जैसे ही ये सितारे चमके, धूमकेतु की तरह चमकते हुए प्रोफेसर अस्त हो गए। उन्हें हर तरह की शोहरत और प्रसिद्धि असहनीय थी: जहाँ वे चमक नहीं सकते थे, वहाँ से वे भाग जाते थे।

और अब सब कुछ तैयार था: लेकिन हॉल का एक हिस्सा अभी भी भरा जाना बाकी था - एक ऐसा हिस्सा जो भव्य सीढ़ियों और दरवाजों की तरह गहरे लाल रंग से

ढका हुआ था, जिसमें गद्देदार बेंचें लगी हुई थीं, जो दो शाही कुर्सियों के दोनों ओर कतार में लगी थीं, जिन्हें एक चंदवा के नीचे गरिमापूर्ण ढंग से रखा गया था।

एक संकेत दिया गया, दरवाजे खुल गए, सभा खड़ी हो गई, ऑर्केस्ट्रा बजने लगा, और एक मधुर गायन के साथ राजा, रानी और लाबासेकोर का दरबार प्रवेश कर गया।

तब तक मैंने कभी किसी जीवित राजा या रानी को नहीं देखा था; इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यूरोपीय राजसी ठाठ-बाठ के इन नमूनों को देखने के लिए मुझे अपनी दृष्टि शक्ति पर कितना ज़ोर डालना पड़ा होगा। किसी भी व्यक्ति को जब पहली बार किसी राजसी व्यक्ति को देखता है, तो उसके मन में एक अस्पष्ट आश्चर्य और निराशा का भाव अवश्य होता है कि वह स्थायी रूप से सिंहासन पर विराजमान, मुकुट पहने और राजदंड धारण किए हुए नहीं है। राजा और रानी की तलाश में, जब मैंने केवल एक अधेड़ उम्र के सैनिक और एक अपेक्षाकृत युवा महिला को देखा, तो मुझे आधा ठगा हुआ और आधा प्रसन्न महसूस हुआ।

मुझे वह राजा अच्छी तरह याद है— पचास साल का एक आदमी, थोड़ा झुका हुआ, थोड़ा सा बूढ़ा: उस पूरी सभा में कोई भी चेहरा उससे मिलता-जुलता नहीं था। मैंने उसके स्वभाव या आदतों के बारे में कभी पढ़ा नहीं था, न ही मुझे कभी कुछ बताया गया था; और शुरू में उसके माथे पर, उसकी आँखों के चारों ओर, उसके मुँह के पास लोहे की कलम से खुदे हुए मजबूत चित्रलिपि ने मेरी सहज बुद्धि को उलझन में डाल दिया। हालाँकि, जल्द ही, अगर मैं नहीं जानता था, तो कम से कम मैंने महसूस किया, उन अक्षरों का अर्थ जो बिना हाथ से लिखे गए थे। वहाँ एक मौन पीड़ित बैठा था— एक घबराया हुआ, उदास आदमी। उन आँखों ने एक खास भूत के दर्शन देखे थे— उस सबसे अजीब प्रेत, हाइपोकॉन्ड्रिया के आने-जाने का लंबे समय से इंतजार किया था। शायद उसने उसे अब उस मंच पर, अपने सामने, उस चमकदार भीड़ के बीच देखा होगा। हाइपोकॉन्ड्रिया की यही आदत है, हजारों के बीच उठना— किस्मत की तरह काली, बीमारी की तरह पीली, और लगभग मौत की तरह ताकतवर। उसका साथी और शिकार एक पल के लिए खुश होने का सोचता है— "ऐसा नहीं है," वह कहती है; “मैं आती हूँ।” और वह उसके दिल में खून जमा देती है, और उसकी आँखों की रोशनी को धुंधला कर देती है।

कुछ लोग कह सकते हैं कि विदेशी राजमुकुट के दबाव से राजा के माथे पर वह अजीब और पीड़ादायक शिकन आ गई थी; कुछ लोग बचपन में हुए किसी प्रियजन

की मृत्यु के प्रभाव का हवाला दे सकते हैं। इन दोनों में कुछ सच्चाई हो सकती है; लेकिन ये बातें मानवता के सबसे बड़े शत्रु - जन्मजात उदासी - से और भी कड़वी हो जाती हैं। उनकी पत्नी, रानी, यह जानती थीं: मुझे ऐसा लगा जैसे उनके पति के दुःख की झलक, एक दबी हुई छाया की तरह, उनके सौम्य चेहरे पर दिखाई दे रही थी। वह राजकुमारी एक सौम्य, विचारशील और शालीन महिला प्रतीत होती थीं; सुंदर नहीं, उन महिलाओं जैसी बिलकुल नहीं जिनका वर्णन कुछ पन्ने पहले किया गया था, जिनमें ठोस आकर्षण और भाव-भंगिमाएँ थीं। उनका शरीर कुछ दुबला-पतला था; उनके चेहरे की बनावट, यद्यपि काफी विशिष्ट थी, फिर भी उसमें राजसी राजवंशों और शाही वंशों की झलक थी, जिससे पूर्ण आनंद नहीं मिलता था। उस चेहरे पर जो भाव थे, वे इस समय सुखद थे; लेकिन आप उन्हें उन याद की गई मूर्तियों से जोड़ने से बच नहीं सकते थे, जहाँ इसी तरह के भाव, नीच, दुर्बल, कामुक या धूर्त जैसे भावों में दिखाई देते थे। लेकिन रानी की नज़रें केवल अपनी थीं; और दया, अच्छाई, मधुर सहानुभूति ने उन्हें दिव्य प्रकाश से भर दिया था। वह किसी शासक की तरह नहीं, बल्कि एक दयालु, प्रेममयी और शालीन महिला की तरह लग रही थीं। उनका छोटा बेटा, प्रिंस ऑफ लाबासेकोर, और युवा ड्यूक डी डिंडोनो, उनके साथ थे: वह अपनी माँ की गोद में सिर रखकर बैठा था; और उस शाम के दौरान, मैंने बार-बार देखा कि वह अपने बगल में बैठे राजा को ध्यान से देख रही थीं, उनकी खोई हुई तल्लीनता को समझ रही थीं, और उनका ध्यान अपने बेटे की ओर खींचकर उन्हें जगाने की कोशिश कर रही थीं। वह अक्सर अपना सिर झुकाकर लड़के की बातें सुनतीं, और फिर मुस्कुराते हुए उन्हें उसके पिता को बतातीं। उदास राजा चौंकते, सुनते, मुस्कुराते, लेकिन जैसे ही उनका बेटा बोलना बंद करता, वे फिर से उसी उदासी में डूब जाते। वह दृश्य अत्यंत दुखद और अर्थपूर्ण था! इसका कारण यह भी है कि लाबासेकोर के अभिजात वर्ग और ईमानदार बुर्जुआ वर्ग दोनों के लिए, इसकी विशिष्टता पूरी तरह से अदृश्य प्रतीत होती थी: मुझे यह पता नहीं चल सका कि उपस्थित किसी भी व्यक्ति पर इसका कोई प्रभाव पड़ा हो या वह इससे प्रभावित हुआ हो।

राजा और रानी अपने दरबार में प्रवेश कर चुके थे, जिसमें दो-तीन विदेशी राजदूत भी शामिल थे; उनके साथ विलेट में रहने वाले विदेशियों का कुलीन वर्ग भी आया था। उन्होंने लाल रंग की बेंचों पर कब्जा कर लिया; महिलाएं बैठ गईं; अधिकांश पुरुष खड़े रहे: पृष्ठभूमि में उनकी सांवली वर्दी, सामने प्रदर्शित वैभव के लिए एक गहरे आवरण

की तरह लग रही थी। यह वैभव भी प्रकाश, छाया और विभिन्न स्तरों से रहित नहीं था: मध्य दूरी मखमल और साटन के वस्त्रों, पंखों और रत्नों से सजी महिलाओं से भरी हुई थी; रानी के दाहिनी ओर, अग्रभूमि में बेंचें विशेष रूप से युवा लड़कियों के लिए समर्पित प्रतीत होती थीं, जो विलेट अभिजात वर्ग का फूल - शायद, मुझे कहना चाहिए, कली - थीं। यहाँ न तो गहने थे, न सिर के आभूषण, न मखमली आवरण या रेशमी चमक; पवित्रता, सादगी और दिव्य सुंदरता उस कुंवारी टोली में व्याप्त थी। सरल गुंथे बालों वाली युवा लड़कियाँ, और सुंदर काया (मैं उन्हें अप्सरा जैसी काया कहने वाला था, पर यह बिल्कुल गलत होता: इनमें से कई "युवा लड़कियाँ," जिनकी उम्र सोलह या सत्रह वर्ष से अधिक नहीं थी, उनकी काया पच्चीस वर्षीय हृष्ट-पुष्ट अंग्रेज़ महिला के समान सुगठित और सुडौल थी) - सफेद, हल्के गुलाबी या शांत नीले वस्त्रों में लिपटी सुंदर काया स्वर्ग और देवदूतों की याद दिलाती थी। मैं ऐसी ही कुछ "गुलाबी और सफेद" रंग की सुंदरियों को जानता था। यहाँ मैडम बेक की दो पूर्व छात्राएँ थीं - सुश्री मैथिल्डे और एंजेलिक: वे छात्राएँ जो स्कूल के अपने अंतिम वर्ष में प्रथम श्रेणी में होनी चाहिए थीं, लेकिन उनकी बुद्धि उन्हें द्वितीय श्रेणी से आगे नहीं ले जा सकी। अंग्रेज़ी में वे मेरी देखरेख में थीं, और उन्हें 'द विकार ऑफ़ वेकफ़ील्ड' के एक पृष्ठ का तर्कसंगत अनुवाद करवाना कठिन परिश्रम था। तीन महीनों के दौरान, उनमें से एक मेरी सहपाठी के रूप में भोजन करती थी, और वह दोपहर के भोजन में जितनी मात्रा में घर की बनी रोटी, मक्खन और पके हुए फल खाती थी, वह सचमुच आश्चर्यजनक था - इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह थी कि वह बचे हुए टुकड़े अपनी जेब में रख लेती थी। ये कुछ सच्चाईयां हैं - और वो भी अच्छी सच्चाईयां।

मैं इन देवदूतों में से एक और को जानता था—जो सबसे सुंदर थी, या कम से कम, सबसे कम संकोची और दिखावटी लग रही थी: वह एक अंग्रेज रईस की बेटी के बगल में बैठी थी, जो ईमानदार थी, हालांकि अभिमानी लग रही थी: दोनों ब्रिटिश दूतावास के सुइट में दाखिल हुई थीं। उसका (यानी मेरी परिचित का) दुबला-पतला, लचीला शरीर था, विदेशी युवतियों के शरीर से बिलकुल अलग: उसके बाल भी रेशम की टोपी या खोल की तरह घने गुंथे हुए नहीं थे; वे बालों जैसे दिखते थे, और उसके सिर से लहराते हुए लंबे, घुंघराले और बहते हुए लग रहे थे। वह बहुत बातें कर रही थी, और अपने आप पर और अपनी स्थिति पर एक हल्के-फुल्के संतोष से भरी हुई लग रही थी। मैंने डॉ. ब्रेटन की ओर नहीं देखा; लेकिन मैं जानता था कि वह भी

जिनेवरा फैंसहावे को देख रहे थे: वह इतने शांत हो गए थे, अपनी माँ की बातों का जवाब इतने संक्षिप्त में दे रहे थे, और अक्सर आह को दबा रहे थे। उन्हें आह क्यों भरनी चाहिए थी? उन्होंने कठिनाइयों में प्रेम की खोज के प्रति अपने लगाव को स्वीकार किया था; यहाँ उनकी यह इच्छा पूरी तरह से संतुष्ट हो रही थी। उनकी प्रेमिका उन पर एक अलग ही दुनिया से मोहित थीं: वे उनके पास नहीं जा सकते थे; उन्हें यकीन नहीं था कि वे उनसे एक नज़र भी पा सकेंगे। मैं यह देखने के लिए प्रतीक्षा कर रहा था कि क्या वह उन पर इतनी कृपा करेंगी। हमारी सीट लाल रंग की बेंचों से ज़्यादा दूर नहीं थी; मिस फैंसहावे जैसी तेज़ और चौकस निगाहों से हमें वहाँ से ज़रूर देखा जा सकता था, और बहुत जल्द उनकी निगाहें हम पर टिक गईं: कम से कम डॉ. और श्रीमती ब्रेटन पर। मैं पहचाने जाने से बचने के लिए छाया में और नज़रों से ओझल रहा: उन्होंने डॉ. जॉन को स्थिर निगाहों से देखा, और फिर उनकी माँ को देखने के लिए एक गिलास उठाया; एक-दो मिनट बाद उन्होंने हँसते हुए अपने पड़ोसी के बारे में फुसफुसाया; प्रदर्शन शुरू होते ही, उनका ध्यान मंच की ओर चला गया।

कॉन्सर्ट के बारे में मुझे ज्यादा विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है; पाठक को मेरी राय जानने में कोई रुचि नहीं होगी; और वास्तव में, उन्हें दर्ज करना भी व्यर्थ होगा, क्योंकि वे घोर अज्ञानता पर आधारित विचार थे। संगीत विद्यालय की युवतियाँ बहुत डरी हुई थीं और उन्होंने दो भव्य पियानो पर कांपते हुए प्रदर्शन किया। एम. जोसेफ इमानुएल उनके पास खड़े रहे जब वे बजा रही थीं; लेकिन उनमें अपने रिश्तेदार जैसी सूझबूझ या प्रभाव नहीं था, जो ऐसी ही परिस्थितियों में अपने विद्यार्थियों को निश्चित रूप से वीरता और आत्म-संयम के साथ व्यवहार करने के लिए प्रेरित करते। एम. पॉल ने उन्मादी युवतियों को दो तरफा संकट में डाल दिया होता - दर्शकों का भय और स्वयं का भय - और बाद वाले भय को कहीं अधिक बढ़ाकर उन्हें हताशा का साहस प्रदान किया होता: एम. जोसेफ ऐसा नहीं कर सके।

सफेद मलमल के पियानोवादकों के पीछे, सफेद साटन के वस्त्र पहने एक सुंदर, सजी-धजी, रूठी हुई महिला आई। उसने गाना गाया। उसका गायन मुझ पर किसी जादूगर के करतबों की तरह असर कर गया: मैं हैरान था कि वह यह कैसे करती है - कैसे वह अपनी आवाज़ को ऊपर-नीचे करती है, और ऐसे अद्भुत करतब दिखाती है; लेकिन एक साधारण स्कॉटिश धुन, जिसे एक असभ्य गली के गायक ने बजाया हो, अक्सर मुझे इससे कहीं अधिक गहराई से प्रभावित करती है।

इसके बाद एक सज्जन आगे आए, जो राजा और रानी की ओर झुकते हुए, अपने सफेद दस्ताने वाले हाथ को बार-बार अपने हृदय के पास ले जाते हुए, एक "झूठी इसाबेल" के खिलाफ़ कड़वी बातें कहने लगे। मुझे लगा कि वे विशेष रूप से रानी की सहानुभूति पाने की कोशिश कर रहे थे; लेकिन, अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो महारानी ने दिलचस्पी की गंभीरता के बजाय शिष्टाचार के शांत भाव से उनकी बात सुनी। इस सज्जन की मानसिक स्थिति बहुत ही दयनीय थी, और मुझे खुशी हुई जब उन्होंने अपनी संगीतमय प्रस्तुति समाप्त की।

कुछ जोशीले गायनों ने मुझे शाम के मनोरंजन का सबसे अच्छा हिस्सा लगा। वहाँ सभी बेहतरीन प्रांतीय गायन मंडलियों के प्रतिनिधि उपस्थित थे; सच्चे, तगड़े, लाबासेकोरियन मूल निवासी। इन प्रतिभाशाली लोगों ने बिना किसी संकोच के अपनी पूरी लगन से गायन किया और उनके इस प्रयास का कम से कम यह अच्छा परिणाम निकला कि कानों को शक्ति का एक संतोषजनक अनुभव प्राप्त हुआ।

पूरे प्रदर्शन के दौरान— संकोची वाद्य युगल गीत, अभिमानी एकल गायन, सुरीले और जोशीले गायन—मेरी नज़र मंच पर टिकी रही, मेरी एक आँख और एक कान डॉ. ब्रेटन पर ही केंद्रित रहे: मैं उन्हें भूल नहीं सका, और न ही यह सवाल करना बंद कर सका कि वे कैसा महसूस कर रहे थे, क्या सोच रहे थे, क्या वे आनंदित थे या नहीं। अंत में उन्होंने बोलना शुरू किया।

“और तुम्हें ये सब कैसा लग रहा है, लूसी? तुम तो बहुत शांत हो,” उसने अपने हंसमुख लहजे में कहा।

मैंने कहा, "मैं चुप हूँ, क्योंकि मुझे बहुत ज़्यादा दिलचस्पी है: न केवल संगीत में, बल्कि अपने आस-पास की हर चीज़ में।"

फिर उन्होंने इतनी शांति और संयम से कुछ और बातें कहीं कि मुझे लगने लगा कि उन्होंने सचमुच वह नहीं देखा जो मैंने देखा था, और मैंने फुसफुसाकर कहा - "मिस फैंसहावे यहाँ हैं: क्या आपने उन्हें देखा है?"

“ओह, हाँ! और मैंने देखा कि आपने भी उसे नोटिस किया था?”

"क्या आपको लगता है कि वह श्रीमती चोलमोंडली के साथ आई हैं?"

"श्रीमती चोलमोंडली एक भव्य दल के साथ वहाँ मौजूद थीं। जी हाँ; जिनेवरा उनके साथ थीं; और श्रीमती चोलमोंडली लेडी — — के साथ थीं, जो रानी के दल में थीं। यदि यह यूरोप के उन छोटे-छोटे दरबारों में से एक न होता, जिनकी औपचारिकताएँ

भी केवल औपचारिकताओं से अधिक नहीं होतीं, और जिनका भव्य समारोह रविवार के पहनावे में सादगी के समान होता है, तो यह सब बहुत ही शानदार लगता।"

"मुझे लगता है जिनेवरा ने तुम्हें देखा था?"

“मैं भी यही सोचता हूँ। जब से आपने अपनी नज़र हटाई है, तब से मैंने कई बार उस पर नज़र रखी है; और मुझे एक छोटे से तमाशे का गवाह बनने का सौभाग्य मिला है जिससे आप बच गए।”

मैंने यह नहीं पूछा कि क्या; मैंने स्वेच्छा से दी जाने वाली जानकारी की प्रतीक्षा की, जो मुझे अभी दी गई।

“मिस फैंशॉ के साथ एक साथी हैं—एक उच्च कोटि की महिला। मैं लेडी सारा को जानता हूँ; उनकी कुलीन माँ ने मुझे पेशेवर काम से बुलाया है। वह स्वाभिमानी लड़की हैं, लेकिन ज़रा भी अभिमानी नहीं हैं, और मुझे संदेह है कि जिनेवरा ने अपने पड़ोसियों को निशाना बनाकर उनकी नज़र में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाई होगी।”

“कौन से पड़ोसी?”

“केवल मैं और मेरी माँ। मेरे लिए तो यह सब बहुत स्वाभाविक है: मुझे लगता है कि युवा बुर्जुआ डॉक्टर से ज़्यादा आसान निशाना और कोई नहीं हो सकता; लेकिन मेरी माँ! मैंने उन्हें पहले कभी इस तरह उपहास का पात्र बनते नहीं देखा। क्या आप जानते हैं, उनके होंठों का टेढ़ापन और व्यंग्यपूर्ण ढंग से ताना मारना, मेरे लिए एक अजीब सा अहसास था।”

“डॉक्टर जॉन, इस बारे में चिंता मत कीजिए: यह व्यर्थ है। अगर जिनेवरा आज रात की तरह चंचल मूड में होती, तो वह उस शांत, गंभीर रानी या उस उदास राजा पर हंसने में जरा भी संकोच नहीं करती। वह दुर्भावना से नहीं, बल्कि सरासर नादानी से प्रेरित है। एक नासमझ स्कूली बच्ची के लिए कुछ भी पवित्र नहीं होता।”

लेकिन आप भूल जाते हैं: मैं मिस फैंसहावे को एक नासमझ स्कूली छात्रा के रूप में देखने का आदी नहीं रहा हूँ। क्या वह मेरी देवी नहीं थीं - मेरे करियर की परी?

“हेम! यही तुम्हारी गलती थी।”

सच कहूँ तो, बिना किसी बनावटी बड़बड़ाहट या काल्पनिक प्रेम प्रसंग के, छह महीने पहले एक पल ऐसा आया था जब मुझे वह दिव्य लगीं। क्या आपको उपहारों के बारे में हमारी बातचीत याद है? उस विषय पर आपसे खुलकर बात नहीं की थी: जिस उत्साह से आपने उस पर चर्चा शुरू की, उससे मुझे आनंद आया। आपकी बातों का

पूरा लाभ उठाने के लिए, मैंने आपको यह सोचने दिया कि मैं वास्तव में जितना अनजान था, उससे कहीं अधिक अनजान हूँ। उपहारों की उस परीक्षा ने ही पहली बार जिनेवरा के नश्वर होने का प्रमाण दिया। फिर भी उनकी सुंदरता का आकर्षण बरकरार रहा: तीन दिन - तीन घंटे पहले, मैं पूरी तरह से उनका वश में था। आज रात जब वह सुंदरता में विजयी होकर मेरे पास से गुजरीं, तो मेरी भावनाओं ने उन्हें नमन किया; एक दुर्भाग्यपूर्ण उपहास के कारण ही मैं आज भी उनका सबसे विनम्र सेवक होता। वह मेरा उपहास कर सकती थीं, और भले ही इससे मुझे ठेस पहुँचती, लेकिन वह मुझे इतनी जल्दी दूर नहीं कर पातीं: मेरे माध्यम से, वह दस वर्षों में भी वह नहीं कर सकती थीं जो उन्होंने एक पल में मेरी माँ के माध्यम से कर दिया।

वह कुछ देर चुप रहा। मैंने डॉ. जॉन की नीली आँखों में इतनी आग और इतनी कम धूप पहले कभी नहीं देखी थी, जितनी अभी देखी।

“लूसी,” उसने फिर से बोलना शुरू किया, “मेरी माँ को ध्यान से देखो, और बिना किसी डर या पक्षपात के बताओ कि वह अब तुम्हें किस रूप में दिखाई देती है।”

"जैसा कि वह हमेशा करती है - एक अंग्रेज, मध्यमवर्गीय भद्र महिला; अच्छी तरह से, हालांकि गंभीर रूप से कपड़े पहने हुए, आदतन दिखावे से मुक्त, स्वभाव से संयमित और हंसमुख।"

“वह मुझे ऐसी ही लगती है—भगवान उसका भला करे! खुशमिजाज लोग माँ के साथ हँस सकते हैं, लेकिन केवल कमजोर लोग ही उस पर हँसेंगे। मेरी सहमति के बिना, कम से कम, उसका उपहास नहीं किया जाएगा; और न ही मेरी—मेरी घृणा—मेरी—के बिना—”

वह रुक गया: और अब समय आ गया था—क्योंकि वह उत्तेजित हो रहा था—ऐसा लग रहा था कि वह ज़रूरत से ज़्यादा उत्तेजित हो रहा था। तब मुझे नहीं पता था कि मिस फैंसहावे के प्रति उसकी नाराज़गी के दो कारण थे। उसके चेहरे की चमक, उसकी नाक के नथुनों का फैलना, उसके सुडौल होंठ पर तिरस्कार से उभरती हुई तीखी मुस्कान, उसे एक नए और प्रभावशाली रूप में दिखा रही थी। फिर भी, स्वभाव से शांत और सौम्य व्यक्ति का यह दुर्लभ जुनून एक सुखद दृश्य नहीं होता; और न ही मुझे उसके मजबूत युवा शरीर में दौड़ रही प्रतिशोध की भावना पसंद आई।

“क्या मैं तुम्हें डराता हूँ, लूसी?” उसने पूछा।

मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप इतने गुस्से में क्यों हैं।

“इसीलिए,” उसने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा। “जिनेवरा न तो कोई पवित्र देवदूत है, न ही कोई शुद्ध मन वाली स्त्री।”

“बकवास! तुम अतिशयोक्ति कर रहे हो: उसमें कोई बड़ी बुराई नहीं है।”

“मेरे लिए तो ये बहुत ज़्यादा है। मैं समझ सकती हूँ कि तुम कहाँ पर अंधी हो। अब इस विषय को छोड़ो। मुझे माँ को चिढ़ाकर अपना मनोरंजन करने दो: मैं कहूँगी कि वो सुस्त पड़ गई हैं। माँ, कृपया खुद को संभालो।”

“जॉन, अगर तुम ठीक से व्यवहार नहीं करोगे तो मैं तुम्हें ज़रूर जगा दूँगा। क्या तुम और लूसी चुप रहोगे, ताकि मैं गाना सुन सकूँ?”

फिर वे एक साथ मिलकर गरजने लगे, जिसकी आड़ में ही पिछली सारी बातचीत हुई थी।

“गाना सुनो, माँ! अब मैं अपने असली स्टड को तुम्हारे नकली ब्रोच के बदले दांव पर लगाता हूँ—”

“मेरा पेस्ट ब्रोच, ग्राहम? अपवित्र लड़के! तुम जानते हो कि यह एक कीमती पत्थर है।”

"अरे! यह तो आपका एक अंधविश्वास है: आपको व्यापार में धोखा दिया गया था।"

“जितना आप सोचते हैं, उससे कहीं कम मामलों में मेरे साथ धोखा हुआ है। जॉन, दरबार की युवतियों से आपकी जान-पहचान कैसे हुई? मैंने पिछले आधे घंटे में उनमें से दो को आपकी ओर काफी ध्यान देते हुए देखा है।”

"काश आप उन्हें न देखते।"

“क्यों नहीं? क्योंकि उनमें से एक व्यंग्यपूर्वक अपना चश्मा मेरी ओर तानती है? वह एक प्यारी, भोली लड़की है: लेकिन क्या आपको डर है कि उसकी हंसी उस बूढ़ी औरत को असहज कर देगी?”

“समझदार, प्रशंसनीय बुढ़िया! माँ, तुम मेरे लिए दस पत्नियों से भी बेहतर हो।”

“जॉन, ज्यादा भावुक मत हो, वरना मैं बेहोश हो जाऊंगी और तुम्हें मुझे उठाकर बाहर ले जाना पड़ेगा; और अगर यह बोझ तुम पर आ पड़ा, तो तुम अपना आखिरी भाषण पलट दोगे और कहोगे, ‘माँ, दस पत्नियाँ भी मुझसे उतनी बुरी नहीं हो सकतीं जितनी तुम हो!’”

* * * * *

कॉन्सर्ट खत्म होते ही, "औ बेनिफिस डेस पुवरेस" लॉटरी का दौर शुरू हुआ: बीच का अंतराल आम तौर पर आराम और बेहद सुखद हलचल से भरा था। मंच से सफेदपोश लोग हट गए; उनकी जगह सज्जनों की एक व्यस्त भीड़ जमा हो गई, जो लॉटरी के लिए व्यवस्था कर रहे थे; और इन सबके बीच - सबसे व्यस्त - वही जानी-पहचानी शख्सियत फिर से दिखाई दी, जो कद में छोटी थी लेकिन फुर्तीली थी, तीन लंबे आदमियों जितनी ऊर्जा और चपलता से भरी हुई। एम. पॉल कैसे काम करते थे! कैसे वे निर्देश देते थे और साथ ही साथ खुद भी पूरी लगन से काम करते थे! आधा दर्जन सहायक उनके इशारे पर पियानो वगैरह हटाने के लिए तत्पर थे; कोई बात नहीं, उन्हें अपनी ताकत भी उनकी ताकत में जोड़नी ही थी। उनकी अत्यधिक सतर्कता आधी झुंझलाहट भरी और आधी हास्यास्पद थी: मेरे मन में मैं इस सारी भागदौड़ को नापसंद और उपहास दोनों कर रहा था। फिर भी, पूर्वाग्रह और झुंझलाहट के बीच, देखते हुए मैं उसकी हर बात और हर काम में एक सुखद भोलापन महसूस करने से खुद को रोक नहीं सका; और न ही मैं उसके चेहरे की कुछ सशक्त विशेषताओं को अनदेखा कर सका, जो अब शांत चेहरों की भीड़ के विपरीत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं: उसकी गहरी, तीव्र दृष्टि, उसका चौड़ा, पीला और भरा हुआ माथा - उसके बेहद लचीले होंठों की गतिशीलता। उसमें बल का शांत भाव नहीं था, लेकिन उसकी गति और जोश उसमें स्पष्ट रूप से मौजूद थे।

इसी बीच पूरा हॉल चहल-पहल से भर गया; अधिकांश लोग उठ खड़े हुए, जो एक सुखद आश्चर्य था; कुछ इधर-उधर टहल रहे थे, सभी बातें कर रहे थे और हंस रहे थे। लाल रंग के गलियारे में एक अलग ही जीवंतता छाई हुई थी। सज्जनों का लंबा समूह टुकड़ों में बंटकर महिलाओं की रंगीन कतार में मिल गया; दो-तीन अधिकारी जैसे दिखने वाले पुरुष राजा के पास आए और उनसे बातचीत करने लगे। रानी अपनी कुर्सी से उठकर युवतियों की कतार के बीच से गुजरीं, जो उनके गुजरते ही खड़ी हो गईं; और मैंने देखा कि वह बारी-बारी से सभी को कुछ न कुछ स्नेहपूर्ण शब्द, नज़र या मुस्कान दे रही थीं। उन्होंने दो सुंदर अंग्रेज़ लड़कियों, लेडी सारा और जिनेवरा फैंसहावे से कई वाक्य कहे; जब वह उनसे विदा हुईं, तो दोनों, और विशेष रूप से जिनेवरा, संतुष्टि से दमक रही थीं। बाद में कई महिलाओं ने उनसे बात की, और सज्जनों का एक छोटा सा समूह उनके चारों ओर इकट्ठा हो गया; इनमें से - जिनेवरा के सबसे

करीब - काउंट डी हमाल खड़े थे।

“यह कमरा घुटन भरी गर्मी से भरा है,” डॉ. ब्रेटन अचानक अधीर होकर उठते हुए बोले। “लूसी – माँ – क्या आप एक पल के लिए ताज़ी हवा में आ सकती हैं?”

"उसके साथ जाओ, लूसी," श्रीमती ब्रेटन ने कहा। "मैं अपनी सीट पर ही रहना पसंद करूंगी।"

मैं भी खुशी-खुशी अपना रखना चाहता था, लेकिन ग्राहम की इच्छा मेरी अपनी इच्छा से अधिक महत्वपूर्ण है; इसलिए मैं उसके साथ गया।

हमें रात की हवा ठंडी लगी; या कम से कम मुझे तो लगी ही: उसे शायद इसका एहसास नहीं हुआ; लेकिन आसमान एकदम शांत था और तारों से भरा आसमान बादलों से रहित था। मैंने फर का शॉल ओढ़ा हुआ था। हम फुटपाथ पर कुछ चक्कर लगाए; एक लैंप के नीचे से गुजरते हुए, ग्राहम की नज़र मुझ पर पड़ी।

"लूसी, तुम उदास लग रही हो: क्या यह मेरी वजह से है?"

मुझे तो बस यही आशंका थी कि आप दुखी होंगे।

“बिल्कुल नहीं: इसलिए खुश रहो—जैसे मैं हूँ। लूसी, जब भी मेरी मृत्यु होगी, मुझे पूरा विश्वास है कि यह दिल की बीमारी से नहीं होगी। मुझे शायद दर्द हो, शायद मैं कुछ समय के लिए उदास लगूँ, लेकिन अभी तक मेरे पूरे शरीर में कोई पीड़ा या भावनात्मक बीमारी नहीं आई है। तुमने मुझे हमेशा घर पर खुशमिजाज ही देखा है?”

"आम तौर पर।"

“मुझे खुशी है कि उसने मेरी माँ पर हँसा। मैं उस बुढ़िया को एक दर्जन सुंदरियों के बदले भी नहीं दे सकता। उस व्यंग्य ने मुझे दुनिया का सारा सुख दिया। धन्यवाद, मिस फैंशॉ!” और उसने अपने लहराते बालों से अपनी टोपी उठाई और बनावटी अंदाज़ में प्रणाम किया।

“हाँ,” उन्होंने कहा, “मैं उनका शुक्रिया अदा करता हूँ। उन्होंने मुझे यह एहसास दिलाया है कि मेरे दिल के दस में से नौ हिस्से हमेशा से बिल्कुल सही-सलामत रहे हैं, और दसवें हिस्से में एक मामूली सी चोट से खून बह गया: एक सुई की चुभन जो पल भर में ठीक हो जाएगी।”

"आप अभी गुस्से में हैं, उत्तेजित और आक्रोशित हैं; कल आप अलग तरह से सोचेंगे और महसूस करेंगे।"

“मैं बहुत गुस्से में था! तुम मुझे नहीं जानते। इसके विपरीत, अब गुस्सा शांत हो

गया है: मैं रात की तरह शांत हूँ — जो शायद तुम्हारे लिए कुछ ज़्यादा ही ठंडी हो। हम वापस चलते हैं।”

"डॉक्टर जॉन, यह अचानक हुआ बदलाव है।"

“ऐसा नहीं है: या अगर ऐसा है भी, तो इसके अच्छे कारण हैं — दो अच्छे कारण:

मैंने आपको एक बात बता दी है। लेकिन अब चलिए दोबारा प्रवेश करते हैं।

हमें अपनी सीटें आसानी से नहीं मिलीं; लॉटरी शुरू हो चुकी थी और चारों ओर अफरा-तफरी मची हुई थी; भीड़ ने उस गलियारे को अवरुद्ध कर दिया था जिससे हमें गुजरना था: कुछ देर रुकना जरूरी था। यूं ही पीछे मुड़कर देखा - दरअसल मुझे लगा जैसे किसी ने मेरा नाम पुकारा हो - तो मैंने पास ही, सर्वव्यापी, अपरिहार्य एम. पॉल को देखा। वह मुझे गंभीरता और एकाग्रता से देख रहे थे: मुझे, या यूं कहें कि मेरी गुलाबी पोशाक को - जिस पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी उनकी आंखों में झलक रही थी। अब मैडम बेक के स्कूल में शिक्षकों और छात्रों दोनों की पोशाक पर टिप्पणी करना उनकी आदत बन गई थी - एक ऐसी आदत जिसे कम से कम शिक्षक तो अपमानजनक और गुस्ताखी मानते थे: अभी तक मुझे इसका सामना नहीं करना पड़ा था - मेरी सादी दैनिक पोशाक ध्यान आकर्षित करने वाली नहीं थी। आज रात मैं किसी भी नए अतिक्रमण को बर्दाश्त करने के मूड में नहीं थी: उनकी बातों को सुनने के बजाय, मैं उनकी उपस्थिति को नजरअंदाज करना चाहती थी, और इसलिए मैंने अपना चेहरा डॉ. जॉन के कोट की आस्तीन की ओर मोड़ लिया; उसी काली आस्तीन में मुझे प्रोफेसर के बदसूरत चेहरे की तुलना में कहीं अधिक सुख और आराम का एहसास हुआ, वह कहीं अधिक सौम्य और मैत्रीपूर्ण था। डॉ. जॉन ने नीचे देखकर और अपनी मधुर आवाज में कहा, "हाँ, मेरे पास ही रहना, लूसी: ये भीड़भाड़ वाले लोग किसी का लिहाज नहीं करते।"

लेकिन मैं अपने आप पर कायम नहीं रह सका। किसी सम्मोहनकारी या अन्य प्रभाव के आगे झुककर—एक ऐसा प्रभाव जो अप्रिय, नापसंद करने योग्य, लेकिन प्रभावी था—मैंने फिर से पीछे मुड़कर देखा कि क्या एम. पॉल जा चुके हैं। नहीं, वह वहीं खड़े थे, देखते हुए, लेकिन उनकी नज़रें बदल गई थीं; उन्होंने मेरे विचारों को भेद दिया था और उन्हें नकारने की मेरी इच्छा को जान लिया था। उनकी व्यंग्यात्मक, लेकिन दुर्भावना रहित नज़रें अब एक गहरी भौंहों में बदल गई थीं, और जब मैंने सुलह के इरादे से सिर झुकाया, तो बदले में मुझे केवल एक कठोर और सख्त सहमति ही

मिली।

“लूसी, तुमने किसे नाराज़ किया है?” डॉ. ब्रेटन ने मुस्कुराते हुए फुसफुसाया। “तुम्हारा वो खूंखार दिखने वाला दोस्त कौन है?”

"मैडम बेक के स्कूल में काम करने वाले प्रोफेसरों में से एक: एक बहुत ही चिड़चिड़ा छोटा आदमी।"

“वह अभी बहुत गुस्से में दिख रहा है: तुमने उसके साथ क्या किया है? आखिर बात क्या है? आह, लूसी, लूसी! मुझे इसका मतलब बताओ।”

"इसमें कोई रहस्य नहीं है, मैं आपको आश्वस्त करता हूँ। एम. इमानुएल बहुत ही सख्त हैं, और चूंकि मैंने उनके सामने झुकने और सम्मान दिखाने के बजाय आपकी कोट की आस्तीन की ओर देखा, इसलिए उन्हें लगता है कि मैंने सम्मान में कमी की है।"

“वह छोटा सा...” डॉ. जॉन ने कहना शुरू किया: मुझे नहीं पता कि वह आगे क्या कहते, क्योंकि उसी क्षण मैं लगभग भीड़ के पैरों के बीच गिर पड़ा था। एम. पॉल ने अशिष्टता से धक्का देकर रास्ता बनाया और आसपास के सभी लोगों की सुविधा और सुरक्षा की बिल्कुल परवाह किए बिना कोहनी मारते हुए आगे बढ़ रहे थे, जिसके परिणामस्वरूप एक बहुत ही असहज दबाव महसूस हुआ।

डॉ. ब्रेटन ने कहा, "मुझे लगता है कि वह खुद को 'मेचेंट' कहना पसंद करेंगे।"

मैं भी ऐसा सोचा था।

धीरे-धीरे और बड़ी मुश्किल से हम गलियारे से होते हुए आखिरकार अपनी सीटों पर पहुँच गए। लॉटरी का ड्रॉ लगभग एक घंटे तक चला; यह एक उत्साहवर्धक और मनोरंजक दृश्य था; और चूंकि हम सभी के पास टिकट थे, इसलिए पहिया के हर घुमाव के साथ हमारे मन में उठने वाली आशा और भय की भावनाएँ भी समान रूप से उमड़ रही थीं। पाँच और छह साल की दो छोटी बच्चियों ने नंबर निकाले: और मंच से पुरस्कारों की घोषणा की गई। ये पुरस्कार अनेक थे, हालांकि उनकी कीमत कम थी। संयोग से डॉ. जॉन और मुझे एक-एक पुरस्कार मिला: मुझे एक सिगार का डिब्बा मिला, और उन्हें एक महिला का सिर का आभूषण - नीले और चांदी के रंग का एक हल्का-फुल्का पगड़ीनुमा आभूषण, जिसके एक तरफ बर्फीले बादल की तरह पंखों की एक लड़ी लगी थी। वह इसे बदलने के लिए बहुत उत्सुक थे; लेकिन मैं उनकी बात सुनने को तैयार नहीं थी, और आज तक मैंने अपना सिगार का डिब्बा संभाल कर रखा

है: जब भी मैं उसे देखती हूँ, वह मुझे पुराने दिनों और एक सुखद शाम की याद दिलाता है।

डॉ. जॉन ने अपनी पगड़ी को हाथ की लंबाई पर उंगली और अंगूठे के बीच पकड़ रखा था और उसे श्रद्धा और शर्मिंदगी के मिले-जुले भाव से देख रहे थे, जिससे हंसी आ रही थी। विचार-विमर्श समाप्त होने पर, वे उस नाजुक कपड़े को अपने पैरों के बीच जमीन पर रखने ही वाले थे; उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि इसे कैसे संभालना चाहिए या कहाँ रखना चाहिए: अगर उनकी माँ उन्हें बचाने न आतीं, तो मुझे लगता है कि वे अंत में इसे अपनी बगल में किसी ओपेरा टोपी की तरह कुचल देते; माँ ने इसे वापस उसी डिब्बे में रख दिया जहाँ से यह निकली थी।

ग्राहम पूरी शाम बेहद खुशमिजाज थे, और उनकी खुशी स्वाभाविक और सहज लग रही थी। उनके व्यवहार, उनकी नज़र का वर्णन करना आसान नहीं है; उसमें कुछ अनोखा और मौलिक था। मैंने उसमें भावनाओं पर असाधारण महारत देखी, और एक गहरी और स्वस्थ शक्ति का भंडार देखा, जो बिना किसी थकावट के निराशा को भी कुचल देती थी और उसके दांत निकाल देती थी। उनका व्यवहार मुझे उन गुणों की याद दिलाता था जो मैंने उनमें तब देखे थे जब वे बासे-विले में गरीबों, दोषियों और पीड़ितों के बीच पेशेवर रूप से काम कर रहे थे: वे एक साथ दृढ़, सहनशील और मधुर स्वभाव के दिखते थे। भला कौन उन्हें पसंद किए बिना रह सकता था? उनमें ऐसी कोई कमजोरी नहीं थी जो आपके मन को इस चिंता में डाल दे कि उसकी लड़खड़ाहट को कैसे संभाला जाए; उनमें ऐसी कोई चिड़चिड़ाहट नहीं थी जो शांति भंग कर दे और खुशी को बुझा दे; उनके होठों से ऐसी कोई कटु बात नहीं निकली जो दिल को जला दे; उसकी आँखों से निकलने वाली उदास निगाहें ठंडी, जंग लगी और आपके दिल में जहर घोलने वाली नहीं थीं: उसके पास आराम और आश्रय था - उसके चारों ओर, पोषण देने वाली धूप थी।

फिर भी उन्होंने मिस फैंसहावे को न तो माफ़ किया था और न ही भुलाया था। एक बार क्रोधित हो जाने पर, मुझे संदेह है कि डॉ. ब्रेटन को जल्दी शांत किया जा सकता था - एक बार नाराज़ हो जाने पर, क्या उन्हें कभी सुधारा जा सकता था। उन्होंने उसे एक से अधिक बार देखा; चुपके से या विनम्रता से नहीं, बल्कि दृढ़, खुले अवलोकन के भाव से। डी हमाल अब उसके बगल में स्थिर बैठा था; श्रीमती चोलमोंडली पास में बैठी थीं, और वे और वह पूरी तरह से उस चर्चा, हंसी और उत्साह में डूबी हुई थीं,

जिससे लाल रंग की सीटें हॉल के किसी भी आम हिस्से की तरह ही हलचल मचा रही थीं। किसी स्पष्ट रूप से जीवंत चर्चा के दौरान, जिनेवरा ने एक-दो बार अपना हाथ और बांह उठाई; बाद वाले पर एक सुंदर कंगन चमक रहा था। मैंने देखा कि उसकी चमक डॉ. जॉन की आँखों में कौंधी - जिससे उनमें एक उपहासपूर्ण, क्रोधी चमक पैदा हुई; वह हँसे: — —

"मुझे लगता है," उसने कहा, "मैं अपनी पगड़ी को अपनी पुरानी वेदी पर चढ़ा दूँगा; वहाँ तो उसे अवश्य ही स्वीकृति मिलेगी: किसी भी स्त्री में इतनी आसानी से स्वीकृति पाने की क्षमता नहीं होती। अजीब बात है! क्योंकि आखिरकार, मैं जानता हूँ कि वह एक परिवार की लड़की है।"

"लेकिन आप उसकी शिक्षा के बारे में नहीं जानते, डॉ. जॉन," मैंने कहा। "जीवन भर एक विदेशी स्कूल से दूसरे विदेशी स्कूल में भटकती रही है, इसलिए वह अपनी अधिकांश गलतियों को छिपाने के लिए अज्ञानता का बहाना बना सकती है। और फिर, उसकी बातों से मुझे लगता है कि उसके माता-पिता का पालन-पोषण भी उसी तरह हुआ है जैसे उसका हुआ है।"

उन्होंने कहा, "मैं हमेशा से समझता था कि उसके पास कोई संपत्ति नहीं है; और एक समय मुझे यह सोचकर खुशी होती थी।"

मैंने जवाब दिया, "वह मुझे बताती है कि उनके घर में गरीबी है; वह ऐसे मामलों पर हमेशा खुलकर बोलती है: वह कभी झूठ नहीं बोलती, जैसा कि ये विदेशी अक्सर झूठ बोलते हैं। उसके माता-पिता का परिवार बड़ा है: उनकी सामाजिक स्थिति और संबंध ऐसे हैं कि उनके अनुसार उन्हें दिखावा करना चाहिए; मजबूरी और स्वभाव की लापरवाही ने मिलकर उन्हें दिखावे के लिए धन जुटाने के मामले में बेपरवाह बना दिया है। बचपन से उसने यही स्थिति देखी है, और यही एकमात्र स्थिति है।"

"मुझे इस पर यकीन है—और मैंने उसे बेहतर इंसान बनाने की कोशिश भी की थी: लेकिन, लूसी, सच कहूँ तो, आज रात उसे और डी हमाल को देखकर मुझे एक नया एहसास हुआ है। मेरी माँ के प्रति किए गए दुर्व्यवहार को देखने से पहले ही मुझे यह एहसास हो गया था। उनके प्रवेश करते ही मैंने उन दोनों के बीच एक नज़र का आदान-प्रदान देखा, जिसने मेरे मन पर एक बेहद अप्रिय प्रभाव डाला।"

"आपका क्या मतलब है? क्या आप उनके बीच चल रहे छेड़छाड़ भरे व्यवहार से लंबे समय से अवगत हैं?"

“अरे, नखरे! ये तो सच्चे प्रेमी को लुभाने की एक मासूम सी लड़की की चाल हो सकती है; लेकिन मैं जिस चीज़ की बात कर रहा हूँ वो नखरे नहीं थे: ये एक ऐसी नज़र थी जो आपसी और गुप्त समझ को दर्शाती थी – ये न तो बचकानी थी और न ही मासूम। कोई भी स्त्री, चाहे वो एफ्रोडाइट जितनी सुंदर ही क्यों न हो, जो ऐसी नज़र दे या ले सके, मैं कभी उससे शादी नहीं करूँगा: मैं तो छोटी पेटीकोट और ऊँची टोपी पहने किसी किसान लड़की से शादी करना पसंद करूँगा – और इस बात का पूरा भरोसा रखूँगा कि वो ईमानदार है।”

मैं मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी। मुझे पूरा यकीन था कि अब वह बात को बढ़ा-चढ़ाकर कह रहा है: मुझे पूरा विश्वास था कि जिनेवरा अपनी सारी चंचलता के बावजूद काफी ईमानदार थी। मैंने उसे यही कहा। उसने सिर हिलाया और कहा कि वह अपनी इज्जत के मामले में उस पर भरोसा करने वाला आदमी नहीं है।

मैंने कहा, “एकमात्र चीज़ जिस पर आप उस पर पूरी तरह से भरोसा कर सकते हैं। वह किसी पति के पर्स और संपत्ति को निर्दयतापूर्वक नुकसान पहुंचा सकती है, उसके धैर्य और क्रोध की परीक्षा ले सकती है: मुझे नहीं लगता कि वह उसकी इज्जत पर ज़रा भी उंगली उठाएगी, या किसी और को भी ऐसा करने देगी।”

“तुम उसके वकील बन रहे हो,” उसने कहा। “क्या तुम चाहते हो कि मैं अपनी पुरानी बेड़ियों में फिर से जकड़ जाऊं?”

नहीं: मुझे आपको स्वतंत्र देखकर खुशी हुई है, और मुझे विश्वास है कि आप लंबे समय तक स्वतंत्र रहेंगे। लेकिन साथ ही, न्यायप्रिय भी रहें।

“मैं बिल्कुल राडामेंथस की तरह हूँ, लूसी। एक बार जब मैं पूरी तरह से अलग-थलग पड़ जाती हूँ, तो मैं कठोर होने से खुद को रोक नहीं पाती। लेकिन देखो! राजा और रानी उठ रहे हैं। मुझे वह रानी पसंद है: उनका चेहरा बहुत प्यारा है। माँ भी बहुत थकी हुई हैं; अगर हम और देर तक रुके रहे तो हम बुढ़िया को घर नहीं ले जा पाएँगे।”

“क्या मैं थक गई हूँ, जॉन?” श्रीमती ब्रेटन ने अपने बेटे की तरह ही जोश और सतर्कता दिखाते हुए कहा। “मैं अभी भी तुम्हारे साथ बैठी रहूँगी: हम दोनों को सुबह तक यहीं छोड़ दो, और फिर देखते हैं कि सूर्योदय तक कौन सबसे ज़्यादा थका हुआ दिखता है।”

“मैं यह प्रयोग करना नहीं चाहूँगा; क्योंकि सच में, माँ, आप सबसे अमर और सबसे जीवंत महिला हैं। इसलिए, आपके बेटे की नाज़ुक नसों और कमज़ोर स्वास्थ्य

का हवाला देते हुए ही मुझे जल्द से जल्द कार्यवाही स्थगित करने की याचिका दायर करनी होगी।”

“आलसी नौजवान! तुम ज़रूर बिस्तर पर होना चाहते होगे; और मुझे लगता है कि तुम्हें मज़ा भी आ रहा होगा। देखो, लूसी भी है, कितनी सजी-धजी लग रही है। शर्म करो लूसी! तुम्हारी उम्र में, एक हफ़्ते की शाम की सैर भी मुझे ज़रा भी पीली नहीं कर पाती। चलो, तुम दोनों; और बुढ़िया पर जितना चाहो हँस लो, लेकिन मैं तो ड्रमबॉक्स और पगड़ी संभाल लूँगी।”

और उन्होंने वैसा ही किया। मैंने उनकी जगह लेने की पेशकश की, लेकिन मुझे विनम्रतापूर्वक तिरस्कार के साथ मना कर दिया गया: मेरी धर्ममाता ने कहा कि मेरे पास पहले से ही अपने लिए काफी काम है। अब औपचारिकता न बरतते हुए, राजा और रानी के प्रस्थान के बाद मची उस उमंग भरी भीड़ में, श्रीमती ब्रेटन हमसे आगे चलीं और तुरंत भीड़ के बीच से हमारे लिए रास्ता बना दिया। ग्राहम उनके पीछे-पीछे आए और अपनी माँ की प्रशंसा करते हुए उन्हें अब तक की सबसे समृद्ध महिला बताया, जिन्हें उन्होंने एक बैंडबॉक्स ले जाते हुए देखने का सौभाग्य प्राप्त किया था; उन्होंने यह भी कहा कि मैं उनकी माँ के नीले रंग की पगड़ी के प्रति स्नेह को देखूँ और उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि वह एक दिन इसे अवश्य पहनेंगी।

रात बहुत ठंडी और अंधेरी थी, लेकिन थोड़ी ही देर में हमें गाड़ी मिल गई। जल्द ही हम उसमें ठसाठस भर गए, जैसे आग के पास बैठे हों, वैसे ही गर्म और आरामदायक महसूस कर रहे थे; और घर की यात्रा, मुझे लगता है, कॉन्सर्ट तक की यात्रा से कहीं अधिक सुखद थी। सुखद तो यह थी ही, भले ही कोचवान ने कॉन्सर्ट में बिताए समय का कुछ हिस्सा एक शराब की दुकान में बिता दिया था और हमें अंधेरी और सुनसान सड़क पर ला टेरेस की ओर जाने वाले मोड़ से काफी आगे ले गया; हम, जो बातें करने और हंसने में मशगूल थे, इस गड़बड़ी पर तब तक ध्यान नहीं दिया, जब तक कि अंत में श्रीमती ब्रेटन ने यह संकेत नहीं दिया कि, हालांकि उन्होंने हमेशा महल को एकांत स्थान समझा था, उन्हें नहीं पता था कि यह दुनिया के छोर पर स्थित है, जैसा कि उन्होंने कहा कि अब ऐसा लग रहा था, क्योंकि उनका मानना था कि हमें डेढ़ घंटा रास्ता तय करना पड़ा था और अभी तक हमने उस रास्ते पर मुड़ना शुरू नहीं किया था।

फिर ग्राहम ने बाहर देखा और उसे धुंधले फैले हुए खेत ही दिखाई दिए, जिनमें

अपरिचित पंक्तियों में कटे हुए और चूने के पेड़ उनकी अदृश्य धँसी हुई बाड़ों के साथ लगे हुए थे। ग्राहम ने अनुमान लगाना शुरू किया कि मामला क्या है, और रुककर नीचे उतरते हुए, वह गाड़ी पर चढ़ गया और खुद लगाम पकड़ ली। उसकी बदौलत हम अपने तय समय से लगभग डेढ़ घंटे देरी से सुरक्षित घर पहुँच गए।

मार्था हमें भूली नहीं थी; एक खुशनुमा आग जल रही थी और भोजन कक्ष में बढ़िया खाना लगा हुआ था: हम दोनों से खुश थे। अपने कमरों में पहुँचने से पहले ही सर्दियों की सुबह हो रही थी। मैंने अपनी गुलाबी पोशाक और लेस का लबादा उतारते समय जितनी खुशी महसूस की थी, उससे कहीं अधिक खुशी महसूस कर रही थी। शायद उस संगीत समारोह में चमकते हुए सभी लोग ऐसा नहीं कह सकते थे; क्योंकि सभी लोग मित्रता से संतुष्ट नहीं थे—उसकी शांत सांत्वना और मामूली आशा से।

अध्याय XXI.

प्रतिक्रिया।

अभी तीन दिन और, फिर मुझे पेंशन में लौटना होगा। मैंने घड़ी पर इन दिनों के पलों को लगभग गिन लिया था; काश मैं इन्हें कुछ देर के लिए रोक पाता; लेकिन मेरी निगाहों के सामने ही ये बीत गए: जब मुझे इनके जाने का डर भी था, तब तक ये जा चुके थे।

श्रीमती ब्रेटन ने नाश्ते के समय बड़े प्यार से कहा, "लूसी आज हमें छोड़कर नहीं जाएगी; उसे पता है कि हम दूसरी मोहलत हासिल कर सकते हैं।"

मैंने कहा, “अगर मुझे एक शब्द के बदले में मिल जाए तो मैं एक भी नहीं माँगूँगा। मैं जल्द से जल्द अलविदा कहना चाहता हूँ और फिर से रू फॉसेट में बसना चाहता हूँ। मुझे आज सुबह ही जाना होगा: मुझे तुरंत जाना होगा; मेरा सामान पैक है और रस्सी

से बंधा हुआ है।”

ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरा जाना ग्राहम पर निर्भर था; उसने कहा था कि वह मेरे साथ चलेगा, लेकिन संयोगवश वह पूरे दिन व्यस्त रहा और शाम ढलते ही घर लौटा। फिर थोड़ी कहा-सुनी हुई। श्रीमती ब्रेटन और उनके बेटे ने मुझे एक रात और रुकने के लिए ज़ोर दिया। मैं रोने ही वाली थी, इतनी चिढ़ और बेचैनी थी कि वहाँ से जाना चाहती थी। मैं उन्हें छोड़कर जाने के लिए इतनी बेताब थी जैसे फांसी पर लटका अपराधी कुल्हाड़ी गिरने का इंतज़ार करता है: यानी, मैं उस पीड़ा से छुटकारा पाना चाहती थी। मैं कितना चाहती थी, यह वे नहीं समझ सकते थे। इन मामलों में मेरी मनस्थिति उनके अनुभव से परे थी।

जब डॉ. जॉन ने मुझे मैडम बेक के दरवाजे पर गाड़ी से उतारा, तब अंधेरा हो चुका था। ऊपर का लैंप जल रहा था; नवंबर की हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी, जैसे दिन भर होती रही थी: गीले फुटपाथ पर लैंप की रोशनी चमक रही थी। ठीक वैसी ही रात थी, जैसी एक साल पहले, मैं पहली बार इसी दहलीज पर रुका था; दृश्य बिलकुल वैसा ही था। मुझे फुटपाथ के पत्थरों की आकृतियाँ याद थीं, जिन्हें मैंने यूँ ही देखा था, और धड़कते दिल के साथ उस दरवाजे के खुलने का इंतज़ार कर रहा था, जहाँ मैं अकेला और विनती करता खड़ा था। उस रात भी, मेरी उससे थोड़ी देर के लिए मुलाकात हुई थी, जो अब मेरे साथ खड़ा था। क्या मैंने कभी उसे उस मुलाकात की याद दिलाई थी, या उसे समझाया था? नहीं, और न ही कभी ऐसा करने की इच्छा हुई: यह एक सुखद विचार था, जो मेरे मन में बसा हुआ था, और वहीं रहना ही बेहतर था।

ग्राहम ने घंटी बजाई। दरवाजा तुरंत खुल गया, क्योंकि शाम का यही वह समय था जब आधे समय के लिए ठहरने वाले छात्र जाने लगते थे - इसलिए, रोसीन सतर्क हो गई।

मैंने उनसे कहा, "अंदर मत आइए"; लेकिन वे एक पल के लिए रोशनी से भरे प्रवेश कक्ष में चले गए। मैं नहीं चाहता था कि वे देखें कि "मेरी आँखों में आँसू भरे हुए हैं," क्योंकि उनका स्वभाव इतना दयालु था कि वे कभी भी बेवजह दुख के ऐसे लक्षण दिखाना नहीं चाहते थे। वे हमेशा उपचार करना चाहते थे—राहत देना चाहते थे—जबकि चिकित्सक होने के नाते, शायद न तो इलाज और न ही राहत देना उनके बस में था।

“हिम्मत बनाए रखो, लूसी। मेरी माँ और मुझे सच्चे दोस्त समझो। हम तुम्हें कभी

नहीं भूलेंगे।”

"और मैं आपको कभी नहीं भूलूंगा, डॉ. जॉन।"

अब मेरा सामान अंदर लाया गया। हमने हाथ मिलाया; वह जाने के लिए मुड़ा, लेकिन वह संतुष्ट नहीं था: उसने अपनी उदार भावनाओं को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त कुछ किया या कहा नहीं था।

“लूसी,” — मेरे पीछे कदम बढ़ाते हुए — “क्या तुम्हें यहाँ बहुत अकेलापन महसूस होगा?”

“पहले तो मैं ऐसा ही करूंगा।”

“खैर, मेरी माँ जल्द ही आपसे मिलने आएगी; और इस बीच, मैं आपको बताती हूँ कि मैं क्या करूँगी। मैं लिखूँगी—बस कुछ भी मज़ेदार बेतुकी बातें जो मेरे दिमाग में आएँ— ठीक है ना?”

“वाह, क्या बात है!” मैंने मन ही मन सोचा; लेकिन फिर मैंने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया और कहा, “ऐसा सोचना भी मत: अपने ऊपर ऐसा बोझ मत डालो। मुझे पत्र लिखो! तुम्हारे पास समय ही नहीं होगा।”

“ओह! मैं समय निकाल लूंगा या बना लूंगा। अलविदा!”

वह चला गया। भारी दरवाजा धड़ाम से गिर पड़ा: जैसे कुल्हाड़ी चल पड़ी हो — दर्द का अनुभव हुआ।

सोचने-समझने का समय न देते हुए—आँसू ऐसे पी लिए जैसे वो शराब हों—मैं मैडम के बैठक कक्ष में औपचारिक और सम्मानजनक मुलाकात के लिए गया। उन्होंने बड़ी ही सजी-धजी गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया—यहाँ तक कि उनका अभिवादन संक्षिप्त ही सही, लेकिन भावुक भी था। दस मिनट में मुझे जाने की अनुमति मिल गई। भोजन कक्ष से मैं भोजन कक्ष की ओर बढ़ा, जहाँ विद्यार्थी और शिक्षक शाम की पढ़ाई के लिए एकत्रित थे: वहाँ भी मेरा स्वागत हुआ, और मुझे लगता है कि यह स्वागत खोखला नहीं था। इसके बाद, मैं छात्रावास जाने के लिए स्वतंत्र था।

"और क्या ग्राहम सचमुच लिखेगा?" मैंने बिस्तर के किनारे थककर बैठते हुए सवाल किया।

उस लंबे, धुंधले कमरे की हल्की रोशनी में दबे पांव मेरे पास आते हुए, तर्क ने शांत स्वर में फुसफुसाया— “हो सकता है वह एक बार लिखे। उसका स्वभाव इतना दयालु है कि शायद एक बार लिखने की प्रेरणा मिल जाए। लेकिन यह सिलसिला जारी नहीं

रह सकता—इसे दोहराया नहीं जा सकता। ऐसी उम्मीद पर भरोसा करना मूर्खता होगी— और उस क्षणभंगुर बारिश के कुंड को, जिसमें एक घूँट पानी भरा है, ऋतुओं का जल स्रोत समझने की मूर्खता होगी।"

मैंने अपना सिर झुकाया: मैं एक घंटे और सोचता रहा। तर्क अब भी मुझे फुसफुसा रहा था, मानो मेरे कंधे पर एक मुरझाया हुआ हाथ रखे हो, और बुढ़ापे के ठंडे नीले होंठों से मेरे कान को ठंडेपन से छू रहा हो।

"अगर," वह बुदबुदाई, "अगर वह लिखे, तो क्या होगा? क्या तुम्हें जवाब देने में आनंद आता है? अरे मूर्ख! मैं तुम्हें चेतावनी देती हूँ! तुम्हारा जवाब संक्षिप्त होना चाहिए। हृदय की प्रसन्नता की आशा मत करो—बुद्धि को भोगने की अनुमति मत दो: भावनाओं को विस्तार मत दो—किसी भी इंद्रिय को अवकाश मत दो: किसी भी मैत्रीपूर्ण आदान-प्रदान में समय मत बँटाओ: किसी भी सौहार्दपूर्ण संबंध को बढ़ावा मत दो…।"

"लेकिन मैंने ग्राहम से बात की है और आपने उसे डांटा नहीं," मैंने विनती की।

"नहीं," उसने कहा, "मुझे इसकी ज़रूरत नहीं थी। आपके लिए बोलना एक अच्छा अनुशासन है। आप अपूर्ण रूप से बात करते हैं। बोलते समय, हीनता की भावना को भुलाया नहीं जा सकता—भ्रम को बढ़ावा नहीं दिया जा सकता: दर्द, अभाव, दरिद्रता आपकी भाषा पर अंकित होती है…।"

लेकिन," मैंने फिर बीच में टोकते हुए कहा, "जहां शारीरिक उपस्थिति कमजोर हो और वाणी तुच्छ हो, वहां निश्चित रूप से लिखित भाषा को लड़खड़ाते होठों से कहीं बेहतर अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने में कोई गलती नहीं हो सकती?"

तर्क ने केवल यही उत्तर दिया, "यदि आप उस विचार को संजोते हैं, या उसके प्रभाव को अपने किसी भी लेखन में हावी होने देते हैं, तो यह आपके लिए खतरनाक होगा!"

लेकिन अगर मुझे कुछ महसूस हो, तो क्या मैं उसे कभी व्यक्त न करूँ?

"कभी नहीं!" रीज़न ने घोषणा की।

मैं उसकी कठोर कठोरता के नीचे कराह उठा। कभी नहीं—कभी नहीं—ओह, कठोर शब्द! यह चुड़ैल, यह तर्क, मुझे ऊपर देखने, मुस्कुराने या आशा करने नहीं देती थी: जब तक मैं पूरी तरह से कुचल न जाऊं, डर न जाऊं, टूट न जाऊं और बिखर न जाऊं, तब तक उसे चैन नहीं मिलता था। उसके अनुसार, मेरा जन्म केवल रोटी के

एक टुकड़े के लिए काम करने, मृत्यु की पीड़ाओं की प्रतीक्षा करने और जीवन भर लगातार निराशा में रहने के लिए हुआ था। तर्क शायद सही हो; फिर भी इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हम कभी-कभी उसका विरोध करने, उसकी छड़ी से बच निकलने और कल्पना को कुछ पल की आज़ादी देने में प्रसन्न होते हैं—उसकी कोमल, उज्ज्वल शत्रु, हमारी प्यारी सहायक, हमारी दिव्य आशा। हम समय-समय पर सीमाओं को तोड़ेंगे और तोड़ना ही होगा, भले ही लौटने पर हमें भयानक प्रतिशोध का सामना करना पड़े। तर्क शैतान की तरह प्रतिशोधी है: मेरे लिए वह हमेशा सौतेली माँ की तरह विषैली रही है। अगर मैंने उसकी आज्ञा मानी है, तो वह मुख्य रूप से भय के कारण है, प्रेम के कारण नहीं। बहुत पहले ही मैं उसके दुर्व्यवहार, उसकी कैद, उसकी ठंड, उसके बंजर भोजन, उसके बर्फीले बिस्तर और उसके क्रूर, निरंतर प्रहारों से मर चुका होता; लेकिन उस दयालु शक्ति के कारण, जिसने मेरा रहस्य और निष्ठा सुरक्षित रखी है, मैं बच गया। अक्सर तर्क ने मुझे रात में, कड़ाके की ठंड में, ठंडी बर्फ पर निकाल दिया है, और मुझे कुतरे हुए हड्डियों को भोजन के रूप में फेंकने को कहा है जिन्हें कुत्तों ने त्याग दिया था: उसने कठोरता से कसम खाई है कि उसके भंडार में मेरे लिए कुछ भी नहीं बचा है - उसने मुझे बेहतर चीजें मांगने के अधिकार से बेरहमी से वंचित कर दिया है... फिर, ऊपर देखते हुए, मैंने आकाश में घूमते तारों के बीच एक सिर देखा, जिनमें से सबसे बीच वाले और सबसे चमकीले तारे ने सहानुभूतिपूर्ण और ध्यान देने वाली किरण बिखेरी। एक आत्मा, मानवीय तर्क से कहीं अधिक कोमल और श्रेष्ठ, शांत उड़ान के साथ वीरान भूमि में उतरी - अपने चारों ओर शाश्वत ग्रीष्म ऋतु से उधार ली गई हवा का एक गोला लेकर आई; ऐसे फूलों की सुगंध लेकर आई जो कभी मुरझाते नहीं - ऐसे पेड़ों की सुगंध लेकर आई जिनके फल जीवन हैं; ऐसी शुद्ध हवा लेकर आई जो उस दुनिया से आई है जिसके दिन को रोशन करने के लिए सूर्य की आवश्यकता नहीं है। हे इस दिव्य देवदूत ने मेरी भूख को मीठे और अनोखे भोजन से शांत किया है, जो स्वर्ग के पहले दिन की ओस से भीगी फसल बटोरने वाले देवदूतों के बीच से इकट्ठा किया गया है; उसने कोमलता से उन असहनीय भयों को शांत किया है जो जीवन को ही रुला देते हैं - उसने घातक थकान को आराम दिया है - उसने निराशा को आशा और प्रेरणा दी है। हे दिव्य, दयालु, सहायक शक्ति! जब मैं ईश्वर के अलावा किसी और के सामने घुटने टेकता हूँ, तो वह तेरे श्वेत और पंखदार चरणों में होगा, जो पर्वत पर हो या मैदान में, सुंदर लगते हैं। सूर्य के लिए मंदिर बनाए गए हैं - चंद्रमा को

समर्पित वेदी। हे महान महिमा! न तो हाथ तेरे लिए निर्माण करते हैं, न होंठ तेरे लिए पवित्र करते हैं: परन्तु युगों-युगों से हृदय तेरी पूजा के प्रति निष्ठावान हैं। तेरा निवास स्थान इतना विशाल है कि दीवारें नहीं, गुंबद नहीं - एक मंदिर जिसकी मंजिलें अंतरिक्ष हैं - ऐसे अनुष्ठान जिनके रहस्य उपस्थिति में घटित होते हैं, संसारों के सामंजस्य को प्रज्वलित करते हैं!

हे पूर्ण संप्रभु! धीरज के लिए, आपके पास शहीदों की महान सेना थी; उपलब्धियों के लिए, आपके चुने हुए योग्य व्यक्तियों का समूह था। निर्विवाद देवत्व, आपका सार क्षय को विफल करता है!

स्वर्ग की इस पुत्री ने आज रात मुझे याद किया; उसने मुझे रोते हुए देखा और मुझे दिलासा देने आई: “सो जाओ,” उसने कहा। “मीठी नींद लो—मैं तुम्हारे सपनों को सुनहरा बना दूंगी!”

उसने अपना वादा निभाया और रात भर मेरी देखभाल की; लेकिन भोर होते ही विवेक ने पहरा छुड़ा लिया। मैं अचानक चौंककर जागा; बारिश खिड़कियों पर ज़ोर से पड़ रही थी और हवा रुक-रुक कर चिड़चिड़ी सी आवाज़ निकाल रही थी; छात्रावास के बीच में काले गोल स्टैंड पर रखा रात का दीपक बुझ रहा था: दिन निकल चुका था। मुझे उन लोगों पर तरस आता है जिन्हें मानसिक पीड़ा जगाने के बजाय सुन्न कर देती है! आज सुबह जागने की पीड़ा ने मुझे बिस्तर से ऐसे खींच लिया जैसे किसी विशालकाय का हाथ जकड़ ले। कितनी जल्दी मैंने ठंडी सुबह में कपड़े पहने! कितनी गहराई से मैंने अपने जग से बर्फ़ जैसा ठंडा पानी पिया! यह हमेशा मेरा पसंदीदा पेय होता था, जिसे मैं, अन्य शराब पीने वालों की तरह, निराशा से बेचैन होने पर बड़ी उत्सुकता से पीता था।

कुछ ही देर में स्कूल की सुबह की घंटी बज उठी। कपड़े पहनकर मैं अकेले भोजन कक्ष में गया, जहाँ चूल्हा जल रहा था और हवा गर्म थी; बाकी कमरे में ठंड थी, महाद्वीपीय सर्दियों की चुभन भरी ठंड थी: हालाँकि अभी नवंबर की शुरुआत ही थी, लेकिन उत्तरी हवा ने यूरोप में इतनी जल्दी ही सर्दी का प्रकोप ला दिया था: मुझे याद है कि जब मैं पहली बार आया था तो मुझे काले चूल्हे बिल्कुल पसंद नहीं आए थे; लेकिन अब मैं उनसे आराम का एहसास जोड़ने लगा था और उन्हें पसंद करने लगा था, जैसे इंग्लैंड में हम लोग आग के पास बैठना पसंद करते हैं।

इस गहरे आवरण के सामने बैठते ही, मैं जीवन और उसके अवसरों, नियति और

उसके नियमों पर अपने आप से गहन वाद-विवाद में डूब गया। मेरा मन, पिछली रात की तुलना में अब अधिक शांत और मजबूत था, उसने अपने लिए कुछ कठोर नियम बना लिए, बीते हुए सुखों की किसी भी कमजोर स्मृति को घातक दंड के साथ प्रतिबंधित कर दिया; वर्तमान के निर्जन जंगल में धैर्यपूर्वक यात्रा करने का आदेश दिया, आस्था पर भरोसा करने का आग्रह किया - उस बादल और स्तंभ को देखने का जो मार्गदर्शन करते हुए वश में करते हैं और प्रकाश देते हुए विस्मय उत्पन्न करते हैं - आसक्तिपूर्ण मूर्तिपूजा की प्रवृत्ति को शांत किया, उस दूर देश की लालसा को रोका जिसकी नदियाँ शायद कभी न मिलें, केवल मरते हुए सपनों में ही देखी जा सकें, जिसके मीठे चरागाह केवल नीबो पर्वत की सुनसान और समाधि जैसी चोटी से ही देखे जा सकें।

धीरे-धीरे, शक्ति और दर्द का मिलाजुला एहसास मेरे दिल के चारों ओर तार की तरह लिपट गया, उसकी धड़कनों को थामे रखा, या कम से कम नियंत्रित किया, और मुझे दिन के काम के लिए तैयार कर दिया। मैंने अपना सिर उठाया।

जैसा कि मैंने पहले कहा था, मैं चूल्हे के पास बैठा था, जो भोजन कक्ष और बैठक कक्ष के नीचे दीवार में बना था, और इस प्रकार दोनों कमरों को गर्म करने के लिए पर्याप्त था। उसी दीवार में, चूल्हे के ठीक बगल में, एक खिड़की थी, जो बैठक कक्ष की ओर खुलती थी; जैसे ही मैंने ऊपर देखा, एक टोपी का गुच्छा, एक भौंह, दो आँखें, उस खिड़की के एक शीशे में दिखाई दीं; उन दो आँखों की स्थिर निगाहें सीधे मेरी नज़र से टकराईं: वे मुझे देख रही थीं। उस क्षण तक मुझे पता नहीं था कि मेरे गालों पर आँसू थे, लेकिन अब मुझे उनका एहसास हुआ।

यह एक अजीब घर था, जहाँ कोई कोना घुसपैठ से अछूता नहीं था, जहाँ एक आँसू भी नहीं बहाया जा सकता था, न ही कोई विचार मनन किया जा सकता था, लेकिन एक जासूस हमेशा आसपास मौजूद रहता था, जो हर बात पर नज़र रखता था और हर बात का अनुमान लगाता था। और यह नया, यह बाहरी, यह पुरुष जासूस, इस असामान्य समय पर यहाँ किस काम से आया था? उसे मुझ पर इस तरह घुसपैठ करने का क्या अधिकार था? कक्षा की घंटी बजने से पहले कोई और प्रोफेसर इतनी हिम्मत नहीं करता। एम. इमानुएल को न तो समय की परवाह थी और न ही किसी के काम की: प्रथम श्रेणी के पुस्तकालय में कोई संदर्भ पुस्तक थी जिसे उन्हें देखने की आवश्यकता थी; वे उसे खोजने आए थे: रास्ते में वे भोजन कक्ष से गुज़रे। आगे, पीछे

और चारों ओर नज़र रखना उनकी आदत थी: उन्होंने मुझे छोटी खिड़की से देख लिया था - अब उन्होंने भोजन कक्ष का दरवाजा खोला और वहीं खड़े हो गए।

"मिस, आप दुखी हैं।"

"सर, मुझे ऐसा करने का पूरा अधिकार है।"

“तुम एक साथ दुखी और विद्रोही हो। तुम्हारी गालों पर मुझे दो आंसू दिख रहे हैं जो चिंगारियों की तरह गर्म और समुद्र के क्रिस्टल की तरह नमकीन हैं। जब मैं बोल रहा हूँ, तुम मुझे अजीब तरह से देख रही हो। क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि तुम्हें देखते हुए मुझे क्या याद आ रहा है?”

“महाशय, मुझे थोड़ी देर में प्रार्थना के लिए जाना होगा; इस समय मेरे पास बातचीत के लिए बहुत कम समय है — क्षमा करें —”

“मैं सब कुछ माफ कर देता हूँ,” उसने बीच में ही टोकते हुए कहा; “मेरा मिजाज इतना शांत है कि न तो फटकार और न ही शायद अपमान इसे विचलित कर सकता है। तुम मुझे एक युवा, जंगली प्राणी की याद दिलाती हो, जो अभी-अभी पकड़ी गई हो, अनियंत्रित हो, और आग और भय के मिश्रण से घुसपैठिए के पहले प्रवेश को देख रही हो।”

यह अनुचित व्यवहार है! – अगर किसी छात्र से कहा जाए तो यह जल्दबाज़ी और असभ्य है; शिक्षक से तो बिलकुल भी नहीं। उसने तीखी प्रतिक्रिया को उकसाने की सोची; मैंने उसे पहले भी भावुक लोगों को भड़काकर आग बबूला करते देखा था। मुझमें उसकी दुर्भावना को कोई संतुष्टि नहीं मिलनी चाहिए थी; मैं चुपचाप बैठी रही।

उसने कहा, "तुम ऐसे दिखते हो जैसे मीठे जहर की एक घूंट को झटपट पी जाओगे और सेहतमंद कड़वे पेय को घृणा से ठुकरा दोगे।"

“सचमुच, मुझे कड़वी चीजें कभी पसंद नहीं आईं; न ही मैं उन्हें सेहतमंद मानता हूँ। और जो भी चीज मीठी होती है, चाहे वह जहर हो या खाना, आप कम से कम उसकी मिठास को तो नकार नहीं सकते। शायद बेहतर है कि एक सुखद मौत जल्दी मर जाएं, बजाय इसके कि एक नीरस जीवन को लंबा खींचा जाए।”

“फिर भी,” उसने कहा, “अगर मेरे पास इसे देने की शक्ति होती, तो तुम्हें अपनी कड़वी खुराक नियमित रूप से और प्रतिदिन लेनी चाहिए थी; और जहाँ तक उस प्रिय विष का सवाल है, तो शायद मैं उस प्याले को ही तोड़ देता जिसमें वह रखा था।”

मैंने अपना सिर तेज़ी से दूसरी तरफ घुमा लिया, आंशिक रूप से इसलिए कि

उसकी उपस्थिति मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं थी, और आंशिक रूप से इसलिए कि मैं सवालों से बचना चाहता था: कहीं ऐसा न हो कि मेरी वर्तमान मनोदशा में, जवाब देने का प्रयास मेरे आत्म-नियंत्रण पर हावी हो जाए।

“आओ,” उसने धीमी आवाज़ में कहा, “मुझे सच बताओ— तुम्हें दोस्तों से बिछड़ने का दुख है— क्या ऐसा नहीं है?”

उसकी कोमल विनम्रता भी पूछताछ भरी जिज्ञासा से कम स्वीकार्य नहीं थी। मैं चुप रही। वह कमरे में आया, मुझसे लगभग दो गज की दूरी पर बेंच पर बैठ गया, और मुझे बातचीत में शामिल करने की कोशिश में काफी देर तक, और उसके हिसाब से धैर्यपूर्वक, लगा रहा—ये कोशिशें स्वाभाविक रूप से व्यर्थ थीं, क्योंकि मैं बोल नहीं सकती थी। अंत में मैंने उससे अकेले रहने की विनती की। यह विनती करते हुए मेरी आवाज़ लड़खड़ा गई, मेरा सिर मेरी बाहों और मेज पर झुक गया। मैं फूट-फूटकर रोई, हालांकि चुपचाप। वह थोड़ी देर और बैठा रहा। मैंने ऊपर नहीं देखा और न ही कुछ बोला, जब तक कि बंद होते दरवाजे और उसके जाते कदमों ने मुझे यह नहीं बताया कि वह चला गया है। ये आंसू मेरे लिए राहत साबित हुए।

नाश्ते से पहले मुझे अपनी आँखें धोने का समय मिल गया था, और मुझे लगता है कि मैं उस भोजन के दौरान बाकी लोगों की तरह ही शांत दिख रही थी: हालाँकि, उतनी हंसमुख नहीं जितनी वह युवती थी जो मेरे सामने वाली सीट पर बैठी, अपनी छोटी-छोटी चमकती आँखों से मुझे निहार रही थी, और बेझिझक मेज के उस पार हाथ मिलाने के लिए अपना सफेद हाथ बढ़ा रही थी। मिस फैंसहावे की यात्राओं, मौज-मस्ती और इश्कबाज़ी का उन पर खूब असर हुआ था; वह काफी गोल-मटोल हो गई थीं, उनके गाल सेब जैसे गोल दिख रहे थे। मैंने उन्हें आखिरी बार सुरुचिपूर्ण शाम के परिधान में देखा था। मुझे नहीं लगता कि अब वह अपनी स्कूल की पोशाक में कम आकर्षक लग रही थीं, जो गहरे नीले रंग के कपड़े की एक तरह की लापरवाही भरी पेग्नॉयर थी, जिस पर काले रंग की धुंधली और मैली-कुचैली पट्टियाँ बनी हुई थीं। मुझे तो लगता है कि इस सांवले रंग के परिधान ने उनके आकर्षण को और भी बढ़ा दिया था; इसके विपरीत उनकी गोरी त्वचा, उनकी ताजगी और उनके सुनहरे बालों की सुंदरता और भी निखर रही थी।

“मुझे खुशी है कि तुम वापस आ गए, टिमोन,” उसने कहा। टिमोन उन दर्जनों नामों में से एक था जिनसे वह मुझे पुकारती थी। “तुम्हें नहीं पता कि इस

निराशाजनक जगह में मैं तुम्हें कितनी बार चाहती थी।”

“ओह, क्या सच में? तो फिर, अगर आपको मेरी ज़रूरत थी, तो मेरे पास करने के लिए कुछ न कुछ काम ज़रूर होगा: शायद मोज़े सिलने का काम।” मैंने जिनेवरा को कभी भी एक मिनट या एक पैसे तक भी निस्वार्थ नहीं माना।

“हमेशा की तरह चिड़चिड़ी और गुस्सैल!” उसने कहा। “मुझे यही उम्मीद थी: अगर तुम किसी को ठुकराती नहीं, तो तुम तुम नहीं हो। लेकिन अब, आओ दादी, मुझे उम्मीद है कि तुम्हें कॉफी उतनी ही पसंद है, और पिस्तौलें उतनी ही नापसंद हैं जितनी पहले थीं: क्या तुम लेन-देन करने को तैयार हो?”

"अपना रास्ता खुद चुनो।"

यह उसकी एक आदत थी कि वह मुझे सुविधा देती थी। उसे सुबह की कॉफी पसंद नहीं थी; स्कूल में बनी कॉफी उसके स्वाद के अनुसार न तो कड़क होती थी और न ही मीठी; और अन्य स्वस्थ स्कूली छात्राओं की तरह, उसे सुबह के पिस्टोलेट्स या रोल्स बहुत पसंद थे, जो ताज़े बने होते थे और बहुत स्वादिष्ट होते थे, और जिनमें से प्रत्येक को एक निश्चित मात्रा में दिए जाते थे। यह मात्रा मेरी ज़रूरत से ज़्यादा थी, इसलिए मैं आधी जिनेवरा को दे देता था; मेरी पसंद कभी नहीं बदलती थी, हालाँकि कई अन्य लोग अतिरिक्त मात्रा पर लालच करते थे; और बदले में वह कभी-कभी मुझे अपनी कॉफी का एक हिस्सा दे देती थी। आज सुबह मुझे कॉफी पीकर अच्छा लगा; मुझे भूख नहीं थी, लेकिन प्यास से मेरा गला सूख रहा था। मुझे नहीं पता कि मैंने अपनी रोटी किसी और को देने के बजाय जिनेवरा को देना क्यों चुना; और न ही यह कि, अगर कभी-कभार दो लोगों को एक ही बर्तन का इस्तेमाल करना पड़ता था, जैसा कि कभी-कभार होता था—उदाहरण के लिए, जब हम ग्रामीण इलाकों में लंबी सैर पर जाते थे और किसी फार्म पर जलपान के लिए रुकते थे—तो मैं हमेशा यही कोशिश करता था कि वह मेरी साथी बने और मुझे उसे सफेद बीयर, मीठी शराब या ताजा दूध में से सबसे बड़ा हिस्सा लेने देना अच्छा लगता था: ऐसा ही होता था, और वह यह जानती थी; और इसलिए, हालांकि हम रोजाना झगड़ते थे, फिर भी हम कभी एक-दूसरे से अलग नहीं हुए।

नाश्ते के बाद मेरी आदत थी कि मैं पहली श्रेणी में चला जाता था और वहाँ अकेले बैठकर पढ़ता या सोचता (अक्सर बाद वाला काम करता था) जब तक कि नौ बजे की घंटी बज कर सभी दरवाजे नहीं खुल जाते, बाहरी लोगों और अर्ध-पेंशनभोगियों की

भीड़ अंदर नहीं आ जाती, और उस चहल-पहल और कामकाज के लिए प्रवेश का संकेत नहीं मिल जाता, जिसमें शाम पांच बजे तक कोई आराम नहीं मिलता था।

आज सुबह मैं अभी बैठा ही था कि दरवाजे पर दस्तक हुई।

“माफ़ कीजिए, मैडम,” एक पेंशनभोगी महिला ने धीरे से प्रवेश करते हुए कहा; और अपनी मेज से कोई आवश्यक पुस्तक या कागज़ लेकर, वह दबे पांव पीछे हट गई, मेरे पास से गुज़रते हुए बुदबुदाई, “कितनी मैडम लग गई हैं!”

सचमुच, मैं एक दिखावटी इंसान थी! मेरे सामने पढ़ाई के सारे साधन फैले हुए थे, लेकिन मैं कुछ नहीं कर रही थी; न कुछ किया था, न कुछ करने का इरादा था। इस तरह दुनिया हमें उन गुणों का श्रेय देती है जो हममें होते ही नहीं। मैडम बेक खुद मुझे बिल्कुल मंदबुद्धि मानती थीं, और अक्सर गंभीरता से मुझे चेतावनी देती थीं कि मैं बहुत ज्यादा पढ़ाई न करूं, कहीं ऐसा न हो कि सारा खून मेरे सिर पर चढ़ जाए। दरअसल, रू फॉसेट में हर कोई यह अंधविश्वास रखता था कि "मिस लूसी" (अमीर महिला) बहुत पढ़ी-लिखी हैं; एम. इमैनुएल को छोड़कर, जिन्होंने अपने खास तरीकों से, जो मेरे लिए बिल्कुल समझ से परे थे, मेरी असली योग्यताओं का काफी हद तक अंदाजा लगा लिया था, और चुपके से मेरे कान में अपनी कम योग्यताओं पर अपनी शरारती खुशी जाहिर करते थे। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने कभी इस कमी की परवाह नहीं की। मुझे अपने विचारों में खो जाना बहुत अच्छा लगता है; मुझे कुछ किताबें पढ़ने में बहुत आनंद आता था, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं: मैं हमेशा उन किताबों को पसंद करती थी जिनकी शैली या भाव में लेखक की व्यक्तिगत प्रकृति स्पष्ट रूप से झलकती हो; चरित्रहीन किताबों से स्वाभाविक रूप से ऊब जाना, चाहे वे कितनी भी चतुर और सराहनीय क्यों न हों: यह अच्छी तरह से समझना कि, जहाँ तक मेरे अपने दिमाग का सवाल है, ईश्वर ने इसकी शक्तियों और इसकी क्रिया को सीमित कर दिया है - मुझे विश्वास है कि मैं दिए गए उपहार के लिए आभारी हूँ, लेकिन उच्चतर क्षमताओं के लिए महत्वाकांक्षी नहीं हूँ, उच्चतर संस्कृति के लिए बेचैन नहीं हूँ।

वह विनम्र छात्र अभी गया भी नहीं था कि अचानक, बिना किसी औपचारिकता के, बिना किसी संकेत के, एक दूसरा घुसपैठिया अंदर आ गया। अगर मैं अंधा भी होता तो भी पहचान लेता कि यह कौन है। मेरे स्वभाव में मौजूद संयम का मेरे सहपाठियों के व्यवहार पर अच्छा और मेरे लिए सुविधाजनक प्रभाव पड़ चुका था; अब मुझे शायद ही कभी किसी असभ्य या दखलंदाजी भरे व्यवहार का सामना करना पड़ता था। जब

मैं पहली बार आया था, तो कभी-कभार कोई रूखा जर्मन मुझे कंधे पर थपथपाकर दौड़ लगाने के लिए कहता था; या कोई चंचल लाबासेकुरियन मुझे बांह से पकड़कर खेल के मैदान की ओर खींच ले जाती थी: "पास डे जिएंट" (एक प्रकार का झूला) खेलने या "अन, ड्यूक्स, ट्रोइस" (एक प्रकार का खेल) नामक एक शरारती लुका-छिपी के खेल में शामिल होने के लिए भी अक्सर प्रस्ताव आते थे; लेकिन ये सभी छोटी-मोटी बातें कुछ समय पहले बंद हो गई थीं - और ये सब बिना किसी परेशानी के बंद हो गईं, और मुझे इन्हें रोकने की ज़रूरत भी नहीं पड़ी। अब मुझे किसी परिचित प्रदर्शन से डरने या सहने की ज़रूरत नहीं थी, सिवाय एक तरफ से; और चूंकि वह अंग्रेज़ों का प्रदर्शन था, इसलिए मैं उसे सहन कर सकता था। जिनेवरा फैंसहावे को ज़रा भी संकोच नहीं था कि वह मुझे सड़क पार करते समय पकड़ लेती, मुझे जबरदस्ती वाल्ट्ज़ में घुमा देती और अपनी इस हरकत से होने वाली मानसिक और शारीरिक परेशानी का भरपूर आनंद लेती। अब जिनेवरा फैंसहावे ही मेरे "विद्वत्तापूर्ण अवकाश" में दखल दे रही थी। वह अपनी बगल में एक बड़ी संगीत-पुस्तक लिए बैठी थी।

मैंने उससे तुरंत कहा, "जाओ, अभ्यास करो! तुम उस छोटे से सैलून में जाओ!"

“जब तक मैं तुमसे बात न कर लूँ, प्यारी दोस्त, तब तक नहीं। मुझे पता है कि तुम अपनी छुट्टियाँ कहाँ बिता रही हो, और कैसे तुमने सौंदर्य के लिए त्याग करना शुरू कर दिया है, और किसी भी अन्य सुंदरी की तरह जीवन का आनंद ले रही हो। मैंने तुम्हें पिछली रात संगीत कार्यक्रम में देखा था, तुम बिल्कुल किसी और की तरह सजी हुई थी। तुम्हारी टेलर कौन है?”

“बकवास! कितनी खूबसूरती से शुरुआत हुई है! हे भगवान! — बिलकुल बकवास!”

"चलो, यहाँ से चले जाओ, जिनेवरा। मुझे सच में तुम्हारी संगति नहीं चाहिए।"

लेकिन जब मुझे तुम्हारी इतनी चाहत है, हे देवदूत, तो तुम्हारी थोड़ी सी अनिच्छा का क्या अर्थ है? हे भगवान! हम अपने प्रतिभाशाली देशवासी - विद्वान 'ब्रिटानिक' - के साथ तालमेल बिठाना जानते हैं। और इसलिए, आवरसन, क्या तुम इसिडोर को जानते हो?

मैं जॉन ब्रेटन को जानता हूँ।

“अरे, चुप रहो!” (कानों में उंगलियां डालते हुए) “तुम्हारे ये असभ्य अंग्रेज़ी शब्द

मेरे कान फाड़ देते हैं। लेकिन, हमारे प्यारे जॉन कैसे हैं? मुझे उनके बारे में बताओ। बेचारा ज़रूर दुखी होगा। पिछली रात मेरे व्यवहार पर उन्होंने क्या कहा? क्या मैं क्रूर नहीं थी?”

"क्या तुम्हें लगता है कि मैंने तुम्हें नोटिस किया?"

“वह एक सुखद शाम थी। ओह, वह अद्भुत डी हमाल! और फिर दूर से दूसरे को उदास और मरते हुए देखना; और वह बूढ़ी औरत - मेरी होने वाली सास! लेकिन मुझे डर है कि मैंने और लेडी सारा ने उनसे सवाल पूछकर थोड़ी बदतमीज़ी की।”

"लेडी सारा ने उनसे कभी कोई सवाल नहीं किया; और आपने जो किया है, उसके लिए जरा भी परेशान न हों: श्रीमती ब्रेटन आपके उपहास को सह लेंगी।"

“हो सकता है वो ऐसा कर पाए: बूढ़ी औरतें मजबूत होती हैं; लेकिन उसका बेचारा बेटा! मुझे बताओ उसने क्या कहा: मैंने देखा कि वो बुरी तरह से आहत था।”

उन्होंने कहा कि आप ऐसी दिखती हैं मानो दिल से आप पहले से ही मैडम डी हमाल हों।

“क्या उसने देखा?” वह खुशी से चिल्लाई। “उसने यह बात नोटिस की? कितना प्यारा! मुझे लगा था कि वह ईर्ष्या से पागल हो जाएगा?”

"गिनेवरा, क्या तुमने डॉ. ब्रेटन से सचमुच रिश्ता खत्म कर लिया है? क्या तुम चाहती हो कि वह तुम्हें छोड़ दे?"

“ओह! आपको पता है कि वह ऐसा नहीं कर सकता: लेकिन क्या वह पागल नहीं था?”

“बिल्कुल पागल,” मैंने सहमति जताते हुए कहा; “मार्च के खरगोश की तरह पागल।”

"अच्छा, तो आप उसे घर कैसे लाए?"

“अरे बाप रे! क्या आपको उसकी बेचारी माँ और मुझ पर ज़रा भी दया नहीं आती? सोचिए, हम उसे गाड़ी में कसकर पकड़े हुए थे और वह हमारे बीच बड़बड़ा रहा था, मानो सबको पागल कर देने वाला हो। पता नहीं कैसे कोचवान से ही गलती हो गई और हम रास्ता भटक गए।”

“सचमुच ऐसा है? तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो। अब, लूसी स्नो —”

"मैं आपको आश्वस्त करता हूं कि यह एक तथ्य है - और यह भी एक तथ्य है कि डॉ. ब्रेटन गाड़ी में नहीं रुके: वे हमसे अलग हो गए और बाहर सवारी करने चले गए।"

"और बाद में?"

"उसके बाद - जब वह घर पहुंचा - तो वहां का दृश्य शब्दों में बयान करना असंभव है।"

"अरे, लेकिन इसका वर्णन करो— तुम्हें पता है कि यह कितना मजेदार है!"

“क्या आपको इसमें मज़ा आया, मिस फैंशॉ? लेकिन” (गंभीर स्वर में) “आप यह कहावत तो जानती ही हैं – ‘जो एक के लिए खेल है, वही दूसरे के लिए मौत हो सकती है।’”

"चलो, वहाँ एक प्यारा सा टिमोन है।"

"ईमानदारी से कहूं तो, मैं ऐसा नहीं कर सकता, जब तक आप मुझे यह आश्वासन न दें कि आपमें थोड़ी सी भी दया है।"

"मेरे पास—इतनी विशालता है, आप सोच भी नहीं सकते!"

“अच्छा! इस स्थिति में, आप कल्पना कर सकते हैं कि डॉ. ग्राहम ब्रेटन ने पहली बार में अपना भोजन अस्वीकार कर दिया होगा— उनके लिए तैयार किया गया चिकन और स्वीटब्रेड, मेज पर बिना छुए ही पड़ा रहा होगा। फिर— लेकिन उन भयावह विवरणों पर विस्तार से चर्चा करने का कोई लाभ नहीं है। इतना कहना ही पर्याप्त है कि अपने बचपन के सबसे तूफानी दौरों में भी, उनकी माँ को उन्हें चादर ओढ़ाने में उतनी मेहनत कभी नहीं करनी पड़ी जितनी उस रात करनी पड़ी थी।”

“वह स्थिर नहीं लेट रहा था?”

“वह एक जगह स्थिर नहीं रह सकता था: बात वहीं थी। चादरें भले ही बिछाई गई हों, लेकिन असली चुनौती उन्हें बिछाए रखना था।”

और उसने क्या कहा?

“अरे! क्या तुम कल्पना नहीं कर सकते कि वह अपनी दिव्य जिनेवरा की मांग कर रहा हो, उस राक्षस, डी हमाल को शाप दे रहा हो - सुनहरे बालों, नीली आंखों, सफेद भुजाओं और चमकते कंगन के बारे में बड़बड़ा रहा हो?”

“नहीं, क्या उसने देखा? क्या उसने कंगन देखा?”

“क्या तुमने कंगन देखा? हाँ, बिल्कुल साफ़-साफ़ देखा: और शायद उसने भी पहली बार वह निशान देखा होगा जिससे तुम्हारे हाथ पर कंगन के निशान बने हैं। जिनेवरा” (उठते हुए और लहजा बदलते हुए), “चलो, अब इसे यहीं खत्म करते हैं। जाओ, अभ्यास करो।”

और मैंने दरवाजा खोल दिया।

लेकिन तुमने मुझे सब कुछ नहीं बताया।

“जब तक मैं तुम्हें सब कुछ बता न दूं, तब तक इंतज़ार मत करो। इतनी ज़्यादा बातें करने से तुम्हें कोई खुशी नहीं मिलेगी। मार्च!”

“अरे बाप रे!” उसने कहा; लेकिन उसने बात मान ली: और वास्तव में, पहली कक्षा मेरा इलाका था, और वहाँ वह कानूनी तौर पर मुझसे निकासी के नोटिस का विरोध नहीं कर सकती थी।

सच कहूँ तो, उस समय मैं उससे जितना असंतुष्ट था, उतना पहले कभी नहीं था। वास्तविकता और मेरे वर्णन के बीच के अंतर के बारे में सोचकर मुझे आनंद आता था—डॉ. जॉन को घर लौटते समय गाड़ी चलाते हुए, बड़े चाव से खाना खाते हुए और शांत मन से आराम करते हुए याद करना। असल में, जब मैंने उन्हें सचमुच दुखी देखा, तभी मुझे उनकी पीड़ा के कारण, उस नाज़ुक और नाज़ुक महिला पर सचमुच गुस्सा आया।

* * * * *

दो सप्ताह बीत गए; मैं एक बार फिर स्कूल के बंधन में बंधने लगा था, और बदलाव के तीव्र दर्द से निकलकर रीति-रिवाजों के मंद पड़ने लगा था। एक दोपहर, पहली कक्षा में जाते समय, जहाँ मुझे "शैली और साहित्य" के पाठ में उपस्थित होना था, सड़क पार करते हुए मैंने एक लंबी और बड़ी खिड़की के पास द्वारपाल रोज़ीन को खड़ा देखा। हमेशा की तरह उसका हावभाव बिल्कुल सहज था। वह हमेशा आराम से खड़ी रहती थी; उसका एक हाथ एप्रन की जेब में था, और दूसरे हाथ से वह उस समय एक पत्र को देख रही थी, जिस पर मैडमोजेल बड़े शांत भाव से पता पढ़ रही थी और मुहर का ध्यान से अध्ययन कर रही थी।

एक पत्र! ठीक उसी तरह के पत्र की आकृति पिछले सात दिनों से मेरे दिमाग में गूंज रही थी। मैंने कल रात एक पत्र का सपना देखा था। उस पत्र की ओर एक तीव्र आकर्षण मुझे खींच रहा था; फिर भी, क्या मुझे रोसीन से उस सफेद लिफाफे पर एक नज़र डालने की भी हिम्मत करनी चाहिए थी, जिसके बीच में लाल मोम का धब्बा था, यह मुझे नहीं पता। नहीं; मुझे लगता है कि निराशा से मिलने वाले तिरस्कार के डर से मैं चुपके से निकल जाती: मेरा दिल अब ऐसे धड़क रहा था जैसे मैंने उसके आने की

आहट सुन ली हो। घबराहट भरी गलती! यह साहित्य के प्रोफेसर के तेज़ कदम थे जो गलियारे में नाप रहे थे। मैं उनके सामने से भाग गई। अगर मैं उनके आने से पहले चुपचाप अपनी डेस्क पर बैठी होती, और मेरी आज्ञा का पालन करने वाली कक्षा अनुशासित रूप से तैयार होती, तो शायद वह मुझे डांट नहीं लगाते; लेकिन, अगर मुझे गलियारे में इधर-उधर भटकते हुए पकड़ा गया, तो मुझे निश्चित रूप से एक लंबी-चौड़ी फटकार सुननी पड़ती। मुझे बैठने, पूर्ण मौन बनाए रखने, अपना काम निकालने और सबसे गहन और प्रशिक्षित खामोशी के बीच उसे शुरू करने का समय मिल गया था, इससे पहले कि एम. इमानुएल अपने जोरदार दरवाजे की कुंडी और पैनल की आवाज और अपने गहरे, अनावश्यक प्रणाम के साथ प्रवेश करें, जो क्रोध का संकेत था।

हमेशा की तरह वह अचानक बिजली की कड़क की तरह हम पर टूट पड़ा; लेकिन दरवाजे से गलियारे तक बिजली की तरह तेज़ी से जाने के बजाय, वह मेरी मेज पर आकर बीच में ही रुक गया। अपना चेहरा मेरी और खिड़की की ओर करके, छात्रों और कमरे की ओर पीठ करके, उसने मुझे एक ऐसी नज़र से देखा - ऐसी नज़र जिससे मुझे सीधा खड़े होकर उससे पूछने का साहस मिल जाता कि उसका क्या मतलब है - एक ऐसी घूरती हुई अविश्वास भरी नज़र।

“वाह! आपके लिए,” उन्होंने अपनी वेस्टकोट से हाथ निकालते हुए कहा और मेरी मेज पर एक पत्र रख दिया—वही पत्र जो मैंने रोसीन के हाथों में देखा था—वही पत्र जिसका सफ़ेद उत्कीर्ण चेहरा और सिंदूरी लाल रंग की एक आँख मेरे अंतर्मन की दृष्टि में इतनी स्पष्टता और पूर्णता से अंकित हो गई थी। मैं इसे पहचान गया, मैंने इसे अपनी आशा का पत्र, अपनी इच्छा की पूर्ति, अपने संदेह से मुक्ति, अपने भय से छुटकारा पाया। यह पत्र एम. पॉल ने, अपनी बेवजह दखलंदाजी की आदत के साथ, द्वारपाल से लिया था और अब स्वयं उसे सौंप दिया था।

मुझे गुस्सा आ सकता था, लेकिन उस अनुभूति के लिए मेरे पास एक पल भी नहीं था। हाँ: मेरे हाथ में कोई मामूली नोट नहीं, बल्कि एक लिफाफा था, जिसमें कम से कम एक कागज तो होना ही चाहिए था: यह हल्का नहीं, बल्कि मजबूत, ठोस और संतोषजनक लग रहा था। और यहाँ पता लिखा था, "मिस लूसी स्नो", साफ, स्पष्ट, एक समान और दृढ़ लिखावट में; और यहाँ मुहर थी, गोल, पूरी, निर्मल उंगलियों से कुशलता से लगाई गई, जिस पर "जे. जी. बी." के शुरुआती अक्षरों की स्पष्ट छाप थी। मुझे एक सुखद अनुभूति हुई - एक आनंदमय भावना जो मेरे दिल को गर्म कर

गई और मेरी नसों में दौड़ गई। पहली बार मेरी आशा साकार हुई थी। मेरे हाथ में वास्तविक, ठोस आनंद का एक टुकड़ा था: कोई सपना नहीं, दिमाग की कोई छवि नहीं, उन धुंधली कल्पनाओं में से एक नहीं, जिन पर मानवता तरसती है लेकिन जी नहीं सकती; यह उस अमृत का ढेर नहीं था जिसकी मैंने कुछ देर पहले नीरसता से प्रशंसा की थी—जो वास्तव में पहले होठों पर एक अवर्णनीय और अलौकिक मिठास के साथ पिघल जाता है, लेकिन अंत में, हमारी आत्माएँ उससे घृणा करने लगती हैं; प्राकृतिक और धरती पर उगाए गए भोजन के लिए बेतहाशा तरसती हैं, स्वर्ग की आत्माओं से अपनी आत्मा की ओस और सार को वापस लेने की प्रार्थना करती हैं—एक दिव्य भोजन, पर मनुष्यों के लिए घातक। यह न तो मीठे ओले थे, न ही धनिये के छोटे बीज—न ही कोई पतला वेफर, न ही लजीज शहद, जो मुझे मिला था; यह शिकारी का जंगली, स्वादिष्ट मांस था, पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक, जंगल में पाला गया या रेगिस्तान में विकसित, ताजा, स्वास्थ्यवर्धक और जीवनदायी। यह वही था जो बूढ़े मरते हुए कुलपति ने अपने बेटे एसाव से माँगा था, और बदले में अपनी अंतिम साँस का आशीर्वाद देने का वादा किया था। यह ईश्वर का वरदान था; और मैंने मन ही मन उस ईश्वर का धन्यवाद किया जिसने इसे प्रदान किया था। मैंने केवल बाहरी तौर पर उस व्यक्ति को धन्यवाद दिया और रोते हुए कहा, "धन्यवाद, धन्यवाद, महोदय!"

महोदय ने अपने होंठ सिकोड़े, मुझे घृणा भरी निगाहों से देखा और अपने कमरे की ओर चल दिए। श्रीमान पॉल बिल्कुल भी अच्छे इंसान नहीं थे, हालांकि उनमें कुछ अच्छी बातें भी थीं।

क्या मैंने अपना पत्र वहीं पढ़ लिया था? क्या मैंने हिरण का मांस तुरंत और जल्दबाजी में खा लिया था, मानो एसाव का तीर हर दिन चलता हो?

मुझे बेहतर पता था। पता लिखा हुआ लिफाफा—सील, जिस पर तीन स्पष्ट अक्षर थे—वर्तमान के लिए वरदान और प्रचुरता थी। मैं चुपके से कमरे से निकला, मैंने बड़े छात्रावास की चाबी ली, जो दिन में बंद रहता था। मैं अपनी दराज के पास गया; मैडम के ऊपर आकर मुझे देख लेने के डर से, मैं जल्दी में और कांपते हुए, एक दराज खोला, एक बक्सा खोला, और एक डिब्बा निकाला, और—एक बार फिर उस पर नज़रें गड़ाकर, और विस्मय, शर्म और खुशी के मिले-जुले भाव से मुहर को अपने होठों तक ले जाकर—मैंने उस अनमोल खजाने को, जो अभी तक बिल्कुल सुंदर और अक्षुण्ण था, चांदी के कागज में लपेटकर, बक्से में रखा, बक्सा और दराज बंद किया,

छात्रावास को फिर से बंद किया, ताला लगाया, और कक्षा में लौट आया, ऐसा महसूस करते हुए जैसे परियों की कहानियां सच हों, और परियों के उपहार कोई सपना न हों। अजीब, मीठा पागलपन! और यह पत्र, मेरी खुशी का स्रोत, मैंने अभी तक पढ़ा नहीं था: मुझे अभी तक इसकी पंक्तियों की संख्या भी नहीं पता थी।

जब मैं कक्षा में दोबारा दाखिल हुआ, तो देखा कि एम. पॉल महामारी की तरह भयंकर क्रोध में थे! किसी छात्रा ने उनकी पसंद के हिसाब से स्पष्ट या साफ-साफ नहीं बोला था, और अब वह और अन्य छात्राएं रो रही थीं, और वह अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे लगभग आग बबूला होकर चिल्ला रहे थे। हैरानी की बात यह है कि जैसे ही मैं वहाँ पहुँचा, वह मुझ पर टूट पड़े।

"क्या मैं इन लड़कियों की स्वामिनी थी? क्या मैं उन्हें सभ्य महिलाओं जैसा आचरण सिखाने का दावा करती थी? और क्या मैं उन्हें अपनी मातृभाषा को गले में दबाने, उसे दांतों से कुचलने और मसलने की अनुमति देती थी, और उसे इसमें कोई संदेह नहीं था कि मैं उन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित भी करती थी, मानो उन्हें अपने बोले गए शब्दों पर शर्म आती हो? क्या यह लज्जा थी? वह बेहतर जानता था। यह एक घिनौनी झूठी भावना थी - बुराई की संतान या अग्रदूत। प्रथम श्रेणी की छात्राओं के इस घिसे-पिटे व्यवहार, इस तोड़-मरोड़ और मुंह बनाने, इस श्रेष्ठ भाषा को कुचलने, इस सामान्य बनावटीपन और घिनौनी हठधर्मिता को सहन करने के बजाय, वह उन्हें असहनीय छोटी रानियों की श्रेणी में डाल देता और खुद को तीसरी कक्षा के बच्चों को एबीसी पढ़ाने तक सीमित रखता।"

मैं इन सब बातों पर क्या कह सकता था? सचमुच कुछ नहीं; और मुझे उम्मीद थी कि वह मुझे चुप रहने देगा। तूफान फिर से शुरू हो गया।

"उसके हर सवाल का जवाब देने से इनकार कर दिया गया? ऐसा लगता था कि उस जगह पर—उस दिखावटी, उच्च कोटि के कमरे जैसे कमरे में, जहाँ किताबों की अलमारियाँ भव्य थीं, हरे रंग की मेजें थीं, फूलों के स्टैंडों का ढेर लगा था, तस्वीरों और नक्शों का कचरा था, और एक विदेशी चौकीदार भी था!—ऐसा लगता था कि वहाँ यही चलन था कि साहित्य के प्रोफेसर जवाब देने लायक नहीं हैं! ये नए विचार थे; उन्हें कोई शक नहीं था कि ये सीधे 'ग्रेट ब्रिटेन' से आयात किए गए थे: इनमें द्वीपीय उद्दंडता और अहंकार झलक रहा था।"

दूसरे को शांत करो—लड़कियाँ, जिनमें से किसी को भी किसी अन्य शिक्षक की

फटकार पर कभी आँसू बहाते हुए नहीं देखा गया था, अब सभी एम. इमानुएल की उग्र गर्मी के सामने बर्फ की मूर्तियों की तरह पिघल रही थीं: मैं अभी ज्यादा विचलित नहीं हुआ था, बैठ गया और अपना काम फिर से शुरू करने का साहस किया।

मेरी निरंतर चुप्पी या सिलाई करते हुए मेरे हाथ की हरकत में कुछ ऐसा था जिसने एम. इमानुएल के धैर्य की अंतिम सीमा को भी पार कर दिया; वह सचमुच अपने संयम से बाहर आ गया। चूल्हा मेरी मेज के पास था, उसने उस पर हमला कर दिया; लोहे का छोटा सा दरवाजा लगभग अपने कब्जों से उखड़ गया, ईंधन इधर-उधर उड़ने लगा।

"क्या तुम्हारा इरादा मेरा अपमान करने का है?" उसने मुझसे धीमी, क्रोधित आवाज में कहा, और आग लगाने का बहाना करते हुए उसने मुझे अपमानित किया।

अगर संभव हो तो उसे थोड़ा शांत करने का समय आ गया था।

“लेकिन, महोदय,” मैंने कहा, “मैं दुनिया में किसी भी कीमत पर आपका अपमान नहीं करूंगा। मुझे अच्छी तरह याद है कि आपने एक बार कहा था कि हमें दोस्त होना चाहिए।”

मेरी आवाज़ लड़खड़ाने का मेरा कोई इरादा नहीं था, लेकिन फिर भी लड़खड़ा गई: मुझे लगता है कि यह हाल ही में हुई खुशी की बेचैनी के कारण हुआ, न कि वर्तमान भय के किसी आवेग के कारण। फिर भी, एम. पॉल के क्रोध में कुछ तो ऐसा था—एक तरह की तीव्र भावना—जिससे विशेष रूप से आंसू आ गए। मैं दुखी नहीं था, न ही बहुत डरा हुआ था, फिर भी मैं रो पड़ा।

“चलो, चलो!” उसने चारों ओर देखते हुए और चारों ओर फैली बाढ़ को देखकर कहा। “मैं सचमुच एक राक्षस और बदमाश हूँ। मेरे पास केवल एक रुमाल है,” उसने आगे कहा, “लेकिन अगर मेरे पास बीस होते, तो मैं आप सभी को एक-एक देता। आपकी शिक्षिका आपकी प्रतिनिधि होंगी। लीजिए, मिस लूसी।”

और उन्होंने एक साफ रेशमी रुमाल निकाला और मेरी ओर बढ़ाया। अब जो व्यक्ति एम. पॉल को नहीं जानता था, जो उनसे और उनके स्वभाव से अपरिचित था, वह स्वाभाविक रूप से इस प्रस्ताव पर आपत्ति जताता—इसे स्वीकार करने से इनकार कर देता— इत्यादि। लेकिन मुझे स्पष्ट रूप से लगा कि ऐसा करना उचित नहीं होगा: जरा सी भी हिचकिचाहट शांति की इस नई संधि के लिए घातक साबित होती। मैं उठा और रुमाल को आधा पकड़कर, शालीनता से उसे ग्रहण किया, उससे अपनी आँखें

पोंछीं, और अपनी सीट पर वापस बैठ गया। शांति का झंडा हाथ में और गोद में रखे हुए, मैंने पाठ के शेष समय के दौरान विशेष सावधानी बरती कि न तो सुई को छूऊँ, न अंगुली को, न कैंची को, न मलमल को। एम. पॉल ने इन औजारों पर ईर्ष्या भरी निगाहें डालीं; वे इनसे घोर घृणा करते थे, क्योंकि वे सिलाई को अपने ध्यान से भटकाने का कारण मानते थे। उन्होंने बहुत ही प्रभावशाली पाठ दिया, और अंत तक वे बहुत ही दयालु और मित्रवत रहे। उसके ऐसा करने से पहले ही बादल छंट गए और सूरज चमकने लगा—आंसुओं की जगह मुस्कानें आ गईं।

कमरे से निकलते समय वह एक बार फिर मेरी मेज के पास रुका।

"और तुम्हारा पत्र?" उसने इस बार उतने उग्र स्वर में नहीं कहा।

"मैंने इसे अभी तक नहीं पढ़ा है, महोदय।"

"आह! इसे एक बार में पढ़ना बहुत अच्छा नहीं है; इसे बचाकर रखना चाहिए, जैसे मैं बचपन में पढ़ता था।"

मैं एक ऐसा आड़ू बचाकर रखता था जिसका फूल पूरी तरह से पका हुआ होता था?

मेरा अनुमान सच्चाई के इतना करीब था कि मेरे चेहरे पर अचानक आई गर्माहट ने इस बात को बयां कर दिया।

"उस पत्र को पढ़ते हुए खुद को एक सुखद पल का वादा करो; इसे अकेले में खोलोगी—है ना?" आह! एक मुस्कान जवाब देती है। वाह वाह! किसी को इतना कठोर नहीं होना चाहिए; 'जवानी के पास सिर्फ एक समय होता है'।"

"महाशय, महाशय!" मैंने उनके पीछे से पुकारा, या यूँ कहूँ कि फुसफुसाते हुए कहा, जब वे जाने के लिए मुड़े, "मुझे गलतफहमी में मत छोड़िए। यह महज़ एक मित्र का पत्र है। इसे पढ़े बिना भी मैं इसकी पुष्टि कर सकता हूँ।"

"मैं समझ गया, मैं समझ गया: हम जानते हैं कि दोस्त क्या होता है। नमस्कार।"

मैडमोजेल!

लेकिन, महाशय, यह रहा आपका रूमाल।

"इसे अपने पास रखो, इसे अपने पास रखो, जब तक पत्र पढ़ा न जाए, फिर इसे मेरे पास लाओ; मैं तुम्हारी आँखों में पत्र का भाव पढ़ लूँगा।"

जब वह चला गया, तो विद्यार्थी कक्षा से निकलकर बरसेउ (स्कूल परिसर) में और फिर वहाँ से बगीचे और आँगन में पाँच बजे के भोजन से पहले अपने नियमित

मनोरंजन के लिए निकल चुके थे। मैं एक पल के लिए सोच में डूबा रहा और अनमने ढंग से अपने हाथ पर लिपटे रूमाल को घुमाता रहा। किसी कारण से—शायद बचपन की सुनहरी चमक के अचानक लौट आने से प्रसन्न होकर, उसकी उमंग के अप्रत्याशित नवीनीकरण से प्रेरित होकर, समापन के समय की स्वतंत्रता से खुश होकर, और सबसे बढ़कर, ऊपर के कमरे में रखे उस खजाने की आनंदमय चेतना से हृदय को मिली शांति के कारण—मैं रूमाल से ऐसे खेलने लगा जैसे वह कोई गेंद हो, उसे हवा में उछालता और गिरते ही पकड़ लेता। खेल को मेरे हाथ के अलावा किसी और हाथ ने रोक दिया—एक हाथ जो मेरी आस्तीन से निकला और मेरे कंधे पर फैला; उसने उस तात्कालिक खिलौने को पकड़ा और इन उदास शब्दों के साथ उसे ले गया:

मुझे दिख रहा है कि तुम मेरा और मेरे सामान का मजाक उड़ा रहे हो।

सचमुच वह छोटा आदमी भयानक था: सनक और सर्वव्यापकता का एक मात्र भूत: किसी को कभी भी उसकी इच्छा या उसके ठिकाने का पता नहीं चलता था।

अध्याय XXII.

अक्षर।

जब घर में सब शांत थे; जब खाना खत्म हो चुका था और शोरगुल भरा मनोरंजन का समय बीत चुका था; जब अंधेरा छा चुका था और भोजन कक्ष में अध्ययन का शांत दीपक जल रहा था; जब बाहरी लोग घर जा चुके थे, शाम के लिए खटकते दरवाजे और शोरगुल वाली घंटी शांत हो गई थी; जब मैडम अपनी माँ और कुछ दोस्तों के साथ भोजन कक्ष में आराम से बैठ गई थीं; तब मैं चुपके से रसोई में गया, एक विशेष अवसर के लिए आधे घंटे के लिए एक छोटी सी शराब माँगी, मेरे मित्र गोटन ने मेरी

विनती स्वीकार कर ली और उत्तर दिया, "लेकिन निश्चित रूप से, अगर आप चाहें तो आपको दो मिल जाएँगे;" और, हाथ में हल्की शराब लेकर, मैं चुपचाप शयनकक्ष की ओर चल पड़ा।

उस कमरे में एक विद्यार्थी को अस्वस्थ देखकर मुझे बहुत निराशा हुई, और उससे भी अधिक तब जब मैंने मलमल की नाइट कैप के किनारों के बीच शिक्षिका जिनेवरा फैंसहावे को देखा; इस समय वह लेटी हुई थीं, यह सच है, लेकिन निश्चित रूप से वह जागकर मुझे बकबक से परेशान कर देंगी, जब यह व्यवधान बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं होगा: वास्तव में, जब मैं उन्हें देख रही थी, उनकी पलकों की हल्की सी झपकी ने मुझे आगाह कर दिया कि आराम का यह दृश्य शायद एक चाल हो, जो "टिमोन" की गतिविधियों पर गुप्त निगरानी को छुपाने के लिए हो; उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। और मैं तो बस अकेले रहना चाहती थी, शांति से अपना अनमोल पत्र पढ़ना चाहती थी।

खैर, मुझे कक्षाओं में जाना ही होगा। अपनी मनचाही चीज़ ढूंढकर, मैं नीचे उतरा। बदकिस्मती मेरा पीछा कर रही थी। कक्षाओं में मोमबत्ती की रोशनी में झाड़ू-पोछा और शुद्धिकरण का काम चल रहा था, जैसा कि सप्ताह में एक बार होता है: बेंचें मेजों पर ढेर थीं, हवा धूल से भरी हुई थी, गीली कॉफी की राख (जिसे लाबासेकुरियन नौकरानियां चाय की पत्तियों की जगह इस्तेमाल करती थीं) से फर्श काला हो गया था; हर तरफ निराशाजनक अव्यवस्था थी। स्तब्ध, पर हारा नहीं, मैं पीछे हट गया, पहले की तरह ही दृढ़ निश्चय के साथ कहीं न कहीं एकांत पाने की कोशिश में।

जिस चाबी से मैं भंडारगृह को पहचानती थी, उसे लेकर मैं लगातार तीन सीढ़ियाँ चढ़ी, एक अँधेरे, संकरे, सुनसान चबूतरे पर पहुँची, एक दीमक लगे दरवाजे को खोला और गहरे, काले, ठंडे अटारी में घुस गई। यहाँ कोई मेरा पीछा नहीं करेगा—कोई मुझे परेशान नहीं करेगा—यहाँ तक कि मैडम भी नहीं। मैंने अटारी का दरवाजा बंद कर दिया; मैंने अपनी रोशनी एक जर्जर और फफूंदी लगी दराजों वाली अलमारी पर रखी; मैंने शॉल ओढ़ ली, क्योंकि हवा बर्फ की तरह ठंडी थी; मैंने अपना पत्र लिया; मीठी बेसब्री से काँपते हुए, मैंने उसकी सील तोड़ दी।

"क्या यह लंबा होगा - या छोटा होगा?" मैंने सोचा, अपनी आंखों पर हाथ फेरते हुए, दक्षिण से आ रही हल्की हवा की वजह से छाई चांदी जैसी धुंध को दूर करने की कोशिश की।

यह लंबा था।

"क्या यह अच्छा होगा? — क्या यह दयालु होगा?"

यह दयालुता थी।

मेरी संयमित, नियंत्रित और अनुशासित अपेक्षा के अनुरूप, यह बहुत दयालु प्रतीत हुआ: मेरी लालसा और भूखी सोच के अनुरूप, यह शायद वास्तविकता से कहीं अधिक दयालु प्रतीत हुआ।

मेरी आशा बहुत कम थी, डर बहुत अधिक था; इस सफलता के स्वाद में असीम आनंद था—शायद ऐसा आनंद जो बहुत से मनुष्य जीवन भर कभी अनुभव नहीं कर पाते। बर्फीली अटारी में बैठी वह बेचारी अंग्रेजी शिक्षिका, सर्दियों की हवा में टिमटिमाती धुंधली मोमबत्ती की रोशनी में एक साधारण, सौम्य पत्र पढ़ रही थी—बस इतना ही; हालाँकि वह सौम्यता तब मुझे दैवीय प्रतीत होती थी—वह महलों में रहने वाली अधिकांश रानियों से अधिक प्रसन्न थी।

बेशक, इस तरह की सतही खुशी क्षणिक ही हो सकती थी; फिर भी, जब तक यह बनी रही, यह सच्ची और बेहद खूबसूरत थी: शहद की एक मीठी फुहार जैसी। डॉ. जॉन ने मुझे विस्तार से लिखा था; उन्होंने खुशी से लिखा था; उन्होंने सौम्य भाव से लिखा था, अपनी और मेरी आँखों के सामने गुज़रे दृश्यों का आनंदमय वर्णन करते हुए, उन जगहों का जहाँ हम साथ गए थे, हमारी बातचीत का, संक्षेप में, पिछले कुछ सुखद हफ्तों की छोटी-छोटी बातों का। लेकिन इस आनंद का मूल भाव, उस प्रसन्न और सौम्य भाषा में निहित विश्वास था, कि यह केवल मुझे संतुष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि स्वयं को तृप्त करने के लिए लिखा गया था। एक ऐसी तृप्ति जिसकी उन्हें शायद फिर कभी इच्छा न हो, फिर कभी तलाश न हो - हर दृष्टि से निश्चितता के करीब एक परिकल्पना; लेकिन यह भविष्य से संबंधित थी। इस वर्तमान क्षण में कोई दर्द नहीं था, कोई दाग नहीं था, कोई कमी नहीं थी; परिपूर्ण, शुद्ध, परिपूर्ण, इसने मुझे गहराई से आशीर्वाद दिया। एक दिव्य देवदूत मानो मेरे पास आकर ठहर गया, मेरे हृदय की ओर झुका और उसकी धड़कन पर अपना कोमल, शीतल, उपचारक और पवित्र पंख रख दिया। डॉ. जॉन, आपने मुझे बाद में बहुत पीड़ा दी: उस एक प्रिय, याद की जाने वाली अच्छाई की खातिर, हर बुराई क्षमा हो जाए - निःस्वार्थ क्षमा!

क्या ऐसी दुष्ट शक्तियाँ हैं, जो मानवीय नहीं हैं, और जो मानवीय सुख से ईर्ष्या करती हैं? क्या वातावरण में कोई बुरी शक्तियाँ व्याप्त हैं, जो मनुष्य के लिए इसे

विषैला बना रही हैं? मेरे आस-पास क्या था?

उस विशाल, सुनसान अटारी में कुछ अजीब सी आवाज़ आई। मुझे पक्का यकीन था कि फर्श पर किसी के दबे कदमों की आहट सुनाई दे रही है: मानो किसी दुष्ट के साये से घिरी उस काली कोठरी से कोई रेंगता हुआ बाहर आ रहा हो। मैं मुड़ा: मेरी रोशनी कम थी; कमरा लंबा था – लेकिन हे भगवान! मैंने उस भूतिया कमरे के बीचोंबीच एक आकृति देखी जो पूरी तरह से काली और सफेद थी; उसके सीधे, संकरे, काले रंग के वस्त्र थे; सिर पर पट्टी बंधी थी, घूंघट था और वह सफेद रंग का था।

पाठक, आप जो चाहें कहें—मुझे बताएं कि मैं घबराया हुआ था या पागल; यह पुष्टि करें कि मैं उस पत्र की उत्तेजना से विचलित था; यह घोषणा करें कि मैंने सपना देखा था; मैं यह शपथ लेता हूँ—मैंने वहाँ—उस कमरे में—उस रात—एक नन जैसी छवि देखी।

मैं चीख पड़ी; मुझे घिन आ गई। अगर वह आकृति मेरे पास आ जाती तो मैं बेहोश हो जाती। वह दूर चली गई: मैं दरवाजे की ओर भागी। मैं सारी सीढ़ियाँ कैसे उतरी, मुझे नहीं पता। सहज प्रवृत्ति से मैंने भोजन कक्ष को छोड़ दिया और मैडम के बैठक कक्ष की ओर मुड़ गई: मैं अंदर घुस गई। मैंने कहा—

"उस जंगल में कुछ तो है; मैं वहां गया था: मैंने कुछ देखा था।"

आप सभी जाकर इसे देखें!

मैंने कहा, "आप सभी;" क्योंकि मुझे कमरा लोगों से भरा हुआ लग रहा था, हालांकि वास्तव में वहां केवल चार लोग मौजूद थे: मैडम बेक; उनकी मां, मैडम किंट, जो अस्वस्थ थीं और फिलहाल उनसे मिलने आई थीं; उनके भाई, एम. विक्टर किंट, और एक अन्य सज्जन, जो मेरे कमरे में प्रवेश करने पर उस बुजुर्ग महिला से बातचीत कर रहे थे और उनकी पीठ दरवाजे की ओर थी।

मेरे जानलेवा डर और कमजोरी ने मुझे बुरी तरह पीला कर दिया था। मुझे ठंड लग रही थी और मैं कांप रही थी। वे सब घबराकर उठ खड़े हुए; उन्होंने मुझे घेर लिया। मैंने उनसे खलिहान में जाने का आग्रह किया; उन सज्जनों को देखकर मुझे अच्छा लगा और हिम्मत मिली: ऐसा लगा जैसे आस-पास लोगों के होने से कुछ मदद और उम्मीद मिल सकती है। मैं दरवाजे की ओर मुड़ी और उन्हें अपने पीछे आने का इशारा किया। वे मुझे रोकना चाहते थे, लेकिन मैंने कहा कि उन्हें इस रास्ते आना ही होगा: उन्हें वह

देखना होगा जो मैंने देखा था - अटारी के बीचोंबीच कुछ अजीब सा खड़ा हुआ। और अब मुझे अपना पत्र याद आया, जो मैंने दराजों पर रोशनी में रखा था। यह अनमोल पत्र! इसके लिए जान की बाजी लगानी होगी। मैं तेजी से ऊपर की ओर भागी, क्योंकि मुझे पता था कि मेरा पीछा किया जा रहा है: उन्हें आना ही होगा।

देखो! जब मैं अटारी के दरवाजे पर पहुँचा, तो अंदर सब जगह गड्ढे जैसा अंधेरा था: बत्ती बुझ चुकी थी। सौभाग्य से किसी ने—शायद मैडम ने, अपनी हमेशा की समझदारी से—कमरे से एक दीपक लाया था; इसलिए जैसे ही वे ऊपर आए, एक किरण ने घने अंधेरे को चीर दिया। दराजों पर बुझी हुई बत्ती पड़ी थी; लेकिन पत्र कहाँ था? और अब मैं पत्र की तलाश कर रहा था, न कि नन की।

"मेरा पत्र! मेरा पत्र!" मैं हांफते-चिल्लाते लगभग पागलों की तरह गिड़गिड़ाने लगी। मैं ज़मीन पर हाथ-पैर मार रही थी, बेतहाशा हाथ मल रही थी। कितनी क्रूर नियति है! मेरी थोड़ी सी खुशी मुझसे इस कदर छीन ली गई, इससे पहले कि मैं उसका पूरा आनंद ले पाती!

मुझे नहीं पता कि बाकी लोग क्या कर रहे थे; मैं उन्हें देख नहीं सका: उन्होंने मुझसे सवाल पूछे जिनका मैंने जवाब नहीं दिया; उन्होंने हर कोने की छानबीन की; वे लबादों की इस-उस अव्यवस्था, रोशनदान में दरार या छेद के बारे में बड़बड़ा रहे थे—पता नहीं क्या। "यहाँ कुछ या कोई आया था," किसी ने समझदारी से कहा।

"ओह! वे मेरा पत्र ले गए!" गिड़गिड़ाते, टटोलते, सनकी व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा।

"कौन सा पत्र, लूसी? मेरी प्यारी बच्ची, कौन सा पत्र?" एक जानी-पहचानी आवाज़ मेरे कानों में गूंजी। क्या मैं अपने कानों पर विश्वास कर सकती थी? नहीं: और मैंने ऊपर देखा। क्या मैं अपनी आँखों पर भरोसा कर सकती थी? क्या मैंने उस लहजे को पहचान लिया था? क्या मैं अब उसी पत्र के लेखक का चेहरा देख रही थी? क्या यह सज्जन, जो इस धुंधले कमरे में मेरे पास थे, जॉन ग्राहम थे - स्वयं डॉ. ब्रेटन?

जी हाँ: ऐसा ही था। उन्हें उसी शाम बूढ़ी मैडम किंट की अत्यधिक बीमारी के लिए दवा लिखने के लिए बुलाया गया था; जब मैं अंदर आया तो वे भोजन कक्ष में उपस्थित दूसरे सज्जन थे।

"क्या यह मेरा पत्र था, लूसी?"

"तुम्हारा अपना: तुम्हारा ही – वो पत्र जो तुमने मुझे लिखा था। मैं इसे शांति से

पढ़ने के लिए यहाँ आई थी। मुझे कोई और जगह नहीं मिली जहाँ मैं इसे अकेले पढ़ सकूँ। मैंने इसे पूरे दिन संभाल कर रखा – आज शाम तक खोला तक नहीं: बस सरसरी नज़र डाली थी: मैं इसे खोना बर्दाश्त नहीं कर सकती। ओह, मेरा पत्र!”

“चुप रहो! रोना बंद करो और खुद को इतना कष्ट मत दो। इससे क्या फायदा? चुप रहो! इस ठंडे कमरे से बाहर आओ; वे अब आगे की जांच के लिए पुलिस को बुलाने वाले हैं: हमें यहां रुकने की जरूरत नहीं है - चलो, हम नीचे चलते हैं।”

एक गर्म हाथ ने मेरी ठंडी उंगलियों को थामकर मुझे उस कमरे में ले गया जहाँ आग जल रही थी। डॉ. जॉन और मैं चूल्हे के सामने बैठ गए। उन्होंने मुझसे बातें कीं और असीम स्नेह से मुझे दिलासा दिया, खोए हुए एक पत्र के बदले बीस पत्र देने का वादा किया। यदि शब्द और अन्याय चाकू की तरह होते हैं, जिनके गहरे घाव कभी नहीं भरते - दाँतेदार और ज़हर टपकाने वाली धार के घाव और अपमान - तो उसी प्रकार, ऐसे कोमल स्वर भी होते हैं जो कानों को इतने स्नेह से भर देते हैं कि उनकी गूंज हमेशा के लिए बनी रहती है: स्नेहपूर्ण दयालुता - जिसे जीवन भर संजोकर रखा जाता है, जिसकी कोमलता कभी फीकी नहीं पड़ती, और जो मृत्यु के उस काले बादल से निकलकर, बिना फीकी पड़ी चमक के साथ पुकार का जवाब देती है। मुझे बाद में बताया गया कि डॉ. ब्रेटन उतने परिपूर्ण नहीं थे जितना मैंने उन्हें समझा था: कि उनके वास्तविक चरित्र में वह गहराई, ऊँचाई, व्यापकता और सहनशक्ति नहीं थी जो मेरे विश्वास में थी। मुझे नहीं पता: वह मेरे लिए उतना ही अच्छा था जितना प्यासे मुसाफिर के लिए कुआँ—ठकते काँपते कैदी के लिए सूरज। मुझे वह वीर के रूप में याद है। इस क्षण भी मैं उसे वीर ही मानूंगा।

उन्होंने मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा कि मुझे उनका पत्र इतना प्रिय क्यों लगता है। मैंने मन ही मन सोचा, पर कहा नहीं, कि यह पत्र मेरे लिए उतना ही अनमोल है जितना मेरी रगों में बहने वाला खून। मैंने बस इतना ही उत्तर दिया कि मेरे पास इतने कम पत्र हैं जिनकी मुझे परवाह है।

“मुझे यकीन है कि आपने इसे नहीं पढ़ा,” उसने कहा; “वरना आप इस पर ध्यान ही नहीं देते!”

“मैंने इसे पढ़ा था, लेकिन सिर्फ एक बार। मैं इसे दोबारा पढ़ना चाहती हूँ। मुझे बहुत दुख है कि यह खो गया है।” और मैं फिर से रोने लगी।

“लूसी, लूसी, मेरी प्यारी छोटी धर्म बहन (अगर ऐसा कोई रिश्ता है), ये लो – ये

रहा तुम्हारा पत्र। क्यों न ये आँसुओं और इतने कोमल भाव से अतिरंजित विश्वास के लायक हो?”

अजीबोगरीब, उनकी खास चाल! उनकी तेज नजर ने उस चिट्ठी को देख लिया था जो फर्श पर पड़ी थी, जहां मैं उसे ढूंढ रहा था; उनका हाथ भी उतनी ही तेजी से उसे उठा लाया। उन्होंने उसे अपनी जैकेट की जेब में छिपा लिया था। अगर मेरी परेशानी में थोड़ी भी गंभीरता और सच्चाई न होती, तो मुझे शक है कि वह उसे कभी स्वीकार करते या लौटाते भी। मेरे आंसुओं से एक डिग्री कम तापमान वाले आंसू तो डॉ. जॉन को बस हंसाते।

पुनः प्राप्त होने की खुशी ने मुझे उस पीड़ादायक यातना के लिए उचित निंदा को भुला दिया; मेरी खुशी अपार थी; इसे छिपाया नहीं जा सकता था: फिर भी मुझे लगता है कि यह शब्दों से अधिक मेरे चेहरे पर झलक रही थी। मैंने ज्यादा कुछ नहीं कहा।

“क्या अब आप संतुष्ट हैं?” डॉ. जॉन ने पूछा।

मैंने जवाब दिया कि मैं संतुष्ट और खुश था।

“तो फिर,” उसने आगे कहा, “आप शारीरिक रूप से कैसा महसूस कर रहे हैं? क्या आप शांत हो रहे हैं? ज्यादा नहीं: क्योंकि आप अभी भी पत्ते की तरह कांप रहे हैं।”

हालांकि, मुझे ऐसा लगा कि मैं काफी शांत था: कम से कम अब मुझे डर नहीं लग रहा था। मैंने संयमित होकर अपनी बात कही।

“तो क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आपने क्या देखा? आपका बयान काफी अस्पष्ट था, क्या आप जानते हैं? आपका चेहरा एकदम पीला पड़ गया था; लेकिन आपने सिर्फ ‘कुछ’ कहा, यह नहीं बताया कि वह क्या था। क्या वह कोई आदमी था? क्या वह कोई जानवर था? वह क्या था?”

मैंने कहा, "मैं कभी भी ठीक-ठीक नहीं बताऊंगा कि मैंने क्या देखा, जब तक कि कोई और भी इसे न देख ले, और तब मैं पुष्टिकारक गवाही दूंगा; अन्यथा, मेरी विश्वसनीयता पर सवाल उठेंगे और मुझ पर सपने देखने का आरोप लगाया जाएगा।"

“बताओ,” डॉ. ब्रेटन ने कहा; “मैं इसे एक पेशेवर के तौर पर सुनूंगा: मैं अब तुम्हें एक पेशेवर नज़रिए से देख रहा हूं, और शायद मैं वह सब पढ़ रहा हूं जो तुम छिपाना चाहती हो— तुम्हारी आंखों में, जो अजीब तरह से जीवंत और बेचैन हैं; तुम्हारे गालों

में, जिन पर खून का कोई निशान नहीं है; तुम्हारे हाथ में, जिसे तुम स्थिर नहीं रख पा रही हो। आओ, लूसी, बोलो और मुझे बताओ।”

“तुम हँसोगे — ?”

"अगर तुम मुझे नहीं बताओगे तो तुम्हें और पत्र नहीं मिलेंगे।"

अब तुम हंस रहे हो।

"मैं उस एक पत्र को फिर से ले जाऊंगा: चूंकि यह मेरा है, इसलिए मुझे लगता है कि इसे वापस लेने का मुझे अधिकार है।"

मुझे उसके शब्दों में उपहास का भाव महसूस हुआ: इसने मुझे गंभीर और शांत बना दिया; लेकिन मैंने पत्र को मोड़कर रख दिया और उसे नज़रों से छिपा दिया।

“तुम इसे छुपा सकती हो, लेकिन मैं जब चाहूँ इसे हासिल कर सकती हूँ। तुम्हें मेरी हाथ की सफाई की कला का अंदाज़ा नहीं है; मैं चाहूँ तो जादूगर बन सकती हूँ। माँ कभी-कभी यह भी कहती हैं कि मेरी ज़बान और आँखें एक-दूसरे से तालमेल बिठा लेती हैं; लेकिन तुमने मुझमें यह कभी नहीं देखा — है ना, लूसी?”

“सचमुच—सचमुच—जब तुम छोटे बच्चे थे, तब मैं ये दोनों चीजें देखा करता था: तब अब से कहीं ज़्यादा—क्योंकि अब तुम मज़बूत हो, और मज़बूती में चालाकी की ज़रूरत नहीं होती। लेकिन फिर भी,—डॉक्टर जॉन, तुम्हारे पास वो है जिसे इस देश में ‘अन एयर फिन’ कहते हैं, जिसे कोई भी गलती से नहीं पकड़ सकता। मैडम बेक ने भी इसे देखा था, और—”

“और उसे यह पसंद आया,” उसने हंसते हुए कहा, “क्योंकि उसके पास भी यह है। लेकिन,

लूसी, मुझे वो पत्र दे दो— तुम्हें उसकी परवाह नहीं है।

इस उत्तेजक भाषण का मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। ग्राहम के हंसमुख मूड को ज़्यादा खुश करना ठीक नहीं था। अभी-अभी उनके होठों पर एक नई तरह की मुस्कान खिल उठी - बहुत प्यारी, लेकिन किसी तरह मुझे दुखी कर रही थी - उनकी आँखों में एक नई तरह की चमक थी: शत्रुतापूर्ण नहीं, लेकिन आश्वस्त करने वाली भी नहीं। मैं जाने के लिए उठा - मैंने उन्हें थोड़ी उदासी से शुभ रात्रि कहा।

उनकी संवेदनशीलता—उनकी वह अनोखी, संशयपूर्ण, जासूसी जैसी क्षमता—ने पल भर में अनकही शिकायत—दबे-छिपे तिरस्कार—को भाँप लिया। उन्होंने धीरे से पूछा कि क्या मुझे बुरा लगा। मैंने सिर हिलाकर 'नहीं' का संकेत दिया।

“जाने से पहले मुझे आपसे थोड़ी गंभीरता से बात करने की अनुमति दीजिए। आप बहुत घबराए हुए हैं। आपके हाव-भाव और चेहरे के भावों से, चाहे आप कितने भी संयमित क्यों न हों, मुझे पूरा यकीन है कि आज शाम उस भयानक, जर्जर, कब्रनुमा कमरे में अकेले रहते हुए—सींक के नीचे बने उस तहखाने में, जहाँ सीलन और फफूंद की बदबू आ रही है, तपेदिक और जुकाम से भरा हुआ है—एक ऐसी जगह जहाँ आपको कभी नहीं जाना चाहिए—आपने कोई ऐसी चीज़ देखी या देखने का भ्रम हुआ जो आपकी कल्पना पर गहरा प्रभाव डालती है। मैं जानता हूँ कि आप भौतिक भय, लुटेरों के डर आदि से न तो कभी प्रभावित हुए हैं और न ही होते हैं—लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि किसी प्रेत-दर्शन से आपका मन इतना विचलित नहीं होगा। शांत हो जाइए। मुझे लगता है कि यह सब आपकी घबराहट का मामला है: लेकिन कृपया उस दृश्य का वर्णन कीजिए।”

“तुम किसी को नहीं बताओगे?”

“बिल्कुल नहीं। आप मुझ पर उतना ही भरोसा कर सकते हैं जितना आपने पेरे सिलास पर किया था। दरअसल, डॉक्टर शायद हम दोनों में से ज़्यादा सुरक्षित राज़दार हैं, भले ही उनके बाल सफ़ेद न हों।”

“तुम नहीं हँसोगे?”

"शायद मैं ऐसा करूँ, तुम्हारा भला करने के लिए: लेकिन तिरस्कार के इरादे से नहीं। लूसी, मैं तुम्हारे प्रति मित्रवत भावना रखती हूँ, हालाँकि तुम्हारा संकोची स्वभाव आसानी से विश्वास नहीं करता।"

अब वह एक दोस्त की तरह लग रहा था: वह अवर्णनीय मुस्कान और चमक गायब हो गई थी; होंठ, नाक और भौंहों की वह प्रभावशाली घुमावदार बनावट दबी हुई थी; उसके हावभाव में शांति झलक रही थी— ध्यान उसके चेहरे को गंभीर बना रहा था। विश्वास जीतने पर, मैंने उसे ठीक-ठीक बताया कि मैंने क्या देखा था: इससे पहले मैंने उसे उस घर की कहानी सुनाई थी— उस कहानी को सुनाते हुए हमने अक्टूबर की एक सुहावनी दोपहर का एक घंटा बिताया, जब हम दोनों बोइस ल'एटांग से गुजर रहे थे।

वह बैठकर सोचने लगा, और जब वह सोच रहा था, तभी हमने उन सभी को सीढ़ियों से नीचे आते सुना।

"क्या वे बीच में दखल देंगे?" उसने नाराज़गी भरे भाव से दरवाजे की ओर देखते

हुए कहा।

“वे यहाँ नहीं आएंगे,” मैंने उत्तर दिया; क्योंकि हम उस छोटे से बैठक कक्ष में थे जहाँ मैडम शाम को कभी नहीं बैठती थीं, और जहाँ संयोगवश चूल्हे में अभी भी थोड़ी गर्मी बची हुई थी। वे दरवाज़े से आगे बढ़कर भोजन कक्ष की ओर चले गए।

“अब,” उसने आगे कहा, “वे चोरों, सेंधमारों आदि के बारे में बात करेंगे: उन्हें करने दो – ध्यान रहे कि तुम कुछ मत कहना, और किसी को भी अपनी नन के बारे में न बताने के अपने संकल्प पर कायम रहना। वह तुम्हें फिर से दिखाई दे सकती है: इसलिए इसके बारे में बात शुरू मत करना।”

मैंने दबी हुई आशंका के साथ कहा, "तो क्या तुम्हें लगता है कि वह मेरे दिमाग से निकली, और अब वहीं चली गई है, और शायद किसी ऐसे समय या दिन में फिर से निकल आएगी जब मैं उसकी उम्मीद भी नहीं कर रहा हूँ?"

"मुझे लगता है कि यह एक प्रकार का काल्पनिक भ्रम है: मुझे डर है कि यह लंबे समय से चले आ रहे मानसिक संघर्ष का परिणाम है।"

“ओह, डॉक्टर जॉन— ऐसे भ्रम का शिकार होने के ख्याल से ही मैं कांप जाती हूँ! यह इतना वास्तविक लग रहा था। क्या इसका कोई इलाज नहीं है?— क्या कोई रोकथाम नहीं है?”

"खुशी ही इलाज है, और प्रसन्न मन ही बचाव है: दोनों का विकास करें।"

इस संसार में मुझे सुख को संजोने की सलाह से अधिक खोखली कोई उपहास नहीं लगती। ऐसी सलाह का क्या अर्थ है? सुख कोई आलू नहीं है जिसे मिट्टी में बोकर खाद से सींचा जा सके। सुख स्वर्ग से हम पर बरसने वाली एक दिव्य चमक है। वह एक दिव्य ओस है जिसे आत्मा ग्रीष्म ऋतु की कुछ सुबहों में स्वर्ग के चिलमनुमा फूलों और सुनहरे फलों से गिरते हुए महसूस करती है।

मैंने डॉक्टर से संक्षेप में कहा, "खुशी का विकास करो! क्या आप खुशी का विकास करते हैं? आप इसे कैसे संभालते हैं?"

मैं स्वभाव से हंसमुख व्यक्ति हूं; और दुर्भाग्य ने कभी मेरा पीछा नहीं किया। विपत्ति ने मुझे और मेरी मां को एक क्षणिक क्रोध और धक्का दिया, लेकिन हमने उसका विरोध किया, या यूं कहें कि उस पर हंसे, और वह चली गई।

"इस सबमें खेती-बाड़ी का कोई नामोनिशान नहीं है।"

मैं उदासी के आगे हार नहीं मानता।

“हां: मैंने आपको उस भावना से अभिभूत होते देखा है।”

“गिनेवरा फैंसहावे के बारे में — है ना?”

"क्या वह कभी-कभी आपको दुखी नहीं करती थी?"

“छी! बकवास! बेतुका! देखो, अब मैं ठीक हूँ।”

यदि एक हंसमुख आंख, एक जीवंत चमक और एक दमकती हुई स्वस्थ ऊर्जा से भरा चेहरा इस बात का प्रमाण हो सकता है कि वह बेहतर था, तो वह निश्चित रूप से बेहतर था।

मैंने कहा, "आप कुछ ज्यादा बीमार या अस्वस्थ नहीं लग रहे हैं।"

“और लूसी, तुम मेरी तरह क्यों नहीं दिखती और महसूस करती हो—उत्साही, साहसी और ईसाई जगत के सभी भिक्षुणियों और व्यभिचारियों को चुनौती देने में सक्षम? मैं तुम्हें चुटकी बजाते देखने के लिए तुरंत सोना दे दूंगा। कोशिश करके देखो।”

"अगर मैं मिस फैंसहावे को अभी आपके सामने लाऊं तो?"

“मैं कसम खाता हूँ, लूसी, कि वह मुझे प्रभावित नहीं कर पाएगी: या, वह मुझे केवल एक ही चीज़ से प्रभावित कर पाएगी - सच्चा, हाँ, और भावुक प्रेम। मैं क्षमा करने के लिए कोई कम कीमत नहीं चुकाऊँगा।”

"बिल्कुल! कुछ समय पहले उसकी एक मुस्कान आपके लिए सौभाग्य की बात होती।"

“मैं बदल गया हूँ, लूसी: पूरी तरह बदल गया हूँ! याद है, तुमने एक समय मुझे गुलाम कहा था! लेकिन अब मैं एक स्वतंत्र व्यक्ति हूँ!”

वह खड़ा हो गया: उसके सिर के हावभाव में, उसकी शारीरिक मुद्रा में, उसकी चमकती आँखों और चेहरे में एक ऐसी स्वतंत्रता झलक रही थी जो आराम से कहीं अधिक थी - एक ऐसा भाव जो उसके अतीत के बंधन के प्रति तिरस्कार था।

उन्होंने आगे कहा, "मिस फैंशॉ ने मुझे भावनाओं के एक ऐसे चरण से गुज़ारा है जो अब समाप्त हो चुका है: मैं एक नई अवस्था में प्रवेश कर चुका हूँ, और अब मैं प्रेम के बदले प्रेम, जुनून के बदले जुनून, और वह भी भरपूर मात्रा में, प्राप्त करने के लिए काफी इच्छुक हूँ।"

“अरे, डॉक्टर! डॉक्टर! आपने कहा था कि कठिनाइयों में प्रेम की तलाश करना आपका स्वभाव है— एक गर्वित असंवेदनशीलता से मोहित होना!”

वह हँसा और बोला, “मेरा स्वभाव बदलता रहता है: एक पल का मिजाज कभी-कभी अगले पल उसका मज़ाक बन जाता है। अच्छा, लूसी” (अपने दस्ताने खींचते हुए), “क्या नन आज रात फिर आएगी, तुम्हें क्या लगता है?”

मुझे नहीं लगता कि वह ऐसा करेगी।

“अगर वो ऐसा करे तो उसे मेरी तरफ से बधाई देना — डॉ. जॉन की तरफ से — और उससे विनती करना कि वो उनसे मिलने का इंतज़ार करे। लूसी, क्या वो एक सुंदर नन थी? क्या उसका चेहरा सुंदर था? तुमने मुझे अभी तक ये नहीं बताया है; और यही सबसे महत्वपूर्ण बात है।”

मैंने कहा, "उसके चेहरे पर सफेद कपड़ा था, लेकिन उसकी आंखें चमक रही थीं।"

“उसके भूतिया पहनावे में तो गड़बड़ है!” उसने अनादरपूर्वक कहा, “लेकिन कम से कम उसकी आंखें तो सुंदर थीं - चमकीली और कोमल।”

जवाब मिला, "ठंडा और स्थिर।"

“नहीं, नहीं, हमें उससे कोई मतलब नहीं है: वह तुम्हें परेशान नहीं करेगी, लूसी। अगर वह दोबारा आए तो उससे हाथ मिला देना। क्या वह इसे बर्दाश्त कर पाएगी, तुम्हें क्या लगता है?”

मुझे लगा कि एक भूत के लिए यह बहुत ही दयालु और सौहार्दपूर्ण व्यवहार था: और उसके "शुभ रात्रि" के साथ आने वाली मुस्कान भी वैसी ही थी।

*****

और क्या अटारी में कुछ था? उन्हें क्या मिला? मेरा मानना है कि गहन जाँच करने पर, उन्हें कुछ खास नहीं मिला। पहले तो उन्होंने चादरों के अस्त-व्यस्त होने की बात कही; लेकिन मैडम बेक ने बाद में मुझे बताया कि उन्हें लगा कि चादरें पहले की तरह ही टंगी हुई थीं: और रोशनदान के टूटे हुए शीशे के बारे में उन्होंने कहा कि उस रोशनदान में शायद ही कभी कोई शीशा टूटा या दरारा हुआ न हो: और इसके अलावा, कुछ दिन पहले ही भारी ओलावृष्टि हुई थी। मैडम ने मुझसे बहुत बारीकी से पूछा कि मैंने क्या देखा था, लेकिन मैंने केवल काले कपड़ों में लिपटी एक धुंधली आकृति का वर्णन किया: मैंने जानबूझकर "नन" शब्द का उच्चारण नहीं किया, क्योंकि मुझे यकीन था कि यह शब्द उनके मन में तुरंत एक काल्पनिक और अवास्तविक विचार पैदा कर देगा। उन्होंने मुझे निर्देश दिया कि मैं इस विषय पर किसी भी नौकर, छात्र या शिक्षक

से कुछ न कहूँ, और स्कूल के भोजन कक्ष में यह भयानक कहानी सुनाने के बजाय उनके निजी भोजनालय में आने के मेरे विवेक की बहुत प्रशंसा की। इस प्रकार यह विषय वहीं समाप्त हो गया। मैं मन ही मन उदास होकर यह सोचने लगा कि क्या वह विचित्र वस्तु इस संसार की थी, या मृत्यु के बाद के किसी लोक की; या वास्तव में वह केवल एक बीमारी की संतान थी, और मैं उस बीमारी का शिकार।

अध्याय XXIII.

वृष्टि।

क्या मैंने उदास होकर सोचने की बात कही? नहीं: मेरे जीवन पर एक नया प्रभाव पड़ने लगा, और कुछ समय के लिए उदासी दूर हो गई। कल्पना कीजिए एक गहरी घाटी की, घने जंगल में छिपी हुई; यह धुंध और कोहरे में डूबी है: इसकी घास नम है, इसकी वनस्पति पीली और गीली है। एक तूफान या कुल्हाड़ी बलूत के पेड़ों के बीच एक चौड़ा रास्ता बना देती है; हवा अंदर आती है; सूरज नीचे देखता है; उदास, ठंडी घाटी चमक के गहरे प्याले में बदल जाती है; ग्रीष्म ऋतु अपना नीला वैभव और सुनहरा प्रकाश उस सुंदर आकाश से बिखेरती है, जिसे अब तक इस सूनी घाटी ने कभी नहीं देखा था।

मेरा एक नया सिद्धांत बन गया - सुख में विश्वास।

अटारी वाली घटना को तीन सप्ताह बीत चुके थे, और मेरे पास ऊपर वाले कमरे में एक दराज में एक संदूक था, जिसमें वह पहला पत्र, उसके जैसे ही चार और पत्र रखे थे, जो उसी दृढ़ कलम से लिखे गए थे, उसी स्पष्ट मुहर से सील किए गए थे, और उसी जीवंत सुकून से भरे हुए थे। उस समय मुझे वे जीवंत सुकून ही लगे थे: मैंने उन्हें बाद के वर्षों में पढ़ा; वे काफी मधुर पत्र थे - मनभावन पत्र, क्योंकि एक प्रसन्न

व्यक्ति द्वारा लिखे गए थे; अंतिम दो पत्रों में तीन-चार पंक्तियाँ थीं जो आधी प्रसन्नतापूर्ण, आधी कोमल थीं, "भावनाओं से प्रभावित, लेकिन पराजित नहीं।" प्रिय पाठक, समय ने उन्हें इस सौम्य गुण के पेय में बदल दिया; लेकिन जब मैंने पहली बार उस पवित्र स्रोत से निकले ताजे रस का स्वाद चखा, तो वह किसी दिव्य रस जैसा लगा: एक ऐसा पेय जिसे हेबे भी भर सकती थी, और जिसे स्वयं देवता भी स्वीकार करते।

क्या पाठक, कुछ पृष्ठ पहले कही गई बातों को याद करते हुए, यह जानने की परवाह करेंगे कि मैंने इन पत्रों का उत्तर कैसे दिया: क्या तर्क के शुष्क, संयमित नियंत्रण के तहत, या भावना के पूर्ण, उदार आवेग के अनुसार?

सच कहूँ तो, मैंने समझौता किया; मैंने दो स्वामियों की सेवा की: मैंने रिम्मोन के घरों में सिर झुकाया, और दूसरे मंदिर में हृदय को ऊपर उठाया। मैंने इन पत्रों के दो उत्तर लिखे—एक अपने लिए, दूसरा ग्राहम के पढ़ने के लिए।

आरंभ में: मैंने और मेरी भावना ने तर्क को दरकिनार कर दिया, उसे उसकी कुंडी और कुंडी से सटा दिया, फिर हम बैठ गए, कागज़ फैलाया, उत्सुकता से कलम को स्याही में डुबोया, और गहन आनंद के साथ अपने सच्चे हृदय की बात उंडेल दी। जब हमने लिख डाला — जब दो पन्ने एक दृढ़ स्नेह, एक गहरी और सक्रिय कृतज्ञता की भाषा से भर गए — (इस कोष्ठक में, मैं तथाकथित "गर्म भावनाओं" के किसी भी संदेह को पूरी तरह से तिरस्कारपूर्वक अस्वीकार करता हूँ: महिलाएं इन "गर्म भावनाओं" को तब नहीं पालतीं जब, शुरुआत से लेकर पूरी जान-पहचान के दौरान, उन्हें कभी भी इस विश्वास से वंचित नहीं किया गया कि ऐसा करना एक घोर मूर्खता होगी: कोई भी तब तक प्रेम में नहीं पड़ता जब तक उसने प्रेम के अशांत जल पर आशा के तारे का उदय होते हुए न देखा हो या उसका सपना न देखा हो) — तब, मैंने एक घनिष्ठ और गहरे सम्मानपूर्ण लगाव को व्यक्त किया — एक ऐसा लगाव जो अपने लक्ष्य के भाग्य में मौजूद हर पीड़ा को अपनी ओर आकर्षित करना चाहता था और उसे अपने हिस्से में लेना चाहता था; अगर ऐसा हो पाता, तो वह चिंता की गहरी भावना से देखे जाने वाले जीवन से सभी तूफानों और बिजली को सोखकर दूर कर देता—ठीक उसी क्षण, मेरे हृदय के द्वार कांप उठते, कुंडी और ताला खुल जाता, तर्क शक्ति और प्रतिशोध से भर आता, सारे पन्ने छीन लेता, पढ़ता, उपहास करता, मिटाता, फाड़ता, फिर से लिखता, मोड़ता, सील करता, निर्देश देता और एक संक्षिप्त,

सारगर्भित पत्र भेज देता। उसने सही किया।

मैं केवल पत्रों के सहारे ही नहीं जीती थी: मुझसे मिलने लोग आते थे, मेरी देखभाल करते थे; सप्ताह में एक बार मुझे ला टेरेस ले जाया जाता था; हमेशा मेरा विशेष ध्यान रखा जाता था। डॉ. ब्रेटन ने मुझे यह बताना नहीं भूला कि वे इतने दयालु क्यों थे: "उस नन को दूर रखने के लिए," उन्होंने कहा; "वे उससे उसके शिकार के बारे में बहस करने के लिए दृढ़ थे। उन्होंने कहा, "उन्हें उससे घोर घृणा हो गई थी, मुख्यतः उस सफेद चेहरे के कपड़े और उन ठंडी धूसर आँखों के कारण: जैसे ही उन्होंने उन घृणित बातों के बारे में सुना," उन्होंने पुष्टि की, "घृणा ने उन्हें उसका विरोध करने के लिए प्रेरित किया; वे यह जानने के लिए दृढ़ थे कि कौन अधिक चतुर है, और वे केवल यही चाहते थे कि जब वे मौजूद हों तो वह एक बार फिर मेरी ओर देखे:" लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। संक्षेप में, उन्होंने मुझे एक रोगी के रूप में वैज्ञानिक रूप से देखा, और एक साथ अपने पेशेवर कौशल का प्रयोग किया, और सौहार्दपूर्ण और ध्यानपूर्वक उपचार के माध्यम से अपनी स्वाभाविक परोपकारिता को संतुष्ट किया।

दिसंबर की पहली शाम को, मैं अकेले ही गलियारे में टहल रहा था; शाम के छह बज रहे थे; कक्षा के दरवाजे बंद थे; लेकिन अंदर, छात्र शाम के मनोरंजन की आज़ादी में झूमते हुए एक छोटा सा शोरगुल मचा रहे थे। गलियारा पूरी तरह अंधेरा था, सिवाय चूल्हे के नीचे और आसपास चमकती लाल बत्ती के; चौड़े कांच के दरवाजे और लंबी खिड़कियाँ पाले से ढकी हुई थीं; तारों की चमक, जगह-जगह इस फीके पड़े सर्दियों के आवरण को झिलमिला रही थी और बिखरी हुई चमक से इसकी कढ़ाई की फीकीपन को तोड़ रही थी, जिससे साबित हो रहा था कि रात साफ थी, हालांकि चाँद नहीं था। अंधेरे में इस तरह अकेले रहने का मेरा साहस यह दर्शाता था कि मेरी नसें फिर से स्वस्थ हो रही थीं: मैंने नन के बारे में सोचा, लेकिन उससे ज़रा भी नहीं डरा; हालाँकि सीढ़ियाँ मेरे पीछे थीं, जो अंधेरी, काली रात में, एक मंजिल से दूसरी मंजिल तक, उस भूतिया आंगन की ओर जा रही थीं। फिर भी मैं मानती हूँ कि मेरा दिल काँप उठा, मेरी धड़कन तेज़ हो गई, जब अचानक मुझे साँस लेने और सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी, और मुड़कर देखा तो सीढ़ियों की गहरी छाया में एक और गहरी छाया दिखाई दी —एक आकृति जो हिलती-डुलती नीचे उतर रही थी। वह कक्षा के दरवाज़े पर थोड़ी देर रुकी, और फिर मेरे सामने से गुज़र गई। उसी समय दूर से दरवाज़े की घंटी की आवाज़ आई। सजीव लगने वाली आवाज़ें सजीव लगने वाली भावनाएँ जगाती हैं: यह

आकृति मेरी दुबली-पतली नन के लिए बहुत गोल और छोटी थी: यह तो ड्यूटी पर मौजूद मैडम बेक ही थीं।

"मिस लूसी!" रोसीन गलियारे से हाथ में लैंप लिए हुए अंदर घुसते हुए चिल्लाई, "हम आपसे मिलने लिविंग रूम में आए हैं।"

मैडम ने मुझे देखा, मैंने मैडम को देखा, रोसीन ने हम दोनों को देखा: किसी ने एक-दूसरे को पहचाना नहीं। मैं सीधे सैलून की ओर भागा। वहाँ मुझे वही मिला जिसकी मुझे उम्मीद थी - डॉ. ब्रेटन; लेकिन वे शाम की पोशाक में थे।

“गाड़ी दरवाजे पर खड़ी है,” उसने कहा; “मेरी माँ ने तुम्हें थिएटर ले जाने के लिए इसे भेजा है; वह खुद भी जा रही थी, लेकिन किसी के आने की वजह से वह नहीं जा सकी: उसने तुरंत कहा, ‘मेरी जगह लूसी को ले जाओ।’ क्या तुम चलोगी?”

“अभी? मैंने कपड़े नहीं पहने हैं,” मैंने निराशा से अपनी काली मेरिनो ऊन की ओर देखते हुए कहा।

“आपके पास तैयार होने के लिए आधा घंटा है। मुझे आपको पहले ही बता देना चाहिए था, लेकिन मैंने पाँच बजे के बाद ही जाने का फैसला किया, जब मुझे पता चला कि एक महान अभिनेत्री की उपस्थिति में एक शानदार दावत होने वाली है।”

और उन्होंने एक ऐसे नाम का ज़िक्र किया जिसने मुझे रोमांचित कर दिया—एक ऐसा नाम जो उन दिनों पूरे यूरोप को रोमांचित कर सकता था। अब वह नाम शांत हो चुका है: उसकी कभी की बेचैन गूँज अब थम सी गई है; जिसने उसे जन्म दिया था, वह वर्षों पहले अपनी अंतिम यात्रा पर चली गई: रात और विस्मृति ने उसे बहुत पहले ही घेर लिया था; लेकिन तब उसका दिन—सीरियस का दिन—अपने चरम पर था, प्रकाश और उत्साह से भरपूर।

“मैं जाऊंगी; मैं दस मिनट में तैयार हो जाऊंगी,” मैंने मन ही मन कहा। और मैं उड़ पड़ी, पाठक, उस विचार ने मुझे ज़रा भी नहीं रोका जो शायद इस समय आपको रोक रहा है: यानी, ग्राहम के साथ और श्रीमती ब्रेटन के बिना कहीं भी जाना आपत्तिजनक हो सकता है। मैं इस विचार को, इस तरह की झिझक को, ग्राहम के सामने व्यक्त करने की तो कल्पना भी नहीं कर सकती थी, क्योंकि ऐसा करने से मेरे भीतर एक अत्याचारी आत्म-घृणा का भाव जागृत हो जाता: शर्म की ऐसी भयंकर आग भड़क उठती जो इतनी बुझने वाली और इतनी विनाशकारी होती कि मुझे लगता है कि वह जल्द ही मेरी रगों में दौड़ती जान तक को चाट लेती। इसके अलावा, मेरी धर्ममाता,

अपने बेटे और मुझे जानते हुए, एक बहन को उसके भाई के साथ भेजने के बारे में उतना ही सोचती जितना कि हमारे आने-जाने पर कड़ी नज़र रखने के बारे में।

वर्तमान में दिखावटी वस्त्र पहनने का कोई अवसर नहीं था; मेरा मटमैला क्रेप ही काफी था, और मैंने छात्रावास में स्थित विशाल ओक की अलमारी में उसे ढूँढा, जहाँ चालीस से कम वस्त्र नहीं टंगे थे। लेकिन कुछ बदलाव और सुधार हुए थे, और किसी नवप्रवर्तक ने इसी भरी हुई अलमारी को छाँटकर कई वस्त्र गोदाम में रख दिए थे - मेरा क्रेप भी उन्हीं में से एक था। मुझे उसे लाना ही था। मैंने चाबी ली और निडर होकर, लगभग बेपरवाह होकर ऊपर चढ़ गई। मैंने दरवाजा खोला और अंदर घुस गई। पाठक विश्वास करें या न करें, लेकिन जब मैं इस तरह अचानक अंदर गई, तो वह अटारी पूरी तरह से अँधेरी नहीं थी जैसा कि होना चाहिए था: एक बिंदु से एक गंभीर प्रकाश चमक रहा था, एक तारे की तरह, लेकिन अधिक चौड़ा। वह इतनी स्पष्ट रूप से चमक रहा था कि उसने गहरे आले को प्रकट कर दिया, जिस पर फीके लाल रंग का पर्दा लगा हुआ था। पल भर में, चुपचाप, मेरी आँखों के सामने, वह गायब हो गया; पर्दा और आला भी: अटारी का वह पूरा सिरा रात की तरह काला हो गया। मैंने कुछ भी जाँच-पड़ताल करने का साहस नहीं किया; मेरे पास न तो समय था और न ही इच्छाशक्ति; मैंने दीवार पर टंगी अपनी पोशाक को झटपट उठाया, जो सौभाग्य से दरवाजे के पास ही थी, और मैं बाहर भागी, हड़बड़ी में दरवाजा फिर से बंद किया, और दौड़कर नीचे छात्रावास की ओर चली गई।

लेकिन मेरे हाथ इतने कांप रहे थे कि मैं खुद कपड़े भी नहीं पहन पा रही थी: इतनी कमजोर उंगलियों से बाल संवारना या कंगन लगाना नामुमकिन था, इसलिए मैंने रोसीन को बुलाया और उसे रिश्वत देकर मदद मांगी। रोसीन को रिश्वत पसंद थी, इसलिए उसने अपनी पूरी कोशिश की, मेरे बालों को ऐसे संवारा जैसे कोई हेयरड्रेसर करता, लेस का कॉलर एकदम सीधा लगाया, गले का रिबन भी ठीक से बांधा - संक्षेप में, उसने अपना काम ऐसे किया जैसे वो हर काम में माहिर हो। मुझे मेरा रुमाल और दस्ताने देकर, उसने मोमबत्ती ली और मुझे नीचे जाने के लिए रोशनी दी। आखिर मैं अपना शॉल भूल गई थी; वो उसे लेने वापस भागी; और मैं डॉ. जॉन के साथ बरामदे में खड़ी इंतज़ार कर रही थी।

“ये क्या है, लूसी?” उसने मेरी ओर तिरछी नज़रों से देखते हुए कहा। “ये रहा पुराना रोमांच। हा! फिर से नन?”

लेकिन मैंने इस आरोप को सिरे से खारिज कर दिया: मुझे दूसरी बार भ्रम में होने के संदेह से चिढ़ हो रही थी। वह संशयवादी था।

“वह रही है, मुझे पूरा यकीन है,” उसने कहा; “जब वह आपकी आंखों के सामने से गुजरती है तो उसकी आकृति उन पर एक अनोखी चमक और भाव छोड़ जाती है जिसे पहचाना जा सकता है।”

मैंने जोर देकर कहा, "वह नहीं आई है," क्योंकि वास्तव में, मैं सच्चाई के साथ उसके प्रकट होने से इनकार कर सकता था।

उन्होंने पुष्टि करते हुए कहा, "पुराने लक्षण अभी भी मौजूद हैं: एक विशेष पीलापन, और जिसे स्कॉटिश लोग 'उभरा हुआ' रूप कहते हैं।"

वह इतना हठी था कि मुझे लगा कि बेहतर होगा कि मैं उसे वही बताऊँ जो मैंने सच में देखा था। बेशक, उसके अनुसार यह उसी कारण का एक और परिणाम था: यह सब दृष्टि भ्रम था - तंत्रिका संबंधी विकार, इत्यादि। मुझे उसकी बात पर ज़रा भी विश्वास नहीं था; लेकिन मैं उसका विरोध करने की हिम्मत नहीं कर सका: डॉक्टर इतने आत्ममुग्ध और अपने नीरस, भौतिकवादी विचारों में इतने अडिग होते हैं।

रोसीन शॉल लेकर आई, और मुझे गाड़ी में बिठा दिया गया।

* * * * *

रंगमंच खचाखच भरा हुआ था—छत तक खचाखच: शाही और कुलीन लोग मौजूद थे: महल और होटल के मेहमान भी उन भीड़भाड़ वाली और शांत पंक्तियों में उतर आए थे। मंच के सामने स्थान पाकर मैं खुद को अत्यंत सौभाग्यशाली महसूस कर रहा था; मैं उस शख्स को देखने के लिए व्याकुल था जिसकी शक्तियों के बारे में मैंने सुना था और जिनसे मेरे मन में अनोखी उम्मीदें जाग उठी थीं। मैं सोच रहा था कि क्या वह अपनी प्रसिद्धि को सार्थक साबित कर पाएगी: विचित्र जिज्ञासा के साथ, गंभीर और संयमित भावनाओं के साथ, फिर भी गहरी रुचि के साथ, मैं प्रतीक्षा कर रहा था। वह एक ऐसी शख्सियत थी जिसे मैंने अभी तक नहीं देखा था: वह एक महान और नया ग्रह थी: लेकिन किस रूप में? मैं उसके उदय की प्रतीक्षा कर रहा था।

उस दिसंबर की रात नौ बजे वह उठी: क्षितिज के ऊपर मैंने उसे आते देखा। वह अभी भी अपनी फीकी भव्यता और स्थिर शक्ति से चमक सकती थी; लेकिन वह तारा अपने अंत के कगार पर था। पास से देखने पर वह एक अव्यवस्था थी—

खोखली, आधी भस्म: एक गोला जो नष्ट हो चुका था या नष्ट हो रहा था—आधा लावा, आधा चमक।

मैंने इस महिला को "साधारण" कहा हुआ सुना था, और मुझे हड्डियों की कठोरता और उदासी की उम्मीद थी - कुछ बड़ा, नुकीला, पीला-सा। लेकिन मैंने जो देखा वह एक शाही वष्टि की परछाई थी: एक रानी, जो कभी दिन के उजाले की तरह सुंदर थी, अब गोधूलि बेला की तरह पीली पड़ गई थी, और आग में पिघलती मोम की तरह मुरझा गई थी।

कुछ समय के लिए—काफी लंबे समय के लिए—मैंने सोचा कि यह केवल एक स्त्री है, हालांकि एक अद्वितीय स्त्री, जो इस भीड़ के सामने शक्ति और गरिमा के साथ विचरण कर रही थी। धीरे-धीरे मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। देखो! मैंने उसमें कुछ ऐसा पाया जो न तो स्त्री का था और न ही पुरुष का: उसकी प्रत्येक आँख में एक शैतान बैठा था। ये बुरी शक्तियाँ उसे इस त्रासदी से गुज़ार रही थीं, उसकी कमज़ोर शक्ति को बनाए रख रही थीं—क्योंकि वह एक नाज़ुक प्राणी थी; और जैसे-जैसे घटनाएँ बढ़ती गईं और हलचल गहरी होती गई, वे अपनी भयानक वासनाओं से उसे कितनी बुरी तरह हिला रही थीं! उन्होंने उसके सीधे, अभिमानी माथे पर नरक लिख दिया। उन्होंने उसकी आवाज़ को पीड़ा के स्वर में ढाल दिया। उन्होंने उसके राजसी चेहरे को एक राक्षसी मुखौटे में बदल दिया। वह घृणा, हत्या और पागलपन का अवतार खड़ी थी।

यह एक अद्भुत दृश्य था: एक जबरदस्त रहस्योद्घाटन।

यह एक घिनौना, भयानक और अनैतिक दृश्य था।

तलवारबाजों ने वार किए और अखाड़े की रेत पर अपने खून में लथपथ होकर मर गए; सांडों ने घोड़ों को सींगों से मारकर उनकी आंतें चीर दीं, यह सब जनता के लिए एक सौम्य दृश्य प्रस्तुत करता है - लोगों के स्वाद के लिए एक हल्का मसाला - सात शैतानों द्वारा चीर दी गई वष्टि की तुलना में: वे शैतान जो जोर-जोर से रोए और जिस मकान में वे रहते थे उसे फाड़ डाला, लेकिन फिर भी उन्हें भगाया नहीं जा सका।

उस रंगमंच की महारानी पर दुख का साया था; और वह अपने दर्शकों के सामने न तो झुकती, न सहन करती, और न ही किसी भी हद तक इसका विरोध करती खड़ी थी: वह संघर्ष में जकड़ी हुई, प्रतिरोध में दृढ़ खड़ी थी। वह सजी-धजी नहीं, बल्कि फीके प्राचीन लच्छों में लिपटी हुई खड़ी थी, जो मूर्ति की तरह लंबे और नियमित थे।

गहरे लाल रंग की पृष्ठभूमि, साजो-सामान और फर्श ने उसे अलबास्टर की तरह सफेद - चांदी की तरह - बल्कि, मृत्यु की तरह - उभार दिया था।

क्लियोपेट्रा का कलाकार कहाँ था? उसे आने दो, बैठो और इस भिन्न दृष्टि का अध्ययन करने दो। उसे यहाँ उस बलवान शरीर, मांसपेशियों, भरपूर रक्त, और परिपूर्ण मांस की खोज करने दो जिसकी वह पूजा करता था: सभी भौतिकवादी पास आएं और देखें।

मैंने कहा है कि वह अपने दुःख से नाराज़ नहीं है। नहीं; यह शब्द इतना कमज़ोर है कि यह झूठ साबित हो जाता है। उसके लिए, जो भी पीड़ा देता है, वह तुरंत साकार हो उठता है: वह उसे एक ऐसी वस्तु के रूप में देखती है जिस पर हमला किया जा सकता है, जिसे कुचला जा सकता है, जिसके टुकड़े-टुकड़े किए जा सकते हैं। स्वयं एक ठोस इकाई न होते हुए भी, वह अमूर्त विचारों से संघर्ष करती है। विपत्ति के सामने वह एक शेरनी होती है; वह अपने दुःखों को चीर-फाड़ देती है, उन्हें घृणा से कांपने देती है। उसके लिए, दर्द का कोई अच्छा परिणाम नहीं होता: आँसुओं से ज्ञान की फसल नहीं सींची जाती: बीमारी पर, मृत्यु पर भी, वह एक विद्रोही की नज़र से देखती है। शायद वह दुष्ट है, लेकिन वह शक्तिशाली भी है; और उसकी शक्ति ने सुंदरता को जीत लिया है, अनुग्रह पर विजय प्राप्त कर ली है, और दोनों को अपने साथ बांध लिया है, अद्वितीय रूप से सुंदर और उतनी ही आज्ञाकारी कैदी। ऊर्जा के चरम उन्माद में भी, प्रत्येक उन्मादी की चाल शाही, राजसी और आक्रामक रूप से ऊपर उठती है। उसके बाल, चाहे उल्लास में हों या युद्ध में, फिर भी किसी देवदूत के बालों की तरह लहराते हैं और प्रभामंडल के नीचे और भी भव्य लगते हैं। पतित, विद्रोही, निर्वासित, वह उस स्वर्ग को याद करती है जहाँ उसने विद्रोह किया था। स्वर्ग का प्रकाश, उसके निर्वासन का अनुसरण करते हुए, उसकी सीमाओं को भेदता है और उसकी निर्जन एकांतता को उजागर करता है।

अब क्लियोपेट्रा, या किसी अन्य घोंघे को, उसके सामने एक बाधा के रूप में रख दें, और देखें कि वह कैसे उस गूदेदार ढेर को चीरती हुई आगे बढ़ती है, जैसे सलादीन की तलवार नरम गद्दे को चीर देती है। पॉल पीटर रूबेंस को मृत्यु से जगा दें, उन्हें अपने कफ़न से बाहर आने दें, और अपनी सारी मोटी स्त्रियों की सेना को यहाँ ले आएं; मूसा की उस हल्की छड़ी को वरदान देने वाली जादूगरी शक्ति या पैगंबर-गुण, एक ही झटके में, जादू से विभाजित समुद्र को मुक्त और पुनर्मिलित कर सकता है,

और भारी सेना को ध्वस्त समुद्री प्राचीरों के उफान से डुबो सकता है।

मुझे बताया गया था कि वष्टि अच्छी नहीं थी; और मैंने कहा है कि वह अच्छी नहीं दिखती थी: हालांकि वह एक आत्मा थी, वह तोफेट की आत्मा थी। खैर, अगर इतनी अपवित्र शक्ति नीचे से उत्पन्न हो सकती है, तो क्या एक दिन ऊपर से उतनी ही पवित्र शक्ति का प्रवाह नहीं हो सकता?

डॉ. ग्राहम ने इस प्राणी के बारे में क्या सोचा?

लंबे समय तक मैं यह देखना भूल गया कि वह खुद को कैसे नीचा दिखाता है, या उसके विचारों पर सवाल उठाना भूल गया। प्रतिभा के प्रबल आकर्षण ने मेरे दिल को उसकी सामान्य कक्षा से बाहर खींच लिया; सूरजमुखी दक्षिण से एक तीव्र प्रकाश की ओर मुड़ गया, जो सूर्य के प्रकाश जैसा नहीं था - एक प्रचंड, लाल, धूमकेतु जैसा प्रकाश - जो दृष्टि और संवेदना दोनों को उत्तेजित कर रहा था। मैंने पहले भी अभिनय देखा था, लेकिन ऐसा कुछ कभी नहीं: ऐसा कुछ भी नहीं जिसने आशा को चकित कर दिया और इच्छा को शांत कर दिया; जिसने आवेग को पार कर दिया और कल्पना को फीका कर दिया; जिसने केवल इस विचार से कल्पना को उत्तेजित करने के बजाय कि क्या किया जा सकता है, और साथ ही साथ इसलिए नसों में ज्वरभंग पैदा कर दिया क्योंकि वह किया नहीं गया था, एक गहरी, उफनती हुई शीतकालीन नदी की तरह शक्ति प्रकट की, जो झरने की तरह गरजती हुई बह रही थी, और आत्मा को एक पत्ते की तरह अपने तीव्र और कठोर ढलान पर ले जा रही थी।

मिस फैंसहावे ने अपनी हमेशा की तरह समझदारी से डॉ. ब्रेटन को एक गंभीर, भावुक व्यक्ति बताया, जो बहुत संजीदा और भावुक भी थे। मैंने उन्हें कभी इस रूप में नहीं देखा था; उन पर मैं ऐसी कोई कमी नहीं निकाल सकती थी। उनका स्वभाव चिंतनशील नहीं था, न ही उनका मिजाज भावुक था; वे पानी की लहरों की तरह भावुक थे, लेकिन लगभग पानी की तरह ही अप्रभावित भी थे: हवा, सूरज, उन पर कोई असर नहीं पड़ता था - धातु उन्हें संजीदा नहीं कर सकती थी, न ही आग।

डॉ. जॉन सोच-विचार कर सकते थे और अच्छी तरह सोच सकते थे, लेकिन वे विचार से अधिक कर्मठ व्यक्ति थे; वे महसूस कर सकते थे, और अपने तरीके से गहराई से महसूस कर सकते थे, लेकिन उनके हृदय में उत्साह की कोई भावना नहीं थी: उज्ज्वल, कोमल, मधुर प्रभावों के लिए उनकी आँखें और होंठ उज्ज्वल, कोमल, मधुर स्वागत करते थे, जो देखने में सुंदर थे जैसे गुलाब और चांदी, मोती और बैंगनी

रंग, गर्मियों के बादलों में घुलते हुए; तूफ़ान से संबंधित, जो उग्र और तीव्र, खतरनाक, अचानक और ज्वालामय था, उससे उन्हें कोई सहानुभूति नहीं थी, और न ही उनका उससे कोई संबंध था। जब मैंने समय निकाला और उन्हें देखने की इच्छा हुई, तो यह देखकर मुझे आनंद और ज्ञान प्राप्त हुआ कि वे उस भयावह और शक्तिशाली वष्टि को देख रहे थे, न आश्चर्य से, न पूजा से, न ही भय से, बल्कि केवल तीव्र जिज्ञासा से। उसकी पीड़ा ने उन्हें कष्ट नहीं पहुँचाया, उसकी कर्कश कराह - चीख से भी बदतर - ने उन्हें अधिक विचलित नहीं किया; उसका क्रोध उन्हें कुछ हद तक विचलित करता था, लेकिन भयभीत करने की हद तक नहीं। शांत युवा ब्रितानी! उसके अपने इंग्लैंड की पीली चट्टानें भी इंग्लिश चैनल की लहरों को उतनी शांति से नहीं देखतीं, जितनी शांति से उसने उस रात पाइथियन प्रेरणा को देखा था।

उसके चेहरे को देखकर, मैं उसके विचारों को जानने के लिए उत्सुक हो गया, और अंत में मैंने उससे एक ऐसा प्रश्न पूछा जिससे उसके विचार पता चल सकें। मेरी आवाज़ सुनते ही वह मानो सपने से जाग उठा; क्योंकि वह अपने ही अंदाज़ में, बहुत ही ध्यान से अपने विचारों में डूबा हुआ था। “उसे वष्टि कैसी लगी?” मैं जानना चाहता था।

“हम्म-हम्म,” पहला अस्पष्ट लेकिन भावपूर्ण जवाब था; और फिर उसके होठों पर एक अजीब सी मुस्कान छा गई, एक ऐसी मुस्कान जो आलोचनात्मक और लगभग निर्मम थी! मुझे लगता है कि ऐसे स्वभाव वाले लोगों के लिए उसकी सहानुभूति निर्मम ही थी। कुछ संक्षिप्त वाक्यों में उसने मुझे अभिनेत्री के बारे में अपनी राय और भावनाएँ बताईं: उसने उसे एक महिला के रूप में परखा, न कि एक कलाकार के रूप में: यह एक तीखा प्रहार था।

वह रात मेरे जीवन की किताब में सफेद रंग से नहीं, बल्कि गहरे लाल रंग के निशान से अंकित हो चुकी थी। लेकिन अभी काम खत्म नहीं हुआ था; और भी कई बातें अमिट लाल अक्षरों में लिखी जानी बाकी थीं।

आधी रात के करीब, जब गहराता हुआ दुखद दृश्य मृत्यु के दृश्य में तब्दील हो गया, और सभी ने अपनी सांसें थाम लीं, यहाँ तक कि ग्राहम ने भी अपने निचले होंठ को काट लिया, अपनी भौंहें सिकोड़ लीं, और चुपचाप बैठा रहा और प्रहार करता रहा — जब पूरा रंगमंच शांत हो गया, जब सभी की निगाहें एक बिंदु पर टिक गईं, जब सभी के कान एक ही दिशा में सुनने लगे — केवल एक सफेद आकृति दिखाई दे रही

थी जो एक सीट पर धंसी हुई थी, अपने अंतिम, अपने सबसे घृणित, अपने स्पष्ट रूप से विजयी शत्रु के साथ संघर्ष में कांप रही थी — केवल उसकी सिसकियाँ, उसकी हांफती हुई आवाजें सुनाई दे रही थीं, विद्रोह की साँसें, अभी भी अवज्ञा की हांफती हुई सांसें; जब, ऐसा प्रतीत हुआ, एक असाधारण इच्छाशक्ति, एक मरते हुए नश्वर शरीर को झकझोर कर, उसे नियति और मृत्यु से युद्ध करने के लिए झुका रही थी, जमीन के हर इंच के लिए लड़ रही थी, खून की हर बूंद बेच रही थी, हर इंद्रिय के बलात्कार का अंतिम दम तक विरोध कर रही थी, देख रही थी, सुन रही थी, साँस ले रही थी, जी रही थी, उस क्षण तक, भीतर, लगभग उससे भी आगे जब मृत्यु सभी इंद्रियों और सभी अस्तित्व से कहती है — “बस यहीं तक और आगे नहीं!” —

तभी, अशुभ संकेत से भरी एक हलचल पर्दे के पीछे सुनाई दी—पैरों की आहट सुनाई दी, आवाज़ें गूंजीं। क्या हुआ? पूरे घर ने पूछा। जवाब मिला, एक आग की लपट, धुएं की गंध।

"आग!" की आवाज़ गैलरी में गूंज उठी। "आग!" की आवाज़ बार-बार दोहराई गई, गूंजी, चिल्लाई गई: और फिर, कलम के शब्दों से भी तेज़ी से, दहशत छा गई, भगदड़ मच गई, कुचलने वाली - एक अंधा, स्वार्थी, क्रूर अराजकता।

और डॉ. जॉन? पाठक, मुझे वह अभी भी दिखाई दे रहे हैं, उनके सुंदर साहस और सौहार्दपूर्ण शांति के साथ।

“मुझे पता है, लूसी चुपचाप बैठी रहेगी,” उसने मेरी ओर देखते हुए कहा, उसी शांत, उसी दृढ़ निश्चय और धैर्य के साथ, जैसा मैंने उसे उसकी माँ के चूल्हे की सुरक्षित शांति में उसके पास बैठे हुए देखा था। हाँ, इस तरह के आश्वासन पर, मुझे लगता है कि मैं किसी चट्टान के नीचे भी चुपचाप बैठी रहती: लेकिन, वास्तव में, ऐसी परिस्थितियों में चुपचाप बैठना मेरी सहज प्रवृत्ति थी; और अपनी जान की कीमत पर भी, मैं उसे परेशान करने, उसकी इच्छा को रोकने या उसका ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश नहीं करती। हम दर्शक दीर्घा में थे, और कुछ मिनटों के लिए हमारे चारों ओर एक भयानक, निर्मम दबाव था।

“औरतें कितनी डरी हुई हैं!” उसने कहा; “लेकिन अगर मर्द भी लगभग उतने ही डरे हुए न होते, तो शायद व्यवस्था बनी रहती। यह एक दयनीय दृश्य है: इस समय मुझे पचास स्वार्थी दरिंदे दिखाई दे रहे हैं, जिनमें से हर एक को, अगर मैं पास होता, तो मैं सचमुच पीट-पीट कर गिरा देता। मुझे कुछ औरतें कुछ मर्दों से ज़्यादा बहादुर

दिखाई दे रही हैं। वहाँ एक है – हे भगवान!”

जब ग्राहम बोल रहे थे, तभी हमारे सामने एक सज्जन से बड़ी शांति से चिपकी हुई एक युवती को अचानक एक बड़े, क्रूर घुसपैठिए ने उसके रक्षक की बाहों से छीन लिया और भीड़ के पैरों तले पटक दिया। मुश्किल से दो सेकंड के लिए ही वह गायब हुई। ग्राहम आगे बढ़े; उन्होंने और उस सज्जन ने, जो कि सफ़ेद बालों वाले होने के बावजूद एक शक्तिशाली व्यक्ति थे, अपनी पूरी ताकत लगाकर भीड़ को पीछे धकेला; लड़की का सिर और लंबे बाल उनके कंधे पर गिर पड़े: वह बेहोश लग रही थी।

“उसे मेरे भरोसे छोड़ दीजिए; मैं एक चिकित्सक हूं,” डॉ. जॉन ने कहा।

“अगर आपके साथ कोई महिला नहीं है, तो ठीक है,” जवाब मिला। “उसे पकड़िए, मैं रास्ता बनाऊंगा: हमें उसे हवा में ले जाना ही होगा।”

ग्राहम ने कहा, "मेरी एक पत्नी है, लेकिन वह न तो बाधा बनेगी और न ही बोझ।"

उसने अपनी आँखों से मुझे बुलाया: हम अलग हो गए थे। फिर भी, उससे दोबारा मिलने के दृढ़ निश्चय के साथ, मैंने उस निर्जीव बाधा को पार किया, उस जगह के नीचे रेंगते हुए जहाँ से मैं न तो बीच में जा सकता था और न ही ऊपर से।

“मुझे कसकर पकड़ लो, और मुझे मत छोड़ो,” उसने कहा; और मैंने उसकी बात मान ली।

हमारे अग्रणी ने बल और कुशलता का परिचय दिया; उन्होंने घने मलबे को एक कील की तरह खोला; धैर्य और परिश्रम से उन्होंने अंततः उस ठोस, गर्म और दम घोंटने वाली चट्टान को छेदते हुए हमें ताज़ी, बर्फीली रात में बाहर निकाला।

सड़क पर आते ही उसने डॉ. ब्रेटन की ओर मुड़कर कहा, "तुम एक अंग्रेज हो!"

“एक अंग्रेज। और मैं एक देशवासी से बात कर रहा हूँ?” यह जवाब मिला।

“ठीक है। कृपया दो मिनट यहीं खड़े रहिए, जब तक मैं अपनी गाड़ी ढूंढ लेता हूँ।”

“पापा, मुझे चोट नहीं लगी है,” एक लड़की की कोमल आवाज ने कहा; “क्या मैं पापा के साथ हूँ?”

आप अपने दोस्त के साथ हैं, और आपके पिता आपके आस-पास ही हैं।

"उसे बता देना कि मुझे कोई चोट नहीं आई है, बस मेरे कंधे में थोड़ी सी चोट है। ओह, मेरा कंधा!"

वे ठीक यहीं से गुजरे थे।

“शायद जोड़ खिसक गया है!” डॉक्टर ने बुदबुदाते हुए कहा। “उम्मीद है कि इससे

ज्यादा गंभीर चोट न लगी हो। लूसी, एक पल के लिए हाथ बढ़ाओ।”

और मैंने उसकी मदद की जब उसने अपने कष्ट को कम करने के लिए कपड़े और बैठने की स्थिति को व्यवस्थित किया। उसने अपनी आह को दबा लिया और चुपचाप और धैर्यपूर्वक उसकी बाहों में लेटी रही।

“वह बहुत हल्की-फुल्की है,” ग्राहम ने कहा, “बिल्कुल एक बच्चे की तरह!” और उसने मेरे कान में फुसफुसाकर पूछा, “क्या वह बच्ची है, लूसी? क्या तुमने उसकी उम्र पर ध्यान दिया?”

“मैं बच्ची नहीं हूँ—मैं सत्रह साल की हूँ,” मरीज़ ने विनम्रता और गरिमा के साथ जवाब दिया। फिर तुरंत बाद बोली, “पापा को बुलाओ; मुझे घबराहट होती है।”

गाड़ी आकर रुकी; उसके पिता ने ग्राहम को उसकी जगह पर बिठाया; लेकिन एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सौंपे जाने के दौरान उसे चोट लग गई और वह फिर से कराह उठी।

“मेरे प्यारे!” पिता ने स्नेहपूर्वक कहा; फिर ग्राहम की ओर मुड़कर, “आपने कहा था, महोदय, आप एक चिकित्सक हैं?”

“मैं हूं: डॉ. ब्रेटन, ला टेरेस से।”

“अच्छा। क्या आप मेरी गाड़ी में बैठेंगे?”

“मेरी अपनी गाड़ी यहीं है: मैं उसे ढूंढूंगा और आपके साथ चलूंगा।”

“तो कृपया हमारे पीछे आइए।” और उन्होंने अपना पता बताया: “होटल”

क्रेसी, रुए क्रेसी में।"

हम उसके पीछे-पीछे चले; गाड़ी तेज़ी से चल रही थी; मैं और ग्राहम चुप थे।

यह एक रोमांचक अनुभव जैसा लग रहा था।

अपना वाहन ढूंढने में कुछ समय बर्बाद करने के बाद, हम इन अजनबियों के लगभग दस मिनट बाद होटल पहुंचे। यह एक विदेशी अर्थों में होटल था: एक सराय नहीं, बल्कि कई आवासीय भवनों का समूह - एक विशाल, भव्य इमारत, जिसके मुख्य द्वार पर एक बड़ा मेहराब था, जो एक गुंबददार ढके हुए रास्ते से होकर चारों ओर बने एक चौक में खुलता था।

हम उतरे, एक चौड़ी, सुंदर सार्वजनिक सीढ़ी से ऊपर चढ़े और दूसरी मंजिल पर नंबर 2 पर रुके; पहली मंजिल पर पता नहीं कौन "राजकुमार रूस" का निवास था, जैसा कि ग्राहम ने मुझे बताया था। दूसरे बड़े दरवाजे की घंटी बजाने पर हमें बहुत ही

सुंदर कमरों के एक सुइट में प्रवेश मिला। वर्दी पहने एक नौकर द्वारा सूचना दिए जाने पर, हम एक ड्राइंग रूम में दाखिल हुए, जिसकी चिमनी में अंग्रेजी शैली की आग जल रही थी और जिसकी दीवारें विदेशी दर्पणों से जगमगा रही थीं। चिमनी के पास एक छोटा सा समूह दिखाई दिया: एक दुबली-पतली आकृति एक गहरी आरामकुर्सी में धंसी हुई थी, एक-दो महिलाएं उसके आसपास व्यस्त थीं, और लोहे जैसे भूरे रंग के सज्जन चिंतित होकर देख रहे थे।

“हैरियट कहाँ है? काश हैरियट मेरे पास आ जाए,” लड़की जैसी आवाज़ ने धीमी आवाज़ में कहा।

"श्रीमती हर्स्ट कहाँ हैं?" उस सज्जन ने अधीरता और कुछ हद तक सख्ती से उस नौकर से पूछा जिसने हमें अंदर आने दिया था।

मुझे यह कहते हुए खेद है कि वह शहर से बाहर चली गई हैं, महोदय; मेरी युवती ने कल तक के लिए छुट्टी ले ली है।

“हाँ—मैंने किया—मैंने किया। वह अपनी बहन से मिलने गई है; मैंने कहा था कि वह जा सकती है।”

“मुझे अब याद आ गया,” युवती ने बीच में कहा; “लेकिन मुझे बहुत खेद है, क्योंकि

मैनन और लुइसन मेरी एक भी बात नहीं समझ पातीं और वे मुझे चोट पहुँचाती हैं।

बिना ऐसा करने का इरादा किए।"

डॉ. जॉन और उस सज्जन ने अब एक-दूसरे का अभिवादन किया; और जब वे कुछ मिनट विचार-विमर्श में बिता रहे थे, मैं आरामकुर्सी के पास गया, और उस कमजोर और मुरझाई हुई लड़की की इच्छा देखकर, मैंने उसके लिए वह कर दिया।

मैं अभी भी व्यवस्था करने में व्यस्त थी, तभी ग्राहम पास आ गया; वह चिकित्सा के साथ-साथ शल्य चिकित्सा में भी उतना ही कुशल था, और जाँच करने पर उसने पाया कि इस मामले के उपचार के लिए उसके अपने परामर्श के अलावा और किसी सलाह की आवश्यकता नहीं है। उसने उसे उसके कमरे में ले जाने का आदेश दिया और मेरे कान में फुसफुसाया: — “महिलाओं के साथ जाओ, लूसी; वे सुस्त लग रही हैं; तुम कम से कम उनके चलने-फिरने को निर्देशित कर सकती हो, और इस तरह उसे कुछ दर्द से बचा सकती हो। उसे बहुत कोमलता से छूना चाहिए।”

कमरा हल्के नीले पर्दों से छाया हुआ था, मलमल के पर्दों और आवरणों से भरा

हुआ था; बिस्तर मुझे बर्फ और धुंध जैसा लग रहा था - बेदाग, मुलायम और जालीदार। महिलाओं को अलग खड़ा करके, मैंने उनकी मालकिन के कपड़े उतारे, उनकी नेक नियत वाली लेकिन अनाड़ी मदद के बिना। मैं इतनी शांत अवस्था में नहीं था कि उतारे गए कपड़ों के हर विवरण को स्पष्ट रूप से देख सकूँ, लेकिन मुझे परिष्कार, कोमलता और परिपूर्ण व्यक्तित्व का आभास हुआ; जिसने बाद में विचार करने पर, मिस जिनेवरा फैंसहावे के पहनावे के बारे में मेरे विचारों के विपरीत एक अनूठा अंतर प्रस्तुत किया।

वह लड़की स्वयं में एक छोटी, नाज़ुक सी आकृति थी, लेकिन किसी आदर्श के समान सुडौल। जैसे ही मैंने उसके घने, कोमल और सुंदर बालों को पीछे किया, जो इतने चमकदार और कोमल थे और इतनी खूबसूरती से संवारे हुए थे, मेरी नज़र एक युवा, पीली, थकी हुई, लेकिन उच्च कोटि के चेहरे पर पड़ी। उसका माथा चिकना और निर्मल था; भौहें स्पष्ट थीं, लेकिन कोमल थीं और कनपटी पर जाकर हल्की सी झलक में सिमट जाती थीं; उसकी आँखें प्रकृति का एक अनमोल उपहार थीं - सुंदर और भरी हुई, बड़ी, गहरी, मानो चेहरे की अन्य सूक्ष्म विशेषताओं पर अपना प्रभुत्व जमाए हुए हों - शायद किसी और समय और किसी और परिस्थिति में उनका बहुत महत्व होता, लेकिन अब वे सुस्त और पीड़ा से भरी हुई थीं। उसकी त्वचा एकदम गोरी थी, गर्दन और हाथों की नसें फूल की पंखुड़ियों की तरह बारीक थीं; अहंकार की बर्फ की एक पतली परत ने इस नाजुक बाहरी रूप को निखार दिया था, और उसके होंठों पर एक हल्की सी मुस्कान थी - मुझे संदेह नहीं है कि यह स्वाभाविक और अचेतन थी, लेकिन अगर मैंने इसे पहले स्वास्थ्य और प्रतिष्ठा के साथ देखा होता, तो यह मुझे अनुचित लगती, और यह साबित करती कि इस छोटी सी महिला का जीवन और अपने महत्व के बारे में बिल्कुल गलत दृष्टिकोण है।

डॉक्टर के हाथों इलाज के दौरान उसका व्यवहार देखकर पहले तो उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई; यह बचकानी नहीं थी, बल्कि कुल मिलाकर धैर्यपूर्ण और दृढ़ थी, फिर भी एक-दो बार उसने अचानक और तीखे स्वर में डॉक्टर से कहा कि उन्हें दर्द हो रहा है और उन्हें दर्द कम करने का उपाय करना चाहिए; मैंने देखा कि उसकी बड़ी-बड़ी आँखें भी डॉक्टर के चेहरे पर ऐसे टिक गईं जैसे किसी प्यारे, जिज्ञासु बच्चे की गंभीर आँखें हों। मुझे नहीं पता कि ग्राहम को यह जाँच महसूस हुई या नहीं: अगर हुई भी तो उन्होंने किसी भी तरह की प्रतिक्रियात्मक नज़र से इसे रोकने या असहज करने की

कोशिश नहीं की। मुझे लगता है कि डॉक्टर ने अपना काम अत्यंत सावधानी और कोमलता से किया, जहाँ तक संभव हो सके उसे दर्द से बचाया; और जब उनका काम पूरा हो गया, तो उसने भी इन शब्दों से इसका आभार व्यक्त किया: "धन्यवाद, डॉक्टर, और शुभ रात्रि," उसने ये शब्द बड़ी कृतज्ञता से कहे, हालाँकि, मुझे लगा कि उसकी गंभीर और सीधी नज़रें फिर से उसी तरह थीं, जो अपनी गंभीरता और एकाग्रता में अनोखी थीं।

ऐसा लगता है कि चोटें जानलेवा नहीं थीं: उसके पिता ने इस आश्वासन को एक ऐसी मुस्कान के साथ स्वीकार किया जिससे मानो कोई उनका मित्र बन गया हो - उनकी मुस्कान इतनी प्रसन्न और संतुष्ट थी। अब उन्होंने ग्राहम के प्रति अपनी कृतज्ञता को उतनी ही गंभीरता से व्यक्त किया जितनी एक अंग्रेज के लिए उचित होती है, जो किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहा हो जिसने उसकी सेवा की हो, लेकिन अभी तक अजनबी हो; उन्होंने ग्राहम से अगले दिन आने का भी अनुरोध किया।

"पापा," घूंघट से ढके सोफे से एक आवाज आई, "उस महिला को भी धन्यवाद कहिए; क्या वह वहां है?"

मैंने मुस्कुराते हुए पर्दा खोला और अंदर झाँका। वह अब अपेक्षाकृत आराम से लेटी हुई थी; वह सुंदर लग रही थी, हालाँकि उसका रंग पीला था; उसका चेहरा नाजुक बनावट वाला था, और अगर पहली नज़र में वह घमंडी लगता था, तो मुझे लगता है कि समय के साथ वह कोमल साबित हो सकता है।

“मैं उस महिला का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ,” उसके पिता ने कहा। “मुझे लगता है कि उन्होंने मेरी बच्ची का बहुत ख्याल रखा है। मुझे लगता है कि हम श्रीमती हर्स्ट को यह बताने की हिम्मत नहीं कर सकते कि उनकी जगह किसने काम किया है; उन्हें शर्म और ईर्ष्या दोनों महसूस होंगी।”

और इस प्रकार, अत्यंत सौहार्दपूर्ण भाव से विदाई की शुभकामनाओं का आदान-प्रदान हुआ; और आतिथ्य सत्कार के साथ जलपान की पेशकश की गई, लेकिन देर हो जाने के कारण हमने इसे अस्वीकार कर दिया, और हम होटल क्रेसी से चले गए।

वापस लौटते समय हम फिर से थिएटर के पास से गुज़रे। चारों ओर सन्नाटा और अंधेरा था: शोर मचाती, भागती-दौड़ती भीड़ गायब हो चुकी थी— सीलन और साथ ही हल्की सी आग भी बुझ चुकी थी और भुला दी गई थी। अगली सुबह के अखबारों में बताया गया कि यह महज़ एक ढीला पर्दा था जिस पर एक चिंगारी गिरी थी, और

जो पल भर में भड़क उठी और बुझ गई।

अध्याय XXIV.

श्री डी बासोम्पिएरे।

सेवानिवृत्ति का जीवन जीने वाले, स्कूलों या अन्य चारदीवारी वाले सुरक्षित आवासों के एकांत में सिमट चुके लोग, अपने मित्रों, एक अधिक स्वतंत्र दुनिया के निवासियों की स्मृति से अचानक और लंबे समय तक ओझल हो जाते हैं। शायद अकारण ही, और असामान्य रूप से लगातार मेल-जोल के किसी दौर के ठीक बाद—कुछ रोमांचक छोटी-छोटी घटनाओं के बाद, जिनका स्वाभाविक परिणाम संचार के रुकने के बजाय उसे और तेज़ करना प्रतीत होता है—एक सन्नाटा छा जाता है, एक खामोश सन्नाटा, विस्मृति का एक लंबा खालीपन। यह खालीपन हमेशा बना रहता है; पूर्ण और अस्पष्ट दोनों। कभी नियमित रूप से आने वाले पत्र, संदेश, बंद हो जाते हैं; पहले नियमित रूप से होने वाली मुलाक़ातें, अब नहीं होतीं; पुस्तक, कागज़ या अन्य कोई भी स्मृति चिन्ह जो याद दिलाता था, अब नहीं मिलता।

इन निष्क्रियताओं के पीछे हमेशा ही उत्कृष्ट कारण होते हैं, अगर साधु उन्हें जान पाता। यद्यपि वह अपनी कोठरी में स्थिर है, उसके बाहरी संबंध जीवन के भंवर में बँधे हुए हैं। वह खालीपन का अंतराल जो उसके लिए इतना धीमा बीतता है कि घड़ियाँ भी थम सी जाती हैं, और पंखहीन घंटे थके हुए यात्रियों की तरह मील के पत्थरों पर विश्राम करते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं - शायद वही अंतराल घटनाओं से भरा हुआ है, और उसके मित्रों के लिए तड़प रहा है।

यदि संन्यासी समझदार संन्यासी है, तो वह आंतरिक शीतकाल के इन सप्ताहों के दौरान अपने विचारों को दबा लेगा और अपनी भावनाओं को रोक लेगा। वह जानता है

कि नियति ने उसे कभी-कभी गिलहरी की तरह व्यवहार करने के लिए बनाया है, और वह इसके अनुरूप ढल जाएगा: स्वयं को एक सलीके से गोले में समेट लेगा, जीवन की दीवार के एक छेद में घुस जाएगा, और आने वाली उस हवा के झोंके के आगे शालीनता से आत्मसमर्पण कर देगा जो उसे जल्द ही रोक देती है, और उसे पूरे मौसम के लिए बर्फ में जमा देती है।

उसे कहने दो, “यह बिल्कुल सही है: ऐसा ही होना चाहिए, क्योंकि ऐसा ही है।” और शायद, एक दिन उसकी बर्फ की कब्र खुल जाएगी, वसंत की कोमलता लौट आएगी, सूरज और दक्षिणी हवा उस तक पहुँचेंगे; झाड़ियों की कलियाँ खिलेंगी, पक्षियों का चहचहाना और मुक्त धाराओं का गीत उसे सुखद पुनरुत्थान की ओर बुलाएगा। शायद ऐसा हो, शायद न हो: ठंड उसके दिल में जम जाए और फिर कभी न पिघले; जब वसंत आए, तो एक कौआ या एक पाई दीवार से केवल उसकी गिलहरी की हड्डियाँ ही निकाल पाए। खैर, उस स्थिति में भी, सब ठीक होगा: यह माना जा सकता है कि वह शुरू से ही जानता था कि वह नश्वर है, और एक दिन सभी प्राणियों की तरह उसे भी जाना ही है, “जो होना है सो जल्दी।”

थिएटर में उस यादगार शाम के बाद, मेरे लिए सात सप्ताह ऐसे खाली पन्नों की तरह थे जैसे सात खाली कागज: उनमें से किसी पर भी एक शब्द नहीं लिखा था; न कोई मुलाकात, न कोई निशानी।

उस समय के मध्य में मुझे ये ख्याल आने लगे कि ला टेरेस में मेरे दोस्तों के साथ कुछ हो गया है। अकेलापन हमेशा ही एक अंधकारमय पल होता है: लंबे इंतजार के तनाव से उसकी नसें तन जाती हैं; अब तक दबाए गए संदेह अब एक समूह में इकट्ठा हो जाते हैं और - संचय के साथ - प्रतिशोध की भावना से भरी ताकत से उस पर वापस आ पड़ते हैं। रात भी एक निर्दयी समय बन जाती है, और नींद और उसका स्वभाव मेल नहीं खाते: अजीब झटके और संघर्ष उसके बिस्तर को परेशान करते हैं: बुरे सपनों का भयावह गिरोह, विपत्ति के भय और पूर्ण परित्याग के भयानक डर के साथ, उसके खिलाफ गठबंधन कर लेता है। बेचारा! वह सहने की पूरी कोशिश करता है, लेकिन उस पूरी कोशिश के बावजूद भी वह एक बेचारा, पीला, कमजोर होता हुआ बेचारा है।

इन लंबे सात हफ्तों के आखिरी हफ्ते में मैंने वह बात स्वीकार कर ली, जिसे मैंने बाकी छह हफ्तों में बड़ी हिचक से छुपा रखा था—यह दृढ़ विश्वास कि ये खालीपन

अपरिहार्य थे: परिस्थितियों का परिणाम, भाग्य का फरमान, मेरे जीवन का एक हिस्सा और—सबसे बढ़कर—एक ऐसा विषय जिसके मूल के बारे में कभी कोई सवाल नहीं पूछा जाना चाहिए, जिसके दर्दनाक क्रम के लिए कभी कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। बेशक मैंने अपने कष्टों के लिए खुद को दोषी नहीं ठहराया: मैं ईश्वर का शुक्रगुजार हूं कि मुझमें न्याय की सच्ची भावना थी, जिससे मैं आत्म-आरोप की किसी भी मूर्खतापूर्ण अतिशयता में नहीं पड़ा; और दूसरों को चुप रहने के लिए दोषी ठहराने की बात करें तो, मैं अपनी बुद्धि से उन्हें निर्दोष जानता था, और अपने दिल में उन्हें ऐसा ही मानता था: लेकिन यह एक कठिन और बोझिल रास्ता था, और मैं बेहतर दिनों की कामना करता था।

मैंने जीवनयापन और जीवनयापन के लिए कई उपाय आजमाए: मैंने जटिल जाली का काम शुरू किया, मैंने जर्मन भाषा का गहन अध्ययन किया, मैंने पुस्तकालय की सबसे नीरस और मोटी किताबों को नियमित रूप से पढ़ने का संकल्प लिया; अपने सभी प्रयासों में मैं यथासंभव रूढ़िवादी बनी रही। क्या कहीं कोई गलती हुई? संभवतः। मुझे बस इतना पता है कि परिणाम ऐसा था मानो मैंने भूख मिटाने के लिए रेती चबाई हो, या प्यास बुझाने के लिए खारा पानी पिया हो।

मेरे लिए सबसे कष्ट का समय शाम का था। दुर्भाग्य से, मैं इसे अच्छी तरह जानता था, और इस ज्ञान से खुद को वंचित रखने की मैंने व्यर्थ ही कोशिश की; उस जानी-पहचानी घंटी के बजने से पहले और बाद में आने वाली उम्मीदों की पीड़ा और निराशा के भयानक आघात से मैं भयभीत रहता था।

मुझे लगता है कि पिंजरों में बंद और इतना कम भोजन पाने वाले जानवर, जो हमेशा भुखमरी की कगार पर रहते हैं, अपने भोजन का इंतज़ार वैसे ही करते होंगे जैसे मैं एक पत्र का इंतज़ार कर रही थी। ओह! सच कहूँ तो, और उस झूठी शांति का भाव छोड़कर, जिसे बनाए रखना प्रकृति की सहनशीलता को भी मात दे देता है, मैंने उन सात हफ्तों में कड़वे डर और पीड़ा, अजीबोगरीब आंतरिक कष्ट, आशा का दुखद पतन और असहनीय निराशा का सामना किया। यह निराशा कभी-कभी इतनी करीब आ जाती थी कि मानो उसकी साँस मेरे अंदर तक समा जाती थी। मैं उसे एक भयानक हवा या आह की तरह महसूस करती थी, जो गहराई तक प्रवेश करती थी और मेरे दिल की धड़कन को रोक देती थी, या असहनीय दबाव में ही चलने देती थी। वह पत्र - वह प्यारा पत्र - नहीं आया; और जीवन की सारी मिठास उसी में छिपी थी।

घोर अभाव में, मैंने बार-बार उस छोटी सी थैली का सहारा लिया, जिसमें पाँच चिट्ठियाँ थीं। वह महीना कितना सुंदर लगता था, जिसके आकाश में इन पाँच तारों का उदय हुआ था! मैं हमेशा रात में ही उनसे मिलने जाता था, और रसोई में हर शाम मोमबत्ती माँगने की हिम्मत न करते हुए, मैंने मोमबत्ती जलाने के लिए एक छोटी मोमबत्ती और माचिस खरीदी, और पढ़ाई के समय चुपके से छात्रावास में जाकर बर्मेसाइड की रोटी का बचा हुआ टुकड़ा खा लेता था। उससे मुझे पोषण नहीं मिलता था: मैं उस पर तड़पता रहता था, और परछाई की तरह पतला हो गया था: अन्यथा मैं बीमार नहीं था।

एक शाम कुछ देर तक पढ़ते हुए, मुझे ऐसा लग रहा था कि पढ़ने की शक्ति मुझसे दूर होती जा रही है—लगातार पढ़ने से मेरे मन से सारी ऊर्जा और अर्थ क्षीण हो रहा था: मेरा सोना मेरी आँखों के सामने पत्तों की तरह मुरझा रहा था, और मैं इस निराशा से दुखी था—तभी अचानक एक तेज़ कदमों की आहट सीढ़ियों से ऊपर सुनाई दी। मैं जिनेवरा फैंसहावे के कदमों को पहचान गया: उन्होंने उस दोपहर शहर में भोजन किया था; अब वह लौट आई थीं, और यहाँ आकर अपनी शॉल आदि अलमारी में रख देंगी।

हाँ: वो अंदर आई, चमकीले रेशमी वस्त्र पहने, शॉल उसके कंधों से लटक रही थी, और रात की नमी में उसके बाल आधे खुले हुए, लापरवाही से उसकी गर्दन पर लटक रहे थे। मुझे अपने खजाने को संदूक में समेटने और ताला लगाने का मुश्किल से ही समय मिला था कि वो मेरे पास आ गई; उसका मूड कुछ ठीक नहीं लग रहा था।

“यह एक मूर्खतापूर्ण शाम रही: वे मूर्ख लोग हैं,” उसने कहना शुरू किया।

“कौन? श्रीमती चोलमोंडली? मुझे लगा कि आपको उनका घर हमेशा से ही आकर्षक लगता था?”

मैं श्रीमती चोलमोंडली के यहाँ नहीं गया हूँ।

“जी हाँ! क्या आपने कोई नया परिचित बनाया है?”

मेरे चाचा डी बासोम्पियर आ गए हैं।

“तुम्हारे चाचा डी बासोम्पियर! क्या तुम्हें खुशी नहीं हुई? — मुझे लगा था कि वह सबके चहेते थे।”

"तुमने गलत सोचा: वह आदमी घृणित है; मैं उससे नफरत करता हूँ।"

“क्या इसलिए कि वह विदेशी है? या फिर इसी तरह के किसी अन्य महत्वपूर्ण

कारण से?”

“वह विदेशी नहीं है। वह व्यक्ति काफी अंग्रेज है, भगवान ही जानता है; और तीन-चार साल पहले तक उसका नाम भी अंग्रेजी ही था; लेकिन उसकी माँ एक विदेशी थी, डी बासोम्पियर, और उसके परिवार के कुछ सदस्य मर चुके हैं और उन्होंने उसे संपत्ति, एक उपाधि और यह नाम विरासत में दिया है: वह अब काफी बड़ा आदमी है।”

क्या तुम इसी वजह से उससे नफरत करते हो?

“क्या मुझे पता नहीं कि मम्मी उनके बारे में क्या कहती हैं? वो मेरे सगे चाचा नहीं हैं, बल्कि मम्मी की बहन से शादी की है। मम्मी उनसे नफरत करती हैं; वो कहती हैं कि उन्होंने आंटी जिनेवरा को बेरहमी से मार डाला: वो भालू जैसे दिखते हैं। कितनी बुरी शाम थी!” वो आगे बोलीं। “मैं अब उनके बड़े होटल में कभी नहीं जाऊंगी। सोचो, मैं अकेले कमरे में गई, और पचास साल का एक बड़ा आदमी आगे आया, और कुछ मिनट की बातचीत के बाद मुझसे मुंह मोड़ लिया, और फिर अचानक कमरे से बाहर चला गया। कितना अजीब तरीका है! मुझे लगता है कि उनका ज़मीर उन्हें कचोट रहा होगा, क्योंकि घर पर सब कहते हैं कि मैं आंटी जिनेवरा की हूबहू कॉपी हूं। मम्मी अक्सर कहती हैं कि ये समानता तो बिलकुल हास्यास्पद है।”

"क्या आप अकेले आगंतुक थे?"

“एकमात्र आगंतुक? हाँ; फिर मेरी चचेरी बहन थी: छोटी सी बिगड़ी हुई, लाड़ली बच्ची।”

“क्या एम. डी. बासोम्पियर की कोई बेटी है?”

“जी हां, मुझे सवालों से परेशान मत करो। अरे! मैं बहुत थक गई हूँ।”

उसने जम्हाई ली। बिना किसी औपचारिकता के मेरे बिस्तर पर लेटते हुए उसने कहा, "लगता है कुछ हफ्ते पहले थिएटर में मची अफरा-तफरी में मैडमोजेल लगभग कुचल कर जेली बन गई थीं।"

“अहा! बिल्कुल। और वे रुए क्रेसी के एक बड़े होटल में रहते हैं?”

“न्याय। आपको कैसे पता?”

"मैं वहां जा चुका हूं।"

“ओह, सच में? वाकई! आजकल तो आप हर जगह जाते हैं। मुझे लगता है मदर ब्रेटन आपको ले गई होंगी। उनके और एस्कुलेपियस के पास डी बासोम्पियर अपार्टमेंट्स का प्रवेश द्वार है: लगता है ‘मेरा बेटा जॉन’ मिस के दुर्घटना के समय

उनकी देखभाल करने गया था — दुर्घटना? छी! सब दिखावा! मुझे नहीं लगता कि उन्हें उनके नखरों के लिए ज़रूरत से ज़्यादा सज़ा मिली होगी। और अब तो उनके बीच काफी घनिष्ठता हो गई है: मैंने 'पुराने दिनों' और न जाने क्या-क्या सुना। ओह, वे सब कितने बेवकूफ थे!"

"सब लोग! आपने कहा था कि आप अकेले आगंतुक हैं।"

"क्या मैंने ऐसा किया? आप जानते हैं, लोग अक्सर एक बूढ़ी औरत और उसके बेटे के बारे में विशेष रूप से बात करना भूल जाते हैं।"

"क्या डॉ. और श्रीमती ब्रेटन आज शाम एम. डी बासोम्पियर के यहाँ थे?"

"अरे वाह! एकदम जीवंत! और मेरी पत्नी ने मेज़बान की भूमिका निभाई। कितनी अभिमानी गुड़िया है!"

उदास और निराश, मिस फैंसहावे अपनी इस दयनीय स्थिति के कारणों का खुलासा करने लगी थीं। अगरबत्ती का उपयोग कम कर दिया गया था, ध्यान भटकाने की कोशिश की गई थी या फिर सम्मान और ध्यान पूरी तरह से रोक दिया गया था; नखरेबाज़ी का कोई असर नहीं हुआ था, और अहंकार को ठेस पहुँची थी। वह गुस्से से उबल रही थीं।

मैंने पूछा, "क्या मिस डी बासोम्पियर अब बिल्कुल ठीक हैं?"

"निस्संदेह, वह आप या मुझ जितनी ही अच्छी थी; लेकिन वह एक बनावटी बच्ची है, और डॉक्टरों का ध्यान आकर्षित करने के लिए बीमार होने का नाटक करती थी। और उस बूढ़ी विधवा को उसे पलंग पर लिटाते हुए और 'मेरे बेटे जॉन' को उत्तेजना वगैरह से रोकते हुए देखना - छी! यह दृश्य बहुत ही घिनौना था।"

"ऐसा नहीं होता अगर ध्यान का केंद्र बदल दिया गया होता: अगर आपने मिस डी बासोम्पियर की जगह ले ली होती।"

"सचमुच! मुझे अपने बेटे जॉन से नफरत है!"

"'मेरा बेटा जॉन!' — इस नाम से आपका क्या तात्पर्य है? डॉ. ब्रेटन की माँ उन्हें कभी इस नाम से नहीं पुकारतीं।"

"तो उसे ऐसा करना ही चाहिए। वह एक मसखरा, भालू जैसा जॉन है।"

"ऐसा कहकर आप सत्य का उल्लंघन कर रहे हैं; और चूंकि मेरा सारा धैर्य अब समाप्त हो चुका है, इसलिए मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप उस पलंग से उठें और इस कमरे को खाली कर दें।"

“अरे वाह! तुम्हारा चेहरा तो शकरकंद के रंग का है। पता नहीं क्यों तुम हमेशा इतने चिड़चिड़े हो जाते हो? ‘जॉन एंडरसन, मेरे जो, जॉन!’ ओह, कितना प्रतिष्ठित नाम है!”

मैं व्याकुलता से कांप रहा था, जिसे प्रकट करना सरासर मूर्खता होती—क्योंकि उस निराकार पंख, उस पतले पंखों वाले पतंगे से मुकाबला करना असंभव था—मैंने अपनी मोमबत्ती बुझाई, अपनी अलमारी बंद की और उसे वहीं छोड़ दिया, क्योंकि वह मुझे छोड़ने को तैयार नहीं थी। मामूली सी दिखने वाली वह अब असहनीय रूप से कड़वी हो गई थी।

अगले दिन गुरुवार था और आधे दिन की छुट्टी थी। नाश्ता हो चुका था; मैं पहली कक्षा में चला गया था। वह डरावना समय, डाक का समय, नज़दीक आ रहा था, और मैं उसका इंतज़ार कर रहा था, ठीक वैसे ही जैसे कोई भूत-प्रेत देखने वाला अपने भूत का इंतज़ार करता है। चिट्ठी मिलने की संभावना पहले से भी कम थी; फिर भी, लाख कोशिश करने के बावजूद, मैं यह नहीं भूल पा रहा था कि यह संभव है। जैसे-जैसे समय बीतता गया, एक बेचैनी और डर, जो सामान्य से कहीं ज़्यादा था, मुझ पर हावी हो गया। यह सर्दियों की पूर्वी हवाओं का दिन था, और मैं कुछ समय से हवाओं और उनके बदलावों के उस नीरस रिश्ते में बंध चुका था, जो स्वस्थ लोगों के लिए बहुत कम जाना-पहचाना और समझ से परे था। उत्तर और पूर्व का प्रभाव बहुत ज़बरदस्त था, जो हर दर्द को और भी गहरा और हर दुख को और भी उदास बना देता था। दक्षिण शांत कर सकता था, पश्चिम कभी-कभी खुश कर देता था: सिवाय इसके कि वे अपने साथ गरजते बादलों का बोझ लेकर आएं, जिनके भार और गर्मी में सारी ऊर्जा मर जाती थी।

जनवरी का वो दिन कितना भी कड़वा और अंधकारमय क्यों न हो, मुझे याद है कि मैं कक्षा से निकलकर बिना टोपी के लंबे बगीचे के अंत तक दौड़ गया, और फिर सूखी झाड़ियों के बीच कुछ देर रुका रहा, इस उम्मीद में कि शायद डाकिया की घंटी बज जाए जब मैं सुनाई न दे, और इस तरह मैं उस रोमांच से बच जाऊँ जिसे कुछ खास नसें, एक तय विचार के अटूट दाँत से लगभग कुतर चुकी थीं, सहन करने में पूरी तरह असमर्थ हो रही थीं। मैं तब तक रुका रहा जब तक कि मेरी अनुपस्थिति से किसी का ध्यान आकर्षित होने का डर न रहा हो। मैंने अपने सिर को एप्रन से ढक लिया और कान बंद कर लिए, उस कष्टदायक घंटी की आवाज़ के डर से, जिसके बाद निश्चित

रूप से ऐसी खामोशी, मेरे लिए ऐसा खालीपन छा जाएगा। आखिरकार मैंने पहली कक्षा में फिर से प्रवेश करने का साहस किया, जहाँ अभी नौ बजे नहीं बजे थे, इसलिए किसी भी छात्र को प्रवेश नहीं दिया गया था। सबसे पहले जो चीज दिखी वह मेरी काली मेज पर एक सफेद वस्तु थी, एक सफेद, सपाट वस्तु। डाक सचमुच आ गई थी; मेरे लिए अनसुनी। रोसीन मेरी कोठरी में आई थी, और किसी देवदूत की तरह, अपनी उपस्थिति की एक उज्ज्वल निशानी छोड़ गई थी। मेज पर पड़ी वह चमकती हुई चीज़ वास्तव में एक पत्र थी, एक असली पत्र; मैंने तीन गज की दूरी से ही बहुत कुछ देख लिया था, और चूंकि धरती पर मेरा केवल एक ही पत्र-व्यवहार करने वाला था, इसलिए यह पत्र उसी से आना चाहिए था। उसे अभी भी मेरी याद थी। कृतज्ञता की एक गहरी लहर ने मेरे हृदय में नई जान फूंक दी।

पास आकर, झुककर और कांपते हुए, लगभग निश्चित उम्मीद के साथ कि शायद किसी परिचित की लिखावट हो, मैंने पत्र को देखा, लेकिन इसके विपरीत मुझे एक अज्ञात हस्ताक्षर मिला—एक दृढ़, पुरुष अक्षर के बजाय एक धुंधली महिला की लिखावट। तब मुझे लगा कि किस्मत मेरे साथ बहुत कठोर है, और मैंने ज़ोर से कहा, "यह तो ज़ुल्म है।"

लेकिन मैंने उस दर्द से भी उबर लिया। जीवन तो जीवन ही है, चाहे उसमें कितनी भी पीड़ा हो: हमारी आंखें और कान और उनका उपयोग हमारे साथ बना रहता है, भले ही जो चीज़ें हमें प्रसन्न करती हैं उनकी संभावना पूरी तरह से समाप्त हो गई हो, और जो आवाज़ें हमें सांत्वना देती हैं वे पूरी तरह से शांत हो गई हों।

मैंने पत्र खोला: तब तक मैं उसकी लिखावट को पूरी तरह से पहचान चुका था। उस पर "ला टेरेस" की तारीख लिखी थी और उसमें इस प्रकार लिखा था: —

प्रिय लूसी, — मुझे यह पूछने का मन हुआ कि पिछले एक-दो महीनों से तुम क्या कर रही हो? मुझे नहीं लगता कि तुम्हें अपने बारे में बताने में कोई कठिनाई होगी। मुझे पूरा यकीन है कि तुम भी ला टेरेस में हम सब की तरह ही व्यस्त और खुश रही होगी। जहाँ तक ग्राहम की बात है, उसका पेशेवर काम दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है: उसकी इतनी मांग है, वह इतना व्यस्त है कि मैं उससे कहती हूँ कि वह घमंडी हो जाएगा। एक अच्छी माँ होने के नाते, मैं उसे संयम में रखने की पूरी कोशिश करती हूँ: जैसा कि तुम जानती हो, मैं उसकी कोई चापलूसी नहीं करती। फिर भी, लूसी, वह एक नेक इंसान है: उसे देखकर उसकी माँ का दिल खुशी से झूम उठता है। दिन भर

इधर-उधर भागदौड़ करने, पचास तरह के मिजाजों का सामना करने, सौ तरह की सनक से लड़ने और कभी-कभी क्रूर पीड़ाओं को देखने के बाद — शायद, जैसा कि मैं उससे कहती हूँ, कभी-कभी वह खुद भी पीड़ा देता है — रात को वह इतने दयालु और खुशमिजाज मूड में मेरे पास लौटता है कि सचमुच, मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं एक तरह के नैतिक विरोधाभास में जी रही हूँ। और जनवरी की इन शामों में मेरा दिन तब शुरू होता है जब दूसरे लोगों की रात शुरू हो जाती है।

"फिर भी उसे अनुशासित रखने, सुधारने और नियंत्रित करने की आवश्यकता है, और मैं उसकी इस समस्या का समाधान करता हूँ; लेकिन वह लड़का इतना चंचल है कि उसे पूरी तरह से परेशान करना असंभव है। जब मुझे लगता है कि मैंने आखिरकार उसे रूठा बना दिया है, तो वह बदले में मुझसे ही मज़ाक करने लगता है: लेकिन आप उसे और उसकी सभी बुराइयों को जानते हैं, और मैं तो बस एक बूढ़ा मूर्ख हूँ जो उसे इस पत्र का विषय बना रहा हूँ।"

"जहाँ तक मेरी बात है, मेरे पुराने ब्रेटन एजेंट मुझसे मिलने आए हुए हैं, और मैं व्यापारिक मामलों में पूरी तरह से डूबा हुआ हूँ। मैं ग्राहम के लिए उसके पिता द्वारा छोड़ी गई संपत्ति का कम से कम कुछ हिस्सा वापस पाना चाहता हूँ। वह इस बात पर मेरी चिंता का उपहास उड़ाते हुए हँसता है, और मुझसे कहता है कि मैं देखूँ कि वह अपने और मेरे लिए कैसे व्यवस्था कर सकता है, और पूछता है कि उस बुढ़िया को ऐसी क्या चाहत हो सकती है जो उसके पास पहले से नहीं है; आसमानी नीली पगड़ियों का इशारा करते हुए; और मुझ पर हीरे पहनने, नौकर रखने, होटल खोलने और विलेट में अंग्रेज़ समुदाय के बीच फैशन का नेतृत्व करने की महत्वाकांक्षा का आरोप लगाता है।"

"आसमानी नीले रंग की पगड़ियों की बात हो रही है, काश तुम उस शाम हमारे साथ होतीं। वो बहुत थका हुआ आया था, और चाय देने के बाद, उसने हमेशा की तरह बड़े घमंड से मेरी कुर्सी पर छलांग लगा दी। मुझे बहुत खुशी हुई कि वो सो गया। (तुम्हें पता है कि वो मुझे नींद आने पर कैसे चिढ़ाता है; मैं, जो कभी दिन के उजाले में आँखें भी नहीं बंद करती।) जब वो सो रहा था, मुझे लगा कि वो बहुत सुंदर लग रहा है, लूसी: मैं कितनी मूर्ख हूँ जो उस पर इतना गर्व करती हूँ; लेकिन कौन क्या कर सकता है? मुझे उसका जैसा कोई दिखाओ। मैं जहाँ तक देखूँ, मुझे विलेट में उसके जैसा कोई नहीं दिखता। खैर, मैंने उसके साथ एक शरारत करने का सोचा: तो मैंने

आसमानी नीले रंग की पगड़ी निकाली, और बड़ी सावधानी से उसे संभालते हुए, मैंने उसके माथे पर इस भव्य आभूषण को सजा दिया। मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ कि यह उस पर बिल्कुल भी बुरा नहीं लगा; वो बिल्कुल पूर्वी लग रहा था, सिवाय इसके कि वो बहुत गोरा है। हालाँकि, अब कोई उस पर लाल बाल होने का आरोप नहीं लगा सकता - ये असली भूरे बाल हैं - गहरे, चमकदार भूरे रंग के बाल; और जब मैंने अपना बड़ा कश्मीरी कंबल उसके ऊपर डाला, तो एक ऐसा सुंदर युवा बे, डे या पाचा (लड़का) तैयार हो गया जैसा आप देखना चाहेंगे।

"यह अच्छा मनोरंजन था; लेकिन इसका आधा ही आनंद लिया, क्योंकि मैं अकेला था: आपको वहां होना चाहिए था।"

कुछ समय बाद मेरे स्वामी की नींद खुली: चिमनी के ऊपर लगे शीशे ने उन्हें उनकी दुर्दशा का आगाह कर दिया: जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, मैं अब प्रतिशोध के खतरे और भय के साये में जी रहा हूँ।

लेकिन अब अपने पत्र के मुख्य बिंदु पर आते हैं। मुझे पता है कि गुरुवार को रू फॉसेट में आधे दिन की छुट्टी है: इसलिए शाम पांच बजे तक तैयार रहना, उस समय मैं तुम्हें ला टेरेस ले जाने के लिए गाड़ी भेज दूँगा। ज़रूर आना: हो सकता है तुम्हें कोई पुराना परिचित मिल जाए। अलविदा, मेरी समझदार, प्यारी, गंभीर छोटी धर्मपुत्री। —तुम्हारा सच्चा,

"लुईसा ब्रेटन."

अब, ऐसा पत्र पढ़कर मन शांत हो जाता है! उस पत्र को पढ़ने के बाद मैं शायद अभी भी दुखी थी, लेकिन पहले से ज़्यादा शांत थी; शायद पूरी तरह खुश तो नहीं हुई, लेकिन राहत ज़रूर मिली। मेरे दोस्त कम से कम ठीक और खुश थे: ग्राहम के साथ कोई दुर्घटना नहीं हुई थी; उसकी माँ को कोई बीमारी नहीं हुई थी—ये वो विपत्तियाँ थीं जिनका मैं लंबे समय से सपना और कल्पना करती आ रही थी। उनके मेरे प्रति भाव भी पहले जैसे ही थे। फिर भी, श्रीमती ब्रेटन के सात हफ़्तों की तुलना अपने सात हफ़्तों से करना कितना अजीब था! और यह भी कि असाधारण स्थिति में फंसे लोगों के लिए चुप रहना और जल्दबाज़ी में यह न कहना कितना बुद्धिमानी का काम है कि ऐसी स्थिति उन्हें कितना कष्ट पहुँचाती है! दुनिया भोजन की कमी से मरने की प्रक्रिया को अच्छी तरह समझ सकती है: शायद ही कोई व्यक्ति एकांत कारावास से पागल होने की प्रक्रिया को समझ पाए। वे लंबे समय से दफ़न कैदी को कब्र से बाहर

निकलते देखते हैं, एक पागल या एक मूर्ख! — कैसे उसकी इंद्रियाँ उसका साथ छोड़ गईं — कैसे उसकी नसें, पहले सूजीं, अकथनीय पीड़ा से गुज़रीं, और फिर लकवाग्रस्त हो गईं — यह एक ऐसा विषय है जो जाँच-पड़ताल के लिए बहुत जटिल है, आम लोगों की समझ से परे है। इसके बारे में बात करना तो मानो किसी यूरोपीय बाज़ार में खड़े होकर उसी भाषा और भाव में गूढ़ बातें कहना है, जिस भाषा और भाव में शाही रोगग्रस्त नबूकदनेज़र अपने भ्रमित कसदियों से बात करता था। और ऐसे लोग, जिनके लिए ये विषय रहस्य नहीं हैं — जो इन्हें सहानुभूतिपूर्वक समझते हैं — बहुत कम हों और दुर्लभ ही मिलें। यह आम धारणा बनी रहे कि केवल शारीरिक कष्ट ही करुणा के पात्र हैं, बाकी सब कल्पना मात्र है। जब दुनिया आज से ज़्यादा युवा और स्वस्थ थी, तब नैतिक परीक्षाएँ और भी गहरे रहस्य थीं: शायद पूरे इस्राएल देश में केवल एक ही शाऊल था — और निश्चित रूप से केवल एक ही दाऊद था जो उसे सांत्वना दे सकता था या उसकी बात समझ सकता था।

सुबह की तीक्ष्ण, स्थिर ठंड दिन ढलते ही रूसी बंजर भूमि से आती हुई तेज़ हवा में तब्दील हो गई: शीत क्षेत्र समशीतोष्ण क्षेत्र पर छा गया और उसे जमा दिया। उत्तर से एक भारी, धुंधली और बर्फ से ढकी चादर सी उत्तर की ओर उठी और आशा से भरे यूरोप पर छा गई। दोपहर होते-होते बर्फ का उतरना शुरू हो गया। मुझे डर था कि कोई गाड़ी नहीं आएगी, क्योंकि बर्फ का तूफ़ान इतना घना और भयंकर था। लेकिन मेरी धर्ममाता पर भरोसा रखो! एक बार पूछने पर, वह अपने मेहमान को ले आतीं। लगभग छह बजे मुझे गाड़ी से उठाकर महल की पहले से ही बंद सीढ़ियों से होते हुए ला टेरेस के दरवाजे पर पहुँचा दिया गया।

प्रवेश द्वार से दौड़ते हुए, ऊपर ड्राइंग रूम में पहुँचकर, मैंने श्रीमती ब्रेटन को पाया —जैसे मानो मानो गर्मी का दिन उनके साक्षात रूप में मौजूद हों। अगर मुझे दुगनी ठंड भी लग रही होती, तो भी उनका स्नेहपूर्ण चुंबन और आलिंगन मुझे गर्माहट दे देता। इतने लंबे समय से सादे तख्तों, काली बेंचों, डेस्कों और स्टोवों वाले कमरों में रहने की आदत पड़ जाने के कारण, नीला कमरा मुझे भव्य लगा। उसमें जलती क्रिसमस जैसी आग में ही एक निर्मल और गहरा लाल रंग का प्रकाश था जिसने मुझे पूरी तरह चकाचौंध कर दिया।

जब मेरी धर्ममाता ने थोड़ी देर के लिए मेरा हाथ पकड़ा, मुझसे बातें कीं और मुझे पिछली बार जब उन्होंने मुझे देखा था तब की तुलना में पतला हो जाने के लिए डांटा,

तो उन्होंने कहा कि उन्हें पता चला है कि बर्फीली हवा ने मेरे बालों को बिखेर दिया है, और मुझे उन्हें ठीक करने और शॉल हटाने के लिए ऊपर भेज दिया।

अपने छोटे से समुद्री हरे रंग के कमरे में लौटकर मैंने देखा कि वहाँ भी एक तेज आग जल रही थी और मोमबत्तियाँ भी जल रही थीं: बड़े शीशे के दोनों ओर एक-एक लंबी मोमबत्ती रखी थी; लेकिन मोमबत्तियों के बीच और शीशे के सामने कुछ ऐसा प्रकट हुआ जो खुद को सजा रहा था - एक हवादार, परी जैसी चीज - छोटी, पतली, सफेद - एक शीत ऋतु की आत्मा।

मैं सच कहूँ तो, एक पल के लिए मुझे ग्राहम और उसके मायावी भ्रम याद आ गए। मैंने संदेह भरी नज़रों से इस नए दृश्य के हर पहलू को गौर से देखा। उसने सफ़ेद वस्त्र पहने थे, जिन पर हल्के लाल रंग की बूँदें पड़ी थीं; उसकी कमरबंद लाल थी; उसके बालों में कुछ पत्तों जैसा, फिर भी चमकीला सा था—एक छोटा सा सदाबहार जैसा मुकुट। चाहे वह मायावी हो या नहीं, यहाँ सचमुच कुछ भी डरावना नहीं था, और मैं आगे बढ़ गया।

मेरी ओर तेजी से मुड़ते हुए, लंबी पलकों के नीचे एक बड़ी सी आंख ने मुझ पर एक चमक डाली, जैसे कि वह घुसपैठिया हो: पलकें जितनी लंबी थीं उतनी ही गहरी भी थीं, और वे अपनी पेंसिल जैसी आकृति से उस गोले को नरम कर रही थीं जिसकी वे रक्षा कर रही थीं।

“आह! तुम आ गए!” उसने धीमी, शांत आवाज में कहा, और धीरे से मुस्कुराई, और ध्यान से देखने लगी।

अब मैं उसे पहचान गई थी। उस तरह का चेहरा, उसकी कोमल और नाजुक विशेषताओं के साथ, मैंने केवल एक बार ही देखा था, इसलिए मैं उसे पहचाने बिना नहीं रह सकती थी।

मैंने उच्चारण किया, "मिस डी बासोम्पियर।"

“नहीं,” जवाब मिला, “आपके लिए मिस डी बासोम्पियर नहीं!” मैंने यह नहीं पूछा कि वह कौन हो सकती हैं, बल्कि स्वैच्छिक जानकारी की प्रतीक्षा की।

“तुम बदल गए हो, लेकिन फिर भी तुम वही हो,” वह पास आते हुए बोली। “मुझे तुम अच्छी तरह याद हो— तुम्हारा चेहरा, तुम्हारे बालों का रंग, तुम्हारे चेहरे की बनावट...।”

मैं आग के पास चला गया था, और वह मेरे सामने खड़ी होकर मुझे निहार रही थी;

और जैसे-जैसे वह मुझे निहारती रही, उसके चेहरे पर विचार और भावनाएँ धीरे-धीरे और अधिक स्पष्ट होती गईं, यहाँ तक कि अंत में एक धुंध ने उसकी स्पष्ट दृष्टि को धुंधला कर दिया।

उन्होंने कहा, "इतने पुराने दिनों को याद करके मेरी आंखों में लगभग आंसू आ जाते हैं, लेकिन अफसोस या भावुकता की बात न करें: इसके विपरीत, मैं बेहद खुश और प्रसन्न हूं।"

मुझे दिलचस्पी तो थी, लेकिन मैं पूरी तरह से दोषी था, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। आखिरकार मैं हकलाते हुए बोला, "मुझे लगता है कि मैं आपसे उस रात तक कभी नहीं मिला था, कुछ हफ्ते पहले, जब आपको चोट लगी थी...?"

वह मुस्कुराई। “तो क्या तुम भूल गए कि मैं तुम्हारी गोद में बैठी थी, तुम्हारी बाहों में उठी थी, यहाँ तक कि तुम्हारे साथ तकिया भी सोई थी? तुम्हें वह रात याद नहीं जब मैं एक शरारती बच्ची की तरह रोते हुए तुम्हारे बिस्तर के पास आई थी और तुमने मुझे अपने पास ले लिया था। तुम्हें वह सुकून और सुरक्षा याद नहीं जिससे तुमने मेरे गहरे दुख को शांत किया था? ब्रेटन वापस जाओ। मिस्टर होम को याद रखना।”

आखिरकार मैंने सब कुछ देख लिया। "और तुम छोटी पॉली हो?"

मैं पॉलिना मैरी होम डे बासोम्पियर हूँ।

समय कितना बदल सकता है! नन्ही पॉली के पीले, छोटे चेहरे, परी जैसी समरूपता और बदलते भावों में एक खास आकर्षण और सुंदरता झलकती थी; लेकिन पॉलिना मैरी खूबसूरत हो गई थी—वह सुंदरता नहीं जो गुलाब की तरह आंखों को भाती है—गोल, लालिमा लिए और परिपूर्ण; न ही अपनी गोरी चचेरी बहन जिनेवरा की तरह गोल-मटोल, गुलाबी और सुनहरे रंग की; बल्कि सत्रह वर्षों ने उसे एक परिष्कृत और कोमल आकर्षण दिया था, जो उसके रंग में नहीं था, हालांकि उसका रंग गोरा और साफ था; न ही उसकी शारीरिक बनावट में, हालांकि उसके चेहरे के भाव मधुर थे और उसके अंग सुडौल थे; बल्कि, मुझे लगता है, यह आत्मा से निकलने वाली एक मंद चमक में था। यह कोई अपारदर्शी फूलदान नहीं था, चाहे वह कितना भी महंगा क्यों न हो, बल्कि एक पवित्र दीपक था जो बुझने से बचाता था, फिर भी पूजा से छिपा नहीं था, एक जीवंत और पवित्र लौ। उसके आकर्षण का वर्णन करते हुए, मैं शब्दों को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहूंगा; लेकिन, वास्तव में, वे मुझे बहुत वास्तविक और आकर्षक लगे। हालांकि यह सब छोटे पैमाने पर था, लेकिन इस सफेद वायलेट

को जो विशिष्टता मिली, वह इसकी सुगंध ही थी, जिसने इसे सबसे चौड़े कैमेलिया - अब तक खिले सबसे परिपूर्ण डहलिया - से भी श्रेष्ठ बना दिया।

“अरे! और आपको ब्रेटन के पुराने दिन याद हैं?”

“बेहतर,” उसने कहा, “शायद तुमसे भी बेहतर। मुझे वह समय और दिन दोनों ही बहुत स्पष्ट रूप से याद हैं।”

"क्या आप कुछ बातें भूल गए हैं?"

"मुझे लगता है कि बहुत कम।"

"तब तुम भावनाओं से भरपूर एक नन्ही सी बच्ची थी: तुम्हें बहुत पहले ही उन छापों से बाहर निकल जाना चाहिए था जिनसे दस साल पहले खुशी और दुख, स्नेह और शोक ने तुम्हारे मन पर छाप छोड़ी थी।"

"क्या आपको लगता है कि मैं भूल गया हूँ कि मुझे बचपन में कौन पसंद था और किस हद तक पसंद था?"

“क्या तीक्ष्णता दूर हो जानी चाहिए—वह तीक्ष्णता, वह मार्मिकता—वह गहरी छाप धीरे-धीरे मिट जानी चाहिए?”

मुझे उन दिनों की अच्छी याद है।

वह मानो ऐसा लग रही थी जैसे उसने सब कुछ देख लिया हो। उसकी आँखें ऐसी थीं मानो उसे सब याद हो; एक ऐसी शख्सियत जिसका बचपन सपने की तरह धुंधला न हो, न जवानी सूरज की किरण की तरह ढल जाए। वह जीवन को टुकड़ों में, बेतरतीब और अव्यवस्थित तरीके से नहीं जीती, और एक मौसम को दूसरे में जाते हुए यूँ ही बीतने नहीं देती: वह यादों को सहेजती और उनमें कुछ जोड़ती; अक्सर शुरुआत से सब कुछ देखती और इस तरह उम्र के साथ-साथ सामंजस्य और निरंतरता में बढ़ती जाती। फिर भी मैं इस बात को पूरी तरह से स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि जो तस्वीरें अब मेरे सामने उमड़ रही थीं, वे सब उसे भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। उसके प्यारे लगाव, एक प्रिय सहेली के साथ उसके खेल और प्रतियोगिताएँ, उसके नन्हे दिल की धैर्यपूर्ण और सच्ची भक्ति, उसके डर, उसका कोमल संकोच, उसकी छोटी-छोटी परेशानियाँ, बिछड़ने का आखिरी दर्द... मैंने इन सब बातों को याद किया और अविश्वास से सिर हिलाया। वह अपनी बात पर अड़ी रही। "सात साल की बच्ची अभी भी सत्रह साल की लड़की में बसी है," उसने कहा।

मैंने उन्हें परखने के इरादे से कहा, "आप श्रीमती ब्रेटन को बहुत पसंद करती थीं।"

उन्होंने तुरंत मेरी गलती सुधार दी।

“मुझे वो बहुत ज्यादा पसंद नहीं थी,” उसने कहा; “मैं उसे पसंद करती थी: मैं उसका उतना ही सम्मान करती थी जितना मुझे अब करना चाहिए: मुझे लगता है कि उसमें बहुत कम बदलाव आया है।”

मैंने सहमति जताते हुए कहा, "वह ज्यादा नहीं बदली है।"

हम कुछ मिनट चुप रहे। कमरे में चारों ओर नज़र घुमाते हुए उसने कहा, "यहाँ कई ऐसी चीज़ें हैं जो पहले ब्रेटन में हुआ करती थीं! मुझे वह पिनकुशन और वह दर्पण याद है।"

जाहिर है, अपनी याददाश्त के बारे में उनका अनुमान गलत नहीं था; कम से कम अभी तक तो नहीं।

“तो फिर आपको लगता है कि आप श्रीमती ब्रेटन को जानते होंगे?” मैंने आगे पूछा।

मुझे वह पूरी तरह से याद थी; उसके चेहरे की बनावट, उसका सांवला रंग, उसके काले बाल, उसकी लंबाई, उसकी चाल, उसकी आवाज।

मैंने आगे कहा, "डॉ. ब्रेटन तो बिल्कुल ही सवाल से परे होंगे: और वास्तव में, जैसा कि मैंने उनके साथ आपका पहला साक्षात्कार देखा, मुझे पता है कि वे आपको एक अजनबी की तरह लगे।"

“उस पहली रात मैं असमंजस में थी,” उसने जवाब दिया।

"उनके और आपके पिता के बीच यह आपसी पहचान कैसे बनी?"

“उन्होंने कार्डों का आदान-प्रदान किया। ग्राहम ब्रेटन और होम डे बासोम्पियर के नामों ने कई सवाल और स्पष्टीकरणों को जन्म दिया। यह दूसरे दिन की बात थी; लेकिन उससे पहले ही मुझे कुछ-कुछ पता चलने लगा था।”

“कैसे—कुछ पता है?”

“अरे,” उसने कहा, “यह कितना अजीब है कि ज़्यादातर लोग सच्चाई को महसूस करने में इतने धीमे लगते हैं—देखने में नहीं, बल्कि महसूस करने में! जब डॉ. ब्रेटन मुझसे कुछ बार मिलने आए, मेरे पास बैठे और मुझसे बातें कीं; जब मैंने उनकी आँखों की नज़र, उनके होंठों के हाव-भाव, उनकी ठोड़ी की बनावट, उनके सिर का हाव-भाव और वो सब कुछ देखा जो हम अपने पास आने वाले लोगों में देखते हैं—तो मैं ग्रैहम ब्रेटन के बारे में सोचने से कैसे बच सकती थी? ग्रैहम उनसे दुबले-पतले थे, उनकी

लंबाई इतनी नहीं थी, उनका चेहरा ज़्यादा चिकना था, उनके बाल लंबे और हल्के थे, और वे—इतनी गहरी आवाज़ में नहीं—लड़की जैसी आवाज़ में बोलते थे; लेकिन फिर भी वे ग्रैहम ही हैं, जैसे मैं छोटी पॉली हूँ, या आप लूसी स्नो हैं।"

मैंने भी यही सोचा था, लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरे विचार उसके भी थे: कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिनमें हम अपने हमशक्ल से इतनी कम बार मिलते हैं कि जब ऐसा मौका आता है तो यह किसी चमत्कार जैसा लगता है।

"तुम और ग्राहम कभी साथ खेलते थे।"

"और क्या तुम्हें वह याद है?" उसने भी अपनी बारी में पूछा।

"निस्संदेह उसे भी यह याद रहेगा," मैंने कहा।

मैंने उनसे नहीं पूछा है: अगर मुझे पता चले कि उन्होंने ऐसा किया है तो मुझे बहुत आश्चर्य होगा। मुझे लगता है कि उनका स्वभाव अभी भी हंसमुख और लापरवाह है।

"क्या पहले भी ऐसा ही था? क्या आपको भी ऐसा ही लगा था? क्या आप उन्हें इसी तरह याद करते हैं?"

मुझे शायद ही कभी वह किसी और रूप में याद आता है। कभी वह पढ़ाई में मग्न रहता था; कभी खुशमिजाज रहता था: लेकिन चाहे वह अपनी किताबों में डूबा हो या खेलने के मूड में हो, वह मुख्य रूप से किताबों या खेल के बारे में ही सोचता था; वह उन लोगों पर ज्यादा ध्यान नहीं देता था जिनके साथ वह पढ़ता या मनोरंजन करता था।

फिर भी वह तुम्हारे प्रति पक्षपाती था।

"क्या वो मुझसे पक्षपाती था? अरे नहीं! उसके दूसरे दोस्त भी थे—उसके स्कूल के साथी; रविवार को छोड़कर मैं उसके लिए कुछ खास मायने नहीं रखती थी: हाँ, रविवार को वो बहुत दयालु होता था। मुझे याद है, मैं उसके साथ हाथ में हाथ डालकर सेंट मैरी चर्च जाती थी, और वो मेरी प्रार्थना-पुस्तक में मेरी जगहें ढूंढ लेता था; और रविवार की शामों को वो कितना शांत और सौम्य रहता था! इतना घमंडी और चंचल लड़का होने के बावजूद कितना सौम्य; पढ़ने में मेरी सारी गलतियों पर कितना धैर्य रखता था; और उस पर कितना भरोसा किया जा सकता था, क्योंकि वो कभी भी उन शामों को घर से बाहर नहीं बिताता था: मुझे हमेशा डर रहता था कि वो कोई निमंत्रण स्वीकार कर लेगा और हमें छोड़ देगा; लेकिन उसने कभी ऐसा नहीं किया, और न ही कभी ऐसा करने की इच्छा दिखाई। तो, ज़ाहिर है, अब ऐसा नहीं हो सकता। मुझे

लगता है कि अब रविवार डॉ. ब्रेटन का बाहर खाना खाने का दिन होगा...?"

"बच्चों, नीचे आओ!" श्रीमती ब्रेटन ने नीचे से आवाज़ दी। पॉलिना अभी भी वहीं रुकना चाहती थी, लेकिन मेरा मन नीचे जाने का हुआ: हम नीचे चले गए।

अध्याय XXV.

छोटी काउंटेस।

मेरी धर्ममाता स्वभाव से हंसमुख थीं और हमारे लिए मनोरंजन करने का पूरा प्रयास करती थीं, फिर भी उस शाम ला टेरेस पर कोई वास्तविक आनंद नहीं था, जब तक कि सर्दियों की रात के भयानक शोर के बीच आगमन की आहट सुनाई नहीं दी। कितनी बार, जब महिलाएं और लड़कियां आरामदायक आग के पास बैठी होती हैं, तो उनके दिल और कल्पनाएं अपने आस-पास के आराम से अलग होने के लिए विवश हो जाती हैं, रात के अंधेरे रास्तों पर भटकने के लिए मजबूर हो जाती हैं, मौसम की मार झेलने के लिए, बर्फीले तूफान से जूझने के लिए, सबसे भयंकर तूफानों में सुनसान दरवाजों और बाड़ों पर इंतजार करने के लिए, पिता, पुत्र, पति के घर आने की प्रतीक्षा में।

पिता और पुत्र अंततः महल में पहुँचे: उस रात काउंट डी बासोम्पियर डॉ. ब्रेटन के साथ आए थे। मुझे नहीं पता कि हम तीनों में से किसने घोड़ों की आहट सबसे पहले सुनी; मौसम की कठोरता और उग्रता को देखते हुए हम दौड़कर हॉल में गए ताकि दोनों घुड़सवारों का स्वागत कर सकें; लेकिन उन्होंने हमें दूरी बनाए रखने की चेतावनी दी: दोनों घोड़े सफेद थे - बर्फ के दो पहाड़ जैसे; और वास्तव में श्रीमती ब्रेटन ने उनकी हालत देखकर उन्हें तुरंत रसोई में जाने का आदेश दिया; उन्हें चेतावनी दी कि जब तक वे क्रिसमस का मुखौटा उतार नहीं देते, तब तक वे अपनी कालीन वाली सीढ़ियों पर

कदम न रखें, वरना उन्हें जान का खतरा होगा। फिर भी, हम उनके पीछे-पीछे रसोई में चले गए: यह एक बड़ी, पुरानी डच रसोई थी, सुंदर और मनमोहक। छोटी सफेद काउंटेस अपने उतने ही सफेद पिता के चारों ओर नाचने लगी, ताली बजाते हुए और चिल्लाते हुए बोली, "पापा, पापा, आप एक विशाल ध्रुवीय भालू जैसे दिख रहे हैं।"

भालू ने खुद को झटका दिया, और नन्ही परी बर्फीली बौछार से दूर भाग गई। हालाँकि, वह हँसते हुए वापस आई और आर्कटिक वेश को हटाने में मदद करने के लिए उत्सुक थी। अंत में, काउंट अपने युद्धपोत से बाहर निकला और उसे हिमस्खलन की तरह अपने साथ ले जाने की धमकी दी।

"तो आओ," उसने झुकते हुए कहा, मानो पानी को गिरने के लिए आमंत्रित कर रही हो, और जब पानी चंचलता से उसके सिर के ऊपर से गुजरा, तो वह किसी नन्हे चमोइस की तरह उछलकर उसकी पहुंच से बाहर निकल गई।

उसकी चाल में बिल्ली के बच्चे जैसी कोमलता और मखमली आकर्षण था; उसकी हंसी चांदी और क्रिस्टल की झंकार से भी अधिक स्पष्ट थी; जब उसने अपने पिता के ठंडे हाथों को थामकर सहलाया और चुंबन के लिए उनके होठों तक पहुंचने के लिए पंजों पर खड़ी हुई, तो ऐसा लगा मानो उसके चारों ओर प्रेम और आनंद का एक प्रभामंडल चमक रहा हो। गंभीर और आदरणीय स्वामी उसे ऐसे देख रहे थे जैसे पुरुष अपनी आंखों के तारे को देखते हैं।

“श्रीमती ब्रेटन,” उसने कहा, “मैं अपनी इस बेटी या बेटी के साथ क्या करूँ? न तो उसकी बुद्धि बढ़ती है और न ही कद-काठी। क्या आपको नहीं लगता कि वह दस साल पहले जैसी थी, लगभग वैसी ही बच्ची है?”

“वह मेरे इस प्यारे बेटे से ज़्यादा बच्ची नहीं हो सकती,” श्रीमती ब्रेटन ने कहा, जो अपने बेटे से कपड़ों में कुछ बदलाव को लेकर बहस कर रही थीं, जिसे उनका बेटा नहीं मान रहा था। वह डच ड्रेसर से टेक लगाकर खड़ा था, हंस रहा था और उन्हें एक हाथ की दूरी पर रखे हुए था।

“आओ, माँ,” उसने कहा, “समझौते के तौर पर, और हमें आंतरिक और बाहरी दोनों तरह की गर्माहट सुनिश्चित करने के लिए, चलो एक क्रिसमस वासेल-कप लें, और यहाँ चूल्हे पर बैठकर पुराने इंग्लैंड के लिए टोस्ट करें।”

तो, जब काउंट आग के पास खड़े थे, और पॉलिना मैरी अभी भी इधर-उधर नाच रही थीं - विशाल हॉल जैसी रसोई की स्वतंत्रता में प्रसन्न - श्रीमती ब्रेटन ने स्वयं

मार्था को वासेल के कटोरे में मसाले डालकर गर्म करने का निर्देश दिया, और ब्रेटन के एक बड़े बर्तन में पेय डालकर, उसे गरमागरम परोसा गया, एक छोटे चांदी के बर्तन के माध्यम से, जिसे मैंने ग्राहम के बपतिस्मा के प्याले के रूप में पहचाना।

"ऑल्ड लैंग साइन की जय हो!" काउंट ने चमकते हुए प्याले को ऊपर उठाते हुए कहा। फिर, श्रीमती ब्रेटन की ओर देखते हुए।

"We twa ha' paidlet i' the burn
सुबह की धूप से लेकर रात के खाने तक,
लेकिन हमारे बीच समुद्रों की चोटी दहाड़ उठी
Sin' auld lane syne.
और निश्चित रूप से तुम अपना प्याला भर लोगे,
और निश्चित रूप से मैं अपनी ही होऊंगी;
और हम एक प्याला प्यार का स्वाद चखेंगे।
पुराने समय के लिए।"

"स्कॉच! स्कॉच!" पॉलिना चिल्लाई; "पापा स्कॉच बोल रहे हैं; और वे कुछ हद तक स्कॉच हैं भी। हम होम और डी बासोम्पियर हैं, कैलेडोनियन और गैलिक।"

"और क्या तुम स्कॉटिश रील डांस कर रही हो, हे हाइलैंड की परी?" उसके पिता ने पूछा। "श्रीमती ब्रेटन, जल्द ही आपकी रसोई के बीचोंबीच एक हरा घेरा उग आएगा। मैं उसके समझदार होने की बात नहीं कह सकता: वह एक अजीब सी नन्ही इंसान है।"

"पापा, लूसी से कहो कि वह मेरे साथ नाचे; वह लूसी स्नो है।"

श्री होम (उनमें अभी भी साधारण श्री होम की उतनी ही झलक थी जितनी कि अभिमानी काउंट डी बासोम्पियर की) ने मेरी ओर हाथ बढ़ाते हुए विनम्रता से कहा, "उन्हें मैं अच्छी तरह याद था; और अगर उनकी अपनी याददाश्त इतनी कमजोर भी होती, तो भी उनकी बेटी अक्सर मेरा नाम लेती थी, और उन्होंने मेरे बारे में इतनी लंबी-लंबी कहानियां सुनी थीं कि मैं उन्हें एक पुराने परिचित जैसा लगता।"

अब पॉलिना को छोड़कर सभी ने वासेल का प्याला चख लिया था, जिसके पा डे फे या डे फैंटेसी को कोई भी बाधित करके इतना अपवित्र पेय पेश करने के बारे में नहीं सोच रहा था; लेकिन उसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था, न ही उसके नश्वर विशेषाधिकारों से वंचित किया जा सकता था।

"मुझे चखने दो," उसने ग्राहम से कहा, जब वह कप को उसकी पहुँच से दूर ड्रेसर के शेल्फ पर रख रहा था।

श्रीमती ब्रेटन और श्री होम अब बातचीत में मग्न थे। डॉ. जॉन परी के नृत्य को ध्यान से देख रहे थे; उन्होंने उसे देखा था और उन्हें वह पसंद आया था। उसकी कोमल और सुंदर चालों की तो बात ही क्या, जो उनकी सौंदर्य-प्रेमी दृष्टि को अत्यंत भा रही थी, अपनी माँ के घर में वह सहजता उन्हें मंत्रमुग्ध कर रही थी, क्योंकि इससे उन्हें सुकून मिल रहा था: वह फिर से उनके लिए एक बच्ची जैसी लग रही थी - फिर से, लगभग उनकी सहेली जैसी। मैं सोच रही थी कि वह उससे कैसे बात करेंगे; मैंने अभी तक उन्हें उससे बात करते नहीं देखा था; उनके पहले शब्द यह साबित करते हैं कि आज शाम की बचकानी मस्ती ने उन्हें "छोटी पॉली" के पुराने दिनों की याद दिला दी थी।

"क्या आपकी महोदया को एक बड़ा गिलास चाहिए?"

मुझे लगता है मैंने ऐसा कहा था। मुझे लगता है मैंने इसी बात का संकेत दिया था।

मैं किसी भी हालत में इस तरह का कदम उठाने के लिए सहमत नहीं हो सकता। मुझे खेद है, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता।

“क्यों? मैं अब बिल्कुल ठीक हूँ: इससे मेरी कॉलरबोन दोबारा नहीं टूट सकती, न ही मेरा कंधा अपनी जगह से हट सकता है। क्या यह शराब का असर है?”

नहीं; न ही ओस।

मुझे ओस नहीं चाहिए; मुझे ओस पसंद नहीं है: लेकिन यह क्या है?

"एले - कड़क एले - पुरानी अक्टूबर वाली; शायद तब बनी होगी जब मेरा जन्म हुआ था।"

"यह तो जिज्ञासा की बात होगी: क्या यह अच्छा है?"

"बेहद अच्छा।"

और उसने उसे नीचे उतारा, खुद को इस शक्तिशाली अमृत की दूसरी खुराक दी, अपनी शरारती आँखों में इससे अत्यधिक संतुष्टि व्यक्त की, और गंभीरता से प्याले को शेल्फ पर वापस रख दिया।

पॉलिना ने ऊपर देखते हुए कहा, "मुझे थोड़ा सा चाहिए; मैंने कभी 'ओल्ड अक्टूबर' नहीं पिया है: क्या यह मीठा होता है?"

"बेहद मीठा," ग्राहम ने कहा।

वह लगातार ऊपर की ओर देखती रही, ठीक उसी तरह जैसे कोई बच्चा किसी वर्जित मिठाई के लिए तरस रहा हो। आखिरकार डॉक्टर मान गए, उन्होंने उसे नीचे उतारा और उसे अपने हाथ से चखने का सुख भोगने दिया; उनकी आँखें, जो हमेशा सुखद भावनाओं को प्रकट करती थीं, चमकती और मुस्कुराती हुई इस बात को ज़ाहिर कर रही थीं कि यह एक सुखद अनुभव था; और उन्होंने प्याले की स्थिति को इस तरह समायोजित करके इस सुख को और बढ़ा दिया कि एक बार में केवल एक बूंद ही उसके गुलाबी, चुस्कियों से भरे होठों तक पहुँच सके, जिनसे वह प्याले के किनारे को छू रही थी।

"थोड़ा और—थोड़ा और," उसने चिढ़कर अपनी तर्जनी उंगली से उसका हाथ छूते हुए कहा, ताकि वह प्याला थोड़ा और उदारता से झुकाए। "इसमें मसालों और चीनी की खुशबू तो है, पर मुझे इसका स्वाद नहीं आ रहा; तुम्हारी कलाई इतनी अकड़ी हुई है, और तुम इतने कंजूस हो।"

उसने उसकी बात मान ली, लेकिन गंभीरता से फुसफुसाते हुए कहा: "मेरी माँ या लूसी को मत बताना; उन्हें यह पसंद नहीं आएगा।"

"मुझे भी नहीं," उसने पेय को परखते ही अपना लहजा और अंदाज़ बदल लिया, मानो उस पर किसी जादू तोड़ने वाले पेय का असर हुआ हो, मानो किसी जादूगर का सारा जादू उलट गया हो: "मुझे तो यह बिल्कुल भी मीठा नहीं लग रहा; यह कड़वा और तीखा है, और मेरी सांसें रोक रहा है। तुम्हारा पुराना अक्टूबर वाला पेय तो बस तभी अच्छा लगता था जब वह मना था। धन्यवाद, बस।"

और, हल्के से झुकते हुए—लापरवाही से, लेकिन अपने नृत्य की तरह ही सुंदर—वह उससे दूर हटकर अपने पिता के पास लौट गई।

मुझे लगता है उसने सच ही कहा था: सत्रह साल की लड़की में सात साल का बच्चा छिपा हुआ था।

ग्राहम थोड़ा हैरान और असमंजस में उसे देखता रहा; शाम के बाकी समय में उसकी नजरें काफी देर तक उस पर टिकी रहीं, लेकिन ऐसा लगा जैसे उसने उसे नोटिस ही नहीं किया हो।

जब हम चाय के लिए ड्राइंग रूम में गए, तो उसने अपने पिता का हाथ थाम लिया: मानो उनकी बगल में बैठना ही उसका स्वाभाविक स्थान था; उसकी आँखें और कान पूरी तरह से उन्हीं पर टिके हुए थे। हमारे छोटे से समूह में पिता और श्रीमती ब्रेटन ही

सबसे ज़्यादा बातें कर रहे थे, और पॉलिना उनकी सबसे अच्छी श्रोता थी, जो कही गई हर बात को ध्यान से सुनती थी और किसी न किसी बात या घटना को दोहराने के लिए प्रेरित करती थी।

"पापा, उस समय आप कहाँ थे? और आपने तब क्या कहा था? और श्रीमती ब्रेटन को बताइए कि उस अवसर पर क्या हुआ था।" इस तरह उन्होंने उनसे बात निकलवाई।

वह फिर कभी उल्लास में नहीं डूबी; उसके चेहरे की बचकानी चमक रात भर के लिए मिट गई थी: वह कोमल, विचारशील और विनम्र थी। उसका शुभ रात्रि कहना देखना सुखद था; ग्राहम के प्रति उसका व्यवहार गरिमापूर्ण था: उसकी हल्की सी मुस्कान और शांत प्रणाम में काउंटेस की झलक थी, और ग्राहम गंभीर होकर सम्मानपूर्वक झुकने को मजबूर हो गया। मैंने देखा कि वह नाचती हुई परी और कोमल स्त्री के भावों को एक साथ कैसे मिलाए, यह समझ ही नहीं पा रहा था।

अगले दिन, जब हम सभी सुबह के ठंडे स्नान के बाद कांपते हुए नाश्ते की मेज के चारों ओर एकत्रित हुए थे, श्रीमती ब्रेटन ने एक फरमान जारी किया कि उस दिन कोई भी व्यक्ति, जो घोर आवश्यकता से विवश न हो, उनके घर से बाहर न निकले।

सचमुच, बाहर निकलना लगभग नामुमकिन लग रहा था; बर्फ़बारी से खिड़की के निचले शीशे धुंधले हो गए थे, और बाहर देखने पर आसमान और हवा अशांत और धुंधली दिखाई दे रही थी, हवा और बर्फ़ भयंकर संघर्ष कर रही थीं। अब कोई बर्फ़बारी नहीं हो रही थी, लेकिन जो बर्फ़ पहले ही गिर चुकी थी, वह ज़मीन से उखड़ गई, तेज़ हवा के झोंकों से चारों ओर घूम गई, और सैकड़ों अजीबोगरीब आकृतियों में बदल गई।

काउंटेस ने श्रीमती ब्रेटन का समर्थन किया।

"पापा बाहर नहीं जाएंगे," उसने अपने पिता की कुर्सी के बगल में बैठते हुए कहा। "मैं उनका ख्याल रखूंगी। आप शहर नहीं जाएंगे, है ना पापा?"

"हाँ, और नहीं," जवाब था। "अगर आप और श्रीमती ब्रेटन मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार करें, पॉली—दयालु और ध्यान देने वाली हों; अगर आप मुझे प्यार से दुलारें और मेरा विशेष ध्यान रखें, तो शायद मैं नाश्ते के बाद एक घंटा रुक कर देखूँ कि यह तीखी हवा शांत होती है या नहीं। लेकिन, आप मुझे नाश्ता नहीं देतीं; मुझे कुछ नहीं देतीं: मुझे भूखा मरने देती हैं।"

"जल्दी कीजिए! श्रीमती ब्रेटन, कृपया कॉफी परोस दीजिए," पॉलिना ने विनती की, "जब तक मैं काउंट डी बासोम्पियर का अन्य कामों में ध्यान रखती हूँ: जब से वह काउंट बने हैं, उन्हें बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।"

उसने एक रोल अलग किया और तैयार किया।

“देखो पापा, ये रही आपकी पिस्तौलें, जिनमें गोलियां भरी हुई हैं,” उसने कहा। “और ये रही...”

कुछ मुरब्बा, बिल्कुल वैसा ही मुरब्बा जैसा हम पहले खाया करते थे।

ब्रेटन, और जिसके बारे में आपने कहा था कि यह उतना ही अच्छा है जितना कि इसे संरक्षित किया गया होता।

स्कॉटलैंड —

“और वो चीज़ जो आपकी छोटी सी लेडीशिप मेरे बेटे के लिए मिन्नतें करती थीं—क्या आपको याद है?” श्रीमती ब्रेटन ने बीच में टोकते हुए कहा। “क्या आप भूल गई हैं कि कैसे आप मेरे पास आकर मेरी आस्तीन को छूते हुए फुसफुसाती थीं, ‘कृपया, महोदया, ग्राहम के लिए कुछ अच्छा सा दे दीजिए—थोड़ा सा मुरब्बा, या शहद, या जैम?’”

“नहीं, माँ,” डॉ. जॉन हँसते हुए, लेकिन चेहरा लाल करते हुए बीच में बोले; “ऐसा बिल्कुल नहीं था: मुझे इन चीजों की परवाह नहीं थी।”

"क्या उसने ऐसा किया था या नहीं, पॉलिना?"

"उन्हें वे पसंद थे," पॉलिना ने जोर देकर कहा।

“इस बात पर शर्मिंदा मत हो, जॉन,” श्री होम ने उत्साह बढ़ाते हुए कहा। “मुझे तो ये अभी भी पसंद हैं, और हमेशा से पसंद रहे हैं। और पॉली ने अपने दोस्त की भौतिक सुख-सुविधाओं का ख्याल रखकर अपनी समझदारी दिखाई: मैंने ही उसे ये अच्छे शिष्टाचार सिखाए थे—और मैं उसे ये भूलने भी नहीं देता। पॉली, मुझे अपनी जीभ का एक छोटा सा टुकड़ा दो।”

"लो पापा, लेकिन याद रखना कि आपकी इतनी लगन से सेवा तभी की जाती है जब आप आसानी से मान जाएं और दिन भर के लिए ला टेरेस से संतुष्ट हो जाएं।"

“श्रीमती ब्रेटन,” काउंट ने कहा, “मैं अपनी बेटी को स्कूल भेजना चाहता हूँ। क्या आपको किसी अच्छे स्कूल के बारे में पता है?”

"यह लूसी का घर है - मैडम बेक का।"

“क्या मिस स्नो स्कूल में हैं?”

“मैं एक शिक्षक हूँ,” मैंने कहा, और यह कहने का अवसर पाकर मुझे काफी खुशी हुई। कुछ समय से मैं खुद को एक अजीब स्थिति में फंसा हुआ महसूस कर रहा था। श्रीमती ब्रेटन और उनके बेटे को मेरी स्थिति का पता था; लेकिन काउंट और उनकी बेटी को नहीं। हो सकता है कि समाज में मेरी हैसियत का पता चलने पर वे मेरे प्रति अपने अब तक के सौहार्दपूर्ण व्यवहार में कुछ बदलाव लाएँ। मैंने तब सहजता से बोल दिया: लेकिन मेरे शब्दों के साथ ही कई ऐसे विचार उमड़ आए जिनकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी और न ही उन्हें जगाया था, जिससे अनजाने में ही मैंने आह भर दी। श्री होम ने लगभग दो मिनट तक अपनी नाश्ते की थाली से नज़रें नहीं हटाईं, न ही कुछ बोले; शायद उन्होंने मेरे शब्द सुने ही नहीं—शायद उन्होंने सोचा होगा कि इस तरह की बात स्वीकार करने पर शिष्टाचार के कारण कोई टिप्पणी नहीं करनी चाहिए: स्कॉटिश लोग अपनी स्वाभिमान के लिए प्रसिद्ध हैं; और श्री होम दिखने में भले ही साधारण थे, उनकी आदतें और रुचियाँ भी सरल थीं, लेकिन मैंने हमेशा यह संकेत दिया है कि उनमें भी राष्ट्रीय गुण मौजूद थे। क्या उनका स्वाभिमान दिखावटी था? क्या वह वास्तविक गरिमा थी? मैं इस प्रश्न को व्यापक अर्थों में अनुत्तरित छोड़ देता हूँ। जहां तक मेरा व्यक्तिगत संबंध है, मैं केवल इतना ही कह सकता हूं: तब भी और हमेशा भी, उन्होंने स्वयं को एक सच्चे हृदय वाले सज्जन व्यक्ति के रूप में सिद्ध किया।

स्वभाव से वे एक भावुक और चिंतनशील व्यक्ति थे; उनकी भावनाओं और चिंतन पर उदासी की एक हल्की सी परत छाई रहती थी; हल्की परत से कहीं अधिक: दुख और शोक में यह एक बादल की तरह छा जाती थी। वे लूसी स्नो के बारे में ज्यादा नहीं जानते थे; जो कुछ जानते थे, उसे भी ठीक से नहीं समझ पाते थे: वास्तव में, मेरे चरित्र के बारे में उनकी गलत धारणाएँ अक्सर मुझे हँसा देती थीं; लेकिन उन्होंने जीवन में मेरे मार्ग को पहाड़ी के छायादार हिस्से की ओर जाते देखा: उन्होंने ईमानदारी से सीधे रास्ते पर चलने के मेरे प्रयासों के लिए मेरी सराहना की; यदि वे कर सकते तो मेरी मदद अवश्य करते: मदद करने का अवसर न होने पर भी, वे मेरा भला चाहते थे। जब वे मेरी ओर देखते, तो उनकी आँखें दयालु होतीं; जब वे बोलते, तो उनकी आवाज़ स्नेहपूर्ण होती।

उन्होंने कहा, “आपका काम बहुत कठिन है। मैं कामना करता हूं कि आप इसमें

सफलता पाने के लिए स्वस्थ और शक्तिशाली रहें।”

उनकी प्यारी सी छोटी बेटी ने इस जानकारी को इतनी शांति से नहीं लिया: उसने आश्चर्य और लगभग निराशा से भरी आँखों से मेरी ओर देखा।

“क्या आप शिक्षिका हैं?” वह चिल्लाई। फिर, इस अप्रिय विचार पर कुछ देर रुककर बोली, “खैर, मुझे कभी पता ही नहीं चला कि आप क्या हैं, और न ही मैंने कभी पूछने के बारे में सोचा: मेरे लिए, आप हमेशा लूसी स्नो ही थीं।”

“और अब मैं क्या हूँ?” मैं यह सवाल पूछे बिना नहीं रह सका।

“बेशक, आप खुद। लेकिन क्या आप सचमुच यहाँ विलेट में पढ़ाते हैं?”

"मैं वास्तव में करता हूँ।"

"और क्या आप इसे पसंद करते हैं?"

"हमेशा नहीं।"

और आप इसे जारी क्यों रखते हैं?

उसके पिता ने उसकी ओर देखा और मुझे डर था कि वे उसे रोकने वाले हैं; लेकिन उन्होंने केवल इतना कहा, “आगे बढ़ो, पॉली, उस प्रश्नोत्तर को जारी रखो – साबित करो कि तुम कितनी होशियार हो। अगर मिस स्नो शर्मा जातीं और घबरा जातीं, तो मुझे तुम्हें चुप रहने के लिए कहना पड़ता; और हम दोनों को शर्मिंदगी के साथ भोजन छोड़ना पड़ता; लेकिन वह तो बस मुस्कुरा रही हैं, इसलिए उन पर और दबाव डालो, उनसे और भी सवाल पूछो। अच्छा, मिस स्नो, आप इसे क्यों जारी रख रही हैं?”

"मुझे मुख्य रूप से डर इस बात का है कि कहीं मुझे मिलने वाले पैसे का ही मामला न हो।"

"तो क्या यह विशुद्ध परोपकार की भावना से प्रेरित नहीं था? पॉली और मैं इस परिकल्पना को आपकी विलक्षणता का सबसे नरम कारण मानकर इस पर टिके हुए थे।"

“नहीं—नहीं, महोदय। बल्कि इसलिए कि इस तरह मुझे रहने के लिए छत मिल जाती है; और यह सोचकर मन को जो सुकून मिलता है कि जब तक मैं खुद के लिए काम कर सकता हूँ, तब तक मुझे किसी पर बोझ बनने के दर्द से मुक्ति मिल जाती है।”

"पापा, आप जो चाहें कहें, मुझे लूसी पर दया आती है।"

“उस दया को अपना लो, मिस डी बासोम्पियर; उसे दोनों हाथों में थाम लो, जैसे

तुम बिना अनुमति के सीमा से बाहर बैठे किसी नन्हे-से नन्हे हंस के बच्चे को थामती हो; उसे वापस उसी हृदय के गर्म घोंसले में रख दो जहाँ से वह निकली है, और इस फुसफुसाहट को सुनो। अगर मेरी पॉली कभी इस संसार की अनिश्चित प्रकृति को अनुभव से जान ले, तो मैं चाहूँगी कि वह लूसी की तरह व्यवहार करे: अपने लिए काम करे, ताकि वह किसी पर बोझ न बने।”

“जी पापा,” उसने सोच-विचार करते हुए और विनम्रता से कहा। “लेकिन बेचारी लूसी! मुझे लगा था कि वह एक अमीर महिला है और उसके दोस्त भी अमीर हैं।”

“तुमने मुझे एक नासमझ बच्चे की तरह समझा। मैंने ऐसा कभी नहीं सोचा। जब मुझे लूसी के व्यवहार और हाव-भाव पर गौर करने का समय मिला, जो कि अक्सर नहीं होता था, तो मैंने देखा कि वह ऐसी थी जिसे खुद की रक्षा करनी थी, किसी की रक्षा नहीं; जो खुद काम करती थी, किसी की सेवा नहीं लेती थी: और मुझे लगता है कि इस स्थिति ने उसे एक ऐसा अनुभव दिया है जिसके पूरे लाभ को अगर वह लंबे समय तक जी सके, तो वह ईश्वर का धन्यवाद करेगी। लेकिन यह स्कूल,” उन्होंने गंभीर लहजे से खुशमिजाज लहजे में कहा: “क्या मैडम बेक मेरी पॉली को दाखिला देंगी, आपको क्या लगता है, मिस लूसी?”

मैंने कहा, मैडम को बस एक बार आज़मा कर देखना था; जल्द ही पता चल जाएगा: उन्हें अंग्रेज़ विद्यार्थी बहुत पसंद थे। मैंने आगे कहा, “अगर आप आज दोपहर ही मिस डी बासोम्पियर को अपनी गाड़ी में ले जाएँगे, तो मुझे पूरा भरोसा है कि दरबान रोज़ीन आपकी घंटी का जवाब देने में ज़रा भी देर नहीं करेंगी; और मुझे पूरा यकीन है कि मैडम आपका स्वागत करने के लिए अपने सबसे अच्छे दस्ताने पहनकर सैलून में आएँगी।”

“तो फिर,” श्री होम ने उत्तर दिया, “मुझे देरी की कोई आवश्यकता नहीं दिखती। श्रीमती हर्स्ट अपनी ‘युवती’ का सामान उसके पीछे भेज सकती हैं; पॉली रात होने से पहले अपनी हॉर्न-बुक पढ़ सकती है; और आप, मिस लूसी, मुझे विश्वास है कि आप कभी-कभार उस पर नज़र रखेंगी और मुझे समय-समय पर बताएंगी कि वह कैसी है। मुझे आशा है कि आपको यह व्यवस्था पसंद आएगी, काउंटेस डी बासोम्पियर?”

काउंटेस हिचकिचाई और सोचने लगी। उसने कहा, "मुझे लगा था, मुझे लगा था कि मेरी शिक्षा पूरी हो चुकी है..."

“यह तो बस यही साबित करता है कि हम अपने विचारों में कितनी बड़ी गलती कर

सकते हैं। मेरी राय इससे बिल्कुल अलग है, और आज सुबह जीवन के प्रति आपके गहन ज्ञान को सुनने वाले अधिकांश लोगों की भी यही राय होगी। आह, मेरी प्यारी बच्ची, तुम्हें अभी बहुत कुछ सीखना है; और पापा को तुम्हें जितना सिखाया है, उससे कहीं ज़्यादा सिखाना चाहिए था! चलो, अब मैडम बेक से मिलने के अलावा कोई चारा नहीं है; और मौसम भी सुधर रहा है, और मैंने अपना नाश्ता खत्म कर लिया है।”

लेकिन, पापा!

"कुंआ?"

मुझे एक बाधा दिखाई दे रही है।

मुझे बिल्कुल भी ऐसा नहीं लगता।

“यह बहुत विशाल है, पापा; इसे कभी पार नहीं किया जा सकता; यह आपके ओवरकोट में आपके और ऊपर जमी बर्फ के ढेर जितना बड़ा है।”

और, उस बर्फ के ढेर की तरह, क्या वह भी पिघलने में सक्षम है?

“नहीं! यह बहुत ही ठोस मांस का बना है: यह तो बस तुम्हारा अपना ही रूप है। मिस लूसी, मैडम बेक को चेतावनी दे दो कि मुझे ले जाने के किसी भी प्रस्ताव पर ध्यान न दें, क्योंकि अंत में उन्हें पापा को भी ले जाना पड़ेगा: क्योंकि वह बहुत चिढ़ाते हैं, मैं उनके बारे में कहानियां सुना दूंगी। श्रीमती ब्रेटन और आप सभी ध्यान से सुनें: लगभग पांच साल पहले, जब मैं बारह साल की थी, तो उन्होंने यह ठान लिया कि वह मुझे बिगाड़ रहे हैं; कि मैं दुनिया के लिए अनुपयुक्त होती जा रही हूं, और न जाने क्या-क्या, और उन्हें कुछ भी संतुष्ट नहीं कर सकता था, सिवाय इसके कि मुझे स्कूल जाना ही होगा। मैं रोई, और इसी तरह; लेकिन एम. डी बासोम्पियर कठोर हृदय, बिल्कुल दृढ़ और अटल साबित हुए, और मैं स्कूल गई। परिणाम क्या हुआ? बड़े ही प्रशंसनीय तरीके से, पापा भी स्कूल आने लगे: हर दूसरे दिन वह मुझसे मिलने आते थे। मैडम एग्रेदू बड़बड़ाती रहीं, लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ; और इस तरह, अंत में, पापा और मैं दोनों, एक तरह से, निष्कासित कर दिया गया। लूसी मैडम बेक को बस अपनी यह छोटी सी आदत बता सकती है: उन्हें यह बताना ही उचित होगा कि उन्हें क्या उम्मीद करनी चाहिए।

श्रीमती ब्रेटन ने श्री होम से पूछा कि इस कथन के जवाब में उन्हें क्या कहना है। चूंकि उन्होंने कोई बचाव नहीं किया, इसलिए उनके खिलाफ फैसला सुनाया गया और पॉलिना विजयी रहीं।

लेकिन भोली और मासूमियत के अलावा भी उसके कई और मिजाज थे। नाश्ते के बाद, जब दोनों बड़े-बुजुर्ग चले गए - शायद श्रीमती ब्रेटन के कुछ व्यावसायिक मामलों पर बात करने के लिए - और काउंटेस, डॉ. ब्रेटन और मैं कुछ देर के लिए अकेले रह गए - तो उसका बचपन गायब हो गया; हम, जो उम्र में उसके लगभग बराबर थे, के साथ वह एकदम एक सभ्य महिला बन गई: मानो उसका चेहरा ही बदल गया हो; चेहरे की वह चंचलता और मासूमियत, जो अपने पिता से बात करते समय उसके गालों में गड्ढों और गोल-मटोल गद्दी का भाव पैदा करती थी, अब एक गंभीर और शांत चेहरे में बदल गई, जिसमें चेहरे की रेखाएं अधिक स्पष्ट और कम गतिशील थीं।

निस्संदेह ग्राहम ने भी मेरी तरह इस बदलाव को महसूस किया। वह कुछ मिनटों तक खिड़की के पास खड़े होकर बर्फ को देखते रहे; फिर वे चूल्हे के पास गए और बातचीत शुरू की, लेकिन उतनी सहजता से नहीं जितनी वे आमतौर पर करते थे: उनके होठों पर उपयुक्त विषय नहीं आ रहे थे; वे उन्हें बड़ी सावधानी से, हिचकिचाते हुए और परिणामस्वरूप बेढंगे ढंग से चुन रहे थे: उन्होंने विलेट के बारे में अस्पष्ट रूप से बात की - उसके निवासियों, उसके उल्लेखनीय दर्शनीय स्थलों और इमारतों के बारे में। मिस डी बासोम्पियर ने उन्हें पूरी तरह से स्त्रीत्वपूर्ण ढंग से जवाब दिया; बुद्धिमत्ता के साथ, एक ऐसे अंदाज़ में जो पूरी तरह से व्यक्तिगत नहीं था: एक लहजा, एक नज़र, एक हावभाव, कहीं-कहीं संयमित और गरिमापूर्ण होने के बजाय अधिक जीवंत और तेज़, अभी भी छोटी पॉली की याद दिलाते थे; लेकिन फिर भी उनमें इतनी सूक्ष्म और एकसमान शालीनता, इतनी शांत और विनम्र गरिमा थी, जो इन विशिष्टताओं को निखार रही थी और बनाए रख रही थी, कि ग्राहम से कम संवेदनशील व्यक्ति उन्हें खुलकर बातचीत करने के अवसर के रूप में पकड़ने का साहस नहीं करता।

डॉ. ब्रेटन भले ही शांत और गंभीर बने रहे, फिर भी वे बहुत ध्यान से देखते थे। उनकी छोटी-मोटी हरकतें और स्वाभाविक रुकावटें भी उनकी नजरों से नहीं छूटीं। उन्होंने उनकी एक भी खास हरकत, बोलने में एक भी झिझक या उच्चारण में एक भी तुतलाहट नहीं छोड़ी। कभी-कभी तेज़ बोलते समय वह तुतलाती थीं; लेकिन जब भी ऐसा होता, तो वे थोड़ा शर्मा जातीं और बड़ी सावधानी से, उतने ही मज़ेदार तरीके से, जैसे कि वह छोटी सी गलती, उस शब्द को और स्पष्ट रूप से दोहरातीं।

जब भी वह ऐसा करतीं, डॉ. ब्रेटन मुस्कुरा उठते। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे उनकी बातचीत आगे बढ़ी, दोनों पक्षों का संयम कम होता गया: अगर बातचीत थोड़ी और

लंबी चलती, तो मुझे लगता है कि वह जल्द ही सौहार्दपूर्ण हो जाती: पॉलिना के होंठों और गालों पर फिर से वही प्यारी, डिंपल वाली मुस्कान लौट आई; वह एक बार तुतलाई और खुद को सुधारना भूल गई। और डॉ. जॉन, मुझे नहीं पता कि उनमें क्या बदलाव आया, लेकिन उनमें बदलाव जरूर आया। वे और खुशमिजाज नहीं हुए—उनके चेहरे पर न तो कोई हंसी-मजाक था, न ही कोई चंचलता—लेकिन उनकी स्थिति में उन्हें और अधिक आनंद मिलता हुआ प्रतीत हुआ, और उन्होंने अपने बढ़े हुए आराम को अधिक सहज भाषा में, अधिक मधुर स्वर में व्यक्त किया। दस साल पहले इस जोड़ी के पास हमेशा एक-दूसरे से कहने के लिए बहुत कुछ होता था; बीते दशक ने न तो उनके अनुभव को कम किया और न ही उनकी बुद्धि को क्षीण किया: इसके अलावा, कुछ ऐसे स्वभाव होते हैं जिन पर आपसी प्रभाव ऐसा होता है कि वे जितना अधिक बोलते हैं, उतना ही अधिक उनके पास कहने को होता है। क्योंकि इनके लिए संगति से जुड़ाव पैदा होता है, और जुड़ाव से एकीकरण।

लेकिन ग्राहम को जाना ही था: उनका पेशा ऐसा था जिसकी जिम्मेदारियों को न तो नजरअंदाज किया जा सकता था और न ही टाला जा सकता था। उन्होंने कमरा छोड़ा; लेकिन घर से निकलने से पहले ही वह वापस आ गए। मुझे यकीन है कि वह वापस आए थे - कागज या कार्ड के लिए नहीं, जो उनकी डेस्क पर पड़ा था और जिसका उन्होंने बहाना बनाया था - बल्कि एक और नजर डालकर यह सुनिश्चित करने के लिए कि पॉलिना का रूप वास्तव में वैसा ही था जैसा उनकी यादों में बसा था: कि कहीं वह उसे किसी अधूरी, बनावटी रोशनी में तो नहीं देख रहे थे और कोई भोली सी गलती तो नहीं कर रहे थे। नहीं! उन्हें लगा कि उनका नजरिया सही था - बल्कि, इस वापसी से उन्हें नुकसान से ज्यादा फायदा ही हुआ: वह अपने साथ एक विदाई भरी नजर ले गए - शर्मीली, लेकिन बहुत कोमल - उतनी ही सुंदर, उतनी ही मासूम, जितनी कोई छोटा हिरण फर्न के आवरण से बाहर निकलता है, या कोई मेमना अपने घास के मैदान से।

अकेले रह जाने पर, पॉलिना और मैं कुछ देर चुप रहे: हम दोनों ने कुछ काम निकाला और चुपचाप लगन से काम में जुट गए। पुराने ज़माने की सफ़ेद लकड़ी की वर्कबॉक्स की जगह अब कीमती मोज़ेक से जड़ी और सोने के औज़ारों से सुसज्जित एक वर्कबॉक्स थी; छोटी-छोटी उंगलियाँ, जो पहले सुई को मुश्किल से चला पाती थीं, अब फुर्तीली और कुशल हो गई थीं: लेकिन माथे पर वही व्यस्तता, वही नज़ाकत भरी

अदाएँ, वही फुर्तीले मोड़ और हरकतें - कभी किसी बिखरे हुए बाल को समेटना, तो कभी रेशमी स्कर्ट से धूल का कोई कण - कोई चिपका हुआ धागा - झाड़ना।

उस सुबह मेरा मन चुप रहने का था: सर्दी के दिन की कठोर गर्मी ने मुझ पर एक विस्मयकारी, शांत करने वाला प्रभाव डाला था। जनवरी का वह जुनून, जो इतना सफेद और इतना निर्जीव था, अभी शांत नहीं हुआ था: तूफान अपनी कर्कश आवाज से गरज चुका था, लेकिन थमने के कोई आसार नहीं थे। अगर जिनेवरा फैंसहावे उस ड्राइंग रूम में मेरी साथी होतीं, तो वह मुझे चुपचाप सोचने और सुनने नहीं देतीं। अभी-अभी हमसे बिछड़ी हुई शख्सियत ही उनका विषय होती; और वह एक ही विषय पर कितनी बातें करतीं! वह कैसे सवालों और अटकलों से मेरा पीछा करतीं और मुझे परेशान करतीं — उन टिप्पणियों और गुप्त बातों से मुझे चिंतित और दबा देतीं जिन्हें मैं नहीं सुनना चाहता था और जिनसे बचना चाहता था।

पॉलिना मैरी ने अपनी गहरी, भरी हुई आँखों से एक-दो बार मेरी ओर शांत लेकिन मर्मस्पर्शी दृष्टि डाली; उसके होंठ आधे खुले हुए थे, मानो कुछ कहने की प्रेरणा से: लेकिन उसने मेरी चुप्पी की इच्छा को देखा और बड़ी ही कोमलता से उसका सम्मान किया।

"यह ज़्यादा देर तक नहीं टिकेगा," मैंने मन ही मन सोचा; क्योंकि मुझे महिलाओं या लड़कियों में आत्म-संयम या आत्म-त्याग की कोई शक्ति देखने की आदत नहीं थी। जहाँ तक मैं उन्हें जानता था, उनके आमतौर पर तुच्छ रहस्यों, उनकी अक्सर बहुत ही खोखली और तुच्छ भावनाओं के बारे में गपशप करने का मौका एक ऐसा अवसर था जिसे आसानी से छोड़ा नहीं जा सकता था।

छोटी काउंटेस ने एक अपवाद का वादा किया: उसने तब तक सिलाई की जब तक वह सिलाई करते-करते थक नहीं गई, और फिर उसने एक किताब उठा ली।

संयोगवश, उसने वह किताब डॉ. ब्रेटन के बुकशेल्फ़ वाले हिस्से में ही ढूँढी; और वह ब्रेटन की ही एक पुरानी किताब निकली—प्राकृतिक इतिहास पर कोई सचित्र कृति। मैंने अक्सर उसे ग्राहम के पास खड़े होकर, उस किताब को उनकी गोद में रखकर, उन्हें पढ़ते हुए देखा था; और पाठ समाप्त होने पर, वह इनाम के तौर पर उनसे चित्रों के बारे में सब कुछ बताने की विनती करती थी। मैंने उसे गौर से देखा: क्या अब उसकी उस स्मृति की असली परीक्षा होने वाली थी जिसका वह इतना बखान करती थी? क्या अब उसकी यादें सटीक होंगी?

निष्ठावान? इस पर कोई संदेह नहीं था। जैसे ही उसने पन्ने पलटे, उसके चेहरे पर भावों की एक के बाद एक चमक उभरती गई, जिनमें से सबसे सरल भाव अतीत को एक पूर्ण अभिवादन था। फिर उसने शीर्षक पृष्ठ खोला और स्कूली बच्चे की लिखावट में लिखे नाम को देखा। उसने उसे देर तक देखा; और वह केवल देखने से संतुष्ट नहीं हुई: उसने अपनी उंगलियों के सिरों को धीरे से अक्षरों पर फेरा, और इस क्रिया के साथ एक अनजाने में लेकिन कोमल मुस्कान बिखेरी, जिसने स्पर्श को एक दुलार में बदल दिया। पॉलिना को अतीत से प्रेम था; लेकिन इस छोटे से दृश्य की विशेषता यह थी कि उसने कुछ नहीं कहा: वह शब्दों की बाढ़ में अपनी भावनाओं को उंडेलने के बिना ही उन्हें महसूस कर सकती थी।

वह लगभग एक घंटे तक किताबों की अलमारी के पास बैठी रही; एक के बाद एक किताबें निकालती और हर किताब को नए सिरे से पढ़ती रही। इतना करने के बाद, वह एक छोटी सी कुर्सी पर बैठ गई, अपना गाल हाथ पर टिकाया और सोचने लगी, और अब भी चुप थी।

नीचे से सामने का दरवाजा खुलने की आवाज, ठंडी हवा का झोंका और हॉल में श्रीमती ब्रेटन से बात करते हुए उनके पिता की आवाज ने आखिरकार उन्हें चौंका दिया। वह झट से उठीं: एक ही पल में वह नीचे पहुँच गईं।

“पापा! पापा! आप बाहर नहीं जा रहे हैं?”

"मेरे प्यारे, मुझे शहर जाना होगा।"

"लेकिन बहुत ज्यादा ठंड है, पापा।"

और फिर मैंने एम. डी बासोम्पियर को उसे यह दिखाते हुए सुना कि उसने मौसम से बचाव के लिए अच्छी तरह से तैयारी कर रखी है; और कैसे उसके पास गाड़ी होगी और वह पूरी तरह से सुरक्षित आश्रय में रहेगा; और संक्षेप में, यह साबित करते हुए कि उसे उसके आराम के बारे में चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

लेकिन आप वादा कीजिए कि आज शाम अंधेरा होने से पहले आप यहाँ वापस आ जाएँगे; — आप और डॉ. ब्रेटन, दोनों गाड़ी में? गाड़ी में सफर करना ठीक नहीं है।

"ठीक है, अगर मुझे डॉक्टर दिख जाए, तो मैं उनसे कहूंगी कि एक महिला ने उन्हें आदेश दिया है कि वे अपने कीमती स्वास्थ्य का ख्याल रखें और मेरी निगरानी में जल्दी घर लौट आएं।"

“हां, आपको एक महिला का नाम लेना होगा; और वह सोचेगा कि यह उसकी माँ

है, और आज्ञाकारी हो जाएगा। और, पापा, जल्दी आना, क्योंकि मैं देख और सुन रही हूँ।"

दरवाजा बंद हो गया, और गाड़ी बर्फ में धीरे-धीरे आगे बढ़ी; और काउंटेस उदास और चिंतित होकर वापस लौटी।

शाम ढलने पर उसने सुना और देखा; लेकिन एकदम शांत भाव से: वह ड्राइंग रूम में बिल्कुल खामोश कदमों से चल रही थी। वह बीच-बीच में अपनी कोमल चाल रोकती; कान लगाकर रात की आवाज़ों को सुनती; बल्कि यूँ कहूँ, रात के सन्नाटे को; क्योंकि अब आखिरकार हवा थम गई थी। हिमस्खलन से मुक्त आकाश नंगा और पीला पड़ा था: सड़क की सूखी डालियों के बीच से हम उसे अच्छी तरह देख सकते थे, और नए साल के चाँद की ध्रुवीय चमक को भी देख सकते थे — एक गोला जो बर्फ की दुनिया जैसा सफेद था। अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि हमने गाड़ी की वापसी भी देख ली।

आज शाम पॉलिना के मन में स्वागत का कोई भाव नहीं था। कमरे में प्रवेश करते ही उसने बड़े ही गंभीर भाव से अपने पिता को अपने वश में कर लिया; और तुरंत ही उन्हें अपना बना लिया, अपनी पसंद की कुर्सी पर बिठाया, और इतनी जल्दी घर आने और अच्छा व्यवहार करने के लिए उनकी प्रशंसा करते हुए मीठे शब्दों की बौछार कर दी। ऐसा लग रहा था मानो पॉलिना ने अपने नन्हे हाथों से ही उन्हें कुर्सी पर बिठाया हो, उन्हें आराम से बैठाया हो; क्योंकि वह बलवान व्यक्ति प्रेम से परिपूर्ण इस प्रभुत्व के आगे पूरी तरह से समर्पित होने में आनंदित प्रतीत हो रहा था।

काउंट के आने के कुछ मिनट बाद ही ग्राहम प्रकट हुए। उनके कदमों की आहट सुनकर पॉलिना ने आधा मुड़कर देखा: दोनों ने बात की, लेकिन बस एक-दो शब्द; उनकी उंगलियां एक पल के लिए मिलीं, लेकिन स्पष्ट रूप से बहुत हल्का सा स्पर्श था। पॉलिना अपने पिता के पास ही बैठी रही; ग्राहम कमरे के दूसरी ओर एक कुर्सी पर बैठ गए।

यह अच्छी बात थी कि श्रीमती ब्रेटन और श्री होम के पास एक-दूसरे से कहने के लिए बहुत कुछ था - पुरानी यादों का लगभग अटूट भंडार; अन्यथा, मुझे लगता है, उस शाम हमारी सभा बिल्कुल शांत होती।

चाय के बाद, पॉलिना की तेज़ सुई और सुंदर सुनहरी अंगुली दीपक की रोशनी में तेज़ी से चल रही थी, लेकिन उसकी ज़बान शांत थी और उसकी आँखें, जो इतनी

चिकनी और घनी थीं, बार-बार पलकें उठाने में हिचकिचा रही थीं। ग्राहम भी अपने दिन भर के काम से थका हुआ लग रहा होगा: वह बड़ों और बड़ों की बात ध्यान से सुन रहा था, खुद बहुत कम बोल रहा था और पॉलिना की अंगुली की सुनहरी चमक पर टकटकी लगाए देख रहा था; मानो वह उड़ता हुआ कोई चमकीला पतंगा हो, या फुर्ती से दौड़ते किसी छोटे पीले साँप का सुनहरा सिर हो।

अध्याय XXVI.

अंतिम संस्कार।

उस दिन से मेरे जीवन में विविधता की कमी नहीं रही; मैं मैडम बेक की पूर्ण सहमति से खूब बाहर घूमने लगा, जो मेरे जान-पहचान वालों के स्तर को पूरी तरह से पसंद करती थीं। उस सम्मानित निदेशिका ने शुरू से ही मेरे साथ हमेशा सम्मानपूर्वक व्यवहार किया; और जब उन्हें पता चला कि मुझे एक महल और एक बड़े होटल से अक्सर निमंत्रण मिलते हैं, तो उनका सम्मान प्रतिष्ठा में बदल गया।

ऐसा नहीं था कि वह इस बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बोलती थीं: मैडम, सांसारिक मामलों में, किसी भी तरह से कमजोर नहीं थीं; अपने स्वार्थ की पूर्ति में भी उनका संयम और विवेक था, और लाभ प्राप्त करने में भी वे शांत और विचारशील थीं; इसलिए, उन्होंने खुद को मेरे लिए अवसरवादी और चापलूस कहलाने से बचाते हुए, चतुराई से यह स्पष्ट किया कि उन्हें खुशी है कि उनके संस्थान से जुड़े लोग ऐसे लोगों के साथ समय बिताएं जो उन्हें प्रोत्साहित और उन्नत करें, न कि उन लोगों के साथ जो उन्हें बिगाड़ और निराश कर सकते हैं। उन्होंने कभी मेरी या मेरे दोस्तों की प्रशंसा नहीं की; केवल एक बार जब वह बगीचे में धूप में बैठी थीं, उनकी बगल में कॉफी का कप और हाथ में अखबार था, और वह बहुत सहज लग रही थीं, और मैं उनके पास आया और शाम के

लिए छुट्टी मांगी, तो उन्होंने बड़े ही विनम्र ढंग से कहा: —

जी हां, मेरे प्रिय मित्र: मैं तुम्हें पूरे दिल से और खुशी-खुशी इसकी अनुमति देता हूं। मेरे घर में तुम्हारा काम हमेशा सराहनीय, उत्साहपूर्ण और विवेकपूर्ण रहा है: तुम्हें आनंद लेने का पूरा अधिकार है। जितना चाहो बाहर जाओ। जहां तक तुम्हारे परिचितों के चुनाव की बात है, मैं उससे प्रसन्न हूं; यह बुद्धिमानीपूर्ण, गरिमापूर्ण और प्रशंसनीय है।

उसने अपने होंठ बंद कर लिए और गजट पढ़ना फिर से शुरू कर दिया।

पाठक इस छोटी सी घटना को ज्यादा गंभीरता से नहीं लेंगे कि लगभग इसी समय मेरे दराज से पांच पत्रों का तिहरा लिपटा हुआ पैकेट कुछ समय के लिए गायब हो गया। इसे देखकर स्वाभाविक रूप से मेरी पहली प्रतिक्रिया घोर निराशा थी; लेकिन पल भर में मैंने हिम्मत जुटा ली।

"धैर्य रखो!" मैंने मन ही मन फुसफुसाया। "मुझे कुछ नहीं कहना है, बस शांति से प्रतीक्षा करनी है; वे फिर लौट आएंगे।"

और वे वापस आ गए: वे मैडम के कमरे में केवल थोड़े समय के लिए ही गए थे; अपनी परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, वे विधिवत और सही सलामत वापस आ गए: मैंने उन्हें अगले दिन बिल्कुल ठीक पाया।

मुझे आश्चर्य होता है कि मेरे पत्रों के बारे में उनका क्या विचार रहा होगा? डॉ. जॉन ब्रेटन की पत्र लेखन क्षमता के बारे में उन्होंने क्या राय बनाई होगी? सहज और जीवंत शैली में लिखे गए उनके अक्सर सारगर्भित विचार, आम तौर पर सटीक और कभी-कभी मौलिक मत, उन्हें किस दृष्टि से प्रतीत हुए होंगे? वह सौम्य, थोड़ा हास्यपूर्ण अंदाज़, जो मुझे इतना आनंद देता था, उन्हें कैसा लगा होगा? इधर-उधर बिखरे हुए कुछ दयालु शब्दों के बारे में उन्होंने क्या सोचा होगा—हीरों की तरह घनी संख्या में नहीं, बल्कि उन रत्नों की तरह बिखरे हुए, जिनके बारे में कहानियों में नहीं लिखा गया है? ओह, मैडम बेक! ये सब बातें आपको कैसी लगीं?

मुझे लगता है कि मैडम बेक की नज़रों में वे पाँच पत्र कुछ खास थे। एक दिन जब उन्होंने मुझसे वे पत्र लिए थे (इतनी सौम्य महिला के बारे में बात करते समय सौम्य शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए), मैंने उन्हें मुझे एक स्थिर चिंतनशील दृष्टि से देखते हुए पाया, वे थोड़ी उलझन में थीं, लेकिन उनमें ज़रा भी द्वेष नहीं था। यह कक्षाओं के बीच के उस छोटे से अंतराल के दौरान हुआ, जब विद्यार्थी पंद्रह मिनट के मनोरंजन के

लिए प्रांगण में चले गए थे; हम दोनों पहली कक्षा में अकेले रह गए थे: जब मेरी नज़र उनसे मिली, तो उनके विचार उनके होठों से कुछ हद तक निकल आए।

उन्होंने कहा, "इस किरदार में कुछ बेहद उल्लेखनीय बात है।"

अंग्रेज़ी।"

“कैसे, महोदया?”

उसने हल्की सी हंसी हंसते हुए अंग्रेजी में "हाउ" शब्द दोहराया।

“मैं आपको यह तो नहीं बता सकती कि ‘कैसे’, लेकिन खैर, अंग्रेजों के अपने विचार होते हैं, दोस्ती में, प्यार में, हर चीज में। लेकिन कम से कम उन पर नजर रखने की जरूरत तो नहीं है,” यह कहते हुए वह उठी और एक छोटी सी टट्टू की तरह फुदकती हुई चली गई।

“तो मुझे उम्मीद है,” मैंने मन ही मन बुदबुदाया, “कि आप कृपा करके भविष्य में मेरे पत्रों को नजरअंदाज कर देंगे।”

हाय! मेरी आँखों में अचानक कुछ उमड़ आया, जिससे उनकी दृष्टि पूरी तरह धुंधली हो गई, स्कूल का कमरा, बगीचा, सर्दियों का चमकीला सूरज सब कुछ मेरी नज़रों से ओझल हो गया, क्योंकि मुझे याद आया कि अब मुझे कभी भी ऐसे पत्र नहीं मिलेंगे, जैसे उसने पढ़े थे। मैंने उन्हें आखिरी बार देखा था। वह सुंदर नदी, जिसके किनारों पर मैं कुछ समय बिताता था, जिसकी लहरों की कुछ जीवनदायिनी बूँदें मेरे होठों तक पहुँची थीं, अब एक अलग राह पर मुड़ रही थी: वह मेरी छोटी सी झोपड़ी और खेत को वीरान और रेत से सूखा छोड़कर, अपने जल के भंडार को दूर बहा ले जा रही थी। यह बदलाव सही, न्यायसंगत, स्वाभाविक था; एक शब्द भी नहीं कहा जा सकता था: लेकिन मुझे अपनी राइन, अपनी नील नदी से प्रेम था; मैंने अपनी गंगा की लगभग पूजा की थी, और मुझे इस बात का दुख था कि वह विशाल धारा मुझसे बिछड़कर, एक झूठे मृगतृष्णा की तरह गायब हो जाए। यद्यपि मैं संयमी था, पर पूरी तरह से संयमी नहीं था; बूँदें मेरे हाथों पर, मेरी मेज पर तेज़ी से बह रही थीं: मैं एक उमस भरी, भारी और संक्षिप्त बौछार की तरह रोया।

लेकिन जल्द ही मैंने खुद से कहा, "जिस आशा के लिए मैं विलाप कर रहा हूँ, उसने बहुत कष्ट सहा और मुझे भी बहुत कष्ट दिया: वह तब तक नहीं मरी जब तक उसका समय पूरा नहीं हो गया: इतनी लंबी पीड़ा के बाद, मृत्यु का स्वागत होना चाहिए।"

मैंने स्वागत करने का पूरा प्रयास किया। वास्तव में, लंबे दर्द ने धैर्य को मेरी आदत बना दिया था। अंत में मैंने अपने मृत शरीर की आँखें बंद कीं, उसका चेहरा ढका और बड़ी शांति से उसके अंगों को व्यवस्थित किया।

लेकिन उन पत्रों को नज़रों से दूर रख देना चाहिए: शोक संतप्त लोग हमेशा संशयपूर्वक स्मृतियों को इकट्ठा करके सुरक्षित रख देते हैं: हर पल पछतावे के तीव्र पुनरुत्थान से हृदय में छुरा घोंपा जाना असहनीय होता है।

एक खाली छुट्टी की दोपहर (गुरुवार को) जब मैं अपने खजाने को अंतिम निपटान के बारे में विचार करने के इरादे से उसके पास गया, तो मैंने देखा - और इस बार तीव्र आक्रोश के साथ - कि उसके साथ फिर से छेड़छाड़ की गई थी: पैकेट तो वहाँ था, लेकिन उसे बांधने वाला रिबन खोला और फिर से बांधा गया था; और अन्य संकेतों से मुझे पता चला कि मेरी दराज में किसी ने हाथ डाला था।

यह कुछ ज़्यादा ही हो गया था। मैडम बेक स्वयं विवेक की मूर्ति थीं, साथ ही उनका दिमाग़ भी उतना ही तेज़ और निर्णय लेने की क्षमता थी जितनी किसी इंसान के सिर में हो सकती है; उन्हें मेरे संदूक की छुटकी पता होना सुखद नहीं था, पर सहन किया जा सकता था। छोटी सी जेसुइट जांचकर्ता होने के नाते, वह चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में देख सकती थीं और उन्हें बिना किसी विकृति के समझ सकती थीं; लेकिन यह सोचकर कि उन्होंने इस तरह प्राप्त जानकारी दूसरों को बताने का साहस किया होगा; कि उन्होंने शायद अपने किसी साथी के साथ उन दस्तावेजों पर चर्चा की होगी, जो मेरी नज़र में सबसे पवित्र थे, मुझे गहरा सदमा लगा। फिर भी, अगर ऐसा हुआ तो मुझे डरने का कारण नज़र आने लगा; मैंने तो उनके विश्वासपात्र का भी अंदाज़ा लगा लिया। उनके रिश्तेदार, एम. पॉल इमानुएल, ने कल शाम उनके साथ बिताई थी: उन्हें उनसे सलाह लेने और उन मामलों पर चर्चा करने की आदत थी जो वह किसी और से नहीं करती थीं। आज सुबह ही, कक्षा में, उस सज्जन ने मुझे एक ऐसी नज़र से देखा जो उन्होंने अभिनेत्री वष्टि से उधार ली हुई प्रतीत होती थी; उस समय मैं उसकी क्रोधित आँखों से निकली उस नीली, फिर भी भयावह चमक को समझ नहीं पाई थी; लेकिन अब मैं उसका अर्थ समझ गई हूँ। मुझे विश्वास था कि वह मेरे मामलों को निष्पक्ष दृष्टि से नहीं देखेगा, न ही मुझे सहनशीलता और स्पष्टता से परखेगा: मैंने उसे हमेशा कठोर और शंकालु पाया था: यह सोचकर कि ये पत्र, जो मात्र मैत्रीपूर्ण पत्र थे, एक बार उसके हाथों में पड़ चुके हैं, और दोबारा पड़ सकते हैं, मेरी आत्मा तक

झकझोर गई।

इसे रोकने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? इस अजीब से घर के किस कोने में सुरक्षा या गोपनीयता मिल सकती थी? कहाँ चाबी सुरक्षा का साधन हो सकती थी, या ताला एक बाधा?

क्या गोदाम में? नहीं, मुझे गोदाम पसंद नहीं था। इसके अलावा, वहाँ के अधिकांश बक्से और दराज सड़ रहे थे और उनमें ताला नहीं लगता था। चूहे भी सड़ी हुई लकड़ी को कुतर रहे थे; और चूहों ने उनके अंदर रखे सामान के ढेर में घोंसले बना रखे थे: मेरे प्यारे पत्र (जो अब भी बहुत प्यारे हैं, भले ही उनके कवर पर इचैबोड लिखा हो) कीड़े-मकोड़ों द्वारा खाए जा सकते थे; निश्चित रूप से नमी से लिखावट जल्द ही मिट जाएगी। नहीं; गोदाम ठीक नहीं था - लेकिन फिर कहाँ?

इस समस्या पर विचार करते हुए मैं छात्रावास की खिड़की के पास बैठ गया। वह एक सुहावनी, ठंडी दोपहर थी; सर्दियों का सूरज, जो पहले ही डूब रहा था, "एली डेफेंड्यू" में बगीचे की झाड़ियों की चोटियों पर हल्की चमक बिखेर रहा था। एक विशाल पुराना नाशपाती का पेड़ - ननों का नाशपाती का पेड़ - एक ऊंचे, रूखे, दुबले-पतले और निर्वस्त्र कंकाल की तरह खड़ा था। एक विचार मेरे मन में आया - उन विचित्र, काल्पनिक विचारों में से एक जो कभी-कभी अकेले लोगों के मन में आते हैं। मैंने अपनी टोपी, लबादा और फर के वस्त्र पहने और शहर की ओर निकल पड़ा।

कस्बे के पुराने ऐतिहासिक इलाके की ओर कदम बढ़ाते हुए, जिसके रहस्यमय और अंधकारमय क्षेत्रों को मैं उदासी में सहज रूप से खोजता था, मैं गली-गली भटकता रहा, जब तक कि एक लगभग सुनसान जगह या चौक को पार करके मैं एक तरह की दलाल की दुकान के सामने नहीं पहुँच गया; एक प्राचीन जगह, प्राचीन वस्तुओं से भरी हुई। मुझे एक धातु का डिब्बा चाहिए था जिसे जोड़ा जा सके, या एक मोटा कांच का जार या बोतल जिसे ढक्कन लगाकर सील किया जा सके। तरह-तरह के ढेरों में से मुझे वह वस्तु मिल गई और मैंने उसे खरीद लिया।

फिर मैंने अपने पत्रों का एक छोटा सा बंडल बनाया, उन्हें तेल लगे रेशम में लपेटा, धागे से बांधा और बोतल में डालकर बूढ़े यहूदी दलाल से उसे बंद करवाकर सील कर दिया। मेरे निर्देशों का पालन करते हुए, वह अपनी बर्फीली सफेद पलकों के नीचे से मुझे संदेह भरी निगाहों से देखता रहा। मुझे लगता है कि उसे लगा कि कोई बुरा काम होने वाला है। इस सब में मुझे एक उदास सी अनुभूति हुई - खुशी नहीं - बल्कि एक

दुखद, अकेलापन भरा संतोष। जिस आवेग के तहत मैंने यह किया, जिस मनोदशा ने मुझे नियंत्रित किया, वह उसी आवेग और मनोदशा के समान थी जिसने मुझे पश्चात्ताप कक्ष में जाने के लिए प्रेरित किया था। तेज कदमों से चलते हुए मैं अंधेरा होने से ठीक पहले अपने आश्रम में वापस आ गया, और भोजन के समय पर पहुँच गया।

सात बजे चाँद निकला। साढ़े सात बजे, जब विद्यार्थी और शिक्षक पढ़ाई कर रहे थे, और मैडम बेक अपनी माँ और बच्चों के साथ भोजन कक्ष में थीं, जब सभी छात्र घर जा चुके थे, और रोज़ीन प्रवेश कक्ष से निकल चुकी थी, और चारों ओर सन्नाटा था — मैंने अपने आप को शॉल में लपेटा, और सीलबंद जार लेकर, प्रथम श्रेणी के दरवाजे से चुपके से बाहर निकलकर बरसेउ में और फिर "एली डिफेंड्यू" में चला गया।

इस रास्ते के आखिरी छोर पर, मेरी सीट के पास, नाशपाती का पेड़ मेथुसालेह खड़ा था: वह अपने चारों ओर की झाड़ियों से ऊपर, धुंधला और भूरा सा, ऊंचा उठता हुआ दिखाई देता था। मेथुसालेह इतना पुराना होने के बावजूद भी मजबूत था; बस उसकी जड़ के पास एक छेद था, या यूं कहें कि एक गहरा खोखला हिस्सा था। मुझे पता था कि ऐसा खोखला हिस्सा है, जो चारों ओर घनी लताओं और बेलों से आंशिक रूप से छिपा हुआ है; और वहीं मैं अपना खजाना छिपाने के बारे में सोच रहा था। लेकिन मैं सिर्फ खजाना ही नहीं छिपाने जा रहा था—मैं एक दुख को भी दफनाने जा रहा था। वह दुख जिस पर मैं हाल ही में कफन में लपेटते हुए रो रहा था, उसे दफनाना ही था।

मैंने लता हटाई और गड्ढा ढूँढ़ा; वह इतना बड़ा था कि उसमें घड़ा समा सके, और मैंने उसे उसमें गहराई तक गाड़ दिया। बगीचे के निचले हिस्से में बने औज़ारों के शेड में, हाल ही में इमारत के एक हिस्से की मरम्मत के लिए आए राजमिस्त्रियों द्वारा छोड़ी गई निर्माण सामग्री के अवशेष पड़े थे। मैं वहाँ से एक स्लेट और कुछ गारा लाया, स्लेट को गड्ढे में रखा, उसे सीमेंट से पक्का किया, गड्ढे को काली मिट्टी से ढक दिया, और अंत में लता को वापस लगा दिया। यह सब करने के बाद, मैं पेड़ से टेक लगाकर बैठ गया; किसी अन्य शोक संतप्त व्यक्ति की तरह, नई बिछाई गई कब्र के पास कुछ देर रुका रहा।

रात का सन्नाटा पसरा हुआ था, पर एक अजीब सी धुंध छाई हुई थी, जिसने चांदनी को एक चमकदार धुंध में बदल दिया था। इस हवा में, या इस धुंध में, कोई

ऐसी शक्ति थी—शायद बिजली जैसी—जिसका मुझ पर अजीब सा असर हो रहा था। मुझे तब वैसा ही महसूस हुआ जैसा एक साल पहले इंग्लैंड में हुआ था—एक ऐसी रात जब उत्तरी प्रकाश आकाश में फैल रहा था और चारों ओर चक्कर लगा रहा था, जब मैं सुनसान खेतों में देर से रुका था और झंडों के साथ सेना के उस जमावड़े को देख रहा था—लगी हुई भालों की उस थरथराहट को—उत्तरी तारे के नीचे से आकाश के ऊंचे, अंधेरे शिखर तक दूतों के उस तीव्र आरोहण को। मैं खुश तो नहीं था, पर इसके विपरीत, लेकिन मुझमें नई शक्ति का संचार हुआ था।

अगर ज़िंदगी एक युद्ध है, तो लगता है कि इसे अकेले लड़ना ही मेरी नियति है। अब मैं सोच रहा था कि अपने शीतकालीन शिविर को कैसे समेटूँ— उस जगह को कैसे छोड़ दूँ जहाँ भोजन और चारा खत्म हो गया है। शायद, इस बदलाव के लिए किस्मत से एक और ज़बरदस्त लड़ाई लड़नी पड़े; अगर ऐसा है, तो मैं उस मुकाबले के लिए तैयार था: हारने के लिए बहुत गरीब, शायद भगवान ने मुझे जीत दिला दी हो। लेकिन कौन सा रास्ता खुला था?— कौन सी योजना उपलब्ध थी?

मैं अभी इसी सवाल पर सोच ही रहा था कि अब तक धुंधला दिख रहा चाँद अचानक थोड़ा तेज चमकने लगा: एक किरण मेरे सामने एकदम सफेद चमकी और एक परछाईं साफ और स्पष्ट हो गई। मैंने और गौर से देखा, ताकि इस अंधेरी गली में अचानक दिखाई देने वाले इस स्पष्ट अंतर का कारण समझ सकूँ: मेरी आँखों के सामने यह सफेद और काला होता चला गया: इसने पल भर में अपना रूप बदल लिया। मैं एक लंबी, काले वस्त्र और बर्फीले घूंघट वाली महिला से लगभग तीन गज की दूरी पर खड़ा था।

पांच मिनट बीत गए। न तो मैं भागी और न ही चीखी। वह अभी भी वहीं थी।

मैंने बात की थी।

“तुम कौन हो? और मेरे पास क्यों आए हो?”

वह चुपचाप खड़ी थी। उसका कोई चेहरा नहीं था—कोई भाव-भंगिमा नहीं: उसकी भौंहों के नीचे का सारा हिस्सा एक सफेद कपड़े से ढका हुआ था; लेकिन उसकी आंखें थीं, और वे मुझे देख रही थीं।

मुझे लगा, अगर बहादुरी नहीं तो थोड़ी हताशा तो जरूर थी; और हताशा अक्सर साहस का काम करने के लिए काफी होती है। मैं एक कदम आगे बढ़ा। मैंने अपना हाथ बढ़ाया, क्योंकि मैं उसे छूना चाहता था। वह पीछे हटती हुई प्रतीत हुई। मैं और

करीब गया: उसका पीछे हटना, अभी भी खामोश था, लेकिन तेज हो गया। झाड़ियों का एक झुंड, घने सदाबहार पेड़, लॉरेल और यू के पेड़, मेरे और जिसका मैं पीछा कर रहा था, के बीच आ गए। उस बाधा को पार करने के बाद, मैंने देखा और कुछ नहीं दिखाई दिया। मैं इंतजार करता रहा। मैंने कहा, — "अगर तुम्हें किसी को कोई संदेश देना हो, तो वापस आकर उसे दे दो।" कुछ भी नहीं बोला और न ही कुछ दोबारा दिखाई दिया।

इस बार डॉ. जॉन जैसा कोई व्यक्ति नहीं था जिससे मैं मदद मांग सकूं: कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसके सामने मैं ये शब्द फुसफुसाने की हिम्मत कर सकूं, "मैंने फिर से उस नन को देखा है।"

* * * * *

पॉलिना मैरी चाहती थी कि मैं अक्सर रू क्रेसी में उसके साथ रहूँ। पुराने ब्रेटन दिनों में, हालाँकि उसने कभी खुलकर मुझे पसंद नहीं किया था, फिर भी मेरा साथ उसके लिए एक तरह की अचेतन आवश्यकता बन गया था। मैं अक्सर देखता था कि अगर मैं अपने कमरे में चला जाता, तो वह तुरंत मेरे पीछे दौड़ती हुई आती और दरवाजा खोलकर अंदर झाँकती, और अपने थोड़े से दबंग लहजे में कहती, "नीचे आओ। यहाँ अकेले क्यों बैठे हो? तुम्हें बैठक में आना चाहिए।"

उसी भावना से प्रेरित होकर उसने अब मुझसे आग्रह किया— "रू फॉसेट छोड़ दो," उसने कहा, "और हमारे साथ आकर रहो। पापा तुम्हें मैडम बेक से कहीं अधिक देंगे।"

श्री होम ने स्वयं मुझे एक अच्छी खासी रकम की पेशकश की - मेरी वर्तमान तनख्वाह से तीन गुना - अगर मैं उनकी बेटी की सहायिका का पद स्वीकार कर लूँ। मैंने मना कर दिया। मुझे लगता है कि अगर मैं और भी गरीब होती, और मेरे पास संसाधन कम होते, भविष्य की संभावनाएं और भी सीमित होतीं, तो भी मैं मना कर देती। लेकिन मुझमें वह रुचि नहीं थी। मैं पढ़ा सकती थी; मैं पाठ पढ़ा सकती थी; लेकिन निजी गवर्नेस या सहायिका बनना मेरे स्वभाव के विपरीत था। किसी बड़े गृहस्थी में निजी गवर्नेस का पद संभालने के बजाय, मैं जानबूझकर एक नौकरानी की नौकरी कर लेती, मजबूत दस्ताने खरीद लेती, शयनकक्षों और सीढ़ियों की सफाई करती, और शांति और स्वतंत्रता से चूल्हे और ताले साफ करती। सहायिका बनने के

बजाय, मैं कमीजें सिलकर भूखी मर जाती।

मैं किसी तेजतर्रार महिला की परछाई नहीं थी—मिस डी बासोम्पियर की तो बिल्कुल नहीं। मेरा स्वभाव अक्सर उदास रहता था; मैं स्वभाव से संयमित थी: लेकिन यह उदासी और अवसाद दोनों ही स्वैच्छिक थे—ऐसे जो मुझे मैडम बेक की पहली कक्षा में अपने अब अच्छी तरह से अभ्यस्त हो चुके विद्यार्थियों के बीच, या अकेले, उनके छात्रावास में अपने बिस्तर के पास, या उनके बगीचे में उस गली और जगह पर, जिसे मैं अपना कहती थी, विनम्र बनाए रखते थे: मेरे गुण न तो परिवर्तनीय थे, न ही अनुकूलनीय; उन्हें किसी रत्न की आड़, किसी सुंदरता का सहायक, ईसाई जगत की किसी महानता का हिस्सा नहीं बनाया जा सकता था। मैडम बेक और मैं, आत्मसात हुए बिना, एक-दूसरे को अच्छी तरह समझते थे। मैं न तो उनकी साथी थी, न ही उनके बच्चों की देखभाल करने वाली। उसने मुझे आज़ाद छोड़ दिया: उसने मुझे किसी चीज़ से नहीं बांधा—न खुद से—न ही अपने हितों से। एक बार, जब वह एक करीबी रिश्तेदार की बीमारी के कारण दो सप्ताह के लिए घर से दूर रही, और लौटने पर, अपने संस्थान को लेकर बहुत चिंतित और परेशान थी, कहीं उसकी अनुपस्थिति में कुछ गड़बड़ न हो जाए। उसने देखा कि सब कुछ पहले की तरह ही चल रहा था, और लापरवाही का कोई सबूत नहीं था—तो उसने स्थिरता के लिए सभी शिक्षकों को उपहार दिए। रात बारह बजे वह मेरे बिस्तर के पास आई और मुझसे कहा कि मेरे लिए उसके पास कोई उपहार नहीं है: "मुझे सेंट पियरे के लिए वफादारी को फायदेमंद बनाना होगा," उसने कहा; "अगर मैं इसे तुम्हारे लिए फायदेमंद बनाने की कोशिश करूंगी, तो हमारे बीच गलतफहमी पैदा हो जाएगी—शायद अलगाव भी। लेकिन एक चीज़ जो मैं तुम्हें खुश करने के लिए कर सकती हूँ—तुम्हें तुम्हारी आज़ादी के साथ अकेला छोड़ दूंगी: यही मैं करूंगी।" उसने अपना वादा निभाया। उसने मुझ पर जो भी छोटे-मोटे बंधन लगाए थे, उस समय से उसने उन्हें शांति से हटा दिया। इस प्रकार मुझे स्वेच्छा से उसके नियमों का पालन करने में आनंद मिला: दुगुना समय देने में, मेरे अधीन सौंपे गए विद्यार्थियों के साथ दुगुना परिश्रम करने में संतुष्टि मिली।

मैरी डी बासोम्पियर की बात करें तो, मैं उनसे मिलने में प्रसन्न होता था, हालाँकि मैं उनके साथ रहना नहीं चाहता था। मेरी मुलाकातों से मुझे जल्द ही यह समझ आ गया कि मेरा कभी-कभार और स्वेच्छा से उनके साथ रहना भी उनके लिए लंबे समय तक अपरिहार्य नहीं रहेगा। दूसरी ओर, एम. डी बासोम्पियर इस अनुमान से बेखबर

और इस संभावना से अनभिज्ञ प्रतीत होते थे; किसी बच्चे की तरह वे उन संकेतों, संभावनाओं और शुरुआती संकेतों से अनजान थे, जो शायद अंत में उन्हें स्वीकार्य न हों।

मुझे अक्सर यह संदेह रहता था कि क्या वह सहर्ष स्वीकार करेंगे। कहना मुश्किल था। उनकी रुचि विज्ञान में बहुत अधिक थी; अपने पसंदीदा विषयों में वे उत्सुक, एकाग्र और कुछ हद तक विद्रोही स्वभाव के थे, लेकिन जीवन के सामान्य मामलों में वे निडर और भरोसेमंद थे। जितना मैं समझ पाई, उससे ऐसा लगता था कि वे अपनी "बेटी" को अभी भी एक बच्ची ही मानते थे, और शायद उन्होंने अभी तक यह स्वीकार नहीं किया था कि दूसरे लोग उसे अलग नजरिए से देख सकते हैं: वे इस बारे में बात करते थे कि जब "पॉली" एक महिला बन जाएगी, जब वह बड़ी हो जाएगी, तो क्या करना चाहिए; और "पॉली," उनकी कुर्सी के पास खड़ी होकर, कभी मुस्कुराती और अपने छोटे हाथों से उनके सम्मानित सिर को थाम लेती, और उनके भूरे बालों को चूमती; और कभी-कभी वह मुंह फुलाकर अपने घुंघराले बालों को झटकती: लेकिन उसने कभी नहीं कहा, "पापा, मैं बड़ी हो गई हूँ।"

अलग-अलग लोगों के साथ उसका मिजाज बदल जाता था। अपने पिता के साथ वह सचमुच एक बच्ची जैसी, या कहें तो बच्ची जैसी, स्नेही, हंसमुख और चंचल रहती थी। मेरे साथ वह गंभीर और उतनी ही गंभीर होती थी जितनी उसकी सोच और भावनाएँ उसे बना सकती थीं। श्रीमती ब्रेटन के साथ वह आज्ञाकारी और भरोसेमंद थी, लेकिन खुलकर बात नहीं करती थी। ग्राहम के साथ वह शर्मीली थी, आजकल तो बहुत शर्मीली; कभी-कभी वह ठंडा व्यवहार करने की कोशिश करती थी; कभी-कभी उससे बचने का प्रयास करती थी। उसके कदमों की आहट से वह चौंक जाती थी; उसके आने पर वह चुप हो जाती थी; जब वह बोलता था, तो उसके जवाब धाराप्रवाह नहीं होते थे; जब वह विदा लेता था, तो वह खुद को परेशान और बेचैन महसूस करती रहती थी। उसके पिता ने भी उसके इस व्यवहार को देखा था।

“मेरी प्यारी पॉली,” उन्होंने एक बार कहा, “तुम बहुत एकांत जीवन जीती हो; अगर तुम इन शर्मीले स्वभाव वाली महिला बनीं, तो तुम समाज के लिए शायद ही उपयुक्त हो पाओगी। तुम डॉ. ब्रेटन को बिल्कुल अजनबी बना देती हो: ऐसा क्यों? क्या तुम्हें याद नहीं कि बचपन में तुम उन्हें बहुत पसंद करती थीं?”

"नहीं, पापा," उसने अपने थोड़े रूखे, फिर भी कोमल और सरल स्वर में दोहराया।

“और अब आपको वो पसंद नहीं है? उसने ऐसा क्या किया है?”

“कुछ नहीं। हाँ, मैं उसे थोड़ा पसंद करती हूँ; लेकिन हम एक-दूसरे के लिए अजनबी हो गए हैं।”

“तो इसे मिटा दो, पॉली; जंग और अजनबीपन को मिटा दो। जब वह यहाँ हो तो खुलकर बातें करो, और उससे बिल्कुल मत डरो?”

“वह ज्यादा बोलता नहीं है। क्या आपको लगता है, पापा, वह मुझसे डरता है?”

"अरे हाँ, भला कौन सा आदमी ऐसी शांत और नर्म महिला से नहीं डरेगा?"

"फिर किसी दिन उससे कह देना कि मेरी चुप्पी का बुरा न माने। कहना कि यही मेरा तरीका है और मेरा कोई दुर्भावनापूर्ण इरादा नहीं है।"

“तुम्हारी मनमानी, छोटी बकबक करने वाली? यह तुम्हारी मनमानी होने के बजाय केवल तुम्हारी सनक है!”

“ठीक है, मैं सुधार करूँगा, पापा।”

और अगले दिन जिस शालीनता से उसने अपना वादा निभाने की कोशिश की, वह बहुत ही सुंदर थी। मैंने उसे डॉ. जॉन से सामान्य विषयों पर सौहार्दपूर्ण बातचीत करने का प्रयास करते देखा। उसके ध्यान से उसके मेहमान के चेहरे पर एक सुखद आभा आ गई; उसने उससे सावधानी से बात की और बहुत ही कोमल स्वर में उत्तर दिया, मानो हवा में एक नाजुक सी खुशी छाई हो जिसे वह गहरी सांस लेकर भंग करने से डर रहा हो। निःसंदेह, उसकी संकोची लेकिन गंभीर मित्रता की ओर बढ़ने की इस कोशिश में एक अत्यंत मनमोहक और जादुई आकर्षण था।

डॉक्टर के जाने के बाद, वह अपने पिता की कुर्सी के पास गई।

“क्या मैंने अपना वादा निभाया, पापा? क्या मैंने बेहतर व्यवहार किया?”

“मेरी पॉली रानी की तरह व्यवहार करती है। अगर यह सुधार जारी रहा तो मुझे उस पर बहुत गर्व होगा। धीरे-धीरे हम उसे अपने मेहमानों का बड़े ही शांत और शालीन तरीके से स्वागत करते देखेंगे। मिस लूसी और मुझे अपने चारों ओर ध्यान देना होगा और अपने सभी अच्छे व्यवहार और शिष्टाचार को निखारना होगा, कहीं हम फीके न पड़ जाएं। फिर भी, पॉली, थोड़ी घबराहट है, कभी-कभी हकलाने की प्रवृत्ति है, और यहाँ तक कि तुतलाने की भी, जैसे तुम छह साल की उम्र में तुतलाती थी।”

“नहीं पापा,” उसने गुस्से से बीच में ही टोकते हुए कहा, “यह सच नहीं हो सकता।”

“मैं मिस लूसी से अपील करता हूँ। क्या उन्होंने डॉ. ब्रेटन के इस सवाल का जवाब देते हुए कि क्या उन्होंने कभी बोइस ल'एटांग के राजकुमार का महल देखा है, यह नहीं कहा था कि 'हाँ', कि वह वहाँ 'कई' बार जा चुकी हैं?”

“पापा, आप व्यंग्यात्मक हैं, आप बड़े ही धूर्त हैं! मैं वर्णमाला के सभी अक्षरों का उच्चारण उतनी ही स्पष्टता से कर सकता हूँ जितना आप करते हैं। लेकिन मुझे यह बताइए कि आप मुझे डॉ. ब्रेटन के प्रति विनम्र व्यवहार करने के लिए इतना ज़ोर क्यों देते हैं, क्या आप स्वयं उन्हें पसंद करते हैं?”

"हाँ, बिल्कुल: पुराने परिचय के कारण मैं उसे पसंद करता हूँ: वह अपनी माँ का बहुत अच्छा बेटा है; इसके अलावा वह दयालु और अपने पेशे में होशियार भी है: हाँ, वह नौजवान काफी अच्छा है।"

“कैलेंट! आह, स्कॉचमैन! पापा, क्या आप एडिनबर्ग या एबरडीन के लहजे में बात करते हैं?”

“दोनों, मेरे प्रिय, दोनों: और निस्संदेह ग्लासगो का लहजा भी। यही वह चीज है जो मुझे इतनी अच्छी फ्रेंच बोलने में सक्षम बनाती है: अच्छी स्कॉटिश बोली हमेशा फ्रेंच के काम आती है।”

“फ्रांसीसी! फिर से स्कॉच: सुधरने वाला नहीं बाप। तुम्हें भी शिक्षा की जरूरत है।”

"अच्छा, पॉली, तुम्हें मिस स्नो को मनाना होगा कि वह हम दोनों को अपने साथ ले लें; ताकि वह तुम्हें स्थिर और स्त्रीत्वपूर्ण बनाएँ, और मुझे परिष्कृत और शास्त्रीय।"

एम. डी. बासोम्पियर जिस नज़रिए से "मिस स्नो" को देखते थे, उससे मुझे अक्सर बहुत कुछ सीखने को मिलता था। हमें देखने वाले के नज़रिए के अनुसार हमारे चरित्र के कितने विरोधाभासी गुण बता दिए जाते हैं! मैडम बेक मुझे विद्वान और रूढ़िवादी मानती थीं; मिस फैंसहावे मुझे कटु, व्यंग्यात्मक और निंदक समझती थीं; मिस्टर होम मुझे एक आदर्श शिक्षक, शांत और विवेकशील मानते थे: शायद कुछ हद तक पारंपरिक, बहुत सख्त, सीमित और संशयवादी, लेकिन फिर भी एक आदर्श शिक्षक; वहीं दूसरी ओर, प्रोफेसर पॉल इमैनुएल, कभी भी यह जताने का मौका नहीं छोड़ते थे कि मेरा स्वभाव उग्र और उतावला है— साहसी, उद्दंड और निडर। मैं उन सभी पर मुस्कुरा देती थी। अगर कोई मुझे जानता था तो वह छोटी पॉलिना मैरी थी।

चूंकि मैं पॉलिना की नाममात्र की और वेतनभोगी साथी नहीं बनना चाहती थी, हालांकि मुझे उसके साथ बातचीत में सौहार्द और सामंजस्य महसूस होने लगा था,

उसने मुझे नियमित और स्थिर संचार बनाए रखने के लिए किसी अध्ययन में शामिल होने के लिए राजी किया: उसने जर्मन भाषा का प्रस्ताव रखा, जिसे मेरी तरह ही उसे भी सीखना मुश्किल लगता था। हम दोनों ने एक ही शिक्षिका से रुए क्रेसी में पाठ लेने का निर्णय लिया; इस व्यवस्था के कारण हम हर हफ्ते कुछ घंटों के लिए साथ रहने लगे। एम. डी बासोम्पियर काफी प्रसन्न प्रतीत हुए: उन्हें यह बात पूरी तरह से पसंद आई कि मैडम मिनर्वा ग्रेविटी अपने खाली समय का कुछ हिस्सा उनकी प्यारी और प्रिय छात्रा के साथ बिताएं।

मेरे एक और स्व-घोषित न्यायाधीश, रू फॉसेट के प्रोफेसर ने, कुछ गुप्त जासूसी के ज़रिए यह पता लगा लिया कि मैं अब पहले की तरह स्थिर नहीं रहता, बल्कि नियमित रूप से कुछ दिनों के कुछ निश्चित समय पर बाहर जाता हूँ। इसलिए उन्होंने मुझ पर नज़र रखना शुरू कर दिया। लोग कहते थे कि एम. इमैनुएल का पालन-पोषण जेसुइट्स के बीच हुआ था। अगर उनकी चालें बेहतर ढंग से छिपी होतीं, तो मैं इस बात पर आसानी से विश्वास कर लेता। लेकिन जैसा था, मुझे इस पर संदेह था। उनसे ज़्यादा बेशर्म षड्यंत्रकारी, इतना स्पष्टवादी और बेपरवाह षड्यंत्रकारी कोई नहीं था। वे अपनी ही चालों का विश्लेषण करते, जटिल योजनाएँ बनाते और फिर तुरंत उनकी कुशलता का बखान करते। मुझे नहीं पता कि मुझे ज़्यादा मज़ा आया या गुस्सा आया, जब एक सुबह वह मेरे पास आया और धीरे से गंभीर स्वर में बोला कि "उसकी नज़र मुझ पर है: कम से कम वह एक दोस्त का फर्ज तो निभाएगा, और मुझे पूरी तरह से अपने हाल पर नहीं छोड़ेगा।" मेरी स्थिति उस समय बहुत अनिश्चित लग रही थी: उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है: उसे लगता था कि उसकी चचेरी बहन बेक को इस बात का बहुत दोष देना चाहिए कि उसके घर से जुड़ी एक शिक्षिका में इस तरह की अस्थिरता थी। शिक्षा जैसे गंभीर पेशे में लगी एक व्यक्ति का काउंट और काउंटेस, होटलों और महलों से क्या लेना-देना? उसे तो मैं बिल्कुल ही बेसुध लग रही थी। उसके विश्वास पर, उसे लगता था कि मैं सात में से छह दिन बाहर जाती हूँ।

मैंने कहा, "महाशय ने अतिशयोक्ति की। मुझे हाल ही में थोड़ा बदलाव का लाभ अवश्य मिला था, लेकिन तब तक नहीं जब तक यह आवश्यक नहीं हो गया था; और इस विशेषाधिकार का मैंने किसी भी तरह से दुरुपयोग नहीं किया।"

"ज़रूरी! यह कैसे ज़रूरी था? उनका मानना था कि मैं ठीक-ठाक थी? बदलाव ज़रूरी! उन्होंने मुझे कैथोलिक धर्मानुयायियों को देखने और उनके जीवन का अध्ययन

करने की सलाह दी। उन्होंने किसी बदलाव की मांग नहीं की।”

जब उन्होंने ऐसा कहा तो मेरे चेहरे पर क्या भाव थे, इसका मैं कोई अंदाजा नहीं लगा सकता, लेकिन यह वही भाव था जिसने उन्हें क्रोधित कर दिया: उन्होंने मुझ पर लापरवाह, सांसारिक और भोगी होने का आरोप लगाया; महान बनने की महत्वाकांक्षा रखने और जीवन के वैभव और भोग-विलास के लिए अत्यधिक तरसने का आरोप लगाया। ऐसा लगता है कि मेरे चरित्र में न तो समर्पण था, न ही आत्म-त्याग; न ही अनुग्रह, विश्वास, त्याग या आत्म-विनम्रता की भावना थी। इन आरोपों का जवाब देने की निरर्थकता को महसूस करते हुए, मैं चुपचाप अंग्रेजी अभ्यासों के ढेर को ठीक करने में लगा रहा।

"उन्हें मुझमें कुछ भी ईसाई जैसा नहीं दिखता था: कई अन्य प्रोटेस्टेंटों की तरह, मैं मूर्तिपूजा के अभिमान और स्वेच्छाचार में मग्न रहता था।"

मैं उससे थोड़ा सा मुँह फेरकर, मौन के आवरण में और भी करीब सिमट गई।

उनके दांतों के बीच से एक अस्पष्ट सी आवाज़ निकली; यह निश्चित रूप से "जुरोन" नहीं हो सकती थी: वे इसके लिए बहुत धार्मिक थे; लेकिन मुझे यकीन है कि मैंने "सैकरे" शब्द सुना। यह बताते हुए दुख होता है कि लगभग दो घंटे बाद जब मैं गलियारे में उनसे मिला, तो उन्होंने वही शब्द दोहराया, साथ में स्पष्ट रूप से "मिले समथिंग" भी जोड़ा, जब मैं रुए क्रेसी में अपनी जर्मन की क्लास लेने जा रहा था। कुछ मामलों में एम. पॉल से बेहतर कोई छोटा आदमी नहीं था: और कुछ मामलों में उनसे ज्यादा गुस्सैल और तानाशाह कोई नहीं था।

* * * * *

हमारी जर्मन शिक्षिका, फ्रॉइलिन अन्ना ब्राउन, लगभग पैंतालीस वर्ष की एक नेक और मिलनसार महिला थीं; शायद उन्हें महारानी एलिजाबेथ के ज़माने में रहना चाहिए था, क्योंकि वे नियमित रूप से अपने पहले और दूसरे नाश्ते में बीयर और गोमांस खाती थीं। साथ ही, उनका सीधा-सादा और स्पष्ट जर्मन स्वभाव हमारे अंग्रेज़ी संयम से घुटन महसूस करता था; हालाँकि हम उनके साथ बहुत सौहार्दपूर्ण व्यवहार करते थे: लेकिन हमने कभी उनके कंधे पर थपकी नहीं दी, और अगर हमने उनके गाल चूमने की सहमति भी दी, तो वह चुपचाप और बिना किसी शोर-शराबे के किया गया। इन कमियों ने उन्हें काफी परेशान और उदास कर दिया; फिर भी, कुल मिलाकर, हमारा

तालमेल बहुत अच्छा रहा। विदेशी लड़कियों को पढ़ाने की आदत होने के कारण, जो शायद ही कभी खुद से सोचती और पढ़ती हैं—जिन्हें किसी कठिनाई से जूझने और चिंतन या लगन से उसे दूर करने का कोई अनुभव नहीं होता—हमारी प्रगति, जो वास्तव में बहुत धीमी थी, उन्हें आश्चर्यचकित करती प्रतीत होती थी। उसकी नजरों में हम दोनों बर्फीले, निर्मल, अभिमानी और अलौकिक प्रतिभाओं के धनी थे।

युवा काउंटेस थोड़ी अभिमानी और थोड़ी नज़ाकत पसंद थीं; और शायद अपनी स्वाभाविक कोमलता और सुंदरता के कारण उन्हें इन भावनाओं का उचित अधिकार भी था; लेकिन मुझे लगता है कि इन भावनाओं को मुझ पर थोपना सरासर गलत था। मैं सुबह की सलामी से कभी नहीं बचता था, जबकि पॉलिना मौका मिलते ही ऐसा कर लेती थी; और न ही मेरे बचाव के हथियारों में तिरस्कार का कोई खास तरीका शामिल था; जबकि पॉलिना हमेशा अपने चेहरे को साफ, सुंदर और चमकदार रखती थीं, और किसी भी जर्मन हमले पर उनका तीखा और मजबूत चेहरा तुरंत चमक उठता था।

ईमानदार अन्ना ब्राउन ने कुछ हद तक इस अंतर को महसूस किया; और हालांकि वह पॉलिना से आधा डरती थी, आधा उसकी पूजा करती थी, एक प्रकार की नाज़ुक अप्सरा - एक अंडाइन - के रूप में, उसने मेरे पास शरण ली, एक ऐसे प्राणी के रूप में जो पूरी तरह से नश्वर है, और जिसका स्वभाव अधिक सहज है।

शिलर की बैलेड्स नामक पुस्तक हमें पढ़ने और अनुवाद करने में बहुत पसंद थी; पॉलिना ने जल्द ही उन्हें खूबसूरती से पढ़ना सीख लिया; फ्रॉइलिन उसे आनंद भरी मुस्कान के साथ सुनती और कहती कि उसकी आवाज़ संगीत जैसी लगती है। वह उनका अनुवाद भी बड़ी सहजता से करती थी, भाषा के प्रवाह और आत्मीयता तथा काव्यमय उत्साह से: उसका गाल लाल हो जाता, उसके होंठ कांपते हुए मुस्कुराते, उसकी सुंदर आँखें कभी चमक उठतीं तो कभी पिघल जातीं। उसने सबसे अच्छी कविताएँ कंठस्थ कर ली थीं और जब हम अकेले होते तो अक्सर उन्हें सुनाती थी। उसे "डेस मैडचेन्स क्लागे" बहुत पसंद थी: यानी, उसे शब्दों को दोहराना अच्छा लगता था, उसे ध्वनि में एक मार्मिक धुन मिलती थी; वह अर्थ की आलोचना करती थी। एक शाम जब हम आग के पास बैठे थे, तो वह बुदबुदाई: —

हे संत, अपने बच्चे को वापस बुला लो।

मैंने सांसारिक सुख का आनंद लिया।

मैंने जीवन जिया है और प्रेम किया है!

“जीना और प्यार करना!” उसने कहा, “क्या सांसारिक सुख की पराकाष्ठा, जीवन का उद्देश्य प्रेम करना है? मुझे नहीं लगता। यह नश्वर पीड़ा की चरम सीमा हो सकती है, यह समय की सरासर बर्बादी और भावनाओं की व्यर्थ यातना हो सकती है। अगर शिलर ने कहा होता कि प्यार पाना, तो शायद वह सच्चाई के करीब पहुँच जाते। लूसी, क्या प्यार पाना एक अलग बात नहीं है?”

"शायद ऐसा हो सकता है: लेकिन इस विषय पर विचार क्यों करें? आपके लिए प्रेम क्या है? आप इसके बारे में क्या जानते हैं?"

वह शर्म और झुंझलाहट से लाल हो गई।

“अब, लूसी,” उसने कहा, “मैं तुमसे यह नहीं छीनूँगी। पापा के लिए मुझे बच्ची समझना ठीक हो सकता है: मुझे तो यही अच्छा लगता है कि वे मुझे इसी तरह देखें; लेकिन तुम जानती हो और समझोगी कि मैं उन्नीस साल की होने वाली हूँ।”

"चाहे आपका उनतीसवां जन्मदिन ही क्यों न हो; हम चर्चा और बातचीत के माध्यम से किसी भी भावना का अनुमान नहीं लगाएंगे; हम प्यार के बारे में बात नहीं करेंगे।"

“जी हां, जी हां!” वह हड़बड़ी और गुस्से में बोली, “आप मुझे जितना चाहें रोक सकते हैं और काबू में रख सकते हैं; लेकिन मैंने इसके बारे में बहुत बात की है और सुना भी है; और हाल ही में बहुत कुछ, और अप्रिय और हानिकारक तरीके से: और ऐसे तरीके से जिसे आप पसंद नहीं करेंगे।”

और वह चिढ़ी हुई, विजयी, सुंदर, शरारती लड़की हँसी। मैं समझ नहीं पाई कि उसका क्या मतलब था, और मैंने उससे पूछा भी नहीं: मैं अचंभित थी। हालाँकि, उसके चेहरे पर पूर्ण निर्दोषता देखकर—कुछ क्षणिक हठ और चिड़चिड़ाहट के साथ—मैंने अंत में कहा, —

“ऐसे मामलों पर आपसे अप्रिय और हानिकारक बातें कौन करता है? आपके इतने करीब रहने वाला कौन ऐसा करने की हिम्मत करेगा?”

“लूसी,” उसने और भी धीमी आवाज़ में जवाब दिया, “वह एक ऐसी इंसान है जो कभी-कभी मुझे दुखी कर देती है; और मैं चाहती हूँ कि वह मुझसे दूर रहे — मैं उसे नहीं चाहती।”

"लेकिन पॉलिना, यह कौन हो सकता है? तुम मुझे बहुत उलझन में डाल देती हो।"

“ये मेरी चचेरी बहन जिनेवरा है। जब भी उसे श्रीमती चोलमोंडली से मिलने की छुट्टी मिलती है, वो यहाँ आती है, और जब भी मुझे अकेला पाती है, अपने चाहने वालों के बारे में बातें शुरू कर देती है। वाकई, प्यार! आपको सुनना चाहिए कि वो प्यार के बारे में क्या-क्या कहती है।”

“ओह, मैंने तो सुन लिया,” मैंने बड़ी सहजता से कहा; “और कुल मिलाकर, शायद यह अच्छा ही हुआ कि तुमने भी सुन लिया: इसमें अफसोस की कोई बात नहीं है, सब ठीक है। फिर भी, निश्चित रूप से, जिनेवरा का दिमाग तुम्हारे दिमाग पर असर नहीं डाल सकता। तुम उसके दिमाग और दिल दोनों को देख सकते हो।”

“वह मुझ पर बहुत प्रभाव डालती है। उसे मेरी खुशी को भंग करने और मेरे विचारों को विचलित करने की कला आती है। वह मेरी भावनाओं और मेरे सबसे प्रिय लोगों के माध्यम से मुझे चोट पहुंचाती है।”

“वह क्या कहती है, पॉलिना? मुझे कुछ अंदाजा दो। शायद हुए नुकसान की भरपाई के लिए कुछ किया जा रहा हो।”

“जिन लोगों को मैं सबसे लंबे समय से जानता और सबसे अधिक सम्मान देता हूं, उन्हें वह अपमानित करती है। वह श्रीमती ब्रेटन को नहीं छोड़ती—वह ग्राहम को भी नहीं छोड़ती…।”

“नहीं, मैं कह सकता हूँ: और वह इन चीजों को अपनी भावनाओं और अपने… प्रेम के साथ कैसे मिलाती है? मुझे लगता है कि वह इन्हें मिलाती है।”

“लूसी, वह बहुत उद्दंड है; और मुझे लगता है, झूठी भी। तुम डॉ. ब्रेटन को जानती हो। हम दोनों उन्हें जानते हैं। वह लापरवाह और घमंडी हो सकते हैं; लेकिन क्या वह कभी नीच या चापलूस रहे हैं? वह मुझे रोज़ दिखाती है कि वह उसके पैरों पर घुटने टेकते हैं, उसकी परछाई की तरह उसके पीछे-पीछे चलते हैं। वह उन्हें अपमानित करके ठुकराती है, और वह मोह में उससे विनती करते हैं। लूसी, क्या यह सच है? क्या इसमें कुछ भी सच है?”

"यह सच हो सकता है कि उसने कभी उसे सुंदर समझा हो: क्या वह अब भी उसे अपना प्रेमी मानती है?"

वह कहती है कि वह किसी भी दिन उससे शादी कर सकती है: वह केवल उसकी सहमति का इंतजार कर रहा है।

"इन्हीं कहानियों की वजह से ग्राहम के प्रति आपके व्यवहार में वो संकोच आया है

जिसे आपके पिता ने महसूस किया था।"

“उन्होंने निश्चित रूप से मुझे उनके चरित्र के बारे में पूरी तरह से संदेह में डाल दिया है।

जिनेवरा बोलती है, लेकिन उनके शब्दों में शुद्ध सत्य की ध्वनि नहीं झलकती:

मुझे लगता है कि वह बढ़ा-चढ़ाकर बोलती है—शायद मनगढ़ंत बातें करती है—लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि वह कितनी हद तक ऐसा करती है।

"मान लीजिए कि हम मिस फैंसहावे को किसी सबूत के लिए लाते हैं। उन्हें वह शक्ति प्रदर्शित करने का अवसर दें जिसका वे बखान करती हैं।"

“मैं यह कल कर सकती हूँ। पापा ने कुछ सज्जनों को रात के खाने पर बुलाया है, सभी विद्वान हैं। ग्राहम भी उनमें से एक हैं, जिनके बारे में पापा को अब पता चल रहा है कि वे भी एक विद्वान हैं—कहते हैं कि वे विज्ञान की एक से अधिक शाखाओं में निपुण हैं। अब ऐसे समारोह में अकेले मेज पर बैठना मेरे लिए बहुत कष्टदायक होगा। मैं पेरिस के शिक्षाविदों, श्रीमान ए—— और जेड—— से बात नहीं कर सकती: मेरे शिष्टाचार की सारी नई साख खतरे में पड़ जाएगी। आपको और श्रीमती ब्रेटन को मेरे लिए आना ही होगा; जिनेवरा भी तुरंत आपके साथ आ जाएँगी।”

"हां; तो मैं निमंत्रण का संदेश लेकर जाऊंगा, और उसे अपनी सत्यनिष्ठा साबित करने का मौका मिलेगा।"

अध्याय XXVII.

क्रेसी होटल।

अगला दिन हमारी (या कम से कम मेरी) उम्मीद से कहीं अधिक चहल-पहल भरा और व्यस्त रहा। ऐसा लगता है कि लाबासेकोर के युवा राजकुमारों में से एक का

जन्मदिन था - सबसे बड़े, शायद ड्यूक डी डिंडोनो का, और उनके सम्मान में स्कूलों में, और विशेष रूप से मुख्य "एथेनी" या कॉलेज में, आम छुट्टी घोषित की गई थी। उस संस्थान के युवाओं ने एक निष्ठापूर्ण भाषण भी तैयार किया था, जिसे उन्हें प्रस्तुत करना था; इसके लिए उन्हें उस सार्वजनिक भवन में इकट्ठा किया जाना था जहाँ वार्षिक परीक्षाएँ आयोजित की जाती थीं और पुरस्कार वितरित किए जाते थे। पुरस्कार वितरण समारोह के बाद, एक प्रोफेसर द्वारा भाषण दिया जाना था।

एम. डी बासोम्पियर के कई मित्र—विद्वान—एथेनी से किसी न किसी रूप में जुड़े होने के कारण, उनसे इस अवसर पर उपस्थित होने की अपेक्षा थी; साथ ही विलेट की सम्मानित नगर पालिका, मेयर ले शेवेलियर स्टास, नगर प्रमुख, और आम तौर पर एथेनियन लोगों के माता-पिता और रिश्तेदार भी उपस्थित रहेंगे। एम. डी बासोम्पियर को उनके मित्रों ने उनके साथ जाने के लिए कहा था; उनकी सुंदर पुत्री भी निश्चित रूप से दल में शामिल होंगी, और उन्होंने जिनेवरा और मुझे एक छोटा सा पत्र लिखकर जल्दी आने का आग्रह किया ताकि हम उनसे मिल सकें।

जब मिस फैंसहावे और मैं रू के छात्रावास में कपड़े बदल रहे थे

फॉसेट (मिस एफ.) अचानक जोर से हंस पड़ीं।

“अब क्या?” मैंने पूछा; क्योंकि उसने अपने कपड़े ठीक करने का काम रोक दिया था और मेरी ओर देख रही थी।

"यह बहुत अजीब लगता है," उसने अपने सामान्य आधे ईमानदार आधे उद्दंड बेबाकी से जवाब दिया, "कि अब हम दोनों इतने समान स्तर पर हैं, एक ही क्षेत्र में मिल रहे हैं; हमारे संपर्क एक जैसे हैं।"

“जी हां,” मैंने कहा; “कुछ समय पहले तक आप जिन लोगों के साथ अक्सर उठते-बैठते थे, उनके प्रति मेरे मन में कोई सम्मान नहीं था: श्रीमती चोलमोंडली और उनके साथी मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं आते।”

"आप कौन हैं, मिस स्नो?" उसने इतनी स्पष्ट और सरल जिज्ञासा भरी आवाज में पूछा कि मुझे भी हंसी आ गई।

“तुम खुद को नर्सरी गवर्नेस कहती थीं; जब तुम पहली बार यहाँ आई थीं, तब सचमुच इस घर के बच्चों की देखभाल तुम ही करती थीं: मैंने तुम्हें छोटी जॉर्जेट को गोद में लिए देखा है, जैसे कोई प्यारी बच्ची हो — बहुत कम गवर्नेस इतना विनम्र व्यवहार करतीं — और अब मैडम बेक तुमसे सेंट पियरे, जो पेरिस की रहने वाली हैं,

से भी ज़्यादा विनम्रता से पेश आती हैं; और मेरी वह घमंडी चचेरी बहन, तुम्हें अपनी जिगरी दोस्त बना लेती है!"

"वाह!" मैंने उसकी हैरानी देखकर बहुत आनंदित होते हुए सहमति जताई। "मैं आखिर कौन हूँ? शायद कोई भेस बदला हुआ व्यक्ति। अफसोस, मैं उस किरदार जैसा दिखता नहीं हूँ।"

"मुझे आश्चर्य है कि आप इन सब बातों से इतने खुश क्यों नहीं हैं," उसने आगे कहा; "आप इसे अजीब तरह से शांत भाव से लेते हैं। अगर आप वाकई उतने ही साधारण हैं जितना मैंने कभी सोचा था, तो आप वाकई बहुत समझदार हैं।"

"वही मामूली इंसान जिसे तुम कभी समझती थी!" मैंने दोहराया, और मेरा चेहरा थोड़ा लाल हो गया; लेकिन मैं गुस्सा नहीं हुई: एक स्कूली छात्रा द्वारा 'मामूली इंसान' और 'खास इंसान' जैसे शब्दों का भद्दा इस्तेमाल क्या मायने रखता था? इसलिए मैंने बस इतना कहा कि मुझे तो बस शिष्टाचार मिला था; और पूछा, "उसने इस शिष्टाचार में ऐसा क्या देखा कि सुनने वाले को इतना गुस्सा आ गया?"

"कुछ चीजों को देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक है," उसने जोर देकर कहा।

"अपनी ही बनाई अद्भुत चीजों पर आश्चर्यचकित होते हुए। क्या आप आखिरकार तैयार हैं?"

"हां; मुझे आपका हाथ पकड़ने दीजिए।"

मैं ऐसा नहीं करना चाहूंगा: हम कंधे से कंधा मिलाकर चलेंगे।

जब वह मेरा हाथ पकड़ती थी, तो वह हमेशा अपना पूरा वजन मुझ पर डाल देती थी; और चूंकि मैं न तो सज्जन था और न ही उसका प्रेमी, इसलिए मुझे यह पसंद नहीं था।

"फिर वही बात!" वह चिल्लाई। "मैंने सोचा था कि आपका हाथ पकड़ने की पेशकश करके, मैं आपके पहनावे और समग्र रूप-रंग की प्रशंसा कर रही थी: मेरा मतलब एक तारीफ करना था।"

"क्या सच में? आपका मतलब संक्षेप में यह कहना था कि आपको मेरे साथ सड़क पर देखे जाने में कोई शर्म नहीं है? कि अगर श्रीमती चोलमोंडली किसी खिड़की पर अपने पालतू कुत्ते को सहला रही हों, या कर्नल डी हमाल किसी बालकनी में अपने दांत साफ कर रहे हों, और गलती से हमारी एक झलक देख लें, तो आपको अपने साथी के लिए शर्मिंदगी महसूस नहीं होगी?"

"हाँ," उसने अपनी उस सीधी-सादी बात से कहा, जो उसकी सबसे बड़ी खूबी थी - जो उसके झूठ को भी एक ईमानदार सादगी दे देती थी - जो संक्षेप में, उसके चरित्र का एकमात्र रक्षक तत्व थी, जो अन्यथा झूठ को छुपाने के लिए नहीं बना था।

मैंने इस "हाँ" पर टिप्पणी करने का दायित्व अपने चेहरे पर डाल दिया; या यूँ कहें कि मेरे निचले होंठ ने स्वेच्छा से मेरी जीभ से पहले ही प्रतिक्रिया दे दी; बेशक, मैंने उसे जो नज़र दी, उसमें श्रद्धा और गंभीरता की भावनाएँ व्यक्त नहीं हुईं।

“घमंडी, उपहास करने वाली प्राणी!” वह बोलती रही, जब हम एक बड़े चौक को पार करके शांत, मनमोहक पार्क में दाखिल हुए, जो रू क्रेसी जाने का हमारा सबसे नज़दीकी रास्ता था। “इस दुनिया में तुम्हारे जैसा कोई भी तुर्क मेरे लिए इतना बुरा नहीं रहा!”

"तुमने खुद ही मुसीबत मोल ली है: मुझे अकेला छोड़ दो: चुप रहने की समझ रखो: मैं तुम्हें अकेला छोड़ दूंगा।"

"जैसे कि कोई तुम्हें अकेला छोड़ सकता है, जब तुम इतने विचित्र और इतने रहस्यमय हो!"

"यह रहस्य और विचित्रता पूरी तरह से आपके अपने दिमाग की उपज है - कीड़े - इससे ज्यादा कुछ नहीं, कृपया इन्हें मेरी नजरों से दूर रखें।"

"लेकिन क्या तुम कोई हो भी?" उसने ज़िद करते हुए, मेरी इच्छा के विरुद्ध अपना हाथ मेरी बांह के नीचे डाल दिया; और वह बांह घुसपैठिए को बाहर रखने के लिए मेरे बगल से असभ्य रूप से चिपक गई।

“हां,” मैंने कहा, “मैं एक उभरती हुई शख्सियत हूं: कभी एक बूढ़ी औरत की सहायिका, फिर एक नर्सरी-गवर्नेस, और अब एक स्कूल-शिक्षिका।”

“बताइए—बताइए आप कौन हैं? मैं इसे दोहराऊंगी नहीं,” उसने आग्रह किया, गुमनामी के अपने इस बुद्धिमानी भरे विचार पर हास्यास्पद दृढ़ता से अड़ी रही; और उसने उस बांह को कसकर पकड़ लिया जिस पर अब उसका पूरा अधिकार था, और तब तक फुसलाती और जादू करती रही जब तक कि मुझे पार्क में रुककर हंसना नहीं पड़ा। हमारी पूरी सैर के दौरान उसने इस विषय पर तरह-तरह के मनगढ़ंत बयान दिए; अपनी हठधर्मी विश्वासशीलता, या अविश्वासशीलता से, यह साबित करते हुए कि वह यह समझ नहीं पा रही थी कि जन्म या धन से समर्थित न होने वाला, नाम या संबंध की किसी चेतना से समर्थित न होने वाला कोई भी व्यक्ति उचित ईमानदारी कैसे

बनाए रख सकता है। जहाँ तक मेरी बात है, मेरे मानसिक सुकून के लिए इतना ही काफी था कि मैं उन जगहों पर जाना जाता था जहाँ जाना जाना आवश्यक था; बाकी बातें मेरे लिए सहज थीं: वंश, सामाजिक स्थिति और गूढ़ बौद्धिक ज्ञान, मेरे हितों और विचारों में लगभग समान स्थान रखते थे; वे मेरे तीसरे दर्जे के किराएदार थे—जिन्हें केवल छोटा बैठक कक्ष और छोटा पिछला शयनकक्ष ही दिया जा सकता था: भले ही भोजन कक्ष और बैठक कक्ष खाली रहते थे, मैंने उन्हें कभी नहीं बताया, क्योंकि मुझे लगता था कि उनके हालात के लिए छोटे कमरे ज़्यादा उपयुक्त थे। मैंने जल्द ही जान लिया कि दुनिया की सोच अलग थी: और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि दुनिया का नज़रिया बिल्कुल सही है, फिर भी मेरा मानना है कि मेरा नज़रिया भी पूरी तरह गलत नहीं है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके लिए सामाजिक स्थिति में गिरावट नैतिक रूप से अपमानजनक होती है, जिनके लिए सामाजिक संबंधों का टूटना आत्मसम्मान की हानि के समान होता है: क्या ऐसे लोगों के लिए उस पद और संगति को सर्वोच्च महत्व देना उचित नहीं है जो उन्हें अपमान से बचाती है? यदि कोई व्यक्ति यह महसूस करता है कि यदि यह सर्वविदित हो जाए कि उसके पूर्वज साधारण थे, सज्जन नहीं, गरीब थे, अमीर नहीं, मजदूर थे, पूंजीपति नहीं, तो वह अपनी ही दृष्टि में तिरस्कारयोग्य हो जाएगा, तो क्या इन घातक तथ्यों को छुपाने के लिए उसे कठोर रूप से दोषी ठहराना उचित होगा— क्या उस जोखिम से डरने, कांपने और भयभीत होने के लिए जो इस खुलासे का खतरा पैदा करता है? जैसे-जैसे हमारा जीवन लंबा होता जाता है, हमारा अनुभव व्यापक होता जाता है; हम अपने पड़ोसी के आचरण का न्याय करने और दुनिया की बुद्धिमत्ता पर सवाल उठाने से कम इच्छुक होते जाते हैं: जहाँ कहीं भी छोटे-छोटे सुरक्षा कवच पाए जाते हैं, चाहे वह किसी संशयवादी के सद्गुणों के इर्द-गिर्द हों या किसी दुनियादार व्यक्ति की प्रतिष्ठा के, वहाँ निश्चित रूप से उनकी आवश्यकता होती है।

हम होटल क्रेसी पहुँचे; पॉलिना तैयार थी; श्रीमती ब्रेटन उसके साथ थीं; और उनके तथा एम. डी बासोम्पियर के साथ, हमें शीघ्र ही सभा स्थल पर ले जाया गया और ट्रिब्यून से सुविधाजनक दूरी पर अच्छी सीटों पर बैठाया गया। एथेनी के युवा हमारे सामने पंक्तिबद्ध थे, नगर पालिका और उनके बुर्जमास्त्री सम्मान के स्थानों पर थे, युवा राजकुमार अपने शिक्षकों के साथ एक प्रमुख स्थान पर थे, और भवन का

अधिकांश भाग शहर के अभिजात वर्ग और प्रमुख नागरिकों से भरा हुआ था।

जिस प्रोफेसर द्वारा यह "भाषण" दिया जाना था, उसकी पहचान के बारे में मुझे अभी तक कोई चिंता या संदेह नहीं था। मुझे बस एक अस्पष्ट सी उम्मीद थी कि कोई विद्वान खड़ा होकर एक औपचारिक भाषण देगा, जो एथेंसवासियों के लिए आधा हठधर्मिता और आधा राजकुमारों के लिए चापलूसी होगा।

जब हम अंदर दाखिल हुए तो ट्रिब्यून अभी खाली था, लेकिन दस मिनट बाद ही वह भर गया; अचानक, एक पल में, लाल रंग की मेज के ऊपर एक सिर, छाती और भुजाएँ उभर आईं। मैं इस सिर को पहचानती थी: इसका रंग, आकार, हावभाव, अभिव्यक्ति, ये सब मुझे और मिस फैंसहावे दोनों को परिचित थे; खोपड़ी का कालापन और सघनता, माथे की चौड़ाई और पीलापन, आँखों की नीली चमक और तेज, ये सभी विवरण स्मृति में इतने गहरे बसे हुए थे, और कई विचित्र यादों से इतने जुड़े हुए थे कि मानो इनके अचानक प्रकट होने से मन में हंसी का उबाल आ गया हो। सच कहूँ तो, मैं भी खूब हंसी; लेकिन फिर मैंने अपना सिर झुका लिया, और अपने रूमाल और नीचे किए हुए घूंघट को ही अपनी हंसी का एकमात्र साथी बना लिया।

मुझे लगता है कि एम. पॉल को देखकर मुझे खुशी हुई; मुझे लगता है कि उन्हें वहाँ देखना सुखद था, उग्र और स्पष्टवादी, गंभीर और निष्कपट, चिड़चिड़ा और निडर, जैसे कक्षा में वे अपने सिंहासन पर राज करते हैं। उनकी उपस्थिति मेरे लिए एक आश्चर्य की बात थी: मैंने उनसे मिलने की उम्मीद बिल्कुल नहीं की थी, हालाँकि मुझे पता था कि वे कॉलेज में साहित्य के प्रोफेसर हैं। उस ट्रिब्यून में उनके साथ, मुझे यकीन था कि न तो औपचारिकता और न ही चापलूसी हमारा विनाश करेगी; लेकिन जो कुछ हमें मिला, जो कुछ अचानक, तेजी से, लगातार हमारे सिर पर उंडेला गया - मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं इसके लिए तैयार नहीं था।

उन्होंने राजकुमारों, रईसों, मजिस्ट्रेटों और नागरिकों से उसी सहजता, लगभग उसी तीखे, क्रोधी और गंभीर अंदाज़ में बात की, जिस तरह वे रू फॉसेट के तीनों वर्गों को संबोधित किया करते थे। उन्होंने कॉलेज के छात्रों को स्कूली बच्चों के रूप में नहीं, बल्कि भावी नागरिकों और उभरते देशभक्तों के रूप में संबोधित किया। यूरोप पर आने वाले समय की भविष्यवाणी अभी तक नहीं की गई थी, और एम. इमैनुएल की भावना मुझे बिल्कुल नई लगी। किसने सोचा होगा कि लाबासेकोर की समतल और उपजाऊ मिट्टी ऐसी राजनीतिक मान्यताओं और राष्ट्रीय भावनाओं को जन्म दे सकती

है, जिन्हें अब इतनी दृढ़ता से व्यक्त किया जा रहा था? उनके विचारों के स्वरूप के बारे में मुझे यहाँ कोई विशेष जानकारी देने की आवश्यकता नहीं है; फिर भी मुझे यह कहने की अनुमति दी जा सकती है कि मुझे लगा कि वह छोटे कद के व्यक्ति अपनी बातों में गंभीर से अधिक सही नहीं थे: अपने पूरे जोश के साथ वे कठोर और संवेदनशील थे; उन्होंने काल्पनिक सिद्धांतों को कुचल दिया; उन्होंने बेतुके सपनों को तिरस्कार के साथ खारिज कर दिया; लेकिन जब उन्होंने अत्याचार का सामना किया, तो उनकी आँखों में एक अद्भुत चमक आ गई; और जब उन्होंने अन्याय की बात की, तो उनकी आवाज़ में कोई अस्पष्टता नहीं थी, बल्कि मुझे वह पार्क से गोधूलि बेला में बजने वाले तुरही की याद दिलाती थी।

मुझे नहीं लगता कि उनके श्रोता आम तौर पर उनकी बातों को पूरी तरह से समझ पाते थे; लेकिन कॉलेज के कुछ युवाओं में जोश भर आया जब उन्होंने बड़ी कुशलता से उन्हें बताया कि देश और यूरोप के भविष्य के लिए उन्हें क्या मार्ग और प्रयास अपनाने चाहिए। उनके भाषण के समापन पर उन्होंने जोरदार तालियों से उनका स्वागत किया: अपनी पूरी जोशीली शैली के बावजूद, वे उनके पसंदीदा प्रोफेसर थे।

जब हमारा दल हॉल से निकला, तो वह प्रवेश द्वार पर खड़ा था; उसने मुझे देखा और पहचान लिया, और अपनी टोपी उठाई; जाते हुए उसने हाथ बढ़ाया और कहा, "क्या कहते हो तुम?" - यह सवाल उसके स्वभाव का ही था, और उसकी इस जीत के क्षण में भी मुझे उसकी उस जिज्ञासु बेचैनी, उस आत्म-नियंत्रण की कमी की याद दिला रहा था, जिसे मैं वांछनीय मानता था, और जो उसकी कमियों में से एक थी। उसे उस समय यह पूछने की परवाह नहीं करनी चाहिए थी कि मैं क्या सोचता हूँ, या कोई और क्या सोचता है, लेकिन उसने परवाह की, और वह इतना सहज था कि छिपा नहीं सका, इतना आवेगी था कि अपनी इच्छा को दबा नहीं सका। खैर! अगर मैं उसकी अति-उत्साह की निंदा करूँ, तो मुझे उसकी भोलापन पसंद आया। मैं उसकी प्रशंसा करना चाहता था: मेरे दिल में प्रशंसा की भरमार थी; लेकिन, अफसोस! मेरे होठों पर शब्द नहीं थे। सही समय पर शब्द किसके पास होते हैं? मैंने कुछ अटपटे भाव व्यक्त किए; लेकिन वास्तव में मुझे खुशी हुई जब अन्य लोगों ने भरपूर बधाई देकर मेरी कमी को पूरा कर दिया।

एक सज्जन ने उनका परिचय एम. डी. बासोम्पियर से कराया; और काउंट, जो स्वयं भी अत्यंत प्रसन्न हुए थे, ने उन्हें अपने मित्रों (जिनमें अधिकतर एम. इमानुएल

के मित्र थे) के साथ होटल क्रेसी में भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने भोजन करने से इनकार कर दिया, क्योंकि वे धनी लोगों के प्रस्तावों को स्वीकार करने में हमेशा कुछ संकोची स्वभाव के थे: उनके दृढ़ आत्मविश्वास में एक दृढ़ स्वतंत्रता झलकती थी - यह स्पष्ट नहीं थी, लेकिन उनके चरित्र को जानने पर यह सुखद रूप से प्रकट होती थी; हालांकि, उन्होंने शाम के दौरान अपने मित्र, एम. ए. - - , जो एक फ्रांसीसी शिक्षाविद थे, के साथ भोजन करने का वादा किया।

उस दिन रात के खाने पर, जिनेवरा और पॉलिना दोनों ही अपने-अपने तरीके से बेहद खूबसूरत लग रही थीं; शायद जिनेवरा भौतिक आकर्षण में अधिक श्रेष्ठ थीं, लेकिन पॉलिना सूक्ष्म और आध्यात्मिक आकर्षणों में सबसे आगे थीं: उनकी आंखों की चमक और वाक्पटुता, उनके हाव-भाव की शालीनता और भावों की मनमोहक विविधता। जिनेवरा की गहरे लाल रंग की पोशाक उनके हल्के घुंघराले बालों को और भी निखार रही थी और उनके गुलाब जैसे रंग से मेल खा रही थी। पॉलिना का पहनावा - फैशन के हिसाब से एकदम सधा हुआ, हालांकि त्रुटिहीन रूप से साफ-सुथरा, लेकिन बनावट में साफ और सफेद - उनकी कोमल रंगत, उनके चेहरे की सौम्य जीवंतता, उनकी आंखों की कोमल गहराई, उनके बालों की भूरी छाया और भरपूर प्रवाह को निहार रहा था - उनके बाल उनकी सैक्सन चचेरी बहन के बालों से गहरे थे, साथ ही उनकी भौहें, पलकें, उनकी भरी हुई पुतलियां और बड़ी गतिशील पुतलियां भी। प्रकृति ने मिस फैंशॉ के मामले में इन सभी विवरणों को बड़ी ही बारीकी से और लापरवाही से उकेरा था; और मिस डी बासोम्पियर के काम में, उन्हें उच्च और नाजुक पूर्णता तक पहुंचाया गया।

पॉलिना विद्वानों से प्रभावित तो थी, लेकिन इतनी भी नहीं कि चुप हो जाए: वह विनम्रता और संकोच से बात करती थी; बिना प्रयास के नहीं, बल्कि इतनी सच्ची मधुरता, इतनी सूक्ष्म और मर्मस्पर्शी समझ के साथ कि उसके पिता कई बार अपनी बातचीत रोककर उसकी बातें सुनने लगते और गर्व भरी प्रसन्नता से उसे निहारते। एक शिष्ट फ्रांसीसी, एम. ज़ेड — — , जो बहुत विद्वान थे, लेकिन काफी सभ्य स्वभाव के थे, उन्होंने ही पॉलिना को बातचीत में शामिल किया था। मैं उसकी फ्रांसीसी भाषा से मुग्ध हो गया; वह त्रुटिहीन थी— संरचना सही, मुहावरे सटीक, उच्चारण शुद्ध; जिनेवरा, जिसने अपना आधा जीवन महाद्वीप पर बिताया था, उसकी फ्रांसीसी भाषा इतनी उत्कृष्ट नहीं हो सकती थी—ऐसा नहीं था कि मिस फैंसहावे के पास कभी शब्दों

की कमी रही हो, लेकिन वास्तविक सटीकता और शुद्धता न तो उसके पास थी, और न ही वह आने वाले वर्षों में इसे प्राप्त कर सकती थी। यहाँ भी एम. डी बासोम्पियर संतुष्ट थे; क्योंकि भाषा के मामले में वे आलोचनात्मक थे।

वहाँ एक और श्रोता और पर्यवेक्षक मौजूद थे; जो अपने पेशे की किसी मजबूरी के कारण भोजन के लिए देर से आए थे। मेज पर बैठते ही डॉ. ब्रेटन ने दोनों महिलाओं को चुपचाप देखा; और यह सतर्क अवलोकन बार-बार दोहराया गया। उनके आने से मिस फैंशॉ में हलचल मच गई, जो अब तक सुस्त लग रही थीं: अब वह मुस्कुराने लगीं और आत्मसंतुष्ट हो गईं, बातें करने लगीं - हालाँकि उनकी बातें शायद ही कभी प्रासंगिक होती थीं - या यूँ कहें कि उनका उद्देश्य उस अवसर के स्तर से कुछ हद तक अपमानजनक रूप से नीचे था। उनकी हल्की-फुल्की, बेतरतीब बकवास शायद कभी ग्राहम को अच्छी लगती थी; शायद अब भी लगती हो: शायद यह केवल उनका वहम था जिसने यह विचार उत्पन्न किया कि जहाँ उनकी आँखें भरपेट भोजन से भरी थीं और कान तृप्त थे, वहीं उनकी रुचि, उनका तीक्ष्ण उत्साह, उनकी जीवंत बुद्धि को समान रूप से ध्यान नहीं दिया गया था। यह निश्चित है कि, यद्यपि उन पर ध्यान देने की मांग बहुत अधिक और चुनौतीपूर्ण प्रतीत होती थी, फिर भी उन्होंने विनम्रतापूर्वक वह सब कुछ प्रदान किया जो अपेक्षित था: उनके व्यवहार में न तो कोई क्रोध था और न ही कोई रूखापन। जिनेवरा उनकी पड़ोसी थीं, और भोजन के दौरान उन्होंने लगभग पूरी तरह से उन्हीं पर ध्यान केंद्रित किया। वह संतुष्ट प्रतीत हुईं और बहुत प्रसन्नता के साथ ड्राइंग रूम में चली गईं।

फिर भी, जैसे ही हम उस शरणस्थल पर पहुँचे, वह फिर से उदास और सुस्त हो गई: सोफे पर लेटते हुए, उसने प्रवचन और भोजन दोनों को मूर्खतापूर्ण बताया और अपनी चचेरी बहन से पूछा कि वह अपने पिता द्वारा बोले जा रहे ऐसे नीरस और उबाऊ भाषणों को कैसे सुन सकती है। जैसे ही सज्जनों के हिलने-डुलने की आवाज़ आई, उसका रोना-धोना बंद हो गया: वह उठ खड़ी हुई, पियानो की ओर दौड़ी और पूरे जोश से उस पर झपट पड़ी। डॉ. ब्रेटन, जो सबसे पहले आने वालों में से एक थे, अंदर आए और उसके बगल में बैठ गए। मुझे लगा कि वह ज़्यादा देर तक वहाँ नहीं टिकेंगे: चूल्हे के पास एक जगह थी जहाँ मुझे उम्मीद थी कि वह आकर्षित होंगे: लेकिन उन्होंने उस जगह को बस एक नज़र से देखा; जब वह देख रहे थे, तो दूसरे लोग भी वहाँ आ गए। पॉलिना की शालीनता और बुद्धिमत्ता ने इन विचारशील फ्रांसीसियों को

मोहित कर लिया: उसकी सुंदरता की नज़ाकत, उसके व्यवहार की सौम्य विनम्रता, उसकी अपरिपक्व, लेकिन वास्तविक और जन्मजात चतुराई ने उनके राष्ट्रीय स्वाद को भाया; वे उसके चारों ओर जमा हो गए, विज्ञान की बातें करने के लिए नहीं; जिससे वह गूंगी हो सकती थी, लेकिन साहित्य, कला और वास्तविक जीवन के कई विषयों पर चर्चा करने से यह स्पष्ट हो गया कि उसने उन पर पढ़ा और मनन किया था। मैंने सुना। मुझे यकीन है कि हालांकि ग्राहम दूर खड़ा था, वह भी सुन रहा था: उसकी सुनने और देखने की क्षमता बहुत ही तेज, सूक्ष्म और पारखी थी। मुझे पता था कि वह बातचीत को समझ रहा था; मुझे लगा कि जिस शैली में बातचीत चल रही थी, वह उसे बहुत पसंद आ रही थी - लगभग असहनीय रूप से प्रसन्न कर रही थी।

पॉलिना में भावनाओं और चरित्र दोनों की ऐसी प्रबलता थी, जितनी अधिकांश लोगों की सोच से कहीं अधिक थी—स्वयं ग्राहम की कल्पना से भी कहीं अधिक—जितना वह उन लोगों के सामने कभी नहीं दिखाती थी जो इसे देखना नहीं चाहते थे। सच कहूँ तो, पाठक, उत्कृष्ट सौंदर्य, परिपूर्ण अनुग्रह, विश्वसनीय परिष्कार, बिना उतनी ही उत्कृष्ट, पूर्ण और विश्वसनीय शक्ति के संभव नहीं है। जैसे जड़विहीन और रसहीन वृक्ष पर अच्छे फल और फूल की तलाश करना उतना ही मुश्किल है, जितना कि कमजोर और शिथिल स्वभाव में स्थायी आकर्षण की। कुछ समय के लिए, सुंदरता का खिलता हुआ रूप कमजोरी के चारों ओर पनप सकता है; लेकिन यह आंधी का सामना नहीं कर सकता: यह जल्द ही मुरझा जाता है, यहाँ तक कि शांत धूप में भी। ग्राहम चौंक जाते यदि किसी भी उत्साही आत्मा ने उस कोमल स्वभाव को धारण करने वाली शक्ति और सहनशक्ति के बारे में फुसफुसाया होता; लेकिन मैं, जो उसे बचपन से जानता था, जानता था या अनुमान लगाता था कि उसके अनुग्रह की जड़ें वास्तविकता की दृढ़ भूमि में कितनी मजबूत हैं।

डॉ. ब्रेटन सुन रहे थे और जादुई घेरे में मौका मिलने का इंतज़ार कर रहे थे। उनकी नज़रें बेचैनी से बीच-बीच में कमरे में घूमती रहीं और संयोग से मुझ पर पड़ीं, जहाँ मैं अपनी धर्ममाता और एम. डी. बासोम्पियर से कुछ ही दूरी पर एक शांत कोने में बैठी थी। वे दोनों हमेशा की तरह, श्री होम के शब्दों में कहें तो, "दो हाथों से चटकने" में मशगूल थीं: जिसे काउंट एक तरह की आमने-सामने की बातचीत समझते। ग्राहम ने मुझे पहचान लिया और मुस्कुराए, कमरे के उस पार आए, मुझसे पूछा कि मैं कैसी हूँ, और कहा कि मैं पीली लग रही हूँ। मुझे भी अपने मन में एक मुस्कान आई: डॉ. जॉन

ने मुझसे लगभग तीन महीने से बात नहीं की थी - इस अंतराल का उन्हें ज़रा भी एहसास नहीं था। वे बैठ गए और चुप हो गए। उनकी इच्छा बातचीत करने से ज़्यादा देखने की थी। जिनेवरा और पॉलिना अब उनके सामने थीं: वे उन्हें जी भर कर देख सकते थे: उन्होंने दोनों के रूप निहार लिए - दोनों के चेहरों का अध्ययन किया।

रात के खाने के बाद से कई नए मेहमान, महिलाएँ और पुरुष दोनों, कमरे में आ चुके थे और शाम की बातचीत में शामिल हो गए थे; और पुरुषों के बीच, मैं यह भी बताना चाहूँगी कि मैंने पहले ही एक गंभीर, सांवले, प्रोफेसर जैसे व्यक्ति को एक भीतरी कमरे में अलग-थलग खड़े देखा था, जो केवल एक झलक में ही दिखाई दे रहा था। एम. इमानुएल उपस्थित कई पुरुषों को जानते थे, लेकिन मुझे लगता है कि मेरे अलावा अधिकांश महिलाओं के लिए वे अजनबी थे; चूल्हे की ओर देखते हुए, उन्होंने मुझे देखा और स्वाभाविक रूप से मेरे पास आने के लिए आगे बढ़े; हालाँकि, डॉ. ब्रेटन को भी देखकर, उन्होंने अपना इरादा बदल दिया और रुक गए। अगर बात यहीं खत्म हो जाती, तो झगड़े का कोई कारण नहीं होता; लेकिन रुकने से संतुष्ट न होकर, उन्होंने अपनी भौहें सिकोड़ीं, अपने होंठ बाहर निकाले और इतने बदसूरत दिखे कि मैंने उस अप्रिय दृश्य से अपनी नज़रें हटा लीं। एम. जोसेफ इमानुएल अपने गंभीर भाई के साथ आ चुके थे और इस समय पियानो पर जिनेवरा की जगह ले रहे थे। उसकी स्कूली बच्ची वाली धुन के बाद क्या गजब का कलात्मक स्पर्श देखने को मिला! उस वाद्य यंत्र ने कितने भव्य और कृतज्ञतापूर्ण स्वर में सच्चे कलाकार के हुनर को स्वीकार किया!

डॉ. ब्रेटन ने मौन भंग करते हुए और मुस्कुराते हुए कहा, "लूसी," जैसे ही जिनेवरा उनके सामने से गुजरी, गुजरते हुए एक नजर डालते हुए, "मिस फैंसहावे निश्चित रूप से एक बेहतरीन लड़की हैं।"

मैंने निश्चित रूप से सहमति दी।

उन्होंने आगे पूछा, "क्या इस कमरे में कोई और भी उतना ही सुंदर है?"

मुझे लगता है कि उनके जैसा सुंदर दूसरा कोई नहीं है।

“मैं तुमसे सहमत हूँ, लूसी: हम दोनों की राय, पसंद अक्सर एक जैसी होती है।”

मुझे लगता है; या कम से कम मेरे अनुमान के अनुसार।

“क्या हम ऐसा करते हैं?” मैंने कुछ संदेह के साथ कहा।

"मेरा मानना है कि अगर तुम लड़की की जगह लड़का होतीं, लूसी - मेरी माँ की

धर्मपुत्री की जगह धर्मपुत्र होतीं, तो हम अच्छे दोस्त होते: हमारे विचार एक-दूसरे में विलीन हो जाते।"

उनका हावभाव मज़ाकिया था: उनकी आँखों में हल्की, थोड़ी स्नेह भरी, थोड़ी व्यंग्यात्मक चमक थी। आह, ग्राहम! मैंने लूसी स्नो के बारे में आपके विचार और आकलन में एक से अधिक क्षण बिताए हैं: क्या आपका विचार हमेशा दयालु या न्यायसंगत था? यदि लूसी स्वभाव से वैसी ही होतीं, लेकिन धन और प्रतिष्ठा के अतिरिक्त लाभ प्राप्त कर लेतीं, तो क्या उनके प्रति आपका व्यवहार, आपका सम्मान, वैसा ही होता जैसा वास्तव में था? फिर भी इन प्रश्नों से मैं गंभीरता से दोषारोपण नहीं करना चाहता। नहीं; आप मुझे कभी-कभी दुखी और परेशान कर सकते हैं; लेकिन मेरा स्वभाव जल्दी उदास और आसानी से विचलित होने वाला है - जैसे सूरज के सामने बादल छा जाए तो मैं उदास हो जाता हूँ। शायद कठोर न्याय की कसौटी पर मैं आपसे अधिक दोषी ठहराया जाऊँ।

फिर, अपने दिल में उठ रहे उस असहनीय दर्द को दबाने की कोशिश करते हुए, जो मुझे यह जानकर हुआ कि जहाँ ग्राहम दूसरों के प्रति सबसे गंभीर और निष्ठापूर्ण, सबसे मर्दाना रुचि दिखा सकता था, वहीं लूसी, जो मेरी पुरानी दोस्त थी, के लिए उसके पास केवल हल्की-फुल्की हंसी-मजाक ही थी, मैंने शांत भाव से पूछा, — “किन बिंदुओं पर हम इतने सहमत हैं?”

हम सभी में अवलोकन करने की क्षमता होती है। शायद आप मुझे इस गुण का श्रेय न दें; फिर भी यह क्षमता मुझमें है।

"लेकिन आप रुचियों की बात कर रहे थे: हम एक ही वस्तु को देख सकते हैं, फिर भी उनका मूल्यांकन अलग-अलग तरीके से कर सकते हैं?"

चलिए, इसकी परीक्षा लेते हैं। बेशक, आप मिस फैंसहावे की खूबियों को नमन किए बिना नहीं रह सकते: अब, कमरे में मौजूद अन्य लोगों के बारे में आपका क्या विचार है? — उदाहरण के लिए, मेरी माँ; या वे दोनों सज्जन, श्रीमान ए — — और जेड — — ; या, चलिए मान लेते हैं, वह पीली-सी दिखने वाली महिला, मिस डी बासोम्पियर?

“तुम जानती हो मैं तुम्हारी माँ के बारे में क्या सोचती हूँ। मैंने महोदय के बारे में नहीं सोचा है।”

ए — — और जेड — —।

और दूसरा?

"मुझे लगता है कि वह, जैसा कि आपने कहा, एक पीली-सी दिखने वाली महिला है - निश्चित रूप से अभी पीली पड़ गई है, क्योंकि वह अत्यधिक उत्तेजना से थक गई है।"

"क्या आपको वह बचपन में याद नहीं है?"

मुझे कभी-कभी आश्चर्य होता है कि क्या आप ऐसा करते हैं।

"मैं उसे भूल गया था; लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि परिस्थितियाँ, व्यक्ति, यहाँ तक कि शब्द और नज़रें भी, जो आपकी स्मृति से निकल गई हों, कुछ विशेष परिस्थितियों में, आपके या किसी और के मन के कुछ पहलुओं को पुनर्जीवित कर सकती हैं।"

"यह काफी हद तक संभव है।"

“फिर भी,” उन्होंने आगे कहा, “पुनरुद्धार अपूर्ण है—पुष्टि की आवश्यकता है, यह एक सपने की धुंधली प्रकृति या कल्पना की हवा-हवाई प्रकृति से इतना मिलता-जुलता है कि इसकी पुष्टि के लिए किसी गवाह की गवाही आवश्यक हो जाती है। क्या आप दस साल पहले ब्रेटन में मेहमान नहीं थे, जब श्री होम अपनी छोटी बच्ची को, जिसे हम तब ‘छोटी पॉली’ कहते थे, अपनी माँ के साथ रहने के लिए लाए थे?”

"जब वह आई थी उस रात मैं वहीं था, और जब वह चली गई उस सुबह भी मैं वहीं था।"

“वह बड़ी अजीब बच्ची थी, है ना? मुझे आश्चर्य होता है कि मैंने उसके साथ कैसा व्यवहार किया होगा। क्या उन दिनों मुझे बच्चों से लगाव था? क्या मुझमें कुछ भी शालीनता या दयालुता थी— एक महान, लापरवाह, स्कूली लड़के के रूप में? लेकिन आप मुझे याद तो नहीं करते, है ना?”

“आपने ला टेरेस पर अपनी तस्वीर देखी है। यह बिल्कुल आपके जैसी है। आपके हाव-भाव कल और आज लगभग एक जैसे ही हैं।”

लेकिन, लूसी, यह कैसे संभव है? ऐसी भविष्यवाणी सुनकर मेरी जिज्ञासा और बढ़ जाती है। आज मैं क्या हूँ? दस साल पहले मैं क्या था?

"जो भी आपको प्रसन्न करे, उसके प्रति उदार रहें - किसी भी चीज के प्रति निर्दयी या क्रूर न हों।"

"यहाँ आप गलत हैं; मुझे लगता है कि मैं आपके प्रति लगभग एक क्रूर व्यक्ति की

तरह था, उदाहरण के लिए।"

“एक क्रूर व्यक्ति! नहीं, ग्राहम: मैं कभी भी धैर्यपूर्वक क्रूरता सहन नहीं करता।”

"लेकिन मुझे यह बात याद है: शांत स्वभाव वाली लूसी स्नो को मेरी कृपा का जरा भी अनुभव नहीं हुआ।"

"तुम्हारी क्रूरता का जितना कम हिस्सा हो उतना ही कम।"

"अगर मैं खुद नीरो होता, तो मैं परछाई की तरह निर्दोष प्राणी को भी यातना नहीं दे पाता।"

मैं मुस्कुराई; लेकिन साथ ही मैंने एक आह भी दबा ली। ओह! – काश वो मुझे अकेला छोड़ देता – मेरे बारे में बातें करना बंद कर देता। ये विशेषण – ये गुण मैंने खुद से दूर कर लिए हैं। उसकी "शांत लूसी स्नो", उसकी "निर्दोष परछाई", मैंने उसे वापस लौटा दिए; तिरस्कार से नहीं, बल्कि अत्यधिक थकावट से: उनका व्यवहार सीसे की ठंडक और दबाव जैसा था; उसे मुझ पर ऐसा बोझ नहीं डालना चाहिए। सौभाग्य से, वो जल्द ही दूसरे विषय पर चला गया।

“‘छोटी पॉली’ और मेरे बीच क्या संबंध थे? अगर मेरी यादें मुझे धोखा नहीं दे रही हैं, तो हम दुश्मन नहीं थे—”

“आप बहुत अस्पष्ट बातें कर रहे हैं। क्या आपको लगता है कि छोटी पॉली की याददाश्त अधिक स्पष्ट नहीं है?”

“ओह! अब हम ‘छोटी पॉली’ की बात नहीं करते। ज़रा बताइए, मिस डी बासोम्पियर; और, ज़ाहिर है, इतनी गरिमामयी हस्ती को ब्रेटन के बारे में कुछ याद नहीं होगा। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें देखिए, लूसी; क्या वो स्मृति के पन्ने पर एक शब्द भी पढ़ सकती हैं? क्या ये वही आँखें हैं जिन्हें मैं कभी किताब पढ़ने के लिए निर्देशित करती थी? उसे यह नहीं पता कि मैंने ही उसे थोड़ा-बहुत पढ़ना सिखाया था।”

“रविवार की रात को बाइबल पढ़ना?”

“अब उसका चेहरा शांत, कोमल और काफी सुंदर दिखता है: एक समय था जब वह कितनी चंचल और चिंतित रहती थी! बच्चों की पसंद कितनी अद्भुत होती है — कितना प्यारा! क्या आप विश्वास करेंगे? वह महिला मुझे बहुत पसंद करती थी!”

मैंने संयमित स्वर में कहा, "मुझे लगता है कि वह कुछ हद तक तुम्हें पसंद करती थी।"

“तुम्हें तब की बात याद नहीं है? मैं भूल गया था; लेकिन अब याद आ गया है।

ब्रेटन में जितने भी लोग थे, उनमें से वह मुझे सबसे ज्यादा पसंद करती थी।”

"आपको ऐसा ही लगा था।"

मुझे यह सब अच्छी तरह याद है। काश मैं उसे सब कुछ बता पाती; या यूँ कहूँ कि काश कोई, जैसे कि तुम, पीछे जाकर उसके कान में सब कुछ फुसफुसा देतीं, और मुझे यहाँ बैठे-बैठे यह देखने का आनंद मिलता कि वह उस जानकारी को समझने की कोशिश कर रही है। क्या तुम ऐसा कर सकती हो, लूसी, और मुझे हमेशा के लिए आभारी बना दोगी?

“क्या मैं आपको कभी आभारी बना पाऊँगी?” मैंने कहा। “नहीं, मैं नहीं बना सकती।” और मैंने महसूस किया कि मेरी उंगलियाँ चल रही हैं और मेरे हाथ आपस में जुड़ गए हैं: मुझे भीतरी साहस का भी एहसास हुआ, गर्मजोशी भरा और दृढ़। इस मामले में मैं डॉ. जॉन को खुश करने के मूड में नहीं थी: बिलकुल भी नहीं। अब एक सुखद दृढ़ता के साथ, मुझे उनके मेरे चरित्र और स्वभाव के बारे में पूरी गलतफहमी का एहसास हुआ। वह हमेशा मुझे एक ऐसी भूमिका देना चाहते थे जो मेरी नहीं थी। मेरा स्वभाव और मैं उनके विपरीत थे। उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मैं क्या महसूस कर रही हूँ: उन्होंने मेरी आँखों, चेहरे या हाव-भाव को नहीं पढ़ा; हालाँकि, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि सब कुछ कह रहा था। मेरी ओर प्यार से झुकते हुए, उन्होंने धीरे से कहा, “मुझे संतुष्ट करो, लूसी।”

और मैं संतुष्ट हो जाती, या कम से कम मैं उसे स्पष्ट रूप से समझा देती, और उसे अच्छी तरह सिखा देती कि वह मुझसे फिर कभी किसी प्रेम नाटक में दखलंदाजी करने वाली नायिका की भूमिका की अपेक्षा न करे; तभी, उसकी कोमल, उत्सुकता भरी फुसफुसाहट के बाद, लगभग उसकी विनती भरी, मधुर आवाज़ में — “मुझे संतुष्ट करो, लूसी!” दूसरी तरफ से एक तीखी फुफकार मेरे कान में चुभ गई।

“नन्ही बिल्ली के बच्चे, प्यारी, नखरीली!” अचानक प्रकट हुए अजगर ने कहा; “तुम इतनी उदास, दब्बू, स्वप्निल दिखती हो, पर तुम ऐसी नहीं हो: मैं तुमसे कहता हूँ: जंगली! तुम्हारी आत्मा में ज्वाला है, तुम्हारी आँखों में बिजली है!”

“हाँ; मेरे दिल में आग है, और मुझे वह आग चाहिए ही!” मैंने गुस्से से पलटकर जवाब दिया: लेकिन प्रोफेसर इमानुएल ने अपना अपमान फुफकारा और जा चुके थे।

सबसे बुरी बात यह थी कि डॉ. ब्रेटन, जिनके कान, जैसा कि मैंने कहा है, बहुत तेज और संवेदनशील थे, ने इस संबोधन का हर शब्द सुन लिया; उन्होंने अपना रूमाल

अपने चेहरे पर रख लिया और तब तक हँसते रहे जब तक कि वे काँपने नहीं लगे।

“शाबाश, लूसी,” वह चिल्लाया; “शानदार! नन्ही चुलबुली, नन्ही नन्ही नखरीली! ओह, मुझे अपनी माँ को बताना ही होगा! क्या यह सच है, लूसी, या आधा सच? मुझे लगता है कि यह सच है: तुम्हारा चेहरा मिस फैंसॉव के गाउन के रंग जैसा लाल हो गया है। और सच में, कसम से, अब जब मैं उसे देख रहा हूँ, तो यह वही छोटा आदमी है जिसने कॉन्सर्ट में तुम्हारे साथ इतना बुरा बर्ताव किया था: बिलकुल वही, और इस समय वह अंदर ही अंदर पागल हो रहा है क्योंकि वह मुझे हँसते हुए देख रहा है। ओह! मुझे उसे चिढ़ाना ही होगा।”

और ग्राहम, अपनी शरारती प्रवृत्ति के आगे झुकते हुए, तब तक हंसता, मजाक करता और फुसफुसाता रहा जब तक कि मैं और सहन नहीं कर सका और मेरी आंखों में आंसू आ गए।

अचानक वह गंभीर हो गया: मिस डी बासोम्पियर के पास एक खाली जगह दिखाई दी; उनके चारों ओर का घेरा मानो बिखरने ही वाला था। इस हलचल पर ग्राहम की नज़र तुरंत पड़ी - हँसते हुए भी वह हमेशा चौकन्ना रहता था; वह उठा, हिम्मत जुटाकर कमरे के उस पार गया और मौके का फायदा उठा लिया। डॉ. जॉन, अपने पूरे जीवन में, भाग्य के धनी थे - एक सफल व्यक्ति। और क्यों? क्योंकि उनमें अवसर को पहचानने की दृष्टि थी, सही समय पर कार्रवाई करने की क्षमता थी, और किसी भी काम को पूरा करने का साहस था। किसी भी प्रताड़ना ने उन्हें पीछे नहीं खींचा; किसी भी उत्साह या कमजोरी ने उनके रास्ते में बाधा नहीं डाली। इस समय वह कितने आकर्षक लग रहे थे! जब पॉलिना ने ऊपर देखा जब वह उसके पास पहुँचा, तो उसकी निगाहें तुरंत एक भावुक, फिर भी विनम्र निगाहों से मिल गईं; जब वह उससे बात कर रहा था, तो उसका चेहरा आधा लाल हो गया, आधा चमक उठा। वह उसकी उपस्थिति में साहसी और शर्मीला खड़ा था: शांत और सहज, फिर भी अपने उद्देश्य में दृढ़ और अपने उत्साह में समर्पित। मैंने यह सब एक ही नज़र में समझ लिया। मैंने अपना अवलोकन ज़्यादा देर तक नहीं किया—समय कम पड़ गया, या यूँ कहूँ कि रात ढल चुकी थी; जिनेवरा और मुझे तो अब तक रू फॉसेट में पहुँच जाना चाहिए था। मैं उठा और अपनी धर्ममाता और एम. डी बासोम्पियर को शुभ रात्रि कहा।

मुझे नहीं पता कि प्रोफ़ेसर इमानुएल ने डॉ. ब्रेटन की हंसी-मज़ाक को मेरी अनिच्छा से स्वीकार करने पर ध्यान दिया था या नहीं, या उन्होंने यह महसूस किया था कि मैं

दुखी थी, और कुल मिलाकर, चंचल और मौज-मस्ती पसंद करने वाली मैडमोजेल लूसी के लिए वह शाम आनंदमय नहीं रही थी; लेकिन, जैसे ही मैं कमरे से बाहर निकल रही थी, वे मेरे पास आए और पूछा कि क्या मेरे साथ रू फॉसेट तक जाने के लिए कोई है। प्रोफ़ेसर अब विनम्रता से, और यहाँ तक कि आदरपूर्वक भी बोले, और वे क्षमा याचना करते और पश्चाताप करते हुए दिखाई दिए; लेकिन मैं उनकी विनम्रता को एक शब्द में भी नहीं पहचान सकी, न ही उनके पश्चाताप को जल्दबाजी में अनदेखा कर सकी। इससे पहले मैंने कभी भी उनकी रूखेपन पर नाराज़गी नहीं जताई थी, न ही उनकी उग्रता के सामने स्तब्ध हुई थी; हालाँकि, आज रात उन्होंने जो कहा, वह मुझे अनुचित लगा: इस घटना के प्रति मेरी घोर असहमति, चाहे थोड़ी ही सही, स्पष्ट होनी चाहिए। मैंने बस इतना कहा: — “मेरे साथ कोई है।”

यह बात सच थी, क्योंकि जिनेवरा और मुझे गाड़ी में घर भेजा जाना था; और मैंने उनके पास से उसी झुककर प्रणाम किया, जिस तरह कक्षा में उनके सामने से गुजरने वाले छात्र उन्हें नमस्कार किया करते थे।

अपनी शॉल लेने के बाद मैं प्रवेश कक्ष में लौट आया। श्री इमानुएल वहाँ प्रतीक्षा करते हुए खड़े थे। उन्होंने देखा कि रात सुहावनी थी।

“क्या ऐसा है?” मैंने ऐसे लहजे और अंदाज़ में कहा जिसकी बेमिसाल सावधानी और रूखेपन की मैं तारीफ़ किए बिना नहीं रह सकी। ऐसा बहुत कम होता था कि मैं दुख या चोट लगने पर संयमित और शांत रहने के अपने संकल्प को सही ढंग से निभा पाती थी, इसलिए इस एक सफल प्रयास पर मुझे लगभग गर्व महसूस हुआ। वह “क्या ऐसा है?” बिल्कुल दूसरे लोगों के अंदाज़ जैसा लग रहा था। मैंने ऐसे सैकड़ों छोटे-छोटे, कटे-फटे, रूखे वाक्य दर्जनों आत्म-नियंत्रित, आत्मनिर्भर महिलाओं के सिकुड़े हुए होंठों से सुने थे। मुझे पता था कि एम. पॉल इस तरह के लंबे संवाद को बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे; लेकिन वे निश्चित रूप से इस तरह के संक्षिप्त और रूखेपन का एक नमूना पाने के हकदार थे। मुझे लगता है कि उन्होंने खुद भी ऐसा ही सोचा होगा, क्योंकि उन्होंने चुपचाप इसे स्वीकार कर लिया। उन्होंने मेरी शॉल को देखा और उसके हल्केपन पर आपत्ति जताई। मैंने दृढ़ता से उनसे कहा कि यह उतनी ही भारी है जितनी मैं चाहती हूँ। अलग-थलग होकर और एकांत में खड़े होकर, मैं सीढ़ियों की रेलिंग पर झुक गया, अपने शॉल को अपने चारों ओर लपेट लिया और दीवार पर छाई एक नीरस धार्मिक पेंटिंग पर अपनी निगाहें टिका दीं।

जिनेवरा को आने में देर हो गई: उसका आना उबाऊ लग रहा था। एम. पॉल अभी भी वहीं थे; मेरे कान उनके होठों से गुस्से भरी आवाज़ की उम्मीद कर रहे थे। वे पास आए। "अब एक और फुफकार!" मैंने सोचा: अगर यह हरकत इतनी असभ्य न होती तो मैं डर के मारे अपने कान उंगलियों से बंद कर लेता। कुछ भी हमारी उम्मीद के मुताबिक नहीं होता: एक हल्की सी आवाज़ या बड़बड़ाहट सुनो; तभी तुम्हें शिकार या दर्द की चीख सुनाई देगी। एक तीखी चीख, एक गुस्से भरी धमकी की प्रतीक्षा करो, और एक सौहार्दपूर्ण अभिवादन, एक धीमी, दयालु फुसफुसाहट का स्वागत करो। एम. पॉल ने धीरे से कहा: — "दोस्तों," उन्होंने कहा, "एक शब्द पर झगड़ा मत करो। मुझे बताओ, क्या यह मैं था या वह "वह महान अंग्रेज" (जिस तरह से उन्होंने डॉ. ब्रेटन को अपवित्र रूप से संबोधित किया), "जिसने तुम्हारी आँखों को इतना नम और तुम्हारे गालों को इतना गर्म कर दिया है जितना कि वे अभी हैं?"

"मुझे इस बात का कोई आभास नहीं है, महोदय, न ही किसी और ने ऐसी भावनाएँ जगाई हैं जैसा कि आप संकेत दे रहे हैं," यह मेरा उत्तर था; और इसे देते हुए, मैंने एक बार फिर अपने सामान्य स्वभाव को पार कर लिया, और एक सटीक, ठंडे झूठ को अंजाम दिया।

“लेकिन मैंने क्या कहा था?” उसने पूछा; “बताओ: मैं गुस्से में था: मैं अपने शब्द भूल गया हूँ; मैंने क्या कहा था?”

“इसे भूल जाना ही बेहतर है!” मैंने कहा, अभी भी काफी शांत और संयमित होकर।

“तो क्या मेरे शब्दों ने आपको आहत किया? उन्हें अनकहा समझें: मुझे अपने शब्दों को वापस लेने की अनुमति दें; मुझे क्षमा कर दें।”

“मैं क्रोधित नहीं हूँ, महोदय।”

“तो फिर आप गुस्से से भी बदतर स्थिति में हैं—दुखी हैं। मुझे क्षमा कीजिए, मिस लूसी।”

“श्री इमानुएल, मैं आपको क्षमा करता हूँ।”

मुझे आपकी स्वाभाविक आवाज में यह कहते हुए सुनने दीजिए, न कि उस अजनबी लहजे में, 'मोन अमी, जे वौस पार्डोने' (मेरे प्रिय मित्र, मैं आपको क्षमा चाहता हूँ)।

उन्होंने मुझे मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया। उनकी उदासी, उनकी सादगी, उनकी

गंभीरता को देखकर भला कौन मुस्कुराए बिना रह सकता है?

“वाह!” वह चिल्लाया। “दिन निकलने ही वाला है! बताओ, मेरे दोस्त!”

"श्री पॉल, मैं आपको माफ करता हूँ।"

“मुझे 'महाशय' शब्द नहीं चाहिए: दूसरा शब्द बोलो, वरना मैं तुम्हें ईमानदार नहीं मानूंगा: एक और कोशिश करो — मेरे दोस्त, या फिर अंग्रेजी में, — मेरे मित्र!”

अब, "मेरे दोस्त" शब्द का अर्थ और भाव "मेरे मित्र" से कुछ अलग था; इसमें घरेलू और आत्मीय स्नेह का भाव नहीं था; मैं श्रीमान पॉल से "मेरे मित्र" नहीं कह सकता था; "मेरे दोस्त" मैं कह सकता था, और बिना किसी कठिनाई के कहा भी। हालाँकि, उनके लिए यह अंतर मायने नहीं रखता था, और वे अंग्रेज़ी वाक्यांश से पूरी तरह संतुष्ट थे। वे मुस्कुराए। पाठक, आपको उनकी मुस्कान देखनी चाहिए थी; और आपको उनके चेहरे के वर्तमान भाव और आधे घंटे पहले के भाव में अंतर स्पष्ट दिखाई देता। मैं यह दावा नहीं कर सकता कि मैंने श्रीमान पॉल के होठों या आँखों में पहले कभी प्रसन्नता, संतोष या दयालुता की मुस्कान देखी थी। व्यंग्य, कटाक्ष, तिरस्कार, और उमंग भरी खुशी, ये सभी भाव मैंने सैकड़ों बार उन्हें अपनी मुस्कान के माध्यम से व्यक्त करते देखा था, लेकिन उनके चेहरे पर सौम्य या गर्मजोशी भरे भावों का कोई भी स्पष्ट संकेत मुझे बिल्कुल नया लगा। ऐसा लगा जैसे उनका चेहरा मुखौटे से असली चेहरे में बदल गया हो: उनके चेहरे से गहरी झुर्रियाँ गायब हो गईं; उनका रंग-रूप भी साफ और तरोताजा लग रहा था; वह गहरा काला, पीला, दक्षिणी अंधकार जो उनके स्पेनिश वंश की गवाही दे रहा था, एक हल्के रंग में तब्दील हो गया। मुझे नहीं लगता कि मैंने किसी और इंसान के चेहरे में इस तरह का परिवर्तन कभी देखा है। अब वह मुझे गाड़ी में ले गया: उसी क्षण एम. डी बासोम्पियर अपनी भतीजी के साथ बाहर आए।

मिस्ट्रेस फैंसहावे का मूड कुछ अजीब सा था; उन्हें शाम पूरी तरह से असफल लगी थी: उनका मिजाज पूरी तरह बिगड़ चुका था और जैसे ही हम बैठे और गाड़ी का दरवाजा बंद हुआ, वे बेकाबू होकर उदास हो गईं। डॉ. ब्रेटन के खिलाफ उनके शब्दों में ज़हर भरा था। उन्हें लुभाने या उन पर प्रहार करने में असमर्थ पाकर, नफरत ही उनका एकमात्र सहारा थी; और इस नफरत को उन्होंने इतने उग्र शब्दों और इतने भयानक अनुपात में व्यक्त किया कि कुछ देर तक संयम बरतने के बाद, न्याय की मेरी भावना अचानक भड़क उठी। एक विस्फोट हुआ: क्योंकि मैं भी भावुक हो सकता था;

खासकर अपनी इस खूबसूरत लेकिन दोषपूर्ण साथी के साथ, जो मुझमें छिपी सबसे बुरी भावनाओं को जगाने में कभी असफल नहीं होती थी। यह अच्छा ही हुआ कि गाड़ी के पहिए चोसविल के पथरीले फुटपाथ पर ज़ोरदार खड़खड़ाहट कर रहे थे, क्योंकि मैं पाठक को विश्वास दिला सकता हूँ कि गाड़ी के अंदर न तो सन्नाटा था और न ही कोई शांत बातचीत। आधे मन से, आधे दिखावे के लिए, मैंने जिनेवरा को सबक सिखाने का निश्चय किया। वह रू क्रेसी से बेकाबू होकर निकली थी; रू फॉसेट पहुँचने से पहले उसे काबू में करना ज़रूरी था: इसके लिए उसकी असलियत और योग्यता को साबित करना अनिवार्य था; और यह ऐसे शब्दों में किया जाना चाहिए जिनकी निष्ठा और सरलता जॉन नॉक्स द्वारा मैरी स्टुअर्ट की प्रशंसा से तुलना करने लायक हो। जिनेवरा के लिए यही सही सबक था; यह उसे रास आया। मुझे पूरा यकीन है कि उस रात वह पहले से कहीं ज़्यादा शांत और स्थिर मन से सोई, और एक ज़बरदस्त नैतिक सबक मिलने के बाद उसे और भी मीठी नींद आई।

अध्याय XXVIII.

चौकीदार।

एम. पॉल इमानुएल को अपने पाठों के दौरान किसी भी कारण से होने वाली रुकावट की असुविधा के प्रति तीव्र संवेदनशीलता थी: ऐसे हालात में कक्षा से गुजरना विद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से एक महिला या लड़की के जीवन के बराबर माना जाता था।

मैडम बेक खुद, अगर मजबूर होकर यह काम करना पड़ता, तो अपनी स्कर्ट समेटते हुए, तेज़ी से भागतीं और उस खतरनाक खाड़ी को ऐसे पार करतीं जैसे कोई जहाज़ लहरों से डर रहा हो। जहाँ तक पोर्ट्रेस रोज़ीन की बात है—जिस पर हर आधे घंटे में

विद्यार्थियों को किसी न किसी विभाग के बीचोंबीच से लाकर प्रार्थना कक्ष, बड़े या छोटे हॉल, भोजन कक्ष या किसी अन्य पियानो स्टेशन पर संगीत की शिक्षा दिलाने का कठिन कर्तव्य होता था—वह अक्सर दूसरे या तीसरे प्रयास में अत्यधिक घबराहट के कारण लगभग चुप हो जाती—यह घबराहट उन घूरती निगाहों के कारण पैदा होती थी जो उसे तीखे चश्मे से घूरती थीं।

एक सुबह मैं बैठक में बैठी कढ़ाई के एक टुकड़े पर काम कर रही थी, जिसे एक छात्रा ने शुरू तो किया था लेकिन पूरा करने में देरी कर दी थी। मेरी उंगलियां फ्रेम पर काम कर रही थीं, तभी बगल की कक्षा में किसी की तेज़ और तीखी आवाज़ मेरे कानों तक पहुँच गई, जो धीरे-धीरे और भी बेचैन और खतरनाक होती जा रही थी। मेरे और आने वाले तूफान के बीच एक मज़बूत दीवार थी, साथ ही अगर तूफान मेरी तरफ आता तो आंगन में जाने के लिए कांच के दरवाजे से निकलने का आसान रास्ता भी था; इसलिए मुझे डर के बजाय इन बढ़ते लक्षणों से ज़्यादा मनोरंजन मिला। बेचारी रोज़ीन सुरक्षित नहीं थी: उस शुभ सुबह चार बार वह खतरे से गुज़री थी; और अब, पाँचवीं बार, यह उसका खतरनाक कर्तव्य बन गया था कि वह जलती हुई आग से एक जलती हुई लकड़ी को बचाए—एक छात्रा को एम. पॉल की नाक के नीचे से बचाए।

"हे भगवान! हे भगवान!" वह चिल्लाई। "मेरा क्या होगा? मुझे पूरा यकीन है कि वह सज्जन मुझे मार डालेंगे; क्योंकि वह बहुत गुस्से में हैं!"

हताशा के बावजूद साहस से प्रेरित होकर उसने दरवाजा खोल दिया।

"मैडमोजेल ला माले औ पियानो!" यह उसकी पुकार थी।

इससे पहले कि वह पीछे हट पाती या दरवाजा पूरी तरह बंद कर पाती, यह आवाज सुनाई दी: —

"इस क्षण से! — कक्षा में आना प्रतिबंधित है। जो भी इस दरवाजे को खोलेगा या इस दीवार को पार करेगा, उसे फांसी दी जाएगी — चाहे वह मैडम बेक ही क्यों न हो!"

इस फरमान के जारी होने के दस मिनट भी नहीं बीते थे कि रोसीन के फ्रेंच पैंटौफल्स की सरसराहट फिर से गलियारे में सुनाई देने लगी।

"महोदया," उसने कहा, "मैं अभी पाँच फ़्रैंक के बदले भी उस क्लास में दोबारा नहीं जाऊँगी: महाशय के चश्मे सचमुच बहुत खराब हैं; और यहाँ एक कमीशनर एथेनी का संदेश लेकर आया है। मैंने मैडम बेक को बताया है कि मैं इसे देने की हिम्मत नहीं

कर सकती, और वह कहती हैं कि मुझे इसका खर्च आप पर डालना है।”

“मैं? नहीं, ये तो बहुत बुरा हुआ! ये मेरे कर्तव्य में नहीं है। आओ, आओ, रोसीन! अपना बोझ खुद उठाओ। हिम्मत रखो – एक बार फिर हमला करो!”

“मैं, मैडमोजेल? — असंभव! आज मैं पाँच बार उससे टकरा चुकी हूँ। मैडम को इस काम के लिए वाकई एक पुलिसकर्मी नियुक्त करना चाहिए। उफ़! मैं अब और नहीं कर सकती!”

“अरे! तुम तो बस एक कायर हो। संदेश क्या है?”

"ठीक उसी तरह का आदेश जिससे महाशय को परेशान होना बिल्कुल पसंद नहीं है: एथेनी के पास सीधे जाने का एक अत्यावश्यक बुलावा, क्योंकि एक आधिकारिक आगंतुक - निरीक्षक - पता नहीं कौन - आया है, और महाशय को उससे मिलना होगा: आप जानते हैं कि उन्हें इस तरह का आदेश कितना नापसंद है।"

हाँ, मैं अच्छी तरह जानता था। वह बेचैन छोटा आदमी किसी भी तरह की रोक-टोक को नापसंद करता था: जो भी ज़रूरी या अनिवार्य होता, वह विद्रोह कर बैठता था। फिर भी, मैंने ज़िम्मेदारी स्वीकार कर ली—निःसंदेह, डर के साथ-साथ कुछ और भावनाएँ भी थीं, जिनमें जिज्ञासा भी शामिल थी। मैंने दरवाज़ा खोला, अंदर गया, और जितनी जल्दी और चुपचाप हो सकता था, उतनी जल्दी और चुपचाप उसे बंद कर दिया; क्योंकि धीमे चलना या जल्दबाज़ी करना, कुंडी को खड़खड़ाना, या दरवाज़ा खुला छोड़ देना, अपराध को और भी गंभीर बना देते थे, जिसका परिणाम अक्सर अपराध से भी ज़्यादा भयानक होता था। मैं वहाँ खड़ा था, और वह वहाँ बैठा था; उसका मिजाज साफ़ तौर पर खराब था—लगभग सबसे खराब; वह गणित पढ़ा रहा था—क्योंकि वह हर उस विषय पर पढ़ाता था जो उसे पसंद आता था—और गणित एक नीरस विषय होने के कारण, उसे हमेशा नापसंद था: जब वह संख्याओं की बात करता था, तो शायद ही कोई छात्र काँपता था। वह अपनी मेज पर झुके बैठे थे: किसी के प्रवेश की आहट सुनकर, अपनी इच्छा और कानून के सीधे उल्लंघन को देखकर ऊपर देखना उनके लिए उस क्षण असहनीय था। यह अच्छा ही हुआ: इससे मुझे लंबी गली में चलने का समय मिल गया; और दूर से उसके क्रोध को सहने की बजाय, उनके जैसे क्रोध के निकट विस्फोट का सामना करना मेरी विशिष्ट प्रवृत्ति के लिए कहीं अधिक उपयुक्त था।

उनके सामने आकर मैं रुक गया; ज़ाहिर है, मैं तुरंत ध्यान देने लायक नहीं था:

उन्होंने अपना पाठ जारी रखा। उपेक्षा करना उचित नहीं था: उन्हें मेरा संदेश सुनना ही था और उसका उत्तर देना ही था।

मेरी लंबाई इतनी कम थी कि मैं अपना सिर उनके डेस्क के ऊपर नहीं उठा पा रहा था, जो कि बरामदे पर ऊँचा रखा था, और इस वजह से मैं अपनी वर्तमान स्थिति में छिप गया था। इसलिए मैंने चारों ओर झाँकने का साहस किया, मेरा पहला इरादा केवल उनके चेहरे को बेहतर ढंग से देखना था, जो मुझे अंदर आते ही एक काले और पीले बाघ के चेहरे से मिलता-जुलता और आकर्षक लगा था। दो बार मैंने निडर होकर उनका यह पार्श्व दृश्य देखा, बिना किसी को दिखाई दिए आगे-पीछे होते हुए; तीसरी बार मेरी आँख डेस्क के धुंधलेपन से बाहर निकली ही थी कि मेरी आँख उन चकाचौंध भरी आँखों पर टिक गई और वहीं ठहर गई। रोसीन सही थी; इन चकाचौंध भरी आँखों में एक खाली और अटल भय था, जो पहनने वाले की निर्मल आँखों के गतिशील क्रोध से भी परे था।

अब मुझे निकटता का लाभ समझ में आया: ये कमज़ोर नज़र वाले चश्मे महाशय की नाक के नीचे किसी अपराधी की जाँच के लिए बेकार थे; इसलिए, उन्होंने उन्हें उतार दिया, और हम दोनों अधिक समान स्तर पर आ गए।

मुझे खुशी है कि मैं उससे सचमुच ज्यादा नहीं डरी थी— बल्कि, उसकी मौजूदगी में भी मुझे जरा भी डर नहीं लगा; क्योंकि जब उसने हाल ही में सुनाए गए फैसले को पूरा करने के लिए फांसी का फंदा मांगा, तो मैंने बड़ी विनम्रता से उसे कढ़ाई का धागा दे दिया, जिससे उसकी थोड़ी सी झुंझलाहट तो कम हो ही गई। बेशक, मैंने यह शिष्टाचार सबके सामने नहीं दिखाया: मैंने बस धागे को मेज के कोने से घुमाकर प्रोफेसर की कुर्सी की सलाखों वाली पीठ पर फंदा की तरह बांध दिया।

"क्या तुम मुझसे मुस्कुराना चाहते हो?" उसने गुर्राते हुए कहा, जिसकी आवाज़ पूरी तरह से उसके सीने और गले तक ही सीमित थी, क्योंकि उसने अपने दांत भींच रखे थे; और ऐसा लग रहा था मानो वह मन ही मन यह प्रतिज्ञा कर रहा हो कि कोई भी सांसारिक चीज़ उससे मुस्कान नहीं निकलवा सकती।

मेरा जवाब बिना किसी लाग-लपेट के शुरू हुआ: "महाशय," मैंने कहा, "मैं असंभव चाहता हूँ, ये सब बेतुकी बातें हैं;" और यह सोचते हुए कि सीधे मुद्दे पर आना बेहतर होगा, बल्कि दृढ़ता से "शौच" करना ही सही होगा, मैंने धीमी लेकिन तेज़ आवाज़ में एथेंस का संदेश दिया, उसकी तात्कालिकता को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हुए।

बेशक, वह इस बात की एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता था। “वह नहीं जाएगा; वह अपने वर्तमान वर्ग को नहीं छोड़ेगा, चाहे विलेट के सभी अधिकारी उसे बुला लें। वह राजा, मंत्रिमंडल और सभी के आदेश पर एक इंच भी नहीं हिलेगा।”

लेकिन मुझे पता था कि उसे जाना ही होगा; चाहे वह कुछ भी कहे, उसका कर्तव्य और हित दोनों ही उसके लिए आदेश का तुरंत और अक्षरशः पालन करना अनिवार्य बनाते थे: इसलिए मैं चुपचाप खड़ा रहा, मानो उसने अभी तक कुछ कहा ही न हो। उसने पूछा कि मुझे और क्या चाहिए।

"केवल महाशय का उत्तर ही आयुक्त को दिया जाना चाहिए।"

उसने अधीरता से नकारात्मक का संकेत लहराया।

मैंने खिड़की की चौखट पर गंभीर मुद्रा में पड़े बोनट-ग्रेक की ओर हाथ बढ़ाने का साहस किया। उसने मेरी इस साहसी हरकत को अपनी निगाहों से देखा, निस्संदेह उसमें दया और आश्चर्य का मिला-जुला भाव था।

“आह!” वह बुदबुदाया, “अगर ऐसी नौबत आ गई — अगर मिस लूसी ने उसके ग्रीक बोनट में दखल दिया — तो वह शायद खुद ही उसे पहन ले, उस मौके के लिए गार्सन का रूप धारण कर ले, और दयालुतापूर्वक उसकी जगह एथेंस चली जाए।”

मैंने अत्यंत आदर के साथ टोपी को मेज पर रख दिया, जहाँ उसका लटकन मुझे मानो एक भयानक इशारा कर रहा था।

“मैं माफीनामा लिख दूंगा—बस इतना ही काफी होगा!” उसने टालमटोल करते हुए कहा।

यह जानते हुए भी कि ऐसा करना ठीक नहीं होगा, मैंने टोपी को धीरे से उसके हाथ की ओर धकेल दिया। इस तरह धकेले जाने पर, वह पॉलिश की हुई और चिकनी मेज की ढलान पर फिसल गई, अपने साथ हल्के स्टील के फ्रेम वाले "लूनेट्स" को ले गई, और दुख की बात है कि वे खिड़की के बाहर गिर गए। इससे पहले मैंने उन्हें बीस बार गिरते देखा था और उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ था - इस बार, मानो लूसी स्नो की बदकिस्मती थी, वे इस तरह गिरे कि हर साफ कंकड़ एक चूर-चूर और बेढंगे तारे में बदल गया।

अब सचमुच, मुझे निराशा और खेद दोनों ने घेर लिया। मैं इन चश्मों का महत्व जानता था: एम. पॉल की दृष्टि असामान्य थी, आसानी से चश्मा फिट नहीं होता था, और ये चश्मे उन पर जँचते थे। मैंने उन्हें इन्हें अपना खजाना कहते सुना था: जब मैंने

टूटे-फूटे और बेकार चश्मों को उठाया, तो मेरा हाथ काँपने लगा। मैंने जो गड़बड़ की थी, उसे देखकर मैं बुरी तरह भयभीत हो गया था, लेकिन मुझे लगता है कि मैं डर से कहीं ज़्यादा दुखी था। कुछ पलों के लिए मैं दुखी प्रोफेसर की ओर देखने की हिम्मत नहीं कर पाया; उन्होंने ही सबसे पहले बोलना शुरू किया।

"ला!" उसने कहा: "मुझे लगता है मैडमोजेल लूसी अब कबूल कर लेंगी कि फांसी और फांसी की सजा उन्होंने पूरी तरह से सही कमाई है; वह अपने अंत की आशंका से कांप रही हैं। आह, गद्दार! गद्दार! तुमने ठान लिया है कि मैं पूरी तरह से अंधा और असहाय हो जाऊंगी!"

मैंने अपनी नज़रें ऊपर उठाईं: उनका चेहरा गुस्से, उदासी और शिकन के बजाय, उस मुस्कान से खिल उठा था, जो मैंने उस शाम होटल क्रेसी में देखी थी। वे क्रोधित नहीं थे—दुखी भी नहीं थे। वास्तविक हानि के बावजूद उन्होंने करुणा दिखाई; वास्तविक उकसावे के बावजूद, वे संत की तरह धैर्यवान थे। यह घटना, जो इतनी अप्रिय लग रही थी—जिसने मुझे लगा था कि मेरी सफल स्वीकृति की संभावना को तुरंत नष्ट कर दिया है—मेरे लिए सबसे बड़ी मददगार साबित हुई। जब तक मैंने उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था, तब तक उन्हें संभालना मुश्किल था, लेकिन जैसे ही मैं उनके सामने एक सचेत और पश्चातापी अपराधी के रूप में खड़ा हुआ, वे सहज और दयालु हो गए।

अब भी मुझे हल्के-फुल्के अंदाज़ में "एक शक्तिशाली महिला - एक भयानक अंग्रेज़ - एक छोटी सी छटपटाने वाली" कहकर कोसते हुए, उन्होंने घोषणा की कि ऐसी खतरनाक वीरता का प्रदर्शन करने वाली का आज्ञा पालन करने के अलावा उनके पास कोई चारा नहीं था; यह बिल्कुल "महान सम्राट द्वारा भय उत्पन्न करने के लिए फूलदान तोड़ने" जैसा था। अंत में, अपने सिर पर ग्रीक टोपी सजाकर और क्षमा और प्रोत्साहन के भाव से मेरे हाथ से अपने टूटे हुए "ल्युनेट्स" लेकर, उन्होंने प्रणाम किया और पूरे उत्साह और उमंग के साथ एथेंस की ओर चल दिए।

* * * * *

इस सारी सौहार्दपूर्ण बातचीत के बाद, पाठक को यह जानकर मेरे लिए खेद होगा कि रात होने से पहले मेरा एम. पॉल से फिर से झगड़ा हो गया था; लेकिन ऐसा ही हुआ, और मैं कुछ नहीं कर सकता था।

यह उनकी कभी-कभार की आदत थी—और एक बहुत ही प्रशंसनीय, स्वीकार्य आदत भी—कि वे शाम को अचानक, बिना किसी पूर्व सूचना के, आ जाते, अध्ययन के शांत समय में खलल डालते, हम पर और हमारे कामों पर अचानक अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेते, किताबें हटवा देते, काम के थैले निकलवा देते, और एक मोटी किताब या मुट्ठी भर पुस्तिकाएँ निकालकर, किसी ऊंघते छात्र द्वारा धीमी गति से दिए जा रहे उबाऊ "व्याख्यान" के स्थान पर, किसी ऐसी त्रासदी को प्रस्तुत कर देते जो भव्य पठन से भव्य और जोशीले अभिनय से जीवंत हो उठी हो—कोई ऐसा नाटक, जिसका मैंने स्वयं शायद ही कभी आंतरिक गुण-दोष का अध्ययन किया हो; क्योंकि एम. इमैनुएल उसे अपनी भावनाओं के प्रवाह का पात्र बना देते थे, और उसे अपने सहज जोश और जुनून से भर देते थे, जैसे किसी प्याले को जीवनदायी पेय से भर दिया जाता है। या फिर वह हमारे मठ के अंधकार में एक उज्ज्वल दुनिया की झलक दिखाते, हमें उस समय के साहित्य की एक झलक देते, किसी मनमोहक कहानी के अंश पढ़कर सुनाते, या पेरिस के बारों में हँसी जगाने वाले नवीनतम हास्यप्रद निबंध को सुनाते; और हमेशा इस बात का विशेष ध्यान रखते कि त्रासदी, नाटक, कहानी या निबंध में से जो भी अंश, वाक्यांश या शब्द "युवा लड़कियों" के लिए अनुपयुक्त लगे, उसे वे बड़ी सख्ती से हटा दें। मैंने कई बार देखा कि जहाँ निरर्थक शब्दों को हटाकर अर्थहीनता पैदा हो जाती या कमजोरी आ जाती, वहाँ वे पूरे पैराग्राफ को सहजता से रच देते, जो उतने ही सशक्त और त्रुटिहीन होते; उनके द्वारा जोड़े गए संवाद—वर्णन—अक्सर हटाए गए संवादों से कहीं बेहतर होते थे।

खैर, उस शाम हम सब एकांतवास में बैठी ननों की तरह चुपचाप बैठे थे, विद्यार्थी पढ़ाई कर रहे थे और शिक्षक काम कर रहे थे। मुझे अपना काम याद है; यह एक मामूली कल्पना थी, और इसमें मेरी रुचि थी; इसका एक उद्देश्य था; मैं इसे केवल समय बिताने के लिए नहीं कर रही थी; मैं इसे पूरा होने पर एक उपहार के रूप में देना चाहती थी; और भेंट का अवसर निकट था, इसलिए जल्दी करना आवश्यक था, और मेरी उंगलियां व्यस्त थीं।

हमने घंटी की तीखी आवाज़ सुनी जिसे हम सब जानते थे; फिर हर किसी के कानों में जानी-पहचानी तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी: "वाह महोदय!" शब्द मुश्किल से ही सबके होठों से एक साथ निकले थे कि दो पल्लों वाला दरवाजा खुल गया (जैसा कि वह हमेशा उनके प्रवेश के लिए खुलता था - "खुलना" जैसा धीमा शब्द

उनकी गतिविधियों का वर्णन करने में अपर्याप्त है), और वह हमारे बीच खड़े हो गए।

वहाँ दो अध्ययन-मेजें थीं, दोनों लंबी और दोनों ओर बेंचें लगी हुई थीं; प्रत्येक मेज के केंद्र के ऊपर एक दीपक लटका हुआ था; इस दीपक के नीचे, मेज के दोनों ओर एक-एक शिक्षिका बैठी थीं; लड़कियाँ दाईं और बाईं ओर बैठी थीं; सबसे बड़ी और सबसे अधिक पढ़ने वाली लड़कियाँ दीपकों के सबसे पास थीं; आलसी और छोटी लड़कियाँ उत्तर और दक्षिण ध्रुवों की ओर बैठी थीं। महोदय की आदत थी कि वे किसी शिक्षिका को, आमतौर पर वरिष्ठ शिक्षिका ज़ेली सेंट पियरे को, विनम्रतापूर्वक एक कुर्सी देते थे; फिर उनकी खाली कुर्सी पर बैठ जाते थे; और इस प्रकार कर्क या मकर राशि के प्रकाश का पूरा लाभ उठाते थे, जिसकी उन्हें अपनी कमज़ोर दृष्टि के कारण आवश्यकता होती थी।

हमेशा की तरह, ज़ेली फुर्ती से उठी, अपने पूरे मुँह से मुस्कुराती हुई, अपने ऊपर और नीचे के दाँतों की पूरी कतारें दिखाती हुई— वो अजीब सी मुस्कान जो कान से कान तक फैली होती है, और सिर्फ़ एक पतली सी घुमावदार रेखा से चिह्नित होती है, जो चेहरे पर नहीं फैलती, न ही गालों पर डिंपल बनाती है और न ही आँखों में चमक लाती है। मुझे लगता है कि महाशय ने उसे नहीं देखा, या उन्होंने जानबूझकर उसे नज़रअंदाज़ करने का मन बना लिया था, क्योंकि वे महिलाओं की तरह ही नखरेबाज़ थे; फिर उनके "ल्युनेट्स" (उनके पास एक और जोड़ी थी) उनके लिए हर तरह की छोटी-मोटी गलतियों और कमियों का बहाना बन जाते थे। उनका कारण जो भी हो, वे ज़ेली के पास से गुज़रे, मेज़ के दूसरी तरफ आए, और इससे पहले कि मैं रास्ता साफ़ करने के लिए उठ पाती, फुसफुसाए, "ने बूगेज़ पास," और मेरे और मिस फैंशॉ के बीच में खड़े हो गए, जो हमेशा मेरी पड़ोसी रहती थीं, और चाहे मैं उनसे कितनी ही बार कहूँ, "गिनेवरा, काश तुम जेरिको में होतीं," उनकी कोहनी हमेशा मेरी बगल में लगी रहती थी।

"हद मत करो" कहना आसान था; लेकिन मैं क्या करूँ? मुझे उनके लिए जगह बनानी ही थी, और मुझे विद्यार्थियों से पीछे हटने का अनुरोध करना ही था ताकि मैं भी पीछे हट सकूँ। सर्दियों की शामों में जिनेवरा का मुझसे चिपके रहना, जैसा कि वह कहती थी, "खुद को गर्म रखना", और अपनी बेचैनी और गुदगुदी से मेरे दिल को परेशान करना, यहाँ तक कि कभी-कभी मुझे उसकी कोहनी से बचाव के लिए अपनी कमरबंद में चालाकी से पिन लगानी पड़ती थी, यह बहुत अच्छा था; लेकिन मुझे

लगता है कि एम. इमैनुएल के साथ ऐसा बर्ताव नहीं किया जा सकता था, इसलिए मैंने अपनी काम की सामग्री हटा दी, ताकि उनकी किताब के लिए जगह बन सके, और खुद भी पीछे हट गई ताकि उनके लिए जगह बन सके; हालाँकि, मैंने एक गज से ज़्यादा जगह नहीं छोड़ी, जो किसी भी समझदार व्यक्ति के लिए बैठने की उचित और सम्मानजनक जगह होती। लेकिन एम. इमैनुएल कभी समझदार नहीं थे; पत्थर और बारूद की तरह! वह झट से आग पकड़ लेते थे।

"तुम मुझे पड़ोसी के रूप में नहीं चाहते," वह गुर्राया। "तुम लोग किसी जाति के लोगों की तरह व्यवहार करते हो; तुम मुझे अछूत समझते हो," उसने तेवर चढ़ाते हुए कहा। "ठीक है! मैं इसे सुलझाऊंगा!" और वह काम पर लग गया।

"आप सभी महिलाएं खड़ी हो जाएं!" वह चिल्लाया।

लड़कियाँ उठ खड़ी हुईं। उसने उन सबको दूसरी मेज़ की ओर जाने का आदेश दिया। फिर उसने मुझे लंबी बेंच के एक छोर पर बिठाया, और मेरी टोकरी, रेशम, कैंची, मेरे सारे औज़ार सावधानीपूर्वक लाकर मुझे देने के बाद, वह स्वयं दूसरे छोर पर जाकर बैठ गया।

यह व्यवस्था, चाहे कितनी ही बेतुकी क्यों न हो, कमरे में किसी ने भी हंसने की हिम्मत नहीं की; हंसने वाले के लिए तो हंसी ही दुर्भाग्यपूर्ण साबित होती। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने इसे पूरी शांति से स्वीकार किया। मैं वहाँ बैठा रहा, अकेला और लोगों से कटा हुआ; मैं बैठा रहा, अपने काम में लगा रहा, शांत रहा और बिल्कुल भी दुखी नहीं था।

"क्या यह दूरी काफी है?" उसने पूछा।

मैंने कहा, "सर ही निर्णायक हैं।"

"आप अच्छी तरह जानते हैं कि ऐसा नहीं है। इस विशाल शून्य को आपने ही पैदा किया है: इसमें मेरा कोई हाथ नहीं था।"

और इसी कथन के साथ उन्होंने पढ़ना शुरू किया।

अपनी बदकिस्मती के चलते उन्होंने जिसे "विलियम्स शेक्सपायर का नाटक" कहा, उसका फ्रांसीसी अनुवाद चुना; और आगे उन्होंने घोषणा की, "ये बेवकूफ अंग्रेज़ हैं।" अगर उनका मिजाज खराब न हुआ होता तो वे उनका वर्णन और किस तरह करते, यह बताने की शायद ही ज़रूरत है।

बेशक, अनुवाद फ्रेंच होने के कारण बहुत ही अप्रभावी था; और मैंने इसकी कुछ

निराशाजनक गलतियों से उत्पन्न होने वाली घृणा को छिपाने का कोई विशेष प्रयास भी नहीं किया। ऐसा नहीं था कि मुझे कुछ कहना उचित या उपयुक्त लगता हो: लेकिन कभी-कभी व्यक्ति उस राय को शब्दों में व्यक्त करने से कतराता है जिसे व्यक्त करना मना होता है। महोदय की निगाहें चौकस थीं, और उन्होंने हर क्षणिक दृष्टि को पकड़ लिया; मुझे नहीं लगता कि उन्होंने एक भी दृष्टि खोई: परिणाम यह हुआ कि उनकी आँखों ने जल्द ही अपने ऊपर से पर्दा हटा दिया, ताकि उनकी चमक खुलकर जगमगा सके, और वे उस उत्तरी ध्रुव पर इतने गर्म हो गए जहाँ उन्होंने स्वेच्छा से स्वयं को निर्वासित कर लिया था, जितना कि कमरे के सामान्य तापमान को देखते हुए कर्क राशि की सीधी किरण के नीचे होना भी स्वाभाविक नहीं होता।

पढ़ने के बाद, यह तय करना मुश्किल लग रहा था कि वह अपना गुस्सा बिना ज़ाहिर किए ही चला जाएगा या उसे खुलकर प्रकट करेगा। भावनाओं को दबाना उसकी आदत नहीं थी; फिर भी, उसके साथ ऐसा क्या हुआ था जो खुलेआम निंदा का कारण बन सके? मैंने एक शब्द भी नहीं बोला था, और आँखों और मुँह के आसपास की मांसपेशियों को सामान्य से थोड़ा अधिक सक्रिय करने के लिए मुझे डांट या दंड देना उचित नहीं था।

रात का भोजन परोसा गया, जिसमें रोटी और गुनगुने पानी में मिला हुआ दूध था। प्रोफेसर की उपस्थिति का सम्मान करते हुए, रोटी और गिलास तुरंत परोसने के बजाय खड़े रहने दिए गए।

“देवियों, अपना भोजन लीजिए,” उन्होंने कहा, मानो वे अपनी पुस्तक “विलियम्स शेक्सपायर” के हाशिये पर कुछ टिप्पणियाँ लिख रहे हों। उन्होंने भोजन ग्रहण किया। मैंने भी रोटी और गिलास लिया, लेकिन अब अपने काम में पहले से कहीं अधिक रुचि होने के कारण, मैं अपनी जगह पर डटी रही और रोटी चबाते और पेय पीते हुए काम करती रही, वह भी सहजता और शांति के साथ; एक विशेष प्रकार की शांति और संयम के साथ, जो मेरी आदतों में शायद ही कभी होता है, और मेरे भावों के लिए सुखद रूप से नया था। ऐसा प्रतीत हुआ मानो एम. पॉल जैसे बेचैन, चिड़चिड़े और काँटेदार स्वभाव की उपस्थिति चुंबक की तरह सभी उग्र और अशांत प्रभावों को सोख लेती है, और मुझमें केवल शांत और सामंजस्यपूर्ण प्रभाव ही छोड़ती है।

वह उठा। “क्या वह बिना कुछ कहे चला जाएगा?” हाँ; वह दरवाजे की ओर मुड़ा।

नहीं: वह अपने कदमों पर वापस मुड़ा; लेकिन शायद केवल अपना पेंसिल बॉक्स

लेने के लिए, जो मेज पर छूट गया था।

उसने पेंसिल ली - उसे अंदर-बाहर किया, लकड़ी पर रगड़कर उसकी नोक तोड़ दी, फिर से काटकर जेब में रख ली, और... तुरंत मेरे पास आ गया।

दूसरी मेज के चारों ओर इकट्ठा हुई लड़कियां और शिक्षिकाएं काफी खुलकर बातें कर रही थीं: वे हमेशा भोजन के समय बातें करती थीं; और ऐसे समय में तेज और ऊंची आवाज में बोलने की लगातार आदत के कारण, वे अब अपनी आवाज को ज्यादा धीमा नहीं कर रही थीं।

एम. पॉल आकर मेरे पीछे खड़े हो गए। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं क्या बना रहा हूँ; और मैंने कहा कि मैं एक चौकीदार का गार्ड बना रहा हूँ।

उन्होंने पूछा, "किसके लिए?" और मैंने जवाब दिया, "एक सज्जन के लिए - मेरे एक मित्र के लिए।"

एम. पॉल नीचे झुके और उपन्यासकारों की भाषा में कहें तो, और जैसा कि उनके मामले में अक्षरशः सच था, मेरे कान में कुछ मार्मिक शब्द फुसफुसाए।

उन्होंने कहा कि जितनी भी महिलाओं को वे जानते थे, उनमें से मैं ही वह थी जो खुद को सबसे ज़्यादा अप्रिय बना सकती थी: मैं वह थी जिसके साथ दोस्ताना संबंध रखना सबसे मुश्किल था। मेरा स्वभाव असाध्य और चमत्कारिक रूप से विकृत था। मैं यह कैसे कर पाती थी, या मुझमें क्या चल रहा था, यह उन्हें खुद नहीं पता था; लेकिन चाहे कोई व्यक्ति कितने ही शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण इरादों से मुझसे बात करे—धड़ाम! मैं सद्भाव को कलह में, सद्भावना को शत्रुता में बदल देती थी। उन्हें पूरा यकीन था—श्री पॉल—कि वे मेरा भला चाहते थे; जहाँ तक उन्हें पता था, उन्होंने मुझे कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था; कम से कम, उन्हें लगता था, उन्हें एक तटस्थ परिचित माना जाना चाहिए, जो शत्रुतापूर्ण भावनाओं से मुक्त हो: फिर भी, मैं उनके साथ कैसा व्यवहार करती थी! कितनी तीखी जीवंतता के साथ—कितनी बगावत की भावना के साथ—कितने अन्याय के साथ!

यहां मैं अपनी आंखें थोड़ी चौड़ी करने से खुद को रोक नहीं पाया, और यहां तक कि एक हल्की सी टिप्पणी भी कर बैठा: "जीवंतता? प्रेरणा? फौग? मुझे नहीं पता था..."

“छी! आ ल’इंस्टेंट! वहाँ! मैं चला गया — विवे कोम ला पौड्रे!” उसे अफ़सोस था — उसे बहुत अफ़सोस था: मेरे लिए वह मेरी इस दुर्भाग्यपूर्ण विचित्रता पर दुखी था।

यह “व्यवहार,” यह “गर्मजोशी” — शायद उदार, लेकिन अति — उसे डर था कि मेरे लिए नुकसानदायक साबित होगी। यह अफ़सोस की बात थी: वह अपने मन में मानता था कि मुझमें अच्छे गुण बिल्कुल नहीं हैं: और अगर मैं तर्क की सुनता, और अधिक शांत, अधिक संयमित, कम “नखरेबाज़,” कम “नाकचला,” दिखावे से कम प्रभावित, बाहरी उत्कृष्टता को अनुचित महत्व न देता — उन लोगों के ध्यान को ज़्यादा महत्व न देता जो मुख्य रूप से अपने लंबे कद, “डेस कलर्स डे पुपी,” “अन नेज़ प्लस ओ मोइन्स बिएन फेट,” और अत्यधिक मूर्खता के लिए जाने जाते हैं — तो शायद मैं एक उपयोगी, शायद एक अनुकरणीय चरित्र साबित हो सकता था। लेकिन, जैसा कि हुआ —और यहाँ, उस छोटे आदमी की आवाज एक मिनट के लिए रुक गई।

मैं उसकी ओर देख सकती थी, या अपना हाथ बढ़ा सकती थी, या उसे दिलासा देने वाले शब्द कह सकती थी; लेकिन मुझे डर था कि अगर मैं हिली तो या तो हंस दूंगी या रो दूंगी; इस सब में मार्मिक और हास्यास्पद का मिश्रण इतना अजीब था।

मुझे लगा कि उसका काम लगभग पूरा हो गया है, लेकिन नहीं; वह आराम से काम जारी रखने के लिए बैठ गया।

“जब श्रीमान पॉल इन कष्टदायक विषयों पर चर्चा कर रहे होते थे, तो वे मेरी भलाई के लिए मेरे क्रोध को भड़काते थे और मेरे पहनावे में आए एक बदलाव का ज़िक्र करने का साहस करते थे। वे यह स्वीकार करने के लिए स्वतंत्र थे कि जब वे मुझे पहली बार जानते थे—या यूँ कहें कि समय-समय पर मुझे देखने की उनकी आदत थी—तो इस मामले में मैं उन्हें संतुष्ट करती थी: मेरे पहनावे में जो गंभीरता और सादगी झलकती थी, वह मेरे भले के लिए सर्वोच्च आशाएँ जगाती थी। किस घातक प्रभाव ने मुझे हाल ही में अपनी टोपी के किनारे पर फूल लगाने, कढ़ाई वाले कॉलर पहनने और यहाँ तक कि एक बार लाल गाउन में दिखने के लिए प्रेरित किया—वे अनुमान तो लगा सकते थे, लेकिन फिलहाल वे खुलकर इसका खुलासा नहीं करेंगे।”

मैंने फिर से बीच में दखल दिया, और इस बार मेरा लहजा आक्रोश और भय से भरा हुआ था।

“स्कार्लेट, महाशय पॉल? यह स्कार्लेट नहीं था! यह गुलाबी था, और हल्का गुलाबी भी था: और काले फीते से और भी सौम्य हो गया था।”

“गुलाबी हो या गहरा लाल, पीला हो या चटख लाल, मटर जैसा हरा हो या आसमानी नीला, सब एक ही था: ये सभी भड़कीले, चकाचौंध भरे रंग थे; और जिस

लेस की मैंने बात की, वह तो बस एक अतिरिक्त दिखावा था।" और उन्होंने मेरी इस गिरावट पर आह भरी। "उन्हें खेद था कि वे इस विषय पर उतनी बारीकी से बात नहीं कर सकते थे जितनी वे चाहते थे: इन 'बेबियोल्स' के सटीक नाम न होने के कारण, वे छोटी-मोटी शाब्दिक गलतियाँ कर सकते थे, जो निश्चित रूप से उन्हें मेरे व्यंग्य का शिकार बना देतीं और मेरे दुर्भाग्य से अचानक और भावुक स्वभाव को भड़का देतीं। वे बस सामान्य शब्दों में कहेंगे—और इन सामान्य शब्दों में वे जानते थे कि वे सही थे—कि मेरी पोशाक ने हाल ही में 'डेस फ़ैशन्स मोनाडाइन्स' का रूप धारण कर लिया है, जिसे देखकर उन्हें दुख होता है।"

मेरे वर्तमान शीतकालीन मेरिनो ऊन और सादे सफेद कॉलर में उन्हें कौन से आधुनिक फैशन नज़र आए, यह अनुमान लगाना मेरे लिए वास्तव में मुश्किल था: और जब मैंने उनसे पूछा, तो उन्होंने कहा कि यह सब दिखावे पर बहुत अधिक ध्यान देकर बनाया गया था - और इसके अलावा, "क्या मेरे गले में रिबन का धनुष नहीं था?"

"महाशय, अगर आप किसी महिला के लिए रिबन के धनुष की निंदा करते हैं, तो क्या आप किसी सज्जन के लिए इस तरह की चीज़ को भी अस्वीकार करेंगे?" —मैंने रेशम और सोने की अपनी चमकीली छोटी माला दिखाते हुए कहा। उनका एकमात्र जवाब एक आह थी — शायद मेरी हल्की-फुल्की बात पर।

कुछ मिनट चुपचाप बैठने और उस श्रृंखला की प्रगति को देखने के बाद, जिस पर मैं अब पहले से कहीं अधिक लगन से काम कर रहा था, उसने पूछा: "क्या उसने अभी जो कहा है, उसका असर यह होगा कि मैं उससे पूरी तरह नफरत करने लगूंगा?"

मुझे ठीक से याद नहीं कि मैंने क्या जवाब दिया था या यह सब कैसे हुआ; मुझे नहीं लगता कि मैंने कुछ बोला भी था, लेकिन मुझे पता है कि हमने दोस्ताना अंदाज़ में एक-दूसरे को शुभ रात्रि कहा: और, एम. पॉल के दरवाज़े तक पहुँचने के बाद भी, वह वापस मुड़े और बस यह समझाने लगे, "कि मैं लाल पोशाक की पूरी तरह से निंदा नहीं कर रहा हूँ" ("गुलाबी! गुलाबी!" मैंने कहा); "कि उनका इरादा इसे सुंदर दिखने की खूबी से इनकार करने का नहीं था" (दरअसल, एम. इमानुएल की रंगों की पसंद चमकीले रंगों की ओर थी); "वह बस मुझे यह सलाह देना चाहते थे कि जब भी मैं इसे पहनूँ, तो इसे उसी भावना से पहनूँ जैसे कि इसका कपड़ा 'बुरे' और इसका रंग 'ग्रे' हो।"

"और मेरी टोपी के नीचे जो फूल हैं, महोदय?" मैंने पूछा। "वे बहुत छोटे हैं — ?"

“तो फिर इन्हें छोटा ही रखो,” उसने कहा। “इन्हें पूरी तरह विकसित न होने दो।”

“और वो धनुष, महाशय— वो रिबन का टुकड़ा?”

“रिबन के साथ चलते हैं!” यह शुभ उत्तर था।

और इस तरह हमने मामला सुलझा लिया।

* * * * *

“शाबाश, लूसी स्नो!” मैंने मन ही मन कहा; “तुम्हें तो खूब उपदेश सुनने को मिला है – तुमने खुद को ‘अशिष्ट विद्वान’ बना लिया है, और वो भी सांसारिक दिखावटी चीजों के प्रति तुम्हारे बुरे लगाव के कारण! किसने सोचा होगा? तुम तो खुद को काफी गंभीर और समझदार समझती थी! मिस फैंसहावे तुम्हें दूसरा डायोजेन्स मानती हैं। एम. डी बासोम्पियर ने कुछ दिन पहले अभिनेत्री वष्टि की प्रतिभाओं पर चल रही बातचीत को विनम्रता से दूसरी तरफ मोड़ दिया, क्योंकि उन्होंने कहा, ‘मिस स्नो असहज लग रही थीं।’ डॉ. जॉन ब्रेटन तुम्हें सिर्फ ‘शांत लूसी’ के रूप में जानते हैं – ‘एक ऐसी शख्सियत जो परछाई की तरह हानिरहित है;’ उन्होंने कहा है, और तुमने भी उन्हें कहते सुना है: ‘लूसी की कमियां उसके स्वाद और व्यवहार में अत्यधिक गंभीरता – उसके चरित्र और पहनावे में रंग की कमी से पैदा होती हैं।’ ये तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तों के विचार हैं; और देखो! तभी एक छोटा सा आदमी खड़ा हो जाता है, जो इन सबसे बिल्कुल अलग है, और तुम पर बहुत ज्यादा चंचल और खुशमिजाज – बहुत ज्यादा चंचल और बहुमुखी – बहुत ज्यादा अलंकारिक होने का आरोप लगाता है। रंग-बिरंगा। यह कठोर छोटा आदमी—यह निर्दयी आलोचक—तुम्हारे घमंड के बिखरे हुए सभी पापों को, तुम्हारे बदकिस्मत गुलाबी रंग के शिफॉन को, तुम्हारी छोटी सी माला को, तुम्हारे रिबन के टुकड़े को, तुम्हारे बेतुके फीते को इकट्ठा करता है और तुमसे हर एक चीज़ का हिसाब मांगता है। तुम्हें जीवन की धूप में परछाई की तरह नज़रअंदाज़ किए जाने की आदत हो चुकी है: तुम्हारे लिए यह एक नई बात है कि कोई चिढ़कर अपनी आँखें ढकने के लिए हाथ उठाता है, क्योंकि तुम उसे अपनी चुभती हुई किरण से परेशान करते हो।

अध्याय 29।

महाशय की पार्टी।

अगली सुबह मैं भोर होने से एक घंटा पहले उठ गया और अपना पहरा खत्म किया, सेंटर स्टैंड के बगल में छात्रावास के फर्श पर घुटनों के बल बैठकर, रात के दीपक की अंतिम पहरेदारी में बची हुई धुंधली रोशनी का लाभ उठाने के लिए।
मेरी सारी सामग्रियाँ—मोतियों और रेशम का सारा भंडार—तब तक खत्म हो गईं जब तक कि चेन मेरी मनचाही लंबाई और भव्यता की नहीं बन गई; मैंने इसे दो बार बुना था, क्योंकि मैं जानती थी कि विपरीत नियमों के अनुसार, जिसकी विशेष पसंद को संतुष्ट करना था, उसके लिए एक आकर्षक रूप अत्यंत आवश्यक था। आभूषण को अंतिम रूप देने के लिए एक छोटे सोने के कुंडी की आवश्यकता थी; सौभाग्य से वह मेरे एकमात्र हार के बंधन में मौजूद थी; मैंने उसे विधिवत निकालकर दोबारा लगा दिया, फिर तैयार कुंडी को कसकर लपेट दिया; और उसे एक छोटे से डिब्बे में बंद कर दिया जिसे मैंने उसकी चमक के लिए खरीदा था, जो "नाकारट" नामक रंग के किसी उष्णकटिबंधीय शंख से बना था, और चमकदार नीले पत्थरों के एक छोटे मुकुट से सजा हुआ था। डिब्बे के ढक्कन के भीतर, मैंने अपनी कैंची की नोक से कुछ अक्षर सावधानीपूर्वक उकेरे।

* * * * *

पाठक को शायद मैडम बेक के उत्सव का वर्णन याद होगा; और यह भी नहीं भूले होंगे कि हर सालगिरह पर स्कूल द्वारा एक भव्य उपहार के लिए चंदा इकट्ठा किया जाता था। इस दिन को मनाने का सम्मान केवल मैडम बेक को ही प्राप्त था, और कुछ हद तक उनके रिश्तेदार और सलाहकार एम. इमैनुएल को भी। एम. इमैनुएल के मामले में, यह सम्मान स्वतः ही दिया जाता था, पहले से योजनाबद्ध नहीं होता था,

और यह कई अन्य प्रमाणों के साथ-साथ इस बात का भी प्रमाण था कि साहित्य के प्रोफेसर को उनके छात्रों द्वारा कितना सम्मान दिया जाता था - उनकी कुछ पक्षपातपूर्ण आदतों, पूर्वाग्रहों और चिड़चिड़े स्वभाव के बावजूद। उन्हें कोई भी कीमती वस्तु भेंट नहीं की जाती थी: उन्होंने स्पष्ट रूप से यह बता दिया था कि वे न तो प्लेट स्वीकार करेंगे और न ही गहने। फिर भी, उन्हें एक छोटा सा उपहार पसंद था; कीमत या धन का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था: एक हीरे की अंगूठी या सोने की नसवार की डिब्बी, चाहे धूमधाम से ही क्यों न भेंट की जाए, उन्हें एक फूल या एक चित्र से कम प्रसन्न करती, जो सादगी से और सच्ची भावनाओं के साथ भेंट किया गया हो। उनका स्वभाव ही ऐसा था। वह अपनी पीढ़ी के हिसाब से बुद्धिमान नहीं थे, फिर भी वे "ऊपर के प्रभात" के प्रति पुत्रवत सहानुभूति का दावा कर सकते थे।

एम. पॉल का पर्व 1 मार्च, गुरुवार को पड़ा। मौसम सुहाना और धूपदार था; और यह वही सुबह थी जब प्रार्थना सभा में शामिल होना प्रथा थी; साथ ही, इस दिन आधे दिन की छुट्टी भी थी जिससे दोपहर में बाहर घूमने, खरीदारी करने या मिलने-जुलने का अवसर मिलता था: इन सभी कारणों से पहनावे में एक अलग ही चमक और ताजगी थी। साफ कॉलर वाले कपड़े चलन में थे; साधारण फीके ऊनी कपड़े की जगह हल्के और साफ कपड़े पहने जा रहे थे। मैडमोजेल ज़ेली सेंट पियरे ने उस गुरुवार को एक रेशमी गाउन पहना था, जिसे मितव्ययी लाबासेकोर में एक जोखिम भरा वैभव और विलासिता का प्रतीक माना जाता था; इतना ही नहीं, यह भी कहा गया कि उन्होंने उस सुबह अपने बालों को संवारने के लिए एक हेयरड्रेसर को बुलाया था; कुछ विद्यार्थियों ने तो यह भी जान लिया कि उन्होंने अपने रूमाल और हाथों पर एक नया और फैशनेबल इत्र लगाया हुआ था। बेचारी ज़ेली! इस समय वह अक्सर कहती थीं कि वह एकांत और श्रम के जीवन से तंग आ चुकी हैं; वह आराम करने के लिए साधन और फुर्सत चाहती थी; कोई उसके लिए काम करे—एक ऐसा पति जो उसके सारे कर्ज चुका दे (वह बुरी तरह कर्ज में डूबी हुई थी), उसके कपड़ों का इंतजाम करे और उसे, जैसा कि वह कहती थी, "थोड़ा आनंद लेने" की आजादी दे। लंबे समय से यह अफवाह थी कि उसकी नजर एम. इमानुएल पर थी। श्री इमानुएल की नजर भी अक्सर उस पर रहती थी। वह बैठकर उसे मिनटों तक टकटकी लगाए देखता रहता था। मैंने उसे पंद्रह मिनट तक उसे घूरते देखा है, जबकि कक्षा चुपचाप रचना कर रही थी और वह अपने सोफे पर खाली बैठा था। इस पैनी नजर से हमेशा वाकिफ, वह

इसके नीचे छटपटाती रहती, आधी खुश, आधी हैरान, और श्रीमान उसकी भावनाओं को समझते, कभी-कभी बेहद पैनी नजर से देखते; क्योंकि कुछ मामलों में, उनके पास सहज ज्ञान की अचूक अंतर्दृष्टि थी, और वे हृदय के अंतिम छिपे हुए विचार को भी भेद देते थे, और दिखावटी आवरण के नीचे आत्मा के नंगे, बंजर स्थानों को पहचान लेते थे: हाँ, और उसकी विकृत प्रवृत्तियों को, और उसके छिपे हुए झूठे वक्रों को - वह सब कुछ जो पुरुष और स्त्री नहीं जानते थे - उनकी टेढ़ी रीढ़, जन्मजात विकृत अंग, और इससे भी बदतर, वह कलंक या कुरूपता जो शायद उन्होंने स्वयं पर लाई थी। कोई भी विपत्ति इतनी शापित नहीं थी कि एम. इमैनुएल उस पर दया न कर सकें और उसे क्षमा न कर सकें, यदि उसे ईमानदारी से स्वीकार किया जाए; लेकिन जहाँ उनकी जिज्ञासु दृष्टि बेईमान इनकार से टकराती थी - जहाँ उनकी निर्मम खोजों में कपटपूर्ण छिपाव मिलता था - ओह, तब वे क्रूर हो सकते थे, और मुझे लगता था कि दुष्ट भी! वह निर्धन, सहमे हुए लोगों से पर्दा छीन लेता, उन्हें शीघ्रता से नग्नता के पहाड़ की चोटी पर ले जाता, और वहाँ उन्हें पूरी तरह नंगा, पूरी तरह झूठा—जीते-जी झूठ—उस भयानक सत्य की संतान दिखाता जिसे बिना ढके देखा नहीं जा सकता। वह सोचता था कि वह न्याय कर रहा है; जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे संदेह है कि मनुष्य को मनुष्य के साथ ऐसा न्याय करने का अधिकार है या नहीं: उसकी इन हरकतों के दौरान, कई बार मुझे उसके पीड़ितों के लिए आँसू बहाने पड़े, और मैंने खुद पर क्रोध और तीखा प्रहार करने से खुद को नहीं बख्शा। वह इसके योग्य था; लेकिन उसके इस दृढ़ विश्वास को डिगाना मुश्किल था कि यह काम न्यायसंगत और आवश्यक था।

नाश्ता समाप्त होने और प्रार्थना सभा संपन्न होने के बाद, विद्यालय की घंटी बजी और कमरे भर गए: कक्षा में एक बहुत ही सुंदर दृश्य था। विद्यार्थी और शिक्षक करीने से सजे-धजे, व्यवस्थित और आशा भरी निगाहों से बैठे थे, हर किसी के हाथ में बधाई का गुलदस्ता था—बसंत के सबसे सुंदर, ताज़े फूल, जिनकी सुगंध हवा में घुल रही थी: मेरे पास तो कोई गुलदस्ता ही नहीं था। मुझे फूल खिलते देखना अच्छा लगता है, लेकिन जब उन्हें तोड़ लिया जाता है, तो वे मुझे प्रसन्न नहीं करते। मैं उन्हें जड़विहीन और नाशवान वस्तुएँ समझती हूँ; जीवन से उनकी समानता मुझे दुखी कर देती है। मैं अपने प्रियजनों को कभी फूल भेंट नहीं करती; मैं कभी भी अपने प्रियजनों के हाथों से फूल ग्रहण नहीं करना चाहती। मैडमोजेल सेंट पियरे ने मेरे खाली हाथों को देखा—उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं इतनी लापरवाह हो गई हूँ; उनकी निगाहें उत्सुकता

से मुझे चारों ओर घुमा रही थीं: ज़रूर मेरे पास कहीं न कहीं कोई प्रतीकात्मक फूल होगा: वायलेट का कोई छोटा सा गुच्छा, कुछ ऐसा जिससे मुझे अपनी कलात्मकता के लिए प्रशंसा और प्रतिभा के लिए सराहना मिले। साधारण सी दिखने वाली "अंग्रेज़" पेरिस की महिला के डर से कहीं बेहतर साबित हुई: वह बिल्कुल खाली बैठी थी, मानो सर्दियों के पेड़ पर कोई फूल या पत्ती न हो। यह देखकर ज़ेली मुस्कुराई और बहुत खुश हुई।

"आपने अपने पैसे बचाकर बहुत बुद्धिमानी का काम किया है, मिस लूसी," उसने कहा: "बेवकूफी! मैंने तो ग्रीनहाउस में उगाए गए फूलों के गुलदस्ते पर दो फ्रैंक बर्बाद कर दिए!"

और उसने गर्व से अपना खूबसूरत फूलों का गुलदस्ता दिखाया।

लेकिन चुप रहो! एक कदम: वो कदम। हमेशा की तरह, वो तुरंत आया, लेकिन इतनी तेज़ी से कि हमें लगा जैसे ये सिर्फ़ घबराहट और इरादे की तीव्रता से प्रेरित नहीं था। हमने सोचा कि आज सुबह हमारे प्रोफ़ेसर के कदमों की आहट में (रोमांटिक अंदाज़ में कहें तो) एक दोस्ताना वादा छिपा था; और ऐसा ही था।

वह ऐसे मूड में दाखिल हुए कि मानो पहले से ही जगमगाते फर्स्ट क्लास कमरे में नई धूप की किरण आ गई हो। सुबह की रोशनी हमारे पौधों के बीच खेल रही थी और दीवारों पर खिलखिला रही थी, जिसे एम. पॉल के सौम्य अभिवादन से और भी निखार मिला। एक सच्चे फ्रांसीसी की तरह (हालाँकि मुझे नहीं पता कि मुझे ऐसा क्यों कहना चाहिए, क्योंकि वह न तो फ्रांसीसी थे और न ही लाबासेकुरियन), उन्होंने स्थिति और अवसर के अनुरूप कपड़े पहने थे। उनके गहरे काले रंग के धुंधले, रहस्यमय और षड्यंत्रकारी जैसे कपड़ों से उनके शरीर की रूपरेखा नहीं छिपी थी; इसके विपरीत, उनका कद (जैसा भी था, मैं उस पर गर्व नहीं करता) एक सभ्य कोट और देखने में सुंदर रेशमी बनियान से और भी निखर रहा था। उनका विद्रोही और गैर-ईसाई ग्रीक टोपी वाला पहनावा गायब हो गया था: बिना टोपी के, वह हमारे पास आए, अपने दस्ताने वाले हाथ में एक ईसाई टोपी लिए हुए। वह छोटे कद के व्यक्ति अच्छे दिख रहे थे, बहुत अच्छे; उनकी नीली आँखों में मित्रता की स्पष्टता थी, और उनके सांवले रंग पर सद्भावना की चमक थी, जो सुंदरता के स्थान पर पूर्णतः समाहित थी: वास्तव में किसी को इस बात पर ध्यान देने की परवाह नहीं थी कि उनकी नाक, हालांकि छोटी नहीं थी, लेकिन उसका कोई विशेष आकार नहीं था, उनके गाल पतले

थे, उनके माथे उभरे हुए और चौकोर थे, उनके होंठ गुलाब की कली जैसे नहीं थे: लोगों ने उन्हें वैसे ही स्वीकार किया जैसे वे थे, और उनकी उपस्थिति को नीरस या महत्वहीन होने के बजाय विपरीत रूप से महसूस किया।

वह अपनी मेज की ओर बढ़ा; उसने अपनी टोपी और दस्ताने वहीं रख लिए। "शुभ दिन, मेरे दोस्तों," उसने एक ऐसे स्वर में कहा, जो हममें से कुछ लोगों को उसके कई तीखे और क्रूर गुस्से की भरपाई करता हुआ लगा: यह कोई हंसमुख, दोस्ताना स्वर नहीं था, न ही कोई चापलूसी भरा पुजारी जैसा लहजा, बल्कि एक ऐसी आवाज थी जो उसकी अपनी थी—एक ऐसी आवाज जो तब निकलती थी जब उसका दिल उसके होठों तक शब्द पहुंचाता था। वही दिल कभी-कभी बोलता भी था; हालांकि वह चिड़चिड़ा था, पर वह कठोर नहीं था: उसके भीतर एक ऐसी जगह थी, जो मनुष्य की कोमलता से भी कहीं अधिक कोमल थी; एक ऐसी जगह जो उसे छोटे बच्चों के प्रति विनम्र बना देती थी, जो उसे उन लड़कियों और महिलाओं से जोड़ देती थी, जिनके प्रति वह चाहे जितना भी विद्रोही क्यों न हो, अपने लगाव को नकार नहीं सकता था, और न ही इस बात से पूरी तरह इनकार कर सकता था कि कुल मिलाकर वह अपनी ही जाति की महिलाओं की तुलना में उनके साथ बेहतर व्यवहार करता था।

“हम सभी महोदय को शुभ दिन की शुभकामनाएं देते हैं और उनके पर्व की वर्षगांठ पर उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं,” सभा की प्रवक्ता बनते हुए मैडमोजेल ज़ेली ने कहा; और बिना किसी औपचारिकता के, उन्होंने अपना कीमती गुलदस्ता उनके सामने रख दिया। उन्होंने उसके ऊपर सिर झुकाया।

भेंटों का लंबा सिलसिला चलता रहा: सभी छात्राएँ, विदेशियों की तरह सहज कदमों से आगे बढ़ती हुई, अपनी-अपनी भेंटें छोड़ती गईं। हर लड़की ने अपने उपहार को इतनी कुशलता से सजाया कि जब आखिरी गुलदस्ता मेज पर रखा गया, तो वह एक खिलते हुए पिरामिड का शिखर बन गया – एक ऐसा पिरामिड जो खिलता हुआ, फैलता हुआ और इतनी उमंग से ऊंचा होता गया कि अंत में अपने पीछे के नायक को भी ढक लिया। यह समारोह समाप्त होने पर, सभी अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए और भाषण की प्रतीक्षा में सन्नाटे में बैठ गए।

मुझे लगता है कि पांच मिनट बीत गए होंगे और सन्नाटा बरकरार रहा होगा; दस मिनट बीत गए होंगे और कोई आवाज नहीं आई होगी।

वहाँ मौजूद कई लोग निःसंदेह यह सोचने लगे कि महोदय किस बात का इंतज़ार

कर रहे हैं; और उनका ऐसा सोचना स्वाभाविक भी था। चुपचाप, बिना हिले-डुले, बिना कुछ बोले, वे फूलों के ढेर के पीछे अपनी जगह पर डटे रहे।

अंत में एक गहरी सी आवाज निकली, मानो किसी खोखले स्थान से आ रही हो:

"बस इतना ही?"

मैडमोसेले ज़ेली ने चारों ओर देखा।

“क्या आप सभी ने अपने गुलदस्ते प्रस्तुत कर दिए हैं?” उसने विद्यार्थियों से पूछा।

हाँ; सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक, सबसे लंबे से लेकर सबसे छोटे तक, सभी ने अपने-अपने फूलों के गुलदस्ते दिए थे। वरिष्ठ शिक्षिका ने इस बात का स्पष्ट संकेत दिया।

“Est-ce là tout?” को एक ऐसे स्वर में दोहराया गया जो पहले गहरा था, लेकिन अब कुछ स्वर नीचे उतर गया था।

“महाशय,” मैडमोजेल सेंट पियरे ने उठते हुए और इस बार अपनी प्यारी मुस्कान के साथ कहा, “मुझे आपको यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि एक अपवाद को छोड़कर, कक्षा में सभी ने अपना गुलदस्ता भेंट किया है। श्रीमती लूसी के लिए, महाशय कृपा करके छूट देंगे; एक विदेशी होने के नाते, शायद उन्हें हमारे रीति-रिवाजों की जानकारी नहीं थी, या उन्होंने उनके महत्व को नहीं समझा। श्रीमती लूसी ने इस समारोह को इतना तुच्छ समझा कि उन्होंने इसे अपने पालन से सम्मानित नहीं किया।”

“मशहूर!” मैंने दांतों के बीच से बुदबुदाते हुए कहा: “तुम शुरुआत में बुरी वक्ता नहीं हो, ज़ेली।”

एस्ट्राडे से मैडमोजेल सेंट पियरे को दिया गया उत्तर पिरामिड के पीछे से हाथ के इशारे से दिया गया था। यह हस्तक्रिया शब्दों को तुच्छ समझने और मौन रहने का आदेश देने जैसी प्रतीत होती थी।

कुछ ही देर में, हाथ के पीछे एक आकृति दिखाई दी। महाशय अपने अंधकार से बाहर निकले; और अपने बरामदे के सामने आकर, सामने की दीवार को ढके हुए विशाल "मैपे-मोंडे" (दुनिया का नक्शा) को सीधे और टकटकी लगाकर देखते हुए, उन्होंने तीसरी बार, और अब वास्तव में दुखद स्वर में, मांग की —

"बस इतना ही?"

मैं आगे बढ़कर अपने हाथ में पकड़ी हुई लाल रंग की छोटी सी पेटी उनके हाथ में

थमाकर शायद सब ठीक कर सकती थी। मैंने यही करने का पूरा इरादा किया था; लेकिन, पहले तो महाशय के व्यवहार के हास्यपूर्ण पहलू ने मुझे थोड़ा रुकने के लिए प्रेरित किया, और अब, मैडमोजेल सेंट पियरे के बनावटी हस्तक्षेप ने मुझे और भी क्रोधित कर दिया। पाठक को अब तक मिस स्नो के चरित्र को पूर्णता का कोई आशय न होने के कारण, यह जानकर शायद ही आश्चर्य होगा कि वह पेरिस की महिला द्वारा लगाए गए किसी भी आरोप से खुद का बचाव करने में असमर्थ महसूस कर रही थीं, और इसके अलावा, एम. पॉल इतने दुखद थे, और उन्होंने मेरे इस विश्वासघात को इतनी गंभीरता से लिया कि वे नाराज होने के योग्य थे। इसलिए, मैंने अपनी पेटी और अपना चेहरा दोनों संभाले रखा, और पत्थर की तरह बेसुध बैठी रही।

"सब ठीक है!" आखिरकार एम. पॉल के होठों से ये शब्द निकले; और ये कहते ही, उनके माथे पर किसी तीव्र क्रोध, तिरस्कार और दृढ़ संकल्प का उभार सा छा गया, उनके होंठ लहरा उठे और गालों पर लकीरें पड़ गईं। आगे की सारी बातें मन में ही दबाकर, उन्होंने अपना வழக்க भाषण शुरू कर दिया।

मुझे बिल्कुल याद नहीं आ रहा कि यह "भाषण" क्या था; मैंने इसे सुना ही नहीं: उसकी झुंझलाहट या झुंझलाहट को अचानक खारिज करने की प्रक्रिया ने मुझे एक ऐसी अनुभूति दी जिसने बार-बार दोहराए गए "Est-ce là tout?" के हास्यास्पद प्रभाव को कुछ हद तक कम कर दिया।

भाषण के अंत में एक सुखद मोड़ आया और मेरा ध्यान एक बार फिर मनोरंजक ढंग से आकर्षित हो गया।

किसी मामूली सी आकस्मिक हलचल के कारण—मुझे लगता है कि मेरी अंगुली फर्श पर गिर गई थी, और उसे उठाने के लिए झुकते समय मेरा सिर डेस्क के नुकीले कोने से टकरा गया; इन छोटी-मोटी घटनाओं (जो स्वाभाविक रूप से मुझे, और शायद किसी और को भी, परेशान करने वाली थीं) से थोड़ी सी हलचल मच गई—एम. पॉल चिढ़ गए, और अपनी बनावटी शांति को त्यागकर, और उस गरिमा और आत्म-संयम को ताक पर रखकर, जिसे वे कभी लंबे समय तक धारण करना नहीं चाहते थे, उन्होंने उस धुन में बोलना शुरू कर दिया जो उन्हें सबसे अधिक आराम देती थी।

मुझे नहीं पता कि अपने "भाषण" के दौरान वह कैसे इंग्लिश चैनल पार करके ब्रिटिश धरती पर उतरने में कामयाब हो गया; लेकिन जब मैंने सुनना शुरू किया तो मैंने उसे वहीं पाया।

कमरे में चारों ओर एक त्वरित, व्यंग्यात्मक नज़र डालते हुए - एक ऐसी नज़र जो मुझ पर चुभती थी, या चुभने के इरादे से डाली गई थी - वह "लेस एंग्लैसेस" (अंग्रेज़ों) पर क्रोध से टूट पड़ा।

मैंने कभी भी अंग्रेज़ महिलाओं के साथ ऐसा बर्ताव होते नहीं देखा जैसा एम. पॉल ने उस सुबह किया था: उन्होंने किसी को नहीं बख्शा—न उनके दिमाग को, न उनके नैतिक मूल्यों को, न उनके व्यवहार को, न ही उनकी दिखावटी शक्ल-सूरत को। मुझे खास तौर पर उनकी लंबी कद-काठी, उनकी लंबी गर्दन, उनकी पतली बांहों, उनके बेढंगे पहनावे, उनकी किताबी शिक्षा, उनके नास्तिक संशयवाद (!), उनके असहनीय घमंड और उनके दिखावटी सद्गुणों पर उनकी तीखी आलोचना याद है: जिस पर उन्होंने द्वेषपूर्वक दांत पीसे और ऐसा लग रहा था मानो अगर हिम्मत होती तो वो कुछ अटपटी बातें कह देते। ओह! वो कितने द्वेषपूर्ण, कटु और क्रूर थे; और स्वाभाविक रूप से, बेहद बदसूरत भी।

“छोटे दुष्ट विषैले आदमी!” मैंने सोचा; “क्या मैं तुम्हें नाराज़ करने या तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुँचाने के डर से खुद को परेशान करने वाला हूँ? नहीं, बिलकुल नहीं; तुम मेरे लिए उदासीन रहोगे, जैसे तुम्हारे फूलों के ढेर में सबसे पुराना गुलदस्ता।”

मुझे यह कहते हुए खेद है कि मैं इस संकल्प को पूरी तरह से पूरा नहीं कर सका। कुछ समय तक इंग्लैंड और अंग्रेजों के अपमान ने मुझे स्तब्ध कर दिया: मैंने लगभग पंद्रह मिनट तक इसे धैर्यपूर्वक सहन किया; लेकिन यह फुफकारता हुआ सांप डंक मारने पर तुला हुआ था, और उसने अंत में ऐसी बातें कहीं - न केवल हमारी महिलाओं पर, बल्कि हमारे सबसे महान नामों और सर्वश्रेष्ठ पुरुषों पर भी निशाना साधा; ब्रिटानिया के प्रतीक चिन्ह को कलंकित किया, और यूनियन जैक को कीचड़ में डुबो दिया - जिससे मुझे गहरा आघात लगा। उसने बड़े चाव से महाद्वीपीय इतिहास के सबसे तीखे झूठों को उछाला - जिनसे अधिक अपमानजनक कुछ भी नहीं सोचा जा सकता। ज़ेली और पूरी कक्षा प्रतिशोधी आनंद से भर उठी; क्योंकि यह जानना दिलचस्प है कि लाबासेकोर के ये मसखरे इंग्लैंड से कितनी गुप्त रूप से नफरत करते हैं। अंत में, मैंने अपनी मेज पर एक तेज प्रहार किया, अपने होंठ खोले, और यह चीख निकाली: —

“इंग्लैंड, इतिहास और नायकों की जय हो! फ्रांस का नाश हो!

कल्पना और बदमाश!

पूरी कक्षा स्तब्ध रह गई। मुझे लगता है उन्होंने मुझे पागल समझ लिया। प्रोफेसर ने अपना रुमाल ऊपर उठाया और उसकी तहों में शैतानी मुस्कान के साथ मुस्कुराए। धिक्कार है, दुष्टता का छोटा सा दानव! अब उन्हें लगा कि उन्होंने जीत हासिल कर ली है, क्योंकि उन्होंने मुझे क्रोधित कर दिया था। पल भर में उनका मूड ठीक हो गया। बड़ी सहजता से उन्होंने अपने फूलों का विषय फिर से शुरू किया; उनकी मिठास, सुगंध, शुद्धता आदि के बारे में काव्यात्मक और प्रतीकात्मक ढंग से बात की; "युवा लड़कियों" और अपने सामने खिले मीठे फूलों के बीच फ्रांसीसी तुलना की; मैडमोजेल सेंट पियरे के गुलदस्ते की श्रेष्ठता की दिल खोलकर प्रशंसा की; और यह घोषणा करते हुए समाप्त किया कि वसंत की पहली सचमुच सुहावनी, हल्की और उमस भरी सुबह, वे पूरी कक्षा को नाश्ते के लिए गाँव ले जाने का इरादा रखते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा, "कम से कम कक्षा के उन लोगों को, जिन्हें वे अपने मित्रों में गिन सकते हैं।"

“तो मैं वहां नहीं रहूंगा,” मैंने अनजाने में ही घोषणा कर दी।

“ठीक है!” यह उसका जवाब था; और अपने फूलों को बाहों में समेटते हुए वह कक्षा से बाहर निकल गया; जबकि मैं अपना काम, कैंची, अंगुली और उपेक्षित छोटी सी पेटी को अपनी मेज पर रखकर ऊपर की ओर चली गई। मुझे नहीं पता कि उसे गुस्सा आया था या नहीं, लेकिन मैं यह स्वीकार करने में संकोच नहीं करती कि मुझे आया था।

फिर भी, एक अजीब से क्षणिक गुस्से के साथ, मैं एक घंटे तक अपने बिस्तर के किनारे पर बैठी रही, उसके हाव-भाव, इशारे और शब्दों की कल्पना करती रही, और फिर अचानक पूरे दृश्य पर मुस्कुरा दी। मुझे थोड़ा अफसोस हुआ कि मैंने उसे वह डिब्बा नहीं दिया। मैं उसे खुश करना चाहती थी। लेकिन किस्मत को यही मंजूर नहीं था।

दोपहर के दौरान, यह याद करते हुए कि कक्षा में डेस्क किसी भी तरह से अछूते भंडार नहीं थे, और यह सोचते हुए कि ढक्कन पर लिखे शुरुआती अक्षरों, पी.सी.डी.ई., यानी पॉल कार्ल (या कार्लोस) डेविड इमानुएल (यह उनका पूरा नाम था) के कारण बक्से को सुरक्षित रखना बेहतर होगा - इन विदेशियों के पास हमेशा बपतिस्मा के प्रमाण पत्रों की एक श्रृंखला होती है - मैं स्कूल के कमरे में नीचे उतरा।

यह कमरा छुट्टियों की शांति में सोया हुआ था। दिन के सभी छात्र घर जा चुके थे,

बोर्डिंग में रहने वाले छात्र टहलने निकले थे, सप्ताह की निगरानी करने वाली शिक्षिका को छोड़कर बाकी सभी शिक्षक शहर में घूमने या खरीदारी करने गए थे; कमरों का सुइट खाली था; और ग्रैंड हॉल भी खाली था, जिसके बीच में एक विशाल, गंभीर ग्लोब लटका हुआ था, दो शाखाओं वाले झूमर थे, और एक क्षैतिज ग्रैंड पियानो बंद, शांत, सप्ताह के मध्य की शांति का आनंद ले रहा था। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि प्रथम कक्षा का दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था; यह कमरा आमतौर पर खाली होने पर बंद रहता था, और तब मैडम बेक और मेरे अलावा किसी के लिए भी इसमें प्रवेश करना असंभव था, क्योंकि मेरे पास इसकी एक डुप्लीकेट चाबी थी। पास जाकर मुझे और भी आश्चर्य हुआ, जब मुझे जीवन की एक अस्पष्ट हलचल सुनाई दी - एक कदम, एक कुर्सी का हिलना, एक डेस्क के खुलने जैसी आवाज।

"निरीक्षण का काम तो सिर्फ मैडम बेक ही कर रही हैं," एक पल सोचने के बाद यही निष्कर्ष निकला। आंशिक रूप से खुला दरवाजा इस बात की पुष्टि का मौका दे रहा था। मैंने देखा। देखो! मैडम बेक का निरीक्षण वाला पहनावा नहीं—शॉल और साफ टोपी—बल्कि कोट और एक आदमी का छोटा, काला सिर। यह व्यक्ति मेरी कुर्सी पर बैठा था; उसका जैतून रंग का हाथ मेरी मेज को पकड़े हुए था, कागजों के बीच उसकी नाक दिखाई नहीं दे रही थी। उसकी पीठ मेरी तरफ थी, लेकिन उसकी पहचान को लेकर कोई संदेह नहीं हो सकता था। औपचारिक पोशाक पहले ही उतार दी गई थी: प्रिय और स्याही से सना हुआ पैलेटोट फिर से पहन लिया गया था; टेढ़ी-मेढ़ी ग्रीक टोपी फर्श पर पड़ी थी, मानो किसी व्यस्तता में हाथ से छूट गई हो।

अब मैं जानती थी, और मुझे बहुत पहले से पता था, कि एम. इमानुएल का हाथ मेरी मेज से बहुत ही घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था; वह ढक्कन उठाता-उतारता, अंदर रखी चीजों को इधर-उधर करता और व्यवस्थित करता, लगभग उसी सहजता से जैसे मैं करती हूँ। यह बात संदिग्ध नहीं थी, और न ही वह ऐसा चाहता था: वह हर बार आने के स्पष्ट और अचूक निशान छोड़ जाता था; हालाँकि, अब तक मैंने उसे कभी रंगे हाथों नहीं पकड़ा था: चाहे मैं कितनी भी निगरानी कर लूँ, मैं उसके आने के समय और क्षणों का पता नहीं लगा सकती थी। मैंने उस प्रशिक्षु के काम को रात भर गलतियों से भरे अभ्यास पत्रों में देखा, जिन्हें अगली सुबह सावधानीपूर्वक सुधारा हुआ पाया जाता था: मैंने उसकी मनमौजी सद्भावना से प्राप्त होने वाली सुखद और ताजगी भरी उधारी का भरपूर लाभ उठाया। एक फीकी पड़ चुकी शब्दकोश और घिसी-पिटी

व्याकरण की किताब के बीच जादुई रूप से एक नई, रोचक रचना या एक क्लासिक, अपनी परिपक्व अवस्था में मधुर और मीठी रचना पनप उठती थी। मेरी काम की टोकरी से हँसते हुए एक प्रेम कहानी झाँकती थी, और उसके नीचे वह पुस्तिका या पत्रिका छिपी होती थी, जिससे पिछली शाम की पढ़ाई निकाली गई थी। इन खजानों के स्रोत पर संदेह करना असंभव था: अगर कोई और संकेत न होता, तो उनमें एक ही खास बात, जो सबमें समान थी, इस सवाल का जवाब दे देती - उनमें सिगार की गंध आती थी। यह बहुत चौंकाने वाला था, बेशक: पहले तो मुझे भी ऐसा ही लगा, और मैं अपनी मेज को हवा देने के लिए खिड़की जल्दी से खोल देता था, और बड़ी सावधानी से उंगली और अंगूठे से उन आपत्तिजनक ब्रोशरों को ताज़ी हवा में फैला देता था। अचानक ही मेरी यह औपचारिकता छूट गई। एक दिन महोदय ने मुझे ऐसा करते हुए पकड़ लिया, इशारा समझ गए, तुरंत मेरे हाथ से बोझ हटा दिया, और अगले ही पल उसे धधकते चूल्हे में फेंकने वाले थे। संयोग से वह एक किताब थी, जिसे मैं पढ़ने में लगा हुआ था; इसलिए इस बार मैं उनसे भी ज्यादा दृढ़ और फुर्तीला साबित हुआ; मैंने वह किताब वापस ले ली, और - इस किताब को बचाकर - फिर कभी दूसरी किताब लेने का जोखिम नहीं उठाया। इन सबके बावजूद, मैं उनकी मुलाकातों में उस अजीबोगरीब, दोस्ताना, सिगार प्रेमी प्रेत को कभी पकड़ नहीं पाया था।

लेकिन अब आखिरकार मैंने उसे पा लिया: वह वहीं था—स्वयं ब्राउनी; और उसके होठों से उसकी भारतीय प्रेमिका की हल्की नीली सांस निकल रही थी: वह मेरी डेस्क पर सिगरेट पी रहा था: इससे उसकी पोल खुल सकती थी। इस बात से उत्तेजित होकर, और फिर भी उसे आश्चर्यचकित करने की खुशी से—यानी उस गृहिणी की मिली-जुली भावना से खुश होकर, जो आखिरकार अपने अजनबी बौने साथी को डेयरी में बेवजह मथने में व्यस्त पाती है—मैं धीरे से आगे बढ़ी, उसके पीछे खड़ी हो गई, सावधानी से उसके कंधे पर झुक गई।

आज सुबह की शत्रुता, मेरी कथित लापरवाही, उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचने और उनके गुस्से के भड़कने के बाद भी, यह देखकर मेरा दिल व्याकुल हो गया कि वे सब कुछ भूलकर क्षमा करने को तैयार थे और मेरे लिए दो सुंदर पुस्तकें लाए थे, जिनके शीर्षक और लेखक का नाम ही मेरी रुचि का प्रमाण थे। अब, जब वे डेस्क पर झुके बैठे थे, तो वे उनके पन्नों को मिला रहे थे; लेकिन कोमल और सावधानीपूर्वक हाथों से; बेशक उन्हें अस्त-व्यस्त कर रहे थे, लेकिन नुकसान नहीं पहुँचा रहे थे। मेरा

दिल व्याकुल हो गया: जब मैं उनके ऊपर झुका, जब वे बेहोश बैठे थे, मेरी यथासंभव मदद कर रहे थे, और मुझे विश्वास है कि मेरे प्रति उनके मन में कोई दुर्भावना नहीं थी, तो सुबह का मेरा सारा गुस्सा पिघल गया: मुझे प्रोफेसर इमानुएल से कोई घृणा नहीं थी।

मुझे लगता है उसने मेरी सांसें सुन लीं। वह अचानक मुड़ा: उसका स्वभाव घबराया हुआ था, फिर भी वह कभी चौंका नहीं और उसका चेहरा भी शायद ही कभी बदला: उसमें कुछ दृढ़ता थी।

“मुझे लगा कि आप दूसरे शिक्षकों के साथ शहर गए हैं,” उन्होंने अपने आप पर काबू पाने की कोशिश करते हुए कहा, जो लगभग उनके हाथ से निकल गया था — “अच्छा हुआ कि आप नहीं गए। क्या आपको लगता है कि मुझे पकड़े जाने की परवाह है? बिलकुल नहीं। मैं अक्सर आपकी डेस्क पर आता हूँ।”

"महाशय, मुझे पता है।"

“कभी-कभार आपको कोई ब्रोशर या ग्रंथ मिल जाता है; लेकिन आप उन्हें पढ़ते नहीं हैं, क्योंकि वे इस नजरिए से ओझल हो जाते हैं?” — अपनी सिगार को छूते हुए।

उन्होंने ऐसा किया है, और इस प्रक्रिया से उनमें कोई सुधार नहीं हुआ है; लेकिन मैं उन्हें पढ़ता हूं।

“बिना आनंद के?”

"महामहिम का विरोध नहीं किया जाना चाहिए।"

“क्या आपको ये पसंद हैं, या इनमें से कोई भी? — क्या ये स्वीकार्य हैं?” “महाशय ने मुझे इन्हें सौ बार पढ़ते हुए देखा है, और वह जानते हैं कि मेरे पास इतने अधिक मनोरंजन के साधन नहीं हैं कि मैं उनके द्वारा प्रदान किए गए मनोरंजन को कम महत्व दूं।”

"मेरा इरादा नेक है; और अगर आपको मेरा इरादा नेक लगता है, और मेरे प्रयासों से आपको थोड़ा बहुत आनंद मिलता है, तो हम दोस्त क्यों नहीं बन सकते?"

"एक भाग्यवादी कहेगा - क्योंकि हम ऐसा नहीं कर सकते।"

उन्होंने आगे कहा, "आज सुबह मैं बहुत खुश होकर उठा और खुशी-खुशी कक्षा में आया; तुमने मेरा पूरा दिन खराब कर दिया।"

"नहीं, महाशय, केवल एक या दो घंटे के लिए, और वह भी अनजाने में।"

“अनजाने में! नहीं। यह मेरा त्योहार था; सबने मुझे शुभकामनाएँ दीं, सिवाय तुम्हारे। तीसरी कक्षा के छोटे बच्चों ने एक-दूसरे को वायलेट के गुच्छे दिए, तुतलाते हुए बधाई दी: — तुम — कुछ नहीं। न एक कली, न एक पत्ता, न एक फुसफुसाहट — एक नज़र भी नहीं। क्या यह अनजाने में हुआ था?”

मेरा इरादा किसी को नुकसान पहुंचाने का नहीं था।

“तो क्या तुम्हें हमारी परंपरा का पता नहीं था? क्या तुम तैयार नहीं थे? अगर तुम्हें पता होता कि मुझसे इसकी उम्मीद की जाती है, तो तुम मुझे प्रसन्न करने के लिए खुशी-खुशी एक फूल पर कुछ पैसे खर्च कर देते? ऐसा कह दो, और सब कुछ भुला दिया जाएगा, और दर्द कम हो जाएगा।”

मुझे पता था कि ऐसा होने की उम्मीद थी: मैं तैयार थी; फिर भी मैंने फूलों पर एक पैसा भी खर्च नहीं किया।

“यह अच्छा है—ईमानदारी से काम लेना ठीक है। अगर तुमने चापलूसी की होती और झूठ बोला होता, तो मैं तुमसे नफरत करने लगता। मुस्कुराकर दिलचस्पी दिखाने, स्नेह जताने और दिल से झूठे और ठंडे होने से बेहतर है कि सीधे-सीधे कह दो, ‘पॉल कार्ल इमानुएल—जे ते डेतेस्टे, मोन गार्सन!’” मुझे नहीं लगता कि तुम झूठे और ठंडे हो; लेकिन मुझे लगता है कि तुमने जीवन में एक बड़ी गलती की है; मुझे लगता है कि तुम्हारा निर्णय गलत है—तुम वहाँ उदासीन हो जहाँ तुम्हें आभारी होना चाहिए—और शायद वहाँ समर्पित और आसक्त हो जहाँ तुम्हें अपने नाम की तरह शांत रहना चाहिए। यह मत सोचो कि मैं चाहता हूँ कि तुम मुझसे प्यार करो, मैडमोजेल; भगवान तुम्हें बचाए! तुम क्यों चौंक रही हो? क्योंकि मैंने जुनून कहा? खैर, मैं फिर से कहता हूँ। ऐसा शब्द है, और ऐसी चीज है—हालाँकि इन दीवारों के भीतर नहीं, भगवान का शुक्र है! तुम कोई बच्ची नहीं हो कि जो मौजूद है उसके बारे में बात न की जाए; लेकिन मैंने सिर्फ शब्द कहा—चीज, मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ। तुम मेरे पूरे जीवन और विचारों से बिल्कुल अलग हो। अतीत में तुम्हारा अंत हो चुका है—वर्तमान में तुम दफ़न हो—तुम्हारी कब्र गहरी खोदी गई है, उस पर ढेर लगे हैं और वह कई सर्दियों पुरानी है: भविष्य में तुम्हारा पुनरुत्थान होगा, जैसा कि मुझे अपने मन को सांत्वना देने के लिए विश्वास है; लेकिन तब सब कुछ बदल जाएगा—रूप और भावना: नश्वर अमरता धारण कर लेगा—वह उठेगा, पृथ्वी के लिए नहीं, बल्कि स्वर्ग के लिए। मैं तुमसे बस इतना ही कहना चाहता हूँ, मिस लूसी स्नो—कि तुम्हें प्रोफ़ेसर पॉल

इमानुएल के साथ शालीनता से पेश आना चाहिए।

मैं इस भावना का खंडन नहीं कर सका और न ही मैंने किया।

“मुझे बताओ,” उसने आगे पूछा, “तुम्हारा त्योहार कब है, और मैं एक छोटी सी भेंट के बदले कुछ सेंटिम्स देने में कोई आपत्ति नहीं करूंगा।”

“आप भी मेरी तरह ही होंगे, महोदय: इसकी कीमत कुछ सेंटिम से कहीं अधिक है, और

मुझे इसकी कीमत से कोई आपत्ति नहीं थी।

और खुली हुई मेज से वह छोटा सा डिब्बा उठाकर मैंने उसके हाथ में रख दिया।

मैंने आगे कहा, "यह आज सुबह मेरी गोद में तैयार पड़ा था; और अगर महाशय थोड़ा और धैर्यवान होते, और मैडमोजेल सेंट पियरे कम दखल देतीं - शायद मुझे यह भी कहना चाहिए, अगर मैं अधिक शांत और समझदार होती - तो मैं इसे तभी दे देती।"

उसने डिब्बे की ओर देखा: मैंने उसका साफ, गर्म रंग और चमकीला नीला घेरा देखा, जो उसकी आँखों को भा गया। मैंने उसे इसे खोलने को कहा।

“मेरे नाम के पहले अक्षर!” उसने ढक्कन पर लिखे अक्षरों की ओर इशारा करते हुए कहा। “तुम्हें किसने बताया कि मेरा नाम कार्ल डेविड है?”

"एक छोटी चिड़िया, महोदय।"

क्या यह मेरे से आपके पास उड़कर आता है? फिर जरूरत पड़ने पर इसके पंख के नीचे संदेश बांधा जा सकता है।

उसने चेन निकाली—मूल्य के हिसाब से तो वह मामूली थी, लेकिन रेशम से चमकीली और मोतियों से जगमगाती हुई थी। उसे वह भी अच्छी लगी—उसने एक बच्चे की तरह सहजता से उसकी प्रशंसा की।

“मेरे लिए?”

"हाँ तुम्हारे लिए।"

"क्या तुम कल रात इसी काम में लगे हुए थे?"

"जो उसी।"

"क्या तुमने इसे आज सुबह ही पूरा कर लिया?"

“मैंने किया।”

"क्या आपने इसे इस इरादे से शुरू किया था कि यह मेरा हो?"

"निश्चित रूप से।"

और क्या इसे मेरे पर्व के दिन अर्पित किया गया था?

"हाँ।"

"क्या यह उद्देश्य आपके बुनने के दौरान भी जारी रहा?"

मैंने फिर से सहमति दे दी।

“तो फिर यह आवश्यक नहीं है कि मैं इसका कोई भाग काट दूं — यह कहते हुए कि यह भाग मेरा नहीं है: इसे किसी और के विचार और अलंकरण के लिए बुना गया था?”

"बिल्कुल नहीं। यह न तो आवश्यक है और न ही न्यायसंगत होगा।"

“क्या यह वस्तु पूरी तरह मेरी है?”

वह वस्तु पूरी तरह से आपकी है।

तुरंत ही महोदय ने अपना पैलेटोट खोला, अपने सीने पर गार्ड को बड़े करीने से सजाया, जितना हो सके उतना प्रदर्शित किया और जितना कम हो सके उतना छिपाया: क्योंकि उन्हें अपनी पसंद की और सजावटी चीज़ों को छिपाने का कोई विचार ही नहीं था। डिब्बे के बारे में उन्होंने कहा कि यह एक शानदार बोनबोनियर है - वैसे, उन्हें बोनबोन बहुत पसंद थे - और चूंकि उन्हें हमेशा अपनी पसंद की चीज़ें दूसरों के साथ साझा करना अच्छा लगता था, इसलिए वे अपनी "ड्रैगीज़" (आइसक्रीम) उतनी ही आसानी से देते थे जितनी आसानी से वे अपनी किताबें उधार देते थे। मेरे डेस्क में रखे ब्राउनी के उपहारों में से, मैं कई चॉकलेट कॉम्बिट्स गिनना भूल गया। इन मामलों में उनका स्वाद दक्षिणी था, और जिसे हम बचकाना समझते हैं। उनका साधारण दोपहर का भोजन अक्सर एक "ब्रियोश" (एक प्रकार का ब्रेड) होता था, जिसे वे अक्सर तीसरी श्रेणी के किसी बच्चे के साथ साझा करते थे।

“अब जो हो चुका है,” उन्होंने अपना पैलेटोट ठीक करते हुए कहा; और इस विषय पर हमारी कोई और बात नहीं हुई। अपने साथ लाए दो खंडों को देखने के बाद, और अपनी कलम से कुछ पन्ने काटने के बाद (वे आम तौर पर अपनी किताबें उधार देने से पहले उनमें से कुछ पन्ने काट देते थे, खासकर अगर वे उपन्यास होते थे, और कभी-कभी मुझे उनकी इस सख्ती पर थोड़ा गुस्सा आता था, क्योंकि काटे गए पन्ने कहानी को बाधित करते थे), वे उठे, विनम्रता से अपनी ग्रीक टोपी को छुआ, और मुझे शिष्टाचारपूर्वक शुभ दिन कहा।

मैंने सोचा, "अब हम दोस्त हैं, अगली बार जब तक हमारा झगड़ा न हो जाए।"

हम उसी शाम फिर से झगड़ सकते थे, लेकिन हैरानी की बात है कि हम उस मौके का फायदा उठाने में नाकाम रहे।

सभी उम्मीदों के विपरीत, एम. पॉल अध्ययन के समय आ गए। सुबह उन्हें इतनी बार देखने के बाद, हमें रात में उनकी उपस्थिति की उम्मीद नहीं थी। हालाँकि, जैसे ही हम पाठ के लिए बैठे, वे प्रकट हो गए। मैं स्वीकार करती हूँ कि उन्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई, इतनी खुशी कि मैं मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी; और जब वे उसी सीट पर बैठ गए जिसके बारे में पहले एक गंभीर गलतफहमी हुई थी, तो मैंने उनके लिए ज्यादा जगह न बनाने का पूरा ध्यान रखा; उन्होंने ईर्ष्यालु, तिरछी नज़र से देखा कि क्या मैं पीछे हट जाती हूँ, लेकिन मैं नहीं हटी, हालाँकि बेंच थोड़ी भीड़भाड़ वाली थी। एम. पॉल से दूर हटने की मेरी शुरुआती प्रवृत्ति अब कम हो रही थी। पैलेटोट और बोनट-ग्रेक की आदत हो जाने के कारण, इन कपड़ों का आसपास होना अब असहज या बहुत डरावना नहीं लगता था। मैं अब उनके बगल में घुटन महसूस करते हुए नहीं बैठती थी; मैं जब चाहूँ तब हिलती-डुलती थी, जब ज़रूरत होती थी तब खाँसती थी, यहाँ तक कि जब थक जाती थी तब जम्हाई भी लेती थी—संक्षेप में, जो मन करता था वही करती थी, पूरी तरह से उनकी कृपा पर निर्भर थी। कम से कम आज शाम तो मेरी इस गुस्ताखी का मुझे वो दंड नहीं मिला जिसके मैं हकदार थी; वे दयालु और सौम्य स्वभाव के थे; उनकी आँखों में एक भी तिरछी नज़र नहीं थी, उनके होंठों से एक भी जल्दबाज़ी वाला शब्द नहीं निकला। शाम ढलने तक उन्होंने मुझसे बात तक नहीं की, फिर भी मुझे किसी तरह महसूस हुआ कि वे मित्रता से भरे हुए हैं। मौन के भी कई प्रकार होते हैं और उसके अलग-अलग अर्थ होते हैं; एम. पॉल की भावहीन उपस्थिति से बढ़कर कोई शब्द इतना सुखद संतोष नहीं दे सकते थे। जब थाली आई और खाने की गहमागहमी शुरू हुई, तो जाते हुए उन्होंने बस इतना कहा कि मुझे शुभ रात्रि और मीठे सपने आएँ; और मुझे भी शुभ रात्रि और मीठे सपने आए।

अध्याय XXX

एम. पॉल.

फिर भी पाठक को सलाह दी जाती है कि वह अपने उदार निष्कर्षों पर जल्दबाजी न करे, या अत्यधिक उदारता के साथ यह न मान ले कि उस दिन से एम. पॉल एक बदला हुआ चरित्र बन गया - जिसके साथ रहना आसान हो गया, और जो अब अपने आसपास खतरा और असुविधा पैदा करने की प्रवृत्ति नहीं रखता।

नहीं; स्वभाव से ही वह एक छोटा, चिड़चिड़े स्वभाव का व्यक्ति था। जब वह अत्यधिक तनावग्रस्त होता था, जो अक्सर होता था, तो वह बेहद चिड़चिड़ा हो जाता था; और इसके अलावा, उसकी रगें ईर्ष्या के गहरे लाल रंग से रंगी हुई थीं, जो ईर्ष्या का प्रतीक है। मेरा तात्पर्य केवल हृदय की कोमल ईर्ष्या से नहीं है, बल्कि उस कठोर, संकीर्ण भावना से है जो मस्तिष्क में उत्पन्न होती है।

जब मैं एम. पॉल को देखता था, और वो मेरी किसी गलती पर भौंहें चढ़ाते या होंठ मटकाते थे, जिसमें उनकी उम्मीद से कम गलतियाँ होती थीं (क्योंकि उन्हें मेरी गलतियाँ पसंद थीं: गलतियों का ढेर उन्हें मेवों के गुच्छे की तरह मीठा लगता था), तो मुझे लगता था कि उनमें नेपोलियन बोनापार्ट की झलक है। आज भी मुझे ऐसा ही लगता है।

उदारता की घोर अवहेलना करते हुए, वह महान सम्राट के समान थे। एम. पॉल बीस विद्वान महिलाओं से झगड़ा कर सकते थे, पूरे समूह के साथ छोटी-मोटी कहा-सुनी और आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला बेशर्मी से जारी रख सकते थे, और अपनी गरिमा की हानि या अपमान की कभी परवाह नहीं करते थे। अगर मैडम डी स्टेल्स ने उन्हें नाराज़ किया होता, उनका अपमान किया होता, उनसे प्रतिस्पर्धा की होती या उनका विरोध किया होता, तो वह उन्हें पचास बार देश निकाला दे देते।

मुझे मैडम पनाचे के साथ उनकी एक तीखी बहस अच्छी तरह याद है—वह मैडम बेक द्वारा इतिहास पढ़ाने के लिए अस्थायी रूप से नियुक्त महिला थीं। वह चतुर थीं—अर्थात, उन्हें काफी ज्ञान था; और इसके अलावा, उन्हें अपने ज्ञान का भरपूर उपयोग करने की कला भी पूरी तरह आती थी; शब्दों और आत्मविश्वास पर उनका पूर्ण अधिकार था। उनका रूप-रंग भी आकर्षक था; मेरा मानना है कि कई लोग उन्हें "एक

सुंदर महिला" कहते; फिर भी उनके सशक्त और आकर्षक व्यक्तित्व के साथ-साथ उनकी चपल और मुखर उपस्थिति में कुछ ऐसी बातें थीं, जो एम. पॉल के नाजुक और नखरे वाले स्वभाव को भा जाती थीं। गलियारे में गूंजती उनकी आवाज उन्हें एक अजीब सी तल्लीनता में डाल देती थी; गलियारे में उनके लंबे, सहज कदम—लगभग उछलते हुए कदम—अक्सर उन्हें अपने कागजात उठाकर तुरंत वहां से भागने पर मजबूर कर देते थे।

एक दिन उसने बुरे इरादे से उसकी कक्षा में घुसपैठ करने का सोचा; उसने पलक झपकते ही उसकी शिक्षण पद्धति का पता लगा लिया; जो उसकी अपनी पसंदीदा पद्धति से भिन्न थी। उसने बिना किसी औपचारिकता या शिष्टाचार के उसकी कमियों को उजागर किया। क्या वह आज्ञापालन और ध्यान की अपेक्षा रखता था, यह मुझे नहीं पता; उसे तीखे विरोध का सामना करना पड़ा, साथ ही उसके निःसंदेह हस्तक्षेप के लिए उसे करारा फटकार भी मिली।

गरिमा के साथ पीछे हटने के बजाय, जैसा कि वे अभी भी कर सकते थे, उन्होंने चुनौती दे दी। मैडम पनाचे, जो पेंथिसिलिया की तरह आक्रामक थीं, ने तुरंत चुनौती स्वीकार कर ली। उन्होंने हस्तक्षेप करने वाले के चेहरे पर उंगलियां चटकाईं; और शब्दों के तूफान के साथ उन पर टूट पड़ीं। एम. इमानुएल वाक्पटु थे; लेकिन मैडम पनाचे वाचाल थीं। भयंकर शत्रुता का दौर शुरू हो गया। अपनी सुंदर शत्रु पर, उसके आत्मसम्मान और मुखरता पर, दबे स्वर में हंसने के बजाय, एम. पॉल ने उससे घोर घृणा की; उन्होंने अपने तीव्र क्रोध से उसका सम्मान किया; उन्होंने प्रतिशोधी और निर्दयी रूप से उसका पीछा किया, अपने बिस्तर पर चैन से सोने से इनकार कर दिया, अपने भोजन का उचित लाभ उठाने से मना कर दिया, या यहां तक कि शांति से अपनी सिगार का आनंद लेने से भी इनकार कर दिया, जब तक कि उसे पूरी तरह से संस्थान से बाहर नहीं निकाल दिया गया। प्रोफेसर विजयी हुए, लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि इस जीत की चमक उनके माथे पर शोभायमान थी। एक बार मैंने इस बात का संकेत देने का साहस किया। मुझे बड़े आश्चर्य हुआ जब उन्होंने माना कि मैं सही हो सकता हूँ, लेकिन उन्होंने कहा कि जब उनका सामना मैडम पनाचे जैसी अशिष्ट, आत्मसंतुष्ट स्वभाव वाली किसी भी महिला या पुरुष से होता है, तो वे अपने आवेश पर नियंत्रण नहीं रख पाते; एक असहनीय और तीव्र घृणा उन्हें विनाशकारी युद्ध के लिए प्रेरित करती है।

तीन महीने बाद, जब उसे पता चला कि उसके पराजित शत्रु को हार का सामना करना पड़ा है और रोज़गार न मिलने के कारण वह सचमुच परेशान है, तो उसने अपनी घृणा भुला दी और अच्छे-बुरे दोनों ही कामों में समान रूप से सक्रिय होकर, उसे नौकरी दिलाने के लिए हर संभव प्रयास किया। जब वह उससे पुराने मतभेद सुलझाने और उसकी हालिया दयालुता के लिए धन्यवाद देने आई, तो उसकी पुरानी आवाज़ - थोड़ी ऊँची - और उसका पुराना अंदाज़ - थोड़ा आक्रामक - ने उस पर ऐसा प्रभाव डाला कि दस मिनट के भीतर ही वह घबराकर उठ खड़ा हुआ और उसे, या यूँ कहें कि खुद को, कमरे से बाहर निकाल दिया।

एक साहसिक तुलना करें तो, सत्ता के लोभ और सर्वोच्चता की लालसा में एम. इमैनुएल बोनापार्ट के समान थे। वे ऐसे व्यक्ति थे जिनके सामने हमेशा झुकना उचित नहीं था। कभी-कभी प्रतिरोध करना आवश्यक होता था; कभी-कभी स्थिर रहना, उनकी आँखों में आँखें डालकर उन्हें यह बताना कि उनकी अपेक्षाएँ तर्क से परे हैं—कि उनका निरंकुशवाद अत्याचार की सीमा तक पहुँच गया है, उचित होता था।

उसके दायरे में और उसके शासन में उभरती विलक्षण प्रतिभाओं के पहले विकास ने उसे अजीब तरह से उत्साहित किया, यहाँ तक कि विचलित भी किया। उसने उनके जीवन में आने के संघर्ष को तिरछी नज़रों से देखा; उसने अपना हाथ रोक लिया—शायद कहा, "अगर हिम्मत है तो आगे बढ़ो," लेकिन उसने जन्म में कोई सहायता नहीं की।

जब पहले संघर्ष की पीड़ा और खतरा समाप्त हो गया, जब जीवन की सांस ली गई, जब उसने फेफड़ों को फैलते और सिकुड़ते देखा, जब उसने दिल की धड़कन महसूस की और आंखों में जीवन का अनुभव किया, तब भी उसने पालन-पोषण करने की पेशकश नहीं की।

“अपनी सच्चाई साबित करो, तभी मैं तुम्हें अपना सत्कार दूंगा,” यही उसका आदेश था; और उसने उस प्रमाण को कितना कठिन बना दिया! उसने उन पैरों के रास्ते में कांटे, झाड़ियाँ और पत्थर बिखेर दिए जो ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलने के अभ्यस्त नहीं थे! वह बिना आँसू बहाए देखता रहा—कि उसके द्वारा तय की गई परीक्षाएँ निडरता से पार की जानी थीं। वह उन पदचिन्हों का पीछा करता रहा जो सीमा के पास पहुँचते ही कभी-कभी खून से सने होते थे—उनका निर्ममता से पीछा करता रहा, दर्द से तड़पते तीर्थयात्री पर कड़ी निगरानी रखता रहा। और जब अंत में

उसने नींद से पहले आराम करने दिया, तो उसने निर्दयी उंगली और अंगूठे से उन्हीं पलकों को चौड़ा खोल दिया, और पुतली और नेत्रगोलक के माध्यम से मस्तिष्क और हृदय में गहराई से झाँका, यह देखने के लिए कि क्या घमंड, अहंकार या झूठ, अपने किसी भी सूक्ष्म रूप में, अस्तित्व के सबसे गहरे कोने में पाया जा सकता है। यदि अंत में उसने नौसिखिए को सोने दिया, तो वह बस एक पल के लिए ही था; उसने उसे अचानक जगाकर नए परीक्षण किए: जब वह थकान से लड़खड़ा रहा था, तब उसने उसे थकाऊ कामों पर भेजा; उसने उसके स्वभाव, बुद्धि और स्वास्थ्य की परीक्षा ली; और जब हर कठिन परीक्षा पूरी हो गई और सहन कर ली गई, जब सबसे संक्षारक जल का प्रयोग किया गया और वह अयस्क को धूमिल करने में विफल रहा, तब उसने उसे असली माना और, अभी भी मौन अवस्था में, उस पर अपनी गहरी स्वीकृति की मुहर लगा दी।

मैं इन बुराइयों से अनभिज्ञ होकर नहीं बोल रहा हूँ।

जिस तारीख को आखिरी अध्याय समाप्त होता है, उस समय तक एम. पॉल मेरे प्रोफेसर नहीं थे - उन्होंने मुझे कोई पाठ नहीं पढ़ाया था, लेकिन उसी समय के आसपास, एक दिन संयोग से मुझे शिक्षा की किसी शाखा (मुझे लगता है कि यह अंकगणित था) के बारे में अपनी अज्ञानता स्वीकार करते हुए सुनकर, जैसा कि उन्होंने बिल्कुल सही कहा था, उन्होंने मुझे अपने हाथ में लिया, पहले मेरी परीक्षा ली, और मुझे, कहने की आवश्यकता नहीं है, अत्यधिक कमी वाला पाया, मुझे कुछ किताबें दीं और मुझे कुछ कार्य सौंपे।

उन्होंने पहले तो यह बात खुशी से, बल्कि खुले उत्साह से कही, और यह कहते हुए विनम्रता दिखाई कि उनका मानना है कि मैं "बोन एट पास ट्रॉप फैबल" (अर्थात् काफी अच्छी तरह से स्वभावी, और पूरी तरह से अक्षम नहीं) हूँ, लेकिन, उनके अनुमान के अनुसार प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण, "अभी तक मानसिक विकास की दयनीय अपूर्ण अवस्था में हूँ।"

मेरे जीवन में हर प्रयास की शुरुआत असाधारण मूर्खता से ही हुई है। सामान्य जान-पहचान बनाने में भी मैं कभी औसत दर्जे की फुर्ती का दावा या प्रमाण नहीं दे पाया। जीवन के हर नए पन्ने की शुरुआत निराशाजनक और कठिन दौर से ही हुई है।

जब तक यह दौर चला, एम. पॉल अत्यंत दयालु, अत्यंत नेक और अत्यंत सहनशील रहे; उन्होंने मुझे पहुँचाई गई तीव्र पीड़ा को देखा और मेरी अक्षमता के

कारण उत्पन्न अपमान को महसूस किया; उनके स्नेह और सहायता का वर्णन शब्दों में बयां करना मुश्किल है। जब शर्म और परिश्रम के आँसू मेरी आँखों में उमड़ आते, तो उनकी आँखें भी नम हो जातीं; काम के बोझ तले दबे होने के बावजूद, वे अपने थोड़े से खाली समय का आधा हिस्सा मुझे देते थे।

लेकिन, अजीब दुख! जब वह भारी और बादलों से घिरी सुबह आखिरकार दिन में बदलने लगी; जब मेरी इंद्रियां मुक्त होने लगीं, और मेरी ऊर्जा और संतुष्टि का समय आ गया; जब मैंने स्वेच्छा से उनके द्वारा दिए गए कार्यों को दुगुना, तिगुना, चौगुना कर दिया, जैसा कि मैंने सोचा था, उन्हें प्रसन्न करने के लिए, उनकी दयालुता कठोरता में बदल गई; उनकी आँखों की रोशनी किरण से चिंगारी में बदल गई; वे चिढ़ गए, उन्होंने विरोध किया, उन्होंने मुझे निरंकुशता से नियंत्रित किया; जितना अधिक मैंने किया, जितनी अधिक मेहनत की, उतना ही कम वे संतुष्ट प्रतीत हुए। व्यंग्य, जिनकी कठोरता ने मुझे चकित और व्याकुल कर दिया, मेरे कानों को परेशान करने लगे; फिर "बुद्धि के अभिमान" के विरुद्ध सबसे कड़वे व्यंग्य निकले। मुझे अस्पष्ट रूप से न जाने किस विनाश की धमकी दी गई, यदि मैंने कभी अपने स्त्रीत्व के लिए उचित सीमाओं का उल्लंघन किया, और गैर-स्त्री ज्ञान के लिए एक निषिद्ध लालसा विकसित की। अफसोस! मुझमें ऐसी कोई लालसा नहीं थी। जो मुझे प्रिय था, उसे संतुष्ट करने के किसी भी प्रयास से मुझे आनंद मिलता था; लेकिन अमूर्त रूप में विज्ञान के लिए महान भूख - खोज के लिए ईश्वरीय प्यास - ये भावनाएँ मुझे केवल क्षणिक झलकियों के रूप में ही ज्ञात थीं।

फिर भी, जब एम. पॉल ने मेरा उपहास किया, तो मैं उन्हें और अधिक पूर्ण रूप से प्राप्त करना चाहता था; उनके अन्याय ने मेरे भीतर महत्वाकांक्षी इच्छाओं को जगाया - इसने एक मजबूत प्रेरणा प्रदान की - इसने आकांक्षाओं को पंख दिए।

शुरुआत में, जब तक मैं उसके इरादों को समझ नहीं पाई थी, उसकी वह समझ से परे की तिरस्कार भरी मुस्कान मेरे दिल को पीड़ा देती थी, लेकिन धीरे-धीरे वह मेरे शरीर में जोश भर देती थी और मेरी धड़कनें तेज कर देती थी। मेरी जो भी क्षमताएं थीं - चाहे स्त्रीत्व वाली हों या इसके विपरीत - वे ईश्वर की देन थीं, और मैं ईश्वर की देन की किसी भी क्षमता से शर्मिंदा न होने का दृढ़ संकल्प रखती थी।

कुछ समय तक संघर्ष बहुत तीखा रहा। ऐसा लगा जैसे मैंने एम. पॉल का स्नेह खो दिया हो; उनका व्यवहार मेरे प्रति विचित्र हो गया। अपने सबसे अन्यायपूर्ण क्षणों में वे

यह संकेत देते कि मैंने उन्हें धोखा दिया है जब मैं उनके शब्दों में "कमजोर" यानी अक्षम प्रतीत हुआ; उन्होंने कहा कि मैंने झूठी अक्षमता का नाटक किया है। फिर अचानक वे पलटकर मुझ पर सबसे बेतुकी नकल और असंभव साहित्यिक चोरी का आरोप लगाते, यह दावा करते कि मैंने उन किताबों से सार निकाला है जिनके बारे में मैंने कभी सुना तक नहीं था—और जिन्हें पढ़ते-पढ़ते मैं निश्चित रूप से यूटिचस जैसी गहरी नींद में सो जाता।

एक बार जब उसने मुझ पर ऐसा आरोप लगाया, तो मैं उस पर भड़क उठा - मैं उसके विरुद्ध खड़ा हो गया। मैंने अपनी मेज से उसकी किताबों का एक ढेर उठाया, उन्हें अपने एप्रन में भर लिया और उसके पैरों के पास, उसके बरामदे पर ढेर कर दिया।

“इन्हें मुझसे दूर ले जाइए, श्रीमान पॉल,” मैंने कहा, “और मुझे और मत सिखाइए। मैंने कभी ज्ञानी बनने की इच्छा नहीं की थी, और आप मुझे यह गहराई से महसूस करने के लिए विवश कर रहे हैं कि ज्ञान सुख नहीं है।”

और अपनी डेस्क पर लौटकर मैंने अपना सिर अपनी बाहों पर रख लिया, और उसके बाद दो दिनों तक उससे बात नहीं की। उसने मुझे बहुत दुख और निराशा दी। उसका स्नेह बहुत मधुर और प्यारा था—एक नया और अतुलनीय आनंद: अब जब वह स्नेह मुझसे छिन गया था, तो मुझे उसकी पढ़ाई में कोई रुचि नहीं रही।

लेकिन किताबें हटाई नहीं गईं; उन्हें बड़ी सावधानी से उनकी जगह पर वापस रख दिया गया, और वे हमेशा की तरह मुझे पढ़ाने आए। उन्होंने किसी तरह सुलह कर ली —शायद बहुत आसानी से: मुझे और देर तक वहाँ खड़े रहना चाहिए था, लेकिन जब उन्होंने दयालु और नेक नज़र से देखा और दोस्ती का हाथ बढ़ाया, तो मेरी याददाश्त उनके दमनकारी पलों को ठीक से याद नहीं कर पाई। और फिर, सुलह हमेशा मीठी होती है!

एक सुबह मेरी धर्ममाता का संदेश आया, जिसमें मुझे उन्हीं सार्वजनिक कक्षों में दिए जाने वाले एक उल्लेखनीय व्याख्यान में शामिल होने का निमंत्रण दिया गया था, जिनका पहले वर्णन किया गया था। डॉ. जॉन स्वयं संदेश लेकर आए थे और उन्होंने इसे मौखिक रूप से रोसीन को सुनाया, जिन्होंने एम. इमानुएल का अनुसरण करने में कोई संकोच नहीं किया, जो उस समय प्रथम कक्षा में जा रहे थे, और उनकी उपस्थिति में, मेरे डेस्क के सामने "कैरेमेंट" (सभ्यतापूर्वक) खड़ी हो गईं, हाथ एप्रन की जेब में

डालकर, और उसी व्याख्यान को शरारती अंदाज़ में ज़ोर से दोहराया, और अंत में कहा, "क्या सच में सुंदर हैं, मैडमोजेल, यह युवा डॉक्टर! क्या आँखें हैं - क्या नज़र है! देखो! मेरा दिल पूरी तरह से भर आया है!"

जब वह चली गई, तो मेरे प्रोफेसर ने मुझसे पूछा कि मुझे "cette fille effrontée, cette créature sans pudeur" (यानी, मुझे इस तरह के शब्दों में संबोधित करने की अनुमति क्यों दी गई)।

मेरे पास कोई संतोषजनक जवाब नहीं था। ये ठीक वैसे ही शब्द थे जैसे रोज़ीन - एक ऐसी युवती जिसके मन में आदर और संयम की भावनाएँ अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुई थीं - अक्सर इस्तेमाल करती थी। इसके अलावा, उसने उस युवा डॉक्टर के बारे में जो कहा था, वह काफी हद तक सच था। ग्राहम सुंदर था; उसकी आँखें खूबसूरत थीं और उसकी निगाहें मोहक थीं। यही बात मेरे होंठों से निकल कर सामने आ गई।

मैंने कहा, "वह सिर्फ सच बोलती है।"

“अरे! आपको ऐसा लगता है?”

लेकिन, शायद।

उस दिन हमें जो पाठ पढ़ना था, वह इतना सुखद था कि उसके समाप्त होने पर हमें बहुत खुशी हुई। पाठ समाप्त होते ही, छात्र आधे कांपते हुए, आधे उत्साहित होकर बाहर भागे। मैं भी जा रहा था। लेकिन मुझे रुकने का आदेश मिला, जिससे मैं रुक गया। मैंने उदास होकर बुदबुदाया कि मुझे थोड़ी ताज़ी हवा चाहिए - चूल्हा तेज़ जल रहा था, कक्षा बहुत गर्म थी। एक कठोर आवाज़ ने मुझे चुप रहने की सलाह दी; और यह चालाक आदमी - जिसके लिए कोई भी कमरा कभी बहुत गर्म नहीं लगता था - मेरी मेज और चूल्हे के बीच बैठ गया - ऐसी स्थिति में जहाँ उसे झुलस जाना चाहिए था, लेकिन नहीं - और फिर उसने मुझे एक यूनानी उद्धरण सुनाना शुरू कर दिया!

एम. इमैनुएल के मन में यह संदेह घर कर गया था कि मुझे ग्रीक और लैटिन दोनों भाषाएँ आती हैं। जैसे बंदरों के बारे में कहा जाता है कि अगर वे चाहें तो उनमें बोलने की क्षमता होती है, और वे इस क्षमता को छिपाते हैं क्योंकि उन्हें डर रहता है कि इसका दुरुपयोग उनके लिए हानिकारक हो सकता है, वैसे ही मुझमें भी ज्ञान का भंडार होने का दावा किया गया था, जिसे मैं गुप्त रूप से और चालाकी से छुपा रहा था। यह संकेत दिया गया कि "शास्त्रीय शिक्षा" के विशेषाधिकार मुझे प्राप्त थे; मैंने

हाइमेटस के फूलों का आनंद लिया था; स्मृति में छिपा हुआ ज्ञान का सुनहरा भंडार अब चुपचाप मेरे प्रयासों को सहारा दे रहा था और गुप्त रूप से मेरी बुद्धि का पोषण कर रहा था।

मेरे रहस्य को उजागर करने के लिए एम. पॉल ने सौ तरह के हथकंडे अपनाए—फुसलाने, धमकाने और चौंकाने के लिए। कभी-कभी वह मेरे रास्ते में ग्रीक और लैटिन की किताबें रख देते और फिर मुझे देखते रहते, जैसे जोन ऑफ आर्क के जेलर उसे योद्धाओं के साजो-सामान से लुभाते थे, और परिणाम की प्रतीक्षा करते। कभी-कभी वह न जाने किन लेखकों और अंशों का हवाला देते और उनकी मधुर और प्रभावशाली पंक्तियों को सुनाते हुए (उनके होठों से शास्त्रीय स्वर संगीत की तरह निकलते थे—क्योंकि उनकी आवाज़ बहुत अच्छी थी—व्यापकता, उतार-चढ़ाव और अद्वितीय अभिव्यक्ति के लिए उल्लेखनीय), वह मुझे एक सतर्क, तीक्ष्ण और अक्सर द्वेषपूर्ण नज़र से देखते रहते। यह स्पष्ट था कि वह कभी-कभी बड़े प्रदर्शनों की उम्मीद करते थे; हालाँकि, ऐसा कभी नहीं हुआ; ज़ाहिर है, मैं समझ न पाने के कारण न तो मोहित हो सकती थी और न ही नाराज़।

हैरान—लगभग क्रोधित—वह अब भी अपने अटल विचार पर अड़ा हुआ था; मेरी भावनाएँ पत्थर की तरह कठोर थीं—मेरा चेहरा एक मुखौटा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह इस सरल सत्य को स्वीकार करने और मुझे मेरे वास्तविक स्वरूप में अपनाने को तैयार नहीं था: पुरुष और महिलाएं, दोनों ही किसी न किसी प्रकार के भ्रम में पड़ जाते हैं; यदि उन्हें इसके लिए तैयार न किया जाए, तो वे स्वयं ही अतिशयोक्तिपूर्ण बातें गढ़ लेते हैं।

कई बार तो मुझे लगा कि काश उसके संदेह ज़्यादा पुख्ता होते। ऐसे भी पल आए जब मैं वो खजाने पाने के लिए अपना दायाँ हाथ भी दे देता जो उसने मुझे दिए थे। उसकी चिड़चिड़ी हरकतों के लिए उसे उचित दंड मिलना चाहिए था। मैं उसके सबसे बुरे डर को चौंकाने वाले ढंग से सच साबित करके उसे दुआ दे सकता था। मैं उसकी आँखों के सामने फूटकर, उसकी सनक को एक झटके में उजागर करके, उसके ज्ञान के विस्फोट से उसे चकित कर सकता था। ओह! काश किसी ने मुझे बचपन में ही समझदार न बनाया होता, ताकि मैं एक ज़बरदस्त, अचानक, अमानवीय रहस्योद्घाटन से - एक ठंडी, क्रूर, ज़बरदस्त जीत से - पॉल कार्ल डेविड इमानुएल के उपहास भरे भाव को हमेशा के लिए कुचल देता!

अफसोस! ऐसा कारनामा मेरे बस में नहीं था। आज, हमेशा की तरह, उनके उद्धरण बेअसर साबित हुए: उन्होंने जल्द ही अपना रुख बदल लिया।

उनका अगला विषय था "बुद्धिमान महिलाएं": यहाँ वे अपने घर में थे। ऐसा प्रतीत होता था कि "बुद्धिमान महिला" एक प्रकार की "प्राकृतिक वस्तु" थी, एक दुर्भाग्यपूर्ण संयोग, सृष्टि में जिसके लिए न तो कोई स्थान था और न ही कोई उपयोग, न पत्नी के रूप में और न ही काम करने वाली के रूप में। सुंदरता ने उसे पहले स्थान पर रखा। वे अपने मन में मानते थे कि सुंदर, शांत और निष्क्रिय स्त्रीत्व ही एकमात्र ऐसा सहारा है जिस पर पुरुष विचार और इंद्रियां अपने थके हुए मन को आराम दे सकती हैं; और काम की बात करें तो, केवल पुरुष मस्तिष्क ही किसी अच्छे व्यावहारिक परिणाम तक पहुँच सकता है - है ना?

यह “hein?” एक प्रश्नवाचक संकेत था जिसका उद्देश्य मुझसे खंडन या आपत्ति करवाना था। हालाँकि, मैंने केवल इतना कहा — “Cela ne me regarde pas: je ne m’en soucie pas;” और तुरंत जोड़ा — “क्या मैं जा सकता हूँ, महाशय? दूसरे दोपहर के भोजन के लिए घंटी बज गई है” (अर्थात दोपहर का भोजन)।

“तो फिर क्या? तुम्हें भूख नहीं लगी?”

मैंने कहा, "हाँ, मैं था; मैंने सात बजे नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया था, और अगर मैं यह घंटी चूक गया तो मुझे पांच बजे दोपहर के भोजन तक कुछ नहीं मिलेगा।"

"खैर, वह भी उसी दुर्दशा में था, लेकिन मैं शायद उसके साथ कुछ साझा कर सकता हूँ।"

और उसने अपने लिए रखी "ब्रियोश" को दो टुकड़ों में तोड़ दिया और आधा मुझे दे दिया। सचमुच, उसकी धमकी उसके कृत्य से कहीं अधिक भयानक थी; लेकिन असली हमला तो अभी बाकी था। उसका केक खाते हुए, मैं अपने मन में यह इच्छा व्यक्त किए बिना नहीं रह सकी कि काश मुझे वह सब पता होता जिसका उसने मुझ पर आरोप लगाया था।

"क्या मैंने सचमुच खुद को अज्ञानी समझा था?" उसने नरम स्वर में पूछा।

अगर मैंने विनम्रतापूर्वक बिना किसी शर्त के हाँ में जवाब दिया होता, तो मुझे लगता है कि वह अपना हाथ आगे बढ़ा देता और हम उसी क्षण दोस्त बन जाते, लेकिन मैंने जवाब दिया—

"बिल्कुल नहीं। महोदय, आप जिस ज्ञान का श्रेय मुझे देते हैं, उस ज्ञान से मैं अनभिज्ञ हूं, लेकिन कभी-कभी, हमेशा नहीं, मुझे अपने स्वयं के ज्ञान का अहसास होता है।"

“मेरा मतलब क्या था?” उसने तीखे स्वर में पूछा।

इस सवाल का तुरंत जवाब न दे पाने के कारण मैंने विषय बदलकर बात टाल दी। उसने अपना आधा ब्रियोश खत्म कर लिया था और उसे पूरा यकीन था कि इतने छोटे से टुकड़े से उसकी भूख नहीं मिट सकती, जैसा कि मेरी भी नहीं मिट पाई थी। भोजन कक्ष से आती भुने हुए सेबों की खुशबू सूंघकर मैंने हिम्मत करके पूछा कि क्या उसे भी वह मनमोहक खुशबू आ रही है। उसने हाँ में जवाब दिया। मैंने कहा कि अगर वह मुझे बगीचे के दरवाजे से बाहर जाने दे और मुझे आँगन पार करने की इजाज़त दे, तो मैं उसके लिए एक थाली भरकर ले आऊँगी; और आगे कहा कि मुझे लगता है कि वे बहुत स्वादिष्ट हैं, क्योंकि गोटन के पास फल पकाने का एक बहुत अच्छा तरीका है, या यूँ कहें कि उबालने का, जिसमें थोड़ा मसाला, चीनी और एक-दो गिलास वाइन ब्लैंक मिलाया जाता है - क्या मैं जा सकती हूँ?

“छोटी सी खाने की शौकीन!” उसने मुस्कुराते हुए कहा, “मैं भूला नहीं हूँ कि मैंने एक बार तुम्हें जो क्रीमी पैटे दिया था, उससे तुम कितनी खुश हुई थीं, और तुम इस समय अच्छी तरह जानती हो कि मेरे लिए सेब लाना तुम्हारे लिए लाने के बराबर ही होगा। तो जाओ, लेकिन जल्दी वापस आना।”

और अंततः उसने मुझे पैरोल पर रिहा कर दिया। मेरी योजना थी कि मैं जाऊं और शीघ्रता और सद्भावना से लौट आऊं, दरवाजे पर प्लेट रख दूं, और फिर असंयमित होकर गायब हो जाऊं, बाकी सभी परिणाम भविष्य के लिए छोड़ दूं।

उनकी तीव्र प्रवृत्ति ने मानो मेरी योजना को भांप लिया था: उन्होंने दहलीज पर ही मुझे रोक लिया, जल्दी से कमरे में ले गए और पल भर में मुझे मेरी पिछली जगह पर बिठा दिया। मेरे हाथ से फलों की थाली लेकर उन्होंने अपने लिए रखा हिस्सा अलग किया और मुझे भी अपना हिस्सा खाने का आदेश दिया। मैंने अनिच्छा से उनकी बात मानी और शायद मेरी अनिच्छा से चिढ़कर उन्होंने एक गुप्त और खतरनाक हमला बोल दिया। अब तक उन्होंने जो कुछ कहा था, वह मुझे केवल शोर और क्रोध लगा, जिसका कोई अर्थ नहीं था: लेकिन उनका यह हमला ऐसा नहीं था।

इसमें एक अनुचित प्रस्ताव शामिल था जिससे वह पहले भी मुझे परेशान कर चुका

था: अर्थात्, अगली सार्वजनिक परीक्षा के दिन मुझे - एक विदेशी होने के नाते - प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों की पहली पंक्ति में अपना स्थान ग्रहण करना था, और उनके साथ किसी भी दर्शक द्वारा बताए गए किसी भी विषय पर व्याकरण या शब्दकोश की सहायता के बिना फ्रेंच में एक रचना तैयार करनी थी।

मुझे पता था कि ऐसे प्रयोग का परिणाम क्या होगा। मैं, जिसे प्रकृति ने सहजता की क्षमता से वंचित कर दिया था; जो सार्वजनिक रूप से स्वभाव से एक रहस्य था; जिसकी मानसिक सक्रियता का समय, अकेले में भी, दोपहर के सूर्य के नीचे नहीं होता था; जिसे सृजनात्मक प्रेरणा से उसकी उपस्थिति का एक प्रमाण, उसकी शक्ति का एक सबूत प्राप्त करने के लिए सुबह की ताजा शांति या शाम की एकांत शांति की आवश्यकता होती थी; मैं, जिसके साथ वह प्रेरणा सबसे जिद्दी, सबसे मनमौजी, सबसे पागल कर देने वाली स्वामी थी (उससे पहले हमेशा अपवाद था) - एक देवता जो कभी-कभी, अनुकूल परिस्थितियों में, पूछे जाने पर नहीं बोलता था, अपील करने पर नहीं सुनता था, खोजने पर नहीं मिलता था; बल्कि एकदम ठंडा, एकदम कठोर, एकदम पत्थर जैसा, नक्काशीदार होंठों और खाली आँखों वाला एक अंधकारमय बाल, और एक मकबरे के पत्थर के चेहरे जैसी छाती के साथ खड़ा रहता था; और फिर, अचानक, किसी मोड़ पर, किसी ध्वनि पर, हवा की किसी लंबी कांपती हुई सिसकी पर, बिजली की किसी अदृश्य धारा के तेजी से गुजरने पर, वह तर्कहीन दानव अनचाहे ही जाग उठता, अजीब तरह से जीवंत हो उठता, एक विचलित डैगन की तरह अपने आसन से दौड़ पड़ता, अपने भक्त को बलिदान के लिए पुकारता, चाहे जो भी समय हो—अपने शिकार से कुछ खून, या कुछ सांस, चाहे जो भी परिस्थिति या दृश्य हो—अपने पुजारी को जगाता, धोखे से भविष्यवाणी का वादा करता, शायद अपने मंदिर को भविष्यवाणियों की एक अजीब गूंज से भर देता, लेकिन निश्चित रूप से भाग्य की हवाओं को आधा महत्व देता, और हताश श्रोता को एक दयनीय अंश भी देने से कतराता—उसे घिनौने ढंग से देता, मानो प्रत्येक शब्द उसकी अपनी काली नसों के अमर मवाद की एक बूंद हो। और इस अत्याचारी को मुझे गुलामी में बांधना था, और उसे स्कूल के बरामदे में, मैडम बेक की निगरानी में, मथिल्डे और कोराली के बीच, लाबासेकोर के एक बुर्जुआ के आनंद और प्रेरणा के लिए, एक धुन तैयार करने के लिए मजबूर करना था!

इस तर्क पर एम. पॉल और मेरे बीच एक से अधिक बार तीखी बहस हुई - एक

जोरदार बहस, जिसमें मांग और अस्वीकृति, जबरन वसूली और प्रतिकार का शोरगुल भरा माहौल था।

उस दिन मेरी खूब परीक्षा हुई। ऐसा लग रहा था मानो "मेरी पूरी स्त्रीत्व की हठधर्मिता" मुझमें समा गई हो; मुझमें शैतानी भय था। मैं सचमुच असफल होने से डर रही थी! क्या फर्क पड़ता है कि मैं असफल होऊं या नहीं? मैं कौन होती हूं कि अपने से श्रेष्ठों की तरह असफल न होऊं? असफल होना मेरे लिए अच्छा ही होता। वह मुझे हारा हुआ देखना चाहता था (मैं जानती थी कि वह यही चाहता था), और एक पल के लिए वह सांस लेने के लिए रुका।

"क्या मैं अब बोलूंगा, और क्या मैं आज्ञाकारी बनूंगा?"

“मैं इस मामले में कभी भी समझौता नहीं करूंगा। कानून भी मुझे बाध्य नहीं कर सकता। मैं जुर्माना भरना या कारावास भुगतना पसंद करूंगा, लेकिन किसी मंच पर बैठकर दिखावे के लिए और आदेश पर लिखना नहीं चाहूंगा।”

क्या कोमल भावनाएँ मुझे प्रभावित कर सकती हैं? क्या मैं दोस्ती की खातिर झुक जाऊँगा?

"बिल्कुल भी नहीं, जरा सा भी नहीं। दुनिया में किसी भी प्रकार की मित्रता को इस तरह की रियायत मांगने का अधिकार नहीं है। कोई भी सच्ची मित्रता मुझे इस तरह परेशान नहीं करेगी।"

तब उसने सोचा (व्यंग्य भरे लहजे में - एम. पॉल बेहतरीन व्यंग्य कर सकते थे, अपने होंठ सिकोड़ते हुए, अपनी नाक खोलते हुए, अपनी पलकें सिकोड़ते हुए) - उसने सोचा कि अपील का केवल एक ही तरीका है जिसे मैं सुनूंगा, और उस तरीके का उपयोग करना उसके लिए उचित नहीं था।

उन्होंने कहा, "कुछ खास लोगों के दबाव में, कुछ खास पक्षों से, मैं आपको यहाँ देख रहा हूँ," "उत्सुकता से बलिदान के लिए तैयार हो रहा हूँ, जोश से इस प्रयास के लिए हथियार उठा रहा हूँ।"

"विलेट के डेढ़ सौ 'पापा' और 'मम्मी' के सामने खुद को एक मूर्ख, एक चेतावनी और एक उदाहरण के रूप में पेश करना।"

और यहाँ, धैर्य खोते हुए, मैं फिर से एक चीख के साथ फूट पड़ा कि मैं मुक्त होना चाहता हूँ - बाहर ताज़ी हवा में जाना चाहता हूँ - मैं लगभग बुखार में था।

“छी!” निर्दयी ने कहा, “यह तो बस भागने का बहाना था; वह गर्म नहीं था, चूल्हा

उसकी पीठ के बिल्कुल पास था; मैं कैसे सहन कर सकती थी, जब मैं पूरी तरह से उसकी आड़ में थी?”

“मुझे उसकी शारीरिक बनावट समझ नहीं आई। मुझे सैलामैंडर के प्राकृतिक इतिहास के बारे में कुछ भी पता नहीं था। मैं खुद एक शांत स्वभाव का द्वीपवासी था, और भट्टी में बैठना मुझे रास नहीं आता था; कम से कम क्या मैं कुएँ तक जाकर एक गिलास पानी ले सकता था—मीठे सेबों ने मुझे प्यासा कर दिया था?”

"अगर बस इतना ही होता, तो वह मेरा काम कर देता।"

वह पानी लेने गया। ज़ाहिर है, मेरे पीछे दरवाज़ा सिर्फ़ कुंडी से बंद था, इसलिए मैंने मौका नहीं गंवाया। उसके लौटने से पहले ही उसका अधमरा शिकार भाग निकला।

अध्याय XXXI.

अप्सरा।

वसंत ऋतु आगे बढ़ रही थी और मौसम अचानक गर्म हो गया था। तापमान में इस बदलाव के कारण, शायद कई अन्य लोगों की तरह, मेरी शक्ति में अस्थायी कमी आ गई। इस समय थोड़ी सी भी मेहनत करने पर मैं अत्यधिक थका हुआ महसूस करता था—नींद न आने के कारण दिन सुस्त और नीरस हो जाते थे।

एक रविवार की दोपहर, आधा लीग की दूरी तय करके प्रोटेस्टेंट चर्च तक पैदल चलकर, मैं थका-हारा वापस लौटा; और अपने एकांत प्रार्थनास्थल, प्रथम श्रेणी के चर्च में शरण लेकर, मुझे बैठना और अपनी मेज को अपनी बाहों और सिर के लिए तकिया बनाना अच्छा लगा।

कुछ देर तक मैंने बरसेउ में भिनभिनाती मधुमक्खियों की लोरी सुनी और कांच के

दरवाजे और कोमल, हल्के से बिखरे हुए वसंत के पत्तों के बीच से मैडम बेक और उनके दोस्तों के एक खुशमिजाज समूह को देखा, जिन्हें उन्होंने उस दिन सुबह की प्रार्थना के बाद रात के खाने पर आमंत्रित किया था, जो बगीचे की शाखाओं के नीचे केंद्रीय गली में चल रहे थे, जो इस मौसम में खिले हुए थे और सूर्योदय के समय पहाड़ की बर्फ की तरह शुद्ध और गर्म रंग धारण किए हुए थे।

मुझे याद है, इन मेहमानों के समूह के प्रति मेरा मुख्य आकर्षण एक ही शख्सियत में था - एक खूबसूरत युवती, जिसे मैंने पहले मैडम बेक के यहाँ एक मेहमान के रूप में देखा था, और जिसके बारे में मुझे अस्पष्ट रूप से बताया गया था कि वह एम. इमैनुएल की "फिलेउले" या धर्मपुत्री थी, और उसकी माँ, या चाची, या उसकी किसी अन्य महिला रिश्तेदार और प्रोफेसर के बीच पुराने समय से एक विशेष मित्रता थी। एम. पॉल आज छुट्टी मनाने आए लोगों के समूह में नहीं थे, लेकिन मैंने इस युवती को पहले भी उनके साथ देखा था, और जहाँ तक मैं दूर से देख सका, वह उनके साथ एक ऐसे सहज भाव से घुलमिल रही थी जैसे कोई बच्चा अपने स्नेही अभिभावक के साथ हो। मैंने उसे उनके पास दौड़कर जाते, अपना हाथ उनके हाथ में डालते और उनसे लिपटते देखा था। एक बार जब उसने ऐसा किया, तो मेरे मन में एक अजीब सी अनुभूति हुई - एक अप्रिय आशंका - शायद किसी पूर्वाभास के कारण - लेकिन मैंने उस पर ध्यान देने या विचार करने से इनकार कर दिया। मैडमोजेल सौवेउर नाम की इस लड़की को देखते हुए और उसके चमकीले रेशमी वस्त्र की चमक को फूलों और कोमल पन्ना रंग के पत्तों के बीच से गुजरते हुए निहारते हुए (वह हमेशा आलीशान कपड़े पहनती थी, क्योंकि कहा जाता था कि वह धनी थी), मेरी आँखें चौंधिया गईं - वे बंद हो गईं; मेरी सुस्ती, दिन की गर्मी, मधुमक्खियों और पक्षियों की भिनभिनाहट, सबने मुझे सुला दिया, और अंत में मैं सो गया।

दो घंटे पलक झपकते ही बीत गए। जागने से पहले ही सूरज ऊंचे-ऊंचे मकानों के पीछे छिप चुका था, बगीचा और कमरा धूसर रंग के हो गए थे, मधुमक्खियां अपने घर लौट चुकी थीं और फूल मुरझा रहे थे; मेहमानों का समूह भी गायब हो चुका था; हर गली सुनसान थी।

जागने पर मुझे बहुत आराम महसूस हुआ—ठंड नहीं लग रही थी, जबकि कम से कम दो घंटे तक स्थिर बैठने के बाद ठंड लगनी चाहिए थी; कठोर डेस्क पर दबाव पड़ने से मेरे गाल और बाहें सुन्न नहीं हुई थीं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

जिस लकड़ी पर मैंने अपने हाथ रखे थे, उसकी जगह मुझे एक मोटा शॉल सावधानी से तह करके रखा हुआ मिला, और एक और शॉल (दोनों गलियारे से लिए गए थे जहाँ ऐसी चीजें टंगी रहती थीं) मेरे चारों ओर गर्मजोशी से लिपटा हुआ था।

यह किसने किया था? मेरा दोस्त कौन था? शिक्षकों में से कौन? विद्यार्थियों में से कौन? सेंट पियरे को छोड़कर, कोई भी मेरा शत्रु नहीं था; लेकिन उनमें से किसके पास इतनी कोमलता से मदद करने की कला, सोच और आदत थी? उनमें से किसके कदम इतने शांत और हाथ इतने कोमल थे कि अगर वह दिन में सोते समय मेरे पास आती या मुझे छूती, तो मैं उसे सुन या महसूस न कर पाता?

जिनेवरा फैंसहावे की बात करें तो, वह तेजतर्रार युवती बिल्कुल भी सौम्य नहीं थी, और अगर उसने इस मामले में दखल दिया होता तो वह मुझे मेरी कुर्सी से जरूर खींच लेती। मैंने अंत में कहा: "यह मैडम बेक की करतूत है; वह अंदर आईं, मुझे सोते हुए देखा, और सोचा कि मुझे सर्दी लग गई होगी। वह मुझे एक उपयोगी मशीन मानती हैं, जो उस उद्देश्य को बखूबी पूरा कर रही है जिसके लिए इसे किराए पर लिया गया था; इसलिए वह मुझे बेवजह चोट नहीं पहुंचाना चाहती थीं। और अब," मैंने सोचा, "मैं टहलने चलता हूँ; शाम सुहावनी है, और ज्यादा ठंडी भी नहीं है।"

इसलिए मैंने कांच का दरवाजा खोला और बरसेउ में कदम रखा।

मैं अपनी गली में चला गया: अगर अंधेरा होता, या शाम भी ढल रही होती, तो मैं शायद ही वहाँ जाने की हिम्मत करता, क्योंकि कुछ महीने पहले उस जगह पर मुझे जो अजीब सा भ्रम (अगर वह भ्रम ही था) हुआ था, वह मैं भूला नहीं था। लेकिन ढलते सूरज की एक किरण अभी भी जीन बैपटिस्ट के भूरे बालों को चमका रही थी; और बगीचे के सारे पक्षी अभी तक घनी झाड़ियों और दीवार पर उगी बेलों के बीच अपने घोंसलों में नहीं गए थे। मैं इधर-उधर टहल रहा था, लगभग उन्हीं विचारों में डूबा हुआ था जो मैंने उस रात सोचे थे जब मैंने अपना कांच का घड़ा गाड़ा था - मुझे जीवन में कैसे तरक्की करनी चाहिए, एक स्वतंत्र स्थिति की ओर एक और कदम कैसे बढ़ाना चाहिए; क्योंकि यह विचार, हालांकि हाल ही में मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया था, लेकिन मैंने इसे कभी पूरी तरह से छोड़ा भी नहीं था; और जब भी कोई मुझसे नज़रें फेर लेता, और किसी का चेहरा निर्दयता और अन्याय से भर जाता, तो मैं तुरंत उसी विचार में खो जाता; इस तरह, धीरे-धीरे, मैंने आधी योजना बना ली थी।

मैंने मन ही मन कहा, "इस किफायती शहर विलेट में जीवन यापन का खर्च कम

है, जहाँ लोग मेरी समझ से प्यारे पुराने इंग्लैंड के लोगों से कहीं अधिक समझदार हैं — दिखावे की चिंता कहीं कम करते हैं, और आडंबर की होड़ भी कम करते हैं—जहाँ कोई भी अपनी सुविधा के अनुसार सादा और बचत करने में जरा भी शर्म महसूस नहीं करता। समझदारी से चुनी गई जगह पर मकान का किराया ज्यादा नहीं होता। जब मेरे पास एक हजार फ्रैंक जमा हो जाएँगे, तो मैं एक बड़ा कमरा और दो-तीन छोटे कमरों वाला एक मकान लूँगा, पहले कमरे में कुछ बेंच और मेज, एक काला पर्दा, अपने लिए एक चबूतरा रखूँगा; उस पर एक कुर्सी और मेज, एक स्पंज और कुछ सफेद चाक रखूँगा; दिन के हिसाब से विद्यार्थियों को पढ़ाना शुरू करूँगा, और धीरे-धीरे आगे बढ़ूँगा। मैडम बेक की शुरुआत—जैसा कि मैंने उन्हें अक्सर कहते सुना है—कहीं ऊँचे स्तर से नहीं हुई थी, और अब वह कहाँ हैं? ये सारी जगह और यह बगीचा उनका है, जो उन्होंने अपने पैसों से खरीदा है; उन्होंने बुढ़ापे के लिए पर्याप्त धन जमा कर लिया है, और उनके निर्देशन में एक फलता-फूलता संस्थान है, जो उनके लिए एक सफल करियर प्रदान करेगा।" उसके ब्च्चे।

"हिम्मत रखो, लूसी स्नो! अभी आत्म-त्याग और मितव्ययिता से, और आगे निरंतर प्रयास से, जीवन का लक्ष्य तुम्हें निराश नहीं करेगा। यह शिकायत करने का साहस मत करो कि ऐसा लक्ष्य बहुत स्वार्थी, बहुत सीमित और नीरस है; स्वतंत्रता के लिए तब तक परिश्रम करो जब तक तुम उस पुरस्कार को प्राप्त करके यह सिद्ध न कर दो कि तुम्हें उच्चतर दृष्टि रखने का अधिकार है। लेकिन उसके बाद, क्या जीवन में मेरे लिए कुछ और नहीं है - कोई सच्चा घर नहीं - मेरे लिए स्वयं से अधिक प्रिय कुछ नहीं है, और अपनी सर्वोपरिता के कारण, मुझसे उन चीजों को प्राप्त नहीं कर सकता जिन्हें मैं केवल अपने लिए ही संजोना चाहता हूँ? कुछ भी नहीं, जिसके चरणों में मैं स्वेच्छा से मानवीय अहंकार का सारा बोझ डाल सकूँ, और दूसरों के लिए परिश्रम करने और जीने का महान दायित्व गौरवपूर्वक ग्रहण कर सकूँ? मुझे लगता है, लूसी स्नो, तुम्हारा जीवन इतना गोल नहीं है: तुम्हारे लिए अर्धचंद्राकार अवस्था ही पर्याप्त है। बहुत खूब। मैं अपने कई साथी मनुष्यों को इससे भी बदतर परिस्थितियों में देखता हूँ। मैं देखता हूँ कि बहुत से पुरुष, और उससे भी अधिक महिलाएं, अपने जीवन को त्याग और आत्म-त्याग की स्थिति में जी रहे हैं। अभाव। मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि मैं उन कुछ भाग्यशाली लोगों में से क्यों हूँ। मेरा मानना है कि आशा और प्रकाश का कोई न कोई मिश्रण सबसे बुरे हालातों को भी बेहतर बना देता है। मेरा मानना है

कि यह जीवन ही सब कुछ नहीं है; न तो शुरुआत है और न ही अंत। मैं कांपते हुए भी विश्वास करता हूँ; मैं रोते हुए भी भरोसा करता हूँ।

तो यह विषय यहीं समाप्त होता है। समय-समय पर अपने जीवन के हिसाब-किताब का साहसपूर्वक सामना करना और ईमानदारी से उसका निपटारा करना उचित है। और वह व्यक्ति जो हिसाब-किताब करते समय स्वयं से झूठ बोलता है और दुःख को दुःख की श्रेणी में रखता है, वह स्वयं को धोखा देने वाला बड़ा ही मूर्ख है। पीड़ा को पीड़ा कहो, और निराशा को निराशा; दोनों को दृढ़ कलम से स्पष्ट अक्षरों में लिखो: तुम अपने भाग्य का ऋण बेहतर ढंग से चुका पाओगे। झूठ बोलो: जहाँ "पीड़ा" लिखना चाहिए था, वहाँ "विशेषाधिकार" लिख दो; और देखो कि तुम्हारा शक्तिशाली ऋणदाता इस धोखे को स्वीकार करेगा या उस सिक्के को स्वीकार करेगा जिससे तुमने उसे धोखा दिया है। ईश्वर की सेना के सबसे शक्तिशाली देवदूत को भी, जब वह रक्त मांगे, तो क्या वह पानी देगा? एक लाल बूँद के लिए पूरा पीला सागर नहीं। मैंने एक और हिसाब-किताब निपटाया।

बगीचे के विशालकाय और संरक्षक मेतुसालेह के सामने रुककर, मैंने अपना माथा उसकी गांठदार टहनी से टिकाया और अपना पैर उसकी जड़ में बने छोटे से मकबरे को सील करने वाले पत्थर पर रखा; और मुझे उसमें दबी भावनाओं का वह दौर याद आया; मुझे डॉ. जॉन याद आए; उनके प्रति मेरा गहरा स्नेह; उनकी श्रेष्ठता में मेरा विश्वास; उनकी कृपा में मेरी प्रसन्नता। वह विचित्र एकतरफा दोस्ती कहाँ गई जो आधी संगमरमर और आधी जीवन थी; एक तरफ सत्य और दूसरी तरफ शायद एक मज़ाक?

क्या यह भावना मर चुकी थी? मुझे नहीं पता, लेकिन यह दफ़न हो चुकी थी। कभी-कभी मुझे लगता था कि कब्र अशांत है, और मैं अजीबोगरीब सपने देखता था जिसमें धरती हिल रही होती थी, और ताबूत की दरारों से सुनहरे, जीवंत बाल बाहर निकले होते थे।

क्या मैंने जल्दबाजी कर दी थी? मैं खुद से यह सवाल अक्सर पूछती थी; और डॉ. जॉन से किसी संक्षिप्त मुलाकात के बाद यह सवाल और भी तीखेपन से मेरे मन में उठता था। उनके चेहरे पर अब भी वही दयालुता थी, उनका स्पर्श अब भी उतना ही स्नेहपूर्ण था; मेरे नाम के लिए उनकी आवाज़ में अब भी वही मधुरता थी; मुझे "लूसी" नाम इतना अच्छा कभी नहीं लगा जितना उनके मुंह से सुनने पर लगता था। लेकिन

समय के साथ मैंने यह जान लिया कि यह दयालुता, यह आत्मीयता, यह मधुरता मुझमें ज़रा भी नहीं थी: यह तो उनके व्यक्तित्व का हिस्सा थी; यह उनके स्वभाव की मिठास थी; यह उनके सौम्य मिजाज का मरहम थी; वे इसे ऐसे बाँटते थे जैसे पका फल अपनी मिठास से मधुमक्खी को आकर्षित करता है; वे इसे अपने चारों ओर ऐसे फैलाते थे जैसे मीठे पौधे अपनी सुगंध बिखेरते हैं। क्या नेक्टेरिन (एक प्रकार का फूल) उस मधुमक्खी या पक्षी से प्रेम करता है जिसे वह खिलाता है? क्या स्वीटब्रियर (एक प्रकार की जंगली झाड़ी) हवा से मोहित होती है?

शुभ रात्रि, डॉ. जॉन; आप अच्छे हैं, आप खूबसूरत हैं; लेकिन आप मेरे नहीं हैं। शुभ रात्रि, और ईश्वर आपका भला करे!

इस प्रकार मैंने अपने चिंतन को समाप्त किया। मेरे होठों से "शुभ रात्रि" निकला; मैंने उन शब्दों को सुना, और फिर मुझे एक प्रतिध्वनि सुनाई दी - बिल्कुल पास से।

शुभ रात्रि, महोदया; या यूँ कहें, शुभ संध्या — सूरज अभी डूबा ही नहीं है; आशा है आपने अच्छी नींद ली होगी?

मैं चौंक गया, लेकिन बस एक पल के लिए ही असहज हुआ; मैं आवाज और बोलने वाले दोनों को जानता था।

“सोया था, महोदय! कब? कहाँ?”

“आप पूछ सकते हैं कि कब और कहाँ। ऐसा लगता है कि आप दिन को रात में बदल देते हैं, और तकिए के लिए मेज चुनते हैं; काफी कठोर आवास है — ?”

“महोदय, जब मैं सो रही थी, तब मेरे लिए यह नरम हो गया। वह अदृश्य, उपहार देने वाली चीज़ जो मेरी मेज पर मंडराती रहती है, उसने मुझे याद रखा। चाहे मैं किसी भी तरह सोई, मैं तकिए और कंबल में लिपटी हुई ही उठी।”

"क्या शॉल से आपको गर्मी मिली?"

“बहुत गर्मजोशी से भरे हैं। क्या आप इनके लिए धन्यवाद मांगते हैं?”

“नहीं। सोते समय तुम्हारा चेहरा पीला पड़ गया था: क्या तुम्हें घर की याद आ रही है?”

"घर की याद आने के लिए, घर होना जरूरी है; जो मेरे पास नहीं है।"

“तो आपको एक समझदार दोस्त की और भी ज्यादा जरूरत है। मिस लूसी, मुझे शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति पता है जिसे आपसे ज्यादा दोस्त की सख्त जरूरत हो; आपकी कमियां ही इसकी अनिवार्यता हैं। आपको बहुत ज्यादा नियंत्रण, मार्गदर्शन

और काबू में रखने की जरूरत है।”

“दबा कर रखने” का यह विचार एम. पॉल के दिमाग से कभी नहीं निकला; मेरे मामले में, सबसे अधिक अधीनता भी उसे इससे मुक्त नहीं कर पाती। कोई बात नहीं; इसका क्या अर्थ था? मैंने उसकी बात सुनी और खुद को बहुत अधिक विनम्र होने की जहमत नहीं उठाई; अगर मैंने उसे “दबा कर रखने” के लिए कुछ भी नहीं छोड़ा होता, तो उसका काम ही छिन गया होता।

“तुम्हें निगरानी की ज़रूरत है, और तुम्हारी देखरेख की,” उसने आगे कहा; “और यह तुम्हारे लिए अच्छा है कि मैं यह देख रहा हूँ, और इन दोनों कर्तव्यों को निभाने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ। मैं तुम पर और दूसरों पर बहुत करीब से, बहुत लगातार नज़र रखता हूँ, जितना तुम या वे सोचते हैं उससे कहीं ज़्यादा करीब से और अक्सर। क्या तुम्हें वह खिड़की दिख रही है जिसमें रोशनी है?”

उन्होंने कॉलेज के एक छात्रावास में लगी जाली की ओर इशारा किया।

“ये कमरा मैंने किराए पर लिया है,” उसने कहा। “नाम के लिए अध्ययन कक्ष, असल में निगरानी चौकी। मैं वहाँ घंटों बैठकर पढ़ता हूँ: ये मेरा तरीका है, मेरी पसंद है। मेरी किताब ये बगीचा है; इसकी विषयवस्तु मानव स्वभाव है, नारी स्वभाव। मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। आह! मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ, सेंट पियरे, पेरिस की महिला, ये मालकिन-महिला, मेरी चचेरी बहन बेक।”

“यह सही नहीं है, महाशय।”

“क्या टिप्पणी? यह सही नहीं है? किसके मत के अनुसार? क्या कैल्विन या लूथर का कोई सिद्धांत इसकी निंदा करता है? इससे मुझे क्या लेना-देना? मैं प्रोटेस्टेंट नहीं हूँ। मेरे धनी पिता (हालाँकि मैंने गरीबी देखी है, और एक बार रोम में एक अटारी में एक साल तक भूखा रहा - बुरी तरह भूखा, अक्सर दिन में एक बार खाना, और कभी-कभी वह भी नहीं - फिर भी मैं धनवान परिवार में पैदा हुआ था) - मेरे धनी पिता एक अच्छे कैथोलिक थे; और उन्होंने मुझे एक पादरी और एक जेसुइट शिक्षक के रूप में दिया। मैं उनकी शिक्षाओं को आज भी याद रखता हूँ; और हे भगवान! उन्होंने मुझे कितनी ही नई खोजें करने में मदद की है!”

"गुप्त रूप से की गई खोजें मुझे बेईमानी भरी खोजें लगती हैं।"

“प्यूरिटन! मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है। फिर भी देखो कि मेरे जेसुइट की प्रणाली कैसे काम करती है। क्या तुम सेंट पियरे को जानते हो?”

"आंशिक रूप से।"

वह हँसा। “तुम सही कहते हो – ‘आंशिक रूप से’; जबकि मैं उसे पूरी तरह जानता हूँ; यही अंतर है। उसने मेरे सामने सौम्यता का प्रदर्शन किया; मुझे मखमली कपड़े भेंट किए; दुलार किया, चापलूसी की, मेरे सामने गिड़गिड़ाया। अब, मैं एक महिला की चापलूसी से प्रभावित हो जाता हूँ – अपनी बुद्धि के विरुद्ध। हालाँकि वह कभी सुंदर नहीं थी, लेकिन जब मैं उससे पहली बार मिला था, तब वह युवा थी, या उसे युवा दिखना आता था। अपनी सभी देशवासियों की तरह, उसे कपड़े पहनने की कला आती थी – उसमें एक निश्चित सहजता, आराम और सामाजिक आत्मविश्वास था, जिसने मुझे शर्मिंदगी के दर्द से बचा लिया।”

"महाशय, यह सब अनावश्यक रहा होगा। मैंने आपको अपने जीवन में कभी शर्मिंदा होते नहीं देखा।"

“महोदया, आप मेरे बारे में बहुत कम जानती हैं; एक साधारण पेंशनभोगी होने के नाते मैं शर्मिंदा हो सकता हूँ; मेरे स्वभाव में विनम्रता और संकोच का भंडार है—”

"महाशय, मैंने इसे कभी नहीं देखा।"

"मैडम, यह वहीं है। आपको इसे देखना चाहिए था।"

"महाशय, मैंने आपको सार्वजनिक रूप से देखा है - मंचों पर, दीर्घाओं में, उपाधियों और सम्राटों के सामने - और आप उतने ही सहज थे जितने कि आप तीसरे डिवीजन में होते हैं।"

महोदया, न तो उपाधियाँ और न ही राजसी ठाठ-बाठ मेरी विनम्रता को झकझोरते हैं; और प्रसिद्धि तो मेरी अपनी दुनिया है। मुझे यह खूब पसंद है, और मैं इसमें खुलकर सांस लेता हूँ; लेकिन संक्षेप में, यही भावना इस समय मेरे मन में प्रकट हो रही है; फिर भी, मैं इससे हारना नहीं चाहता। महोदया, अगर मैं शादी करने वाला पुरुष होता (जो मैं नहीं हूँ; और इस विचार पर आप जो भी उपहास कर रही हों, उसे छोड़ दें), और मुझे किसी महिला से यह पूछना आवश्यक लगता कि क्या वह मुझे भावी पति के रूप में देख सकती है, तो यह सिद्ध हो जाता कि मैं जैसा कहता हूँ वैसा ही हूँ - विनम्र।

अब मुझे उस पर पूरा विश्वास हो गया था; और विश्वास करने के कारण, मैंने उसके प्रति इतनी सच्ची श्रद्धा दिखाई कि मेरा हृदय पीड़ा से भर गया।

“सेंट पियरे की बात करें तो,” उन्होंने थोड़ा संभलते हुए कहा, क्योंकि उनकी आवाज़ थोड़ी बदल गई थी, “वह एक समय मैडम इमानुएल बनना चाहती थी; और

मुझे नहीं पता कि मैं कहाँ चला जाता, अगर वह छोटी सी रोशनी वाली जाली न होती। आह, जादुई जाली! तुमने खोज के कितने चमत्कार किए हैं! हाँ," उन्होंने आगे कहा, "मैंने उसकी कटुता, उसका घमंड, उसकी चंचलता देखी है - न केवल यहाँ, बल्कि अन्य जगहों पर भी: मैंने वह देखा है जो मुझे उसकी सभी चालों से बचाता है: मैं बेचारी ज़ेली से सुरक्षित हूँ।"

"और मेरी छात्राएँ," उन्होंने फिर से बोलना शुरू किया, "वे गोरी, भोली लड़कियाँ — इतनी शांत और विनम्र— मैंने सबसे शर्मीली को भी लड़कों की तरह खेलते देखा है, सबसे संकोची को भी— दीवारों से अंगूर तोड़ते, पेड़ों से नाशपाती तोड़ते। जब अंग्रेज़ी शिक्षिका आईं, तो मैंने उन्हें देखा, इस गली के प्रति उनकी शुरुआती पसंद को पहचाना, एकांत के प्रति उनके लगाव को देखा, उन्हें ध्यान से देखा, इससे बहुत पहले कि हम दोनों के बीच बातचीत शुरू हुई; क्या आपको याद है कि एक बार जब हम अजनबी थे, तो मैं चुपचाप आया था और आपको सफेद वायलेट का एक छोटा सा गुच्छा भेंट किया था?"

मुझे याद है। मैंने वायलेट के फूलों को सुखाकर रख लिया था और वे अभी भी मेरे पास हैं।

"मुझे खुशी हुई जब तुमने उन्हें शांतिपूर्वक और बिना किसी संकोच के तुरंत स्वीकार कर लिया—वह भावना जिसे मैं जगाने से हमेशा डरता हूँ, और जो आँखों या हावभाव में प्रकट होने पर मुझे घोर घृणा होती है। वापस आने के लिए। मैंने न केवल तुम्हें देखा; बल्कि अक्सर—विशेषकर शाम के समय—एक और रक्षक देवदूत चुपचाप पास में मंडराता रहता था: रात दर रात मेरी चचेरी बहन बेक चुपके से उन सीढ़ियों से नीचे उतरती थी, और जब तुम उसे नहीं देख पाती थी तो चुपके से तुम्हारी हरकतों का पीछा करती थी।"

लेकिन, महाशय, क्या आप उस खिड़की की दूरी से यह नहीं देख सकते थे कि रात में इस बगीचे में क्या घटित होता है?

चांदनी रात में शायद मैं शीशे से देख सकूँ—मैं शीशा इस्तेमाल करता हूँ—लेकिन बगीचा मेरे लिए खुला है। नीचे बने शेड में एक दरवाजा है जो एक आंगन में खुलता है, जो महाविद्यालय से जुड़ा है; उस दरवाजे की चाबी मेरे पास है, इसलिए मैं जब चाहूँ आता-जाता हूँ। आज दोपहर मैं उसी से आया और तुम्हें कक्षा में सोते हुए पाया; आज शाम भी मैंने उसी रास्ते का इस्तेमाल किया।

मैं खुद को यह कहने से रोक नहीं सका, "अगर तुम एक दुष्ट, धूर्त व्यक्ति होते, तो यह सब कितना भयानक होता!"

इस विषय पर उनका ध्यान कहीं नहीं लग रहा था: उन्होंने सिगार जलाया और पेड़ से टेक लगाकर, उसी शांत और विनोदी अंदाज़ में मेरी ओर देखते हुए, जैसे उनका मूड शांत होने पर होता था, उन्होंने धुंआ उड़ाया। तब मुझे लगा कि उन्हें उपदेश देना जारी रखना ही उचित होगा: वे अक्सर घंटों तक मुझे प्रवचन देते रहते थे - मुझे समझ नहीं आया कि मैं भी एक बार अपने मन की बात क्यों न कहूँ। इसलिए मैंने उन्हें उनकी जेसुइट प्रणाली के बारे में अपने विचार बताए।

"महाशय, इससे मिलने वाला ज्ञान बहुत महंगा पड़ता है; इस तरह छुप-छुपकर आना-जाना आपकी गरिमा को ठेस पहुंचाता है।"

“मेरी गरिमा!” वह हंसते हुए चिल्लाया; “मैंने कभी अपनी गरिमा के बारे में चिंता करते हुए देखा है? असल में, आप ही हैं, मिस लूसी, जो ‘गौरवशाली’ हैं। आपकी इस ऊँची और संकीर्ण उपस्थिति में, मैंने कितनी बार उस चीज़ को रौंदने का आनंद लिया है जिसे आप मेरी गरिमा कहती हैं; उसे फाड़कर, हवा में बिखेरते हुए, उन पागलपन भरे उन्मादों में जिन्हें आप इतने घमंड से देखती हैं, और जिन्हें आप किसी घटिया लंदन अभिनेता की बकवास समझती हैं।”

“महाशय, मैं आपसे कहता हूँ कि उस जाली से डाली गई आपकी हर दृष्टि आपके अपने स्वभाव के सर्वोत्तम भाग के साथ अन्याय है। इस प्रकार मानव हृदय का अध्ययन करना, गुप्त रूप से और अपवित्रतापूर्वक ईव के सेबों का भोज करने के समान है। काश आप प्रोटेस्टेंट होते।”

उस इच्छा की परवाह किए बिना, वह सिगरेट पीता रहा। कुछ देर मुस्कुराते हुए, लेकिन विचारशील चुप्पी के बाद, उसने अचानक कहा, "मैंने और भी चीजें देखी हैं।"

"क्या अन्य बातों?"

उसने अपने होठों से खरपतवार को हटाकर उसके अवशेष को झाड़ियों के बीच फेंक दिया, जहां वह क्षण भर के लिए अंधेरे में चमकता रहा।

“इसे देखो,” उसने कहा: “क्या वह चिंगारी किसी आंख की तरह नहीं है जो तुम्हें और मुझे देख रही हो?”

वह रास्ते पर मुड़ गया; थोड़ी देर बाद लौटकर उसने आगे कहा: — “मैंने कुछ ऐसी चीजें देखी हैं, मिस लूसी, जो मेरे लिए समझ से परे हैं, जिनके समाधान की

तलाश में मैं पूरी रात जागता रहा, और मुझे अभी तक वह नहीं मिला है।”

उसकी आवाज़ अजीब थी; मेरी नसें फड़कने लगीं; उसने मुझे कांपते हुए देखा।

“क्या तुम डर रहे हो? क्या मेरे शब्दों से या उस लाल ईर्ष्यालु आँख से जो धीरे-धीरे गायब हो रही है?”

मुझे ठंड लग रही है; रात गहरी और लंबी होती जा रही है, और हवा बदल गई है; अब अंदर जाने का समय हो गया है।

“अभी आठ बज चुके हैं, लेकिन आपको जल्दी अंदर जाना होगा। मुझे बस इस सवाल का जवाब दीजिए।”

फिर भी, इसे रखने से पहले वह रुक गया। बगीचे में सचमुच अंधेरा छा रहा था; शाम के बादल छा गए थे और पेड़ों पर बारिश की बूँदें पड़ने लगी थीं। मुझे उम्मीद थी कि उसे इसका एहसास होगा, लेकिन फिलहाल वह इतना मग्न था कि उसे इस बदलाव का पता ही नहीं चल रहा था।

"मैडम, क्या आप प्रोटेस्टेंट लोग अलौकिक शक्तियों में विश्वास करते हैं?"

मैंने उत्तर दिया, “इस मुद्दे पर प्रोटेस्टेंटों के बीच, साथ ही अन्य संप्रदायों के बीच भी, सिद्धांत और विश्वास में मतभेद है। “महाशय, आप ऐसा प्रश्न क्यों पूछ रहे हैं?”

“तुम इतने सिकुड़कर और इतनी धीमी आवाज में क्यों बोलते हो? क्या तुम अंधविश्वासी हो?”

“मैं स्वभाव से ही घबरा जाता हूँ। मुझे ऐसे विषयों पर चर्चा करना पसंद नहीं है। मुझे यह और भी ज़्यादा नापसंद है क्योंकि—”

"आप विश्वास करते है?"

“नहीं: लेकिन मुझे ऐसा अनुभव हुआ है कि मुझे कुछ अनुभूतियाँ हुई हैं—”

“जब से तुम यहाँ आए हो?”

“हां; कुछ महीने पहले की बात है।”

“यहाँ? — इसी घर में?”

"हाँ।"

“वाह! मुझे खुशी है। मुझे पता था, कहीं न कहीं; आपके बताने से पहले ही। मुझे आप और मेरे बीच एक जुड़ाव का एहसास था। आप धैर्यवान हैं, और मैं क्रोधी; आप शांत और पीली हैं, और मैं तगड़ा और जोशीला; आप एक कट्टर प्रोटेस्टेंट हैं, और मैं एक तरह का आम जेसुइट: लेकिन हम एक जैसे हैं - हमारे बीच एक आत्मीयता है।

क्या आप इसे देखती हैं, मैडमोजेल, जब आप शीशे में देखती हैं? क्या आप देखती हैं कि आपका माथा मेरे जैसा है - कि आपकी आँखें मेरी जैसी हैं? क्या आप सुनती हैं कि आपकी आवाज़ में मेरे कुछ स्वर हैं? क्या आप जानती हैं कि आपके कई रूप मेरे जैसे हैं? मैं यह सब महसूस करता हूँ, और मानता हूँ कि आप मेरे नक्षत्र में जन्मी हैं। हाँ, आप मेरे नक्षत्र में जन्मी हैं! कांपो! क्योंकि जहाँ मनुष्यों के साथ ऐसा होता है, वहाँ उनके भाग्य के धागों को सुलझाना मुश्किल होता है; गांठें और उलझनें होती हैं - अचानक टूटने से जाल में क्षति होती है। लेकिन इन 'धारणाओं' को, जैसा कि आप कहती हैं, अंग्रेजी सावधानी के साथ संभालें। मुझे भी ऐसा ही अनुभव हुआ है। मेरी 'धारणाएँ'।"

"महामहिम, मुझे उनके बारे में बताइए।"

"मैं इससे बेहतर की कामना नहीं करता, और न ही इससे कम का इरादा रखता हूँ। क्या आप इस घर और बगीचे की किंवदंती जानते हैं?"

"मुझे पता है। हाँ। कहते हैं कि सैकड़ों साल पहले एक नन को इसी पेड़ के नीचे, उस जमीन के नीचे जिंदा दफना दिया गया था, जिस पर अब हम दफन हैं।"

और पुराने समय में एक नन का भूत यहाँ आता-जाता करता था।

"महामहिम, क्या होगा अगर यह अभी भी यहां आता-जाता रहे?"

"यहाँ कुछ आता-जाता रहता है: रात में इस घर में एक आकृति मंडराती रहती है, जो दिन में दिखने वाली किसी भी आकृति से अलग है। मैंने निस्संदेह एक चीज़ को एक से अधिक बार देखा है; और मेरे लिए उसके मठवासी वस्त्र एक विचित्र दृश्य थे, जो किसी भी अन्य जीवित प्राणी को जो बता सकते हैं उससे कहीं अधिक कहते थे। एक नन!"

"महाशय, मैंने भी इसे देखा है।"

"मुझे इसका अंदाज़ा था। चाहे यह नन हाड़-मांस की हो, या खून सूख जाने और मांस के नष्ट हो जाने के बाद बची हुई कोई चीज़ हो, उसका काम शायद उतना ही आपसे है जितना मुझसे। खैर, मैं इसका पता लगाने की कोशिश करूँगा; इसने मुझे अब तक उलझन में डाल रखा है, लेकिन मैं इस रहस्य को सुलझाने का प्रयास करूँगा। मेरा मतलब है—"

अपने मन की बात बताने के बजाय, उसने अचानक अपना सिर उठाया; मैंने भी उसी क्षण वही हरकत की; हम दोनों एक ही बिंदु पर देखने लगे — विशाल बरसेउ की

छाया में खड़ा ऊँचा वृक्ष, जिसकी कुछ शाखाएँ पहली मंजिल की छत पर टिकी थीं। उस ओर से एक अजीब और अकथनीय ध्वनि आई, मानो उस वृक्ष की शाखाएँ अपने आप हिल रही हों, और उसके पत्तों का भार उसके विशाल तने पर आकर टूट पड़ा हो। हाँ; हवा का हल्का सा झोंका भी नहीं आया था, और वह भारी वृक्ष काँप उठा, जबकि झाड़ियाँ स्थिर खड़ी रहीं। कुछ मिनटों तक लकड़ी और पत्तों के बीच एक चीर-फाड़ और कंपन होती रही। अँधेरा होने के बावजूद, मुझे ऐसा लगा जैसे रात की छाया या शाखाओं की छाया से भी अधिक ठोस कोई चीज़ तनों से काली होकर उभर रही हो। अंत में संघर्ष थम गया। इस पीड़ा के बाद किसका जन्म हुआ? इन वेदनाओं से किस अप्सरा का जन्म हुआ? हम टकटकी लगाकर देखते रहे। अचानक घर में एक घंटी बजी — प्रार्थना की घंटी। अचानक हमारी गली में, बरसेउ से एक काली-सफेद आकृति प्रकट हुई। मानो क्रोध से झपट्टा मारते हुए, हमारे चेहरों के बिल्कुल करीब से गुज़री, मानो स्वयं नन! मैंने उन्हें पहले कभी इतनी स्पष्ट रूप से नहीं देखा था। वे कद में लंबी और हाव-भाव में उग्र लग रही थीं। उनके जाते ही हवा सिसकने लगी; बारिश तेज़ और ठंडी बरसने लगी; मानो पूरी रात उनकी उपस्थिति महसूस कर रही हो।

अध्याय 32.

पहला पत्र।

अब यह जानने का समय आ गया है कि पॉलिना मैरी कहाँ थीं? होटल क्रेसी के शानदार होटल में मेरा अनुभव कैसा रहा? अनुपस्थिति के कारण कुछ समय के लिए यह अनुभव रुका हुआ था; श्रीमान और श्रीमती डी बासोम्पियर यात्रा पर थे, उन्होंने कुछ सप्ताह प्रांतों और फ्रांस की राजधानी में बिताए थे। संयोगवश, उनकी वापसी की सूचना मुझे कुछ ही समय बाद मिल गई।

एक सुहावनी दोपहर में मैं एक शांत सड़क पर टहल रहा था, धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था, अप्रैल की हल्की धूप का आनंद ले रहा था और कुछ सुखद विचारों में खोया हुआ था, तभी मैंने अपने सामने घुड़सवारों का एक समूह देखा, जो मानो अभी-अभी मिले हों, और चौड़े, चिकने, लिंडन के पेड़ों से घिरे रास्ते के बीचोंबीच रुककर एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे थे; एक तरफ एक अधेड़ उम्र का सज्जन और युवती, दूसरी तरफ एक युवा और आकर्षक पुरुष। युवती का हावभाव अत्यंत सुंदर था, उसके वस्त्र उत्तम थे, और उसका पूरा रूप-रंग कोमल और गरिमामय था। फिर भी, जैसे ही मैंने उन्हें देखा, मुझे लगा कि वे मुझे जानते हैं, और थोड़ा और पास जाकर मैंने उन सभी को पहचान लिया: काउंट होम डी बासोम्पियर, उनकी बेटी और डॉ. ग्राहम ब्रेटन।

ग्राहम का चेहरा कितना जीवंत था! वह आनंद कितना सच्चा, कितना गर्मजोशी भरा, फिर भी कितना संयमित था! यही परिस्थिति थी, यही संयोग था, जो डॉ. जॉन को एक साथ आकर्षित और जकड़ने वाला, वश में करने वाला और उत्तेजित करने वाला था। जिस मोती की वह प्रशंसा कर रहा था, वह अपने आप में अनमोल और शुद्धतम था, लेकिन वह ऐसा व्यक्ति नहीं था जो रत्न की सराहना करते हुए उसकी जड़ाई को भूल जाए। यदि उसने पॉलिना को उसी यौवन, सुंदरता और आकर्षण के साथ, पैदल, अकेली, निहत्थी और साधारण वस्त्रों में, एक आश्रित कामगार, एक अर्ध-स्वर्गीय महिला के रूप में देखा होता, तो वह उसे एक प्यारी सी लड़की समझता और उसकी चाल-ढाल और हावभाव को निहारता, लेकिन उसे इस तरह पराजित करने के लिए, उसे सुरक्षित रूप से अपने अधीन लाने के लिए, बिना किसी नुकसान के, बल्कि उसके पुरुषोत्तेजक सम्मान में वृद्धि के साथ, इससे कहीं अधिक की आवश्यकता थी; डॉ. जॉन में संसार का सारा आकर्षण था; केवल स्वयं को संतुष्ट करना पर्याप्त नहीं था; समाज को स्वीकृति मिलनी चाहिए—दुनिया को उसके कार्यों की प्रशंसा करनी चाहिए, अन्यथा वह अपने उपायों को व्यर्थ और निरर्थक मानता। अपनी विजयस्थली में उसने वह सब कुछ चाहा जो यहाँ प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता था—उच्च कोटि की संस्कृति की छाप, सावधानीपूर्वक और आधिकारिक संरक्षण का प्रमाण, वे सभी तत्व जो फैशन द्वारा निर्धारित, धन द्वारा खरीदे गए और स्वाद द्वारा समायोजित किए गए; इन्हीं शर्तों को उसकी आत्मा ने आत्मसमर्पण करने से पहले निर्धारित किया था: वे यहाँ पूर्णतः पूर्ण थीं; और अब, गर्वित, भावुक, फिर भी

भयभीत होकर, उसने पॉलिना को अपनी संप्रभु मानकर सम्मान दिया। जहाँ तक उसकी बात है, उसकी आँखों में सचेत शक्ति के बजाय भावनाओं की कोमल मुस्कान थी।

वे अलग हो गए। वह तेज़ी से मेरे पास से गुज़रा, मानो ज़मीन का एहसास ही न हो और दोनों ओर कुछ दिखाई न दे रहा हो। वह बेहद आकर्षक लग रहा था; उसमें साहस और दृढ़ संकल्प पूरी तरह जागृत थे।

"पापा, लूसी यहाँ है!" एक मधुर, मधुर आवाज़ ने पुकारा। "प्यारी लूसी!"

लूसी—यहाँ जरूर आओ!

मैं जल्दी से उसके पास गया। उसने अपना घूंघट हटाया और मुझे चूमने के लिए घोड़े की काठी से नीचे झुकी।

"मैं कल आपसे मिलने आ रही थी," उसने कहा; "लेकिन अब कल आप मुझसे मिलने आएंगे।"

उसने समय बताया और मैंने उसका पालन करने का वादा किया।

अगली शाम मैं उसके साथ थी—हम दोनों उसके कमरे में बंद थे। मैंने उसे तब से नहीं देखा था जब उसके दावों की तुलना जिनेवरा फैंसहावे के दावों से की गई थी और वह बहुत ही प्रभावशाली ढंग से विजयी हुई थी; इस बीच उसने मुझे अपनी यात्राओं के बारे में बहुत कुछ बताया। आमने-सामने की बातचीत में वह बहुत ही जीवंत और तेज़ वक्ता थी, एक बहुत ही सजीव वर्णनकर्ता; फिर भी अपनी सरल भाषा और स्पष्ट कोमल आवाज़ के साथ, वह कभी भी बहुत तेज़ या बहुत अधिक बोलती हुई नहीं लगती थी। मुझे लगता है कि मेरा ध्यान जल्दी नहीं भटकता, लेकिन धीरे-धीरे, उसे खुद विषय बदलने की ज़रूरत महसूस हुई; उसने अपनी कहानी को संक्षेप में समाप्त करने की जल्दी की। फिर भी उसने इतने संक्षिप्त रूप में क्यों समाप्त किया, यह तुरंत समझ में नहीं आया; सन्नाटा छा गया— एक बेचैन सन्नाटा, जिसमें कुछ अमूर्तता के लक्षण भी थे। फिर, मेरी ओर मुड़कर, एक संकोची, कुछ हद तक विनती भरी आवाज़ में— "लूसी—"

"ठीक है, मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

"क्या मेरी चचेरी बहन जिनेवरा अभी भी मैडम बेक के यहाँ है?"

"तुम्हारी चचेरी बहन अभी भी वहीं है; तुम उससे मिलने के लिए तरस रही होगी।"

नहीं—ज्यादा नहीं।

"क्या आप उसे एक और शाम बिताने के लिए आमंत्रित करना चाहते हैं?"

“नहीं... मुझे लगता है कि वह अब भी शादीशुदा होने के बारे में बात करती है?”

"ऐसा किसी से भी मत कहो जिसकी तुम परवाह करते हो।"

"लेकिन क्या वह अभी भी डॉ. ब्रेटन के बारे में सोचती है? इस मामले पर उसने अपना विचार नहीं बदला होगा, क्योंकि दो महीने पहले तो यह बात पक्की हो गई थी।"

“क्यों, आपको पता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आपने वे शर्तें तो देख ही लीं जिन पर वे टिके हुए थे।”

"उस शाम थोड़ी गलतफहमी जरूर हुई थी; क्या वह नाखुश लग रही है?"

“वो नहीं। बात बदलते हैं। क्या आपने अपनी अनुपस्थिति के दौरान ग्राहम के बारे में कुछ सुना या देखा नहीं है?”

"मुझे लगता है पापा को उनसे व्यापार के सिलसिले में एक-दो बार पत्र मिले थे। हमारी अनुपस्थिति में उन्होंने किसी ऐसे मामले का प्रबंधन संभाला था जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता थी। डॉ. ब्रेटन पापा का सम्मान करते प्रतीत होते हैं और उनकी मदद करने में उन्हें खुशी मिलती है।"

“हां: आप उनसे कल सड़क पर मिले थे; आप उनके चेहरे के भाव से अंदाजा लगा सकते हैं कि उनके दोस्तों को उनके स्वास्थ्य को लेकर ज्यादा चिंतित होने की जरूरत नहीं है?”

“पापा ने भी तुम्हारे साथ ही सोचा होगा। मुझे मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी। वैसे तो वो ज्यादा ध्यान नहीं देते, क्योंकि वो अक्सर अपनी आंखों के सामने से गुजरने वाली चीजों से हटकर दूसरी चीजों में ही सोचते रहते हैं; लेकिन जब डॉ. ब्रेटन घोड़े पर सवार होकर चले गए, तो उन्होंने कहा, ‘सच में उस लड़के का जोश और ऊर्जा देखकर बहुत अच्छा लगता है।’ उन्होंने डॉ. ब्रेटन को लड़का कहा; मुझे लगता है कि वो उन्हें लगभग लड़का ही समझते हैं, जैसे मुझे छोटी बच्ची समझते हैं; वो मुझसे नहीं बोल रहे थे, बल्कि ये बात उन्होंने खुद से कही। लूसी...।”

फिर से वही मनमोहक स्वर सुनाई दिया, और उसी क्षण वह अपनी कुर्सी से उठी और आकर मेरे पैरों के पास रखी कुर्सी पर बैठ गई।

मुझे वह पसंद आई। इस पुस्तक के दौरान मैंने अपने परिचय के बारे में यह बात बार-बार नहीं कही है; पाठक कृपया इसे एक बार सहन करें। घनिष्ठ संपर्क और

बारीकी से देखने पर पॉलिना में केवल वही दिखा जो कोमल, बुद्धिमान और ईमानदार था; इसलिए उसके प्रति मेरा स्नेह गहरा था। सतही प्रशंसा शायद अधिक स्पष्ट होती; लेकिन मेरी प्रशंसा शांत थी।

मैंने कहा, “लूसी से तुम्हें क्या पूछना है? हिम्मत रखो और खुलकर बोलो।”

लेकिन उसकी आँखों में साहस का कोई भाव नहीं था; जैसे ही उसकी नज़र मेरी आँखों से मिली, उसकी नज़रें झुक गईं; और उसके गालों पर शीतलता का कोई भाव नहीं था— एक क्षणिक सतही लाली नहीं, बल्कि एक बढ़ती हुई आंतरिक उत्तेजना ने उसके रंग और तापमान को बढ़ा दिया था।

"लूसी, मैं डॉ. ब्रेटन के बारे में तुम्हारे विचार जानना चाहता हूँ। कृपया मुझे उनके चरित्र और स्वभाव के बारे में अपनी सच्ची राय बताएं।"

उनका चरित्र उच्च कोटि का है, और यह बिल्कुल उचित है।

“और उसका स्वभाव? मुझे उसके स्वभाव के बारे में बताएं,” उसने आग्रह किया; “आप उसे अच्छी तरह जानते हैं।”

मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ।

“आप उसके घर को जानते हैं। आपने उसे उसकी माँ के साथ देखा है; उसके बारे में बेटे की तरह बात करें।”

वह एक नेक दिल बेटा है; अपनी माँ का सहारा और उम्मीद, उसका गौरव और खुशी।

उसने मेरा हाथ अपने हाथों के बीच पकड़ लिया और हर प्रशंसा भरे शब्द पर उसे हल्के से सहलाया।

"लूसी, वह और किस तरह से अच्छा है?"

"डॉ. ब्रेटन दयालु हैं - अपनी पूरी जाति के प्रति मानवीय भाव रखते हैं, डॉ. ब्रेटन सबसे नीच बर्बर या सबसे बुरे अपराधी के प्रति भी दयालुता का भाव रखते हैं।"

मैंने कुछ सज्जनों को, पापा के कुछ दोस्तों को, उनके बारे में बात करते हुए यही कहते सुना। उनका कहना है कि अस्पतालों में कई गरीब मरीज, जो कुछ निर्दयी और स्वार्थी सर्जनों के सामने कांपते हैं, उनका स्वागत करते हैं।

“वे सही कह रहे हैं; मैंने स्वयं ऐसा देखा है। एक बार वह मुझे एक अस्पताल ले गए थे; मैंने देखा कि उनका वहाँ कैसा स्वागत हुआ: आपके पिता के मित्र सही कह रहे हैं।”

जब उसने एक पल के लिए अपनी आँखें उठाईं, तो उसकी आँखों में कोमल कृतज्ञता झलक रही थी। उसे अभी और भी कुछ कहना था, लेकिन समय और स्थान को लेकर वह झिझक रही थी। शाम ढलने लगी थी; उसके बैठक कक्ष की आग पहले से ही गोधूलि की लालिमा से जगमगा रही थी; लेकिन मुझे लगा कि वह कमरे में थोड़ी कम रोशनी चाहती थी, एक घंटे बाद।

मैंने उसे आश्वस्त करने के लिए कहा, "यहाँ हमें कितनी शांति और एकांत महसूस हो रहा है!"

“क्या हमें बुलाया जाएगा? हाँ; आज शाम शांत है, और मुझे चाय के लिए नीचे नहीं बुलाया जाएगा; पापा बाहर खाना खाने गए हैं।”

मेरा हाथ पकड़े हुए, वह अनजाने में मेरी उंगलियों से खेलती रही, उन्हें सजाती रही, कभी अपनी अंगूठियों से, कभी अपने खूबसूरत बालों की लटों से; उसने अपनी हथेली को अपने गर्म गाल पर थपथपाया, और अंत में, एक चिड़िया की तरह स्वाभाविक रूप से मधुर आवाज में बोली: —

आपको यह थोड़ा अजीब लग रहा होगा कि मैं डॉ. के बारे में इतनी बातें कर रहा हूँ।

ब्रेटन, इतने सारे सवाल पूछते हो, इतनी दिलचस्पी लेते हो, लेकिन—“

"बिल्कुल भी अजीब नहीं; एकदम स्वाभाविक; तुम उसे पसंद करती हो।"

“और अगर मैंने ऐसा किया,” उसने थोड़ी तेज़ी से कहा, “तो क्या यह कोई कारण है?

क्या मुझे बोलना चाहिए? मुझे लगता है कि आप मुझे मेरी चचेरी बहन जिनेवरा की तरह कमजोर समझते हैं?

“अगर मुझे लगता कि आप मैडम जिनेवरा जैसी जरा भी होतीं, तो मैं यहाँ बैठकर आपके संदेशों का इंतज़ार नहीं करती। मैं उठकर कमरे में आराम से घूमती और आपके पूरे भाषण से पहले ही सब कुछ बता देती। बोलिए।”

“मैं तो आगे बढ़ती रहूंगी,” उसने पलटकर जवाब दिया; “तुम्हें क्या लगता है कि मैं और क्या करूंगी?”

और वह दिखने और बोलने में—ब्रेटन की नन्ही पॉली जैसी—चिड़चिड़ी और संवेदनशील थी।

“अगर,” उसने ज़ोर देकर कहा, “अगर मैं डॉ. जॉन को इतना पसंद करती कि उसे

पसंद करने के लिए मरने को तैयार हो जाती, तो भी सिर्फ़ यही मुझे चुप रहने की इजाज़त नहीं देता — एकदम चुप — तुम्हारी तरह चुप, लूसी स्नो — तुम जानती हो — और तुम जानती हो कि अगर मैं आत्म-संयम में नाकाम रही और अपनी किसी बेबुनियाद पसंद के बारे में शिकायत करती रही, तो तुम मुझसे नफ़रत करोगी।”

“यह सच है कि मैं उन महिलाओं या लड़कियों का सम्मान नहीं करता जो अपनी जीत का बखान करने या अपनी भावनाओं की पीड़ाओं का विलाप करने में बहुत अधिक बोलती हैं। लेकिन जहाँ तक तुम्हारी बात है, पॉलिना, बोलो, क्योंकि मैं तुम्हें सुनने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। मुझे वह सब बताओ जो तुम्हें बताने में खुशी या राहत देता है: मैं इससे अधिक कुछ नहीं पूछता।”

"क्या तुम मेरी परवाह करती हो, लूसी?"

“हां, मैं करता हूँ, पॉलिना।”

“और मैं तुमसे प्यार करती हूँ। जब मैं छोटी, शरारती और आज्ञा न मानने वाली लड़की थी, तब भी तुम्हारे साथ रहने में मुझे एक अजीब सा सुकून मिलता था; तब अपनी सारी शरारतें और मनमौजीपन तुम पर लुटाना मुझे अच्छा लगता था। अब तुम मुझे स्वीकार्य हो, और मुझे तुमसे बात करना और तुम पर भरोसा करना अच्छा लगता है। तो सुनो, लूसी।”

और वह मेरे हाथ के सहारे आराम से बैठ गई - धीरे से, न कि ईमानदार मिस्ट्रेस फैंसहावे के थका देने वाले और स्वार्थी भार के साथ।

"कुछ मिनट पहले आपने पूछा था कि क्या हमारी अनुपस्थिति के दौरान हमें ग्राहम से कोई खबर नहीं मिली, और मैंने कहा था कि पापा के लिए व्यापार के सिलसिले में दो पत्र थे; यह सच था, लेकिन मैंने आपको सब कुछ नहीं बताया।"

“तुम बच निकले?”

“मैंने टालमटोल किया और गोलमोल बातें कीं, तुम्हें पता है। लेकिन अब मैं सच बोलने जा रही हूँ; अंधेरा हो रहा है; अब आराम से बात की जा सकती है। पापा अक्सर मुझे चिट्ठियों का थैला खोलने और उन्हें चिट्ठियाँ दिखाने देते हैं। करीब तीन हफ्ते पहले, एक सुबह, तुम्हें पता नहीं मैं कितनी हैरान हुई थी जब मुझे एम. डी बासोम्पियर के नाम की एक दर्जन चिट्ठियों के बीच मिस डी बासोम्पियर के नाम की एक चिट्ठी मिली। मैंने उसे तुरंत बाकी चिट्ठियों के बीच देखा; लिखावट अनजान नहीं थी; उसने मुझे सीधे आकर्षित किया। मैं कहने वाली थी, ‘पापा, ये डॉ. ब्रेटन की एक

और चिट्ठी है;' लेकिन 'मिस' ने मुझे चुप कर दिया। सच कहूँ तो मुझे इससे पहले कभी किसी सज्जन से चिट्ठी नहीं मिली थी। क्या मुझे इसे पापा को दिखाना चाहिए था, और उन्हें इसे खोलकर पहले पढ़ने देना चाहिए था? मैं ऐसा बिल्कुल नहीं कर सकती थी, लूसी। मैं पापा के मेरे बारे में विचारों को अच्छी तरह जानती हूँ: वे मेरी उम्र भूल जाते हैं; वे सोचते हैं कि मैं सिर्फ एक स्कूली छात्रा हूँ; उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि दूसरे लोग मुझे देखते हैं मैं अपनी उम्र के बराबर लंबी हो गई थी; इसलिए, मिली-जुली भावनाओं के साथ, जिनमें से कुछ आत्म-निंदा वाली थीं और कुछ इतनी तीव्र और प्रबल थीं कि मैं उनका वर्णन नहीं कर सकती, मैंने पापा को उनके बारह पत्र - उनकी सारी संपत्ति - दे दिए और अपना एक पत्र, अपनी प्यारी भेड़ का बच्चा, अपने पास रख लिया। नाश्ते के दौरान वह मेरी गोद में पड़ा रहा, एक अवर्णनीय अर्थ के साथ मेरी ओर देखता रहा, जिससे मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरा दोहरा अस्तित्व है - उस प्यारे पापा के लिए एक बच्ची, लेकिन अब अपने लिए बच्ची नहीं। नाश्ते के बाद मैं अपना पत्र लेकर ऊपर गई, और दरवाजे में चाबी घुमाकर खुद को सुरक्षित कर लिया, और अपने खजाने के बाहरी हिस्से का अध्ययन करने लगी: मुझे दिशा समझने और मुहर को भेदने में कुछ मिनट लग गए; इस तरह की मजबूत जगह पर पल भर में कब्जा नहीं किया जा सकता - जैसा कि घेराबंदी करने वाले कहते हैं, इसके सामने कुछ देर बैठना पड़ता है। ग्राहम की लिखावट उन्हीं की तरह है, लूसी, और उनकी मुहर भी - एकदम साफ, दृढ़ और गोल - मोम का कोई बेतरतीब छींटा नहीं - एक पूरी, ठोस, स्थिर बूंद - एक स्पष्ट छाप; कोई तीखे मोड़ आँखों की नसों को चुभते हैं, लेकिन एक साफ-सुथरी, सौम्य और सुखद पांडुलिपि, जो पढ़ते समय आपको सुकून देती है। यह उनके चेहरे की तरह है - ठीक वैसे ही जैसे उनके चेहरे की नक्काशी: क्या आप उनकी हस्तलेख पहचान सकते हैं?

मैंने इसे देखा है: आगे बढ़ो।

"सील इतनी खूबसूरत थी कि उसे तोड़ना मुश्किल था, इसलिए मैंने उसे कैंची से चारों ओर से काट दिया। आखिरकार चिट्ठी पढ़ने ही वाली थी कि मैं एक बार फिर स्वेच्छा से पीछे हट गई; अभी उस घूंट को पीना जल्दबाजी होगी—कपड़े में चमक इतनी खूबसूरत थी—मैं उसे एक मिनट और देखती रहूंगी। तभी मुझे अचानक याद आया कि मैंने उस सुबह प्रार्थना नहीं की थी। पापा को नाश्ते के लिए थोड़ा जल्दी जाते हुए देखकर, मुझे उन्हें इंतजार कराने का डर था, और कपड़े पहनते ही मैं उनके

पास जल्दी से चली गई, यह सोचकर कि प्रार्थना को बाद में करने में कोई हर्ज नहीं है। कुछ लोग कहेंगे कि मुझे पहले भगवान की सेवा करनी चाहिए थी और फिर मनुष्य की; लेकिन मुझे नहीं लगता कि स्वर्ग पापा के लिए मेरे किसी भी काम से ईर्ष्या करेगा। मुझे लगता है कि मैं अंधविश्वासी हूं। अब एक आवाज कह रही थी कि पुत्रवत स्नेह के अलावा कोई और भावना भी मायने रखती है—मुझे यह पढ़ने से पहले प्रार्थना करने के लिए प्रेरित कर रही थी जिसे पढ़ने के लिए मैं इतनी उत्सुक थी—खुद को एक पल के लिए रोककर, पहले एक महान कर्तव्य को याद करने के लिए। मुझे ये आवेग हमेशा से आते रहे हैं जब से मुझे याद है। मैंने चिट्ठी नीचे रख दी और कहा... मेरी प्रार्थनाओं में, अंत में, यह प्रबल निवेदन भी शामिल था कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं पापा को कभी भी दुख पहुंचाने के प्रलोभन में न पड़ूँ, और दूसरों की देखभाल करते समय कभी भी उनकी उपेक्षा न करूँ। इस संभावना के विचार मात्र से ही मेरा हृदय इतना भेद उठा कि मैं रोने लगी। लेकिन फिर भी, लूसी, मुझे लगा कि समय आने पर पापा को सच्चाई सिखानी होगी, उन्हें समझाना होगा और उनकी बात सुननी होगी।

"मैंने पत्र पढ़ा। लूसी, कहते हैं कि जीवन निराशाओं से भरा है। मुझे निराशा नहीं हुई। पढ़ने से पहले और पढ़ते समय, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था—तेज़ी से काँप रहा था—हर कंपन किसी प्यासे जानवर की साँस की तरह लग रही थी, जो कुएँ पर लेटा पानी पी रहा हो; और कुआँ बिल्कुल भरा हुआ था, एकदम साफ़; वह अपनी ही प्रेरणा से भरपूर था; मैंने उसके उफान में से सूरज को देखा, और लूसी, उस तीन बार शुद्ध किए गए सुनहरे पानी में एक कण भी नहीं था, न काई, न कीड़ा, न ही कोई कण।"

"कुछ लोगों के लिए जीवन दुखों से भरा होता है। मैंने ऐसी जीवनियाँ पढ़ी हैं जिनमें यात्री एक के बाद एक दुखों से गुज़रता हुआ प्रतीत होता है; जहाँ आशा उससे आगे-आगे तेज़ी से उड़ती है, कभी इतनी नज़दीक नहीं पहुँचती, न ही इतनी देर ठहरती है कि उसे पकड़ने का एक मौका मिल सके। मैंने उन लोगों के बारे में पढ़ा है जिन्होंने आँसुओं में बीज बोए, और जिनकी फसल, खुशी से काटे जाने के बजाय, असमय बीमारी से नष्ट हो गई, या अचानक आए बवंडर में उड़ गई; और, अफसोस! इनमें से कुछ ने खाली भंडारों के साथ सर्दी का सामना किया, और साल के सबसे अंधेरे और ठंडे समय में घोर अभाव से मर गए।"

"क्या यह उनकी गलती थी, पॉलिना, कि जिनकी तुम बात कर रही हो उनकी इस

तरह मृत्यु हो गई?”

“यह हमेशा उनकी गलती नहीं होती। उनमें से कुछ अच्छे और प्रयासशील लोग थे। मैं न तो प्रयासशील हूँ और न ही सक्रिय रूप से अच्छा, फिर भी ईश्वर ने मुझे धूप, पर्याप्त नमी और सुरक्षित संरक्षण में पाला-पोसा, मेरे प्यारे पिता द्वारा आश्रय दिया, पाला-पोसा और सिखाया; और अब—अब—एक और आ रहा है। ग्राहम मुझसे प्यार करता है।”

कुछ मिनटों के लिए हम दोनों इस चरम क्षण पर ठहर गए।

मैंने धीमी आवाज में पूछा, "क्या तुम्हारे पिता को पता है?"

"ग्राहम ने पापा के प्रति गहरे सम्मान के साथ बात की, लेकिन यह संकेत दिया कि वह अभी उस तरफ जाने की हिम्मत नहीं कर रहा है; उसे पहले अपनी योग्यता साबित करनी होगी: उसने आगे कहा कि इस मामले में कहीं और कदम उठाने से पहले उसे मेरे और मेरी भावनाओं के बारे में कुछ जानकारी होनी चाहिए।"

आपने क्या जवाब दिया?

मैंने संक्षिप्त उत्तर दिया, लेकिन मैंने उसे नाराज़ नहीं किया। फिर भी, मुझे डर था कि कहीं मेरा जवाब कुछ ज़्यादा ही सौहार्दपूर्ण न हो जाए: ग्राहम की पसंद बहुत ही बारीकी वाली है। मैंने इसे तीन बार लिखा - हर बार शब्दों को सुधारते और संयमित करते हुए; अंत में, जब मैंने इसे इतना परिष्कृत कर लिया कि यह मुझे फल या चीनी के हल्के से स्वाद वाले बर्फ के टुकड़े जैसा लगने लगा, तब मैंने इसे सील करके भेजने का साहस किया।

“बहुत बढ़िया, पॉलिना! तुम्हारी सहज प्रवृत्ति बिल्कुल सही है; तुम डॉ. ब्रेटन को समझती हो।”

"लेकिन मैं पापा के बारे में कैसे संभालूँ? मुझे अभी भी वहाँ दर्द हो रहा है।"

“बिल्कुल भी कोई कोशिश मत करो। अभी इंतजार करो। बस इतना कर लो कि जब तक तुम्हारे पिता को सब कुछ पता न चल जाए और वे अपनी मंजूरी न दे दें, तब तक उनसे कोई पत्राचार न करो।”

"क्या वह कभी इसे देगा?"

समय बताएगा। प्रतीक्षा करें।

"डॉ. ब्रेटन ने एक और पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने मेरे शांत और संक्षिप्त संदेश के लिए गहरी कृतज्ञता व्यक्त की; लेकिन मैंने आपकी सलाह का अनुमान लगाते हुए

कहा कि जब तक मेरी भावनाएँ वही रहेंगी, मैं अपने पिता की जानकारी के बिना दोबारा नहीं लिख सकता।"

"तुमने वही किया जो तुम्हें करना चाहिए था; डॉ. ब्रेटन को ऐसा ही लगेगा: इससे तुम्हारे प्रति उनका गर्व और प्रेम और भी बढ़ेगा, यदि बढ़ सकता है तो। पॉलिना, तुम्हारी वह कोमल बर्फीली लौ, जो इतनी शुद्ध, कोमल ज्वाला को घेरे हुए है, प्रकृति का एक अनमोल वरदान है।"

"देखिए, मैं ग्राहम के स्वभाव को समझती हूँ," उसने कहा। "मुझे लगता है कि उसके साथ व्यवहार करने के लिए कोई भी कोमलता कम नहीं पड़ सकती।"

"यह पूरी तरह से सिद्ध हो चुका है कि आप उन्हें समझते हैं, और फिर - डॉ. ब्रेटन का स्वभाव चाहे जो भी हो, यदि वे अधिक निकटता की अपेक्षा रखते - तब भी आप अपने पिता के साथ सच्चाई से, खुलेपन से और कोमलता से पेश आते।"

"लूसी, मुझे उम्मीद है कि मैं हमेशा ऐसा ही व्यवहार करूंगी। ओह, पापा को उनके सपने से जगाना और उन्हें बताना कितना दर्दनाक होगा कि मैं अब छोटी बच्ची नहीं रही!"

"पॉलिना, ऐसा करने में जल्दबाजी मत करो। समय और तुम्हारे भाग्य पर छोड़ दो। मैंने तुम्हारे प्रति उसकी कोमल देखभाल भी देखी है: संदेह मत करो कि वह कृपापूर्वक परिस्थितियों को व्यवस्थित करेगी और उचित समय निर्धारित करेगी। हाँ: मैंने तुम्हारे जीवन पर वैसे ही विचार किया है जैसे तुमने स्वयं किया है; मैंने उन तुलनाओं की हैं जिनका तुमने उल्लेख किया है। हम भविष्य को नहीं जानते, लेकिन अतीत अनुकूल रहा है।"

"बचपन में मुझे तुम्हारे लिए डर लगता था; जीवन में कोई भी चीज तुम्हारे बचपन के स्वभाव से ज्यादा संवेदनशील नहीं होती: कठोरता या उपेक्षा के कारण, न तो तुम्हारा बाहरी और न ही तुम्हारा आंतरिक व्यक्तित्व उस स्तर तक परिपक्व हो पाता जैसा कि आज है। बहुत दर्द, बहुत डर, बहुत संघर्ष तुम्हारे चेहरे की रेखाओं को बिगाड़ देता, उसकी नियमितता को तोड़ देता, तुम्हारी नसों को आदतन चिड़चिड़ाहट के बुखार में बदल देता जिससे तुम स्वास्थ्य और प्रसन्नता, अनुग्रह और मधुरता खो देतीं। ईश्वर ने तुम्हारी रक्षा की और तुम्हें संवारा, न केवल तुम्हारे लिए, बल्कि मुझे विश्वास है कि ग्राहम के लिए भी। उसका भाग्य भी भाग्यशाली था: अपने स्वभाव के सर्वोत्तम पहलुओं को पूरी तरह से विकसित करने के लिए, तुम्हारे जैसी साथी की आवश्यकता

थी: और तुम तैयार हो। तुम्हें एक होना ही होगा। यह मुझे उस पहले दिन ही पता चल गया था जब मैंने तुम्हें ला टेरेस पर एक साथ देखा था। तुम और ग्राहम के आपसी संबंधों में मुझे आशा, योजना और सामंजस्य दिखाई देता है। मुझे नहीं लगता कि तुम दोनों की सुनहरी जवानी तूफानी बुढ़ापे की अग्रदूत साबित होगी। मुझे लगता है कि यह अच्छा है कि तुम दोनों शांति से रहो और खुश रहो - स्वर्गदूतों की तरह नहीं, बल्कि कुछ खास लोगों की तरह। मनुष्य अपने बीच सुखी हैं। कुछ जीवन इस प्रकार धन्य हैं: यह ईश्वर की इच्छा है: यह स्वर्ग का प्रमाण और स्थायी साक्ष्य है। अन्य जीवन शुरुआत से ही एक अलग राह पर चल पड़ते हैं। अन्य यात्रियों को अस्थिर और तूफानी, उबड़-खाबड़ और परिवर्तनशील मौसम का सामना करना पड़ता है - वे विपरीत हवाओं का सामना करते हैं, देर से पहुंचते हैं और शीत ऋतु की रात के आगमन से पहले ही समाप्त हो जाते हैं। यह सब ईश्वर की अनुमति के बिना संभव नहीं है; और मैं जानता हूँ कि उनकी असीम रचनाओं के बीच कहीं न कहीं इस अंतिम भाग्य के न्याय का रहस्य छिपा है: मैं जानता हूँ कि उनके खजाने में उनकी दया का प्रमाण और वादा निहित है।

अध्याय 33.

एम. पॉल ने अपना वादा निभाया।

1 मई को हम सभी (अर्थात बीस बोर्डिंग छात्र और चार शिक्षक) को सुबह पाँच बजे उठने, छह बजे तक तैयार होकर कपड़े पहनने और प्रोफेसर इमानुएल के नेतृत्व में चलने का नोटिस मिला था। वही विलेट से हमारे प्रस्थान का नेतृत्व करने वाले थे, क्योंकि इसी दिन उन्होंने हमें गाँव में नाश्ता कराने का अपना वादा पूरा करने का प्रस्ताव रखा था। जैसा कि पाठक को शायद याद होगा, जब इस भ्रमण की योजना

बनी थी, तब मुझे निमंत्रण नहीं मिला था, बल्कि इसके विपरीत हुआ था; लेकिन अब जब मैंने इस तथ्य का उल्लेख किया और यह जानने की इच्छा जताई कि यह कैसे होगा, तो मेरे कान में एक आवाज़ आई, जिसका जवाब देने से बचने के लिए मैंने और अधिक कठिनाइयाँ उठाने का साहस नहीं किया।

“मैं आपको प्रार्थना करने की सलाह देता हूँ,” एम. इमानुएल ने शाही अंदाज़ में दूसरे कान को धमकाते हुए कहा। हालाँकि, नेपोलियन की एक तारीफ़ ही काफ़ी थी, इसलिए मैंने भी उनकी बात मानने का फ़ैसला कर लिया।

सुबह गर्मी की तरह शांत थी, बगीचे में पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ गूंज रही थी और हल्की ओस की फुहार गर्मी का संकेत दे रही थी। हम सबने कहा कि मौसम गर्म रहेगा, और हम सभी भारी कपड़ों को समेटकर धूप वाले मौसम के अनुकूल कपड़े पहनने में आनंदित थे। साफ-सुथरी, ताज़ी प्रिंट वाली ड्रेस और हल्की भूसी की टोपी, जिन्हें फ्रांसीसी कारीगरों की कारीगरी से ही बनाया और सजाया गया था, ताकि सादगी और भव्यता का सही मेल हो सके, यही पहनावे का नियम था। किसी ने भी फीके रेशम के कपड़े नहीं पहने; किसी ने भी पुराने कपड़े नहीं पहने।

छह बजे घंटी मधुरता से बजी, और हम सीढ़ियों से नीचे उतरे, गलियारे से होते हुए प्रवेश कक्ष में पहुँचे। वहाँ हमारे प्रोफेसर खड़े थे, उन्होंने अपने पुराने, क्रूर दिखने वाले कोट और गंभीर टोपी के बजाय एक युवा दिखने वाली बेल्ट वाली ब्लाउज और हंसमुख भूसे की टोपी पहन रखी थी। उन्होंने हम सभी को बड़े प्यार से सुप्रभात कहा, और हममें से अधिकांश ने उनके प्रति कृतज्ञता भरी मुस्कान बिखेरी। हम सब व्यवस्थित हुए और जल्द ही चल पड़े।

गलियाँ अभी भी शांत थीं, और सड़कें खेतों की तरह ताज़ी और शांत थीं। मुझे लगता है कि चलते हुए हम बहुत खुश थे। हमारे इस मुखिया के पास खुशी को एक विशेष गति देने का हुनर था; ठीक वैसे ही, जैसे वह विपरीत मनोदशा में भय को रोमांचित कर सकता था।

वह न तो हमारा नेतृत्व कर रहा था और न ही हमारा अनुसरण कर रहा था, बल्कि कतार में चलता रहा, हर किसी से बात करता रहा, अपने पसंदीदा लोगों से खूब बातें करता रहा और जिन्हें वह नापसंद करता था, उन्हें भी पूरी तरह से नजरअंदाज नहीं करता रहा। दरअसल, किसी कारणवश, मेरी इच्छा थी कि मैं थोड़ा ध्यान से दूर रहूँ, और जिनेवरा फैंसहावे के साथ होने के कारण, उस देवदूत के सुडौल शरीर का भार

सहते हुए (वह बेहद खूबसूरत लग रही थी, और मैं पाठक को आश्वस्त कर सकता हूँ कि उसकी सुंदरता का भार सहना कोई मामूली बात नहीं थी; उस गर्म दिन में कई बार मैंने कामना की कि काश वह इतनी आकर्षक न होती) - फिर भी, जैसा कि मैंने कहा, उसके साथ होने के कारण, मैंने उसे हमेशा अपने और एम. पॉल के बीच में रखकर, अपनी जगह बदलते हुए, उसे दाईं या बाईं ओर आते हुए सुनकर, उसका उपयोग करने की कोशिश की। इस पैंतरेबाजी के पीछे मेरा निजी मकसद शायद मेरे द्वारा पहनी गई नई प्रिंटेड ड्रेस के गुलाबी रंग का होने से जुड़ा हो सकता है - एक ऐसा तथ्य जिसने, हमारे वर्तमान काफिले के दौरान, मुझे कुछ वैसा ही महसूस कराया जैसा मैंने तब महसूस किया था, जब लाल बॉर्डर वाली शॉल ओढ़कर मुझे एक ऐसे घास के मैदान से गुजरना पड़ा था जहां एक बैल चर रहा था।

कुछ समय के लिए, काले रेशमी स्कार्फ की व्यवस्था में कुछ बदलावों के साथ, यह फेरबदल प्रणाली मेरे उद्देश्य को पूरा करने में कारगर रही; लेकिन धीरे-धीरे उसे पता चला कि चाहे वह इधर आए या उधर, मिस फैंसहावे उसकी पड़ोसी ही थीं। जिनेवरा और उसके बीच जान-पहचान कभी इतनी सहज नहीं रही कि जब भी वह उसका अंग्रेज़ी लहजा सुनता, तो उसका स्वभाव थोड़ा तीखा हो जाता: उनके स्वभाव में कुछ भी मेल नहीं खाता था; संपर्क में आने पर वे असहज महसूस करते थे; वह उसे खोखली और बनावटी समझता था; जबकि वह उसे रूखा, दखलंदाज़ और घृणित मानती थी।

अंततः, जब उसने लगभग छठी बार अपनी जगह बदली, और प्रयोग का वही अप्रिय परिणाम पाया, तो उसने अपना सिर आगे बढ़ाया, मेरी आँखों में आँखें गड़ा दीं और अधीरता से पूछा, "यह क्या है? क्या तुम मुझे घुमा रहे हो?"

उसके मुँह से शब्द निकले ही थे कि उसने अपनी आदत के अनुसार फुर्ती से इस बात की जड़ पकड़ ली: मैंने व्यर्थ ही अपने लंबे झालर को झटक दिया और अपने स्कार्फ का चौड़ा सिरा फैला दिया। “आह-ह! ये गुलाबी गाउन है!” उसके मुँह से फूट पड़ा, जिससे मुझे ऐसा लगा जैसे किसी मैदानी इलाके के स्वामी की अचानक और क्रोधित चीख सुनाई दी हो।

मैंने जल्दबाजी में कहा, "यह तो सिर्फ सूती है; और सस्ती भी है, और बाकी सभी रंगों से बेहतर धुलती है।"

“और मैडमोजेल लूसी दस पेरिसियन महिलाओं जितनी ही नखरीली हैं,” उन्होंने

जवाब दिया। “क्या आपने कभी ऐसी अंग्रेज़ महिला देखी है? ज़रा उनकी टोपी, उनके दस्ताने और उनके जूते तो देखिए!” ये कपड़े बिल्कुल वैसे ही थे जैसे मेरे साथियों ने पहने थे; यकीनन उनके कपड़े ज़्यादा सजग नहीं थे—शायद ज़्यादातर से सादे ही थे—लेकिन महाशय अब अपने विषय पर आ गए थे, और मुझे उनके उपदेश से चिढ़ होने लगी। हालाँकि, यह उपदेश उतनी ही शांति से बीत गया जितनी शांति से कभी-कभी गर्मी के दिन तूफ़ान का खतरा टल जाता है। मुझे उनकी आँखों से बस एक हल्की सी मुस्कान के रूप में बिजली की एक चमक दिखाई दी; और फिर उन्होंने कहा, “हिम्मत रखो!—सच कहूँ तो, मैं नाराज़ नहीं हूँ, शायद मैं खुश भी हूँ कि हम सब मेरी छोटी सी पार्टी के लिए इतने सुंदर ढंग से तैयार हुए हैं।”

"लेकिन मेरी पोशाक सुंदर नहीं है, महोदय - यह केवल साफ है।"

“मुझे स्वच्छता पसंद है,” उसने कहा। संक्षेप में, वह असंतुष्ट नहीं होने वाला था; इस शुभ सुबह में प्रसन्नता का सूर्य विजय प्राप्त करने वाला था; उसने भागते बादलों को अपनी कक्षा को दूषित करने से पहले ही भस्म कर दिया।

और अब हम ग्रामीण इलाके में थे, जिसे वे "लेस बोइस एट लेस पेटिट सेंटियर्स" कहते थे। एक महीने बाद ये जंगल और गलियाँ धूल भरी और अनिश्चित एकांत जगह ही प्रदान करतीं: लेकिन अब, मई की हरियाली और सुबह की शांति में, वे बहुत ही मनमोहक लग रही थीं।

हम एक कुएँ के पास पहुँचे, जिसके चारों ओर लाबासेकोर की शैली में चूने के पेड़ों का एक व्यवस्थित घेरा बना हुआ था: यहाँ रुकने का आदेश दिया गया; कुएँ के चारों ओर फैली हरी-भरी ज़मीन पर हमें बैठने का आदेश दिया गया, महाशय हमारे बीच में बैठ गए और हमें उनके चारों ओर एक घेरा बनाकर बैठने दिया। जो लोग उनसे डरने की बजाय उन्हें ज़्यादा पसंद करते थे, वे पास आ गए, और ये मुख्य रूप से छोटे बच्चे थे; जो लोग पसंद करने की बजाय डरते थे, वे कुछ दूरी बनाए रखते थे; और जिनके मन में अत्यधिक स्नेह था, जिसने बचे-खुचे डर को भी एक सुखद उत्साह में बदल दिया था, वे सबसे अधिक दूरी बनाए रखते थे।

उन्होंने हमें एक कहानी सुनाना शुरू किया। वे बहुत ही सुंदर ढंग से सुनाते थे: उनकी भाषा इतनी सहज थी कि बच्चे उसे पसंद करते हैं और विद्वान उसका अनुकरण करते हैं; उनकी सरल भाषा में ही शक्ति थी और सादगी में ही शक्ति। उस छोटी सी कहानी में कई खूबसूरत स्पर्श थे; भावनाओं की मीठी झलकियाँ और वर्णन के ऐसे रंग

थे जो सुनते-सुनते मेरे मन में बस गए और आज तक धुंधले नहीं हुए हैं। उन्होंने एक गोधूलि बेला के दृश्य को इस तरह चित्रित किया - वह दृश्य आज भी मेरी स्मृति में बसा है - ऐसा चित्र मैंने किसी कलाकार की कलम से पहले कभी नहीं देखा था।

मैंने कहा है कि मुझमें सहज बुद्धि की कमी थी; और शायद इसी कमी ने मुझे उस व्यक्ति पर और भी अधिक आश्चर्य करने पर मजबूर किया जिसमें यह बुद्धि परिपूर्ण थी। एम. इमैनुएल पुस्तकें लिखने वाले व्यक्ति नहीं थे; परन्तु मैंने उन्हें बड़ी सहजता से, अचेतन रूप से, ऐसी बौद्धिक संपदा बिखेरते हुए सुना है जो पुस्तकों में शायद ही कभी देखने को मिलती है; उनका मस्तिष्क वास्तव में मेरा पुस्तकालय था, और जब भी वह मेरे लिए खुलता, मैं परमानंद में डूब जाता। बौद्धिक रूप से अपूर्ण होने के कारण, मैं बहुत कम पढ़ पाता था; कुछ ही ऐसी मुद्रित पुस्तकें थीं जो मुझे थकाती नहीं थीं—जिनका पठन मुझे थकाकर आँखों को अंधा न कर देता—परन्तु उनके विचार ग्रंथ आत्मा की आँखों के लिए काजल के समान थे; उनकी सामग्री से अंतर्दृष्टि स्पष्ट और प्रबल हो जाती थी। मैं सोचता था कि उस व्यक्ति के लिए कितना आनंद होगा जो उनसे स्वयं से भी अधिक प्रेम करता हो, उन मुट्ठी भर स्वर्ण-धूल को इकट्ठा करना और संचित करना, जो आकाश की निर्मम हवाओं में इतनी बेपरवाही से बिखेरी गई थीं।

अपनी कहानी खत्म करके, वह उस छोटी पहाड़ी की ओर बढ़ा जहाँ मैं और जिनेवरा अलग-अलग बैठे थे। अपनी राय जानने की आदत के अनुसार (वह स्वेच्छा से राय दिए जाने का इंतजार करने में जरा भी संकोच नहीं करता था) उसने पूछा, "क्या आपको इसमें दिलचस्पी थी?"

अपनी आदत के अनुसार, बिना कोई भावना दिखाए, मैंने बस इतना ही जवाब दिया - "हाँ।"

"क्या यह अच्छा था?"

"बहुत अच्छा।"

“लेकिन मैं उसे लिख नहीं सका,” उन्होंने कहा।

"क्यों नहीं, महाशय?"

मुझे मशीनी काम से नफरत है; मुझे झुकना और स्थिर बैठना पसंद नहीं है। हालांकि, मैं इसे खुशी-खुशी किसी ऐसे सहायक को लिखवा सकती हूँ जो मुझे पसंद हो। क्या मैडमोजेल लूसी मेरे लिए लिखेंगी अगर मैं उनसे कहूँ?

"महाशय बहुत जल्दबाजी करते; वे मुझे उकसाते और अगर मेरी कलम उनके होठों की गति से नहीं चलती तो वे नाराज हो जाते।"

“कभी कोशिश करके देखना; देखते हैं कि इन परिस्थितियों में मैं खुद को किस हद तक राक्षस बना सकता हूँ। लेकिन अभी हुक्म चलाने का कोई सवाल ही नहीं है; मेरा इरादा तुम्हें किसी और काम में लगाना है। क्या तुम्हें वो दूर वाला फार्महाउस दिख रहा है?”

“पेड़ों से घिरा हुआ? हाँ।”

"हम नाश्ते के लिए तैयार हैं; और जब तक अच्छी किसान महिला एक कड़ाही में कॉफी बनाएगी, तब तक आप और मेरे द्वारा चुने गए पांच अन्य लोग, पचास ब्रेड रोल पर मक्खन लगाएंगे।"

अपनी टुकड़ी को एक बार फिर पंक्तिबद्ध करने के बाद, वह हमें सीधे खेत की ओर ले गया, जिसने हमारी सेना को देखकर बिना आत्मसमर्पण किए ही आत्मसमर्पण कर दिया।

साफ़ चाकू और प्लेटें, और ताज़ा मक्खन उपलब्ध होने पर, हमारे प्रोफेसर द्वारा चुने गए हममें से आधे दर्जन लोग उनके निर्देशों के अनुसार नाश्ते के लिए ब्रेड से भरी एक बड़ी टोकरी तैयार करने में जुट गए। बेकर को हमारे आने की उम्मीद में फार्म में ब्रेड का स्टॉक करने का आदेश दिया गया था। कॉफी और चॉकलेट पहले से ही गरमागरम तैयार थे; क्रीम और ताज़े अंडे भी इसमें शामिल किए गए, और हमेशा उदार रहने वाले एम. इमैनुएल अतिरिक्त रूप से "जैम्बोन" और "कन्फिट्यूर्स" का बड़ा ऑर्डर देना चाहते थे, लेकिन हममें से कुछ लोगों ने, शायद अपने प्रभाव का फायदा उठाते हुए, ज़ोर देकर कहा कि यह भोजन की घोर बर्बादी होगी। उन्होंने हमारी मेहनत पर हमें खूब खरी-खोटी सुनाई और हमें "लालची नौकरानियों" कहा; लेकिन हमने उन्हें बोलने नहीं दिया और भोजन की बचत अपने तरीके से की।

वह बड़े प्रसन्न चेहरे के साथ खेत की रसोई के चूल्हे पर खड़े होकर देख रहे थे! वह ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें दूसरों को खुश देखकर खुशी मिलती थी; उन्हें अपने आसपास चहल-पहल, जीवंतता, समृद्धि और आनंद पसंद था। हमने उनसे पूछा कि वे कहाँ बैठेंगे। उन्होंने कहा, हम अच्छी तरह जानते हैं कि वे हमारे गुलाम हैं और हम उनके अत्याचारी, और हमारी अनुमति के बिना वे कुर्सी चुनने की हिम्मत भी नहीं कर सकते; इसलिए हमने उन्हें लंबी मेज के सिर पर किसान की बड़ी कुर्सी लगा दी और

उन्हें उस पर बैठा दिया।

हम उसे उसकी तमाम भावनाओं और उग्र स्वभाव के बावजूद पसंद कर सकते हैं, जब वह कभी-कभी इतना दयालु और विनम्र हो सकता है, जैसा कि वह अभी था। वास्तव में, सबसे बुरी स्थिति में भी, केवल उसकी नसें ही चिड़चिड़ी होती थीं, उसका स्वभाव इतना खराब नहीं था; उसे शांत करो, समझो, दिलासा दो, और वह एक मेमने की तरह हो जाता था; वह एक मक्खी को भी नुकसान नहीं पहुँचाता था। केवल बेहद मूर्ख, विकृत या असंवेदनशील लोगों के लिए ही वह थोड़ा-बहुत खतरनाक था।

अपने धर्म के प्रति सदा सचेत रहते हुए, उन्होंने नाश्ता शुरू करने से पहले समूह के सबसे छोटे सदस्य से एक छोटी सी प्रार्थना करवाई, और उन्होंने पूरी श्रद्धा से स्त्री की तरह क्रॉस का चिन्ह बनाया। मैंने उन्हें पहले कभी प्रार्थना करते या वह पवित्र चिन्ह बनाते नहीं देखा था; उन्होंने इसे इतनी सरलता से, इतने मासूम विश्वास के साथ किया कि मुझे देखकर सुखद मुस्कान आ गई; उनकी नज़रें मेरी मुस्कान से मिलीं; उन्होंने अपना दयालु हाथ बढ़ाते हुए कहा, "मुझे हाथ दो! मैं देखता हूँ कि हम एक ही ईश्वर की, एक ही भावना से, अलग-अलग रीति-रिवाजों से पूजा करते हैं।"

एम. इमैनुएल के अधिकांश साथी प्रोफेसर मुक्त विचारक, नास्तिक और विधर्मी थे; और उनमें से कई ऐसे व्यक्ति थे जिनका जीवन जांच-पड़ताल के लायक नहीं था; वे पुराने जमाने के योद्धा की तरह थे, अपने तरीके से धार्मिक और बेदाग प्रतिष्ठा वाले। मासूम बचपन और खूबसूरत जवानी उनकी संगति में सुरक्षित थी। उनमें तीव्र भावनाएं और जज़्बा था, लेकिन उनका शुद्ध सम्मान और सरल धार्मिकता ही वह आकर्षण था जो शेरों को भी शांत रखता था।

वह नाश्ता एक आनंदमय भोज था, और वह आनंद मात्र खोखली बातें नहीं थीं: एम. पॉल ने ही इसकी शुरुआत की, इसका नेतृत्व किया, इसे नियंत्रित किया और इसे और भी जीवंत बनाया; उनका सामाजिक, जीवंत स्वभाव बेरोक-टोक और निर्मल था; केवल महिलाओं और बच्चों से घिरे होने के कारण उन्हें रोकने या बाधा डालने वाला कोई नहीं था; वह अपने तरीके से चलते थे, और वह तरीका सुखद था।

खाना खत्म होने के बाद, सभी लोग घास के मैदानों में दौड़ने और खेलने के लिए स्वतंत्र थे; कुछ लोग किसान की पत्नी को उसके मिट्टी के बर्तन समेटने में मदद करने के लिए रुक गए। एम. पॉल ने मुझे उनमें से बुलाया और अपने पास एक पेड़ के नीचे बैठने को कहा—जहाँ से वे विशाल चरागाह में खेलते हुए अपने साथियों को देख

सकते थे—और सिगार पीते हुए उन्हें पढ़कर सुनाने को कहा। वे एक देहाती बेंच पर बैठे थे, और मैं पेड़ की जड़ के पास। जब मैं पढ़ रहा था (एक लोकप्रिय क्लासिक—कॉर्नेइल की किताब—मुझे वह पसंद नहीं आई, लेकिन उन्हें आई, क्योंकि उन्हें उसमें ऐसी सुंदरता दिखी जिसे मैं कभी समझ नहीं पाया), वे अपनी सहज चंचलता के बावजूद मधुरता से मेरी बातें सुन रहे थे; उनकी नीली आँखों में गहरी खुशी झलक रही थी और उनके चौड़े माथे पर मुस्कान थी। मैं भी खुश था—उज्ज्वल दिन से खुश, उनकी उपस्थिति से और भी खुश, और उनकी दयालुता से सबसे ज्यादा खुश।

उन्होंने थोड़ी देर बाद पूछा, क्या मैं वहाँ बैठने के बजाय अपने साथियों के पास भाग जाना पसंद नहीं करूँगी? मैंने कहा, नहीं; मैं जहाँ वह था, वहीं रहकर संतुष्ट थी। उन्होंने पूछा कि अगर मैं उनकी बहन होती, तो क्या मैं हमेशा उनके जैसे भाई के साथ रहकर संतुष्ट रहती? मैंने कहा, मुझे लगता है कि मैं रहती; और मुझे ऐसा महसूस भी होता है। फिर उन्होंने पूछा कि अगर वह विलेट को छोड़कर दूर चले जाएँ, तो क्या मुझे दुख होगा? इस पर मैंने कॉर्नेल को छोड़ दिया और कोई जवाब नहीं दिया।

“छोटी बहन,” उसने कहा; “अगर हम अलग हो गए तो तुम मुझे कब तक याद रख पाओगी?”

"महाशय, मैं यह कभी नहीं बता सकती, क्योंकि मुझे नहीं पता कि कब तक मैं सांसारिक चीजों को भूल जाऊंगी।"

"अगर मैं दो-तीन-पांच साल के लिए समुद्र पार चला जाऊं, तो क्या आप मेरे लौटने पर मेरा स्वागत करेंगे?"

"महाशय, मैं अंतराल में कैसे रह सकता हूँ?"

"फिर भी मैं तुम्हारे साथ बहुत कठोर और अपेक्षाशील रहा हूँ।"

मैंने अपना चेहरा किताब से छिपा लिया, क्योंकि वह आंसुओं से भीगा हुआ था। मैंने उनसे पूछा कि वे इस तरह क्यों बात कर रहे हैं; उन्होंने कहा कि वे अब ऐसा नहीं करेंगे, और मुझे अत्यंत स्नेहपूर्ण प्रोत्साहन देकर फिर से तसल्ली दी। फिर भी, दिन भर उन्होंने जिस कोमलता से मेरे साथ व्यवहार किया, वह मेरे दिल को छू गई। बहुत कोमल थी। दुख भरी थी। काश वे अपनी आदत के अनुसार रूखे, मनमौजी और गुस्सैल होते।

दोपहर होते-होते जब तेज़ धूप निकली—जैसा हमने अनुमान लगाया था, दिन जून की धूप की तरह चमक रहा था—हमारे चरवाहे ने चरागाह से अपनी भेड़ें इकट्ठा कीं

और हम सबको धीरे-धीरे घर ले जाने लगा। लेकिन हमें पूरा एक मील चलना था, विलेट से वह खेत बहुत दूर था जहाँ उसने नाश्ता किया था; बच्चे, खासकर, खेल-खेल में थक चुके थे; और ज़्यादातर लोगों का मन इस दोपहर की पैदल यात्रा के विचार से उदास था, क्योंकि ये पथरीली, चकाचौंध भरी और धूल भरी सड़कें थीं। इस स्थिति का पहले से ही अनुमान लगा लिया गया था और इसके लिए तैयारी भी कर ली गई थी। खेत की सीमा से थोड़ा आगे हमें दो बड़ी गाड़ियाँ मिलीं जो हमें लेने आ रही थीं—ये गाड़ियाँ खास तौर पर स्कूली बच्चों के लिए किराए पर दी जाती हैं; यहाँ, अच्छे प्रबंधन से, सभी के लिए जगह मिल गई, और एक घंटे में एम. पॉल ने अपने बच्चों को रू फॉसेट पर सुरक्षित छोड़ दिया। दिन सुहावना था: यह एकदम सही होता, अगर उदासी की एक लहर ने कुछ पल के लिए इसकी धूप को फीका न कर दिया होता।

वह कलंक उसी शाम फिर से ताजा हो गया।

सूर्यास्त के ठीक पहले, मैंने श्री इमानुएल को मैडम बेक के साथ मुख्य द्वार से बाहर आते देखा। वे लगभग एक घंटे तक बीच वाली गली में टहलते रहे और गंभीरता से बातें करते रहे: श्री इमानुएल गंभीर, फिर भी बेचैन दिख रहे थे; जबकि मैडम बेक आश्चर्यचकित, अभिव्यक्त करने वाली और समझाने वाली मुद्रा में थीं।

मैं सोच रही थी कि किस बात पर चर्चा हो रही है; और जब अंधेरा होने पर मैडम बेक घर में वापस आईं, और अपने रिश्तेदार पॉल को बगीचे में ही छोड़ गईं, तो मैंने मन ही मन कहा — "उन्होंने आज सुबह मुझे 'छोटी बहन' कहकर पुकारा। अगर वो सच में मेरे भाई होते, तो मैं अभी उनके पास जाकर उनसे पूछना चाहती कि उनके मन में क्या चल रहा है। देखो, वो उस पेड़ से कैसे टिके हुए हैं, हाथ बांधे और माथे पर शिकन डाले। मुझे पता है, उन्हें सांत्वना चाहिए: मैडम सांत्वना नहीं देतीं: वो तो बस डांटती हैं। अब क्या करूँ — —?"

शांति से अचानक हरकत में आते हुए, एम. पॉल सीधे खड़े होकर तेज़ी से बगीचे में आ गए। चौखट के दरवाज़े अभी भी खुले थे: मैंने सोचा कि शायद वे अपनी आदत के अनुसार गमलों में लगे संतरे के पेड़ों को पानी देने जा रहे होंगे; लेकिन आंगन में पहुँचते ही वे अचानक मुड़े और चौखट और प्रथम श्रेणी के कांच के दरवाज़े की ओर चल पड़े। मैं वहीं प्रथम श्रेणी के कमरे में थी, वहीं से उन्हें देख रही थी; लेकिन वहाँ मुझे उनके आने का इंतज़ार करने की हिम्मत नहीं हुई। वे इतनी अचानक मुड़े, इतनी तेज़ी से चले, इतने अजीब लग रहे थे; मेरे अंदर का डर पीला पड़ गया, सिकुड़ गया

और - तर्क की सुनने का इंतज़ार किए बिना, और उनके आगे बढ़ने पर झाड़ियों के कुचलने और कंकड़ के टूटने की आवाज़ सुनकर - वह घबराहट के मारे उड़ गई।

और मैं तब तक नहीं रुका जब तक कि मैंने खाली पड़े प्रार्थना कक्ष में शरण नहीं ले ली। धड़कते दिलों और एक अकारण, अनिश्चित आशंका के साथ वहाँ सुनते हुए, मैंने उसे सभी कक्षाओं से गुजरते हुए सुना, जाते समय वह दरवाजों को अधीरता से खटखटा रहा था; मैंने उसे भोजन कक्ष में प्रवेश करते हुए सुना, जिसे अब "लेक्चर पियोज़" (प्रशिक्षु) ने बड़े ही संयम से संभाला हुआ था; मैंने उसे ये शब्द कहते हुए सुना - "ओउ एस्ट मैडमोजेल लुसी?"

और जैसे ही मैंने हिम्मत जुटाकर नीचे जाने की तैयारी की, और वो करने जा रही थी जो मैं दुनिया में सबसे ज़्यादा चाहती थी—यानी उससे मिलना—तभी सेंट पियरे की पतली आवाज़ ने बनावटी और बेतुके ढंग से जवाब दिया, “एले एस्ट औ लिट।” और वो झुंझलाहट भरे अंदाज़ में गलियारे में चला गया। वहाँ मैडम बेक उससे मिलीं, उसे पकड़ लिया, डाँटा, गली के दरवाज़े तक ले गईं और अंत में उसे जाने दिया।

जैसे ही वह गली का दरवाज़ा बंद हुआ, अपने ही इस विकृत व्यवहार पर अचानक मुझे गहरा आघात लगा। मुझे शुरू से ही लग रहा था कि वह मुझे ही चाहता है—मुझे ही खोज रहा है—और क्या मैं भी उसे नहीं चाहती थी? फिर, किस बात ने मुझे उसकी ओर खींच लिया था? किस बात ने मुझे उसकी पहुँच से दूर कर दिया था? उसे कुछ कहना था: वह मुझे कुछ कहने ही वाला था: मेरे कान उसे सुनने के लिए बेताब थे, और मैंने विश्वास को असंभव बना दिया था। सुनने और सांत्वना देने की तीव्र इच्छा के बीच, जबकि मुझे लग रहा था कि सुनने और सांत्वना पाने की कोई उम्मीद नहीं है—जैसे ही अचानक और पूरी तरह से मौका आया, मैंने उससे ऐसे किनारा कर लिया जैसे मैं मृत्यु के कठोर स्तंभ से बचती।

खैर, मेरी इस बेतुकी अस्थिरता का मुझे फल मिला। उस सुकून, उस निश्चित संतुष्टि के बजाय, जो मुझे मिल सकती थी—अगर मैं अपने दम घोंटने वाले डर को काबू कर पाता और दो मिनट तक दृढ़ रहता—यहाँ सन्नाटा, गहरा संदेह और निराशाजनक अनिश्चितता छाई हुई थी।

मैंने अपनी तनख्वाह अपने तकिए पर रखी और पूरी रात उन्हें गिनता रहा।

अध्याय 34.

द्वेषपूर्ण।

मैडम बेक ने मुझे गुरुवार दोपहर को फोन किया और पूछा कि क्या मेरे पास कोई ऐसा काम है जो मुझे शहर जाने और दुकानों पर उनके लिए कुछ छोटे-मोटे काम निपटाने से रोक रहा हो।

अपना काम छोड़कर, मैंने स्वयं को उनकी सेवा में समर्पित कर दिया और मुझे तुरंत विद्यार्थियों के काम में आवश्यक ऊन, रेशम, कढ़ाई के धागे आदि की एक सूची दी गई। बादल भरे और उमस भरे दिन के संभावित खतरे को देखते हुए, मैंने स्वयं को सुसज्जित कर लिया और बाहर निकलने के लिए गली के दरवाजे का स्प्रिंग बोल्ट खींच ही रहा था कि तभी मैडम की आवाज ने मुझे फिर से भोजनालय में बुलाया।

"माफ़ कीजिए, मिस्टर लूसी!" वह अचानक आए विचार की जल्दबाजी में चिल्लाई, "मुझे अभी-अभी आपके लिए एक और काम याद आया है, अगर आपका दयालु स्वभाव इसे बोझिल न समझे तो?"

बेशक मैंने इसके विपरीत दावे करके खुद को "भ्रमित" कर लिया; और मैडम दौड़कर छोटे से कमरे में आईं और वहाँ से एक सुंदर टोकरी ले आईं, जो बढ़िया ग्रीनहाउस फलों से भरी हुई थी, गुलाबी, परिपूर्ण और लुभावने, गहरे हरे, मोम जैसे पत्तों और हल्के पीले तारों के बीच रखे हुए थे, पता नहीं किस विदेशी पौधे के।

"लो," उसने कहा, "यह भारी नहीं है, और आपके साफ-सुथरे पहनावे को खराब नहीं करेगा, मानो यह घर का कोई नौकर-चाकर जैसा सामान हो। कृपया इस छोटी टोकरी को मैडम वालरावेंस के घर पर मेरी शुभकामनाओं के साथ छोड़ देना। वह पुराने कस्बे में, नंबर 3, रू डेस मेजेस में रहती हैं। मुझे लगता है कि आपको पैदल चलना थोड़ा लंबा लगेगा, लेकिन आपके पास पूरा दोपहर का समय है, इसलिए जल्दी मत करना; अगर आप रात के खाने तक वापस नहीं आईं, तो मैं आपके लिए कुछ

बचाकर रखवा दूंगी, या गोटन, जो आपका पसंदीदा है, आपके लिए कुछ खास पकवान बनाकर देगा। आपको कभी नहीं भुलाया जाएगा, मेरी प्यारी। और हाँ! कृपया!" (मुझे एक बार फिर बुलाते हुए) "मैडम वालरावेंस से खुद मिलना और टोकरी उन्हीं के हाथों में देना मत भूलना, ताकि कोई गलती न हो, क्योंकि वह बहुत ही सलीकेदार हैं। अलविदा!

और आखिरकार मैं निकल पड़ी। दुकान के ऑर्डर पूरे करने में थोड़ा समय लगा, रेशम और ऊन का चुनाव और मिलान हमेशा से ही थका देने वाला काम रहा है, लेकिन आखिरकार मैंने अपनी सूची पूरी कर ली। चप्पलों, घंटियों की रस्सियों, और काबा के पैटर्न चुन लिए गए थे - पर्स के लिए स्लाइड और लटकन भी चुन लिए गए थे - संक्षेप में, सारा काम मेरे दिमाग से निकल गया था; अब बस फल और शुभकामनाओं पर ध्यान देना बाकी था।

मुझे पुराने और भयावह बासे-विले में लंबी सैर करने का विचार काफी पसंद आया; और मुझे यह इसलिए भी बुरा नहीं लगा क्योंकि शहर के ऊपर शाम का आकाश काले-नीले धातु के एक पिंड में तब्दील हो रहा था, जो किनारों पर गर्म था और धीरे-धीरे गहरे लाल रंग में बदल रहा था।

मुझे तेज़ हवा से डर लगता है, क्योंकि तूफ़ान में उस शक्ति और कर्म की आवश्यकता होती है जिसे मैं हमेशा पीड़ा के साथ स्वीकार करता हूँ; परन्तु उदास वर्षा, भारी बर्फ़बारी, या बारिश की तेज़ बौछार, केवल समर्पण की माँग करती है—भीगे हुए वस्त्रों और शरीर को चुपचाप त्याग देना। बदले में, यह आपके सामने एक विशाल राजधानी को साफ़ कर देती है; यह आपको चौड़ी, भव्य सड़कों से एक शांत मार्ग प्रदान करती है; यह एक जीवंत शहर को मानो पूर्वी जादू से स्थिर कर देती है; यह एक छोटे से गाँव को एक बड़े शहर में बदल देती है। तो फिर, बारिश हो और बाढ़ आए—बस मुझे पहले फलों की इस टोकरी से छुटकारा पाना होगा।

किसी अनजान मीनार से आती एक अनजान घड़ी (जीन बैपटिस्ट की आवाज़ अब इतनी दूर थी कि सुनाई नहीं दे रही थी) सवा पाँच बजने का समय बता रही थी, जब मैं उस गली और घर पर पहुँचा जिसका पता मैडम बेक ने मुझे दिया था। वह कोई गली नहीं थी; बल्कि किसी चौक का हिस्सा लग रही थी: वहाँ सन्नाटा था, चौड़ी भूरी टाइलों के बीच घास उगी हुई थी, घर बड़े और बहुत पुराने लग रहे थे - उनके पीछे पेड़ों की आभा दिखाई दे रही थी, जो पीछे बगीचों का संकेत दे रही थी। इस क्षेत्र पर

प्राचीनता छाई हुई थी, व्यापार का कोई नामोनिशान नहीं था। कभी इस इलाके में अमीरों का राज था, और कभी यहाँ वैभव का बोलबाला था। वह गिरजाघर, जिसकी अंधेरी, अधखंडी मीनारें चौक की ओर देखती थीं, कभी ज्ञानी पुरुषों का पूजनीय और कभी समृद्ध तीर्थस्थल हुआ करता था। लेकिन धन और महानता ने बहुत पहले ही अपने सुनहरे पंख फैलाए यहाँ से विदा ले ली थी, इन प्राचीन घरों को छोड़कर, शायद कुछ समय के लिए दरिद्रता का घर बनाने के लिए, या शायद सर्दियों के दौरान खाली और वीरान पड़े रहने के लिए।

जैसे ही मैं इस सुनसान "स्थान" को पार कर रहा था, जिसके फुटपाथ पर लगभग पांच फ्रैंक के सिक्के जितने बड़े गड्ढे धीरे-धीरे अंधेरे में तब्दील हो रहे थे, मैंने इसके पूरे विस्तार में जीवन का कोई लक्षण या प्रमाण नहीं देखा, सिवाय एक कमजोर बूढ़े पुजारी की आकृति के, जो झुककर और एक छड़ी के सहारे आगे बढ़ रहा था - बुढ़ापे और क्षय का प्रतीक।

वह उसी घर से निकला था जहाँ मुझे जाने का निर्देश दिया गया था; और जब मैं उसके जाने के तुरंत बाद बंद हुए दरवाजे के सामने रुकी और घंटी बजाई, तो उसने मेरी ओर देखा। और उसने अपनी नज़रें तुरंत नहीं हटाईं; शायद उसने मुझे, गर्मियों के फलों की टोकरी लिए और उम्र के साथ आने वाली गरिमा की कमी के कारण, ऐसे दृश्य में एक बेमेल व्यक्ति समझा हो। मुझे पता है, अगर किसी युवा, लाल चेहरे वाली महिला ने मुझे अंदर आने दिया होता, तो मैं उसे अपने घर के साथ बेमेल ही समझती; लेकिन, जब मैंने खुद को एक बहुत बूढ़ी औरत के सामने पाया, जिसने एक बहुत ही पुराने जमाने की किसान पोशाक पहनी हुई थी, एक भद्दी और महंगी टोपी, देसी फीते के लंबे फ्लैप, कपड़े का पेटीकोट और जैकेट, और जूतों से ज़्यादा छोटी नावों जैसे दिखने वाले जूते, तो यह सब ठीक लगा और उसके स्वभाव के अनुरूप लगा।

उसके चेहरे के भाव उसके पहनावे की तरह उतने शांत नहीं थे; मैंने शायद ही कभी इतना चिड़चिड़ा चेहरा देखा हो; उसने मैडम वालरावेंस के बारे में मेरे सवालों का मुश्किल से ही जवाब दिया; मुझे लगता है कि अगर बूढ़ा पादरी लंगड़ाते हुए न आता और उसे रोककर मेरी बात न सुनता, तो वह मेरे हाथ से फलों की टोकरी छीन लेती।

उनकी स्पष्ट बहरेपन की वजह से उन्हें यह समझाना थोड़ा मुश्किल हो गया कि मुझे मैडम वालरावेंस से मिलना है और फल उन्हीं को सौंपने हैं। आखिरकार, उन्हें समझ आ गया कि ये मेरे आदेश थे और कर्तव्य के तहत इनका अक्षरशः पालन करना

अनिवार्य था। उन्होंने उस बुजुर्ग महिला से फ्रेंच में नहीं, बल्कि लाबासेकोर की स्थानीय भाषा में बात की और अंततः मुझे उस दुर्गम दहलीज को पार करने देने के लिए राजी कर लिया। फिर वे मुझे ऊपर ले गए और मुझे एक तरह के बैठक कक्ष में ले जाकर वहीं छोड़ दिया गया।

कमरा बड़ा था, उसकी छत पुरानी और सुंदर थी, और रंगीन कांच की खिड़कियाँ लगभग चर्च जैसी थीं; लेकिन वह वीरान था, और आने वाले तूफान के साये में अजीब तरह से उदास लग रहा था। अंदर एक छोटा कमरा था; हालाँकि, वहाँ एकमात्र खिड़की का पर्दा बंद था; घोर अंधेरे में फर्नीचर की कुछ ही चीज़ें दिखाई दे रही थीं। मैंने उन्हीं कुछ चीज़ों को समझने की कोशिश में अपना मनोरंजन किया; और विशेष रूप से, दीवार पर बनी एक तस्वीर की रूपरेखा ने मुझे आकर्षित किया।

धीरे-धीरे वह तस्वीर मानो बिखरने लगी: मेरे आश्चर्य के बीच, वह कांप उठी, धंस गई, और फिर शून्य में विलीन हो गई; उसके गायब होने से एक मेहराबदार खुला रास्ता बन गया, जो एक रहस्यमयी घुमावदार सीढ़ी वाले मार्ग में खुलता था; मार्ग और सीढ़ी दोनों ठंडे पत्थरों के बने थे, उन पर न तो कालीन बिछा था और न ही रंगा हुआ था। इस सीढ़ी से नीचे एक टप-टप की आवाज़ आ रही थी, जैसे कोई छड़ी चल रही हो; जल्द ही सीढ़ियों पर एक परछाई पड़ी, और अंत में, मुझे किसी वस्तु का आभास हुआ।

लेकिन क्या यह सचमुच कोई ठोस पदार्थ था, जो मेरी ओर आ रहा था? क्या यह अवरोध था, जो मेहराब को आंशिक रूप से अंधकारमय कर रहा था?

वह नज़दीक आ गया, और मैंने उसे अच्छी तरह देखा। मुझे समझ आने लगा कि मैं कहाँ हूँ। इस पुराने चौक को 'मैगी का क्वार्टर' कहना बिलकुल सही था — इसके ऊपर बने तीन मीनारें किसी मृत और रहस्यमयी कला के तीन ऋषियों को अपना संरक्षक मानती थीं, यह कहना भी बिलकुल सही था। यहाँ एक गहरा जादू छाया हुआ था; एक जादू ने मेरे लिए परियों की दुनिया खोल दी थी — वह कोठरी जैसा कमरा, वह गायब होती तस्वीर, वह मेहराब, रास्ता और पत्थर की सीढ़ियाँ, सब किसी परी कथा के हिस्से थे। इन सभी दृश्यों से भी कहीं ज़्यादा स्पष्ट थी मुख्य आकृति — कुनेगोंडे, जादूगरनी! मालेवोला, दुष्ट परी। वह कैसी थी?

वह शायद तीन फुट लंबी रही होगी, पर उसका कोई सुडौल आकार नहीं था; उसकी पतली हथेलियाँ एक-दूसरे पर टिकी थीं और एक छड़ी जैसी हाथीदांत की

सुनहरी मूठ को दबाए हुए थीं। उसका चेहरा बड़ा था, कंधों पर नहीं, बल्कि छाती के सामने धँसा हुआ था; मानो उसकी गर्दन ही न हो; मैं कह सकता था कि उसके चेहरे पर सौ साल झलकते थे, और शायद उसकी आँखों में उससे भी ज़्यादा - उसकी द्वेषपूर्ण, शत्रुतापूर्ण आँखें, ऊपर घनी भूरी भौहें और चारों ओर पीली पलकें। वे मुझे कितनी गंभीरता से देख रही थीं, मानो एक तरह की मंद नाराज़गी से!

इस महिला ने चमकीले नीले रंग का ब्रोकेड गाउन पहना था, जो जेंटियानेला फूल की तरह गहरा नीला था और उस पर सैटिन के पत्तों का बड़ा पैटर्न बना हुआ था; गाउन के ऊपर एक कीमती शॉल था, जिस पर शानदार किनारी बनी हुई थी और वह इतना बड़ा था कि उसकी बहुरंगी झालर ज़मीन को छू रही थी। लेकिन उसकी सबसे खास बात उसके गहने थे: उसने लंबे, पारदर्शी झुमके पहने थे, जिनकी चमक ऐसी थी मानो वह नकली या उधार ली हुई न हो; उसके कंकाल जैसे हाथों में मोटी सोने की बालियां थीं, जिनमें बैंगनी, हरे और गहरे लाल रंग के पत्थर जड़े थे। कुबड़ी, बौनी और भावुक, वह किसी बर्बर रानी की तरह सजी हुई थी।

"आप मुझसे क्या चाहते हैं?" उसने कर्कश स्वर में कहा, उसकी आवाज किसी वृद्ध महिला की नहीं बल्कि किसी पुरुष की लग रही थी; और वास्तव में, उसकी ठुड्डी पर चांदी जैसी दाढ़ी उग आई थी।

मैंने अपनी टोकरी और अपना संदेश पहुंचा दिया।

“बस इतना ही?” उसने पूछा।

मैंने कहा, "बस यही सब कुछ है।"

“सचमुच, यह बहुत फायदेमंद रहा,” उसने उत्तर दिया। “मैडम बेक के पास वापस जाओ और उनसे कहो कि मैं जब चाहूँ फल खरीद सकती हूँ, et quant à ses félicitations, je m’en moque!” और इस विनम्र महिला ने पीठ फेर ली।

जैसे ही वह मुड़ी, गरज की एक तेज़ आवाज़ गूंजी और बिजली की एक चमक सैलून और बेडरूम के ऊपर से गुज़र गई। ऐसा लग रहा था मानो जादू की कहानी प्राकृतिक तत्वों के साथ आगे बढ़ रही हो। जादुई महल में बहकावे में आई यात्री ने बाहर, जादू से उत्पन्न तूफ़ान की आवाज़ सुनी।

इन सब बातों के बीच मैं मैडम बेक के बारे में क्या सोचूँ? उनके कुछ अजीबोगरीब परिचित थे; वे एक अनोखे मंदिर में संदेश और उपहार चढ़ाती थीं, और जिस भद्दी चीज़ की वे पूजा करती थीं, उसका व्यवहार अशुभ प्रतीत होता था। फिर वो उदास

सिडोनिया, लकवे की साक्षात मूर्ति की तरह लड़खड़ाती और काँपती हुई, अपनी हाथीदांत की छड़ी को मोज़ेक फर्श पर थपथपाती हुई, और ज़हरीले शब्दों में बुदबुदाते हुए गायब हो गईं।

बारिश बरस रही थी, आसमान गहरा रहा था; कुछ देर पहले लाल-लाल बादल अब अपने पूरे कालेपन के बीच डर से पीले पड़ गए थे। बारिश से न डरने के अपने हालिया दावे के बावजूद, इस भयंकर बारिश में बाहर निकलना मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था। तभी बिजली की चमक बहुत तेज थी, गरज बहुत पास सुनाई दी; यह तूफान विलेट के ठीक ऊपर इकट्ठा हुआ था; ऐसा लग रहा था जैसे यह आसमान के शिखर पर फट पड़ा हो; यह नीचे की ओर तेज़ी से बढ़ा; तिरछी, टेढ़ी-मेढ़ी बिजली की कड़ियाँ सीधी धाराओं को चीरती हुई गुज़रीं; लाल टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें सफेद धातु की तरह फीकी पड़ चुकी थीं: और सब कुछ घने काले आसमान से फूट पड़ा।

मैडम वालरावेंस के अरुचिकर कक्ष को छोड़कर, मैं उनकी ठंडी सीढ़ियों की ओर चल पड़ा; वहाँ लैंडिंग पर एक सीट थी - मैं वहीं इंतजार करने लगा। तभी ऊपर गैलरी में कोई धीरे-धीरे चलता हुआ आया; वह बूढ़ा पादरी था।

“बिल्कुल नहीं, मैडमोजेल को वहां नहीं बैठना चाहिए,” उसने कहा। “अगर हमारे उपकारक को पता चले कि इस घर में किसी अजनबी के साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है तो उन्हें बहुत बुरा लगेगा।”

और उन्होंने मुझसे इतनी गंभीरता से सैलून में लौटने की विनती की कि बिना किसी असभ्यता के, मैं उनकी बात मानने को तैयार हो गया। छोटा कमरा बड़े कमरे की तुलना में बेहतर सुसज्जित और अधिक रहने योग्य था; उन्होंने मुझे वहीं पहुँचाया। पर्दा थोड़ा हटाकर उन्होंने एक ऐसा कमरा दिखाया जो किसी शयनकक्ष से अधिक प्रार्थना कक्ष जैसा लग रहा था, एक अत्यंत गंभीर छोटा कमरा, जो देखने में ऐसा लग रहा था मानो वह वर्तमान उपयोग और आराम के लिए नहीं बल्कि अवशेषों और स्मृतियों को समर्पित स्थान हो।

वह नेक पिता मेरे साथ बैठने के लिए बैठ गए; लेकिन बातचीत करने के बजाय, उन्होंने एक किताब निकाली, पन्ने पर अपनी निगाहें गड़ा दीं और अपने होठों से कुछ बुदबुदाने लगे—जो किसी प्रार्थना या मंत्रोच्चार जैसा लग रहा था। आकाश से आती पीली बिजली की रोशनी उनके गंजे सिर को चमका रही थी; उनका शरीर गहरे बैंगनी रंग की छाया में डूबा हुआ था; वे मूर्ति की तरह स्थिर बैठे थे; ऐसा लग रहा था जैसे वे

प्रार्थना में लीन होकर मुझे भूल गए हों; वे केवल तभी ऊपर देखते जब बिजली कड़कती या कोई तेज़, नज़दीकी खड़खड़ाहट आती जो आने वाले खतरे का संकेत देती; तब भी, वे डर से नहीं, बल्कि विस्मय से अपनी आँखें उठाते थे। मैं भी विस्मय से भर गया था; हालाँकि, किसी भी तरह के भय से ग्रस्त न होने के कारण, मेरे विचार और अवलोकन स्वतंत्र थे।

सच कहूँ तो, मुझे लगने लगा था कि वह बूढ़ा पादरी उसी पेरे सिलास जैसा दिखता है, जिसके सामने मैंने बेगिनगे के गिरजाघर में घुटने टेके थे। यह विचार अस्पष्ट था, क्योंकि मैंने अपने पादरी को केवल शाम के धुंधलके में और एक तरफ से देखा था, फिर भी मुझे कुछ समानता दिखाई दी: मुझे लगा कि मैंने उनकी आवाज़ भी पहचान ली है। जब मैं उन्हें देख रहा था, तो उन्होंने एक नज़र उठाकर यह जता दिया कि उन्हें मेरी नज़र का एहसास हो गया है; मैंने कमरे की ओर मुड़कर देखा; उसमें भी कुछ रहस्यमय सा आकर्षण था।

समय के साथ पीले पड़ चुके, विचित्र नक्काशीदार पुराने हाथीदांत के एक क्रॉस के बगल में, जो गहरे लाल रंग के प्रार्थना कक्ष के ऊपर झुका हुआ था, और जिस पर विधिवत रूप से समृद्ध प्रार्थना पुस्तक और काले रंग की माला रखी थी, वह चित्र टंगा हुआ था जिसकी धुंधली आकृति ने पहले भी मेरी नज़रें खींची थीं - वह चित्र जो हिलता-डुलता था, दीवार के साथ गायब हो जाता था और उसमें प्रेत समा जाते थे। अपूर्ण रूप से देखने पर, मैंने उसे मैडोना समझ लिया था; स्पष्ट प्रकाश में देखने पर पता चला कि वह नन के वेश में एक महिला का चित्र था। चेहरा, हालांकि सुंदर नहीं था, फिर भी मनमोहक था; पीला, युवा, और दुःख या अस्वस्थता की उदासी से भरा हुआ। मैं फिर कहता हूँ कि वह सुंदर नहीं था; वह बौद्धिक भी नहीं था; उसकी मनमोहकता ही एक कमजोर शरीर, निष्क्रिय भावनाओं और आज्ञाकारी आदतों की मनमोहकता थी: फिर भी मैंने उस चित्र को देर तक देखा, और देखे बिना नहीं रह सका।

वह बूढ़ा पुजारी, जो मुझे पहले बहरा और दुर्बल सा लग रहा था, उसकी सोचने-समझने की क्षमता अभी भी काफी हद तक बरकरार रही होगी; अपनी किताब में मग्न प्रतीत होते हुए, बिना एक बार भी सिर उठाए, या जहाँ तक मुझे पता था, अपनी आँखें घुमाए बिना, उसने उस बात को समझ लिया जिस ओर मेरा ध्यान आकर्षित हो रहा था, और धीमी, स्पष्ट आवाज में, इसके बारे में ये चार बातें कहीं: —

वह बहुत प्रिय थीं।

उसने स्वयं को ईश्वर को समर्पित कर दिया।

“उसकी कम उम्र में ही मृत्यु हो गई।”

उन्हें आज भी याद किया जाता है, आज भी उनके लिए आंसू बहाए जाते हैं।

"क्या उस बूढ़ी महिला, मैडम वालरावेंस की वजह से?" मैंने पूछा, यह सोचते हुए कि मैंने शोक के असाध्य दुख में, उसी बूढ़ी महिला के निराशाजनक चिड़चिड़ेपन की कुंजी खोज ली है।

पिता ने हल्की मुस्कान के साथ सिर हिलाया।

“नहीं, नहीं,” उसने कहा; “एक दादी का अपने बच्चों के बच्चों के प्रति स्नेह महान हो सकता है, और उनके खोने का दुख भी तीव्र हो सकता है; लेकिन केवल वह मंगेतर प्रेमी ही होता है, जिसे भाग्य, आस्था और मृत्यु ने तीन बार मिलन के सुख से वंचित कर दिया है, जो अपने खोए हुए पर शोक मनाता है, ठीक वैसे ही जैसे जस्टिन मैरी के लिए आज भी शोक मनाया जाता है।”

मुझे लगा कि पिता कुछ सवाल-जवाब करना चाहते हैं, इसलिए मैंने पूछा कि किसने "जस्टिन मैरी" को खोया है और कौन अब भी उनके लिए शोक मना रहा है। जवाब में मुझे एक छोटी-सी रोमांटिक कहानी सुनने को मिली, जिसे उन्होंने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से सुनाया, और साथ ही थमते तूफान की आवाज़ भी आ रही थी। मैं यह कहना चाहूँगा कि अगर इसमें फ्रांसीसी, रूसो जैसी भावुकता और अतिशयोक्ति न होती, और प्रभाव के प्रति थोड़ी और सहज लापरवाही होती, तो यह कहानी कहीं अधिक प्रभावशाली हो सकती थी। लेकिन वह आदरणीय पिता स्पष्ट रूप से फ्रांसीसी थे (मुझे धीरे-धीरे यकीन होता गया कि वे मेरे पादरी से मिलते-जुलते हैं) - वे रोम के सच्चे सपूत थे; जब उन्होंने अपनी आँखें उठाईं, तो उन्होंने अपनी आँखों के कोनों से मुझे देखा, और उनकी नज़रें इतनी गहरी और तीक्ष्ण थीं कि सत्तर वर्षों के बाद भी उनमें वैसी संवेदनशीलता नहीं बची थी। फिर भी, मेरा मानना है कि वे एक अच्छे बुजुर्ग व्यक्ति थे।

उनकी कहानी का नायक उनका कोई पूर्व छात्र था, जिसे वे अब अपना उपकारक कहते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उस छात्र ने धनी माता-पिता की पुत्री, इस पीली-सी दिखने वाली जस्टिन मैरी से प्रेम किया था, उस समय जब उनकी अपनी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी थी कि वे एक समृद्ध विवाह की आकांक्षा को जायज़ ठहरा सकते

थे। छात्र के पिता - जो कभी एक धनी बैंकर थे - दिवालिया हो गए, उनकी मृत्यु हो गई और वे अपने पीछे केवल कर्ज और गरीबी छोड़ गए। बेटे को मैरी के बारे में सोचने से मना किया गया था; विशेष रूप से वह बूढ़ी चुड़ैल जैसी महिला, मैडम वालरावेंस, जिसे मैंने देखा था, इस रिश्ते का पुरजोर विरोध करती थी, उस क्रोध के साथ जो कभी-कभी कुरूपता के कारण राक्षसी रूप ले लेता था। सौम्य मैरी में न तो झूठ बोलने की छलता थी और न ही अपने प्रेमी के प्रति पूरी तरह दृढ़ रहने का साहस; उसने अपने पहले प्रेमी को त्याग दिया, लेकिन अधिक धनवान दूसरे प्रेमी को स्वीकार करने से इनकार करते हुए, एक मठ में चली गई और वहीं दीक्षा के दौरान उसकी मृत्यु हो गई।

ऐसा प्रतीत होता है कि एक अमिट पीड़ा ने उस श्रद्धावान हृदय को जकड़ लिया था जो उसकी पूजा करता था, और उस प्रेम और शोक की सच्चाई को इस तरह से प्रदर्शित किया गया था जिसने मुझे भी, जब मैं सुन रहा था, प्रभावित किया।

जस्टिन मैरी की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद, उनके घर पर भी विपत्ति आ पड़ी: उनके पिता, जो नाममात्र के जौहरी थे, लेकिन शेयर बाजार में भी अच्छा-खासा कारोबार करते थे, कुछ ऐसे वित्तीय लेन-देन में शामिल हो गए थे, जिनका खुलासा हो गया और उन पर भारी जुर्माना लगा। उनकी मृत्यु इस हानि के शोक और बदनामी के कारण हुई। उनकी बूढ़ी कुबड़ी माँ और उनकी शोक संतप्त पत्नी बेसहारा रह गईं और शायद वे भी अभाव में मर जातीं; लेकिन उनकी खोई हुई बेटी के कभी तिरस्कृत, फिर भी अत्यंत सच्चे हृदय वाले प्रेमी ने इन महिलाओं की हालत सुनकर, अद्वितीय समर्पण के साथ उनकी सहायता के लिए हाथ बढ़ाया। उन्होंने उनके उद्दंड अभिमान को शुद्धतम परोपकार के रूप में बदला लिया - उन्हें आश्रय दिया, उनकी देखभाल की, उनसे मित्रता की, ऐसा स्नेह और कुशलता से कोई पुत्र नहीं कर सकता था। माँ - जो कुल मिलाकर एक अच्छी महिला थीं - ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए अपनी जान दे दी; विचित्र, नास्तिक, प्रेमहीन, मानवद्वेषी दादी अभी भी जीवित थीं, पूरी तरह से इस आत्म-त्यागी व्यक्ति के सहारे। वह स्त्री, जो उसके जीवन का अभिशाप थी, जिसने उसकी आशाओं को चकनाचूर कर दिया था और प्रेम और घरेलू सुख के बदले उसे लंबा शोक और उदासी भरा एकांत दिया था, उसके साथ वह वैसा ही सम्मान रखता था जैसा एक अच्छा पुत्र अपनी दयालु माँ के साथ रखता है। वह उसे इस घर में लाया था, और, पुजारी ने अपनी आँखों में आँसू भरते हुए कहा, “यहाँ भी वह मुझे, अपने पुराने

शिक्षक को, और एग्नेस को, जो उसके पिता के परिवार की एक सेवानिवृत्त नौकरानी है, आश्रय देता है। मुझे पता है कि वह अपनी आय का तीन हिस्सा हमारे भरण-पोषण और अन्य दान-पुण्य कार्यों में लगाता है, और केवल चौथा हिस्सा अपने लिए रोटी और न्यूनतम आवास की व्यवस्था करने के लिए रखता है। इस व्यवस्था के कारण उसने अपने लिए विवाह करना असंभव बना दिया है: उसने स्वयं को ईश्वर और अपनी देवदूत-दुल्हन को उतना ही समर्पित कर दिया है जितना कि वह मेरे जैसे किसी पुजारी को।"

पिता ने अपने अंतिम शब्द कहने से पहले अपने आँसू पोंछ लिए थे, और उन्हें बोलते समय उन्होंने एक पल के लिए मेरी ओर देखा। हालाँकि यह दृष्टि अस्पष्ट थी, फिर भी मैंने उनकी इस दृष्टि को पकड़ लिया; उस क्षणिक चमक ने एक ऐसा अर्थ समेट लिया जो मुझे झकझोर गया।

ये रोमनवादी बड़े विचित्र प्राणी हैं। उनमें से एक ऐसा भी है—जिसे आप पेरू के अंतिम इंका या चीन के प्रथम सम्राट से अधिक नहीं जानते—वह आपको और आपकी सभी चिंताओं को जानता है; और आपसे ऐसा कहने के उसके अपने कारण हैं, जबकि आपने सोचा होगा कि यह बातचीत तात्कालिक आवेग से निकली है: उसकी योजना यह सुनिश्चित करने की है कि आप उस दिन, उस स्थान पर, उन परिस्थितियों में आएं, जबकि आपकी अधूरी समझ में यह सब संयोग या किसी आवश्यकता का परिणाम प्रतीत होता है। मैडम बेक का अचानक याद आया संदेश और उपहार, मेरा सरलतापूर्वक मैगी के स्थान पर जाना, बूढ़े पुजारी का गलती से सीढ़ियों से उतरना और चौक पार करना, मुझे भगा देने वाली महिला के साथ मेरी ओर से उसका हस्तक्षेप, सीढ़ियों पर उसका पुनः प्रकट होना, इस कमरे में मेरा परिचय, चित्र, और सहजता से सुनाई गई कहानी—ये सभी छोटी-छोटी घटनाएं, जैसे-जैसे घटित हुईं, एक-दूसरे से स्वतंत्र प्रतीत होती हैं; मुट्ठी भर बिखरे हुए मनके: लेकिन एक जेसुइट की तेज और धूर्त निगाह से पिरोए गए, वे एक लंबी माला में लटक रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे प्रार्थना कक्ष में लटकी माला। इस मठवासी हार की कड़ी कहाँ थी, इसका छोटा सा कुंडा कहाँ था? मैंने जुड़ाव देखा या महसूस किया, लेकिन अभी तक वह स्थान नहीं खोज पाया था, न ही जुड़ाव का माध्यम समझ पाया था।

शायद उस समय तक मैं जिस चिंतन-मनन में डूब गई थी, वह अपने अमूर्त स्वरूप के कारण कुछ संदिग्ध लग रहा था; उसने धीरे से बीच में टोकते हुए कहा:

"मैडमोजेली," उसने कहा, "मुझे उम्मीद है कि आपको इन जलमग्न सड़कों से ज्यादा दूर नहीं जाना है?"

"आधे लीग से भी ज्यादा।"

"आप रहते हैं - - ?"

"रू फॉसेट में।"

“नहीं” (एनिमेशन के साथ), “मैडम बेक के पेंशननेट में नहीं?”

"जो उसी।"

“तो” (ताली बजाते हुए), “तो, आप मेरे होनहार शिष्य, मेरे पॉल को जानते ही होंगे?”

“महाशय पॉल इमानुएल, साहित्य के प्रोफेसर?”

“वही, और कोई नहीं।”

कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया। मिलन का स्रोत अचानक स्पष्ट रूप से प्रकट हो उठा; मैंने महसूस किया कि वह दबाव के आगे झुक रहा है।

“क्या आप एम. पॉल के बारे में बात कर रहे थे?” मैंने तुरंत पूछा। “क्या वह आपका शिष्य और मैडम वालरावेंस का संरक्षक था?”

“हाँ, और एग्नेस, उस बूढ़ी नौकरानी के बारे में: और इसके अलावा, (कुछ ज़ोर देते हुए), वह स्वर्ग में विराजमान उस संत - जस्टिन मैरी - का सच्चा, स्थिर और शाश्वत प्रेमी था और है।”

“और आप कौन हैं, पिताजी?” मैंने सवाल जारी रखा; और हालांकि मैंने इस सवाल पर जोर दिया, लेकिन इसे कहना लगभग अनावश्यक था; मैं इससे पहले उस जवाब के लिए पूरी तरह तैयार था जो वास्तव में आया।

“हे पुत्री, मैं पेरे सिलास हूँ; पवित्र चर्च का वह अयोग्य पुत्र जिसे आपने कभी महान और भावपूर्ण विश्वास से सम्मानित किया था, मुझे हृदय की गहराई और मन के अंतर्मन को दिखाया था, जिसका मार्गदर्शन मैंने सच्चे विश्वास के लिए पूरी निष्ठा से चाहा था। मैंने एक दिन के लिए भी आपको नहीं भुलाया, न ही एक घंटे के लिए भी आपमें गहरी रुचि खोई। रोम के अनुशासन में पले-बढ़े, उसकी उच्च शिक्षा से आकारित हुए, उसके लाभकारी सिद्धांतों से पोषित हुए, और केवल उसी के द्वारा दिए गए उत्साह से प्रेरित होकर—मैं समझता हूँ कि आपका आध्यात्मिक स्तर और व्यावहारिक मूल्य क्या हो सकता है; और मैं विधर्म को उसके शिकार से ईर्ष्या करता

हूँ।”

यह मुझे एक विशेष स्थिति लगी—मुझे कुछ-कुछ एहसास हुआ कि मैं भी उसी स्थिति में हूँ; अनुशासन में पला-बढ़ा, ढाला गया, प्रशिक्षित किया गया, टीका लगाया गया, इत्यादि। “ऐसा नहीं है,” मैंने सोचा, लेकिन मैंने अपनी निराशा को दबा लिया और चुपचाप बैठा रहा।

“मुझे लगता है कि एम. पॉल यहाँ नहीं रहते?” मैंने फिर से अपनी बात शुरू की, एक ऐसे विषय को आगे बढ़ाते हुए जिसे मैं किसी भी बेतुके विद्रोही सपनों से कहीं अधिक प्रासंगिक मानता था।

“नहीं; वह कभी-कभार ही अपने प्रिय संत की पूजा करने, मुझसे अपने पापों का प्रायश्चित करने और अपनी माँ कहलाने वाली महिला को सम्मान देने आता है। उसका अपना आवास केवल दो कमरों का है: उसके पास कोई नौकर नहीं है, फिर भी वह मैडम वालरावेंस को उन शानदार गहनों को बेचने नहीं देता, जिन्हें आप उसे पहने हुए देखते हैं, और जिन पर वह बचकाना गर्व करती है, क्योंकि वे उसके यौवन के आभूषण और उसके जौहरी बेटे की संपत्ति के अंतिम अवशेष हैं।”

मैंने मन ही मन बुदबुदाते हुए कहा, "कितनी बार मुझे ये आदमी, ये एम. इमानुएल, छोटी-छोटी बातों में उदारता की कमी वाले लगे हैं, फिर भी बड़ी बातों में ये कितने महान हैं!"

मैं स्वीकार करता हूं कि मैंने उनकी महानता के प्रमाणों में न तो स्वीकारोक्ति को और न ही संत-पूजा को गिना।

“उस महिला की मृत्यु को कितना समय हो गया है?” मैंने जस्टिन की ओर देखते हुए पूछा।

मैरी।

“बीस साल। वह एम. इमानुएल से कुछ बड़ी थीं; वह तब बहुत युवा थे, क्योंकि उनकी उम्र चालीस से थोड़ी ही अधिक थी।”

क्या वह अब भी उसके लिए रोता है?

“उसका हृदय उसके लिए सदा रोता रहेगा: इमानुएल के स्वभाव का सार है - स्थिरता।”

यह बात विशेष जोर देकर कही गई।

और अब सूरज पीला और फीका सा निकला; बारिश अभी भी हो रही थी, लेकिन

आंधी नहीं थी: गर्म आकाश फट गया था और बिजली चमक रही थी। और देर होने पर मेरे लौटने के लिए शायद ही दिन का उजाला बचेगा, इसलिए मैं उठा, पिताजी को उनके आतिथ्य और कहानी के लिए धन्यवाद दिया, जिसके जवाब में उन्होंने विनम्रता से "पैक्स वोबिस्कम" कहा, जिसका मैंने सहर्ष स्वागत किया, क्योंकि यह सच्ची दयालुता से कहा गया प्रतीत हुआ; लेकिन इसके साथ जुड़ा रहस्यमय वाक्यांश मुझे उतना पसंद नहीं आया।

"बेटी, तुम वही बनोगी जो तुम बनना चाहोगी!" यह भविष्यवाणी सुनकर मैंने दरवाजे से बाहर निकलते ही अपने कंधे उचका दिए। हममें से कुछ ही लोग निश्चित रूप से जानते हैं कि हमारा भविष्य क्या होगा, लेकिन अब तक जो कुछ भी हुआ था, उसके बावजूद मुझे एक संयमी प्रोटेस्टेंट के रूप में जीने और मरने की अच्छी उम्मीद थी: मेरे भीतर एक खालीपन था, और "पवित्र चर्च" के चारों ओर एक आडंबर था जो मुझे लुभा तो रहा था, लेकिन सीमित रूप से। मैं कई बातों पर विचार करते हुए आगे बढ़ गई। रोमनवाद चाहे जो भी हो, अच्छे रोमनवादी भी होते हैं: यह व्यक्ति, इमानुएल, सबसे अच्छे रोमनवादियों में से एक प्रतीत होता था; अंधविश्वास से प्रभावित, पुरोहितवाद से प्रेरित, फिर भी गहरी आस्था, पवित्र भक्ति, आत्म-बलिदान और असीम दान के लिए अद्भुत। यह देखना बाकी था कि रोम अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से इन गुणों का कैसे उपयोग करता है; क्या वह उन्हें स्वयं के लिए और ईश्वर के लिए संजोता है, या उन्हें सूद पर बेचकर ब्याज का लाभ उठाता है।

जब तक मैं घर पहुँचा, सूर्यास्त हो चुका था। गोटन ने मेरे लिए खाने का एक हिस्सा बचाकर रखा था, जिसकी मुझे वाकई ज़रूरत थी। उसने मुझे छोटे से कमरे में बुलाया ताकि मैं उसे खा सकूँ, और तभी मैडम बेक वहाँ आ गईं और मेरे लिए एक गिलास वाइन ले आईं।

"अच्छा," उसने हंसते हुए कहा, "और मैडम का कैसा स्वागत हुआ?"

वालरेवेन्स आपको क्या देती है? वह मज़ेदार है, है ना?

मैंने उसे पूरी घटना बताई, और वही विनम्र संदेश दोहराया जिसका मुझे पालन करने का आदेश दिया गया था।

"ओह, वह अजीब सा कुबड़ा!" वह हंस पड़ी। "और सोचो, वह मुझसे नफरत करती है, क्योंकि उसे लगता है कि मैं अपने चचेरे भाई पॉल से प्यार करती हूँ; वह नेक छोटा आदमी जो अपने पादरी की अनुमति के बिना हिलने की हिम्मत भी नहीं

करता! इसके अलावा," वह आगे बोली, "अगर वह शादी करना भी चाहे—चाहे मुझसे हो या किसी और से—तो वह ऐसा नहीं कर सकता; उसके पास पहले से ही बहुत बड़ा परिवार है: मदर वालरेवेंस, फादर साइलस, डेम एग्नेस, और अनगिनत नामहीन भिखारियों का झुंड। उसके जैसा कोई आदमी नहीं है जो अपनी क्षमता से अधिक बोझ खुद पर ले लेता है, स्वेच्छा से अनावश्यक जिम्मेदारियाँ उठा लेता है। इसके अलावा, वह किसी पीली-सी दिखने वाली मैरी जस्टिन के बारे में रोमांटिक कल्पनाएँ पाल रहा है—एक मूर्ख चरित्र, मुझे लगता है" (मैडम की यह व्यंग्यात्मक टिप्पणी थी), "जो पिछले बीस वर्षों से स्वर्ग में, या कहीं और, एक देवदूत रही है, और जिसके पास वह सभी सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर, एक लिली की तरह पवित्र होकर जाना चाहता है, जैसा कि वह कहता है। ओह, आप हँस पड़ेंगे, अगर आप एम. इमैनुएल के बारे में आधा भी जानते हों।" सनकीपन और अजीबोगरीब बातें! लेकिन मैं आपको जलपान करने से नहीं रोकूंगा, मेरी प्यारी मालकिन, जिसकी आपको बहुत ज़रूरत है; अपना भोजन करें, अपनी शराब पिएं, स्वर्गदूतों, कुबड़ों और सबसे बढ़कर, प्रोफेसरों को भूल जाएं - और शुभ संध्या!

अध्याय XXXV

बिरादरी।

"प्रोफेसरों को भूल जाओ।" मैडम बेक ने यही कहा था। मैडम बेक एक बुद्धिमान महिला थीं, लेकिन उन्हें ये शब्द नहीं कहने चाहिए थे। ऐसा करना एक गलती थी। उस रात उन्हें मुझे शांत छोड़ देना चाहिए था—उत्तेजित, उदासीन, उदासीन, अपनी और दूसरों की नज़र में अलग-थलग—उस दूसरे व्यक्ति से, जिसे मुझे भूल जाना था, विचारों में भी जुड़ाव नहीं।

उसे भूल जाऊं? आह! उन्होंने मुझे उसे भुलाने के लिए बड़ी चतुराई से योजना बनाई थी – बड़े बुद्धिमान लोग! उन्होंने मुझे दिखाया कि वह कितना अच्छा था; उन्होंने मेरे प्यारे छोटे से आदमी को एक बेदाग छोटा नायक बना दिया। और फिर उन्होंने उसके प्रेम करने के तरीके के बारे में बकवास की। इस दिन से पहले मुझे क्या पता था कि वह सच में प्रेम कर सकता है या नहीं?

मैं उसे ईर्ष्यालु और शंकालु जानता था; मैंने उसमें कुछ कोमलता और अस्थिरता देखी थी— एक कोमलता जो गर्म हवा की तरह आती थी, और एक दया जो ओस की तरह गुज़र जाती थी, उसकी चिड़चिड़ीपन की गर्मी में सूख जाती थी: बस यही मैंने देखा था। और उन्होंने, पिता सिलास और मोडेस्ट मारिया बेक (मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि इन दोनों ने मिलकर काम किया) ने उसके हृदय के गहरे द्वार खोल दिए— मुझे एक महान प्रेम दिखाया, इस दक्षिणी प्रकृति की युवावस्था का बच्चा, इतना मजबूत और परिपूर्ण कि उसने स्वयं मृत्यु पर हँसा, पदार्थ के उसके नीच शोषण को तुच्छ समझा, अमर आत्मा से जुड़ा रहा, और विजय और विश्वास में, बीस वर्षों तक एक कब्र के पास पहरा दिया।

यह सब यूं ही नहीं किया गया था: यह महज़ भावनाओं का खोखला प्रदर्शन नहीं था; उसने अपनी सर्वोत्तम ऊर्जा को एक निस्वार्थ उद्देश्य के लिए समर्पित करके अपनी निष्ठा सिद्ध की थी, और अनगिनत व्यक्तिगत बलिदानों से इसे प्रमाणित किया था: जिन लोगों को वह कभी प्रिय मानता था, उनके लिए उसने प्रतिशोध का भाव त्याग दिया था और क्रूस उठा लिया था।

अब, जहाँ तक जस्टिन मैरी की बात है, मैं उसे ऐसे जानती थी जैसे मैंने उसे देखा हो। मैं जानती थी कि वह ठीक-ठाक थी; मैडम बेक के स्कूल में उसके जैसी लड़कियाँ थीं - शांत स्वभाव की - पीली, धीमी, निष्क्रिय, लेकिन दयालु, बुराई से अप्रभावित, अच्छाई में साधारण।

यदि उसने देवदूतों के पंख धारण किए थे, तो मैं जानता था कि किस कवि की कल्पना ने उन्हें ये पंख दिए थे। यदि उसका माथा किसी प्रभामंडल की परावर्तन से जगमगा रहा था, तो मैं जानता था कि किसकी पुतलियों की अग्नि में पवित्र ज्वाला का वह घेरा उत्पन्न हुआ था।

तो क्या मुझे जस्टिन मैरी से डरना चाहिए था? क्या एक पीली पड़ी मृत नन की छवि एक शाश्वत बाधा बनकर उभरने वाली थी? और उन दान-पुण्यों का क्या हुआ

जिन्होंने उनकी सांसारिक संपत्ति को सोख लिया? उनके उस हृदय का क्या हुआ जिसने कुंवारेपन की शपथ ली थी?

मैडम बेक—पिता सिलास—आपको ये सवाल नहीं उठाने चाहिए थे। ये मेरे लिए अब तक की सबसे गहरी पहेली, सबसे बड़ी बाधा और सबसे तीव्र प्रेरणा थे। एक सप्ताह तक रात-दिन मैं सोता रहा—सपने देखता रहा और इन्हीं दो सवालों के साथ जागता रहा। पूरी दुनिया में इनका कोई जवाब नहीं था, सिवाय उस जगह के जहाँ एक छोटा सा सांवला आदमी खड़ा होता, बैठता, चलता और उपदेश देता था, एक डाकू जैसी ग्रीक टोपी के नीचे, और एक फटेहाल, स्याही से सने और धूल से भरे कपड़े के घेरे में।

रू डेस मेजेस की उस यात्रा के बाद, मैं उसे फिर से देखना चाहता था। मुझे ऐसा लगा मानो—अब जो मैं जानता था—उसके चेहरे से पहले से कहीं अधिक स्पष्ट, कहीं अधिक रोचक रहस्य उजागर हो जाएगा; मेरे मन में उस आदिम भक्ति की छाप, उस अर्ध-वीरतापूर्ण, अर्ध-संत-वीरता के संकेत खोजने की तीव्र इच्छा जागृत हुई, जिसका वर्णन पादरी के वृत्तांत में उसके स्वभाव के रूप में किया गया था। वह मेरा ईसाई नायक बन गया था: मैं उसे उसी रूप में देखना चाहता था।

और मौका भी हाथ से नहीं जाने दिया; अगले दिन ही मेरे नए विचारों की परीक्षा हो गई। जी हाँ: मुझे अपने "ईसाई नायक" से मिलने का अवसर मिला - एक ऐसा साक्षात्कार जो बहुत वीरतापूर्ण, भावुक या बाइबिल से प्रेरित नहीं था, लेकिन अपने तरीके से काफी जीवंत था।

दोपहर करीब तीन बजे, पहली कक्षा की शांति - जो मैडम बेक के शांत मार्गदर्शन में सुरक्षित रूप से स्थापित प्रतीत हो रही थी, जो स्वयं अपने व्यवस्थित और उपयोगी पाठों में से एक दे रही थीं - यह शांति, मैं कहूँ, एक पैलेटोट के उग्र विस्फोट से अचानक भंग हो गई।

उस समय मुझसे ज़्यादा शांत कोई नहीं था। मैडम बेक की उपस्थिति से ज़िम्मेदारी का बोझ हल्का हो गया था, उनकी एकसमान आवाज़ से मुझे सुकून मिला, और विषय की उनकी स्पष्ट व्याख्या से मैं प्रसन्न और प्रेरित हुआ (क्योंकि वे बहुत अच्छा पढ़ाती थीं)। मैं अपनी मेज़ पर झुका बैठा चित्र बना रहा था—अर्थात, एक जटिल रेखाचित्र की नकल कर रहा था, अपनी नकल को मूल कृति के समान पूर्ण रूप देने के लिए लगन से काम कर रहा था, क्योंकि कला के बारे में मेरी व्यावहारिक धारणा यही

थी; और, हैरानी की बात है, मुझे इस काम में बेहद आनंद आता था, और मैं स्टील या मेज़ोटिंट प्लेटों की बेहद बारीकी से बनी चीनी प्रतिकृतियाँ भी बना सकता था—ये चीज़ें ऊनी काम की कई उपलब्धियों के बराबर ही मूल्यवान थीं, लेकिन उन दिनों मैं उन्हें बहुत महत्व देता था।

आखिर हुआ क्या? मेरी ड्राइंग, मेरी पेंसिलें, मेरी अनमोल कॉपी, सब कुछ एक मुट्ठी भर कुचलकर मेरी आँखों के सामने से गायब हो गया; मैं खुद अपनी कुर्सी से ऐसे हिल गया या बाहर निकल गया जैसे कोई अकेला और मुरझाया हुआ जायफल किसी मसाले के डिब्बे से उत्तेजित रसोइए द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है। वह कुर्सी और मेरी मेज, उस बेकाबू पैलेटोट (एक-एक बाजु के नीचे) द्वारा पकड़ी गई, दूर ले जाई गईं; एक पल में, मैं भी उस फर्नीचर के पीछे-पीछे चला गया; दो मिनट में वे और मैं ग्रैंड हॉल के बीचोंबीच स्थिर हो गए - एक विशाल सटा हुआ कमरा, जिसका उपयोग शायद ही कभी नृत्य और गायन कक्षाओं के अलावा किया जाता था - इस तरह स्थिर हो गए जैसे कि हमें वहाँ से फिर कभी हिलने की दूर-दूर तक कोई उम्मीद ही न हो।

अपनी भयभीत बुद्धि को थोड़ा संजोकर मैंने स्वयं को दो पुरुषों के समक्ष पाया, जिन्हें मैं सज्जन कहूँ तो बेहतर होगा - एक सांवला, दूसरा गोरा - एक सख्त, अर्धसैनिक मुद्रा में था और उसने एक गुंथा हुआ ओवरकोट पहना हुआ था; दूसरा, अपने पहनावे और हावभाव में, छात्र या कलाकार वर्ग के लापरवाह व्यक्ति जैसा लग रहा था: दोनों अपनी मूंछों, दाढ़ी और शाही ठाठ-बाठ में पूरी शान से सजे हुए थे। एम. इमानुएल इन सबसे थोड़ा अलग खड़े थे; उनके चेहरे और आँखों में तीव्र क्रोध झलक रहा था; उन्होंने अपने प्रतिनिधि के हावभाव में अपना हाथ आगे बढ़ाया।

“महोदया,” उन्होंने कहा, “आपका काम इन सज्जनों को यह साबित करना है कि मैं झूठा नहीं हूँ। आप उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों का यथासंभव उत्तर देंगी। आप उनके द्वारा चुने गए विषय पर लिखेंगी भी। उनकी नज़र में, ऐसा लगता है कि मैं एक बेईमान धोखेबाज़ हूँ। मैं निबंध लिखता हूँ; और जानबूझकर जालसाज़ी करके अपने छात्रों के नाम से उन पर हस्ताक्षर करता हूँ, और उन्हें उनका काम बताकर गर्व करता हूँ। आप इस आरोप को गलत साबित करेंगी।”

हे भगवान! आखिरकार, वह दिखावटी मुकदमा, जिससे मैं लंबे समय से बच रहा था, मुझ पर बिजली की कड़क की तरह आ गिरा। ये दो सलीकेदार, चोटी वाले, मूंछों वाले, व्यंग्य करने वाले शख्स कॉलेज के दो घमंडी प्रोफेसर थे - श्री बोइसेक और

रोशेमोर्ते - दो निर्मम, पांडित्यपूर्ण, संशयवादी और उपहास करने वाले लोग। ऐसा लगता है कि श्री पॉल ने जल्दबाजी में मेरी लिखी हुई कोई चीज प्रदर्शित कर दी थी - जिसकी उन्होंने मेरे सामने कभी प्रशंसा नहीं की थी, न ही कभी जिक्र किया था, और जिसे मैं भूला हुआ समझता था। निबंध बिल्कुल भी उल्लेखनीय नहीं था; यह केवल विदेशी स्कूली छात्राओं की औसत रचनाओं की तुलना में उल्लेखनीय लग रहा था; किसी अंग्रेजी संस्थान में तो इस पर शायद ही किसी का ध्यान जाता। श्री बोइसेक और रोशेमोर्ते ने इसकी प्रामाणिकता पर सवाल उठाना और धोखाधड़ी का आरोप लगाना उचित समझा; अब मुझे सच्चाई की गवाही देनी थी और उनकी परीक्षा की यातना सहनी थी।

इसके बाद एक यादगार दृश्य सामने आया।

उन्होंने क्लासिक्स से शुरुआत की। एकदम सन्नाटा। फिर वे फ्रांसीसी इतिहास पर आ गए। मुझे मेरोवी और फरामंड के बारे में मुश्किल से ही कुछ पता था। उन्होंने मुझे कई तरह की 'विज्ञान' में परखा, लेकिन फिर भी मुझे सिर्फ सिर हिलाना और एक ही बात दोहराना पड़ा, "मुझे कुछ नहीं पता।"

कुछ देर के मौन के बाद, वे सामान्य जानकारी के विषयों पर आगे बढ़े, जिनमें से एक-दो ऐसे विषय थे जिनके बारे में मुझे अच्छी तरह से जानकारी थी और जिन पर मैंने अक्सर विचार किया था। एम. इमानुएल, जो अब तक शीत संक्रांति की तरह उदास खड़े देख रहे थे, कुछ हद तक प्रसन्न हुए; उन्हें लगा कि अब कम से कम मैं मूर्ख तो नहीं साबित होऊंगा।

उसे अपनी गलती का एहसास हो गया। हालाँकि सवालों के जवाब तेज़ी से उमड़ रहे थे, मेरा दिमाग कुएँ की तरह भर रहा था, विचार तो थे लेकिन शब्द नहीं। मैं या तो बोल नहीं पा रहा था, या बोलना नहीं चाहता था—मुझे ठीक से पता नहीं: शायद कुछ हद तक मेरी नसें लड़खड़ा गई थीं, और कुछ हद तक मेरा मूड खराब हो गया था।

मैंने अपने परीक्षकों में से एक को - गुंथी हुई ओवरकोट वाले को - अपने सह-प्रोफेसर से फुसफुसाते हुए सुना, "क्या वह बेवकूफ है?"

“हाँ,” मैंने सोचा, “वह एक मूर्ख है, और तुम्हारे जैसे लोगों के लिए हमेशा मूर्ख ही रहेगी।”

लेकिन मुझे कष्ट सहना पड़ा—अत्यंत कष्ट सहना पड़ा; मैंने एम. पॉल के माथे पर आँसू देखे, और उनकी आँखों में एक तीव्र लेकिन उदास निंदा झलक रही थी। उन्हें

मेरी लोकप्रियता की कमी पर विश्वास नहीं था; उनका मानना था कि अगर मैं चाहूँ तो मैं तुरंत प्रतिक्रिया दे सकता हूँ।

अंत में, उन्हें, प्रोफेसरों को और खुद को राहत देने के लिए, मैंने हकलाते हुए कहा:

"सज्जनों, बेहतर होगा कि आप मुझे जाने दें; मुझसे आपको कोई लाभ नहीं होगा; जैसा कि आप कहते हैं, मैं एक मूर्ख हूँ।"

काश मैं शांत और गरिमापूर्ण ढंग से बोल पाता, या काश मेरी समझ मुझे चुप रहने के लिए काफी होती; मेरी वह धोखेबाज़ ज़बान लड़खड़ा गई, डगमगा गई। न्यायाधीशों को एम. इमानुएल पर विजय की कठोर दृष्टि डालते देख और अपनी ही कांपती हुई आवाज़ को सुनकर मैं फूट-फूट कर रोने लगा। यह भावना दुःख से कहीं अधिक क्रोध की थी; यदि मैं पुरुष और बलवान होता, तो मैं उन दोनों को वहीं चुनौती दे सकता था—पर यह भावना थी, और मैं इसे प्रकट करने के बजाय कोड़े खाना पसंद करता।

अकुशल लोग! क्या वे उस रचना में एक नौसिखिए की अधूरी कला को तुरंत नहीं देख सके जिसे वे जालसाजी कह रहे थे? विषय शास्त्रीय था। जब एम. पॉल ने उस विषय को बताया जिस पर निबंध आधारित होना था, तो मैंने उसे पहली बार सुना; यह विषय मेरे लिए नया था, और मेरे पास इसके विवेचन के लिए कोई सामग्री नहीं थी। लेकिन मैंने किताबें पढ़ीं, तथ्यों का अध्ययन किया, वास्तविक की सूखी हड्डियों से श्रमपूर्वक एक ढांचा तैयार किया, फिर उसे आवरण दिया, और उसमें जान डालने की कोशिश की, और इस अंतिम लक्ष्य में मुझे आनंद मिला। मेरे लिए यह एक कठिन और चिंताजनक समय था जब तक कि मेरे तथ्य मिल नहीं गए, उनका चयन नहीं हो गया और उन्हें ठीक से जोड़ा नहीं गया; और मैं तब तक शोध और प्रयास से नहीं रुका जब तक कि मैं सही संरचना से संतुष्ट नहीं हो गया; त्रुटि या असत्यता के विचार के प्रति मेरी आंतरिक घृणा की शक्ति ने कभी-कभी मुझे घोर गलतियों से बचने में सक्षम बनाया; लेकिन ज्ञान मेरे दिमाग में तैयार और परिपक्व रूप से मौजूद नहीं था; यह वसंत में बोया नहीं गया था, ग्रीष्म में उगाया नहीं गया था, शरद ऋतु में काटा नहीं गया था, और शीत ऋतु में संकलित नहीं किया गया था; मुझे जो भी चाहिए होता, मुझे बाहर जाकर ताजा इकट्ठा करना पड़ता; जंगली जड़ी-बूटियाँ चुन-चुनकर अपनी गोद में भरनी पड़तीं और उन्हें कच्चा ही काटकर बर्तन में डालना पड़ता। श्री बोइसेक और श्री रोशेमोर्ते को यह बात समझ नहीं आई। उन्होंने मेरे काम को किसी अनुभवी विद्वान का काम समझ लिया।

वे मुझे अभी जाने नहीं दे रहे थे: मुझे उनके सामने बैठकर लिखना ही था। जब मैंने कांपते हाथों से कलम को स्याही में डुबोया और आधी अंधी और आँसुओं से भरी आँखों से सफेद कागज को देखा, तो मेरे एक न्यायाधीश ने बड़ी नखरेबाजी से उस पीड़ा के लिए माफी मांगनी शुरू कर दी जो उन्होंने मुझे पहुंचाई थी।

उन्होंने कहा, “हम सच्चाई के हित में काम कर रहे हैं। हम आपको नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते।”

तिरस्कार ने मुझे हिम्मत दी। मैंने केवल इतना ही उत्तर दिया, —

"आप हुक्म चलाइए, महोदय।"

रोशेमोर्ते ने इस विषय को "मानव न्याय" नाम दिया।

मानवीय न्याय! मैं इसका क्या अर्थ निकालूँ? एक खाली, निर्मम अमूर्त अवधारणा, जो मुझे किसी भी प्रेरक विचार का संकेत नहीं देती; और वहाँ श्री इमानुएल खड़े थे, शाऊल की तरह उदास और योआब की तरह कठोर, और वहाँ उनके अभियोगी विजयी हुए।

मैंने उन दोनों की ओर देखा। मैं हिम्मत जुटाकर उनसे कहने ही वाला था कि मैं उनकी संतुष्टि के लिए एक शब्द भी नहीं लिखूंगा और न ही बोलूंगा, कि उनका विषय मुझे भाता नहीं है, न ही उनकी उपस्थिति मुझे प्रेरित करती है, और इसके बावजूद, जो कोई भी एम. इमानुएल के सम्मान पर संदेह की छाया भी डालता है, वह उस सत्य का अपमान करता है जिसके वे स्वयं को रक्षक घोषित करते हैं: मैं यह सब कहने ही वाला था, तभी अचानक मेरी याददाश्त में एक प्रकाश कौंधा।

लंबे बालों, मूंछों और दाढ़ी के घने जंगल से झांकते वे दो चेहरे—वे दो ठंडे फिर भी साहसी, अविश्वासी फिर भी अभिमानी चेहरे—वही चेहरे थे, वही चेहरे जो विलेट में मेरे सुनसान आगमन की रात, बरामदे के खंभों के पीछे से तेज रोशनी में उभरकर मुझे लगभग मौत के मुंह में धकेल गए थे। मुझे नैतिक रूप से पूरा यकीन था कि ये वही नायक थे जिन्होंने एक बेसहारा विदेशी को उसकी समझ और ताकत से परे धकेल दिया था, और उसे शहर के एक चौथाई हिस्से में बेदम कर दिया था।

“अच्छे गुरु!” मैंने सोचा। “युवाओं के लिए सच्चे मार्गदर्शक! यदि ‘मानव न्याय’ वैसा होता जैसा उसे होना चाहिए, तो आप दोनों शायद ही अपने वर्तमान पद पर होते, या इस समय इतनी प्रसिद्धि का आनंद ले रहे होते।”

एक बार विचार मन में आते ही मैं काम में जुट गया। "मानवीय न्याय" एक नए रूप

में मेरे सामने आ उठा, एक लाल रंग की, बेतरतीब सी दिखने वाली महिला, हाथ कमर पर रखे हुए। मैंने उसे उसके घर में देखा, अव्यवस्था के अड्डे में: नौकर उससे आदेश या मदद के लिए पुकारते थे, लेकिन वह कुछ नहीं देती थी; भिखारी उसके दरवाजे पर इंतजार करते और भूखे मरते रहते थे, जिन पर किसी का ध्यान नहीं जाता था; बीमार और झगड़ालू बच्चों का एक झुंड उसके पैरों के आसपास रेंगता था और उसके कानों में ध्यान, सहानुभूति, इलाज और न्याय की गुहार लगाता था। उस ईमानदार महिला को इनमें से किसी बात की परवाह नहीं थी। आग के पास उसकी अपनी एक गर्म कुर्सी थी, एक छोटी काली पाइप में उसका अपना सुकून था, और श्रीमती स्वेनी के सुखदायक सिरप की एक बोतल थी; वह सिगरेट पीती, घूंट-घूंट करके पीती और अपने स्वर्ग का आनंद लेती थी; और जब भी उसके आसपास के पीड़ित लोगों की चीखें उसके कानों में चुभतीं, तो मेरी हंसमुख महिला पोकर या चूल्हे की सफाई करने वाला ब्रश उठा लेती: यदि अपराधी कमजोर, पीड़ित और बीमार होता, तो वह उसे प्रभावी ढंग से शांत कर देती: यदि वह मजबूत, जीवंत और हिंसक होता, तो वह केवल धमकी देती, फिर अपना हाथ अपनी गहरी थैली में डालती और चीनी के बेरों की उदार बौछार कर देती।

कागज पर जल्दबाजी में बनाया गया "मानव न्याय" का यह खाका श्री बोइसेक और श्री रोशेमोर्ते को सौंप दिया गया था। श्री इमानुएल ने मेरे कंधे के ऊपर से इसे पढ़ा। कोई टिप्पणी न मिलने पर, मैंने तीनों को झुककर प्रणाम किया और वहां से चला गया।

उस दिन स्कूल के बाद, एम. पॉल और मैं फिर मिले। ज़ाहिर है, पहली मुलाकात सहज नहीं रही; उनके साथ एक तीखी बहस भी हुई; वह जबरदस्ती की पूछताछ मुझे तुरंत समझ नहीं आई। तीखी नोकझोंक के बाद मुझे "एक छोटी सी बेवकूफ और बेदिल औरत" कहा गया, और महाशय कुछ देर के लिए वहाँ से चले गए।

मैं नहीं चाहता था कि वह पूरी तरह से चला जाए, बस यही चाहता था कि उसे एहसास हो कि उस दिन जिस आनंद में वह डूब गया था, उसे पूरी तरह से छूट के साथ नहीं भोगा जा सकता था। इसलिए, थोड़ी देर बाद उसे बगीचे में बागवानी करते देखकर मुझे कोई दुख नहीं हुआ। वह कांच के दरवाजे के पास आया; मैं भी पास गया। हमने उसके चारों ओर उग रहे कुछ फूलों के बारे में बात की। थोड़ी देर बाद महोदय ने अपना फावड़ा नीचे रख दिया; थोड़ी देर बाद उन्होंने फिर से बातचीत शुरू

की, दूसरे विषयों पर बात करने लगे और अंत में एक दिलचस्प विषय पर आ गए।

यह जानते हुए कि उस दिन की उनकी हरकतें फिजूलखर्ची के आरोप के लिए विशेष रूप से उत्तरदायी थीं, एम. पॉल ने आधा क्षमा याचना की; उन्होंने अपने बदलते मिजाज पर भी आधा खेद व्यक्त किया, फिर भी उन्होंने संकेत दिया कि उनके प्रति कुछ नरमी बरती जानी चाहिए। “लेकिन,” उन्होंने कहा, “मैं आपसे इसकी उम्मीद नहीं कर सकता, मिस लूसी; आप न तो मुझे जानती हैं, न मेरी स्थिति को, न ही मेरे इतिहास को।”

उनका इतिहास। मैंने तुरंत उस शब्द को अपनाया; मैंने उस विचार का अनुसरण किया।

“नहीं, महोदय,” मैंने उत्तर दिया। “बिल्कुल, जैसा कि आप कहते हैं, मैं न तो आपका इतिहास जानता हूँ, न आपकी स्थिति, न आपके बलिदान, न आपके दुख, न आपकी कठिनाइयाँ, न आपके स्नेह, न आपकी निष्ठा। ओह, नहीं! मैं आपके बारे में कुछ नहीं जानता; आप मेरे लिए बिल्कुल अजनबी हैं।”

“हैन?” उसने हैरानी से अपनी भौहें चढ़ाते हुए धीरे से कहा।

“महाशय, आप जानते हैं, मैं आपको केवल कक्षा में ही देखता हूँ—कठोर, हठधर्मी, उतावला, अभिमानी। शहर में मैंने आपके बारे में केवल यही सुना है कि आप सक्रिय और मनमौजी हैं, तुरंत पहल करने वाले, नेतृत्व करने में जल्दबाज़, लेकिन समझाने में धीमे और आसानी से न झुकने वाले। आप जैसे व्यक्ति का कोई बंधन नहीं होता, कोई लगाव नहीं; आश्रितों के बिना कोई कर्तव्य नहीं। हम सब, जिनके साथ आप संपर्क में आते हैं, मशीन हैं, जिन्हें आप इधर-उधर धकेलते हैं, उनकी भावनाओं की परवाह किए बिना। आप शाम के झूमर की रोशनी में सार्वजनिक स्थानों पर अपना मनोरंजन करते हैं: यह स्कूल और वह कॉलेज आपकी कार्यशालाएँ हैं, जहाँ आप विद्यार्थियों नामक वस्तु गढ़ते हैं। मुझे तो यह भी नहीं पता कि आप कहाँ रहते हैं; यह मान लेना स्वाभाविक है कि आपका कोई घर नहीं है, और आपको किसी घर की आवश्यकता भी नहीं है।”

“मेरा मूल्यांकन हो चुका है,” उसने कहा। “आपके विचार मेरे बारे में बिल्कुल वही हैं जो मैंने सोचे थे। आपके लिए मैं न तो पुरुष हूँ और न ही ईसाई। आप मुझे स्नेह और धर्म से रहित, मित्र या परिवार से विमुख, सिद्धांत या आस्था से मुक्त देखती हैं। कोई बात नहीं, महोदया; इस जीवन में यही हमारा प्रतिफल है।”

“आप एक दार्शनिक हैं, महाशय; एक सनकी दार्शनिक” (और मैंने उनके पैलेटोट की ओर देखा, जिसकी धुंधली आस्तीन को उन्होंने तुरंत अपने हाथ से साफ किया), “मानवता की कमजोरियों को तुच्छ समझने वाले – उसकी विलासिताओं से ऊपर – उसके आराम से स्वतंत्र।”

और आप, मैडमोजेल? आप बहुत साफ-सुथरी और नखरे वाली हैं, और साथ ही बेहद असंवेदनशील भी हैं।

लेकिन संक्षेप में, महोदय, अब जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि आप कहीं न कहीं रहते होंगे?

कृपया मुझे बताएं कि आप कहाँ रहते हैं; और आपके यहाँ कितने नौकर-चाकर हैं?

अपने होंठ के निचले हिस्से को भयपूर्वक आगे बढ़ाते हुए, घोर तिरस्कार का भाव प्रकट करते हुए, वह भड़क उठा।

“मैं एक गुफा में रहता हूँ, महोदया—एक ऐसी गुफा में जहाँ आप अपनी नाज़ुक नाक भी नहीं डाल सकतीं। एक बार, पूरी सच्चाई बोलने की घोर शर्मिंदगी के साथ, मैंने उस कॉलेज में अपने ‘अध्ययन कक्ष’ के बारे में बात की थी: अब जान लीजिए कि यह ‘अध्ययन कक्ष’ ही मेरा पूरा निवास है; मेरा कमरा और मेरा ड्राइंग रूम यहीं है। जहाँ तक मेरे ‘नौकरों के समूह’ की बात है” (मेरी आवाज़ की नकल करते हुए) “उनकी संख्या दस है; ये रहे।”

और उसने गंभीर भाव से, मेरी आंखों के ठीक सामने, अपनी दस उंगलियां फैला दीं।

“मैं अपने जूते पॉलिश करता हूँ,” उसने क्रूरता से कहा। “मैं अपने पैलेटोट को ब्रश करता हूँ।”

“नहीं, महोदय, यह बहुत ही साधारण है; आप ऐसा कभी नहीं करते,” मैंने विराम चिह्न लगाते हुए कहा।

मैं अपना भोजन और परिवार स्वयं ढूंढता हूँ; मैं रेस्तरां में अपना भोजन खोजता हूँ; मेरा भोजन स्वयं ही मिल जाता है; मैं परिश्रमपूर्ण और प्रेमहीन दिन गुजारता हूँ; रातें लंबी और एकाकी होती हैं; मैं क्रूर, दाढ़ीदार और साधु जैसा हूँ; और इस संसार में अब कोई भी जीवित प्राणी मुझसे प्रेम नहीं करता, सिवाय कुछ बूढ़े हृदयों के जो मेरे जैसे ही थके हुए हैं, और कुछ गिने-चुने प्राणियों के, जो दरिद्र, पीड़ित, धन और आत्मा से गरीब हैं, जिन्हें इस संसार के राज्य अपना नहीं मानते, परन्तु एक निर्विवाद वसीयत ने

उन्हें स्वर्ग का राज्य सौंप दिया है।

“अरे, महोदय; लेकिन मुझे पता है!”

“तुम क्या जानती हो? मुझे पूरा विश्वास है कि तुम बहुत कुछ जानती हो; लेकिन मुझे नहीं, लूसी!”

मुझे पता है कि बासे-विले के एक खूबसूरत पुराने चौक में आपका एक प्यारा सा पुराना घर है - आप वहां जाकर क्यों नहीं रहने लगते?

“हेन?” उसने फिर बुदबुदाया।

“मुझे यह बहुत पसंद आया, महोदय; दरवाजे तक जाती सीढ़ियाँ, सामने लगे भूरे रंग के पत्थर, पीछे लहराते पेड़ — असली पेड़, झाड़ियाँ नहीं — घने, ऊँचे और पुराने पेड़। और वह कमरा — आपको उसे अपना अध्ययन कक्ष बना लेना चाहिए; वह बहुत शांत और गंभीर है।”

उसने मुझे गौर से देखा; उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान थी, और चेहरा शर्म से लाल हो गया था। "यह सब तुम्हें कहाँ से पता चला? किसने बताया?" उसने पूछा।

“मुझे किसी ने नहीं बताया। क्या मैंने सपना देखा था, महाशय, आपको क्या लगता है?”

“क्या मैं आपके सपनों में प्रवेश कर सकता हूँ? क्या मैं किसी महिला के जागते हुए विचारों का अनुमान लगा सकता हूँ, उसकी सोते हुए कल्पनाओं का तो और भी ज्यादा?”

“अगर मैंने सपना देखा था, तो मैंने अपने सपने में इंसानों के साथ-साथ एक घर भी देखा। मैंने एक पुजारी को देखा, बूढ़ा, झुका हुआ और सफ़ेद बालों वाला, और एक गृहिणी को भी देखा—वह भी बूढ़ी और आकर्षक थी; और एक महिला को देखा, भव्य लेकिन विचित्र; उसका सिर मुश्किल से मेरी कोहनी तक पहुँचता था—उसकी भव्यता किसी ड्यूक को भी छुड़ा सकती थी। उसने नीलमणि जैसा चमकीला गाउन पहना था—एक शॉल जिसकी कीमत हज़ार फ़्रैंक थी: वह इतने चमकदार गहनों से सजी थी कि मैंने कभी इतने सुंदर झिलमिलाते गहने नहीं देखे थे; लेकिन उसका शरीर ऐसा लग रहा था जैसे दो टुकड़ों में टूटकर दोहरा झुक गया हो; ऐसा लग रहा था जैसे उसने सामान्य आयु को पार कर लिया हो, और केवल परिश्रम और दुख के वर्षों को प्राप्त कर लिया हो। वह उदास हो गई थी—लगभग द्वेषपूर्ण; फिर भी, ऐसा लगता है, कोई उसकी दुर्बलता में उसकी देखभाल करता था—कोई उसके गुनाहों को क्षमा

करता था, इस उम्मीद में कि उसके गुनाह क्षमा हो जाएँगे। ये तीनों लोग—मालकिन, पादरी, नौकर—एक साथ रहते थे—सभी बूढ़े, सभी कमज़ोर, सभी आश्रय में। एक तरह का पंख।"

उसने अपने हाथ से अपने चेहरे का ऊपरी हिस्सा ढक लिया, लेकिन अपने मुंह को नहीं छिपाया, जहां मैंने एक ऐसा भाव देखा जो मुझे पसंद आया।

“मुझे लगता है कि तुमने मेरे रहस्यों में प्रवेश कर लिया है,” उसने कहा, “लेकिन यह कैसे हुआ?”

तो मैंने उन्हें बताया कि कैसे—जिस काम के लिए मुझे भेजा गया था, जिस तूफान ने मुझे रोक रखा था, उस महिला का अचानक व्यवहार, और पादरी की दयालुता।

मैंने कहा, "जब मैं बारिश रुकने का इंतजार कर रहा था, तब पेरे सिलास कहानी सुनाकर समय बिता रहे थे।"

“एक कहानी! कैसी कहानी? पिता सिलास कोई उपन्यासकार नहीं हैं।”

"क्या मैं महाशय को यह कहानी सुनाऊं?"

“हाँ: शुरुआत से शुरू करते हैं। मुझे मिस लूसी की फ्रेंच सुनने दीजिए—चाहे वो सबसे अच्छी हो या सबसे खराब—मुझे इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता: चलिए, कुछ असभ्य शब्दों का अच्छा-खासा मिश्रण और उनके द्वीपीय लहजे की भरपूर खुराक सुनते हैं।”

“महामहिम को कोई महत्वाकांक्षी कहानी और कथावाचक का बीच में डटे रहने का तमाशा पसंद नहीं आएगा। लेकिन मैं उन्हें शीर्षक बता दूँगी – ‘पुजारी का शिष्य’।”

“वाह!” उसने कहा, उसके सांवले गालों पर फिर से लाली छा गई। “भले पिता जी इससे बुरा विषय नहीं चुन सकते थे; यह उनकी कमजोरी है। लेकिन ‘पुजारी के शिष्य’ का क्या?”

“ओह! बहुत सी चीजें।”

"आप बेहतर होगा कि यह परिभाषित कर दें कि मैं किन चीजों के बारे में जानना चाहता हूं।"

“उस विद्यार्थी में जवानी थी, जवानी थी; उसका लालच, उसकी कृतघ्नता, उसकी निर्दयता, उसकी अस्थिरता। कितना बुरा विद्यार्थी है, महोदय! कितना कृतघ्न, निर्दयी, असभ्य, क्षमा न करने वाला!”

“और फिर?” उसने सिगार उठाते हुए कहा।

“और फिर,” मैंने आगे कहा, “उसने ऐसी विपत्तियाँ झेलीं जिन पर दया नहीं आती थी — उसने उन्हें ऐसे भाव से सहा जिसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती थी — ऐसे अन्याय सहन किए जिनके लिए कोई सहानुभूति नहीं थी; अंत में उसने अपने शत्रु के सिर पर आग के अंगारे डालकर अमानवीय प्रतिशोध लिया।”

उन्होंने कहा, "तुमने मुझे सब कुछ नहीं बताया है।"

"लगभग सभी, मुझे लगता है: मैंने पेरे सिलास के अध्यायों के शीर्षों को इंगित किया है।"

"आप एक बात भूल गए हैं - वह बात जो शिष्य के स्नेहहीन स्वभाव - उसके कठोर, निर्मम, साधु जैसे हृदय को छूती थी।"

“सच है; मुझे अब याद आ गया। पिता सिलास ने कहा था कि उनका पेशा लगभग एक पुजारी जैसा था - कि उनका जीवन पवित्र माना जाता था।”

“किन बंधनों या कर्तव्यों के द्वारा?”

"अतीत के बंधनों और वर्तमान के परोपकार के माध्यम से।"

"तो, आपको पूरी स्थिति का पता है?"

मैंने अब महाशय को वह सब कुछ बता दिया है जो मुझे बताया गया था।

कुछ मिनट ध्यानमग्न अवस्था में बीत गए।

“अब, मैडमोजेल लूसी, मेरी ओर देखिए, और उस सत्य के साथ, जिसका आप जानबूझकर कभी उल्लंघन नहीं करतीं, मुझे एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। अपनी आँखें ऊपर उठाइए; मेरी आँखों में देखिए; संकोच न कीजिए; मुझ पर भरोसा करने से मत डरिए—मैं एक भरोसेमंद व्यक्ति हूँ।”

मैंने अपनी आँखें ऊपर उठाईं।

"मुझे अच्छी तरह से जानने के बाद - मेरे सभी अतीत, मेरी सभी जिम्मेदारियों को जानने के बाद - मेरी कमियों को लंबे समय से जानने के बाद, क्या हम अभी भी दोस्त रह सकते हैं?"

"यदि महोदय मुझमें मित्रता चाहते हैं, तो मुझे उनमें मित्रता पाकर प्रसन्नता होगी।"

लेकिन मेरा मतलब एक घनिष्ठ मित्र से है— अंतरंग और सच्चा— खून के रिश्ते को छोड़कर हर तरह से रिश्तेदार। क्या मिस लूसी एक बहुत ही गरीब, बंधनों में जकड़े, बोझ से दबे और परेशान आदमी की बहन होंगी?

मैं शब्दों में उसका उत्तर नहीं दे सका, फिर भी मुझे लगता है कि मैंने उसे उत्तर दे

दिया; उसने मेरा हाथ थाम लिया, जिसे उसके हाथ के सहारे सुकून मिला। उसकी मित्रता कोई संदेहास्पद, अस्थिर लाभ नहीं थी— कोई ठंडी, दूर की आशा नहीं थी—कोई ऐसी भावना नहीं थी जो उंगली का भार भी न सह सके: मैंने तुरंत महसूस किया (या मुझे लगा कि मैंने महसूस किया) कि उसका सहारा किसी चट्टान की तरह था।

“जब मैं दोस्ती की बात करता हूँ, तो मेरा मतलब सच्ची दोस्ती से है,” उसने ज़ोर देकर दोहराया; और मुझे मुश्किल से विश्वास हो रहा था कि इतने गंभीर शब्द मेरे कानों तक पहुँचे; मुझे उसकी उस दयालु, चिंतित नज़र की सच्चाई पर मुश्किल से यकीन हो रहा था। अगर वह सचमुच मेरा विश्वास और सम्मान चाहता था, और सचमुच मुझे अपना सम्मान देगा — तो मुझे लगा कि जीवन इससे बेहतर कुछ नहीं दे सकता। उस स्थिति में, मैं मजबूत और समृद्ध हो गया था: एक पल में मैं सचमुच खुश हो गया था। इस तथ्य को पुख्ता करने के लिए, इसे पक्का करने के लिए, मैंने पूछा —

"क्या महोदय वाकई गंभीर हैं? क्या उन्हें सच में लगता है कि उन्हें मेरी ज़रूरत है, और क्या वे मुझमें एक बहन की तरह रुचि ले सकते हैं?"

“निश्चित रूप से, निश्चित रूप से,” उसने कहा; “मुझ जैसा अकेला आदमी, जिसकी कोई बहन नहीं है, किसी स्त्री के हृदय में बहन का सच्चा स्नेह पाकर बहुत प्रसन्न होगा।”

और क्या मैं महाशय की कृपा पर भरोसा कर सकता हूँ? क्या मैं उनसे तब बात कर सकता हूँ जब मेरा मन करे?

“मेरी छोटी बहन को खुद ही प्रयोग करने होंगे,” उसने कहा; “मैं कोई वादा नहीं करूँगा। उसे अपने मनमौजी भाई को तब तक चिढ़ाना और आज़माना होगा जब तक वह उसे अपनी इच्छानुसार न ढाल ले। आख़िरकार, कुछ लोगों के हाथों में वह कोई आसानी से प्रभावित होने वाली वस्तु नहीं है।”

जब वह बोल रहा था, उसकी आवाज़ का लहजा, उसकी अब स्नेही आँखों की चमक, मुझे ऐसा आनंद दे रही थी जैसा मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया था। मुझे किसी लड़की के प्रेमी से, किसी दुल्हन के दूल्हे से, किसी पत्नी के पति से ईर्ष्या नहीं थी; मैं अपने इस स्वेच्छा से, निस्वार्थ मित्र से संतुष्ट थी। अगर वह भरोसेमंद साबित हो जाए, और वह भरोसेमंद लग भी रहा था, तो उसकी दोस्ती के अलावा मैं और क्या चाह सकती हूँ? लेकिन, अगर सब कुछ एक सपने की तरह गायब हो जाए, जैसा कि

पहले एक बार हुआ था — ?

“तो फिर क्या बात है?” उसने कहा, जैसे ही यह विचार मेरे दिल पर भारी पड़ा, मेरे चेहरे पर उदासी छा गई। मैंने उसे बताया; और एक पल के विराम और एक विचारशील मुस्कान के बाद, उसने मुझे दिखाया कि कैसे एक समान डर—कहीं मैं उससे ऊब न जाऊँ, एक ऐसे व्यक्ति से जिसका मिजाज इतना कठिन और अस्थिर है—उसके मन में एक दिन या एक महीने से अधिक समय से मंडरा रहा था।

यह सुनकर मुझे एक शांत साहस मिला। मैंने उसे दिलासा देने के लिए कुछ शब्द कहे। वह शब्द न केवल सहन किया गया, बल्कि उसे दोहराने के लिए प्रोत्साहित भी किया गया। उसे सुरक्षित, संतुष्ट और शांत देखकर मुझे बहुत खुशी हुई—अजीब सी खुशी। कल तक तो मैं विश्वास ही नहीं कर सकती थी कि धरती पर ऐसे पल भी होते हैं, या जीवन में ऐसे पल भी मिलते हैं, जैसे मैं अब जी रही थी। अनगिनत बार मैंने आशंका भरे दुख को करीब आते देखा था; लेकिन अनचाही खुशी को साकार होते, जगह पाते और पल-पल बीतते उसके और करीब आते देखना सचमुच एक नया अनुभव था।

एम. पॉल ने धीमी आवाज़ में और मेरा हाथ पकड़े हुए कहा, "लूसी, क्या तुमने पुराने घर के बेडरूम में कोई तस्वीर देखी?"

“मैंने बनाया था; एक पैनल पर एक चित्र चित्रित किया था।”

“क्या यह किसी नन का चित्र है?”

"हाँ।"

"क्या आपने उसका इतिहास सुना है?"

"हाँ।"

"तुम्हें याद है हमने उस रात बरसेउ में क्या देखा था?"

मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा।

“आपने दोनों विचारों को आपस में नहीं जोड़ा; क्या यह मूर्खता होगी?”

मैंने कहा, "जब मैंने वह चित्र देखा तो मुझे उस प्रेत की याद आ गई"; जो कि काफी हद तक सच था।

“तुमने कभी यह नहीं सोचा था, और न ही तुम सोचोगे,” उसने आगे कहा, “कि स्वर्ग में बैठी कोई संत धरती के झगड़ों से परेशान होती है? प्रोटेस्टेंट लोग शायद ही कभी अंधविश्वासी होते हैं; ये निरर्थक कल्पनाएँ तुम्हें परेशान नहीं करेंगी?”

मुझे नहीं पता कि इस मामले के बारे में क्या सोचना चाहिए; लेकिन मुझे विश्वास है कि इस रहस्यमय समस्या का एक बिल्कुल स्वाभाविक समाधान एक दिन अवश्य मिल जाएगा।

“निस्संदेह, निस्संदेह। इसके अलावा, कोई भी नेक महिला—खासकर कोई पवित्र, प्रसन्न आत्मा—हमारे जैसे सौहार्द को क्यों भंग करेगी, है ना?”

इससे पहले कि मैं जवाब दे पाता, फिफाइन बेक अचानक अंदर आ गई, उसका चेहरा खिलखिला रहा था और वह अचानक चिल्लाई कि मुझे बुलाया जा रहा है। उसकी माँ शहर जा रही थी किसी अंग्रेज़ परिवार से मिलने, जिन्होंने एक विज्ञापन के लिए आवेदन किया था: उन्हें दुभाषिया के रूप में मेरी सेवाओं की आवश्यकता थी। यह व्यवधान अनुचित नहीं था: दिन के लिए बुराई ही काफी होती है; इस समय के लिए, उसकी अच्छाई ही काफी थी। फिर भी मैं एम. पॉल से पूछना चाहता था कि जिन "विकृत कल्पनाओं" के बारे में उन्होंने मुझे चेतावनी दी थी, क्या वे उनके स्वयं के दिमाग में भी चल रही थीं।

अध्याय 36.

कलह का कारण।

फिफाइन बेक की मां के अलावा, एक और शक्ति ने भी एम. पॉल और मुझसे कुछ कहा, इससे पहले कि उस मित्रता की प्रतिज्ञा को पुष्ट किया जा सके। हम एक अथक निगरानी में थे: रोम उस रहस्यमयी जाली के माध्यम से अपने बेटे पर ईर्ष्या से नज़र रख रहा था, जिसके सामने मैं कभी घुटने टेक चुका था, और जिसके पास एम. इमानुएल हर महीने आते थे - स्वीकारोक्ति कक्ष का खिसकने वाला पैनल।

पाठक पूछता है, "आप एम. पॉल के साथ मित्रता करके इतने प्रसन्न क्यों थे?

क्या वह लंबे समय से आपके मित्र नहीं थे? क्या उन्होंने अपने भावों में किसी प्रकार के पक्षपात का बार-बार प्रमाण नहीं दिया था?"

हाँ, उसने कहा था; फिर भी मुझे उसकी ये बात सुनना अच्छा लगता था कि वो मेरा सच्चा और करीबी दोस्त है; मुझे उसकी विनम्रता और कोमल आदर अच्छा लगता था— वो भरोसा जो टिकने के लिए तरसता था और जब उसे सिखाया जाता था कि कैसे टिकना है तो वो शुक्रगुजार होता था। उसने मुझे "बहन" कहा था। ये ठीक था। हाँ; वो मुझे जो चाहे कह सकता था, बशर्ते वो मुझ पर भरोसा करे। मैं उसकी बहन बनने को तैयार थी, बशर्ते वो मुझे अपनी भावी पत्नी के साथ ये रिश्ता निभाने के लिए न कहे; और उसने चुपचाप ब्रह्मचर्य का व्रत लिया था, इसलिए इस दुविधा में कोई खतरा नहीं दिखता था।

अगली रात का अधिकांश समय मैं उस शाम की मुलाकात के बारे में सोचता रहा। मैं सुबह होने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, और फिर घंटी बजने की प्रतीक्षा करता रहा; और उठने और कपड़े पहनने के बाद, मुझे प्रार्थना और नाश्ता धीमा और हर घंटा लंबा लगता रहा, जब तक कि वह पल नहीं आ गया जिसने मुझे साहित्य का पाठ पढ़ाया। मेरी इच्छा इस भाईचारे के बंधन को और गहराई से समझने की थी: यह देखना कि जब हम दोबारा मिलेंगे तो वह भाई की तरह व्यवहार करेगा; यह साबित करना कि मेरे अपने भावों में बहन की कितनी झलक है; यह पता लगाना कि क्या मैं बहन का साहस और वह भाई की स्पष्टवादिता दिखा सकता हूँ।

वह आ गया। जीवन की रचना ही ऐसी है कि घटना अपेक्षा के अनुरूप नहीं होती, न हो सकती है, न होगी। उस पूरे दिन उसने मुझसे बात तक नहीं की। उसका पाठ सामान्य से कहीं अधिक शांत, सौम्य और गंभीर था। वह अपने विद्यार्थियों के प्रति पिता तुल्य था, पर मेरे प्रति भाई तुल्य नहीं। कक्षा छोड़ने से पहले, मुझे एक मुस्कान की उम्मीद थी, कम से कम एक शब्द की; मुझे न तो मुस्कान मिली और न ही कुछ: मेरी ओर उसने बस एक हल्की सी मुस्कान दी - जल्दबाजी में, शरमाते हुए।

मैंने तर्क दिया कि यह दूरी आकस्मिक है—यह अनैच्छिक है; धैर्य रखो, और यह गायब हो जाएगी। लेकिन यह गायब नहीं हुई; यह कई दिनों तक बनी रही; बल्कि बढ़ती ही गई। मैंने अपने आश्चर्य को दबाया और जो भी अन्य भावनाएँ उमड़ने लगीं, उन्हें भी निगल लिया।

जब उसने भाईचारे का प्रस्ताव रखा, तो मेरा यह पूछना जायज़ था— “क्या मैं

आप पर भरोसा कर सकती हूँ?" वह, निस्संदेह स्वयं को भलीभांति जानते हुए, कोई भी वादा करने से इनकार कर सकता था। सच है, उसने मुझे अपने प्रयोग करने—उसे चिढ़ाने और परखने—के लिए कहा था। व्यर्थ का आदेश! नाममात्र का विशेषाधिकार, अनुपलब्ध! कुछ औरतें इसका लाभ उठा सकती थीं! मेरी शक्ति या सहज ज्ञान में ऐसा कुछ भी नहीं था जो मुझे इस साहसी समूह में शामिल होने के लिए प्रेरित करता। अकेले रह जाने पर, मैं निष्क्रिय थी; घृणा से घिरी हुई, मैं पीछे हट गई; भुला दी गई— मेरे होंठ कुछ नहीं बोले, न ही मेरी आँखें कोई संकेत दे पाईं। ऐसा लगा जैसे मेरी गणनाओं में कहीं कोई त्रुटि हो गई थी, और मैं समय का इंतज़ार कर रही थी ताकि वह उसे उजागर कर सके।

लेकिन वह दिन आ ही गया जब हमेशा की तरह उन्हें मुझे पढ़ाना था। सात शामों में से एक शाम वे मुझे बड़ी उदारता से देते थे, जिसे वे पिछले सप्ताह के दौरान विभिन्न अध्ययनों की समीक्षा और आने वाले सप्ताह के कार्य की तैयारी के लिए समर्पित करते थे। इन अवसरों पर मेरा कक्षा कक्ष कहीं भी हो सकता था, जहाँ भी विद्यार्थी और अन्य शिक्षक मौजूद होते थे, या उनके आस-पास ही, अक्सर बड़े द्वितीय श्रेणी के भवन में, जहाँ दिन के विद्यार्थियों की अनुपस्थिति में एक शांत कोना चुनना आसान होता था, और कुछ ही बोर्डिंग छात्र निरीक्षक के बरामदे के आसपास इकट्ठा होते थे।

हर शाम, समय की सामान्य घंटी बजते ही, मैंने अपनी किताबें और कागज, कलम और स्याही इकट्ठा की और बड़े विभाग की ओर चल पड़ा।

कक्षा में कोई नहीं था, और चारों ओर ठंडी गहरी छाया छाई हुई थी; लेकिन खुले दोहरे दरवाजों से गलियारे में विद्यार्थियों और प्रकाश से भरा हॉल दिखाई दे रहा था; हॉल और लोगों पर पश्चिम की ओर ढलता सूरज चमक रहा था। वह इतना चटख और जीवंत था कि दीवारों के रंग और पोशाकों के विभिन्न रंग एक ही गर्म चमक में विलीन हो गए प्रतीत हो रहे थे। लड़कियाँ बैठी हुई थीं, काम कर रही थीं या पढ़ाई कर रही थीं; उनके समूह के बीच में एम. इमानुएल एक शिक्षक से हंसमुख ढंग से बात कर रहे थे। उनके गहरे रंग के चेहरे और काले बालों में लाल रंग की कई झलकियाँ थीं; जब उन्होंने क्षण भर के लिए अपना स्पेनिश चेहरा घुमाया, तो सूरज की जीवंत किरणों का जवाब एक जीवंत मुस्कान से दिया। मैंने एक डेस्क पर अपनी जगह ले ली।

संतरे के पेड़ और कई अन्य पौधे, खिले हुए और चमकीले फूलों से लदे हुए, सूरज

की खिलखिलाती धूप का आनंद ले रहे थे; उन्होंने दिनभर धूप का लुत्फ़ उठाया था और अब पानी माँग रहे थे। श्री इमानुएल को बागवानी का शौक था; उन्हें पौधों की देखभाल करना और उन्हें पालना-पोसना अच्छा लगता था। मुझे लगता था कि फावड़े या पानी के बर्तन से झाड़ियों के बीच काम करना उनके मन को सुकून देता था; यह एक ऐसा शौक था जिसका वे अक्सर सहारा लेते थे; और अब उन्होंने संतरे के पेड़ों, जेरेनियम के पौधों और खूबसूरत कैक्टस की ओर देखा और उन्हें वह ताज़गी दी जिसकी उन्हें सूखे से ज़रूरत थी। इस बीच उनके होठों पर उनकी कीमती सिगार टिकी हुई थी, जो (उनके लिए) जीवन की पहली और सबसे ज़रूरी विलासिता थी; शाम की रोशनी में उसके नीले घेरे फूलों के बीच खूबसूरती से लहरा रहे थे। वह विद्यार्थियों या शिक्षिकाओं से और बात नहीं करता था, लेकिन एक छोटे से स्पैनियल कुत्ते (अगर ऐसा शब्द गढ़ा जा सकता है) को बहुत प्यार भरे शब्द कहता था, जो नाममात्र के लिए तो उस घर का हिस्सा था, लेकिन असल में उसे अपना मालिक मानता था, क्योंकि वह उसे बाकी सभी से ज़्यादा प्यार करता था। वह एक नाज़ुक, रेशमी, प्यारी और स्नेहपूर्ण छोटी कुतिया थी, जो उसके बगल में दौड़ती रहती थी, भावपूर्ण, स्नेह भरी आँखों से उसके चेहरे को देखती रहती थी; और जब भी वह खेल-खेल में अपना बोनट-ग्रेक या रूमाल गिरा देता, तो वह उसके पास ऐसे दुबक जाता जैसे कोई छोटा शेर किसी राज्य के झंडे की रक्षा कर रहा हो।

वहाँ बहुत सारे पौधे थे, और शौकिया माली अपने हाथों से आंगन में स्थित कुएँ से सारा पानी भर रहा था, इसलिए उसका काम काफी देर तक चलता रहा। स्कूल की बड़ी घड़ी टिक-टिक करती रही। एक और घंटा बज गया। चबूतरा और युवाओं का समूह सूर्यास्त के भ्रम से बाहर निकल गया। दिन ढल रहा था। मुझे लगा कि आज रात मेरा पाठ बहुत छोटा होगा; लेकिन अब संतरे के पेड़, कैक्टस, कैमेलिया, सबका काम हो चुका था। क्या अब मेरी बारी थी?

अफसोस! बगीचे में और भी पौधे थे जिनकी देखभाल करनी थी—पसंदीदा गुलाब की झाड़ियाँ, कुछ खास फूल; छोटी सिल्वी की खुशी भरी भौंक और सिसकियाँ गलियों में ढलते अंधेरे का पीछा करती रहीं। मैंने अपनी कुछ किताबें समेट लीं; मुझे उन सबकी ज़रूरत नहीं थी; मैं बैठ कर सोचने लगी; और इंतज़ार करती रही, अनजाने में ही शाम के बढ़ते अंधेरे को कोसती रही।

खुशी से उछलती-कूदती सिल्वी एक बार फिर सामने आई, मानो लौटते हुए

पैलेटोट (पानी का घड़ा) की सूचना दे रही हो; कुएँ के पास पानी का घड़ा रख दिया गया था; उसने अपना काम पूरा कर दिया था; मैं कितनी खुश थी! महोदय ने एक छोटे से पत्थर के कटोरे में हाथ धोए। अब पाठ के लिए समय नहीं था; जल्द ही प्रार्थना की घंटी बजनी थी; लेकिन फिर भी हमें मिलना था; वह बात करेंगे; उनकी आँखों में छिपी शर्म को समझने का मौका मिलेगा। स्नान करने के बाद, वह खड़े हुए, धीरे-धीरे अपनी कफ़ ठीक करते हुए, नीले आकाश में हल्के रंग में डूबे युवा चंद्रमा के सींग को देख रहे थे, जो जीन बैपटिस्ट की खिड़की पर हल्की सी झिलमिला रहा था। सिल्वी ने उनके चिंतनशील वातावरण को देखा; उसकी खामोशी उसे परेशान कर रही थी; वह उसे तोड़ने के लिए रोने और उछलने लगी। उन्होंने नीचे देखा।

"पेटिट एक्सिजिएंट," उसने कहा; "ऐसा लगता है कि तुम्हें एक पल के लिए भी भुलाया नहीं जाना चाहिए।"

वह रुका, उसे अपनी बाहों में उठाया, आंगन पार करते हुए धीरे-धीरे चला, खिड़कियों की कतार से एक गज की दूरी पर, जिनमें से एक के पास मैं बैठा था: वह धीरे-धीरे चलता रहा, अपनी छाती से स्पैनियल को सहलाता रहा, कोमल स्वर में उसे प्यार से पुकारता रहा। सामने के दरवाजे की सीढ़ियों पर वह मुड़ा; एक बार फिर उसने चाँद को देखा, धूसर गिरजाघर को, दूर के मीनारों और घरों की छतों को जो रात के धुंध के नीले सागर में विलीन हो रही थीं; उसने शाम की मीठी हवा का स्वाद लिया, और बगीचे के मुरझाए हुए फूलों को देखा; उसने अचानक चारों ओर देखा; उसकी आँख से निकली एक तीखी किरण ने सफेद दीवारों को रोशन कर दिया, और लंबी कतार को पार कर गई। मुझे लगता है उसने झुककर अभिवादन किया; अगर किया भी, तो मेरे पास शिष्टाचार का जवाब देने का समय नहीं था। पल भर में वह चला गया; चाँदनी से जगमगाती दहलीज बंद दरवाजे के सामने फीकी और छायाहीन पड़ी थी।

मेरे सामने मेज पर जो कुछ भी फैला हुआ था, उसे मैंने अपनी बाहों में समेट लिया और बचे हुए ढेर को वापस तीसरी श्रेणी में उसकी जगह पर रख दिया। प्रार्थना की घंटी बजी; मैंने उसकी पुकार का पालन किया।

कल वो रू फॉसेट वापस नहीं लौट पाएगा, क्योंकि वो पूरा दिन उसके कॉलेज में ही बीता था। मैंने अपना अध्यापन कार्य पूरा किया; बीच के घंटे भी गुज़ारे; शाम ढलती देखी और उसकी उदासी के लिए खुद को तैयार किया। अपने सहपाठियों के

साथ रहना बुरा था या अकेले बैठना, मैंने इस पर विचार नहीं किया था; स्वाभाविक रूप से मैंने दूसरा विकल्प चुना; अगर किसी क्षण के लिए भी आराम की कोई उम्मीद थी, तो इस घर में किसी भी इंसान का दिल या दिमाग उसे नहीं दे सकता था; केवल मेरी मेज के ढक्कन के नीचे ही वह आशा छिपी हो सकती थी, किसी किताब के पन्नों के बीच, पेंसिल की नोक को चमकाते हुए, कलम की निब को, या स्याही की बोतल में काले रंग को रंगते हुए। भारी मन से मैंने अपनी मेज का ढक्कन खोला; थके हुए हाथों से मैंने उसके अंदर की चीज़ें पलटीं।

एक-एक करके, जानी-पहचानी किताबों को, परिचित आवरणों में लिपटी किताबों को, निकाला गया और निराशा से वापस रख दिया गया: उनमें कोई आकर्षण नहीं था; वे कोई सुकून नहीं दे सकती थीं। क्या यह बैंगनी रंग का पर्चा कुछ नया है? मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा था, और मैंने आज ही दोपहर को अपनी मेज को फिर से व्यवस्थित किया था; यह पर्चा पिछले एक घंटे के भीतर ही रखा गया होगा, जब हम रात का खाना खा रहे थे।

मैंने उसे खोला। वह क्या था? वह मुझसे क्या कहेगा?

यह न तो कोई कहानी थी, न कविता, न निबंध, न इतिहास; न इसे गाया गया, न सुनाया गया, न इस पर चर्चा की गई। यह एक धार्मिक रचना थी; इसने उपदेश दिया और लोगों को प्रेरित किया।

मैंने बड़ी खुशी से उसे सुना, क्योंकि वह छोटी सी किताब अपने आप में एक जादू थी और मेरा ध्यान तुरंत उस पर केंद्रित हो गया। वह रोमनवाद का प्रचार करती थी; वह धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करती थी। उस चतुर छोटी सी किताब की आवाज़ मीठी थी; उसके लहजे में स्नेह और मरहम था। उसमें रोम की गर्जना या उसके क्रोध की कोई झलक नहीं थी। प्रोटेस्टेंट को पोपवादी बनना था, विधर्मी के नरक के भय से नहीं, बल्कि पवित्र चर्च द्वारा दिए गए आराम, अनुग्रह और कोमलता के कारण: उसका उद्देश्य धमकाना या ज़बरदस्ती करना नहीं था; उसकी इच्छा मार्गदर्शन करना और जीतना थी। क्या वह सताती थी? बिलकुल नहीं! किसी भी कीमत पर नहीं!

यह कोमल रचना कठोर और सांसारिक लोगों के लिए नहीं थी; यह बलवानों के लिए भी कठोर भोजन नहीं थी: यह नन्हे-मुन्नों के लिए दूध के समान थी: एक माँ का अपने सबसे कोमल और छोटे बच्चे के प्रति कोमल प्रेम का प्रवाह; पूरी तरह से और केवल उन्हीं के लिए थी जिनके मस्तिष्क तक हृदय के माध्यम से पहुँचा जा सकता है।

इसका आह्वान बुद्धि से नहीं था; इसका उद्देश्य स्नेहियों को उनकी भावनाओं के माध्यम से, सहानुभूति रखने वालों को उनकी सहानुभूति के माध्यम से जीतना था: संत विंसेंट डी पॉल ने अपने अनाथ बच्चों को अपने चारों ओर इकट्ठा करते हुए इससे अधिक मधुरता से कभी नहीं बोला।

मुझे याद है कि धर्मत्याग के लिए एक बड़ा प्रलोभन यह था कि जिन कैथोलिकों ने अपने प्रिय मित्रों को खो दिया है, वे उनके लिए प्रार्थना करके नरक से मुक्ति पाकर असीम शांति पा सकते हैं। लेखक ने उन लोगों की अधिक दृढ़ शांति का उल्लेख नहीं किया जिनकी आस्था नरक की अवधारणा को पूरी तरह से नकार देती है: लेकिन मैंने इस बारे में सोचा; और कुल मिलाकर, मैंने बाद वाले सिद्धांत को सबसे अधिक सांत्वनादायक पाया। उस छोटी सी किताब ने मेरा मनोरंजन किया, और मुझे बहुत अधिक निराश नहीं किया। यह एक पाखंडी, भावुक, सतही सी किताब थी, फिर भी इसमें कुछ ऐसा था जिसने मेरे उदासी भरे मन को हल्का किया और मुझे मुस्कुराने पर मजबूर किया; मैं ऊन में लिपटे उस भोले-भाले भेड़िये के बच्चे की उछल-कूद से खुश था, जो एक भोले-भाले मेमने की मिमियाहट की नकल कर रहा था। इसके कुछ अंशों ने मुझे कुछ वेस्लेयन मेथोडिस्ट लेखों की याद दिला दी जो मैंने बचपन में पढ़े थे; उनमें भी कट्टरता को उकसाने वाला लगभग वैसा ही मसाला था। जिसने इसे लिखा था, वह कोई बुरा आदमी नहीं था, और यद्यपि वह लगातार अपनी धूर्तता का परिचय देता रहता था—जो उसकी कार्यप्रणाली का कुटिल पहलू था—फिर भी मुझे उस पर बेईमानी का आरोप लगाने से पहले रुकना चाहिए। हालाँकि, उसका निर्णय कमज़ोर था; वह दोषपूर्ण था।

सात पहाड़ियों की उस लाल-लाल बूढ़ी औरत से मिल रहे मातृत्व के इस स्नेह को देखकर मेरे चेहरे पर मुस्कान आ गई; साथ ही, इन प्रेम निवेदनों को स्वीकार करने की अपनी अनिच्छा, बल्कि कहें तो अपनी अक्षमता पर भी मैं मुस्कुराया। शीर्षक पृष्ठ पर नज़र डालते ही मुझे "पिता सिलास" का नाम मिला। एक छोटे से पृष्ठ पर पेंसिल से छोटे, लेकिन स्पष्ट और जाने-माने अक्षरों में लिखा था: "पी. सी. डी. ई. से एल-वाई तक।" और इसे देखकर मैं हँस पड़ा: लेकिन अपने पुराने अंदाज़ में नहीं। मुझे नई ऊर्जा मिली।

मेरे मन और दृष्टि से अचानक एक गहरा भ्रम दूर हो गया; स्फिंक्स की पहेली सुलझ गई; पेरे सिलास और पॉल इमानुएल, इन दो नामों के मेल ने सारी बात स्पष्ट

कर दी। पश्चात्तापी अपने गुरु के साथ था; उसे कुछ भी छिपाने की अनुमति नहीं थी; उसे अपने हृदय के किसी भी कोने को ईश्वर और स्वयं के लिए पवित्र रखने की छूट नहीं थी; हमारी पिछली मुलाकात का पूरा वृत्तांत उसने ही बताया था; उसने भाईचारे की प्रतिज्ञा स्वीकार की थी और अपनी दत्तक बहन के बारे में बात की थी। भला चर्च इस प्रतिज्ञा, इस दत्तक ग्रहण को कैसे मान्यता दे सकता है? एक विधर्मी के साथ भाईचारा! मुझे ऐसा लगा जैसे पेरे सिलास उस अपवित्र समझौते को रद्द कर रहे हों; अपने पश्चात्तापी को इसके खतरों से आगाह कर रहे हों; विनती कर रहे हों, संयम बरतने का आदेश दे रहे हों, बल्कि अपने पद के अधिकार से, और एम. इमानुएल के सबसे प्रिय और पवित्र माने जाने वाले सभी लोगों के नाम और स्मृति से, उस नई व्यवस्था को लागू करने का आदेश दे रहे हों जिसकी ठंड ने मेरी हड्डियों तक को भेद दिया था।

ये परिकल्पनाएँ शायद सुखद न लगें; फिर भी, तुलनात्मक रूप से, इनका स्वागत किया गया। पृष्ठभूमि में मंडराते एक रहस्यमय उपद्रवी की कल्पना, स्वयं एम. पॉल में उत्पन्न होने वाले स्वतःस्फूर्त परिवर्तन के भय के सामने नगण्य थी।

इतने समय बीत जाने के बाद, मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि उपरोक्त अनुमान कितने हद तक स्वयं-प्रेरित थे या किस हद तक उनकी उत्पत्ति और पुष्टि किसी अन्य स्रोत से हुई थी। सहायता की कोई कमी नहीं थी।

आज शाम सूरज की रोशनी तेज़ नहीं थी: पश्चिम और पूर्व एक ही बादल से घिरे थे; गर्मियों की रात की धुंध भी नहीं थी, नीली, फिर भी गुलाबी रंगत वाली, जो दूरी को धुंधला कर देती; दलदल से उठती चिपचिपी धुंध विलेट के चारों ओर धूसर रंग में फैल रही थी। आज रात पानी का घड़ा कुएँ के पास अपनी जगह पर रखा रहेगा: दोपहर भर हल्की-हल्की बारिश होती रही थी, और अभी भी तेज़ और चुपचाप हो रही थी। यह मौसम गीली गलियों में, टपकते पेड़ों के नीचे घूमने के लिए ठीक नहीं था; और मुझे बगीचे में सिल्वी का अचानक भौंकना सुनाई देने लगा - उसका स्वागत का भौंकना। यकीनन उसके साथ कोई नहीं था, फिर भी यह खुश और तेज़ भौंकना केवल एक ही उपस्थिति के सम्मान में ही सुनाई देता था।

कांच के दरवाजे और मेहराबदार बरामदे से, मुझे रक्षा पंक्ति का विशाल दृश्य दिखाई दे रहा था: तभी सिल्वी दौड़ती हुई आई, जो अंधेरे में सफेद गुलाब की तरह चमक रही थी। वह इधर-उधर भागती, गुनगुनाती, उछलती-कूदती और झाड़ियों में बैठे

छोटे पक्षियों को परेशान करती हुई। मैंने पाँच मिनट तक उसे देखा; शगुन का कोई परिणाम नहीं निकला। मैं अपनी किताबों में वापस लौट गया; सिल्वी का तेज भौंकना अचानक बंद हो गया। मैंने फिर ऊपर देखा। वह कुछ ही गज की दूरी पर खड़ी थी, अपनी सफेद पंखों वाली पूंछ को पूरी तेज़ी से हिला रही थी, और एक अथक हाथ द्वारा चलाए जा रहे फावड़े को ध्यान से देख रही थी। वहाँ श्री इमानुएल झुके हुए थे, बारिश से लदी और बहती झाड़ियों के बीच गीली मिट्टी में खुदाई कर रहे थे, मानो उन्हें अपनी दिनभर की कमाई माथे के पसीने से कमानी हो।

इस संकेत में मुझे बेचैनी झलकती है। वह कड़ाके की ठंड में भी, जब भी किसी पीड़ादायक भावना से व्याकुल होता, चाहे वह तंत्रिका उत्तेजना हो या आत्मनिंदा के दुखद विचार, जमी हुई बर्फ में इसी तरह खोदता रहता था। वह घंटों तक माथे पर शिकन और दांत भींचकर खोदता रहता था, एक बार भी अपना सिर नहीं उठाता था और न ही अपने होंठ खोलता था।

सिल्वी थकने तक देखती रही। फिर से टेढ़े-मेढ़े तरीके से इधर-उधर भागती, उछलती-कूदती, हर जगह सूंघती और सूंघती हुई; आखिरकार उसने मुझे कक्षा में देख लिया। तुरंत ही वह खिड़कियों पर भौंकने लगी, मानो मुझे अपने सुख या अपने मालिक के परिश्रम में शामिल होने के लिए बुला रही हो; उसने मुझे कभी-कभी उस गली में एम. पॉल के साथ चलते देखा था; और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसने भीगते हुए भी अब उनके साथ जाना अपना कर्तव्य समझा होगा।

उसने इतना शोर मचाया कि एम. पॉल ने आखिरकार ऊपर देखा और समझ गए कि वह क्यों और किसके लिए भौंक रही थी। उन्होंने सीटी बजाकर उसे शांत करने की कोशिश की; लेकिन वह और भी ज़ोर से भौंकने लगी। ऐसा लग रहा था मानो वह कांच का दरवाज़ा खुलवाने पर तुली हुई हो। शायद उसकी ज़िद से तंग आकर, उन्होंने अपना फावड़ा नीचे फेंक दिया, पास गए और दरवाज़ा थोड़ा सा खोल दिया। सिल्वी पूरी तेज़ी से अंदर घुस आई, मेरी गोद में कूद पड़ी और अपने पंजे मेरी गर्दन पर रखकर, अपनी छोटी सी नाक और जीभ को मेरे चेहरे, मुंह और आंखों पर ज़बरदस्ती घुमाते हुए, अपनी घनी पूंछ को मेज पर लहराया और किताबें और कागज़ इधर-उधर बिखेर दिए।

एम. इमानुएल शोर को शांत करने और अव्यवस्था को ठीक करने के लिए आगे बढ़े। किताबें समेटने के बाद, उन्होंने सिल्वी को पकड़ा और उसे अपने पैलेटोट के नीचे

छिपा दिया, जहाँ वह चूहे की तरह चुपचाप दुबकी रही, बस उसका सिर थोड़ा सा बाहर झाँकता रहा। वह बहुत छोटी थी, उसका चेहरा बेहद मासूम और प्यारा था, उसके कान रेशमी और लंबे थे, और उसकी आँखें दुनिया की सबसे खूबसूरत काली आँखें थीं। मैंने उसे कभी नहीं देखा, लेकिन मुझे पॉलिना डी बासोम्पियर की याद आ गई: पाठक, इस तुलना के लिए क्षमा करें, यह स्वाभाविक है।

एम. पॉल ने उसे प्यार से सहलाया और थपथपाया; उसे मिलने वाले स्नेह में कोई आश्चर्य की बात नहीं थी; वह अपनी सुंदरता और जीवंत जीवन से स्नेह को आमंत्रित करती थी।

स्पैनियल को सहलाते हुए, उसकी नज़र अभी-अभी रखे गए कागज़ों और किताबों पर घूमी; उसकी नज़र धार्मिक पर्चे पर टिक गई। उसके होंठ हिले; उसने बोलने की इच्छा को आधा दबा लिया। क्या! क्या उसने मुझसे फिर कभी बात न करने का वादा किया था? अगर ऐसा था, तो उसकी अच्छी भावना ने कहा कि यह वादा "पालन से ज़्यादा उल्लंघन" था, क्योंकि उसने दोबारा कोशिश करके कहा — "मुझे लगता है कि आपने अभी तक ब्रोशर नहीं पढ़ा है? क्या यह उतना आकर्षक नहीं है?"

मैंने जवाब दिया कि मैंने इसे पढ़ लिया है।

वह इंतज़ार कर रहे थे, मानो मुझसे बिना पूछे ही इस पर राय चाहते हों। लेकिन बिना पूछे, मैं कुछ भी करने या कहने के मूड में नहीं थी। अगर कोई रियायत देनी होती —अगर कोई मांग करनी होती—तो यह तो परम पूज्य सिलास के उस विनम्र शिष्य का मामला था, मेरा नहीं। उनकी नज़र मुझ पर धीरे से टिकी: उस पल उनकी नीली आँखों में कोमलता थी—चिंता थी—दया की एक झलक थी; कई अर्थ मिले-जुले और विरोधाभासी थे—निंदा पश्चाताप में बदल रही थी। शायद उस पल, वह मुझमें कुछ भावुकता देखकर खुश होते। मैं उसे दिखा नहीं सकी। लेकिन अगले ही पल, मैं उलझन ज़ाहिर कर देती, अगर मैंने अपनी मेज़ से कुछ कलम उठाकर उन्हें ठीक करना शुरू न किया होता।

मुझे पता था कि इस हरकत से उसका मिजाज बदल जाएगा। उसे मुझे कलम ठीक करते देखना कभी पसंद नहीं था; मेरा चाकू हमेशा कुंद रहता था— मेरा हाथ भी कुशल नहीं था; मैं बेतरतीब ढंग से काटता और छील देता था। इस बार मैंने जानबूझकर अपनी उंगली काट ली। मैं उसे उसकी स्वाभाविक स्थिति में वापस लाना चाहता था, उसे सहज महसूस कराना चाहता था, उसे डांटने के लिए उकसाना चाहता

था।

अंत में वह चिल्लाया, "बेवकूफ! वह अपने हाथों का चूर-चूर कर देगी।"

उसने सिल्वी को नीचे रख दिया, उसे अपने बोनट-ग्रेक के बगल में चुपचाप लेटने दिया, और मुझसे कलम और कलम चलाने वाला चाकू छीनकर, एक मशीन की सटीकता और तेजी से काटने, निब लगाने और नोक बनाने में जुट गया।

“क्या मुझे वह छोटी किताब पसंद आई?” उसने अब पूछा।

जम्हाई को दबाते हुए मैंने कहा कि मुझे इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है।

"क्या इसने मुझे प्रभावित किया?"

मुझे लगा कि इससे मुझे थोड़ी नींद आ रही है।

(थोड़ी देर रुककर:) “चलिए! उससे इस लहजे में बात करने का कोई फायदा नहीं था। मैं चाहे कितना भी बुरा क्यों न था—और उसे मेरी सारी कमियाँ एक ही बार में गिनानी पड़ें तो उसे अफ़सोस होना चाहिए—भगवान और प्रकृति ने मुझे ‘अत्यधिक संवेदनशीलता और सहानुभूति’ दी है, ताकि मैं इतनी मार्मिक अपील से गहराई से प्रभावित न हो सकूँ।”

“बिल्कुल!” मैंने झट से खुद को संभालते हुए जवाब दिया, “मुझ पर इसका ज़रा भी असर नहीं हुआ — जरा सा भी नहीं।”

और सबूत के तौर पर, मैंने अपनी जेब से एक बिल्कुल सूखा रूमाल निकाला, जो अभी भी साफ था और अपनी तहों में था।

इसके बाद मुझे कई तीखी फटकारें सुनने को मिलीं, जो शालीनता से कहीं अधिक तीखी थीं। मैंने बड़े उत्साह से सुना। उन दो दिनों की अस्वाभाविक चुप्पी के बाद, श्रीमान पॉल को अपने पुराने अंदाज़ में फिर से भाषण देते सुनना संगीत से भी बढ़कर था। मैंने सुना, और इस बीच मैंने और सिल्वी ने एक बोनबोनियर (एक प्रकार की मिठाई की टोकरी) से अपना मन बहलाया, जो श्रीमान इमानुएल के उपहारों से हमेशा भरी रहती थी: उन्हें यह देखकर प्रसन्नता होती थी कि उनके हाथों से बनी एक छोटी सी चीज़ की भी सराहना की जा रही है। जब हम मिठाई बाँट रहे थे, तो उन्होंने मेरी और स्पैनियल की ओर देखा; उन्होंने अपना कलम चाकू रख दिया। नए कटे हुए कलमों के बंडल से मेरे हाथ को छूते हुए उन्होंने कहा: — “तो बताओ, छोटी बहन — खुलकर बोलो — पिछले दो दिनों में तुमने मेरे बारे में क्या सोचा?”

लेकिन इस सवाल पर मैंने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया; इसके भाव से मेरी आँखें भर

आईं। मैंने सिल्वी को बड़े प्यार से सहलाया। एम. पॉल, डेस्क पर झुकते हुए, मेरी ओर मुड़े: “मैंने खुद को तुम्हारा भाई कहा था,” उन्होंने कहा: “मैं खुद को ठीक से नहीं जानता कि मैं क्या हूँ – भाई – दोस्त – मैं बता नहीं सकता। मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ – मैं तुम्हारे अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ – लेकिन मुझे खुद को रोकना होगा; तुमसे डरना चाहिए। मेरे सबसे अच्छे दोस्त खतरे की ओर इशारा करते हैं और सावधानी बरतने की सलाह देते हैं।”

अपने दोस्तों की बात सुनना सही है। लेकिन सावधानी जरूर बरतें।

“यह तुम्हारा धर्म है— तुम्हारा विचित्र, आत्मनिर्भर, अजेय मत, जिसका प्रभाव तुम्हें न जाने किस तरह के अपवित्र कवच में लपेटे हुए प्रतीत होता है। तुम अच्छे हो—पिता सिलास तुम्हें अच्छा कहते हैं और तुमसे प्रेम करते हैं—पर तुम्हारा भयानक, अभिमानी, गंभीर प्रोटेस्टेंटवाद, यही खतरा है। यह कभी-कभी तुम्हारी आँखों में झलकता है; और कभी-कभी, यह तुम्हें कुछ ऐसे लहजे और हाव-भाव देता है जिनसे मुझे डर लगता है। तुम भावप्रभु नहीं हो, फिर भी, अभी—जब तुमने वह पर्चा छुआ—हे भगवान! मुझे लगा जैसे लुसिफर मुस्कुरा रहा हो।”

"मैं उस लेख का बिल्कुल भी सम्मान नहीं करता - तो फिर क्या?"

“उस पर्चे का सम्मान नहीं? लेकिन यह आस्था, प्रेम और परोपकार का शुद्ध सार है! मुझे लगा था कि यह आपको प्रभावित करेगा: इसकी कोमलता में, मुझे विश्वास था कि यह व्यर्थ नहीं जाएगा। मैंने इसे आपकी मेज पर एक प्रार्थना के साथ रखा: मैं वास्तव में पापी हूँ: स्वर्ग मेरे हृदय से निकली हार्दिक प्रार्थनाओं को नहीं सुनेगा। आप मेरी छोटी सी भेंट का तिरस्कार करते हैं। ओह, इससे मुझे बहुत दुख होता है!”

“महाशय, मैं इसे तुच्छ नहीं समझता—कम से कम आपके उपहार के रूप में तो बिल्कुल नहीं। महाशय, बैठ जाइए; मेरी बात सुनिए। मैं नास्तिक नहीं हूँ, मैं कठोर हृदय वाला नहीं हूँ, मैं ईसाई विरोधी नहीं हूँ, मैं खतरनाक नहीं हूँ, जैसा कि लोग आपको बताते हैं; मैं आपके विश्वास को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता; आप ईश्वर, मसीह और बाइबल में विश्वास करते हैं, और मैं भी।”

लेकिन क्या आप बाइबल में विश्वास करते हैं? क्या आपको ईश्वरीय संदेश प्राप्त होते हैं? आपके देश और संप्रदाय की इस बेपरवाह और निर्भीक हरकत की कोई सीमा नहीं है। पिता सिलास ने कुछ गंभीर संकेत दिए थे।

अपनी समझाने-बुझाने की क्षमता से मैंने उनसे इन संकेतों को आंशिक रूप से

स्पष्ट करवाया; ये चालाकी भरे जेसुइट-निंदा के समान थे। उस रात एम. पॉल और मैंने गंभीरता से और गहनता से बात की। उन्होंने निवेदन किया, उन्होंने तर्क दिए। मैं तर्क नहीं दे सका—यह एक सौभाग्यशाली अक्षमता थी; निर्देशक जो कुछ भी चाहते थे, उसे पूरा करने के लिए केवल विजयी, तार्किक विरोध ही पर्याप्त था; लेकिन मैं अपने तरीके से बात कर सकता था—जिस तरह से एम. पॉल को बात करने की आदत थी—और जिसे वे मेरी बातों को समझ सकते थे, अंतरालों को भर सकते थे और मेरी अजीब हकलाहट को क्षमा कर सकते थे, जो अब उनके लिए अजीब नहीं थी। उनके साथ सहज महसूस करते हुए, मैं अपने पंथ और आस्था का अपने तरीके से बचाव कर सका; कुछ हद तक मैं उनके पूर्वाग्रहों को शांत कर सका। जब वे चले गए तो वे संतुष्ट नहीं थे, मुश्किल से ही शांत हुए थे; लेकिन उन्हें पूरी तरह से यह एहसास दिलाया गया कि प्रोटेस्टेंट जरूरी नहीं कि वे अनादर करने वाले मूर्तिपूजक हों जैसा कि उनके निर्देशक ने संकेत दिया था; उन्हें प्रकाश, जीवन और वचन का सम्मान करने के उनके तरीके को कुछ हद तक समझने में मदद मिली; वह आंशिक रूप से यह समझने में सक्षम था कि यद्यपि पूजनीय वस्तुओं के प्रति उनका आदर उनके चर्च में विकसित आदर के समान नहीं था, फिर भी इसमें शायद अपनी एक गहरी शक्ति थी - अपना एक अधिक गंभीर भय था।

मैंने पाया कि पेरे सिलास (स्वयं, मैं दोहराना चाहूँगा, कोई बुरे व्यक्ति नहीं थे, हालाँकि वे एक बुरे उद्देश्य के समर्थक थे) ने आम तौर पर प्रोटेस्टेंटों को और मुझ पर भी, अजीब नामों का प्रयोग करते हुए, कुछ अजीब "वादों" का आरोप लगाया था। श्री इमैनुएल ने यह सब अपने स्पष्टवादिता भरे अंदाज़ में बताया, जिसमें कोई छिपाव नहीं था। वे बोलते समय मुझे एक दयालु, गंभीर भय से देख रहे थे, मानो आरोपों में सच्चाई होने के डर से काँप रहे हों। ऐसा लगता है कि पेरे सिलास ने मुझे करीब से देखा था, और उन्हें पता था कि मैं विलेट के तीनों प्रोटेस्टेंट चैपलों - फ्रांसीसी, जर्मन और अंग्रेजी - यानी प्रेस्बिटेरियन, लूथरन और एपिस्कोपलियन - में बारी-बारी से और बिना किसी भेदभाव के जाता था। पिता की नज़र में ऐसी उदारता गहरी उदासीनता को दर्शाती थी - उनका तर्क था कि जो सभी को सहन करता है, वह किसी से भी जुड़ा नहीं रह सकता। अब, हुआ यूँ कि मैं अक्सर चुपके से इन तीनों संप्रदायों के बीच के सूक्ष्म और महत्वहीन अंतरों पर आश्चर्य करता था—उनके मूल सिद्धांतों की एकता और समानता पर: मुझे ऐसा कुछ भी नहीं दिखता था जो उन्हें एक दिन एक महान

पवित्र गठबंधन में विलीन होने से रोक सके, और मैं उन सभी का सम्मान करता था, हालाँकि मुझे लगता था कि प्रत्येक में कुछ न कुछ औपचारिक त्रुटियाँ, बोझ और तुच्छ बातें थीं। मैंने यही विचार एम. इमैनुएल को बताया और उन्हें समझाया कि मेरा अंतिम सहारा, मेरा मार्गदर्शक और मेरा शिक्षक, हमेशा बाइबल ही होनी चाहिए, न कि कोई संप्रदाय, चाहे उसका नाम या राष्ट्र कुछ भी हो।

उसने मुझे शांत किया, फिर भी चिंता से भर दिया, एक प्रार्थना के समान दृढ़ कामना व्यक्त करते हुए कि यदि मैं गलत हूँ, तो ईश्वर मुझे सही राह दिखाए। मैंने दहलीज पर ही "मैरी, रीन डू सिएल" की कुछ भावुक गुनगुनाहट सुनी, एक गहरी आकांक्षा कि शायद उसकी आशा मेरी भी हो।

विचित्र! मुझे उसे उसके पूर्वजों के धर्म से विमुख करने की ऐसी कोई तीव्र इच्छा नहीं थी। मैं रोमनवाद को गलत मानता था, सोने और मिट्टी की एक बड़ी मिश्रित मूर्ति; लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह रोमनवादी अपने धर्म के शुद्धतम तत्वों को हृदय की ऐसी पवित्रता के साथ धारण करता है जिसे ईश्वर अवश्य पसंद करेगा।

पिछली बातचीत शाम आठ से नौ बजे के बीच, शांत रू फॉसेट के एक स्कूल के कमरे में हुई, जो एक एकांत बगीचे की ओर खुलता था। संभवतः उसी समय या अगली शाम को कुछ देर बाद, उसकी गूंज, पवित्र आज्ञाकारिता से एकत्रित होकर, मैगी के प्राचीन गिरजाघर में एक कन्फेशनल के पैनल में एक ध्यानपूर्वक कान में सुनाई दी। इसके बाद, पेरे सिलास ने मैडम बेक से मुलाकात की, और न जाने किन कारणों से प्रेरित होकर, उन्हें कुछ समय के लिए उस अंग्रेज महिला का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करने के लिए राजी कर लिया।

इसके बाद मुझे पढ़ने के लिए कहा गया—अर्थात्, मुझे जो पुस्तकें उधार दी गई थीं, मैंने उन पर बस सरसरी नज़र डाली; वे मेरे लिए इतनी छोटी थीं कि मैं उन्हें पूरी तरह से पढ़, चिह्नित कर, सीख या आत्मसात नहीं कर सका। इसके अलावा, मेरे पास ऊपर, मेरे तकिये के नीचे एक किताब थी, जिसके कुछ अध्याय आध्यात्मिक ज्ञान के विषय में मेरी आवश्यकताओं को पूरा करते थे, और ऐसे उपदेश और उदाहरण प्रस्तुत करते थे, जिनके बारे में मुझे अपने हृदय से विश्वास था कि उनमें कोई सुधार नहीं किया जा सकता।

तब पिता सिलास ने मुझे रोम का सुंदर पक्ष, उसके अच्छे कार्य दिखाए; और मुझे फल देखकर पेड़ का मूल्यांकन करने के लिए कहा।

उत्तर में, मैंने महसूस किया और स्वीकार किया कि ये कार्य रोम के फल नहीं थे; वे तो बस उसके प्रचुर उत्कर्ष थे, वह सुंदर वादा जो उसने संसार को दिखाया था। वह उत्कर्ष, जब मुरझा गया, तो उसमें दानशीलता की सुगंध नहीं थी; पूर्ण विकसित सेब अज्ञानता, नीचता और कट्टरता का प्रतीक था। मनुष्यों के कष्टों और भावनाओं से ही उनकी दासता के बंधन गढ़े गए थे। गरीबी को भोजन, वस्त्र और आश्रय दिया गया ताकि वह “चर्च” के प्रति कर्तव्यबद्ध हो जाए; अनाथालय को पाला-पोसा और शिक्षित किया गया ताकि वह “चर्च” की शरण में बड़ा हो सके; बीमारी का इलाज किया गया ताकि वह “चर्च” के नियमों और विधानों के अनुसार मर जाए; पुरुषों को अत्यधिक काम में लगाया गया, और महिलाओं को निर्मम बलिदान किया गया, और सभी ने उस संसार को त्याग दिया जिसे ईश्वर ने अपने प्राणियों के भले के लिए सुखद बनाया था, और एक भारी, कष्टदायी क्रूस को उठाया ताकि वे रोम की सेवा कर सकें, उसकी पवित्रता सिद्ध कर सकें, उसकी शक्ति की पुष्टि कर सकें और उसके अत्याचारी “चर्च” के शासन का प्रसार कर सकें।

मनुष्य की भलाई के लिए बहुत कम किया गया; ईश्वर की महिमा के लिए तो और भी कम। हजारों रास्ते पीड़ा, रक्तपात और प्राणों की आहुति से खुले; पहाड़ों को चीरकर चट्टानें जड़ तक फट गईं; और यह सब किसलिए? ताकि एक पुरोहित वर्ग सीधे ऊपर की ओर बढ़ते हुए एक सर्वोपरि शिखर तक पहुँच सके, जहाँ से वे अंततः अपने मोलोच "चर्च" का राजदंड फहरा सकें।

ऐसा नहीं होगा। ईश्वर रोम के साथ नहीं है, और यदि परमेश्वर के पुत्र के लिए मनुष्य के दुख अभी भी होते, तो क्या वह रोम की क्रूरताओं और महत्वाकांक्षाओं पर शोक नहीं मनाते, जैसे उन्होंने एक बार विनाश के शिकार यरूशलेम के अपराधों और विपत्तियों पर शोक मनाया था!

हे सत्ता के प्रेमियों! हे इस संसार के राज्य के आकांक्षी मुकुटधारियों! एक समय आएगा, तुम्हारे लिए भी, जब तुम्हारे हृदयों को – प्रत्येक टूटी हुई धड़कन पर क्षीण होते हुए – यह जानकर सुकून मिलेगा कि मानवीय करुणा से परे एक दया है, एक प्रेम है, जो इस कठोर मृत्यु से भी अधिक शक्तिशाली है जिसका सामना तुम्हें भी करना है, और जिसके समक्ष तुम्हें गिरना है; एक परोपकार है जो किसी भी पाप से अधिक शक्तिशाली है, यहाँ तक कि तुम्हारे पाप से भी; एक करुणा है जो संसारों का उद्धार करती है – बल्कि पुरोहितों को भी क्षमा करती है।

* * * * *

मेरा तीसरा प्रलोभन रोम की शान-शौकत में, उसके राज्य की महिमा में प्रकट हुआ। मुझे विशेष अवसरों पर, उत्सवों और राजकीय समारोहों के दौरान, गिरजाघरों में ले जाया गया; मुझे पोप के रीति-रिवाज और समारोह दिखाए गए। मैंने उन्हें गौर से देखा।

कई लोगों—पुरुष और महिलाएं—निःसंदेह हजारों मायनों में मुझसे कहीं अधिक श्रेष्ठ—ने इस प्रदर्शन को प्रभावशाली माना है, और कहा है कि यद्यपि उनकी बुद्धि ने विरोध किया, उनकी कल्पना शक्ति इसके वश में हो गई। मैं ऐसा नहीं कह सकता। न तो पूर्ण जुलूस, न ही भव्य प्रार्थना सभा, न ही मोमबत्तियों का समूह, न ही झूलते हुए धूपदान, न ही धार्मिक वस्त्र, न ही दिव्य आभूषणों ने मेरी कल्पना को जरा भी प्रभावित किया। जो मैंने देखा वह मुझे भव्य नहीं, बल्कि भद्दा लगा; घोर भौतिकवादी लगा, न कि आध्यात्मिक काव्यात्मक।

यह बात मैंने पेरे सिलास को नहीं बताई; वे बूढ़े थे, आदरणीय प्रतीत होते थे: हर असफल प्रयास के बावजूद, हर बार की निराशा के बावजूद, वे मेरे प्रति व्यक्तिगत रूप से दयालु बने रहे, और मुझे उनके भावों को ठेस पहुँचाने का डर सताता था। लेकिन एक दिन शाम को, जब एक बड़े घर की बालकनी से मुझे चर्च और सेना के एक विशाल मिश्रित जुलूस का साक्षी बनने का अवसर मिला - अवशेषों के साथ पुजारी, हथियारों से लैस सैनिक, कैम्ब्रिक और लेस के वस्त्र पहने एक मोटे और वृद्ध आर्कबिशप, जो स्वर्ग के पक्षी के पंखों में एक भूरे कौवे की तरह अजीब तरह से दिख रहे थे, और विचित्र रूप से सजे-धजे वस्त्रों और मालाओं से सजी युवतियों का एक समूह - तब मैंने एम. पॉल से अपने मन की बात कही।

मैंने उनसे कहा, "मुझे यह पसंद नहीं आया; मैं ऐसी रस्मों का सम्मान नहीं करता था; मैं अब और कुछ नहीं देखना चाहता था।"

और इस घोषणा से अपने अंतरात्मा को हल्का करके, मैं आगे बढ़ सका और अपनी आदत से अधिक स्पष्ट और सटीक शब्दों में उसे यह दिखा सका कि मैं अपने सुधारित पंथ पर कायम रहना चाहता हूँ; जितना अधिक मैंने पोपवाद को देखा, उतना ही मैं प्रोटेस्टेंटवाद से जुड़ता गया; निःसंदेह हर चर्च में त्रुटियाँ होती हैं, लेकिन अब मैंने इसके विपरीत यह महसूस किया कि मेरा चर्च कितना पवित्र है, उस चर्च की तुलना में

जिसका सँवारा हुआ और दिखावटी चेहरा मेरे सामने उजागर किया गया था। मैंने उसे बताया कि कैसे हम अपने और ईश्वर के बीच कम से कम दिखावे को रखते हैं; वास्तव में, शायद केवल मानव जाति के स्वभाव को ही बनाए रखते हैं, जो विधिवत पालन के लिए आवश्यक सामूहिक प्रार्थना में ही रह जाता है। मैंने उसे बताया कि मैं ऐसे समय और ऐसी परिस्थितियों में फूलों और झालरों, मोमबत्तियों और कढ़ाई को नहीं देख सकता, जो उस ईश्वर के गुप्त दर्शन के लिए समर्पित होनी चाहिए जिसका घर अनंत है, और जिसका अस्तित्व शाश्वत है। जब मैं पाप और दुःख, सांसारिक भ्रष्टाचार, नश्वर दुराचार, भारी सांसारिक कष्टों के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे भजन गाने वाले पुजारियों या मूक अभिनय करने वाले अधिकारियों की परवाह नहीं होती; जब जीवन के कष्ट और मृत्यु का भय मेरे सामने उमड़ पड़े—जब भविष्य की अपार आशा और असीम अनिश्चितता मेरे मन में उत्पन्न हुई—तब, यहाँ तक कि वैज्ञानिक प्रयास या किसी विद्वतापूर्ण और मृत भाषा में की गई प्रार्थना भी मुझे परेशान करने लगी: उस हृदय को जो केवल यह पुकारना चाहता था— "हे ईश्वर, मुझ पापी पर दया करो!"

जब मैंने इस प्रकार बोलकर, अपने विश्वास की घोषणा करके, और अपने आप को उससे पूरी तरह अलग कर लिया, जिसे मैं संबोधित कर रहा था - तब, अंत में, एक सामंजस्यपूर्ण स्वर आया, एक प्रतिध्वनि उत्पन्न हुई, दो परस्पर विरोधी आत्माओं में सामंजस्य का एक मधुर स्वर आया।

"पुजारियों या विवाद करने वालों की बातों पर ध्यान मत दो," एम. इमानुएल ने धीरे से कहा, "ईश्वर दयालु है और सभी सच्चे भक्तों से प्रेम करता है। इसलिए, जितना हो सके विश्वास करो; जैसे भी हो सके विश्वास करो; कम से कम एक प्रार्थना तो हम सब में समान है; मैं भी यही कहता हूँ – 'हे ईश्वर, मुझ पापी पर दया करो!'"

वह मेरी कुर्सी की पीठ पर झुक गया। कुछ देर सोचने के बाद उसने फिर कहा:

"जिस ईश्वर ने समस्त आकाश की रचना की, जिसकी नाक से जीवन का सार निकला, या जो आकाश में चमकते तारों में समाया है, उसकी दृष्टि में मनुष्य के भेद कैसे प्रतीत होते हैं? परन्तु जैसे ईश्वर के लिए समय और स्थान का कोई महत्व नहीं है, वैसे ही न तो माप का, न ही तुलना का। हम अपनी तुच्छता में स्वयं को नीचा समझते हैं, और यही उचित है; फिर भी यह संभव है कि एक हृदय की स्थिरता, एक मन का सत्य और विश्वास, ईश्वर द्वारा निर्धारित प्रकाश के अनुसार, उनके लिए उतना ही महत्वपूर्ण हो जितना कि उपग्रहों का अपने ग्रहों के चारों ओर, ग्रहों का अपने सूर्यों के

चारों ओर, और सूर्यों का उस विशाल अदृश्य केंद्र के चारों ओर, जो समझ से परे और अवास्तविक है, और जिसे केवल मानसिक प्रयास से ही समझा जा सकता है।"

भगवान हम सबका मार्गदर्शन करें! भगवान आपको आशीर्वाद दें, लूसी!

अध्याय 37.

धूप।

पॉलिना के लिए यह बहुत अच्छा था कि उसने अपने पिता की अनुमति मिलने तक ग्राहम से आगे पत्राचार न किया। लेकिन डॉ. ब्रेटन होटल क्रेसी के एक मील के दायरे में रहते हुए भी वहाँ बार-बार जाने का मौका नहीं छोड़ सकते थे। मेरा मानना है कि दोनों प्रेमी पहले तो दूरी बनाए रखना चाहते थे; उन्होंने दिखावटी प्रेम प्रसंग के मामले में अपना इरादा कायम रखा, लेकिन भावनाओं में वे जल्द ही एक-दूसरे के बहुत करीब आ गए।

ग्राहम के भीतर जो कुछ भी सर्वोत्तम था, वह पॉलिना की तलाश में था; उसके भीतर जो कुछ भी महान था, वह पॉलिना की उपस्थिति में जागृत और विकसित होता था। मिस फैंशॉ के प्रति उसकी पिछली प्रशंसा में शायद उसकी बुद्धि का कोई योगदान नहीं था, लेकिन अब उसकी पूरी बुद्धि और उसकी उच्चतम रुचियां सवालों के घेरे में आ गईं। ये, उसकी अन्य सभी क्षमताओं की तरह, सक्रिय थीं, पोषण के लिए उत्सुक थीं और संतुष्टि मिलने पर उसका भरपूर आनंद उठाती थीं।

मैं यह नहीं कह सकता कि पॉलिना ने जानबूझकर उसे किताबों की बात करने के लिए उकसाया, या एक पल के लिए भी उसे चिंतन में विवश करने का संकल्प लिया, या उसके दिमाग को सुधारने की योजना बनाई, या यहाँ तक कि यह कल्पना भी की कि उसके दिमाग को किसी भी तरह से सुधारा जा सकता है। वह उसे बहुत परिपूर्ण

समझती थी; यह ग्राहम ही था, जिसने संयोगवश ही, अपनी पढ़ी हुई किसी किताब का जिक्र किया, और जब पॉलिना की प्रतिक्रिया में सहानुभूति का एक सुखद सामंजस्य सुनाई दिया, जो उसकी आत्मा को भा गया, तो वह बोलने लगा, शायद पहले से कहीं अधिक और बेहतर तरीके से, ऐसे विषयों पर। पॉलिना ने आनंद से सुना और उत्साह से उत्तर दिए। हर उत्तर में, ग्राहम को एक ऐसा संगीत सुनाई दिया जो उसकी इंद्रियों को और भी मधुर होता गया; हर उत्तर में उसे एक विचारोत्तेजक, प्रेरक, जादुई लहजा मिला जिसने उसके भीतर छिपे खजाने को खोल दिया, उसके मन में अनपेक्षित शक्ति को दिखाया, और इससे भी बेहतर, उसके हृदय में छिपी अच्छाई को। दोनों को एक-दूसरे के बोलने का तरीका पसंद आया; आवाज, शब्द चयन, अभिव्यक्ति मनभावन थी; दोनों ने एक-दूसरे की बुद्धि का भरपूर आनंद लिया; वे एक-दूसरे के भावों को बड़ी सहजता से समझ लेते थे, उनके विचार अक्सर सावधानीपूर्वक चुने गए मोतियों की तरह मेल खाते थे। ग्राहम स्वभाव से ही हंसमुख था; पॉलिना में ऐसी सहज चंचलता नहीं थी—एकाग्र न होने पर वह चिंतनशील और उदास रहती थी—पर अब वह चिड़िया की तरह प्रसन्न लग रही थी; अपने प्रेमी की सौम्य उपस्थिति में वह किसी कोमल, आनंदमय प्रकाश की तरह चमक रही थी। वह अपनी खुशी में कितनी सुंदर हो गई थी, इसे शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए मुश्किल है, लेकिन उसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। उसकी वह कोमल बर्फ—वह संयम जिस पर वह निर्भर थी; अब कहाँ गया? आह! ग्राहम इसे अधिक समय तक सहन नहीं कर सका; वह अपने साथ एक उदार प्रभाव लेकर आया जिसने जल्द ही उसके संकोच और स्वयं द्वारा लगाए गए प्रतिबंध को पिघला दिया।

अब पुराने ब्रेटन दिनों की बातें होने लगीं; शायद पहले टूटी-फूटी आवाज़ में, एक तरह की मुस्कुराती हुई झिझक के साथ, फिर खुलेपन और बढ़ते आत्मविश्वास के साथ। ग्राहम ने अपने लिए मुझसे बेहतर अवसर बना लिया था; उसने उस अप्रत्यक्ष मदद से आज़ादी हासिल कर ली थी जिसे असहयोगी लूसी ने ठुकरा दिया था; "छोटी पॉली" की उसकी सारी यादें उसकी अपनी मधुर आवाज़ में, उसके अपने प्यारे और सुंदर होंठों से सही ढंग से व्यक्त हो गईं; यह मेरे द्वारा कहे जाने से कहीं बेहतर था।

कई बार जब हम अकेले होते थे, पॉलिना मुझे बताती थी कि इस मामले में उनकी याददाश्त कितनी समृद्ध और सटीक थी, यह जानना कितना अद्भुत और अनोखा था। कैसे, जब वह उसे देखते थे, तो यादें अचानक उनके मन में ताज़ा हो जाती थीं। उन्होंने

उसे याद दिलाया कि एक बार उसने उनका सिर अपनी बाहों में भर लिया था, उनके शेर जैसे सुंदर चेहरे को सहलाया था और कहा था, "ग्राहम, मैं तुम्हें बहुत पसंद करती हूँ!" उन्होंने उसे बताया कि कैसे वह उनके बगल में एक छोटी चौकी रखती थी और उसकी मदद से उनके घुटने तक चढ़ जाती थी। आज भी उन्होंने कहा कि उन्हें याद है कि कैसे उनके छोटे हाथ उनके गालों को सहलाते थे या उनके घने बालों में समा जाते थे। उन्हें याद था उनकी छोटी तर्जनी उंगली का स्पर्श, जो आधी कांपती हुई, आधी उत्सुकता से उनकी ठुड्डी के गड्ढे में रखी जाती थी, उनकी तुतलाहट, और वह नज़र जिससे वह उसे "सुंदर डिंपल" कहती थी, फिर उनकी आँखों में देखती और पूछती कि वे इतनी गहरी क्यों हैं, और कहती थी कि उनका "चेहरा सुंदर और अनोखा है; उनकी माँ या लूसी स्नो से कहीं ज़्यादा सुंदर, कहीं ज़्यादा अनोखा।"

“मैं तो बच्ची ही थी,” पॉलिना ने कहा, “मुझे हैरानी होती है कि मैंने इतनी हिम्मत कैसे की। अब तो वह मुझे एकदम पवित्र लगते हैं, उनके बाल पहुंच से बाहर हैं, और लूसी, जब मैं उनकी दृढ़, संगमरमर जैसी ठुड्डी और उनके सीधे-सादे यूनानी चेहरे को देखती हूँ, तो मुझे एक तरह का डर लगता है। लूसी, औरतें खूबसूरत होती हैं; वह औरत जैसे नहीं हैं, इसलिए मुझे लगता है कि वह खूबसूरत नहीं हैं, लेकिन फिर वह हैं क्या? क्या दूसरे लोग उन्हें मेरी नज़रों से देखते हैं? क्या तुम उनकी तारीफ़ करती हो?”

“मैं तुम्हें बताती हूँ, मैं क्या करती हूँ,” एक बार उसके कई सवालों के जवाब में मैं यही कहती थी। “मैं उसे कभी नहीं देखती। लगभग एक साल पहले, जब उसने मुझे पहचाना, उससे पहले मैंने उसे दो-तीन बार देखा था, और फिर मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं; और अगर वह हर दिन सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच बारह बार उनके सामने से गुज़रे, तो याददाश्त के अलावा, मुझे शायद ही पता चलेगा कि कौन सी आकृति गुज़री थी।”

“लूसी, तुम्हारा क्या मतलब है?” उसने धीमी आवाज़ में कहा।

मेरा मतलब है कि मैं दृष्टि को महत्व देता हूं, और पूरी तरह से अंधा हो जाने से डरता हूं।

सबसे अच्छा यही था कि उसे तुरंत ही कड़े शब्दों में जवाब दे दिया जाए, और उसके होठों से निकलने वाले उन कोमल, भावुक शब्दों को हमेशा के लिए खामोश कर दिया जाए जो कभी-कभी मेरे कानों में पिघले हुए सीसे की तरह चुभते थे। उसने

अपने प्रेमी की सुंदरता के बारे में मुझसे और कोई टिप्पणी नहीं की।

फिर भी वह उसके बारे में बात करती थी; कभी शर्माते हुए, शांत, संक्षिप्त वाक्यों में; कभी कोमलता भरी लय और मधुर स्वर में; लेकिन कभी-कभी यह मुझे बुरी तरह से परेशान कर देता था; और तब, मुझे पता है, मैंने उसे कठोर निगाहों और शब्दों से देखा; लेकिन असीम खुशी ने उसकी स्वाभाविक स्पष्ट दृष्टि को चकाचौंध कर दिया था, और वह केवल लूसी को अस्थिर समझती थी।

“स्पार्टन लड़की! गर्वित लूसी!” वह मेरी ओर मुस्कुराते हुए कहतीं। “ग्राहम कहता है कि तुम सबसे विचित्र, नखरे वाली छोटी महिला हो जिसे वह जानता है; लेकिन फिर भी तुम उत्कृष्ट हो; हम दोनों यही मानते हैं।”

मैंने कहा, “तुम दोनों को लगता है कि तुम्हें कुछ पता नहीं है। कृपया मुझे अपनी बातचीत और विचारों का विषय जितना हो सके कम बनाओ। मेरी अपनी एक अलग जिंदगी है, जो तुमसे अलग है।”

"लेकिन लूसी, हमारा जीवन खूबसूरत है, या होगा; और तुम भी इसमें भागीदार बनोगी।"

“इस संसार में मैं किसी भी पुरुष या स्त्री के जीवन में उस अर्थ में भागीदार नहीं बनूंगा, जिस अर्थ में आप भागीदार बनने का अर्थ समझते हैं। मुझे लगता है कि मेरा अपना एक मित्र है, पर मुझे यकीन नहीं है; और जब तक मुझे यकीन नहीं हो जाता, मैं एकाकी जीवन व्यतीत करूंगा।”

लेकिन एकांत दुख का कारण है।

“हाँ; यह उदासी है। लेकिन जीवन में इससे भी बदतर चीजें होती हैं। उदासी से भी गहरी, दिल टूटने की पीड़ा होती है।”

"लूसी, मुझे आश्चर्य होता है कि क्या कोई कभी तुम्हें पूरी तरह से समझ पाएगा।"

प्रेमियों में एक प्रकार का अहंकार होता है; वे अपनी खुशी का गवाह चाहते हैं, चाहे इसके लिए उन्हें कुछ भी कीमत चुकानी पड़े। पॉलिना ने पत्रों पर प्रतिबंध लगा रखा था, फिर भी डॉ. ब्रेटन ने उन्हें लिखा; उन्होंने पत्राचार न करने का संकल्प लिया था, फिर भी उन्होंने जवाब दिया, चाहे वह केवल डांटने के लिए ही क्यों न हो। उन्होंने मुझे ये पत्र दिखाए; एक बिगड़े हुए बच्चे की ज़िद और एक उत्तराधिकारी के दबंग अंदाज़ में, उन्होंने मुझे उन्हें पढ़ने के लिए मजबूर किया। जब मैंने ग्राहम के पत्र पढ़े, तो मुझे उनकी ज़िद पर ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ और मैंने उनके गर्व को समझा: वे सुंदर पत्र

थे - मर्दाना और स्नेहपूर्ण - विनम्र और साहसी। उनके पत्र ग्राहम को सुंदर लगे होंगे। ये पत्र उनकी प्रतिभा दिखाने के लिए नहीं लिखे गए थे; और न ही, मुझे लगता है, उनके प्रेम को व्यक्त करने के लिए। इसके विपरीत, ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने उस भावना को छिपाने और अपने प्रेमी के उत्साह को नियंत्रित करने का बीड़ा उठाया था। लेकिन ऐसे पत्र इस उद्देश्य की पूर्ति कैसे कर सकते थे? ग्राहम उनके जीवन के समान प्रिय हो गए थे; वह उन्हें एक शक्तिशाली चुंबक की तरह अपनी ओर खींचते थे। उसके लिए, उसके हर शब्द, लेखन, विचार या दृष्टि में एक अवर्णनीय प्रभाव था। इस अनकहे स्वीकारोक्ति से उसके पत्र दमक उठते थे; अभिवादन से लेकर विदाई तक, यह प्रभाव उन्हें प्रज्वलित करता था।

"काश पापा को पता होता; काश पापा को पता होता!" अब उसकी घबराहट भरी गुनगुनाहट शुरू हो गई थी। "काश, और फिर भी मुझे डर लग रहा है। मैं ग्राहम को पापा को बताने से मुश्किल से रोक पा रही हूँ। इस मामले को सुलझाने से ज़्यादा मेरी कोई और इच्छा नहीं है—खुले दिल से सब कुछ कह देना; और फिर भी मुझे इस संकट से डर लग रहा है। मुझे पता है, मुझे पूरा यकीन है, पापा पहले तो नाराज़ होंगे; मुझे डर है कि वो मुझे लगभग नापसंद करने लगेंगे; उन्हें यह एक अनुचित बात लगेगी; यह उनके लिए एक आश्चर्य, एक झटका होगा: मैं उन पर इसके पूरे प्रभाव का अंदाज़ा नहीं लगा सकती।"

असल बात यह थी कि लंबे समय से शांत रहने वाले उनके पिता थोड़े विचलित होने लगे थे: एक बात को लेकर लंबे समय से अंधे रहे उनके मन में अब एक बेचैनी सी जाग उठी थी।

उसने उससे कुछ नहीं कहा; लेकिन जब वह उसकी ओर नहीं देख रही थी, या शायद उसके बारे में नहीं सोच रही थी, तो मैंने उसे उस पर टकटकी लगाए और ध्यान लगाते हुए देखा।

एक शाम—पॉलिना अपने ड्रेसिंग रूम में थीं, शायद ग्राहम को लिख रही थीं; उन्होंने मुझे पुस्तकालय में पढ़ने के लिए छोड़ दिया था—तभी एम. डी. बासोम्पियर अंदर आए; वे बैठ गए: मैं उठने ही वाला था कि उन्होंने मुझे रुकने का अनुरोध किया—विनम्रता से, लेकिन इस तरह से कि लग रहा था कि वे मेरी बात मानेंगे। वे खिड़की के पास, मुझसे कुछ दूरी पर बैठे थे; उन्होंने एक मेज खोली; उसमें से उन्होंने एक पुस्तिका जैसी दिखने वाली वस्तु निकाली; उस पुस्तिका में लिखी एक प्रविष्टि को वे

कई मिनट तक पढ़ते रहे।

“मिस स्नो,” उसने उसे नीचे रखते हुए कहा, “क्या आपको मेरी छोटी बच्ची की उम्र पता है?”

"लगभग अठारह, है ना, महोदय?"

“ऐसा लगता है। इस पुरानी पर्स में लिखा है कि उसका जन्म 5 मई, 18— को हुआ था, अठारह साल पहले। यह अजीब है; मैं उसकी उम्र का सही हिसाब भूल गया था। मैं उसे बारह-चौदह साल का समझता था—उम्र का कोई निश्चित आंकड़ा नहीं था; लेकिन वह बच्ची जैसी लगती थी।”

मैंने दोहराया, “वह लगभग अठारह साल की है। वह बड़ी हो चुकी है; उसकी लंबाई और नहीं बढ़ेगी।”

"मेरी नन्ही सी अनमोल!" एम. डी बासोम्पियर ने अपनी बेटी के लहजे की तरह मर्मस्पर्शी स्वर में कहा।

वह बहुत सोच-विचार में डूबा बैठा था।

“महोदय, शोक न करें,” मैंने कहा; क्योंकि मैं उनकी भावनाओं को जानता था, भले ही वे पूरी तरह से अनकही थीं।

“वह मेरी इकलौती अनमोल रत्न है,” उसने कहा; “और अब दूसरों को पता चलेगा कि वह पवित्र और अनमोल है: वे उस पर मोहित हो जाएंगे।”

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। उस दिन ग्राहम ब्रेटन ने हमारे साथ भोजन किया था; वे बातचीत और रूप दोनों में ही आकर्षक लग रहे थे: पता नहीं किस गौरव ने उनके चेहरे को और उनके व्यवहार को इतना निखारा था। एक उच्च आशा के आवेग में, उनके पूरे व्यवहार में कुछ ऐसा प्रकट हुआ जिसने सबका ध्यान आकर्षित किया। मुझे लगता है कि उस दिन उन्होंने अपने प्रयासों के उद्गम और अपनी महत्वाकांक्षा के लक्ष्य को इंगित करने का इरादा किया था। एम. डी बासोम्पियर को एक तरह से उनके समर्पण की दिशा और चरित्र को समझने के लिए विवश होना पड़ा। टिप्पणी करने में धीमे, वे तर्क में तार्किक थे: एक बार जब उन्होंने मुख्य बिंदु पकड़ लिया, तो वह उन्हें एक लंबी भूलभुलैया में ले गया।

“वह कहाँ है?” उसने पूछा।

वह ऊपर है।

"वह क्या कर रही है?"

वह लिख रही है।

“क्या वह लिखती है? क्या उसे पत्र मिलते हैं?”

“केवल वही मुझे दिखा सकती हैं जो वह दिखा सकती हैं। और — महोदय — वे आपसे परामर्श करना चाहते हैं।”

“छी! वे मेरे बारे में सोचते ही नहीं – एक बूढ़े पिता के बारे में! मैं तो रास्ते में खड़ा हूँ।”

“अरे, एम. डी बासोम्पियर – ऐसा नहीं हो सकता! लेकिन पॉलिना को खुद बोलना होगा: और डॉ. ब्रेटन को भी अपना पक्ष खुद रखना होगा।”

"थोड़ा देर हो चुकी है। लगता है मामले काफी आगे बढ़ चुके हैं।"

“महोदय, जब तक आप मंजूरी नहीं देते, कुछ नहीं होगा — वे सिर्फ एक दूसरे से प्यार करते हैं।”

“केवल!” उसने दोहराया।

भाग्य ने मुझे विश्वासपात्र और मध्यस्थ की भूमिका सौंपी थी, और मुझे यह कहना पड़ा: "डॉ. ब्रेटन सैकड़ों बार आपसे मदद मांगने ही वाले थे, महोदय; लेकिन अपने पूरे साहस के बावजूद, वे आपसे बहुत डरते हैं।"

“हो सकता है वो मुझसे डरता हो। उसने मेरी सबसे कीमती चीज को छू लिया है। अगर उसने उसे अकेला छोड़ दिया होता, तो वो कई सालों तक बच्ची ही रहती। तो क्या उनकी सगाई हो गई है?”

वे आपकी अनुमति के बिना सगाई नहीं कर सकते थे।

"सुश्री स्नो, आपके लिए यह अच्छी बात है कि आप हमेशा की तरह शालीनता से बात करती और सोचती हैं; लेकिन यह मामला मेरे लिए बहुत दुखदायी है; मेरी छोटी बेटी ही मेरी सब कुछ थी: अब मेरी कोई बेटी या बेटा नहीं है; ब्रेटन को कहीं और देखना चाहिए था; मुझे यकीन है कि दर्जनों अमीर और खूबसूरत औरतें हैं जो उसे नापसंद नहीं करेंगी: उसके पास अच्छी शक्ल, अच्छा व्यवहार और अच्छे संबंध हैं। क्या मेरी पॉली के अलावा उसके लिए कुछ और अच्छा होगा?"

"अगर उन्होंने आपकी 'पॉली' को कभी नहीं देखा होता, तो शायद दूसरे लोग उन्हें पसंद आते और आते भी - उदाहरण के लिए, आपकी भतीजी, मिस फैंसहावे।"

“आह! मैं तो उसे जिनेवरा पूरे दिल से दे देता; लेकिन पॉली! – मैं उसे उसे नहीं दे सकता। नहीं – मैं नहीं दे सकता। वह उसके बराबर का नहीं है,” उसने कुछ रूखेपन

से कहा। “वह किस मामले में उसका मुकाबला कर सकता है? लोग दौलत की बात करते हैं! मैं लालची या स्वार्थी आदमी नहीं हूँ, लेकिन दुनिया इन चीजों के बारे में सोचती है – और पॉली अमीर हो जाएगी।”

“हां, यह तो सबको पता है,” मैंने कहा: “विलेट में हर कोई उसे एक उत्तराधिकारी के रूप में जानता है।”

क्या वे मेरी छोटी बच्ची के बारे में उस तरह से बात करते हैं?

“जी हां, बिल्कुल।”

वह गहरी सोच में डूब गए। मैंने हिम्मत करके पूछा, “महोदय, क्या आपको कोई पॉलिना के लिए उपयुक्त लगता है? क्या आप डॉ. ब्रेटन के अलावा किसी और को पसंद करेंगे? क्या आपको लगता है कि उच्च पद या अधिक धन से भावी दामाद के प्रति आपकी भावनाओं में कोई खास फर्क पड़ेगा?”

“तुम मुझे वहाँ छुओ,” उसने कहा।

"विलेट के अभिजात वर्ग को देखिए—क्या आप उन्हें पसंद नहीं करेंगे, महोदय?"

"मैं ऐसा नहीं करूंगा - कभी भी ड्यूक, बैरन या विस्काउंट नहीं बनूंगा।"

“मुझे बताया गया है कि इनमें से कई लोग उसके बारे में सोचते हैं, महोदय,” मैंने हिम्मत जुटाते हुए कहा, यह देखकर कि मुझे तिरस्कार के बजाय ध्यान मिल रहा है। “इसलिए, अगर डॉ. ब्रेटन को मना कर दिया जाता है, तो दूसरे लोग भी आएंगे। मुझे लगता है कि आप जहाँ भी जाएँगे, इच्छुक लोगों की कमी नहीं होगी। उत्तराधिकार से इतर, मुझे लगता है कि पॉलिना जिसे भी देखती है, उसे मोहित कर लेती है।”

“क्या वह ऐसा करती है? कैसे? मेरी छोटी बच्ची को तो सुंदर नहीं माना जाता।”

"महोदय, मिस डी बासोम्पियर बहुत सुंदर हैं।"

“बकवास! – क्षमा करें, मिस स्नो, लेकिन मुझे लगता है कि आप कुछ ज़्यादा ही पक्षपात कर रही हैं। मुझे पॉली पसंद है: मुझे उसके सारे तौर-तरीके और उसकी हर सूरत पसंद है – लेकिन मैं उसका पिता हूँ; और मैंने तो कभी सुंदरता के बारे में सोचा ही नहीं। वह मनोरंजक, परी जैसी, मेरे लिए दिलचस्प है; – आपको उसे सुंदर समझना बिल्कुल गलत है?”

"वह आकर्षक है, महोदय: वह आपके धन और पद के लाभों के बिना भी आकर्षक होती।"

“मेरी दौलत और रुतबा! क्या ये ग्राहम को लुभाने के लिए कोई चारा हैं? अगर

मुझे ऐसा लगता तो...”

“डॉ. ब्रेटन इन बातों को भली-भांति जानते हैं, जैसा कि आप निश्चिंत हो सकते हैं, एम. डी बासोम्पियर, और वे इन्हें किसी भी सज्जन व्यक्ति की तरह महत्व देते हैं — जैसा कि आप स्वयं उन्हीं परिस्थितियों में देते — लेकिन ये उनके लिए प्रलोभन नहीं हैं। वे आपकी बेटी से बहुत प्यार करते हैं; वे उसके सर्वोत्तम गुणों को महसूस करते हैं, और वे गुण उन्हें सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।”

“क्या! मेरे छोटे से पालतू जानवर में ‘अच्छे गुण’ हैं?”

“अरे महोदय! क्या आपने उस शाम उन्हें देखा था जब इतने सारे प्रतिष्ठित और विद्वान पुरुष यहाँ भोजन कर रहे थे?”

"उस दिन मैं उसके व्यवहार से सचमुच काफी प्रभावित और आश्चर्यचकित हुआ था; उसकी नारीत्व की भावना ने मुझे मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया।"

"और क्या आपने उन प्रतिभाशाली फ्रांसीसी लोगों को ड्राइंग रूम में उसके चारों ओर इकट्ठा होते देखा?"

"मैंने किया था; लेकिन मुझे लगा कि यह आराम करने का एक तरीका था - जैसे कोई व्यक्ति एक प्यारे से शिशु के साथ समय बिताकर अपना मनोरंजन करता है।"

“महोदय, उन्होंने अपने व्यवहार को विशिष्टता से प्रस्तुत किया; और मैंने फ्रांसीसी सज्जनों को यह कहते सुना कि वह ‘पेट्री डी’एस्पिरिट एट डी ग्रेस’ थीं। डॉ. ब्रेटन भी यही मानते थे।”

“वह एक प्यारी और नेक बच्ची है, यह तो निश्चित है; और मुझे यकीन है कि उसमें कुछ गुण भी हैं। जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मुझे याद आता है कि एक बार मैं बीमार था; पॉली ने मेरी देखभाल की; सबने सोचा था कि मैं मर जाऊँगा; मुझे याद है, जैसे-जैसे मेरी सेहत बिगड़ती गई, वह और भी मजबूत और कोमल होती गई। और जब मैं ठीक हुआ, तो वह मेरे बीमार कमरे में सूरज की किरण की तरह थी! हाँ; वह मेरी कुर्सी के आसपास इतनी खामोशी और खुशी से खेलती थी जैसे बिजली। और अब तो उसकी शादी के लिए लोग उसे ढूंढ रहे हैं! मैं उसे खोना नहीं चाहता,” उसने कहा और आह भरी।

मैंने सुझाव दिया, "आप डॉ. और श्रीमती ब्रेटन को इतने लंबे समय से जानते हैं, इसलिए उन्हें किसी और को देने की तुलना में उन्हें सौंपना अलगाव जैसा कम होगा।"

वह काफी निराशापूर्वक सोचने लगा।

“सच है। मैं लुइसा ब्रेटन को बहुत लंबे समय से जानता हूँ,” उसने धीमी आवाज़ में कहा। “हम दोनों सचमुच बहुत पुराने दोस्त हैं; जब वो जवान थी, तब वो बहुत प्यारी और दयालु लड़की थी। आप सुंदरता की बात कर रही हैं, मिस स्नो! वो वाकई खूबसूरत थी – लंबी, सीधी और खिलखिलाती हुई – मेरी पॉली जैसी नादान बच्ची या परी नहीं थी: अठारह साल की उम्र में लुइसा का कद-काठी किसी राजकुमारी के योग्य था। अब वो एक सुंदर और अच्छी महिला है। लड़का भी उसी की तरह है; मैंने हमेशा ऐसा ही सोचा है, और उसका भला चाहा है। अब वो इस चोरी से मुझे इसका बदला चुका रहा है! मेरी प्यारी बच्ची अपने बूढ़े पिता से बहुत प्यार करती थी। अब तो सब कुछ खत्म हो गया, इसमें कोई शक नहीं – मैं उस पर बोझ हूँ।”

दरवाजा खुला—उसकी “छोटी सी अनमोल” अंदर आई। मानो वह शाम की खूबसूरती से सजी हुई थी; दिन ढलने पर जो जीवंतता आती है, वह उसकी आँखों और गालों पर चमक रही थी; उसके चेहरे पर हल्की सी लालिमा छाई हुई थी; उसके घुंघराले बाल उसकी कोमल गर्दन पर लंबे और घने लग रहे थे; उसकी सफेद पोशाक जून की गर्मी में जंच रही थी। मुझे अकेला समझकर वह अपने हाथ में अभी-अभी लिखा हुआ पत्र लाई थी—कोला हुआ, लेकिन बिना सील किया हुआ। मुझे उसे पढ़ना था। जब उसने अपने पिता को देखा, तो उसके लड़खड़ाते कदम थोड़े से डगमगाए, एक पल के लिए ठहर गए—उसके गालों की लाली उसके पूरे चेहरे पर फैल गई।

एम. डी बासोम्पियर ने धीमी आवाज़ में, गंभीर मुस्कान के साथ कहा, "पॉली, क्या तुम पापा को देखकर शरमा जाती हो? यह तो कुछ नया है।"

“मैं शरमाती नहीं हूँ—मैं कभी शरमाती नहीं हूँ,” उसने दृढ़ता से कहा, तभी उसके दिल से एक और लाल रंग की लहर उठी। “लेकिन मुझे लगा कि तुम भोजन कक्ष में हो, और मुझे लूसी चाहिए थी।”

“मुझे लगता है कि आपको लगा कि मैं जॉन ग्राहम ब्रेटन के साथ हूँ? लेकिन उन्हें अभी बुलाया गया है: वे जल्द ही वापस आ जाएँगे, पॉली। वे आपका पत्र आपके लिए पोस्ट कर सकते हैं; इससे मैथ्यू का एक काम बच जाएगा, जैसा कि वह इसे कहते हैं।”

“मैं चिट्ठियाँ पोस्ट नहीं करती,” उसने कुछ चिड़चिड़ेपन से कहा।

“तो फिर तुम उनका क्या करते हो? — इधर आओ और मुझे बताओ।”

उसका मन और हावभाव दोनों एक पल के लिए हिचकिचाए— मानो यह कहने के

लिए कि "क्या मैं आऊं?"— लेकिन फिर भी वह आगे बढ़ी।

"पॉली, तुम्हें पत्र लिखते हुए कितना समय हो गया है? ऐसा लगता है जैसे कल ही की बात हो जब तुम कलम चलाकर दोनों हाथों से पूरी लगन से लिख रही थीं।"

“पापा, ये वो चिट्ठियाँ नहीं हैं जिन्हें आप अपने थैले में डालकर डाक से भेज दें; ये तो बस चिट्ठियाँ हैं, जो मैं कभी-कभार किसी व्यक्ति को दे देती हूँ, बस उसे संतुष्ट करने के लिए।”

“वो व्यक्ति! मेरा मतलब है मिस स्नो?”

“नहीं पापा—लूसी नहीं।”

“तो फिर कौन? शायद श्रीमती ब्रेटन?”

“नहीं पापा—मिसेज ब्रेटन नहीं।”

“तो फिर कौन, मेरी नन्ही बेटी? पापा को सच बताओ।”

“ओह, पापा!” उसने बड़ी गंभीरता से कहा, “मैं आपको सच बताऊंगी—पूरा सच; मुझे आपको बताने में खुशी हो रही है—खुशी, हालांकि मैं कांप रही हूं।”

वह कांप उठी: बढ़ती उत्तेजना, जागृत भावनाएं और साथ ही जुटाया गया साहस उसे हिला रहा था।

“पापा, मैं आपसे अपने कामों को छिपाना नहीं चाहती। मैं आपसे डरती भी हूँ और भगवान के अलावा हर चीज़ से ज़्यादा आपसे प्यार करती हूँ। पत्र पढ़िए; पता देखिए।”

उसने उसे उसकी गोद में रख दिया। उसने उसे उठाया और पूरा पढ़ा; इस बीच उसका हाथ कांप रहा था और उसकी आँखों में चमक आ गई थी।

उसने उसे दोबारा मोड़ा और लेखक को एक अजीब, कोमल, शोकपूर्ण विस्मय के साथ देखा।

“क्या वो इतना लिख सकती है—वो नन्ही सी बच्ची जो कल तक मेरी गोद में बैठी थी? क्या वो इतना महसूस कर सकती है?”

“पापा, क्या यह गलत है? क्या इससे आपको दर्द होता है?”

"इसमें कुछ भी गलत नहीं है, मेरी मासूम छोटी मैरी; लेकिन इससे मुझे दुख होता है।"

“पर पापा, सुनिए! आपको मेरी वजह से दुखी नहीं होना चाहिए। मैं लगभग सब कुछ त्याग दूंगी” (खुद को सुधारते हुए); “मैं आपको दुखी करने के बजाय मरना

पसंद करूंगी; यह बहुत बुरा होगा!”

वह सिहर उठी।

“क्या यह पत्र आपको पसंद नहीं आया? क्या इसे भेजा नहीं जाना चाहिए? क्या इसे फाड़ देना चाहिए? अगर आप आदेश दें तो, आपकी खातिर इसे फाड़ दिया जाएगा।”

मैं कुछ भी ऑर्डर नहीं करता।

“पापा, कुछ ऑर्डर कीजिए; अपनी इच्छा बताइए; बस ग्राहम को दुख मत पहुँचाइए, उसे परेशान मत कीजिए। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती। पापा, मैं आपसे प्यार करती हूँ; लेकिन मैं ग्राहम से भी प्यार करती हूँ — क्योंकि — क्योंकि — इसमें कुछ करना नामुमकिन है।”

“यह शानदार ग्राहम एक शरारती नौजवान है, पॉली—यही मेरी उसके बारे में अभी की राय है: यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैं उसे ज़रा भी पसंद नहीं करती। आह! सालों पहले मैंने उस लड़के की आँखों में कुछ ऐसा देखा था जिसे मैं कभी पूरी तरह समझ नहीं पाई—कुछ ऐसा जो उसकी माँ भी नहीं समझ पाई—एक ऐसी गहराई जो किसी को भी उस धारा में ज़्यादा आगे बढ़ने से रोकती थी; अब, अचानक, मैं उसके प्यार में पूरी तरह डूब गई हूँ।”

“पापा, आप—आपने कोई गलती नहीं की है; आप सुरक्षित हैं; आप जो चाहें कर सकते हैं; आपकी सत्ता निरंकुश है; आप मुझे किसी मठ में बंद कर सकते हैं, और अगर आप इतने क्रूर होना चाहें तो कल ग्राहम का दिल तोड़ सकते हैं। अब, तानाशाह, अब सम्राट, क्या आप ऐसा करेंगे?”

"उसे साइबेरिया भेज दो, उसकी लाल मूंछों समेत; मैं कहती हूं, मुझे वह पसंद नहीं है, पॉली, और मुझे आश्चर्य है कि तुम्हें वह क्यों पसंद है।"

“पापा,” उसने कहा, “क्या आपको पता है कि आप बहुत शरारती हैं? मैंने आपको पहले कभी इतना चिड़चिड़ा, इतना अन्यायपूर्ण, इतना प्रतिशोधी नहीं देखा। आपके चेहरे पर एक ऐसा भाव है जो आप पर जंचता नहीं है।”

“उसे यहाँ से भगाओ!” श्री होम ने आगे बढ़कर कहा, जो सचमुच बेहद नाराज़ और परेशान दिख रहे थे—यहाँ तक कि थोड़े कड़वे भी; “लेकिन, मुझे लगता है, अगर वह चला गया, तो पॉली अपना सामान पैक करके उसके पीछे दौड़ पड़ेगी; उसका दिल तो जीत लिया गया है—जीत लिया गया है, और वह अपने बूढ़े पिता से अलग हो गई

है।”

“पापा, मैं कहती हूँ कि इस तरह बात करना शरारत है, बिलकुल गलत है। मैं आपसे अलग नहीं हुई हूँ, और कोई भी इंसान या कोई भी सांसारिक प्रभाव मुझे आपसे अलग नहीं कर सकता।”

“शादी कर लो, पॉली! लाल मूंछों वाले से शादी कर लो। बेटी बनना छोड़ दो; जाओ और पत्नी बनो!”

“लाल मूंछें! पापा, मुझे समझ नहीं आ रहा कि आपका क्या मतलब है। आपको पूर्वाग्रह से सावधान रहना चाहिए। आप कभी-कभी मुझसे कहते हैं कि आपके देश के सभी स्कॉटिश लोग पूर्वाग्रह के शिकार हैं। मुझे लगता है कि अब यह बात साबित हो चुकी है, जब लाल और गहरे भूरे रंग में कोई अंतर नहीं किया जा सकता।”

“उस पूर्वाग्रही बूढ़े स्कॉटिश व्यक्ति को छोड़ दो; चले जाओ।”

वह एक मिनट तक उन्हें देखती रही। वह दृढ़ता दिखाना चाहती थी, ताने-बाज़ियों के सामने अपनी श्रेष्ठता साबित करना चाहती थी; अपने पिता के स्वभाव को जानते हुए, उनकी कुछ कमज़ोरियों का अंदाज़ा लगाते हुए, उसने इस तरह के दृश्य की उम्मीद की थी जो अब घटित हो रहा था; यह उसके लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, और वह इसे गरिमा के साथ, प्रतिक्रिया पर निर्भर रहते हुए, बीतने देना चाहती थी। लेकिन उसकी गरिमा उसके किसी काम नहीं आई। अचानक उसकी आत्मा उसकी आँखों में पिघल गई; वह उनके गले लग गई: — “मैं आपको नहीं छोड़ूँगी, पापा; मैं आपको कभी नहीं छोड़ूँगी। मैं आपको दुख नहीं दूँगी! मैं आपको कभी दुख नहीं दूँगी!” वह रो पड़ी।

“मेरी प्यारी बच्ची! मेरा अनमोल रत्न!” स्नेही, लेकिन कठोर स्वभाव वाले उस पिता ने धीरे से कहा। उन्होंने फिलहाल और कुछ नहीं कहा; वास्तव में, उनके दो शब्द कर्कश थे।

कमरा अब अंधेरा हो रहा था। मुझे बाहर किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। मुझे लगा कि शायद कोई नौकर मोमबत्तियाँ लेकर आ रहा होगा, इसलिए मैंने दखलंदाज़ी रोकने के लिए धीरे से दरवाजा खोला। लेकिन सामने वाले कमरे में कोई नौकर नहीं था: एक लंबा-चौड़ा सज्जन अपनी टोपी मेज पर रख रहा था, धीरे-धीरे अपने दस्ताने उतार रहा था—जैसे रुका हुआ हो, इंतज़ार कर रहा हो। उसने न तो इशारे से और न ही शब्दों से मुझे बुलाया; फिर भी उसकी आँखों ने कहा— “लूसी,

इधर आओ।” और मैं चली गई।

जब वह मेरी ओर देख रहा था, तो उसके चेहरे पर एक मुस्कान फैल गई: उसके अपने स्वभाव के अलावा, किसी और का स्वभाव उस तरह की बेचैनी को मुस्कान के माध्यम से व्यक्त नहीं कर सकता था जो इस समय उसे परेशान कर रही थी।

“एम. डी बासोम्पियर वहाँ हैं—है ना?” उन्होंने पुस्तकालय की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"हाँ।"

“क्या उसने मुझे डिनर पर देखा? क्या वह मुझे समझ पाया?”

“जी हां, ग्राहम।”

"तो मुझे न्याय करने के लिए पाला-पोसा गया है, और उसे भी?"

“मिस्टर होम” (हम उन्हें अब भी और हमेशा से ही कभी-कभी मिस्टर होम कहकर बुलाते रहे हैं) “अपनी बेटी से बात कर रहे हैं।”

“हा! ये तो वाकई तीखे पल हैं, लूसी!”

वह काफी उत्तेजित था; उसका युवा हाथ कांप रहा था; एक जीवंत (मैं 'नश्वर' लिखने वाला था, लेकिन ऐसे शब्द उस जैसे सर्वांगीण व्यक्ति पर उपयुक्त नहीं होंगे) - एक जीवंत तनाव कभी ठहरता, कभी तेज चलता, उसकी सांसें: इस सारी परेशानी में भी उसकी मुस्कान कभी फीकी नहीं पड़ी।

"क्या वह बहुत गुस्से में है, लूसी?"

“वह बहुत वफादार है, ग्राहम।”

मेरे साथ क्या किया जाएगा?

"ग्राहम, तुम्हारा सितारा ज़रूर भाग्यशाली है।"

“क्या ऐसा ही है? दयालु भविष्यवक्ता! इतना उत्साहित होकर, मैं तो डरपोक ही कहलाऊँगा। मुझे लगता है कि सभी स्त्रियाँ वफ़ादार होती हैं, लूसी। मुझे उनसे प्रेम करना चाहिए, और मैं करता भी हूँ। मेरी माँ अच्छी हैं; वे दिव्य हैं; और तुम लोहे की तरह सच्ची हो। क्या तुम नहीं हो?”

“जी हां, ग्राहम।”

“तो मुझे अपना हाथ दो, मेरी नन्ही धर्म बहन: यह छोटा सा हाथ मेरे लिए मित्रवत है, और हमेशा से रहा है। और अब महान कार्य के लिए तैयार हो जाओ। ईश्वर सही राह दिखाए। लूसी, आमीन कहो!”

वह मुड़ा और तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक मैंने "आमीन!" नहीं कहा—जो मैंने उसे प्रसन्न करने के लिए कहा: उसकी आज्ञा का पालन करने से मेरा पुराना आकर्षण फिर से जागृत हो गया। मैंने उसकी सफलता की कामना की; और मुझे विश्वास था कि वह सफल होगा। वह जन्मजात विजेता था, जैसे कुछ लोग जन्मजात पराजित होते हैं।

“मेरे पीछे आओ!” उसने कहा; और मैं उसके पीछे-पीछे मिस्टर होम के सामने चला गया।

“महोदय,” उसने पूछा, “मेरी सजा क्या है?”

पिता ने उसकी ओर देखा; बेटी ने अपना चेहरा छुपाए रखा।

“खैर, ब्रेटन,” श्री होम ने कहा, “आपने मुझे आतिथ्य सत्कार का अपना सामान्य पुरस्कार दिया है। मैंने आपका सत्कार किया; आपने मेरी सबसे अच्छी चीज़ ले ली। मुझे हमेशा आपसे मिलकर खुशी होती थी; आपको मेरी एकमात्र अनमोल चीज़ देखकर खुशी हुई। आपने मेरे बारे में अच्छी बातें कहीं; और इस बीच, मैं यह नहीं कहूंगा कि आपने मुझे लूटा है, लेकिन मैं दुखी हूं, और जो मैंने खोया है, वह आपने, लगता है, जीत लिया है।”

“महोदय, मैं पश्चाताप नहीं कर सकता।”

“पश्चाताप करो! तुम नहीं! तुम तो निश्चित रूप से विजयी होगे: जॉन ग्राहम, तुम आंशिक रूप से एक हाइलैंडर और एक सरदार के वंशज हो, और तुम्हारे रूप, वाणी और विचार में सेल्ट की झलक मिलती है। तुममें उसकी धूर्तता और आकर्षण है। लाल बाल— (तो फिर, पॉली, सुंदर) धूर्तता भरी ज़ुबान और चालाक बुद्धि, ये सब तुम्हें विरासत में मिले हैं।”

“महोदय, मैं खुद को ईमानदार महसूस करता हूँ,” ग्राहम ने कहा; और उनके चेहरे पर एक सच्ची अंग्रेज़ शर्मिंदगी झलक रही थी, जो उनकी ईमानदारी का प्रमाण थी। “फिर भी,” उन्होंने आगे कहा, “मैं यह नहीं नकारूँगा कि कुछ मामलों में आप मुझ पर सही आरोप लगा रहे हैं। आपकी उपस्थिति में मेरे मन में हमेशा एक विचार रहा है जिसे मैं आपको बताने की हिम्मत नहीं कर पाया। मैं सचमुच आपको दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ का स्वामी मानता था। मैंने उसे पाने की इच्छा की, उसके लिए प्रयास किया। महोदय, मैं अब उसे आपसे माँगता हूँ।”

जॉन, तुम बहुत कुछ पूछते हो।

“जी हां, महोदय। यह आपकी उदारता से उपहार के रूप में और आपके न्याय से पुरस्कार के रूप में ही मिलता है। मैं इसे कभी कमा नहीं सकता।”

“अरे! हाइलैंड की बोली सुनो!” श्री होम ने कहा। “ऊपर देखो, पॉली!”

इस ‘बदसूरत प्रेमी’ को जवाब दो; इसे भगा दो!

उसने ऊपर देखा। उसने शरमाते हुए अपने उत्सुक, सुंदर प्रेमी की ओर देखा। उसने अपने झुर्रीदार पिता को स्नेहपूर्वक निहारा।

“पापा, मैं आप दोनों से बहुत प्यार करती हूँ,” उसने कहा; “मैं आप दोनों का ख्याल रख सकती हूँ। मुझे ग्राहम को कहीं भेजने की ज़रूरत नहीं है—वह यहीं रह सकता है; उससे कोई परेशानी नहीं होगी,” उसने अपनी उस सरल भाषा में कहा, जिसे सुनकर कभी-कभी उसके पिता और ग्राहम दोनों मुस्कुरा देते थे। अब वे मुस्कुरा रहे थे।

“वह मेरे लिए बहुत बड़ी असुविधा पैदा करेगा,” श्री होम अड़े रहे। “मुझे वह नहीं चाहिए, पॉली, वह बहुत लंबा है; वह मेरे रास्ते में रुकावट है। उसे कहो कि वह चला जाए।”

“पापा, आपको उसकी आदत पड़ जाएगी। पहले तो वह मुझे बहुत लंबा लगा—जैसे कोई मीनार हो; लेकिन कुल मिलाकर, मैं उसे किसी और रूप में नहीं देखना चाहता।”

“पॉली, मुझे उससे सख्त आपत्ति है; मुझे दामाद की ज़रूरत नहीं है। मैं देश के सबसे अच्छे आदमी को कभी भी इस रिश्ते में अपने दामाद के रूप में नहीं चुनती। इस सज्जन को बर्खास्त कर दीजिए।”

"लेकिन पापा, वह आपको बहुत लंबे समय से जानता है और आप पर बहुत अच्छा लगता है।"

“बिलकुल, मुझे ठीक लगता है! हाँ; उसने मेरे विचारों और पसंद को अपना बताने का नाटक किया है। उसने अच्छे कारणों से मेरी बात मानी है। मुझे लगता है, पॉली, हम दोनों उसे अलविदा कह देंगे।”

“सिर्फ कल तक के लिए। पापा, ग्राहम से हाथ मिला लीजिए।”

“नहीं: मुझे नहीं लगता: मैं उसका दोस्त नहीं हूँ। मुझे अपने बीच लाने की कोशिश मत करो।”

“हाँ, हाँ, तुम दोस्त हो। ग्राहम, अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाओ। पापा, अपना

हाथ आगे बढ़ाओ। अब, उन्हें छूने दो। पापा, सख्त मत बनो; अपनी उंगलियाँ बंद करो; लचीले बनो — लो! लेकिन यह मुट्ठी नहीं है — यह जकड़ है? पापा, आप तो शिकंजे की तरह जकड़ रहे हैं। आप ग्राहम के हाथ को हड्डी तक कुचल रहे हैं; आप उसे चोट पहुँचा रहे हैं!"

उसने उसे जरूर चोट पहुंचाई होगी; क्योंकि उसने हीरे जड़े एक भारी-भरकम अंगूठी पहन रखी थी, जिसके नुकीले पहलू ग्राहम के मांस में धंस गए और खून निकल आया: लेकिन दर्द ने डॉ. जॉन को केवल हंसाया, जैसे चिंता ने उन्हें मुस्कुराने पर मजबूर किया था।

अंत में श्री होम ने डॉक्टर से कहा, "मेरे अध्ययन कक्ष में मेरे साथ आइए।" वे चले गए। उनकी बातचीत संक्षिप्त थी, लेकिन मेरा मानना है कि वह निर्णायक थी। दूल्हे से कई बातों पर पूछताछ और गहन जांच की गई। चाहे डॉक्टर ब्रेटन कभी-कभी अपने हाव-भाव और भाषा में धूर्तता दिखाते हों या नहीं, उनके व्यक्तित्व में गहराई थी। बाद में मुझे पता चला कि उनके उत्तरों से बुद्धिमत्ता और ईमानदारी दोनों झलकती थीं। उन्होंने अपने मामलों को बखूबी संभाला था। उन्होंने उलझनों से जूझते हुए सफलता प्राप्त की थी; उनकी किस्मत अब सुधरने की राह पर थी; उन्होंने स्वयं को विवाह के योग्य साबित किया था।

पिता और प्रेमी एक बार फिर पुस्तकालय में प्रकट हुए। एम. डी.

बासोम्पियर ने दरवाजा बंद कर दिया; उसने अपनी बेटी की ओर इशारा किया।

"उसे ले जाओ," उसने कहा। "उसे ले जाओ, जॉन ब्रेटन: और ईश्वर तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करे जैसा तुम उसके साथ करोगे!"

* * * * *

कुछ समय बाद, शायद दो सप्ताह बाद, मैंने तीन व्यक्तियों को देखा - काउंट डी बासोम्पियर, उनकी बेटी और डॉ. ग्राहम ब्रेटन - बोइस ल'एटांग स्थित महल के मैदान में एक छोटे, घने और छायादार पेड़ के नीचे एक ही स्थान पर बैठे हुए। वे वहाँ गर्मियों की शाम का आनंद लेने आए थे: भव्य द्वारों के बाहर उनकी गाड़ी उन्हें घर ले जाने के लिए प्रतीक्षा कर रही थी; उनके चारों ओर फैली हरी घास शांत और धुंधली थी; महल दूर से पेंटेलिकस पर्वत की चट्टान की तरह सफेद दिखाई दे रहा था; उसके ऊपर शाम का तारा चमक रहा था; फूलों से भरी झाड़ियों का जंगल इस स्थान के वातावरण को

सुहावना बना रहा था; समय शांत और मधुर था; इस समूह के अलावा, पूरा दृश्य एकांत था।

पॉलिना दोनों सज्जनों के बीच बैठी थी: जब वे बातचीत कर रहे थे, उसके छोटे हाथ किसी काम में व्यस्त थे; पहले तो मुझे लगा कि वह फूलों का गुलदस्ता बाँध रही है। नहीं; उसकी गोद में चमकती छोटी कैंची से उसने अपने बगल में बैठे दोनों पुरुषों के सिर से बाल काट डाले थे, और अब वह भूरे और सुनहरे बालों को एक साथ गूंथने में लगी थी। जब चोटी बन गई - उसे बाँधने के लिए रेशम का धागा पास में नहीं था - तो उसने अपने ही बालों की एक लट का इस्तेमाल किया; उसने उसे गाँठ की तरह बाँधा, एक लॉकेट में रखा, और अपने दिल पर रख लिया।

“अब,” उसने कहा, “एक ताबीज़ बनाया गया है, जिसमें तुम दोनों को हमेशा दोस्त बनाए रखने का गुण है। जब तक मैं इसे पहनूंगी, तुम दोनों कभी झगड़ा नहीं कर सकते।”

एक ताबीज बनाया गया, एक ऐसा मंत्र रचा गया जिसने शत्रुता को असंभव बना दिया। वह दोनों के लिए एक बंधन बन गई, दोनों पर प्रभाव डालने लगी, आपसी सामंजस्य स्थापित करने लगी। उनसे ही उसे सुख प्राप्त हुआ, और जो कुछ उसने लिया, उसे ब्याज सहित लौटा दिया।

"क्या सचमुच धरती पर ऐसी खुशी है?" मैंने पूछा, जब मैंने पिता, बेटी और भावी पति को एक साथ देखा - सभी धन्य और आशीर्वाद देने वाले।

जी हाँ; यह सच है। बिना किसी कल्पना या अतिशयोक्ति के, यह सच है। कुछ वास्तविक जीवन—कुछ दिनों या वर्षों के लिए—स्वर्ग के सुख की अनुभूति करते हैं; और मेरा मानना है कि यदि अच्छे लोग एक बार ऐसे परिपूर्ण सुख का अनुभव कर लें (दुष्टों को यह कभी नहीं मिलता), तो इसका मधुर प्रभाव कभी पूरी तरह से नष्ट नहीं होता। चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ आएं, चाहे बीमारी का कितना भी कष्ट हो या मृत्यु का साया छा जाए, पूर्व-प्राप्त गौरव की चमक हमेशा बनी रहती है, तीव्र पीड़ा को कम करती है और गहरे अंधकार को दूर करती है।

मैं इससे आगे बढ़ता हूँ। मेरा मानना है कि कुछ मनुष्य ऐसे जन्म लेते हैं, ऐसे पले-बढ़े होते हैं, ऐसे मार्गदर्शन में पलते हैं कि उन्हें कोमल पालने से शांति और अंतिम मृत्यु तक ले जाया जाता है, और उनके जीवन में कभी अत्यधिक कष्ट नहीं आता, न ही कोई अंधकारमय अंधकार उनकी यात्रा को घेरता है। और अक्सर, ये लाड़-प्यार से

पाले गए, स्वार्थी प्राणी नहीं होते, बल्कि प्रकृति के चुने हुए, सामंजस्यपूर्ण और दयालु होते हैं; ऐसे पुरुष और स्त्रियाँ जो करुणा से भरे होते हैं, और ईश्वर के दयालु गुणों के प्रतिनिधि होते हैं।

खुशखबरी बताने में देर न करें। ग्राहम ब्रेटन और पॉलिना डी बासोम्पियर का विवाह हुआ था, और डॉ. ब्रेटन वाकई एक आदर्श व्यक्तित्व साबित हुए। समय के साथ उनका व्यक्तित्व नहीं बदला; उनकी कमियाँ दूर हुईं, उनके गुण निखर गए; वे बौद्धिक रूप से परिष्कृत हुए, नैतिक रूप से समृद्ध हुए: सारी अशुद्धियाँ छन गईं, और शुद्ध शराब शांत और निर्मल हो उठी। उनकी प्यारी पत्नी का भाग्य भी उज्ज्वल था। उन्होंने अपने पति के प्रेम को थामे रखा, उनकी प्रगति में सहयोग दिया— उनकी खुशी की नींव वही थीं।

यह दंपत्ति सचमुच धन्य थे, वर्षों तक उन्हें अपार समृद्धि और अपार भलाई प्राप्त हुई; उन्होंने खुले दिल से, फिर भी बुद्धिमानी से दान दिया। निःसंदेह उन्होंने दुख, निराशा और कठिनाइयों का सामना किया; लेकिन उन्होंने इन्हें बखूबी सहा। एक से अधिक बार उन्हें उस परमेश्वर के दर्शन करने पड़े, जिसका चेहरा मनुष्य शायद ही देख और जी सके: उन्हें भय के राजा को अपना आदर अर्पित करना पड़ा। वृद्धावस्था में एम. डी. बासोम्पियर का देहांत हो गया; परिपक्व वृद्धावस्था में लुईसा ब्रेटन का भी देहांत हो गया। एक बार तो उनके महल में राहेल के अपने बच्चों के लिए रोने की आवाज गूंजी; लेकिन खोए हुए की जगह नए बच्चे स्वस्थ और खिले-खिले होकर आए: डॉ. ब्रेटन ने अपने बेटे में स्वयं को पुनर्जीवित देखा, जिसने उनका रूप और स्वभाव विरासत में पाया था; उनकी बेटियाँ भी उन्हीं की तरह गरिमामय थीं: उन्होंने इन बच्चों का पालन-पोषण कोमल, फिर भी दृढ़ हाथों से किया; वे विरासत और परवरिश के अनुरूप बड़े हुए।

संक्षेप में, मैं सत्य ही कह रहा हूँ कि ग्राहम और पॉलिना का जीवन, याकूब के प्रिय पुत्र की तरह, "ऊपर स्वर्ग के आशीर्वाद और नीचे की गहराई के आशीर्वाद" से परिपूर्ण था। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि परमेश्वर ने इसे उचित समझा।

अध्याय 38.

बादल।

लेकिन यह सबके लिए ऐसा नहीं है। तो फिर क्या? उसकी इच्छा पूरी हो, और निश्चित रूप से पूरी होगी, चाहे हम समर्पण करें या न करें। सृष्टि की प्रेरणा इसे आगे बढ़ाती है; दृश्य और अदृश्य शक्तियों की शक्ति इसके पूर्ण होने का भार वहन करती है। आने वाले जीवन का प्रमाण अवश्य दिया जाना चाहिए। यदि आवश्यक हो, तो अग्नि और रक्त में वह प्रमाण लिखा जाना चाहिए। अग्नि और रक्त में ही हम प्रकृति में उसका विवरण पाते हैं। अग्नि और रक्त में ही वह हमारे अपने अनुभव को पार करता है। हे पीड़ित, इस ज्वलंत प्रमाण के भय से भयभीत मत हो। हे थके हुए यात्री, कमर कस लो; ऊपर देखो, आगे बढ़ो। हे तीर्थयात्रियों और शोक संतप्त भाइयों, मित्रवत संगति में शामिल हो जाओ। इस संसार के निर्जन जंगल में हममें से अधिकांश के लिए मार्ग अंधकारमय है: हमारे कदम स्थिर और दृढ़ हों; हमारा क्रूस ही हमारा ध्वज हो। हमारे पास उसका वचन सहारा है, जिसका “वचन सिद्ध है, जिसका मार्ग सिद्ध है”; वर्तमान आशा के लिए उसकी कृपा है, “जो उद्धार की ढाल देता है, जिसकी कोमलता महान बनाती है”; हमारा अंतिम घर उनकी गोद में है, जो "स्वर्ग की ऊँचाइयों में निवास करते हैं"; हमारा सर्वोच्च पुरस्कार एक असीम और शाश्वत महिमा है। आइए हम इस प्रकार दौड़ें कि हम इसे प्राप्त कर सकें; अच्छे सैनिकों की तरह कठिनाइयों को सहन करें; अपनी यात्रा पूरी करें और विश्वास बनाए रखें, इस विश्वास के साथ कि अंत में हम विजेताओं से भी बढ़कर होंगे: "हे पवित्र प्रभु, क्या तू अनादि काल से मेरा नहीं है? हम नहीं मरेंगे!"

गुरुवार की सुबह हम सभी कक्षा में एकत्रित थे, साहित्य के पाठ की प्रतीक्षा कर रहे थे। समय आ गया था; हम शिक्षक की प्रतीक्षा कर रहे थे।

पहली कक्षा के विद्यार्थी एकदम शांत बैठे थे; पिछली कक्षा के बाद से तैयार की गई साफ-सुथरी रचनाएँ उनके सामने रिबन से करीने से बंधी पड़ी थीं, मानो प्रोफेसर के डेस्कों का चक्कर लगाते ही उन्हें उठाने की प्रतीक्षा कर रही हों। महीना जुलाई का

था, सुबह सुहावनी थी, कांच का दरवाजा थोड़ा खुला था, जिससे ताज़ी हवा आ रही थी, और चौखट पर उगे पौधे लहरा रहे थे, झुक रहे थे, अंदर झाँक रहे थे, मानो कोई संदेश फुसफुसा रहे हों।

एम. इमानुएल हमेशा समय के पाबंद नहीं थे; हमें उनके थोड़ा देर से आने पर शायद ही आश्चर्य हुआ, लेकिन हमें तब आश्चर्य हुआ जब अंततः दरवाजा खुला और उनकी फुर्ती और जोश के बजाय, सतर्क मैडम बेक चुपचाप हमारे सामने आ गईं।

वह एम. पॉल की मेज के पास पहुंची; वह उसके सामने खड़ी हो गई; उसने अपने कंधों को ढकने वाले हल्के शॉल को अपने चारों ओर लपेट लिया; धीमी, लेकिन दृढ़ आवाज़ में और एकटक निगाहों से बोलते हुए उसने कहा, "आज सुबह साहित्य की कोई कक्षा नहीं होगी।"

लगभग दो मिनट के विराम के बाद उनके भाषण का दूसरा अनुच्छेद आया।

"संभवतः कक्षाएं एक सप्ताह के लिए स्थगित रहेंगी। मुझे एम. इमानुएल के स्थान पर एक कुशल विकल्प खोजने के लिए कम से कम इतना समय चाहिए होगा। इस बीच, हम रिक्त स्थानों को उपयोगी ढंग से भरने का प्रयास करेंगे।"

"देवियों, आपके प्रोफेसर आपसे संभवत: समय रहते विदा लेना चाहते हैं। फिलहाल उनके पास इस औपचारिकता के लिए समय नहीं है। वे एक लंबी यात्रा की तैयारी कर रहे हैं। कर्तव्य की एक अचानक और अत्यावश्यक पुकार उन्हें बहुत दूर बुला रही है। उन्होंने अनिश्चित काल के लिए यूरोप छोड़ने का फैसला किया है। शायद वे आपको इसके बारे में और अधिक जानकारी दे सकें। देवियों, एम. इमैनुएल के साथ नियमित पाठ के बजाय, आप आज सुबह मैडमोजेल लूसी के साथ अंग्रेजी पढ़ेंगी।"

उसने विनम्रतापूर्वक अपना सिर झुकाया, अपने शॉल की तहों को समेटा और कक्षा से बाहर चली गई।

एकदम सन्नाटा छा गया: फिर कमरे में हल्की फुसफुसाहट फैल गई: मुझे लगता है कुछ छात्र रो पड़े।

कुछ समय बीत गया। शोर, फुसफुसाहट, और कभी-कभार सिसकियाँ बढ़ गईं। मुझे अनुशासन में ढील, एक तरह की बढ़ती अव्यवस्था का एहसास हुआ, मानो मेरी छात्राओं को लग रहा था कि सतर्कता हटा ली गई है, और कक्षा से निगरानी लगभग गायब हो गई है। आदत और कर्तव्यबोध ने मुझे तुरंत संभलने, अपने सामान्य तरीके से उठने, अपने सामान्य लहजे में बोलने, निर्देश देने और अंत में शांति स्थापित करने

में सक्षम बनाया। मैंने अंग्रेजी की पढ़ाई लंबी और गहन करवाई। मैंने उन्हें पूरी सुबह उसी में लगाए रखा। मुझे याद है कि सिसकने वाली छात्राओं के प्रति मुझे अधीरता का भाव आ रहा था। वास्तव में, उनकी भावना का कोई खास महत्व नहीं था: यह केवल एक हिस्टीरिया जैसी बेचैनी थी। मैंने उन्हें यह बात बिना किसी संकोच के कही। मैंने उनका आधा मज़ाक उड़ाया। मैं सख्त थी। सच तो यह था कि मैं उनके आँसू, या उस सिसकने की आवाज़ को सहन नहीं कर सकती थी; मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। एक कमजोर दिमाग वाली, उदास छात्रा ने तब भी सिसकना जारी रखा जब बाकी छात्राओं ने सिसकना बंद कर दिया था; अत्यावश्यक आवश्यकता ने मुझे उससे इस प्रकार बात करने के लिए बाध्य और सहायता प्रदान की कि वह प्रदर्शन जारी रखने का साहस नहीं कर सकी, और उसे अपनी घबराहट पर काबू पाने के लिए विवश होना पड़ा।

उस लड़की को मुझसे नफरत करने का पूरा हक था, लेकिन स्कूल खत्म होने और उसकी सहेलियों के जाने के बाद, मैंने उसे रुकने का आदेश दिया। उनके जाने के बाद, मैंने वो किया जो मैंने उनमें से किसी के साथ पहले कभी नहीं किया था - उसे अपने सीने से लगा लिया और उसके गाल चूमे। लेकिन, इस भावना के आगे झुककर, मैंने उसे तुरंत कक्षा से बाहर निकाल दिया, क्योंकि उस मार्मिक क्षण पर वह पहले से कहीं ज्यादा फूट-फूटकर रोई।

उस दिन मैंने हर पल को व्यस्त रखा और अगर मोमबत्ती जलती रहती तो मैं पूरी रात जागना चाहता; लेकिन रात अच्छी नहीं गुज़री और उसका बुरा असर पड़ा, जिससे अगले दिन असहनीय गपशप के लिए मैं बिल्कुल भी तैयार नहीं था। ज़ाहिर है, यह खबर हर तरफ फैल गई। पहले तो थोड़ी हैरानी हुई, लेकिन जल्द ही वो भी दूर हो गई; हर किसी ने मुंह खोल दिया; हर कोई बातें करने लगा; शिक्षक, छात्र, यहाँ तक कि नौकर भी "इमैनुएल" का नाम लेने लगे। वो व्यक्ति जिसका स्कूल से जुड़ाव उसके शुरू होने के समय से ही था, अचानक ऐसे गायब हो जाए! सबको यह अजीब लगा।

वे इतनी बातें करते रहे, इतनी देर तक, इतनी बार, कि उनके शब्दों और अफवाहों की भरमार में से आखिरकार कुछ जानकारी मिली। लगभग तीसरे दिन मैंने सुना कि वह एक हफ्ते में रवाना होने वाला है; फिर—कि वह वेस्ट इंडीज जा रहा है। मैंने मैडम बेक के चेहरे और आँखों में देखा, इस खबर की पुष्टि या खंडन के लिए; मैंने उन्हें पूरी तरह से निहारने की कोशिश की, लेकिन उनके हाव-भाव से शांत और सामान्य भाव

के अलावा कुछ भी पता नहीं चला।

“यह अलगाव उनके लिए बहुत बड़ा नुकसान था,” उन्होंने आरोप लगाया। “उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे इस खालीपन को कैसे भरेंगी। वे अपने रिश्तेदार की इतनी आदी हो चुकी थीं कि वे उनके दाहिने हाथ बन गए थे; उनके बिना वे क्या करतीं? उन्होंने इस कदम का विरोध किया था, लेकिन एम. पॉल ने उन्हें समझा दिया था कि यह उनका कर्तव्य है।”

उसने यह सब बातें सबके सामने, कक्षा में, खाने की मेज पर, ज़ेली सेंट पियरे से स्पष्ट रूप से बोलते हुए कहीं।

“यह उसका कर्तव्य क्यों था?” मैं उनसे यह सवाल पूछ सकती थी। कक्षा में जब वह शांति से मेरे पास से गुज़रीं, तो मेरा मन किया कि अचानक उन्हें पकड़ लूँ, अपना हाथ बढ़ाऊँ और उन्हें कसकर पकड़ लूँ और कहूँ, “रुको। हमें इस पूरे मामले का निष्कर्ष सुनने दो। निर्वासन में जाना उसका कर्तव्य क्यों है?” लेकिन मैडम हमेशा किसी दूसरे शिक्षक से बात करतीं और कभी मेरी तरफ नहीं देखतीं, उन्हें कभी यह एहसास ही नहीं हुआ कि मेरे सवाल में कोई दिलचस्पी हो सकती है।

सप्ताह बीतता गया। एम. इमानुएल के हमें विदाई देने आने के बारे में और कुछ नहीं कहा गया; और न ही कोई उनके आने को लेकर चिंतित था; न ही किसी ने उनके आने या न आने पर सवाल उठाया; न ही किसी को इस बात का डर था कि वे चुपचाप और बिना देखे चले जाएंगे; वे लगातार बातें करते रहे, और अपनी सारी बातचीत में उन्होंने इस महत्वपूर्ण मुद्दे का ज़िक्र तक नहीं किया। जहाँ तक मैडम की बात है, वह बेशक उनसे मिल सकती थीं और उनसे जितनी चाहें उतनी बातें कर सकती थीं। उन्हें क्या फ़र्क पड़ता कि वे कक्षा में आते हैं या नहीं?

पूरा सप्ताह बीत गया। हमें बताया गया कि वह इस दिन जा रहे हैं, उनका गंतव्य "गुआडालूप में बासेटेरे" है: विदेश जाने का उनका काम उनके निजी हितों से नहीं, बल्कि एक मित्र के हितों से संबंधित था: मुझे भी यही लगा।

“गुआडालूप में बासेटेरे।” इस समय मुझे बहुत कम नींद आती थी, लेकिन जब भी मैं सोता था, तो निश्चित रूप से मैं अचानक चौंककर जाग जाता था, और ऐसा लगता था मानो “बासेटेरे,” “गुआडालूप,” शब्द मेरे तकिये पर लिखे जा रहे हों, या मेरे चारों ओर और मेरे सामने अंधेरे में लाल या बैंगनी रोशनी के टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में दौड़ रहे हों।

मुझे जो महसूस हो रहा था, उसके लिए कोई मदद नहीं थी, और मैं अपनी

भावनाओं को कैसे रोक सकती थी? पिछले कुछ दिनों में एम. इमानुएल मेरे प्रति बहुत दयालु रहे थे; उनका व्यवहार प्रति घंटा बेहतर और दयालु होता जा रहा था। हमारे बीच धार्मिक मतभेद सुलझने को अब एक महीना हो गया था, और इस पूरे समय में कोई झगड़ा नहीं हुआ था। न ही हमारी शांति अलगाव की ठंडी संतान थी; हम अलग-थलग नहीं रहे थे; वे अक्सर आते थे, मुझसे पहले से ज़्यादा बातें करते थे; वे मेरे साथ घंटों बिताते थे, शांत मन से, संतुष्ट आँखों से, घरेलू और सौम्य व्यवहार से। हमारे बीच बातचीत के विषय सुहावने हो गए थे; उन्होंने मेरी जीवन योजनाओं के बारे में पूछा था, और मैंने उन्हें बताया था; स्कूल का प्रोजेक्ट उन्हें पसंद आया; उन्होंने मुझसे इसे एक से ज़्यादा बार दोहराने को कहा, हालाँकि उन्होंने इसे अलनाशर का सपना कहा। मतभेद सुलझ गया था; आपसी समझ मजबूत हो रही थी; एकता और आशा की भावनाएँ दिल में गहराई से महसूस होने लगी थीं; स्नेह, गहरा सम्मान और उभरता विश्वास, सभी ने अपने बंधन को मजबूत कर लिया था।

इस समय मुझे कितने शांत सबक मिले! अब मेरी "बुद्धि" पर कोई ताने नहीं, न ही सार्वजनिक दिखावे की कोई धमकियाँ! ईर्ष्यापूर्ण ताने और उससे भी अधिक ईर्ष्यापूर्ण, आधे-अधूरे मन से की गई प्रशंसा की जगह कितनी मधुरता से एक मौन, उदार सहायता, एक स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन और एक कोमल सहनशीलता ने ले ली, जो क्षमा तो करती थी लेकिन कभी प्रशंसा नहीं करती थी। कई बार वे मिनटों तक बैठे रहते और बिल्कुल नहीं बोलते; और जब शाम ढल जाती या कर्तव्य के कारण बिछड़ जाते, तो वे इन शब्दों के साथ विदा होते, “शांति मधुर है! शांति अनमोल है!”

एक शाम, दस दिन से भी कम समय पहले, वह मेरी गली में टहलते हुए मेरे पास आया। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। मैंने उसकी ओर देखा। मुझे लगा कि वह मेरा ध्यान अपनी ओर खींचना चाहता है।

“बॉन पेटिट अमी!” उसने कोमल स्वर में कहा; “डूस कॉन्सोलैट्रिस!” लेकिन उसके स्पर्श और शब्दों से एक नई भावना और एक अजीब विचार ने जन्म लिया। क्या वह मित्र या भाई से बढ़कर कुछ बन रहा था? क्या उसकी नज़रें भाईचारे या मित्रता से परे दयालुता बयां कर रही थीं?

उनकी भावपूर्ण दृष्टि में बहुत कुछ कहने को था, उनका हाथ मुझे आगे खींच लाया, उनके होंठ भाव-भंगिमाते हुए हिल रहे थे। नहीं। अभी नहीं। तभी धुंधली सी गली में एक व्यवधान आया: यह दोहरा और अशुभ था: हमारे सामने दो भयावह आकृतियाँ थीं

- एक महिला की और एक पुजारी की - मैडम बेक और पेरे सिलास।

बाद वाले पहलू को मैं कभी नहीं भूलूंगा। पहली प्रतिक्रिया में इसने जीन-जैक्स की संवेदनशीलता को दर्शाया, जो अचानक सामने आए स्नेह के संकेतों से प्रेरित थी; फिर तुरंत ही उस पर चर्च की ईर्ष्या का काला साया छा गया। उन्होंने मुझसे स्नेह से बात की। उन्होंने अपने शिष्य को सख्ती से देखा। जहाँ तक मैडम बेक की बात है, उन्होंने तो कुछ भी नहीं देखा—बिल्कुल भी नहीं; हालाँकि उनके रिश्तेदार ने उनकी उपस्थिति में उस विधर्मी विदेशी का हाथ थामे रखा, उसे छोड़ने नहीं दिया, बल्कि कसकर थामे रखा।

इन घटनाओं के बाद, अचानक हुई विदाई की घोषणा मुझे पहले तो अविश्वसनीय लगी। दरअसल, बार-बार दोहराई गई इस बात और मेरे आस-पास मौजूद डेढ़ सौ लोगों के विश्वास ने ही मुझे इसे पूरी तरह स्वीकार करने पर मजबूर किया। उस अनिश्चितता भरे सप्ताह की बात करें, जिसमें कई दिन खाली-खाली से थे, फिर भी उनमें एक अजीब सी बेचैनी थी, और जिसकी ओर से उन्होंने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया - मुझे वह सप्ताह याद तो है, लेकिन मैं उसका वर्णन नहीं कर सकती।

अंतिम दिन की शुरुआत हो गई। अब वह हमसे मिलने आएगा। अब वह आएगा और अपनी विदाई कहेगा, या फिर चुपचाप गायब हो जाएगा और हम उसे फिर कभी नहीं देख पाएंगे।

उस विद्यालय में किसी भी जीवित प्राणी के मन में यह विकल्प मौजूद नहीं था। सभी लोग तय समय पर उठे; सभी ने हमेशा की तरह नाश्ता किया; सभी ने अपने दिवंगत प्रोफेसर का जिक्र किए बिना या उनके बारे में सोचे बिना, हमेशा की तरह शांत भाव से अपने-अपने कर्तव्यों का पालन किया।

घर इतना उदासीन, इतना शांत, इतना अनुशासित और इतना उदासीन था कि ऐसे स्थिर, इतने घुटन भरे वातावरण में सांस लेना मेरे लिए लगभग असंभव था। क्या कोई मेरी आवाज़ नहीं था? क्या किसी की कोई इच्छा नहीं थी, किसी के पास कोई शब्द नहीं था, किसी के पास कोई प्रार्थना नहीं थी जिसे मैं कह सकूँ - आमीन?

मैंने उन्हें छोटी-छोटी चीजों के लिए भी सर्वसम्मति से मांग करते देखा था—एक दावत, एक छुट्टी, एक पाठ की छूट; अब वे मैडम बेक को घेरने और उस गुरु से अंतिम मुलाकात के लिए जोर देने के लिए एकजुट नहीं हो सकते थे, जिन्हें निश्चित रूप से कम से कम कुछ लोगों द्वारा प्यार किया गया था—जितना वे प्यार कर सकते

थे—लेकिन, ओह! भीड़ का प्यार क्या होता है?

मुझे पता था कि वह कहाँ रहता है: मुझे पता था कि उससे कहाँ संपर्क किया जा सकता है या उसकी खबर कहाँ से सुनी जा सकती है; दूरी बहुत कम थी: अगर वह बगल वाले कमरे में भी होता—बिना बुलाए, तो मैं अपने ज्ञान का कोई उपयोग नहीं कर पाता। पीछा करना, ढूँढ़ना, याद दिलाना, स्मरण करना—इन सब चीजों के लिए मुझमें कोई क्षमता नहीं थी।

एम. इमानुएल मेरी बांह की पहुंच के भीतर से गुजर सकते थे: यदि वे चुपचाप और अनसुना होकर गुजर जाते, चुपचाप और बिना हिले-डुले गुजर जाते तो क्या मैं उन्हें जाने देता?

सुबह का समय व्यर्थ गया। दोपहर होते-होते मुझे लगा सब कुछ खत्म हो गया। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मेरा खून बेचैन था। मैं बहुत बीमार महसूस कर रहा था और समझ नहीं पा रहा था कि अपनी जगह पर कैसे टिका रहूँ या अपना काम कैसे करूँ। फिर भी मेरे आस-पास की दुनिया बेपरवाह सी चलती रही; सब कुछ खुश, चिंता, डर या सोच से मुक्त लग रहा था: वही विद्यार्थी जो सात दिन पहले एक चौंकाने वाली खबर सुनकर फूट-फूटकर रोए थे, मानो उस खबर, उसके महत्व और अपनी भावनाओं को पूरी तरह भूल गए हों।

शाम पांच बजे से कुछ पहले, छुट्टी के समय, मैडम बेक ने मुझे अपने कमरे में बुलाया, ताकि मैं उन्हें मिले कुछ अंग्रेज़ी पत्रों को पढ़ और अनुवाद कर सकूँ और उनके लिए उनका उत्तर लिख सकूँ। काम शुरू करने से पहले, मैंने देखा कि उन्होंने अपने कमरे के दोनों दरवाज़े धीरे से बंद कर दिए; उन्होंने खिड़की का शीशा भी बंद कर दिया और उसे अच्छी तरह से बंद कर दिया, जबकि उस दिन बहुत गर्मी थी और हवा का आना-जाना उनके लिए हमेशा ज़रूरी माना जाता था। इतनी सावधानी क्यों? एक गहरी शंका, लगभग घोर अविश्वास, ने यह सवाल उठाया। क्या वह आवाज़ को रोकना चाहती थीं? कौन सी आवाज़?

मैंने पहले कभी न सुनी थी ऐसी सुनने की आवाज़ सुनी; मैं शाम और सर्दियों के भेड़िये की तरह सुन रहा था, बर्फ को सूंघता हुआ, शिकार की गंध पहचानता हुआ, और दूर से किसी यात्री के कदमों की आहट सुनता हुआ। फिर भी मैं सुन भी सकता था और लिख भी सकता था। पत्र के बीच में ही मुझे एक आहट सुनाई दी - जिसने मेरी कलम रोक दी - बरामदे में किसी के कदमों की आहट। कोई घंटी नहीं बजी थी;

रोसीन - शायद किसी के आदेश पर - ने ऐसी भनक लगने का अनुमान लगा लिया था। मैडम ने मुझे रुकते हुए देखा। वह खाँसी, कुछ हलचल की, और ज़ोर से बोली। कदमों की आहट कक्षाओं तक पहुँच गई थी।

“आगे बढ़ो,” मैडम ने कहा; लेकिन मेरा हाथ जंजीरों से जकड़ा हुआ था, मेरा कान जंजीरों में जकड़ा हुआ था, मेरे विचार कैद में ले जाए जा रहे थे।

कक्षाओं के लिए एक अलग इमारत बनाई गई थी; हॉल ने उन्हें आवासीय घर से अलग कर दिया था: दूरी और विभाजन के बावजूद, मैंने अचानक लोगों की हलचल सुनी, एक पूरी मंडली एक साथ उठ खड़ी हुई।

“वे काम समेट रहे हैं,” मैडम ने कहा।

काम समेटने का समय तो आ ही गया था, लेकिन अचानक यह सन्नाटा क्यों छा गया—हलचल पल भर में शांत क्यों हो गई?

"महोदया, रुकिए—मैं देखता हूँ कि क्या है।"

और मैंने अपना पेन नीचे रख दिया और उसे छोड़कर चला गया। छोड़कर चला गया? नहीं: वह मुझे छोड़कर नहीं जा सकती थी: मुझे रोकने में असमर्थ, वह उठी और मेरे पीछे-पीछे आई, मेरी परछाई की तरह। मैं सीढ़ी के आखिरी पायदान पर मुड़ गया।

मैंने पूछा, "क्या तुम भी आ रहे हो?"

“हां,” उसने कहा; मेरी ओर देखते हुए उसके चेहरे पर एक विचित्र भाव था— एक ऐसी दृष्टि, जो धुंधली थी, फिर भी दृढ़ थी।

फिर हम आगे बढ़े, एक साथ नहीं, लेकिन वह मेरे कदमों पर चलती रही।

वह आ गया था। पहली कक्षा में प्रवेश करते ही मैंने उसे देखा। वहाँ एक बार फिर वही जानी-पहचानी आकृति दिखाई दी। मुझे पूरा यकीन है कि उन्होंने उसे रोकने की कोशिश की होगी, लेकिन वह आ ही गया था।

लड़कियाँ अर्धवृत्त में खड़ी थीं; वह सबके पास जाकर विदाई दे रहा था, हर किसी से हाथ मिला रहा था, हर किसी के गाल को अपने होठों से छू रहा था। यह अंतिम रस्म, जो ऐसे विदाई समारोह में विदेशी रीति-रिवाजों के अनुसार जायज़ थी, इतनी गंभीर और इतनी देर तक चलने वाली थी।

मुझे यह बात बेहद बुरी लगी कि मैडम बेक इस तरह मेरा पीछा कर रही थीं; मेरे पीछे-पीछे चल रही थीं और मुझे करीब से देख रही थीं; उनकी फुसफुसाहट के नीचे मेरी गर्दन और कंधे बुखार से सिकुड़ गए; मैं बुरी तरह चिढ़ गया।

वह नज़दीक आ रहा था; अर्धवृत्त लगभग पूरा घूम चुका था; वह आखिरी विद्यार्थी के पास पहुँचा; वह मुड़ा। लेकिन मैडम मेरे सामने थीं; वह अचानक बाहर आ गई थीं; ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने अपने आकार को और बड़ा कर लिया हो और अपने वस्त्रों को और भी भव्य बना दिया हो; उन्होंने मुझे ढक लिया; मैं छिप गया। वह मेरी कमज़ोरी और खामी को जानती थीं; वह नैतिक पक्षाघात की उस हद का अंदाज़ा लगा सकती थीं—आत्म-विश्वास की पूर्ण कमी—जिससे संकट की स्थिति में मैं ग्रस्त हो सकता था। वह अपने रिश्तेदार के पास जल्दी से गईं, उन पर तेज़ी से बोलने लगीं, उनका ध्यान अपनी ओर खींच लिया, और उन्हें जल्दी से दरवाज़े तक ले गईं—वह काँच का दरवाज़ा बगीचे की ओर खुलता था। मुझे लगता है कि उन्होंने पीछे मुड़कर देखा; काश मैं उनकी नज़र में आ पाता, मुझे लगता है कि हिम्मत आ जाती और मैं उन पर टूट पड़ता, और शायद मैं बच भी जाता; लेकिन तब तक कमरा पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो चुका था, अर्धवृत्त समूहों में बँट गया था, मेरी आकृति तीस और लोगों के बीच खो गई थी। मैडम ने अपनी मर्ज़ी पूरी कर ली थी; हाँ, वह उन्हें वहाँ से ले गईं, और उन्होंने मुझे देखा भी नहीं; उन्होंने सोचा कि मैं अनुपस्थित हूँ। पांच बज गए, छुट्टी की तेज घंटी बजी, स्कूल के सभी छात्र अलग हो गए, कमरा खाली हो गया।

मुझे याद है, उस अकेलेपन में बीते कुछ पलों में चारों ओर घना अंधेरा और बेचैनी छा गई थी—एक असहनीय क्षति पर अवर्णनीय दुःख। मैं क्या करूँ; ओह! मैं क्या करूँ; जब मेरे जीवन की सारी आशा मेरे टूटे हुए, आहत हृदय से जड़ से उखाड़ दी गई हो?

मुझे नहीं पता कि मुझे क्या करना चाहिए था, जब एक नन्हा बच्चा - स्कूल का सबसे छोटा बच्चा - अपनी सरलता और अपनी अचेतनता के साथ उस आंतरिक संघर्ष के उग्र लेकिन शांत केंद्र में प्रवेश कर गया।

"मैडमोजेल," पतली आवाज़ में तुतलाते हुए कहा, "मुझे आपको वह देना है। एम. पॉल ने कहा था कि मुझे आपको पूरे घर में, अनाज भंडार से लेकर तहखाने तक, खोजना है और जब मैं आपको पा लूँ, तो आपको वह देना है।"

और उस बच्चे ने एक नोट दिया; छोटी कबूतरी मेरी गोद में आकर बैठ गई, उसकी जैतून की पत्ती टूट गई थी। मुझे न तो पता मिला, न ही नाम, केवल ये शब्द मिले: —

"बाकी सबको अलविदा कहते समय मेरा इरादा आपसे विदा लेने का नहीं था, बल्कि मुझे उम्मीद थी कि कक्षा में आपसे मुलाकात होगी। मेरी निराशा हुई। मुलाकात

स्थगित हो गई है। मेरे लिए तैयार रहना। रवाना होने से पहले, मुझे आपसे फुर्सत में मिलना है और आपसे विस्तार से बात करनी है। तैयार रहना; मेरे पास बहुत कम समय है, और इस समय मैं पूरी तरह व्यस्त हूँ; इसके अलावा, मुझे एक निजी काम करना है जिसे मैं किसी के साथ साझा नहीं करूँगा, न ही किसी को बताऊँगा—यहाँ तक कि आपको भी नहीं। — पॉल।"

"तैयार रहना?" तो फिर आज शाम ही तो होगी: क्या वो कल नहीं जाएगा? हाँ; इस बात का मुझे पूरा यकीन था। मैंने उसके जहाज़ के प्रस्थान की तारीख़ का विज्ञापन देखा था। ओह! मैं तैयार तो रहूँगी, लेकिन क्या वो बहुप्रतीक्षित मुलाक़ात सचमुच हो पाएगी? समय बहुत कम था, साज़िश रचने वाले बहुत चौकस, बहुत सक्रिय और बहुत शत्रुतापूर्ण लग रहे थे; पहुँचने का रास्ता एक खाई की तरह संकरा और एक गहरी खाई की तरह गहरा लग रहा था — अपोलियन उस पर सवार होकर आग उगल रहा था। क्या मेरा महान हृदय उस पर काबू पा सकेगा? क्या मेरा मार्गदर्शक मुझ तक पहुँच सकेगा?

कौन बता सकता है? फिर भी मुझे कुछ हिम्मत और कुछ तसल्ली मिलने लगी; मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उसके दिल की धड़कन को महसूस कर रही हूँ जो मेरे दिल की धड़कन के साथ-साथ धड़क रही है।

मैंने अपने रक्षक की प्रतीक्षा की। अपोलियन अपने पीछे नरक का साया लिए आ रहा था। मुझे लगता है कि यदि अनंत काल में भी पीड़ा होती, तो उसका रूप अग्नि-कष्ट न होता, न ही उसका स्वरूप निराशा। मुझे लगता है कि उन दिनों में से किसी एक दिन, जो कभी उदय नहीं हुए और कभी अस्त नहीं होंगे, एक देवदूत पाताल लोक में प्रवेश किया - खड़ा हुआ, चमका, मुस्कुराया, सशर्त क्षमा की भविष्यवाणी की, आने वाले सुख की एक अनिश्चित आशा जगाई, जो अभी नहीं, बल्कि किसी अनपेक्षित दिन और घड़ी में आएगा, अपनी महिमा और भव्यता में अपने वादे की ऊँचाई और विस्तार प्रकट किया: इस प्रकार बोला - फिर विशाल होकर एक तारा बन गया, और अपने स्वर्ग में विलीन हो गया। उसकी विरासत अनिश्चितता थी - निराशा से भी बदतर वरदान।

उस पूरी शाम मैं कबूतर द्वारा भेजे गए जैतून के पत्ते पर भरोसा रखते हुए इंतज़ार करती रही, फिर भी अपने भरोसे के बीच, मैं बुरी तरह डरी हुई थी। मेरा डर बहुत गहरा था। ठंडा और अजीब, मैं जानती थी कि यह एक दुर्लभ पूर्वाभास का साथी था।

पहले घंटे लंबे और धीमे लग रहे थे; मन ही मन मैं आखिरी घंटों के उड़ते हुए किनारों से चिपकी रही। वे बहते बादल की तरह गुज़रे—तूफान से पहले भागते हुए मलबे की तरह।

वे गुजर गए। गर्मी का वह लंबा, गर्म दिन क्रिसमस की लकड़ी की तरह जलकर खत्म हो गया; उसका लालिमा भरा अंत फीका पड़ गया; मैं ठंडी नीली छायाओं के बीच, उसकी रात की फीकी और राख जैसी चमक के ऊपर झुका रह गया।

प्रार्थना समाप्त हो चुकी थी; सोने का समय हो गया था; मेरे साथ रहने वाले सभी लोग सो चुके थे। मैं अब भी उस उदास प्रथम श्रेणी के कमरे में ही था, उन नियमों को भूलकर, या कम से कम उनकी अवहेलना करके, जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं भूला था या जिनकी अवहेलना नहीं की थी।

मैं उस क्लासरूम में कितनी देर तक चक्कर लगाती रही, यह मैं बता नहीं सकती; मैं कई घंटों तक चलती रही होगी; मैंने अनायास ही बेंच और डेस्क हटाकर अपने लिए एक रास्ता बना लिया था। मैं वहाँ चलती रही, और जब मुझे यकीन हो गया कि घर के सभी लोग सो रहे हैं और मेरी आवाज़ बिल्कुल सुनाई नहीं दे रही है—वहाँ, मैं आखिरकार रो पड़ी। रात का सहारा लेकर, एकांत में खुद को समेटकर, मैंने अपने आँसू रोके नहीं रखे, अपनी सिसकियों को जकड़े नहीं रखा, अब और नहीं; वे मेरे दिल को चीरते हुए बह निकले; वे अपना रास्ता बना रहे थे। इस घर में, कौन सा दुख पवित्र हो सकता है?

ग्यारह बजने के कुछ ही देर बाद—रू फॉसेट में काफी देर हो चुकी थी—दरवाजा धीरे से खुला, लेकिन चोरी-छिपे नहीं; एक दीपक की लौ चांदनी में फैल गई; मैडम बेक उसी शांत भाव से अंदर आईं, मानो किसी सामान्य अवसर पर, किसी सामान्य मौसम में आई हों। मुझसे तुरंत बात करने के बजाय, वह अपनी मेज पर गईं, चाबियां लीं और कुछ ढूंढने लगीं: वह इस दिखावटी खोज में बहुत देर तक, ज़रूरत से ज़्यादा देर तक, मशगूल रहीं। वह शांत थीं, ज़रूरत से ज़्यादा शांत; मेरा मन इस दिखावे को बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था; दो घंटे पहले ही मैं अपने सामान्य सम्मान और भय को पीछे छोड़ चुका था, और अब मैं सामान्य सीमा से बाहर आ चुका था। सामान्य परिस्थितियों में, एक स्पर्श से निर्देशित और एक शब्द से नियंत्रित होने वाला, अब कोई बंधन सहन नहीं किया जा सकता था—कोई लगाम नहीं मानी जा सकती थी।

“अब सेवानिवृत्ति का समय आ गया है,” मैडम ने कहा; “घर के नियमों का

उल्लंघन बहुत लंबे समय से हो रहा है।”

मैडम को कोई जवाब नहीं मिला: मैंने अपनी चाल नहीं रोकी; जब वह मेरे रास्ते में आई,

मैंने उसे इससे बाहर निकाल दिया।

"मुझे आपको शांत करने दीजिए, मीस; मुझे आपको आपके कमरे तक ले जाने दीजिए," उसने धीरे से बोलने की कोशिश करते हुए कहा।

“नहीं!” मैंने कहा; “न तो तुम और न ही कोई और मुझे मना सकता है या मेरा मार्गदर्शन कर सकता है।”

“तुम्हारा बिस्तर गर्म किया जाएगा। गोटन अभी भी बैठी है। वह तुम्हें आराम देगी: वह तुम्हें एक शामक दवा देगी।”

“महोदया,” मैं भड़क उठा, “आप एक कामुक महिला हैं। आपकी सारी शांति, सुकून और शालीनता के पीछे, आप एक निर्विवाद कामुक महिला हैं। अपना बिस्तर खुद गर्म और मुलायम बनाइए; जितनी चाहें उतनी नींद की गोलियां, मांस और मसालेदार मीठे पेय लीजिए। अगर आपको कोई दुख या निराशा है—और शायद है—नहीं, मुझे पता है है—तो अपने लिए, अपनी पसंद के साधनों से ही उसका समाधान ढूंढिए। लेकिन मुझे छोड़ दीजिए। मुझे छोड़ दीजिए, मैं कहता हूँ!”

"मुझे तुम्हारी निगरानी के लिए एक और व्यक्ति को भेजना होगा, मीस: मुझे गोटन को भेजना होगा।"

“मैं इसकी मनाही करता हूँ। मुझे अकेला छोड़ दो। मुझसे, मेरी ज़िंदगी से और मेरी परेशानियों से दूर रहो। ओह, महोदया! आपके हाथों में ठंडक और ज़हर दोनों हैं। आप ज़हर फैलाती हैं और लकवा मार देती हैं।”

“मैंने क्या कर दिया, मीस? तुम्हें पॉल से शादी नहीं करनी चाहिए। वह शादी नहीं कर सकता।”

“कुत्ते की चरनी!” मैंने कहा: क्योंकि मैं जानती थी कि वह उसे गुप्त रूप से चाहती थी, और हमेशा से चाहती रही थी। वह उसे “असहनीय” कहती थी, उसे “भक्त” कहकर कोसती थी, वह उससे प्यार नहीं करती थी, बल्कि उससे शादी करना चाहती थी, ताकि उसे अपने स्वार्थ के लिए बांध सके। मैडम के कुछ रहस्यों में मैं गहराई तक उतर चुकी थी—पता नहीं कैसे: किसी अंतर्ज्ञान या प्रेरणा से—पता नहीं कहाँ से। उसके साथ रहते हुए, मैंने धीरे-धीरे यह भी जान लिया था कि जब तक वह किसी

कमतर व्यक्ति के साथ न हो, वह हमेशा मेरी प्रतिद्वंदी रहेगी। वह मेरी प्रतिद्वंदी थी, दिल और जान से, हालांकि गुप्त रूप से, अत्यंत सहज व्यवहार के साथ, और मेरे और उसके अलावा किसी को भी पता नहीं था।

दो मिनट तक मैं मैडम के ऊपर खड़ा रहा, यह महसूस करते हुए कि वह पूरी तरह से मेरे वश में है, क्योंकि कुछ मनोदशाओं में, जैसे कि वर्तमान में - कुछ उत्तेजित अवस्थाओं में, जैसे कि इस क्षण में - उनका अभ्यस्त वेश, उनका मुखौटा और उनका डोमिनो, मेरे लिए केवल छेदों से भरा एक जाल मात्र था; और मैंने उसके भीतर एक निर्दयी, स्वार्थी और नीच व्यक्तित्व देखा। वह चुपचाप मुझसे दूर चली गईं: विनम्र और संयमित, हालांकि बहुत बेचैन, उन्होंने कहा, "यदि मैं आराम करने के लिए राजी नहीं हुई, तो मुझे अनिच्छा से मुझे छोड़ना पड़ेगा।" और वह तुरंत चली गईं, शायद मुझसे भी अधिक प्रसन्न होकर, उन्हें जाते हुए देखकर।

मैडम बेक और मेरे बीच यही एक क्षणिक मुलाकात थी जिसने सच्चाई उजागर की: यह छोटी सी रात की घटना फिर कभी नहीं दोहराई गई। इससे उनके मेरे प्रति व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आया। मुझे नहीं पता कि उन्होंने इसका बदला लिया या नहीं। मुझे नहीं पता कि मेरी स्पष्टवादिता के कारण उन्हें मुझसे नफरत हुई। मुझे लगता है कि उन्होंने अपने दृढ़ निश्चय और गुप्त दर्शन से खुद को मजबूत किया और उस बात को भूलने का निश्चय किया जिसे याद करके उन्हें चिढ़ होती थी। मैं जानता हूँ कि हमारे जीवन के अंत तक उस ज्वलंत घटना का न तो जिक्र हुआ और न ही उसका कोई उल्लेख।

वह रात बीत गई: सभी रातें—यहाँ तक कि प्रलय से पहले की तारों रहित रात भी—बीत जाती हैं। लगभग छह बजे, जिस समय घरवाले उठ खड़े होते थे, मैं आंगन में गया और वहाँ के ठंडे, ताज़े कुएँ के पानी से अपना चेहरा धोया। जैसे ही मैं सीढ़ी से अंदर गया, ओक की लकड़ी की अलमारी में जड़े एक शीशे में मेरी ही छवि दिखाई दी। ऐसा लगा जैसे मैं बदल गया हूँ: मेरे गाल और होंठ भीगे हुए सफेद थे, मेरी आँखें बेजान थीं और मेरी पलकें सूजी हुई और बैंगनी थीं।

अपने साथियों के पास लौटते ही, मुझे पता था कि वे सब मुझे घूर रहे हैं—जैसे मेरा दिल उनके सामने खुल गया हो: मुझे लगा जैसे मैंने खुद को धोखा दिया हो। यह बात बेहद निश्चित लग रही थी कि स्कूल के सबसे छोटे बच्चे भी समझ गए होंगे कि मैं क्यों और किसके लिए निराश थी।

“इसाबेल,” वह बच्ची जिसकी मैंने कभी बीमारी में देखभाल की थी, मेरे पास आई। क्या वह भी मेरा मजाक उड़ाएगी!

“आप कितने पीले हैं! आप तो बिल्कुल बीमार हैं, मैडमोजेल!” उसने अपनी उंगली मुंह में डालते हुए कहा और एक उदास मूर्खता भरी निगाहों से घूरने लगी, जो उस क्षण मुझे सबसे तेज बुद्धि से भी अधिक सुंदर लग रही थी।

इसाबेल अज्ञानता की सलाह में अधिक समय तक अकेली नहीं रही: दिन समाप्त होने से पहले ही, मुझे पूरे अंधे परिवार के प्रति कृतज्ञता का कारण मिल गया। भीड़ के पास दिलों को पढ़ने और गूढ़ बातों की व्याख्या करने के अलावा और भी काम हैं। जो चाहे, वह अपनी बात अपने तक ही रख सकता है - अपने रहस्य का स्वामी बन सकता है। उस दिन के दौरान, मुझे एक के बाद एक प्रमाण मिलते गए, न केवल यह कि मेरे वर्तमान दुख का कारण अनसुलझा था, बल्कि यह भी कि पिछले छह महीनों से मेरा पूरा आंतरिक जीवन अभी भी केवल मेरा ही था। यह ज्ञात नहीं था - इस पर ध्यान नहीं दिया गया था - कि मैं सभी जीवन में एक जीवन को विशेष महत्व देता हूँ। गपशप मुझसे दूर रही; जिज्ञासा ने मुझे अनदेखा किया; ये दोनों सूक्ष्म प्रभाव, जो हमेशा मेरे आस-पास मंडराते रहते थे, कभी मुझ पर केंद्रित नहीं हुए। एक संगठन बुखार से भरे अस्पताल में रह सकता है, और टाइफस से बच सकता है। एम. इमैनुएल आए और चले गए: मुझे सिखाया गया और मैंने खोज की; हर मौसम में, चाहे समय हो या न हो, वह मुझे बुलाता था और मैं उसकी बात मान लेती थी: “एम. पॉल मिस लूसी को बुला रहे हैं” — “मिस लूसी एम. पॉल के साथ हैं” — यही बात हमेशा चलती रहती थी; और किसी ने कोई टिप्पणी नहीं की, निंदा तो दूर की बात है। किसी ने कोई इशारा नहीं किया, किसी ने कोई मज़ाक नहीं किया। मैडम बेक ने पहेली को समझ लिया: किसी और ने उसका हल नहीं निकाला। अब मैं जिस तकलीफ से गुज़र रही थी, उसे बीमारी कहा जाता था — सिरदर्द: मैंने इसे स्वीकार कर लिया।

लेकिन ऐसी पीड़ा जैसी शारीरिक बीमारी और क्या हो सकती है? यह निश्चितता कि वह बिना विदाई के चला गया—यह क्रूर विश्वास कि भाग्य और पीछा करने वाली विपत्तियाँ—एक स्त्री की ईर्ष्या और एक पादरी का कट्टरपन—मुझे उसे फिर कभी देखने नहीं देंगी? इसमें क्या आश्चर्य की बात है कि दूसरी शाम भी मैं पहली शाम जैसी ही थी—बेकाबू, पीड़ाग्रस्त, फिर से एक एकांत कमरे में मौन उदासी के अटूट जुनून में

चक्कर लगा रही थी?

उस रात मैडम बेक ने मुझे खुद बिस्तर पर नहीं बुलाया— वो मेरे पास भी नहीं आईं: उन्होंने जिनेवरा फैंसहावे को भेजा— इस काम के लिए उनसे बेहतर कोई और एजेंट नहीं हो सकता था। जिनेवरा के पहले शब्द— "क्या आज रात तुम्हारा सिरदर्द बहुत तेज़ है?" (क्योंकि जिनेवरा को भी बाकी लोगों की तरह लगा कि मेरा सिरदर्द है — असहनीय सिरदर्द जिससे मेरा चेहरा पीला पड़ गया था और पैर बुरी तरह बेचैन हो रहे थे)— उनके पहले शब्दों ने ही मुझे कहीं भी भाग जाने की इच्छा जगा दी, ताकि मैं उनकी पहुँच से दूर हो जाऊँ। और फिर जो कुछ हुआ— उनके अपने सिरदर्द के बारे में शिकायतें—उसने बात पूरी कर दी।

मैं ऊपर गया। थोड़ी देर में मैं अपने बिस्तर पर था— मेरा बदनसीब बिस्तर— जिस पर बिच्छू रेंग रहे थे। लेटे हुए अभी पाँच मिनट भी नहीं हुए थे कि एक और दूत आ गया: गोटन आया और मेरे लिए कुछ पीने को लाया। मुझे बहुत प्यास लगी थी— मैंने जल्दी से पी लिया; पेय मीठा तो था, लेकिन मुझे उसमें नशे का स्वाद महसूस हुआ।

"मैडम कहती हैं कि इससे आपको नींद आ जाएगी, छो-छो," गोटन ने खाली प्याला वापस लेते हुए कहा।

आह! मुझे बेहोश करने वाली दवा दे दी गई थी। दरअसल, उन्होंने मुझे एक तेज़ अफीम दी थी। मुझे एक रात के लिए चुप कराया जाना था।

घरवाले सोने चले गए, रात की बत्ती जला दी गई, शयनकक्ष में सन्नाटा छा गया। नींद ने जल्द ही अपना राज कायम कर लिया: तकियों पर, नींद ने आसानी से अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया: शांत मन से उन सिरों और दिलों पर राज करते हुए, जिनमें कोई दर्द नहीं था — वह अशांत भावों को दरकिनार करते हुए आगे बढ़ गई।

दवा का असर हुआ। मुझे नहीं पता कि मैडम ने खुराक ज़्यादा दी थी या कम; नतीजा वैसा नहीं हुआ जैसा उन्होंने चाहा था। सुस्ती की जगह उत्तेजना आ गई। मैं नए विचारों से भर गया— एक अनोखे रंग की कल्पना में खो गया। सारी इंद्रियों में एक पुकार सी गूंज उठी, उनके बिगुल बजने लगे, उनके तुरही बजने लगे, एक असमय बुलावा। कल्पना अपनी नींद से जाग उठी, और उग्र और साहसी होकर सामने आई। उसने अपने साथी पदार्थ को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा— "उठो!" उसने कहा। "आलसी! आज रात मैं अपनी मर्ज़ी पूरी करूंगी; और तुम कामयाब नहीं होगे।"

"बाहर देखो और रात का नज़ारा लो!" वह पुकार रही थी; और जब मैंने पास ही स्थित खिड़की से भारी पर्दा उठाया - तो उसने अपने शाही अंदाज़ में मुझे एक विशाल और शानदार आकाश में बसा हुआ सर्वोच्च चंद्रमा दिखाया।

मेरी कांपती हुई इंद्रियों के लिए उसने छात्रावास के धुंधले अंधकार, तंग सीमाओं और असहनीय गर्मी को भी असहनीय बना दिया। उसने मुझे इस मांद को छोड़कर ओस, शीतलता और आनंद की ओर अपने पीछे चलने के लिए लुभाया।

उसने मुझे आधी रात के विलेट का एक अजीब सा दृश्य दिखाया। खासकर उसने मुझे वह पार्क दिखाया, गर्मियों का पार्क, जिसकी लंबी-लंबी गलियाँ एकदम शांत, सुनसान और सुरक्षित थीं; उनके बीच एक विशाल पत्थर का कुंड था - वही कुंड जिसे मैं जानता था, और जिसके किनारे मैं अक्सर खड़ा होता था - पेड़ों की घनी छाया में, ठंडे, साफ पानी से भरा हुआ, जिसके नीचे हरी-भरी घास और सरकंडे लगे थे। ये सब क्या था? पार्क के द्वार बंद थे, ताले लगे थे, पहरेदार तैनात थे: अंदर जाना नामुमकिन था।

क्या ऐसा नहीं हो सकता? यह विचारणीय विषय है; और इसी पर सोचते हुए मैंने यंत्रवत कपड़े पहन लिए। नींद आना या शांत लेटना बिल्कुल असंभव था — सिर से पैर तक उत्तेजित थी — ऐसे में कपड़े पहनने के अलावा मैं और क्या कर सकती थी?

द्वार बंद थे, उनके सामने सैनिक तैनात थे: तो क्या पार्क में प्रवेश वर्जित था?

कुछ दिन पहले, वहाँ से गुज़रते हुए, मैंने देखा था, उस समय ध्यान दिए बिना ही, बाड़ में एक दरार थी—एक खंभा टूटा हुआ था। अब मुझे वह दरार फिर से याद आ गई—बिल्कुल साफ़—लिंडेन के पेड़ों के तनों के बीच दिखाई देने वाला संकरा, अनियमित छेद, जो एक पंक्तिबद्ध तरीके से लगाए गए थे। कोई आदमी उस छेद से नहीं जा सकता था, न ही कोई हष्ट-पुष्ट महिला, शायद मैडम बेक तो नहीं; लेकिन मुझे लगा कि मैं जा सकती हूँ: मैंने सोचा कि मुझे कोशिश करनी चाहिए, और एक बार अंदर जाने के बाद, इस समय पूरा पार्क मेरा होगा—चाँदनी रात में जगमगाता पार्क!

छात्रावास में कितनी गहरी नींद थी! कितनी शांत साँसें! पूरा बड़ा कमरा कितना शांत था! समय क्या हुआ था? मुझे जानने की बेचैनी हो रही थी। नीचे वाली कक्षा में एक घड़ी थी: मुझे नीचे जाकर उसे देखने से क्या रोक रहा था? चाँदनी रात में, उसका बड़ा सफेद डायल और काले अंक साफ दिखाई दे रहे होंगे।

इस कदम में रुकावट की तो कोई बात ही नहीं, न ही कोई चरमराती हुई कब्ज़ा

और न ही कोई खटखट। जुलाई की इन गर्म रातों में घुटन भरी हवा बर्दाश्त नहीं हो रही थी, इसलिए कमरे का दरवाज़ा पूरी तरह खुला था। क्या छात्रावास के तख्ते मेरे कदमों को बिना किसी नुकसान के संभाल पाएंगे? हाँ। मुझे पता है कि कहाँ कोई तख्ता ढीला है, और मैं उससे बचकर निकलूँगा। उतरते समय ओक की सीढ़ियाँ थोड़ी चरमराती हैं, लेकिन ज़्यादा नहीं: — मैं सीढ़ी पर पहुँच गया हूँ।

बड़े-बड़े क्लासरूम के दरवाज़े बंद हैं: उन पर कुंडी लगी हुई है। दूसरी ओर, गलियारे का प्रवेश द्वार खुला है। मुझे लगता है कि ये क्लासरूम विशाल, उजाड़ जेलों की तरह हैं, जो मुख्य सड़कों से बहुत दूर दबे हुए हैं, और मेरे लिए भयानक और असहनीय यादों से भरे हुए हैं, जहाँ मैं भूसे और बेड़ियों के बीच दुखी पड़ा हूँ। गलियारा एक खुशनुमा दृश्य प्रस्तुत करता है, जो ऊँचे प्रवेश द्वार की ओर जाता है, जो सीधे सड़क पर खुलता है।

चुप रहो! — घड़ी बज उठी। इस मठ की खामोशी इतनी गहरी है कि मानो ग्यारह ही बजे हों। जब मैं आखिरी घड़ी की गुनगुनाहट को शांत करने के लिए कान लगा रही थी, तभी मुझे गुंबदनुमा गुंबद से हल्की सी आवाज़ सुनाई दी, जैसे घंटियों की या किसी बैंड की — एक ऐसी आवाज़ जिसमें मिठास, विजय और मातम सब घुलमिल गए हों। काश, मैं इस संगीत के और करीब जा पाती, सरकंडों से भरे कुंड के किनारे अकेले बैठकर इसे सुन पाती! मुझे जाने दो — ओह, मुझे जाने दो! कौन सी चीज़ आज़ादी में बाधा डालती है, कौन सी चीज़ उसकी मदद नहीं करती?

वहाँ, गलियारे में, मेरे बगीचे के कपड़े, मेरी बड़ी टोपी, मेरा शॉल टंगे हैं। उस विशाल, भारी दरवाज़े पर कोई ताला नहीं है; कोई चाबी भी नहीं है जिसे ढूँढना पड़े: यह एक स्प्रिंग-बोल्ट से बंद होता है, जिसे बाहर से नहीं खोला जा सकता, बल्कि अंदर से चुपचाप निकाला जा सकता है। क्या मैं इसे खोल पाऊँगी? यह मेरे हाथ के आगे झुक जाता है, बड़ी आसानी से खुल जाता है। मैं आश्चर्यचकित हूँ कि वह दरवाज़ा लगभग अनायास ही खुल गया - मैं आश्चर्यचकित हूँ जब मैं दहलीज पार करके पक्की सड़क पर कदम रखती हूँ, उस अजीब सहजता पर आश्चर्यचकित हूँ जिससे इस कैदखाने को खोल दिया गया है। ऐसा लगता है जैसे मुझे अदृश्य रूप से किसी ने रास्ता दिखाया हो, जैसे कोई विलीन करने वाली शक्ति मुझसे पहले चली गई हो: क्योंकि मैंने खुद शायद ही कोई प्रयास किया हो।

शांत रू फॉसेट! इस फुटपाथ पर मुझे वही मनमोहक ग्रीष्म रात्रि याद आती है

जिसका मैंने कभी ज़िक्र किया था; मुझे उसका चाँद अपने ऊपर दिखाई देता है; हवा में उसकी ओस महसूस होती है। लेकिन मैं यहाँ नहीं रुक सकता; मैं अभी भी अपने पुराने ठिकानों के बहुत करीब हूँ: कालकोठरी के इतने करीब, मैं कैदियों की सिसकियाँ सुन सकता हूँ। यह गंभीर शांति वह नहीं है जिसकी मुझे तलाश है, यह वह नहीं है जिसे मैं सहन कर सकता हूँ: मुझे उस आकाश का चेहरा दुनिया की मृत्यु जैसा लगता है। पार्क भी शांत होगा—मुझे पता है, हर जगह एक नश्वर शांति छाई रहती है—फिर भी मुझे पार्क की तलाश करने दो।

मैंने एक जाना-पहचाना रास्ता चुना और आलीशान और राजसी हाउट-विले की ओर चल पड़ा; वहाँ से वह संगीत निश्चित रूप से गूंज रहा था जो मैंने सुना था; अब वह शांत था, लेकिन शायद फिर से जाग उठे। मैं आगे बढ़ता रहा: न तो बैंड की आवाज़ आई और न ही घंटियों की; उसकी जगह एक और आवाज़ आ गई, एक तेज़ लहर जैसी, एक विशाल प्रवाह जैसी, जो मेरे आगे बढ़ने के साथ-साथ गहरी होती गई। उजाला हुआ, हलचल बढ़ी, घंटियाँ बज उठीं - मैं कहाँ जा रहा था? एक भव्य स्थान पर पहुँचते ही, जादू की तरह अचानक ही मैं एक जीवंत, खुशहाल भीड़ के बीच पहुँच गया।

विलेट एक जगमगाहट से जगमगा रहा है, एक व्यापक रोशनी से; मानो पूरी दुनिया दूर तक फैली हुई है; चांदनी और आसमान गायब हो गए हैं: शहर अपनी ही मशालों की रोशनी में अपनी ही शान देख रहा है—रंगीन पोशाकें, भव्य गाड़ियाँ, शानदार घोड़े और वीर घुड़सवार चमकीली सड़कों पर उमड़ रहे हैं। मुझे दर्जनों मुखौटे भी दिखाई दे रहे हैं। यह एक अजीब दृश्य है, सपनों से भी अजीब। लेकिन पार्क कहाँ है?—मुझे इसके पास ही होना चाहिए। इस चकाचौंध के बीच पार्क छायादार और शांत होना चाहिए—कम से कम वहाँ तो न मशालें हैं, न दीपक, न भीड़?

मैं यही सवाल पूछ रही थी कि तभी एक खुली गाड़ी मेरे पास से गुजरी, जिसमें कई जाने-पहचाने चेहरे थे। भीड़ के बीच से वह गाड़ी बड़ी धीमी गति से ही निकल पाई; उसके फुर्तीले घोड़े अपनी संयमित ऊर्जा में बेचैन थे। मैंने उस गाड़ी में बैठे लोगों को अच्छी तरह देखा: मुझे वे देख नहीं पाए, या कम से कम पहचान नहीं पाए, क्योंकि मैं अपने बड़े शॉल में लिपटी हुई थी और अपने भूसे के हैट से ढकी हुई थी (उस रंग-बिरंगी भीड़ में कोई भी पोशाक अजीब नहीं लग रही थी)। मैंने काउंट डी बासोम्पियर को देखा; मैंने अपनी धर्ममाता को देखा, जो सुंदर वस्त्रों में सजी,

आकर्षक और हंसमुख थीं; मैंने पॉलिना मैरी को भी देखा, जो अपनी सुंदरता, यौवन और खुशी के तिहरे आभामंडल से घिरी हुई थीं। उनके प्रसन्न चेहरे और उत्सव की चमकती आंखों को देखकर, शायद ही कोई उनके भव्य परिधानों पर ध्यान दे पाता था; मुझे बस इतना पता है कि उनके चारों ओर लहराता हुआ वस्त्र पूरी तरह से सफेद, हल्का और दुल्हन जैसा था; उनके सामने मैंने ग्राहम ब्रेटन को बैठे देखा; उसकी ओर देखते हुए ही उसके चेहरे पर वह चमक आ गई थी - उसकी आँखों में प्रतिबिंबित प्रकाश सबसे पहले उसकी आँखों से निकला था।

इन मित्रों का अदृश्य रूप से पीछा करना मुझे एक अजीब सा आनंद दे रहा था, और मैंने सोचा कि मैं उनके पीछे-पीछे पार्क तक जाऊँगा। मैंने उन्हें नए और अप्रत्याशित वैभव के बीच उतरते देखा (गाड़ियाँ वहाँ अनुमत नहीं थीं)। देखो! पत्थर के स्तंभों के बीच लोहे का द्वार तारों से निर्मित एक चमकते मेहराब से घिरा हुआ था; और उस मेहराब के नीचे सावधानी से उनका पीछा करते हुए, मैं कहाँ था और वे कहाँ थे?

एक जादुई भूमि में, एक बेहद खूबसूरत बगीचा, रंगीन उल्काओं से जगमगाता मैदान, बैंगनी, माणिक और सुनहरे रंग की चिंगारियों से सजे पत्तों वाला जंगल; एक ऐसा क्षेत्र, जो पेड़ों और छाया का नहीं, बल्कि अद्भुत स्थापत्य कला से समृद्ध है - वेदी और मंदिर का, पिरामिड, ओबिलिस्क और स्फिंक्स का: अविश्वसनीय रूप से कहें तो, विलेट के पार्क में मिस्र के चमत्कार और प्रतीक व्याप्त थे।

भले ही पाँच मिनट में रहस्य मेरे हाथ में आ गया हो—रहस्य की कुंजी मिल गई हो और उसका भ्रम टूट गया हो—भले ही मैंने इन गंभीर टुकड़ों की सामग्री—लकड़ी, रंग और गत्ते—को तुरंत पहचान लिया हो—ये अपरिहार्य खोजें उस रात के आकर्षण को पूरी तरह नष्ट नहीं कर सकीं और न ही उस रात के आश्चर्य को कम कर सकीं। भले ही अब मुझे उस पूरे भव्य उत्सव का स्पष्टीकरण मिल गया हो—एक ऐसा उत्सव जिसका स्वाद कॉन्वेंट की रू फॉसेट गली ने नहीं चखा था, हालाँकि वह उस सुबह भोर में खुल गई थी और आधी रात के करीब तक पूरे जोश में थी।

इतिहास के अनुसार, बीते दिनों में लाबासेकोर के भाग्य में एक भयानक संकट मंडरा रहा था, जिससे वहाँ के वीर नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रता को न जाने कितना बड़ा खतरा था। युद्ध की अफवाहें थीं, भले ही युद्ध न हुआ हो; सड़कों पर एक तरह का संघर्ष था—हलचल—इधर-उधर भागदौड़, कुछ जगहों पर बैरिकेड्स बनाए

जा रहे थे, कुछ नागरिकों ने दंगे किए, कुछ ने सेना को बुलाया, खूब ईंट-पत्थर फेंके गए और यहाँ तक कि कुछ गोलियाँ भी चलीं। परंपरा के अनुसार, देशभक्त शहीद हुए थे: पुराने बासे-विले में एक बाड़ा दिखाया गया था, जिसे पूरी श्रद्धा के साथ बनाया गया था और अलग रखा गया था, जिसमें कहा जाता था कि शहीदों की पवित्र अस्थियाँ रखी थीं। चाहे जो भी हो, साल का एक खास दिन उन देशभक्तों और शहीदों के सम्मान में मनाया जाता था, जिनकी स्मृति कुछ हद तक काल्पनिक है—सुबह सेंट जीन बैपटिस्ट में एक गंभीर प्रार्थना सभा होती थी, और शाम को ऐसे ही तमाशों, सजावटों और रोशनी से जगमगाहट का आयोजन होता था, जैसा कि मैंने अभी देखा।

एक स्तंभ पर टिकी सफेद आइबिस की छवि को निहारते हुए—एक सड़क के मशालों से जगमगाते गहरे दृश्य को समझने की कोशिश करते हुए, जिसके अंत में एक स्फिंक्स की मूर्ति थी—मैं उस समूह को नज़रों से ओझल होते हुए देख पाया, जिसका मैंने विशाल चौक के मध्य से पीछा किया था—या यूँ कहें कि वे प्रेतों के समूह की तरह गायब हो गए। इस पूरे दृश्य पर एक स्वप्निल सा आभास छा गया था: हर आकृति डगमगा रही थी, हर हरकत तैर रही थी, हर आवाज़ गूँजती हुई—आधी उपहासपूर्ण, आधी अनिश्चित। पॉलिना और उसके दोस्तों के चले जाने के बाद, मैं मुश्किल से ही कह सकता था कि मैंने उन्हें सचमुच देखा था; न ही मुझे अराजकता में मार्गदर्शक के रूप में उनकी कमी महसूस हुई, और न ही रात के अंधेरे में रक्षक के रूप में उनके जाने का कोई अफसोस।

वह उत्सवपूर्ण रात एक छोटे बच्चे के लिए भी सुरक्षित होती। आधे किसान विलेट के बाहरी इलाकों से आए हुए थे, और सभ्य नागरिक भी अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने इधर-उधर घूम रहे थे। मेरी भूसे की टोपी टोपी और जैकेट, छोटी पेटीकोट और लंबी कैलिको चादर के बीच से बिना किसी का ध्यान खींचे निकल गई; मैंने बस एहतियात के तौर पर चौड़ी पत्ती वाली चादर को जिप्सी स्टाइल में एक अतिरिक्त रिबन से बांध लिया - और फिर मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने अपना मुखौटा पहन रखा हो।

मैं गलियों में सुरक्षित रूप से चलता रहा—भीड़ में जहाँ सबसे ज़्यादा भीड़ थी, वहाँ सुरक्षित रूप से घुलमिल गया। शांत रहना मेरे बस में नहीं था, न ही चुपचाप देखना। मैंने दृश्य का भरपूर आनंद लिया; मैंने रात की उमंग भरी हवा को पी लिया—ध्वनि का उफान, धुंधली रोशनी, कभी चमकती, कभी फीकी पड़ती। सुख या आशा के मामले में, हम दोनों ने हाथ मिला लिया था, लेकिन अभी—मैंने निराशा को ठुकरा

दिया।

चलते-चलते मेरा अस्पष्ट सा लक्ष्य उस पत्थर के कुंड को खोजना था, जिसकी गहराई निर्मल थी और जिसके चारों ओर हरी-भरी परत थी: उस शीतलता और हरियाली के बारे में मैं अचेतन बुखार की तीव्र प्यास के साथ सोच रहा था। चकाचौंध, भागदौड़, भीड़ और शोर के बीच, मैं अब भी गुप्त रूप से और मुख्य रूप से उस क्रिस्टल के गोलाकार दर्पण को देखना चाहता था, और उसमें चंद्रमा की मोती जैसी चमक को देखकर आश्चर्यचकित होना चाहता था।

मुझे अपना रास्ता पता था, फिर भी ऐसा लग रहा था मानो मुझे सीधे उस पर चलने से रोका जा रहा हो: कभी कोई दृश्य, कभी कोई आवाज़ मुझे अपनी ओर खींच रही थी, कभी इस गली में, कभी उस गली में। मैंने घने पेड़ों को देखा जो इस कांपते और लहरदार पानी को घेरे हुए थे, तभी दाईं ओर एक खुले मैदान से ऐसी आवाज़ आई जैसे मानो स्वर्ग के द्वार खुल गए हों—शायद वैसी ही आवाज़ जैसी शुभ समाचार की रात बेथलहम के मैदान में सुनाई दी थी।

वह मधुर गीत, वह संगीत, दूर से उठता हुआ प्रतीत हुआ, मानो तेज़ी से बढ़ते पंखों पर सवार होकर, इन छायाओं में सुरों का ऐसा तूफान उमड़ पड़ा कि अगर आस-पास कोई पेड़ न होता जिस पर मैं टिक सकूँ, तो शायद मैं गिर ही जाता। मुझे ऐसा लगा मानो अनगिनत आवाज़ें थीं; वाद्ययंत्र अनेक और असंख्य थे— बिगुल, हॉर्न और तुरही तो मैं जानता ही था। प्रभाव ऐसा था मानो समुद्र अपनी सारी लहरों के साथ गीत गाने लगा हो।

लहरें इधर-उधर बहती हुई आईं, फिर पीछे हट गईं, और मैं उनके पीछे-पीछे चलता गया। वे मुझे एक बीजान्टिन शैली की इमारत की ओर ले गईं - पार्क के केंद्र के पास एक छोटा सा कियोस्क जैसा। चारों ओर हजारों लोग भीड़ लगाए खड़े थे, मानो खुले आसमान के नीचे एक भव्य संगीत कार्यक्रम देखने आए हों। मुझे लगता है कि मैंने जो सुना वह एक जोशीला जैगर कोरस था; रात, जगह, दृश्य और मेरी मनोदशा ने उन ध्वनियों और उनके प्रभाव को और भी बढ़ा दिया था।

यहां महिलाएं एकत्रित थीं, इस प्रकाश में वे अत्यंत सुंदर लग रही थीं: कुछ की पोशाकें जालीदार थीं, कुछ में रेशम की चमक थी, फूल और सुनहरे बाल कांप रहे थे, और उनके सजे हुए बोनटों पर घूंघट लहरा रहे थे, मानो एक विशाल समूह के समान, अपनी व्यापक ध्वनि से उनके ऊपर के आकाश को चीर रहा हो। इनमें से अधिकांश

महिलाएं पार्क की छोटी-छोटी कुर्सियों पर बैठी थीं, और उनके पीछे और बगल में संरक्षक सज्जन खड़े थे। भीड़ की बाहरी पंक्तियों में नागरिक, आम लोग और पुलिसकर्मी शामिल थे।

सबसे बाहरी पंक्ति में मैंने अपनी जगह ले ली। मुझे यह अच्छा लगा कि मैं छोटी पेटीकोट और सैबोट के बीच चुपचाप, अनजानी, और इसलिए किसी से बात न करने वाली पड़ोसी थी; और रेशमी चोगा, मखमली लबादा और पंखों वाली टोपी को दूर से निहार रही थी। इतनी जीवंतता और आनंद के बीच भी, मुझे अकेला रहना अच्छा लगा—बिल्कुल अकेला। इतनी घनी भीड़ में से रास्ता बनाने की न तो इच्छा थी और न ही शक्ति, इसलिए मेरी जगह सबसे दूर थी, जहाँ मैं सुन तो सकती थी, लेकिन देख बहुत कम सकती थी।

“मैडम यहाँ ठीक नहीं हैं,” मेरे बगल से एक आवाज़ आई। इतनी कम सामाजिक मनोदशा में मुझे परेशान करने की हिम्मत किसने की? मैंने जवाब देने के बजाय पीछे हटने के लिए मुड़ी। मैंने एक आदमी को देखा—एक नागरिक—एक पल के लिए तो मुझे वह बिलकुल अजनबी लगा, लेकिन अगले ही पल मैंने उसे एक व्यापारी के रूप में पहचान लिया—एक पुस्तक विक्रेता, जिसकी दुकान रू फॉसेट को किताबें और स्टेशनरी मुहैया कराती थी; वह आदमी जो हमारे मोहल्ले में अपने अत्यधिक चिड़चिड़े स्वभाव और यहाँ तक कि हम जैसे अपने मुख्य ग्राहकों के प्रति भी अक्सर रूखे व्यवहार के लिए कुख्यात था: लेकिन अपने अकेलेपन के कारण, मैं उसे हमेशा पसंद करती थी और हमेशा उसे सभ्य, कभी-कभी दयालु भी पाती थी; एक बार विदेशी मुद्रा के कुछ मुश्किल लेन-देन में मेरी मदद करके उसने मेरी बहुत मदद की थी। वह एक बुद्धिमान व्यक्ति था; अपनी कठोरता के बावजूद, वह एक नेक दिल इंसान था; कभी-कभी मेरे मन में यह विचार आता था कि उनके स्वभाव का एक हिस्सा एम. इमानुएल के स्वभाव के एक हिस्से से मिलता-जुलता है (जिन्हें वे अच्छी तरह जानते थे, और जिन्हें मैंने अक्सर मिरेट के काउंटर पर बैठकर मौजूदा महीने के प्रकाशनों को पलटते हुए देखा था); और इसी समानता में मुझे उस सुलह के भाव का स्पष्टीकरण मिला जिसके साथ मैं सहज रूप से उनके प्रति व्यवहार करता था।

आश्चर्य की बात है, इस आदमी ने मुझे मेरी भूसे की टोपी और कसकर लपेटे हुए शॉल के बावजूद पहचान लिया; और, हालांकि मैंने उसके प्रयास का विरोध किया, उसने भीड़ में से मेरे लिए रास्ता बनाने और मेरे लिए बेहतर जगह ढूंढने पर जोर दिया।

उसने अपनी निस्वार्थ विनम्रता को और आगे बढ़ाया; और किसी तरह मेरे लिए एक कुर्सी का इंतजाम किया। मैंने बार-बार पाया है कि सबसे कठोर स्वभाव वाले लोग किसी भी तरह से सबसे बुरे इंसान नहीं होते; न ही वे सबसे निचले दर्जे के होते हैं, न ही सबसे कम संवेदनशील। इस आदमी को अपनी विनम्रता में मेरे यहाँ अकेले होने में कुछ भी अजीब नहीं लगा; बल्कि मुझे यथासंभव विनम्र, फिर भी प्रभावी ध्यान देने का एक कारण मिला। मुझे जगह और कुर्सी दिलाने के बाद, वह बिना कोई सवाल पूछे, बिना कोई टिप्पणी किए, बिना कोई फालतू शब्द कहे चला गया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि प्रोफेसर इमानुएल को एम. मिरेट की दुकान में अपनी सिगार और लाउंज लेकर अपना लेख पढ़ना पसंद था - ये दोनों चीजें उन्हें बहुत पसंद आई होंगी।

मुझे बैठे हुए अभी पाँच मिनट भी नहीं हुए थे कि मुझे एहसास हुआ कि संयोग और मेरे सम्मानित नागरिक मित्र ने मुझे एक बार फिर एक परिचित और घरेलू समूह के सामने ला खड़ा किया है। मेरे ठीक सामने ब्रेटन और डी बासोम्पियर परिवार बैठे थे। अगर मैं हाथ बढ़ाना चाहता, तो मेरी पहुँच में एक परी-रानी जैसी आकृति बैठी थी, जिसके वस्त्र, लिली और उनकी पत्तियाँ मानो यह संकेत दे रही थीं कि जो कुछ भी बेदाग सफेद नहीं था, वह गहरे हरे रंग का था। मेरी धर्ममाता भी इतनी पास बैठी थीं कि अगर मैं आगे झुकता, तो मेरी साँस से उनकी टोपी का रिबन हिल सकता था। वे बहुत पास थे; एक अपेक्षाकृत अजनबी द्वारा पहचाने जाने पर, मुझे इतनी घनिष्ठ जान-पहचान के इस निकट संपर्क में असहजता महसूस हुई।

मुझे यह देखकर बहुत हैरानी हुई जब श्रीमती ब्रेटन ने श्री होम की ओर मुड़कर, स्मृति की एक कोमल भावना से प्रेरित होकर कहा, "मुझे आश्चर्य है कि अगर मेरी प्यारी छोटी लूसी यहाँ होती तो वह इन सब बातों पर क्या कहती? काश हम उसे भी लाए होते, उसे तो बहुत आनंद आता।"

“हाँ, वो ऐसा ही करती, अपने गंभीर और समझदार अंदाज़ में; अफ़सोस की बात है कि हमने उससे नहीं पूछा,” उस सज्जन ने जवाब दिया; और आगे कहा, “मुझे उसे इतनी शांति से प्रसन्न देखकर अच्छा लगता है; इतना कम विचलित होते हुए भी इतना संतुष्ट।”

वे दोनों मुझे बहुत प्रिय थे, और आज भी उनकी दयालुता मुझे प्रिय है। उन्हें उस पीड़ा का जरा भी अंदाजा नहीं था जिसने लूसी को लगभग बुखार की हालत में पहुंचा दिया था, और उसे बेबस और अनियंत्रित अवस्था में, उन्माद की कगार पर ला खड़ा

किया था। मेरा मन कर रहा था कि मैं बड़ों के कंधों पर झुककर उनकी अच्छाई का जवाब अपनी आंखों से दूं। एम. डी बासोम्पियर मुझे अच्छी तरह से नहीं जानते थे, लेकिन मैं उन्हें जानता था, और उनके स्वभाव का सम्मान और प्रशंसा करता था, उनकी सादगी, स्नेह और सहज उत्साह के लिए। शायद मैं कुछ बोल पाता, लेकिन तभी ग्राहम मुड़े; वे अपने एक गरिमामय और दृढ़ हावभाव के साथ मुड़े, जो एक चिड़चिड़े और छोटे कद के आदमी के हावभाव से बिल्कुल अलग था: उनके पीछे सौ पंक्तियों की भीड़ थी; हजारों लोग उनकी नजरों से मिलने और उन्हें बांटने के लिए खड़े थे - तो फिर उन्होंने अपनी सारी निगाहें मुझ पर क्यों टिका दीं - अपनी उस नीली, स्थिर आंख की पूरी ताकत से मुझे क्यों दबा रहे थे? अगर वह देखना चाहता था, तो एक नज़र से ही क्यों संतुष्ट नहीं हुआ? वह कुर्सी पर क्यों घूमा, अपनी कोहनी उसकी पीठ पर टिकाई और आराम से मुझे निहारने लगा? वह मेरा चेहरा नहीं देख पा रहा था, मैंने उसे छुपा रखा था; यकीनन, वह मुझे पहचान नहीं सकता था: मैं झुकी, मैं मुड़ी, मैं पहचानी नहीं जाना चाहती थी। वह उठा, किसी तरह मेरे पास आने का रास्ता निकाला, दो मिनट में उसे मेरा राज़ पता चल जाता: मेरी पहचान उसके हाथों में होती, उसके हाथ कभी ज़ालिम नहीं थे, लेकिन हमेशा शक्तिशाली थे। उससे बचने या उसे रोकने का बस एक ही तरीका था। मैंने एक तरह के विनती भरे इशारे से यह जता दिया कि मेरी प्रार्थना है कि मुझे अकेला छोड़ दिया जाए; उसके बाद, अगर वह ज़िद करता, तो शायद उसे लूसी का क्रोधित रूप देखने को मिलता: उसमें जो कुछ भी महान, अच्छा या दयालु था (और लूसी ने उसे पूरी तरह महसूस किया), वह उसे इतना शांत या बिल्कुल निर्दोष और परछाई जैसा नहीं रख सकता था। उसने देखा, लेकिन रुक गया। उसने अपना सुंदर सिर हिलाया, लेकिन वह चुप रहा। वह अपनी सीट पर वापस बैठ गया, और फिर कभी मेरी ओर मुड़कर नहीं देखा, न ही मुझे अपनी नज़र से परेशान किया, सिवाय एक पल के, जब उसकी एक नज़र, जिज्ञासा से कहीं अधिक सहानुभूति से भरी हुई, मेरी ओर आई — मानो कुछ ऐसा कह रही हो जिसने मेरे दिल को शांत कर दिया हो, जैसे "दक्षिणी हवा धरती को शांत कर देती है।" आख़िरकार, ग्राहम के मेरे प्रति विचार पूरी तरह से उदासीनता से भरे नहीं थे। मेरा मानना है कि उस आलीशान घर, यानी उसके दिल में, रोशनदानों के नीचे एक छोटी सी जगह थी जहाँ लूसी अगर आना चाहे तो मनोरंजन कर सकती थी। वह जगह उन कमरों जितनी सुंदर नहीं थी जहाँ वह अपने पुरुष मित्रों को ठहराता था; वह उस हॉल

जैसी नहीं थी जहाँ वह अपना परोपकार करता था, न ही उस पुस्तकालय जैसी जहाँ वह अपने विज्ञान को संजोता था, और न ही उस मंडप जैसी जहाँ उसकी शादी की दावत भव्य रूप से आयोजित की गई थी; फिर भी, धीरे-धीरे, लंबे और समान स्नेह से, उसने मुझे यह साबित कर दिया कि उसने एक छोटी सी कोठरी रखी हुई थी, जिसके दरवाजे पर "लूसी का कमरा" लिखा था। मैंने उसके लिए भी एक जगह रखी थी—एक ऐसी जगह जिसका माप मैंने कभी नापा नहीं, न नियम से और न ही मापक यंत्र से: मुझे लगता है कि वह पेरी-बानू के तम्बू जैसी थी। जीवन भर मैंने उसे अपनी हथेली में मोड़कर रखा, फिर भी, उस पकड़ और बंधन से मुक्त होकर, मुझे नहीं पता कि उसकी असीम विस्तार क्षमता उसे एक विशाल तंबू में तब्दील कर देती, जिसमें कई लोग समा सकते थे।

आज रात वह भले ही धैर्यवान था, लेकिन मैं उसके इतने करीब नहीं रह सकती थी; इस खतरनाक जगह और ठिकाने को छोड़ना ही होगा: मैंने मौके का इंतज़ार किया, उठी और चुपके से निकल गई। वह सोच सकता था, शायद विश्वास भी कर सकता था कि लूसी उस शॉल में लिपटी हुई है और उस टोपी के नीचे सुरक्षित है; लेकिन वह निश्चित नहीं हो सकता था, क्योंकि उसने मेरा चेहरा नहीं देखा था।

क्या इस समय तक मेरी बेचैनी शांत हो गई थी? क्या मुझे रोमांच का पूरा आनंद नहीं मिल गया था? क्या मैं थकने, डरने और किसी सुरक्षित छत के नीचे शरण लेने की इच्छा करने नहीं लगा था? ऐसा नहीं था। मुझे अभी भी स्कूल के छात्रावास में अपने बिस्तर से इतनी नफरत थी कि शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता: मैं हर उस चीज़ से चिपकी रहती थी जो मेरे विचारों को भटका सके। मुझे कहीं न कहीं यह भी महसूस होता था कि रात का नाटक अभी शुरू ही हुआ है, प्रस्तावना तो अभी बस शुरू ही हुई है: इस घने जंगल और घास के मैदान में रहस्य की छाया छाई हुई थी; अनचाहे कलाकार और घटनाएँ पर्दे के पीछे इंतज़ार कर रही थीं: मुझे लगा कि यही पूर्वाभास मुझे बता रहा है।

इधर-उधर भटकते हुए, हर किसी के धक्के का पालन करते हुए, मैं एक ऐसे इलाके में पहुँचा जहाँ पेड़ों के समूह या अकेले खड़े पेड़ भीड़ की सघनता को कुछ हद तक कम कर रहे थे और उसे अधिक बिखरा हुआ स्वरूप दे रहे थे। यह इलाका संगीत से दूर और यहाँ तक कि लैंप से भी कुछ हद तक अलग-थलग था, लेकिन सुकून देने वाली ध्वनि पर्याप्त थी, और उस पूर्णिमा के ऊँचे चाँद के कारण लैंप की शायद ही

ज़रूरत थी। यहाँ मुख्य रूप से परिवार समूह, नागरिक माता-पिता बसे हुए थे; उनमें से कुछ, देर रात होने के बावजूद, अपने बच्चों से घिरे हुए थे, जिनके साथ भीड़ में जाना उचित नहीं समझा गया था।

तीन ऊंचे-ऊंचे सुंदर पेड़, जो लगभग तने से तने लिपटे हुए, एक-दूसरे के करीब उग रहे थे, एक हरी-भरी पहाड़ी के ऊपर घनी छाया की छतरी बना रहे थे, जिसके शिखर पर एक आसन था - एक ऐसा आसन जिस पर कई लोग बैठ सकते थे, फिर भी ऐसा लग रहा था कि वह केवल एक व्यक्ति के लिए ही है, इस स्थान पर मौजूद सौभाग्यशाली लोगों के शेष सदस्य कर्तव्यनिष्ठा से उसके चारों ओर खड़े थे; फिर भी, इस श्रद्धापूर्ण घेरे के बीच एक महिला थी, जो एक छोटी बच्ची का हाथ पकड़े हुए थी।

जब मेरी नज़र इस छोटी बच्ची पर पड़ी, तो वह अपनी एड़ी पर गोल-गोल घूम रही थी, अपनी गाइड के हाथ से झूल रही थी, और अटपटे ढंग से इधर-उधर उछल-कूद कर रही थी। उसकी ये विकृत हरकतें मेरा ध्यान खींच रही थीं; मुझे ऐसा लगा जैसे ये किसी जानी-पहचानी हस्ती की नकल हों। गौर से देखने पर बच्ची का पहनावा भी कुछ ऐसा ही लगा; बैंगनी रंग का रेशमी कोट, छोटा हंस के पंखों वाला बोआ, सफेद टोपी - संक्षेप में, उसका पूरा उत्सव का पहनावा किसी मशहूर परी, उस नन्ही सी बच्ची, डेज़िरे बेक, के पहनावे जैसा था - और वह डेज़िरे बेक ही थी - या उसकी शक्ल की कोई शैतान।

मैंने इस खोज को एक बिजली के झटके की तरह लिया होगा, लेकिन ऐसी अतिशयोक्ति जल्दबाजी होगी; खोज को अपने चरम पर पहुंचने से पहले एक से अधिक स्तर तक बढ़ना तय था।

और भोली-भाली डेज़िरे किसके हाथ पर इतनी स्वार्थी होकर झूल सकती थी, किसके दस्ताने को इतनी बेपरवाही से फाड़ सकती थी, किसकी बांह को इतनी बेखौफ होकर खींच सकती थी, या किसके वस्त्र के किनारों को इतनी उद्दंडता से छूकर रौंद सकती थी, सिवाय अपनी मां के हाथ, दस्ताने, बांह और वस्त्र के? और वहीं, एक भारतीय शॉल और हल्के हरे रंग की क्रेप टोपी में - वहीं, ताजगी से भरी, सुगठित, प्रसन्न और मनमोहक - मैडम बेक खड़ी थीं।

अजीब बात है! मैंने तो यही सोचा था कि इस शुभ क्षण में मैडम अपने बिस्तर पर और डेज़िरे अपनी पालना में सो रही होंगी, दोनों ही पवित्र दीवारों के भीतर, रू फॉसेट की गहरी शांति में, चैन की नींद सो रही होंगी। और निश्चित रूप से उन्होंने "मिस लूसी"

को किसी और काम में व्यस्त नहीं सोचा होगा; और हम तीनों आधी रात को उत्सव से जगमगाते पार्क में अपनी "एबेट्स" (पारंपरिक माओरी प्रार्थना) कर रहे थे!

असल में, मैडम तो बस अपनी बिल्कुल जायज़ आदत के मुताबिक ही काम कर रही थीं। मुझे अब याद आया कि मैंने शिक्षकों के बीच यह बात सुनी थी—हालांकि उस समय मैंने इस गपशप पर खास ध्यान नहीं दिया था—कि अक्सर जब हम सोचते थे कि मैडम अपने कमरे में सो रही हैं, तो वो पूरी तरह सज-धज कर ओपेरा, नाटक या पार्टियों में अपना मनोरंजन करने निकल जाती थीं। मैडम को संन्यासी जीवन में ज़रा भी रुचि नहीं थी, और वो बड़े ही सलीके से—हालांकि काफी हद तक, लेकिन समझदारी से—अपने जीवन में दुनियादारी का लुत्फ़ उठाती थीं।

उसके दोस्तों में से आधा दर्जन सज्जन उसके चारों ओर खड़े थे। इनमें से दो-तीन को पहचानते हुए मुझे देर नहीं लगी। वहाँ उसका भाई, एम. विक्टर किंट था; वहाँ एक और व्यक्ति था, मूंछों वाला और लंबे बालों वाला— एक शांत, कम बोलने वाला आदमी, लेकिन जिसके लक्षणों में एक ऐसी छाप और समानता थी जिसे मैं बिना प्रभावित हुए नहीं देख सका। संयम और झिझक के बीच, चरित्र और चेहरे के विरोधाभासों के बीच, कुछ ऐसा था जो एक चेहरे की याद दिलाता था— गतिशील, उत्साही, भावुक— एक ऐसा चेहरा जो बदलता रहता था, कभी उदास, कभी चमकता हुआ— एक ऐसा चेहरा जो मेरी दुनिया से छीन लिया गया था, क्योंकि मेरी आँखें उसे खो बैठी थीं, लेकिन जहाँ मेरे जीवन के सबसे अच्छे वसंत के पल छाया और प्रकाश में बारी-बारी से गुजरे थे; वह चेहरा, जहाँ मैंने अक्सर प्रतिभा के इतने करीब की हलचलें देखी थीं— कि क्यों वहाँ निर्विवाद अग्नि, वह तत्व, वह आत्मा और स्वयं रहस्य पूरी तरह से नहीं चमकते थे— यह मैं कभी नहीं बता सका। हाँ— यह जोसेफ इमानुएल — शांति का यह आदमी—मुझे अपने उत्साही भाई की याद दिलाता था।

विक्टर और जोसेफ़ के अलावा, मैं इस समूह के एक और व्यक्ति को जानता था। यह तीसरा व्यक्ति पीछे और छाया में खड़ा था, उसकी मुद्रा भी झुकी हुई थी, फिर भी उसके वस्त्र और गंजा सफेद सिर उसे समूह का सबसे विशिष्ट व्यक्ति बना रहे थे। वह एक पादरी थे: वह पेरे सिलास थे। पाठक, यह न सोचें कि इस उत्सव में पादरी की उपस्थिति में कोई विसंगति थी। इसे दिखावटी मेले का आयोजन नहीं माना जाता था, बल्कि देशभक्तिपूर्ण बलिदान का स्मरणोत्सव माना जाता था। चर्च ने इसे संरक्षण दिया, यहाँ तक कि भव्यता के साथ। उस रात पार्क में पादरियों की टोलियाँ मौजूद

थीं।

पेरे सिलास उस देहाती बेंच और उस पर बैठे व्यक्ति पर झुके, जिस पर केवल एक ही व्यक्ति बैठा था: वह एक विचित्र पिंड था - जिसका कोई आकार नहीं था, फिर भी भव्य था। वास्तव में, चेहरे की रूपरेखा और चेहरे की विशेषताएं दिखाई दे रही थीं, लेकिन वे इतनी निर्जीव और विचित्र रूप से स्थित थीं कि ऐसा लग रहा था मानो किसी का सिर धड़ से अलग करके कीमती सामान के ढेर पर बेतरतीब ढंग से फेंक दिया गया हो। दूर से आती दीपक की किरणें पारदर्शी लटकनों और चौड़ी अंगूठियों पर पड़ रही थीं; न तो चांदनी की पवित्रता और न ही मशालों की दूरी, पर्दों के शानदार रंगों को पूरी तरह से फीका कर पा रही थी। नमस्कार, मैडम वालरेवेंस! मुझे लगता है कि आप पहले से कहीं अधिक चुड़ैल जैसी लग रही हैं। और तभी उस महिला ने साबित कर दिया कि वह वास्तव में कोई लाश या भूत नहीं थी, बल्कि एक कठोर और दृढ़ बूढ़ी औरत थी; क्योंकि, जब डेज़िरे बेक ने अपनी माँ से मिठाइयाँ लेने के लिए दुकान पर जाने की गुहार लगाई, तो कुबड़ा आदमी ने अचानक अपनी सोने की मूठ वाली छड़ी से उसे ज़ोरदार प्रहार किया।

वहाँ मैडम वालरावेंस, मैडम बेक, पेरे सिलास—सारा गुप्त समूह, गुप्त मंडली मौजूद थी। उन सबको इस तरह एकत्रित देखकर मुझे अच्छा लगा। मैं यह नहीं कह सकता कि मैं उनके सामने कमजोर, शर्मिंदा या भयभीत महसूस कर रहा था। वे मुझसे संख्या में अधिक थे, और मैं पराजित होकर उनके पैरों तले दब गया था; लेकिन फिर भी, मैं मरा नहीं था।

अध्याय 39.

पुराने और नए परिचित।

तीन सिरों वाले बेसिलिस्क की तरह मोहित होकर, मैं इस समूह को छोड़ नहीं पा रहा था; उनके पास की ज़मीन मेरे पैरों को थामे हुए सी लग रही थी। आपस में लिपटे पेड़ों की घनी छाया छाया दे रही थी, रात सुरक्षा का आश्वासन दे रही थी, और एक साधारण सा दीपक बस एक किरण चमकाकर मुझे एक छिपी हुई, सुरक्षित जगह दिखा रहा था, और फिर गायब हो गया। अब मैं पाठक को संक्षेप में वह सब बताऊँगा जो पिछले दो हफ़्तों के अँधेरे में मैंने चुपचाप अफवाहों से इकट्ठा किया है, एम. इमानुएल के जाने के कारण और उद्देश्य के बारे में। कहानी छोटी है, और नई नहीं है: इसका मूल तत्व धन है, और इसका उपसंहार स्वार्थ है।

यदि मैडम वालरावंस हिंदू मूर्ति की तरह बदसूरत थीं, तो उनके भक्तों की नज़र में उनका रुतबा भी मूर्ति के समान ही था। दरअसल, वह धनी थीं—बेहद धनी; और यद्यपि फिलहाल उनके पास धन का कोई दबदबा नहीं था, फिर भी एक दिन उनके फिर से धनी होने की संभावना थी। ग्वाडेलोप के बासेटेरे में उनकी एक विशाल संपत्ति थी, जो उन्हें साठ साल पहले विवाह के समय दहेज में मिली थी, लेकिन उनके पति की मृत्यु के बाद से जब्त कर ली गई थी; लेकिन अब, ऐसा माना जाता था कि उस पर किसी का दावा नहीं है, और यदि किसी योग्य और ईमानदार प्रतिनिधि द्वारा उसकी उचित देखभाल की जाए, तो कुछ ही वर्षों में उसे काफी उत्पादक बनाया जा सकता है।

धर्म और चर्च के हित में, जिसकी मैग्लियोर वालरावेंस एक धर्मनिष्ठ पुत्री थीं, पेरे सिलास ने इस संभावित सुधार में रुचि दिखाई। कुबड़ा व्यक्ति से दूर के रिश्तेदार और यह जानते हुए कि उनका अपना कोई परिवार नहीं है, मैडम बेक ने एक माँ की तरह दूरदर्शिता से भविष्य की संभावनाओं पर विचार किया था, और मैडम वालरावेंस द्वारा उनके साथ किए गए कठोर व्यवहार के बावजूद, उन्होंने अपने हित के लिए उनसे संपर्क बनाए रखा। इस प्रकार, मैडम बेक और पादरी दोनों ही धन कारणों से वेस्ट इंडीज की संपत्ति की देखभाल में समान रूप से और ईमानदारी से रुचि रखते थे।

लेकिन दूरी बहुत अधिक थी और जलवायु खतरनाक। एक योग्य और ईमानदार एजेंट की तलाश थी, जो समर्पित व्यक्ति हो। मैडम वालरावेंस ने बीस वर्षों तक ऐसे ही व्यक्ति को अपनी सेवा में रखा, जिसने उनके जीवन को बर्बाद कर दिया और फिर उन पर एक पुराने कवक की तरह पनपने लगी; ऐसे ही व्यक्ति को पेरे सिलास ने प्रशिक्षित किया, सिखाया और कृतज्ञता, आदत और विश्वास के बंधनों से बांध दिया।

मैडम बेक ऐसे व्यक्ति को जानती थीं और कुछ हद तक उसे प्रभावित भी कर सकती थीं। पेरे सिलास ने कहा, "मेरा शिष्य, यदि वह यूरोप में रहता है, तो धर्मत्याग के खतरे में पड़ जाएगा, क्योंकि वह एक विधर्मी के साथ उलझ गया है।" मैडम बेक ने भी अपनी निजी टिप्पणी की और अपने मन में निर्वासन की इच्छा का गुप्त कारण रखा। जो चीज उन्हें नहीं मिली, उसे पाने की उनकी इच्छा किसी और से नहीं थी: बल्कि वे उसे नष्ट करना चाहती थीं। मैडम वालरावेंस को अपना धन और जमीन चाहिए थी और वे जानती थीं कि पॉल, यदि चाहे तो, सबसे अच्छा और वफादार प्रबंधक बन सकता है: इसलिए तीनों स्वार्थी लोगों ने मिलकर एक निस्वार्थ व्यक्ति को घेर लिया। उन्होंने तर्क दिए, अपील की, विनती की; उन्होंने स्वयं को उसकी दया पर समर्पित कर दिया, अपने हितों को विश्वासपूर्वक उसके हाथों में सौंप दिया। उन्होंने केवल दो या तीन वर्षों की भक्ति की माँग की — उसके बाद, वह स्वयं अपना जीवन यापन करे: शायद उनमें से किसी ने कामना की हो कि इस बीच उसकी मृत्यु हो जाए।

किसी भी जीवित प्राणी ने कभी विनम्रतापूर्वक अपना लाभ एम. इमैनुएल के चरणों में नहीं रखा, न ही विश्वासपूर्वक उसे उनके हाथों में सौंपा, कि उन्होंने उस भरोसे को ठुकरा दिया या उस संरक्षक को अस्वीकार कर दिया। उनका निजी दुख या यूरोप छोड़ने की आंतरिक अनिच्छा क्या रही होगी—उनके भविष्य के लिए उनकी क्या योजनाएँ थीं—किसी ने पूछा नहीं, न जाना, न बताया। यह सब मेरे लिए रहस्य था। उनके धर्मोपदेशक के साथ उनकी बातचीत का मैं अनुमान लगा सकता था; उनके द्वारा अपनाई गई बातों में कर्तव्य और धर्म की भूमिका का मैं अनुमान लगा सकता था। वे चले गए थे, और कोई संकेत नहीं छोड़ा था। यहीं मेरा ज्ञान समाप्त हो गया।

* * * * *

सिर झुकाए और माथे को हाथों पर टिकाए, मैं घने पेड़ों और झाड़ियों के बीच बैठा था। पड़ोसियों के बीच जो भी बातें हो रही थीं, मैं सुन सकता था, अगर मैं चाहता; मैं काफी पास था; लेकिन कुछ समय तक ध्यान देने का कोई कारण नहीं था। वे कपड़ों, संगीत, रोशनी और सुहावनी रात के बारे में बातें कर रहे थे। मैं यह सुनने के लिए सुन रहा था कि वे क्या कह रहे हैं, "उसकी यात्रा के लिए मौसम शांत है; एंटिगुआ" (उसका जहाज) "सफलतापूर्वक रवाना होगा।" ऐसी कोई बात नहीं हुई; न तो एंटिगुआ का नाम लिया गया, न ही उसके मार्ग का, और न ही उसके किसी यात्री का।

शायद बूढ़ी मैडम वालरावेंस को हल्की-फुल्की बातचीत में मुझसे ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी; वह बेचैन लग रही थीं, अपना सिर कभी इधर तो कभी उधर घुमा रही थीं, पेड़ों के बीच से और भीड़ में देख रही थीं, मानो किसी के आने की उम्मीद कर रही हों और देरी से अधीर हो रही हों। “वे कहाँ हैं? वे क्यों नहीं आ रहे?” मैंने उन्हें एक से ज़्यादा बार बुदबुदाते सुना; और अंत में, मानो अपने सवाल का जवाब पाने के लिए दृढ़ संकल्पित हों—जिस पर अब तक किसी ने ध्यान नहीं दिया था—उन्होंने ज़ोर से यह वाक्य कहा—एक वाक्य जो काफ़ी संक्षिप्त और सरल था, लेकिन इसने मुझे झकझोर दिया— “महोदय और देवियों,” उन्होंने कहा, “तो जस्टिन मैरी कहाँ हैं?”

“जस्टिन मैरी!” ये क्या? जस्टिन मैरी — मृत नन — वो कहाँ है? अरे, अपनी कब्र में, मैडम वालरावेंस — आपको उससे क्या चाहिए? आप उसके पास जाएँगी, लेकिन वो आपके पास नहीं आएगी।

अगर मेरे पास जवाब होता तो मैं जवाब दे देता, लेकिन ऐसा लगता था कि कोई भी मेरी सोच से सहमत नहीं था; कोई भी हैरान, चौंका हुआ या असमंजस में नहीं था। उस कुबड़ वाले व्यक्ति के अजीबोगरीब, दिल दहला देने वाले, एंडोर की चुड़ैल जैसे सवाल का जवाब एक शांत और सामान्य जवाब से दिया गया।

एक व्यक्ति ने कहा, "जस्टिन मैरी आ रही हैं; वह कियोस्क में हैं; वह अभी यहाँ होंगी।"

इस प्रश्न और उत्तर से बातचीत में एक बदलाव आया— बातचीत तो वही रही, सहज, बेतरतीब, परिचित गपशप। इशारे, संकेत, टिप्पणियाँ, सब एक ही बात को दोहराते रहे, लेकिन सब इतने बिखरे हुए, इतने अज्ञात व्यक्तियों या अस्पष्ट परिस्थितियों के संदर्भों पर निर्भर थे कि चाहे मैं कितनी भी ध्यान से सुनता—और अब मैं नियतिपूर्ण रुचि से सुन रहा था—मैं बस इतना ही समझ पाया कि कोई साजिश चल रही थी, जिसमें यह रहस्यमयी जस्टिन मैरी—जीवित हो या मृत—शामिल थी। यह पारिवारिक गुट किसी न किसी कारण से उसे हथियाने की कोशिश कर रहा था; विवाह का, संपत्ति का मामला लग रहा था—किसके लिए, यह मैं ठीक से समझ नहीं पाया—शायद विक्टर किंट के लिए, शायद जोसेफ इमानुएल के लिए—दोनों कुंवारे थे। एक बार मुझे लगा कि इशारे और मजाक पार्टी के एक युवा गोरे विदेशी पर बरस रहे थे, जिसे वे हेनरिक मुलर कहते थे। इन सब हंसी-मजाक के बीच, मैडम वालरावेंस बीच-बीच में अपनी कर्कश, बेसुरी आवाज में बोलती रहीं; उसकी अधीरता केवल

डेज़िरे पर की जा रही निर्दयी निगरानी से ही कुछ हद तक शांत हो रही थी, जो हिल भी नहीं पा रही थी, लेकिन बूढ़ी औरत उसे अपनी लाठी से धमका रही थी।

"देखो वो!" अचानक एक सज्जन चिल्लाए, "जस्टिन मैरी आ रही हैं!"

यह पल मेरे लिए अनोखा था। मुझे पैनल पर चित्रित नन की छवि याद आ गई; मेरे मन में वह दुखद प्रेम कहानी उभर आई; मैंने अपने विचारों में अटारी का दृश्य, गली का आभास, और बेर्सो के विचित्र जन्म को देखा; मुझे एक पूर्वाभास हुआ, एक प्रबल विश्वास हुआ कि कुछ होने वाला है। आह! जब कल्पना एक बार बेकाबू हो जाए तो हम कहाँ रुकें? कौन सा शीतकालीन वृक्ष इतना नंगा और शाखाओं से रहित है - कौन सा सड़क किनारे का, झाड़ियों को चरने वाला जानवर इतना विनम्र है कि कल्पना, एक गुजरता बादल, और एक संघर्षरत चाँदनी उसे आध्यात्मिकता से न ढक दे, और उसे एक प्रेत न बना दे?

मेरे हृदय में एक गंभीर भय का भाव उमड़ रहा था, रहस्य के टूटने की उम्मीद: अब तक मैंने इस प्रेत को धुंधले शीशे से ही देखा था; अब मुझे इसे आमने-सामने देखना था। मैं आगे झुका; मैंने देखा।

"वह आ रही है!" जोसेफ इमानुएल चिल्लाया।

घेरा मानो किसी नए और स्वागतयोग्य सदस्य का स्वागत करने के लिए खुल रहा हो। ठीक उसी क्षण एक मशाल वहाँ से गुज़री; उसकी लौ ने फीके चाँद को संकट की भयावहता को और भी स्पष्ट कर दिया, मानो आगे बढ़ते हुए घटनाक्रम को पूर्ण रूप से रोशन कर दिया हो। निश्चित रूप से मेरे आस-पास के लोगों ने भी मेरी तरह ही कुछ हद तक चिंता का अनुभव किया होगा, जो इतनी तीव्र थी कि उसका अंदाज़ा लगाना मुश्किल था। उस समूह में सबसे शांत व्यक्ति ने भी कुछ पल के लिए अपनी साँस रोक ली होगी! जहाँ तक मेरी बात है, मेरा जीवन थम सा गया था।

यह सब समाप्त हो गया। वह क्षण और वह नन आ चुकी हैं। संकट और रहस्योद्घाटन बीत चुके हैं।

पार्क के रखवाले के हाथ में फहराया हुआ मशाल अभी भी एक गज के भीतर चमक रहा है।

हाथ; उसकी लंबी, उत्सुक ज्वाला की जीभ लगभग आकृति को चाट लेती है।

मुझे यही उम्मीद थी—वहीं—जहाँ वह मेरी आँखों के सामने खड़ी है। वह कैसी है?

उसने क्या पहना है? वह कैसी दिखती है? वह कौन है?

आज रात पार्क में कई मुखौटे दिखाई दे रहे हैं, और जैसे-जैसे रात ढलती जा रही है, उल्लास और रहस्य की एक ऐसी विचित्र भावना चारों ओर फैलने लगती है कि पाठक, यदि मैं कहूँ कि वह अटारी की नन के समान है, कि उसने काले स्कर्ट और सफेद सिर के वस्त्र पहने हैं, कि वह शरीर के पुनरुत्थान जैसी दिखती है, और वह एक पुनर्जीवित भूत है, तो आप शायद ही मुझ पर अविश्वास करेंगे।

सब झूठ है—सब मनगढ़ंत बातें! हम इस जाल में नहीं फँसेंगे। आइए ईमानदार बनें और पहले की तरह ही सच्चाई के सरल जाल से बाहर निकलें।

साधारण, हालांकि, यह शब्द उपयुक्त नहीं है। जो मैं देख रहा हूँ वह बिल्कुल साधारण नहीं है। वहाँ विलेट की एक लड़की खड़ी है—एक ऐसी लड़की जो अभी-अभी पेंशन से लौटी है। वह बेहद सुंदर है, इस देश की स्वाभाविक सुंदरता से परिपूर्ण। वह स्वस्थ, गोरी और भरी-पूरी दिखती है। उसके गाल गोल हैं, आँखें सुंदर हैं; उसके बाल घने हैं। उसने सुंदर कपड़े पहने हैं। वह अकेली नहीं है; उसके साथ तीन लोग हैं—जिनमें से दो बुजुर्ग हैं; वह उन्हें "मेरे चाचा" और "मेरी चाची" कहकर पुकारती है। वह हँसती है, बातें करती है; हंसमुख, भरी-पूरी और खिलखिलाती हुई, वह हर तरह से एक संभ्रांत सुंदरी लगती है।

"जस्टिन मैरी के बारे में बस इतना ही; भूतों और रहस्य के बारे में भी बस इतना ही: ऐसा नहीं है कि यह आखिरी रहस्य सुलझ गया हो - यह लड़की निश्चित रूप से मेरी नन नहीं है: मैंने अटारी और बगीचे में जो देखा वह निश्चित रूप से एक बित्ता लंबा रहा होगा।"

हमने शहर की सुंदरी को देखा; हमने सम्मानित बूढ़े चाचा और चाची पर सरसरी नज़र डाली। क्या हम इस समूह के तीसरे सदस्य पर एक नज़र डाल सकते हैं? क्या हम उसे एक पल के लिए भी देख सकते हैं? पाठक, हमें उसे अभी तक पहचानना चाहिए; उसका हम पर अधिकार है; हम उससे पहली बार नहीं मिल रहे हैं। मैंने अपने हाथों को कसकर पकड़ लिया और गहरी साँस ली: मैंने चीख को रोक लिया, मैंने अपने आवेग को दबा लिया, मैंने चौंकने से खुद को रोका, मैं बोली और पत्थर की तरह हिली भी नहीं; लेकिन मैं जानती थी कि मैं क्या देख रही हूँ; कई रातों के रोने से मेरी आँखों में छाई धुंध के बावजूद, मैं उसे पहचान गई। उन्होंने कहा था कि वह एंटिगुआ से रवाना होगा। मैडम बेक ने ऐसा कहा था। उसने झूठ बोला था, या उसने कभी सच कहा था, और जब वह झूठ साबित हुआ तो वह उसका खंडन करने में

असफल रही। एंटिगुआ जा चुका था, और वहाँ पॉल इमैनुएल खड़ा था।

क्या मैं खुश था? मेरे ऊपर से एक बहुत बड़ा बोझ उतर गया था। क्या यह खुशी मनाने लायक बात थी? मुझे नहीं पता। पहले यह पूछिए कि इस राहत के पीछे क्या कारण थे? इस देरी से मुझे कितना फर्क पड़ा? क्या ऐसे लोग नहीं थे जिन पर इसका अधिक प्रभाव पड़ सकता था?

आखिर ये युवती, ये जस्टिन मैरी, कौन है? पाठक, वो कोई अजनबी नहीं है; मैं उसे जानता हूँ; वो रू फॉसेट में आती-जाती रहती है; वो अक्सर मैडम बेक की रविवार की पार्टियों में जाती है। वो बेक और वालरेवेन दोनों परिवारों की रिश्तेदार है; उसका बपतिस्मा का नाम उस संत नन के नाम पर रखा गया है जो जीवित होती तो उसकी मौसी होती; उसका पिता का नाम सौवेउर है; वो एक उत्तराधिकारी और अनाथ है, और एम. इमानुएल उसके संरक्षक हैं; कुछ लोग कहते हैं कि वो उसके धर्मपिता हैं।

परिवार के मुखिया चाहते हैं कि इस उत्तराधिकारी की शादी उनके गिरोह के किसी सदस्य से हो — वह कौन है? अहम सवाल — वह कौन है?

अब मुझे बहुत खुशी हो रही थी कि मीठे पेय में घुली औषधि ने मुझे एक ऐसे आवेश से भर दिया था जिससे बिस्तर और कमरा असहनीय हो गए थे। मैंने अपने पूरे जीवन में हमेशा वास्तविक सत्य की खोज की है; मुझे देवी को उनके मंदिर में खोजना, पर्दा हटाना और उस भयानक दृष्टि का सामना करना अच्छा लगता है। हे देवियों में महाशक्ति! तेरे स्वरूप की ढकी हुई रूपरेखा अक्सर अपनी अनिश्चितता के कारण विचलित कर देती है, परन्तु हमें एक गुण दिखा, एक आकृति दिखा, भयानक सच्चाई के साथ; हम अथाह भय से हांफ सकते हैं, परन्तु उस हांफने के साथ हम तेरी दिव्यता की सांस ग्रहण करते हैं; हमारा हृदय कांपता है, और उसकी धाराएं भूकंप से उठी नदियों की तरह बहती हैं, परन्तु हमने शक्ति ग्रहण कर ली है। सबसे बुरे को देखना और जानना भय से उसका मुख्य लाभ छीन लेना है।

वालरावेंस का दल, जिसकी संख्या बढ़ गई थी, अब बहुत खुशनुमा हो गया था। सज्जन लोग कियोस्क से जलपान लाए, सभी पेड़ों के नीचे घास पर बैठ गए; उन्होंने एक-दूसरे की सेहत और शुभकामनाओं के लिए जाम पिया; वे हँसे, उन्होंने मज़ाक किया। एम. इमानुएल को कुछ मज़ाक का सामना करना पड़ा, आधा मज़ाकिया, आधा, मुझे लगा, शरारती, खासकर मैडम बेक की ओर से। मुझे जल्द ही पता चल गया कि उन्होंने अपनी इच्छा से, अपने दोस्तों की सहमति के बिना, यहाँ तक कि

उनकी सलाह के विरुद्ध भी, अपनी यात्रा अस्थायी रूप से स्थगित कर दी थी; उन्होंने एंटिगुआ जहाज छोड़ दिया था और पॉल एट वर्जिनी में अपना स्थान ले लिया था, जिसे दो सप्ताह बाद रवाना होना था। इस निर्णय का कारण जानने के लिए उन्होंने उन्हें चिढ़ाया, और जिसका उन्होंने केवल अस्पष्ट रूप से "एक छोटे से काम का निपटारा, जिस पर उन्होंने अपना दिल लगा रखा था" कहकर संकेत दिया। यह काम क्या था? कोई नहीं जानता था। हाँ, एक व्यक्ति ऐसा था जो कम से कम आंशिक रूप से उनके विश्वास में था; उसके और जस्टिन मैरी के बीच एक अर्थपूर्ण नज़र का आदान-प्रदान हुआ। “La petite va m’aider — n’est-ce pas?” उसने कहा। जवाब तुरंत मिल गया, भगवान ही जानता है?

“जी हां, मैं पूरे दिल से आपकी मदद करूंगा। मेरे धर्मपिता, आप मेरे साथ जो चाहें कर सकते हैं।”

और इस प्यारे “पर्रेन” ने उसका हाथ थामकर अपने कृतज्ञ होठों से लगाया। इस प्रदर्शन को देखकर मैंने गोरे रंग के युवा जर्मन, हेनरिक मुलर को बेचैन होते देखा, मानो उसे यह पसंद न आया हो। उसने कुछ बड़बड़ाया भी, जिस पर एम. इमानुएल ने उसके चेहरे पर ही हंस दिया और एक आश्वस्त विजेता की निर्मम विजय के साथ अपने शिष्य को अपने करीब खींच लिया।

उस रात श्री इमैनुएल सचमुच बहुत प्रसन्न थे। दृश्य और आगामी गतिविधियों में बदलाव से वे ज़रा भी विचलित नहीं हुए थे। वे सचमुच पार्टी की जान थे; शायद थोड़े निरंकुश, हँसी-मज़ाक और मेहनत दोनों में सबसे आगे रहने के लिए दृढ़ निश्चयी, फिर भी पल-पल अपने नेतृत्व के अधिकार को निर्विवाद रूप से सिद्ध करते हुए। उनके शब्द सबसे चुटीले, किस्से सबसे मनोरंजक और हँसी सबसे खुलकर होती थी। अपनी आदत के अनुसार, वे हमेशा सक्रिय रहते थे और सबकी सेवा में तत्पर रहते थे; लेकिन ओह! मैंने देखा कि उनका सबसे प्रिय कौन था। मैंने देखा कि वे किसके चरणों में घास पर लेटते थे, मैंने देखा कि वे किसे रात की ठंडी हवा से बड़ी सावधानी से ढकते थे, किसकी देखभाल करते थे, किस पर नज़र रखते थे और किसे अपनी आँखों का तारा मानते थे।

फिर भी, ताने और उपहास का सिलसिला जारी रहा, और मुझे यही समझ आया कि जब एम. पॉल दूसरों के लिए काम करते हुए अनुपस्थित रहेंगे, तो ये दूसरे लोग, जो पूरी तरह से कृतघ्न नहीं थे, यूरोप में उनके छोड़े हुए खजाने की रक्षा करेंगे। चाहे

वे उन्हें भारत से धन-दौलत लाकर दें, बदले में वे उन्हें एक युवा दुल्हन और एक समृद्ध विरासत दे देंगे। जहाँ तक संत के रूप में समर्पण और निष्ठा की प्रतिज्ञा की बात है, वह सब भुला दिया गया: खिलते और आकर्षक वर्तमान ने अतीत पर विजय प्राप्त कर ली; और अंततः, उनकी नन को दफना दिया गया।

इसलिए ऐसा ही होना चाहिए। रहस्योद्घाटन वास्तव में हो चुका था। पूर्वाभास अपने आवेग में गलत नहीं था: एक प्रकार का पूर्वाभास होता है जो कभी गलत नहीं होता; क्षण भर के लिए मुझसे ही गलती हो गई थी; भविष्यवाणी के वास्तविक अर्थ को न समझते हुए, मैंने सोचा था कि वह किसी दृष्टि की बात कर रही है, जबकि वास्तव में उसकी भविष्यवाणी वास्तविकता से जुड़ी थी।

मैंने जो देखा उस पर शायद थोड़ा और विचार किया होता; निष्कर्ष निकालने से पहले शायद थोड़ा और सोचा होता। कुछ लोग शायद आधार को संदेहास्पद मानते, सबूतों को अपर्याप्त समझते; कुछ संशयवादी चालीस वर्षीय गरीब और निस्वार्थ व्यक्ति और उसकी अठारह वर्षीय धनी आश्रिता के विवाह को अंतिम रूप से स्वीकार करने से पहले अविश्वासपूर्वक जांच करते; लेकिन ऐसे बहाने और दिखावे, वास्तविकता से इस तरह का अस्थायी बचाव, उस भयानक, तेज गति वाले, सर्वव्यापी तथ्य से इस तरह का कायरतापूर्ण पलायन, एकमात्र संप्रभु के प्रति समर्पण का इस तरह का कमजोर विलंब, उस शक्ति के प्रति इस तरह का लड़खड़ाता और डगमगाता प्रतिरोध जिसका उद्देश्य विजय प्राप्त करना और जीतना है, सत्य से इस तरह का विश्वासघाती विमुखता।

नहीं। मैंने पूरी योजना को तुरंत स्वीकार कर लिया। मैंने अपना हाथ बढ़ाया और सब कुछ ग्रहण कर लिया। मैंने उसे एक तरह के क्रोध और जल्दबाजी में अपने भीतर समेट लिया, और उसे अपने चारों ओर इस प्रकार लपेट लिया जैसे युद्ध के मैदान में खड़ा सैनिक अपने झंडे को अपनी छाती पर लपेटता है। मैंने दृढ़ विश्वास से प्रार्थना की कि वह मुझ पर उस निश्चितता को, जिसे गले लगाते हुए भी घृणा होती है, जड़ दे, उसे अपनी सबसे शक्तिशाली चोटों से ठोक दे; और जब लोहा मेरी आत्मा में गहराई तक समा गया, तो मैं उठ खड़ा हुआ, मानो मेरा नया रूप धारण हो गया हो।

अपने मोह में डूबे हुए मैंने कहा, "सत्य, तुम अपने वफादार सेवकों की अच्छी स्वामिनी हो! जब झूठ ने मुझे जकड़ रखा था, तब मैंने कितना कष्ट सहा! यहाँ तक कि जब झूठ अभी भी मीठा, कल्पना को लुभाने वाला और भावनाओं को गर्म करने

वाला था, तब भी इसने मुझे हर घंटे पीड़ा दी। यह विश्वास कि स्नेह जीत लिया गया है, इस भय से अलग नहीं हो सका कि कहीं चक्र के एक और मोड़ से यह खो न जाए। सत्य ने झूठ, चापलूसी और उम्मीद को छीन लिया, और मैं यहाँ खड़ा हूँ - स्वतंत्र!"

अब बस यही बचा था कि मैं अपनी आज़ादी को अपने कमरे में ले जाऊं, उसे अपने बिस्तर तक ले जाऊं और देखूं कि मैं उससे क्या कर सकती हूं। नाटक अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था। मैं पेड़ों के नीचे उस प्रेम दृश्य को, उस वनमय प्रेम प्रसंग को और देर तक देख सकती थी। अगर उस प्रदर्शन में प्रेम का कोई अंश न भी होता, तो भी इस समय मेरी कल्पना इतनी उदार, इतनी रचनात्मक थी कि वह उसके लिए सबसे प्रमुख रूपरेखा तैयार कर सकती थी, और उसे जुनून का गहरा जीवन और उच्चतम रंग दे सकती थी। लेकिन मैं नहीं देखूंगी; मैंने अपना संकल्प पक्का कर लिया था, लेकिन मैं अपनी प्रकृति का उल्लंघन नहीं करूंगी। और फिर— किसी चीज़ ने मुझे शॉल के नीचे इतनी बेरहमी से चीर डाला, किसी चीज़ ने मेरी बगल में इतना गहरा घाव कर दिया, एक गिद्ध की तरह जिसकी चोंच और पंजे इतने मजबूत थे कि मुझे उससे अकेले ही लड़ना पड़ा। मुझे लगता है कि मैंने अब तक कभी ईर्ष्या महसूस नहीं की थी। यह डॉ. जॉन और पॉलिना के प्यार भरे शब्दों को सहने जैसा नहीं था, जिनके खिलाफ मैंने अपनी आंखें और कान बंद कर लिए थे, अपने विचारों को उनसे दूर कर लिया था, फिर भी मेरे सामंजस्य की भावना ने उसमें एक आकर्षण पाया था। यह घोर अन्याय था। सौंदर्य से जन्मा प्रेम मेरा नहीं था; मेरा उससे कोई संबंध नहीं था: मैं उसमें हस्तक्षेप करने का साहस नहीं कर सकता था, परन्तु एक अन्य प्रेम, जो लंबे समय के परिचय के बाद संकोचपूर्वक जीवन में प्रवेश करता है, पीड़ा की भट्टी में तपा हुआ, निष्ठा की मुहरों से युक्त, स्नेह के शुद्ध और स्थायी मिश्रण से सुदृढ़, बुद्धि द्वारा बुद्धि की ही कसौटियों पर परखा हुआ, और अंततः अपनी ही प्रक्रिया से अपनी ही निर्दोष पूर्णता तक पहुँचा, वह प्रेम जो वासना, उसके तीव्र उन्माद और उसके उग्र और शीघ्र विनाश पर हँसता है, उस प्रेम में मेरा निहित स्वार्थ था; और जो कुछ भी उसके विकास या विनाश की ओर ले जाता, मैं उसे उदासीन नहीं देख सकता था।

मैंने पेड़ों के समूह और उसकी छाया में मौजूद खुशनुमा माहौल से मुंह मोड़ लिया। आधी रात बीत चुकी थी; संगीत कार्यक्रम समाप्त हो चुका था, भीड़ कम हो रही थी। मैं भी उसी गति से आगे बढ़ा। जगमगाते पार्क और रोशनी से जगमगाते हाउते-विले

(जो अब भी रोशन था, ऐसा लगता है कि विलेट में यह एक तरह की खुली छूट थी) को पीछे छोड़ते हुए, मैं धुंधले निचले इलाके की ओर चल पड़ा।

मैं इसे धुंधला नहीं कहूँगा, क्योंकि चाँदनी की सुंदरता—जो पार्क में भुला दी गई थी—यहाँ एक बार फिर से प्रकट हुई। वह ऊँची उड़ान भर रही थी, और शांत और निर्मल चमक रही थी। उत्सव का संगीत और उल्लास, उन दीपों की आग और चमकीले रंग एक घंटे के लिए उसे मात दे चुके थे, लेकिन अब, फिर से, उसकी महिमा और उसका मौन विजयी हुआ। प्रतिद्वंद्वी दीप बुझ रहे थे: वह एक श्वेत भाग्य की तरह अपने मार्ग पर डटी रही। ढोल, तुरही, बिगुल ने अपनी ध्वनि गूंजी और भुला दिए गए; उसने कलम की किरणों से आकाश और पृथ्वी पर शाश्वत अभिलेखों के लिए अभिलेख लिखे। वह और वे तारे मुझे एक साथ सर्वव्यापी सत्य के प्रतीक और साक्षी प्रतीत हुए। रात्रि आकाश ने उसके शासन को प्रकाशित किया: अपनी धीमी गति से आगे बढ़ती हुई प्रगति की तरह, उसने अपनी विजय को आगे बढ़ाया—वह निरंतर गति जो अनंत काल से है, है और रहेगी।

तेल की रोशनी से जगमगाती ये सड़कें एकदम शांत हैं: मुझे इनकी सादगी और शांति बहुत पसंद है। घर लौटते हुए लोग कभी-कभार मेरे पास से गुज़रते हैं, लेकिन ये लोग पैदल चलते हैं, ज़्यादा शोर नहीं करते और जल्दी ही चले जाते हैं। मुझे विलेट का वर्तमान रूप इतना प्यारा है कि मैं किसी छत के नीचे दोबारा नहीं जाना चाहता, बल्कि मैं अपने इस अनोखे साहसिक कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने और मैडम बेक के घर आने से पहले चुपचाप बड़े शयनकक्ष में अपने बिस्तर पर वापस जाने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ।

मेरे और रू फॉसेट के बीच केवल एक ही गली है; जैसे ही मैं पहली बार उसमें दाखिल हुआ, एक गाड़ी की आवाज़ ने इस इलाके की गहरी शांति भंग कर दी। वह इस तरफ आ रही थी—बहुत तेज़ी से आ रही थी। पक्की सड़क पर उसकी खड़खड़ाहट कितनी तेज़ थी! गली संकरी थी, और मैं सावधानी से पुलिया पर चलता रहा। गाड़ी गर्जना करते हुए गुज़र गई, लेकिन उसके गुज़रते समय मैंने क्या देखा, या क्या देखने का आभास हुआ? ज़रूर उस खिड़की से कुछ सफ़ेद फड़फड़ाया—ज़रूर किसी ने हाथ से रूमाल लहराया होगा। क्या वह इशारा मेरे लिए था? क्या कोई मुझे जानता है? मुझे कौन पहचान सकता है? वह न तो एम. डी बासोम्पियर की गाड़ी थी, न ही श्रीमती ब्रेटन की; और इसके अलावा, न तो होटल क्रेसी और न ही ला टेरेस का

महल उस दिशा में था। खैर, मेरे पास अटकलें लगाने का समय नहीं है; मुझे जल्दी घर जाना है।

रू फॉसेट पर पहुँचकर पेंशननेट (पेंशन हाउस) तक आते-आते सब कुछ शांत हो गया; मैडम और डेज़िरे के साथ अभी तक कोई फियाक्रे (पुलिस वाला) नहीं आया था। मैंने बड़ा दरवाज़ा थोड़ा खुला छोड़ दिया था; क्या वह ऐसे ही मिलेगा? शायद हवा या किसी और वजह से वह इतनी ज़ोर से खुल गया हो कि उसका स्प्रिंग बोल्ट खुल गया हो? अगर ऐसा हुआ तो प्रवेश असंभव हो गया; मेरा यह साहसिक कार्य किसी आपदा में परिणत होगा। मैंने भारी पल्ले को हल्के से धक्का दिया; क्या वह खुलेगा?

हाँ। एकदम खामोशी से, एकदम प्रतिरोधहीनता से, मानो किसी शुभ वरदान ने भीतर के प्रवेश कक्ष में तिल के ताबीज की प्रतीक्षा की हो। साँस रोककर, चुपचाप सब कुछ समेटते हुए, बिना जूतों के सीढ़ियाँ चढ़ते हुए, मैं छात्रावास की ओर बढ़ा और अपने सोफे पर पहुँच गया।

* * * * *

अरे! मैं वहाँ पहुँच गई, और एक बार फिर मुझे एक स्वतंत्र प्रेरणा मिली। अगले ही पल, मैं लगभग चीख पड़ी—लगभग, पर पूरी तरह नहीं, भगवान का शुक्र है!

छात्रावास में, पूरे घर में, इस समय मृत्यु का सन्नाटा छाया हुआ था। सब सो रहे थे, और इतनी खामोशी में कि मानो कोई सपना ही न देख रहा हो। उन्नीस बिस्तरों पर उन्नीस आकृतियाँ पूरी लंबाई में और गतिहीन पड़ी थीं। मेरे बिस्तर पर—बीसवें पलंग पर—कुछ भी नहीं होना चाहिए था: मैंने इसे खाली छोड़ दिया था, और खालीपन ही इसे पाना चाहिए था। तो फिर, आधे खींचे हुए पर्दों के बीच मैं क्या देख रहा हूँ? वह काली, अतिक्रमण करने वाली आकृति, लेटी हुई, लंबी और अजीब? क्या यह कोई लुटेरा है जो खुले दरवाजे से अंदर आ गया है और वहाँ घात लगाकर बैठा है? यह बहुत काला दिखता है, मुझे लगता है—यह इंसान नहीं दिखता। क्या यह कोई आवारा कुत्ता है जो गली से अंदर आ गया है और रेंगकर यहाँ दुबक गया है? क्या यह मेरे पास आने पर उछल पड़ेगा, क्या यह कूद पड़ेगा? मुझे पास जाना ही होगा। हिम्मत! एक कदम!

मेरा सिर चकरा गया, क्योंकि धुंधली रोशनी में मैंने अपने बिस्तर पर उस बूढ़ी प्रेत को लेटे हुए देखा - वह नन।

इस क्षण एक चीख मुझे बर्बाद कर सकती थी। चाहे जो भी दृश्य हो, मैं न तो

घबरा सकती थी, न चीख सकती थी, न बेहोश हो सकती थी। इसके अलावा, मैं व्याकुल नहीं थी। हाल की घटनाओं से संयमित होकर, मेरे तंत्रिका तंत्र ने उन्माद को त्याग दिया था। प्रकाश, संगीत और हजारों की भीड़ से प्रेरित होकर, एक नए प्रकोप से पूरी तरह से जकड़ी हुई, मैंने प्रेतों को चुनौती दी। एक पल में, बिना किसी उद्गार के, मैं उस प्रेतवाधित पलंग पर टूट पड़ी; कुछ भी उछला नहीं, न उछला, न हिला; सारी गति मेरी थी, सारा जीवन, वास्तविकता, सार, बल सब मेरा था; जैसा मेरी अंतरात्मा ने महसूस किया। मैंने उसे चीर डाला - उस दुष्ट आत्मा को! मैंने उसे ऊपर उठाया - उस प्रेत को! मैंने उसे झटक कर छोड़ दिया - उस रहस्य को! और वह नीचे गिर पड़ी - मेरे चारों ओर - टुकड़ों और खंडों में - और मैंने उस पर पैर रख दिया।

फिर से देखो—शाखाविहीन वृक्ष, अस्थिर रोसिनांटे; बादलों की पतली परत, चाँदनी की टिमटिमाहट। लंबी नन एक लंबे तकिये जैसी लग रही थी, जिस पर एक लंबा काला शॉल लिपटा था और चतुराई से एक सफेद घूंघट डाला गया था। वास्तव में, भले ही यह अजीब लगे, ये वस्त्र असली नन के वस्त्र थे, और किसी ने इन्हें भ्रम पैदा करने के उद्देश्य से सजाया था। ये वस्त्र कहाँ से आए? यह छल किसने रचा? ये प्रश्न अभी भी अनसुलझे थे। सिर पर बंधी पट्टी पर कागज की एक पर्ची पिन से लगी थी: उस पर पेंसिल से ये व्यंग्यात्मक शब्द लिखे थे—

"अटारी में रहने वाली नन ने लूसी स्नो को अपने कपड़े विरासत में दिए। अब वह रू फॉसेट में कभी नहीं दिखेगी।"

और वो कौन और क्या थी जिसने मुझे सता रखा था? उसे मैंने वास्तव में तीन बार देखा था। मेरी जान-पहचान की कोई भी महिला उस भूतनी के कद की नहीं थी। उसका कद किसी स्त्री के कद के बराबर नहीं था। मेरे किसी भी परिचित पुरुष पर इस साज़िश का ज़रा भी आरोप नहीं लगाया जा सकता था।

अब भी मैं बेहद हैरान थी, लेकिन अचानक ही, अलौकिक और रहस्यमयी भावनाओं से पूरी तरह मुक्त हो गई थी; एक तुच्छ लेकिन अनसुलझी पहेली को सुलझाने में अपना दिमाग खपाने से बचने के लिए, मैंने शॉल, घूंघट और पट्टियों को एक साथ बांधा, उन्हें अपने तकिए के नीचे रख दिया, लेट गई, तब तक सुनती रही जब तक मुझे मैडम के घर लौटते हुए कार के पहियों की आवाज सुनाई नहीं दी, फिर करवट बदली और कई रातों की जागने से थकी हुई, शायद अब असर कर रहे मादक पदार्थ से भी वश में होकर, गहरी नींद सो गई।

अध्याय XL.

खुशहाल जोड़ी।

उस अद्भुत ग्रीष्म संक्रांति की रात के बाद का दिन कोई साधारण दिन नहीं था। मेरा मतलब यह नहीं है कि उस दिन आकाश में कोई संकेत दिखाई दिए या धरती पर कोई अपशगुन हुआ; न ही मेरा तात्पर्य मौसम संबंधी किसी घटना, तूफान, बाढ़ या बवंडर से है। इसके विपरीत: सूर्य जुलाई के महीने की तरह प्रसन्नता से उदय हुआ। सुबह ने अपनी सुंदरता को माणिकों से सजाया और अपनी गोद को गुलाबों से इस प्रकार भर दिया कि वे उससे बौछारों की तरह गिरे और उसके मार्ग को लाल कर दिया: घंटे अप्सराओं की तरह तरोताजा होकर उठे और सुबह की पहाड़ियों पर अपनी ओस की थैलियाँ उंडेलते हुए, वे भाप से मुक्त होकर बाहर निकले: छायाहीन, नीले रंग में और शानदार, उन्होंने सूर्य के घोड़ों को एक जलते हुए और निर्मल मार्ग पर अग्रसर किया।

संक्षेप में कहें तो, वह दिन गर्मियों के सबसे सुहावने दिनों में से एक था; लेकिन मुझे संदेह है कि मैं रू फॉसेट का एकमात्र निवासी था जिसने इस सुखद तथ्य पर ध्यान दिया या गौर किया। बाकी सभी के दिमाग में एक और ही विचार चल रहा था; वास्तव में, वह विचार मेरे मन में भी था; लेकिन यह मुख्य विचार, मेरे लिए उतना नया, उतना अचानक और उतना रहस्यमय नहीं था जितना कि मेरे साथ विचार कर रहे अधिकांश लोगों के लिए था, इसलिए मैं बाकियों की तुलना में किसी भी अन्य अवलोकन या प्रभाव के लिए थोड़ा अधिक खुला था।

फिर भी, बगीचे में टहलते हुए, धूप का आनंद लेते हुए और खिलते और बढ़ते पौधों को देखते हुए, मैंने उसी विषय पर विचार किया जिस पर पूरे घर में चर्चा हो रही थी।

विषय क्या?

बस इतना ही। जब सुबह की प्रार्थना का समय आया, तो बोर्डिंग रूम की पहली पंक्ति में एक जगह खाली थी। जब नाश्ता परोसा गया, तो एक कॉफी का कप बिना बिके रह गया। जब नौकरानी ने बिस्तर लगाए, तो एक बिस्तर पर उसे एक तकिया लंबाई में रखा हुआ मिला, जिस पर टोपी और नाइटगाउन था; और जब जिनेवरा फैंसहावे की संगीत शिक्षिका हमेशा की तरह सुबह जल्दी आकर सुबह का पाठ पढ़ाने आई, तो वह प्रतिभाशाली और होनहार युवती, उनकी शिष्या, बिल्कुल भी कुछ नहीं बोली।

मिस फैंशॉ की हर जगह तलाशी ली गई; घर को कोने-कोने तक छान मारा गया; व्यर्थ; कोई सुराग नहीं, कोई संकेत नहीं, यहाँ तक कि खाने-पीने की कोई चीज भी नहीं मिली; अप्सरा गायब हो गई, बीते हुए रात में समा गई, जैसे कोई टूटता तारा अंधेरे में गायब हो जाता है।

निगरानी करने वाले शिक्षकों की निराशा गहरी थी, और दोषी निदेशिका का आतंक उससे भी कहीं अधिक था। मैंने मैडम बेक को इतना पीला और इतना भयभीत कभी नहीं देखा था। यह उनके कोमल अंग पर, उनकी कमज़ोरी पर एक गहरा प्रहार था; यह उनके हितों को ठेस पहुँचाने वाला आघात था। आखिर यह अप्रिय घटना कैसे घटी? भगोड़ा किस रास्ते से भागा? एक भी खिड़की खुली नहीं मिली, एक भी शीशा टूटा नहीं; सभी दरवाजे मजबूती से बंद थे। आज तक मैडम बेक को इस मामले में संतोष नहीं मिला है, और न ही किसी और को, सिवाय लूसी स्नो के, जो यह नहीं भूल पाई कि किसी काम को आसान बनाने के लिए, एक बड़े दरवाजे को धीरे से चौखट तक खींच लिया गया था, बंद तो किया गया था, लेकिन न तो कुंडी लगाई गई थी और न ही मजबूती से बंद किया गया था। गड़गड़ाती हुई गाड़ी और उसके जोड़े को भी अब याद आ गया था, साथ ही वह रहस्यमय संकेत, लहराया गया रूमाल भी।

इन बातों और एक-दो अन्य बातों के आधार पर, जिन तक मेरे अलावा किसी की पहुँच नहीं थी, मैं केवल एक ही निष्कर्ष निकाल सका। यह भागकर शादी करने का मामला था। इस बात पर नैतिक रूप से आश्वस्त होकर और मैडम बेक की गहरी झिझक को देखते हुए, मैंने अंततः अपना विश्वास व्यक्त किया। एम. डी. हमाल के प्रस्ताव का जिक्र करते हुए, मैंने पाया, जैसा कि मुझे उम्मीद थी, कि मैडम बेक इस मामले से पूरी तरह वाकिफ थीं। उन्होंने बहुत पहले ही श्रीमती चोलमोंडली से इस बारे

में चर्चा कर ली थी और इस मामले में अपनी जिम्मेदारी उन्हीं पर डाल दी थी। अब उन्होंने श्रीमती चोलमोंडली और एम. डी. बासोम्पियर से मदद मांगी थी।

हमें पता चला कि होटल क्रेसी को पहले से ही घटना की जानकारी थी। जिनेवरा ने अपनी चचेरी बहन पॉलिना को पत्र लिखकर शादी की इच्छा का अस्पष्ट संकेत दिया था; डी हमाल के परिवार से भी संदेश प्राप्त हुए थे; एम. डी बासोम्पियर भगोड़ों का पीछा कर रहे थे। लेकिन वे उन्हें पकड़ने में बहुत देर कर चुके थे।

इस सप्ताह के दौरान, डाक से मुझे एक नोट मिला। मैं इसे लिख ही लेता हूँ; इसमें एक से अधिक बिंदुओं पर स्पष्टीकरण है: —

'प्यारे टिम (टिमोन का छोटा नाम), – मैं जा रहा हूँ, देखो – एकदम से। अल्फ्रेड और मैंने लगभग शुरू से ही इसी तरह शादी करने का इरादा किया था; हम कभी भी दूसरे लोगों की तरह नीरस तरीके से बंधन में नहीं बंधना चाहते थे; अल्फ्रेड में इसके लिए बहुत जोश है, और मुझमें भी – हे भगवान! क्या तुम जानती हो, अल्फ्रेड, जो तुम्हें 'ड्रैगन' कहकर बुलाता था, पिछले कुछ महीनों में तुमसे इतना मिला है कि अब वह तुम्हारे प्रति काफी दोस्ताना महसूस करने लगा है। उसे उम्मीद है कि उसके जाने के बाद तुम्हें उसकी कमी महसूस नहीं होगी; अगर उसने तुम्हें थोड़ी बहुत परेशानी दी हो तो वह माफी मांगता है। उसे डर है कि उसने तुम्हें थोड़ी असुविधा पहुँचाई होगी जब वह तुम्हें खलिहान में मिला, ठीक उसी समय जब तुम एक पत्र पढ़ रही थीं जो देखने में बेहद दिलचस्प लग रहा था; लेकिन वह तुम्हें चौंकाने के लालच का विरोध नहीं कर सका, क्योंकि तुम अपने पत्र में इतनी मग्न लग रही थीं। बदले में, वह कहता है कि एक बार जब उसने सिगरेट जलाई थी और चुपचाप अपनी सिगार का एक कश लेने जा रहा था, तब तुम अचानक ड्रेस, शॉल या किसी अन्य शिफॉन के लिए दौड़कर उसे डरा दिया था, जबकि वह मेरा इंतजार कर रहा था।

क्या अब तक आपको समझ आ गया है कि एम. ले कॉम्टे डी हमाल अटारी के नन थे, और वे आपके विनम्र सेवक से मिलने आए थे? मैं आपको बताता हूँ कि उन्होंने यह कैसे किया। आप जानते हैं कि उनके पास एथेनी में प्रवेश द्वार है, जहाँ उनकी सबसे बड़ी बहन, मैडम डी मेल्सी के दो-तीन भतीजे पढ़ते हैं। आप जानते हैं कि एथेनी का प्रांगण आपकी सैरगाह, एले डेफेंड्यू, की ऊँची दीवार के दूसरी ओर है। अल्फ्रेड जितना अच्छा नाच या तलवारबाज़ी कर सकता है, उतना ही अच्छा वह चढ़ाई भी कर सकता है: उसका शौक हमारे पेंशननेट की सीढ़ी बनाना था, पहले दीवार पर चढ़कर;

फिर - उस ऊँचे पेड़ की मदद से जो ग्रैंड बर्सेउ पर फैला हुआ था और जिसकी कुछ शाखाएँ हमारे परिसर की निचली इमारतों की छत पर टिकी हुई थीं - वह पहली मंजिल और ग्रैंड हॉल पर चढ़ने में कामयाब हो जाता था। एक रात, संयोग से, वह इस पेड़ से गिर गया, कुछ शाखाएँ तोड़ दीं, और लगभग खुद को चोट पहुँचा ली। गर्दन, और आखिरकार, भागते समय उसे बहुत डर लगा, और लगभग दो लोगों ने उसे पकड़ लिया, मैडम बेक और एम. इमानुएल, जैसा कि उसे लगता है, जो गली में चल रहे थे। बड़े हॉल से इमारत के सबसे ऊंचे ब्लॉक तक चढ़ाई मुश्किल नहीं है, जो बड़े अटारी में समाप्त होती है। रोशनदान, जैसा कि आप जानते हैं, दिन-रात हवा के लिए आधा खुला रहता है; वह रोशनदान से ही अंदर आया था। लगभग एक साल पहले मैंने संयोग से उसे नन की हमारी कहानी सुनाई थी; इससे उसके प्रेत रूप धारण करने का रोमांटिक विचार आया, जिसे मुझे लगता है कि आपको मानना पड़ेगा कि उसने बहुत चतुराई से अंजाम दिया है।

“अगर नन का काला गाउन और सफेद घूंघट न होता, तो वह बार-बार आप और उस बाघ जैसे जेसुइट, एम. पॉल, दोनों के हाथों पकड़ा जाता। वह आप दोनों को भूत-प्रेत देखने में माहिर और बहुत बहादुर समझता है। मुझे हैरानी आपकी बहादुरी से ज़्यादा आपकी गोपनीयता पर होती है। आप उस लंबे भूत के बार-बार दर्शन को बिना चिल्लाए, सबको बताए और पूरे घर और पड़ोस को जगाए कैसे सहन कर सकती थीं?”

“ओह, और आपको नन के साथ बिस्तर पर सोना कैसा लगा? मैंने उसे सजाया था: क्या मैंने अच्छा नहीं किया? क्या आप उसे देखकर चीख पड़े थे? मैं तो पागल हो जाती; लेकिन आप तो बिल्कुल मजबूत हैं! एकदम लोहे और चमड़े जैसे! मुझे लगता है आपको कुछ महसूस नहीं होता। आपमें मेरे जैसी संवेदनशीलता नहीं है। मुझे लगता है आप दर्द, डर और दुख, किसी भी भावना से बेखबर हैं। आप तो बिल्कुल बूढ़े डायोजेन्स जैसे हैं।”

“खैर, प्यारी दादी! क्या आप मेरी चांदनी रात में उड़ने वाली और भागती हुई माचिस से बहुत नाराज़ नहीं हैं? मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि इसमें बहुत मज़ा आया, और मैंने यह कुछ हद तक उस नखरीली पॉलिना और उस भालू जैसे डॉक्टर जॉन को चिढ़ाने के लिए किया: उन्हें यह दिखाने के लिए कि उनके सारे नखरों के बावजूद, मैं भी उनकी तरह शादी कर सकती हूँ। एम. डी बासोम्पियर पहले तो अल्फ्रेड

पर बहुत गुस्से में थे; उन्होंने 'नाबालिग को धोखा देने' के लिए मुकदमा चलाने की धमकी दी, और पता नहीं क्या-क्या; वह इतने गंभीर थे कि मुझे थोड़ा नाटकीय होना पड़ा - घुटनों पर बैठना पड़ा, सिसकना पड़ा, रोना पड़ा, तीन रुमाल भिगोने पड़े। बेशक, 'मेरे चाचा' जल्द ही मान गए; आखिर हंगामा करने का क्या फायदा? मेरी शादी हो चुकी है, बस बात खत्म। वह अब भी कहते हैं कि हमारी शादी कानूनी नहीं है, क्योंकि मैं बालिग नहीं हूँ! जैसे कि इससे कोई फर्क पड़ता हो! मेरी शादी उतनी ही हुई है जितनी कि अगर मैं बालिग होती। सौ। हालांकि, हमारी दोबारा शादी होने वाली है, और मुझे दहेज मिलेगा, जिसकी देखरेख श्रीमती चोलमोंडली करेंगी; और कुछ उम्मीद है कि एम. डी बासोम्पियर मुझे एक अच्छा हिस्सा देंगे, जो बहुत सुविधाजनक होगा, क्योंकि प्यारे अल्फ्रेड के पास अपनी जन्मजात और वंशानुगत कुलीनता और अपनी तनख्वाह के अलावा कुछ नहीं है। काश चाचाजी बिना किसी शर्त के, उदार और सज्जनता से सब कुछ करते; वे इतने चिड़चिड़े हैं कि उन्होंने दहेज को इस शर्त पर रखा है कि अल्फ्रेड लिखित में वादा करे कि दहेज मिलने के दिन से वह कभी ताश या पासा नहीं छुएगा। लोग मेरे प्यारे पर जुआ खेलने की प्रवृत्ति का आरोप लगाते हैं: मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन मैं इतना जरूर जानती हूं कि वह एक प्यारा और मनमोहक इंसान है।

“डी हमाल ने जिस चतुराई से हमारी भागने की योजना बनाई, उसकी जितनी भी तारीफ की जाए कम है। उसने कितनी समझदारी से उत्सव की रात चुनी, जब मैडम (क्योंकि वह उनकी आदतों को जानता था), जैसा कि उसने कहा था, पार्क में होने वाले संगीत कार्यक्रम में निश्चित रूप से अनुपस्थित होंगी। मुझे लगता है कि आप उनके साथ ही गए होंगे। मैंने आपको लगभग ग्यारह बजे छात्रावास से उठते और निकलते देखा। आप अकेले और पैदल कैसे लौटे, यह मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। क्या संकरी पुरानी रू सेंट जीन में हम आपसे ही मिले थे? क्या आपने मुझे गाड़ी की खिड़की से अपना रूमाल लहराते देखा था?”

“अलविदा! मेरी खुशकिस्मती पर आनंद मनाइए: मेरी अपार खुशी पर मुझे बधाई दीजिए, और यकीन मानिए, प्रिय संशयवादी और मानवद्वेषी, मैं आपका उत्तम स्वास्थ्य और प्रसन्नता में हूं।”

जिनेवा लौरा डे हमाल, भतीजे फैनशावे।

“पुनश्चः याद रखना, मैं अब एक काउंटेस हूँ। पापा, मम्मी और घर की लड़कियाँ

यह सुनकर बहुत खुश होंगी। ‘मेरी बेटी काउंटेस!’ ‘मेरी बहन काउंटेस!’ वाह! मिसेज जॉन ब्रेटन से तो यह कहीं बेहतर लगता है, है ना?”

* * * * *

मिस्ट्रेस फैंसहावे के संस्मरणों के समापन में, पाठक को निस्संदेह यह उम्मीद होगी कि अंततः उन्हें अपनी युवावस्था की नादानियों का कड़वा प्रायश्चित करना पड़ा। बेशक, उनके भविष्य में भी काफी कष्ट भोगने को बाकी है।

कुछ ही शब्दों में उनके बारे में मेरा अतिरिक्त ज्ञान व्यक्त हो जाएगा।

मैंने उसे उसके हनीमून के आखिरी दिनों में देखा। वह मैडम बेक से मिलने गई और मुझे सैलून में बुलवाया। वह हंसते हुए मेरी बाहों में दौड़ पड़ी। वह बेहद खूबसूरत और खिलखिलाती हुई लग रही थी: उसके बाल पहले से कहीं ज्यादा लंबे थे, गाल पहले से कहीं ज्यादा गुलाबी थे: उसकी सफेद टोपी और फ्लैंडर्स का घूंघट, नारंगी फूल और दुल्हन का गाउन उस पर बेहद जंच रहे थे।

“मुझे मेरा हिस्सा मिल गया!” वह तुरंत चिल्लाई; (जिनेवरा हमेशा ठोस बातों पर अड़ी रहती थी; मुझे हमेशा लगता था कि उसके स्वभाव में एक अच्छा व्यापारिक तत्व था, भले ही वह “बुर्जुआ” लोगों को तुच्छ समझती थी;) “और चाचा डी बासोम्पियर पूरी तरह से मान गए हैं। मुझे इस बात से कोई आपत्ति नहीं है कि उन्होंने अल्फ्रेड को ‘बेवकूफ’ कहा – यह तो बस उनकी घटिया स्कॉटिश परवरिश है; और मुझे लगता है कि पॉलिना मुझसे ईर्ष्या करती है, और डॉ. जॉन ईर्ष्या से पागल हो रहे हैं – मानो अपना सिर उड़ा लेंगे – और मैं बहुत खुश हूँ! मुझे सच में लगता है कि अब मेरी कोई इच्छा नहीं बची है – सिवाय एक गाड़ी और एक होटल के, और, ओह! मुझे – आपको अपने ‘पति’ से मिलवाना है। अल्फ्रेड, इधर आओ!”

और अल्फ्रेड भीतरी कक्ष से प्रकट हुए, जहाँ वे मैडम बेक से बात कर रहे थे और उस महिला की मिली-जुली शुभकामनाएँ और फटकारें सुन रहे थे। मुझे मेरे विभिन्न नामों से पेश किया गया: ड्रैगन, डायोजेन्स और टिमोन। युवा कर्नल बहुत विनम्र थे। उन्होंने भूत-प्रेत के दर्शन आदि के बारे में बड़े सलीके से और स्पष्ट शब्दों में मुझसे माफी मांगी और अंत में कहा कि "उनके सभी पापों का सबसे अच्छा बहाना वहीं खड़ा है!" अपनी दुल्हन की ओर इशारा करते हुए।

फिर दुल्हन ने उसे मैडम बेक के पास वापस भेज दिया, और मुझे अपने पास बुला

लिया, और सचमुच अपनी बेलगाम मस्ती, बचकानी, चंचल, बेतुकी बातों से मेरा दम घोंटने लगी। उसने अपनी अंगूठी बड़े गर्व से दिखाई; उसने खुद को मैडम ला कोम्टेस डी हमाल कहा, और बीस बार पूछा कि यह कैसा लगता है। मैंने बहुत कम कहा। मैंने उसे अपने स्वभाव का बस ऊपरी हिस्सा ही बताया। कोई बात नहीं कि वह मुझसे इससे बेहतर की उम्मीद नहीं करती थी—वह मुझे इतनी अच्छी तरह जानती थी कि तारीफ की उम्मीद नहीं करती थी—मेरे रूखे ताने उसे काफी पसंद आए और मेरा चेहरा जितना अधिक भावहीन और नीरस होता गया, वह उतनी ही खुशी से हँसती रही।

शादी के कुछ समय बाद ही, एम. डी. हमाल को सेना छोड़ने के लिए राजी कर लिया गया, क्योंकि यही उन्हें कुछ अनुपयुक्त संगतियों और आदतों से दूर करने का सबसे कारगर तरीका था; उनके लिए एक अटैची का पद दिलवाया गया, और वे अपनी युवा पत्नी के साथ विदेश चले गए। मुझे लगा कि अब वह मुझे भूल जाएगी, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। कई वर्षों तक, उसने अनियमित और अनिश्चित प्रकार का पत्राचार जारी रखा। पहले एक-दो साल तक, वह केवल अपने और अल्फ्रेड के बारे में ही लिखती रही; फिर, अल्फ्रेड पृष्ठभूमि में चला गया; वह और एक नया व्यक्ति हावी हो गए; अल्फ्रेड फैंसहावे डी बासोम्पियर डी हमाल ने अपने पिता की जगह ले ली। इस व्यक्ति के बारे में बड़े-बड़े दावे किए जाते थे, उसकी असाधारण प्रतिभा के चमत्कारों का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता था, और साथ ही उस उदासीनता के खिलाफ कड़ी निंदा भी की जाती थी जिसके साथ मैंने उन्हें स्वीकार किया था। मुझे नहीं पता था कि "माँ होना क्या होता है।" “मैं तो बिल्कुल भावनाहीन थी, इसलिए माँ के दिल की भावनाएँ मेरे लिए बिल्कुल अनजान थीं,” और इसी तरह की बातें। प्रकृति के नियमानुसार, इस युवक ने दाँत निकलने, खसरा और काली खांसी जैसी कई तकलीफें झेलीं: वह मेरे लिए बहुत भयानक समय था – माँ के पत्र मेरे लिए पीड़ा की चीख जैसे थे; किसी औरत पर इतनी विपत्ति नहीं आई थी; किसी इंसान को इतनी सहानुभूति की ज़रूरत नहीं थी। पहले तो मैं डर गई और बड़े दुख भरे शब्दों में जवाब दिया; लेकिन जल्द ही मुझे समझ आ गया कि इसमें सिर्फ़ दिखावा नहीं है, और मैं अपनी स्वाभाविक निर्ममता में वापस लौट गई। जहाँ तक उस युवा पीड़ित की बात है, उसने हर मुसीबत का सामना एक नायक की तरह किया। वह युवक पाँच बार मौत के मुँह से वापस आया और पाँचों बार चमत्कारिक रूप से जीवित हो उठा।

वर्षों के दौरान अल्फ्रेड प्रथम के विरुद्ध अशुभ संकेत उठने लगे; एम. डी बासोम्पियर से अपील करनी पड़ी, ऋण चुकाने पड़े, जिनमें से कुछ तो "सम्मान के ऋण" कहलाने वाले घिनौने और गंदे प्रकार के थे; अपमानजनक शिकायतें और कठिनाइयाँ आम हो गईं। हर संकट में, चाहे वह कैसा भी हो, जिनेवरा हमेशा की तरह सहानुभूति और सहायता के लिए ज़ोर-शोर से गुहार लगाती थी। वह किसी भी संकट का अकेले सामना करने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। किसी न किसी रूप में, किसी न किसी माध्यम से, उसे पूरा विश्वास था कि उसकी इच्छा पूरी हो जाएगी, और इसी तरह वह आगे बढ़ती रही - दूसरों के माध्यम से जीवन की लड़ाई लड़ती रही, और कुल मिलाकर, मैंने जितने भी मनुष्यों को देखा है, उनमें से उसने सबसे कम कष्ट सहे।

अध्याय XLI.

क्लोटिल्डे फॉबोर्ग।

क्या मुझे समापन से पहले उस स्वतंत्रता और नवीनीकरण का कुछ विवरण देना होगा जो मैंने उत्सव की रात को प्राप्त किया था? क्या मुझे यह बताना होगा कि कैसे मैंने और मेरे दो दृढ़ साथियों ने, जिन्हें मैं उस जगमगाते पार्क से घर लाया था, घनिष्ठ परिचय की कसौटी पर खरा उतरा?

मैंने अगले ही दिन उन्हें आजमाया। उन्होंने प्रेम और उसके बंधन से मुझे मुक्त कराते समय अपनी शक्ति का बखान किया था, लेकिन जब मैंने शब्दों से नहीं, बल्कि कर्मों से, बेहतर आराम का कोई प्रमाण, एक राहत भरे जीवन का कोई अनुभव मांगा, तो स्वतंत्रता ने यह कहकर अपना बचाव किया कि वह वर्तमान में गरीब और लाचार व्यक्ति की सहायता करने में असमर्थ है; और नवीनीकरण ने कभी कुछ नहीं कहा;

उसकी रात में अचानक मृत्यु हो गई थी।

तब मेरे पास इसके अलावा कोई चारा नहीं बचा था कि मैं चुपके से यह मान लूँ कि शायद अटकलों ने मुझे बहुत जल्दबाजी में और बहुत दूर तक पहुँचा दिया है, और ईर्ष्या के विकृत और रंगहीन जादू की याद दिलाकर उस दमनकारी घड़ी को सह सकूँ। एक छोटे और व्यर्थ संघर्ष के बाद, मैंने खुद को फिर से उसी पुराने अनिश्चितता के जाल में फँसा हुआ पाया, जकड़ा हुआ और फिर से तनावग्रस्त।

क्या मैं उसके जाने से पहले उसे देख पाऊँगी? क्या वह मुझे याद रखेगा? क्या उसका आने का इरादा है? क्या आज का दिन—क्या अगला घंटा उसे ले आएगा? या मुझे फिर से उस लंबे इंतज़ार के दर्द को सहना पड़ेगा—अंत में होने वाले उस तीखे दर्द को, उस मूक, जानलेवा पीड़ा को, जो आशा और संदेह दोनों को एक साथ उखाड़ फेंककर जीवन को झकझोर देती है; जबकि हिंसा करने वाले हाथ पर दया नहीं की जा सकती, क्योंकि अनुपस्थिति ही उसकी बाधा है!

यह स्वर्गारोहण का पर्व था; स्कूल बंद था। सुबह प्रार्थना सभा में शामिल होने के बाद, छात्रावास में रहने वाले छात्र और शिक्षक दोपहर का भोजन करने के लिए किसी फार्महाउस में लंबी सैर पर निकल गए थे। मैं उनके साथ नहीं गया, क्योंकि पॉल एट वर्जिनी के रवाना होने में अब केवल दो दिन बचे थे, और मैं अपने आखिरी मौके से ऐसे चिपटा हुआ था जैसे किसी जहाज़ के मलबे से बचा हुआ व्यक्ति अपने आखिरी सहारे या रस्सी से चिपटा रहता है।

पहली कक्षा में कुछ बढ़ई का काम था, कुछ बेंच या डेस्क की मरम्मत करनी थी; अक्सर छुट्टियों का इस्तेमाल इन कामों को करने के लिए किया जाता था, क्योंकि जब कमरे विद्यार्थियों से भरे होते थे तो ये काम नहीं किए जा सकते थे। मैं अकेला बैठा था, सोच रहा था कि बगीचे में जाकर थोड़ी देर के लिए शांत हो जाऊं, लेकिन इतना सुस्त था कि अपना इरादा पूरा नहीं कर पा रहा था, तभी मुझे कामगारों के आने की आवाज़ सुनाई दी।

विदेशी कारीगर और नौकर हर काम जोड़ों में करते हैं: मेरा मानना है कि एक कील ठोकने के लिए दो लाबासेकुरियन बढ़ई लगेंगे। अपनी टोपी बाँधते समय, जो अब तक मेरे हाथ में रिबन से लटकी हुई थी, मुझे क्षण भर के लिए एक ही कारीगर के कदमों की आहट सुनाई दी। मैंने यह भी गौर किया—जैसे काल कोठरी में बंद कैदी कभी-कभी खाली समय में छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देते हैं—कि इस आदमी ने जूते पहने

थे, न कि चप्पलें: मैंने अनुमान लगाया कि यह मुख्य बढ़ई होगा, जो अपने कारीगरों को भेजने से पहले निरीक्षण करने आया होगा। मैंने अपना दुपट्टा अपने चारों ओर लपेट लिया। वह आगे बढ़ा; उसने दरवाजा खोला; मेरी पीठ दरवाजे की ओर थी; मुझे एक अजीब सी सिहरन महसूस हुई—एक अजीब सी अनुभूति, इतनी जल्दी और क्षणिक कि उसका विश्लेषण करना असंभव था। मैं मुड़ी, मैं उस कथित मुख्य कारीगर के सामने खड़ी थी: दरवाजे की ओर देखते हुए, मैंने देखा कि वह एक आकृति से भरा हुआ था, और मेरी आँखों ने मेरे दिमाग में एम. पॉल की तस्वीर अंकित कर दी।

सैकड़ों प्रार्थनाएँ जिनसे हम ईश्वर से विनती करते हैं, प्रार्थना करने वाले को कोई लाभ नहीं पहुँचातीं। जीवन में कभी-कभार ही कोई सुनहरा उपहार हमारी गोद में आ गिरता है—एक परिपूर्ण और उज्ज्वल वरदान, जो पूर्णता की पुदीने से निकला हुआ होता है।

श्री इमैनुएल ने वही पोशाक पहनी थी जिसमें शायद वे यात्रा करने वाले थे—मखमल से ढका हुआ एक ओवरकोट; मुझे लगा कि वे तुरंत प्रस्थान के लिए तैयार हैं, जबकि मुझे पता था कि जहाज के रवाना होने में अभी दो दिन बाकी हैं। वे स्वस्थ और प्रसन्न दिख रहे थे। वे दयालु और सौम्य लग रहे थे: वे उत्सुकता से अंदर आए; एक पल में ही वे मेरे करीब आ गए; उनका व्यवहार अत्यंत सौहार्दपूर्ण था। शायद दूल्हे के रूप में उनका भाव ही उन्हें इतना प्रसन्न कर रहा था। कारण चाहे जो भी हो, मैं उनकी प्रसन्नता का विरोध नहीं कर सकती थी। अगर यह उनके साथ मेरा आखिरी पल होता, तो मैं इसे बनावटी, अस्वाभाविक दूरी में बर्बाद नहीं करती। मैं उनसे बहुत प्रेम करती थी—इतना अधिक कि ईर्ष्या को भी अपने रास्ते से हटा सकती थी, जब वह एक सुखद विदाई में बाधा डालती। उनके होठों से निकले एक मधुर शब्द या उनकी आँखों की एक कोमल दृष्टि मेरे जीवन के शेष समय के लिए पर्याप्त होती; यह अकेलेपन की अंतिम अवस्था में सांत्वना होती; मैं इसे ग्रहण करती—मैं इस अमृत का स्वाद चखती, और अहंकार इसे व्यर्थ नहीं जाने देता।

साक्षात्कार संक्षिप्त ही होगा: वह मुझसे वही कहेंगे जो उन्होंने उपस्थित सभी विद्यार्थियों से कहा था; वह दो मिनट के लिए मेरा हाथ थामे रहेंगे; वह पहली, आखिरी और एकमात्र बार अपने होठों से मेरे गाल को स्पर्श करेंगे—और फिर—बस। फिर, सचमुच, अंतिम विदाई, फिर वह विशाल अलगाव, वह खाई जिसे पार करके मैं उनके पास नहीं जा सकती—जिसके पार, शायद, वह मेरी ओर देखेंगे भी नहीं, मुझे याद

करने के लिए भी नहीं।

उन्होंने एक हाथ से मेरा हाथ पकड़ा, दूसरे हाथ से मेरी टोपी ठीक की; उन्होंने मेरे चेहरे की ओर देखा, उनकी चमकती मुस्कान गायब हो गई, उनके होंठों ने मानो एक माँ की मौन भाषा को व्यक्त किया, जो अपने बच्चे को अप्रत्याशित रूप से बहुत बदला हुआ, बीमारी से टूटा हुआ या अभाव से मुरझाया हुआ पाती है। तभी एक विराम आ पड़ा।

“पॉल, पॉल!” पीछे से एक महिला की हड़बड़ी भरी आवाज़ आई, “पॉल, बैठक में आ जाओ; मुझे तुमसे बहुत सी बातें करनी हैं—पूरे दिन की बातचीत—और विक्टर को भी; और यूसुफ भी यहीं है। आओ पॉल, अपने दोस्तों के पास आओ।”

मैडम बेक, जो सतर्कता या किसी रहस्यमय सहज ज्ञान के कारण उस स्थान पर आ गईं, इतनी करीब आ गईं कि उन्होंने लगभग खुद को मेरे और एम. इमानुएल के बीच में धकेल दिया।

“आओ, पॉल!” उसने दोहराया, उसकी नज़रें मुझ पर ऐसे पड़ीं जैसे किसी लोहे की छुरी से। उसने अपने रिश्तेदार को धक्का दिया। मुझे लगा कि वह पीछे हट गया है; मुझे लगा कि वह चला जाएगा। असहनीय पीड़ा से व्याकुल होकर, अब उस दर्द को महसूस करते हुए जिसे दबाना असंभव था, मैं रो पड़ा—

मेरा दिल टूट जाएगा!

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा दिल सचमुच टूट गया हो; लेकिन एक और झरने का ढक्कन खुल गया: एम. पॉल की एक साँस, उनकी फुसफुसाहट, "मुझ पर भरोसा करो!" ने मेरे ऊपर से बोझ हटा दिया, एक रास्ता खोल दिया। गहरी सिसकियों के साथ, सिहरन के साथ, कंपकंपी के साथ, ज़ोर से काँपते हुए, और फिर भी राहत के साथ - मैं रोया।

"उसे मेरे भरोसे छोड़ दो; यह एक संकट की स्थिति है: मैं उसे एक टॉनिक दूंगी, और यह ठीक हो जाएगा," शांत स्वभाव वाली मैडम बेक ने कहा।

उसके और उसके मीठे पेय के भरोसे रहना मुझे किसी विषदाता और उसके कटोरे के भरोसे रहने जैसा लगा। जब एम. पॉल ने गंभीर, कठोर और संक्षिप्त स्वर में उत्तर दिया — “मुझे छोड़ दो!” — तो मुझे एक विचित्र, सशक्त, लेकिन जीवनदायिनी संगीत का अनुभव हुआ।

"मुझे जाने दो!" उसने दोहराया, उसकी नाक के नथुने खुल गए और बोलते समय

उसके चेहरे की सभी मांसपेशियां कांप रही थीं।

“लेकिन यह बिल्कुल भी ठीक नहीं है,” मैडम ने सख्ती से कहा। उनके रिश्तेदार ने और भी सख्ती से जवाब दिया—

"यहाँ से चले जाओ!"

“मैं पिता सिलास को बुलवाऊंगी: मैं उन्हें तुरंत बुलवाऊंगी,” उसने दृढ़ता से धमकी दी।

“महिला!” प्रोफेसर चिल्लाया, अब अपनी गंभीर आवाज़ में नहीं, बल्कि अपनी सबसे ऊँची और उत्तेजित स्वर में, “महिला! तुरंत निकलो!”

वह उत्तेजित हो गया, और मैंने उसके क्रोध में भी उससे असीम प्रेम किया।

मुझे अभी तक ऐसा महसूस नहीं हुआ था।

“तुम जो कर रहे हो वह गलत है,” मैडम ने आगे कहा; “यह तुम्हारे जैसे अविश्वसनीय, कल्पनाशील स्वभाव वाले पुरुषों का विशिष्ट कार्य है; एक आवेगपूर्ण, अविवेकी, असंगत कदम – एक कष्टदायक क्रिया, और अधिक स्थिर और दृढ़ चरित्र वाले व्यक्तियों की दृष्टि में प्रशंसनीय नहीं है।”

“तुम नहीं जानती कि मुझमें कितना दृढ़ और अटल भाव है,” उसने कहा, “परन्तु तुम देखोगी; घटनाक्रम तुम्हें सबक सिखाएगा। मोडेस्ट,” उसने कम उग्र स्वर में कहा, “नरम बनो, दया करो, एक स्त्री बनो; इस बेचारे चेहरे को देखो और दया करो। तुम जानती हो कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ, और तुम्हारे मित्रों का भी मित्र हूँ; तुम्हारे ताने-बाज़ियों के बावजूद, तुम अच्छी तरह जानती हो कि मुझ पर भरोसा किया जा सकता है। मैंने स्वयं को बलिदान करने में कोई कठिनाई नहीं उठाई, परन्तु जो मैं देख रही हूँ उससे मेरा हृदय क्षुब्ध है; इसे सांत्वना चाहिए और दूसरों को भी सांत्वना देनी चाहिए। मुझे अकेला छोड़ दो!”

इस बार, "मुझे अकेला छोड़ दो" में इतना कड़वा और इतना आदेशात्मक स्वर था कि मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या मैडम बेक स्वयं भी एक पल के लिए आज्ञापालन में देरी कर सकती थीं; लेकिन वह दृढ़ रहीं; उन्होंने निडरता से उन्हें देखा; उनकी नज़रें पत्थर की तरह कठोर और स्थिर थीं। वह जवाब देने के लिए अपने होंठ खोल रही थीं; मैंने एम. पॉल के पूरे चेहरे पर एक तीव्र प्रकाश और अग्नि देखी; मैं मुश्किल से बता सकता हूँ कि उन्होंने यह हरकत कैसे की; यह हिंसक नहीं लग रही थी; यह शिष्टाचार का रूप धारण किए हुए थी; उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया; मुझे लगा कि उनका हाथ

मुश्किल से ही उन्हें छू पाया; वह भागीं, कमरे से घूमकर बाहर निकल गईं; वह चली गईं, और दरवाजा एक ही पल में बंद हो गया।

प्रेम का वो क्षणिक आवेश बहुत जल्दी थम गया। मुस्कुराते हुए उसने मुझे अपनी आँखें पोंछने को कहा; वह चुपचाप तब तक इंतजार करता रहा जब तक मैं शांत नहीं हो गई, बीच-बीच में मुझे शांत करने वाले और दिलासा देने वाले शब्द कहता रहा। कुछ ही देर में मैं फिर से उसके बगल में बैठ गई— आश्वस्त, न तो हताश, न ही उदास; न ही बेसहारा, न ही निराश, न ही जीवन से ऊबी हुई और न ही मृत्यु की तलाश में।

“तो फिर अपने दोस्त को खोने से आपको बहुत दुख हुआ था?” उसने पूछा।

“मुझे भुला दिए जाने का बहुत दुख है, महोदय,” मैंने कहा। “इन सभी थका देने वाले दिनों में आपकी ओर से एक भी शब्द नहीं सुना, और इस संभावना से मेरा दिल टूट गया, जो अब निश्चितता में बदल रही थी, कि आप बिना विदाई कहे चले जाएंगे!”

“क्या मुझे तुम्हें वही बताना होगा जो मैंने मोडेस्ट बेक को बताया था—कि तुम मुझे नहीं जानते? क्या मुझे तुम्हें अपना चरित्र दिखाना और सिखाना होगा? क्या तुम्हें इस बात का सबूत चाहिए कि मैं एक सच्चा दोस्त हो सकता हूँ? बिना स्पष्ट सबूत के यह हाथ मेरे हाथ में स्थिर नहीं रहेगा, क्या यह मेरे कंधे को सुरक्षित सहारा नहीं मानेगा? अच्छा। सबूत तैयार है। मैं खुद को सही साबित करने आया हूँ।”

"आप जो चाहें कहें, जो चाहें सिखाएं, जो चाहें साबित करें, महोदय; मैं अब सुनने के लिए तैयार हूं।"

“तो सबसे पहले, आपको मेरे साथ शहर में काफी दूर तक चलना होगा। मैं आपको लेने के लिए ही आया हूँ।”

उसके कहने का मतलब पूछे बिना, उसकी योजना को जाने बिना, या किसी भी तरह की आपत्ति जताए बिना, मैंने अपनी टोपी दोबारा बांध ली: मैं तैयार था।

उसने जो रास्ता चुना वह चौड़ी सड़कों से होकर जाता था: उसने मुझे कई बार नींबू के पेड़ों के नीचे लगी सीटों पर बैठने के लिए कहा; उसने यह नहीं पूछा कि क्या मैं थका हुआ था, बल्कि उसने देखा और अपने खुद के निष्कर्ष निकाल लिए।

“इन सभी थका देने वाले दिनों में,” उन्होंने मेरे शब्दों को दोहराते हुए कहा, मेरी आवाज़ और विदेशी लहजे की कोमल, दयालु नकल करते हुए, जो उनके होठों से पहले भी निकल चुका था, और जिसमें उनकी चंचल हंसी-मजाक कभी ठेस नहीं

पहुंचाती थी, यहां तक कि तब भी नहीं जब अक्सर वह यह दावा करते थे कि मैं उनकी भाषा चाहे जैसे भी लिखूं, मैं उसे अपूर्ण और हिचकिचाते हुए ही बोलती हूं और हमेशा बोलती रहूंगी। "'इन सभी थका देने वाले दिनों में' मैं तुम्हें एक पल के लिए भी नहीं भूली। निष्ठावान स्त्रियां इस बात में गलती करती हैं कि वे स्वयं को ईश्वर की एकमात्र निष्ठावान रचना मानती हैं। अपने लिए एक अत्यंत प्रबल और जीवंत सत्य पर, मैं भी हाल तक किसी भी तरफ से गिनती करने का साहस नहीं करती थी; लेकिन — — मुझे देखो।"

मैंने अपनी प्रसन्न आँखें ऊपर उठाईं: वे अब प्रसन्न थीं, अन्यथा वे मेरे हृदय की भावनाओं को व्यक्त करने वाली नहीं होतीं।

कुछ सेकंड तक गौर करने के बाद उसने कहा, "खैर, इस हस्ताक्षर को नकारा नहीं जा सकता: इसे कॉन्स्टेंसी ने लिखा है: उसकी कलम लोहे की है। क्या यह रिकॉर्ड दर्दनाक था?"

"बेहद दर्दनाक," मैंने सच्चाई से कहा। "महाशय, उसका हाथ हटा लीजिए; मैं उसके हाथों के निशानों को और सहन नहीं कर सकता।"

"वह इतनी पीली पड़ गई है," उसने खुद से कहा; "उसका चेहरा मुझे दुख पहुंचाता है।"

"अरे! मैं देखने में अच्छा नहीं हूँ — — ?"

मैं यह कहने से खुद को रोक नहीं सका; शब्द अनायास ही निकल आए: मुझे कभी ऐसा समय याद नहीं आता जब मुझे अपनी बाहरी कमियों की सीमा को लेकर कोई भय न सताता रहा हो; इस समय यह भय मुझ पर विशेष बल के साथ हावी था।

उसके चेहरे पर एक गहरी कोमलता छा गई; उसकी बैंगनी आँखें गहरी स्पेनिश पलकों के नीचे चमक उठीं और दमक उठीं: वह उठ खड़ा हुआ; "चलो आगे बढ़ते हैं।"

"क्या मैं आपकी नजरों में बहुत अप्रिय लगता हूँ?" मैंने साहस जुटाकर यह सवाल पूछा: यह बात मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

वह रुका और उसने मुझे संक्षिप्त, सशक्त उत्तर दिया; एक ऐसा उत्तर जिसने मुझे चुप करा दिया, शांत कर दिया, फिर भी गहरी संतुष्टि प्रदान की। उसके बाद से जब मुझे पता चला कि मैं उसके लिए क्या हूँ; और मैं बाकी दुनिया के लिए क्या हो सकता हूँ, तब से मैंने इस बात की परवाह करना छोड़ दिया। क्या दिखावे के बारे में राय पर इतना ज़ोर देना कमज़ोरी थी? मुझे डर है कि शायद थी; मुझे डर है कि थी;

लेकिन अगर ऐसा है तो मुझे अपनी कमज़ोरी को हल्के में स्वीकार नहीं करना चाहिए। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मुझे नाराज़ करने का बहुत डर है - और एम. पॉल को थोड़ा-बहुत प्रसन्न करने की प्रबल इच्छा है।

हम कहाँ जा रहे थे, मुझे ठीक से पता ही नहीं था। हमारी सैर लंबी थी, फिर भी छोटी लग रही थी; रास्ता सुहावना था, दिन खूबसूरत था। श्री इमानुएल अपनी यात्रा के बारे में बात कर रहे थे—वे तीन साल दूर रहने की सोच रहे थे। ग्वाडालूप से लौटने पर, वे जिम्मेदारियों से मुक्ति और एक स्पष्ट योजना की उम्मीद कर रहे थे; और मैंने उनकी अनुपस्थिति के दौरान क्या करने का इरादा किया था? उन्होंने पूछा। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि मैंने एक बार स्वतंत्र होने और अपना एक छोटा सा स्कूल चलाने की बात की थी: क्या मैंने वह विचार छोड़ दिया था?

"सचमुच, मैंने ऐसा नहीं किया था: मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहा था कि जो कुछ भी मुझे इसे व्यवहार में लाने में सक्षम बनाए, उसे बचा सकूं।"

“उन्हें मुझे रू फॉसेट में छोड़ना अच्छा नहीं लगता था; उन्हें डर था कि मैं वहाँ उन्हें बहुत याद करूँगी — मैं अकेलापन महसूस करूँगी — मैं उदास हो जाऊँगी — ?”

यह निश्चित था; लेकिन मैंने सहन करने की पूरी कोशिश करने का वादा किया।

“फिर भी,” उसने धीमी आवाज़ में कहा, “आपके वर्तमान निवास पर एक और आपत्ति है। मैं कभी-कभी आपको पत्र लिखना चाहता हूँ: पत्रों के सुरक्षित संप्रेषण के बारे में किसी भी प्रकार की अनिश्चितता ठीक नहीं होगी; और रू फॉसेट में—संक्षेप में, कुछ मामलों में हमारा कैथोलिक अनुशासन—यद्यपि उचित और उपयोगी है—लेकिन विशेष परिस्थितियों में इसका दुरुपयोग—शायद गलत इस्तेमाल—हो सकता है।”

“लेकिन अगर आप लिखें,” मैंने कहा, “मुझे आपके पत्र चाहिए; और मैं उन्हें प्राप्त कर लूँगा: दस निदेशक, बीस निदेशिकाएँ भी उन्हें मुझसे नहीं रोक पाएँगी। मैं एक प्रोटेस्टेंट हूँ: मैं इस तरह का अनुशासन सहन नहीं करूँगा: महोदय, मैं नहीं करूँगा।”

“धीरे-धीरे,” उसने जवाब दिया; “हम एक योजना पर काम करेंगे; हमारे पास संसाधन हैं: निश्चिंत रहें।”

इतना कहते हुए वह रुक गया।

अब हम लंबी पैदल यात्रा से लौट रहे थे। हम साफ-सुथरे फाउबर्ग के मध्य में पहुँच चुके थे, जहाँ घर छोटे थे, लेकिन देखने में अच्छे लग रहे थे। एक बेहद साफ-सुथरे घर की सफेद दहलीज के सामने श्री पॉल रुक गए।

उन्होंने कहा, "मैं यहाँ फोन करता हूँ।"

उसने दरवाजा नहीं खटखटाया, बल्कि अपनी जेब से चाबी निकालकर तुरंत अंदर चला गया। मुझे अंदर बुलाकर उसने हमारे पीछे दरवाजा बंद कर दिया। कोई नौकर नहीं आया। प्रवेश कक्ष घर की तरह छोटा था, लेकिन उस पर ताज़ा और सुरुचिपूर्ण ढंग से रंग किया गया था; उसका नज़ारा एक फ्रेंच खिड़की में सिमटता था, जिसके शीशों पर लताएँ लिपटी हुई थीं, और हरी पत्तियाँ शीशे को छू रही थीं। इस घर में सन्नाटा छाया हुआ था।

अंदर का दरवाज़ा खोलते ही एम. पॉल ने एक बैठक कक्ष या छोटा सा कमरा दिखाया—बहुत छोटा, लेकिन मुझे बेहद सुंदर लगा। उसकी कोमल दीवारें गुलाबी रंग से रंगी हुई थीं; फर्श पर मोम लगा हुआ था; बीच में एक चमकदार कालीन बिछा था; उसकी छोटी गोल मेज चूल्हे के ऊपर लगे दर्पण की तरह चमक रही थी; एक छोटा सा सोफा और एक छोटी सी अलमारी थी, जिसका आधा खुला हुआ लाल रेशमी दरवाजा अलमारियों पर रखे चीनी मिट्टी के बर्तनों को दिखा रहा था; एक फ्रांसीसी घड़ी और एक दीपक था; बिस्किट रंग के सजावटी सामान थे; इकलौती बड़ी खिड़की के कोने में एक हरा स्टैंड रखा था, जिस पर तीन हरे फूलों के गमले रखे थे, हर गमले में खिले हुए सुंदर फूल लगे थे; एक कोने में संगमरमर की ऊपरी सतह वाला एक गेरिडॉन (एक प्रकार का बर्तन) रखा था, जिस पर एक काम करने का डिब्बा और पानी में रखे वायलेट फूलों से भरा एक गिलास रखा था। इस कमरे की जाली खुली थी; बाहर की ताज़ी हवा अंदर आ रही थी, जिससे ताजगी महसूस हो रही थी और वायलेट फूलों की मीठी खुशबू फैली हुई थी।

“बहुत ही सुंदर जगह है!” आई. एम. पॉल ने मुझे इतना खुश देखकर मुस्कुराते हुए कहा।

"क्या हमें यहीं बैठकर इंतजार करना होगा?" मैंने गहरी खामोशी से थोड़ा भयभीत होकर फुसफुसाते हुए पूछा।

उन्होंने जवाब दिया, "हम पहले इस संक्षिप्त विवरण के एक-दो अन्य कोनों में झांक कर देखेंगे।"

मैंने पूछा, "क्या तुम घर के हर कोने में घूमने की आजादी लेने की हिम्मत करते हो?"

“हां, मैं हिम्मत करता हूं,” उसने धीमी आवाज में कहा।

वह आगे-आगे चलने लगा। मुझे एक छोटी सी रसोई दिखाई गई जिसमें एक छोटा सा चूल्हा और चूल्हा था, कुछ चमकीले पीतल के सामान, दो कुर्सियाँ और एक मेज थी। एक छोटी सी अलमारी में मिट्टी के बर्तनों का एक छोटा लेकिन सुविधाजनक सेट रखा था।

"सैलून में चीनी मिट्टी के बर्तनों का एक कॉफी सेट है," एम. पॉल ने कहा, जब मैंने हरे और सफेद रंग की छह डिनर प्लेटें देखीं; साथ ही चार प्लेटें, कप और जग भी थे।

संकरी लेकिन साफ सीढ़ियों से ऊपर ले जाते हुए, मुझे दो सुंदर कमरों वाले बेडरूम की एक झलक देखने को मिली; अंत में, मुझे एक बार फिर नीचे ले जाया गया, और हम एक ऐसे दरवाजे के सामने एक विशेष औपचारिकता के साथ रुके जो अभी तक खोला नहीं गया था।

दूसरी चाबी निकालकर, एम. इमानुएल ने उसे इस दरवाजे के ताले में लगाया। उन्होंने दरवाजा खोला और मुझे अपने सामने अंदर जाने दिया।

“यहाँ!” वह चिल्लाया।

मैंने खुद को एक बड़े आकार के अपार्टमेंट में पाया, जो बेहद साफ-सुथरा था, हालांकि अब तक देखे गए अपार्टमेंटों की तुलना में काफी सादा था। फर्श पर कालीन नहीं बिछे थे; इसमें हरे रंग की बेंचों और मेजों की दो पंक्तियाँ थीं, बीच में एक गलियारा था जो एक खुले स्थान पर जाकर समाप्त होता था, जहाँ एक शिक्षक की कुर्सी और मेज थी; उनके पीछे एक चित्र बना हुआ था। दीवारों पर दो नक्शे टंगे थे; खिड़कियों में कुछ हरे-भरे पौधे खिले थे; संक्षेप में, यह एक छोटी कक्षा थी - संपूर्ण, सुव्यवस्थित और सुखद।

“तो यह एक स्कूल है?” मैंने कहा। “इसे कौन चलाता है? मैंने इस उपनगरीय इलाके में किसी संस्थान के बारे में कभी नहीं सुना।”

“क्या आप मेरे एक मित्र की ओर से वितरण हेतु कुछ विवरणिकाएँ स्वीकार करने की कृपा करेंगे?” उन्होंने अपनी जेब से इन दस्तावेजों की कुछ प्रतियाँ निकालते हुए पूछा और उन्हें मेरे हाथ में थमा दिया। मैंने देखा, मैंने पढ़ा — साफ अक्षरों में छपा था: —

“लड़कियों का बोर्डिंग स्कूल। नंबर 7, फाउबर्ग। क्लोटिल्डे, प्रधानाध्यापिका।”

मैडमोजेल लूसी स्नो।"

* * * * *

और मैंने एम. पॉल इमानुएल से क्या कहा?

हमारे जीवन के कुछ मोड़ ऐसे होते हैं जिन्हें याद करना हमेशा मुश्किल होता है। कुछ खास पल, संकट, भावनाएं, खुशियां, दुख और आश्चर्य, जब हम उन्हें याद करते हैं, तो वे हमें धुंधले और बेतरतीब ढंग से घूमते हुए पहिये की तरह लगते हैं।

इस खुलासे के बाद के दस मिनटों के विचार या शब्द मुझे उतने ही याद नहीं हैं, जितने कि मैं अपने जीवन के शुरुआती वर्षों के अनुभव को याद नहीं कर सकता: फिर भी, मुझे जो पहली बात स्पष्ट रूप से याद है, वह यह है कि मैं बहुत तेज़ी से बोल रहा था, बार-बार दोहरा रहा था: —

"क्या आपने ये सब किया है, श्रीमान पॉल? क्या ये आपका घर है? क्या आपने इसे सजाया है? क्या आपने ये कागज़ात छपवाए हैं? क्या आपका मतलब मुझसे है? क्या मैं ही निदेशक मंडल की सदस्य हूँ? क्या कोई और लूसी स्नो भी है? मुझे बताइए: कुछ तो बोलिए।"

लेकिन वह कुछ नहीं बोला। उसकी संतुष्ट चुप्पी, उसकी हँसती हुई झुकी हुई नज़र, उसका हावभाव, ये सब मुझे अब भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं।

"यह कैसे है? मुझे सब कुछ जानना है—सब कुछ," मैं चिल्लाई।

कागजों का पैकेट फर्श पर गिर गया। उसने अपना हाथ बढ़ाया था, और मैं बाकी सब कुछ भूलकर उस पर झपट पड़ी थी।

"अरे! आपने कहा था कि मैं इन थका देने वाले दिनों में आपको भूल गया था," उसने कहा। "बेचारा बूढ़ा इमानुएल! तीन हफ़्तों तक घर की पेंटिंग करने वाले से लेकर गद्दी लगाने वाले, अलमारी बनाने वाले से लेकर सफाईकर्मी तक, हर तरह का काम करते रहने के बाद उसे यही धन्यवाद मिल रहा है। उसके दिमाग में बस लूसी और लूसी का पलंग ही बस यही ख्याल है!"

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। पहले मैंने उसकी कलाई पर लगे मुलायम मखमल को छुआ, फिर उसके हाथ को सहलाया। उसकी दूरदर्शिता, उसकी अच्छाई, उसकी खामोश, मजबूत और असरदार अच्छाई ने मुझे अपने सिद्ध स्वरूप से अभिभूत कर दिया। उसकी अथक चिंता का आश्वासन मुझ पर स्वर्ग से आई रोशनी की तरह छा गया; उसकी—मैं कहने की हिम्मत करूँगी—उसकी स्नेहपूर्ण, कोमल नज़र ने मुझे अवर्णनीय रूप से झकझोर दिया। इन सबके बीच मैंने खुद को

व्यावहारिक पहलुओं पर ध्यान देने के लिए मजबूर किया।

"कितनी परेशानी!" मैंने चिल्लाकर कहा, "और कितना खर्चा! क्या आपके पास पैसे थे, श्रीमान पॉल?"

"खूब पैसा!" उसने उत्साह से कहा। "मेरे बड़े शिक्षण संबंध के निपटान से मुझे अच्छी खासी रकम मिली है, जिसका कुछ हिस्सा मैंने खुद को अब तक का सबसे शानदार तोहफा देने का फैसला किया है। मुझे यह पसंद है। मैं पिछले कुछ दिनों से दिन-रात इस पल का इंतज़ार कर रहा था। मैं आपके पास नहीं आया, क्योंकि मैं इसे पहले से नहीं बताना चाहता था। संकोच न तो मेरा गुण है और न ही अवगुण। अगर मैंने खुद को आपके हवाले कर दिया होता, और आपने अपनी नज़र और होंठों से सवाल पूछना शुरू कर दिया होता—आप कहाँ थे, श्रीमान पॉल? आप क्या कर रहे थे? आपका रहस्य क्या है?—तो मेरा एकमात्र पहला और आखिरी रहस्य पल भर में आपकी गोद में खुल जाता। अब," उसने आगे कहा, "आप यहाँ रहेंगे और एक स्कूल चलाएंगे; जब मैं दूर रहूँगा तो आप खुद को व्यस्त रखेंगे; आप कभी-कभी मेरे बारे में सोचेंगे; आप मेरे लिए अपने स्वास्थ्य और सुख का ध्यान रखेंगे, और जब मैं वापस आऊँगा—"

वहां उसने एक खाली जगह छोड़ दी।

मैंने उनसे वादा किया कि मैं उनकी हर बात मानूंगा। मैंने वादा किया कि मैं पूरी लगन और उत्साह से काम करूंगा। मैंने कहा, "मैं आपका वफादार सेवक बनूंगा; मुझे विश्वास है कि आपके आने पर हिसाब-किताब तैयार होगा। महोदय, महोदय, आप बहुत अच्छे हैं!"

ऐसे अपर्याप्त शब्दों में मेरी भावनाएँ अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष कर रही थीं; वे व्यक्त नहीं हो पा रही थीं; वाणी, जो कठोर, कठोर और बर्फ़ के समान ठंडी थी, प्रयास में ही घुल गई या काँप उठी। वह मुझे देखता रहा, स्थिर; उसने धीरे से अपना हाथ मेरे बालों को सहलाने के लिए उठाया; वह मेरे होठों को छू गया; मैंने उसे अपने करीब कर लिया, मैंने उसे सम्मान दिया। वह मेरा राजा था; मेरे लिए उस हाथ की उदारता राजसी थी; सम्मान अर्पित करना एक आनंद और कर्तव्य दोनों था।

* * * * *

दोपहर का समय बीत चुका था और शाम की खामोशी ने शांत उपनगर को अपने

साये में ढक लिया था। श्रीमान पॉल ने मेरी मेहमाननवाज़ी का अनुरोध किया; सुबह से व्यस्त और चलते-फिरते उन्हें कुछ ताज़गी की ज़रूरत थी; उन्होंने कहा कि मैं उन्हें अपने सुंदर सुनहरे और सफेद चीनी मिट्टी के बर्तनों में चॉकलेट दूँ। वे बाहर गए और रेस्तरां से ज़रूरत का सामान मंगवाया; उन्होंने छोटी सी ट्रे और दो कुर्सियाँ बेलों के नीचे, फ्रेंच खिड़की के बाहर बालकनी में रख दीं। मैंने बड़ी झिझक के साथ मेज़बानी की ज़िम्मेदारी स्वीकार की, ट्रे सजाई और मेहमान को खाना परोसा।

यह बालकनी घर के पिछले हिस्से में थी, हमारे चारों ओर उपनगरीय उद्यान थे, दूर-दूर तक खेत फैले हुए थे। हवा शांत, सौम्य और ताज़ी थी। चिनार, लॉरेल, सरू और गुलाब के पेड़ों के ऊपर, एक चाँद इतना सुंदर और शांत दिख रहा था कि उसकी मुस्कान देखकर दिल कांप उठता था; उसके बगल में एक तारा चमक रहा था, जिसकी किरणें शुद्ध प्रेम की असीम चमक बिखेर रही थीं। हमारे पास ही एक बड़े बगीचे में, कुएँ से पानी की एक धारा निकल रही थी, और एक पीली सी मूर्ति पानी के खेल पर झुकी हुई थी।

एम. पॉल ने मुझसे बात की। उनकी आवाज़ इतनी मधुर थी कि वह चांदी जैसी फुसफुसाहट, उमंग, संगीतमय आह के साथ सामंजस्य बिठा रही थी, जिसमें हल्की हवा, फव्वारा और हरियाली अपनी लोरी जैसी शाम की धुन गा रहे थे।

शुभ समय— एक पल ठहर जा! अपने पंख झुका ले, अपने परों को आराम दे; स्वर्ग के उस मुखमंडल की ओर झुक जा! श्वेत देवदूत! तेरा प्रकाश ठहर जाए; आने वाले बादलों पर अपनी परछाई छोड़ दे; उस समय को अपनी प्रसन्नता प्रदान कर दे जिसे अतीत में एक किरण की आवश्यकता है!

हमारा भोजन सादा था: चॉकलेट, ब्रेड, ताज़े गर्मियों के फलों की थाली, चेरी और स्ट्रॉबेरी हरी पत्तियों में सजी हुई थीं; लेकिन यह हम दोनों को किसी दावत से भी ज़्यादा पसंद था, और मुझे श्री पॉल की सेवा करने में असीम आनंद मिला। मैंने उनसे पूछा कि क्या उनके मित्र, पिता सिलास और मैडम बेक, जानते हैं कि उन्होंने क्या किया है—क्या उन्होंने मेरा घर देखा है?

“मेरी प्यारी,” उसने कहा, “मैंने जो किया है, वह तुम्हारे और मेरे सिवा कोई नहीं जानता: यह आनंद हम दोनों के लिए ही है, किसी के साथ साझा नहीं किया गया और न ही इसे अपवित्र किया गया है। सच कहूँ तो, इस मामले में मुझे एक ऐसा आनंद मिला है जिसे मैं किसी को बताकर भद्दा नहीं बनाना चाहता। इसके अलावा,”

(मुस्कुराते हुए) "मैं मिस लूसी को यह साबित करना चाहता था कि मैं राज़ रख सकता हूँ। कितनी बार उसने मुझे गरिमाहीन संयम और आवश्यक सावधानी की कमी के लिए ताना मारा है! कितनी बार उसने शरारती अंदाज़ में यह इशारा किया है कि मेरे सारे मामले पोलिचिनेल के राज़ हैं!"

यह बात बिल्कुल सच थी: मैंने इस मामले में उसे नहीं बख्शा था, शायद किसी और मामले में भी नहीं जिस पर आपत्ति की जा सकती थी। महान बुद्धि वाला, उदार हृदय वाला, प्यारा, गलतियों से भरा छोटा सा इंसान! तुम स्पष्टवादिता के पात्र थे, और मुझसे तुम्हें हमेशा वही मिली।

मैंने अपनी पूछताछ जारी रखते हुए पूछा कि यह घर किसका है, मेरा मकान मालिक कौन है और मेरा किराया कितना है। उन्होंने तुरंत मुझे ये सारी जानकारी लिखित में दे दी; उन्होंने सब कुछ पहले से ही सोच रखा था और तैयारी कर रखी थी।

यह मकान एम. पॉल का नहीं था—यह तो मुझे पहले से ही पता था: वे मालिक बनने लायक व्यक्ति तो थे ही नहीं; मुझे उनमें बचत की कमी का भी संदेह था; वे कमा तो सकते थे, लेकिन बचा नहीं पाते थे; उन्हें एक कोषाध्यक्ष की आवश्यकता थी। तब यह मकान बासे-विले के एक नागरिक का था—एक संपन्न व्यक्ति, एम. पॉल ने बताया; उन्होंने यह कहकर मुझे चौंका दिया: "आपका एक मित्र, मिस लूसी, एक ऐसा व्यक्ति जो आपका बहुत सम्मान करता है।" और, मुझे सुखद आश्चर्य हुआ जब मैंने पाया कि मकान मालिक कोई और नहीं बल्कि एम. मिरेट थे, वही गुस्सैल और दयालु पुस्तक विक्रेता, जिन्होंने उस यादगार रात पार्क में मेरे लिए इतनी कृपा करके बैठने की व्यवस्था की थी। ऐसा लगता है कि एम. मिरेट अपनी हैसियत के हिसाब से धनी होने के साथ-साथ बहुत सम्मानित भी थे, और इस उपनगर में उनके कई मकान थे; किराया मामूली था, विलेट के केंद्र के पास समान आकार के मकान के किराए का लगभग आधा।

"और फिर," एम. पॉल ने कहा, "अगर किस्मत आपका साथ न दे, हालांकि मुझे लगता है कि देगी, तो मुझे इस बात की तसल्ली है कि आप अच्छे हाथों में हैं; एम. मिरेट आपसे ज़्यादा किराया नहीं वसूलेंगे: पहले साल का किराया तो आपकी बचत में पहले से ही है; उसके बाद मिस लूसी को भगवान और खुद पर भरोसा रखना होगा। लेकिन अब, आप विद्यार्थियों के लिए क्या करेंगी?"

मुझे अपने विवरणिकाओं का वितरण करना होगा।

“ठीक है! बिना समय गंवाए, मैंने कल ही एक एम. मिरेट को दे दिया था।”

यदि आपको तीन छोटी पूंजीपतियों से शुरुआत करने पर आपत्ति हो, तो

डेमोइसेल्स मिरेट? वे आपकी सेवा में हैं।

“महाशय, आप कुछ नहीं भूलते; आप अद्भुत हैं। कोई आपत्ति? आपत्ति करना तो उचित ही होगा! वैसे तो मैं अपने छोटे से डे-स्कूल में कुलीन वर्ग के लोगों की उम्मीद नहीं कर सकता; मुझे परवाह नहीं अगर वे कभी न आएं। मुझे एम. मिरेट की बेटियों का स्वागत करने में गर्व होगा।”

“इनके अलावा,” उन्होंने आगे कहा, “एक और छात्रा है जो रोज़ाना अंग्रेज़ी सीखने आएगी; और क्योंकि वह अमीर है, इसलिए वह अच्छी फीस देगी। मेरा मतलब मेरी धर्मपुत्री और संरक्षण प्राप्त जस्टिन मैरी सॉवेर से है।”

नाम में क्या रखा है? — तीन शब्दों में क्या? अब तक मैं बड़े आनंद से सुन रहा था — मैंने बड़ी तेज़ी से जवाब दिया था; एक नाम ने मुझे स्तब्ध कर दिया; तीन शब्दों ने मुझे चुप कर दिया। इसका असर छिपाया नहीं जा सका, और सच कहूँ तो मैंने इसे छिपाने की कोशिश भी नहीं की।

“अब क्या?” एम. पॉल ने कहा।

"कुछ नहीं।"

“कुछ नहीं! तुम्हारा चेहरा बदल गया है: तुम्हारा रंग और तुम्हारी आँखें भी धुंधली पड़ गई हैं। कुछ नहीं! तुम ज़रूर बीमार हो; तुम्हें कोई तकलीफ़ है; बताओ क्या है।”

मेरे पास बताने के लिए कुछ नहीं था।

वह अपनी कुर्सी और पास खींच लाया। हालाँकि मैं चुप और भावहीन बना रहा, फिर भी वह नाराज़ नहीं हुआ। उसने मुझसे बात करने की कोशिश की; उसने लगन से विनती की, उसने धैर्य से प्रतीक्षा की।

उन्होंने कहा, "जस्टिन मैरी एक अच्छी लड़की है, विनम्र और मिलनसार; फुर्तीली नहीं है - लेकिन आपको वह पसंद आएगी।"

मुझे नहीं लगता। मुझे लगता है कि उसे यहाँ नहीं आना चाहिए।

मेरा भाषण कुछ इस प्रकार था।

“क्या तुम मुझे उलझन में डालना चाहते हो? क्या तुम उसे जानते हो? लेकिन सच में कुछ तो गड़बड़ है। तुम फिर से उस मूर्ति की तरह पीले पड़ गए हो। पॉल कार्लोस पर भरोसा करो; उसे अपना दुख बताओ।”

उनकी कुर्सी मेरी कुर्सी से छू गई; उनका हाथ धीरे से आगे बढ़ा और मुझे उनकी ओर मोड़ दिया।

“क्या आप मैरी जस्टिन को जानते हैं?” उसने फिर पूछा।

उसके होठों से निकले उस नाम ने मुझे अकारण व्याकुल कर दिया। इसने मुझे क्षीण नहीं किया, बल्कि इसने मुझे झकझोर दिया, मेरी नसों में तेज़ी और गर्मी के साथ दौड़ते हुए, एक पल के तीव्र दर्द, कई दिनों और रातों के हृदयविदारक कष्टों की याद दिला दी। अब वह मेरे पास बैठा था, उसी दृढ़ता और निकटता से जैसे उसने लंबे समय से अपना जीवन मेरे साथ जोड़ा था - चाहे कितनी भी प्रगति हुई हो, और हमारे मन और स्नेह का एकीकरण कितना भी करीब आ गया हो - हस्तक्षेप, हृदय-वियोग का संकेत मात्र ही एक उग्र उत्तेजना, एक प्रचंड पीड़ा, एक तिरस्कारपूर्ण संकल्प, एक क्रोध, एक प्रतिरोध के साथ सुना जा सकता था, जिसकी ज्वाला को न तो कोई मानवीय आँख या गाल छिपा सकता था, और न ही कोई सत्य से परिचित मानवीय जीभ उस चीख को रोक सकती थी।

मैंने कहा, "मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूँ, मैं तुम्हें सब कुछ बताना चाहता हूँ।"

“बोलो, लूसी; पास आओ; बोलो। अगर मैं तुम्हें महत्व नहीं देता, तो कौन देता है? अगर इमैनुएल तुम्हारा मित्र नहीं है, तो कौन है? बोलो!”

मैंने बोलना शुरू किया। सब कुछ मेरे होठों से निकल गया। अब मेरे पास शब्दों की कमी नहीं थी; मैंने तेज़ी से बयान किया; धाराप्रवाह अपनी कहानी सुनाई; यह मेरी ज़बान पर बहती रही। मैं पार्क में उस रात की यादों में खो गया; मैंने उस औषधीय पेय का ज़िक्र किया—कि वह क्यों दिया गया था—उसका उत्तेजक प्रभाव—कैसे उसने मेरी नींद छीन ली थी, मुझे मेरे पलंग से हिलाकर रख दिया था, मुझे एक जीवंत लेकिन गंभीर कल्पना के आकर्षण में खींच ले गया था—गर्मी की रात में घास के मैदान पर, पेड़ों के नीचे, एक गहरी, ठंडी झील के किनारे का एकांत। मैंने उस दृश्य का वर्णन किया; भीड़, मुखौटे, संगीत, दीपक, वैभव, दूर से आती तोपों की गड़गड़ाहट, ऊपर गूंजती घंटियाँ। मैंने जो कुछ भी देखा, उसका विस्तृत वर्णन किया, जो कुछ भी पहचाना, सुना और देखा; कैसे मैंने उसे देखा और निहारा: कैसे मैंने सुना, कितना सुना, क्या अनुमान लगाया; संक्षेप में, पूरी कहानी, उसके भरोसे में ली गई, वहाँ तक पहुँची, सच्ची, शाब्दिक, जोशीली, कड़वी।

फिर भी, जैसा कि मैंने बताया, जाँच करने के बजाय, उन्होंने मुझे आगे बढ़ने के

लिए उकसाया; उन्होंने अपने हावभाव, मुस्कान और आधे शब्दों से मुझे प्रेरित किया। आधा भी पूरा होने से पहले ही, उन्होंने मेरे दोनों हाथ पकड़ लिए, उन्होंने मेरी आँखों में एक तीखी नज़र से देखा: उनके चेहरे पर कुछ ऐसा था जो न तो मुझे शांत करता था और न ही मुझे दबाता था; उन्होंने अपने ही सिद्धांतों को भुला दिया, उन्होंने दमन की अपनी ही प्रणाली को तब त्याग दिया जब मैंने उसके प्रयोग को सबसे अधिक चुनौती दी। मुझे लगता है कि मैं कड़ी फटकार का हकदार था; लेकिन हमें हमारा कर्मफल कब मिलता है? मैं कठोरता का हकदार था; उन्होंने नरमी बरती। खुद मुझे ही अहंकारी और तर्कहीन लग रहा था, क्योंकि मैंने जस्टिन मैरी को अपने घर में आने से मना कर दिया था; वह मुस्कुराए, मानो खुशी जता रहे हों। गर्मजोशी, ईर्ष्या और अभिमान से भरा, मुझे अब तक पता नहीं था कि मेरे स्वभाव में ऐसा भी एक मिजाज है: उन्होंने मुझे अपने दिल के करीब समेट लिया। मैं दोषों से भरा था; उन्होंने उन सभी को और मुझे अपने साथ घर ले लिया। सबसे बड़े विद्रोह के क्षण के लिए, उन्होंने शांति का एक गहरा क्षण बचाकर रखा था। ये शब्द मेरे कानों में गूंजे: —

"लूसी, मेरा प्यार स्वीकार करो। एक दिन मेरे जीवन में भागीदार बनो। मेरी सबसे प्रिय, धरती पर मेरी पहली साथी बनो।"

हम चांदनी रात में रू फॉसेट की ओर वापस चले - वैसी चांदनी जैसी स्वर्ग पर पड़ती थी - विशाल उद्यान की छायाओं से छनकर चमकती हुई, मानो किसी दिव्य कदम के लिए एक मार्ग को सुनहरा बना रही हो - एक अनाम उपस्थिति। अपने जीवन में एक बार कुछ पुरुष और महिलाएं हमारे महान पिता और माता के उन शुरुआती ताजे दिनों में लौट जाते हैं - उस भव्य सुबह की ओस का स्वाद चखते हैं - उसके सूर्योदय में नहाते हैं।

चलते-चलते मुझे बताया गया कि जस्टिन मैरी सौवेउर को हमेशा बेटी के समान स्नेह से देखा जाता था — कि श्री पॉल की सहमति से, उनकी सगाई कुछ महीने पहले एक धनी युवा जर्मन व्यापारी हेनरिक मुलर से तय हो चुकी थी और एक साल के भीतर उनकी शादी होने वाली थी। ऐसा लगता है कि श्री इमानुएल के कुछ रिश्तेदार और परिचित चाहते थे कि वह जस्टिन मैरी सौवेउर की शादी उनसे करवा दें, ताकि परिवार में उनकी संपत्ति सुरक्षित रहे; लेकिन स्वयं श्री इमानुएल को यह योजना घृणित लगी और यह विचार उन्हें बिल्कुल अस्वीकार्य था।

हम मैडम बेक के दरवाजे पर पहुँचे। जीन बैपटिस्ट की घड़ी में नौ बज रहे थे। ठीक

इसी समय, इसी घर में, अठारह महीने पहले, मेरे बगल में बैठा यह आदमी मेरे सामने झुका था, मेरे चेहरे और आँखों में देखकर, और मेरे भाग्य का फैसला सुनाया था। आज शाम को वह फिर झुका, देखा और फैसला सुनाया। नज़र कितनी अलग थी - भाग्य कितना बदल गया था!

उन्होंने मुझे अपने नक्षत्र में जन्मा हुआ माना: ऐसा लगा मानो उन्होंने मुझ पर अपने नक्षत्र की किरणें एक झंडे की तरह फैला दी हों। एक समय था जब मैं अनजान और अवांछित था, और उन्हें कठोर और अजनबी समझता था; उनका छोटा कद, दुबला-पतला शरीर, कोणीय रूप, अंधकार और व्यवहार मुझे अप्रिय लगते थे। अब, उनके प्रभाव में आकर, उनके स्नेह से जीवन यापन करते हुए, उनकी बुद्धि से उनकी योग्यता और उनके हृदय से उनकी अच्छाई को पहचानते हुए, मैं उन्हें समस्त मानवता से ऊपर मानता हूँ।

हम अलग हुए: उसने मुझे अपना वादा दिया, और फिर विदाई ली। हम अलग हुए: अगले दिन — वह जहाज से रवाना हो गया।

अध्याय 12.

समाप्त।

मनुष्य भविष्यवाणी नहीं कर सकता। प्रेम कोई भविष्यवक्ता नहीं है। भय कभी-कभी व्यर्थ की कल्पना करता है। वे वर्षों की अनुपस्थिति! उनकी आशंका से ही मैं कितना व्याकुल हो गया था! उनसे आने वाला दुख मृत्यु के समान निश्चित प्रतीत होता था। मैं उनके मार्ग की प्रकृति जानता था: मुझे कभी संदेह नहीं था कि यह कितना कष्टदायी होगा। उसकी गाड़ी पर सवार विशालकाय वाहन वहाँ एक भारी बोझ की तरह खड़ा

था। उसे निकट आते हुए, अपने चौड़े पहियों को दबी हुई मिट्टी में धंसाते हुए देखकर —मैं, नतमस्तक भक्त—पहले से ही उस विनाशकारी आघात को महसूस कर चुका था।

अजीब बात है—अजीब, फिर भी सच, और जीवन के अनुभवों में कई समानताएँ रखने वाला—वह प्रत्याशात्मक कर्कश ध्वनि ही सारी—हाँ—लगभग सारी यातना साबित हुई। विशाल रथ पर सवार महान जगन्नाथ ऊँची, गर्जना करती और उदास मुद्रा में आगे बढ़ा। वह दोपहर के समय आकाश में परछाई की तरह चुपचाप गुजर गया। चारों ओर बस एक भयानक धुंधलापन ही दिखाई दे रहा था। मैंने ऊपर देखा। रथ और राक्षस सारथी जा चुके थे; भक्त अभी भी जीवित था।

एम. इमैनुएल तीन साल तक दूर रहे। पाठक, वे मेरे जीवन के सबसे सुखद तीन साल थे। क्या आपको यह विरोधाभास समझ में आता है? सुनिए। मैंने स्कूल जाना शुरू किया; मैंने मेहनत की—मैंने खूब मेहनत की। मैंने खुद को उनकी संपत्ति का प्रबंधक समझा और ईश्वर की कृपा से, उसका पूरा हिसाब चुकाने का निश्चय किया। विद्यार्थी आने लगे—शुरू में साधारण छात्र—लेकिन जल्द ही उच्च वर्ग के छात्र भी आने लगे। दूसरे वर्ष के मध्य में एक अप्रत्याशित अवसर ने मुझे अतिरिक्त सौ पाउंड दे दिए: एक दिन मुझे इंग्लैंड से एक पत्र मिला जिसमें वह राशि लिखी थी। यह पत्र मेरी प्रिय और दिवंगत प्रेमिका के चचेरे भाई और उत्तराधिकारी श्री मार्चमोंट की ओर से आया था। वे एक गंभीर बीमारी से उबर रहे थे; यह पैसा उनके अंतरात्मा को शांत करने का एक प्रयास था, जो उन्हें उनकी रिश्तेदार की मृत्यु के बाद मिले कुछ कागजात या दस्तावेजों के बारे में फटकार लगा रहा था—जिनमें लूसी स्नो का नाम या सिफारिश थी। श्रीमती बैरेट ने उन्हें मेरा पता दिया था। उनकी अंतरात्मा को कितना ठेस पहुंची थी, यह मैंने कभी नहीं पूछा। मैंने कोई सवाल नहीं किया, बस पैसे लिए और उनका सदुपयोग किया।

इन सौ पाउंड से मैंने अपने घर से सटे घर को लेने का साहस किया। मैं उस घर को नहीं छोड़ना चाहता था जिसे श्री पॉल ने चुना था, जिसमें वह रह रहे थे और जहाँ उन्हें मुझसे दोबारा मिलने की उम्मीद थी। मेरा बाहरी निवास पेंशनभोगी में बदल गया; वह भी फलता-फूलता रहा।

मेरी सफलता का रहस्य मुझमें, मेरी किसी प्रतिभा में, मेरी किसी क्षमता में उतना नहीं था, जितना कि नई परिस्थितियों में, एक अद्भुत रूप से बदले हुए जीवन में और

एक राहत भरे हृदय में था। मेरी ऊर्जा का स्रोत समुद्र पार, एक भारतीय द्वीप में था। विदाई के समय, मुझे एक विरासत मिली थी; वर्तमान के लिए ऐसा विचार, भविष्य के लिए ऐसी आशा, एक दृढ़, परिश्रमी, उद्यमशील, धैर्यवान और साहसी मार्ग के लिए ऐसा प्रोत्साहन - मैं कभी पीछे नहीं हट सकता था। अब कुछ ही चीजें मुझे विचलित करती थीं; कुछ ही चीजें मुझे परेशान, भयभीत या निराश कर सकती थीं: अधिकांश चीजें मुझे प्रसन्न करती थीं - छोटी-छोटी बातों में भी आकर्षण था।

यह मत सोचो कि यह मधुर लौ अपने आप ही जलती रही, या पूरी तरह से किसी विरासत में मिली आशा या विदाई के वादे पर टिकी रही। एक उदार दाता ने भरपूर ईंधन प्रदान किया। मुझे हर तरह की ठंड, हर तरह की कमी से बचाया गया; मुझे गरीबी का डर नहीं सताया गया; मुझे किसी अनिश्चितता का सामना नहीं करना पड़ा। उसने हर पात्र से लिखा; उसने वैसे ही लिखा जैसे वह देता था और जैसे वह प्यार करता था, पूरे दिल से, भरपूर मात्रा में। उसने लिखा क्योंकि उसे लिखना अच्छा लगता था; उसने संक्षेप नहीं किया, क्योंकि उसे संक्षेप करने की परवाह नहीं थी। वह बैठ गया, उसने कलम और कागज उठाया, क्योंकि वह लूसी से प्यार करता था और उससे बहुत कुछ कहना चाहता था; क्योंकि वह वफादार और विचारशील था, क्योंकि वह कोमल और सच्चा था। उसमें कोई दिखावा, कोई छल, कोई खोखलापन या बनावटीपन नहीं था। माफी ने कभी उसके होठों पर अपना चिकना तेल नहीं टपकाया - कभी उसकी कलम से अपने कायरतापूर्ण छल और तुच्छ बातें नहीं पेश कीं: उसने न तो पत्थर दिया, न कोई बहाना - न बिच्छू; न ही कोई निराशा; उनके पत्र वास्तविक भोजन के समान थे जो पोषण प्रदान करते थे, जीवनदायी जल के समान थे जो ताजगी देते थे।

और क्या मैं आभारी था? ईश्वर ही जानता है! मेरा मानना है कि शायद ही कोई ऐसा प्राणी हो जिसे इतनी याद किया जाए, इतना सहारा दिया जाए, जिसके साथ इतना निरंतर, सम्मानजनक और नेक व्यवहार किया जाए, जो मृत्यु तक आभारी न रहे।

अपने धर्म के प्रति दृढ़ निश्चयी (उनमें वह गुण नहीं था जिससे कोई आसानी से धर्मत्यागी बन जाता है), उन्होंने स्वेच्छा से मुझे मेरा शुद्ध धर्म सौंप दिया। उन्होंने न तो मुझे चिढ़ाया और न ही लुभाया। उन्होंने कहा: —

“प्रोटेस्टेंट ही रहो। मेरी नन्ही अंग्रेज प्यूरिटन, मुझे तुममें प्रोटेस्टेंटवाद बहुत पसंद है।

मैं इसके कठोर आकर्षण को स्वीकार करती हूँ। इसके रीति-रिवाजों में कुछ ऐसा है जिसे मैं स्वयं स्वीकार नहीं कर सकती, लेकिन यह 'लूसी' के लिए एकमात्र धर्म है।"

रोम के सारे उपदेश भी उसे कट्टर नहीं बना सके, न ही प्रचार-प्रसार उसे सच्चा धर्मगुरु साबित कर सका। वह जन्म से ईमानदार था, झूठा नहीं; सरल, धूर्त नहीं; स्वतंत्र, गुलाम नहीं। उसकी कोमलता ने उसे पुजारी के हाथों में लचीला बना दिया था; उसका स्नेह, उसकी निष्ठा, उसका सच्चा धार्मिक उत्साह कभी-कभी उसकी दयालु आँखों को अंधा कर देता था, जिससे वह स्वयं के लिए न्याय का त्याग कर छल-कपट करता था और स्वार्थ की पूर्ति करता था; परन्तु ये दोष इतने दुर्लभ हैं, और इन्हें निभाने वाले को इतना भारी पड़ता है कि हम शायद ही जानते हैं कि एक दिन ये रत्नों में गिने जाएँगे या नहीं।

* * * * *

और अब तीन साल बीत चुके हैं: श्री इमानुएल की वापसी तय है। शरद ऋतु है; नवंबर की धुंध छाने से पहले वह मेरे पास होंगे। मेरा विद्यालय फल-फूल रहा है, मेरा घर तैयार है: मैंने उनके लिए एक छोटी सी लाइब्रेरी बनाई है, उसकी अलमारियों को उन किताबों से भर दिया है जो उन्होंने मेरी देखरेख में छोड़ी थीं: मैंने उनके प्रति प्रेम से (स्वाभाविक रूप से मैं फूल विक्रेता नहीं थी) उनके पसंदीदा पौधों की देखभाल की है, और उनमें से कुछ अभी भी खिले हुए हैं। जब वह गए थे तब मुझे लगा था कि मैं उनसे प्यार करती हूँ; अब मैं उनसे एक अलग ही स्तर पर प्यार करती हूँ: वह मेरे अपने हैं।

सूर्य विषुव को पार कर जाता है; दिन छोटे हो जाते हैं, पत्ते मुरझाने लगते हैं; लेकिन—वह आ रहा है।

रात में पाला पड़ता है; नवंबर ने अपने कोहरे को पहले ही भेज दिया है; हवा अपनी शरद ऋतु की कराह में डूबी है; लेकिन - वह आ रहा है।

आकाश घना और काला है—पश्चिम से एक भयानक जलप्रपात आ रहा है; बादल विचित्र आकृतियाँ बना रहे हैं— मेहराब और चौड़ी किरणें; वहाँ तेजस्वी सुबहें उठ रही हैं— शानदार, राजसी, अपने राज्य में सम्राट के समान बैंगनी; आकाश एक ज्वाला है; वे इतने उग्र हैं कि युद्ध के सबसे भयंकर रूप को भी मात देते हैं— इतने रक्तपातपूर्ण कि विजय को भी लज्जित कर देते हैं। मैं आकाश के कुछ संकेतों को जानता हूँ; मैंने

उन्हें बचपन से ही देखा है। हे भगवान, उस जलप्रपात पर नज़र रखो! हे! उसकी रक्षा करो!

हवा पश्चिम की ओर मुड़ जाती है। शांति, शांति, बंशी — हर खिड़की पर विलाप! यह उठेगी — यह उग्र होगी — यह लंबी चीखें मारेगी: चाहे मैं इस रात घर में इधर-उधर भटकूँ, मैं इस आंधी को शांत नहीं कर सकती। बढ़ते घंटे इसे और मजबूत बनाते हैं: आधी रात तक, सभी नींद से जागते पहरेदार एक भयंकर दक्षिण-पश्चिम तूफान को सुनते और डरते हैं। वह तूफान सात दिनों तक उन्माद में गरजता रहा। यह तब तक नहीं रुका जब तक अटलांटिक महासागर जहाज़ों के मलबे से भर नहीं गया: यह तब तक नहीं रुका जब तक गहराइयों ने अपना पूरा पोषण नहीं ले लिया। जब तक आंधी के विनाशकारी देवदूत ने अपना पूर्ण कार्य पूरा नहीं कर लिया, तब तक वह अपने पंख नहीं समेटेगा, जिसकी लहर गड़गड़ाहट थी — जिसके पंखों का कंपन तूफान था।

शांति, थम जाओ! ओह! हजारों विलाप करने वाले, पीड़ा में प्रार्थना करते हुए, प्रतीक्षारत किनारों पर उस आवाज की प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन वह सुनाई नहीं दी - तब तक सुनाई नहीं दी; जब सन्नाटा छा गया, तो कुछ लोग उसे महसूस नहीं कर सके: जब सूरज वापस आया, तो उसका प्रकाश कुछ लोगों के लिए रात बन गया!

यहां रुकिए: तुरंत रुक जाइए। बहुत कुछ कहा जा चुका है। शांत, दयालु हृदय को परेशान न कीजिए; उज्ज्वल कल्पनाओं को आशा दीजिए। उन्हें घोर आतंक से पुनर्जीवित होकर प्राप्त आनंद, संकट से मुक्ति की उमंग, भय से मिली अद्भुत राहत और वापसी की पूर्णता की कल्पना करने दीजिए। उन्हें मिलन और एक सुखी आगामी जीवन की कल्पना करने दीजिए।

मैडम बेक अपने जीवन भर समृद्ध रहीं; पिता सिलास भी।

मैडम वालरावेंस ने अपने निधन से पहले नब्बे वर्ष पूरे कर लिए थे। अलविदा।

समाप्त

प्रोफेसर

यह शार्लोट का पहला उपन्यास था, जो जेन आयर से पहले लिखा गया था और कई प्रकाशन गृहों द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया था, लेकिन अंततः 1857 में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ। कहानी में युवा विलियम क्रिम्सवर्थ को मुख्य पात्र के रूप में दिखाया गया है और इसे प्रथम-पुरुष के दृष्टिकोण से बताया गया है, जिसमें उसके परिपक्व होने, उसके प्रेम संबंधों और अंततः एक बालिका विद्यालय में प्रोफेसर के रूप में उसके करियर का वर्णन है।

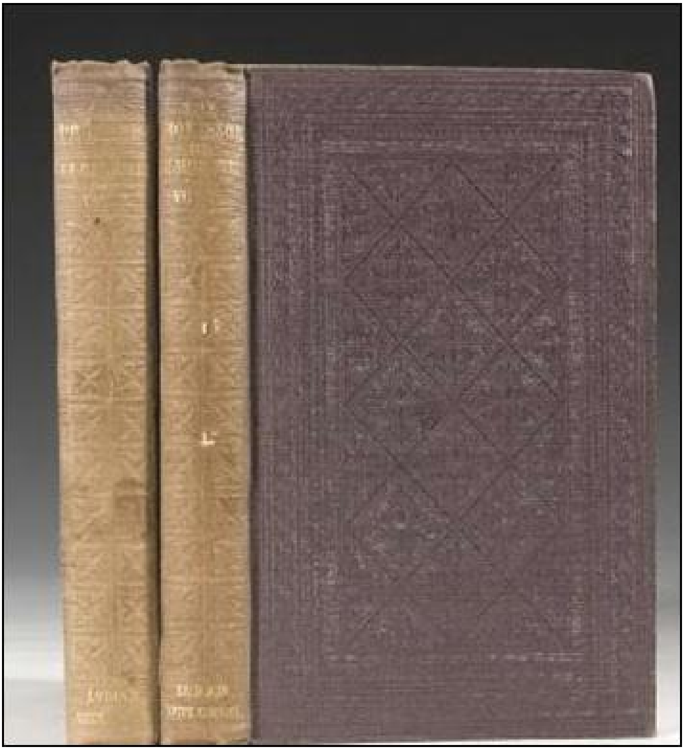

पहला संस्करण

जे. एच. थॉम्पसन द्वारा रचित शार्लोट

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना।

अध्याय I. परिचयात्मक।

अध्याय II.

अध्याय III.

अध्याय IV.

अध्याय V.

अध्याय VI.

अध्याय VII.

अध्याय VIII.

अध्याय 9.

अध्याय X.

अध्याय XI.

अध्याय XII.

अध्याय XIII.

अध्याय 14.

अध्याय पंद्रह।

अध्याय सोलह।

अध्याय सत्रह।

अध्याय 18वां।

अध्याय XIX.

अध्याय XX.

अध्याय XXI.

अध्याय XXII

अध्याय XXIII

अध्याय XXIV.

अध्याय XXV.

प्रस्तावना।

यह छोटी सी किताब "जेन आयर" या "शर्ली" से पहले लिखी गई थी, फिर भी इसे पहले प्रयास के बहाने माफ़ नहीं किया जा सकता। यह निश्चित रूप से पहला प्रयास नहीं था, क्योंकि इसे लिखने वाली कलम कई वर्षों के अभ्यास में पहले ही काफी घिस चुकी थी। मैंने "द प्रोफेसर" शुरू करने से पहले वास्तव में कुछ भी प्रकाशित नहीं किया था, लेकिन कई अधूरे प्रयासों में, जिन्हें मैंने रचना के तुरंत बाद ही नष्ट कर दिया था, मैंने अलंकृत और अनावश्यक रचना के प्रति अपने पुराने आकर्षण को त्याग दिया था और सादगी और सरलता को प्राथमिकता देना सीख लिया था। साथ ही, मैंने घटनाओं आदि के विषय में कुछ सिद्धांत अपना लिए थे, जो सिद्धांत रूप में तो आम तौर पर स्वीकार्य होते हैं, लेकिन व्यवहार में उनका परिणाम अक्सर लेखक के लिए आनंद से अधिक आश्चर्य का कारण बनता है।

मैंने मन ही मन सोचा कि मेरे नायक को जीवन में वैसे ही मेहनत करनी चाहिए जैसे मैंने वास्तविक जीवन में लोगों को करते देखा है—उसे कभी भी बिना मेहनत के एक पैसा भी नहीं मिलना चाहिए—कोई भी अचानक बदलाव उसे पल भर में धन और उच्च पद तक नहीं पहुंचाना चाहिए; उसे जो भी थोड़ी-बहुत कमाई हो, वह उसके अथक परिश्रम से ही मिलनी चाहिए; उसे बैठने के लिए एक छोटा सा मंडप मिलने से पहले ही "कठिनाई की पहाड़ी" की आधी चढ़ाई पार कर लेनी चाहिए; उसे किसी सुंदर लड़की या उच्च पदस्थ महिला से विवाह भी नहीं करना चाहिए। आदम के पुत्र के रूप में उसे आदम के ही भाग्य का सामना करना चाहिए और जीवन भर सुख-सुविधाओं का संतुलित और संतुलित अनुभव करना चाहिए।

लेकिन इसके बाद मैंने पाया कि प्रकाशक आम तौर पर इस प्रणाली को शायद ही पसंद करते थे, बल्कि वे कुछ अधिक कल्पनाशील और काव्यात्मक रचना चाहते थे—कुछ ऐसा जो गहन कल्पना, करुणा और कोमल, उदात्त, अलौकिक भावनाओं से

अधिक मेल खाता हो। वास्तव में, जब तक कोई लेखक इस तरह की पांडुलिपि को प्रकाशित करने का प्रयास नहीं करता, तब तक वह यह नहीं जान सकता कि रोमांस और संवेदनशीलता का कितना भंडार उन हृदयों में छिपा है जिनके बारे में उसने कभी सोचा भी नहीं होगा कि वे ऐसे खजाने को संजो कर रख सकते हैं। आमतौर पर यह माना जाता है कि व्यवसाय में लगे लोग वास्तविकता को पसंद करते हैं; परीक्षण करने पर यह धारणा अक्सर गलत साबित होती है: जंगली, अद्भुत और रोमांचकारी—अजीबोगरीब, चौंकाने वाली और दिल दहला देने वाली चीजों के प्रति तीव्र लगाव उन अनेक आत्माओं को भी झकझोर देता है जो ऊपर से शांत और गंभीर दिखाई देती हैं।

ऐसी स्थिति में, पाठक समझ जाएगा कि मुद्रित पुस्तक के रूप में उस तक पहुँचने के लिए इस संक्षिप्त वृत्तांत को कुछ संघर्षों से गुजरना पड़ा होगा - और वास्तव में ऐसा ही हुआ है। और अंततः, इसका सबसे कठिन संघर्ष और सबसे बड़ी परीक्षा अभी बाकी है, लेकिन यह सांत्वना पाता है - भय को दबाता है - एक मध्यम आशा के सहारे टिका रहता है - और जनता की ओर देखते हुए मन ही मन बुदबुदाता है,

“जो नीचा है उसे गिरने का डर नहीं होता।”

करर बेल।

उपरोक्त प्रस्तावना मेरी पत्नी ने "शर्ली" के प्रकाशन के तुरंत बाद "द प्रोफेसर" के प्रकाशन के उद्देश्य से लिखी थी। हालांकि, उनका इरादा बदल गया और लेखिका ने बाद में अपनी एक रचना "विलेट" में इन सामग्रियों का कुछ उपयोग किया। लेकिन चूंकि ये दोनों कहानियां कई मायनों में भिन्न हैं, इसलिए मुझे यह सलाह दी गई है कि मुझे "द प्रोफेसर" को जनता से छिपाना नहीं चाहिए। अतः मैंने इसके प्रकाशन की सहमति दे दी है।

ए. बी. निकोल्स

हॉवर्थ पार्सनेज,

22 सितंबर, 1856।

अध्याय I. परिचयात्मक।

कुछ दिन पहले, अपने कागजात देखते समय, मुझे अपनी डेस्क में एक पत्र की निम्नलिखित प्रति मिली, जो मैंने एक साल पहले अपने एक पुराने स्कूली परिचित को भेजा था: —

प्रिय चार्ल्स,

“मुझे लगता है जब हम दोनों ईटन में साथ पढ़ते थे, तब हम दोनों में से कोई भी लोकप्रिय व्यक्तित्व नहीं था: तुम एक व्यंग्यपूर्ण, पैनी नज़र रखने वाली, चतुर और निर्मम शख्सियत थीं; मैं अपना चित्र बनाने की कोशिश तो नहीं करूँगी, लेकिन मुझे याद नहीं कि मैं कभी आकर्षक रही होऊँगी — क्या तुम्हें याद है? किस आकर्षण ने हम दोनों को एक-दूसरे की ओर खींचा, यह मैं नहीं जानती; निश्चित रूप से मैंने तुम्हारे लिए कभी भी पाइलेड्स और ओरेस्टेस जैसी भावनाएँ महसूस नहीं कीं, और मुझे विश्वास है कि तुम भी मेरे प्रति उतनी ही उदासीन थीं। फिर भी, स्कूल के बाद हम लगातार साथ घूमते और बातें करते थे; जब बातचीत का विषय हमारे साथी या हमारे शिक्षक होते थे, तो हम एक-दूसरे को समझ जाते थे, और जब मैं किसी स्नेह की भावना, किसी उत्कृष्ट या सुंदर वस्तु के प्रति अस्पष्ट प्रेम, चाहे वह सजीव हो या निर्जीव, व्यक्त करती थी, तो तुम्हारी व्यंग्यपूर्ण शीतलता मुझ पर कोई असर नहीं डालती थी। मैं तब भी और अब भी खुद को उस रोक से ऊपर समझती हूँ।”

“तुम्हें लिखे हुए बहुत समय हो गया है, और तुमसे मिले हुए तो और भी अधिक समय हो गया है। कुछ दिन पहले संयोगवश तुम्हारे जिले का अखबार उठाते ही मेरी नज़र तुम पर पड़ी। मैं पुराने दिनों को याद करने लगा; हमारे अलग होने के बाद से जो कुछ घटित हुआ है, उस पर विचार करने लगा; और फिर बैठकर यह पत्र लिखना शुरू किया। तुम क्या कर रहे हो, मुझे नहीं पता; लेकिन अगर तुम सुनना चाहो, तो तुम्हें पता चल जाएगा कि मेरे जीवन में क्या-क्या उतार-चढ़ाव आए हैं।”

"सबसे पहले, ईटन छोड़ने के बाद, मेरी अपने मामाओं, लॉर्ड टाइनडेल और माननीय जॉन सीकोम्ब से मुलाकात हुई। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं चर्च में प्रवेश

करना चाहूंगा, और मेरे मामा, जो एक रईस थे, ने मुझे सीकोम्ब का पदभार सौंपने की पेशकश की, जो उनके अधिकार क्षेत्र में था, यदि मैं ऐसा करना चाहूं; फिर मेरे दूसरे मामा, श्री सीकोम्ब ने संकेत दिया कि जब मैं सीकोम्ब-कम-स्काइफ का रेक्टर बनूंगा, तो शायद मुझे अपने घर की मालकिन और अपने पल्ली की प्रमुख के रूप में अपनी छह चचेरी बहनों में से एक, उनकी बेटियों को रखने की अनुमति मिल सकती है, जिनसे मैं बहुत नफरत करता हूं।"

मैंने चर्च और विवाह दोनों को अस्वीकार कर दिया। एक अच्छा पादरी होना अच्छी बात है, लेकिन मैं एक बहुत बुरा पादरी साबित होता। पत्नी की बात करें तो, अपने किसी चचेरे भाई या बहन के साथ जीवन भर के लिए बंधने का विचार किसी बुरे सपने जैसा है! निस्संदेह वे गुणवान और सुंदर हैं; लेकिन उनका कोई गुण या आकर्षण मेरे दिल को छू नहीं पाता। सीकोम्ब रेक्टरी के बैठक कक्ष में आग के पास बैठकर सर्दियों की शामें उनमें से किसी एक के साथ अकेले बिताने के बारे में सोचना भी नहीं चाहता—उदाहरण के लिए, विशाल और सुगठित सारा—नहीं; ऐसी परिस्थितियों में मैं एक बुरा पति होने के साथ-साथ एक बुरा पादरी भी साबित होता।

जब मैंने अपने चाचाओं के प्रस्ताव ठुकरा दिए, तो उन्होंने मुझसे पूछा, 'मैं क्या करने का इरादा रखता हूँ?' मैंने कहा कि मैं इस पर विचार करूँगा। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि मेरे पास कोई संपत्ति नहीं है, और न ही भविष्य में किसी संपत्ति की कोई उम्मीद है। काफी देर रुकने के बाद, लॉर्ड टाइनडेल ने सख्ती से पूछा, 'क्या मैं अपने पिता के नक्शेकदम पर चलकर व्यापार करने के बारे में सोच रहा हूँ?' अब, मेरे मन में ऐसा कोई विचार नहीं था। मुझे नहीं लगता कि मेरी मानसिकता मुझे एक अच्छा व्यापारी बनने के योग्य बनाती है; मेरी रुचि, मेरी महत्वाकांक्षा उस ओर नहीं है; लेकिन लॉर्ड टाइनडेल के चेहरे पर 'व्यापार' शब्द का उच्चारण करते समय जो तिरस्कार झलक रहा था—उनके लहजे में जो अपमानजनक व्यंग्य था—उससे मैंने तुरंत फैसला कर लिया। मेरे पिता मेरे लिए सिर्फ एक नाम थे, फिर भी उस नाम को अपने सामने उपहास के साथ सुनना मुझे अच्छा नहीं लगता था। तब मैंने जल्दबाजी और जोश से जवाब दिया, 'मैं अपने पिता के नक्शेकदम पर चलने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता; हाँ, मैं व्यापारी बनूँगा।' मेरे चाचाओं ने कोई आपत्ति नहीं जताई; वे और मैं अलग हो गए। आपसी घृणा के साथ। इस लेन-देन की समीक्षा करते हुए, मुझे लगता है कि टाइनडेल के संरक्षण के बोझ से छुटकारा पाना मेरा बिल्कुल सही

निर्णय था, लेकिन तुरंत ही एक और बोझ को अपने कंधों पर लेने की कोशिश करना मेरी मूर्खता थी - एक ऐसा बोझ जो शायद और भी असहनीय हो सकता था, और जिसका अभी तक कोई अनुभव नहीं हुआ था।

मैंने तुरंत एडवर्ड को पत्र लिखा—आप एडवर्ड को जानते हैं—मेरा इकलौता भाई, मुझसे दस साल बड़ा, एक अमीर चक्की मालिक की बेटी से विवाहित, और अब उस चक्की और व्यवसाय का मालिक जो मेरे पिता के दिवालिया होने से पहले उनका था। आपको पता है कि मेरे पिता—जिन्हें कभी धन का महापुरुष माना जाता था—अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले दिवालिया हो गए थे, और मेरी माँ उनके बाद लगभग छह महीने तक गरीबी में रहीं, अपने कुलीन भाइयों से कोई मदद नहीं मिली, जिन्हें उन्होंने क्रिम्सवर्थ, जो एक स्थानीय व्यापारी थे, से विवाह करके बहुत नाराज कर दिया था। उन छह महीनों के अंत में उन्होंने मुझे जन्म दिया, और फिर स्वयं इस दुनिया से चली गईं, मुझे लगता है कि उन्हें ज्यादा अफसोस नहीं हुआ होगा, क्योंकि इस दुनिया में उनके लिए कोई उम्मीद या सुकून नहीं था।

मेरे पिता के रिश्तेदारों ने एडवर्ड की देखभाल की, जैसे उन्होंने मेरी भी, जब तक मैं नौ साल का नहीं हो गया। उसी दौरान संयोगवश हमारे काउंटी के एक महत्वपूर्ण नगर का पद खाली हो गया; श्री सीकोम्ब उस पद के लिए खड़े हुए। मेरे चाचा क्रिम्सवर्थ, जो एक चतुर व्यापारी थे, ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए उम्मीदवार को एक तीखा पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने कहा कि यदि वे और लॉर्ड टाइनडेल अपनी बहन के अनाथ बच्चों के भरण-पोषण के लिए कुछ नहीं करते हैं, तो वे उस बहन के प्रति उनके निर्दयी और दुर्भावनापूर्ण व्यवहार का पर्दाफाश करेंगे और श्री सीकोम्ब के चुनाव को रोकने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। वे सज्जन और लॉर्ड टाइनडेल अच्छी तरह जानते थे कि क्रिम्सवर्थ परिवार बेईमान और दृढ़ निश्चयी था; वे यह भी जानते थे कि X नगर में उनका प्रभाव था; और मजबूरी को अवसर मानते हुए, उन्होंने मेरी शिक्षा का खर्च उठाने की सहमति दी। मुझे ईटन भेजा गया, जहाँ मैं दस साल रहा, इस दौरान एडवर्ड और मैं कभी नहीं मिले। जब वह बड़ा हुआ, तो उसने व्यापार शुरू किया और अपने पेशे को आगे बढ़ाया। इतनी लगन, योग्यता और सफलता के साथ कि अब, तीस वर्ष की आयु में, वह तेजी से धनवान बन रहे थे। इसका अंदाजा मुझे उनसे मिलने वाले कभी-कभार के छोटे पत्रों से होता था, जो साल में तीन-चार बार आते थे; और उन पत्रों का अंत हमेशा सीकोम्ब परिवार के प्रति दृढ़ शत्रुता और मुझे उस

परिवार की उदारता पर जीने के लिए कोसने के बिना नहीं होता था। पहले तो, जब मैं अभी बच्चा ही था, मैं यह नहीं समझ पाता था कि मेरे माता-पिता न होने के बावजूद, मुझे अपनी शिक्षा के लिए अपने चाचा टाइनडेल और सीकोम्ब का ऋणी क्यों नहीं होना चाहिए; लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, और धीरे-धीरे उनके द्वारा मेरे पिता के प्रति दिखाई गई निरंतर शत्रुता, मृत्यु तक घृणा, मेरी माँ के कष्टों, संक्षेप में, हमारे परिवार के सभी अन्याय के बारे में सुना, तब मुझे उस निर्भरता पर शर्म महसूस हुई जिसमें मैं जी रहा था, और मैंने यह संकल्प लिया कि मैं उन हाथों से रोटी नहीं लूंगा जिन्होंने मेरी मरती हुई माँ की जरूरतों को पूरा करने से इनकार कर दिया था। इन्हीं भावनाओं से प्रभावित होकर मैंने यह निर्णय लिया। मैंने सीकोम्बे के रेक्टरी पद और अपने एक कुलीन चचेरे भाई से विवाह करने से इनकार कर दिया।

मेरे चाचाओं और मेरे बीच इस प्रकार एक ऐसा मतभेद पैदा हो गया जिसे ठीक नहीं किया जा सकता था। इसलिए मैंने एडवर्ड को पत्र लिखा; उसे सारी घटना बताई और उसे सूचित किया कि मैं उसके नक्शेकदम पर चलकर एक व्यापारी बनना चाहता हूँ। मैंने उससे यह भी पूछा कि क्या वह मुझे काम दे सकता है। उसके जवाब में मेरे आचरण के प्रति कोई स्वीकृति नहीं थी, लेकिन उसने कहा कि अगर मैं चाहूँ तो — — शायर आ सकता हूँ और वह देखेगा कि मुझे काम कैसे दिया जा सकता है। मैंने अपने सारे विचार — यहाँ तक कि उसके पत्र पर मन ही मन की गई टिप्पणी भी — दबा लिए, अपना सामान और कालीन का थैला पैक किया और सीधे उत्तर की ओर चल पड़ा।

"दो दिन की यात्रा के बाद (उस समय रेलगाड़ियाँ अस्तित्व में नहीं थीं) मैं अक्टूबर की एक बरसाती दोपहर को X — — नामक कस्बे में पहुँचा। मुझे हमेशा से पता था कि एडवर्ड इसी कस्बे में रहता है, लेकिन पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि बिगबेन क्लोज़ के धुएँ भरे वातावरण में केवल श्री क्रिम्सवर्थ की चक्की और गोदाम ही स्थित थे; उनका निवास स्थान चार मील दूर ग्रामीण इलाके में था।"

शाम ढल चुकी थी जब मैं अपने भाई के लिए निर्धारित घर के द्वार पर उतरा। जैसे ही मैं गली में आगे बढ़ा, धुंधली रोशनी और घने कोहरे के बीच से मुझे दिखाई दिया कि घर बड़ा था और उसके चारों ओर का मैदान भी काफी विशाल था। मैं सामने के लॉन पर एक पल के लिए रुका और बीच में खड़े एक ऊंचे पेड़ से पीठ टिकाकर क्रिम्सवर्थ हॉल के बाहरी हिस्से को उत्सुकता से देखने लगा।

"एडवर्ड अमीर है," मैंने मन ही मन सोचा। 'मुझे लगता था कि वह अच्छी स्थिति में है – लेकिन मुझे नहीं पता था कि वह इतने बड़े महल का मालिक है।' सारी हैरानी, अटकलें, अनुमान आदि को दरकिनार करते हुए, मैं आगे बढ़ा और दरवाजे की घंटी बजाई। एक नौकर ने दरवाजा खोला – मैंने अपना परिचय दिया – उसने मेरा गीला लबादा और कालीन का थैला ले लिया और मुझे एक ऐसे कमरे में ले गया जो पुस्तकालय की तरह सजा हुआ था, जहाँ तेज आग जल रही थी और मेज पर मोमबत्तियाँ जल रही थीं; उसने मुझे बताया कि उसका मालिक अभी तक बाजार से नहीं लौटा है, लेकिन आधे घंटे में घर आ जाएगा।

अकेले में, मैंने लाल मोरोक्को से ढकी आरामदायक कुर्सी पर बैठ गया, जो चूल्हे के पास रखी थी। मेरी आँखें जलते कोयलों से उठती लपटों और चूल्हे पर गिरती राख को देखती रहीं, और मेरा मन होने वाली मुलाकात के बारे में तरह-तरह के अनुमान लगाने में लगा रहा। इन अनुमानों के विषय में बहुत कुछ संदिग्ध था, लेकिन एक बात काफी हद तक निश्चित थी - मुझे घोर निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा; मेरी उम्मीदों के संयम ने मुझे यही आश्वासन दिया था। मुझे भाईचारे की अतिशयता की कोई उम्मीद नहीं थी; एडवर्ड के पत्र हमेशा ऐसे होते थे जो इस तरह के भ्रम को जन्म देने या पनपने से रोकते थे। फिर भी, जब मैं उसके आने की प्रतीक्षा में बैठा था, तो मैं बहुत उत्सुक था - बहुत उत्सुक - मैं आपको बता नहीं सकता क्यों; मेरा हाथ, जो किसी अपने के हाथ की पकड़ से पूरी तरह अनजान था, बेचैनी से कांपने से रोकने के लिए मुट्ठी में कस गया।

"मैंने अपने चाचाओं के बारे में सोचा; और जब मैं यह सोच रहा था कि क्या एडवर्ड की उदासीनता उस ठंडे तिरस्कार के बराबर होगी जो मुझे हमेशा उनसे मिलता रहा था, तभी मैंने रास्ते के फाटकों को खुलते सुना: पहिए घर के पास आ रहे थे; श्री क्रिम्सवर्थ आ गए थे; और कुछ मिनटों के बीतने के बाद, और हॉल में उनके और उनके नौकर के बीच संक्षिप्त बातचीत के बाद, उनके कदमों की आहट पुस्तकालय के दरवाजे के पास सुनाई दी - केवल उस आहट ने ही घर के मालिक की उपस्थिति का संकेत दिया।"

"दस साल पहले एडवर्ड कैसा दिखता था, इसकी कुछ धुंधली सी यादें मेरे मन में अभी भी बाकी थीं—एक लंबा, दुबला-पतला, अनुभवहीन युवक; अब, जैसे ही मैं अपनी सीट से उठा और पुस्तकालय के दरवाजे की ओर मुड़ा, मैंने एक सुंदर और

शक्तिशाली व्यक्ति को देखा, गोरा रंग, सुगठित शरीर और एथलेटिक कद-काठी वाला; पहली ही नज़र में मुझे उसकी फुर्ती और तेज़ी का आभास हो गया, जो उसके हाव-भाव, उसकी आँखों और उसके चेहरे के भावों में साफ झलक रहा था। उसने संक्षिप्तता से मेरा अभिवादन किया और हाथ मिलाते ही मुझे सिर से पैर तक घूर लिया; वह मोरक्को की चमड़े की कुर्सी पर बैठ गया और मुझे दूसरी कुर्सी पर बैठने का इशारा किया।

"'मुझे उम्मीद थी कि आप क्लोज स्थित लेखा कार्यालय में आएंगे,' उसने कहा; और मैंने गौर किया कि उसकी आवाज में एक तीखा लहजा था, जो शायद उसकी आदत थी; वह एक कर्कश उत्तरी लहजे में भी बोलता था, जो मेरे कानों को कर्कश लगता था, क्योंकि मैं दक्षिण के मधुर उच्चारण का आदी था।

मैंने कहा, "'जिस सराय में गाड़ी रुकी थी, उसके मालिक ने मुझे यहाँ आने का रास्ता बताया। मुझे पहले तो उसकी जानकारी की सटीकता पर संदेह हुआ, क्योंकि मुझे पता नहीं था कि आपका ऐसा कोई निवास स्थान भी है।'"

"'अरे, कोई बात नहीं!' उसने जवाब दिया, 'बस मैं आपके इंतज़ार में आधा घंटा लेट हो गया था – बस इतना ही। मुझे लगा था कि आप आठ बजे वाली बस से आ रही होंगी।'"

मैंने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि उन्हें इंतजार करना पड़ा; उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि आग को हिलाया, मानो अधीरता की किसी अभिव्यक्ति को छुपाने के लिए; फिर उन्होंने मुझे दोबारा देखा।

मुझे इस बात की आंतरिक संतुष्टि हुई कि मुलाकात के पहले ही क्षण में मैंने किसी प्रकार की गर्मजोशी या उत्साह नहीं दिखाया; कि मैंने इस व्यक्ति का शांत और स्थिर भाव से अभिवादन किया।

"'क्या तुमने टाइनडेल और सीकोम्बे से पूरी तरह नाता तोड़ लिया है?' उसने जल्दबाजी में पूछा।

"'मुझे नहीं लगता कि मेरा उनसे आगे कोई संपर्क होगा; मुझे लगता है कि उनके प्रस्तावों को ठुकराना भविष्य में किसी भी तरह के संपर्क के खिलाफ एक बाधा के रूप में काम करेगा।'"

"'क्यों,' उन्होंने कहा, 'हमारे संबंध की शुरुआत में ही मैं आपको याद दिला दूं कि "कोई भी व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता।" लॉर्ड टाइनडेल से जान-

पहचान रखना मुझसे सहायता प्राप्त करने के अनुकूल नहीं होगा।’ यह बात कहते हुए उनकी आँखों में एक प्रकार की अनावश्यक धमकी झलक रही थी।

मुझे उन्हें जवाब देने का मन नहीं हुआ, इसलिए मैंने मन ही मन मनुष्यों के मन की विभिन्नताओं पर विचार किया। मुझे नहीं पता कि श्री क्रिम्सवर्थ ने मेरी चुप्पी से क्या निष्कर्ष निकाला—क्या उन्होंने इसे मेरी हठधर्मिता का लक्षण समझा या उनके कठोर व्यवहार से भयभीत होने का प्रमाण। मुझे देर तक घूरने के बाद, वे अचानक अपनी सीट से उठ खड़े हुए।

"‘कल,’ उसने कहा, ‘मैं आपका ध्यान कुछ अन्य बिंदुओं की ओर आकर्षित करूंगा; लेकिन अभी रात के खाने का समय हो गया है, और श्रीमती क्रिम्सवर्थ शायद प्रतीक्षा कर रही होंगी; क्या आप आएंगी?’

“वह कमरे से बाहर निकल गया, और मैं उसके पीछे-पीछे चली। हॉल पार करते हुए, मैं सोच रही थी कि श्रीमती क्रिम्सवर्थ कौन होंगी। ‘क्या वह,’ मैंने सोचा, ‘मेरी पसंद से उतनी ही अलग हैं जितनी टाइनडेल, सीकोम्ब, मिस सीकोम्ब—जैसे कि वह स्नेही रिश्तेदार जो अब मेरे सामने चल रही है? या वह इन सबसे बेहतर हैं? क्या मैं उनसे बातचीत करते समय अपने असली स्वभाव का कुछ अंश दिखाने में स्वतंत्र महसूस करूँगी; या—’ भोजन कक्ष में प्रवेश करते ही मेरे आगे के सभी विचार रुक गए।”

कांच की छाया में जलते हुए एक दीपक से ओक की लकड़ी से बने सुंदर कमरे का नजारा दिखाई दे रहा था; मेज पर खाना लगा हुआ था; चूल्हे के पास, मानो हमारे आने का इंतजार कर रही एक महिला खड़ी थी; वह जवान, लंबी और सुडौल थी; उसका पहनावा सुंदर और फैशनेबल था: मेरी पहली नजर में इतना ही पता चल पाया। उसने और मिस्टर क्रिम्सवर्थ ने खुशी से अभिवादन किया; उसने उन्हें देर से आने के लिए थोड़ा मज़ाकिया अंदाज में, थोड़ा नाराज़गी से डांटा; उसकी आवाज (मैं हमेशा किसी के चरित्र का आकलन करते समय आवाज पर ध्यान देता हूँ) जीवंत थी - मुझे लगा कि यह उसके उत्साह का संकेत था। मिस्टर क्रिम्सवर्थ ने जल्द ही उसके तीखे डांट को एक चुंबन से शांत कर दिया - एक ऐसा चुंबन जो अभी भी दूल्हे की याद दिला रहा था (उनकी शादी को अभी एक साल भी नहीं हुआ था); वह पूरे उत्साह से खाने की मेज पर बैठ गई। मुझे देखकर उसने पहले ध्यान न देने के लिए मुझसे माफी मांगी और फिर मुझसे हाथ मिलाया, जैसा कि महिलाएं अच्छे मूड में होने पर करती

हैं। वह सबके प्रति हंसमुख थी, यहाँ तक कि अपने सबसे उदासीन परिचितों के प्रति भी। अब मुझे यह और भी स्पष्ट हो गया था कि उसका रंग सुंदर था, और चेहरे की बनावट आकर्षक थी; उसके बाल लाल थे—बिल्कुल लाल। वह और एडवर्ड बहुत बातें करते थे, हमेशा मज़ाकिया अंदाज़ में; वह नाराज़ थी, या नाराज़ होने का नाटक करती थी, कि उस दिन उसने गाड़ी में एक खतरनाक घोड़ा चलाया था, और एडवर्ड उसकी चिंताओं को हल्के में लेता था। कभी-कभी वह मुझसे भी अपील करती थी।

"'अब, श्रीमान विलियम, क्या एडवर्ड का इस तरह बात करना हास्यास्पद नहीं है? वह कहता है कि वह जैक को ही चलाएगा, और किसी दूसरे घोड़े को नहीं, और वह जानवर उसे पहले ही दो बार गिरा चुका है।

"वह तुतलाकर बोलती थी, अप्रिय तो नहीं, लेकिन बचकाना ज़रूर था। मैंने जल्द ही यह भी देखा कि उसके चेहरे पर, जो कि छोटा नहीं था, केवल बचकानापन ही नहीं था, बल्कि एक बचकाना भाव भी था; मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह तुतलाहट और भाव एडवर्ड की नज़रों में आकर्षण का स्रोत थे, और अधिकांश पुरुषों के लिए भी होते, लेकिन मेरे लिए नहीं। मैंने उसकी आँखों में देखने की इच्छा से, उस बुद्धिमत्ता को पढ़ने की चाहत में, जिसे मैं उसके चेहरे पर नहीं देख पा रहा था और न ही उसकी बातों में सुन पा रहा था; उसकी आँखें हंसमुख थीं, बल्कि छोटी सी थीं; कभी-कभी मुझे उसकी पुतलियों से जीवंतता, कभी घमंड, कभी नखरे झलकते हुए दिखाई देते थे, लेकिन आत्मा की एक झलक पाने के लिए मेरी कोशिश व्यर्थ ही गई। मैं कोई पूर्वी व्यक्ति नहीं हूँ; सफेद गर्दन, गहरे लाल होंठ और गाल, चमकीले घुंघराले बालों के गुच्छे, मेरे लिए उस दिव्य चिंगारी के बिना पर्याप्त नहीं हैं जो गुलाब और लिली के मुरझाने और चमकीले बालों के सफेद हो जाने के बाद भी जीवित रहेगी। धूप में, समृद्धि में, फूल बहुत अच्छे होते हैं; लेकिन जीवन में कितने ही बरसात के दिन होते हैं - नवंबर के विपत्ति के मौसम, जब एक आदमी का... बुद्धि की स्पष्ट, उत्साहवर्धक चमक के बिना घर और चूल्हा सचमुच ठंडा पड़ जाएगा।

"श्रीमती क्रिम्सवर्थ के सुंदर चेहरे को देखने के बाद, एक गहरी, अनैच्छिक आह ने मेरी निराशा को व्यक्त किया; उन्होंने इसे अपनी सुंदरता के प्रति सम्मान समझा, और एडवर्ड, जो स्पष्ट रूप से अपनी धनी और सुंदर युवा पत्नी पर गर्व करता था, ने मेरी ओर एक नजर डाली - आधी उपहासपूर्ण, आधी क्रोधपूर्ण।"

मैंने उन दोनों से मुंह फेर लिया और थकी हुई निगाहों से कमरे में चारों ओर देखा

तो मुझे ओक की लकड़ी की पैनलिंग में दो तस्वीरें दिखाई दीं—एक मेंटलपीस के दोनों ओर। श्रीमान और श्रीमती क्रिम्सवर्थ के बीच चल रही हंसी-मजाक भरी बातचीत में हिस्सा न लेते हुए, मैंने अपना ध्यान इन तस्वीरों पर केंद्रित किया। ये चित्र थे—एक महिला और एक पुरुष, दोनों बीस साल पहले के फैशन के कपड़े पहने हुए थे। पुरुष छाया में थे। मैं उन्हें ठीक से नहीं देख पा रही थी। महिला को हल्की रोशनी वाले लैंप की पूरी किरण मिल रही थी। मैंने उन्हें तुरंत पहचान लिया; मैंने यह तस्वीर बचपन में देखी थी; यह मेरी माँ की तस्वीर थी; और यही दूसरी तस्वीर मेरे पिता की संपत्ति की बिक्री से बची एकमात्र विरासत थी।

मुझे याद आया, बचपन में वह चेहरा मुझे बहुत भाता था, पर तब मैं उसे समझ नहीं पाया था; अब मुझे पता चल गया था कि दुनिया में ऐसे चेहरे कितने दुर्लभ हैं, और मैं उसकी विचारशील, फिर भी सौम्य अभिव्यक्ति की गहराई से सराहना करता था। उसकी गंभीर भूरी आँखों में मेरे लिए एक गहरा आकर्षण था, साथ ही चेहरे की कुछ रेखाएँ भी जो सच्ची और कोमल भावनाओं को दर्शाती थीं। मुझे दुख था कि वह केवल एक तस्वीर थी।

“मैंने जल्द ही मिस्टर और मिसेज क्रिम्सवर्थ को उनके हाल पर छोड़ दिया; एक नौकर मुझे मेरे बेडरूम तक ले गया; अपने कमरे का दरवाजा बंद करके, मैंने सभी घुसपैठियों को बाहर कर दिया - तुम्हें, चार्ल्स, साथ ही बाकी सभी को भी।”

"फिलहाल के लिए अलविदा,"

“विलियम क्रिम्सवर्थ।”

मुझे इस पत्र का कोई उत्तर नहीं मिला; मेरे पुराने मित्र को यह पत्र मिलने से पहले ही उन्होंने एक उपनिवेश में सरकारी पद स्वीकार कर लिया था और अपने आधिकारिक कार्यभार के लिए रवाना हो चुके थे। उसके बाद उनका क्या हुआ, यह मुझे नहीं पता।

मेरे पास जो भी खाली समय है, जिसे मैं उनके निजी हित के लिए इस्तेमाल करना चाहता था, अब मैं उसे आम जनता के हित में समर्पित करूँगा। मेरी कहानी रोमांचक नहीं है, और सबसे बढ़कर, अद्भुत भी नहीं है; लेकिन यह कुछ व्यक्तियों को रुचिकर लग सकती है, जिन्होंने मेरे समान ही पेशे में परिश्रम किया है, और उन्हें मेरे अनुभव में अपने अनुभवों की झलक मिलेगी। उपरोक्त पत्र एक परिचय के रूप में कार्य करेगा। अब मैं आगे बढ़ता हूँ।

अध्याय II.

एक सुहावनी अक्टूबर की सुबह उस धुंध भरी शाम के बाद आई, जिसमें मुझे पहली बार क्रिम्सवर्थ हॉल देखने का मौका मिला था। मैं जल्दी उठ गया और घर के चारों ओर फैले विशाल पार्क जैसे घास के मैदान में टहलने लगा। शरद ऋतु का सूरज, पहाड़ियों के ऊपर से उगता हुआ, एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत कर रहा था; भूरे और हरे-भरे जंगल उन खेतों को अलग-अलग रंग दे रहे थे जहाँ से हाल ही में फसल काटी गई थी; जंगलों के बीच बहती नदी, अक्टूबर के सूरज और आकाश की हल्की ठंडी चमक को अपनी सतह पर समेटे हुए थी; नदी के किनारों पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर, ऊँची, बेलनाकार चिमनियाँ, लगभग पतले गोल टावरों जैसी, उन कारखानों की ओर इशारा कर रही थीं जिन्हें पेड़ों ने आधा छिपा रखा था; यहाँ-वहाँ क्रिम्सवर्थ हॉल जैसी हवेलियाँ पहाड़ी ढलानों पर सुंदर स्थानों पर बनी हुई थीं; कुल मिलाकर, यह इलाका एक खुशमिजाज, जीवंत और उपजाऊ रूप धारण किए हुए था। भाप, व्यापार और मशीनों ने लंबे समय से यहाँ से सभी तरह के रोमांस और एकांत को दूर कर दिया था। पाँच मील की दूरी पर, नीची पहाड़ियों के बीच खुलती एक घाटी में, X — — का महान शहर बसा हुआ था। इस इलाके पर एक घना, स्थायी धुंध छाया हुआ था - यहीं एडवर्ड की "चिंता" छिपी थी।

मैंने अपनी आँखों को इस दृश्य का गहन अवलोकन करने के लिए विवश किया, मैंने अपने मन को कुछ देर तक इस पर चिंतन करने के लिए विवश किया, और जब मैंने पाया कि इससे मेरे हृदय में कोई सुखद भावना उत्पन्न नहीं हुई — कि इसने मुझमें उन आशाओं का कोई भाव नहीं जगाया जो एक व्यक्ति को अपने जीवन के

मार्ग को अपने सामने देखकर महसूस होनी चाहिए — तो मैंने स्वयं से कहा, “विलियम, तुम परिस्थितियों के विरुद्ध विद्रोही हो; तुम मूर्ख हो, और तुम्हें पता नहीं कि तुम क्या चाहते हो; तुमने व्यापार चुना है और तुम एक व्यापारी ही बनोगे। देखो!” मैंने मन ही मन कहा — “उस घाटी में उठते धुएँ को देखो, और जानो कि यही तुम्हारा काम है! वहाँ तुम सपने नहीं देख सकते, तुम अटकलें और सिद्धांत नहीं बना सकते — वहाँ तुम्हें जाकर काम करना होगा!”

इस प्रकार स्वयं को शिक्षित करके मैं घर लौट आया। मेरा भाई नाश्ते के कमरे में था। मैंने उससे संयम से मुलाकात की—मैं उससे प्रसन्नतापूर्वक नहीं मिल सका; वह आग की ओर पीठ करके कालीन पर खड़ा था—जब मैंने उसे सुप्रभात कहने के लिए आगे बढ़कर उसकी आँखों में देखा, तो मेरी नज़र उससे मिली और उसकी आँखों के भावों ने मुझे बहुत कुछ समझा; यह मेरे स्वभाव के कितना विपरीत था! उसने अचानक "सुप्रभात" कहा और सिर हिलाया, और फिर उसने मेज से अखबार छीन लिया, न कि लिया, और उसे ऐसे पढ़ने लगा जैसे कोई मालिक अपने अधीनस्थ से बातचीत की बोरियत से बचने का बहाना ढूंढ रहा हो। अच्छा हुआ कि मैंने कुछ समय तक सहन करने का संकल्प लिया था, वरना उसका व्यवहार उस घृणा को और भी असहनीय बना देता जिसे मैं अभी-अभी दबाने की कोशिश कर रहा था। मैंने उसे देखा: मैंने उसके मजबूत शरीर और शक्तिशाली अनुपात को परखा; मैंने मेंटलपीस के ऊपर लगे दर्पण में अपना प्रतिबिंब देखा; मैंने दोनों चित्रों की तुलना करके खुद को खुश किया। चेहरे से मैं उससे मिलता-जुलता था, हालाँकि मैं उतना सुंदर नहीं था; मेरे चेहरे के भाव उतने सुव्यवस्थित नहीं थे; मेरी आंखें गहरी थीं और माथे चौड़े थे— शारीरिक बनावट में मैं उससे बहुत कमतर था—पतला, दुबला-पतला, कद में छोटा। एक जानवर के रूप में एडवर्ड मुझसे कहीं श्रेष्ठ था; अगर वह शारीरिक और मानसिक रूप से भी उतना ही श्रेष्ठ साबित हुआ तो मैं उसका गुलाम बन जाऊंगा—क्योंकि उससे मुझे अपने से कमजोर के प्रति शेर जैसी उदारता की उम्मीद नहीं करनी चाहिए; उसकी ठंडी, लालची आंखें, उसका कठोर, डरावना व्यवहार मुझे बता देता था कि वह किसी को नहीं बख्शेगा। क्या मुझमें उससे मुकाबला करने की मानसिक शक्ति थी? मुझे नहीं पता था; मैंने कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं किया था।

श्रीमती क्रिम्सवर्थ के आने से मेरा ध्यान क्षण भर के लिए भटक गया। वह अच्छी लग रही थीं, सफेद वस्त्र पहने हुए, उनका चेहरा और पोशाक सुबह की ताजगी और

दुल्हन जैसी चमक से दमक रहे थे। मैंने उनसे सहजता से बात की, जैसा कि पिछली रात की उनकी बेफिक्री भरी खुशी से अपेक्षित था, लेकिन उन्होंने संयम और गंभीरता से जवाब दिया: उनके पति ने उन्हें समझाया था; उन्हें अपने क्लर्क से ज्यादा घुलमिलना नहीं था।

नाश्ता खत्म होते ही श्री क्रिम्सवर्थ ने मुझे बताया कि वे गाड़ी दरवाजे पर ला रहे हैं और पाँच मिनट में मुझे उनके साथ X — — चलने के लिए तैयार रहना होगा। मैंने उन्हें ज़्यादा इंतज़ार नहीं कराया; हम जल्द ही तेज़ी से सड़क पर दौड़ने लगे। वह जिस घोड़े को चला रहे थे, वह वही खूंखार जानवर था जिसके बारे में श्रीमती क्रिम्सवर्थ ने पिछली रात अपनी आशंकाएँ व्यक्त की थीं। एक-दो बार जैक बेचैन होता हुआ प्रतीत हुआ, लेकिन उसके मालिक के निर्दयी हाथों से चाबुक की ज़ोरदार और दृढ़ मार ने उसे जल्द ही वश में कर लिया, और एडवर्ड के फैले हुए नथुने इस लड़ाई के परिणाम पर उसकी जीत को दर्शा रहे थे; पूरी छोटी सी यात्रा के दौरान वह मुझसे मुश्किल से ही बोला, बस बीच-बीच में अपने घोड़े को कोसने के लिए अपने होंठ खोलता रहा।

जब हम X में दाखिल हुए तो वहाँ हर तरफ हलचल और चहल-पहल थी; हम उन साफ-सुथरी गलियों को पीछे छोड़ आए थे जहाँ रिहायशी मकान, दुकानें, गिरजाघर और सार्वजनिक इमारतें थीं; हम इन सबको पीछे छोड़कर मिलों और गोदामों वाले इलाके में आ गए; वहाँ से हम दो विशाल फाटकों से होकर एक बड़े पक्के आंगन में पहुँचे और बिगबेन क्लोज़ में थे। मिल हमारे सामने थी, अपनी लंबी चिमनी से धुआँ उगल रही थी और लोहे के पुर्जों की गड़गड़ाहट से उसकी मोटी ईंटों की दीवारें काँप रही थीं। कामगार इधर-उधर आ-जा रहे थे; एक गाड़ी में सामान लादा जा रहा था। श्री क्रिम्सवर्थ ने इधर-उधर देखा और मानो एक ही नज़र में सब कुछ समझ गए हों; वे उतरे और अपने घोड़े और गाड़ी को एक आदमी के भरोसे छोड़कर, जो जल्दी से उनके हाथ से लगाम लेने आया था, उन्होंने मुझे लेखा-घर चलने को कहा। हम अंदर गए; क्रिम्सवर्थ हॉल के बैठक कक्षों से बिल्कुल अलग जगह - एक व्यापारिक स्थान, जिसमें लकड़ी के तख्तों का फर्श, एक तिजोरी, दो ऊँची मेजें और स्टूल, और कुछ कुर्सियाँ थीं। एक व्यक्ति एक डेस्क पर बैठा था, जिसने श्री क्रिम्सवर्थ के प्रवेश करते ही अपनी चौकोर टोपी उतार दी और पल भर में फिर से अपने लेखन या गणना के काम में मग्न हो गया - मुझे नहीं पता कि वह क्या कर रहा था।

श्री क्रिम्सवर्थ ने अपना रेनकोट उतारकर आग के पास बैठ गए। मैं चूल्हे के पास

ही खड़ा रहा; उन्होंने थोड़ी देर बाद कहा—

“स्टाईटन, आप कमरे से बाहर जा सकते हैं; मुझे इस सज्जन से कुछ काम निपटाना है। घंटी बजने पर वापस आ जाना।”

काउंटर पर बैठा व्यक्ति उठा और जाते समय दरवाज़ा बंद कर दिया। श्री क्रिम्सवर्थ ने आग को हिलाया, फिर अपनी बाहें मोड़ लीं और कुछ पल सोचते हुए बैठ गए, उनके होंठ कसे हुए थे, माथे पर शिकन थी। मेरे पास उन्हें देखने के अलावा और कोई काम नहीं था - उनके चेहरे की बनावट कितनी सुंदर थी! वे कितने आकर्षक व्यक्ति थे! फिर, उनके चेहरे पर वह तनाव कहाँ से आया - उनके माथे पर, उनके पूरे चेहरे पर, वह संकुचित और कठोर भाव कहाँ से आया?

मेरी ओर मुड़कर उसने अचानक बोलना शुरू किया:

“तुम यहाँ किसी कारीगर का काम सीखने आए हो?”

"हाँ मैं हूँ।"

“क्या आपने इस मुद्दे पर अपना मन बना लिया है? मुझे तुरंत बता दीजिए।”

"हाँ।"

“खैर, मैं आपकी मदद करने के लिए बाध्य नहीं हूँ, लेकिन यहाँ एक पद खाली है, अगर आप इसके लिए योग्य हैं तो मैं आपको आज़माइश के तौर पर ले सकता हूँ। आप क्या कर सकते हैं? क्या आप कॉलेज की उस बेकार की पढ़ाई - ग्रीक, लैटिन, इत्यादि - के अलावा कुछ और जानते हैं?”

मैंने गणित का अध्ययन किया है।

“सामान! मुझे पूरा यकीन है कि आपके पास है।”

मैं फ्रेंच और जर्मन पढ़ और लिख सकता हूँ।

“हम्म!” उन्होंने एक पल सोचा, फिर अपने पास रखी मेज की दराज खोलकर एक पत्र निकाला और मुझे दे दिया।

“क्या तुम इसे पढ़ सकते हो?” उसने पूछा।

यह एक जर्मन व्यावसायिक पत्र था; मैंने इसका अनुवाद किया; मैं यह नहीं बता सका कि वह संतुष्ट हुआ या नहीं - उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं आया।

“अच्छा हुआ,” उसने कुछ देर रुककर कहा, “कि तुम्हें कुछ उपयोगी जानकारी है, जिससे तुम अपना गुजारा कर सकोगे: क्योंकि तुम फ्रेंच और जर्मन जानते हो, मैं तुम्हें अपने घर के विदेशी पत्राचार के लिए दूसरे क्लर्क के रूप में रखूँगा। मैं तुम्हें अच्छी

तनख्वाह दूँगा—90 पाउंड सालाना—और अब," उसने ऊँची आवाज़ में कहा, "हमारे रिश्ते और इस तरह की सारी बकवास के बारे में जो कहना है, उसे एक बार सुन लो! इस मामले में मुझे कोई बकवास बर्दाश्त नहीं है; यह मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं आएगा। भाई होने के बहाने मैं तुम्हें किसी भी बात के लिए माफ़ नहीं करूँगा; अगर मुझे तुम मूर्ख, लापरवाह, अय्याश, आलसी या घर के हितों के लिए हानिकारक कोई भी दोष वाले लगे, तो मैं तुम्हें किसी भी दूसरे क्लर्क की तरह निकाल दूँगा। 90 पाउंड सालाना अच्छी तनख्वाह है, और मैं तुमसे अपने पैसे का पूरा मूल्य वसूलना चाहता हूँ; यह भी याद रखना कि मेरे यहाँ सब कुछ व्यावहारिक है—व्यवहारिक आदतें, भावनाएँ और विचार मुझे सबसे अच्छे लगते हैं। समझे?"

"कुछ हद तक," मैंने उत्तर दिया। "मेरा मानना है कि आपका मतलब यह है कि मुझे अपनी मजदूरी के लिए काम करना है; आपसे किसी प्रकार की कृपा की अपेक्षा नहीं करनी है, और अपनी कमाई के अलावा किसी भी सहायता के लिए आप पर निर्भर नहीं रहना है; यह मुझे बिल्कुल ठीक लगता है, और इन्हीं शर्तों पर मैं आपका क्लर्क बनने के लिए सहमत हूँ।"

मैं मुड़कर खिड़की की ओर चल पड़ा; इस बार मैंने उसका चेहरा देखकर उसकी राय जानने की कोशिश नहीं की: उसकी राय क्या थी, यह मुझे नहीं पता था, और न ही मुझे उस समय इसकी परवाह थी। कुछ मिनटों की चुप्पी के बाद उसने फिर बोलना शुरू किया: —

"शायद आप क्रिम्सवर्थ हॉल में अपार्टमेंट की व्यवस्था की उम्मीद कर रहे हैं और मेरे साथ गाड़ी में आना-जाना चाहते हैं। लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह व्यवस्था मेरे लिए बहुत असुविधाजनक होगी। मैं अपनी गाड़ी में एक सीट खाली रखना पसंद करता हूँ ताकि व्यापारिक कारणों से मैं जिसे एक-दो रातों के लिए हॉल में लाना चाहूँ, वह आ सके। आप X — — में रहने की व्यवस्था ढूँढ़ लें।"

खिड़की से बाहर निकलकर मैं वापस चूल्हे की ओर चल पड़ा।

"बेशक मैं X—— में रहने की जगह ढूंढूंगा," मैंने जवाब दिया। "क्रिम्सवर्थ हॉल में रहना भी मुझे ठीक नहीं लगेगा।"

मेरी आवाज़ धीमी थी। मैं हमेशा धीमी आवाज़ में ही बोलता हूँ। फिर भी मिस्टर क्रिम्सवर्थ की नीली आँखें गुस्से से लाल हो गईं; उन्होंने अपना बदला बड़े अजीब तरीके से लिया। मेरी ओर मुड़कर उन्होंने सीधे-सीधे कहा—

"मुझे लगता है कि आप काफी गरीब हैं; आप अपनी तिमाही की तनख्वाह मिलने तक कैसे गुजारा करेंगे?"

मैंने कहा, "मैं आगे बढ़ूंगा।"

“तुम जीने की उम्मीद कैसे करते हो?” उसने ऊँची आवाज़ में दोहराया।

"जितना संभव हो सकेगा, श्री क्रिम्सवर्थ।"

“कर्ज लेना आपके लिए खतरनाक साबित हो सकता है! बस इतना ही,” उसने जवाब दिया। “जहाँ तक मुझे पता है, आपके कुछ खर्चीले और अभिजात्य स्वभाव हो सकते हैं: अगर हैं, तो उन्हें छोड़ दें; मैं यहाँ इस तरह की कोई भी बात बर्दाश्त नहीं करता, और चाहे आप पर कितना भी कर्ज क्यों न हो, मैं आपको एक शिलिंग भी अतिरिक्त नहीं दूंगा – इस बात का ध्यान रखें।”

"जी हां, श्री क्रिम्सवर्थ, आपको पता चलेगा कि मेरी याददाश्त अच्छी है।"

मैंने और कुछ नहीं कहा। मुझे नहीं लगा कि अभी ज्यादा बातचीत का समय आया है। मुझे सहज रूप से महसूस हुआ कि एडवर्ड जैसे व्यक्ति के साथ बार-बार अपना गुस्सा दिखाना मूर्खता होगी। मैंने मन ही मन कहा, “मैं अपना प्याला इस लगातार टपकते पानी के नीचे रख दूंगी; यह वहीं स्थिर और शांत रहेगा; जब भर जाएगा, तो अपने आप छलक जाएगा – तब तक धैर्य रखो। दो बातें निश्चित हैं। मैं श्री क्रिम्सवर्थ द्वारा दिए गए काम को करने में सक्षम हूं; मैं ईमानदारी से अपनी मजदूरी कमा सकती हूं, और वह मजदूरी मेरे जीवनयापन के लिए पर्याप्त है। जहां तक मेरे भाई के मेरे प्रति एक अभिमानी, कठोर स्वामी जैसा व्यवहार करने की बात है, गलती उसकी है, मेरी नहीं; और क्या उसका अन्याय, उसकी दुर्भावना मुझे मेरे चुने हुए मार्ग से तुरंत हटा देगी? नहीं; कम से कम, भटकने से पहले, मैं इतना आगे बढ़ जाऊंगी कि देख सकूं कि मेरा करियर किस ओर जाता है। अभी तो मैं केवल प्रवेश द्वार पर ही हूं – एक संकरा द्वार; इसका अंत अच्छा होना चाहिए।” जब मैं इस प्रकार तर्क कर रहा था, तभी श्री क्रिम्सवर्थ ने घंटी बजाई; उनका पहला क्लर्क, जिसे हमारी बैठक से पहले ही बर्खास्त कर दिया गया था, वापस अंदर आ गया।

उन्होंने कहा, "श्रीमान स्टाईटन, श्री विलियम को वॉस ब्रदर्स के पत्र दिखाइए और उन्हें उत्तरों की अंग्रेजी प्रतियां दे दीजिए; वे उनका अनुवाद कर देंगे।"

लगभग पैंतीस वर्ष के श्री स्टाईटन, जिनका चेहरा एक साथ धूर्त और गंभीर था, ने इस आदेश का पालन करने में तत्परता दिखाई; उन्होंने पत्र मेज पर रख दिए, और मैं

तुरंत उस पर बैठ गया और अंग्रेजी उत्तरों का जर्मन में अनुवाद करने में जुट गया। अपनी आजीविका कमाने के इस पहले प्रयास से मुझे तीव्र आनंद का अनुभव हुआ— एक ऐसा आनंद जो कार्यपालक की उपस्थिति से न तो कमज़ोर हुआ और न ही दूषित हुआ, जो कुछ देर तक खड़े होकर मुझे लिखते हुए देखता रहा। मुझे लगा कि वह मेरे चरित्र को परखने की कोशिश कर रहा है, लेकिन मैं उसकी जांच से उतना ही सुरक्षित महसूस कर रहा था मानो मैंने टोपी पहन रखी हो— या यूं कहें कि मैंने उसे अपना चेहरा इस आत्मविश्वास से दिखाया जैसे कोई अनपढ़ व्यक्ति को ग्रीक में लिखा पत्र दिखाता है; वह रेखाएं देख सकता है, अक्षरों को पहचान सकता है, लेकिन वह उनका अर्थ नहीं समझ सकता; मेरा स्वभाव उसका स्वभाव नहीं था, और उसके लिए ये संकेत किसी अनजान भाषा के शब्दों के समान थे। कुछ ही देर में वह अचानक मुड़ गया, मानो चकित होकर, और लेखा-गृह से चला गया; वह उस दिन केवल दो बार ही लौटा; हर बार जब वह ब्रांडी और पानी का एक गिलास मिलाकर पीता, तो वह चिमनी के एक तरफ की अलमारी से वह सामग्री निकालता; मेरे अनुवादों पर एक नज़र डालने के बाद - वह फ्रेंच और जर्मन दोनों पढ़ सकता था - वह चुपचाप बाहर चला जाता।

अध्याय III.

मैंने एडवर्ड के दूसरे क्लर्क के रूप में निष्ठापूर्वक, समय की पाबंदी के साथ और लगन से उनकी सेवा की। मुझे जो भी काम सौंपा गया, उसे मैंने पूरी क्षमता और दृढ़ संकल्प के साथ निभाया। श्री क्रिम्सवर्थ हर कमी पर पैनी नजर रखते थे, लेकिन उन्हें कोई कमी नहीं मिली; उन्होंने अपने चहेते और मुखिया टिमोथी स्टाइटन को भी

निगरानी के लिए लगा दिया। टिमोथी नाकाम रहे; मैं उनकी तरह ही सटीक था, बल्कि उनसे भी तेज था। श्री क्रिम्सवर्थ ने मुझसे मेरे रहन-सहन के बारे में पूछा, कि क्या मुझ पर कोई कर्ज है - नहीं, मकान मालकिन के साथ मेरा हिसाब-किताब हमेशा साफ-सुथरा था। मैंने एक छोटा सा कमरा किराए पर लिया था, जिसका किराया मैंने अपनी सीमित धनराशि से चुकाया - यह मेरे ईटन की जेब खर्च की बचत थी; क्योंकि आर्थिक सहायता मांगना मुझे हमेशा से नापसंद था, इसलिए मैंने बचपन से ही संयम बरतने की आदत डाल ली थी; मैं अपने मासिक भत्ते को बड़ी सावधानी से बचाकर रखता था, ताकि भविष्य में किसी आपात स्थिति में मुझे अतिरिक्त सहायता मांगने की नौबत न आए। मुझे याद है कि उस समय कई लोग मुझे कंजूस कहते थे, और मैं इस निंदा के साथ यह तसल्ली भी देता था - अभी गलत समझा जाना बेहतर है बजाय इसके कि बाद में ठुकरा दिया जाए। आज मुझे मेरा इनाम मिल गया; इससे पहले भी मुझे यह इनाम मिल चुका था, जब अपने चिढ़े चाचाओं से विदा लेते समय उनमें से एक ने मेरे सामने मेज पर 5 पाउंड का नोट फेंक दिया था, जिसे मैं वहीं छोड़कर चला गया था, यह कहते हुए कि मेरे यात्रा खर्च का पहले से ही इंतजाम हो चुका है। श्री क्रिम्सवर्थ ने टिम को यह पता लगाने के लिए भेजा कि क्या मेरी मकान मालकिन को मेरे नैतिक आचरण के बारे में कोई शिकायत है; उसने जवाब दिया कि वह मानती है कि मैं बहुत धार्मिक व्यक्ति हूँ, और बदले में टिम से पूछा कि क्या उसे लगता है कि मेरा कभी चर्च जाने का इरादा है; क्योंकि, उसने कहा, उसके घर में युवा पादरी रह चुके हैं जो स्थिरता और शांति के मामले में मेरे बराबर नहीं थे। टिम स्वयं भी "एक धार्मिक व्यक्ति" था; दरअसल, वह एक पक्के मेथोडिस्ट थे, लेकिन (यह समझना चाहिए) इससे उनमें एक पक्के बदमाश होने की प्रवृत्ति नहीं रुकी, और मेरी धार्मिकता के बारे में सुनकर वे काफी परेशान हो गए। जब उन्होंने यह बात मिस्टर क्रिम्सवर्थ को बताई, तो उस सज्जन ने, जो स्वयं किसी पूजा स्थल पर नहीं जाते थे और धन के सिवा किसी ईश्वर को नहीं मानते थे, इस जानकारी को मेरे शांत स्वभाव पर हमला करने के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। उन्होंने छुप-छुपकर ताने मारने शुरू कर दिए, जिनका मतलब मुझे पहले समझ नहीं आया, जब तक कि मेरी मकान मालकिन ने मिस्टर स्टीटन के साथ हुई बातचीत के बारे में नहीं बताया; इससे मुझे सब समझ आ गया; इसके बाद मैं पूरी तैयारी के साथ लेखा-जोखा कार्यालय गया, और जब मिल मालिक ने अगली बार मुझ पर अपमानजनक व्यंग्य किए, तो मैंने उन्हें बेपरवाही

से सह लिया। जल्द ही वह एक मूर्ति पर अपने ताने बर्बाद करते-करते थक गए, लेकिन उन्होंने तीर फेंके नहीं - उन्होंने उन्हें बस अपने तरकश में शांत रखा।

एक बार क्लर्कशिप के दौरान मुझे क्रिम्सवर्थ हॉल में एक निमंत्रण मिला; यह मास्टर के जन्मदिन के सम्मान में आयोजित एक भव्य पार्टी के अवसर पर था; वे हमेशा से ही ऐसे जन्मदिनों पर अपने क्लर्कों को आमंत्रित करते थे, और मुझे अनदेखा नहीं कर सकते थे; हालाँकि, मुझे पूरी तरह से पृष्ठभूमि में रखा गया था। श्रीमती क्रिम्सवर्थ, जो सैटिन और लेस के सुरुचिपूर्ण परिधानों में सजी-धजी, युवावस्था और स्वास्थ्य से भरपूर थीं, ने मुझे केवल एक दूर की ओर इशारा करके ही ध्यान दिया; क्रिम्सवर्थ ने तो मुझसे कभी बात ही नहीं की; मुझे उन युवतियों के समूह में से किसी से भी परिचित नहीं कराया गया, जो सफेद जाली और मलमल के चांदी जैसे बादलों में लिपटी हुई, एक लंबे और विशाल कमरे के विपरीत दिशा में मेरे सामने कतार में बैठी थीं; वास्तव में, मैं काफी अलग-थलग था, और दूर से उन चमकती हुई युवतियों को निहारने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था, और जब ऐसे चकाचौंध भरे दृश्य से ऊब जाता, तो कालीन के पैटर्न पर ध्यान केंद्रित कर लेता। मिस्टर क्रिम्सवर्थ कालीन पर खड़े थे, उनकी कोहनी संगमरमर के मेंटलपीस पर टिकी हुई थी, और उनके चारों ओर बहुत सुंदर लड़कियों का एक समूह था, जिनसे वे खुशी-खुशी बातचीत कर रहे थे - इस तरह बैठे हुए मिस्टर क्रिम्सवर्थ ने मेरी ओर देखा; मैं थकी हुई, अकेली, किसी उदास शिक्षक या शिक्षिका की तरह दबी हुई लग रही थी; वे संतुष्ट थे।

नृत्य शुरू हुआ; मुझे किसी मनमोहक और बुद्धिमान लड़की से परिचय कराने का अच्छा अवसर मिलता, और यह दिखाने की स्वतंत्रता और मौका मिलता कि मैं सामाजिक मेलजोल का आनंद महसूस कर सकता हूँ और उसे दूसरों तक पहुँचा सकता हूँ—संक्षेप में, मैं कोई वस्तु या फर्नीचर का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक क्रियाशील, विचारशील, सजीव व्यक्ति हूँ। कई मुस्कुराते चेहरे और सुंदर आकृतियाँ मेरे सामने से गुज़रीं, लेकिन मुस्कानें दूसरों की आँखों में थीं, उन आकृतियों को मेरे हाथों के अलावा दूसरे हाथों ने सहारा दिया था। मैं उत्तेजित होकर मुँह फेर लिया, नर्तकियों को छोड़कर ओक की लकड़ी से बने भोजन कक्ष में चला गया। इस घर में किसी भी जीवित प्राणी के प्रति मेरे मन में कोई सहानुभूति नहीं थी; मैंने अपनी माँ की तस्वीर ढूँढी और मुझे मिल गई। मैंने स्टैंड से एक मोमबत्ती उठाई और उसे ऊपर उठाया। मैंने उसे देर तक, गंभीरता से देखा; मेरा हृदय उस छवि से भर गया। मैंने

महसूस किया कि मेरी माँ ने मुझे अपने चेहरे की बहुत सी विशेषताएँ और चेहरे के अंश विरासत में दिए थे—उनका माथा, उनकी आँखें, उनका रंग। अहंकारी मनुष्यों को किसी भी सामान्य सुंदरता से उतना आनंद नहीं मिलता जितना कि उनकी स्वयं की कोमल और परिष्कृत छवि से। इसी कारण पिता अपनी बेटियों के चेहरे की बनावट को देखकर संतुष्टि से भर जाते हैं, जहाँ अक्सर उनकी अपनी शक्ल, रंग की कोमलता और आकृति की नाजुकता से खूबसूरती से जुड़ी हुई पाई जाती है। मैं सोच ही रहा था कि वह तस्वीर, जो मुझे इतनी दिलचस्प लगती है, किसी निष्पक्ष दर्शक को कैसी लगेगी, तभी मेरे ठीक पीछे से एक आवाज आई —

"हम्म! इस चेहरे में कुछ तो समझदारी झलकती है।"

मैंने मुड़कर देखा; मेरे बगल में एक लंबा, जवान आदमी खड़ा था, हालाँकि शायद मुझसे पाँच या छह साल बड़ा था—अन्य दृष्टियों से वह आम आदमी से बिल्कुल अलग था; हालाँकि अभी, क्योंकि मैं उसका विस्तृत चित्र नहीं बनाना चाहता, पाठक को मेरे द्वारा प्रस्तुत आकृति से ही संतोष करना होगा; उस क्षण मैंने उसका बस इतना ही रूप देखा था: मैंने उसकी भौहों या आँखों का रंग नहीं देखा; मैंने उसका कद और शरीर की रूपरेखा देखी; मैंने उसकी सलीके से बनी हुई टेढ़ी नाक भी देखी; ये अवलोकन, संख्या में कम और सामान्य प्रकृति के (आखिरी को छोड़कर), पर्याप्त थे, क्योंकि इनसे मुझे उसे पहचानने में मदद मिली।

"शुभ संध्या, श्रीमान हन्सडेन," मैंने झुककर धीरे से कहा, और फिर, अपनी शर्मीली प्रवृत्ति के कारण, मैं वहाँ से दूर जाने लगा—और क्यों? क्योंकि श्रीमान हन्सडेन एक निर्माता और चक्की मालिक थे, और मैं केवल एक क्लर्क था, और मेरी सहज प्रवृत्ति ने मुझे अपने वरिष्ठ अधिकारी से दूर रहने के लिए प्रेरित किया। मैंने हन्सडेन को अक्सर बिगबेन क्लोज़ में देखा था, जहाँ वे लगभग हर हफ्ते श्री क्रिम्सवर्थ के साथ व्यापार करने आते थे, लेकिन मैंने उनसे कभी बात नहीं की थी, न ही उन्होंने मुझसे, और मेरे मन में उनके प्रति एक प्रकार की अनचाही नाराजगी थी, क्योंकि वे एक से अधिक बार एडवर्ड द्वारा मेरे प्रति किए गए अपमान के मौन साक्षी रहे थे। मुझे पूरा विश्वास था कि वे मुझे केवल एक कमजोर और दयनीय व्यक्ति ही समझते होंगे, इसलिए अब मैं उनकी उपस्थिति से बचने और उनसे बातचीत न करने का प्रयास करता था।

"तुम कहाँ जा रहे हो?" उसने पूछा, जब मैं एक तरफ हट गया। मैंने पहले ही

ध्यान दिया था कि श्री हन्सडेन बोलने के अचानक और अटपटे तरीके अपनाते थे, और मैंने मन ही मन अजीब तरह से कहा—

"उसे लगता है कि वह एक बेचारे क्लर्क से जैसा चाहे वैसा बोल सकता है; लेकिन शायद मेरा मिजाज उतना लचीला नहीं है जितना वह समझता है, और उसकी यह बेपरवाही मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं है।"

मैंने विनम्रता से कम और उदासीनता से भरा एक संक्षिप्त उत्तर दिया और आगे बढ़ने लगा। वह शांत भाव से मेरे रास्ते में आकर खड़ा हो गया।

“थोड़ी देर यहीं रुकिए,” उसने कहा: “डांसिंग रूम में बहुत गर्मी है; इसके अलावा, आप डांस नहीं करतीं; आज रात आपको कोई पार्टनर नहीं मिला है।”

वह सही था, और जब वह बोल रहा था तो न तो उसकी नज़र, न ही लहजा, न ही उसका व्यवहार मुझे बुरा लगा; मेरा आत्मसम्मान संतुष्ट हो गया; उसने मुझसे किसी पर एहसान जताने के लिए बात नहीं की थी, बल्कि ठंडे भोजन कक्ष में जलपान करने के बाद, उसे कुछ देर के लिए किसी से बात करने की ज़रूरत थी। मुझे इस तरह का व्यवहार पसंद नहीं है, लेकिन मुझे अच्छा लगता है इसलिए मैं रुका रहा।

“यह एक अच्छी तस्वीर है,” उन्होंने चित्र का जिक्र करते हुए अपनी बात जारी रखी।

मैंने पूछा, "क्या आपको चेहरा सुंदर लगता है?"

“सुंदर! नहीं—धंसी हुई आँखों और पिचके गालों के साथ यह सुंदर कैसे हो सकती है? लेकिन यह अनोखी है; ऐसा लगता है जैसे सोचती हो। अगर वह महिला जीवित होती, तो आप उससे पहनावे, मुलाकातों और तारीफों के अलावा अन्य विषयों पर भी बात कर सकते थे।”

मैं उससे सहमत था, लेकिन मैंने ऐसा कहा नहीं। वह बोलता रहा।

“ऐसा नहीं है कि मैं उस तरह के सिर की प्रशंसा करता हूँ; उसमें व्यक्तित्व और शक्ति की कमी है; उस मुँह में बहुत अधिक संवेदनशीलता है (उसने होंठ सिकोड़ते हुए इस तरह कहा); इसके अलावा, उसके माथे पर अभिजात वर्ग लिखा है और उसके चेहरे की बनावट में स्पष्ट रूप से झलकता है; मुझे तुम्हारे अभिजात वर्ग से नफरत है।”

"तो क्या आपको लगता है, श्री हन्सडेन, कि कुलीन वंश को विशिष्ट शारीरिक बनावट और चेहरे की विशेषताओं में पढ़ा जा सकता है?"

“कुलीन वंश को भाड़ में जाने दो! इसमें क्या संदेह है कि आपके रईसों की ‘विशेष

शारीरिक बनावट और चेहरे की बनावट' उतनी ही विशिष्ट हो सकती है जितनी हमारी—यानी ग्रामीण व्यापारियों की? लेकिन सबसे अच्छी कौन सी है? उनकी तो बिल्कुल नहीं। जहाँ तक उनकी महिलाओं की बात है, मामला थोड़ा अलग है: वे बचपन से ही सुंदरता को निखारती हैं, और देखभाल और प्रशिक्षण से उस क्षेत्र में एक निश्चित स्तर की उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती हैं, ठीक वैसे ही जैसे पूर्वी देशों की अप्सराएँ करती हैं। फिर भी यह श्रेष्ठता भी संदिग्ध है। उस तस्वीर में दिख रही आकृति की तुलना श्रीमती एडवर्ड क्रिम्सवर्थ से कीजिए—कौन सी ज़्यादा सुंदर है?"

मैंने धीमी आवाज़ में जवाब दिया: "श्री हन्सडेन, अपनी तुलना श्री एडवर्ड क्रिम्सवर्थ से कीजिए।"

"ओह, क्रिम्सवर्थ मुझसे ज़्यादा भरा-पूरा है, मैं जानती हूँ, इसके अलावा उसकी नाक सीधी है, भौंहें धनुषाकार हैं, और भी बहुत कुछ; लेकिन ये खूबियाँ—अगर इन्हें खूबियाँ कहा जा सकता है—उसे अपनी माँ, जो एक कुलीन महिला थी, से नहीं, बल्कि अपने पिता, बूढ़े क्रिम्सवर्थ से विरासत में मिली हैं, जिनके बारे में मेरे पिता कहते हैं कि वे एक ऐसे कुलीन रंगसाज़ थे जो नील को बर्तन में भरते थे, फिर भी तीनों राइडिंग्स में सबसे सुंदर आदमी थे। विलियम, तुम अपने परिवार के कुलीन हो, और तुम अपने साधारण भाई से कहीं ज़्यादा अच्छे इंसान हो।"

श्री हन्सडेन के सीधे-सादे बोलने के अंदाज में कुछ ऐसा था जो मुझे अप्रिय लगने के बजाय सुखद लगा, क्योंकि इससे मुझे सहजता महसूस हुई। मैंने रुचि के साथ बातचीत जारी रखी।

"आपको कैसे पता चला कि मैं मिस्टर क्रिम्सवर्थ का भाई हूँ? मुझे लगा था कि आप और बाकी सब लोग मुझे सिर्फ एक मामूली क्लर्क के रूप में ही देखते हैं।"

"खैर, हम ऐसा ही करते हैं; और तुम एक मामूली क्लर्क के सिवा कुछ नहीं हो? तुम क्रिम्सवर्थ का काम करते हो, और वह तुम्हें मजदूरी देता है— वो भी बहुत ही घटिया मजदूरी।"

मैं चुप रहा। हन्सडन की भाषा अब अभद्रता की सीमा पर पहुँच गई थी, फिर भी उनके व्यवहार से मुझे जरा भी आपत्ति नहीं हुई - बल्कि इससे मेरी जिज्ञासा और बढ़ गई; मैं चाहता था कि वे आगे बोलते रहें, और थोड़ी देर बाद उन्होंने बोलना शुरू कर दिया।

उन्होंने कहा, "यह दुनिया एक बेतुकी दुनिया है।"

“ऐसा क्यों, श्रीमान हन्सडेन?”

"मुझे आश्चर्य है कि आपने यह सवाल पूछा: आप स्वयं उस बेतुकेपन का एक मजबूत प्रमाण हैं जिसका मैं जिक्र कर रहा हूं।"

मैंने ठान लिया था कि उसे बिना मेरे दबाव डाले खुद ही अपनी बात स्पष्ट करनी चाहिए - इसलिए मैंने फिर से चुप्पी साध ली।

“क्या आपका इरादा कारीगर बनने का है?” उन्होंने थोड़ी देर बाद पूछा।

"तीन महीने पहले मेरा यही गंभीर इरादा था।"

“हम्म! तुम तो और भी मूर्ख हो – तुम तो किसी व्यापारी जैसे दिखते हो! तुम्हारा चेहरा कितना व्यावहारिक और व्यावसायिक है!”

"मेरा चेहरा वैसा ही है जैसा भगवान ने बनाया है, श्री हन्सडेन।"

“भगवान ने न तो तुम्हारा चेहरा बनाया है और न ही तुम्हारा दिमाग X के लिए — तुम्हारी ये आदर्शवादिता, तुलना, आत्मसम्मान, कर्तव्यनिष्ठा जैसी बातें यहाँ क्या काम आ सकती हैं? लेकिन अगर तुम्हें बिगबेन क्लोज़ पसंद है, तो वहीं रहो; ये तुम्हारा निजी मामला है, मेरा नहीं।”

"शायद मेरे पास कोई विकल्प नहीं है।"

खैर, मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है—तुम क्या करते हो या कहाँ जाते हो, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा; लेकिन अब मैं ठीक हूँ—मैं फिर से नाचना चाहता हूँ; और मैंने सोफे के कोने में अपनी माँ के पास बैठी एक खूबसूरत लड़की को देखा; देखो, मैं उसे झटपट अपना साथी बना लूँ! वहाँ वैडी—सैम वैडी उसे रिझाने की कोशिश कर रहा है; क्या मैं उसे बीच से नहीं हटा दूँ?

और श्री हन्सडेन शान से चले गए। मैंने खुले तह वाले दरवाजों से उन्हें देखा; वे वैडी से आगे निकल गए, उस सुंदर लड़की का हाथ मांगा और विजयी भाव से उसे अपने साथ ले गए। वह एक लंबी, सुगठित, आकर्षक पोशाक वाली युवती थी, जो श्रीमती ई. क्रिम्सवर्थ की शैली में थी; हन्सडेन ने पूरे जोश के साथ उसे वाल्ट्ज नृत्य कराया; वे शाम भर उसके साथ रहे, और मैंने उसके जीवंत और संतुष्ट चेहरे को देखकर समझ लिया कि वे उसे पूरी तरह से प्रसन्न करने में सफल रहे थे। माँ भी (पगड़ी पहने एक हष्ट-पुष्ट महिला - श्रीमती लप्टन) बहुत प्रसन्न लग रही थीं; शायद भविष्यसूचक दृष्टियों ने उनके अंतर्मन को प्रसन्न कर दिया था। हन्सडेन परिवार एक प्रतिष्ठित परिवार था; यॉर्क (मेरे दिवंगत वार्ताकार का यही नाम था) भले ही जन्मजात

लाभों को तुच्छ समझता हो, लेकिन अपने मन में वह भली-भांति जानता था और अपने प्राचीन, भले ही उच्च न हो, वंश के उस गौरव की सराहना करता था जो उसे X जैसे छोटे से कस्बे में प्राप्त था, जिसके निवासियों के बारे में यह कहावत प्रचलित थी कि हज़ार में से एक भी अपने दादा को नहीं जानता था। इसके अलावा, हन्सडेन परिवार, जो कभी समृद्ध था, अब भी स्वतंत्र था; और यह भी कहा जाता था कि यॉर्क अपने व्यापारिक सफलता से अपने परिवार की आंशिक रूप से क्षीण हो चुकी संपत्ति को फिर से समृद्ध करने की राह पर था। इन परिस्थितियों को देखते हुए, श्रीमती लप्टन के चौड़े चेहरे पर संतुष्टि की मुस्कान होना स्वाभाविक था, जब वह हन्सडेन वुड के उत्तराधिकारी को अपनी प्रिय सारा मार्था की चापलूसी में तल्लीन देखतीं। हालाँकि, मेरी अवलोकन क्षमता कम होने के कारण अधिक सटीक होने की संभावना थी, और मैंने शीघ्र ही देखा कि मातृत्व की आत्म-प्रशंसा के लिए आधार वास्तव में बहुत कम थे; मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सज्जन दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए अधिक इच्छुक थे, न कि उनसे कोई प्रभाव ग्रहण करने के लिए। मुझे नहीं पता कि श्री हन्सडेन में ऐसा क्या था कि जब मैं उन्हें देख रहा था (मेरे पास करने के लिए कुछ और नहीं था), तो मुझे बार-बार एक विदेशी होने का आभास होता था। रूप और चेहरे से उन्हें अंग्रेज कहा जा सकता था, हालांकि उनमें कुछ फ्रांसीसीपन भी झलकता था; लेकिन उनमें अंग्रेजों जैसी शर्म नहीं थी: उन्होंने कहीं न कहीं, किसी न किसी तरह, खुद को सहज महसूस कराने की कला सीख ली थी, और किसी भी संकीर्ण झिझक को अपने और अपनी सुविधा या आनंद के बीच बाधा नहीं बनने दिया था। वे दिखावटी शिष्टाचार नहीं अपनाते थे, फिर भी उन्हें अशिष्ट नहीं कहा जा सकता था; वे अजीब नहीं थे - कोई विचित्रता नहीं - फिर भी वे किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते-जुलते नहीं थे जिसे मैंने पहले कभी देखा हो; उनका सामान्य व्यवहार आत्म-संतुष्टि का पूर्ण और सर्वोपरि संकेत देता था; फिर भी, कभी-कभी, उनके चेहरे पर एक अवर्णनीय उदासी ग्रहण की तरह छा जाती थी, और मुझे ऐसा लगता था जैसे उन्हें अचानक अपने बारे में, अपने शब्दों और कार्यों के बारे में एक तीव्र आंतरिक संदेह हो गया हो - अपने जीवन या अपनी सामाजिक स्थिति, अपने भविष्य की संभावनाओं या अपनी मानसिक उपलब्धियों के बारे में एक तीव्र असंतोष - मुझे नहीं पता कि किस बारे में। शायद अंततः यह महज़ एक चिड़चिड़ी सनक ही हो।

अध्याय IV.

कोई भी व्यक्ति यह स्वीकार करना पसंद नहीं करता कि उसने अपने पेशे के चुनाव में गलती की है, और हर सच्चा व्यक्ति, हवा और लहरों के विपरीत लंबे समय तक संघर्ष करता है, इससे पहले कि वह यह कह दे, "मैं हार गया हूँ!" और निष्क्रिय रूप से वापस किनारे पर आ जाए। X में अपने निवास के पहले सप्ताह से ही मुझे अपना काम थकाऊ लगने लगा। काम अपने आप में—व्यापारिक पत्रों की नकल और अनुवाद करना—काफी नीरस और उबाऊ था, लेकिन अगर बस इतना ही होता, तो मैं इस झंझट को लंबे समय तक सहन कर लेता; मैं अधीर स्वभाव का नहीं हूँ, और अपनी आजीविका कमाने और खुद को और दूसरों को व्यापारी बनने के अपने संकल्प को सही ठहराने की दोहरी इच्छा से प्रेरित होकर, मैं अपनी सर्वोत्तम क्षमताओं के क्षरण और जकड़न को चुपचाप सहन कर लेता; मैं मन ही मन भी यह नहीं कहता कि मुझे स्वतंत्रता की लालसा है; बिगबेन क्लोज़ की घुटन, धुएँ, नीरसता और आनंदहीन कोलाहल में दबी मेरी हर आह में मेरे हृदय की पीड़ा और मुक्त एवं ताज़गी भरे दृश्यों की तीव्र इच्छा का सार समाहित हो जाना चाहिए था; मुझे श्रीमती किंग के आवास में अपने छोटे से शयनकक्ष में कर्तव्य की प्रतिमा, दृढ़ता की प्रतिमा स्थापित कर लेनी चाहिए थी, और ये दोनों मेरे घरेलू देवता होने चाहिए थे, जिनसे मेरी प्रिय, मेरी गुप्त रूप से पोषित, कोमल और शक्तिशाली कल्पना, मुझे कभी भी कोमलता या बल से अलग न कर पाती। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई; मेरे और मेरे मालिक के बीच पनपी शत्रुता प्रतिदिन गहरी जड़ें जमाती और घना अंधकार फैलाती जा रही थी, जिसने मुझे जीवन की धूप की हर झलक से वंचित कर दिया; और मैं स्वयं को एक कुएँ की कीचड़ भरी दीवारों से नम अंधेरे में उगने वाले पौधे की तरह महसूस करने

लगी।

घृणा ही एकमात्र ऐसा शब्द है जो एडवर्ड क्रिम्सवर्थ के मेरे प्रति भाव को व्यक्त कर सकता है—यह एक ऐसा भाव था जो काफी हद तक अनैच्छिक था और मेरी हर छोटी से छोटी हरकत, नज़र या शब्द से भड़क उठता था। मेरा दक्षिणी लहजा उसे परेशान करता था; मेरी भाषा में झलकने वाली शिक्षा का स्तर उसे चिढ़ाता था; मेरी समयबद्धता, परिश्रम और सटीकता ने उसकी नापसंदगी को और भी गहरा बना दिया और उसे ईर्ष्या का तीव्र स्वाद दे दिया; उसे डर था कि मैं भी एक दिन सफल व्यापारी बन जाऊँगा। अगर मैं किसी भी क्षेत्र में उससे कमतर होता, तो वह मुझसे इतनी घृणा नहीं करता, लेकिन मैं वह सब जानता था जो वह जानता था, और इससे भी बुरी बात यह थी कि उसे संदेह था कि मैं उस बौद्धिक संपदा पर चुप्पी साधे हुए हूँ जिसमें उसका कोई हिस्सा नहीं है। अगर वह मुझे एक बार भी हास्यास्पद या अपमानजनक स्थिति में डाल पाता, तो वह मुझे बहुत कुछ माफ कर देता, लेकिन मैं तीन गुणों से सुरक्षित था—सावधानी, चतुराई और अवलोकन। एडवर्ड की धूर्तता चाहे कितनी भी छुप-छुप कर ताक-झांक करती हो, वह मेरे इन स्वाभाविक रक्षकों की पैनी निगाहों को कभी चकमा नहीं दे सकी। दिन-प्रतिदिन उसकी दुर्भावना मेरी चतुराई पर नजर रखती रही, आशा करती रही कि वह सो जाएगी, और उस पर सांप की तरह झपटने की तैयारी करती रही; लेकिन सच्ची चतुराई कभी नहीं सोती।

मुझे अपनी पहली तिमाही की तनख्वाह मिल चुकी थी और मैं अपने कमरे की ओर लौट रहा था। मेरे मन में यह सुखद अहसास था कि मुझे तनख्वाह देने वाले मालिक को मेरी उस मेहनत से कमाई गई थोड़ी सी रकम का भी बहुत अफसोस था (मैंने श्री क्रिम्सवर्थ को अपना भाई मानना तो कब का छोड़ दिया था - वह एक कठोर और निर्दयी मालिक थे; वह एक निर्दयी तानाशाह बनना चाहते थे, बस यही बात थी)। मेरे मन में एक जैसे, लेकिन तीव्र विचार उमड़ रहे थे; मेरे भीतर दो आवाजें गूंज रही थीं; बार-बार वही नीरस वाक्य दोहरा रही थीं। एक आवाज: "विलियम, तुम्हारा जीवन असहनीय है।" दूसरी: "तुम इसे बदलने के लिए क्या कर सकते हो?" मैं तेजी से चल रहा था, क्योंकि जनवरी की वह रात बहुत ठंडी और बर्फीली थी; जैसे ही मैं अपने कमरे के पास पहुँचा, मैंने अपने हालातों की सामान्य स्थिति से हटकर इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि क्या मेरी आग बुझी होगी; बैठक के कमरे की खिड़की की ओर देखते हुए, मुझे कोई लाल चमकती रोशनी नहीं दिखाई दी।

मैंने कहा, "उस नीच नौकरानी ने हमेशा की तरह इसकी उपेक्षा की है, और अगर मैं अंदर जाऊँगी तो मुझे केवल फीकी राख ही दिखाई देगी; आज रात तारों भरी है - मैं थोड़ा और आगे चलूँगी।"

वह एक सुहावनी रात थी, और सड़कें सूखी और यहाँ तक कि साफ भी थीं; पैरिश चर्च के टावर के पास चाँदनी की एक अर्धचंद्राकार आकृति दिखाई दे रही थी, और आकाश के सभी कोनों में सैकड़ों तारे तेज़ी से चमक रहे थे।

अनजाने में ही मैंने अपना रास्ता ग्रामीण इलाके की ओर मोड़ दिया; मैं ग्रोव-स्ट्रीट में पहुँच गया था, और एक उपनगरीय घर के चारों ओर, किनारे पर धुंधले पेड़ों को देखकर मुझे आनंद आने लगा था, तभी इस गली में साफ-सुथरे आवासीय घरों के सामने बने छोटे बगीचों में से एक के लोहे के गेट पर झुके हुए एक व्यक्ति ने मुझे संबोधित किया, जब मैं तेजी से कदमों से आगे बढ़ रहा था।

“इतनी जल्दी किस बात की? लूत ने भी सदोम को ऐसे ही छोड़ा होगा, जब उसे उम्मीद थी कि जलते हुए पीतल के बादलों से आग बरसेगी।”

मैं अचानक रुक गया और वक्ता की ओर देखा। मुझे सिगार की खुशबू आई और एक सिगार की लाल चिंगारी दिखाई दी; साथ ही, एक आदमी की धुंधली आकृति भी खिड़की के ऊपर से मेरी ओर झुकी हुई दिखाई दी।

“देखो, मैं शाम के समय खेत में ध्यान कर रहा हूँ,” उस प्रेत ने आगे कहा। “भगवान जाने, यह कितना बढ़िया काम है! खासकर इसलिए कि ऊँट की पीठ पर बैठी, हाथों में कंगन और नाक में नथ पहने रेबेका की जगह, भाग्य ने मुझे एक धूसर ट्वीड कफ़न पहने लेखा-जोखा की क्लर्क भेज दी है।” यह आवाज़ मुझे जानी-पहचानी लगी — इसके दूसरे शब्द ने मुझे वक्ता की पहचान करने में मदद की।

“श्री हंसडेन! शुभ संध्या।”

"शुभ संध्या, बिल्कुल! हाँ, लेकिन अगर मैंने पहले बोलने की विनम्रता न दिखाई होती तो आप मुझे बिना पहचाने ही आगे बढ़ जाते।"

"मेरा तुमसे परिचय नहीं था।"

“ये तो एक मशहूर बहाना है! तुम्हें मुझे जानना चाहिए था; मैं तुम्हें जानता था, भले ही तुम भाप के इंजन की तरह आगे बढ़ रहे थे। क्या पुलिस तुम्हारा पीछा कर रही है?”

"यह उनके लिए फायदेमंद नहीं होगा; मैं इतना महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं हूं कि वे मेरी

ओर आकर्षित हों।"

“हाय, बेचारे चरवाहे! हाय रे! कितना अफसोस का विषय है, और तुम्हारी आवाज से तो लगता है कि तुम कितने उदास होगे! लेकिन जब तुम पुलिस से नहीं भाग रहे हो, तो किससे भाग रहे हो? शैतान से?”

इसके विपरीत, मैं उसे पोस्ट करने जा रहा हूँ।

“यह तो अच्छी बात है – आपकी किस्मत अच्छी है: आज मंगलवार शाम है; आज रात डाइनफोर्ड में बाज़ार से कई ठेले और गाड़ियाँ लौट रही हैं; और वह, या उसके कुछ साथी, उन सभी में नियमित रूप से मौजूद रहते हैं; इसलिए, अगर आप मेरे कमरे में आकर आधे घंटे बैठ जाएँ, तो आप उसे आते-जाते आसानी से देख पाएँगे। हालाँकि मुझे लगता है कि आज रात उसे अकेला छोड़ देना ही बेहतर होगा, क्योंकि उसे बहुत सारे ग्राहकों को सेवा देनी होगी; मंगलवार X — — और डाइनफोर्ड में उसका व्यस्त दिन होता है; फिर भी अंदर आ जाइए।”

बोलते-बोलते उसने विकेट खोल दिया।

मैंने पूछा, "क्या आप सचमुच चाहते हैं कि मैं अंदर जाऊं?"

“जैसा आपको ठीक लगे—मैं अकेला हूँ; एक-दो घंटे के लिए आपका साथ मुझे अच्छा लगेगा; लेकिन अगर आप इतना समय नहीं देना चाहते, तो मैं इस पर ज़ोर नहीं डालूँगा। मुझे किसी को भी बोर करना पसंद नहीं है।”

मुझे निमंत्रण स्वीकार करना उतना ही उचित लगा जितना हन्सडेन को देना। मैं फाटक से होकर गुजरा और उसके पीछे-पीछे मुख्य द्वार तक गया, जिसे उसने खोला; वहाँ से हम एक गलियारे से होते हुए उसके बैठक कक्ष में पहुँचे; दरवाजा बंद होने पर उसने मुझे चूल्हे के पास रखी एक कुर्सी की ओर इशारा किया; मैं बैठ गया और चारों ओर नज़र डाली।

यह एक आरामदायक कमरा था, जो एक साथ सुकून भरा और आकर्षक था; चमकदार अंगीठी में असली देहाती आग जल रही थी, लाल, साफ और भरपूर, न कि दक्षिण इंग्लैंड की तरह कोने में ढेर लगे हुए मंद-मंद अंगारे। मेज पर एक छायादार दीपक से नरम, सुखद और समान रोशनी फैल रही थी; फर्नीचर एक युवा कुंवारे के लिए लगभग आलीशान था, जिसमें एक सोफा और दो आरामदायक कुर्सियाँ थीं; शेल्फ के दोनों ओर किताबों की अलमारियाँ थीं; वे अच्छी तरह से सजी हुई थीं और एकदम व्यवस्थित थीं। कमरे की साफ-सफाई मुझे पसंद आई; मुझे अनियमित और

लापरवाह आदतें नापसंद हैं। जो मैंने देखा उससे मैंने निष्कर्ष निकाला कि इस मामले में हन्सडेन के विचार मेरे विचारों से मेल खाते हैं। जब वह बीच की मेज से कुछ पर्चे और पत्रिकाएँ साइडबोर्ड पर रख रहे थे, तब मैंने अपने पास रखी किताबों की अलमारी पर नज़र डाली। फ्रांसीसी और जर्मन रचनाओं का प्रभुत्व था, जिनमें पुराने फ्रांसीसी नाटककार, विविध आधुनिक लेखक जैसे थियर्स, विलेमेन, पॉल डी कॉक, जॉर्ज सैंड, यूजीन सू शामिल थे; जर्मन में गोएथे, शिलर, ज़्शॉके, जीन पॉल रिक्टर; अंग्रेजी में राजनीतिक अर्थशास्त्र पर रचनाएँ थीं। मैंने आगे अध्ययन नहीं किया, क्योंकि श्री हन्सडेन ने स्वयं मेरा ध्यान वापस आकर्षित कर लिया।

"तुम्हें कुछ न कुछ तो मिलेगा," उसने कहा, "क्योंकि इस ठंडी कनाडाई रात में न जाने कितनी दूर चलने के बाद तुम्हें ताज़गी की ज़रूरत तो होगी ही; लेकिन यह ब्रांडी-पानी नहीं होगा, न ही पोर्ट वाइन की बोतल, और न ही शेरी। मेरे पास ऐसा कोई ज़हर नहीं है। मैं खुद राइन वाइन पीता हूँ, और तुम या तो उसे या कॉफ़ी को चुन सकते हो।"

यहाँ भी हन्सडेन मेरे लिए उपयुक्त था: अगर कोई एक आम चलन था जिससे मुझे सबसे ज़्यादा नफ़रत थी, तो वह था शराब और तेज़ वाइन का नियमित सेवन। हालाँकि, मुझे उनकी खट्टी जर्मन शराब पसंद नहीं थी, लेकिन मुझे कॉफ़ी पसंद थी, इसलिए मैंने जवाब दिया—

"मुझे थोड़ी कॉफी दीजिए, मिस्टर हन्सडेन।"

मुझे लगा कि मेरे जवाब से वह खुश हो गए; उन्होंने शायद यह उम्मीद की होगी कि उनके इस स्पष्ट बयान से कि वह मुझे न तो शराब देंगे और न ही कोई और पेय, मुझ पर एक ठंडा असर पड़ेगा; उन्होंने मेरी ओर एक तीखी नज़र डाली, यह जानने के लिए कि मेरी विनम्रता सच्ची थी या केवल दिखावटी शिष्टाचार। मैं मुस्कुराया, क्योंकि मैं उन्हें अच्छी तरह समझ गया था; और, हालांकि मैंने उनकी कर्तव्यनिष्ठ दृढ़ता का सम्मान किया, मुझे उनके अविश्वास पर हंसी भी आई; वह संतुष्ट दिखे, घंटी बजाई और कॉफी मंगाई, जो तुरंत आ गई; अपने लिए, अंगूर का एक गुच्छा और आधा पाइंट खट्टी शराब काफी थी। मेरी कॉफी बहुत अच्छी थी; मैंने उन्हें बताया और उनके तपस्वी भोजन से उत्पन्न हुई दया का भाव व्यक्त किया। उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, और मुझे नहीं लगता कि उन्होंने मेरी बात सुनी भी। उसी क्षण उनके चेहरे पर वही क्षणिक उदासी छा गई जिसका मैंने पहले जिक्र किया था, जिससे उनकी मुस्कान

गायब हो गई और उनकी आंखों की हमेशा की चतुर, व्यंग्यात्मक दृष्टि की जगह एक खोई हुई और अलग-थलग नज़र आ गई। मैंने मौन के इस अंतराल का उपयोग उसके चेहरे की बारीकी से जांच करने में किया। मैंने उसे पहले कभी इतनी बारीकी से नहीं देखा था; और, क्योंकि मेरी दृष्टि बहुत कमज़ोर है, इसलिए मुझे उसकी शक्ल-सूरत का केवल एक धुंधला सा अंदाज़ा ही था; अब गौर करने पर मुझे आश्चर्य हुआ कि उसके चेहरे के हाव-भाव कितने छोटे और यहाँ तक कि स्त्री जैसे थे; उसका लंबा कद, लंबे और काले बाल, उसकी आवाज़ और उसका सामान्य व्यवहार, मुझे किसी शक्तिशाली और विशाल व्यक्ति का आभास देते थे; बिलकुल नहीं: — मेरे अपने चेहरे के हाव-भाव उससे कहीं अधिक कठोर और चौकोर थे। मैंने महसूस किया कि उसके आंतरिक और बाहरी व्यक्तित्व में विरोधाभास होंगे; मतभेद भी होंगे; क्योंकि मुझे संदेह था कि उसकी आत्मा में उसके शरीर की ताकत और मांसपेशियों से कहीं अधिक इच्छाशक्ति और महत्वाकांक्षा थी। शायद, "शारीरिक बनावट" और "मनोबल" की इन असंगतियों में ही उस क्षणिक उदासी का रहस्य छिपा था; वह चाहता तो था लेकिन कर नहीं पा रहा था, और उसका जुझारू मन अपने अधिक नाज़ुक साथी पर तिरस्कार भरी नज़रें गड़ा रहा था। उनकी खूबसूरती के बारे में, मैं इस विषय पर किसी महिला की राय जानना चाहती थी; मुझे ऐसा लगता था कि उनका चेहरा किसी महिला पर वैसा ही प्रभाव डाल सकता है जैसा किसी पुरुष पर किसी आकर्षक और दिलचस्प, भले ही उतना सुंदर न हो, स्त्री का चेहरा डालता है। मैंने उनके काले बालों का ज़िक्र किया है - वे उनके सफेद और चौड़े माथे पर एक तरफ कंघी किए हुए थे; उनके गालों में एक अलग ही ताजगी थी; उनके चेहरे के हाव-भाव कैनवास पर तो अच्छे लगते, लेकिन संगमरमर पर उतने अच्छे नहीं लगते: वे बनावटी थे; व्यक्तित्व ने उन पर अपनी छाप छोड़ी थी; भाव-भंगिमाएं उन्हें अपनी इच्छा से नया रूप देती थीं, और अजीबोगरीब रूपांतरण करती थीं, कभी उन्हें उदास बैल जैसा तो कभी चंचल और शरारती लड़की जैसा बना देती थीं; अक्सर, दोनों रूप आपस में मिल जाते थे, और एक विचित्र, मिश्रित चेहरा बन जाता था।

अपनी खामोशी से शुरुआत करते हुए, उन्होंने बोलना शुरू किया: —

“विलियम! श्रीमती किंग के उन दयनीय कमरों में रहना तुम्हारी कितनी बड़ी मूर्खता है, जबकि तुम ग्रोव स्ट्रीट में कमरे ले सकते थे और मेरी तरह एक बगीचा रख सकते थे!”

मुझे चक्की से बहुत दूर होना चाहिए।

“इसमें क्या बुराई है? दिन में दो-तीन बार वहां जाकर वापस आना आपके लिए अच्छा रहेगा; वैसे भी, क्या आप इतने पुराने ख्यालों के हैं कि आप कभी कोई फूल या हरा पत्ता देखना ही नहीं चाहते?”

मैं कोई जीवाश्म नहीं हूँ।

“तो फिर तुम हो क्या? तुम दिन-रात, सप्ताह-दर-सप्ताह क्रिम्सवर्थ के लेखा-गृह में उस डेस्क पर बैठे रहते हो, कलम से कागज़ पर घिसते रहते हो, बिलकुल एक मशीन की तरह; तुम कभी उठते नहीं; तुम कभी कहते नहीं कि तुम थके हुए हो; तुम कभी छुट्टी नहीं मांगते; तुम कभी आराम या विश्राम नहीं लेते; तुम शाम को किसी भी तरह की अति नहीं करते; तुम न तो बुरे लोगों की संगति करते हो, न ही शराब का सेवन करते हो।”

"क्या आप ऐसा करते हैं, श्री हन्सडेन?"

“मुझसे छोटे-मोटे सवाल पूछने की कोशिश मत करो; तुम्हारा और मेरा मामला बिलकुल अलग है, और इनकी तुलना करने की कोशिश करना सरासर बेवकूफी है। मैं कहता हूँ कि जब कोई व्यक्ति असहनीय पीड़ा को धैर्यपूर्वक सहता है, तो वह जीवाश्म बन जाता है।”

“तुम्हें मेरे धैर्य का ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ?”

“अरे यार, क्या तुम्हें लगता है कि तुम कोई रहस्य हो? पिछली रात तो तुम इस बात पर हैरान थे कि मुझे पता है कि तुम किस परिवार से हो; अब तुम्हें इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि मैं तुम्हें धैर्यवान कह रहा हूँ। तुम्हें क्या लगता है मैं अपनी आँखों और कानों से क्या करता हूँ? मैं तुम्हारे लेखा-जोखा कार्यालय में एक से ज़्यादा बार गया हूँ जब क्रिम्सवर्थ ने तुम्हारे साथ कुत्ते जैसा बर्ताव किया है; जैसे, किताब माँगी और जब तुमने उसे गलत किताब दी, या जिसे उसने गलत समझा, तो उसने उसे लगभग तुम्हारे मुँह पर फेंक दिया; तुमसे दरवाज़ा खोलने या बंद करने को कहा जैसे तुम उसके नौकर हो; लगभग एक महीने पहले पार्टी में तुम्हारी हालत की तो बात ही मत करो, जहाँ न तो तुम्हारी कोई जगह थी और न ही कोई साथी, बल्कि तुम एक बेचारे, फटेहाल भिखारी की तरह इधर-उधर मंडराते रहे; और इन सभी परिस्थितियों में तुम कितने धैर्यवान थे!”

"तो फिर, श्रीमान हन्सडेन, आगे क्या?"

“तो मैं आपको ठीक-ठीक बता नहीं सकता; आपके चरित्र के बारे में जो निष्कर्ष निकाला जा सकता है, वह आपके आचरण को निर्देशित करने वाले उद्देश्यों की प्रकृति पर निर्भर करता है; यदि आप इसलिए धैर्यवान हैं क्योंकि आप अंततः क्रिम्सवर्थ से कुछ हासिल करने की उम्मीद करते हैं, उसकी तानाशाही के बावजूद, या शायद उसी के माध्यम से, तो आप वो हैं जिसे दुनिया स्वार्थी और लालची कहती है, लेकिन आप बहुत बुद्धिमान व्यक्ति हो सकते हैं; यदि आप इसलिए धैर्यवान हैं क्योंकि आप अपमान का सामना समर्पण से करना अपना कर्तव्य समझते हैं, तो आप एक मूर्ख हैं, और किसी भी तरह से मेरे लायक नहीं हैं; यदि आप इसलिए धैर्यवान हैं क्योंकि आपका स्वभाव शांत, सपाट, उत्तेजित न होने वाला है, और आप प्रतिरोध की चरम सीमा तक नहीं पहुँच सकते, तो ईश्वर ने आपको कुचलने के लिए बनाया है; और हर हाल में लेट जाओ, और जगन्नाथ को अपने ऊपर से गुजरने दो।”

श्री हन्सडेन की वाक्पटुता, जैसा कि आप समझ सकते हैं, चिकनी-चुपड़ी बातों वाली नहीं थी। उनके बोलने से मुझे बिल्कुल भी प्रसन्नता नहीं हुई। मुझे उनमें उन लोगों में से एक की झलक दिखाई दी जो स्वयं तो काफी संवेदनशील होते हैं, लेकिन दूसरों की संवेदनशीलता के प्रति स्वार्थी और निर्दयी होते हैं। इसके अलावा, यद्यपि वे न तो क्रिम्सवर्थ जैसे थे और न ही लॉर्ड टाइनडेल जैसे, फिर भी उनका लहजा कड़वा था और मुझे संदेह हुआ कि वे अपने व्यवहार में दबंग भी थे: उनके द्वारा दिए गए निंदों की उग्रता में तानाशाही का स्वर था, जिसके द्वारा वे उत्पीड़ितों को उत्पीड़क के विरुद्ध विद्रोह के लिए उकसाना चाहते थे। उन्हें पहले से भी अधिक ध्यान से देखते हुए, मैंने उनकी आँखों और हावभाव में एक ऐसा संकल्प देखा कि वे अपने लिए इतनी असीमित स्वतंत्रता हथियाना चाहते हैं कि वह अक्सर उनके पड़ोसियों की उचित स्वतंत्रता का हनन कर सकती है। मैंने इन विचारों को जल्दी से दोहराया और फिर मनुष्य की असंगतता के एक सूक्ष्म आंतरिक अहसास से प्रेरित होकर, मैं अनजाने में ही धीरे से हँस पड़ा। यह वैसा ही था जैसा मैंने सोचा था: हन्सडेन को उम्मीद थी कि मैं उसके गलत और अपमानजनक अनुमानों, उसके कड़वे और घमंडी ताने को शांति से सहन कर लूंगा; और वह खुद एक हल्की सी हंसी से चिढ़ गया था, जो फुसफुसाहट से मुश्किल से ही तेज थी।

उसकी भौंहें तन गईं, उसकी पतली नाक का नथुना थोड़ा फैल गया।

“हाँ,” उसने कहना शुरू किया, “मैंने तुमसे कहा था कि तुम एक कुलीन हो, और

एक कुलीन के अलावा और कौन ऐसी हँसी हँस सकता है, और ऐसा चेहरा बना सकता है? एक ठंडी, उपहास भरी हँसी; एक आलसी, विद्रोही चेहरा; सज्जनतापूर्ण व्यंग्य, कुलीन आक्रोश। विलियम क्रिम्सवर्थ, तुम कितने महान व्यक्ति बनते! तुम इसके लिए बिल्कुल उपयुक्त थे; अफसोस, भाग्य ने प्रकृति को धोखा दिया! चेहरे, शरीर, यहाँ तक कि हाथों को भी देखो - हर तरफ विशिष्टता - बदसूरत विशिष्टता! अब, अगर तुम्हारे पास एक जागीर, एक हवेली, एक पार्क और एक उपाधि होती, तो तुम कैसे विशिष्ट बन सकते थे, अपने वर्ग के अधिकारों को बनाए रख सकते थे, अपने किरायेदारों को कुलीन वर्ग के प्रति सम्मान की आदतें सिखा सकते थे, जनता की बढ़ती शक्ति का हर कदम पर विरोध कर सकते थे, अपनी सड़ी हुई व्यवस्था का समर्थन कर सकते थे, और इसके लिए कंजूसों के खून में घुटने तक डूबने को तैयार हो सकते थे; लेकिन अभी तुम्हारे पास कोई शक्ति नहीं है; तुम कुछ नहीं कर सकते; तुम बर्बाद हो चुके हो और व्यापार के किनारों पर फँसे हुए हो; व्यावहारिक लोगों के साथ टकराव के लिए मजबूर हो, जिनसे आप निपट नहीं सकते, क्योंकि आप कभी भी कुशल कारीगर नहीं बन सकते।

हन्सडेन के भाषण का पहला भाग मुझे ज़रा भी प्रभावित नहीं कर पाया, या अगर किया भी तो सिर्फ़ इस बात पर हैरानी हुई कि पूर्वाग्रह ने मेरे चरित्र के बारे में उनके निर्णय को किस विकृत रूप में ढाल दिया था; लेकिन अंतिम वाक्य ने न केवल मुझे प्रभावित किया, बल्कि झकझोर दिया; इसका प्रहार बहुत गहरा था, क्योंकि सत्य ने ही हथियार चलाया था। अगर मैं अब मुस्कुराता हूँ, तो वह केवल स्वयं के प्रति तिरस्कार का भाव है।

हन्सडेन ने अपनी स्थिति को भांप लिया; उसने इसका पूरा फायदा उठाया।

“व्यापार करके तुम कुछ नहीं कमा पाओगे,” उसने आगे कहा; “सूखी रोटी के टुकड़े और साफ पानी के घूंट के अलावा कुछ नहीं, जिस पर तुम अभी जी रहे हो; तुम्हारे लिए अच्छी कमाई करने का एकमात्र मौका किसी अमीर विधवा से शादी करना या किसी उत्तराधिकारी के साथ भाग जाना है।”

मैंने उठते हुए कहा, "मैं ऐसे बदलावों को अमल में लाने का काम उन्हें तैयार करने वालों पर छोड़ देता हूँ।"

“और वो भी नामुमकिन है,” उसने शांत भाव से कहा। “कौन सी विधवा तुम्हें चाहेगी? और उससे भी बड़ी बात, कौन सी वारिस? तुम न तो पहले के लिए साहसी

और निडर हो, न ही दूसरे के लिए आकर्षक और मनमोहक। तुम्हें लगता है कि तुम बुद्धिमान और सभ्य दिखती हो; अपनी बुद्धि और शिष्टाचार को बाज़ार में दिखाओ, और मुझे निजी तौर पर बता देना कि उनके लिए क्या बोली लग रही है।"

श्री हन्सडेन ने रात के लिए अपना स्वर निर्धारित कर लिया था; उनके द्वारा छेड़ा गया तार बेसुरा था, इसलिए उन्होंने दूसरा तार छेड़ने की ज़हमत नहीं उठाई। मुझे दिन-रात शोरगुल से चिढ़ थी, इसलिए अंततः मैंने निष्कर्ष निकाला कि कर्कश बातचीत से मौन और एकांत बेहतर हैं; मैंने उन्हें शुभ रात्रि कहा।

"क्या! जा रहे हो, बेटा? अच्छा, शुभ रात्रि: तुम्हें दरवाज़ा मिल जाएगा।" और वह आग के सामने चुपचाप बैठा रहा, जबकि मैं कमरे और घर से निकल गया। अपने कमरे की ओर लौटते हुए मैं काफी दूर आ चुका था कि मुझे एहसास हुआ कि मैं बहुत तेज़ चल रहा हूँ, मेरी साँसें तेज़ चल रही हैं, मेरे नाखून मेरी मुट्ठी में लगभग धंस गए हैं, और मेरे दाँत भींच गए हैं; यह जानकर मैंने अपनी चाल, मुट्ठियाँ और जबड़े, तीनों ही ढीले कर दिए, लेकिन मेरे मन में उमड़ रहे पछतावे को मैं इतनी जल्दी शांत नहीं कर सका। मैंने खुद को व्यापारी क्यों बनाया? आज शाम मैं हन्सडेन के घर क्यों गया? कल सुबह मुझे क्रिम्सवर्थ की चक्की क्यों जाना है? पूरी रात मैं खुद से यही सवाल पूछता रहा, और पूरी रात मेरी आत्मा इन सवालों का जवाब माँगती रही। मुझे नींद नहीं आई; मेरा सिर जल रहा था, मेरे पैर जम रहे थे; आखिरकार कारखाने की घंटियाँ बजीं, और मैं दूसरे गुलामों के साथ अपने बिस्तर से उछल पड़ा।

अध्याय V.

हर चीज़ का, हर भावना का, जीवन के हर पड़ाव का एक चरम बिंदु होता है। जनवरी

की ठंडी सुबह में, जब मैं श्रीमती किंग के घर से क्लोज़ की ओर जाने वाली खड़ी और अब बर्फीली सड़क पर तेज़ी से उतर रहा था, तब मैंने इस सत्य पर विचार किया। कारखाने के कर्मचारी मुझसे लगभग एक घंटा पहले ही निकल चुके थे, और जब मैं वहाँ पहुँचा तो मिल पूरी तरह से रोशन थी और पूरी तरह से चालू थी। मैं हमेशा की तरह लेखा-गृह में अपने पद पर गया; वहाँ आग अभी-अभी जलाई गई थी, और अभी तक केवल धुआँ ही निकल रहा था; स्टाईटन अभी तक नहीं आया था। मैंने दरवाज़ा बंद किया और डेस्क पर बैठ गया; मेरे हाथ, जो अभी-अभी आधे जमे पानी से धोए गए थे, अभी भी सुन्न थे; जब तक उनमें जान वापस नहीं आ जाती, मैं लिख नहीं सकता था, इसलिए मैं सोचता रहा, और मेरे विचारों का विषय अभी भी "चरमोत्कर्ष" ही था। आत्म-असंतोष ने मेरे चिंतन की धारा को अत्यधिक बाधित किया।

"आओ, विलियम क्रिम्सवर्थ," मेरी अंतरात्मा ने कहा, या जो भी हमारे भीतर हमें दोषी ठहराता है— "आओ, यह स्पष्ट कर लो कि तुम क्या चाहते हो, या क्या नहीं चाहते। तुम चरम सीमा की बात करते हो; क्या तुम्हारी सहनशीलता चरम सीमा पर पहुँच गई है? अभी चार महीने भी नहीं बीते हैं। तुमने खुद को कितना दृढ़ निश्चयी समझा था जब तुमने टाइनडेल से कहा था कि तुम अपने पिता के पदचिन्हों पर चलोगे, और तुम इसे बड़े ही सुंदर ढंग से निभाने वाले हो! तुम्हें X कितना पसंद है——! ठीक इस समय उसकी गलियाँ, उसकी दुकानें, उसके गोदाम, उसके कारखाने कितने सुखद यादों से भरे हुए हैं! आज के दिन की संभावना तुम्हें कितना उत्साहित करती है! दोपहर तक चिट्ठियों की नकल करना, अपने कमरे में अकेले भोजन करना, शाम तक चिट्ठियों की नकल करना, एकांत; क्योंकि तुम्हें न तो ब्राउन, न स्मिथ, न निकोल, न एक्ले की संगति में आनंद मिलता है; और हन्सडेन की बात करें तो, तुमने सोचा था कि उसकी संगति में आनंद मिलता है— हे! हे! कैसे! क्या तुम्हें कल रात उसका स्वाद अच्छा लगा? क्या वह मीठा था? फिर भी वह एक प्रतिभाशाली, मौलिक विचारों वाला व्यक्ति है, और वह भी तुम्हें पसंद नहीं करता; तुम्हारा आत्मसम्मान तुम्हें उसे पसंद करने से रोकता है; उसने हमेशा तुम्हें नुकसान पहुँचाया है; वह हमेशा तुम्हें नुकसान पहुँचाता रहेगा; तुम्हारी स्थितियाँ असमान हैं, और यदि वे एक ही स्तर पर होतीं तो भी तुम्हारे दिमाग एक-दूसरे को आत्मसात नहीं कर पाते; इसलिए, उस काँटों से घिरे पौधे से दोस्ती का शहद बटोरने की कभी उम्मीद मत रखना। हैलो, क्रिम्सवर्थ! तुम्हारे विचार कहाँ जा रहे हैं? तुम हन्सडेन की याद को ऐसे छोड़ देते हो जैसे कोई

मधुमक्खी चट्टान को, जैसे कोई पक्षी रेगिस्तान को; और तुम्हारी आकांक्षाएँ सपनों की दुनिया की ओर उत्सुकता से पंख फैलाती हैं जहाँ, अब बढ़ते दिन के उजाले में — X — — दिन के उजाले में — तुम सौहार्द, शांति और मिलन का सपना देखने का साहस करते हो। इन तीनों से तुम इस दुनिया में कभी नहीं मिल पाओगे; वे देवदूत हैं। सिद्ध हुए धर्मी पुरुषों की आत्माएँ स्वर्ग में उनसे मिल सकती हैं, लेकिन तुम्हारी आत्मा कभी सिद्ध नहीं होगी। आठ बज गए! तुम्हारे हाथ पिघल गए हैं, उठो! काम!"

“काम? मैं काम क्यों करूँ?” मैंने उदास होकर कहा। “मैं गुलामों की तरह मेहनत करके भी किसी को खुश नहीं कर सकता।” “काम, काम!” भीतरी आवाज़ ने दोहराया। “मैं काम कर भी लूँ, तो भी कोई फायदा नहीं होगा,” मैं बड़बड़ाया; फिर भी मैंने चिट्ठियों का एक पैकेट निकाला और अपना काम शुरू किया—वह काम जो किसी इस्राएली के ईंटों की कहानी पूरी करने के लिए मिस्र के तपते खेतों में भूसा और ठूंठ की तलाश में रेंगने के समान ही धन्यवादहीन और कड़वा था।

लगभग दस बजे मैंने श्री क्रिम्सवर्थ की गाड़ी को आंगन में मुड़ते सुना, और एक-दो मिनट में वे लेखा-भवन में दाखिल हो गए। उनकी आदत थी कि वे स्टाईटन और मुझ पर एक नज़र डालते, अपना रेनकोट टांगते, एक मिनट आग की तरफ पीठ करके खड़े रहते और फिर बाहर चले जाते। आज उन्होंने अपनी आदत नहीं बदली; फर्क सिर्फ इतना था कि जब उन्होंने मेरी तरफ देखा, तो उनकी भौंहें सिर्फ सख्त होने के बजाय गुस्से से भरी हुई थीं; उनकी आंखें ठंडी होने के बजाय तेज थीं। उन्होंने मुझे सामान्य से एक-दो मिनट ज़्यादा देर तक देखा, लेकिन चुपचाप बाहर चले गए।

बारह बज गए; काम बंद करने की घंटी बजी; कामगार अपने भोजन के लिए चले गए; स्टाईटन भी चले गए और मुझसे लेखा-गृह का दरवाजा बंद करने और चाबी अपने साथ ले जाने को कहा। मैं कागजों का एक बंडल बांध रहा था और उन्हें अपनी जगह पर रख रहा था, अपनी डेस्क बंद करने की तैयारी में, तभी क्रिम्सवर्थ दरवाजे पर फिर से दिखाई दिए और अंदर जाकर दरवाजा बंद कर दिया।

"तुम यहाँ एक मिनट रुकोगे," उसने गहरी, क्रूर आवाज में कहा, जबकि उसके नथुने फूल गए और उसकी आँखों से भयावह आग की एक चिंगारी निकली।

एडवर्ड के साथ अकेले में मुझे हमारा रिश्ता याद आया, और उसे याद करके मैं पद के अंतर को भूल गई; मैंने आदर और बोलने के सावधानीपूर्ण तरीकों को त्याग दिया; मैंने सरल और संक्षिप्त शब्दों में उत्तर दिया।

मैंने अपनी डेस्क में चाबी घुमाते हुए कहा, "घर जाने का समय हो गया है।"

“तुम यहीं रुकोगे!” उसने फिर दोहराया। “और उस चाबी से अपना हाथ हटा लो! उसे ताले में ही रहने दो!”

मैंने पूछा, "क्यों? मुझे अपनी सामान्य योजनाओं में बदलाव करने की क्या वजह है?"

“जैसा मैं कहूँ वैसा करो,” जवाब मिला, “और कोई सवाल नहीं! तुम मेरे सेवक हो, मेरी आज्ञा मानो! तुम क्या कर रहे थे —?” वह एक ही सांस में बोलता जा रहा था, तभी अचानक एक विराम आया जिससे पता चला कि क्रोध ने क्षण भर के लिए उसकी वाणी पर काबू पा लिया था।

मैंने जवाब दिया, "अगर आप जानना चाहें तो देख सकते हैं। वह खुली मेज है, वे कागजात हैं।"

“तुम्हारी यह धृष्टता धृष्टता धृष्टता है! तुम किसलिए आए हो?”

"यही आपका काम है, और आपने इसे बखूबी किया है।"

“पाखंडी और बकवास करने वाला! चिकने चेहरे वाला, गिड़गिड़ाने वाला चिकना तेल लगाने वाला!” (मेरा मानना है कि यह आखिरी शब्द पूरी तरह से देहाती है, और काले, बासी व्हेल के तेल के सींग की ओर इशारा करता है, जो आमतौर पर गाड़ी के पहियों से लटका हुआ देखा जाता है, और उनका उपयोग उन्हें चिकना करने के लिए किया जाता है।)

“एडवर्ड क्रिम्सवर्थ, बस करो। अब समय आ गया है कि हम दोनों हिसाब-किताब निपटा लें। मैंने तुम्हारी सेवा को तीन महीने आज़माया है, और मुझे यह दुनिया की सबसे घिनौनी गुलामी लग रही है। कोई दूसरा क्लर्क ढूंढ लो। मैं अब और नहीं रुकूंगा।”

“तुम मुझे नोटिस देने की हिम्मत कैसे करते हो? कम से कम अपनी तनख्वाह के लिए तो काम बंद कर दो।” उसने अपने रेनकोट के बगल में लटकी भारी चाबुक नीचे उतारी।

मैंने अपने आप को थोड़ी सी तिरस्कार भरी हंसी हंसने की अनुमति दी, जिसे मैंने दबाने या छिपाने की कोई कोशिश नहीं की। उसका क्रोध उबल पड़ा, और जब उसने चाबुक उठाए बिना ही आधा दर्जन अश्लील, अधार्मिक गालियां दीं, तो वह आगे बढ़ा:

“मैंने तुम्हें पहचान लिया है और तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ, मतलब, चापलूस!

तुमने मेरे बारे में X — — पर क्या-क्या कहा है? मुझे इसका जवाब दो!”

“तुम? मुझे तुम्हारे बारे में बात करने की न तो कोई इच्छा है और न ही कोई लालसा।”

“तुम झूठ बोलते हो! मेरी बुराई करना तुम्हारी आदत बन गई है; मेरे हाथों से मिलने वाले बुरे बर्ताव की सार्वजनिक शिकायत करना तुम्हारी नियमित आदत है। तुमने दूर-दूर तक यह बात फैला दी है कि मैं तुम्हें कम वेतन देता हूँ और कुत्ते की तरह पीटता हूँ। काश तुम कुत्ते होते! मैं अभी इसी वक्त इस चाबुक से तुम्हारी हड्डियों से मांस का एक-एक टुकड़ा नोचकर अलग कर देता, और तब तक वहीं खड़ा रहता।”

उसने अपना औजार लहराया। चाबुक का सिरा मेरे माथे को छू गया। एक गर्म, उत्तेजित सी सिहरन मेरी नसों में दौड़ गई, मेरा खून मानो उमड़ पड़ा और फिर अपनी नसों में तेज़ी से और गर्म होकर बहने लगा। मैं फुर्ती से उठा, उसके पास गया और उसका सामना किया।

मैंने कहा, "अपनी चाबुक नीचे रखो और अभी इसी वक्त समझाओ कि तुम्हारा मतलब क्या है।"

“सर्रा! आप किससे बात कर रहे हैं?”

“आपसे। मुझे लगता है कि यहाँ और कोई मौजूद नहीं है। आप कहते हैं कि मैं आपकी बदनामी कर रहा हूँ—आपके कम वेतन और बुरे बर्ताव की शिकायत कर रहा हूँ। इन दावों के आधार बताइए।”

क्रिम्सवर्थ में कोई गरिमा नहीं थी, और जब मैंने सख्ती से स्पष्टीकरण मांगा, तो उसने ऊंची, डांटने वाली आवाज में ही स्पष्टीकरण दिया।

“तुम्हारे पास सबूत हैं! और सच्चाई का सामना करो ताकि मैं तुम्हारा बेशर्म चेहरा शर्म से लाल होते देख सकूँ, जब तुम खुद को झूठा और पाखंडी साबित होते सुनोगे। कल टाउन हॉल में एक सार्वजनिक सभा में, मुझे अपने विरोधी वक्ता द्वारा मेरे निजी मामलों का ज़िक्र करके, निर्दयी राक्षसों, खानदानी तानाशाहों और ऐसी ही बकवास बातों से मेरा अपमान होते सुनने का सौभाग्य मिला; और जब मैं जवाब देने के लिए उठा, तो गंदी भीड़ ने मुझ पर चिल्लाना शुरू कर दिया, जहाँ तुम्हारा नाम सुनकर मैं तुरंत समझ गया कि यह घटिया हमला कहाँ से हुआ है। जब मैंने चारों ओर देखा, तो मैंने उस धोखेबाज़ हन्सडेन को जासूस की भूमिका निभाते देखा। मैंने तुम्हें एक महीने पहले अपने घर पर हन्सडेन के साथ गुप्त बातचीत करते हुए देखा था, और मुझे पता

है कि तुम कल रात हन्सडेन के कमरे में थे। अगर हिम्मत है तो इनकार करो।”

“ओह, मैं इससे इनकार नहीं करूँगा! और अगर हन्सडेन ने लोगों को तुम्हें कोसने के लिए उकसाया, तो उसने बिल्कुल सही किया। तुम जनता की निंदा के पात्र हो; क्योंकि तुमसे बुरा आदमी, तुमसे कठोर स्वामी, तुमसे अधिक क्रूर भाई शायद ही कभी हुआ हो।”

“सिर्रा! सिर्रा!” क्रिम्सवर्थ ने दोहराया; और अपने संबोधन को पूरा करने के लिए, उसने सीधे मेरे सिर पर चाबुक चलाया।

एक मिनट में ही मैंने उसे उससे छीन लिया, दो टुकड़े कर दिए और अंगीठी के नीचे फेंक दिया। वह मेरी ओर तेज़ी से दौड़ा, जिससे मैं बच निकला और बोला—

"अगर तुमने मुझे छुआ, तो मैं तुम्हें निकटतम मजिस्ट्रेट के सामने पेश करवा दूंगा।"

क्रिम्सवर्थ जैसे लोगों का अगर दृढ़ता और शांति से विरोध किया जाए, तो उनका हद से ज़्यादा अभिमान कुछ हद तक कम हो जाता है; उसका मजिस्ट्रेट के सामने पेश होने का कोई इरादा नहीं था, और मुझे लगता है कि वह समझ गया था कि मैंने जो कहा, वह सच था। एक अजीब और लंबे समय तक मुझे घूरने के बाद, एक साथ बैल की तरह और आश्चर्यचकित होकर, उसने शायद सोचा कि आखिरकार, उसके पास जो पैसा है, वह उसे मुझ जैसे भिखारी से कहीं ज़्यादा श्रेष्ठता देता है, और उसके पास व्यक्तिगत दंड के कुछ हद तक जोखिम भरे तरीके से कहीं ज़्यादा सुरक्षित और गरिमापूर्ण बदला लेने का तरीका है।

“अपनी टोपी लो,” उसने कहा। “जो तुम्हारा है, वो लो और उस दरवाजे से बाहर निकल जाओ; अपने इलाके में चले जाओ, हे कंगाल: भीख मांगो, चोरी करो, भूखे रहो, देश निकाला पाओ, जो चाहो करो; लेकिन मेरी नजरों में दोबारा आने की हिम्मत मत करना! अगर मुझे कभी पता चला कि तुमने मेरी ज़मीन के एक इंच पर भी कदम रखा है, तो मैं एक आदमी को किराए पर लेकर तुम्हें बेंत से पिटवाऊंगा।”

“ऐसा संभव नहीं है कि आपको मौका मिले; एक बार आपके परिसर से बाहर निकल जाने के बाद, मुझे वापस लौटने का क्या प्रलोभन हो सकता है? मैं एक जेल को छोड़ रहा हूँ, मैं एक अत्याचारी को छोड़ रहा हूँ; मैं उस सबसे बुरी स्थिति को छोड़ रहा हूँ जो मेरे सामने आ सकती है, इसलिए मेरे वापस आने का कोई डर नहीं है।”

"जाओ, वरना मैं तुम्हें मजबूर कर दूंगा!" क्रिम्सवर्थ चिल्लाया।

मैं धीरे-धीरे अपनी मेज तक गया, उसमें से अपनी निजी चीजें निकालीं, उन्हें अपनी

जेब में रखा, मेज को ताला लगाया और चाबी को ऊपर रख दिया।

"तुम उस मेज से क्या निकाल रहे हो?" चक्की मालिक ने पूछा। "सब कुछ उसकी जगह पर छोड़ दो, वरना मैं पुलिसवाले को बुलाकर तुम्हारी तलाशी करवाऊंगा।"

"तो फिर इस बारे में सतर्क रहो," मैंने कहा, और मैंने अपनी टोपी उतारी, दस्ताने पहने, और आराम से लेखा-जोखा भवन से बाहर निकल गया — उससे बाहर निकल गया, ताकि फिर कभी उसमें प्रवेश न करूँ।

मुझे याद है कि जब चक्की की घंटी ने भोजन का समय बताया, श्री क्रिम्सवर्थ के आने से पहले, और ऊपर वर्णित घटना घटी, तब मुझे बहुत भूख लगी थी और मैं भोजन के समय का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। लेकिन अब मैं यह सब भूल चुका था; पिछले आधे घंटे में वहाँ मची हलचल और शोरगुल ने आलू और भुने हुए मटन की छवियाँ मेरे दिमाग से मिटा दी थीं। मैं बस चलने के बारे में सोच रहा था, ताकि मेरी मांसपेशियों की क्रिया मेरी नसों की क्रिया के साथ तालमेल बिठा सके; और मैं चला, तेज़ और दूर तक। मैं और क्या कर सकता था? मेरे दिल से बोझ उतर गया था; मैं हल्का और मुक्त महसूस कर रहा था। मैं अपने संकल्प को तोड़े बिना, अपने आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाए बिना बिगबेन क्लोज़ से निकल आया था। मैंने परिस्थितियों को मजबूर नहीं किया था; परिस्थितियों ने मुझे मुक्त किया था। जीवन मेरे लिए फिर से खुल गया था; अब इसका दायरा क्रिम्सवर्थ की चक्की के चारों ओर बनी ऊँची काली दीवार तक सीमित नहीं था। दो घंटे बीत चुके थे, तब जाकर मेरी संवेदनाएँ इतनी शांत हुईं कि मैं यह देख सकूँ कि उस धुएँ के घेरे को मैंने कितनी विस्तृत और स्पष्ट सीमाओं से बदल दिया है। जब मैंने ऊपर देखा, तो सामने ही ग्रोटाउन फैला हुआ था, जो X — — से लगभग पाँच मील दूर विलाओं का एक गाँव था। ढलते सूरज से मुझे लग रहा था कि छोटा सा शीत ऋतु का दिन ढलने वाला है; जिस नदी के किनारे X — — बसा है, और जिसके किनारे से होकर मेरी सड़क गुज़रती थी, उससे ठंडी बर्फीली धुंध उठ रही थी; इसने धरती को धुंधला कर दिया था, लेकिन जनवरी के साफ बर्फीले नीले आकाश को नहीं छिपाया था। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था; दिन का समय शांति के अनुकूल था, क्योंकि सभी लोग अपने घरों में काम कर रहे थे, कारखानों से शाम की छुट्टी का समय अभी नहीं आया था; हवा में केवल बहते पानी की आवाज़ गूंज रही थी, क्योंकि नदी गहरी और भरपूर थी, जो हाल ही में पिघली बर्फ से उफान पर थी। मैं कुछ देर एक दीवार पर झुककर खड़ा रहा; और

धारा को नीचे देखते हुए: मैंने उसकी लहरों के तीव्र प्रवाह को देखा। मैं चाहता था कि स्मृति इस दृश्य की एक स्पष्ट और स्थायी छाप छोड़ दे, और इसे आने वाले वर्षों के लिए संजो कर रखे। ग्रोवटाउन चर्च की घड़ी में चार बज गए; ऊपर देखते हुए, मैंने उस दिन के सूरज की आखिरी किरण देखी, जो चर्च के चारों ओर स्थित कुछ बहुत पुराने ओक के पेड़ों की पत्तों से रहित शाखाओं से छनकर लाल रंग की चमक बिखेर रही थी - उसका प्रकाश उस दृश्य को रंग और रूप दे रहा था जैसा मैं चाहता था। मैं एक क्षण के लिए रुका रहा, जब तक कि घंटी की मधुर, धीमी ध्वनि हवा में पूरी तरह से मिट नहीं गई; फिर कान, आँख और भावना से संतुष्ट होकर, मैंने दीवार को छोड़ा और एक बार फिर अपना चेहरा X की ओर मोड़ लिया।

अध्याय VI.

मैं भूखा-प्यासा शहर में लौटा; रात का खाना जो मैं भूल गया था, वह मुझे बार-बार याद आ रहा था; और तेज़ कदमों और भूख से बेहाल होकर मैं अपने कमरे की ओर जाने वाली संकरी गली में चढ़ गया। जब मैंने सामने का दरवाज़ा खोला और घर में दाखिल हुआ, तब तक अँधेरा हो चुका था। मैं सोच रहा था कि मेरी आग कैसी होगी; रात ठंडी थी, और मुझे यह सोचकर डर लग रहा था कि अंगीठी में सिर्फ़ चिंगारियाँ ही जल रही होंगी। मुझे खुशी हुई कि जब मैं अपने बैठक कक्ष में पहुँचा, तो वहाँ अच्छी आग जल रही थी और चूल्हा साफ़ था। मैंने अभी इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया था कि तभी मुझे एक और चीज़ पर हैरानी हुई; चूल्हे के पास वाली कुर्सी, जिस पर मैं अक्सर बैठता था, पहले से ही भरी हुई थी; एक व्यक्ति वहाँ सीने पर हाथ बाँधे और पैर कालीन पर फैलाए बैठा था। मेरी नज़र कमज़ोर होने के कारण, और आग की

रोशनी कम होने के बावजूद, एक पल की जाँच में मैंने अपने परिचित श्री हन्सडेन को पहचान लिया। पिछली रात जिस तरह से मेरा उससे विदा हुआ था, उसे देखते हुए मुझे उसे देखकर स्वाभाविक रूप से कोई खुशी नहीं हुई। जब मैं चूल्हे की ओर चली, आग को हिलाया और ठंडे लहजे में "शुभ संध्या" कहा, तो मेरे हावभाव से उतनी ही बेरुखी झलक रही थी जितनी मेरे मन में थी; फिर भी मैं मन ही मन सोच रही थी कि वह वहाँ क्यों आया था; और यह भी कि किन कारणों से उसने मेरे और एडवर्ड के बीच इतनी सक्रियता से दखल दिया था; ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसी की वजह से मुझे वहाँ से सुखद विदाई मिली थी; फिर भी मैं उससे कोई सवाल पूछने या जिज्ञासा दिखाने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी; अगर वह समझाना चाहे तो समझा सकता है, लेकिन स्पष्टीकरण पूरी तरह से उसकी अपनी इच्छा पर निर्भर होना चाहिए; मुझे लगा कि वह समझाने की तैयारी कर रहा है।

"तुम मेरे आभारी हो," ये उनके पहले शब्द थे।

मैंने कहा, "क्या मुझे ऐसा करना चाहिए? मुझे उम्मीद है कि यह कोई बड़ी देनदारी नहीं होगी, क्योंकि मैं इतना गरीब हूं कि किसी भी तरह की भारी देनदारी अपने ऊपर नहीं ले सकता।"

“तो फिर तुरंत खुद को दिवालिया घोषित कर दो, क्योंकि यह देनदारी कम से कम एक टन के बराबर है। जब मैं अंदर आया तो देखा कि तुम्हारी आग बुझी हुई थी, मैंने उसे फिर से जलाया और उस चिड़चिड़े नौकर को वहीं रोककर धौंकनी से तब तक आग पर फूँकने को कहा जब तक कि वह ठीक से जल न गई; अब, ‘धन्यवाद!’ कहो।”

"जब तक मुझे कुछ खाने को नहीं मिल जाता, तब तक नहीं; मैं इतनी भूखी हूँ कि किसी को धन्यवाद नहीं दे सकती।"

मैंने घंटी बजाई और चाय और कुछ ठंडा मांस मंगवाया।

"ठंडा मांस!" नौकर के दरवाजा बंद करते ही हन्सडेन चिल्लाया, "तुम कितने पेटू हो! चाय के साथ मांस! तुम ज्यादा खाकर मर जाओगे।"

“नहीं, श्रीमान हन्सडेन, मैं ऐसा नहीं करूँगा।” मुझे उनका विरोध करना आवश्यक लगा; मैं भूख से व्याकुल था, उन्हें वहाँ देखकर चिढ़ गया था, और उनके लगातार असभ्य व्यवहार से भी चिढ़ गया था।

उन्होंने कहा, "ज्यादा खाने से ही आपका स्वभाव इतना चिड़चिड़ा हो जाता है।"

मैंने पूछा, "आपको कैसे पता?" उन्होंने कहा, "मामले की किसी भी परिस्थिति से परिचित हुए बिना व्यावहारिक राय देना आपकी आदत है; मैंने रात का खाना नहीं खाया है।"

मैंने जो कहा वह काफी चिड़चिड़ा और तीखा था, और हन्सडेन ने केवल मेरी ओर देखकर और हंसकर जवाब दिया।

“बेचारा!” उसने थोड़ी देर रुककर शिकायत भरी आवाज़ में कहा। “इसे रात का खाना नहीं मिला, है ना? क्या! लगता है इसके मालिक ने इसे घर नहीं आने दिया। क्या क्रिम्सवर्थ ने तुम्हें सज़ा के तौर पर उपवास रखने का आदेश दिया है, विलियम!”

“नहीं, श्रीमान हन्सडेन। सौभाग्य से इस चिड़चिड़े माहौल में चाय आ गई, और मैं तुरंत ब्रेड, मक्खन और ठंडे गोमांस पर टूट पड़ा। एक प्लेट खाली करने के बाद, मैं इतना विनम्र हो गया कि मैंने श्रीमान हन्सडेन को इशारा किया कि उन्हें वहाँ बैठकर घूरने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि वे मेज पर आकर मेरी तरह ही कर सकते हैं, यदि वे चाहें।”

“लेकिन मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं,” उसने कहा और घंटी की रस्सी को फिर से खींचकर नौकर को बुलाया और एक गिलास गर्म पानी पीने की इच्छा जताई। “और थोड़ा और कोयला भी,” उसने आगे कहा; “जब तक मैं यहाँ हूँ, श्री क्रिम्सवर्थ अच्छी आग जलाए रखेंगे।”

उसके आदेशों का पालन होते देख, उसने अपनी कुर्सी घुमाकर मेज के पास ला दी, ताकि वह मेरे सामने आ सके।

“अच्छा,” उसने आगे कहा। “मुझे लगता है कि आप बेरोजगार हैं।”

“हाँ,” मैंने कहा; और इस बात पर अपनी संतुष्टि ज़ाहिर न करते हुए, उस पल की भावना में बहकर, मैंने इस विषय को ऐसे उठाया मानो मुझे जो हुआ उससे लाभ नहीं बल्कि हानि हुई हो। “हाँ – आपकी वजह से ही मुझे हानि हुई है। मुझे पता चला है कि क्रिम्सवर्थ ने मुझे एक मिनट के नोटिस पर ही हटा दिया, क्योंकि आपने एक सार्वजनिक सभा में कुछ हस्तक्षेप किया था।”

“अरे! क्या! उसने इसका ज़िक्र किया? उसने मुझे लड़कों को इशारा करते हुए देखा था, है ना? उसने अपने दोस्त हन्सडेन के बारे में क्या कहा—कुछ अच्छा-अच्छा?

उन्होंने तुम्हें विश्वासघाती खलनायक कहा।

“ओह, वो मुझे अभी ठीक से जानता भी नहीं! मैं उन शर्मीले लोगों में से एक हूँ जो

एकदम से खुलकर सामने नहीं आते, और वो अभी-अभी मुझसे जान-पहचान शुरू कर रहा है, लेकिन उसे पता चलेगा कि मुझमें कुछ अच्छे गुण हैं — बेहतरीन गुण! हन्सडेन परिवार हमेशा से ही बदमाश को पहचानने में बेजोड़ रहा है; एक निर्मम, बेईमान खलनायक उनका स्वाभाविक शिकार होता है — वे जहाँ भी मिलते, उससे बच नहीं पाते; आपने अभी-अभी व्यावहारिक शब्द का प्रयोग किया — यह शब्द हमारे परिवार की संपत्ति है; यह पीढ़ी दर पीढ़ी हम पर लागू होता आया है; हमें बुराइयों को पहचानने की अच्छी समझ है; हम एक बदमाश को मीलों दूर से ही पहचान लेते हैं; हम जन्मजात सुधारक हैं, कट्टर सुधारक; और मेरे लिए क्रिम्सवर्थ के साथ एक ही शहर में रहना, उससे साप्ताहिक संपर्क में आना, आपके सामने उसके कुछ व्यवहारों का गवाह बनना (जिनके लिए मुझे व्यक्तिगत रूप से कोई परवाह नहीं है; मैं केवल उस क्रूर अन्याय पर विचार करता हूँ जिसके साथ उसने समानता के आपके स्वाभाविक अधिकार का उल्लंघन किया) — मैं कहता हूँ कि मेरे लिए इस स्थिति में रहते हुए अपने भीतर अपनी जाति के देवदूत या शैतान को काम करते हुए महसूस न करना असंभव था। मैंने अपने अपनी सहज प्रवृत्ति से एक अत्याचारी का विरोध किया और एक जंजीर तोड़ दी।

यह भाषण मुझे बहुत रुचिकर लगा, क्योंकि इससे हन्सडेन का चरित्र उजागर हुआ और उसके उद्देश्यों की व्याख्या हुई; यह मुझे इतना रुचिकर लगा कि मैं इसका उत्तर देना भूल गया और चुपचाप बैठकर उन असंख्य विचारों पर चिंतन करने लगा जो इससे उत्पन्न हुए थे।

"क्या तुम मेरे आभारी हो?" उसने थोड़ी देर बाद पूछा।

सच कहूँ तो मैं आभारी था, या लगभग था, और मुझे लगता है कि उस समय मैं उसे थोड़ा पसंद भी करने लगा था, भले ही उसने यह शर्त रखी थी कि उसने जो किया वह मेरे प्रति सम्मान के कारण नहीं था। लेकिन इंसानी फितरत टेढ़ी होती है। उसके सीधे सवाल का सकारात्मक जवाब देना नामुमकिन था, इसलिए मैंने कृतज्ञता की भावना को पूरी तरह से नकार दिया और उसे सलाह दी कि अगर वह अपनी इस बहादुरी के लिए किसी इनाम की उम्मीद करता है, तो उसे किसी बेहतर दुनिया में तलाश करे, क्योंकि उसे यहाँ ऐसा मिलने की संभावना नहीं है। जवाब में उसने मुझे "सूखे दिल वाला घमंडी बदमाश" कहा, जिस पर मैंने फिर से उस पर आरोप लगाया कि उसने मेरे मुँह से रोटी छीन ली है।

“तेरी रोटी गंदी थी, यार!” हन्सडेन चिल्लाया — “गंदी और अस्वास्थ्यकर! यह एक अत्याचारी के हाथों से आई है, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि क्रिम्सवर्थ एक अत्याचारी है — अपने कामगारों के प्रति अत्याचारी, अपने क्लर्कों के प्रति अत्याचारी, और एक दिन अपनी पत्नी के प्रति भी अत्याचारी बनेगा।”

“बकवास! रोटी तो रोटी होती है, और वेतन तो वेतन होता है। मैंने अपना वेतन खो दिया है, और वह भी आपके कारण।”

“आपकी बात में वाकई समझदारी है,” हन्सडेन ने जवाब दिया। “मुझे यह सुनकर सुखद आश्चर्य हुआ कि आपने इतनी व्यावहारिक बात कही। आपके स्वभाव को पहले देखने के बाद मुझे लगा था कि नई मिली आज़ादी की खुशी में आप कुछ समय के लिए दूरदर्शिता और विवेक को भूल जाएंगे। लेकिन अब मुझे लगता है कि आपने गंभीरता से ज़रूरी बातों पर ध्यान दिया है।”

“जरूरत पर लगातार ध्यान केंद्रित! मैं इसके अलावा और क्या कर सकता हूँ? मुझे जीना है, और जीने के लिए मुझे वह चाहिए जिसे आप ‘जरूरत’ कहते हैं, जो मुझे केवल काम करके ही मिल सकता है। मैं फिर से कहता हूँ, आपने मेरा काम मुझसे छीन लिया है।”

"तुम क्या करने का इरादा रखते हो?" हन्सडेन ने शांत भाव से पूछा। "तुम्हारे प्रभावशाली रिश्तेदार हैं; मुझे लगता है कि वे जल्द ही तुम्हारे लिए कोई और जगह का इंतजाम कर देंगे।"

“प्रभावशाली रिश्तेदार? कौन? मैं उनके नाम जानना चाहूंगा।”

"द सीकॉम्ब्स।"

“साला! मैंने इन्हें काट दिया है।”

हंसडेन ने अविश्वास भरी निगाहों से मेरी ओर देखा।

मैंने कहा, "हाँ, मैंने किया है, और वह निश्चित रूप से।"

"विलियम, तुम्हारा मतलब यही होगा कि उन्होंने तुम्हें टीम से निकाल दिया है।"

“जैसा आप चाहें। उन्होंने मुझे चर्च में प्रवेश करने की शर्त पर अपना संरक्षण देने की पेशकश की; मैंने शर्तें और प्रतिफल दोनों ही अस्वीकार कर दिए; मैं अपने ठंडे चाचाओं से दूर हो गया और अपने बड़े भाई की बाहों में खुद को समर्पित करना बेहतर समझा, जिनके स्नेहपूर्ण आलिंगन से अब एक अजनबी - संक्षेप में, आप - के क्रूर हस्तक्षेप के कारण मुझे अलग कर दिया गया है।”

यह कहते हुए मैं अपनी हल्की सी मुस्कान को रोक नहीं सका; उसी क्षण हन्सडेन के होठों पर भी इसी तरह की भावना का आंशिक प्रकटीकरण दिखाई दिया।

“ओह, मैं समझ गया!” उसने मेरी आँखों में देखते हुए कहा, और यह स्पष्ट था कि वह सचमुच मेरे दिल की गहराई में उतर गया था। एक-दो मिनट तक ठुड्डी हाथ पर टिकाए, मेरे चेहरे को ध्यान से देखते हुए बैठने के बाद, वह आगे बोला:

"सच में, क्या आपको सीकॉम्ब्स से कुछ भी उम्मीद नहीं है?"

“हाँ, अस्वीकृति और घृणा। आप मुझसे दो बार क्यों पूछते हैं? लेखा-जोखा के स्याही से सने हाथ, ऊन के गोदाम की चिकनाई से मैले हाथ, भला फिर कभी कुलीन वर्ग के हाथों के संपर्क में कैसे आ सकते हैं?”

"इसमें कोई शक नहीं कि मुश्किल होगी; फिर भी आप दिखने में, चेहरे की बनावट में, भाषा में, लगभग हर तरह से एक सीकोम्ब हैं, मुझे आश्चर्य है कि वे आपको क्यों नकार देंगे।"

“उन्होंने मुझे त्याग दिया है; इसलिए इसके बारे में और बात मत करो।”

"क्या तुम्हें इसका पछतावा है, विलियम?"

"नहीं।"

“क्यों नहीं, बेटा?”

"क्योंकि वे ऐसे लोग नहीं थे जिनके प्रति मुझे कभी कोई सहानुभूति हो सकती थी।"

मैं कहता हूं कि तुम भी उनमें से एक हो।

"इससे तो बस यही साबित होता है कि आपको इसके बारे में कुछ भी नहीं पता; मैं अपनी मां का बेटा हूं, लेकिन अपने चाचाओं का भतीजा नहीं हूं।"

फिर भी—आपके चाचाओं में से एक लॉर्ड हैं, हालांकि वे अपेक्षाकृत गुमनाम और बहुत धनी नहीं हैं, और दूसरे एक बहुत ही सम्मानित व्यक्ति हैं: आपको सांसारिक हितों पर विचार करना चाहिए।

“बकवास है, श्रीमान हन्सडेन। आप जानते हैं या शायद जानते होंगे कि अगर मैं अपने चाचाओं के प्रति विनम्र रहना भी चाहता, तो भी मैं इतनी शालीनता से कभी नहीं झुक पाता कि उनका स्नेह प्राप्त कर सकूँ। मुझे अपने आराम का त्याग करना पड़ता और बदले में उनका संरक्षण नहीं मिलता।”

"बहुत संभव है—तो क्या आपने यही सोचा था कि सबसे समझदारी भरा कदम

यही होगा कि आप तुरंत अपने मन मुताबिक काम करें?"

“बिल्कुल सही। मुझे अपने ही बनाए नियमों का पालन करना होगा—मुझे अपनी मृत्यु तक ऐसा ही करना होगा; क्योंकि मैं दूसरों के नियमों को न तो समझ सकता हूँ, न अपना सकता हूँ और न ही उन पर अमल कर सकता हूँ।”

हंसडेन ने जम्हाई ली। “खैर,” उसने कहा, “इन सबमें मुझे बस एक ही बात साफ़ नज़र आती है—कि इस पूरे मामले से मेरा कोई लेना-देना नहीं है।” उसने अंगड़ाई ली और फिर जम्हाई ली। “पता नहीं कितना समय हो गया है,” उसने आगे कहा: “मेरी सात बजे की अपॉइंटमेंट है।”

मेरी घड़ी के हिसाब से पौने छह बज रहे हैं।

“ठीक है, तो मैं चलता हूँ।” वह उठ खड़ा हुआ। “तुम फिर कभी व्यापार में दखल नहीं दोगे?” उसने अपनी कोहनी शेल्फ पर टिकाते हुए कहा।

नहीं; मुझे ऐसा नहीं लगता।

"अगर तुमने ऐसा किया तो तुम मूर्ख होगे। शायद, आखिरकार, तुम अपने चाचाओं के प्रस्ताव पर पुनर्विचार करोगे और चर्च में शामिल हो जाओगे।"

“ऐसा करने से पहले मेरे संपूर्ण आंतरिक और बाहरी व्यक्तित्व में एक अद्वितीय पुनर्जन्म होना आवश्यक है। एक अच्छा पादरी सर्वश्रेष्ठ पुरुषों में से एक होता है।”

"बिल्कुल! क्या आपको ऐसा लगता है?" हन्सडेन ने उपहासपूर्वक बीच में ही टोकते हुए कहा।

"हाँ, बिल्कुल। लेकिन मुझमें अच्छे पादरी बनने के लिए आवश्यक गुण नहीं हैं; और जिस पेशे के लिए मुझमें कोई योग्यता नहीं है, उसे अपनाने के बजाय मैं गरीबी की चरम कठिनाइयों को सहन करना पसंद करूँगा।"

“आप जैसे व्यक्ति को संतुष्ट करना बहुत मुश्किल है। आप न तो व्यापारी बन सकते हैं, न पादरी; न वकील, न डॉक्टर, न ही सज्जन, क्योंकि आपके पास पैसा नहीं है। मैं आपको यात्रा करने की सलाह दूंगा।”

“क्या! बिना पैसों के?”

“तुम्हें पैसे की तलाश में यात्रा करनी होगी, यार। तुम फ्रेंच बोल सकते हो—भले ही तुम्हारा अंग्रेजी लहजा कितना भी घटिया क्यों न हो—फिर भी, तुम फ्रेंच बोल सकते हो। यूरोप जाओ और देखो वहाँ तुम्हारे लिए क्या होता है।”

“भगवान जाने मैं जाना कितना पसंद करूंगा!” मैंने अनायास ही उत्साह से कहा।

“जाओ: आखिर तुम्हें क्या रोक रहा है? अगर तुम मितव्ययिता से खर्च करना जानते हो, तो तुम उदाहरण के तौर पर पांच या छह पाउंड में ब्रुसेल्स पहुँच सकते हो।”

"अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो आवश्यकता मुझे सिखा देती।"

तो जाओ, और वहाँ पहुँचकर अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करके रास्ता ढूँढ़ लेना। मैं ब्रसेल्स को लगभग उतना ही अच्छी तरह जानता हूँ जितना कि X को, और मुझे यकीन है कि तुम्हारे जैसे व्यक्ति के लिए यह लंदन से कहीं बेहतर रहेगा।

"लेकिन काम, श्री हन्सडेन! मुझे वहीं जाना होगा जहाँ काम मिल सके; और ब्रुसेल्स में मुझे सिफारिश, परिचय या नौकरी कैसे मिल सकती है?"

“यही तो सावधानी का संकेत है। जब तक आप रास्ते के हर इंच को अच्छी तरह से नहीं जान लेते, तब तक एक कदम भी आगे बढ़ना नहीं चाहते। क्या आपके पास कागज और कलम-स्याही नहीं है?”

“मुझे उम्मीद है,” और मैंने तुरंत लिखने का सामान निकाला; क्योंकि मुझे अंदाज़ा था कि वह क्या करने वाला है। वह बैठ गया, कुछ पंक्तियाँ लिखीं, एक पत्र को मोड़ा, सील किया और उस पर पता लिखा, और मुझे दे दिया।

“देखो, प्रूडेंस, तुम्हारे रास्ते की पहली मुश्किलों को दूर करने के लिए एक पथप्रदर्शक मिल गया है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ, बेटा, तुम उन लोगों में से नहीं हो जो बिना सोचे समझे खुद को फंदे में धकेल लेंगे, और तुम बिल्कुल सही हो। मुझे लापरवाह लोग बिल्कुल पसंद नहीं हैं, और कोई भी बात मुझे ऐसे लोगों के मामलों में दखल देने के लिए मजबूर नहीं कर सकती। जो लोग खुद के लिए लापरवाह होते हैं, वे आम तौर पर अपने दोस्तों के लिए दस गुना ज़्यादा लापरवाह होते हैं।”

मैंने पत्र लेते हुए कहा, "मुझे लगता है यह परिचय पत्र है?"

जी हाँ। इसे अपनी जेब में रखने से आपको घोर दरिद्रता की स्थिति में पड़ने का कोई खतरा नहीं रहेगा, जिसे आप अपमान समझेंगे - और मैं भी यही समझूंगा। जिस व्यक्ति को आप इसे भेंट करेंगे, उसकी सिफारिश पर आमतौर पर दो-तीन प्रतिष्ठित पद मिल जाते हैं।

मैंने कहा, "यह मेरे लिए बिल्कुल सही रहेगा।"

“अच्छा, तो फिर आपकी कृतज्ञता कहाँ है?” श्री हन्सडेन ने पूछा; “क्या आपको ‘धन्यवाद’ कहना भी नहीं आता?”

"मेरे पास पंद्रह पाउंड और एक घड़ी है, जो मेरी धर्ममाता ने, जिनसे मैं कभी नहीं मिला, मुझे अठारह साल पहले दी थी," यह मेरा कुछ हद तक अप्रासंगिक जवाब था; और मैंने खुद को एक सुखी व्यक्ति बताया, और कहा कि मैं ईसाई जगत में किसी भी प्राणी से ईर्ष्या नहीं करता।

लेकिन आपकी कृतज्ञता?

“मैं अभी रवाना हो रहा हूँ, श्रीमान हन्सडेन—कल, यदि सब ठीक रहा तो: मैं X में एक दिन भी अधिक नहीं रुकूँगा—जितना मुझे रुकना आवश्यक है।”

“बहुत बढ़िया — लेकिन आपको जो सहायता मिली है, उसके लिए आभार व्यक्त करना उचित होगा; जल्दी कीजिए! अभी सात बजने ही वाले हैं: मैं धन्यवाद की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।”

"श्रीमान हन्सडेन, कृपया रास्ते से हट जाइए: मुझे एक चाबी चाहिए जो शेल्फ के कोने पर रखी है। मैं सोने से पहले अपना सूटकेस पैक कर लूंगी।"

घर की घड़ी में सात बज गए।

“यह लड़का तो नास्तिक है,” हन्सडेन ने कहा और साइडबोर्ड से अपनी टोपी उठाकर कमरे से बाहर निकल गया, मन ही मन हंसते हुए। मेरा भी मन हुआ कि मैं उसके पीछे जाऊं: मैं सचमुच अगली सुबह X को छोड़ने वाला था, और मुझे उसे अलविदा कहने का दोबारा मौका नहीं मिलना चाहिए था। तभी सामने का दरवाजा ज़ोर से बंद हो गया।

मैंने कहा, "उसे जाने दो, हम किसी दिन फिर मिलेंगे।"

अध्याय VII.

पाठक, शायद आप कभी बेल्जियम नहीं गए? शायद आप उस देश की भौगोलिक स्थिति से परिचित नहीं हैं? क्या उसकी रूपरेखा आपकी स्मृति में उतनी स्पष्ट रूप से अंकित नहीं है, जितनी मेरी स्मृति में है?

तीन—नहीं, चार—तस्वीरें उस चारदीवारी वाली कोठरी में लगी हैं जहाँ मेरे अतीत के रिकॉर्ड सहेजे गए हैं। पहली, ईटन। उस तस्वीर में सब कुछ दूर से, धुंधला और छोटा सा दिखाई देता है; लेकिन ताज़ा रंगों से भरा, हरा-भरा, ओस से भीगा हुआ, बसंत के आसमान के साथ, चमकते हुए लेकिन बारिश वाले बादलों से घिरा हुआ; क्योंकि मेरा बचपन पूरी तरह धूप से भरा नहीं था—उसमें बादल छाए हुए थे, ठंड थी, तूफानी पल थे। दूसरी, X—— , विशाल, मैला; कैनवास फटा हुआ और धुआँ छोड़ता हुआ; पीला आसमान, कालिख से भरे बादल; न सूरज, न नीला आसमान; उपनगरों की हरियाली मुरझाई और मैली—एक बहुत ही उदास दृश्य।

तीसरा, बेल्जियम; और मैं इस परिदृश्य के सामने कुछ पल रुकूँगा। चौथे के ऊपर एक पर्दा पड़ा है, जिसे मैं अपनी सुविधा और क्षमता के अनुसार बाद में हटा भी सकता हूँ और नहीं भी। फिलहाल तो यह पर्दा अबाधित ही रहेगा। बेल्जियम! यह नाम अरुचिकर और काव्यात्मक नहीं है, फिर भी जब भी इसका उच्चारण होता है, मेरे कानों में एक ध्वनि, मेरे हृदय में एक गूंज पैदा करता है, ऐसी गूंज जो किसी अन्य शब्दसमूह में नहीं, चाहे वह कितना भी मधुर या शास्त्रीय क्यों न हो। बेल्जियम! मैं इस शब्द को दोहराता हूँ, अब जब मैं आधी रात के करीब अकेला बैठा हूँ। यह मेरे अतीत की दुनिया को पुनरुत्थान के आह्वान की तरह जगाता है; कब्रें खुल जाती हैं, मुर्दे जीवित हो उठते हैं; विचार, भावनाएँ, स्मृतियाँ जो सोई हुई थीं, मुझे बादलों से ऊपर उठती हुई दिखाई देती हैं - उनमें से अधिकांश प्रभामंडल से घिरी हुई हैं - लेकिन जब मैं उनके धुंधले रूपों को निहारता हूँ, और उनकी रूपरेखा को निश्चित रूप से जानने का प्रयास करता हूँ, तो उन्हें जगाने वाली ध्वनि मंद पड़ जाती है, और वे सभी, धुंध के हल्के घेरे की तरह, मिट्टी में समा जाती हैं, कलशों में समा जाती हैं, स्मारकों में फिर से समा जाती हैं। अलविदा, प्रकाशमान प्रेतों!

यह बेल्जियम है, पाठक। देखिए! इस तस्वीर को सपाट या नीरस मत कहिए—जब मैंने इसे पहली बार देखा था, तब यह मुझे न तो सपाट लगी थी और न ही नीरस। जब मैं फरवरी की एक सुहावनी सुबह ओस्टेंड से निकला और ब्रुसेल्स जाने वाली सड़क पर था, तब मुझे कुछ भी नीरस नहीं लग रहा था। मेरी आनंद की भावना चरम

सीमा पर थी, एकदम नई, तीव्र और उत्कृष्ट। मैं जवान था; मेरा स्वास्थ्य अच्छा था; आनंद से मेरा कोई वास्ता नहीं था; उसकी किसी भी भोग-विलास ने मेरे स्वभाव के किसी भी पहलू को कमजोर या तृप्त नहीं किया था। मैंने पहली बार स्वतंत्रता को अपनी बाहों में थामा था, और उसकी मुस्कान और आलिंगन के प्रभाव ने मेरे जीवन को सूर्य और पश्चिमी हवा की तरह पुनर्जीवित कर दिया था। हाँ, उस समय मैं एक ऐसे सुबह के यात्री की तरह महसूस कर रहा था जिसे इस बात का कोई संदेह नहीं था कि जिस पहाड़ी पर वह चढ़ रहा है, वहाँ से उसे एक शानदार सूर्योदय दिखाई देगा; चाहे रास्ता संकरा, ढलान वाला और पथरीला ही क्यों न हो, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता; उसकी निगाहें उस शिखर पर टिकी थीं, जो पहले से ही लालिमा से जगमगा रहा था, और वहाँ पहुँचकर उसे आगे के दृश्य का पूरा यकीन था। वह जानता है कि सूर्य उसके सामने होगा, उसका रथ अभी पूर्वी क्षितिज से आ रहा है, और उसके गालों पर महसूस हो रही वह सुखद हवा देवता के मार्ग के लिए नीले आकाश का एक स्पष्ट, विशाल मार्ग खोल रही है, जो मोती जैसे कोमल और ज्वाला जैसे गर्म बादलों के बीच स्थित है। कठिनाई और परिश्रम मेरे भाग्य में लिखे थे, लेकिन ऊर्जा से भरपूर, धुंधली लेकिन उज्ज्वल आशाओं से प्रेरित होकर, मैंने इस भाग्य को कोई कठिनाई नहीं समझा। अब मैं छायादार पहाड़ी पर चढ़ गया; मेरे रास्ते में कंकड़, ऊबड़-खाबड़ रास्ते और झाड़ियाँ थीं, लेकिन मेरी निगाहें ऊपर स्थित लाल शिखर पर टिकी थीं; मेरी कल्पना उस चमकते आकाश में खोई हुई थी, और मैंने अपने पैरों के नीचे लुढ़कते पत्थरों या चेहरे और हाथों पर खरोंचते कांटों के बारे में कुछ नहीं सोचा।

मैं अक्सर खिड़की से बाहर देखता था, और हमेशा आनंद से (याद रहे, ये वो दिन नहीं थे जब ट्रेनें और रेलगाड़ियाँ हुआ करती थीं)। वाह! मैंने क्या देखा? मैं आपको ईमानदारी से बताता हूँ। हरे-भरे, सरकंडों से भरे दलदल; उपजाऊ लेकिन समतल खेत, टुकड़ों में खेती की गई थी जिससे वे बड़े-बड़े रसोई-बगीचों जैसे दिखते थे; क्षितिज के किनारे कटे हुए पेड़ों की कतारें, औपचारिक रूप से छंटे हुए विलो पेड़ों की तरह; सड़क के किनारे धीरे-धीरे बहती संकरी नहरें; रंगीन फ्लेमिश फार्महाउस; कुछ बहुत गंदी झोपड़ियाँ; एक धूसर, निर्जीव आकाश; गीली सड़क, गीले खेत, गीली छतें: पूरे रास्ते में मेरी नज़र में एक भी सुंदर, शायद ही कोई मनोरम दृश्य आया हो; फिर भी मेरे लिए, सब कुछ सुंदर था, सब कुछ मनोरम से कहीं अधिक था। दिन का उजाला रहने तक मौसम सुहाना बना रहा, हालाँकि पिछले कई नम दिनों की नमी ने

पूरे इलाके को तर कर दिया था; जैसे-जैसे अंधेरा गहराता गया, बारिश फिर से शुरू हो गई, और घने अंधेरे में ही मेरी नज़र ब्रसेल्स की रोशनी की पहली झलक पर पड़ी। उस रात मुझे शहर की रोशनी के अलावा कुछ खास दिखाई नहीं दिया। गाड़ी से उतरने के बाद, एक छोटी सी गाड़ी मुझे होटल दे — — तक ले गई, जहाँ एक सहयात्री ने मुझे ठहरने की सलाह दी थी; यात्रियों वाला भोजन करने के बाद, मैं बिस्तर पर चला गया और चैन की नींद सो गया।

अगली सुबह मैं गहरी नींद से जाग उठा और मुझे लगा कि मैं अभी भी X — — में हूँ। उजाला होते देख मैं चौंककर उठ बैठा, मुझे लगा कि मैं ज़्यादा सो गया हूँ और लेखा कार्यालय में समय से पीछे हो गया हूँ। क्षणिक और कष्टदायक बंधन का एहसास स्वतंत्रता की पुनर्जीवित और स्फूर्तिदायक चेतना के सामने गायब हो गया, जैसे ही मैंने अपने बिस्तर के सफेद पर्दे हटाए और एक विशाल, ऊँचे, विदेशी कमरे में देखा; यह उस छोटे और गंदे, हालांकि असुविधाजनक नहीं, कमरे से कितना अलग था जिसमें मैंने लंदन के एक प्रतिष्ठित सराय में एक-दो रातें बिताई थीं, जब मैं जहाज के रवाना होने का इंतजार कर रहा था! फिर भी मैं उस छोटे से गंदे कमरे की याद को अपवित्र नहीं करना चाहता! वह भी मेरी आत्मा को प्रिय है; क्योंकि वहाँ, जब मैं शांति और अंधेरे में लेटा था, मैंने पहली बार सेंट पॉल की विशाल घंटी सुनी थी जो लंदन को आधी रात बता रही थी, और मुझे उसकी गहरी, सधी हुई आवाज़ें अच्छी तरह याद हैं, जो विशाल संयम और शक्ति से भरी हुई थीं। उस कमरे की छोटी, संकरी खिड़की से मैंने पहली बार लंदन की धुंध में से उभरता हुआ गुंबद देखा। मेरा मानना है कि उन पहली आवाज़ों, पहले नज़ारों से उत्पन्न होने वाली भावनाएँ जीवन में केवल एक बार ही महसूस होती हैं; उन्हें संजो कर रखिए, स्मृति; उन्हें कलशों में संजो कर रखिए, और उन्हें सुरक्षित स्थानों में रखिए! खैर—मैं उठी। यात्री विदेशी आवासों के कमरों को खाली और असुविधाजनक बताते हैं; मुझे अपना कमरा भव्य और खुशनुमा लगा। इसमें इतनी बड़ी खिड़कियाँ थीं—क्रोइसेस जो दरवाजों की तरह खुलती थीं, जिनमें इतने चौड़े, साफ कांच के टुकड़े लगे थे; मेरी ड्रेसिंग टेबल पर इतना बड़ा दर्पण लगा था—मेंटलपीस के ऊपर इतना सुंदर दर्पण चमक रहा था—रंगीन फर्श इतना साफ और चमकदार दिख रहा था; जब मैंने कपड़े पहने और सीढ़ियों से नीचे उतर रही थी, तो संगमरमर की चौड़ी सीढ़ियाँ लगभग मुझे विस्मित कर गईं, और वह ऊँचा हॉल भी जिसमें वे मुझे ले जा रही थीं। पहली मंजिल पर मेरी मुलाकात एक फ्लेमिश नौकरानी

से हुई: उसने लकड़ी के जूते, एक छोटी लाल पेटीकोट, एक प्रिंटेड सूती गाउन पहना था, उसका चेहरा चौड़ा था, और उसकी शारीरिक बनावट बेहद भद्दी थी; जब मैंने उससे फ्रेंच में बात की, तो उसने मुझे फ्लेमिश में जवाब दिया, उसका लहजा बिल्कुल भी सभ्य नहीं था; फिर भी मुझे वह आकर्षक लगी; अगर वह सुंदर या विनम्र नहीं थी, तो मुझे लगा कि वह बहुत ही मनमोहक थी; उसने मुझे सीकोम्ब हॉल में पिछले वर्षों में देखी गई कुछ डच पेंटिंग्स में चित्रित महिलाओं की याद दिला दी।

मैं सार्वजनिक कक्ष में गया; वह भी बहुत बड़ा और ऊँचा था, और उसमें एक चूल्हा जल रहा था; फर्श काला था, चूल्हा काला था, और अधिकांश फर्नीचर भी काला था: फिर भी मुझे उस आनंद का ऐसा अनुभव कभी नहीं हुआ था जब मैं एक बहुत लंबी, काली मेज पर बैठा (हालांकि, उस पर आंशिक रूप से सफेद कपड़ा बिछा था), और नाश्ता मंगवाकर एक छोटी सी काली कॉफी-पॉट से अपनी कॉफी निकालने लगा। चूल्हा कुछ लोगों को उदास लग सकता है, मुझे नहीं, लेकिन वह निस्संदेह बहुत गर्म था, और उसके पास दो सज्जन बैठे फ्रेंच में बातें कर रहे थे; उनकी तेज़ वाणी को समझना या उनके शब्दों का अर्थ पूरी तरह से जानना असंभव था - फिर भी, फ्रांसीसी या बेल्जियमवासियों के मुँह से फ्रेंच (उस समय मुझे बेल्जियम के लहजे की भयावहता का एहसास नहीं था) मेरे कानों को संगीत की तरह लगती थी। इन सज्जनों में से एक ने मुझे तुरंत पहचान लिया कि मैं एक अंग्रेज हूँ - निस्संदेह मेरे वेटर से बात करने के तरीके से। मैं अपनी बेहद खराब दक्षिण-इंग्लैंड शैली में फ्रेंच बोलने पर अड़ा रहा, हालाँकि वह व्यक्ति अंग्रेज़ी समझता था। उस सज्जन ने मेरी ओर एक-दो बार देखने के बाद, बड़ी विनम्रता से बहुत अच्छी अंग्रेज़ी में मुझसे बात की; मुझे याद है कि मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि काश मैं भी फ्रेंच बोल पाता; उनकी धाराप्रवाह बोलने की क्षमता और सही उच्चारण ने मुझे पहली बार उस राजधानी के बहुसांस्कृतिक स्वरूप का उचित आभास कराया जहाँ मैं था; यह उन जीवित भाषाओं में दक्षता का मेरा पहला अनुभव था जो बाद में मुझे ब्रुसेल्स में इतनी व्यापक रूप से देखने को मिली।

मैंने नाश्ते का जितना हो सके उतना आनंद लिया; जब तक नाश्ता मेज पर था और वह अजनबी मुझसे बातें करता रहा, मैं एक स्वतंत्र यात्री की तरह था; लेकिन आखिरकार नाश्ता हटा दिया गया, दोनों सज्जन कमरे से चले गए; अचानक भ्रम टूट गया, वास्तविकता और काम का सिलसिला फिर से शुरू हो गया। मैं, एक गुलाम जो

अभी-अभी गुलामी के बंधन से मुक्त हुआ था, इक्कीस वर्षों की गुलामी से एक सप्ताह के लिए आज़ाद हुआ था, मजबूरी में फिर से गुलामी की बेड़ियों में जकड़ गया। मैंने अभी-अभी मालिक के बिना रहने का सुख चखा ही था कि कर्तव्य ने अपना कठोर आदेश दिया: "जाओ और कोई दूसरी नौकरी ढूंढो।" मैं कभी भी किसी कष्टदायक और आवश्यक कार्य में देर नहीं लगाता; मैं काम से पहले कभी आनंद नहीं लेता, ऐसा करना मेरे स्वभाव में नहीं है; शहर में इत्मीनान से टहलने का आनंद लेना असंभव था, भले ही मुझे सुबह बहुत सुहावनी लग रही थी, जब तक कि मैंने पहले श्री हन्सडेन का परिचय पत्र प्रस्तुत नहीं कर दिया और नई नौकरी की राह पर ठीक से आगे नहीं बढ़ गया। मैंने अपने मन को स्वतंत्रता और आनंद से झटकते हुए, अपनी टोपी पकड़ी और अनिच्छा से अपने शरीर को होटल डी — — से बाहर निकालकर अनजान सड़क पर आ गया।

मौसम सुहाना था, लेकिन मैंने न तो नीले आकाश की ओर देखा और न ही अपने आसपास के आलीशान मकानों की ओर; मेरा ध्यान सिर्फ एक ही बात पर केंद्रित था, "श्री ब्राउन, नंबर —, रू रॉयल" का पता लगाना, क्योंकि मेरे पत्र पर यही पता लिखा था। काफी खोजबीन के बाद मुझे सफलता मिली; आखिरकार मैं वांछित दरवाजे पर पहुंचा, दस्तक दी, श्री ब्राउन के बारे में पूछा और मुझे अंदर जाने दिया गया।

मुझे एक छोटे से नाश्ते के कमरे में ले जाया गया, जहाँ मेरी मुलाकात एक बुजुर्ग सज्जन से हुई—जो बेहद गंभीर, पेशेवर और सम्मानित दिख रहे थे। मैंने उन्हें श्री हन्सडेन का पत्र दिखाया; उन्होंने मेरा बहुत ही विनम्रता से स्वागत किया। थोड़ी देर बातचीत के बाद उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या कोई ऐसा काम है जिसमें उनकी सलाह या अनुभव मेरे काम आ सके। मैंने कहा, "हाँ," और फिर उन्हें बताया कि मैं कोई धनवान व्यक्ति नहीं हूँ जो मौज-मस्ती के लिए यात्रा कर रहा हो, बल्कि एक पूर्व लेखा कार्यालय का क्लर्क हूँ, जिसे किसी तरह की नौकरी की तत्काल आवश्यकता है। उन्होंने जवाब दिया कि श्री हन्सडेन के मित्र होने के नाते वे मेरी यथासंभव सहायता करने को तैयार हैं। कुछ विचार करने के बाद उन्होंने लीज में एक व्यापारिक प्रतिष्ठान में और लूवेन में एक पुस्तक विक्रेता की दुकान में एक पद का नाम बताया।

“क्लर्क और दुकानदार!” मैंने मन ही मन बुदबुदाया। “नहीं।” मैंने सिर हिलाया। मैंने ऊँची कुर्सी पर बैठने की कोशिश की थी; मुझे वह बिल्कुल पसंद नहीं आई; मुझे लगता था कि मेरे लिए और भी काम बेहतर होंगे; इसके अलावा, मैं ब्रसेल्स छोड़ना

नहीं चाहता था।

श्री ब्राउन ने उत्तर दिया, "ब्रसेल्स में मुझे ऐसी कोई जगह नहीं पता, जब तक कि आप शिक्षण की ओर ध्यान देने को तैयार न हों। मैं एक बड़े संस्थान के निदेशक को जानता हूँ जिन्हें अंग्रेजी और लैटिन के प्रोफेसर की आवश्यकता है।"

मैंने दो मिनट सोचा, फिर मैंने उत्सुकता से उस विचार को अपना लिया।

“बिल्कुल सही, महोदय!” मैंने कहा।

“लेकिन,” उसने पूछा, “क्या आप बेल्जियम के लड़कों को अंग्रेजी पढ़ाने के लिए पर्याप्त फ्रेंच समझते हैं?”

सौभाग्य से मैं इस प्रश्न का उत्तर सकारात्मक रूप से दे सका; एक फ्रांसीसी शिक्षक के मार्गदर्शन में फ्रेंच भाषा का अध्ययन करने के कारण, मैं धाराप्रवाह तो नहीं, लेकिन समझने योग्य ढंग से बोल सकता था। मैं इसे अच्छी तरह से पढ़ भी सकता था और ठीक-ठाक लिख भी सकता था।

“तो,” श्री ब्राउन ने आगे कहा, “मुझे लगता है कि मैं आपको वह स्थान दिला सकता हूँ, क्योंकि महाशय पेलेट मेरे द्वारा अनुशंसित प्रोफेसर को मना नहीं करेंगे; लेकिन आज दोपहर पाँच बजे फिर से यहाँ आइएगा, और मैं आपको उनसे मिलवा दूँगा।”

“प्रोफेसर” शब्द सुनकर मुझे हैरानी हुई। मैंने कहा, “मैं प्रोफेसर नहीं हूँ।”

“ओह,” श्री ब्राउन ने जवाब दिया, “बेल्जियम में प्रोफेसर का मतलब सिर्फ एक शिक्षक होता है, बस इतना ही।”

मेरा अंतरात्मा शांत हो गया, मैंने श्री ब्राउन को धन्यवाद दिया और फिलहाल वहाँ से चला गया। इस बार मैं राहत भरे मन से सड़क पर निकला; उस दिन के लिए मैंने जो काम अपने ऊपर तय किया था, वह पूरा हो चुका था। अब मैं कुछ घंटे आराम कर सकता था। मुझे ऊपर देखने की आज़ादी महसूस हुई। पहली बार मैंने हवा की चमकती हुई सफ़ाई, आसमान का गहरा नीला रंग और सफ़ेद रंग से पुते या रंगे हुए घरों की जीवंतता देखी; मैंने देखा कि रू रॉयल कितनी सुंदर सड़क थी, और उसके चौड़े फुटपाथ पर इत्मीनान से चलते हुए, मैं उसके आलीशान होटलों को निहारता रहा, जब तक कि पार्क की बाड़, द्वार और पेड़ नज़र नहीं आए और मेरी आँखों को एक नया आकर्षण प्रदान किया। मुझे याद है, पार्क में प्रवेश करने से पहले, मैं कुछ देर जनरल बेलियार्ड की मूर्ति को निहारने के लिए रुका, और फिर मैं उसके ठीक आगे

बनी विशाल सीढ़ी के ऊपर गया, और मैंने नीचे एक संकरी गली में देखा, जिसे बाद में मुझे पता चला कि रू डी'इसाबेल कहा जाता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरी नज़र सामने वाले एक बड़े से घर के हरे दरवाज़े पर पड़ी, जहाँ पीतल की एक प्लेट पर "पेंशन ऑफ द डेमोजेल्स" लिखा था। पेंशन ऑफ द डेमोजेल्स! इस शब्द ने मेरे मन में एक बेचैनी पैदा कर दी; ऐसा लगा जैसे यह किसी बंधन की बात कर रहा हो। कुछ डेमोजेल्स, जो शायद बाहर से आई थीं, उसी क्षण दरवाज़े से बाहर निकल रही थीं - मैंने उनमें से किसी सुंदर चेहरे को खोजने की कोशिश की, लेकिन उनकी छोटी-छोटी फ्रेंच टोपियों ने उनके चेहरे को छिपा रखा था; पल भर में वे गायब हो गईं।

पांच बजने से पहले ही मैंने ब्रुसेल्स का काफी हिस्सा घूम लिया था, लेकिन ठीक उसी समय मैं फिर से रू रॉयल में था। श्री ब्राउन के नाश्ते के कमरे में दोबारा प्रवेश करते ही मैंने उन्हें पहले की तरह मेज पर बैठे पाया, और वे अकेले नहीं थे - एक सज्जन चूल्हे के पास खड़े थे। परिचय के दो शब्दों ने उन्हें मेरे भावी स्वामी के रूप में पहचान दी। "श्री पेलेट, श्री क्रिम्सवर्थ; श्री क्रिम्सवर्थ, श्री पेलेट" - दोनों ओर से एक-एक प्रणाम के साथ औपचारिकता समाप्त हुई। मुझे नहीं पता कि मैंने किस तरह प्रणाम किया; शायद एक साधारण प्रणाम, क्योंकि मैं शांत और सामान्य मन की स्थिति में था; मुझे वह घबराहट बिल्कुल महसूस नहीं हो रही थी जिसने एडवर्ड क्रिम्सवर्थ के साथ मेरी पहली मुलाकात को परेशान किया था। श्री पेलेट का प्रणाम अत्यंत विनम्र था, फिर भी नाटकीय नहीं, मुश्किल से फ्रांसीसी जैसा; हम दोनों तुरंत एक-दूसरे के सामने बैठ गए। मधुर स्वर में, धीमी आवाज़ में और मेरे विदेशी कानों को ध्यान में रखते हुए, बहुत स्पष्ट और सधी हुई आवाज़ में, एम. पेलेट ने बताया कि उन्हें अभी-अभी "आदरणीय एम. ब्राउन" से मेरी योग्यताओं और चरित्र का विवरण प्राप्त हुआ है, जिससे उन्हें मुझे अपने संस्थान में अंग्रेजी और लैटिन के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त करने में कोई संकोच नहीं रहा; फिर भी, औपचारिकतावश, वे मेरी क्षमताओं की परीक्षा के लिए कुछ प्रश्न पूछेंगे। उन्होंने ऐसा किया और मेरे उत्तरों पर प्रसन्नता व्यक्त की। इसके बाद वेतन का विषय आया; यह भोजन और आवास के अलावा एक हजार फ्रैंक प्रति वर्ष तय किया गया। "और इसके अतिरिक्त," एम. पेलेट ने सुझाव दिया, "चूंकि प्रत्येक दिन कुछ घंटे ऐसे होंगे जब मेरे संस्थान में आपकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं होगी, इसलिए आप समय आने पर अन्य शिक्षण संस्थानों में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं और इस प्रकार अपने खाली समय का सदुपयोग कर

सकते हैं।"

मुझे यह बहुत अच्छा लगा, और वास्तव में बाद में मुझे पता चला कि श्री पेलेट ने मुझे जिन शर्तों पर नियुक्त किया था, वे ब्रुसेल्स के हिसाब से काफी उदार थीं; क्योंकि वहां शिक्षकों की संख्या अधिक होने के कारण शिक्षा अत्यंत सस्ती थी। यह भी तय हुआ कि मुझे अगले ही दिन अपने नए पद पर कार्यभार सौंप दिया जाएगा, जिसके बाद श्री पेलेट और मैं अलग हो गए।

तो, वे कैसे थे? और उनके बारे में मेरी क्या धारणाएँ थीं? वे लगभग चालीस वर्ष के, मध्यम कद-काठी के और दुबले-पतले व्यक्ति थे; उनका चेहरा पीला, गाल धँसे हुए और आँखें धँसी हुई थीं; उनके चेहरे की बनावट आकर्षक और सुव्यवस्थित थी, उसमें फ्रांसीसी झलक थी (क्योंकि एम. पेलेट कोई फ्लेमिश नहीं, बल्कि जन्म और वंश दोनों से फ्रांसीसी थे), फिर भी फ्रांसीसी चेहरे की स्वाभाविक कठोरता उनके चेहरे पर उनकी सौम्य नीली आँखों और उदास, लगभग पीड़ादायक भाव से कुछ हद तक कम हो गई थी; उनकी शारीरिक बनावट "सुंदर और आध्यात्मिक" थी। मैं दो फ्रांसीसी शब्दों का प्रयोग कर रहा हूँ क्योंकि वे किसी भी अंग्रेजी शब्द से बेहतर ढंग से उस बुद्धिमत्ता को परिभाषित करते हैं जो उनके चेहरे में झलकती थी। वे कुल मिलाकर एक दिलचस्प और आकर्षक व्यक्तित्व थे। मुझे केवल उनके पेशे की सभी सामान्य विशेषताओं की पूर्ण अनुपस्थिति पर आश्चर्य हुआ, और मुझे लगभग डर था कि वे एक शिक्षक के लिए पर्याप्त कठोर और दृढ़ नहीं हो सकते। कम से कम बाह्य दृष्टि से तो एम. पेलेट मेरे दिवंगत गुरु एडवर्ड क्रिम्सवर्थ से बिलकुल विपरीत थे।

उनकी सौम्यता से मिली छाप से प्रभावित होकर, मैं अगले दिन अपने नए मालिक के घर पहुँचकर बहुत आश्चर्यचकित हुआ, जब मुझे पहली बार अपने भावी कार्यक्षेत्र, यानी विशाल, ऊँचे और अच्छी रोशनी वाले स्कूल के कमरों को देखने का मौका मिला। वहाँ मैंने विद्यार्थियों का एक बड़ा समूह देखा, जिनमें लड़के ही थे, जिनकी सामूहिक उपस्थिति एक पूर्ण, समृद्ध और सुव्यवस्थित विद्यालय के सभी लक्षण दर्शा रही थी। जब मैं एम. पेलेट के साथ कक्षाओं में घूम रहा था, तो चारों ओर गहरी शांति छाई हुई थी, और अगर गलती से कोई फुसफुसाहट या कानाफूसी भी होती, तो इस अत्यंत सौम्य शिक्षक की एक नजर उसे तुरंत शांत कर देती। मैंने सोचा, यह आश्चर्यजनक था कि इतनी हल्की सी रोक इतनी कारगर कैसे हो सकती है। जब मैंने कक्षाओं का पूरा चक्कर लगा लिया, तो एम. पेलेट मुड़े और मुझसे बोले—

"क्या आपको लड़कों को उनकी वर्तमान स्थिति में लेकर, उनकी अंग्रेजी दक्षता का परीक्षण करने में कोई आपत्ति होगी?"

यह प्रस्ताव अप्रत्याशित था। मैंने सोचा था कि मुझे तैयारी के लिए कम से कम 3 दिन का समय मिलना चाहिए था; लेकिन किसी भी करियर की शुरुआत हिचकिचाहट से करना अशुभ माना जाता है, इसलिए मैं सीधे प्रोफेसर की मेज के पास गया, जहाँ हम सब खड़े थे, और अपने विद्यार्थियों के समूह की ओर मुँह किया। मैंने अपने विचारों को इकट्ठा करने के लिए कुछ क्षण लिए, और साथ ही फ्रेंच में उस वाक्य को तैयार करने के लिए भी समय लिया जिससे मैं अपनी बात शुरू करना चाहता था। मैंने इसे यथासंभव संक्षिप्त रखा: —

“सज्जनों, कृपया अपनी पढ़ने की पुस्तकें निकाल लें।”

“अंग्रेजी या फ्रेंच, महोदय?” ब्लाउज पहने हुए मोटे-ताज़े, गोल चेहरे वाले एक युवा फ्लेमंड ने पूछा। सौभाग्य से उत्तर आसान था: —

"अंग्रेज़ी।"

मैंने इस पाठ में यथासंभव कम से कम परेशानी उठाने का निश्चय किया; अभी अपनी अनुभवहीन जीभ से व्याख्या करने का जोखिम उठाना उचित नहीं था; मेरे उच्चारण और मुहावरे मेरे सामने उपस्थित युवा सज्जनों की आलोचनाओं के लिए आसानी से उपलब्ध हो जाते, जिनके सापेक्ष मुझे पहले से ही एक लाभप्रद स्थिति प्राप्त करना आवश्यक लग रहा था, और मैंने तदनुसार उपाय अपनाए।

“शुरू करो!” मैंने चिल्लाकर कहा, जब उन सभी ने अपनी-अपनी किताबें निकाल लीं। गोल चेहरे वाले युवक (जिसका नाम जूल्स वेंडरकेल्कोव था, जैसा कि मुझे बाद में पता चला) ने पहला वाक्य बोला। वह “पुस्तक” “विकार ऑफ वेकफील्ड” थी, जो विदेशी स्कूलों में बहुत प्रचलित थी क्योंकि माना जाता था कि इसमें बोलचाल की अंग्रेज़ी के बेहतरीन नमूने हैं; हालाँकि, जूल्स द्वारा उच्चारित शब्द ग्रेट ब्रिटेन के मूल निवासियों द्वारा बोली जाने वाली आम भाषा से बिल्कुल भी मेल नहीं खाते थे, इसलिए ऐसा लग रहा था मानो वह कोई जादुई पांडुलिपि हो। हे भगवान! वह कैसे घुरघुरा रहा था, नाक से आवाज़ निकाल रहा था और घरघराहट कर रहा था! उसने जो कुछ भी कहा, वह गले और नाक से ही बोला, क्योंकि फ्लेमिश लोग ऐसे ही बोलते हैं, लेकिन मैंने उसके पूरे पैराग्राफ को बिना एक शब्द भी सुधारे सुना, जिस पर वह बेहद आत्मसंतुष्ट दिख रहा था, निस्संदेह इस बात से आश्वस्त था कि उसने एक सच्चे

"अंग्रेज़" की तरह खुद को साबित कर दिया है। उसी अविचल मौन में मैंने बारी-बारी से एक दर्जन बातें सुनीं, और जब बारहवीं बात लड़खड़ाने, फुफकारने और बुदबुदाने के साथ समाप्त हुई, तो मैंने गंभीरता से किताब नीचे रख दी।

"अरेटेज़!" मैंने कहा। कुछ देर का सन्नाटा छा गया, इस दौरान मैंने उन सभी को स्थिर और कुछ हद तक सख्त निगाहों से देखा; अगर किसी कुत्ते को लंबे समय तक घूरा जाए तो वह शर्मिंदगी के लक्षण दिखाने लगता है, और मेरे सामने बैठे बेल्जियमवासियों ने भी आखिरकार ऐसा ही किया। यह देखकर कि मेरे सामने बैठे कुछ लोगों के चेहरे उदास और कुछ शर्मिंदा होने लगे हैं, मैंने धीरे से अपने हाथ जोड़े और गहरी आवाज़ में कहा, "वॉइक्स डे पोइट्रिन"—

"इतना भयानक!"

उन्होंने एक-दूसरे को देखा, मुंह फुलाया, चेहरा लाल हो गया, एड़ी पटकी; मैंने देखा कि वे खुश नहीं थे, लेकिन प्रभावित ज़रूर हुए थे, और ठीक वैसे ही जैसे मैं चाहता था। इस तरह उनके अहंकार को कम करके, अगला कदम था उनकी नज़र में खुद को ऊपर उठाना; यह आसान नहीं था, क्योंकि मैं अपनी कमियों के उजागर होने के डर से मुश्किल से ही कुछ बोल पाता था।

"सुनिए, महोदय!" मैंने कहा, और मैंने अपने लहजे में एक श्रेष्ठ प्राणी की करुणा का भाव लाने का प्रयास किया, जो उस बेबसी की चरम सीमा से द्रवित होकर, जिसने पहले तो केवल उसकी घृणा को ही जगाया था, अंततः सहायता प्रदान करने की कृपा करता है। फिर मैंने "विकार ऑफ वेकफील्ड" के बिल्कुल आरंभ से पढ़ना शुरू किया, और धीमी, स्पष्ट आवाज में लगभग बीस पृष्ठ पढ़े, वे सभी चुपचाप बैठे ध्यानपूर्वक सुनते रहे; जब तक मैंने पढ़ना समाप्त किया, लगभग एक घंटा बीत चुका था। फिर मैं उठा और बोला: —

"आज के लिए इतना ही काफी है, सज्जनों; कल हम फिर से शुरू करेंगे, और मुझे उम्मीद है कि सब कुछ ठीक रहेगा।"

इस भविष्यवाणीपूर्ण वाक्य के साथ मैंने सिर झुकाया और एम. पेलेट के साथ कक्षा से बाहर निकल गया।

"वाह! बहुत बढ़िया!" मेरे प्रधानाचार्य ने अपने बैठक कक्ष में प्रवेश करते ही कहा। "मैं देख रहा हूँ कि महोदय कुशल हैं; यह देखकर मुझे प्रसन्नता हुई, क्योंकि शिक्षा में कौशल उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि ज्ञान।"

बैठक कक्ष से श्री पेलेट मुझे मेरे कमरे तक ले गए, जिसे उन्होंने बड़े ही आत्मसंतुष्टि भरे लहजे में मेरा "कक्ष" कहा। कमरा बहुत छोटा था, और बिस्तर भी बहुत छोटा था, लेकिन श्री पेलेट ने मुझे समझाया कि मुझे उसमें बिल्कुल अकेले रहना है, जो मेरे लिए बड़ी राहत की बात थी। फिर भी, आकार में इतना छोटा होने के बावजूद, उसमें दो खिड़कियाँ थीं। बेल्जियम में प्रकाश पर कोई कर नहीं लगता, इसलिए लोग अपने घरों में प्रकाश आने से कभी कतराते नहीं; हालाँकि, यहाँ यह बात कुछ हद तक प्रासंगिक नहीं है, क्योंकि इनमें से एक खिड़की पर तख्ते लगे हुए थे; खुली खिड़कियाँ लड़कों के खेल के मैदान की ओर खुलती थीं। मैंने दूसरी खिड़की पर नज़र डाली, यह सोचते हुए कि तख्ते हटा देने पर वह कैसी दिखेगी। श्री पेलेट ने, शायद, मेरी आँखों के भाव को समझ लिया; उन्होंने समझाया: —

उन्होंने कहा, "बंद खिड़की से एक लड़कियों के बोर्डिंग स्कूल का बगीचा दिखाई देता है, और शिष्टाचार के अनुसार—ठीक है, आप समझते हैं ना—है ना महोदय?"

“हाँ, हाँ,” मैंने जवाब दिया और ज़ाहिर तौर पर मैं काफ़ी संतुष्ट दिख रही थी; लेकिन जब एम. पेलेट चले गए और दरवाज़ा बंद कर दिया, तो मैंने सबसे पहले कीलों से ठोंकी हुई तख्तियों का बारीकी से निरीक्षण किया, इस उम्मीद में कि मुझे कोई दरार या छेद मिल जाए जिसे मैं बड़ा कर सकूँ और इस तरह पवित्र भूमि पर एक नज़र डाल सकूँ। मेरी खोज व्यर्थ थी, क्योंकि तख्तियाँ अच्छी तरह से जुड़ी हुई थीं और मज़बूती से ठोंकी गई थीं। यह आश्चर्य की बात है कि मैं कितनी निराश हुई। मैंने सोचा था कि फूलों और पेड़ों से भरे बगीचे को देखना कितना सुखद होता, युवतियों को खेलते देखना कितना मनोरंजक होता; महिलाओं के चरित्र के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना कितना अच्छा होता, और साथ ही मैं एक साधारण मलमल के पर्दे से ढकी रहती, जबकि, शायद किसी बूढ़ी बुढ़िया की बेतुकी संशय के कारण, अब मेरे पास केवल एक खाली बजरी वाले आँगन को देखने का विकल्प था, जिसके बीच में एक विशाल “पास डे जिएंट” (पारंपरिक जर्मन शैली का बाड़ा) था, और चारों ओर लड़कों के स्कूल की नीरस दीवारें और खिड़कियाँ थीं। न केवल तब, बल्कि उसके बाद भी कई बार, विशेषकर थकान और उदासी के क्षणों में, मैं उस मोहक तख्ते को असंतुष्ट निगाहों से देखता रहा, उसे फाड़कर उस हरे-भरे क्षेत्र की एक झलक पाने के लिए तरसता रहा, जिसकी मैं कल्पना करता था कि वह उसके पार फैला हुआ है। मैं जानता था कि खिड़की के पास एक पेड़ उगता है, क्योंकि यद्यपि अभी तक उसमें

पत्तियाँ नहीं थीं जो सरसराहट करतीं, मैं अक्सर रात में शाखाओं के शीशे से टकराने की आवाज़ सुनता था। दिन के समय, जब मैं ध्यान से सुनता था, तो तख्तों के पार से भी, मैं मनोरंजन के समय युवतियों की आवाज़ें सुन सकता था, और सच कहूँ तो, मेरे भावुक विचार कभी-कभी उन आवाज़ों से थोड़े अस्त-व्यस्त हो जाते थे जो पूरी तरह से चांदी जैसी नहीं थीं, बल्कि अक्सर पीतल जैसी थीं, जो नीचे के अदृश्य स्वर्ग से उठकर मेरे एकांत में शोर मचाती हुई घुस जाती थीं। सीधे शब्दों में कहूँ तो, मुझे वास्तव में यह संदेहजनक लगता था कि मैडम के फेफड़े... रॉयटर की लड़कियाँ या एम. पेलेट के लड़के सबसे ताकतवर थे, और चीखने-चिल्लाने में लड़कियाँ लड़कों को आसानी से हरा देती थीं। वैसे, मैं यह कहना भूल गया कि रॉयटर उस बूढ़ी औरत का नाम था जिसने मेरी खिड़की पर दाढ़ी बनवाई थी। मैं उसे बूढ़ी इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि उसके सतर्क और संरक्षक जैसे व्यवहार को देखकर मैंने यही निष्कर्ष निकाला था; इसके अलावा, कोई भी उसे कभी जवान नहीं कहता था। मुझे याद है कि जब मैंने पहली बार उसका पहला नाम सुना तो मुझे बहुत हंसी आई थी; वह था ज़ोराइड - मैडमोजेल ज़ोराइड रॉयटर। लेकिन महाद्वीपीय देशों में नाम चुनने में काफी छूट होती है, जो हम जैसे गंभीर अंग्रेज कभी नहीं पाते। मुझे लगता है कि हमारे पास चुनने के लिए नामों की सूची बहुत सीमित है।

इस बीच मेरा रास्ता धीरे-धीरे सुगम होता जा रहा था। कुछ ही हफ्तों में मैंने लगभग हर करियर की शुरुआत में आने वाली मुश्किलों पर काबू पा लिया। जल्द ही मुझे फ्रेंच बोलने में इतनी महारत हासिल हो गई कि मैं अपने विद्यार्थियों के साथ सहज महसूस करने लगा; और चूंकि मैंने शुरुआत में ही उनके साथ अच्छा तालमेल बिठाया था और जो बढ़त मैंने शुरू में हासिल की थी उसे दृढ़ता से बनाए रखा, इसलिए उन्होंने कभी विद्रोह करने की कोशिश नहीं की। यह एक महत्वपूर्ण और असामान्य घटना है, जिसे बेल्जियम के स्कूलों की गतिविधियों से थोड़ी भी परिचित हर व्यक्ति, और जो उन संस्थानों में शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच अक्सर होने वाले संबंधों को जानता है, समझेगा। इस अध्याय को समाप्त करने से पहले मैं अपनी कक्षाओं के संबंध में अपनाई गई प्रणाली के बारे में कुछ कहना चाहूंगा: मेरा अनुभव शायद दूसरों के लिए उपयोगी हो।

ब्राबंट के युवाओं के चरित्र को समझने के लिए गहन अवलोकन की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन उनकी क्षमता के अनुरूप व्यवहार करने के लिए कुछ हद तक सूझबूझ

की आवश्यकता थी। उनकी बौद्धिक क्षमता सामान्यतः कमजोर थी, जबकि उनकी पशुवत प्रवृत्ति प्रबल थी; इस प्रकार उनके स्वभाव में एक प्रकार की कमजोरी और जड़ता थी; वे सुस्त थे, लेकिन साथ ही असाधारण रूप से जिद्दी, सीसे के समान भारी और सीसे की तरह ही उन्हें हिलाना बेहद मुश्किल था। ऐसी स्थिति में, उनसे अधिक मानसिक परिश्रम करवाना वास्तव में मूर्खतापूर्ण होता; उनकी याददाश्त कमजोर थी, बुद्धि सघन थी और चिंतन शक्ति भी कमज़ोर थी, इसलिए वे गहन अध्ययन या चिंतन की आवश्यकता वाले किसी भी कार्य से घृणापूर्वक विमुख हो जाते थे। यदि प्रोफेसर द्वारा अनुचित और मनमाने उपायों से उनसे यह घृणित प्रयास जबरदस्ती करवाया जाता, तो वे हताश सूअरों की तरह हठपूर्वक, शोर मचाते हुए, विरोध करते; और यद्यपि वे अकेले बहादुर नहीं थे, सामूहिक रूप से कार्य करने पर वे निर्दयी हो जाते थे।

मुझे पता चला कि एम. पेलेट के संस्थान में मेरे आने से पहले, छात्रों की सामूहिक अवज्ञा के कारण एक से अधिक अंग्रेजी शिक्षकों को बर्खास्त कर दिया गया था। ऐसे में, उन छात्रों से संयमित व्यवहार की अपेक्षा करना आवश्यक था जो व्यवहार करने में असमर्थ थे - उनकी अस्पष्ट और संकुचित समझ को हर संभव तरीके से सहायता प्रदान करना - हमेशा कोमल, विचारशील और यहाँ तक कि एक हद तक, अतार्किक रूप से विकृत स्वभाव वाले छात्रों के प्रति भी विनम्र रहना; लेकिन, जब आप उस चरम सीमा तक पहुँच जाते हैं, तो आपको अपना पैर मजबूती से जमाना होगा, उसे चट्टान में गाड़ना होगा - सेंट गुडुल के मीनारों की तरह अडिग हो जाना होगा; एक कदम भी आगे बढ़ा तो मूर्खता की खाई में गिर जाओगे; वहाँ पहुँचकर, तुम्हें जल्द ही ब्राबांट की लार की बौछारों और लो कंट्री की मिट्टी के रूप में फ्लेमिश कृतज्ञता और उदारता के प्रमाण मिलेंगे। आप सीखने के मार्ग को जितना हो सके सुगम बना सकते हैं, रास्ते से हर कंकड़ हटा सकते हैं; लेकिन फिर आपको दृढ़ता से यह आग्रह करना होगा कि शिष्य आपका हाथ थाम ले और चुपचाप तैयार मार्ग पर चलने दे। जब मैंने अपने सबसे मंदबुद्धि शिष्य की क्षमता के सबसे निचले स्तर तक अपना पाठ उतार दिया था — जब मैंने स्वयं को सबसे सौम्य, सबसे सहनशील शिक्षक के रूप में प्रदर्शित किया था — तब एक भी अभद्र शब्द, अवज्ञा का एक भी संकेत मुझे तुरंत एक तानाशाह में बदल देता था। तब मैंने केवल एक ही विकल्प दिया — समर्पण और गलती स्वीकार करना, या अपमानजनक निष्कासन। इस प्रणाली ने काम किया, और मेरा प्रभाव धीरे-धीरे मजबूत होता चला गया। "लड़का ही आदमी का पिता होता है,"

ऐसा कहा जाता है; और मैं अक्सर अपने छात्रों को देखकर और उनके पूर्वजों के राजनीतिक इतिहास को याद करके यही सोचता था। पेलेट का विद्यालय बेल्जियम राष्ट्र का मात्र एक प्रतीक था।

अध्याय VIII.

और पेलेट खुद? मैं उन्हें पसंद क्यों करता रहा? ओह, बहुत ही बढ़िया! उनका मेरे प्रति व्यवहार इतना सहज, सज्जनतापूर्ण और दोस्ताना था कि उससे ज्यादा सहज कुछ हो ही नहीं सकता था। मुझे उनसे न तो ठंडी उपेक्षा, न ही चिढ़ाने वाली दखलअंदाजी, और न ही श्रेष्ठता का दिखावटी अभिमान सहना पड़ा। हालांकि, मुझे डर है कि प्रतिष्ठान के दो बेचारे, मेहनती बेल्जियन कर्मचारी ऐसा नहीं कह सकते थे; उनके प्रति निर्देशक का व्यवहार हमेशा रूखा, सख्त और ठंडा रहता था। मुझे लगता है कि उन्होंने एक-दो बार महसूस किया होगा कि मैं उनके और मेरे बीच के अंतर को देखकर थोड़ा हैरान था, और उन्होंने एक शांत व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ इसका जवाब देते हुए कहा—

"वे तो बस फ्लेमिश लोग हैं — अरे यार!"

फिर उन्होंने धीरे से अपने होठों से सिगार उतारा और उस कमरे के रंगे हुए फर्श पर थूक दिया जिसमें हम बैठे थे। वे निश्चित रूप से फ्लेमंड थे, और दोनों की शारीरिक बनावट भी फ्लेमंडों जैसी ही थी, जहाँ बौद्धिक हीनता स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी; फिर भी वे इंसान थे, और मुख्य रूप से ईमानदार इंसान थे; और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि सपाट, नीरस मिट्टी के मूल निवासी होने को उनके साथ निरंतर कठोरता और तिरस्कारपूर्ण व्यवहार का बहाना क्यों बनाया जाए। अन्याय का यह विचार पेलेट

के सौम्य और मिलनसार स्वभाव से मिलने वाले आनंद को कुछ हद तक कम कर रहा था। दिन का काम खत्म होने पर अपने मालिक को एक बुद्धिमान और हंसमुख साथी के रूप में पाना निश्चित रूप से सुखद था; और अगर वह कभी-कभी थोड़ा व्यंग्यात्मक और कभी-कभी थोड़ा ज्यादा चुभने वाला होता था, और अगर मुझे पता चलता था कि उसकी सौम्यता वास्तविकता से अधिक दिखावे की बात थी - अगर मुझे कभी-कभी मखमली आवरण के नीचे कठोर या लोहे की मौजूदगी का संदेह होता था - फिर भी हममें से कोई भी परिपूर्ण नहीं है; और X में लगातार जिस क्रूरता और उद्दंडता के माहौल में मैं रह रहा था, उससे मैं तंग आ चुका था, लेकिन अब शांत क्षेत्रों में लंगर डालने के बाद, मेरी उन कमियों की छानबीन करने की कोई इच्छा नहीं थी जिन्हें मुझसे सावधानीपूर्वक छुपाया गया था। मैं पेलेट को उसके वास्तविक स्वरूप में स्वीकार करने को तैयार था—जब तक कोई अप्रिय घटना उसे अन्यथा साबित न कर दे, तब तक उसे दयालु और मित्रवत मानने को तैयार था। वह अविवाहित था, और मैंने जल्द ही महसूस किया कि विवाह और महिलाओं के बारे में उसके विचार एक फ्रांसीसी, एक पेरिसवासी जैसे ही थे। मुझे उसके नैतिक मूल्यों में कुछ ढिलाई का संदेह था; जब भी वह "सुंदर स्त्री" की बात करता था, तो उसके लहजे में एक तरह की ठंडक और उदासीनता होती थी; लेकिन वह इतना सज्जन था कि वह उन विषयों में दखल नहीं देता था जिन्हें मैंने आमंत्रित नहीं किया था, और चूंकि वह वास्तव में बुद्धिमान था और बौद्धिक विषयों पर चर्चा का शौकीन था, इसलिए मुझे और उसे हमेशा बात करने के लिए पर्याप्त विषय मिल जाते थे, बिना किसी अनावश्यक विषय को खोजे। मुझे प्रेम का जिक्र करने का उसका तरीका नापसंद था; मैं निर्धनता से अपने हृदय से घृणा करता था। उसने हमारे विचारों के अंतर को भांप लिया, और आपसी सहमति से हमने विवाद के विषय से दूरी बनाए रखी।

पेलेट के घर की देखभाल और रसोई का काम उनकी माँ करती थीं, जो एक सच्ची फ्रांसीसी महिला थीं। वह खूबसूरत थीं - कम से कम उन्होंने मुझे यही बताया था, और मैंने उनकी बात पर यकीन करने की पूरी कोशिश की; अब वह बदसूरत हो गई थीं, जैसा कि महाद्वीपीय बूढ़ी औरतें हो सकती हैं; शायद, उनके पहनावे के कारण वह असलियत से भी ज़्यादा बदसूरत दिखती थीं। घर के अंदर वह बिना टोपी के घूमती थीं, उनके भूरे बाल अजीब तरह से बिखरे रहते थे; फिर, घर पर वह शायद ही कभी गाउन पहनती थीं - केवल एक फटी हुई सूती कमीज़; जूते भी उनके पैरों के लिए

अजनबी थे, और उनकी जगह वह एड़ियों से घिसी हुई ढीली चप्पलें पहनती थीं। दूसरी ओर, जब भी उन्हें बाहर जाना अच्छा लगता था, जैसे रविवार और त्योहारों के दिन, वह बहुत चमकीले रंग की पोशाक पहनती थीं, जो आमतौर पर पतले कपड़े की होती थी, फूलों की माला वाली रेशमी टोपी और एक बहुत ही बढ़िया शॉल। वह स्वभाव से चिड़चिड़ी बूढ़ी औरत नहीं थी, बल्कि लगातार और हद से ज़्यादा बकबक करने वाली थी; वह ज़्यादातर रसोई में ही रहती थी और अपने बेटे की गरिमामयी उपस्थिति से बचना चाहती थी; दरअसल, वह उससे काफ़ी आदर करती थी। जब वह उसे डांटता था, तो उसकी डांट कड़वी और कठोर होती थी; लेकिन वह शायद ही कभी ऐसा करता था।

मैडम पेलेट का अपना एक निजी समूह था, उनके चुने हुए मेहमानों का एक खास दायरा था, जिनसे मैं अक्सर नहीं मिल पाता था, क्योंकि वह आम तौर पर उन्हें अपने उस कमरे में बुलाती थीं जिसे वह अपना "कैबिनेट" कहती थीं, जो रसोई से सटा हुआ एक छोटा सा कमरा था और जिसमें एक-दो सीढ़ियाँ उतरकर जाया जाता था। संयोग से, मैंने मैडम पेलेट को अक्सर अपनी गोद में थाली लिए बैठे हुए देखा है, जो एक साथ तीन काम कर रही होती थीं: खाना खाना, अपनी पसंदीदा नौकरानी, हाउसमेड से गपशप करना और अपने प्रतिद्वंद्वी, रसोइए को डांटना; वह अपने बेटे के साथ कभी भी भोजन नहीं करती थीं, और वास्तव में बहुत कम ही उसके साथ खाना खाती थीं; और लड़कों की मेज पर उनका चेहरा दिखना तो बिल्कुल असंभव था। ये बातें अंग्रेजों को बहुत अजीब लगेंगी, लेकिन बेल्जियम इंग्लैंड नहीं है, और उसके तौर-तरीके हमारे जैसे नहीं हैं।

मैडम पेलेट की जीवनशैली को ध्यान में रखते हुए, मुझे उस समय काफी आश्चर्य हुआ जब एक गुरुवार की शाम (गुरुवार हमेशा आधा अवकाश होता था), मैं अपने कमरे में बिल्कुल अकेला बैठा अंग्रेजी और लैटिन अभ्यासों के ढेर को जांच रहा था, तभी एक नौकर ने दरवाजे पर दस्तक दी, और दरवाजा खुलने पर उसने मैडम पेलेट का अभिवादन प्रस्तुत किया, और कहा कि उन्हें मुझे भोजन कक्ष में अपने साथ "गौटर" (एक भोजन जो हमारी अंग्रेजी "चाय" के समान है) लेते हुए देखकर खुशी होगी।

“प्लीज़?” मैंने कहा, क्योंकि मुझे लगा कि शायद मैंने कुछ गलत समझा है, संदेश और निमंत्रण बहुत ही अजीब थे; वही शब्द बार-बार दोहराए गए थे। मैंने स्वीकार कर

लिया, और जैसे ही मैं सीढ़ियों से नीचे उतरी, मैं सोचने लगी कि उस बुढ़िया के दिमाग में क्या अजीबोगरीब विचार आया होगा; उसका बेटा बाहर गया हुआ था - ग्रैंड हार्मनी के हॉल या किसी और क्लब में शाम बिताने गया था, जिसका वह सदस्य था। जैसे ही मैंने भोजन कक्ष के दरवाजे के हैंडल पर हाथ रखा, एक अजीब सा विचार मेरे मन में कौंधा।

मैंने कहा, "यकीनन वो मुझसे प्रेम संबंध नहीं बनाएगी। मैंने सुना है कि बूढ़ी फ्रांसीसी औरतें इस तरह की अजीब हरकतें करती हैं; और गाउट की बात करें तो, मुझे लगता है कि वे आम तौर पर ऐसे संबंध खाने-पीने से शुरू करती हैं।"

मेरी उत्तेजित कल्पना में इस विचार से एक भयानक भय उत्पन्न हुआ, और यदि मैंने इस पर विचार करने के लिए समय दिया होता, तो मैं निस्संदेह वहीं से भागकर अपने कमरे में वापस चला जाता और खुद को अंदर बंद कर लेता; लेकिन जब भी कोई खतरा या भयावहता अनिश्चितता से घिरी होती है, तो मन की पहली इच्छा पहले सच्चाई का पता लगाने की होती है, और भागने का उपाय उस क्षण के लिए बचा कर रखा जाता है जब उसकी भयावह आशंका सच हो जाएगी। मैंने दरवाजे का हैंडल घुमाया, और पल भर में उस घातक दहलीज को पार कर लिया, दरवाजा अपने पीछे बंद कर लिया, और मैडम पेलेट के सामने खड़ा हो गया।

हे भगवान! उसे देखते ही मेरी सारी आशंकाएँ पुख्ता हो गईं। वह हल्के हरे रंग के मलमल के गाउन में बैठी थी, सिर पर झालर में खिले हुए लाल गुलाबों वाली लेस की टोपी थी; उसकी मेज करीने से सजी थी; फल, केक और कॉफी के साथ किसी चीज़ की एक बोतल भी थी - मुझे नहीं पता क्या। मेरे माथे पर पसीना आने लगा, मैंने पीछे मुड़कर बंद दरवाजे की तरफ देखा, तभी मुझे असीम राहत मिली जब मेरी नज़र चूल्हे की तरफ धीरे से गई और उसके बगल में एक बड़ी कुर्सी पर बैठी एक दूसरी आकृति पर टिक गई। यह भी एक महिला थी, और इतनी बूढ़ी थी कि मैडम पेलेट की तरह ही मोटी और लाल-लाल थी; उसका पहनावा भी बहुत सुंदर था, और अलग-अलग रंगों के वसंत के फूल उसके बैंगनी रंग के मखमली बोनट के ऊपर एक चमकदार माला की तरह सजे थे।

मुझे इन सामान्य टिप्पणियों को करने का ही समय मिला था कि तभी मैडम पेलेट, एक सुंदर और लचीले कदम के साथ आगे बढ़ते हुए, मुझसे इस प्रकार मिलीं:

"महोदय सचमुच बहुत ही दयालु हैं कि उन्होंने मुझ जैसे एक तुच्छ व्यक्ति के

अनुरोध पर अपनी किताबें, अपनी पढ़ाई छोड़ दी - क्या महाशय अपनी इस दयालुता को पूरा करते हुए मुझे उन्हें मेरी प्रिय मित्र मैडम रॉयटर से मिलवाने की अनुमति देंगे, जो पड़ोसी घर में रहती हैं - जो युवतियों का स्कूल चलाती हैं?"

“अरे!” मैंने सोचा, “मुझे पता था कि वह बूढ़ी हैं,” और मैंने झुककर अपनी जगह ले ली। मैडम रॉयटर मेरे सामने वाली मेज पर बैठ गईं।

“आपको बेल्जियम कैसा लगा, महोदय?” उन्होंने ब्रुसेल्स के लहजे में पूछा। अब मैं एम. पेलेट के सुस्पष्ट और शुद्ध पेरिसियन उच्चारण और फ्लेमिश लोगों के कर्कश उच्चारण के बीच का अंतर आसानी से पहचान सकता था। मैंने विनम्रता से उत्तर दिया, और फिर सोचने लगा कि मेरे सामने बैठी इतनी असभ्य और अनाड़ी बूढ़ी औरत एक महिला विद्यालय की प्रमुख कैसे हो सकती है, जिसके बारे में मैंने हमेशा प्रशंसा के स्वर में सुना था। सच में, आश्चर्य की बात थी। मैडम रॉयटर एक गंभीर, सख्त पेंशनर की बजाय एक हंसमुख, स्वतंत्र जीवन जीने वाली बूढ़ी फ्लेमिश किसान या यहाँ तक कि एक मालकिन जैसी लग रही थीं। आम तौर पर महाद्वीपीय, या कम से कम बेल्जियम की बूढ़ी औरतें अपने तौर-तरीकों, बोलने के तरीके और हाव-भाव में ऐसी छूट रखती हैं, जिसे हमारी आदरणीय दादी-नानी बिल्कुल अपमानजनक मानकर पीछे हट जाती हैं, और मैडम रॉयटर का हंसमुख चेहरा इस बात का सबूत था कि वह अपने देश के इस नियम का अपवाद नहीं थीं; उनकी बाईं आंख में एक चमक और शरारती मुस्कान थी; उनकी दाहिनी आंख हमेशा आधी बंद रहती थी, जो मुझे वाकई बहुत अजीब लगा। इन दो मजाकिया बूढ़ी महिलाओं के मुझे अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित करने के मकसद को समझने के कई व्यर्थ प्रयासों के बाद, मैंने आखिरकार हार मान ली, और अपरिहार्य रहस्य को स्वीकार करते हुए, मैं बैठ गया और पहले एक को, फिर दूसरी को देखता रहा, इस बीच मैं उन मिठाई, केक और कॉफी का पूरा आनंद लेने का ध्यान रख रहा था, जो उन्होंने मुझे भरपूर मात्रा में परोसी थीं। उन्होंने भी खाया, और वह भी बिना किसी संयम के, और ठोस भोजन का एक बड़ा हिस्सा खत्म करने के बाद, उन्होंने एक "छोटी गिलास" (एक गिलास) का प्रस्ताव रखा। मैंने मना कर दिया। लेकिन श्रीमती पेलेट और रॉयटर ने ऐसा नहीं किया; दोनों ने अपने लिए पंच का एक गिलास बनाया, जो मुझे थोड़ा कड़ा लगा, और उसे चूल्हे के पास एक स्टैंड पर रखकर, उन्होंने अपनी कुर्सियाँ उसी हिसाब से खींच लीं और मुझे भी ऐसा ही करने को कहा। मैंने उनकी बात मानी; और उनके बीच में

आराम से बैठने पर, पहले मैडम पेलेट ने और फिर मैडम रॉयटर ने मुझसे बात की।

"अब हम व्यापार की बात करेंगे," मैडम पेलेट ने कहा, और उन्होंने एक विस्तृत भाषण दिया, जिसका अनुवाद करने पर यह निष्कर्ष निकला कि उन्होंने उस शाम मेरी उपस्थिति का अनुरोध इसलिए किया था ताकि उनकी मित्र मैडम रॉयटर को एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखने का अवसर मिल सके, जो मेरे लिए बहुत फायदेमंद साबित हो सकता है।

"बशर्ते आप अच्छे हों," मैडम रॉयटर ने कहा, "और सच कहूँ तो, आप वाकई अच्छे लगते हैं। पंच की एक बूँद पीजिए" (या पोंच, जैसा कि उन्होंने उच्चारण किया); "भरपेट भोजन के बाद यह एक सुखद और पौष्टिक पेय है।"

मैंने सिर झुकाया, लेकिन फिर से मना कर दिया। वह आगे बोली:

एक गंभीर घूंट लेने के बाद उसने कहा, "मुझे ऐसा महसूस होता है—मुझे उस जिम्मेदारी का गहरा महत्व महसूस होता है जो मेरी प्यारी बेटी ने मुझे सौंपी है, क्योंकि आप जानते ही हैं, महाशय, कि बगल वाले घर में प्रतिष्ठान का संचालन मेरी बेटी ही करती है?"

"अरे! मुझे लगा कि आप ही हैं, मैडम।" हालांकि, वास्तव में, उसी क्षण मुझे याद आया कि इसे मैडमोजेल कहा जाता था, न कि मैडम रॉयटर की पेंशन।

"मैं! अरे नहीं! मैं घर का कामकाज संभालती हूँ और नौकरों की देखभाल करती हूँ, जैसे मेरी सहेली मैडम पेलेट अपने बेटे महाशय के लिए करती हैं—बस इतना ही। आह! आपको लगा कि मैं कक्षा में पढ़ाती हूँ—क्या ऐसा ही है?"

और वह जोर से और देर तक हंसी, मानो यह विचार उसे बेहद पसंद आया हो।

मैंने कहा, "मैडम का हंसना गलत है; अगर वह सबक नहीं देती हैं, तो मुझे यकीन है कि यह इसलिए नहीं है क्योंकि वह नहीं दे सकतीं;" और मैंने एक सफेद रूमाल निकाला और उसे फ्रांसीसी अंदाज में अपनी नाक के पास लहराते हुए, समय के नाम पर झुककर अभिवादन किया।

"कितना प्यारा नौजवान!" मैडम पेलेट ने धीमी आवाज़ में कहा। मैडम रॉयटर, जो कम भावुक थीं, क्योंकि वह फ्लेमंड थीं, फ्रांसीसी नहीं, केवल फिर से हंस पड़ीं।

"मुझे डर है कि तुम एक खतरनाक व्यक्ति हो," उसने कहा; "अगर तुम इस तरह से चापलूसी कर सकते हो, तो ज़ोराइड तुमसे ज़रूर डर जाएगी; लेकिन अगर तुम अच्छे हो, तो मैं तुम्हारा राज़ रखूंगी और उसे नहीं बताऊंगी कि तुम कितनी अच्छी तरह

से चापलूसी कर सकते हो। अब सुनो, वह तुम्हें क्या प्रस्ताव देती है। उसने सुना है कि तुम एक उत्कृष्ट प्रोफेसर हो, और चूंकि वह अपने स्कूल के लिए सबसे अच्छे मास्टर चाहती है (क्योंकि ज़ोराइड एक रानी की तरह व्यवहार करती है, वह एक सच्ची मालकिन है), इसलिए उसने मुझे आज दोपहर मैडम पेलेट से यह पता लगाने के लिए भेजा है कि क्या वह तुम्हें नियुक्त कर सकती है। ज़ोराइड एक सतर्क सेनापति है; वह पहले अपनी स्थिति का अच्छी तरह से जायज़ा लिए बिना आगे नहीं बढ़ती। मुझे नहीं लगता कि अगर उसे पता चले कि मैंने पहले ही उसके इरादे तुम्हें बता दिए हैं, तो वह खुश होगी; उसने मुझे इतना आगे जाने का आदेश नहीं दिया था, लेकिन मैंने सोचा कि तुम्हें राज़ बताने में कोई हर्ज नहीं है, और मैडम पेलेट भी यही सोचती थीं। हालांकि, ध्यान रखना कि तुम हम दोनों में से किसी को भी ज़ोराइड के सामने उजागर न करो—मेरा मतलब मेरी बेटी से है; वह वह स्वयं इतनी विवेकशील और सतर्क है कि वह यह समझ ही नहीं पाती कि थोड़ी-बहुत गपशप करने में भी आनंद मिल सकता है।

"वह बिल्कुल मेरे बेटे जैसा है!" श्रीमती पेलेट चिल्लाईं।

“हमारे बचपन से लेकर अब तक दुनिया कितनी बदल गई है!” दूसरी ने जवाब दिया: “आजकल के युवा कितने समझदार हो गए हैं। खैर, श्रीमान, मुद्दे पर आते हैं। मैडम पेलेट अपने बेटे से मेरी बेटी के स्कूल में आपके पढ़ाने के बारे में बात करेंगी और वह आपसे इस बारे में चर्चा करेगा; फिर कल आप हमारे घर आइएगा और मेरी बेटी से मिलने की इच्छा जताएगा। आप इस विषय को ऐसे उठाएंगे जैसे इसकी जानकारी आपको खुद श्री पेलेट से मिली हो, और मेरा नाम बिल्कुल मत लेना, क्योंकि मैं किसी भी कीमत पर ज़ोराइड को नाराज़ नहीं करना चाहती।”

“ठीक है! ठीक है!” मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा—क्योंकि यह सारी बकवास और घुमा-फिराकर बातें मुझे बहुत ऊबने लगी थीं; “मैं एम. पेलेट से सलाह लूंगा, और मामला आपकी इच्छा के अनुसार सुलझ जाएगा। शुभ संध्या, देवियों—मैं आपका अत्यंत आभारी हूं।”

“क्या! आप अभी जा रहे हैं?” मैडम पेलेट ने हैरानी से कहा।

"क्या आप कुछ और लेना चाहेंगे, महोदय; एक भुना हुआ सेब, कुछ बिस्कुट, एक और कप कॉफी?"

“धन्यवाद, धन्यवाद, महोदया – अलविदा।” और अंततः मैं अपार्टमेंट से बाहर निकल गया।

अपने कमरे में वापस आकर मैंने शाम की घटना पर विचार करना शुरू किया। यह सब कुछ अजीबोगरीब और अटपटा लग रहा था; उन दो बूढ़ी महिलाओं ने मिलकर इसे काफी उलझा दिया था; फिर भी इस विषय पर मेरे मन में सबसे प्रबल भावना संतोष की थी। पहली बात तो यह थी कि किसी दूसरे सेमिनरी में पढ़ाना एक नया अनुभव होगा, और फिर युवतियों को पढ़ाना एक बेहद रोचक पेशा होगा—महिलाओं के बोर्डिंग स्कूल में दाखिला मिलना ही मेरे जीवन में एक बिल्कुल नया अनुभव होगा। इसके अलावा, मैंने बंद खिड़की की ओर देखते हुए सोचा, "अब मैं आखिरकार उस रहस्यमयी बगीचे को देख पाऊँगी: मैं स्वर्गदूतों और उनके स्वर्ग को निहार पाऊँगी।"

अध्याय 9.

श्री पेलेट को मैडम रॉयटर के प्रस्ताव पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती थी; क्योंकि मुझे नियुक्त करने की शर्तों में अतिरिक्त रोजगार स्वीकार करने की अनुमति भी शामिल थी। इसलिए, अगले दिन यह तय किया गया कि मुझे मैडम रॉयटर के संस्थान में सप्ताह में चार दोपहर पढ़ाने की अनुमति होगी।

शाम होते ही मैं मैडमोजेल से इस विषय पर बात करने के लिए उनके पास जाने की तैयारी करने लगा; दिन भर कक्षा में व्यस्त रहने के कारण मुझे पहले उनसे मिलने का समय नहीं मिला था। मुझे अच्छी तरह याद है कि अपने कमरे से निकलने से पहले मैंने खुद से थोड़ी देर तक इस बात पर विचार किया कि क्या मुझे अपने साधारण कपड़ों को बदलकर कुछ बेहतर पहनना चाहिए। अंत में मैंने निष्कर्ष निकाला कि यह व्यर्थ होगा। मैंने सोचा, "निस्संदेह, वह कोई रूढ़िवादी बुढ़िया होंगी; क्योंकि मैडम रॉयटर की बेटी होने के बावजूद, उनकी उम्र चालीस से अधिक होगी; इसके अलावा,

अगर ऐसा नहीं है, अगर वह जवान और सुंदर हैं, तो मैं सुंदर नहीं हूँ, और कोई भी पहनावा मुझे सुंदर नहीं बना सकता, इसलिए मैं जैसा हूँ वैसा ही जाऊँगा।" और मैं चल पड़ा, शीशे से सजे हुए श्रृंगार की मेज के पास से गुजरते हुए मैंने एक पतली, अनियमित शक्ल देखी, बड़े, चौकोर माथे के नीचे धँसी हुई, काली आँखें, चेहरे पर कोई चमक या आकर्षण नहीं था; कोई युवा, लेकिन जवानी से रहित, किसी महिला का प्यार जीतने की वस्तु नहीं, कामदेव के बाणों का निशाना नहीं।

मैं जल्द ही पेंशनैट के प्रवेश द्वार पर पहुँच गया; पल भर में मैंने घंटी बजा दी; अगले ही पल दरवाजा खुल गया, और अंदर काले और सफेद संगमरमर से बना एक गलियारा दिखाई दिया; दीवारें भी संगमरमर की नकल में रंगी हुई थीं; और दूसरे छोर पर एक कांच का दरवाजा खुला, जिसके माध्यम से मैंने झाड़ियाँ और घास का मैदान देखा, जो सुहावनी वसंत शाम की धूप में बहुत सुंदर लग रहे थे—क्योंकि अब अप्रैल का मध्य था।

तो, यह बगीचे की मेरी पहली झलक थी; लेकिन मेरे पास ज़्यादा देर देखने का समय नहीं था, क्योंकि मेरी मालकिन के घर पर होने के सवाल का जवाब हाँ में देने के बाद, द्वारपाल ने बाईं ओर के एक कमरे के तह वाले दरवाज़े खोल दिए और मुझे अंदर बुलाकर उन्हें मेरे पीछे बंद कर दिया। मैंने खुद को एक ऐसे कमरे में पाया जिसका फर्श बहुत ही सुंदर ढंग से रंगा और पॉलिश किया हुआ था; कुर्सियाँ और सोफे सफेद पर्दों से ढके हुए थे, एक हरे रंग का चीनी मिट्टी का चूल्हा था, दीवारों पर सुनहरे फ्रेम वाली तस्वीरें टंगी हुई थीं, मेंटलपीस पर एक सुनहरा पेंडुलम और अन्य सजावटी सामान थे, छत के बीचोंबीच एक बड़ा चमकदार झूला लटका हुआ था, दर्पण, कंसोल, मलमल के पर्दे और एक सुंदर सेंटर टेबल फर्नीचर की सूची को पूरा कर रहे थे। सब कुछ बेहद साफ-सुथरा और चमकदार दिख रहा था, लेकिन अगर तह वाले दरवाज़ों का दूसरा बड़ा जोड़ा खुला न होता, जिससे एक छोटा और अधिक सुसज्जित कमरा दिखाई देता, तो यह माहौल कुछ हद तक ठंडा लगता। इस कमरे में कालीन बिछा हुआ था, और उसमें एक पियानो, एक सोफा, एक अलमारी थी - सबसे बढ़कर, इसमें एक विशाल खिड़की थी जिस पर गहरे लाल रंग का पर्दा लगा था, जिसे खुला रखने पर बड़े, साफ शीशों से बगीचे की एक और झलक दिखाई देती थी, जिसके चारों ओर आइवी की कुछ पत्तियां और बेल की कुछ लताएं लिपटी हुई थीं।

“महाशय क्रीम्सवोर्ट, है ना?” मेरे पीछे से एक आवाज़ आई; और मैं अनजाने में

चौंककर मुड़ गया। मैं उस सुंदर छोटे से कमरे को निहारने में इतना मग्न था कि मुझे बड़े कमरे में किसी के प्रवेश का पता ही नहीं चला। लेकिन अब मैडम रॉयटर ने मुझसे बात की और मेरे बिल्कुल पास खड़ी हो गईं; और जब मैंने तुरंत शांत भाव से झुककर अभिवादन किया — क्योंकि मैं आसानी से शर्मिंदा नहीं होता — तो मैंने उनकी छोटी सी अलमारी की सुंदरता और बगीचे के मामले में एम. पेलेट से आगे होने के लाभ का जिक्र करते हुए बातचीत शुरू की।

"हां," उसने कहा, "वह अक्सर ऐसा सोचती थी;" और आगे बोली, "महाशय, यह मेरा बगीचा ही है जिसकी वजह से मैं इस घर में रह रही हूं, अन्यथा शायद मैं बहुत पहले ही किसी बड़े और अधिक सुविधाजनक घर में स्थानांतरित हो गई होती; लेकिन आप देखिए, मैं अपने बगीचे को अपने साथ नहीं ले जा सकती, और मुझे शहर में कहीं और इतना बड़ा और मनमोहक बगीचा शायद ही मिले।"

मैंने उसके फैसले को सही माना।

"लेकिन तुमने इसे अभी तक नहीं देखा है," वह उठते हुए बोली; "खिड़की के पास आओ और इसे अच्छे से देखो।" मैं उसके पीछे-पीछे गया; उसने खिड़की का शीशा खोला, और बाहर झुककर मैंने उस बंद जागीर को पूरी तरह से देखा जो अब तक मेरे लिए एक अनजान क्षेत्र थी। यह खेती योग्य ज़मीन की एक लंबी, बहुत चौड़ी नहीं, पट्टी थी, जिसके बीच में विशाल पुराने फलों के पेड़ों से घिरी एक गली थी; वहाँ एक छोटा सा लॉन था, गुलाब के पेड़ों की क्यारियाँ थीं, कुछ फूलों की क्यारियाँ थीं, और दूसरी तरफ, बकाइन, लेबर्नम और बबूल के घने पेड़ थे। यह मुझे बहुत अच्छा लगा— बहुत ही अच्छा, क्योंकि मैंने बहुत समय से कोई बगीचा नहीं देखा था। लेकिन मेरी नज़रें केवल मैडम रॉयटर के बगीचे पर ही नहीं टिकीं; जब मैंने उनकी अच्छी तरह से छंटी हुई क्यारियों और कलियों से खिलती झाड़ियों को देखा, तो मैंने अपनी नज़र वापस उन पर डाली, और जल्दी से नहीं हटाई।

मैंने सोचा था कि मुझे एक लंबी, दुबली-पतली, पीली, मठवासी जैसी महिला दिखाई देगी, जिसने काले कपड़े पहने हों, सिर पर सफ़ेद टोपी हो, जो ठुड्डी के नीचे ननों के सिर के वस्त्र की तरह बंधी हो; जबकि मेरे पास एक छोटी और गोल-मटोल महिला खड़ी थी, जो शायद मुझसे बड़ी हो, पर अभी भी जवान थी; मुझे लगा कि उसकी उम्र छब्बीस या सत्ताईस से ज़्यादा नहीं होगी; वह एक गोरी अंग्रेज़ महिला की तरह सुंदर थी; उसने टोपी नहीं पहनी थी; उसके बाल भूरे थे और घुंघराले थे; उसके

चेहरे के भाव सुंदर नहीं थे, न ही बहुत कोमल, न ही बहुत नियमित, लेकिन वे बिल्कुल भी सादे नहीं थे, और मुझे पहले से ही उन्हें भावपूर्ण मानने का कारण दिखाई दे रहा था। उनमें प्रमुख गुण क्या था? क्या यह बुद्धिमत्ता थी? - समझदारी? हाँ, मुझे ऐसा ही लगा; लेकिन मैं अभी तक पूरी तरह से निश्चित नहीं हो सकता था। हालाँकि, मैंने पाया कि उसकी आँखों में एक विशेष शांति और चेहरे पर ताजगी थी, जो देखने में बहुत सुखद थी। उसके गालों का रंग एक अच्छे सेब के खिले हुए लाल रंग जैसा था, जो अंदर से उतना ही पौष्टिक होता है जितना कि उसका छिलका लाल।

मैडम रॉयटर और मैंने बातचीत शुरू की। उन्होंने कहा कि वह अपने इस कदम की बुद्धिमत्ता को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं थीं, क्योंकि मैं बहुत युवा थी और हो सकता है कि माता-पिता अपनी बेटियों के लिए मुझ जैसे प्रोफेसर को स्वीकार न करें: “लेकिन अक्सर अपने विवेक से काम लेना और माता-पिता का मार्गदर्शन करना बेहतर होता है, न कि उनके इशारों पर चलना। प्रोफेसर की योग्यता उम्र पर निर्भर नहीं करती; और जो मैंने सुना है और जो मैंने स्वयं देखा है, उससे मैं संगीत शिक्षक एम. लेड्रू की तुलना में आप पर अधिक भरोसा करूंगी, जो लगभग पचास वर्ष के विवाहित व्यक्ति हैं।”

मैंने कहा कि मुझे उम्मीद है कि वह मुझे अपनी अच्छी राय के योग्य समझेगी; कि अगर मैं खुद को जानता हूँ, तो मुझ पर रखे गए किसी भी भरोसे को तोड़ने में मैं असमर्थ हूँ। "जारी रहेगा," उसने कहा, "निगरानी पर कड़ी नज़र रखी जाएगी।" और फिर उसने शर्तों पर चर्चा शुरू की। वह बहुत सतर्क थी, पूरी तरह सावधान; उसने सीधे तौर पर सौदेबाजी नहीं की, बल्कि सावधानी से मेरी अपेक्षाओं का पता लगाने की कोशिश की; और जब वह मुझसे कोई रकम नहीं निकलवा सकी, तो उसने धाराप्रवाह लेकिन शांत ढंग से घुमा-फिराकर तर्क दिए और अंत में मुझे प्रति वर्ष पाँच सौ फ्रैंक पर राजी कर लिया - बहुत ज़्यादा नहीं, लेकिन मैं मान गया। बातचीत पूरी होने से पहले ही शाम होने लगी। मैंने जल्दी नहीं की, क्योंकि मुझे बैठकर उसकी बातें सुनना अच्छा लग रहा था; मुझे उसकी व्यावसायिक कुशलता देखकर मज़ा आ रहा था। एडवर्ड ने खुद को इससे ज़्यादा व्यावहारिक नहीं दिखाया होगा, हालाँकि वह ज़्यादा रूखापन और जल्दबाज़ी दिखा सकता था; और फिर उसके पास इतने सारे कारण, इतने सारे स्पष्टीकरण थे; और अंततः, वह स्वयं को पूरी तरह से निस्वार्थ और उदार साबित करने में सफल रही। अंत में उसने कहा कि वह और कुछ नहीं कह सकती,

क्योंकि मैं हर बात पर सहमत था, इसलिए उसके लिए और कुछ कहने का कोई कारण नहीं था। मुझे उठना पड़ा। मैं थोड़ी देर और बैठना चाहता था; आखिर मुझे अपने छोटे से खाली कमरे में ही तो लौटना था? और मेरी आँखों को मैडम रॉयटर को देखने में आनंद आ रहा था, खासकर अब, जब गोधूलि बेला ने उनके चेहरे की सुंदरता को थोड़ा कम कर दिया था, और धुंधली सी शाम में, मैं कल्पना कर सकता था कि उनका माथा उतना ही खुला हुआ था जितना वास्तव में उठा हुआ था, उनके होंठों पर मिठास के साथ-साथ भावपूर्ण रेखाएँ भी थीं। जब मैं जाने के लिए उठा, तो मैंने जानबूझकर अपना हाथ बढ़ाया, हालाँकि मैं जानता था कि यह विदेशी शिष्टाचार के विरुद्ध था; वह मुस्कुराई और बोली—

"अरे! ये तो बिल्कुल सभी अंग्रेज लोगों की तरह है," लेकिन उसने बड़े प्यार से मेरी तरफ हाथ बढ़ाया।

मैंने कहा, "यह मेरे देश का विशेषाधिकार है, महोदया; और याद रखिए, मैं इस पर हमेशा अपना दावा करूंगा।"

वह हल्के से हँसी, बड़े ही सौम्य भाव से, और उसके हर काम में झलकने वाली शांति के साथ—एक ऐसी शांति जिसने मुझे बेहद सुकून दिया और मुझे बहुत भाया, कम से कम उस शाम तो मुझे ऐसा ही लगा। जब मैं सड़क पर वापस आया तो ब्रसेल्स मुझे बहुत ही सुखद जगह लगी, और ऐसा लगा मानो उसी शांत, सौम्य अप्रैल की रात में मेरे लिए एक खुशहाल, रोमांचक और उन्नतिपूर्ण भविष्य के द्वार खुल रहे हों। मनुष्य कितना भावुक प्राणी है, या कम से कम उन दिनों में मैं तो ऐसा ही था।

अध्याय X.

अगले दिन एम. पेलेट के यहाँ सुबह के घंटे बहुत धीरे-धीरे बीतते प्रतीत हुए; मैं दोपहर का इंतज़ार कर रहा था ताकि मैं पास के ही पेंशननेट में जाकर वहाँ के रमणीय परिसर में अपना पहला पाठ पढ़ा सकूँ; क्योंकि वह परिसर मुझे बेहद सुखद लगा। दोपहर होते ही मनोरंजन का समय आ गया; एक बजे हमने दोपहर का भोजन किया; यह समय के अनुसार हुआ, और अंत में सेंट गुडुल की गहरी घंटी ने धीरे-धीरे दो बजकर उस पल की घोषणा की जिसका मैं बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था।

मेरे कमरे से नीचे उतरने वाली संकरी सीढ़ियों के अंत में, मेरी मुलाकात एम. पेलेट से हुई।

“तुम बहुत खूबसूरत लग रही हो!” उसने कहा। “मैंने तुम्हें इतना खुश कभी नहीं देखा। क्या हुआ?”

“जाहिर है मुझे बदलाव पसंद है,” मैंने जवाब दिया।

“अहा! मैं समझ गया—बस यही बात है—समझदारी से काम लेना। तुम बहुत छोटे हो—जिस भूमिका को तुम निभाने जा रहे हो उसके लिए बहुत छोटे हो; तुम्हें सावधान रहना होगा—समझ रहे हो?”

लेकिन इसमें खतरा क्या है?

मुझे नहीं पता - अपने आप को प्रबल धारणाओं से प्रभावित न होने दें - बस इतना ही।

मैं हँस पड़ा: यह सोचकर मेरे मन में एक असीम आनंद की लहर दौड़ गई कि शायद कुछ जीवंत भावनाएँ उत्पन्न होंगी; अब तक तो जीवन की नीरसता, रोज़मर्रा की एकरसता ही मेरी परेशानी का कारण थी; लड़कों के सेमिनरी में मेरी ब्लाउज़-पहने "एलेव्स" (छात्रवृत्ति) ने मुझमें कभी कोई जीवंत भावनाएँ नहीं जगाईं, सिवाय कभी-कभार थोड़े गुस्से के। मैं एम. पेलेट से अलग हुआ, और जैसे ही मैं गलियारे से नीचे उतरा, वह अपनी एक खास फ्रांसीसी, शरारती, मज़ाकिया हँसी के साथ मेरे पीछे-पीछे आया।

मैं फिर से पास वाले दरवाजे पर खड़ा हो गया, और जल्द ही मुझे उस खुशनुमा गलियारे में प्रवेश मिल गया जिसकी दीवारें कबूतर के रंग के नकली संगमरमर जैसी थीं। मैं द्वारपाल के पीछे-पीछे चला, एक सीढ़ी उतरकर मुड़ा और खुद को एक गलियारे में पाया; एक बगल का दरवाजा खुला और मैडम रॉयटर की छोटी सी आकृति, जितनी सुंदर थी उतनी ही गोल-मटोल भी, दिखाई दी। अब मैं दिन के उजाले

में उनकी पोशाक को साफ देख सकता था; एक साफ-सुथरा, साधारण मूसलिन-लेन गाउन उनके गोल-मटोल शरीर पर एकदम फिट बैठ रहा था - नाजुक छोटा कॉलर और लेस के फ्रेम, पेरिस की कढ़ाई वाले ब्रोडेक्विन उनकी गर्दन, कलाई और पैरों को खूबसूरती से उभार रहे थे; लेकिन जब वह अचानक मेरे सामने आईं तो उनका चेहरा कितना गंभीर था! उनकी आंखों में - उनके माथे पर - चिंता और काम का भाव साफ झलक रहा था; वह लगभग सख्त लग रही थीं। उनका "बॉन जूर, मोनसिउर" काफी विनम्र था, लेकिन इतना व्यवस्थित, इतना सामान्य कि इसने मेरे मन पर एक ठंडा, नम तौलिया जैसा प्रभाव डाल दिया। जब मालकिन प्रकट हुई तो नौकरानी पीछे मुड़ गई, और मैं मैडम रॉयटर के साथ धीरे-धीरे गलियारे में चलने लगी।

“आज पहली कक्षा में महोदय एक पाठ पढ़ाएंगे,” उसने कहा; “शिकायत या पढ़ना शायद शुरुआत के लिए सबसे अच्छा तरीका होगा, क्योंकि ये विदेशी भाषा में निर्देश संप्रेषित करने के सबसे आसान तरीके हैं; और, शुरुआत में, एक शिक्षक स्वाभाविक रूप से थोड़ा असहज महसूस करता है।”

वह बिलकुल सही थी, जैसा कि मैंने अपने अनुभव से पाया था; अब मुझे बस उसकी बात माननी थी। अब हम चुपचाप आगे बढ़े। गलियारा एक बड़े, ऊँचे और चौकोर हॉल में जाकर खत्म हुआ; एक तरफ के काँच के दरवाजे से अंदर एक लंबा, संकरा भोजन कक्ष दिखाई दिया, जिसमें मेजें, एक अलमारी और दो लैंप थे; वह खाली था; सामने के बड़े काँच के दरवाजे खेल के मैदान और बगीचे की ओर खुलते थे; दूसरी तरफ एक चौड़ी सीढ़ी घुमावदार तरीके से ऊपर जाती थी; बची हुई दीवार पर दो बड़े तह वाले दरवाजे थे, जो अब बंद थे और जिनसे: निस्संदेह, कक्षाएँ खुलती थीं।

मैडम रॉयटर ने मेरी ओर तिरछी नज़र डाली, शायद यह जानने के लिए कि क्या मैं उनके पवित्र कक्ष में प्रवेश करने के लिए पर्याप्त रूप से संयमित हूँ। मुझे लगता है कि उन्होंने मुझे आत्म-नियंत्रित पाया, क्योंकि उन्होंने दरवाज़ा खोला और मैं उनके पीछे-पीछे अंदर चला गया। प्रवेश करते ही सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी; दाएं या बाएं देखे बिना, मैं दो बेंचों और मेजों के बीच बनी गली में सीधा चला गया और एक सीढ़ी ऊंचे चबूतरे पर रखी खाली कुर्सी और अलग मेज पर बैठ गया, ताकि मैं एक हिस्से पर अपना नियंत्रण रख सकूँ; दूसरा हिस्सा इसी तरह ऊंचे चबूतरे पर बैठी एक महिला की निगरानी में था। चबूतरे के पीछे, और इस कक्षा को दूसरे से अलग करने वाले एक

चल विभाजन से जुड़ा हुआ, काले रंग से रंगा और वार्निश किया हुआ लकड़ी का एक बड़ा चित्र था; मेरी मेज पर सफेद चाक की एक मोटी पेंसिल रखी थी ताकि पाठों में व्याकरण या शब्दों की किसी भी अस्पष्टता को चित्र पर लिखकर स्पष्ट किया जा सके; चाक के बगल में एक गीला स्पंज दिखाई दिया, ताकि जब निशान अपना उद्देश्य पूरा कर लें तो मैं उन्हें मिटा सकूं।

मैंने अपने सामने की बेंचों पर एक नज़र डालने से पहले सावधानीपूर्वक और सोच-समझकर ये अवलोकन किए; क्रेयॉन को हाथ में लेने के बाद, चित्र को पीछे मुड़कर देखने के बाद, स्पंज को छूकर यह सुनिश्चित करने के बाद कि वह सही नमी की स्थिति में है, मैंने खुद को इतना शांत पाया कि मैं शांति से ऊपर देख सकूं और जानबूझकर अपने चारों ओर निहार सकूं।

और सबसे पहले मैंने देखा कि मैडम रॉयटर पहले ही चली गई थीं, वह कहीं दिखाई नहीं दे रही थीं; एक गृहिणी या शिक्षिका, जो मेरे बगल वाले गलियारे में बैठती थीं, केवल मेरी निगरानी के लिए वहीं रह गई थीं; वह थोड़ी छाया में थीं, और मेरी कमज़ोर नज़र से मैं केवल इतना ही देख सका कि उनका शरीर दुबला-पतला और रंग कुछ पीला था, और उनके बैठने का अंदाज़ उदासीनता और बनावटीपन दोनों का मिश्रण था। बड़ी खिड़की की पूरी रोशनी में, मेरे ठीक सामने वाली बेंचों पर बैठे लोग अधिक स्पष्ट और प्रमुखता से दिखाई दे रहे थे, जिनमें से कुछ चौदह, पंद्रह, सोलह वर्ष की लड़कियाँ थीं, कुछ अठारह (जैसा कि मुझे लगा) से लेकर बीस वर्ष तक की युवतियाँ थीं; सभी ने बेहद शालीन पोशाक पहनी थी, बालों को सबसे सरल तरीके से संवारा था; और सुंदर चेहरे, लालिमा लिए हुए, खिलखिलाते रंग, बड़ी और चमकदार आँखें, सुडौल, यहाँ तक कि ठोस शरीर, सभी बहुतायत में दिखाई दे रहे थे। मैंने पहले दृश्य को एक संयमी व्यक्ति की तरह सहन नहीं किया; मैं चकित रह गया, मेरी आँखें झुक गईं, और मैंने कुछ धीमी आवाज़ में बुदबुदाया—

"अपनी श्रुतलेख की नोटबुक निकालो, युवतियों।"

मैंने पेलेट के स्कूल में लड़कों को अपनी पढ़ने की किताबें लेने के लिए नहीं कहा था। तभी सरसराहट हुई और डेस्क खुलने की आवाज़ आई; डेस्क के ढक्कनों के पीछे, जो क्षण भर के लिए झुके हुए सिरों को छिपा रहे थे ताकि वे अभ्यास पुस्तिकाएँ खोज सकें, मुझे हल्की फुसफुसाहट और ठहाके सुनाई दिए।

“यूलाली, मुझे तो हंसी के ठहाके लगने वाले हैं,” एक ने कहा।

बोलते समय वह कितना शरमा रहा था!

"हां, वह सचमुच एक नौसिखिया है।"

"चुप रहो, होर्टेंस—वह हमारी बातें सुन रहा है।"

और अब पलकें झुक गईं और चेहरे फिर से दिखाई देने लगे; मैंने तीन को चिह्नित कर लिया था, फुसफुसाने वालों को, और मैंने उन्हें उनके अस्थायी ग्रहण से बाहर आते ही ध्यान से देखने में कोई संकोच नहीं किया। यह आश्चर्यजनक है कि उनकी चंचलता भरी छोटी-छोटी बातों ने मुझे कितनी सहजता और साहस प्रदान किया था; जिस विचार से मैं भयभीत था, वह यह था कि मेरे सामने मौजूद युवा, अपने काले नन जैसे वस्त्रों और कोमल गुंथे हुए बालों के साथ, एक प्रकार के अर्ध-देवदूत थे। हल्की हंसी, मदहोश कर देने वाली फुसफुसाहट ने मेरे मन से उस प्यारे और दमनकारी भ्रम को कुछ हद तक दूर कर दिया था।

जिन तीन महिलाओं का मैं जिक्र कर रहा हूँ, वे ठीक मेरे सामने, मेरे प्रवेश द्वार से आधे गज की दूरी पर थीं, और उपस्थित महिलाओं में सबसे अधिक स्त्रीत्वपूर्ण दिख रही थीं। उनके नाम मुझे बाद में पता चले, और अब बता देना उचित होगा; वे थीं यूलाली, हॉर्टेंस और कैरोलीन। यूलाली लंबी और बेहद सुडौल थीं: उनका रंग गोरा था, और उनकी विशेषताएं किसी देहाती देवी जैसी थीं; मैंने डच चित्रों में कई "फिगर्ड डे वर्जिन" देखी हैं जो बिल्कुल उनसे मिलती-जुलती हैं; उनके शरीर या चेहरे में कोई कोण नहीं था, सब कुछ वक्र और गोलाई थी - न विचार, न भावना, न जुनून उनकी पीली, साफ त्वचा की समानता को रेखा या लाली से विचलित करते थे; उनकी सुडौल छाती उनकी नियमित साँसों के साथ ऊपर-नीचे होती थी, उनकी आँखें थोड़ी हिलती थीं - जीवन के इन प्रमाणों से ही मैं उन्हें मोम की किसी बड़ी सुंदर मूर्ति से अलग पहचान सकता था। हॉर्टेंस मध्यम कद और हृष्ट-पुष्ट थीं, उनका शरीर भद्दा था, उनका चेहरा आकर्षक था, यूलाली से अधिक जीवंत और तेजस्वी, उनके बाल गहरे भूरे थे, उनका रंग गहरा था; उसकी आँखों में चंचलता और शरारत झलक रही थी: उसमें शायद संयम और अच्छी समझ थी, लेकिन उसके चेहरे के किसी भी भाव से ये गुण झलकते नहीं थे।

कैरोलिन कद में छोटी थी, फिर भी देखने में पूरी तरह विकसित लग रही थी; काले घने बाल, गहरी आँखें, एकदम सधे हुए चेहरे के नैन-नक्श, और सांवली जैतून जैसी रंगत, चेहरे पर साफ़ और गर्दन पर पीली, ये सब मिलकर उसके सौंदर्य का वो संगम

बनाते थे जिसे कई लोग सुंदरता की पराकाष्ठा मानते हैं। उसकी त्वचा की निर्मल पीली रंगत और चेहरे की सीधी बनावट के बावजूद वो इतनी कामुक कैसे दिखती थी, ये मैं नहीं जानता। मुझे लगता है उसके होंठ और आँखें मिलकर ऐसा जादू कर देती थीं, और इसका नतीजा देखने वाले के मन में कोई संदेह नहीं छोड़ता था। वो अब कामुक थी, और दस साल बाद वो भद्दी हो जाएगी - उसके चेहरे पर भविष्य की नादानियों के स्पष्ट संकेत लिखे थे।

अगर मैं इन लड़कियों को बिना किसी संकोच के देखता, तो वे मुझे और भी कम संकोच से देखतीं। यूलाली ने अपनी स्थिर नज़र मेरी ओर उठाई, और मानो निष्क्रिय रूप से, लेकिन सुरक्षित रूप से, अपने राजसी आकर्षण की एक सहज प्रशंसा की अपेक्षा कर रही हो। हॉर्टेंस ने मुझे निडरता से देखा, और साथ ही खिलखिलाकर हंसते हुए, एक धृष्ट स्वतंत्रता के भाव से कहा—

"कृपया कुछ ऐसा लिखवाएं जो हमारे लिए शुरू करने में आसान हो, महोदय।"

कैरोलीन ने अपने घने, लेकिन कुछ हद तक रूखे, घुंघराले बालों को अपनी गोल-गोल काली आँखों पर झटक दिया; अपने होंठों को, जो किसी जोशीली मैरून महिला के होंठों की तरह भरे हुए थे, खोलकर उसने अपने सजे-धजे दाँत दिखाए जो उनके बीच चमक रहे थे, और साथ ही मुझे अपनी खास मुस्कान से अभिवादन किया। पॉलीन बोर्गेसी की तरह सुंदर, वह उस क्षण ल्यूक्रेस डी बोर्जिया से शायद ही अधिक पवित्र लग रही थी। कैरोलीन एक कुलीन परिवार से थी। मैंने बाद में उसकी माँ के चरित्र के बारे में सुना, और तब मुझे बेटी की असाधारण प्रतिभा पर आश्चर्य होना बंद हो गया। मैंने तुरंत देखा कि ये तीनों खुद को स्कूल की रानी समझती थीं, और मानती थीं कि अपनी शान से वे बाकी सभी को फीका कर देती हैं। पाँच मिनट से भी कम समय में उन्होंने मुझे अपने चरित्र का परिचय दे दिया, और पाँच मिनट से भी कम समय में मैंने भी कठोर उदासीनता का कवच पहन लिया और निर्भीक संयम का मुखौटा उतार लिया।

मैंने इतनी नीरस और घिसी-पिटी आवाज़ में कहा, मानो मैं केवल जूल्स वेंडरकेल्कोव और उनके साथियों को ही संबोधित कर रहा हूँ, “अपनी कलम उठाओ और लिखना शुरू करो।”

अब प्रवचन शुरू हुआ। मेरी तीनों सुंदरियाँ लगातार छोटे-छोटे बेतुके सवालों और अनावश्यक टिप्पणियों से मुझे टोकती रहीं, जिनमें से कुछ का मैंने कोई जवाब नहीं

दिया, और कुछ का बहुत धीरे और संक्षेप में उत्तर दिया। “Comment dit-on point et virgule en Anglais, monsieur?”

“सेमीकोलन, मैडमोजेल।”

“अर्ध-लंबा? ओह, कितना मजेदार!” (हंसते हुए)

मेरी लेखन शैली इतनी खराब है कि लिखना नामुमकिन है!

"लेकिन, महोदय—मैं आपके साथ नहीं चल पा रहा हूँ—आप बहुत तेज़ चल रहे हैं।"

मुझे कुछ समझ नहीं आया!

यहाँ एक सामान्य फुसफुसाहट उठी, और शिक्षिका ने पहली बार अपने होंठ खोलकर कहा—

“चुप रहो, देवियों!”

इसके बाद कोई सन्नाटा नहीं छा गया — बल्कि इसके विपरीत, सामने बैठी तीनों महिलाएं और भी जोर से बोलने लगीं।

अंग्रेजी बहुत कठिन है!

“Je deteste la dictee.”

“जिस चीज को आप समझते ही नहीं, उसे लिखना कितना उबाऊ होता है!”

पीछे बैठे कुछ लोग हंस पड़े: कक्षा में कुछ हद तक भ्रम की स्थिति पैदा होने लगी; तत्काल उपाय करना आवश्यक था।

मैंने यूलाली से अचानक लहजे में कहा, "मुझे अपनी नोटबुक दे दो" और झुककर मैंने उसे देने से पहले ही नोटबुक ले ली।

“और आप, मैडम, मुझे अपना दीजिए,” मैंने थोड़ा नरम लहजे में कहा, दूसरी पंक्ति में पहली पंक्ति में बैठी एक छोटी, पीली-सी दिखने वाली लड़की को संबोधित करते हुए, जिसके बारे में मैंने टिप्पणी की थी कि वह कमरे में सबसे बदसूरत और सबसे चौकस थी; वह उठी, मेरे पास आई और गंभीर, विनम्र अभिवादन के साथ अपनी किताब मुझे सौंप दी। मैंने दोनों श्रुतलेखों पर एक नज़र डाली; यूलाली का श्रुतलेख अस्पष्ट, धब्बेदार और मूर्खतापूर्ण गलतियों से भरा था - सिल्वी (उस बदसूरत छोटी लड़की का यही नाम था) का श्रुतलेख स्पष्ट रूप से लिखा हुआ था, उसमें अर्थ के विरुद्ध कोई त्रुटि नहीं थी, और वर्तनी की कुछ ही गलतियाँ थीं। मैंने शांत भाव से दोनों अभ्यासों को जोर से पढ़ा, गलतियों को चिह्नित करते हुए - फिर मैंने यूलाली की

ओर देखा:

“यह शर्मनाक है!” मैंने कहा, और मैंने जानबूझकर उसकी लिखी हुई किताब को चार टुकड़ों में फाड़ दिया, और उसे वे टुकड़े दे दिए। मैंने मुस्कुराते हुए सिल्वी को उसकी किताब लौटा दी और कहा—

“यह अच्छी बात है—मैं तुमसे खुश हूँ।”

सिल्वी शांत भाव से संतुष्ट दिख रही थी, जबकि यूलाली क्रोधित टर्की की तरह फूल रही थी, लेकिन विद्रोह शांत हो गया: पहली बेंच पर बैठे लोगों का घमंडी नखरा और व्यर्थ की छेड़छाड़ एक मौन उदासी में तब्दील हो गई, जो मेरे लिए कहीं अधिक सुविधाजनक थी, और मेरा बाकी का पाठ बिना किसी रुकावट के संपन्न हुआ।

आंगन में बजती घंटी ने स्कूल के कामों के समापन का ऐलान कर दिया। उसी समय मैंने अपने स्कूल की घंटी सुनी, और उसके तुरंत बाद एक सरकारी कॉलेज की घंटी भी। सन्नाटा पल भर में बिगड़ गया; सभी छात्र उठ खड़े हुए। मैं जल्दी से अपनी टोपी उठाकर, अध्यापिका को प्रणाम करके कमरे से बाहर निकल गया, इससे पहले कि अंदर की कक्षा से लगभग सौ छात्र बाहर आ जाएं, जहां मुझे पता था कि लगभग सौ छात्र बंद हैं, और जिनका शोरगुल मैं पहले ही सुन चुका था।

मैंने अभी हॉल पार करके गलियारे में कदम ही रखा था कि मैडम रॉयटर फिर से मेरे सामने आ गईं।

“एक पल के लिए अंदर आ जाइए,” उसने कहा और बगल वाले कमरे का दरवाज़ा खोल दिया, जहाँ से वह मेरे आने पर निकली थी; यह एक डाइनिंग हॉल था, जैसा कि उसके सुंदर अलाव और कांच के बर्तनों से भरे अलमारी से पता चलता था, जो उसके फर्नीचर का हिस्सा थे। इससे पहले कि वह मेरे और अपने लिए दरवाज़ा बंद करती, गलियारा दिन के विद्यार्थियों से भर गया था, जो अपने लबादे, टोपियाँ और काबा लकड़ी के खूंटों से उतार रहे थे; बीच-बीच में एक गृहिणी की तीखी आवाज़ सुनाई देती थी, जो किसी तरह अनुशासन बनाए रखने की व्यर्थ कोशिश कर रही थी; व्यर्थ ही, मैं कहता हूँ: इन उबड़-खाबड़ छात्रों में अनुशासन नाम की कोई चीज नहीं थी, और फिर भी इसे ब्रसेल्स के सबसे अच्छे स्कूलों में से एक माना जाता था।

"ठीक है, आपने अपना पहला पाठ पढ़ा दिया है," मैडम रॉयटर ने अत्यंत शांत और सौम्य स्वर में कहना शुरू किया, मानो उन्हें उस अराजकता का बिल्कुल भी एहसास न हो जिससे हम केवल एक दीवार से अलग थे।

“क्या आप अपने विद्यार्थियों से संतुष्ट थे, या उनके आचरण में कोई ऐसी बात थी जिसके कारण आपको शिकायत हुई हो? मुझसे कुछ भी न छिपाएं, मुझ पर पूरा भरोसा रखें।”

खुशी की बात यह थी कि मुझे अपने विद्यार्थियों को बिना किसी सहायता के संभालने की पूरी क्षमता महसूस हो रही थी; वह आकर्षण, वह सुनहरा धुंध जिसने पहले मेरी दृष्टि को चकाचौंध कर दिया था, काफी हद तक छंट चुका था। मैं यह नहीं कह सकती कि एक वृद्धाश्रम की वास्तविकता और उसी समुदाय के मेरे अस्पष्ट आदर्श के बीच के अंतर से मैं दुखी या निराश थी; बल्कि मैं ज्ञानवर्धक और आनंदित थी; इसलिए, मुझे मैडम रॉयटर से शिकायत करने का कोई मन नहीं हुआ, और मैंने उनके विश्वास के निमंत्रण को मुस्कुराते हुए स्वीकार किया।

"बहुत-बहुत धन्यवाद, महोदया, सब कुछ बहुत ही सुचारू रूप से हो गया।"

वह बेहद संशय में दिख रही थी।

“और पहली बेंच पर बैठी वो तीन युवतियां?” उसने कहा।

“आह! सब ठीक चल रहा है!” मेरा जवाब था, और मैडम रॉयटर ने मुझसे सवाल करना बंद कर दिया; लेकिन उनकी आँख—न बड़ी, न चमकीली, न कोमल, न प्रज्वलित, बल्कि तीक्ष्ण, मर्मस्पर्शी, व्यावहारिक—दिखा रही थी कि वह मेरे साथ हैं; उनकी आँख में एक क्षणिक चमक आई, जिसने स्पष्ट रूप से कहा, “जितना चाहो उतना करीब रहो, मैं तुम्हारी ईमानदारी पर निर्भर नहीं हूँ; जो तुम छिपाना चाहते हो, वह मैं पहले से ही जानती हूँ।”

इतनी खामोशी से, मानो किसी को पता ही न चले, निध्यापिका का व्यवहार बदल गया; उनके चेहरे से चिंता और काम का भाव गायब हो गया, और वे मौसम और शहर के बारे में बातें करने लगीं, और पड़ोस की तरह एम. और मैडम पेलेट का हालचाल पूछने लगीं। मैंने उनके सभी छोटे-छोटे सवालों के जवाब दिए; उन्होंने अपनी बात को लंबा खींच दिया, और मैं उनकी बातों को घुमाता रहा; वे इतनी देर तक बैठी रहीं, इतना कुछ कहा, और बातचीत के विषय इतनी बार बदले कि यह समझना मुश्किल नहीं था कि मुझे इस तरह रोके रखने के पीछे उनका कोई खास मकसद था। उनके मात्र शब्दों से इस मकसद का कोई संकेत नहीं मिल सकता था, लेकिन उनके चेहरे के हाव-भाव ने इसमें मदद की; हालांकि उनके होंठ केवल सौहार्दपूर्ण सामान्य बातें कह रहे थे, उनकी आंखें लगातार मेरे चेहरे पर टिकी हुई थीं। उनकी निगाहें पूरी तरह से

नहीं पड़ रही थीं, बल्कि कोनों से, इतनी खामोशी से, इतनी चुपके से, फिर भी मुझे लगता है कि मैंने एक भी नज़र नहीं खोई। मैंने उन्हें उतनी ही उत्सुकता से देखा जितनी उत्सुकता से उन्होंने मुझे देखा; मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि वे मेरे असली चरित्र को परख रही थीं; वे मुख्य बिंदुओं और कमजोर बिंदुओं, और विलक्षण बिंदुओं की तलाश कर रही थीं; वह कभी यह, कभी वह परीक्षण कर रही थी, इस उम्मीद में कि अंत में उसे कोई कमजोरी, कोई अवसर मिल जाए, जहाँ वह अपना छोटा सा मजबूत पैर जमाकर मेरी गर्दन पर कब्जा जमा सके — मेरे स्वभाव की स्वामिनी। पाठक, मुझे गलत न समझें, वह कोई प्रेमपूर्ण प्रभाव प्राप्त करना नहीं चाहती थी — उस समय तो वह केवल राजनीतिज्ञ की शक्ति प्राप्त करना चाहती थी; मैं अब उसके संस्थान में प्रोफेसर के पद पर आसीन था, और वह यह जानना चाहती थी कि उसका दिमाग मुझसे कहाँ श्रेष्ठ है — किस भावना या राय से वह मुझे अपने वश में कर सकती है।

मुझे खेल में बहुत आनंद आया और मैंने इसे जल्दी खत्म करने की कोशिश नहीं की; कभी-कभी मैं अपनी बात को कमजोर ढंग से शुरू करके उसे उम्मीद दिला देता था, और उसकी पैनी नज़र चमक उठती थी—उसे लगता था कि उसने मुझे फंसा लिया है; उसे थोड़ा बहकाने के बाद, मैं पलटकर अपनी बात को ठोस और सटीक शब्दों में खत्म कर देता था, जिससे उसका चेहरा उतर जाता था। अंत में एक नौकर खाने की घोषणा करने आया; इस प्रकार संघर्ष समाप्त हो गया और हम बिना किसी लाभ के अलग हो गए: मैडम रॉयटर ने मुझे भावनाओं से उसे जवाब देने का मौका भी नहीं दिया था, और मैं उसकी चालाकी भरी छोटी-छोटी योजनाओं को नाकाम करने में कामयाब रहा था। यह एक बराबरी का मुकाबला था। कमरे से निकलते समय मैंने फिर से अपना हाथ बढ़ाया, उसने भी अपना हाथ बढ़ाया; उसका हाथ छोटा और सफेद था, लेकिन कितना ठंडा! मैंने उसकी आँखों में भी सीधे देखा—जिससे वह मुझे सीधी नज़र से देखने के लिए मजबूर हो गई; यह आखिरी परीक्षा मेरे खिलाफ गई: इसने उसे वैसे ही छोड़ दिया जैसे वह थी—संयमित, शांत, स्थिर; मुझे इसने निराश किया।

"मैं समझदार होता जा रहा हूँ," एम. पेलेट के घर लौटते हुए मैंने सोचा। "इस छोटी सी महिला को देखो; क्या यह उपन्यासकारों और प्रेम कहानियों में वर्णित महिलाओं जैसी है? कविता और कथा साहित्य में चित्रित नारी चरित्र को पढ़कर ऐसा

लगता है मानो वह भावनाओं से भरा हो, चाहे अच्छी हों या बुरी – यहाँ एक ऐसा ही नमूना है, और वह भी अत्यंत समझदार और सम्माननीय, जिसका मूल तत्व अमूर्त तर्क है। ज़ोराइड रॉयटर से ज़्यादा भावहीन तो कोई टैलीरैंड भी नहीं रहा!” तब तो मैंने यही सोचा था; बाद में मुझे पता चला कि भोली-भाली भावनाएँ प्रबल प्रवृत्तियों के साथ बहुत मेल खाती हैं।

अध्याय XI.

उस धूर्त छोटे राजनेता से मेरी काफ़ी देर तक बात हुई थी, और अपने कमरे में पहुँचकर मैंने देखा कि खाना आधा खत्म हो चुका था। खाने में देर करना उस प्रतिष्ठान का एक नियम था, और अगर सूप हटाए जाने और पहला कोर्स शुरू होने के बाद कोई फ्लेमिश सेवक अंदर आता, तो एम. पेलेट शायद उसे सबके सामने फटकार लगाते और उससे सूप और मछली दोनों ज़ब्त करवा देते; लेकिन उस विनम्र, हालांकि पक्षपाती सज्जन ने केवल अपना सिर हिलाया, और जैसे ही मैं अपनी जगह पर बैठा, अपना नैपकिन खोला और मन ही मन प्रार्थना की, उन्होंने विनम्रता से एक नौकर को रसोई में भेजा, ताकि मेरे लिए "प्यूरी ऑक्स कैरोटेस" (क्योंकि यह एक माइग्रे-डे था) की एक प्लेट लाएँ, और पहला कोर्स भेजने से पहले, मेरे लिए उसमें से स्टॉक-फिश का एक हिस्सा बचाकर रख दिया। खाना खत्म होने पर, लड़के शाम के खेल के लिए बाहर भागे; किंट और वैंडम (दोनों सेवक) भी उनके पीछे-पीछे चले गए। बेचारे! अगर वे इतने उदास, इतने भावहीन और स्वर्ग से लेकर धरती तक हर चीज़ के प्रति इतने उदासीन न दिखते, तो मैं उन पर बहुत दया करता, क्योंकि उन्हें हर जगह और हर समय उन बदतमीज़ लड़कों के पीछे-पीछे चलना पड़ता था; फिर भी, जब मैं अपने

कमरे में जाने के लिए मुड़ा, तो मैंने खुद को एक विशेषाधिकार प्राप्त घमंडी समझा, क्योंकि मुझे यकीन था कि वहाँ मुझे आनंद नहीं तो कम से कम स्वतंत्रता तो मिलेगी; लेकिन आज शाम (जैसा कि पहले भी कई बार हो चुका था) मैं और भी अलग दिखने वाला था।

"अच्छा, बुरा विषय!" मेरे पीछे से मिस्टर पेलेट की आवाज़ आई, जैसे ही मैंने सीढ़ी के पहले पायदान पर अपना पैर रखा, "तुम कहाँ जा रहे हो? भोजन कक्ष में आओ, ताकि मैं तुम्हें थोड़ा डांट सकूँ।"

"महाशय, मुझे क्षमा करें," मैंने उनके निजी बैठक कक्ष में उनके पीछे जाते हुए कहा, "इतनी देर से लौटने के लिए—यह मेरी गलती नहीं थी।"

"मैं यही तो जानना चाहता था," एम. पेलेट ने जवाब दिया और मुझे लकड़ी की अच्छी-खासी आग वाले आरामदायक बैठक कक्ष में ले गए—क्योंकि चूल्हा अब मौसम के लिए हटा दिया गया था। घंटी बजाकर उन्होंने "दो लोगों के लिए कॉफ़ी" का आदेश दिया और थोड़ी ही देर में हम दोनों लगभग अंग्रेज़ी अंदाज़ में, चूल्हे के दोनों ओर बैठ गए। हमारे बीच एक छोटी गोल मेज़ थी, जिस पर एक कॉफ़ी पॉट, एक चीनी का कटोरा और दो बड़े सफ़ेद चीनी मिट्टी के कप रखे थे। जब एम. पेलेट एक डिब्बे से सिगार चुन रहे थे, तब मेरे विचार उन दो निकाले गए कर्मचारियों की ओर लौट गए, जिनकी आवाज़ें मुझे अभी भी खेल के मैदान में कर्कश स्वर में व्यवस्था बनाए रखने के लिए चिल्लाती सुनाई दे रही थीं।

"यह निगरानी एक बड़ी जिम्मेदारी है," आई ने टिप्पणी की।

"माफ़ कीजिए?" श्री पेलेट ने कहा।

मैंने कहा कि मुझे लगता है कि श्रीमान वैंडम और श्रीमान किंट कभी-कभी अपने काम से थोड़ा थक जाते होंगे।

"Des betes de somme, — des betes de somme," निर्देशक ने तिरस्कारपूर्वक बुदबुदाया। इसी बीच मैंने उन्हें उनकी कॉफी का कप दिया।

"सर्वेज़-वू मोन गार्सन," उसने बेपरवाही से कहा, जब मैंने उसके कप में चीनी के दो बड़े टुकड़े डाले। "और अब मुझे बताओ कि तुम मैडम रॉयटर के यहाँ इतनी देर क्यों रुके रहे। मुझे पता है कि उनके यहाँ और मेरे यहाँ भी कक्षाएं चार बजे समाप्त होती हैं, और जब तुम लौटे तो पाँच बज चुके थे।"

"महोदया मुझसे बात करना चाहती थीं, महोदय।"

“जी हाँ! किस विषय पर? अगर आप पूछें तो।”

"महोदया ने कुछ भी नहीं कहा, महोदय।"

“यह एक महत्वपूर्ण विषय है! और क्या उन्होंने विद्यार्थियों के सामने कक्षा में इस पर चर्चा की?”

"नहीं; आपकी ही तरह, महोदय, उन्होंने भी मुझे अपने बैठक कक्ष में आने के लिए कहा था।"

“और मैडम रॉयटर— वो बूढ़ी औरत— मेरी माँ की गपशप करने वाली, वो भी वहाँ थी, बिल्कुल?”

नहीं, महोदय; मुझे मैडमोजेल के साथ बिल्कुल अकेले रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

“C’est joli — cela,” एम. पेलेट ने कहा और मुस्कुराते हुए आग की ओर देखा।

“होनी सोइत क्वि माल वाई पेंस,” मैं गंभीरता से बुदबुदाया।

"मैं अपने छोटे पड़ोसी को थोड़ा-बहुत जानता हूँ - आप देखिए।"

"ऐसे में, महोदय मुझे यह पता लगाने में मदद कर सकेंगे कि मैडमोजेल ने मुझे एक घंटे के लिए अपने सोफे के सामने क्यों बैठाया, और मुझे तुच्छ बातों पर सबसे विस्तृत और धाराप्रवाह भाषण सुनने के लिए मजबूर किया।"

वह आपके किरदार की नकल कर रही थी।

मुझे भी यही लगा था, महोदय।

क्या उसे तुम्हारी कमजोरी का पता चल गया?

मेरी कमजोरी क्या है?

"अरे वाह, तुम कितने भावुक हो! कोई भी स्त्री जो अपने तीर को काफी गहराई तक चलाती है, अंततः तुम्हारे हृदय में संवेदनशीलता के अथाह झरने तक पहुँच ही जाएगी, क्रिम्सवर्थ।"

मुझे अपने दिल के आसपास खून का संचार महसूस हुआ और वह गर्माहट के साथ मेरे गालों तक चढ़ गया।

"कुछ महिलाएं ऐसा कर सकती हैं, महोदय।"

“क्या मिस रॉयटर यहाँ हैं? खुलकर बोलो, मेरे बेटे; वह अभी जवान हैं, शायद तुमसे उम्र में थोड़ी बड़ी हों, लेकिन उनमें एक नन्ही माँ की कोमलता और एक समर्पित

पत्नी का प्यार दोनों समाहित हैं; क्या यह तुम्हारे लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं होगा?”

"नहीं, महोदय; मैं चाहता हूँ कि मेरी पत्नी मेरी पत्नी ही रहे, न कि मेरी माँ की आधी।"

"तो क्या वह आपके लिए थोड़ी ज्यादा उम्र की है?"

"नहीं, महोदय, अगर वह अन्य मामलों में मेरे लिए उपयुक्त है तो उम्र के हिसाब से वह बिल्कुल भी पुरानी नहीं है।"

“विलियम, वह आपको किस बात में पसंद नहीं है? वह व्यक्तिगत रूप से तो मनभावन है, है ना?”

"बिल्कुल; उसके बाल और रंग-रूप मुझे बहुत पसंद हैं; और उसकी शारीरिक बनावट, हालांकि पूरी तरह से बेल्जियम की है, फिर भी बेहद आकर्षक है।"

“वाह! और उसका चेहरा? उसकी विशेषताएं? आपको कैसी लगीं?”

"थोड़ा कठोर, खासकर उसका मुंह।"

“अहा, हाँ! उसके होंठ,” एम. पेलेट ने कहा और मन ही मन मुस्कुराए। “उसके होंठों में एक खास अंदाज़ है—दृढ़ता—लेकिन उसकी मुस्कान बहुत प्यारी है; क्या आपको ऐसा नहीं लगता?”

"काफी चालाक।"

"सच है, लेकिन कलात्मकता का वह भाव उसकी भौहों की वजह से है; क्या आपने उसकी भौहों पर ध्यान दिया है?"

मैंने जवाब दिया कि मैंने ऐसा नहीं किया था।

“क्या तुमने उसे नीचे देखते हुए नहीं देखा?” उसने कहा।

"नहीं।"

फिर भी, यह एक सुखद अनुभव है। उसे तब देखिए जब वह बुनाई कर रही हो, या किसी और महिला का काम कर रही हो, और शांति की मूर्ति की तरह बैठी हो, अपनी सुइयों और रेशम पर तल्लीन हो, इस बीच उसके आसपास कुछ चर्चा चल रही हो, जिसमें चरित्र की विशेषताओं का पता चल रहा हो, या महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श हो रहा हो; वह उसमें कोई भाग नहीं लेती; उसका विनम्र, स्त्रीत्वपूर्ण मन पूरी तरह से बुनाई में लीन होता है; उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदलता; वह न तो सहमति में मुस्कुराती है, न ही असहमति में भौंहें चढ़ाती है; उसके छोटे हाथ लगन से अपना सरल कार्य करते हैं; यदि वह केवल यह पर्स पूरा कर ले, या यह ग्रीक टोपी

बना ले, तो उसके लिए पर्याप्त है। यदि सज्जन उसकी कुर्सी के पास आते हैं, तो उसके चेहरे पर एक गहरी शांति, एक नम्रता छा जाती है, और उसके समग्र आभामंडल को ढक लेती है; तब उसकी भौहों को देखिए, और मुझे बताइए कि क्या एक में बिल्ली और दूसरे में हिरण नहीं है।

मैंने कहा, "मैं पहले अवसर पर ही इस पर ध्यान दूंगा।"

“और फिर,” एम. पेलेट ने आगे कहा, “पलकें फड़केंगी, हल्के रंग की पलकें एक पल के लिए उठेंगी, और एक नीली आंख, पर्दे के नीचे से झांकते हुए, अपना संक्षिप्त, चालाक, खोजपूर्ण सर्वेक्षण करेगी, और फिर वापस चली जाएगी।”

मैं मुस्कुराया, और पेलेट भी मुस्कुराया, और कुछ मिनटों की चुप्पी के बाद, मैंने पूछा:

"क्या आपको लगता है कि वह कभी शादी करेगी?"

“शादी! क्या पक्षी जोड़े बनाते हैं? बेशक, जब उसे कोई उपयुक्त साथी मिलेगा तो शादी करना उसका इरादा और संकल्प दोनों है, और वह खुद से बेहतर यह नहीं जानती कि वह किस तरह का प्रभाव पैदा कर सकती है; चुपचाप मोहित करना उससे बेहतर किसी को पसंद नहीं होता। अगर वह तुम्हारे दिल पर अपने कदमों की छाप नहीं छोड़ेगी, तो मैं गलत हूँ, क्रिम्सवर्थ।”

“उसके कदमों के बारे में? बिलकुल नहीं! मेरा दिल कोई तख्ता नहीं है जिस पर चला जा सके।”

"लेकिन मखमली कपड़े का कोमल स्पर्श इसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा।"

वह मुझे मखमली कपड़े नहीं पहनाती; वह मेरे साथ पूरी तरह से शालीन और संयमित रहती है।

“शुरुआत में यही बात मायने रखती है; सम्मान को आधार बनाएं, स्नेह को पहली मंजिल और प्रेम को ऊपरी संरचना; मैडम रॉयटर एक कुशल वास्तुकार हैं।”

“और ब्याज, श्रीमान पेलेट—ब्याज। क्या महोदया इस बात पर विचार नहीं करेंगी?”

“जी हाँ, इसमें कोई शक नहीं; यह हर पत्थर के बीच सीमेंट का काम करेगा। और अब जब हमने निध्यापिका के बारे में बात कर ली है, तो विद्यार्थियों का क्या? N’y-a-t-il pas de belles etudes parmi ces jeunes tetes?”

“चरित्रों का अध्ययन? हाँ; कम से कम जिज्ञासापूर्ण तो होंगे ही, जैसा कि मैं

कल्पना करता हूँ; लेकिन पहली मुलाकात से ज्यादा कुछ पता नहीं लगाया जा सकता।”

“अरे, आप तो विवेक का दिखावा करते हैं; लेकिन अब मुझे बताइए, क्या इन खिलते हुए युवा प्राणियों के सामने आपको थोड़ी शर्म नहीं आई?”

"शुरू में तो हां; लेकिन मैंने खुद को संभाला और पूरे धैर्य के साथ इस स्थिति से बाहर निकल आया।"

मुझे आपकी बात पर विश्वास नहीं है।

“यह सच है, फिर भी। पहले तो मैंने उन्हें फरिश्ते समझा, लेकिन उन्होंने मुझे उस भ्रम में ज्यादा देर तक नहीं रहने दिया; उनमें से तीन सबसे बड़े और सुंदर ने मुझे सही राह दिखाने का जिम्मा उठाया, और उन्होंने इतनी चतुराई से काम लिया कि पांच मिनट में ही मैं उन्हें जान गई कि वे असल में क्या थे - तीन सरासर नखरेबाज़।”

“मैं उन्हें जानता हूँ!” श्री पेलेट ने उत्साह से कहा। “वे हमेशा चर्च और सैरगाह पर सबसे आगे वाली पंक्ति में बैठी रहती हैं; एक बेहद खूबसूरत गोरी, एक प्यारी सी शरारती और एक सुंदर सांवली।”

"बिल्कुल।"

“ये सभी कितनी प्यारी हैं — कलाकारों के लिए आदर्श! अगर इन्हें एक साथ लिया जाए तो क्या गजब का समूह बनेगा! यूलाली (मैं इनके नाम जानती हूँ), अपने चिकने गुंथे बालों और शांत हाथीदांत जैसे माथे के साथ। हॉर्टेंस, अपने घने भूरे बालों को इतनी खूबसूरती से गुंथे, चोटी बनाए, घुमाए, मानो उसे पता ही न हो कि इन बालों को कैसे संभाले, अपने लाल होंठों, रेशमी गालों और शरारती हँसती आँखों के साथ। और कैरोलिन डी ब्लेमोंट! आह, क्या खूबसूरती है! परिपूर्ण सुंदरता। किसी अप्सरा के चेहरे पर काले घुंघराले बालों का क्या ही खूबसूरत घेरा! क्या ही आकर्षक होंठ! क्या ही शानदार काली आँखें! तुम्हारा बायरन तो उसकी पूजा करता, और तुम — तुम ठंडे, निर्मम द्वीपवासी! — तुम इतनी खूबसूरत एफ्रोडाइट की उपस्थिति में कठोर, बेपरवाह बने रहे?”

अगर मुझे निर्देशक का उत्साह वास्तविक लगता तो शायद मैं उस पर हंस देता, लेकिन उनके लहजे में कुछ ऐसा था जिससे लग रहा था कि यह बनावटी उत्साह है। मुझे लगा कि वह सिर्फ मुझे भ्रमित करने और बदले में कुछ कहने के लिए ही ऐसा कर रहे हैं, इसलिए मैंने मुश्किल से ही मुस्कुराया। उन्होंने आगे कहा:

"विलियम, क्या तुम स्वीकार करोगे कि ज़ोराइड रॉयटर की मात्र अच्छी सूरत उसके कुछ विद्यार्थियों के शानदार आकर्षण की तुलना में भद्दी और साधारण नहीं लगती?"

इस प्रश्न ने मुझे विचलित कर दिया, लेकिन अब मुझे स्पष्ट रूप से महसूस हो रहा था कि मेरे प्रधानाचार्य (जिन कारणों से वे स्वयं ही बेहतर जानते थे - उस समय मैं उन्हें समझ नहीं पा रहा था) मेरे मन में ऐसे विचार और इच्छाएँ उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे थे जो उचित और सम्मानजनक नहीं थे। उकसावे की इस कुटिलता ने ही इसका प्रतिकार कर दिया, और जब उन्होंने आगे कहा: —

"उन तीनों खूबसूरत लड़कियों में से प्रत्येक के पास अच्छी खासी दौलत होगी; और थोड़ी सी चतुराई से, तुम्हारे जैसा एक सज्जन, बुद्धिमान युवक उन तीनों में से किसी का भी हाथ, दिल और पैसा जीत सकता है।"

मैंने एक नजर और प्रश्नवाचक स्वर में "महाशय?" कहकर जवाब दिया, जिससे वह चौंक गया।

वह बनावटी हंसी हंसा, यह जताते हुए कि वह सिर्फ मजाक कर रहा था, और मुझसे पूछा कि क्या मैंने उसे सच में गंभीर समझा था। तभी घंटी बजी; खेल का समय समाप्त हो गया था; यह एक ऐसी शाम थी जिस पर एम. पेलेट अपने छात्रों को नाटक और साहित्य के अंश पढ़कर सुनाते थे। उन्होंने मेरे जवाब का इंतजार नहीं किया, बल्कि उठकर कमरे से बाहर चले गए, जाते समय वे बेरेंजर की कोई मधुर धुन गुनगुना रहे थे।

अध्याय XII.

मैडम रॉयटर के सेमिनरी में अपनी उपस्थिति जारी रखते हुए, मुझे प्रतिदिन आदर्श और वास्तविकता की तुलना करने के नए अवसर मिलते रहे। ब्रुसेल्स आने से पहले मैं नारी चरित्र के बारे में क्या जानती थी? बहुत कम। और मेरी धारणा क्या थी? कुछ अस्पष्ट, हल्का, धुंधला, चमकीला; अब जब मैं इसके संपर्क में आई तो मैंने इसे एक ठोस पदार्थ पाया; कभी-कभी बहुत कठोर और अक्सर भारी; इसमें धातु थी, सीसा और लोहा दोनों।

आदर्शवादियों, सांसारिक देवदूतों और मानव पुष्पों के स्वप्नद्रष्टाओं को बस यहीं देखें, जब मैं अपना पोर्टफोलियो खोलकर उन्हें प्रकृति से प्रेरित एक-दो रेखाचित्र दिखा रहा हूँ। मैंने ये रेखाचित्र मैडम रॉयटर के प्रतिष्ठान के द्वितीय श्रेणी के स्कूल कक्ष में बनाए थे, जहाँ लगभग सौ युवतियाँ एक साथ एकत्रित थीं और विषयों की एक समृद्ध विविधता प्रस्तुत करती थीं। वे एक विविध समूह थीं, जो जाति और देश दोनों में भिन्न थीं; जब मैं अपने बरामदे पर बैठा और मेजों की लंबी कतार पर नज़र डाली, तो मेरी नज़र फ्रांसीसी, अंग्रेज, बेल्जियमवासी, ऑस्ट्रियाई और प्रशियाई लोगों पर पड़ी। अधिकांश बुर्जुआ वर्ग से थीं; लेकिन कई काउंटेस भी थीं, दो जनरलों और कई कर्नलों, कप्तानों और सरकारी कर्मचारियों की बेटियाँ भी थीं; ये महिलाएँ उन युवतियों के साथ-साथ बैठी थीं जो भविष्य में वेश्यालय में काम करने वाली थीं, और कुछ फ्लेमांडे, देश के वास्तविक मूल निवासी भी थीं। पहनावे में सभी लगभग एक जैसी थीं, और व्यवहार में बहुत कम अंतर था; सामान्य नियम के कुछ अपवाद अवश्य थे, परन्तु अधिकांश ने ही उस संस्था का स्वरूप निर्धारित किया, और वह स्वरूप कठोर, शोरगुल भरा था, जो एक-दूसरे या अपने शिक्षकों के प्रति किसी भी प्रकार की सहनशीलता की घोर अवहेलना से ढका हुआ था; प्रत्येक छात्रा अपने स्वार्थ और सुविधा की पूर्ति के लिए उत्सुक थी; और बाकी सभी के स्वार्थ और सुविधा के प्रति घोर उदासीनता रखती थी। उनमें से अधिकांश लाभप्रद प्रतीत होने पर बेशर्मी से झूठ बोल सकती थीं। सभी को अपने लाभ के लिए मीठी बातें बोलने की कला आती थी, और शिष्टाचार का लाभ समाप्त होते ही वे बड़ी कुशलता से और पल भर में ही संबंध तोड़ सकती थीं। उनके बीच खुलेआम झगड़े बहुत कम होते थे; परन्तु चुगली और कानाफूसी सर्वत्र प्रचलित थी। विद्यालय के नियमों के अनुसार घनिष्ठ मित्रता निषिद्ध थी, और कोई भी लड़की दूसरी लड़की के प्रति उतना ही सम्मान रखती थी जितना कि एकांत कष्टदायक होने पर साथी पाने के लिए आवश्यक था। ऐसा माना जाता था

कि उन सभी का पालन-पोषण बुराई से पूरी तरह अनभिज्ञता में हुआ था। उन्हें अज्ञानी, अगर निर्दोष नहीं तो, बनाए रखने के लिए अपनाई गई सावधानियां अनगिनत थीं। फिर यह कैसे संभव था कि चौदह वर्ष की आयु प्राप्त कर चुकी उन लड़कियों में से शायद ही कोई ऐसी थी जो किसी पुरुष का सामना शालीनता और मर्यादा से कर पाती हो? किसी पुरुष की सामान्य सी निगाह का भी जवाब एक बेशर्म, उद्दंड इश्कबाजी या एक भद्दी, मूर्खतापूर्ण घूरती निगाह से ही मिल जाता था। मैं रोमन कैथोलिक धर्म के रहस्यों से अनजान हूं, और मैं धर्मशास्त्र के मामलों में कट्टरपंथी नहीं हूं, लेकिन मुझे संदेह है कि इस अपरिपक्वता की जड़, जो पोपवादी देशों में इतनी स्पष्ट और व्यापक है, रोम के चर्च के सिद्धांतों में नहीं तो अनुशासन में ही निहित है। मैं वही लिख रहा हूं जो मैंने देखा है: ये लड़कियां समाज के सम्मानित वर्गों से थीं; उनका पालन-पोषण बहुत सावधानी से किया गया था, फिर भी उनमें से अधिकांश मानसिक रूप से भ्रष्ट थीं। यह तो सामान्य अवलोकन था: अब एक-दो चुनिंदा उदाहरणों पर नज़र डालते हैं।

पहली तस्वीर में ऑरेलिया कोस्लो का पूरा शरीर दिखाया गया है, जो एक जर्मन युवती है, या यूं कहें कि जर्मन और रूसी मिश्रित नस्ल की है। वह अठारह वर्ष की है और अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए ब्रुसेल्स भेजी गई है। उसका कद मध्यम है, शरीर गठीला है, लंबा शरीर, छोटी टांगें, सुविकसित लेकिन सुडौल नहीं, कमर एक अमानवीय रूप से कसे हुए कोर्सेट से असमान रूप से दबी हुई है, पोशाक करीने से सजी है, बड़े पैर छोटे बूटों की तरह कसे हुए हैं, सिर छोटा है, बाल चिकने, गुंथे हुए, तेल लगे और गोंद से चिपकाए हुए हैं; माथा बहुत नीचा है, छोटी और प्रतिशोधी भूरी आँखें हैं, कुछ हद तक तातार जैसी विशेषताएं हैं, नाक चपटी है, गाल की हड्डियाँ उभरी हुई हैं, फिर भी कुल मिलाकर वह बदसूरत नहीं है; रंगत ठीक-ठाक है। बस, यही है उसका व्यक्तित्व। दिमाग के मामले में, वह बेहद अज्ञानी और कम जानकारी वाली है: अपनी मातृभाषा जर्मन में भी वह ठीक से लिख या बोल नहीं पाती, फ्रेंच में तो वह बिलकुल ही नासमझ है, और अंग्रेजी सीखने के उसके प्रयास तो सरासर हास्यास्पद हैं, फिर भी वह बारह साल से स्कूल जा रही है; लेकिन चूंकि वह हमेशा अपने सभी प्रकार के अभ्यास किसी सहपाठी से करवाती है, और अपनी गोद में छिपी किताब से पाठ पढ़ती है, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उसकी प्रगति इतनी धीमी रही है। मुझे नहीं पता कि ऑरेलिया की दिनचर्या कैसी है, क्योंकि मुझे हर समय

उसे देखने का अवसर नहीं मिलता; लेकिन उसकी मेज, किताबों और कागजों की हालत देखकर मैं कह सकता हूँ कि वह लापरवाह और मैली है; जैसा कि मैंने कहा, उसके बाहरी कपड़े तो साफ-सुथरे रहते हैं, लेकिन उसकी बेंच के पीछे से गुजरते हुए मैंने देखा कि उसकी गर्दन धोने की कमी के कारण सफेद हो गई है, और उसके बाल गोंद और तेल से इतने चमकदार हैं कि उन्हें छूने का मन ही नहीं करता, उंगलियाँ फेरने की तो बात ही छोड़िए। कक्षा में ऑरेलिया का व्यवहार, कम से कम जब मैं मौजूद होती हूँ, तो वह असाधारण होता है, जिसे लड़कियों की मासूमियत का प्रतीक माना जा सकता है। जैसे ही मैं कमरे में प्रवेश करती हूँ, वह अपने बगल वाली सहपाठी को कोहनी मारती है और दबी हुई हंसी हंसती है। जैसे ही मैं गलियारे में बैठती हूँ, वह अपनी निगाहें मुझ पर गड़ा देती है; ऐसा लगता है जैसे वह मेरा ध्यान अपनी ओर खींचने और संभव हो तो उसे अपने वश में करने के लिए दृढ़ संकल्पित है: इसके लिए वह मुझ पर तरह-तरह की निगाहें डालती है, कभी उदास, कभी उकसाने वाली, कभी घूरने वाली, कभी हंसने वाली। चूंकि मैं इस तरह के हमलों से पूरी तरह अप्रभावित रहती हूँ—क्योंकि हम बिना मांगे दी गई किसी भी चीज़ को तुच्छ समझते हैं—इसलिए वह आवाजें निकालने का सहारा लेती है; कभी आहें भरती है, कभी कराहती है, कभी ऐसी अस्पष्ट ध्वनियाँ निकालती है जिनका भाषा में कोई नाम नहीं है। अगर चलते-चलते मैं उसके पास से गुजरती हूँ, तो वह अपना पैर आगे बढ़ाती है ताकि वह मेरे पैर को छू ले; अगर मैं इस चाल को देख नहीं पाता और मेरा जूता उसके लबादे से टकरा जाता है, तो वह दबी हुई हंसी हंसने का नाटक करती है; अगर मैं जाल को भांप लेता हूं और उससे बच जाता हूं, तो वह अपनी शर्मिंदगी को उदास बड़बड़ाहट में व्यक्त करती है, जिसमें मुझे खुद को टूटी-फूटी फ्रेंच में गाली खाते हुए सुनाई देता है, जिसका उच्चारण असहनीय निम्न जर्मन लहजे में होता है।

मैडम कोस्लो से कुछ ही दूरी पर एडेल ड्रोनसार्ट नाम की एक और युवती बैठी है: यह बेल्जियम की है, कद में थोड़ी छोटी, भारी-भरकम, चौड़ी कमर, छोटी गर्दन और पतले हाथ-पैरों वाली, सुंदर लाल और सफेद रंगत वाली, तराशे हुए और नियमित चेहरे के भाव, साफ भूरे रंग की सुंदर आंखें, हल्के भूरे बाल, अच्छे दांत, उम्र पंद्रह से थोड़ी ही अधिक, लेकिन बीस साल की किसी हष्ट-पुष्ट अंग्रेज युवती की तरह परिपक्व। यह चित्र एक थोड़ी मोटी लेकिन सुंदर युवती का आभास देता है, है ना? खैर, जब मैंने युवा चेहरों की पंक्ति पर नजर डाली, तो मेरी नजर अक्सर एडेल के

चेहरे पर ही रुक जाती थी; उसकी निगाहें हमेशा मेरी निगाहों का इंतजार करती रहती थीं, और अक्सर उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने में सफल भी हो जाती थीं। वह एक अस्वाभाविक सी दिखने वाली शख्सियत थी - इतनी युवा, ताजगी से भरी, खिलखिलाती हुई, फिर भी किसी राक्षसी जैसी। उसके माथे पर संदेह, उदासी और चिड़चिड़ापन था, उसकी आंखों में दुष्ट प्रवृत्ति थी, उसके मुंह पर ईर्ष्या और तेंदुआ जैसी छल-कपट थी। आम तौर पर वह बहुत शांत बैठी रहती थी; उसका विशाल शरीर ऐसा लगता था मानो वह ज़्यादा झुक नहीं सकता, और उसका बड़ा सिर—जो नीचे से चौड़ा और ऊपर से पतला था—उसकी छोटी गर्दन पर आसानी से घूम भी नहीं सकता था। उसके चेहरे पर दो ही भाव रहते थे; एक आम भाव था कठोर, असंतुष्ट भौंहें चढ़ाना, जो कभी-कभी एक बेहद धूर्त और कपटी मुस्कान में बदल जाता था। उसके सहपाठी उससे दूरी बनाए रखते थे, क्योंकि उनमें से कई बुरे थे, लेकिन उसके जितनी बुरी कोई नहीं थी।

ऑरेलिया और एडेल दूसरी कक्षा के पहले भाग में थीं; दूसरे भाग की मुखिया जुआना ट्रिस्टा नाम की एक पेंशनभोगी थीं। यह लड़की मिश्रित बेल्जियम और स्पेनिश मूल की थी; उसकी फ्लेमिश माँ का निधन हो चुका था, उसके कैटालोनियन पिता एक व्यापारी थे जो द्वीपों में रहते थे, जहाँ जुआना का जन्म हुआ था और जहाँ से उसे शिक्षा के लिए यूरोप भेजा गया था। मुझे आश्चर्य होता है कि उस लड़की के चेहरे और हाव-भाव को देखकर कोई उसे अपने घर में पनाह कैसे दे सकता था। उसकी खोपड़ी का आकार बिल्कुल पोप सिकंदर छठे जैसा था; उसके परोपकार, आदर, कर्तव्यनिष्ठा और धैर्य के अंग असाधारण रूप से छोटे थे, जबकि आत्मसम्मान, दृढ़ता, विध्वंस और लड़ाकू प्रवृत्ति के अंग बेतुके रूप से बड़े थे; उसका सिर ऊपर की ओर झुका हुआ था, माथा सिकुड़ा हुआ था और पीछे से उभरा हुआ था; उसके चेहरे की बनावट अच्छी थी, हालाँकि बड़ी और स्पष्ट थी; उसका स्वभाव कठोर और पित्तप्रिय था, रंग पीला और गहरा था, बाल और आँखें काली थीं, शरीर कोणीय और कठोर था लेकिन आनुपातिक था, उम्र पंद्रह वर्ष थी।

जुआना बहुत दुबली नहीं थी, लेकिन उसका चेहरा निर्मल था, और उसकी निगाहें उग्र और भूखी थीं; उसकी भौंहें संकरी थीं, फिर भी उन पर दो शब्द, विद्रोह और घृणा, स्पष्ट रूप से खुदे हुए थे; मुझे लगता है कि उसकी किसी अन्य आकृति में, उसकी आंख में भी कायरता का स्पष्ट संकेत था। मैडम ट्रिस्टा ने मेरे पहले पाठों में

एक अशिष्ट कार्यदिवस जैसी अशांति पैदा करना उचित समझा; वह घोड़े की तरह मुंह से आवाजें निकालती थी, लार थूकती थी, क्रूर शब्द बोलती थी; उसके पीछे और नीचे बहुत ही भद्दी, घटिया दिखने वाली फ्लेमांडे महिलाओं का एक समूह बैठा था, जिनमें दो-तीन ऐसी कुरूपता और मंदबुद्धि के उदाहरण थे, जिनकी नीदरलैंड में बार-बार उपस्थिति इस बात का प्रमाण देती प्रतीत होती है कि वहां की जलवायु मानव मन और शरीर के पतन को प्रेरित करती है; मुझे जल्द ही पता चला कि ये सब उसके प्रभाव में थे, और उनकी मदद से वह उठ खड़ी हुई और एक घिनौना हंगामा खड़ा कर दिया, जिसे अंततः मुझे शांत करने के लिए मजबूर होना पड़ा। मैंने उसे और उसके दो साथियों को अपनी सीटों से उठने का आदेश दिया, और उन्हें पाँच मिनट तक खड़ा रखने के बाद, उन्हें कक्षा से बाहर निकाल दिया: उसके साथियों को बगल के एक बड़े कमरे में, जिसे ग्रैंड सैले कहा जाता था, भेज दिया; और प्रधानाचार्य को एक कोठरी में बंद कर दिया, जिसका दरवाजा मैंने बंद कर दिया और चाबी अपनी जेब में रख ली। यह फैसला मैंने मैडम रॉयटर की उपस्थिति में सुनाया, जो इतनी कठोर कार्रवाई देखकर बहुत भयभीत हो गईं - यह उनके संस्थान में अब तक की सबसे कठोर कार्रवाई थी। मैंने उनकी भयभीत नज़र का जवाब संयमित नज़र से दिया, और अंत में एक मुस्कान के साथ, जिसने शायद उन्हें खुश किया, और निश्चित रूप से उन्हें शांत किया। जुआना ट्रिस्टा यूरोप में इतने लंबे समय तक रही कि उसने उन सभी लोगों को दुर्भावना और कृतघ्नता से चुकाया जिन्होंने कभी उसकी मदद की थी; और फिर वह अपने पिता के साथ द्वीपों में जाने के लिए रवाना हो गई, इस विचार से प्रसन्न होकर कि वहाँ उसके पास गुलाम होंगे, जिन्हें, जैसा कि उसने कहा, वह अपनी इच्छा से लात मार सकती है और पीट सकती है।

ये तीनों तस्वीरें उनके जीवन से ली गई हैं। मेरे पास कुछ और तस्वीरें भी हैं, जो उतनी ही भयावह और अप्रिय हैं, लेकिन मैं उन्हें अपने पाठक को दिखाकर संतुष्ट नहीं करना चाहता।

निस्संदेह यह सोचा जाएगा कि अब मुझे तुलना के तौर पर कुछ मनमोहक दिखाना चाहिए; किसी कोमल कुंवारी लड़की का सिर, जिसके चारों ओर प्रभामंडल हो, मासूमियत की कोई प्यारी मूर्ति, जो शांति के कबूतर को अपने सीने से लगाए हो। नहीं: मैंने ऐसा कुछ नहीं देखा, और इसलिए मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। विद्यालय में सबसे प्रसन्न स्वभाव वाली छात्रा लुईस पाथ थी, जो गाँव से आई थी; वह

काफी दयालु और मददगार थी, लेकिन अच्छी तरह से शिक्षित और सभ्य नहीं थी; इसके अलावा, उसमें कपट का दाग भी था; सम्मान और सिद्धांत उसके लिए अज्ञात थे, उसने शायद ही कभी उनके नाम सुने हों। सबसे कम दोषरहित छात्रा बेचारी छोटी सिल्वी थी जिसका जिक्र मैंने पहले भी किया है। सिल्वी स्वभाव से कोमल और बुद्धि से तेज थी; वह अपने धर्म के अनुसार ईमानदार भी थी, लेकिन उसका शारीरिक गठन दोषपूर्ण था; कमज़ोर सेहत ने उसके विकास को रोक दिया और उसके मनोबल को गिरा दिया। फिर, मठ में जाने के लिए नियति ने उसे इस कदर ढाल दिया कि उसकी पूरी आत्मा मठवासी झुकाव में डूब गई। उसके शांत, प्रशिक्षित अधीन व्यवहार से यह स्पष्ट होता था कि उसने अपने विचारों और कार्यों की स्वतंत्रता को किसी निरंकुश पादरी के हाथों में सौंपकर अपने भावी जीवन के लिए स्वयं को तैयार कर लिया था। उसने अपने लिए कोई मौलिक राय नहीं रखी, न ही किसी साथी या काम को प्राथमिकता दी; हर चीज़ में वह किसी और के मार्गदर्शन में चलती थी। एक फीके, निष्क्रिय, मशीनी भाव से वह सारा दिन वही करती रहती थी जो उसे करने को कहा जाता था; कभी भी वह नहीं करती थी जो उसे पसंद हो या जो उसे अपने अंतर्मन के विश्वास से सही लगता हो। बेचारी नन्ही भावी धर्मपरायण को बचपन से ही यह सिखाया गया था कि वह अपनी बुद्धि और विवेक को अपने आध्यात्मिक गुरु की इच्छा के पूरी तरह अधीन कर ले। वह मैडम रॉयटर के मठ की आदर्श शिष्या थी; एक फीकी, मुरझाई हुई छवि, जहाँ जीवन कमज़ोर रूप से मंडरा रहा था, लेकिन जहाँ से रोमन जादूगरी द्वारा आत्मा को जादू से प्रकट किया गया था!

इस विद्यालय में कुछ अंग्रेज़ छात्राएँ थीं, जिन्हें दो वर्गों में बाँटा जा सकता था। पहला वर्ग महाद्वीपीय अंग्रेज़ छात्राओं का था—मुख्यतः उन पतियों की बेटियाँ, जिन्हें कर्ज़ या बदनामी के कारण अपना देश छोड़ना पड़ा था। इन बेचारी लड़कियों को कभी भी स्थिर घर, सभ्य उदाहरण या ईमानदार प्रोटेस्टेंट शिक्षा का सुख नहीं मिला था; उनके माता-पिता एक देश से दूसरे देश भटकते रहते थे—फ्रांस से जर्मनी, जर्मनी से बेल्जियम—इसलिए वे कुछ महीने एक कैथोलिक विद्यालय में, कुछ महीने दूसरे में रहती थीं। उन्होंने थोड़ी-बहुत शिक्षा तो प्राप्त कर ली थी, लेकिन कई बुरी आदतें भी अपना ली थीं। धर्म और नैतिकता के मूलभूत सिद्धांतों का ज्ञान भी वे खो बैठी थीं और मानवता को ऊपर उठाने वाली हर भावना के प्रति उनमें एक मूर्खतापूर्ण उदासीनता आ गई थी। उनकी पहचान उनके चेहरे पर छाई उदासी और निराशा के भाव से होती थी,

जो उनके आत्मसम्मान के कुचल जाने और उनके कैथोलिक सहपाठियों द्वारा लगातार धमकाने का परिणाम था। ये सहपाठी उन्हें अंग्रेज़ होने के कारण नफ़रत करते थे और विधर्मी कहकर उनका तिरस्कार करते थे।

दूसरी श्रेणी के लोग ब्रिटिश अंग्रेज़ थे। सेमिनरी में अपने पूरे समय के दौरान मुझे इनमें से आधे दर्जन से भी कम लोग मिले; उनकी विशेषताएँ थीं: साफ-सुथरे लेकिन लापरवाह कपड़े, अव्यवस्थित बाल (विदेशियों के चुस्त और सलीके से बने बालों की तुलना में), सीधा खड़ा होना, लचीला शरीर, सफेद और पतले हाथ, बेल्जियमवासियों की तुलना में अधिक अनियमित लेकिन अधिक बौद्धिक चेहरे, गंभीर और विनम्र चेहरे, और स्वाभाविक शालीनता और शिष्टाचार का भाव; केवल इसी आखिरी विशेषता से मैं अल्बियन की बेटी और प्रोटेस्टेंट धर्म की पालक संतान को रोम की पालक संतान और जेसुइस्टी के संरक्षण में पली-बढ़ी लड़की से अलग पहचान सकता था: इन ब्रिटिश लड़कियों का रूप-रंग भी गर्व से भरा था; महाद्वीपीय साथियों द्वारा ईर्ष्या और उपहास का पात्र होने के बावजूद, वे कठोर शिष्टता से अपमान को दूर रखती थीं और घृणा का मौन तिरस्कार करती थीं; वे संगति से दूर रहती थीं और भीड़ के बीच भी एकांत में रहना पसंद करती थीं।

इस मिश्रित समूह की देखरेख करने वाली तीन शिक्षिकाएँ थीं, तीनों फ्रांसीसी थीं - उनके नाम थे: ज़ेफिरिन, पेलागी और सुज़ेट; अंतिम दो साधारण व्यक्तित्व वाली थीं; उनका रूप-रंग साधारण था, उनका व्यवहार साधारण था, उनका स्वभाव साधारण था, उनके विचार, भावनाएँ और दृष्टिकोण सब साधारण थे - यदि मैं इस विषय पर एक अध्याय लिखूँ तो भी मैं इसे और अधिक स्पष्ट नहीं कर पाऊँगा। ज़ेफिरिन दिखने और व्यवहार में पेलागी और सुज़ेट से कुछ अधिक विशिष्ट थीं, लेकिन स्वभाव से वह एक सच्ची पेरिसियन चंचल, कपटी, लालची और निर्मम थीं। एक चौथी शिक्षिका को मैंने कभी-कभार देखा जो प्रतिदिन कढ़ाई, या नेटिंग, या फीते की मरम्मत, या ऐसी ही कोई मामूली कला सिखाने आती प्रतीत होती थीं; लेकिन उनकी एक झलक से अधिक मुझे कभी नहीं मिली, क्योंकि वह अपने फ्रेम और लगभग एक दर्जन बड़े विद्यार्थियों के साथ कैरे में बैठी रहती थीं, इसलिए मुझे उनके चरित्र का अध्ययन करने या उनके व्यक्तित्व को अधिक ध्यान से देखने का अवसर नहीं मिला; मैंने गौर किया कि बाद वाली महिला, एक गृहिणी होने के नाते, काफी अंग्रेज़ स्वभाव की थी, अन्यथा वह उतनी प्रभावशाली नहीं थी; मेरे विचार से चरित्रवान तो वह थी ही, लेकिन

उसमें कुछ खास गुण नहीं थे, क्योंकि उसके विद्यार्थी उसकी सत्ता के विरुद्ध लगातार विद्रोह करते रहते थे। वह घर में नहीं रहती थी; मेरा मानना है कि उसका नाम मैडम हेनरी था।

इस तुच्छ और दोषपूर्ण माहौल के बीच, जहाँ बहुत कुछ दुष्ट और घृणित था (इस अंतिम विशेषण से कई लोग उन दो-तीन कठोर, मौन, शालीन व्यवहार वाली, भद्दी पोशाक वाली ब्रिटिश लड़कियों का वर्णन करते), समझदार, बुद्धिमान और मिलनसार निदेशिका जैक-ओ'-लैंटॉर्न से भरे दलदल में एक स्थिर तारे की तरह चमक रही थी; अपनी श्रेष्ठता के प्रति गहरी जागरूकता के साथ, वह उस चेतना से आंतरिक आनंद प्राप्त करती थी जो उसे उसकी स्थिति से अविभाज्य सभी देखभाल और जिम्मेदारी के तहत सहारा देती थी; इसने उसके स्वभाव को शांत, उसके माथे को सौम्य और उसके व्यवहार को सौम्य बनाए रखा। उसे अच्छा लगता था - जैसा कि किसे नहीं लगेगा? - स्कूल-कक्ष में प्रवेश करते ही, यह महसूस करना कि उसकी उपस्थिति ही उस व्यवस्था और शांति को फैलाने के लिए पर्याप्त थी जिसे उसके अधीनस्थों के सभी विरोध और यहाँ तक कि आदेश भी अक्सर लागू करने में विफल रहते थे; उसे अपने आसपास के लोगों से तुलना करना, या यूँ कहें कि उनसे भिन्न दिखना पसंद था, और यह जानकर उसे गर्व होता था कि व्यक्तिगत और मानसिक दोनों ही दृष्टियों से वह निर्विवाद रूप से श्रेष्ठ थी (तीनों शिक्षक साधारण थे)। वह अपने विद्यार्थियों का इतनी उदारता और कुशलता से प्रबंधन करती थी, हमेशा स्वयं ही उनकी प्रशंसा और सराहना करती थी, और अपने अधीनस्थों को दोषारोपण और दंड देने का हर घृणित कार्य सौंप देती थी, कि वे सभी उसका आदर करते थे, भले ही स्नेह न करते हों; उसके शिक्षक उससे प्रेम नहीं करते थे, लेकिन वे उसके अधीन रहते थे क्योंकि वे हर मामले में उससे कमतर थे; उसके विद्यालय में आने वाले सभी शिक्षक किसी न किसी रूप में उसके प्रभाव में थे; एक शिक्षक पर उसने उसके बुरे स्वभाव को कुशलतापूर्वक संभालकर शक्ति प्राप्त कर ली थी; दूसरे पर उसकी छोटी-छोटी सनक पर ध्यान देकर; तीसरे को उसने चापलूसी से वश में कर लिया था; चौथे - एक डरपोक व्यक्ति - को वह अपने कठोर और दृढ़ व्यवहार से भयभीत रखती थी। वह अब भी मुझे देखती रहती थी, अब भी बड़े-बड़े अजूबों से मुझे परखने की कोशिश करती रहती थी— वह मेरे चारों ओर घूमती रहती, उलझन में, फिर भी कोशिश करती रहती; मुझे लगता है कि वह मुझे एक चिकनी और नंगी चट्टान की तरह समझती थी, जिस पर चढ़ने वाले की मदद के

लिए न तो कोई उभरा हुआ पत्थर था, न पेड़ की जड़, न घास का कोई गुच्छा। कभी वह बड़ी चतुराई से मेरी चापलूसी करती, कभी उपदेश देती, कभी यह जानने की कोशिश करती कि मैं स्वार्थी इरादों से कितना प्रभावित हो सकता हूँ, फिर वह स्नेह की सीमा पर खेलती—यह जानते हुए कि कुछ पुरुष कमजोरी से जीते जाते हैं—और फिर बड़ी समझदारी की बातें करती, यह जानते हुए कि दूसरों में समझदारी की प्रशंसा करने की मूर्खता होती है। मुझे इन सभी कोशिशों से बचना सुखद और आसान लगता था; जब वह मुझे लगभग जीत लेती, तो मुड़कर उसकी आँखों में आधा तिरस्कारपूर्ण ढंग से मुस्कुराना और फिर उसकी लगभग छिपी हुई, हालांकि मौन पीड़ा को देखना सुखद लगता था। फिर भी उसने हार नहीं मानी, और आखिरकार, मुझे यह स्वीकार करना ही होगा, उसकी उंगली ने संदूक के हर कण को छूकर, उसकी गुप्त स्प्रिंग को छू लिया, और एक पल के लिए ढक्कन खुल गया; उसने अपना हाथ भीतर रखे रत्न पर रख दिया; चाहे उसने उसे चुराकर तोड़ दिया हो, या ढक्कन उसकी उंगलियों पर झट से बंद हो गया हो, आगे पढ़िए, और आपको पता चल जाएगा।

एक दिन मैं पढ़ाने आया, लेकिन मेरी तबीयत ठीक नहीं थी; मुझे ज़ुकाम और खांसी थी; लगातार दो घंटे बोलने से मेरी आवाज़ बैठ गई थी और मैं बहुत थका हुआ था। जब मैं क्लासरूम से निकला और गलियारे से गुज़र रहा था, तभी मेरी मुलाकात मैडम रॉयटर से हुई; उन्होंने चिंता भरे लहजे में कहा कि मैं बहुत पीला और थका हुआ लग रहा हूँ। मैंने कहा, "हाँ, मैं थका हुआ था।" फिर उन्होंने और दिलचस्पी से कहा, "जब तक आप कुछ खा-पी न लें, तब तक आप यहाँ से नहीं जा सकते।" उन्होंने मुझे बैठक में आने के लिए राजी किया और जब तक मैं वहाँ रुका, वे बहुत दयालु और विनम्र रहीं। अगले दिन वे और भी दयालु थीं; वे खुद कक्षा में आईं और देखा कि खिड़कियाँ बंद हैं और हवा का झोंका नहीं आ रहा है; उन्होंने मुझे बड़े प्यार से समझाया कि मैं ज़्यादा मेहनत न करूँ; जब मैं जाने लगा, तो उन्होंने बिना पूछे ही मुझे अपना हाथ दिया, और मैंने विनम्रता से हाथ मिलाकर यह जता दिया कि मैं उनके इस एहसान का आभारी हूँ। मेरे इस छोटे से प्रयास ने उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान ला दी; मुझे वह बेहद आकर्षक लगी। शाम के बाकी समय में, मेरा मन अगले दिन की दोपहर के आने का बेसब्री से इंतज़ार करता रहा, ताकि मैं उससे दोबारा मिल सकूँ।

मुझे निराशा नहीं हुई, क्योंकि वह मेरी अगली पूरी क्लास में बैठी रहीं और अक्सर मुझे लगभग स्नेह भरी निगाहों से देखती रहीं। चार बजे वह मुझे स्कूल से बाहर तक

छोड़ने आईं, मेरी सेहत के बारे में चिंता से पूछती रहीं, फिर मुझे मीठी आवाज़ में डांटती रहीं क्योंकि मैं बहुत ज़ोर से बोल रहा था और खुद को बहुत परेशान कर रहा था; मैं बगीचे की ओर जाने वाले कांच के दरवाज़े पर रुक गया ताकि उनकी बात पूरी सुन सकूँ; दरवाज़ा खुला था, मौसम बहुत सुहावना था, और जब मैं उनकी मीठी डांट सुन रहा था, तो मैं धूप और फूलों को देख रहा था और बहुत खुश महसूस कर रहा था। दिन के छात्र-छात्राएं स्कूल से निकलकर गलियारे में आने लगे।

"क्या आप एक-दो मिनट के लिए बगीचे में जा सकते हैं?" उसने पूछा, "जब तक वे चले न जाएं?"

मैंने बिना जवाब दिए सीढ़ियों से नीचे उतर गया, लेकिन मैंने पीछे मुड़कर देखा मानो कुछ कहना चाह रहा हो—

"क्या तुम मेरे साथ आओगे?"

अगले ही पल मैं और निध्यापिका फलदार पेड़ों से घिरी गली में कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे थे, जिनके सफेद फूल और कोमल हरे पत्ते पूरी तरह खिले हुए थे। आसमान नीला था, हवा शांत थी, मई की दोपहर चमक और सुगंध से भरपूर थी। घुटन भरे माहौल से मुक्त, फूलों और हरियाली से घिरी, एक मनमोहक, मुस्कुराती हुई, मिलनसार महिला के साथ - मुझे कैसा महसूस हो रहा था? बहुत ही ईर्ष्यालु। ऐसा लग रहा था मानो इस बगीचे के बारे में मेरी कल्पना में जो रोमांटिक दृश्य थे, जब यह अभी भी चारदीवारी से छिपा हुआ था, वे पूरी तरह साकार हो गए थे; और, जब गली के एक मोड़ ने घर का दृश्य छिपा दिया, और कुछ ऊँची झाड़ियों ने एम. पेलेट की हवेली को अलग कर दिया, और हमें क्षण भर के लिए अन्य घरों से अलग कर दिया, जो इस हरे-भरे स्थान के चारों ओर रंगमंच की तरह बने हुए थे, तो मैंने मैडम रॉयटर को अपना हाथ दिया और उन्हें पास में कुछ लिली के फूलों के नीचे रखी एक बगीचे की कुर्सी तक ले गई। वह बैठ गईं; मैं भी उनके बगल में बैठ गई। वह मुझसे बड़ी सहजता से बातें करती रही, और जैसे-जैसे मैं सुनता गया, मेरे मन में यह अहसास हुआ कि मैं प्यार में पड़ने ही वाला हूँ। उसके घर और एम. पेलेट के घर दोनों जगह खाने की घंटी बजी; हमें अलग होना पड़ा; जब वह जाने लगी तो मैंने उसे कुछ पल के लिए रोक लिया।

मैंने कहा, "मुझे कुछ चाहिए।"

"क्या?" ज़ोराइड ने भोलेपन से पूछा।

“सिर्फ एक फूल।”

"तो फिर इसे इकट्ठा कर लो—या दो, या बीस, अगर तुम चाहो तो।"

“नहीं—एक ही चलेगा—लेकिन आपको उसे इकट्ठा करके मुझे देना होगा।”

“यह कैसी सनक है!” वह चौंक उठी, लेकिन फिर अपने पंजों पर खड़ी होकर, बकाइन की एक सुंदर शाखा तोड़कर मुझे बड़े सलीके से भेंट की। मैंने उसे लिया और संतुष्ट होकर, भविष्य के लिए आशावान होकर चला गया।

वह मई का दिन निःसंदेह बहुत ही प्यारा था, और वह ग्रीष्म ऋतु की उमस और शांति से भरी चांदनी रात में समाप्त हुआ। मुझे यह अच्छी तरह याद है; क्योंकि उस शाम देर तक जागकर होमवर्क की जाँच करते हुए, थकावट और अपने छोटे से कमरे की घुटन महसूस करते हुए, मैंने अक्सर उल्लेखित तख्तों वाली खिड़की खोली, जिसके तख्ते मैंने बूढ़ी मैडम पेलेट को हटवाने के लिए मना लिया था, क्योंकि मैंने वृद्धाश्रम में प्रोफेसर का पदभार ग्रहण कर लिया था, और उस समय से मेरे लिए अपने विद्यार्थियों को उनके खेल-कूद में देखना अब "असुविधाजनक" नहीं रह गया था। मैं खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गया, अपना हाथ चौखट पर टिकाया और बाहर की ओर झुक गया: मेरे ऊपर बादलों से रहित रात का साफ आसमान था—चमकीली चांदनी ने तारों की टिमटिमाती रोशनी को फीका कर दिया था—नीचे बगीचा फैला हुआ था, चांदी जैसी चमक और गहरी छाया से भरा हुआ, ओस से भीगा हुआ—फलदार पेड़ों के बंद फूलों से एक मनमोहक सुगंध निकल रही थी—एक पत्ता भी नहीं हिल रहा था, रात बिल्कुल शांत थी। मेरी खिड़की से सीधे मैडम रॉयटर के बगीचे के एक खास रास्ते पर नज़र पड़ती थी, जिसे "ल'एली डिफेंड्यू" कहा जाता था, क्योंकि लड़कों के स्कूल के पास होने के कारण विद्यार्थियों को उसमें प्रवेश करने की मनाही थी। यहीं पर लिली और लेबर्नम के फूल विशेष रूप से घने उगते थे; यह बाड़े का सबसे सुरक्षित कोना था, इसकी झाड़ियों ने उस बगीचे की कुर्सी को ढक रखा था जहाँ मैं उस दोपहर युवा निध्यापिका के साथ बैठा था। कहने की आवश्यकता नहीं है कि जब मैं जाली से झुककर बगीचे की पगडंडियों और किनारों पर नज़रें गड़ाए बैठी थी, तो मेरे विचार मुख्य रूप से उसी के साथ थे। कभी मैं बगीचे के रास्तों और किनारों पर, तो कभी घनी पत्तियों के बीच से उठते हुए घर के कई खिड़कियों वाले अग्रभाग पर नज़र डाल रही थी। मैं सोच रही थी कि इमारत के किस हिस्से में उसका कमरा होगा; और एक खिड़की के शीशे से छनकर आती एक रोशनी मुझे उसी ओर निर्देशित

करती हुई प्रतीत हुई।

“वह देर रात तक जागती रहती है,” मैंने सोचा, “क्योंकि अब आधी रात होने वाली होगी। वह एक आकर्षक छोटी महिला है,” मैंने मन ही मन मौन स्वर में कहा; “उसकी छवि स्मृति में एक सुखद चित्र बनाती है; मैं जानता हूँ कि वह दुनिया की नज़र में सुंदर नहीं है— कोई बात नहीं, उसके रूप में एक सामंजस्य है, और मुझे वह पसंद है; उसके भूरे बाल, उसकी नीली आँखें, उसके गालों की ताजगी, उसकी गर्दन की सफेदी, सब कुछ मुझे भाता है। फिर मैं उसकी प्रतिभा का सम्मान करता हूँ; किसी गुड़िया या मूर्ख से शादी करने का विचार मुझे हमेशा से घृणित लगता था: मैं जानता हूँ कि एक सुंदर गुड़िया, एक सुंदर मूर्ख, हनीमून के लिए ठीक हो सकती है; लेकिन जब प्रेम ठंडा हो जाता है, तो यह कितना भयानक होता है कि मेरे सीने में मोम और लकड़ी का एक लोथड़ा रखा हो, मेरी बाहों में एक आधा मूर्ख जकड़ा हो, और यह याद करना कि मैंने इसे अपना बराबर— बल्कि, अपना आदर्श— बना लिया था, यह जानना कि मुझे अपना बाकी नीरस जीवन एक ऐसे प्राणी के साथ बिताना होगा जो मेरी कही हुई बातों को समझने, मेरे विचारों की सराहना करने या मेरी भावनाओं के प्रति सहानुभूति रखने में असमर्थ है! “अब, ज़ोराइड रॉयटर,” मैंने सोचा, “उसमें चतुराई, चरित्र, विवेक, समझ है; क्या उसमें दिल भी है?” जब उसने मुझे लिली की शाखा दी, तो उसके होठों पर कितनी प्यारी, भोली सी मुस्कान थी! मैंने उसे कभी-कभी चालाक, कपटी और स्वार्थी समझा है, यह सच है; लेकिन क्या उसके व्यवहार में जो कुछ भी धूर्तता और कपट जैसा दिखता है, वह वास्तव में उसकी सौम्य प्रकृति द्वारा पेचीदा मुश्किलों को चुपचाप पार करने का प्रयास मात्र नहीं है? और जहाँ तक स्वार्थ की बात है, वह दुनिया में अपना मुकाम बनाना चाहती है, इसमें कोई शक नहीं, और इसमें उसे कौन दोष दे सकता है? अगर वह वास्तव में सिद्धांतों में कमजोर भी है, तो क्या यह उसकी गलती से ज़्यादा उसकी बदकिस्मती नहीं है? उसका पालन-पोषण कैथोलिक धर्म में हुआ है: अगर वह एक अंग्रेज़ महिला के रूप में पैदा हुई होती और प्रोटेस्टेंट के रूप में पली-बढ़ी होती, तो क्या वह अपने सभी गुणों में सच्ची ईमानदारी को भी शामिल नहीं कर लेती? मान लीजिए कि उसकी शादी एक अंग्रेज़ और प्रोटेस्टेंट पति से होती, तो क्या वह, अपनी तर्कसंगत और समझदार प्रवृत्ति के कारण, सुविधा पर सच्चाई और नीति पर ईमानदारी की श्रेष्ठता को तुरंत स्वीकार नहीं कर लेती? यह प्रयोग करके देखना सार्थक होगा; कल मैं अपने अवलोकन को दोहराऊँगा। वह जानती

है कि मैं उसे देखता रहता हूँ: वह इतनी निगरानी में कितनी शांत रहती है! ऐसा लगता है कि यह बात उसे परेशान करने के बजाय संतुष्टि देती है। तभी संगीत की एक धुन मेरे एकालाप में समा गई और उसे रोक दिया; मुझे लगा कि यह किसी बिगुल की धुन थी, जिसे बहुत कुशलता से बजाया जा रहा था, शायद पार्क के पास या प्लेस रॉयल पर। उस समय, सन्नाटे और चांदनी की शांत रोशनी में, उसकी धुन इतनी मधुर और मनमोहक थी कि मैंने सोचना बंद कर दिया और ध्यान से सुनने लगा। धुन धीमी होती गई, उसकी ध्वनि मंद पड़ती गई और जल्द ही गायब हो गई; मेरे कान एक बार फिर आधी रात के पूर्ण सन्नाटे में आराम करने के लिए तैयार हो गए। नहीं। वह कैसी गुनगुनाहट थी जो धीमी, फिर भी पास और करीब आती जा रही थी, और पूर्ण सन्नाटे की उम्मीद को तोड़ रही थी? कोई बात कर रहा था - हाँ, स्पष्ट रूप से, मेरे ठीक नीचे बगीचे में एक धीमी, लेकिन सुनाई देने वाली आवाज़ सुनाई दी। दूसरे ने जवाब दिया; पहली आवाज़ एक पुरुष की थी, दूसरी एक महिला की; और मैंने एक पुरुष और एक महिला को धीरे-धीरे गली से नीचे आते देखा। पहले तो उनके शरीर छाया में थे, मैं केवल धुंधली रूपरेखा ही देख पा रहा था, लेकिन तभी चांदनी की एक किरण उन पर पड़ी। सैर का अंत तब हुआ, जब वे मेरी नाक के ठीक नीचे थे, और बहुत स्पष्ट रूप से, बहुत ही बेबाकी से, मैडम ज़ोराइड रॉयटर, मेरे प्रधान, विश्वासपात्र और सलाहकार, श्री फ्रांकोइस पेलेट के साथ कंधे से कंधा मिलाकर (या हाथ में हाथ डालकर, मुझे याद नहीं है कि कौन सा) चल रही थीं। और श्री पेलेट कह रहे थे—

"मेरी प्रियतमा, शादी का दिन कब होगा?"

और मैडम रॉयटर ने जवाब दिया —

लेकिन, फ्रांस्वा, तुम अच्छी तरह जानते हो कि छुट्टियों से पहले मेरी शादी करना असंभव होगा।

“जून, जुलाई, अगस्त, पूरा एक सत्र!” निर्देशक ने कहा। “मैं इतना लंबा इंतजार कैसे कर सकता हूँ? मैं तो अभी भी आपके चरणों में अधीर होकर मरने को तैयार हूँ!”

“आह! अगर आपकी मृत्यु हो जाती है, तो नोटरी और अनुबंधों के झंझट के बिना सारा मामला सुलझ जाएगा; मुझे केवल एक साधारण शोक वस्त्र का ऑर्डर देना होगा, जो विवाह वस्त्रों की तुलना में बहुत जल्दी तैयार हो जाएगा।”

“क्रूर ज़ोराइड! तुम मेरे जैसे सच्चे दिल से तुमसे प्रेम करने वाले की पीड़ा पर हंस रही हो: मेरी पीड़ा तुम्हारा खेल है; तुम ईर्ष्या की आग में मेरी आत्मा को तड़पाने में

जरा भी संकोच नहीं करती; क्योंकि चाहे तुम इसे कितना भी नकारो, मुझे पूरा यकीन है कि तुमने उस स्कूली लड़के, क्रिम्सवर्थ पर प्रोत्साहन भरी निगाहें डाली हैं; उसने प्रेम करने का साहस किया है, जो वह तब तक नहीं कर पाता जब तक तुमने उसे आशा की किरण न दिखाई होती।"

"तुम क्या कहते हो, फ्रांस्वा? क्या तुम कहते हो कि क्रिम्सवर्थ मुझसे प्यार करता है?"

"सिर और कानों के ऊपर।"

क्या उसने आपको ऐसा बताया है?

"नहीं—पर मैंने उसके चेहरे पर देखा है: जब भी तुम्हारा नाम लिया जाता है, वह शरमा जाता है।" मैडम रॉयटर की इस जानकारी पर खुशी भरी हल्की हंसी ने उनकी संतुष्टि का ऐलान किया (वैसे यह झूठ था—आखिरकार, मैं कभी इतना बहकावे में नहीं आया था)। एम. पेलेट ने आगे पूछा कि वह मेरे साथ क्या करने का इरादा रखती हैं, और काफी स्पष्ट और असभ्य ढंग से इशारा किया कि मेरे जैसे "गोरे" को पति के रूप में स्वीकार करने का उनका विचार ही व्यर्थ है, क्योंकि वह मुझसे कम से कम दस साल बड़ी होंगी (क्या वह तब बत्तीस साल की थीं? मुझे तो ऐसा नहीं लगता)। मैंने उन्हें इस विषय पर किसी भी इरादे से इनकार करते सुना—हालांकि, निर्देशक ने फिर भी उनसे एक निश्चित उत्तर देने के लिए दबाव डाला।

"फ्रांकोइस," उसने कहा, "तुम ईर्ष्यालु हो," और वह अभी भी हंस रही थी; फिर, मानो अचानक उसे याद आया कि यह नखरा उस शालीन गरिमापूर्ण छवि के अनुरूप नहीं था जिसे वह स्थापित करना चाहती थी, उसने संयमित स्वर में कहा: "सचमुच, मेरे प्यारे फ्रांकोइस, मैं यह नहीं मानती कि इस युवा अंग्रेज ने मुझसे मेल-मिलाप करने की कोशिश की होगी; लेकिन, उसे कोई प्रोत्साहन देने के बजाय, मैंने हमेशा उसके साथ यथासंभव संयम और शालीनता से व्यवहार किया है; तुमसे मेरी सगाई हो चुकी है, इसलिए मैं किसी को झूठी उम्मीदें नहीं दूंगी; मेरा विश्वास करो, मेरे प्रिय मित्र।" फिर भी पेलेट ने अविश्वास के स्वर में कुछ बुदबुदाया—कम से कम मुझे तो उसके जवाब से यही लगा।

"कितनी मूर्खता! मैं एक अनजान विदेशी को तुमसे ज़्यादा अहमियत कैसे दे सकती हूँ? और फिर—तुम्हारे घमंड को बढ़ावा देने के लिए नहीं—क्रिम्सवर्थ शारीरिक या मानसिक रूप से तुमसे तुलना नहीं कर सकता; वह बिल्कुल भी सुंदर आदमी नहीं

है; कुछ लोग उसे सज्जन और बुद्धिमान दिखने वाला कह सकते हैं, लेकिन मेरी राय में —”

बाकी वाक्य दूर तक सुनाई नहीं दिया, क्योंकि वे दोनों अपनी कुर्सी से उठकर चले गए। मैंने उनके लौटने का इंतज़ार किया, लेकिन जल्द ही एक दरवाज़े के खुलने और बंद होने की आवाज़ से मुझे पता चला कि वे घर में वापस आ गए हैं; मैंने थोड़ी देर और सुना, सब कुछ एकदम शांत था; मैंने एक घंटे से ज़्यादा सुना - आखिरकार मैंने एम. पेलेट को अंदर आते और अपने कमरे में जाते सुना। बगीचे वाले घर के लंबे सामने की ओर एक बार फिर नज़र डालते हुए, मैंने देखा कि उसकी अकेली बत्ती आखिरकार बुझ गई थी; और कुछ पल के लिए, प्यार और दोस्ती पर मेरा भरोसा भी टूट गया। मैं सोने चला गया, लेकिन मेरे अंदर कुछ ऐसा बुखार और बेचैनी दौड़ गई थी जिसने मुझे उस रात ज़्यादा सोने नहीं दिया।

अध्याय XIII.

अगली सुबह मैं भोर होते ही उठ गया, कपड़े पहनकर आधे घंटे तक दराजों पर कोहनी टिकाकर खड़ा रहा, यह सोचता रहा कि नींद की कमी से थके हुए अपने मन को सामान्य स्थिति में लाने के लिए क्या उपाय अपनाऊं—क्योंकि मेरा इरादा एम. पेलेट से झगड़ा करने, उन पर विश्वासघात का आरोप लगाने, उन्हें चुनौती देने या इस तरह की कोई और नौटंकी करने का नहीं था—अंततः मुझे सुबह की ठंडी हवा में पास के एक स्नानघर में जाकर ताजगी भरी डुबकी लगाने का उपाय सूझा। इस उपाय का मनचाहा असर हुआ। मैं सात बजे तरोताजा और ऊर्जावान होकर लौटा, और जब एम. पेलेट नाश्ते के लिए आए तो उनका अभिवादन शांत और अपरिवर्तित चेहरे से कर

सका; हाथ मिलाने का सौहार्दपूर्ण प्रस्ताव और "मेरे पुत्र" कहकर संबोधित करना, जो उस स्नेहपूर्ण स्वर में कहा गया था जिससे महोदय, विशेष रूप से हाल के दिनों में, मुझे संबोधित करने के आदी हो गए थे, मेरे दिल में दबी हुई भावनाओं का कोई बाहरी संकेत नहीं दे सका। ऐसा नहीं था कि मैं प्रतिशोध की भावना पाल रहा था - नहीं; लेकिन अपमान और विश्वासघात की भावना मेरे भीतर एक सुलगते कोयले की तरह सुलग रही थी, हालांकि अभी बुझी हुई थी। ईश्वर जानता है कि मैं स्वभाव से प्रतिशोधी नहीं हूँ; मैं किसी व्यक्ति को इसलिए चोट नहीं पहुँचाऊँगा क्योंकि मैं अब उस पर भरोसा नहीं कर सकता या उसे पसंद नहीं कर सकता; लेकिन न तो मेरी बुद्धि और न ही मेरी भावनाएँ अस्थिर हैं - वे उस रेत जैसी नहीं हैं जहाँ छापें, यदि जल्दी बनती हैं, तो उतनी ही जल्दी मिट भी जाती हैं। एक बार जब मुझे यकीन हो जाता है कि मेरे मित्र का स्वभाव मेरे स्वभाव से मेल नहीं खाता, एक बार जब मुझे यकीन हो जाता है कि वह कुछ ऐसे दोषों से अमिट रूप से कलंकित है जो मेरे सिद्धांतों के विपरीत हैं, तो मैं संबंध तोड़ देता हूँ। मैंने एडवर्ड के साथ भी ऐसा ही किया। जहाँ तक पेलेट की बात है, यह खोज अभी नई थी; क्या मुझे उसके साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए? यही सवाल मेरे मन में चल रहा था जब मैं अपनी कॉफी को एक छोटी सी चम्मच से हिला रही थी (हमारे पास कभी चम्मच नहीं होती थी)। इसी बीच पेलेट मेरे सामने बैठा था, उसका पीला चेहरा हमेशा की तरह अधिक समझदार और थका हुआ लग रहा था, उसकी नीली आंखें कभी अपने लड़कों और कर्मचारियों पर सख्ती से, तो कभी मुझ पर विनम्रता से टिकी हुई थीं।

“हालात ही मुझे राह दिखाएंगे,” मैंने कहा; और पेलेट की बनावटी नज़र और छल भरी मुस्कान को देखकर मैंने ईश्वर का शुक्र अदा किया कि पिछली रात मैंने अपनी खिड़की खोली थी और पूर्णिमा की रोशनी में उस कपटी चेहरे का असली मतलब समझ लिया था। मैं खुद को उसका आधा स्वामी महसूस कर रहा था, क्योंकि अब मुझे उसके स्वभाव की सच्चाई पता चल चुकी थी; चाहे वह मुस्कुराए और चापलूसी करे, मैंने उसकी मुस्कान के पीछे छिपी उसकी आत्मा को देखा और उसके हर मीठे वाक्य में छिपे धोखे भरे अर्थ को समझने वाली एक आवाज़ सुनी।

लेकिन ज़ोराइड रॉयटर? बेशक, उसके दल-बदल ने मुझे अंदर तक चोट पहुँचाई थी? वह घटना; क्या वह घाव इतना गहरा था कि दर्शनशास्त्र की कोई भी सांत्वना उसे ठीक नहीं कर सकती थी? बिलकुल नहीं। रात का बुखार उतर गया, मैंने उस घाव

पर मरहम ढूँढा, और गिलियड की तुलना में घर के पास ही कुछ मरहम मिल गया। तर्क ही मेरा चिकित्सक था; उसने यह साबित करके शुरुआत की कि जो पुरस्कार मैंने खोया था, उसका कोई खास महत्व नहीं था: उसने माना कि शारीरिक रूप से ज़ोराइड मेरे अनुकूल हो सकती थी, लेकिन उसने ज़ोर देकर कहा कि हमारी आत्माएँ एक-दूसरे के अनुरूप नहीं थीं, और उसके और मेरे मन के मिलन से ही असामंजस्य उत्पन्न हुआ होगा। फिर उसने सभी प्रकार के पश्चाताप को दबाने पर ज़ोर दिया, और मुझे आदेश दिया कि मैं इस बात पर प्रसन्न होऊँ कि मैं एक जाल से बच गया। उसकी दवा ने मुझे लाभ पहुँचाया। अगले दिन जब मैं निर्देशिका से मिला तो मैंने उसका सशक्त प्रभाव महसूस किया; नसों पर उसके कठोर प्रभाव से कोई कंपन या लड़खड़ाहट नहीं हुई; इसने मुझे दृढ़ता से उसका सामना करने और सहजता से उससे मिलने में सक्षम बनाया। उसने मेरी ओर हाथ बढ़ाया था - जिसे मैं देखना नहीं चाहता था। उसने एक मनमोहक मुस्कान के साथ मेरा अभिवादन किया—वह मुस्कान मेरे हृदय पर पत्थर पर प्रकाश की तरह उतरी। मैं बरामदे की ओर बढ़ा, वह मेरे पीछे आई; उसकी निगाहें मेरे चेहरे पर टिकी थीं, मानो मेरे बदले हुए और लापरवाह व्यवहार का अर्थ हर भाव से जानना चाहती हों। “मैं उसे जवाब दूंगा,” मैंने सोचा; और उसकी निगाहों से मिलते हुए, मैंने अपनी निगाहें उसकी आँखों में इस तरह डालीं, जैसे उसमें न सम्मान हो, न प्रेम, न कोमलता, न ही शिष्टाचार; जहाँ गहन विश्लेषण से केवल तिरस्कार, निर्भीकता और व्यंग्य ही झलक रहा था। मैंने उसे वह दृष्टि सहन करने और महसूस करने पर मजबूर किया; उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला, लेकिन उसका रंग खिल उठा और वह मानो मोहित होकर मेरे पास आ गई। वह बरामदे में आई और मेरे पास खड़ी हो गई; उसके पास कहने को कुछ नहीं था। मैं उसकी शर्मिंदगी दूर नहीं करना चाहता था, और लापरवाही से एक किताब के पन्ने पलटने लगा।

अंत में उसने धीमी आवाज में कहा, "मुझे उम्मीद है कि आज आप पूरी तरह से ठीक महसूस कर रहे होंगे।"

और मैं, महोदया, आशा करती हूँ कि बगीचे में देर रात टहलने के कारण आपको कल रात सर्दी नहीं लगी होगी।

वह मेरी बात को तुरंत समझ गई; उसका चेहरा थोड़ा पीला पड़ गया—बहुत थोड़ा—लेकिन उसकी स्पष्ट विशेषताओं में कोई हलचल नहीं हुई; और शांत और संयमित होकर वह चबूतरे से हटकर थोड़ी दूरी पर चुपचाप बैठ गई और एक पर्स बुनने में मग्न

हो गई। मैंने अपना पाठ पढ़ाना शुरू किया; यह एक "रचना" पाठ था, यानी मैंने कुछ सामान्य प्रश्न बताए, जिनके उत्तर विद्यार्थियों को स्मृति से लिखने थे, पुस्तकों का उपयोग वर्जित था। जब मैडम यूलाली, हॉर्टेंस, कैरोलीन, आदि मेरे द्वारा पूछे गए कुछ जटिल व्याकरणिक प्रश्नों पर विचार कर रही थीं, तब मुझे खाली आधे घंटे का उपयोग करके स्वयं शिक्षिका को और अधिक ध्यान से देखने का अवसर मिला। हरे रेशमी पर्स को वह अपने हाथों में तेजी से बुन रही थी; उसकी निगाहें उस पर टिकी हुई थीं; मेरे से दो गज की दूरी पर पर्स बुनते हुए भी उसका हावभाव अभी भी सतर्क था; उसके संपूर्ण व्यक्तित्व में एक साथ, समान स्पष्टता और शांति के साथ, सतर्कता और संयम का अद्भुत मेल झलक रहा था— एक दुर्लभ संयोग! उसे देखकर, मैं पहले की तरह ही, उसकी सूझबूझ और अद्भुत आत्म-संयम की अनायास ही प्रशंसा करने के लिए विवश हो गया। उसे महसूस हुआ था कि मैंने उससे अपना सम्मान वापस ले लिया है; उसने मेरी आँखों में तिरस्कार और शीतलता देखी थी, और उसके लिए, जो अपने चारों ओर सभी की प्रशंसा चाहती थी, जो सर्वत्र प्रशंसा की प्यासी थी, यह अनुभूति एक गहरा घाव रही होगी। मैंने उसके गालों की क्षणिक पीली रंगत में इसका प्रभाव देखा— उसके गाल जो रंग बदलने के आदी नहीं थे; फिर भी, आत्म-संयम के बल पर उसने कितनी जल्दी अपना संयम वापस पा लिया! अब वह कितनी शांत गरिमा के साथ, लगभग मेरे बगल में बैठी थी, अपनी सुदृढ़ और सशक्त समझ से प्रेरित; उसके थोड़े लंबे, लेकिन चतुर ऊपरी होंठ में कोई कंपन नहीं था, उसके गंभीर माथे पर कोई कायरतापूर्ण शर्म नहीं थी!

मैंने घूरते हुए कहा, "वहाँ धातु है। काश वहाँ आग भी होती, एक जीवंत जोश होता जो स्टील को चमका देता - तब मैं उससे प्यार कर पाता।"

कुछ देर बाद मुझे एहसास हुआ कि वह जानती थी कि मैं उसे देख रहा हूँ, क्योंकि वह हिली नहीं, उसने अपनी चालाक पलकें भी नहीं उठाईं; उसने अपनी जालीदार पोशाक से नज़र हटाकर अपने छोटे से पैर पर डाली, जो उसके बैंगनी मेरिनो गाउन की कोमल सिलवटों से झाँक रहा था; फिर उसकी नज़र वापस उसके हाथ पर गई, जो हाथीदांत की तरह सफेद था, तर्जनी उंगली में एक चमकीली गार्नेट की अंगूठी और कलाई पर फीते की हल्की सी झालर थी; उसने लगभग न के बराबर हरकत करते हुए अपना सिर घुमाया, जिससे उसके भूरे घुंघराले बाल खूबसूरती से लहरा उठे। इन छोटे-छोटे संकेतों से मैंने समझा कि उसके दिल की तमन्ना, उसके दिमाग की योजना, उस

शिकार को वापस लुभाना थी जिसे उसने डरा दिया था। एक छोटी सी घटना ने उसे मुझसे दोबारा बात करने का मौका दिया।

कक्षा में सन्नाटा पसरा हुआ था—सिर्फ कॉपी की सरसराहट और पन्नों पर कलमों की आवाज सुनाई दे रही थी—तभी हॉल से खुलने वाले बड़े तह वाले दरवाजे का एक पल्ला खुला, जिससे एक छात्रा अंदर आई। उसने जल्दी से प्रणाम किया और कुछ घबराहट भरे भाव से, शायद देर से आने के कारण, दरवाजे के सबसे पास वाली मेज पर खाली सीट पर बैठ गई। बैठते ही, वह अभी भी जल्दबाजी और झिझक के साथ, अपनी अलमारी खोलने और किताबें निकालने लगी; और जब मैं उसकी पहचान जानने के लिए उसके ऊपर देखने का इंतजार कर रहा था—क्योंकि मेरी कमज़ोर नज़र के कारण मैं उसे प्रवेश करते समय पहचान नहीं पाया था—तभी मैडम रॉयटर अपनी कुर्सी से उठकर गलियारे की ओर बढ़ीं।

“महाशय क्रीम्सवोर्ट,” उसने फुसफुसाते हुए कहा: क्योंकि जब स्कूल के कमरे शांत होते थे, तो निर्देशिका हमेशा मखमली कदमों से चलती थी और अत्यंत दबी हुई आवाज़ में बोलती थी, अनुशासन और शांति को उपदेश के साथ-साथ उदाहरण से भी पूरी तरह से लागू करती थी: “महाशय क्रीम्सवोर्ट, वह युवती, जो अभी-अभी प्रवेश कर रही है, आपसे अंग्रेजी की कक्षाएं लेना चाहती है; वह इस विद्यालय की छात्रा नहीं है; वास्तव में, एक अर्थ में, वह एक शिक्षिका है, क्योंकि वह फीते की मरम्मत और विभिन्न प्रकार की सजावटी कढ़ाई में प्रशिक्षण देती है। वह बहुत ही उचित रूप से उच्च शिक्षा विभाग के लिए स्वयं को योग्य बनाना चाहती है, और उसने अंग्रेजी के अपने ज्ञान को परिपूर्ण करने के लिए आपकी कक्षाओं में भाग लेने की अनुमति मांगी है, जिसमें उसने, मेरा मानना है, पहले ही कुछ प्रगति कर ली है; बेशक, मैं उसके इस प्रशंसनीय प्रयास में उसकी सहायता करना चाहती हूँ; तो आप उसे अपने शिक्षण से लाभ उठाने की अनुमति देंगे - है ना, महाशय?” और मैडम... रॉयटर की निगाहें मेरी ओर उठीं, उनकी आंखों में एक साथ भोलापन, दयालुता और विनती का भाव था।

मैंने बहुत संक्षिप्त और लगभग अचानक ही जवाब दिया, "बेशक।"

“एक और बात,” उसने कोमल स्वर में कहा: “श्रीमती हेनरी ने नियमित शिक्षा प्राप्त नहीं की है; शायद उनकी स्वाभाविक प्रतिभाएँ उच्चतम कोटि की न हों: लेकिन मैं आपको उनके नेक इरादों और मिलनसार स्वभाव का आश्वासन दे सकती हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि महाशय शुरू में उनके प्रति दयालु होंगे और उनकी पिछड़ी सोच,

उनकी अपरिहार्य कमियों को उन युवतियों के सामने उजागर नहीं करेंगे, जो एक तरह से उनकी शिष्याएँ हैं। क्या महाशय क्रीम्सवोर्ट मेरी इस बात पर ध्यान देंगे?” मैंने सिर हिलाया। वह दबी हुई गंभीरता के साथ बोलती रही—

"मुझे क्षमा करें, महोदय, यदि मैं यह कहने का साहस करूँ कि मैंने अभी जो कहा है वह उस बेचारी लड़की के लिए महत्वपूर्ण है; उसे पहले से ही इन चंचल युवाओं को अपनी सत्ता के प्रति उचित सम्मान सिखाने में बहुत कठिनाई हो रही है, और यदि उसकी अक्षमता के नए खुलासे से यह कठिनाई और बढ़ जाती है, तो उसे मेरे संस्थान में अपनी स्थिति बनाए रखना बहुत कष्टदायक लग सकता है; एक ऐसी स्थिति जिसका मुझे उसके लिए बहुत अफसोस होगा, क्योंकि वह यहाँ अपने काम के लाभ को खोने का जोखिम नहीं उठा सकती।"

मैडम रॉयटर में अद्भुत सूझबूझ थी; लेकिन सबसे विशिष्ट सूझबूझ भी, ईमानदारी के बिना, कभी-कभी अपना असर खो देती है; इस प्रकार, इस अवसर पर, जैसे-जैसे वह गवर्नेस छात्रा के प्रति उदार होने की आवश्यकता के बारे में उपदेश देती रहीं, वैसे-वैसे मैं सुनता-सुनता अधीर होता गया। मैंने स्पष्ट रूप से समझ लिया कि यद्यपि उनका घोषित उद्देश्य सुस्त, यद्यपि नेक इरादे वाली मैडम हेनरी की सहायता करना था, उनका वास्तविक उद्देश्य मुझे अपनी उच्च कोटि की अच्छाई और कोमल सहानुभूति का आभास कराना था; इसलिए उनकी बातों पर फिर से जल्दी से सहमति जताते हुए, मैंने अचानक तीखे स्वर में रचनाएँ माँगकर और एस्ट्रेड से बाहर निकलकर उन्हें लेने के लिए आगे बढ़कर उनकी बातों को दोहराने से रोक दिया। जब मैं गवर्नेस छात्रा के पास से गुज़रा, तो मैंने उससे कहा—

“आज आप पाठ लेने के लिए बहुत देर से आए हैं; अगली बार समय पर आने की कोशिश करें।”

मैं उसके पीछे था, और मेरे असभ्य शब्दों का उसके चेहरे पर क्या असर हुआ, यह मैं नहीं समझ पाया। शायद अगर मैं आगे बैठा होता, तो मुझे ऐसा करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती; लेकिन मैंने देखा कि उसने तुरंत अपनी किताबें वापस अपनी अलमारियों में रखनी शुरू कर दीं; और थोड़ी देर बाद, जब मैं वापस गलियारे में आ गया और अपनी रचनाओं का ढेर व्यवस्थित कर रहा था, तो मैंने फिर से तह वाला दरवाज़ा खुलते और बंद होते सुना; और ऊपर देखने पर मैंने पाया कि उसकी जगह खाली थी। मैंने मन ही मन सोचा, "अंग्रेजी सीखने की उसकी पहली कोशिश नाकाम ही होगी;"

और मैं सोचने लगा कि क्या वह रूठकर चली गई, या मूर्खता के कारण उसने मेरी बातों को ज़्यादा ही शाब्दिक अर्थ ले लिया, या फिर मेरे चिड़चिड़े लहजे ने उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई। आख़िरी विचार तो मैंने आते ही लगभग खारिज कर दिया, क्योंकि बेल्जियम आने के बाद से मैंने किसी भी इंसान के चेहरे पर संवेदनशीलता का कोई अंश नहीं देखा था, इसलिए मैं इसे लगभग एक काल्पनिक गुण मानने लगा था। क्या उसके चेहरे से यह बात ज़ाहिर हो रही थी, यह मैं नहीं कह सकता, क्योंकि उसके जल्दी चले जाने के कारण मुझे स्थिति का पता लगाने का समय ही नहीं मिला। दरअसल, मैंने उसे दो-तीन बार पहले भी देखा था (जैसा कि मुझे लगता है कि पहले भी बताया जा चुका है); लेकिन मैंने कभी उसके चेहरे या शरीर को ध्यान से नहीं देखा था, और मुझे उसकी सामान्य शक्ल-सूरत का बहुत ही धुंधला सा ही अंदाज़ा था। जैसे ही मैंने कागज़ात समेटना खत्म किया, चार बजे की घंटी बज उठी; उस संकेत का पालन करने की अपनी आदत के अनुसार, मैंने अपनी टोपी पकड़ी और परिसर खाली कर दिया।

अध्याय 14.

यदि मैं मैडम रॉयटर के घर से समय पर निकला था, तो वहाँ पहुँचने में भी मैं कम से कम उतना ही समय का पाबंद था; मैं अगले दिन दो बजकर पाँच मिनट पर पहुँचा, और कक्षा के कमरे के दरवाज़े पर पहुँचते ही, उसे खोलने से पहले ही, मुझे एक तेज़, कर्कश आवाज़ सुनाई दी, जिसने मुझे आगाह किया कि "प्रायरे डू मिडी" अभी समाप्त नहीं हुई है। मैंने उसके समाप्त होने का इंतज़ार किया; उसके दौरान मेरी विधर्मी उपस्थिति अनुचित होती। प्रार्थना दोहराने वाला कैसे कर्कश और लड़खड़ाता हुआ बोल

रहा था! मैंने न तो पहले कभी और न ही बाद में कभी किसी को इतनी तेज़ गति से बोलते सुना। "नोत्रे पेरे क्वी एटेस औ सिएल" एक झटके में बोला गया; फिर मैरी को संबोधित किया गया "विर्ज सेलेस्टे, रीन डेस एंजेस, मैसन डी'ओर, टूर डी'आइवर!" और फिर उस दिन के संत का आह्वान किया गया; और फिर वे सब बैठ गए, और गंभीर (?) अनुष्ठान समाप्त हो गया; और मैं अंदर दाखिल हुआ, दरवाजा पूरी तरह खोलकर और तेजी से कदम बढ़ाते हुए, जैसा कि अब मेरी आदत बन गई थी; क्योंकि मैंने पाया था कि आत्मविश्वास के साथ प्रवेश करना और आत्मविश्वास से सीढ़ी पर चढ़ना ही तत्काल शांति सुनिश्चित करने का रहस्य था। प्रार्थना के लिए खोले गए दोनों कक्षाओं के बीच के तह वाले दरवाजे तुरंत बंद कर दिए गए; एक गृहिणी, हाथ में काम का बक्सा लिए, अपनी उपयुक्त मेज पर बैठ गई; विद्यार्थी अपने कलम और किताबों के साथ चुपचाप बैठे रहे; मेरी तीन सुंदरियाँ जो सबसे आगे थीं, अब लगातार शांत व्यवहार से काफी विनम्र हो चुकी थीं, अपने हाथों को घुटनों पर चुपचाप मोड़े हुए सीधी बैठी थीं; उन्होंने आपस में खिलखिलाना और फुसफुसाना छोड़ दिया था, और अब मेरी उपस्थिति में चुटीली बातें करने का साहस नहीं करती थीं; वे अब केवल कभी-कभार अपनी आँखों से मुझसे बात करती थीं, हालाँकि, इन आँखों के माध्यम से वे अब भी बहुत साहसी और नखरीली बातें कह सकती थीं। यदि स्नेह, अच्छाई, विनम्रता, और सच्ची प्रतिभा ने कभी उन उज्ज्वल आँखों को व्याख्याकार के रूप में इस्तेमाल किया होता, तो मुझे नहीं लगता कि मैं दयालु और उत्साहवर्धक, शायद कभी-कभार जोशीला उत्तर देने से खुद को रोक पाता; लेकिन जैसा कि था, मुझे घमंड की दृष्टि का उत्तर संयम की दृष्टि से देने में आनंद मिला। युवा, सुंदर, प्रतिभाशाली, जैसे मेरे कई छात्र थे, मैं सचमुच कह सकता हूँ कि उन्होंने मुझमें एक कठोर, लेकिन न्यायप्रिय संरक्षक के अलावा कोई और व्यवहार नहीं देखा। यदि कोई इस कथन की सत्यता पर संदेह करता है, यह सोचकर कि यह मेरे अंदर मौजूद आत्म-त्याग या स्किपियो जैसे आत्म-संयम को दर्शाता है, तो उन्हें निम्नलिखित परिस्थितियों पर विचार करना चाहिए, जो मेरी योग्यता को कम करते हुए भी मेरी सत्यता को प्रमाणित करती हैं।

हे अविश्वासी पाठक! जान लो कि एक गुरु का एक सुंदर, भोली-भाली, शायद अज्ञानी लड़की के प्रति संबंध, किसी नृत्य-समारोह में उसके साथी या सैरगाह पर किसी प्रेमी से कुछ अलग होता है। एक प्रोफेसर अपनी शिष्या से मिलने पर उसे रेशम

और मलमल के वस्त्रों में सजी, सुगंधित और घुंघराले बालों में, हवा में लहराते हुए फीते से मुश्किल से ढकी गर्दन में, गोल सफेद कंगनों से सजी बाहों में, और नाच के लिए सजे पैरों में नहीं देखता। उसका काम उसे वाल्ट्ज नृत्य में नचाना, उसकी प्रशंसा करना, या आत्मसंतुष्टि से उसकी सुंदरता को बढ़ाना नहीं है। न ही वह उसे पेड़ों से घिरी चिकनी सड़क पर, या हरे-भरे धूप वाले पार्क में देखता है, जहाँ वह अपनी सुंदर चलने वाली पोशाक में, कंधों पर करीने से डाले हुए दुपट्टे में, अपने घुंघराले बालों को मुश्किल से ढकती हुई छोटी सी टोपी में, और उसके किनारे के नीचे लगा लाल गुलाब उसके गालों की कोमल गुलाबी रंगत में एक नया रंग भरते हुए जाती है; उसका चेहरा और आँखें भी मुस्कान से जगमगा रही थीं, शायद उत्सव के दिन की धूप की तरह क्षणभंगुर, लेकिन उतनी ही चमकदार भी; उसके साथ चलना, उसकी जीवंत बातें सुनना, उसके छाते को थामना, जो एक चौड़े हरे पत्ते से थोड़ा ही बड़ा था, या उसके ब्लेंहेम स्पैनियल या इटैलियन ग्रेहाउंड को पट्टे से बांधकर ले जाना उसका काम नहीं था। नहीं: वह उसे स्कूल के कमरे में सादे कपड़ों में, किताबों के साथ पाता है। अपनी शिक्षा या स्वभाव के कारण किताबें उसके लिए एक झंझट हैं, और वह उन्हें घृणा से खोलती है, फिर भी उसके शिक्षक को उसके मन में इन किताबों की सामग्री भरनी ही है; वह मन गंभीर जानकारी को स्वीकार करने का विरोध करता है, पीछे हटता है, बेचैन हो जाता है, चिड़चिड़ापन दिखाई देता है, चेहरे की बनावट बिगाड़ने वाली भौंहें चेहरे की समरूपता को नष्ट कर देती हैं, कभी-कभी भद्दे हाव-भाव से शालीनता छिन्न-भिन्न हो जाती है, जबकि बुदबुदाते भाव, जन्मजात और अमिट अशिष्टता से भरे हुए, आवाज की मिठास को दूषित कर देते हैं। जहां स्वभाव शांत होता है, भले ही बुद्धि सुस्त हो, वहां एक अदम्य सुस्ती शिक्षण के हर प्रयास का विरोध करती है। जहां चालाकी तो होती है, पर ऊर्जा नहीं, वहां छल, झूठ, हजारों तरह की योजनाएँ और चालें चलकर मेहनत करने की आवश्यकता से बचने की कोशिश की जाती है; संक्षेप में, शिक्षक के लिए, युवती और स्त्री-आकर्षण, पर्दे के पर्दों की तरह होते हैं, जिनका उल्टा भाग हमेशा उसकी ओर ही रहता है; और भले ही वह चिकनी, साफ-सुथरी बाहरी सतह को देख ले, वह अच्छी तरह जानता है कि उसके पीछे कितनी गांठें, लंबे टांके और टेढ़े-मेढ़े किनारे छिपे हैं, इसलिए उसे सबके सामने दिखने वाले सुंदर रूपों और चमकीले रंगों की प्रशंसा करने का शायद ही कोई प्रलोभन होता है।

हमारी पसंद-नापसंद परिस्थितियों से तय होती है। कलाकार को पहाड़ी इलाका

पसंद होता है क्योंकि वह सुंदर होता है; इंजीनियर को समतल इलाका पसंद होता है क्योंकि वह सुविधाजनक होता है; मौज-मस्ती करने वाले को वह पसंद आती है जिसे वह "सुंदर स्त्री" कहता है - वह उसके अनुकूल होती है; फैशनेबल युवक फैशनेबल युवती की प्रशंसा करता है - वह उसके जैसी होती है; परिश्रम से थका हुआ, हारा हुआ, शायद चिड़चिड़ा शिक्षक, जो सुंदरता को लगभग न देख पाता है, दिखावे और शिष्टाचार से बेखबर, मुख्य रूप से कुछ मानसिक गुणों में गौरव महसूस करता है: लगन, ज्ञान के प्रति प्रेम, स्वाभाविक क्षमता, आज्ञाकारिता, सत्यनिष्ठा, कृतज्ञता - ये वे गुण हैं जो उसका ध्यान आकर्षित करते हैं और उसका स्नेह जीतते हैं। वह इन्हें खोजता है, लेकिन शायद ही कभी पाता है; यदि संयोग से उसे ये मिल जाएं, तो वह इन्हें हमेशा के लिए अपने पास रखना चाहता है, और जब उनसे बिछड़ने पर उसे ऐसा लगता है जैसे किसी निर्दयी हाथ ने उसकी इकलौती भेड़ को उससे छीन लिया हो। ऐसी स्थिति में, और यही स्थिति है, मेरे पाठक मुझसे सहमत होंगे कि मैडम रॉयटर के पेंशननेट डी डेमोइसेल्स में मेरे आचरण की ईमानदारी और संयम में कुछ भी बहुत प्रशंसनीय या बहुत अद्भुत नहीं था।

आज दोपहर मेरा पहला काम महीने के लिए निर्धारित स्थानों की सूची पढ़ना था, जो पिछले दिन दिए गए विवरणों की सापेक्षिक सटीकता के आधार पर तय की गई थी। हमेशा की तरह, सूची में सबसे ऊपर सिल्वी का नाम था, वही सीधी-सादी, शांत छोटी लड़की जिसका मैंने पहले भी वर्णन किया है कि वह स्कूल की सबसे अच्छी और सबसे बदसूरत छात्रा है; दूसरा स्थान लियोनी लेडू को मिला था, जो कद में छोटी, तीक्ष्ण चेहरे वाली और गोरी चमड़ी वाली, तेज बुद्धि, नाजुक अंतरात्मा और कठोर भावनाओं वाली लड़की थी; एक वकील जैसी लड़की, जिसके बारे में मैं कहा करता था कि अगर वह लड़का होती, तो वह एक सिद्धांतहीन, चालाक वकील का आदर्श उदाहरण होती। फिर यूलाली का नाम आया, वह घमंडी खूबसूरत लड़की, स्कूल की जूनो, जिसे अंग्रेजी भाषा के सरल व्याकरण के छह लंबे वर्षों के अभ्यास ने, उसकी बुद्धि की कठोरता के बावजूद, इसके अधिकांश नियमों से यांत्रिक रूप से परिचित करा दिया था। जब सिल्वी ने अपना नाम सबसे पहले पढ़ा, तो उसके नन जैसे शांत और भावहीन चेहरे पर न कोई मुस्कान थी, न ही खुशी या संतुष्टि का कोई निशान। उस बेचारी लड़की की हर पल की पूर्ण शांति देखकर मुझे हमेशा दुख होता था, और मेरी आदत थी कि मैं उसे कम से कम देखूँ, उससे कम से कम बात करूँ; उसकी अत्यधिक

विनम्रता, उसकी लगन और दृढ़ता, उसके प्रति मेरे मन में गहरी श्रद्धा जगाती थी; उसकी विनम्रता, उसकी बुद्धिमत्ता, मुझे उसके प्रति अत्यंत स्नेह और स्नेह का भाव रखने के लिए प्रेरित करती थी, भले ही उसके चेहरे की सादगी, उसके शरीर का बेमेलपन, उसके चेहरे पर मुर्दे जैसी भावहीनता थी, अगर मुझे यह पता न होता कि उसका हर दोस्ताना शब्द, हर दयालु कार्य उसके पादरी को बताया जाएगा, और वह उसे गलत समझकर विकृत कर देगा। एक बार मैंने उसके सिर पर अपना हाथ रखा, स्वीकृति के प्रतीक के रूप में; मुझे लगा कि सिल्वी मुस्कुराएगी, उसकी धुंधली आँखें लगभग चमक उठीं; लेकिन, तुरंत ही, वह मुझसे दूर हट गई; मैं एक पुरुष और विधर्मी था; वह बेचारी बच्ची! एक नन बनने वाली और धर्मनिष्ठ कैथोलिक: इस प्रकार एक चार-स्तरीय अलगाव की दीवार ने उसके और मेरे मन को अलग कर दिया था। लियोनी अपनी संतुष्टि को एक चंचल मुस्कान और विजय भरी तीखी निगाहों से व्यक्त करती थी; यूलाली उदास और ईर्ष्यालु दिख रही थी - उसे पहले स्थान की उम्मीद थी। सूची में कहीं नीचे अपना नाम पढ़े जाने पर हॉर्टेंस और कैरोलीन ने एक-दूसरे को बेपरवाही से देखा; मानसिक हीनता के इस दाग को वे कोई अपमान नहीं मानती थीं, भविष्य के लिए उनकी आशाएँ पूरी तरह से उनके व्यक्तिगत आकर्षण पर आधारित थीं।

यह व्यवस्था हो जाने के बाद नियमित पाठ शुरू हुआ। विद्यार्थियों द्वारा अपनी पुस्तकों पर रेखांकन करने में लगे संक्षिप्त विराम के दौरान, मेरी नज़र बेंचों पर लापरवाही से घूमती हुई पहली बार इस बात पर पड़ी कि सबसे दूर वाली पंक्ति की सबसे दूर वाली सीट—जो आमतौर पर खाली रहती थी—पर एक बार फिर नई छात्रा, मैडम हेनरी बैठी थीं, जिनकी सिफ़ारिश निदेशिका ने बड़े ही दिखावे के साथ मुझे की थी। आज मैंने चश्मा पहना हुआ था; इसलिए उनकी शक्ल मुझे पहली नज़र में ही साफ़ नज़र आ गई; मुझे ज़्यादा सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह युवा दिख रही थीं; फिर भी, अगर मुझे उनकी सही उम्र पूछी जाती, तो मैं थोड़ा असमंजस में पड़ जाता; उनके दुबले-पतले शरीर को देखकर लगता था कि वह सत्रह साल की होंगी; उनके चेहरे पर एक तरह की चिंता और उदासी का भाव था जो उनकी अधिक उम्र का संकेत दे रहा था। उन्होंने भी बाकी विद्यार्थियों की तरह गहरे रंग का गाउन और सफ़ेद कॉलर पहना हुआ था; उनके चेहरे की बनावट वहाँ मौजूद अन्य लोगों से अलग थी, उतनी गोल नहीं, बल्कि ज़्यादा स्पष्ट, फिर भी लगभग नियमित नहीं। उसके सिर का आकार

भी अलग था, ऊपरी भाग अधिक विकसित था, जबकि निचला भाग अपेक्षाकृत कम विकसित था। पहली नज़र में ही मुझे यकीन हो गया कि वह बेल्जियम की नहीं थी; उसका रंग, चेहरा, चेहरे की बनावट, शरीर, सब कुछ उनसे अलग था, और स्पष्ट रूप से किसी दूसरी नस्ल का प्रतीक था—ऐसी नस्ल जिसमें शरीर की परिपूर्णता और रक्त की प्रचुरता कम हो; जो कम हंसमुख, कम भौतिकवादी और कम विचारशील हो। जब मैंने पहली बार उसे देखा, तो वह टकटकी लगाए नीचे देख रही थी, ठुड्डी हाथ पर टिकी हुई थी, और जब तक मैंने पाठ शुरू नहीं किया, तब तक उसने अपनी मुद्रा नहीं बदली। बेल्जियम की कोई भी लड़की इतने लंबे समय तक एक ही मुद्रा में, और वह भी चिंतनशील मुद्रा में, नहीं रह पाती। फिर भी, यह बता देने के बाद कि उसका रूप-रंग अनोखा था, क्योंकि वह अपनी फ्लेमिश सहेलियों से अलग थी, मेरे पास इसके बारे में कहने के लिए और कुछ नहीं है; मैं उसकी सुंदरता की प्रशंसा नहीं कर सकता, क्योंकि वह सुंदर नहीं थी; न ही उसकी सादगी पर शोक व्यक्त कर सकता हूँ, क्योंकि वह सादी भी नहीं थी; माथे पर चिंता की लकीरें और उससे मेल खाती होंठों की बनावट ने मुझे आश्चर्य जैसी भावना से भर दिया, लेकिन ये लक्षण शायद किसी कम चिड़चिड़े पर्यवेक्षक का ध्यान नहीं खींच पाते।

अब, पाठक, यद्यपि मैंने मैडम हेनरी का वर्णन करने में एक पृष्ठ से अधिक समय व्यतीत कर लिया है, मैं भली-भांति जानता हूँ कि मैंने आपके मन में उनकी कोई स्पष्ट छवि नहीं छोड़ी है; मैंने न तो उनके रंग-रूप का वर्णन किया है, न ही उनकी आँखों का, न ही उनके बालों का, और न ही उनके शरीर की रूपरेखा का। आप यह नहीं बता सकते कि उनकी नाक नुकीली थी या उभरी हुई, उनकी ठोड़ी लंबी थी या छोटी, उनका चेहरा चौकोर था या अंडाकार; पहले दिन तो मैं भी यह नहीं बता पाया था, और मेरा इरादा आपको वह ज्ञान एक ही बार में देने का नहीं है जो मैंने स्वयं धीरे-धीरे प्राप्त किया है।

मैंने एक छोटा सा अभ्यास दिया, जिसे सभी ने लिख लिया। मैंने देखा कि नई छात्रा पहले तो भाषा और शैली की नवीनता से थोड़ी उलझन में थी; एक-दो बार उसने मुझे बड़ी चिंता से देखा, मानो उसे मेरी बात बिल्कुल समझ नहीं आ रही हो; फिर जब बाकी छात्राएँ तैयार थीं, तब वह तैयार नहीं थी; वह अपने वाक्य उतनी तेज़ी से नहीं लिख पा रही थी जितनी तेज़ी से बाकी लिख रहे थे; मैंने उसकी मदद नहीं की, मैं लगातार लिखता रहा। उसने मेरी तरफ देखा; उसकी आँखों ने साफ-साफ कहा, "मैं

आपकी बात नहीं समझ पा रही।" मैंने उसकी बात अनसुनी कर दी और लापरवाही से कुर्सी पर पीछे झुककर, बीच-बीच में बेपरवाही से खिड़की से बाहर देखते हुए, थोड़ा और तेज़ी से लिखवाया। दोबारा उसकी तरफ देखने पर मैंने देखा कि उसका चेहरा शर्मिंदगी से भरा हुआ था, लेकिन वह फिर भी पूरी लगन से लिख रही थी; मैंने कुछ सेकंड का विराम लिया; उसने इस अंतराल का उपयोग जल्दी से अपने लिखे हुए को दोबारा पढ़ने में किया, और उसके चेहरे पर शर्म और बेचैनी साफ झलक रही थी; जाहिर है उसे समझ आ गया था कि उसने सब गड़बड़ कर दिया है। दस मिनट में श्रुतलेख पूरा हो गया, और सुधार के लिए थोड़ा समय देने के बाद, मैंने उनकी किताबें ले लीं; मैडम हेनरी ने अनिच्छा से अपनी किताब मुझे दी, लेकिन एक बार जब वह मुझे मिल गई, तो उन्होंने अपने चिंतित चेहरे को शांत कर लिया, मानो उन्होंने फिलहाल पछतावे को भुलाने का फैसला कर लिया हो, और अभूतपूर्व मूर्ख समझे जाने के लिए तैयार हो गई हों। उनके अभ्यास पर नज़र डालते हुए, मैंने पाया कि कुछ पंक्तियाँ छूट गई थीं, लेकिन जो लिखा था उसमें बहुत कम गलतियाँ थीं; मैंने तुरंत पृष्ठ के नीचे "बॉन" लिख दिया और उन्हें वापस कर दिया; वह मुस्कुराईं, पहले अविश्वास से, फिर जैसे आश्वस्त होकर, लेकिन उन्होंने अपनी आँखें नहीं उठाईं; ऐसा लग रहा था कि वह उलझन और व्याकुलता में मेरी ओर देख सकती थीं, लेकिन संतुष्ट होने पर नहीं; मुझे यह बिल्कुल भी उचित नहीं लगा।

अध्याय पंद्रह।

कुछ समय बीतने के बाद मैंने फिर से पहली कक्षा में पाठ पढ़ाया; व्हिटसनटाइड की छुट्टी तीन दिन चली, और चौथे दिन दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों को मेरी शिक्षा लेने का

समय था। जब मैं कैरे से गुज़र रहा था, तो मैंने हमेशा की तरह देखा कि विद्यार्थियों का एक समूह मैडम हेनरी को घेरे हुए था; वे लगभग एक दर्जन ही थे, लेकिन उनका शोर पचास लोगों के शोर के बराबर था; वे उनके नियंत्रण में बिल्कुल नहीं लग रहे थे; तीन-चार एक साथ उन पर झगड़ने लगे; वह परेशान लग रही थीं, उन्होंने शांति की मांग की, लेकिन व्यर्थ। उन्होंने मुझे देखा, और उनकी आँखों में मैंने वह पीड़ा देखी कि एक अजनबी उनके विद्यार्थियों की अवज्ञा को देख रहा है; वह व्यवस्था बनाए रखने की विनती करती प्रतीत हुईं - उनकी प्रार्थनाएँ व्यर्थ थीं; फिर मैंने देखा कि उन्होंने अपने होंठ सिकोड़ लिए और भौंहें सिकोड़ लीं; और उनके चेहरे के भाव, अगर मैंने सही समझा, तो कह रहे थे - "मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है; फिर भी मैं निंदा की पात्र प्रतीत होती हूँ; तो जो चाहे मुझे दोष दे।" मैं आगे बढ़ गया; जैसे ही मैंने स्कूल के कमरे का दरवाजा बंद किया, मैंने उसे अचानक और तीखे स्वर में कहते सुना, वह उनमें से सबसे बड़े और सबसे उग्र स्वभाव वाले बच्चे को संबोधित कर रही थी—

"एमिली मुलेनबर्ग, अगले एक सप्ताह तक मुझसे कोई प्रश्न न पूछें और न ही मुझसे किसी प्रकार की सहायता मांगें; इस दौरान मैं न तो आपसे बात करूंगा और न ही आपकी सहायता करूंगा।"

ये शब्द ज़ोर देकर बोले गए थे—बल्कि, बहुत जोश के साथ—और उसके बाद कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया; यह शांति स्थायी थी या नहीं, मुझे नहीं पता; अब मेरे और कैरे के बीच दो दरवाजे बंद हो गए थे।

अगले दिन पहली कक्षा के लिए निर्धारित था; मेरे आने पर मैंने देखा कि निध्यापिका हमेशा की तरह दोनों पंक्तियों के बीच वाली कुर्सी पर बैठी थीं, और उनके सामने मैडम हेनरी खड़ी थीं, जो (मुझे ऐसा लगा) कुछ अनिच्छुक ध्यान मुद्रा में थीं। निध्यापिका बुनाई करते हुए बातें भी कर रही थीं। एक बड़े स्कूल-कक्ष की चहल-पहल के बीच, किसी एक व्यक्ति के कान में इस तरह बोलना आसान था कि केवल वही सुन सके, और इसी तरह मैडम रॉयटर अपनी शिक्षिका से बातचीत कर रही थीं। शिक्षिका का चेहरा थोड़ा लाल था, काफी परेशान भी; उसमें झुंझलाहट थी, जिसका कारण मुझे नहीं पता, क्योंकि निध्यापिका बहुत शांत दिख रही थीं; वह इतनी कोमल फुसफुसाहट और इतने शांत भाव से डांट नहीं सकती थीं; नहीं, यह जल्द ही साबित हो गया कि उनकी बातचीत अत्यंत मैत्रीपूर्ण थी, क्योंकि मैंने अंतिम शब्द सुने —

"बस करो, मेरे प्यारे दोस्त; अब मैं तुम्हें और नहीं रोकना चाहता।"

बिना कोई जवाब दिए, मैडम हेनरी मुँह फेरकर चली गईं; उनके चेहरे पर असंतोष स्पष्ट रूप से झलक रहा था, और कक्षा में अपनी जगह लेते समय उनके होंठों पर एक हल्की और क्षणिक मुस्कान थी, जो कड़वी, अविश्वासपूर्ण और, मेरे विचार से, तिरस्कारपूर्ण थी; यह एक गुप्त, अनैच्छिक मुस्कान थी, जो बस एक पल के लिए ही रही; उसके बाद उदासी छा गई, जो तुरंत ही ध्यान और रुचि के भाव में बदल गई, जब मैंने सभी विद्यार्थियों को अपनी-अपनी पढ़ने की किताबें लेने का आदेश दिया। आम तौर पर मुझे पढ़ने का पाठ नापसंद था, मेरी मातृभाषा का उनका भद्दा उच्चारण सुनना कानों के लिए एक यातना जैसा था, और मेरे द्वारा दिए गए किसी भी उदाहरण या उपदेश से उनके उच्चारण में जरा सा भी सुधार नहीं होता था। आज, हर कोई अपनी-अपनी लय में, हमेशा की तरह तुतला रहा था, हकला रहा था, बुदबुदा रहा था और बड़बड़ा रहा था; लगभग पंद्रह शब्दों ने मुझे बारी-बारी से परेशान कर दिया था, और मेरी श्रवण तंत्रिका सोलहवें शब्द के बेमेल स्वरों की प्रतीक्षा कर रही थी, तभी एक पूरी, हालांकि धीमी आवाज ने, स्पष्ट और सही अंग्रेजी में पढ़ा।

"पर्थ जाते समय राजा को एक हाइलैंड महिला मिली, जिसने स्वयं को भविष्यवक्ता बताया; वह उस नौका के किनारे खड़ी थी जिससे राजा उत्तर की ओर यात्रा करने वाले थे, और उसने ऊँची आवाज़ में कहा, 'हे मेरे स्वामी, यदि आप इस जल को पार करेंगे तो आप कभी जीवित वापस नहीं लौटेंगे!'" — (स्कॉटलैंड का इतिहास देखें)।

मैं आश्चर्य से ऊपर देखने लगा; आवाज़ एल्बियन की थी; लहजा शुद्ध और मधुर था; उसमें बस दृढ़ता और आत्मविश्वास की कमी थी, ताकि वह एसेक्स या मिडलसेक्स की किसी भी सुशिक्षित महिला के उच्चारण के अनुरूप हो सके, फिर भी वक्ता या पाठक कोई और नहीं बल्कि मैडम हेनरी थीं, जिनके गंभीर, भावहीन चेहरे पर मुझे इस बात का कोई आभास नहीं दिखा कि उन्होंने कोई असाधारण उपलब्धि हासिल की है। किसी और ने भी आश्चर्य नहीं जताया। मैडम रॉयटर लगन से बुनाई करती रहीं; हालाँकि, मुझे इस बात का एहसास था कि अनुच्छेद के अंत में, उन्होंने अपनी पलकें उठाईं और तिरछी नज़र से मुझे देखा; वह शिक्षक की पढ़ने की शैली की पूरी उत्कृष्टता से अवगत नहीं थीं, लेकिन उन्होंने महसूस किया कि उनका लहजा दूसरों से अलग था, और वह जानना चाहती थीं कि मैं क्या सोचता हूँ; मैंने अपने चेहरे पर उदासीनता का भाव छिपा लिया, और अगली लड़की को आगे बढ़ने का आदेश

दिया।

जब पाठ समाप्त हुआ, तो छुट्टी होने से मची अफरा-तफरी का फायदा उठाकर मैंने मैडम हेनरी से बात की; वह खिड़की के पास खड़ी थीं और मेरे आगे बढ़ते ही पीछे हट गईं; उन्हें लगा कि मैं बाहर देखना चाहता हूँ, और उन्होंने सोचा भी नहीं था कि मुझे उनसे कुछ कहना है। मैंने उनके हाथ से उनकी अभ्यास पुस्तिका ले ली; पन्ने पलटते हुए मैंने उनसे कहा: —

मैंने पूछा, "क्या आपने पहले कभी अंग्रेजी की कक्षाएं ली हैं?"

"जी नहीं, महोदय।"

“नहीं! आपने इसे ठीक से पढ़ा; आप इंग्लैंड में रहे हैं?”

“ओह, नहीं!” कुछ एनिमेशन के साथ।

"क्या आप अंग्रेज़ परिवारों में रहे हैं?"

फिर भी जवाब "नहीं" था। तभी मेरी नज़र किताब के पहले पन्ने पर पड़ी और मैंने देखा, "फ्रांसिस इवान हेनरी" लिखा हुआ था।

मैंने पूछा, “आपका नाम?”

"जी श्रीमान।"

मेरी पूछताछ बीच में ही रुक गई; मैंने अपने पीछे हल्की सरसराहट सुनी, और मेरे ठीक पीछे निदेशालय की शिक्षिका खड़ी थी, जो एक डेस्क के अंदरूनी हिस्से की जांच करने का दावा कर रही थी।

“मैडम,” उसने ऊपर देखते हुए और शिक्षिका को संबोधित करते हुए कहा, “क्या आप कृपा करके गलियारे में जाकर खड़ी हो जाएँगी, जब तक कि युवतियाँ अपने कपड़े पहन रही हैं, और थोड़ी व्यवस्था बनाए रखने की कोशिश करेंगी?”

मैडम हेनरी ने आज्ञा का पालन किया।

“कितना शानदार मौसम है!” निध्यापिका ने खिड़की से बाहर देखते हुए प्रसन्नतापूर्वक कहा। मैंने सहमति जताते हुए कहा और जाने लगा। “महाशय, आपकी नई छात्रा कैसी है? क्या वह अंग्रेजी में प्रगति कर पाएगी?”

"सच कहूँ तो मैं ठीक से कुछ कह नहीं सकता। उसका उच्चारण काफी अच्छा है; भाषा के उसके वास्तविक ज्ञान के बारे में मुझे अभी तक कोई राय बनाने का अवसर नहीं मिला है।"

"और उसकी स्वाभाविक क्षमता के बारे में, महोदय? मुझे इस बारे में कुछ

आशंकाएं हैं: क्या आप कम से कम उसकी औसत क्षमता के बारे में मुझे आश्वस्त कर सकते हैं?"

"मुझे इसकी औसत क्षमता पर संदेह करने का कोई कारण नहीं दिखता, महोदया, लेकिन सच कहूँ तो मैं उसे मुश्किल से ही जानता हूँ, और उसकी क्षमता का आकलन करने का मुझे समय नहीं मिला है। आपका दोपहर का समय शुभ हो।"

वह अब भी मेरा पीछा कर रही थी। "महाशय, आप ध्यान से देखें और मुझे अपनी राय बताएँ; मैं अपनी राय से कहीं अधिक आपकी राय पर भरोसा कर सकती हूँ; स्त्रियाँ इन मामलों में पुरुषों की तरह निर्णय नहीं ले सकतीं, और, मेरी ज़िद के लिए क्षमा करें, महाशय, लेकिन इस बेचारी छोटी बच्ची के प्रति मेरी रुचि होना स्वाभाविक है; उसके बहुत कम रिश्तेदार हैं, उसे अपने प्रयासों के अलावा किसी और चीज़ का सहारा नहीं है, उसकी उपलब्धियाँ ही उसकी एकमात्र संपत्ति हैं; उसकी वर्तमान स्थिति कभी मेरी थी, या लगभग वैसी ही थी; इसलिए उसके प्रति सहानुभूति होना स्वाभाविक है; और कभी-कभी जब मैं विद्यार्थियों को संभालने में उसकी कठिनाई देखती हूँ, तो मुझे बहुत दुख होता है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करती है, उसकी मंशाएँ उत्तम हैं; लेकिन, महाशय, उसमें सूझबूझ और दृढ़ता की कमी है। मैंने उससे इस विषय पर बात की है, लेकिन मैं धाराप्रवाह नहीं बोल पाती, और शायद मैंने अपनी बात स्पष्ट रूप से नहीं कही; वह मुझे कभी समझ नहीं पाती। अब, क्या आप कभी-कभी, जब भी आपको अवसर मिले, उसे इस विषय पर सलाह दे सकते हैं; पुरुषों का प्रभाव महिलाओं की तुलना में कहीं अधिक होता है।" वे हमसे कहीं अधिक तर्कसंगत ढंग से बहस करते हैं; और आप, महोदय, विशेष रूप से, अपनी बात मनवाने की असाधारण क्षमता रखते हैं; आपकी सलाह का एक शब्द भी उसके लिए लाभकारी सिद्ध होगा; भले ही वह रूखी और जिद्दी हो (जिसकी मुझे आशा है कि वह नहीं है), वह शायद ही आपकी बात सुनने से इनकार करेगी; मैं स्वयं यह कह सकता हूँ कि मैं आपके किसी भी पाठ में बिना विद्यार्थियों के आपके प्रबंधन से लाभान्वित हुए नहीं जाता। अन्य शिक्षक मेरे लिए निरंतर चिंता का विषय हैं; वे युवतियों में सम्मान की भावना उत्पन्न नहीं कर पाते, न ही युवावस्था के स्वाभाविक चंचलता को नियंत्रित कर पाते हैं: आप पर, महोदय, मुझे पूर्ण विश्वास है; तो इस बेचारी बच्ची को हमारी चंचल, उत्साही ब्राबेंटॉइस को नियंत्रित करना सिखाने का प्रयास कीजिए। लेकिन, महोदय, मैं एक बात और जोड़ना चाहूँगा; उसके

आत्मसम्मान को ठेस न पहुँचाएँ; वहाँ चोट पहुँचाने से सावधान रहें। मैं अनिच्छा से स्वीकार करता हूँ कि इस मामले में वह निंदनीय रूप से - कुछ लोग कहेंगे हास्यास्पद रूप से - संवेदनशील है। मुझे डर है कि मैंने अनजाने में इस संवेदनशील मुद्दे को छू लिया है, और वह इससे उबर नहीं पा रही है।"

इस भाषण के अधिकांश भाग के दौरान मेरा हाथ बाहरी दरवाजे के ताले पर था; अब मैंने उसे घुमाया।

“अलविदा, महोदया,” मैंने कहा और वहाँ से निकल गया। मैंने देखा कि निदेशालय की ओर से अभी भी बहुत कुछ कहना बाकी था। वह मुझे देखती रही, मानो मुझे और देर तक रोकना चाहती हो। जब से मैंने उसके साथ कठोरता और उदासीनता का व्यवहार करना शुरू किया था, तब से उसका मेरे प्रति व्यवहार बदल गया था: वह लगभग हर मौके पर मेरे सामने गिड़गिड़ाती थी; वह लगातार मेरे चेहरे को निहारती रहती थी और अनगिनत छोटी-छोटी औपचारिकताओं से मुझे घेर लेती थी। चापलूसी तानाशाही को जन्म देती है। यह दासतापूर्ण सम्मान, मेरे हृदय को नरम करने के बजाय, केवल मेरे कठोर और सख्त स्वभाव को और बढ़ावा देता था। उसका मेरे चारों ओर एक मोहित पक्षी की तरह मंडराना, मुझे मानो पत्थर के कठोर स्तंभ में बदल देता था; उसकी चापलूसी मेरे तिरस्कार को और भड़काती थी, उसकी मीठी-मीठी बातें मेरे संकोच को और पुख्ता करती थीं। कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता था कि वह मुझे जीतने के लिए इतनी मेहनत क्यों कर रही थी, जबकि अधिक लाभदायक पेलेट पहले से ही उसके जाल में था, और जब वह यह भी जानती थी कि मुझे उसका रहस्य पता है, क्योंकि मैंने उसे यह बताने में कोई संकोच नहीं किया था: लेकिन सच्चाई यह है कि जिस प्रकार उसका स्वभाव विनम्रता, स्नेह, निस्वार्थता की वास्तविकता पर संदेह करना और उनके महत्व को कम आंकना था - इन गुणों को चरित्र की कमजोरी मानना - उसी प्रकार अभिमान, कठोरता, स्वार्थ को शक्ति का प्रमाण मानना भी उसकी प्रवृत्ति थी। वह विनम्रता का गला घोंट देती थी, वह तिरस्कार के चरणों में घुटने टेक देती थी; वह कोमलता का गुप्त तिरस्कार से सामना करती थी, उदासीनता को वह निरंतर परिश्रम से लुभाती थी। परोपकार, समर्पण, उत्साह, ये उसके लिए घृणास्पद थे; छल और स्वार्थ के लिए उसके मन में विशेष लगाव था - ये उसकी दृष्टि में वास्तविक बुद्धिमत्ता थे; नैतिक और शारीरिक पतन, मानसिक और शारीरिक हीनता को वह उदारता से देखती थी; वे ऐसे दिखावे थे जिनका इस्तेमाल उनकी अपनी

खूबियों को निखारने के लिए किया जा सकता था। हिंसा, अन्याय और अत्याचार के आगे वे झुक गईं - ये उनके स्वाभाविक स्वामी थे; उनमें घृणा की कोई प्रवृत्ति नहीं थी, न ही इनका विरोध करने की कोई प्रेरणा; इनके आदेशों से कुछ लोगों के दिलों में जो आक्रोश पैदा होता था, वह उनके भीतर कभी नहीं था। इसी कारण यह हुआ कि झूठे और स्वार्थी लोगों ने उन्हें बुद्धिमान कहा, अशिष्ट और नीच लोगों ने उन्हें दयालु कहा, अभिमानी और अन्यायी लोगों ने उन्हें मिलनसार कहा, और ईमानदार और परोपकारी लोगों ने आम तौर पर पहले तो उन्हें अपने जैसा मानने के दावे को वैध समझा; लेकिन जल्द ही दिखावे का आवरण उतर गया, असली सच्चाई सामने आ गई, और उन्होंने उन्हें एक छल समझकर त्याग दिया।

अध्याय सोलह।

अगले दो सप्ताहों के दौरान मैंने फ्रांसिस इवांस हेनरी को इतना देख लिया था कि मैं उनके चरित्र के बारे में और अधिक निश्चित राय बना सका। मैंने पाया कि उनमें कम से कम दो अच्छे गुण असाधारण रूप से मौजूद थे, अर्थात् दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा; मैंने पाया कि वे वास्तव में अध्ययन में मन लगाने और कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम थीं। प्रारंभ में मैंने उन्हें वही सहायता प्रदान की जो मैंने हमेशा दूसरों को प्रदान करना आवश्यक समझा था; मैंने उनके लिए प्रत्येक जटिल बिंदु को सुलझाने से शुरुआत की, लेकिन मुझे जल्द ही पता चला कि मेरी नई छात्रा ऐसी सहायता को अपमानजनक मानती थी; वह एक प्रकार की अभिमानी अधीरता के साथ इससे पीछे हट गई। इसके बाद मैंने उन्हें लंबे पाठ दिए और उन्हें उनमें आने वाली किसी भी उलझन को स्वयं हल करने के लिए छोड़ दिया। उन्होंने गंभीर उत्साह के साथ कार्य

शुरू किया और एक कार्य को शीघ्रता से पूरा करने के बाद, उत्सुकतापूर्वक और अधिक की मांग की। उनकी दृढ़ता के बारे में तो यही कहा जा सकता है; जहाँ तक उनकी कर्तव्यनिष्ठा की बात है, वह इस प्रकार प्रकट हुई: उन्हें सीखना पसंद था, लेकिन पढ़ाना नापसंद था; एक छात्रा के रूप में उसकी प्रगति उस पर ही निर्भर थी, और मैंने देखा कि वह अपने आप पर पूर्णतः भरोसा कर सकती थी; एक शिक्षिका के रूप में उसकी सफलता आंशिक रूप से, शायद पूरी तरह से, दूसरों की इच्छा पर टिकी थी; इस बाहरी इच्छा से संघर्ष करने, उसे अपने अधीन करने का प्रयास करना उसके लिए अत्यंत कष्टदायी था; क्योंकि आम तौर पर लोगों के मामले में उसकी इच्छाशक्ति अनेक संशय से बाधित थी; अपने मामलों में वह उतनी ही दृढ़ थी जितनी कि निडर, और यदि उसकी इच्छाशक्ति उसके उचित विश्वासों के विपरीत होती, तो वह किसी भी समय अपनी इच्छाशक्ति को उसके अधीन कर सकती थी; फिर भी जब उसे दूसरों की प्रवृत्तियों, आदतों और दोषों से जूझना पड़ता था, विशेषकर बच्चों से, जो तर्क को नहीं समझते और अधिकतर समझाने पर भी नहीं मानते, तो उसकी इच्छाशक्ति कभी-कभी लगभग निष्क्रिय हो जाती थी; तब कर्तव्य की भावना जागृत होती थी और अनिच्छुक इच्छाशक्ति को क्रियाशील होने के लिए विवश करती थी। इसका परिणाम अक्सर ऊर्जा और श्रम की व्यर्थ हानि होती थी। फ्रांसिस ने अपने विद्यार्थियों के लिए और उनके साथ अथक परिश्रम किया, लेकिन उनके कर्तव्यनिष्ठ प्रयासों का फल उन्हें लंबे समय बाद ही मिला, क्योंकि वे जानते थे कि उन पर उनका प्रभुत्व है। फ्रांसिस को समझाने, मनाने और नियंत्रित करने के उनके कष्टदायी प्रयासों का विरोध करके—उन्हें बलपूर्वक उपाय अपनाने पर मजबूर करके—वे उन्हें असहनीय पीड़ा पहुंचा सकते थे। मनुष्य—विशेषकर बच्चे—शायद ही कभी उस शक्ति का प्रयोग करने के सुख से वंचित रहते हैं जिसके प्रति वे सचेत होते हैं, भले ही वह शक्ति केवल दूसरों को दुखी करने की क्षमता ही क्यों न हो; एक विद्यार्थी जिसकी संवेदनाएं अपने शिक्षक की तुलना में कम होती हैं, जबकि उसकी नसें अधिक मजबूत होती हैं और शारीरिक शक्ति शायद अधिक होती है, उसे अपने शिक्षक पर बहुत बड़ा लाभ होता है, और वह आमतौर पर इसका निर्दयतापूर्वक उपयोग करता है, क्योंकि बहुत छोटे, बहुत स्वस्थ, बहुत लापरवाह बच्चे न तो सहानुभूति दिखाना जानते हैं और न ही दया दिखाना। मुझे डर है कि फ्रांसिस ने बहुत कष्ट सहा; ऐसा लगता था मानो एक निरंतर बोझ उनके मनोबल को दबा रहा हो। मैंने कहा है कि वह घर में नहीं रहती थी, और चाहे वह अपने

घर में रहती हो, चाहे वह कहीं भी हो, उसके चेहरे पर वही चिंता, भावहीनता और दुख से भरा दृढ़ निश्चय रहता था जो मैडम रॉयटर के घर में हमेशा उसके चेहरे पर छाया रहता था, यह मैं नहीं बता सकता।

एक दिन मैंने एक छोटे से पाठ के रूप में अल्फ्रेड के चरवाहे की झोपड़ी में केक परोसने की घिसी-पिटी कहानी सुनाई, जिसे विस्तार से बताना था। अधिकांश विद्यार्थियों ने इसे एक अजीबोगरीब घटना बना दिया; क्योंकि उन्होंने मुख्य रूप से संक्षिप्तता का अध्ययन किया था; अधिकांश कहानियाँ बिल्कुल समझ से परे थीं; केवल सिल्वी और लियोनी लेड्रू की कहानियों में ही कुछ अर्थ और जुड़ाव दिखाई देता था। वास्तव में, यूलाली ने सटीकता सुनिश्चित करने और परेशानी से बचने का एक चतुर तरीका खोज लिया था; उसने किसी तरह इंग्लैंड के इतिहास का एक संक्षिप्त संस्करण प्राप्त कर लिया था और कहानी को हूबहू नकल कर लिया था। मैंने उसकी नकल के हाशिये पर "बेवकूफी भरी और धोखे वाली" लिखा और फिर उसे बीच से फाड़ दिया।

एकल-पत्ती वाले लिखित दस्तावेजों के ढेर में सबसे अंत में, मुझे कई पन्नों में से एक मिला, जो साफ-सुथरा लिखा हुआ था और एक साथ सिला हुआ था; मैं लिखावट को पहचानता था, और लेखक की पहचान के बारे में अपने अनुमान की पुष्टि करने के लिए मुझे "फ्रांसिस इवांस हेनरी" के हस्ताक्षर के प्रमाण की शायद ही आवश्यकता थी।

रात का समय मेरे लिए सामान्यतः लिखित दस्तावेज़ों की जाँच करने का समय होता था, और मेरा अपना कमरा ही इस कार्य का सामान्य स्थान होता था - जो अब तक का सबसे कठिन कार्य रहा है; और मुझे यह अजीब लगा कि जैसे ही मैंने मोमबत्ती बुझाई और बेचारे शिक्षक की पांडुलिपि को पढ़ने में खुद को लगाया, मेरे भीतर एक प्रारंभिक रुचि जागृत होने लगी।

मैंने सोचा, "अब मुझे उसकी असलियत की एक झलक देखने को मिलेगी; मुझे उसकी क्षमताओं की प्रकृति और सीमा का अंदाजा हो जाएगा; ऐसा नहीं है कि उससे किसी विदेशी भाषा में अच्छी तरह से बोलने की उम्मीद की जा सकती है, लेकिन फिर भी, अगर उसमें थोड़ी भी बुद्धि है, तो यहाँ उसकी झलक जरूर मिलेगी।"

कहानी की शुरुआत एक विशाल, पत्तों से रहित, शीतकालीन जंगल की सीमा के भीतर स्थित एक सैक्सन किसान की झोपड़ी के वर्णन से होती है; यह दिसंबर की

एक शाम का दृश्य था; बर्फ के टुकड़े गिर रहे थे, और चरवाहे ने एक भयंकर तूफान की भविष्यवाणी की; उसने अपनी पत्नी को थोन नदी के किनारे दूर भटक रही अपनी भेड़ों को इकट्ठा करने में मदद करने के लिए बुलाया; उसने उसे चेतावनी दी कि उनके लौटने में देर हो जाएगी। पत्नी शाम के भोजन के लिए केक बनाने का अपना काम छोड़ने को तैयार नहीं थी; लेकिन भेड़ों और उनके झुंडों की सुरक्षा के महत्व को समझते हुए, उसने भेड़ की खाल का लबादा ओढ़ लिया; और चूल्हे के पास सरकंडों के बिस्तर पर आधे लेटे एक अजनबी से कहा कि जब तक वह वापस न आ जाए, तब तक रोटी का ध्यान रखे।

"ध्यान रखना, नौजवान," वह आगे कहती है, "हमारे जाने के बाद दरवाज़ा अच्छी तरह बंद कर देना; और सबसे ज़रूरी बात, हमारी गैरमौजूदगी में किसी के लिए भी दरवाज़ा मत खोलना; चाहे जो भी आवाज़ सुनाई दे, हिलना मत, और बाहर मत देखना। रात जल्द ही होने वाली है; यह जंगल बेहद घना और सुनसान है; सूर्यास्त के बाद अक्सर यहाँ अजीबोगरीब आवाज़ें सुनाई देती हैं; भेड़िये इन घाटियों में घूमते हैं, और डेनिश योद्धाओं ने इस इलाके में आतंक मचा रखा है; इससे भी बुरी बातें सुनने को मिलती हैं; हो सकता है कि तुम्हें किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दे, और उसे सहारा देने के लिए दरवाज़ा खोलते ही, एक बड़ा काला बैल या कोई डरावना भूतिया कुत्ता दहलीज पार कर जाए; या, इससे भी ज़्यादा भयानक, अगर कोई चीज़ पंखों की तरह जाली से टकराए, और फिर कोई कौआ या सफेद कबूतर अंदर आकर चूल्हे पर बैठ जाए, तो ऐसा मेहमान घर के लिए दुर्भाग्य का पक्का संकेत होगा; इसलिए, मेरी सलाह मानो, और बेवजह कुंडी मत खोलना।"

उसका पति उसे बुलाता है, और दोनों चले जाते हैं। अकेला रह गया अजनबी कुछ देर तक बर्फ की धीमी हवा, नदी की दूरस्थ, उफनती हुई आवाज़ सुनता है, और फिर बोलता है।

"क्रिसमस की पूर्व संध्या है," वह कहता है, "मैं इस तारीख को याद करता हूँ; यहाँ मैं सरकंडों के एक साधारण पलंग पर अकेला बैठा हूँ, एक चरवाहे की झोपड़ी की छत के नीचे; मैं, जिसे विरासत में एक राज्य मिला था, अपनी रात की शरण एक गरीब दास के कारण पा सका हूँ; मेरा सिंहासन छीन लिया गया है, मेरा मुकुट एक आक्रमणकारी के माथे पर है; मेरे कोई मित्र नहीं हैं; मेरी सेना वेल्स की पहाड़ियों में बिखरी हुई भटक रही है; निर्दयी लुटेरे मेरे देश को लूट रहे हैं; मेरी प्रजा निर्दयी डेन के

पैरों तले कुचली हुई पड़ी है। भाग्य! तूने अपना सबसे बुरा कर्म किया है, और अब तू मेरे सामने अपनी कुंद तलवार पर हाथ रखे खड़ी है। हाँ; मैं तेरी आँख को अपनी आँखों से मिलते हुए देखता हूँ और वह मुझसे पूछती है कि मैं अभी भी क्यों जीवित हूँ, मैं अभी भी क्यों आशा रखता हूँ। हे मूर्तिपूजक दानव, मैं तेरी सर्वशक्तिमत्ता पर विश्वास नहीं करता, और इसलिए तेरी शक्ति के आगे नहीं झुक सकता। हे मेरे ईश्वर, जिसका पुत्र, आज रात की तरह, मनुष्य का रूप धारण किया, और मनुष्य के लिए दुख सहा और लहू बहाया, वह तेरे हाथ को नियंत्रित करता है, और उसकी आज्ञा के बिना तू एक भी प्रहार नहीं कर सकता। मेरा परमेश्वर निष्पाप, शाश्वत, सर्वज्ञानी है—उसी में मेरा भरोसा है; और यद्यपि तूने मुझे निर्धन और कुचल दिया है—यद्यपि मैं नंगा, उजाड़, असहाय हूँ—मैं निराश नहीं होता, मैं निराश नहीं हो सकता: यदि गुथरुम का भाला अब मेरे रक्त से लथपथ हो, तब भी मैं निराश नहीं होता। मैं देखता रहता हूँ, मैं परिश्रम करता हूँ, मैं आशा रखता हूँ, मैं प्रार्थना करता हूँ; यहोवा अपने समय पर मेरी सहायता करेगा।

मुझे उद्धरण जारी रखने की आवश्यकता नहीं है; पूरा प्रवचन एक ही भाव से लिखा गया था। वर्तनी की त्रुटियाँ थीं, विदेशी मुहावरे थे, वाक्य रचना में कुछ त्रुटियाँ थीं, अनियमित क्रियाओं को नियमित क्रियाओं में बदल दिया गया था; जैसा कि ऊपर दिए गए उदाहरण से स्पष्ट है, यह अधिकतर छोटे और कुछ हद तक असभ्य वाक्यों से बना था, और शैली को परिष्करण और गरिमा की बहुत आवश्यकता थी; फिर भी, जैसी भी थी, मैंने अपने प्रोफेसरीय अनुभव में अब तक ऐसा कुछ नहीं देखा था। लड़की के मन में झोपड़ी, दो किसानों, और मुकुटहीन राजा का चित्र बन गया था; उसने सर्द जंगल की कल्पना की थी, उसे पुरानी सैक्सन भूत-कथाएँ याद आ गई थीं, उसने विपत्ति में अल्फ्रेड के साहस की सराहना की थी, उसे उसकी ईसाई शिक्षा याद थी, और उसने उसे उन आदिम दिनों के अटूट विश्वास के साथ, पौराणिक भाग्य के विरुद्ध सहायता के लिए शास्त्रों में वर्णित यहोवा पर भरोसा करते हुए दिखाया था। यह सब उसने मेरी ओर से बिना किसी संकेत के किया था: मैंने विषय तो दिया था, लेकिन उसे प्रस्तुत करने के तरीके के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा था।

मैंने मन ही मन कहा, “मैं उससे बात करने का मौका ढूंढूंगी या बनाऊंगी,” जैसे ही मैंने कागज लपेटना शुरू किया; “मैं यह जानने की कोशिश करूंगी कि फ्रांसिस इवांस नाम के अलावा उसे अंग्रेजी का कितना ज्ञान है; यह तो स्पष्ट है कि वह इस भाषा में

नौसिखिया नहीं है, फिर भी उसने मुझे बताया कि वह न तो इंग्लैंड गई है, न ही उसने अंग्रेजी की कक्षाएं ली हैं, और न ही वह किसी अंग्रेजी परिवार में रही है।”

अपने अगले पाठ के दौरान, मैंने अन्य लिखित कार्यों की रिपोर्ट तैयार की, और अपनी प्रथा के अनुसार, प्रशंसा और निंदा को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटा, क्योंकि कठोर निंदा करने का कोई लाभ नहीं था, और उच्च प्रशंसा शायद ही कभी योग्य होती थी। मैंने मैडम हेनरी के अभ्यास के बारे में कुछ नहीं कहा, और चश्मा नाक पर लगाए, मैंने उनके चेहरे पर उस चूक के प्रति उनकी भावनाओं को समझने का प्रयास किया। मैं यह जानना चाहता था कि क्या उनमें अपनी प्रतिभा का आभास है। "अगर उन्हें लगता है कि उन्होंने वह लिखित कार्य रचकर कोई चतुराई का काम किया है, तो अब वह शर्मिंदा दिखेंगी," मैंने सोचा। हमेशा की तरह उनका चेहरा गंभीर, लगभग उदास था; हमेशा की तरह, उनकी आँखें उनके सामने खुली नोटबुक पर टिकी हुई थीं; पिछले पाठ की संक्षिप्त समीक्षा समाप्त करते समय, मुझे लगा कि उसके हावभाव में कुछ उम्मीद झलक रही थी। जब मैंने पाठ को मुझसे दूर फेंक दिया और अपने हाथ मलते हुए उन्हें व्याकरण की किताबें लेने को कहा, तो उसके चेहरे और हावभाव में कुछ हल्का सा बदलाव आया, मानो उसने सुखद उत्साह की एक धुंधली सी उम्मीद को त्याग दिया हो; वह किसी ऐसे विषय पर चर्चा होने की प्रतीक्षा कर रही थी जिसमें उसकी कुछ रुचि हो; वह चर्चा नहीं हुई, इसलिए उम्मीद धरी रह गई, सिकुड़ गई और उदास हो गई, लेकिन ध्यान ने तुरंत उस खालीपन को भर दिया और पल भर में उसके चेहरे की क्षणिक उदासी को ठीक कर दिया; फिर भी, पूरे पाठ के दौरान, मैंने महसूस किया, देखा नहीं, कि उससे एक उम्मीद छीन ली गई थी, और अगर उसने दुख नहीं दिखाया, तो इसका कारण यह था कि वह दिखाना नहीं चाहती थी।

चार बजे, जब घंटी बजी और कमरा तुरंत शोरगुल से भर गया, तो मैंने अपनी टोपी उतारकर बरामदे से उठने के बजाय, एक पल के लिए वहीं बैठा रहा। मैंने फ्रांसिस को देखा, वह अपनी किताबें अपने काबा में रख रही थी; बटन लगाने के बाद, उसने अपना सिर उठाया; मेरी नज़र मिलते ही, उसने विनम्रतापूर्वक प्रणाम किया, मानो शुभ दोपहर कह रही हो, और जाने के लिए मुड़ गई: —

“इधर आओ,” मैंने उंगली उठाते हुए कहा। वह झिझकी; दोनों कक्षाओं में फैले शोरगुल के कारण वह मेरे शब्द नहीं सुन पाई; मैंने इशारा दोहराया; वह पास आई; फिर से वह खिड़की के आधे गज की दूरी पर रुक गई, और शर्माई हुई सी दिखी, मानो

उसे अभी भी संदेह था कि कहीं उसने मेरे कहने का मतलब गलत तो नहीं समझा।

“आगे बढ़ो,” मैंने दृढ़ता से कहा। संकोची और आसानी से शर्मिंदा होने वाले लोगों से निपटने का यही एकमात्र तरीका था, और थोड़ी सी शारीरिक सहायता से मैंने उसे तुरंत वहीं बिठा दिया जहाँ मैं उसे बिठाना चाहता था, यानी मेरी मेज और खिड़की के बीच, जहाँ वह दूसरी श्रेणी के लोगों की भीड़ से बची रही और जहाँ कोई भी उसके पीछे छिपकर उसकी बातें नहीं सुन सकता था।

“बैठ जाइए,” मैंने एक स्टूल रखते हुए कहा और उसे बिठा दिया। मुझे पता था कि मैं जो कर रहा हूँ उसे बहुत अजीब समझा जाएगा, और उससे भी बड़ी बात यह थी कि मुझे इसकी परवाह नहीं थी। फ्रांसिस भी यह जानती थी, और मुझे डर है कि उसकी घबराहट और कंपकंपी से यह ज़ाहिर हो गया था कि उसे बहुत परवाह थी। मैंने अपनी जेब से लिपटा हुआ लिबास निकाला।

“यही है, शायद तुम्हारा ही है?” मैंने उससे अंग्रेजी में कहा, क्योंकि अब मुझे पूरा यकीन था कि वह अंग्रेजी बोल सकती है।

“हाँ,” उसने स्पष्ट स्वर में उत्तर दिया; और जैसे ही मैंने उसे खोलकर उसके सामने मेज पर फैलाया और उस पर अपना हाथ रखा, और उस हाथ में एक पेंसिल थी, मैंने देखा कि वह भावुक हो उठी, और मानो उसमें एक नई ऊर्जा आ गई हो; उसकी उदासी ऐसे चमक उठी जैसे सूरज के पीछे छिपा कोई बादल चमक रहा हो।

“इस दस्तावेज़ में अनेक त्रुटियाँ हैं,” मैंने कहा। “आपको पूर्णतः सही अंग्रेज़ी लिखने में सक्षम होने के लिए कई वर्षों तक गहन अध्ययन करना होगा। ध्यान दीजिए: मैं कुछ प्रमुख त्रुटियाँ बताऊँगा।” और मैंने इसे ध्यानपूर्वक पढ़ा, प्रत्येक त्रुटि को नोट किया, और यह बताया कि वे त्रुटियाँ क्यों थीं, और उन शब्दों या वाक्यांशों को कैसे लिखा जाना चाहिए था। इस गंभीर प्रक्रिया के दौरान वह शांत हो गईं। अब मैं आगे बढ़ा:

“श्रीमती हेनरी, आपके शोध पत्र के विषय में मुझे आश्चर्य हुआ; मैंने इसे बड़े आनंद से पढ़ा, क्योंकि इसमें मुझे आपकी रुचि और कल्पनाशीलता के कुछ प्रमाण मिले। रुचि और कल्पनाशीलता मानव मन की सर्वोच्च देन नहीं हैं, लेकिन आपमें ये गुण हैं —शायद सर्वोच्च स्तर पर नहीं, लेकिन उस स्तर तक जो अधिकांश लोगों के पास नहीं होता। इसलिए आप साहस रखें; ईश्वर और प्रकृति द्वारा प्रदत्त अपनी क्षमताओं को निखारें, और किसी भी दुःख या अन्याय के दबाव में, उनकी शक्ति और विशिष्टता

के ज्ञान से पूर्ण और सहज सांत्वना प्राप्त करने से न डरें।"

"शक्ति और दुर्लभता!" मैंने मन ही मन दोहराया; "हाँ, ये शब्द शायद सच हैं," क्योंकि ऊपर देखने पर मैंने पाया कि सूरज ने अपने आवरण को चीरते हुए बादलों को हटा दिया था, उसका चेहरा रूपांतरित हो गया था, उसकी आँखों में एक मुस्कान चमक रही थी—लगभग विजयी मुस्कान; ऐसा लग रहा था जैसे वह कह रही हो—

मुझे खुशी है कि आपको मेरे स्वभाव के बारे में इतना कुछ जानने का मौका मिला; आपको अपनी भाषा को इतना संयमित रखने की आवश्यकता नहीं है। क्या आपको लगता है कि मैं खुद से अनजान हूँ? जो बातें आप इतने सीमित शब्दों में कह रहे हैं, उन्हें मैं बचपन से ही भली-भांति जानता हूँ।

उसने ये बात स्पष्ट और तीखी नज़र से कही, लेकिन पल भर में उसके चेहरे की चमक, उसके चेहरे की रौनक फीकी पड़ गई; अपनी प्रतिभाओं के प्रति वह जितनी सचेत थी, उतनी ही अपनी कमियों के प्रति भी सचेत थी, और एक पल के लिए मिट जाने के बाद अचानक ज़ोर से लौट आई इन कमियों ने उसकी क्षमताओं के प्रति उसके अत्यधिक सजीव भाव को तुरंत दबा दिया। भावनाओं में इतना तीव्र परिवर्तन हुआ कि मुझे उसे डांटकर उसकी जीत को रोकने का समय ही नहीं मिला; इससे पहले कि मैं अपनी भौंहें सिकोड़ पाता, वह गंभीर और लगभग उदास दिखने लगी थी।

"धन्यवाद, महोदय," उसने उठते हुए कहा। उसकी आवाज़ और नज़र दोनों में कृतज्ञता झलक रही थी। वास्तव में, हमारी चर्चा समाप्त होने का समय हो चुका था; क्योंकि जब मैंने चारों ओर देखा, तो पाया कि सभी बोर्डिंग छात्र (दिन के छात्र जा चुके थे) मेरी मेज से एक-दो गज की दूरी पर एकत्रित थे और आँखें और मुँह खुले रखकर घूर रहे थे; तीनों गृहिणियाँ एक कोने में फुसफुसाती हुई समूह बनाकर बैठी थीं, और मेरे ठीक बगल में, निदेशिका एक नीची कुर्सी पर बैठी, अपने पर्स के लटकन को शांति से काट रही थीं।

अध्याय सत्रह।

आखिरकार, मैडम हेनरी से बात करने का जो अवसर मैंने इतनी हिम्मत से हासिल किया था, उसका मैंने पूरा लाभ तो नहीं उठाया; मेरा इरादा उनसे यह पूछने का था कि उनके फ्रांसीसी उपनाम के अलावा, उनके दो अंग्रेजी बपतिस्मा नाम, फ्रांसिस और इवांस, कैसे हैं, और उनका अच्छा उच्चारण भी वहीं से आया है। मैं ये दोनों बातें भूल गया था, या यूँ कहें कि हमारी बातचीत इतनी संक्षिप्त थी कि मुझे उन्हें आगे बढ़ाने का समय ही नहीं मिला; इसके अलावा, मैंने उनकी अंग्रेजी बोलने की क्षमता का ठीक से परीक्षण भी नहीं किया था; उस भाषा में उनसे मुझे केवल "जी" और "धन्यवाद महोदय" ही सुनने को मिले। "कोई बात नहीं," मैंने सोचा। "जो अभी अधूरा रह गया है, उसे किसी और दिन पूरा कर लिया जाएगा।" और मैंने खुद से किया वादा भी नहीं तोड़ा। इतने सारे विद्यार्थियों में से किसी एक से विशेष बातचीत करना भी मुश्किल था; लेकिन, पुरानी कहावत के अनुसार, "जहाँ चाह है, वहाँ राह है"; और बार-बार मुझे मैडम हेनरी से कुछ शब्द कहने का अवसर मिल ही गया। हेनरी, चाहे कितनी भी ईर्ष्या भरी निगाहों से देखती हो और जब भी मैं उसके पास जाता था तो निंदा भरे स्वर में फुसफुसाती थी।

"तुम्हें एक पल चाहिए।" मैं अक्सर इन संक्षिप्त संवादों की शुरुआत इसी तरह करता था; समय हमेशा पाठ के समापन के ठीक बाद का होता था; और उसे उठने का इशारा करके, मैं उसकी जगह पर खड़ा हो जाता था, उसे सम्मानपूर्वक अपने बगल में खड़े रहने देता था; क्योंकि मैं उसके मामले में गुरु-शिष्य के बीच सामान्य रूप से प्रचलित सभी नियमों का सख्ती से पालन करवाना उचित और सही समझता था; खासकर इसलिए कि मैंने देखा कि जैसे-जैसे मेरा व्यवहार कठोर और अधिकारपूर्ण होता जाता था, उसका व्यवहार सहज और संयमित होता जाता था—निःसंदेह, ऐसे मामलों में यह एक अजीब विरोधाभास था; लेकिन ऐसा ही था।

"एक पेंसिल," मैंने उसकी ओर देखे बिना अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा। (मैं अब इन सम्मेलनों में से पहले सम्मेलन की एक संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार करने वाला हूँ।) उसने मुझे एक पेंसिल दी, और जब मैं उसके द्वारा लिखे गए व्याकरण संबंधी अभ्यास में कुछ त्रुटियों को रेखांकित कर रहा था, तब मैंने देखा—

“क्या आप बेल्जियम के मूल निवासी नहीं हैं?”

"नहीं।"

“और न ही फ्रांस का?”

"नहीं।"

तो फिर, आपका जन्मस्थान कहाँ है?

मेरा जन्म जिनेवा में हुआ था।

"मुझे लगता है कि आप फ्रांसिस और इवांस को स्विस नामों से नहीं पुकारते?"

"नहीं, महोदय; ये अंग्रेजी नाम हैं।"

"बिल्कुल सही; और क्या जिनेवा के लोगों में अपने बच्चों को अंग्रेजी उपनाम देने की प्रथा है?"

“नहीं, महोदय; लेकिन—”

कृपया अंग्रेजी में बात करें।

"अधिक - "

"अंग्रेज़ी - "

लेकिन (धीरे-धीरे और शर्मिंदगी के साथ) "मेरे माता-पिता दोनों जिनेवावासी नहीं थे।"

“दोनों बोलिए, ‘दोनों’ नहीं, मैडम।”

"दोनों स्विस नहीं थे: मेरी माँ अंग्रेज़ थीं।"

“अरे! और अंग्रेज़ मूल के?”

"हां—उसके सभी पूर्वज अंग्रेज थे।"

और आपके पिता?

वह स्विस था।

“इसके अलावा और क्या? उनका पेशा क्या था?”

“धर्मगुरु — पादरी — उनका एक चर्च था।”

"चूंकि आपकी मां एक अंग्रेज महिला हैं, तो आप इतनी आसानी से अंग्रेजी क्यों नहीं बोल पाते?"

“मां का निधन दस साल पहले हो गया था।”

“और आप उसकी भाषा को भूलकर उसकी स्मृति का अपमान कर रहे हैं। जब तक मैं आपसे बात कर रहा हूँ, कृपया फ्रेंच को अपने दिमाग से निकाल दें — अंग्रेजी

में ही बात करें।”

"जब आप इसके आदी नहीं रह जाते हैं, तो यह बहुत मुश्किल हो जाता है, सर।"

"मुझे लगता है कि पहले आपकी यही आदत थी? अब मुझे अपनी मातृभाषा में उत्तर दीजिए।"

"जी हाँ, महोदय, मैं बचपन में फ्रेंच की तुलना में अंग्रेजी ज्यादा बोलता था।"

“आप इसे अभी क्यों नहीं बोलते?”

क्योंकि मेरे कोई अंग्रेज दोस्त नहीं हैं।

"मुझे लगता है कि तुम अपने पिता के साथ रहते हो?"

मेरे पिता की मृत्यु हो गई है।

“क्या आपके भाई-बहन हैं?”

एक भी नहीं।

"क्या आप अकेले रहते हैं?"

“नहीं—मेरी एक चाची हैं—मेरी चाची जूलियन।”

“तुम्हारे पिता की बहन?”

"जी हां, महोदय।"

क्या यह अंग्रेजी है?

नहीं— लेकिन मैं भूल गया—

“इसके लिए, महोदया, यदि आप एक बच्ची होतीं तो मैं निश्चित रूप से कोई मामूली सजा तय करता; आपकी उम्र को देखते हुए—आपकी उम्र बत्तीस या तेईस के आसपास होगी, मुझे लगता है?”

“अभी नहीं, महोदय—एक महीने में मैं उन्नीस साल का हो जाऊंगा।”

"खैर, उन्नीस साल की उम्र एक परिपक्व उम्र है, और इसे प्राप्त करने के बाद, आपको अपने स्वयं के सुधार के लिए इतना उत्सुक होना चाहिए कि जब भी संभव हो, अंग्रेजी बोलने की उपयोगिता के बारे में आपको दो बार याद दिलाने के लिए किसी शिक्षक की आवश्यकता न हो।"

इस ज्ञानवर्धक बात का मुझे कोई जवाब नहीं मिला; और जब मैंने ऊपर देखा, तो मेरी छात्रा मन ही मन मुस्कुरा रही थी, एक अर्थपूर्ण, हालांकि बहुत प्रसन्नतापूर्ण नहीं; ऐसा लग रहा था जैसे वह कह रही हो, "वह किस बारे में बात कर रहा है, उसे पता नहीं है।" उसने यह बात इतनी स्पष्ट रूप से कही कि मैंने उस विषय पर जानकारी

प्राप्त करने का निश्चय किया जिसके बारे में मेरी अज्ञानता को इस प्रकार मौन रूप से स्वीकार किया जा रहा था।

क्या आप अपने स्वयं के सुधार के प्रति चिंतित हैं?

"की अपेक्षा।"

“आप इसे कैसे साबित करेंगी, मैडम?”

एक अजीब सवाल, और सीधे शब्दों में कहें तो; इसने दूसरी मुस्कान पैदा कर दी।

“क्यों, महोदय, मैं लापरवाह तो नहीं हूँ — क्या मैं हूँ? मैं अपने पाठ अच्छे से सीखता हूँ —”

“अरे, ये तो एक बच्चा भी कर सकता है! और आप इससे ज्यादा क्या करते हैं?”

"मेरे द्वारा और क्या किया जा सकता है?"

"ओह, बिलकुल नहीं, ज्यादा नहीं; लेकिन आप एक शिक्षक होने के साथ-साथ एक छात्र भी हैं, है ना?"

"हाँ।"

“क्या आप फीते सिलना सिखाते हैं?”

"हाँ।"

“एक नीरस, मूर्खतापूर्ण पेशा; क्या आपको यह पसंद है?”

नहीं—यह उबाऊ है।

“आप इसे क्यों अपना रहे हैं? आप इतिहास, भूगोल, व्याकरण, या यहाँ तक कि अंकगणित क्यों नहीं पढ़ाते?”

"क्या महोदय, आपको यकीन है कि मैं स्वयं इन अध्ययनों से पूरी तरह परिचित हूँ?"

मुझे नहीं पता; आपकी उम्र के हिसाब से तो ऐसा ही होना चाहिए।

लेकिन मैं कभी स्कूल नहीं गया, महोदय—“

“बिल्कुल! तो फिर तुम्हारे दोस्त कौन थे— तुम्हारी चाची क्या कर रही थी? इसमें उनका बहुत बड़ा हाथ है।”

“नहीं महोदय, नहीं – मेरी चाची अच्छी हैं – उनकी कोई गलती नहीं है – वह अपनी तरफ से पूरी कोशिश करती हैं; वह मुझे अपने घर में रखती हैं और मेरा पालन-पोषण करती हैं” (मैं श्रीमती हेनरी के शब्दों को अक्षरशः बता रही हूँ, और उन्होंने फ्रांसीसी से उनका यही अनुवाद किया है)। “वह अमीर नहीं हैं; उन्हें केवल बारह सौ

फ़्रैंक की वार्षिक पेंशन मिलती है, और उनके लिए मुझे स्कूल भेजना असंभव है।”

“बल्कि,” यह सुनकर मैंने मन ही मन सोचा, लेकिन मैंने अपने उसी हठधर्मी लहजे में बोलना जारी रखा: —

"यह दुख की बात है कि आपको शिक्षा की सबसे सामान्य शाखाओं से अनभिज्ञता में पाला-पोसा गया है; यदि आपको इतिहास और व्याकरण का कुछ ज्ञान होता, तो आप धीरे-धीरे अपने फीते सिलने के श्रम को छोड़कर दुनिया में आगे बढ़ सकते थे।"

मैं यही करना चाहता हूँ।

“कैसे? केवल अंग्रेजी के ज्ञान से? यह पर्याप्त नहीं होगा; कोई भी सम्मानित परिवार ऐसी गवर्नेंस को स्वीकार नहीं करेगा जिसका पूरा ज्ञान केवल एक विदेशी भाषा के परिचय तक ही सीमित हो।”

"महाशय, मुझे और भी चीजें पता हैं।"

"हां, हां, आप बर्लिन की ऊन से काम कर सकते हैं, और रूमाल और कॉलर पर कढ़ाई कर सकते हैं - लेकिन इससे आपको कुछ खास फायदा नहीं होगा।"

मैडम हेनरी के होंठ जवाब देने के लिए खुले ही थे, लेकिन उन्होंने खुद को रोक लिया, क्योंकि उन्हें लगा कि चर्चा काफी आगे बढ़ चुकी है, और वह चुप रहीं।

मैंने अधीरता से कहा, "बोलो; मुझे कभी भी वास्तविकता के अभाव में सहमति का दिखावा पसंद नहीं आता; और तुम्हारे शब्दों में विरोधाभास था।"

"महाशय, मैंने व्याकरण, इतिहास, भूगोल और अंकगणित में कई पाठ पढ़े हैं। मैंने प्रत्येक विषय का एक पाठ्यक्रम पूरा किया है।"

“शाबाश! लेकिन तुमने यह कैसे किया, क्योंकि तुम्हारी चाची तुम्हें स्कूल भेजने का खर्च नहीं उठा सकती थीं?”

"फीते की मरम्मत करके; उस चीज़ से जिसे महाशय इतना नापसंद करते हैं।"

"सचमुच! और अब, महोदया, आपके लिए यह एक अच्छा अभ्यास होगा कि आप मुझे अंग्रेजी में समझाएं कि इस तरह के साधनों द्वारा ऐसा परिणाम कैसे प्राप्त किया गया।"

“महाशय, ब्रुसेल्स आने के तुरंत बाद मैंने अपनी चाची से मुझे लेस की मरम्मत का काम सिखाने की विनती की, क्योंकि मुझे पता था कि यह एक ऐसा पेशा है जिसे आसानी से सीखा जा सकता है और जिससे मैं बहुत जल्द कुछ पैसे कमा सकती हूँ। मैंने इसे कुछ ही दिनों में सीख लिया और मुझे जल्दी ही काम मिल गया, क्योंकि

ब्रुसेल्स की सभी महिलाओं के पास पुरानी लेस होती है - बहुत कीमती - जिसे हर बार धोने के बाद मरम्मत की ज़रूरत होती है। मैंने थोड़े-बहुत पैसे कमाए और उन पैसों से मैंने उन पढ़ाई का खर्च उठाया जिनका मैंने ज़िक्र किया है; कुछ पैसे मैंने किताबें खरीदने में खर्च किए, खासकर अंग्रेज़ी की किताबें; जल्द ही मैं एक गवर्नेस या स्कूल टीचर की नौकरी ढूंढने की कोशिश करूँगी, जब मैं अच्छी तरह से अंग्रेज़ी लिख और बोल सकूँगी; लेकिन यह मुश्किल होगा, क्योंकि जो लोग जानेंगे कि मैं लेस की मरम्मत का काम करती थी, वे मुझे तुच्छ समझेंगे, जैसे यहाँ के छात्र मुझे तुच्छ समझते हैं। फिर भी मेरा प्रोजेक्ट जारी है," उसने धीमी आवाज़ में कहा।

"यह क्या है?"

मैं इंग्लैंड जाकर रहूंगी; मैं वहां फ्रेंच पढ़ाऊंगी।

ये शब्द ज़ोर देकर बोले गए थे। उसने "इंग्लैंड" शब्द ऐसे कहा जैसे मूसा के ज़माने का कोई इस्राएली कनान कहता होगा।

क्या आप इंग्लैंड देखना चाहते हैं?

"हां, और एक इरादा भी।"

और तभी एक आवाज सुनाई दी, निदेशक की आवाज:

"मिस हेनरी, मुझे लगता है कि बारिश होने वाली है; मेरी प्यारी दोस्त, आपके लिए बेहतर होगा कि आप तुरंत घर लौट जाएं।"

इस औपचारिक चेतावनी के लिए धन्यवाद का एक शब्द भी कहे बिना, मौन में मैडम हेनरी ने अपनी पुस्तकें समेटीं; वह आदरपूर्वक मेरे पास आईं, अपने वरिष्ठ अधिकारी के पास जाने का प्रयास किया, हालांकि यह प्रयास लगभग असफल रहा, क्योंकि उनका सिर मानो झुकने को तैयार नहीं था, और इस प्रकार वह चली गईं।

जहां किसी व्यक्ति में दृढ़ता या संकल्प का जरा सा भी अंश होता है, वहां छोटी-मोटी बाधाएं अक्सर हतोत्साहित करने के बजाय प्रोत्साहन ही देती हैं। मैडम रॉयटर को मौसम के बारे में वह सूचना देने की परेशानी से बचना चाहिए था (वैसे उनकी भविष्यवाणी घटना से गलत साबित हुई - उस शाम बारिश नहीं हुई)। अगले पाठ के अंत में मैं फिर से मैडम हेनरी की मेज पर था। मैंने उनसे इस प्रकार बात की: —

"आप इंग्लैंड के बारे में क्या सोचती हैं, महोदया? आप वहां क्यों जाना चाहती हैं?"

अब तक मेरे व्यवहार की सुनियोजित अचानकता से अभ्यस्त हो चुकी होने के कारण, यह उसे अब विचलित या आश्चर्यचकित नहीं करती थी, और उसने केवल

उतनी ही झिझक के साथ उत्तर दिया जो उसके विचारों को फ्रेंच से अंग्रेजी में अनुवाद करने में आ रही कठिनाई के कारण अपरिहार्य हो गई थी।

"इंग्लैंड एक अनोखी जगह है, जैसा कि मैंने सुना और पढ़ा है; इसके बारे में मेरी धारणा अस्पष्ट है, और मैं अपनी इस धारणा को स्पष्ट और निश्चित करने के लिए वहां जाना चाहता हूं।"

"हम्म! अगर आप शिक्षक बनकर इंग्लैंड जाते, तो आप वहाँ का कितना हिस्सा देख पाते? किसी देश के बारे में स्पष्ट और निश्चित जानकारी पाने की आपकी सोच कितनी अजीब है! ग्रेट ब्रिटेन में आप बस किसी स्कूल का अंदरूनी हिस्सा या ज़्यादा से ज़्यादा एक-दो निजी मकान ही देख पाते।"

"यह एक अंग्रेजी स्कूल होगा; वे अंग्रेजी शैली के आवास होंगे।"

"निस्संदेह; लेकिन फिर क्या? इतने संकीर्ण पैमाने पर किए गए अवलोकनों का क्या महत्व होगा?"

"महाशय, क्या सादृश्य से कुछ सीखा नहीं जा सकता? एक नमूना अक्सर पूरे का अंदाजा देने में काम आता है; इसके अलावा, संकीर्ण और व्यापक तुलनात्मक शब्द हैं, है ना? शायद मेरी पूरी जिंदगी आपकी नजरों में संकीर्ण लगे — उस छोटे से भूमिगत जानवर की पूरी जिंदगी — एक भूरे रंग के — इसे कैसे कहें?"

"तिल।"

"हां - एक तिल, जो जमीन के नीचे रहता है, वह तो मुझे भी संकीर्ण सोच वाला लगेगा।"

"अच्छा, महोदया—तो फिर क्या? आगे बढ़िए।"

लेकिन, महोदय, आप मुझे समझते हैं।

"बिल्कुल नहीं; कृपया समझाने की कृपा करें।"

"जी महोदय, बात बिल्कुल यही है। स्विट्जरलैंड में मैंने बहुत कम काम किया, बहुत कम सीखा और बहुत कम देखा; वहाँ मेरा जीवन एक ही चक्र में सिमट गया था; मैं हर दिन उसी चक्कर में घूमता रहता था; मैं उससे बाहर नहीं निकल पाता था; अगर मैं आराम करता—अपनी मृत्यु तक वहीं रहता, तो भी मैं इसे कभी बढ़ा नहीं पाता, क्योंकि मैं गरीब हूँ, कुशल नहीं हूँ, मेरे पास कोई बड़ी विद्या नहीं है; जब मैं इस चक्र से पूरी तरह थक गया, तो मैंने अपनी चाची से ब्रुसेल्स जाने की विनती की; यहाँ मेरा जीवन बड़ा नहीं हुआ है, क्योंकि मैं न तो अमीर हुआ हूँ और न ही ऊँचा उठा हूँ; मैं

उसी संकीर्ण दायरे में घूमता हूँ, लेकिन दृश्य बदल गया है; अगर मैं इंग्लैंड जाता तो यह फिर से बदल जाता। मैं जिनेवा के बुर्जुआ वर्ग के बारे में थोड़ा बहुत जानता था, अब मैं ब्रुसेल्स के बुर्जुआ वर्ग के बारे में थोड़ा बहुत जानता हूँ; अगर मैं लंदन जाता, तो मैं लंदन के बुर्जुआ वर्ग के बारे में थोड़ा बहुत जान पाता। क्या आप मेरी बातों का कुछ अर्थ समझ पा रहे हैं, महोदय, या यह सब अस्पष्ट है?"

“मैं समझ गया, मैं समझ गया— अब चलिए दूसरे विषय पर बात करते हैं; आप अपना जीवन अध्यापन के लिए समर्पित करने का इरादा रखते हैं, और आप एक बेहद असफल शिक्षक हैं; आप अपने विद्यार्थियों को अनुशासन में नहीं रख सकते।”

इस कठोर टिप्पणी के परिणामस्वरूप वह पीड़ादायक उलझन में पड़ गई; उसने अपना सिर मेज पर झुकाया, लेकिन जल्द ही उसे उठाकर जवाब दिया—

"महाशय, यह सच है कि मैं एक कुशल शिक्षिका नहीं हूँ, लेकिन अभ्यास से सुधार होता है; इसके अलावा, मैं कठिनाइयों में काम करती हूँ; यहाँ मैं केवल सिलाई सिखाती हूँ, सिलाई में मैं कोई महारत या श्रेष्ठता नहीं दिखा सकती - यह एक गौण कला है; फिर इस घर में मेरा कोई सहयोगी नहीं है, मैं अकेली हूँ; मैं एक विधर्मी भी हूँ, जो मुझे प्रभाव से वंचित करता है।"

और इंग्लैंड में आप एक विदेशी होंगे; इससे भी आपका प्रभाव कम हो जाएगा, और आप अपने आस-पास के सभी लोगों से पूरी तरह अलग हो जाएंगे; इंग्लैंड में आपके उतने ही कम संबंध होंगे, उतनी ही कम अहमियत होगी जितनी यहाँ है।

लेकिन मुझे कुछ सीखना चाहिए; बाकी के लिए, मुझ जैसे लोगों के लिए शायद हर जगह मुश्किलें हैं, और अगर मुझे लड़ना ही है, और शायद हारना भी पड़े, तो मैं फ्लेमिश अशिष्टता के बजाय अंग्रेजी अभिमान के आगे झुकना पसंद करूंगा; इसके अलावा, महाशय—“

वह रुक गई - जाहिर तौर पर खुद को व्यक्त करने के लिए शब्द खोजने में किसी कठिनाई के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि विवेक ने मानो कहा, "आपने काफी कुछ कह दिया है।"

मैंने आग्रह किया, "अपना वाक्य पूरा करो।"

“इसके अलावा, महोदय, मैं एक बार फिर प्रोटेस्टेंटों के बीच रहने की इच्छा रखता हूँ; वे कैथोलिकों से अधिक ईमानदार हैं; एक रोमन स्कूल छिद्रपूर्ण दीवारों, खोखले फर्श और नकली छत वाली इमारत है; इस घर के हर कमरे में, महोदय, आँखों और

कानों के लिए छेद हैं, और यह घर जैसा है, इसके निवासी भी वैसे ही हैं, बहुत धोखेबाज; वे सभी झूठ बोलना जायज़ समझते हैं; वे सभी जहाँ घृणा रखते हैं, वहाँ मित्रता का दिखावा करना शिष्टाचार कहते हैं।"

मैंने कहा, "सभी? आपका मतलब विद्यार्थियों से है— उन नन्हे बच्चों से— जो अनुभवहीन, नासमझ हैं, जिन्होंने सही और गलत के बीच अंतर करना नहीं सीखा है?"

इसके विपरीत, महोदय—बच्चे सबसे ईमानदार होते हैं; उन्हें अभी तक कपट में निपुण होने का समय नहीं मिला है; वे झूठ बोलेंगे, लेकिन वे इसे स्वाभाविक रूप से करते हैं, और आप जानते हैं कि वे झूठ बोल रहे हैं; लेकिन बड़े लोग बहुत झूठे होते हैं; वे अजनबियों को धोखा देते हैं, वे एक दूसरे को धोखा देते हैं—"

एक नौकर अंदर आया: —

"मिस हेनरी - मिस रॉयटर आपसे अनुरोध करती हैं कि कृपया डोरलोडॉट की छोटी बच्ची को घर ले जाएं; वह द्वारपाल रोज़ाली के कार्यालय में आपका इंतजार कर रही है - उसकी नौकरानी उसे लेने नहीं आई है - आप देख लीजिए।"

"एह बिएन! एस्ट-से क्यू जे सुइस सा बोन्ने—मोई?" मैडम हेनरी ने पूछा; फिर मुस्कुराते हुए, उसी कड़वी, उपहास भरी मुस्कान के साथ जो मैंने पहले भी उनके होठों पर देखी थी, वह जल्दी से उठीं और चली गईं।

अध्याय 18वां।

युवा एंग्लो-स्विस छात्रा को अपनी मातृभाषा के अध्ययन से स्पष्ट रूप से आनंद और लाभ दोनों प्राप्त होते थे। उसे पढ़ाते समय, मैंने स्वयं को सामान्य विद्यालय की दिनचर्या तक सीमित नहीं रखा; मैंने अंग्रेजी शिक्षण को साहित्य शिक्षण का माध्यम

बनाया। मैंने उसके लिए पठन-पाठन का एक पाठ्यक्रम निर्धारित किया; उसके पास अंग्रेजी क्लासिक्स का एक छोटा संग्रह था, जिनमें से कुछ उसकी माँ ने उसे दिए थे, और बाकी उसने अपने पैसों से खरीदे थे। मैंने उसे कुछ आधुनिक रचनाएँ भी दीं; उसने उन सभी को बड़ी उत्सुकता से पढ़ा और प्रत्येक रचना को पढ़ने के बाद मुझे लिखित रूप में उसका स्पष्ट सारांश दिया। उसे रचना में भी बहुत आनंद आता था। यह कार्य मानो उसकी साँसों का सार था, और जल्द ही उसकी सुधरी हुई रचनाओं ने मुझे यह स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया कि जिन गुणों को मैंने उसमें रुचि और कल्पना कहा था, उन्हें वास्तव में विवेक और कल्पना कहना चाहिए था। जब मैंने हमेशा की तरह रूखे और संक्षिप्त शब्दों में इतना कुछ कहा, तो मुझे उस चमकीली और आनंदित मुस्कान की उम्मीद थी जो मेरी प्रशंसा के एक शब्द ने पहले जगाई थी; लेकिन फ्रांसिस का चेहरा लाल हो गया। अगर वह मुस्कुराई भी, तो बहुत ही धीमी और शर्मीली मुस्कान थी; और विजयी निगाहों से मेरी ओर देखने के बजाय, उसकी नज़र मेरे हाथ पर टिकी थी, जो उसके कंधे पर फैला हुआ था और जिस पर वह अपनी किताब के हाशिये पर पेंसिल से कुछ निर्देश लिख रही थी।

मैंने पूछा, "अच्छा, क्या आप इस बात से खुश हैं कि मैं आपकी प्रगति से संतुष्ट हूं?"

“हां,” उसने धीरे से, कोमल स्वर में कहा, उसके चेहरे पर जो थोड़ी सी शर्मिंदगी कम हो गई थी, वह फिर से लौट आई।

“लेकिन शायद मैं पर्याप्त नहीं बोलता?” मैंने आगे कहा। “मेरी प्रशंसाएँ कुछ ज्यादा ही ठंडी हैं?”

उसने कोई जवाब नहीं दिया, और मुझे लगा कि वह थोड़ी उदास लग रही थी। मैंने उसके मन की बात समझ ली, और अगर ऐसा करना उचित होता तो मैं उसका जवाब देना चाहता। अब उसे मेरी प्रशंसा की कोई खास चाह नहीं थी—मुझे प्रभावित करने की कोई तीव्र इच्छा नहीं थी; थोड़ा सा स्नेह—बहुत थोड़ा सा—उसे दुनिया की सारी तारीफों से कहीं ज्यादा अच्छा लगता था। यह महसूस करते हुए, मैं कुछ देर उसके पीछे खड़ा रहा, उसकी किताब के हाशिये पर लिखता रहा। मैं अपनी जगह से हिल भी नहीं सकता था और न ही अपना काम छोड़ सकता था; कुछ तो था जो मुझे वहाँ झुके रहने के लिए मजबूर कर रहा था, मेरा सिर उसके सिर के बहुत पास था और मेरा हाथ भी उसके पास ही था; लेकिन किताब का हाशिये की जगह असीमित तो नहीं होती—

शायद निर्देशिका ने भी यही सोचा होगा; और उसने यह देखने के लिए मेरे पास से गुजरने का मौका लिया कि मैं किस तरह से उसे भरने में इतना ज्यादा समय बर्बाद कर रहा हूँ। मुझे जाना पड़ा। कितना अप्रिय प्रयास—जिस चीज से हमें सबसे ज्यादा प्यार है उसे छोड़ना!

फ्रांसिस अपने एकाकी कार्य के कारण पीली या कमजोर नहीं पड़ी; शायद इससे उसके मन को मिलने वाली उत्तेजना ने उसके शरीर पर पड़ने वाली निष्क्रियता को संतुलित कर दिया। वह बदल गई, वास्तव में, स्पष्ट रूप से और तेजी से; लेकिन यह बेहतर के लिए था। जब मैंने उसे पहली बार देखा, तो उसका चेहरा उदास था, उसका रंग फीका था; वह ऐसी लग रही थी जैसे उसे दुनिया में कहीं भी आनंद का कोई स्रोत न हो, कोई सुख न मिलता हो; अब उसके चेहरे से उदासी का बादल छंट गया था, आशा और उत्साह की सुबह के लिए जगह बन गई थी, और ये भावनाएँ एक साफ सुबह की तरह उभर आईं, उदास मन को जीवंत कर दिया, फीकेपन को रंग दिया। उसकी आँखें, जिनका रंग मैंने पहले नहीं जाना था, दबे हुए आँसुओं से इतनी धुंधली थीं, निरंतर निराशा से इतनी घिरी हुई थीं, अब, उसके दिल को खुश करने वाली धूप की एक किरण से रोशन होकर, चमकीले हेज़ल रंग की पुतलियाँ दिखाई दे रही थीं - बड़ी और भरी हुई पुतलियाँ, लंबी पलकों से ढकी हुई; और आँखों की पुतलियाँ आग से भरी हुई थीं। चिंता या उदासी के कारण अक्सर दिखने वाली दुबली-पतली, लंबी और गोल दिखने वाली चेहरे की वह उदासी उसके चेहरे से गायब हो गई थी; त्वचा में एक चमक और एक उभार जैसी कोमलता आ गई थी, और उसके चेहरे की बनावट की स्पष्ट रेखाओं में एक गोलाई आ गई थी। उसके शरीर में भी यह सकारात्मक बदलाव आया; वह अधिक गोल हो गया, और चूंकि उसके शरीर का सामंजस्य पूर्ण था और उसकी कद-काठी मध्यम और आकर्षक थी, इसलिए मुझे (या कम से कम मुझे) उसके शरीर की बनावट में पूर्णता की कमी का अफसोस नहीं हुआ, जो अभी भी हल्की, फिर भी सुगठित, सुंदर और लचीली थी - कमर, कलाई, हाथ, पैर और टखने का मनमोहक घुमाव समरूपता के मेरे विचारों को पूरी तरह संतुष्ट करता था, और गति में एक हल्कापन और स्वतंत्रता प्रदान करता था जो सुंदरता के मेरे विचारों से मेल खाता था।

इस प्रकार सुधरकर, जीवन के प्रति जागृत होकर, मैडम हेनरी ने विद्यालय में एक नई मुकाम हासिल करना शुरू कर दिया; उनकी मानसिक क्षमता, जो धीरे-धीरे लेकिन

लगातार प्रकट होती गई, जल्द ही ईर्ष्यालु लोगों से भी प्रशंसा प्राप्त करने लगी; और जब युवा और स्वस्थ लोगों ने देखा कि वह खुलकर मुस्कुरा सकती हैं, खुशी से बातचीत कर सकती हैं, जीवंतता और सतर्कता के साथ चल सकती हैं, तो उन्होंने उनमें युवा और स्वस्थ लोगों का एक समूह देखा और तदनुसार उन्हें अपने ही समूह का हिस्सा मानकर सहन किया।

सच कहूँ तो, मैंने इस बदलाव को उसी तरह देखा जैसे कोई माली किसी अनमोल पौधे की वृद्धि को देखता है, और मैंने भी इसमें अपना योगदान दिया, ठीक वैसे ही जैसे वह माली अपने प्रिय पौधे के विकास में योगदान देता है। मेरे लिए यह समझना कठिन नहीं था कि मैं अपनी शिष्या का सर्वोत्तम पोषण कैसे करूँ, उसकी तरसती भावनाओं को कैसे संजोऊँ, और उस आंतरिक शक्ति को कैसे प्रकट करूँ जिसे अब तक सूर्यविहीन सूखे और विनाशकारी तूफान ने पनपने से रोक रखा था। निरंतर ध्यान देना— एक ऐसी दयालुता जो मौन और सतर्क दोनों थी, हमेशा उसके साथ खड़ी रहती थी, संयम के आवरण में लिपटी हुई, और जिसका असली स्वरूप केवल कभी-कभार रुचि भरी नज़र या सौहार्दपूर्ण और कोमल शब्दों से ही प्रकट होता था; दिखावटी दबंगता के आवरण में छिपा हुआ वास्तविक सम्मान, उसके कार्यों को निर्देशित करना, प्रेरित करना, फिर भी उसकी मदद करना, और वह भी पूरी लगन से: ये वे साधन थे जिनका मैंने उपयोग किया, क्योंकि ये साधन फ्रांसिस की भावनाओं के लिए सबसे उपयुक्त थे, जो गहरी और संवेदनशील थीं—उसका स्वभाव एक साथ गर्व और शर्मीला दोनों था।

मेरी पद्धति के लाभ उसके शिक्षक के रूप में बदले हुए व्यवहार में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे; अब वह अपने विद्यार्थियों के बीच एक ऐसे आत्मविश्वास और दृढ़ता के साथ बैठती थी जिससे उन्हें तुरंत विश्वास हो जाता था कि वह आज्ञापालन चाहती है — और वह आज्ञापालन करती भी थी। उन्हें लगा कि अब उनका उस पर कोई अधिकार नहीं रह गया है। यदि कोई लड़की विद्रोह करती, तो वह अब उसके विद्रोह को दिल पर नहीं लेती; उसके पास एक ऐसा सहारा था जिसे वे छीन नहीं सकते थे, एक ऐसा मजबूत स्तंभ जिसे वे गिरा नहीं सकते थे: पहले, अपमानित होने पर वह रोती थी; अब, वह मुस्कुराती थी।

उनकी एक रचना के सार्वजनिक पाठ ने उनकी प्रतिभा को सर्वप्रसिद्ध कर दिया; मुझे विषय याद है—यह एक प्रवासी का अपने घर के मित्रों को लिखा पत्र था। इसकी

शुरुआत सरल थी; कुछ प्राकृतिक और चित्रात्मक वर्णनों ने पाठक को उस निर्जन वन और विशाल, नई दुनिया की नदी का दृश्य दिखाया—जो पाल और झंडे से रहित थी—जिसके बीच यह पत्र लिखा गया था। एक बसने वाले के जीवन में आने वाली कठिनाइयों और खतरों का संकेत दिया गया था; और उस विषय पर कहे गए कुछ शब्दों में, श्रीमती हेनरी ने दृढ़ संकल्प, धैर्य और प्रयास की आवाज़ को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया। उन आपदाओं का उल्लेख किया गया था जिन्होंने उन्हें अपने वतन से विदा किया था; निर्मल सम्मान, अटूट स्वतंत्रता और अविनाशी आत्मसम्मान का भाव वहाँ प्रकट हुआ। बीते दिनों की बात की गई; बिछड़ने का दुख, अनुपस्थिति का अफसोस व्यक्त किया गया; हर वाक्य में प्रबल और सूक्ष्म भावनाएँ स्पष्ट रूप से व्यक्त हुईं। अंत में, सांत्वना का संकेत दिया गया; वहां धार्मिक आस्था ही वक्ता बनी और उसने अच्छी तरह से बात की।

यह भक्तिमय संदेश एक ही समय में पवित्र और चुनिंदा भाषा में, जोश से भरपूर और सामंजस्य से सुशोभित शैली में सशक्त रूप से लिखा गया था।

मैडम रॉयटर अंग्रेज़ी से अच्छी तरह परिचित थीं और उनकी उपस्थिति में इसे पढ़े या बोले जाने पर समझ जाती थीं, हालाँकि वे स्वयं न तो बोल सकती थीं और न ही लिख सकती थीं। इस पाठ को पढ़ते समय, वे शांतिपूर्वक व्यस्त बैठी रहीं, उनकी आँखें और उंगलियाँ एक कैम्ब्रिक रूमाल के चारों ओर एक जालीदार किनारा बनाने में लगी थीं; उन्होंने कुछ नहीं कहा, और उनका चेहरा और माथा, पूरी तरह से नकारात्मक भावों से ढके हुए, उनके होंठों की तरह ही भावहीन थे। जिस प्रकार उनके चेहरे पर न तो आश्चर्य, न खुशी, न ही स्वीकृति, न रुचि प्रकट हुई, उसी प्रकार न ही तिरस्कार, ईर्ष्या, झुंझलाहट, न थकान; यदि उस रहस्यमय चेहरे ने कुछ कहा भी, तो वह बस यही था—

"यह मामला इतना सामान्य है कि इससे कोई भावना उत्पन्न नहीं होती या कोई राय सामने नहीं आती।"

जैसे ही मैंने अपना काम समाप्त किया, एक हलचल मच गई; कई विद्यार्थी मैडम हेनरी के चारों ओर जमा होकर उनकी प्रशंसा करने लगे; अब निर्देशिका की संयमित आवाज सुनाई दी: —

“युवतियों, जिनके पास चादर और छाते हैं, वे बारिश तेज होने से पहले जल्दी घर लौट आएं” (हल्की बारिश हो रही थी), “बाकी लड़कियां अपने-अपने नौकरों के आने

तक इंतजार करें।” और स्कूल समाप्त हो गया, क्योंकि चार बज चुके थे।

“महाशय, एक बात,” मैडम रॉयटर ने सीढ़ी पर कदम रखते हुए कहा और हाथ के इशारे से यह संकेत दिया कि वह चाहती हैं कि मैं एक पल के लिए अपने हाथ में पकड़ी हुई छड़ी छोड़ दूं।

"महोदया, मैं आपकी सेवा में तत्पर हूं।"

“महाशय, किसी विशेष रूप से मेहनती विद्यार्थी की प्रगति को उजागर करके युवाओं में परिश्रम को प्रोत्साहित करना निश्चित रूप से एक उत्कृष्ट योजना है; लेकिन क्या आपको नहीं लगता कि इस मामले में, मैडम हेनरी को अन्य विद्यार्थियों के समकक्ष नहीं माना जा सकता? वह उनमें से अधिकांश से उम्र में बड़ी हैं, और उन्हें अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त करने के लिए विशेष लाभ मिले हैं; दूसरी ओर, उनका जीवन स्तर उनसे कुछ नीचे है; इन परिस्थितियों में, मैडम हेनरी को दिया गया सार्वजनिक सम्मान तुलनाओं का कारण बन सकता है, और ऐसी भावनाएँ उत्पन्न कर सकता है जो उस व्यक्ति के लिए बिल्कुल भी लाभकारी नहीं होंगी। मैडम हेनरी के वास्तविक कल्याण में मेरी रुचि मुझे उन्हें इस प्रकार की परेशानियों से बचाने के लिए प्रेरित करती है; इसके अलावा, महाशय, जैसा कि मैंने आपको पहले भी संकेत दिया है, उनके चरित्र में आत्मसम्मान की भावना कुछ अधिक ही प्रबल है; प्रसिद्धि इस भावना को बढ़ावा देती है, और उनमें इसे दबाना चाहिए - उन्हें इसकी आवश्यकता है दबाना, आगे बढ़ाने से बेहतर; और फिर मैं सोचती हूँ, महोदय—मुझे लगता है कि महत्वाकांक्षा, विशेषकर साहित्यिक महत्वाकांक्षा, एक स्त्री के मन में पोषित करने योग्य भावना नहीं है: क्या श्रीमती हेनरी अधिक सुरक्षित और सुखी नहीं होंगी यदि उन्हें यह सिखाया जाए कि सामाजिक कर्तव्यों के शांत निर्वाह में ही उनका वास्तविक कर्तव्य निहित है, बजाय इसके कि उन्हें प्रशंसा और प्रसिद्धि के लिए प्रेरित किया जाए? हो सकता है कि उनकी कभी शादी न हो; उनके संसाधन सीमित हैं, उनके संबंध अस्पष्ट हैं, उनका स्वास्थ्य अनिश्चित है (क्योंकि मुझे लगता है कि उन्हें तपेदिक है, उनकी माँ की मृत्यु इसी बीमारी से हुई थी), इसलिए यह बहुत संभव है कि उनकी कभी शादी न हो। मुझे नहीं लगता कि वह ऐसी स्थिति तक पहुँच सकती हैं जहाँ से ऐसा कदम संभव हो सके; लेकिन अविवाहित रहते हुए भी उनके लिए एक सम्मानित और शालीन महिला के चरित्र और आदतों को बनाए रखना बेहतर होगा।

“निस्संदेह, महोदया,” मेरा उत्तर था। “आपकी राय में कोई संदेह नहीं है;” और,

इस डर से कि कहीं बहस फिर से शुरू न हो जाए, मैं उस सौहार्दपूर्ण सहमति भरे वाक्य की आड़ में पीछे हट गया।

ऊपर बताई गई छोटी सी घटना के दो सप्ताह बाद, मैंने अपनी डायरी में दर्ज किया कि मैडम हेनरी कक्षा में नियमित रूप से उपस्थित नहीं हो रही थीं। पहले एक-दो दिन तो मुझे उनकी अनुपस्थिति पर आश्चर्य हुआ, लेकिन मैंने उनसे इसका कारण पूछना उचित नहीं समझा; मुझे लगा कि शायद कोई बात गलती से निकल जाए जिससे मुझे वह जानकारी मिल जाए जो मैं जानना चाहती थी, और इसके लिए मुझे पूछने पर किसी की हंसी और कानाफूसी का जोखिम भी नहीं उठाना पड़ेगा। लेकिन जब एक सप्ताह बीत गया और दरवाजे के पास वाली डेस्क खाली रही, और कक्षा के किसी भी छात्र ने इस बारे में कोई बात नहीं की — बल्कि इसके विपरीत, मैंने देखा कि सभी इस विषय पर चुप थे — तो मैंने ठान लिया कि मैं इस चुप्पी को तोड़ूंगी। मैंने सिल्वी को सूचना देने वाली के रूप में चुना, क्योंकि मुझे पता था कि उससे कम से कम मुझे एक समझदारी भरा जवाब तो मिल ही जाएगा, बिना किसी छल-कपट, हंसी या अन्य मूर्खतापूर्ण बातों के।

“तो मैडम हेनरी कहाँ हैं?” मैंने एक दिन कहा जब मैं एक अभ्यास पुस्तिका लौटा रहा था जिसकी मैं जाँच कर रहा था।

“वह चली गई हैं, महोदय।”

"चली गई? और कितने समय के लिए? वह कब वापस आएगी?"

“वह हमेशा के लिए चली गई हैं, महोदय; वह वापस नहीं आएंगी।”

“आह!” यह मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया; फिर कुछ देर रुकने के बाद: —

"क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है, सिल्वी?"

"जी हां, महोदय, प्रधानाध्यापिका ने स्वयं हमें दो-तीन दिन पहले यह बात बताई थी।"

और मैं अपनी पूछताछ को आगे नहीं बढ़ा सका; समय, स्थान और परिस्थितियाँ मुझे एक और शब्द कहने से रोक रही थीं। मैं न तो कही गई बातों पर टिप्पणी कर सकता था, न ही और अधिक जानकारी मांग सकता था। शिक्षक के जाने का कारण, कि क्या यह स्वेच्छा से था या नहीं, यह प्रश्न मेरे होठों पर था, लेकिन मैंने इसे दबा लिया - चारों ओर श्रोता थे। एक घंटे बाद, गलियारे में सिल्वी को अपनी टोपी पहनते हुए देखकर, मैं अचानक रुक गया और पूछा: —

“सिल्वी, क्या तुम्हें मैडम हेनरी का पता पता है? मेरे पास उनकी कुछ किताबें हैं,” मैंने लापरवाही से कहा, “और मैं उन्हें भेजना चाहूंगी।”

"नहीं, महोदय," सिल्वी ने उत्तर दिया; "लेकिन शायद द्वारपाल रोज़ाली आपको यह दे सकेंगी।"

रोसैली का कैबिनेट बिल्कुल पास ही था; मैं अंदर गया और वही सवाल दोहराया। रोसैली—एक सजी-धजी फ्रांसीसी महिला—ने अपने काम से नज़रें उठाकर एक समझदारी भरी मुस्कान दी, ठीक वैसी ही मुस्कान जिसे मैं जगाने से बचना चाहता था। उसका जवाब पहले से तैयार था; उसे मैडम हेनरी के पते के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं थी—उसे कभी पता ही नहीं था। अधीरता से उससे मुँह मोड़ते हुए—क्योंकि मुझे यकीन था कि वह झूठ बोल रही है और झूठ बोलने के लिए ही उसे काम पर रखा गया है—मैंने लगभग अपने पीछे खड़े किसी व्यक्ति को टक्कर मार दी; वह डायरेक्ट्रेस थीं। मेरे अचानक हिलने से वह दो-तीन कदम पीछे हट गईं। मुझे माफ़ी माँगनी पड़ी, जो मैंने विनम्रता से ज़्यादा संक्षिप्त रूप से की। कोई भी व्यक्ति ज़िद पसंद नहीं करता, और उस समय मैं जिस चिड़चिड़े मूड में था, मैडम रॉयटर को देखकर मैं बुरी तरह भड़क उठा। जिस क्षण मैंने मुड़ा, उनका चेहरा कठोर, गंभीर और जिज्ञासु लग रहा था; उनकी आँखें लगभग भूखी जिज्ञासा से मुझ पर टिकी हुई थीं। मैंने मुश्किल से ही चेहरे के इस बदलाव को देखा था कि यह गायब हो गया; उसके चेहरे पर एक सौम्य मुस्कान थी; मेरी कठोर माफी को उसने सहजता से स्वीकार कर लिया।

“अरे, कोई बात नहीं, महोदय; आपने बस मेरी कोहनी से मेरे बालों को छुआ है; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, बस थोड़े से बिखरे हुए हैं।” उसने अपने बालों को झटककर पीछे किया और अपनी उंगलियों से उन्हें और भी घने और लहराते हुए छल्लों में बदल दिया। फिर वह जोश से आगे बोली:

“रोसाली, मैं तुम्हें यह बताने आ रही थी कि तुम तुरंत जाओ और बैठक की खिड़कियाँ बंद कर दो; हवा तेज़ हो रही है, और मलमल के पर्दे धूल से भर जाएँगे।”

रोसैली चली गई। “अब,” मैंने सोचा, “यह ठीक नहीं है; मैडम रॉयटर सोचती हैं कि छुपकर बातें सुनने की उनकी नीचता बहाने गढ़ने की उनकी कला से छिपी हुई है, जबकि जिन मलमल के पर्दों की वह बात कर रही हैं, वे इस बहाने से ज़्यादा पारदर्शी नहीं हैं।” मेरे मन में एक आवेग आया कि मैं उस कमज़ोर पर्दे को हटा दूं और सीधे-

सीधे सच के एक-दो शब्दों से उनकी चालाकी का साहसपूर्वक सामना करूं। “खुरदुरे जूते फिसलन भरी ज़मीन पर सबसे मज़बूती से पड़ते हैं,” मैंने सोचा; और इस तरह मैंने बोलना शुरू किया:

“मैडम हेनरी ने आपका प्रतिष्ठान छोड़ दिया है — मुझे लगता है कि उन्हें बर्खास्त कर दिया गया है?”

“आह, महाशय, मैं आपसे थोड़ी बातचीत करना चाहती थी,” निर्देशिका ने अत्यंत सहज और सौहार्दपूर्ण भाव से उत्तर दिया; “लेकिन हम यहाँ शांति से बात नहीं कर सकते; क्या महाशय एक मिनट के लिए बगीचे में आ सकते हैं?” और वह मुझसे पहले ही उस कांच के दरवाजे से बाहर निकल गईं जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था।

"वहाँ," उसने कहा, जब हम मध्य गली के केंद्र में पहुँच गए थे, और जब झाड़ियों और पेड़ों के पत्ते, जो अब अपनी गर्मियों की सुंदरता में थे, हमारे पीछे और चारों ओर से घिर गए, जिससे घर का दृश्य छिप गया, और इस प्रकार राजधानी के बिल्कुल केंद्र में स्थित जमीन के इस छोटे से टुकड़े को भी एकांत का एहसास हुआ।

“वहाँ, जब चारों ओर केवल नाशपाती के पेड़ और गुलाब की झाड़ियाँ हों, तो मन को शांति और स्वतंत्रता का अहसास होता है; मुझे यकीन है कि आप भी, मेरी तरह, महोदय, कभी-कभी जीवन की भागदौड़ में घिरे रहने से थक जाते होंगे; हमेशा अपने चारों ओर इंसानी चेहरों, हमेशा अपनी ओर देखती आँखों और हमेशा अपने कानों में इंसानी आवाज़ों से। मुझे यकीन है कि मैं अक्सर किसी छोटे से फार्महाउस में, जो बिल्कुल साफ-सुथरा, स्वच्छ और चारों ओर हरियाली से घिरा हो, एक पूरा महीना बिताने की तीव्र इच्छा रखता हूँ; देहाती जीवन से कितना मनमोहक जीवन है! है ना, महोदय?”

"यह निर्भर करता है, महोदया।"

“हवा अच्छी और ताज़ी है!” निर्देशिका ने आगे कहा; और वह बिल्कुल सही थी, क्योंकि यह दक्षिण की ओर से आने वाली हवा थी, कोमल और मधुर। मैंने अपनी टोपी हाथ में पकड़ी हुई थी, और यह कोमल हवा मेरे बालों से गुज़रते हुए मेरे कनपटी को मरहम की तरह सुकून दे रही थी। हालाँकि, इसका ताज़गी भरा प्रभाव शरीर की सतह से अधिक गहरा नहीं था; क्योंकि जब मैं मैडम रॉयटर के बगल से गुज़र रहा था, तब भी मेरा दिल अंदर से गर्म था, और जब मैं सोच रहा था तो आग भड़क रही थी;

तभी मैंने अपने मन से कहा: —

“मैं समझ गया मैडम। हेनरी यहाँ से चले गए हैं, और वापस नहीं लौटेंगे?”

“अहा, बिल्कुल सही! मैं कुछ दिन पहले ही इस विषय पर आपसे बात करना चाहता था, लेकिन मेरा समय इतना व्यस्त है कि मैं अपनी आधी इच्छाएँ भी पूरी नहीं कर पा रहा हूँ: क्या आपने कभी यह अनुभव नहीं किया है, महोदय, कि आपके अनेक कर्तव्यों के लिए दिन बारह घंटे कम पड़ जाए?”

“ऐसा अक्सर नहीं होता। मुझे लगता है कि मैडम हेनरी का जाना स्वेच्छा से नहीं था? अगर ऐसा होता, तो मेरी शिष्या होने के नाते वह मुझे इसका कुछ संकेत जरूर देती।”

"अरे, क्या उसने तुम्हें नहीं बताया? यह तो अजीब बात है; जहाँ तक मेरी बात है, मैंने कभी इस विषय पर ध्यान देने के बारे में सोचा ही नहीं; जब किसी के पास करने के लिए बहुत सारी चीजें होती हैं, तो वह छोटी-मोटी घटनाओं को भूल जाता है जो प्राथमिक महत्व की नहीं होतीं।"

तो क्या आप मैडम हेनरी की बर्खास्तगी को एक बहुत ही महत्वहीन घटना मानते हैं?

“बर्खास्तगी? आह! उन्हें बर्खास्त नहीं किया गया था; मैं सत्य कह सकता हूँ, महोदय, कि जब से मैं इस संस्थान का प्रमुख बना हूँ, तब से किसी भी शिक्षक या अध्यापक को यहाँ से बर्खास्त नहीं किया गया है।”

“लेकिन कुछ लोगों ने इसे छोड़ दिया है, मैडम?”

"कई बार; मैंने पाया है कि शिक्षकों को बार-बार बदलना आवश्यक होता है - शिक्षकों का बदलना अक्सर विद्यालय के हित में लाभकारी होता है; यह गतिविधियों में जीवंतता और विविधता लाता है; यह विद्यार्थियों का मनोरंजन करता है, और अभिभावकों को परिश्रम और प्रगति का विचार देता है।"

"लेकिन जब आप किसी प्रोफेसर या मालकिन से ऊब जाते हैं, तो क्या आप उन्हें बर्खास्त करने में संकोच करते हैं?"

“ऐसे चरम उपायों का सहारा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है, मैं आपको आश्वस्त करती हूँ। चलो, महोदय प्रोफेसर - चलिए चलते हैं; मैं आपको आपके संस्थान के बारे में एक छोटा सा सबक दूंगी।” (काश मैं वह सब लिख पाती जो उन्होंने मुझसे फ्रेंच में कहा था - अंग्रेजी में अनुवाद करने पर उसका अर्थ पूरी तरह बिगड़

जाता है।) अब हम बगीचे की कुर्सी तक पहुँच चुके थे; निदेशक बैठ गईं और मुझे अपने पास बैठने का इशारा किया, लेकिन मैंने केवल अपना घुटना कुर्सी पर रखा और अपना सिर और बांह एक विशाल लेबर्नम के पेड़ की घनी शाखा पर टिकाए खड़ी रही, जिसके सुनहरे फूल, बकाइन की झाड़ी के गहरे हरे पत्तों के साथ मिलकर, उस स्थान पर छाया और धूप का एक मिश्रित मेहराब बना रहे थे। श्रीमती रॉयटर एक क्षण के लिए चुपचाप बैठी रहीं; जाहिर तौर पर उनके दिमाग में कुछ नए विचार चल रहे थे, और वे उनकी तीक्ष्ण भौंहों पर दिखाई दे रहे थे; वह किसी उत्कृष्ट नीतिगत कार्य पर विचार कर रही थीं। कई महीनों के अनुभव से आश्वस्त होकर कि जिन गुणों का वह दिखावा करती थी, वे मुझ पर असर नहीं करेंगे — यह जानते हुए कि मैंने उसका असली स्वभाव जान लिया था और उसके द्वारा बताए गए किसी भी चरित्र पर विश्वास नहीं करूंगा — उसने अंततः एक नई तरकीब आज़माने का निश्चय किया, यह देखने के लिए कि क्या मेरे दिल का ताला इससे खुल जाएगा; थोड़ी सी हिम्मत, सच्चाई का एक शब्द, वास्तविकता की एक झलक। "हाँ, मैं कोशिश करूँगी," उसका आंतरिक संकल्प था; और फिर उसकी नीली आँखें मुझ पर चमक उठीं — उनमें कोई चमक नहीं थी — उनकी सौम्य चमक में कभी कोई लौ नहीं भड़की।

"क्या महाशय मेरे बगल में बैठने से डरते हैं?" उसने शरारती अंदाज में पूछा।

“पेलेट की जगह लेने की मेरी कोई इच्छा नहीं है,” मैंने उत्तर दिया, क्योंकि मुझे उससे सीधे-सीधे बात करने की आदत पड़ गई थी—यह आदत गुस्से में शुरू हुई थी, लेकिन जारी रही क्योंकि मैंने देखा कि इससे उसे ठेस पहुँचने के बजाय, वह और भी आकर्षित हो जाती थी। उसने अपनी आँखें नीचे कर लीं और पलकें झुका लीं; उसने बेचैनी से आह भरी; वह चिंतित भाव से मुड़ी, मानो वह मुझे पिंजरे में फड़फड़ाते हुए पक्षी का आभास देना चाहती हो, जो अपने पिंजरे और जेलर से उड़कर अपने साथी और प्यारे घोंसले की तलाश में जाना चाहता हो।

“अच्छा—और आपका पाठ?” मैंने संक्षेप में पूछा।

“आह!” उसने खुद को संभालते हुए कहा, “तुम इतने युवा हो, इतने स्पष्टवादी और निडर हो, इतने प्रतिभाशाली हो, मूर्खता के प्रति इतने चिढ़ते हो, अशिष्टता के प्रति इतने तिरस्कारी हो, तुम्हें एक सबक की जरूरत है; तो ये लो: इस दुनिया में ताकत से कहीं ज्यादा काम चतुराई से होता है; लेकिन शायद तुम यह पहले से जानते थे, क्योंकि तुम्हारे चरित्र में शक्ति के साथ-साथ कोमलता भी है—अभिमान के साथ-

साथ चतुराई भी है?”

“बोलिए,” मैंने कहा; और मैं मुस्कुराए बिना रह ही नहीं सकी, मेरी तारीफ़ इतनी तीखी और सधी हुई थी। हालाँकि मैंने अपनी मुस्कान छुपाने के लिए अपना हाथ अपने मुँह पर रख लिया, फिर भी उसने मुझे अपने बगल में बैठने के लिए जगह दी। हालाँकि उस पल मुझे बोलने का बहुत मन कर रहा था, फिर भी मैंने अपना सिर हिलाया और उसे एक बार फिर बोलने के लिए कहा।

“अच्छा, तो फिर, अगर कभी आप किसी बड़े संस्थान के मुखिया बनें, तो किसी को बर्खास्त मत कीजिएगा। सच कहूँ तो, महोदय (और मैं आपसे सच ही कहूँगा), मुझे वे लोग बिल्कुल पसंद नहीं जो हमेशा झगड़े करते रहते हैं, शेखी बघारते रहते हैं, किसी को दाएं तो किसी को बाएं भेजते रहते हैं, और परिस्थितियों को जल्दबाजी में बदलने की कोशिश करते रहते हैं। महोदय, मैं आपको बताऊँ कि मुझे सबसे अच्छा क्या लगता है, क्या मैं बताऊँ?” उन्होंने फिर ऊपर देखा; इस बार उनकी नज़रें बहुत सधी हुई थीं—बहुत नखरे, अधिक सम्मान, थोड़ी सी चंचलता, और अपनी क्षमता का खुला एहसास। मैंने सिर हिलाया; उन्होंने मुझे एक महान मुगल की तरह समझा; इसलिए उनकी नज़र में मैं एक महान मुगल बन गया।

“महोदय, मुझे अपनी बुनाई हाथ में लेकर चुपचाप कुर्सी पर बैठना अच्छा लगता है; परिस्थितियाँ मेरे सामने से गुज़रती हैं; मैं उनकी चाल देखती हूँ; जब तक वे मेरी इच्छा के अनुसार चलती हैं, मैं कुछ नहीं कहती, कुछ नहीं करती; मैं ताली नहीं बजाती, न ही चिल्लाती हूँ, ‘वाह! मैं कितनी भाग्यशाली हूँ!’ ताकि अपने पड़ोसियों का ध्यान और ईर्ष्या आकर्षित कर सकूँ—मैं बस निष्क्रिय रहती हूँ; लेकिन जब घटनाएँ बिगड़ती हैं—जब परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो जाती हैं—मैं बहुत सतर्कता से देखती हूँ; मैं बुनाई करती रहती हूँ, और चुप रहती हूँ; लेकिन कभी-कभी, महाराज, मैं बस अपना पैर आगे बढ़ाती हूँ—और विद्रोही परिस्थिति को चुपके से, बिना शोर किए, एक छोटा सा धक्का देती हूँ, जिससे वह मेरी इच्छा के अनुसार हो जाती है, और अंततः मैं सफल हो जाती हूँ, और किसी को मेरा उपाय पता नहीं चलता। इसलिए, जब शिक्षक या प्रधानाचार्य परेशानी पैदा करने वाले और अक्षम हो जाते हैं—जब, संक्षेप में, उनके पद पर बने रहने से विद्यालय के हितों को नुकसान होगा—मैं अपनी बुनाई पर ध्यान देती हूँ, घटनाएँ आगे बढ़ती हैं, परिस्थितियाँ धीरे-धीरे गुज़रती हैं; मैं एक ऐसी परिस्थिति देखती हूँ जिसे अगर ज़रा सा भी टेढ़ा कर दिया जाए, इससे वह पद

अव्यवहारिक हो जाएगा जिसे मैं खाली करना चाहता हूं - काम हो चुका है - बाधा दूर हो गई है - और किसी ने मुझे नहीं देखा: मैंने कोई शत्रु नहीं बनाया है, मैं एक बोझ से मुक्त हो गया हूं।"

कुछ क्षण पहले तक तो मुझे वह आकर्षक लग रही थी; यह भाषण समाप्त होते ही मैंने उसे घृणा से देखा। "बिल्कुल तुम्हारी तरह," मेरा ठंडा जवाब था। "और इस तरह तुमने मैडम हेनरी को पद से हटा दिया? तुम उनका पद चाहती थीं, इसलिए तुमने उनके लिए इसे असहनीय बना दिया?"

“बिल्कुल नहीं, महोदय, मैं तो बस मैडम हेनरी के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित थी; नहीं, आपकी नैतिक दृष्टि तो स्पष्ट और पैनी है, लेकिन आप सच्चाई को समझने में असफल रहे हैं। मैंने हमेशा से मैडम हेनरी के कल्याण में गहरी रुचि रखी है; मुझे उनका हर मौसम में बाहर जाना पसंद नहीं था; मुझे लगा कि उनके लिए स्थायी नौकरी पाना अधिक लाभदायक होगा; इसके अलावा, मुझे लगा कि अब वह सिलाई सिखाने से बढ़कर कुछ और करने के लिए योग्य हैं। मैंने उनसे इस बारे में बात की; फैसला उन पर छोड़ दिया; उन्हें मेरे विचार सही लगे और उन्होंने उन्हें स्वीकार कर लिया।”

“बहुत बढ़िया! और अब, महोदया, क्या आप कृपा करके मुझे उनका पता बता सकती हैं?”

“उसका पता!” और निर्देशिका के चेहरे पर एक गंभीर और कठोर भाव आ गया। “उसका पता? आह? – खैर – काश मैं आपकी मदद कर पाती, महोदय, लेकिन मैं नहीं कर सकती, और मैं आपको इसका कारण बताती हूँ; जब भी मैंने उससे उसका पता पूछा, उसने हमेशा टालमटोल किया। मुझे लगा – हो सकता है मैं गलत हूँ – लेकिन मुझे लगा कि ऐसा करने के पीछे उसका मकसद मुझे किसी, शायद बहुत गरीब, घर से परिचित कराने की एक स्वाभाविक, हालांकि गलत, अनिच्छा थी; उसके पास सीमित साधन थे, उसकी पृष्ठभूमि अस्पष्ट थी; वह निस्संदेह किसी ‘बेसे विले’ में रहती है।”

मैंने कहा, “मैं अपनी सबसे होनहार छात्रा को अभी नहीं छोडूंगा, भले ही वह भिखारियों के घर पैदा हुई हो और तहखाने में रहती हो; बाकी सब बातों के लिए, उसकी पृष्ठभूमि को लेकर चिंता करना बेतुका है - मुझे बस इतना पता है कि वह एक स्विस पादरी की बेटी थी, इससे ज्यादा कुछ नहीं; और जहाँ तक उसकी तंग आमदनी

की बात है, मुझे उसकी जेब की गरीबी से कोई लेना-देना नहीं है, जब तक उसका दिल खुशियों से भरा है।”

“महाशय, आपके विचार अत्यंत प्रशंसनीय हैं,” निदेशिका ने जम्हाई रोकने का नाटक करते हुए कहा; उनकी चंचलता अब गायब हो चुकी थी, उनका क्षणिक स्पष्टवादिता भी समाप्त हो गई थी; लाल रंग का, समुद्री डाकुओं जैसा दिखने वाला दुस्साहस का झंडा, जिसे उन्होंने एक पल के लिए हवा में लहराने दिया था, अब समेट लिया गया था, और छल का चौड़ा, शांत रंग का झंडा एक बार फिर किले पर नीचे लटक रहा था। मुझे उनका यह रूप पसंद नहीं आया, इसलिए मैंने उनसे बातचीत बीच में ही रोक दी और वहां से चला गया।

अध्याय XIX.

उपन्यासकारों को वास्तविक जीवन के अध्ययन से कभी ऊबना नहीं चाहिए। यदि वे इस कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करें, तो वे हमें प्रकाश और छाया के जीवंत विरोधाभासों से सजे चित्र कम ही देंगे; वे अपने नायकों और नायिकाओं को परमानंद की ऊँचाइयों तक कम ही पहुँचाएँगे—और उन्हें निराशा की गहराइयों में तो और भी कम ही डुबोएँगे; क्योंकि यदि हम इस जीवन में आनंद की परिपूर्णता का स्वाद कम ही चखते हैं, तो हम निराशापूर्ण पीड़ा की कड़वी अनुभूति का स्वाद और भी कम चखते हैं; जब तक कि हम जानवरों की तरह इंद्रिय सुख में डूब न जाएँ, दुरुपयोग न करें, तनाव न लें, उत्तेजित न हों, फिर अति तनाव में न पड़ें, और अंत में, आनंद लेने की अपनी क्षमताओं को नष्ट न कर दें; तब, वास्तव में, हम खुद को बिना सहारे के, आशा से वंचित पा सकते हैं। हमारी पीड़ा बहुत बड़ी है, और यह कैसे समाप्त हो सकती है?

हमने अपनी शक्तियों का स्रोत तोड़ दिया है; जीवन पूरी तरह से पीड़ामय होना चाहिए —विश्वास की कल्पना करने के लिए भी बहुत कमजोर—मृत्यु अंधकारमय होनी चाहिए—ईश्वर, आत्माएं, धर्म हमारे टूटे हुए मन में कोई स्थान नहीं रख सकते, जहां केवल दुराचार की भयानक और दूषित यादें ही शेष रहती हैं; और समय हमें कब्र के कगार पर ले आता है, और विघटन हमें उसमें फेंक देता है—बीमारी से पूरी तरह से फटा हुआ, दर्द से चूर-चूर, निराशा की निर्दयी एड़ी से कब्रिस्तान की मिट्टी में कुचला हुआ।

लेकिन नियमित जीवन और तर्कसंगत बुद्धि वाला व्यक्ति कभी निराश नहीं होता। वह अपनी संपत्ति खो देता है—यह एक आघात है—वह एक पल के लिए लड़खड़ा जाता है; फिर, इस पीड़ा से जागृत उसकी ऊर्जा, उपाय खोजने में जुट जाती है; सक्रियता जल्द ही पछतावे को कम कर देती है। बीमारी उसे घेर लेती है; वह धैर्य रखता है—उस बीमारी को सहता है जिसका इलाज नहीं हो सकता। तीव्र पीड़ा उसे सताती है; उसके तड़पते अंग आराम पाने के लिए जगह नहीं पाते; वह आशा के सहारे टिका रहता है। मृत्यु उससे उसका प्रिय छीन लेती है; जड़ से उखाड़ देती है, और उस तने को हिंसक रूप से फाड़ देती है जिससे उसका स्नेह लिपटा हुआ था—एक अंधकारमय, निराशाजनक समय, एक भयानक आघात—लेकिन किसी सुबह धर्म सूर्योदय के साथ उसके उजाड़ घर में झांकता है, और कहता है, कि दूसरे लोक में, दूसरे जीवन में, वह अपने सगे-संबंधियों से फिर मिलेगा। वह उस लोक को पाप से अछूते स्थान के रूप में वर्णित करती है—उस जीवन को, दुख से रहित युग के रूप में; वह दो विचारों को जोड़कर अपने सांत्वना को बहुत मजबूत करती है - जिन्हें मनुष्य समझ नहीं सकते, लेकिन जिन पर वे विश्राम करना पसंद करते हैं - शाश्वतता, अमरता; और शोक संतप्त व्यक्ति का मन प्रकाश और शांति से भरे स्वर्गीय पहाड़ों की धुंधली लेकिन गौरवशाली छवि से भर जाता है - वहाँ आनंद में विश्राम कर रही आत्मा की छवि से - उस दिन की छवि से जब उसकी आत्मा भी वहाँ मुक्त और निराकार होकर उतरेगी - प्रेम से परिपूर्ण, भय से मुक्त एक पुनर्मिलन की छवि से - वह साहस जुटाता है - जीवन की आवश्यकताओं का सामना करने और कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिए निकल पड़ता है; और यद्यपि दुःख उसके मन से अपना बोझ कभी नहीं हटा सकता, आशा उसे इसे सहन करने में सक्षम बनाएगी।

अच्छा—और इन सब बातों का विचार कहाँ से आया? और इससे क्या निष्कर्ष

निकाला जा सकता है? इसका कारण यह था कि मेरा सबसे उत्तम शिष्य—मेरा अनमोल रत्न—मेरे हाथों से छीन लिया गया और मेरी पहुँच से दूर कर दिया गया; इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि एक स्थिर और समझदार व्यक्ति होने के नाते, मैंने इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से अपने मन में उत्पन्न आक्रोश, निराशा और दुःख को किसी भयानक रूप में बढ़ने नहीं दिया; न ही मैंने उन्हें अपने हृदय पर पूरी तरह हावी होने दिया; बल्कि इसके विपरीत, मैंने उन्हें एक तंग और गुप्त कोने में कैद कर दिया। दिन के समय भी, जब मैं अपने कर्तव्यों में व्यस्त था, मैंने उन्हें चुप रहने को कहा; और रात को अपने कमरे का दरवाजा बंद करने के बाद ही मैंने इन उदास बच्चों के प्रति अपनी कठोरता में कुछ ढील दी और उनकी बड़बड़ाहट को व्यक्त करने की अनुमति दी; फिर, प्रतिशोध में, वे मेरे तकिये पर बैठ गए, मेरे बिस्तर पर मंडराने लगे और अपनी लंबी, आधी रात की रोने की आवाज़ से मुझे जगाए रखा।

एक हफ़्ता बीत गया। मैंने मैडम रॉयटर से कुछ नहीं कहा था। मैं उनके प्रति शांत भाव से पेश आ रहा था, हालाँकि मेरा व्यवहार पत्थर जैसा ठंडा और कठोर था। जब मैंने उन्हें देखा, तो मेरी नज़रें वैसी ही थीं जैसी किसी ऐसे व्यक्ति पर पड़ती हैं जिसने ईर्ष्या को सलाहकार बनाया हो और छल को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया हो - शांत तिरस्कार और गहरे अविश्वास की नज़रें। शनिवार शाम को, घर से निकलने से पहले, मैं बैठक कक्ष में गया, जहाँ वह अकेली बैठी थीं, और उनके सामने खड़े होकर, मैंने उसी शांत स्वर और तरीके से पूछा, जैसे मैं पहली बार यह सवाल पूछता -

"मैडम, क्या आप कृपा करके मुझे फ्रांसिस इवांस हेनरी का पता दे देंगी?"

थोड़ा आश्चर्यचकित, लेकिन विचलित हुए बिना, उसने मुस्कुराते हुए उस पते के बारे में किसी भी जानकारी से इनकार किया और कहा, "शायद महोदय भूल गए हैं कि मैंने उस परिस्थिति के बारे में पहले ही सब कुछ समझा दिया था - एक सप्ताह पहले?"

मैंने आगे कहा, "महोदया, यदि आप मुझे उस युवक के निवास स्थान का पता बता दें तो आप मुझ पर बहुत बड़ा उपकृत करेंगी।"

वह कुछ हैरान सी लग रही थी; और अंत में, बड़ी चतुराई से बनावटी भोलेपन का भाव दिखाते हुए ऊपर देखते हुए उसने पूछा, "क्या महाशय को लगता है कि मैं झूठ बोल रही हूँ?"

फिर भी उन्हें सीधा जवाब देने से बचते हुए, मैंने कहा, "तो क्या आपका इरादा,

महोदया, इस मामले में मेरी मदद करने का नहीं है?"

लेकिन, महोदय, मैं आपको वह बात कैसे बता सकता हूँ जो मुझे पता ही नहीं है?

“बहुत खूब; मैं आपकी बात पूरी तरह समझ गया हूँ, महोदया, और अब मुझे बस दो-तीन शब्द कहने हैं। यह जुलाई का आखिरी सप्ताह है; एक महीने बाद छुट्टियाँ शुरू हो जाएँगी, कृपया इस दौरान मिलने वाले अवकाश का लाभ उठाकर किसी अन्य अंग्रेज शिक्षक की तलाश कर लें — अगस्त के अंत में, मुझे आपके संस्थान से अपना पद छोड़ना पड़ेगा।”

मैंने इस घोषणा पर उनकी टिप्पणी का इंतजार नहीं किया, बल्कि झुककर तुरंत वहां से चला गया।

उसी शाम, भोजन के तुरंत बाद, एक नौकर मेरे लिए एक छोटा सा पैकेट लाया; उस पर लिखावट जानी-पहचानी थी, लेकिन मुझे इतनी जल्दी उसे दोबारा देखने की उम्मीद नहीं थी; अपने कमरे में अकेले होने के कारण, उसे तुरंत खोलने में मुझे कोई बाधा नहीं थी; उसमें पाँच-पाँच फ़्रैंक के चार सिक्के और अंग्रेज़ी में एक नोट था।

"महोदय,

“मैं कल श्रीमती रॉयटर के घर गई थी, उस समय जब मुझे पता था कि आप अपना पाठ लगभग समाप्त कर चुकी होंगी, और मैंने उनसे पूछा कि क्या मैं कक्षा में जाकर आपसे बात कर सकती हूँ। श्रीमती रॉयटर बाहर आईं और कहा कि आप जा चुकी हैं; अभी चार भी नहीं बजे थे, इसलिए मुझे लगा कि उन्हें कोई गलतफहमी हुई होगी, लेकिन मैंने सोचा कि अगले दिन फिर से यही काम करने आना व्यर्थ होगा। एक तरह से एक पत्र भी उतना ही अच्छा रहेगा - यह 20 फ्रैंक, यानी आपके द्वारा दिए गए पाठों की कीमत, को लपेट देगा; और अगर यह आपके प्रति मेरे आभार को पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर पाएगा - अगर यह आपको उस तरह से विदाई नहीं दे पाएगा जैसा मैं देना चाहती थी - अगर यह आपको उस तरह से नहीं बता पाएगा जैसा मैं कहना चाहती हूँ, कि मुझे कितना दुख है कि मैं शायद अब आपसे कभी नहीं मिल पाऊँगी - तो फिर, बोले गए शब्द भी इस काम के लिए शायद ही पर्याप्त होंगे। अगर मैं आपसे मिली होती, तो शायद मैं कुछ कमजोर और असंतोषजनक शब्द ही बोल पाती - कुछ ऐसा जो मेरी भावनाओं को व्यक्त करने के बजाय उन्हें झुठलाता; इसलिए शायद यह अच्छा ही हुआ कि मुझे आपकी कक्षा में प्रवेश नहीं मिला। उपस्थिति। महोदय, आपने अक्सर कहा था कि मेरे लेखन में दुःख सहने की सहनशीलता पर बहुत ज़ोर दिया गया

है—आपने कहा था कि मैं इस विषय को बहुत बार उठाता हूँ: वास्तव में मुझे लगता है कि किसी कठिन कर्तव्य के बारे में लिखना उसे निभाने से कहीं अधिक आसान है, क्योंकि जब मैं देखता और महसूस करता हूँ कि मेरे साथ क्या बुरा हुआ है, तो मैं बहुत दुखी हो जाता हूँ; महोदय, आप मेरे प्रति दयालु थे—बहुत दयालु; मैं दुखी हूँ—आपसे बिछड़ने से मेरा हृदय टूट गया है; जल्द ही इस धरती पर मेरा कोई मित्र नहीं रहेगा। लेकिन अपनी परेशानियों से आपको परेशान करना व्यर्थ है। आपकी सहानुभूति का मुझे क्या अधिकार है? कुछ नहीं; इसलिए मैं और कुछ नहीं कहूँगा।

अलविदा, महोदय।

“एफ. ई. हेनरी।”

मैंने नोट को अपने पर्स में रख लिया। मैंने पाँच फ्रैंक के सिक्के अपने पर्स में डाल लिए और फिर अपने संकरे कमरे से एक चक्कर लगाया।

“मधुमक्खी रॉयटर ने अपनी गरीबी के बारे में बताया था,” मैंने कहा, “और वह सच में गरीब हैं; फिर भी वह अपना कर्ज चुकाती हैं और उससे भी ज़्यादा देती हैं। मैंने अभी तक उन्हें एक तिमाही की पढ़ाई भी नहीं कराई है, और उन्होंने मुझे एक तिमाही का बकाया भेज दिया है। मुझे हैरानी होती है कि उन्होंने बीस फ्रैंक जुटाने के लिए खुद को किन-किन चीजों से वंचित किया होगा—मुझे हैरानी होती है कि वह किस तरह के घर में रहती होंगी, उनकी चाची कैसी महिला होंगी, और क्या उन्हें उस जगह की भरपाई के लिए कोई नौकरी मिल पाएगी जो उन्होंने खो दी है। इसमें कोई शक नहीं कि उन्हें एक स्कूल से दूसरे स्कूल के चक्कर लगाने पड़ेंगे, यहाँ पूछताछ करनी पड़ेगी, वहाँ आवेदन करना पड़ेगा—यहाँ से ठुकराया जाएगा, वहाँ से निराश होना पड़ेगा। कई शामें वह थकी-हारी और असफल होकर बिस्तर पर जाएंगी। और निध्यापिका ने उन्हें मुझसे विदा लेने के लिए अंदर नहीं आने दिया? क्या मुझे स्कूल के कमरे की खिड़की पर उनके साथ कुछ मिनट खड़े होकर कुछ वाक्य बोलने का मौका नहीं मिलेगा—यह जानने का कि वह कहाँ रहती हैं—और अपनी इच्छानुसार सब कुछ व्यवस्थित करने की तैयारी करने का? नोट पर कोई पता नहीं है,”—मैंने अपनी जेब से नोट निकालते हुए कहा। और दोनों पन्नों के दोनों ओर देखते हुए मैंने सोचा: “औरतें तो औरतें ही होती हैं, ये तो निश्चित है, और हमेशा औरतों की तरह ही काम करती हैं; मर्द तो बस अपनी चिट्ठियों पर तारीख और पता लिख देते हैं। और ये पाँच-पाँच फ्रैंक के सिक्के?” — (मैंने उन्हें अपने पर्स से निकाला) — “अगर उसने इन्हें हरे रेशम के धागे से एक

छोटे से पैकेट में बाँधने के बजाय खुद मुझे दिए होते, तो मैं इन्हें वापस उसके छोटे से हाथ में थमा देती, और उसकी पतली, नुकीली उंगलियों को उन पर बंद कर देती — ऐसे — और उसकी शर्म, उसका गर्व, उसकी झिझक, सब कुछ एक दृढ़ इच्छाशक्ति के आगे झुकने पर मजबूर कर देती — अब वो कहाँ है? मैं उस तक कैसे पहुँचूँ?”

मैंने अपने कमरे का दरवाजा खोला और रसोई में चली गई।

मैंने उस नौकर से पूछा, "यह पैकेट कौन लाया?" जिसने इसे मुझे दिया था।

"एक छोटा-सा काम करने वाला लड़का, महोदय।"

“क्या उसने कुछ कहा?”

"कुछ नहीं।"

और मैं अपनी पिछली सीढ़ियों से ऊपर की ओर बढ़ा, अपनी पूछताछ से मुझे आश्चर्यजनक रूप से अधिक ज्ञान प्राप्त हुआ था।

मैंने मन ही मन कहा, "कोई बात नहीं," और फिर से दरवाजा बंद कर दिया। "कोई बात नहीं - मैं ब्रुसेल्स के रास्ते उसे ढूंढ लूंगा।"

और मैंने ऐसा ही किया। चार हफ़्तों तक, जब भी मुझे फुर्सत मिलती, मैं उसे हर दिन ढूँढता रहा; रविवार को दिन भर उसे ढूँढता रहा; बुलेवार्ड्स में, एले वर्टे में, पार्क में उसे ढूँढता रहा; सेंट गुडुल और सेंट जैक्स में उसे ढूँढता रहा; दोनों प्रोटेस्टेंट चैपल्स में उसे ढूँढता रहा; मैं इन चैपल्स में जर्मन, फ्रेंच और अंग्रेज़ी प्रार्थना सभाओं में जाता रहा, इस उम्मीद में कि शायद मैं उससे किसी एक में मिल जाऊँगा। मेरी सारी खोजें बिलकुल निष्फल रहीं; आखिरी बात पर मेरा भरोसा भी बाकी अनुमानों की तरह ही निराधार साबित हुआ। प्रार्थना सभा के बाद मैं हर चैपल के दरवाज़े पर खड़ा रहता और तब तक इंतज़ार करता जब तक कि हर कोई बाहर न आ जाए, हर दुबली-पतली लड़की के गाउन को गौर से देखता, हर युवा के सिर पर बंधी टोपी के नीचे झाँकता। व्यर्थ; मैंने लड़कियों जैसी आकृतियाँ देखीं जो अपने काले स्कार्फ़ को अपने झुके हुए कंधों पर लपेटे हुए मेरे पास से गुज़र रही थीं, लेकिन उनमें से किसी में भी मैडम हेनरी जैसी अदा और हाव-भाव नहीं थे; मैंने भूरे बालों की लटों में लिपटे पीले और विचारशील चेहरों को देखा, लेकिन मुझे उसका माथा, उसकी आंखें, उसकी भौहें कभी नहीं दिखीं। मेरे सामने आए सभी चेहरों की सारी विशेषताएं मानो लुप्त हो गई थीं, क्योंकि मेरी आंखें उन विशिष्टताओं को पहचान नहीं पा रही थीं जिन पर वे टिकी हुई थीं; माथे का चौड़ा हिस्सा, एक बड़ी, गहरी और गंभीर आंख, जिसके ऊपर एक

पतली लेकिन स्पष्ट भौंह की रेखा बनी हुई थी।

"शायद वह ब्रुसेल्स छोड़कर चली गई है—शायद इंग्लैंड चली गई है, जैसा उसने कहा था," मैंने मन ही मन बुदबुदाया, जब चौथे रविवार की दोपहर को मैं शाही गिरजाघर के उस दरवाजे से मुड़ा जिसे द्वारपाल ने अभी-अभी बंद करके ताला लगा दिया था, और चौक पर बिखर रहे अंतिम लोगों के पीछे-पीछे चल पड़ा। मैं जल्द ही अंग्रेज़ सज्जनों और महिलाओं के जोड़ों से आगे निकल गया। (हे भगवान! ये लोग अच्छे कपड़े क्यों नहीं पहनते? मेरी आँखें अभी भी उन ऊँची झालरों वाली, बेढंगी और अस्त-व्यस्त महंगी रेशम और साटन की पोशाकों, महँगी लेस के बड़े भद्दे कॉलरों, और उन बेढंगे कोटों और अजीबोगरीब ढंग से बनी पैंटों की यादों से भरी हुई हैं, जो हर रविवार को अंग्रेजी प्रार्थना सभा के दौरान चैपल-रॉयल के गायन मंडलों को भर देते थे, और उसके बाद, चौक में निकलते हुए, साफ-सुथरे और सलीके से कपड़े पहने विदेशी लोगों के साथ बेमेल विरोधाभास पैदा करते थे, जो कोबर्ग चर्च में सलामी देने के लिए जल्दी में होते थे।) मैं इन ब्रिटिश जोड़ों, सुंदर ब्रिटिश बच्चों के समूहों, और ब्रिटिश नौकरों और दासियों के पास से गुज़र चुका था; मैं प्लेस रॉयल पार करके रू रॉयल में पहुँच गया था, और वहाँ से मैं रू डे लूवेन में मुड़ गया था - एक पुरानी और शांत गली। मुझे याद है कि थोड़ी भूख लगने पर, और पेलेट के भोजनालय में परोसे जा रहे "गौटर" (यानी पिस्टोलेट और पानी) में से अपना हिस्सा लेने के लिए वापस जाने की इच्छा न होने पर, मैं एक बेकरी में गया और एक कौक (?) (यह एक फ्लेमिश शब्द है, मुझे इसकी वर्तनी नहीं पता) - एक कोरिन्थे-एंग्लिस, यानी किशमिश वाला बन - और एक कप कॉफी पीकर खुद को तरोताज़ा किया; और फिर मैं पोर्ट डी लूवेन की ओर चल पड़ा। बहुत जल्द मैं शहर से बाहर निकल गया, और द्वार से ऊपर जाने वाली पहाड़ी पर धीरे-धीरे चढ़ते हुए, मैंने अपना समय लिया; क्योंकि दोपहर, हालांकि बादल छाए हुए थे, बहुत उमस भरी थी, और वातावरण को ताज़ा करने के लिए हवा का एक झोंका भी नहीं चल रहा था। ब्रसेल्स के किसी भी निवासी को एकांत की तलाश में दूर भटकने की ज़रूरत नहीं है; उसे बस अपने शहर से आधा मील दूर जाना है और वह उसे विशाल खेतों पर, जो इतने उजाड़ होते हुए भी इतने उपजाऊ हैं, बिना पेड़ों और बिना रास्तों के, ब्रबांट की राजधानी के चारों ओर फैले हुए, शांत और निर्जन पाएगा। पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर, और उस सुसंस्कृत लेकिन निर्जीव मैदान को देर तक निहारने के बाद, मेरे मन में उस मुख्य मार्ग को

छोड़ने की इच्छा हुई, जिस पर मैं अब तक चल रहा था, और उन उपजाऊ खेतों में जाने की इच्छा हुई - जो किसी विशाल रसोई के बगीचे की क्यारियों की तरह उपजाऊ थे - जो क्षितिज की सीमाओं तक दूर-दूर तक फैले हुए थे, जहाँ शाम के समय हरे रंग से दूरी के साथ उनका रंग एक उदास नीले रंग में बदल गया, और उनके रंग उग्र और गरजते हुए दिखने वाले आकाश के रंगों के साथ मिल गए। तदनुसार, मैं दाईं ओर एक पगडंडी पर मुड़ गया; मैं अभी ज्यादा दूर तक उसका पीछा नहीं कर पाया था कि वह मुझे, जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, खेतों में ले आई, जिनके बीच, ठीक मेरे सामने, एक लंबी और ऊंची सफेद दीवार फैली हुई थी। ऊपर से दिख रही पत्तियों से ऐसा लग रहा था मानो दीवार के अंदर यू और साइप्रस के घने पेड़ लगे हों, क्योंकि उन्हीं प्रजातियों की शाखाएँ दीवार की हल्की दीवारों पर टिकी हुई थीं और एक विशाल क्रॉस के चारों ओर घनी थीं। यह क्रॉस संभवतः एक ऊंचे स्थान पर स्थापित था और इसकी भुजाएँ, जो काले संगमरमर की प्रतीत हो रही थीं, उन अशुभ पेड़ों की चोटियों के ऊपर फैली हुई थीं। मैं यह सोचकर पास पहुंचा कि यह अच्छी तरह से संरक्षित बगीचा किस घर का है; मैंने दीवार के कोने को पार किया, यह सोचकर कि शायद कोई आलीशान घर होगा; मैं बड़े लोहे के फाटकों के पास था; पास में एक झोपड़ी थी जो लॉज का काम करती थी, लेकिन मुझे चाबी मांगने की जरूरत नहीं पड़ी - फाटक खुले थे; मैंने एक पल्ला पीछे धकेला - बारिश ने उसके कब्जों में जंग लगा दी थी, क्योंकि घूमते समय वह धीमी आवाज कर रहा था। प्रवेश द्वार के चारों ओर घनी हरियाली थी। सड़क पर आगे बढ़ते हुए, मैंने दोनों ओर ऐसी वस्तुएँ देखीं, जो अपने मौन शिलालेखों और चिह्नों की भाषा में स्पष्ट रूप से बता रही थीं कि मैं किस स्थान पर आ रहा हूँ। यह सभी जीवित प्राणियों के लिए निर्धारित स्थान था; क्रॉस, स्मारक और शाश्वतता की मालाएँ घोषणा कर रही थीं, "लूवेन के द्वार के बाहर प्रोटेस्टेंट कब्रिस्तान।"

यह जगह इतनी बड़ी थी कि आधे घंटे तक बिना एक ही रास्ते पर बार-बार चलने की नीरसता के आराम से सैर की जा सकती थी; और जो लोग कब्रिस्तानों के इतिहास को पढ़ना पसंद करते हैं, उनके लिए यहाँ शिलालेखों की इतनी विविधता थी कि उनका ध्यान उससे दुगने या तिगुने समय तक लगा रह सकता था। यहाँ अनेक जातियों, भाषाओं और देशों के लोग अपने मृतकों को दफ़नाने के लिए लाए थे; और यहाँ पत्थर, संगमरमर और पीतल के पन्नों पर नाम, तिथियाँ, अंतिम श्रद्धांजलि या

प्रेम के शब्द अंग्रेज़ी, फ़्रेंच, जर्मन और लैटिन में लिखे हुए थे। यहाँ एक अंग्रेज ने अपनी पत्नी मैरी स्मिथ या जेन ब्राउन के अवशेषों पर संगमरमर का स्मारक बनवाया था और उस पर केवल उनका नाम खुदवाया था। वहाँ एक फ्रांसीसी विधुर ने अपनी पत्नी एल्मायर या सेलेस्टाइन की कब्र को गुलाबों की घनी झाड़ियों से ढक दिया था, जिनके बीच एक छोटी सी पट्टिका उनकी अनगिनत खूबियों की उतनी ही उज्ज्वल गवाही दे रही थी। हर देश, जनजाति और परिवार ने अपने-अपने तरीके से शोक मनाया; और सबका शोक कितना मौन था! मेरे कदमों की आहट, यद्यपि धीमी और समतल पगडंडियों पर थी, फिर भी चौंका देने वाली प्रतीत हुई, क्योंकि यह उस पूर्ण सन्नाटे को एकमात्र भंग कर रही थी। न केवल हवाएँ, बल्कि अस्थिर और भटकती हुई हवाएँ भी उस दोपहर, सर्वमान्य रूप से, अपने-अपने क्षेत्रों में सोई हुई थीं; उत्तर शांत था, दक्षिण मौन, पूर्व सिसक नहीं रहा था, न ही पश्चिम फुसफुसा रहा था। आकाश में बादल घने और धुंधले थे, लेकिन मानो बिल्कुल स्थिर थे। इस कब्रिस्तान के पेड़ों के नीचे एक गर्म, साँस रोक देने वाला अंधकार छाया हुआ था, जिसमें सरू के पेड़ सीधे और मौन खड़े थे, जिनके ऊपर विलो के पेड़ नीचे और स्थिर लटके हुए थे; जहाँ फूल, जितने सुंदर थे उतने ही सुस्त, रात की ओस या गरज के साथ बारिश की प्रतीक्षा में बेसुध पड़े थे; जहाँ कब्रें, और वे लोग जिन्हें वे छिपाए हुए थे, सूर्य या छाया, वर्षा या सूखे से अछूते थे।

अपने कदमों की आहट से प्रेरित होकर, मैं घास पर मुड़ा और धीरे-धीरे यू वृक्षों के झुरमुट की ओर बढ़ा; मैंने तनों के बीच कुछ हलचल देखी; मुझे लगा कि शायद कोई टूटी हुई शाखा झूल रही है, मेरी कमज़ोर दृष्टि ने कोई आकृति नहीं देखी, केवल गति का आभास हुआ; लेकिन धुंधली छाया आगे बढ़ गई, रास्ते के खुले स्थानों पर प्रकट और गायब होती रही। जल्द ही मुझे समझ आ गया कि यह एक जीवित प्राणी है, और एक मानव प्राणी है; और पास आने पर मैंने देखा कि यह एक स्त्री थी, जो धीरे-धीरे इधर-उधर टहल रही थी, और स्पष्ट रूप से खुद को अकेला समझ रही थी जैसे मैंने खुद को अकेला समझा था, और ध्यान कर रही थी जैसे मैं ध्यान कर रहा था। थोड़ी देर बाद वह उस जगह पर लौट आई जिसे उसने अभी-अभी छोड़ा था, वरना मैं उसे पहले ही देख लेता। वह एक कोने में थी, पेड़ों के झुंड से ढकी हुई; उसके सामने सफेद दीवार थी, दीवार से सटा हुआ एक छोटा सा पत्थर था, और पत्थर के नीचे, अभी-अभी खोदी गई घास का एक छोटा सा हिस्सा था, एक नई बनी हुई कब्र। मैंने

अपना चश्मा लगाया और धीरे से उसके पीछे से गुजरा; पत्थर पर लिखे शिलालेख पर नज़र डालते हुए मैंने पढ़ा, “जूलियन हेनरी, ब्रुसेल्स में निधन, आयु साठ वर्ष। 10 अगस्त, 18 —।” शिलालेख पढ़ने के बाद, मैंने अपनी आँखों के ठीक नीचे झुकी हुई और विचारशील बैठी हुई आकृति को देखा, मानो आसपास किसी भी जीवित प्राणी की मौजूदगी से बेखबर हो; वह सादे काले कपड़े के शोक वस्त्र में एक दुबली-पतली, युवा आकृति थी, जिसके सिर पर एक छोटी सी साधारण काली क्रेप की टोपी थी; मैंने महसूस किया, साथ ही देखा भी, कि वह कौन थी; और बिना हाथ-पैर हिलाए, मैं कुछ क्षणों तक अपने विश्वास की शांति का आनंद लेता रहा। मैंने उसे एक महीने तक खोजा था, और उसका कोई सुराग नहीं मिला था — उससे मिलने की कोई उम्मीद नहीं जगी थी, न ही कहीं मिलने का कोई मौका मिला था। मुझे अपनी उम्मीदों पर से पकड़ ढीली करनी पड़ी थी; और, अभी एक घंटा पहले ही, मैं इस निराशाजनक विचार के बोझ तले दबकर सुस्त पड़ गया था कि जीवन की धारा और नियति के आवेग ने उसे हमेशा के लिए मेरी पहुँच से दूर कर दिया है; और देखो, निराशा के दबाव में अचानक धरती की ओर झुकते हुए - एक कब्रिस्तान की घास पर दुख के निशान का पीछा करते हुए - यहाँ मेरा खोया हुआ रत्न आँसुओं से सिंचित घास पर गिरा हुआ था, यू-वृक्ष की अस्त-व्यस्त और फफूंदी लगी जड़ों में बसा हुआ था।

फ्रांसिस बिल्कुल शांत बैठी थी, उसकी कोहनी घुटने पर टिकी थी और सिर हाथ पर। मैं जानता था कि वह बिना हिले-डुले लंबे समय तक चिंतनशील मुद्रा में रह सकती है; आखिरकार, उसकी आँखों से एक आँसू बह निकला; वह अपने सामने पत्थर पर लिखे नाम को देख रही थी, और उसका हृदय निस्संदेह उन पीड़ाओं में से एक से गुजरा होगा जिनसे मृत व्यक्ति के शोक में डूबे हुए लोग कभी-कभी बुरी तरह पीड़ित होते हैं। कई आँसू बह निकले, जिन्हें उसने बार-बार अपने रूमाल से पोंछा; कुछ सिसकियाँ उसके मुँह से निकलीं, और फिर, पीड़ा का दौर समाप्त होने पर, वह पहले की तरह शांत बैठ गई। मैंने धीरे से अपना हाथ उसके कंधे पर रखा; उसे और कुछ समझाने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह न तो हिस्टीरिया से पीड़ित थी और न ही बेहोश होने की प्रवृत्ति रखती थी; वास्तव में, अचानक धक्का देने से वह चौंक सकती थी, लेकिन मेरे शांत स्पर्श ने केवल मेरी इच्छा के अनुसार उसका ध्यान आकर्षित किया; और, यद्यपि वह तेज़ी से मुड़ी, फिर भी कुछ लोगों के मन में, विशेष रूप से, यह विचार बिजली की गति से आया कि किस बात का आश्चर्य—यह चेतना

कि कौन अचानक उसकी एकांतता में आ गया, उसके मस्तिष्क में कौंध गई और उसके हृदय में कौंध गई, इससे पहले कि उसने वह जल्दबाजी में हरकत की हो; कम से कम, आश्चर्य ने मुश्किल से ही उसकी आँखें खोली थीं और मेरी ओर उठाई थीं, इससे पहले कि पहचान ने उसकी पुतलियों को अत्यंत चमक से भर दिया। घबराहट भरी हैरानी ने मुश्किल से ही उसके चेहरे को विचलित किया था कि अत्यंत जीवंत आनंद की भावना उसके पूरे चेहरे पर स्पष्ट और गर्म चमक उठी। मुझे मुश्किल से ही यह देखने का समय मिला कि वह कमजोर और पीली पड़ गई थी, इससे पहले कि मुझे उस जीवंत लालिमा में चमकते और मेरे शिष्य के चेहरे पर फैलते व्यापक प्रकाश में जगमगाते अत्यंत पूर्ण और उत्कृष्ट आनंद की अनुभूति हुई। यह भारी गर्मी की बारिश के बाद चमकता हुआ ग्रीष्म ऋतु का सूरज था; और उस किरण से अधिक तेजी से उपजाऊ क्या हो सकता है, जो अपनी तीव्रता में लगभग आग की तरह जल रही हो?

मुझे दुस्साहस से नफरत है— वह दुस्साहस जो कठोर माथे और संवेदनहीन नसों का होता है; लेकिन मुझे दृढ़ हृदय का साहस, उदार रक्त का जोश पसंद है; मुझे फ्रांसिस इवांस की निर्मल भूरी आँखों की चमक से बेहद प्यार था जब वह मेरी आँखों में सीधे देखने से नहीं डरती थी; मुझे वे स्वर पसंद थे जिनसे उसने शब्द कहे—

"मेरे स्वामी! मेरे स्वामी!"

मुझे वो भावपूर्ण भाव बहुत भाया जिससे उसने अपना हाथ मेरे हाथ में थाम लिया; मुझे वो तब भी भाई जब वो वहाँ निर्धन और अनाथ खड़ी थी; एक कामुक व्यक्ति के लिए आकर्षणहीन, मेरे लिए एक अनमोल रत्न — धरती पर मेरी सबसे प्रिय सहानुभूति की पात्र, जो मेरे जैसे विचार रखती थी, मेरे जैसे भाव महसूस करती थी; मेरे प्रेम के भंडार को संजोने के लिए मेरे आदर्श मंदिर जैसी; विवेक और दूरदर्शिता, परिश्रम और दृढ़ता, आत्म-त्याग और आत्म-संयम की साक्षात मूर्ति — मेरे उस प्रेम के उपहार की रक्षक, उस विश्वसनीय रखवाली करने वाली जिसे मैं उसे अर्पित करना चाहता था — मेरे समस्त स्नेह का उपहार; सत्य और सम्मान, स्वतंत्रता और कर्तव्यनिष्ठा की आदर्श — एक ईमानदार जीवन को निखारने और बनाए रखने वाली; कोमलता के एक गहरे स्रोत की मौन स्वामी, एक ऐसी लौ की, जो शांत और निर्मल, कभी न बुझने वाली, स्वाभाविक भावनाओं और जुनून से भरी — घर के पवित्र स्थान को ताजगी और सुकून देने वाली। मैं जानता था कि उसके हृदय में वह गहरा और शांत

भाव कितनी गहराई से उबलता था; मैं जानता था कि तर्क की दृष्टि में वह अधिक खतरनाक लौ कितनी सुरक्षित रूप से जलती थी; मैंने देखा था जब आग एक पल के लिए बहुत ऊँची और तीव्र हो उठी थी, जब तीव्र गर्मी ने जीवन की धारा को उसके प्रवाह में खलल डाला था; मैंने देखा था जब तर्क ने विद्रोही को शांत किया और उसकी ज्वाला को राख में बदल दिया। मुझे फ्रांसिस इवांस पर भरोसा था; मैं उनका सम्मान करता था, और जब मैंने उनका हाथ अपने हाथ में लिया और उन्हें कब्रिस्तान से बाहर ले गया, तो मुझे एक और भावना का एहसास हुआ, जो भरोसे जितनी ही मजबूत, सम्मान जितनी ही दृढ़, और इन दोनों से कहीं अधिक तीव्र थी - वह थी प्रेम की भावना।

“अच्छा, मेरे शिष्य,” मैंने कहा, जैसे ही अशुभ ध्वनि वाला द्वार हमारे पीछे की ओर खुला — “अच्छा, मैंने तुम्हें फिर से पा लिया है: एक महीने की खोज लंबी लग रही थी, और मैंने जरा भी नहीं सोचा था कि मेरी खोई हुई भेड़ कब्रों के बीच भटकती हुई मिल जाएगी।”

मैंने इससे पहले कभी भी उसे "मैडमोजेल" के अलावा किसी और नाम से संबोधित नहीं किया था, और इस तरह बोलना हम दोनों के लिए एक नया लहजा था। उसके जवाब ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया कि इस भाषा से उसकी भावनाओं को कोई ठेस नहीं पहुंची, उसके दिल में कोई असंतोष नहीं जागा।

“मेरे स्वामी,” उसने कहा, “क्या आपने मुझे ढूंढने की जहमत उठाई? मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि आप मेरी अनुपस्थिति को इतना अहमियत देंगे, लेकिन आपसे बिछड़ने पर मुझे बहुत दुख हुआ। मुझे उस परिस्थिति का बहुत अफसोस था, जबकि इससे भी बड़ी मुसीबतों में मुझे यह बात भुला देनी चाहिए थी।”

“तुम्हारी चाची मर गई?”

“हाँ, दो सप्ताह बीत चुके हैं, और वह गहरे अफसोस से घिरी हुई इस दुनिया से चली गईं, जिसे मैं उनके मन से नहीं निकाल सका; अपनी आखिरी रात में भी वह यही दोहराती रहीं, ‘फ्रांसिस, मेरे जाने के बाद तुम कितनी अकेली और बेसहारा हो जाओगी।’ उनकी यह भी इच्छा थी कि उन्हें स्विट्जरलैंड में दफनाया जाए, और मैंने ही बुढ़ापे में उन्हें लेक लेमन के किनारे छोड़कर, इस समतल फ्लैंडर्स क्षेत्र में आने के लिए राजी किया था, मानो यह क्षेत्र ही उनका अंतिम पड़ाव हो। मैं उनकी अंतिम इच्छा पूरी करना चाहता था और उनके अवशेषों को अपने देश वापस ले जाना चाहता

था, लेकिन यह असंभव था; मुझे उन्हें यहीं दफनाना पड़ा।”

"मुझे लगता है कि वह थोड़े समय के लिए ही बीमार थी?"

“लेकिन तीन सप्ताह। जब उनकी हालत बिगड़ने लगी तो मैंने मैडम रॉयटर से उनके साथ रहने और उनकी देखभाल करने की अनुमति मांगी; मुझे तुरंत अनुमति मिल गई।”

“क्या तुम पेंशन में वापस जाओगे!” मैंने जल्दबाजी में पूछा।

“महाशय, जब मैं एक सप्ताह से घर पर थी, एक शाम मैडम रॉयटर मुझसे मिलने आईं, ठीक उसी समय जब मैंने अपनी चाची को सुलाया था; वह उनसे बात करने के लिए उनके कमरे में गईं और हमेशा की तरह बेहद विनम्र और मिलनसार थीं; बाद में वह आकर मेरे साथ काफी देर तक बैठी रहीं, और जैसे ही वह जाने के लिए उठीं, उन्होंने कहा: “महोदया, मुझे आपके मेरे संस्थान से जाने का बहुत दुख होगा, हालांकि यह सच है कि आपने अपने विद्यार्थियों को इतनी अच्छी तरह पढ़ाया है कि वे सभी उन छोटे-छोटे कामों में निपुण हैं जिन्हें आप इतनी कुशलता से सिखाती हैं, और उन्हें आगे किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं है; मेरी दूसरी शिक्षिका भविष्य में छोटे विद्यार्थियों के मामले में आपकी जगह लेंगी, जितना वह कर सकती हैं, हालांकि वह वास्तव में आपसे कम कुशल कलाकार हैं, और निस्संदेह अब आपके लिए अपने पेशे में उच्च स्थान प्राप्त करना उचित होगा; मुझे यकीन है कि आपको हर जगह ऐसे स्कूल और परिवार मिलेंगे जो आपकी प्रतिभा का लाभ उठाना चाहेंगे।” और फिर उन्होंने मुझे मेरी पिछली तिमाही का वेतन दिया। मैंने मैडमोजेल के अंदाज़े के मुताबिक, सीधे-सीधे पूछा कि क्या वह मुझे नौकरी से निकालना चाहती हैं। मेरी अटपटी भाषा पर वह मुस्कुराईं और बोलीं, "मालिक और कर्मचारी के तौर पर हमारा रिश्ता तो खत्म हो चुका है, लेकिन उन्हें उम्मीद है कि मेरी जान-पहचान का सुख उन्हें हमेशा मिलता रहेगा; एक दोस्त के तौर पर मुझे देखकर उन्हें हमेशा खुशी होगी।" फिर उन्होंने सड़कों की अच्छी हालत और लंबे समय तक सुहावने मौसम के बारे में कुछ कहा और खुश होकर चली गईं।

मैं मन ही मन हँस पड़ी; यह सब कुछ डायरेक्ट्रेस के व्यवहार से बिल्कुल मेल खाता था—बिल्कुल वैसा ही जैसा मैंने उसके आचरण के बारे में अनुमान लगाया था; और फिर फ्रांसिस द्वारा अनजाने में उसके झूठ का पर्दाफाश और सबूत मिल गया:—“उसने मैडम हेनरी का पता कई बार माँगा था,” सचमुच; “मैडम हेनरी हमेशा पता देने

से बचती रही थीं," इत्यादि, इत्यादि, और यहाँ मैंने उसे उसी घर में एक आगंतुक के रूप में पाया जिसके बारे में उसने पूर्ण अज्ञानता का दावा किया था!

मेरे विद्यार्थी के संवाद पर मैं जो भी टिप्पणी करना चाहता था, वह हमारे चेहरों और रास्ते पर बरसती तेज़ बारिश की बूंदों और दूर से आती तूफ़ान की आहट से रुक गई। थमी हवा और धुंधले आसमान में दिख रही चेतावनी ने मुझे पहले ही ब्रुसेल्स वापस जाने वाली सड़क पर मुड़ने के लिए प्रेरित कर दिया था, और अब मैंने अपने और अपने साथी के कदमों को तेज़ कर दिया, और चूंकि हमारा रास्ता ढलान वाला था, हम तेज़ी से आगे बढ़ गए। पहली बड़ी बूंदों के गिरने के बाद कुछ देर का अंतराल रहा, फिर तेज़ बारिश शुरू हो गई; इस बीच हम पोर्ट डी लूवेन से गुज़र चुके थे और फिर से शहर में पहुँच गए थे।

मैंने पूछा, "आप कहाँ रहते हैं?" उन्होंने कहा, "मैं आपको सुरक्षित घर पहुँचा दूँगा।"

"रुए नोट्रे डेम ऑक्स नीगेस," फ्रांसिस ने उत्तर दिया।

यह रू डे लूवेन से ज्यादा दूर नहीं था, और हम उस घर की दहलीज पर खड़े थे जिसे हम ढूंढ रहे थे, इससे पहले कि बादल, तेज गड़गड़ाहट और बिजली के झटकों के साथ चीरते हुए, अपने पीले आवरणों को एक भारी, झुकी हुई और चौड़ी धारा में खाली कर दें।

"अंदर आओ! अंदर आओ!" फ्रैंसेस ने कहा, और उसे घर में अंदर रखने के बाद, मैं उसके पीछे जाने से पहले थोड़ी देर रुका: उस शब्द ने मुझे निश्चय कर दिया; मैंने दहलीज पार की, तेज़, चमकती, सफ़ेद होती आंधी से बचने के लिए दरवाज़ा बंद किया, और उसके पीछे-पीछे ऊपर उसके कमरे में चला गया। न तो वह और न ही मैं भीगे थे; दरवाज़े के ऊपर बने एक उभार ने सीधे नीचे गिरती बाढ़ को रोक दिया था; केवल पहली कुछ बड़ी बूँदें ही हमारे कपड़ों को छू पाई थीं; एक मिनट और होता तो हमारे शरीर का एक भी कपड़ा सूखा नहीं रहता।

हरे ऊन की एक छोटी सी चटाई पर कदम रखते हुए, मैं एक छोटे से कमरे में पहुँच गई, जिसका फर्श रंगा हुआ था और बीच में हरे रंग का एक चौकोर कालीन बिछा था; फर्नीचर कम था, लेकिन सभी चमकीले और बेहद साफ थे; उसकी संकीर्ण सीमाओं में व्यवस्था का राज था—ऐसी व्यवस्था जिसे देखकर मेरी सजग आत्मा को सुकून मिला। और मैं उस घर में प्रवेश करने से हिचकिचा रही थी, क्योंकि मुझे आशंका थी

कि मैडम रॉयटर का उसकी अत्यधिक गरीबी के बारे में संकेत शायद बहुत सही था, और मुझे डर था कि कहीं मैं बिना बताए उसके कमरे में जाकर फीते सिलने वाली को शर्मिंदा न कर दूं! जगह भले ही गरीब थी; वास्तव में गरीब थी; लेकिन उसकी साफ-सफाई भव्यता से कहीं बेहतर थी, और अगर उस साफ चूल्हे पर एक छोटी सी जलती हुई आग होती, तो मैं उसे महल से भी ज्यादा आकर्षक मानती। हालांकि, वहाँ न तो आग थी, न ही जलाने के लिए कोई ईंधन तैयार था; फीते सिलने वाली खुद को यह सुविधा नहीं दे सकती थी, खासकर अब जब अपने इकलौते रिश्तेदार की मृत्यु के बाद, उसके पास सहारा लेने के लिए केवल अपने स्वयं के अथक प्रयास ही थे। फ्रांसिस अपना बोनट उतारने के लिए एक अंदरूनी कमरे में गई और जब वह बाहर आई तो सादगी और सफ़ाई की मिसाल लग रही थी। उसने काले रंग की सुगठित पोशाक पहनी थी, जो उसके सुडौल सीने और पतली कमर को खूबसूरती से उभार रही थी। उसकी बेदाग सफेद कॉलर उसकी सुंदर और आकर्षक गर्दन से पीछे की ओर मुड़ी हुई थी। उसके घने भूरे बाल कनपटी पर चिकने बैंड में सजे थे और पीछे एक बड़ी ग्रीक चोटी बनी हुई थी। उसने कोई आभूषण नहीं पहना था - न ब्रोच, न अंगूठी, न रिबन; वह इनके बिना भी काफी अच्छी लग रही थी - पोशाक की परिपूर्णता, शरीर का अनुपात और चाल-ढाल की सुंदरता ने ही इनकी जगह बखूबी ले ली थी। जैसे ही वह छोटे से बैठक कक्ष में वापस आई, उसकी नज़र तुरंत मेरी नज़र से मिली, जो उस समय चूल्हे पर टिकी हुई थी; मैं समझ गई कि उसने तुरंत ही उस तरह की आंतरिक पीड़ा और दया की भावना को पढ़ लिया था जो उस चूल्हे की ठंडी खालीपन ने मेरी आत्मा में जगा दी थी: तुरंत समझ में आने वाली, तुरंत निर्णय लेने वाली और उससे भी तेज़ी से अमल में लाने वाली, उसने पल भर में अपनी कमर पर एक हॉलैंड एप्रन बांध लिया। फिर वह गायब हो गई और एक टोकरी लेकर वापस आई; उस पर एक ढक्कन था; उसने उसे खोला और उसमें से लकड़ी और कोयला निकाला; उसने बड़ी कुशलता और सलीके से उन्हें अंगीठी में सजा दिया।

मैंने सोचा, "यह उसका सारा भंडार है, और वह आतिथ्य सत्कार में इसे पूरी तरह से खर्च कर देगी।"

मैंने पूछा, "तुम क्या करने वाले हो? इस गर्म शाम में आग तो नहीं जलाओगे? मैं तो दम घुटकर मर जाऊँगा।"

"जी हां, महोदय, बारिश शुरू होने के बाद से मुझे बहुत ठंड लग रही है; इसके

अलावा, मुझे अपनी चाय के लिए पानी उबालना होगा, क्योंकि मैं रविवार को चाय पीता हूं; आपको गर्मी सहन करने की कोशिश करनी होगी।"

उसने माचिस जलाई; लकड़ी पहले से ही आग की लपटों में घिरी हुई थी; और सचमुच, बाहर के अँधेरे, तूफ़ान के भयंकर शोर के विपरीत, अब धधकती हुई चूल्हे पर पड़ती वह शांत चमक बहुत ही मन को प्रसन्न करने वाली लग रही थी। कहीं से एक धीमी, गुनगुनाने जैसी आवाज़ आई, जिससे पता चला कि मेरे अलावा कोई और भी इस बदलाव से खुश था; एक काली बिल्ली, जो रोशनी से जागकर एक छोटे से गद्दीदार स्टूल पर सो रही थी, आई और जब फ़्रांसिस घुटनों के बल बैठी तो उसने अपना सिर उसके गाउन से रगड़ा; उसने उसे सहलाते हुए कहा कि यह उसकी "बेचारी चाची जूलियन" की पसंदीदा बिल्ली थी।

आग जलाकर, चूल्हे को साफ किया गया और एक छोटी सी केतली, जो बहुत ही पुराने डिज़ाइन की थी (जैसा कि मुझे याद है मैंने इंग्लैंड के पुराने फार्महाउसों में देखी थी), अब लाल हो चुकी लौ पर रखी गई। फ्रांसिस ने झटपट हाथ धोए और अपना एप्रन उतार दिया। फिर उसने एक अलमारी खोली और एक चाय की ट्रे निकाली, जिस पर उसने जल्दी से चीनी मिट्टी के चाय के बर्तन सजा दिए, जिनका डिज़ाइन, आकार और माप प्राचीनता का संकेत दे रहे थे; प्रत्येक तश्तरी में एक छोटा, पुराने ज़माने का चांदी का चम्मच रखा गया; और चीनी के डिब्बे पर चांदी के चिमटे रखे गए; अलमारी से एक साफ-सुथरा चांदी का क्रीम-कलश भी निकाला गया, जो अंडे के छिलके से बड़ा नहीं था। ये सब करते समय, उसने संयोग से ऊपर देखा और मेरी आँखों में जिज्ञासा देखकर मुस्कुराई और पूछा—

"क्या यह इंग्लैंड जैसा है, महाशय?"

मैंने जवाब दिया, "सौ साल पहले के इंग्लैंड की तरह।"

“क्या सचमुच? खैर, इस थाली में रखी हर चीज़ कम से कम सौ साल पुरानी है: ये प्याले, ये चम्मच, ये सुराही, सब खानदानी धरोहर हैं; मेरी परदादी ने इन्हें मेरी दादी को दिया, उन्होंने मेरी माँ को, और मेरी माँ इन्हें इंग्लैंड से स्विट्जरलैंड अपने साथ लाईं और मुझे दे गईं; और, जब से मैं छोटी बच्ची थी, तब से मैं सोचती रही हूँ कि मैं इन्हें वापस इंग्लैंड ले जाऊँगी, जहाँ से ये आई थीं।”

उसने मेज पर कुछ छोटी पिस्तौलें रखीं; उसने चाय बनाई, जैसे विदेशी चाय बनाते हैं—यानी, आधा दर्जन कपों में एक छोटा चम्मच चाय; उसने मेरे लिए एक कुर्सी

लगाई, और जैसे ही मैं उस पर बैठा, उसने एक प्रकार के उत्साह के साथ पूछा—

"क्या इससे आपको कुछ पल के लिए घर जैसा महसूस होगा?"

"अगर इंग्लैंड में मेरा घर होता, तो मुझे यकीन है कि यह मुझे उसकी याद दिला देता," मैंने जवाब दिया; और सच में, गोरे रंग की, अंग्रेज़ दिखने वाली लड़की को अंग्रेज़ी भोजन की अध्यक्षता करते और अंग्रेज़ी भाषा में बोलते देखना एक तरह का भ्रम था।

“तो फिर तुम्हारे पास घर नहीं है?” उसने यह टिप्पणी की।

“न तो कभी था, न ही कभी होगा। अगर कभी मेरा अपना घर हुआ भी, तो वो मुझे खुद बनाना होगा, और वो काम अभी शुरू होना बाकी है।” और, जैसे ही मैंने ये कहा, मेरे दिल में एक नई सी पीड़ा उठी: ये मेरी दयनीय स्थिति और सीमित साधनों के कारण हुई निराशा की पीड़ा थी; और इसी पीड़ा के साथ मेरे अंदर और अधिक करने, और अधिक कमाने, और अधिक बनने, और अधिक पाने की प्रबल इच्छा जागृत हुई; और बढ़ती संपत्ति में, मेरा उत्तेजित और उत्सुक मन उस घर को पाने के लिए तड़प रहा था जो मुझे कभी नहीं मिला था, उस पत्नी को पाने के लिए जिसे मैंने मन ही मन पाने का संकल्प लिया था।

फ्रांसिस की चाय गर्म पानी, चीनी और दूध से थोड़ी ही बेहतर थी; और उसके पिस्टोलेट (एक प्रकार का पेय), जिसके साथ वह मुझे मक्खन नहीं दे सकी, मेरे लिए अमृत के समान मीठे थे।

भोजन समाप्त होने के बाद, कीमती थालियाँ और चीनी मिट्टी के बर्तन धोकर रख दिए गए, चमकदार मेज और भी चमक उठी, मेरी चाची जूलियन की बिल्ली को भी विशेष रूप से उसके लिए रखी गई थाली में भोजन परोसा गया, चूल्हे से कुछ गिरी हुई चिंगारियाँ और राख भी साफ कर दी गईं, अंत में फ्रांसिस बैठ गई; और फिर, जैसे ही वह मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठी, उसने पहली बार थोड़ी झिझक दिखाई; और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि वास्तव में मैंने अनजाने में उसे कुछ ज्यादा ही करीब से देखा था, उसकी हर हरकत और हर कदम को अपनी आँखों से कुछ ज्यादा ही लगन से देखा था, क्योंकि उसने मुझे अपनी क्रिया की सुंदरता और सतर्कता से मंत्रमुग्ध कर दिया था - उसकी कोमल और नाजुक उंगलियों के हर स्पर्श से उत्पन्न होने वाले कुशल, साफ-सुथरे और यहां तक कि सजावटी प्रभाव से; और जब अंत में वह शांत हो गई, तो उसके चेहरे की बुद्धिमत्ता मुझे सुंदरता लगी, और मैं उसी पर

ध्यान केंद्रित करता रहा। हालाँकि, उसका रंग शांत होने के बजाय और भी गहरा होता जा रहा था, और उसकी आँखें झुकी हुई थीं, हालाँकि मैं पलकें उठने का इंतज़ार करता रहा ताकि मैं उस प्रकाश की एक किरण पी सकूँ जिसे मैं प्यार करता था — एक ऐसा प्रकाश जहाँ आग कोमलता में घुल जाती थी, जहाँ स्नेह भेद को शांत करता था, जहाँ, कम से कम अभी के लिए, आनंद विचारों के साथ खेलता था — यह उम्मीद पूरी न होने पर, मुझे अंततः संदेह होने लगा कि शायद इस निराशा के लिए मैं खुद ही ज़िम्मेदार हूँ; अगर मैं उस जादू को तोड़ना चाहता था जिसके तहत वह अब गतिहीन बैठी थी, तो मुझे उसे घूरना बंद करके बोलना शुरू करना होगा; इसलिए, उस शांत प्रभाव को याद करते हुए जो एक अधिकारपूर्ण स्वर और व्यवहार हमेशा उस पर पैदा करता था, मैंने कहा —

"मैडम, अपनी अंग्रेजी की कोई किताब ले आइए, क्योंकि अभी भी तेज बारिश हो रही है, और शायद मुझे आधे घंटे और रुकना पड़ेगा।"

रिहा होने और सहज महसूस करने पर, वह उठी, अपनी किताब ली और तुरंत मेरे बगल में रखी कुर्सी पर बैठ गई। उसने अपनी क्लासिक किताबों की अलमारी से "पैराडाइज़ लॉस्ट" को चुना था, शायद यह सोचकर कि किताब का धार्मिक स्वरूप इसे रविवार के लिए सबसे उपयुक्त बनाता है; मैंने उसे शुरुआत से पढ़ने को कहा, और जब वह मिल्टन की उस दिव्य देवी की प्रार्थना पढ़ रही थी, जिसने "ओरेब या सिनाई की गुप्त चोटी" पर हिब्रू चरवाहे को सिखाया था कि कैसे अराजकता के गर्भ में, एक दुनिया की कल्पना उत्पन्न हुई और परिपक्व हुई, तब मैं बिना किसी बाधा के, उसके पास होने के तिहरे आनंद का अनुभव कर रहा था, उसकी आवाज़ सुन रहा था - जो मेरे कानों में मधुर और सुकून देने वाली थी - और बीच-बीच में उसके चेहरे को देख रहा था: इस आखिरी विशेषाधिकार का मैंने मुख्य रूप से तब लाभ उठाया जब मुझे किसी स्वर, विराम या उच्चारण में कोई त्रुटि नज़र आती थी; जब तक मैं अपनी बात पर अड़ा रहता, मैं बिना किसी अतिशय उत्तेजना के उसे निहार भी सकता था।

जब उसने लगभग आधा दर्जन पन्ने पढ़ लिए (उसके लिए यह काफी समय लेने वाला काम था, क्योंकि वह धीरे-धीरे पढ़ती थी और जानकारी पूछने और प्राप्त करने के लिए बार-बार रुकती थी) तो मैंने कहा, "बस करो; अब बारिश रुक रही है, और मुझे जल्दी जाना चाहिए।" दरअसल, उस क्षण खिड़की की ओर देखते हुए, मुझे चारों ओर नीला आसमान दिखाई दिया; गरजते बादल छंट गए थे और अगस्त का ढलता

सूरज जाली से माणिक की परछाई की तरह चमक रहा था। मैं उठा; मैंने अपने दस्ताने पहने।

“क्या आपको अभी तक कोई और पद नहीं मिला है जो मैडम रॉयटर द्वारा आपको बर्खास्त किए जाने वाले पद का स्थान ले सके?”

नहीं, महोदय; मैंने हर जगह पूछताछ की है, लेकिन सभी मुझसे संदर्भ मांगते हैं; और सच कहूँ तो, मैं निदेशिका से संपर्क करना पसंद नहीं करती, क्योंकि मुझे लगता है कि उन्होंने मेरे साथ न तो न्यायसंगत व्यवहार किया और न ही सम्मानजनक; उन्होंने मेरे विद्यार्थियों को मेरे विरुद्ध भड़काने के लिए छल-कपट का सहारा लिया, और इस प्रकार मुझे अपने संस्थान में रहते हुए दुखी किया, और अंततः उन्होंने एक नकाबपोश और पाखंडी चाल से मुझे मेरे पद से वंचित कर दिया, यह दिखावा करते हुए कि वह मेरे भले के लिए काम कर रही हैं, लेकिन वास्तव में उन्होंने मुझसे मेरी आजीविका का मुख्य साधन छीन लिया, उस संकट के समय जब न केवल मेरा जीवन, बल्कि दूसरे का जीवन भी मेरे प्रयासों पर निर्भर था: मैं उनसे फिर कभी कोई मदद नहीं मांगूंगी।

तो फिर आप आगे कैसे बढ़ने का इरादा रखते हैं? आप अभी कैसे जीवन यापन करते हैं?

“मेरे पास अभी भी फीते सिलने का काम है; अगर मैं इसे ध्यान से करूं तो यह मुझे भुखमरी से बचाएगा, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि मेहनत से मुझे इससे बेहतर काम मिल जाएगा; मैंने अभी दो सप्ताह पहले ही कोशिश शुरू की है; मेरा साहस और आशाएं अभी तक बिल्कुल भी कम नहीं हुई हैं।”

और अगर आपको अपनी मनचाही चीज मिल जाए, तो फिर क्या? आपके अंतिम विचार क्या होंगे?

"इंग्लैंड इंग्लिश चैनल पार करने के लिए पर्याप्त बचत करने के लिए: मैं हमेशा इंग्लैंड को अपने कनान के रूप में देखता हूं।"

“अच्छा, अच्छा—जल्द ही आपसे फिर मिलूंगा; शुभ संध्या,” और मैं अचानक ही उससे विदा हो गया; मुझे अपने भीतर की तीव्र इच्छा को रोकना मुश्किल हो रहा था, जो मुझे और गर्मजोशी से, और भावपूर्ण विदाई लेने के लिए उकसा रही थी: उसे एक पल के लिए गले लगाना, उसके गाल या माथे पर एक चुंबन देना कितना स्वाभाविक था? मैं अनुचित नहीं था—बस यही तो मैं चाहता था; अगर मैं इससे संतुष्ट हो जाता, तो मैं चैन से जा सकता था; लेकिन विवेक ने मुझे यह भी नहीं करने दिया; उसने मुझे

आदेश दिया कि मैं अपनी निगाहें उसके चेहरे से हटा लूं, और अपने कदम उसके कमरे से हटा लूं—उसे उतनी ही रूखेपन और ठंडेपन से विदा करूं जितना मैं बूढ़ी मैडम पेलेट को विदा करता। मैंने आज्ञा का पालन किया, लेकिन मैंने मन ही मन कसम खाई कि एक दिन इसका बदला जरूर लूंगा। "मैं इस मामले में अपनी मर्ज़ी से करने का अधिकार अर्जित करूँगा, अन्यथा मैं इस संघर्ष में मर जाऊँगा। अब मेरा एक ही लक्ष्य है - उस जिनेवा की लड़की को अपनी पत्नी बनाना; और वह मेरी पत्नी बनकर रहेगी - बशर्ते कि वह अपने स्वामी के प्रति उतना ही या आधा सम्मान रखे जितना वह उसके प्रति रखता है। और क्या वह मेरे निर्देशों का पालन करते हुए इतनी आज्ञाकारी, इतनी मुस्कुराती हुई, इतनी प्रसन्न रहेगी यदि वह ऐसा न करती? क्या वह मेरे पास तब भी इतनी शांत, संतुष्ट और सौम्य मुद्रा में बैठी रहेगी जब मैं उसे कुछ लिखवाऊँ या सुधारूँ?" क्योंकि मैंने हमेशा देखा था कि जब मैं किसी कमरे में प्रवेश करता था तो उसका चेहरा चाहे कितना भी उदास या परेशान क्यों न हो, मेरे पास आने, उससे कुछ शब्द बोलने, उसे कुछ निर्देश देने, शायद कुछ डांटने के बाद, वह अचानक खुशी से झूम उठती थी और शांत और तरोताज़ा होकर ऊपर देखती थी। डांट उसे सबसे ज़्यादा भाती थी: जब मैं उसे डांटता था तो वह अपनी कलम की नोक से पेंसिल या पेन को खुरचती रहती थी; थोड़ा बेचैन होकर, थोड़ा मुंह फुलाकर, एक-एक शब्द बोलकर अपना बचाव करते हुए, और जब मैं उससे कलम या पेंसिल छीन लेता, इस डर से कि कहीं वह सब कुछ काट न दे, और जब मैं उसके एक-एक शब्द के बचाव को भी रोक देता, ताकि उसकी दबी हुई उत्तेजना को थोड़ा और बढ़ा सकूँ, तो अंत में वह अपनी आँखें उठाती और मुझे एक ऐसी नज़र से देखती, जो खुशी से भरी और चुनौती से भरी होती, जो सच कहूँ तो मुझे इतना रोमांचित कर देती थी जितना पहले कभी नहीं हुआ था, और मुझे एक तरह से (हालाँकि सौभाग्य से वह इसे नहीं जानती थी), उसका अधीन बना देती थी, भले ही उसका गुलाम न हो। ऐसे छोटे-छोटे दृश्यों के बाद उसका उत्साह कई घंटों तक बना रहता था, और जैसा कि मैंने पहले बताया, इससे उसके स्वास्थ्य को वह पोषण और स्फूर्ति मिलती थी, जिसने उसकी चाची की मृत्यु और उसकी बर्खास्तगी से पहले उसके पूरे शरीर को लगभग पुनर्जीवित कर दिया था।

इन आखिरी वाक्यों को लिखने में मुझे कई मिनट लग गए; लेकिन फ्रांसिस के कमरे से सीढ़ियाँ उतरते समय मैंने इनके सारे भावों पर विचार कर लिया था। जैसे ही मैंने बाहरी दरवाज़ा खोला, मुझे वे बीस फ्रैंक याद आए जो मैंने लौटाए नहीं थे; मैं रुक

गया: उन्हें अपने साथ ले जाना असंभव था; उन्हें उनके असली मालिक को लौटाना मुश्किल था; मैंने अब उसे उसके साधारण से घर में देख लिया था, उसकी गरीबी की गरिमा, व्यवस्था का गर्व, उसके छोटे से घर की व्यवस्था और मितव्ययिता में स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली रूढ़िवादिता की सावधानी देखी थी; मुझे यकीन था कि वह अपने कर्ज चुकाने से बचने नहीं देगी; मुझे पूरा यकीन था कि वह किसी से भी, शायद मुझसे भी, हर्जाने की पेशकश स्वीकार नहीं करेगी: फिर भी ये चार पाँच-फ्रैंक के सिक्के मेरे आत्मसम्मान पर बोझ थे, और मुझे इनसे छुटकारा पाना ही था। एक उपाय - बेशक भद्दा, लेकिन जो सबसे अच्छा मैं सोच सकता था - मेरे दिमाग में आया। मैं तेजी से सीढ़ियों पर चढ़ा, दरवाजा खटखटाया और जल्दबाजी में कमरे में वापस दाखिल हुआ:

"मैडम, मैं अपना एक दस्ताना भूल गया हूँ; मैंने उसे यहीं छोड़ दिया होगा।"

वह तुरंत उसे ढूंढने के लिए उठी; जैसे ही उसने पीठ मोड़ी, मैं - जो अब चूल्हे के पास था - चुपचाप एक छोटा सा फूलदान उठाया, जो चाय के प्यालों की तरह ही पुराने ज़माने के चीनी मिट्टी के सजावटी सामानों के सेट में से एक था - उसके नीचे पैसे सरका दिए, फिर कहा - "ओह, मेरा दस्ताना मिल गया! मैंने इसे कार के फेंडर में गिरा दिया था; शुभ संध्या, महोदया," और मैं दूसरी बार बाहर निकल गया।

हालांकि मेरी अचानक वापसी संक्षिप्त थी, इसने मुझे एक गहरे दर्द को महसूस करने का समय दिया; मैंने देखा कि फ्रांसिस ने अपनी छोटी सी खुशनुमा आग की लाल राख को अंगीठी से पहले ही हटा दिया था: हर चीज़ का हिसाब लगाने, हर छोटी से छोटी बात में बचत करने के लिए मजबूर होकर, उसने मेरे जाते ही उस विलासिता को तुरंत कम कर दिया जो अकेले आनंद लेने के लिए बहुत महंगी थी।

मैंने सोचा, “मुझे खुशी है कि अभी सर्दी नहीं आई है; लेकिन दो महीने बाद नवंबर की हवाएँ और बारिश आ जाएँगी; काश, उससे पहले मुझे इतनी शक्ति और अधिकार मिल जाए कि मैं अपनी इच्छानुसार अंगीठी में कोयले डाल सकूँ!”

फुटपाथ पहले से ही सूख रहा था; एक सुखद और ताज़ी हवा बिजली की चमक से शुद्ध होकर हवा में चल रही थी; मैंने अपने पीछे पश्चिम को महसूस किया, जहाँ ओपल जैसा आकाश फैला हुआ था; नीला रंग लाल रंग से मिला हुआ था: विशाल सूर्य, टायरियन रंगों में शानदार, पहले ही अपना किनारा झुका चुका था; पूर्व की ओर बढ़ते हुए, मेरे सामने बादलों का एक विशाल समूह था, लेकिन साथ ही मेरे सामने एक शाम का इंद्रधनुष भी था; एक परिपूर्ण इंद्रधनुष - ऊँचा, चौड़ा, चमकीला। मैंने देर तक

देखा; मेरी आँखें उस दृश्य को सोख रही थीं, और मुझे लगता है कि मेरे मस्तिष्क ने उसे आत्मसात कर लिया होगा; क्योंकि उस रात, सुखद बुखार में लंबे समय तक जागते रहने के बाद, शांत बिजली को देखते हुए, जो अभी भी पीछे हटते बादलों के बीच खेल रही थी, और तारों पर चाँदी की तरह चमक रही थी, मैं अंततः सो गया; और फिर एक सपने में डूबता हुआ सूरज, बादलों का समूह, विशाल इंद्रधनुष फिर से प्रकट हुए। मुझे लगा कि मैं एक छत पर खड़ा था; मैं एक मुंडेर वाली दीवार पर झुका हुआ था; मेरे नीचे अंतरिक्ष था, ऐसी गहराई जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था, लेकिन लहरों की अंतहीन गड़गड़ाहट सुनकर मुझे लगा कि यह समुद्र है; क्षितिज तक फैला समुद्र; बदलते हरे और गहरे नीले रंग का समुद्रः दूर सब कुछ कोमल था; सब कुछ धुंध से ढका हुआ था। पानी और हवा के बीच की रेखा पर सोने की एक चिंगारी चमकी, ऊपर उठी, पास आई, बड़ी हुई, बदल गई; वह वस्तु आकाश और पृथ्वी के बीच, इंद्रधनुष के चाप के नीचे लटकी हुई थी; धुंधले बादल पीछे फैल रहे थे। वह पंखों पर मंडरा रही थी; मोती जैसी, मुलायम, चमकती हवा उसके चारों ओर वस्त्र की तरह बह रही थी; कार्नेशन रंग से रंगा प्रकाश, चेहरे और अंगों को रंग रहा था; एक बड़ा तारा देवदूत के माथे पर स्थिर चमक के साथ जगमगा रहा था; एक उठी हुई भुजा और हाथ, किरण की तरह चमकते हुए, ऊपर इंद्रधनुष की ओर इशारा कर रहे थे, और मेरे दिल में एक आवाज फुसफुसाई -

"प्रयास पर आशा की किरण चमकती है!"

अध्याय XX.

मुझे योग्यता प्राप्त करने की चाह थी; अब यही मेरा लक्ष्य और संकल्प था; लेकिन मैं

अपने लक्ष्य से बहुत दूर था। अगस्त के साथ ही शैक्षणिक वर्ष समाप्त हो गया, परीक्षाएँ संपन्न हुईं, पुरस्कार वितरित किए गए, स्कूल बंद हो गए, सभी कॉलेजों के द्वार और सभी शैक्षणिक संस्थानों के दरवाजे बंद हो गए, जो अक्टूबर के आरंभ या मध्य तक नहीं खुलने थे। अगस्त का अंतिम दिन निकट था, और मेरी स्थिति क्या थी? क्या पिछली तिमाही की शुरुआत से मैंने एक कदम भी तरक्की की थी? इसके विपरीत, मैं एक कदम पीछे हट गया था। मैडम रॉयटर के संस्थान में अंग्रेजी शिक्षक के पद से इस्तीफा देकर, मैंने स्वेच्छा से अपनी वार्षिक आय से 20 पाउंड कम कर दिए थे; मेरी 60 पाउंड प्रति वर्ष की आय घटकर 40 पाउंड रह गई थी, और वह भी अब बहुत अनिश्चित स्थिति में थी।

मुझे एम. पेलेट का ज़िक्र किए काफी समय हो गया है। चांदनी रात में टहलना, मेरे ख्याल से, इस वृत्तांत में दर्ज आखिरी घटना है जिसमें उस सज्जन का कोई ज़िक्र आता है: दरअसल, उस घटना के बाद से हमारे व्यवहार में बदलाव आ गया था। दरअसल, उन्हें इस बात का पता नहीं था कि शांत समय, साफ चाँद और खुली खिड़की ने उनके स्वार्थी प्रेम और झूठी दोस्ती का राज़ मेरे सामने खोल दिया था, और वे पहले की तरह ही सहज और विनम्र बने रहते; लेकिन मैं साही की तरह सख्त और काँटेदार लाठी की तरह कठोर हो गई थी; मुझे उनकी हंसी पर कभी मुस्कान नहीं आती थी, उनके साथ समय बिताना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं था; उनके बैठक कक्ष में कॉफी पीने के निमंत्रण को मैं हमेशा ठुकरा देती थी, और वह भी बहुत सख्ती और कड़े शब्दों में; उनकी गृहनिदेशिका के बारे में की जाने वाली मज़ाकिया टिप्पणियाँ (जो वे अब भी करते रहते थे) अब उस चिड़चिड़े आनंद से बिल्कुल अलग, गंभीर शांति के साथ सुनी जाती थीं जो पहले उनमें देखने को मिलता था। काफी समय तक पेलेट ने मेरे ठंडे व्यवहार को बड़ी धैर्य से सहन किया; यहाँ तक कि उसने अपना ध्यान भी बढ़ा दिया; लेकिन जब उसने देखा कि मेरी चापलूसी भरी विनम्रता भी मुझे पिघला नहीं पा रही है, तो अंत में उसने भी अपना व्यवहार बदल दिया; वह भी ठंडा पड़ गया; उसके निमंत्रण बंद हो गए; उसका चेहरा संदेह से भर गया और उदास हो गया, और मैंने उसकी भौंहों के उलझे हुए लेकिन गंभीर भाव में, बातों की निरंतर जाँच और तुलना, और उनसे कोई व्याख्यात्मक निष्कर्ष निकालने का बेचैन प्रयास देखा। मुझे लगता है कि जल्द ही वह सफल हो गया, क्योंकि वह दूरदर्शी था; शायद मैडम ज़ोराइड ने भी इस पहेली को सुलझाने में उसकी मदद की हो; खैर, मैंने जल्द ही पाया कि उसके

व्यवहार से संदेह की अनिश्चितता गायब हो गई थी; मित्रता और सौहार्द का दिखावा छोड़कर, उसने एक संयमित, औपचारिक, लेकिन फिर भी अत्यंत विनम्र व्यवहार अपना लिया। यही वह बिंदु था जहाँ तक मैं उसे लाना चाहता था, और अब मैं अपेक्षाकृत सहज महसूस कर रहा था। यह सच है कि मुझे उनके घर में अपनी स्थिति पसंद नहीं थी; लेकिन झूठे वादों और दोहरे व्यवहार की झंझट से मुक्त होकर मैं इसे सहन कर सका, खासकर इसलिए कि निर्देशक के प्रति घृणा या ईर्ष्या की कोई वीर भावना मेरे दार्शनिक मन को विचलित नहीं कर रही थी; मैंने पाया कि उन्होंने मुझे किसी बहुत ही नाजुक जगह पर चोट नहीं पहुंचाई थी, घाव इतनी जल्दी और पूरी तरह से भर गया था कि केवल उस कपटपूर्ण तरीके के प्रति तिरस्कार की भावना रह गई थी जिससे यह घाव दिया गया था, और उस हाथ के प्रति एक स्थायी अविश्वास रह गया था जिसे मैंने अंधेरे में छुरा घोंपने की कोशिश करते हुए महसूस किया था।

यह सिलसिला जुलाई के मध्य तक चलता रहा, फिर थोड़ा बदलाव आया; एक रात पेलेट अपने सामान्य समय से एक घंटा बाद घर लौटा, वह पूरी तरह नशे में धुत था, जो उसके स्वभाव के विपरीत था; क्योंकि यदि उसमें अपने देशवासियों की कुछ सबसे बुरी कमियाँ थीं, तो उनमें से कम से कम एक गुण, यानी संयम, भी था। हालाँकि, उस समय वह इतना नशे में था कि उसने हॉल की घंटी ज़ोर से बजाकर पूरे भवन को जगा दिया (छात्रों को छोड़कर, जिनका छात्रावास कक्षाओं के ऊपर, आवास से अलग एक इमारत में था, इसलिए वे अशांति से सुरक्षित थे), और तुरंत दोपहर का भोजन लाने का आदेश दिया, क्योंकि उसे लगा कि दोपहर हो गई है, जबकि शहर की घंटियाँ अभी-अभी आधी रात को बजी थीं; उसने नौकरों को समय की पाबंदी न रखने के लिए खूब खरी-खोटी सुनाई, और अपनी बूढ़ी माँ को डाँटने के करीब पहुँच गया, जिसने उसे सोने की सलाह दी, और फिर वह "ले मौडिट एंग्लिस, क्रीम्सवोर्ट" के बारे में भयानक रूप से बड़बड़ाने लगा। मैं अभी सोया नहीं था; कुछ जर्मन किताबें जो मुझे मिली थीं, उनकी वजह से मैं देर रात तक जागा रहा; मैंने नीचे का शोर सुना और निर्देशक की आवाज़ को पहचान सका, जो एक अजीब और भयानक तरीके से ऊंची उठ रही थी। अपना दरवाज़ा थोड़ा सा खोलकर मैंने देखा कि वह "क्रीम्सवोर्ट" को नीचे लाने की मांग कर रहा था ताकि वह हॉल की मेज पर अपना गला काट सके और अपनी इज़्ज़त धो सके, जिसे वह गंदा बता रहा था, और उसे नरक के ब्रिटिश खून से धो सके। मैंने सोचा, "वह या तो पागल है या नशे में है, और दोनों ही मामलों में उस

बुढ़िया और नौकरों को एक आदमी की मदद से ज़्यादा फ़ायदा होगा," इसलिए मैं सीधे हॉल में उतर गया। मैंने उसे लड़खड़ाते हुए पाया, उसकी आँखें गुस्से से इधर-उधर घूम रही थीं - वह एक अजीब नज़ारा था, मूर्ख और पागल के बीच का एक अजीब सा नज़ारा।

"आइए, श्रीमान पेलेट," मैंने कहा, "आपको बिस्तर पर जाना चाहिए," और मैंने उनका हाथ पकड़ लिया। ज़ाहिर है, जिस व्यक्ति के रक्त के लिए वे आवेदन कर रहे थे, उसे देखते और छूते ही उनकी उत्तेजना बहुत बढ़ गई: उन्होंने संघर्ष किया और क्रोध से प्रहार किया—पर एक शराबी व्यक्ति एक होश में रहने वाले व्यक्ति का मुकाबला नहीं कर सकता; और, अपनी सामान्य अवस्था में भी, पेलेट का थका हुआ शरीर मेरे स्वस्थ शरीर के सामने टिक नहीं सकता था। मैं उन्हें ऊपर ले गया, और कुछ समय बाद बिस्तर पर। इस दौरान उन्होंने लगातार ऐसी गालियाँ दीं जो टूटी-फूटी होने के बावजूद अर्थपूर्ण थीं; मुझे एक विश्वासघाती देश की कुटिल संतान बताते हुए, उन्होंने उसी क्षण ज़ोराइड रॉयटर को शाप दिया; उन्होंने उसे "बेशर्म और दुष्ट स्त्री" कहा, जिसने एक अनैतिक सनक में आकर खुद को एक सिद्धांतहीन साहसी व्यक्ति पर लुटा दिया था; उसने गुस्से में आकर तिरछे प्रहार से मुझे अंतिम अपशब्द कहा। मैंने उसे बिस्तर से उछलते हुए देखा, जिस पर मैंने उसे सुलाया था; लेकिन, सावधानी बरतते हुए मैंने दरवाजे की चाबी घुमा दी और सुबह तक उसकी सुरक्षित हिरासत के बारे में आश्वस्त होकर अपने कमरे में लौट गया, और अब मैं अभी-अभी देखे गए दृश्य से निश्चिंत होकर निष्कर्ष निकालने के लिए स्वतंत्र था।

अब, ठीक इसी समय, मेरी शीतलता से आहत, मेरे तिरस्कार से मोहित, और मेरे द्वारा किसी और के प्रति रखे जाने के संदेह से उत्तेजित होकर, निदेशालयाध्यक्ष अपने ही बिछाए जाल में फँस गई थी—वह स्वयं उसी जुनून के जाल में फँस गई थी जिसमें वह मुझे फँसाना चाहती थी। उस क्षेत्र की स्थिति से अवगत होकर, मैंने अपने स्वामी की हालत देखकर यह समझा कि उनकी प्रेमिका ने अपने स्नेह के अलगाव को प्रकट कर दिया था—बल्कि, मैं कहूँगा कि झुकाव; स्नेह इस विषय के लिए एक साथ बहुत गर्म और बहुत शुद्ध शब्द है—उन्होंने उन्हें यह दिखा दिया था कि उनके खोखले हृदय का खालीपन, उनकी छवि से रहित, अब उनके दरबारी की छवि से भर गया था। मुझे इस मामले को इस दृष्टिकोण से देखने के लिए मजबूर होना पड़ा, इसमें मुझे कुछ आश्चर्य भी हुआ। पेलेट, अपने पुराने और प्रतिष्ठित स्कूल के साथ, इतना सुविधाजनक

और लाभदायक रिश्ता था—ज़ोराइड इतनी चालाक और स्वार्थी महिला थी—मुझे आश्चर्य होता था कि क्या उसके मन में सांसारिक लाभ के ऊपर कभी व्यक्तिगत पसंद हावी हो सकती थी: फिर भी, पेलेट की बातों से यह स्पष्ट था कि उसने न केवल उसे ठुकरा दिया था, बल्कि मेरे प्रति पक्षपात के भाव भी प्रकट किए थे। नशे में धुत होकर उसने एक बार कहा था, "और वह औरत तुम्हारी जवानी पर मोहित है, तुम नासमझ! और तुम्हारे नेक आचरण की बात करती है, जैसे वह तुम्हारी शापित अंग्रेज़ी औपचारिकता कहती है—और तुम्हारे शुद्ध नैतिक मूल्यों की भी! des moeurs de Caton a-t-elle dit— sotte!" मैंने सोचा, वह एक विचित्र आत्मा होगी, जहाँ धन और पद के लाभों को अनुचित रूप से आंकने की प्रबल स्वाभाविक प्रवृत्ति के बावजूद, एक भाग्यहीन अधीनस्थ के व्यंग्यपूर्ण तिरस्कार ने एक समृद्ध प्रमुख के सबसे चापलूसी भरे प्रयासों से भी कहीं अधिक गहरा प्रभाव डाला था। मैं मन ही मन मुस्कुराया; और आश्चर्य की बात है, यद्यपि इस विजय से मेरा आत्मसम्मान अप्रिय रूप से जागृत नहीं हुआ, फिर भी मेरी उच्च भावनाएँ अप्रभावित रहीं। अगले दिन, जब मैंने निर्देशिका को देखा, और जब उसने गलियारे में मुझसे मिलने का बहाना बनाया, और हेलोट की विनम्रता के समान विनम्र व्यवहार और नज़र से मेरा ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया, तो मैं न तो उससे प्रेम कर सका, न ही उस पर दया कर सका। मेरे स्वास्थ्य के बारे में किसी रोचक प्रश्न का संक्षिप्त और रूखे ढंग से उत्तर देना - एक कठोर प्रणाम के साथ उसे अनदेखा कर देना - बस इतना ही मैं कर सका; उस समय और उससे कुछ समय पहले से ही, उसकी उपस्थिति और व्यवहार का मुझ पर एक अनोखा प्रभाव था: उसने मेरे भीतर की सारी अच्छाई को दबा दिया और सारी बुराई को उजागर कर दिया; कभी-कभी वह मेरी इंद्रियों को कमजोर कर देती थी, लेकिन हमेशा मेरे हृदय को कठोर बना देती थी। मैं अपने ऊपर हुए नुकसान से अवगत था और इस बदलाव के लिए खुद से झगड़ता था। मैंने हमेशा एक अत्याचारी से घृणा की थी; और देखो, एक दासी का, स्वेच्छा से समर्पित होना, मुझे लगभग उसी में बदल रहा था जिससे मुझे घृणा थी! एक आकर्षक और अभी भी युवा उपासिका से इस मधुर सुगंध को प्राप्त करने में एक प्रकार की नीच संतुष्टि थी; और उस सुख के अनुभव में ही एक चिड़चिड़ी अपमान की अनुभूति थी। जब वह एक दासी के कोमल कदमों से मेरे आसपास घूमती थी, तो मैं एक पाशा की तरह बर्बर और कामुक महसूस करता था। मैं कभी-कभी उसकी श्रद्धा को सहन करता था; कभी-कभी मैं उसे

अस्वीकार करता था। मेरी उदासीनता या कठोरता, दोनों ही उस बुराई को बढ़ाने का काम करती थीं जिसे मैं रोकना चाहता था।

“उस पर तिरस्कार कितना अच्छा लगता है!” मैंने एक बार उसे अपनी माँ से कहते हुए सुना था: “जब वह अपने अभिमानी अंदाज़ में मुस्कुराता है तो वह अपोलो जितना ही सुंदर लगता है।”

और उस हंसमुख बूढ़ी औरत ने हंसते हुए कहा कि उसे लगता है उसकी बेटी पर जादू हो गया है, क्योंकि मुझमें एक सुंदर पुरुष के कोई लक्षण नहीं हैं, सिवाय इसके कि मैं सीधा और बेदाग हूं। “Pour moi,” उसने आगे कहा, “il me fait tout l’effet d’un chat-huant, avec ses besicles.”

वाह, कितनी नेक महिला! अगर वह थोड़ी ज्यादा बूढ़ी, थोड़ी मोटी और थोड़ी लाल चेहरे वाली न होती तो मैं जाकर उसे चूम लेता; उसकी बेटी के निराशावादी भ्रमों के विपरीत, उसके समझदारी भरे और सच्चे शब्द बहुत ही सुखद लग रहे थे।

जब पेलेट अपने उन्माद के दौरे के बाद अगली सुबह जागा, तो उसे पिछली रात की कोई घटना याद नहीं थी, और सौभाग्य से उसकी माँ ने उसे यह न बताने का विवेक दिखाया कि मैं उसकी इस दुर्दशा का साक्षी था। उसने अपने दुखों को कम करने के लिए फिर कभी शराब का सहारा नहीं लिया, लेकिन शांत अवस्था में भी उसने जल्द ही दिखा दिया कि ईर्ष्या की आग उसके दिल में घर कर चुकी थी। एक पूर्ण फ्रांसीसी होने के नाते, उसके चरित्र में क्रूरता का राष्ट्रीय गुण स्वाभाविक रूप से मौजूद था; यह सबसे पहले उसके नशे में उग्र क्रोध में प्रकट हुआ, जब मेरे प्रति उसकी घृणा के कुछ प्रदर्शन वास्तव में शैतानी थे, और अब यह उसके चेहरे के क्षणिक संकुचन और उसकी नीली आँखों में दिखाई देने वाली भयंकरता से और भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहा था, जब उसकी नज़रें संयोगवश मेरी आँखों से मिलती थीं। उसने मुझसे बात करना पूरी तरह से बंद कर दिया; अब तो मुझे उसकी बनावटी विनम्रता का भी सामना नहीं करना पड़ा। हमारे आपसी संबंधों की इस स्थिति में, मेरा मन कभी-कभी लगभग अनियंत्रित रूप से उस घर में रहने और ऐसे व्यक्ति की सेवा करने के विरुद्ध विद्रोह करता था; लेकिन परिस्थितियों के बंधन से कौन मुक्त है? उस समय, मैं नहीं थी: मैं हर सुबह उसकी गुलामी से मुक्त होने और अपना सूटकेस बगल में दबाकर बाहर जाने के लिए उत्सुक होकर उठती थी, अगर भिखारी भी होती, तो कम से कम एक स्वतंत्र व्यक्ति तो होती; और शाम को, जब मैं वृद्धाश्रम से लौटती, तो मेरे कानों में एक मधुर आवाज

गूंजती; मेरी आँखों में एक ऐसा चेहरा होता, जो इतना बुद्धिमान, फिर भी इतना विनम्र, इतना विचारशील, फिर भी इतना कोमल होता; मेरे मन में एक ऐसा चरित्र होता, जो एक साथ गर्वित और लचीला, संवेदनशील और बुद्धिमान, गंभीर और उत्साही होता; एक विशेष प्रकार की भावना, जोशीली और विनम्र, परिष्कृत और व्यावहारिक, शुद्ध और शक्तिशाली, जो मेरी स्मृति को आनंदित और परेशान करती है - नए संबंधों की कल्पनाएँ जिन्हें मैं स्थापित करने के लिए तरसता था, नए कर्तव्यों की कल्पनाएँ जिन्हें मैं निभाने के लिए तरसता था, ने मेरे भीतर के घुमक्कड़ और विद्रोही स्वभाव को खत्म कर दिया था, और एक स्पार्टन सद्गुण के प्रकाश में मेरे घृणित भाग्य के प्रति सहनशीलता दिखाई थी।

लेकिन पेलेट का क्रोध शांत हो गया; दो सप्ताह का समय ही उसके उदय, प्रगति और अंत के लिए पर्याप्त था: इस दौरान पड़ोसी घर से उस अप्रिय शिक्षक को बर्खास्त कर दिया गया था, और इसी अंतराल में मैंने अपनी शिष्या का पीछा करने और उसे ढूंढने का संकल्प लिया था, और जब उसका पता मांगने का मेरा आवेदन अस्वीकार कर दिया गया, तो मैंने तुरंत अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इस अंतिम कार्य से मैडम रॉयटर को तुरंत होश आ गया; उनकी दूरदर्शिता, उनका विवेक, जो इतने लंबे समय से एक आकर्षक भ्रम से गुमराह था, उस भ्रम के दूर होते ही सही राह पर लौट आया। सही राह से मेरा तात्पर्य सिद्धांतों के कठिन और पथ से नहीं है - उस पथ पर वह कभी नहीं चलीं; बल्कि सामान्य ज्ञान के सरल मार्ग से है, जिससे वह हाल ही में बहुत दूर भटक गई थीं। वहां पहुंचकर उन्होंने सावधानीपूर्वक अपने पुराने प्रेमी, एम. पेलेट को खोजा, और जब उन्हें वह मिल गया, तो उन्होंने लगन से उसका पीछा किया। जल्द ही उन्होंने उसे पकड़ लिया। मुझे नहीं पता कि उसने उसे शांत करने और उसकी आँखों में आँसू लाने के लिए कौन सी तरकीबें अपनाईं, लेकिन वह उसके क्रोध को शांत करने और उसकी समझ को धोखा देने में सफल रही, जैसा कि उसके हावभाव और व्यवहार में आए बदलाव से जल्द ही साबित हो गया; उसने उसे यह विश्वास दिला दिया होगा कि मैं न तो उसका प्रतिद्वंद्वी था और न ही कभी रहा था, क्योंकि मेरे प्रति दो सप्ताह का उसका क्रोध अत्यंत दयालुता और विनम्रता के साथ समाप्त हुआ, जिसमें आत्मसंतुष्टि का एक अंश भी मिला हुआ था, जो चिढ़ाने से कहीं अधिक हास्यास्पद था। पेलेट का कुंवारा जीवन नैतिक संयम की अवहेलना करते हुए उचित फ्रांसीसी शैली में बीता था, और मुझे लगा कि उसका वैवाहिक जीवन भी बहुत

फ्रांसीसी होगा। वह अक्सर मुझसे डींगें मारता था कि वह अपने कुछ परिचित पतियों के लिए कितना आतंक था; मुझे लगा कि अब उसे उसी के रंग में रंगना मुश्किल नहीं होगा।

संकट गहराता चला गया। छुट्टियाँ शुरू होते ही पेलेट के पूरे घर में किसी महत्वपूर्ण आयोजन की तैयारियों की गूंज सुनाई देने लगी: चित्रकार, पॉलिश करने वाले और गद्दी लगाने वाले तुरंत काम पर लग गए, और "मैडम का कमरा" या "मैडम का कमरा" की चर्चा होने लगी। मुझे यह संभव नहीं लगा कि हमारे घर में इस उपाधि से सुशोभित वृद्धा ने अपने बेटे में इतनी आत्मीयता और स्नेह की भावना जगाई होगी कि उसने अपने लिए विशेष कमरे तैयार करवाए हों। इसलिए मैंने, रसोइए, दोनों नौकरानियों और रसोई के सहायक के साथ मिलकर, यह निष्कर्ष निकाला कि इन सुंदर कमरों की किरायेदार एक नई और युवा मैडम बनने वाली हैं।

फिलहाल आगामी घटना की आधिकारिक घोषणा कर दी गई। एक सप्ताह के भीतर निदेशक श्री फ्रांकोइस पेलेट और निदेशक मैडम ज़ोराइड रॉयटर विवाह बंधन में बंधने वाले थे। श्रीमान ने स्वयं आकर मुझे यह सूचना दी; उन्होंने अपनी बात समाप्त करते हुए विनम्रतापूर्वक इच्छा व्यक्त की कि मैं पहले की तरह ही उनका सबसे योग्य सहायक और सबसे विश्वसनीय मित्र बना रहूँ; और मेरे वेतन में प्रति वर्ष दो सौ फ्रैंक की अतिरिक्त वृद्धि का प्रस्ताव रखा। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया, उस समय कोई निर्णायक उत्तर नहीं दिया, और उनके जाने के बाद, मैंने अपनी कमीज़ उतार दी, कोट पहन लिया और पोर्ट डे फ्लैंड्रे के बाहर लंबी सैर पर निकल पड़ी, ताकि, जैसा कि मैंने सोचा था, मेरा मन शांत हो जाए, मेरी नसें स्थिर हो जाएँ और मेरे बिखरे हुए विचार व्यवस्थित हो जाएँ। वास्तव में, मुझे वस्तुतः मेरी बर्खास्तगी मिल चुकी थी। मैं इस बात को छिपा नहीं सकी, और न ही छिपाना चाहती थी कि अब मुझे पूरा यकीन हो गया था कि मैडम ज़ोराइड रॉयटर... रॉयटर का मैडम पेलेट बनना तय था; मेरे लिए उस घर में आश्रित बनकर रहना ठीक नहीं था जो जल्द ही उनका होने वाला था। मेरे प्रति उनका वर्तमान व्यवहार न तो गरिमाहीन था और न ही शालीनता से भरा; लेकिन मैं जानती थी कि उनकी पुरानी भावनाएँ अपरिवर्तित थीं। शिष्टाचार अब दबा हुआ था, और नीति उसे छुपाए हुए थी, लेकिन अवसर इन दोनों के लिए बहुत प्रबल होगा - प्रलोभन इन दोनों बंधनों को तोड़ देगा।

मैं कोई पोप नहीं था—मैं अचूकता का दावा नहीं कर सकता था: संक्षेप में, अगर

मैं रुका रहता, तो संभावना यही थी कि तीन महीने के भीतर, भोले-भाले पेलेट के घर में एक व्यावहारिक आधुनिक फ्रांसीसी उपन्यास रचा जा रहा होता। अब, आधुनिक फ्रांसीसी उपन्यास न तो व्यावहारिक रूप से और न ही सैद्धांतिक रूप से मेरी रुचि के हैं। जीवन का मेरा अनुभव अभी सीमित ही था, फिर भी मुझे एक बार दिलचस्प और रोमांटिक घरेलू विश्वासघात के परिणामों का एक उदाहरण करीब से देखने का अवसर मिला था। इस उदाहरण में कल्पना का कोई सुनहरा आवरण नहीं था, मैंने इसे नग्न और वास्तविक रूप में देखा, और यह बहुत घृणित था। मैंने एक ऐसे मन को देखा जो नीच छल-कपट और कपटपूर्ण धोखे की आदत से भ्रष्ट हो चुका था, और एक ऐसे शरीर को देखा जो दुर्गुणों से दूषित आत्मा के संक्रामक प्रभाव से दूषित हो चुका था। इस दृश्य को लंबे समय तक देखने से मुझे बहुत कष्ट हुआ था; उन कष्टों का मुझे अब कोई पछतावा नहीं था, क्योंकि उनकी साधारण सी याद ही प्रलोभन के लिए एक बहुत ही कारगर औषधि का काम करती थी। उन्होंने मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास बिठा दिया था कि गैरकानूनी आनंद, जो दूसरों के अधिकारों का हनन करता है, भ्रामक और विषैला आनंद है - इसकी खोखलापन उस समय निराशा देता है, इसका जहर बाद में क्रूरतापूर्वक यातना देता है, और इसके प्रभाव हमेशा के लिए भ्रष्ट कर देते हैं।

इन सब बातों से यही निष्कर्ष निकला कि मुझे पेलेट का घर तुरंत छोड़ देना चाहिए; “पर,” प्रूडेंस ने कहा, “तुम्हें नहीं पता कि कहाँ जाना है, कैसे जीना है;” और तभी सच्चे प्रेम का सपना मेरे मन में आया: फ्रांसिस हेनरी मानो मेरे बगल में खड़ी थी; उसकी पतली कमर मुझे अपनी बांह थामने के लिए बुला रही थी; उसका हाथ मेरे हाथ को रिझाने के लिए तरस रहा था; मुझे लगा मानो वह मेरे हाथ में समा जाने के लिए ही बना है; मैं उस पर अपना अधिकार नहीं छोड़ सकता था, न ही मैं अपनी आँखें उसकी आँखों से हमेशा के लिए हटा सकता था, जहाँ मैंने इतनी खुशी देखी, दिल से दिल का ऐसा जुड़ाव देखा; जिसके भावों पर मेरा इतना प्रभाव था; जहाँ मैं आनंद जगा सकता था, विस्मय पैदा कर सकता था, गहरी खुशी पैदा कर सकता था, उमंग भरी भावनाएँ जगा सकता था, और कभी-कभी सुखद भय भी पैदा कर सकता था। इच्छा करने और पाने की मेरी आशाएँ, योग्यता हासिल करने और ऊपर उठने के मेरे संकल्प, मेरे विरुद्ध खड़े हो गए; और मैं यहाँ पूर्ण दरिद्रता की खाई में गिरने ही वाला था; “और यह सब,” एक अंतर्मन की आवाज़ ने सुझाव दिया, “क्योंकि तुम एक ऐसी बुराई से डरते हो जो शायद कभी हो ही न!” “ऐसा होगा; तुम जानते हो कि ऐसा

होगा,” उस हठी मार्गदर्शक, अंतरात्मा ने उत्तर दिया। “वही करो जो तुम्हें सही लगे; मेरी आज्ञा मानो, और अभाव के दलदल में भी मैं तुम्हारे लिए दृढ़ आधार तैयार करूँगा।” और फिर, जैसे ही मैं सड़क पर तेज़ी से चलने लगा, मेरे मन में एक अजीब, अंतर्मन से महसूस हुआ विचार आया कि कोई महान सत्ता, अदृश्य, लेकिन सर्वव्यापी, अपनी कृपा से केवल मेरा कल्याण चाहती है, और अब मेरे हृदय में अच्छाई और बुराई के संघर्ष को देख रही है, और यह देखने के लिए प्रतीक्षा कर रही है कि क्या मैं अपनी अंतरात्मा की फुसफुसाहट में सुनी गई उसकी आवाज़ का पालन करूँ, या उन कुतर्कों पर ध्यान दूँ जिनके द्वारा उसका और मेरा शत्रु—दुष्ट आत्मा—मुझे गुमराह करने की कोशिश कर रहा है। दैवीय सुझाव द्वारा इंगित मार्ग ऊबड़-खाबड़ और कठिन था; काई से ढका और ढलान वाला वह हरा-भरा मार्ग जिस पर प्रलोभन ने फूल बिखेरे थे; लेकिन मुझे लगा कि प्रेम के देवता, समस्त अस्तित्व के मित्र, प्रसन्न होकर मुस्कुराएँगे यदि मैं कमर कस लूँ और उस कठिन चढ़ाई को स्वीकार कर लूँ; दूसरी ओर, मखमली ढलान की ओर प्रत्येक झुकाव उस मनुष्य-द्वेषी, ईश्वर-विरोधी राक्षस के माथे पर विजय की चमक बिखेरता प्रतीत होता था। मैं तेज़ी से मुड़ा; अपने कदमों के निशान पर तेज़ी से वापस लौटा; आधे घंटे में मैं फिर से एम. पेलेट के पास था: मैंने उन्हें उनके अध्ययन कक्ष में ढूँढा; संक्षिप्त बातचीत, संक्षिप्त स्पष्टीकरण पर्याप्त था; मेरे हावभाव से पता चलता था कि मैं दृढ़ निश्चयी था; शायद, वे मन ही मन मेरे निर्णय से सहमत थे। बीस मिनट की बातचीत के बाद, मैं अपने कमरे में लौट आया, स्वयं को जीविका के साधनों से वंचित कर चुका था, स्वयं को अपना वर्तमान घर छोड़ने की सजा दे चुका था, और मुझे एक सप्ताह के भीतर दूसरा घर ढूंढना था।

अध्याय XXI.

जैसे ही मैंने दरवाजा बंद किया, मेज पर दो पत्र रखे हुए देखे; मुझे लगा कि ये मेरे कुछ विद्यार्थियों के मित्रों के निमंत्रण पत्र होंगे; मुझे कभी-कभार ऐसे निमंत्रण मिलते रहते थे, और मेरे जैसे कोई मित्र न होने के कारण, इससे अधिक रुचिकर पत्राचार का तो सवाल ही नहीं उठता था; ब्रुसेल्स आने के बाद से डाकिये का आना मेरे लिए कभी कोई खास बात नहीं रही थी। मैंने लापरवाही से उन दस्तावेजों पर हाथ रखा, और ठंडेपन से धीरे-धीरे उन्हें देखते हुए, सील तोड़ने की तैयारी की; मेरी नज़र और मेरा हाथ दोनों ही ठहर गए; मैंने जो देखा, उससे मैं इतना रोमांचित हो गया, मानो मुझे एक खाली पन्ने की जगह कोई जीवंत चित्र मिल गया हो: एक लिफाफे पर अंग्रेजी डाक टिकट था; दूसरे पर एक महिला के स्पष्ट, सुंदर हस्ताक्षर थे; मैंने पहले आखिरी वाला खोला: —

"महोदय,

“तुम्हारे मेरे घर आने के ठीक अगली सुबह ही मुझे पता चल गया कि तुमने क्या किया था; तुम यकीन मानो, मैं रोज़ाना बर्तनों की धूल झाड़ती हूँ; और, क्योंकि एक हफ्ते से मेरे कमरे में तुम्हारे सिवा कोई नहीं आया था, और ब्रुसेल्स में परियों का पैसा नहीं चलता, इसलिए मुझे इस बात में कोई शक नहीं था कि चिमनी पर बीस फ्रैंक किसने छोड़े थे। जब मैं मेज के नीचे तुम्हारा दस्ताना ढूंढने के लिए झुकी थी, तो मुझे लगा कि तुमने फूलदान को हिलाया था, और मुझे हैरानी हुई कि तुमने कैसे सोचा कि वह इतने छोटे कप में चला गया होगा। अब, महोदय, यह पैसा मेरा नहीं है, और मैं इसे अपने पास नहीं रखूँगी; मैं इसे इस नोट में नहीं भेजूँगी क्योंकि यह खो सकता है —इसके अलावा, यह भारी भी है; लेकिन मैं तुमसे मिलते ही इसे तुम्हें लौटा दूँगी, और इसे लेने में तुम्हें कोई आनाकानी नहीं करनी चाहिए; क्योंकि, पहली बात तो यह है कि, मुझे यकीन है, महोदय, तुम समझ सकते हो कि हर कोई अपना कर्ज चुकाना चाहता है; किसी का कुछ भी उधार न होना संतोषजनक होता है; और दूसरी बात, अब मैं ईमानदारी से काम कर सकती हूँ, क्योंकि मेरे पास नौकरी है।” दरअसल, यही आखिरी बात है जिसके कारण मैं आपको पत्र लिख रहा हूँ, क्योंकि अच्छी खबर देना सुखद होता है; और इन दिनों मेरे पास केवल मेरे स्वामी ही हैं जिनसे मैं कुछ भी कह सकता हूँ।

“एक सप्ताह पहले, महोदय, मुझे श्रीमती व्हार्टन नामक एक अंग्रेज महिला ने

बुलवाया था; उनकी सबसे बड़ी बेटी की शादी होने वाली थी, और उनके किसी धनी रिश्तेदार ने उन्हें कीमती पुराने लेस से बना एक घूंघट और पोशाक उपहार में दी थी, जो उनके अनुसार गहनों के समान कीमती थी, लेकिन समय के साथ थोड़ी क्षतिग्रस्त हो गई थी। मुझे उन्हें ठीक करने का काम सौंपा गया था। मुझे यह काम उनके घर पर ही करना था; इसके अलावा, उन्होंने मुझे कुछ कढ़ाई का काम भी दिया, और सब कुछ पूरा करने में लगभग एक सप्ताह लग गया। जब मैं काम कर रही थी, श्रीमती व्हार्टन और मिसेज़ व्हार्टन अक्सर कमरे में आकर मेरे साथ बैठती थीं; वे मुझसे अंग्रेज़ी में बात करती थीं; पूछती थीं कि मैंने इतनी अच्छी अंग्रेज़ी बोलना कैसे सीखा; फिर वे पूछती थीं कि मुझे और क्या पता है - मैंने कौन सी किताबें पढ़ी हैं; जल्द ही वे मुझ पर एक तरह का आश्चर्य करने लगीं, निस्संदेह मुझे एक विद्वान समझकर। एक दोपहर, श्रीमती व्हार्टन मेरी फ्रेंच भाषा की सटीकता की जाँच करने के लिए एक पेरिस की महिला को लेकर आईं; इसका परिणाम यह हुआ कि, संभवतः काफी हद तक... विवाह को लेकर माता-पिता दोनों का सौहार्दपूर्ण रवैया, जिसने उन्हें परोपकारी कार्यों के लिए प्रेरित किया, और शायद इसलिए भी कि वे स्वभाव से ही दयालु हैं, उन्होंने यह निर्णय लिया कि मेरी यह इच्छा कि मैं फीते सिलने से बढ़कर कुछ और करूँ, बिलकुल जायज़ थी; और उसी दिन वे मुझे अपनी गाड़ी में बिठाकर श्रीमती डी. के घर ले गईं, जो ब्रुसेल्स के पहले अंग्रेजी स्कूल की निध्यापिका हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें भूगोल, इतिहास, व्याकरण और रचना की फ्रेंच भाषा में पढ़ाने के लिए एक फ्रांसीसी शिक्षिका की आवश्यकता थी। श्रीमती व्हार्टन ने मेरी बहुत प्रशंसा की; और चूंकि उनकी दो छोटी बेटियाँ उसी स्कूल में पढ़ती हैं, इसलिए उनके सहयोग से मुझे वह स्थान मिल गया। यह तय हुआ कि मुझे प्रतिदिन छह घंटे उपस्थित रहना होगा (क्योंकि सौभाग्य से, मुझे उसी स्कूल में रहने की आवश्यकता नहीं थी; मुझे अपना कमरा छोड़ने में दुख होता), और इसके लिए श्रीमती डी. मुझे प्रति वर्ष बारह सौ फ्रैंक देंगी।

इसलिए, महोदय, आप देख सकते हैं कि मैं अब धनी हूँ; लगभग उतनी धनी जितनी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। मैं इसके लिए आभारी हूँ, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि बारीक लेस का काम करते-करते मेरी दृष्टि कमजोर होने लगी थी; और देर रात तक जागते रहने से भी मुझे पढ़ने या अध्ययन करने का समय नहीं मिल पाता था, जिससे मैं बहुत थक गई थी। मुझे डर लगने लगा था कि मैं बीमार पड़

जाऊँगी और अपना खर्च नहीं उठा पाऊँगी; यह डर अब काफी हद तक दूर हो गया है; और सचमुच, महोदय, मैं इस राहत के लिए ईश्वर की बहुत आभारी हूँ; और मुझे लगभग यह आवश्यक लगता है कि मैं अपनी खुशी किसी ऐसे दयालु व्यक्ति को बताऊँ जो दूसरों को खुश देखकर प्रसन्न होता है। इसलिए मैं आपको पत्र लिखने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सकी; मैंने खुद से तर्क किया कि मुझे लिखना बहुत अच्छा लगता है, और यह बिल्कुल भी कष्टदायक नहीं होगा, हालाँकि महोदय, इसे पढ़ना शायद थकाऊ हो। मेरी घुमावदार भाषा और अभिव्यक्ति की कमियों पर ज्यादा नाराज़ न हों, और विश्वास कीजिए,

"आपका संलग्न छात्र,

"एफ. ई. हेनरी।"

इस पत्र को पढ़ने के बाद, मैंने कुछ क्षणों के लिए इसकी सामग्री पर विचार किया—चाहे सुखद भावनाओं के साथ या अन्यथा, इसका उल्लेख मैं आगे करूँगा—और फिर दूसरा पत्र उठाया। यह एक ऐसे व्यक्ति की लिखावट में था जिसे मैं नहीं जानता था—छोटा और काफी साफ-सुथरा; न तो पुरुष का और न ही पूरी तरह से स्त्री का; मुहर पर एक कुलचिह्न बना हुआ था, जिसके बारे में मैं केवल इतना ही समझ पाया कि यह सीकोम्ब परिवार का नहीं था, इसलिए यह पत्र मेरे लगभग भूले हुए, और निश्चित रूप से पूरी तरह से भूल चुके कुलीन रिश्तेदारों में से किसी का भी नहीं हो सकता था। तो फिर यह किसका था? मैंने लिफाफा खोला; अंदर मुड़ा हुआ नोट इस प्रकार था:

मुझे इसमें कोई शक नहीं कि तुम उस चिकने-चुपड़े फ़्लैंडर्स में खूब मजे कर रहे हो; शायद वहाँ की उपजाऊ ज़मीन की शान में जी रहे हो; काले बालों वाले, सांवली चमड़ी वाले, लंबी नाक वाले इस्राएली की तरह मिस्र के मांस के बर्तनों के पास बैठे हो; या लेवी के किसी बदमाश बेटे की तरह पवित्र स्थान के पीतल के कड़ाहे के पास, और कभी-कभी पवित्र कांटा डालकर, उस शोरबे से सबसे मोटे कंधों और सबसे मांसल छाती को निकाल रहे हो। मुझे यह पता है, क्योंकि तुम इंग्लैंड में किसी को भी चिट्ठी नहीं लिखते। धिक्कार नहीं, तुम तो! मैंने अपनी सिफारिश के दम पर तुम्हें वह जगह दिलवाई जहाँ तुम आज आराम से रह रहे हो, फिर भी तुमने बदले में एक शब्द भी कृतज्ञता या आभार नहीं जताया; लेकिन मैं तुमसे मिलने आ रहा हूँ, और तुम अपने मंदबुद्धि अभिजात्य दिमाग से यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि मैं तुम्हें किस

तरह की करारी फटकार लगाने वाला हूँ। मेरा कालीन-बैग, जो मेरे पहुंचते ही आपको भेंट किया जाएगा।

“इस बीच मुझे तुम्हारे सारे मामलों की जानकारी है, और ब्राउन के पिछले पत्र से मुझे पता चला है कि तुम एक छोटी, पतली-दुबली बेल्जियन स्कूल टीचर से फ़ायदेमंद शादी करने वाले हो – मैडम ज़ेनोबी या कुछ ऐसा ही नाम होगा। जब मैं आऊँगी तो उसे ज़रूर देखूँगी! और तुम इस बात पर भरोसा रखो: अगर वह मुझे पसंद आई, या अगर मुझे आर्थिक दृष्टि से फ़ायदेमंद लगा, तो मैं तुम्हारा इनाम छीन लूँगी और तुम्हारे दाँतों की परवाह किए बिना उसे विजयी होकर ले जाऊँगी। लेकिन मुझे मोटी औरतें भी पसंद नहीं हैं, और ब्राउन कहता है कि वह छोटी और मोटी है – तुम्हारे जैसे दुबले-पतले, भूखे-प्यासे दिखने वाले आदमी के लिए ज़्यादा उपयुक्त। “सावधान रहना, क्योंकि तुम्हें नहीं पता कि कब तुम्हारा — — (मैं अपशब्द नहीं कहना चाहती, इसलिए खाली जगह छोड़ रही हूँ) — आएगा।”

"भवदीय,

“हंसडेन यॉर्क हंसडेन।”

“हम्फ!” मैंने कहा; और पत्र नीचे रखने से पहले, मैंने एक बार फिर उस छोटी, साफ-सुथरी लिखावट पर नज़र डाली, जो किसी व्यापारी की लिखावट जैसी बिल्कुल नहीं थी, बल्कि हन्सडेन के अलावा किसी और की लिखावट जैसी भी नहीं थी। लोग हस्तलेख और व्यक्तित्व के बीच समानता की बात करते हैं: यहाँ क्या समानता थी? मुझे लेखक का विशिष्ट चेहरा और कुछ ऐसे लक्षण याद आए, जिनके बारे में मुझे संदेह था, निश्चित रूप से नहीं, कि वे उसके स्वभाव से संबंधित थे, और मैंने उत्तर दिया, “बहुत अधिक।”

तो, हन्सडेन ब्रुसेल्स आ रहा था, और कब आएगा यह मुझे नहीं पता था; वह इस उम्मीद के साथ आ रहा था कि वह मुझे समृद्धि के शिखर पर पाएगा, मेरी शादी होने वाली होगी, मैं एक गर्मजोशी भरे आशियाने में कदम रखूंगी, और एक सुखी, अच्छी तरह से पोषित साथी के बगल में आराम से लेट जाऊंगी।

“काश उसे अपने बनाए चित्र की सच्चाई पर खुशी होती,” मैंने सोचा। “जब उसे गुलाबों की कुटिया में चहचहाते और गुटरगू करते गोल-मटोल कबूतरों के जोड़े की जगह गरीबी की वीरान खाई पर अकेला, बिना साथी और आश्रय के खड़ा एक दुबला-पतला जलकौवा दिखेगा, तो वह क्या कहेगा? धिक्कार है उसे! आने दो, और

अफवाह और हकीकत के इस अंतर पर हंसने दो। अगर वह खुद शैतान होता, सिर्फ उसके जैसा दिखने के बजाय, तो भी मैं उसके रास्ते से हटने या उसके व्यंग्य को टालने के लिए मुस्कुराने या खुशमिजाज शब्द बोलने की जहमत नहीं उठाता।"

फिर मैंने उस दूसरे पत्र पर ध्यान दिया: उसने मेरे दिल को छू लिया, जिसकी आवाज़ को मैं अपने कानों में उंगलियां डालकर भी दबा नहीं सका, क्योंकि वह मेरे भीतर गूंज रही थी; और यद्यपि उसकी ध्वनि मधुर संगीत जैसी लग सकती थी, उसकी लय एक कराह थी।

फ्रांसिस को अभाव के बोझ से मुक्ति मिली, अत्यधिक परिश्रम का अभिशाप उससे दूर हो गया, यह देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई; समृद्धि में उसका पहला विचार मुझसे अपनी खुशी बाँटकर उसे और बढ़ाना था, यह देखकर मेरे हृदय की इच्छा पूरी हुई और तृप्त हुई। उसके पत्र के दो परिणाम सुखद थे, अमृत के दो घूंटों के समान मीठे; परन्तु तीसरी बार जब मैंने उस प्याले को चखा, तो मेरे होंठ सिरके और पित्त से छिल गए।

दो ऐसे व्यक्ति जिनकी इच्छाएँ संयमित हैं, ब्रसेल्स में उतनी ही आय में आराम से रह सकते हैं, जितनी आय से लंदन में एक व्यक्ति का जीवन यापन मुश्किल से ही सम्मानजनक हो पाएगा। ऐसा इसलिए नहीं है कि लंदन में जीवन की आवश्यक वस्तुएँ बहुत महँगी हैं या कर बहुत अधिक हैं, बल्कि इसलिए कि अंग्रेज मूर्खता में पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों से आगे हैं, और रीति-रिवाजों, मतों और दिखावे की लालसा के इतने गुलाम हैं जितने कि इटालियन पुरोहितवाद के, फ्रांसीसी आडंबर के, रूसी अपने ज़ार के या जर्मन शराब के। मैंने एक साधारण बेल्जियम परिवार की सादगी में ऐसी समझदारी देखी है, जो सौ आलीशान अंग्रेजी हवेलियों की भव्यता, फिजूलखर्ची, विलासिता और दिखावटी परिष्कार को भी शर्मिंदा कर सकती है। बेल्जियम में, यदि आप पैसा कमा सकते हैं, तो आप उसे बचा भी सकते हैं; इंग्लैंड में यह लगभग असंभव है; वहाँ दिखावा एक महीने में उतना खर्च कर देता है जितना परिश्रम से एक साल में कमाया जाता है। उस अत्यंत समृद्ध और कंगाल देश के सभी वर्गों पर फैशन के प्रति उनकी चाटुकारिता के लिए और भी शर्म आती है; मैं इस विषय पर एक-दो अध्याय लिख सकता था, लेकिन फिलहाल मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। अगर मेरी सालाना आय 60 पाउंड होती, तो अब जब फ्रांसिस के पास 50 पाउंड हैं, तो मैं आज शाम ही सीधे उसके पास जाकर वो शब्द कह देता जो दबे हुए मेरे दिल को बेचैन कर

रहे थे; हमारी संयुक्त आय, जैसा कि हम प्रबंधित करते, हमारे आपसी भरण-पोषण के लिए पर्याप्त होती; क्योंकि हम ऐसे देश में रहते थे जहाँ मितव्ययिता को कंजूसी के समान नहीं माना जाता था, जहाँ पहनावे, भोजन और फर्नीचर में मितव्ययिता को इन विभिन्न मामलों में अशिष्टता के समानार्थक नहीं माना जाता था। लेकिन बेघर, संसाधनों से रहित और जान-पहचान से वंचित उस द्वारपाल को इस बारे में नहीं सोचना चाहिए; प्रेम जैसी भावना, विवाह जैसा शब्द उसके दिल और होठों पर बेमानी थे। अब पहली बार मैंने सचमुच महसूस किया कि गरीब होना क्या होता है; अब मेरे द्वारा जीवनयापन के साधनों को त्यागने का जो बलिदान मैंने किया था, उसका एक नया रूप सामने आया; एक सही, न्यायसंगत, सम्मानजनक कार्य के बजाय, वह एक साथ हल्का और कट्टरपंथी कृत्य प्रतीत हुआ; मैं अपने कमरे में कई चक्कर लगाता रहा, अत्यंत तीव्र पश्चाताप के प्रभाव में; मैं दीवार से खिड़की तक पंद्रह मिनट चला; और खिड़की पर, आत्म-निंदा मेरे सामने आ गई; दीवार पर, आत्म-घृणा: अचानक अंतरात्मा ने वाणी मारी:

"शांत हो जाओ, मूर्ख सताने वालों!" वह चिल्लाई; "उस आदमी ने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है; तुम उसे इस तरह उन बातों से परेशान मत करो जो हो सकती थीं; उसने एक अस्थायी और क्षणिक भलाई को त्याग दिया ताकि वह एक स्थायी और निश्चित बुराई से बच सके जो उसने सही किया। अब उसे सोचने दो, और जब तुम्हारी अंधा कर देने वाली धूल और कान बहरा कर देने वाला शोर शांत होगा, तो उसे एक रास्ता मिल जाएगा।"

मैं बैठ गया; मैंने अपने माथे को दोनों हाथों पर टिका लिया; मैं एक-दो घंटे सोचता रहा; व्यर्थ। मैं एक भूमिगत तहखाने में बंद व्यक्ति की तरह था, जो घोर अंधकार को निहार रहा हो; चारों ओर गज भर मोटी पत्थर की दीवारों और ऊपर इमारतों के ढेर से घिरे अंधकार को, और ग्रेनाइट और ग्रेनाइट की तरह मजबूत सीमेंट से प्रकाश के प्रवेश की उम्मीद कर रहा हो। लेकिन सबसे अच्छी तरह से बनी चिनाई में भी दरारें होती हैं, या हो सकती हैं; मेरी गुफा जैसी कोठरी में एक दरार थी; क्योंकि अंततः, मैंने एक किरण देखी, या देखी प्रतीत हुई - फीकी, ठंडी और संदिग्ध, लेकिन फिर भी एक किरण, क्योंकि इसने वह संकरा रास्ता दिखाया जिसका वादा अंतरात्मा ने किया था। दो-तीन घंटे मस्तिष्क और स्मृति में यातनापूर्ण खोज के बाद, मैंने परिस्थितियों के कुछ अवशेषों को उजागर किया, और एक आशा की कि उन्हें एक साथ जोड़कर एक उपाय

तैयार किया जा सकता है, और एक समाधान खोजा जा सकता है। परिस्थितियाँ संक्षेप में इस प्रकार थीं:

लगभग तीन महीने पहले, एम. पेलेट ने अपने उत्सव के अवसर पर लड़कों को एक दावत दी थी। यह दावत ब्रुसेल्स के बाहरी इलाके में स्थित एक प्रसिद्ध सार्वजनिक स्थल पर मौज-मस्ती के लिए थी, जिसका नाम मुझे इस समय याद नहीं है, लेकिन उसके पास कई छोटी-छोटी झीलें थीं जिन्हें एटैंग कहा जाता था; और उनमें से एक एटैंग बाकी सभी से बड़ी थी, जहाँ छुट्टियों में लोग छोटी नावों में बैठकर सैर करके आनंद लेते थे। लड़कों ने खूब सारे गौफ्रे खाए और लूवेन बियर की कई बोतलें पी लीं। ऐसे मौज-मस्ती के लिए बने बगीचे की छाँव में बैठकर उन्होंने निदेशक से एटैंग में नाव चलाने की अनुमति मांगी। उनमें से लगभग छह बड़े लड़कों को अनुमति मिल गई और मुझे उनके साथ निगरानीकर्ता के रूप में भेजा गया। उन छह लड़कों में से एक जीन बैपटिस्ट वैंडेनहुटेन भी था, जो एक बेहद तगड़ा नौजवान फ्लेमंड था, कद में छोटा, लेकिन सोलह साल की कम उम्र में भी, उसके व्यक्तित्व में एक ऐसा विस्तार और गहराई थी जो वास्तव में राष्ट्रीय थी। संयोगवश जीन नाव में कदम रखने वाला पहला लड़का था; वह लड़खड़ाया, एक तरफ लुढ़क गया, उसके भार से नाव हिल गई और पलट गई। वैनडेनहुटेन सीसे की तरह डूब गई, फिर उठी, फिर डूब गई। मैंने पलक झपकते ही अपना कोट और जैकेट उतार दिया; मैं ईटन में पला-बढ़ा था और वहाँ दस साल तक नाव चलाना, नहाना और तैरना सीखा था, यह सब यूँ ही नहीं हुआ था; मेरे लिए बचाव के लिए कूदना एक स्वाभाविक और आसान काम था। लड़के और नाविक चिल्लाए; उन्हें लगा कि डूबने से एक की जगह दो मौतें होंगी; लेकिन जैसे ही जीन तीसरी बार उठा, मैंने उसका एक पैर और कॉलर पकड़ लिया, और तीन मिनट के भीतर हम दोनों सुरक्षित किनारे पर पहुँच गए। सच कहूँ तो, इस काम में मेरा योगदान बहुत कम था, क्योंकि मैंने कोई जोखिम नहीं उठाया था, और बाद में भीगने से मुझे सर्दी भी नहीं लगी; लेकिन जब श्रीमान और श्रीमती वंडेनहुटेन, जिन पर जीन बैपटिस्ट की एकमात्र आशा टिकी थी, को इस कारनामे के बारे में पता चला, तो उन्हें लगा कि मैंने ऐसी बहादुरी और समर्पण दिखाया है जिसका कोई भी धन्यवाद पर्याप्त नहीं है। विशेष रूप से श्रीमती को यकीन था कि "मैं उनके प्यारे बेटे से बहुत प्यार करती थी, वरना मैं उसकी जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में नहीं डालती।" श्रीमान, जो दिखने में ईमानदार और शांत स्वभाव के थे, बहुत कम बोले, लेकिन उन्होंने मुझे तब

तक कमरे से बाहर नहीं जाने दिया, जब तक मैंने उनसे यह वादा नहीं कर दिया कि अगर मुझे कभी मदद की ज़रूरत पड़ी, तो मैं उनसे संपर्क करके उन्हें उस एहसान को निभाने का मौका दूंगी, जिसके तहत उन्होंने कहा था कि मैंने उन पर एहसान किया है। ये शब्द मेरे लिए आशा की किरण थे; यहीं मुझे अपना एकमात्र सहारा मिला; और सच कहूँ तो, हालांकि उस ठंडी रोशनी ने मुझे जगाया, लेकिन उससे मुझे कोई खुशी नहीं मिली; और न ही वह रास्ता ऐसा था जिससे मैं गुजरना चाहती थी। श्रीमान वंडेनहुटेन की मदद का मुझ पर कोई भरोसा नहीं था; योग्यता के आधार पर तो मैं उनसे संपर्क नहीं कर सकती थी; नहीं, मुझे मजबूरी में यही कहना था: मेरे पास कोई काम नहीं था; मुझे काम चाहिए था; और उसे पाने का सबसे अच्छा मौका उनकी सिफारिश हासिल करने में था। मैं जानता था कि यह सिफारिश मांगने से मिल सकती है; लेकिन अगर मैं सिफारिश न मांगूं, क्योंकि यह मेरे स्वाभिमान को ठेस पहुंचाती और मेरी आदतों के खिलाफ थी, तो मुझे लगता था कि यह झूठी और आलसी नखरेबाजी होगी। मैं इस चूक पर जीवन भर पछताता रहूं; लेकिन तब मैं इस अपराध का दोषी नहीं होऊंगा।

उस शाम मैं एम. वैंडेनहुटेन के घर गया; लेकिन मेरी सारी कोशिश बेकार गई; धनुष को मोड़ने और डंडे को ठीक करने की सारी मेहनत व्यर्थ रही; डोरी टूट गई। मैंने बड़े दरवाजे की घंटी बजाई (यह शहर के एक महंगे इलाके में एक बड़ा, सुंदर घर था); एक नौकर ने दरवाजा खोला; मैंने एम. वैंडेनहुटेन के बारे में पूछा; एम. वैंडेनहुटेन और उनका परिवार शहर से बाहर गए हुए थे — ओस्टेंड गए थे — पता नहीं कब लौटेंगे। मैंने अपना कार्ड वहीं छोड़ दिया और वापस लौट आया।

अध्याय XXII

एक हफ़्ता बीत गया; 'ले जूर डेस नोसेस' (शादी का दिन) आ गया; सेंट जैक्स में शादी संपन्न हुई; मैडम ज़ोराइड, मैडम पेलेट (पहले रॉयटर) बन गईं; और इस बदलाव के लगभग एक घंटे बाद, अख़बारों के शब्दों में कहें तो, "खुशहाल जोड़ा" पेरिस के लिए रवाना हो गया; जहाँ पहले से तय योजना के अनुसार हनीमून मनाया जाना था। अगले दिन मैंने पेंशननेट (घर) छोड़ दिया। मुझे और मेरे सामान (कुछ किताबें और कपड़े) को जल्द ही पास की एक गली में किराए पर लिए गए एक साधारण से कमरे में पहुँचा दिया गया। आधे घंटे में मेरे कपड़े कमोड में, किताबें शेल्फ पर रख दी गईं और "स्थानांतरण" हो गया। उस दिन मैं दुखी नहीं होता अगर एक बेचैनी मुझे सताती न रहती - रू नोट्रे डेम ऑक्स नीजेस (Rue Notre Dame aux Neiges) जाने की तीव्र इच्छा, जिसे मैंने दबाया तो सही, लेकिन साथ ही उस गली से तब तक दूर रहने के मेरे अंतर्मन के दृढ़ संकल्प ने मुझे और भी बेचैन कर दिया जब तक कि मेरे भविष्य को लेकर संदेह का बादल छंट न जाए।

सितंबर की एक सुहावनी शाम थी—बहुत शांत, एकदम स्थिर; मेरे पास करने को कुछ नहीं था; मुझे पता था कि उस समय फ्रांसिस भी उतनी ही व्यस्त होगी; मैंने सोचा कि शायद वह अपने गुरु को याद कर रही होगी, और मैं अपनी शिष्या को याद कर रही थी। उसकी धीमी फुसफुसाहट से कल्पनाओं का जन्म हुआ, जिसने मेरी आत्मा में उन सुखों की कोमल गाथा भर दी जो संभव थे।

“आप उसे पढ़ते या लिखते हुए पाएंगे,” उसने कहा; आप उसके बगल में बैठ सकते हैं; आपको अनावश्यक उत्तेजना से उसकी शांति भंग करने की आवश्यकता नहीं है; आपको असामान्य व्यवहार या भाषा से उसे शर्मिंदा करने की आवश्यकता नहीं है। आप जैसे हैं वैसे ही रहें; उसने जो लिखा है उसे देखें; जब वह पढ़ रही हो तो सुनें; उसे डांटें या चुपचाप उसकी सराहना करें; आप दोनों ही तरीकों का प्रभाव जानते हैं; आप जानते हैं कि प्रसन्न होने पर वह मुस्कुराती है, आप जानते हैं कि उत्तेजित होने पर उसकी निगाहों में क्या भाव होते हैं; आपके पास वह रहस्य है जिससे आप अपनी इच्छानुसार भाव प्रकट कर सकते हैं, और आप उस सुखद विविधता में से चुन सकते हैं। आपके साथ वह तब तक चुपचाप बैठी रहेगी जब तक आपको अकेले बात करना उचित लगे; आप उसे अपने वश में कर सकते हैं: वह जितनी बुद्धिमान है, जितनी वाक्पटु हो सकती है, आप उसके होंठों को बंद कर सकते हैं, और उसके

उज्ज्वल चेहरे को संकोच से ढक सकते हैं; फिर भी, आप जानते हैं, वह पूरी तरह से नीरस सौम्य नहीं है; आपने एक अजीब से आनंद के साथ, विद्रोह, तिरस्कार, कठोरता, कड़वाहट को उसकी भावनाओं और चेहरे में एक स्थान बनाने का जोरदार दावा करते देखा है; आप जानते हैं कि कुछ ही लोग उस पर आपके जैसा शासन कर सकते हैं; आप जानते हैं कि वह टूट सकती है। लेकिन अत्याचार और अन्याय के आगे कभी मत झुकना, तर्क और स्नेह ही उसे सही राह दिखा सकते हैं। अब उनके प्रभाव को आजमाओ। जाओ—ये भावनाएँ नहीं हैं; तुम इन्हें सुरक्षित रूप से संभाल सकते हो।

“मैं नहीं जाऊँगा,” मैंने उस मोहक स्त्री को यही उत्तर दिया। एक व्यक्ति एक हद तक ही अपने वश में होता है, उससे आगे नहीं। क्या मैं आज रात फ्रांसिस से मिल सकता हूँ, क्या मैं उसके साथ एक शांत कमरे में अकेले बैठकर, केवल तर्क और स्नेह की भाषा में उससे बात कर सकता हूँ?

"नहीं," उस प्रेम का संक्षिप्त, भावुक उत्तर था जिसने मुझे जीत लिया था और अब मुझे नियंत्रित कर रहा था।

समय मानो थम सा गया था; सूरज डूबने का नाम ही नहीं ले रहा था; मेरी घड़ी टिक-टिक कर रही थी, लेकिन मुझे लग रहा था जैसे उसकी सुइयां रुक गई हों।

“कितनी गर्म शाम है!” मैंने जाली खोलते हुए कहा; क्योंकि सच में, मुझे इतनी गर्मी पहले कभी नहीं लगी थी। सीढ़ियों पर किसी के कदमों की आहट सुनकर, मैं सोचने लगी कि क्या वह “लोकेटेयर”, जो अब अपने कमरों की ओर जा रहा था, मेरी तरह ही मानसिक रूप से अशांत था, या वह अपने संसाधनों की शांति और बेरोक-टोक भावनाओं की स्वतंत्रता में जी रहा था। क्या! क्या वह खुद उस समस्या को सुलझाने आ रहा था जिसका ज़िक्र मैंने दबी आवाज़ में किया था? उसने सचमुच दरवाज़ा खटखटाया था – मेरे दरवाज़े पर; एक तेज़, ज़ोरदार दस्तक; और इससे पहले कि मैं उसे अंदर बुला पाती, वह दहलीज पार कर चुका था और दरवाज़ा बंद कर चुका था।

“आप कैसे हैं?” एक उदासीन, शांत आवाज ने अंग्रेजी में पूछा; जबकि मेरे आगंतुक ने बिना किसी हड़बड़ी या परिचय के, अपनी टोपी मेज पर रखी, अपने दस्ताने टोपी में रखे, और कमरे में मौजूद एकमात्र आरामकुर्सी को थोड़ा आगे खींचकर शांति से उस पर बैठ गए।

कुछ ही क्षणों में उसने पूछा, “क्या तुम बोल नहीं सकते?” उसकी आवाज़ में एक ऐसी बेपरवाही थी मानो मैं जवाब दूं या न दूं, बात एक ही हो। दरअसल, मुझे अपने अच्छे दोस्तों “चश्मे” का सहारा लेना ज़रूरी लगा; आगंतुक की पहचान जानने के लिए नहीं—क्योंकि मैं उसे पहले से ही जानता था, उसकी गुस्ताखी को धिक्कार है! बल्कि यह देखने के लिए कि वह कैसा दिखता है—उसके हाव-भाव और चेहरे का एक स्पष्ट अंदाजा लगाने के लिए। मैंने चश्मे को बड़ी सावधानी से पोंछा और उतनी ही सावधानी से पहना; उन्हें इस तरह से समायोजित किया कि वे मेरी नाक की हड्डी को चोट न पहुंचाएं या मेरे छोटे भूरे बालों में न उलझें। मैं खिड़की के पास वाली सीट पर बैठा था, मेरी पीठ रोशनी की ओर थी, और वह मेरे ठीक सामने था; एक ऐसी स्थिति जिसे वह उलटना ज़्यादा पसंद करता; क्योंकि वह किसी भी समय जांच-परख करने को जांच-परख किए जाने से ज़्यादा पसंद करता था। हाँ, यह वही था, और कोई गलती नहीं, अपने छह फीट लंबे शरीर के साथ बैठे हुए। मखमली कॉलर वाला उनका गहरा यात्रा वस्त्र, उनकी धूसर पैंट, उनका काला मोजा, और उनका चेहरा - प्रकृति द्वारा गढ़ा गया सबसे अनोखा, फिर भी सबसे कम दिखावटी; कोई भी ऐसी विशेषता नहीं जिसे विशिष्ट या विचित्र कहा जा सके, फिर भी संपूर्णता का प्रभाव अद्वितीय था। जो अवर्णनीय है, उसका वर्णन करने का प्रयास व्यर्थ है। उनसे बात करने की कोई जल्दी न होने के कारण, मैं आराम से बैठा रहा और उन्हें देखता रहा।

“ओह, ये तुम्हारा खेल है—है ना?” उसने आख़िरकार कहा। “देखते हैं कौन पहले थकता है।” और उसने धीरे से एक बढ़िया सिगार का डिब्बा निकाला, अपनी पसंद का एक सिगार चुना, उसे जलाया, अपने हाथ के पास वाली शेल्फ़ से एक किताब निकाली, फिर पीछे झुककर, इतनी शांति से सिगार पीते और पढ़ते रहे मानो वे इंग्लैंड के ग्रोव-स्ट्रीट, एक्स-शायर में अपने कमरे में हों। मुझे पता था कि अगर उनका मन हुआ तो वे आधी रात तक इसी मुद्रा में रह सकते हैं, इसलिए मैं उठा और उनके हाथ से किताब लेकर मैंने कहा, —

तुमने इसे नहीं माँगा था, और तुम्हें यह नहीं मिलेगा।

“यह बेवकूफी और उबाऊ है,” उसने कहा, “इसलिए मेरा ज्यादा नुकसान नहीं हुआ है;” फिर सन्नाटा टूटते ही वह आगे बोला, “मुझे लगा था कि तुम पेलेट के यहाँ रहती हो; मैं आज दोपहर वहाँ यह सोचकर गया था कि बोर्डिंग स्कूल के ड्राइंग रूम में बैठे-बैठे भूख से मर जाऊँगा, लेकिन उन्होंने मुझे बताया कि तुम चली गई हो, आज

सुबह ही चली गई हो; हालाँकि तुमने अपना पता छोड़ दिया था, जिस पर मुझे आश्चर्य हुआ; यह मेरी कल्पना से कहीं अधिक व्यावहारिक और समझदारी भरा कदम था। तुमने क्यों छोड़ा?”

"क्योंकि एम. पेलेट ने अभी-अभी उस महिला से शादी की है जिसे आपने और मिस्टर ब्राउन ने मेरी पत्नी के रूप में मुझे सौंपा था।"

“ओह, बिल्कुल!” हन्सडेन ने हल्की हंसी के साथ जवाब दिया; “तो आपने अपनी पत्नी और अपना घर दोनों खो दिए?”

"बिल्कुल सही।"

मैंने उसे अपने कमरे का चारों ओर जल्दी से, चुपके से एक नज़र डालते देखा; उसने कमरे की तंग सीमाओं, कम साज-सज्जा पर गौर किया: पल भर में वह स्थिति समझ गया था - उसने मुझे समृद्धि के अपराध से बरी कर दिया था। इस खोज ने उसके विचित्र मन पर एक अजीब सा प्रभाव डाला; मुझे नैतिक रूप से यकीन है कि अगर उसने मुझे एक सुंदर बैठक में, एक मुलायम सोफे पर आराम करते हुए, एक सुंदर, धनी पत्नी के साथ पाया होता, तो वह मुझसे नफरत करता; ऐसे में एक संक्षिप्त, ठंडी, घमंडी मुलाकात उसकी शिष्टता की चरम सीमा होती, और जब तक भाग्य की लहर मुझे अपनी सतह पर सुचारू रूप से ले जाती, वह फिर कभी मेरे पास नहीं आता; लेकिन रंगीन साज-सज्जा, खाली दीवारें, मेरे कमरे का उदास एकांत उसके कठोर अभिमान को नरम कर दिया, और मुझे नहीं पता कि उसके स्वर और दृष्टि में क्या कोमल परिवर्तन आया था, इससे पहले कि वह फिर से बोला।

"क्या आपके पास कोई और जगह है?"

"नहीं।"

"क्या आप इसे पाने में बाधा बन रहे हैं?"

"नहीं।"

“यह तो बुरी बात है; क्या आपने ब्राउन यूनिवर्सिटी में आवेदन किया है?”

"जी नहीं, बिलकुल नहीं।"

"आपको ऐसा करना चाहिए; वह अक्सर ऐसे मामलों में उपयोगी जानकारी देने में सक्षम होता है।"

"उसने एक बार मेरी बहुत अच्छी सेवा की थी; मेरा उस पर कोई दावा नहीं है, और न ही मैं उसे दोबारा परेशान करने के मूड में हूँ।"

"अगर आप संकोची हैं और दखलंदाजी करने से डरते हैं, तो बस मुझे नियुक्त कर दीजिए। मैं आज रात उनसे मिलूंगा; मैं उनके लिए सिफ़ारिश कर सकता हूं।"

“श्रीमान हन्सडेन, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप ऐसा न करें; मैं पहले से ही आपका ऋणी हूँ; जब मैं X—— में था तब आपने मेरी बहुत मदद की थी; मुझे उस दलदल से बाहर निकाला जहाँ मैं मर रहा था: उस मदद का मैंने कभी बदला नहीं चुकाया है, और फिलहाल मैं इस खाते में एक और मद जोड़ने से साफ इनकार करता हूँ।”

“अगर हवा इसी तरह चलती रही, तो मैं संतुष्ट हूँ। मुझे लगा था कि उस शापित लेखा-घर से तुम्हें बाहर निकालने में मेरी बेमिसाल उदारता की एक दिन सराहना ज़रूर होगी: ‘अपनी रोटी पानी में डालो, और बहुत दिनों बाद वह मिल जाएगी,’ शास्त्र कहते हैं। हाँ, बिल्कुल सही, बेटा – मेरी कदर करो – मैं अद्वितीय हूँ: आम लोगों में मेरे जैसा कोई नहीं है। इस बीच, सारी बकवास को एक तरफ़ रखकर थोड़ी देर के लिए समझदारी की बात करें, तो तुम एक बेहतर स्थिति में होगे, और उससे भी बढ़कर, अगर तुम किसी के भी दिए हुए अवसर को ठुकराते हो, तो तुम मूर्ख हो।”

“बहुत खूब, श्रीमान हन्सडेन; अब जब आपने यह मुद्दा सुलझा लिया है, तो किसी और बात पर चर्चा कीजिए। X से क्या खबर है?

“मैंने अभी तक उस मुद्दे को सुलझाया नहीं है, या कम से कम X तक पहुँचने से पहले एक और मुद्दा सुलझाना बाकी है। क्या ये मिस ज़ेनोबी हैं?” (ज़ोराइड ने बीच में कहा) — “अच्छा, ज़ोराइड — क्या वो सचमुच पेलेट से शादीशुदा हैं?”

मैं तुमसे कहता हूँ हाँ—और अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है, तो जाकर सेंट जैक्स के चिकित्सक से पूछ लो।

और तुम्हारा दिल टूट गया है?

मुझे इस बात का एहसास नहीं है; सब ठीक लग रहा है – धड़कनें हमेशा की तरह चल रही हैं।

"तो फिर तुम्हारी भावनाएँ उतनी कोमल नहीं हैं जितना मैंने सोचा था; तुम ज़रूर एक कठोर और निर्दयी व्यक्ति होगे, जो इस तरह के प्रहार को बिना लड़खड़ाए सहन कर सकते हो।"

“क्या वे इससे परेशान हैं? एक बेल्जियम की स्कूल शिक्षिका की एक फ्रांसीसी स्कूल शिक्षक से शादी होने पर भला परेशान होने की क्या बात है? संतानें निस्संदेह

एक विचित्र संकर नस्ल होंगी; लेकिन यह उनकी जिम्मेदारी है - मेरी नहीं।"

वह अपमानजनक चुटकुलों में लिप्त रहता है, और दुल्हन उसकी मंगेतर थी!

"ऐसा किसने कहा?"

"भूरा।"

"मैं आपको बताता हूँ, हन्सडेन - ब्राउन एक पुराना गपशप करने वाला है।"

"वह है; लेकिन इस बीच, अगर उसकी अफवाहें तथ्यों से कम पर आधारित हैं — अगर आपने मिस ज़ोराइड में कोई विशेष रुचि नहीं ली — तो हे युवा शिक्षक! आपने उसके मैडम पेलेट बनने के कारण अपना पद क्यों छोड़ा?"

"क्योंकि—" मुझे लगा कि मेरा चेहरा थोड़ा गर्म हो गया है; "क्योंकि—संक्षेप में, श्री हन्सडेन, मैं अब और किसी भी प्रश्न का उत्तर देने से इनकार करता हूँ," और मैंने अपने हाथ अपनी पैंट की जेब में गहराई तक डाल लिए।

हन्सडेन विजयी हुए: उनकी आंखें—उनकी हंसी ने जीत की घोषणा कर दी।

"आप किस बात पर हंस रहे हैं, मिस्टर हन्सडेन?"

"तुम्हारे अनुकरणीय संयम को देखकर। खैर, बेटा, मैं तुम्हें उबाऊ नहीं बनाऊंगा; मुझे समझ आ गया है कि क्या हुआ है: ज़ोराइड ने तुम्हें छोड़ दिया है - किसी अमीर आदमी से शादी कर ली है, जैसा कि कोई भी समझदार महिला करती अगर उसे मौका मिलता।"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया— मैंने उसे ऐसा ही सोचने दिया, क्योंकि मुझे वास्तविकता की व्याख्या करने की कोई इच्छा नहीं थी, और न ही कोई झूठा बयान गढ़ने की; लेकिन हन्सडेन को भ्रमित करना आसान नहीं था; मेरी चुप्पी ने उसे यह विश्वास दिलाने के बजाय कि उसने सच्चाई का पता लगा लिया है, उसे संदेह में डाल दिया; वह आगे बोला:—

"मेरा मानना है कि यह सौदा वैसे ही हुआ जैसे समझदार लोगों के बीच होता है: आपने उसे अपनी जवानी और अपनी प्रतिभाएँ—जो भी थीं—उसके पद और पैसे के बदले में पेश कीं। मुझे नहीं लगता कि आपने दिखावट या जिसे प्यार कहते हैं, उसे ध्यान में रखा होगा—क्योंकि मुझे पता चला है कि वह आपसे उम्र में बड़ी है, और ब्राउन कहते हैं कि वह खूबसूरत से ज़्यादा समझदार दिखती है। उसके पास बेहतर सौदा करने का कोई मौका नहीं था, इसलिए वह पहले तो आपसे समझौता करने को तैयार थी, लेकिन पेलेट—एक सफल स्कूल के प्रमुख—ने ज़्यादा बोली लगाई; उसने

स्वीकार कर लिया, और उसने उसे पा लिया: एक सही सौदा—बिल्कुल सही—व्यावसायिक और वैध। और अब हम किसी और बात पर चर्चा करेंगे।"

"हाँ," मैंने कहा, इस विषय को समाप्त करने में मुझे बहुत खुशी हुई, और विशेष रूप से अपने प्रश्नकर्ता की बुद्धिमत्ता को चकनाचूर करने में मुझे खुशी हुई — अगर वास्तव में मैंने उसे चकनाचूर कर दिया था; क्योंकि यद्यपि उसके शब्द अब खतरनाक मुद्दे से दूर जा रहे थे, उसकी पैनी और सतर्क आँखें अभी भी पहले वाले विचार में ही उलझी हुई प्रतीत हो रही थीं।

"क्या तुम X — — से खबर सुनना चाहते हो? और X — — में तुम्हारी क्या दिलचस्पी हो सकती है? तुमने वहाँ न तो कोई दोस्त बनाया, न ही कोई दोस्त छोड़ा। कोई तुम्हारा हालचाल नहीं पूछता — न पुरुष, न स्त्री; और अगर मैं किसी सभा में तुम्हारा नाम लेता हूँ, तो पुरुष ऐसे देखते हैं जैसे मैंने प्रेस्टर जॉन का नाम लिया हो; और स्त्रियाँ दबे स्वर में उपहास करती हैं। हमारी X — — सुंदरियों को तुम नापसंद रहे होंगे। तुमने उनकी नाराज़गी कैसे पैदा की?"

"मुझे नहीं पता। मैं उनसे शायद ही कभी बात करती थी—वे मेरे लिए कुछ भी नहीं थे। मैं उन्हें दूर से बस एक नज़र देखने लायक समझती थी; उनके कपड़े और चेहरे अक्सर देखने में अच्छे लगते थे: लेकिन मैं उनकी बातचीत समझ नहीं पाती थी, यहाँ तक कि उनके चेहरे के भाव भी नहीं पढ़ पाती थी। जब कभी-कभार उनकी कही हुई कुछ बातें सुन भी लेती थी, तो उन्हें पूरी तरह समझ नहीं पाती थी; और उनके होंठों और आँखों की हरकतें भी मेरी कोई मदद नहीं करती थीं।"

"यह तुम्हारी गलती थी, उनकी नहीं। X में समझदार और खूबसूरत औरतें भी हैं; ऐसी औरतें जिनसे बात करना किसी भी पुरुष के लिए फायदेमंद होता है, और जिनसे मैं खुशी से बात कर सकता हूँ: लेकिन तुममें न तो शिष्टाचार है और न ही पहले; तुममें ऐसा कुछ भी नहीं है जो किसी औरत को तुमसे घुलमिलने के लिए प्रेरित करे। मैंने तुम्हें लोगों से भरे कमरे में दरवाजे के पास बैठे देखा है, सुनने में मग्न, बोलने में नहीं; देखने में, मनोरंजन करने में नहीं; किसी पार्टी की शुरुआत में बेहद शर्मीला, बीच में उलझन में सतर्क और अंत में अपमानजनक रूप से थका हुआ। क्या तुम्हें लगता है कि यही तरीका है खुशी देने या दिलचस्पी जगाने का? नहीं; और अगर तुम आम तौर पर अलोकप्रिय हो, तो इसलिए क्योंकि तुम इसके लायक हो।"

"संतोषजनक!" मैंने विस्मयबोधक स्वर में कहा।

"नहीं, तुम संतुष्ट नहीं हो; तुम देखते हो कि सुंदरता हमेशा तुमसे मुंह मोड़ लेती है; तुम निराश होते हो और फिर उपहास करते हो। मेरा दृढ़ विश्वास है कि पृथ्वी पर जो कुछ भी वांछनीय है—धन, प्रतिष्ठा, प्रेम—वह तुम्हारे लिए हमेशा ऊंचे तंबू पर लगे पके अंगूरों के समान रहेगा: तुम उन्हें निहारोगे; वे तुम्हारी आंखों में लालसा जगाएंगे; लेकिन वे तुम्हारी पहुंच से बाहर हैं: तुम्हारे पास सीढ़ी लाने की सूझबूझ नहीं है, और तुम उन्हें खट्टा कहकर चले जाओगे।"

कुछ परिस्थितियों में ये शब्द कितने भी चुभने वाले क्यों न रहे हों, अब इनसे मुझे कोई आघात नहीं पहुँचा। मेरा जीवन बदल चुका था; X छोड़ने के बाद से मेरे अनुभव विविध रहे थे, लेकिन हन्सडेन को इसका ज्ञान नहीं था; उसने मुझे केवल श्री क्रिम्सवर्थ के क्लर्क के रूप में देखा था— धनी अजनबियों के बीच एक आश्रित, तिरस्कार का सामना कठोर भाव से करने वाला, अपने असामाजिक और अनाकर्षक बाहरी रूप के प्रति सचेत, ध्यान आकर्षित करने से इनकार करने वाला, और प्रशंसा व्यक्त करने से बचने वाला, जिसे मैं जानता था कि व्यर्थ समझा जाएगा। वह इस बात से अवगत नहीं हो सकता था कि तब से यौवन और सुंदरता मेरे लिए रोजमर्रा की वस्तुएँ बन गई थीं; कि मैंने फुर्सत में और बारीकी से उनका अध्ययन किया था, और दिखावे के नीचे छिपी सच्चाई की स्पष्ट बनावट को देखा था; न ही वह, अपनी तीक्ष्ण दृष्टि के बावजूद, मेरे हृदय में प्रवेश कर सकता था, मेरे मस्तिष्क की खोज कर मेरी विशिष्ट सहानुभूति और घृणा को पढ़ सकता था; वह मुझे इतने लंबे समय तक या इतनी अच्छी तरह से नहीं जानता था कि यह समझ सके कि कुछ प्रभावों के तहत मेरी भावनाएँ कितनी कमज़ोर हो जाती हैं, जो अधिकांश लोगों के दिमाग पर शक्तिशाली होते हैं; अन्य प्रभावों के तहत वे कितनी ऊँचाई तक, कितनी तेज़ी से बहेंगे, जो शायद मुझ पर अधिक तीव्र बल का प्रयोग कर रहे थे, क्योंकि वे केवल मुझ पर ही प्रभाव डाल रहे थे। न ही उन्हें एक पल के लिए भी मैडम रॉयटर के साथ मेरे संवादों के इतिहास का संदेह हो सकता था; उनके और अन्य सभी लोगों के लिए उनकी विचित्र दीवानगी की कहानी गुप्त थी; उनके प्रलोभन, उनकी चालें केवल मैंने ही देखी थीं, और केवल मुझे ही पता थीं; लेकिन उन्होंने मुझे बदल दिया था, क्योंकि उन्होंने साबित कर दिया था कि मैं प्रभावित कर सकता हूँ। मेरे दिल में एक और मीठा रहस्य गहराई से बसा हुआ था; कोमलता और शक्ति से भरपूर: इसने हन्सडेन के व्यंग्य की चुभन को कम कर दिया; इसने मुझे शर्म से झुकने नहीं दिया, और क्रोध से विचलित नहीं होने दिया।

लेकिन इन सब के बारे में मैं कुछ नहीं कह सका - कम से कम निर्णायक रूप से कुछ नहीं; अनिश्चितता ने मेरे होंठों को बंद कर दिया, और उस मौन के अंतराल के दौरान, जिसमें मैंने श्री हन्सडेन को उत्तर दिया, मैंने यह तय कर लिया कि फिलहाल वह मुझे पूरी तरह से गलत समझेंगे, और मैं गलत समझा गया; उन्हें लगा कि उन्होंने मुझ पर कुछ ज्यादा ही सख्ती बरती है, और मैं उनकी फटकार के बोझ तले दब गया हूँ; इसलिए मुझे आश्वस्त करने के लिए उन्होंने कहा, निःसंदेह मैं एक दिन सुधर जाऊँगा; अभी तो जीवन की शुरुआत ही हुई है; और सौभाग्य से मैं पूरी तरह से नासमझ नहीं हूँ, इसलिए मेरी हर गलती मेरे लिए एक अच्छा सबक होगी।

तभी मैंने अपना चेहरा थोड़ा सा प्रकाश की ओर घुमाया; गोधूलि बेला के आने और खिड़की के पास बैठने की वजह से पिछले दस मिनट से वह मेरे चेहरे के भावों को ठीक से नहीं देख पा रहा था; लेकिन जैसे ही मैं हिला, उसने मेरे चेहरे पर एक भाव देखा जिसे उसने इस प्रकार समझा: —

“अरे बाप रे! ये लड़का कितना घमंडी और आत्मप्रशंसाशील लग रहा है! मुझे लगा था कि उसे शर्म से मर जाना चाहिए, और ये तो यहाँ मुस्कुराते हुए बैठा है, मानो कह रहा हो, ‘दुनिया चाहे जैसे भी चले, मेरे पास मेरी जैकेट की जेब में पारस पत्थर है और मेरी अलमारी में जीवन का अमृत; मैं न तो भाग्य से और न ही किस्मत से स्वतंत्र हूँ।’”

“हंसडेन— तुमने अंगूरों की बात की; मैं एक ऐसे फल के बारे में सोच रहा था जो मुझे तुम्हारे X से कहीं ज़्यादा पसंद है— ग्रीनहाउस में उगाए गए अंगूर— एक अनोखा फल, जो जंगली रूप से उगता है, जिसे मैंने अपना मान लिया है, और आशा करता हूँ कि एक दिन मैं उसे तोड़कर चखूँगा। तुम्हारा मुझे कड़वाहट का घूंट पिलाना या प्यास से मौत की धमकी देना व्यर्थ है: मेरे मुँह में मिठास की अनुभूति है; मेरे होठों पर ताजगी की आशा है; मैं बेस्वाद को नकार सकता हूँ और थका देने वाली पीड़ा को सह सकता हूँ।”

"कितनी देर के लिए?"

"जब तक प्रयास करने का अगला अवसर न मिले; और चूंकि सफलता का पुरस्कार मेरे दिल के लिए एक अनमोल खजाना होगा, मैं इस संघर्ष में बैल जैसी ताकत लगाऊंगा।"

"बदकिस्मती बैलों को भी उतनी ही आसानी से कुचल देती है जितनी कि गधों को;

और मेरा मानना है कि यह क्रोध तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेगा: तुम मुंह में लकड़ी का चम्मच लेकर पैदा हुए हो, इस बात पर भरोसा रखो।"

"मैं आपकी बात मानता हूँ; दुख की बात है कि मेरा इरादा अपनी लकड़ी की चम्मच से वही काम करवाने का है जो कुछ लोगों के चांदी के करछुल करते हैं: मजबूती से पकड़ी और फुर्ती से इस्तेमाल की जाए तो लकड़ी की चम्मच भी शोरबा को आसानी से उठा सकती है।"

हन्सडेन उठे: “मैं समझ गया,” उन्होंने कहा; “मुझे लगता है कि आप उन लोगों में से हैं जो बिना किसी की निगरानी के सबसे अच्छा विकास करते हैं और बिना किसी की मदद के सबसे अच्छा काम करते हैं—अपने तरीके से काम करो। अब मैं चलता हूँ।” और, बिना कुछ और कहे, वे चले गए; दरवाजे पर पहुँचकर वे मुड़े: —

उन्होंने कहा, "क्रिम्सवर्थ हॉल बिक गया है।"

“बिक गया!” मेरी भी यही आवाज़ गूंजी।

“हां; आपको तो पता ही होगा कि आपका भाई तीन महीने पहले फेल हो गया था?”

“क्या! एडवर्ड क्रिम्सवर्थ?”

“बिल्कुल सही; और उसकी पत्नी अपने पिता के घर चली गई; जब मामले बिगड़ने लगे, तो उसका स्वभाव भी उनके साथ सहानुभूति रखने लगा; उसने उसके साथ बुरा बर्ताव किया; मैंने तुमसे कहा था कि वह एक दिन उसके साथ अत्याचार करेगा; जहाँ तक उसकी बात है—“

“हाँ, जहाँ तक उसकी बात है—उसका क्या हुआ?”

"कुछ भी असाधारण नहीं है - घबराइए मत; उसने अदालत की सुरक्षा में खुद को सौंप दिया, अपने लेनदारों के साथ समझौता कर लिया - दस पेंस प्रति पाउंड; छह सप्ताह में उसने फिर से अपना काम शुरू कर दिया, अपनी पत्नी को वापस मना लिया, और अब वह हरे-भरे तेजपत्ता की तरह फल-फूल रहा है।"

“और क्रिम्सवर्थ हॉल — क्या उसका फर्नीचर भी बिक गया?”

"सब कुछ—भव्य पियानो से लेकर बेलन तक।"

और ओक की लकड़ी से बने भोजन कक्ष का सामान—क्या वह बिक गया?

"बिल्कुल; उस कमरे के सोफे और कुर्सियों को किसी अन्य कमरे के सोफे और कुर्सियों से अधिक पवित्र क्यों माना जाना चाहिए?"

और तस्वीरें?

“कौन सी तस्वीरें? जहाँ तक मुझे पता है, क्रिम्सवर्थ के पास कोई विशेष संग्रह नहीं था—वह खुद को शौकिया फोटोग्राफर नहीं मानता था।”

“वहाँ दो चित्र थे, एक-एक मेंटलपीस के दोनों ओर; आप उन्हें भूले नहीं होंगे, श्री हन्सडेन; आपने एक बार उस महिला का चित्र देखा था—”

“ओह, मुझे याद है! वो दुबली-पतली शक्ल वाली महिला जिसने शॉल ओढ़ रखी थी। – ज़ाहिर है, वो भी बाकी चीज़ों के साथ बिक रही होगी। अगर तुम अमीर होते, तो शायद खरीद लेते, क्योंकि मुझे याद है तुमने कहा था कि वो तुम्हारी माँ की याद दिलाती है: अब तुम समझ गए ना कि बिना पैसे के रहना कैसा होता है।”

मैंने किया। “लेकिन निश्चित रूप से,” मैंने मन ही मन सोचा, “मैं हमेशा इतना गरीब नहीं रहूंगा; शायद एक दिन मैं इसे वापस खरीद लूं। — इसे किसने खरीदा? क्या आप जानते हैं?” मैंने पूछा।

“ऐसा कैसे हो सकता है? मैंने कभी यह नहीं पूछा कि किसने क्या खरीदा; ये तो उस अव्यावहारिक व्यक्ति की सोच है – यह सोचना कि पूरी दुनिया को उसी बात में दिलचस्पी है जिसमें उसे खुद दिलचस्पी है! अब, शुभ रात्रि – मैं कल सुबह जर्मनी के लिए रवाना हो रहा हूँ; मैं छह सप्ताह में यहाँ वापस आऊँगा, और शायद मैं आपसे फिर मिलने आऊँ; मुझे आश्चर्य है कि क्या आप तब भी यहाँ बेमेल महसूस करेंगे!” वह मेफिस्टोफेल्स की तरह व्यंग्यपूर्ण और निर्दयी ढंग से हँसा, और हँसते-हँसते गायब हो गया।

कुछ लोग, चाहे लंबे समय तक अनुपस्थिति के बाद कितने भी उदासीन क्यों न हो जाएं, विदाई के समय हमेशा एक सुखद छाप छोड़ने का प्रबंध करते हैं; लेकिन हन्सडेन के साथ ऐसा नहीं था; उनसे हुई बातचीत किसी को पेरू की छाल के घूंट की तरह लगती थी; ऐसा लगता था मानो यह विशेष रूप से कठोर, तीखा और कड़वा हो; क्या छाल की तरह यह स्फूर्तिदायक भी था, यह मुझे ठीक से पता नहीं था।

एक अशांत मन बेचैन तकिया बना देता है; इस मुलाकात के बाद वाली रात मैं बहुत कम सोया; सुबह होते-होते मुझे हल्की-हल्की नींद आने लगी, लेकिन नींद पूरी तरह से आई ही नहीं थी कि मेरे बैठक कक्ष में, जो मेरे शयनकक्ष से सटा हुआ था, एक आवाज़ से मेरी नींद टूट गई — एक कदम की आहट और फर्नीचर के खिसकने की आवाज़; यह हलचल मुश्किल से दो मिनट तक चली; दरवाज़ा बंद होते ही यह बंद

हो गई। मैंने ध्यान से सुना; कोई हलचल नहीं थी; शायद मैंने सपना देखा था; शायद किसी किराएदार ने गलती से अपने कमरे की जगह मेरे कमरे में प्रवेश कर लिया था। अभी केवल पाँच बजे थे; न तो मैं पूरी तरह जागा था और न ही दिन; मैं करवट बदला और तुरंत बेहोश हो गया। जब मैं लगभग दो घंटे बाद उठा, तो मैं वह घटना भूल चुका था; हालाँकि, अपने कमरे से बाहर निकलते ही जो पहली चीज़ मैंने देखी, उससे मुझे वह याद आ गई; मेरे बैठक कक्ष के दरवाजे पर ठीक से धकेला हुआ, और अभी भी सीधा खड़ा, एक लकड़ी का पैकिंग बॉक्स था — एक खुरदुरा, चौड़ा लेकिन उथला सा। इसमें कोई शक नहीं कि एक कुली ने इसे आगे धकेला होगा, लेकिन कमरे में किसी को न देखकर उसने इसे प्रवेश द्वार पर ही छोड़ दिया होगा।

"यह मेरा नहीं है," मैंने पास आते हुए सोचा; "यह किसी और के लिए होगा।" मैंने पता देखने के लिए झुककर देखा: —

"विलियम क्रिम्सवर्थ, एस्क्वायर, नंबर — , — स्ट्रीट, ब्रुसेल्स।"

मैं असमंजस में था, लेकिन यह सोचकर कि जानकारी प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका अंदर पूछना ही है, मैंने डोरियाँ काटीं और बक्सा खोला। हरे रंग के कपड़े से उसका सामान लिपटा हुआ था, किनारों से सावधानीपूर्वक सिला हुआ; मैंने अपने पेन-चाकू से धागे को चीर दिया, और जैसे ही सिलाई खुली, चौड़ी होती दरारों से सोने की परत की झलक दिखाई देने लगी। तख्ते और कपड़ा हटाने के बाद, मैंने बक्से से एक बड़ी तस्वीर निकाली, जो एक शानदार फ्रेम में लगी थी; उसे एक कुर्सी के सहारे टिका दिया, जहाँ खिड़की से आने वाली रोशनी उस पर अच्छी तरह पड़ रही थी, और मैं पीछे हट गया - मैंने पहले ही अपना चश्मा लगा लिया था। एक चित्रकार के आकाश (सबसे उदास और भयावह आकाश), और दूर के पेड़ों की पारंपरिक गहराई ने एक पीले, चिंतनशील दिखने वाले स्त्री चेहरे को पूरी तरह से उभार दिया, जो कोमल काले बालों से ढका हुआ था, जो लगभग उतने ही गहरे बादलों में घुलमिल रहे थे; बड़ी, गंभीर आँखें चिंतनशील होकर मेरी आँखों में देख रही थीं; एक पतला गाल एक नाजुक छोटे हाथ पर टिका हुआ था; एक शॉल, कलात्मक ढंग से लिपटा हुआ, आधा छिपा हुआ, आधा एक दुबली-पतली आकृति को दिखा रहा था। अगर कोई सुनने वाला होता, तो शायद दस मिनट तक चुपचाप निहारने के बाद मुझे "माँ!" कहते हुए सुन लेता। मैं और भी कुछ कह सकती थी—लेकिन मेरे साथ, एकालाप में बोला गया पहला शब्द चेतना को जगा देता है; यह मुझे याद दिलाता है कि केवल

पागल लोग ही खुद से बात करते हैं, और फिर मैं अपने एकालाप को बोलने के बजाय सोच-विचार करती हूँ। मैंने बहुत देर तक सोचा था, और बहुत देर तक उन सुंदर, धूसर आँखों की बुद्धिमत्ता, मिठास और—अफ़सोस! उदासी, उस माथे की मानसिक शक्ति और उस गंभीर मुख की दुर्लभ संवेदनशीलता पर विचार किया था, जब मेरी नज़र नीचे की ओर जाते हुए, फ्रेम और कैनवास के बीच, तस्वीर के कोने में फंसी एक पतली सी पट्टी पर पड़ी। तब मैंने सबसे पहले पूछा, "यह तस्वीर किसने भेजी? किसने मेरे बारे में सोचा, इसे क्रिम्सवर्थ हॉल के मलबे से बचाया, और अब इसे इसके असली रखवाले की देखभाल में सौंप दिया?" मैंने उस ताक से नोट निकाला; इस प्रकार उसने कहा:—

"बच्चे को मिठाई, मूर्ख को घंटियाँ और कुत्ते को हड्डी देने में एक अजीब सा आनंद होता है। इसका प्रतिफल तब मिलता है जब बच्चा अपना चेहरा चीनी से लपेट लेता है; जब आप देखते हैं कि मूर्ख का उत्साह उसे पहले से भी बड़ा मूर्ख बना देता है; जब आप देखते हैं कि कुत्ते का असली स्वभाव हड्डी मिलने पर सामने आ जाता है। विलियम क्रिम्सवर्थ को उसकी माँ की तस्वीर देकर, मैं उसे मिठाई, घंटियाँ और हड्डी सब एक साथ दे रहा हूँ; मुझे दुख इस बात का है कि मैं परिणाम नहीं देख सकता; अगर नीलामी करने वाला मुझे यह आनंद देने का वादा कर देता, तो मैं अपनी बोली में पाँच शिलिंग और जोड़ देता।"

"एच. वाई. एच.

"पुनश्च: आपने कल रात कहा था कि आपने मेरे खाते में एक और आइटम जोड़ने से साफ इनकार कर दिया था; क्या आपको नहीं लगता कि मैंने आपको उस परेशानी से बचा लिया है?"

मैंने तस्वीर को उसके हरे कपड़े के कवर में लपेटकर वापस उसके केस में रख दिया और सारा सामान अपने बेडरूम में ले जाकर बिस्तर के नीचे छिपा दिया। अब मेरी खुशी तीखे दर्द में बदल गई थी; मैंने ठान लिया कि जब तक मैं चैन से न देख लूँ, तब तक नहीं देखूँगी। अगर उस समय हन्सडेन आ जाता, तो मैं उससे कहती, "हन्सडेन, मैं तुम्हारी कुछ भी ऋणी नहीं हूँ—एक पैसे का अंश भी नहीं: तुमने तो खुद को ताने मारकर चुका दिया है!"

अब और चुप रहना मेरे लिए असहनीय था, नाश्ता करते ही मैं एक बार फिर श्रीमान वैनडेनहुटेन के घर चला गया, इस उम्मीद के साथ कि वे घर पर होंगे; क्योंकि

मेरी पहली मुलाकात को अभी एक हफ्ता भी नहीं बीता था: लेकिन मुझे लगा कि शायद मैं उनके लौटने के समय के बारे में जानकारी जुटा सकूँ। मुझे उम्मीद से कहीं बेहतर परिणाम मिला, क्योंकि परिवार अभी भी ओस्टेंड में था, श्रीमान वैनडेनहुटेन एक दिन के लिए काम से ब्रुसेल्स आए हुए थे। उन्होंने एक सच्चे, लेकिन शांत स्वभाव के व्यक्ति की तरह मेरा स्वागत किया। उनके दफ्तर में उनके साथ पाँच मिनट भी अकेले नहीं बैठा था कि मुझे उनकी उपस्थिति में एक सहजता का अहसास हुआ, जैसा कि मुझे अजनबियों के साथ शायद ही कभी होता था। मैं अपनी ही शांति पर हैरान था, क्योंकि आखिरकार, मैं एक ऐसे काम के लिए आया था जो मेरे लिए बेहद कष्टदायक था - एक मदद माँगना। मैंने पूछा कि इस शांति का आधार क्या है - मुझे डर था कि यह सिर्फ दिखावा हो सकता है। कुछ ही देर में मुझे जमीन की एक झलक मिली, और तुरंत ही मुझे उसकी मजबूती का यकीन हो गया; मुझे पता चल गया कि वह कहाँ है।

एम. वैंडेनहुटेन धनी, सम्मानित और प्रभावशाली थे; मैं गरीब, तिरस्कृत और शक्तिहीन था; इसलिए हम दुनिया की नज़र में विश्व समाज के सदस्य थे; लेकिन एक-दूसरे के लिए, दो मनुष्यों के रूप में, हमारी स्थिति उलट थी। डचमैन (वह फ्लेमंड नहीं, बल्कि शुद्ध हॉलैंडवासी थे) धीमे, शांत और कुछ हद तक जटिल बुद्धि वाले थे, हालांकि उनका निर्णय सटीक और सही होता था; अंग्रेज कहीं अधिक संवेदनशील, सक्रिय और योजना बनाने और उसे अमल में लाने, कल्पना करने और उसे साकार करने में तेज थे। डचमैन परोपकारी थे, अंग्रेज संवेदनशील; संक्षेप में, हमारे चरित्र एक-दूसरे से मेल खाते थे, लेकिन मेरे दिमाग में उनसे कहीं अधिक जोश और सक्रियता थी, इसलिए मैंने सहज रूप से प्रभुत्व हासिल कर लिया और उसे बनाए रखा।

यह बात तय हो जाने और मेरी स्थिति अच्छी तरह से समझ आ जाने पर, मैंने उनसे अपने मामलों के बारे में उस सच्ची ईमानदारी से बात की जो केवल पूर्ण विश्वास से ही प्रेरित हो सकती है। उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि मुझसे इस तरह बात की जा रही है; उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया कि मैंने उन्हें मेरे लिए थोड़ी सी कोशिश करने का यह अवसर दिया। मैंने उन्हें आगे समझाया कि मेरी इच्छा मदद पाने की नहीं, बल्कि खुद की मदद करने के मार्ग पर चलने की थी; मुझे उनसे किसी प्रयास की आवश्यकता नहीं थी - वह तो मेरा काम था - बल्कि केवल जानकारी और सिफारिश

की आवश्यकता थी। थोड़ी देर बाद मैं जाने के लिए उठा। विदाई के समय उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया - विदेशियों के लिए यह एक ऐसा कार्य है जिसका महत्व अंग्रेजों की तुलना में कहीं अधिक होता है। जब मैंने उनके साथ मुस्कुराकर अभिवादन किया, तो मुझे लगा कि उनके सच्चे चेहरे की दयालुता मेरी अपनी बुद्धिमत्ता से कहीं अधिक थी। मेरे जैसे लोगों को विक्टर वैंडेनहुटेन जैसे ईमानदार हृदय वाले लोगों के संपर्क में आने से सुकून मिलता है।

अगले दो सप्ताह उतार-चढ़ाव से भरे रहे; इस दौरान मेरा जीवन शरद ऋतु की उन रातों के आकाश जैसा था, जो उल्कापिंडों और टूटते तारों से जगमगाती हैं। आशाएँ और भय, अपेक्षाएँ और निराशाएँ आसमान से क्षितिज तक हल्की फुहारों की तरह बरसती रहीं; लेकिन सब क्षणभंगुर थीं, और हर क्षण के लुप्त होते ही अंधेरा छा जाता था। एम. वैंडेनहुटेन ने मेरी पूरी मदद की; उन्होंने मुझे कई जगहों के बारे में बताया और खुद भी उन्हें मेरे लिए सुरक्षित करने का प्रयास किया; लेकिन लंबे समय तक मेरी विनती और सिफ़ारिशें व्यर्थ रहीं—या तो जब मैं अंदर जाने वाला होता, तो दरवाज़ा मेरे सामने बंद हो जाता, या कोई दूसरा व्यक्ति मुझसे पहले अंदर जाकर मेरी आगे की यात्रा को व्यर्थ कर देता। मैं उत्तेजित और उत्साहित था, लेकिन कोई भी निराशा मुझे रोक नहीं पाई; लगातार हार ने मेरी इच्छाशक्ति को और मज़बूत किया। मैंने संकोच को भुला दिया, संकोच को दूर किया, अहंकार को त्याग दिया: मैंने पूछा, मैंने दृढ़ता दिखाई, मैंने विरोध किया, मैंने गुहार लगाई। ऐसा ही होता है कि भाग्य के उस सुरक्षित घेरे में प्रवेश करने के लिए रास्ते खुल जाते हैं जहाँ भाग्य कृपा बरसाता रहता है। मेरी लगन ने मुझे प्रसिद्धि दिलाई; मेरी निरंतर कोशिशों ने मुझे चर्चा में ला दिया। मेरे बारे में पूछताछ होने लगी; मेरे पूर्व छात्रों के माता-पिता, अपने बच्चों की रिपोर्ट इकट्ठा करते हुए, मुझे प्रतिभाशाली के रूप में सुनते थे, और वे भी यही बात दोहराते थे: यह शब्द, जो बेतरतीब ढंग से इधर-उधर गूंजता था, अंततः उन कानों तक पहुंचा जहाँ इसकी व्यापकता के बिना शायद यह कभी नहीं पहुंच पाता; और ठीक उस संकट की घड़ी में जब मैंने अपना अंतिम प्रयास कर लिया था और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं, एक सुबह भाग्य ने मेरी ओर देखा, जब मैं अपने पलंग पर उदास और लगभग हताश होकर बैठी थी, एक पुराने परिचित की तरह सिर हिलाया - हालांकि भगवान जानता है कि मैं उससे पहले कभी नहीं मिली थी - और मेरी गोद में एक पुरस्कार डाल दिया।

अक्टूबर 2018 के दूसरे सप्ताह में, मुझे ब्रुसेल्स के कॉलेज में सभी कक्षाओं के लिए अंग्रेजी प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति मिली, जिसका वेतन तीन हजार फ्रैंक प्रति वर्ष था; और यह निश्चित था कि इस पद से मिलने वाली प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि के बल पर मैं निजी साधनों से इससे भी अधिक कमा सकूँगा। इस सूचना को देने वाले आधिकारिक नोटिस में यह भी उल्लेख किया गया था कि यह एम. वैनडेनहुटेन, जो एक व्यापारी थे, की प्रबल अनुशंसा थी जिसने मेरे पक्ष में निर्णय को मोड़ दिया।

जैसे ही मैंने घोषणा पढ़ी, मैं तुरंत एम. वैंडेनहुटेन के दफ्तर पहुँचा, दस्तावेज़ उनके सामने रख दिया, और जब उन्होंने उसे पढ़ लिया, तो मैंने उनके दोनों हाथ पकड़कर अत्यंत उत्साह से उनका धन्यवाद किया। मेरे जोशीले शब्दों और हावभाव ने उनकी शांत डच शैली को अप्रत्याशित रूप से प्रभावित कर दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें खुशी है - मेरी सेवा करके उन्हें प्रसन्नता हुई; लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया था जिसके लिए वे इतनी प्रशंसा के पात्र हों। उन्होंने एक पैसा भी खर्च नहीं किया था - बस कागज के एक पन्ने पर कुछ शब्द लिखे थे।

मैंने फिर से उससे दोहराया—

आपने मुझे बेहद खुश किया है, और ऐसे तरीके से जो मुझे भाता है; मुझे आपके इस दयालु व्यवहार से कोई बोझ महसूस नहीं होता; आपने मुझ पर जो उपकार किया है, उसके कारण मैं आपसे दूर रहने का मन नहीं करता; आज से आपको मुझे अपने घनिष्ठ संबंध में स्वीकार करना होगा, क्योंकि मैं भविष्य में बार-बार आपकी संगति का आनंद लेने के लिए लौटता रहूंगा।

“ऐंसी सोइट-इल,” यह उत्तर मिला, साथ ही एक सौम्य संतुष्टि भरी मुस्कान भी। मैं उस खुशी को अपने दिल में लिए हुए वहां से चला गया।

अध्याय XXIII

दो बज रहे थे जब मैं अपने कमरे में लौटा; पास के एक होटल से लाया गया मेरा खाना मेज पर रखा था और उसमें से धुआँ निकल रहा था; मैं खाने के लिए बैठ गया —अगर उबले हुए गोमांस और हरी बीन्स की जगह प्लेट में मिट्टी के बर्तन और टूटे हुए कांच के टुकड़े भी होते, तो भी मेरी भूख इससे ज़्यादा नहीं टूटती: भूख बिल्कुल गायब हो चुकी थी। बिना स्वाद के खाना देखकर मैं बेचैन हो गया और उसे अलमारी में रख दिया, फिर सोचने लगा, "शाम तक मैं क्या करूँ?" क्योंकि शाम छह बजे से पहले रू नोट्रे डेम ऑक्स नीजेस जाना बेकार था; वहाँ की रहने वाली (मेरे लिए वहाँ सिर्फ़ एक ही थी) कहीं और काम में व्यस्त थी। मैं ब्रुसेल्स की गलियों में घूमा और दो बजे से छह बजे तक अपने कमरे में घूमता रहा; इस पूरे समय में मैं एक बार भी नहीं बैठा। मैं अपने कमरे में ही था जब छह बज गए; मैंने अभी-अभी अपना चेहरा और बुखार से तपते हाथ धोए थे और शीशे के पास खड़ा था; मेरे गाल लाल हो गए थे, मेरी आँखें आग की तरह भड़क रही थीं, फिर भी मेरे चेहरे पर शांति और स्थिरता झलक रही थी। सीढ़ियों से तेज़ी से उतरकर बाहर कदम रखते ही मुझे बादलों में ढलती शाम देखकर खुशी हुई; ऐसी छाया मेरे लिए किसी राहत देने वाले आवरण जैसी थी, और उत्तर-पश्चिम से आती हल्की ठंडी हवा मुझे ताज़गी का एहसास करा रही थी। फिर भी मैंने देखा कि दूसरों को ठंड लग रही थी, क्योंकि मेरे पास से गुज़रने वाली औरतें शॉल ओढ़े हुए थीं, और पुरुषों ने अपने कोट के बटन बंद कर रखे थे।

हम कब पूरी तरह से खुश होते हैं? क्या मैं उस समय खुश था? नहीं; एक तीव्र और बढ़ता हुआ डर मेरे मन को सता रहा था, और जब से मुझे खुशखबरी मिली थी, तब से ही ऐसा हो रहा था। फ्रांसिस कैसी थी? उसे देखे हुए दस सप्ताह हो गए थे, उससे या उसके बारे में सुने हुए छह सप्ताह। मैंने उसके पत्र का उत्तर एक संक्षिप्त, मैत्रीपूर्ण लेकिन शांत नोट से दिया था, जिसमें आगे के पत्राचार या मुलाकातों का कोई जिक्र नहीं था। उस समय मेरी नाव भाग्य की लहर के सबसे ऊपरी मोड़ पर टिकी हुई थी, और मुझे नहीं पता था कि लहर का आगे बढ़ना उसे किस चट्टान पर फेंक देगा; मैं उस समय उसके भाग्य को अपने भाग्य से जरा भी नहीं जोड़ना चाहता था; अगर चट्टान से टकराकर टूट जाना या रेत के टीले पर फंस जाना तय था, तो मैंने ठान लिया था कि कोई और जहाज मेरे इस दुर्भाग्य का शिकार न हो: लेकिन छह

सप्ताह बहुत लंबा समय था; और क्या ऐसा हो सकता है कि वह अभी भी ठीक हो? क्या सभी ऋषि इस बात पर सहमत नहीं हैं कि इस धरती पर सुख की कोई सीमा नहीं होती? क्या मैं यह सोचने की हिम्मत कर सकता हूँ कि अब मुझे संतोष के उस परिपूर्ण प्याले से बस आधी गली ही अलग कर रही है—वह घूँट जो स्वर्ग में बहने वाले जल से निकाला गया है?

मैं दरवाजे पर था; मैंने शांत घर में प्रवेश किया; मैं सीढ़ियों पर चढ़ा; लॉबी खाली और शांत थी, सभी दरवाजे बंद थे; मैंने साफ-सुथरी हरी चटाई को ढूंढा; वह अपनी जगह पर ठीक से पड़ी थी।

“आशा की किरण!” मैंने कहा और आगे बढ़ी। “लेकिन मैं थोड़ा शांत रहूंगी; मैं जल्दबाजी नहीं करूंगी और सीधे कोई दृश्य नहीं बनाऊंगी।” अपने उत्सुक कदमों को रोकते हुए, मैं चटाई पर रुक गई।

“कितनी खामोशी है! क्या वो अंदर है? क्या कोई अंदर है?” मैंने खुद से पूछा। हल्की सी झनझनाहट सुनाई दी, जैसे अंगीठी से राख गिर रही हो; एक हलचल हुई—जैसे आग को धीरे से हिलाया गया हो; और जीवन की हल्की सरसराहट जारी रही, कमरे में एक कदम आगे-पीछे, आगे-पीछे चलता रहा। मैं मंत्रमुग्ध होकर खड़ा रहा, और भी ज्यादा मंत्रमुग्ध हो गया जब एक आवाज ने मेरे ध्यान को आकर्षित किया—इतनी धीमी, इतनी आत्म-संबोधित, कि मुझे कभी भी बोलने वाले के अलावा कुछ और नहीं लगा; रेगिस्तान में या किसी वीरान घर के हॉल में एकांत शायद ऐसा ही बोलता है।

“‘और ऐसा सिर्फ एक बार ही होगा, मेरे बेटे,’ उसने कहा।”

क्या उस अंधेरी गुफा में कदम रखा गया था?
अत्याचार के सबसे कठिन दिनों में,
जब ईश्वर ने इस भूमि को त्याग दिया था।
बेवली के दलदल से, वध के लाल रंग के साथ,
एक राहगीर इधर आया;
और वह अक्सर रुककर अपना सिर घुमाता था।
जैसे-जैसे रात की हवाएँ रुक-रुक कर चलती रहीं।
चेविओट-किनारे के चारों ओर रौंदने के लिए
सैनिकों की उत्सुक आवाजें सुनाई दीं;

और व्हाइटलॉ रिज से अक्सर
मौत की गोली की एक चमक कौंधी, "आदि।

स्कॉटिश लोकगीत का कुछ अंश सुनाया गया, फिर उसे रोक दिया गया; कुछ देर का विराम हुआ; फिर फ्रेंच में एक और धुन सुनाई गई, जिसका अनुवाद इस प्रकार है: —

मैंने शुरू में पूरा ध्यान दिया;
फिर लोगों की दिलचस्पी बढ़ने लगी;
जैसे-जैसे सुधार बढ़ता गया, ब्याज दर बढ़ती गई।
कृतज्ञता में सफलता मिली।

जल्द ही आज्ञापालन कोई मुश्किल काम नहीं रह गया।
और प्रसव पीड़ा रहित था;
अगर थकी हुई हो तो बस एक शब्द, एक नज़र ही काफी है।
इससे मुझे फिर से ताकत मिलेगी।

अध्ययनशील समूह के अन्य सदस्यों से,
कुछ ही समय बाद उसने मुझे चुन लिया;
लेकिन केवल अधिक करीबी मांग के माध्यम से,
और अधिक गंभीर तत्परता।

उसने दूसरे से वह काम ले लिया,
उसने मुझे अस्वीकार कर दिया;
वह मामूली चूक को भी बर्दाश्त नहीं करता था।
और उसमें कोई दोष न हो।

यदि मेरे साथी भटक गए,
उन्होंने शायद ही कभी उनके भटकने की निंदा की;
अगर मैं रास्ते में जरा भी लड़खड़ा गया,
उसका क्रोध भयंकर रूप से भड़क उठा।

पास के कमरे में कुछ हलचल हुई; चुपके से छुपकर बातें सुनना ठीक नहीं था; मैंने जल्दी से दस्तक दी और उतनी ही जल्दी अंदर चला गया। फ्रांसिस मेरे ठीक सामने थी; वह अपने कमरे में धीरे-धीरे चल रही थी, और मेरे आने से उसके कदम रुक गए: उसके साथ केवल गोधूलि बेला थी, और शांत, लालिमा लिए हुए अग्निप्रकाश; इन बहनों, उजाले और अंधेरे, से वह मेरे आने से पहले कविता में बात कर रही थी। सर वाल्टर स्कॉट की आवाज़, उसके लिए एक अनजान, दूर की आवाज़, पहाड़ों की गूंज, पहले छंदों में सुनाई दी थी; दूसरा, मुझे लगा, शैली और विषयवस्तु से, उसके अपने दिल की भाषा थी। उसका चेहरा गंभीर था, भाव एकाग्र थे; उसने मुझे बिना मुस्कुराए देखा - एक ऐसी नज़र जो अभी-अभी चिंतन से लौटी थी, सपनों से जागी थी: उसके साधारण वस्त्र सुव्यवस्थित थे, उसके काले बाल संवारे हुए थे, उसका शांत कमरा व्यवस्थित था; लेकिन - उसकी विचारशील नज़र, उसकी गंभीर आत्मनिर्भरता, ध्यान और शायद प्रेरणा की ओर झुकाव के साथ - प्रेम से उसका क्या लेना-देना था? “कुछ नहीं,” उसके उदास, फिर भी सौम्य चेहरे का उत्तर था; मानो वह कह रही हो, “मुझे धैर्य विकसित करना होगा और कविता का सहारा लेना होगा; एक मेरा सहारा होगा और दूसरा जीवन भर मेरा सांत्वना। मानवीय भावनाएँ न तो मुझमें पनपती हैं और न ही मेरे लिए कोई जुनून पैदा होता है।” अन्य महिलाओं के भी ऐसे ही विचार होते हैं। अगर फ्रांसिस उतनी ही अकेली होती जितना वह समझती थी, तो भी वह अपनी जैसी हजारों महिलाओं से बदतर स्थिति में नहीं होती। उन कठोर और औपचारिक कुंवारी महिलाओं को देखिए - वह जाति जिसे सब तुच्छ समझते हैं; उन्होंने जवानी से ही त्याग और सहनशीलता के सिद्धांतों पर अपना जीवन व्यतीत किया है। उनमें से कई इस शुष्क आहार से कठोर हो जाती हैं; आत्म-नियंत्रण इतना निरंतर उनका विचार और लक्ष्य होता है कि अंततः यह उनके स्वभाव के कोमल और सुखद गुणों को आत्मसात कर लेता है; और वे केवल कठोरता के आदर्श बनकर मर जाती हैं, जो थोड़े से कागज और बहुत सी हड्डियों से बने होते हैं। शरीर रचना विज्ञानियों का कहना है कि मुरझाई हुई बूढ़ी कुंवारी महिला के शरीर में भी उतना ही दिल होता है जितना इस देश की किसी भी प्रिय पत्नी या स्वाभिमानी माँ के दिल में होता है। क्या यह सच हो सकता है? मुझे सच में नहीं पता; लेकिन मुझे इस पर संदेह होता है।

मैं आगे बढ़ा, फ्रांसिस को "शुभ संध्या" कहा और अपनी कुर्सी पर बैठ गया। मैंने जो कुर्सी चुनी थी, वह शायद वही थी जिसे उन्होंने अभी-अभी छोड़ा था; वह एक

छोटी सी मेज के पास थी जहाँ उनकी खुली डेस्क और कागज़ रखे थे। मुझे नहीं पता कि उन्होंने मुझे पहली बार में पूरी तरह पहचाना था या नहीं, लेकिन अब उन्होंने पहचान लिया था; और धीमी लेकिन शांत आवाज़ में उन्होंने मेरे अभिवादन का जवाब दिया। मैंने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई; उन्होंने भी मुझसे संकेत लिया और कोई आश्चर्य नहीं जताया। हम वैसे ही मिले जैसे हम हमेशा मिलते थे, गुरु और शिष्य की तरह—बस इतना ही। मैं कागज़ों को संभालने लगा; फ्रांसिस, जो चौकस और मददगार थीं, एक अंदर के कमरे में गईं, एक मोमबत्ती लाईं, उसे जलाया और मेरे पास रख दिया; फिर उन्होंने जाली पर पर्दा डाला और पहले से ही तेज़ जल रही आग में थोड़ा और ईंधन डालकर, मेज के पास एक दूसरी कुर्सी खींची और मेरे दाहिनी ओर, थोड़ी दूरी पर बैठ गईं। सबसे ऊपर रखा कागज़ किसी गंभीर फ्रांसीसी लेखक की रचना का अंग्रेज़ी अनुवाद था, लेकिन उसके नीचे छंदों वाला एक पृष्ठ था; मैंने उस पर हाथ रखा। फ्रैंसिस आधा उठी, पकड़े गए सामान को वापस लेने के लिए हाथ बढ़ाया और बोली, यह कुछ नहीं था - महज़ कविताओं की एक नकल थी। मैंने उस निर्णय का विरोध किया जिसका वह ज़्यादा देर तक विरोध नहीं करती थी; लेकिन इस बार उसकी उंगलियाँ कागज़ पर जम गई थीं। मुझे चुपचाप उन्हें छुड़ाना पड़ा; मेरे स्पर्श से ही उनकी पकड़ ढीली पड़ गई; उसका हाथ पीछे हट गया; मेरा भी मन किया कि उसका पीछा करूँ, लेकिन फिलहाल मैंने उस आवेग को रोक लिया। कागज़ के पहले पन्ने पर वे पंक्तियाँ लिखी थीं जो मैंने सुनी थीं; आगे की रचना लेखक के अपने अनुभव से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी, बल्कि उस अनुभव के कुछ अंशों से बनी थी। इस प्रकार अहंकार से बचते हुए कल्पना को उड़ान मिली और हृदय को तृप्ति मिली। मैं पहले की तरह ही अनुवाद कर रहा हूँ, और मेरा अनुवाद लगभग शाब्दिक है; यह इस प्रकार जारी रहा: —

जब बीमारी ने कुछ समय तक मेरा साथ नहीं छोड़ा,
वह अब भी अधीर प्रतीत हो रहा था।
क्योंकि उसके शिष्य की शक्ति कम हो रही थी
मैं उसकी इच्छा का पालन नहीं कर सका।

एक दिन जब मुझे बिस्तर पर बुलाया गया
जहां दर्द और मैंने संघर्ष किया,

मैंने उसे सुना, जब उसने अपना सिर झुकाया,
कहो, “हे भगवान, उसे अवश्य ही पुनर्जीवित होना चाहिए!”

मैंने उनके हाथ को हल्के स्पर्श के साथ महसूस किया।
एक पल मेरे ऊपर आ पड़ा,
और मैं अपनी चेतना पर निशान लगाना चाहता था
किसी प्रतिक्रियात्मक संकेत द्वारा।

लेकिन तब बोलने या हिलने-डुलने में असमर्थ।
मुझे भीतर से बस यही महसूस हुआ,
आशा की भावना, प्रेम की शक्ति,
उनका उपचार कार्य शुरू होता है।

और जैसे ही वह कमरे से बाहर निकला,
मेरा हृदय उसके कदमों का अनुसरण करता रहा;
मैं नए प्रयासों के माध्यम से यह साबित करने के लिए उत्सुक था;
मेरी हार्दिक कृतज्ञता।

जब मैंने दोबारा अपनी जगह ग्रहण की,
कक्षा में लंबे समय से रिक्त स्थान था,
उसके चेहरे पर कभी-कभार दिखने वाली मुस्कान
एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे सब कुछ बीत गया हो।

पाठ समाप्त; संकेत दे दिया गया
आनंदमय मुक्ति और खेल का,
वह गुजरते समय एक पल के लिए रुक गया।
एक विनम्र शब्द कहना चाहता हूँ।

जेन, कल तक तुम आज़ाद हो।

थकाऊ कार्य और नियम से;
आज दोपहर मुझे नहीं देखना चाहिए
स्कूल में वो पीला-सा चेहरा।

बगीचे की छाँव में बैठने की जगह ढूँढ़ो,
खेल के मैदान के शोरगुल से दूर;
सूरज की गर्मी है, हवा मीठी है:
जब तक मैं तुम्हें अंदर न बुलाऊं, तब तक यहीं रुको।

एक लंबी और सुखद दोपहर
मैं उन हरे-भरे पेड़ों के झुरमुटों से होकर गुजरा;
सब शांत, निर्मल और एकाकी।
पक्षियों, मधुमक्खियों और फूलों के साथ।

फिर भी, जब मैंने अपने स्वामी की आवाज सुनी
खिड़की से पुकारो, "जेन!"
यह सुनकर मैं प्रसन्न होकर अंदर प्रवेश कर गया।
फिर से चहल-पहल छा गई।

वह हॉल में इधर-उधर टहल रहा था;
जब मैं वहां से गुजरा तो वह रुक गया;
उसके माथे की सख्त शिकन थोड़ी कम हो गई:
उसने अपनी धंसी हुई आंख ऊपर उठाई।

"इतना पीला नहीं है," उसने धीमी आवाज़ में कहा।
"अब जेन, थोड़ी देर आराम करो।"
और जब मैंने मुस्कुराया, तो उसकी चिकनी भौंहें
उसने भी उतनी ही प्रसन्नता भरी मुस्कान के साथ जवाब दिया।

मेरी सेहत पूरी तरह ठीक हो गई, उसने मुझे ले लिया।
उनका चेहरा फिर से गंभीर हो गया;
और पहले की तरह, वह इसे बर्दाश्त नहीं करेगा।
जेन की तरफ से जरा सी भी गलती।

सबसे लंबा कार्य, सबसे कठिन विषय
पहले की तरह ही मुझे भी इसका खामियाजा भुगतना पड़ा।
और फिर भी मैंने अपना नाम दर्ज कराने के लिए कड़ी मेहनत की।
हर अध्ययन में सबसे पहले।

वह अब भी प्रशंसा करने में कंजूसी करता था और उसे सीमित मात्रा में ही देता था।
लेकिन मैंने पढ़ना सीख लिया था।
उसके चेहरे का गुप्त अर्थ,
और यही मेरा सबसे अच्छा प्रतिफल था।

यहां तक कि जब उसका उग्र स्वभाव हावी हो जाता था तब भी
उन स्वरों में जिनसे शोक की भावना जागृत हुई,
जागते ही मेरा दुख कम हो गया।
किसी नरम शब्द से।

और जब उसने कोई अनमोल किताब उधार दी,
या फिर कोई सुगंधित फूल दिया।
मैं ईर्ष्या भरी नजरों से नहीं डरा।
आनंद की शक्ति द्वारा समर्थित।

अंततः हमारे विद्यालय के सैनिकों ने अपनी जगह ले ली।
मैंने कड़ी प्रतिस्पर्धा के बाद यह प्रतियोगिता जीती;
पुरस्कार के रूप में लॉरेल की माला दी गई थी, जिसे बांधा गया था।

मेरे धड़कते माथे पर।

मैं अपने स्वामी के घुटनों के पास झुक गया,
मिलने के लिए प्रस्तावित मुकुट;
इसकी हरी पत्तियाँ मेरी कनपटी से होकर गुज़रती थीं
एक ऐसा रोमांच जो जितना रोमांचक है उतना ही आनंददायक भी।

महत्वाकांक्षा की प्रबल धड़कन ने प्रहार किया
मेरी हर रग में;
उसी क्षण, खून बहना शुरू हो गया
एक गुप्त, आंतरिक घाव।

मेरे लिए विजय का क्षण था
दुःख की वह घड़ी;
एक दिन बाद मुझे समुद्र पार करना होगा।
फिर कभी इसे पार नहीं करना।

एक घंटे बाद, मेरे मालिक के कमरे में
मैं उसके साथ अकेला बैठा था।
और उसे बताया कि यह कितना निराशाजनक अंधकार है।
बिछड़ने की खुशी पर दुख का साया छा गया था।

उन्होंने ज्यादा कुछ नहीं कहा; समय बहुत कम था।
जहाज जल्द ही रवाना होने वाला था।
और जब मैं घोर शोक में सिसक रही थी,
लेकिन मेरे मालिक का चेहरा पीला पड़ गया था।

उन्होंने जल्दी से बुलाया; उसने मुझे जाने को कहा।
फिर मुझे वापस छीन लिया;

उसने मुझे कसकर पकड़ लिया और धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदाया,
"वे हमें अलग क्यों करेंगे, जेन?"

“क्या आप मेरी देखरेख में खुश नहीं थे?”
क्या मैंने वफादारी साबित नहीं की?
क्या दूसरे मेरे प्यारे भालू के लिए
क्या वह प्रेम भी उतना ही सच्चा और गहरा था?

हे भगवान, मेरे पालक बच्चे की रक्षा करना!
हे उसके कोमल सिर की रक्षा करो!
जब मन उमंग से भरा हो और तूफान उग्र हो
उसके चारों ओर सुरक्षा घेरा फैला हुआ था!

“वे फिर से पुकारते हैं; तब मेरी छाती छोड़ देते हैं;
जेन, अपनी सच्ची शरण छोड़ दो;
लेकिन जब धोखा दिया जाए, खदेड़ा जाए, उत्पीड़ित किया जाए,
फिर से मेरे पास घर लौट आओ!

मैं पढ़ता रहा—फिर स्वप्निल भाव से पेंसिल से हाशिये पर निशान बनाता रहा; साथ ही साथ दूसरी बातों के बारे में सोचता रहा; सोचता रहा कि “जेन” अब मेरे पास है; कोई बच्ची नहीं, बल्कि उन्नीस साल की एक लड़की; और वह मेरी हो सकती है, ऐसा मेरा दिल मानता था; गरीबी का अभिशाप मुझसे हट गया था; ईर्ष्या और जलन बहुत दूर थीं, और हमारी इस शांत मुलाकात से अनभिज्ञ थीं; गुरु के व्यवहार की कठोरता पिघल सकती थी; मैं महसूस कर रहा था कि पिघलना तेजी से आ रहा है, चाहे मैं चाहूँ या न चाहूँ; अब आँखों को कठोर दृष्टि का अभ्यास करने की, माथे को तनाव से समेटने की कोई आवश्यकता नहीं थी: अब उसे भीतरी चमक के बाहरी प्रकटीकरण को सहने की अनुमति थी—खोजने, माँगने और उसके अनुरूप उत्साह उत्पन्न करने की। इस प्रकार चिंतन करते हुए, मैंने सोचा कि हर्मोन पर्वत की घास सूर्यास्त की ताज़ी ओस को उतनी कृतज्ञता से कभी नहीं पीती जितनी मेरी भावनाएँ इस क्षण के आनंद को पी रही हैं।

फ्रैंसेस बेचैनी से उठी; वह मेरे सामने से गुज़री और आग को हिलाने लगी, जिसे हिलाने की ज़रूरत नहीं थी; उसने मेंटलपीस पर रखे छोटे-छोटे सजावटी सामानों को उठाया और नीचे रख दिया; उसकी पोशाक मेरे से एक गज की दूरी पर लहरा रही थी; दुबली-पतली, सीधी और सुरुचिपूर्ण, वह चूल्हे पर सीधी खड़ी थी।

कुछ आवेग ऐसे होते हैं जिन्हें हम नियंत्रित कर सकते हैं; लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जो हमें नियंत्रित करते हैं, क्योंकि वे बाघ की छलांग की तरह हम तक पहुँच जाते हैं और हमें पता चलने से पहले ही हमारे स्वामी बन जाते हैं। हालाँकि, शायद ऐसे आवेग पूरी तरह से बुरे नहीं होते; शायद तर्क, एक ऐसी प्रक्रिया द्वारा जो शांत और संक्षिप्त होती है, एक ऐसी प्रक्रिया जो महसूस होने से पहले ही समाप्त हो जाती है, उस कर्म की सार्थकता का पता लगा लेती है जिस पर सहज प्रवृत्ति विचार करती है, और उसे होते हुए निष्क्रिय रहने में उचित समझती है। मैं जानता हूँ कि मैंने तर्क नहीं किया, मैंने कोई योजना या इरादा नहीं बनाया, फिर भी, एक पल पहले मैं मेज के पास कुर्सी पर अकेला बैठा था, अगले ही पल मैंने फ्रांसिस को अपनी गोद में बिठा लिया, उसे वहाँ दृढ़ता और दृढ़ता से रखा और अत्यंत दृढ़ता से थामे रखा।

"महाशय!" फ्रांसिस ने पुकारा और एकदम शांत हो गई: उसके होठों से एक भी शब्द नहीं निकला; पहले कुछ क्षणों में वह बेहद घबराई हुई लग रही थी; लेकिन जल्द ही उसका आश्चर्य शांत हो गया; न तो डर हावी हुआ और न ही क्रोध: आखिरकार, वह उस व्यक्ति के और भी करीब आ गई थी जिसका वह हमेशा सम्मान करती थी और जिस पर भरोसा करती थी; शर्मिंदगी उसे विरोध करने के लिए प्रेरित कर सकती थी, लेकिन आत्मसम्मान ने प्रतिरोध को वहीं रोक दिया जहाँ प्रतिरोध व्यर्थ था।

"फ्रांसिस, तुम मुझे कितना सम्मान देती हो?" मैंने उससे पूछा। कोई जवाब नहीं; स्थिति अभी इतनी नई और चौंकाने वाली थी कि बोलना संभव नहीं था। इस बात को ध्यान में रखते हुए, मैंने कुछ पल के लिए उसकी चुप्पी सहन की, हालांकि मैं उससे चिढ़ रहा था: थोड़ी देर बाद, मैंने वही सवाल दोहराया—शायद शांत स्वर में नहीं; उसने मेरी तरफ देखा; मेरा चेहरा, निस्संदेह, शांत नहीं था, मेरी आँखें भी शांत नहीं थीं।

"बोलिए," मैंने आग्रह किया; और एक बहुत धीमी, जल्दबाजी भरी, फिर भी तीक्ष्ण आवाज ने कहा—

"सर, आप मुझे चोट पहुँचा रहे हैं; कृपया मेरा दाहिना हाथ थोड़ा ढीला कर

दीजिए।”

सच में मुझे एहसास हुआ कि मैं उक्त "मुख्य अधिकार" को कुछ हद तक निर्दयतापूर्वक पकड़े हुए था: मैंने इच्छानुसार किया; और, तीसरी बार, अधिक विनम्रता से पूछा —

"फ्रांसिस, तुम मेरे लिए कितना सम्मान रखती हो?"

“मेरे स्वामी, मेरे पास बहुत सारे हैं,” यह सत्यपूर्ण उत्तर था।

“फ्रांसिस, क्या तुममें इतनी क्षमता है कि तुम मुझे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर सको? — मुझे अपने पति के रूप में स्वीकार कर सको?”

मैंने हृदय की बेचैनी महसूस की, मैंने "प्रेम के बैंगनी प्रकाश" को गालों, कनपटी और गर्दन पर अपनी चमकती हुई परछाई डालते देखा; मेरी इच्छा हुई कि मैं आँखों से देख सकूँ, लेकिन पलकों और आँखों की सुरक्षा ने ऐसा करने से रोक दिया।

अंत में कोमल आवाज ने कहा, "महोदय, महोदय जानना चाहते हैं कि क्या मैं सहमत हूँ—क्या—अंततः, क्या मैं उनसे शादी करना चाहती हूँ?"

"बिल्कुल।"

क्या वह सज्जन एक अच्छे स्वामी होने के साथ-साथ एक अच्छे पति भी साबित होंगे?

मैं कोशिश करूंगा, फ्रांसिस।

एक विराम; फिर आवाज में एक नया, फिर भी संयमित स्वर परिवर्तन — एक ऐसा स्वर परिवर्तन जिसने मुझे उत्तेजित करने के साथ-साथ प्रसन्न भी किया — और साथ ही स्वर के साथ पूर्ण सामंजस्य में एक "आखिरी और शर्मीली मुस्कान" भी: —

"तो, साहब हमेशा थोड़े जिद्दी, मांग करने वाले और मनमौजी रहेंगे?"

"क्या मैं ऐसा रहा हूँ, फ्रांसिस?"

"हां, बिल्कुल; आप यह जानते ही हैं।"

क्या मैं इसके अलावा कुछ और नहीं था?

"हां, तुम मेरे सबसे अच्छे दोस्त थे।"

"और, फ्रांसिस, तुम मेरे लिए क्या हो?"

“आपकी समर्पित छात्रा, जो आपको पूरे दिल से प्यार करती है।”

“क्या मेरी छात्रा मेरे साथ अपना जीवन व्यतीत करने के लिए सहमत होगी? अब अंग्रेजी में बात करो, फ्रांसिस।”

कुछ क्षणों के चिंतन के बाद, उत्तर धीरे-धीरे दिया गया, जो इस प्रकार था: —

“आपने मुझे हमेशा खुश रखा है; मुझे आपकी बातें सुनना अच्छा लगता है; मुझे आपको देखना अच्छा लगता है; मुझे आपके पास रहना अच्छा लगता है; मुझे विश्वास है कि आप बहुत अच्छे और श्रेष्ठ हैं; मैं जानती हूँ कि आप लापरवाह और आलसी लोगों के प्रति कठोर हैं, लेकिन आप मेहनती और लगनशील लोगों के प्रति दयालु हैं, भले ही वे चतुर न हों। स्वामी, मुझे आपके साथ हमेशा रहने में खुशी होगी;” और उसने एक तरह से हिलने-डुलने की कोशिश की, मानो वह मुझसे लिपट जाना चाहती हो, लेकिन खुद को रोकते हुए उसने गंभीर स्वर में कहा — “स्वामी, मैं अपना जीवन आपके साथ बिताने के लिए तैयार हूँ।”

"बहुत खूब, फ्रांसिस।"

मैंने उसे अपने हृदय के और करीब खींच लिया; मैंने उसके होठों को चूमा, और इस तरह हमारे बीच एक अटूट बंधन स्थापित कर दिया; उसके बाद हम दोनों चुप रहे, और हमारी चुप्पी क्षणिक थी। इस दौरान फ्रांसिस के मन में क्या विचार थे, यह मैं नहीं जानता, और न ही मैंने उन्हें जानने का प्रयास किया; मैं उसके चेहरे को निहारने में या उसकी शांति भंग करने में व्यस्त नहीं था। जो शांति मुझे महसूस हो रही थी, मैं चाहता था कि वह भी उसे महसूस करे; यह सच है कि मेरी बांह अभी भी उसे थामे हुए थी; लेकिन इतने कोमल संयम के साथ कि जब तक कोई विरोध न करे, वह और कस जाए। मेरी निगाहें लाल आग पर टिकी थीं; मेरा हृदय अपने भीतर की शांति को माप रहा था; वह गूंजता रहा, गूंजता रहा, और पाता रहा कि उसकी गहराई अथाह है।

"महाशय," अंततः मेरी शांत साथी ने कहा, खुशी से इतनी स्थिर जैसे कोई चूहा डर से स्थिर हो जाता है। बोलते समय भी उसने मुश्किल से अपना सिर उठाया।

"तो, फ्रांसिस?" मुझे सहज यौन संबंध पसंद हैं; कामुक विशेषणों से हावी होना मेरा तरीका नहीं है, न ही स्वार्थी रूप से आग्रहपूर्ण स्पर्शों से परेशान करना।

“सर, वह तो समझदार हैं, है ना?”

“हाँ; खासकर जब मुझसे अंग्रेजी में ऐसा करने का अनुरोध किया जाता है: लेकिन आप मुझसे यह क्यों पूछ रहे हैं? आपको मेरे व्यवहार में कुछ भी उग्र या आक्रामक नहीं दिखता; क्या मैं पर्याप्त शांत नहीं हूँ?”

“बात वो नहीं है—” फ्रांसिस ने कहना शुरू किया।

“अंग्रेजी!” मैंने उसे याद दिलाया।

"जी महोदय, मैं बस इतना कहना चाहता था कि मैं निश्चित रूप से शिक्षण कार्य जारी रखना चाहूंगा। मुझे लगता है कि आप अभी भी पढ़ाते रहेंगे, महोदय?"

"ओह, हाँ! यही एकमात्र सहारा है जिस पर मैं निर्भर रह सकती हूँ।"

"अच्छा! मेरा मतलब है, बढ़िया। इस तरह हम दोनों का पेशा एक ही होगा। मुझे यह पसंद है; और तरक्की करने के लिए मेरे प्रयास भी उतने ही बेरोक-टोक होंगे जितने आपके — हैं ना, महोदय?"

मैंने कहा, "तुम मुझसे स्वतंत्र होने की योजना बना रहे हो।"

"जी हां, महोदय; मुझे आपके लिए किसी भी तरह से बोझ नहीं बनना चाहिए - किसी भी तरह से नहीं।"

"लेकिन, फ्रांसिस, मैंने अभी तक तुम्हें अपने भविष्य के बारे में नहीं बताया है। मैंने एम. पेलेट की नौकरी छोड़ दी है; और लगभग एक महीने की खोज के बाद, मुझे एक और जगह मिल गई है, जहाँ सालाना तीन हज़ार फ्रैंक का वेतन है, जिसे मैं थोड़ी और मेहनत करके आसानी से दोगुना कर सकता हूँ। इसलिए तुम देख सकती हो कि तुम्हारे लिए बाहर जाकर ट्यूशन देना व्यर्थ होगा; छह हज़ार फ्रैंक में हम दोनों आराम से रह सकते हैं, और अच्छी तरह से रह सकते हैं।"

फ्रांसिस विचारमग्न प्रतीत हुई। मनुष्य की शक्ति में कुछ प्रशंसा का भाव है, उसके गौरवशाली अभिमान के अनुरूप है, यह विचार कि वह जिसे प्रेम करता है, उसका पालन-पोषण करे—उसे वैसे ही भोजन और वस्त्र प्रदान करे, जैसे ईश्वर खेतों के लिली के फूलों का करता है। इसलिए, उसका निर्णय जानने के लिए, मैंने आगे कहा: —

"फ्रांसिस, अब तक तुम्हारा जीवन काफी कष्टदायक और श्रमसाध्य रहा है; तुम्हें पूर्ण विश्राम की आवश्यकता है; तुम्हारे बारह सौ फ्रैंक हमारी आय में कोई खास वृद्धि नहीं करेंगे, और इसे कमाने के लिए तुम्हें कितना सुख-सुविधाओं का त्याग करना पड़ेगा! अपने परिश्रम को त्याग दो: तुम थक चुकी होगी, और मुझे तुम्हें विश्राम देने का सौभाग्य प्राप्त करने दो।"

मुझे यकीन नहीं है कि फ्रांसिस ने मेरी बातों पर उचित ध्यान दिया था या नहीं; हमेशा की तरह सम्मानपूर्वक और तत्परता से जवाब देने के बजाय, उसने केवल आह भरी और कहा, —

"आप कितने अमीर हैं, महोदय!" और फिर वह मेरी बाहों में बेचैनी से हिलने

लगी। “तीन हज़ार फ़्रैंक!” उसने धीरे से कहा, “जबकि मुझे तो केवल बारह सौ मिलते हैं!” वह और तेज़ी से बोली। “लेकिन फिलहाल तो यही ठीक है; और महोदय, क्या आप मेरे पद छोड़ने के बारे में कुछ कह रहे थे? अरे नहीं! मैं इसे मजबूती से थामे रहूंगी;” और उसकी छोटी उंगलियां मेरी उंगलियों पर और कसकर पकड़ गईं।

“ज़रा सोचिए, अगर मैं आपसे शादी करके आपके भरोसे रहूँ, महोदय! मैं ऐसा नहीं कर सकती; और मेरे दिन कितने नीरस हो जाएँगे! आप सुबह से शाम तक तंग, शोरगुल भरे स्कूल-कक्षों में पढ़ाने में व्यस्त रहेंगे, और मैं घर पर अकेली और बेरोज़गार पड़ी रहूँगी; मैं उदास और चिड़चिड़ी हो जाऊँगी, और आप भी जल्द ही मुझसे ऊब जाएँगे।”

"फ्रांसिस, तुम पढ़ और अध्ययन कर सकती हो - ये दो चीजें तुम्हें बहुत पसंद हैं।"

“महाशय, मैं ऐसा नहीं कर सकती; मुझे चिंतनशील जीवन पसंद है, लेकिन मुझे सक्रिय जीवन उससे भी अधिक पसंद है; मुझे किसी न किसी रूप में कार्य करना होगा, और आपके साथ मिलकर कार्य करना होगा। मैंने गौर किया है, महाशय, कि जो लोग केवल मनोरंजन के लिए एक-दूसरे की संगति में रहते हैं, वे वास्तव में एक-दूसरे को उतना पसंद नहीं करते या एक-दूसरे का उतना सम्मान नहीं करते, जितना कि वे लोग करते हैं जो साथ काम करते हैं, और शायद साथ में कष्ट भी सहते हैं।”

अंत में मैंने कहा, “तुम ईश्वर का सत्य कह रहे हो, और तुम्हारी यही इच्छा पूरी होगी, क्योंकि यही सबसे अच्छी इच्छा है। अब, तुम्हारी इस सहज सहमति के बदले में, मुझे स्वेच्छा से एक चुंबन दो।”

चुंबन की कला में नौसिखिया होने के कारण स्वाभाविक रूप से थोड़ी झिझक के बाद, उसने अपने होंठों को बहुत ही शर्मीले और कोमल स्पर्श से मेरे माथे से छुआ; मैंने उस छोटे से उपहार को एक ऋण के रूप में लिया और उसे तुरंत और उदारतापूर्वक ब्याज सहित चुका दिया।

मुझे नहीं पता कि जब मैंने पहली बार फ्रांसिस को देखा था, तब से उसमें सचमुच कोई बदलाव आया था या नहीं; लेकिन अब जब मैंने उसे देखा, तो मुझे लगा कि वह मेरे लिए पूरी तरह बदल गई है; उसकी उदास आँखें, पीला गाल, और उदास और भावहीन चेहरा, जो मुझे उसके शुरुआती गुण याद थे, पूरी तरह गायब हो गए थे, और अब मुझे एक ऐसा चेहरा दिखाई दिया जो सुंदरता से सजा था; मुस्कान, गालों में डिंपल और गुलाबी रंगत ने उसके चेहरे की बनावट को निखार दिया था और उसकी

रंगत को और भी चमका दिया था। मुझे यह सोचकर अच्छा लगता था कि उसके प्रति मेरा गहरा लगाव मेरे स्वभाव की किसी विशेष दूरदर्शिता को दर्शाता है; वह सुंदर नहीं थी, अमीर नहीं थी, यहाँ तक कि गुणवान भी नहीं थी, फिर भी वह मेरे जीवन का खजाना थी; तो फिर मैं एक असाधारण विवेकशील व्यक्ति हूँ। आज रात मेरी आँखें खुल गईं और मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ; मुझे शक होने लगा कि शायद मेरी पसंद ही अनोखी थी, न कि शारीरिक आकर्षण पर नैतिक मूल्यों की श्रेष्ठता को पहचानने और समझने की मेरी क्षमता। मेरे लिए फ्रांसिस में शारीरिक आकर्षण था: उसमें कोई कुरूपता नहीं थी जिसे नज़रअंदाज़ किया जा सके; आँखों, दाँतों, रंग-रूप, आकार-प्रकार की कोई भी ऐसी स्पष्ट खामी उसमें नहीं थी, जो बुद्धि के धुरंधरों को भी मोहित कर देती है (क्योंकि स्त्री किसी बदसूरत पुरुष से भी प्रेम कर सकती है, बशर्ते वह प्रतिभाशाली हो); यदि वह "दांतों से रहित, मायोपिक, रग्ग्यूज़ या बॉस्यू" भी होती, तो भी उसके प्रति मेरी भावनाएँ शायद सौम्य होतीं, पर कभी भी भावुक नहीं हो सकती थीं; मुझे बेचारी कुरूप सिल्वी से स्नेह तो था, पर उससे कभी प्रेम नहीं हो सकता था। यह सच है कि फ्रांसिस के मानसिक गुण सबसे पहले मेरी रुचि के थे, और आज भी मेरी पसंद पर उनका ही सबसे अधिक प्रभाव है; लेकिन मुझे उसके व्यक्तित्व की सुंदरता भी भाती थी। मुझे उसकी भूरी आँखों की स्पष्टता, उसकी कोमल त्वचा की सफेदी, उसके सुस्थापित दाँतों की शुद्धता, उसके कोमल शरीर के अनुपात को निहारने से विशुद्ध रूप से भौतिक आनंद प्राप्त होता था; और उस आनंद के बिना मैं नहीं रह सकता था। तब यह प्रतीत हुआ कि मैं भी अपने संयमित और सजग स्वभाव में एक कामुक व्यक्ति था।

अब, पाठक, पिछले दो पन्नों में मैंने आपको फूलों से ताजा शहद दिया है, लेकिन आपको पूरी तरह से इतने स्वादिष्ट भोजन पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए; इसलिए थोड़ा सा कड़वापन चखें - बस एक बूंद, बदलाव के तौर पर।

कुछ देर बाद मैं अपने कमरे में लौटा: खाने-पीने जैसी सांसारिक चिंताओं को कुछ समय के लिए भूलकर मैं खाली पेट सो गया। मैं दिन भर उत्तेजित और सक्रिय रहा था, और सुबह आठ बजे से कुछ भी नहीं खाया था; इसके अलावा, पिछले दो हफ्तों से मुझे न तो शरीर को आराम मिला था और न ही मन को; पिछले कुछ घंटे एक मीठे उन्माद जैसे थे, जो अब शांत नहीं हो रहे थे, और आधी रात के काफी बाद तक, बेचैन आनंद के साथ उस आराम को भंग करते रहे जिसकी मुझे बहुत ज़रूरत थी।

आखिरकार मुझे नींद आ गई, लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं; जब मैं जागा तो अभी भी काफी अंधेरा था, और मेरा जागना वैसा ही था जैसा अय्यूब का था जब एक आत्मा उसके सामने से गुज़री थी, और उसकी तरह ही, "मेरे रोंगटे खड़े हो गए।" मैं इस तुलना को आगे बढ़ा सकता हूँ, क्योंकि सच तो यह है कि यद्यपि मैंने कुछ नहीं देखा, फिर भी "एक बात चुपके से मेरे पास लाई गई, और मेरे कान ने उसका थोड़ा सा हिस्सा सुना; सन्नाटा छा गया, और मैंने एक आवाज़ सुनी," जो कह रही थी - "जीवन के बीच में हम मृत्यु में हैं।"

वह आवाज़, और उसके साथ उठने वाली सिहरन भरी पीड़ा, कई लोगों को अलौकिक लगती; लेकिन मैंने इसे तुरंत प्रतिक्रिया के रूप में पहचान लिया। मनुष्य हमेशा अपनी नश्वरता से जकड़ा रहता है, और यह मेरी नश्वर प्रकृति ही थी जो अब लड़खड़ा रही थी और कराह रही थी; मेरी नसें झटक रही थीं और एक अजीब सी आवाज़ निकाल रही थीं, क्योंकि आत्मा, जो हाल ही में एक लक्ष्य की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी, ने शरीर की तुलनात्मक कमज़ोरी पर अत्यधिक दबाव डाल दिया था। मुझ पर घोर अंधकार छा गया; मुझे लगा जैसे मेरे कमरे में कोई ऐसा व्यक्ति आ गया हो जिसे मैं पहले जानता था, लेकिन जिसे मैं हमेशा के लिए बिछड़ चुका समझता था। मैं अस्थायी रूप से रोग-भ्रम का शिकार हो गया था।

वह बचपन में मेरी परिचित, बल्कि मेरी मेहमान रह चुकी थी; मैंने उसे एक साल तक अपने घर में ठहराया था; उस दौरान वह मेरे साथ एकांत में रही; वह मेरे साथ सोती, मेरे साथ खाना खाती, मेरे साथ सैर पर निकलती, मुझे जंगलों के कोने और पहाड़ियों की घाटियाँ दिखाती जहाँ हम साथ बैठ सकते थे, और जहाँ वह अपना घूंघट मुझ पर डाल देती, और इस तरह आकाश और सूरज, घास और हरे पेड़ को छिपा लेती; मुझे पूरी तरह से अपनी मृत्यु-शीतित छाती से लगा लेती, और हड्डियों जैसी बाहों से मुझे थाम लेती। ऐसे समय में वह मुझे कैसी-कैसी कहानियाँ सुनाती! मेरे कानों में कैसे-कैसे गीत गाती! वह मुझसे अपने देश - कब्र - के बारे में कैसे बातें करती, और बार-बार मुझे वहाँ जल्द ही ले जाने का वादा करती; और मुझे एक काली, उदास नदी के किनारे तक खींचकर, दूसरी ओर, टीलों, स्मारकों और शिलाखंडों से सजे असमान किनारे दिखाती, जो चाँदनी से भी अधिक धुंधली चमक में खड़े थे। "कब्रिस्तान!" वह फीके पड़े भवनों की ओर इशारा करते हुए फुसफुसाती और कहती, "इसमें तुम्हारे लिए एक आलीशान घर तैयार किया गया है।"

लेकिन मेरा बचपन अकेला, माता-पिता विहीन, भाई-बहन के बिना बीता; और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि जैसे ही मैं युवावस्था में पहुँचा, एक जादूगरनी ने मुझे अस्पष्ट मानसिक भटकन में खोया हुआ पाया, अनेक भावनाओं और कुछ लक्ष्यों के साथ, उज्ज्वल आकांक्षाओं और निराशाजनक संभावनाओं के साथ, प्रबल इच्छाओं और कमजोर आशाओं के साथ, दूर से ही अपनी मायावी दीपक मेरी ओर उठाई और मुझे अपने भयानक गुंबदनुमा घर की ओर आकर्षित किया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उस समय उसके जादू में शक्ति थी; लेकिन अब, जब मेरा मार्ग विस्तृत हो रहा था, मेरी संभावनाएं उज्ज्वल हो रही थीं; जब मेरी भावनाओं को विश्राम मिल गया था; जब मेरी इच्छाएं, लंबी उड़ान से थककर, पंख समेटे, फल प्राप्ति की गोद में उतरी थीं, और वहाँ एक कोमल हाथ के स्पर्श के नीचे गर्मजोशी और संतुष्टि से बसी थीं - तो अब मुझे यह भय क्यों सताने लगा?

मैंने उसे ऐसे दूर भगाया जैसे कोई भयानक और डरावनी रखैल को भगाता है जो पति के दिल में उसकी जवान दुल्हन के प्रति कड़वाहट पैदा करने आती है; लेकिन व्यर्थ; उस रात, अगले दिन और उसके बाद के आठ दिनों तक उसका मुझ पर प्रभाव बना रहा। उसके बाद, मेरा मनोबल धीरे-धीरे ठीक होने लगा; मेरी भूख लौट आई, और दो सप्ताह में मैं पूरी तरह स्वस्थ हो गया। मैं हमेशा की तरह अपना काम करता रहा, और मैंने अपने मन की बात किसी को नहीं बताई; लेकिन मुझे खुशी हुई जब वह बुरी आत्मा मुझसे दूर हो गई, और मैं फिर से फ्रांसिस से मिल सका, और उसके पास बैठ सका, अपने अंदर के उस भयानक राक्षस के अत्याचार से मुक्त होकर।

अध्याय XXIV.

नवंबर के एक सुहावने, बर्फीले रविवार को, मैं और फ्रांसिस लंबी सैर पर निकले; हमने बुलेवार्ड्स से होते हुए शहर का चक्कर लगाया; और बाद में, फ्रांसिस थोड़ी थक गई थी, इसलिए हम पेड़ों के नीचे थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बनी उन सीटों में से एक पर बैठ गए, जो थके हुए लोगों के आराम के लिए बनाई गई थीं। फ्रांसिस मुझे स्विट्जरलैंड के बारे में बता रही थी; विषय में उसकी उत्सुकता चरम पर थी; और मैं सोच ही रहा था कि उसकी आँखें उसकी ज़बान की तरह ही शब्दों को बयां कर रही थीं, तभी वह रुकी और बोली—

"महाशय, एक सज्जन हैं जो आपको जानते हैं।"

मैंने ऊपर देखा; तीन फैशनेबल कपड़े पहने हुए आदमी तभी वहाँ से गुज़र रहे थे - अंग्रेज, मैंने उनके हाव-भाव और चाल-ढाल के साथ-साथ उनके चेहरे से भी पहचान लिया; तीनों में सबसे लंबे आदमी को मैंने तुरंत मिस्टर हन्सडेन के रूप में पहचान लिया; वह फ्रांसिस के सम्मान में अपनी टोपी उठा रहे थे; उसके बाद, उन्होंने मेरी तरफ़ मुँह बनाया और आगे बढ़ गए।

"कौन है ये?"

"एक व्यक्ति जिसे मैं इंग्लैंड में जानता था।"

“उसने मेरे सामने सिर क्यों झुकाया? वह मुझे जानता ही नहीं।”

"हां, वह आपको अपने तरीके से जानता है।"

“कैसे हो, महोदय?” (वह अब भी मुझे “महोदय” कहकर बुलाती थी; मैं उसे कोई और अधिक सौहार्दपूर्ण शब्द अपनाने के लिए राजी नहीं कर सका।)

क्या तुमने उसकी आँखों के भाव नहीं पढ़े?

“उसकी आँखों के बारे में? नहीं। उन्होंने क्या कहा?”

“उन्होंने तुमसे कहा, ‘कैसी हो विल्हेल्मिना, क्रिम्सवर्थ?’ मुझसे कहा, ‘तो आखिरकार तुम्हें अपनी हमसफर मिल ही गई; वह रही, तुम्हारे जैसी ही स्त्री!’”

"महाशय, आप उनकी आँखों में वह सब नहीं पढ़ सकते थे; वे इतनी जल्दी चले गए।"

“मैंने यह और भी बहुत कुछ पढ़ा है, फ्रांसिस; मैंने पढ़ा है कि वह शायद आज शाम या जल्द ही किसी अवसर पर मुझसे मिलने आएगा; और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह आपसे परिचय कराने पर जोर देगा; क्या मैं उसे आपके कमरे में ले आऊं?”

"अगर आप चाहें, महोदय - मुझे कोई आपत्ति नहीं है; बल्कि मुझे लगता है कि मैं उन्हें और करीब से देखना पसंद करूंगा; वे बहुत ही अनोखे दिखते हैं।"

जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, श्री हन्सडेन उस शाम आए। उन्होंने सबसे पहले कहा: —

“आपको शेखी बघारने की ज़रूरत नहीं है, प्रोफेसर महोदय; मुझे आपके कॉलेज में नियुक्ति के बारे में सब पता है; ब्राउन ने मुझे बताया है।” फिर उन्होंने इशारा किया कि वे एक-दो दिन पहले ही जर्मनी से लौटे हैं; इसके बाद, उन्होंने अचानक पूछा कि क्या वह मैडम पेलेट-रियूटर थीं जिनके साथ उन्होंने मुझे बुलेवार्ड्स पर देखा था। मैं ज़ोर देकर मना करने ही वाला था, लेकिन फिर मैंने खुद को रोका और सहमति जताते हुए पूछा कि उनके बारे में उनका क्या विचार है?

“जहाँ तक उसकी बात है, मैं उस पर सीधे आऊँगा; लेकिन पहले मुझे तुमसे कुछ कहना है। मुझे लगता है तुम एक बदमाश हो; तुम्हें किसी और की पत्नी के साथ घूमने का कोई हक नहीं है। मुझे लगा था कि तुम इतने समझदार होगे कि इस तरह के बेमेल मामलों में नहीं पड़ोगे।”

लेकिन वो महिला?

“ज़ाहिर है वो तुम्हारे लिए बहुत अच्छी है; वो तुम्हारे जैसी है, पर तुमसे कुछ बेहतर भी है—खूबसूरत तो नहीं, पर जब वो उठी (क्योंकि मैंने पीछे मुड़कर देखा कि तुम दोनों जा रहे हो) तो मुझे उसका कद-काठी और चाल अच्छी लगी। ये विदेशी लोग शिष्टाचार समझते हैं। पेलेट के साथ उसका क्या चक्कर है? उससे शादी किए हुए उसे तीन महीने भी नहीं हुए—वो ज़रूर बेवकूफ होगा!”

मैं इस गलती को ज्यादा बढ़ने नहीं देता; मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं था।

“पेलेट? तुम्हारा दिमाग तो मॉन्स और मैडम पेलेट के बारे में ही घूमता रहता है! तुम हमेशा उन्हीं के बारे में बात करते रहते हो। काश, तुमने मैडम ज़ोराइड से शादी कर ली होती!”

"क्या वह युवती मैडम ज़ोराइड नहीं थीं?"

“नहीं; न ही मैडम ज़ोराइड।”

तो फिर तुमने झूठ क्यों बोला?

मैंने झूठ नहीं बोला; लेकिन आप लोग इतनी जल्दी में हैं। वह मेरी एक छात्रा है - एक स्विस लड़की।

और हां, आप उससे शादी करने वाले हैं? इस बात से इनकार मत कीजिए।

“शादी! मुझे लगता है मैं कर लूँगी — अगर किस्मत हम दोनों को दस हफ्ते और तौफीक दे दे तो। ये मेरी नन्ही जंगली स्ट्रॉबेरी है, हन्सडेन, जिसकी मिठास ने मुझे तुम्हारे ग्रीनहाउस अंगूरों की परवाह न करने पर मजबूर कर दिया।”

“रुको! कोई शेखी नहीं—कोई वीरता नहीं; मैं ये सब नहीं सुनूंगा। वो कौन है? वो किस जाति की है?”

मैं मुस्कुराया। हन्सडेन ने अनजाने में 'जाति' शब्द पर ज़ोर दिया, और वास्तव में, गणतंत्रवादी और सामंतों से घृणा करने वाला होने के बावजूद, हन्सडेन को अपने पुराने शायर रक्त, अपने वंश और पारिवारिक प्रतिष्ठा पर उतना ही गर्व था, जितना कि उसकी नॉर्मन जाति और विजय-काल की उपाधि के किसी भी कुलीन व्यक्ति को होता था। हन्सडेन अपनी जाति से नीची जाति की महिला से विवाह करने के बारे में उतना ही कम सोचता, जितना कि एक स्टेनली किसी कोबडेन से विवाह करने के बारे में सोचता। मुझे आश्चर्य की अनुभूति हुई; मुझे अपने व्यवहार की उसकी सिद्धांत पर विजय का आनंद आया; और मेज पर झुककर, धीरे-धीरे लेकिन दबी हुई खुशी के साथ, मैंने संक्षेप में कहा—

वह फीते की मरम्मत करने वाली है।

हंसडेन ने मेरी जांच की। उन्होंने यह नहीं कहा कि उन्हें आश्चर्य हुआ, लेकिन उन्हें आश्चर्य अवश्य हुआ; उनके मन में अच्छे संस्कारों को लेकर अपने विचार थे। मैंने देखा कि उन्हें संदेह था कि मैं कोई बहुत जल्दबाजी वाला कदम उठाने वाला हूँ; लेकिन अपनी प्रतिक्रिया या विरोध को दबाते हुए, उन्होंने केवल उत्तर दिया—

“खैर, आप सबसे अच्छे हैं; अपने मामलों के निर्णायक आप ही हैं। एक फीता ठीक करने वाली महिला एक अच्छी पत्नी और एक सभ्य महिला बन सकती है; लेकिन आपने यह सुनिश्चित करने का पूरा ध्यान रखा होगा कि चूंकि उसके पास शिक्षा, धन या रुतबा नहीं है, इसलिए उसमें वे प्राकृतिक गुण मौजूद हों जो आपको लगता है कि आपकी खुशी के लिए सबसे उपयुक्त हैं। क्या उसके कई रिश्तेदार हैं?”

"ब्रसेल्स में कोई नहीं।"

“यह बेहतर है। ऐसे मामलों में अक्सर रिश्तेदार ही असली बुराई होते हैं। मुझे लगता है कि घटिया रिश्तों की एक लंबी श्रृंखला आपके जीवन के अंत तक आपके लिए उबाऊ साबित होती।”

कुछ देर और चुपचाप बैठने के बाद, हन्सडेन उठे और धीरे से मुझे शुभ संध्या कहने लगे; जिस विनम्र और विचारशील तरीके से उन्होंने मुझे अपना हाथ बढ़ाया (ऐसा उन्होंने पहले कभी नहीं किया था), उससे मुझे यकीन हो गया कि उन्हें लगा कि मैंने खुद को बहुत बड़ी मूर्खता में डाल दिया है; और चूंकि मैं बर्बाद और त्यागा हुआ था, इसलिए यह व्यंग्य या निंदक का समय नहीं था, बल्कि केवल सहानुभूति और सहनशीलता का समय था।

"शुभ रात्रि, विलियम," उन्होंने अत्यंत कोमल स्वर में कहा, जबकि उनके चेहरे पर करुणा और दया का भाव झलक रहा था। "शुभ रात्रि, मेरे बेटे। मैं तुम्हें और तुम्हारी होने वाली पत्नी को ढेर सारी समृद्धि की कामना करता हूँ; और आशा करता हूँ कि वह तुम्हारी नज़ाकत भरी आत्मा को संतुष्ट करेगी।"

उनके चेहरे पर व्याप्त उदारता और करुणा को देखकर मुझे अपनी हंसी रोकने में काफी मशक्कत करनी पड़ी; फिर भी, मैंने गंभीर भाव बनाए रखते हुए कहा: —

"मुझे लगा था कि आप मैडम हेनरी को देखना पसंद करेंगे?"

"ओह, यही नाम है! जी हाँ—अगर सुविधा हो तो मैं उससे मिलना चाहूँगा—लेकिन—।" वह हिचकिचाया।

"कुंआ?"

मैं किसी भी हालत में दखल देना नहीं चाहूंगा।

"चलो फिर," मैंने कहा। हम चल पड़े। हन्सडेन मुझे बेशक जल्दबाज़ और नासमझ समझता होगा, क्योंकि मैं अपनी बेचारी छोटी सी प्रेमिका को उसके छोटे से कच्चे घर में इस तरह से नीचा दिखा रहा था; लेकिन उसने एक सच्चे सज्जन की तरह व्यवहार करने की तैयारी कर ली, क्योंकि वास्तव में उसके अंदर सज्जनता के गुण थे, भले ही उसने अपने मन में एक कठोर आवरण ओढ़ रखा था। सड़क पर चलते हुए वह बड़े ही सौहार्दपूर्ण और विनम्र ढंग से बातें कर रहा था; उसने अपने जीवन में कभी मेरे साथ इतना विनम्र व्यवहार नहीं किया था। हम घर पहुँचे, अंदर गए, सीढ़ियाँ चढ़े; लॉबी में पहुँचते ही हन्सडेन एक संकरी सीढ़ी पर चढ़ने के लिए मुड़ा जो ऊपर की मंजिल पर जाती थी; मैंने देखा कि उसका मन अटारी पर जाने का था।

"लीजिए, श्रीमान हन्सडेन," मैंने धीरे से फ्रांसिस के दरवाजे पर दस्तक देते हुए कहा। वह मुड़े; अपनी स्वाभाविक विनम्रता में वह अपनी गलती पर थोड़ा असहज हुए; उनकी नज़र फिर से हरी चटाई पर चली गई, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा।

हम अंदर दाखिल हुए और फ्रांसिस मेज के पास अपनी सीट से उठकर हमारा स्वागत करने लगीं; उनके शोक वस्त्रों ने उन्हें एकांतप्रिय, कुछ हद तक मठवासी जैसी, लेकिन फिर भी बेहद विशिष्ट रूप दिया; उनकी गंभीर सादगी ने सुंदरता में कुछ नहीं जोड़ा, बल्कि गरिमा को बढ़ाया; सफेद कॉलर और मैनशेट्स की फिनिशिंग ने गंभीर काले मेरिनो गाउन को एक राहत दी; आभूषणों का त्याग किया गया था। फ्रांसिस ने शांत भाव से झुककर अभिवादन किया, हमेशा की तरह, जब कोई उनसे पहली बार मिलता था, तो वह एक ऐसी महिला लगती थीं जिनका सम्मान किया जाना चाहिए, न कि उनसे प्रेम किया जाना चाहिए; मैंने श्री हन्सडेन का परिचय कराया, और उन्होंने फ्रेंच में उनसे मिलकर अपनी खुशी व्यक्त की। शुद्ध और परिष्कृत उच्चारण, धीमी लेकिन मधुर और कुछ हद तक भरी हुई आवाज ने तुरंत अपना प्रभाव डाला; हन्सडेन ने जवाब में फ्रेंच में बात की; मैंने उन्हें पहले कभी यह भाषा बोलते नहीं सुना था; उन्होंने इसे बहुत अच्छे से बोला। मैं खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गया; श्री हन्सडेन, अपनी मेज़बान के निमंत्रण पर, चूल्हे के पास एक कुर्सी पर बैठ गए; अपनी जगह से मैं उन दोनों को और कमरे को भी एक नज़र में देख सकता था। कमरा इतना साफ-सुथरा और चमकदार था कि मानो किसी पॉलिश किए हुए छोटे से कैबिनेट जैसा लग रहा था; मेज के बीचोंबीच फूलों से भरा एक गिलास रखा था, और मेंटलपीस पर रखे हर चीनी के कप में एक ताजा गुलाब रखा था, जिससे कमरे में उत्सव का माहौल बन गया था। फ्रांसिस गंभीर थीं और मिस्टर हन्सडेन शांत, लेकिन दोनों एक-दूसरे के प्रति विनम्र थे; वे फ्रेंच में बहुत अच्छे से बातचीत कर रहे थे: आम विषयों पर भी बड़े ही सलीके और शिष्टाचार से चर्चा हो रही थी; मुझे लगा कि मैंने शिष्टाचार के ऐसे दो आदर्श पहले कभी नहीं देखे थे, क्योंकि हन्सडेन (विदेशी भाषा की बाध्यता के कारण) अपने शब्दों को इस तरह गढ़ते और वाक्यों को इस तरह मापते थे कि उनमें कोई भी अटपटापन न रहे। अंत में इंग्लैंड का जिक्र आया और फ्रांसिस ने सवाल पूछना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे उनमें उत्साह आ गया, ठीक वैसे ही जैसे सूर्योदय के समय गंभीर रात का आकाश बदल जाता है: पहले ऐसा लगा जैसे उनका माथा खिल उठा हो, फिर उनकी आंखें चमक उठीं, उनके चेहरे के भाव सहज हो गए और एकदम जीवंत हो उठे; उनका शांत रंग अब गर्म और पारदर्शी हो गया; मुझे अब वह सुंदर लग रही थीं; पहले तो वह सिर्फ एक सभ्य महिला जैसी दिखती थीं।

उसके पास अपने द्वीप-देश से अभी-अभी लौटे अंग्रेज से कहने के लिए बहुत कुछ था, और उसने उत्सुकता से भरे उत्साह के साथ उससे बात करने का आग्रह किया, जिसने जल्द ही हन्सडेन के संकोच को इस तरह पिघला दिया जैसे आग जमे हुए सांप को पिघला देती है। मैं यह तुलना इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि वह मुझे एक ऐसे सांप की याद दिलाता है जो सुस्ती से जाग रहा हो, जब उसने अपना लंबा कद सीधा किया, अपना सिर उठाया, फिर थोड़ा झुकाया, और अपने चौड़े सैक्सन माथे से अपने बाल पीछे हटाए, तो उसके चेहरे पर लगभग क्रूर व्यंग्य की चमक साफ दिखाई दी, जिसे उसकी वार्ताकार के उत्साह भरे स्वर और जोशीले चेहरे ने उसकी आत्मा में जगा दिया था और उसकी आँखों से निकाल दिया था: वह स्वयं था; जैसे फ्रांसिस स्वयं थी, और अब वह उससे केवल अपनी ही भाषा में बात करेगा।

"क्या आप अंग्रेजी समझते हैं?" यह प्रारंभिक प्रश्न था।

"थोड़ा।"

“अच्छा, तो फिर आपको इसकी भरपूर मात्रा मिलेगी; और पहली बात, मुझे लगता है कि आपमें मेरे कुछ परिचितों से ज़्यादा अक्ल नहीं है” (अंगूठे से मेरी ओर इशारा करते हुए), “वरना आप उस गंदे से छोटे देश, इंग्लैंड के बारे में इतनी उग्र न होतीं; क्योंकि आप उग्र हैं, मुझे लगता है; मैं आपकी नज़रों में एंग्लोफोबिया पढ़ सकता हूँ, और आपके शब्दों में भी। क्यों, महोदया, क्या यह संभव है कि थोड़ी सी भी समझ रखने वाला कोई व्यक्ति महज़ एक नाम, और वह नाम इंग्लैंड, के बारे में उत्साह महसूस करे? पाँच मिनट पहले तक मुझे लगा था कि आप कोई मठाध्यक्षा हैं, और मैं आपका उसी हिसाब से सम्मान करता था; और अब मुझे लगता है कि आप एक स्विस भविष्यवक्ता जैसी हैं, जो कट्टर टोरी और चर्च के सिद्धांतों को मानती हैं!”

"क्या इंग्लैंड आपका देश है?" फ्रांसिस ने पूछा।

"हाँ।"

और आपको यह पसंद नहीं है?

मुझे इसे पसंद करने में दुख होगा! एक छोटा सा भ्रष्ट, लालची, सामंत-राजाओं द्वारा शापित राष्ट्र, गंदी अभिमान से भरा हुआ (जैसा कि वे — — शायर में कहते हैं), और असहाय दरिद्रता; दुर्व्यवहारों से सड़ा हुआ, पूर्वाग्रहों से पागल!

"आप लगभग हर राज्य के बारे में ऐसा कह सकते हैं; हर जगह दुर्व्यवहार और पूर्वाग्रह मौजूद हैं, और मुझे लगता है कि इंग्लैंड में अन्य देशों की तुलना में कम हैं।"

“इंग्लैंड आओ और देखो। बर्मिंघम और मैनचेस्टर आओ; लंदन के सेंट जाइल्स चर्च आओ, और हमारे तंत्र की कार्यप्रणाली को व्यावहारिक रूप से समझो। हमारे कुलीन वर्ग के पदचिह्नों का निरीक्षण करो; देखो कि वे कैसे रक्त में चलते हैं, दिलों को कुचलते हुए आगे बढ़ते हैं। बस अंग्रेजी झोपड़ियों के दरवाजों में झाँको; अकाल की एक झलक पाओ जो काले चूल्हों पर सुस्त पड़ा है; बीमारी को बिना चादर के बिस्तरों पर नग्न अवस्था में लेटे हुए देखो; बदनामी को अज्ञानता के साथ बेरहमी से व्यभिचार करते हुए देखो, हालाँकि वास्तव में विलासिता उसका प्रिय प्रेमी है, और शाही महल उसे फूस की झोपड़ियों से कहीं अधिक प्रिय हैं।”

"मैं इंग्लैंड की बदहाली और बुराइयों के बारे में नहीं सोच रहा था; मैं अच्छे पक्ष के बारे में सोच रहा था - उस चीज़ के बारे में जो एक राष्ट्र के रूप में आपके चरित्र को ऊंचा उठाती है।"

“इसमें कोई अच्छा पक्ष नहीं है—कम से कम ऐसा कोई पक्ष नहीं जिसके बारे में आपको कोई जानकारी हो; क्योंकि आप उद्योग के प्रयासों, उद्यम की उपलब्धियों या विज्ञान की खोजों की सराहना नहीं कर सकतीं: शिक्षा की संकीर्णता और पद की अस्पष्टता आपको इन बातों को समझने में पूरी तरह असमर्थ बना देती है; और ऐतिहासिक और काव्यात्मक संदर्भों के बारे में, मैं आपको अपमानित नहीं करूंगा, महोदया, यह मानकर कि आपने ऐसी किसी बकवास का जिक्र किया है।”

"लेकिन मैंने आंशिक रूप से ऐसा किया।"

हंसडेन हँसा—उसकी हँसी में घोर तिरस्कार झलक रहा था।

“जी हां, श्री हन्सडेन। क्या आप उन लोगों में से हैं जिन्हें इस तरह के संबंध पसंद नहीं आते?”

“महोदया, एसोसिएशन क्या होता है? मैंने तो कभी देखा ही नहीं। इसकी लंबाई, चौड़ाई, वजन, मूल्य—अरे, मूल्य? बाजार में इसकी क्या कीमत होगी?”

"आपका चित्र, आपसे प्रेम करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए, एक यादगार पल के रूप में, अमूल्य होगा।"

उस रहस्यमय हन्सडेन ने यह टिप्पणी सुनी और कहीं न कहीं इसे बहुत गहराई से महसूस भी किया; क्योंकि उसका चेहरा लाल हो गया—जो उसके लिए कोई असामान्य बात नहीं थी, जब उसे अचानक किसी संवेदनशील मुद्दे पर चोट पहुँचती थी। क्षण भर के लिए उसकी आँखों में एक तरह की परेशानी छा गई, और मेरा मानना

है कि अपने प्रतिद्वंद्वी के तीखे प्रहार के बाद आए क्षणिक विराम को उसने इस इच्छा से भर दिया कि कोई उसे वैसे ही प्यार करे जैसे वह खुद प्यार पाना चाहता है—कोई ऐसा जिसका प्यार वह बिना किसी शर्त के लौटा सके।

उस महिला ने अपने अस्थायी लाभ को बरकरार रखा।

“अगर आपकी दुनिया बिना किसी जुड़ाव की दुनिया है, श्री हन्सडेन, तो मुझे अब आश्चर्य नहीं होता कि आप इंग्लैंड से इतनी नफरत क्यों करते हैं। मैं ठीक से नहीं जानती कि स्वर्ग क्या है और देवदूत क्या हैं; फिर भी, इसे मेरी कल्पना में सबसे शानदार क्षेत्र और देवदूतों को सबसे ऊँचा दर्जा देते हुए—अगर उनमें से एक—अगर स्वयं अब्दिएल (वह मिल्टन के बारे में सोच रही थी)—अचानक जुड़ाव की क्षमता से वंचित हो जाए, तो मुझे लगता है कि वह तुरंत ‘सदा खुले द्वार’ से बाहर निकल आएगा, स्वर्ग छोड़कर नरक में अपनी खोई हुई चीज़ की तलाश करेगा। हाँ, उसी नरक में जिससे वह ‘तिरस्कार के साथ’ मुँह मोड़कर चला गया था।”

यह कहते समय फ्रांसिस का लहजा उतना ही स्पष्ट था जितना कि उसकी भाषा, और जब उसके होठों से "नरक" शब्द कुछ चौंकाने वाले लहजे में निकला, तब हन्सडेन ने प्रशंसा भरी एक हल्की सी नज़र डाली। उसे मर्द हो या औरत, हर किसी में कुछ मजबूत पसंद था; उसे वह सब पसंद था जो पारंपरिक सीमाओं को तोड़ने का साहस रखता हो। उसने पहले कभी किसी महिला को इतने बेबाक लहजे में "नरक" कहते नहीं सुना था, और एक महिला के होठों से यह शब्द उसे अच्छा लगा; वह चाहता था कि फ्रांसिस फिर से वही शब्द बोले, लेकिन यह उसके बस की बात नहीं थी। विलक्षण जोश का प्रदर्शन उसे कभी पसंद नहीं आता था, और यह उसकी आवाज़ में तभी झलकता था या उसके चेहरे पर तभी दिखाई देता था जब असाधारण परिस्थितियाँ - और आमतौर पर दर्दनाक परिस्थितियाँ - इसे उस गहराई से बाहर निकाल देती थीं जहाँ यह सुप्त अवस्था में जल रहा होता था। मुझसे एक-दो बार अंतरंग बातचीत में, उसने कुछ साहसिक विचार उत्तेजित भाषा में व्यक्त किए थे; लेकिन जब वह क्षण बीत जाता था, तो मुझे वह याद नहीं रहता था; वह अपने आप आता था और अपने आप चला जाता था। हन्सडेन की उत्तेजनाओं को उसने जल्द ही मुस्कुराते हुए दरकिनार कर दिया, और वाद-विवाद के विषय पर लौटते हुए कहा—

"जब इंग्लैंड का कोई अस्तित्व ही नहीं है, तो महाद्वीपीय राष्ट्र उसका इतना सम्मान क्यों करते हैं?"

“मुझे लगा था कि कोई बच्चा यह सवाल नहीं पूछेगा,” हन्सडेन ने जवाब दिया, जो कभी भी जानकारी देने से पहले पूछने वालों को मूर्खता का ताना मारने से नहीं हिचकिचाता था। “अगर तुम मेरी शिष्या होतीं, जैसा कि मुझे लगता है कि कभी तुम्हें सौ मील दूर रहने वाले एक नीच चरित्र वाले व्यक्ति की शिष्या होने का दुर्भाग्य मिला था, तो मैं तुम्हारी इस अज्ञानता भरी स्वीकारोक्ति के लिए तुम्हें कोने में खड़ा कर देता। क्यों, मैडम, क्या तुम नहीं देख सकतीं कि हमारा सोना ही हमें फ्रांसीसी शिष्टाचार, जर्मन सद्भावना और स्विस चापलूसी दिलाता है?” और उसने शैतानी व्यंग्य किया।

“स्विस?” फ्रांसिस ने “गुलामी” शब्द को पकड़ते हुए कहा। “क्या आप मेरे देशवासियों को गुलाम कहते हैं?” और वह चौंक उठी। मैं अपनी हल्की हंसी नहीं रोक पाई; उसकी निगाहों में क्रोध और हावभाव में चुनौती थी। “क्या आप मेरे सामने स्विट्जरलैंड को बुरा-भला कह रहे हैं, श्रीमान हन्सडेन? क्या आपको लगता है कि मेरा किसी से कोई संबंध नहीं है? क्या आप सोचते हैं कि मैं केवल आल्प्स के गांवों में पाई जाने वाली बुराइयों और गिरावट पर ही ध्यान दूंगी, और अपने देशवासियों की सामाजिक महानता, हमारी खून-पसीने से अर्जित स्वतंत्रता और हमारे पहाड़ों की प्राकृतिक सुंदरता को पूरी तरह से भुला दूंगी? आप गलत हैं—आप गलत हैं।”

“सामाजिक महानता? आप इसे जो चाहें कहें, आपके देशवासी समझदार लोग हैं; वे उस चीज़ को एक बिक्री योग्य वस्तु बना देते हैं जो आपके लिए एक अमूर्त विचार है; उन्होंने इससे पहले अपनी सामाजिक महानता और अपने खून-पसीने से अर्जित स्वतंत्रता को विदेशी राजाओं के सेवक बनने के लिए बेच दिया है।”

"क्या आप कभी स्विट्जरलैंड नहीं गए?"

“हां—मैं वहां दो बार जा चुका हूं।”

आपको इसके बारे में कुछ नहीं पता।

"मैं करता हूं।"

"और आप कहते हैं कि स्विस लोग भाड़े के सैनिक हैं, जैसे कोई तोता 'बेचारा पोल' कहता है, या जैसे यहाँ बेल्जियमवासी कहते हैं कि अंग्रेज बहादुर नहीं हैं, या जैसे फ्रांसीसी उन पर विश्वासघाती होने का आरोप लगाते हैं: आपके इन कथनों में कोई न्याय नहीं है।"

“इसमें सच्चाई है।”

“मैं आपसे कहती हूँ, श्रीमान हन्सडेन, आप मुझसे भी अधिक अव्यावहारिक पुरुष हैं, क्योंकि आप वास्तव में जो मौजूद है उसे स्वीकार नहीं करते; आप व्यक्तिगत देशभक्ति और राष्ट्रीय महानता को उसी प्रकार नष्ट करना चाहते हैं जैसे एक नास्तिक ईश्वर और अपनी आत्मा को उनके अस्तित्व से इनकार करके नष्ट कर देता है।”

“आप कहाँ जा रहे हैं? आप विषय से भटक रहे हैं— मुझे लगा कि हम स्विस लोगों के भाड़े के सैनिकों वाले स्वभाव के बारे में बात कर रहे थे।”

"हम थे - और अगर आप कल मुझे यह साबित कर दें कि स्विस लोग भाड़े के सैनिक हैं (जो आप नहीं कर सकते), तो भी मैं स्विट्जरलैंड से प्यार करूंगा।"

"तो फिर आप पागल ही होंगे - बिल्कुल पागल - अगर आप लाखों जहाजों में भरी मिट्टी, लकड़ी, बर्फ और हिम के प्रति जुनून में लिप्त हो जाएं।"

"तुम्हारे जितना पागल नहीं, जो किसी से प्रेम नहीं करते।"

मेरी दीवानगी में भी एक तरीका है; तुम्हारी दीवानगी में ऐसा कोई तरीका नहीं है।

"आपका तरीका सृष्टि का रस निचोड़कर कचरे को खाद में बदलना है, जिसे आप 'उपयोग' कहते हैं।"

"तुम तर्क करना बिल्कुल नहीं जानते," हन्सडेन ने कहा; "तुम्हारे अंदर कोई तर्क शक्ति नहीं है।"

"भावनाहीन होने से बेहतर है तर्कहीन होना," फ्रांसिस ने जवाब दिया, जो अब अपनी अलमारी से मेज तक बार-बार आ-जा रही थी, और उसका इरादा, यदि आतिथ्य सत्कार के विचारों में नहीं, तो कम से कम आतिथ्य सत्कार के कार्यों में तो था ही, क्योंकि वह मेज पर कपड़ा बिछा रही थी और उस पर प्लेटें, चाकू और कांटे रख रही थी।

“क्या यह मुझ पर हमला है, महोदया? क्या आपको लगता है कि मैं भावनाहीन हूँ?”

"मुझे लगता है कि आप हमेशा अपनी और दूसरों की भावनाओं में दखल देते रहते हैं, और इस, उस और अन्य भावना की अतार्किकता के बारे में हठधर्मिता करते रहते हैं, और फिर इसे दबाने का आदेश देते हैं क्योंकि आपको लगता है कि यह तर्क के साथ असंगत है।"

मैं सही काम करता हूँ।

फ्रांसिस कुछ देर के लिए नजरों से ओझल होकर एक छोटी सी पेंट्री जैसी जगह में

चली गई; वह जल्द ही वापस आ गई।

“क्या आप सही कह रहे हैं? बिलकुल नहीं! अगर आप ऐसा सोचते हैं तो आप बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। श्री हन्सडेन, कृपया मुझे आग जलाने दीजिए; मुझे कुछ पकाना है।” (आग पर एक बर्तन रखने में कुछ समय लगा; फिर, जब वह उसमें रखी सामग्री को हिला रही थी:) “ठीक है! मानो ईश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई किसी भी सुखद भावना को कुचलना सही हो, विशेषकर ऐसी भावना को जो देशभक्ति की तरह मनुष्य के स्वार्थ को व्यापक रूप से फैलाती है” (आग को हिलाया गया, बर्तन उसके सामने रखा गया)।

क्या आपका जन्म स्विट्जरलैंड में हुआ था?

मुझे तो ऐसा ही लगता है, वरना मैं इसे अपना देश क्यों कहूँ?

और आपको ये अंग्रेजी जैसी शक्ल-सूरत और कद-काठी कहां से मिली?

मैं भी अंग्रेज हूं; मेरी रगों में आधा खून अंग्रेज का है; इसलिए मुझे देशभक्ति की दोहरी शक्ति का अधिकार है, क्योंकि मेरा दो महान, स्वतंत्र और सौभाग्यशाली देशों में हित है।

“क्या आपकी माँ अंग्रेज़ थीं?”

"हां, हां; और मुझे लगता है कि आपकी मां चांद से या यूटोपिया से आई होंगी, क्योंकि यूरोप में किसी भी राष्ट्र का आपके हितों पर कोई दावा नहीं है?"

"इसके विपरीत, मैं एक सार्वभौमिक देशभक्त हूं, अगर आप मुझे सही ढंग से समझ सकें तो: मेरा देश दुनिया है।"

“इतनी व्यापक रूप से फैली सहानुभूति बहुत सतही होनी चाहिए: क्या आप मेज़ पर आने की कृपा करेंगे, महोदय?” (मुझसे, जो उस समय चांदनी में पढ़ने में मग्न प्रतीत हो रहा था) — “महोदय, भोजन परोसा जा चुका है।”

यह बात उन्होंने उस आवाज से बिल्कुल अलग आवाज में कही जिसमें वह मिस्टर हन्सडेन के साथ बातचीत कर रही थीं - इतनी संक्षिप्त नहीं, बल्कि अधिक गंभीर और नरम आवाज में।

"फ्रांसिस, खाना बनाने से तुम्हारा क्या मतलब है? हमारा यहाँ रुकने का कोई इरादा नहीं था।"

"अरे महोदय, लेकिन आप रुक गए हैं, और रात का खाना तैयार है; आपके पास इसे खाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।"

भोजन बेशक विदेशी था; इसमें दो छोटे लेकिन स्वादिष्ट मांस के व्यंजन थे जिन्हें कुशलता से तैयार किया गया था और बड़े सलीके से परोसा गया था; एक सलाद और फ्रेंच फ्रोम भी था। खाने के दौरान दोनों पक्षों के बीच थोड़ी देर के लिए शांति छा गई, लेकिन खाना खत्म होते ही वे फिर से झगड़ने लगे। विवाद का नया मुद्दा धार्मिक असहिष्णुता की भावना थी, जिसके बारे में श्री हन्सडेन का दावा था कि स्विट्जरलैंड में यह बहुत प्रबल है, भले ही स्विस लोग स्वतंत्रता के प्रति अपनी निष्ठा का दावा करते हों। यहाँ फ्रांसिस की स्थिति सबसे खराब थी, न केवल इसलिए कि वह तर्क देने में कुशल नहीं थी, बल्कि इसलिए भी कि इस मुद्दे पर उसके अपने विचार श्री हन्सडेन के विचारों से लगभग मिलते-जुलते थे, और उसने केवल विरोध के कारण ही उनका विरोध किया था। अंत में उसने हार मान ली और स्वीकार किया कि वह भी उन्हीं की तरह सोचती है, लेकिन साथ ही यह भी कहा कि वह खुद को हारा हुआ नहीं मानती।

"वॉटरलू में फ्रांसीसियों ने भी ऐसा ही किया था," हन्सडेन ने कहा।

"दोनों मामलों में कोई तुलना नहीं है," फ्रांसिस ने जवाब दिया; "मेरा मामला दिखावटी लड़ाई थी।"

"नकली हो या असली, यह आप पर निर्भर करता है।"

नहीं; भले ही मेरे पास तर्कशक्ति या शब्दों का भंडार न हो, फिर भी अगर मेरी राय आपसे सचमुच अलग हो, तो मैं अपनी राय पर अडिग रहूंगा, भले ही मेरे पास उसके बचाव में कहने के लिए एक शब्द भी न हो; आप मौन दृढ़ संकल्प से हार जाएंगे। आप वाटरलू की बात करते हैं; नेपोलियन के अनुसार, आपके वेलिंगटन को वहां हार जाना चाहिए था; लेकिन उन्होंने युद्ध के नियमों की अवहेलना करते हुए दृढ़ता दिखाई और सैन्य रणनीति की अवहेलना करते हुए विजय प्राप्त की। मैं भी वही करूंगा जो उन्होंने किया।

"मुझे यकीन है कि आप भी ऐसा ही करेंगे; शायद आपमें भी इसी तरह की जिद्दी प्रवृत्ति हो।"

"अगर मैंने ऐसा नहीं किया होता तो मुझे खेद होता; वह और टेल भाई थे, और मैं उस स्विस व्यक्ति, चाहे पुरुष हो या महिला, को तुच्छ समझता, जिसके मन में हमारे वीर विलियम के समान सहनशील स्वभाव न हो।"

"अगर टेल वेलिंगटन जैसा था, तो वह एक मूर्ख था।"

"क्या ASS का मतलब BAUDET नहीं होता?" फ्रैंसेस ने मेरी ओर मुड़ते हुए

पूछा।

"नहीं, नहीं," मैंने उत्तर दिया, "इसका मतलब है एक एस्प्रिट-किला; और अब," मैंने आगे कहा, क्योंकि मैंने देखा कि इन दोनों के बीच कलह का एक नया अवसर पैदा हो रहा था, "अब जाने का समय आ गया है।"

हन्सडेन उठे। उन्होंने फ्रांसिस से कहा, "अलविदा; मैं कल इस शानदार इंग्लैंड के लिए रवाना हो रहा हूँ, और ब्रसेल्स वापस आने में शायद बारह महीने या उससे भी ज़्यादा समय लग जाए; जब भी आऊँगा, तुमसे ज़रूर मिलूँगा, और तब तुम देखोगी कि मैं तुम्हें अजगर से भी ज़्यादा खूंखार बनाने का कोई तरीका निकालता हूँ या नहीं। आज शाम तुमने अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन अगली मुलाकात में तुम मुझे सीधे चुनौती दोगी। इस बीच, मुझे लगता है कि तुम विलियम क्रिम्सवर्थ की पत्नी बनने के लिए अभिशप्त हो; बेचारी युवती? लेकिन तुममें अभी भी जोश की चिंगारी है; इसे संजो कर रखना, और प्रोफेसर को इसका पूरा लाभ देना।"

"क्या आप शादीशुदा हैं, मिस्टर हन्सडेन?" फ्रैंसिस ने अचानक पूछा।

नहीं। मुझे लगा था कि मेरे चेहरे को देखकर आप समझ गए होंगे कि मैं बेनेडिक्ट हूं।

"खैर, जब भी तुम्हारी शादी हो, स्विट्जरलैंड के बाहर से पत्नी मत लाना; क्योंकि अगर तुम हेलवेटिया की निंदा करने लगो और कैंटन को कोसने लगो — और सबसे बढ़कर, अगर तुम टेल नाम के साथ गधा शब्द का ज़िक्र करो (क्योंकि गधा तो बौडेट ही होता है, मुझे पता है; हालाँकि महाशय इसे एस्पिरिट-फोर्ट अनुवाद करना पसंद करते हैं) तो तुम्हारी पहाड़ी दासी एक रात अपने ब्रेटन-ब्रेटोनेंट का गला घोंट देगी, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारे शेक्सपियर के ओथेलो ने डेसडेमोना का गला घोंट दिया था।"

"मुझे चेतावनी मिल गई है," हन्सडेन ने कहा; "और तुम्हें भी, लड़के," (मेरी ओर इशारा करते हुए) "मुझे आशा है कि मूर और उसकी सुंदर महिला के एक ऐसे नाटक के बारे में सुनने को मिलेगा, जिसमें भूमिकाएँ ठीक उसी तरह उलट दी जाएँगी जैसा मैंने अभी बताया है — हालाँकि, तुम मेरी नाइट कैप पहने होगे। अलविदा, मैडम!" उसने उसके हाथ पर ठीक उसी तरह झुककर प्रणाम किया जैसे सर चार्ल्स ग्रैंडिसन ने हैरियट बायरन के हाथ पर किया था; और आगे कहा — "ऐसी उंगलियों से मृत्यु भी मोहक होगी।"

“हे भगवान!” फ्रैंसेस ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें खोलते हुए और अपनी विशिष्ट धनुषाकार भौहें उठाते हुए धीरे से कहा; “ये तो तारीफें कर रहे हैं! मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी।” वह आधी क्रोध और आधी खुशी से मुस्कुराई, विदेशी अंदाज में झुककर अभिवादन किया और इस तरह वे अलग हो गए।

सड़क पर पहुंचते ही हन्सडेन ने मुझे पकड़ लिया।

“और वो तुम्हारी फीते सिलने वाली है?” उसने कहा; “और तुम्हें लगता है कि उससे शादी का प्रस्ताव देकर तुमने कोई बड़ा और उदार काम किया है? सीकोम्बे के खानदान के होकर तुमने एक मजदूर से शादी करके सामाजिक भेद-भाव के प्रति अपनी अवहेलना साबित कर दी है! और मुझे उस आदमी पर तरस आया, मुझे लगा कि उसकी भावनाओं ने उसे गुमराह कर दिया है, और उसने एक नीच विवाह करके खुद को ही नुकसान पहुंचाया है!”

"बस मेरा कॉलर छोड़ दो, हन्सडेन।"

इसके विपरीत, उसने मुझे इधर-उधर झुलाया; इसलिए मैंने उसकी कमर पकड़ ली। अंधेरा था; गली सुनसान और बिना बत्ती वाली थी। फिर हम दोनों के बीच खींचतान हुई; और जब हम दोनों फुटपाथ पर लुढ़क गए, और बड़ी मुश्किल से उठे, तो हमने संभलकर चलने का फैसला किया।

“हां, यही मेरी फीते सिलने वाली है,” मैंने कहा; “और ईश्वर की कृपा से, ये जीवन भर मेरी ही रहेगी।”

“ईश्वर की इच्छा नहीं है—ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता; आखिर आपको किसी साथी के साथ इतना अच्छा तालमेल बिठाने का क्या अधिकार है? और वह आपसे एक तरह का सम्मान भी रखती है, ‘महाशय’ कहकर पुकारती है और अपने लहजे को इस तरह नियंत्रित करती है जैसे आप कोई श्रेष्ठ व्यक्ति हों! अगर सौभाग्य से वह आपकी जगह मेरी पसंद होती, तो भी वह मुझ जैसे व्यक्ति के प्रति इससे अधिक आदर नहीं दिखाती।”

“हंसडेन, तुम तो अभी पिल्ले हो। लेकिन तुमने मेरी खुशी का सिर्फ शीर्षक पृष्ठ देखा है; तुम्हें आगे की कहानी का पता नहीं है; तुम इस कथा की रुचि, मधुर विविधता और रोमांचकारी उत्साह की कल्पना भी नहीं कर सकते।”

हंसडेन - धीमी और गहरी आवाज़ में, क्योंकि हम अब एक व्यस्त सड़क पर आ गए थे - ने मुझे चुप रहने को कहा और धमकी दी कि अगर मैंने शेखी बघारकर उसके

गुस्से को और भड़काया तो वह कुछ भयानक करेगा। मैं इतना हँसा कि मेरे पेट में दर्द होने लगा। हम जल्द ही उसके होटल पहुँच गए; अंदर जाने से पहले उसने कहा -

"घमंडी मत बनो। तुम्हारी फीते सिलने वाली तुम्हारे लिए बहुत अच्छी है, पर मेरे लिए काफी नहीं; न तो शारीरिक रूप से और न ही नैतिक रूप से वह मेरी आदर्श स्त्री के अनुरूप है। नहीं; मैं उस पीली-सी, चंचल छोटी हेलवेटियन से कहीं बढ़कर किसी और का सपना देखता हूँ (वैसे, उसमें एक मजबूत 'युवा' की तुलना में एक नर्वस, चंचल पेरिसियन के गुण कहीं अधिक हैं)। तुम्हारी मैडम हेनरी मेरे सपनों की रानी की तुलना में व्यक्तित्व में "भ्रांत" और मन में "चरित्रहीन" हैं। तुम बेशक उस "कमजोर शिफॉन" को बर्दाश्त कर सकते हो; लेकिन जब मेरी शादी होगी तो मुझे उस विकृत, कुपोषित बच्ची की तुलना में अधिक सीधी और सुगठित नैन-नक्श चाहिए, और एक अधिक सुंदर और सुविकसित आकृति चाहिए।"

मैंने कहा, "अगर तुम चाहो तो किसी देवदूत को रिश्वत देकर स्वर्ग से आग का एक अंगारा मंगवा लो, और उससे रूबेंस की चित्रित महिलाओं में सबसे लंबी, सबसे मोटी, सबसे बेजान और सबसे अधिक रक्त वाली स्त्री में जीवन प्रज्वलित कर दो - मुझे केवल मेरी अल्पाइन पेरी छोड़ दो, और मैं तुमसे ईर्ष्या नहीं करूंगा।"

एक साथ हरकत करते हुए, दोनों ने एक-दूसरे की ओर पीठ फेर ली। किसी ने भी "ईश्वर आपका भला करे" नहीं कहा; फिर भी अगले दिन समुद्र हमारे बीच से होकर गुजरने वाला था।

अध्याय XXV.

दो महीने बाद ही फ्रांसिस ने अपनी चाची के शोक की अवधि पूरी कर ली थी। जनवरी

की एक सुबह - नए साल की छुट्टियों की पहली सुबह - मैं एम. वैनडेनहुटेन के साथ एक छोटी सी गाड़ी में रू नोट्रे डेम ऑक्स नीजेस गया, और अकेले उतरकर ऊपर जाने पर मैंने फ्रांसिस को मेरा इंतज़ार करते हुए पाया, जो उस ठंडे, चमकदार, बर्फीले दिन के लिए शायद ही उपयुक्त पोशाक पहने हुए थी। मैंने उसे इससे पहले कभी काले या उदास रंग के कपड़ों के अलावा किसी और रंग में नहीं देखा था; और वह खिड़की के पास खड़ी थी, पूरी तरह से सफेद, और बेहद पारदर्शी सफेद रंग में; उसकी पोशाक बेशक बहुत सरल थी, लेकिन इतनी पारदर्शी, भरी हुई और लहराती हुई होने के कारण वह भव्य और उत्सवपूर्ण लग रही थी; एक घूंघट ने उसके सिर को ढका हुआ था और उसके घुटनों से नीचे तक लटका हुआ था; गुलाबी फूलों की एक छोटी सी माला ने उसके घने ग्रीक चोटी को बांध रखा था, और वहाँ से वह उसके चेहरे के दोनों ओर धीरे से गिर रही थी। यह कहना अजीब होगा कि वह रो रही थी, या रो चुकी थी; जब मैंने उससे पूछा कि क्या वह तैयार है, तो उसने दबी हुई सिसकी के साथ कहा, "जी महोदय।" और जब मैंने मेज पर पड़ी शॉल उठाई और उसे उसके चारों ओर लपेटा, तो न केवल उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, बल्कि वह मेरे स्पर्श से एक सरकंडे की तरह काँपने लगी। मैंने कहा कि उसे इतने उदास देखकर मुझे खेद है, और मैंने इसके कारण के बारे में जानने की अनुमति मांगी। उसने केवल इतना कहा, "कुछ नहीं किया जा सकता था," और फिर स्वेच्छा से, हालांकि जल्दी से, अपना हाथ मेरे हाथ में डालकर, मेरे साथ कमरे से बाहर आई और तेजी से, अनिश्चित कदमों से सीढ़ियों से नीचे भागी, मानो कोई बड़ा काम निपटाना चाहती हो। मैंने उसे कार में बिठाया। एम. वैंडेनहुटेन ने उसका स्वागत किया और उसे अपने बगल में बैठाया; हम सब एक साथ प्रोटेस्टेंट चैपल गए, कॉमन प्रेयर बुक में एक विशेष प्रार्थना की और हम दोनों विवाहित होकर बाहर आए। एम. वैंडेनहुटेन ने दुल्हन का कन्यादान किया।

हमने शादी का कोई औपचारिक सफर नहीं किया; हमारी शालीनता, जो हमारी सामाजिक स्थिति की शांतिपूर्ण गुमनामी और हमारे हालात के सुखद एकांत से ढकी हुई थी, ने हमें अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता महसूस नहीं कराई। हम तुरंत उस छोटे से घर में चले गए जिसे मैंने शहर के उस हिस्से के सबसे नज़दीकी उपनगर में किराए पर लिया था जहाँ हमारा व्यवसाय स्थित था।

शादी की रस्म के तीन-चार घंटे बाद, फ्रांसिस, दुल्हन के वस्त्र उतारकर, गर्म कपड़े से बने एक सुंदर बैंगनी गाउन, एक आकर्षक काले रेशमी एप्रन और बैंगनी रिबन की

सजावट वाले लेस कॉलर में सजी हुई, एक साफ-सुथरे ढंग से सुसज्जित, हालांकि विशाल नहीं, बैठक कक्ष के कालीन पर घुटनों के बल बैठी, मेज से मैंने उसे जो किताबें दीं, उन्हें अलमारी की अलमारियों पर सजा रही थी। बाहर तेजी से बर्फ गिर रही थी; दोपहर तूफानी और ठंडी हो गई थी; आसमान बर्फ के ढेरों से भरा हुआ लग रहा था, और सड़क पर टखनों तक बर्फ जमी हुई थी। हमारी आग तेज जल रही थी, हमारा नया घर बिल्कुल साफ-सुथरा और तरोताजा दिख रहा था, सारा फर्नीचर व्यवस्थित था, बस कुछ कांच के बर्तन, चीनी मिट्टी के बर्तन, किताबें आदि को व्यवस्थित करना बाकी था। फ्रांसिस चाय के समय तक इसी काम में लगी रहीं, और फिर, जब मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से उचित अंग्रेजी शैली में चाय बनाने का तरीका बताया, और जब वह बर्तन में इतनी अधिक मात्रा में सामग्री देखकर हुई घबराहट से उबर गईं, तो उन्होंने मुझे एक उचित ब्रिटिश भोजन परोसा, जिसमें न तो मिठाई की कमी थी, न ही चायदानी की, न ही आग की रोशनी की और न ही आराम की।

हमारी एक हफ्ते की छुट्टियाँ झटपट बीत गईं और हम फिर से काम में जुट गए। मेरी पत्नी और मैंने इस सोच के साथ शुरुआत की कि हम मेहनती लोग हैं, जिन्हें कड़ी मेहनत से अपनी रोजी-रोटी कमानी है। हमारे दिन पूरी तरह से व्यस्त रहते थे; हम हर सुबह आठ बजे अलग होते थे और शाम पाँच बजे तक फिर नहीं मिलते थे; लेकिन हर व्यस्त दिन की भागदौड़ कितनी मीठी नींद में बदल जाती थी! यादों के सागर में खोकर, मुझे उस छोटे से बैठक कक्ष में गुज़री शामें अतीत की धुंधली यादों को घेरे हुए माणिकों की एक लंबी माला की तरह लगती हैं। वे हर तराशे हुए रत्न की तरह एक जैसी थीं, और हर रत्न की तरह चमकदार और दमकती हुई थीं।

डेढ़ साल बीत गया। एक सुबह (एक उत्सव था, और पूरा दिन हम दोनों के लिए खाली था) फ्रांसिस ने मुझसे अचानक कहा, ठीक उसी अंदाज़ में जैसे वह किसी विषय पर लंबे समय तक सोचने के बाद, अंत में किसी निष्कर्ष पर पहुँचकर, मेरे विवेक की कसौटी पर उसकी सत्यता की जाँच करना चाहती थी: —

मैं पर्याप्त काम नहीं करता।

“अब क्या?” मैंने अपनी कॉफ़ी से नज़रें उठाते हुए पूछा, जिसे मैं जानबूझकर हिला रहा था, क्योंकि मैं उस सुहावने गर्मी के दिन (जून का महीना था) फ़्रांसिस के साथ एक सैर पर जाने की योजना का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, जहाँ हमें देहात के एक फार्महाउस में रात का खाना खाना था। “अब क्या?” और मैंने तुरंत उसके

चेहरे पर गंभीरता और उत्साह में एक अत्यंत महत्वपूर्ण योजना देख ली।

“मैं संतुष्ट नहीं हूँ,” उसने जवाब दिया: “आप अब सालाना आठ हज़ार फ़्रैंक कमा रहे हैं” (यह सच था; मेरे प्रयासों, समय की पाबंदी, मेरे छात्रों की प्रगति की प्रसिद्धि, मेरे स्टेशन के प्रचार ने अब तक मेरी मदद की थी), “जबकि मैं अभी भी अपने दयनीय बारह सौ फ़्रैंक पर ही अटकी हुई हूँ। मैं इससे बेहतर कर सकती हूँ, और मैं करूँगी।”

"तुम भी मेरी तरह ही लंबे समय तक और उतनी ही लगन से काम करो, फ्रांसिस।"

"जी हां, महोदय, लेकिन मैं सही तरीके से काम नहीं कर रहा हूं, और मुझे इस बात का पूरा यकीन है।"

"तुम बदलाव चाहते हो - तुम्हारे मन में प्रगति की एक योजना है; जाओ और अपनी टोपी पहन लो; और जब हम टहलेंगे, तो तुम मुझे इसके बारे में बताओगे।"

"जी श्रीमान।"

वह चली गई - एक प्रशिक्षित बच्चे की तरह शांत और विनम्र; वह आज्ञाकारीता और दृढ़ता का एक विचित्र मिश्रण थी: मैं उसके बारे में सोचता रहा, और यह सोचता रहा कि उसकी योजना क्या हो सकती है, तभी वह वापस आ गई।

“महाशय, मैंने मिन्नी (हमारी प्यारी) को भी बाहर जाने की अनुमति दे दी है, क्योंकि मौसम बहुत अच्छा है; तो क्या आप कृपया दरवाजा बंद कर देंगे और चाबी अपने साथ ले जाएंगे?”

"मुझे चूम लो, श्रीमती क्रिम्सवर्थ," मेरा जवाब कुछ खास उपयुक्त नहीं था; लेकिन वह अपनी हल्की गर्मियों की पोशाक और छोटी सी कॉटेज बोनट में इतनी आकर्षक लग रही थीं, और मुझसे बात करने का उनका तरीका हमेशा की तरह इतना सहज और विनम्र था कि उन्हें देखकर मेरा दिल भर आया, और उस बेचैनी को शांत करने के लिए एक चुंबन जरूरी लगा।

"जी हां, महोदय।"

“आप मुझे हमेशा ‘महाशय’ क्यों कहते हैं? ‘विलियम’ कहिए।”

मैं आपके 'डब्ल्यू' का उच्चारण नहीं कर सकता; वैसे भी, 'मोंसियर' आपका है; मुझे यही सबसे अच्छा लगता है।

मिन्नी साफ टोपी और सुंदर शॉल ओढ़कर चली गई, और हम भी घर को एकांत और शांत छोड़कर निकल पड़े—कम से कम घड़ी की टिक-टिक के अलावा तो सन्नाटा था ही। जल्द ही हम ब्रसेल्स से बाहर निकल आए; खेतों ने हमारा स्वागत

किया, और फिर गलियों ने, जो गाड़ियों की गूंजती हुई चौसी की आवाज़ से दूर थीं। थोड़ी देर में हम एक ऐसे एकांत स्थान पर पहुँचे, जो इतना देहाती, हरा-भरा और एकांत था कि मानो किसी देहाती अंग्रेजी प्रांत का कोई इलाका हो; एक कांटेदार झाड़ी के नीचे छोटी और काईदार घास का एक किनारा बैठने के लिए इतना आकर्षक था कि हम उसे ठुकरा नहीं सके; हम बैठ गए, और जब हमने अपने पैरों के पास उग रहे कुछ अंग्रेजी दिखने वाले जंगली फूलों की प्रशंसा और जाँच की, तो मुझे नाश्ते के दौरान चर्चा किए गए विषय पर फ्रांसिस और मेरा ध्यान याद आया।

"उसकी योजना क्या थी?" एक स्वाभाविक योजना—हमारे द्वारा उठाया जाने वाला अगला कदम, या कम से कम उसके द्वारा, यदि वह अपने पेशे में आगे बढ़ना चाहती थी। उसने एक स्कूल शुरू करने का प्रस्ताव रखा। हमारे पास पहले से ही एक छोटे पैमाने पर शुरुआत करने के लिए पर्याप्त साधन थे, क्योंकि हम अपनी आमदनी के हिसाब से ही खर्च करते थे। इस समय तक, हमारे पास एक व्यापक और उपयुक्त संपर्क भी था, जो हमारे व्यवसाय के लिए फायदेमंद था; क्योंकि, हालांकि हमारे परिचितों का दायरा पहले की तरह ही सीमित था, हम अब स्कूलों और परिवारों में शिक्षकों के रूप में व्यापक रूप से जाने जाते थे। जब फ्रांसिस ने अपनी योजना पूरी कर ली, तो उसने अपने अंतिम वाक्यों में भविष्य के लिए अपनी आशाओं का संकेत दिया। अगर हम स्वस्थ रहें और हमें संतोषजनक सफलता मिले, तो वह आश्वस्त थी कि हम समय आने पर आत्मनिर्भर हो सकते हैं; और शायद तब तक जब तक हम इतने बूढ़े न हो जाएं कि इसका आनंद न ले सकें; तब हम दोनों को आराम मिलेगा; और हमें इंग्लैंड में रहने से कौन रोक सकता था? इंग्लैंड अभी भी उसका सपनों का देश था।

मैंने उसके रास्ते में कोई बाधा नहीं डाली; कोई आपत्ति नहीं उठाई; मैं जानता था कि वह निष्क्रिय और शांत रहने वाली नहीं थी, या तुलनात्मक रूप से भी निष्क्रिय नहीं रह सकती थी। उसे अपने कर्तव्य निभाने थे, और महत्वपूर्ण कर्तव्य; काम करना था - और रोमांचक, मनमोहक और लाभदायक काम; उसकी प्रतिभाएं प्रबल थीं, और उन्हें पूर्ण पोषण और स्वतंत्र अभ्यास की आवश्यकता थी: मेरा हाथ उन्हें कभी भूखा या संकुचित करने वाला नहीं था; नहीं, मुझे उन्हें पोषण देने और उन्हें कार्य करने के लिए अधिक अवसर प्रदान करने में आनंद आता था।

मैंने कहा, "फ्रांसिस, तुमने एक योजना बनाई है, और एक अच्छी योजना; इसे

अमल में लाओ; तुम्हें मेरी पूरी सहमति है, और जब भी और जहाँ भी मेरी सहायता की आवश्यकता हो, मांगो और तुम्हें मिल जाएगी।"

फ्रांसिस की आँखों में लगभग आँसू भरे हुए थे, और उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया; बस एक-दो चमक थीं, जो तुरंत गायब हो गईं; उन्होंने मेरा हाथ भी थाम लिया और कुछ देर तक उसे अपने दोनों हाथों में कसकर थामे रखा, लेकिन उन्होंने "धन्यवाद, महोदय" के अलावा और कुछ नहीं कहा।

हमने एक शानदार दिन बिताया और पूर्णिमा के चांद की रोशनी में देर से घर लौटे।

दस साल धूल भरी, कांपती हुई, बेचैन पंखों की तरह मुझ पर झपट पड़े; भागदौड़, सक्रियता और अथक प्रयास के वर्ष; वे वर्ष जिनमें मैं और मेरी पत्नी, यूरोपीय राजधानियों में प्रगति की तेज़ रफ्तार के साथ, शायद ही कभी आराम कर पाए, मनोरंजन से दूर रहे, कभी विलासिता के बारे में सोचा भी नहीं, और फिर भी, जैसे-जैसे हमारा सफर साथ-साथ चलता रहा, जैसे-जैसे हम हाथ में हाथ डालकर आगे बढ़ते रहे, हमने न तो शिकायत की, न पछतावा किया और न ही डगमगाए। आशा ने सचमुच हमें प्रोत्साहित किया; स्वास्थ्य ने हमें स्वस्थ रखा; विचार और कर्म के सामंजस्य ने कई कठिनाइयों को दूर किया, और अंततः, सफलता ने समय-समय पर परिश्रम का उत्साहवर्धक फल दिया। हमारा विद्यालय ब्रुसेल्स के सबसे लोकप्रिय विद्यालयों में से एक बन गया, और जैसे-जैसे हमने अपने शुल्क बढ़ाए और अपनी शिक्षा प्रणाली को उन्नत किया, हमारे विद्यार्थियों का चयन और भी चुनिंदा होता गया, और अंततः इसमें बेल्जियम के सबसे अच्छे परिवारों के बच्चे भी शामिल हो गए। इंग्लैंड में भी हमारा एक बेहतरीन संपर्क था, जिसकी शुरुआत श्री हन्सडेन की अनचाही सिफारिश से हुई थी। श्री हन्सडेन वहां आए और मेरी समृद्धि की जमकर आलोचना करने के बाद वापस चले गए, और जल्द ही उन्होंने अपनी चचेरी बहनों, युवा वारिसों का एक समूह भेजा; जैसा कि उन्होंने कहा, "श्रीमती क्रिम्सवर्थ द्वारा उनका काम तमाम करने के लिए।"

श्रीमती क्रिम्सवर्थ की बात करें तो, एक मायने में वे बिल्कुल बदल गई थीं, हालांकि दूसरे मायने में उनमें कोई बदलाव नहीं आया था। अलग-अलग परिस्थितियों में वे इतनी अलग थीं। ऐसा लगता था मानो मेरी दो पत्नियां हों। उनके स्वभाव की जो खूबियां उनसे विवाह के समय ही प्रकट हो चुकी थीं, वे आज भी ताज़ा और सुंदर थीं; लेकिन अन्य खूबियां तेज़ी से विकसित हुईं, व्यापक रूप से फैलीं और पौधे के बाहरी

स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया। दृढ़ता, सक्रियता और उद्यमशीलता, गंभीर पत्तियों, काव्यात्मक भावना और उत्साह से ढकी हुई थीं; लेकिन ये फूल अब भी मौजूद थे, बाद के विकास और अधिक मजबूत प्रकृति की छाया में शुद्ध और ओस से भरे हुए: शायद दुनिया में केवल मैं ही उनके अस्तित्व का रहस्य जानता था, लेकिन मेरे लिए वे हमेशा एक मनमोहक सुगंध बिखेरने और एक ऐसी सुंदरता प्रस्तुत करने के लिए तैयार थीं जो पवित्र और तेजस्वी दोनों थी।

दिन के समय मेरे घर और संस्थान का संचालन मैडम डायरेक्ट्रेस करती थीं, जो एक गरिमामयी और शालीन महिला थीं। उनके चौड़े माथे पर गहरी चिंता झलकती थी; उनके गंभीर चेहरे में एक सधी हुई गरिमा थी। नाश्ते के तुरंत बाद मैं उनसे विदा लेता था; मैं अपने कॉलेज जाता था, और वह अपने स्कूल जाती थीं। दिन में एक घंटे के लिए लौटकर मैं उन्हें हमेशा कक्षा में, पूरी तरह से व्यस्त पाता था; उनकी उपस्थिति में खामोशी, लगन और ध्यान का भाव साफ दिखाई देता था। जब वह पढ़ा नहीं रही होती थीं, तब वह आंखों और इशारों से छात्रों का मार्गदर्शन करती थीं; तब वह सतर्क और जागरूक दिखती थीं। निर्देश देते समय उनका चेहरा अधिक जीवंत हो उठता था; ऐसा लगता था जैसे उन्हें अपने काम में आनंद आ रहा हो। जिस भाषा में वह अपने छात्रों से बात करती थीं, वह सरल और सहज होने के बावजूद कभी भी घिसी-पिटी या नीरस नहीं होती थी; वह रटे-रटाए वाक्यों का प्रयोग नहीं करती थीं - वह बोलते समय अपने स्वयं के वाक्य बनाती थीं, और अक्सर वे बहुत ही प्रभावशाली और भावपूर्ण होते थे; अक्सर, इतिहास या भूगोल के अपने पसंदीदा विषयों को समझाते समय, वह अपनी गंभीरता में सचमुच वाक्पटु हो जाती थीं। उनकी शिष्याएँ, या कम से कम उनमें से जो बड़ी और बुद्धिमान थीं, एक श्रेष्ठ बुद्धि की भाषा को भलीभांति पहचानती थीं; वे महसूस भी करती थीं, और उनमें से कुछ को उच्च भावनाओं का आभास भी होता था; शिक्षिका और छात्राओं के बीच स्नेह का भाव कम ही था, परन्तु समय के साथ फ्रांसिस की कुछ शिष्याएँ उनसे सच्चे मन से प्रेम करने लगीं; सभी उन्हें आदर की दृष्टि से देखती थीं; उनके प्रति उनका सामान्य व्यवहार गंभीर था; कभी-कभी जब वे अपनी प्रगति और लगन से उन्हें प्रसन्न करती थीं तो वे दयालु हो जाती थीं, और हमेशा अत्यंत परिष्कृत और विचारशील रहती थीं। जब फटकार या दंड की आवश्यकता होती थी तो वे आमतौर पर पर्याप्त सहनशील रहती थीं; परन्तु यदि कोई उस सहनशीलता का लाभ उठाता था, जो कभी-कभी होता था, तो एक तीव्र,

अचानक और बिजली की तरह कठोर प्रतिक्रिया से अपराधी को उसकी गलती का पूरा दंड मिल जाता था। कभी-कभी कोमलता की एक झलक उनकी आँखों और व्यवहार में झलकती थी, परन्तु ऐसा बहुत कम होता था; केवल तभी जब कोई विद्यार्थी बीमार होता था, या जब उसे घर की याद आती थी, या किसी अनाथ बच्चे के मामले में, या अपने साथियों की तुलना में बहुत गरीब बच्चे के मामले में, जिसके कम कपड़ों और साधारण साज-सज्जा के कारण उसे गहनों से सजी युवा काउंटेस और रेशमी वस्त्रों वाली युवतियों की अवमानना का सामना करना पड़ता था। ऐसे कमजोर विद्यार्थियों पर निध्यापिका ने अत्यंत स्नेहपूर्ण संरक्षण का आवरण फैलाया: वह रात को उनके बिस्तर पर आकर उन्हें गर्मजोशी से सुलाती थी; सर्दियों में वह यह सुनिश्चित करने के लिए उनकी देखभाल करती थी कि चूल्हे के पास हमेशा उनके लिए एक आरामदायक जगह हो; उन्हें बारी-बारी से बैठक में बुलाया जाता था ताकि उन्हें केक या फल का एक छोटा सा टुकड़ा दिया जा सके - आग के पास एक छोटी सी चौकी पर बैठाया जा सके - एक शाम साथ बिताने के लिए घर के आराम और लगभग घर जैसी आजादी का आनंद लिया जा सके - उनसे कोमल और मधुर शब्दों में बात की जा सके, उन्हें सांत्वना दी जा सके, प्रोत्साहित किया जा सके, उनका स्नेह किया जा सके - और जब सोने का समय आता था, तो उन्हें सच्चे स्नेह के चुंबन के साथ विदा किया जाता था। जहाँ तक जूलिया और जॉर्जियाना जी - - का सवाल है, जो एक अंग्रेज बैरोनेट की बेटियाँ थीं, जहाँ तक मैडम का सवाल है। बेल्जियम के एक काउंट की उत्तराधिकारी मैथिल्डे डी - - , और कुलीन परिवार के अन्य कई बच्चों की देखभाल करने वाली डायरेक्ट्रेस, बाकी सभी की तरह ही उनकी भी तरक्की के लिए चिंतित रहती थी, लेकिन उनके मन में कभी भी किसी को तरजीह देने का विचार नहीं आया; एक कुलीन परिवार की लड़की से उन्हें बेहद प्यार था - एक युवा आयरिश बैरोनेस - लेडी कैथरीन - - ; लेकिन उनके उत्साही हृदय और चतुर बुद्धि, उनकी उदारता और उनकी प्रतिभा के आगे उपाधि और पद का कोई महत्व नहीं था।

मेरी दोपहरें भी कॉलेज में ही बीतती थीं, सिवाय उस एक घंटे के जो मेरी पत्नी मुझसे रोज़ अपने काम के लिए लेती थी और जिसे वो कभी नहीं छोड़ती थी। वो कहती थी कि मुझे वो समय उसके विद्यार्थियों के बीच बिताना चाहिए ताकि मैं उनके स्वभाव को जान सकूँ, स्कूल में चल रही हर बात से अवगत रहूँ, उसकी रुचियों में दिलचस्पी लूँ, और जब उसे ज़रूरत हो तो मुश्किल मामलों पर अपनी राय दे सकूँ।

और वो ऐसा लगातार करती रहती थी, कभी भी विद्यार्थियों में मेरी रुचि कम नहीं होने देती थी, और मेरी जानकारी और सहमति के बिना कोई भी महत्वपूर्ण बदलाव नहीं करती थी। जब मैं साहित्य पढ़ाता था, तो वो मेरे पास बैठकर मुझे बहुत प्रसन्न करती थी, घुटनों पर हाथ रखे, और वहाँ मौजूद सभी लोगों में सबसे ज़्यादा ध्यान से सुनती थी। वो कक्षा में मुझसे शायद ही कभी बात करती थी; जब करती भी थी तो बड़े आदर के साथ; उसे मुझे हर बात में गुरु बनाए रखना बहुत अच्छा लगता था।

शाम छह बजे मेरा रोज़ का काम समाप्त हो गया। फिर मैं घर लौट आया, क्योंकि मेरा घर ही मेरा स्वर्ग था; ठीक उसी समय, जैसे ही मैं अपने निजी बैठक कक्ष में प्रवेश करता, मेरी सहेली मेरी आँखों के सामने से गायब हो जाती और मेरी प्यारी छोटी सी फीते सिलने वाली, फ्रांसिस हेनरी, जादुई ढंग से मेरी बाहों में लौट आती; वह बहुत निराश होती अगर उसका मालिक भी उसी तरह अपने प्रेम प्रसंग के प्रति वफादार न होता और अगर उसके कोमल शब्दों, "शुभ संध्या, महोदय," का जवाब उसके सच्चे चुंबन से तुरंत न मिल जाता।

वह मुझसे फ्रेंच में बात करती थी, और अपनी मनमानी के लिए उसे कई बार सजा भी मिली थी। मुझे डर है कि सजा का चुनाव अनुचित रहा होगा, क्योंकि गलती सुधारने के बजाय, ऐसा लगता था कि इससे गलती और बढ़ गई। हमारी शामें हमारी अपनी होती थीं; यह मनोरंजन हमारे कर्तव्यों के उचित निर्वहन के लिए हमारी ऊर्जा को पुनः प्राप्त करने के लिए आवश्यक था; कभी-कभी हम पूरी शाम बातचीत में बिताते थे, और मेरी युवा जिनेवा की बेटी, अब जब वह अपने अंग्रेजी प्रोफेसर से पूरी तरह परिचित हो चुकी थी, अब जब वह उनसे इतना प्यार करती थी कि उनसे डरने की कोई गुंजाइश नहीं थी, तो उन पर इतना भरोसा करती थी कि उनके साथ बातचीत के विषयों की कमी नहीं होती थी, जैसे कि अपने दिल की बात कहने के लिए विषयों की कमी नहीं होती थी। उन पलों में, अपने साथी के साथ पक्षी की तरह खुश, वह मुझे अपने समृद्ध स्वभाव में छिपी जीवंतता, आनंद और मौलिकता दिखाती थी। वह कभी-कभी व्यंग्य और शरारत भरे ताने भी मारती थी, और मुझे चिढ़ाती, चिढ़ाती, और कभी-कभी मेरी उन बातों पर गुस्सा करती जिन्हें वह मेरी "अजीबोगरीब अंग्रेज़ी" और "अजीबोगरीब सनक" कहती थी। उसकी शरारत इतनी तीखी और चुटीली होती थी कि जब तक वह ऐसा करती, वह एकदम शैतान जैसी लगती थी। हालाँकि, ऐसा कम ही होता था, और उसका यह चंचल स्वभाव ज़्यादा देर तक नहीं टिकता था:

कभी-कभी जब शब्दों की लड़ाई में बात थोड़ी बढ़ जाती थी—क्योंकि उसकी ज़बान उसकी मातृभाषा फ्रेंच के सार, सार और नज़ाकत को बखूबी बयां करती थी, और उसी भाषा में वह हमेशा मुझ पर हमला करती थी—तो मैं भी अपने पुराने इरादे से उस पर पलटवार करता और मुझे चिढ़ाने वाली उस परी को ज़बरदस्ती पकड़ लेता। लेकिन यह सब बेकार था! जैसे ही मैं उसका हाथ या बांह पकड़ता, वह परी गायब हो जाती; उसकी भावपूर्ण भूरी आँखों में वो उत्तेजक मुस्कान गायब हो जाती, और उसकी जगह पलकों के नीचे एक कोमल श्रद्धा झलकने लगती। मैंने एक चिड़चिड़ी परी को पकड़ा था, और अपनी बाहों में एक विनम्र और विनती करती हुई नन्ही सी स्त्री को पाया। फिर मैंने उसे एक किताब लाने को कहा, और प्रायश्चित के तौर पर उसे एक घंटे तक अंग्रेज़ी पढ़ने को कहा। मैं अक्सर उसे इसी तरह वर्ड्सवर्थ की रचनाएँ पढ़ने को कहता था, और वर्ड्सवर्थ ने उसे जल्द ही सहज बना दिया; उसे उनके गहरे, शांत और गंभीर मन को समझने में कठिनाई होती थी; उनकी भाषा भी उसके लिए सरल नहीं थी; उसे प्रश्न पूछने पड़ते थे, स्पष्टीकरण माँगने पड़ते थे, एक बच्चे और नौसिखिए की तरह व्यवहार करना पड़ता था, और मुझे अपना वरिष्ठ और मार्गदर्शक मानना पड़ता था। उसकी सहज प्रवृत्ति ने तुरंत ही अधिक उत्साही और कल्पनाशील लेखकों के अर्थ को समझ लिया। बायरन उसे उत्साहित करते थे; स्कॉट से उसे प्रेम था; वर्ड्सवर्थ को वह केवल उलझन में डालती थी, आश्चर्य करती थी, और उस पर अपनी राय देने में संकोच करती थी।

लेकिन चाहे वह मुझे पढ़कर सुनाती, या मुझसे बातें करती; चाहे वह मुझे फ्रेंच में चिढ़ाती, या अंग्रेजी में विनती करती; चाहे वह चतुराई से मजाक करती, या आदरपूर्वक पूछती; रुचि से सुनाती, या ध्यान से सुनती; चाहे वह मुझ पर मुस्कुराती, या मुझ पर, हमेशा नौ बजे मुझे अकेला छोड़ दिया जाता था। वह मेरी बाहों से खुद को छुड़ाती, मेरा साथ छोड़ती, अपना दीपक लेती और चली जाती। उसका काम ऊपर की मंजिल पर होता था; मैं कभी-कभी उसके पीछे जाता और उसे देखता। पहले वह छात्रावास (छात्रों के कमरे) का दरवाजा खोलती, चुपचाप सफेद पलंगों की दो पंक्तियों के बीच लंबे कमरे में जाती, सभी सोए हुए लोगों को देखती; अगर कोई जाग रहा होता, खासकर अगर कोई उदास होता, तो उनसे बात करती और उन्हें दिलासा देती; कुछ मिनट यह सुनिश्चित करने के लिए खड़ी रहती कि सब सुरक्षित और शांत है; रात भर कमरे में जलने वाली रोशनी को ठीक करती, फिर बिना आवाज किए

दरवाजा बंद करके चली जाती। फिर वह हमारे कमरे में जाती; उसमें एक छोटी सी अलमारी थी; वह उसे ढूंढने जाती; वहाँ भी एक पलंग दिखाई दिया, लेकिन एक ही, और वह भी बहुत छोटा; जिस रात मैंने उसका पीछा किया और उसे देखा, उस रात जब वह उस छोटे से पलंग के पास पहुँची तो उसका चेहरा बदल गया; गंभीर भाव से वह प्रसन्न हो उठी; उसने एक हाथ से दूसरे हाथ में पकड़े दीपक को छाया दी; वह तकिये के ऊपर झुकी और सो रहे बच्चे पर टकटकी लगाए रही; उसकी नींद (कम से कम उस शाम, और मुझे लगता है कि आमतौर पर) गहरी और शांत थी; उसकी काली पलकों पर एक भी आँसू नहीं था; उसके गोल गालों पर बुखार नहीं था; उसके नन्हे से चेहरे पर कोई बुरा सपना नहीं आया था। फ्रांसिस ने देखा, वह मुस्कुराई नहीं, फिर भी उसके चेहरे पर गहरी खुशी छा गई; सुखद, शक्तिशाली भावना उसके पूरे शरीर में दौड़ रही थी, जो अभी भी स्थिर था। मैंने सचमुच देखा, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, उसके होंठ थोड़े खुले हुए थे, उसकी साँसें थोड़ी तेज़ हो गईं; बच्चा मुस्कुराया; फिर अंत में माँ भी मुस्कुराई, और धीमी आवाज़ में बोली, "भगवान मेरे नन्हे बेटे को आशीर्वाद दें!" वह उसके और करीब झुकी, उसके माथे पर कोमल चुंबन दिए, उसकी छोटी सी उंगली को अपनी उंगली से ढक लिया, और अंत में उठकर चली गई। मैं उससे पहले बैठक में पहुँच गया। दो मिनट बाद अंदर आते हुए उसने बुझे हुए दीपक को नीचे रखते हुए धीरे से कहा—

"विक्टर अच्छी तरह से सो रहा है: वह नींद में मुस्कुराया; उसकी मुस्कान बिल्कुल आपकी जैसी है, महोदय।"

उक्त विक्टर निःसंदेह उनका अपना बेटा था, जिसका जन्म हमारी शादी के तीसरे वर्ष में हुआ था: उसका ईसाई नाम एम. वैनडेनहुटेन के सम्मान में रखा गया था, जो हमेशा हमारे भरोसेमंद और प्रिय मित्र बने रहे।

उस समय फ्रांसिस मेरे लिए एक अच्छी और प्यारी पत्नी थी, क्योंकि मैं उसके लिए एक अच्छा, न्यायप्रिय और वफादार पति था। अगर उसने किसी कठोर, ईर्ष्यालु, लापरवाह आदमी से शादी की होती—एक दुराचारी, फिजूलखर्ची करने वाले, शराबी या अत्याचारी से—तो वह कैसी होती, यह एक अलग सवाल है, और यही सवाल मैंने एक बार उससे पूछा था। कुछ सोचने के बाद उसका जवाब था—

मुझे कुछ समय के लिए इस बुराई को सहने या इसका इलाज करने की कोशिश करनी चाहिए थी; और जब मुझे यह असहनीय और लाइलाज लगने लगता, तो मुझे

अचानक और चुपचाप अपने उत्पीड़क को छोड़ देना चाहिए था।

और अगर कानून या ताकत ने आपको वापस लौटने पर मजबूर कर दिया होता?

"क्या, किसी शराबी, व्यभिचारी, स्वार्थी खर्चीले, अन्यायी मूर्ख को?"

"हाँ।"

मैं वापस चली जाती; फिर से यह सुनिश्चित कर लेती कि क्या उसकी बुराई और मेरी पीड़ा का कोई समाधान है या नहीं; और यदि नहीं, तो मैं उसे फिर से छोड़ देती।

और यदि फिर से लौटने के लिए मजबूर किया जाए, और पालन करने के लिए विवश किया जाए?

"मुझे नहीं पता," उसने जल्दी से कहा। "आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं, महोदय?"

मुझे इसका जवाब मिल जाएगा, क्योंकि मैंने उसकी आंखों में एक अजीब तरह की आत्मा देखी, जिसकी आवाज को जगाने का मैंने निश्चय किया।

"महाशय, यदि पत्नी का स्वभाव अपने पति के स्वभाव से घृणा करता है, तो विवाह गुलामी ही है। गुलामी के विरुद्ध सभी सच्चे विचारक विद्रोह करते हैं, और प्रतिरोध की कीमत चाहे यातना ही क्यों न हो, यातना सहन करने का साहस अवश्य करना चाहिए; यद्यपि स्वतंत्रता का एकमात्र मार्ग मृत्यु के द्वार से होकर गुजरता है, फिर भी उन द्वारों को पार करना ही होगा; क्योंकि स्वतंत्रता अपरिहार्य है। तब, महाशय, मैं अपनी सामर्थ्य से प्रतिरोध करूंगी; जब मेरी सामर्थ्य समाप्त हो जाएगी, तो मुझे शरण की निश्चितता होगी। मृत्यु मुझे बुरे कानूनों और उनके परिणामों से अवश्य बचाएगी।"

"स्वैच्छिक मृत्यु, फ्रांसिस?"

"नहीं, महोदय। मुझमें भाग्य द्वारा प्रदत्त हर पीड़ा को सहने का साहस होगा, और न्याय और स्वतंत्रता के लिए अंतिम क्षण तक संघर्ष करने का सिद्धांत होगा।"

"मुझे लगता है कि तुम धैर्यवान ग्रिज़ल नहीं बन सकती थीं। और अब, मान लो कि भाग्य ने तुम्हें कुंवारी बुढ़ापे की नियति दी होती, तो फिर क्या होता? तुम्हें ब्रह्मचर्य कैसा लगता?"

"ज़्यादा कुछ नहीं, बिलकुल नहीं। एक कुंवारी औरत का जीवन निःसंदेह खाली और नीरस होता है—उसका दिल तनावग्रस्त और खाली होता है। अगर मैं कुंवारी होती, तो अपना पूरा जीवन उस खालीपन को भरने और दर्द को कम करने की कोशिश में बिता देती। शायद मैं असफल हो जाती, और थकी-हारी, निराश, तिरस्कृत

और महत्वहीन होकर मर जाती, दूसरी अकेली औरतों की तरह। लेकिन मैं कुंवारी नहीं हूँ," उसने जल्दी से कहा। "मैं होती, अगर मेरे पति न होते। मैं प्रोफ़ेसर क्रिम्सवर्थ के अलावा किसी और पुरुष के लिए उपयुक्त नहीं होती—कोई और सज्जन, चाहे वह फ्रांसीसी हो, अंग्रेज हो या बेल्जियम का, मुझे आकर्षक या सुंदर नहीं समझता; और मुझे संदेह है कि अगर मुझे दूसरों की प्रशंसा मिल भी जाती, तो क्या मैं उसकी परवाह करती। अब, मैं आठ साल से प्रोफ़ेसर क्रिम्सवर्थ की पत्नी हूँ, और मेरी नज़र में वह क्या हैं? क्या वह सम्माननीय हैं, प्रिय हैं—?" वह रुक गई, उसकी आवाज़ रुक गई, उसकी आँखें अचानक नम हो गईं। वह और मैं अगल-बगल खड़े थे; उसने मुझे बाहों में भर लिया और पूरे जोश से मुझे अपने दिल से लगा लिया: उसके पूरे अस्तित्व की ऊर्जा उसकी गहरी और फिर फैलती आँखों में चमक रही थी, और उसके जीवंत गालों को लाल कर रही थी; उसकी नज़र और हरकत प्रेरणा से भरी थीं; एक में ऐसी चमक थी, दूसरे में ऐसी शक्ति। आधे घंटे बाद, जब वह शांत हो गई, तो मैंने उससे पूछा कि वह सारा उग्र जोश कहाँ चला गया जिसने उसे कुछ देर पहले बदल दिया था और उसकी नज़र को इतना रोमांचक और जोशीला बना दिया था - उसकी हरकत को इतना तेज़ और मजबूत। उसने नीचे देखा, धीरे से और निष्क्रियता से मुस्कुराते हुए:

"मैं यह नहीं बता सकती कि वह कहाँ चला गया है, महोदय," उसने कहा, "लेकिन मुझे पता है कि जब भी उसकी आवश्यकता होगी, वह वापस आ जाएगा।"

दस वर्षों के अंत में हमें देखिए, हमने आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है। इस लक्ष्य को इतनी शीघ्रता से प्राप्त करने के तीन कारण थे: पहला, हमने इसके लिए अथक परिश्रम किया; दूसरा, सफलता में कोई बाधा नहीं थी; तीसरा, जैसे ही हमारे पास निवेश करने के लिए पूंजी आई, बेल्जियम और इंग्लैंड के दो कुशल सलाहकारों, वान्डेनहुटेन और हन्सडेन ने हमें निवेश के प्रकार के बारे में सलाह दी। उनका सुझाव विवेकपूर्ण था; और उस पर तुरंत अमल करने से लाभप्रद परिणाम प्राप्त हुए - यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि कितना लाभप्रद; मैंने वान्डेनहुटेन और हन्सडेन को सारी जानकारी दे दी; किसी और को इसे सुनने में रुचि नहीं होगी।

हिसाब-किताब निपटाने और अपने पेशेवर संबंध समाप्त करने के बाद, हम दोनों इस बात पर सहमत हुए कि चूंकि धन हमारा स्वामी नहीं है, न ही उसकी सेवा में हम अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हैं; हमारी इच्छाएँ संयमित हैं और हमारी आदतें दिखावटी नहीं हैं, इसलिए अब हमारे पास जीवन यापन के लिए पर्याप्त धन है - अपने

बेटे के लिए छोड़ने के लिए पर्याप्त धन; और इसके अलावा हमारे पास हमेशा एक शेष राशि होनी चाहिए, जिसका उचित प्रबंधन सही सहानुभूति और निस्वार्थ गतिविधि के साथ किया जाए, तो यह परोपकार के कार्यों में सहायता कर सकती है और दान के हाथों को सांत्वना दे सकती है।

अब हमने इंग्लैंड जाने का निश्चय किया; हम वहाँ सुरक्षित पहुँच गए; फ्रांसिस ने अपने जीवन भर का सपना साकार कर लिया। हमने पूरी गर्मी और पतझड़ ब्रिटिश द्वीपों के एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा करने में बिताई, और उसके बाद एक सर्दी लंदन में गुजारी। फिर हमने अपना निवास स्थान तय करने का सोचा। मेरा दिल अपने पैतृक जिले — — शायर की ओर तड़प रहा था; और अब मैं — — शायर में ही रहता हूँ; और अब मैं अपने घर की लाइब्रेरी में ही लिख रहा हूँ। मेरा घर एक एकांत और पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है, जो X — — से तीस मील दूर है; एक ऐसा क्षेत्र जिसकी हरियाली को मिलों के धुएँ ने अभी तक दूषित नहीं किया है, जिसका पानी अभी भी शुद्ध बहता है, जिसके दलदली मैदानों के बीच स्थित फर्न से भरी घाटियों में प्रकृति की आदिम जंगलीपन, उसकी काई, उसकी फर्न, उसकी ब्लूबेल्स, उसकी सरकंडे और हीथर की सुगंध, उसकी मुक्त और ताज़ी हवाओं को सहेज कर रखा है। मेरा घर एक सुंदर और बहुत विशाल न होने वाला मकान है, जिसमें नीची और लंबी खिड़कियाँ हैं, सामने के दरवाजे के ऊपर एक जालीदार और पत्तों से ढका हुआ बरामदा है, जो इस गर्मी की शाम में गुलाब और आइवी के मेहराब जैसा दिख रहा है। बगीचा मुख्य रूप से पहाड़ियों की घास से बना है, जिसमें काई जैसी छोटी और मुलायम घास है, जो अपने खास छोटे और तारे जैसे फूलों से भरी है, जो उनकी बारीक पत्तियों की कढ़ाई में जड़े हुए हैं। ढलान वाले बगीचे के निचले हिस्से में एक छोटा सा दरवाज़ा है, जो लॉन की तरह ही हरी-भरी एक लंबी, छायादार और कम आवाजाही वाली गली में खुलता है; इस गली की घास पर आमतौर पर वसंत के पहले डेज़ी फूल खिलते हैं - इसीलिए इसका नाम डेज़ी लेन पड़ा है; यह घर की एक खास पहचान भी है।

यह (मेरा मतलब गली से है) एक घने जंगल वाली घाटी में जाकर समाप्त होती है; यह जंगल—मुख्यतः ओक और बीच के पेड़ों से भरा—एक बहुत पुराने महल के आसपास छायादार छाया फैलाए हुए है, जो एलिज़ाबेथ काल की इमारतों में से एक है, डेज़ी लेन से कहीं अधिक विशाल और प्राचीन है, और एक ऐसे व्यक्ति की संपत्ति

और निवास स्थान है जिसे मैं और पाठक दोनों जानते हैं। जी हाँ, हन्सडेन वुड में—क्योंकि उन मैदानों और उस धूसर इमारत को, जिसमें कई छज्जे और ढेर सारी चिमनियां हैं, इसी नाम से जाना जाता है—यॉर्क हन्सडेन रहते हैं, जो अभी तक अविवाहित हैं; मुझे लगता है कि उन्हें अभी तक अपना आदर्श नहीं मिला है, हालाँकि मैं चालीस मील के दायरे में कम से कम बीस युवतियों को जानता हूँ, जो उनकी तलाश में उनकी मदद करने को तैयार होंगी।

पांच साल पहले अपने पिता की मृत्यु के बाद, उन्हें यह संपत्ति विरासत में मिली; उन्होंने व्यापार छोड़ दिया है, क्योंकि इससे उन्होंने पारिवारिक विरासत पर लगे कुछ ऋणों को चुकाने के लिए पर्याप्त आय अर्जित कर ली थी। मैं कहता हूँ कि वह यहाँ रहते हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह बारह महीनों में से पाँच महीने से अधिक यहाँ रहते हैं; वह एक देश से दूसरे देश भटकते रहते हैं और प्रत्येक सर्दी का कुछ हिस्सा शहर में बिताते हैं: जब वह — — जिले में आते हैं तो अक्सर अपने साथ आगंतुकों को लाते हैं, और ये आगंतुक अक्सर विदेशी होते हैं; कभी उनके साथ कोई जर्मन दार्शनिक होता है, कभी कोई फ्रांसीसी विद्वान; एक बार उनके साथ एक असंतुष्ट और क्रूर दिखने वाला इतालवी भी आया था, जो न तो गाता था और न ही बजाता था, और जिसके बारे में फ्रांसिस ने कहा था कि वह "एक षड्यंत्रकारी जैसा दिखता था।"

हंसडेन जिन अंग्रेज़ मेहमानों को आमंत्रित करते हैं, वे सभी या तो बर्मिंघम या मैनचेस्टर के होते हैं—कठोर स्वभाव के, मानो एक ही विचार में बंधे हुए, जिनकी चर्चा मुक्त व्यापार पर होती है। विदेशी आगंतुक भी राजनीतिज्ञ होते हैं; वे एक व्यापक विषय पर बात करते हैं—यूरोपीय प्रगति—महाद्वीप में उदारवादी विचारों का प्रसार; उनके विचारों में रूस, ऑस्ट्रिया और पोप के नाम स्पष्ट रूप से अंकित होते हैं। मैंने उनमें से कुछ को सशक्त और ज्ञानवर्धक बातें करते सुना है—जी हाँ, मैं हंसडेन वुड के पुराने, ओक की लकड़ी से बने भोजन कक्ष में बहुभाषी चर्चाओं में उपस्थित रहा हूँ, जहाँ उत्तरी निरंकुश शासन और दक्षिणी अंधविश्वासों के प्रति दृढ़ निश्चयी लोगों के विचारों की अनूठी झलक मिलती थी: साथ ही, मैंने बहुत सी बेतुकी बातें भी सुनी हैं, जो मुख्य रूप से फ्रेंच और जर्मन में बोली जाती थीं, लेकिन चलिए इसे छोड़ देते हैं। हंसडेन स्वयं उन निरर्थक सिद्धांतकारों को सहन करते थे; व्यावहारिक लोगों के साथ वे मानो घनिष्ठ मित्रता रखते थे।

जब हन्सडेन वुड में अकेले होते हैं (जो कि बहुत कम होता है), तो वे आम तौर पर

सप्ताह में दो या तीन बार डेज़ी लेन आ जाते हैं। गर्मियों की शामों में हमारे बरामदे में सिगार पीने के पीछे उनका एक परोपकारी मकसद होता है; वे कहते हैं कि वे गुलाबों में मौजूद कानखजूरे मारने के लिए ऐसा करते हैं, और उनका कहना है कि अगर वे ऐसा न करते तो हमारे बगीचे में इनकी भरमार हो जाती। बारिश के दिनों में भी हम उन्हें लगभग हमेशा देख लेते हैं; उनके अनुसार, यह सही समय होता है कि वे मेरे दिमागी दर्द को कुरेदकर मुझे पागल कर दें, या होफर और टेल की यादों का अपमान करके श्रीमती क्रिम्स्सवर्थ से उनके भीतर छिपे रहस्य को उजागर करवा लें।

हम अक्सर हन्सडेन वुड भी जाते हैं, और मुझे और फ्रांसिस दोनों को वहाँ जाना बहुत पसंद है। अगर वहाँ दूसरे मेहमान होते हैं, तो उनके व्यक्तित्व का अध्ययन करना दिलचस्प होता है; उनकी बातचीत रोमांचक और अनोखी होती है; मेज़बान और उसके चुने हुए समाज में स्थानीय संकीर्णता का अभाव बातचीत को महानगरीय, लगभग सर्वदेशीय स्वतंत्रता और व्यापकता प्रदान करता है। हन्सडेन स्वयं अपने घर में एक विनम्र व्यक्ति हैं: जब वे चाहें, तो मेहमानों का मनोरंजन करने की उनमें असीम क्षमता होती है; उनका महल भी दिलचस्प है, कमरे कहानियों से भरे लगते हैं, गलियारे पौराणिक कथाओं से युक्त, हीरे के आकार की जालीदार खिड़कियों की लंबी कतारों वाले कम छत वाले कमरों में एक प्राचीन, रहस्यमय आभा होती है: अपनी यात्राओं में उन्होंने कलात्मक वस्तुओं का भंडार इकट्ठा किया है, जिन्हें उनके पैनल वाले या टेपेस्ट्री वाले कमरों में बड़े करीने से सजाया गया है: मैंने वहाँ एक-दो चित्र और एक-दो मूर्तियाँ देखी हैं, जिन्हें देखकर कई कुलीन कला पारखी भी ईर्ष्या कर सकते हैं।

जब मैं और फ्रांसिस हन्सडेन के साथ भोजन करते और शाम बिताते हैं, तो वह अक्सर हमारे साथ घर तक पैदल चलते हैं। उनका जंगल बड़ा है, और कुछ पेड़ पुराने और विशाल हैं। उसमें घुमावदार रास्ते हैं, जो खुले मैदानों और झाड़ियों से होकर गुजरते हैं, जिससे डेज़ी लेन तक का पैदल सफर थोड़ा लंबा हो जाता है। कई बार, जब पूर्णिमा होती है, और रात सुहावनी और उमस भरी होती है, और कोई बुलबुल गा रही होती है, और एल्डर पेड़ों में छिपी कोई धारा उसके गीत में मधुरता भर देती है, तो दस मील के दायरे में स्थित उस छोटे से गाँव की दूर स्थित चर्च की घंटी आधी रात को बज उठती है, इससे पहले कि जंगल के मालिक हमें हमारे बरामदे पर छोड़ दें। ऐसे समय में उनकी बातें सहज और दिन के समय और गिनती शुरू होने से पहले की तुलना में कहीं अधिक शांत और सौम्य होती थीं। तब वह राजनीति और चर्चाओं को

भूलकर अपने घर के बीते समय, अपने पारिवारिक इतिहास, स्वयं और अपनी भावनाओं पर ध्यान केंद्रित करता था—ये सभी विषय एक विशेष उत्साह से भरे होते थे, क्योंकि वे सभी अपने आप में अद्वितीय थे। जून की एक शानदार रात, जब मैं उसकी आदर्श दुल्हन के बारे में उसे चिढ़ा रहा था और उससे पूछ रहा था कि वह कब आएगी और अपनी विदेशी सुंदरता को पुराने हन्सडेन ओक के पेड़ पर लगाएगी, तो उसने अचानक उत्तर दिया—

“तुम उसे आदर्श कहते हो; लेकिन देखो, यहाँ उसकी परछाई है; और बिना सार के परछाई नहीं हो सकती।”

वह हमें घुमावदार रास्ते की गहराई से एक खुले मैदान में ले गया, जहाँ से बीच के पेड़ हट गए थे, जिससे वह जगह आसमान के लिए खुली रह गई थी; एक निर्मल चंद्रमा अपना प्रकाश इस खुले मैदान में बिखेर रहा था, और हन्सडेन उसकी किरणों के नीचे एक हाथीदांत की लघु मूर्ति को प्रदर्शित कर रहा था।

फ्रैंसेस ने उत्सुकता से पहले उसका निरीक्षण किया; फिर उसने मुझे दे दिया—फिर भी, वह अपना छोटा सा चेहरा मेरे चेहरे के करीब लाकर मेरी आँखों में यह जानने की कोशिश कर रही थी कि मैं उस चित्र के बारे में क्या सोचता हूँ। मुझे लगा कि यह एक बेहद सुंदर और विशिष्ट दिखने वाले स्त्री चेहरे का चित्रण है, जिसमें, जैसा कि उन्होंने एक बार कहा था, "सीधी और सुगठित विशेषताएं" हैं। चेहरा गहरा था; काले बाल न केवल माथे से, बल्कि कनपटी से भी फैले हुए थे—ऐसा लग रहा था मानो लापरवाही से बिखेर दिए गए हों, मानो ऐसी सुंदरता किसी भी व्यवस्था को नकारती हो, बल्कि उसका तिरस्कार करती हो। इतालवी आँख सीधे आपकी आँखों में देख रही थी, और वह एक स्वतंत्र, दृढ़ आँख थी; होंठ उतने ही दृढ़ थे जितने कि सुंदर; ठोड़ी भी वैसी ही थी। लघुचित्र के पीछे सुनहरे अक्षरों में "ल्यूसिया" लिखा था।

मेरा निष्कर्ष यह था, "यह सचमुच एक बड़ा सिर है।"

हंसडेन मुस्कुराया।

“मुझे ऐसा ही लगता है,” उसने जवाब दिया। “ल्यूसिया में सब कुछ वास्तविक था।”

"और वह ऐसी महिला थी जिससे आप शादी करना चाहते थे - लेकिन नहीं कर सके?"

"मैं उससे शादी करना चाहता था, और मैंने ऐसा नहीं किया, यह इस बात का

सबूत है कि मैं ऐसा कर ही नहीं सकता था।"

उसने वह लघुचित्र वापस ले लिया, जो अब फिर से फ्रांसिस के हाथ में था, और उसे एक तरफ रख दिया।

"तुम्हें यह कैसा लगा?" उसने मेरी पत्नी से पूछा, और साथ ही उसने अपने कोट के बटन भी बंद कर लिए।

“मुझे यकीन है कि लूसिया ने कभी जंजीरें पहनी थीं और उन्हें तोड़ा था,” यह अजीब सा जवाब था। “मेरा मतलब वैवाहिक जंजीरों से नहीं है,” उसने खुद को सुधारते हुए कहा, मानो उसे गलतफहमी का डर हो, “बल्कि किसी तरह की सामाजिक जंजीरों से है। यह चेहरा उस व्यक्ति का है जिसने किसी सशक्त और मूल्यवान क्षमता को असहनीय बंधन से मुक्त करने का प्रयास किया है, और वह प्रयास सफल और विजयी रहा है; और जब लूसिया की क्षमता मुक्त हुई, तो मुझे यकीन है कि उसने अपने पंख फैलाए और उसे—” वह हिचकिचाई।

"किससे ज़्यादा?" हन्सडेन ने पूछा।

“‘लेस कन्वेनेंस’ ने आपको अनुसरण करने की अनुमति दी।”

मुझे लगता है कि तुम द्वेषपूर्ण और उद्दंड होते जा रहे हो।

“ल्यूसिया ने रंगमंच पर अपनी कला का प्रदर्शन किया है,” फ्रांसिस ने आगे कहा। “आपने कभी गंभीरता से उससे शादी करने के बारे में नहीं सोचा; आप उसकी मौलिकता, उसकी निडरता, उसके शारीरिक और मानसिक ऊर्जा के प्रशंसक थे; आप उसकी प्रतिभा से प्रसन्न थे, चाहे वह गायन हो, नृत्य हो या नाट्य प्रस्तुति; आप उसकी सुंदरता के अगाध थे, जो आपके दिल को छू लेने वाली थी: लेकिन मुझे यकीन है कि उसने एक ऐसा क्षेत्र भरा था जहाँ से आप कभी किसी को पत्नी के रूप में अपनाने के बारे में नहीं सोचते।”

“अद्भुत,” हन्सडेन ने टिप्पणी की; “यह सच है या नहीं, यह एक अलग सवाल है। इस बीच, क्या आपको नहीं लगता कि लूसिया जैसी चंचल महिला के सामने आपकी छोटी सी आत्मा का दीपक फीका पड़ जाता है?”

"हाँ।"

"कम से कम स्पष्ट तो हो; और क्या प्रोफेसर जल्द ही आपके द्वारा दी जा रही धुंधली रोशनी से असंतुष्ट नहीं होंगे?"

“क्या आप ऐसा करेंगे, महाशय?”

"मेरी दृष्टि हमेशा से ही इतनी कमजोर थी कि मैं तेज धूप सहन नहीं कर सकती थी, फ्रांसिस," और अब हम विकेट तक पहुँच चुके थे।

मैंने कुछ पन्ने पहले कहा था कि यह एक प्यारी गर्मी की शाम है; यह सच है—कई खूबसूरत दिन बीत चुके हैं, और यह सबसे प्यारी शाम है; मेरे खेतों से अभी-अभी घास लाई गई है, उसकी खुशबू अभी भी हवा में बसी है। एक-दो घंटे पहले फ्रांसिस ने मुझे लॉन में चाय पीने का प्रस्ताव दिया था; मैं एक खास बीच के पेड़ के नीचे चीनी मिट्टी के बर्तनों से सजी गोल मेज देख रही हूँ; हन्सडेन के आने की उम्मीद है—नहीं, मैंने सुना है कि वह आ गया है—उसकी आवाज़ आ रही है, किसी मुद्दे पर अधिकारपूर्वक अपना मत जताते हुए; फ्रांसिस जवाब देती है; ज़ाहिर है, वह उसका विरोध करती है। वे विक्टर के बारे में बहस कर रहे हैं, जिसके बारे में हन्सडेन का कहना है कि उसकी माँ उसे कमज़ोर समझ रही है। श्रीमती क्रिम्सवर्थ पलटवार करती हैं:—

"हजार गुना बेहतर है कि वह एक डरपोक लड़का हो, बजाय इसके कि जिसे हन्सडेन 'एक अच्छा लड़का' कहता है; और इसके अलावा वह कहती है कि अगर हन्सडेन पड़ोस में स्थायी रूप से रहने लगे, और केवल एक धूमकेतु की तरह न रहे, जो कभी आता है, कभी जाता है, और कभी जाता है, तो वह तब तक बहुत बेचैन रहेगी जब तक कि वह विक्टर को कम से कम सौ मील दूर किसी स्कूल में न भेज दे; क्योंकि अपने विद्रोही सिद्धांतों और अव्यावहारिक सिद्धांतों से वह बीस बच्चों का भविष्य बर्बाद कर देगा।"

इस पांडुलिपि को अपनी मेज में बंद करने से पहले मुझे विक्टर के बारे में कुछ कहना है - लेकिन यह संक्षिप्त ही होना चाहिए, क्योंकि मुझे चीनी मिट्टी के बर्तनों पर चांदी की झंकार सुनाई दे रही है।

विक्टर उतना ही कम सुंदर बच्चा है जितना मैं किसी सुंदर पुरुष को नहीं पहचानती, या उसकी माँ किसी सुंदर स्त्री को नहीं पहचानती; वह पीला और दुबला-पतला है, उसकी आँखें बड़ी-बड़ी हैं, फ्रांसिस की आँखों की तरह गहरी और मेरी आँखों की तरह धँसी हुई। उसका शरीर सुडौल है, लेकिन दुबला-पतला है; उसका स्वास्थ्य अच्छा है। मैंने कभी किसी बच्चे को इतना कम मुस्कुराते नहीं देखा, न ही किसी ऐसे बच्चे को देखा है जो किसी रुचिकर किताब को पढ़ते समय या अपनी माँ, हन्सडन या मुझसे रोमांच, खतरे या आश्चर्य की कहानियाँ सुनते समय इतनी दृढ़ता से

भौंहें सिकोड़ता हो। लेकिन शांत होने के बावजूद, वह दुखी नहीं है - गंभीर तो है, लेकिन उदास नहीं; सुखद संवेदनाओं के प्रति उसकी संवेदनशीलता इतनी तीव्र है कि वह उत्साह के समान है। उसने अपनी माँ की गोद में बैठकर पुराने तरीके से वर्तनी की किताब से पढ़ना सीखा, और क्योंकि वह इस विधि से बिना किसी खास प्रगति के आगे बढ़ रहा था, इसलिए उसकी माँ ने उसे पढ़ने के लिए कागज़ात खरीदने या सीखने के लिए आजकल अनिवार्य माने जाने वाले अन्य प्रोत्साहनों को आज़माने की आवश्यकता नहीं समझी। जब से वह पढ़ना सीख गया, तब से वह किताबों का शौकीन हो गया और आज भी वैसा ही है। उसके खिलौने बहुत कम रहे हैं और उसने कभी और खिलौनों की चाह नहीं की। उसके पास जो खिलौने हैं, उनके प्रति उसका लगाव एक तरह से स्नेह के समान है; घर के एक-दो जीवित जानवरों के प्रति यह भावना लगभग जुनून में तब्दील हो जाती है।

श्री हन्सडेन ने उन्हें एक मास्टिफ़ कुत्ता दिया, जिसका नाम उन्होंने देने वाले के नाम पर योर्क रखा; वह एक शानदार कुत्ता बन गया, जिसकी उग्रता उसके युवा मालिक की संगति और दुलार से काफी हद तक कम हो गई थी। वह योर्क के बिना कहीं नहीं जाते, कुछ नहीं करते; योर्क उनके पैरों के पास लेटकर उनकी पढ़ाई करता, बगीचे में उनके साथ खेलता, गली और जंगल में उनके साथ घूमता, भोजन के समय उनकी कुर्सी के पास बैठता, हमेशा उनके अपने हाथों से खाना खाता, सुबह उठते ही सबसे पहले योर्क को ढूंढता और रात को सोने से पहले उसे ही छोड़ता। एक दिन योर्क श्री हन्सडेन के साथ X — — गया, और सड़क पर एक पागल कुत्ते ने उसे काट लिया। जैसे ही हन्सडेन उसे घर लाए और मुझे घटना की सूचना दी, मैं आंगन में गया और जहाँ वह अपना घाव चाट रहा था, वहीं उसे गोली मार दी: वह पल भर में मर गया; उसने मुझे बंदूक चलाते हुए नहीं देखा; मैं उसके पीछे खड़ा था। घर में आए हुए मुझे मुश्किल से दस मिनट ही हुए थे कि मेरे कानों में पीड़ा भरी आवाज़ें सुनाई दीं: मैं एक बार फिर आंगन की ओर भागा, क्योंकि वे लोग वहीं से जा रहे थे। विक्टर अपने मरे हुए मास्टिफ़ कुत्ते के पास घुटनों के बल बैठा था, उस पर झुका हुआ था, उसकी बैल जैसी गर्दन को थामे हुए था, और घोर शोक में डूबा हुआ था: उसने मुझे देखा।

“ओह पापा, मैं आपको कभी माफ नहीं करूँगा! मैं आपको कभी माफ नहीं करूँगा!” उसने चीखते हुए कहा। “आपने योर्क को गोली मार दी – मैंने खिड़की से देखा। मुझे कभी विश्वास नहीं हुआ कि आप इतने क्रूर हो सकते हैं – मैं अब आपसे

प्यार नहीं कर सकता!"

मुझे बड़ी मुश्किल से उसे शांत स्वर में इस काम की कठोर आवश्यकता समझानी पड़ी; फिर भी, उसी असहनीय और कड़वे स्वर में, जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता, लेकिन जिसने मेरे दिल को छलनी कर दिया, उसने दोहराया—

"वह ठीक हो सकता था—तुम्हें कोशिश करनी चाहिए थी—तुम्हें घाव को गर्म लोहे से जला देना चाहिए था, या उस पर कोई ज्वलनशील पदार्थ लगा देना चाहिए था। तुमने समय नहीं दिया; और अब बहुत देर हो चुकी है—वह मर चुका है!"

वह बेजान शव पर लगभग बैठ गया; मैंने धैर्यपूर्वक काफी देर तक प्रतीक्षा की, जब तक कि उसका दुःख कुछ कम नहीं हो गया; फिर मैंने उसे अपनी बाहों में उठाया और उसकी माँ के पास ले गया, मुझे पूरा विश्वास था कि वही उसे सबसे अच्छी तरह सांत्वना दे पाएगी। उसने खिड़की से सारा दृश्य देखा था; वह अपनी भावनाओं से मेरी मुश्किलें बढ़ने के डर से बाहर नहीं आई, लेकिन अब वह उसे लेने के लिए तैयार थी। उसने उसे अपने दयालु हृदय से लगाया और अपनी कोमल गोद में बिठा लिया; कुछ देर तक केवल अपने होठों, अपनी आँखों और अपने कोमल आलिंगन से उसे सांत्वना दी; और फिर, जब उसका रोना कम हुआ, तो उसने उसे बताया कि योर्क को मरते समय कोई पीड़ा नहीं हुई थी, और अगर उसे स्वाभाविक रूप से मरने दिया जाता, तो उसका अंत अत्यंत भयानक होता; सबसे बढ़कर, उसने उसे बताया कि मैं क्रूर नहीं हूँ (क्योंकि यह विचार बेचारे विक्टर को अत्यंत पीड़ा पहुँचा रहा था), कि योर्क और उसके प्रति मेरे स्नेह ने ही मुझे ऐसा करने पर मजबूर किया था, और उसे इस तरह फूट-फूट कर रोते देखकर मेरा हृदय लगभग टूट गया था।

अगर ये बातें, ये कारण, जो इतनी धीमी, इतनी मधुर आवाज़ में कहे गए थे—इतने कोमल स्पर्शों के साथ—इतनी दया और सहानुभूति से भरी निगाहों के साथ—विक्टर पर कोई असर न डालते, तो विक्टर अपने पिता का सच्चा पुत्र नहीं होता। लेकिन इन बातों का असर हुआ: वह शांत हो गया, अपना चेहरा उसके कंधे पर टिका दिया और उसकी बाहों में स्थिर लेट गया। थोड़ी देर बाद ऊपर देखते हुए उसने अपनी माँ से फिर से पूछा कि उसने योर्क को कोई पीड़ा न होने और मेरे क्रूर न होने के बारे में क्या कहा था; उन मीठे शब्दों को दोहराए जाने पर, उसने फिर से अपना गाल उसकी छाती पर टिका दिया और फिर से शांत हो गया।

कुछ घंटों बाद, वह मेरे पुस्तकालय में आया, मुझसे पूछा कि क्या मैंने उसे क्षमा

कर दिया है, और सुलह करना चाहता था। मैंने उस लड़के को अपने पास बुलाया और कुछ देर तक उसे वहीं बैठाए रखा, उससे बहुत बातें कीं, जिसके दौरान उसने अपने बेटे के कई ऐसे भाव और विचार प्रकट किए जो मुझे पसंद आए। यह सच है कि मुझे उसमें "अच्छे" या "नेक" होने के कुछ ही गुण मिले; शराब के प्याले पर चमकने वाली या भावनाओं को विनाशकारी आग में बदलने वाली भावना की झलक भी नहीं दिखी; लेकिन मैंने उसके हृदय की भूमि में करुणा, स्नेह और निष्ठा के स्वस्थ और बढ़ते हुए बीज देखे। मैंने उसकी बुद्धि के बगीचे में अच्छे सिद्धांतों - तर्क, न्याय, नैतिक साहस - की भरपूर वृद्धि देखी, जो अगर नष्ट न हुए हों तो भी उपजाऊ फल देने के लिए सिद्ध थे। इसलिए मैंने उसके विशाल माथे और उसके गालों पर - जो अभी भी आंसुओं से पीले थे - एक गर्वपूर्ण और संतुष्टि भरा चुंबन दिया, और उसे सांत्वना देकर विदा किया। फिर भी मैंने उसे अगले दिन उस टीले पर लेटा हुआ देखा जिसके नीचे योर्क को दफनाया गया था, उसका चेहरा उसके हाथों से ढका हुआ था; वह कुछ हफ्तों तक उदास रहा, और एक साल से अधिक समय बीतने के बाद ही उसने दूसरा कुत्ता रखने के किसी भी प्रस्ताव को सुना।

विक्टर जल्दी सीखता है। उसे जल्द ही ईटन जाना होगा, जहाँ मुझे लगता है कि उसके पहले एक-दो साल बेहद कष्टदायक होंगे: मुझे, अपनी माँ को और अपने घर को छोड़ना उसके दिल को असहनीय पीड़ा देगा; फिर, पढ़ाई का बोझ उसे रास नहीं आएगा - लेकिन प्रतिस्पर्धा, ज्ञान की प्यास, सफलता का गौरव उसे प्रेरित करेगा और समय के साथ उसे पुरस्कृत भी करेगा। इस बीच, मुझे उस समय को तय करने में तीव्र घृणा हो रही है जो मेरे एकमात्र प्रेम के रिश्ते को उखाड़कर मुझसे दूर ले जाएगा; और जब मैं इस विषय पर फ्रांसिस से बात करती हूँ, तो वह एक प्रकार के धैर्य और पीड़ा के साथ सुनती है, मानो मैं किसी भयानक ऑपरेशन का जिक्र कर रही हूँ, जिससे उसका स्वभाव काँप उठता है, लेकिन उसका धैर्य उसे पीछे हटने नहीं देता। फिर भी, यह कदम उठाना ही होगा, और उठाया जाएगा; क्योंकि, हालाँकि फ्रांसिस अपने बेटे को कमजोर नहीं बनाएगी, लेकिन वह उसे एक ऐसे व्यवहार, एक ऐसी सहनशीलता, एक ऐसी सौहार्दपूर्ण कोमलता की आदत डालेगी जो उसे किसी और से नहीं मिलेगी। वह देखती है, जैसा कि मैं भी देखता हूँ, विक्टर के स्वभाव में कुछ ऐसा है—एक प्रकार का विद्युतीय जोश और शक्ति—जो कभी-कभी अशुभ चिंगारियाँ बिखेरता है; हन्सडेन इसे उसकी आत्मा कहते हैं और कहते हैं कि इसे दबाना नहीं

चाहिए। मैं इसे पापी आदम का खमीर कहता हूँ और मानता हूँ कि यदि इसे उससे पूरी तरह से नहीं निकाला जा सकता, तो कम से कम उसे अच्छी तरह से अनुशासित किया जाना चाहिए; और वह किसी भी प्रकार के शारीरिक या मानसिक कष्ट के लिए तैयार है जो उसे आत्म-संयम की कला में गहराई से स्थापित कर देगा। फ्रांसिस अपने बेटे के इस विशिष्ट चरित्र को कोई नाम नहीं देती; लेकिन जब यह उसके दाँत पीसने में, उसकी आँखों की चमक में, निराशा, दुर्भाग्य, अचानक दुख या कथित अन्याय के विरुद्ध भावनाओं के उग्र विद्रोह में प्रकट होता है, तो वह उसे अपने सीने से लगा लेती है, या उसे अपने साथ अकेले जंगल में टहलने ले जाती है; तब वह उससे किसी दार्शनिक की तरह तर्क करती है, और तर्क के लिए विक्टर हमेशा सुलभ होता है; तब वह उसे प्रेम भरी निगाहों से देखती है, और प्रेम से विक्टर को अचूक रूप से वश में किया जा सकता है; लेकिन क्या भविष्य में दुनिया उसकी हिंसा का सामना तर्क या प्रेम के हथियारों से करेगी? ओह, नहीं! उसकी काली आँखों की उस चमक के लिए—उसकी हड्डियों वाले माथे पर छाए उस बादल के लिए—उसकी मूर्ति जैसी सुंदर होठों की उस जकड़न के लिए, उस लड़के को एक दिन प्यार भरी बातों की जगह मार पड़ेगी—चुंबनों की जगह लातें पड़ेंगी; फिर मौन क्रोध के उस प्रकोप के लिए जो उसके शरीर को बीमार और उसकी आत्मा को पागल कर देगा; फिर उस योग्य और लाभकारी पीड़ा की परीक्षा के लिए, जिससे वह (मुझे विश्वास है) एक समझदार और बेहतर इंसान बनकर निकलेगा।

मैं उसे अभी देख रहा हूँ; वह हन्सडेन के पास खड़ा है, जो बीच के पेड़ के नीचे लॉन में बैठा है; हन्सडेन का हाथ लड़के के कॉलर पर है, और वह न जाने कौन से सिद्धांत उसके कानों में डाल रहा है। विक्टर अभी ठीक लग रहा है, क्योंकि वह मुस्कुराते हुए दिलचस्पी से सुन रहा है; वह मुस्कुराते समय अपनी माँ जैसा दिखता है - अफसोस, धूप कितनी कम निकलती है! विक्टर हन्सडेन को बहुत पसंद करता है, उतना ही जितना मैं उचित समझता हूँ, यह मेरे द्वारा उस व्यक्ति के लिए महसूस की गई किसी भी भावना से कहीं अधिक प्रबल, दृढ़ और भेदभाव रहित है। फ्रांसिस भी इसे एक तरह की अनकही चिंता से देखती है; जब उसका बेटा हन्सडेन के घुटने पर झुकता है, या उसके कंधे से टिका होता है, तो वह बेचैनी से इधर-उधर घूमती रहती है, जैसे कोई कबूतर अपने बच्चे को मंडराते हुए बाज से बचा रहा हो; वह कहती है कि काश हन्सडेन के अपने बच्चे होते, क्योंकि तब वह उनके अहंकार को भड़काने और

उनकी कमजोरियों को बढ़ावा देने के खतरे को बेहतर ढंग से समझ पाता।

फ्रैंसेस मेरी लाइब्रेरी की खिड़की के पास आती है; उसे आधा ढकने वाली हनीसकल की लता को हटाती है और मुझे बताती है कि चाय तैयार है; यह देखकर कि मैं अभी भी व्यस्त हूँ, वह कमरे में प्रवेश करती है, चुपचाप मेरे पास आती है और अपना हाथ मेरे कंधे पर रखती है।

“सर बहुत ही मेहनती हैं।”

मैं जल्द ही काम पूरा कर लूंगा।

वह पास में एक कुर्सी खींचकर बैठ जाती है और मेरे समाप्त होने तक प्रतीक्षा करती है; उसकी उपस्थिति मेरे मन को उतनी ही सुखद लगती है जितनी ताजी घास और सुगंधित फूलों की खुशबू, पश्चिम की ओर ढलते सूरज की चमक, और ग्रीष्म संक्रांति की पूर्व संध्या की शांति मेरी इंद्रियों को सुकून देती है।

लेकिन हन्सडेन आता है; मुझे उसके कदमों की आहट सुनाई देती है, और वह वहाँ है, जाली से झुककर, जहाँ से उसने बेरहमी से बेल को हटा दिया है, जिससे दो मधुमक्खियाँ और एक तितली विचलित हो गई हैं।

“क्रिम्सवर्थ! मैं कहती हूँ, क्रिम्सवर्थ! उसके हाथ से कलम छीन लो, मालकिन, और उसे अपना सिर ऊपर उठाने के लिए कहो।”

“तो, हन्सडेन? मैं आपकी बात सुन रहा हूँ—”

“मैं कल X — — पर था! आपका भाई नेड रेलवे के सट्टेबाजी से क्रोएसस से भी ज़्यादा अमीर हो रहा है; पीस हॉल में उसे दस का बारह नंबर का हिरण कहते हैं; और मैंने ब्राउन से सुना है। एम., मैडम वैंडेनहुटेन और जीन बैपटिस्ट अगले महीने आपसे मिलने आ रहे हैं। उसने पेलेट्स का भी ज़िक्र किया; उसने कहा कि उनके घर में सामंजस्य दुनिया में सबसे अच्छा नहीं है, लेकिन व्यापार में वे ‘ऑन ने प्यू म्यू’ (बहुत अच्छा) कर रहे हैं, जिससे उसे लगता है कि दोनों के बीच किसी भी छोटी-मोटी अनबन के लिए काफ़ी तसल्ली होगी। क्रिम्सवर्थ, आप पेलेट्स को — — शायर क्यों नहीं बुलाते? मैं आपकी पहली प्रेमिका, ज़ोराइड को देखना चाहता हूँ। मालकिन, ईर्ष्या मत कीजिए, लेकिन वह उस महिला से बेइंतहा प्यार करता था; मुझे यह बात पक्के तौर पर पता है। ब्राउन कहता है कि अब उसका वज़न बारह स्टोन है; आप देख लीजिए कि आपने क्या खोया है, श्रीमान प्रोफ़ेसर। अब, महाशय और महोदया, अगर आप चाय पर नहीं आते हैं, तो विक्टर और मैं आपके बिना ही शुरू कर देंगे।”

“पिताजी, ये क्या!”

एम्मा

इस अधूरे उपन्यास में केवल 20 पृष्ठों की पांडुलिपि है और यह 1860 में मरणोपरांत प्रकाशित हुआ था। हाल के वर्षों में, इस खंड के कम से कम दो और भाग प्रकाशित हो चुके हैं।

शार्लोट ब्रोंटे, तस्वीर, 1854

अंतर्वस्तु

अध्याय 1।
अध्याय II.

अध्याय 1।

हम सभी जीवन में एक आदर्श की तलाश करते हैं। एक साल पहले मेरे मन में एक सुखद विचार आया कि शायद ऐसे मनुष्य बहुत कम हैं जो जीवन के किसी न किसी पड़ाव पर, कमोबेश थोड़े समय के लिए ही सही, अपने आदर्श की खोज न कर पाते हों। मैंने अपनी जवानी में तो निश्चित रूप से इसे नहीं पाया था, हालांकि इसके अस्तित्व में मेरा दृढ़ विश्वास मेरे सबसे उज्ज्वल और जीवंत समय में मुझे आशावान बनाए रखने के लिए पर्याप्त था। मैंने इसे परिपक्वता में भी नहीं पाया था। मैं इसे कभी न पाने के लिए तैयार हो चुका था। मैंने कुछ धुंधले साल पूरी तरह शांत और आशाहीनता में बिताए थे। और अब मुझे यकीन नहीं था, लेकिन कुछ ऐसा था जो मेरे घर के आसपास मंडरा रहा था और मुझे बेहद प्रसन्न कर रहा था।

इसे देखिए, पाठक। मेरे बैठक कक्ष में आइए और स्वयं निर्णय कीजिए कि क्या इस चीज़ की देखभाल करना मेरा उचित है। पहले, कृपया मुझे परख लीजिए। एक संतोषजनक परिचय और एक-दूसरे को ठीक से समझने के बाद हम बेहतर ढंग से बातचीत कर पाएंगे। मेरा नाम श्रीमती चालफॉन्ट है। मैं विधवा हूँ। मेरा घर अच्छा है, और मेरी आमदनी इतनी है कि दान या आतिथ्य सत्कार की भावना को रोकने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अभी जवान नहीं हूँ, लेकिन बूढ़ी हो चुकी हूँ। मेरे बालों में अभी सफ़ेदी नहीं आई है, लेकिन उनकी पीली चमक फीकी पड़ गई है। मेरे चेहरे पर झुर्रियाँ अभी आनी बाकी हैं, लेकिन मैं उन दिनों को लगभग भूल चुकी हूँ जब मेरे चेहरे पर कभी रौनक हुआ करती थी। मेरी शादी बहुत कम उम्र में हुई थी। मैंने पंद्रह साल ऐसा जीवन जिया जो, चाहे कितनी भी कठिनाइयों से भरा हो, ठहराव भरा नहीं कहा जा सकता। फिर पाँच साल मैं अकेली रही और निःसंतान होने के कारण अकेली पड़ गई। हाल ही में, भाग्य ने अपने पहिये के एक अजीब मोड़ से, मेरे जीवन में एक रुचि और एक साथी ला दिया।

जिस मोहल्ले में मैं रहती हूँ, वह काफी सुखद है, वहाँ का नज़ारा मनमोहक है और

समाज सभ्य है, हालाँकि वहाँ लोगों की संख्या कम है। मेरे घर से लगभग एक मील दूर एक लड़कियों का स्कूल है, जो हाल ही में स्थापित हुआ है—लगभग तीन साल पहले। इस स्कूल की संचालक मेरी परिचित थीं; और हालाँकि मैं यह नहीं कह सकती कि वे मेरी नज़र में सर्वोच्च स्थान रखती थीं—क्योंकि वे कुछ महीनों के लिए विदेश में रहकर अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद बहुत कुछ बनावटी, दिखावटी और आडंबरपूर्ण बातें लेकर लौटी थीं—फिर भी मैंने उन्हें वह सम्मान दिया जो उन सभी महिलाओं को मिलना चाहिए जो जीवन का साहसपूर्वक सामना करती हैं और अपने प्रयासों से अपना रास्ता खुद बनाने की कोशिश करती हैं।

मिस विलकॉक्स द्वारा स्कूल खोलने के लगभग एक साल बाद, जब उनके विद्यार्थियों की संख्या अभी भी बेहद सीमित थी और निस्संदेह वे संख्या बढ़ाने के लिए उत्सुक थीं, एक दिन उनके छोटे से रास्ते का प्रवेश द्वार एक बग्घी के लिए खोला गया - "एक बहुत ही सुंदर, फैशनेबल बग्घी," मिस मेबल विलकॉक्स ने बाद में घटना का वर्णन करते हुए कहा - जिसे दो शानदार घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा था। रास्ते पर गाड़ी का आना, दरवाजे की घंटी की तेज़ आवाज़, घर में हलचल भरा प्रवेश, और रोशन ड्राइंग-रूम में औपचारिक प्रवेश - इन सबने फ्यूशिया लॉज में काफी उत्साह पैदा कर दिया। मिस विलकॉक्स नए दस्ताने पहने और हाथ में फ्रेंच कैम्ब्रिक का रूमाल लिए स्वागत कक्ष में गईं।

उसने सोफे पर एक सज्जन को बैठे हुए पाया, जो उठते ही लंबे और आकर्षक व्यक्ति प्रतीत हुए; कम से कम उसे ऐसा ही लगा, क्योंकि वे प्रकाश की ओर पीठ करके खड़े थे। उन्होंने अपना परिचय श्री फिट्ज़गिबन के रूप में दिया, पूछा कि क्या मिस विलकॉक्स के पास कोई सीट खाली है, और बताया कि वे अपनी बेटी को एक नई छात्रा के रूप में उनकी देखरेख में सौंपना चाहते हैं। यह खबर उसके लिए खुशी की बात थी, क्योंकि मिस विलकॉक्स के स्कूल में कई सीटें खाली थीं; वास्तव में, उनके स्कूल में अभी केवल तीन ही छात्राएँ थीं, और वह और उनकी बहनें अपने पहले छमाही के अंत में हिसाब-किताब के मिलान को लेकर बिल्कुल भी आश्वस्त नहीं थीं। ऐसे में, श्री फिट्ज़गिबन ने हाथ के इशारे से जिस ओर उसका ध्यान दिलाया, उससे ज्यादा सुखद कुछ और नहीं हो सकता था - ड्राइंग रूम की खिड़की के पास खड़ी एक बच्ची की आकृति।

यदि मिस विलकॉक्स के संस्थान में अधिक विद्यार्थी होते — यदि उन्होंने वास्तव में

समृद्धि के उस पथ पर अच्छी तरह से कदम रखा होता, जिसे बाद के वर्षों में बाहरी दिखावे पर अटूट ध्यान देने के कारण उन्होंने इतनी शानदार ढंग से हासिल किया — तो उनके मन में सबसे पहला विचार यह होता कि अब प्रस्तावित विद्यार्थी एक उत्कृष्ट विद्यार्थी के रूप में कितना उपयुक्त होगा। वह तुरंत उसके रूप-रंग, पहनावे आदि का अवलोकन करतीं और इन संकेतों से उसके मूल्य का अनुमान लगातीं। हालाँकि, उन चिंताजनक शुरुआती दिनों में, मिस विलकॉक्स के पास इस तरह के मूल्यांकन का समय शायद ही था: एक नए विद्यार्थी के लिए शिक्षक की शर्तों से अलग चालीस पाउंड प्रति वर्ष का शुल्क लगता था — और चालीस पाउंड प्रति वर्ष वह राशि थी जिसकी मिस विलकॉक्स को आवश्यकता थी और जिसे पाकर वह प्रसन्न थीं; इसके अलावा, उत्तम आचरण, उत्तम सज्जन और प्रतिष्ठित नाम ने प्रस्तावित संबंध में योग्यता का पर्याप्त और संतोषजनक आश्वासन दिया। तब यह स्वीकार किया गया कि फुशिया लॉज में रिक्तियाँ थीं; कि मिस फिट्ज़गिबन को तुरंत प्रवेश दिया जा सकता था; कि उन्हें वह सब कुछ सीखना था जो स्कूल के विवरणिका में पढ़ाने का प्रस्ताव था; हर अतिरिक्त खर्च के लिए उत्तरदायी: संक्षेप में, उतना ही महंगा और फलदायी विद्यार्थी बनना जितना किसी भी निध्यापिका का दिल चाहे। यह सब मखमली कपड़े की तरह, सहजता और उदारता से व्यवस्थित किया गया था। श्री फिट्ज़गिबन ने इस व्यवहार में सौदेबाजी करने वाले व्यापारी की कठोरता या तंगहाल पेशेवर की चिंता का जरा भी संकेत नहीं दिया। मिस विलकॉक्स ने उन्हें "पूर्णतः सज्जन" पाया। हर बात ने उन्हें उस छोटी लड़की की ओर थोड़ा झुकाव दिया, जिसे उन्होंने विदा लेते समय औपचारिक रूप से उनकी देखरेख में सौंप दिया था; और मानो उनकी सुखद धारणा को पूरा करने के लिए कोई भी परिस्थिति कम न हो, कार्ड पर लिखा पता मिस विलकॉक्स की संतुष्टि को पूरा करने के लिए पर्याप्त था - कॉनवे फिट्ज़गिबन, एस्क्वायर, मे पार्क, मिडलैंड काउंटी। उसी दिन नवागंतुक के पक्ष में तीन आदेश पारित किए गए: -

पहला। वह मिस विलकॉक्स की सहेली बनने वाली थी।

2. मेज पर उसके बगल में बैठना।

तीसरा. उसके साथ बाहर जाना।

कुछ ही दिनों में यह स्पष्ट हो गया कि इनमें एक चौथा गुप्त खंड भी जोड़ दिया गया था, अर्थात्, मिस फिट्जगिबन को हर संभव अवसर पर विशेष महत्व दिया जाना

था, उनकी देखभाल की जानी थी और उन्हें सुरक्षा प्रदान की जानी थी।

एक कुप्रवृत्ति वाली छात्रा, जो फुशिया लॉज में आने से पहले हार्टवुड की कुछ पुराने विचारों वाली मिस स्टर्लिंग की देखरेख में एक वर्ष बिता चुकी थी और उनसे न्याय के अव्यावहारिक विचार प्राप्त कर चुकी थी, ने इस पक्षपातपूर्ण प्रणाली पर अपनी राय व्यक्त करने का बीड़ा उठाया।

"मिस स्टर्लिंग," उसने नासमझी से कहा, "कभी भी किसी लड़की को इस आधार पर अलग नहीं मानती थीं कि वह बाकी लड़कियों से ज़्यादा अमीर या बेहतर कपड़े पहनती थी। वे ऐसा करने से कतराती थीं। वे हमेशा लड़कियों को उनके सहपाठियों के साथ अच्छे व्यवहार और पढ़ाई में लगन के आधार पर पुरस्कृत करती थीं, न कि उनके रेशमी कपड़ों, बढ़िया फीतों और पंखों की संख्या के आधार पर।"

यह नहीं भूलना चाहिए कि मिस फिट्ज़गिबन के संदूक खोलने पर एक शानदार अलमारी मिली; कपड़े इतने उत्तम थे कि स्कूल के शयनकक्ष की रंगीन लकड़ी की दराजों में रखने के बजाय, मिस विलकॉक्स ने उन्हें अपने कमरे में एक महोगनी की अलमारी में सजाया था। रविवार को वह अपने हाथों से अपनी नन्ही लाडली को रजाईदार रेशमी कोट, टोपी और पंख, फर का बोआ और छोटे फ्रेंच जूते और दस्ताने पहनाती थीं। और जब वह युवा उत्तराधिकारी (मिस्टर फिट्ज़गिबन के पहले दौरे के बाद मिले एक पत्र में यह अतिरिक्त जानकारी थी कि उनकी बेटी उनकी इकलौती संतान है और उनकी जागीरों की उत्तराधिकारी होगी, जिसमें मे पार्क, मिडलैंड काउंटी भी शामिल है) को चर्च में ले गईं और उन्हें गैलरी की बेंच के शीर्ष पर अपने बगल में शान से बैठाया, तो उन्हें बहुत आत्मसंतुष्टि महसूस हुई। निष्पक्ष पर्यवेक्षक शायद यह सोचकर हैरान होते कि इस रेशमी पोशाक वाली छोटी सी महिला में गर्व करने लायक क्या था, और उसकी खास खूबियों को समझने के लिए वे अपना सिर खुजाते। सच तो यह है कि मिस फिट्ज़गिबन स्कूल की सबसे सुंदर लड़की तो बिल्कुल नहीं थीं: उनकी सहेलियों में दो-तीन ऐसी लड़कियाँ थीं जिनका चेहरा उनसे कहीं ज़्यादा सुंदर था। अगर वह गरीब बच्ची होतीं, तो मिस विलकॉक्स को उनका चेहरा बिल्कुल भी पसंद नहीं आता: बल्कि, सच कहें तो, वह उन्हें आकर्षित करने के बजाय विमुख करतीं; और तो और—हालाँकि मिस विलकॉक्स ने इस बात को कभी खुद स्वीकार नहीं किया, बल्कि इसके विपरीत, उन्होंने इसे नज़रअंदाज़ करने की पूरी कोशिश की —ऐसे क्षण भी आते थे जब उन्हें अपने इस पक्षपातपूर्ण रवैये को जारी रखने में एक

अजीब सी थकान महसूस होती थी। इस विशेष मामले में यह विशेष भेद दिखाना उनके लिए स्वाभाविक नहीं था। कभी-कभी उन्हें एक अनिश्चित आश्चर्य होता था कि इस नन्ही उत्तराधिकारी की चापलूसी और दुलार करने में उन्हें ज़्यादा सच्ची संतुष्टि क्यों नहीं मिलती—कि उन्हें उसे हमेशा अपने पास, अपनी विशेष देखरेख में रखना ज़्यादा अच्छा क्यों नहीं लगता। सिद्धांत के आधार पर मिस विलकॉक्स ने अपनी शुरू की हुई योजना को जारी रखा। सिद्धांत के आधार पर, क्योंकि उन्होंने स्वयं से तर्क किया: यह मेरी सबसे धनी और कुलीन छात्रा थी; वह मुझे सबसे अधिक सम्मान और लाभ दिलाती है; इसलिए, न्यायसंगत रूप से मुझे उसके प्रति विशेष उदारता दिखानी चाहिए; और उन्होंने ऐसा किया भी - लेकिन धीरे-धीरे बढ़ती हुई विचित्र भावना के साथ।

निश्चित रूप से, छोटी मिस फिट्ज़गिबन पर बरसाए गए अनुचित अनुग्रहों से उन्हें कोई वास्तविक लाभ नहीं मिला। पसंदीदा होने के कारण, वह सहपाठी बनने के योग्य नहीं थीं, इसलिए उनके सहपाठियों ने उनकी संगति को पूरी दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया। सक्रिय अस्वीकृति की आवश्यकता जल्द ही नहीं पड़ी; यह स्पष्ट हो गया कि निष्क्रिय रूप से बचना ही पर्याप्त था; वह लाडली नहीं थी। जी हाँ, मिस विलकॉक्स ने भी उन्हें कभी सामाजिक नहीं समझा। जब वह मेहमानों के आने पर ड्राइंग रूम में उन्हें अपने सुंदर कपड़े दिखाने के लिए बुलातीं, और विशेष रूप से जब वह शाम को उन्हें अपने बैठक कक्ष में बुलातीं, तो मिस विलकॉक्स अजीब तरह से असमंजस में पड़ जातीं। वह युवा उत्तराधिकारी से सौहार्दपूर्ण ढंग से बात करने, उसे बातचीत में शामिल करने और उसका मनोरंजन करने की कोशिश करतीं। स्वयं गवर्नेंस को समझ नहीं आता था कि उनके प्रयास जल्द ही क्यों विफल हो जाते थे; लेकिन ऐसा हमेशा होता था। हालाँकि, मिस विलकॉक्स एक साहसी महिला थीं; और चाहे उनकी संरक्षिका कितनी भी लाड़ली क्यों न हो, उन्होंने अपने सिद्धांतों पर कायम रहते हुए अपनी वरीयता प्रणाली को जारी रखा।

एक चहेते के कोई दोस्त नहीं होते; और एक सज्जन व्यक्ति, जो लगभग उसी समय लॉज में आए थे और संयोगवश मिस फिट्ज़गिबन को देख लिया था, ने कहा, "वह बच्ची बेहद दुखी लग रही है।" वह मिस फिट्ज़गिबन को देख रहे थे, जब वह अपने सहपाठियों के आनंदपूर्वक खेलने के दौरान अकेली, सुंदर और एकांत में चल रही थीं।

“यह बेचारा छोटा सा जीव कौन है?” उसने पूछा।

उन्हें उसका नाम और पदवी बताई गई।

“बेचारी छोटी सी आत्मा!” उसने दोहराया; और उसने उसे गलियारे में आगे-पीछे चलते हुए देखा; सीधी खड़ी होकर, उसके हाथ उसके फर वाले मफ में थे, उसकी सुंदर फर वाली पोशाक सर्दियों की धूप में चमक रही थी, उसकी बड़ी लेगहॉर्न टोपी उसके चेहरे को छाया दे रही थी, जिसका सौभाग्य से परिसर में कोई मुकाबला नहीं था।

“बेचारी छोटी सी आत्मा!” उस सज्जन ने दोहराया। उन्होंने ड्राइंग रूम की खिड़की खोली, मफ लिए खड़ी लड़की को तब तक देखते रहे जब तक उनकी नज़र उस पर नहीं पड़ी, और फिर उंगली से उसे इशारा किया। वह आई; उन्होंने अपना सिर उसके सामने झुकाया; उसने अपना चेहरा ऊपर उठाया।

“छोटी बच्ची, क्या तुम नहीं खेलोगी?”

"जी नहीं, महोदय।"

“नहीं! क्यों नहीं? क्या तुम खुद को दूसरे बच्चों से बेहतर समझते हो?”

कोई जवाब नहीं।

"क्या इसलिए कि लोग आपको बताते हैं कि आप अमीर हैं, आप नहीं खेलेंगे?"

वह युवती जा चुकी थी। उसने उसे रोकने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन वह उसकी पहुँच से दूर घूम गई और तेजी से आँखों से ओझल हो गई।

"इकलौती संतान," मिस विलकॉक्स ने विनती करते हुए कहा; "शायद अपने पापा के लाड़लेपन के कारण थोड़ी बिगड़ी हुई है; इसलिए उसकी थोड़ी-बहुत नखरेबाजी को माफ किया जा सकता है।"

"हम्म! मुझे डर है कि इसमें माफी मांगने लायक कुछ भी नहीं है।"

अध्याय II.

श्री एलिन—पिछले अध्याय में वर्णित सज्जन—एक ऐसे व्यक्ति थे जो जहाँ चाहें वहाँ जाते थे, और गपशप करने वाले, आरामपसंद स्वभाव के होने के कारण उन्हें लगभग हर जगह जाना पसंद था। वे अमीर तो नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे बहुत ही शांत जीवन जीते थे; फिर भी उनके पास कुछ न कुछ धन तो अवश्य रहा होगा, क्योंकि बिना किसी स्पष्ट पेशे के भी वे घर और नौकर रखते थे। वे हमेशा खुद को कभी मजदूर बताते थे; लेकिन अगर ऐसा था भी, तो बहुत समय नहीं बीता होगा, क्योंकि वे अब भी काफी जवान दिखते थे। कभी-कभी शाम को, थोड़ी सामाजिक बातचीत के उत्साह में, वे बिल्कुल युवा दिखते थे; लेकिन उनका मिजाज, रंग और हावभाव बदलते रहते थे, और उनकी आँखें गिरगिट की तरह रंग बदलती थीं, कभी नीली और हंसमुख, कभी धूसर और गहरी, और कभी हरी और चमकीली। कुल मिलाकर उन्हें औसत कद का, दुबला-पतला और फुर्तीला व्यक्ति कहा जा सकता है। वे वर्तमान पड़ोस में दो साल से अधिक समय से नहीं रह रहे थे; उनके पूर्वज वहाँ अज्ञात थे; लेकिन चूंकि रेक्टर, जो एक अच्छे परिवार और प्रतिष्ठा के धनी थे और परिचितों के चयन में निस्संदेह बहुत सतर्क थे, ने उनका परिचय कराया था, इसलिए उन्हें हर जगह तुरंत स्वागत मिला, और उनके आचरण में अभी तक ऐसा कुछ भी नहीं दिखा था जो उन्हें इसके अयोग्य साबित करता हो। कुछ लोग तो उन्हें "एक विचित्र व्यक्ति" कहते थे और उन्हें "सनकी" समझते थे; लेकिन अन्य लोगों को ये विशेषण उचित नहीं लगते थे। वे उन्हें हमेशा बहुत ही हानिरहित और शांत स्वभाव के लगते थे, शायद उतने खुले और समझने योग्य नहीं जितने की अपेक्षा की जा सकती थी। उनकी आँखों में एक बेचैनी भरी अभिव्यक्ति होती थी; और कभी-कभी बातचीत में उनके शब्द अस्पष्ट होते थे; लेकिन फिर भी वे मानते थे कि उनका कोई बुरा इरादा नहीं था।

श्री एलिन अक्सर मिस विलकॉक्स के घर जाया करते थे; कभी-कभी उनके साथ चाय पीते थे; उन्हें चाय और मफिन पसंद थे, और इस तरह की बातचीत उन्हें बुरी नहीं लगती थी जो आमतौर पर चाय-मछली के साथ होती है; कहा जाता था कि वे अच्छे निशानेबाज और अच्छे मछुआरे थे। वे गपशप करने में माहिर थे—उन्हें गपशप बहुत पसंद थी। कुल मिलाकर, उन्हें महिलाओं की संगति अच्छी लगती थी, और वे अपनी महिला परिचितों में कठिन कौशल या दुर्लभ गुणों की अपेक्षा नहीं रखते थे। उदाहरण

के लिए, मिस विलकॉक्स उतनी ही सतही थीं जितनी कि उनकी चाय के प्याले रखने वाली चीनी मिट्टी की तश्तरी; फिर भी श्री एलिन उनसे बहुत अच्छे से घुलमिल जाते थे, और जाहिर तौर पर उन्हें उनके स्कूल की हर छोटी-बड़ी बात पर चर्चा सुनने में बहुत आनंद आता था। वे उनकी सभी छात्राओं के नाम भी जानते थे; उन्हें उनके परीक्षा दिवस और उत्सव दिवस भी याद थे, और एक से अधिक बार वे पादरी श्री सेसिल के साथ चर्च इतिहास की परीक्षा देने गए थे।

यह समारोह हर बुधवार दोपहर को साप्ताहिक रूप से होता था, जिसके बाद श्री सेसिल कभी-कभी चाय के लिए रुक जाते थे और आमतौर पर उन्हें दो या तीन महिला पैरिशियनर से मिलने के लिए आमंत्रित किया जाता था। श्री एलिन भी लगभग निश्चित रूप से वहाँ मौजूद होते थे। अफवाह थी कि मिस विलकॉक्स में से एक की शादी क्यूरेट से होने वाली है, और उनके मित्र को भी उसी तरह के प्रेम संबंध में दूसरी मिल गई है; इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ऐसे रोचक माहौल में उनका एक सामाजिक और सुखद मिलन समारोह होता था। उनकी शामें शायद ही कभी मिस फिट्ज़गिबन के परिचय के बिना गुजरती थीं - जो हमेशा कढ़ाईदार मलमल, लहराती कमरबंद और सजी हुई लटों में सजी रहती थीं; अन्य विद्यार्थियों को भी बुलाया जाता था, शायद गाने के लिए, पियानो पर थोड़ा हुनर दिखाने के लिए, या कभी-कभी कविता सुनाने के लिए। मिस विलकॉक्स अपनी छात्राओं में दिखावे को बढ़ावा देती थीं, यह सोचकर कि इस तरह वह स्वयं और उनके प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर रही हैं, साथ ही अपनी प्रसिद्धि भी फैला रही हैं और बच्चों को आत्म-संयमित शिष्टाचार सिखा रही हैं।

यह देखना रोचक था कि इन अवसरों पर, अच्छे, वास्तविक प्राकृतिक गुण अभी भी नकली, कृत्रिम लाभों पर अपनी श्रेष्ठता साबित करते हैं। जबकि "प्रिय मिस फिट्ज़गिबन," सजी-धजी और चापलूसी से सजी-धजी, केवल अपने स्वाभाविक उदास भाव से सभा में इधर-उधर घूमती रहीं, मेहमानों को बस हाथ बढ़ातीं, फिर लगभग झट से हाथ हटा लेतीं और अभद्र जल्दबाजी में मिस विलकॉक्स के बगल में अपने लिए निर्धारित स्थान पर बैठ जातीं, जहाँ वह एक फर्नीचर के टुकड़े की तरह बैठी रहीं, न मुस्कुराती रहीं और न ही शाम भर बोलती रहीं - जबकि उनके व्यवहार जैसी कुछ सहेलियाँ, जैसे मैरी फ्रैंक्स, जेसी न्यूटन, आदि, सुंदर, खुले चेहरे वाली छोटी युवतियाँ - निर्भीक क्योंकि हानिरहित - अभिवादन की मुस्कान और खुशी की

लाली के साथ प्रवेश करतीं, ड्राइंग रूम के दरवाजे पर अपना प्यारा सा आदर दिखातीं, जिन आगंतुकों को वे जानती थीं, उनसे दोस्ती भरा छोटा सा हाथ बढ़ातीं और पियानो पर बैठकर अपने अच्छी तरह से अभ्यास किए गए युगल गीत को एक मासूम, विनम्र तत्परता के साथ बजातीं, जिसने सभी का दिल जीत लिया।

डायना नाम की एक लड़की थी—जिसका ज़िक्र पहले मिस स्टर्लिंग की शिष्या के रूप में किया गया था—एक साहसी, निडर लड़की, जिसे उसके साथी बहुत प्यार करते थे और थोड़ा डरते भी थे। उसमें शारीरिक और मानसिक दोनों ही खूबियाँ थीं—वह होशियार, ईमानदार और निर्भीक थी। कक्षा में वह मिस फिट्ज़गिबन के दिखावे के सामने चट्टान की तरह दृढ़ रहती थी; ड्राइंग रूम में भी उसमें उनका सामना करने का साहस और हौसला था। एक शाम, जब चाय के तुरंत बाद पादरी को किसी काम से बुलाया गया था और वहाँ मिस्टर एलिन के अलावा कोई अजनबी मौजूद नहीं था, तो डायना को संगीत का एक लंबा और कठिन टुकड़ा बजाने के लिए बुलाया गया, जिसे वह बखूबी बजा सकती थी। वह अभी अपना प्रदर्शन कर ही रही थी कि - श्री एलिन ने शायद पहली बार उत्तराधिकारी की मौजूदगी को पहचाना और उनसे पूछा कि क्या उन्हें ठंड लग रही है - मिस विलकॉक्स ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए मिस फिट्ज़गिबन के निर्जीव व्यवहार की प्रशंसा करते हुए उसे शालीन, विनम्र और अनुकरणीय बताया। मिस विलकॉक्स के संयमित लहजे से यह स्पष्ट नहीं होता कि वह वास्तव में उस प्रशंसा को कितना कम महसूस कर रही थीं, या वह केवल कर्तव्य की भावना से बोल रही थीं, न कि इसलिए कि वह उस शख्सियत से किसी भी हद तक प्रभावित हो सकती थीं जिसकी वह प्रशंसा कर रही थीं - या डायना, जो स्वभाव से जल्दबाज़ थीं, अचानक चिड़चिड़ी हो गईं - यह पूरी तरह से निश्चित नहीं है, लेकिन वह अपनी संगीत कुर्सी पर घूम गईं।

“मैडम,” उसने मिस विलकॉक्स से कहा, “वह लड़की इतनी प्रशंसा की पात्र नहीं है। उसका व्यवहार बिल्कुल भी अनुकरणीय नहीं है। कक्षा में वह बेहद अभद्र और अलग-थलग रहती है। मैं तो उसके इस नखरे की निंदा करती हूँ; हममें से कोई भी उससे कम या उससे बेहतर नहीं है, भले ही हम उतने धनी न हों।”

और डायना ने पियानो बंद किया, अपनी संगीत की किताब बगल में दबाई, झुककर अभिवादन किया और गायब हो गई।

यह जानकर आश्चर्य होता है कि मिस विलकॉक्स ने उस समय एक शब्द भी नहीं

कहा; और न ही डायना को बाद में इस घटना के लिए फटकार लगाई गई। मिस फिट्ज़गिबन को स्कूल में आए अब तीन महीने हो चुके थे, और शायद गवर्नेस को अपने शुरुआती पक्षपातपूर्ण व्यवहार को शांत करने का समय मिल गया था।

दरअसल, समय बीतने के साथ-साथ यह बुराई अक्सर अपने आप सुधरती हुई प्रतीत होती थी; बार-बार ऐसा लगता था कि मिस फिट्ज़गिबन को अपने कर्मों का फल मिल जाएगा, लेकिन फिर, तर्क और न्याय के प्रेमियों को थोड़ा चिढ़ाने वाली बात यह होती थी कि कोई छोटी सी घटना घटित होकर उनकी तुच्छता को कृत्रिम रूप से दिलचस्प बना देती थी। एक बार ऐसा हुआ कि मिस फिट्ज़गिबन के नाम पर मिस विलकॉक्स को उपहार स्वरूप ग्रीनहाउस में उगाए गए फलों - खरबूजे, अंगूर और चीड़ के फलों - से भरी एक बड़ी टोकरी भेजी गई। चाहे इन स्वादिष्ट फलों का कुछ हिस्सा दानकर्ता को ज़रूरत से ज़्यादा दे दिया गया हो, या मिस मेबल विलकॉक्स के जन्मदिन पर उन्होंने ज़रूरत से ज़्यादा केक खा लिया हो, बात कुछ ऐसी हुई कि पाचन क्रिया में गड़बड़ी के कारण मिस फिट्ज़गिबन नींद में चलने लगीं। एक रात उन्होंने अपने सफेद नाइट-ड्रेस में, कराहते हुए और हाथ फैलाते हुए, कमरों से गुजरते हुए पूरे स्कूल में दहशत फैला दी।

इसके बाद डॉक्टर पर्सी को बुलाया गया; संभवतः उनकी दवाइयाँ इस मामले में कारगर नहीं रहीं; क्योंकि उस नींद में चलने जैसी घटना के दो सप्ताह के भीतर, मिस विलकॉक्स अंधेरे में सीढ़ियाँ चढ़ते समय किसी चीज़ पर पैर रख बैठीं, जिसे उन्होंने बिल्ली समझा। रोशनी माँगने पर उन्होंने अपनी प्यारी मटिल्डा फिट्ज़गिबन को सीढ़ियों पर सिकुड़ी हुई पाया, वह नीली, ठंडी और अकड़ी हुई थी, उसकी आधी खुली आँखों में कोई चमक नहीं थी, उसके होंठों में कोई रंग नहीं था और उसके अंगों में कोई हरकत नहीं थी। वह इस दौरे से जल्दी नहीं उठी; उसकी इंद्रियाँ लगभग बिखरी हुई लग रही थीं; और अब मिस विलकॉक्स के पास उसे पूरे दिन ड्राइंग रूम के सोफे पर रखने और पहले से कहीं अधिक देखभाल करने का एक ठोस बहाना था।

लाड़ली वारिसों और आंशिक रूप से अनुरक्षित शिक्षिकाओं, दोनों के लिए एक दिन हिसाब-किताब का दिन आता है।

एक साफ़ सर्दी की सुबह, जब श्री एलिन नाश्ते पर बैठे अपने आरामकुर्सी पर आराम कर रहे थे और लंदन के नम, ताज़े अख़बार का आनंद ले रहे थे, तभी उनके पास एक नोट लाया गया जिस पर "निजी" और "जल्दी में" लिखा था। आखिरी निर्देश

व्यर्थ था, क्योंकि विलियम एलिन को कोई जल्दी नहीं थी - उनमें कोई जल्दी नहीं थी; उन्हें आश्चर्य होता था कि कोई इतना मूर्ख कैसे हो सकता है कि जल्दी करे; जीवन वैसे भी बहुत छोटा है। उन्होंने उस छोटे से नोट को देखा - तीन कोनों वाला, सुगंधित, स्त्री द्वारा लिखा हुआ। वह लिखावट पहचान गए; यह उसी महिला का था जिसे अफवाहों में अक्सर उनकी अपनी बताया जाता था। कुंवारे ने एक मोरोक्को का डिब्बा निकाला, कई छोटे औजारों में से एक कैंची चुनी, मुहर के चारों ओर काटा और पढ़ा: - "श्री एलिन को मिस विलकॉक्स का नमस्कार, और अगर उन्हें फुर्सत मिले तो वह उनसे कुछ मिनटों के लिए मिलकर बहुत खुश होंगी। मिस डब्ल्यू को थोड़ी सलाह चाहिए। वह श्री ई से मिलने तक स्पष्टीकरण नहीं देंगी।"

श्री एलिन ने बड़ी शांति से अपना नाश्ता समाप्त किया; फिर, चूंकि दिसंबर का दिन बहुत सुहावना था—हल्की ठंड और सुहावना, लेकिन शांत और कड़ाके की ठंड नहीं—उन्होंने ठंड के लिए खुद को सावधानीपूर्वक तैयार किया, अपनी छड़ी ली और चल पड़े। उन्हें सैर अच्छी लगी; हवा शांत थी; सूरज पूरी तरह से बेअसर नहीं था; रास्ता पक्का था और उस पर हल्की-सी बर्फ जमी थी। उन्होंने कई खेतों और घुमावदार, सुनसान गलियों से होते हुए अपनी यात्रा को यथासंभव लंबा किया। जब रास्ते में कोई पेड़ सहारा देने के लिए उपयुक्त जगह पर मिलता, तो वे कभी-कभी रुक जाते, अपनी पीठ उसके तने से टिका लेते, बाहें मोड़ लेते और सोचने लगते। अगर अफवाह उन्हें देख पाती, तो वह पुष्टि करती कि वे मिस विलकॉक्स के बारे में सोच रहे थे; शायद जब वे लॉज पहुंचेंगे तो उनका व्यवहार हमें बताएगा कि ऐसा अनुमान सही है या नहीं।

अंततः वह दरवाजे पर खड़ा होकर घंटी बजाता है; उसे अंदर आने दिया जाता है और बैठक कक्ष में ले जाया जाता है—जो ड्राइंग रूम से छोटा और अधिक एकांत वाला कमरा है। मिस विलकॉक्स वहाँ बैठी हैं; वह अपनी लेखन-मेज पर बैठी हैं; वह अपने आगंतुक का स्वागत करने के लिए बड़े ही सलीके से उठती हैं। यह सलीका और शालीनता उन्होंने फ्रांस में सीखी थी; क्योंकि वह छह महीने तक पेरिस के एक स्कूल में थीं, और वहाँ उन्होंने थोड़ी-बहुत फ्रेंच और शिष्टाचार के तौर-तरीके सीखे थे। नहीं: यह बिल्कुल भी असंभव नहीं है कि मिस्टर एलिन मिस विलकॉक्स की प्रशंसा करते हों। वह अपनी बहनों की तरह ही बेहद खूबसूरत हैं; और वे सभी बहुत ही सजग और दिखावटी हैं। चमकीला नीला रंग उन्हें पोशाकों में पसंद है; कंट्रास्ट देने के लिए

कहीं न कहीं एक गहरा लाल रिबन ज़रूर लगा होता है; आमतौर पर चटकीले रंग—घास जैसा हरा, लाल बैंगनी, गहरा पीला—उन्हें पसंद हैं; सभी सामंजस्यपूर्ण रंगों को वे नापसंद करती हैं। बहुत से लोग मिस विलकॉक्स को, जो वहाँ अपनी नीली मेरिनो पोशाक और अनार के रिबन में खड़ी हैं, एक बहुत ही आकर्षक महिला समझेंगे। उसके चेहरे की बनावट सामान्य है; नाक थोड़ी नुकीली, होंठ थोड़े पतले, रंग गोरा, हल्के लाल बाल। वह बहुत ही व्यावहारिक और व्यावसायिक है; उसने अपने जीवन में कभी भी भावनाओं या विचारों की परिष्कृतता का अनुभव नहीं किया; वह पूरी तरह से संयमित, सभ्य और आत्मसंतुष्ट है। उसकी आंखें शांत और उभरी हुई हैं; पुतली तेज और उथली है, सिकुड़ती या फैलती नहीं; आंखों की पुतलियां पीली हैं; पलकें हल्की हैं, माथा भी हल्का है। मिस विलकॉक्स बहुत ही शालीन और सभ्य हैं; लेकिन वह कोमल या विनम्र नहीं हो सकतीं, क्योंकि उनमें स्वभाव से संवेदनशीलता की कमी है। जब वह बोलती है तो उसकी आवाज में कोई कंपन नहीं होता; उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं होता; उसके व्यवहार में कोई भावना नहीं होती। उसने कभी शर्म या कंपकंपी नहीं देखी।

"मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ, मिस विलकॉक्स?" श्री एलिन लेखन-मेज के पास आते हुए और उसके बगल में एक कुर्सी पर बैठते हुए कहते हैं।

“शायद आप मुझे सलाह दे सकते हैं,” जवाब मिला; “या शायद आप मुझे कुछ जानकारी दे सकते हैं। मैं बहुत उलझन में हूँ, और मुझे सच में डर है कि कुछ गड़बड़ है।”

"कहां और कैसे?"

“अगर मुमकिन हो तो मुझे न्याय चाहिए,” महिला ने आगे कहा; “लेकिन इसे पाने की शुरुआत कैसे करूं! श्रीमान एलिन, आग के पास बैठिए; आज बहुत ठंड है।”

वे दोनों आग के पास आ गए। उसने आगे कहा, "तुम्हें पता है कि क्रिसमस की छुट्टियां नजदीक आ रही हैं?"

उसने सहमति में सिर हिलाया।

लगभग दो सप्ताह पहले, मैंने हमेशा की तरह अपने विद्यार्थियों के मित्रों को पत्र लिखकर छुट्टी की तारीख बताई और उनसे अनुरोध किया कि यदि कोई लड़की छुट्टी के दौरान रुकना चाहे, तो इसकी सूचना भेज दें। कॉनवे फिट्ज़गिबन, एस्क्वायर, मे पार्क, मिडलैंड काउंटी को संबोधित एक पत्र को छोड़कर बाकी सभी पत्रों का

संतोषजनक और शीघ्र उत्तर मिला - आप जानते हैं, यह पत्र मटिल्डा फिट्ज़गिबन के पिता का था।

"क्या? क्या वह उसे घर नहीं जाने देगा?"

"उसे घर जाने दो, मेरे प्रिय महोदय! आपको पता चल जाएगा। दो सप्ताह बीत गए, इस दौरान मैं प्रतिदिन उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा; कोई उत्तर नहीं आया। मुझे देरी से बहुत गुस्सा आया, क्योंकि मैंने विशेष रूप से शीघ्र उत्तर का अनुरोध किया था। आज सुबह ही मैंने दोबारा लिखने का मन बना लिया था, तभी – आपको क्या लगता है डाक मेरे लिए क्या लेकर आई?"

मैं जानना चाहूंगा।

"मेरा अपना पत्र—वास्तव में मेरा ही पत्र—डाकघर से एक सूचना के साथ वापस आ गया—ऐसी सूचना!—लेकिन आप खुद ही पढ़ लीजिए।"

उसने श्री एलिन को एक लिफाफा दिया; उन्होंने उसमें से लौटाया गया पत्र और एक कागज निकाला— कागज पर जल्दबाजी में कुछ पंक्तियाँ लिखी हुई थीं। उसमें संक्षेप में लिखा था कि मिडलैंड काउंटी में मे पार्क नाम की कोई जगह नहीं है, और न ही वहाँ कॉनवे फिट्ज़गिबन, एस्क्वायर नाम के किसी व्यक्ति का कभी उल्लेख हुआ है।

यह पढ़कर श्री एलिन ने अपनी आंखें थोड़ी सी खोलीं।

उन्होंने कहा, "मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि हालात इतने खराब होंगे।"

"क्या? तो आपको लगा कि कुछ बुरा है? आपको शक था कि कुछ गड़बड़ है?"

"सच में! मुझे ठीक से याद नहीं कि मैंने क्या सोचा था या क्या शक किया था। कितना अजीब है, मे पार्क नाम की कोई जगह ही नहीं! भव्य हवेली, मैदान, बलूत के पेड़, हिरण, सब गायब हो गए। और फिर खुद फिट्ज़गिबन! लेकिन आपने फिट्ज़गिबन को देखा था - वह अपनी गाड़ी में आए थे?"

"उनकी गाड़ी में!" मिस विलकॉक्स ने दोहराया; "एक बेहद शानदार सवारी, और वे स्वयं एक बेहद प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। क्या आपको लगता है कि इसमें कोई गलती हुई है?"

"निश्चित रूप से, यह एक गलती है; लेकिन जब इसे सुधारा जाएगा तो मुझे नहीं लगता कि फिट्ज़गिबन या मे पार्क उपलब्ध होंगे। क्या मुझे मिडलैंड काउंटी जाकर इन दो अनमोल वस्तुओं की देखभाल करनी चाहिए?"

“ओह! क्या आप इतनी कृपा करेंगे, श्री एलिन? मुझे पता था कि आप इतने दयालु होंगे; व्यक्तिगत पूछताछ, आप जानते हैं - इसकी कोई तुलना नहीं है।”

“बिल्कुल कुछ नहीं। इस बीच, तुम उस बच्ची का क्या करोगे—उस दिखावटी वारिस का, अगर वो दिखावटी है तो? क्या तुम उसे सुधारोगे—उसे उसकी औकात दिखाओगे?”

मिस विलकॉक्स ने सोच-विचार करते हुए जवाब दिया, “मुझे लगता है—अभी ठीक से नहीं; मेरी योजना जल्दबाजी में कुछ भी न करने की है; हम पहले पूछताछ करेंगे। अगर आखिरकार वह सच निकली जैसा कि पहले अनुमान लगाया गया था, तो बेहतर होगा कि हम ऐसा कुछ न करें जिसका बाद में पछतावा हो। नहीं; जब तक मुझे आपसे दोबारा सूचना नहीं मिलती, मैं उससे कोई संबंध नहीं रखूंगी।”

“बहुत अच्छा। जैसी आपकी इच्छा,” श्री एलिन ने उस शीतलता के साथ कहा, जिसने मिस विलकॉक्स की नज़र में उन्हें एक उपयुक्त सलाहकार बना दिया था। उनके शुष्क और संक्षिप्त जवाब में उन्हें अपनी दुनियादारी की समझ झलकती थी। उन्हें लगता था कि अगर वे उनका विरोध न करें तो उन्होंने काफी कुछ कह दिया है। जिस टिप्पणी को उन्होंने इतने लालच से टाला, वह उन्हें नहीं चाहिए थी।

श्री एलिन, जैसा कि उन्होंने कहा, मिडलैंड काउंटी की ओर रवाना हुए। यह एक ऐसा काम था जो उन्हें रास आता था; क्योंकि उनकी कुछ अनोखी रुचियां और अपने कुछ खास तरीके थे। कोई भी गुप्त खोज उन्हें पसंद थी; शायद उनमें एक शौकिया जासूस की झलक थी। वे बिना किसी का ध्यान खींचे जांच कर सकते थे। उनका शांत चेहरा कभी जिज्ञासु नहीं दिखता था, न ही उनकी नींद से भरी आंखें सतर्कता का कोई संकेत देती थीं।

वह लगभग एक सप्ताह के लिए बाहर गया था। लौटने के अगले दिन वह मिस विलकॉक्स के सामने ऐसे शांत भाव से पेश हुआ मानो उसने उसे कल ही देखा हो। अपने उस रहस्यमय चेहरे के साथ, जो वह अक्सर उसे दिखाता था, उसने पहले उससे कहा कि उसने कुछ नहीं किया है।

श्री एलिन चाहे जितने भी रहस्यमय हों, उन्होंने मिस विलकॉक्स को कभी उलझन में नहीं डाला। उन्हें उनमें कभी कोई रहस्य नज़र नहीं आया। कुछ लोग उनसे डरते थे, क्योंकि वे उन्हें समझ नहीं पाते थे; मिस विलकॉक्स के मन में तो अभी तक उनके स्वभाव को समझने या उनके चरित्र का विश्लेषण करने का विचार ही नहीं आया था।

अगर उनके मन में उनके बारे में कोई धारणा थी, तो वह यही थी कि वे एक आलसी लेकिन मददगार इंसान थे, आक्रामक नहीं, कम बोलने वाले लेकिन अक्सर काम के होते थे। चाहे वे चतुर और गंभीर हों या कमज़ोर और सतही, गुप्त हों या खुले, विचित्र हों या साधारण, उन्हें पूछताछ करने में कोई व्यावहारिक लाभ नज़र नहीं आया, इसलिए उन्होंने पूछताछ नहीं की।

“उसने कुछ क्यों नहीं किया?” उसने अब पूछा।

"मुख्यतः इसलिए क्योंकि करने के लिए कुछ नहीं है।"

"तो फिर वह उसे कोई जानकारी नहीं दे सकता था?"

“कुछ खास नहीं; बस इतना ही – कॉनवे फिट्ज़गिबन एक खोखला शख्स था; मे पार्क ताश के पत्तों के महल जैसा। मिडलैंड काउंटी में या इंग्लैंड के किसी भी अन्य ज़िले में ऐसे शख्स या हवेली का कोई निशान नहीं बचा था। परंपरा भी न तो इस नाम के बारे में कुछ कहती थी और न ही इस जगह के बारे में। पुराने दस्तावेज़ों और रजिस्टरों से भी जब सलाह ली गई, तो कोई जवाब नहीं मिला।”

"तो फिर वह कौन हो सकता है जो यहां आया है, और यह बच्चा कौन है?"

"मैं आपको बस यही नहीं बता सकता; — मेरी असमर्थता मुझे यह कहने पर मजबूर करती है कि मैंने कुछ नहीं किया है।"

और मुझे भुगतान कैसे मिलेगा?

मैं आपको वह भी नहीं बता सकता।

“एक तिमाही का भोजन और शिक्षा का बकाया है, और साथ ही शिक्षक की फीस भी,” मिस विलकॉक्स ने आगे कहा। “कितनी शर्मनाक बात है! मैं यह नुकसान बर्दाश्त नहीं कर सकती।”

"और अगर हम पुराने अच्छे दिनों में होते," श्री एलिन ने कहा, "जहां हमें होना चाहिए था, तो आप मिस मटिल्डा को वर्जीनिया के बागानों में भेज सकते थे, उसे उसकी उचित कीमत पर बेच सकते थे और खुद भुगतान कर सकते थे।"

“मैटिल्डा, बिल्कुल, और फिट्ज़गिबन! एक छोटी सी धोखेबाज़। मुझे आश्चर्य है कि उसका असली नाम क्या है?”

“बेटी हॉज? पोल स्मिथ? हन्ना जोन्स?” श्री एलिन ने सुझाव दिया।

“अब,” मिस विलकॉक्स चिल्लाईं, “मेरी बुद्धिमत्ता को तो स्वीकार कीजिए। यह बहुत अजीब है, लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद, और मैंने हर संभव प्रयास

किया, मैं उस बच्ची को कभी पसंद नहीं कर पाई। इस घर में उसे हर तरह का दुलार मिला है; और मुझे यकीन है कि उसे इतना ध्यान देने में मैंने सिद्धांतों के लिए अपनी भावनाओं का बहुत बड़ा बलिदान दिया है, क्योंकि मैं किसी को भी यह विश्वास नहीं दिला सकती कि मैं उससे कितनी घृणा करती रही हूँ।"

"हां। मुझे इस पर विश्वास हो सकता है। मैंने इसे देखा है।"

"क्या तुमने ऐसा किया? खैर, इससे साबित होता है कि मेरा विवेक शायद ही कभी गलत होता है। हालांकि, अब उसका खेल खत्म हो चुका है; और यही सही समय था। मैंने अभी तक उससे कुछ नहीं कहा है; लेकिन अब—"

श्री एलिन ने कहा, "जब तक मैं यहाँ हूँ, उसे अंदर बुला लो। क्या उसे इस धंधे की जानकारी है? क्या वह गुप्त साजिश में शामिल है? क्या वह खुद इसमें भागीदार है, या महज़ एक मोहरा? उसे अंदर बुला लो।"

मिस विलकॉक्स ने घंटी बजाई, मटिल्डा फिट्ज़गिबन को बुलाया, और नकली उत्तराधिकारी तुरंत प्रकट हुई। वह अपने घुंघराले बालों, कमरबंद और झालरदार पोशाक के आभूषणों के साथ आई थी, अफसोस! जो अब स्वीकार्य नहीं थे।

"वहीं खड़ी रहो!" मिस विलकॉक्स ने सख्ती से कहा और चूल्हे के पास आते हुए उसे रोका। "मेज के दूसरी तरफ वहीं खड़ी रहो। मुझे तुमसे कुछ सवाल पूछने हैं, और तुम्हारा काम उनका जवाब देना होगा। और याद रखना, हमें सच बताना। हम झूठ बर्दाश्त नहीं करेंगे।"

जब से मिस फिट्ज़गिबन को दौरे की हालत में पाया गया था, तब से उनका चेहरा अजीब तरह से पीला पड़ गया था और उनकी आँखें गहरे रंग की हो गई थीं। जब उनसे इस तरह बात की जाती, तो वे कांपने लगतीं और उनका चेहरा पीला पड़ जाता, मानो वे अपराधबोध की जीती-जागती मूर्ति हों।

"तुम कौन हो?" मिस विलकॉक्स ने पूछा। "तुम अपने बारे में क्या जानते हो?"

लड़की के होंठों से एक तरह का अधूरा विस्मयादिबोधक शब्द निकला; यह एक ऐसी ध्वनि थी जो आंशिक रूप से भय और आंशिक रूप से उस सदमे को व्यक्त कर रही थी जो नसों को तब महसूस होता है जब कोई बुराई, जिसकी लंबे समय से प्रतीक्षा की जा रही थी, अंततः अचानक आ जाती है।

"शांत रहो, और कृपया जवाब दो," मिस विलकॉक्स ने कहा, जिनमें दया की कमी होना स्वाभाविक था, क्योंकि प्रकृति ने उन्हें करुणामय नहीं बनाया था। "तुम्हारा

नाम क्या है? हम जानते हैं कि तुम्हें मटिल्डा फिट्ज़गिबन नाम रखने का कोई अधिकार नहीं है।"

उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"मैं जवाब देने पर जोर देता हूँ। आपको बोलना ही होगा, देर-सवेर। इसलिए बेहतर होगा कि आप अभी बोल दें।"

इस पूछताछ का विषय पर स्पष्ट रूप से बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। वह मानो लकवाग्रस्त होकर खड़ी थी, बोलने की कोशिश कर रही थी, लेकिन स्पष्ट रूप से बोलने में असमर्थ थी।

मिस विलकॉक्स क्रोधित तो नहीं हुईं, लेकिन वे बहुत गंभीर और दृढ़ हो गईं, थोड़ा ऊँची आवाज़ में बोलने लगीं, और उनकी ऊँची आवाज़ में एक रूखा शोर था जो कानों पर चुभता और दिमाग को चकरा देता था। उनके हितों को ठेस पहुँची थी - उनकी जेब को चोट पहुँची थी। वे अपने अधिकारों की रक्षा कर रही थीं, और उनकी नज़र और भावनाओं पर नहीं, बल्कि केवल उस मुद्दे पर थी जो उनके सामने था। श्री एलिन मानो केवल तमाशा देख रहे थे; वे चूल्हे के पास एकदम शांत खड़े रहे।

अंततः दोषी बोली। उसके होंठों से एक धीमी आवाज़ निकली। "ओह, मेरा सिर!" वह चिल्लाई, अपने हाथों को माथे पर उठाते हुए। वह लड़खड़ा गई, लेकिन दरवाज़ा पकड़ लिया और गिरी नहीं। कुछ आरोप लगाने वाले ऐसी चीख सुनकर चौंक जाते - यहाँ तक कि चुप भी हो जाते; लेकिन मिस विलकॉक्स ऐसी नहीं थीं। वह न तो क्रूर थीं और न ही हिंसक; लेकिन वह संवेदनहीन होने के कारण कठोर थीं। एक गहरी साँस लेकर, वह हमेशा की तरह कठोर स्वर में बोलती रहीं।

श्री एलिन चूल्हे के पास से उठकर कमरे में धीरे-धीरे चहलकदमी करने लगे, मानो खड़े-खड़े थक गए हों और थोड़ा चलना चाहते हों। लौटते समय और अपराधी के दरवाजे के पास से गुजरते हुए, एक धीमी सी सांस उनके कान तक पहुँचती हुई प्रतीत हुई, मानो उनका नाम फुसफुसा रही हो।

"ओह, मिस्टर एलिन!"

बोलते-बोलते बच्ची का सिर नीचे गिर गया। एक अजीब सी आवाज़—हालांकि वो मिस्टर एलिन की आवाज़ नहीं थी—ने मिस विलकॉक्स से चुप रहने और कुछ न बोलने को कहा। उन्होंने ज़मीन पर गिरी चीज़ें उठाईं। वह थोड़ी स्तब्ध लग रही थीं, लेकिन बेहोश नहीं थीं। मिस्टर एलिन के बगल में आराम करते हुए, कुछ मिनटों में

उन्होंने फिर से सांस ली। उन्होंने अपनी नज़रें उनकी ओर उठाईं।

“आओ, मेरी नन्ही सी बच्ची; डरो मत,” उसने कहा।

अपना सिर उसके कंधे पर टिकाकर वह धीरे-धीरे शांत हो गई। उसे होश में लाने के लिए उसे एक शब्द भी नहीं कहना पड़ा; यहाँ तक कि उसकी तेज़ कंपकंपी भी उसके सुरक्षात्मक स्पर्श से शांत हो गई। उसने बड़ी शांति से, लेकिन दृढ़ता से, मिस विलकॉक्स से कहा कि छोटी बच्ची को सुला देना चाहिए। वह उसे ऊपर ले गया और उसे वहाँ लिटा दिया। मिस विलकॉक्स के पास लौटकर उसने कहा, “उससे और कुछ मत कहो। सावधान रहो, वरना तुम जितना सोचती हो या चाहती हो, उससे कहीं ज़्यादा गड़बड़ कर दोगी। उसका स्वभाव तुम्हारे स्वभाव से बहुत अलग है। यह संभव नहीं है कि तुम्हें यह पसंद आए; लेकिन इसे छोड़ दो। हम इस विषय पर कल और बात करेंगे। मुझे उससे पूछने दो।”

शार्लोट ब्रोंटे की बाल रचनाएँ

एंग्रिया की कहानियाँ

1834 में शार्लोट और उनके भाई ब्रैनवेल ने हाथ से बनी छोटी-छोटी किताबों की एक श्रृंखला में एंग्रिया नामक एक काल्पनिक राज्य की रचना की। कुछ वर्षों बाद, जब शार्लोट अपनी युवावस्था के शुरुआती दौर में थीं, तब उन्होंने पाँच लघु उपन्यास लिखे, जिनमें उन्होंने एक कुलीन वर्ग के संभ्रांत समाज का हास्यपूर्ण और व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। ये सभी कहानियाँ मिलकर उस युवा लेखिका के मन और रचनात्मक प्रक्रियाओं की एक आकर्षक झलक प्रस्तुत करती हैं, इससे पहले कि वह एक महान उपन्यासकार बनीं।

लौरा का चेहरा

रिवौल्क्स का क्रॉस! क्या यह नाम मेरे पाठकों को जाना-पहचाना लग रहा है? मुझे नहीं लगता। तो सुनिए: यह एंग्रिया और सिडेनहैम पहाड़ियों के बीचोंबीच स्थित एक हरा-भरा, रमणीय और शांत स्थान है; हॉक्सक्लिफ की पहाड़ियों के बीच, उसके शाही जंगल के किनारे पर। आपको एक सुंदर घर दिखाई देगा, जिसकी खिड़कियाँ घनी लताओं से घिरी हैं और करीने से सँवारी गई हैं; सामने के दरवाजे के ऊपर जालीदार काम का एक छोटा सा आधुनिक बरामदा है, जो गर्मियों में हरे-भरे पत्तों और गुलाबी गुलाब की कलियों और खिले हुए फूलों से ढका रहता है। अच्छे मौसम में, इसके अंदर का दरवाजा हमेशा खुला रहता है और एक भव्य मार्ग, लगभग एक हॉल जैसा, दिखाई देता है, जो सफेद रंग की नीची सीढ़ियों पर जाकर समाप्त होता है, जिसके बीचोंबीच एक चमकदार कालीन बिछा है। आप इसे बंद करने के लिए किसी दीवार या गेट को व्यर्थ ही ढूँढ़ेंगे: एकमात्र पहचान चिन्ह एक पुराना ओबिलिस्क है जिसके आधार पर काई और जंगली फूल हैं और उसके किनारे पर एक आधा मिट चुका क्रूस उकेरा गया है।

वैसे तो यह कोई बहुत ही भव्य जगह नहीं है, लेकिन जून की शामों में मैंने अक्सर एक ऐसे व्यक्ति को देखा है, जिसे एंग्रिया में हर कोई पहचान सकता है, जो उस छोटे से हॉल के घरेलू अंधकार से निकलकर बरामदे के नीचे बड़े आराम से खड़ा होता है, जिसके फूल और पत्तियाँ उसके घुंघराले बालों के स्पर्श से हिल जाती हैं। हालाँकि यह एकांत में स्थित है, लेकिन रिवाउल्क्स का क्रॉस ज़मोर्ना के गुप्त घरों में से एक नहीं है; वह वहाँ हर किसी को आने की अनुमति देता है जो आना चाहता है।

दिन थम सा गया है, एकदम शांत और गर्म। दोपहर ढलने के बाद सूरज धीरे-धीरे शाम में ढल रहा है और गहरा सुनहरा प्रकाश बिखेर रहा है। हवेली में खुशनुमा माहौल

छाया हुआ है, जिसकी खिड़कियाँ खुली हैं, दरवाजा हमेशा की तरह मेहमाननवाज़ी से खुला है, और चौड़ा गलियारा उससे जुड़े कमरों से आती हुई चहल-पहल भरी बातचीत की आवाज़ों से गूंज रहा है। दिन इतना सुहावना और धूप से भरा है कि लोग अपनी ओर खींचे चले आते हैं और सुहावनी हवा में बाहर निकल आते हैं; देखिए, दो सज्जन बरामदे में आराम से बैठे हैं और ड्राइंग रूम से लाए कपों में कॉफी पी रहे हैं; एक तीसरा व्यक्ति ओबिलिस्क की छाया में नरम काई पर लेटा हुआ है। इन लोगों के बिना, पूरा नज़ारा बेहद शांत और सुकून भरा हो सकता था।

दो लोग (सैनिक वर्दी में) ज़मोर्ना की विशाल सेना के मुख्यालय के अधिकारी हैं; दूसरा, घास पर लेटा हुआ, काले रंग के वस्त्रों में दुबला-पतला व्यक्ति, नागरिक वस्त्र पहने हुए है। वह गृह सचिव श्री वार्नर हैं। उनके पास एक और व्यक्ति खड़ा था जिसका वर्णन करना मुझे उचित लगता। वह एक सुंदर युवती थी, जिसने कीमती काले साटन के वस्त्र पहने थे, और ऐसे आभूषणों से सजी थी जैसे किसी डाकू की पत्नी के हों, जिन पर मानो बहुत सारा धन खर्च किया गया हो; लेकिन इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि वे निस्संदेह किसी राजा का उपहार थे। उसके कानों में आग की तरह लाल, दो लंबे, साफ झुमके लटके हुए थे, जिनमें बैंगनी रंग की झलक थी, जो उन्हें असली पूर्वी माणिक्य साबित करती थी। सोने की चमकदार, नाजुक लड़ियाँ बार-बार उसके गले में लिपटी हुई थीं, और उसकी छाती पर रत्नों का एक क्रॉस था, जिसके बीच में एक लॉकेट था जिसमें गहरे भूरे बालों की एक लट थी - उस छोटी, कोमल लट को वह किसी राज्य के लिए भी नहीं छोड़ती।

वार्नर की निगाहें मिस लॉरी पर टिकी हुई थीं, जो उनके ऊपर खड़ी थीं, सुंदरता, जोश और तंदुरुस्ती की मिसाल। उनके सुगठित शरीर में एक तरह की फौजी जैसी दृढ़ता थी, और जिस तरह से उनकी गर्दन, उनके आकर्षक सीने से निकली हुई, उनके झुके हुए कंधों पर सजी हुई थी, वह भी स्पष्ट था। उनकी कमर, जो पीछे की ओर झुकी हुई थी, और उनके पतले, सुडौल पैर, जो उन्हें एक सुव्यवस्थित मुद्रा में सहारा दे रहे थे, स्पष्ट रूप से दर्शाते थे कि उन्हें बचपन से ही सार्जेंट के प्रशिक्षण का अच्छा ज्ञान था। पूरी दोपहर वह अपने विशिष्ट अतिथियों - बरामदे में बैठे दो लोग लॉर्ड हार्टफोर्ड और एनारा - का मनोरंजन कर रही थीं और उनसे खुलकर और प्रसन्नतापूर्वक बातचीत कर रही थीं। दुनिया में यही उनके एकमात्र मित्र थे। उन्होंने कभी भी महिला मित्रता की तलाश नहीं की, और अगर की भी होती, तो उन्हें कभी नहीं मिलती। और

वह अपनी हर बात और हर काम में इतनी समझदार, चतुर और गंभीर थीं कि अभिमानी अभिजात वर्ग के लोग भी उनसे महत्वपूर्ण मामलों पर अक्सर बात करने में संकोच नहीं करते थे।

अब मिस्टर वार्नर उससे उसके बारे में बात कर रहे थे।

“मेरी प्रिय महोदया,” वह अपने हमेशा के दबंग और मधुर स्वर में कह रहा था, “यह अनुचित है कि आप इस तरह खतरे में रहें। मैं आपका मित्र हूँ—जी हाँ, महोदया, आपका सच्चा मित्र। आप मेरी बात क्यों नहीं सुनतीं और मामले के बारे में मेरी दलीलों पर ध्यान क्यों नहीं देतीं? एंग्रिया आपके लिए असुरक्षित जगह है। आपको इसे छोड़ देना चाहिए।” महिला ने सिर हिलाया।

'कभी नहीं। जब तक मेरा स्वामी मुझे विवश न करे, उसकी भूमि ही मेरी भूमि है।'

लेकिन—लेकिन, मिस लॉरी, आप जानती हैं कि हमारी सेना को सर्वशक्तिमान ईश्वर से कोई अनुमति नहीं मिली है। यह आक्रमण कम से कम कुछ समय के लिए सफल हो सकता है; और फिर आपका क्या होगा? जब ड्यूक का राष्ट्र विनाश से जूझ रहा हो, उसकी शान गहरे पानी में डूबी हो, और वह स्वयं उसे पुनः प्राप्त करने के लिए बेताब हो, तो क्या वह एक स्त्री पर एक पल भी बर्बाद कर सकता है?

मीना मुस्कुराई।

‘मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया है,’ उसने कहा। ‘मेरे स्वामी स्वयं मुझे उन्हें छोड़ने के लिए विवश नहीं कर सकते। आप जानते हैं कि मैं कठोर हृदय की हूँ, वार्नर; शर्म और निंदा का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मुझे चमचा कहलाने की परवाह नहीं है। शांति और सुख के समय में अफ्रीका की सभी महिलाएं ड्यूक के इशारों पर तत्पर रहेंगी; युद्ध और कष्ट के समय में उन्हें एक भी गरीब किसान लड़की की कमी नहीं होगी। क्यों, महोदय, मेरे पास जीने के लिए और कुछ नहीं है। जीवन में मेरी कोई और रुचि नहीं है। बस उनकी कृपा के साथ खड़े रहना, उन्हें देखना और उनकी इच्छाओं का अनुमान लगाना, या जब मैं ऐसा नहीं कर सकती, तो उनके संकेत मिलते ही उन्हें बिजली की तरह पूरा करना; उनके बीमार या घायल होने पर उनकी सेवा करना, उनकी कराहें सुनना और दर्द सहते हुए उनके हृदयविदारक पशुवत धैर्य को सहन करना; यदि संभव हो तो अपनी अटूट सेहत और ऊर्जा उनमें भर देना, और ओह, यदि संभव हो तो उनका बुखार और पीड़ा सह लेना; उनके हितों की रक्षा करना, उनसे वह शक्ति अपने कंधों पर लेना जिसका बोझ मुझे कचोटता है; उनकी सेवा के विशाल

दायरे में एक ऐसी कमी को पूरा करने के लिए, जिसे भरने की हिम्मत कोई और नहीं कर सकता: यह सब करना, महोदय, मेरे जन्म के भाग्य को पूरा करना है। मैं जानता हूँ कि समाज में मेरी कोई प्रतिष्ठा नहीं है क्योंकि मैंने स्वयं को पूरी तरह से एक व्यक्ति को समर्पित कर दिया है। और मैं यह भी जानता हूँ कि वे शायद ही कभी मेरे कार्यों के बारे में सोचते हैं, उन्होंने कभी भी मेरी असाधारण अधीनता की भावना, मेरे द्वारा उनके प्रति किए गए पूर्ण आत्म-बलिदान की सराहना नहीं की है और न ही कभी कर सकते हैं। लेकिन फिर भी वे मुझे मेरा पुरस्कार देते हैं, और वह भी भरपूर।

श्रीमान वार्नर, जब मैं फोर्ट एड्रियन में थी और गैरीसन और सैन्य घराने के शासन का सारा भार मुझ पर था, तो मैं अपनी ज़िम्मेदारी में आनंदित होती थी और जैसे-जैसे भार बढ़ता जाता, मैं और अधिक दृढ़ महसूस करती थी। जब मेरे स्वामी आते थे, जैसा कि वे अक्सर अपने सामान्य सर्वेक्षणों के लिए या अपने कुछ राजकीय अधिकारियों के साथ शिकार अभियान पर आते थे, तो मुझे भोज और मनोरंजन की व्यवस्था करने और उन अंधेरे कक्षों में आग जलती और झूमर जगमगाते देखकर बहुत खुशी होती थी, यह जानते हुए कि यह दावत किसके लिए तैयार की गई है। अपने युवा स्वामी की आवाज़ सुनना, उन्हें अपने गढ़ में सुरक्षित और शक्तिशाली रूप से घूमते देखना और यह जानना कि उनके आसपास कितने सच्चे लोग हैं, मुझे परमानंद का अनुभव कराता था। इसके अलावा, महोदय, उनका अभिवादन और उनके हाथ का विनम्रतापूर्ण स्पर्श एक रानी को भी गर्वित करने के लिए काफी था, एक सार्जेंट की बेटी की तो बात ही क्या।

उदाहरण के लिए, पिछली गर्मियों की शाम जब वह यहाँ आए थे, सूरज, फूल और शांति ने उनके नेक चेहरे को इतनी खुशी से चमकाया कि मैं समझ गई कि उनका दिल शांत था; क्योंकि जब वह उस छाया में लेटे थे जहाँ आप अभी हैं, तो मैंने उन्हें वही धुन गुनगुनाते सुना जो वह बहुत पहले अपने गिटार पर बजाते थे। तब मुझे यह महसूस करके सुकून मिला कि मेरा घर इतना सुखद था कि वह एंग्रिया को भूलकर घर लौट आए। आपको मुझे माफ करना होगा, श्रीमान वार्नर, लेकिन पश्चिम, प्यारा पश्चिम, उनका भी घर है और मेरा भी।' मीना रुकी और गंभीरता से सूरज को देखा, जिसकी चमक अब कम हो गई थी और वह बहुत नीचे लटक रहा था। एक पल में उसकी नज़र फिर से वार्नर पर पड़ी। ऐसा लग रहा था जैसे उसने जिस चीज़ को देखा था, उससे प्रकाश सोख लिया हो: तीर की नोक जैसी रोशनी उसकी आँखों में चमक उठी जब

उसने कहा,

'यही वो समय है जब मुझे ज़मोर्ना का अनुसरण करना है। मैं उन आनंदमय और जोखिम भरे पलों से वंचित नहीं होना चाहती जब मैं लगातार उसके साथ रह सकती हूँ। मुझे खतरे से डर नहीं लगता; मेरे हौसले बुलंद हैं; मैं मर जाऊँगी या उसके साथ रहूँगी।'

'मिस लॉरी, आपकी आँखों में अचानक इतनी चमक क्यों आ गई है?' लॉर्ड हार्टफोर्ड ने पूछा, जो अब एनारा के साथ गुलाबों की छतरी से आगे बढ़ रहे थे।

'ड्यूक, ड्यूक,' एनारा ने बुदबुदाते हुए कहा। 'तुम उसे नहीं छोड़ोगी, मैं कसम खाकर कहती हूँ।'

'मैं नहीं कर सकती, जनरल,' मीना ने कहा।

'नहीं,' इतालवी ने उत्तर दिया, 'और कोई आपको बाध्य नहीं करेगा। आप अपनी इच्छानुसार कार्य करेंगी, महोदया, चाहे वह सही हो या गलत। मुझे आप जैसी किसी की इच्छा का विरोध करना पसंद नहीं है।'

'धन्यवाद, जनरल, आप हमेशा मेरे प्रति इतनी दयालु रहती हैं।' मीना ने जल्दी से अपना छोटा हाथ एनारा के दस्ताने पहने हाथों में दे दिया।

'दयालु, महोदया?' उसने गर्मजोशी से कहा, 'मैं इतना दयालु हूँ कि जो कोई भी रानी के प्रति उचित सम्मान के अलावा किसी और तरह से आपका नाम लेगा, मैं उसे फांसी पर लटका दूँगा।' गहरे रंग की, सख्त भौंहों वाली हार्टफोर्ड ने उसके उत्साह पर मुस्कुरा दिया।

उन्होंने पूछा, 'क्या यह श्रद्धांजलि मिस लॉरी की अच्छाई को दी जा रही है या उनकी सुंदरता को?'

'मेरे स्वामी, न तो उसके लिए,' एनारा ने संक्षेप में उत्तर दिया, 'बल्कि उसके गुण के लिए, उसके उत्कृष्ट गुण के लिए।'

'हार्टफोर्ड, तुम मुझे तुच्छ नहीं समझोगे? क्या यह एक व्यंग्य था?' मीना ने धीरे से कहा।

'नहीं, नहीं, मिस लॉरी,' उस महान जनरल ने गंभीरता से उत्तर दिया। 'मैं जानता हूँ कि आप क्या हैं; मैं आपके महत्व से भलीभांति परिचित हूँ। क्या आपको एडवर्ड हार्टफोर्ड की सम्मानजनक मित्रता पर संदेह है? यह मित्रता आपको ऐसे शर्तों पर दी जा रही है जैसी किसी खूबसूरत महिला को पहले कभी नहीं दी गई।'

मिस लॉरी के जवाब देने से पहले ही, हवेली के अंदर से एक आवाज ने उनका नाम पुकारा।

'यह मेरे स्वामी हैं!' वह चिल्लाई और हिरणी की तरह घास के मैदान पर दौड़ती हुई बरामदे से होते हुए गलियारे से गुजरी और एक ग्रीष्मकालीन बैठक कक्ष में पहुँची, जिसकी दीवारें हल्के लाल रंग से रंगी हुई थीं, उसकी नक्काशी सुनहरी थी और खिड़कियों के पर्दे गहरे नीले रेशम के कलात्मक ड्रेपरी थे, जो सुनहरी लहरों और फूलों से ढके हुए थे।

ज़मोर्ना यहाँ अकेले बैठे थे; वे कुछ लिख रहे थे। उनके बगल वाली मेज़ पर एक-दो पत्र रखे थे, जो तह किए हुए, सीलबंद और पश्चिम दिशा की ओर इशारा करते हुए थे। घर में प्रवेश करने के तीन घंटे बाद से उन्होंने अपना सिर नहीं ढका था, और शायद उनके ड्रैगून हेलमेट का भार, या उसके पंखों की उदासी, या फिर कोई आंतरिक भावना, उनके चेहरे पर एक अजीब उदासी छाई हुई थी।

मीना ने दरवाजा बंद किया और धीरे से पास आई; बिना कुछ बोले या अनुमति मांगे, वह भारी हेलमेट के हुक खोलने में जुट गई। जब उसकी नन्ही उंगलियां ड्यूक की ठुड्डी और घनी मूंछों पर फिरने लगीं, तो ड्यूक हल्के से मुस्कुराए; फिर, पीतल और काले पंखों का बोझ उतरते ही, उन्होंने चमकदार भूरे घुंघराले बालों को संवारा और कोमल ठंडे स्पर्श से उनके बुखार से तपते माथे को छुआ। इस सुखद कार्य में मग्न होने के कारण उसे शायद ही पता चला कि महाराज की बांह ने उसकी कमर को घेर लिया है; फिर भी उसे इसका एहसास हुआ, और उनके स्नेह से मुंह मोड़ना उसके लिए अनुचित होता। उसने इसे एक दास की तरह ग्रहण किया जैसे एक सुल्तान का स्पर्श ग्रहण करना चाहिए, और उनके कोमल हाथों के इशारे पर धीरे से अपने स्वामी के बगल में सोफे पर बैठ गई।

"मेरी नन्ही चिकित्सक," उसने अपने चेहरे की पूरी चमक से उसकी स्नेहपूर्ण लेकिन चिंतित ऊपर की ओर देखती निगाहों में देखते हुए कहा, "तुम मुझे ऐसे देख रही हो जैसे तुम्हें लगता है कि मैं ठीक नहीं हूँ – मेरी नब्ज़ देखो।" उसने आगे बढ़ाए गए उसके हाथ को, जो सफ़ेद, कोमल और युवावस्था और कोमल पालन-पोषण से भरा था, अपने दोनों हाथों में थाम लिया; चाहे ज़मोर्ना की नब्ज़ तेज़ धड़क रही हो या नहीं, उसकी दासी की नब्ज़ धड़क रही थी क्योंकि उसने राजा की पतली, कोमल उंगलियों को अपने हाथों में शांति से महसूस किया।

उसने रिपोर्ट का इंतज़ार नहीं किया, बल्कि अपना हाथ फिर से हटा लिया और उसके काले घुंघराले बालों पर रखते हुए कहा, 'तो मीना, तुम मुझे छोड़कर नहीं जाओगी, हालाँकि मैंने दुनिया में तुम्हारा कभी कोई भला नहीं किया। वार्नर का कहना है कि तुम युद्ध के मैदान में बने रहने के लिए दृढ़ संकल्पित हो।'

'आपके साथ बने रहने के लिए, मेरे स्वामी ड्यूक।'

लेकिन मैं तुम्हारे साथ क्या करूँ, मीना? तुम्हें कहाँ रखूँ? मेरी नन्ही बच्ची, जब सेना को तुम्हारी उपस्थिति का पता चलेगा तो वे क्या कहेंगे? तुमने इतिहास पढ़ा है; याद रखो कि युद्ध के मैदान में रखैलें ले जाने वाला सिकंदर नहीं, बल्कि दारियस था। दुनिया कहेगी कि ज़मोर्ना ने अपने लिए एक सुंदर रखैल रख ली है। वह अपने सुखों में मग्न रहता है और उसे इस बात की परवाह नहीं कि उसके सैनिक कितना कष्ट सह रहे हैं।

बेचारी मीना इन शब्दों को सुनकर ऐसे तड़पी जैसे उसकी आत्मा में लोहा समा गया हो। उसके गालों पर तीव्र लालिमा छा गई और शर्म और आत्मनिंदा के आँसू उसकी चमकीली काली आँखों से एक साथ बहने लगे। ज़मोर्ना को गहरा आघात पहुँचा।

“नहीं, मेरी प्यारी बच्ची,” उसने अपने अभिमानपूर्ण स्नेह भरे स्पर्शों को दोहराते हुए और अपने सबसे मधुर स्वर में कहा, “इसके बारे में कभी मत रोना। मुझे तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुँचाने का दुख है, लेकिन तुम एक असंभव इच्छा रखती हो और मुझे तुम्हें यह समझाने के लिए कड़े शब्दों का प्रयोग करना होगा कि मैं इसे पूरा नहीं कर सकता।”

‘ओह! मुझे फिर से मना मत कीजिए,’ मिस लॉरी सिसकते हुए बोलीं। ‘मैं आपके साथ चलने की अनुमति पाने के लिए हर बदनामी और अपमान सहने को तैयार हूँ, महाराज। महाराज, मैंने वर्षों तक पूरी निष्ठा से आपकी सेवा की है और आपसे शायद ही कभी कोई कृपा माँगी हो। मेरी इस तरह की पहली विनती को ठुकराइए मत।’

ड्यूक ने अपना सिर हिलाया, और उनके सुंदर होंठों का शांत भाव, जो इतना सौम्य था कि उसे दबाना मुश्किल था, बता रहा था कि वे टस से मस नहीं होंगे।

मीना ने आगे कहा, “अगर आपको चोट लग जाए, अगर आप बीमार पड़ जाएं, तो सर्जन और चिकित्सक आपके लिए क्या कर सकते हैं? वे मेरी तरह आपकी देखभाल, सेवा और सम्मान नहीं कर सकते; आप अब स्वस्थ नहीं लग रहे हैं, आपके चेहरे की

रौनक फीकी पड़ गई है और आंखों के आसपास की त्वचा सूख गई है। मेरे स्वामी, मुस्कुराइए और इतने शांत और दृढ़ मत दिखिए। मुझे जाने दीजिए!"

ज़मोर्ना ने अपना हाथ उसकी कमर से हटा लिया। उसने कहा, 'जब तक तुम मुझे परेशान करना बंद नहीं करोगी, तब तक मुझे नाराज़ होना पड़ेगा।' 'मीना, उस पत्र को देखो, उसमें लिखे निर्देश पढ़ो,' उसने अपने लिखे पत्र की ओर इशारा करते हुए कहा। उसने बात मानी: वह पत्र महामहिम मैरी हेनरीटा, ज़मोर्ना की डचेस, एंग्रिया की रानी को संबोधित था।

'क्या मुझे उस महिला की भावनाओं पर ध्यान नहीं देना चाहिए?' ड्यूक ने आगे कहा, जो युद्ध के कर्तव्यों और कुछ आंतरिक भावनाओं के संघर्ष के कारण कुछ ज़्यादा ही कठोर हो गए थे। 'चाहे मैं उनसे प्रेम करूँ या न करूँ, उनके सार्वजनिक अधिकारों का सम्मान करना ही होगा।' मिस लॉरी एकदम सिमट गईं। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। उनके मन में एक तीव्र इच्छा जाग उठी कि काश वह मर जातीं और दफ़न हो जातीं, उस शर्म से बेखबर जो उन्हें जकड़ रही थी। उन्होंने ज़मोर्ना की उंगली देखी जिस पर अंगूठी अभी भी उस भयानक नाम की ओर इशारा कर रही थी, एक ऐसा नाम जो घृणा की भावना नहीं जगाता था, बल्कि केवल घोर अपमान और आत्म-हीनता का भाव पैदा करता था। वह अपने स्वामी के पास से चुपके से हट गईं, यह महसूस करते हुए कि उन्हें वहाँ बैठने का उतना ही अधिकार नहीं है जितना कि एक हिरण के बच्चे को शाही शेर की मांद में बैठने का; और अपनी मूर्खता पर खेद व्यक्त करते हुए, निराशा और हताशा में कमरे से बाहर निकलने ही वाली थीं। लेकिन ड्यूक उठ खड़ा हुआ, उसने उसे रोक लिया और जब वह उसके सामने घुटने टेककर बैठी थी, तो उसने अपना लंबा कद झुकाकर उसे फिर से अपनी बाहों में भर लिया। उसके चेहरे की गंभीरता में एक पल की भी कमी नहीं आई, और उसके भव्य लेकिन थके हुए चेहरे से उदासी भी नहीं हटी, जैसा कि उसने कहा,

मैंने जो कुछ कहा है, उसके लिए मैं कोई माफी नहीं मांगूंगा, क्योंकि मीना, मैं जानता हूं कि अब जब तुम मेरी बाहों में हो, तो मेरी क्षणिक कठोरता का तुम्हें पूरा प्रतिफल मिल चुका है। जाने से पहले, मैं तुम्हें सांत्वना का एक शब्द कहूंगा, जिसे तुम मेरे दूर जाने पर, और शायद मरने के बाद भी याद रखोगी। मेरी प्यारी बच्ची! मैं जानता हूं और तुम्हारी हर उस कोशिश की सराहना करता हूं जो तुमने मेरे लिए की है, जो तुमने त्यागा है, और जो तुमने मेरे लिए सहन किया है। मैं तुम्हें इसका प्रतिफल

एक सिक्के से देता हूं, जो तुम्हारे लिए दुनिया के हर सिक्के से कहीं अधिक मूल्यवान होगा। मैं तुम्हें ऐसा सच्चा और स्नेहपूर्ण प्रेम देता हूं जैसा कोई स्वामी अपनी सबसे सुंदर और प्यारी दासी को देता है, जो कभी सामंती निष्ठा से बंधी रही हो। अब तुम्हें ज़मोर्ना के होठों का स्पर्श फिर कभी नहीं मिलेगा। लो, मीना।' और उसने जोश से, लगभग उग्रता से, अपने होठों को उसके माथे से सटा दिया। 'अपने कमरे में जाओ। कल तुम्हें पश्चिम के लिए निकलना होगा।'

'मृत्यु तक आज्ञाकारी,' मिस लॉरी ने जवाब दिया, और दरवाजा बंद करके वह गायब हो गईं।

[इस बीच... यद्यपि ज़मोर्ना ने पिछले दृश्य में अपनी पत्नी को पत्र लिखा है, फिर भी वह उसे त्यागने और उसका दिल तोड़कर उसके पिता, नॉर्थेंगरलैंड से बदला लेने के अपने निर्णय पर अडिग रहता है। ज़मोर्ना की ओर से एक भी खबर नहीं आती और कई सप्ताह बीत जाते हैं, और मैरी धीरे-धीरे उदास होने लगती है।]

डचेस ने अपना सिर अपने हाथ पर टिका लिया।

"क्या आज शाम धूप बहुत तेज है?" उसने कहा। "मैं बहुत सुस्त और आलसी महसूस कर रही हूँ।" अफसोस, यह अप्रैल की हल्की धूप नहीं थी जो सुबह की बची हुई बारिश की बूंदों पर चमक रही थी और जिसके कारण यह अस्वस्थता और सुस्ती थी। "काश डाक आ जाए," डचेस ने आगे कहा। "अमेलिया, मुझे कितने दिनों से कोई पत्र नहीं मिला है?"

'तीन सप्ताह, महोदया।'

"अगर आज शाम तक कोई नहीं आया, तो मैं क्या करूँगी, अमेलिया? मैं कल तक जाग ही नहीं पाऊँगी। ओह, मुझे उन लंबी, थका देने वाली, नींदहीन रातों से डर लगता है जो मैंने हाल ही में बिताई हैं, एक चौड़े, अकेले बिस्तर पर घंटों करवटें बदलती हुई, मेरे चारों ओर बुझते हुए लैंपों के बीच। अब मुझे लगता है कि अगर मेरे पास एक प्यारा सा पत्र होता जिसे मैं रात भर अपने दिल से लगाकर रख सकूँ, तो मैं सो सकती थी। अमेलिया, मैं आज शाम पूरब से एक सफेद कागज का टुकड़ा पाने के लिए कुछ भी दे सकती हूँ, जो उस हल्की, तेज लिखावट में लिखा हो। क्या वह बस मेरे लिए दो पंक्तियाँ लिखकर अपने नाम से हस्ताक्षर कर देगा?"

मिस क्लिफ्टन ने अपनी मालकिन के सामने चाय का एक छोटा सा चांदी का बर्तन और बिस्कुट की प्लेट रखते हुए कहा, 'महामहिम, आज शाम आपको पूरब से खबर मिलेगी, और वो भी कुछ ही मिनटों में। श्री वार्नर वर्दोपोलिस में हैं और आपसे तुरंत मिलने आएंगे।' यह देखकर सुखद लगा कि महारानी मैरी के चेहरे पर छाई उदासी अचानक खुशी से खिल उठी।

"मैं इसके लिए ईश्वर की आभारी हूँ," उसने कहा। "भले ही वह बुरी खबर लाए, फिर भी चिंता से राहत मिलेगी; और अगर अच्छी खबर लाए, तो कुछ पल के लिए मेरा यह दिल का दर्द दूर हो जाएगा।"

जब वह बोल रही थी, तभी प्रतीक्षालय में किसी के कदमों की आहट सुनाई दी, और दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। श्री वार्नर पूरी तरह से ढके हुए अंदर आए, क्योंकि यह अत्यंत आवश्यक था कि वे किसी का ध्यान आकर्षित न करें, अन्यथा उनकी पहचान उजागर हो जाती और उनकी स्वतंत्रता खतरे में पड़ जाती। अपने व्यवहार में कुछ शिष्टता और समर्पण भाव लिए वे डचेस के सामने एक घुटने पर बैठ गए और आदरपूर्वक उनके द्वारा बढ़ाए गए हाथ को अपने होठों से छुआ। जैसे ही वे उठे, उनकी आँखों में उत्सुकता और चिंता की एक झलक दिखाई दी, उन्होंने डचेस की ओर देखा और उनके दिव्य चेहरे पर छाई उदासी और निराशा की छाया, उनके फीके रंग की कोमलता को देखा।

'आपकी गरिमा क्षीण होती जा रही है,' उसने अचानक कहा, शुरुआती अभिवादन समाप्त होते ही। 'आप पतन की ओर अग्रसर हैं; आपने चीजों को वास्तविकता से कहीं अधिक बुरा मान लिया है; आपने काल्पनिक अनुमानों से खुद को भयभीत कर लिया है।'

[उसे सांत्वना देने की इच्छा के बावजूद, वार्नर वह प्रतीक्षित पत्र नहीं लाता। हताशा में, मैरी ने उसके साथ मोर्चे पर लौटने का फैसला किया।]

"एक सौ बीस मील की दूरी पर रहते हुए मैं उसे मनाने की एक भी कोशिश नहीं कर सकती। मुझे यकीन है कि अगर मैं पास होती तो वह मुझे एक महिला के रूप में ज्यादा देखता, न कि अपने और मेरे भयानक पिता के बीच एक निर्जीव कड़ी के रूप में। वार्नर, मेरी नसों में यह बेचैनी असहनीय है। मुझे अपनी इच्छाओं की पूर्ति में

निराशा और देरी की आदत नहीं है। तुम एंग्रिया कब लौट रहे हो?”

‘कल, महोदया, संभव हो तो सूर्योदय से पहले।’ ‘और आप भेस बदलकर यात्रा करेंगे, है ना?’

'मैं करता हूं।'

‘तो फिर अपनी गाड़ी में मेरे लिए जगह बनाइए। मुझे आपके साथ चलना ही है। श्रीमान वार्नर, आपसे निवेदन है कि एक शब्द भी विरोध न कीजिए। अगर मुझे यह उपाय सूझा न होता तो मैं सुबह होने से पहले ही मर जाती।’ श्रीमान वार्नर ने चुपचाप उनकी बात सुनी और समझ गए कि उनका विरोध करना सरासर व्यर्थ है, लेकिन मन ही मन उन्हें यह जोखिम उठाना बुरा लग रहा था। उन्हें इसकी जल्दबाजी और खतरे का एहसास था; इसके अलावा उन्होंने ड्यूक के इस निर्णय के परिणाम का बार-बार आकलन किया था। उन्होंने लाभ और हानि, लाभ और हानि, पिता से वियोग और पुत्री की खुशी, इन सभी बातों का तौल लगाया था, और उनकी शांत और महत्वाकांक्षी दृष्टि में, पुत्री की खुशी का पलड़ा भारी लग रहा था। उन्होंने डचेस को प्रणाम किया, कहा कि उनकी बात मान ली जाएगी, और कमरे से चले गए।

मोर्चे पर पहुंचते ही वार्नर तुरंत ज़मोर्ना से मिलता है।

‘मुझे पता था कि तुम आओगे, हॉवर्ड,’ उसने कहा, ‘क्योंकि मैंने तुम्हारी आवाज लगभग पंद्रह मिनट पहले सुनी थी। अच्छा, क्या तुमने दस्तावेज हासिल कर लिए हैं?’

जी हां, और मैंने उन्हें आपके निजी सचिव को सौंप दिया है।

‘वे वेलेस्ली हाउस में थे, है ना?’

'जी हां, डचेस की देखरेख में। उन्होंने कहा कि आप चाहते हैं कि उन्हें सावधानीपूर्वक संरक्षित किया जाए।'

वार्नर ने थोड़ी देर रुकने के बाद आगे कहा, 'उनकी कृपा ने बड़ी उत्सुकता से आपका हालचाल पूछा।'

जब ड्यूक अपने पलंग पर विशालकाय रूप में लेटे थे, तो उनके चेहरे पर एक सख्त फील्ड-मार्शल का भाव आ गया और क्षणिक सौम्यता गायब हो गई।

‘मुझे आपसे यह पूछने की ज़रूरत नहीं है कि मैरी वेलेस्ली कैसी दिखती हैं,’ उसने अपनी गहरी आवाज़ में कहा, ‘क्योंकि मैं आपसे बेहतर जानता हूँ। मैं कहता हूँ, हॉवर्ड,

क्या उसने आपसे कोई पत्र नहीं माँगा था?'
'उसने किया; उसने तो मुझसे एक के लिए लगभग विनती ही कर दी थी।'

'और तुम्हारे पास उसे देने के लिए एक भी नहीं था,' उसके राजा ने जवाब दिया, और धीमी, कड़वी हंसी के साथ वह अपने सोफे पर मुड़ गया और चुप हो गया।

वार्नर बेचैन कदमों से कमरे में चहलकदमी कर रहे थे। अचानक रुकते हुए उन्होंने कहा, 'महाराज, क्या आप सही कर रहे हैं?' 'यह मामला ईश्वर और आपकी अंतरात्मा के बीच है। मैं जानता हूँ कि व्यक्तिगत शांति या जीवन की किसी भी कीमत पर राज्य को बचाना होगा; महाराज, मैं राज्य के शासन में व्यावहारिकता का समर्थन करता हूँ; मैं न्यायपूर्ण लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अस्पष्ट उपायों को स्वीकार करता हूँ; मैं देशद्रोही को दिल में छुरा घोंपने के लिए रक्तपात और घरेलू सुख को जड़ से उखाड़ फेंकने को भी जायज़ मानता हूँ। लेकिन फिर भी, महाराज, मैं एक पुरुष हूँ, और पिछले एक-दो दिनों में मैंने जो देखा है, उसके बाद मैं आपसे पूरी गंभीरता से पूछता हूँ: क्या नॉर्थेंगरलैंड के हृदय तक पहुँचने का मेरी रानी के हृदय से होकर गुजरने के अलावा कोई और रास्ता नहीं है?'

[ज़मोर्ना अड़ियल बना रहता है, और वार्नर अंततः उसे यह जानकारी देकर छोड़ देता है कि बगल के कमरे में 'एक महिला' है जो उससे मिलना चाहती है।]

वार्नर के जाने के लगभग दस मिनट बाद, वह महिला भीतरी दरवाजे से कमरे में दाखिल हुई। ज़मोर्ना अपने पलंग से उठकर आग के सामने पूरी तरह से खड़े हो गए थे। पहले तो उन्होंने लापरवाही से उनकी ओर देखा, लेकिन उनकी पैनी नज़र उस सुंदर आकृति को देखकर तुरंत ही उत्सुकता से चमक उठी, जिसका दुबला-पतला, युवा शरीर और आकर्षक हाव-भाव, उनके पहनावे के साथ मिलकर, एक अत्यंत शालीनता का भाव पैदा कर रहे थे। उन्होंने झुककर प्रणाम किया और अपने बड़े घूंघट को इस तरह से संभाला कि उनका चेहरा छिप गया। ऐसा करते समय उनका हाथ कांप रहा था; फिर वह रुकीं और दरवाजे के पास एक किताबों की अलमारी से टिक गईं।

ज़मोर्ना ने देखा कि वह सिर से पैर तक कांप रही थी। अपनी मधुर और कोमल आवाज़ में उसने उसे पास आने को कहा और चूल्हे के पास उसके लिए एक कुर्सी रख

दी। उसने आज्ञा मानने की कोशिश की, लेकिन स्पष्ट था कि अगर वह सहारा छोड़ देती तो गिर जाती। उसकी अत्यधिक घबराहट देखकर ज़मोर्ना थोड़ा हैरान हुआ और मुस्कुराया।

"मुझे उम्मीद है, महोदया, मेरी उपस्थिति से आपको कोई घबराहट नहीं हुई है," उसने कहा और आगे बढ़ते हुए उसने विनम्रता से उसका हाथ पकड़ा और उसे बैठने के लिए ले गया। जैसे ही वह थोड़ी शांत हुई, उसने अत्यंत कोमल और उत्साहवर्धक स्वर में उससे फिर बात की।

'मुझे लगता है कि मिस्टर वार्नर ने कहा था कि आप मेरी सेना में एक अधिकारी की पत्नी हैं। उनका नाम क्या है?'

'आर्चर,' उस महिला ने जवाब दिया, पहली बार उसने एक मधुर शब्द का प्रयोग किया।

'क्या आपके पति के बारे में आपकी कोई विनती है? बेझिझक बताइए, महोदया; यदि वह उचित होगी, तो मैं उसे स्वीकार कर लूंगी।' उन्होंने कुछ उत्तर दिया, लेकिन इतनी धीमी आवाज़ में कि सुनाई नहीं दिया।

'महोदया, अपना घूंघट हटा दीजिए,' ड्यूक ने कहा। 'इससे मुझे आपकी बात स्पष्ट रूप से सुनाई नहीं दे रही है।' वह एक पल के लिए झिझकी, फिर जैसे अचानक कोई निश्चय कर लिया हो, उसने अपने सिर पर बंधी रेशमी गांठ खोली और घूंघट व टोपी दोनों उतारकर कालीन पर गिरा दीं। महाराज को एक सुंदर, शरमाया हुआ चेहरा दिखाई दिया, लेकिन पल भर में बालों के गुच्छे उस पर आ गिरे और वह चेहरा दो कोमल, छोटे सफेद हाथों से ढक गया, जिनकी पतली उंगलियों पर कई चमकती अंगूठियां थीं।

पूर्व के सम्राट अचंभित थे; इन मामलों में उनकी पैनी दृष्टि थी, लेकिन वे अपनी प्रिय याचिकाकर्ता की बढ़ती हुई, कांपती हुई झिझक को पूरी तरह से समझ नहीं पा रहे थे। उन्होंने याचिका की प्रकृति के संबंध में महिला से पहले पूछा गया प्रश्न दोहराया।

अंत में उसने कहा, "महाराज, मैं अपने प्रिय पति को इस संसार में हमेशा के लिए छोड़कर जाने से पहले एक बार फिर देखने की आपकी कृपापूर्ण अनुमति चाहती हूँ।" उसने ऊपर देखा, अपने सुनहरे माथे से अपने भूरे बालों को हटाया और अपनी आँसुओं से भरी, गंभीर और विनती भरी भूरी आँखों से उस चेहरे को देखा जो उसकी

नज़र से लाल हो गया था।

राजा का हृदय इतनी तेज़ी से धड़क रहा था कि उसकी धड़कन उसके विशाल सीने के फड़कने में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। वह महिला के सामने स्थिर मुद्रा में खड़ा था, थोड़ा झुका हुआ था, उसकी आँखों में एक अवर्णनीय चमक उभर रही थी जो एक तेज रोशनी में तब्दील हो गई, उसके रक्त की धारा उसके गालों तक दौड़ रही थी, और उसका माथा गंभीर, भयानक और निराशाजनक विचारों से काला पड़ गया था।

मैरी ने हाथ जोड़कर प्रतीक्षा की। उसे नहीं पता था कि प्रेम प्रबल होगा या आक्रोश। उसने देखा कि दोनों भावनाएँ हावी थीं। उसका सस्पेंस समाप्त हो गया: गरजते बादल बिजली के आवेश में फट पड़े! वह अपनी डचेस से मुड़ा और दरवाजा खोल दिया। एंग्रिया हाउस के गलियारों में वार्नर को पुकारती एक आवाज गूंजी - एक ऐसी आवाज जिसमें तुरही की लय और ढोल की गहराई थी -

[वार्नर को शाही अंदाज में उचित फटकार लगाई जाती है और बर्खास्त कर दिया जाता है।]

वार्नर, जिनका दिव्य दर्शन इस भयानक तूफान से थोड़ा भी विचलित नहीं हुआ था, हिंसक भावनाओं में लिप्त होने की बुराई पर अपने महामहिम को एक संक्षिप्त उपदेश देने के लिए रुक जाते; लेकिन डचेस की एक विनती भरी नजर ने उन्हें चुपचाप चले जाने के लिए विवश कर लिया।

मैरी को सुखद भय का अहसास हुआ जब उसने खुद को फिर से ड्यूक के साथ अकेला पाया। ड्यूक ने अभी तक उससे एक भी कठोर शब्द नहीं कहा था। ड्यूक के क्रोध की इस घड़ी में ज़मोर्ना की इकलौती साथी होना भयानक था, लेकिन उससे एक सौ बीस मील दूर होने से तो कितना बेहतर था! वह जल्द ही उसके काफी करीब पहुँच गई। ड्यूक, उसकी पीली और प्यारी सुंदरता को निहारते हुए, इस एहसास में डूब गया कि दुनिया में ऐसी कोई चीज नहीं है जिसे वह इतना प्यार करता हो - यह जानते हुए कि उसका कोमल रूप केवल उसके लिए था, और उस भक्ति की सराहना करते हुए जिसने उसे इतने खतरों से गुज़रकर उससे मिलने के लिए प्रेरित किया था - उसने खुद को आवेग में आकर उसके पास गिरा दिया और जल्द ही उसके स्पर्श की तीव्रता से वह उतनी ही कांप उठी जितनी उसके क्रोध के भय से।

“तुम्हारे द्वारा मुझे दिए गए सुख के कुछ पल मैं तहे दिल से लपक लूँगा, मैरी,” उसने कहा, जब वह उससे लिपट गई और उसे अपना प्रिय, गौरवशाली एड्रियन कहकर पुकारने लगी, “लेकिन तुम्हारे ये चुंबन और आँसू, और तुम्हारी मदहोश कर देने वाली सुंदरता, मेरे संकल्प को नहीं बदल सकती। मैं तुम्हें, मेरी प्यारी गुलाब, अपने से पूरी तरह अलग कर दूँगा; मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के बगीचे में फिर से लगा दूँगा: मुझे यह करना ही होगा, वह मुझे विवश कर रहे हैं।”

‘मुझे परवाह नहीं,’ डचेस ने उस पल के स्वादिष्ट पेय को पीते हुए कहा और अंधकारमय भविष्य से ज़मोर्ना में बसे गौरवशाली वर्तमान की ओर मुड़ गई। ‘लेकिन अगर तुम मुझे तलाक दे देते हो, ज़मोर्ना, तो क्या तुम मुझे कभी वापस नहीं अपनाओगे? क्या बीस साल की उम्र से पहले ही मेरी मृत्यु निश्चित है?’ ड्यूक चुपचाप उसकी ओर देखता रहा; वह आशा को खत्म नहीं कर सकता था।

‘वह घटना अभी घटी नहीं है, मैरी, और अभी भी संभावना है कि इसे टाला जा सकता है। लेकिन, प्रिय, अगर मैं तुम्हारे उस प्यारे माथे से ताज उतार लूँ, वह ताज जो मैंने हमारे राज्याभिषेक के दिन तुम्हारे रेशमी बालों पर रखा था, तो निराश मत होना। किसी चांदनी रात में, जब तुम्हें बिल्कुल भी उम्मीद न हो, तुम अपनी खिड़की के नीचे एड्रियन की सीटी सुन सकती हो। तब मुंडेर पर कदम रखना; मैं तुम्हें वहाँ से अपनी बाहों में उठाकर छत पर ले जाऊँगा। उस समय से हमेशा के लिए, मैरी, भले ही एंग्रिया की कोई रानी न हो, पर्सी की कोई बेटी नहीं होगी।’

‘एड्रियान,’ डचेस ने कहा, ‘तुम कितने अलग हो, तुम्हारे करीब आने पर तुम कितने बदल जाते हो। दूर से तो तुम बिल्कुल पहुँच से बाहर लगते हो। काश, काश मेरे पिता अभी तुम्हारे उतने ही करीब होते जितने मैं हूँ—या कम से कम लगभग उतने ही करीब; क्योंकि मैं तुम्हारी लता हूँ, मैं तुम्हारे चारों ओर आइवी की तरह लिपट जाती हूँ, और वह एक ऐसा वृक्ष है जो तुम्हारे साथ-साथ बढ़ता है। अगर वह इस कमरे में होते तो मैं तृप्त हो जाती।’

मुझे नहीं पता कि ज़मोर्ना ने क्या उत्तर दिया, लेकिन उसने पर्दा गिरा दिया।

कुछ समय बीत जाता है; ज़मोर्ना अंततः विजयी होता है और विद्रोह को कुचल दिया जाता है; वह अपने सलाहकारों के कड़े विरोध के बावजूद नॉर्थेंगरलैंड से सुलह कर लेता है, और मैरी उस मृत्यु से बच जाती है जो निश्चित रूप से उसके 'एड्रियान' से

स्थायी अलगाव के कारण हो सकती थी। हालाँकि, इसके बाद हम ज़मोर्ना को एक बार फिर अपने उस अड़ियल 'लता हुआ पौधा' से खुद को निकालने की कोशिश करते हुए देखते हैं। उसने अपने परिवार को अलविदा कह दिया है और एंग्रिया के लिए रवाना होने वाला है।

बैरोच दरवाजे पर खड़ा था, दूल्हा और नौकर इंतजार कर रहे थे, और ड्यूक, उदास चेहरे के साथ, उनके पास जाने के लिए आगे बढ़ रहा था, तभी उसकी पत्नी आगे आई।

‘तुम मुझे भूल गए हो, एड्रियन—’ उसने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, लेकिन उसी पल उसकी आँखों में एक भावपूर्ण चमक आ गई। वह चौंक गया, क्योंकि सचमुच वह उसे भूल चुका था।

‘तो अलविदा, मैरी,’ उसने जल्दी से उसे चूमते और गले लगाते हुए कहा। उसने उसका हाथ थाम लिया।

‘कृपा करके बताइए, मुझे यहाँ कब तक रहना होगा?’ उसने पूछा। ‘आप मुझे छोड़कर क्यों जा रहे हैं? मैं आपके साथ क्यों नहीं जा रही?’ ‘मौसम बहुत खराब है,’ उसने उत्तर दिया। ‘जब यह तूफान थम जाएगा तो मैं आपको बुलवा लूँगा — –’

'यह कब होगा?' डचेस ने उसके कदमों का पीछा करते हुए पूछा, जैसे ही वह हॉल में दाखिल हुआ।

‘जल्द ही—जल्द ही मेरी जान—शायद एक-दो दिन में—वहाँ—बेवकूफी मत करो—बेशक तुम आज नहीं जा सकते—’

‘मैं कर सकती हूँ और मैं करूँगी,’ डचेस ने तुरंत उत्तर दिया। ‘मैं एलनविक से तंग आ चुकी हूँ, तुम मुझे पीछे नहीं छोड़ सकते।’

‘कमरे में जाओ, मैरी। दरवाजा खुला है और हवा तुम पर बहुत तेज चल रही है। क्या तुम नहीं देख रही हो कि यह बर्फ को अंदर कैसे उड़ाकर ला रही है — -’

“मैं कमरे में नहीं जाऊंगी। मैं जैसी हूँ वैसी ही गाड़ी में बैठ जाऊंगी। अगर आप मेरे तैयार होने तक इंतज़ार करने से इनकार करते हैं, तो शायद आप मुझ पर इतनी दया दिखाएँगे कि मुझे अपने लबादे में से कुछ दे दें—” बोलते हुए वह कांप उठी। खुले द्वार से आती ठंडी हवा के झोंके में उसके बाल और पोशाक उड़ने लगे, जिससे हॉल में बर्फ

और सूखे पत्ते बिखर गए।

‘आप मौसम के थोड़ा नरम होने तक इंतजार कर सकते हैं। मुझे नहीं लगता कि आज बाहर निकलना आपके लिए अच्छा होगा।’

लेकिन मुझे जाना होगा, मैरी— क्रिसमस की छुट्टियां खत्म हो गई हैं और काम का दबाव बढ़ गया है।

तो मुझे ले चलो; मुझे यकीन है कि मैं इसे सहन कर सकता हूँ।

‘बिल्कुल नहीं। तुम अपने उन छोटे, नादान हाथों को पकड़ सकती हो—इतने पतले कि मैं लगभग उनके आर-पार देख सकती हूँ; और अपने घुंघराले बालों को अपने चेहरे पर झटक सकती हो—शायद उसकी पीलापन मुझसे छुपाने के लिए। क्या बात है? रो रही हो? अच्छा! मैं उसका क्या करूँ? अपने पिता के पास जाओ, मैरी। उन्होंने तुम्हें बिगाड़ दिया है।’ ‘एड्रियान, मैं तुम्हारे बिना एलनविक में नहीं रह सकती,’ डचेस ने गंभीरता से कहा। ‘यह मेरे जीवन के सबसे कड़वे दिनों की याद दिलाता है। मैं तुमसे फिर कभी अलग नहीं होऊँगी, सिवाय किसी हिंसा के—’

उसे मनाना कोई आसान काम नहीं था, क्योंकि उसके झूठे नाटक, उसके अलगाव और उसके अनगिनत विश्वासघातों ने उसके मन को ईर्ष्या के भयानक भ्रमों से भर दिया था, उसकी नसों को कमजोर कर दिया था और उन्हें सौ अस्पष्ट आशंकाओं का शिकार बना दिया था; ऐसे भय जो उसे कभी पूरी तरह से नहीं छोड़ते थे, सिवाय तब जब वह वास्तव में उसकी बाहों में होती थी या कम से कम उसकी प्रत्यक्ष उपस्थिति में होती थी।

‘मैं तुमसे कहता हूँ, मैरी,’ उसने स्नेह और झुंझलाहट से भरी मुस्कान के साथ उसकी ओर देखते हुए कहा, ‘मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं तुम्हें दो-तीन दिनों में बुलवा लूँगा—। शायद मैं एंग्रिया में एक सप्ताह रहूँगा, इससे अधिक नहीं—।’

‘एक सप्ताह! और आपकी कृपा इसे तुच्छ समय मानती है? मेरे लिए तो यह अत्यंत थकाऊ होगा—’

“अगर घोड़े ज़्यादा देर तक खड़े रहे तो जम जाएँगे,” ड्यूक ने उसकी आखिरी बात पर ध्यान न देते हुए कहा। “आओ, अपनी आँखें पोंछ लो और एक बार के लिए दार्शनिक बन जाओ। लो, जाने से पहले मुझे एक मुस्कान देखने दो। एक हफ़्ता तुरंत बीत जाएगा – यह किसी युद्ध अभियान पर निकलने जैसा नहीं है।”

जब ज़मोर्ना ने डचेस को अपनी बाहों से छोड़ा, तो उसने विनती करते हुए कहा,

'दो दिन में मुझे बुलवाना मत भूलना।'

'नहीं, नहीं, मैं तुम्हें कल बुलवा लूँगा—अगर मौसम ठीक रहा तो। और,' उसकी आवाज़ की नकल करते हुए, 'मुझसे ईर्ष्या मत करना, मैरी—जब तक कि तुम एनारा और वार्नर के श्रेष्ठ आकर्षण से डरती न हो। अलविदा—' वह जा चुका था। वह खिड़की की ओर भागी; वह उसके पास से गुज़र गया। तीन मिनट में बग्घी धीमी आवाज़ के साथ लॉन का चक्कर लगाकर गाड़ी वाली सड़क पर तेज़ी से आगे बढ़ी और बर्फीले तूफान के घने भंवर में जल्दी से गायब हो गई।

[इस बीच, मीना रिवाउल्क्स में ज़मोर्ना का धैर्यपूर्वक इंतज़ार करती है। संयोग से, लॉर्ड हार्टफोर्ड मीना के प्यार में पागल है; ज़मोर्ना द्वारा उसके साथ किए गए लापरवाह व्यवहार से नाराज़ होकर, वह उससे मिलने और शादी का प्रस्ताव रखने का फैसला करता है। वह कई बार इस विषय पर बात करने की कोशिश करता है, लेकिन मीना जानबूझकर उसकी बात को समझने से बचती है। अंततः, उसका प्यार स्पष्ट हो जाता है।]

मिस लॉरी बेचैनी से उठीं; वह हार्टफोर्ड की ओर बढ़ीं।

'मेरे स्वामी, आपने मुझ पर बहुत कृपा की है, और मैं उस कृपा के लिए बहुत आभारी हूँ। शायद कभी मैं इसका बदला चुका सकूँ—हम नहीं जानते कि भाग्य कब पलटता है; कमजोरों ने भी बलवानों की सहायता की है। मैं आपकी सेवा करने के छोटे से छोटे अवसर की प्रतीक्षा करूँगा, लेकिन इस तरह बात न करें। मुझे नहीं पता कि आपके शब्दों का क्या अर्थ है।' लॉर्ड हार्टफोर्ड ने उत्तर देने से पहले एक क्षण रुककर कहा। झुकी हुई भौंहों और मुड़े हुए हाथों से उसकी ओर देखते हुए उन्होंने कहा,

'मिस लॉरी, आप मेरे बारे में क्या सोचती हैं?'

'आप दुनिया के सबसे नेक दिलों में से एक हैं,' उसने निडर होकर उत्तर दिया। वह हार्टफोर्ड के ठीक सामने खड़ी थी, ऊपर उसकी ओर देख रही थी, उसके बाल माथे से पीछे की ओर गिरे हुए थे, उसकी सुंदर लटें कनपटी और पतली गर्दन को ढक रही थीं। उसके छोटे, प्यारे चेहरे पर गंभीरता की झलक थी, और उसकी बड़ी, गहरी, भावुक और दयालु आँखों में एक अलग ही चमक थी: मानो वह एक महान मस्तिष्क की पापी

सोच से डर भी रही हो और उस पर तरस भी खा रही हो।

हार्टफोर्ड इसे बर्दाश्त नहीं कर सका। वह स्त्री के क्रोध या भय को सहन कर सकता था, लेकिन करुणा से भरी कृतज्ञता की उस भावभंगिमा ने उसे लगभग क्षत-विक्षत कर दिया। उसने एक पल के लिए अपना सिर दूसरी ओर घुमाया, लेकिन फिर जुनून हावी हो गया। जब उसने दोबारा देखा तो उसकी सुंदरता ने उसके भीतर एक मदहोश कर देने वाली अनुभूति पैदा कर दी, जो निराशा जैसी भावना से और भी तीव्र हो गई थी।

'तुम मुझसे प्यार करोगी!' वह हताशा से चिल्लाया। 'क्या मैं तुमसे प्यार नहीं करता? क्या मैं तुम्हारे लिए अपनी जान नहीं दे दूंगा? क्या बदले में मुझे केवल मित्रता का ठंडा भाव ही मिलेगा? मैं कोई प्लेटोनिक नहीं हूँ, मिस लॉरी – मैं तुम्हारा मित्र नहीं हूँ। सुनो, महोदया, मैं तुम्हारा घोषित प्रेमी हूँ। नहीं, तुम मुझे कभी नहीं छोड़ोगी, भगवान की कसम! मैं तुमसे ज़्यादा शक्तिशाली हूँ –' वह उसकी उग्रता से भयभीत होकर एक-दो कदम पीछे हट गई। उसने सोचा कि वह पीछे हटना चाहती है; लेकिन पीछे न हटने का निश्चय करके उसने उसे तुरंत अपनी दोनों बाहों में भर लिया और प्यार से नहीं बल्कि उग्रता से चूमा। मिस लॉरी ने कोई विरोध नहीं किया।

'हार्टफोर्ड,' उसने अपनी आवाज़ को संभालते हुए कहा, हालाँकि कोशिश के बावजूद उसकी आवाज़ लड़खड़ा रही थी, 'यह हमारी विदाई का दृश्य होना चाहिए। अगर तुम खुद को नहीं संभालोगे तो मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगी।' हार्टफोर्ड ने देखा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह बुरी तरह काँपने लगी। उसने अपनी बाहों से उसे ढीला छोड़ दिया। उसने उसे जाने दिया। वह सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई और जल्दी से अपना माथा पोंछा, जो नम और संगमरमर की तरह पीला पड़ गया था।

'सुश्री लॉरी,' उनके लॉर्डशिप ने कहा, 'दुनिया में कोई भी पुरुष आपसे उतना प्यार नहीं करता जितना मैं करता हूँ। क्या आप मेरी उपाधि और मेरा मुकुट स्वीकार करेंगी? मैं इन्हें आपके चरणों में अर्पित करता हूँ।'

'मेरे स्वामी, क्या आप जानते हैं कि मैं किसकी हूँ?' उसने खोखली, बेहद दबी हुई आवाज़ में उत्तर दिया। 'क्या आप जानते हैं कि ये प्रस्ताव मेरे कानों को कितने अप्रिय लगते हैं, कितने अधार्मिक और ईशनिंदापूर्ण प्रतीत होते हैं? क्या आप ज़रा भी समझ सकते हैं कि मेरे लिए आपसे प्रेम करना कितना असंभव है? मैंने आपको सच्चा और

वफ़ादार समझा था; लेकिन अब मैं जानती हूँ कि आप गद्दार हैं।'

'क्या तुम मुझसे घृणा करते हो?' हार्टफोर्ड ने पूछा।

'नहीं, महाराज, मैं नहीं करती।' वह रुकी और नीचे देखने लगी। उसके पीले चेहरे पर अचानक लाली आ गई; वह सिसक उठी, आँसू नहीं, बल्कि एक गर्मजोशी भरे दिल से उपजी प्रबल प्रेरणा। उसने फिर ऊपर देखा। उसकी आँखों का भाव बदल गया था, वे एक तीव्र, उज्ज्वल प्रेरणा से दमक रही थीं।

'हार्टफोर्ड,' उसने कहा, 'अगर मैं तुमसे बहुत पहले मिली होती, घर छोड़ने और अपने पिता को अपमानित करने से पहले, तो मैं तुमसे प्यार करती। हे मेरे स्वामी, तुम नहीं जानते कि कितना सच्चा प्यार। मैं तुमसे शादी करती और तुम्हारे घर को खुशियों से भर देना अपने जीवन का गौरव बनाती। लेकिन अब मैं ऐसा नहीं कर सकती—कभी नहीं।'

मैंने अपने वर्तमान स्वामी को तब देखा था जब वे अभी जवान ही हुए थे। हार्टफोर्ड, क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हें बताऊँगी कि उनके लिए मेरे मन में क्या भावनाएँ थीं? उन्हें शब्दों में व्यक्त करना असंभव है: वे इतनी तीव्र, इतनी प्रचंड थीं कि उन्होंने सब कुछ मिटा दिया। मैं दुनिया की राय के महत्व को समझने, सही-गलत में फर्क करने की शक्ति खो बैठी थी। मैंने अपने जीवन में कभी ज़मोर्ना का विरोध नहीं किया, कभी उनके आदेशों का पालन करने में देरी नहीं की। मैं कर ही नहीं सकती थी! वे कभी-कभी मेरे लिए एक इंसान से भी बढ़कर थे, वे हर चीज से ऊपर थे: सभी स्नेह, सभी रुचियाँ, सभी भय, आशाएँ या सिद्धांत। उनसे अलग होकर मेरा मन खाली हो जाता - ठंडा, निर्जीव, केवल निराशा की भावना से भरा हुआ। अगर मुझे उनसे अलग कर दिया जाए और तुम्हारे पास छोड़ दिया जाए तो मैं कितना दुखी हो जाऊँगी! यह मत पूछो - मैं पहले मर जाऊँगी। कोई भी स्त्री जिसने मेरे स्वामी से प्रेम किया हो, उन्हें छोड़ने के लिए राजी नहीं हो सकती। उनके जैसा कहीं और कोई नहीं है। हार्टफोर्ड, अगर मैं तुम्हारी पत्नी होती, अगर ज़मोर्ना मेरी तरफ़ देखती, तो मैं गुलाम की तरह अपने पुराने काम पर लौट जाती। मैं तुम्हें वैसे ही अपमानित करती जैसे मैंने अपने सारे रिश्तेदारों को किया है। इस बात को याद रखना, मेरे स्वामी, और फिर कभी मुझसे प्यार का इज़हार मत करना।

हार्टफोर्ड, गुस्से में आकर लापरवाही बरतते हुए, अंततः मीना का अपमान करता है

और उसे ज़मोर्ना की 'कोमल रखैल' कहता है, जिससे वह 'व्यापार की उथल-पुथल और वैवाहिक जीवन की परेशानियों' से थक जाने पर मिलने जाता है। वे अचानक, कड़वाहट के साथ अलग हो जाते हैं।

पहले से कहीं अधिक हताश होकर, हार्टफोर्ड ने ज़मोर्ना को द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दी; इस बात से क्रोधित होकर कि 'एक असभ्य एंग्रियन सरदार' 'मेरी किसी भी चीज़ पर कब्ज़ा करने' की कोशिश कर रहा है, ड्यूक ने अपने प्रतिद्वंद्वी को लगभग जानलेवा घाव दे दिया।

हार्टफोर्ड को बर्खास्त करने के बाद, और आगामी द्वंद्वयुद्ध से अनभिज्ञ, मीना अपने दैनिक कार्यों में लौट आती है और ड्यूक का इंतजार करने लगती है। मीना की तुलना में कम धैर्यवान मैरी अब और इंतजार नहीं कर सकती और ज़मोर्ना के कंट्री हाउस के लिए निकल पड़ती है। उसकी गाड़ी के साथ हुई एक दुर्घटना के कारण वह ड्यूक की जागीर में स्थित मीना के क्रॉस ऑफ रिवाउल्क्स पर पहुँच जाती है।

नाश्ते के बाद मिस लॉरी एक छोटी सी लाइब्रेरी में बैठी थीं। उनके सामने उनकी मेज थी, और दो बड़े लाइनदार क्वार्टो पेपर थे जो मदों और आंकड़ों से भरे हुए थे, जिनकी वे तुलना करती हुई प्रतीत हो रही थीं। उनकी कुर्सी के पीछे एक लंबा, सुगठित, सिपाही जैसा दिखने वाला, हल्के बालों वाला युवक खड़ा था। उसका पहनावा सादा और शालीन था; केवल एक कंधे पर लगा एपॉलेट ही उसके आधिकारिक पद का संकेत दे रहा था। वह ध्यान से अपनी छोटी उंगलियों की गति को देख रहा था, जो खातों के लंबे स्तंभों की तेजी से गणना कर रही थीं। मिस लॉरी के चेहरे पर दिखाई देने वाली एकाग्रता को देखना विचित्र था; उनके चिकने, सफेद माथे की गंभीरता, जो झुके हुए घुंघराले बालों से ढकी हुई थी; उनके होठों की लगभग न के बराबर और भावहीन हरकत—हालांकि उनके होंठ अपनी गुलाबी मिठास में केवल मुस्कान के लिए ही बने प्रतीत होते थे। एक घंटे से अधिक समय बीत गया, इस बीच कमरा गहरी शांति में डूबा रहा, जो केवल कभी-कभार मिस लॉरी द्वारा अपने पीछे बैठे सज्जन से कुछ मदों की वैधता या कुल योग को पूरा करने के लिए आवश्यक किसी फालतू पैसे की कमी के बारे में की गई टिप्पणियों से टूटती थी। खातों के मिलान में उन्होंने अत्यंत व्यावसायिक कुशलता और सख्ती दिखाई। छोटी से छोटी गलती भी तुरंत पकड़ ली जाती और कुछ ही शब्दों में, लेकिन एक पैनी नज़र से

उसका ज़िक्र कर दिया जाता था। हालांकि, लेखाकार उनकी निगरानी का आदी हो चुका था, क्योंकि कुल मिलाकर उसके खाते गणितीय रूप से एकदम सटीक थे।

'बहुत खूब,' मिस लॉरी ने पन्ने बंद करते हुए कहा। 'आपके खाते सराहनीय हैं, श्री ओ'नील। आप महोदय को बता दीजिए कि सब कुछ बिल्कुल सही है। आपके विवरण मेरे विवरणों से बिल्कुल मेल खाते हैं।' श्री ओ'नील ने सिर झुकाया।

'धन्यवाद, महोदया।' अपनी किताबें उठाते हुए, वह कमरे से बाहर जाने ही वाले थे। लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा करते, वह मुड़े और बोले,

'ड्यूक चाहते थे कि मैं आपको सूचित करूँ, महोदया, कि वे संभवतः दोपहर चार या पाँच बजे के आसपास यहाँ होंगे।'

'आज?' मिस लॉरी ने आश्चर्य भरे लहजे में पूछा। 'जी मैडम।' वह एक पल रुकीं, फिर जल्दी से बोलीं,

'बहुत खूब, महोदय।' श्री ओ'नील ने विनम्रतापूर्वक झुककर विदा ली। मिस लॉरी ने भी थोड़ा सा अनमना भाव दिखाते हुए झुककर अभिवादन किया; उनके सारे विचार उस आखिरी बात में उलझ गए थे और कहीं खो गए थे। दरवाजा बंद होने के काफी देर बाद तक वह अपना सिर हाथ पर रखकर बैठी रहीं, विचारों के उथल-पुथल में डूबी हुई थीं—उस सरल वाक्य, 'ड्यूक आज यहाँ होंगे', ने उनके मन में कई उम्मीदें जगा दी थीं।

घड़ी की आवाज से वह जाग उठी। उसे याद आया कि बीस काम उसका इंतजार कर रहे थे। हमेशा सक्रिय और व्यस्त रहने वाली वह लड़की सपनों में समय बर्बाद नहीं करती थी। वह उठी, अपना डेस्क बंद किया और शांत पुस्तकालय छोड़कर व्यस्त वातावरण की ओर चल पड़ी।

चार बज चुके थे और मिस लॉरी के कदमों की आहट सीढ़ियों पर सुनाई दी, जो उनके कमरे से नीचे उतर रही थीं। वह विशाल, रोशन गलियारे को पार कर रही थीं, मानो नारीत्व और सुंदरता की पराकाष्ठा हों। उन्होंने खुद को शानदार ढंग से सजाया था: काले साटन का गाउन उनके पतले शरीर पर पूरी तरह से लिपटा हुआ था, जो उनकी चमकती हुई तहों को उभार रहा था, और उनके उज्ज्वल, खिले हुए रंग को रंगों के विपरीत निखार रहा था। उनके घुंघराले बालों में हीरे की एक अंगूठी चमक रही थी, और उसी शुद्ध रत्न की बूंदें उनके छोटे, नाजुक कानों से झिलमिला रही थीं। ये आभूषण, अपनी भव्यता के कारण, राजघराने के उपहार थे, और अब वे इन्हें मुख्य

रूप से उन कोमल और सुखद पलों की याद दिलाने के लिए पहनती थीं, जिनकी चमक से झलक मिलती थी।

वह अपने ड्राइंग रूम में दाखिल हुई और खिड़की के पास खड़ी हो गई। वहाँ से रिवाउल्क्स की घनी छायाओं के बीच से मुख्य सड़क की एक झलक दिखाई दी; वह भी अब जमी हुई धुंध में लगभग छिप चुकी थी, जिसमें गोधूलि बेला छाई हुई थी। घर और जंगल दोनों जगह सन्नाटा पसरा हुआ था। एक घोड़ागाड़ी पास आई, उसने उसकी आवाज़ सुनी। उसने उसे धुंध में से तेज़ी से निकलते देखा। लेकिन वह ज़मोर्ना नहीं थी।

एक पल भी देखे बिना ही उनकी अनुभवी दृष्टि ने भांप लिया कि घोड़ों के साथ कुछ गड़बड़ है—शायद लगाम उलझ गई थी, या वे डर गए थे। कोचवान का उन पर से नियंत्रण छूट गया था, वे बेकाबू होकर उछल-कूद कर रहे थे। उन्होंने घंटी बजाई; एक नौकर अंदर आया; उन्होंने सड़क पर खड़ी उस गाड़ी के लिए तुरंत सहायता भेजने का आदेश दिया। दो घोड़ों की देखभाल करने वाले तुरंत उनके आदेश का पालन करने के लिए नीचे की ओर दौड़े, लेकिन उनके पहुँचने से पहले ही, उछल-कूद करते हुए एक घोड़ा बर्फीली सड़क पर फिसलकर गिर गया। बाकी घोड़े और भी बेकाबू हो गए, और देखते ही देखते गाड़ी सड़क किनारे पलट गई। मिस लॉरी का एक संदेशवाहक वापस आया। उन्होंने खिड़की खोल दी।

‘क्या किसी को चोट लगी है?’

'मुझे उम्मीद है कि ज्यादा कुछ नहीं होगा, महोदया।'

‘गाड़ी में कौन है?’

‘सिर्फ एक महिला आई हैं, और ऐसा लगता है कि वो बेहोश हो गई हैं। जब मैंने दरवाजा खोला तो उनका चेहरा बिल्कुल पीला पड़ गया था। अब क्या किया जाए, महोदया?’ मिस लॉरी ने आयरिश लहजे में सीधे-सीधे जवाब दिया।

‘महिला को सीधे अंदर ले आओ, और नौकरों को आराम की व्यवस्था करो।’

जी जी मैडम।

मिस लॉरी ने अपनी खिड़की बंद कर ली; बहुत ठंड थी। कुछ ही मिनटों में, नौकरानी की बाहों में बैठी महिला को धीरे-धीरे लॉन से होते हुए ड्राइंग रूम में लाया गया।

'उसे सोफे पर लिटा दो,' मिस लॉरी ने कहा। महिला का यात्रा वाला लबादा

सावधानीपूर्वक हटाया गया, और एक पतली आकृति गहरे रेशमी वस्त्र में दिखाई दी: रुई के गद्दे इतने हल्के थे कि दबाव से लगभग दब ही नहीं रहे थे।

अब उसका बेहोशी का दौरा उतर रहा था। आग की सुखद गर्माहट, जो उस पर पूरी तरह पड़ रही थी, ने उसे होश में ला दिया। आँखें खोलकर उसने मिस लॉरी का चेहरा देखा, जो उसके पास झुकी हुई थीं और अपने होठों को किसी पेय से गीला कर रही थीं। एक अजनबी को पहचानकर उसने शरमाते हुए अपनी नज़रें फेर लीं। उसने कमरे का चारों ओर ध्यान से देखा और उसकी उत्तम व्यवस्था, चूल्हे की रोशनी की प्रसन्न और शांत चमक देखकर वह कुछ अधिक शांत हो गई।

‘इस दयालुता के लिए मैं किसका ऋणी हूँ? मैं कहाँ हूँ?’

'एक आतिथ्यवान देश में, महोदया। एंग्रियन लोग अजनबियों से कभी मुंह नहीं मोड़ते।'

उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'मुझे पता है कि मैं एंग्रिया में हूँ, लेकिन कहाँ? इस घर का नाम क्या है, और आप कौन हैं?'

मिस लॉरी का चेहरा थोड़ा लाल हो गया। ऐसा लग रहा था मानो उन्हें अपना असली नाम बताने में कोई अस्पष्ट हिचकिचाहट हो रही हो; वह जानती थीं कि उनकी बहुत ख्याति थी—इतनी ज़्यादा कि अगर उस महिला को उनका नाम पता चल जाता तो शायद वह उनसे मुंह मोड़ लेतीं। मिस लॉरी को लगा कि वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकतीं।

‘मैं तो बस यहाँ की नौकरानी हूँ,’ उसने कहा। ‘यह एक महान एंग्रियन मालिक का शिकारगाह है — -’

‘कौन?’ उस महिला ने पूछा, जो अप्रत्यक्ष उत्तरों से विचलित होने वाली नहीं थी। मिस लॉरी फिर हिचकिचाईं; किसी भी हालत में वह ‘महामहिम ड्यूक ऑफ ज़मोर्ना’ नहीं कह सकती थीं। उन्होंने जल्दी से जवाब दिया।

'पश्चिमी मूल का एक सज्जन, महान पैकेनहैम परिवार की एक दूरस्थ शाखा - कम से कम पारिवारिक अभिलेख तो यही कहते हैं, लेकिन वे लंबे समय से पूर्व में स्वाभाविक रूप से बस चुके हैं -'

‘मैंने उनके बारे में कभी नहीं सुना,’ महिला ने जवाब दिया। ‘पैकेनहम? यह तो एंग्रियन नाम नहीं है!’

‘शायद, महोदया, आप देश के इस हिस्से से विशेष रूप से परिचित नहीं हैं—’

'मैं हॉक्सक्लिफ को जानती हूँ,' उस महिला ने कहा, 'और आपका घर बिल्कुल सीमा पर, शाही स्वतंत्रता क्षेत्र के भीतर ही है, है ना?'

'जी हां, महोदया। यह वहां तब से मौजूद है जब महान ड्यूक ने वन जागीर खरीदी थी, और महाराज ने मेरे स्वामी को इस लॉज और शिकार में भाग लेने के विशेषाधिकार को बनाए रखने की अनुमति दी थी।'

'अच्छा, और आप मिस्टर पैकेनहम की हाउसकीपर हैं?'

जी महोदया।' उस महिला ने अपनी विशाल, राजसी आँखों से मिस लॉरी को एक और दबी नज़र से देखा। उसकी नज़रें हीरे की बालियों पर ठहरीं, काले घुंघराले बालों के बीच से चमकते हीरों के झुमके पर; फिर उस युवा गृहणी के प्यारे चेहरे और आकर्षक आकृति पर; और अंत में एक ऐसे भाव के साथ दीवार पर टिक गईं जो बहुत कुछ कह रहा था। मिस लॉरी उन चमकदार झुमकों को अपने कानों से उतार देना चाहती थीं; उन्हें बहुत बुरा लगा। 'सब मुझे जानते हैं,' उसने मन ही मन कहा। 'मुझे लगता है कि मेरे माथे पर "मालकिन" का दाग लग गया है — -'

[मीना के झूठ को भांपते हुए, मैरी एकांत में जाने के लिए एक कमरा मांगती है और अपनी खुद की कहानी गढ़ती है: वह 'श्रीमती इरविंग' है, जिसका पति उत्तर का एक पादरी है। मैरी चली जाती है; नीचे, मीना ज़मोर्ना के आने का इंतजार करती है।]

अब पाँच बज चुके थे। लगभग अँधेरा हो चुका था। एक नौकर मोमबत्ती से बड़े से भोजन कक्ष में झूमर जला रहा था, जहाँ रात के खाने के लिए सजी मेज पर चाँदी की जगमगाती प्लेटों पर जलती हुई दीपक की रोशनी पड़ रही थी। शानदार साइडबोर्ड से भी रोशनी चमक रही थी, जो आने वाले खास मेहमान के स्वागत के लिए पूरी तरह से तैयार था।

जब भी वह किसी मुलाकात पर आने का इरादा रखता था, तो ज़मोर्ना समय का पाबंद था। घर में प्रवेश करते ही गलियारे में लगी घड़ी की मधुर ध्वनि पेंडुलम के साथ गूंज उठी। सामने का दरवाजा खुलना, रात की ठंडी हवा का झोंका; फिर अचानक दरवाजा बंद होना और कदमों की आहट उसके आगमन का संकेत थी।

मिस लॉरी भोजन कक्ष में चारों ओर देख रही थीं और सभी चीजों को अंतिम रूप दे रही थीं। तभी उनकी मुलाकात अपने स्वामी से हुई जब वे अंदर आए। उनके ठंडे होंठ

उनके माथे से लगे और उनका ठंडा हाथ उनके हाथ को थाम लिया, जिससे उन्हें वह अनुभूति हुई जिसका वे हफ्तों और महीनों से इंतजार कर रही थीं, और जिसे प्राप्त होने पर वे सभी देरी, सभी परिश्रम और सभी कष्टों का एकमात्र प्रतिफल मानती थीं।

‘मैं जम गया हूँ, मीना,’ उसने कहा। ‘मैं आखिरी चार मील घोड़े पर सवार होकर आया हूँ और रात कनाडा जैसी ठंडी है।’ उसने मीना की गर्म और कोमल हथेलियों के बीच अपने बर्फीले हाथ को रगड़कर उसे थोड़ा सा हिलाया और मौन भाव से भरी खुशी, संतुष्टि और श्रद्धा से भरी आँखों से जवाब दिया।

‘मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ, मेरे स्वामी?’ ये उसके पहले शब्द थे, जब वह आग के पास खड़ा होकर खुशी से अपने हाथ आग की लपटों के ऊपर उठा रहा था। वह हँसा।

'मीना, अपनी बाहों को मेरी गर्दन के चारों ओर डालो और मेरे गाल को चूमो, जैसे तुम्हारा अपना गाल गर्म और खिलता हुआ हो।'

अगर मीना लॉरी, मीना वेलेस्ली होतीं, तो वह ऐसा ही करतीं; और उनके शब्दों पर विश्वास करने की तीव्र इच्छा को रोकना उनके लिए एक कशमकश थी। लेकिन उन्होंने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया और संकोच से उस कुर्सी के पास गईं जिस पर वह अब बैठ गए थे, और उनके कनपटी के बालों को संवारने और व्यवस्थित करने लगीं। उन्होंने देखा कि अभिवादन की पहली मुस्कान गायब होते ही उनके माथे पर उदासी छा गई, जो बाद में चाहे वह कुछ भी बोलें या हँसें, उनके चेहरे की एक स्थायी विशेषता बनी रही।

‘घर में कौन-कौन से मेहमान आए हैं?’ उसने पूछा। ‘जब मैं अंदर आया तो मैंने देखा कि अस्तबल के सामने चार काले घोड़ों की मालिश कर रहा था।’

'लगभग एक घंटे पहले लॉज के द्वार पर एक गाड़ी पलट गई थी; चूंकि उसमें सवार महिला को बेहोशी की हालत में बाहर निकाला गया था, इसलिए मैंने उसे यहां लाने और उसके नौकरों को रात भर के लिए ठहराने का आदेश दिया।'

‘और क्या आप जानते हैं कि वह महिला कौन है?’ उनके विनम्र उत्तर ने आगे कहा। ‘घोड़े अच्छे हैं – बेहतरीन किस्म के।’

‘वह कहती है कि उसका नाम श्रीमती इरविंग है, और वह उत्तर में एक प्रेस्बिटेरियन पादरी की पत्नी है, लेकिन — -’

'क्या आपको उस पर मुश्किल से ही विश्वास है?' ड्यूक ने बीच में ही टोकते हुए

कहा।

'नहीं,' मिस लॉरी ने जवाब दिया। 'मुझे कहना होगा कि मैंने उन्हें एक उच्च कोटि की महिला समझा था। उनके तौर-तरीकों और हाव-भाव में कुछ हद तक कुलीनता झलकती है, और ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें एंग्रिया के बारे में काफी जानकारी है।'

ज़मोर्ना ने पूछा, 'वह कैसी है? जवान है या बूढ़ी, सुंदर है या बदसूरत?'

'वह जवान है, दुबली-पतली है, मुझसे ज़्यादा लंबी नहीं है, और मैं कहूँगी कि सुंदर से ज़्यादा शालीन है; उसका व्यवहार बहुत पीला और ठंडा है। उसका मुँह और ठोड़ी छोटी है और गर्दन बहुत गोरी है — -'

'शायद तुमने यह नहीं बताया कि यह घर किसका है, मीना?'

मीना ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'मैंने कहा था कि घर का मालिक एक महान एंग्रियन जमींदार था, जो पश्चिमी पैकेनहैम परिवार का वंशज था, और मैं उसकी गृहणी थी।'

'बहुत खूब; वो तुम्हारी बात पर यकीन नहीं करेगी। तुम किसी एंग्रियन देहाती सज्जन की प्रेमिका जैसी दिखती हो। मुझे अपना हाथ दो, मेरी बच्ची। क्या तुम मेरी उम्र की नहीं हो?'

'जी हां, मेरे स्वामी ड्यूक। मेरा जन्म भी उसी दिन, आपके जन्म के एक घंटे बाद हुआ था।'

'मैंने भी यही सुना है, पर ये ज़रूर कोई ग़लतफ़हमी होगी। तुम बीस साल की नहीं लगतीं, और मैं पच्चीस साल की हूँ, मेरी प्यारी पश्चिमी लड़की। क्या आँखें हैं! मेरी तरफ देखो, मीना—सीधे देखो और शरमाओ मत—' मीना ने देखने की कोशिश की, लेकिन वो शरमाए बिना देख नहीं पाई। उसके माथे तक लाल हो गए।

'छी!' उन्होंने उसे दूर धकेलते हुए कहा। 'विनम्र होने का दिखावा कर रही हो। दस साल से मेरी परिचित भी बिना झिझके मेरी आँखों में आँखें नहीं मिला सकती। मीना, क्या तुमने वह अंगूठी खो दी है जो मैंने तुम्हें कभी दी थी?'

'कौन सी अंगूठी, मेरे स्वामी? आपने तो मुझे बहुत सारी अंगूठियां दी हैं।'

'मैंने जो कहा, उसमें आपके पूरे हृदय और मन का सार एक आदर्श वाक्य के रूप में पत्थर पर उकेरा गया था।'

'वफादारी?' मिस लॉरी ने पूछा, और उन्होंने अपनी तर्जनी उंगली पर खुदा हुआ पन्ना पहने हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

‘ठीक है,’ जवाब आया। ‘क्या अब भी यही तुम्हारा आदर्श वाक्य है?’ और अपनी अभिमानी, ईर्ष्यालु निगाहों से वह मानो उसका अंतरात्मा पढ़ने की कोशिश कर रहा था। मिस लॉरी तुरंत समझ गई कि हाल की घटनाएँ सिर्फ़ उसके और लॉर्ड हार्टफोर्ड के बीच ही सीमित नहीं थीं। उसने देखा कि उसकी शालीनता डगमगा रही थी और वह क्रूरता की ओर अग्रसर था; वह उदास, भयभीत निगाहों से उसे देखती रही।

‘खैर,’ उसने लंबे विराम के बाद मुँह फेरते हुए कहा, ‘अगर महाराज मुझसे नाराज़ हैं, तो इस दुनिया में मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं है—’ खाना लेकर नौकरों के आने से ज़मोर्ना का जवाब अधूरा रह गया…

जब पर्दा हटा दिया गया और नौकर चले गए, तब ड्यूक ने अपने एकमात्र गिलास शैंपेन की चुस्की लेते हुए, उस बातचीत को फिर से शुरू किया, जिसे उन्होंने पहले इतने अप्रिय तरीके से शुरू किया था।

‘इधर आओ, मेरी बच्ची,’ उसने अपने पास एक कुर्सी खींचते हुए कहा। मीना ने शर्म या किसी अन्य भावना के कारण ज़रा भी संकोच नहीं किया और उसके आदेश का पालन किया।

‘अब,’ उसने अपना सिर उसकी ओर झुकाते हुए और अपना हाथ उसके कंधे पर रखते हुए कहा, ‘क्या तुम खुश हो, मीना? क्या तुम्हें कुछ चाहिए?’

‘कुछ नहीं, मेरे स्वामी।’ उसने सचमुच कहा। इस दुनिया में जो कुछ भी उसे सुख दे सकता था, वह उस क्षण उसकी पहुँच में था। कमरा शांत था। दीपक मानो सुन रहे हों; आग की लौ टिमटिमाती नहीं थी, बल्कि पूरे विशाल कक्ष में एक विस्तृत, स्थिर, चमकती रोशनी फैला रही थी। ज़मोर्ना ने उसे छुआ। उसका रूप और चेहरे उसकी आँखों में, उसकी आवाज़ उसके कानों में, उसकी उपस्थिति उसके पूरे हृदय में समा गई। उसे परम सुख का अनुभव हुआ।

‘मेरी निष्ठावान,’ उस मधुर स्वर ने आगे कहा, ‘यदि तुम्हें कोई विनती करनी हो, तो यही समय है। मैं पूरी तरह से उदार हूँ—शहद की तरह मीठा, किसी महिला के दस्ताने की तरह कोमल। आओ, एस्तेर, तुम्हारी क्या विनती और क्या निवेदन है? यहाँ तक कि मेरे राज्य का आधा हिस्सा भी तुम्हें दे दिया जाएगा।’

'कुछ नहीं,' मिस लॉरी ने फिर बुदबुदाया। 'हे भगवान, कुछ नहीं। मुझे क्या चाहिए?'

‘कुछ नहीं?’ उसने दोहराया। ‘क्या, दस साल के विश्वास, प्रेम और भक्ति का कोई इनाम नहीं? छह महीने के निर्वासन में साथ देने का कोई इनाम नहीं? उस नन्हे हाथ को कोई प्रतिफल नहीं जिसने बीमारी में अक्सर मेरा तकिया सहलाया, उन मीठे होंठों को कोई मुआवज़ा नहीं जो कई बार ठंड और ओस से भीगे स्वास्थ्य में बुखार के माथे से लगे? उन गहरी माइलेशियन आँखों को कोई नहीं जो कभी मेरी बेहोशी की रातों में मेरी देखभाल करते-करते धुंधली हो गई थीं? क्या मुझे उस मिठास और धैर्य के बारे में बताने की ज़रूरत है जिसने उन कष्टों में मेरा हौसला बढ़ाया जिन्हें केवल तुम और मैं ही जानते थे, मीना, उस भक्ति के बारे में जिसने मुझे रोटी दी जब तुम भूख से मर रही थी, और यह बात एक साल से भी कम समय पहले की है? इन सब और इससे भी कहीं अधिक के लिए क्या कोई इनाम नहीं है?’

‘बस बहुत हो गया,’ मिस लॉरी ने कहा, ‘अब तो हो ही गया—’

‘लेकिन,’ ड्यूक ने आगे कहा, ‘क्या होगा अगर मैंने कुछ ऐसा सोचा हो जो आपको स्वीकार्य हो? अब ऊपर देखो और मेरी बात सुनो।’ उसने ऊपर देखा, लेकिन तुरंत ही नीचे कर लिया। उसके स्वामी की आँखें असहनीय थीं; वे नरक की आग से धधक रही थीं।

‘वह क्या कहने वाला है?’ मिस लॉरी ने मन ही मन बुदबुदाया। वह कांप रही थी।

‘सुश्री,’ उस व्यक्ति ने उसे थोड़ा और करीब खींचते हुए कहा, ‘मैं तुम्हें इनाम के तौर पर एक पति दूंगा – अभी घबराओ मत – और वह पति एक रईस होगा, और उस रईस का नाम लॉर्ड हार्टफोर्ड है! अब, महोदया, खड़ी हो जाइए और मुझे आपको देखने दीजिए।’ उसने अपनी बाहें खोलीं और मिस लॉरी एक ढीले धनुष की तरह सीधी खड़ी हो गईं।

‘आपकी कृपा की उम्मीद थी!’ उसने कहा। ‘यह प्रस्ताव मुझे पहले भी दिया जा चुका है। लॉर्ड हार्टफोर्ड ने स्वयं तीन दिन पहले ऐसा किया था।’

‘और आपने क्या कहा, महोदया? अब सच बोलिए। छल-कपट से कुछ नहीं होगा —’

‘मैंने क्या कहा? ज़मोर्ना, मुझे नहीं पता— इसका कोई खास महत्व नहीं है। आपने मुझे पुरस्कृत किया है, मेरे स्वामी ड्यूक, लेकिन मैं इसे सहन नहीं कर सकती। मैं बीमार महसूस कर रही हूँ।’ एक गहरी, छोटी सिसकी के साथ, उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह ड्यूक के पास ही गिर पड़ी, उसका सिर उनके पैर पर टिका हुआ था।

मिस लॉरी अपने जीवन में पहली बार बेहोश हुई थीं, लेकिन अपने स्वामी की घोषणा सुनकर उनके मन में उठने वाले तीव्र संघर्ष के आगे उनका स्वास्थ्य भी व्यर्थ साबित हुआ। उन्हें लगा कि स्वामी पूरी तरह ईमानदार हैं; उन्हें लगा कि स्वामी उनसे ऊब चुके हैं और वह इसे सहन नहीं कर सकीं।

मुझे लगता है कि जब वह गिरी तो ज़मोर्ना की पहली भावना भय की थी; और उसके बाद, मुझे पूरा यकीन है, उसे तीव्र संतुष्टि हुई। लोग कहते हैं कि जब मैं उसकी निंदा करता हूँ तो मैं गंभीर नहीं होता, वरना मैं यहाँ आधे पृष्ठ की निंदा लिख देता: उचित और हार्दिक। खैर, मैं बिना किसी टिप्पणी या टिप्पणी के केवल उसके व्यवहार का वर्णन करूँगा। उसने मेज से एक मोमबत्ती उठाई और उसे मिस लॉरी के ऊपर रखा। वह दिखावा नहीं कर सकती थी: उसका चेहरा संगमरमर की तरह सफेद और पत्थर की तरह स्थिर हो गया। सच तो यह है कि वह उससे इतना गहरा प्रेम करती थी कि उसके मन में किसी अजनबी की छवि के लिए कोई जगह नहीं थी। पाठक, यह मत सोचिए कि ज़मोर्ना इतना उदार होना चाहता था कि वह मिस लॉरी को लॉर्ड हार्टफोर्ड को सौंप दे। नहीं; उस पर विश्वास कीजिए; वह तो बस अपने सामान्य तरीके से उस लगाव की परीक्षा ले रहा था, जिसके हजारों प्रमाणों से उसे बहुत पहले ही यह विश्वास हो जाना चाहिए था कि वह अमर है।

जब वह अभी भी उसे देख रहा था, वह संभलने लगी। उसकी पलकें झपकीं; फिर धीरे-धीरे उसकी बड़ी काली आँखों से, जो उसकी आँखों से मुश्किल से मिली थीं, दुख का सैलाब उमड़ पड़ा। क्रोध की एक झलक भी नहीं, निंदा की एक फुसफुसाहट भी नहीं; उसके होंठ और आँखें एक साथ केवल सरल शब्दों के अलावा कोई और भाषा नहीं बोल रही थीं।

‘मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा सकती।’ वह बड़ी मुश्किल से और कमजोरी से उठी। ड्यूक ने सहारा देने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उसने उसके होठों पर शराब का वह गिलास लगाया जिसे उसने मुश्किल से ही चखा था। ‘मीना,’ उसने कहा, ‘क्या तुम मेरी बात सुनने के लिए तैयार हो?’

'जी महाराज।'

‘तो सुनो। मैं अपनी आधी – बल्कि पूरी जागीर लॉर्ड हार्टफोर्ड को देना ज़्यादा पसंद करूँगी, बजाय तुम्हें देने के। मैंने अभी जो कहा, वह सिर्फ़ तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए था।’ मिस लॉरी ने आँखें उठाईं, किसी भयानक सपने से जागने जैसी आह भरी,

लेकिन वह कुछ बोल नहीं सकीं।

"क्या मैं," ड्यूक ने आगे कहा, "क्या मैं अपने पहले प्यार को अपने अलावा किसी और के हाथों में सौंप दूँगा? मैं उसे उसकी कब्र में देखना ज़्यादा पसंद करूँगा। मैं तुम्हें वहाँ बिल्कुल शांत, बिल्कुल सफ़ेद और अभी मेरे पैरों पर पड़ी हुई हालत से भी कहीं ज़्यादा बेजान हालत में लिटा दूँगा, इससे पहले कि मैं किसी को धमकी, विनती या सौदेबाजी के लिए तुम्हारी एक झलक या तुम्हारे होंठों की एक मुस्कान भी दे दूँ। मैं जानता हूँ कि तुम अब मुझसे प्यार करती हो, क्योंकि तुम उस बेचैनी का दिखावा नहीं कर सकतीं; और इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैंने कल तुम्हारे प्रति अपने प्यार का क्या सबूत दिया। हार्टफोर्ड ने मेरी मौजूदगी में तुम्हारा नाम लिया, और मैंने उस अपमान का बदला एक गोली से लिया जिससे वह लगभग लाश की तरह बिस्तर पर जा गिरा।"

मिस लॉरी सिहर उठीं, लेकिन मानव स्वभाव के रहस्य इतने गहरे और अंधकारमय हैं कि वे हमेशा अच्छाई को बुराई से जोड़ देते हैं, और मुझे डर है कि उनके स्वामी के प्रेम के इस रक्तरंजित प्रमाण ने उनके हृदय में भय से अधिक आनंद भर दिया होगा। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा, क्योंकि ज़मोर्ना की बाहें फिर से उनके चारों ओर लिपटी हुई थीं; वह फिर से उन्हें शांत कर रहे थे, अपने स्नेहपूर्ण शब्दों और स्पर्शों से, जो संसार के सभी विचारों, अतीत के सभी शर्मिंदगी के दर्द, सभी ठंडे संदेहों, सभी थकान, लंबे समय से टली आशा से उत्पन्न सभी हृदयविक्षतता को दूर कर रहे थे। उन्होंने उनसे कहा था कि वह उनका पहला प्रेम थीं, और अब उन्हें यह विश्वास करने का प्रलोभन हो रहा था कि वह उनका एकमात्र प्रेम भी हैं। अपनी स्त्रीत्व से परे दृढ़ निश्चयी, सक्रिय, ऊर्जावान और अन्य सभी दृष्टियों से निपुण, वह यहाँ एक बच्चे की तरह कमजोर थीं। उन्होंने अपनी पहचान खो दी। उनका जीवन जीने का तरीका ही दूसरे के जीवन में समाहित हो गया था।

[ज़मोर्ना के नौकर द्वारा बातचीत बाधित हो जाती है, जो उसे कमरे से बुलाकर यह शर्मनाक खबर देता है कि 'श्रीमती इरविंग', जो अब हॉल में घूम रही हैं, उनकी पत्नी, डचेस से चौंकाने वाली हद तक मिलती-जुलती हैं।]

'लगभग दस मिनट पहले मैं गलियारे से लापरवाही से गुजर रहा था, तभी मुझे

सीढ़ियों पर एक हल्की सी आहट सुनाई दी - मानो कोई बहुत छोटा पैर हो। मैंने मुड़कर देखा तो एक महिला नीचे आ रही थी। हे भगवान, वह तो एक महिला थी!'

'अच्छा, महोदय, क्या आप उन्हें जानते थे?'

मुझे लगता है, अगर मेरी आँखें जादू से प्रभावित नहीं होतीं, तो मैंने उसे देखा होता। मैं एक खंभे की आड़ में छाया में खड़ा था और वह मेरे बहुत पास से गुज़री, लेकिन उसने मुझे नहीं देखा। मैंने उसे स्पष्ट रूप से देखा, और अगर यह सच नहीं था तो इस पल मुझे धिक्कार है—'

'कौन, महोदय?'

'डचेस!' सन्नाटा छा गया, जिसे ड्यूक की एक बेहद लंबी सीटी ने तोड़ा। उन्होंने अपने दोनों हाथ जेब में डाले और कमरे में इत्मीनान से चक्कर लगाया। 'पक्का?' उन्होंने कहा। 'मुझे पता है कि आप ऐसे मामलों में मुझसे झूठ बोलने की हिम्मत नहीं करते। जी हां, बिल्कुल सच है, मैं कसम खाकर कहता हूं। श्रीमती इरविंग, उत्तर में एक मंत्री की पत्नी। भगवान कसम, मेरे शाही व्यक्तित्व पर एक व्यंग्यात्मक प्रहार। पीली, गोरी गर्दन, छोटा मुंह और ठुड्डी। वाह! काश, वही छोटा मुंह और ठुड्डी सौ मील दूर होती। आखिर क्या बात है? अपने अनमोल पति के बारे में चिंता? उनके बिना और नहीं रह सकती थीं? यह देखने के लिए मजबूर होकर निकलीं कि वह क्या कर रहे हैं? अगर वह पांच मिनट पहले अचानक कमरे में आ जातीं—हे भगवान! मेरे पास उनके हाथ-पैर बांधने के अलावा कोई चारा नहीं होता। इससे उनकी जान ही निकल जाती। मैं क्या करूं? गुस्सा नहीं करना चाहिए, इस समय उन्हें इस तरह की बातें बर्दाश्त नहीं हो सकतीं।' धीरे से बात करो, उसे नरमी से डांटो, कसम खाकर कहो कि मेरा मिस्टर पैकेनहम की हाउसकीपर से कोई संबंध नहीं है — -' अपना एकालाप समाप्त करते हुए, ड्यूक फिर से अपने नौकर की ओर मुड़ा।

'उनकी कृपा किस कमरे में समा गई?'

'ड्राइंग रूम में, महाराज। वह अभी वहीं हैं।'

'ठीक है, इसके बारे में किसी को मत बताना, वरना अचानक मौत हो जाएगी। क्या आप सुन रहे हैं, महोदय?' उसने अपना हाथ अपने दिल पर रखा और ज़मोर्ना ऑपरेशन शुरू करने के लिए कमरे से बाहर चला गया।

ड्राइंग रूम का दरवाजा धीरे से खोलते ही उसने चूल्हे के पास एक महिला को देखा। उसकी पीठ उसकी ओर थी, लेकिन इसमें कोई शक नहीं था। उसका पूरा

शरीर, पहनावा, घुंघराले भूरे बाल: ये सब एक ही व्यक्ति की पहचान थे - उसकी अपनी अनोखी, अभिमानी, ईर्ष्यालु छोटी डचेस की। उसने दरवाजा उतनी ही खामोशी से बंद किया जितनी खामोशी से खोला था, और चुपके से आगे बढ़ गया।

डचेस को अपने कंधे पर किसी के हाथ का स्पर्श महसूस हुआ और उसने ऊपर देखा। आकर्षण बल ने अपना सामान्य प्रभाव दिखाया और वह जो कुछ भी देख रही थी, उससे चिपक गई।

‘एड्रियान! एड्रियान!’ बस यही शब्द उसके होंठों से निकल पाए।

‘मैरी! मैरी!’ ड्यूक ने जवाब दिया और उसे अपने आसपास मंडराने दिया। ‘वाह! यहाँ क्या कर रही हो? क्या तुम भाग रही हो, मेरी गैरमौजूदगी में कहीं छिपकर जा रही हो?’

‘एड्रियान, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया? तुमने कहा था कि तुम एक हफ्ते में वापस आ जाओगे, और तुम्हें गए हुए आठ दिन हो गए हैं। घर वापस आ जाओ — -’

ज़मोर्ना ने दिल खोलकर हंसते हुए कहा, 'तो, तुम सचमुच पति की तलाश में निकली थी, और रास्ते में पलट गई और पाकेनहम के शूटिंग बॉक्स में शरण लेने के लिए मजबूर हो गई!'

‘एड्रियान, तुम यहाँ क्यों हो?’ डचेस ने पूछा।

जो इतनी गंभीर थी कि उसकी हंसी में शामिल नहीं हो सकी। 'पैकनहम कौन है और वह कौन है जो खुद को उसकी नौकरानी कहती है? आप किसी को हॉक्सक्लिफ के इतने पास बिना मुझे बताए रहने क्यों देते हैं?'

‘मैं आपको बताना भूल गया था,’ उनके सम्माननीय महोदय ने कहा। ‘जब आपकी वो चमकीली भूरी आँखें मेरी ओर देख रही होती हैं, तो मुझे और भी बहुत कुछ सोचना पड़ता है। जहाँ तक पैकेनहम की बात है, सच कहूँ तो – वो आपके ही रिश्तेदार हैं, क्योंकि वो दक्षिण में रहने वाले मेरे चाचा, पुराने एडमिरल के नाजायज बेटे हैं; उनकी नौकरानी उनकी बहन है। बस, हो गया। अब मुझे चूम लो।’ डचेस ने उन्हें चूमा, लेकिन एक गहरी आह के साथ। ईर्ष्या और चिंता का बादल उनके माथे पर छाया रहा।

‘एड्रियान, मेरा दिल अब भी दुखता है। तुम इतने दिनों से एंग्रिया में क्यों रुके हुए हो? ओह, तुम्हें मेरी कोई परवाह नहीं! तुमने कभी सोचा भी नहीं कि मैं तुम्हारे लौटने का कितनी बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ। एड्रियान—’ वह रुक गई और रोने लगी।

‘मैरी, खुद को संभालो,’ उनके सम्मान ने कहा। ‘मैं हमेशा तुम्हारे चरणों में नहीं रह

सकता। जब हमारी शादी हुई थी तब तुम इतनी कमजोर नहीं थीं। तब तुम मुझे अक्सर बिना किसी ईर्ष्यापूर्ण विरोध के तुम्हें छोड़कर जाने देती थीं।'

'उस समय मैं तुम्हें इतना अच्छी तरह नहीं जानती थी,' मैरी ने कहा, 'और अगर मेरा मन कमजोर हो गया है, तो उसकी सारी शक्ति तुम्हारे लिए आँसुओं और भय में ही नष्ट हो गई है। मैं अब उतनी सुंदर और उतनी हंसमुख नहीं हूँ जितनी पहले थी। लेकिन तुम्हें मेरी इस दुर्बलता को क्षमा कर देना चाहिए क्योंकि यह तुम्हारी ही कारण है।'

मैरी, जब तक मैं तुम्हें इशारा न दूं, तब तक अपनी सुंदरता खोने का दोष कभी मत लगाना। यकीन मानो, इस मामले में और हर मायने में, तुम बिल्कुल वैसी ही हो जैसी मैं तुम्हें देखना चाहता हूं। तुम संगमरमर की तरह कभी फीकी नहीं पड़ सकतीं—कम से कम मेरी नज़रों में तो नहीं। तुम्हारी भक्ति और कोमलता की बात करें, हालांकि मैं कभी-कभी इसकी अति पर तुम्हें डांटता हूं क्योंकि यह तुम्हें लगभग एक परछाई की तरह क्षीण और फीका कर देती है, फिर भी यही वह सबसे मज़बूत कड़ी है जो मुझे तुमसे बांधे रखती है। अब खुश हो जाओ। आज रात तुम हॉक्सक्लिफ जाओगी; यह सिर्फ पांच मील दूर है। मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता क्योंकि मुझे पैकेनहम के साथ कुछ ज़रूरी काम निपटाना है जिसे टाला नहीं जा सकता। कल मैं भोर से पहले महल में पहुंच जाऊंगा। गाड़ी तैयार होगी, मैं तुम्हें उसमें बिठाऊंगा, मैं तुम्हारे बगल में बैठूंगा। हम सीधे वर्दोपोलिस के लिए निकलेंगे, और वहां अगले तीन महीनों तक मैं तुम्हें सुबह, दोपहर और रात अपनी संगति से थका दूंगा। अब, मैं और क्या वादा कर सकता हूं? अगर तुम ईर्ष्या करना चाहो, तो मैं कुछ नहीं कर सकता। मुझे या तो सोडा वाटर पीकर निराशा में डूब जाना होगा, या फिर खुद को पत्थर का बनाकर अपोलो की मूर्ति में तराशकर आपके ड्रेसिंग रूम में रखवाना होगा। हे भगवान! मेरे सद्गुणों का कोई सम्मान नहीं मिलता — झूठ और हंसी के बल पर वह व्यक्ति अंततः सब कुछ अपने मन में बिठाने में सफल हो गया। डचेस उस रात हॉक्सक्लिफ गई। अपना वादा निभाते हुए, अगली सुबह वह उसके साथ वर्दोपोलिस गया —

लॉर्ड हार्टफोर्ड आज भी जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहे हैं। उनका जुनून न तो दर्द से कमजोर हुआ है, न ही अस्वीकृति से बढ़ा है, और न ही अनुपस्थिति से ठंडा पड़ा है। उनके दृढ़ निश्चय पर एक ऐसी छाप अंकित है जिसे कोई मिटा नहीं सकता।

लंबे समय के लिए अलविदा पाठक। मैंने आपको प्रसन्न करने का भरसक प्रयास

किया है, और यद्यपि मैं जानता हूँ कि कमजोरी, नीरसता और बार-बार एक ही काम दोहराने के कारण मेरा काम सफलता के बजाय असफलता में परिणत हुआ है, फिर भी आप मुझे क्षमा करने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है।

जनवरी, 1838

लौरा का चेहरा भाग II

जनवरी की एक सुहावनी, शांत शाम को सिडेनहैम पहाड़ियों की नीली चोटी पर चाँद निकला और रिवाउल्क्स गाँव से घुमावदार सड़क पर नीचे देख रहा था। धरती पाले से जमी हुई थी – कठोर, शांत और चमकती हुई। हॉक्सक्लिफ का जंगल किसी कब्र की तरह शांत था, और उसका काला, पत्तों से रहित जंगल दूर तक फैला हुआ था, मानो आसमान को देश से एक कठोर, दाँतेदार रेखा से अलग कर रहा हो। वह आसमान पूरी तरह से चाँदी जैसा नीला था, जिसमें कहीं-कहीं हीरे जैसे तारे चमक रहे थे। केवल चाँद की रोशनी ही उसे नरम कर रही थी, विशाल, पूर्ण और सुनहरी। जिस सड़क की मैंने बात की है, उस पर चाँद की किरणें एकांत पथ पर पड़ रही थीं। हॉक्सक्लिफ से प्रेतवाधित चीड़ और विशाल पुराने बीच के पेड़ पहरेदारों की तरह रास्ते की रक्षा कर रहे थे। आगे जाकर वह ऊबड़-खाबड़ रास्ता जंगल की घनी छाया में चला गया, लेकिन यहाँ वह खुला था और पाले से फीकी पड़ी हुई वह घिसी-पिटी पगडंडी काई और जंगली लताओं से ढकी एक पुरानी दीवार के नीचे से गुजर रही थी।

इस दृश्य पर शीत ऋतु का सूर्य बादलों से रहित शांत वातावरण में डूब चुका था, आग की तरह लाल, और अपनी अंतिम किरणों से हॉक्सक्लिफ के किनारे स्थित एक हवेली की खिड़कियों को रोशन कर रहा था। उस हवेली तक जाने वाली सड़क रिवाउल्क्स से सबसे छोटा रास्ता थी। और यहाँ एक पल के लिए रुकते हैं, आशा है

कि फर में लिपटे हुए, क्योंकि इससे भीषण ठंड ने ओलंपिया को कभी नहीं जमाया था।

इससे पहले कि आप कुछ समझ पाएं, एक आकृति शाम की शांति में मग्न होकर इत्मीनान से पुल पर आती हुई दिखाई देती है। निस्संदेह वह आकृति उसी हवेली की निवासी होगी, क्योंकि वह एक सुंदर और मनमोहक इमारत है। धीरे-धीरे पास आने पर आप एक प्रतिष्ठित महिला को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, सीधी और पतली, उसकी चाल में कुछ मोहक और राजकुमारी जैसी अदा है, भले ही यह सहज ही क्यों न हो। उसके टखने इतने सुडौल हैं, और उसके पैर - अगर वह कोशिश भी करे, तो शायद ही इससे अलग तरह से चल पाए - हल्के, दृढ़ता से, सीधे। फर का मफ, रेशमी पेलिस, और गहरे बीवर की सुंदर और विशाल टोपी उसके हल्के युवा शरीर पर खूब जंचती है। उसने घूंघट ओढ़ा हुआ है; आपको उसके चेहरे के हाव-भाव का अंदाज़ा लगाना होगा - लेकिन वह आगे बढ़ जाती है और सड़क का मोड़ उसे छिपा लेता है।

सन्नाटे को चीरते हुए, सन्नाटे में तेज़ी से आता हुआ एक घुड़सवार दिखाई देता है। उसके घोड़े के खुरों के नीचे से, पथरीली सड़क पर आग की लपटें निकलती हैं। वह बेताब होकर घोड़े की सवारी करता है। बीच-बीच में वह रकाब में उछलता है और उत्सुकता से रास्ते पर देखता है, मानो किसी ऐसी चीज़ को ढूंढ रहा हो जो उससे छूट गई हो। जैसे ही वह उसे देखता है, वह बेरहमी से अपने घोड़े के पेट में एड़ी मारता है। घोड़ा और सवार एक बवंडर में गायब हो जाते हैं।

लोहे के फाटकों से गुज़रती हुई महिला हॉक्सक्लिफ की जागीर में दाखिल हुई। वह रुककर चाँद को निहारने लगी, जो अब पूरी तरह से उग चुका था और एक शानदार एल्म के पेड़ की शाखाओं के बीच से उसे देख रहा था। उसके और घर के बीच एक हरा-भरा लॉन था, जहाँ उसकी रोशनी सुनहरी चमक रही थी। उसके पीछे से घोड़ों के खुरों की गड़गड़ाहट सुनाई दी, और पाँच मिनट पहले हमने जिस जंगली घुड़सवार को देखा था, वह अपनी काठी पर झुककर, इधर-उधर फैली शाखाओं से बचते हुए, तेज़ी से वहाँ आ पहुँचा। घोड़े को ज़ोर से लगाम कसते हुए, वह उसे लगभग उसके पिछले पैरों पर लादकर उस जगह के पास ले आया जहाँ वह महिला खड़ी थी।

'मिस लॉरी! शुभ संध्या!' उन्होंने कहा। महिला ने अपना घूंघट हटाया, एक नज़र में उन्हें देखा और जवाब दिया:

'लॉर्ड हार्टफोर्ड! आपको देखकर मुझे खुशी हुई, मेरे स्वामी। आप बहुत तेज दौड़े

हैं। आपका घोड़ा झाग निकाल रहा है। कोई बुरी खबर है?’

'नहीं!'

‘तो आप एड्रियानोपोलिस जा रहे हैं। मुझे लगता है कि आप रात यहीं बिताएंगे?’

अगर आप मुझसे पूछेंगे तो मैं कर दूंगा।

'अगर मैं तुमसे पूछूं! हां; यह दोनों राजधानियों के बीच का सही पड़ाव है। रात ठंडी है, चलो अंदर चलते हैं।'

अब वे दरवाजे पर थे। हार्टफोर्ड ने खुद को घोड़े की काठी से नीचे फेंक दिया। एक नौकर घोड़े को अस्तबल में ले जाने के लिए आया, और वह मिस लॉरी के पीछे-पीछे अंदर चला गया।

वह उसे अपने ही ड्राइंग रूम में ले गई, जो सर्दियों की शाम की ठंडक के बाद बेहद सुखद दृश्य था; कमरा बड़ा नहीं था, बस सादा साज-सज्जा थी, हरे रेशम के पर्दे और सोफे थे, एक बड़ा सा दर्पण था, और बीच में एक यूनानी शैली का दीपक धीरे-धीरे जल रहा था और आग की हल्की रोशनी में घुलमिल रहा था, जिसकी तेज चमक ठंड की तीव्रता की गवाही दे रही थी।

हार्टफोर्ड ने चारों ओर नज़र घुमाई। वह पहले भी मिस लॉरी के ड्राइंग रूम में आ चुका था, लेकिन कभी अकेला मेहमान नहीं। मुसीबतों के शुरू होने से पहले, वह कई बार एक ऐसे प्रतिष्ठित तिकड़ी का हिस्सा रहा था, जिनकी आदत थी कि वे कभी-कभार रिवाउल्क्स लॉज में मिलते थे: वार्नर, एनारा और वह खुद अक्सर मिस लॉरी के सोफे के चारों ओर चूल्हे के पास खड़े होते थे, और उसे याद था कि कैसे उनका चेहरा उनकी ओर देखता था, जिसमें गंभीर, कोमल बुद्धिमत्ता झलकती थी, जो किसी भी स्त्री की चंचलता को नहीं, बल्कि उन विषयों में गहरी रुचि को दर्शाती थी जिन पर वे बातचीत करते थे। उसे वह पहली चिंगारी याद थी जो अब उसके जीवन को भस्म कर रही थी, जब उसने उसकी सुंदरता को निहारा और उस गंभीर उत्साह को देखा जिसके साथ वह सर्वोच्च महत्व के विषयों में अपना दिल झोंक देती थी। उसने अक्सर इन महान पुरुषों के लिए वह किया था जो कोई और पुरुष उनके लिए नहीं कर सकता था। उसने उनके रहस्यों को सुरक्षित रखा था और जहाँ तक संभव हो उनकी इच्छाओं को पूरा किया था, क्योंकि सलाह देना कभी उसका काम नहीं था। विनम्रता और निष्ठा के साथ, वह हमेशा अपने निर्धारित कार्य की प्रतीक्षा करती थी, और उस कार्य को पूरा करने के लिए मिस लॉरी से अधिक दृढ़ संकल्प शायद ही कोई वार्नर भी लगा

पाता। यदि मीना का जीवन अलग होता, तो वह ऐसे मामलों में कभी हस्तक्षेप न करती। अब भी वह हस्तक्षेप नहीं करती थी: वह केवल सेवा करती थी। षड्यंत्र जैसी कोई बात कभी भी राजनीति में उसके मार्ग को धूमिल नहीं कर पाई थी। वह अपने निदेशकों को अपने कार्यों के बारे में बताती और अधिक कार्य माँगती, इस बात के लिए हमेशा आभारी रहती कि वे उस पर इतना भरोसा करते हैं कि उसे नियुक्त करते हैं, और उनकी वफादारी के उत्साह के लिए भी आभारी रहती; संक्षेप में, वह हृदय और मन से उनके प्रति समर्पित थी क्योंकि वह मानती थी कि वे भी सर्वमान्य स्वामी के प्रति उतनी ही निष्ठावान हैं।

राजनेताओं और उनकी खूबसूरत लेफ्टिनेंट के बीच इस तरह के अत्यंत गोपनीय संवाद का परिणाम यह हुआ कि मिस्टर वार्नर के मन में उनके लिए तीव्र और वीर भाव से भरी प्रशंसा थी; जनरल एनारा के मन में उनके लिए गहरा स्नेह और लगाव था; और लॉर्ड हार्टफोर्ड के मन में तीव्र जुनून की आग भड़क उठी थी। लॉर्ड हार्टफोर्ड हमेशा से ही प्रबल और अनियंत्रित भावनाओं वाले व्यक्ति रहे थे, और अपनी युवावस्था में (यदि खबरों पर विश्वास किया जाए तो) कुछ हद तक अनैतिक आदतों के भी थे, लेकिन उनके मन में सम्मान के अपने विचार दृढ़ता से बसे हुए थे, और यद्यपि यदि उनके समकक्षों में से किसी की पत्नी या उनके किसी किरायेदार की बेटी का मामला होता तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होती, फिर भी वे असमंजस में पड़ गए थे।

मिस लॉरी ज़मोर्ना के ड्यूक की थीं। वह निर्विवाद रूप से उनकी संपत्ति थीं, ठीक वैसे ही जैसे रिवाउल्क्स का लॉज या हॉक्सक्लिफ का आलीशान जंगल, और वह खुद को भी इसी नज़रिए से देखती थीं। उनके साथ उनका सारा लेन-देन ड्यूक से जुड़े मामलों तक ही सीमित था, और उन्होंने हमेशा उनके हितों के प्रति एक अटूट, गंभीर और निष्ठापूर्ण समर्पण दिखाया था, जिससे ऐसा लगता था मानो उन्हें दुनिया की किसी और चीज़ की परवाह ही न हो। उनके मन में बस एक ही विचार था - ज़मोर्ना! ज़मोर्ना! यह उनके साथ पला-बढ़ा था, उनके स्वभाव का हिस्सा बन गया था। अनुपस्थिति, उदासीनता, लंबे समय तक पूर्ण उपेक्षा उनके लिए कुछ भी मायने नहीं रखती थी। वह उनसे उतना ही अलगाव महसूस करती थीं जितना खुद से। जब वह उन्हें भूल जाते थे, तब भी उन्हें कोई दुःख नहीं होता था, ठीक वैसे ही जैसे कोई भक्त तब दुखी नहीं होता जब उसका देवता कुछ समय के लिए अपना चेहरा फेर लेता है और उसे सांसारिक कष्टों के लिए अकेला छोड़ देता है। ऐसा लगता था मानो वह उनके

अतीत की यादों के सहारे जी सकती थीं, बिना और कुछ मांगे।

हार्टफोर्ड यह सब जानता था, और वह यह भी जानता था कि वह उसे उतना ही महत्व देती थी जितना वह उसे अपने राजा के प्रति वफादार मानती थी। उसके प्रति उसकी मित्रता इस बात पर टिकी थी: 'हम एक ही नेक उद्देश्य के लिए सहकर्मी और सह-दुखदायी रहे हैं।' ये उसके अपने शब्द थे जो उसने एक रात अपने तीन प्रतिष्ठित सहयोगियों से विदा लेते समय कहे थे, ठीक उस समय जब एंग्रिया पर तूफान आने वाला था। हार्टफोर्ड ने बोलते समय उसके चेहरे के भावों पर ध्यान दिया था, और सोचा कि एक युवा और सुंदर स्त्री इस तरह उन लोगों से सहानुभूति की अपील कर रही है जिनका स्वभाव उससे बहुत अलग है।

लेकिन चलिए इन विषयों पर और अधिक चर्चा न करें। इतना कहना ही पर्याप्त है कि लॉर्ड हार्टफोर्ड ने तर्क के विरुद्ध और निराशा के साथ अंततः अपने प्रचंड जुनून के मार्गदर्शन में स्वयं को पूरी तरह से सौंप दिया था; और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक हताश प्रयास करने के दृढ़ संकल्प के साथ वह अब रिवाउल्क्स की महिला के समक्ष खड़ा था।

लॉर्ड हार्टफोर्ड के घर में प्रवेश किए दो घंटे से अधिक समय बीत चुका था। चाय का समय समाप्त हो चुका था और शाम की पूर्ण शांति में वे और मिस लॉरी अकेले रह गए थे। वे चूल्हे के एक तरफ बैठे थे और वे दूसरी तरफ – उनके बीच केवल उनकी काम करने की मेज थी, और उस पर उनका छोटा हाथ उनकी पहुँच में था। वह हाथ लेस के एक कपड़े में लिपटा हुआ था, जिसकी कढ़ाई उन्होंने कुछ पल के लिए छोड़ी थी। लॉर्ड हार्टफोर्ड की नज़रें उन सफेद कोमल उंगलियों पर टिकी हुई थीं। उनका हृदय उस क्षण आनंद से भर उठा था। इतना करीब होना, इतना स्नेहपूर्ण और दयालु स्वागत मिलना – वे खुद को भूल गए। उनका हाथ अनजाने में ही उनके हाथ पर पड़ गया। मिस लॉरी ने उनकी ओर देखा... एक पल के लिए स्तब्ध, लगभग अभिभूत, फिर भी उन्होंने शीघ्र ही अपने भावों पर काबू पाया, अपना हाथ हटाया, अपना काम फिर से शुरू किया और सिर झुकाकर, व्यस्त होने का दिखावा करते हुए शर्मिंदगी को छिपाने का प्रयास करती प्रतीत हुईं।

इसके बाद जो सन्नाटा छा गया, वह ठीक नहीं था, इसलिए उसने बहुत ही शांत और संयमित स्वर में चुप्पी तोड़ी।

'लॉर्ड हार्टफोर्ड, जिस अंगूठी की आप अभी प्रशंसा कर रहे थे, वह कभी डचेस

ऑफ वेलिंगटन की थी।'

‘और क्या यह तुम्हें उसके बेटे ने दिया था?’ जनरल ने कड़वाहट से पूछा।

'नहीं, मेरे स्वामी, स्वयं डचेस ने अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले इसे मुझे दिया था। इस पत्थर पर उनका मायके का नाम "कैथरीन पैकेनहम" खुदा हुआ है।'

‘लेकिन,’ हार्टफोर्ड ने आगे कहा, ‘जब मैंने आपका हाथ छुआ तो मैं अंगूठी की प्रशंसा नहीं कर रहा था। नहीं; मेरे मन में यह विचार आया कि अगर कभी मेरी शादी हुई तो मैं चाहूंगा कि मेरी पत्नी का हाथ भी बिल्कुल वैसा ही सफेद, बर्फीला और पतला हो जैसा आपका है।’

'मैं एक साधारण सैनिक की बेटी हूँ, महाराज, और ऐसा कहा जाता है कि उच्च वंश की महिलाओं के हाथ किसान महिलाओं की तुलना में अधिक सुंदर होते हैं।'

हार्टफोर्ड ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बेचैनी से अपनी सीट से उठा और शेल्फ के सहारे खड़ा हो गया।

'मिस लॉरी, क्या मैं आपको बताऊं कि मेरे जीवन का सबसे खुशी का पल कौन सा था?'

'मैं अनुमान लगाऊंगा, महाराज। शायद उस समय जब वह विधेयक पारित हुआ जिसने एंग्रिया को एक स्वतंत्र राज्य बना दिया।'

'नहीं।' हार्टफोर्ड ने भावपूर्ण मुस्कान के साथ उत्तर दिया।

'शायद तब, जब लॉर्ड नॉर्थेंगरलैंड ने मुहरों से इस्तीफा दे दिया - क्योंकि मैं जानता हूं कि आपके और अर्ल के बीच कभी अच्छे संबंध नहीं थे।'

नहीं। मुझे उनके लॉर्डशिप से नफरत थी, लेकिन ऐसे क्षण भी होते हैं जो किसी हारे हुए शत्रु की विजय देखने से भी कहीं अधिक सुखद होते हैं।

मुझे उम्मीद है कि यह पुनर्स्थापना काल में हुआ होगा।

‘फिर से गलत! महोदया, आप भले ही युवा हैं, लेकिन आपका दिमाग राजनीति के बंधन में इतना ढल चुका है कि आप सुख-दुख को उससे अलग नहीं देख सकतीं। आप मुझे वार्नर की याद दिलाती हैं।’

'मुझे लगता है कि मैं उन्हीं की तरह हूं,' मिस लॉरी ने जवाब दिया। 'वे अक्सर खुद भी मुझसे ऐसा कहते हैं, लेकिन मैं पुरुषों और राजनेताओं के बीच इतना समय बिताती हूं कि एक महिला होने के विचार लगभग खो बैठे हैं।'

‘क्या तुम ऐसा करते हो?’ हार्टफोर्ड ने अपनी विशिष्ट काली, भयावह मुस्कान के

साथ बुदबुदाया।

मिस लॉरी ने इस अस्पष्ट टिप्पणी को नजरअंदाज कर दिया और बातचीत जारी रखी।

‘मैं आपकी पहेली का उत्तर नहीं दे सकता, महाराज, इसलिए मुझे लगता है कि आपको ही इसे समझाना होगा।’

‘तो, मिस लॉरी, आश्चर्यचकित होने के लिए तैयार हो जाइए। आप इतनी देशभक्त और इतनी वफादार हैं कि जब मैं यह कहूँ कि मेरे जीवन का सबसे खुशी का पल एंग्रिया की विपत्तियों के सबसे भयावह संकट के सबसे काले दिन में आया, तो आप शायद ही मुझ पर विश्वास करेंगी।’

‘कैसे, लॉर्ड हार्टफोर्ड?’

‘इसके अलावा, मिस लॉरी, यह आपके जीवन का कोई उज्ज्वल दौर नहीं था। यह आपके लिए सबसे तीव्र पीड़ा का क्षण था; मेरे लिए परमानंद का क्षण था।’

मिस लॉरी ने घबराए हुए अंदाज़ में अपना सिर एक तरफ घुमाया और कांपने लगीं। ऐसा लग रहा था जैसे वह समझ गई हों कि वह किस ओर इशारा कर रहा है।

'क्या आपको 1 जुलाई, 1936 याद है?' हार्टफोर्ड ने आगे कहा।

उसने सिर झुकाया।

'तुम्हें याद है कि उस दिन की शाम एक भयंकर तूफान के साथ समाप्त हुई थी?'

'जी महाराज।'

आपको याद होगा कि आप इसी कमरे में, इसी अंगीठी के पास बैठी थीं, रात को सोने से डर रही थीं, कहीं सुबह किसी दूसरी दुनिया में न जाग जाएं। तब देश इतना शांत नहीं था जितना अब है। आप उस भयानक धमाके को नहीं भूली होंगी जो आधी रात को गूंजा था और जिसने आपको बताया था कि आपकी जान और आजादी खतरे में है, कि दुश्मन अचानक रिवाउल्क्स पर आ गया है, और हम जो वहां बची हुई उम्मीद की रक्षा के लिए छिपे थे, रात के हमले में अचानक आकर हार गए। फिर महोदया, शायद आपको वह चेतावनी भी याद होगी जो मैंने आपको सुबह एक बजे दी थी, कि तुरंत भाग जाओ, वरना जॉर्डन के हाथों कुख्यात कैद का विकल्प चुनना पड़ेगा। मैंने आपको यहां, बिना आग के एक काली चूल्हे के पास बैठे हुए पाया, और अर्नेस्ट फिट्ज़-आर्थर आपकी गोद में सो रहा था। आपने मुझे बताया कि आपने गोलीबारी सुनी थी, और आप मुझसे किसी संदेश का इंतजार कर रही थीं, बिना

आदेश के हिलने-डुलने का इरादा नहीं था, कहीं आपकी कोई जल्दबाजी मुझे शर्मिंदा न कर दे। मैंने आपके लिए पहले से ही एक गाड़ी तैयार रखी थी। मैंने आपको अंदर बिठाया और अपने पराजित अनुयायियों के अवशेषों के साथ आपको ज़मोर्ना तक पहुँचाया। उसके बाद क्या हुआ, मिस लॉरी?

मिस लॉरी ने अपने हाथों से अपनी आँखें ढक लीं। ऐसा लग रहा था मानो वह जवाब नहीं दे सकतीं।

'खैर,' हार्टफोर्ड ने आगे कहा। 'अंधेरे और आंधी के बीच, जब ज़मोर्ना का पूरा शहर मानो राक्षसों से भरे और पागलपन से ग्रस्त नरक में बदल गया था, तब मेरे साथियों पर आप पर हमला हुआ और आपकी गाड़ी रुक गई। मुझे अच्छी तरह याद है कि आपने क्या किया – आपने फिट्ज़-आर्थर को बचाने के लिए कितनी ज़ोरदार कोशिश की, और जब उसे आपसे छीन लिया गया तो आपने मेरी तरफ कैसे देखा। जहाँ तक आपकी अपनी जान बचाने की बात है – उसे दोहराने की ज़रूरत नहीं – सिर्फ़ मेरे हाथ ने ही आपको बचाया। क्या आप यह बात मानती हैं, मिस लॉरी?'

'हार्टफोर्ड, मैं जानता हूँ, लेकिन आप उस भयानक दृश्य पर इतना ध्यान क्यों दे रहे हैं?'

क्योंकि अब मैं अपने जीवन के सबसे सुखद क्षण के करीब पहुँच रहा हूँ। मैं तुम्हें अपने एक भरोसेमंद किरायेदार के घर ले गया, और जैसे ही सुबह हुई, तुम और मैं एक फार्महाउस के छोटे से कमरे में अकेले बैठे थे, और तुम मेरी बाहों में थी, तुम्हारा सिर मेरे कंधे पर था, और तुम अपना सारा दुख उस छाती पर बहा रही थी जो तुम्हारे लिए तड़प रही थी।

मिस लॉरी बेचैनी से उठीं। वह हार्टफोर्ड की ओर बढ़ीं।

'मेरे स्वामी, आपने मुझ पर बहुत कृपा की है और मैं उस कृपा के लिए आपका बहुत आभारी हूँ। शायद कभी मैं इसका प्रतिफल दे सकूँ। भाग्य का खेल किसी को पता नहीं होता। कमजोरों ने बलवानों की सहायता की है, और मैं आपकी सेवा करने के लिए जरा से भी अवसर की प्रतीक्षा करूँगा, लेकिन इस तरह की बातें न करें। मुझे नहीं पता कि आपके शब्दों का क्या अर्थ निकलता है।'

लॉर्ड हार्टफोर्ड ने जवाब देने से पहले एक पल का विराम लिया। झुकी हुई भौंहों और मुड़े हुए हाथों से उसकी ओर देखते हुए उन्होंने कहा:

'मिस लॉरी, आप मेरे बारे में क्या सोचती हैं?'

‘आप दुनिया के सबसे नेक दिलों में से एक हैं!’ उसने निडर होकर जवाब दिया। वह हार्टफोर्ड के ठीक सामने खड़ी थी, ऊपर उसकी ओर देख रही थी, उसके बाल माथे से पीछे की ओर गिरे हुए थे, उसकी सुंदर लटें कनपटी और पतली गर्दन को ढक रही थीं; उसके छोटे, प्यारे चेहरे पर गंभीरता झलक रही थी, उसकी बड़ी, गहरी, भावुक आँखें, जिनमें विनती भरी दयालुता और चिंतित भाव थे, मानो वह एक महान दिमाग की पापी सोच से डर भी रही हो और उस पर तरस भी खा रही हो। हार्टफोर्ड इसे सहन नहीं कर सका। वह स्त्री के क्रोध या भय को तो सह सकता था, लेकिन करुणा से भरी कृतज्ञता की उस भाव ने उसे लगभग बेबस कर दिया। उसने एक पल के लिए अपना सिर दूसरी ओर घुमाया, लेकिन फिर जुनून हावी हो गया। जब उसने दोबारा देखा तो उसकी सुंदरता ने उसे झकझोर दिया – निराशा जैसी भावना ने उस पागलपन भरी अनुभूति को और भी तीव्र कर दिया।

‘तुम मुझसे प्रेम करोगी!’ उसने हताशा से कहा; ‘क्या मैं तुम्हें प्यार नहीं करता? क्या मैं तुम्हारे लिए अपनी जान नहीं दे सकता? और बदले में मुझे केवल मित्रता की ठंडी भावना ही मिलेगी? मैं प्लेटोवादी नहीं हूँ, मिस लॉरी – मैं तुम्हारा मित्र नहीं हूँ। सुनो महोदया, मैं तुम्हारा घोषित प्रेमी हूँ! नहीं, तुम मुझे नहीं छोड़ोगी; भगवान की कसम – मैं तुमसे अधिक शक्तिशाली हूँ।’

वह उसकी उग्रता देखकर भयभीत होकर एक-दो कदम पीछे हट गई। उसने सोचा कि वह पीछे हटना चाहती है, और पीछे न हटने का निश्चय करके उसने उसे तुरंत अपनी दोनों बाहों में भर लिया और प्यार से नहीं बल्कि उग्रता से चूमा। मिस लॉरी ने कोई विरोध नहीं किया।

‘हार्टफोर्ड,’ उसने अपनी आवाज को स्थिर करते हुए कहा, हालांकि कोशिश के बावजूद उसकी आवाज लड़खड़ा रही थी, ‘यही हमारा आखिरी दृश्य होना चाहिए। अगर तुम खुद को नहीं संभालोगे तो मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊंगी।’

हार्टफोर्ड ने देखा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया है और वह बुरी तरह कांप रही है। उसकी बाहों ने उसे छोड़ दिया। उसने उसे जाने दिया।

वह सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई और जल्दी से अपने माथे को पोंछा जो नम और संगमरमर की तरह पीला पड़ गया था।

‘अब, मिस लॉरी,’ लॉर्ड ने कहा, ‘दुनिया में कोई भी आदमी आपसे उतना प्यार नहीं करता जितना मैं करता हूँ। क्या आप मेरी उपाधि और मेरा मुकुट स्वीकार करेंगी?

मैं इन्हें आपके चरणों में अर्पित करता हूँ।'

'मेरे स्वामी, क्या आप जानते हैं कि मैं किसकी हूँ?' उसने खोखली और बेहद दबी हुई आवाज़ में उत्तर दिया। 'क्या आप जानते हैं कि ये प्रस्ताव मेरे कानों को कितने अचंभित करते हैं – कितने अधार्मिक और ईशनिंदापूर्ण लगते हैं? क्या आप ज़रा भी समझ सकते हैं कि मेरे लिए आपसे प्रेम करना कितना असंभव है? अभी-अभी मैंने जो दृश्य देखा है, उसने मेरे सभी अभ्यस्त विचारों को झकझोर दिया है। मैंने आपको सच्चा और वफ़ादार समझा था: मुझे पता चला कि आप गद्दार हैं।'

'क्या तुम मुझसे घृणा करते हो?' हार्टफोर्ड ने पूछा।

नहीं, महाराज, मैं ऐसा नहीं करता।

वह रुकी और नीचे देखने लगी। उसके पीले चेहरे पर अचानक रंग चढ़ आया। वह सिसक उठी, आँसू नहीं, बल्कि एक गर्मजोशी भरे और पश्चिमी हृदय से उपजी प्रबल प्रेरणा के आवेश में। उसने फिर ऊपर देखा। उसकी आँखों का रूप बदल गया था, उनमें एक जंगली, उज्ज्वल प्रेरणा की चमक थी, जो सचमुच, दिव्य रूप से आयरिश थी।

'हार्टफोर्ड,' उसने कहा, 'अगर मैं तुमसे बहुत पहले मिली होती, एलीबैंक छोड़ने और सेंट साइप्रियन को भूलने और अपने पिता का अपमान करने से पहले, तो मैं तुमसे प्यार करती। हे मेरे स्वामी, तुम नहीं जानते कि कितना सच्चा प्यार! मैं तुमसे शादी करती और तुम्हारे घर को खुशियों से भर देना अपने जीवन का गौरव बनाती, लेकिन अब मैं ऐसा नहीं कर सकती – कभी नहीं। मैंने अपने वर्तमान स्वामी को तब देखा था जब वे मुश्किल से जवान हुए थे। क्या तुम्हें लगता है, हार्टफोर्ड, मैं तुम्हें बताऊंगी कि मेरे मन में उनके लिए क्या भावनाएँ थीं? कोई भी ज़ुबान उन्हें व्यक्त नहीं कर सकती; वे इतनी तीव्र, इतनी चमकीली थीं कि उन्होंने सब कुछ मिटा दिया। मैंने दुनिया की राय के महत्व को समझने, सही और गलत के बीच अंतर करने की शक्ति खो दी। मैंने अपने जीवन में कभी ज़मोर्ना का विरोध नहीं किया, कभी उनके आदेशों का पालन करने में देरी नहीं की। मैं कर ही नहीं सकती थी। वे मेरे लिए एक इंसान से कहीं बढ़कर थे। वे हर चीज़ से ऊपर थे – सभी स्नेह, सभी हित, सभी भय, आशाएँ या सिद्धांत।' उससे अलग होकर मेरा मन खाली, ठंडा, निर्जीव हो जाएगा, केवल निराशा की भावना से ही भर जाएगा। अगर मुझे उससे अलग करके तुम्हारे हवाले कर दिया जाए तो मैं कितना दुखी हो जाऊंगी! यह मत पूछो; मैं पहले मर जाऊंगी। कोई

भी स्त्री जिसने मेरे स्वामी से प्रेम किया हो, उसे छोड़ने के लिए राजी नहीं हो सकती। उसके जैसा कोई और नहीं है। हार्टफोर्ड, अगर मैं तुम्हारी पत्नी बन जाऊं, अगर ज़मोर्ना मेरी तरफ देख भी ले, तो मैं गुलाम की तरह अपनी पुरानी सेवा में लौट जाऊंगी। मैं तुम्हें वैसे ही अपमानित करूंगी जैसे मैंने अपने सभी रिश्तेदारों को लंबे समय से अपमानित किया है। इस बारे में सोचो, मेरे स्वामी, और फिर कभी मुझसे प्रेम मत कहना।

‘आप मुझे डरा नहीं सकते,’ लॉर्ड हार्टफोर्ड ने दृढ़ता से उत्तर दिया; ‘मैं वह जोखिम उठाने को तैयार हूँ, हाँ, और हर दूसरा जोखिम भी, अगर मैं हार्टफोर्ड हॉल के उस पुराने भोजन कक्ष में अपनी मेज के मुखिया के रूप में आपको अपनी पत्नी और स्वामिनी के रूप में देख सकूँ। वैसे तो मुझे घमंडी कहा जाता है, लेकिन मैं एंग्रिया को दिखा दूँगा कि एक आदमी कितना घमंडी हो सकता है, अगर मैं रात को घर लौटते समय मीना लॉरी को अपना स्वागत करते हुए पाऊँ; अगर मैं बैठकर आपको इस चेतना के साथ देख सकूँ कि आपकी असीम सुंदरता केवल मेरी है, वह गाल, वे होंठ, वह प्यारा हाथ, सब कुछ मेरा है और आप मुझे मना करने की हिम्मत नहीं करेंगी, तब मैं प्रसन्न हो जाऊँगा।’

'हार्टफोर्ड, जब तुम घर लौटोगे तो तुम्हें अपना घर खाली और चूल्हा वीरान मिलने की संभावना कहीं अधिक होगी। मैं अपने मोह की हद जानती हूँ। मुझे ज़मोर्ना के पास वापस जाकर उसके सामने घुटने टेककर विनती करनी चाहिए कि वह मुझे फिर से अपना गुलाम बना ले!'

हार्टफोर्ड ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'मैडम, अगर आप मेरी पत्नी होतीं तो आपकी हिम्मत नहीं होती; मैं आपकी रक्षा करता!'

‘तो मुझे आपकी देखरेख में मरना चाहिए। लेकिन यह प्रयोग कभी नहीं किया जाएगा!’

हार्टफोर्ड पास आया, उसके बगल में बैठ गया और उसकी ओर झुक गया। वह पीछे नहीं हटी।

‘ओह!’ उसने कहा, ‘मैं खुश हूँ। एक समय था जब मैं तुम्हारे इतने करीब आने की हिम्मत नहीं करता था। दो साल पहले एक गर्मी की शाम को मैं गोधूलि बेला में लॉन के उन पेड़ों के बीच टहल रहा था, और एक मोड़ पर मैंने तुम्हें उनमें से एक पेड़ की जड़ में अकेले बैठे देखा।’

‘तुम सिडेनहैम्स के ऊपर टिमटिमाते तारे को देख रही थी। तुमने सफेद कपड़े पहने थे; तुम्हारे हाथ घुटनों पर मुड़े हुए थे, और तुम्हारे बाल गर्दन पर स्थिर, चमकदार लटों में टिके हुए थे। मैं खड़ा होकर देखता रहा। मेरे मन में यह विचार आया: अगर वह छवि अब मेरे अपने जंगल में होती, अगर वह कोई ऐसी चीज होती जिसमें मेरी रुचि होती, अगर मैं जाकर उसके माथे पर अपने होंठ रख पाता और उस स्पर्श के बदले में एक मुस्कान की उम्मीद कर पाता, अगर मैं उसे अपनी बाहों में ले पाता और उसके विचारों को उस अकेले तारे वाले आकाश से, और उस दूर देश से, जिसकी ओर वह इशारा कर रहा था (क्योंकि वह पश्चिम में था और मुझे पता है कि तुम सेनेगाम्बिया के बारे में सोच रही थी), मोड़ पाता, अगर मैं उन विचारों को आकर्षित कर पाता और उन्हें अपने भीतर केंद्रित कर पाता, तो यह दुनिया मेरे लिए स्वर्ग जैसी हो जाती।’ मैंने खिड़की खुलने की आवाज़ सुनी, और ज़मोर्ना की आवाज़ सन्नाटे में गूंजी, "मीना!" अगले ही पल मुझे तुम्हें लॉन पर खड़े देखने का सौभाग्य मिला, ठीक उस खिड़की के नीचे जहाँ ड्यूक झुककर बैठे थे, और तुम उन्हें अपने बालों में हाथ फेरने दे रही थीं, और उनके होंठों को...'

‘लॉर्ड हार्टफोर्ड!’ मिस लॉरी ने लाली भरी आँखों से कहा, ‘यह मेरे बस से बाहर है। मैं अभी तक क्रोधित नहीं हुई थी। मुझे लगा था कि आप पर क्रोधित होना मूर्खता होगी, क्योंकि आपने कहा था कि आप मुझसे प्यार करते हैं, लेकिन आपने जो कहा है वह मेरी नस को छू गया है; यह सारी समझ को कुचल देता है; यह एक चुभने वाले ताने की तरह है जिसे सहने के लिए मैं बाध्य नहीं हूँ। हर कोई जानता है कि मैं कैसी हूँ, लेकिन अफ्रीका में वह कौन सी स्त्री है जो इन्हीं परिस्थितियों में, इन्हीं प्रलोभनों का सामना करने पर, मुझसे अधिक बुद्धिमानी से काम करती?’

'अर्थात,' हार्टफोर्ड ने जवाब दिया, जिसकी आंखें अब एक हताश, लापरवाह भाव से चमक रही थीं, 'अफ्रीका में वह कौन सी स्त्री है जो उस युवा दुरो को ना कह देती, जब एलीबैंक की रोमांटिक पहाड़ियों के बीच किसी सुहावनी चांदनी रात में उसने उससे प्रेम निवेदन किया हो, और लड़की और लड़का खुद को एक हरी-भरी घाटी में अकेले पाते हों, जहाँ कहीं-कहीं पेड़ उनकी छाया हों, दूर आसमान में तारे उनके रक्षक हों, और चारों ओर रात का घना पर्दा हो।'

मिस लॉरी के दिल की तेज़ धड़कन उनकी सैटिन की चोली से साफ दिखाई दे रही थी – यहाँ तक कि सुनाई भी दे रही थी, क्योंकि एक पल के लिए हार्टफोर्ड ने अपना

उपहास रोककर उसके प्रभाव को महसूस किया। वह अब भी उनके पास ही था, और वह उनसे हिली नहीं। उन्होंने कुछ नहीं कहा। फीकी रोशनी में उनके होंठ सफेद और गाल बेजान दिख रहे थे।

उन्होंने लगातार और कड़वाहट से कहा: 'बाद के समय में, निःसंदेह, हॉक्सक्लिफ के जंगलों ने कई कोमल दृश्यों को देखा होगा, जब एंग्रिया के राजा व्यापार की उथल-पुथल और वैवाहिक झंझटों से दूर अपनी कोमल प्रेमिका के साथ प्रेम और विश्राम करने के लिए सेवानिवृत्त हुए होंगे।'

'अब, हार्टफोर्ड, हमें विदा लेना होगा,' मिस लॉरी ने बीच में ही कहा। 'मैं समझ गई हूँ कि मेरे बारे में क्या राय है, और यह बिल्कुल सही है, लेकिन ऐसी राय जिसे मैं खुशी से सुनना नहीं चाहती। आपने मेरे दिल को बहुत दुख पहुँचाया है। अलविदा। मैं भविष्य में आपसे मिलने से बचने की कोशिश करूँगी।'

वह उठी। हार्टफोर्ड ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। वह बाहर चली गई। जैसे ही उसने दरवाजा बंद किया, उसने उन भावनाओं का उग्र और तीव्र उफान सुना, जो उसके ताने-बाने से उमड़कर पीड़ादायक हो गई थीं।

उसकी अनुपस्थिति ने एक खालीपन छोड़ दिया। अचानक उसके मन में उसे याद करने, उसे सांत्वना देने, उसे प्रसन्न करने की इच्छा जागी। वह दरवाजे तक गया और उसे खोला। अंदर एक छोटा सा हॉल था, या यूँ कहें कि एक चौड़ा गलियारा था, जिसमें एक बड़ा सा दीपक धीमी आंच पर जल रहा था। न तो यहाँ कुछ दिखाई दिया, न ही उस सीढ़ी पर जहाँ वह गलियारा समाप्त होता था। ऐसा लगा जैसे वह गायब हो गई हो।

लॉर्ड हार्टफोर्ड की टोपी और घुड़सवार का लबादा किनारे की पटिया पर पड़ा था। रिवाउल्क्स लॉज में अब उनके लिए कोई आकर्षण नहीं बचा था। आनंद का वह मदहोश कर देने वाला स्वप्न टूट गया और गायब हो गया। निराशा ने उनके उग्र और कठोर स्वभाव को और भी उग्र बना दिया। वे उस काली और बर्फीली रात में निकल पड़े जो ऐसी ज्वालाओं में जल रही थी जिन्हें बर्फ भी बुझा नहीं सकती थी। उन्होंने अपने घोड़े को आदेश दिया और उस पर सवार हो गए, और वेस्टवुड और लेडेन के नरसंहार से उन्हें विजयी रूप से ले जाने वाले उस महान युद्ध-घोड़े के पार्श्वों में बेरहमी से अपने स्पर्स ठोकते हुए, रिवाउल्क्स की ओर सड़क पर उग्र गति से दौड़ पड़े।

मिस लॉरी नाश्ते के बाद एक छोटी सी लाइब्रेरी में बैठी थीं। उनके सामने उनकी मेज थी और दो बड़े लाइनदार क्वार्टो पेपर थे जो मदों और आंकड़ों से भरे हुए थे, जिनकी वे तुलना करती हुई प्रतीत हो रही थीं। उनकी कुर्सी के पीछे हल्के बालों वाला एक लंबा, सुगठित, सिपाही जैसा दिखने वाला युवक खड़ा था। उसका पहनावा सादा और शालीन था; केवल एक कंधे पर लगा एपॉलेट ही उसके आधिकारिक पद का संकेत दे रहा था। वह ध्यान से अपनी छोटी उंगली की गति को देख रहा था जो तेजी से हिसाब-किताब के लंबे स्तंभों पर चल रही थी। मिस लॉरी के चेहरे पर दिखाई देने वाली एकाग्रता, उनके चिकने सफेद माथे की गंभीरता, जो लहराते बालों से ढकी हुई थी, उनके होठों की लगभग न दिखने वाली और भावहीन हरकत, हालांकि उनके गुलाबी रंग के होठों में मुस्कान झलक रही थी, अजीब लग रही थी। एडवर्ड पर्सी अपने बहीखाते में इतने मग्न दिखाई दे रहे थे मानो वे हिसाब-किताब और अंशों के रहस्यों में डूबे हुए हों। इस काम में एक घंटे से अधिक समय बीत गया। इस दौरान कमरे में गहरी शांति छाई रही, जिसे केवल कभी-कभार मिस लॉरी द्वारा पीछे बैठे सज्जनों से किसी मद की वैधता या किसी लापता सिक्के के बारे में की गई टिप्पणी ही तोड़ती थी, जो कुल योग की सटीकता को पूरा करने के लिए आवश्यक था। खातों के मिलान में उन्होंने अत्यंत व्यावसायिक तत्परता और सख्ती दिखाई। छोटी से छोटी गलती भी पकड़ ली जाती और कुछ ही शब्दों में, लेकिन एक त्वरित नज़र से उस पर टिप्पणी कर दी जाती। हालांकि, लेखाकार स्पष्ट रूप से उनकी निगरानी के आदी हो चुके थे, क्योंकि कुल मिलाकर उनके खाते गणितीय शुद्धता का उत्कृष्ट उदाहरण थे।

‘बहुत खूब,’ मिस लॉरी ने पन्ने बंद करते हुए कहा। ‘आपके हिसाब-किताब से आपकी विश्वसनीयता साबित होती है, श्री ओ’नील। आप महामहिम को बता दीजिए कि सब कुछ बिल्कुल सही है। आपके विवरण मेरे विवरणों से बिल्कुल मेल खाते हैं।’

श्री ओ'नील ने झुककर अभिवादन किया। 'धन्यवाद महोदया। इससे लॉर्ड हार्टफोर्ड के विरुद्ध मेरी बात पुष्ट होगी। पिछली बार जब वे फोर्ट एड्रियन का निरीक्षण करने आए थे, तब उन्होंने मुझे बहुत फटकार लगाई थी।'

'किस बारे में?' मिस लॉरी ने अपना चेहरा दूसरी तरफ मोड़ते हुए पूछा, ताकि लॉर्ड हार्टफोर्ड का नाम सुनते ही उनके चेहरे पर छाए गहरे लाल रंग को छुपा सकें।

'मैं आपको ठीक-ठीक बता नहीं सकती, महोदया, लेकिन उनके स्वामी का मिजाज बेहद खराब था। उन्हें कुछ भी पसंद नहीं आ रहा था। वे हर चीज और हर किसी में

कमी निकाल रहे थे। मुझे लगा कि वे बिल्कुल अपने सामान्य रूप में नहीं दिख रहे थे, और हाल ही में कई लोगों की यही राय रही है।'

मिस लॉरी ने धीरे से अपना सिर हिलाया। ‘ऐसा नहीं कहना चाहिए, रयान’, उन्होंने हल्के से फटकार भरे लहजे में जवाब दिया। ‘लॉर्ड हार्टफोर्ड के पास सोचने के लिए बहुत सी चीजें हैं, और स्वभाव से वे थोड़े सख्त हैं। आपको उनके गुस्से को सहन करना चाहिए।’

श्री ओ'नील ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, 'महोदया, आवश्यकता का कोई नियम नहीं होता, और मुझे उनकी बात सहनी ही पड़ेगी, लेकिन सेना में उनके लॉर्डशिप लोकप्रिय नहीं हैं। वे कोड़े मारने का आदेश बहुत ही निर्दयता से देते हैं। हमें अर्ल ऑफ अरुंडेल दस गुना बेहतर लगते हैं।'

‘आह’, मिस लॉरी मुस्कुराते हुए बोलीं, ‘आप और मैं पश्चिमी हैं, मिस्टर ओ’नील – आयरिश – और हम अपने देशवासियों का पक्ष लेते हैं। लेकिन हार्टफोर्ड एक बहादुर सेनापति है। उसके सैनिक हमेशा उस पर भरोसा कर सकते हैं। हमें पक्षपात नहीं करना चाहिए।’

श्री ओ'नील ने उनकी राय का सम्मान करते हुए सिर झुकाया, लेकिन साथ ही मुस्कुराए, मानो उन्हें उसकी निष्पक्षता पर संदेह हो। अपनी किताबें उठाते हुए, वे कमरे से बाहर जाने ही वाले थे। लेकिन इससे पहले कि वे ऐसा करते, वे मुड़े और बोले: 'मैडम, ड्यूक चाहते हैं कि मैं आपको सूचित करूँ कि वे संभवतः दोपहर चार या पाँच बजे यहाँ होंगे।'

'आज?' मिस लॉरी ने आश्चर्य भरे लहजे में पूछा।

जी मैडम।

उसने एक पल सोचा, फिर जल्दी से कहा, 'बहुत अच्छा, महोदय।'

श्री ओ'नील ने एक बार फिर विनम्रतापूर्वक झुककर विदा ली। मिस लॉरी ने भी थोड़ी अनमनी भरी नज़र से झुककर अभिवादन किया। उनके सारे विचार उस आखिरी बात में उलझ गए थे और कहीं खो गए थे। दरवाज़ा बंद होने के काफी देर बाद तक वह अपना सिर हाथ पर रखकर बैठी रहीं, विचारों के उथल-पुथल भरे सैलाब में खोई हुई थीं - उस सरल वाक्य, 'ड्यूक आज यहाँ होंगे', से जागृत हुई उम्मीदों में डूबी हुई थीं।

घड़ी की आवाज से उसकी नींद खुली। उसे याद आया कि बीस काम उसका

इंतजार कर रहे हैं। हमेशा सक्रिय और व्यस्त रहने वाली वह लड़की सपने देखने में ज्यादा समय बर्बाद नहीं करती थी। वह उठी, अपना डेस्क बंद किया और शांत पुस्तकालय छोड़कर व्यस्त वातावरण की ओर चल पड़ी।

चार बज गए, और मिस लॉरी के कदमों की आहट उनके कमरे से उतरती सीढ़ियों पर सुनाई दी। वह विशाल, रोशन गलियारे से गुज़रीं – नारी सौंदर्य और भव्यता की एक अद्भुत मिसाल! उन्होंने खुद को शानदार ढंग से सजाया था। काले साटन का गाउन उनके पतले शरीर पर, जो उनकी चमकती हुई तहों में लिपटा हुआ था, और उनके निखरे रंग पर, जो रंगों के मेल से और भी निखर रहा था, खूब जंच रहा था। उनके घुंघराले बालों में हीरे की एक अंगूठी चमक रही थी, और उन्हीं शुद्ध रत्नों की बूँदें उनके छोटे, नाज़ुक कानों से झिलमिला रही थीं। ये आभूषण, जो अपनी भव्यता में इतने राजसी थे, राजघराने के उपहार थे, और अब वे इन्हें मुख्य रूप से उन कोमल और सुखद पलों की याद दिलाने के लिए पहनती थीं, जिनकी चमक से झलक मिलती थी।

वह अपने ड्राइंग रूम में दाखिल हुई और खिड़की के पास खड़ी हो गई। वहाँ से रिवाउल्क्स के घने होते कोहरे के बीच से मुख्य सड़क की एक झलक दिखाई दी। वह भी अब जमी हुई धुंध में लगभग छिप चुकी थी, जिसमें गोधूलि बेला छाई हुई थी। घर और जंगल दोनों जगह सन्नाटा पसरा हुआ था। एक गाड़ी पास आई। उसने उसकी आवाज़ सुनी। उसने उसे कोहरे में से तेज़ी से निकलते देखा; लेकिन वह ज़मोर्ना नहीं था। नहीं; वह न तो निमशी के पुत्र येहू की गाड़ी थी, न ही येहू के सहायकों की। एक मिनट भी देखे बिना उसकी अनुभवी नज़र ने तुरंत समझ लिया कि घोड़ों में कुछ गड़बड़ है। लगाम उलझ गई थी या वे डर गए थे। कोचवान का उन पर से नियंत्रण छूट गया था: वे बेतहाशा उछल रहे थे।

उसने घंटी बजाई। एक नौकर अंदर आया। उसने सड़क पर खड़ी गाड़ी के लिए तुरंत मदद भेजने का आदेश दिया। दो घोड़ों की देखभाल करने वाले तुरंत उसका आदेश मानने के लिए नीचे की ओर दौड़े, लेकिन उनके पहुँचने से पहले ही, उछल-कूद में लगा एक घोड़ा बर्फीली सड़क पर फिसलकर गिर गया। बाकी घोड़े बेकाबू हो गए और देखते ही देखते गाड़ी सड़क के किनारे पलट गई। मिस लॉरी का एक संदेशवाहक वापस आया। उसने खिड़की खोल दी ताकि वह उससे आसानी से बात कर सके।

‘कोई दुर्घटना हुई?’ उसने पूछा। ‘क्या किसी को चोट लगी?’

'मुझे उम्मीद है कि ज्यादा कुछ नहीं होगा, महोदया।'

'गाड़ी में कौन है?'

'केवल एक महिला है, और ऐसा लगता है कि वह बेहोश हो गई है। जब मैंने दरवाजा खोला तो वह बिल्कुल पीली पड़ गई थी। अब क्या किया जाए, महोदया?'

मिस लॉरी ने आयरिश स्पष्टवादिता के साथ सीधे जवाब दिया, 'उन सभी को घर के अंदर ले आओ। घोड़ों को अस्तबल में ले जाया जाए। और नौकर - कितने हैं?'

'तीन, महोदया। सफ़ेद और भूरे रंग के पोस्टिलियन; सादे कपड़ों में नौकर। कहते हैं कि सिडेनहैम के बैलों के झुंड को देखकर घोड़े डर गए थे: बहुत ही जोशीले घोड़े।'

'ठीक है, आपको मेरा आदेश है: महिला को सीधे अंदर लाओ, और बाकी लोगों को आराम से बिठाओ।'

जी मैडम।

दूल्हे ने अपनी टोपी को छुआ और चला गया। मिस लॉरी ने अपनी खिड़की बंद कर ली। बहुत ठंड थी। कुछ ही मिनटों में नौकरानियों की बाहों में बैठी महिला को धीरे-धीरे लॉन से होते हुए ड्राइंग रूम में लाया गया।

'उसे सोफे पर लिटा दो', मिस लॉरी ने कहा।

उसकी बात मान ली गई। महिला का यात्रा लबादा सावधानीपूर्वक हटाया गया, और गहरे रेशमी वस्त्र में एक दुबली-पतली आकृति दिखाई दी। रुई से बने गद्दे इतने हल्के थे कि दबाव से भी मुश्किल से दबे।

अब उसका बेहोशी का असर कम हो रहा था। आग की सुखद गर्माहट, जो उस पर पूरी तरह पड़ रही थी, ने उसे होश में ला दिया। आँखें खोलकर उसने मिस लॉरी का चेहरा देखा, जो उसके पास झुकी हुई थीं और अपने होठों को किसी पेय से गीला कर रही थीं। एक अजनबी को पहचानकर उसने शरमाते हुए नज़रें हटा लीं और अपने नौकरों को बुलाया।

'वे घर में हैं, महोदया, और पूरी तरह सुरक्षित हैं। लेकिन आप अभी अपनी यात्रा जारी नहीं रख सकतीं; गाड़ी बहुत क्षतिग्रस्त हो गई है।'

वह महिला चुपचाप लेटी रही। उसने कमरे का चारों ओर ध्यान से देखा और उसकी उत्तम व्यवस्था, चूल्हे की रोशनी की प्रसन्न और शांत चमक देखकर वह कुछ शांत हो गई। अपने तकियों पर थोड़ा सा घूमकर, और मिस लॉरी की ओर देखे बिना, बल्कि सीधे दूसरी ओर देखते हुए, उसने कहा, 'इस कृपा के लिए मैं किसकी ऋणी

हूँ? मैं कहाँ हूँ?'

'एक आतिथ्यवान देश में, महोदया। एंग्रियन लोग अजनबियों से कभी मुंह नहीं मोड़ते।'

उसने झट से कहा, 'मुझे पता है मैं एंग्रिया में हूँ, लेकिन कहाँ? घर का नाम क्या है? आप कौन हैं?'

मिस लॉरी का चेहरा थोड़ा लाल हो गया। ऐसा लग रहा था मानो उन्हें अपना असली नाम बताने में कोई अनिश्चित हिचकिचाहट हो रही हो, जो कि व्यापक रूप से - बल्कि बहुत अधिक - प्रसिद्ध था। संभवतः अगर उस महिला को यह पता चलता तो वह तिरस्कारपूर्वक उनसे मुंह मोड़ लेती, और मिस लॉरी को लगा कि वह इसे बर्दाश्त नहीं कर सकतीं।

उसने कहा, 'मैं तो बस यहाँ की नौकरानी हूँ। यह एक महान एंग्रियन जमींदार का शिकारगाह है।'

'कौन?' उस महिला ने पूछा, जो अप्रत्यक्ष उत्तरों से विचलित होने वाली नहीं थी।

मिस लॉरी एक बार फिर हिचकिचाईं। किसी भी हालत में वह 'हिज ग्रेस द ड्यूक ऑफ ज़मोर्ना' नहीं कह सकती थीं। उन्होंने जल्दी से जवाब दिया, 'पश्चिमी मूल के एक सज्जन, महान पैकेनहैम परिवार की एक दूरस्थ शाखा, कम से कम पारिवारिक अभिलेख तो यही कहते हैं, लेकिन वे बहुत पहले पूर्व में बस चुके हैं।'

'मैंने इनके बारे में कभी नहीं सुना', महिला ने जवाब दिया। 'पैकेनहम! क्या यह एंग्रियन नाम नहीं है?'

'शायद, महोदया, आप देश के इस हिस्से से विशेष रूप से परिचित नहीं हैं?'

'मैं हॉक्सक्लिफ को जानती हूँ,' उस महिला ने कहा, 'और आपका घर बिल्कुल सीमा पर, शाही स्वतंत्रता क्षेत्र के भीतर ही है, है ना?'

जी हां, महोदया, यह ग्रेट ड्यूक द्वारा वन-जागीर खरीदने से पहले से ही वहां मौजूद था, और महामहिम ने मेरे स्वामी को इस लॉज और शिकार में भाग लेने के विशेषाधिकार को बनाए रखने की अनुमति दी थी।

'अच्छा, और आप मिस्टर पैकेनहम की हाउसकीपर हैं?'

जी जी मैडम।

उस महिला ने अपनी विशाल, राजसी आँखों से एक और दबी नज़र से मिस लॉरी को देखा। उसकी निगाहें हीरे की बालियों पर टिकीं, फिर काले घुंघराले बालों के बीच

से चमकते हीरों के झुमके पर, उसके बाद उस प्यारी सी शक्ल पर, उस युवा गृहस्वामी के मनमोहक रूप पर, और अंत में दीवार पर एक ऐसे भाव के साथ लौट आईं जो बहुत कुछ कह रहा था।

मिस लॉरी अपने कानों से उन चमकदार झुमकों को नोचकर उतार देना चाहती थीं। उन्हें बहुत बुरा लग रहा था। उन्होंने मन ही मन कहा, 'सब मुझे जानते हैं। लगता है, मेरे माथे पर 'मालकिन' का दाग लग गया है।'

बारी आने पर उसने अपनी मेहमान को निहारा। वह महिला भले ही युवा थी, लेकिन उसका व्यवहार अत्यंत गरिमामय और प्रभावशाली था। उसके चेहरे की बनावट बहुत ही सुंदर और स्त्रीत्वपूर्ण थी, आँखें आकर्षक थीं, गर्दन नाजुक और घुमावदार थी, और उसके छोटे-छोटे, सुंदर, बर्फीले रंग के हाथ किसी कुलीन परिवार के सदस्य की तरह सुंदर थे, और पैरों में भी वैसी ही सैंडल थीं। उसके पहनावे से उसकी सामाजिक स्थिति का अंदाजा लगाना मुश्किल था। मिस लॉरी की पहचान उजागर करने वाले वे चकाचौंध भरे गवाह अब नज़र नहीं आ रहे थे। किसी भी सज्जन की पत्नी गहरे नीले रेशम का गाउन, पेरिस के चमड़े के रंगीन दस्ताने और काले साटन की सैंडल पहन सकती थी, जो उसने पहनी हुई थी।

'क्या मुझे एक कमरा अकेले मिल सकता है?' उसने फिर से मुस्कुराते हुए मिस लॉरी की ओर देखते हुए पूछा।

'ज़रूर, महोदया, मैं आपको आराम देना चाहता हूँ। क्या आप ऊपर जा सकती हैं?'

'ओह हां!'

वह सोफे से उठीं और मिस लॉरी के बढ़ाए हुए हाथ पर इस तरह झुक गईं जैसे उन्हें इस तरह के सहारे की आदत हो, और दोनों कमरे से बाहर निकल गईं। अपनी सुंदर लेकिन कुछ अभिमानी मेहमान को एक शांत और विशाल कक्ष में भव्य लाल रंग के पलंग पर सावधानीपूर्वक लेटा हुआ देखकर, उनके सिर को (उनके घुंघराले बालों सहित) मुलायम तकिये पर धंसते हुए देखकर, उनकी बड़ी शर्मीली आँखों को उनकी चिकनी पलकों के नीचे बंद होते हुए देखकर, और उनके छोटे पतले हाथों को पूर्ण विश्राम की मुद्रा में उनकी छाती पर मुड़े हुए देखकर, मिस लॉरी उन्हें छोड़ने की तैयारी करने लगीं।

‘एक पल रुकिए,’ उसने कहा। उसकी बात मान ली गई – उसकी आवाज़ में कुछ ऐसा था जो आज्ञाकारी बना देता था। ‘मैं नहीं जानती कि आप कौन हैं,’ उसने कहा,

‘लेकिन आपकी दयालुता के लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ। अगर मेरा व्यवहार आपको पसंद नहीं आया हो तो मुझे क्षमा कर दीजिए। मेरा इरादा किसी भी तरह की बदतमीज़ी करने का नहीं है। मुझे लगता है कि आप मेरा नाम जानना चाहेंगे: मेरा नाम श्रीमती इरविंग है। मेरे पति उत्तरी चर्च में पादरी हैं; मैं स्नेचीसलैंड से हूँ। अब आप जा सकते हैं!’

मिस लॉरी चली गईं। श्रीमती इरविंग ने उनकी कहानी पर अविश्वास जताया था, और अब उन्होंने भी वही अविश्वास व्यक्त किया। दोनों महिलाएं अपनी-अपनी उलझन में खोई हुई थीं।

अब पाँच बज चुके थे। लगभग अंधेरा हो चुका था। एक नौकर मोमबत्ती से बड़े से भोजन कक्ष में झूमर जला रहा था, जहाँ रात के खाने के लिए सजी मेज पर एक शानदार साइडबोर्ड से तारों की रोशनी पड़ रही थी, सब कुछ उस महान, प्रतीक्षित अतिथि के स्वागत के लिए तैयार था।

जब भी वह किसी मुलाकात को पूरा करने का इरादा रखता था, तो ज़मोर्ना समय का पाबंद था। घर में प्रवेश करते ही गलियारे में लगी घड़ी की मधुर ध्वनि पेंडुलम के साथ गूंज उठी। सामने का दरवाजा खुलना, रात की ठंडी हवा का झोंका, फिर अचानक बंद होना और आगे बढ़ने का कदम, ये सब उसके आगमन के संकेत थे।

मिस लॉरी भोजन कक्ष में चारों ओर देख रही थीं और सभी चीजों को अंतिम रूप दे रही थीं। जैसे ही वह अंदर आईं, उनकी मुलाकात अपने स्वामी से हुई। उनके ठंडे होंठ उनके माथे पर लगे और उनका ठंडा हाथ उनके हाथ को थाम लिया, जिससे उन्हें वह अनुभूति हुई जिसका वे हफ्तों और महीनों से इंतजार कर रही थीं, और जिसे प्राप्त होने पर वे सभी देरी, सभी परिश्रम और सभी कष्टों का भरपूर प्रतिफल मानती थीं।

‘मैं ठंड से जम गया हूँ, मीना,’ उसने कहा। ‘मैं आखिरी चार मील घोड़े पर सवार होकर आया हूँ, और रात कनाडा जैसी है।’

अपने गर्म, कोमल हथेलियों के बीच उसके बर्फीले हाथ को रगड़कर उसे जीवंत करते हुए, उसने मौन लेकिन भावपूर्ण आनंद, संतुष्टि और श्रद्धा की अभिव्यक्ति से जवाब दिया, जो उसकी आँखों में भर गई और छलक उठी।

जब वह आग के पास खड़े होकर खुशी से अपने हाथों को आग पर मल रहे थे, तो उनके पहले शब्द थे, 'मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ, मेरे स्वामी?' वह हँसे।

'मीना, अपनी बाहों को मेरी गर्दन के चारों ओर डालो और मेरे गाल को चूमो, जो

तुम्हारे अपने गालों की तरह ही गर्म और खिले हुए हैं।'

अगर मीना लॉरी, मीना वेलेस्ली होतीं, तो वह ऐसा ही करतीं। उनके मन में उनके शब्दों पर विश्वास करने की तीव्र इच्छा को रोकना उनके लिए एक कशमकश थी, लेकिन उन्होंने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया और संकोच से उस कुर्सी के पास गईं जिस पर वे अब बैठ गए थे और उनके कनपटी पर उलझे बालों को संवारने और सुलझाने लगीं। उन्होंने देखा कि अभिवादन की पहली मुस्कान गायब होते ही उनके माथे पर उदासी छा गई, जो बाद में चाहे वे कुछ भी बोलें या हँसें, उनके चेहरे की एक स्थायी विशेषता बनी रही।

‘घर में कौन-कौन से मेहमान आए हैं?’ उसने पूछा; ‘जब मैं अंदर आया तो मैंने देखा कि अस्तबल के सामने चार काले घोड़ों की मालिश कर रहा था। मुझे लगता है कि वे हॉक्सक्लिफ स्टड के नहीं हैं?’

'नहीं, मेरे स्वामी। लगभग एक घंटे पहले लॉन के गेट पर एक गाड़ी पलट गई थी, और चूंकि उसमें सवार महिला को बेहोशी की हालत में बाहर निकाला गया था, इसलिए मैंने उसे यहां लाने और उसके नौकरों को रात भर के लिए ठहराने का आदेश दिया।'

‘और क्या आप जानते हैं कि वह महिला कौन है?’ महामहिम ने आगे कहा, ‘घोड़े अच्छे हैं – बेहतरीन किस्म के।’

‘वह कहती है कि उसका नाम श्रीमती इरविंग है, और वह उत्तर में एक प्रेस्बिटेरियन पादरी की पत्नी है, लेकिन –’

'क्या आपको उस पर मुश्किल से ही विश्वास है?' ड्यूक ने बीच में ही टोकते हुए कहा।

'नहीं', मिस लॉरी ने जवाब दिया, 'मुझे कहना होगा कि मैंने उन्हें एक उच्च कोटि की महिला समझा था। उनके तौर-तरीकों और रूप-रंग में कुछ हद तक अभिजात्यता झलकती है, और ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें एंग्रिया के बारे में काफी जानकारी है।'

ज़मोर्ना ने पूछा, 'वह कैसी है? जवान है या बूढ़ी, सुंदर है या बदसूरत?'

‘वह जवान है, दुबली-पतली है, मुझसे छोटी है, और मैं कहूँ तो, सुंदर से कहीं अधिक शालीन है, बहुत पीली है, और उसका व्यवहार ठंडा है। उसका मुँह और ठोड़ी छोटी है, और गर्दन गोरी है।’

‘हम्म! लेडी स्टुआटविल जैसी मामूली सी बात है’, महाराज ने उत्तर दिया। ‘अगर

यह काउंटेस हो तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा, लेकिन मैं पता लगा लूंगा। शायद तुमने यह नहीं बताया कि यह घर किसका है, मीना?’

मीना ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'मैंने कहा था कि घर का मालिक एक महान एंग्रियन जमींदार था, जो पश्चिमी पैकेनहैम परिवार का वंशज था, और मैं उसकी गृहणी थी।'

‘बहुत खूब! वो तो यकीन ही नहीं करेगी। तुम तो किसी एंग्रियन देहाती सज्जन की गुड़िया जैसी दिखती हो! मुझे अपना हाथ दो, मेरी बच्ची। तुम मेरी उम्र की नहीं हो।’

'जी हां, मेरे लॉर्ड ड्यूक, मेरा जन्म उसी दिन, आपके जन्म के एक घंटे बाद हुआ था।'

मैंने तो यही सुना है, लेकिन ये ज़रूर कोई गलतफहमी होगी। तुम बीस साल की नहीं लगतीं, और मैं पच्चीस साल की हूँ। मेरी खूबसूरत पश्चिमी लड़की – क्या आँखें हैं! मीना, मेरी तरफ सीधे देखो, और शरमाओ मत।

मीना ने देखने की कोशिश की, लेकिन वह शरमाए बिना ऐसा नहीं कर सकी। उसका चेहरा कनपटी तक लाल हो गया।

‘छी!’ महामहिम ने उसे धक्का देते हुए कहा। ‘विनम्र होने का नाटक कर रही हो! दस साल से मेरी परिचित भी बिना झिझके मेरी आँखों में नहीं देख सकती। क्या तुमने वह अंगूठी खो दी है जो मैंने तुम्हें कभी दी थी, मीना?’

‘कौन सी अंगूठी है, मेरे स्वामी? आपने मुझे बहुत सी दी हैं।’

मैंने जो कहा, उसमें आपके पूरे हृदय और मन का सार एक आदर्श वाक्य के रूप में पत्थर पर उकेरा गया था।

'वफादारी?' मिस लॉरी ने पूछा, और उन्होंने अपनी तर्जनी उंगली पर खुदा हुआ पन्ना पहने हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

‘सही’ जवाब आया; ‘क्या अब भी यही तुम्हारा आदर्श वाक्य है?’ और अपनी ईर्ष्या भरी भूखी निगाहों से वह मानो किसी के अंतरात्मा को पढ़ने की कोशिश कर रहा था। मिस लॉरी तुरंत समझ गईं कि हाल के घटनाक्रम केवल उनके और लॉर्ड हार्टफोर्ड के बीच का रहस्य नहीं थे। उन्होंने देखा कि महामहिम मानसिक रूप से अस्थिर थे और क्रूरता की ओर अग्रसर थे। वह खड़ी रहीं और उदास, भयभीत निगाहों से उन्हें देखती रहीं।

‘खैर,’ उसने लंबे विराम के बाद मुँह फेरते हुए कहा, ‘अगर आपकी कृपा मुझसे

नाराज है तो इस दुनिया में मुझे बहुत कम चीजों की परवाह है।’

भोजन लेकर नौकरों के आने से ज़मोर्ना का जवाब अधूरा रह गया। मेज के मुखिया के रूप में अपनी जगह लेते हुए उन्होंने अपने पीछे खड़े व्यक्ति से कहा: 'श्रीमान पैकेनहम की ओर से श्रीमती इरविंग को मेरा प्रणाम कहना और यह भी कहना कि यदि वे उपस्थित होकर उन्हें सम्मानित करेंगी तो उन्हें श्रीमती इरविंग को अपने भोजन पर देखकर प्रसन्नता होगी।'

नौकर गायब हो गया। वह पाँच मिनट बाद लौट आया।

'श्रीमती इरविंग इस समय इतनी थकी हुई हैं कि वे श्री पैकेनहम के विनम्र निमंत्रण का लाभ नहीं उठा सकतीं, लेकिन उन्हें उनके साथ चाय पर शामिल होने में खुशी होगी।'

ज़मोर्ना ने कहा, 'बहुत अच्छा', फिर चारों ओर देखते हुए पूछा, 'मिस लॉरी कहाँ हैं?'

मीना कमरे से बाहर निकलने ही वाली थी, लेकिन उसकी पुकार सुनकर वह यंत्रवत रूप से रुक गई।

‘क्या मुझे अकेले भोजन करना है?’ उसने पूछा।

‘क्या आप चाहते हैं कि मैं आपकी सेवा में उपस्थित रहूँ?’

उन्होंने उठकर उन्हें उनकी सीट तक ले जाकर जवाब दिया। फिर वे अपनी सीट पर बैठ गए और भोजन शुरू हो गया। जब तक पर्दा हट नहीं गया और नौकर चले नहीं गए, तब तक ड्यूक ने अपने एक गिलास शैंपेन की चुस्की लेते हुए उस बातचीत को फिर से शुरू नहीं किया, जिसे उन्होंने पहले इतने अप्रिय ढंग से शुरू किया था।

‘इधर आओ, मेरी बच्ची’, उसने कहा और एक कुर्सी को अपने पास खींच लिया।

मीना ने कभी भी शर्म या किसी अन्य भावना के कारण उसके आदेशों का पालन करने में देरी नहीं की, कभी भी संकोच नहीं किया।

‘अब,’ उसने अपना सिर उसकी ओर झुकाते हुए और अपना हाथ उसके कंधे पर रखते हुए कहा, ‘क्या तुम खुश हो, मीना? क्या तुम्हें कुछ चाहिए?’

‘कुछ नहीं, मेरे स्वामी’।

उसने सचमुच कहा था; अनंत काल के इस पार जो कुछ भी उसे सुख दे सकता था, वह उस क्षण उसकी पहुँच में था। कमरा शांत था। दीपक ऐसे जल रहे थे मानो सुन रहे हों। आग की लौ टिमटिमाती नहीं थी, बल्कि पूरे विशाल कक्ष में एक विस्तृत,

स्थिर और दमकती रोशनी फैला रही थी। ज़मोर्ना ने उसे छुआ। उसका रूप और चेहरे उसकी आँखों में समा गए, उसकी आवाज़ उसके कानों में, उसकी उपस्थिति उसके पूरे हृदय में। उसे परम सुख का अनुभव हुआ।

‘मेरी वफ़ादारी!’ उस मधुर आवाज़ ने आगे कहा। ‘अगर तुम्हें कोई विनती करनी है, तो यही सही समय है। मैं पूरी तरह से उदार हूँ, शहद की तरह मीठा, किसी महिला के दस्ताने की तरह कोमल। आओ, एस्तेर, तुम्हारी क्या विनती है? और तुम्हारी प्रार्थना, यहाँ तक कि मेरे राज्य का आधा हिस्सा भी, पूरी की जाएगी!’

'कुछ नहीं,' मिस लॉरी ने फिर बुदबुदाया। 'हे भगवान, कुछ नहीं। मुझे क्या चाहिए?'

‘कुछ नहीं,’ उसने दोहराया। ‘क्या? दस साल के विश्वास, प्रेम और भक्ति का कोई इनाम नहीं; छह महीने के निर्वासन में साथ देने का कोई इनाम नहीं; उस नन्हे हाथ का कोई प्रतिफल नहीं जिसने बीमारी में अक्सर मेरा तकिया सहलाया, उन मीठे होंठों का कोई प्रतिफल नहीं जो कई बार ठंड और ओस से भीगे बुखार में मेरे माथे से लगे, उन गहरी माइलेशियन आँखों का कोई प्रतिफल नहीं जो कभी मेरी बेहोशी की रातों में मेरी देखभाल करते-करते धुंधली हो गई थीं? क्या मुझे उस मिठास और धैर्य के बारे में बताने की ज़रूरत है जिसने उन कष्टों में मेरा हौसला बढ़ाया जिन्हें केवल तुम और मैं ही जानते हैं, मीना? उस भक्ति के बारे में जिसने मुझे रोटी दी जब तुम भूख से मर रही थी – और यह सब एक साल से भी कम समय पहले हुआ था? इन सब के लिए, और इससे भी कहीं अधिक के लिए, क्या कोई इनाम नहीं होना चाहिए?’

मिस लॉरी ने कहा, 'बस बहुत हो गया। अब बहुत हो गया।'

लेकिन’, ड्यूक ने आगे कहा, ‘क्या होगा यदि मैंने कुछ ऐसा आविष्कार किया हो जो आपकी स्वीकृति के योग्य हो? अब ऊपर देखो और मेरी बात सुनो।’

उसने ऊपर देखा, लेकिन तुरंत ही नीचे झुका लिया। उसके स्वामी की आँखें असहनीय थीं। वे नरक की आग से जल रही थीं। 'वह क्या कहने वाला है?' मिस लॉरी ने मन ही मन बुदबुदाया। वह काँप रही थी।

‘सुंदर, मैं तुम्हें इनाम के तौर पर एक पति दूंगा, अभी मत हिचकिचाओ! और वह पति एक रईस होगा, और उस रईस का नाम लॉर्ड हार्टफोर्ड है! अब, महोदया, खड़ी हो जाओ और मुझे तुम्हें देखने दो!’

उसने अपनी बाहें खोलीं, और मिस लॉरी एक ढीले धनुष की तरह सीधी खड़ी हो

गईं।

उन्होंने कहा, 'महामहिम, इसकी उम्मीद थी। यह प्रस्ताव मुझे पहले भी दिया जा चुका है। लॉर्ड हार्टफोर्ड ने स्वयं तीन दिन पहले ऐसा किया था।'

‘और आपने क्या कहा, महोदया?’ अब सच बोलिए; छल-कपट से आपका कोई भला नहीं होगा।’

‘मैंने क्या कहा, ज़मोर्ना? मुझे नहीं पता; इसका कोई खास महत्व नहीं है; आपने मुझे पुरस्कृत किया है, मेरे स्वामी ड्यूक! लेकिन मैं इसे सहन नहीं कर सकता - मुझे अस्वस्थ महसूस हो रहा है।’

एक गहरी, छोटी सी सिसकी के साथ, उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह ड्यूक के पास ही गिर पड़ी, उसका सिर उसके पैर पर टिका हुआ था।

मीना लॉरी अपने जीवन में पहली बार बेहोश हुई थी, लेकिन अपने स्वामी की घोषणा सुनकर उसके भीतर जो तीव्र संघर्ष छिड़ा, उसके बावजूद उसका स्वास्थ्य भी उसे स्तब्ध कर गया। उसे लगा कि स्वामी पूरी तरह ईमानदार है। उसे लगा कि स्वामी उससे ऊब गया है और वह इसे सहन नहीं कर सकी।

मुझे लगता है कि ज़मोर्ना के गिरने पर उसकी पहली प्रतिक्रिया भय की थी, और उसके बाद, मुझे पूरा यकीन है, उसे तीव्र संतुष्टि मिली होगी। लोग कहते हैं कि जब मैं उसकी निंदा करता हूँ तो मैं गंभीर नहीं होता, वरना मैं यहाँ आधे पृष्ठ में उसकी जमकर आलोचना करता, जो उचित और दिल से निकली होती। फिलहाल, मैं बिना किसी टिप्पणी या टिप्पणी के केवल उसके आचरण का वर्णन करूँगा।

उसने मेज से मोमबत्ती उठाई और उसे मिस लॉरी के ऊपर रखा। यहाँ छल-कपट की कोई गुंजाइश नहीं थी। वह संगमरमर की तरह सफेद और पत्थर की तरह स्थिर थी। सच तो यह है कि वह उससे बेहद प्यार करती थी, इतनी शिद्दत से कि उसके मन में किसी अजनबी की छवि के लिए कोई जगह नहीं थी। पाठक, यह मत सोचिए कि ज़मोर्ना ने मिस लॉरी को लॉर्ड हार्टफोर्ड को सौंपने का इतना उदार इरादा किया था। नहीं; उस पर भरोसा कीजिए! वह तो बस अपने सामान्य तरीके से उस लगाव की परीक्षा ले रहा था, जिसे रोज़ाना मिलने वाले हज़ारों सबूतों से उसे बहुत पहले ही अमर हो जाना चाहिए था।

जब वह अभी भी उसे देख रहा था, तभी वह संभलने लगी। उसकी पलकें झपकीं, और फिर धीरे-धीरे उनकी बड़ी-बड़ी काली आँखें खुल गईं, जो उससे नज़रें मिलते ही

दुख से भर उठीं। क्रोध की एक झलक भी नहीं! निंदा की एक फुसफुसाहट भी नहीं! उसके होंठ और आँखें एक साथ केवल सरल शब्दों के अलावा और कोई भाषा नहीं बोल रही थीं।

'तुम्हें छोड़ पाना मेरे लिए मुश्किल है!'

वह बड़ी मुश्किल से और बड़ी कमजोरी से उठी। ड्यूक ने उसकी सहायता के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उन्होंने उसके होठों तक शराब का वह गिलास रखा जिसे उसने अभी-अभी पिया था।

'मीना,' उसने कहा। 'क्या तुम मेरी बात सुनने के लिए पर्याप्त रूप से शांत हो?'

'जी महाराज'।

'तो सुनो। मैं अपनी आधी – बल्कि पूरी संपत्ति लॉर्ड हार्टफील्ड को देना ज्यादा पसंद करूंगा, बजाय तुम्हारे! मैंने अभी जो कहा वह सिर्फ तुम्हें परखने के लिए था।'

मिस लॉरी ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं, किसी भयानक सपने से जागने वाले व्यक्ति की तरह आह भरी, लेकिन वह बोल नहीं सकीं।

ड्यूक ने आगे कहा, "क्या मैं अपने पहले प्यार को अपने अलावा किसी और के हाथों में सौंप दूँगा? मैं उसे उसकी कब्र में देखना ज़्यादा पसंद करूँगा; और मैं तुम्हें वहाँ बिल्कुल शांत, बिल्कुल सफेद और अभी मेरे पैरों पर पड़ी हुई हालत से भी कहीं ज़्यादा बेजान हालत में लिटा दूँगा, इससे पहले कि मैं किसी को धमकी देकर, गिड़गिड़ाकर या रिश्वत देकर तुम्हारी एक झलक या तुम्हारे होंठों की एक मुस्कान भी दे दूँ। मुझे पता है कि तुम अब मुझसे प्यार करती हो, मीना, क्योंकि तुम उस बेचैनी का दिखावा नहीं कर सकतीं, और इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैंने कल तुम्हारे प्रति अपने प्यार का क्या सबूत दिया: हार्टफोर्ड ने मेरी मौजूदगी में तुम्हारा नाम लिया, और मैंने उस अपमान का बदला एक गोली से लिया जिससे वह लगभग लाश की तरह बिस्तर पर गिर पड़ा।"

मिस लॉरी सिहर उठीं, लेकिन मानव स्वभाव के रहस्य इतने गहरे और अंधकारमय हैं कि वे हमेशा अच्छाई को बुराई से जोड़ देते हैं, और मुझे डर है कि उनके स्वामी के प्रेम के इस रक्तरंजित प्रमाण ने उनके हृदय में भय से कहीं अधिक आनंद भर दिया होगा। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा, क्योंकि ज़मोर्ना की बाहें फिर से उनके चारों ओर लिपटी हुई थीं, और वह फिर से उन्हें प्यार भरे शब्दों और स्पर्शों से शांत कर रहे थे, जिससे दुनिया के सारे विचार, शर्म की सारी पीड़ाएँ, सारे संदेह, सारी थकान, लंबे

समय से टली आशा से उत्पन्न सारा हृदय-विक्षत भाव दूर हो गया था। उन्होंने उनसे कहा था कि वह उनका पहला प्रेम थीं, और अब उन्हें यह विश्वास करने का प्रलोभन हो रहा था कि वह उनका एकमात्र प्रेम भी हैं। अपनी स्त्रीत्व से परे दृढ़ निश्चयी, सक्रिय, ऊर्जावान और अन्य सभी दृष्टियों से निपुण, वह यहाँ एक बच्चे की तरह कमजोर थीं। उन्होंने अपनी पहचान खो दी; उनका जीवन किसी और के जीवन में समाहित हो गया था।

दरवाजे पर दस्तक हुई। ज़मोर्ना उठा और दरवाजा खोला। उसका नौकर बाहर खड़ा था।

'क्या मैं आपसे प्रतीक्षालय में बात कर सकता हूँ?' श्री रोजियर ने कुछ जल्दबाजी भरे स्वर में पूछा। ड्यूक उनके पीछे-पीछे बाहर चले गए।

'आप मुझसे क्या चाहते हैं, महोदय? क्या कोई बात है?'

'अहम!' यूजीन ने कहना शुरू किया, जिसके चेहरे पर सामान्य से कहीं अधिक शर्मिंदगी झलक रही थी, जो उसके गहरे, तीखे चेहरे की विशेषता नहीं थी। 'अहम! मेरे लॉर्ड ड्यूक, यह तो वाकई एक अजीबोगरीब काम है, अगर आप मुझे ऐसा कहने की अनुमति दें तो यह पूरी तरह से जादूगरी का करतब है।'

'आपका क्या मतलब है, महोदय?'

'अरे बाप रे! मुझे तो पता ही नहीं। मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि इसे देखकर मैं थोड़ा स्तब्ध रह गया था।'

'क्या देखा? साफ-साफ बोलो, रोजियर!'

'महामहिम इस पर कैसे प्रतिक्रिया देंगे, इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता', नौकर ने उत्तर दिया, 'हालांकि मैंने देखा है कि जब मामला मुझे बेहद शर्मनाक लगा, तब भी महाराज ने बड़ी चतुराई से अपनी गलती सुधारी, लेकिन यह तो मैंने सचमुच असाधारण सोचा था – मैंने सपने में भी नहीं सोचा था!'

'रोज़ियर, मुद्दे पर आओ, वरना –' ज़मोर्ना ने अपना हाथ उठाया।

'मेरी जान चली गई!' यूजीन ने कहा, 'मैं आपको सब कुछ बताऊंगा जो मुझे पता है। मैं लगभग दस मिनट पहले गलियारे से लापरवाही से गुजर रहा था, तभी मुझे सीढ़ियों पर एक हल्की सी आहट सुनाई दी, मानो कोई बहुत छोटा पैर हो। मैंने मुड़कर देखा, तो एक महिला नीचे आ रही थी। हे प्रभु, वह एक महिला थी!'

'अच्छा, महोदय, क्या आप उन्हें जानते थे?'

मुझे लगता है कि अगर मेरी आँखें जादू से प्रभावित न होतीं तो मैंने उसे देखा होता। मैं एक खंभे की आड़ में छाया में खड़ा था और वह मेरे बहुत पास से गुज़री, लेकिन उसने मुझे नहीं देखा। मैंने उसे स्पष्ट रूप से देखा, और अगर ऐसा नहीं था तो मुझे इसी क्षण मौत की सजा दी जाए।

'कौन, महोदय?'

'द डचेस!'

कुछ देर का विराम ड्यूक की स्पष्ट और प्रभावशाली लंबी सीटी की आवाज से टूटा। उन्होंने अपने दोनों हाथ जेब में डाले और इत्मीनान से कमरे का एक चक्कर लगाया।

'क्या तुम्हें यकीन है, यूजीन?' उसने पूछा। 'मैं जानता हूँ कि तुम ऐसे मामले में मुझसे झूठ बोलने की हिम्मत नहीं करोगे क्योंकि तुम अपनी इज्जत का बहुत ख्याल रखते हो! हाँ, बिलकुल सच है, कसम से। श्रीमती इरविंग, उत्तरी राज्य के एक मंत्री की पत्नी! मेरे शाही व्यक्तित्व पर एक व्यंग्यात्मक प्रहार! हे भगवान! पीली-सी गर्दन, छोटा मुँह और ठुड्डी! वाह! काश, ये छोटा मुँह और ठुड्डी सौ मील दूर होती। आखिर उसे क्या हुआ होगा? अपने अनमोल पति की चिंता में – उसके बिना और नहीं रह सकती थी – इसलिए यह देखने के लिए निकल पड़ी कि वह क्या कर रहा है। अच्छा हुआ कि उस चालाक रोजियर ने मुझे बता दिया। अगर वह पाँच मिनट पहले अचानक कमरे में आ जाती – हे भगवान! मेरे पास उसके हाथ-पैर बाँधने के अलावा कोई चारा नहीं होता। वह मर जाती! मैं क्या करता? गुस्सा नहीं करना चाहिए; अभी उसे इस तरह की बातें बर्दाश्त नहीं हो सकतीं।' धीरे से बात करो, उसे नरमी से डांटो, और कसम खाकर कहो कि मेरा मिस्टर पैकेनहम की हाउसकीपर से कोई संबंध नहीं है।

अपना एकालाप समाप्त करते हुए, ड्यूक फिर से अपने नौकर की ओर मुड़ा।

'हर एग्रेस किस कमरे में गई थीं?'

'ड्राइंग रूम में, महाराज, वह इस समय वहीं हैं।'

'ठीक है, इस बारे में कुछ मत कहना, रोजियर – वरना अचानक मौत हो जाएगी! क्या तुम मुझे सुन रहे हो, महोदय?'

रोजियर ने अपना हाथ अपने दिल पर रखा, और ज़मोर्ना ऑपरेशन शुरू करने के लिए कमरे से बाहर चली गई।

ड्राइंग रूम का दरवाजा धीरे से खोलते ही उसने चूल्हे के पास एक महिला को

देखा। उसकी पीठ उसकी ओर थी, लेकिन इसमें कोई शक नहीं था। उसका पूरा शरीर, पहनावा, घुंघराले भूरे बाल: ये सभी एक ही व्यक्ति की विशेषताएँ थीं - उसकी अपनी अनोखी, अभिमानी, ईर्ष्यालु छोटी डचेस की। उसने दरवाजा उतनी ही खामोशी से बंद किया जितनी खामोशी से खोला था और चुपके से आगे बढ़ा। उसका ध्यान किसी चीज़ में लगा हुआ था, एक किताब में जिसे उसने उठा रखा था। उसके पीछे चुपचाप खड़े होकर उसने देखा कि उसकी नज़र किताब के पहले पन्ने पर टिकी हुई थी, जिस पर उसके अपने हाथों से लिखा था:

हे पवित्र संत साइप्रियन! तेरे जल भटकते हैं!
शांत और गंभीर स्वर में:
और मेरे सुनहरे पल तेज़ी से बीत रहे हैं
और कुछ हद तक एक धुंधली छाया डालता है,
जैसे ही संध्याकाल में दिन समाप्त होता है,
तेरे जलमार्गों पर एकाकी।

अलविदा! अगर मुझे दोबारा आने का मौका मिले तो,
मैं उस समय जवान और स्वतंत्र था,
और एक बार फिर अपनी हर रग में उस एहसास को महसूस करो
उस पहले जुनून की आग का राज
जिसे दु:ख या पीड़ा भी शांत नहीं कर सकी,
मैं जल्द ही तुम्हारे पास लौट आऊंगा;
लेकिन जब तुम्हारी लहरें मुख्य धारा की ओर बढ़ती हैं
ऐसा फिर कभी न हो!

इस पर 'मॉर्निंगटन, 1829' की तारीख अंकित थी।

डचेस को अपने कंधे पर किसी के हाथ का स्पर्श महसूस हुआ और उसने ऊपर देखा। आकर्षण बल ने अपना सामान्य प्रभाव दिखाया और वह जो कुछ भी देख रही थी, उससे चिपक गई।

'एड्रियान! एड्रियान!' बस यही शब्द उसके होंठों से निकल पाए।

'मैरी! मैरी!' ड्यूक ने जवाब दिया और उसे अपने आसपास मंडराने दिया: 'वाह! यहाँ क्या कर रही हो? क्या तुम भाग रही हो, मेरी अनुपस्थिति में कहीं छिपकर जा रही हो?'

'एड्रियान, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया? तुमने कहा था कि तुम एक हफ्ते में वापस आ जाओगे, और आठ दिन बीत चुके हैं। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। तुम्हारे जाने के बाद से मैंने न तो नींद ली है और न ही आराम किया है। घर वापस आ जाओ!'

'तो तुम सचमुच पति की तलाश में निकली थी!' ज़मोर्ना ने दिल खोलकर हंसते हुए कहा, 'और पलट गई और पाकेनहम के शूटिंग बॉक्स में शरण लेने के लिए मजबूर हो गई!'

'एड्रियान, तुम यहाँ क्यों हो?' डचेस ने पूछा, जो इतनी गंभीर थीं कि उनकी हंसी में शामिल नहीं हो पाईं। 'पैकेनहम कौन है? और वह कौन है जो खुद को उसकी नौकरानी कहती है? और तुमने मुझे बिना बताए हॉक्सक्लिफ के इतने पास किसी को रहने की इजाजत क्यों दी?'

'मैं आपको बताना भूल गया था,' महामहिम ने कहा। 'जब आपकी वो चमकीली भूरी आँखें मेरी ओर देख रही होती हैं, तो मेरे पास सोचने के लिए और भी बहुत कुछ होता है! जहाँ तक पैकेनहम की बात है, सच कहूँ तो वो आपका एक तरह से चचेरा भाई है, क्योंकि वो दक्षिण में मेरे चाचा, पुराने एडमिरल का नाजायज बेटा है, और उसकी नौकरानी उसकी बहन है। बस इतना ही। अब मुझे चूम लो।'

डचेस ने उसे चूमा तो सही, लेकिन एक गहरी आह के साथ; ईर्ष्या और चिंता का बादल उसके माथे पर अडिग रहा।

'एड्रियान, मेरा दिल अब भी दुखता है। तुम इतने दिनों से एंग्रिया में क्यों रुके हुए हो? ओह, तुम्हें मेरी कोई परवाह नहीं! तुमने कभी सोचा भी नहीं होगा कि मैं तुम्हारे लौटने की कितनी बेसब्री से तड़प रही हूँ, एड्रियान!' वह रुक गई और रोने लगी।

'मैरी, होश में आओ!' परम पूज्य ने कहा। 'मैं हर समय तुम्हारे चरणों में नहीं रह सकता। जब हमारी शादी हुई थी तब तुम इतनी कमजोर नहीं थीं। तब तुम मुझे अक्सर बिना किसी ईर्ष्यापूर्ण विरोध के तुम्हें छोड़कर जाने देती थीं।'

'उस समय मैं तुम्हें इतना अच्छी तरह नहीं जानती थी,' मैरी ने कहा, 'और अगर मेरा मन कमजोर हो गया है, तो उसकी सारी शक्ति तुम्हारे लिए आँसुओं और भय में

बह गई है। मैं अब उतनी सुंदर और उतनी हंसमुख नहीं हूँ जितनी पहले थी, लेकिन तुम्हें मेरी इस दुर्बलता को क्षमा कर देना चाहिए क्योंकि यह तुमने ही की है।'

ज़मोर्ना ने जवाब दिया, 'निराश हो रही हो, मामलों के बुरे पहलू पर ध्यान दे रही हो! भगवान भला करे, दुष्ट अपने ही जाल में फँस गया है। काश मैं कह पाती, 'फिर भी मैं बच जाऊँगी।' मैरी, जब तक मैं तुम्हें इशारा न दूँ, तब तक अपनी सुंदरता खोने का दोष कभी मत लगाना। अब मेरी बात मानो; इस मामले में और हर मायने में तुम वैसी ही हो जैसी मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ। तुम संगमरमर की तरह कभी फीकी नहीं पड़ सकतीं - कम से कम मेरी नज़रों में तो नहीं। और जहाँ तक तुम्हारी भक्ति और कोमलता की बात है, हालाँकि मैं कभी-कभी इसकी अति पर नाराज़ होता हूँ, क्योंकि यह तुम्हें लगभग एक परछाई की तरह क्षीण और बेजान बना देती है, फिर भी यही वह सबसे बारीक कड़ी है जो मुझे तुमसे बाँधे रखती है। अब खुश हो जाओ! आज रात तुम हॉक्सक्लिफ जाओगी; यह सिर्फ़ पाँच मील दूर है। मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता क्योंकि मुझे पैकेनहम के साथ कुछ ज़रूरी काम निपटाना है जिसे टाला नहीं जा सकता। कल, मैं भोर से पहले महल में पहुँच जाऊँगा। गाड़ी तैयार होगी। मैं तुम्हें उसमें बिठा दूँगा, मैं तुम्हारे बगल में रहूँगा; चलिए सीधे वर्दोपोलिस चलते हैं, और वहाँ अगले तीन महीनों तक मैं सुबह, दोपहर और रात, अपनी संगति से आपको तंग कर दूँगा! अब मैं और क्या वादा कर सकता हूँ? अगर आप हेनरी फर्नांडो, बैरन ऑफ एट्रेई; या जॉन, ड्यूक ऑफ फिडेना; या सुंदर अर्ल ऑफ रिचटन से ईर्ष्या करना चाहें, जो, ईश्वर साक्षी है, मेरी वर्तमान यात्राओं में एकमात्र साथी रहे हैं, तो मैं कुछ नहीं कर सकता। तब मुझे सोडा-वॉटर पीकर निराशा में डूबना पड़ेगा, या फिर खुद को पत्थर का बनाकर अपोलो की मूर्ति में तराशकर आपके ड्रेसिंग रूम में रखवाना पड़ेगा। हे भगवान! मेरी सदाचारिता का कोई नामोनिशान नहीं!

झूठ और हंसी के बल पर अंततः वह व्यक्ति अपने मन में सभी बातों को सुलझाने में सफल हो गया।

उस रात डचेस हॉक्सक्लिफ गई; और, अपना वादा निभाते हुए, वह अगली सुबह उसके साथ वर्दोपोलिस गया।

लॉर्ड हार्टफोर्ड आज भी जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहे हैं। उनका जुनून न तो दर्द से कमजोर हुआ है, न ही अस्वीकृति से बढ़ा है, और न ही अनुपस्थिति से ठंडा पड़ा है। उनके दृढ़ निश्चय पर एक ऐसी छाप अंकित है जिसे कोई मिटा नहीं सकता।

वार्नर उन्हें कोसते हैं; रिचटन शोक व्यक्त करते हैं।

लंबे समय के लिए अलविदा, पाठक! मैंने आपको प्रसन्न करने का भरसक प्रयास किया है; और यद्यपि मैं जानता हूँ कि कमजोरी, नीरसता और बार-बार एक ही काम दोहराने के कारण मेरा काम सफलता के बजाय असफलता में परिणत हुआ है, फिर भी आप मुझे क्षमा कर देंगे, क्योंकि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है।

सी. ब्रोंटे

हॉवर्थ, 17 जनवरी, 1838

स्टैनक्लिफ का होटल

अध्याय 1

चार्ल्स टाउनशेंड, लुइसा डांस के घर जाते हैं और वहां मैकारा लॉफ्टी को अफीम के नशे में पाते हैं।

“आमीन!” यही ध्वनि एक छोटी सी चीख में गूंजी, जिसके साथ एबेनेज़र चैपल में शाम की प्रार्थना सभा समाप्त हुई। श्री ब्रोमली घुटनों के बल से उठे। उन्होंने काफी मशक्कत की थी, और उनके धार्मिक परिश्रम का पसीना उनके माथे पर तेल की तरह चमक रहा था। एक गहरी सांस लेकर और अपने नम माथे पर रूमाल फेरकर, वे वापस अपनी सीट पर बैठ गए। फिर, अपनी दोनों मजबूत भुजाओं को फैलाकर और उन्हें वेदी के किनारों पर टिकाकर, पीले धब्बों वाले रूमाल को एक हाथ से लटकाए हुए, वे बैठ गए और खचाखच भरी गैलरी के खाली होने का इंतजार करने लगे।

"आज रात चैपल में कितनी असहनीय गर्मी रही है," एक कोमल आवाज ने मुझसे

कहा, और एक टोपी आगे की ओर झुककर अपने रिबन मेरे चेहरे पर लहराने लगी।

“जी हां, दो अर्थों में,” मेरा उत्तर था। “शाब्दिक रूप से, वातावरण के संदर्भ में, और लाक्षणिक रूप से, उत्साह के संदर्भ में। हमारे भाई ने पूरी स्वतंत्रता के साथ यह कार्य किया है, महोदया।”

“बकवास, चार्ल्स! मुझे ये बोलचाल की भाषा कभी समझ नहीं आती! लेकिन चलो, गैलरी के दरवाजे पर भीड़ कम हो रही है। मुझे लगता है अब हम अंदर जा सकेंगे, और मुझे ताजी हवा की बहुत ज़रूरत है। मुझे मेरा शॉल दो, चार्ल्स।”

महिला उठीं, और जब मैंने उन्हें शॉल और बोआ (जो महिलाओं द्वारा गले में पहना जाने वाला सांप के आकार का फर या पंखों का कुंडल होता है) से सावधानीपूर्वक लपेटा, जो उन्हें रात की ठंडी हवा से बचाने के लिए था, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "आप मुझे मेरे विला तक ले जाएँगे और मेरे साथ मूली और अंडा खाएँगे।" मैंने उस सफेद हाथ को दबाकर जवाब दिया जिस पर वह फ्रेंच किड का दस्ताना बना रही थीं। उन्होंने वह हाथ मेरी बांह में डाला और हम साथ में गैलरी से बाहर निकल गए।

जैसे ही हम चैपल की भाप और मशालों की रोशनी से बाहर निकले, एक शांत और तारों भरी रात ने हमारा स्वागत किया। द्वार पर बिखरती भीड़ के बीच से तेज़ी से रास्ता बनाते हुए, हम एक जाने-माने और अक्सर इस्तेमाल होने वाले रास्ते पर चल पड़े, जो आधे घंटे में हमें हमारे इलाके की जगमगाती दुकानों और व्यस्त सड़कों से निकालकर घाटी की गहरी छाया और - इस समय - एकांत में ले आया।

“चार्ल्स,” मेरी प्यारी सहेली ने अपनी हमेशा वाली आवाज़ में कहा, आधी फुसफुसाहट में, आधी बड़बड़ाहट में। “चार्ल्स, कितनी प्यारी रात है – गर्मी की रात से पहले ही! बस चाँद की कमी है, वो इसे और भी खूबसूरत बना दे – फिर मुझे अपना विला दिख जाएगा। तारे इतने पास नहीं हैं कि सामने के सफेद हिस्से को पूरी तरह से चमका सकें। फिर भी मुझे वहाँ एक हल्की सी रोशनी टिमटिमाती हुई दिख रही है। क्या वो मेरे ड्राइंग रूम की खिड़की से नहीं आ रही?”

“शायद,” मेरा जवाब था, और मैंने आगे कुछ नहीं कहा। उनकी कोमलता कभी-कभी हद से ज़्यादा हो जाती है, खासकर जब वे भावुकता की सीमा तक पहुँच जाती हैं।

“चार्ल्स,” उसने मेरी बेरुखी से ज़रा भी शर्मिंदा हुए बिना कहा। “ऐसे समय में कितनी प्यारी यादें हमारे मन में आती हैं! तुम्हें क्या लगता है कि गर्मी की रात में मेरे

विचार हमेशा कहाँ भटकते हैं? तुम्हें क्या लगता है कि 'बादलों से रहित आकाश और तारों से भरा आसमान' हमेशा किस छवि को दर्शाता है?"

मैंने कहा, "शायद, यह सबसे महान रिचर्ड, मार्क्विस ऑफ वेलेस्ली का दृश्य है, जैसा कि आपने उन्हें आखिरी बार देखा था, गठिया से पीड़ित कुर्सी और स्टूल पर आराम करते हुए, चावल-करी, डेविल्ड टर्की और अमरूद के रात्रिभोज के समापन पर उन्होंने जिस पवित्र पेय का सेवन किया था, उसके प्रभाव से उनकी पलकें धीरे से बंद थीं।"

लुईसा नाराज़ होने के बजाय मधुरता से हंस पड़ी। उसने कहा, "आप कुछ हद तक सही हैं। आपने जिस आकृति का वर्णन किया है, वह वास्तव में मेरी यादों का एक हिस्सा है। अब, क्या आप चित्र पूरा करेंगे, या मैं आपकी जगह इसे पूरा कर दूं?"

"मैं कलम को ऐसे हाथों में सौंपता हूँ जो इसके प्रबंधन के लिए अधिक योग्य हों," आई ने जवाब दिया।

"तो फिर सुनो," मार्क्विस ने आगे कहा। "आराम कुर्सी और गद्दीदार पायदान से, और उस पर सो रही महिला से अलग होकर, एक वीणा की कल्पना करो - वही वीणा जो अब मेरे शयनकक्ष में रखी है। एक स्त्री की कल्पना करो, जो उसके पास बैठी है। मुझे उसका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है: वह मैं स्वयं हूँ। वह बजा नहीं रही है। वह उस स्त्री को सुन रही है जो अपने वाद्य यंत्र पर झुकी हुई है और इतनी धीमी आवाज़ में गुनगुना रही है जैसे हवा अब मेरे बबूल के पेड़ों में गुनगुना रही है।"

"हम!" मैंने कहा। "क्या यह आकृति किसी गंजे बुजुर्ग सज्जन की है?"

लुइसा ने हां में जवाब देते हुए आह भरी।

"वैसे," मैंने आगे कहा। "लगातार यह खबर आ रही है कि उसने —"

"क्या?" मार्क्विस ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "उम्मीद है, ये शराब नहीं होगी! मुझे पता है कि पानी मिलाकर बनाई गई हॉलैंड शराब भी उसे मुश्किल से संतुष्ट कर पाती थी।"

"नहीं, महोदया, अपने डर को काबू में रखिए। मैं तो बस उनके पहनावे की बात कर रहा था। पैंट तो गायब हो गई है: उन्होंने सफेद टाइट्स और रेशमी कपड़े पहने हैं।"

मैंने फुसफुसाते हुए ही ये चौंकाने वाली खबर लुइसा को सुनाई, लेकिन उसकी नसों में सिहरन दौड़ गई और दिल तक झकझोर गई। इसके बाद जो सन्नाटा छाया,

उसमें मैं सांस रोककर इसके असर का इंतज़ार करता रहा। आखिरकार वो असर हुआ। हल्की सी खिलखिलाहट के साथ उसने कहा, "अरे वाह! हे भगवान! कितना अजीब है! लेकिन आखिरकार, मुझे लगता है कि ये समझदारी भरा कदम है। उसकी टांग से ज़्यादा सुडौल और कुछ नहीं हो सकता, और वैसे भी वो बूढ़ा हो रहा है, और कपड़े बदलना ज़रूरी हो गया था। फिर भी मुझे डर है कि कहीं यहाँ बहुत ज़्यादा घनी छाया न हो और इस समय घाटी की एकांतता भी न छाई रहे।"

“चार्ल्स,” मेरी प्यारी सहेली ने अपनी हमेशा वाली आवाज़ में कहा, आधी फुसफुसाहट में, आधी बड़बड़ाहट में। “चार्ल्स, कितनी प्यारी रात है – गर्मी की रात से पहले ही! बस चाँद की कमी है, वो इसे और भी खूबसूरत बना दे – फिर मुझे अपना विला दिख जाएगा। तारे इतने पास नहीं हैं कि सामने के सफेद हिस्से को पूरी तरह से चमका सकें। फिर भी मुझे वहाँ एक हल्की सी रोशनी टिमटिमाती हुई दिख रही है। क्या वो मेरे ड्राइंग रूम की खिड़की से नहीं आ रही?”

“शायद,” मेरा जवाब था, और मैंने आगे कुछ नहीं कहा। उनकी कोमलता कभी-कभी हद से ज़्यादा हो जाती है, खासकर जब वे भावुकता की सीमा तक पहुँच जाती हैं।

“चार्ल्स,” उसने मेरी बेरुखी से ज़रा भी शर्मिंदा हुए बिना कहा। “ऐसे समय में कितनी प्यारी यादें हमारे मन में आती हैं! तुम्हें क्या लगता है कि गर्मी की रात में मेरे विचार हमेशा कहाँ भटकते हैं? तुम्हें क्या लगता है कि ‘बादलों से रहित आकाश और तारों से भरा आसमान’ हमेशा किस छवि को दर्शाता है?”

मैंने कहा, "शायद, यह सबसे महान रिचर्ड, मार्क्विस ऑफ वेलेस्ली का दृश्य है, जैसा कि आपने उन्हें आखिरी बार देखा था, गठिया से पीड़ित कुर्सी और स्टूल पर आराम करते हुए, चावल-करी, डेविल्ड टर्की और अमरूद के रात्रिभोज के समापन पर उन्होंने जिस पवित्र पेय का सेवन किया था, उसके प्रभाव से उनकी पलकें धीरे से बंद थीं।"

लुईसा नाराज़ होने के बजाय मधुरता से हंस पड़ी। उसने कहा, "आप कुछ हद तक सही हैं। आपने जिस आकृति का वर्णन किया है, वह वास्तव में मेरी यादों का एक हिस्सा है। अब, क्या आप चित्र पूरा करेंगे, या मैं आपकी जगह इसे पूरा कर दूं?"

“मैं कलम को ऐसे हाथों में सौंपता हूँ जो इसके प्रबंधन के लिए अधिक योग्य हों,” आई ने जवाब दिया।

“तो फिर सुनो,” मार्क्विस ने आगे कहा। “आराम कुर्सी और गद्दीदार पायदान से, और उस पर सो रही महिला से अलग होकर, एक वीणा की कल्पना करो—वही वीणा जो अब मेरे शयनकक्ष में रखी है। एक स्त्री की कल्पना करो, जो उसके पास बैठी है। मुझे उसका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है: वह मैं स्वयं हूँ। वह बजा नहीं रही है। वह उस स्त्री को सुन रही है जो अपने वाद्य यंत्र पर झुकी हुई है और इतनी धीमी आवाज़ में गुनगुना रही है जैसे हवा अब मेरे बबूल के पेड़ों में गुनगुना रही है।”

“हम!” मैंने कहा। “क्या यह आकृति किसी गंजे बुजुर्ग सज्जन की है?”

लुइसा ने हां में जवाब देते हुए आह भरी।

“वैसे,” मैंने आगे कहा। “लगातार यह खबर आ रही है कि उसने —”

“क्या?” मार्क्विस ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “उम्मीद है, ये शराब नहीं होगी! मुझे पता है कि पानी मिलाकर बनाई गई हॉलैंड शराब भी उसे मुश्किल से संतुष्ट कर पाती थी।”

“नहीं, महोदया, अपने डर को काबू में रखिए। मैं तो बस उनके पहनावे की बात कर रहा था। पैंट तो गायब हो गई है: उन्होंने सफेद टाइट्स और रेशमी कपड़े पहने हैं।”

मैंने ये चौंकाने वाली खबर फुसफुसाते हुए जितनी धीमी आवाज़ में दी, उतनी ही ज़ोर से लुइसा के दिल में सिहरन दौड़ गई। उसके बाद जो सन्नाटा छाया, उस दौरान मैं सांस रोककर उसके असर का इंतज़ार करता रहा। आख़िरकार, वो असर दिखा ही दिया। हल्की सी खिलखिलाहट के साथ उसने कहा, “सच में! हे भगवान! कितना अजीब है! लेकिन मुझे लगता है कि ये समझदारी भरा कदम है। उसकी टांग से ज़्यादा सुडौल और कुछ नहीं हो सकता, और वैसे भी वो बूढ़ा हो रहा है, और कपड़े बदलना ज़रूरी हो गया था। फिर भी मुझे डर था कि कहीं वो बहुत पतला न हो जाए, वो बहुत पतला था, तुम्हें पता है ना—बहुत—”

मैंने पूछा, "क्या आपने हाल ही में उनके लॉर्डशिप से कोई खबर सुनी है?"

"अरे नहीं! लगभग छह महीने पहले मेरे पास वास्तव में एक छोटा सा नोट था, लेकिन मैंने गलती से उसे मैकारा को दे दिया, और सच में मुझे नहीं पता कि उसके बाद उसका क्या हुआ।"

"क्या मैकारा ने इस तरह गलती से यह जानकर कि आपने कुलीन अर्ल के साथ सभी पत्राचार पूरी तरह से बंद नहीं किया था, ईर्ष्या की तीव्र भावना व्यक्त की?"

“हां। उन्होंने कहा कि उन्हें लगा कि पत्र बहुत ही शालीनता से लिखा गया था, और वे चाहते थे कि मैं भी उसका जवाब उतने ही विनम्र शब्दों में दूं।”

“बहुत बढ़िया! और आपने ऐसा किया?”

“बिल्कुल। मैंने गुलाबी रंग के नोटपैड पर एक सुंदर पत्र लिखा और उस पर एक प्यारी हरी मुहर लगाई जिस पर एक ही लौ में जलते हुए दो दिलों का निशान बना था। हालांकि, कुछ गलतफहमी जरूर हुई होगी, क्योंकि दो-तीन दिन बाद मुझे वह पत्र बिना खुला और सावधानीपूर्वक एक लिफाफे में बंद मिला। वह पत्र उनके लॉर्ड की लिखावट में नहीं था: मैकारा ने मुझे बताया कि उन्हें लगा कि वह काउंटेस की लिखावट है।”

मैंने पूछा, "क्या आप सेल्डन हाउस को जानते हैं, जहां उनके लॉर्डशिप अभी रहते हैं?"

“अहा! शादी के कुछ समय बाद, मुझे याद है कि मैं अपने पति रॉसलैंड (रॉस लैंड, ऐनी ब्रोंटे के नाटक 'यंग मेन्स प्ले' के मुख्य पात्र कैप्टन जॉन रॉस द्वारा स्थापित राज्य) की यात्रा पर गई थी और वहाँ से गुज़री थी। हमने वहाँ दोपहर का भोजन किया था, क्योंकि कर्नल सेल्डन (उस समय उसके मालिक) मेरे आदरणीय दूल्हे के मित्र थे। उन दिनों की याद आते ही मुझे एक ऐसी गलती याद आ जाती है जो हम जिन होटलों और निजी घरों में रुकते थे, वहाँ हर कोई ज़रूर करता था। मुझे सब लोग लॉर्ड वेलेस्ली की बेटी समझ लेते थे। खासकर कर्नल सेल्डन तो मुझे लेडी जूलिया कहकर पुकारते रहते थे।”

“वह एक आकर्षक व्यक्ति थे, मेरी प्रतिष्ठित पत्नी से कम से कम बीस साल छोटे थे। मैंने डांस से पूछा, जो उस यात्रा में हमारे साथ थे, कि उन्होंने मेरे लिए उस वीर कर्नल जैसे साथी का चयन क्यों नहीं किया। उन्होंने मुझे अब तक की सबसे तीखी नज़र से जवाब दिया।”

“अच्छा,” मैंने उनकी यादों को बीच में रोकते हुए कहा। “हम आपके विला में आ गए हैं। शुभ रात्रि। मैं आज शाम आपके साथ भोजन नहीं कर सकता: मैं व्यस्त हूँ।”

“नहीं, चार्ल्स,” उसने जवाब दिया, और मेरा हाथ थामे रखा जिसे मैं उससे छुड़ाना चाहता था। “अंदर आइए! आपके साथ शांतिपूर्वक अकेले में बातचीत करने का मौका मिले मुझे बहुत समय हो गया है।”

मैंने कुछ देर तक इनकार करने पर अड़ा रहा; लेकिन अंततः मुस्कान और विनम्र

विनती भरे स्वर के आगे झुककर मैंने अपनी बात छोड़ दी और मार्क्विस के पीछे-पीछे अंदर चला गया।

जब हम महारानी के बैठक कक्ष में दाखिल हुए, तो हमने देखा कि मोमबत्तियाँ जल रही थीं और मेज पर हमारे लिए भोजन की थाली सजी हुई थी। चूल्हे के पास, अकेले, लॉर्ड मैकारा लॉफ्टी बैठे थे। उनका हाथ कुर्सी पर झुका हुआ था और उसमें दो खुले पत्र थे: उनकी आँखें आग पर टिकी हुई थीं—ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी विचार में डूबे हुए हों। लुईसा ने उन्हें जगाया। जब वह उनके ऊपर झुकीं, तो जिस सुस्त निगाह से उन्होंने अपनी आँखें लुईसा पर डालीं, उसे देखकर मैं दंग रह गया। उनके चेहरे पर एक खालीपन और स्वप्निल स्तब्धता थी।

"क्या हम चैपल से देर से आ रहे हैं?" उसने कहा। "ब्रोमली की अंतिम प्रार्थना अंतहीन सी लग रही थी।"

"बल्कि, मुझे लगता है," विस्काउंट ने जवाब दिया। "थोड़ा-थोड़ा देर हो गई है — देर हो गई, आपने कहा? ओह! बिल्कुल। मैं आपके साथ दो घंटे से बैठा हूँ, है ना लुइसा? — जब मैं घाटी में आया था तब शाम के समय — देर हो गई थी! निश्चित रूप से —"

यह अस्पष्ट उत्तर एक ऐसे व्यक्ति के लहजे और हावभाव में दिया गया था जो गहरी नींद से अभी-अभी जागा हो, जबकि जब हम कमरे में दाखिल हुए थे तब माननीय विस्काउंट पूरी तरह से जाग रहे थे। उपर्युक्त भाषण देने के बाद, उन्होंने मार्क्विस की ओर ध्यान देना बंद कर दिया और मानो अनजाने में ही अपनी पूर्व मुद्रा और हावभाव में लौट आए।

"क्या आप रात का खाना नहीं खाएंगे?" उसने पूछा।

कोई जवाब नहीं मिला। उसने सवाल दोहराया।

"हे भगवान, नहीं," उन्होंने हड़बड़ी में कहा, मानो बीच में टोकने से नाराज़ हों, साथ ही उनके चेहरे पर एक तल्लीन भाव था, मानो उनकी हर इंद्रिय किसी गहन विचार में लीन हो गई हो। मार्क्विस ने मुंह बनाकर उनसे मुंह फेर लिया। उन्होंने मेरी ओर सिर हिलाया और फुसफुसाते हुए कहा, "विद्वानों में कभी-कभी बहुत अजीबोगरीब सनक आ जाती है।"

उसके अजीब व्यवहार से जरा भी विचलित हुए बिना, वह चुपचाप अपनी टोपी, शॉल और बोआ उतारने लगी; और उन्हें सोफे के पीछे फेंककर, उसने अपने बालों में

उंगलियां फिराईं, और बिखरे हुए घुंघराले बालों को झटकते हुए दर्पण की ओर मुड़ी। उसका चेहरा न तो जवान था, न खिलखिलाता, न ही नियमित रूप से सुंदर — लेकिन फिर भी, उस लंबी तराशी हुई नाक, उन कोमल और नींद से भरी आंखों और उस धूर्त होठों के चारों ओर हमेशा मंडराने वाली उस सौम्य मुस्कान की मदद से, अपने युग के सबसे महान व्यक्ति को मोहित करने में सक्षम था।

“आओ,” वह मेज की ओर बढ़ते हुए बोली। “चार्ल्स, एक सैंडविच ले लो और मुझे उस चिकन का एक टुकड़ा दे दो। हम तब तक एक-दूसरे का मनोरंजन कर सकते हैं जब तक मैकारा को होश नहीं आ जाता और वह एक समझदार ईसाई की तरह व्यवहार नहीं करती।”

पाठक, मैंने मकारा से यह नहीं पूछा कि क्या हुआ था, क्योंकि मुझे स्वयं ही इस बात का अच्छा-खासा अंदाज़ा था कि उनके स्वामी जिस गहन ध्यानमग्न अवस्था में बैठे थे, उसका कारण क्या था। मैं तुरंत सैंडविच और चिकन की चर्चा में लग गया, जो मार्क्विस ने उदारतापूर्वक मुझे दिए। वह भी बैठ गईं, और जब हम साथ में शराब पी रहे थे, तो गिलास के किनारे से झांकती उनकी कोमल आँखें, अपने प्रिय मित्र की उस विचित्र दुविधा के प्रति चिंता से कहीं अधिक सहजता से उन अच्छी चीजों का आनंद व्यक्त कर रही थीं, जिनमें वह चूल्हे के पास चुपचाप और बिना हिले-डुले बैठे थे। इसी बीच, मकारा की आँखों में जो आनंदमय मुस्कानें समय-समय पर चमक उठती थीं और उनके चेहरे पर धूप की तरह फैल जाती थीं, वे अब कम प्रभावी और लंबे अंतराल पर दिखाई देने लगीं। गहन संतुष्टि और तल्लीनता का लगभग कामुक भाव थकान में बदल गया। हमारी आवाज़ें मानो उन्हें याद दिला रही थीं। वह अपनी सीट पर हिले, फिर उठे, और लड़खड़ाते कदमों से कमरे में चहलकदमी करने लगे। उसकी आंखें - जो अभी भी भारी और धुंधली थीं - मेरी आंखों से मिलीं।

“अरे! क्या तुम हो?” उसने एक अजीब सी आवाज़ में कहा, जो शायद ही बोलने वाले के नियंत्रण में लग रही थी। “मुझे तो पता ही नहीं चला कि तुम कमरे में हो – और लुइसा भी! खैर, मैं ज़रूर मोटा हो गया था। (ज़ाहिर है, यह “बेहोशी” का एक मज़ाकिया विकल्प है: मैकारा अभी तक भाषा पर नियंत्रण नहीं रख पा रहा है)। और ब्रोमली ने आज रात क्या कहा? किसी ने मुझे कुछ देर पहले बताया था कि तुम चैपल में थी – कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है, लेकिन यह सब मेरा वहम भी हो सकता है! मुझे लगता है कि तुम मुझे आज रात कुछ अजीब मूड में समझोगी, लेकिन

मैं तुम्हें सीधे समझा देता हूँ – जैसे ही मैं थोड़ा संभल जाऊँगा।”

कांपते हाथों से उसने पानी का गिलास उंडेला, थोड़ा पिया और फिर अपनी उंगलियों को पानी में डुबोकर बचे हुए पानी से अपने माथे और कनपटी को ठंडा किया। “मेरा सिर दर्द कर रहा है,” उसने कहा। “मुझे यह प्रयोग बार-बार नहीं करना चाहिए।” बोलते समय उसका हाथ इतनी बुरी तरह कांप रहा था कि वह गिलास को मेज पर मुश्किल से ही रख पाया। अपनी इस कमजोर नस के लक्षण को देखकर वह उदास मुस्कान के साथ बोला, “सच में, टाउनशेंड! ज़रा ध्यान दीजिए! और आपको क्या लगता है कि इसका कारण क्या है?”

मैंने संक्षेप में कहा, "नशा। और वो भी एक बहुत ही अधार्मिक किस्म का। मैकारा, तुम जो कर रही हो उससे कहीं बेहतर है कि तुम तुरंत शराब पीना शुरू कर दो।"

“मेरी अंतरात्मा कसम,” विस्काउंट ने बैठते हुए और उसी कांपते हाथ से मेज पर प्रहार करते हुए उत्तर दिया। “टाउनशेंड, मुझे यकीन है कि आप सही हैं। मुझे अब यह एहसास होने लगा है कि मेरी यह प्रणाली, जिसे मैंने तर्कसंगत समझा था, सबसे बड़े प्रलोभन से भरी हुई है।”

सचमुच, पाठक, मैकारा जैसे व्यक्ति से निपटना मुश्किल है, जो अपनी कमजोरियों को भी छिपाने के लिए अपनी इच्छा से खुलकर बात करता है। चाहे वह कितनी भी बदनामी भरी स्थिति में क्यों न हो, वह बिना किसी शर्म के पलट जाता है और अपना बचाव करने के बजाय, यह कहकर इनकार करने के बजाय कि मामले वैसे नहीं हैं जैसा कि आप सोचते हैं, आमतौर पर अपनी स्थिति की सारी बदनामी स्वीकार कर लेता है और दार्शनिक गहराई से उन सभी उद्देश्यों और गुप्त कारणों का विस्तार से वर्णन करने लगता है जिनके कारण मामला इस स्थिति में पहुंचा है। इसी रणनीति के अनुसार विस्काउंट ने अपना आत्म-आरोप आगे बढ़ाया।

“जैसा कि आप जानते हैं, शाम सुहावनी थी,” उसने कहा, “और मैंने सोचा कि घाटी में थोड़ी देर टहल लूँ, ताकि दिन भर से छाए उदासी के भावों को कुछ राहत मिल सके। टाउनशेंड, मुझे यकीन है कि आप नहीं जानते कि निर्मल सूर्य, सुंदर खेतों और नदी के किनारे तक फैले हरे-भरे और चमकदार जंगलों को देखकर, मन में उदासी के सिवा कोई और भावना न आ पाना कैसा होता है। लेकिन मैं इस मन की स्थिति से परिचित हूँ—और जब मैं लुइसा के लॉन को घेरने वाले छोटे से द्वार से गुजरा, और मुड़कर हरी गली में रुका, और लॉरेल के पेड़ों के बीच चमकता हुआ लाल आकाश

देखा, जो आग की तरह साफ था, जिसे सूर्य पहाड़ियों के ऊपर छोड़ आया था, तो मुझे, टाउनशेंड, लगा कि भले ही दिन ढल रहा था और चमक रहा था, और कल का दिन कितना भी सुंदर होने का वादा कर रहा था, इस गर्मी की सुंदरता मेरे लिए कुछ भी नहीं थी—नहीं।"

"तो मैं घर की ओर चला; मैं इस कमरे में दाखिल हुआ, लुइसा को ढूंढने की उम्मीद में। वह वहाँ नहीं थी, और जब मैंने उसके बारे में पूछा तो मुझे बताया गया कि वह कुछ घंटों तक नहीं लौटेगी। मैं इंतज़ार करने के लिए बैठ गया। शाम ढलने लगी, और उस मनोदशा में मैंने देखा कि वह धीरे-धीरे हर वस्तु को, झाड़ियों के हर पेड़ को, ऐसे भेसों में ढक रही थी, जैसे किसी प्रेतवाधित, विचलित, काली कल्पना का सुझाव हो। स्मृति ने मुझे फुसफुसाया कि बीते वर्षों में मैं ऐसे समय में, ऐसे दृश्य में बैठा हो सकता था; और उगते चाँद से, जिस अंधेरे परिदृश्य को मैं देख रहा था, उस शांत छोटे से कमरे से जहाँ मैं बैठा था, वर्तमान के आनंद से भरी और भविष्य के लिए कोमल खुशी से परिपूर्ण छवियाँ एकत्रित कर सकता था। क्या अब भी ऐसा ही था? नहीं, श्री टाउनशेंड; मैं ऐसी मनस्थिति में था जिसका वर्णन करके मैं आपका मज़ाक नहीं उड़ाऊँगा। लेकिन उदासी, निराशा असहनीय हो गई; भयानक आशंकाएँ मुझ पर हावी हो गईं, जिनकी शक्ति का मैं सामना नहीं कर सका। मैंने खुद को किसी भयानक आपदा के कगार पर महसूस किया और एक अस्पष्ट प्रभाव लगातार बना रहा। एक अज्ञात व्यक्ति ने मुझे धक्का देकर गिरा दिया, और जीवन और बुद्धि को कसकर पकड़े रहने के बावजूद, मैं मृत्यु के भय की व्याकुलता में लगभग बेहोश हो गया।

"अब, टाउनशेंड, इतना कष्ट सहते हुए, मैंने कितनी बड़ी गलती की जब मैंने उस असाधारण शक्ति का सहारा लिया जो एक साधारण मादक पदार्थ ने मुझे प्रदान की थी? मैंने यह छोटा सा डिब्बा खोला, और महोदय, मैंने ज़रा भी संकोच नहीं किया। नहीं, मैंने इसे चखा। परिवर्तन तुरंत हुआ। पाँच मिनट में मैं, जो उस आकाश के नीचे सबसे दुखी प्राणी था, एक तर्कसंगत, सुखी व्यक्ति बन गया, मन की शांति से तृप्त, शरीर के विश्राम से मुक्त, मधुर विचार उत्पन्न करने में सक्षम, आनंद का अनुभव करने में सक्षम, उन पीड़ाओं के बंधनों को तोड़ने में सक्षम जिन्होंने मुझे जकड़ रखा था, और हल्के मस्तिष्क और ऊँची आत्मा के साथ कल्पना के सबसे सुंदर क्षेत्रों में विलीन हो गया। अब, टाउनशेंड, मैंने इससे किसी भी साथी प्राणी को चोट नहीं पहुँचाई: मैंने स्वयं को भी क्रूरता से नहीं मारा। शायद इस प्रकार के भोग से मेरा

जीवन छोटा हो जाता [युवा ब्रोंटे इस तरह के मादक पदार्थों के अनुभवों के वर्णन से परिचित रही होंगी। थॉमस डी क्विन्सी की 'कन्फेशंस ऑफ एन इंग्लिश ओपियम-ईटर' 1822 में प्रकाशित हुई थी, और इस पर बहुत चर्चा हुई थी और इसका संदर्भ दिया गया था] इसके बाद ब्लैकवुड्स मैगज़ीन में] — लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है? अनंत नींद तो कभी न कभी आ ही जाएगी, चाहे जल्दी आए या देर से।

मैंने शांत भाव से जवाब दिया, "मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लुइसा, क्या तुम्हें है?"

“मुझे उस अफीम से मिलने वाला आनंद समझ में नहीं आता,” मार्क्विस ने कहा। “और उदासी के बारे में, मैं अक्सर मैकारा से कहती हूँ कि मुझे लगता है कि उसमें बहुत कुछ कल्पनाशीलता का अंश होता है।”

विस्काउंट ने धीरे से आह भरी और अपना हाथ उसके हाथ पर रखते हुए, अपनी मुरझाई उंगलियों से उसे हल्के से दबाते हुए कहा, "उम्मीद है तुम लंबे समय तक ऐसा ही सोचोगी, लुइसा!"

यह देखकर कि उनके स्वामी बहुत भावुक थे और मेरी सेवा करने के लिए तैयार नहीं थे, मैंने थोड़ी देर बाद उठकर विदा ली। मार्क्विस मुझे हॉल के दरवाजे तक छोड़ने आईं।

“क्या वो पागल नहीं है, चार्ल्स?” उसने कहा। “कमज़ोरी को लेकर इतना बवाल मचाना क्या बकवास है! सच कहूँ तो, ये मुझे ऐशवर्थ की याद दिलाता है। बेचारा, कुछ दिनों तक ज़ोरदार उपदेश देने और उससे भी ज़्यादा शराब पीने के बाद कहता था कि उसके बगल में कोई बड़बड़ाता हुआ शैतान बैठा है। उसने एक बार ब्रॉमली को ये बताया था, और ब्रॉमली ने उसकी बात मान ली थी। क्या तुम भी ऐसा ही करते, चार्ल्स?”

“अप्रत्यक्ष रूप से, महोदया। शुभ रात्रि।”

अध्याय दो

चार्ल्स टाउनशेंड ने ग्रामीण इलाके की यात्रा करने का फैसला किया।

मुझे शहर पसंद है। जब तक सर्दी रहती है, मुझे इसके गर्म और भीड़भाड़ वाले इलाकों से दूर ले जाना आसान नहीं होगा। यहाँ तक कि जब तक वसंत अपनी हल्की ठंडक के साथ अपनी लंबी बौछारें और रुक-रुक कर आती धूप बिखेरता रहता है, तब तक मैं रात में थिएटर और सुबह समाचार-कक्ष (1830 के दशक में, समाचार पत्र पढ़ने के लिए अलग रखा गया कमरा) में ही रहना पसंद करूँगा। लेकिन आखिरकार, मैं स्वीकार करता हूँ, जैसे-जैसे जून आगे बढ़ता है और गर्म दिनों, कोमल सूर्यास्त और सुहावनी चांदनी रातों की एक लंबी श्रृंखला शुरू होती है, मुझे एक यात्रा की सहज इच्छा होने लगती है, गाँव की सैर की, कहीं दूर किसी ऐसी जगह की यात्रा की जहाँ जंगल हों, देहाती पहाड़ियाँ हों और चमकीले कंकड़ वाले झरने हों।

यह भावना मुझ पर कुछ दिन पहले तब प्रबल हुई, जब ग्रांट्स कॉफी हाउस में बैठे हुए मैंने एक लोकप्रिय अखबार उठाया, जिसके कॉलम निम्नलिखित जैसी घोषणाओं से भरे हुए थे: उत्तरी क्षेत्र में लॉर्ड सेंट क्लेयर के निवास स्थान, रॉसलिन कैसल में उनके परिवार और विशिष्ट अतिथियों के स्वागत की तैयारियां चल रही हैं, जिन्हें सेंट क्लेयर एस्टेट के उस हिस्से में व्याप्त सुंदर वन दृश्यों के बीच ग्रीष्मकालीन प्रवास करने के लिए आमंत्रित किया गया है।

फिडेना के राजकुमार ऑगस्टस कल अपने शिक्षक के साथ नॉर्थवुड-ज़ारा के लिए रवाना हुए, जहां फिडेना के ड्यूक और डचेस कुछ दिनों में उनका अनुसरण करेंगे।

लॉर्ड और लेडी स्टुअर्टविले कल शहर से रवाना होंगे। उनका गंतव्य अंग्रिया में स्टुअर्टविले पार्क है।

नॉर्थेंगरलैंड के अर्ल अभी भी सेल्डन हाउस में हैं। ऐसा माना जाता है कि वे राजनीति में बहुत कम रुचि रखते हैं।

जनरल थॉर्नटन और उनकी पत्नी पिछले सप्ताह गिरनिंगटन हॉल के लिए रवाना हुए। जनरल का इरादा एंग्रिया में स्थित अपनी पहले से ही समृद्ध वनभूमि में वृक्षारोपण को और बढ़ाने का है।

अर्ल और काउंटेस ऑफ अरुंडेल, अरुंडेल प्रांत में स्थित अपने निवास स्थान समरफील्ड हाउस में हैं।

जनरल और श्रीमती ग्रेनविले ने गर्मियों का समय वार्नर हॉल में बिताने का प्रस्ताव

रखा है, जो एंग्रिया के प्रीमियर डब्ल्यू.एच. वार्नर एस्क्वायर का निवास स्थान है।

बैंकर जॉन बेलिंघम एस्क्वायर गोल्डथोर्प मोब्रे में अवकाश पर हैं। चिकित्सकों ने श्री बेलिंघम के स्वास्थ्य में पूर्ण सुधार के लिए समुद्र में स्नान करने की सलाह दी है, जो इन्फ्लूएंजा के गंभीर प्रकोप से काफी प्रभावित हुआ है।

मार्क्विस ऑफ हार्लो, अपने कुछ मित्रों, जिनमें जे. बिलिंगर एस्क्वायर, मिस्टर मैक्वीन आदि शामिल हैं, कर्नल लकीमैन के कंट्री हाउस, कैटन लॉज में राजकीय चिंताओं से कुछ समय के लिए विश्राम का आनंद ले रहे हैं।

लॉर्ड चार्ल्स और उनकी बहनें लेडी रिचटन, मोब्रे में अपनी कुलीन माता के साथ आ गए हैं। सिगस्टन होटल पूरी तरह से लेडी रिचटन और उनके परिवार के लिए आरक्षित है। लॉर्ड चार्ल्स फ्लावर, जो अपनी बहनों के साथ खसरा से उबर रहे हैं, परिवार के चिकित्सक डॉ. मॉरिसन की देखरेख में हैं। स्वयं माननीय राजदूत दक्षिण में हैं।

इन अनुच्छेदों से स्पष्ट था कि वह मौसम अब पूरी तरह समाप्त हो चुका था। फ्लावर हाउस में अब कोई सभा नहीं होती थी, फिडेना पैलेस में अब कोई चुनिंदा रात्रिभोज नहीं होते थे। थॉर्नटन होटल के बार बंद हो चुके थे, एलिंगटन हॉल और वेलेस्ली हाउस के आसपास के चौक सुनसान थे, कैसलरेघ के घर वीरान थे, अरुंडेल के पूजा स्थल अंधकार में डूबे हुए थे! जबकि अब, दूरदराज के जंगलों में, गिरिंगटन हॉल की चिमनियों से नीला धुआँ निकल रहा था, जो इस बात का संकेत था कि वह पुराना स्थान फिर से आबाद हो गया है; दूरदराज के मैदानों में, समरफील्ड हाउस की चौड़ी खिड़कियाँ खोल दी गई थीं, ताकि उन विशाल मैदानों पर बहने वाली हवा उन कमरों में प्रवेश कर सके जहाँ शीशे साफ कर दिए गए थे, कालीन बिछा दिए गए थे और सोफे पर हॉलैंड की चादरें बिछा दी गई थीं। स्टुअर्टविले पार्क में हर पर्दा हटा दिया गया था, हर शटर खोल दिया गया था, और खिड़कियाँ लाल पर्दों के माध्यम से उस हरे-भरे टीले की ओर साहसपूर्वक देख रही थीं जहाँ एडवर्डस्टन अपने युवा वृक्षारोपण पर मुस्कुराता है। गर्मी की एक सुबह, वार्नर हॉल में कौवे पहले से कहीं अधिक खुशी से कांव-कांव कर रहे थे, जब एंग्रिया के प्रधानमंत्री अपने घर के सामने की सीढ़ियों पर खड़े होकर अपने शांत मैदानों और घने जंगलों और हॉवर्ड के लंबे, अंधेरे मैदानों पर उगते सूरज को देख रहे थे।

मैं काव्यात्मक हो सकता था। मैं बीते वर्षों के प्रकाश से सराबोर, अधिक दूर और

शांत दृश्यों को याद कर सकता था, जो 1933 के अभियान और 1936 के विद्रोह से कहीं अधिक उच्चतर—क्योंकि पुराने—संबंधों से पवित्र थे। मैं यह पूछ सकता था कि सूर्योदय अभी भी एल्म के पेड़ों और वुड चर्च के बुर्ज को कैसे सुशोभित करता है। लेकिन मैंने खुद को रोका और बस यही सवाल किया, क्या मुझे बाहर निकलना चाहिए या नहीं? और मैं अपने कदम किधर बढ़ाऊँ? मोब्रे विकारेज के सामने ग्रेहाउंड में अपने पुराने ठिकाने पर? बोल्शिल की तलहटी में मेरे मित्र टॉम इंगम के फार्म पर? फिडेना के आसपास उत्तर की ओर रहने वाले मेरे कुछ परिचितों के पास? या दक्षिण में मेरे मित्र बिलिंगर के पैतृक घर से कुछ ही दूरी पर स्थित किसी आरामदायक ग्रामीण आवास में? समय और संयोग ही तय करेंगे। मेरे पास यात्रा के लिए पर्याप्त धन है; मैंने अभी-अभी अपना उन्नीसवाँ वर्ष पूरा किया है और बीसवें वर्ष में प्रवेश किया है; मैं एक सुगठित व्यक्तित्व, एक सक्षम विद्वान, एक लोकप्रिय लेखक, एक सज्जन और एक अनुभवी व्यक्ति हूँ। तो फिर मुझे कौन रोकेगा? क्या मैं अपनी मर्ज़ी से नहीं घूम सकता? चलो, पाठक, आइए, हम अपना थैला पैक करते हैं। एक सूची बनाइए: सामान - 4 कमीज़ें, 6 फ्रंट, 4 जोड़ी सूती, 2 जोड़ी रेशमी मोज़े, 1 जोड़ी मोरक्को पंप, 1 ड्रेस सैटिन वेस्टकोट, 1 ड्रेस कोट, 2 जोड़ी ड्रेस पैंट, 1 जोड़ी नैंकीन [एक प्रकार के सूती कपड़े से बनी पतलून], 1 ब्रश और कंघी, 1 बोतल मकासर तेल, 1 टूथब्रश, एक डिब्बा वनस्पति टूथपाउडर, 1 डिब्बा गुलाब क्रीम, 1 केस रेज़र (ध्यान दें: केवल दिखाने के लिए, इस्तेमाल के लिए नहीं), बादाम साबुन की दो टिकिया, 1 बोतल इत्र, 1 बोतल मिले फ्लावर्स इत्र, 1 जोड़ी कर्लिंग आयरन। बस! अब मैं अपना नौकर खुद हूँ! पाठक, अगर आप तैयार हैं, तो मैं भी तैयार हूँ। कोच आ रहा है, हेलो! उससे मिलने के लिए पूरी रफ्तार से निकल पड़े!

अध्याय 3

स्टैनक्लिफ होटल में, व्यावसायिक यात्रियों के बीच

"खैर, मुझे लगता है कि मुझे ज़मोर्ना में पूरी रात रुकना पड़ेगा। जून की शाम बहुत सुहावनी है।"

स्टैनक्लिफ होटल के यात्री कक्ष में खड़े होकर, खिड़की से मैं ज़मोर्ना की थॉर्नटन स्ट्रीट पर छातों, लबादों और रेनकोटों को आते-जाते देख रहा था। तभी मन ही मन मैं ये बातें कर रहा था। बाज़ार का दिन था और कपड़े बेचने वालों की गाड़ियाँ, जो अब अपने घर लौट रही थीं, तेज़ बारिश और रुक-रुक कर चलने वाली तेज़ हवाओं के बीच फुटपाथ पर दौड़ रही थीं। उस सुहावनी जून की शाम ने मानो अपना अंत कर लिया था। बीच-बीच में लगभग आधा दर्जन घुड़सवार व्यापारियों का एक काफिला पूरी रफ्तार से खिड़की के सामने से गुज़रता था। ये सज्जन निःसंदेह वूलपैक या स्टुअर्ट आर्म्स में एक साथ भोजन कर चुके थे, और उनकी फुर्ती, उनके चेहरों की प्रसन्नता और उनके बीच हंसी-मजाक की गूंज से साफ पता चलता था कि वे सभी - तकनीकी भाषा में कहें तो - बाजार से ताज़ा (नशे में धुत, जिसका अर्थ है "किसानों में अक्सर पाई जाने वाली संयम की संदिग्ध स्थिति" (1841; ओईडी)) थे। कई बग्गियां भी इतनी तेज़ी से निकल रही थीं कि यह स्पष्ट था कि उनमें बैठे लोगों ने ब्रांडी और पानी का पर्याप्त स्टॉक जमा कर रखा था। सड़क पर तेज़ हवा और लगातार भारी बारिश के बावजूद, ये नायक, वाटरप्रूफ केप की बाहरी सुरक्षा और उतने ही वाटरप्रूफ कॉन्यैक के आंतरिक गुणों से सुरक्षित, खुले एडवर्डस्टन या एड्रियानोपोलिटन की सड़कों की ओर दौड़ पड़े, मानो उस तूफान को चुनौती दे रहे हों जो शहर के आंशिक आश्रय से बाहर निकलने पर और भी ज़ोर से उनका सामना करने वाला था।

स्टैनक्लिफ होटल के यात्री कक्ष में किसी साधु की कुटिया जैसी शांति और एकांत बिल्कुल नहीं था। अलग-अलग तरह के सामान बेचने वाले व्यापारी (कमर्शियल ट्रैवलर्स) लगातार होटल के भीड़भाड़ वाले गलियारे से अंदर-बाहर आते-जाते रहते थे, जिसका गीला और कीचड़ भरा फर्श बाहर की सड़कों की हालत बयां कर रहा था। फिर वेटरों को पुकारने की तेज़ आवाज़ें, थकी हुई घंटी की लगातार घंटियाँ, तरह-तरह के थैलों और सूटकेसों के बारे में आदेश, कई गीले ओवरकोट और भीगे हुए मोटे ओवरकोट जिन्हें रसोई की आग पर तुरंत सुखाने के लिए लाया जाता था, और रहस्यमय विषयों पर बहसें जो डरे हुए वेटर और पीड़ित शिकायतकर्ता के अलावा किसी को समझ में नहीं आती थीं। एक गुस्सैल व्यक्ति, जिसकी गाड़ी दोपहर भर हुई

बारिश से भी तेज़ मूसलाधार बारिश के बीच होटल पहुँची थी, एक गंभीर और डरावने चेहरे के साथ कमरे में दाखिल हुआ। जैसे ही वह अपने तीन परतों वाले ओवरकोट को उतार रहा था, जिससे पानी की धाराएँ टपक रही थीं, चूल्हे की हालत देखकर उसे घोर भय का अनुभव हुआ। वह तुरंत दरवाजे की ओर भागा।

"वेटर! वेटर!! वेटर!!!" उसने शेर जैसी आवाज में चिल्लाया।

वेटर आया। उसे बुलाने वाला व्यक्ति मोटा और क्रोधी था; उसका गुस्सा पहले तो उसकी वाणी को अवरुद्ध करता प्रतीत हुआ, लेकिन अधिक देर तक नहीं। उसने बोलना शुरू किया:

"महाराज, उस अंगीठी को देखिए! क्या आप इसे आराम कहते हैं—अच्छी आग की जगह नीले और पीले कागज के भद्दे टुकड़े?"

"महोदय, जून का महीना है," वेटर ने जवाब दिया। "18 तारीख है। मई के अंत के बाद हम निचले कमरों में आग नहीं जलाते।"

"तुम्हें धिक्कार है," थैलाधारी ने कहा। "तुरंत आग जलाओ, वरना मैं तुम्हारे मालिक को बुलवाकर उसके सामने खूब खरी-खोटी सुनाऊँगा। सुन लो, स्टैनक्लिफ के यहाँ तुम्हारे लोग हद से ज़्यादा लापरवाह हैं। पिछली बार यहाँ मैंने जो घटिया खाना खाया था, वो तो बिल्कुल ही घटिया था! लेकिन मैं वादा करता हूँ, अगर तुमने मुझे फिर से ऐसा ही खाना खिलाया, तो मैं अगली बार स्टुअर्ट आर्म्स में ठहरूँगा। आग जलाओ, साहब, और मेरा कोट ले आओ। अगर तुमने उस पर एक भी गीला धागा छोड़ा, तो मैं उसे हिसाब से घटा दूँगा। रात के खाने में मेरे लिए गरमा गरम पंच और सीपियाँ लाना, और ध्यान रखना कि नौकरानी मेरे बिस्तर को अच्छे से हवा दे दे। पिछली बार जब मैं यहाँ सोया था, चादरें गीली थीं, अगर मैंने ऐसा नहीं किया होता, तो मेरी तो वाट लग जाती।"

आपका एंग्रियन व्यावसायिक यात्री दुनिया के सबसे बड़े बदमाश लोगों में से एक है, ठीक उसी तरह जैसे आपका एंग्रियन अखबार का संपादक। इन दोनों व्यक्तियों से अधिक सुनियोजित रूप से सिद्धांतहीन और फिजूलखर्ची करने वाला कोई और व्यक्ति कल्पना करना मुश्किल है। इन बुराइयों के लक्षण उन छह सज्जनों के चेहरों पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे जो उस तूफानी शाम को उस अपार्टमेंट में इकट्ठा हुए थे जिसका परिचय मैंने अपने पाठकों को कराया है। उनकी बातचीत में कोई कमी नहीं आई। बर्तनों और घंटियों की खनक के बीच, कुछ इस तरह के वाक्य सुनाई दिए:

“ब्राउन, मैं कहता हूँ, तुम भाग्यशाली हो कि आज रात तुम्हें और आगे नहीं जाना है!”

"अच्छा, और आप भी तो वैसे ही हैं, है ना?"

“मैं! अगर मूसलाधार बारिश भी हुई तो भी मुझे दस मील और आगे बढ़ना होगा: मुझे आज रात नौ बजे तक एडवर्डस्टन पहुंचना है ताकि मैं अपने एक साथी से मिल सकूं।”

“इनमें से कौन: कल्पीपर या हॉस्किन्स?”

“कल्पीपर, एसी-डी क्रॉस-ग्रेन्ड डॉग।”

लाल घुंघराले बालों और मखमली जैकेट पहने एक युवा फैशनेबल व्यक्ति ने बीच में टोकते हुए कहा, "जून के हिसाब से मौसम कितना सुहाना है, है ना?"

"हाँ, बिल्कुल तुम्हारे चेहरे की तरह सुंदर," उस क्रोधित व्यक्ति ने उत्तर दिया जिसने आग जलाने का आदेश दिया था, और जो अब अपने दोनों पैर फेंडर पर रखकर, उन कुछ धुएँदार कोयलों के ठीक सामने बैठा था जिन्हें उसके आदेशों का पालन करते हुए एक साथ ढेर कर दिया गया था।

"क्या आप मुझे एक नोट बदल सकते हैं?" एक व्यक्ति ने पूछा, जिसकी ठुड्डी सफेद शॉल से ढकी हुई थी।

“बैंक ऑफ एंग्रिया या निजी बैंक?” जिस व्यक्ति से उन्होंने बात की थी, उसने पूछा।

“निजी बैंक — हमारे अपने अमोस किर्कवॉल और उनके बेटों का।”

"मैं इसे हमारे पाउंड के नोटों से बदल सकता हूँ - एडवर्ड पर्सी और स्टीटन के नोट: मैंने उन्हें आज दोपहर उनके गोदाम से लिया है।"

"मैं इन्हें सॉवरेन सिक्कों से कहीं ज्यादा पसंद करूंगा - इनके नकली होने की संभावना कम है।"

"अच्छा, तो आज राजनीति कैसी चल रही है?" सोने की चेन पहने एक सजग यात्री ने अखबार पढ़ने में मग्न एक विद्वान व्यक्ति के कंधे पर थपथपाते हुए पूछा।

“भगवान जाने!” जवाब था। “प्रधानमंत्री के इस्तीफे की खबर सुनकर मुझे ज्यादा हैरानी नहीं होगी।”

“और अगर वह अपना कर्तव्य निभाएगा तो वह ऐसा करेगा,” तीसरे व्यक्ति ने कहा। “क्या आपने आज सुबह का युद्ध समाचार देखा है? सच में, उनके लोग तो हद

ही कर देंगे!”

“मर्दाना, स्वतंत्र प्रकाशन, वॉर डिस्पैच,” पहले वक्ता ने उत्तर दिया। “यह पूरे देश की भावनाओं को व्यक्त करता है। धिक्कार है इस पर – हमें अपने अधिकारों का दावा करने से कौन रोक सकता है? क्या हम सब जन्म से स्वतंत्र एंग्रियन नहीं हैं?”

“द राइजिंग सन का कहना है कि पर्सी ने अपना इस्तीफा दे दिया है और उसे वापस लेने के लिए कहा गया है। इस बारे में आपकी क्या राय है?”

"उसे कम से कम इन तीन वर्षों से ज़ार [ज़मोर्ना के ड्यूक] के खिलाफ जमा किए गए अपमानों के लंबे बिल को ब्याज सहित चुकाने का एक शानदार अवसर मिला था।"

लेकिन मुझे लगता है कि अगर ऐसा है तो वह इस अवसर को यूं ही जाने नहीं देगा। ब्रांडी और पानी! वह अगले सत्रों में इन्हें शानदार तरीके से परोसेगा।

"ईश्वर की कसम, वह ऐसा जरूर करेगा, और अगले सत्रों से पहले ही। वैसे, लोग कहते हैं कि युद्ध संबंधी रिपोर्ट में शामिल कुछ नेताओं के नाम उसी ने लिखे हैं।"

“बहुत संभावना है; वह एक तुरुप का पत्ता है। क्या आप उसके साथ लेन-देन करते हैं?”

"नहीं, हमारा घर बर्तनों की कतार में है।"

"हाँ, हम करते थे, या यूँ कहें कि कुछ समय पहले करते थे; लेकिन उसने मजीठ की कुछ बोतलों के सौदे में इतनी बड़ी गड़बड़ की और उस समय भुगतान के लिए इतनी जल्दी तैयार हो गया जब हमारे पास नकदी की कमी थी, कि हमारे वरिष्ठ साझेदार ने बाइबिल की कसम खाकर कहा कि वह अब उस भट्टी में अपने हाथ नहीं जलाएगा।"

अब तक चुपचाप बैठा वह क्रोधित व्यक्ति, अब तक भड़की हुई आग से मुँह मोड़कर दबी आवाज़ में बोला, “श्री ड्रेक, मैं आपको मजीठ, नील, लकड़ी और बरिला जैसी सभी गुणवत्ता की लकड़ियाँ उचित दामों पर उपलब्ध करा सकता हूँ। यदि आप मुझे एक ऑर्डर दे दें तो मैं आपका आभारी रहूँगा। क्या मैं आपको नीचे उतार दूँ?” उसने एक जेब से पेंसिल निकाली और उसे म्यान से बाहर निकाला।

“किस घराने का?” श्री ड्रेक ने पूछा।

"मैं मिल्नेस, डफ एंड स्टीफेंसन, डायर्स, अनवेल के लिए लिखता हूँ," झगड़ालू व्यक्ति ने उत्तर दिया।

“हम्फ!” ड्रेक ने व्यंग्य भरे लहजे में जवाब दिया। “मैंने उस कंपनी का ज़िक्र कहीं देखा है।” उसने कुछ पल सोचने का नाटक किया, फिर उंगलियां चटकाते हुए बोला: “मुझे याद आ गया! यह गजट में था। मुझे लगता है, उन्होंने एक महीने पहले दूसरा लाभांश दिया था – प्रति पाउंड आधा क्राउन।”

क्रोधित व्यक्ति ने कुछ नहीं कहा; वह स्तब्ध रह गया था। लेकिन वह अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गया, और दोनों पैर फेंडर से उठाकर एक-एक करके चूल्हे पर रख दिए। उसका पसंदीदा चूल्हा, जो अब साफ और लाल जल रहा था, उसे हर मुश्किल में सांत्वना देता प्रतीत हो रहा था।

“अरे वाह, मौसम साफ हो रहा है!” नौ बजे तक एडवर्डस्टन पहुँचने की अपनी प्रतिबद्धता बताने वाले उस सज्जन ने अचानक कहा। वह कमरे से बाहर भागा और जल्दी से अपनी गाड़ी मंगवाकर वापस आ गया; और एक बड़े गिलास का सारा पेय पीकर उसने डॉसन से अपना रेनकोट पहनाने में मदद करने की विनती की। फिर, जैसे ही उसने अपने गले में रेनकोट का कॉलर ठीक किया, उसने डॉसन को स्नेहपूर्ण विदाई देते हुए कहा:

"जाओ बूढ़े! अलविदा! तुम्हारी नाक देखकर लगता है कि अगला चक्कर तुम्हें थका देगा।"

मैंने खिड़की से उसे अपना गिटार उठाते और अभी भी गीली सड़क पर धूमकेतु की तरह तेजी से नीचे जाते देखा।

सच कहूँ तो, उस दिन पहली बार बादल छंटने लगे थे। बारिश रुक गई थी; हवा भी थम गई थी; और मुझे लगता है, अगर मैं पश्चिम देख पाता, तो सूर्यास्त के कुछ ही मिनटों बाद सूरज ओलंपियन घाटी पर अपनी आखिरी किरण बिखेर रहा था [एंग्रियन कुलीन वर्ग के घर ओलंपियन घाटी में हैं]। कई यात्री उठ खड़े हुए। सबने अपने-अपने वाहन निकाले और कोट-चोगा पहन लिए। कुछ ही मिनटों में कमरा खाली हो गया, सिवाय दो-तीन लोगों के जिनका इरादा रात के लिए स्टैनक्लिफ के यहाँ ठहरने का था। जब ये लोग पेशेवर विषयों पर चर्चा कर रहे थे, मैं खिड़की पर बैठा रहा और उन यात्रियों को देखता रहा जिन्हें बरसात के दिन के अंत में सूरज की किरणें अपनी ओर खींच लाई थीं।

खास तौर पर, मैंने सामने वाली एक शानदार दुकान के दरवाजे पर किसी का इंतज़ार करती हुई एक खूबसूरत महिला की हरकतों पर ध्यान दिया। हरे पर्दे को

हटाकर, मैंने उसका ध्यान खींचने की कोशिश की, और चुटकी भर तंबाकू निकालने के बहाने एक सोने की नसवार दिखाई, साथ ही अपने सफेद, कुलीन हाथ में सजी दो-तीन चमकीली अंगूठियां भी दिखाईं। उसकी नज़र मेरी चमक पर पड़ी। उसने अपने घने, चमकदार और रेशमी बालों के बीच से मेरी तरफ देखा, जो असली लाल रंग के थे। फिर उसकी नज़र मुझसे हटकर अपनी हरी रेशमी फ्रॉक और सुंदर सैंडल पहने पैरों पर चली गई। मुझे लगा कि वह मुस्कुराई। चाहे वह मुस्कुराई हो या नहीं, मैंने भी बड़ी मोहक मुस्कान के साथ जवाब दिया। वह शरमा गई। उसकी इस सहानुभूति से उत्साहित होकर, मैंने अपना हाथ चूमकर उसे दिया। वह खिलखिलाकर हंसी और दुकान के अंदर चली गई। जब मैं व्यर्थ ही उसकी आकृति को पहचानने की कोशिश कर रहा था, जिसकी धुंधली रूपरेखा दुकान के दरवाजे पर लटकते रेशम और प्रिंट के झुमकों से और भी बढ़ गई थी, तभी किसी ने मेरा हाथ छुआ। मैं मुड़ा। वह एक वेटर था।

"महोदय, कृपया आपकी आवश्यकता है।"

मुझे कौन चाहता है?

"ऊपर वाले कमरे में एक सज्जन रहते हैं। वे आज दोपहर आए थे। उन्होंने यहाँ भोजन किया। मैं अभी-अभी शराब लेकर आया हूँ, और उन्होंने मुझसे कहा कि मैं यात्री कक्ष में ठहरे उस युवक को बता दूँ जिसने गहरे रंग का फ्रॉक-कोट और सफेद जींस (मोटे सूती कपड़े की पतलून) पहनी हुई थी कि उन्हें आज शाम उनकी संगति पाकर खुशी होगी।"

मैंने पूछा, "क्या आप जानते हैं कि वह कौन है?"

“मैंने उनका नाम नहीं सुना है, महोदय, लेकिन वे अपनी गाड़ी में आए थे - एक शानदार बरोच गाड़ी। देखने में फौजी लग रहे थे। मुझे लगता है कि वे सेना में कोई अधिकारी होंगे।”

“ठीक है,” मैंने कहा, “मुझे उनके अपार्टमेंट तक ले चलो,” और चप्पल पहने वेटर के मेरे आगे चलने पर मैं थोड़ी उत्सुकता से उसके पीछे-पीछे गया यह देखने के लिए कि इस आलीशान बरोच गाड़ी का मालिक कौन हो सकता है। वैसे इसमें कुछ भी अजीब नहीं था, क्योंकि ज़मोर्ना का प्रमुख होटल होने के नाते स्टैनक्लिफ़्स में हर दिन कुलीन मेहमान आते थे। स्वयं ज़ार भी अपनी राजधानी आने-जाने के दौरान अक्सर यहीं घोड़े बदलते थे।

अध्याय 4

चार्ल्स टाउनशेंड को एडवर्डस्टन में ज़मोर्ना की हार के बाद उसके मुकदमे की याद आती है और वह अपने एक पुराने दोस्त से मिलता है।

सराय के गलियारे से गुज़रते हुए—जो पहले से कहीं ज़्यादा गीला और गंदा था, और चारों ओर कोलाहल मचा हुआ था क्योंकि शाम की वर्डोपोलिटन कोच अभी-अभी आई थी और यात्री रात के खाने, बिस्तर और कमरों के लिए पुकार रहे थे और साथ ही अपने सामान के पीछे बेतहाशा भाग रहे थे—मैं कहता हूँ, इस समृद्ध भीड़भाड़ से गुज़रते हुए, जिसके दौरान मैं लगभग एक महिला और एक छोटी बच्ची को कुचलने ही वाला था और इसके बदले में उनके साथी, मूंछों वाले एक बड़े आदमी ने मुझे बदतमीज़ बदमाश कहा—मैं एक बार फिर दोहराता हूँ, इस क्षेत्र से गुज़रते हुए जहाँ एक महिला अपनी बाहों में एक बच्चे के साथ—जो पूरी तरह भीगी हुई थी, क्योंकि वह कोच के बाहर बैठी थी—पूरी तेज़ी से मेरी ओर आई, अंततः, दूसरे लंबे गलियारे के कोने को मोड़कर और दो बड़े तह वाले दरवाजों से गुज़रते हुए, मैंने खुद को एक अलग क्षेत्र में पाया।

यह एक हॉल था जिसके चारों ओर कमरे थे, हर दरवाजे पर हरी चटाइयाँ बिछी थीं, बीच में एक लैंप था, एक चौड़ी सीढ़ी ऊपर एक गैलरी तक जाती थी, जो हॉल के तीन तरफ फैली हुई थी, और चौथी तरफ एक बड़ी मेहराबदार खिड़की के लिए जगह छोड़ी गई थी। यहाँ सब कुछ साफ-सुथरा, शांत और भव्य था। यह होटल का नया हिस्सा था, जिसका निर्माण स्वतंत्रता के वर्ष के बाद हुआ था। उससे पहले, स्टैनक्लिफ्स एक पुराना, काला सा दिखने वाला सार्वजनिक होटल था, जिसका सबसे अच्छा कमरा भी उसके वर्तमान यात्रियों के कमरे से अधिक सुंदर ढंग से सुसज्जित नहीं था। जैसे ही मैं सीढ़ियों से ऊपर चढ़ रहा था, संयोग से खिड़की से बाहर देखने पर मुझे उस नए कोर्ट-हाउस का पूरा और भव्य दृश्य दिखाई दिया, जो

अपने मजबूत तहखाने पर खड़ा होकर ज़मोर्ना के पहले सराय के सामने भव्यता से खड़ा था। वहीं, एडवर्डस्टन के विनाशकारी दिन के बाद, जेरेमिया सिम्पसन ने अपना कोर्ट मार्शल शुरू किया था; ठीक ऐसी ही एक शाम को। ठीक इसी समय, जब गोधूलि बेला सूर्यास्त को अंतिम रूप दे रही थी, एक पगड़ीधारी व्यक्ति, सुल्तान के समान फर वाले वस्त्र पहने और कमर से लटकती शॉल ओढ़े, उन सीढ़ियों पर चढ़ा और, जबकि उसके नीचे की पूरी चौड़ी और लंबी सड़क सिरों के समुद्र और अजीब चीखों के नरक से भरी हुई थी, चिल्लाया: "सैनिकों, कैदी को लाओ!"

फिर, भीड़ को चीरते हुए, जवान और बूढ़े सभी को रौंदते हुए, जूलियन गॉर्डन के सैनिक क्वाशिया के घंटों की गड़गड़ाहट और मदीना के ढोलों की गड़गड़ाहट के बीच टूट पड़े। अदालत भवन पर लगी एक तोप भीड़ के सिर पर चलाई गई, जैसा कि बाद में हाउस ऑफ पीयर्स के समक्ष शपथ ली गई। धुएं के बीच कैदी मुश्किल से दिखाई दे रहा था, लेकिन उसका सिर नंगा था, हाथ बंधे हुए थे; अदालत भवन ने उसे अंदर ले लिया और भीड़ के लिए दरवाजा बंद कर दिया गया।

“यही कमरा है, महोदय,” वेटर ने गैलरी के बीचोंबीच का दरवाज़ा खोलते हुए कहा और मुझे एक विशाल कमरे में प्रवेश कराया, जिसकी सजावट की शैली, अगर मैं ऐसी चीजों से अनजान होता, तो मुझे चकाचौंध कर देती। यह किसी रईस के घर के बैठक कक्ष की तरह ही सुरुचिपूर्ण और भव्य थी। खिड़कियाँ बड़ी, ऊँची और पारदर्शी थीं; उन पर लगे पर्दे रेशम के थे, गहरे लाल रंग के रेशम के, जो हर चीज़ को गुलाबी रंगत दे रहे थे। कालीन मुलायम और आलीशान था, जिस पर चमकीले फूलों के समूह बने हुए थे। मेंटलपीस शास्त्रीय सजावटी वस्तुओं से सजा हुआ था - संगमरमर की छोटी-छोटी लेकिन सुंदर मूर्तियाँ, बर्फ जैसे सफेद फूलदान, जिन पर मिट्टी से बचाने के लिए कांच की घंटियाँ उल्टी रखी हुई थीं, चांदी के दीपक और बीच में एक विदेशी घड़ी।

इन सबके ऊपर एक तस्वीर झुकी हुई थी, कमरे में इकलौती तस्वीर: अपने वस्त्रों में एक एंग्रियन रईस, सचमुच एक शानदार व्यक्ति। पहले तो मैं चेहरा पहचान नहीं पाया, क्योंकि पोशाक बहुत ही असामान्य थी; लेकिन धीरे-धीरे मैंने देखा कि वह बेहद प्रतिष्ठित फ्रेडरिक स्टुअर्ट, अर्ल ऑफ स्टुअर्टविले और विस्काउंट कैसलरेघ, ज़मोर्ना प्रांत के लॉर्ड लेफ्टिनेंट से काफी मिलता-जुलता था। "सचमुच," मैंने कमरे की पूरी सजावट को देखते हुए सोचा, "ये एंग्रियन लोग तो पैसे की जमकर उड़ान भरते हैं -

महल जैसे होटल, महल जैसे जिन्न के सपने [ग्लास टाउन में, एंग्रिया के निर्माता चार प्रमुख जिन्न थे]। उम्मीद है कि कागजी मुद्रा के साथ-साथ नकद भी होगा, बस इतना ही।" डेकैंटर और चांदी की फलों की टोकरियों से सजी एक मेज पर मेरा अनजान दोस्त बैठा था, जो उस आलीशान गाड़ी का मालिक था। वेटर के दरवाजा बंद करके चले जाने के बाद, मैं आगे बढ़ा।

अध्याय 5

विलियम पर्सी ने चार्ल्स टाउनशेंड को अपने कारनामों के बारे में बताया।

शाम का हल्का अंधेरा होने के कारण और उस सज्जन का चेहरा लाल रंग की आग की रोशनी से दूर होने के कारण, पहली नज़र में मैं उन्हें पहचान नहीं पाया। फिर भी, मैंने कहा, "आप कैसे हैं, महोदय? आपसे मिलकर खुशी हुई।"

"ठीक है, धन्यवाद," उसने जवाब दिया, और धीरे-धीरे उठते हुए, उसने अपने कोट के पिछले हिस्से को कोमलता से अपनी बाहों के नीचे समेट लिया, और कालीन पर खड़े होकर अपनी पीठ उस लालिमा लिए आग की ओर कर ली जिसका पहले उल्लेख किया गया था।

"ओह, ये तो तुम हो!" मैंने हैरानी से कहा; क्योंकि अब उसका चेहरा साफ दिख रहा था। "तुम्हें कैसे पता चला कि मैं यहाँ हूँ?"

"तुम्हें यहाँ क्या चीज़ लेकर आई है?" उसने पूछा।

मैंने पलटकर पूछा, "तुम्हें यह जानने की इतनी इच्छा क्यों है?"

"मैं भला कैसे बताऊँ?" उसने जवाब दिया।

यहां, इन शानदार व्यंग्यों से हम दोनों की बुद्धि थक चुकी थी, इसलिए मैंने कुछ पल के लिए हंसकर राहत पाई। फिर मेरे दोस्त ने दोबारा बोलना शुरू किया।

भगवान के नाम पर, बैठ जाइए।

"ईसा मसीह के नाम पर, मैं ऐसा करूँगा।"

"भगवान के नाम पर, मुझे आपके लिए एक बड़ा गिलास भरने दीजिए।"

"नरक के डर से, गिलास में बची हुई शराब का एक बूंद भी मत छोड़ना।"

मैं तुम्हें बाइबल की कसम खिलाकर कहता हूँ, मुझे बताओ कि क्या यह अच्छी शराब है।

मैं कुरान की कसम खाकर कहता हूं, मैंने इससे बेहतर स्वाद चखा है।

"काना के चमत्कार की कसम, तुम झूठ बोल रहे हो।"

"मूसा के चमत्कार से, मैं ऐसा नहीं करता।"

"महोदय, आपकी शपथों के अनुसार, मुझे आपको खतनाशुदा समझना चाहिए।"

"तुम्हारे अनुसार तो मुझे शायद ही विश्वास होता है कि तुम्हारा बपतिस्मा हुआ होगा।"

“ईसाई धर्म का विधान मुझ पर लागू नहीं हुआ।”

मैंने मुस्लिम रीति-रिवाजों का त्याग कर दिया है।

“तो तुम एक अपवित्र विधर्मी हो।”

“और तू एक काफिर है, गियाउर [ईसाइयों के लिए इस्लामी अपमानजनक शब्द, और लॉर्ड बायरन की एक कविता का शीर्षक, 1813]।”

“बोतल दो, यार,” मेरे दोस्त ने अपनी सीट पर बैठते हुए और बोतल को ज़ोर से पकड़ते हुए कहा। हम दोनों ने अपने गिलास भरे और फिर एक-दूसरे को देखा। मुझे लगता है कि कोई तीसरा व्यक्ति भी हम दोनों में कुछ ऐसा ही देखता। हम दोनों जवान थे, दोनों पतले, दोनों का रंग पीला और बाल हल्के थे, आँखें नीली थीं, दोनों ने सलीके से और कुछ हद तक दिखावटी कपड़े पहने थे, छोटे-छोटे पैर पतले जूतों से और भी आकर्षक लग रहे थे, और गोरे हाथों में बड़ी-बड़ी अंगूठियाँ थीं।

मेरा दोस्त मुझसे काफी लंबा था और उसमें सैन्य शैली की झलक भी अधिक थी। उसका सिर उसके कंधों पर अलग तरह से टिका हुआ था। उसकी हल्की भूरी मूंछें और दाढ़ी के कुछ बाल उग रहे थे; वह सीना तानकर खड़ा था और उसके पैर के अंत में बूट और स्पर्स लगे हुए थे। उसका रंग, जो मूल रूप से लगभग सौम्य था, सेवा में होने के कारण प्रतीत होता था, क्योंकि धूप से उसका रंग मेरी तरह ही काफी टैन हो गया था, उस पर झाइयां पड़ गई थीं और वह पीला पड़ गया था। उसने मखमली कॉलर वाला नीला ड्रेस-कोट, मखमली वेस्टकोट और आकर्षक सफेद टाइट्स पहनी हुई थीं: मैंने एक अच्छी तरह से बनी हरी फ्रॉक और हल्की गर्मियों की जींस पहनी थी।

अब, पाठक, क्या आप हमें समझ पाए?

युवा अधिकारी ने अपने माथे को हाथ पर टिकाकर और विचारशील भाव से एक लंबे शैंपेन के गिलास को भरते हुए बातचीत को फिर से शुरू किया।

"मुझे लगता है कि आप मुझे यहां देखकर हैरान होंगे, है ना?"

"हाँ, बिल्कुल; मुझे लगा कि तुम गज़ेम्बा या डोंगला, या बोनोवेन या सोकाटू, या ऐसे ही किसी बर्बर ठिकाने पर हो, जहाँ तुम नीग्रो लोगों के पीछे खोजी कुत्तों को छोड़ रहे हो और नदी किनारे झंडों के बीच मूसा की तरह सो रहे हो।"

“अच्छा, टाउनशेंड,” उसने कहा। “तुम्हारा वर्णन बिल्कुल वैसा ही है जैसा मैंने पिछले छह महीनों से जीवन बिताया है।”

“और क्या आपने इसे रोक दिया है?” मैंने पूछा।

“अरे यार, रुका हुआ है! सम्मान की बात सोचो! क्या तुमने हर अखबार में नहीं देखा: ‘कर्नल सर विलियम पर्सी के नेतृत्व में 10वीं हुसार बटालियन के पूर्वी मोर्चे पर प्रयास अथक हैं। उस वीर अधिकारी द्वारा बर्बरों को जड़ से उखाड़ फेंकने के प्रयास प्रशंसनीय हैं। शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता हो जब डोंगोला की दीवारों के नीचे पाँच-छह लोगों को फांसी न दी जाती हो’? फिर: ‘सर विलियम पर्सी के आदेश पर पिछले सप्ताह कटागूम में प्रतिशोध का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रदर्शित किया गया।’

उस स्थान पर तैनात अपनी रेजिमेंट से एक सैनिक कुछ दिनों से लापता था। अंततः उसके अवशेष पास के एक जंगल में मिले, बुरी तरह क्षत-विक्षत, और नीग्रो नरसंहार के सभी भयानक विरूपणों को प्रदर्शित करते हुए। सर विलियम ने तुरंत अपने पट्टे में बंधे दो सबसे खूंखार और तेज शिकारी कुत्तों को बाहर भेजने का आदेश दिया। उन्होंने कुछ ही घंटों में हत्यारों का पता लगा लिया। पकड़े जाने पर, खून से लथपथ उन दुष्टों को एक जंगली झाड़ी के गहरे कीचड़ में गर्दन तक डुबो दिया गया था।26 सर विलियम ने उन्हें वहीं सिर में गोली मार दी, और उनके शरीर उस गंदगी में विलीन हो गए जिसने उन्हें एक उपयुक्त कब्र प्रदान की। 'एह, टाउनशेंड? क्या यही बात नहीं है?'

“बिल्कुल सही। लेकिन अब कर्नल जी, चूंकि आप इतने सम्मानजनक काम में व्यस्त थे, तो मैं आपको आपके गौरवशाली परिश्रम के स्थान से इतनी दूर क्यों पा रहा हूँ?”

“सचमुच, टाउनशेंड, आप इतने अविवेकी कैसे हो सकते हैं? दसवीं हुसार रेजिमेंट—चाहे वे कितने भी महान हों, या कहें कि ईश्वर के समान पुरुष—उन रेगिस्तानों की धूप और उन दलदलों के मलेरिया को हमेशा के लिए सहन नहीं कर सकती। इसलिए हमारे दयालु सम्राट ने उन्हें वापस बुलाने का आदेश दिया है; यह आदेश उन्होंने स्वयं नहीं दिया, बल्कि हमारे विश्वसनीय और प्रिय सलाहकार डब्ल्यू.एच. वार्नर एस्क्वायर के माध्यम से दिया है, जिन्होंने अपने निर्देश हमारे सेनापति और किलों के कमांडर हेनरी फर्नांडो डि एनारा को दिए, और उन्होंने उन्हें आपके विनम्र सेवक तक पहुँचाया।”

और आपने तुरंत उस राहत को स्वीकार कर लिया।

“क्या मैंने तुरंत प्रतिक्रिया दी? नहीं; मैंने उस संदेश को, मेरे ख्याल से, अपनी आदत के अनुसार शांत भाव से पढ़ा - ज़ाहिर है, हमारे प्रभु राजा के महान नाम से भयभीत होकर, जिनके नाम पर वह लिखा गया था - लेकिन इसके अलावा मुझे पसीना नहीं आया, न ही मैं बेहोश हुआ। हम जैसे साधारण लोगों के लिए न तो खुशी, न दुख, न संतुष्टि, न निराशा महसूस करना उचित है।”

"तो कर्नल जी, अब आप कहाँ जा रहे हैं?"

“हे प्रभु, श्री टाउनशेंड, इतनी जल्दी मत कीजिए! मुझे थोड़ा सोचने का समय दीजिए! मैं अभी तक गज़ेम्बा में मुझ पर छाए आत्मिक कष्ट से उबर भी नहीं पाया हूँ।”

“कैसे? किस आधार पर?”

“अपनी तुच्छता का एहसास— मानो धूल में मिल जाना। श्रद्धा का वो भाव मेरे मस्तिष्क में इतना प्रबल है कि एक दिन मेरी मृत्यु का कारण बनेगा। आप जानते हैं, एड्रियानोपोलिस जाना था, इसलिए गज़ेम्बा से होकर जाना आवश्यक था, और गज़ेम्बा में, वहाँ के हमारे किला कमांडर से उनके सुंदर छोटे से विला में मिलना एक बोझिल कार्य था। इसलिए, अधिक शालीनता के लिए चेक शर्ट के ऊपर रेजिमेंटल वर्दी पहनकर (महामहिम के हक्काबैक पहने होने के दौरान कैम्ब्रिक में दिखना धृष्टता होती), मैं उनके निवास स्थान की ओर चल पड़ा। सिग्नोर फर्नांडो को ऐसे लोगों को सहन करने के लिए वाकई बहुत हिम्मत चाहिए होगी जो उस गैरीसन के घर के सदस्य हैं। किसी कैदी जहाज के सबसे गंदे लोग भी शायद ही ऐसे लोगों का सामना कर पाते। माता-पिता की हत्या करने वाले, भाई-बहन की हत्या करने वाले, अंधेरे में छुरा

घोंपने वाले, नरक के बदमाश गुंडे।” झूठी गवाही दिलवाने वाले दुष्ट लोग: इन्हीं सामग्रियों से उसने अपने देश के आलीशान घर का घरेलू साजो-सामान बनाया था। एक जाली दस्तावेज़ बनाने वाले ने कुली के वेश में मेरे लिए दरवाजा खोला; एक जेबकतरे ने नौकर के कंधे पर बैज लगाकर मुझे एक प्रतीक्षालय में पहुँचाया; वहाँ मेरा स्वागत एक ऐसे व्यक्ति ने किया जिसके हाथ में प्रबंधक की छड़ी थी और जिसे तीन बार आगजनी के आरोप में दोषी ठहराया जा चुका था; उसने मेरा नाम श्रीमान सचिव गॉर्डन को बताया, जिसे स्पष्ट रूप से हत्या के आरोप में फाँसी दी गई थी, लेकिन दुर्भाग्य से कानून द्वारा अपना पूर्ण कार्य करने से पहले ही उसे मौत के घाट उतार दिया गया था।

“इस कठिन परीक्षा से गुज़रते-गुज़रते मैं बुरी तरह पसीने से तरबतर हो चुका था, और जब आखिरकार मिस्टर गॉर्डन ने मुझे एक भयानक छोटे से तहखाने में ले गए जिसे कैबिनेट कहा जाता था, जहाँ एनारा बैठी थी, तो मेरे घुटने काँपते हुए पेड़ों के पत्तों की तरह काँप रहे थे। वहाँ वह महान व्यक्ति अपने सामान्य पहनावे में बैठा था - गिंघम जैकेट और डच क्षमता से कहीं अधिक चौड़े कैनवास ट्राउज़र। वह स्टॉक और वेस्टकोट को तुच्छ समझता था: सबसे सजग महिला भी उसकी मजबूत छाती और वीर बालों से भरी गर्दन को देखकर प्रशंसा से भर जाती। कमांडर के होठों के बीच एक सिगार था, और एक हाथ में उसने उस सामान का एक सुंदर डिब्बा पकड़ रखा था, जो सुगंधित जड़ी-बूटियों के द्वीपों से आयातित ताज़ा था। सिर थोड़ा झुकाए और महत्वपूर्ण चुनाव को लेकर चिंता से माथे को सिकोड़े हुए, जब मैं अंदर आया, तो ऐसा लग रहा था कि वह प्रतिष्ठित जनरल उसी तरह का एक और सामान चुन रहा है। एक महान बुद्धि की महान सादगी को देखिए, जो एक साधारण दुकानदार के सबसे सामान्य काम में लगी हुई है! अपना चुनाव करने के बाद, उसने हवन्ना सिगार एक ऐसे व्यक्ति को सौंप दिया जो खड़ा था उसके बगल में, और जिसे मैंने अब तक नहीं देखा था, ऐसा करते हुए उसने कहा, 'धिक्कार है! मुझे लगता है कि यह अच्छा होगा!'

“‘हे भगवान! ऐसा ही है!’ यह उसके साथी का जवाब था, जब उसने कुछ क्षण रुककर मीठी वर्जिनियन बोली। अब मैंने दूसरे वक्ता की ओर देखा। टाउनशेंड, ये तो हद से ज़्यादा था! एनारा की कुर्सी के पीछे एक आदमी फटे-पुराने भूरे रंग के ओवरकोट में खड़ा था, उसके हाथ उसकी पिछली जेबों में थे, उसने एक कड़ा स्टॉकिंग पहना हुआ था, जिसमें से एक लंबा और काला, सूखे सिरके जैसा चेहरा

निकला हुआ था, जिस पर घनी मूंछें थीं और उससे भी ज़्यादा घने बाल थे। वह आदमी इतना बदसूरत था कि पहली नज़र में मुझे लगा कि कोई अजनबी होगा। दूसरी नज़र में मुझे यकीन हो गया कि वह जनरल लॉर्ड हार्टफोर्ड थे। मैं क्या कर सकता था? कुलीन गरिमा की चमक ने मुझे पूरी तरह से वश में कर लिया था। फिर भी, मैंने आगे बढ़ने का प्रयास किया।"

"'आप कैसे हैं, श्री विलियम?' एनारा ने पूछा। 'आपको वापस बुला लिया गया है? मुझे खेद है कि ऐसा करना पड़ा, जिससे आपको निश्चित रूप से बहुत निराशा हुई होगी।' मैंने हिम्मत करके पूछा कि किस संदर्भ में? उन्होंने मुझे ऐसे देखा मानो मैंने उनसे ग्रीक भाषा में प्रश्न पूछा हो। 'एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में, श्रीमान, मुझे लगता है—लेकिन शायद आप शीघ्र वापसी की आशा से अपनी निराशा को कम करने की कोशिश कर रहे हैं। देखते हैं, श्रीमान; मैं आपकी ओर से ड्यूक से बात करूँगा। आपकी सेवाओं से मुझे बहुत संतुष्टि मिली है।'

मैंने झुककर प्रणाम किया, और फिर आगे की बात सुनने के लिए खड़ा हो गया, लेकिन जनरल ने अपनी बात कह दी थी। लॉर्ड हार्टफोर्ड ने कुछ अस्पष्ट बड़बड़ाया, हालांकि पूरी गरिमा के साथ। उनका निचला होंठ सिगार को सहारा देने के लिए तिरस्कारपूर्वक बाहर निकला हुआ था और उनकी दागदार भौंहें उनकी आँखों पर एक दुष्ट की तरह कड़वी और द्वेषपूर्ण नज़र से सिकुड़ी हुई थीं। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें अस्थमा हो गया हो, शायद पिछली सर्दियों में लगी चोट के कारण। यह देखकर कि अब और कोई बात नहीं हो सकती, मैं जाने के लिए उठ गया। मेरे विदाई के प्रणाम के जवाब में एनारा ने तेज़ी से सिर हिलाया और जल्द ही फिर मिलने की उम्मीद जताते हुए कुछ बुदबुदाया और कहा कि मेरे लिए एक खास काम तय किया है। हार्टफोर्ड ने अपनी अकड़ी हुई पीठ झुकाकर एक कठोर और घमंडी अंदाज़ में प्रणाम किया, जिससे मेरा मन किया कि मैं उनके पीछे जाकर उन्हें ठोकर मार दूं।

सर विलियम के वर्णन समाप्त करते ही मैं हंस पड़ा।

"वाह, कर्नल जी, आपने तो उन्हें सही सबक सिखा दिया!" मैंने कहा। "बड़े-बड़े घमंडी लोग हैं! मुझे कभी-कभार उनकी बुराई सुनना अच्छा लगता है। और एड्रियानोपोलिस में आपका अनुभव कैसा रहा? मुझे लगता है आपने प्रधानमंत्री से मुलाकात की होगी?"

"हाँ, मैं कोषागार गया था; और मैं अभी उनके बैठक कक्ष के दरवाज़े के अंदर

पहुँचा ही था कि उन्होंने अपनी स्त्री जैसी आवाज़ में कहना शुरू कर दिया, ‘सर विलियम, सर विलियम, मुझे बताइए कि आप क्या कर रहे थे। कृपया अपनी कार्यवाही का स्पष्ट विवरण दीजिए, सर। जनरल एनारा के संदेश पर्याप्त रूप से विस्तृत नहीं हैं, सर; वे बहुत संक्षिप्त और सारहीन हैं। देश की सरकार को अंधेरे में रखा जा रहा है, सर - तुलनात्मक रूप से कहें तो - ऐसे समय में, जब सूचना प्राप्त करने के लिए हर संभव सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए। मैं कुट्टल-कुराफ़ी की उस हालिया घटना के बारे में हर एक बात जानना चाहता हूँ।’ वे एक मिनट के लिए रुके और मेरी ओर देखा। मैंने भी उनकी ओर देखा और अपनी कुर्सी पर तकिया ठीक करके बैठ गया। यह मौन कुछ लंबा था, इसलिए मैंने कहा कि आज सुबह कितनी सुहावनी है। ‘क्या?’ उन्होंने कान खड़े करते हुए कहा। ‘सुबह बहुत ही सुखद रूप से ठंडी और शुष्क है,’ मेरा उत्तर था। ‘क्या यह संभव है?’ वार्नर ने हैरानी से कहा। ‘सर, मैं कहता हूँ, क्या यह संभव है कि सबसे आलसी और खाली दिमाग वाले समय-बर्बाद करने वाले व्यक्ति की तुच्छ टिप्पणियाँ, लूटपाट और नरसंहार से ग्रस्त तथा मूर्तिपूजक बर्बरों के घिनौने प्रदूषण से भरे देश में अपने राजा की सक्रिय सेवा से लौटे एक व्यक्ति के होठों पर पहले और एकमात्र शब्द हों?

“‘आप मुझसे क्या कहना चाहते हैं?’ मैंने मेज पर पड़े एक पर्चे को उठाते हुए और शीर्षक पृष्ठ पर नज़र डालते हुए पूछा। ‘महोदय,’ प्रधानमंत्री ने बड़े ही ऊँचे और प्रभावशाली लहजे में कहा। ‘महोदय, मेरा समय कीमती है। यदि आपका मुझसे कोई काम इतना ज़रूरी नहीं है कि उस पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता हो, तो हम इसे अभी के लिए टाल सकते हैं।’ जम्हाई रोकने की कोशिश करते हुए और अपने अंगों को थोड़ा फैलाते हुए—टाउनशेंड, क्या ये भद्दा नहीं है?—मैंने जवाब दिया: ‘काम है, महोदय? महोदय, मुझे खुद भी नहीं पता कि मैं आपसे किसलिए मिला था। मुझे लगता है कि मैं बस खाली समय बिताने आया था। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आजकल फैशन क्या चल रहा है? आजकल मेरे पास कपड़ों का कोई नया कलेक्शन नहीं है, क्योंकि कट्टल-कुराफी में इस तरह के कपड़े बहुत कम ही देखने को मिलते हैं।’ ‘महोदय,’ वार्नर ने जवाब दिया, ‘आपको सुप्रभात। श्रीमान जोन्स आपको बाहर का रास्ता दिखा देंगे।’ ‘सुप्रभात, महोदय,’ मैंने कहा और कोषागार से लगभग बाहर निकल गया।”

"अच्छा, तो फिर आप आगे कहाँ गए?"

मैं एक इत्र की दुकान पर गया और दस्ताने और कंघी जैसी कुछ छोटी-मोटी चीजें खरीदीं। लौटते समय, आपको क्या लगता है कि मैं किससे मिला?

"अंदाजा नहीं लगा सकते।"

"क्यों, व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष के अलावा और कोई नहीं।"

“क्या! एडवर्ड पर्सी?”

“हाँ; वह सड़क पर रुक गया और कहने लगा: ‘विलियम! मैं कहता हूँ, विलियम, तुम्हें वापस किसने बुलवाया? मुझे पक्का पता है, महोदय, कि तुमने वापस बुलाए जाने की गुहार लगाते हुए एक मार्मिक ज्ञापन भेजा था। तुमने भेजा था, महोदय, इसे नकारने की कोशिश भी मत करो।’

“‘नहीं,’ मैंने उत्तर दिया। ‘सुप्रभात, एडवर्ड! मौसम कितना सुहाना है! अपने फेफड़ों का ख्याल रखना, बेटा — हमेशा ही फेफड़ों की समस्या रहती है। मैं तुम्हें बालसम ऑफ होरहौंड लगाने की सलाह दूंगा — फेफड़ों की बीमारियों के लिए बेहतरीन उपाय है! सुप्रभात, बेटा!’ और शालीनता से हाथ हिलाते हुए मैं आगे बढ़ गया।”

तभी एक वेटर मोमबत्ती और खाने की थाली लेकर आया। सर विलियम ने मुझे अपने भुने हुए चिकन और सीप की चटनी में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया, लेकिन मैंने मना कर दिया, क्योंकि मैंने नीचे वाले कमरे में अपने खर्च पर रात का खाना मंगवाया था। इसलिए, कर्नल के खास अंदाज में हाथ मिलाने के बाद हम रात के लिए अलग हो गए—यानी, दोनों ने अपनी-अपनी तर्जनी उंगली को बड़े ही शांत तरीके से आगे बढ़ाया।

अध्याय 6

चार्ल्स टाउनशेंड और सर विलियम पर्सी एक दूसरे के साथ छेड़छाड़ करते हैं।

अगली सुबह उतनी ही सुहावनी और शांत थी जितनी गर्मी के आगमन की शुरुआत

हमेशा होती है। सूरज की रोशनी से जागते ही, मैंने अपने कमरे की भव्य खिड़कियों से, करीने से खींचे गए पर्दों के बीच से आती हुई धूप को देखा, मेरा मन प्रसन्न हो गया, और उससे भी अधिक तब जब उठकर पर्दा हटाया तो आसमान में बिखरे हुए कुछ बादलों की ऊँची और चित्तीदार आकृति में, हवा की शांति और ताजगी में, गर्मी के सुकून का एक कोमल वादा नज़र आया। पिछले महीने भर से हम जिन तूफानों, रुक-रुक कर होने वाली बारिश और ठंडी हवाओं का सामना कर रहे थे, वे सब चले गए थे। वे आसमान को साफ कर गए थे और उसे शांत छोड़ गए थे।

मुझे कपड़े पहनने में पूरा आधा घंटा लगा, और अपने कमरे में लगे शानदार पूरे आकार के दर्पण में सिर से पैर तक खुद को देखने में भी आधा घंटा लग गया। सचमुच, जब मैंने उसमें अपनी सुसज-धज करीने से सजी आकृति देखी, जो फैशनेबल मॉर्निंग सूट में थी, जिसके हल्के मुलायम बाल एक तरफ से बँधे हुए थे और चमकदार घुंघराले बालों में कंघी किए हुए थे, तो मैंने सोचा, "दुनिया में चार्ल्स टाउनशेंड से भी बुरे आदमी हैं।" अपने कमरे से उतरकर, मैं एक बार फिर उसी हलचल भरे, गंदे सराय के गलियारे में चला गया जिसका वर्णन पहले किया गया था। वह अभी भी हलचल भरा था, लेकिन उतना गंदा नहीं था जितना पिछली रात था, क्योंकि एक नौकरानी एक बड़ी बाल्टी लेकर घुटनों के बल बैठी हुई थी और गंदगी साफ कर रही थी। दरवाजे पर एक सज्जन की गाड़ी खड़ी थी। दो-तीन नौकर उसमें कुछ सामान रख रहे थे, और एक परिवार अंदर जाने के लिए इंतजार कर रहा था - एक महिला, एक सज्जन और कुछ बच्चे। बच्चे तो पहले से ही गाड़ी में सवार थे, और वे देखने में बिल्कुल स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त लग रहे थे। उनकी माताजी को विदाई देते समय एक सुंदर, लंबी, सजी-धजी महिला, जो बेहद शानदार ढंग से सजी हुई थी, एक बगल के कमरे से उन्हें विदा करने आई थीं। वे श्रीमती स्टैनक्लिफ थीं, इस भव्य घर की मालकिन। जब गाड़ी आखिरकार चली गई, तो मैं उनके पास गया और उन्हें प्रणाम किया, क्योंकि मेरा उनसे कुछ खास संबंध था। उन्होंने मेरी बातों का जवाब नॉर्थेंजरलैंड की काउंटेस के लहजे और अंदाज में दिया, बस थोड़ा अधिक विनम्रता से। काउंटेस को पता न चले, लेकिन यह सच है कि वे और मकान मालकिन एक-दूसरे से काफी मिलती-जुलती हैं, लंबाई, अक्षांश और परिधि लगभग बराबर हैं। दोनों ही बड़ी महिलाएं! भयानक महिलाएं! स्वभाव में भी वे कुछ हद तक एक जैसी हैं, जैसा कि आगे की कहानी से पता चलेगा।

कुछ महीने पहले ज़मोर्ना नगर निगम द्वारा अपने लॉर्ड लेफ्टिनेंट, अर्ल ऑफ़ स्टुअर्टविले और सर विल्सन थॉर्नटन के सम्मान में एक सार्वजनिक भोज का आयोजन किया गया था। यह भोज युद्ध में देश के लिए उनके द्वारा दी गई उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया गया था। भोजन और अन्य सभी व्यवस्थाओं का जिम्मा श्रीमती स्टैनक्लिफ को सौंपा गया था। संयोगवश, किसी चूक के चलते, जिस व्यक्ति से उन्होंने शिकार किए गए मांस की आपूर्ति का अनुबंध किया था, वह अपना कर्तव्य निभाने में विफल रहा। भोज के दिन, दरबार भवन में मेजें सजी हुई थीं। लोहे के बक्सों में रखी स्टैनक्लिफ की थालियाँ, भव्य ढंग से सजी हुई थीं और विशाल मेजों पर राजसी वैभव बिखेर रही थीं। प्रांत के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति दूर-दूर से एकत्रित हुए थे। छह बजते ही सूप और मछली मेज पर परोसी जा चुकी थी।

लॉर्ड लेफ्टिनेंट जोरदार जयकारों के बीच प्रवेश किया, हमेशा की तरह एक सभ्य सज्जन की तरह दिखते हुए, मुस्कुराते हुए और अपने नगरवासियों को झुककर धन्यवाद दिया। उनके पीछे जनरल सर विलियम थॉर्नटन और सांसद एडवर्ड पर्सी एस्क्वायर आए। अंत में, लेकिन कम महत्वपूर्ण नहीं, हार्टफोर्ड हॉल के अभिमानी और कड़वे स्वभाव वाले मालिक ने प्रवेश किया, जिनका चेहरा (उनके घाव के बाद) बिना धुले हुए हॉलैंड के चादर जैसा था, और वे सर जॉन किर्कवॉल और एक प्रख्यात बैरिस्टर विलियम मूर एस्क्वायर के बीच में खड़े थे। ज़मोर्ना के प्रधान पादरी, राइट रेवरेंड डॉ. किर्कवॉल द्वारा विधिवत आशीर्वाद दिया गया और एडवर्डस्टन के विकर डॉ. कुक ने आमीन कहा, और सभी लोग इसमें शामिल हो गए। मछली और सूप परोसे जाने के बाद, शिकार का भोजन परोसा जाना चाहिए था। लेकिन इसके बजाय, श्रीमती स्टैनक्लिफ भव्य रूप से सजी-धजी, पगड़ी, पंख और हीरे की कलगी के साथ, गैलरी में किसी भी काउंटेस की तरह प्रवेश कर गईं। वह लॉर्ड स्टुअर्टविले की कुर्सी के पीछे जाकर बैठ गईं।

“महाराज,” उसने अत्यंत गरिमापूर्ण ढंग से और इतनी धीमी आवाज़ में कहा कि वहाँ उपस्थित सभी लोग सुन सकें। “दूसरे भोजन में देरी के लिए मुझे आपसे क्षमा मांगनी चाहिए, लेकिन मेरे नौकरों ने अपना कर्तव्य ठीक से नहीं निभाया और भोजन उपलब्ध नहीं हो पाया। फिर भी, मैंने आपके और ज़मोर्ना के सज्जनों के अपमान का दंड दिया है। मैंने अपने घर में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। कल रात से पहले, इस समूह का कोई भी नौकर या नौकरानी मेरे यहाँ काम नहीं करेगी।”

शांत स्वभाव वाले अर्ल ने अपने चेहरे पर हाथ फेरकर अपनी मुस्कान छुपाते हुए, नाराज़ महिला को सांत्वना देने के लिए कुछ शालीन और विनम्र शब्द कहे। जनरल थॉर्नटन ने उन्हें आश्वासन दिया कि उनके अन्य भोजन की प्रचुरता और उत्कृष्ट गुणवत्ता को देखते हुए, दो-तीन खरगोश और तीतरों की कमी महसूस नहीं होगी। लेकिन श्रीमती स्टैनक्लिफ ने सांत्वना स्वीकारने से इनकार कर दिया। अपने चेहरे पर गंभीर चिंता को जरा भी कम किए बिना, उन्होंने कंपनी को एक गरिमापूर्ण प्रणाम किया और चली गईं। उन्होंने अपने घर में सचमुच एक बड़ा बदलाव किया, और यह एक सुंदर बदलाव था; वेटर, बारमेड, अस्तबल के कर्मचारी, बूटमैन और कोचमैन का ऐसा अव्यवस्थित बदलाव पहले कभी नहीं देखा गया था। इस शाही कदम के बाद से उन्हें लोकप्रिय रूप से ज़मोर्ना की डचेस कहा जाता है! लॉर्ड स्टुअर्टविल उन्हें उनके सामने भी इसी नाम से पुकारना पसंद करते हैं। हालांकि, यह स्वतंत्रता केवल उनके वीर लॉर्डशिप द्वारा ही ली जाती है। अगर कोई और आदमी इतनी हिम्मत करता, तो वह तुरंत उसके मुंह पर करारा प्रहार करतीं।

मैंने नाश्ता अभी मुश्किल से खत्म किया ही था कि एक वेटर मेरे लिए एक पत्र लेकर आया जिस पर लिखा था: “प्रिय टाउनशेंड, क्या आप आज सुबह मेरे साथ टहलने चलेंगे? आपका, डब्लू. पर्सी।” मैंने तुरंत जवाब में लिखा: “प्रिय बैरोनेट, ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ। आपका, डब्लू. टाउनशेंड।”

हम गलियारे में एक-दूसरे से मिले; और हाथ में हाथ डाले, दोनों के हाथों में एक-एक हल्की छड़ी थी, और हम अपनी सैर पर निकल पड़े।

ज़मोर्ना में हलचल मची हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो आधी आबादी नई चौड़ी सड़कों पर उतर आई हो। पिछली रात के तूफ़ान का कोई निशान नहीं बचा था। शांत हवा और साफ़ धूप में गर्मी पूरे जोश के साथ छाई हुई थी। सफ़ेद पोशाक पहने महिलाएं सड़कों पर चहलकदमी कर रही थीं और भव्य और चहल-पहल भरी दुकानों में भीड़ जमा थी। हमारे सामने नया गिरजाघर खड़ा था, जिसका खूबसूरत अग्रभाग और नक्काशीदार शिखर दक्षिणी शुद्ध आकाश में संगमरमर की तरह चमक रहे थे। बोचेआ के वीणा की तरह मधुर स्वर वाली उसकी घंटियाँ सुबह की घंटियों की तरह गूंज रही थीं, और उस मधुर संगीत से युवा ज़मोर्ना मानो जीवन की नई ऊर्जा से जाग उठा था। सिम्पसन के कठोर शासन से शहर इतनी जल्दी पूर्ण शक्ति और सुंदरता से कैसे उबर गया था? यहाँ हाल के अत्याचार का कोई निशान नहीं था, न ही कठोर श्रम

का, न ही हाल ही में विफल हुए आक्रमण का, न ही मौजूदा भारी राष्ट्रीय ऋण का, न ही गंदगी, अभाव या पीड़ा का। चारों ओर सुंदर महिलाएं, आलीशान हवेली, व्यस्त मिलें और भव्य दुकानें दिखाई दे रही थीं।

जब हम पहली बार बाहर निकले तो वातावरण बिल्कुल साफ था। जैसे ही हम पश्चिमी छोर से निकलकर पुल और नदी के पास पहुँचे, जिसके किनारे विशाल कारखानों से भरे हुए थे और मिलों की चिमनियों से घिरे हुए थे, जो पतली मीनारों की तरह ऊँची, भव्य और खड़ी थीं, हमने घनी हवा में सांस ली। दो विशाल इमारतों - एडवर्ड पर्सी की, और शायद मिस्टर सिडेनहैम की - की चिमनियों से कालिख की तरह काले धुएँ के घने और ठोस स्तंभ उठ रहे थे और धीरे-धीरे फैलते हुए पूरे ज़मोर्ना के आकाश को काला कर रहे थे।

"यह एडवर्ड का तंबाकू का पाइप है," सर विलियम ने ऊपर देखते हुए कहा, जब हम उनके भाई की चक्की की चिमनी के ठीक नीचे से गुज़रे, जिसका बेलनाकार स्तंभ तीन सौ फीट ऊंचा था। पुल पार करने के बाद, हम उस शानदार सड़क पर मुड़ गए जो हार्टफोर्ड की ओर जाती है, और अब जून की सुबह की पूरी भव्यता हमारे चारों ओर प्रकट होने लगी।

हमारे ठीक सामने ओलंपियन घाटी का विशाल और खुला मैदान फैला हुआ था; घाटी के हरे-भरे चरागाहों और लहराते जंगलों के बीच से होकर गुजरती हुई सड़क दूध की तरह सफेद रंग की थी। जिस रास्ते पर हमें चलना था, उसे देखकर मेरा दिल खुशी से भर उठा। यह रास्ता कोमल पहाड़ियों की तलहटी से होकर गुजरता था, जिनका लंबा विस्तार नदी के किनारे समतल हो जाता था - वह शानदार नदी! जो चौड़ी, शांत लहरों के साथ, दूर के समुद्रों की ध्वनि के साथ, स्वर्ग के समान हरे-भरे दृश्यों के बीच से बह रही थी। हम लगभग हार्टफोर्ड पार्क के द्वार पर पहुँच चुके थे। घर दूर धूप से जगमगाते मैदानों के बीच दिखाई दे रहा था, और उसके बीच के जंगल, सड़क तक फैले हुए, पुल के ऊपर एक चांदी जैसी छाया बिखेर रहे थे। यह एकांत का दृश्य नहीं था। हर पाँच मिनट में गाड़ियाँ हमारे पास से सुचारू रूप से गुजर रही थीं, और भव्य घुड़सवार अपने शानदार घोड़ों पर सरपट दौड़ रहे थे।

हम लगभग पंद्रह मिनट तक चुपचाप चलते रहे, तभी अचानक सर विलियम ने कहा,

"टाउनशेंड, कितनी सुंदर लड़की है!"

मैंने पूछा, “कहाँ?”

उन्होंने हमसे कुछ आगे एक आकृति की ओर इशारा किया: एक युवती, एक फुर्तीले छोटे टट्टू पर सवार, और उसके पीछे एक नौकर भी सवार था। मैंने उसे करीब से देखने के लिए अपनी चाल तेज कर दी। उसने बैंगनी रंग का लंबा और लहराता हुआ वस्त्र पहना था; जिससे उसका सुडौल, सीधा और गोल शरीर प्रकट हो रहा था, जो उसकी मुद्रा की सुंदरता और उसकी सहज चाल से और भी निखर रहा था। जब मैंने पहली बार देखा, तो उसका चेहरा दूसरी ओर मुड़ा हुआ था, जो आंशिक रूप से उसके लंबे घुंघराले बालों और आंशिक रूप से उसके लहराते घूंघट से ढका हुआ था, लेकिन उसने तुरंत अपनी स्थिति बदल ली, और तब मैंने उसका सुंदर, स्पष्ट चेहरा, चमकीली आंखें और बेहद खूबसूरत रंगत देखी। पहले ही पल से मैं जान गया कि वह कोई अजनबी नहीं थी।

“मैंने यह चेहरा पहले भी देखा है,” मैंने सर विलियम से कहा। फिर, जैसे-जैसे मुझे याद आया, मैंने आगे कहा, “कल रात स्टैनक्लिफ की दुकान के सामने वाली कपड़े की दुकान में।” दरअसल, यह वही लड़की थी जिसे मैंने खिड़की से देखा था।

“मैंने भी उसे पहले देखा है,” बैरोनेट ने जवाब दिया। “मैं उसका नाम जानता हूँ। वह मिस मूर हैं, जो प्रसिद्ध बैरिस्टर की बेटी हैं।”

“क्या!” मैंने हैरानी से कहा। “जेन – वो खूबसूरत एंग्रियन?” शायद मेरे पाठकों को इस युवती का वो वर्णन याद हो जो कुछ समय पहले पूर्वी और पश्चिमी महिलाओं की तुलना के रूप में सामने आया था।

सर विलियम ने आगे कहा, “मैंने उन्हें पिछली शरद ऋतु में ज़मोर्ना के गिरजाघर में सितंबर में आयोजित संगीत समारोह में देखा था। आपको उनके बारे में वह किस्सा याद है जो उस समय अखबारों में छपा था?”

मैं ऐसा नहीं कह सकता।

"लोग कहते थे कि उसने विशेष रूप से महामहिम का ध्यान आकर्षित किया था, जो उत्सव में उपस्थित थे, और उन्होंने उसे ज़मोर्ना की गुलाब की उपाधि से सम्मानित किया था।"

“क्या यह सच था?”

बस इतना ही: वह उसके सामने बैठी थी और वह भी बाकी सब की तरह उसे घूर रहा था, क्योंकि सफेद साटन की पोशाक और बर्फीले शुतुरमुर्ग के पंखों के भव्य

मुकुट में वह वाकई बेहद प्रभावशाली लग रही थी। उसने उसका नाम भी पूछा, और जब किसी ने उसे बताया, तो उसने कहा, 'भगवान कसम, वह ज़मोर्ना की गुलाब है! मुझे उसके जैसी कोई दूसरी औरत नज़र नहीं आती।' बस इतना ही। मुझे यकीन है कि उसने उसके बारे में फिर कभी नहीं सोचा होगा। वह उसके जैसी नहीं है।

"अच्छा, लेकिन," मैंने आगे कहा, "मैं उसे थोड़ा और देखना चाहूंगा। हे भगवान! मुझे लगता है कि मुझे उससे प्यार हो गया है!"

"मैं भी," पर्सी ने आह भरते हुए कहा। "बेहद उत्साहित! देखो, क्या तुमने कभी इससे बेहतर घुड़सवारी करने वाली महिला देखी है? क्या गजब का आकर्षण और जोश है! लेकिन सड़क का वो मनहूस मोड़ उसे छिपा देगा। देखो, उसने मोड़ ले लिया है। मैं कसम खाता हूँ, मेरा सूरज ग्रहण में चला गया। क्या तुम्हारा नहीं, टाउनशेंड?"

"जी हां, बिल्कुल; लेकिन क्या हम उसका पीछा नहीं कर सकते, कर्नल जी? वह कहां रहती है?"

"ज़्यादा दूर नहीं। मुझे सच में लगता है कि हम यह कर लेंगे, हालाँकि मेरी उससे कभी मुलाक़ात नहीं हुई, और शायद आपकी भी नहीं।"

"मुझे खेद है, कभी नहीं।"

तो फिर, क्या आपमें कोई अतिरिक्त शर्म है? अगर है, तो उसे अपनी जैकेट की जेब में रख लीजिए और ऊपर से अपनी जैकेट के बटन लगा लीजिए। अब, भाई, क्या आप उस चीज़ से छुटकारा पा गए?

"बिल्कुल सही।"

"चलिए, चलिए। उनके पिता एक बैरिस्टर हैं और एंग्रिया में अदालती कार्यवाही में भाग ले रहे हैं। इसलिए वे घर पर नहीं हैं। भला हम जैसे दो सभ्य नौजवानों को उनसे किसी काम के सिलसिले में मिलने की ज़रूरत क्यों न हो? शायद किसी दोस्त की संपत्ति पर गिरवी रखने के मामले में, या शायद अपनी संपत्ति पर ही, या फिर हमारे अमीर बूढ़े चाचा की विवादित वसीयत से जुड़े किसी मुकदमे के सिलसिले में? नौकरों ने बताया है कि श्री मूर घर पर नहीं हैं, तो क्या हम उनकी बेटी (वैसे उसकी माँ नहीं है) के बारे में नहीं पूछ सकते, ताकि उसे कोई ऐसा काम सौंप सकें जो हम नौकरों को नहीं सौंपना चाहते? अब, भाई, क्या तुम्हें इशारा समझ आया?"

मैंने अपना अंगूठा अपनी नाक के किनारे पर रखा, और हम साथ-साथ आगे बढ़ते गए।

श्री मूर का घर लॉर्ड हार्टफोर्ड की संपत्ति पर पट्टे पर है, और ज़मोर्ना में उनकी छवि उस रईस के चापलूस के रूप में है। हालांकि यह वकील एक सक्षम व्यक्ति है, लेकिन खबरों के अनुसार, वह सिद्धांतों के प्रति बहुत उदासीन है, और संभव है कि अपनी अपार संपत्ति के बल पर वह एक दिन शहर के वर्तमान प्रतिनिधि के खिलाफ चुनाव लड़ने की उम्मीद रखता हो - ऐसे में लॉर्ड हार्टफोर्ड का प्रभाव उसकी सफलता में कोई मायने नहीं रखेगा।

“हम यहाँ प्रवेश करते हैं,” पर्सी ने कहा, और मखमली लॉन पर लेबर्नम के मेहराब के नीचे खुले हरे द्वार पर रुक गया। हमारे सामने सफेद दीवारों वाला एक विला था, जो खिले हुए झाड़ियों से घिरा हुआ था, गुलाब के पेड़ों के बीच हरी पगडंडियाँ थीं और एक चौड़ी सड़क घुमावदार होकर दरवाजे तक जाती थी। उस सुहावने समय में (अब लगभग दोपहर हो चुकी थी) इसकी छाया और एकांत का नजारा बेहद सुकून देने वाला था। ऐसा लग रहा था मानो यह उस विशाल जागीर और आलीशान हवेली से भी बेहतर हो, जिसके सामने यह इतनी सादगी से खड़ा था। दरवाजे पर पहुँचकर सर विलियम ने दस्तक दी। एक नौकर ने दरवाजा खोला।

"क्या मिस्टर मूर अंदर हैं?"

"नहीं, महोदय; मालिक पिछले सप्ताह अदालती कार्यवाही के लिए घर से रवाना हो गए थे।"

सर विलियम ने निराशा का भाव दिखाया। वे मुड़े और फुसफुसाते हुए मुझसे सलाह लेने का नाटक किया। फिर नौकर से पूछा, "शायद मिस मूर घर पर हैं?" "जी सर।"

"कृपया हमारा नाम उन्हें बता दें - श्रीमान क्लार्क और गार्डिनर - और कहें कि हम उनसे एक महत्वपूर्ण मामले पर थोड़ी देर के लिए मिलना चाहते हैं।"

नौकर ने झुककर हमें आगे आने का विनम्र अनुरोध किया और एक छोटे से बैठक कक्ष का दरवाजा खोल दिया। कमरा खूबसूरती से सजा हुआ था। उसकी इकलौती बड़ी खिड़की पूरी तरह खुली हुई थी, जिससे दोपहर की सुस्ती को चीरती हुई हल्की हवा अंदर आ रही थी। यह खिड़की विशेष रूप से मनमोहक लग रही थी, क्योंकि इसमें एक गहरा गड्ढा था और एक सफेद तकिये से ढकी हुई सीट थी, जिसके ऊपर मलमल के पर्दे की झालरें लहरा रही थीं। हम उस गड्ढे में बैठ गए और खिड़की की चौखट पर झुककर चमेली की खुशबू का आनंद लिया, जिसकी लताएँ खिड़की के

चारों ओर हवा में लहरा रही थीं।

"यह मिस मूर का निजी बैठक कक्ष है," सर विलियम ने कैंची, अंगुली और फीते से सजी एक छोटी सी मेज की ओर इशारा करते हुए कहा, और फिर अपनी नज़र एक कैबिनेट पियानो पर डाली जिसके कीबोर्ड के ऊपर एक खुली संगीत पुस्तक रखी थी। "जब भी मैं किसी महिला के कमरे में अकेला होता हूँ, मैं हमेशा कुछ न कुछ हथिया लेता हूँ," उन्होंने आगे कहा; और धीरे से उठकर, वे मेज से कुछ उठाने ही वाले थे कि गलियारे में एक हल्की सी गुनगुनाहट सुनाई दी, और कदमों की आहट या कपड़ों की सरसराहट के बिना, मिस मूर एक प्रेत की तरह हमारे सामने प्रकट हुईं। कर्नल मुड़े, और वह वहाँ थीं। उन्होंने बोलने से पहले उन्हें देखा, या यूँ कहें कि उनके आर-पार देखा। सचमुच, ऐसा लग रहा था जैसे उनके चारों ओर एक प्रभामंडल हो – उनके पूरे रूप में कुछ ऐसा प्रकाश था। न तो पश्चिम की ओर फैली बड़ी काली आँखें, न ही भौंहों का बड़ा, समतल मेहराब; न ही उत्साही और काव्यात्मक नज़र, न ही गंभीर रंग के गुंथे या लहराते बाल; बल्कि बस सफेद कपड़ों में एक लड़की, गोल-मटोल और बहुत लंबी। उसका घुड़सवारी का वस्त्र और बीवर टोपी गायब थी; और सुनहरे बाल (पाठक ध्यान रहे, मैंने यहाँ 'सुनहरा' शब्द शिष्टाचारवश प्रयोग किया है) एंग्रिया की सबसे गोरी गर्दन पर लटके हुए थे। उसका चेहरा दमक रहा था: इतना गोरा, इतना खिलखिलाता हुआ। उसके होंठ गुलाबी थे और उसके छोटे-छोटे, समरूप दाँत मोतियों की तरह चमक रहे थे; उसकी नाक उभरी हुई और सीधी थी और आँखें बहुत जीवंत थीं। चेहरे की नियमितता उसकी मुख्य सुंदरता नहीं थी: बल्कि उसकी जीवंत त्वचा और आकर्षक आकृति की पूर्णता थी।

वह महिला बेहद गंभीर दिख रही थी; उसका झुककर अभिवादन करना गरिमापूर्ण और दूरीपूर्ण था।

"महोदया, मुझे अनुमति दीजिए," कर्नल ने कहा, "मैं अपना और अपने मित्र का परिचय देना चाहता हूँ। मैं श्री क्लार्क हूँ, और ये सज्जन श्री गार्डिनर हैं। हम दोनों आपके पिता के मुवक्किल हैं। आपने उन्हें क्लार्क और गार्डिनर बनाम जोवेट के बीच चल रहे मुकदमे का जिक्र करते हुए सुना होगा।"

"मुझे लगता है," मिस मूर ने जवाब दिया, "हालांकि मुझे अभी ठीक से याद नहीं है। क्या आप लोग बैठेंगे?"

वह वर्क-टेबल के पास एक छोटे से सोफे पर बैठ गई और अपनी कोहनी को

आर्मरेस्ट पर टिकाकर बेहद शालीन और राजसी लग रही थी।

"आज सुबह मौसम सुहाना है," सर विलियम ने बातचीत जारी रखते हुए कहा।

"बिल्कुल," उसने विनम्रता से उत्तर दिया।

मैंने कहा, "मिस्टर मूर की यह जगह बहुत सुंदर है।"

"हाँ," मिस मूर ने जवाब दिया; फिर लापरवाही से अपना काम शुरू करते हुए उन्होंने आगे कहा, "मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ, सज्जनों?"

सर विलियम ने अपना हाथ मला। उन्हें काम पर वापस लौटना ही था।

"महोदया, जब श्री मूर लौटें तो क्या आप इतनी कृपा करेंगी कि उन्हें बता दें कि जेम्स कार्टराइट, वह गवाह जो पेश होने में बहुत आनाकानी कर रहा था, अंततः पेश होने के लिए सहमत हो गया है, और इसलिए यदि वह उचित समझे तो अगले महीने मुकदमा आगे बढ़ सकता है।"

"बहुत खूब," उसने कहा। फिर, लेस पर अपनी नज़रें गड़ाए हुए, उसने आगे कहा, "मेरे पिता को यह बताने के लिए आप कितनी दूर से आए हैं? क्या आप आस-पड़ोस में रहते हैं?"

"नहीं महोदया, लेकिन हम दोनों इस समय वहाँ घूमने गए हैं। हम ज़मोर्ना में स्थित अपनी एक छोटी सी चक्की की संपत्ति की देखभाल करने आए हैं।"

"आपको काफी गर्मी लगी होगी," मिस मूर ने आगे कहा। "क्या आप कुछ जलपान करना चाहेंगे?"

हम दोनों ने मना कर दिया, लेकिन उसने हमारी अस्वीकृति पर कोई ध्यान नहीं दिया और घंटी बजाकर नौकर को शराब आदि लाने का आदेश दिया। फिर वह चुपचाप अपने लेस के काम में लौट गई। हमारी उपस्थिति से वह इतनी असहज लग रही थी मानो हम उसके पालतू कुत्ते हों या बच्चे। लेकिन सर विलियम उससे कहीं ज़्यादा प्रभावशाली थे। वह एक पैर दूसरे पर रखकर बैठे थे और उन्हें घूर रहे थे। मुझे लगता है कि वह जानती थी कि उनकी निगाहें उन पर टिकी हैं, लेकिन उन्होंने बड़ी चतुराई से अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया। अंत में उन्होंने कहा, "महोदया, आपसे पहले भी मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।"

"शायद, महोदय; मैं हमेशा घर पर नहीं रहता।"

"यह पिछले सितंबर में ज़मोर्ना मिनस्टर में हुआ था।"

वह थोड़ी शर्म से लाल हो गई और हंस पड़ी, क्योंकि उसे निस्संदेह वह प्रशंसा याद

आ गई थी जिसके साथ उस समय पत्रिकाओं में उसके नाम का उल्लेख किया गया था, और हजारों निगाहें उस पर टिकी हुई थीं जब वह चर्च के ऊंचे गलियारे में अपने सफेद साटन के वस्त्र में बैठी हुई आकर्षण का केंद्र थी।

"उस समय बहुत से लोगों ने मुझे देखा," उसने उत्तर दिया, "और मेरे बारे में बातें भी कीं, क्योंकि मेरे कद ने मुझे एक अद्भुत विशिष्टता प्रदान की थी।"

"सिर्फ आकार ही तो?" सर विलियम ने पूछा, और उनके हावभाव ने बाकी सब कुछ बयां कर दिया।

"क्या आप कुछ सालमागंडी लेंगे, श्रीमान क्लार्क?" उसने उठते हुए और नौकर द्वारा मेज पर रखी गई ट्रे की ओर बढ़ते हुए कहा। श्रीमान क्लार्क ने अपनी इच्छा व्यक्त की; श्रीमान गार्डिनर ने भी। उसने दोनों को भरपूर भोजन दिया और वे सो गए।

दरवाजे पर दस्तक हुई। वह खिड़की के पास गई और बाहर देखा। मैंने उसे सिर हिलाते और मुस्कुराते देखा, और उसकी मुस्कान बनावटी नहीं थी: उसमें उसके सामने के दांत दिख रहे थे और उसकी आंखें बेहद मनमोहक चमक रही थीं। वह गलियारे में गई और खुद दरवाजा खोला।

"जेन, कैसी हो?" एक मर्दाना आवाज ने कहा। पर्सी ने मेरी तरफ आँख मारी।

"आप कैसे हैं?" उसने पूछा। "और इस गर्म दिन में आप यहाँ क्यों आए हैं?"

"क्या! लगता है आप मुझे देखकर खुश नहीं हैं," आगंतुक ने जवाब दिया।

"हाँ, मैं हूँ, क्योंकि तुम बहुत अच्छे दिखते हो! मुझे खेद है कि हमारे पास तुम्हें गर्म करने के लिए आग नहीं है, लेकिन तुम रसोई में जा सकते हो।"

"चलो, संभलकर! मूर एंग्रिया में है, कैसा रहेगा?"

"भले ही वो कैसा भी हो—लेकिन आप आगे बढ़ सकते हैं।" फिर धीमी आवाज़ में, "मेरे बैठक कक्ष में दो पर्चियाँ हैं—बिल्कुल लेखा-पत्र के क्लर्कों या युवा सर्जनों जैसी। बस आकर उन्हें देख लीजिए।"

पर्सी और मैंने भोजन को अपने मुंह तक पहुंचने से पहले ही रोक लिया। हम क्रोधित थे।

"जेड!" पर्सी ने कहा।

मैंने कुछ नहीं कहा। हालाँकि, एक और भी गंभीर समस्या सामने आ गई थी। जो आवाज़ आ रही थी, वह सर विलियम और मुझे दोनों को ही जानी-पहचानी लग रही थी, और अब बोलने वाला व्यक्ति सधे कदमों से और अपने जूते की खनक के साथ

पास आ रहा था। आते हुए भी वह बोलता रहा: “मैं तुम्हारे साथ भोजन करने आया हूँ, जेन, और फिर मुझे कुछ काम से हार्टफोर्ड हॉल जाना है। मैं छह बजे फिर आऊँगा, और जूलिया कहती है कि तुम्हें मेरे साथ गिरिंगटन वापस आना होगा।”

"जनरल, मुझे लगता है कि मैं ऐसा करूंगा या नहीं?"

चाहे आप ऐसा करें या न करें।

और यहीं सर विल्सन थॉर्नटन रुक गए, क्योंकि वे कमरे में मौजूद थे और उनकी नज़र हम पर पड़ी, जो मेज़ पर बैठे मिस मूर द्वारा परोसी गई शराब का आनंद ले रहे थे। मुझे नहीं लगता कि सर विलियम या मेरे चेहरे पर कोई भाव बदला। जनरल थॉर्नटन की नज़रें मुझे देखते ही हमेशा एक ठंडी नाराज़गी भरी हो जाती हैं। मैंने उनसे बेझिझक कहा: “हे जनरल! आप कैसे हैं? अरे वाह, आप तो चलते-चलते थक गए हैं! क्या आपका चेहरा सूजा हुआ है?”

“जहां तक मुझे पता है, नहीं, मिस्टर टाउनशेंड,” उन्होंने ठंडे स्वर में उत्तर दिया और सर विलियम को झुककर प्रणाम करते हुए अपनी सीट पर बैठ गए।

“मेरे प्रिय जनरल,” मैंने आगे कहा। “आपकी इस हालत में किसी भी हालत में पानी मत पीजिए। मुझे लगता है आप बहुत दुबले हो गए हैं! मेरी दुआ है कि आपको ठंड न लग जाए! अरे बाप रे - मिस मूर जैसी खूबसूरत युवती के सामने आपका इतना दुबला-पतला दिखना कितना दुखद है!”

"अगर मैंने मिस मूर को किसी भी तरह से परेशान किया है, तो वह बिना आपके हस्तक्षेप के मुझे इसके बारे में बताने की कृपा करेंगी," जनरल ने बहुत परेशान होकर कहा।

“क्या आपको कभी स्कार्लेट फीवर हुआ था?” मैंने उत्सुकता से पूछा।

उन्होंने जवाब दिया, "मुझे समझ नहीं आ रहा कि मेरी सेहत से आपको क्या लेना-देना है।"

“या फिर पसीना आने वाली बीमारी?” मैंने आगे पूछा।

जनरल ने अपनी कोट की आस्तीन से धूल झाड़ी और मिस मूर की ओर तेज़ी से मुड़कर उनसे पूछा कि क्या ये वही लड़के हैं जिन्हें उन्होंने दो युवा सर्जन समझा था।

“हां,” उसने कहा, “लेकिन मुझे लगने लगा है कि गलती मेरी थी।”

“मैं जानना चाहता हूँ कि किस बेतुकी बात ने इन्हें यहाँ खींच लाया,” थॉर्नटन ने कहा। “न तो ये सर्जन हैं और न ही मैं। पर्सी, मुझे हैरानी है कि तुम टाउनशेंड जैसे

मूर्ख के साथ देश में नौकरी ढूंढने जाओगे।”

“पर्सी!” मिस मूर ने हैरानी से कहा। “ओह, ये तो सर विलियम पर्सी हैं! मुझे लगा मैंने इन्हें पहले भी देखा है। एक परेड में देखा था: ये शाही कर्मचारियों में से एक थे।”

कर्नल ने सिर झुकाया। उन्होंने कहा, "मेरे लिए अब तक का सबसे बड़ा सम्मान यही है कि मिस मूर ने हजारों लोगों में से मुझे चुना और मेरा चेहरा याद रखा।"

"क्योंकि मुझे यह लॉर्ड नॉर्थेंजरलैंड के चित्र से मिलता-जुलता लगा," उसने जवाब दिया।

"चाहे जो भी कारण हो, महोदया, यह सम्मान मेरा है, और मुझे इस पर गर्व है।"

उसने उन भावुक और रहस्यमयी निगाहों से उसके चेहरे को परखा, जो उसकी आँखों में झलकती थीं और उसे सचमुच उसके पिता की याद दिलाती थीं। मुझे नहीं लगता कि वह अपनी इस छानबीन से खुश था। मिस मूर का चेहरा हमेशा की तरह खिलखिलाता और खुला हुआ था। अगर वह शरमा जाती या पीछे हट जाती, तो सर विलियम की जीत हो जाती। लेकिन उसका दिल अचानक, गुप्त और गहरे प्रेम से ग्रस्त होने वाला नहीं था—जिस तरह के प्रेम को वह अक्सर जगाने की कोशिश करता है।

“चलो, टाउनशेंड,” उसने अपने दस्तानों पर निशान बनाते हुए कहा। “हम चलेंगे।”

“मुझे लगता है कि तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, लड़के,” थॉर्नटन ने कहा। “इस अय्याशी से न तो तुमने और न ही टाउनशेंड ने अपनी प्रतिष्ठा को कोई ठेस पहुँचाई है।”

हम दोनों ने मिस मूर से बात करने की हिम्मत दिखाई; और वह इतनी सौम्य या शायद बेपरवाह थीं कि उन्होंने हमसे बेझिझक हाथ मिलाया और कहा कि जब उनके पिता घर लौटेंगे तो उन्हें उनके मुवक्किल श्री क्लार्क और गार्डिनर से दोबारा मिलकर खुशी होगी, चाहे मुकदमे के सिलसिले में हो या उनके साथ चाय पीने के लिए। सच कहूँ तो, उस लड़की में कुछ समझदारी थी। मुझे नहीं लगता कि मैं उनका सुंदर चेहरा, उनकी आवाज़ और उनकी आँखों की मनमोहक चमक जल्दी भूल पाऊँगा।

जब हम दोनों दोबारा पेड़ों से घिरे द्वार से गुजरे और अब जलती हुई सड़क पर कदम रखा, तो मैंने सर विलियम से पूछा कि क्या वह मोहित हो गए हैं।

“मैं नहीं,” उसने कहा। “उसमें बुद्धि तो है ही नहीं, और दिल भी न के बराबर। अगर कभी मेरी शादी हुई, तो यकीन मानिए, मैं ज़मोर्ना की गुलाब को कभी नहीं

चुनूंगा।”

लेकिन युवा कर्नल के साथ कुछ गड़बड़ ज़रूर हो गई थी। उनका घमंड टूट गया था, या फिर जनरल थॉर्नटन के दखल से वे नाराज़ थे। कारण चाहे जो भी हो, यह निश्चित था कि वे बेहद चिड़चिड़े हो गए थे, हर तरफ़ गुस्सा कर रहे थे और हर बात पर कड़वी बातें कह रहे थे। हम अभी एक चौथाई मील भी नहीं चले थे कि उन्होंने कहा कि उन्हें कहीं और काम है, और अब उन्हें मुझे अलविदा कहना होगा। बैरोनेट मुख्य सड़क से निकलने वाली एक सुनसान गली में मुड़ गए, और मैं सीधा आगे बढ़ता रहा।

जनरल और लेडी थॉर्नटन के साथ गिरनिंगटन में ठहरी जेन मूर, हाल ही में हुए एंग्रियन युद्ध में आर्ड्सले के सैनिकों के आक्रमण और ईवेशम की घेराबंदी के बारे में जोश भरे गीत गाती हैं। स्टुअर्टविले के अर्ल कैसलरेघ खबर लाते हैं कि ज़मोर्ना अगले दिन ज़मोर्ना शहर में आने वाले हैं, और उनके नॉर्थेंगरलैंड दौरे से नाराज़ जनता दंगा करने की धमकी दे रही है।

“जमोर्ना के सभी हिस्सों में आक्रमणकारियों की अफवाहें फैल गईं।”

तब टर्नर ग्रे ने अपना आदर्श वाक्य दिया:

हो! आर्ड्सले, वैन की ओर!

लॉर्ड हार्टफोर्ड ने अपने किसानों को बुलाया, और वार्नर ने अपने कबीले को संगठित किया।

लेकिन सबसे पहले, आर्ड्सले ने पूरी ताकत से दौड़ते हुए सबसे आगे वाले समूह की ओर दौड़ लगाई!

मदीना की पगड़ी आ गई, सर जॉन ने अपना प्रतिबंध लगा दिया:

हजारों दिलों में इसका तिरस्कार होने के बावजूद, आर्ड्सले सबसे आगे रहा!

युद्ध की ताज़ा हवाएं सौ झंडों को फहराती हैं,

और इसमें कोई शक नहीं कि आर्ड्सले का झंडा सबसे आगे लहरा रहा होगा!

नरसंहार के मैदान में ठंड से कांपते हुए वे एक-एक करके गिर पड़े,

और अब न तो मार्च में और न ही हमले में आर्ड्सले अग्रिम पंक्ति का नेतृत्व करेगा!

उस वीर कुल के लिए विलाप करते तुरही की तेज आवाजें गूंज रही हैं,

और एंग्रियन अपना संकेत चिल्लाते हैं:

हो! आर्ड्सले, वैन की ओर!

उन्हें उस स्थान पर सम्मानजनक समाधि प्रदान करें जहाँ उनकी जन्मभूमि की नदी बहती थी।

उन्हें शांति से रहने दो! वे वीरों की तरह मरे।

युद्ध के आग से लथपथ वैन में!

और जब उनके नाम लिए जाते हैं, तो यह आशा प्रत्येक व्यक्ति को प्रसन्न कर सकती है:

वह भूमि कभी नष्ट नहीं होगी

जहां सच्चे दिलों ने वैन का नेतृत्व किया!

गिरनिंगटन के पुराने भवन इस वीरगाथा से गूंज रहे थे, और कुछ सुर ड्राइंग रूम की खुली खिड़कियों से निकलकर गोधूलि बेला में फैले पार्क तक भी पहुँच गए। अभी भी शाम का समय था। निर्मल आकाश, चमकते चाँद के उदय पर मुस्कुरा रहा था। वह ग्रीष्म ऋतु का दिन बीत चुका था, और पश्चिम की जलती हुई किरणें अपने द्वार बंद कर रही थीं, वहीं पूर्व में कोमल राहें एक सौम्य ग्रीष्म रात्रि के कदमों के लिए खुल रही थीं।

क्या वह घुड़सवार उन वृक्षों के ऊपर चमकती उस महिमा के बारे में सोच रहा है जिनके बीच से उसका शरीर इतनी तेज़ी से गुज़र रहा है? सड़क पर आगे बढ़ते हुए, वह कभी पीछे मुड़कर नहीं देखता कि विशाल शाखाओं के हर खुले भाग से उस पर पड़ने वाली उन चांदी जैसी किरणों का स्रोत क्या है। फिर भी कोई गहरी चिंता उसके विचारों को व्याकुल नहीं करती, क्योंकि जब वह संगीत उसके सामने से गुज़रता है तो वह अपना सिर उठाकर सुनता है, और जब संगीत समाप्त होता है और उस हवेली से हंसी की आवाज़ आती है जिसके दरवाज़े पर वह अब उतरने वाला है, तो वह मुस्कुरा उठता है।

जनरल और लेडी थॉर्नटन अपने हॉल की खिड़की के पास आमने-सामने दो आरामकुर्सियों पर बैठे थे। ढलती रोशनी जूलिया पर पड़ रही थी और सर विल्सन की नज़रों में वह किसी परी जैसी लग रही थी। पृष्ठभूमि में, लगभग धुंधलके में, एक तीसरी महिला पियानो पर बैठी थी, जो एक ही समय में बजाते और बात करते हुए

नज़र आ रही थी। उसकी आवाज़ से उसकी पहचान स्पष्ट हो गई। वह हार्टफोर्ड के किर्कहम लॉज की मिस मूर थीं, जो कर्नल थॉर्नटन के निमंत्रण पर उनके साथ आई थीं।

“जनरल,” वह सम्मानित बैरोनेट के कुछ मज़ाकिया भाषण के जवाब में कह रही थी, “मुझे डर है कि मैं एक बूढ़ी कुंवारी ही मर जाऊंगी।”

"अगर तुमने ऐसा किया तो मुझे लगता है कि यह तुम्हारी ही गलती होगी, जेन।"

"वैसे, अभी तक किसी ने भी मुझे सकारात्मक प्रस्ताव नहीं दिया है।"

"क्योंकि तुम बहुत घमंडी और उद्दंड हो," जूलिया ने कहा। "तुम उन्हें डराकर भगा देती हो।"

"जी हां, आप गलत हैं! कम से कम एक आदमी तो ऐसा है जिसे जीतने के लिए मैंने अपनी पूरी कोशिश की है।"

"कोण है वोह?"

“लॉर्ड हार्टफोर्ड। मैं उनसे लंबे समय से प्यार करती आ रही हूँ। सच कहूँ तो, शादी के लिए उनसे ज़्यादा पसंद करने वाला कोई और नहीं है। मैंने उनके साथ नृत्य किया है, उन पर मुस्कुराई हूँ और अपने सारे विजयी गीत पूरे जोश से गाए हैं, फिर भी अभी तक उन पर कोई असर नहीं हुआ है। एक बार मुझे लगा कि मैंने उन पर थोड़ा सा प्रभाव डाला है। यह उस आर्ड्सली गीत को गाने के बाद हुआ जो आपने अभी सुना। वे मेरे पीछे आकर खड़े हो गए और मुझसे वह गीत दोबारा गाने को कहा। उसी रात, उन्होंने मुझे घर जाने के लिए अपनी गाड़ी देने की पेशकश की, क्योंकि हमारी गाड़ी मेरे पिताजी के साथ उनके एक दौरे पर थी; और अगली सुबह वे सचमुच मेरे साथ नाश्ता करने के लिए लॉज तक पैदल आए। मैंने उन्हें खुश करने के लिए कितनी कोशिश की! मुझे यकीन है कि मैं बहुत आकर्षक लग रही थी! वे घर चले गए, और मुझे पूरी उम्मीद थी कि रात होने से पहले मुझे औपचारिक रूप से शादी का प्रस्ताव मिल जाएगा; लेकिन नहीं। मुझे लगता है कि मैंने कुछ ज़्यादा ही उम्मीद कर ली थी। खैर, कुछ नहीं हुआ।”

“स्टुअर्टविले के अर्ल,” एक नौकर ने दरवाजा खोलते हुए कहा, और स्टुअर्टविले के अर्ल अंदर आ गए।

“शुभ संध्या, थॉर्नटन,” उनके लॉर्ड ने कहा। “सब कुछ अंधेरे में डूबा हुआ है—कोई मोमबत्ती नहीं। बिलकुल रोमांटिक! क्या वह लेडी जूलिया हैं, चांदनी में नहाई

हुई? हे भगवान! मेरा दिल पिघल गया! भला किसने कभी इतना अद्भुत दृश्य देखा है? थॉर्नटन, बेहतर होगा कि तुम मुझे अभी चुनौती दो!”

अर्ल लेडी जूलिया के बगल वाली कुर्सी पर बैठ गया और अपना एक सुंदर पैर फैलाकर, एक मुग्ध फ्रांसीसी की तरह उसकी ओर झुक गया।

“कैसलरेघ, आप यहाँ किसलरेघ क्यों आए हैं?” महारानी ने पूछा। “मुझे नया नाम भूलने के लिए क्षमा करें—लेकिन आप जानते हैं, कैसल, वह पुराना नाम मुझे बहुत प्रिय है, क्योंकि उससे हमारी सारी पुरानी यादें जुड़ी हुई हैं।”

"उन दिनों की बात है जब आप मुझे प्यार से 'आदमी-बंदर' कहकर पुकारती थीं।"

“कैसलरेघ, वो दिन कितने खुशनुमा थे!” जूलिया ने आह भरते हुए कहा। “तब बस सजने-संवरने, नाचने-गाने और खाने-पीने का ही काम होता था। न कोई विदेश मंत्री का पद, न किसी डिवीजन जनरल का काम, न काउंटी की राजनीति को संभालना, न दरबारी साजिशों का सामना करना।”

"जी हां, लेडी जूलिया; मैं दोपहर दो बजे बिस्तर से उठता था, चार बजे तक कपड़े पहनता था, सात बजे तक आराम करता था, नौ बजे तक खाना खाता था और अगली सुबह छह बजे तक नाचता था।"

“जी हाँ, मेरे प्रिय स्वामी; यह तो बस आपके जीवन का सार था। अफसोस! मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि वर्दोपोलिस में सबसे खूबसूरत और शानदार जैकेट और बेहतरीन खुशबूदार मूंछों का मालिक कभी अपनी शान-शौकत को शीत युद्ध की कठिनाइयों में झोंक देगा, और अपने चश्मे को युद्ध के मैदान में टूटने के खतरे में डाल देगा!”

यहां बातचीत शांत हो गई, पियानो से निकलने वाले संगीत की गंभीर धुन और एक रोमांचक आवाज के उद्गार में खो गई।

"सिरहाला नदी गहराई से बहती है,"
और एवेशम उस पर फैल जाता है,
वह आखिरी रात जब वह मुस्कुराएगी
उसके चारों ओर सन्नाटा छाया रहता है!
सभी अपने भालों पर टिके हुए हैं,
सब कुछ भीतर, आसपास,

लेकिन कुछ लोगों को कल रात पता चल जाएगा
एक बेहद गहरी नींद!
गर्मी की ओस अदृश्य
किले और बुर्ज पर चमक:
जब युद्ध की आवाज गूंजेगी तो कौन सी ओस गिरेगी?
क्या ऐसा ही कुछ सुनने को मिल रहा है?
ट्रम्प और विजय का ढोल
जीती गई लड़ाई का प्रसार होगा:
फिर कौन मुड़कर कहेगा
क्या हम महान आत्माओं के निधन पर शोक मनाते हैं?
मजबूत हाथ, वीर हृदय
फिर से घर की ओर भीड़ उमड़ेगी,
युद्ध के रक्तरंजित चंगुल से लौटकर:
वे मृतकों को कहाँ छोड़ेंगे?
एक विदेशी भूमि के नीचे,
एक अजनबी लहर के अलावा,
शहीद के पवित्र ईश्वर की निगरानी में,
शहीद की कब्र की रखवाली कौन करता है!

गीत समाप्त होने पर मिस मूर उठीं और आगे आईं।

“अब, मेरे स्वामी,” उसने अर्ल ऑफ स्टुअर्टविले को संबोधित करते हुए कहा। “देखिए, अगर आप मुझे नहीं देखेंगे तो मैंने आपको सुनने के लिए मजबूर कर दिया है। माफ़ी मत मांगिए! मुझे बेशक बुरा लगा है। यह कहना व्यर्थ है कि आपने मुझे नहीं देखा, अंधेरा था, आदि। आपको सहज ज्ञान से मेरी उपस्थिति का एहसास हो जाना चाहिए था।”

“क्या!” लॉर्ड ने जवाब दिया। “मुझे लगता है कि ज़मोर्ना के गुलाब को उसकी सुगंध से पहचाना जाना चाहिए। मिस जेन, बैठ जाइए। मुझे आपसे कुछ कहना है; कुछ ऐसा जो—मैं इसकी पुष्टि कर सकता हूँ—आपके दिल को गुस्से से भर देगा।”

"क्या इसका संबंध उस कारण से है जिसके लिए आप यहां आए हैं?" उसने पास

ही रखे एक फुटरेस्ट पर बैठते हुए पूछा।

"बिल्कुल सही; और आपको इसे एक महत्वपूर्ण परिस्थिति ही समझना चाहिए जिसकी वजह से मैं रात के इस समय दस मील की दूरी तय करके यहाँ आया हूँ।"

“तो चलिए, बिना किसी देरी के सीधे-सीधे बात करते हैं,” थॉर्नटन ने बीच में टोकते हुए कहा। “मेरे जाने के बाद मजिस्ट्रेटों की बैठक में क्या कुछ गड़बड़ हुई?”

“नहीं,” अर्ल ने जवाब दिया, “सिवाय इसके कि एडवर्ड पर्सी और मेरे बीच नाजायज संतान के एक मामले को लेकर थोड़ी कहा-सुनी हुई थी। खैर, वह मामला सुलझ गया था; हमने हिसाब बराबर कर लिया था, और एडवर्ड अपना आखिरी गिलास ब्रांडी और पानी खत्म ही कर रहा था कि कोर्ट-हाउस की खिड़की के पास खड़े सिडेनहैम ने कहा कि गली के निचले छोर पर भीड़ जमा होती दिख रही है — और जैसे ही उसने यह कहा, हमें एक चीख सुनाई दी जो बिल्कुल उनके चुनावी नारों जैसी थी। मैंने मैके को तुरंत जाकर देखने को कहा कि क्या करना है, लेकिन इससे पहले कि वह बाहर निकल पाता, ज़मोर्ना के पाँच-छह सज्जन मजिस्ट्रेट के कमरे की सीढ़ियों पर एक साथ चढ़ गए, और सबसे आगे वाले ने दुख से ज़्यादा खुशी के साथ घोषणा की कि उसे लगता है कि दंगा होने वाला है। ‘क्या बात है?’ मैंने पूछा। किसी ने जवाब नहीं दिया, और हममें से कुछ का चेहरा पीला पड़ गया, क्योंकि अचानक गली में एक ज़बरदस्त भीड़ उमड़ पड़ी, और दो मिनट में स्टैनक्लिफ़ और कोर्ट-हाउस का पूरा सामने का हिस्सा चीख-पुकार की भीड़ से भर गया। आवारा लोग।"

“क्या उन्होंने खिड़कियाँ तोड़ दीं?” थॉर्नटन ने पूछा।

“नहीं, उन्होंने तो एक भी पत्थर नहीं फेंका, और सच में, वे हमारे बारे में सोच भी नहीं रहे थे। उनके चेहरे दूसरी तरफ मुड़े हुए थे, होटल की सामने वाली खिड़कियों की ओर उठे हुए थे। वे बुरी तरह चिल्ला रहे थे, लेकिन लाख कोशिश करने पर भी मुझे समझ नहीं आया कि वे क्या कह रहे थे। हालांकि, आप यकीन मानिए कि हमने तुरंत विशेष कांस्टेबलों को शपथ दिलाने का काम शुरू कर दिया, और सैनिकों को तैयार रखने के लिए बैरकों में संदेश भेज दिया गया। इसी बीच मैं और पर्सी सीढ़ियों पर गए और भीड़ को तितर-बितर होने के लिए चिल्लाया, लेकिन उन्होंने हमें ‘नॉर्थेंगरलैंड मुर्दाबाद! कोई फ्रांसीसी नहीं! कोई अर्द्राहियन नहीं!’ के नारे से जवाब दिया। ‘अच्छा, मेरे साथियों,’ मैंने कहा, ‘क्या तुम हमें फ्रांसीसी कहते हो? क्या तुम कहते हो कि हम नॉर्थेंगरलैंड और अर्द्राह के लिए हैं? अगर बस यही बात है, तो मैं भी तुम्हारे साथ तीनों

के खिलाफ ज़ोरदार विरोध करूंगा – और फिर तितर-बितर होकर चुपचाप घर चला जाऊंगा।' और इस तरह विरोध हुआ, और वह एक ज़बरदस्त गर्जना थी; और एडवर्ड आगे बढ़कर अपना अपनी वेस्टकोट के आर्महोल में अंगूठे डाले, वह चिल्लाया, 'अब, लड़कों, चलो ज़ोर से चिल्लाते हैं—जितना ऊँचा हो सके—पूरी तरह से उस बूढ़े, अय्याश नॉर्थेंगरलैंड के सम्मान में! ज़ोर से चिल्लाओ, लड़कों! मैं ताल देता हूँ!' उसने ऐसा किया, और जिस सीढ़ी पर वह खड़ा था, वह उनके एक साथ उठे भयानक शोर से काँप उठी। 'देशवासियों!' एडवर्ड ने कहा। 'मुझे आप लोगों के बीच ऐसा जोश देखकर गर्व हो रहा है! अब घर जाओ। आज के लिए इतना काफी है।' लेकिन वे हिले तक नहीं। उन्होंने केवल एक उलझी हुई और भयानक बड़बड़ाहट में जवाब दिया जिसे समझना असंभव था, और वे अभी भी होटल की ओर देख रहे थे, मानो वहाँ कुछ ऐसा हो जिसे वे जानना चाहते हों। 'क्या आपको लगता है कि नॉर्थेंगरलैंड स्टैनक्लिफ के यहाँ है?' मैंने पूछा। 'नहीं, नहीं,' जवाब था। 'अगर वह होता तो खून-खराबा हो जाता!' और एक अकेली आवाज़ ने कहा, 'लेकिन वह कुत्ता, उसका दामाद है।

कैसलरेघ रुक गया। इस घोषणा में बहुत कुछ शामिल था। थॉर्नटन अपनी कुर्सी से उठा और कमरे में एक-दो बार चक्कर लगाया; जूलिया परेशान लग रही थी और उसने कुछ धीमी सी आवाज़ निकाली; मिस मूर ने कुछ नहीं कहा, लेकिन हल्की चाँदनी में भी यह देखा जा सकता था कि उसका चेहरा लाल हो गया था। अर्ल ने बोलना जारी रखा। "जब हमने यह सुना, तो एडवर्ड पर्सी वापस कोर्टहाउस में चले गए, बैठ गए और बोले कि अगर उन्होंने कुछ भी होने से रोकने के लिए हाथ उठाया, तो उनकी मृत्यु हो जाए तो अच्छा होगा। मैं उनके ऊपर खड़ा हो गया और पूरी गंभीरता से कसम खाई, 'अगर हमने जो सुना है वह सच है, और अगर भीड़ तुरंत तितर-बितर नहीं हुई, तो मैं बैरक से तीन सौ घुड़सवार बुलाऊंगा और उन्हें कीड़े-मकोड़ों की तरह कुचल दूंगा।' 'भगवान की कसम, तुम ऐसा नहीं करोगे,' एडवर्ड ने कहा। 'सैनिकों को जनता को नियंत्रित करने का कोई अधिकार नहीं है, धिक्कार है लाल अत्याचारियों!' मैंने कहा कि मेरे उपाय सख्त होंगे और मैं उनकी इस शापित दुर्भावना से नहीं रुकूंगा। मैं घोड़े पर सवार हुआ और भीड़ के बीच से होते हुए स्टैनक्लिफ के घर की ओर भागा। मैं अंदर गया। जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, वे सभी घबराए हुए थे, लेकिन मैंने मालकिन को बुलवाया और उनसे पूछा कि क्या ड्यूक वास्तव में यहाँ हैं। उन्होंने कहा नहीं, लेकिन अर्ल ऑफ रिचटन की गाड़ी एक घंटे पहले आ गई थी, और उसी से

यह अफवाह फैली थी। मैंने उनसे पूछा कि क्या राजदूत तो वहाँ थे, लेकिन उसने कहा कि केवल उनके पारिवारिक चिकित्सक, डॉ. मॉरिसन ही थे, जो यह खबर लाए थे कि महामहिम सेल्डन हाउस से निकल चुके हैं और कल दोपहर बारह बजे ज़मोर्ना में होंगे। रिचटन उनके साथ यात्रा कर रहे थे, और मॉरिसन उनसे एक दिन पहले रास्ता तैयार करने के लिए निकल गए थे। यह सूचना मिलने पर, मैं फिर बाहर गया, लोगों से कहा कि वे अभी जाएँ और कल दोपहर उसी स्थान पर अवश्य पहुँचें, जहाँ ज़मोर्ना उनसे मिलने के लिए मौजूद होंगे। 'और फिर,' मैंने कहा, 'देखते हैं आप क्या करते हैं। फिलहाल वे दो सौ मील दूर हैं।' उन्होंने मेरी बात मान ली, और कुछ ही घंटों में सड़क खाली हो गई। अब, थॉर्नटन, आपको क्या लगता है? आपको और मुझे सुबह जल्दी स्टैनक्लिफ के पास होना चाहिए। जहाँ तक एडवर्ड पर्सी की बात है, उनका कहना है कि वे कल पूरे दिन बिस्तर पर ही रहेंगे।

"उसे वहीं पड़ा रहने दो!" थॉर्नटन बुदबुदाया। "मुझे उसकी कोई परवाह नहीं है, और ड्यूक को वही मिलेगा जिसका वह हकदार है। उसे लोगों को इतना परेशान नहीं करना चाहिए था। एक बूढ़े, घिसे-पिटे अय्याश से मिलने के लिए उसे तीन-चार सौ मील जाने की क्या ज़रूरत थी? एडवर्ड इस मामले में काफी समझदार है। वह हमेशा अपने लिए कड़वा पेय बनाता रहता है, और जहाँ तक मुझे पता है, अब उसे पीना ही पड़ेगा। काश उसमें थोड़ी अक्ल आ जाती। हार्टफोर्ड कहाँ है?"

"अभी-अभी गज़ेम्बा से हॉल लौटा हूँ। लेकिन वह किसी काम का नहीं है। वह भी सोने चला जाएगा।"

"मैंने कभी ऐसी परेशानी नहीं देखी," आदरणीय जनरल ने आगे कहा। "मुझे यह सोचकर ही घिन आती है कि लोग सैनिकों से कुचले जा रहे हैं। यह स्वाभाविक नहीं है। लेकिन अगर वे उनसे छेड़छाड़ करते हैं, तो मुझे परवाह नहीं कि तोपें उन पर ही क्यों न तान दी जाएं। हे कैसलरेघ, पहले उन्हें मार डालो— पहले उन्हें मार डालो और फिर देखो कि जब वह आएगा तो क्या कहेगा। अगर वह एक बार उनके बीच आ गया, तो वे अपना इरादा बदल लेंगे।"

"मुझे उम्मीद है कि वे ऐसा करेंगे," जूलिया ने हाथ मलते हुए कहा। "मुझे उम्मीद है कि वे ऐसा करेंगे। थॉर्नटन, क्या तुम्हें लगता है कि वे उसे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे?"

"किसे परवाह है?" सर विलियम ने रूखेपन से जवाब दिया।

"मुझे पूरा यकीन है कि आप ऐसा करते हैं," उसने कहा, "भले ही आप इस बारे में इतने नाराज़ क्यों हैं।"

“जूलिया, चुप रहो!” उसने जवाब दिया।

जूलिया चुप थी; और मिस मूर ने अपनी पलकों की गहरी छाया के नीचे से लगभग तिरस्कारपूर्ण भाव से उसकी ओर देखा - एक क्षणिक भाव जो पल भर में गायब हो गया।

"ड्यूक शहर जाते समय गिरनिंगटन गेट से गुजरेंगे," उसने उदासीन स्वर में कहा।

“जी हां,” कैसलरेघ ने कहा। “लेकिन अगर आप ध्यान से देखें तो आपको गाड़ी मुश्किल से ही नज़र आएगी। यह बिल्कुल साधारण सी गाड़ी है, जैसे किसी आम सज्जन की होती है, जिसमें छह घोड़े और तीन सहायक होते हैं।”

"शायद कोई ड्यूक को ही पहचान सके," उसने अपनी आंख के कोने से कैसलरेघ को उसी तिरछी नजर से देखते हुए जवाब दिया।

“जेन, समझदारी से बात करो!” थॉर्नटन ने चिढ़कर कहा, और जेन ने अपना सिर उठाकर उसे घूरकर देखा, उसकी निगाहें अचानक आश्चर्य और गुस्से से भर उठी थीं। लेकिन वह कुछ बोली नहीं, और अपने निचले होंठ को दबाकर उसने उस भावना को काबू में करने की कोशिश की जो उसके चेहरे को लाल कर रही थी। अब थॉर्नटन ने लॉर्ड स्टुअर्टविले को अपने अध्ययन कक्ष में साथ चलने के लिए कहा, और सभा समाप्त हो गई।

अध्याय 7

चार्ल्स टाउनशेंड ज़मोर्ना के ज़मोर्ना शहर में लौटने को देख रहे हैं।

26 जून की सुबह मानो सभी कामकाज ठप्प पड़ गए थे। ज़मोर्ना की आबादी में एक तरह का उत्साह छाया हुआ था, मानो आम चुनाव का माहौल हो। सड़कों पर कुछ ही महिलाएं नज़र आ रही थीं, लेकिन सज्जनों या मैकेनिकों के समूह हर लैंपपोस्ट के

पास मंडरा रहे थे। अधिकांश मिलें बंद पड़ी थीं, क्योंकि मजदूर काम पर नहीं आ रहे थे। दस बजे अदालत के दरवाजे खुल गए, और लॉर्ड स्टुअर्टविले की भविष्यवाणी के विपरीत, लॉर्ड हार्टफोर्ड की गाड़ी सबसे पहले नीचे सीढ़ियों पर आकर रुकी। विशेष कांस्टेबल मजिस्ट्रेट के कमरे से निकलकर स्टैनक्लिफ की ओर सड़क पार करते हुए दिखाई देने लगे। जैसे-जैसे दोपहर करीब आती गई, भीड़ बढ़ती गई। होटल के सामने एक घनी भीड़ जमा होने लगी।

अब दूसरी मंजिल की खिड़की से मुझे पूरा दृश्य दिखाई दिया। मौसम सुहाना था—सूरज चमक रहा था, आसमान गर्मियों के सबसे गहरे नीले रंग का था—लेकिन किसी को भी चिलचिलाती गर्मी महसूस नहीं हो रही थी। हर चेहरे पर बेचैनी और उम्मीद झलक रही थी। किसी अजनबी के लिए यह एक शानदार मौका होता, क्योंकि प्रांत के बड़े-बड़े लोग हर पल सड़क पार कर रहे थे। मैंने देखा कि जनरल थॉर्नटन आ चुके थे, क्योंकि वे अंदर की सीढ़ियों पर खड़े थे और मिल के प्रमुख मालिक श्री वॉकर को एक भारी लाल झंडा दिखा रहे थे, जो ठीक सामने दो गंदे-मैले मजदूरों द्वारा पकड़े गए एक ऊंचे खंभे पर स्थिर लटका हुआ था। जैसे-जैसे झंडा कभी-कभी खंभे के हिलने से, न कि उमस भरी हवा के झोंके से, अपनी तहें फैलाता, उस पर ये शब्द दिखाई देते: 'एंग्रिया गद्दारों को तिरस्कार करता है—नॉर्थेंगरलैंड को कतई'; दूसरी तरफ: 'पर्सी का कोई प्रभाव नहीं'। लॉर्ड स्टुअर्टविले पास आए और मैंने उन्हें साफ-साफ कहते सुना, "हम इस झंडे को नहीं उतारेंगे! इस पर एक अच्छा आदर्श वाक्य लिखा है।" वास्तव में, यह स्पष्ट था कि शहर के कुलीन और संभ्रांत वर्ग निम्न वर्गों के विरुद्ध किसी भी प्रकार से शत्रुतापूर्ण नहीं थे। इसके विपरीत, वे अपने कट्टर शत्रु के विरुद्ध इस प्रकार की भावना के प्रदर्शन से प्रसन्न थे, जिसके तीखे अपमान अभी भी उनकी स्मृति में ताज़ा थे और प्रत्येक के हृदय में तीव्र आक्रोश था। वे केवल इस भावना को नियंत्रण में रखना चाहते थे ताकि किसी भी प्रकार के अनुचित और अव्यावहारिक उग्र प्रदर्शन को रोका जा सके।

खैर, समय बीतता गया। शोर बढ़ता गया और भीड़ घनी होती गई। पूरा वातावरण शोर से गूंज रहा था। बेसब्री से इंतज़ार चरम पर था। लोग शहर की घड़ी की ओर देख रहे थे, जो तेज धूप में बारह बजने का संकेत दे रही थी: एक और पल, और हर कान में लोहे की गहरी, जोरदार आवाज गूंज उठी। ट्रिनिटी चर्च और पादरी के घर से यह आवाज और भी मधुर सुनाई दी। उनकी घंटियों की आवाज अभी शांत भी नहीं हुई थी

कि भीड़ के सबसे बाहरी किनारों पर कुछ झंडे बेचैनी से लहराते हुए दिखाई दिए। वे आगे बढ़े, और फिर जल्दी से पीछे हट गए। एक भयंकर, गहरी आवाज उठी। जैसे ही यह आवाज हिलती-डुलती, बेचैन कतारों के बीच से गुज़री, अपनी तेज़ गति से बढ़ती ताकत के साथ, घबराहट का एहसास हुआ। आखिरकार, होटल की खिड़कियों के ठीक नीचे, "वह आ रहा है - वह आ रहा है!" सौ आवाजों में एक साथ आवाज़ गूंजी। घर के अंदर यह घोषणा गूंजी, और कदमों की आहट सीढ़ियों पर सुनाई दी। मेरे कमरे का दरवाजा अचानक खुल गया, और बीस लोग मेरे पीछे थे, खिड़की से एक झलक पाने के लिए एक दूसरे के पीछे धक्का-मुक्की कर रहे थे; जब मैं बाहर की ओर झुका तो मैंने देखा कि सामने की चौड़ी खिड़की के हर हिस्से में इसी तरह लोग मौजूद थे।

सभी मजिस्ट्रेट अब अदालत की सीढ़ियों पर थे। मैंने एडवर्ड पर्सी को ढूँढा, लेकिन निस्संदेह वह बिस्तर पर थे; खैर, वह वहाँ नहीं थे। इसी बीच, भीड़भाड़ वाली दूरी में एक गहरी खाई खुल गई - मुझे नहीं पता कैसे, क्योंकि सड़क इतनी घनी थी कि एक और आदमी का निकलना असंभव लग रहा था। धीरे-धीरे उसमें से गुज़रते हुए, मैंने घोड़ों के सिर और पहरेदारों की आकृतियाँ देखीं। ठीक उसी क्षण, कराह शुरू हुई - जनता की तिरस्कारपूर्ण, घृणित, दुर्भावनापूर्ण कराह। इसने मन को भयभीत कर दिया - आवाज़ इतनी तेज़ और उग्र हो गई कि लोग उन्मादी गति से इधर-उधर भागने लगे और उनके ऊपर दो विशाल ध्वजवाहक अपने विशाल और रक्तरंजित झंडे को बेतहाशा लहरा रहे थे। इस बीच, सभी आने वाली गाड़ी को देखने के लिए झुक गए। वह ठोस भीड़ में से मुश्किल से अपना रास्ता बना रही थी, लेकिन फिर भी आगे बढ़ती रही। घोड़े पहरेदारों के कठोर लगाम से टकराते हुए अपने सिर ऊँचे उछाल रहे थे। वे अब पास थे। मेरी थकी हुई आँखों ने सब कुछ स्पष्ट रूप से देखा। डिब्बा खुला और विशाल था: उसमें तीन लोग थे। इन तीनों को देखने और यह जानने में गहरी दिलचस्पी थी कि उनकी वर्तमान स्थिति उन्हें कैसे प्रभावित कर रही है।

एक व्यक्ति, सफेद टोपी और नीले फ्रॉग्ड कोट में, आगे की ओर झुका हुआ था और पोस्टिलियनों को पूरी लगन से निर्देश दे रहा था। मुझे लगा कि वह गाड़ी को कोर्ट-हाउस के पास लाने के लिए उत्सुक था; उसने वहाँ बैठे सज्जनों की ओर देखा, और ऐसा लगा जैसे उनके और उसके बीच बुद्धिमत्तापूर्ण निगाहें चल रही हों। ये सभी - मेरा मतलब मजिस्ट्रेटों से है - सिर झुकाए हुए थे। लॉर्ड स्टुअर्टविल आगे दिखाई दिए; उनके घुंघराले बाल धूप में चमक रहे थे; उन्होंने एक हाथ में टोपी पकड़ी हुई थी

और दूसरे हाथ से लोगों को अपनी कतारें हटाने का इशारा कर रहे थे। जनरल थॉर्नटन, भी टोपी हाथ में लिए, जल्दी से एक आदमी को आदेश दे रहे थे जिसे मैं अपना सेवक जानता था; मैंने उन्हें बैरक की ओर इशारा करते देखा। जहाँ तक लॉर्ड हार्टफोर्ड की बात है, वह चुपचाप और सीधे खड़े थे: उनकी गहरी नज़र लोगों पर घूम रही थी और गाड़ी पर टकटकी लगाए खड़ी थी। लॉर्ड रिचटन (बेशक नीले फ्रॉग्ड कोट और सफेद टोपी के मालिक कोई और नहीं हो सकते) के बारे में कहा जाता है कि उनमें शेर जैसा साहस नहीं है, फिर भी वे स्पष्ट खतरे की स्थिति में बहुत संयम दिखा सकते हैं। मुझे उनके चेहरे की शांति देखकर आनंद आया, जिस पर न तो मुस्कान थी और न ही शिकन, और उनकी हल्की आँखों में, जो हमेशा फुर्तीली थीं, एक प्रकार की चिंता झलक रही थी, जिसमें डर या क्रोध का कोई अंश नहीं था। ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने तानाशाह और प्रबंधक की भूमिका निभा ली हो, और वे बहुत व्यस्त दिख रहे थे, कभी अदालत की सीढ़ियों पर खड़े समूह से टेलीग्राम पर बात कर रहे थे, तो कभी विवेक के अनुसार पोस्टिलियनों को जाँच रहे थे या उन्हें निर्देश दे रहे थे। गाड़ी में बैठा दूसरा पुरुष बिल्कुल शांत था। वह लापरवाही से पीछे की ओर झुका हुआ था; चौड़ी किनारी वाली और आगे की ओर झुकी हुई टोपी ने उसके चेहरे को छाया दी हुई थी; उसने कुछ नहीं कहा; उसने किसी की ओर नहीं देखा। मैंने उसे बस इतना करते देखा कि उसने अपनी जैकेट की जेब से सोने की नसवार की डिब्बी निकाली, उसे तीन बार थपथपाया, उंगली और अंगूठे से चुटकी भर नसवार निकाली, फिर डिब्बी को वापस रख दिया और अपनी जैकेट के बटन बंद कर लिए।

इस समूह की तीसरी आकृति, एक महिला, और निश्चित रूप से ज़मोर्ना की डचेस, एक अधिक रोचक वस्तु प्रस्तुत करती है। उन्होंने अपने विशिष्ट शैलीगत सादगीपूर्ण वस्त्र पहने थे - एक हल्का ग्रीष्मकालीन कोट, जो उनकी आकृति पर खूबसूरती से फिट था; एक सुंदर, साधारण बोनट, जो एक चौड़े रिबन से बंधा था; न घूंघट, न फूल, न पंख। उनके बाल भी अपने स्वाभाविक घुंघरालेपन से रहित थे और माथे पर स्पष्ट रूप से विभाजित थे: यह शैली, जो बहुत कम लोगों को शोभा देती है, उन पर खूब जंच रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि इससे उनके माथे को अतिरिक्त शांति, उनकी नाक को अतिरिक्त सीधापन और कोमलता मिल रही है; इससे उनके गोरे, पारदर्शी रंग में और भी निखार आ रहा था और उनकी आँखों में एक संतत्व का आभास हो रहा था। मैं यह नहीं कह सकता कि वह भयभीत थीं, दुखी थीं या अपमानित; आपके

महान लोग आम लोगों के सामने अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं करते; फिर भी, होठों पर हल्की सी लाली के अलावा उनका पूरा शरीर रंगहीन था।

“पर्सी का कोई प्रभाव नहीं!” उन्मादी भीड़ चिल्लाई और चीखी। “नॉर्थेंगरलैंड मुर्दाबाद— उसका खून से सना सिर मिट्टी में लोट जाए!” और उन्होंने अपमानजनक बैनर उसकी बेटी के ऊपर ऊँचा लहराया, जिससे उसकी आकृति क्षण भर के लिए बैनर की तहों से परावर्तित उदास, आग जैसी छाया में समा गई। इस बीच, चौड़ी किनारी वाली टोपी पहने वह व्यक्ति किसी भी भीगे हुए क्वेकर की तरह बैठा था, जिस पर अभी तक कोई असर नहीं हुआ था। हालाँकि, रिचटन के कुशल मार्गदर्शन से उसकी गाड़ी अंततः कोर्ट-हाउस पहुँच गई, जो अब सीढ़ियों पर लंगर डाले खड़ी थी, और गति रुकने से उसे एहसास हुआ कि वह एक अजीब स्थिति में है। उसने सीधे अपने सामने देखा, फिर दाईं ओर, बाईं ओर, और अंत में अपने कंधे के ऊपर। एक क्षण के चिंतन के बाद उसने अपनी तर्जनी उंगली उठाई और अर्ल ऑफ स्टुअर्टविले को इशारा किया। मुझे उसे इतना बुद्धिमानी भरा काम करते देखकर आश्चर्य हुआ। तीन मिनट की एक बैठक हुई, जिसमें स्टुअर्टविले की भूमिका प्रश्नकर्ता के होंठों से तेज़ी से पूछे जा रहे सवालों की एक श्रृंखला का जवाब देने तक ही सीमित रही। फिर ब्रॉड-ब्रिम ने खुद को सीधा किया, अपनी टोपी को थोड़ा ऊपर उठाया, गाड़ी में ही अचानक खड़े हो गए और ऐसा करते हुए उन्होंने अपना सिर ढक लिया। उनके बालों से गुज़रती एक हवा ने उन्हें कनपटी और माथे से हटा दिया। उन्होंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

अचानक हुई कोई अप्रत्याशित हलचल आम तौर पर किसी भी स्थिति को, चाहे वह किसी भी दिशा में चल रही हो, कम से कम एक पल के लिए रोक देती है। इस बार, ज़मोर्ना के ड्यूक के उठने से वह शोरगुल शांत हो गया जिसने उनके राज्य में उनका इतना कर्कश स्वागत किया था। सबसे पहले सन्नाटा उनके आस-पास के लोगों पर छा गया; दूसरों को भी आभास हुआ कि कुछ देखने या सुनने को मिल रहा है, और वे भी चुप हो गए। शांति फैल गई, और कुछ ही देर में विशाल और आशा से भरी भीड़ की धीमी, समुद्र जैसी गुनगुनाहट के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। इस बीच, वह सीधे खड़े रहे, उनके कोट का सीना खुला हुआ था, एक हाथ उनकी कमर पर टिका हुआ था। दूसरे हाथ में पहले उनकी टोपी थी, जब तक कि रिचटन ने उन्हें बिना एहसास कराए ही टोपी उनसे नहीं ले ली। ऐसा लग रहा था जैसे वह तब तक

प्रतीक्षा कर रहे हों और देख रहे हों जब तक कि उनके चारों ओर का हलचल भरा वातावरण शांत न हो जाए। फिर तुलनात्मक सन्नाटा छा गया: हर किसी की निगाहें उन पर टिकी थीं। आशा का वह ठहराव इतना खामोश था कि उसके टूटने के ख्याल से ही दिल कांप उठता था।

“काश,” ज़मोर्ना के ड्यूक ने कहा, “काश, लड़कों, तुम सबको घर पर कुछ करने को मिल जाता।”

उनकी आवाज़ जानी-पहचानी थी, और उनके चेहरे के हाव-भाव भी। लोग और सुनने के लिए उत्सुक लग रहे थे, और अपने लंबे बालों में उंगलियाँ फिराते हुए उन्होंने दोबारा बोलना शुरू किया।

"क्या आप में से कोई इतना बुद्धिमान व्यक्ति है जो इस खूबसूरत प्रदर्शन का कारण बता सके जो आप अभी कर रहे हैं?"

(“हाँ! हाँ!” कई आवाज़ों ने एक साथ कहा।)

“मैं कहता हूँ नहीं! क्या इसका कारण यह है कि मैं अपने एक पुराने परिचित और दूर के रिश्तेदार से मिलने गया था जो एक कमजोर और बीमार व्यक्ति है?”

("महामहिम, आप एक बार फिर नॉर्थेंगरलैंड से भिड़ गए हैं और हम उससे नफरत करते हैं," भीड़ में से एक अकेली आवाज ने जवाब दिया।)

“क्या कहते हो, मेरे लड़के?” ड्यूक ने कहा, ऐसा लगता है कि उन्होंने वह बात ठीक से नहीं सुनी थी। उस आदमी ने बात दोहराई।

“नॉर्थेंगरलैंड की जिम्मेदारी संभालना!” महामहिम ने आगे कहा। “यह एक अस्पष्ट अभिव्यक्ति है। मैं दक्षिण में गया था, अपने और अपने रिश्तेदारों के मामलों को देख रहा था, और राजनीति के बारे में मेरी उतनी ही कम चिंता थी जितनी आपमें से अधिकांश लोगों की धर्म के बारे में होती है।”

"क्या तुमने नॉर्थेंगरलैंड के साथ गठबंधन किया है?" झंडाबरदारों में से एक ने सख्ती से पूछा।

ड्यूक ने बदले हुए गुस्से भरे चेहरे के साथ उसकी ओर देखा। उसने उसके विद्रोही झंडे को घूरते हुए ठंडे स्वर में कहा, "उस झंडे को उतार दो।"

“नहीं!” झंडा उठाने वाले ने चिल्लाकर कहा। “यह जनता का झंडा है।”

“इसे उतारो,” महामहिम ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया और मजिस्ट्रेटों को घूरकर देखा। उन्होंने तुरंत ड्यूक के आदेश का पालन करने के लिए छह विशेष कांस्टेबलों को

भेजा। ज़ोरदार हंगामा मच गया; विशाल झंडा ऊपर-नीचे उछाला जा रहा था क्योंकि उसे धारण करने वाले लोग उसे अपने पास रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे, जिसे कांस्टेबल छीनने पर तुले हुए थे; भीड़ का शोर दुगना हो गया; और अचानक, भयानक गर्जना के साथ, शाही रथ पर धावा बोल दिया गया। एक भयावह दृश्य सामने आया। दरबार की सीढ़ियों और खिड़कियों पर जमा हुए सज्जन भीड़ में कूद पड़े। एक भयानक चीख सुनाई दी क्योंकि चौंके हुए घोड़े - अब चौकीदारों के आदेश का पालन नहीं कर रहे थे - घनी भीड़ में दहशत से कूद पड़े। उनकी जंगली आँखें और लहराते बाल मानव सिरों के समुद्र के ऊपर दिखाई दे रहे थे, जैसे उनके लोहे के खुर, पागलों की तरह उछलते हुए, अपने चारों ओर सब कुछ कुचल रहे थे। मैंने पीड़ा से डचेस की ओर देखा; वह पीछे की ओर झुकी हुई थी और उसने अपना चेहरा गाड़ी के गद्दों में छिपा लिया था। ज़मोर्ना, जिसके दाँत कसे हुए थे और उसके गंजे सिर के घुंघराले बाल उसकी क्रूर आँखों को ढके हुए थे, वह भयानक लग रहा था; उसने न तो अपनी पत्नी से और न ही लॉर्ड रिचटन से एक शब्द कहा; उसकी निगाहें एक ही दिशा में टिकी हुई थीं। अंत में, जिस दिशा में उसने देखा, वहाँ एक गड़गड़ाहट की आवाज़ और धूल का घना बादल उठा, तो वह उठ खड़ा हुआ और बहुत ऊँची और स्पष्ट आवाज़ में बोला, "ज़मोर्ना के लोगों, तीन सौ घुड़सवार तुम पर हमला करने आ रहे हैं। मैं उन्हें देख रहा हूँ; वे यहाँ हैं; यदि तुम तुरंत गाड़ी से पीछे नहीं हटे, तो पाँच मिनट में तुम्हें कुचल दिया जाएगा।" समय नहीं था: घोड़े के बाल लहराते हुए और चौड़ी तलवारें चमकाते हुए, ज़ोरदार जयकार और गरज के साथ, घुड़सवार सेना भीड़ पर टूट पड़ी। लॉर्ड स्टुअर्टविले सबसे आगे था, अपनी टोपी लहराते हुए और एक शैतान की तरह घोड़े पर सवार था। कोई भी इसका सामना नहीं कर सका, यहाँ तक कि ज़मोर्ना के पागल मैकेनिक और हताश कर्मचारी भी नहीं। वे भूसे की तरह उड़ गए; यह रेगिस्तान की रेत को उड़ाता हुआ बवंडर था। पुल और रथ साफ हो गए थे; उनके पीछे चौड़ी सड़क तेज धूप में खाली पड़ी थी। कुछ घायल लोग ही टूटे-फूटे अंगों के साथ फुटपाथ पर पड़े रह गए थे। उन्हें जल्द ही अस्पताल ले जाया गया, पत्थरों से उनका खून धो दिया गया, और जो कुछ हुआ था उसका कोई निशान नहीं बचा। जब मैंने शाही रथ को देखा, तो वह स्टैनक्लिफ के सामने खाली खड़ा था; सीट पर एक चादर पड़ी थी और दो नौकर घोड़ों को बाहर निकाल रहे थे।

अध्याय 8

सर विलियम पर्सी ने शहर के नेताओं के प्रति ज़मोर्ना के गुस्से का वर्णन किया है।

दोपहर का समय था और होटल में थोड़ी शांति थी। मैं बगीचे में थोड़ी ठंडी हवा लेने के लिए बाहर गया था, जहाँ घनी झाड़ियाँ धूप को कुछ हद तक रोक रही थीं। दो-तीन सज्जन वहाँ टहल रहे थे और एक मंडप में मुझे सर विलियम पर्सी मिले।

"अच्छा, कर्नल जी, आज सुबह जब धूल उड़ रही थी तो आप कहाँ थे?"

“ओह, मुझे तो अदालत में सबसे आरामदायक कोना मिल गया था। मैंने सारा तमाशा बड़े आराम से देखा। सर्दियों के लिए तो बढ़िया खेल था; लेकिन इन भीषण गर्मी के लिए कुछ ज़्यादा ही फुर्तीला। वो घोड़े कैसे भागे! जब तुम्हारे भाई को उनकी हार के बारे में पता चलेगा तो वो क्या कहेंगे?”

“वाह! खुद को अथाह गड्ढे में कसम खिला रहा है और फिर अपनी जीभ को ठंडा करने के लिए ब्रांडी की एक बूंद मांग रहा है! लेकिन टाउनशेंड, क्या मैं बहुत सुस्त नहीं दिख रहा हूँ? बिल्कुल थका हुआ [ताज़ी हवा से वंचित], शास्त्रीय मुहावरे का प्रयोग करते हुए?”

"कह तो नहीं सकते, लेकिन तुम पर इसका असर दिख रहा है। लगता है गर्मी ने तुम्हें काबू कर लिया है।"

"हाँ, ऐसा हो सकता है। दोपहर से ही मैं महान मुगल की उपस्थिति में हूँ।"

"क्या, ज़मोर्ना के बारे में?"

“और कोई नहीं। उन्होंने हममें से बहुतों को बड़े भोजन कक्ष में बुलवाया; और फिर, जब मैं, स्टुअर्टविले, थॉर्नटन, सिडेनहैम, वॉकर और एक दर्जन और लोग अंदर गए, तो वह चिमनी से खिड़की तक इधर-उधर घूम रहे थे, उनका चेहरा एडवर्ड के तंबाकू के पाइप के धुएं से दस गुना ज़्यादा काला था। जब हम अंदर आए तो वह बस खड़े रहे और लंबी मेज पर हाथ रख दिया, हर आदमी ने अपने जूते उतारे और दरवाजे पर झुककर अभिवादन किया। उन्होंने हमें बैठने के लिए कभी नहीं कहा, बल्कि हमें

नीचे वाले छोर पर खड़े रहने दिया, जैसे चौबीस शहद के बर्तन एक कतार में खड़े हों। उन्होंने लॉर्ड स्टुअर्टविले से यह पूछकर बात शुरू की कि क्या सैनिक अपने क्वार्टर में वापस चले गए हैं। स्टुअर्टविले एक कदम आगे बढ़े और जवाब दिया कि वे चले गए हैं, सिवाय एक छोटी टुकड़ी के जिसे शहर के उस हिस्से में व्यवस्था बनाए रखने के लिए छोड़ा गया था जो अभी तक पूरी तरह से व्यवस्थित नहीं लग रहा था। 'फिर,' उनके महामहिम ने अपनी बात जारी रखी, जितनी ठंडी आप चाहें, 'मुझे कहना होगा, मेरे प्रभु, मैं उस असंतोष की स्थिति को देखकर बहुत हैरान हूँ जिसमें मैं हूँ 'आपके नेतृत्व में प्रांत की स्थापना हुई।' और इस सुंदर वाक्य को एक और शब्द से नरम किए बिना, वह उत्तर के लिए रुक गया।

स्टुअर्टविले ने साफ-साफ कहा, 'उनका मानना है कि लोगों के मन में अर्ल ऑफ नॉर्थैंगरलैंड के खिलाफ एक प्रबल भावना है।' 'मुझे आपकी बात को दूसरे शब्दों में कहने दीजिए,' महामहिम ने कहा। 'मुझे लगता है कि लोगों के मन में यह प्रबल भावना है कि उन्हें यह तय करने का अधिकार है कि कैसे, कब, कहाँ, किससे और किस विषय पर वे चाहें। यह आपका और आपके पीछे खड़े सज्जनों का कर्तव्य है कि इस भावना को दबाएँ; जो लोग इसे पाल रहे हैं, उन्हें इसके भ्रम और इस पर अमल करने के खतरे को दिखाएँ।' जनरल थॉर्नटन ने टिप्पणी की कि उन्होंने उस सुबह अपनी पूरी कोशिश की थी। उन्हें जो जवाब मिला, उससे उनका यह विचार पूरी तरह से भ्रामक साबित हुआ। 'मैंने आपके आचरण को उस नजरिए से नहीं देखा है,' मुगल ने कहा। 'नगर अधिकारियों की सामान्य सतर्कता से ऐसे बदमाशों का जमावड़ा रोका जा सकता था। सामान्य विवेक से उस झंडे के डंडे को जलावन में बदल दिया जा सकता था जिसे आज आपके शहर में गुस्ताखी से फहराया गया था। मेरा सिर।' उन्होंने फिर से एक ठहराव लिया और फिर पूछा कि क्या ज़मोर्ना के मेयर मौजूद हैं। श्री मौड ने झुककर अभिवादन किया और आगे आए। 'आपकी पुलिस ढीली है,' उन्होंने बिना किसी शिष्टाचार के बोलना शुरू किया। 'आपका नगर निगम आलसी है और उसमें सुधार की आवश्यकता है। हर चीज अव्यवस्था, लापरवाही और कुशासन की ओर इशारा करती है। यदि मुझे शीघ्र ही कोई सुधार नहीं मिला, तो मैं आपके शहर को उसके नगर निगम विशेषाधिकारों से वंचित करने के उपाय शुरू करना अपना कर्तव्य समझूंगा।'

"फिर एक और विराम आया, जिसके दौरान श्री सिडेनहैम ने कहा, 'उनका मानना

है कि महामहिम ने शहर का बहुत कठोर मूल्यांकन किया। उनका मानना था कि उस दिन प्रकट हुई भावना बेवफाई का सबूत नहीं थी, बल्कि इसके विपरीत थी।' इस बात पर ड्यूक ने सारसेन की तरह तेवर चढ़ाए। सिडेनहैम पर निगाहें गड़ाते हुए उन्होंने कहा, 'कृपया इस कमरे में रहते हुए अपनी राय अपने तक ही रखें। मैंने कभी भी उस वफादारी को महत्व नहीं दिया जो मेरे निजी मित्रों के चुनाव को निर्धारित करे या मेरे निजी कार्यों की दिशा तय करे। मैंने एंग्रिया का ताज इस शर्त पर स्वीकार नहीं किया था – और आपको यह समझने में कितना समय लगेगा कि सम्राट बनने के बाद भी मैं इंसान रहना नहीं छोड़ता? आपके देश ने मुझे राजशाही की शान और शक्ति सौंपी, लेकिन मैंने बदले में निजी जीवन की स्वतंत्रता और आजादी नहीं दी।' किसी ने उन्हें जवाब नहीं दिया और एक और विराम के बाद उन्होंने फिर से बोलना शुरू किया। 'लॉर्ड स्टुअर्टविले, ज़मोर्ना ने आपके नेतृत्व में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है। इस पद पर आपने मेरी उम्मीदों को निराश किया है। मुझे आपको हटाना होगा। यदि आप और अधिक जोश से काम नहीं करते हैं।' स्टुअर्टविल का चेहरा लाल हो गया और वह बहुत भावुक होकर बोला, 'महामहिम, आपसे पहले ही यह अपेक्षा की जाएगी। इसी क्षण से मैं अपने पद से इस्तीफा देता हूँ। यदि मुझे पहले पता होता तो...' और, टाउनशेंड, क्या आप विश्वास करेंगे, यहाँ वह एक घूँट के साथ रुक गया जैसे उसका गला घुट गया हो। थॉर्नटन का चेहरा भी लाल हो गया और उसने कहा कि उसे लगता है कि यह सब बहुत बुरा है। हमारे सम्राट ने आगे कहा: 'आप मजिस्ट्रेटों ने स्वयं को अपमानित किया है; एक अनुपस्थित था; दूसरा पूरी तरह से निष्क्रिय था; और शेष चार ने न तो दूरदर्शिता, न संकल्प, न ही ऊर्जा दिखाई। सज्जनों, आप जा सकते हैं।' और इस तरह उसने हमारी ओर पीठ फेर ली, खिड़की तक चला गया, और हम बाहर निकल गए। थॉर्नटन एक बैल की तरह चिड़चिड़े होकर गिरिंगटन लौट गया; स्टुअर्टविल अपने तेज घोड़े पर सवार होकर सरपट दौड़ पड़ा, जो उसे बहुत पहले ही मृत्युदंड तक ले गया होगा; सिडेनहैम और वॉकर दोनों एडवर्डस्टन के मंच पर चढ़ गए और निस्संदेह अब वे सम्राट के सम्मान में शराब पी रहे होंगे। एडवर्ड की बेहतरीन रचनाओं का एक बड़ा संग्रह; जहाँ तक मेरी बात है, मैं यहाँ ताज़ी हवा लेने और फ्रिकैंड्यू ("बछड़े के मांस या अन्य मांस का एक टुकड़ा ... सॉस के साथ परोसा जाता है") खाने की भूख बढ़ाने आया हूँ, जिसे मैंने अभी-अभी ऑर्डर किया है।

"वाह," मैंने कहा। "वाह, क्या बात है! और बताओ, डचेस का क्या हाल है? क्या

तुम्हें पता है कि वो बहुत डरी हुई है?”

"लगभग, मैं कह सकता हूँ। भीड़ शुरू होने पर उसका चेहरा पीला पड़ गया था; मैंने सुना है कि स्टैनक्लिफ अस्पताल में भर्ती होते ही वह बीमार पड़ गई।"

“तो फिर आपने उसे नहीं देखा?”

"हां, एक मिनट के लिए; सीढ़ियों पर चढ़ते समय मैं रिचटन की बांह का सहारा ले रहा था।"

“क्या आपने कुछ कहा?”

“नहीं। दरअसल, वह उस समय लगभग मर चुकी थी, और न तो उसने मुझे देखा और न ही किसी और को। वह आदमी यह बताने आ रहा है कि मेरा फ्रिकांडो तैयार है। टाउनशेंड, क्या तुम अंदर आकर नाश्ता करोगे?”

अध्याय 9

स्टैनक्लिफ होटल में ज़मोर्ना और उनकी पत्नी मैरी

शाम ढलती जा रही थी। ओह, कितनी ठंडी, कितनी सुहावनी हवा उसकी पहली सिसकियाँ भरती हुई आई, मानो दिन के उजाले को अपने साथ ले जा रही हो। सूर्यास्त हो चुका था; सड़कें शांत और धुंधली थीं; आसमान से निकलता चाँद ज़मोर्ना के मठ के टावरों पर अपनी निगाहें गड़ाए हुए था, मानो उसका सफेद अग्रभाग और खंभों वाली खिड़की उस निगाहों का जवाब देने के लिए ऊपर उठी हुई हो। शाम की हवा स्टैनक्लिफ के एक बड़े ऊपरी कमरे के पर्दों को फड़फड़ा रही थी। हर खिड़की पर पर्दा लगा हुआ था, मानो रोशनी, शोर और हर उस चीज़ को बाहर रखने के लिए जो उस कोने में रखे सोफे से आराम को भंग कर सकती थी। तकियों के ढेर में धँसी एक महिला सो रही थी - पीली पड़ी हुई, बाल खुले हुए, और उसकी शारीरिक मुद्रा अत्यधिक थकान की शिथिलता को दर्शा रही थी।

क्या सोफे पर झुका हुआ वह व्यक्ति उसे जगाने वाला है? अफसोस, कमरे में कोई और जीवित प्राणी नहीं है जो उसे हटने के लिए कहे और उसे सोने दे! वह व्यक्ति किस बात पर मुस्कुरा रहा है? ऐसा लगता है कि उसे उस दुबली-पतली काया और संगमरमर जैसे चेहरे की थकावट और उन नन्ही परी जैसी हाथों की पवित्रता में मज़ा आ रहा है। हे दुष्ट, उसे मत छुओ! लेकिन अपनी लंबी तर्जनी उंगली से वह उसके माथे से बिखरे बालों को और हटाता है, और फिर उस चीज़ पर मुस्कुराता है जिसकी कोई भी व्यक्ति पूजा करेगा - खुला माथा, जो किसी मूर्ति में विराजमान कुंवारी मैरी की तरह चमक रहा है। वह एक पल के लिए अपने अपवित्र हाथों को उससे हटाकर अपनी जेब में डाल लेता है। हे मनुष्य, तुम इस पवित्र स्थान के लिए उपयुक्त संरक्षक नहीं लगते! तुम इस दृश्य की शांति भंग कर रहे हो। क्यों नहीं चले जाते? चारों ओर इतनी शांति और धुंध है, और वह इतनी सुंदर है कि कोई उसे संत और इस कमरे को एक पवित्र चैपल समझ सकता है। लेकिन जब आप वहां खड़े हों, तो मैं किसी को भी इस तरह के पवित्र भ्रम से अपने मन को शांत करने की चुनौती देता हूं: एक आदमी जिसकी मूंछें और कुछ-कुछ दाढ़ी जैसी हैं, और इतने सारे बाल हैं - इस रोशनी में लगभग काले दिखते हैं - कि आपको मुश्किल से पता चलता है कि उसका माथा है या नहीं, जब तक कि वह अचानक बालों के ढेर को हटा नहीं देता और फिर नीचे एक खुला मैदान दिखाई देता है, जिसकी चिकनाई आपको बताती है कि वह पुजारी बनने के लिए काफी बूढ़ा नहीं है।

अपने लॉर्ड लेफ्टिनेंट और कॉर्पोरेशन के साथ हुई कड़ी पूछताछ और दोपहर भर चले उतने ही कठोर दृश्यों से उबरने के बाद, ज़मोर्ना शाम की ठंडक में उस कमरे की ओर बढ़ा जहाँ उसकी डचेस विश्राम करने गई थी। कई तरह की मिली-जुली भावनाएँ उसे वहाँ खींच लाई थीं। एक ओर, वह जानना चाहता था कि सुबह का दृश्य उसके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था, तो दूसरी ओर, वह दिन भर के कड़वे और गुस्से भरे संघर्ष से व्याकुल उसकी कोमल भावनाओं पर भरोसा करना चाहता था। फिर, एक रहस्यमय अस्पष्टता में, लगभग स्वयं को ही, यह एहसास था कि उसी के साथ उसके संबंध ने उसे अपने लोगों के साथ इस तरह उलझा दिया था; और अब वह आंशिक रूप से उसकी सुंदरता से प्रसन्न होने के लिए, और आंशिक रूप से स्त्री आकर्षण के जादू और उन पर अत्यधिक मोहित होने, उनके द्वारा पूरी तरह निर्देशित होने के खतरे पर एक घंटा चिंतन में बिताने के लिए आया था।

उसने लाल पर्दा हटाया और शाम की धूप उस पर पड़ने दी। वह कमरे में धीरे-धीरे इधर-उधर टहल रहा था, और हर बार जब वह उसके पलंग के पास से गुज़रता, तो उसकी निगाहें उस पर टिक जातीं। उस आदमी ने मैरी पर्सी से अब तक किसी भी औरत से ज़्यादा प्यार किया था, और मैं कह सकती हूँ कि अब तक उसका चेहरा उसके लिए जाना-पहचाना और घर का चेहरा बन चुका था। जिस तरह से उसकी नज़रें उसके कोमल और फीके चेहरे को ढूँढ़ती और उसकी रेखाओं पर टिकती हैं, उससे पता चलता है कि उसे उसे निहारने में सुकून मिलता है। हर मनोदशा में, हर समय, वह उसे पसंद करता है। उसका मिजाज बदलता रहता है; वह हमेशा खुशमिजाज़ नहीं रहती; वह कभी-कभी रोती है, और अक्सर स्त्री-सुलभ ईर्ष्याओं से उसे चिढ़ाती और परेशान करती है। मुझे नहीं लगता कि धरती पर कोई और औरत होगी जिसमें वह इन बदलावों को एक पल के लिए भी सहन कर सके। उससे ये बदलाव उसे लगभग प्रसन्न करते हैं। उसे उसके डर के साथ खेलने में मज़ा आता है—अपनी मर्ज़ी से उन्हें भड़काना या शांत करना।

वह अब भी सो रही थी, लेकिन अब वह उसे जगाने के लिए झुका। उसने उसके जुड़े हुए हाथों को अलग किया और एक हाथ अपने हाथ में ले लिया। इस हरकत से परेशान होकर उसने जल्दी से और चिढ़कर अपना हाथ छुड़ा लिया और करवट बदलते हुए कुछ बुदबुदाई। वह हँसा, और उसकी हँसी से वह जाग गई। उठकर उसने उसकी ओर देखा और मुस्कुराई। वह अब भी थकी हुई लग रही थी, और जब वह उसके बगल में बैठा तो उसने अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया और फिर से सो जाना चाहती थी। लेकिन ड्यूक ने उसे ऐसा करने नहीं दिया: वह अपनी शाम के मनोरंजन के लिए आया था, और वह अपना मनोरंजन करके ही रहेगा, चाहे वह इसके लिए तैयार हो या न हो। उसकी इस रोक लगाने वाली और परेशान करने वाली हरकत के जवाब में उसने कहा, "एड्रियान, मैं थकी हुई हूँ।"

“मुझसे बात करने के लिए बहुत थके हुए हो?” उसने पूछा।

"नहीं, एड्रियन, लेकिन मुझे तुम्हारे सहारे झुकने दो।"

फिर भी उसने उसे रोके रखा।

“आओ,” उसने कहा। “अपनी आँखें खोलो और अपने बाल बाँध लो; ये तुम्हारी गर्दन पर जलपरी की तरह लटक रहे हैं।” डचेस ने अपना हाथ अपने बालों पर उठाया; सचमुच वे बिखरे हुए और कंधों पर फैले हुए थे। वह उन्हें संवारने के लिए उठी और

इस काम ने उसे तरोताज़ा कर दिया। दर्पण के सामने अपनी भूरी चोटियों को संवारने और अपने ढीले हुए वस्त्र को बार-बार ठीक करने के बाद, जब तक कि वह अपनी सामान्य साफ-सुथरी स्थिति में वापस नहीं आ गया, वह खिड़की की ओर चली गई।

"सूरज डूब गया," उसने कहा। "मैं इसे डूबते हुए देखने के लिए बहुत देर हो चुकी है।" और डूबते सूरज की कोमल रोशनी पर उसकी नज़र ठहर गई, और वह सोच में पड़कर मुस्कुराई। "यह पश्चिम है!" उसने कहा; और ज़मोर्ना की ओर मुड़कर जल्दी से बोली, "अगर तुम एक महान कल्पनाशील एंग्रियन पैदा हुए होते तो क्या होता?"

"खैर, मुझे वही मूर्खतापूर्ण काम करना चाहिए था जो मैंने एक छोटी सी कल्पनाशील सेनेगाम्बियन लड़की से शादी करके किया है।"

"और," वह आधी खुद से और आधी उससे बात करते हुए बोली, "तब तुम्हारे प्रति मेरी भावनाएँ आज से बिल्कुल अलग होतीं। मुझे लगता कि तुम्हें मेरे दूर देश की, उसके विशाल जंगली जंगलों की कोई परवाह नहीं है। मुझे लगता कि तुम्हारा सारा दिल इस खूबसूरत और समृद्ध, ऊर्जा और जीवन से भरपूर भूमि में बसा हुआ है, लेकिन फिर भी, एड्रियन, पश्चिम के उस रोमांस में नहीं।"

"और अब तुम क्या सोचती हो, मेरी सैफो?"

"तुम कोई भव्य, भयानक परदेसी नहीं हो जो अपने राज्य को धरती की सबसे महान भूमि समझकर उसमें लीन हो, मुझे एक अजनबी समझकर मेरी देशभक्तिपूर्ण बातों को भावुक सपने समझकर सुन रहे हो, बल्कि तुम सेनेगाम्बिया के पुत्र हो, जैसे मैं एक पुत्री हूँ — मेरे लिए हज़ार गुना अधिक गौरवशाली, क्योंकि तुम मेरी अपनी धरती की अग्नि-सीखित मिट्टी से निकली सबसे गौरवशाली वस्तु हो! आज जब वे एंग्रियन तुम्हारे चारों ओर चिल्ला रहे थे, तब मैंने तुम्हें देखा और मुझे याद आया कि तुम मेरे देशवासी हो, उनके नहीं — और अचानक उनकी पराई इंद्रियों, उनके परदेसी हृदयों ने तुममें, उस महान अजनबी में, कुछ असंगत पाया और वे तुम्हारे वश में उठ खड़े हुए, विद्रोह करते हुए चिल्लाने लगे।"

"मैरी!" ड्यूक हंसते हुए उसके पास आते हुए बोले। "मैरी, आज शाम तुम्हें क्या हुआ है? मुझे देखने दो—क्या यह वही शांत, प्यारी सी सूरत है जिसे मैं अक्सर देखता हूँ?" उन्होंने उसका चेहरा ऊपर उठाया और देखा, लेकिन वह झट से दूसरी तरफ मुड़ गई।

"नहीं, एड्रियन। मैं पर्सी हॉल के सपने देख रही हूँ। तुम मुझे वहाँ कब जाने दोगे?"

"कभी भी। अगर आप चाहें तो आज रात ही रवाना हो सकते हैं।"

“यह बकवास है, और मैं सच कह रहा हूँ। मुझे कभी न कभी जाना ही होगा— लेकिन तुम मुझे कभी भी अपनी मर्जी से कुछ नहीं करने देते।”

“बिल्कुल! अगर आपको हद से ज्यादा लाड़-प्यार न मिला होता, तो आप ऐसा कहने की हिम्मत ही न करते।”

"मुझे जाने दो, और लगभग एक महीने बाद मेरे साथ आना जब तुम एड्रियानापोलिस में मामले सुलझा लोगे - वादा करो, एड्रियन।"

“मैं तुम्हें खुशी-खुशी जाने दूंगी,” ज़मोर्ना ने बैठते हुए और चिढ़ते हुए कहा। “लेकिन मुझसे अंग्रिया को कम से कम एक साल और एक दिन के लिए फिर से छोड़ने के लिए कहना – ऐसी अनुचित विनती को तो कोई और नहीं मानेगा, सिवाय एक अति लाड़ली पत्नी के।”

"यह अनुचित नहीं है, और मुझे लगता है कि आप चाहते हैं कि मैं आपको छोड़ दूं? अगर मैं कुछ कर सकता तो मैं आपको पंद्रह सौ मील दूर कभी नहीं जाने देता।"

“नहीं,” उनके सम्मान ने जवाब दिया। “और न ही पंद्रह सौ गज। तुम मुझे अपने ड्राइंग रूम में चीनी मिट्टी के गहने की तरह रखोगे। चलो, उस पालतू जानवर को हटाओ! आखिर बात क्या है?”

"एड्रियान, तुम बहुत ही तिरस्कारपूर्ण दिख रहे हो।"

उसने खिड़की की सीट पर पड़ी एक किताब उठाई और पढ़ना शुरू कर दिया। डचेस कुछ देर तक उसे देखती रही और अपनी सधी हुई भौंहें सिकोड़ती रही। वह पन्ने पलटता गया और उसकी भौंहों की गंभीरता से पता चलता था कि उसे पढ़ने में रुचि है और वह आगे पढ़ना चाहता है। महारानी किसी भी तरह से मनमौजी नहीं हैं, हालांकि कभी-कभी वह ऐसे हथियारों से खेलती हुई प्रतीत होती हैं जिन्हें संभालने की हिम्मत शायद ही कोई करे। इस बार उसकी अचूक सूझबूझ ने उसे बता दिया कि मामला हद से ज्यादा बढ़ गया है। फिर वह ज़मोर्ना के पास बैठ गई; झुककर किताब को देखा; वह कविता की किताब थी - बायरन की। उसका ध्यान भी उस पर केंद्रित हो गया; और वह पढ़ती रही, हर पन्ने के अंत में ड्यूक के चेहरे की ओर देखकर यह देखती रही कि क्या वह आगे पढ़ने के लिए तैयार है। वह इतनी शांत थी, उसके बाल इतने कोमल ढंग से उसके गालों को छू रहे थे जब वह अपना सिर उसकी ओर झुका रही थी, उसके कोमल हाथ का स्पर्श कभी-कभार उसके हाथ को छू रहा था, उसकी

चिकनी और रेशमी पोशाक इतनी मनमोहक थी कि उसकी शरारती हरकत से पैदा हुई शुरुआती नाराजगी तुरंत शांत हो गई; और जब लगभग आधे घंटे बाद, उसने उस अप्रिय किताब को बंद करने और उसके हाथ से लेने का साहस किया, तो उसे कोई प्रतिरोध नहीं मिला - केवल सिर हिलाना, आधा फटकार भरा, आधा क्षमाशील।

ड्यूक और डचेस ने ज़्यादा कुछ नहीं कहा, या कम से कम उनकी आगे की बातचीत किसी को सुनाई नहीं दी। कमरे में शाम का अंधेरा छा रहा था; सूर्यास्त की आखिरी किरण सुनहरी दीवारों से छनकर आ रही थी। वे खिड़की के कोने में अगल-बगल बैठे थे, आसमान से साफ चाँद उन पर चमक रहा था और अपनी मुस्कान से उनके चेहरों को रोशन कर रहा था। मैरी ने अपना खुश सिर उस छाती पर टिका दिया जिस पर उसे भरोसा था—इस विश्वास में खुश, भले ही यह एक भ्रम था। एड्रियानापोलिस में उनकी आखिरी सुखद मुलाकात के बाद से ज़मोर्ना दयालु, स्नेही और जहाँ तक उसे पता था, वफादार रहा था, और उसने उसकी बाहों में सुरक्षित महसूस करना सीख लिया था, इस डर के बिना कि जब उसे सबसे ज़्यादा सहारे की ज़रूरत होगी, तो वह अचानक छिन जाएगा। नॉर्थेंगरलैंड की अपनी पिछली यात्रा के दौरान उन्होंने उस पर विशेष ध्यान दिया था, क्योंकि वे जानते थे कि उसके प्रति स्नेह दिखाना ही उसके पिता के हृदय को शांत करने का सबसे कारगर तरीका है। और जब वह कई बार अर्ल और ड्यूक के बीच बैठी थी, तो उसने महसूस किया कि दोनों उसे अपने जीवन का प्रकाश और आशा मानते हैं, तो उसके भावों की अपार प्रसन्नता को शब्दों में व्यक्त करना असंभव था। भाषा ने उसे यह बात स्पष्ट रूप से नहीं समझाई थी। उसके पिता भावनात्मक मामलों में कम बोलते हैं; उसका पति तो बिलकुल भी नहीं बोलता, हालांकि वह अपने कार्यों में बहुत उत्साही है; लेकिन नॉर्थेंगरलैंड उसकी उपस्थिति में प्रसन्न हो उठता था, और ज़मोर्ना सुबह से शाम तक उसे देखती रहती थी, उसकी हर हरकत पर पैनी और गहरी नज़र रखती थी।

क्या दरवाजे पर हन्ना रोवले दस्तक दे रही है? वह कहती है कि चाय आ गई है, और श्री सुरेना दुकान में वापस जाने के लिए बेचैन हैं।

विली एलिन की कहानी

भाग 1

[मई 1853 दिनांकित]

मैं इस बात से इनकार नहीं करूँगा कि मुझे श्रीमती विडअप के चरित्र का अध्ययन करने में आनंद आया, और न ही इस बात से कि मुझे उनमें एक विशेष प्रकार का गुण दिखाई दिया। तीस वर्ष पहले (हमारी जान-पहचान की शुरुआत इतने समय पहले हुई थी) मैंने उनके चरित्र का अध्ययन किए बिना ही उनके गुणों पर पूरा विश्वास किया था। तब वे मुझे अपने चार बच्चों में से एक मानती थीं – अपने लाडले बच्चों की तरह। इस समूह में मैं उनका प्रिय नहीं था; वास्तव में, उनकी कृपा में मेरा स्थान सबसे निचला था। यहाँ तक कि बचपन और किशोरावस्था के दौरान भी वे मुझे एक आदर्श के बजाय एक पहेली की तरह देखती थीं। दो दशकों के अलगाव और आधी पीढ़ी से अधिक के बदलाव के बाद हम फिर से एक ही छत के नीचे मिले, एलिन हॉल का गृहस्वामी होने के नाते, मैं उसके मालिक का सम्मान तो करता था, लेकिन दिन-रात उसे एक अनसुलझी पहेली की तरह देखता रहता था।

ऐसा ही था और ऐसा ही होना था: आदत और परिस्थितियाँ हमें बांधे रखती थीं, लेकिन कुछ भी आपस में मिल नहीं सकता था, कुछ भी पूरी तरह से सामने नहीं आ सकता था।

एक तरह से देखा जाए तो श्रीमती विडअप पूरी तरह ईमानदार थीं; उनका स्वभाव स्थिर और दृढ़ था; मित्रता में वे पक्षपाती थीं, लेकिन शत्रु में अडिग; वे आमतौर पर दयालु और हंसमुख थीं। वे संकीर्ण सोच वाली थीं, धन से प्रेम करती थीं, और स्वभाविक रूप से स्वार्थ की ओर झुकी रहती थीं। वफादारी, पक्षपात, स्वार्थ, इन सभी ने उन्हें एलिन परिवार से लगाव रखने के लिए प्रेरित किया, और इसी कारण वे मुझसे, उस परिवार के जीवित प्रतिनिधि से, जुड़ी रहीं।

एलिन हॉल पाँच पीढ़ियों से एलिन परिवार का घर था। मेरी जवानी में यह उनके हाथों से निकल गया। मेरे सबसे बड़े सौतेले भाई ने इसे बेच दिया। उनकी अचानक मृत्यु हो गई, उन्होंने न तो कोई वसीयत छोड़ी और न ही कोई सीधा वारिस; उनकी

संपत्ति मुझे मिली, और मैंने उस प्राचीन घर को वापस खरीद लिया। मेरा वह सबसे बड़ा सौतेला भाई शरीर से तो बलवान था, लेकिन हृदय से निरंकुश था। मैं उसके कर्मों का उल्लेख करना चाहता हूँ, पर वे ऐसे हैं जिन्हें मृत्यु स्मृति से मिटा देती है।

भाग II

[दिनांक 22 जून 1853]

अन्य देशों में, और सुदूर काल में, यह संभव है कि मेरी जाति के अधिक लोग मानव आवासों – चाहे झोपड़ी हो या हवेली – की ओर आकर्षित हुए हों और उन्हें गुप्त रूप से किराए पर लिया हो, जबकि पिछले सौ वर्षों में ऐसे आवासों में रहने वाले लोगों की संख्या इतनी कम ही रही है। फिर भी, हम हमेशा से ही कम संख्या में थे, हमारी उपस्थिति दुर्लभ थी, इसके संकेत धुंधले थे और इसके प्रमाण प्राप्त करना कठिन था।

मेरा घर देखने में सुंदर नहीं था: उसमें न तो बुर्ज थे, न ही प्राचीरें, न ही जालीदार या हीरे के आकार की खिड़कियाँ। फिर भी, मुझे लगता है कि इसके पत्थर शुरू से ही भूरे रंग के थे, जो किसी बंजर ज़मीन पर स्थित किसी भूरी खदान से निकाले गए थे। इसे बनाने वालों को ताज़ी हवा बहुत पसंद थी, इसलिए उन्होंने एक ऊँची जगह चुनी थी, जहाँ हरी-भरी ज़मीन सबसे ऊँची उठती थी। इसका नज़ारा खुला और चारों ओर से सुंदर था: यहाँ से सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों दिखाई देते थे, और उत्तर-दक्षिण दिशा में एक समान और विस्तृत क्षेत्र दिखाई देता था। इन निर्माताओं ने भी सुविधा की बजाय एकांत को प्राथमिकता दी: गाँव दूर था - गर्मियों में शायद काफ़ी पास, लेकिन सर्दियों में दिन में टहलने के लिए काफ़ी दूर। आस-पास के इलाके की एक भावनात्मक विशेषता के बारे में, मुझे लगता है कि पहले मालिकों को न तो पता था और न ही उन्होंने ज़मीन चुनते समय इस पर ध्यान दिया था। आस-पास फैली छोटी, हरी, फूलों से लदी घास एक प्राचीन कब्रिस्तान को ढके हुए थी – इतना प्राचीन कि फूलों के नीचे दफ़न सभी कब्रें बहुत पहले ही मिट्टी या हड्डी बनकर महीन मिट्टी में तब्दील हो चुकी थीं, जो मई में बैंगनी फूल और वसंत, ग्रीष्म और शरद ऋतु में रेशमी घास की चादर बिछा देती थीं। ये बैंगनी फूल सफेद थे, और अपने मौसम में ये घनी तरह से एक फीके घेरे में इकट्ठा हो जाते थे, जो किसी गहरे धंसे हुए और लोहे जैसे

भूरे रंग के पत्थर के चारों ओर लिपटा होता था – मानो किसी भूले हुए चैपल का एकमात्र बचा हुआ नींव का पत्थर हो, या किसी टूटे हुए क्रॉस का तहखाना। घर का एक शांत छज्जा इस काईदार घास के मैदान की ओर देखता था। छज्जे के निचले हिस्से में कोई खिड़की नहीं थी, ऊपरी हिस्से में एक खिड़की थी, जिसके सामने पत्थर की एक बालकनी थी, जो उस इलाके में एक दुर्लभ विशेषता थी, और वास्तव में घर की विशिष्ट पहचान थी और इसी से इसका नाम पड़ा – एलिन बालकनी।

मैं कौन हूँ? क्या मैं घर का मालिक था? नहीं। क्या मैं किराएदार था, शायद पट्टे पर लेकर किराया दे रहा था? नहीं। क्या मैं परिवार का बच्चा था? नहीं। नौकर? नहीं। मुझसे और सवाल मत पूछो, क्योंकि इनका जवाब देना मुश्किल है। मैं वहाँ था, और वह मेरा घर था।

मुझे वो पहला पल याद है जब मुझे इसका एहसास हुआ। मैं गोधूलि बेला के बीचोंबीच होश में आया। मैं धरती से ऊपर आया था – स्वर्ग से नीचे नहीं, और जिसने सबसे पहले मेरा स्वागत किया और मुझे जीवन में सहारा दिया, वो मेरे ऊपर एक विशाल वृत्त था, एक गोल आकृति, साफ, ऊबड़-खाबड़ और वीरान। मैंने आकाश देखने से पहले ही चाँद देख लिया था; लेकिन वो भी, रात के आवरण में लिपटा और तारों से जगमगाता हुआ, जल्द ही मेरे लिए खुल गया। एक मधुर सन्नाटा मेरे जन्म के क्षण को देख रहा था। मुझे इस काईदार जगह से लगाव हो गया, मैं इमारत के हर कोने और ज़मीन के हर कोने में चुपके से घूमता रहा। ग्रीष्म ऋतु की एक रात की हल्की धूप और शुद्ध नमी में, मैंने एलिन बालकनी की छत और लॉन पर ओस में और चाँदनी में अपनी छाप और चिन्ह अंकित पाया।

मुझे नहीं पता कि मैं कभी मानवता से जुड़ा था, या अस्तित्व के उस रहस्य से समाहित था जिसे पुरुष या स्त्री जानते हैं। फिर भी, यदि बालकनी के पास कोई नश्वर अवशेष न सो रहा होता, तो क्या मैं उठ खड़ा होता? क्या मेरी माँ, रात्रि, मुझे किसी निश्चित जीवनदायी, नश्वर सार से अविभाजित रूप में जन्म देती?

आंसुओं ने इस धरती को सींचा था; गहरे दुःख और तीव्र भावनाएँ यहाँ एकत्रित हुई थीं। क्या कोई ठंडी मिट्टी, जो केवल बारिश से भीगी हो और जहाँ केवल हवा और छाया ही आती हो, मुझे अपनी उपज के रूप में दे सकती थी?

मुझे तो यह भी लगता है कि किसी सोए हुए व्यक्ति ने मुझे एक महान परिश्रमी हृदय से बाहर फेंक दिया, जिसने अपने तीस, साठ या अस्सी वर्षों के काम में भयानक

परिश्रम किया था, जो जीवंत और दृढ़ता से धड़कता रहा, जब वह अभी भी शक्ति में था तब स्थिर रहा, और दफन होते हुए भी गर्म और मुश्किल से रुका हुआ, अपनी अबाधित चमक और अनियंत्रित क्रिया को एक ऐसे सार में प्रक्षेपित किया जो देहहीन और अपूर्ण था, फिर भी मर्मस्पर्शी और सूक्ष्म था।

मुझे ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि पुरुषों से मेरे संबंध बहुत सीमित थे। लाखों पुरुषों से मुझे कोई जुड़ाव महसूस नहीं हुआ, कोई नज़दीकी नहीं मिली; कुछ ही पुरुषों से मैं धीरे से जुड़ पाती थी। क्या ऐसे पुरुष भी मौजूद थे जो मुझे अधिक सक्रिय रूप से आकर्षित कर सकते थे, यह तो समय और संयोग ही बता सकते थे।

मेरे बचपन में एलिन बालकनी में जो भी लोग रहते थे, उनका मुझ पर कोई असर नहीं हुआ। मैं दीवारों के हर पत्थर को जानता था। मैं आस-पड़ोस को जानता था – छोटी पहाड़ियाँ, गलियाँ, घास के मैदान, हर तरह की वनस्पति, खेत के फूल, झाड़ियाँ, पीली कंटीली झाड़ियाँ और कंटीली झाड़ियाँ, पथरीली मिट्टी से चमकते फॉक्सग्लोव, ज़मीन या दीवार पर फैली आइवी। मैं इन चीजों को पहचानता था और अब भी मुझे ये सब अच्छी तरह याद हैं। मैं ऋतुओं को जानता था, गर्मी और सर्दी के रूपों को। बसंत और पतझड़ के आसमान मेरे लिए जाने-पहचाने थे; रात, दिन और घंटे सब मेरे लिए परिचित थे। तूफान और सुहावना मौसम मेरी यादों को पूरा करते हैं। मुझे कोई मानवीय दृश्य याद नहीं आता, फिर भी उस घर में इंसानियत थी। अब अनुभव मुझे बताता है कि वह व्यस्त, चहल-पहल भरी इंसानियत रही होगी, जीवन की एक सजग धारा जो शहरों और घनी आबादी वाले इलाकों की ओर बहती थी, और वहाँ से नए लोगों के साथ लौटती थी – जीवन एक स्वतंत्र, सामान्य धारा में बहता था, कभी विचारों के किनारों के नीचे धीरे-धीरे नहीं जाता था, कभी गहराइयों में नहीं मुड़ता था, बल्कि घनी आबादी वाले राजमार्गों के समानांतर चलता था। अंततः, मुझे लगता है, यह व्यावहारिक दैनिक जीवन सेवानिवृत्ति को त्यागकर स्थायी रूप से उन शहरों में लौट गया जो इसका स्वाभाविक क्षेत्र थे। इस प्रस्थान से मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ा, सिवाय इसके कि मुझे सूर्य को देखना और हवा की आवाज़ सुनना एक नए, निर्धन अवकाश के भाव से याद है।

लगभग इसी समय मैंने मानव जाति के अस्तित्व की धुंधली धारणा में एक व्यक्ति विशेष की चेतना को जोड़ा। एक अकेली बूढ़ी औरत एलिन बाल्कनी की गृहणी बनी। वह अब खाली पड़े आंगन में जंजीर से बंधे एक बड़े कुत्ते को खाना खिलाती,

खिड़कियों के शटर खोलती-बंद करती, खूब बुनाई करती और थोड़ा-बहुत पढ़ती-सोचती थी। मेरा मानना है कि शायद इसीलिए मैं उसकी उपस्थिति को महसूस कर पाता था, चाहे वह कितना भी कम क्यों न हो। उससे पहले यहाँ रहने वाले लोग कभी सोचते नहीं थे, और मैं उस भौतिक अस्तित्व में प्रवेश नहीं कर सकता था।

भाग III

मैं

एलिन बाल्कनी की अकेली गृहणी, बूढ़ी श्रीमती हिल, एक दिन अपनी रसोई में बैठी एक पुराने उपदेश-पुस्तिका को पढ़ रही थीं, जो उनकी उम्र के बराबर ही पुरानी थी। तभी, जैसे ही उनकी केतली चाय के लिए उबलने लगी, उन्हें लगा जैसे किसी पगडंडी से लोहे का फाटक खुल रहा हो, जो उस अकेले घर की ओर जाती थी। उन्होंने अपना हाथ रोका, अपनी घड़ी की सुइयों को देखा और ध्यान से सुना। क्या कोई आ रहा था? यह तो बस हवा थी, जो दक्षिण से चलने पर, जैसे कि अब चल रही थी, उस फाटक को किसी हाथ की तरह खड़खड़ा सकती थी। शांत स्वभाव की श्रीमती हिल, हर दिन और हर रात, इस सुनसान जगह के आसपास ऐसी आवाज़ें सुनती थीं जो उन्हें डरा देती थीं, लेकिन दृढ़ निश्चय के कारण, उनका डर कभी उनके होंठों से नहीं निकला और न ही उनके हाव-भाव पर कोई असर पड़ा। उन्होंने फाटक को दूसरी तरफ रख दिया और अपनी मोज़े पहनने लगीं।

सच है, दक्षिण से हल्की हवा चल रही थी। उससे कुछ भी नहीं हिल रहा था; वह बस उस प्राकृतिक रास्ते पर सरसरा रही थी जो फाटक से ऊपर की ओर जाने वाले रास्ते के ऊपर अंधेरा छा रहा था। इस समय परछाईं सिर्फ रास्ते पर ही नहीं, बल्कि एक छोटे से राहगीर पर भी पड़ रही थी – एक बच्चे जैसी आकृति – शायद कोई देहाती सा दिखने वाला लड़का किसी काम से जाने के लिए इस फाटक से होकर इस घने पेड़ों वाले रास्ते से ऊपर जा रहा था। क्या उसके कपड़े रास्ते के रंग के हैं? क्या वे

कंकड़, काई, पेड़ और तने से मेल खाते हैं? क्या उसके गाल और हाथ जामुनी रंग के और लाल हैं?

बिलकुल नहीं; आकृति उतनी आकर्षक नहीं है। यह सभ्य और दुबली-पतली है, अन्य चीज़ों के साथ सामंजस्य नहीं, बल्कि विरोधाभास है। पोशाक किसी कस्बे में बनी है; बाल लंबे और लहराते हैं, चेहरा गोरा है, और चेहरे पर गंभीरता झलकती है। यह एक सज्जन स्कूली छात्र लगता है, शायद दस साल का। आज वह काफ़ी दूर चला होगा; उसके पैर दुख रहे हैं, चेहरा पीला पड़ गया है, और कुछ और मील चलने पर वह पूरी तरह थक जाएगा। उसने एक थैला उठाया हुआ है, हल्का बोझ है, लेकिन उसके थके हुए कंधे में दर्द हो रहा है। सड़क से निकलकर वह छोटे से लॉन पर रुकता है और एलिन बालकनी को देखता है।

उसने घर को नाप लिया है, चारों ओर की ज़मीन का जायज़ा लिया है, नीचे जंगल से ढकी घाटी पर नज़र डाली है और ऊपर उन बंजर और धूसर पहाड़ियों को देखा है जिनकी ओर बालकनी का मुख है। वह दरवाजे की ओर बढ़ता है।

एक अकेली बूढ़ी बुनकर ऊन को अपने गोले में लपेट रही थी और बुने हुए धागों को समेट रही थी, ताकि उबलती हुई केतली को चूल्हे से उतार सके। तभी घर में दस्तक हुई, एक ज़ोरदार लेकिन संक्षिप्त दस्तक। वह चौंक गई - और चौंकना स्वाभाविक भी था, क्योंकि बालकनी की देखभाल करने के बाद से यह पहली बार था जब उसे इस तरह बुलाया गया था। वह घबराकर भागी, दरवाज़ा खोला और सीढ़ी पर एक लड़के को देखा, जो अच्छे कपड़े पहने हुए था लेकिन धूल से सना हुआ था, और अपनी गोरी भौंहों के नीचे से सीधी, साफ नीली आँखों से उसे देख रहा था।

‘क्या वे आपको श्रीमती हिल कहते हैं?’ उसने कहा।

उन्हें सकारात्मक उत्तर मिला।

और यह जगह “एलिन बालकनी” है?

'हाँ।'

‘कृपया मुझे अंदर जाने दीजिए। मैं अंदर आना चाहता हूँ; मैं अंदर आना चाहता हूँ। मैं थक गया हूँ।’

‘लेकिन, स्वामी जी—’ श्रीमती हिल अचंभित होकर रुक गईं, मानो अचानक उन्हें कोई ज्ञान प्राप्त हुआ हो। उन्होंने तुरंत अपनी बात जारी रखी— ‘निश्चित रूप से आप गोलपिट के एलिन नहीं हैं, निश्चित रूप से वह नन्हा बच्चा नहीं हैं?’

'मैं विली हूं, यानी विलियम एलिन, और मैं आज ही गोलपिट से आया हूं - पंद्रह मील, बहुत लंबा रास्ता। मैं थक गया हूं।'

श्रीमती हिल ने उसे जाने दिया। वह उसे रसोई में ले गईं और वह चूल्हे पर रखी कुर्सी पर बैठ गया।

'तो तुम ही बच्चे हो?' नौकरानी चिल्लाई।

'शायद जब आपने मुझे देखा था तब मैं बच्चा था। मुझे उम्मीद है कि अब मैं लड़का हूँ।'

'मास्टर एलिन, आपकी उम्र कितनी है?'

'साढ़े दस, लेकिन मैं दुबला-पतला लड़का हूँ।'

'तुम पतले और गोरे हो। क्या तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा है?'

'पूंजी - जब वे मुझे अनुमति देंगे।'

तुम अपनी मां जैसी हो।

क्या मैं अपनी माँ जैसी हूँ? मुझे इस बात की खुशी है!

'तुम्हारा मुंह बिल्कुल उसके जैसा है, तुम उसी की तरह बोलती हो। लेकिन, मास्टर विलियम, आप जैसे बच्चे को अकेले गोलपिट से क्यों लाए?'

'कई बातें हैं, श्रीमती हिल। मैं आपको एक मिनट में सब कुछ नहीं बता सकता - बस इतना ही कि मैं यहाँ हूँ, और बहुत भूखा और थका हुआ हूँ।'

'भूखा है!' श्रीमती हिल ने दोहराया: 'मुझे लगता है कि वह भूखा है,' और वह जल्दी से एक ट्रे और कप लेने चली गईं।

चाय पीने से पहले लड़के ने मेज़बान से घर के दोनों बाहरी दरवाज़े बंद करने को कहा। जब यह हो गया तो उसने कहा, 'अब मैं सुरक्षित हूँ,' और बड़े चाव से खाना खाने लगा। खाना खत्म होने पर वह एक बेंच पर लेट गया। उसने अपने दोनों हाथ सिर के नीचे रख लिए, लेकिन आँखें बंद नहीं कीं; उसका चेहरा पीला पड़ गया था, लेकिन उस पर उदासी का कोई निशान नहीं था।

'श्रीमती हिल,' उसने बात फिर से शुरू की, 'आप मेरी माँ को जानती थीं?'

'मैं उनकी अंतिम बीमारी के दौरान उनके साथ रहा। मास्टर विली।'

क्या बीमारी के दौरान उसे बहुत दर्द होता था?

कभी-कभी उसे बहुत कष्ट सहना पड़ता था।

'क्या वह धैर्यवान थी, या नहीं?'

'पीड़ा के दौरान वह चुप रही और उसने अद्भुत ढंग से सहन किया।'

'उन्होंने मेरी देखभाल की, है ना, श्रीमती हिल?'

'शब्दों से परे,' नौकरानी ने कहा। 'और हम सभी सोचते थे कि तुम अपनी माँ से बहुत प्यार करते थे।'

'खैर, मुझे लगता है कि ऐसा ही था। जब उनकी मृत्यु हुई तब मैं तीन साल से कुछ ही बड़ी थी, लेकिन मुझे उनकी याद आती है। मैं हमेशा उन्हें याद करती रही हूँ, और मुझे खुशी होगी जब मैं उनके बारे में सोचने की आदत से मुक्त हो जाऊंगी, क्योंकि वह कभी वापस नहीं आ सकतीं।'

जवाब मिला, 'तुममें उसका कुछ स्वभाव जरूर होगा, और मुझे लगता है कि तुममें है। लेकिन मुझे डर है कि तुम्हारे ज्यादा दोस्त नहीं हैं, वरना तुम्हारा मन किसी मृत व्यक्ति के बारे में इस तरह नहीं सोचता।'

‘मुझे लगता है कि अब ऐसा नहीं होगा,’ लड़के ने जवाब दिया।

‘क्या गोलपिट में आपके साथ अच्छा व्यवहार होता है, मास्टर विली?’

‘मैं भाग गया हूँ, श्रीमती हिल।’

‘बच्चे, तुम कहाँ जाना चाहते हो और वहाँ क्या करोगे?’

मैं इस बारे में सोचूंगा। आपको मुझे एक-दो दिन के लिए यहीं छिपाना होगा।

‘क्या गलत हुआ है? क्या वे तुम्हें भूखा रखते हैं?’

'अरे नहीं, मुझे खाने के लिए तो पर्याप्त मिल जाता है, लेकिन एडवर्ड का हाथ और छड़ी बहुत भारी हैं।'

‘अरे! श्री एलिन को न तो आप पसंद थे और न ही आपकी माँ।’

'मुझे लगता है कि वह एक क्रूर सौतेला बेटा था, श्रीमती हिल - वह अभी भी कभी-कभी मां के बारे में इतनी बेरहमी से बात करता है।'

‘और क्या वह तुम्हें मारता है, बच्चे?’

अगर उसे लगता है कि मैं काम में सुस्त हूँ, जो मुझे सीखने में नीरस और कठिन लगता है, तो वह मेरे सिर पर तब तक मारता है जब तक दर्द न होने लगे। मैं बहुत कम ही रोती हूँ, लेकिन अगर सजा के बाद मैं उदास दिखती हूँ, तो वह मुझे असंतुष्ट विद्रोही कहता है और फिर मारता है। कल रात वह सौदेबाजी कर रहा था और उसने थोड़ी ब्रांडी और पानी पी लिया था। उसने मुझे एक स्टूल से गिरा दिया, बिना किसी खास वजह के, सिवाय इसके कि कभी-कभी उसे मुझे देखना भी पसंद नहीं आता।

स्टूल के नुकीले कोने से मेरी कनपटी कट गई। काश, श्रीमती हिल, आप मुझे थोड़ा गर्म पानी दे देतीं ताकि मैं उसे धो सकूँ। लंबी सैर के बाद अब उसमें बहुत दर्द हो रहा है और जलन हो रही है।

कुछ ही देर में नौकरानी उसके लिए पानी का एक बर्तन ले आई। वह उसकी मदद करना चाहती थी, लेकिन उसने खुद स्पंज उठाया और अपने सुनहरे भूरे बालों को हटाते हुए नीली नसों वाली कनपटी पर एक गहरा घाव और चोट देखी - जो अब खून से लथपथ थी - लेकिन उसने जल्दी ही उसे साफ कर लिया, और फिर श्रीमती हिल ने सावधानीपूर्वक पट्टी बांध दी।

‘मेरे प्यारे बच्चे,’ उसने करुणापूर्वक कहा, ‘यह तो दुष्टतापूर्ण कार्य है।’

‘बुढ़िया, मैं कोई भोला-भाला नहीं हूँ,’ लड़के ने हँसते हुए कहा। ‘और वैसे भी, मुझे उस दस्तक की इतनी चिंता नहीं है। मैं उस वजह से भागा नहीं था।’

‘यह किसलिए हो सकता है?’

क्योंकि एडवर्ड ने मुझे किसी ऐसी चीज से धमकाया है जिससे मुझे वाकई डर लगना चाहिए। ऐसा लगता है कि मैं पूरी तरह से उसके वश में हूँ, क्योंकि मेरे माता-पिता ने मेरे लिए कोई पैसा नहीं छोड़ा है।

‘मुझे पता है, बेटा। तुम्हारे सौतेले भाई की संपत्ति उसे उसकी माँ, यानी तुम्हारे पिता की पहली पत्नी के अधिकार से मिली है। जैसा कि लोग कहते हैं, तुम उस पर निर्भर हो।’

'हां, और वह मुझसे कहता है कि वह मुझे भिखारी की तरह पालेगा - वह मुझे दुकान में प्रशिक्षु बना देगा। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता, श्रीमती हिल।'

बुजुर्ग महिला ने अपना सिर हिलाया और ऐसा लग रहा था कि वह कोई जवाब नहीं दे पा रही है।

मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं दुकान के लड़कों के साथ नहीं रहना चाहता, न ही काउंटर के पीछे खड़ा रहना चाहता हूँ। मेरी माँ एक सभ्य महिला थीं - मुझे भी एक सज्जन व्यक्ति होना चाहिए।

लेकिन तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं; तुम चुन नहीं सकते। तुम्हें कोई हुनर सीखना ही होगा।

'हमारे परिवार में न जाने कितने समय से कोई व्यापारी नहीं था, जब तक कि एडवर्ड ने लालच में आकर व्यापार शुरू नहीं कर दिया। मेरे पिता, दादा और परदादा

एलिन बाल्कनी में रहते थे और अपनी ज़मीन पर खेती करते थे, और जमींदार थे।'

'हां, और धीरे-धीरे उनकी आमदनी कम होती गई। अगर आपके भाई गोलपिट में नए मकान में न चले गए होते और जैसा कि आपने कहा, व्यापार में न लग गए होते, तो एलिन बालकनी को बेचना ही पड़ता।'

क्या ऐसा होगा?

'जी हां; और ध्यान रहे, उनके उदाहरण का अनुसरण करने से बेहतर आप कुछ नहीं कर सकते। क्या वह आपको अपने लेखा-जोखा कार्यालय में रखेंगे?'

मुझे तो बहुत दुख होगा।

बेचारा लड़का कराह उठा।

'लेकिन याद रखना,' श्रीमती हिल ने बहुत सहानुभूति के साथ, लेकिन साथ ही साथ गहरी चेतावनी भरे स्वर में कहा, 'मास्टर विली, आपके कोई मित्र नहीं हैं। एडवर्ड ही आपका एकमात्र सहारा है: उसे जितना हो सके कम नाराज़ करना और उसकी बात मानना।'

'क्या मैं समुद्र में नहीं जा सकता, या सैनिक नहीं बन सकता?'

'आप ऐसा नहीं कर सकते – बिल्कुल नहीं कर सकते।'

लेकिन एडवर्ड क्रूर है, श्रीमती हिल; मुझे लगता है कि वह मुझे सताता है। मैं ज्यादा शिकायत नहीं करती, मैं आपको सब कुछ नहीं बताती, लेकिन सच में मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं पिछले कुछ वर्षों से जिस तरह जी रही हूँ, वैसे कैसे जीती रहूँ।

'तुम्हें ईश्वर की ओर देखना चाहिए - अवश्य ही, मेरे प्यारे बच्चे। इस थकी हुई दुनिया में, चाहे बड़े हों या छोटे, पीड़ित लोग बस यही कर सकते हैं।'

'मुझे आश्चर्य होता है कि क्या मेरी माँ को मेरे बारे में पता है, श्रीमती हिल? कभी-कभी मैं आशा करती हूँ कि उन्हें न पता हो, कहीं स्वर्ग में उन्हें दुख न हो।'

क्या आप रात को प्रार्थना करते हैं? क्या आपको कभी प्रार्थना करना सिखाया गया है?

'हां,' उसने संक्षेप में कहा। 'उन्होंने मुझे कभी नहीं सिखाया – मतलब, एडवर्ड और उसकी पत्नी ने मुझे कभी प्रार्थना करना नहीं सिखाया, लेकिन मैंने उन्हें अपनी मां से सीखा और मुझे वे अभी भी याद हैं।'

'इन्हें मत भूलना। क्या अब तुम सोने जाओगे?'

'जी हां, अगर आप चाहें तो। मैं थक गया हूँ।'

श्रीमती हिल बच्चे को ऊपर ले जाकर उसका कमरा दिखाने के बाद, जिसमें एक अतिरिक्त बिस्तर था जिसे वह हमेशा सूखा और हवादार रखती थीं, वह सीढ़ियों के शीर्ष पर आया और चिंतित होकर, लेकिन धीरे से पुकारा:

'मिसेज हिल, दरवाजे कसकर बंद कर दीजिए। किसी को अंदर न आने दीजिए और किसी को मत बताइए कि घर में कोई अजनबी लड़का है।'

उसने इसी के अनुरूप वादा किया।

थकान से चूर होकर वह अगली सुबह देर तक सोता रहा। अभी उठा भी नहीं था कि लोहे का फाटक ज़ोर से बंद हुआ और एक बग्घी तेज़ी से गली में आ गई। पलक झपकते ही एक फुर्तीला और लाल मूंछों वाला आदमी आंगन के फुटपाथ पर दौड़ा, रसोई के दरवाजे से अंदर घुसा और मानो घर और नौकरानी पर धावा बोल दिया हो।

'शावक कहाँ है? मैंने उसके पक्के निशानों का पीछा करते हुए उसे यहाँ तक पहुँचाया है, इसलिए झूठ मत बोलो। वह कहाँ है?'

'श्री एलिन, आपका क्या मतलब है?'

मिस्टर एलिन ने बूढ़ी औरत के चेहरे के सामने मुट्ठी उठाई, उसे उसकी दोनों आंखों के बीच हिलाया, एक गाली दी और तेजी से ऊपर की ओर भाग गए।

वहाँ सात शयनकक्ष थे। उसने छह के दरवाज़े खोल कर देखे – वे खुल गए। वह अंदर गया और कमरे खाली पाए। सातवें दरवाज़े को खोलकर देखने पर उसने पाया कि वह उसके हाथ का विरोध कर रहा था – एक कसा हुआ कुंडा उसके सामने खड़ा था।

'भागो!' उसने कहा। 'अब वो मेरे हाथ में है। विलियम एलिन!'

'हां, एडवर्ड,' एक बच्चे की आवाज सुनाई दी।

'यह दरवाजा खोलो!' (साथ में शपथ)।

'अगर आप वादा करें कि आप मारपीट नहीं करेंगे - कम से कम, जोर से नहीं - तो मैं इसे सीधे खोल दूंगा।'

इस सवाल के जवाब में उस महान एथलीट ने छोटे से दरवाजे को जोर से हिलाया।

'मैं वादा करता हूँ!' वह चिल्लाया। 'मैं तुमसे मिलूंगा,' इत्यादि।

भीतर सन्नाटा छा गया। दरवाजा एक बार फिर कांप उठा।

'यदि तुम वादा नहीं करोगे,' अंग की ऊँची ध्वनि फिर से गूंजी, विस्मय से भरी

लेकिन निर्भीक स्वर में बोली गई, ‘तो मुझे बचाव करना होगा।’

‘बचाव? आपका क्या मतलब है? अगर आपको अपनी जान प्यारी है तो दरवाजा खोलिए।’

‘मुझे अपनी जान प्यारी है, इसलिए मैं एक बैरिकेड बनाऊंगा,’ जवाब मिला, और फर्नीचर के खिसकने जैसी आवाज़ आई। बच्चा चुपचाप इस भयानक हमलावर का सामना करने की योजना बना रहा था। तभी गोलियत गुस्से से भड़क उठा। उसने अपने मजबूत हाथों और भारी कंधों से दरवाजे पर ज़ोर लगाया। दरवाजा हिलने लगा, चरमराने लगा और डगमगाने लगा। नीचे, श्रीमती हिल सीढ़ियों पर घुटनों के बल बैठी क्षमा और दया की प्रार्थना कर रही थीं। मानो वह पत्थर से भीख मांग रही हों। थोड़ी ही देर में कब्ज़ा, ताला, पैनल सब टूट गए, पूरा दरवाजा टूटकर गिर पड़ा, और बीच में रखी दराजों की अलमारी को हटाकर एडवर्ड एलिन अपने छोटे भाई पर झपटा। हमले से बच्चा नीचे गिर गया, लेकिन जल्दी ही एक घुटने के बल उठ खड़ा हुआ, और उसकी नीली आंखें नीचे नहीं झुकीं - बल्कि ऊपर उठ गईं। उसके ऊपर कोड़ा लहरा रहा था। उसने कोड़े की ओर देखा।

"इस बार ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी," उसने धीमी, शांत और स्थिर आवाज में कहा। "मैंने विचार किया है, और इस काम में अपना सर्वश्रेष्ठ देने का इरादा रखता हूं।"

उस दुष्ट व्यक्ति की बांह की मांसपेशियां अकड़ गईं; क्रूर चाबुक कांप उठा, लेकिन गिरा नहीं। मानो कोई ईश्वरीय कृपा उस बेचारे छोटे सैमुअल पर नज़र रख रही थी, जो अपनी दुबली-पतली नाइट-शर्ट पहने ज़मीन पर घुटनों के बल बैठा था।

पीछे से एक आवाज आई।

‘एलिन – ऐसा नहीं। मैं ऐसा नहीं होने दूँगा,’ कर्कश और गुंडे जैसी आवाज़ से कहीं अधिक मर्दाना और मधुर स्वर में कहा गया। ‘लड़का चाहे जो भी हो, वह कोड़े की मार सहने लायक ताकतवर नहीं है। उसे जाने दो।’

वक्ता उस गाड़ी में सवार दूसरा व्यक्ति था। श्रीमती हिल की चीखें और दरवाज़ा टूटने की आवाज़ ने उसे घटनास्थल पर बुला लिया था। इस समय वह एक सक्षम रक्षक प्रतीत हो रहा था। वह एक सुंदर पुरुष था, एलिन जितना ही शक्तिशाली; और उसका चेहरा, उसकी आँखें, उसकी आवाज़, इस बात की गवाही दे रही थीं कि वह कभी भी अपनी शक्ति का दुरुपयोग क्रूरता के लिए नहीं करेगा। उसमें एक निश्चित प्रभुत्व था, लेकिन उसमें दमन करने की कोई प्रवृत्ति नहीं थी। कई हत्यारों की आँखें

एडवर्ड एलिन जैसी ही क्रूर, आकर्षक, मजबूत जबड़ा, विशाल गर्दन और घनी लाल मूंछें थीं। किसी भी अपराधी ने कभी भी कटघरे में श्री बोसास जैसा चेहरा, हावभाव, चेहरे की बनावट और नज़र नहीं दिखाई।

'आओ, एलिन, शांत हो जाओ,' आखिरी ने कहा। 'मुझे वह चाबुक दो; मैं उसका ख्याल रखूंगा।'

जिस व्यक्ति को संबोधित किया गया था, वह अपशब्दों की बौछार करने को तैयार लग रहा था, और सचमुच उसने अपशब्दों का प्रयोग किया, लेकिन अपने काले आँखों वाले सौम्य प्रतिद्वंद्वी पर नहीं। नन्हे विली को इस तूफान का सबसे अधिक सामना करना पड़ा, या करना पड़ता अगर बोसास बीच में न आ जाता।

'कपड़े पहन लो,' उसने लड़के से सख्ती से, लेकिन बिना किसी दुर्भावना के कहा। लड़के ने तुरंत उसकी बात मान ली। इस बीच, विलियम अभी भी भयभीत था, लेकिन कायरता नहीं दिखा रहा था, उस बैल को देख रहा था जिसे उस आदमी ने काबू में रखा था। उसने अपना चेहरा और हाथ भी धोए, और तौलिए से पोंछते हुए उसने अपने दोस्त की ओर देखा और एक अजीब तरह की सहनशीलता के साथ कहा, 'आखिरकार, साहब, ज्यादा परेशानी मत उठाइए। मुझे पहले भी चाबुक पड़ चुकी है, और आपके जाने के बाद फिर पड़ेगी।'

'मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा,' उस सज्जन ने गंभीरता से कहा। 'आइए, एलिन, मुझसे वादा कीजिए कि आप इस बार उसे छोड़ देंगी।'

एलिन ने कुछ मिनटों तक कोई वादा नहीं किया और कोई जवाब नहीं दिया; फिर, मानो अचानक उसका मिजाज बदल गया हो, वह जोर से हंस पड़ा और बोला –

'छी, छी! मैं तो बस मजाक कर रहा था; मैं उसे हाथ नहीं लगाऊंगा। विली मुझे अच्छी तरह जानता है। मैं जोशीला इंसान हूं, लेकिन अच्छे स्वभाव का हूं।'

'तो आप उसे माफ कर देते हैं?' मध्यस्थ ने कहा।

'हाँ, बिलकुल। मुझे उस छोटे से मूर्ख से कोई शिकायत नहीं थी। उसे अब और स्कूल से भागने मत दो, और चुपचाप घर आ जाओ - बस इतना ही।'

'बहुत खूब। तुम सहमत हो ना, मेरे प्यारे दोस्त?' उस सांवले चेहरे वाले लेकिन दयालु व्यक्ति ने कहा।

उसने बच्चे की ओर देखे बिना ही बोलना शुरू कर दिया। अगर उस समय उसने बच्चे को देख लिया होता, तो शायद उसके विचारों की धारा बदल जाती, शायद उसके

मन में कोई ऐसा विचार आ जाता जो उस समय उसके मन में नहीं आया था। लेकिन भाग्य हवा में अदृश्य रूप से अपने बादलों के पहिये पर बैठा था। वह भावहीन होकर घूमता रहा, अपनी ऊन की कोई गांठ नहीं सुलझाता रहा। विली का चेहरा पीला पड़ गया और एक पल के लिए उसका दिल दुख से भर गया, लेकिन व्यर्थ। किसी ने ध्यान नहीं दिया, न ही कोई समझ पाया कि बच्चे को क्या आशंका थी। उसने न तो अपने विचारों को और न ही अपनी आशंकाओं को शब्दों में व्यक्त किया। दूरदर्शी होते हुए भी धैर्यवान, वह उस सुबह गोलपिट लौट गया।

द्वितीय

श्री बोसास गोलपिट के निवासी नहीं थे। दरअसल, वे काफी दूर एक राजधानी शहर में रहते थे। उनका नाम भले ही विदेशी जैसा लगता हो, लेकिन वे अंग्रेज़ पैदा हुए थे, हालांकि कुछ लोगों का मानना था कि वे यहूदी मूल के थे। उनके चेहरे या आँखों में यहूदीपन का कोई निशान नहीं था, फिर भी उनकी विशेषताओं में शायद इज़राइली वंश की कुछ सुंदर झलकियाँ देखी जा सकती थीं, और अगर वे दाढ़ी रखते, तो उनके घने, काले और पूर्वी बाल उनकी ठुड्डी की शोभा बढ़ाते।

बोसास और एलिन के बीच व्यापारिक संबंध थे, क्योंकि बोसास भी व्यापार में थे; और चूंकि वे एलिन के निर्मित माल को निर्यात के लिए खरीदते थे, और अपनी श्रेष्ठ संपत्ति और व्यापारिक प्रतिष्ठा के कारण एलिन को काफी हद तक लाभ पहुंचाने या नुकसान पहुंचाने की शक्ति रखते थे, इसलिए एलिन उनका सम्मान करते थे और लगभग उनके अधीन रहते थे। यही कारण है कि विली के मामले में एलिन ने उनकी इच्छा का तुरंत पालन किया; और इसी कारण से, श्री बोसास के गोलपिट में दो दिन तक अतिथि के रूप में रहने के दौरान, उनके आश्रित को कोई परेशानी नहीं हुई।

शायद विली को उम्मीद थी कि यह आराम उस दयालु व्यापारी के ठहरने की अवधि से अधिक नहीं रहेगा; शायद वह यही बात कहना चाहता था; लेकिन अगर ऐसा था तो उसे कभी भी चुपचाप कुछ कहने का मौका नहीं मिला, न ही विदाई के समय जागृत हुई अपनी रुचि को फिर से जगाने या उसे बनाए रखने का अवसर मिला। श्री बोसास के जाने से कुछ समय पहले विली को एक काम से भेजा गया था, और जब

वह लौटा तो उसका वकील जा चुका था।

उस लड़के का एक छोटा सा कमरा था जिसे वह अपना कहता था। वह बस एक अटारी जैसा था, जिसमें एक पालना और एक स्टूल ही था। फिर भी, जैसा भी था, वह उसे दो मंजिल नीचे बने आलीशान ड्राइंग रूम से ज़्यादा पसंद करता था। अगर उसके इस उबड़-खाबड़ जीवन में कोई सुकून भरी यादें थीं, तो वे सब स्लेट की छत के नीचे बने इस ठंडे, तंग से कमरे से जुड़ी थीं। बोसास के जाने के बाद वाली रात को वह जल्दी ही यहाँ आ गया – मन ही मन सोच रहा था कि अब तक उस पर कुछ बीता नहीं, और उसे धुंधली सी उम्मीद भी थी कि शायद उसके भाई ने एक बार उसे दिल से माफ़ कर दिया हो। गर्मी की शाम के साढ़े आठ बज रहे थे, अभी शाम नहीं हुई थी, इसलिए विली अपने साथ एक किताब लाया था और छोटी सी खिड़की के पास बैठकर पढ़ रहा था। एक साल पहले उसके मन में पढ़ने का शौक जागा था। यह शौक ज़्यादा विकसित नहीं हुआ था, लेकिन कम खाने-पीने से ही पनप गया था, जो सेहत के लिए काफी था। आजकल उसे रॉबिन्सन क्रूसो दुनिया की किसी भी किताब से ज़्यादा पसंद था। रॉबिन्सन क्रूसो ही उसका वर्तमान अध्ययन था।

उसके सारे विचार उस सुनसान द्वीप में ही थे, तभी उसने अपने कमरे की सीढ़ी पर किसी के कदमों की आहट सुनी। सीढ़ी लगभग आखिरी मोड़ पर पहुँच गई थी, इससे पहले कि उसके मन में कोई और चिंताजनक विचार आता, उसे लगा कि शायद काफी देर हो चुकी है, क्योंकि नौकरानियाँ - जो अटारी में ही रहती थीं - सोने आ रही थीं। अचानक उसे कदमों में एक भारीपन महसूस हुआ, जिससे किसी महिला के कदमों की आहट असंभव सी लगी। लकड़ी की सीढ़ियाँ हिल गईं, उसका दरवाजा भी हिल गया; दरवाजा खुला और छह फीट लंबा, चौड़ा और कुछ मोटा सा एक व्यक्ति अंदर आया।

विली ने आज तक अपने भाई को रात में अकेले अपने कमरे में आते नहीं देखा था। अपनी तमाम मुश्किलों में भी उसे कभी इस तरह अंधेरे में, और छुपकर किसी ने नहीं देखा था। शायद मुझे अंधेरा कहना सही नहीं होगा, क्योंकि वह समय दो तरह की रोशनी में बीता था - गोधूलि और चांदनी। रात बहुत सुहावनी थी, एकदम शांत और गर्म, और बस कुछ हल्के बादल, सुनहरे और हल्की बिजली की चमक के साथ, चांद के चारों ओर मंडरा रहे थे। दरवाजा बंद था, दुबला-पतला बच्चा अपनी कुर्सी पर बैठा था, और विशालकाय आदमी उसके ऊपर खड़ा था।

‘आखिरकार मैंने तुम्हें सुरक्षित पा लिया है, और अब मैं तुम्हें लगभग खत्म कर दूंगा,’ ये पहले शब्द थे, जो एक कठोर वयस्क के लहजे में बोले गए थे। श्री एडवर्ड एलिन से किसी को भी संयमित भाषा या सधे हुए व्यवहार की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। वह वहाँ मजबूत, क्रूर और अनियंत्रित खड़ा था, और एक अनियंत्रित दरिंदे की तरह ही व्यवहार करने का उसका इरादा था।

लड़के ने केवल एक बार ही विनती की।

‘कल तक इंतजार करो,’ उसने कहा। ‘मुझे यहाँ और रात के अंधेरे में मत कोड़े मारो। कल लेखा सभा में ऐसा करना।’

लेकिन उसके सौतेले भाई ने अपने कोट की आस्तीन ऊपर करके जवाब दिया, जिससे उसकी मजबूत कलाई दिखाई दी जो जल्दी थकने वाली नहीं थी। वह अपने साथ गाड़ी का चाबुक लाया था। उसने उसे उठाया और हवा में लहराया। यही उसका जवाब था।

भाग IV

[अज्ञात तिथि, लगभग जून 1853]

‘रुको,’ उत्सुक पीड़ित ने पूरी गंभीरता से कहा – इतनी गंभीरता से कि जल्लाद रुक गया, लेकिन फिर भी उसने मांग की,

मैं रुकने वाला क्या हूँ? शिकायत करने का कोई फायदा नहीं – देर-सवेर तुम्हें अपने कर्मों का फल मिलेगा – तुम भाग गए थे और तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।

लेकिन एडवर्ड, मुझसे बदला लेते समय सावधान रहना। तुम्हारे जैसे समझदार व्यक्ति को तर्कसंगत होना चाहिए। वह चाबुक भारी है, और मैं केवल मध्यम दर्जे का ही हूं। अगर तुम गुस्से में आकर मुझे मारोगे तो शायद तुम्हें जितना लगता है उससे कहीं ज्यादा गहरा घाव हो जाएगा।

‘तो फिर क्या? किसे परवाह है?’

'अगर मुझे आपकी सोच से ज़्यादा चोट लग जाए? अगर आपको मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया जाए और जुर्माना भरना पड़े या देश निकाला दिया जाए?' विली ने

सुझाव दिया।

यह विचार दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ। लड़के का पूरा व्यवहार घृणास्पद था क्योंकि वह प्रभाव में आकर अपनी स्थूल प्रकृति को समझ से परे पा रहा था। श्री एलिन ने क्रोध से गुर्राते हुए कहा।

'बेशर्म भिखारी!' उसने कहा; 'तो तुम मुझे जुर्माने और मजिस्ट्रेटों से धमका रहे हो? ये लो! और ये भी! – इत्यादि।'

वह काम में जुट गया था। ऐसा लग रहा था कि उसे अपना काम पसंद था, क्योंकि वह काफी देर तक, मानो बहुत देर तक, उसी में लगा रहा। सबसे बुरी बात यह थी कि विली न तो चीख रहा था, न रो रहा था। कुछ ज़ोरदार चीखें, एक लड़ाई-झगड़ा, एक ज़ोरदार दहाड़, शायद मिस्टर एलिन के आनंद को कम करने में चमत्कार कर सकती थीं; लेकिन इस मामले में कुछ भी उसे रोक नहीं पाया और वह खुलकर मजे ले रहा था। आखिरकार एक कराह सुनाई दी - बच्चा एकदम नीचे गिर गया - आदमी रुक गया। सन्नाटे में दर्द की कुछ आवाज़ निकली - एक-दो कराह - प्रकृति की पीड़ा को सीमित करने वाली सबसे हल्की आवाज़; लेकिन अपने दमन में भी बहुत कुछ कह रही थी। इसने मिस्टर एलिन को यह कहने पर मजबूर कर दिया,

मुझे उम्मीद है कि अब आपका पेट भर गया होगा।

उन्हें कोई जवाब नहीं मिला।

'अगर तुमने दोबारा स्कूल से भागने की कोशिश की या बोसास को बहलाने की कोशिश की, तो मैं तुम्हें दोगुनी सजा दूंगा।'

कोई जवाब नहीं—और न ही कोई सिसकी—शायद आंसू भी नहीं।

क्या आप बोलेंगे?

कोड़े मारने वाला व्यक्ति आधा डरा हुआ लग रहा था, क्योंकि विली की थकी हुई मुद्रा से यह साबित हो गया था कि उसे वाकई काफी मार पड़ चुकी थी; संभवतः वह बेहोश हो गया होगा, जो परेशानी का सबब बन सकता था।

लेकिन ऐसा नहीं था। आखिरी घाव के असहनीय दर्द से राहत मिलते ही वह बोलने लगा।

उन्होंने कहा, 'आज रात मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

एलिन ने उसकी बात मान ली - उससे कहा कि या तो अभी सो जाओ या फिर किसी और जगह जाओ, सीटी बजाई और चली गई।

कुछ देर बाद, जब विली अकेला रह गया, तो उसने खुद को संभाला। उसे कपड़े उतारते और दर्द से रेंगते हुए अपने पालने तक जाते देखना दुखद होता, और उसके विचारों को पढ़ना उससे भी अधिक दुखद होता। उसके होंठों से मुश्किल से एक शब्द निकला; कुछ देर तक उसकी पलकों पर एक भी आंसू नहीं बहा। वह एक घंटे से अधिक समय तक बिना सोए और पीड़ा सहता रहा, तब जाकर उसे राहत मिली; लेकिन आखिरकार आंसू बहने लगे, सिसकियाँ तेज हो गईं, उसने अपने तकिये के नीचे से अपना छोटा सा रुमाल निकाला – उसमें जी भर कर रोया – फिर उसने कुछ बुदबुदाया कि उसका जीवन बहुत ही कठिन और असहनीय है। अंत में, और एक लंबे विराम के बाद, वह धीरे-धीरे घुटनों के बल बैठ गया – ऐसा लग रहा था जैसे वह प्रार्थना कर रहा हो – हालाँकि न तो उसकी आँखें उठी थीं, न ही उसने हाथ जोड़े थे, न ही प्रार्थना को दर्शाने वाले कोई शब्द सुनाई दिए – वास्तव में कुछ भी नहीं था सिवाय उसकी मुद्रा और चेहरे के एकाग्र, भावहीन भाव के, जो एक अनदेखे क्षेत्र में खोए हुए मन को दर्शाता था, जो अदृश्य संवाद में लीन था। जैसे ही वह पृथ्वी पर लौटा, उसकी अब तक बंद आँखें धीरे-धीरे खुलीं। वह लेट गया; शायद उसे लगा कि उसकी प्रार्थना सुन ली गई है; शांति ने उसे विश्राम दिया; वह सो गया।

विली को संत का दर्जा नहीं दिया जा सकता – उनका धैर्य जन्मजात था, जैसे उनका धार्मिक स्वभाव सहज था। पीड़ा को व्यक्त करने में संयम बरतना उनकी एक विलक्षण विशेषता थी। प्रार्थना उनकी लगभग निराशाजनक परिस्थितियों की आवश्यकता थी। मनुष्य द्वारा सताए जाने पर, प्रकृति ने उन्हें फुसफुसाकर कहा, 'ईश्वर से प्रार्थना करो,' और उन्होंने आज्ञा का पालन किया। कुछ लोग मानते हैं कि प्रार्थनाओं का उत्तर शायद ही कभी मिलता है; फिर भी ऐसी मर्मस्पर्शी प्रार्थनाएँ हुई हैं जो सभी द्वारों और बाधाओं को पार करते हुए सीधे परदे के भीतर तक पहुँच गईं।

भाग V

बुरे स्वभाव वाला वह व्यक्ति चला गया। विलियम अपने पालने के पास घुटनों के बल बैठा रह गया, उसका चेहरा और हाथ गद्दे पर दबे हुए थे। उसे बुरी तरह पीटा गया था और कुछ समय के लिए वह बीमार महसूस कर रहा था, लेकिन उसे कोई गंभीर चोट नहीं आई थी - शारीरिक रूप से कोई क्षति नहीं हुई थी। उसके हृदय का क्या

हाल था, यह एक अलग सवाल है।

ऐसा प्रतीत हो सकता है कि ईश्वर की निगरानी इस अनाथ बच्चे से कुछ समय के लिए हट गई हो, क्योंकि वह एक अत्याचारी हाथ के आगे प्रतिरोध करने में असमर्थ होकर सिकुड़ गया था – बाद में वह अकेला, पीला पड़ा, कमजोर, दुखी होकर रोता रहा, हालांकि भावुकता से नहीं, अपनी विलक्षण प्रवृत्ति के अनुसार, घोर दुःख में भी, अभिव्यक्ति में एक प्रकार का वीर संयम बनाए रखने के लिए विवश था। मनुष्य के विवेक में यह माना जा सकता है कि इस बच्चे को भुला दिया गया था, जहाँ घोंसले से गिरे हुए नन्हे पक्षी को भी याद रखा जाता है। विलियम को भी यही आशंका थी। उसकी आँखों पर गहरा अंधकार छाया हुआ था, और एक भयानक ठंड ने उसकी आशाओं को जमा दिया था – उसकी सुनने की शक्ति भी थम गई थी। अब वह सीढ़ी का एक भी कदम नहीं पकड़ पा रहा था, न ही उसने दरवाजे के दोबारा खुलने पर ध्यान दिया। मोमबत्ती की तेज रोशनी ही उसे क्षण भर के लिए भी स्वयं से और अपने दुख से बाहर निकाल पाई।

मोमबत्ती लाने वाले हाथ ने उसे खिड़की की संकरी चौखट पर रख दिया। तभी कोई विली के पास आया, पालने के किनारे उसके बगल में बैठ गया; एक हाथ उसके चारों ओर लिपटा, दूसरे हाथ ने उसे अपने गर्म कंधे की ओर खींचा, होठों ने उसके माथे को चूमा और आँखों ने उसकी गर्दन पर आँसू बहाए।

‘बेचारा लड़का! बेचारा पीड़ित बच्चा!’

ये शब्द कहने वाली आवाज़ विली की उम्र से कुछ ही साल आगे की लग रही थी: बोलने वाली सत्रह साल की एक लड़की लग रही थी, खिलखिलाती हुई, और उसके चेहरे पर अगर इस पल दया का भाव झलक रहा था, तो बदले में वह सुंदरता निर्विवाद, स्पष्ट और अचूक थी। विली पर आँसू बरसाती उसकी आँखें वाकई सुंदर थीं, और वे बाहें, हाथ और होंठ भी बेहद प्यारे थे जिनसे उसे सहारा और सांत्वना मिली थी।

‘मैंने सुना है कि क्या हुआ है – नीचे वाले कमरे से सुना। मुझे डर है कि आपको बहुत चोट लगी है?’ उसने कहा।

‘मुझे दर्द की परवाह नहीं – सबसे ज़्यादा तकलीफ़ मेरे मन को होती है,’ लड़के ने कराहते हुए कहा। भय से कोमलता में अचानक हुए इस बदलाव ने एक पल के लिए आत्म-नियंत्रण की शक्ति को शिथिल कर दिया।

‘चुप रहो, मेरे प्यारे, मेरे बच्चे! चुप रहो, विली, उसे भूल जाओ: वह तुम्हें फिर कभी चोट नहीं पहुंचाएगा,’ युवा सांत्वना देने वाली महिला ने पीड़ित को अपनी बाहों में झुलाते हुए और उसे अपने सीने से लगाए हुए कहा।

राहत मिलने के बावजूद विली का दिल नरम पड़ गया, वह खुलकर रोने लगा और जल्द ही शांत हो गया। कोमल हाथों से उसे बिस्तर पर लिटाया गया, प्यार से उसकी देखभाल की गई जब तक वह सो नहीं गया, नींद में उसे चूमा गया; और फिर संरक्षक वहाँ से चला गया, केवल रात भर उसके बारे में सोचने के लिए, किसी भी तरह की छेड़छाड़ से बचने के लिए, और किसी भी खतरे के लक्षण दिखने पर बचाव के लिए तैयार रहने के लिए।

एल्बियन और मरीना

लॉर्ड वेलेस्ली की एक कहानी

प्रस्तावना

हाल ही में मुझे पहुँचाई गई चोटों के प्रतिशोध में मैंने यह कहानी लिखी है। इसके कई भाग, विशेषकर पूर्व भाग, एक रहस्यमय प्रभाव के तहत रचे गए हैं जिसका कारण मैं नहीं बता सकता।

मेरे पाठक उन पात्रों को आसानी से पहचान लेंगे, भले ही मैंने उन पर एक पतला सा पर्दा डाल दिया हो। मैंने लेडी ज़ेनोबिया ज़ेलज़िया एलिंगटन की बहुत प्रशंसा की है। वह उतनी सुंदर नहीं हैं जितना मैंने उन्हें चित्रित किया है, और उन्होंने किसी को दूसरे की नज़रों से बेदखल करने के लिए मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक ज़ोरदार प्रयास किए। लेकिन उनके प्रयास विफल रहे। एल्बियन अब तक अडिग रहा है। वह क्या

करेगा, इसका मैं अनुमान भी नहीं लगा सकता; लेकिन मुझे लगता है कि मरीना की अतुलनीय श्रेष्ठता उसकी फ्रांसीसी भाषी प्रतिद्वंद्वी पर भारी पड़ेगी, जो, जैसा कि पूरी दुनिया जानती है, एक मिलर, जॉकी, बातूनी, विद्वान महिला, रथ चालक और बुढ़िया का मिला-जुला रूप है...

यह निष्कर्ष सत्य से पूरी तरह निराधार है, और मैंने यह प्रतिशोध की भावना से किया। जहाँ तक मुझे पता है, एल्बियन और मरीना दोनों जीवित और स्वस्थ हैं।

हालांकि, एक बात निश्चित रूप से मेरा दिल तोड़ देगी, और वह है ट्री (प्रकाशक) के खिलाफ किसी भी घोटाले को स्वीकार करना; लेकिन मुझे उम्मीद है कि मेरे पाठक मुझे इसके लिए क्षमा कर देंगे, क्योंकि मैं वादा करता हूं कि अगली बार जब मैं कोई किताब लिखूंगा तो सूदखोरी के मामले में भरपाई कर दूंगा।

सी. वेलेस्ली

12 अक्टूबर, 1830

मैंने इसे चार घंटे में लिखा। सी.बी.

अध्याय 1
एल्बियन

दक्षिण इंग्लैंड में एक छोटा सा रमणीय देहाती गाँव है, जिससे मैं अधिकांश लोगों की तुलना में कहीं अधिक परिचित हूँ। इसके आसपास का दृश्य किसी भी प्रकार की भव्यता या वन्य जीवन की विशेषता से रहित नहीं है, जो किसी उपन्यास में उपयुक्त

लगे, और यह संक्षिप्त वृत्तांत किसी भी प्रकार के उपन्यास के लिए कोई उच्च शीर्षक का दावा नहीं करता है।

न तो ऊबड़-खाबड़ ऊँची चट्टानें, न ही धुंधले विशाल पर्वत, प्रकृति के शांत चेहरे पर कोई तीखी नज़र डालते हैं; बल्कि शांत घाटियाँ, वनों से ढकी नीची पहाड़ियाँ, कलकल करते झरने और छोटी-छोटी धाराएँ, उपजाऊ खेत, फार्महाउस, झोपड़ियाँ और एक चौड़ी नदी, ये सभी मिलकर दर्शनीय स्थल बनाते हैं। और हर गाँव में एक या एक से अधिक महान व्यक्ति होते हैं।

उसका नाम 'ना-शीप-शैंक्स' था। दुनिया के हर कान ने उसकी प्रसिद्धि सुनी थी और हर ज़बान उसकी गवाही दे सकती थी। मैं उसे स्ट्रैथेलरे का ड्यूक नाम दूंगा और इसी नाम से गाँव का भी नाम रखा गया था।

तीस मील से अधिक के दायरे में जमीन का हर इंच उसका था और हर आदमी उसका सेवक था।

इस कुलीन व्यक्ति का भव्य विला, या यूं कहें कि महल, एक ऊंचे स्थान पर स्थित था, जो एक विशाल उद्यान और एक प्राचीन जंगल की घनी छाया से घिरा हुआ था, मानो गर्व से पूरे ग्रामीण क्षेत्र की निष्ठा का दावा कर रहा हो।

इसके महान स्वामी के दिमाग, उपलब्धियों और चरित्र का चित्रण मेरी जैसी कमजोर कलम से न तो किया जा सकता है और न ही किया जाना चाहिए; क्योंकि भले ही मैं पुत्रवत प्रेम और समर्पित प्रशंसा की मदद ले सकूं, फिर भी दोनों पूरी तरह से अप्रभावी साबित होंगे।

हालांकि ड्यूक स्वयं अपने सामंतों के बीच कम ही आते थे, क्योंकि वे महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त रहते थे, फिर भी उनकी पत्नी डचेस महल में ही रहती थीं। उनके बारे में मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि वे धरती पर एक देवदूत के समान थीं। उनका मन दया, परोपकार, कोमलता और मधुरता से भरा हुआ था। सभी, चाहे बूढ़े हों या जवान, उनसे प्रेम करते थे; और मृत्यु के निकट पहुँच चुके लोगों का आशीर्वाद सदा उन पर बना रहता था।

उनके दो बेटे भी थे, जो अक्सर स्ट्रैथेलरेय घूमने आते थे।

सबसे छोटे, लॉर्ड कॉर्नेलियस के बारे में सब कुछ तब कहा जा सकता है जब मैं पाठक को बताऊं कि वह सत्रह वर्ष के थे, गंभीर, उपदेशात्मक, संयमी, कुछ हद तक अभिमानी और व्यंग्यात्मक, सुंदर चेहरे वाले, हालांकि कुछ हद तक सांवले; उनके

लंबे, घने बाल थे जो हुडी के पंख की तरह काले थे; और उन्हें उदास मौन में बैठकर मानवीय मामलों की व्यर्थता पर चिंतन करने या गणित की उच्च शाखाओं और खगोल विज्ञान जैसे उदात्त विज्ञान के गूढ़ अध्ययन द्वारा अपने दिमाग को बेहतर बनाने और विस्तारित करने से ज्यादा कुछ भी पसंद नहीं था।

मेरे इस वृत्तांत का नायक सबसे बड़ा पुत्र, एल्बियन, मार्क्विस ऑफ टैगस है। वह उन्नीस वर्ष का हो चुका था; उसका कद ऊँचा था; उसका शरीर अपोलो बेल्वेडेरे के समान भव्य था। उसके घने भूरे बालों की लटें, संगमरमर जैसे शुद्ध माथे पर लहराती थीं, जो शिराओं से रहित सफेदी से परिपूर्ण था। उसकी नाक और मुँह एकदम सही आकार में थे। लेकिन मैंने उसकी आँखों के समान कुछ नहीं देखा! ओह! मैं घंटों तक उसे निहारता रह सकता था! उन विशाल, चमकीली भूरी आँखों में क्या स्पष्टता, गहराई और पारदर्शिता थी! और उसकी मुस्कान का आकर्षण अप्रतिरोध्य था, हालाँकि उसके गंभीर और लगभग उदास चेहरे पर वह मन की धूप शायद ही कभी फूटती थी। वह एक सैनिक था, रॉयल रेजिमेंट ऑफ हॉर्स गार्ड्स में कप्तान, और उसके सभी हाव-भाव और कार्य वीरता से परिपूर्ण थे। उनकी मानसिक क्षमताएं उनके बाहरी व्यक्तित्व के अनुरूप ही थीं, जो उच्चतम कोटि की थीं; और यद्यपि वे अपने छोटे भाई की तरह पूरी तरह से अध्ययन में लीन नहीं थे, फिर भी वे प्राचीन भाषाओं में पारंगत थे, और ग्रीक और रोमन क्लासिक्स के साथ-साथ ब्रिटिश, जर्मन और इतालवी भाषाओं की सर्वश्रेष्ठ कृतियों का गहन अध्ययन करते थे।

ऐसा था मेरा नायक। उसके चरित्र में मुझे जो एकमात्र दाग नज़र आया, वह था उसका थोड़ा उग्र स्वभाव या क्रोध की उग्रता, जो कभी-कभी उसे हद से ज़्यादा उग्र बना देती थी, हालाँकि अपने पिता की एक हल्की सी नज़र या आदेश पर वह तुरंत अपने गुस्से पर काबू पा लेता था और एकदम शांत हो जाता था।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि ड्यूक को ऐसे बेटे पर गर्व था।

अध्याय II

किले से लगभग दो मील की दूरी पर एक सुंदर घर खड़ा था, जो घने जंगल के कारण पूरी तरह से छिपा हुआ था और उसी जंगल के एक खुले मैदान में स्थित था।
इसके पीछे सुगंधित झाड़ियों से घिरा एक चिकना लॉन था, और इसके सामने एक सुंदर फूलों का बगीचा था।

यह सर एलुरेड एंगस का निवास स्थान था, जो एक स्कॉटिश व्यक्ति थे और महामहिम के चिकित्सक थे। यद्यपि उनके तौर-तरीके और व्यवहार सज्जनतापूर्ण थे, फिर भी उनका चेहरा और स्वभाव कठोर, सख्त और कुछ हद तक झगड़ालू था।

वह विधुर थे और उनकी एक ही संतान थी, एक बेटी, जिसे मैं मरीना कहूंगा, जो उसके असली नाम से काफी मिलती-जुलती है।

अकेले खिलने वाला कोई जंगली गुलाब या पुरानी दीवार से झांकता कोई नीलबेल, सुंदरता में इस जंगल के फूल की बराबरी नहीं कर सकता था। उसके गालों का लाल रंग जंगली गुलाब के सबसे कोमल रंग को भी मात दे देता, यहाँ तक कि जब उसकी कली गर्मी की हवा में खिल रही होती है, और उसकी आँखों का नीला रंग जंगली गुलाब को धुंधले जलकुंभी की तरह फीका कर देता। साथ ही, उसके सुनहरे भूरे बालों की रेशमी लटें, जो उसकी गर्दन और बर्फ जैसे सफेद माथे पर हल्के घुंघराले गुच्छों में फैली थीं, किसी लता की नई शाखाओं से भी अधिक सुंदर लगती थीं। उसकी पोशाक सादगी में लगभग क्वेकरों जैसी थी। वह हमेशा शुद्ध सफेद या बसंत हरे रंग के वस्त्र पहनती थी, गले में मोतियों की एक माला के अलावा कोई गहना नहीं पहनती थी। वह घर के पास एक लंबे खेत के किनारे से गुजरने वाली हरी-भरी और सुहावनी गली की सीमा से बाहर कभी नहीं जाती थी। वहाँ गर्मी की सुहावनी शामों में वह टहलती और रुककर वुडलार्क का गीत सुनती, और कभी-कभी अपनी सुरीली आवाज़ में उसके मधुर गीत में शामिल हो जाती।

जब शरद ऋतु और सर्दियों के उदास दिन और रातें इन सैर की अनुमति नहीं देते थे, तो वह चित्रकारी (जिसमें उसकी गहरी रुचि थी), वीणा बजाने, अपने पिता के विशाल पुस्तकालय में सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी, फ्रेंच और इतालवी कृतियों को पढ़ने (जिन सभी भाषाओं को वह समझती थी) और कभी-कभी थोड़ी बहुत हल्की कढ़ाई करके अपना मनोरंजन करती थी।

इस प्रकार लगभग पूर्ण एकांत में (क्योंकि सर एलुरेड आमतौर पर लंदन में रहते थे, इसलिए उन्हें उनका साथ भी बहुत कम मिलता था) वह काफी खुश थीं, और उन लोगों पर भोलेपन से आश्चर्य करती थीं जो तथाकथित 'फैशनेबल समाज' के शोरगुल भरे सुखों में आनंद पा सकते थे...

एक दिन, जब लेडी स्ट्रैथेलरे जंगल में टहल रही थीं, तो उनकी मुलाकात मरीना से हुई। मरीना को जानने पर, उनकी सुंदरता और मधुर व्यवहार से मोहित होकर, उन्होंने उन्हें अगले दिन महल में आने का निमंत्रण दिया। मरीना ने ऐसा ही किया और वहाँ उनकी मुलाकात मार्क्विस ऑफ टैगस से हुई। मार्क्विस, डचेस से भी अधिक आश्चर्यचकित और प्रसन्न हुए, और उनके जाने के बाद उन्होंने अपनी माँ से मरीना के बारे में कई प्रश्न पूछे, जिनका उनकी माँ ने संतोषजनक उत्तर दिया।

कुछ समय बाद वह उदास और खोया-खोया सा दिखने लगा। पाठक आसानी से समझ जाएगा कि वह, एक प्रचलित मुहावरे में कहें तो, 'प्यार में पड़ गया था'।

उनके भाई लॉर्ड कॉर्नेलियस ने उन्हें ऐसा करने की मूर्खता के बारे में चेतावनी दी, लेकिन उनकी बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह सुनने के बजाय उन्होंने पहले हंसने की कोशिश की, और फिर उन पर भौंहें चढ़ाकर चुप रहने का आदेश दिया।

कुछ दिनों बाद उन्होंने ओकवुड हाउस (सर एलुरेड की हवेली) का दौरा किया, और उसके बाद वे पहले से भी अधिक उदास हो गए।

उनके पिता ने यह देखा और एक दिन जब वे अकेले बैठे थे, तो उन्होंने एल्बियन से इस बारे में कहा, साथ ही यह भी जोड़ा कि वे इसके पीछे का कारण पूरी तरह से जानते हैं।

एल्बियन का चेहरा लाल हो गया लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।

'मेरे बेटे, मैं तुम्हारी इच्छाओं के विरुद्ध नहीं हूँ, हालाँकि निश्चित रूप से तुम्हारे और मरीना एंगस के बीच पद में काफी अंतर है, लेकिन यह अंतर उसके अनेक प्रशंसनीय गुणों से संतुलित हो जाता है।'

ये शब्द सुनकर आर्थर – मेरा मतलब एल्बियन से है – चौंककर उठा और अपने पिता के चरणों में गिरकर, अत्यंत कृतज्ञता से भर उठा। उसके चेहरे पर खुशी की लाली छा गई और उसके शब्दों से भी कहीं अधिक प्रभावशाली ढंग से उसका भाव व्यक्त हुआ।

'उठो, एल्बियन!', ड्यूक ने कहा, 'तुम उसके योग्य हो और वह तुम्हारे योग्य है;

लेकिन तुम दोनों अभी बहुत छोटे हो। तुम्हारे मिलन में कुछ साल लगेंगे; इसलिए धैर्य रखो, मेरे बेटे।'

इस खबर से एल्बियन की खुशी थोड़ी कम हो गई, लेकिन उसकी कृतज्ञता, पुत्रवत आज्ञाकारिता और प्रेम ने उसे स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दिया, और तुरंत बाद वह कमरे से बाहर निकलकर ओकवुड हाउस की ओर चल पड़ा।

वहां उसने सारी बातें मरीना को बताईं, जो अविश्वास से लाल हो गई, लेकिन वास्तव में उसे उतनी ही खुशी और निराशा के लगभग बराबर संदेह से बहुत बड़ी राहत महसूस हुई जितनी उसे खुद हुई थी।

अध्याय III
ग्लासटाउन

कुछ महीनों बाद ड्यूक ऑफ स्ट्रैथेलरे ने दुनिया के उस अजूबे, अफ्रीका के महान शहर: कांच के शहर की यात्रा करने का निश्चय किया, जिसकी भव्यता, वैभव, विस्तार, शक्ति और धन के बारे में कभी-कभार दूर से समाचार आते थे, जो समुद्र की हवाओं द्वारा खुशहाल इंग्लैंड तक पहुंचाए जाते थे।

लेकिन उस छोटे से द्वीप के अधिकांश निवासियों के लिए यह किसी सपने या भव्य कथा जैसा था। वे समझ नहीं पा रहे थे कि साधारण मनुष्य इतनी विशाल और भव्य इमारतें कैसे बना सकते हैं, जैसा कि कई सार्वजनिक भवनों के बारे में बताया जाता था; और 'सभी राष्ट्रों के मीनार' के अस्तित्व पर तो कुछ ही लोग विश्वास करते थे। यह प्राचीन शहरों जैसे नीनवे या बेबीलोन और उनके देवताओं, नीनस या बृहस्पति बेलस के मंदिरों और उनके अस्टार्टे और सेमाल्ट के महलों जैसा प्रतीत होता था। अधिकांश लोगों का मानना है कि बीते युगों की धुंधली छाया और इतिहास के अतिरंजित पन्नों के कारण ये इमारतें और भी भव्य दिखाई देती हैं।

ग्लास टाउन के निवासियों से कई निमंत्रण प्राप्त होने के कारण, जो उस व्यक्ति

को देखने के लिए उत्सुक थे जिसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी और जिसके पास अफ्रीकी तट के निकट विशाल साम्राज्य भी था, ड्यूक ने अपनी पत्नी, मार्क्विस ऑफ टैगस और लॉर्ड कॉर्नेलियस को सूचित किया कि एक महीने के भीतर वह उनके साथ प्रस्थान करेंगे और उनसे उस समय तक तैयार रहने की अपेक्षा करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि उनके लौटने पर मरीना एंगस को मार्क्विस ऑफ टैगस की उपाधि प्रदान की जाएगी।

हालांकि एल्बियन के लिए उस व्यक्ति से बिछड़ना एक कड़वी परीक्षा थी, जिसके प्रति वह अब पूरी तरह से समर्पित था, फिर भी, अपने पिता के भाषण के अंतिम भाग से सांत्वना पाकर, उसने बिना शिकायत किए आज्ञा का पालन किया।

स्ट्रैथेलरे में अपने प्रवास की आखिरी शाम को उन्होंने मरीना से उदास विदाई ली, जो मानो हताश होकर रो रही थी; लेकिन अचानक अपने दुखों को रोकते हुए उसने ऊपर देखा, उसकी खूबसूरत आँखें एक मुस्कान से जगमगा रही थीं जो प्रकाश की किरण की तरह क्रिस्टल जैसे आँसुओं को रोशन कर रही थी, और फुसफुसाते हुए बोली:

मुझे आपके लौटने पर खुशी होगी।

फिर वे अलग हो गए; और विशाल महासागर में अपनी यात्रा के दौरान एल्बियन अक्सर उसके अंतिम शब्दों को याद करके सांत्वना पाता था।

यह एक आम अंधविश्वास है कि बिछड़ने पर दोस्त द्वारा कहे गए शब्द भविष्यसूचक होते हैं, और ये शब्द निश्चित रूप से शांति के अलावा और कुछ नहीं दर्शाते थे।

अध्याय IV
साहित्यिक महत्वाकांक्षाएँ

कुछ समय बाद वे ग्लास टाउन पहुंचे और उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया।

अपने राज्य का दौरा करने के बाद ड्यूक प्रमुख महानगर में लौट आया और वहां सलामांका महल में अपना निवास स्थान स्थापित किया।

अपने व्यक्तित्व की विशिष्टता के कारण मार्क्विस ऑफ टैगस जहाँ भी जाते थे, काफी ध्यान आकर्षित करते थे, और थोड़े ही समय में उन्होंने उच्च कोटि और योग्यता वाले कई वफादार मित्र बना लिए थे।

साहित्य और ललित कलाओं के प्रति उनके प्रेम के कारण, चित्रकार और कवि जल्द ही उनके सबसे बड़े प्रशंसकों में शामिल हो गए। वे स्वयं भी असाधारण प्रतिभा के धनी थे, लेकिन अभी तक उन्हें स्वयं भी इसकी पूर्ण क्षमता का ज्ञान नहीं था।

एक दिन जब वह अकेले में अपने और सुंदर मरीना के बीच बहते जल के संसार का चिंतन कर रहा था, तो उसने अपने भावों को कागज पर उतारने का निश्चय किया ताकि भविष्य में जब उसकी प्रतीक्षा पूरी हो जाए, तो वह उसे दिखा सके। उसने कलम उठाई और लगभग पंद्रह मिनट में एक छोटी सी, अत्यंत सुंदर कविता लिख डाली। इस प्रयास से उसे प्रसन्नता हुई और उसके हृदय में व्याप्त पीड़ा शांत हुई। इससे उसे अपने मन की अद्भुत क्षमताओं का भी ज्ञान प्राप्त हुआ; और अमरता की लालसा, यश की महत्वाकांक्षा ने उसे जकड़ लिया।

वह यूनानी त्रासदी नाटककारों द्वारा छोड़ी गई दिव्य कृतियों के एक समर्पित उपासक थे, जिन्हें आने वाली पीढ़ियां विस्मित करती हैं, विशेष रूप से सोफोक्लीज द मैजेस्टिक की कृतियों के; और उनका मन पृथ्वी या यहां तक कि परनासस से भी ऊंचे क्षेत्रों में उनकी विकराल उड़ान की भावना से गहराई से ओतप्रोत था।

अपनी असाधारण प्रतिभाओं का कुछ ज्ञान प्राप्त करने के बाद, उन्होंने मिल्टन की तरह कुछ ऐसा लिखने का निश्चय किया जिसे पारंपरिक कला देवियाँ आसानी से भुला न सकें, और इसी के अनुरूप उन्होंने 'नेक्रोपोलिस, या मृतकों का शहर' नामक एक त्रासदी की रचना शुरू की। इसमें उन्होंने प्राचीन मिस्र की पूजा-अर्चना के रहस्यों को अत्यंत उत्कृष्ट ढंग से प्रस्तुत किया है, और उन्होंने मुझसे स्वीकार किया है कि इसे लिखते समय वे स्वयं अपने द्वारा रचित शब्दों में भी मग्न हो गए थे।

यह अद्भुत रचना वाकई उत्कृष्ट है! एक प्रख्यात लेखक (कैप्टन ट्री) के शब्दों में, यह वास्तव में 'मानव बुद्धि की लगभग पूर्णता का एक उत्कृष्ट उदाहरण' है; लेकिन इस पर एक कोमल उदासी का भाव छाया हुआ है, क्योंकि मरीना की छवि उनके विचारों में व्याप्त थी, और उनकी नायिका अमाल्थिया, उसी का एक प्रतिरूप मात्र है।

इस त्रासदी ने उनकी प्रसिद्धि के मुकुट को और भी बुलंद कर दिया, और उनकी बाद की रचनाएँ, जिनमें से प्रत्येक दूसरी से बेहतर प्रतीत होती थी, ने उनके माथे को पहले से ही सुशोभित कर रहे मुकुटों में नए मुकुट जोड़ दिए।

मैं उनके साहित्यिक जीवन की भव्यता का वर्णन नहीं कर सकता, न ही उनकी विभिन्न रचनाओं के शीर्षकों का उल्लेख कर सकता हूँ। इतना कहना ही पर्याप्त है कि वे अपने युग के महानतम कवियों में से एक बने; और प्रसिद्धि प्राप्त करने के उनके प्रयासों के पीछे एक प्रमुख प्रेरणा यह थी कि वे मरीना जैसी अनमोल धरोहर के योग्य बन सकें। वे जिस भी कार्य में संलग्न होते, मरीना हमेशा उनके विचारों में रहती थी, और ग्लास टाउन की सभी महिलाओं में से – चाहे वे धनी, प्रतिष्ठित और सुंदर हों और उनका दिल जीतने के लिए अनगिनत प्रयास करती हों – उन्होंने अभी तक किसी ऐसी महिला को नहीं देखा था जिसकी तुलना वे मरीना से कर सकें।

अध्याय V
लेडी ज़ेलज़िया एलिंगटन

एक शाम एल्बियन को अर्ल क्रुचन के घर आमंत्रित किया गया, जहाँ एक बड़ा भोज आयोजित था। मेहमानों में एक महिला भी थीं, जिनकी आयु लगभग पच्चीस या छब्बीस वर्ष प्रतीत होती थी। कद-काठी में वे बहुत लंबी थीं और उनका कद-काठी और चेहरा पूर्णतः रोमन शैली का था। उनके चेहरे की बनावट सुस्पष्ट और सुंदर थी, उनकी चमकीली और भरी हुई आँखें काली थीं, और उनके घने घुंघराले बाल भी काले

थे। उनके गहरे रंग की दमकती त्वचा पर लाल मखमली वस्त्र था जिस पर फर की किनारी लगी थी, और काले शुतुरमुर्ग के पंखों का लहराता हुआ गुच्छा उनकी भव्यता और गरिमा को और बढ़ा रहा था।

अपनी असाधारण सुंदरता के बावजूद, एल्बियन ने शायद ही उस पर ध्यान दिया, जब तक कि अर्ल क्रुचन उठे और उन्होंने उसका परिचय लेडी ज़ेलज़िया एलिंगटन के रूप में कराया।

वह ग्लास टाउन की सबसे विद्वान और प्रतिष्ठित महिला थीं, और उन्हें उनसे मिलने का यह अवसर पाकर वह प्रसन्न थे।

कुछ समय तक उन्होंने अत्यंत जीवंत और वाक्पटुतापूर्ण भाषण से उनका मनोरंजन किया, और वास्तव में मैडम डी स्टेल स्वयं वार्तालाप प्रतिभा में लेडी ज़ेलज़िया से आगे नहीं निकल सकती थीं; और इस अवसर पर उन्होंने अपनी पूरी क्षमता का उपयोग किया, क्योंकि वह इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति की उपस्थिति में थीं, और एक ऐसे व्यक्ति को प्रसन्न करने के लिए वह महत्वाकांक्षी प्रतीत होती थीं।

अंततः एक अतिथि ने उनसे भव्य पियानो पर एक गीत और धुन प्रस्तुत करने का अनुरोध किया। पहले तो उन्होंने मना कर दिया, लेकिन एल्बियन के अनुरोध का समर्थन करने पर वे उठीं और ड्राइंग रूम की मेज से कविताओं की एक छोटी सी पुस्तक उठाकर मार्क्विस ऑफ टैगस की पहली कविता खोली। फिर उन्होंने उसे एक मधुर धुन पर गाया और कुशलतापूर्वक पियानो बजाते हुए गाया:

जब चांदनी चमकती है, तब मुझे तुम्हारी याद आती है।
शांत जल की सतह पर;
इस प्रकार तुम्हारी नीली आँखों की चमकीली किरण
वह समान गरिमा से चमक रहा था।

जब बर्फीला हंस उड़ता है तो मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ
धारा में शांतिपूर्वक बहता हुआ;
इसकी पंखुड़ियों को हवा भी मुश्किल से ही हिला पाती है।
उनकी दीप्तिमान चमक से विस्मित।

क्योंकि इस प्रकार मैंने तेज हवाओं को शांत होते देखा है
तुम्हारी सुंदरता को अनदेखा करना,
कोमल स्पर्श और चंचल उमंग के साथ
अपनी चमकीली लटों के बीच उड़ो।

और मैंने जंगली पक्षियों को उड़ते हुए देखा है
अपने सिर के ऊपर छल्लों में,
जब तू पीली लिली की तरह खड़ी रही
उनके प्यार से अनजान।

ओह! उस दिन का इंतज़ार है जब एक बार फिर
मेरी निगाहें तुझ पर टिकी रहेंगी;
लेकिन एक विशाल महासागर, एक गहराता हुआ सागर,
और सदा गरजता हुआ समुद्र,
बीच में आगे बढ़ें
उनकी हरी लहरों के साथ,
हाई टोस्ट ने तूफानी ढंग से उछाला।

ग्लास टाउन पहुंचने के तुरंत बाद एल्बियन ने इस गीत की रचना की थी। यह गीत मरीना को संबोधित था। लेडी ज़ेलज़िया की मधुर और भावपूर्ण आवाज़ ने गीत के विषय को बखूबी व्यक्त किया और उनके द्वारा एल्बियन को दिए गए सम्मान के प्रति उनके आभार को उचित शब्दों में दर्शाया।

जब उसने अपना भाषण समाप्त कर लिया तो सभी लोग चले गए, क्योंकि तब तक काफी देर हो चुकी थी।

अध्याय VI
मरीना की भावना

जब एल्बियन अकेले अपने घर की ओर चल पड़ा, तो वह अनजाने में लेडी ज़ेलज़िया एलिंगटन के भव्य आकर्षणों पर विचार करने लगा और उनकी तुलना मरीना एंगस के सौम्य आकर्षणों से करने लगा। पहले तो वह यह तय नहीं कर पा रहा था कि किसे प्राथमिकता दे, क्योंकि यद्यपि वह अभी भी मरीना को लगभग पूजता था, फिर भी चार वर्षों के अंतराल ने उसकी छवि की याद को काफी हद तक धुंधला कर दिया था।

जब वह इस काम में लगा हुआ था, तभी उसने एक धीमी लेकिन उदास आवाज को फुसफुसाते हुए सुना, 'एल्बियन!'

वह झट से मुड़ा और थोड़ी दूरी पर चांदनी में साफ दिखाई देने वाली हूबहू मरीना की आकृति को देखा।

'मरीना! मेरी प्यारी मरीना!' वह असीम खुशी से झूमते हुए उसकी ओर दौड़ा; 'तुम यहाँ कैसे आई? क्या स्वर्ग के देवदूत तुम्हें यहाँ लाए हैं?'

ऐसा कहते हुए उसने अपना हाथ बढ़ाया, लेकिन वह उसकी पकड़ से बच निकली और धीरे-धीरे दूर जाते हुए बोली: 'मुझे मत भूलना; तुम्हारे लौटने पर मुझे खुशी होगी।'

फिर वह आकृति गायब हो गई। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह केवल अपनी प्रतिद्वंदी पर अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए प्रकट हुई थी, और वास्तव में जैसे ही एल्बियन ने उसकी सुंदरता देखी, उसे लगा कि वह अद्वितीय है।

लेकिन अब आश्चर्य और उलझन ने उनके मन को घेर लिया। वे इस दृश्य का कारण अलौकिक शक्ति के सामान्य समाधान के अलावा और कुछ नहीं समझ पा रहे थे, और उस प्राचीन मत को भी स्वीकार नहीं कर पा रहे थे जिसे उनकी प्रबुद्ध बुद्धि ने अब तक अस्वीकार कर दिया था, जब तक कि इस असाधारण घटना ने उन्हें ऐसा करने के लिए विवश नहीं कर दिया।

हालांकि, एक बात ऐसी थी जिसकी व्याख्या में उसे कोई गलती नहीं हो सकती थी, और वह थी उसके अंतिम शब्दों का दोहराव: 'तुम्हारे लौटने पर मुझे खुशी होगी।' इससे पता चलता था कि वह अभी भी जीवित थी, और जो उसने देखा था वह उसकी आत्मा नहीं हो सकती थी। फिर भी, उसने दिन और समय का नोट बना लिया, यानी 18 जून 815, रात के बारह बजे।

इस समय से उनके स्वभाव में निहित उदासी और भी बढ़ गई, क्योंकि उनके लौटने से पहले ही उनकी मृत्यु का भय उन्हें लगातार सताता रहता था, और उन्हें फिर से देखने की उनकी तीव्र इच्छा और प्रेम दोगुना हो गया था।

अंततः, अपने दुख को और सहन न कर पाने के कारण, उसने यह बात अपने पिता को बताई; और ड्यूक, उसके दुख और निष्ठापूर्ण प्रेम से द्रवित होकर, उसे इंग्लैंड जाने और मरीना को अपने साथ अफ्रीका वापस लाने की पूरी अनुमति दे दी।

अध्याय VII
एल्बियन की वापसी

मुझे अल्बियन की यात्रा की परिस्थितियों का विस्तृत विवरण देकर पाठक को परेशान करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि मैं सीधे इंग्लैंड पहुंचने के बाद जो हुआ उस पर बात करूंगा।

सितंबर 185 की एक सुहावनी शाम थी जब वह स्ट्रैथेलरेये पहुंचा।

अपने पिता के महल में प्रवेश करने का इंतज़ार किए बिना वह तुरंत ओकवुड हाउस की ओर चल पड़ा। जैसे ही वह उसके पास पहुँचा, एक पल के लिए यह ख्याल उसके मन में आया कि शायद वह अब इस दुनिया में न हो, जिससे वह लगभग घबरा गया। लेकिन आशा का सहारा लेकर और उसके सुनहरे सहारे पर भरोसा करते हुए वह लॉन से होते हुए ड्राइंग रूम के कांच के दरवाज़ों तक पहुँचा।

जैसे ही वह पास पहुँचा, वीणा की मधुर ध्वनि उसके कानों में गूंज उठी। उस ध्वनि से उसका हृदय आनंद से भर उठा। वह जानता था कि केवल उसी की उंगलियाँ उन सुरीली ध्वनियों को उत्पन्न कर सकती थीं, जिनमें अब एक मधुर और उदास, लेकिन सुप्रसिद्ध आवाज का सामंजस्य घुलमिल गया था। उसने दरवाजे पर छाँव रखने वाली बेल की शाखा को उठाया और मरीना को देखा, जो उसे पहले से कहीं अधिक सुंदर लग रही थी, वीणा पर बैठी अपनी पतली उंगलियों से कांपते तारों को बजा रही थी।

उसकी नजरों से बचकर, क्योंकि उसने अपना चेहरा उससे दूसरी तरफ कर रखा था, वह अंदर आया और बैठ गया, अपना सिर हाथ पर टिकाकर, आंखें बंद करके, असीम आनंद की अनुभूति के साथ निम्नलिखित शब्दों को सुनने लगा:

लंबे समय से मेरा उत्सुक कान सुनता रहा है
उस कदम के लिए जो कभी वापस नहीं लौटा;
और मेरी आँसुओं से भरी आँखें चमक उठीं।
और मेरा दिल प्रतिदिन जलता रहा है,
लेकिन अब मैं आराम करता हूँ।

प्रकृति स्वयं शोक में डूबी हुई प्रतीत हो रही थी;
यहां तक कि तारे के आकार का जंगली फूल भी,
अपने सुंदर पर्चों के साथ, सुशोभित
वन-कुंड की ओर जाने वाला मार्ग,
उसने अपना सिर झुका लिया।

पहाड़ की गुफा से,
पहाड़ी की चोटी पर स्थित उपवनों से,
धारा से, और फव्वारे से,
अभी भी गुनगुनाहट सुनाई दे रही थी, "भविष्यवाणी जैसी आवाजें।"
शोक का प्रतीक।

अशुभ हवाएँ रुक-रुक कर, आहें भरती हुई आईं।
ऊंचे और घने पत्तों वाले पेड़ों के बीच से;
अपशगुन के पक्षी, बेतहाशा चिल्लाते हुए,
उन्होंने हवा के झोंकों के साथ अपनी पुकार भेजी
मेरे चारों ओर विलाप की आवाजें आ रही हैं।

हर आवाज पर मेरा चेहरा पीला पड़ जाता और मैं कांपने लगता।

हर कदम पर मैं अपना सिर ऊपर उठाता था,
अगर यह उसके जैसा दिखता है तो ध्यान से सुनने पर,
या फिर अगर खबर मिले कि उसकी मौत हो गई है
बहुत दूर से आए थे।

मेरे सारे दिन रोने-धोने में ही बीतते थे;
घोर निराशा के विचार मन में उठने लगे;
भारी कदमों से समय रेंगता हुआ प्रतीत हो रहा था;
लंबे समय तक हृदय रोग, आशा का टलना
मेरे दिल में घाव हो गए।

यहां अचानक संगीत और गायन बंद हो गया।

एल्बियन ने अपना सिर उठाया। चारों ओर अंधेरा था, सिवाय उस जगह के जहाँ चाँदी जैसी चाँदनी की किरणें एक उजाड़ और खंडहर हो चुके अपार्टमेंट को दिखा रही थीं, जबकि कुछ मिनट पहले ही वह आलीशान बैठक कक्ष को देखकर उसकी आँखों को सुकून मिला था।

मरीना का कोई अता-पता नहीं था, न कोई वीणा या संगीत का कोई और वाद्य यंत्र, और ठंडी चाँदनी कांच के दरवाजे की जगह खाली जगह से छनकर आ रही थी। वह उछल पड़ा और जोर से पुकारा: 'मरीना! मरीना!' लेकिन केवल खाली कमरों की गूंज सुनाई दी। लगभग विचलित होकर वह खुली हवा में भागा। बगीचे के द्वार पर एक बच्चा अकेला खड़ा था, जो उसकी ओर बढ़ा और बोला: 'मैं तुम्हें मरीना एंगस के पास ले चलूँगा; वह उस घर से दूसरे घर में चली गई है।'

एल्बियन उस बच्चे के पीछे-पीछे तब तक चलता रहा जब तक वे ऊँचे-ऊँचे, गहरे रंग के पेड़ों की एक लंबी कतार के पास नहीं पहुँच गए जो एक कब्रिस्तान की ओर जाती थी। वे कब्रिस्तान में दाखिल हुए और बच्चा गायब हो गया, एल्बियन को एक सफेद संगमरमर के मकबरे के पास छोड़कर जिस पर खुदा हुआ था:

मरीना एंगस

वह मर गई
18 जून 1815
आधी रात के 12 बजे

जब एल्बियन ने यह पढ़ा तो उसके दिल में एक भयानक पीड़ा का झटका लगा और उसका पूरा शरीर कांप उठा। एक ज़ोरदार कराह के साथ वह मकबरे पर गिर पड़ा और काफी देर तक वहीं बेसुध पड़ा रहा, जब तक कि आखिरकार वह उस मृत्यु जैसी बेहोशी से जागा और उसने मरीना की आत्मा को देखा, जो एक पल के लिए उसके बगल में खड़ी रही और फिर बुदबुदाते हुए बोली, 'एल्बियन, मैं खुश हूँ, क्योंकि मुझे शांति मिल गई है', और गायब हो गई!

कुछ दिनों तक वह उसकी समाधि के आसपास घूमता रहा, और फिर स्राथेलराय से चला गया, जिसके बाद उसके बारे में फिर कभी कुछ पता नहीं चला।

....

मैं मरीना की मृत्यु का कारण संक्षेप में बताऊँगा। एल्बियन के जाने के चार वर्ष बाद गाँव में यह खबर आई कि उसकी मृत्यु हो गई है। इस खबर ने मरीना के सच्चे दिल को तोड़ दिया। अगले ही दिन, वह इस दुनिया से चली गई।

सी.बी.
12 अक्टूबर, 1830

एंग्रिया और एंग्रियन

मैंने जितने भी वर्णन पढ़े हैं, उनमें से मुझे 'टेल्स ऑफ माय लैंडलॉर्ड' की शुरुआत में दिए गए वर्णन से अधिक सुंदर कोई और वर्णन याद नहीं आता, जिसमें घाटी के शीर्ष पर स्थित एकांत निचले पहाड़ी इलाकों में कोवेनेंटर्स के दफन स्थल का वर्णन किया गया है। मुझे यह वर्णन इतना पसंद इसलिए है क्योंकि इसमें प्रकृति की भव्यता या सुंदरता का ऐसा चयन नहीं है जो लेखक की शक्ति या उसके विषय की भावना से स्वतंत्र रूप से मन को मोहित कर ले। क्योंकि आधे दबे हुए कब्र के पत्थरों को छोड़कर, यह केवल कई "हरे फर्न की एकांत घाटियों" में से एक का चित्र है, जिसके नीचे एक उबड़-खाबड़, कम विकसित भूमि, भीतर एक भूरी फर्न से ढकी धारा, चारों ओर सुस्त पथरीले उभार और परे एक दलदली नीरस मैदान है। लेकिन पहाड़ी इलाके में जन्मा और पला-बढ़ा होने के कारण, मुझे उस वर्णन को पसंद करने के लिए और अधिक महान या आकर्षक वर्णन की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उन लिनेट से आबाद पहाड़ियों को देखकर मेरे मन में जो यादें उमड़ती हैं, वे मेरे लिए काफी हैं। और वास्तव में, कब्र के पत्थरों का शांत कोना मुझे उन समयों की याद दिलाता है जब जीवन के खतरे और कठोरता मनुष्य अपने पर्वतीय भूभाग के मूर और मॉस लोगों के साथ उचित रूप से मेल खाता है। मैं कभी यह विश्वास नहीं कर सकता कि दूर और अज्ञात छवियों की कविता से हमारा मन उतना ही जागृत हो सकता है जितना कि उन चीजों की कविता से जिन्हें हम लंबे समय से जानते हैं। मैं उस लेखक की प्रतिभा पर संदेह करूँगा जो इंग्लैंड के वनों से भरे महलों और बादलों से घिरे आकाश की तुलना में भारतीय ताड़ के पेड़ों या जिन्न के महलों पर अधिक ध्यान देना पसंद करता है। इसलिए जब मैं उस पृष्ठ पर उन वस्तुओं का प्रतिबिंब देखता हूँ जिनसे मैं हमेशा घिरा रहा हूँ, तो मुझे स्वयं वर्णन और उसे रचने वाले महान लेखक के प्रति और भी अधिक आनंद होता है, क्योंकि यह मुझे अपना पवित्र कब्रिस्तान और वह सब कुछ दिखाता है जिसे देखने के लिए मुझे केवल पृष्ठों से अपनी आँखें उठानी पड़ती हैं। पत्थर की बाड़ वाले खेतों के बीच वह पहाड़ी राख का पेड़ जो हीथर के किनारे है और शांत तालाबों के ऊपर चक्कर लगाते हुए पीविट पक्षी जो केवल अपनी सीटी बजाती सरकंडों और धूसर बादलों से घिरे आकाश को प्रतिबिंबित करते हैं। मैं उस सुनसान फार्म हाउस की ओर खिंचा चला जाता हूँ जो खुले मैदान की सीमाओं पर बसा है, जिसका विशाल आंतरिक भाग पुरानी कहानियों को प्रेरित करने वाले ओक के फर्नीचर, चिमनीनुमा

आकृतियों और सदियों के धुएँ से काली पड़ी बाइबलों से सुसज्जित है। वहीं, आग के पास अपनी ऊँची पीठ वाली कुर्सी पर बैठा बूढ़ा व्यक्ति वर्षों से कठोर और निर्मम प्रतीत होता है, लेकिन फिर भी प्रेमपूर्वक जीवित है मानो वर्षों ने उसे भुला दिया हो। उसकी उदासीन दृष्टि मेरे दृश्य पर लगभग उतना ही गंभीर भय का भाव डालती है जितना कि मृतकों के ऊपर मंडराता बूढ़ा नश्वर शरीर स्कॉटिश उपन्यासकार के दृश्य पर डालता है।

जिस देश का मैंने जिक्र किया है, वह कार्नाक के एयरडमोर पैरिश के आसपास स्थित था, जिसकी उजाड़ पहाड़ियों के किनारे गोरसाइड डीन से नीचे आने वाली राख से घिरी धारा बहती थी। यह धारा सुनसान सीमांत में एक वीरान खाई की तरह दिखाई देती थी, जिसके चारों ओर फर्न से ढकी ढलानें थीं और यह बंजर भूमि के निर्जन जंगल में खोई हुई थी। इसकी सीमा की ओर लगभग सबसे दूर स्थित घर, खट्टी पीली चरागाह भूमि के सबसे ऊंचे तल पर खड़ा था, जिसकी बड़ी काली दीवारें, काई से ढकी धुंध और उदास देवदार के पेड़ों का एक बागान था। इनमें से सबसे पुराने और सबसे ऊंचे पेड़ का एक झुंड, उस वीरान दृश्य के जिन्न की तरह, एक छत के ऊपर अपनी क्षैतिज भुजाएँ फैलाए खड़ा था। इस घर के आगे, इसकी लंबी खेत की दीवारें नवंबर के आकाश के साथ एक रेखा बनाती थीं और उनके पार का रास्ता एक अंतहीन बंजर भूमि की ओर जाता था, जिसके पदचिह्न स्नाइप या हीथकॉक के शिकार के लिए एक लंबे दिन का खेल प्रदान कर सकते थे, लेकिन घर के पास कोई पक्षी नहीं उड़ता था, सिवाय कुछ गीली पुरानी दीवार पर सैकड़ों की संख्या में चहचहाते लिनट्स के। और फिर भी, अपने एकांत के बावजूद, यह घर उस विशाल पल्ली में कोई साधारण घर नहीं था, और बीते समय की आधी से ज़्यादा कहानियाँ "डार्कवॉल" को ही अपना विषय बनाती थीं और उसके मालिकों को। वे लॉन्गमोर एज के जागीरदार थे और उनकी प्राचीन कब्रें हर रविवार को एयरडमोर चर्च के अनुयायियों की निगाहों का केंद्र होती थीं। लेकिन उनकी प्रसिद्धि में सबसे ज़्यादा योगदान "डार्कवॉल गिट्रैश" के दर्शन का था, हालाँकि इसके प्रकट होने से उस पल्ली में जो भय फैला था, उसमें मेरे पाठक, इसकी प्रकृति से अनभिज्ञ होने के कारण, बहुत कम ही शामिल होंगे। गिट्रैश एक प्रेत है जो न तो कभी जीवित रहे लोगों के भूतों जैसा है, न परियों, वन प्राणियों जैसा, न राक्षसों जैसा, न ही वायु की शक्तियों जैसा। यह केवल मनुष्य रूप धारण नहीं करता, बल्कि बहुत कम ही ऐसे रूप में प्रकट होता है। एक काला कुत्ता जो

जंजीर घसीट रहा हो, एक काला बछड़ा, यहाँ तक कि एक लुढ़कता पत्थर या स्वयं चलने वाला गाड़ी का पहिया भी आमतौर पर इस उदास प्रेत के नश्वर रूप होते हैं। लेकिन डार्कवॉल गिट्रैश को एक बूढ़े बौने और भयानक आदमी के रूप में जाना जाता था, जिसे अक्सर बिना सिर के और सिर के साथ देखा जाता था। वह अंधेरे में उस पुराने घर के चारों ओर फैले नंगे खेतों में घूमता था। लोगों के मन में उसकी उपस्थिति उस परिवार के भाग्य से जुड़ी होती थी जिसके आसपास वह मंडराता था, और ऐसे अवसरों पर हमेशा अपशकुन माने जाते थे, और यदि परंपरा सच होती तो वे पूरे भी होते थे।

अपने गिट्राश के बाद, थर्स्टन परिवार स्वयं ही पूरे इलाके में विस्मय और कहानियों का पात्र था, क्योंकि अनिश्चितता आश्चर्य का कारण बनती है और थर्स्टन परिवार के बारे में जो जानकारी थी वह अक्सर अस्पष्ट थी। उनके पास हमेशा से ही उपजाऊ और घनी आबादी वाले ग्रामीण इलाकों में जमीनें और घर थे; उनके पारिवारिक संबंध वहीं से जुड़े थे और वे केवल अनिश्चित समय के लिए ही अपनी सबसे पुरानी पारिवारिक जमीन पर रहते थे। विलियम थर्स्टन, जिनके पास सारी संपत्ति आ गई थी, सद्गुण से अधिक अवगुण के आदी थे (यह प्रवृत्ति थर्स्टन परिवार की पहचान थी, जैसा कि कई अन्य परिवारों की भी रही है)। अपने सामान्य निवास (वर्डोपोलिस के आगे एडवर्डस्टन के पास थर्स्टन हाउस) की विशाल दूरी से, वे अपने पूर्वजों की तरह ही कम जाने जाते थे। इसके अलावा, उन्होंने एक अच्छे परिवार की महिला से शादी की थी, जिसके बारे में किसी को पता नहीं था कि वह कहां से आई थी, और श्रीमती थर्स्टन को देखने की इच्छा अक्सर पूरी नहीं होती थी। जो लोग उनसे मिलने आते थे, वे हमेशा दूर से ही आते थे और उनका घर भी अपने पड़ोस से उतना ही कटा हुआ था जितना कि वे खुद।

जिस समय से मेरी आगामी कहानी शुरू होती है, उस समय श्री थर्स्टन कुछ समय से राजधानी में अनुपस्थित थे, लेकिन उनके लौटने की उम्मीद उसी दिन थी, जो कि एयरडमोर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले एक बड़े पशु मेले से ठीक पहले का दिन था। एयरडमोर एक विशाल चरागाह और पशुपालन क्षेत्र का केंद्र है और इस वर्ष यह मेला पहले से कहीं अधिक बड़ा और अधिक लोगों द्वारा देखा जाने वाला होने की उम्मीद थी, क्योंकि पूरे मौसम में यह अफवाह थी कि प्रसिद्ध पशु व्यापारी श्री पर्सी मेले में शामिल होंगे। मेले से एक दिन पहले, उनके सींग वाले पशुओं का काफिला उनके सह-भागीदारों, मेसर्स ओ'कॉनर कैरी और गॉर्डन की देखरेख में पहुंचा। वे अपने

साथ जाने-माने बैरिस्टर श्री एच एम एम मोंटमोरेंसी के साथ शाम को डार्कवॉल गए, ताकि अपने मुख्य व्यापारी श्री पर्सी से मिल सकें, जिनके श्री थर्स्टन के साथ उस रात राजधानी से वहां पहुंचने की उम्मीद थी। सभी गणमान्य व्यक्ति ड्राइंग रूम की आग के चारों ओर एकत्रित थे और बंद दरवाजों और गलियारों से उनकी शपथ और हंसी की आवाजें विशाल पुराने रसोईघर में सुनाई दे रही थीं, जहां श्रीमती मारिया थर्स्टन शाही रात्रिभोज की तैयारियों की देखरेख कर रही थीं।

नवंबर की ढलती धूप में वह रसोईघर धधकती आग की चमक से जगमगा रहा था, जिसकी रोशनी प्राचीन और चमकदार पीतल की विशाल अलमारी पर पड़ रही थी। कमरे के अंधेरे कोने से बिल्कुल विपरीत दिशा में स्थित पॉलिश की हुई धातु की अलमारी की हर प्लेट और थाली में एक तेज और चटखती हुई लौ झलक रही थी। गहरे रंग के ओक के सोफे चमक रहे थे और साफ-सुथरे एप्रन पहने नौकरानियों के चेहरे उनसे भी ज्यादा दमक रहे थे, जो पकते हुए भुने मांस और सुगंधित भाप छोड़ते ओवन पर अपने कर्तव्यों का पालन कर रही थीं। बड़े स्पैनियल कुत्ते किसी भी आदेश पर ऐसे स्वर्गिक चूल्हे को नहीं छोड़ते थे और जब उन्हें अंधेरे गलियारे में जाने के लिए मजबूर किया गया, तो बदलाव ने उनके दिलों पर इतना गहरा असर डाला कि ड्राइंग रूम से आ रही सामाजिक गर्जना को सुनकर उनके दोनों कान खड़े हो गए और वे तब तक भौंकते रहे जब तक कि पूरे घर में उनकी गूंज गूंजती हुई खाली जगह में न गूंज उठी। लेकिन विशाल रसोईघर में सबसे ज्यादा ध्यान खींचने वाली चीज थी लंबी और शालीन महिला, जिसने काले रेशमी एप्रन पहन रखा था और जिसकी गोल सफेद बाहें कोहनी तक खुली हुई थीं। उसकी गुलाबी और पतली उंगलियां उसकी फुर्तीली नौकरानियों द्वारा तैयार किए जा रहे भोजन को व्यवस्थित करने और उसकी देखरेख करने में व्यस्त थीं। सफेद मोजे और काली सैंडल पहने उनके पैर शांत और सुरुचिपूर्ण ढंग से चलते थे, और कभी-कभी मेज पर झुकी उनकी सफेद पलकें खिड़की की ओर आशा भरी निगाहों से उठती थीं। हालांकि, ढलते सूरज को देखने के लिए उन्हें अक्सर अपने काले घुंघराले बालों को वापस समेटना पड़ता था, जो नीचे झुकने पर अपनी लेस से निकल जाते थे। इतने विस्तृत वर्णन के बाद मेरे पाठक शायद यह देखकर आश्चर्यचकित हों कि श्रीमती थर्स्टन एक महिला के कामों से बहुत कम मेल खाने वाले कामों में लगी हुई थीं, लेकिन वह सुसंस्कृत और शिक्षित होने के बावजूद एकांत और ग्रामीण इलाके की आदी थीं, जहां मालकिनें वास्तव में घर की मालकिन होती हैं।

कार्नाक पहाड़ों में सालाना हजारों की कमाई उन दिनों किसी पत्नी को हजारों का सदुपयोग करने से नहीं रोकती थी। न ही फ्रांसीसी रसोइये एयर्डमोर पहुंचे थे, इसलिए आगंतुकों को खुश करने का काम स्वाभाविक रूप से उस व्यक्ति पर आ जाता था जिसकी रुचि उन्हें खुश करने में होती थी।

अनुमानित समय बीत चुका था, भोजन की सुरक्षा सुनिश्चित हो चुकी थी और अपनी चिंता से मुक्त होकर श्रीमती थर्स्टन ने घड़ी की ओर देखा, जो श्री थर्स्टन के आगमन के निर्धारित समय से एक घंटा आगे थी। उन्हें लगा कि सज्जनों को उनके मेज़बान के बिना इतनी देर तक छोड़ना असुविधाजनक है, लेकिन किसी भी हालत में उनके कपड़े पहनने का समय हो गया था, इसलिए उन्होंने अपनी नौकरानी को बुलाया और रसोई से बाहर निकल गईं। लड़कियाँ आग के चारों ओर इकट्ठा थीं, जो करीने से सजे रिबन और सफेद एप्रन पहने हुए थीं। उनके चेहरों पर उत्साह झलक रहा था और उनकी ज़ुबान पर तरह-तरह के कयास उठ रहे थे, उस प्रसिद्ध पशु व्यापारी के बारे में, जिसके मंगल और शुक्र के खेतों में कारनामे अफ्रीका में लंबे समय से चर्चा का विषय रहे थे। वह और उनके साथी, जिन्हें "दुनिया भर में फैले" के रूप में जाना जाता था, एयरडमोर के लिए बिल्कुल नए थे और दूर का गाँव उन्हें देखने के लिए उतना ही बेताब था जितना कि डार्कवॉल की रसोई में आग के पास बैठे लोग।

“क्या शानदार घोड़े हैं उनके!” एक ने कहा, “जॉन ने उनकी सफाई की है और उसका कहना है कि उसने जन्म से लेकर अब तक ऐसे शानदार घोड़े कभी नहीं देखे।”

“हाँ और,” दूसरे ने कहा, “उनमें से सबसे छोटा लड़का कैसा आदमी है—” “क्या महान वकील है—” — “नहीं, लाल बालों वाली लड़की के साथ—अगर उसने गलियारे से गुजरते समय मेरी कमर न पकड़ी होती—तो कितनी बेशर्मी है—”

“अरे लड़की! मैं इसके अलावा कुछ और नहीं कहता, लेकिन वो काली मूंछों वाला कितना बदसूरत दिखता है — खैर, यही तो घंटी है — कौन जाएगा? उनके बारे में हर जगह चर्चा हो रही है, जैसे किसी शराबखाने में होती है —”

तुरंत हंगामा मच गया, हर कोई जाना चाहता था और ऐसा दिखावा कर रहा था जैसे वह जाना नहीं चाहता हो, लेकिन तभी एक नौकर अंदर आ गया और उनकी परेशानी दूर हो गई। फिर वे बातें करने लगे कि "लाल बालों वाला सज्जन ओ' कॉनर था, उस महिला का भाई जिसके साथ पर्सी भाग गया था, और मिस्टर मोंटमोरेंसी उसका पति था, और जॉन गिरनिंगटन से मिस हार्टफोर्ड और मिस्टर पर्सी के बारे में

जो कहानी और खबर लाया था, उसके बारे में।" लेकिन कहानी सुनाने के जोश में ही, घोड़ों के खुरों की आवाज आंगन में सुनाई दी और दरवाजे के बाहर एक सज्जन की आवाज आदेश देती हुई सुनाई दी। नौकर ने यह सोचकर दरवाजा तुरंत खोल दिया कि वह उसका मालिक है, लेकिन मिस्टर थर्स्टन वहां नहीं थे। आगंतुक, जो काफी लंबा था, अपने शानदार भूरे घोड़े की लगाम एक नौकर को सौंप रहा था, जो एक "बड़े सफेद घोड़े" पर सवार था। वह नौकर अपने दोनों घोड़ों को अस्तबल की ओर ले गया, मिस्टर पर्सी को अपना ऊंचा सिर झुकाए वहीं छोड़कर रसोई के बरामदे के नीचे चला गया। नौकरों को यह देखकर बहुत हैरानी हुई कि उनके मालिक की जगह एक असाधारण कद का आदमी अंदर आया। उसने हरे रंग की छोटी फ्रॉक, सफेद डोरी वाली पैंट और ऊंचे बूट पहने हुए थे, उसके सिर पर चौड़ी सफेद टोपी थी और उसके चेहरे पर विशाल नारंगी रंग की मूंछें थीं।

“अब मेरी लड़कियों,” उसने कहा, “जितनी जल्दी हो सके मुझे अपनी मालकिन से मिलने दो,” और इतना कहकर वह आग की ओर बढ़ा, चूल्हे पर पीठ करके खड़ा हो गया और अपनी टोपी मेज पर रख दी। नौकरानियाँ खिलखिलाती हुई भीड़ बनाकर उस प्रसिद्ध व्यक्ति को देखने लगीं। वह अपने शानदार सफेद माथे, भूरे घुंघराले बालों और गालों पर चमकते आभामंडल के साथ एक नेक इंसान लग रहा था, हालाँकि उन पर थोड़ी सी कामुकता की लकीरें थीं, और उसकी तिरछी नज़र ने देखने वालों की प्रशंसा को कुछ हद तक कम कर दिया और उनमें डर जैसी भावना पैदा कर दी। उसकी आज्ञा का पालन करने वाली महिला उसे बैठक में ले जाने के लिए लौटी, लेकिन उसने कसम खाई कि उसे उन्हें छोड़ने में कोई हिचक नहीं थी और उसने मौखिक अभिवादन शुरू कर दिया जिससे वे मुश्किल से समझ पा रही थीं कि कहाँ देखें, जब तक कि दरवाजा खुलने की आवाज से वह और श्रीमती थर्स्टन अंदर नहीं आ गईं। श्रीमती थर्स्टन अब लहराते घुंघराले बालों और बर्फ जैसे सफेद गर्दन और कंधों के साथ पहले की तरह ही सुंदर लग रही थीं। दोनों ने गर्मजोशी से हाथ मिलाया।

और “भगवान की कसम,” उसने कहा, “मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि समय के साथ मेरी नन्ही मारिया में इतना सुधार आएगा। समय ने मेरे सारे ज्ञान को नष्ट कर दिया है, लेकिन इसने तुम्हें सुधार दिया है।”

“हमें मिले हुए काफी समय हो गया है महोदय,” उसने उत्तर दिया, “मैं तब तो एक बच्ची ही थी—लेकिन मेरे पति कहाँ हैं? क्या आप उन्हें अपने साथ नहीं लाए हैं?”

बातचीत के दौरान श्रीमती थर्स्टन श्री पर्सी को बैठक कक्ष में ले गईं और उन्होंने कसम खाकर कहा कि उनके पति को उनकी सहायता की आवश्यकता नहीं है, वे अपना ख्याल खुद रख रहे हैं और उन्होंने अनुमान लगाया कि डी-एल ने उन्हें किसी न किसी साजिश में फंसा रखा है। वे डेनार्ड में अलग हो गए और उन्हें उम्मीद थी कि वे एक-दो दिन में घर लौट आएंगे। लेकिन वे इस विषय पर बात नहीं करना चाहते थे और उन्होंने कहा कि जब उन्हें पता चला कि उनकी मुलाकात को कई साल हो गए हैं, तो यह विचार इतना उलझा हुआ था कि वे लगभग बोल ही नहीं पा रहे थे। उन्होंने कहा कि वे शायद उन्हें बहुत पहले ही भूल गए होंगे, लेकिन अपने जीवन में मिली तमाम कठिनाइयों के बावजूद, उन्हें कभी-कभी उनके बारे में सोचने का समय मिल जाता था। "आह," उन्होंने उत्तर दिया, "मैं तब चौदह वर्ष की थी, जो अवलोकन करने के लिए काफी उम्र थी और पर्सी हॉल में रहते हुए मैंने आपको जो खुशी का आनंद लेते देखा था, वह तब से मेरे मन में बार-बार आती है जब भी मैंने उन दुखों और खतरों के बारे में सुना है जो वर्षों बाद आपके नाम से जुड़ गए हैं - लेकिन आप दुखी लग रहे हैं कि मैंने इसका जिक्र किया। क्या आप अपने दोस्तों के पास जाएंगे, महोदय या -"

“दोस्तों मारिया! उनमें से कितने हैं? मॉन्ट, मुझे लगता है कि उसकी हंसी और उस सनकी ओ'कॉनर को देखकर ऐसा लगता है? पहले मुझे कपड़े पहनने दो, फिर मैं उन शराबी बदमाशों से निपटूंगी!” श्रीमती थर्स्टन ने घंटी बजाई और नौकर को बुलाया, जिसे उन्होंने श्री पर्सी का नौकर कहा। जैसे ही वह आदमी अंदर आया, वह बाहर चली गईं और कमरे में उनकी जगह एक बिल्कुल अलग दिखने वाला व्यक्ति आ गया। वह एक बूढ़ा और बौना आदमी था, जिसका माथा हर तरह की शैतानी भावना से भरा हुआ था, और उसके भूरे बाल और काले पुराने जमाने के कपड़े उसकी गहरी भूरी आंखों की हर हरकत में एक तेज चमक का मजाक उड़ा रहे थे। ऐसा था मशहूर रॉबर्ट किंग, या जैसा कि पूरी दुनिया उसे मिस्टर एस डेथ कहती थी, एक पुराना खलनायक जिसके अपराध न्यूगेट कैलेंडर को भर सकते थे, और जो कभी अपने लगभग उतने ही काबिल मालिक का गुरु था, जिसकी वह अब निजी नौकर और उसके व्यापक घोड़े के व्यापार में मुख्य एजेंट के रूप में सेवा करता था - एक ऐसा पद जिसके लिए यॉर्कशायर में जन्म और घुड़सवारी की शिक्षा ने उसे पूरी तरह से योग्य बना दिया था। वह मोमबत्ती हाथ में लिए श्री पर्सी को सीढ़ियों से ऊपर ले गए और थोड़ी देर बाद जब वे नीचे आए तो उन्हें ड्राइंग रूम में ले गए जहाँ धधकती आग के चारों ओर साझेदारों

का समूह अपने भावी मुखिया के आने की प्रतीक्षा में बैठा था। जैसे ही वह प्रकट हुए, सभी उछल पड़े और यह जानकर कि श्रीमती थर्स्टन उनके लिए रात का खाना तैयार कर रही हैं, वे अपने मार्गदर्शक के पीछे भोजन कक्ष में चले गए। ओ'कॉनर चमकती प्लेटों और बर्फीली सफेद मेज के लंबे प्रदर्शन को देखकर आनंद की आंतरिक कसमें खा रहे थे और मोंटमोरेंसी ने पर्सी को एक शत्रुतापूर्ण तिरछी नज़र से देखा जब उन्होंने उस सुंदर महिला को देखा जो उनके प्रवेश का स्वागत करने के लिए खड़ी थी।

जब सब लोग बैठ गए, तो श्रीमती थर्स्टन अपने कुछ पीले, फिर भी मुस्कुराते चेहरे, बड़ी काली आँखों और चित्रकार की नज़र में सुंदर स्त्री रूप के साथ, अपने दाहिनी ओर बैठे सुंदर, फिर भी व्यभिचारी दिखने वाले व्यक्ति के ऊँचे कद और भव्य माथे के लिए एक सुंदर साथी लग रही थीं, और अपने बाईं ओर बैठे दुष्ट गॉर्डन की काली और उदास क्रूरता के लिए एक अच्छा विपरीत भाव प्रस्तुत कर रही थीं। जंगली, बेपरवाह और अय्याश ओ'कॉनर बड़बड़ा रहा था और मज़ाकिया, फिर भी कहीं अधिक गहरे रंग का बदमाश मोंटमोरेंसी सामने मज़ाक कर रहा था, लेकिन इस तरह से कि श्रीमती थर्स्टन जल्द से जल्द मेज छोड़कर चली गईं और उन्हें बोतलों और गिलासों के उस स्वर्ग में छोड़ दिया जिसके लिए ओ'कॉनर का दिल पूरे दिन तड़प रहा था।

“अब,” वह आग के पास आते हुए चिल्लाया, “चलो सिद्धांत और व्यवहार को मिलाते हैं, ये दोनों लंबे समय से अलग-अलग हैं। चलो, हमारी मेज़बान के चारों ओर इकट्ठा हो जाओ, और हमारे घरों को कभी भी इस खूबसूरत आभूषण की कमी न हो। मेरा मतलब है, जब हमारे पास घर हो, हे भगवान!”

“अब मेरे दोस्तों,” बैरिस्टर ने कहा, “इतनी चिंता करने का क्या फायदा? हमारे दिमाग में तो बस थोड़ी सी अक्ल है। हम चारों यहाँ पूरी शाम बैठे-बैठे पुरानी बेवकूफियों पर हँसते रहे हैं, और तुम, पर्सी, अभी तो सवा एक मिनट ही हुए हैं और तुम्हारी रोटी तो पक भी चुकी है। धत् तेरे की, हे भगवान! बोतल दो, आर्थर।”

आर्थर ने एक और शपथ ली जिससे उसे और भी राहत मिली और उसका जंगली लाल सिर हमेशा की तरह बेतरतीब ढंग से घूमने लगा, जिसे हेक्टर मैथियास मोंटमोरेंसी बड़ी खुशी से छेड़ रहा था, जिससे विचारों का एक सच्चा आयरिश भ्रम पैदा हो रहा था। इस सब के दौरान वह अपने नेता अलेक्जेंडर पर्सी की हरकतों पर पैनी नजर रखे हुए था। "चलो अब मेरे दोस्त," हेक्टर ने ओ कॉनर को प्यार से पुकारा,

"मैं उस विषय पर तुम्हारी पूरी राय जानना चाहता हूँ जिसे हमने रात के खाने से पहले छोड़ दिया था—"

अगर मैं इसे भूल जाऊं तो मेरी पैंट कांप जाएगी मॉन्ट —"

"नैतिक रूप से सही और गलत की पहचान, जिसे आप अभी-अभी समझाने की कोशिश कर रहे थे—"

"अरे भगवान की कसम, मुझे याद आ रहा है—अच्छा, और देखो, जब कोई आदमी कहता है कि अगर मैंने यह अपराध किया तो मुझे इसकी सज़ा यहीं या परलोक में ज़रूर मिलेगी, तो इसका क्या मतलब है? अरे, यह तो कायरता है, सरासर डरपोकपन है। वह डरा हुआ है और डर को ही अपने इनकार का मुख्य कारण बना रहा है। धिक्कार है! जब मैं रोवर पर था, अगर मैंने ग्रैसन पर हाथ नहीं उठाया होता, तो मार पड़ने के डर से ही होता। मैंने वार किया और नतीजा क्या हुआ—मुझे एक हज़ार पाउंड मिले जिससे उसके बाद आधा साल जन्नत जैसा हो गया! हे भगवान—अब पर्सी भी है। उसका क्या सिद्धांत है?—मुझे उससे कई बार निपटना पड़ा है—और तुम्हें भी, मॉन्ट। भगवान की कसम—अच्छा, अगर मैंने ऐसा किया होता तो क्या होता?"

जब मैं रोवर जहाज पर सवार था — (माफ़ कीजिए महोदया, श्री पर्सी समझ गए होंगे कि मेरा क्या मतलब है) — मैं शुरू में हमेशा खुद से पूछता रहता था — क्या यह सही है? अगर नहीं, तो क्या समस्या होगी? — खैर, दिन बीतते गए — ऐसा कोई घंटा नहीं बीतता था जब मैं कुछ न कुछ गलत न कर बैठता और ऐसी कोई रात नहीं बीतती थी जब मैं स्वर्ग के नशे में चूर न हो जाता — खैर, मैंने सोचा कि इसका सिद्धांत क्या है? मुझे समझ आया कि यह व्यवहार है और यह एक नियमित स्वर्ग है। मैंने सोचा कि हम सबको किसी सुबह हड़ताल करनी चाहिए और डूब जाना चाहिए, लेकिन यह व्यर्थ था, कुछ नहीं हुआ और हमारे पर्स विधवा के क्रूज की तरह हो गए। हमारा हाथ हमेशा उनमें रहता था और उनका वजन एक औंस भी कम नहीं हुआ — माफ़ कीजिए महोदया, हम क्या कर सकते थे? प्रलोभन आए और अच्छे व्यापारी हमारे चारों ओर से गुजरे। समस्या क्या थी, क्यों जो उनका था वह हमारा हो गया — लड़ाई हुई — खैर, खैर, हम नाम नहीं लेंगे, लेकिन जो भी हो, यह पहली बार था जब मैंने खून बहाया, क्या आप मुझे माफ़ करेंगी? खैर, उस रात मैं एक पल भी नहीं सो पाया, क्योंकि मैं उससे मिले फायदों के बारे में सोचता रहता था। इसमें सजा क्या थी? ओह!

XXXX

XXXX

वह विचित्र संयोजन जिसने पर्सी के चरित्र को आकार दिया - व्यभिचार, अय्याशी, भावुकता और बेचैन महत्वाकांक्षा - और जो बाद में उसकी कड़वी उदासी से धुंधलाने लगा था, फिर भी श्रीमती थर्स्टन के मन में हमेशा वही रुचि जगाता रहा जो हजारों अन्य लोगों के मन में थी। उसके जीवन की कहानी, उसकी निरंतर भटकन और अफवाहों में घिरे अपराधों ने उस रुचि को और बढ़ा दिया और उस रोमांस को जीवित रखा जिसे उसका वर्तमान काम शायद नष्ट कर देता। उन्होंने इतने प्रसिद्ध व्यक्ति के आगमन की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा की थी और जब वह आया, तो उसका हर शब्द और हर कार्य उसकी कल्पनाओं को साकार करता हुआ प्रतीत हुआ, मानो उसने पहले कभी न देखे गए परिदृश्य में नए चित्र बनाए हों।

हालांकि उसने श्री पर्सी को नहीं देखा था, वह महानगर में उसके पति का साथी था और श्री थर्स्टन ने अब उसे अपने निवास पर ठहरने के लिए आमंत्रित किया था, जहाँ वह फिडेना में अपना काम समाप्त होते ही उसके साथ आ जाएगा। अब तक उसकी पत्नी को उसका स्वागत करना था, जो पहले तो उसे लगा कि वह बिल्कुल नहीं कर पाएगी, लेकिन वह उसे अच्छी तरह जानती नहीं थी। जब उसका गिरोह मौजूद था, तब वह चिड़चिड़ा और उग्र लग रहा था, लेकिन अब वे जा चुके थे। और जब उसकी मेज़बान आग के पास सोफे पर बैठी थी, तब वह अचानक उठा और कमरे में आगे-पीछे घूमने लगा। उसकी राजसी आकृति कभी प्रकाशमान होती तो कभी छाया में, जैसे-जैसे वह आग के पास जाता या उससे दूर जाता, उसकी नीली चंचल आँखें चमक उठतीं और उसका भाव हर पल बदलता रहता, जबकि वह कई विषयों पर अपने शब्दों को इतनी गर्मजोशी और प्रवाहमयीता से प्रकट करता था। अगर श्रीमती थर्स्टन उनसे बात करतीं तो वह रुककर बड़ी उत्सुकता से सुनते, जिससे श्रीमती थर्स्टन लगभग भावुक हो जातीं। लेकिन जब वह बात करते तो श्रीमती थर्स्टन भी सामान्य बातचीत से कहीं अधिक उत्साहित हो जातीं। उन्हें उन्हें आगे बोलने के लिए प्रेरित करने की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि किसी बात ने उन्हें स्पष्ट आनंद से भर दिया था। यह उनकी मेज़बान की हंस जैसी सुंदर गर्दन और काले घुंघराले बाल थे, जिन्होंने उन्हें किसी विषय की परवाह या चमकने की इच्छा से कहीं अधिक प्रोत्साहित किया था।

“मुझे आश्चर्य है,” उसने कहा, क्योंकि उसने उसकी भावनाओं की गहरी कड़वाहट

के बारे में सुना था। “मुझे आश्चर्य है, महोदय, जो कुछ मैं जानती हूँ उसके बाद आपको अब इतना प्रसन्न देखकर। मुझे बहुत डर था कि यह उजाड़ मैदान और प्राचीन घर आपको सुस्ती और ऊब से दबा देंगे।”

“और कभी-कभी,” उन्होंने उत्तर दिया, “ऐसा लगता है कि अगर मैं अकेला होता तो शायद ऐसा होता, लेकिन आपके यहाँ होने से ऐसा नहीं है। और सच कहूँ तो, मैंने अकेलेपन का इतना अनुभव किया है कि मुझे यह न तो अजीब लगता है और न ही अप्रिय। जब मैं समुद्र में बिताई लंबी रातों और नॉर्वे की सर्दियों के दिनों के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि अगर उन्होंने मेरे अन्य दुखों को दफ़नाया न होता, तो मैं अब तक मरकर अपनी कब्र में दफ़न हो गया होता। लेकिन मैं हमेशा सबसे अच्छा तब सोचता हूँ जब मैं समुद्र में दूर होता हूँ और सबसे अच्छा तब महसूस करता हूँ जब मैं अभी जैसा हूँ वैसा ही होता हूँ। आपको मेरे समय में दखल देने के लिए मुझे क्षमा करना होगा, श्रीमती थर्स्टन, क्योंकि मुझे ऐसा सुख का अवसर बहुत कम मिलता है। और अगर आप जानतीं कि जब मैं आपसे विदा लूँगा तो मुझे कैसा महसूस होगा, तो आप मुझे इतनी देर तक रोकने के लिए क्षमा कर देतीं।

क्या आपको मुझे एक व्यभिचारी और दुराचारी व्यक्ति के रूप में देखने की आदत नहीं रही है - और एक ऐसा व्यक्ति जिसे ईश्वर ने दयालु स्वभाव की हर चिंगारी से वंचित कर दिया है? - और मैं उस बुराई को स्वीकार करता हूँ और मेरा एक लंबा साथ रहा है।

द्वीपवासियों की कहानियाँ

जब शार्लोट के भाई ब्रैनवेल को बारह खिलौने वाले सैनिकों का एक सेट मिला, तो उनके सामने एक पूरी नई काल्पनिक दुनिया खुल गई। बारह सैनिक, या युवा सैनिक, ब्रोंटे बच्चों के लिए प्रेरणा का एक निरंतर स्रोत बन गए, जिनसे साहसिक कारनामों, गहरी साजिशों, दुर्भाग्यपूर्ण प्रेम कहानियों और द्वेषपूर्ण आत्माओं की कहानियाँ जन्म

लेती थीं। यहाँ संकलित कहानियाँ आनंददायक हैं और ब्रोंटे परिवार के जीवन और एक लेखिका के रूप में शार्लोट के विकास की अनूठी झलक पेश करती हैं।

यह संग्रह इस मायने में असाधारण है कि यह ब्रोंटे बहनों में से किसी एक द्वारा लिखी गई कहानियों का एकमात्र जीवित उदाहरण है। शार्लोट द्वारा एक वर्ष की अवधि में छोटी-छोटी हस्तलिखित पुस्तकों में लिखी गई 'टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स' के चार खंड, संपूर्ण रचना का निर्माण करते हैं। इसलिए ये विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये एक इकाई का रूप धारण करते हैं। ये चारों खंड शार्लोट की कहानी कहने की क्षमता में महत्वपूर्ण विकास को दर्शाते हैं। पहला खंड अध्यायों में विभाजित भी नहीं है, हालांकि इसमें दो अलग-अलग कहानियां हैं, जिनकी शुरुआत इस आकर्षक विवरण से होती है कि युवा ब्रोंटे बहनों ने पहली बार 'द आइलैंडर्स' की अवधारणा कैसे विकसित की। कहानियों की नाट्य उत्पत्ति, जिसमें प्रत्येक बच्चा कहानी के विकास में एक सक्रिय और अंतःक्रियात्मक नाटकीय भूमिका निभाता है, विशेष रूप से पहले और सबसे सरल खंड में स्पष्ट है। शार्लोट स्वयं, एमिली और ब्रैनवेल सभी अपने वास्तविक रूप में, साथ ही अपनी सबसे छोटी बहन ऐनी के साथ विभिन्न काल्पनिक अवतारों में दिखाई देते हैं।

A FAMILY GROUP BY BRANWELL BRONTË

द्वीपवासियों की कहानियाँ

31 जुलाई 1829 - 30 जुलाई 1830

अंतर्वस्तु

टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स का पहला खंड, 31 जून 1829

टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स का दूसरा खंड

अध्याय एक

अध्याय दो

अध्याय तीन

चौथा अध्याय

अध्याय पाँच

टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स का तीसरा खंड
अध्याय एक
अध्याय दो
टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स का चौथा खंड
अध्याय एक
अध्याय दो

टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स का पहला खंड, 31 जून 1829

द्वीपवासियों की कहानियाँ

'द आइलैंडर्स' नाटक की रचना दिसंबर 1827 में इस प्रकार हुई। एक रात, जब नवंबर की ठंडी बर्फ़बारी और धुंध छंटने लगी और कड़ाके की सर्दी के बर्फीले तूफ़ान और तेज़ चुभने वाली रात की हवाएँ चलने लगीं, हम सब रसोई की गर्म जलती हुई आग के चारों ओर बैठे थे। हमने अभी-अभी टैबी के साथ मोमबत्ती जलाने की उपयुक्तता को लेकर हुए झगड़े को सुलझाया था, जिसमें वह विजयी रही क्योंकि कोई मोमबत्ती नहीं लाई गई थी। एक लंबा सन्नाटा छा गया, जिसे अंत में ब्रैनवेल ने आलस भरे लहजे में यह कहकर तोड़ा, "मुझे नहीं पता कि क्या करना है।" एमिली और ऐनी ने भी यही दोहराया, "तुम सो जाओ।"

बी मैं इससे बेहतर कुछ भी कर लूँगा और सी तुम आज रात बहुत उदास हो सी मान लो कि हम दोनों के पास एक-एक द्वीप होता बी अगर होता तो मैं मैन द्वीप चुनता सी और मैं आइल ऑफ वाइट चुनता ई मेरे लिए एरन द्वीप

ए और मेरा नाम ग्वेर्नसे सी होना चाहिए, वेलिंगटन का डी मेरा मुख्य व्यक्ति होना चाहिए, बी हेरीज़ मेरा होना चाहिए, ई वाल्टर स्कॉट मेरा होना चाहिए, ए बेंटिंक मेरा होना चाहिए। हमारी बातचीत घड़ी के 7 बजने की निराशाजनक आवाज़ से बाधित हुई और हमें सोने के लिए बुलाया गया। अगले दिन हमने अपनी नामों की सूची में कई अन्य लोगों को जोड़ा, जब तक कि हमारे पास राज्य के लगभग सभी प्रमुख व्यक्तियों के नाम नहीं हो गए।

इसके बाद लंबे समय तक कुछ भी उल्लेखनीय नहीं हुआ। जून 1828 में हमने एक काल्पनिक द्वीप पर एक स्कूल बनाया, जिसमें 1000 बच्चे पढ़ने वाले थे। इमारत का स्वरूप इस प्रकार था: द्वीप 50 मील की परिधि में फैला हुआ था और निश्चित रूप से यह किसी जादुई क्षेत्र या किसी सुंदर काल्पनिक कथा जैसा प्रतीत होता था, न कि गंभीर वास्तविकता जैसा। कुछ हिस्सों में विशाल चट्टानें, तेज़ बहती धाराएँ और गर्जना करते जलप्रपात इसे अत्यंत भव्य बनाते थे, और कहीं-कहीं बिजली से झुलसे या समय के साथ मुरझाए हुए ओक के पेड़ थे, मानो अकेले यात्री को यह याद दिलाने के लिए कि यह कभी कैसा था, एक हरा-भरा युवा अंकुर इसके पुराने भूरे तने के चारों ओर लिपटा हुआ था। द्वीप के अन्य हिस्सों में, हरे-भरे मैदानों में चमकते झरने फूटते थे, फूलों से लदे मैदानों में या रमणीय जंगलों के बीच, जहाँ परियों के निवास की बात कही जाती थी, जिनकी सीमाएँ बैंगनी वायलेट और पीले प्रिमरोज़ से सजी थीं और हवा मीठे जंगली फूलों से महकती थी तथा कोयल और कबूतर की आवाज़ या ब्लैकबर्ड और थ्रश के मधुर संगीत से गूंजती थी, ये सब मिलकर एक सुंदर दृश्य बनाते थे।

एक विशेषता? महल के विद्यालय के चारों ओर एक विशाल सुंदर उद्यान था जिसमें पहाड़ियों और मैदानों के सुंदर उतार-चढ़ाव ने दृश्य को विविधता प्रदान की, जो अन्यथा नीरस हो सकता था। छायादार उपवन पहाड़ियों की शोभा बढ़ाते थे, शुद्ध धाराएँ मैदानों से बहती हुई किनारों को और भी सुंदर हरियाली से सींचती थीं, जैसे कि साफ झीलें जिनकी सीमाएँ झुकी हुई विलो, सुरुचिपूर्ण लार्च, आदरणीय ओक और सदाबहार लॉरेल से घिरी हुई थीं, किसी विशालकाय दानव के क्रिस्टल पन्ना से जड़े दर्पणों की तरह प्रतीत होती थीं। अक्सर इन सबसे खूबसूरत झीलों में से एक के बारे में कहा जाता है कि जब सब कुछ शांत होता है तो परियों की दुनिया का संगीत सुनाई देता है और लाल चंदन की एक छोटी सी नाव, जिसका मस्तूल अंबर का, पाल और

रस्सियाँ रेशम की और चप्पू हाथीदांत के बने होते हैं, झील पर सरकती हुई दिखाई देती है और जब उसका छोटा सा दल जल लिली के पौधे को वापस समेट लेता है और फूलों से भरे किनारे पर उतरता है तो वे अपने पारदर्शी पंख फैलाते हैं और नश्वर कदमों की आवाज के साथ सुबह के कोहरे की तरह गायब हो जाते हैं, जैसे सूरज की चमक से पहले।

सर्दियों के गुलाबों के सुंदर उपवन और लता लता से परे, शुद्ध सफेद संगमरमर का एक भव्य महल खड़ा है, जिसके सुंदर और बारीक नक्काशी वाले स्तंभ और राजसी बुर्ज किसी कमजोर मनुष्य के नहीं बल्कि शक्तिशाली जिन्न की रचना प्रतीत होते हैं। संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए आप एक भव्य प्रवेश द्वार पर पहुँचते हैं, जो सफेद संगमरमर के कोरिंथियन स्तंभों से घिरे एक हॉल में ले जाता है। हॉल के बीचोंबीच एक विशाल प्रतिमा है, जिसके दोनों हाथों में क्रिस्टल के फूलदान हैं, जिनसे साफ पानी की एक धारा बहती है और हजारों हीरों और मोतियों में टूटकर शुद्ध सोने के एक पात्र में गिरती है और एक छिद्र से विलीन होकर पार्क के विभिन्न भागों में चमकीले फव्वारों के रूप में फिर से प्रकट होती है। ये गिरते हुए पानी कई छोटी धाराओं में विभाजित हो जाते हैं, जो जमीन से होकर बहती हुई एक नदी में मिल जाती हैं, जो अंततः समुद्र में समा जाती है।

हॉल के ऊपरी छोर पर संतरे के पेड़ों का एक छोटा सा बाग था, जिन पर सुनहरे फल और सुगंधित फूल अक्सर एक ही शाखा पर लगे होते थे। इस हॉल से आप एक और भव्य और विशाल कक्ष में प्रवेश करते हैं, जो गहरे लाल रंग के मखमल से सजा हुआ है और इसके भव्य गुंबद से शुद्ध सोने की एक शानदार चमक लटक रही है, जिसकी बूंदें शुद्ध क्रिस्टल जैसी हैं। कमरे की पूरी लंबाई में गहरे लाल मखमल से ढके लंबे सोफे लगे हैं। दोनों सिरों पर कबूतर के रंग के इतालवी संगमरमर की चिमनी हैं, जिनके स्तंभ कोरिंथियन शैली के हैं और उन पर सोने की नक्काशी की गई है। यहां से हम एक छोटे लेकिन बेहद सुंदर कमरे में प्रवेश करते हैं, जिसके सोफे हल्के नीले मखमल से ढके हैं, जिन पर चांदी के फूल बने हैं और जो छोटे सफेद संगमरमर के स्तंभों से घिरे हैं।

अब भव्य हॉलों और आलीशान ड्राइंग रूमों से हटकर मुझे बिल्कुल अलग तरह के दृश्यों का वर्णन शुरू करना होगा। फव्वारे वाले हॉल में एक मूर्ति के पीछे एक छोटा सा दरवाजा है जिस पर सफेद रेशम का पर्दा लगा है। इस दरवाजे को खोलने पर एक

छोटा सा कमरा दिखाई देता है जिसके दूसरे छोर पर एक बहुत बड़ा लोहे का दरवाजा है जो एक लंबे, अंधेरे गलियारे की ओर जाता है, जिसके अंत में सीढ़ियाँ एक भूमिगत तहखाने की ओर जाती हैं जिसका वर्णन मैं अब करने का प्रयास करूंगा।

यह एक विशाल तिजोरी जैसा दिखता है, जो एस्फाल्टास नामक एक दीपक की मंद रोशनी से जगमगा रहा है। यह रोशनी तहखाने के एक हिस्से पर अजीबोगरीब, मौत जैसी चमक बिखेरती है और बाकी हिस्से को आधी रात के अंधकार में डुबो देती है। बीच में काले संगमरमर की एक पटिया है, जो उसी के चार खंभों पर टिकी है। इसके शीर्ष पर लोहे का एक सिंहासन है। तहखाने के कई हिस्सों में यातना के उपकरण रखे हैं, क्योंकि यह वह भयानक कक्ष है जहाँ दुष्ट कॉकनी लोगों का न्याय सबसे अन्यायपूर्ण न्यायाधीश, सीएन और उसके गिरोह एस. टी. डी. और अन्य लोगों द्वारा किया जाता है। इस तहखाने के अंत में उन कोठरियों का प्रवेश द्वार है, जो कॉकनी लोगों में से एक, हाल बी. स्टंट और शरारती स्कूली बच्चों के निजी उपयोग के लिए आरक्षित हैं। ये कोठरियाँ अँधेरी, मेहराबदार और धरती में इतनी गहराई में हैं कि ऊपरी दुनिया के किसी भी निवासी को सबसे तेज़ चीख भी सुनाई नहीं दे सकती। इन कोठरियों के साथ-साथ कालकोठरी में भी सबसे अन्यायपूर्ण यातनाएँ बिना किसी डर के जारी रह सकती थीं, अगर मेरे पास कालकोठरी की चाबी और एमिली के पास कोठरियों की चाबी न होती। और विशाल, मजबूत लोहे के प्रवेश द्वार कानूनी उपकरणों को छोड़कर किसी भी हमले का सामना कर सकते हैं।

इस भव्य महल में रहने वाले बच्चे जॉनी लॉकहार्ट को छोड़कर केवल देश के युवा कुलीन वर्ग के हैं। हमारे अधीन मुख्य गवर्नर ड्यूक ऑफ वेलिंगटन हैं। हालाँकि, यह केवल एक मानद उपाधि है, क्योंकि जब यह उपाधि उनके ऊपर लागू की गई तो निम्नलिखित उत्तर प्राप्त हुआ।

“छोटे राजा और रानी (ये हमारी उपाधियाँ हैं) मुझे खेद है कि एक सैनिक और राजनेता के रूप में मेरा पेशा मुझे आपकी इस विनती को मानने की अनुमति नहीं देता कि मैं कुछ सैकड़ों, बल्कि लाखों बच्चों का शासक बनूँ, जब तक कि यह उपाधि केवल मानद न हो और मेरे अधीन कुछ दर्जन अधिकारी हों। निवेदन है कि मैं आपका आज्ञाकारी प्रजा बना रहूँ।” इस निवेदन का पालन किया गया।

बच्चों को अनुशासन में रखने और उन्हें सैर पर ले जाने के लिए गार्ड के रूप में मार्क्विस ऑफ डौरो और लॉर्ड चार्ल्स वेल्फेस्ली तैनात हैं, जो इस काम के लिए विशेष

रूप से उपयुक्त हैं क्योंकि वे उन्हें देश के सबसे जंगली और खतरनाक हिस्सों में ले जाते हैं, चट्टानों, खाइयों आदि को पार करते हैं और इस बात की परवाह नहीं करते कि बच्चे आगे जा रहे हैं या पीछे रह रहे हैं, और अंत में लगभग एक दर्जन लापता बच्चों के साथ घर लौटते हैं, जो कुछ दिनों बाद झाड़ियों या खाइयों में टूटे हुए पैरों या सिर के साथ पाए जाते हैं, और सर ए ह्यूम, सर ए कूपर और सर एच हैलफोर्ड को अपनी विभिन्न प्रकार की शिकार कलाओं को प्रदर्शित करने का एक अच्छा अवसर प्रदान करते हैं।

बच्चों की गलतियों पर उन्हें पीटने के लिए गार्ड कर्नल ओ'शॉग्नेसी और उनके भतीजे फॉगहार्टी हैं। कभी-कभी तो वे इस विशेषाधिकार का इस्तेमाल तब भी करते हैं जब इसकी आवश्यकता नहीं होती। ये गार्ड अक्सर बेहद उपयोगी साबित होते हैं। मैं यह बताना भूल गया कि ब्रैनवेल के पास एक बड़ा काला डंडा है जिससे वह कभी-कभी बच्चों को बेरहमी से पीटता है। फिलहाल मैंने स्कूली बच्चों के बारे में अपनी जानकारी पूरी कर ली है।

हमारे द्वीपवासियों में बैनेस के तीन बेटे टी, ई और टी हैं, जिन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है: टोल्टोल, नेडनेड या कभी-कभी रैटन और टॉमटोम। ये तीनों सबसे शरारती तिकड़ी हैं: टी लगभग 2 फुट लंबा है, एन अपने भाई की आधी लंबाई का है और टी नेड की तीन चौथाई लंबाई का है। टोल एक वकील का गाउन और एक विशाल विग पहने हुए है जो उसके पैरों तक पहुँचती है और उसे चारों ओर से लपेटे रखती है; रैट ने एक मोटे बोरे का कपड़ा पहना हुआ है जिसे रस्सी से गर्दन और पैरों के चारों ओर बांधा गया है और जो पूंछ और कानों जैसा दिखता है; और टॉम एक रिपोर्टर के कपड़े पहने हुए है।

लगभग एक साल पहले, जब हम स्ट्रैथफील्डसे के विशाल डोमेन से संबंधित जंगलों में से एक में घूम रहे थे, तो हमने अपने पीछे एक धीमी आवाज़ सुनी, "आज एक तूफान आया है और विशाल आकाश का नीला और चमकदार मेहराब काले बादलों से घिर गया है, जिसका अंधकार केवल बिजली की तेज चमक से टूट रहा था, जो काले धुएं के पार प्रतिशोध के शब्द की तरह बादलों में से निकल रही थी, नफरत जिसने व्हिगिश बुद्धि के उज्ज्वल भोर को ढक दिया था! और मुझे उनका बदला लेने के लिए नियुक्त किया गया है! हाँ, यह भुजा (यहाँ हमने एक इंच से थोड़ी लंबी भुजा को पत्तियों के बीच से निकलते देखा) यह भुजा उस कठोर ड्यूक के सिर पर उनकी

घृणा का बदला लेगी जिसके डोमेन में मैं हूँ। लेकिन जल्द ही मैं उसके घमंड को धूल में मिला दूँगा और उसे संप्रभु लोगों के सामने झुकने पर मजबूर कर दूँगा।" फिर उलझी हुई घास के बीच से तेजी से (क्योंकि वह द्वेषी प्राणी घास से ऊपर नहीं पहुँच सकता था) वह पार्क के द्वार तक पहुँचा, लेकिन यहाँ एक बड़ी बाधा सामने आई क्योंकि द्वारपाल... एक बूढ़ा सैनिक, जिसने ड्यूक के सभी युद्धों में उनका साथ दिया था और उनकी सभी लड़ाइयों में उनके साथ रहा था, अगर उसने उस जानवर को देखा होता तो वह निश्चित रूप से उसे चूहा समझकर उसके साथ वैसा ही व्यवहार करता। नेड मुड़ा और हमें देखकर बोला, "छोटी रानियों, क्या आप वह द्वार खोलेंगी?" क्योंकि हम इस रोमांच का अंत देखना चाहते थे, हमने रैटन को उठाया और उसे ऊंची दीवार के ऊपर से फेंक दिया और फिर द्वार पर दस्तक दी। थोड़ी देर में हमें पेड़ों में सरसराहट सुनाई दी और सैनिक हमारे सामने खड़ा हो गया। "कृपया, अर्दली, क्या आप हमारे लिए वह द्वार खोलेंगे? मुझे पहले यह जानना होगा कि आप कौन हैं। हम छोटी रानियां हैं। आप कौन हैं? तो आइए।" इतना कहकर उसने द्वार खोल दिया और हम अंदर चले गए। रैटन तेजी से पार्क में भागा और बाल-बाल एक हिरण के पैरों तले कुचले जाने से बचा, जो उसके पास से उछलता हुआ निकला। हालांकि, एक चीज थी जो उसकी प्रगति को रोकने की धमकी दे रही थी और वह थी एक नदी जो धीरे-धीरे और चुपचाप पार्क से होकर बह रही थी। कुछ देर तक वह नदी के किनारे स्थिर खड़ा रहा और चारों ओर देखता रहा। उसके पीछे वह विशाल जंगल था जिसे उसने अभी-अभी छोड़ा था। यह एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित था और ऊपर तक गहरे हरे पत्तों से ढका हुआ था, जिनके बीच-बीच में बैंगनी बीच के पेड़ की हल्की लहराती शाखाएँ या सफेद चिनार के पेड़ की हल्की हरी शाखाएँ दिखाई दे रही थीं। उसके दोनों ओर विशाल और सुंदर पार्क फैला हुआ था, जो महान ड्यूक के विशाल साम्राज्य से घिरा हुआ था। उसके सामने स्ट्रैथफील्डसे का शानदार महल था और उसके पैरों के पास ही नदी थी, जिसके विपरीत किनारे पर एक हिरण अपना सिर और सींग झुकाकर बहते हुए शुद्ध जल को पी रहा था। नदी के किनारे उगे एक युवा ओक के पेड़ की शाखाओं पर एक बुलबुल बैठी थी, जो पूर्व के स्वच्छ आकाश में हल्के अर्धचंद्राकार दिख रहे चाँदी जैसे चाँद के लिए अपना सुबह का गीत गा रही थी। डूबते सूरज की सुनहरी रोशनी हर चीज़ को ऐसे चमका रही थी मानो वह जलता हुआ सोना हो। कुछ देर के लिए रैटन उस दृश्य की सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो गया, लेकिन अचानक "कोई कमजोरी नहीं" कहते हुए वह

नदी में कूद गया और तैरकर दूसरी तरफ पहुँच गया। फिर वह पार्क के बाकी हिस्से में अकल्पनीय तेज़ी से दौड़ता हुआ घर पहुँचा, हॉल, गैलरी, सीढ़ियों से होते हुए अंत में ड्यूक के पुस्तकालय में पहुँचा। वहाँ कोई नहीं था और मेज पर पानी का एक गिलास रखा था। रैटन ने उसमें कुछ डाला, जिसका रंग नहीं बदला। फिर मेज से कूदकर वह कालीन पर पड़ी एक बड़ी किताब के पीछे छिप गया।

तभी गैलरी में कदमों की आहट सुनाई दी। दरवाजा खुला और एक सैनिक जैसी शान और हाव-भाव वाला लंबा आदमी अंदर आया। उसके पीछे एक और लंबा-चौड़ा आदमी था। पहला व्यक्ति ड्यूक ऑफ वेलिंगटन था और दूसरा सर अलेक्जेंडर ह्यूम। उनके अंदर आते ही ड्यूक ने एक शेल्फ से एक किताब उठाई और बैठ गए। फिर बातचीत शुरू हुई।

डी ह्यूम, आप वाल्फल्टर स्कॉट द्वारा लिखित फापोलियन के इतिहास के बारे में क्या सोचते हैं?

एच, क्या आपका मतलब यह है कि मैं इस तथ्य को ध्यान में रखूँ कि इसे एक पेकिन ने लिखा है, मेरे स्वामी? डी जी हाँ। एच, तो मुझे लगता है कि यह उतनी ही अच्छी तरह से लिखा गया है जितनी अच्छी तरह से एक पेकिन लिख सकता है। डी, क्या आपको लगता है कि इसमें कोई सच्चाई है?

हे प्रभु, आपने इसकी बहुत प्रशंसा की है। क्या आपको लगता है कि मैंने इसकी कुछ ज़्यादा ही प्रशंसा कर दी है?

ओह नहीं! मैं कभी भी किसी पेकिन की इतनी प्रशंसा नहीं करना चाहूंगा। इसके बाद लगभग आधे घंटे तक सन्नाटा छाया रहा और ड्यूक ने पानी को छुआ तक नहीं। रैटन अधीर होने लगा और उसे अपने प्रयास की सफलता का डर सताने लगा। आखिरकार, ड्यूक ने गिलास उठाया और सारा पानी पी लिया। रैटन खुशी से चीखने ही वाला था, लेकिन उसने खुद को रोक लिया। तभी ह्यूम ने कहा, "मैंने कभी नहीं सोचा था कि ठंडा पानी पीने से कुछ अच्छा होता है।" और कुछ मिनट बाद उसने कहा, "मेरे प्रभु, क्या आप ठीक हैं? आप कितने पीले पड़ गए हैं! मैंने किसी को इतना पीला कभी नहीं देखा।"

यहाँ रैटन चिल्लाया, "और वह हमेशा पीला ही रहेगा।" ड्यूक ने उस पर अपनी कठोर दृष्टि डाली और वह प्राणी कांपते हुए अपने कोने में दुबक गया। "मेरे प्रभु, क्या आप मर रहे हैं? घंटी बजाइए, लिटिल क्वीन्स।"

महामहिम का चेहरा पीड़ा से फट पड़ा, उनके हाथ से किताब गिर गई और वे कुर्सी पर वापस धंस गए। तभी हमारे कानों में एक ज़ोरदार चीख गूंजी, एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी और बादलों का एक विशालकाय प्राणी हमारे सामने खड़ा हो गया। उसने ड्यूक को छुआ और मानो उन्हें नया जीवन मिल गया हो। ड्यूक खड़े हुए और दृढ़ स्वर में उस विशालकाय प्राणी का नाम पूछा। उसने गरजती हुई आवाज़ में उत्तर दिया, "रहस्य," और फिर धीरे-धीरे गायब हो गया।

तब उनके महामहिम ने सभी को अपने समक्ष से चले जाने का आदेश दिया और कुछ दिनों बाद रैटन अपने पिता के घर, लफीड्स में, भय से पीला पड़ा हुआ, कांपता हुआ और अधमरा पाया गया। लेकिन वह वहां कैसे पहुंचा, यह अनिश्चित है। न ही वह कभी कोई स्पष्टीकरण देने के लिए राजी हुआ और वास्तव में यह पूरा मामला आज तक एक रहस्य बना हुआ है।

प्रिंस लिफोल्ड और सर जॉर्ज हिल हमेशा से मार्क्विस ऑफ डौरो और लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली को बिल्कुल नापसंद करते रहे हैं। प्रिंस लिफोल्ड एक बेहद नीच किस्म के व्यक्ति हैं, जिनके व्यवहार में एक धूर्तता झलकती है जो बहुत अप्रिय है। सर जॉर्ज हिल स्पष्टवादी और साहसी हैं, लेकिन उन्हें जुआ खेलने की थोड़ी आदत है और वे पेकिन्स से बेवजह नफरत करते हैं। हाल ही में यह अनुमान लगाया गया है कि वे आर्थर और चार्ल्स वेलेस्ली को केवल मनोरंजन के लिए नापसंद करने का दिखावा करते हैं, और यह बात काफी हद तक सच भी है।

कुछ देर पहले, एक तूफानी रात में जब एमिली और मैं स्कूल जाने वाले जंगल से गुज़र रहे थे, तो हमने चाँद की रोशनी में, जो उस समय बादलों से छनकर आई थी, किसी चमकदार चीज़ को चमकते हुए देखा। चाँद फिर बादलों में छिप गया और हम कुछ भी नहीं देख पाए, बस एक घना काला बादल दिखाई दिया। तभी हमें एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी, “ओह आर्थर, काश हम यहाँ कभी न आए होते! अगर मेरे पिताजी को पता चला तो क्या होगा? और मुझे बहुत ठंड लग रही है क्योंकि बारिश तेज़ हो रही है और हवा भी बहुत तेज़ चल रही है। चार्ल्स, अपना फर का लबादा और कसकर लपेट लो और चलो इस पुराने पेड़ का सहारा लेते हैं क्योंकि मैं बिना सहारे के ज़्यादा देर तक खड़ी नहीं रह पाऊँगी। आसमान पूरी तरह से काले बादलों से ढका हुआ है और पेड़ों के बीच हवा कितनी उदास आवाज़ में कराह रही है।” “आर्थर, मैंने वह कैसी आवाज़ सुनी?” सुनो! “यह एक कौआ है चार्ल्स। मैं अंधविश्वास में ज्यादा

विश्वास नहीं करता, लेकिन मुझे याद है मेरी दादी कहती थीं कि यह किसी बुरी घटना के आने का संकेत है। अगर आज रात हम यहीं मर गए, और याद है आर्थर, हम यहाँ अपने दो सबसे बड़े दुश्मनों के इशारे पर आए हैं, तो मेरी माँ और मेरे पिता क्या करेंगे?" तभी वे दोनों जोर-जोर से रोने लगे और हमें भी जंगल में एक अजीब और भयानक आवाज सुनाई दी। "हमारे कुत्तों को क्या हुआ है आर्थर? क्या वे मर रहे हैं?"

"नहीं चार्ल्स, लेकिन यह भी मृत्यु की आवाज कही जाती है।" "मृत्यु की आवाज आर्थर! लेकिन कौवे की आवाज फिर से सुनो! ओ! यह एक भयानक जगह है।"

"चुप रहो चार्ल्स! वे आ रहे हैं।"

पेड़ों के बीच से लालटेन की हल्की रोशनी दिखाई दी और दो आदमी अचानक रास्ते पर आ गए। उनमें से एक लंबा और दुबला-पतला था, लेकिन उसके चेहरे पर दया का भाव था। उसने कहा, "बेचारे! हालाँकि मैं तुम्हें खास पसंद नहीं करता, फिर भी मुझे खेद है कि तुम्हें इस ठंडी रात में इतनी देर तक बारिश में इंतज़ार करना पड़ा।" दूसरा एक नीच और दुष्ट व्यक्ति था और उसने आँखें सिकोड़ते हुए कहा, "राजकुमार लियोपोल्ड और सर जॉर्ज, हम आपके पीछे चलने के लिए पूरी तरह तैयार हैं, लेकिन धीरे चलिए क्योंकि हम तेज़ नहीं चल सकते।" "ठीक है, चलिए।" इतना कहकर वे चल पड़े और हम उनके पीछे-पीछे चलने लगे। लालटेन की रोशनी में हम देख सकते थे कि मार्क्विस ऑफ डौरो और लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली के साथ दो शिकारी कुत्ते थे और जैसे ही वे जंगल से बाहर निकले, उन दोनों कुत्तों ने ज़ोर से दहाड़ मारी। राजकुमार लियोपोल्ड डर से काँप उठे और चार्ल्स ने उन्हें थपथपाया, जिस पर वे दर्द भरी आवाज़ में कराहने लगे। इसके बाद वे कुछ देर चुप रहे और फिर मार्च आगे बढ़ा। कई ऊँची-ऊँची चट्टानों पर चढ़ने और कई खाइयों को पार करने के बाद हम विशाल दलदली भूमि की सीमा में प्रवेश कर गए। तभी शिकारी कुत्ते फिर से रुक गए और एक और भयानक चीख मारी जो उस विशाल मैदान में गूंज उठी और ऐसा लगा मानो दूर से एक और गहरी और भयावह चीख सुनाई दी हो।

"अपने इन बदमाश कुत्तों को चुप कराओ वरना मैं कर दूंगा," सर जॉर्ज ने कहा। "हिल, अगर तुमने इन्हें छुआ तो तुम्हें अंजाम भुगतना पड़ेगा," आर्थर ने जवाब दिया। "ये तुम्हें काट भी सकते हैं।"

लियोपोल्ड डर से हांफ रहा था।

"चलो लड़कों!" सर जॉर्ज ने खोखली हंसी के साथ चिल्लाया, जिसकी गूंजती

चट्टानों ने दस गुना अधिक तीव्रता से जवाब दिया। ठीक उसी क्षण पंखों की धीमी फड़फड़ाहट और एक अशुभ कर्कश आवाज सुनाई दी।

"आश्चर्य की बात क्या है?"

“यह तो कौआ है!” लियोपोल्ड डर से लगभग बेहोश होते हुए बोला। “जल्दी करो ताकि हम किसी आश्रय स्थल पर पहुँच सकें, क्योंकि रात का अंधेरा बढ़ता जा रहा है, बारिश तेज़ हो रही है और हवा इस उजाड़, वीरान मैदान पर और भी भयानक झोंकों के साथ बह रही है।” वे सब आगे बढ़े और थोड़ी देर बाद क्षितिज के किनारे एक रोशनी दिखाई दी, जो उनके पास पहुँचते ही गायब हो गई, लेकिन लालटेन की मदद से हम एक छोटी और वीरान सी दिखने वाली झोपड़ी को देख सके। वे उसमें दाखिल हुए और हम भी उनके पीछे-पीछे एक ऐसे दरवाजे से गए जो समय के साथ जर्जर हो चुका था और कई जगहों से हिंसा से चकनाचूर हो गया था।

“और क्या आप हमें यहीं ले जाना चाहते हैं?” मार्क्विस ऑफ डफौरो ने हैरानी से कहा।

“अरे नहीं, लेकिन जैसा कि लगता है आप आगे नहीं जा सकते, पिताजी, मैंने सोचा कि बेहतर होगा कि आप यहीं रुक जाएं और शायद हमें नीचे हमारे कुछ दोस्त मिल जाएं,” सर जॉर्ज ने एक दरवाजा खोलते हुए कहा, जिससे संकरी सीढ़ियाँ दिखाई दीं। वे नीचे उतरे और फिर एक और दरवाजे पर पहुँचे, जहाँ उन्हें कई आवाजों और हंसी की आवाज सुनाई दी। सर जॉर्ज ने दरवाजा खोला और तुरंत ही तेज रोशनी और उमस भरी गर्माहट फूट पड़ी, जिसने अंधेरी, गीली रात में इतने लंबे समय तक रहने के बाद उन्हें लगभग स्तब्ध कर दिया। जिस तहखाने में वे आए थे, वह गुंबददार था और कई जगहों पर दीवारों से चूना टपक रहा था। चूल्हे पर पीट की बड़ी आग जल रही थी और चारों ओर बेंचों पर बहुत सारे अधिकारी बैठे थे, जिनमें मार्क्विस ऑफ लॉर्ड्स सीएडब्ल्यू और जी पी.यू. भी शामिल थे। कुछ लोग शराब पी रहे थे, कुछ ताश खेल रहे थे, कुछ गा रहे थे। जैसे ही मार्क्विस ऑफ डौरो और लॉर्ड चार्ल्स वेल्फेस्ली ने ये सब देखा, वे बोले, “हम नहीं जाएंगे पिताजी, और चाहे इसके लिए हमें मरना ही पड़े, हम यहीं रुकना पसंद करेंगे।” इस दुष्ट स्थान की तुलना में खुले मैदान में रात बिताना बेहतर है, और यदि आप हमें यहाँ से जाने से रोकते हैं तो यह आपके लिए खतरनाक साबित होगा।

“क्या ऐसा होगा?” लियोपोल्ड ने तीखी और तिरस्कारपूर्ण हंसी के साथ कहा।

उन्होंने अपने कुत्तों को बुलाया, लेकिन वे दिखाई नहीं दिए। लियोपोल्ड उनकी ओर दौड़ा, उन्हें नीचे गिरा दिया, उनके मुंह पर पट्टी बांध दी और उनके हाथ-पैर बांध दिए। फिर आग के चारों ओर बैठे लोगों के पास लौटकर वह गाने-बजाने लगा और उनके साथ खूब शोर मचाने लगा। लेकिन इस सारी मस्ती और उल्लास के बीच, सीढ़ियों से कदमों की आहट सुनाई दी। दरवाजा ज़ोर से खुला और दो आदमी, उनके पीछे तीन बड़े कुत्ते, कमरे में घुस आए। उनमें से एक आदमी को उसके कठोर चेहरे और चमकती आंखों से तुरंत पहचान लिया गया, क्योंकि उसने उग्र स्वर में पूछा, "अरे दुष्टों, मेरे बेटे कहाँ हैं?" वह ड्यूक ऑफ वेलिंगटन थे। वे इतने अचंभित थे कि जवाब नहीं दे पाए, जब तक कि उन्होंने पहले से भी अधिक उग्रता से प्रश्न दोहराया और उन्हें उत्तर देने का आदेश दिया। लियोपोल्ड ने कांपते हुए उत्तर दिया, "वे वहीं हैं।"

“हाँ, ये तो हैं ही! तुम नीच भिखारी!” महाराज ने कहा और उसे लात मारकर तहखाने के दूसरे छोर पर फेंक दिया। फिर उस कोने पर गए जहाँ लिफोल्ड ने इशारा किया था, उन्होंने अपने बेटों के बंधन और हथकड़ी खोली और उन्हें खड़ा किया। लेकिन वे खड़े नहीं हो सके और वापस गिर पड़े। महाराज ने फिर बाकी लोगों की ओर मुड़कर ऐसी आवाज़ में कहा जिससे स्पष्ट था कि वे आज्ञा का पालन करवाना चाहते थे, “मैं तुम सबको इस जगह से चले जाने का आदेश देता हूँ और अगर तुम कभी यहाँ वापस आए तो मैं तुम्हें इसके लिए भयानक दंड दूँगा।”

जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला, वे सीढ़ियों से ऊपर भागे और जितनी तेजी से हो सके, भाग निकले। इस बीच, डॉक्टर ह्यूम नामक दूसरे व्यक्ति ने आर्थर और चार्ल्स को कुछ ऐसा दिया जिससे उन्हें इतनी ताकत मिली कि वे खड़े हो सके और चल भी सके। ड्यूक ने तब पूछा कि वे उस घर में कैसे आए, ठीक उसी समय हम अपने छिपने के स्थान से बाहर निकले और सारी घटना बताई, जिसके बाद हमने पूछा कि महामहिम को चार्ल्स और आर्थर के वहां होने की जानकारी कैसे मिली। महामहिम ने हमें बताया कि जब वे ह्यूम और अपने महान ब्लडहाउंड के साथ स्कूल जा रहे थे, तो उन्हें दूर से अपने बेटों के कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनाई दी, जिसका जवाब तुरंत उनके अपने कुत्तों ने दिया। लगभग एक मील आगे जाने पर उन्हें एक ग्रामीण मिला जिसने उन्हें बताया कि उसने उनके बेटों को ग्रेट मूर पर जॉर्ज हिल और प्रिंस लियोपोल्ड के साथ देखा था। तब, हालांकि रात हो चुकी थी, वे मूर की ओर घोड़े पर सवार होकर गए, लेकिन रास्ते में उन्हें उनके बेटों के कुत्ते मिले जो उन्हें कुटिया तक ले

गए।

जैसे ही महामहिम ने अपना भाषण समाप्त किया, वे प्रस्थान करने के लिए उठे और आर्थर

चार्ल्स उनके पीछे-पीछे आया। जब वे अंधेरी संकरी सीढ़ियों से चढ़कर कुटिया के दरवाजे तक पहुँचे, तो उन्हें उगते सूरज की किरणें दरवाजे की दरारों से छनकर आती देखकर आश्चर्य हुआ। खुली हवा में पहुँचते ही जो दृश्य उनकी आँखों के सामने आया, वह सचमुच मनमोहक था। काले बादलों की जगह नीला, चमकदार गुंबदनुमा आकाश था, जिसमें हल्का चाँद अभी भी दिखाई दे रहा था। शानदार सूरज पूरब से उग रहा था और पिछली रात हुई बारिश की बूँदें, जो अभी भी मैदान पर बची हुई थीं, उन्हें हीरे की तरह चमका रही थीं। कुछ छोटी जंगली पहाड़ी भेड़ें दिखाई दीं और जैसे ही वे पास आईं, वे भाग गईं और चट्टानों पर चढ़ गईं, जब तक कि वे हमें दूर से सुरक्षित रूप से देख न सकें। हमारे आने पर लार्क पक्षी अपने काई वाले बिस्तर से उछल पड़ा और सुबह का गीत गाने लगा। जैसे-जैसे वह नीले आकाश में ऊपर चढ़ता गया, उसका गीत और भी मधुर होता गया, यहाँ तक कि वह सुनाई देना बंद हो गया। थोड़ी देर में वे दलदल के किनारे पहुँच गए और लगभग 9 बजे स्कूल पहुँच गए। सभी स्वस्थ और तंदुरुस्त थे। इस प्रकार ड्यूक, मार्क्विस और लॉर्ड का उस कुटिया में बिताया गया रोमांच समाप्त हो गया।

शार्लोट ब्रोंटे, 31 जून, 1829

टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स का दूसरा खंड

अध्याय एक

मैंने पहले भी इन कहानियों का एक संग्रह प्रकाशित किया है जिसमें विद्यालय का विषय शामिल था। उस संग्रह में मैंने विद्यालय के संचालन के नियमों और साथ ही प्रशासकों के नाम और उनके विभिन्न गुणों आदि का वर्णन किया था। अब मैं इस विषय पर आगे बढ़ूंगा।

संस्था की स्थापना के कुछ समय बाद तक यह बहुत सुचारू रूप से चलती रही। सभी नियमों का पूरी निष्ठा से पालन किया जाता था, शासी अधिकारी अपने कर्तव्यों का बखूबी निर्वाह करते थे, बच्चे बाहरी रूप से तो सभ्य प्राणी बनते जा रहे थे, उनमें जुआ खेलने की प्रवृत्ति कम हो गई थी, उनके बीच झगड़े कम हिंसक हो गए थे और वे स्वयं भी व्यवस्था और स्वच्छता पर थोड़ा ध्यान देने लगे थे। उस समय हम और सभी शासी अधिकारी विद्यालय के भव्य महल में ही रहते थे, ताकि कोई भी कार्य पूरी तरह से नौकरों और अधीनस्थों के भरोसे न रहे। बड़ा कमरा सभी उच्च मंत्रियों के अवकाश के समय (अर्थात शाम के समय) का केंद्र बन गया था और संस्था के सुचारू संचालन को देखकर उन्होंने संस्था को हर संभव सहायता प्रदान करने का संकल्प लिया।

यह खुशहाली लगभग छह महीने तक बनी रही, फिर संसद खुली और 'महान कैथोलिक प्रश्न' उठाया गया, ड्यूक के उपायों का खुलासा हुआ और चारों ओर बदनामी, हिंसा, गुटबाजी और अफरा-तफरी मच गई। राजा के भाषण से लेकर अंत तक के वे तीन महीने! कोई भी कैथोलिक प्रश्न और ड्यूक ऑफ वेलिंगटन या मिस्टर पील के अलावा किसी और विषय पर सोच, बोल या लिख नहीं सकता था। मुझे वह दिन याद है जब इंटेलिजेंस एक्स्ट्राऑर्डिनरी आया, जिसमें मिस्टर पील का भाषण था, जिसमें कैथोलिकों को प्रवेश देने की शर्तें थीं; पापा ने कितनी उत्सुकता से कवर फाड़ा और हम सब उनके चारों ओर कैसे जमा हो गए और कितनी सांस रोककर चिंता से सुनते रहे, जैसे-जैसे एक-एक करके उनका खुलासा किया गया, समझाया गया और उन पर इतनी कुशलता और अच्छे से तर्क दिए गए और फिर जब सब कुछ सामने आ गया तो चाची ने कहा कि उन्हें यह बहुत अच्छा लगा और इतनी अच्छी सुरक्षा के साथ कैथोलिक कोई नुकसान नहीं कर सकते। मुझे यह भी याद है कि क्या यह हाउस ऑफ लॉर्ड्स में पारित होगा या नहीं, इस बारे में संदेह और यह भविष्यवाणी कि यह पारित नहीं होगा। जब वह पत्र आया जिससे इस प्रश्न का निर्णय होना था, तो हम

सबने बड़ी चिंता के साथ पूरी बात सुनी - दरवाज़े खुलना, सन्नाटा छा जाना, शाही ड्यूक अपने वस्त्रों में, ग्रेट ड्यूक हरे रंग के कमरबंद और जैकेट में, उनके उठने पर सभी कुलीन महिलाओं का उठना, उनके भाषण का पाठ, पापा का यह कहना कि उनके शब्द अनमोल सोने के समान हैं, और अंत में विधेयक के पक्ष में 1-4 का बहुमत। लेकिन यह विषयांतर है और मैं अपने पाठकों से इसके लिए क्षमा चाहता हूँ - अब मैं अपने विषय पर आगे बढ़ता हूँ।

इस कैथोलिक प्रश्न के परिणामस्वरूप ड्यूक और मिस्टर पील को लगातार लंदन में रहना पड़ा और हम भी जल्द ही उसी जगह चले गए। ओ'शॉग्नेसी और उनका भतीजा कहीं शिकार पर गए हुए थे और स्कूल का पूरा प्रबंधन मार्क्विस ऑफ डफौरो और लॉर्ड चार्ल्स वेफलेस्ली को सौंप दिया गया था। इसका परिणाम अगले अध्याय में देखने को मिलेगा।

अध्याय दो

कुछ समय तक हमें स्कूल के बारे में कोई खबर नहीं मिली और हमने पूछताछ करने की जहमत भी नहीं उठाई, आखिरकार एक सुबह जब हम नाश्ता कर रहे थे, तभी एक पत्र आया जिसे खोलकर हमने पाया कि वह लॉर्ड वेल्फ्सली की ओर से था। पत्र का सार इस प्रकार था: 8 जून, विजन आइलैंड, लिटिल किंग्स एंड क्वींस। मैं यह पत्र आपको स्कूल में हुए विद्रोह के बारे में सूचित करने के लिए लिख रहा हूँ, जिसका विवरण देने के लिए मेरे पास समय नहीं है। मैं बस इतना कह सकता हूँ कि मैं इस समय खुले में बनी एक छोटी सी झोपड़ी में हूँ - और - लेकिन वे आ रहे हैं और मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकता।

आपका ही बना रहे, इत्यादि - चार्ल्स डब्ल्यू

पी.एस. ऊपर लिखने के बाद से हमारा एक युद्ध हुआ है जिसमें हमारे खोजी कुत्तों

ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी और हमने जीत हासिल की है। हालांकि, भोजन की कमी के कारण हम बहुत मुश्किल में हैं और यदि आप जल्दी से हमारी मदद के लिए नहीं आते हैं तो हमें आत्मसमर्पण करना होगा। मेरे पिता के महान खोजी कुत्ते को अपने साथ लाएँ और डॉक्टर ह्यूम और गेमकीपर को भी।

जैसे ही हमने यह पत्र पढ़ा, हमने एक गुब्बारा मंगवाया। जब वह आया, हम उसमें सवार हो गए और स्ट्रैथफील्डसेफ की ओर हवा में उड़ने लगे। वहाँ पहुँचकर हमने शिकारी कुत्ते और गेमकीपर को लिया और तेज़ी से द्वीप की ओर चल दिए। हम स्कूल के पास के मैदान में उतरे और जब हमने मर्टल के पेड़ों के झुरमुट की ओर देखा, तो हमें वह भव्य महल दिखाई दिया जो चारों ओर घने हरे पेड़ों के बीच से अपनी शान से उठ रहा था और उस द्वीप पर मौन वैभव के साथ खड़ा था, जिसे सही ही एक सपना कहा गया था, क्योंकि मनुष्य की आँख ने रात के सपनों के अलावा कभी ऐसी भव्य सुंदरता, ऐसी अद्भुत शान नहीं देखी थी जैसी इस परीलोक में है, और उसके कानों ने अपने दिल की कल्पनाओं के अलावा कभी ऐसा संगीत नहीं सुना था जो उन पेड़ों के बीच छिपे विशालकाय वीणा से निकलता है। सुनो, एक मरते हुए हंस की आवाज़ जैसी एक धीमी सी आवाज़ है, लेकिन अब एक तेज़ हवा तारों से गुज़रती है और संगीत तेज़ हो रहा है। सुनो, यह कैसे बुलंद हो रहा है! उस प्रचंड स्वर में क्या भव्यता थी, लेकिन हवा और भी तेज़ गरज रही है। मैंने दूर से आती गड़गड़ाहट सुनी, यह नज़दीक आती जा रही है, और वीणा की धुनें बुलंद होती जा रही हैं, जब तक कि अचानक गड़गड़ाहट और हवा के गरजने के बीच, यह इतनी भयानक उग्रता और अलौकिक भव्यता के साथ गूंज उठती है कि आपको विश्वास करने का मन करता है कि यह आत्माओं की आवाज़ है। यही तूफान है।

लेकिन अब अपने विषय पर आते हैं: द्वीप में लगभग आधे घंटे रहने के बाद हमने दूर से लॉर्ड वेलेस्ली को आते देखा। जब वे पास आए तो उन्होंने हमसे कहा, "छोटी रानी, मुझे खुशी है कि तुम आ गई हो, जल्दी करो और मेरे पीछे आओ क्योंकि एक पल भी बर्बाद करने का समय नहीं है।" जैसे ही हम आगे बढ़े, हमारे अनुरोध पर उन्होंने हमें स्कूल विद्रोह की उत्पत्ति के बारे में निम्नलिखित विवरण दिया।

आपके जाने के बाद लगभग तीन दिनों तक सब कुछ बहुत अच्छा चला, लेकिन उसके बाद अनुशासनहीनता के लक्षण प्रकट होने लगे। हमने इन्हें रोकने की पूरी कोशिश की, लेकिन व्यर्थ ही, और स्थिति सुधरने के बजाय और बिगड़ गई। स्कूल

अब चार गुटों में बँट गया था, जिनमें से प्रत्येक का नेतृत्व एक सरदार कर रहा था, अर्थात् प्रिंस पोलिग्नैक, प्रिंस जॉर्ज, जॉनी लॉकहार्ट और राजकुमारी विक्टोरिया। ये चारों लगातार एक-दूसरे से बेहद उग्र तरीके से झगड़ते और लड़ते रहते थे। कुछ हफ्तों तक उनसे संघर्ष करने के बाद भी कोई फायदा नहीं हुआ, इसलिए वे सब भाग गए और अब द्वीप के एक बहुत ही जंगली हिस्से में डेरा डाले हुए हैं, जहाँ हम अभी पहुँचेंगे। उनके पास प्रत्येक गुट में 2 तोपें और पर्याप्त मात्रा में बारूद और गोले हैं। कभी-कभी वे सब हमारे खिलाफ एकजुट हो जाते हैं, और तब हमारे पास बहुत बुरा मौका होता है, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, लेकिन अब जब आप हमारी सहायता के लिए आ गए हैं, तो हम जल्द ही उनका सफाया कर देंगे। जैसे ही उन्होंने अपनी बात समाप्त की, हम उस जंगल से बाहर निकले जिसमें हम तब तक यात्रा कर रहे थे और एक गहरी घाटी में प्रवेश किया, जिसके माध्यम से एक उग्र, उग्र नदी बड़े-बड़े पत्थरों के बीच से गरजती और झाग बनाती हुई तेज़ी से बह रही थी, जो उसके प्रवाह को रोक रहे थे। फिर जैसे-जैसे उसका मार्ग गहरा और चौड़ा होता गया, वह शांत और सहज हो गई, दाहिनी ओर फैले हरे-भरे मैदान से चुपचाप बहती हुई, उसे उपजाऊ और ताज़ा करती हुई आगे बढ़ रही थी। हमारे बाईं ओर चट्टानें खड़ी थीं, जो घाटी पर गहरे रंग में मंडरा रही थीं और अपनी विशाल छाया से उसे काला कर रही थीं। कुछ हिस्सों में वे ऊंचे चीड़ के पेड़ों से ढकी हुई थीं, जिनके बीच से हवा उदास स्वर में कराह रही थी, क्योंकि वह उनकी सूखी शाखाओं से होकर गुजर रही थी। अन्य हिस्सों में चट्टान के विशाल टुकड़े अपने घने आवरण से झांक रहे थे और उनकी धूसर चोटियाँ घाटी पर भयानक रूप से लटक रही थीं। घाटी में प्रवेश करते ही दूर से दागी गई तोप की गूंज और अपने घोंसले से चौंक कर निकली चील की चीख के अलावा कोई आवाज़ नहीं थी, जिसने मृत्यु जैसी खामोशी को भंग कर दिया।

कुछ ही समय में हम उस स्थान पर पहुँच गए जहाँ बच्चे डेरा डाले हुए थे। विटोरियों के तंबू एक चट्टान की चोटी पर लगे थे, पोलिग्नैक के तंबू एक गहरी खाई में, जॉर्जियों ने खुले मैदान में अपना डेरा डाला था और लॉकहार्टियों ने कुछ पेड़ों के बीच मोर्चाबंदी कर रखी थी। मार्क्विस ऑफ डौरो और लॉर्ड वेलेस्ली की झोपड़ी एक विशाल ओक के पेड़ की छाया में बनी थी। उसके ऊपर एक विशाल चट्टान खड़ी थी। एक तरफ हल्की ढलान वाली पहाड़ी थी, दूसरी तरफ ऊँचे पेड़ों का एक झुरमुट था और उसके सामने एक साफ, कलकल करती धारा बह रही थी।

जब हम उस साधारण से घर में दाखिल हुए तो हमने मार्क्विस ऑफ डफौरो को पत्तों के बिस्तर पर लेटे हुए देखा। उनका चेहरा बेहद पीला पड़ गया था; उनके सुंदर चेहरे के भाव संगमरमर की मूर्ति की तरह स्थिर लग रहे थे। उनकी आँखें बंद थीं और उनके चमकदार घुंघराले बाल कुछ जगहों पर खून से जमे हुए थे। यह दृश्य देखते ही चार्ल्स दौड़कर आगे बढ़ा और अपने भाई के बगल में बिस्तर पर गिरकर बेहोश हो गया। डॉक्टर ह्यूम ने उसे तुरंत प्राथमिक उपचार दिए और काफी देर बाद उसे होश आ गया। इस पूरे समय आर्थर न तो बोला और न ही हिला, और हमें लगा कि वह मर गया है। चौकीदार बड़बड़ा रहा था और यहाँ तक कि कठोर हृदय वाले ह्यूम की आँखों में भी आँसू आ गए, और चार्ल्स पागलों जैसा लग रहा था। इस आपात स्थिति में हमने ड्यूक ऑफ वेलिंगटन को तुरंत बुलाने का फैसला किया। हमने ऐसा ही किया और जैसे ही हमने उसे आते देखा, हममें से एक उससे मिलने बाहर गया। जब हमने उसे सारी घटना बताई तो वह मौत की तरह पीला पड़ गया; उसके होंठ काँपने लगे और उसका पूरा शरीर घबराहट से काँपने लगा। कुछ ही देर में वह झोपड़ी में पहुँच गया और पलंग के पास जाकर उसने एक बेजान हाथ पकड़ा और कांपती हुई, मुश्किल से सुनाई देने वाली आवाज़ में कहा, "आर्थर मेरे बेटे, मुझसे बात करो।" तभी अपने पिता के शब्दों को सुनकर आर्थर ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं और ऊपर देखा। ड्यूक को देखकर उसने बोलने की कोशिश की, लेकिन बोल नहीं सका। तब हमने अपने दयालु हृदय से प्रेरित होकर, कुछ जादुई औषधियों के प्रयोग से उसे तुरंत ठीक कर दिया। ऐसा करते ही ड्यूक ने अपनी उंगली से एक हीरे की अंगूठी निकाली और हमें भेंट कर दी। हमने इसे स्वीकार किया और इसके लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

इन घटनाओं के बाद हमने महाराज को विद्यालय में हुए विद्रोह की सूचना दी। वे तुरंत बिना कुछ बोले बाहर चले गए और हम उनके पीछे-पीछे गए। वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ विद्रोहियों ने डेरा डाला हुआ था और ऊँची आवाज़ में चिल्लाकर कहा कि यदि उन्होंने आत्मसमर्पण नहीं किया तो वे सब मर जाएँगे, क्योंकि वे अपने साथ कई हज़ार खूंखार कुत्ते लाए हैं जो उन्हें पल भर में चीर-फाड़ देंगे। वे इस बात से बहुत डर गए और इसलिए आत्मसमर्पण करने को तैयार हो गए, जो उन्होंने तुरंत कर दिया। इसके बाद कुछ समय के लिए विद्यालय पहले की तरह फलता-फूलता रहा, लेकिन हम इससे तंग आकर बच्चों को उनके घर भेज दिया। अब स्वप्नलोक में केवल परियाँ ही निवास करती हैं।

सी. ब्रोंटे, 6 अक्टूबर 1829

अध्याय तीन

स्कूल विद्रोह के लगभग एक वर्ष बाद, सितंबर 1828 की एक सुहावनी सुबह, ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के परिवार में एक अद्भुत घटना घटी। मार्क्विस ऑफ डौरो और लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली शिकार के लिए बाहर गए थे। उन्होंने 8 बजे से पहले लौटने का वादा किया था, लेकिन 10 बज गए और वे नहीं लौटे। 12 बज गए और उनका कोई पता नहीं चला। तब बूढ़े कॉकनी ने नौकरों को सोने का आदेश दिया और जब वे सो गए और सब शांत हो गया, तो वह बड़े हॉल में गए और आग के पास बैठ गए। उन्होंने ठान लिया था कि जब तक वे वापस नहीं आते, तब तक वे सोने नहीं जाएंगे। वह लगभग आधे घंटे तक बेसब्री से उनके आने का इंतजार करते रहे, तभी अंदर का दरवाजा धीरे से खुला और लेडी वेलेस्ली प्रकट हुईं। बूढ़े ने मोमबत्ती बुझा दी थी, इसलिए आग की रोशनी में उन्होंने देखा कि वह बहुत पीली और घबराई हुई थीं।

"क्या बात है मैडम?" लेडी व्हेलस्ले ने कहा। "मैं बैठकर काम कर रही थी कि अचानक मोमबत्ती की रोशनी मेरे काम पर नीली और जलते हुए फास्फोरस या एस्फाल्ट जैसी दिखने लगी। मैंने ऊपर देखा तो मुझे अपने बेटों की खून से लथपथ और विकृत आकृतियाँ दिखाई दीं। मैं उन्हें तब तक देखती रही जब तक वे गायब नहीं हो गए, न बोल पा रही थी न हिल पा रही थी, और फिर मैं यहाँ नीचे आ गई।"

उसने अभी इस विचित्र दृश्य का वर्णन समाप्त ही किया था कि एक ज़ोरदार चरमराहट के साथ बड़ा दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनाई दी और ड्यूक ऑफ वेलिंगटन अंदर आए। वे एक पल के लिए स्थिर खड़े रहे, गंभीरता से लेडी वेलेस्ली और उस बूढ़े व्यक्ति को देखते रहे और फिर स्पष्ट रूप से सुनाई देने वाली लेकिन खोखली आवाज़ में बोले, "कैथरीन, मेरे बेटे कहाँ हैं? मैं अपने अध्ययन कक्ष में बैठा

था और मैंने उनकी आवाज़ें सुनीं, वे मेरे चारों ओर विलाप कर रहे थे और मुझसे उन्हें उस मृत्यु से बचाने की विनती कर रहे थे जिससे वे मरने वाले थे। अभी भी मुझे उनके बारे में एक भयानक आशंका सता रही है जिसे मैं दूर नहीं कर पा रहा हूँ। कैथरीन, वे कहाँ हैं?"

इससे पहले कि लेडी वेलेस्ली जवाब दे पातीं, दरवाजा फिर खुला और हम सामने आ गए। उन्होंने तुरंत हमसे बात की और उनसे पूछा कि उनका क्या हुआ। हमने जवाब दिया कि हमें नहीं पता, लेकिन अगर उन्हें अच्छा लगे तो हम उनकी तलाश में जाएंगे। उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक धन्यवाद दिया और कहा कि वे हमारे साथ चलेंगे। लेडी वेलेस्ली से विदा लेने के बाद हम तुरंत रवाना हो गए।

हम लगभग चार मील तक जितना आगे जा सकते थे, उतना गए, तभी हम एक बेहद उजाड़ बंजर मैदान में पहुँच गए जिसे हममें से किसी ने पहले कभी नहीं देखा था। हम इस मैदान पर तब तक चलते रहे जब तक कि सब कुछ हमारी नज़र से ओझल नहीं हो गया और फिर अचानक हमने देखा कि आसमान का पूरा नज़ारा बदल गया है। यह विशाल लहरों के समान प्रतीत हो रहा था, जिनके शिखर सफेद झाग से ढके थे। हमें दूर से समुद्र की गर्जना जैसी गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी और चंद्रमा कई मील व्यास वाले एक विशाल गोले जैसा लग रहा था। हम इस भव्य दृश्य को मौन विस्मय से निहार रहे थे, जो हर पल और भी भव्य होता जा रहा था और गरज की आवाज बढ़ती जा रही थी। तभी अचानक विशाल लहरें अलग हो गईं और सूर्य के आवरण में लिपटा एक विशालकाय व्यक्ति, जिसके सिर पर 12 तारों का मुकुट था, मैदान में उतरा। एक क्षण के लिए हमारी दृष्टि उसके वस्त्रों की भव्यता से स्तब्ध रह गई और जब दृष्टि वापस लौटी तो हमने खुद को एक ऐसी दुनिया में पाया जिसकी सुंदरता का वर्णन करना मेरे बस में नहीं है। वहाँ प्रकाश से जगमगाते पेड़ और कुंजियाँ थीं, सोने की रेत पर तरल क्रिस्टल जैसा पानी बह रहा था, जिसकी ध्वनि मधुर वीणा के संगीत या मधुर आवाज वाले बुलबुल के गीत से कहीं अधिक मधुर थी। वहाँ पन्ना, माणिक, हीरे, नीलम और मोती के महल थे, जो जैस्पर, अगेट और नीलम के इंद्रधनुष की तरह विशाल समुद्रों पर फैले हुए थे, जिनकी शक्तिशाली आवाजें अब एक कोमल गुनगुनाहट में बदल गई थीं और इस दीप्तिमान भूमि से बहने वाली चांदी जैसी धाराओं के साथ मधुर सामंजस्य में गा रही थीं, जबकि उनका गौरवशाली गीत दूर उठते ऊंचे पहाड़ों द्वारा प्रतिध्वनित हो रहा था, जो सोने में जड़े उत्तम ओपल की तरह चमकते

प्रकाश में दमक रहे थे।

हम यहाँ कुछ ही समय रहे थे कि आसमान काला हो गया, हवाएँ तेज़ हो गईं और समुद्र की लहरें गरजने लगीं। सभी सुंदर चीज़ें गायब हो गईं और उनकी जगह ऊँचे, काले सरू और देवदार के पेड़ दिखाई दिए जो हवा में इधर-उधर हिल रहे थे और मरते हुए मनुष्यों की कराह जैसी उदास आवाज़ निकाल रहे थे। हमारे सामने एक विशाल काली चट्टान प्रकट हुई और उसमें एक चौड़ी और अंधेरी गुफा खुल गई जिसमें हमने आर्थर और चार्ल्स वेल्फेस्ली को देखा। फिर दानव दोबारा आया और उन्हें और हमें अपनी बाहों में उठाकर तेज़ी से हवा में उड़ गया और हम सबको स्ट्रैथफील्डसे के विशाल हॉल में उतार दिया।

चौथा अध्याय

अगस्त के महीने की एक खूबसूरत शाम थी जब ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और उनके बेटे स्ट्रैथफील्डसे के विशाल गोल टावर के शीर्ष पर बने एक छोटे से निजी कमरे में बैठे थे। सूरज डूब रहा था और उसकी किरणें गोथिक शैली की खिड़की से छनकर आ रही थीं, जो सुनहरे खंभों से गिरे हरे मखमली पर्दे से आधी ढकी हुई थी। यह पर्दा भव्य झालरों की तरह चमक रहा था, मानो पूर्वी माणिक से निकलने वाली लालिमा जैसी चमक हो। लेकिन उस खूबसूरत रत्न के विपरीत, इसकी चमक धीरे-धीरे कम होती जा रही थी, यहाँ तक कि अंत में केवल संगमरमर के चबूतरे पर एक हल्की गुलाबी आभा ही रह गई, जिस पर विलियम पिट की प्रतिमा रखी थी और जो कुछ ही देर पहले चमकीले सोने की तरह दमक रहा था। जैसे ही सूरज की आखिरी किरण गायब हुई, लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली ने कहा, "पिताजी, मैं चाहता हूँ कि आप हमें भारत या स्पेन में अपने कुछ रोमांचक किस्से सुनाएँ।"

“ठीक है, चार्ल्स, अब ध्यान से सुनो,” महामहिम ने उत्तर दिया, “क्या तुम भी

सुनना चाहोगे, आर्थर?”

“मैं ऐसा अवश्य करूंगा,” मार्क्विस ने गंभीरता और शांति के साथ उत्तर दिया, जो उनके छोटे भाई के चंचल उल्लासपूर्ण व्यवहार के बिल्कुल विपरीत था। उन्होंने आगे कहा:

“सलामांका की लड़ाई के वर्ष और दिन’7 में, जैसे ही सूरज डूबा और गोधूलि बेला छाने लगी, मैंने अपने संदेश पूरे किए और स्पेन की ठंडी शाम का आनंद लेने के लिए सलामांका के रेक्टर के मठ के द्वार से बाहर निकला। इस उद्देश्य से मैं शहर से होते हुए उसकी दीवारों के बाहर तक गया और फिर टोर्मेस नदी की निर्मल धारा के किनारे टहलते हुए, उसके प्रवाह का अनुसरण करता रहा, जब तक कि मैं शहर से बहुत दूर एक विशाल जंगल की सीमा पर नहीं पहुँच गया, जो कई ऊँची पहाड़ियों से होते हुए क्षितिज तक फैला हुआ था। इस जंगल से होकर एक छोटा सा रास्ता बना हुआ था, जिस पर चलकर मैं उस नदी को पार कर गया जो अब एक छोटी सी धारा में सिमट गई थी। सच कहूँ तो, यह एक बुद्धिमानी भरा कदम नहीं था और न ही मैं अपने बेटों को सलाह दूँगा कि यदि आप कभी ऐसी ही परिस्थितियों में हों तो ऐसा कदम उठाएँ, क्योंकि शाम काफी ढल चुकी थी और सुंदर क्षितिज की तेज रोशनी हर चीज पर एक अनिश्चित चमकती हुई रोशनी डाल रही थी, जिससे एक ऐसे अंधेरे जंगल से गुजरना, जिसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था, बेहद खतरनाक हो गया था। देश में भी साहसी लुटेरों और संगठित डाकुओं का बोलबाला था जो सुनसान इलाकों में रहते थे, लेकिन मुझ पर एक अजीब सा आकर्षण था जिसने मुझे अनमने ढंग से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। लगभग एक चौथाई मील चलने के बाद मुझे दूर से संगीत जैसी एक ध्वनि सुनाई दी जो थोड़ी देर में मंद पड़ गई, लेकिन जब मैं जंगल में काफी अंदर चला गया तो वह फिर से सुनाई दी और फिर पास सुनाई देने लगी। मैं एक विशाल फैले हुए मेपल के पेड़ के नीचे बैठ गया, जिसकी विशाल शाखाएँ और पत्तियाँ अब चाँदनी से जगमगाने लगी थीं, जो जंगल की गहराई में प्रवेश कर रही थी और अपनी किरणों से घने अंधेरे को रोशन कर रही थी। मैं यहाँ ज्यादा देर नहीं बैठा था कि अचानक वह संगीत जो तब तक किसी मधुर वाद्य यंत्र पर किसी कुशल संगीतकार की वादन शैली की तरह धीमा और कोमल सुनाई दे रहा था, एक ऊँची और गहरी धुन में बदल गया जो किसी पूर्ण स्वर वाले ऑर्गन की गूंज जैसी थी, जब उसकी समृद्ध ध्वनियाँ उदात्त टे देउम में गूंजती और ऊँची गलियारों में गूँजती हैं। किसी भव्य

गिरजाघर के गुंबद से आती गहरी, गंभीर ध्वनि, जैसे भयंकर गड़गड़ाहट और भयानक गरज, या फिर उस सबसे उदात्त संगीत, युद्ध संगीत का अचानक विस्फोट, जब तुरही की झंकार और ढोल की गड़गड़ाहट एक बहादुर और महान सेना के भयंकर आक्रमण के साथ गूंजती है, तब आप तोपों की बिजली और गर्जना, तलवारों और भालों की चमक और विजय की ओर भयंकर रूप से दौड़ते पुरुषों और घोड़ों के जीवंत झरने की गड़गड़ाहट के बीच युद्ध की भव्यता को महसूस करते हैं, जो रक्त से सने वस्त्रों में सजी हुई, अपने सिर पर गौरव का मुकुट लिए खड़ी है। लेकिन अपनी कहानी को आगे बढ़ाते हुए, जैसे ही यह जोरदार संगीत गूंजा, अंधेरा जंगल सुबह की धुंध की तरह सूर्य की चमक के सामने गायब हो गया और धीरे-धीरे मेरी दृष्टि में एक विशाल दर्पण उभरा, जिसमें घने और काले बादलों और वाष्पों की धुंधली छाया दिखाई दे रही थी, जो अंधेरे और तूफानी भव्यता में एक दूसरे पर लुढ़क रहे थे और उनके बीच बिजली की चमक में मैंने "भविष्य" को देखा। धीरे-धीरे ये बादल छंट गए और उनके बीच एक सुंदर द्वीप दिखाई दिया। एक शांत और निर्मल सागर के बीच से उभरता हुआ, एक सुनहरी जंजीर से उससे जुड़ा हुआ, एक और द्वीप था जो सुंदरता में उसके बराबर था लेकिन आकार में छोटा था। इन दो द्वीपों में से सबसे बड़े द्वीप के बीच में, एक लंबी और राजसी महिला माणिक्य के सिंहासन पर बैठी थी, जिस पर गुलाबों का मुकुट था। उसके एक हाथ में ओक के पत्तों की माला और दूसरे हाथ में तलवार थी, जबकि उसके ऊपर स्वतंत्रता का वृक्ष फलता-फूलता था, जिसकी शाखाएँ दूर-दूर तक फैली हुई थीं और उसके फूलों की सुगंध पृथ्वी के सुदूर कोनों तक पहुँच रही थी। दूसरे द्वीप के बीच में भी एक महिला थी जो पन्ना के सिंहासन पर बैठी थी, उसका मुकुट तिपतिया घास से बना था, उसके दाहिने हाथ में वीणा थी और उसके वस्त्र गहरे लाल रंग के थे मानो खून से रंगे हों। वह दूसरी महिला जितनी ही राजसी थी, लेकिन उसके चेहरे पर कुछ बहुत ही उदास और शोकपूर्ण भाव था, मानो उस पर कोई भयानक विपत्ति मंडरा रही हो। उसके सिर के ऊपर, दूसरे द्वीप को छाया देने वाले सुखद वृक्ष के स्थान पर, एक गहरे सरू के पेड़ की शाखाएँ थीं, और कभी-कभी वह वीणा के तारों को बजाती थी। वीणा से एक कर्कश और शोकपूर्ण ध्वनि निकल रही थी, मानो किसी मृत्यु की विलाप या मातम हो। जब मैं उसके दुःख पर आश्चर्य कर रहा था, तभी मैंने देखा कि एक विशालकाय राक्षस समुद्र से निकला और उसके द्वीप पर आ गिरा। जैसे ही वह तट पर पहुँचा, एक कराहती चीख फूट पड़ी जिसने दोनों द्वीपों को अंदर

तक हिला दिया और चारों ओर का समुद्र भयंकर रूप से उबलने लगा, मानो कोई भयानक भूकंप आ गया हो। राक्षस काला और भयानक था और उसकी दहाड़ बिजली की तरह गड़गड़ाहट कर रही थी। उसने जंगली जानवरों की खाल ओढ़ रखी थी और उसके माथे पर गर्म लोहे से 'कट्टरता' शब्द अंकित था। एक हाथ में उसने दरांती पकड़ रखी थी और जैसे ही उसने धरती पर कदम रखा, तबाही का सिलसिला शुरू हो गया: देश के चेहरे से सारी सुंदरता और सुकून गायब हो गया और उनकी जगह घातक दलदल आ गए। ऐसा लग रहा था मानो वह एक भयानक बूढ़े आदमी का पीछा कर रहा हो, जिसके बारे में किसी ने मेरे कान में फुसफुसाया कि उसे रोमन धर्म कहा जाता है। पहले तो वह कमजोर और शक्तिहीन लग रहा था, लेकिन जैसे-जैसे वह भागा, उसने शक्ति जुटाई और जितना अधिक उस पर अत्याचार हुआ, उतना ही वह मजबूत होता गया, अंततः उसने एक भयानक स्वर में अपने उत्पीड़क को चुनौती देना शुरू किया और साथ ही साथ दो द्वीपों को जोड़ने वाली सुनहरी जंजीर को तोड़ने का प्रयास किया। और अब मैंने एक योद्धा को आते हुए देखा जिसकी शक्ल मैं किसी भी तरह से नहीं पहचान सका, लेकिन जिसके ऊपर आकाश से एक शक्तिशाली ढाल फैली हुई थी। वह उस राक्षस के पास आया जिसका नाम कट्टरता था और न्याय शब्द सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ एक भाला लेकर उसने पूरी ताकत से उस पर फेंका। भाला उसके हृदय में लगा और वह एक ज़ोरदार कराह के साथ धरती पर गिर पड़ा। जैसे ही वह गिरा, उस योद्धा के माथे पर, जिस पर पहले से ही कई मालाएँ थीं, एक सुनहरे बादल से निकले हाथ ने लॉरेल से बुने हुए अमरंथों के एक नए मुकुट से उसे सजा दिया। उसी समय दो आत्माएँ अपने सिंहासनों से उठीं और उसकी ओर आकर उन्होंने उसके चरणों में विजय की मालाएँ और मुकुट डाले और ऊँचे और गौरवशाली स्वरों में उसकी प्रशंसा की। इस बीच उजाड़ भूमि एक बार फिर सुखद चरागाहों, हरे-भरे जंगलों और धूप से सराबोर मैदानों से भर गई, जहाँ स्वच्छ नदियाँ हरी चट्टानों पर मधुर ध्वनि के साथ बहती हुई सिंचित हो रही थीं। वहीं, स्वतंत्रता के वृक्ष की शाखाओं के बीच जंगली वीणा मधुर स्वरों में गूंज रही थी। ध्वनि थम गई और देखो, मैं मेपल के पेड़ के नीचे था और एक बुलबुल अपने सुंदर गीत से मुझे तृप्त कर रही थी, जिससे मुझे मधुर संगीत का सपना आया। (21 नवंबर, 1829)

अलविदा?

अध्याय पाँच

सन् 1722 में, जून के सुहावने महीने में, परियों की दुनिया के चार निवासियों ने पृथ्वीवासियों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त करने का निश्चय किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने मनुष्यों का रूप धारण किया, परन्तु पहले उन्हें अपने राजा और रानी, ओबेरॉन और टाइटेनिया से अनुमति लेनी आवश्यक थी। तदनुसार, उन्होंने उनके दर्शन का अनुरोध किया और उन्हें प्रवेश दिया गया। उन्होंने अपनी इच्छा और निवेदन बताया, जिसे तुरंत स्वीकार कर लिया गया और वे प्रस्थान की तैयारी करने लगे।

बादल में सवार होकर धरती पर उतरने के बाद वे इंग्लैंड के एक ऐसे हिस्से में उतरे जो बहुत पहाड़ी और बिल्कुल निर्जन था। वे कुछ देर तक चलते रहे, फिर एक चट्टान के किनारे पहुँचे जहाँ से नीचे एक सुंदर घाटी दिखाई देती थी। उस घाटी से एक स्वच्छ और सुहावनी धारा बह रही थी, जो घाटी के संकरे रास्तों से होकर गुजरती थी। उसके चारों ओर ऊँचे-ऊँचे काले पहाड़ थे और घने पेड़ों के समूह थे जो पूरी घाटी पर ठंडी और सुखद छाया बिखेरते थे। इन पेड़ों के बीच से यह धारा लहरों की आवाज के साथ बहती रही, जब तक कि घाटी इन पेड़ों के बीच से निकलकर एक विस्तृत हरे मैदान में नहीं फैल गई, जो बड़े-बड़े सफेद चिनार और राजसी ओक के पेड़ों से भरा हुआ था और मोती जैसे डेज़ी और सुनहरे बटरकप से जगमगा रहा था। इनके बीच कभी-कभी हल्के प्रिमरोज़ या बैंगनी वायलेट भी दिखाई देते थे। यह धारा एक चौड़ी और गहरी धारा में भी फैल गई, जो एक शांत गुनगुनाहट के साथ बहती रही, जो किसी जलपरी की आवाज जैसी थी, जो अपने मूंगा महलों की गहराई से गाती है जब समुद्र भयानक काली सुंदरता में उथल-पुथल मचाना बंद कर देता है और रात भयानक वैभव के साथ चलती है। पृथ्वी का चेहरा तारों से ढका हुआ था, जबकि लूना अपने चांदी के दीपक से हल्की रोशनी बिखेरकर अंधकारमय और भव्य रानी के मार्ग को रोशन कर रही थी।

इस घाटी के बीचोंबीच एक छोटी सी फूस की कुटिया थी, जो कभी एक समृद्ध किसान का सुखद निवास हुआ करती थी, जिसकी अब मृत्यु हो चुकी थी और उसके बच्चे एक-एक करके इसे और उस सुंदर स्थान को छोड़कर अपनी-अपनी किस्मत आजमाने चले गए थे, यहाँ तक कि अब यह पूरी तरह से वीरान हो गई थी और खंडहर व जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुँच गई थी। परियाँ घाटी से नीचे कुटिया की ओर बढ़ीं और वहाँ पहुँचकर उसका निरीक्षण करने लगीं। दीवारें पूरी तरह से धूसर और काई से ढकी हुई थीं; दरवाजे के चारों ओर लिपटी आइवी की लताओं के बीच अभी भी बेल की लताएँ दिखाई दे रही थीं और गहरे पत्तों के बीच से एक चाँदी के तारे जैसा चमेली का फूल झाँक रहा था। छोटा सा बगीचा बिच्छू-बूटी और जंगली खरपतवारों से पूरी तरह भर गया था और उसकी पूर्व सुंदरता का कोई निशान नहीं बचा था, सिवाय एक गुलाब की झाड़ी के जिस पर अभी भी कुछ अर्ध-जंगली गुलाब खिले हुए थे और उसके बगल में एक छोटा सा स्ट्रॉबेरी का पौधा उगा हुआ था जिस पर दो या तीन गहरे लाल रंग की स्ट्रॉबेरी लगी हुई थीं, जो चारों ओर फैली वीरानगी के विपरीत एक सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर रही थीं।

इस स्थान पर परियों ने अपना निवास स्थान बनाने का निश्चय किया, और उन्होंने ऐसा ही किया। वहाँ पहुँचे अभी कुछ ही समय हुआ था कि एक शाम वे अपनी कुटिया की आग के चारों ओर बैठी थीं (क्योंकि अब मनुष्य रूप धारण कर चुकी थीं, इसलिए वे उन्हीं की तरह व्यवहार करती थीं)। वे घाटी में बहती हवा की धीमी, लयबद्ध आवाज़ सुन रही थीं, जिसमें कभी-कभी कुछ अजीब आवाज़ें भी मिली होती थीं। वे अच्छी तरह जानती थीं कि ये आवाज़ें आत्माओं की थीं जो मनुष्यों की दृष्टि से अदृश्य थीं। जैसा कि मैंने पहले बताया, वे अपनी कुटिया की आग के चारों ओर बैठी थीं, तभी अचानक उन्हें दरवाजे पर धीमी दस्तक सुनाई दी। उनमें से एक तुरंत दरवाजा खोलने के लिए उठी और एक व्यक्ति यात्री के लबादे में दिखाई दिया। उन्होंने उससे पूछा कि वह क्या चाहता है, उसने उत्तर दिया कि वह घाटी में रास्ता भटक गया था और उनकी कुटिया से आती हुई रोशनी को देखकर वह वहीं रुक गया था और अब सुबह तक आश्रय चाहता है ताकि वह दिन के उजाले में अपनी यात्रा जारी रख सके। उसकी विनती तुरंत मान ली गई और जैसे ही वह बैठा, उन्होंने उससे पूछा कि वह किस कारण से आया है? उसने उत्तर दिया कि यदि वे चाहें तो वह उन्हें अपनी पूरी कहानी सुना सकता है क्योंकि वह समझ गया था कि वे साधारण लोग नहीं हैं और शायद

उसकी परेशानी में उसकी मदद कर सकें। वे मान गए और उसने इस प्रकार बताना शुरू किया।

मैं आयरलैंड के सबसे दक्षिणी ज़िलों में से एक में रहने वाले एक बेहद धनी और संपत्ति संपन्न सज्जन का पुत्र हूँ। मेरे माता-पिता दोनों रोमन कैथोलिक थे और मेरा पालन-पोषण उसी धर्म में हुआ, जब तक कि मुझे अपने धर्म की त्रुटि का अहसास नहीं हो गया। मेरे पिता के पादरी एक विचित्र और असामाजिक व्यक्ति थे और उनके आसपास रहने वाले लोग उन्हें किसी दूसरी दुनिया के लोगों से बात करने वाला मानते थे। उन्होंने स्पेन में शिक्षा प्राप्त की थी और ऐसा माना जाता था कि उन्होंने वहीं जादू-टोना सीखा था। मेरे प्रोटेस्टेंट धर्म में परिवर्तित होने की कहानी इस प्रकार है: हमारे परिवार में एक बूढ़ा नौकर रहता था, जिसके बारे में मेरे पिता को पता नहीं था कि वह रोमन कैथोलिक चर्च से अलग होकर चर्च ऑफ इंग्लैंड का सदस्य बन गया था। एक दिन मैं अचानक उसके कमरे में गया और उसे बाइबल पढ़ते हुए देखकर आश्चर्यचकित रह गया। मैंने तुरंत उसे उसके इस काम की अनुचितता के बारे में समझाया और उससे यह कहते हुए मना किया कि यह सच्चे चर्च के नियमों के विरुद्ध है और हमारे पादरी की नसीहतों के विपरीत है। उसने विनम्रता से, लेकिन दृढ़ता से, अपने काम के बचाव में धर्मग्रंथों के कई अंश उद्धृत किए और इस तरह से तर्क दिया कि मुझे यकीन हो गया कि मैं गलत था। अगले दिन मैं उसी समय उससे मिलने गया और उसे उसी काम में लगा हुआ पाया। मेरी उससे लंबी बातचीत हुई, जिसका असर यह हुआ कि मुझे खुद बाइबल पढ़ने की प्रेरणा मिली। मैंने ऐसा किया और पाया कि चर्च ऑफ इंग्लैंड के सिद्धांत ईश्वर के वचन से सबसे अधिक मेल खाते हैं, इसलिए मैंने उन सिद्धांतों को अपनाने का निश्चय किया। जैसे ही मेरे धर्म परिवर्तन के बारे में पता चला, मेरे पिता ने मुझे इससे रोकने की कोशिश की, लेकिन मैं अडिग और दृढ़ रहा। कुछ ही समय में उन्होंने मुझे परेशान करना बंद कर दिया। लेकिन पादरी के साथ ऐसा नहीं था: वह मुझे अपने बयान से मुकरने के लिए लगातार तर्क दे रहा था, लेकिन असफल होने पर उसने अंतिम उपाय के रूप में निम्नलिखित युक्ति का सहारा लिया। एक शाम मैं अपने पिता के घर के प्रांगण में खड़ा था, तभी अचानक मेरे कान में एक फुसफुसाहट सुनाई दी, "आज रात 12 बजे विशाल मैदान में आ जाओ।" मैं मुड़ा, लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। तब मैं मन ही मन सोचने लगा कि यह क्या हो सकता है और मुझे जाना चाहिए या नहीं। अंततः मैंने जाने का निश्चय किया और जैसे ही घड़ी में ग्यारह बजे, मैं

चल पड़ा। जिस मैदान का जिक्र किया गया था, वह लगभग चार मील दूर था। यह उत्तर दिशा में तीन लीग तक फैला एक विशाल बंजर मैदान था। थोड़ी ही देर में मैं वहाँ पहुँच गया। रात बहुत अँधेरी थी, चाँद दिखाई नहीं दे रहा था और तारे भी धुंधले बादलों के बीच से मुश्किल से दिखाई दे रहे थे, जो आकाश में छाए हुए थे और गहरे नीले आकाश को एक उदास आवरण में लपेटे हुए थे, जिससे रास्ते पर उदासी छाई हुई थी। मेरे चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था, सिवाय एक छोटी सी धारा के जो झाड़ियों के बीच अदृश्य रूप से बह रही थी। उसकी आवाज़ समुद्र के सीप की कर्कश, निरंतर गुनगुनाहट जैसी थी, जो उन गुफाओं की याद दिलाती है जहाँ गहरे समुद्र की हरी लहरें शाश्वत गर्जना के साथ गरजती और प्रज्वलित होती हैं। मैंने ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं किया था कि धीरे-धीरे मैंने अपने चारों ओर एक पवित्र मठ की धुंधली आकृति को उभरते देखा। भव्य स्तंभ, लंबी घुमावदार गलियाँ, गूंजता गुंबद और पवित्र वेदी, सब धीरे-धीरे और रहस्यमय ढंग से ऊपर उठते गए। एक गंभीर और अलौकिक प्रकाश ऊँची मेहराबदार खिड़कियों से छनकर केंद्र में स्थित एक मकबरे पर पड़ रहा था, जिसे मैं अपने दादाजी का मकबरा जानता था। मैं इन सब चीजों को विस्मय और मौन भाव से निहार रहा था, तभी अचानक मैंने स्मारक पर एक लंबा, सफेद वस्त्रधारी व्यक्ति को खड़ा देखा। उसने मुझे हाथ से इशारा किया: मैं पास गया और उसने मुझसे कहा, “पुत्र, तूने अपने पूर्वजों के प्राचीन और पवित्र धर्म को छोड़कर एक अनजान धर्म को क्यों अपना लिया है?” मैं उत्तर देने ही वाला था कि तभी मैंने पास में पादरी को खड़ा देखा। मैं तुरंत सारी योजना समझ गया और ऊँची आवाज़ में बोला, “तुम्हारी चालें पकड़ी गईं। मेरा धर्म सच्चा है और मैं भली-भांति जानता हूँ कि यह सब जादू-टोना है।” जब पादरी ने यह सुना तो वह भयंकर क्रोध से भर उठा और पैर पटकते ही ज़मीन से आग निकल आई। फिर उसने उस पर कुछ इत्र छिड़का और बेकाबू क्रोध से कांपती आवाज़ में कहा, “यहाँ से चले जा, दुष्ट विधर्मी।” और तुरंत ही मैं इस घाटी में आ गया। बाकी तो आप जानते ही हैं।

यात्री यहीं रुका और कहानी के बारे में इससे ज़्यादा कुछ पता नहीं है सिवाय इसके कि परियों ने उसे उसके परिवार से मिला दिया, जो बाद में चर्च ऑफ़ इंग्लैंड के धर्मनिष्ठ सदस्य बन गए। बाद में पुजारी एक बेहद रहस्यमय तरीके से गायब हो गया और परियाँ अब उस छोटी सी झोपड़ी में नहीं रहतीं, जिसका अब केवल काई से ढका हुआ अवशेष ही बचा है, लेकिन यह परंपरा आज भी कई किसानों की कहानियों में

जीवित है, जब सर्दियाँ धरती को पाले और चमकदार बर्फ से ढक देती हैं।

यह कहानी मार्क्विस ऑफ ड्यूरो और लॉर्ड सी. वेलेस्ली ने स्ट्रैथफील्डसे के ग्रेट हॉल में आग के पास बैठे हुए छोटे राजा और रानी, सेरिंगापाटन के बूढ़े आदमी, कॉकनी भाषा बोलने वाले गेमकीपर और अर्दली मैन को सुनाई थी। सी. ब्रोंटे, 2 दिसंबर 1829

टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स का तीसरा खंड

अध्याय एक

एक शाम, ड्यूक ऑफ वेलिंगटन डाउनिंग स्ट्रीट स्थित अपने कमरे में लिख रहे थे। एल्डन एक आरामदायक कुर्सी पर आराम से बैठे थे और एक साधारण तंबाकू पाइप पी रहे थे (क्योंकि उन्हें सिगार आदि जैसी आधुनिक फिजूलखर्ची से नफरत थी)। उनके बगल में धधकती आग थी, जिसकी लपटों को लेफ्ट ने अभी-अभी लंदनडेरी के काले हीरों की ताजा आपूर्ति से हवा दी थी। एक हाथ वाला हार्डिंग अपनी मेज पर खड़ा था और बाथ पोस्ट के सुनहरे किनारे वाले कागज पर सेना का अनुमान बेतरतीब ढंग से लिख रहा था। मजाकिया रोसलिन पॉलिश किए हुए हरे संगमरमर के मेंटलपीस से टेक लगाकर बैठी थी और सामने बैठे जिज्ञासु बूढ़े पेकिन को असीम तिरस्कार से देख रही थी, और कभी-कभी बैंगनी मखमल से सजी दीवार पर लटके एक शानदार दर्पण में अपनी ही सजी-धजी आकृति को तिरछी नजर से देख रही थी। कैसलरेघ एक तुर्की ओटोमन सोफे पर बैठा लगातार बड़बड़ा रहा था और जम्हाई ले रहा था, जबकि

सचिव पील उनके बगल में एक ट्रेजरी तिपाई पर बैठे फुसफुसाते और फुसलाते रहे। ड्यूक की बात पर तब तक ध्यान नहीं गया जब तक कि एक जटिल गणना के बीच में ही उन्होंने उसे टोक नहीं दिया। तभी अचानक उनके स्वामी की नज़र उन पर पड़ी और बिना किसी चेतावनी के पलक झपकते ही वे कमरे के दूसरे छोर पर पहुँच गए। इस दुखद घटना पर, रोसलिन अपनी डेस्क पर वापस गिर पड़े, जिसे उन्होंने मुख्यालय से बिना अनुमति लिए छोड़ दिया था। हार्डिंग ने बस कंधे के ऊपर से उस गिरे हुए नागरिक को एक हल्की सी मुस्कान दी। एल्डन ने हांफना बंद कर दिया और अपने सूखे हाथों को आधा डर और आधा आश्चर्य से ऊपर उठा लिया। कैसलरेघ मेज के नीचे तकिए से रेंगकर नीचे उतरे और चुपचाप लेट गए। ड्यूक ऑफ वेलिंगटन ने चारों ओर फैली अफरा-तफरी पर ध्यान दिए बिना, अपने पुराने काम में वापस लग गए, यानी खजाने से संबंधित उन उलझे हुए आंकड़ों को सुलझाने में, जिन्हें बेचारे वेसी ने उस बीमारी से ग्रसित होने पर अव्यवस्थित अवस्था में छोड़ दिया था, जिसने उन्हें मृत्यु के घाट उतार दिया था।

जब वे इस काम में लगे हुए थे, तभी बाहर से भारी कदमों की आहट सुनाई दी। दरवाजा खुला और एक दुबली-पतली बूढ़ी औरत, जो पूरी तरह से लिपटी हुई थी, सिवाय उसके चेहरे के, अंदर आई। उसका रूप देखकर किसी को आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वह प्रसिद्ध छोटी रानियों में से एक थी। वह ड्यूक के पास गई और उसे खून से लिखा हुआ एक पत्र दिया, जिस पर एक मुहर लगी थी जिस पर आदर्श वाक्य लिखा था, "एक प्रेत का संदेश"। उसने आदरपूर्वक पत्र लिया और पढ़ा। पढ़ते समय उसका रंग कई बार बदला, जो एक अनियंत्रित भावना को दर्शाता था। पढ़ने के बाद वह उठा और अपने मन को शांत करने की कोशिश करते हुए इधर-उधर घूमने लगा। अचानक वह रुका और वहाँ मौजूद सभी को जाने का आदेश दिया। उन्होंने तुरंत आज्ञा का पालन किया। फिर कुछ देर रुकने के बाद उसने परी से पूछा कि क्या वह पत्र असली है या जाली। उसने हाथ से इशारा किया और तुरंत राजा और दो अन्य रानियाँ प्रकट हुईं। वे सभी घुटने टेककर बैठ गईं। प्रत्येक ने हाथीदांत से जड़ी एक छड़ी निकाली। उन्होंने उन्हें चूमा और कहा, "इन्हीं छड़ियों के बल पर हम मनुष्यों के दिलों पर राज करते हैं, अगर हमारी कही बात झूठी निकली तो हम इन्हें और अपनी आध्यात्मिक शक्ति को खो देंगे, वह पत्र सच है।" ये शब्द कहते ही वे गायब हो गए।

महामहिम ने तुरंत घंटी बजाई और बुलावा आने पर उपस्थित सेवक को अपने

अस्तबल का सबसे तेज़ घोड़ा तैयार करने का आदेश दिया। उनके आदेश का तुरंत पालन किया गया और ड्यूक, जॉर्जियाई लबादे, चौड़ी सैन्य बेल्ट, पीतल के हेलमेट और ऊँचे काले पंखों से सुसज्जित, उस फुर्तीले घोड़े पर सवार हुए, उसे पूरी गति से दौड़ाया और कुछ ही समय में लंदन और उसके उपनगरों को बहुत पीछे छोड़ दिया। वे इतनी तेज़ी से दौड़े कि जब सूर्योदय हुआ तो उन्होंने स्ट्रैथफील्डसे के टावरों को प्राचीन ओक के जंगलों से छनकर आती सुबह की पहली किरणों से लालिमा लिए गर्व से सिर उठाए देखा। उनका सारा विशाल साम्राज्य उनकी आँखों के सामने फैला हुआ था, शांत गाँव आदरणीय जंगलों के बीच बसा हुआ था, विशाल उपजाऊ खेत क्षितिज तक फैले हुए थे, राजसी वृक्ष अपनी छाया से दृश्य को गहरा कर रहे थे, सफेद झोपड़ियाँ अपने बागों के एकांत से झाँक रही थीं और महान नदी अपने रास्ते में सब कुछ ताज़ा कर रही थी, ये सब उनकी अपनी थीं, उनकी अजेय तलवार से जीती हुई, इंग्लैंड की कृतज्ञता के स्मारक। उसके गौरवशाली रक्षक को।

वह तेज़ी से आगे बढ़ा और कुछ ही समय में अंधेरे द्वार के पीछे पहुँच गया। संकरे रास्ते से थोड़ी दूर स्थित पुराने सैनिकों की झोपड़ियाँ दोनों ओर लगे बड़े-बड़े पेड़ों के कारण मुश्किल से पहचानी जा सकती थीं। इन पेड़ों की घनी झुकी हुई शाखाएँ अब पूरी तरह से हरी-भरी हो चुकी थीं और इतनी बढ़ गई थीं कि उन्होंने झोपड़ियों को हरे-भरे आवरण से पूरी तरह घेर लिया था। उनकी स्थिति केवल ऊँची, गोल, धूसर चिमनियों से ही पहचानी जा सकती थी, जिनमें से एक (दाहिनी ओर वाली) सेरिंगापाटन की थी और निर्मल वातावरण में हल्का भूरा धुआँ छोड़ रही थी। दूसरी चिमनी बिल्कुल शांत खड़ी थी क्योंकि उसमें रहने वाले लोग - हरफनमौला, अर्दलीमैन और गेमकीपर - फिलहाल शोरगुल वाले और अपने स्वभाव के अनुसार (अपने किताबी पड़ोसी के विपरीत) अधिक अनुकूल हॉर्स-गार्ड्स के यहाँ ठहरे हुए थे।

जब उनके गुरु प्रवेश के उद्देश्य से दाहिने द्वार की रक्षा करने वाली एक विशाल शाखा को उठा रहे थे, तभी उन्होंने दूर से एक हल्की, मधुर पदचाप और निम्नलिखित शब्दों को गुनगुनाते हुए सुना:

ओह, आर्थर आज रात कहाँ था? वह घर क्यों नहीं लौटा? बहुत देर से सूर्य का सुंदर प्रकाशमान गोला आकाश में चमक रहा था। हरे-भरे पेड़ों के नीचे वह सो रहा था, आकाश ही उसका परीक्षक था। उसके ऊपर आधी रात के तारों ने ऊपर से चमकीली

ओस की बूँदें बरसाईं। और जब पूरब में दिन की पहली हल्की किरण दिखाई दी, तो सुबह की किरण से उसकी आँखें चमक उठीं। वह उठा और अपने गहरे भूरे बालों से उन झिलमिलाते रत्नों को झाड़ा जिन्हें प्रकृति ने जंगल के तनों पर बिखेर दिया था। जैसे ही वह शान से आगे बढ़ा, फूलों से मीठी सुगंध आने लगी। हिरण उछलता हुआ निकल गया और खरगोश झाड़ियों के बीच से तेज़ी से रेंगता हुआ निकल गया।

यहाँ अचानक आवाज़ रुक गई। रास्ते के किनारे लगे सभी पेड़ सरसरा उठे और लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली इतनी उमंग, उल्लास और फुर्ती से उछलते हुए निकले कि मानो ज़मीन को छू ही नहीं रहे हों। उनका गुलाबी चेहरा मुस्कान से दमक रहा था, उनकी बड़ी, चमकीली नीली आँखें मानो प्रसन्नता के पारदर्शी महल हों। उनके माणिक जैसे होंठ खुशी से लथपथ थे और उनके दाँत किसी उत्तम पूर्वी मोती से भी अधिक सफेद थे। उनका गोरा माथा हाथीदांत की तरह था, जिस पर सुनहरे घुंघराले बाल थे जो उनकी कनपटी पर सुंदर गुच्छों में लटक रहे थे, और उनका शरीर मानो हवा में तैरती समरूपता का प्रतीक था। वे ड्यूक को देखे बिना ही आगे बढ़ गए क्योंकि ड्यूक एक ऊँचे काले सरू के पेड़ के पीछे छिपे हुए थे। ड्यूक ने आगे बढ़कर उन्हें उनके नाम से पुकारा; अपने पिता की आवाज़ सुनते ही उस हंसमुख और हल्के-फुल्के व्यक्ति ने अपनी तेज़ चाल या यूँ कहें कि भागना रोक दिया और मुड़कर देखा।

“सुप्रभात मेरे बेटे, तुम कहाँ जा रहे हो?” ड्यूक ने कहा। “ओह प्यारे पिताजी,” उसने कहा। “आपको देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं आर्थर को ढूंढने जा रहा हूँ, जो कल शाम से घर नहीं आया है।”

“कल शाम से घर नहीं आया! अगर यह सच है तो उन्होंने मुझे धोखा नहीं दिया है,” उनके महामहिम ने उत्तर दिया और उनके हंसमुख बेटे की उपस्थिति से क्षण भर के लिए छंट गया गहरा दुख का बादल उनके गंभीर माथे पर पहले से कहीं अधिक उदासी से छा गया। “चार्ल्स, तुम्हारा भाई मृत्यु के खतरे में है,” उन्होंने गंभीरता से कहा।

“मौत का खतरा!” चार्ल्स ने दोहराया और तुरंत ही उसके चेहरे से सारी खुशी गायब हो गई और धुंधले आँसुओं ने उसकी चमकती आँखों को ढक लिया। उसका चेहरा राख की तरह पीला पड़ गया और ज़मीन पर गिरते हुए उसने असहनीय दुःख में जितना हो सका, उतना कहा, “हे आर्थर को मरना नहीं चाहिए! छोटी रानियाँ उसे बचा सकती हैं और बचाएंगी। मैं मिस्ट्री24 को ढूंढ निकालूंगा, चाहे वह कहीं भी हो। आर्थर

के पिता कहाँ हैं? वह कहाँ हैं? अगर वह मर गए तो मैं भी मर जाऊंगा, क्योंकि मैं उनके बिना नहीं जी सकता।”

“चुप रहो चार्ल्स, चुप रहो,” महामहिम ने उसे धरती से उठाते हुए कहा, “मेरे साथ सेरिंगापाटन की कुटिया में चलो। मैं आर्थर को बचाने की कोशिश करूंगा।”

इस समय तक लॉर्ड वेलेस्ली के कराहने और सिसकने की आवाज़ सुनकर सेरिंगापाटन अपने घर से बाहर आ गया था। जब उसने ड्यूक को अपने लगातार रोते हुए बेटे को सहारा देते देखा तो वह थोड़ा घबरा गया और बोला, "बेचारा, वह बेहोश सा लग रहा है। क्या बात है महाराज? क्या किसी ने उसे चोट पहुँचाई है? वह बेचारा कहाँ है? मैं उसे उबलते हुए सीसे में डाल दूँ, लेकिन रुकिए, मुझे उसके लिए कुछ पीने को लाना चाहिए क्योंकि उसका चेहरा पीला पड़ गया है।"

"नहीं नहीं सेरिंगापाटन, उसे थोड़ी देर के लिए अपने घर ले जाओ, मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।"

“हे प्रभु, कृपया अंदर आइए,” उसका पालन-पोषण कर रहे वृद्ध सैनिक ने उत्तर दिया।

एक रहस्य के विचार से आत्म-गर्व महसूस करते हुए और दरवाजा और भी चौड़ा खोलते हुए। "लंदन में रहने वाले लोगों के लिए घरों के दरवाजों के छेदों से झाँकना कोई नई बात नहीं है।"

जब वे अंदर आ गए, तो उसने आग के पास दो कुर्सियाँ रखीं, उन्हें एक कपड़े से पोंछा और चूल्हे पर कालीन का एक टुकड़ा बिछा दिया। फिर उसने पलंग के सिरहाने से एक तकिया निकाला और एक कुर्सी पर रख दिया, यह कहते हुए कि अगर लॉर्ड चार्ल्स को कमजोरी महसूस हो तो वे इस पर सहारा ले सकते हैं। जब वे अंदर आ गए, तो उसने दरवाजा बंद कर दिया, कुंडी लगाई और ताला लगा दिया, और फिर अपने स्वामी के चरणों में तीन टांगों वाले स्टूल पर बैठ गया।

“सेरिंगापाटन,” महामहिम ने कहा, “मैं मानता हूँ कि आप एक सम्मानित और ईमानदार व्यक्ति हैं, मेरे हितों के प्रति वफादार हैं और मेरे द्वारा किए गए उपकारों के लिए आभारी हैं। इसलिए अब मैं आपको एक अत्यंत महत्वपूर्ण रहस्य सौंप रहा हूँ। कल रात मुझे एक रहस्यमय पत्र मिला, जो मेरे दिवंगत पिता की आत्मा की ओर से होने का दावा करता है। उसमें लिखा था कि मेरे पुत्रों में सबसे बड़े और आपके भावी स्वामी आर्थर, अपनी विक्षिप्त यात्राओं के दौरान, एक गुप्त आकर्षण की शक्ति द्वारा

अलौकिक प्राणियों के निवास स्थान पर खींच लिए गए हैं, और इस समय वे सभी यातनाएँ झेल रहे हैं जो वे दे सकते हैं। यदि आप मेरे साथ उस विशेष स्थान पर नहीं गए, जिसके बारे में मुझे जानकारी है, तो निश्चित रूप से उनकी मृत्यु हो जाएगी। अब मैं आपसे अपने और अपने परिवार के प्रति आपकी निष्ठा के कारण, हर बात में मेरे आदेशों का पालन करने का अनुरोध करता हूँ।" यहाँ ड्यूक रुक गए और सेरिंगापाटन घुटनों के बल गिरकर, न केवल वर्तमान समय में, बल्कि अपनी अंतिम साँस तक, उनके सभी आदेशों का पालन करने का वचन दिया। फिर ड्यूक चार्ल्स की ओर मुड़े और उनसे पूछा कि क्या वह भी साथ चलेंगे, मैं खुशी-खुशी मरने को तैयार हूँ। "आर्थर की जान बचाओ," युवा लॉर्ड ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया, और आशा की एक किरण उसकी चमकती आँखों में जगमगा उठी। उसके पिता ने उसके घुंघराले बालों पर थपथपाया और उसे देखकर मुस्कुराए।

कुछ ही क्षणों में वे तैयार हो गए और जब सेरिंगापाटन ने अपनी कुटिया का दरवाजा बंद कर दिया, तो वे तेज़ी से अपनी यात्रा पर निकल पड़े। थोड़ी देर में वे जंगल से बाहर निकल आए और कई घास और मक्के के खेतों के साथ-साथ गाँव के चारों ओर फैले घास के मैदानों और बागों की एक विस्तृत पट्टी को पार करने के बाद वे एक विशाल मैदान में प्रवेश कर गए, जहाँ केवल कुछ बिखरी हुई भेड़ें दिखाई दे रही थीं और वे भी थोड़ी देर में आँखों से ओझल हो गईं। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, स्ट्रैथफील्डसे के टावर और जंगल धीरे-धीरे क्षितिज के नीचे डूबते चले गए, चर्च का ऊँचा शिखर छोटा होता गया और धीरे-धीरे पीछे हटता चला गया, यहाँ तक कि अदृश्य हो गया। घिरे हुए खेत और बाग दूर होते चले गए और अंत में केवल नीचे का समतल मैदान और ऊपर का धनुषाकार आकाश ही उनकी दृष्टि के लिए शेष रह गया।

इस मैदान पर वे शाम तक चलते रहे, जब वे एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ विशाल चट्टानें सीधी खड़ी थीं और अनंत ऊँचाई तक फैली हुई थीं; एक विशाल जलप्रपात गर्जना करते हुए खड़ी चट्टानों से नीचे गिर रहा था और नीचे ठोस पत्थर में एक गड्ढा बना रहा था, और पानी तेज़ी से बहता हुआ कुछ देर तक आगे बढ़ता रहा, फिर धीरे-धीरे समतल और चौड़ा होता हुआ वे एक सुंदर घाटी में शांतिपूर्वक बहने लगे जो धीरे-धीरे दाहिनी ओर खुलती थी। यह घाटी सिकोमोर और युवा ओक के पेड़ों से घिरी हुई थी, जिनमें से ढलते सूरज की किरणें नदी की शांत लहरों पर एक समृद्ध चमक बिखेर रही थीं, जिससे नदी तरल सोने की तरह सुंदर दिख रही थी। वे एक संकरे, ऊबड़-

खाबड़ भेड़-पथ पर चढ़े जो एक चट्टान पर ऊपर की ओर घूमता हुआ एक पठार तक जाता था, जो वनस्पतियों से ढका हुआ था, जिसके ऊपर की चट्टानें, जो एक चक्करदार ऊँचाई तक उठती थीं, पूरी तरह से दुर्गम प्रतीत होती थीं।

यहाँ ड्यूक अचानक रुक गए और सेरिंगापाटन और लॉर्ड वेलेस्ली को रुकने का आदेश दिया, क्योंकि उनके लिए आगे बढ़ना आवश्यक नहीं था। उन्होंने यह बात ऐसी आवाज़ में कही जिसे उनके बेटे और नौकर दोनों समझ गए; यह न तो गुस्से वाली थी और न ही कठोर, बल्कि इसमें एक निर्णायक स्वर था जिससे पता चलता था कि कोई भी विनती उन्हें आगे जाने देने के लिए राजी नहीं करेगी। इसलिए वे चुपचाप घास पर बैठ गए और उन्हें ध्यान से देखने लगे, क्योंकि उन्होंने देखा कि किसी भी नश्वर व्यक्ति के लिए अलौकिक शक्ति की सहायता के बिना उस समतल पत्थर की खड़ी दीवार को पार करना असंभव था जिसे वे देख रहे थे। पठार से लगभग 10 गज की दूरी पर एक उभरा हुआ टुकड़ा था जो नीचे घाटी के ऊपर लटका हुआ था। हालाँकि, यह अत्यंत संकरा और ज़मीन से इतनी ऊँचाई पर था कि इसकी दूरी और उस छोटे से मैदान से इसकी दूरी को देखते हुए, यह बिल्कुल असंभव था कि कोई भी जीवित प्राणी उस भयानक छलांग को लगाने का साहस करे जो वहाँ तक पहुँचने के लिए आवश्यक थी।

ड्यूक एक क्षण के लिए उत्सुकता से चारों ओर देखने लगा, मानो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का कोई उपाय खोज रहा हो। अंत में, उसकी नज़र अपने काले लबादे के उस टुकड़े पर पड़ी जिसे उसने अब तक अपने चारों ओर कसकर लपेटे रखा था। वह पठार की सीमा की ओर बढ़ा और पलक झपकते ही चट्टान पर कूद गया, मानो उसे अचानक किसी इज़ार्ड या चमोइस26 की आत्मा मिल गई हो। जब लॉर्ड वेलेस्ली ने अपने पिता को अपने सबसे बड़े बेटे को बचाने की इच्छा से प्रेरित होकर यह साहसी कार्य करते देखा, तो उसके होंठों से एक दबी हुई चीख निकल गई। अपनी खतरनाक स्थिति के बावजूद, ड्यूक ने चारों ओर देखा और उस पर दया भाव से देखते हुए कहा, "मेरे प्यारे चार्ल्स, मेरे लिए चिंता मत करो; थोड़ी देर में मैं आर्थर को पूरी तरह सुरक्षित लेकर लौट आऊंगा।" फिर चट्टान के एक कोने से मुड़कर वह उनकी दृष्टि से ओझल हो गया।

अपने रास्ते पर आगे बढ़ते हुए, जो हर कदम पर और भी खतरनाक होता जा रहा था, वह अंततः एक विशाल गुफा में पहुँचा, जिसका प्रवेश द्वार लोहे के दरवाजों से बंद

था। जैसे ही वह आगे बढ़ा, दरवाजे खुल गए और वह एक विशाल पत्थर के हॉल में प्रवेश कर गया। उसने प्रवेश किया, दरवाजे उसके पीछे बंद हो गए और उसने खुद को इस अजीब से कमरे में अकेला पाया, जो बीच में एक नीली लौ से मंद रूप से रोशन था। विशाल खंभे गुंबददार छत तक उठे हुए थे: उनके शीर्ष मानव खोपड़ियों और हड्डियों से सजे थे, उनके शाफ्ट भयानक कंकालों के आकार के थे और उनके आधार कब्रों के आकार के थे। हॉल इतना लंबा था कि वह उसका अंत नहीं देख पा रहा था। जैसे ही वह इधर-उधर चला, उसे दूर से अपने कदमों की गूंज सुनाई दी, मानो आवाज गुंबदों या कोठरियों से परावर्तित हो रही हो। काफी देर बाद एक दरवाजा खुलने की आवाज सुनाई दी - हल्के, जाने-पहचाने कदमों की आहट उसके कानों में पड़ी और अगले ही पल उसने अपने प्यारे बेटे को गले लगा लिया। लगभग उसी क्षण वे पठार पर पहुँच गए जहाँ सेरिंगापाटन और लॉर्ड वेलेस्ली बेसब्री से उनका इंतजार कर रहे थे।

दोनों भाइयों का मिलन अत्यंत आनंदमय था और कुछ समय तक खुशी के आँसू बहाते हुए और स्नेहपूर्ण बधाई देते हुए, सभी लोग सुरक्षित रूप से स्ट्रैथफील्डसे लौट आए। उस गुफा में अपने कष्टों के बारे में मार्क्विस से पूछे गए सभी प्रश्नों के उत्तर में उनका हमेशा यही उत्तर रहा है कि वे अवर्णनीय थे।

सीबी 5 मई 1830

अध्याय दो

6 मई 1830

अगस्त 1829 की एक सुहावनी दोपहर थी जब ड्यूक ऑफ वेलिंगटन राजकीय दस्तावेजों को लिखने और उनकी नकल करने के नीरस और उबाऊ काम से उठे (यह काम जॉन हेरीज़ या पी. कोर्टने जैसे विद्वानों के लिए अधिक उपयुक्त था, न कि उनके उदात्त और ऊर्जावान व्यक्तित्व के लिए)। वे पिछले तीन महीनों से बिना किसी विश्राम

के लगातार यही काम कर रहे थे। अपनी लेखन मेज को बंद करने और सभी कागजों को व्यवस्थित करने के बाद, उन्होंने तुरंत हॉर्सगार्ड्स जाने का निश्चय किया। कार्यालय में बैठे सज्जनों और चापलूस क्लर्कों की उबाऊ संगति से थक चुके, यहाँ तक कि अपने पैरों तले धूल चाटने के लिए भी तरस रहे, वे एक बार फिर उस विशेषाधिकार प्राप्त स्थान की ताज़ी, मुक्त सैन्य हवा में सांस लेना चाहते थे, जहाँ सभी महान फील्ड मार्शल, जनरल, स्टाफ अधिकारी और कर्नल रहते थे। जैसे ही उन्होंने अपना संकल्प लिया, उनके कमरे का दरवाजा खुला और नन्हे राजा और रानियाँ हमेशा की तरह अंदर आए। उन्होंने उनसे कहा, "ड्यूक ऑफ वेलिंगटन, हॉर्सगार्ड्स आइए: हम वहाँ जा रहे हैं और हम चाहते हैं कि आप हमारे साथ चलें ताकि आप हमें वहाँ की सभी दर्शनीय स्थलों के बारे में बता सकें।"

“मैं अभी वहीं जाने वाला था,” उनके सम्माननीय महोदय ने उत्तर दिया, “और आपके सानिध्य से मुझे बहुत सम्मान मिलेगा।”

कुछ ही क्षणों में वे चल पड़े और पंद्रह मिनट पैदल चलने के बाद अपने गंतव्य पर पहुँच गए। द्वार बंद था, लेकिन पास खड़े एक सैनिक ने जैसे ही महाराज को आते देखा, तुरंत द्वार खोल दिया। उन्होंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और अंदर प्रवेश किया, लेकिन द्वार उनके पीछे बंद हो गया। घुड़सवार रक्षकों का प्रांगण खुरदुरे पत्थरों और बजरी से ढका हुआ था। दो-तीन संतरी इधर-उधर टहल रहे थे और कभी-कभी एक ऊँचे त्रिकोण की ओर देखते हुए एक छोर पर टकटकी लगाए खड़े थे, जिस पर एक बेचारा सैनिक नौ पूंछ वाले कोड़े की मार झेल रहा था। यह कोड़ा एक अटेंडेंट के निर्दयी हाथों से मारा जा रहा था, जो अपनी कमीज की आस्तीनें ऊपर चढ़ाए खड़ा था और क्रूरता में अपना पूरा जोर लगा रहा था।

"उस व्यक्ति ने ऐसा कौन सा अपराध किया है कि उसे इतनी खूनी सजा भुगतनी पड़ रही है?" ड्यूक ने यातना के उपकरण की ओर बढ़ते हुए कहा।

"जब लॉर्ड हिल ने उसे अपने जूतों की धूल चाटने को कहा तो वह मुंह बना रहा था।" अर्दली-मैन ने एक पल रुकते हुए जवाब दिया।

“लॉर्ड हिल एक बदमाश है,” महामहिम ने उत्तर दिया, “पहली बात तो इसलिए कि उसने एक आदमी को इसलिए कोड़े मारे क्योंकि उसने अपराध करने से इनकार कर दिया (जो कि उसने उसे करने का आदेश दिया था, वह अपराध ही होता) और दूसरी बात इसलिए कि उसने तुम्हें उसे फंसाने का आदेश दिया, जिस पर केवल मुझे

ही अधिकार है। उस दुष्ट को तुरंत नीचे ले जाओ, सहायक अधिकारी। लॉर्ड हिल को लाओ और उसे उसकी जगह पर बिठाओ।”

अपने जीवन में पहली बार अर्दली-मैन अपने स्वामी के आदेशों का पालन करने में हिचकिचाया, उसने चाबुक को जमीन पर फेंक दिया और गहरी आह भरी, उसकी चमकदार धूसर आँखों में आँसू आ गए और उसके कठोर चेहरे पर स्पष्ट शोक और निराशा के निशान दिखाई दिए;

“क्या बात है?” ड्यूक ने अत्यंत आश्चर्य से कहा। “मुझे तो लगता है कि यह आदमी पूरी तरह से जादू-टोने के प्रभाव में है: तुम बिजली की तरह उड़कर मेरे आदेश का पालन क्यों नहीं करते?”

कुछ क्षणों के लिए वह जवाब देने में असमर्थ रहा। अंततः आँसुओं की बाढ़ ने उसे राहत दी और फिर सिसकियों और कराहों के बीच निम्नलिखित शब्द उसके मुँह से निकले।

“महोदय, आज बेकिंग का दिन है और मैं एक बढ़िया किशमिश केक बनाने ही वाला था कि लॉर्ड हिल ने मुझे इस जानवर को त्रिकोण में लपेटने के लिए बुला लिया और अब जब मैंने वह कर लिया है तो मुझे उसे भी त्रिकोण में लपेटना पड़ रहा है और मेरा केक सेरिंगापाटन या बेकिंग-रूम में किसी और भयानक पेटू द्वारा खा लिया जाएगा जबकि मुझे कुछ भी नहीं मिलेगा, हालांकि मैंने इसे बनाने के लिए सामग्री खरीदी थी।” यहाँ मानो अपनी ही बदकिस्मती का वर्णन सुनकर वह फिर से रोने लगा, ड्यूक ऑफ वेलिंगटन जोर से हँसे और उसके कंधे पर हाथ रखकर उससे कहा कि वह निराश न हो क्योंकि वह उसे रोटी के टुकड़े से बेहतर कुछ देगा। इस आश्वासन से सांत्वना पाकर अर्दली-मैन अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करने के लिए जल्दी से चला गया और कुछ ही मिनटों में त्रिकोण से लटके हिल को अपने अपराध का दंड भुगतना पड़ा।

पिछली बातचीत से लिटिल किंग और क्वीन को यह समझ आ गया था कि हॉर्सगार्ड्स में आज बेकिंग का दिन है, इसलिए उन्होंने उस कमरे में जाने की इच्छा व्यक्त की जहाँ रोटी तैयार की जाती थी।

“महाराज, यदि आप चाहें तो आप ऐसा करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हैं,” उनके महामहिम ने कहा, “बशर्ते मेरी उपस्थिति की आवश्यकता न हो, क्योंकि मैं उन कमरों में कभी नहीं जाता जहाँ सैनिक अपना खाना पकाते हैं। ठीक है ड्यूक ऑफ वेलिंगटन,

हम आपके बिना भी काम चला सकते हैं,” परियों ने क्रोधित होकर उत्तर दिया और तुरंत उन्हें छोड़कर हॉर्सगार्ड्स में प्रवेश किया और बेकरी की ओर चल पड़ीं। यह ईंटों से बना एक बड़ा कमरा था जिसमें कोई छत नहीं थी, जिससे छत बनाने वाले सभी बड़े बीम और राफ्टर दिखाई दे रहे थे और सड़कों और मुख्य मार्गों की तरह पक्के थे। एक कोने में एक बैल को भूनने के लिए पर्याप्त आकार और भयंकर आग जल रही थी। बीच में एक लंबी मेज थी जिस पर 200 या 300 सैनिक मोटे ब्रेड और केक बनाने में व्यस्त थे; मेज के शीर्ष पर एक ऊंचे देहाती तिपाई पर एक बहुत बूढ़ा आदमी बैठा था, जिसकी ऊंचाई छह फीट से अधिक प्रतीत होती थी, जिसकी मांसपेशियां हरक्यूलिस की तरह मजबूत और लचीली थीं और हड्डियां मैमथ की तरह विशाल थीं। उसके सफ़ेद बालों को एक रस्सी से बांधकर पीछे की ओर एक लंबी चोटी की तरह गूंथा गया था। उसकी नाक चील की चोंच जैसी थी, जिसकी उम्र के कारण ऊपरी जबड़ा निचले जबड़े से बाहर निकल आया था और वह आदरणीय स्वामी, जो न खा सकता था और न पी सकता था, अपने उस दुर्गम स्थान में पड़ा था जो उन लोगों की सूखी हड्डियों से बना था जिन्हें उसने अपनी जवानी में मार डाला था और जो किसी कब्रिस्तान जैसा लग रहा था। मैं आगे लिख रहा था, लेकिन मुझे लगता है कि यह उपमा पहले ही बहुत अस्पष्ट हो गई है। सेरिंगापाटन की नाक (क्योंकि वह बूढ़ा व्यक्ति कोई और नहीं था) अत्यंत नुकीली थी और उसका मुंह कान से कान तक फैला हुआ लाल धागे जैसा था, और उसकी बड़ी, गहरी, भावपूर्ण आंखें उसे सच्चे माइलेशियन मूल का दर्शाती थीं। वह अपने ऊंचे सिंहासन पर अत्यंत गरिमा और शाही वैभव के साथ बैठा था। उसका सिर धीरे से एक तरफ झुका हुआ था और एक हाथ पर टिका था जिसका रंग इतना गहरा भूरा लाल था कि बर्फ भी उससे ईर्ष्या कर सकती थी। एक पैर मेज के दूसरी तरफ था और दूसरा उस दुष्ट व्यक्ति के सिर पर, जिसने उसकी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह करने का साहस किया था, लेकिन अंततः इस चेतावनी के बाद कि कल अभ्यास के समय उसे अपनी गुस्ताखी का दंड भुगतना पड़ेगा, वह अपने काले अपराध का प्रायश्चित कर रहा था। जब सेरिंगापाटन बोलता था, वह हमेशा अपना दाहिना हाथ अंदर की ओर फैलाता था, मानो सभी महान यूनानी, रोमन, ब्रिटिश और आयरिश वक्ताओं की सुरुचिपूर्ण शैली का अनुकरण कर रहा हो।

कुछ देर तक इस दृश्य को देखने के बाद नन्हे राजा और रानी कमरे से बाहर निकले और ड्यूक ऑफ वेलिंगटन को खोजने के लिए आगे बढ़े। उन्होंने उन्हें

अधिकारियों के लिए बने सार्वजनिक कक्ष में पाया। यह एक विशाल गोल कमरा था जिस पर हरे रंग का कालीन बिछा था। छत से लटकता हुआ एक बड़ा पीतल का तरकश कई वर्षों की धूल से ढका हुआ था। बीच में एक बिलियर्ड टेबल थी जिसके चारों ओर कई अधिकारी खेल रहे थे या बातें कर रहे थे। ड्यूक कमरे के एक कोने में खड़े थे और उनके चारों ओर लॉर्ड रॉसलिन, बेरेसफोर्ड, सोमरसेट और आर्थर हिल के साथ-साथ जनरल मरे हार्डिंग, लंदनडेरी, फिट्ज़रॉय आदि मौजूद थे। रॉसलिन ड्यूक की प्रशंसा में कुछ शब्द कह रहे थे।

हे मेरे प्रभु, जब आप प्रकट होते हैं, तो मेरी आँखों से धुंध छंट जाती है। आप वर्षा के बाद चमकते सूर्य की निर्मल चमक के समान हैं। आपके आने पर काले बादल समुद्र की लहरों में विलीन हो जाते हैं, जहाँ से वे आए थे और जहाँ वे लौटेंगे। सौ फूल, जिनके सुंदर सिर तूफान के प्रकोप में झुक गए थे और जिनके चमकीले रंग तूफान की मार से फीके पड़ गए थे, फिर से अपनी पतली डंडियाँ उठाते हैं, अपने पन्ना जैसे पत्ते फैलाते हैं और अपने सुनहरे मुकुटों को प्रकाश की पहली किरण की ओर उठाते हैं, जो आपके प्रकट होने की सूचना देती है, ताकि वे सुंदरता और आनंद से भर जाएँ। क्योंकि आपने पहले ही जाते हुए वर्षा की अंतिम बूंदों को एक धुंधले लेकिन तेजी से चमकते इंद्रधनुष में बदल दिया है। जब मैं उस विशाल रूप को देखता हूँ जो पूरी पृथ्वी और आकाश में फैला हुआ है, तो यह एक गंभीर संकेत है कि विजयी जल अब कभी भी दुनिया के सबसे ऊँचे पर्वत पर विजय की गर्जना नहीं करेगा, जो अपनी चोटियों से बादलों को चीरता है या उसकी सुखद घाटियों में सुंदरता और शांति के महलों को बिखेरता है। मुझे लगता है कि विनम्र के एक रहस्यमय संबंध से। स्नोड्रॉप, आकाश का मेहराब और वसंत का पहला फूल, दोनों की उत्पत्ति एक समान है, हालांकि एक स्वर्ग की संतान है और दूसरा पृथ्वी की, क्योंकि दोनों ही "तूफान से हिलते और हवा के झोंके से पोषित" होते हैं। "हैं? मेरे स्वामी, क्या यह बहुत सुंदर नहीं है?" उसने कहा और उस क्षण वह निश्चित रूप से एक मनुष्य की तुलना में एक बंदर से कहीं अधिक मिलता-जुलता लग रहा था।

ड्यूक ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "रॉसलिन, तुमने आज तो हद ही कर दी है! हालांकि मुझे डर है कि अगर किसी सियार, मैंड्रिल, चुटकी या बौने को बोलने के लिए मजबूर किया जाए, तो वह भी तुम्हें बंदरों जैसी भाषा में घमंडी और अर्थहीन बातों को व्यक्त करने में पीछे छोड़ देगा। लेकिन महोदय, अब मैं गंभीर हूं,

अगर तुमने मुझे फिर से ऐसी भाषा से परेशान किया जो किसी समझदार और बुद्धिमान अधिकारी या औसत दर्जे के नागरिक की बातचीत से कहीं अधिक एक कमजोर, रोने वाले कवि के दिमाग की मैली गंदगी जैसी है, तो मैं तुम्हें कुछ सुरुचिपूर्ण फ्रांसीसी हाव-भाव दिखाने का मौका जरूर दूंगा। सिर या पीठ के ये सारे इशारे भगोड़ों के भाले से बने त्रिकोण पर बिल्कुल बेमानी लगेंगे, जो गार्ड रेजिमेंट के सभी लोगों के देखने और उपहास का पात्र होंगे। महोदय, आपसे यह भी अपेक्षा की जाएगी कि आप प्रतिदिन ड्रिल में उपस्थित होकर प्रशिक्षु के रूप में कार्य करें। बिना किसी नौकर की सहायता के अपने हथियार और साजो-सामान स्वयं साफ करने के लिए हाजिरी लगानी होगी, सेना के आम जूता पॉलिश करने वालों, नौकरों और माल ढोने वालों के साथ समय बिताना होगा ताकि आप उन्हें वाक्पटुता की कला सिखा सकें और अपने सुरुचिपूर्ण उदाहरण से उनके सामान्य शिष्टाचार में सुधार कर सकें। अंत में, आपको कुछ महीनों के लिए सेवामुक्त किया जाएगा ताकि आप अपने पसंदीदा एकांत का आनंद ले सकें, जिससे शायद आप तुकबंदी के और भी उत्कृष्ट नमूने प्रस्तुत कर सकें, जो आपने अब तक हमें नहीं दिए हैं। यहीं पर महामहिम रुक गए। आसपास के सभी सेनापति रोस्लिन को तिरस्कार भरी निगाहों से घूर रहे थे और जब वह उनमें से किसी के पास आता, तो वे उसके स्पर्श से ऐसे कतराते जैसे वह संक्रामक हो, एक पल के लिए भी उससे बात करने की जहमत नहीं उठाते। उनके इस अजीब व्यवहार को देखकर और अपने स्वामी के शब्दों को सुनकर बेचारा फूट-फूट कर रोने लगा, जोर-जोर से सिसकियाँ लेने लगा और फिर मानो खुद को संभाल न पाने के कारण जितनी तेजी से हो सकता था, कमरे से बाहर भाग गया। कुछ मिनट बाद उसे दूर से निम्नलिखित छंद गाते हुए सुना गया।

जंगल की ओर, निर्जन वन की ओर, आह, मुझे अब जल्दी करनी चाहिए। मैं जहाँ भी जाऊँगा, मुझे अपने स्वामी का झुका हुआ माथा दिखाई देगा। जंगल की काली छाया मेरे दु:ख को नहीं छुपा पाएगी। अब मुझ पर कोई प्रभाव नहीं है, लेकिन नदी मुझे जल्दी राहत देगी। मैं जलमग्न समाधि की तलाश करूँगा। मैं तेज़ी से किनारे की ओर उड़ूँगा। मैं समुद्र में डुबकी लगाऊँगा। जब डूबना मुझे मुक्त करेगा, तो झाग की घंटियाँ ऊपर उठेंगी।

जीवन के सभी दुखों को डुबो दो, हे मेरे भीतर दुख बसा हुआ है, जब मैं जीवित नहीं रहूंगा, दुख की लहरें उमड़ेंगी।

एक ऊंचे एल्म के पेड़ से लटककर मैं अपने दुख भरे जीवन का अंत करूंगा। मेरी आत्मा पित्त से भी अधिक कड़वी है, मेरा हृदय संघर्षों से भरा है।

मैं किसी तेज धार वाले ब्लेड से अपनी गर्दन काट लूंगा, मैं भयानक जहर पी लूंगा। नहीं, अब मैंने अपना संकल्प ले लिया है, मैं खुद को आग लगा लूंगा।

तभी बगल के एक अपार्टमेंट में एक तेज आवाज सुनाई दी और गेम कीपर दौड़कर कमरे में आया और चिल्लाते हुए बताया कि लॉर्ड रॉसलिन ने खुद को आग में झोंक दिया था, लेकिन उन्हें चोट लगने से पहले ही बाहर निकाल लिया गया था।

“उसे सबसे निचले तहखाने में ले जाओ, उसे वहीं रखो और एक महीने तक उसे केवल रोटी और पानी ही खिलाओ।” इसके बाद ड्यूक ऑफ वेलिंगटन कमरे से बाहर चले गए और नन्हे राजा और रानी उनके पीछे-पीछे चले गए।

उन्होंने पूछा, “तुम कहाँ जा रहे हो?”

“आर्थर के अपार्टमेंट में” उसने उत्तर दिया, “क्या महाराज और महाराज मुझे अपनी उपस्थिति से सम्मानित करेंगे?”

“हाँ,” उन्होंने संक्षेप में उत्तर दिया और कुछ ही मिनटों में पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़कर वे एक लंबी गैलरी के अंत में पहुँचे, जहाँ एक दरवाजा था। दरवाजा खोलने पर एक छोटा सा कक्ष दिखाई दिया, जहाँ एक मेहराबदार प्रवेश द्वार था जो मोटे हरे रंग के कपड़े के पर्दे से ढका हुआ था। ड्यूक ने पर्दा हटाया और एक अत्यंत सुंदर लेकिन छोटा सा कमरा सामने आया। फर्श पर एक कीमती फ़ारसी कालीन बिछा हुआ था, कमरे में हरे साटन के कपड़े पर कढ़ाई किए हुए छोटे सोफे रखे थे। अरबी शैली में खूबसूरती से चित्रित एक गुंबद छत का निर्माण कर रहा था, सुंदर सफेद संगमरमर के कई स्टैंडों पर बेहतरीन और सुगंधित फूलों से भरे अलबास्टर फूलदान रखे थे। फ़ारसी मेंटलपीस पर जापान के चीनी मिट्टी के बर्तनों में शास्त्रीय रूप से डिज़ाइन की गई और अच्छी तरह से बनाई गई कई मूर्तियाँ थीं और चूल्हे पर कीमती तबरूज़ की एक पटिया थी। संगमरमर के भव्य बर्तनों में पोर्फोरी, लैपिस लाजुली और अगेट की सजावट थी, जिनमें पूर्व के सबसे उत्तम सुगंध भरे हुए थे। सभी खिड़कियों को संतरे और मर्टल के पेड़ों से ढका गया था, जो सेविले चीनी मिट्टी के बड़े गमलों में उगे थे। इनमें से एक गमले में मार्क्विस ऑफ डौरो और लॉर्ड वेलेस्ली बैठे थे। मार्क्विस ने अपनी रेजिमेंट की शाही नीली और सुनहरी वर्दी पहनी थी, जबकि लॉर्ड वेलेस्ली ने हरे रंग की हल्की किनारी वाली सफेद रेशम की पोशाक और एक बैंगनी रंग का लबादा पहना था, जो

नीलम और पन्ना के आभूषण से एक कंधे पर बंधा हुआ था।

जैसे ही महाराज अंदर आए, वे दोनों प्रसन्नतापूर्वक उनका स्वागत करने लगे और उन्हें शोरगुल भरे रोटंडा से दूर अपने शांत विश्राम स्थल पर आमंत्रित करने लगे। कुछ ही मिनटों में वे बैठ गए और थोड़ी देर मौन रहने के बाद बोले, "आर्थर, यह कितना आलीशान स्थान है! मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, मेरे पुत्र, यह किसी व्यक्ति को उन कठिनाइयों के लिए तैयार करने के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त है जिनका सामना प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के किसी न किसी भाग में करना पड़ता है।"

"हे भगवान!" लॉर्ड चार्ल्स ने हैरानी से कहा, "आर्थर हमेशा मुसीबतें खड़ी करता है अगर उसके पास पहले से कोई चीज़ तैयार न हो। जब से वह यहाँ आया है (यानी तीन घंटे), मैंने उसके चेहरे पर एक भी मुस्कान नहीं देखी। उसे बुलवाने की कोशिश में मैं थक गया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। इसलिए मुझे खिड़की खोलकर नीचे वाले आंगन में आने-जाने वाले हर व्यक्ति से बात करके अपना मनोरंजन करना पड़ा। आखिरकार, यह उपाय भी नाकाम रहा क्योंकि कोई भी प्राणी दिखाई नहीं दिया। इसलिए मैंने खिड़की बंद कर दी और फिर से बैठ गया। आधे घंटे तक चुप रहा। फिर जब मुझे लगा कि मुझे बीमारी का डर सताने लगा है, तो मैं उठा, अपार्टमेंट में हर फूल और इत्र को सूंघा, नाचा, संतरे की डालियाँ हिलाईं, खुशी के गीत गाए, पैर पटके, गुस्सा किया, रोया, आर्थर की नकल की, चीखा, मुस्कुराया, हिस्टीरिया का शिकार हुआ, बेहोश हो गया। और अंत में, उसे एक शब्द भी बुलवाने के मेरे सारे प्रयास व्यर्थ साबित होने पर, मैं थककर एक कुर्सी पर गिर पड़ा और तब तक आर्थर को घूरता रहा जब तक आप अंदर नहीं आए। फिर मुझे असीम खुशी हुई जब मैंने देखा कि उन्हें उठकर आपका स्वागत करने के लिए अपने होंठ खोलने को कहा। ड्यूक ऑफ वेलिंगटन लगभग एक घंटे तक हॉर्सगार्ड्स में रहे और फिर डाउनिंग स्ट्रीट लौट आए, जहाँ उन्हें आधिकारिक दस्तावेजों का एक बंडल उनका इंतजार करता मिला। उन्होंने तुरंत इन दस्तावेजों को समझने के लिए बैठना शुरू कर दिया और इस काम पर मैं उन्हें फिलहाल छोड़ देता हूँ।

सी. ब्रोंटे, 8 मई 1830

द्वीपवासियों की कहानियों का तीसरा खंड

मैंने इस पुस्तक को लिखना सोमवार, 3 मई 1830 को शुरू किया और शनिवार, 8 मई 1830 को समाप्त किया।

सी ब्रोंटे 1830

8 मई।

टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स का चौथा खंड

अध्याय एक

एक सुहावनी शरद ऋतु की शाम को ड्यूक ऑफ वेलिंगटन लंदन से स्ट्रैथफील्डसे जा रहे थे। वे अभी-अभी गाँव से गुज़रे थे और पार्क के द्वार की ओर जाने वाले एक संकरे रास्ते पर आ गए थे। यहाँ वे अपने घोड़े से उतरे और पुराने ब्लैंको-व्हाइट की लगाम पकड़कर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। जैसा कि मैंने कहा, यह शरद ऋतु की एक सुहावनी शाम थी: हवा गर्म और शांत थी, आकाश ऊँचे हल्के बादलों से ढका हुआ था, सिवाय कहीं-कहीं धुंधले क्षितिज पर दिखाई देने वाली कुछ हल्की नीली धारियों के। सूरज अभी-अभी डूबा था। घोंघे झाड़ियों के किनारे से रेंगते हुए उस ताज़गी भरी नमी का आनंद लेने के लिए निकल रहे थे जो साल के इस समय शाम से ठीक पहले आती है। रास्ते के किनारे लगे ओक और हॉथोर्न के पेड़ों से शायद ही कोई पत्ता गिरा हो, क्योंकि उनके पत्तों का गहरा रंग ढलते मौसम के साथ अभी हल्का होना शुरू ही हुआ था। वहाँ केवल कभी-कभार बजने वाली लेडी-क्लॉक*9 की गुनगुनाहट और

एक छोटी सी धारा की हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई देती थी, जो एक प्राचीन बैलगाड़ी के रास्ते (अब अप्रयुक्त) से अदृश्य रूप से बहती थी। यह रास्ता डॉक के पत्तों, जंगली वेच घास और अन्य झाड़ियों से पूरी तरह ढका हुआ था। एक ओर उठती हुई पहाड़ी ने हॉल को, उसके विशाल पार्कों, मनोरंजक मैदानों, उद्यानों, जंगलों आदि के साथ, दूसरी ओर दूर तक ढलान वाली एक विस्तृत और रमणीय घाटी में स्थित होने से छिपा रखा था।

जैसे ही ड्यूक चुपचाप आगे बढ़े, उन्हें अचानक अपने से थोड़ा आगे कई लोगों के दबी आवाज़ में बातचीत की गुनगुनाहट सुनाई दी। वे रुक गए और सुनने लगे, लेकिन वे समझ नहीं पाए कि वे क्या कह रहे थे। कुछ कदम आगे जाने पर रास्ते में एक मोड़ आया और उन्हें तीन बूढ़ी औरतें एक हरे-भरे किनारे पर होली के पेड़ के नीचे बैठी दिखाई दीं, जो बड़ी तेज़ी से बुनाई कर रही थीं और लगातार अपनी जीभ चला रही थीं। उनके बगल में छोटा राजा आराम से लेटा हुआ था और आसपास उगे वायलेट और कोयल का मांस इकट्ठा कर रहा था। ड्यूक के पास आते ही वह और बूढ़ी औरतें दोनों चौंक गईं। उन्होंने अभिवादन किया और उन्होंने भी पत्थर पर बैठे किसी छुपे हुए व्यक्ति की तरह झुककर प्रणाम किया। फिर अपने साथियों की ज़ोरदार हंसी के बाद उन्होंने ड्यूक से इस प्रकार कहा।

"ड्यूक ऑफ वेलिंगटन, मैं आपको अपनी तीन सहेलियों से मिलवाना चाहता हूँ। ये कुछ समय तक स्वर्गीय सर रॉबर्ट पील बार्ट के परिवार में धोबिन के रूप में काम करती थीं। सर रॉबर्ट पील बार्ट उनका इतना सम्मान करते थे कि उन्होंने अपनी वसीयत में प्रत्येक के लिए बीस गिनी का प्रावधान किया था। उनकी मृत्यु के बाद, वर्तमान बार्ट ने उन्हें और उनके कई अन्य पुराने लेकिन वफादार नौकरों को निकाल दिया, ताकि आधुनिक दिखावटी और अभद्र नौकरों के लिए जगह बनाई जा सके, जो आजकल हर सज्जन के घर में भरे पड़े हैं। इस प्रकार, अब वे बेघर और बेघर हैं। यदि आप उन्हें अपनी सेवा में ले लें, तो यह मेरे और उनके दोनों के लिए एक बड़ा उपकृत्य होगा।"

“मुझे नौकर रखने की ज्यादा आदत नहीं है,” महाराज ने उत्तर दिया, “लेकिन आप उन्हें मेरी गृहणी के पास ले जा सकते हैं और यदि उनका चरित्र उस बुजुर्ग महिला की जांच में खरा उतरता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।”

"बहुत खूब, ड्यूक ऑफ वेलिंगटन," छोटे राजा ने अत्यंत प्रसन्न होकर उत्तर दिया।

ड्यूक फिर से अपने घोड़े पर सवार हुए और अपने नए परिचितों से पीछा छुड़ाने के लिए तेज़ी से आगे बढ़े, लेकिन वे उनके साथ-साथ चलते रहे, बातें करते रहे, हँसते रहे और लगातार उन्हें बातचीत में शामिल करने की कोशिश करते रहे। थोड़ी देर में वे पहाड़ी से मुड़े और एक लंबी ढलान वाली गली से तेज़ी से नीचे उतरते हुए उस विशाल जंगल में प्रवेश कर गए जो स्ट्रैथफील्डसे पार्क की एक तरफ की सीमा बनाता है। सेरिंगापाटन के साधारण आदमी के जैक ऑफ ए11 ट्रेड्स और गेम कीपर की झोपड़ियों तक जाने वाले भूलभुलैया के पेचीदा रास्तों को पार करने के बाद वे सेरिंगापाटन के दरवाजे पर रुके और ड्यूक ने चारों ओर लहराती विशाल मोटी शाखाओं से बचने के लिए अपना सिर झुकाकर कुंडी उठाई। सेरिंगापाटन तुरंत बाहर उछले और अपने स्वामी के आदेश का इंतजार किए बिना झुककर पार्क का द्वार खोल दिया। फिर ड्यूक ने झुककर बूढ़े आदमी के कान में कुछ फुसफुसाया और उसे आदेश दिया कि जब तक वह हॉल में न पहुँच जाए, तब तक छोटे राजा और उसके साथियों को रोके रखे। सेरिंगापाटन ने पहले से भी ज्यादा झुककर प्रणाम किया और ड्यूक, ब्लैंको के पार्श्व भाग को गुदगुदाते हुए तेजी से सरपट दौड़ पड़ा।

"अगर आप चाहें तो क्या आप एक मिनट के लिए मेरी रसोई में आकर आराम कर सकते हैं?" सेरिंगापाटन ने कहा।

उन्होंने उनका धन्यवाद किया और बिना किसी औपचारिकता के अंदर चले गए। यह एक छोटा सा कमरा था, जिस पर साफ-सुथरा सफेदी किया हुआ था। एक कोने में चमकदार पीतल और बर्तनों से सजी ओक की लकड़ी की अलमारी थी; उसके ऊपर एक चमचमाती बंदूक और तलवार लटकी हुई थी। कई प्राचीन पुस्तकें काले ओक के बक्से पर करीने से रखी हुई थीं। धधकती आग के दोनों सिरों पर दो मजबूत आरामकुर्सियाँ थीं और खिड़की के सामने, तीन टांगों वाले कई मजबूत स्टूल कतार में रखे हुए थे। फर्श और चूल्हा इतने साफ और सफेद थे कि उन्हें रगड़-रगड़ कर साफ किया जा सकता था। श्रीमती लेफ्ट सेरिंगापाटन एक गोल लकड़ी की मेज पर अपने पति के मोजे सिल रही थीं। उन्होंने गहरे हरे रंग का गाउन, बर्फ जैसी सफेद टोपी और एप्रन पहना हुआ था और वे इतनी शांत दिख रही थीं मानो 25 की जगह 60 साल की हों।

जब नन्हा राजा और बुढ़िया अंदर आए तो वह उठी और उनसे बैठने का अनुरोध किया: वे मान गए। थोड़ी देर बातचीत करने के बाद वह फिर उठी और बाहर चली गई,

लेकिन थोड़ी देर में स्वादिष्ट करंट केक से भरी एक थाली और पेरी की एक बोतल लेकर लौटी। उसने अपने मेहमानों को इन स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लेने के लिए आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने ग्रहण किया और फिर जाने की तैयारी की। सेरिंगापाटन यह जानते हुए कि इस समय तक उसका स्वामी अपने स्थान पर पहुँच चुका है, दरवाजा खोला और उन्हें जाने की अनुमति दी। वे बिना रुके पार्क में आगे बढ़ते रहे क्योंकि रात तेजी से छा रही थी और चंद्रमा अपना प्रकाश लंबे पेड़ों और गलियों पर बिखेर रहा था जो धुंधली रेखाओं में लहरदार परिदृश्य पर दूर तक फैले हुए थे, और हल्के शरद ऋतु के आकाश में चित्तीदार बादलों और धुंधले दिखाई देने वाले तारों के बीच चढ़ रहे थे।

उस दिन लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली अपने पिता की जागीरों में सैर पर निकले हुए थे और घर लौट रहे थे। दूर से उन्होंने तीन बूढ़ी महिलाओं को उनके मार्गदर्शक के साथ देखा। उन्हें संगति पसंद थी, इसलिए वे उनसे मिलने के लिए जल्दी से आगे बढ़े, लेकिन जैसे ही वे पास पहुँचे, उनका चंचल मन बदल गया और उन्होंने उनके पीछे-पीछे चलने और उनकी बातचीत को छुपकर सुनने का निश्चय किया, यह सोचकर कि उन्हें इसमें बहुत मज़ा आएगा। हालाँकि, उनका यह भ्रम टूट गया, क्योंकि सेरिंगापाटन की कुटिया में वे जितनी बातें कर रही थीं, अब एकदम शांत हो गईं।

लगभग पंद्रह मिनट में वे उस गहरी, तेज़ बहने वाली धारा तक पहुँच गए जो मैदानों से होकर बहती है। इसके किनारे विलो और लार्च के पेड़ों से घिरे हुए थे और ऊँची शाखाओं से छनकर आती चाँदनी की लंबी किरणें उग्र लहरों पर मधुर शांति के साथ पड़ रही थीं, जो पानी में तेज़ी से एक के बाद एक आती हुई उनकी उग्र और काली लकीरों के विपरीत एक सुखदायक दृश्य प्रस्तुत कर रही थीं। दूसरी ओर फैले घास के टीले ने एक प्रकार का प्राकृतिक पुल बना दिया था और लॉर्ड चार्ल्स ने सोचा कि वे इसी पुल से होकर गुजरेंगे, इसलिए वे उन्हें देखने के लिए कुछ देर रुक गए। लेकिन उनके आश्चर्य के लिए, वे चुपचाप नदी के बीचोंबीच पहुँच गए और वहाँ तीन बार घूमकर, चमकीली रोशनी के काँपते टुकड़ों के बीच, जिसमें चाँद की रोशनी प्रतिबिंबित हो रही थी, उग्र लहरों और झाग के भंवर में समा गए। वह एक पल के लिए भय से स्तब्ध खड़े रहे, फिर टीले के ऊपर से छलांग लगाकर दूसरी ओर पेड़ों के बीच से होते हुए खुले रास्ते पर पहुँचे और छोटे राजा और तीनों बूढ़ी महिलाओं को अपने से कुछ गज की दूरी पर स्वस्थ और सही सलामत चलते हुए देखा। पहले से भी अधिक

आश्चर्यचकित होकर उसने एक पल के लिए उन्हें चुपचाप देखा और फिर यह निष्कर्ष निकाला कि वे दूसरी परियां थीं जिन्हें नन्हा राजा अपने साथ इस पृथ्वी पर लाया था। उसने इस अनुमान से खुद को संतुष्ट करने का प्रयास किया, लेकिन अपने प्रयासों के बावजूद, जब उसने उनके छोटे नुकीले चेहरों को देखा और उनकी तीखी, अप्रिय आवाज़ें सुनीं (क्योंकि वे अब पहले की तरह ही खुशी से बातें कर रही थीं), तो उसे एक अजीब, अस्पष्ट और बिल्कुल भी सुखद अनुभूति नहीं हुई, जिसका कारण वह समझ नहीं पा रहा था।

अंततः वे हवेली पहुँचे। नन्हे राजा ने विशाल द्वार पर दस्तक दी। तह करने वाले दरवाजे खुल गए और लाल रोशनी की एक तेज किरण फूट पड़ी, जिसने चौड़ी नक्काशीदार सीढ़ियों और दूर तक फैले अंधेरे रास्ते को रोशन कर दिया। चौड़े हॉल की चिमनी में एक बड़ी आग जल रही थी और पीतल की हर शाखा पर लौ की लपटें थीं। नौकर भोज में एकत्रित थे: गेमकीपर मेज के मुखिया पर बैठा था, जैक ऑफ ऑल ट्रेड्स वेटर की भूमिका निभा रहा था और ऑर्डरली-मैन उपाध्यक्ष था। हर पल ऊँची छत पर हंसी की गूंज सुनाई दे रही थी और ओक की लकड़ियाँ काँप रही थीं। नन्हे राजा और उसके साथी अंदर चले गए। दरवाजे फिर से बंद हो गए और लॉर्ड चार्ल्स रात के अंधेरे और सन्नाटे में रह गए, जो उस उत्सव से बिलकुल अलग था जिसकी एक झलक उन्होंने अभी-अभी देखी थी। कुछ क्षण सोचने के बाद, वह छलांग लगाकर सीढ़ियाँ पार कर गया और रास्ते पर दौड़ते हुए दीवार में बने एक दरवाजे के पास पहुँचा, जिसे उसने अपनी जेब से निकाली चाबी से खोला और फिर एक छोटे से हरे मैदान में प्रवेश किया, जो कई सुंदर झाड़ियों और पेड़ों से खूबसूरती से सजा हुआ था और जिसके बीच में एक फव्वारा था। उसने इसे पार किया और संगमरमर की रेलिंग वाली ऊँची सीढ़ियों से चढ़कर एक चबूतरे पर पहुँचा, जो एक मेहराबदार कांच के दरवाजे की ओर जाता था। उसने इसे भी खोला और एक छोटा सा, सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ कमरा दिखाई दिया, जो उसका और उसके भाई का निजी अपार्टमेंट था।

आर्थर आग के पास सिर हाथ पर टिकाए गहरी सोच में डूबा बैठा था। जैसे ही लॉर्ड वेलेस्ली अंदर आए, वह चौंककर बोला, “ओह चार्ल्स, मैं बहुत समय से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था और अब तुम्हारे आने से बहुत प्रसन्न हूँ। आओ बैठो और सोने से पहले अपनी हमेशा की सुखद बातचीत कर लें।” चार्ल्स ने भी अपने भाई का उतने ही

गर्मजोशी से स्वागत किया और गर्म फारसी कालीन पर लेटकर उस दिन के अपने कारनामों को सुनाने लगा। फिलहाल मुझे उसे यहीं छोड़कर छोटे राजा और तीन बूढ़ी महिलाओं के पास लौटना होगा।

रात का खाना खत्म होने के बाद उसने हाउसकीपर से बात करने की अनुमति मांगी, लेकिन एक नौकरानी ने बताया कि वह रात के लिए चली गई है और अब वे उसे परेशान करने की हिम्मत नहीं कर सकतीं, लेकिन कल वह अपने और अपने दोस्तों के लिए मुलाकात का इंतजाम कर सकता है। यह जवाब महिलाओं को बिल्कुल भी पसंद नहीं आया और वे तीखी आवाज में अपनी असंतुष्टि व्यक्त करने लगीं। तभी ओल्ड-मैन-कॉकनी अंदर आया और उन्हें और नौकरों को सोने के लिए भेज दिया गया।

अगली सुबह वे सूरज उगने के साथ ही उठ गए और श्रीमती दौरा डोवेलिक के विश्राम में खलल डालने से उन्हें केवल एक नौकरानी ने रोका, जो दरवाजे पर उनसे मिली और उन्हें उनके घुसपैठ के परिणाम के बारे में चेतावनी दी, यानी बिना मुलाकात के तुरंत बाहर निकाल दिया जाना। बड़ी मुश्किल से उन्हें नौ बजे तक इंतजार करने के लिए राजी किया गया, क्योंकि वे सगाई का मामला जल्द निपटाना चाहते थे। उस समय श्रीमती दौरा ने संदेश भेजा कि वह उनसे मिलने के लिए तैयार हैं। उनके कमरे में जाने पर उन्होंने उन्हें एक आरामकुर्सी पर नाश्ता करते हुए पाया, उनके पैर एक गद्दीदार पायदान पर थे। उनका सधा हुआ शरीर एक पुराने जमाने के काले रेशमी गाउन में लिपटा हुआ था, जिस पर टोपी और रफ बकरे की तरह कड़क थे। सौभाग्य से, उस सुबह उनका मूड अच्छा था, इसलिए उन्हें बैठने के लिए कहने और कुछ सवाल पूछने के बाद, वह उन्हें अपनी मालकिन, डचेस ऑफ वेलिंगटन के सामने पेश करने के लिए सहमत हो गईं।

एक लंबे गलियारे और कक्ष से गुज़रने के बाद वे उनके निजी बैठक कक्ष में पहुँचे, जो अत्यंत भव्य लेकिन फिर भी सरल और आडंबरहीन शैली में सजा हुआ था। डचेस गरीबों के लिए अपने नियमित परोपकारी कार्य में लगी हुई थीं। उन्होंने गहरे लाल मखमल का एक समृद्ध वस्त्र पहना हुआ था, जो लगभग पूरी तरह से सादा था, सिवाय एक चमकदार हीरे के जो कमरबंद को बांधता था। उनके सुंदर भूरे बालों की लटें रेशमी जाल में बंधी हुई थीं, जिस पर एक सफेद शुतुरमुर्ग का पंख खूबसूरती से लहरा रहा था। उनका चेहरा और आकृति अत्यंत सुंदर थी और उनकी बड़ी भूरी आँखें

भावों से चमक रही थीं, लेकिन उनका मुख्य आकर्षण उनके चेहरे पर हमेशा दिखाई देने वाली कोमलता और मधुरता थी। ऐसा लगता था और उनके लिए क्रोधित होना, भौंहें चढ़ाना या यहाँ तक कि नाराज़ होना भी असंभव था, क्योंकि यदि उनके नौकरों या आश्रितों द्वारा कुछ गलत किया जाता था, तो वह केवल दुखी और उदास दिखाई देती थीं, उदास या निराश नहीं।

जब वे अंदर आईं तो ड्यूक भी कमरे में अपनी पत्नी से बातचीत कर रहे थे। उन्हें देखकर गृहणी ने आदरपूर्वक अभिवादन किया और जाने लगी, तभी ड्यूक ने उसे वापस बुलाया और कमरा छोड़कर चले गए। ड्यूक ने उन्हें अपने प्रभावशाली, महामंत्री और क्लर्क जैसे व्यक्तित्व की असहजता से मुक्त होकर अपना काम निपटाने दिया। थोड़ी बातचीत के बाद यह तय हुआ कि तीनों बुजुर्ग महिलाएं एक महीने के लिए कपड़े धोने वाली और कपड़े धोने वाली नौकरानियों के रूप में काम करेंगी और यदि निर्धारित समय के दौरान उनका व्यवहार अच्छा रहा तो उन्हें 10 गिनी प्रति वर्ष के वेतन पर स्थायी रूप से रख लिया जाएगा। वेतन तय होने पर वे वहां से चली गईं। महारानी उनके सौम्य व्यवहार, मनमोहक मुस्कान और उनकी लगन की अप्रत्याशित सफलता से बेहद प्रसन्न थीं।

अगले दिन उन्होंने अपने कार्यालय के कर्तव्यों का निर्वहन शुरू किया, जिसे उन्होंने कुछ हफ्तों तक समान समयबद्धता, लगन और संयम के साथ निभाया, लेकिन इस दौरान उनके बीच कई झगड़े भी हुए, जो अक्सर भयंकर लड़ाइयों में परिणत होते थे, जिनमें दांत, नाखून, पैर और हाथ समान क्रोध से इस्तेमाल किए जाते थे। इन झगड़ों में छोटा राजा (जो हमेशा उनके साथ रहता था) अत्यधिक सक्रिय देखा गया, जो उन्हें हर संभव तरीके से एक-दूसरे को बुरी तरह से घायल करने के लिए उकसाता था। हालांकि, इस बात पर किसी को आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि उसकी हर तरह की शरारत करने की प्रवृत्ति सर्वविदित थी और स्ट्रैथफील्डसे परिवार के हर सदस्य, यहां तक कि स्वयं ड्यूक भी, उसे एक वैध परी से अधिक एक दुष्ट बौने के रूप में मानते थे।

लॉर्ड चार्ल्स ने किसी को भी उस विचित्र घटना के बारे में नहीं बताया था, जिसके वे गवाह थे और जो उनके आगमन की पहली रात को घटी थी। उनकी जिज्ञासा, जो स्वाभाविक रूप से उनमें काफी प्रबल थी, और भी बढ़ गई थी। उन्होंने उन्हें ध्यान से देखा, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ जिससे उनके अलौकिक प्राणी होने के संदेह को

बल मिले। एक दोपहर वह अकेले नदी के उस किनारे पर गया जहाँ से उसने उन्हें लहरों पर चलते देखा था। कुछ देर पेड़ों के बीच घूमते हुए जंगली गुलाब, नीलगाय और अन्य जंगली फूल इकट्ठा करने के बाद, वह हरी घास पर लेट गया और अपनी निगाहें नीले आकाश पर टिका दीं, घनी पत्तियों के बीच से झाँकते हुए। उसके कानों में जो आवाज़ें गूँज रही थीं, वे सभी शांत और सुखदायक थीं - केवल बहते पानी की हल्की कलकल, पेड़ों से आती कबूतरों की दूर की गुटरगू और पेड़ों में हवा की सरसराहट। धीरे-धीरे उसकी आँखें बंद हो गईं, एकांत विश्राम की सुखद अनुभूति उसके भीतर समा गई और वह धीरे-धीरे गहरी, सुखदायक नींद में डूबता चला गया, तभी अचानक हवा में एक स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी, जिसने कहा, "आधी रात को गलियारे में हमसे मिलो।" जब वह चौंककर उठा और सुना, तो आवाज़ धीमी पड़ गई थी और आसपास की जंगली संगीतमय ध्वनि में उसका कोई निशान या स्वर नहीं बचा था।

"मैं सम्मोहित हो गया हूँ," उसने ज़ोर से कहा, "उन प्राणियों ने मुझ पर जादू कर दिया है, लेकिन मैं फिर भी अपना पदभार संभाले रखूंगा क्योंकि मैं ऐसा बिना किसी को बताए कर सकता हूँ, क्योंकि आर्थर लंदन में है।"

फिर वह उठा और घर की ओर चल पड़ा। दिन भर उसके चेहरे पर एक असामान्य भाव प्रकट होता रहा और रात को वह जल्दी अपने कमरे में लौट आया। वह एक मेज के पास बैठकर चिंतन में डूबा हुआ पढ़ता रहा, जब तक कि हर शोर थम नहीं गया और पूरे घर में छाई खामोशी को भंग करने वाली कोई आवाज या पदचाप सुनाई नहीं दी। तभी हॉल की बड़ी घड़ी की धीमी, भारी आवाज उसके कानों में पड़ी, बारह बार हथौड़ा गूंजा। वह उठा, अपनी मोमबत्ती बुझाई और गलियारे में खुलने वाले एक गुप्त रास्ते से कमरे से बाहर निकल गया। उसकी निगाहें अनैच्छिक रूप से कांपते हुए दूर तक फैले दृश्य पर पड़ीं, सब कुछ घने अंधेरे में डूबा हुआ था। कुछ देर बाद खंभों के बीच एक तेज रोशनी दिखाई दी। वह आगे बढ़ा, वह धीरे-धीरे उससे दूर होती गई, लेकिन वह उसका पीछा करता रहा। थोड़ी देर बाद उसने उसे एक सीढ़ी पर चढ़ते देखा जो विशाल गोल मीनार की ओर जाती थी। वहाँ से वह मुड़ा और एक विशाल द्वार तक पहुँचा जहाँ प्रकाश गायब हो गया और वह अकेला रह गया। दरवाज़ा कर्कश आवाज़ के साथ खुला और एक विशाल, ऊँचा कमरा दिखाई दिया जो मशालों की लंबी, टिमटिमाती कतारों से हल्का-हल्का रोशन था और चारों ओर एक भयानक और

डरावनी रोशनी फैला रहा था। उस पर कोई छत नहीं थी, लेकिन ऊपर का आकाश मानो तारों से जगमगाता और बादलों से ढका गुंबद लग रहा था। बीच में एक विशाल काला चंदवा खुली छत से आती हवा में इधर-उधर हिल रहा था और नीचे तीन ताबूत रखे थे, जिनमें से प्रत्येक में एक कफ़न में लिपटा शव था। लॉर्ड चार्ल्स उनकी ओर बढ़ा और कफ़न हटाकर देखा तो पाया कि वे तीन बूढ़ी धोबिनें थीं। वह भय से काँप उठा और उसी क्षण उसके कानों में एक ज़ोरदार हँसी गूँजी। उसने ऊपर देखा और अपने बगल में छोटे राजा और रानियों को खड़ा पाया। उनमें से एक ने उसके कंधे पर ज़ोर से थप्पड़ मारते हुए कहा, "चार्ली, डरो मत, ये तो बस हमारे जादू थे।"

इस अभिवादन पर उसने अपनी आँखें खोलीं, चारों ओर देखा, आश्चर्यचकित हुआ और स्तब्ध रह गया। देखो! वह नदी के किनारे हल्की चाँदनी में लेटा हुआ था और आसपास कोई जीवित प्राणी नहीं था। वह तुरंत पूरी तेज़ी से घर की ओर भागा और वहाँ पहुँचकर उसने अपने पिता, माता और भाई को, जो उसे निजी बैठक में एक साथ मिले, बड़ी उत्सुकता से अपनी कहानी सुनाई। वे बेशक हँसे, लेकिन पूछताछ करने पर पता चला कि बूढ़ी औरतें सुबह से ही स्फथराथफील्डसे से गायब थीं। जाँच शुरू की गई, लेकिन उन्हें ढूँढ़ने का कोई सुराग नहीं मिला। एक देहाती ने बताया कि उसने उन्हें दोपहर के आसपास छोटे राजा के साथ मैदान में देखा था, लेकिन उसे एक पल के लिए अपनी नज़र हटानी पड़ी और जब उसने दोबारा देखा तो उसने छोटे राजा और रानी को उसी जगह पर खड़े देखा, लेकिन उनका कोई निशान नहीं था। कड़ी खोज के बाद बस इतना ही पता चल सका और तब से लेकर आज तक उन्हें न तो देखा गया है और न ही उनके बारे में कुछ सुना गया है। शार्लेट ब्रोंटे, 14 जुलाई 1830

अध्याय दो

चौथा खंड

जुलाई की एक सुहावनी शाम थी, जब मार्क्विस ऑफ डौरो और लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली एक ऊँची चट्टान के किनारे लेटे हुए चारों ओर के नज़ारे को चुपचाप निहार रहे थे। उनके सिर के ऊपर लहराते राजसी वन वृक्षों की आपस में गुंथी हुई शाखाएँ नीचे फैली घास और फूलों की प्राकृतिक चादर को एक वनमय छत प्रदान कर रही थीं। दूर नीचे सैकड़ों हरे ओक और सिकोमोर के पेड़ चट्टानी और लगभग खड़ी ढलान वाली खाई को गहरे ग्रीष्म ऋतु की हरियाली से ढके हुए थे, जिससे उनकी शाखाएँ अब सजी हुई थीं। नीचे की अथाह गहराई से एक छिपे हुए झरने की आवाज़ आ रही थी, जो शाम के बढ़ते अंधेरे में छिपी हुई थी, और यह अंधेरा उस खाई के कारण और भी गहरा हो गया था जिसमें चट्टान के किनारे ढलान बनाते थे, जो सूर्यास्त के बाद क्षितिज पर ठहरती अनिश्चित रोशनी की पहुँच से परे थी। उस धुंधली सी खामोशी को मिटाने वाली कोई आवाज नहीं थी, जो हवा के हर झोंके के साथ व्याप्त थी, जब तक कि मार्क्विस ने अपने पास पड़ी गिटार को उठाकर उसके तारों को तब तक नहीं बजाया जब तक कि हर तार एक साथ कंपन करने लगा और फिर एक पुरानी उदास धुन बजाई, जो विशाल भूभाग पर गूंज उठी और दूर से उसी धुन की प्रतिध्वनि सुनाई दी।

“मैरियन का जवाब सुनो,” लॉर्ड चार्ल्स ने कहा।

आर्थर ध्यान से सुन रहा था, लेकिन संगीत और उसकी गूँज थोड़ी देर में धीरे-धीरे मंद पड़ गई। दोनों कुछ देर तक चुप रहे, उनकी निगाहें पूरब की ओर टिकी थीं जहाँ आकाश में फैलती एक हल्की रोशनी चाँद के आगमन की सूचना दे रही थी। अंत में, चाँदी की ढाल की तरह तारों और बादलों के बीच धीरे-धीरे ऊपर उठा और रात की महारानी की तरह नीली पहाड़ियों के सिंहासन पर विराजमान हो गया, जो पूर्व के विशाल परिदृश्य को घेरे हुए थीं।

"यह निश्चित रूप से असंभव है कि प्रकाश का वह गोला हमारी दुनिया जैसा हो," आर्थर ने कहा, जब उसकी किरणों की भव्यता उसके चारों ओर चमक उठी।

“बिल्कुल नहीं मेरे प्यारे भाई,” लॉर्ड चार्ल्स ने हंसते हुए उत्तर दिया, “अगर आप चाहें तो जब तक हम यहां यूं ही बैठे हैं, मैं आपको इसके बारे में एक कहानी सुनाऊंगा।”

“क्या चार्ल्स, तुम्हें पता है कि मुझे तुम्हारी कहानियाँ हमेशा पसंद आती हैं, खासकर जब मैं उदास होती हूँ, जैसा कि मैं अभी हूँ। शुरू करो, प्रिय, मैं तैयार हूँ।”

“ठीक है, मैं अभी करता हूँ, लेकिन पहले मेरा बंदर ट्रिंगियाफ कहाँ है? ट्रिंगियाफ! ओह, वह आ रहा है! ट्रिंगिया, उस झाड़ी के नीचे बैठ जाओ। यहाँ कुछ मेवे और ब्लैकबेरी हैं जिनसे तुम अपना मनोरंजन कर सकती हो, और तुम्हें कबूतर से भी ज़्यादा शांत रहना होगा, जब तक मैं आर्थर का ध्यान उस सुंदर घर के निवासी से हटाता हूँ जिसे तुम वहाँ देख सकती हो। ट्रिंगिया, एक बगीचे और बागान से घिरा हुआ है। और देखो! मैं उस बगीचे के फूलों से सजे क्या देख रहा हूँ? एक वस्तु जो पूरी तरह से सफेद कपड़ों में लिपटी है! यह नहीं हो सकता, हाँ, यह मैरियन ह्यूम है! और अब जब मैं इस छोटे से ओपेरा-ग्लास से बेहतर देख रहा हूँ, तो वह उसी गुलाब के पेड़ को पानी दे रही है जो आर्थर ने उसे ग्रीनहाउस से दिया था और अपने हाथों से वहाँ लगाया था, कितना दयालु युवक था वह। हाँ, और उसका वीणा उस मंडप के पास रखा है जहाँ से उसने कुछ मिनट पहले वह मनमोहक धुन बजाई थी।”

"चार्ल्स, क्या तुम मुझे यह कहानी सुनाने वाले हो या नहीं?" आर्थर ने उसका ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश करते हुए कहा।

“जी हां, मैं हूं भाई,” लॉर्ड वेलेस्ली ने उत्तर दिया और उन्होंने इस प्रकार बोलना शुरू किया।

एक समय की बात है, जॉर्जिया में, विशाल एल्बोरस पर्वतमाला के चरणों को धोने वाली चांदी जैसी अरगुआ नदी के किनारे, मिर्ज़ा अब्दुलीमाह नाम का एक बूढ़ा आदमी रहता था। वह मनुष्यों के बसाव से दूर, एक सुनसान झोपड़ी में अकेला रहता था; निकटतम गाँव बारह मील दूर था। उसका पेशा लकड़ी काटने का था, जो जॉर्जिया के जंगलों के बीच रहने वाले किसी व्यक्ति के लिए एक आसान काम था। वह शाहबलूत के विशाल पहाड़ों के फल भी इकट्ठा करके बेचता था। बचपन से ही काकेशस पर्वतमाला के एकांत में रहने का आदी होने के कारण, उसे मनुष्यों के साथ की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि वह अरगुआ की सीमाओं के चारों ओर मुस्कुराती हुई युवा लताओं और लिंडन के पेड़ों की घाटियों में घूमना, बर्फीली कासिबेक की विशाल ढलानों में बनी अद्भुत खाइयों को निहारना या अपने देश के गहरे नीले आकाश में दूर तक फैले हुए बर्फ से ढके शिखर को उठाते हुए महान गारा के भयानक रूप को मौन विस्मय से देखना पसंद करता था।

एक शाम जब वह अपने घर लौट रहा था, तो अपने घर से तीन मील दूर एक जंगल से इकट्ठा की गई लकड़ियों के बोझ तले दबा हुआ, वह दो चट्टानों के बीच एक

छोटी हरी घाटी में बैठ गया। ऊपर आकाश चमकीला, बादलों से रहित और सुंदर था। चारों ओर क्षितिज तरल अंबर की तरह साफ था और उससे आने वाला प्रकाश शुद्ध सुनहरे रंग का था, जो शंकु के आकार की पहाड़ियों की चोटियों को नारंगी रंग की हल्की चमक से समृद्ध कर रहा था, जिससे बर्फ का वह ठंडा और घातक रूप गायब हो गया था जो अन्य सभी वस्तुओं को रंग देने वाली पारदर्शिता और गर्माहट के साथ मेल नहीं खाता। वृद्ध मिर्ज़ा उस सुंदर दृश्य से मंत्रमुग्ध हो गए और घुटने टेककर मक्का की ओर मुँह करके मुहम्मद से अपनी सूर्यास्त की प्रार्थना की और फिर सर्वशक्तिमान ईश्वर को उनकी कृपा के लिए धन्यवाद दिया कि उन्होंने केवल कृतघ्न मनुष्य के सुख और मनोरंजन के लिए इतने सुंदर और मनमोहक दृश्यों की रचना की है।

जब उसका काम समाप्त हो गया तो वह उठा, लकड़ियों का गट्ठा उठाया और शानदार क्षितिज पर अंतिम नजर डालते हुए घाटी छोड़ने की तैयारी करने लगा, लेकिन निर्मल आकाश के चारों ओर एक काली रेखा को एक क्षेत्र की तरह खींचे हुए देखकर वह कितना आश्चर्यचकित हुआ। यह धीरे-धीरे ऊपर उठा, छल्लों में लिपटा और स्वर्ग की सघन हवाओं जैसी आवाज़ के साथ दो काले अजगर के पंख फैलाए, जिन्होंने पश्चिम को ऐसे ढक लिया मानो उस पर गरजते बादलों का घना कोहरा छाया हो। कुछ क्षणों के लिए यह आकाश और पृथ्वी के बीच डगमगाया, फिर धीरे-धीरे नीचे उतरा। मिर्ज़ा लकवाग्रस्त की तरह कांप रहा था, लेकिन उसका डर तब और बढ़ गया जब उसने खुद को बेबस होकर उसकी ओर खिंचा चला गया। उसने प्रार्थना की, चीखा, मुहम्मद का नाम लिया, लेकिन व्यर्थ। चुंबक के सामने लोहे की तरह वह अपने मोहक मार्ग पर ऊपर की ओर बढ़ता रहा, प्रकाश से भी तेज गति से वह दिनों और रातों तक आकाश की ओर भागता रहा, जब तक कि उसकी आँखों के सामने चंद्रमा पृथ्वी से भी बड़ा नहीं हो गया। अंत में भय से व्याकुल होकर वह एक लंबी बेहोशी में गिर पड़ा और जब उसकी दृष्टि उस बंधन से मुक्त हुई जिससे वह जकड़ी हुई थी, तो वह एक ऐसी भूमि में था जिसे किसी ने पहले कभी नहीं देखा था। वहाँ पृथ्वी पर सबसे ऊँचे पहाड़ों से भी ऊँचे काले पहाड़ दिखाई दे रहे थे जो आग की बाढ़ और धुएँ के बादल उगल रहे थे - कुछ भी नहीं। उसे केवल आंतरिक ज्वालाओं की गर्जना सुनाई दे रही थी, उसके नीचे की जमीन लगातार कांप रही थी और हर दिशा में लगातार फट रही थी और खाइयों से लाल जलते हुए तरल की नई धाराएं उबलती हुई फूट पड़ीं और आसपास की हर चीज को बहा ले गईं।

“मुझे मरना होगा, मैं जी नहीं सकता,” वह भय से कांपते हुए ज़ोर से बोला, उसके चेहरे से ठंडे पसीने की बूँदें टपक रही थीं। “हे मुहम्मद! हे अल्लाह! अपने सेवक को बचा! उसने ऐसा कौन सा भयानक अपराध किया है कि उसे काफ़िर की मौत मरनी पड़ रही है?”

“स्क्विलिश स्क्विली केरीवेस नेविलाह!” उसके ऊपर से एक तीखी, कर्कश आवाज आई। उसने ऊपर देखा और एक चट्टान की नोक पर खड़े एक प्राणी को देखा, जिसके चारों ओर उसी तरह के कई अन्य प्राणी थे। लेकिन मैं इसके आकार का वर्णन कैसे करूँ? मैं इसकी तुलना किससे करूँ? यह सात फीट ऊँचा था और इसके पैर पेड़ों की शाखाओं जैसे थे, इसकी आँखें इसके सिर के एक वर्गाकार ब्लॉक में बने दो छेद थे, इसका मुँह बंद होने पर खुरदरी त्वचा में एक सिलवट के अलावा अदृश्य था, लेकिन खुलने पर यह एक आयताकार छेद था जिसमें पिन की तरह नुकीले और पतले भूरे दाँतों की तीन पंक्तियाँ दिखाई दे रही थीं, इसकी भुजाएँ इतनी लंबी थीं कि कोहनियों से नीचे जमीन पर टिकी हुई थीं, यह और अन्य प्राणी एक ही छलांग में चट्टान को पार कर गए और मिर्ज़ा के पास उतरे। उन्होंने उसे पकड़ लिया और अपने सिर पर लटके लंबे स्कार्फ से बाँध दिया और उसके बाद लगभग आधे घंटे तक उसकी बारीकी से जाँच करते रहे और अत्यधिक आश्चर्य के सभी लक्षण दिखाते रहे। उस समय के अंत में मिर्ज़ा ने एक तेज़ फुफकारने और बुदबुदाने की आवाज सुनी। उसने ऊपर देखा और पाया कि लावा का एक विशाल भंडार तेज़ी से उसकी ओर लुढ़क रहा है। उन्होंने भी इसे देखा और उसे बाहों में उठाकर अविश्वसनीय तेज़ी से विपरीत दिशा में भाग गए। हालांकि, लावा उनका पीछा करता रहा और अगर एक खड़ी चट्टान उनकी मदद के लिए न आती तो वह उन्हें तुरंत पकड़ लेता। पल भर में वे उस चट्टान से कूदकर सामने वाली चट्टान पर पहुँच गए और जब लावा किनारे पर पहुँचा तो वह लगभग गरजते हुए बिजली के कड़कने जैसी ज़ोरदार आवाज़ के साथ ढलान से नीचे गिर गया, जहाँ कुछ ही समय में वह एक काले पिंड के रूप में प्रकट हुआ, जो उस गहरी खाई के घने अंधेरे में अलग नहीं किया जा सकता था जहाँ वह पड़ा था।

यह सब समाप्त होने पर वे बिना रुके तेजी से आगे बढ़ते रहे, जब तक कि दिन ढलने नहीं लगा। उस समय वे एक संकरी घाटी में पहुँचे, जो पास की एक नदी की शाखा से सिंचित थी और जिसमें पृथ्वी पर अज्ञात प्रकार के कई ऊँचे पेड़ थे। उनमें से एक पेड़ ऊँचाई और सुंदरता में बाकियों से कहीं अधिक ऊँचा था, जिसकी विशाल

शाखाएँ चारों ओर दूर तक फैली हुई थीं। घनी पत्तियों और फूलों के बीच सैकड़ों विचित्र आकृतियाँ थीं, जो बड़े पक्षियों के घोंसलों जैसी दिखती थीं। मिर्ज़ा को अपने साथ लिए हुए प्राणी इसी ओर बढ़े और तेजी से पेड़ के तने और शाखाओं पर चढ़कर सबसे ऊँचे घोंसले पर कब्जा कर लिया। वे अपने गोलाकार निवास के एक तरफ प्रचुर मात्रा में उग रहे बैंगनी और सुनहरे रंग की धारियों वाले फलों की बाड़ के पीछे आराम से बैठ गए। जब उन्होंने स्वयं फल तोड़कर खा लिए, तो उन्होंने मिर्ज़ा को भी कुछ फल दिए। उसने पहले तो सावधानी से चखा, लेकिन यह जानकर कि यह उसके तालू को बहुत ताज़गी दे रहा है, यद्यपि इसका स्वाद पहले कभी चखे गए स्वाद से भिन्न था, उसने बिना किसी रोक-टोक के खुलकर खाया। भोजन समाप्त होने पर वे सब एकदम शांत होकर बैठ गए और उनकी निगाहें आसमान के एक खास बिंदु पर टिकी हुई थीं, जो हमारे संसार को ढकने वाले नीले रंग के समान था। मिर्ज़ा ने भी उसी दिशा में देखा और मन ही मन अपनी शाम की नमाज़ दोहराने लगे।

जैसे ही उसने चलना शुरू किया, पहाड़ियों के ऊपर एक प्रकाश प्रकट हुआ। वह धीरे-धीरे ऊपर उठा और जब सब कुछ प्रकट हुआ, तो मिर्ज़ा ने अपनी पृथ्वी को एक विशाल प्रकाशमान पिंड के रूप में देखा, जो हमारे लिए चंद्रमा से पाँच गुना बड़ा था। उसने अपना सिर झुकाया और मौन प्रार्थना में ईश्वर का धन्यवाद किया। फिर उसके सभी साथी मुँह फेर लेते हैं, क्योंकि पृथ्वी ऊपर उठती है और घोंसले में कुंडली मारकर बैठ जाती है। मिर्ज़ा को ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे लेकर सूचित किया कि नींद ने उनकी पलकें बंद कर दी हैं। जल्द ही नींद ने भी उस पर अपना अधिकार जमा लिया और गहरी नींद के विस्मृति में उसने अपने सारे दुख एक चंद्र रात्रि के लिए भुला दिए, जो मेरे विचार से लगभग एक पृथ्वी की लंबाई के बराबर है।

वह कितने समय तक इन विचित्र प्राणियों के साथ रहा, यह मैं नहीं कह सकता क्योंकि मैंने कभी सुना नहीं, लेकिन उनसे उसकी मुक्ति इस प्रकार हुई। एक दिन जब वे सभी फल की तलाश में पेड़ से नीचे उतर गए और उसे अकेला छोड़ दिया, तो वह घुटनों के बल बैठ गया और मुहम्मद से मुक्ति के लिए प्रार्थना करने लगा। ऐसा प्रतीत होता है कि मुहम्मद ने उसकी प्रार्थना सुन ली और स्वीकार कर ली, क्योंकि उसके प्रार्थना समाप्त करने से पहले ही वह पंखों की फड़फड़ाहट से चौंक गया और इससे पहले कि वह ऊपर देख पाता, एक विशाल, पंखदार और अद्भुत आकार वाले जानवर ने उसे अपने बड़े पीतल के पंजों में जकड़ लिया। उसने बिना चीखे या संघर्ष किए

शांति से अपने भाग्य को स्वीकार कर लिया, यह सोचते हुए कि उस पर एक के बाद एक आ रहे ये दंड उसके पूर्वजों द्वारा किए गए किसी भयानक अपराध के लिए थे। वह चंद्र चील, जो और कुछ नहीं बल्कि एक चील थी, कुछ देर घाटी के ऊपर मंडराती रही और फिर एक विशाल ऊँचाई तक सीधी उड़ान भर गई। मिर्ज़ा को डर था कि वह सूर्य की ओर बढ़ रहा है और उस स्थिति में वह जानता था कि आग की शाश्वत यातना निश्चित रूप से उसका हिस्सा होगी। एक बार फिर, उसने अपने अंतर्मन में महान पैगंबर से प्रार्थना की। चील ने अपना पंख फड़फड़ाया, अपने पंजों की मजबूत पकड़ ढीली की और मिर्ज़ा ने खुद को असहज गति से नीचे की ओर घूमते हुए पाया।

उसके अवतरण के विवरण से मैं अनभिज्ञ हूँ क्योंकि किसी स्थान पर पहुँचने से बहुत पहले ही उसकी चेतना जा चुकी थी। जब उसे होश आया तो वह ज़मीन पर लेटा हुआ था और दो विशालकाय आकृतियाँ उस पर झुकी हुई थीं। उनके चेहरे और शरीर अत्यंत सुंदर थे, मानव रूप से सुडौल, कानों के स्थान पर उनके कंधों पर मांस के लंबे-लंबे टुकड़े लटके हुए थे, उनके बाल रेशम की तरह मुलायम और चमकदार थे, हल्के नीले रंग के, जो उनके सिर पर कलात्मक मालाओं और घुंघराले गुच्छों में सजे हुए थे, उनके माथे से एक लंबा, नुकीला सींग निकला हुआ था जो उत्तम हाथीदांत की तरह सफेद और पॉलिश किया हुआ था और उस पर सोने के मोतियों की एक माला सर्पिलाकार रूप में लिपटी हुई थी। उनका पहनावा सफेद पंखों से बना एक लंबा चोला था, जो कमर पर एक अलंकृत बेल्ट से बंधा हुआ था और वहाँ से अत्यंत कोमल और सुरुचिपूर्ण सिलवटों में गिर रहा था। उनकी भुजाएँ और टखने सोने के कंगन से सजे थे और उनके पैर चांदी की पट्टियों से सजे और रत्नों से जड़े पंखों के सैंडल से सुशोभित थे। उनके गले में भी कीमती पत्थरों और सोने या चांदी की कई मालाएँ लटक रही थीं। वे मुस्कुराते हुए आश्चर्य से मिर्ज़ा को निहार रहे थे, उन्हें पलटकर अत्यंत कोमलता और सावधानी से उनकी जाँच कर रहे थे और इस बीच एक अजीब लेकिन सुरीली भाषा में आपस में बातचीत कर रहे थे।

कुछ समय इस प्रकार बिताने के बाद वे उठे और पास ही उगने वाले एक विशाल पौधे के पत्ते में उसे लपेटकर एक बड़े मैदान की ओर ले गए, जहाँ कई छोटे तंबूओं से घिरा एक बहुत बड़ा और शानदार तंबू था। तंबू में प्रवेश करते समय वे तीस से चालीस फीट ऊँचे सशस्त्र दैत्यों की दुर्जेय पंक्तियों से होकर गुजरे, जिन्होंने उनका अत्यंत सम्मान किया। तंबू के बीच में एक व्यक्ति बैठा था जो मुखिया प्रतीत होता था,

चिंतनशील मुद्रा में। उसके दाहिने हाथ ने उसके विशाल सिर को सहारा दिया हुआ था और बाएँ हाथ में एक कटार थी। वे आगे बढ़े और पत्ते को खोलकर बेचारे छोटे अभागे मिर्ज़ा को उसके सामने रख दिया। उसने प्रसन्नता से एक ध्वनि निकाली, उसे झट से उठा लिया और जल्दी से उठकर तंबू से बाहर निकल गया, यह संकेत देते हुए कि कोई उसका पीछा न करे।

लगभग एक घंटे तक वह पहाड़ियों, मैदानों और नदियों को पार करते हुए चलता रहा, या यूँ कहें कि कदम बढ़ाता रहा, जब तक कि उसे तंबुओं से भरी एक घाटी दिखाई नहीं दी, जिसमें एक महल जैसी इमारत थी, जो एक विशेष प्रकार के मिश्रित संगमरमर से बनी थी। वास्तुकला की दृष्टि से यह उत्कृष्ट तो नहीं थी, लेकिन इसकी विशालता भव्यता और वैभव का आभास कराती थी। यही वह महानगर था जहाँ मिर्ज़ा रहता था और वह इमारत उस राजा का निवास स्थान थी। विशालकाय व्यक्ति ने अपना मार्ग उसी ओर मोड़ा।

मेरे लिए राजा से परिचय के दौरान घटी विचित्र रस्मों का वर्णन करना अनावश्यक होगा, क्योंकि उबाऊ होने के कारण मेरी कहानी और भी नीरस हो जाएगी। लेकिन जब वे रस्में समाप्त हुईं, तो उसने प्रसन्न चेहरे के साथ मिर्ज़ा को महाराज के सामने पेश किया। महाराज खुशी से अपने सिंहासन से उछल पड़े और वापस बैठते ही उन्होंने अपनी खुशी को अभिव्यक्त करते हुए एक जोशीला भाषण दिया। फिर मिर्ज़ा को रत्नों से जड़े एक सोने के बक्से में बंद कर दिया गया, जहाँ वह अगले दिन तक एक दयनीय कैदी की तरह पड़ा रहा। उस समय उसे बाहर निकाला गया और उसे भोजन दिया गया। अत्यधिक भूखा होने के कारण उसने बड़ी घृणा और अरुचि के साथ भोजन किया, क्योंकि वह जानता था कि यह किस जानवर का मांस है और इसका स्वाद खुरदुरा और अप्रिय था।

जैसे ही उसने अपना भोजन समाप्त किया, उसे वाद्ययंत्रों और संगीत आदि की भयंकर ध्वनि सुनाई दी। फिर उसे उसके बक्से में बिठाकर जल्दी से ले जाया गया। कई घंटों के मार्च के बाद उसे फिर से बाहर निकाला गया और उसने खुद को दानवों की एक विशाल सेना के बीच पाया, जो एक वेदी से सम्मानजनक दूरी पर पंक्तिबद्ध थे। वह एक आदरणीय वृद्ध पुजारी की गोद में खड़ा था, जिसने चौड़े, बहने वाले वस्त्र पहने थे, उसकी बर्फ जैसी सफेद दाढ़ी उसकी कमरबंद से नीचे लटक रही थी और उसके लंबे भूरे बाल हवा में बिखरे हुए थे। वेदी पर एक बड़ी आग जल रही थी और

जैसे ही उसने उस पर इत्र छिड़का और मिर्ज़ा को सुगंधित तेलों और सुगंधों से अभिषेक किया, उसने ये शब्द कहे, "हे पर्वत, यह वह बलिदान है जो तूने माँगा था! यहाँ हमारे योद्धा तुझे प्रणाम करने के लिए एकत्रित हुए हैं, हमारी भेंट स्वीकार कर और हमें बख्श दे!" इन शब्दों से मिर्ज़ा को अपने अंत का पता चल गया, क्योंकि यद्यपि वे एक अजीब भाषा में बोले गए थे, फिर भी उन्हें अलौकिक रूप से समझ आ गए थे। जिंदा जलाए जाने का ख्याल आते ही वह भय से कांप उठा, लेकिन उसके पीले पड़े होंठों से न तो चीख निकली और न ही कोई विनती। कुछ आंतरिक संघर्ष के बाद उसने अपने अपरिहार्य भाग्य को स्वीकार कर लिया, इस उम्मीद में कि स्वर्ग के सुख ही उसका अंतिम पुरस्कार होंगे। पुजारी ने अब उसके सिर पर अंतिम आहुति डाली और उसे नए मारे गए जानवर के खून से नहलाया। आग में और ईंधन डाला गया, जिसकी लपटें पहले से ही तीव्र प्रचंडता और गर्मी के साथ उठ रही थीं। मिर्ज़ा को सिर के बल आग में गिराया ही जा रहा था कि आसपास के लोगों की चीख फूट पड़ी। पुजारी ने अपना हाथ रोक लिया और ऊपर देखा। आकाश में एक विशाल काला पर्वत उनके सिर के ऊपर लहराता हुआ धीरे-धीरे उनकी ओर उतरता हुआ दिखाई दिया। अचानक शिखर से आग की एक बाढ़ फूट पड़ी और एक भयानक आवाज सुनाई दी, "हे दुष्टों, क्या तुमने भेंट तैयार की है?" “हमने देख लिया है,” वे सब भय और भय से चीख उठे, एक धीमी गड़गड़ाहट की आवाज के साथ वह फिर से ऊपर उठ गया, जबकि वे सांस रोककर चुपचाप उसे देखते रहे जब तक कि आकाश से उसका हर निशान गायब नहीं हो गया।

फिर पुजारी ने मिर्ज़ा की ओर मुड़कर कहा, “हे प्राणी, तू जो भी हो, हमारी सुरक्षा के लिए तेरा मरना निश्चित है। हम उस दृश्य से लंबे समय से व्याकुल हैं जिसे तूने देखा था। उसने धमकी दी थी कि यदि तेरे जैसे किसी प्राणी को मृत्यु के द्वारा शांत करने के लिए नहीं भेजा गया तो वह हमें नष्ट कर देगा। अंततः किसी अच्छी आत्मा ने तुझे हमारे हवाले कर दिया है। हमारे मुख्य योद्धा की पुत्रियों ने तुझे एक खेत में सोता हुआ और असहाय पाया। वे तुझे अपने पिता के पास ले गईं और उन्होंने तुझे हमारे राजा को सौंप दिया। अब तक तूने उचित धैर्य का व्यवहार किया है, मृत्यु के समय तेरा हृदय भयभीत न हो।”

इन्हीं शब्दों के साथ मिर्ज़ा को अग्नि के हवाले कर दिया गया और उसने जो यातनाएँ सहन कीं, वे असहनीय और अवर्णनीय थीं। जैसे ही आग ने उसके पैरों और

टांगों को जकड़ा, उसने महसूस किया कि उसकी नसें चटक रही हैं, जली हुई हड्डियाँ उसके काले, राख जैसे मांस को चीर रही हैं; धीरे-धीरे उसके अंग राख में तब्दील हो गए और वह उनके अवशेषों के बीच गिर पड़ा। कुछ ही समय में उसकी असहनीय पीड़ा समाप्त हो गई। उठते हुए धुएँ ने उसे दम घोंट दिया और वह अपने बलिदानकर्ताओं की जयजयकार और खुशी के बीच दम तोड़ बैठा।

मेरी सूखी कहानी का बचा हुआ हिस्सा रहस्य के पर्दे में लिपटा हुआ है। वही मिर्ज़ा, जिसने उन दानवों के बीच कानून की कठोर यातनाएँ झेलीं, उस घटना के कितने समय बाद, कंधे पर एक झटके से अपनी मृत्यु की नींद से जागा, जिसने उसे फिर से जीवन प्रदान किया। उसने चारों ओर देखा और पाया कि वह अपनी झोपड़ी के दरवाजे के सहारे सीधा खड़ा है और उसके सामने लकड़ियों का एक गट्ठा पड़ा है। उसके आश्चर्य और खुशी का वर्णन मैं नहीं करूँगा, लेकिन अपने हाथों और पैरों की जाँच करने पर उसने पाया कि उन पर जलने के लंबे निशान और घाव थे। इससे वह थोड़ा स्तब्ध रह गया, लेकिन कुछ विचार करने के बाद उसने निष्कर्ष निकाला कि यह सब उन दुष्ट आत्माओं की चाल थी जो काकेशस पर्वतमाला में विचरण करती हैं। मैं उससे सहमत नहीं हूँ, लेकिन मेरा मानना है कि मैंने जो घटनाएँ बताई हैं वे वास्तव में घटी थीं। मिर्ज़ा को कभी पता नहीं चला कि दानव सूर्य, चंद्रमा, तारों या पृथ्वी के निवासी थे। मेरा मानना है कि वे पृथ्वी के निवासी थे।

“मेरे बेटों, तुम्हारे बीच कौन सा जादू-टोना चल रहा है कि तुम्हें आधी रात (या उसके आसपास) के चांद और आकाश के नीचे ऐसा करने की ज़रूरत है? घर लौट आओ मेरे नन्हे-मुन्ने बच्चों,” उनके ठीक पीछे से एक आवाज़ आई। वे चौंककर उठे और देखा कि उनके पिता पास ही खड़े हैं।

“मैं अभी आता हूँ,” लॉर्ड वेलेस्ली ने उत्तर दिया। “ट्रिंगिया, ट्रिंगिया तुम कहाँ हो?”

ट्रिंगिया झाड़ियों की अपनी शाखा के नीचे से उछलकर निकला और थोड़ी ही देर में ट्रिल, फिलोमेल और पोल के साथ एक गर्म, धधकती आग के सामने निजी बैठक कक्ष के कालीन पर नरम और गर्म जगह पर बैठ गया।

सी ब्रोंटे

हरा बौना

द ग्रीन ड्वार्फ, शार्लोट की प्रेम कहानी है, जिसे उन्होंने अठारह वर्ष की आयु से पहले लिखा था। इसमें भाग्य के मारे प्रेमियों, छिपी हुई पहचानों और जादुई रहस्यों का समावेश है, जो सर वाल्टर स्कॉट की रचनाओं से काफी प्रभावित है। यह कथा उनके प्रारंभिक बाल्यकालीन लेखन की तुलना में कहीं अधिक सुव्यवस्थित और परिष्कृत है। कहानी को आगे बढ़ाने के लिए फ्लैशबैक का उपयोग एक सरल, लेकिन सफल प्रयास है, जो तनाव को बनाए रखने और रहस्य को गहरा करने में सहायक है। सत्रह वर्ष की आयु में ही शार्लोट एक अनुभवी लेखिका बन चुकी थीं और द ग्रीन ड्वार्फ उनकी उपन्यासकार के रूप में प्रारंभिक प्रतिभा को सिद्ध करती है।

कृपया ध्यान दें: यह उपन्यास शार्लोट के जीवनकाल में कभी प्रकाशित नहीं हुआ था और एक अपरिष्कृत पांडुलिपि से बचा हुआ है, इसलिए पाठ की मूल स्थिति के कारण विराम चिह्नों और वर्तनी में अक्सर त्रुटियां होती हैं।

सर वाल्टर स्कॉट, ऐतिहासिक कथा साहित्य के जनक, जिनके वेवरली उपन्यासों ने शार्लोट को 'द ग्रीन ड्वार्फ' लिखने के लिए प्रेरित किया।

हरा बौना

एक ऐसी कहानी जो बिल्कुल सटीक काल को दर्शाती है

लॉर्ड चार्ल्स अल्बर्ट फ्लोरियन वेलेस्ली द्वारा

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना

अध्याय एक

अध्याय दो
अध्याय तीन
अध्याय चौथा
अध्याय पाँचवाँ
छठा अध्याय
अध्याय सात
अध्याय आठवां

प्रस्तावना

मुझे बताया गया है कि दुनिया मेरी लंबी, गहरी और (मुझे कहना ही होगा) बेहद अशुभ चुप्पी पर अपनी हैरानी को दबी हुई, असंतुष्ट बड़बड़ाहट में व्यक्त करने लगी है। बाज़ार में धूसर टोपी और फटी हुई पेटीकोट पहने, आधुनिक नीले रंग की हूबहू छवि में खड़ी पाठक जनता क्या सोचती है? “लॉर्ड चार्ल्स को क्या हुआ है?” “क्या साहित्यिक सरगनाओं के कोड़े ने उन्हें कुचल दिया है? क्या उनकी प्रतिभा और लेखन का जुनून दोनों ने उन्हें एक साथ छोड़ दिया है?” “क्या अब वे मनुष्य की पीठ पर सवार होकर चंद्रमा के पहाड़ों से गुज़र रहे हैं या दुख भरे विचारों में असहाय होकर दर्द से कराहते हुए बिस्तर पर पड़े हैं?”

मुझे खेद है कि आखिरी अनुमान सच था या यूँ कहूँ कि सच था। मैं बीमार था, बहुत बीमार था, मुझे भयानक, अवर्णनीय यातनाएँ सहनी पड़ीं, जो मुख्य रूप से मुझे ठीक करने के लिए अपनाए गए भयानक उपचारों के कारण थीं। इनमें से एक था गर्म पानी में जिंदा उबालना, दूसरा था धीमी आंच पर भूनना, और तीसरा था भूख से मरने

की एक बेहद कठोर प्रक्रिया। इन बातों के प्रमाण के लिए, वर्दोपोलिस के बाहरी इलाके में स्थित वाटरलू पैलेस के पीछे रहने वाली श्रीमती कुक से संपर्क करें। मैं इस तरह के उपचार से कैसे बच पाया, या मेरे विजयी शरीर की शक्ति क्या रही होगी, यह समझाने में मुझसे कहीं अधिक बुद्धिमान लोग असफल रहेंगे।

यह निश्चित है कि अंततः मैं ठीक हो गया, या अधिक शालीनता से कहूँ तो स्वास्थ्य लाभ की अवस्था में पहुँच गया, लेकिन मेरे मुरझाए हुए गालों में थोड़ी-बहुत ताजगी लौटने के काफी समय बाद तक मुझे गृहणी के बैठक कक्ष के एक कोने में बंद रखा गया, कलम, स्याही और कागज का उपयोग वर्जित था, खुली हवा में कदम रखना मना था और मुझे चावल की दलिया, साबूदाना, घोंघे का सूप, मुर्गे की भुनी हुई सब्ज़ियाँ, दूध का शोरबा और भुने हुए चूहे खिलाए जाते थे। मैं यह नहीं बता सकता कि मुझे कितनी खुशी हुई जब श्रीमती रसोइयों ने एक सुहावनी गर्मी की दोपहर लगभग दो बजे मुझे बताया कि चूंकि आज का दिन सुहावना और गर्म है, इसलिए मैं थोड़ी देर के लिए बाहर टहल सकता हूँ, दस मिनट मेरे लिए नए सुंदर कपड़ों का सूट पहनने और पृथ्वी के सात चक्करों की जमा हुई गंदगी को मेरे चेहरे और हाथों से धोने के लिए पर्याप्त हैं।

जैसे ही ये आवश्यक कार्य संपन्न हुए, मैं पंखों वाली टोपी और शाही लबादा पहनकर बाहर निकल पड़ा। इससे पहले मैंने कभी भी स्वतंत्रता के सुखों को पूरी तरह से महसूस नहीं किया था। गर्म, पथरीली सड़क पर व्याप्त घुटन भरी हवा मुझे उतनी ही सुखद लग रही थी जितनी कि घने एकांत में ओस से भीगी और सुखदायक हवा। मुझे उस चिलचिलाती धूप से बचाने के लिए एक भी पेड़ नहीं था, लेकिन मुझे ऐसी किसी आड़ की कमी महसूस नहीं हुई। मैं धीरे-धीरे, लेकिन बिना लड़खड़ाए, दुकानों और घरों की छाया में रेंगता हुआ आगे बढ़ा। अचानक एक मोड़ पर बहता हुआ, सदा ठंडा समुद्र मुझ पर टूट पड़ा। मुझे उन बेचारे लोगों जैसा महसूस हुआ जो भीषण गर्मी से पीड़ित होते हैं। हरी लहरें झाग से ढके विशाल मैदानों की तरह लग रही थीं - सफेद फूल, कोमल वसंत की घास और जहाजों के घने मस्तूल - मेरी उत्तेजित कल्पना ने उन्हें ऊंचे, सुंदर पेड़ों के झुरमुटों में बदल दिया, जबकि छोटे जहाज उनकी छाया में आराम करते हुए मवेशियों का रूप धारण कर रहे थे। मैं अपने स्वाभाविक उछलते कदमों से आगे बढ़ा, लेकिन जल्द ही मेरे कमजोर घुटने लड़खड़ाने लगे। आराम किए बिना आगे बढ़ना असंभव था, इसलिए मैंने बैठने के लिए कोई जगह ढूँढी, जहाँ मैं

थोड़ी देर आराम कर सकूँ। मैं उस प्राचीन और जर्जर आंगन में था, जिसे (बड़े ही शान से) क्वाक्समीना स्क्वायर कहा जाता था, जहाँ बड, गिफोर्ड, लव-डस्ट और लगभग बीस अन्य खस्ताहाल पुरातत्वविद रहते थे। मैंने पहले वाले के घर में शरण लेने का फैसला किया, क्योंकि वह मेरा सबसे करीबी दोस्त है और वह घर सबसे अच्छी हालत में था।

बड का महल सचमुच असुविधाजनक या भद्दा नहीं था। बाहरी हिस्सा भव्य था और आधुनिक राजमिस्त्रियों द्वारा बड़ी समझदारी से मरम्मत किया गया था (हालांकि इस काम की वजह से उसके लगभग सभी पड़ोसियों ने उसकी आलोचना की थी) और अंदर का हिस्सा अच्छी तरह से सुसज्जित था। मैंने दरवाजा खटखटाया, एक बूढ़े नौकर ने खोला जिसके बाल सफ़ेद थे। जब मैंने उससे पूछा कि क्या उसका मालिक घर पर है, तो वह मुझे ऊपर एक छोटे लेकिन सुंदर कमरे में ले गया। वहाँ मैंने बड को फटे हुए कागज़ों और कचरे से घिरी एक मेज पर बैठे हुए पाया और वह अपने हाथ में पकड़े हुए जंग लगे घुटनों के बकल से मार्क्विस ऑफ डौरो और एक दूसरे पिल्ले को खूब कुछ सुना रहा था, जो बड़ी विनम्रता से आग की ओर पीठ करके उसके सामने खड़े थे।

जब मैं अंदर दाखिल हुआ तो उस भले-बुजुर्ग सज्जन ने कहा, "मेरी प्यारी को क्या हो गया है? यह इतनी पीली और मुरझाई हुई क्यों दिख रही है? मुझे उम्मीद है कि यह ट्रीज़ की पुरानी बकवास से होने वाली निराशा नहीं है।"

“भगवान भला करे,” मेरे कुछ बोलने से पहले ही आर्थर ने कहा, “ये कितना छोटा और भद्दा दिख रहा है! मैंने इसे जो कोड़े मारे हैं, उनका असर इसके छोटे से शरीर पर अच्छे से दिख रहा है। अरे चार्ली, अभी तक कोई दर्द तो नहीं हुआ?”

मैंने कहा, "भाई की हत्या करने वाले, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई अपने अधमरे भाई से इतनी आसानी से बात करने की, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यह पूछने की कि क्या तुम्हारे द्वारा दी गई यातनाएँ अभी भी उसके पीड़ादायक शरीर को तड़पा रही हैं?"

उसने इस अपील का जवाब एक ऐसी हंसी से दिया, जिसका उद्देश्य निस्संदेह अपने सफेद दांत दिखाना था, और एक ऐसी व्यंग्यात्मक मुस्कान से दिया, जो उसकी तीक्ष्ण बुद्धि को उजागर करने के लिए थी, और उसी क्षण उसने धीरे से अपनी घुड़सवारी की छड़ी को छुआ।

“नहीं, मेरे स्वामी,” बड ने इस महत्वपूर्ण चाल को देखते हुए कहा, “अब इस तरह

का कोई हिंसक खेल न खेलें - अगर आपको कोई आपत्ति नहीं है तो आप सचमुच उस लड़के को मार डालेंगे।”

उन्होंने कहा, "मैं अभी उससे उलझने वाला नहीं हूँ। फिलहाल वह लड़ने की हालत में नहीं है, लेकिन अगर उसने फिर से मुझे अपमानित किया, जैसा कि उसने पहले किया है, तो मैं उसकी लाश पर एक भी खाल नहीं छोडूंगा।"

इसके अलावा वह और क्या-क्या क्रूर धमकियां देता, यह तो मुझे पता नहीं, लेकिन इसी क्षण खाने के लिए लोगों के आने से उसकी बात में बाधा पड़ गई।

“माई लॉर्ड एंड कर्नल मॉर्टन,” बड ने कहा, “मुझे उम्मीद है कि आप रुकेंगे और मेरे साथ थोड़ा भोजन करेंगे, अगर आपको मेरा सादा भोजन आपके नाज़ुक स्वाद के लिए बहुत भद्दा न लगे।”

“मेरी कसम कैप्टन,” आर्थर ने उत्तर दिया, “आपका बैचलर डिनर बहुत अच्छा लग रहा है और अगर नाश्ते के बाद दो घंटे से ज़्यादा समय न बीता होता तो मुझे भी इसे खाने का बहुत मन करता। कल रात या यूँ कहें कि आज सुबह मैं छह बजे सोया था और बारह बजे उठा, इसलिए आप जानते हैं कि शाम सात या आठ बजे तक डिनर करना संभव नहीं है।”

मॉर्टन ने भी इसी तरह का बहाना बनाकर खुद को विदा किया और कुछ ही देर बाद दोनों सज्जन मेरी संतुष्टि के लिए वहां से चले गए।

जब वे चले गए तो मेरे दोस्त ने कहा, "अब चार्ली, मुझे पता है तुम मुझे अपना साथ दोगे, इसलिए मेरे सामने उस आरामकुर्सी पर बैठ जाओ और चलो जमकर मुक्केबाजी करते हैं।"

मैंने उनका निमंत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया क्योंकि मुझे पता था कि अगर मैं घर लौट गया तो श्रीमती कुक मुझे रात के खाने में गंदे, कीड़े-मकोड़ों से भरे नाश्तों के अलावा कुछ नहीं देंगी। भोजन के दौरान हमने ज्यादा बात नहीं की क्योंकि बड को खाने के समय ज्यादा बातचीत पसंद नहीं थी और मैं पिछले एक महीने से भी ज्यादा समय से खाए गए सबसे स्वादिष्ट भोजन के बारे में चर्चा करने में इतना मशगूल था कि किसी कम महत्वपूर्ण बात पर ध्यान देने का समय ही नहीं था। हालांकि, जब मेज साफ हो गई और मिठाई परोसी गई, तो बड ने गोल मेज को खुली खिड़की के पास खिसकाया, एक गिलास शराब डाली, अपनी गद्देदार कुर्सी पर बैठ गया और फिर उस शांत, संतुष्टि भरे स्वर में बोला जो पुरुष तब बोलते हैं जब वे पूरी तरह से सहज होते

हैं:

"चार्ली, हम किस बारे में बात करेंगे?"

मैंने जवाब दिया, "जो आपको पसंद हो।"

“कुछ भी?” उसने कहा, “इसका मतलब तो कुछ भी नहीं है, लेकिन आप क्या चाहेंगे?”

“प्रिय बड,” मेरा जवाब था, “चूंकि आपने मुझ पर विषय चुनने की कृपा की है, इसलिए मुझे आपकी मनमोहक कहानियों में से एक को सुनने से ज्यादा आनंद किसी और चीज में नहीं आएगा; यदि आप एक बार मुझ पर कृपा करेंगे, तो मैं आपका सदा आभारी रहूंगा।”

बेशक, सभी कहानीकारों की सर्वमान्य प्रथा के अनुसार, बड ने पहले तो इनकार कर दिया, लेकिन बहुत सारी चापलूसी, मनाने और विनती करने के बाद अंततः उसने मेरा अनुरोध मान लिया और निम्नलिखित घटनाएँ सुनाईं, जिन्हें मैं अब पाठक के सामने ठीक उसी रूप में प्रस्तुत नहीं कर रहा हूँ जिस रूप में मैंने उन्हें सुना था, बल्कि भाव और तथ्यों को पूरी तरह से संरक्षित करते हुए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

10 जुलाई -33. सी. वेलेस्ली

अध्याय एक

लगभग बीस वर्ष पहले, जो अब वर्दोपोलिस का मध्य भाग है, लेकिन तब उसका अंतिम छोर था, वहाँ एक विशाल अनियमित इमारत थी जिसे जिनी का सराय कहा जाता था। इसमें पाँच सौ से अधिक कमरे थे, सभी आरामदायक और कुछ शानदार ढंग से सुसज्जित थे, जो यात्रियों के ठहरने के लिए बनाए गए थे, जिन्हें इस विशाल सराय में निःशुल्क ठहराया जाता था। इस उदार व्यवस्था के परिणामस्वरूप, यह

लगभग हर देश के यात्रियों का एकमात्र ठिकाना बन गया, जो मेजबान और मेजबानिनों के संदिग्ध चरित्र के बावजूद, जो चार प्रमुख जिनी, टैली, ब्रानी, एमी और एनी थे, और वेटर और अन्य परिचारकों की घृणित दुष्टता के बावजूद, जो उच्च पदों पर उसी प्रजाति की अधीनस्थ आत्माओं द्वारा भरे जाते थे, भारी संख्या में वहाँ आते रहते थे; उनके भागते कदमों की आहट, शोरगुल भरी मस्ती की आवाज और कारोबार की हलचल अब खंडहर हो चुके मेहराबों, नम, फफूंदी लगे तहखानों, अंधेरे गलियारों और सुनसान कमरों में थम गई है। यह कभी एक भव्य इमारत थी जो महान विद्रोह में नष्ट हो गई थी और अब ग्रेट वर्डोपोलिस के हृदय में खामोश और अकेली खड़ी है। लेकिन हमारा काम अतीत से है, वर्तमान से नहीं, इसलिए आइए उदासी को उल्लुओं पर छोड़ दें और सकारात्मक पक्ष देखें; 4 जून 1814 की शाम को इसका नज़ारा कुछ अलग ही था। उस दिन सामान्य से अधिक अतिथि आए थे, जिसका कारण अगले दिन होने वाला एक भव्य उत्सव था। विशाल हॉल किसी रंगीन वेशभूषा वाले उत्सव जैसा लग रहा था। एक हिस्से में फुटपाथ पर पालथी मारकर बैठे तुर्की व्यापारियों का एक समूह था, जो उन दिनों वर्डोपोलिस के दुकानदारों और नागरिकों के साथ मसालों, शॉल, रेशम, मलमल, आभूषण, इत्र और अन्य पूर्वी विलासिता की वस्तुओं का व्यापार करते थे। वे अपनी लंबी पाइप पीते और बढ़िया शरबत पीते हुए, अपने लिए रखे गए कुशनों पर आराम से बैठे थे। उनके पास ही कुछ सांवले, धूप से झुलसे स्पेनिश लोग मोर की तरह शान से इतरा रहे थे। माना जाता है कि मोर नीचे देखने की हिम्मत नहीं करता, कहीं उसके पैर उसके आत्मसंतुष्ट भाव को भंग न कर दें। सृष्टि के इन स्वामियों से कुछ ही दूरी पर स्टंप्स द्वीप से आए गोल-मटोल, गुलाबी चेहरे वाले, घुंघराले बालों वाले, सीधे पैरों वाले और एक जूता पहने प्राणियों का एक समूह बैठा था, जहाँ उस समय लगभग विलुप्त हो चुकी प्राणियों की वह जाति हरे-भरे तेजपत्ता की तरह फल-फूल रही थी। एक दर्जन से अधिक जिन्न उन्हें खरबूजे और चावल की खीर उपलब्ध कराने में लगे हुए थे, जिसके लिए वे लगातार दहाड़ रहे थे।

हॉल के दूसरे छोर पर पांच-छह पीले-पीले, चिड़चिड़े अंग्रेज हरी चाय की चुस्की लेते हुए बातचीत कर रहे थे। उनके पीछे मुरझाए हुए कुछ सज्जन बैठे एक-दूसरे को बढ़िया सफेद ब्रेड, खास तौर पर लज़ीज़ प्रशियन मक्खन, सुगंधित अखरोट, भूरी चीनी और कैलिको भेंट कर रहे थे। इन अधमुर बंदरों से कुछ ही दूरी पर, एक विशाल धधकती आग के चारों ओर बनी नक्काशीदार स्क्रीन के भीतर, दो सज्जन एक मेज के

सामने बैठे थे, जिस पर प्याज, केचप और लाल मिर्च के साथ परोसे गए स्वादिष्ट गोमांस के व्यंजन से धुआं निकल रहा था। मेज के बगल में बेहतरीन पुरानी कैनरी बियर का एक बड़ा चांदी का बर्तन और मसालेदार बीयर का एक बड़ा मग रखा था।

ऐसे उत्तम भोज का आनंद लेने वाले सौभाग्यशाली व्यक्तियों में से एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति था, जिसकी आयु संभवतः पचपन वर्ष रही होगी। उसके जंग लगे काले वस्त्र, पाउडर से सजी विग और माथे पर पड़ी झुर्रियाँ एक साथ विद्वान और दिखावे से घृणा करने वाले व्यक्ति का भाव प्रकट करती थीं। दूसरा व्यक्ति अपने साथी से बिलकुल विपरीत था; वह अपने जीवन के यौवन में था और देखने में छब्बीस-सात वर्ष से अधिक आयु का नहीं लग रहा था। हल्के भूरे बालों की लटें, जो लापरवाही से लेकिन सुरुचिपूर्ण ढंग से घुंघराली थीं, उसके सुंदर चेहरे की विशेषताओं पर खूब जँच रही थीं, हालाँकि वे पूरी तरह से नियमित नहीं थीं। उसकी चमकीली और साहसी नीली आँखें उसके भावों में चार चाँद लगा रही थीं। बलवान और सुगठित शरीर पर सैन्य पोशाक उसे और भी आकर्षक बना रही थी, जबकि उसका सीधा खड़ा होना और शालीनता से बात करना उसके पेशे की प्रकृति को और भी पुष्ट कर रहा था।

“यह नौजवान सिपाही,” बड ने चमकती आँखों से कहा, “मैं ही था, चार्लेव, तुम हँस सकते हो;” क्योंकि मैं अपने अब कुछ बूढ़े और मोटे दोस्त की गरिमापूर्ण उपस्थिति की तुलना उसके द्वारा दिए गए उसके पुराने रूप के वर्णन से करके अपनी हँसी रोक नहीं पाया। “तुम हँस सकते हो, लेकिन मैं कभी उतना ही बहादुर नौजवान था जितना कोई सिपाही तलवार चला सकता है। अफसोस, एक दिन मुसीबतें आती हैं, लेकिन अच्छी शराब और खुशहाल जीवन इंसान को बुरी तरह बदल देते हैं।”

लेकिन पाठक पूछेंगे कि ऊपर उल्लेखित दूसरे सज्जन कौन थे? वे जॉन गिलफोर्ड थे, जो उस समय एनसाइन बड के घनिष्ठ मित्र थे, जैसे अब कैप्टन बड के हैं। जब तक उनका स्वादिष्ट भोजन चलता रहा, तब तक गहरी शांति छाई रही, लेकिन जब गोमांस का आखिरी निवाला, प्याज का आखिरी टुकड़ा, लाल मिर्च का आखिरी दाना और केचप की आखिरी बूंद गायब हो गई, तो गिलफोर्ड ने अपना चाकू और कांटा नीचे रख दिया, एक गहरी आह भरी और अपने तीखे जबड़े खोलते हुए कहा, "अच्छा बड, मुझे लगता है कि ये मूर्ख जो हम यहाँ स्वर्ग की सभी हवाओं से एकत्रित होकर देख रहे हैं, कल की चकाचौंध और व्यर्थता को देखने के अयोग्य उद्देश्य से हमारे बेबीलोनियन शहर में आए हैं।"

दूसरे ने उत्तर दिया, "निस्संदेह, और मुझे पूरी उम्मीद है कि आप भी उनकी प्रदर्शनी में अपनी उपस्थिति से उन्हें सम्मानित करने में संकोच नहीं करेंगे।"

“मैं!” वरिष्ठ सज्जन लगभग चिल्लाते हुए बोले, “मैं तो रथों की दौड़, घोड़ों की उछल-कूद, जंगली जानवरों का उत्पात, तीरंदाजी का बेतुका हुनर और पहलवानों का क्रूर खेल देखने जाता हूँ! क्या तुम पागल हो गए हो या तुम्हारा दिमाग अच्छी शराब और जायफल वाली बीयर से खराब हो गया है?” यहाँ वक्ता ने अपना गिलास जायफल वाली बीयर से भर लिया।

“मैं न तो गिलफोर्ड हूँ और न ही वो,” बड ने उत्तर दिया, “लेकिन मैं यह कहने का साहस करूँगा कि जहाँ तक आप उन दिखावटी और व्यर्थ की चीजों को तुच्छ समझते हैं, जिन्हें आप तुच्छ समझते हैं, आपसे कहीं बेहतर लोग उन्हीं के कारण कल की प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

“अरे! और मुझे लगता है कि तुम भी उन्हीं मूर्खों में से हो।”

“जी हाँ, बिल्कुल सही कहा! मुझे इस बात को स्वीकार करने में कोई शर्म नहीं दिखती।”

“क्या तुम सचमुच ऐसा नहीं सोचते, ओ दोस्त? मुझे कभी-कभी उम्मीद होती है कि तुम्हें इन सब कामों की मूर्खता का एहसास होने लगा है। मैं कभी-कभी कल्पना करने की हिम्मत करता हूँ कि एक दिन तुम उस चुनिंदा समूह के सदस्य बनोगे जो हमारे इस पतित युग की कमजोर और तुच्छ बातों को तिरस्कार करते हुए, अतीत के चिंतन में मग्न हो जाते हैं, जो कुछ लोगों की तरह सोने और रत्नों को महत्व देते हैं, हर उस अवशेष को, चाहे वह कितना भी छोटा हो, कितना भी तुच्छ क्यों न लगे, जो बीती पीढ़ियों की याद दिलाता है।”

“हे भगवान, गिफोर्ड! आप कैसे बोलते हैं! मुझे मेलकीज़ेडेक का पवित्र मदिरा का प्याला, अब्राहम के ऊंटों को चरागाहों में बांधने वाली रस्सियाँ या यहाँ तक कि हमारे ही किसी महान प्राचीन व्यक्ति की जांघ की हड्डी और कंधे की हड्डी देखना अच्छा लगता है, भले ही ये चीजें किसी मरे हुए हाथी के अवशेष ही क्यों न हों। (अहा, गिफोर्ड, आपने सही कहा!) लेकिन इन चीजों को अपने जीवन का गंभीर विषय बनाने की बात हो, तो मुझे फांसी क्यों न दी जाए अगर मैं बारह साल बीतने से पहले ही इस पेशे में लग जाऊं।”

“तुम मूर्खों की तरह बोलते हो,” गिफ ने गंभीरता से उत्तर दिया, “लेकिन फिर भी

तुम्हारे अंतिम शब्दों से मुझे थोड़ी तसल्ली मिली। क्या भविष्य में कभी तुम उस महान उद्देश्य पर गंभीरता से विचार करोगे जिसके लिए हम सभी को इस दुनिया में लाया गया है?”

"हो सकता है हाँ और हो सकता है ना, लेकिन चाहे मैं करूँ या न करूँ, मेरा प्यारा सा बच्चा, स्टिंगो, ऐसा लगता है कि उसे पुरातत्वविद् और वकील दोनों बनने में कोई आपत्ति नहीं होगी।"

“हा! यह कौन सा प्यारा लड़का है जिसे मैंने कल आपके घर पर देखा था, जिसके युवा चेहरे पर उसकी कम उम्र से कहीं अधिक आशाजनक गंभीरता झलकती है?”

“वही चिड़चिड़ा, बदमिजाज और गुस्सैल बच्चा है।” “मेरे प्यारे दोस्त,” गिफोर्ड ने बड़ी गंभीरता से कहा, “ध्यान रखना कि तुम उस आशाजनक फूल को खिलने से न रोको, मेरी बात मानो, वह अपने देश के लिए गौरव बनेगा और ये खिलौने उसे दे दो (अपनी जेब से कुछ गोल पत्थर निकालते हुए) और उससे कहो कि मुझे कोई संदेह नहीं है कि प्राचीन ब्रितानियों के बच्चे इन्हें कंचों की तरह इस्तेमाल करते थे, निःसंदेह वह इनकी कद्र करना सीख जाएगा।”

"ज़रूर वो खरीदेगा, लेकिन मेरे प्यारे दोस्त, अगली बार जब तुम स्टिंगो को कोई तोहफा दो तो कानून पर कोई छोटी-सी किताब देना। वो मेरी लाइब्रेरी में इस तरह की किताबें ढूंढता रहता है और शिकायत करता है कि उसे अपनी पसंद की किताब मुश्किल से ही मिलती है।"

“देवदूत!” गिफोर्ड ने परमानंद में कहा, “जैसे ही मैं घर पहुँचूँगा, मैं उन्हें कानूनों के अपने संकलन का एक संपूर्ण संस्करण भेजूँगा, उन्हें भूख और कुपोषण की पीड़ा में अधिक समय तक तड़पना नहीं पड़ेगा।”

“आप बहुत दयालु हैं,” बड ने कहा, “लेकिन चलिए विषय बदलते हैं। मुझे पता चला है कि कल ब्रेवी राष्ट्रपति पद संभालने वाले हैं। मुझे आश्चर्य है कि विजेताओं को कौन पुरस्कृत करेगा।”

"ऐसा अक्सर नहीं होता कि मुझे अपनी उपस्थिति में होने वाली व्यर्थ की बातचीत याद रहे, लेकिन मैंने आज सुबह सुना कि लेडी एमिली चार्ल्सवर्थ को उस सम्मान से नवाजा जाने वाला है।"

“क्या सच में? बहुत बढ़िया! इससे बेहतर चुनाव हो ही नहीं सकता था - उनकी सुंदरता ही कल की सारी कार्यवाही को और भी शानदार बना देगी। अब मुझे

ईमानदारी से बताओ गिफ़, क्या तुम्हें नहीं लगता कि लेडी एमिली धरती की सबसे खूबसूरत प्राणी हैं?"

"वह देखने में काफी सुंदर है," गिफोर्ड ने उत्तर दिया, "अर्थात उसके वस्त्र उसके व्यक्तित्व के अनुरूप होते हैं, लेकिन मुझे डर है कि उसका दिमाग एक बंजर, बिना खेती वाला खेत है, जो जहाँ पूरी तरह से बंजर नहीं है, वहाँ तुच्छता के खरपतवारों की एक घनी फसल उगाता है।"

मैंने क्रोधित होकर कहा, "अहंकारी बूढ़े घमंडी! क्या तुम्हारे अंदर ऐसी दिव्यता का सार है कि तुम सड़ी हुई किताबों का अध्ययन करके और कीड़ों से खाए हुए कानून के ग्रंथों पर झुककर उसके गुलाबों को मुरझा दोगे?"

"बिल्कुल ऐसा नहीं है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि वह उन प्रतिभाओं को निखारे जिनसे प्रकृति ने उसे नवाज़ा है, इसके लिए वह आपके द्वारा उल्लेखित विषयों पर संक्षिप्त ग्रंथों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करे, जिन्हें किसी योग्य और विवेकी व्यक्ति ने अच्छी तरह से समझाया हो। जब उसके चाचा ने मुझे शिष्ट शिक्षा की अधिक ठोस और उपयोगी शाखाओं में उसका शिक्षक नियुक्त किया, तो मैंने स्वयं इंग्लैंड के पुरातनों पर दस क्वार्टो खंडों का एक छोटा ग्रंथ लिखा, जिसमें व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ और एक मोटे क्वार्टो खंड का परिशिष्ट था। यदि मैं उसे इस छोटे ग्रंथ को ध्यानपूर्वक और एकाग्रता से पढ़ने के लिए प्रेरित कर पाता, तो शायद उसे उस महान विज्ञान की कुछ समझ मिल जाती जिसका मैं एक अयोग्य प्रशंसक हूँ, लेकिन बुद्धि के एक विचित्र विकृति के कारण वह उन तुच्छ लोगों के निर्देशों को खुले मन से सुनती और आज्ञाकारी रूप से उनका पालन करती रही, जिन्होंने उसे संगीत, नृत्य, चित्रकारी, आधुनिक भाषाएँ आदि की खोखली कलाएँ सिखाईं, जबकि वह रेशमी या महीन लिनेन के वस्त्रों के किनारों पर फूल और अन्य कलात्मक आकृतियाँ बनाने में भी कभी-कभार समय बिताती थी, मैं अकेला ही व्यर्थ ही... मैंने उसे ज्ञान के सम्मानजनक मार्ग पर लाने का प्रयास किया, कभी मीठे शब्दों से तो कभी कठोर धमकियों से। कभी वह हँसती थी तो कभी रोती थी, और कभी-कभी (मुझे यह कहते हुए शर्म आती है) मुझे भ्रामक प्रलोभनों से रिश्वत देकर अपने उस शर्मनाक कृत्य में लिप्त कर लेती थी, जिसमें उसने पुरुष और स्त्री दोनों के लिए उपयोगी ज्ञान की उपेक्षा की थी।

"शाबाश गिफ!" बड हंसते हुए बोला, "काश वो तुम्हारे कान पर एक थप्पड़ मार

देती जब भी तुम उसे ऐसे विषयों पर परेशान करते! वैसे, क्या तुमने सुना है कि तुम्हारी प्यारी पूर्व छात्रा कर्नल पर्सी से शादी करने वाली है?”

"मैंने ऐसा नहीं किया है, लेकिन मुझे इस अफवाह पर कोई संदेह नहीं है: यही तो सभी महिलाओं का स्वभाव है। वे शादीशुदा होने के अलावा और कुछ नहीं सोचतीं, जबकि शिक्षा उनके लिए महत्वहीन होती है।"

"कर्नल पर्सी कौन है और क्या करता है?" पीछे से एक आवाज़ आई। बड ने घबराकर पीछे मुड़कर देखा कि वह अजनबी कौन हो सकता है। जैसे ही उसकी नज़र चूल्हे पर टिमटिमाती जलती हुई राख में धुंधली सी दिखाई देने वाली एक लंबी, पतली आकृति पर पड़ी, वह चौंक गया।

"दोस्त" ने अजनबी को और अच्छे से देखने के लिए आग को कुरेदते हुए कहा, "पहले मुझे बताओ कि तुम कौन हो और क्या हो जो दूसरों के बारे में ऐसे अचानक सवाल पूछते हो।"

“मैं,” उसने उत्तर दिया, “सुशासन और विद्रोहियों के दमन के लिए एक स्वयंसेवक हूँ और मुझे आशा है कि जल्द ही मैं आपके साथ एक साथी योद्धा कह सकूँगा; मेरा इरादा जल्द ही ड्यूक के झंडे तले भर्ती होने का है।”

जैसे ही अज्ञात व्यक्ति ने यह स्पष्टीकरण दिया, आधी बुझी हुई आग पर फेंकी गई झाड़ियों का एक गट्ठा तेज लपटों में बदल गया, जिससे उसका चेहरा अंधेरे में पहले की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा; वह लगभग छह फीट लंबा प्रतीत हुआ। उनकी आकृति, जो स्वाभाविक रूप से परम सुंदरता के आदर्श पर बनी थी, उनके सुरम्य लेकिन कुछ हद तक विलक्षण परिधान से और भी अधिक आकर्षक लग रही थी। इस परिधान में घुटने से थोड़ा नीचे तक पहुँचने वाली हरी बनियान और अंगरखा, लेस वाली बूट, एक बड़ा गहरा चोगा या लबादा जो एक कंधे पर भरपूर तहों में लटका हुआ था और उनकी कमर के चारों ओर बंधी चौड़ी बेल्ट से आंशिक रूप से कसा हुआ था, और काले पंखों के ऊँचे गुच्छे से सजी हरी टोपी शामिल थी। उनकी पीठ पर धनुष और तरकश लटका हुआ था, उनकी कमरबंद में दो चाकू लगे हुए थे जिनके हैंडल रत्नों से जगमगा रहे थे, और एक हाथ में पकड़ा हुआ चमकदार स्टील का लंबा भाला उनके खड़े होने के दौरान एक प्रकार का सहारा प्रदान कर रहा था। इस प्रभावशाली अजनबी के रूप और पोशाक की वीर भव्यता उनके चेहरे की मर्दाना लेकिन युवा सुंदरता के साथ अच्छी तरह से मेल खाती थी, जिसके बारीक तराशे हुए

नैन-नक्श और छोटे भूरे घुंघराले बालों से ढकी हुई चमकदार आँखें, मिश्रित गर्व और स्पष्टवादिता की अभिव्यक्ति से चमक रही थीं, जिसने दर्शक को विस्मय में डाल दिया और साथ ही उसका पूर्ण सम्मान भी प्राप्त कर लिया। प्रशंसा।"

"सचमुच, मित्र," मैंने उस युवा सैनिक के आकर्षक रूप को देखकर कहा, "यदि मैं ड्यूक होता, तो तुम्हारे जैसे रंगरूट से बहुत प्रसन्न होता। कृपया पूछिए कि आप किस देश के निवासी हैं, क्योंकि आपकी वेशभूषा और लहजा दोनों ही कुछ विदेशी लगते हैं?"

अजनबी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "आप भूल गए कि आपको मुझे जवाब देना है: मेरे पहले प्रश्न का उत्तर अभी तक नहीं मिला है।"

"हाँ, सही है," बड ने कहा, "मुझे लगता है कि आपने मुझसे पूछा था कि कर्नल पर्सी कौन हो सकते हैं?"

मैंने ऐसा किया, और मुझे उनके बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करने में बहुत खुशी होगी।

वह धनी वृद्ध ड्यूक ऑफ ब्यूफोर्ट का भतीजा और संभावित उत्तराधिकारी है।

"सचमुच! वह कब से लेडी एमिली चार्ल्सवर्थ को रिझाने की कोशिश कर रहा है?"

लगभग एक साल से।

उनकी शादी कब होने वाली है?

मुझे लगता है कि जल्द ही।

"क्या वो खूबसूरत है?"

"हाँ, लगभग उतना ही जितना आप और साथ ही उसके तौर-तरीके एक कुशल सैनिक और सज्जन व्यक्ति जैसे हैं, लेकिन इन सबके बावजूद वह एक अभिमानी, जुआरी, शराबी और निर्दयी बदमाश है।"

आप उसके खिलाफ इतनी तीखी आलोचना क्यों करते हैं?

"क्योंकि मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं। मैं उसका अधीनस्थ अधिकारी हूं और मुझे प्रतिदिन उसकी बुराइयों को देखने का अवसर मिलता है।"

क्या लेडी एमिली उनके असली चरित्र से परिचित हैं?

"शायद पूरी तरह से नहीं, लेकिन अगर वह होती भी तो मुझे नहीं लगता कि वह उससे कम प्यार करती, महिलाएं अपने होने वाले पतियों में आंतरिक योग्यताओं की तुलना में बाहरी योग्यताओं को अधिक महत्व देती हैं।"

क्या वे अक्सर सार्वजनिक रूप से एक साथ दिखाई देते हैं?

"मुझे ऐसा नहीं लगता, लेडी एमिली अपने निजी जीवन को बहुत सीमित रखती हैं। कहा जाता है कि उन्हें दिखावा पसंद नहीं है।"

क्या आप उसके स्वभाव या मिजाज के बारे में कुछ जानते हैं? क्या वह अच्छा है या बुरा, गुप्त है या स्पष्टवादी?

मुझे यकीन है कि मैं आपको बता नहीं सकती, लेकिन यहाँ एक सज्जन हैं जो इस विषय पर आपकी जिज्ञासा शांत कर सकते हैं। वे उनके शिक्षक थे और उन्हें इसके बारे में सब कुछ पता होना चाहिए। कृपया गिफोर्ड, हमें अपनी राय दें।

गिफोर्ड ने जब अपनी इस तरह की अपील सुनी तो वह उस अंधेरे कोने से बाहर निकला जिसने अब तक उसे लगभग छिपा रखा था। अजनबी उसे देखकर चौंक गया और पहचान से बचने के लिए उसने अपने चेहरे को उस बड़े लबादे के एक सिरे से ढकने की कोशिश की जिसमें वह लिपटा हुआ था। लेकिन वह सम्मानित पुरातत्वविद, जिसकी नज़र कभी तेज़ नहीं होती थी और जिसका दिमाग उस समय कुछ हद तक मसालेदार बीयर के घूंटों से उलझा हुआ था, जिसे वह अभी-अभी बेहिचक पी रहा था, उसे खाली नज़रों से देखता रहा और धीमी आवाज़ में बोला, "दोस्त, तुम्हारा मुझसे क्या काम है?"

मैं बस यह जानना चाहता था कि क्या आप इस सज्जन को बता सकते हैं कि लेडी चार्ल्सवर्थ का स्वभाव कैसा था।

“क्या ही मिजाज है! पता नहीं क्यों, अपनी उम्र की दूसरी लड़कियों जैसा ही है, और ये तो बहुत ही बुरा मिजाज है।” अजनबी मुस्कुराया और कंधे उचकाते हुए बोला, मानो कह रहा हो कि इस तरफ से कुछ खास मिलने वाला नहीं है, और कोने में विनम्रता से झुककर हॉल के एक दूर वाले हिस्से में चला गया। उसके जाने के बाद दोनों दोस्त कुछ देर चुपचाप बैठे रहे, लेकिन बड का ध्यान जल्द ही पास बैठे फ्रांसीसी लोगों के समूह से आती एक आवाज की ओर गया, जो शायद कुछ पढ़ या सुना रहा था। वह उनकी ओर बढ़ा, बोलने वाला एक छोटा, सलीके से सजा हुआ आदमी था, जिसने भूरे रंग का कोट, वेस्टकोट और क्रीम रंग की जैकेट पहनी हुई थी। बड के पास आते ही वह बहुत ही हाव-भाव और चेहरे के भावों के साथ ये शब्द बोल रहा था।

“खैर, जैसा कि मैं कह रहा था, सम्राट बिस्तर पर लेट गए। “शेवेल्यूर,” उन्होंने अपने नौकर से कहा, “कमरे से निकलने से पहले खिड़की के पर्दे गिरा दो और

खिड़की बंद कर दो।” शेवेल्यूर ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था और फिर मोमबत्ती लेकर चला गया। कुछ ही मिनटों में सम्राट को अपना तकिया थोड़ा सख्त लगने लगा और वह उसे हिलाने के लिए उठे। ऐसा करते ही, बिस्तर के सिरहाने के पास हल्की सरसराहट की आवाज सुनाई दी। महाराज ने ध्यान से सुना, लेकिन सब शांत था, इसलिए वह फिर से लेट गए। अभी वह आराम की शांतिपूर्ण मुद्रा में आए ही थे कि उन्हें प्यास लगने लगी। कोहनी के बल उठकर उन्होंने अपने बगल में रखे छोटे से स्टैंड से नींबू पानी का गिलास उठाया। उन्होंने एक बड़ा घूंट पीकर खुद को तरोताजा किया। जैसे ही उन्होंने गिलास वापस रखा, अपार्टमेंट के एक कोने में बने एक छोटे से कमरे से एक गहरी कराह सुनाई दी। “कौन है वहाँ?” सम्राट ने अपनी पिस्तौलें निकालते हुए चिल्लाकर कहा, “बोलो वरना मैं तुम्हारे दिमाग के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।” इस धमकी का कोई असर नहीं हुआ, बस एक छोटी सी तीखी हंसी आई और सन्नाटा छा गया। सम्राट अपने पलंग से उठे और कुर्सी के पीछे लटके हुए एक चोगे को जल्दी से ओढ़कर साहसपूर्वक उस प्रेतवाधित कोठरी की ओर बढ़े। जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला, कुछ सरसराहट हुई। वे तलवार हाथ में लिए आगे बढ़े, लेकिन न तो कोई आत्मा दिखाई दी और न ही कोई वस्तु। सरसराहट स्पष्ट थी कि दरवाजे पर खूंटी से लटके हुए एक चोगे के गिरने से हुई थी। खुद पर थोड़ा शर्मिंदा होकर वे वापस बिस्तर पर लौट आए। जैसे ही वे एक बार फिर अपनी आँखें बंद करने वाले थे, चादर के ऊपर चांदी की शाखा में जल रही तीन मोमबत्तियों की रोशनी अचानक बुझ गई। उन्होंने ऊपर देखा। एक काली धुंधली परछाई ने उसे ढक लिया था। डर से पसीना बहाते हुए सम्राट ने घंटी की रस्सी पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन किसी अदृश्य प्राणी ने उसे बेरहमी से उनके हाथ से छीन लिया और उसी क्षण वह अशुभ परछाई गायब हो गई। "छी!" नेपोलियन चिल्लाया, "यह तो बस आँखों का भ्रम था।"

“क्या यह वही था?” एक खोखली, रहस्यमयी आवाज़ उसके कान के पास फुसफुसाई, “क्या यह एक भ्रम था, फ्रांस के सम्राट? नहीं, तुमने जो कुछ सुना और देखा है, वह दुखद चेतावनी देने वाली वास्तविकता है। उठो, ईगल ध्वजवाहक, जागो, लिली राजदंड के स्वामी, मेरे पीछे आओ, नेपोलियन, और तुम और भी बहुत कुछ देखोगे।” जैसे ही आवाज़ बंद हुई, उसकी आश्चर्यचकित आँखों के सामने एक आकृति प्रकट हुई। वह एक लंबा, पतला आदमी था जिसने सोने की फीती से सजे नीले रंग का ओवरकोट पहना हुआ था। उसके गले में एक काली टाई बहुत कसकर बंधी हुई

थी, जिसे दोनों कानों के पीछे दो छोटी छड़ियों से बांधा गया था। चेहरा पीला पड़ गया था, जीभ दांतों के बीच से बाहर निकली हुई थी और आँखें बेजान और खून से लाल थीं, मानो अपनी जगह से बाहर निकली हुई हों। "हे भगवान!" सम्राट ने कहा, "मैं क्या देख रहा हूँ? भयानक? प्रेत, तुम कहाँ से आए हो?" वह प्रेत कुछ बोला नहीं, बल्कि आगे बढ़ते हुए नेपोलियन को उंगली उठाकर अपने पीछे आने का इशारा किया। एक रहस्यमयी शक्ति के वश में, जिसने उसे सोचने या कार्य करने की क्षमता से पूरी तरह वंचित कर दिया था, वह चुपचाप आज्ञा का पालन करता रहा। जैसे ही वे पास पहुँचे, अपार्टमेंट की ठोस दीवार खुल गई और जब दोनों उससे गुज़र गए, तो वह उनके पीछे गरज जैसी आवाज़ के साथ बंद हो गई। अगर चारों ओर फैली एक हल्की नीली रोशनी न होती, तो वे घोर अंधेरे में होते। उस प्रेत ने एक लंबे, गुंबददार गलियारे की नम दीवारों को प्रकट किया। वे चुपचाप तेज़ी से उस गलियारे में आगे बढ़े। थोड़ी देर बाद, एक ठंडी, ताज़ा हवा गुंबद से ऊपर की ओर तेज़ी से आई और सम्राट को अपने ढीले नाइट ड्रेस को और कसकर लपेटने पर मजबूर कर दिया, जिससे उन्हें खुले आसमान के नीचे आने का आभास हुआ। वे जल्द ही वहाँ पहुँच गए और नेपोलियन ने खुद को पेरिस की प्रमुख सड़कों में से एक पर पाया। "हे पवित्र आत्मा," ठंड में कांपते हुए उसने कहा, "मुझे वापस जाने और कुछ और कपड़े पहनने की अनुमति दीजिए, मैं अभी आपके पास वापस आऊंगा।" "आगे बढ़ो," उसके साथी ने सख्ती से जवाब दिया। बढ़ते गुस्से के बावजूद, जो लगभग उसका गला घोंट रहा था, वह आज्ञा मानने के लिए विवश था। वे सुनसान गलियों से होते हुए सीन नदी के किनारे बने एक ऊंचे घर तक पहुंचे। यहां प्रेत रुका, द्वार उनके स्वागत के लिए खुल गए और वे एक विशाल संगमरमर के हॉल में प्रवेश कर गए, जो आंशिक रूप से एक पर्दे से ढका हुआ था। उस पर्दे की अर्धपारदर्शी परतों से एक तेज रोशनी चकाचौंध भरी चमक के साथ जलती हुई दिखाई दे रही थी। इस हॉल के सामने भव्य वस्त्रों से सजी सुंदर महिलाओं की एक पंक्ति खड़ी थी; प्रत्येक ने अपने सिर पर सबसे सुंदर फूलों की मालाएं पहन रखी थीं, लेकिन उनके चेहरे मृत्यु के सिर का प्रतिनिधित्व करने वाले भयानक मुखौटों से ढके हुए थे। "यह सब क्या नाटक है?" सम्राट ने अपने मानसिक बंधनों को तोड़ने का प्रयास करते हुए कहा, "मैं कहां हूं और मुझे यहां क्यों लाया गया है?" "चुप रहो," गाइड ने अपनी काली और खून से सनी जीभ को और बाहर निकालते हुए कहा, "चुप रहो, अगर तुम पल भर की मौत से बचना चाहते हो।" सम्राट जवाब देना

चाहते थे, उनका स्वाभाविक साहस उस क्षणिक भय पर विजय पा रहा था जिसके वे पहले शिकार हुए थे, लेकिन तभी विशाल पर्दे के पीछे से एक जंगली अलौकिक संगीत की धुन गूंज उठी, जो इधर-उधर लहरा रहा था और धीरे-धीरे फूल रहा था, मानो किसी आंतरिक हलचल या युद्धरत हवाओं के युद्ध से उत्तेजित हो रहा हो। उसी क्षण, नश्वर भ्रष्टाचार की गंधों का एक प्रचंड मिश्रण, जो पूर्वी देशों की सबसे समृद्ध सुगंधों के साथ मिश्रित था, उस प्रेतवाधित हॉल में फैल गया। अब दूर से कई आवाजों की फुसफुसाहट सुनाई दी। किसी ने पीछे से उनका हाथ जोर से पकड़ लिया, वे जल्दी से मुड़े, उनकी नजर मारिया लुइसा के जाने-पहचाने चेहरे पर पड़ी। “तुम भी इस नरक में क्या कर रही हो?” उन्होंने कहा, “तुम्हें यहाँ क्या लाया है?” “महाराज, क्या मैं आपसे भी यही प्रश्न पूछ सकती हूँ?” महारानी ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया - आश्चर्य ने उन्हें रोक दिया। अब उसके और प्रकाश के बीच कोई पर्दा नहीं था। मानो जादू से पर्दा हट गया हो और उसके सिर के ऊपर एक शानदार झूमर लटकता हुआ दिखाई दिया। कीमती वस्त्र पहने, लेकिन मुखौटे न लगाए, महिलाओं की भीड़ उसके चारों ओर खड़ी थी और उनके साथ कुछ खुशमिजाज घुड़सवार भी थे। संगीत अभी भी बज रहा था, लेकिन अब ऐसा लग रहा था कि यह पास ही स्थित एक ऑर्केस्ट्रा में मौजूद नश्वर संगीतकारों के एक समूह से आ रहा है। हवा में अभी भी अगरबत्ती की खुशबू थी, लेकिन यह दुर्गंध रहित अगरबत्ती की खुशबू थी। सम्राट ने पुकारा, "हे भगवान! यह सब कैसे हुआ? पिचे आखिर कहाँ है?" महारानी ने उत्तर दिया, "पीचे? महाराज, आपका क्या मतलब है? क्या आपको बेहतर होगा कि आप कमरा छोड़कर आराम करने न चले जाएँ?" "कमरा छोड़ दूँ! मैं कहाँ हूँ?" “मेरे निजी ड्राइंग-रूम में, दरबार के कुछ खास लोगों से घिरे हुए, जिन्हें मैंने आज शाम एक भोज में आमंत्रित किया था, आप कुछ मिनट पहले अपनी रात्रि पोशाक में, आँखें खुली और स्थिर लिए हुए अंदर आईं। मुझे लगता है कि अब आप जिस हैरानी से गवाही दे रही हैं, उससे यह स्पष्ट है कि आप नींद में चल रही थीं।” सम्राट तुरंत कैटालेप्सी (नींद में चलने की एक तीव्र अवस्था) के दौरे में चले गए, जो उस पूरी रात और अगले दिन के अधिकांश भाग तक जारी रहा।

जैसे ही उस छोटे आदमी ने अपनी कहानी समाप्त की, नीले और सुनहरे रंग की वर्दी पहने एक व्यक्ति आसपास मौजूद श्रोताओं की भीड़ के बीच से तेजी से गुजरा और अपने हाथ में पकड़ी हुई एक प्रकार की आधिकारिक छड़ी से कथावाचक को छूते

हुए कहा, "वह उसे सम्राट के नाम पर गिरफ्तार करता है।"

“किसलिए?” उस छोटे आदमी ने पूछा।

“किसलिए!” हॉल के दूसरे छोर से एक आवाज़ दोहराई गई, “वह उसे बता देगा कि किस लिए। उस शर्मनाक किस्से का क्या मतलब है, उसे जानना चाहिए, उसे तुरंत बास्टिल जेल भेज दो।”

सभी की निगाहें इस निर्णायक आदेश के प्रदाता की ओर थीं, और देखो! वही सम्राट अपने हमेशा के हरे ओवरकोट और बैंगनी रंग की पैंट में लगभग बीस सैनिकों से घिरे खड़े थे, जो लगातार और बिना रुके तंबाकू पी रहे थे: अब सबका ध्यान महान नेपोलियन की ओर आकर्षित हो गया था और बेचारा छोटा तंबाकू प्रेमी बिना किसी और सूचना या दया के बास्टिल की ओर रवाना हो गया, क्योंकि अब बहुत देर हो चुकी थी और प्रतिष्ठित अतिथि के आगमन से मेहमानों में मची हलचल और अफरा-तफरी के कारण सराय में अफरा-तफरी मची हुई थी। बड और गिफोर्ड, जिनके लिए सम्राट कोई अपरिचित नहीं थे, ने वहां से विदा लेना उचित समझा। वे पहली गली से एक साथ चले और फिर चूंकि उनके रास्ते विपरीत दिशाओं में थे, इसलिए रात के लिए अलग हो गए।

अध्याय दो

एक सुहावनी और उमस भरी गर्मी की सुबह ने अफ्रीकी ओलंपिक खेलों के पहले उत्सव का शुभारंभ किया।* (जैसा कि अखबारों में बताया गया है) तड़के ही एम्फीथिएटर लगभग हर तरफ से खचाखच भर गया था, सिवाय एक वर्ग मील के खुले क्षेत्र के जो प्रतियोगियों के लिए आवंटित था और उन निजी सीटों के जो कुलीन वर्ग और अन्य विशिष्ट व्यक्तियों के लिए आरक्षित थीं।

खेलों का स्थल उस समय ठीक वैसा नहीं था जैसा आज है। इसके तीन ओर स्थित

मकान उस समय नवनिर्मित थे; कुछ तो आधे-अधूरे ही बने थे और कुछ की तो केवल नींव ही खोदी गई थी। फ्रेडरिक्स क्रैग नामक ऊँची पहाड़ी, जो चौथी ओर घेरा पूरा करती है और जिसकी चोटी आज उद्यानों और भव्य निजी आवासों से ढकी हुई है, उस समय एक घना जंगल थी जिसकी प्राचीन गूँज अभी तक लकड़हारे की कुल्हाड़ी की आवाज़ से अछूती थी। हाल ही में काटे गए कुछ पेड़ों के ठूंठ भी नव-सफाई किए गए मैदान के बीच में दिखाई दे रहे थे, लेकिन मेरे विचार में यह एक प्रश्न है कि क्या एम्फीथिएटर के आसपास के क्षेत्र में हुए व्यापक सुधारों से इस स्थल ने अपनी भव्यता और पूर्णता में जो वृद्धि की है, उसकी तुलना में इसकी मनोरम विविधता में कोई कमी तो नहीं आई है। उस यादगार सुबह, ऊँचे-ऊँचे भव्य वृक्ष अपनी ओस से भीगी शाखाओं को कभी नीले आकाश की ओर लहरा रहे थे, जो उनके ठीक ऊपर प्रतीत होता था, और कभी उतने ही लोगों, राष्ट्रों के सिर के ऊपर।

नबूकदज़ेज़र के फरमान के अनुसार, दुरा के मैदानों में एकत्रित हुई भाषाएँ और रिश्तेदारियाँ, परिदृश्य में एक जंगलीपन और वनमय भव्यता का संचार करती हैं, जो मेरी राय में हमारे महान शहर द्वारा उनके स्थान पर बनाई गई सुंदरता के किसी भी कृत्रिम रूप से अधिक शक्तिशाली और उच्चतर आकर्षण प्रदान करने में सक्षम होगी।

एक घंटे की बेसब्री से प्रतीक्षा के बाद, दूर से आती संगीत की ध्वनि ने प्रमुख व्यक्तियों के आगमन की सूचना दी। ब्रेवी धीरे-धीरे और शान से आगे बढ़े, उनके पीछे कुलीनों का एक भव्य दल चल रहा था। उनका लंबा और प्रभावशाली व्यक्तित्व सोने की कढ़ाई से सजे बैंगनी रंग के विशाल वस्त्र से और भी निखर रहा था। उन्होंने सर्वव्यापी तालियों के बीच अध्यक्ष के सिंहासन पर अपना स्थान ग्रहण किया। उनके बाद उनकी भतीजी लेडी एमिली चार्ल्सवर्थ आईं। संगीतकारों की बांसुरी और अन्य वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनि से स्वागत हुआ जब विजेताओं को पुरस्कृत करने वाली सुंदर महिला, राजसी चाल के बजाय शालीन कदमों से अपने सजे हुए आसन की ओर बढ़ी। उनका रूप अत्यंत सुंदर था, हालांकि मध्यम कद से अधिक नहीं था, और जब उन्होंने भीड़ की जोरदार तालियों का अभिवादन करने के लिए अपना लंबा सफेद घूंघट उठाया, तो एक ऐसा चेहरा प्रकट हुआ जिसे चित्रकार और कवि कल्पना में देखना पसंद करते हैं, लेकिन जो वास्तविक जीवन में शायद ही कभी देखने को मिलता है। उनके चेहरे की बनावट कोमल और नाजुक थी, रंगत स्पष्ट रूप से गोरी थी, लेकिन गालों और होंठों पर एक स्पष्ट, स्वस्थ लालिमा थी जो स्फूर्ति और ताजगी का आभास

देती थी। उनकी गहरी, चमकीली और जीवंत आंखें, लंबी पलकों और सलीके से बनी भौहों के नीचे से एक चापाकार, हंसमुख, चंचल चमक बिखेर रही थीं, जो शायद किसी प्रेम कहानी की नायिका के लिए उपयुक्त न हो, फिर भी उनके चेहरे में एक बेहद आकर्षक, हालांकि अवर्णनीय आकर्षण जोड़ रही थी। जैसे ही उसने अपना घूंघट हटाया और दस लाख से अधिक प्रशंसा भरी निगाहों से उसका सामना हुआ, उसके सुंदर गालों पर हल्की सी लाली छा गई। उसने विनम्रतापूर्वक लेकिन शालीनता से झुककर अभिवादन किया और अभिवादन के जवाब में अपना सफेद हाथ कांपते हुए हिलाया, लेकिन जल्द ही उसने खुद को संभाल लिया, उसके सामने के दृश्य ने उसके संवेदनशील मन में उच्च कोटि की भावनाएँ जगा दीं।

नीला और शांत आकाश, घना और गहरा जंगल और दूर तक फैले पर्वतीय क्षेत्र का विस्तृत दृश्य, दूरी के बैंगनी रंगों से रंगा हुआ, जीवित और गतिशील प्राणियों के विशाल समूह, महान शहर और उससे परे असीम समुद्र के साथ विपरीत प्रतीत होता है। ये परिस्थितियाँ, साथ ही संगीत की ध्वनि जो अब मंद पड़ चुकी है...

गंभीर लेकिन अत्यंत प्रेरणादायक स्वर में उद्घोषकों ने प्रथम पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाले रथ चालकों को आगे आने का आह्वान किया, जिससे प्रकृति की सरल भव्यता और कला की प्रभावशाली भव्यता के प्रति हर किसी के मन में प्रशंसा जागृत हो गई।

तीन रथ अब आरंभिक बिंदु के चारों ओर आकर रुक गए। पहले रथ में एक बौना आदमी बैठा था जिसके सिर पर धधकते लाल बाल थे और उसकी काली आँखें तीक्ष्ण और द्वेषपूर्ण थीं, जो अखाड़े में चारों ओर घूमती रहती थीं और हर उस व्यक्ति को घूरती रहती थीं जिस पर उनकी विकृत निगाहें पड़ती थीं। उसके चेहरे पर एक नीच बदमाश जैसा भाव था जो उसके बाकी रूप और साजो-सामान से मेल खाता था। उसका रथ आसपास की सभी भव्य वस्तुओं की तुलना में कुछ अलग ही था; वास्तव में वह एक साधारण स्प्रिंग गाड़ी थी जिसे चार लंबे कानों वाले और कहावत में जिद्दी गधे कहलाते थे। वह बारी-बारी से उन्हें एक खुरदरी भूसे की रस्सी की लगाम से नियंत्रित करता था या एक नुकीले काले कांटेदार डंडे की सहायता से आगे बढ़ाता था। दूसरे रथ का सवार गुलाबी रेशमी जैकेट और सफेद पतलून पहने एक फैशनेबल सज्जन था, जिसका पूरा ध्यान अपने चार सुंदर भूरे घोड़ों के प्रबंधन में लगा हुआ प्रतीत होता था। उसका नाम मेजर हॉकिन्स था, जो उस समय घुड़दौड़ के मैदान का

एक प्रसिद्ध नायक था, लेकिन सबसे अधिक ध्यान तीसरे और अंतिम रथ चालक ने आकर्षित किया। वह एक लंबा और बेहद आकर्षक युवक था, जिसका सुगठित शरीर उस समय और भी निखर कर सामने आता था जब वह अपनी छोटी, हल्की गाड़ी पर सीधा खड़ा होकर, गर्व से उछलते घोड़ों को लगाम कस रहा था। घोड़े अपनी तेज़ हिनहिनाहट और भव्य धनुषाकार गर्दन के घमंड से मानो अपने स्वामी की श्रेष्ठता को स्वीकार कर रहे थे। जैसा कि मैंने कहा, इस सज्जन का चेहरा सुंदर था, उनकी नैन-नक्श सुगठित थे और उनका माथा ऊंचा था, हालांकि बहुत खुला हुआ नहीं था। लेकिन उनकी नीली, चमकीली, लेकिन रहस्यमयी आंखों और उनके धूर्त दिखने वाले होंठों पर हमेशा मंडराने वाली मुस्कान में एक गहरी, बेचैन दुष्टता की भावना झलकती थी, जो पारखी दृष्टि वाले को आगाह करती थी कि सब कुछ बाहरी दिखावे जितना सुंदर नहीं है। वहीं, उनके पीले गाल और कुछ थके हुए चेहरे से एक साथ व्यभिचारी, जुआरी और शायद शराबी होने का आभास होता था। कर्नल माननीय अलेक्जेंडर ऑगस्टस पर्सी का वर्णन मेरी कलम जितना कर सकती है, उतना ही अच्छा है।

सब कुछ तैयार होते ही राष्ट्रपति के सिंहासन के पास रखे चांदी के तुरही से आरंभिक संकेत मिला। तीनों रथ तीर की गति से बहादुरी से दौड़ पड़े और लगभग एक-दूसरे के समानांतर लगभग मध्य तक पहुँच गए। तभी सभी को आश्चर्यचकित करते हुए गधों के साथ सवार छोटा लाल बालों वाला सज्जन अन्य दो रथों से आगे निकल गया और अपनी जोरदार चालों से दो मिनट पहले जेल पहुँच गया। कर्नल पर्सी की आँखों में दबी हुई गहरी क्रोध की भावना को कलम या पेंसिल से पूरी तरह से व्यक्त नहीं किया जा सकता, जिसने उनके पीले गालों और माथे को क्रोध की लालिमा से भर दिया था। उन्होंने विजेता पर घृणा भरी एक दृष्टि डाली और फिर लगाम पास खड़े एक सहायक को सौंपकर अपने रथ से कूदकर भीड़ में मिल गए।

इस यादगार दिन में घटी सभी घटनाओं का विस्तृत और संपूर्ण विवरण देना मेरा उद्देश्य नहीं है। मैं केवल इसके बाद घटी घटनाओं पर एक संक्षिप्त नज़र डालूंगा और फिर अपनी कहानी से अधिक संबंधित विषयों पर आगे बढ़ूंगा।

इसके बाद घुड़दौड़, कुश्ती और बैल-लड़ाई के खेल हुए, जिनमें कर्नल पर्सी ने भाग लिया। पहले खेल में उनके पसंदीदा घोड़े टॉरनेडो ने वर्दोपोलिस के दस सबसे प्रसिद्ध घोड़ों से स्वर्ण मुकुट छीन लिया; दूसरे खेल में उन्होंने स्वयं एक के बाद एक पांच शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वियों को परास्त किया, और तीसरे खेल में जब बाइसन नस्ल के

एक विशाल लाल बैल ने दस घोड़ों को चीर-फाड़ कर उनके सवारों को सींगों से मारकर मौत के घाट उतार दिया, तो सभी लोग भयभीत होकर उससे मुंह फेर लिया। कर्नल पर्सी टॉरनेडो पर सवार हुए और अपनी हुसार टोपी से लहराते लाल मुकुट और कंधों से लटकते लाल लबादे के साथ साहसपूर्वक अखाड़े के बीचोंबीच चले गए। लंबे समय तक मुकाबला अनिश्चित बना रहा, लेकिन अंत में एक सटीक प्रहार से उनके भाले ने उस विशालकाय राक्षस के दिल का खून पी लिया और वह दहाड़ते हुए खून से लाल हुई धरती पर गिर पड़ा।

अब आखिरी पुरस्कार तीरंदाजी का था, जिसके लिए मुकाबला होना बाकी था। यहाँ भी कर्नल पर्सी ने प्रतियोगी के रूप में भाग लिया। लक्ष्य साठ फीट की दूरी पर स्थापित एक लंबी सफेद छड़ी थी। तीरंदाजी संघ के बीस प्रतिष्ठित सदस्य, जो सभी प्रथम श्रेणी के निशानेबाज माने जाते थे, इस पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे, लेकिन सभी के तीर या तो लक्ष्य से थोड़ा दूर गिरे। अब कर्नल पर्सी की बारी थी। उन्होंने आगे बढ़कर सावधानीपूर्वक निशाना साधते हुए तीर चलाया, जो बाकी सभी तीरों की तुलना में काफी करीब तो गया, लेकिन लक्ष्य पर नहीं लगा। अब निर्धारित नियम के अनुसार उद्घोषकों ने पूछा कि क्या दर्शकों में से कोई असफल तीरंदाजों को शर्मिंदा करने का साहस करेगा। इस अनुरोध के बाद सन्नाटा छा गया, क्योंकि किसी ने भी खुद को इतने असंभव कार्य को करने के योग्य नहीं समझा। अध्यक्ष ने पुरस्कार उस व्यक्ति को देने का फैसला सुनाया जिसका तीर सबसे करीब गिरा था, अन्यथा बेहतर तीरंदाजी का विकल्प नहीं था।

उसके शब्द अभी निकले ही थे कि भीड़ में से एक युवक आगे बढ़ा, जिसका रूप-रंग प्राचीन काल में अपोलो के समान ही भव्य और राजसी था। उसके पहनावे और रूप-रंग का वर्णन मैं पहले ही कर चुका हूँ, क्योंकि वह वही अजनबी था जो पिछली रात जिनी के सराय में आया था, लेकिन अब हरे रंग की टोपी और पंखों के बजाय, जो उसने तब पहनी हुई थी, उसके सिर पर एक स्टील का हेलमेट था और हेलमेट का मुखौटा पूरी तरह से बंद होने के कारण उसका चेहरा छिपा हुआ था।

“महामहिम,” वह राष्ट्रपति के सिंहासन के पास पहुँचते हुए बोला, “क्या आप मुझे विजेताओं को उचित पुरस्कार देने वाले ईश्वर के समक्ष एक तीर चलाने का सम्मान देंगे? मैंने अपनी विनती अब तक इसलिए टाली थी ताकि कर्नल पर्सी को उस पुरस्कार से वंचित न करूँ जो न्यायसंगत रूप से उनका हक है।”

ब्रेवी ने तुरंत अपनी सहमति दे दी और अजनबी ने निर्धारित दूरी से बीस फीट आगे खड़े होकर अपने कंधे पर लटके धनुष और तरकश को उतारा, एक तीर चुना, कमान कसी और एक पल भी बीतने से पहले ही सफेद छड़ी के टूटने की आवाज ने उसकी जीत और कौशल की घोषणा कर दी। चारों ओर देख रहे हजारों लोगों के बीच जोरदार जयकार हुई और जब यह शांत हुई तो ब्रेवी अपनी सीट से उठकर घोषणा की कि उसने पुरस्कार के संबंध में अपना पूर्व निर्णय रद्द कर दिया है और इसे सफल अजनबी को दे दिया है। अब सभी की निगाहें कर्नल पर्सी पर टिक गईं, लेकिन उनके चेहरे या व्यवहार में निराशा या क्रोध का कोई लक्षण नहीं दिखा, इसके विपरीत वे तुरंत उस अज्ञात व्यक्ति की ओर मुड़े और अत्यंत सौहार्दपूर्ण ढंग से उसे उसकी सौभाग्यशाली किस्मत पर बधाई दी। हालांकि, उनकी विनम्रता को ठंडे और अभिमानी ढंग से स्वीकार किया गया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि उनका स्वागत नहीं किया गया, ठीक उसी तरह जैसे उन्हें तुरंत और दृढ़ता से अस्वीकार किया जा सकता था। फिर भी कर्नल नाराज नहीं दिखे बल्कि उन्होंने अपने असामाजिक विजेता के साथ उसी सहज और निडर लहजे में बातचीत जारी रखी जो एक अनुभवी व्यक्ति के रूप में उनके लिए स्वाभाविक था।

"सच कहूँ तो," एनसाइन बड ने कहा, जो अपने मित्र गिफोर्ड के साथ (क्योंकि उसने उस बुजुर्ग सज्जन को खेल देखने के लिए राजी कर लिया था) सीटों की पहली पंक्ति में बैठा था, "सच कहूँ तो मुझे लगता है कि कर्नल के मन में बदला लेने की कोई घिनौनी योजना है, वरना वह इतना शांत और सहज चेहरा क्यों बनाएगा।"

"निस्संदेह," गिफोर्ड ने जवाब दिया, "लेकिन वह शानदार ढंग से सजे-धजे विदेशी कौन है? मुझे लगता है कि मैंने पहले भी ऐसी आवाज़ सुनी है, हालांकि कहाँ और कब, मुझे बिल्कुल याद नहीं आ रहा।"

बड जवाब देने ही वाला था कि दूतों की ज़ोरदार आवाज़ और संगीत की अचानक गूंज ने उसे रोक दिया, जो भव्यता से तब फूट पड़ा जब विजेता सिंहासन के चरणों में आगे बढ़े और एक-एक करके लेडी एमिली चार्ल्सवर्थ के सामने घुटने टेक दिए, जिनके हाथों से उन्हें अपना पुरस्कार प्राप्त करना था, सबसे पहले गाड़ी और गधों का गाजर जैसे बालों वाला नायक आया।

"महोदय," महिला ने कहा, और उसकी मुस्कान को दबाने की व्यर्थ कोशिश की जो उसकी विचित्र उपस्थिति ने उसके चेहरे पर उभर आई थी, "आज आपने

वर्दोपोलिस के सबसे वीर और उच्च कुल के सज्जनों में से एक पर चमत्कारिक विजय प्राप्त की है और आप उस स्वर्ण पुष्पमाला के योग्य हैं जिसे मैं इस प्रकार आपके शानदार माथे पर लपेट रही हूँ।”

“धन्यवाद महोदया,” उसने झुककर उत्तर दिया, “कर्नल तो वाकई एक सनकी आदमी है, लेकिन आज मैंने उसका बखूबी मुकाबला किया है और अगर आपको सब पता होता तो आप भी यही कहतीं।”

"मुझे आपकी किसी भी पुरुष का मुकाबला करने की क्षमता पर कोई संदेह नहीं है," उसने हंसते हुए उत्तर दिया, "और मेरी राय में कर्नल को अपनी हार पर शर्मिंदा होने का कोई कारण नहीं है क्योंकि यह आपके जैसे एक कुशल छल-कपट कलाकार द्वारा हासिल की गई थी।"

उन्होंने एक बार फिर उनका धन्यवाद किया और एक बार फिर झुककर कर्नल पर्सी के लिए जगह छोड़ दी।

तीन मुकुटों के दावेदार ने जब विनम्रतापूर्वक उनके चरणों में घुटने टेके और दबी आवाज़ में कुछ प्रशंसात्मक बातें फुसफुसाईं, तो लेडी एमिली स्पष्ट रूप से शर्मिंदा हो गईं। उनके चेहरे पर लाली तो नहीं आई, लेकिन उनका माथा, जो पहले हमेशा मुस्कुराता और खुला रहता था, अब उदास और काला पड़ गया। एक पल के लिए वह चुप बैठी रहीं, मानो उन्हें समझ ही न आ रहा हो कि उनसे क्या कहें, लेकिन लगभग तुरंत ही उन्होंने खुद को संभालते हुए कोमल, फिर भी दृढ़ स्वर में कहा और अपनी पतली, रत्नजड़ित उंगलियों से उनके घने, हल्के भूरे बालों में माला बाँध दी।

“तीन कठिन प्रतियोगिताओं में अपने समकक्ष को पाने वाले को पुरस्कृत करने का माध्यम बनकर मुझे खुशी हो रही है। मुझे विश्वास है कि अफ्रीकी ओलंपिक खेलों की प्रत्येक आगामी वर्षगांठ पर हमारे शहर को एक सक्षम चैंपियन मिलेगा।”

“सुंदर महिला,” कर्नल ने उत्तर दिया, “आपकी प्रशंसा मेरे लिए उन दस हजार लोगों की क्षणिक प्रशंसा से कहीं अधिक मूल्यवान होगी जिन्होंने आज मेरे तुच्छ कारनामों पर शोर मचाया है।”

“इसे पाने के लिए मेहनत करो,” उसने धीमी और तेज़ आवाज़ में कहा। “और यह तुमसे छीना नहीं जाएगा!”

अब दूत ने उस अनाम अजनबी को पास आने का इशारा किया, वह धीरे-धीरे और कुछ अनिच्छा से आगे बढ़ा।

"क्या मैं परिचारकों को आपका हेलमेट हटाने के लिए कहूँ?" लेडी एमिली ने मुस्कुराते हुए पूछा, अज्ञात व्यक्ति ने अपना सिर हिलाया लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।

“अच्छा,” उसने चंचल भाव से उत्तर दिया, “तुम एक वीर धनुर्धर होते हुए भी असभ्य हो, परन्तु मेरे अनुरोध को मानने से इनकार करने के बावजूद मैं यह स्वीकार करती हूँ कि मैं तुम्हें उस उज्ज्वल माला के योग्य समझती हूँ जिसे मैं तुम्हारे मुकुट में समाहित बाज के पंखों के बीच पिरो रही हूँ।”

वह उठा और शान से सिर झुकाकर चला गया। अब सब कुछ समाप्त हो चुका था। अफ्रीकी ओलंपिक खेलों का पहला उत्सव समाप्त हो गया था और युद्ध संगीत की बुलंद और विजयपूर्ण गूंज के बीच दस लाख लोगों की विशाल सभा तितर-बितर हो गई और एक ऐसी भगदड़ और कोलाहल के साथ, जो मानो दुनिया को नष्ट कर देती, एम्फीथिएटर से बाहर निकल गई। इस बिखराव का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है, मेरी जानकारी में किसी की जान नहीं गई, लेकिन सैकड़ों थैले, जेबें, जेबें और रुमाल धक्का-मुक्की में बिखर गए, जबकि हजारों लोगों के शरीर को कोहनियों के वार से लगभग नसों तक चोटिल कर दिया गया।

मुझे यह बताते हुए खेद हो रहा है कि इस भारी नुकसान में हमारे आदरणीय मित्र श्री गिफोर्ड भी शामिल हैं। पहली भगदड़ में, भले ही एनसाइन बड ने स्नेहपूर्वक अपना हाथ उस उत्कृष्ट पुरातत्वविद की कमर पर रखा था, फिर भी वे ज़मीन पर गिर पड़े और उठने की कोशिश में लगभग बीस फ्रांसीसी सज्जनों के फैले हुए पैरों में उलझ गए, जो अपने ही उत्साह में उस विशाल भीड़ में से निकलने की कोशिश कर रहे थे, न कि समझदार लोगों की तरह एड़ियों के बल, बल्कि सिर के बल। जब इन सज्जनों ने श्री गिफोर्ड के गिरते हुए शरीर का हल्का-फुल्का दबाव महसूस किया, तो उन्होंने अपनी असुविधा को लात मारकर ज़ाहिर किया।

बड़ी मुश्किल से और अपनी सबसे अच्छी टोपी और विग खोकर वकील को बचाया गया, लेकिन वह मुश्किल से बारह कदम ही चला था कि उसके जूते उसके पैरों से छीन लिए गए और पाँच मिनट बाद ही उसकी संडे कोट, जो एक कीमती काला मखमल था, किसी दुस्साहसी चोर ने उसकी पीठ से ज़बरदस्ती फाड़कर चुरा ली। कराहते और आहें भरते हुए, वह बड की मदद से धीरे-धीरे और दर्द से अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ा और लगभग भीड़ के सबसे घने हिस्से को पार कर ही चुका था

कि तभी किसी ने बिना किसी औपचारिकता के उसकी पैंट की जेब में हाथ डाला और सारा सामान बड़ी कुशलता से निकाल लिया। लेकिन मुझे उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति की विपत्तियों के बारे में और अधिक बताकर पाठक को परेशान करने की आवश्यकता नहीं है, इतना कहना ही पर्याप्त है कि अंततः वह घर पहुँच गया और उसे बिना टूटी हड्डियों के बिस्तर पर लिटाया गया। उसे भरपूर मात्रा में गर्म दलिया और ब्रांडी पिलाई गई जिससे उसे आरामदायक नींद आई और अगली सुबह जब वह जागा तो वह ग्रीक, रोमन या अफ्रीकी, सभी खेलों को बेहिसाब शब्दों में कोसने और भविष्य में अपने व्यर्थ के आयोजनों में भाग लेने वाले सभी लोगों से तुरंत बदला लेने की घोषणा करने में सक्षम था।

अध्याय तीन

जो सूर्य अत्यंत तेजस्वी और प्रसन्नतापूर्वक उदय हुआ था, वह अपने गौरवशाली आगमन के योग्य भव्यता के साथ अस्त हो गया। एक संक्षिप्त गोधूलि बेला छा गई; कुछ समय के लिए समुद्र की लहरें मंद प्रकाश में डूबते हुए किनारे की ओर बढ़ती रहीं, फिर चंद्रमा प्रकट हुआ। शाम के तारे कोमल, निर्मल आकाश से अकेले-अकेले दिखाई देने लगे, रात की हवा तेज हो गई और उसके सामने क्षितिज पर स्थिर पड़े कुछ मोती जैसे बादल आसपास की पहाड़ियों के पार चले गए। इस शांत क्षण में, नाइजर नदी के छायादार किनारों पर स्थित एक उपवन से निकला अज्ञात धनुर्धारी, जहाँ वह अखाड़े से निकलने के बाद से चल रहा था, वर्दोपोलिस की ओर पीठ करके उस पगडंडी पर चल पड़ा जो उस समय की जंगली घाटी की ओर जाती थी जिसमें हमारा शहर स्थित है (क्योंकि तब यहाँ न तो उद्यान थे, न महल, और इसकी प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ाने के लिए कुछ ही खेती योग्य खेत थे)। अपने चारों ओर छाई शांत शाम की खामोशी में

वह उस दृश्य की सारी यादें भूल गया जिसे उसने एक घंटे पहले छोड़ा था।

धीरे-धीरे वह दो ऊँची पहाड़ियों के संगम से बनी एक शांत घाटी में प्रवेश कर गया, जिनकी चोटियाँ घने जंगलों से ढकी थीं, लेकिन जिनके आधार, कहीं-कहीं एक-आध ऊँचे फैले हुए पेड़ को छोड़कर, निर्जन चरागाह भूमि की हरी ढलानें प्रदर्शित करते थे। वह रुका और अपने एक हाथ में पकड़े हुए लंबे भाले पर झुककर कुछ मिनटों तक चारों ओर फैले सुंदर चाँदनी परिदृश्य को निहारता रहा। फिर उसने अपनी कमर से बिगुल निकाला और एक स्पष्ट, लेकिन धीमी ध्वनि में बजाया, जिसकी हल्की गूँज ऊपर की पहाड़ियों के जंगलों में सुनाई दी। कुछ देर प्रतीक्षा के बाद कदमों की आहट सुनाई दी और एक लबादा ओढ़े हुए व्यक्ति ने घाटी के दूसरे छोर से प्रवेश किया।

“एंड्रयू,” तीरंदाज ने कहा, “क्या तुम ही हो मेरे लड़के?”

"हाँ," एक तीखी, बचकानी आवाज़ ने जवाब दिया, जिसकी आवाज़ और बोलने वाले के छोटे कद ने नए आने वाले की कम उम्र का संकेत दिया।

“तो इधर आओ और मुझे दिखाओ कि तुमने सामान कहाँ छिपाया है। मैं भूख से अधमरा हूँ, क्योंकि बारह घंटे से मैंने कुछ खाया-पिया नहीं है।”

एंड्रयू तुरंत भाग गया और कुछ ही मिनटों में अपने कंधों पर एक बड़ा सूटकेस लेकर लौटा। उसने अपना मुखौटा उतार दिया और तेज चांदनी में एक लड़के का चेहरा दिखाई दिया, जिसकी उम्र लगभग तेरह वर्ष रही होगी, हालांकि उसके चेहरे से वह बीस वर्ष से अधिक का प्रतीत होता था। उसकी तीखी और तेज नैन-नक्श छोटी, चतुर और चालाक आँखों से जगमगा रही थीं, जिनमें बच्चे की गोल-मटोल आकृति का कोई निशान नहीं था, जिसे आमतौर पर बच्चे की प्रमुख विशेषता माना जाता है। उसकी पोशाक भी उसके मालिक की तरह ही अनोखी थी, जिसमें एक छोटी प्लेड पेटीकोट या स्कर्ट, उसी कपड़े की गोल टोपी और चमड़े के फीते वाले जूते थे। उसने जल्दी से संदूक का ताला खोला और उसमें से एक टोकरी निकाली, जिसके अंदर रखी चीजें जब एक शानदार एल्म के पेड़ की छाया में चिकनी घास पर फैलाई गईं, तो एक ऐसा रात्रिभोज तैयार हुआ जिसे कोई भी भूखा आदमी तिरस्कार से नहीं देखता। उसमें दो ठंडे मुर्गे, सफेद ब्रेड का एक टुकड़ा, कुछ पनीर, ताड़ी की एक बोतल और सबसे शुद्ध पानी का एक बर्तन था, जिसे एंड्रयू ने एक छोटी सी धारा से प्राप्त किया था जो जंगली फूलों से आधी छिपी हुई थी और घाटी में धीरे-धीरे बहते हुए प्राचीन एल्म के पेड़ की जड़ों को धोती थी। जब धनुर्धारी अपनी भूख मिटा रहा था, तब वह अपने

अनुयायी को नहीं भूला जो थोड़ी दूरी पर बैठकर एक मुर्गे और रोटी व पनीर का एक बड़ा हिस्सा बड़े चाव से खा रहा था। जब उनका भोजन समाप्त हो गया और बचे हुए टुकड़े हटा दिए गए, तो एंड्रयू ने संदूक से एक बड़ा चेकदार लबादा निकाला, जिसमें उसके स्वामी ने खुद को लपेट लिया और ओस से भीगी हरी घास पर काई से ढके पत्थर को तकिया बनाकर लेट गया। वह और उसके पैरों के पास लेटा लड़का, दोनों ही पत्तों से भरी छतरी में सरसराती धीमी हवा और एकरस धारा की सुस्त कलकल ध्वनि से जल्द ही गहरी और स्वप्नहीन नींद में लीन हो गए।

एक घंटा बीत गया और वे अब भी अत्यंत गहन विश्राम की अवस्था में थे। आकाश में ऊँचा चाँद चाँदी जैसी चमक बिखेर रहा था, मानो रात को एक सुंदर दोपहर में बदल रहा हो। आर्थर के शब्दों में या कुछ इसी तरह के शब्दों में, "सभी ने चाँदनी के सौम्य दिन के दिव्य प्रभाव को महसूस किया।" तभी अचानक एक मानवीय कदम ने चारों ओर छाई मधुर शांति को भंग कर दिया और (एक गैर-रोमांटिक घटना) एक ऐसी महिला का रूप प्रकट हुआ, जो "फूलों के मुकुट और प्रकाशमय वस्त्र पहने एक सुंदर और तेजस्वी स्त्री" थी।

तभी नीले कोट और चांदी के एपॉलेट्स पहने एक चतुर नौकर पास की पहाड़ियों में से एक की चोटी से चुपके से नीचे उतरता हुआ दिखाई दिया। वह धीरे से, लगभग खामोशी से, अनजान एंड्रयू की ओर बढ़ा और उसके खुले मुंह में कपड़ा ठूंसकर उसे अपनी बाहों में उठाकर ले गया। एंड्रयू छटपटा रहा था और छटपटा रहा था। हालांकि, एंड्रयू का अपहरण ज्यादा देर तक नहीं चला। एक घंटा भी मुश्किल से बीता था कि वह अकेला लौट आया और अपने मालिक को जगाए बिना ही, अपनी पुरानी जगह पर लेट गया और कुछ ही मिनटों में पहले की तरह गहरी नींद में सो गया।

तेज धूप और चहचहाते पक्षियों ने धनुर्धर को जगा दिया, ठीक उसी समय जब ग्रीष्म ऋतु की पहली किरणें फूट पड़ीं। अपने कठोर पलंग से हल्के से उछलकर उसने अपने पैर से सो रहे सेवक को हिलाया।

“उठो एंड्रयू,” उसने कहा और उस संदूक का सारा सामान घास पर फैला दिया। “मुझे शहर में दोबारा जाने से पहले ये अजीबोगरीब कपड़े बदलने होंगे, तो उठो बेटा और पहले मेरी ये बेल्ट खोलने में मदद करो।” लड़का अनिच्छा से आँखें मलते हुए और नींद से बेहाल होकर जम्हाई लेते हुए उठा, “क्यों?” “क्या हुआ बच्चे? क्या आज रात परियों ने तुम्हें परेशान किया है कि तुम सुबह इतने सुस्त और नींद में हो?”

“नहीं, मैं नहीं,” एंड्रयू ने खोखली हंसी हंसते हुए कहा और अपनी पैनी निगाहें अपने गुरु के चेहरे पर इस तरह टिका दीं मानो वह उनके अंतर्मन के विचारों को जान गया हो। “नहीं, लेकिन मुझे कुछ बुरे सपने परेशान कर रहे हैं।”

“भयानक सपने? अरे छोटे बेवकूफ, वे किस बारे में थे?”

"अपनी आत्मा उस बूढ़े सज्जन को बेचने के बारे में"

"तो क्या आपने सौदा पूरा कर लिया?"

“हां, और इस पर लिखित शपथ भी ली।”

"देखो, यह तो मामले को व्यावसायिक तरीके से संभालना था, लेकिन अब अपनी बकवास बंद करो महोदय, और मुझे यह तंग जैकेट पहनने में मदद करो।"

कुछ ही मिनटों में तीरंदाज ने अपने आकर्षक लेकिन विचित्र वस्त्रों को उतार दिया और उनकी जगह एक फैशनेबल सूट पहन लिया जिसमें एक नीले रंग का फ्रॉक कोट था जो कुछ हद तक सैन्य शैली का था और एक सफेद जैकेट और पैंट थी।

“अब,” उसने स्नान करके कहा, “एंड्रयू, तुम यहीं रुको। मैं शहर जा रहा हूँ और संभवतः शाम से पहले लौट आऊँगा। मेरे लौटने तक जंगल में ही रहना और किसी से बात मत करना।”

एंड्रयू ने जोर से बिना किसी लाग-लपेट के आज्ञापालन का वादा किया और उसके स्वामी ने प्रस्थान किया। अपने नए परिधान में धनुर्धारी ने वह असहजता नहीं दिखाई जो आमतौर पर लोग पहली बार कोई नया परिधान पहनने पर महसूस करते हैं।

इसके विपरीत, उनके चलने-फिरने की सहजता और शालीनता से, जो एक उदात्त और वीर चरित्र को दर्शाती थी, यह स्पष्ट था कि वे इस तरह के पहनावे से अपरिचित नहीं थे। धीमी, उदास चाल से वे उस घुमावदार, पगडंडी पर वापस लौटे जिससे वे पिछली शाम घाटी में चढ़े थे। रास्ते में उन्हें बहुत कम यात्री मिले, क्योंकि उन दिनों वह सड़क बहुत कम इस्तेमाल होती थी। दो-तीन दूधवाली लड़कियाँ गाती हुई जा रही थीं और कुछ अवैध शिकारी लड़के पहाड़ियों में रात भर शिकार करके लौट रहे थे। उनके साथ पाँच-छह सीधे पैरों वाले सज्जन भी थे जो "नाश्ते से पहले बाहर निकलकर तरबूज, ब्रेड और बटर खाने की भूख बढ़ा रहे थे"। ये ही वे लोग थे जिनसे उन्होंने सुबह की शुभकामनाएँ दीं और वे भी उनकी सैर के अंत तक दिखाई नहीं दिए।

लगभग आठ बजे वह वर्दोपोलिस पहुँचे। उत्तरी द्वार से प्रवेश करके वे कई गलियों, चौकों, कतारों और संकरी सड़कों से गुज़रे, जहाँ सुबह-सुबह भी लोगों की चहल-पहल

तेज़ी से बढ़ने लगी थी। अंत में वे मोनमाउथ स्क्वायर से निकलने वाली एक शांत सड़क पर पहुँचे, जहाँ दो कतारों में सजे-धजे मकान थे। इन मकानों के सफेद पर्दे और हरे वेनेशियन ब्लाइंड्स से पता चलता था कि उनमें रहने वाले लोग कितने सुख-सुविधाओं में रहते हैं। बारहवें मकान के पास रुककर उन्होंने चमकते हुए पीतल के दरवाज़े की कुंडी को ज़ोर से खटखटाया। लगभग दो मिनट में एक साफ़-सुथरी दिखने वाली बुजुर्ग महिला ने दरवाज़ा खोला। जैसे ही उन्होंने हमारे नायक को देखा, आश्चर्य से उनकी आवाज़ तेज़ हो गई।

“हे भगवान, श्री लेस्ली!” वह चिल्लाई, “क्या यह आप हैं? हे भगवान! मेरी आँखों ने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं आपका सुंदर चेहरा फिर से देख पाऊँगी।”

“जी हां, मैं ही हूं ऐलिस, लेकिन आपके मालिक कैसे हैं? क्या वे घर पर हैं?” “घर पर? जी हां, बिल्कुल। मुझे आश्चर्य है कि वे और कहां होंगे, जब आप उनके दरवाजे पर खड़े हैं? लेकिन अंदर आइए, मैं अभी दौड़कर उन्हें खुशखबरी सुनाती हूं।”

यहां उस महिला ने आगे बढ़कर श्री लेस्ली को एक अपार्टमेंट में ले जाकर अपने काम से चली गई। जिस कमरे में वह उन्हें ले गई थी, वह एक मध्यम आकार का बैठक कक्ष था जो आरामदेह और सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ था। एक सुंदर अंगीठी की पॉलिश की हुई स्टील की सलाखों में तेज आग जल रही थी और कमरे के बीच में रखी गोल मेज पर बर्फ जैसे सफेद दमिश्क के कपड़े पर एक अच्छे नाश्ते का सारा सामान फैला हुआ था। लेकिन सबसे ज्यादा ध्यान खींचने वाली चीज दीवारों पर सजी कई खूबसूरत तेल चित्रों पर थी, जिनमें से ज्यादातर चित्र थे; सभी चित्रों में कला के एक सच्चे उस्ताद की झलक थी और कुछ चित्रों को आश्चर्यजनक सुंदरता और कोमलता से बनाया गया था। आगंतुक के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे जब उसने ध्यान से चारों ओर देखा, लेकिन जल्द ही दरवाजे के खुलने की आवाज से उसका ध्यान आकर्षित हुआ। वह चौंककर उठा और उत्सुकता से आगे बढ़ा जब एक युवक, जो मध्यम कद से थोड़ा अधिक लंबा था, पीला लेकिन आकर्षक चेहरा और बड़ी बुद्धिमान काली आंखों वाला, अंदर आया।

“खैर, मेरे प्यारे फ्रेडरिक,” उसने कहा, “मुझे यह पूछने की ज़रूरत नहीं है कि तुम कैसे हो। तुम्हारा रूप-रंग और घर का हाल ही में सब कुछ बता देता है, और मुझे लगता है कि अब मुझे केवल भाग्य की बदली हुई स्थिति पर तुम्हें बधाई देनी है।”

“मेरे परम आदरणीय उपकारक,” फ्रेडरिक डी लिस्ले ने कहना शुरू किया, और

उनके बेरंग गालों पर खुशी की लाली छा गई। “आपको फिर से देखकर मुझे कितनी खुशी हो रही है! क्या आप अभी भी कलाकार श्री लेस्ली हैं या अब मुझे आपको इस नाम से संबोधित करने की अनुमति दी जा सकती है?”

“नहीं, नहीं,” उनके मेहमान ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “फिलहाल मेरा नाम लेस्ली ही रहने दीजिए, लेकिन फ्रेडरिक, आपने मेरे द्वारा दी गई उस छोटी सी रकम का अच्छा उपयोग किया होगा, तभी तो आप इतने आरामदायक घर में रहने के हकदार हुए हैं।”

“जी हां,” युवक ने उत्तर दिया, “मुझे लगता है कि मैंने इसका सर्वोत्तम उपयोग किया है, इसलिए मैं प्रशंसा का पात्र हूं, लेकिन केवल इसी से मुझे वह समृद्धि नहीं मिली है जिसका मैं आज आनंद ले रहा हूं। महाराज, आपको पता होना चाहिए कि लगभग तीन साल पहले मुझे एक युवा और बहुत प्यारी लड़की से प्यार हो गया (आम बोलचाल में कहें तो), जिसने जल्द ही मेरे सच्चे प्यार को पहचान लिया और बदले में मुझे भी प्यार किया। हालांकि, हमारे मिलन में कई बाधाएं आईं, उसके माता-पिता धनी थे और वे अपनी बेटी का विवाह ऐसे व्यक्ति से नहीं करना चाहते थे जिसकी सारी दौलत एक ब्रश और पैलेट में थी। लंबे समय तक मटिल्डा रोती रही और व्यर्थ में गिड़गिड़ाती रही, लेकिन अंत में उसके बदले हुए रूप, उसके पीले गाल और उसके दुबले-पतले शरीर ने उनके दिलों में इतनी दया जगाई कि उन्होंने हमारी शादी को इस शर्त पर मंजूरी दे दी कि मैं पहले उस आर्थिक तंगी से बाहर निकल जाऊं जिसमें मैं फंसा हुआ था, लेकिन यह असंभव था। मेरे पास रोटी कमाने के लिए भी मुश्किल से ही काम था और बचत करने के बारे में सोचना भी असंभव था। इस दयनीय समय में महाराज, आपने मुझ पर कृपा की और मेरे शिष्य बनो। आपने मुझे जो उदार वेतन दिया, उससे मैं अपने कुछ ऋण चुका सका और आपके वर्दोपोलिस छोड़ने के बाद आपके उदार दान की सहायता से मैंने अंततः सारा ऋण चुका दिया। मेरी प्यारी मटिल्डा के माता-पिता ने अपना वादा निभाया और लगभग छह महीने पहले मैं अत्यंत सुखी हुआ। तब से मुझे तेजी से रोजगार मिल रहा है और मुझे विश्वास है कि प्रसिद्धि, जिसके लिए मैंने इतने लंबे समय तक अथक परिश्रम किया है और उन कष्टों और कठिनाइयों को सहन किया है जो एक संत के मन को भी विचलित कर सकते थे, अंततः मेरे अथक प्रयासों का फल देगी।

तभी दरवाजा फिर खुला और श्रीमती डी लिस्ले अंदर आईं। वह एक युवा और

सुरुचिपूर्ण महिला थीं, जिनका चेहरा सुंदर था और व्यवहार अत्यंत शालीन था। उनके पति ने हमारे नायक का उनसे परिचय कराते हुए कहा, "श्री लेस्ली, वह सज्जन जिनके बारे में आपने मुझे अक्सर बात करते सुना है।" उन्होंने झुककर अभिवादन किया और एक भावपूर्ण मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "जी हां, मैंने सुना है और उन्हें अपने घर में देखकर मुझे जितनी खुशी हुई है, उतनी ही अप्रत्याशित भी थी।"

तीनों अब कॉफी, अंडे, हैम और ब्रेड-बटर से बने भरपूर नाश्ते के लिए बैठ गए। भोजन के दौरान बातचीत जीवंत और रोचक रही, श्रीमती डी लिस्ले ने भी बड़ी शालीनता और अच्छे स्वाद के साथ बातचीत में हिस्सा लिया, जो फ्रेडरिक की पत्नी के चुनाव के अनुरूप था। भोजन समाप्त होने पर वह घर के कामों की आवश्यकता का बहाना बनाकर कमरे से चली गईं। इस प्रकार दोनों सज्जन अकेले रह गए और उन्होंने नाश्ते से पहले चल रही बातचीत को फिर से शुरू कर दिया। हालांकि, कुछ देर बाद एक गाड़ी के आने और एलिस के प्रवेश करने से उनकी बातचीत में फिर से बाधा उत्पन्न हुई, जिसने कर्नल पर्सी और लेडी एमिली चार्ल्सवर्थ के आने की घोषणा की।

“आह,” डी लिस्ले ने कहा, “यह सौभाग्य की बात है, मुझे लगता है कि आपको लेडी एमिली याद होंगी। जब आप मेरे घर पर चित्रकारी करते थे, तब वह अक्सर आती थीं और घंटों आपके साथ ललित कलाओं के बारे में बातें करती थीं, लेकिन महाराज, क्या बात है? क्या आप बीमार हैं?”

“नहीं फ्रेडरिक,” लेस्ली ने जवाब दिया, हालाँकि उसके चेहरे पर छाई जानलेवा पीलापन उसकी कही बात की सच्चाई का खंडन करती प्रतीत हो रही थी, “बस सिर में अचानक दर्द हो रहा है, जो मुझे अक्सर होता है, यह जल्द ही ठीक हो जाएगा, लेकिन इस बीच मैं इन अजनबियों को नहीं देखना चाहता। क्या वे इस कमरे में आएँगे?”

“नहीं, मैंने उन्हें अपने स्टूडियो में दिखाने का आदेश दिया है। लेडी एमिली अपना चित्र बनवाने आई हैं, जो मैं कर्नल पर्सी के लिए बना रहा हूँ, जिनके साथ कहा जाता है कि उनकी जल्द ही शादी होने वाली है। वे एक बेहतरीन जोड़ी बनेंगे, अफसोस की बात है कि कर्नल जितने सुंदर हैं उतने अच्छे इंसान नहीं हैं।”

“डी लिस्ले,” लेस्ली ने झट से कहा, “मुझे लगता है कि अगर मैं आज सुबह आपको पेंटिंग करते हुए देख सकूँ तो मुझे मज़ा आएगा, लेकिन साथ ही मैं खुद को छिपाए रखना चाहूँगा, क्या आप इसके लिए कोई उपाय नहीं निकाल सकते?”

"बिल्कुल, महाराज। पुस्तकालय की खिड़की मेरे स्टूडियो में खुलती है, आप वहां बैठकर अपनी इच्छानुसार मनोरंजन कर सकते हैं।"

“तो फिर आइए,” लेस्ली ने जवाब दिया और दोनों साथ में कमरे से बाहर निकल गए। जिस पुस्तकालय में डेलिसल अपने मेहमान को ले गया था, वह एक छोटा सा कमरा था जिसमें कुछ चुनिंदा किताबें थीं, मुख्य रूप से ललित साहित्य की। एक खिड़की घर के पीछे बने छोटे से बगीचे की ओर खुलती थी और दूसरी खिड़की, जो हरे पर्दे से आंशिक रूप से ढकी थी, एक निगरानी चौकी का काम करती थी जिससे स्टूडियो का आसानी से जायजा लिया जा सकता था। लेस्ली यहीं पर बैठ गया। जैसे ही उसने लेडी एमिली को खेलों में सोफे पर आराम से लेटे हुए देखा, वह पहले से कहीं अधिक सुंदर लग रही थी, और उसके पीले गालों पर फिर से लालिमा आ गई। कीमती फर से सजी एक बड़ी मखमली पोशाक उसके कंधों से लहराती हुई लटक रही थी। शुतुरमुर्ग के पंखों से सजी उसकी टोपी, जिसे उसने एक तरफ रख दिया था, और उसके बाल पीछे की ओर मुड़े हुए और सोने की कंघी से बंधे हुए, उसके चेहरे के दोनों ओर चमकदार भूरे छल्लों की एक शानदार लटों के रूप में बिखरे हुए थे। वह चुपचाप अपनी गोद में लेटे एक छोटे रेशमी बालों वाले स्पैनियल कुत्ते के गले का पट्टा ठीक कर रही थी और ऐसा लग रहा था कि वह अपने बगल में श्रद्धापूर्वक घुटने टेककर बैठे कर्नल के भावुक विरोध पर ज्यादा ध्यान नहीं दे रही थी। हालांकि, लेस्ली ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया: उसने केवल दोनों के हावभाव को देखा और उसके ऊंचे चेहरे पर गुस्से भरी भौंहें छा गईं। हालांकि, उनकी प्रेम सभा (यदि ऐसी कोई सभा थी) जल्द ही डेलिसल के प्रवेश से बाधित हो गई। "सुप्रभात," उसने झुककर कहा।

“सुप्रभात,” कर्नल पर्सी ने उत्तर दिया, “अब महोदय, अपनी सारी कुशलता का उपयोग करें, प्रेरणा को अपने सहायक के रूप में लें, क्योंकि जिस सौंदर्य का आपको चित्रण करना है वह सांसारिक नहीं बल्कि स्वर्गीय है।”

“मुझे उम्मीद है,” कलाकार ने अपने ईज़ल पर बैठते हुए और वहाँ रखी हुई सुंदर, हालांकि अभी अधूरी, आकृति को छूते हुए उत्तर दिया, “मुझे उम्मीद है कि आप मेरे अब तक के प्रयास को पूरी तरह असफल नहीं मानेंगे।”

"नहीं, बिलकुल नहीं, लेकिन श्रीमान चित्रकार, निश्चित रूप से आपमें यह घमंड नहीं होगा कि आप यह कल्पना करें कि तेल और मिट्टी से बनी कोई भी प्रतिकृति, चाहे वह कितनी भी कुशलता से बनाई गई हो, उस आकृति और चेहरे की जीवंत

वास्तविकता के बराबर हो सकती है जो अब आपके सामने है।"

"क्या आपका मतलब आपसे है कर्नल जी या मुझसे?" सुंदरी ने चालाकी से पूछा।

“आप ही समझ लीजिए। आप यह सवाल क्यों पूछ रहे हैं?” “क्योंकि आपने उस दर्पण में इतनी बार चोरी-छिपे देखा कि मुझे लगा कि आपकी प्रशंसा में कही गई बातें शायद उसमें प्रतिबिंबित आकृति के लिए ही थीं।”

"हम्म, मैं तो बस एक काफी सुंदर दिखने वाले बंदर के चेहरे की प्रशंसा कर रहा था, जिसे मैंने उस खिड़की से आपको झांकते हुए देखा था, और जिसे मैंने पहले भी आपके साथ देखा है, डेलिसल।"

लेडी एमिली ने बताए गए बिंदु की ओर देखा, लेकिन अब कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। वह लगभग दो घंटे तक बैठी रहीं, फिर इस अनिवार्य निष्क्रियता से ऊबकर उन्होंने गाड़ी बुलाने का आदेश दिया और अपने अंगरक्षक कर्नल पर्सी के साथ रवाना हो गईं।

अध्याय चौथा

क्लाइड्सडेल कैसल, जो मार्क्विस ऑफ चार्ल्सवर्थ का निवास स्थान था, उस समय ग्लास टाउन वैली की शोभा बढ़ाने वाले कुछ गिने-चुने महलों में से एक था। यह द्वितीय बारहवीं शताब्दी के दौरान निर्मित एक विशाल और भव्य संरचना थी। इसकी वास्तुकला आधुनिक विलाओं की तरह हल्की ग्रीक शैली की नहीं थी, बल्कि भव्य और मजबूत थी। ऊँची मेहराबदार खिड़कियों से ऊँचे बुर्ज रोशन होते थे और स्तंभों वाले नॉर्मन प्रवेश द्वार इसकी किलेबंदी वाली छत के नीचे स्थित कई विशाल हॉलों में प्रवेश देते थे।

इस सामंती निवास के कुलीन स्वामी, सुंदर एमिली चार्ल्सवर्थ के चाचा और

संरक्षक थे, जिनके माता-पिता की मृत्यु तब हो गई जब वह अभी बच्ची ही थीं। उन्होंने अपनी अंतिम सांस लेते हुए उन्हें अपने इकलौते जीवित रिश्तेदार की देखरेख में सौंप दिया था। इस जिम्मेदारी को मार्क्विस ने पूरी निष्ठा से निभाया, जैसा कि पाठक इस तथ्य से समझ सकते हैं कि उन्होंने जॉन गिलफोर्ड एस्क्वायर को अपनी भतीजी का शिक्षक नियुक्त किया था और बदले में एमिली ने भी उनके प्रति वही स्नेह दिखाया जो एक दयालु हृदय हमेशा उन लोगों के प्रति रखता है जिनसे उसे कोई लाभ प्राप्त हुआ हो।

मेरे पिछले अध्याय में उल्लिखित समय के लगभग एक सप्ताह बाद, एक दोपहर लेडी एमिली पश्चिमी बुर्ज में अपने एकांत कक्ष में बैठी थीं। वह अकेली थीं। उनकी कोहनी उनके बगल में रखी छोटी सी मेज पर टिकी थी और उनकी गहरी काली आँखें खुली जाली से दिखाई देने वाली दूर-दूर तक फैली नीली पर्वत श्रृंखला पर गहरी उदासी के भाव से टिकी हुई थीं। मैं नहीं बता सकता कि वह क्या सोच रही थीं क्योंकि मैंने कभी सुना नहीं, लेकिन जल्द ही उनके कोमल गालों से टपकते कुछ आँसुओं ने यह प्रकट कर दिया कि उनके विचार एल'एलेग्रा की बजाय आईआई पेंसेरोसा से अधिक संबंधित थे; ये मूक मॉनिटर उसे उसकी उदास तन्मयता से जगाते हुए प्रतीत हुए। एक गहरी आह भरकर वह खिड़की से दूर हट गई और पास रखे वीणा को अपनी ओर खींचकर मधुर धीमी आवाज़ में निम्न गीत गाने लगी: रात पूरी तरह शांत और स्थिर हो गई। चाँद घाटी और पहाड़ियों पर चमक रहा था। तारे आकाश में काँप रहे थे। तभी उस फीके, उदास प्रकाश में एक कोमल स्त्री आई। घूंघट और वीणा के साथ, बेदाग सफेद, सुंदर माथा और गहरी नीली आँखें। उसका प्रेमी विशाल गहरे सागर में, उग्र और कठोर महासागर में, यात्रा कर रहा था। और अब वह उसके शीघ्र और सुरक्षित लौटने के लिए प्रार्थना और रोने के लिए चल रही है। वह अक्सर रुक जाती है क्योंकि हवा उन विशाल वृक्षों से होकर बेतहाशा कराहती है। उस स्वर से चौंककर, जो आवाज़ें उठीं, वे आधी रात के आकाश में आत्मा की आह जैसी थीं। इतनी कोमल, इतनी उदास, इतनी नीरस कि भटकती हवा बहती चली गई। और जैसे-जैसे वह सुनती रही, अनचाहे विचार उठते रहे, जब तक कि मोती जैसे आँसू की बूँदें चमकने लगीं। उसने अपनी तारों जैसी आँखों में सब कुछ देखा। उसके प्यार का गौरवशाली युद्धपोत तूफ़ान से भरे गहरे समुद्र में बेतहाशा डगमगा रहा था, प्रचंड हवाओं के विनाशकारी झोंकों से उसका ढांचा चकनाचूर हो गया था। और जैसे ही लाल बिजली का कफ़न

टूटा और समुद्र और बादलों पर आग की लपटों की तरह चमका, उसने एक गहरी और तेज़ गड़गड़ाहट सुनी, जो फिर धीमी गूँज में विलीन हो गई। और जैसे ही वह गड़गड़ाहट शांत हुई, उसने तेज़ लहरों के बीच अपना एडवर्ड्स ईगल का पंख देखा। इस तरह उस भयावह दृश्य को देखते हुए और विचारों के धुंधले क्षेत्रों में उसकी आत्मा के भयानक अंत को देखते हुए, पूरे जंगल में एक आवाज़ गूंजी। वह महिला हिरण की तरह उछल पड़ी, "यह वही है, यह वही है!" वह चिल्लाई। और इससे पहले कि एक और पल का समय बीतता, स्वर्ग ने उसे समय के अशांत प्रवाह में जगह दे दी! और हमारी लेडी की कृपा से लॉर्ड एडवर्ड ने अपनी दुल्हन को गले लगाया। गीत समाप्त हो गया था, लेकिन उसकी सिसकियाँ अभी भी वीणा के तारों में गूंज रही थीं, जिनसे विलाप के लंबे स्वर निकल रहे थे, जिनकी दुखभरी ध्वनि उस प्रेम प्रसंग के सुखद अंत के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त लग रही थी जिसे वह अभी गा रही थी। जिन आँसुओं को उसने पहले रोक रखा था, वे अब खुलकर बहने लगे और सिसकियाँ उसके भीतर छिपे दुख को प्रकट करने लगीं। तभी अचानक दरवाजा खुला और एक नौकर ने यह सूचना दी कि एक सज्जन आए हैं जो लेडी से मिलना चाहते हैं।

“एक सज्जन!” लेडी एमिली ने अपनी आँखें पोंछते हुए और कुछ हद तक संयमित होने की कोशिश करते हुए कहा, “वह कैसे हैं? क्या आपने उन्हें पहले कभी नहीं देखा?”

"बिल्कुल नहीं, मेरी मैडम, वह एक मिलनसार युवक है जिसकी निगाहें बहुत तेज हैं।"

क्या उसने आपको अपना नाम नहीं बताया?

"नहीं, मैंने उससे पूछा कि यह क्या है, लेकिन उसने मुझे कोई जवाब नहीं दिया।"

“यह तो अजीब बात है। क्या वह अकेला है या उसके साथ नौकर भी हैं?”

उसके पास सिर्फ एक छोटा सा पन्ना है, बस इतना ही।

"ठीक है, उसे मेरे ड्राइंग रूम में ले चलो और कहो कि मैं तुरंत नीचे आ रहा हूँ।"

नौकर ने झुककर प्रणाम किया और चला गया। लेडी एमिली ने जल्दी से अपने चेहरे पर आए आंसुओं के निशान मिटाए, पानी से चेहरा धोया, अपने कपड़े ठीक से सँवारे और बिखरे बालों को संवारा। इस तरह तैयार होकर वह उस अनजान मेहमान की सेवा करने के लिए आगे बढ़ीं। हल्के कदमों से वह अपने कमरे से सीढ़ियों से नीचे उतरीं और गलियारे के एक हिस्से से गुज़रते हुए ड्राइंग रूम तक पहुँचीं। उनके स्पर्श से

ही ड्राइंग रूम के गुलाब की लकड़ी के तह वाले दरवाजे अपने पॉलिश किए हुए कब्जों पर बिना आवाज़ किए खुल गए और वह अंदर चली गईं। अजनबी, जिसका लंबा और शाही कद उनके सामने उस बड़ी मेहराबदार खिड़की के ठीक सामने खड़ा था, जहाँ से वह बाहें मोड़े हुए झाँक रहा था, ने उन्हें देखा तक नहीं। एक पल के लिए वह उसकी मूर्ति जैसी गरिमा को निहारने के लिए रुक गईं। पता नहीं क्यों, उसे देखते ही उनका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। लेकिन इस डर से कि कहीं वह अचानक मुड़कर उन्हें चौंका न दे, उन्होंने हल्की सी खाँसी से अपनी उपस्थिति का आभास कराया। वह चौंक गया और पीछे मुड़ गया। उनकी आँखें मिलीं। लेडी एमिली के चेहरे पर छाई उदासी जादुई ढंग से गायब हो गई और उसकी जगह जीवंतता की एक चमकदार किरण चमक उठी।

"लेस्ली, प्यारे लेस्ली!" वह खुशी से उछलते हुए उसकी ओर बढ़ी। "क्या यह तुम हो? तुम वर्दोपोलिस में कितने समय से थे? तुम बहुत समय से वापस क्यों नहीं लौटे? ओह, तुम्हारे जाने के बाद से मैं तुम्हारे बारे में कितना सोचती और रोती रही हूँ।"

वह बोलती रही, लेकिन जब उसने देखा कि उसके हार्दिक स्वागत के बदले उसे केवल एक ठंडा और अभिमानपूर्ण अभिवादन मिला, तो वह शर्मिंदगी से रुक गई। कुछ क्षणों तक दोनों के बीच मौन रहा, जिसे अंततः लेस्ली ने तोड़ा, जो अभी भी अपनी बाहें मोड़े खड़ा था और उसे ध्यान से देख रहा था।

"खूबसूरत पाखंडी," उसने कहा और फिर रुक गया, उसके बारीक कटे होंठ तीव्र भावनाओं से कांप रहे थे।

"क्या बात है?" लेडी एमिली ने धीमी आवाज़ में पूछा, "क्या मैं आपसे इतने लंबे समय बाद दोबारा मिलकर अपनी खुशी ज़ाहिर करने में कुछ ज़्यादा ही आगे बढ़ गई, कुछ ज़्यादा ही भावुक हो गई?"

"यह घटिया नाटक बंद करो," उसके प्रेमी ने सख्ती से कहा, "और मेरे बारे में इतना नीच मत सोचो कि यह सोचो कि मैं तुम्हारे झूठे दिखावों से धोखा खा सकता हूँ। मेरी अनुपस्थिति में तुम बहुत व्यस्त रही हो, इसलिए तुमने मेरे बारे में ज्यादा नहीं सोचा। तुम्हारी झूठी, हालांकि अतुलनीय सुंदरता में कोई और, और निस्संदेह तुम्हारी नज़र में कहीं अधिक मूल्यवान, फँस गया है। अब मैं तुम्हें एक झूठी औरत की तरह त्यागने आया हूँ, भले ही इस प्रयास में मेरा दिल दर्द से फट जाए। लेकिन," उसने गरजती हुई आवाज़ में कहा, जबकि ईर्ष्या की बिजली उसकी भयंकर काली आँखों में चमक रही थी, "मैं तुम्हें उस बदमाश के हवाले आसानी से नहीं करूँगा जिसने मुझे

हटाने की हिम्मत की है। नहीं, उसे बराबरी का संघर्ष करना होगा, उसे अपना चुराया हुआ इनाम पाने के लिए खून में से होकर गुजरना होगा।”

“लेस्ली, लेस्ली,” लेडी एमिली ने कोमल और शांत स्वर में उत्तर दिया, “तुम्हें धोखा दिया गया है, लेकिन मेरे द्वारा नहीं। अब शांति से बैठो और मुझे वह सब बताओ जो तुमने मेरे नुकसान के बारे में सुना है। देखो, मैं क्रोधित नहीं हूँ, भले ही यह तुम्हारे प्रति मेरी अपेक्षा से बिलकुल अलग प्रतिक्रिया है।”

“साइरेन,” उसके अभी तक असंतुष्ट प्रेमी ने कहा, “कौन कल्पना कर सकता था कि इतनी मधुर आवाज का इस्तेमाल झूठ बोलने में किया जा सकता है या इतना प्यारा चेहरा एक नखरेबाज़ के खोखले दिल की बेईमानी को छुपाने का मात्र एक मुखौटा हो सकता है।”

लेडी एमिली, जिनका धैर्य इस निरंतर कठोरता को सहन करने में असमर्थ था, फूट-फूटकर रोने लगीं। लेस्ली, उनकी पीड़ा से, चाहे वह वास्तविक हो या दिखावटी, बहुत प्रभावित हुए और सोचने लगे कि क्या उन्हें इतने घमंडी शब्दों में उन्हें फटकारने का अधिकार था, और खुद से पूछने लगे कि क्या वे रिपोर्टें, जिन्होंने उनके संदेह को जन्म दिया था, स्वयं निराधार तो नहीं थीं। इन विचारों के प्रभाव में, वे उस सोफे के पास गए जिस पर वे अत्यधिक घबराहट के कारण खड़े न हो पाने पर गिर पड़ी थीं, और उनके बगल में बैठकर उनका हाथ पकड़ा, लेकिन उन्होंने उचित गर्व के साथ अपना हाथ हटा लिया।

“श्री लेस्ली,” वह चौंकते हुए बोली, “आपके शब्दों से पता चलता है कि मेरे प्रति जो आदर आप कभी दिखाने का दिखावा करते थे, वह अब नहीं रहा। आप चाहते हैं कि हम अलग हो जाएं, लेकिन यकीन मानिए कि जिसे मैं अब तक अपना सबसे प्रिय मित्र मानती आई हूँ, उसे त्यागने में मुझे चाहे कितना भी दर्द क्यों न हो, इस आवश्यक और कष्टदायक कदम को उठाने में मैं एक पल भी नहीं हिचकिचाऊंगी। तो अलविदा, मुझे उम्मीद है कि दूसरों पर किए गए अत्याचारों के लिए पश्चाताप की कड़वाहट इस दुनिया के आपके हिस्से की बुराइयों में कभी नहीं जुड़ेगी।”

जैसे ही उसने बोलना शुरू किया, उसके भयभीत पीले पड़े गालों पर खून फिर से दौड़ उठा, उसकी आँसुओं से भरी आँखें उल्कापिंड की तरह चमक उठीं और उसका दुबला-पतला शरीर स्वाभाविक रूप से जागृत गर्व से फूला हुआ प्रतीत हुआ। लेस्ली चुपचाप बैठा रहा जब तक कि वह जाने के लिए मुड़ी नहीं, फिर अपनी सीट से

उछलकर वह जल्दी से उसके और दरवाजे के बीच खड़ा हो गया।

"तुम नहीं जाओगी," उसने कहा, "मुझे पूरा यकीन है कि मैं गलत था, जो व्यक्ति तुम्हारे शब्द सुन सकता है और तुम्हारे चेहरे के भाव देख सकता है, वह अमानवीय ही होगा यदि वह अब भी तुम्हारे निर्दोष होने पर संदेह करे।" लेडी एमिली अनिश्चित कदमों से आगे बढ़ती रही, लेकिन अब उसके गोरे गालों पर मुस्कान की एक हल्की सी झलक दिखाई देने लगी।

"अच्छा लेस्ली," उसने कहा, "तुम एक सच्चे कलाकार की तरह हो, सबसे चंचल स्वभाव के पुरुषों में से एक। पर इस समय तुम मुझसे इतने नाराज़ थे कि मुझे कमरे में रहने से डर लग रहा था, और अब तुम मुझे जाने भी नहीं दे रहे हो।" उसके चेहरे पर एक और शरारती मुस्कान खिल उठी, "शायद अब मुझे यहाँ नहीं रहना चाहिए। मैं सचमुच बहुत गुस्से में हूँ और अगली बार जब कर्नल पर्सी आएँ (क्योंकि मुझे लगता है कि तुम उन्हीं से जलते हो), तो मैं उन्हें बताना चाहती हूँ कि मैंने उनके प्रतिद्वंदी को रास्ते से हटा दिया है और उनसे तुरंत शादी कर लूँगी।"

"चुप रहो एमिली," लेस्ली ने दरवाजे के पास अपनी जगह छोड़ते हुए जवाब दिया, "मैं तुम्हें इस तरह बोलते हुए बर्दाश्त नहीं कर सकता, चाहे मजाक में ही क्यों न हो। चलो बैठते हैं और मुझे गंभीरता से बताओ कि वह दुष्ट कौन है और क्या है जिसका नाम अभी-अभी तुम्हारे होंठों से निकला है।"

"वह बहुत ही सुंदर और गुणी व्यक्ति हैं," उसने उत्तेजक लहजे में उत्तर दिया, "और मेरे चाचा कहते हैं कि वह सेना के सबसे बहादुर सैनिकों में से एक हैं।"

लेस्ली की आंखें चमक उठीं और उसकी भौंहें फिर से तन गईं। उसने पूछा, "क्या मुझे अब भी यह सोचना चाहिए कि तुम उस कुख्यात खलनायक के प्रति पक्षपात रखते हो?"

"हे भगवान!" महिला ने हैरानी से कहा, "क्या मैं एक साथ दो लोगों को पसंद नहीं कर सकती? तुम तो कितने एकाधिकारवादी हो!" उसके प्रेमी ने जिस बेताबी से उसका हाथ पकड़ा और उसके गालों पर जो लाली छा गई, उसने उसे आगाह कर दिया कि उसने बहुत देर तक मजाक किया है। उसने बदले हुए स्वर में कहा, "लेकिन हालांकि कर्नल वैसा ही है जैसा मैंने उसका वर्णन किया है, फिर भी मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि आपको डरने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि मैं उससे घोर नफरत करती हूं और दुनिया में कोई भी चीज मुझे अपना नाम एमिली चार्ल्सवर्थ से

एमिली पर्सी में बदलने के लिए न तो लुभा सकती है और न ही मजबूर कर सकती है।"

"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!" उत्साह से भरी लेस्ली ने कहा, "इस आश्वासन के लिए! इसने मेरे ऊपर से बहुत बड़ा बोझ हटा दिया है, लेकिन मुझे बताओ प्रियतम, ये भ्रामक खबरें कैसे फैलीं, क्या कर्नल पर्सी आपसे मिलने आए थे?"

"उसने मुझसे शादी का प्रस्ताव रखा, लेकिन मुझे उसकी अनुपस्थिति याद आ गई और मैंने उसे तुरंत अस्वीकार कर दिया। फिर उसने मेरे चाचा से संपर्क किया, जो दुर्भाग्यवश सभी अभिभावकों की तरह व्यवहार करते हुए मुझे तुरंत उसे अपने भावी पति के रूप में स्वीकार करने का आदेश दिया। मैंने आनाकानी की, मेरे चाचा ने जोर दिया, कर्नल ने विनती की, दबाव के संकेत दिए गए। इससे मैं और अधिक बेचैन हो गई, पादरी को बुलाया गया। तब मैं रोने लगी, कर्नल ने मुझे इतना नरम देखकर थोड़ा उद्दंड हो गया, उसने कहा कि रोने और मुंह फुलाने के बजाय, मुझे यह सोचना चाहिए कि मैं उस व्यक्ति की पसंद से बहुत सम्मानित महसूस कर रही हूँ जिसे वर्दोपोलिस की सभी महिलाएं पसंद करेंगी। इससे मेरी आत्मा जागृत हो गई। मैं उठ खड़ी हुई क्योंकि मैं दोनों उत्पीड़कों के सामने घुटने टेक रही थी और उससे कहा कि वह मेरे तिरस्कार और घृणा का पात्र है और उसे कभी भी उस दिल में कोई जगह पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए जो पूरी तरह से किसी और के लिए समर्पित है। यह सुनकर वह उसी तरह क्रोधित और भौंहें चढ़ा बैठा जैसे आपने अभी किया। मेरे चाचा ने पूछा कि पसंदीदा कौन है... मेरा प्रेमी आ गया था। मैंने तुरंत कहा कि वह न तो लॉर्ड है और न ही नाइट, बल्कि एक युवा और प्रतिभाशाली कलाकार है। अगर आप उन दोनों के आश्चर्य के उस भयानक दृश्य को देखते, तो आप समझ जाते। वे दोनों मुंह खोले और आंखें घूरते हुए आश्चर्य से भर उठे। यह दृश्य बिल्कुल हास्यास्पद था और मेरे मन में डर होने के बावजूद मैं खुलकर हंस पड़ी। इससे वे और भी चिढ़ गए। कर्नल ने कसम खाई कि वह मुझे उससे शादी करने के लिए मजबूर करेगा या मर जाएगा, और मेरे चाचा ने कमर पर हाथ रखकर शपथ ली कि कर्नल पर्सी के अलावा कोई भी पुरुष, चाहे राजा हो, भिखारी हो, ड्यूक हो या कलाकार, मेरा पति नहीं होगा। मैं मुस्कुराई, लेकिन कुछ नहीं बोली। इसके बाद कुछ समय तक मुझे मेरे कमरे में ही बंद रखा गया और दहलीज पार करने की इजाजत नहीं दी गई, कहीं मैं भाग न जाऊं। इस सख्ती से मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया: मैं पीली और दुबली पड़ गई। मेरे चाचा (जो

अपनी कठोरता के बावजूद मुझसे प्यार करते हैं) ने यह बदलाव देखा और आदेश दिया कि मुझे इस शर्त पर रिहा किया जाए कि मैं कर्नल के साथ अपना चित्र बनवाने के लिए जाऊं। पहली बार मैं कर्नल के चित्र के लिए डी लिस्ले के पास गई। पर्सी ने मुझे बताया कि उसने मेरे प्रेमी का पता लगा लिया है और उसे कई बार देखा भी है। इससे मैं थोड़ा डर गई, लेकिन मैंने इस बात से खुद को तसल्ली दी कि तुम इस समय वर्दोपोलिस से दूर हो और इसलिए उसकी पहुँच से बाहर हो। लेकिन अब जब तुम लौट आए हो, तो मुझे बहुत डर है कि वह किसी न किसी तरह से तुम्हारा नाश किए बिना चैन से नहीं बैठेगा।

"एमिली," लेस्ली ने अपनी संक्षिप्त कहानी समाप्त करते हुए कहा, "तुमने उदारता और सच्चाई से काम लिया है। तुम एक गरीब और बेसहारा कलाकार के प्रति वफादार रही हो, या यूँ कहो कि जिसे तुम ऐसा समझती थी, और तुमने उस पुरुष को ठुकरा दिया है जिसकी जन्मजात उम्मीदें और व्यक्तिगत उपलब्धियाँ उसे तुम्हारी ही जाति की हर महिला के लिए सर्वोच्च प्रशंसा का पात्र बनाती हैं। अब मुझे पूर्णतः यह विश्वास है कि तुम मुझे मेरे लिए प्यार करती हो और तुम्हारे प्रेम में स्वार्थ का कोई अंश नहीं है। इसलिए, तुम्हारे निस्वार्थ स्नेह के कारण ही मैं जीवन में अपनी वास्तविक स्थिति और पद प्रकट कर रहा हूँ। मैं वह नहीं हूँ जो दिखता हूँ, भाग्य का गुलाम या मेहनतकश परिवार का पुत्र। नहीं, मैं एल्बिन कबीले का मुखिया, सेंट क्लेयर का अर्ल, कोहरे के जंगली बच्चों का सरदार हूँ। मैं ऐसे पूर्वजों की वंश-परंपरा से आता हूँ जो उतने ही गौरवशाली हैं जितने कि वे जिनके माथे पर कभी कुलीनता का मुकुट रहा हो। मेरे साथ संबंध बनाने से तुम अभाव और भीख मांगने की स्थिति में नहीं आओगी, बल्कि शुद्ध रक्त का मिलन होगा, विशाल भूमि का मिलन होगा और प्रेम भरे हृदय बंधन में बंधेंगे। मृत्यु ही इसे नष्ट कर सकती है। तो मेरे साथ आओ, एमिली, अपने बंधनों को तुरंत तोड़ दो। एक दुष्ट के आग्रह से खुद को मुक्त करो। मैं तुम्हें उत्तर में स्थित अपने पर्वतीय क्षेत्रों में ले जाऊंगा और तुम सेंट क्लेयर की काउंटेस और उन सात हजार सबसे बहादुर योद्धाओं की स्वामिनी बन जाओगी जो कभी किसी सरदार के झंडे के नीचे एकत्रित हुए हों। एलिम्बोस पर स्थित मेरा महल तुम्हारे चाचा के महल से कहीं बड़ा है और मेरा बहादुर कबीला अपनी प्यारी और सौम्य स्वामिनी को एक देवी के समान श्रद्धा अर्पित करेगा।

जैसे ही लेस्ली, या जैसा कि अब हमें उन्हें रोनाल्ड लॉर्ड सेंट क्लेयर कहना चाहिए,

ने अपनी पदवी और शक्ति का प्रदर्शन किया, उनके माथे पर गर्व का रक्त चढ़ गया, उनकी आँखें उनके अपने ही जंगली चीलों की तरह चमक उठीं और उनके कदमों की गरिमा और चाल-ढाल, जैसे ही वे धीरे-धीरे अपार्टमेंट में टहल रहे थे, यह प्रमाणित कर रही थी कि वे सौ अर्लों के वंशज हैं। लेडी एमिली ने उस उच्च उत्साह को महसूस किया जिसने उनके नेक चेहरे में एक अलग ही सुंदरता भर दी थी और अपनी सीट से उठकर उन्होंने स्पष्ट रूप से उनकी ओर हाथ बढ़ाया और कहा, "मेरी अटूट निष्ठा की प्रतिज्ञा स्वीकार करो, चाहे पूरी पृथ्वी मेरे विरुद्ध एकजुट हो जाए, मैं कभी किसी और से प्रेम नहीं करूंगी। 'मृत्यु तक सच्चा रहना' मेरा चुना हुआ आदर्श वाक्य होगा। मैं तुमसे पहले से अधिक प्रेम नहीं कर सकती, लेकिन मुझे तुम्हारे लिए इस बात की खुशी है कि तुम अफ्रीका के सबसे गौरवशाली रईसों के साथ पद में प्रतिस्पर्धा कर सकते हो।" "क्या तुम मेरे साथ चलने को तैयार हो?" उन्होंने पूछा, "हाँ। मुझे किस समय प्रस्थान करना होगा?"

“आज रात बारह बजे चेस्टनट एवेन्यू में मुझसे मिलिए।” “मैं समय पर आऊंगी,” महिला ने कहा। “और अब मेरे स्वामी, मुझे बताइए कि आप वर्दोपोलिस में भेस बदलकर क्यों आए थे?”

“एमिली, तुम्हें तो पता ही होगा कि मेरी शिक्षा इंग्लैंड में हुई थी। ऑक्सफ़ोर्ड छोड़ने के बाद मैं कुछ समय लंदन में रहा, वहाँ मुझे समाज के उच्च वर्गों में प्रवेश मिला; युवा और धनी होने के कारण मुझ पर विशेष ध्यान दिया जाता था। खासकर महिलाएँ मेरे साथ बहुत ही सौहार्दपूर्ण व्यवहार करती थीं, लेकिन मुझे संदेह था कि यह विशेष कृपा मेरे व्यक्तिगत गुणों से अधिक मेरे पद और धन के कारण थी। एक बार यह विचार मेरे मन में आ गया तो मैं इसे किसी भी तरह से निकाल नहीं सका। इसलिए मैंने अफ्रीका की यात्रा करने और यह देखने का निश्चय किया कि एक अनजान और प्रतीततः मित्रहीन अजनबी का भाग्य क्या होता है। वर्दोपोलिस में मेरी मुलाकात डी लिस्ले से हुई, उनके शिष्टाचार और व्यवहार ने मुझे प्रसन्न किया जबकि उनके गुण और गरीबी ने मेरे मन में गहरी सहानुभूति जगाई। मैंने उन्हें पूरी गोपनीयता का पालन करने का निर्देश देते हुए बताया कि मैं कौन हूँ और गुमनाम रहने की मेरी क्या मंशा है। चित्रकला का कुछ ज्ञान होने के कारण मैंने एक कलाकार का रूप धारण करने का निश्चय किया और तदनुसार डी लिस्ले के मार्गदर्शन में खुद को प्रस्तुत किया। उनके घर पर ही मेरी मुलाकात तुमसे हुई क्योंकि तुम अपने योग्य शिक्षक श्री गिफोर्ड

के संरक्षण में कभी-कभी वहाँ प्रतियाँ और चित्र खरीदने आती थीं। इन मुलाकातों के नतीजों के बारे में मुझे बताने की ज़रूरत नहीं है, थोड़े ही समय में हम एक-दूसरे से बहुत करीब आ गए और जब मैं अपनी पदवी का ऐलान करके लॉर्ड चार्ल्सवर्थ से आपका हाथ मांगने ही वाला था, तभी अचानक मुझे ब्रान्नी पहाड़ों में स्थित अपनी उत्तरी जागीरों में बुला लिया गया। कबीले से जुड़े कानूनी मामलों और व्यापारिक गतिविधियों के कारण मुझे लगभग बारह महीने तक रुकना पड़ा और अब मैं वर्दोपोलिस लौट आया हूँ, दो उद्देश्यों से: एक तो आपको अपनी दुल्हन बनाना और दूसरा, यह पूरा होने पर विद्रोही अशान्तियों के खिलाफ ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के झंडे तले शामिल होना।

“मुझे बस एक और सवाल पूछना है,” लेडी एमिली ने कहा, “कर्नल आपसे कैसे परिचित हुए?”

“मैं इसके बारे में तभी जान पाऊंगा जब मैंने आपको डेलिसल के घर पर देखा होगा। मुझे याद है कि एक दिन जब आप मुझसे बातचीत कर रहे थे, तब एक सज्जन व्यक्ति, जो उनसे काफी मिलता-जुलता था, स्टूडियो में दाखिल हुआ और हम दोनों को अत्यंत ध्यान से देख रहा था, लेकिन यह घटना मेरी स्मृति से निकल गई थी, जब तक कि आपके प्रश्न ने मुझे याद नहीं दिला दिया।”

“एक बात ऐसी है जिस पर मैं अभी भी संतुष्ट होना चाहती हूँ,” लेडी एमिली ने मुस्कुराते हुए कहा, मानो उन्हें अचानक कोई विचार आया हो। “क्या आप ओलंपिक खेलों में भेस बदलकर उपस्थित थीं?” “हाँ।”

“तुमने कौन सी पोशाक पहनी थी?” “मेरे कबीले की पोशाक।”

"तब तुम ही वह वीर धनुर्धर थे जिसका तीर सफेद छड़ी को कंपकंपा देता था जब बाकी सभी तीर विफल हो जाते थे।"

“तुमने बड़ी चतुराई से अनुमान लगाया है एमिली, जैसा तुम कह रही हो वैसा ही है।” “तो यकीन मानिए मेरे स्वामी,” उसने गंभीरता से कहा, “कर्नल पर्सी ने आपको पहचान लिया। उनकी नज़र बाज़ से भी तेज़ है और मैंने देखा कि जब आपने बोलने के लिए अपना मुखौटा थोड़ा ऊपर उठाया तो उन्होंने आपको घूरकर देखा। अगर मैंने आपकी आवाज़ सुनी होती तो मुझे यकीन है कि मैं उसे याद रखती और निस्संदेह उन्होंने ऐसा ही किया होगा। ओह, मुझे डर है कि उनका प्रतिशोधी मन तब तक चैन से नहीं बैठेगा जब तक वह आपको पूरी तरह से नष्ट न कर दे।”

“मुझसे मत डरो एमिली, मेरी तलवार उसके बराबर है और मेरी भुजा भी। अगर उसने तुम्हारी उस चमकीली आँख में एक भी आँसू बहाया, तो उसे अपने दिल के खून से इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। और अब मेरी प्यारी, अलविदा, हमें अभी अलग होना होगा, लेकिन अगले सूरज के उगने से पहले धरती और नरक की संयुक्त शक्तियाँ भी हमें अलग नहीं कर पाएंगी। बस नियत समय याद रखना, समय की पाबंद रहना और बाकी सब मुझ पर छोड़ देना।”

लेडी एमिली ने अपना वादा दोहराया और प्रेमी जोड़े आवश्यक तैयारियों के लिए अलग हो गए। जैसे ही लॉर्ड सेंट क्लेयर ड्राइंग रूम से निकले, उन्होंने एक धुंधली आकृति को अंधेरे गलियारे में तेज़ी से जाते हुए देखा। उन्हें डर था कि कहीं उनकी बातचीत किसी ने सुन न ली हो, इसलिए उन्होंने उस आकृति का पीछा किया। पहले तो उन्हें लगा कि वे कुछ हद तक सफल हो रहे हैं, लेकिन अचानक वह आकृति एक संकरे रास्ते में मुड़ गई और वे उसे देख नहीं पाए। अपनी इस विफलता से निराश और इस बात से थोड़ा आशंकित कि फुर्तीले कदमों वाले उस व्यक्ति का इरादा क्या हो सकता है, उन्होंने वापस लौटने और लेडी एमिली को अपनी देखी हुई बात बताने का सोचा, लेकिन तभी हॉल में मार्क्विस ऑफ चार्ल्सवर्थ की कर्कश, सख्त आवाज सुनाई दी। इसलिए हमारे नायक ने तुरंत वहां से चले जाना ही बेहतर समझा, कहीं ऐसा न हो कि उस प्रतिष्ठित व्यक्ति को उनकी मौजूदगी का पता चल जाए और भागने की पूरी योजना विफल हो जाए। इसलिए वह अस्तबल की ओर बढ़ा, जहाँ उसने सेवक और घोड़े दोनों को तैयार पाया। पश्चिमी बुर्ज पर एक नज़र डालते हुए और अपनी प्रेमिका के लिए एक आह भरते हुए, वह अपने सुंदर अरबी घोड़े पर सवार होकर अस्तबल से बाहर निकला और कुछ ही मिनटों में वर्दोपोलिस जाने वाली सड़क पर आधे रास्ते पर पहुँच गया।

अध्याय पाँचवाँ

फिलहाल मुझे लॉर्ड सेंट क्लेयर और लेडी चार्ल्सवर्थ को यह देखने के लिए छोड़ना होगा कि कर्नल पर्सी क्या कर रहे थे जब वे उन्हें इतनी चालाकी से धोखा देने की तैयारी कर रहे थे। कर्नल डिम-डिम स्क्वायर में एक विशाल और आलीशान हवेली में रहते थे, जो उस समय शहर का एक फैशनेबल इलाका था, हालांकि अब यह बिना काम वाले वकीलों, गैर-कमीशन प्राप्त अधिकारियों, बिना संरक्षण वाले लेखकों और अन्य आवारा लोगों का पसंदीदा निवास स्थान है। यह निवास, साथ ही इससे जुड़े महंगे नौकर-चाकर, गाड़ियाँ आदि, आंशिक रूप से मालिक के वेतन से, आंशिक रूप से बिलियर्ड और ताश के खेल में उनकी कमाई से और आंशिक रूप से उनकी बड़ी उम्मीदों के बल पर सूदखोरों से लिए गए उदार ऋणों से चलता था। वहाँ एक शानदार सैलून में, जो विलासिता और सुरुचिपूर्ण ढंग से निर्मित सभी भव्यता से सुसज्जित था, कर्नल पर्सी उस दोपहर अकेले बैठे थे जिसका जिक्र मेरे पिछले अध्याय में किया गया है। उनका सुगठित शरीर रेशमी सोफे पर अत्यंत सहजता से फैला हुआ था। उसकी सुस्त आंखें और पीला गाल पिछली रात की सुस्ती बयां कर रहे थे, जबकि उसके पास ही मेज पर रखे खाली डेकैंटर और गिलास यह दर्शा रहे थे कि शराब का सेवन उसकी सुस्ती को दूर करने के लिए किया गया था, हालांकि इसका कोई असर नहीं हुआ। जब वह इस तरह अपने हाथों को अपने ऊंचे और कुलीन माथे पर दबाए लेटा हुआ था, तभी अचानक सैलून की खिड़की खुली और लाल बालों वाला और अवर्णनीय वस्त्र पहने एक आदमी बाहर से अंदर आ गया।

“राक्षस!” पर्सी ने गुस्से में गाली देते हुए कहा, “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे घर में इतनी बेशर्मी से घुसने की। तुमने हाल ही में मेरे साथ जैसा बर्ताव किया है, उसके बाद तो तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे पास आने की?”

इस स्वागत से उस निर्भीक प्रवेशकर्ता का ज़रा भी मनोबल नहीं गिरा, जिसे हमारे पाठक निस्संदेह गधे द्वारा खींचे जाने वाले रथ के नायक के रूप में पहचान चुके होंगे। इसके विपरीत, वह मुस्कुराते हुए आगे बढ़ा और कर्नल का हाथ अपने सींगदार पंजे से पकड़कर बोला, "कैसा है तुम मेरे प्यारे बदमाश? मुझे डर है कि तुम अपने सबसे अच्छे दोस्तों की कामना के अनुरूप नहीं हो, तुम्हारा पीला चेहरा और यह बुखार से व्याकुल हाथ बहुत कुछ बयां करते हैं।"

“तुम सबसे बड़े बदमाश हो जो कभी भांग का हार पहनने के लायक हो, तुम पर

लानत हो!” कर्नल ने जवाब दिया और साथ ही दूसरे हाथ से उसके चेहरे पर इतनी ज़ोर से प्रहार किया कि कोई भी दूसरा आदमी गिर जाता, लेकिन उस हट्टे-कट्टे सारथी के मुंह से बस एक ठहाका निकला। “तुम्हें दस हज़ार बार लानत हो, मैं कहता हूँ, तन-मन की कसम, हमारे आखिरी सौदे के बाद तुम अकेले और बिना हथियारों के मेरा सामना करने की हिम्मत कैसे करते हो?”

“मैंने तुम्हारे साथ ऐसा क्या किया है, हे दुष्टों के सम्राट?”

“तुमने मेरे साथ क्या किया है, जाहिल? क्या मैंने तुम्हें दो सौ गिनी की रिश्वत नहीं दी थी ताकि तुम खुद अपने घिनौने रथ और गधों के साथ प्रतियोगिता में भाग लेकर कैप्टन व्हीलर को खेलों में रथ चलाने से रोक सको? क्या मैंने तुम्हें जीतने देने के लिए पचास गिनी और नहीं दिए थे और वफादारी की सौ कसमें खाने के बाद क्या तुमने उन सभी को तोड़कर मुझसे बीस हजार पाउंड की ठगी नहीं की, क्योंकि मैंने अपनी जीत पर इतनी रकम का दांव लगाया था?”

“अच्छा, और अगर मैंने ये सब किया,” गाजर जैसे बालों वाले सज्जन ने उत्तर दिया, “क्या यह वही नहीं है जो आप मेरी स्थिति में करते? आपके ढाई सौ पाउंड मेरी पैंट की जेब में सुरक्षित थे, लेकिन दुर्भाग्य से, जैसे ही यह सार्वजनिक रूप से पता चला कि मैं चुनाव लड़ने वाला हूँ, मेरे खिलाफ चालीस से अधिक दांव लगा दिए गए। मैंने उन सभी को स्वीकार कर लिया और आत्मरक्षा में अपनी पूरी कोशिश की, लेकिन,” उन्होंने आगे कहा, “मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता था, यहाँ आने का मेरा उद्देश्य कुछ पाउंड उधार मांगना था; मैंने पिछले हफ्ते जो कुछ भी कमाया था, उसका एक-एक पैसा शराब और अन्य चीजों में खर्च कर दिया है।”

यह मांग शांत और आत्मसंतुष्ट स्वर में की गई थी, मानो यह दुनिया की सबसे तर्कसंगत मांगों में से एक हो। कर्नल पर्सी इसे और सहन नहीं कर सके, क्रोध से कांपते हुए और पीले पड़े हुए उन्होंने अपनी जेब से भरी पिस्तौल निकाली और उस पर पूरी ताकत से गोली चला दी। पहले हमले की तरह इस हमले का भी कोई असर नहीं हुआ, सिवाय एक भयानक हंसी के। गोली उनके सिर से निकल गई और पलटकर वापस आते समय कर्नल को इतनी जोर से लगी कि खून बहने लगा। इस तरह दूसरी बार भी नाकाम होकर उन्होंने हथियार फेंक दिया और गुस्से में इधर-उधर भागने लगे।

“मैं कितना मूर्ख हूँ,” वह रोते हुए बोला, “मैं अपनी शक्ति व्यर्थ क्यों बर्बाद कर रहा हूँ? जैसा कि मुझे पहले से पता था, वह दानव आग या गोली से अप्रभावित रहता

है, मेरे व्यर्थ प्रयास केवल मुझे उसके उपहास का पात्र बनाते हैं।”

“हा हा हा,” उसके उत्पीड़क ने चिल्लाते हुए कहा, “यह सच है, दुष्ट, तो अब बैठ जाओ और चलो थोड़ी समझदारी भरी बातचीत करते हैं।”

अपने प्रयासों से थककर पर्सी ने खुद को बेमन से कुर्सी पर गिरा दिया: "मौत!" उसने शांत स्वर में कहा, "तुम मनुष्य नहीं हो, जहाँ तक मुझे पता है, तुम साक्षात दुष्ट आत्मा हो, साक्षात शैतान। ऐसे ओलों की बौछार के बाद कोई भी इंसान जीवित नहीं रह सकता था।"

एस डेथ (क्योंकि उस निर्लज्ज धोखेबाज का यही नाम था) ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि अपनी सीट से उठकर एक तरह के बेउफेट या साइड-बोर्ड[n w] की ओर गया, जिस पर शराब आदि की कई बोतलें रखी थीं, और शराब का एक केस लेकर पहले खुद एक लबालब भरा हुआ गिलास भर लिया और फिर दूसरा गिलास खाली करके उसे रोग, मेरा मतलब पर्सी की ओर बढ़ा दिया।

“लो प्यारे,” उसने उसे होठों तक उठाते हुए कहा, “लो इस पेय का स्वाद चखो। तुम कुछ कमजोर लग रहे हो, मुझे लगता है कि तुम्हारे कमजोर दिल को कुछ तसल्ली देने के लिए कुछ होना चाहिए।”

कर्नल, जो उस समय शराबी नहीं थे, चाहे अब वे कितने भी शराबी बन गए हों, उन्होंने दिए गए पेय का बस एक घूंट लिया और उसे श्रीमान एस'डेथ को लौटा दिया, जिन्होंने उसे एक ही बार में पी लिया। बातचीत अब पहले से अधिक जीवंत और कम हिंसक लहजे में चल रही थी। पर्सी का गुस्सा कुछ हद तक शांत हो गया था जब उन्हें पता चला कि उस व्यक्ति के खिलाफ गुस्सा निकालना बेकार है जिसे वे नुकसान नहीं पहुंचा सकते। फिर भी, उनके द्वारा एक-दूसरे से कहे गए हर वाक्य का कम से कम आधा हिस्सा गालियों और अपशब्दों से भरा होता था। एस'डेथ बीस पाउंड के ऋण की मांग करते रहे, जिसे पर्सी ने कुछ समय तक यह कहते हुए मना कर दिया कि उनके पास दुनिया में इतनी रकम नहीं है। तब एस'डेथ ने उन्हें डराने की कोशिश की और उन कुछ बेहद आपराधिक लेन-देनों में उनके खिलाफ मुखबिरी करने की धमकी दी जिनमें वे शामिल थे। इसका मनचाहा असर हुआ: कर्नल ने तुरंत अपनी जेब से एक हीरे का बकल निकाला और उसे फर्श पर फेंकते हुए गाली देकर उन्हें आदेश दिया, "इसे ले जाओ और चले जाओ।" उस शातिर बदमाश ने हंसते हुए उसे उठाया और फिर से साइडबोर्ड पर जाकर एक और गिलास शराब निकाल ली। फिर वह खुली

खिड़की से बाहर निकल गया और जाते हुए बोला, "अलविदा बदमाश! इस समय मेरी हर जैकेट की जेब में दो हजार पाउंड के नोट हैं।" ये शब्द कहकर वह तेजी से भाग गया और उसके पीछे दूसरी पिस्तौल चलने की आवाज आई।

“कमीने! कर्नल ने गुस्से से खिड़की का चौखट बंद करते हुए कहा। काश धरती फट जाए और उसे निगल ले या आसमान फट जाए और उसकी अपनी ही प्रकृति की एक चमक से उसे मौत के घाट उतार दे।”

अपनी इस नेक इच्छा को व्यक्त करते ही वह फिर से उसी सोफे पर लेट गया, जहाँ से उसे उसके अनचाहे मेहमान ने जगाया था। दो घंटे बीत गए और फिर उसे कोई परेशान नहीं कर पाया, लेकिन उस समय के अंत में दरवाजे पर हल्की सी दस्तक सुनाई दी।

“अंदर आ जाओ, जानवर, चाहे जो भी हो,” उसने ऊँची आवाज़ में चिल्लाया। दरवाज़ा धीरे से खुला और वर्दी पहने एक नौकर अंदर आया। “अब क्या चाहते हो, बदमाश?” उसके मालिक ने गुस्से से पूछा।

"महोदय, आपको यह सूचित करने के लिए कि हरा बौना अभी-अभी हांफते हुए पहुंचा है और कहता है कि उसके पास बताने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी है।"

“हरा बौना! उसे मेरी लाइब्रेरी में ले आओ और कहो कि मैं तुरंत आऊंगा।”

नौकर ने झुककर प्रणाम किया और कमरे से चला गया। कर्नल पर्सी लगभग तुरंत उसके पीछे-पीछे पुस्तकालय की ओर चल दिए। अब हम उन्हें यहीं छोड़ देते हैं ताकि वे क्लेड्सडेल कैसल का दोबारा दौरा कर सकें।

लेडी एमिली के निजी ड्राइंग-रूम से लॉर्ड सेंट क्लेयर के निकलने के तुरंत बाद ही उनके चाचा, मार्क्विस ऑफ चार्ल्सवर्थ, अंदर आ गए। वे साठ से सत्तर वर्ष की आयु के एक लंबे और गरिमामय बुजुर्ग थे। उनके भूरे बाल बड़े करीने से घुंघराले और पाउडर से संवारे हुए थे, जो उनके चेहरे को घेरे हुए थे। उनकी तरोताज़ा, धूप में झुलसी त्वचा, कठोर बाज जैसी नाक और विशिष्ट भाव-भंगिमा उन्हें एक अनुभवी सैनिक के रूप में तुरंत पहचान दिला देते, भले ही उनके सैन्य बूट और विशाल तलवार ने यह बात और भी स्पष्ट न कर दी होती।

“अच्छा एमिली,” उसने अपनी भतीजी को सलाम करते हुए कहा, जो उससे मिलने के लिए दौड़कर आगे आई थी। “कैसी हो आज शाम, प्यारी? मुझे लगता है कि अकेले बैठे-बैठे तुम्हारा पूरा दिन नीरस रहा होगा।”

“नहीं चाचा जी,” उसने कहा, “मुझे कभी भी किसी के साथ की कमी महसूस नहीं होती। मेरी किताबें, संगीत और चित्रकारी मुझे इसके बिना भी पर्याप्त व्यस्त रखते हैं।”

"यह तो ठीक है, लेकिन मुझे लगता है कि आज शाम आप पूरी तरह से अकेले नहीं थे, क्या कर्नल आपके साथ नहीं थे?"

“नहीं,” लेडी एमिली ने उत्तर दिया, “आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं चाचा?”

"क्योंकि मैंने आंगन में एक बहुत ही सुंदर घोड़ा खड़ा देखा था, जिसे मैंने उसका घोड़ा समझा था, लेकिन चूंकि वह उसका घोड़ा नहीं था, तो कृपया बताएं कि आपके यहां और कौन-कौन से आगंतुक आए थे?"

यह एक अप्रत्याशित प्रश्न था। हालाँकि, लेडी एमिली इससे विचलित नहीं हुईं। उन्होंने तुरंत वह किया जो शायद किसी उपन्यास की नायिका के लिए उचित नहीं माना जाएगा, यानी एक छोटा सा झूठ बोला।

“ओह,” उसने लापरवाही से कहा, “मुझे लगता है कि घोड़ा श्री लस्ट्रिंग का रहा होगा, जो कपड़े के व्यापारी का प्रशिक्षु है। वह आज दोपहर कुछ सामान लेकर यहाँ आया था जो मैंने कुछ दिन पहले उसके मालिक की दुकान से खरीदा था। और अब चाचा जी,” उसने बातचीत को किसी कम संवेदनशील विषय पर मोड़ने की इच्छा से आगे कहा, “बताइए कि आप आज शहर में क्या कर रहे थे।”

उन्होंने कहा, “सबसे पहले तो मैं ड्यूक से मिलने की इच्छा से वाटरलू पैलेस गया था। हमारी मुलाकात दो घंटे चली और उसके बाद ड्यूक ने मुझे रात्रि भोज पर आमंत्रित किया। वहाँ मेरी मुलाकात डचेस से हुई, जो हमेशा की तरह मिलनसार और सौम्य थीं। उन्होंने आपका हालचाल पूछा और मुझसे कहा कि वे वर्डोपोलिस में कुछ हफ्तों के लिए आपके साथ समय बिताना पसंद करेंगी।”

“प्यारी बच्ची!” लेडी एमिली ने कहा, “मैं उसे दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार करती हूँ, सिवाय आपके चाचा जी, और शायद एक-दो और लोगों के। लेकिन क्या आपने उस नन्ही बच्ची को देखा?” “हाँ।”

क्या यह एक सुंदर बच्चा है?

"यह आश्चर्यजनक रूप से अच्छा है, लेकिन मुझे डर है कि यह बिगड़ जाएगा: ड्यूक हर चीज में इसे बढ़ावा देने के लिए तैयार दिखते हैं और डचेस का पूरा जीवन स्पष्ट रूप से इसी में सिमटा हुआ है।"

और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, कृपया बताएं कि इसे क्या कहते हैं?

"मुझे लगता है आर्थर"

क्या यह अच्छे स्वभाव का प्रतीत होता है?

“मुझे सच में नहीं पता। मुझे लगता है कि यह काफी जिद्दी होगा, रात के खाने के बाद जब नर्स इसे कमरे से बाहर ले जाने की कोशिश करती थी तो इसके और नर्स के बीच अक्सर लड़ाई होती थी, अब क्या आपको इस नन्हे शैतान के बारे में और कोई सवाल पूछना है?”

“अभी नहीं। महल से निकलने के बाद आपने क्या किया?” “मैं जेनीज़ इन में गया और मेजर स्टर्लिंग के साथ एक बोतल शराब पी। उसके बाद मैं अपनी बैरक में गया जहाँ मुझे अपनी रेजिमेंट के अधिकारियों के साथ कुछ काम निपटाना था। यह काम खत्म होने के बाद मैं मिस्टर ट्रेफोइल के यहाँ गया और अपनी भतीजी के लिए उसकी शादी के दिन पहनने के लिए कुछ खरीदा, जो जल्द ही आने वाली है।”

यहाँ मार्क्विस ने अपनी जेब से एक छोटा सा डिब्बा निकाला, जिसे खोलने पर उसमें हीरे का एक शानदार हार, उससे मेल खाते झुमके, अंगूठियाँ और ब्रोच निकले। उन्होंने उन्हें लेडी एमिली की गोद में फेंक दिया। उनकी आँखों में आँसू आ गए, उन्होंने इस कीमती उपहार के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और साथ ही सोचा कि वह अपने दयालु चाचा की इच्छा का कितना बड़ा उल्लंघन करने जा रही हैं। उन्होंने यह देखा और कहा, "अब मेरी प्रिय, चलो शोर-शराबा न करें। कर्नल एक प्रशंसनीय व्यक्ति हैं, शायद थोड़े मनमौजी हैं, लेकिन शादी जल्द ही उन्हें इस मनमौजीपन से मुक्त कर देगी।"

काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। चाचा और भतीजी दोनों के उदास चेहरों से लग रहा था कि वे किसी दुखद विचार में डूबे हुए हैं। अंत में चाचा ने बातचीत शुरू करते हुए कहा, "कुछ दिनों में एमिली, हमें कुछ समय के लिए अलग होना पड़ेगा।" "कैसे?" एमिली चौंक उठी और उसका चेहरा पीला पड़ गया, क्योंकि उसके विचार तुरंत कर्नल पर्सी की ओर चले गए।

“मेरी प्रियतम,” मार्क्विस ने उत्तर दिया, “हाल ही में खबर मिली है कि अशान्ती जनजाति बड़ी संख्या में सेना जुटा रही है। इसलिए ड्यूक सेना में और सैनिकों की आवश्यकता समझते हैं। कई रेजिमेंटों को अतिरिक्त सैनिकों के रूप में भेजा गया है, जिनमें 96वीं रेजिमेंट भी शामिल है, और कमांडर होने के नाते मुझे भी उसके साथ

जाना होगा। इसी कारण डचेस ऑफ वेलिंगटन ने आपको अपने यहाँ आने का निमंत्रण दिया है, क्योंकि उन्हें लगता है कि मेरी अनुपस्थिति में आपको क्लेड्सडेल कैसल बहुत नीरस और एकांत लगेगा। आशा है आप निमंत्रण स्वीकार करेंगे, मेरी प्रियतम।”

"ज़रूर," लेडी एमिली ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, क्योंकि जब उसने उस छलपूर्ण भूमिका के बारे में सोचा जो वह उस सावधान और स्नेही अभिभावक के प्रति निभा रही थी जिससे वह शायद हमेशा के लिए अलग होने वाली थी, तो उसका दिल घबरा गया।

रात के खाने की घोषणा हो चुकी थी और खाना खत्म होने के बाद लेडी एमिली ने सिरदर्द का बहाना बनाकर जल्दी सोने की जहमत उठाई और भारी मन से पश्चिमी बुर्ज में स्थित अपने छोटे से कमरे की ओर चल पड़ीं। कमरे में पहुँचकर दरवाजा बंद करने के बाद वह बैठ गईं और अपने आगे के निर्णायक कदम पर विचार करने लगीं। लंबे चिंतन के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुँचीं कि उनके पास केवल दो ही व्यावहारिक विकल्प थे: या तो अपने चाचा की बात मानकर अपने प्रेमी के प्रति बेवफा साबित होना और जीवन भर के लिए अपनी खुशी का त्याग करना, या मार्क्विस की अवज्ञा करना, सेंट क्लेयर के प्रति वफादार रहना और अपने वादे के अनुसार उनके साथ भाग जाना। ऐसी दुविधा में फँसकर अगर वह दूसरा विकल्प चुनतीं तो भला कौन उन्हें दोष दे सकता था? उन्होंने देरी से होने वाली परेशानियों से बचने के लिए भाग जाने का जोखिम उठाने का निश्चय किया। जैसे ही उन्होंने अपना संकल्प पक्का किया, महल की घंटी ने गहरी और गंभीर स्वर में आधी रात के महत्वपूर्ण समय की घोषणा कर दी। उनकी उत्तेजित कल्पना में घंटी की हर आवाज एक चेतावनी भरी आवाज की तरह लग रही थी जो उन्हें तुरंत वहाँ से जाने का आदेश दे रही थी। जैसे ही आखिरी खोखली गूंज गहरी खामोशी में समा गई, वह उस कुर्सी से उठी जहां वह अब तक एक मूर्ति की तरह स्थिर बैठी थी और खुद को एक बड़े हुड वाले लबादे में लपेटने लगी, जैसा कि उस समय वर्दोपोलिस की महिलाएं अक्सर पहनती थीं और जो घूंघट, टोपी और लबादे के तिहरे उद्देश्य को पूरा करता था।

इस प्रकार सजे-धजे वह चुपचाप अपने कमरे से निकली और भव्य सीढ़ियों की ओर बढ़ने के बजाय घुमावदार बुर्ज वाली सीढ़ियों की ओर मुड़ गई, जो एक खाली हॉल में जाती थीं, जहाँ एक मेहराबदार द्वार सीधे पार्क में खुलता था। जैसे ही वह धीरे

से इस हॉल में दाखिल हुई, ऊँची जालीदार खिड़कियों से छनकर आती चाँदनी में उसने द्वार के पास एक काली आकृति को खड़ा देखा, जिससे उसे गुजरना था। लेडी एमिली दार्शनिक नहीं थीं और इस दृश्य ने उन्हें चौंका दिया, क्योंकि उन्हें तुरंत एक दुष्ट परी की पारंपरिक कहानी याद आ गई, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह इस अपार्टमेंट में रहती है। हालाँकि, चाबियों के गुच्छे की खड़खड़ाहट और एक आदमी की कर्कश बड़बड़ाहट सुनकर उनका डर जल्द ही दूर हो गया।

“मुझे आश्चर्य है,” कथित प्रेत ने एकालाप में कहा, “मुझे आश्चर्य है कि उस भयानक रोशनी ने आखिर क्यों बुझने का फैसला किया, मेरे लिए आधी रात को बिना मोमबत्ती के इस तंग जगह में होना वाकई एक अजीब बात है, उस आखिरी गिलास ने मेरे हाथ को काफी कांपने पर मजबूर कर दिया है और मुझे चाबी का छेद भी दिखाई नहीं दे रहा है।”

लेडी एमिली ने वक्ता को पहचान लिया, जो एक नौकर था और जिसका काम सोने से पहले महल के सभी द्वारों को सुरक्षित करना था। उसकी स्थिति की गंभीरता को देखते हुए, उसे तुरंत एक उपाय सूझा, जो उस आदमी के दिमाग की उलझन को देखते हुए शायद ही असफल होता। उसने खुद को चादर में कसकर लपेट लिया और हॉल के बीच में जाकर, अपनी पूरी ताकत से आदेशात्मक स्वर में बोली, "हे मनुष्य, मैं तुझे महान परी अशराह के निवास से चले जाने का आदेश देती हूँ।" इस चाल का असर तुरंत हुआ। वह डर के मारे चिल्लाते हुए चाबियाँ फेंक बैठा और जितनी तेज़ी से भाग सकता था, भाग गया। लेडी एमिली को अब द्वार खोलने और अपनी पूर्व नियोजित योजना के अनुसार भागने में कोई कठिनाई नहीं हुई। एक आज़ाद हिरण की तरह फुर्ती और तेज़ी से वह चाँदनी रात में लॉन पार करते हुए तय स्थान की ओर दौड़ पड़ी।

ऊँचे शाहबलूत के पेड़ों के बीच एक ठंडी और उदास हवा बह रही थी, जब वह अपने प्रेमी के आने की बेसब्री से प्रतीक्षा करते हुए उनकी विशाल शाखाओं के नीचे घूम रही थी। कभी-कभी एक चौड़ी खुली जगह से आती हुई हल्की रोशनी, जब तेज़ हवा अचानक सभी शाखाओं को एक दिशा में झुका देती थी, और कभी-कभी जब रोशनी कम हो जाती थी और वे अपनी जगह पर वापस आ जाती थीं, तो पत्तों से भरे रास्ते पर हजारों चांदी जैसे चेकर बिखेर देती थीं, जिससे उतनी ही अनिश्चित परछाइयाँ बनती थीं। कभी-कभी ऐसा लगता था मानो सौ भूत विशाल तनों के बीच रेंग रहे हों,

अपने धुंधले हाथों से इशारा कर रहे हों और जैसे ही वह उनके पास आती, गायब हो जाते हों। कभी-कभी अचानक एक बादल चाँद को ढक लेता था, और फिर उसके बाद छाए घने अंधेरे में शाखाओं के चरमराने, पत्तों की सरसराहट और हवा के ज़ोरदार शोर का ऐसा मिश्रण बनता था जो किसी भी मजबूत दिल को भयभीत कर सकता था।

आधे घंटे तक वह ठंडी रात की हवा में कांपते हुए धीरे-धीरे चलती रही और बीच-बीच में रुककर किसी के आने की आहट सुनने की कोशिश करती रही। आखिरकार उसे किसी वाहन के पहियों जैसी गड़गड़ाहट सुनाई दी: वह पास आ रहा था: घोड़ों के पैरों की आहट साफ सुनाई देने लगी, फिर अचानक वह पूरी तरह बंद हो गई। पांच बेचैन मिनट बीत गए, कुछ भी सुनाई नहीं दिया। लेडी एमिली सुनती रही, सुनती रही। उसे शक होने लगा कि कहीं उसके कान उसे धोखा तो नहीं दे रहे हैं, लेकिन अब सूखी पत्तियों की सरसराहट से किसी के आने का आभास हुआ। वह कदमों की आहट पहचान गई, सेंट क्लेयर के सिवा किसी की भी चाल इतनी राजसी और वीर जैसी नहीं थी। वह धनुष से निकले तीर की तरह आगे बढ़ी और अगले ही पल लॉर्ड रोनाल्ड की बाहों में समा गई। पहले मौन अभिवादन के बाद उन्होंने धीमी, दबी हुई आवाज में कहा, "आओ प्रियतम, एक पल भी बर्बाद न करें, हमारी सुरक्षा के लिए मौन और शीघ्रता आवश्यक है।" वे उसी राह पर आगे बढ़े, जिसके अंत में एक घोड़ागाड़ी उनका इंतज़ार कर रही थी। एमिली को उनके प्रेमी ने घोड़ागाड़ी में बिठाया और उनका हाथ थामते हुए, उसी दबी हुई आवाज़ में फुसफुसाया कि वह घोड़े पर सवार होकर उनके पीछे आएंगे। एमिली ने धीरे से उनका हाथ थामते हुए कहा, "ठीक है मेरे स्वामी।" उन्होंने दरवाज़ा बंद किया, पास खड़े घोड़े पर सवार हुए, जाने का इशारा किया और जल्द ही चार पहियों और छह घोड़ों की मदद से सुंदर भगोड़ी अपने संरक्षक के महल को बहुत पीछे छोड़ गई।

एक घंटे से भी कम समय में उन्होंने वर्दोपोलिस से पहले चार मील का रास्ता तय कर लिया था। वे उस शहर की चौड़ी गलियों से गुज़रे जो अब बिल्कुल शांत और सुनसान थीं, और एक विशाल सड़क पर आ पहुँचे जो एक बड़े जंगल से होते हुए उत्तर की ओर जाती थी। घने जंगल की छाया में दो घंटे यात्रा करने के बाद, गाड़ी मुख्य मार्ग से हटकर एक उपमार्ग पर मुड़ गई। अब वे ओक, ताड़, एल्म और देवदार के भूरे घने अंधेरे में और भी गहरे उतर गए। एक शाखा दूसरी शाखा के ऊपर उठती हुई, रात के घने पत्तों की छतरी बनाती जा रही थी, यहाँ तक कि प्रकाश की एक भी

किरण उस देर से आने वाले यात्री के लिए रास्ता नहीं ढूंढ पा रही थी। अंत में, लेडी एमिली की बड़ी संतुष्टि के लिए, पेड़ कम होने लगे; धीरे-धीरे वे बिखरे हुए दिखाई देने लगे और कुछ ही देर में गाड़ी एक खुले मैदान में पहुँच गई जहाँ चाँदनी की पूरी चमक में एक ऊँचा और खंडहर टावर दिखाई दिया। दीवार पर लगे फूल उसकी जर्जर दीवारों से लहरा रहे थे और बेलें खिड़कियों के पत्थर के चौखटों पर खूबसूरती से लिपटी हुई थीं, जिनमें से कांच बहुत पहले ही गायब हो चुका था। लेडी एमिली उस समय सिहर उठीं जब गाड़ी इस सुनसान इमारत के लोहे के द्वार के सामने रुकी।

"यह सोने के लिए एक भयानक गड्ढा होगा," उसने मन ही मन कहा, "लेकिन मुझे डर क्यों होना चाहिए? सेंट क्लेयर निश्चित रूप से उन जगहों का सबसे अच्छा जानकार है जहाँ हमें ठहरना चाहिए।"

अब एक नौकर ने दरवाजा खोला, क्योंकि अर्ल अभी तक नहीं आया था, इसलिए उसने उसे गाड़ी से उतरने में मदद करने की पेशकश की। जब वह उतर गई, तो उस आदमी ने अंदर आने की मांग की। जंग लगे दरवाज़े की कुंडी के हिलने से जो तेज़ शोर हुआ, उसने उस घने और गंभीर सन्नाटे को अजीब तरह से भंग कर दिया जो प्राचीन जंगल में छाया हुआ था, जबकि उस धूसर वीरान खंडहर में एक खोखली गूंज पैदा हो गई। लंबे विराम के बाद कुंडी और सलाखों के खुलने की आवाज़ सुनाई दी। द्वार धीरे-धीरे खुले और एक आकृति प्रकट हुई जिसका रूप आसपास की हर चीज़ से पूरी तरह मेल खाता था। वह एक बूढ़ी औरत थी जो उम्र के बोझ से कमर झुकाए खड़ी थी: उसका चेहरा झुर्रियों से भरा हुआ था और उस पर असंतोष का भाव साफ झलक रहा था, जबकि उसकी छोटी, लाल आँखें शैतानी दुर्भावना से चमक रही थीं। एक कांपते हाथ में उसने जंग लगी चाबियों का एक बड़ा गुच्छा और दूसरे में एक धुंधली सी मशाल पकड़ी हुई थी।

"अच्छा बर्था," नौकर ने कहा, "मैं आपके लिए एक मेहमान लाया हूँ, आपको उसे सबसे ऊपरी कक्ष में ले जाना होगा क्योंकि मुझे लगता है कि रहने योग्य स्थिति में कोई और कक्ष नहीं है।"

"नहीं, मुझे आश्चर्य है कि वे कैसे सो सकते हैं?" बुढ़िया ने गुस्से में बड़बड़ाते हुए उत्तर दिया, "जब साठ से अधिक वर्षों से उनमें कोई सोया ही नहीं है, लेकिन तुम इस तरह के चित्रित खिलौने को यहाँ क्यों लाए हो? मुझे लगता है कि हवा में कुछ अच्छा नहीं है।"

“चुप रहो बुढ़िया चुड़ैल,” उस आदमी ने कहा, “वरना मैं तुम्हारी जीभ काट दूंगा।” फिर उसने लेडी एमिली को संबोधित करते हुए कहा, “मुझे उम्मीद है महोदया, आप फिलहाल इस नौकरानी को माफ कर देंगी: अगर बेहतर नौकरानी लाने का समय होता तो मेरे मालिक ने ऐसा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी होती।”

लेडी एमिली ने उत्तर दिया कि “वह बुढ़ापे के लिए हर संभव रियायत दे सकती हैं” और उस दयनीय महिला से कुछ दयालु शब्द कहने ही वाली थीं कि अचानक मुड़कर बुदबुदाईं, “मेरी प्यारी महोदया, अगर आप अपना सोने का स्थान देखना चाहती हैं तो मेरे पीछे आइए,” और लड़खड़ाते हुए कमरे से बाहर निकल गईं। हमारी नायिका ने तुरंत उनकी विनती या यूँ कहें कि आदेश का पालन किया, और उस छतविहीन हॉल को छोड़कर, जहाँ वह खड़ी थीं, उस बदसूरत बुढ़िया के पीछे-पीछे नम, खाली कमरों के एक गलियारे से गुज़रीं, जहाँ हवा इतनी उदास स्वर में सिसक रही थी कि हर सुनने वाले के दिल में सहानुभूतिपूर्ण उदासी का भाव भर दे। अंत में वे एक ऐसे कमरे में पहुँचीं जो बाकी कमरों से छोटा था, जिसमें फीके मखमली पर्दों वाला एक सोफा, कुछ कुर्सियाँ, एक मेज और एक पुराने ज़माने की नक्काशीदार अलमारी थी, जो रहने लायक तो थी, लेकिन आरामदायक नहीं। यहाँ बुढ़िया रुकी और मेज पर मोमबत्ती रखते हुए बोली, “अब आप यहाँ कल तक लेट सकती हैं, अगर कोई बुरी आत्मा आपको अपने साथ न ले जाए।”

“ओह, मुझे तो इस बात का कोई डर नहीं है,” लेडी एमिली ने जबरदस्ती हंसते हुए जवाब दिया, “लेकिन मेरी प्यारी बर्था, क्या आप उस अंगीठी में आग नहीं जला सकतीं, क्योंकि वहां बहुत ठंड है?”

“नहीं, मैं नहीं,” उस बुढ़िया ने उत्तर दिया, “मुझे वास्तव में कुछ और काम करना है,” और इन अभद्र शब्दों के साथ वह कमरे से बाहर चली गई, या यूं कहें कि रेंगती हुई बाहर निकल गई।

जब वह चली गई, तो लेडी एमिली स्वाभाविक रूप से गहरे दुख में डूब गईं। अतीत की गुप्त और रहस्यमयी प्रकृति, वर्तमान की उदासी और भविष्य की अनिश्चितता ने उनके मन पर गहरा अंधकार छा दिया। हालांकि, कुछ ही समय में, क्षितिज पर सूर्य की तरह उगते सेंट क्लेयर की छवि ने उनके मन पर छाए दुख को दूर कर दिया।

उसने सोचा, "जल्द ही वह यहाँ आ जाएगा और तब यह जीर्ण-शीर्ण मीनार मुझे किसी राजा के महल जैसी लगेगी।"

यह सांत्वनापूर्ण विचार अभी फुसफुसाते हुए ही कहा गया था कि अग्रकक्ष से एक भव्य कदम और घोड़ों की एड़ी की झनझनाहट सुनाई दी। जो दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था, उसे धीरे से धक्का देकर खोला गया और यात्रा के लबादे में लिपटे और पंखों वाली टोपी से अपने कुलीन चेहरे को ढके हुए अर्ल का लंबा कद प्रवेश द्वार पर प्रकट हुआ।

"आखिरकार आप आ ही गए," लेडी एमिली ने कहा। "आपको यहाँ आने में कितना समय लग गया, मुझे तो लगभग यह डर लगने लगा था कि आप उस सुनसान जंगल में रास्ता भटक गए होंगे।"

"सुंदर प्राणी," उसने ऐसी आवाज़ में उत्तर दिया जिससे उसके शरीर में बिजली के झटके जैसी सिहरन दौड़ गई। "मैं धरती पर अपनी हर चीज़ दे देता, काश मैं सचमुच तुम्हारी नज़रों में इतना कोमल भाव पा पाता, लेकिन अफ़सोस, मुझे डर है कि तुम्हारी मीठी सहानुभूति उस व्यक्ति के लिए है जिसे मैं जीते जी कभी तुम्हारी उस मधुर आवाज़ में व्यक्त होते नहीं सुन पाऊँगा। मुझे देखो, हे सुंदर स्त्री, और जानो कि तुम किसके वश में हो गई हो।"

ऐसा कहते ही उसने तुरंत अपना लबादा और टोपी उतार फेंकी और भयभीत महिला के सामने उसके प्रेमी सेंट क्लेयर की नहीं, बल्कि उसके प्रतिद्वंद्वी कर्नल पर्सी की आकृति खड़ी हो गई। उसके चेहरे पर पल भर में छाई भयानक पीलापन और हाथों का अचानक जुड़ जाना ही इस अप्रत्याशित दृश्य को देखकर उसके मन में उठने वाली भावनाओं को बयां कर रहा था।

"चलो खुश हो जाओ," कर्नल ने तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ कहा। "अब तुम शांत हो जाओ, क्योंकि मैं धरती और स्वर्ग की हर पवित्र और अपवित्र चीज़ की कसम खाता हूँ कि तुम्हारा यह चित्रकार-प्रेमी, यह प्रेम-प्रसंग करने वाला तीरंदाज़, तुम्हारा चेहरा आखिरी बार देख चुका है।" "अभागी!" लेडी एमिली ने घृणा और नफरत से भरी आँखों से कहा। "जान लो कि जिसे तुम मेरा चित्रकार प्रेमी कहती हो, उसकी रगों में तुमसे कहीं ऊँचा और शुद्ध खून बहता है। वह एल्बिन कबीले का अर्ल सेंट क्लेयर है और तुम तो बस एक कुलीन रिश्तेदार की आश्रित चमची हो।"

"तो उसने तुम्हें यही बताया है," पर्सी ने जवाब दिया, "लेकिन हे स्वामी या चित्रकार, मैंने इस बार उसे पूरी तरह से मात दे दी है। मुझे लगता है कि उसके रथ के पहिए कुछ ज़्यादा ही धीमे चल रहे थे। मेरे पहिए बेहतर ढंग से तेल लगे हुए थे - वे

ज़्यादा सुचारू रूप से चले। मैंने दौड़ जीत ली है और विजयी होकर पुरस्कार लेकर आया हूँ। अब वह चाहे सेंट क्लेयर से मदद की गुहार लगाए, लेकिन उसके कोई भी सेवक इस अंधेरे और अज्ञात ठिकाने तक नहीं पहुँच सकते।”

“सिद्धांतहीन दुष्ट,” लेडी एमिली ने कहा, जिनका जोश अब पूरी तरह से जागृत हो चुका था, “तुमने विश्वासघात किया है, तुमने ऐसे तरीके अपनाए हैं जो एक सज्जन व्यक्ति के सम्मान के बिल्कुल विपरीत हैं, वरना मैं कभी भी तुम्हारे जाल में नहीं फँसती।”

“हम्म,” कर्नल ने उत्तर दिया, “मैं उन पाखंडी मूर्खों में से नहीं हूँ जो सम्मान को अपना देवता मानते हैं। छिपकर बातें सुनने वाले, जासूस या झूठे गवाह, ये सब मुझे समान रूप से स्वीकार्य हैं, जब कोई बड़ा लक्ष्य हो जिसे उनकी सहायता से आसानी से प्राप्त किया जा सके।”

"कर्नल पर्सी," लेडी एमिली ने कहा, "क्योंकि मैं आपको आपके नाम से ज़्यादा घृणित किसी और नाम से नहीं पुकार सकती, क्या आप मुझे इस टावर में ही रखना चाहते हैं या मुझे क्लेड्सडेल कैसल वापस भेजना चाहते हैं?"

"मैं तुम्हें निश्चित रूप से तब तक यहीं रखूंगा जब तक तुम मेरी पत्नी बनने का वादा नहीं कर लेतीं, और फिर तुम भावी डचेस ऑफ ब्यूफोर्ट के अनुरूप भव्यता के साथ वर्दोपोलिस में पुनः प्रकट हो जाओगी।"

"तो मैं यहीं मृत्यु तक या किसी सुखद संयोग से मुक्ति पाने तक रहूंगी, क्योंकि मनुष्य की षडयंत्र से सोची गई सारी यातनाएँ भी मुझे ऐसे व्यक्ति से विवाह करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकतीं, जिसके दुर्गुणों ने उसे मानवता के स्तर से इतना नीचे गिरा दिया है जितना तुम्हारे व्यक्ति ने, जिसने खुलेआम सम्मान के अधिकार का त्याग कर दिया है और घोषणा की है कि उसने स्वयं को अपनी ही भ्रष्ट प्रवृत्तियों के अंध मार्गदर्शन में सौंप दिया है।"

“बहुत बढ़िया उपदेश दिया है,” कर्नल ने व्यंग्य करते हुए कहा, “लेकिन हे सम्मान के सच्चे उपासक, यह प्रस्ताव आपको दी जाने वाली प्रस्तावित कैद को नहीं रोकेगा, जो उस देवता के आदेशों का घोर उल्लंघन करने के लिए एक प्रकार की सजा के रूप में दी जाएगी, जिसके पक्ष में आप इतनी वाक्पटुता से वकालत करते हैं। कृपया बताएं, क्या अपने बूढ़े और स्नेही चाचा को धोखा देना और आधी रात को एक अनजान साहसी के साथ भाग जाना सम्मान के सिद्धांतों के अनुरूप था?”

यह ताना लेडी एमिली के लिए असहनीय था। अपने चाचा की याद और उनके दुखों का ख्याल आते ही, जो उनके लापता होने का पता चलने पर उन्हें भुगतने पड़ते, उनकी वह गरिमा तुरंत नष्ट हो गई जो उन्होंने अपने प्रेमी के दुस्साहस को दबाने के लिए अपनाई थी। उन्होंने अपना सिर हाथ पर टिकाया और फूट-फूटकर रोने लगीं।

"वे क्रिस्टल की बूंदें," कर्नल ने उसकी विनम्रता से बिल्कुल भी विचलित हुए बिना कहा। "मुझे बताओ कि तुम्हारे इस जिद्दी दिल को नरम करना कोई मुश्किल काम नहीं होगा। काश मैं यहाँ एक दिन और रुक पाता। मुझे पूरा यकीन है कि मेरे समझाने-बुझाने की शक्ति से मैं अपनी सुंदरी को समझा पाऊँगा, लेकिन दुर्भाग्यवश, अत्यावश्यकता के कारण मुझे तुरंत जाना पड़ रहा है। सूर्योदय से पहले मुझे वर्दोपोलिस में होना चाहिए और उन पूर्वी पहाड़ियों पर दिन निकल रहा है। अलविदा," उन्होंने अधिक गंभीर स्वर में कहा, "अलविदा एमिली, मैं ऐसी जगह जा रहा हूँ जहाँ शायद कड़ी मेहनत होगी और हो सकता है कि किसी काले विद्रोही की तलवार जल्द ही तुम्हें एक सच्चे, भले ही ठुकराए हुए प्रेमी से और दुनिया को उस व्यक्ति से छुटकारा दिला दे जिसे ज्यादातर लोग खलनायक कहते हैं।"

"अलविदा कर्नल," उसके रोते हुए कैदी ने उत्तर दिया, "और याद रखना कि यदि यही तुम्हारा भाग्य हो तो आज रात तुमने जो किया है उसकी याद तुम्हें मृत्यु की पीड़ा से राहत नहीं दिलाएगी।"

"छी!" उसने बेपरवाह हंसी के साथ कहा, "क्या तुम्हें लगता है कि मुझे इस बात का कोई डर है? नहीं, अगर कभी था भी तो मेरा ज़मीर तो बहुत पहले ही जल चुका है। अमरता मेरे सिद्धांतों में जगह नहीं रखती और मेरे लिए मृत्यु बस एक अस्थायी अवस्था है, जैसे हमेशा के लिए नींद। एक बार फिर अलविदा।"

इन शब्दों के साथ उसने उसका हाथ छीन लिया, उसे प्रेम से चूमा और चला गया। भोर की धुंधली किरणें अब लेडी एमिली की जेल की संकरी खिड़कियों से छनकर उसके चेहरे और शरीर पर पड़ रही थीं, जहाँ वह फटे हुए मखमली सोफे पर लेटी हुई थी, जहाँ थकान से चूर होकर उसने खुद को गिरा दिया था, और वह संकट में फंसी सुंदरता का एक मार्मिक चित्र प्रस्तुत कर रही थी। उसके बाल उसकी बर्फीली गर्दन और कंधों पर बिखरे हुए और उपेक्षित घुंघराले बालों की तरह लटके हुए थे, उसकी आँखें बंद थीं, उसकी लंबी काली पलकें आँसुओं से भीगी हुई उसके गालों पर स्थिर थीं, सिवाय इसके कि कभी-कभी एक ताजा बूँद उनकी रेशमी झालरों पर काँपती थी।

उसका चेहरा जो आमतौर पर खिलखिलाता था, अब उस रात की नींद हराम करने की पीड़ा से संगमरमर की तरह पीला पड़ गया था। एक सफेद हाथ और बांह उसके सिर को तकिए पर सहारा दे रही थी और दूसरा हाथ उस गहरे लबादे की तहों को थामे हुए था जिसमें वह अभी भी आंशिक रूप से लिपटी हुई थी।

कुछ समय बाद, अपनी दयनीय स्थिति के बावजूद, भले ही वह पृथ्वी पर अपने सभी प्रियजनों से हमेशा के लिए अलग हो गई हो, और एकांत खंडहर में केवल मुरझाई हुई बूढ़ी औरत बर्था के साथ अकेली रह गई हो, वह गहरी नींद में सो गई, और जब तक वह इस अस्थायी राहत का आनंद ले रही है, हम अन्य मामलों पर वापस लौटेंगे।

छठा अध्याय

यह सर्वविदित है कि अशांती और ट्वेल्व्स के बीच महान युद्ध कई रक्तरंजित और हठपूर्ण लड़ाइयों के बाद अशांती की पूर्ण पराजय में समाप्त हुआ। उनके राजकुमार की मृत्यु हो गई, उनका राष्ट्र लगभग नष्ट हो गया, उनकी राजधानी तबाह हो गई और आसपास का इलाका ऐसी विकराल और भयावह स्थिति में पहुँच गया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उस समय राजा का इकलौता पुत्र क्वाशी, जो उस समय चार-पाँच वर्ष का था, बंदी बना लिया गया। लूट के बंटवारे में वह अन्य बंदियों के साथ ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के हिस्से में आया, जिनसे उसे उतना ही स्नेह और देखभाल मिली मानो वह उनका पुत्र हो, न कि उनका दास। इन सुनहरे बंधनों में ही युवा राजकुमार पला-बढ़ा। उसकी साहित्यिक शिक्षा का पूरा ध्यान रखा गया, लेकिन उसने अंग्रेजी और अशांती भाषाओं के ज्ञान और दोनों भाषाओं में अपनी अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करने के अलावा और कोई लाभ नहीं उठाया। शारीरिक व्यायाम और सैन्य मामलों में मामला अलग था; इनसे संबंधित हर चीज को वह इतनी लगन से

सीखता था कि यह दर्शाता था कि उसे अपने पिता की युद्धप्रिय भावना पूरी तरह विरासत में मिली थी। सत्रह वर्ष की आयु में, वह एक लंबा, आकर्षक युवक था, जिसकी त्वचा काले रंग की थी और आँखों में एक अलग ही चमक और जोश था। उसका स्वभाव साहसी, चिड़चिड़ा, सक्रिय, निडर और साथ ही साथ बेहद कपटी भी था।

अब यह स्पष्ट होने लगा था कि अपने विजेताओं द्वारा उसके साथ किए गए अत्यंत स्नेहपूर्ण व्यवहार के बावजूद, वह सहज प्रवृत्ति से ही उनके प्रति गहरी और अटूट घृणा रखता था। पंद्रह वर्ष की आयु से ही वह अशान्ती के पहाड़ों और जंगलों में अकेले लंबी यात्राओं पर जाया करता था, जैसा कि वह कहता था, वहाँ बहुतायत में पाए जाने वाले जंगली जानवरों के शिकार के लिए। परन्तु बाद की घटनाओं से पता चला कि इन अभियानों के दौरान उसका वास्तविक कार्य उन अफ़्रीकी जनजातियों का पता लगाना और उन्हें विद्रोह के लिए उकसाना था, जो कूमासी के विनाश और राजा क्वामिना के वध के बाद उन दुर्गम किलों में छिपे हुए थे जहाँ देश के मूल निवासी के अलावा कोई नहीं पहुँच सकता था। जब उसने इन क्षुद्र जंगली लोगों में सुप्त असंतोष की भावना को पर्याप्त रूप से प्रज्वलित कर दिया, और उन्हें उस स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जो उन्होंने एक राष्ट्र के रूप में खो दी थी, तो उसने अपने पिता के पूर्व प्रिय सलाहकारों, प्रसिद्ध भाइयों बुदी और बेनिनि के साथ मिलकर अशान्ती का शाही ध्वज फहराया और उस कभी शक्तिशाली साम्राज्य के बिखरे हुए अवशेषों को बिना किसी देरी के पिंडस पर्वत की तलहटी में उससे जुड़ने के लिए बुलाया।

ऐसा प्रतीत हुआ मानो इस आह्वान ने कम से कम उस विशाल सेना के एक हिस्से को उनकी कब्रों से जगा दिया हो, जिसने चौदह वर्ष पहले रोसेंडेल-हिल की ऊँची चोटियों को अपने रक्त से लाल कर दिया था। जिब्बल कुमरी की पर्वतीय घाटियों और गुफाओं से, भीतरी अफ्रीका के अनछुए क्षेत्रों से और सहारा के लगभग अथाह रेगिस्तान से असंख्य लोग उसके झंडे तले उमड़ पड़े, जिससे कुछ ही हफ्तों में एक ऐसे राज्य के कम से कम पंद्रह हजार सशस्त्र मूल निवासियों ने, जिसे विलुप्त मान लिया गया था, अपने पैतृक सिंहासन पर क्वाशी द्वितीय के दावे की रक्षा के लिए अपने रक्त की अंतिम बूंद बहाने की घोषणा कर दी। इसी दृढ़ संकल्प के साथ वे वर्दोपोलिस की ओर बढ़े और बारह लोगों तक घटना की खबर पहुँचने से पहले ही वे उस शहर से चार सौ मील की दूरी पर पहुँच गए थे। जब इस विद्रोह की जानकारी

मिली, तो ड्यूक ऑफ वेलिंगटन ने तुरंत इच्छा व्यक्त की कि विद्रोहियों को दंडित करने का जिम्मा उन्हें सौंप दिया जाए, क्योंकि उनका नेतृत्व करने वाला युवा नेता उन्हीं के घर में पला-बढ़ा था और उन्होंने लगभग माता-पिता के समान स्नेह से उसका पालन-पोषण किया था। उनकी यह विनती तुरंत मान ली गई और ड्यूक ने प्रसिद्ध कैप्टन लीफ के वंशज जनरल लीफ की कमान में दस हजार सैनिकों को विद्रोहियों की प्रगति रोकने के लिए भेजा।

जब क्वाशी को अपने विरुद्ध बढ़ती हुई विशाल सेना का आभास हुआ, तो उसने गोंडर में एक राजदूत भेजकर अबीसीनियाई राजा से सहायता का अनुरोध किया और इसी बीच उसने सुनियोजित ढंग से पीछे हटना शुरू कर दिया। अंग्रेजों से घृणा करने वाले रास माइकल ने क्वाशी के इस साहसी अभियान में सहायता के लिए आठ हजार सैनिकों की एक सेना भेजने की अनुमति दे दी। इस अतिरिक्त सेना के साथ उस युवा योद्धा ने शत्रु से युद्ध करने का साहस किया। परिणामस्वरूप, सेनेगल नदी के किनारे फातेकोंडा के निकट एक युद्ध छिड़ा, जो एक कठिन संघर्ष के बाद वर्दोपोलिटानों के पक्ष में समाप्त हुआ, हालांकि उनकी जीत ऐसी थी कि ऐसी ही एक और जीत उनके लिए पूर्ण विनाश का कारण बन सकती थी। अब अबीसीनिया से एक नई सेना आ गई, जिससे विद्रोहियों की सेना को अपनी हार से बहुत कम नुकसान हुआ, जबकि लीफ की सेना में केवल छह हजार सैनिक ही बचे थे। इस स्थिति की सूचना मिलते ही ड्यूक ने तुरंत सोलह रेजिमेंटों को आदेश दिया और स्वयं उनका नेतृत्व करते हुए बिना किसी देरी के युद्ध स्थल की ओर कूच किया। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने पाया कि उत्तर से आए मूरों की एक बड़ी टुकड़ी शत्रु से जुड़ गई थी, जिससे उनकी संख्या अभी भी बहुत कम थी। लेकिन अपनी सेना के उत्कृष्ट अनुशासन पर भरोसा करते हुए उन्होंने बिना किसी अतिरिक्त सहायता के वहीं डटे रहने का निश्चय किया। पाठक को यह आवश्यक जानकारी देने के बाद, मैं अब अपनी कहानी को अधिक विस्तृत और कम ऐतिहासिक शैली में आगे बढ़ाऊँगा।

ग्रीष्म ऋतु के अंत की वह एक शानदार शाम थी, जब शत्रु सेनाएँ सेनेगल नदी के विपरीत किनारों पर डेरा डाले खड़ी थीं। सूर्य धीरे-धीरे निर्मल आकाश के क्षितिज में डूब रहा था और अपनी अंतिम किरणें एक अद्वितीय सुंदर दृश्य पर बिखेर रहा था। दोनों सेनाओं के बीच एक सुंदर घाटी थी, जहाँ कोमल पत्तियों वाले इमली के वृक्षों और ऊँचे ताड़ के पेड़ों की छाया बहती हुई नदी के नीले चमकीले जल पर पड़ रही थी।

सैनिकों के आने पर भाग गए वीरान झोपड़ियों का एक समूह घाटी को घेरे हुए धीरे-धीरे ढलान वाली पहाड़ी पर स्थित था। इनमें से सबसे बड़ी झोपड़ी में ड्यूक ऑफ वेलिंगटन ने अपना डेरा डाला था और अब वे अपने चार प्रमुख अधिकारियों से घिरे बैठे थे। हमारे पाठकों को इनमें से दो के बारे में पहले से ही जानकारी है, जैसे कि मार्क्विस ऑफ चार्ल्सवर्थ और कर्नल पर्सी। शेष दो में से पहला मध्यम कद का व्यक्ति था, जिसके कंधे चौड़े और टांगें पतली थीं। उसका माथा थोड़ा ऊंचा था, नाक बड़ी और उभरी हुई थी, मुंह चौड़ा था और ठुड्डी काफी लंबी थी। उसने वर्दी पहनी हुई थी, जिस पर छाती पर एक तारा बना था और दोनों कलाईयों पर बड़े-बड़े कैम्ब्रिक के झालर थे। दूसरा छोटा कद का व्यक्ति था, जिसके अंग जोड़हीन थे, चेहरा गोल-मटोल था और उसने हल्के गुलाबी रंग की रेशमी विग पहनी हुई थी, जिसके ऊपर एक लंबी काली टोपी थी, जिस पर नक्काशीदार लकड़ी का आभूषण लगा था। ये अधिकारी आपस में दबी आवाज़ में बात कर रहे थे ताकि ड्यूक के ध्यान में खलल न पड़े, जो अपनी आँखें सामने फैले विशाल दृश्य पर टिकाए बैठे थे, जिसकी सीमा एक धुंधली, दूधिया सफेद रेखा से लग रही थी, जो विशाल रेतीले रेगिस्तान की शुरुआत का संकेत दे रही थी।

बोबादिल," उसने अचानक उन दो सज्जनों में से पहले वाले को संबोधित करते हुए कहा, जिनका मैंने अभी वर्णन किया है, "क्या आपको दुश्मन के शिविर की दिशा में कुछ हिलता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है? यह उत्तर की ओर उस ऊँची पहाड़ी की छाया में है और पुरुषों के एक काले और सघन समूह की तरह प्रतीत होता है, निश्चित रूप से यह कोई नया सहयोगी तो नहीं है?"

बोबाडिल आगे आया और अपनी गर्दन को बाहर निकालने लगा, आँखें झपकाने लगा, उंगलियों के बीच से देखने लगा, आदि। लेकिन अंत में उसने कहा कि उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। मार्क्विस ऑफ चार्ल्सवर्थ और गुलाबी विग के मालिक जनरल लीफ भी समान रूप से असफल रहे।

"तुम तो छछूंदरों का झुंड हो," ड्यूक ने कहा। "मैं उन्हें साफ़-साफ़ देख सकता हूँ। वे पहाड़ी के चारों ओर घूम चुके हैं और उनके हथियार धूप में चमक रहे हैं। इधर आओ पर्सी, क्या तुम भालों की उस चमकती हुई कतार को नहीं देख सकते जिसके पीछे एक झंडा लहरा रहा है?" "जी महाराज," पर्सी ने उत्तर दिया, जिसकी युवा आँखें आसानी से वह देख सकती थीं जो बूढ़े जनरलों की धुंधली दृष्टि से बिल्कुल ओझल

थी। “वे अब विद्रोहियों से मुँह मोड़ चुके हैं और हमारी ओर बढ़ते हुए प्रतीत हो रहे हैं।” यहाँ पंद्रह मिनट का सन्नाटा छा गया, जिसके दौरान ड्यूक आती हुई सेना को ध्यान से देखते रहे, क्योंकि अब वह साफ़ दिखाई दे रही थी। वे धीरे-धीरे अशान्ती शिविर से दूर चले गए और एक गहरी घाटी में प्रवेश कर गए, जहाँ से वे कुछ देर के लिए ओझल हो गए। लेकिन कुछ ही देर में तेज़ संगीत की गूँज ने उनके फिर से प्रकट होने की घोषणा की। धीरे-धीरे वे उस घाटी के घुमावदार रास्तों से निकले जहाँ वे छिपे हुए थे और युद्ध की मुद्रा में सेनेगल नदी के दाहिने किनारे पर तेज़ बांसुरी और भारी ढोल की आवाज़ के साथ आगे बढ़े।

“ये दुश्मन नहीं, बल्कि दोस्त हैं,” ड्यूक चौंकते हुए बोला। “मेरी कसम, सेंट क्लेयर ने अपना वादा बखूबी निभाया है, मुझे नहीं लगा था कि उसकी उत्तरी पहाड़ियां इतनी शानदार सैन्य टुकड़ी भेज सकती हैं।”

"ये कौन हैं मेरे स्वामी?" सेंट क्लेयर का नाम सुनते ही पर्सी का माथा अचानक लाल हो गया था, इसके अलावा सभी अधिकारियों ने एक साथ हैरानी से कहा।

“एलम्बोस के लोग, कोहरे के लड़के,” महामहिम ने उत्तर दिया। “पर्सी, यहाँ मेरे घोड़े और अपने घोड़े को तैयार करो और मेरे साथ चलो जब तक मैं उनसे मिलने जाता हूँ।”

पर्सी झोपड़ी से निकला और कुछ ही मिनटों में ड्यूक और वह घाटी की ओर घोड़े दौड़ाते हुए चल पड़े। जैसे ही वे उस हाइलैंड सेना के पास पहुँचे, मेरे पिता ने बार-बार सैनिकों की पंक्ति की उत्तम व्यवस्था, सैनिकों की एथलेटिक क्षमता और असाधारण कद-काठी, और उनके हथियारों और साजो-सामान की साफ-सुथरी चमक देखकर अपनी प्रशंसा व्यक्त की, ठीक उसी समय जब वे वहाँ पहुँचे।

अग्रिम पंक्ति को रुकने का आदेश दिया गया, दोनों सैनिक खुलती हुई टुकड़ियों के बीच से होते हुए छोटी सेना के केंद्र तक पहुँचे, जहाँ उन्होंने देखा कि अर्ल अपने चुने हुए सामंतों से घिरा हुआ है, सभी अपने कबीले के हरे टार्टन वस्त्र पहने हुए हैं और भाले, धनुष, तरकश और छोटी त्रिकोणीय ढालें लिए हुए हैं। उनके पास एक विशालकाय योद्धा खड़ा था, जिसके बर्फ जैसे सफेद बाल और दाढ़ी उसकी बढ़ती उम्र का प्रमाण थे, जबकि उसकी सीधी मुद्रा, बलिष्ठ शरीर और मजबूत अंगों से यह स्पष्ट था कि उसमें यौवन की सारी शक्ति बरकरार थी। उसने एक हाथ में अपने विशाल आकार के अनुरूप एक बड़ा भाला धारण कर रखा था, जिस पर हरे रंग का एक चौड़ा

झंडा लहरा रहा था, जिस पर सुनहरे पंखों वाला एक बाज बना था और आदर्श वाक्य था "मैं चट्टान पर निवास करता हूँ"। यह व्यक्ति प्रसिद्ध डोनाल्ड ऑफ द स्टैंडर्ड था, जिसे आम बोलचाल में पहाड़ियों का बंदर कहा जाता था। वह अब एक सौ दस वर्ष का है और उस समय नब्बे वर्ष का था। दोनों पक्षों के सौहार्दपूर्ण अभिवादन के बाद ड्यूक ने सेंट क्लेयर को अपने सैनिकों को शिविर में तैनात करने के तरीके के बारे में निर्देश दिए और उन्हें अन्य निर्देश भी दिए जिनका यहाँ उल्लेख करना अनावश्यक है। उनकी बातचीत समाप्त होने पर उन्होंने रात्रि के लिए विदा ली और कर्नल पर्सी के साथ अपने आवास पर लौट गए।

आगे बढ़ने से पहले, शायद अब बेहतर होगा कि मैं अपनी इस बेतरतीब कहानी के टूटे हुए धागे को जोड़ दूं।

क्लाइड्सडेल कैसल में लेडी एमिली चार्ल्सवर्थ से मुलाकात के बाद जब सेंट क्लेयर वर्दोपोलिस पहुंचे, तो उन्होंने अपने सेवक को पास के उस स्थान पर जाने का आदेश दिया जहाँ गाड़ियाँ किराए पर मिलती थीं और रात ग्यारह बजे तक एक गाड़ी तैयार रखने को कहा। किसी अज्ञात कारण से देरी हुई और बारह बजने के बाद तक गाड़ी तैयार नहीं हुई, जिसके परिणामस्वरूप उनके निर्धारित स्थान पर पहुँचने से पहले ही वह उड़ गई। लगभग पागलपन की हद तक बेचैन होकर वह शाहबलूत के पेड़ों से घिरी सड़क पर टहलते रहे, चाँद को डूबते हुए, तारों को धीरे-धीरे गायब होते हुए और दिन के उजाले को धीरे-धीरे आते हुए देखते रहे, हवा की हर साँस को सुनते रहे और गिरते हुए हर पत्ते की सरसराहट को अपनी प्रतीक्षित प्रेमिका के कदमों में बदलते रहे। हालाँकि, सुबह हो गई, सूरज निकल आया, हिरण अपनी हल्की नींद से जाग गए, फिर भी लेडी एमिली नहीं आईं। उसके स्पष्ट विश्वासघात से दिल को ठेस पहुँचने पर, उसने खुद उसके मुँह से इसका कारण जानने का निश्चय किया और अगर उसे हमेशा के लिए विदा करने का कोई संतोषजनक बहाना नहीं मिला, तो इस संकल्प के साथ वह महल की ओर चल पड़ा।

वहाँ पहुँचने पर उन्होंने देखा कि सब कुछ अस्त-व्यस्त था, नौकर-चाकर संदेह और घबराहट भरे चेहरों के साथ इधर-उधर भाग रहे थे। इस असामान्य हलचल का कारण पूछने पर उन्हें बताया गया कि लेडी एमिली उस रात गायब हो गई थीं और किसी को नहीं पता था कि वह कहाँ गई हैं। इस खबर से भयभीत होकर वे तुरंत वर्दोपोलिस लौट आए और कुछ दिनों तक वहीं रहे। इस दौरान उनके दुखी चाचा ने उस

दुर्भाग्यशाली महिला की तलाश में बहुत मेहनत की, लेकिन सब व्यर्थ रहा। यह देखकर सेंट क्लेयर, जिन्होंने अब जीवन जीने की इच्छा खो दी थी और जिनका कड़वी और हृदय को झकझोर देने वाला दुख उन्हें निष्क्रिय जीवन से भी अधिक भयानक लग रहा था, ने तुरंत ड्यूक ऑफ वेलिंगटन को अशान्ती जनजाति के विरुद्ध उनके प्रस्तावित अभियान में अपनी और अपने कबीले की सेवाएँ देने का निश्चय किया। इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया गया और सेंट क्लेयर जल्द ही अपने योद्धाओं को इकट्ठा करने और उन्हें उनके पैतृक पहाड़ों से नेतृत्व करने के लिए रवाना हो गए। उनके समयोचित आगमन से पाठक पहले से ही परिचित हैं और अब हिसाब चुकता कर लेने के बाद मैं बिना किसी बाधा के आगे बढ़ सकता हूँ।

उस घटना के अगले दिन शाम को जब अर्ल अपने तम्बू में बैठे थे, उनके साथ केवल छोटा सेवक एंड्रयू था, जो एक कोने में तुर्क की तरह बैठा अपने स्वामी के भाले और चांदी के तरकश को चमकाने में लगा हुआ था। कर्नल पर्सी अपने वीर युद्ध-घोड़े पर सवार होकर आए और सेंट क्लेयर को सूचित किया कि ड्यूक एक युद्ध परिषद आयोजित करने वाले हैं जिसमें उनकी उपस्थिति आवश्यक होगी। हमारे नायक ने बड़ी मुश्किल से उस अवांछित दूत को शालीनता से जवाब दिया। उनके हाव-भाव में घमंड और स्वर में कठोरता थी जो उनके विनम्र शब्दों से मेल नहीं खाती थी। उन्होंने उत्तर दिया, "ड्यूक के अनुरोध से उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई है और वे बिना किसी देरी के उनके पास उपस्थित होंगे।" क्या पर्सी को किसी प्रकार की शत्रुता का सामना करना पड़ा, यह तो मुझे नहीं पता, लेकिन उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। एक सौम्य मुस्कान और सिर झुकाकर उन्होंने अपने घोड़े के बगल को छुआ और खुशी-खुशी चले गए।

यह सभा एक विशाल तंबू में आयोजित की गई थी जो सुनहरे कढ़ाई से सजे लाल कपड़े से ढका हुआ था और उसके शिखर पर इंग्लैंड के प्रतीक चिन्ह वाला एक लाल झंडा लहरा रहा था। जब सेंट क्लेयर इस भव्य तंबू में दाखिल हुए, तो उन्होंने ड्यूक को लगभग बीस अधिकारियों से घिरा हुआ पाया। उनके बाईं ओर मार्क्विस ऑफ चार्ल्सवर्थ बैठे थे, जिनका पीला चेहरा और उदास भाव हाल के कष्टों की एक दुखद कहानी बयां कर रहे थे।

अर्ल को उनके महामहिम द्वारा अपने दाहिनी ओर खाली सीट पर बैठने के लिए आमंत्रित किया गया। इस सम्मानपूर्ण अभिनंदन पर कर्नल पर्सी, जो कनिष्ठ

अधिकारियों के बीच तंबू के प्रवेश द्वार के पास बैठे थे, एक विचित्र भाव से मुस्कुराते हुए देखे गए।

जब सभी उपस्थित हो गए, तो ड्यूक ने कहा, "अब सज्जनों, मैं आपको अधिक देर तक रोकना नहीं चाहता। आपको यहाँ एकत्रित करने का मेरा उद्देश्य केवल नदी के उस पार हमारे अश्वेत मित्रों को कुछ ही घंटों में बसाने के प्रस्ताव पर आपकी स्वीकृति प्राप्त करना था, और मुझे उम्मीद है कि इससे हमारी सेना को कोई खास खतरा नहीं होगा।"

इसके बाद महामहिम ने रात में दुश्मन के शिविर पर हमला करने की योजना बताई, जब दुश्मन किसी भी तरह का पर्याप्त बचाव करने में पूरी तरह असमर्थ होगा। जासूसों के माध्यम से यह पता चला था कि उनकी चौकसी दुनिया की सबसे सतर्क चौकियों में से नहीं थी। इस योजना के लाभ स्पष्ट थे, इसलिए परिषद ने सर्वसम्मति से इसके पक्ष में राय दी और अगली रात को इसे अमल में लाने का समय निर्धारित किया गया। इस प्रकार कार्य का संक्षिप्त निपटारा हो जाने पर ड्यूक ने कहा, "चूंकि सज्जनों, मैंने आपको इतने संक्षिप्त कार्य के लिए बुलाया है, इसलिए कुछ प्रतिफल देना बनता है। इसलिए मुझे आशा है कि आप मेरे साथ सैनिकों के भोज में शामिल होने से इनकार नहीं करेंगे। यह तैयार है और बस आपके आने का इंतजार कर रहा है।"

जैसे ही उन्होंने बोलना शुरू किया, तम्बू के ऊपरी सिरे पर लगा पर्दा हट गया और अंदर एक शानदार रोशनी से जगमगाता मंडप दिखाई दिया, जिसमें एक लंबी मेज थी जो एक बेहतरीन और भरपूर रात्रिभोज के लिए तैयार की गई थी, हालांकि शायद वह उतना आलीशान न हो। सभी ने सहर्ष निमंत्रण स्वीकार कर लिया, सिवाय मार्क्विस ऑफ चार्ल्सवर्थ के, जिन्होंने उत्सव में शामिल न हो पाने का बहाना बनाकर इसे अस्वीकार कर दिया।

“मैं आप पर दबाव नहीं डालूंगा, महाराज,” ड्यूक ने विनम्रतापूर्वक उनका हाथ पकड़ते हुए कहा, “लेकिन याद रखें कि एकांत दुख को बढ़ाता है।” बूढ़े व्यक्ति ने केवल शोकपूर्वक सिर हिलाकर जवाब दिया। “उस बेचारे को बुढ़ापे में दिल का दौरा पड़ा है,” कर्नल पर्सी ने कहा, जो संयोगवश रात के खाने में सेंट क्लेयर के बगल में बैठे थे। “उसने अपनी एक बहुत ही सुंदर और प्रतिभाशाली भतीजी को एक बेहद अप्रत्याशित तरीके से खो दिया है।”

क्या उसने ऐसा किया है?” अर्ल ने अपने पड़ोसी को ऐसी निगाहों से देखते हुए कहा, जो शायद शेर के दिल में भी दहशत पैदा कर देती।

“हाँ,” कर्नल ने अत्यंत शांत स्वर में कहा, “आह, वह एक प्यारी लड़की थी, हालाँकि अधिकांश महिलाओं की तरह थोड़ी मनमौजी भी थी, उसकी एक कल्पना विशेष रूप से बेतुकी थी।” “वह क्या हो सकती है?” सेंट क्लेयर ने पूछा।

"जब मैं आपको बताऊंगी तो आपको शायद ही विश्वास होगा, उसने एक बेचारे, भोले-भाले, चालाक चित्रकार से प्यार करने का मन बना लिया और कुछ समय के लिए उसने दावा किया कि वह एक ड्यूक के भतीजे और उत्तराधिकारी के बजाय उससे शादी करेगी, लेकिन अंततः बाद वाला प्रेमी जीत गया और तब उस छोटी चुड़ैल ने कबूल किया कि वह केवल अपने प्रेमी की वफादारी परखने के लिए नखरे कर रही थी और वास्तव में वह उस चित्रकार से उतनी ही नफरत करती थी जितनी कि उसके सबसे घटिया से दिखने वाले चित्रों से।"

सेंट क्लेयर के गालों और माथे पर आई लाली और उसकी प्रचंड आँखों में चमकती रोशनी किसी भी साधारण व्यक्ति के अहंकार को शांत कर देती, लेकिन इसने उस शैतान जैसे प्राणी के अहंकार को और बढ़ा दिया जो उसकी पीड़ा में आनंदित होकर बैठा था।

"क्या आपको कभी क्रोध के दौरे तो नहीं पड़ते?" उसने बनावटी आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए कहा।

“नहीं,” अर्ल ने बड़ी मुश्किल से अपना गुस्सा दबाते हुए जवाब दिया, “लेकिन महोदय, सफल प्रेमी अपनी होने वाली दुल्हन के बिछड़ने का दर्द कैसे सहन करेगा?”

"ओह, लोग कहते हैं कि वह इस पीड़ा के बावजूद सराहनीय धैर्य प्रदर्शित करता है।"

“तो क्या उसका उसके प्रति स्नेह दिखावा था?” “नहीं, मैं ऐसा नहीं कह रहा, लेकिन आप जानते हैं, महाराज, वह शायद दूसरों की तुलना में उसके ठिकाने से बेहतर परिचित है। हम्म, क्या आप मुझे समझ नहीं रहे?” “बिल्कुल नहीं।”

"तो फिर, सीधे शब्दों में कहें तो, कुछ लोग यह कहने में संकोच नहीं करते कि वह भाग गई है।"

“महोदय,” अर्ल ने धीमी, गहरी आवाज़ में कहा, “मैं आपको बता दूं कि मैं उन लोगों से कुछ हद तक परिचित हूँ जिनके बारे में हम बात कर रहे हैं, और मैं आपको

यह भी बता दूं कि यदि मैं उसका चाचा होता और मुझे आपके द्वारा बताए गए ज़रा से भी संदेह होता, तो मैं उसके उस नीच प्रेमी को जंगली घोड़ों से टुकड़े-टुकड़े करवा देता या उसे मजबूर कर देता कि वह मुझे बताए कि वह अभागी कहाँ छिपी है।”

“हा! क्या तुम ऐसा करोगे?” कर्नल ने कहा और अचानक उसके माथे पर उदासी छा गई और उसने सहज रूप से अपनी कमर पर रखे हथियार को पकड़ लिया, लेकिन लगभग तुरंत बाद उसने बुदबुदाते हुए कहा, “अभी समय नहीं आया है” और उसके चेहरे पर फिर से वही बनावटी शांति छा गई।

अब व्यंजन हटा दिए गए और शराब परोसी गई। पहले कुछ दौर के बाद, ड्यूक ऑफ वेलिंगटन मेज के मुखिया के पद से उठकर "उत्सव भोज में अधिक देर तक न रुकने की अनुमति मांगी"। फिर उन्होंने अपने सभी मेहमानों के स्वास्थ्य के लिए शराब पी और उन्हें शुभ रात्रि कहकर चले गए। सेंट क्लेयर, जो सैन्य भोज की प्रमुख विशेषता बन चुकी उस प्रचंड हंसी-मजाक में शामिल होने के मूड में नहीं थे, उन्होंने भी उनका अनुसरण करने का पहला अवसर पाकर ऐसा ही किया।

रात एकदम शांत और स्थिर थी, ओस से भीगी ठंडक और हल्की चाँदनी जो रुक-रुक कर उस पर पड़ रही थी, जब वह खामोश तंबुओं के बीच और नदी के ढलान वाले किनारों पर मुश्किल से दिखाई देने वाली गति से लहराते घने जंगलों में घूम रहा था, उसकी उत्तेजित और अतिरंजित भावनाओं को काफी हद तक शांत कर रही थी। लेकिन नीले तारों भरे आकाश से मरहम की तरह बरसने वाली वह गहरी शांति, एक मीठी गर्मी की रात द्वारा निर्मित विश्राम और शांति की वे सभी छवियाँ, उसके प्रेम से पीड़ित हृदय को वैसी शांति नहीं दे सकीं, न ही ईर्ष्या के उस कीड़े को दूर कर सकीं जो अब उसके भीतरी हिस्से को कुतर रहा था। जिसके लिए वह अपना खून बहा सकता था, उसके द्वारा तिरस्कृत होना, उसके उपहास और तिरस्कार का पात्र बनना, उसकी ईमानदारी के बारे में उसके सभी संदेहों का इतनी भयावह रूप से सच साबित होना, उसके अभिमानी और घमंडी मन के लिए मृत्यु से भी बदतर था। नदी के किनारे खड़े होकर जब उसने अपने पैरों को छूते हुए कोमल और मोहक ढंग से बहते गहरे, निर्मल जल को देखा, तो उसके मन में अपने मस्तिष्क के भ्रम को शांत करने के लिए झरने के पानी में डुबकी लगाने की तीव्र इच्छा हुई। हालांकि, उसने प्रलोभन के इस विचार को दरकिनार कर दिया और एक चंचल स्त्री के झूठेपन से इतना प्रभावित होने के लिए खुद को आधा कोसते हुए, नदी से मुँह मोड़ लिया और अपने तम्बू की ओर

चल पड़ा। जैसे ही वह तम्बू में प्रवेश करने वाला था, एक आवाज़ उसके कान में फुसफुसाई, "पर्सी से सावधान रहो, यह एक मित्र है जो तुम्हें चेतावनी दे रहा है।" अर्ल ने जल्दी से पीछे मुड़कर देखा; उसने एक काली आकृति को दूर जाते हुए देखा जो जल्द ही ताड़ के पेड़ों के एक ऊँचे समूह की छाया में गायब हो गई।

उस रात जब वह हिरण की खाल से बने पलंग पर लेटा था, तब से काफी देर तक नींद उसकी दर्द भरी पलकों पर नहीं चढ़ी। उसके अनजान दोस्त की चेतावनी और उसके विचलित मन में चल रहे गहरे और गहन विचारों ने मिलकर उसकी नींद को पूरी तरह से मिटा दिया था। लेकिन अंत में थकी हुई प्रकृति को अस्थायी विश्राम की शरण लेनी पड़ी। उसके दुखों पर जैसे ही शांति छाई, तंबू के बाहर से एक लंबी और तीखी सीटी की आवाज आई। एंड्रयू, जो उस क्षण तक कोने में गहरी नींद में सो रहा था, अब धीरे से और सावधानी से अपने पलंग से उठा और एक छोटा सा दीपक लेकर अपने मालिक के पलंग के पास दबे पांव गया। उसने मालिक की बंद आंखों पर रोशनी डालकर यह सुनिश्चित किया कि वह वास्तव में सो रहा है। फिर उसने हरे रंग के चेकदार कपड़े में खुद को लपेटा और बिना आवाज किए तंबू से बाहर निकल गया। बाहर एक आदमी खड़ा था, जिसका नीला कोट और लाल टोपी देखकर पता चला कि वह वही व्यक्ति था जिसने लगभग एक महीने पहले एंड्रयू का अपहरण किया था। बिना कुछ बोले, दोनों पास के एक छोटे से जंगल की ओर चल पड़े, या यूँ कहें कि चुपके से निकल गए। उनका सेवक आगे-आगे चल रहा था और एंड्रयू को अपने पीछे आने का इशारा कर रहा था। वहाँ एक और व्यक्ति, जो लबादा ओढ़े था, उनसे मिल गया। फिर तीनों नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़े और कुछ ही मिनटों में घने पेड़ों ने उन्हें पूरी तरह से ओझल कर दिया।

अध्याय सात

"जी मेरे प्रभु, अंततः जीत हमारी है, लेकिन जीत के लिए हमें बहुत संघर्ष करना पड़ा - मेरी कसम, वे काले बदमाश शैतानों की तरह लड़े।"
"उन्होंने वास्तव में ऐसा किया और मुझे लगता है कि मामले की सभी परिस्थितियों को देखते हुए उनका पतन लगभग एक चमत्कार ही माना जा सकता है।"
“हाँ, ऐसा हो सकता है। वैसे, सेंट क्लेयर, मैं आज शाम को युद्ध परिषद की दूसरी बैठक करूँगा। जिन परिस्थितियों का आपने जिक्र किया है, उनके लिए स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, उनकी सावधानीपूर्वक जांच होनी चाहिए। आप अवश्य उपस्थित रहेंगे।”

“जी हां, मेरे स्वामी”

सेंट क्लेयर और ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के बीच संक्षिप्त संवाद हुआ, जब ड्यूक अपने कर्मचारियों के साथ वहाँ से गुज़रे। अशान्ती जनजाति पर एक खूनी लेकिन निर्णायक विजय प्राप्त हो चुकी थी, हालाँकि यह विजय पहले से तय योजना से अलग तरीके से हुई थी। गुप्त हमले के लिए निर्धारित रात ग्यारह बजे, ड्यूक ऑफ वेलिंगटन अपनी पूरी सेना के साथ सेनेगल नदी पार कर गए। जैसे ही वे शत्रु शिविर के पास पहुँचे, एक भी आवाज़ नहीं सुनाई दी, बर्फ़ जैसे सफ़ेद तंबुओं की लंबी, शांत कतारों में एक भी रोशनी नहीं जगी। निर्विरोध वे क्वाशी के तंबू की ओर बढ़ते रहे। वे अंदर गए, वह खाली था।

कुछ ही समय में यह पता चल गया कि उस वीरान शिविर में उनके सिवा कोई भी जीवित प्राणी नहीं बचा था। जब यह बात सामने आई, तब ड्यूक के पास मौजूद लोगों ने बताया कि कुछ क्षणों के लिए उनके चेहरे पर निराशा और हताशा के भाव दिखाई दिए, लेकिन उन्होंने लगभग तुरंत ही खुद को संभाला और जासूसों को तुरंत हर दिशा में जाकर दुश्मन के जाने का पता लगाने का आदेश दिया। कुछ ही देर में उनमें से कुछ ने सूचना दी कि दुश्मन उत्तर की ओर बढ़ गए हैं और अब लगभग दस मील दूर रुके हुए हैं। सेना को तुरंत बताए गए रास्ते पर चलने का आदेश मिला, जो घाटी की ओर जाता था।

भोर होते-होते वे एक दुर्गम पहाड़ी दर्रे पर पहुँचे, जहाँ से एक विशाल मैदान दिखाई दे रहा था, जहाँ मूर, अशान्ती और अबीसीनियाई लोगों की संयुक्त सेनाएँ युद्ध की तैयारी में खड़ी थीं। यह एक भव्य लेकिन भयावह दृश्य था, जब सूर्य की पहली किरणें उस धुंधली सेना पर पड़ीं और उनके चमकीले हथियारों और योद्धाओं द्वारा पहने गए

सोने और रत्नों की बर्बर भव्यता को और भी प्रज्वलित कर दिया। ड्यूक की सेना, जिसके मुखिया स्वयं थे, संकरी घाटी से धीरे-धीरे आगे बढ़ी, तभी एक युवा घुड़सवार अचानक अफ्रीकी सेना के अग्रभाग में पहुँचा और हवा में अपना लंबा भाला लहराते हुए बोला, "यदि दमन के शिविर में एक गद्दार न उठा होता, तो आज रात श्वेत अत्याचारी के हाथों स्वतंत्रता को मृत्यु का वार झेलना पड़ता।" इन शब्दों के साथ ही वह फिर से सेना में समा गया और गायब हो गया, लेकिन इससे पहले कि वह गायब होता, उसके माथे पर चमकते सुनहरे मुकुट ने कट्टर विद्रोही क्वाशी को प्रकट कर दिया।

इसके बाद जो संघर्ष हुआ और जिसने कैमलिया के मैदानों को रक्त से रंग दिया, उसका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है: यह इतिहास का विषय है। इतना कहना ही पर्याप्त है कि उस सुबह सूर्य की सुनहरी किरणों ने आशा और शौर्य से भरे पच्चीस हजार वीर विद्रोहियों को युद्ध के लिए प्रेरित किया था, लेकिन शाम होते-होते सत्रह हजार आठ सौ के शव एक हारे हुए युद्धक्षेत्र में ठंडे और स्थिर पड़े थे, इस प्रतीक्षा में कि गिब्बल कुमरी के गिद्ध दूर से ही भोज की गंध सूंघ लें और उन्हें अपने निहारते मुंह में जीवित ही कब्र बना दें।

हमारे नायक सेंट क्लेयर ने उस दिन की त्रासदी में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जीवन की परवाह न करते हुए, जो अब उनके लिए घृणास्पद हो चुका था, उन्हें अपने वीर हाइलैंडर्स के नेतृत्व में उस हर जगह गौरव प्राप्त करना चाहिए था जहाँ लड़ाई सबसे भीषण थी। उनकी लगभग यही कामना थी कि उनकी अदम्य वीरता की प्रसिद्धि पूरी दुनिया में गूंजे, जबकि वे स्वयं अपने अंतिम वस्त्रों में लिपटे हुए, मौन समाधि में आराम कर रहे हों, ऐसी नींद में जिससे कोई जाग न सके। लेकिन भाग्य ने कुछ और ही तय किया था। पगड़ीधारी मूर की तलवार, क्रूर अशान्ती का युद्ध भाला और यहाँ तक कि तड़पते हुए अबीसीनियाई का प्रसिद्ध तीर भी उनके विरुद्ध मुड़ने पर अपनी विनाशकारी शक्ति खो बैठे थे। जब युद्ध समाप्त हुआ और वे अपनी छोटी सी सेना के साथ धीरे-धीरे उस रक्तरंजित मैदान से वापस लौटे, तो उन्होंने चारों ओर बिखरे हुए पीले और क्षत-विक्षत शवों को ईर्ष्या से भर दिया।

अपने तंबू में पहुँचकर उन्होंने एंड्रयू को अपने गंदे और खून से सने कपड़े बदलने में मदद करने के लिए बुलाया, लेकिन सेवक ने उनकी बात नहीं मानी और कुछ देर उसके आने की उम्मीद में इंतज़ार करने के बाद उन्हें बिना किसी मदद के जैसे-तैसे

काम चलाना पड़ा। अपना श्रृंगार पूरा करने और कुछ जलपान करने के बाद वे जल्दी से चले गए क्योंकि परिषद में जाने में अब देर हो चुकी थी। उनके प्रवेश करते ही तंबू में गहरी शांति छा गई, जो कभी-कभार फुसफुसाहट से ही टूट रही थी। ड्यूक मेज के शीर्ष पर असामान्य रूप से गंभीर और ध्यानमग्न मुद्रा में बैठे थे, उनका सिर उनके हाथ पर टिका था, उनकी भौहें सिकुड़ी हुई थीं और उनके पूरे चेहरे पर गहरी गंभीरता का भाव था। जब सेंट क्लेयर बैठ गए, तो उन्होंने ऊपर देखा और जल्दी से चारों ओर नज़र डाली, मानो यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी सदस्य उपस्थित हैं, फिर उठकर उन्होंने संक्षेप में उन्हें संबोधित किया।

"सज्जनों, जिस उद्देश्य से आप आज रात यहाँ एकत्रित हुए हैं, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसे मामले की जाँच के लिए है जिसमें आपमें से किसी एक या अधिक व्यक्तियों का जीवन और सम्मान दांव पर लगा है। दो दिन पहले इसी स्थान पर रात में हमारे शत्रुओं पर आक्रमण करने की योजना बनाई गई थी: उन्हें इसकी सूचना मिल गई और योजना विफल हो गई। अब हमारा कार्य यह पता लगाना है कि वह सूचना उन तक कैसे पहुँची। मुझे यह कहते हुए खेद है कि आज आप सभी ने विद्रोही नेता को दोनों सेनाओं के सामने जो शब्द कहते हुए सुना, उससे मेरे मन में यह भयानक संदेह उत्पन्न हो गया है कि यह विश्वासघात था। गद्दार अवश्य इसी कक्ष में है और यदि वह अब अपना अपराध स्वीकार करता है, तो मैं पूरी निष्ठा से उसकी जान बख्शने का वादा करता हूँ, लेकिन यदि वह इसे किसी और के द्वारा उजागर होने देता है, तो उसकी मृत्यु अत्यंत कष्टदायी और अपमानजनक होगी।"

ड्यूक रुक गया। उसकी कठोर और पैनी नज़र चेहरे को गौर से देख रही थी।

उसके चारों ओर मौजूद सभी लोगों के भावों को वह एक-एक करके देख रहा था, मानो वह इस तरह हर किसी के दिल में चल रहे विचारों को पढ़ लेना चाहता हो। कुछ मिनटों तक एक शब्द भी नहीं बोला गया; हर कोई अपने पड़ोसी को ऐसे चेहरे से देख रहा था जिसमें विस्मय, जिज्ञासा और निराधार संदेह अजीब तरह से मिश्रित थे। हालाँकि, मंडप की धुंधली मशाल की रोशनी में एक व्यक्ति दिखाई दिया जिसके शांत और नेक चेहरे पर इनमें से कोई भी भाव नहीं था, बल्कि इसके विपरीत उसके होठों के कोनों पर एक दबी हुई मुस्कान खेल रही थी; वह कर्नल पर्सी थे। थोड़ी देर में वह उठे और ड्यूक के पास मेज की ओर बढ़ते हुए धीमी आवाज में बोले, "क्या महाराज मुझे बोलने की अनुमति देंगे?" उत्तर था, "ज़रूर।"

“फिर,” कर्नल ने अपनी भव्यता को पूरी तरह समेटते हुए और शांत भाव से अपनी भुजाएँ मोड़ते हुए कहा, “मेरे पास उस दुष्ट का नाम उजागर करने की शक्ति है जिसने अपने जनरल और साथियों के साथ विश्वासघात किया, लेकिन इससे पहले कि मैं उस कायर का नाम लूँ, उसे अपनी व्यर्थ जान बचाने का एक और मौका मिलेगा। हे अंतरात्मा से व्याकुल गद्दार, आगे आओ और उस दया का लाभ उठाओ जो अब तुम्हारे बीच से जा रही है और कभी वापस नहीं आएगी।”

इस भयावह अपील के बाद सन्नाटा छा गया, न कोई फुसफुसाहट सुनाई दी, न कोई पैर हिला, न कोई हाथ।

“क्या आप प्रस्तावित वरदान स्वीकार नहीं करेंगे?” पर्सी ने गहरे, रोमांचित स्वर में कहा, “तो आपका खून आपके ही सिर पर होगा, मेरे स्वामी,” वह ड्यूक की ओर मुड़ते हुए बोला, उसकी विजयी दृष्टि में एक अलौकिक प्रकाश चमक उठा, “जान लीजिए कि वह नीच गद्दार आपके दाहिने हाथ पर बैठा है, जी हाँ, सबसे महान रोनाल्ड, सेंट क्लेयर के स्वामी और अल्बिन कबीले के सरदार, को नीग्रो के धन से रिश्वत दी गई है ताकि वह सौ अर्लों के स्वामित्व वाले प्रतीक चिन्ह को विश्वासघात से कलंकित कर दे।”

इस विचित्र आरोप पर सर्वत्र "असंभव" की एक आवाज़ गूंज उठी। परिषद का प्रत्येक सदस्य अपनी सीट से उठ बैठा और लगभग भय के भाव से भरा आश्चर्य सबके चेहरों पर दिखाई दिया। केवल ड्यूक और सेंट क्लेयर ही अविचलित बैठे रहे।

“महोदय,” पूर्व अधिकारी ने शांत लेकिन कुछ हद तक सख्त लहजे में कहा, “इस दुस्साहसी आरोप का सबसे पुख्ता सबूत पेश किया जाना चाहिए, अन्यथा आरोपी के लिए निर्धारित सजा आरोप लगाने वाले पर ही उलटी पड़ जाएगी।”

“मैं आपके सुझाव को स्वीकार करता हूँ,” कर्नल ने झुककर उत्तर दिया, “गवाही की कमी नहीं है, लेकिन पहले मुझे उनके लॉर्डशिप से यह पूछने दीजिए कि क्या वे इस आरोप से इनकार करते हैं।”

“नहीं,” अर्ल ने चौंकाने वाले उग्र स्वर में उत्तर दिया, और मानो किसी प्रबल आवेग से प्रेरित होकर अपनी सीट से उछल पड़ा, “नहीं, मैं इस घिनौने झूठ को नकारने से इनकार करता हूँ, लेकिन मैं अपनी तलवार से शैतान के उस औजार पर इसकी नीचता साबित करूँगा।”

बोलते ही उसने म्यान से हथियार छीन लिया। पर्सी ने इस हरकत से बिल्कुल भी

विचलित हुए बिना कहा, "सज्जनों, यह तलवार उसे दोषी ठहराती है। इसे ध्यान से देखिए और फिर मुझे बताइए कि क्या ऐसी तलवार किसी ब्रिटिश सैनिक के हाथों में होनी चाहिए।"

सभी की निगाहें उस चमकते हुए ब्लेड पर टिक गईं; यह एक घुमावदार मूरिश कृपाण थी जिसका हैंडल उच्चतम मूल्य के रत्नों से भरपूर रूप से सजाया गया था।

“यह तो निश्चित रूप से वर्दोपोलिस में नहीं खरीदा गया है, महाराज,” ड्यूक ने इसकी जांच करने के बाद कहा। “आपने इसे कैसे प्राप्त किया?”

“मुझे नहीं पता,” सेंट क्लेयर ने हथियार के बारे में स्पष्ट आश्चर्य व्यक्त करते हुए उत्तर दिया, “यह मेरा नहीं है - मैंने इसे अभी तक कभी नहीं देखा।”

“होश में आओ,” उनके मित्रवत न्यायाधीश ने आगे कहा। “क्या तुमने इसे युद्ध के मैदान में गलती से उठा लिया था?” अर्ल ने सिर हिलाया।

“शायद,” कर्नल पर्सी ने व्यंग्य करते हुए कहा, “मैं उनके लॉर्डशिप को बता सकता हूँ कि यह उनके कब्जे में कैसे आया, यदि आपकी कृपा मुझे अपना गवाह पेश करने की अनुमति दे।”

ड्यूक ने अपनी सहमति जता दी और पर्सी तंबू के दरवाजे की ओर बढ़ते हुए चिल्लाया, "ट्रैवर्स, कैदी को अंदर लाओ।" इस पुकार का जवाब एक नौकर के आने से मिला जो एक लड़के को साथ लेकर आया था, जिसकी पैनी नज़र और झुर्रीदार, बदसूरत चेहरे ने तुरंत बता दिया कि वह कोई और नहीं बल्कि हमारा दोस्त एंड्रयू था।

“यह कैसे हो सकता है?” सेंट क्लेयर ने अचंभित होकर पीछे हटते हुए कहा, “वह लड़का आपकी हिरासत में क्यों है? मैं उसे अपना जागीरदार मानता हूँ और उसके स्वामी होने के नाते मुझे यह जानने का अधिकार है कि उस पर क्या आरोप हैं।”

“वह स्वयं आपको सूचित करेगा, मेरे स्वामी,” कर्नल ने अर्थपूर्ण ढंग से कहा।

“नहीं,” ड्यूक ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “मैं सबसे पहले आपसे ही सुनना चाहूंगा, महोदय।”

“मैंने उसे कल सुबह तड़के शिविर की निर्धारित सीमाओं के बाहर पाया, जब मैं जा रहा था।” पर्सी ने उत्तर दिया, “मैंने उसे कल सुबह शिविर की निर्धारित सीमाओं के बाहर पाया।”

पहरेदार अधिकारी के रूप में गश्त करते हुए, जब मैंने उससे पूछा कि वह कहाँ था, तो वह बहुत घबराया हुआ प्रतीत हुआ और उसने जो जवाब दिए वे असंगत और स्पष्ट

रूप से झूठे थे। तब मैंने उसे सच न बताने पर कड़ी सजा देने की धमकी दी, जिसका वांछित प्रभाव पड़ा, उसने तुरंत स्वीकार किया कि वह अफ्रीकी तंबुओं में गया था। आगे की पूछताछ से उससे वह जानकारी प्राप्त हुई जिसके आधार पर मैंने उसके स्वामी के खिलाफ आरोप लगाया है और जिसे वह अब आपके समक्ष बताने के लिए तैयार है।

ड्यूक ने कहा, "एंड्रयू, इधर आओ, क्या तुम मुझसे वादा करोगे कि अब मैं तुमसे जो प्रश्न पूछूंगा, उनका तुम सत्य-सत्य उत्तर दोगे?"

“मैं करूँगा,” लड़के ने बड़ी ईमानदारी से अपना हाथ अपने दिल पर रखते हुए कहा।

“तो फिर आपको अशांती शिविर में किसने भेजा था?” “मेरे स्वामी, मुखिया ने।” “किसलिए?”

“एक सीलबंद कागज़ पहुँचाने के लिए जो मुक्त अफ्रीकियों के दूसरे राजा क्वाशी को संबोधित था।” “क्या आप पहले कभी वहाँ गए थे?” “हाँ, एक बार।” “कब?” “उसी रात।” “और आप तब क्यों गए थे?”

“मुझे एक निश्चित इनाम मांगने के लिए भेजा गया था, जिसका वादा क्वाशी ने कुछ समय पहले मेरे स्वामी से किया था, बशर्ते मैं उन्हें उन सभी सभाओं की बातें बता दूं जिनमें वे भाग लेते थे।” “क्या आपने वह वादा सुना था?” “हाँ।”

"किस समय?"

यहां पहुंचने के बाद पहली रात एक अश्वेत व्यक्ति मेरे स्वामी के तम्बू में आया और उसने बारह अकी (मुझे लगता है उसने इसे यही कहा था) सोने के सिक्के देने की पेशकश की, अगर वह उसकी इच्छा के अनुसार काम करे। "और आपके स्वामी ने सहमति दे दी?"

“जब तुम क्वाशी के शिविर में गए थे, तो क्या तुमने उसे देखा था?” “हाँ”

वह कैसा था?

"वह एक युवक था और काफी लंबा था, उसकी नाक और होंठ अन्य अश्वेतों की तरह चपटे और मोटे नहीं थे और वह अंग्रेजी बोलता था।"

“आपने जो विवरण दिया है वह बिल्कुल सही है। अब मुझे यह बताएं कि आपने अपने स्वामी के लिए क्या इनाम पहुंचाया था।”

“वहाँ एक काला बक्सा था जिसमें कोई बहुत भारी वस्तु भरी हुई थी, विभिन्न रंगों

के रेशम से बना एक बड़ा लबादा और एक तलवार थी जिसे क्वाशी ने अपनी कमरबंद से निकाला।" "तलवार का वर्णन कीजिए।"

"यह टेढ़ा-मेढ़ा था, लगभग हंसिया जैसा और इसके हैंडल पर बहुत सारे कीमती पत्थर जड़े हुए थे।"

यहां मौजूद लोगों में हैरानी की एक हल्की सी फुसफुसाहट फैल गई। हालांकि, ड्यूक ने उन्हें सख्ती से फटकार लगाई और आगे बढ़ गए।

"क्या तुम्हें पता है कि काला बक्सा और रेशमी चादर कहाँ रखी गई थी?" "हाँ, मेरे मालिक ने मुझे तम्बू के बीच में एक गड्ढा खोदकर उन्हें वहाँ दफनाने का आदेश दिया था।"

"बोबादिल," महामहिम ने कहा, "अपने साथ एक या दो आदमियों को लेकर अर्ल के तम्बू में जाओ और देखो कि क्या तुम ये वस्तुएँ ढूंढ सकते हो।"

बोबाडिल ने मौन प्रणाम किया और अपना कार्य पूरा करने के लिए प्रस्थान किया। जनरल लीफ अब मेज की ओर बढ़े।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ," उसने पृष्ठ को संबोधित करते हुए एक ऐसे स्वर में कहा जिसमें प्राचीन काल की धीमी और गंभीर शैली का कुछ अंश अभी भी मौजूद था, "जब आप राउबल्स के घर गए थे तो क्या आप अकेले थे?"

"नहीं, पहली बार मेरे मालिक ने मुझे कुछ दूर तक साथ ले गए थे," एंड्रयू ने जवाब दिया।

"मुझे ऐसा ही लगा क्योंकि परसों रात जब मैं काउंसिल के सूप से लौट रहा था, तो मैंने एक लंबे आदमी और एक छोटे लड़के को शिविर की सीमाओं की ओर जाते देखा और वह आदमी हरे रंग की चेकदार शर्ट पहने हुए था, जैसी लॉर्ड सेंट क्लेयर पहनते हैं।"

"यह निर्णायक सबूत है," कर्नल पर्सी ने कहा, "यह पुष्टि करता है," ड्यूक ने कहा, "लेकिन मैं इसे पूरी तरह से निर्णायक नहीं मानता।"

अब मंडप के दरवाजे की ओर कदमों की आहट सुनाई दी। कुछ ही क्षणों में जनरल बोबादिल एक हाथ में काला बक्सा और दूसरे हाथ में रेशमी वस्त्र लिए हुए अंदर आए। उन्होंने चुपचाप दोनों को मेज पर रख दिया। ड्यूक ने सबसे पहले रेशमी वस्त्र का निरीक्षण किया; यह उन शानदार अशांती वस्त्रों में से एक था, जिनके बदलते रंगों में इंद्रधनुष के सभी चमकीले रंग दिखाई देते हैं। फिर उन्होंने बक्सा खोला और उसमें

से पाँच दोहरी सोने की जंजीरें निकालीं, जिनमें से प्रत्येक दो गज लंबी थी, एक हार और उसी कीमती धातु के कंगन, एग्री मोतियों के कई आभूषण और बेहतरीन हीरों से जड़ा एक सोने का ताबीज था।

सर्वेक्षण पूरा करने के बाद उन्होंने कहा, "हे भगवान! मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि ये तुच्छ वस्तुएँ एक ब्रिटिश सैनिक का विश्वास खरीद लेंगी। संत क्लेयर उठो - मुझे अपना बचाव सुनाओ। मैं तहे दिल से कामना करता हूँ कि तुम आज रात हमने जो कुछ भी सुना है, उसे गलत साबित कर सको।"

“मेरे स्वामी,” अर्ल ने कहा, जो अब तक अपने सिर को अपने प्लेड में ढके हुए बिना हिले-डुले बैठा था, “मेरे पास बचाव के लिए कुछ नहीं है। ईश्वर मेरी निर्दोषता जानता है, लेकिन मैं मनुष्य को कैसे सिद्ध करूँ कि अभी-अभी प्रस्तुत किए गए सभी प्रतीत होने वाले निष्पक्ष और सुसंगत साक्ष्य वास्तव में सबसे गहरे और काले झूठों का एक शैतानी मिश्रण हैं? मेरा भाग्य इस समय अंधकारमय और निराशाजनक है। मैं धैर्यपूर्वक एक बेहतर संभावना के उदय की प्रतीक्षा करूँगा।”

ऐसा कहकर ड्यूक ने अपनी भुजाएँ मोड़ लीं और अपनी पूर्वस्थिति में लौट आए। फिर उन्होंने कहा कि वे अभी फैसला नहीं सुनाएंगे, बल्कि आरोपी को गवाहों को इकट्ठा करने और औपचारिक मुकदमे की तैयारी के लिए छह सप्ताह का समय देंगे। उन्होंने यह भी सूचित किया कि उन्हें तुरंत वर्दोपोलिस ले जाया जाए और संकेत दिया कि विद्रोह के पूरी तरह शांत होते ही वे स्वयं भी वहाँ पहुँच जाएँगे। इसके बाद परिषद भंग हो गई और सैनिकों के एक दल द्वारा सेंट क्लेयर को कैदियों के लिए आरक्षित तंबू में ले जाया गया।

मैं पाठक से निवेदन करता हूँ कि वे कल्पना करें कि मेरे नायक को पुनः देखने से पहले छह सप्ताह का समय बीत चुका है, इस दौरान उन्हें वर्दोपोलिस ले जाया गया है और उन राजकीय कारागारों में से एक में रखा गया है जो सर्वराष्ट्रों के टावर के नीचे स्थित हैं। वह एक अंधकारमय स्थान था, ऊपरी दुनिया से एक हजार फीट नीचे, मोटी दीवारें और छोटी चौड़ी मेहराबों पर बनी नीची छत, उस चट्टान जितनी विशाल थी जिससे उन्हें तराशा गया था, किसी भी ध्वनि को अंदर नहीं आने देती थी, चाहे वह कितनी ही धीमी, क्षणिक और दूर की क्यों न हो, जिससे इस जीवित कब्र के निवासी को याद दिलाया जा सके कि उसके लगभग तीन मिलियन साथी मनुष्य उसके ऊपर स्वर्ग के मुक्त प्रकाश में रह रहे हैं और घूम रहे हैं। कब्र जैसे सन्नाटे में छाई खामोशी

बीच-बीच में एक ऐसी आवाज़ से टूटती थी जो बेहद धीमी और मानो धरती की गहरी खाई से आती हुई प्रतीत होती थी, फिर भी कालकोठरी की दीवारों को हिला देती थी। ऊपर, नीचे और चारों ओर खोदी गई अन्य भूमिगत गुफाओं में गूंजती हुई यह आवाज़ कानों में एक गहरी, खोखली गड़गड़ाहट की तरह गूंजती थी जो दिल को कंपा देती थी और माथे पर डर के मारे पसीना ला देती थी। यह आवाज़ जिब्बल कुमरी की प्रेतवाधित पहाड़ियों से हज़ार मील लंबी भूमिगत सुरंगों से आती हुई सीप-सीप की थी।

अंतिम मुकदमे के लिए निर्धारित दिन से ठीक पहले की शाम को, सेंट क्लेयर पुआल के बिस्तर पर लेटे हुए थे। उनके बगल में नम ज़मीन पर एक टिमटिमाता दीपक रखा था, जिसकी मंद किरणें इस भयानक जेल के दूरदराज के कोनों में छाए लगभग स्पष्ट अंधेरे को दूर करने में अपर्याप्त थीं, फिर भी दुर्भाग्यशाली रईस के कमजोर शरीर और चेहरे पर एक धुंधली, बुझती हुई रोशनी डाल रही थीं। उनके अब मुरझाए और धंसे हुए गालों पर कभी स्वास्थ्य और युवावस्था की जो चमक थी, उसका कोई निशान नहीं बचा था। उनकी आँखों की रोशनी अब भी बरकरार थी; उनके चेहरे की राजसी सुंदरता भले ही फीकी पड़ गई थी, लेकिन नष्ट नहीं हुई थी।

अचानक, जंग लगे ताले में चाबी के घूमने जैसी कर्कश, खुरदरी आवाज़ से जेलर के आने का आभास हुआ। वह लेटी हुई मुद्रा से उठकर सीधा बैठ गया। कालकोठरी के दरवाजे को बंद करने वाले सभी ताले और कुंडी खोलने में पूरे दस मिनट लग गए, लेकिन अंततः आखिरी कुंडी भी हटा दी गई और भारी लोहे के द्वार खुलने पर जेलर नहीं, बल्कि एक लंबा आदमी अंदर आया, जिसका शरीर और चेहरा उसके विशाल लबादे की तहों से पूरी तरह ढका हुआ था। वह धीरे-धीरे और सावधानी से अर्ल के पुआल के पलंग की ओर बढ़ा और दीपक की सबसे कम रोशनी वाली तरफ बैठकर उससे इस प्रकार कहा।

"अर्ल ऑफ सेंट क्लेयर, अगर मैं गलत नहीं हूं तो आप यहां राजद्रोह के आरोप में लेटे हुए हैं।"

"और अगर मैं ऐसा करता हूँ," उस कैदी ने उत्तर दिया जिसकी आत्मा पर कैद का जरा भी असर नहीं पड़ा था, "तो क्या यह बात अजनबियों को इसका जिक्र करके मेरा अपमान करने का अधिकार देती है?"

"बिल्कुल नहीं," उस अज्ञात आगंतुक ने अप्रत्यक्ष निंदा से अविचलित होकर उत्तर

दिया, “और न ही मेरा इरादा अभी पूछे गए प्रश्न से आपका अपमान करने का था। मेरा दृढ़ विश्वास है कि आप पर लगाए गए आरोप के लिए आप निर्दोष हैं - क्या मेरा यह विश्वास गलत है?”

क्या आपको अपने अस्तित्व के बारे में कोई धारणा गलत लगती है? "मुझे नहीं लगता।"

“एक तथ्य के बारे में उतना ही निश्चित रहो जितना दूसरे के बारे में, और तुम सही होगे।”

“यह निर्णायक है,” अजनबी ने मुस्कुराते हुए लहजे में जवाब दिया और फिर थोड़ी देर रुककर बोला, “महोद, क्या इस झूठे अपराध के लिए आपका मुकदमा कल नहीं है?” “हाँ।”

“और क्या आपके पास इसे गलत साबित करने के लिए कोई सबूत है?” “नहीं, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि अड़तालीस घंटे बीतने से पहले ही मैं एक कुख्यात शत्रु की नफरत का शिकार हो जाऊंगा। जी हां, रॉसलिन के लॉर्ड्स का आखिरी बेटा देशद्रोही के नाम से कलंकित होकर मरेगा।” “अगर मैं कुछ कर सकता हूं तो नहीं!” अज्ञात ने कहा, “और मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा।” “अजनबी, आप दयालु हैं, लेकिन अफसोस, आप क्या कर सकते हैं? मेरे खिलाफ सबूत मजबूत हैं, धोखे का जाल इतनी कुशलता से बुना गया है कि उसे भेदना असंभव है।”

“अरे, डरने की कोई बात नहीं। अंत में सत्य की ही जीत होगी। बस मुझे बता दो कि तुम्हारा छिपा हुआ दुश्मन कौन है।” “कर्नल पर्सी, मेरे अभियोक्ता।”

"मैंने भी यही सोचा था, और अब मैं इस घिनौनी कालकोठरी में आपसे मिलने के अपने उद्देश्य पर आता हूँ; वह आपसे इतनी नफरत क्यों करता है?"

“इस सवाल का जवाब देने से पहले मुझे यह जानना होगा कि यह सवाल कौन पूछ रहा है।” “ऐसा नहीं हो सकता,” अजनबी ने अपने बड़े लबादे को और कसकर लपेटते हुए जवाब दिया। “लेकिन मैं इतना ही कह सकता हूँ। मैं वही व्यक्ति हूँ जिसने कुछ समय पहले आपको कर्नल पर्सी से सावधान रहने की चेतावनी दी थी। जब आप पर आरोप लगाया गया था तब मैं वहाँ मौजूद था और क्योंकि मैं आरोप लगाने वाले के स्वभाव और व्यवहार के बारे में कुछ जानता हूँ, इसलिए मुझे उसकी बातों पर संदेह हुआ क्योंकि मैं जानता था कि किसी बेहद गंभीर मकसद के बिना वह इस तरह के मामले में इतना सक्रिय नहीं हो सकता। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि यदि आप मेरे

साथ ईमानदार रहेंगे तो मुझे वह मकसद बताएँ, इस बार तो वह युवा गिद्ध अपने शिकार से चूक जाएगा।”

“महाराज,” अर्ल ने उत्तर दिया, “आपकी आवाज़ में कुछ ऐसा है जो मुझे बताता है कि मुझे आप पर भरोसा करना चाहिए। तो जान लीजिए कि मैं एक ऐसी महिला से प्यार करता था जो मेरी नज़र में अपनी जाति की सबसे सुंदर और श्रेष्ठ स्त्री थी। कर्नल मेरा प्रतिद्वंदी था और-”

“तुमने काफी कुछ कह दिया,” अजनबी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “मुझे तुम्हारी पूर्ण निर्दोषता के बारे में पूरी तरह आश्वस्त होने के लिए और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे में मैं जानता हूँ कि कर्नल पर्सी तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक कि वे अपने प्रतिद्वंद्वी से सबसे गहरा और घातक बदला न ले लें, अगर वह प्रतिद्वंद्वी उनका अपना भाई होता। अब सारा काला षड्यंत्र उजागर हो गया है: वही गद्दार है और ईश्वर की कृपा से उसे गद्दार की मौत ही मिलेगी। कल जब तुम्हें अपनी निर्दोषता का सबूत पेश करने के लिए कहा जाए, तो यह कहने में संकोच न करना कि अदालत में एक ऐसा व्यक्ति है जो चाहे तो तुम्हें इस अपराध से निर्दोष साबित कर सकता है। बाकी सब मुझ पर छोड़ दो और अब अलविदा। मुझे आशा है कि कल रात तुम किसी और के साथ चैन से सोओगे।” “अलविदा,” सेंट क्लेयर ने अजनबी का हाथ गर्मजोशी से पकड़ते हुए कहा, “और मेरे अनजान दोस्त, इसमें कोई संदेह मत करना कि रॉसलिन उन लोगों को पुरस्कृत करना जानता है जिन्होंने उसकी इज्जत बचाई है।”

इन शब्दों के साथ अर्ल अपनी साधारण चटाई पर वापस गिर पड़ा, जबकि अजनबी उस ऊपरी पृथ्वी पर लौटने के लिए जल्दी से चला गया जिसे उसने अपने परोपकारी कार्य को पूरा करने के लिए छोड़ा था।

अध्याय आठवां

पुराना सैन्य न्याय भवन (जिसे हाल ही में ध्वस्त कर दिया गया है और उसके स्थान पर एक नया भवन बनाया गया है) एक विशाल और अंधकारमय इमारत थी, जो दीर्घाओं से घिरी हुई थी और जिसके ऊपर एक विशाल काला गुंबद था, जो विशाल स्तंभों द्वारा समर्थित था। इन स्तंभों की भारी छाया, झुकी हुई छत के साथ मिलकर, चारों ओर एक गहन और उपयुक्त गंभीरता का वातावरण बना रही थी। 25 सितंबर 1814 को, दस हजार से अधिक लोग सेंट क्लेयर के राजद्रोह के मुकदमे को देखने के लिए यहाँ एकत्रित हुए थे। बारह न्यायाधीशों में ड्यूक ऑफ वेलिंगटन प्रमुख स्थान पर बैठे थे। जैसे ही लोहे की बेड़ियों में जकड़े और अपने कबीले की आकर्षक पोशाक पहने हुए उस महान कैदी को सैनिकों के एक पहरे के साथ हॉल के केंद्र में लाया गया, हर किसी के माथे पर गहन जिज्ञासा का भाव झलक रहा था। उनकी गरिमामयी मुद्रा, राजसी रूप, उनके युवा और सुंदर चेहरे और भारी बेड़ियों के बावजूद उनकी राजसी चाल को देखकर कोई भी इस बात से अचंभित नहीं हो सकता था कि उनके सामने खड़ा व्यक्ति कोई राजद्रोह नहीं था।

अदालत ने सबसे पहले प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों का पुनर्कथन करने की मांग की, और इसी के अनुरूप साक्ष्यों की जांच की गई: गहने, ताबीज, वस्त्र और तलवार सभी को सावधानीपूर्वक प्रदर्शित किया गया और ऐसा प्रतीत हुआ कि कैदी के अपराध को पूरी तरह से सिद्ध करने के लिए पर्याप्त सबूत मौजूद थे। "वह अब सुधर नहीं सकता" यही भावना सभी दर्शकों के मन में व्याप्त थी। अब अर्ल को अपना बचाव प्रस्तुत करने के लिए कहा गया, वह धीरे-धीरे उठे और शांत गरिमा के साथ अपनी निर्दोषता का दावा करते हुए न्यायाधीशों की दयालुता की निंदा करने लगे।

“मेरे प्रभु,” वह जोश से भरते हुए बोला, “मैं बरी होने की भीख नहीं मांग रहा... ऐसा तो उस व्यक्ति का काम होगा जो अपराध बोध से ग्रस्त होकर दया को वरदान समझे। नहीं, मैं इसका दावा करता हूँ, यह मेरा अधिकार है, मैं निर्दोष हूँ और मैं चाहता हूँ कि मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाए। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपना कर्तव्य निभाएँ, उस कुलीन व्यक्ति के वचन पर विश्वास करें जिसकी प्रतिष्ठा पर अब तक कभी संदेह नहीं हुआ और उस व्यक्ति के वचन को अस्वीकार करें - मैं उसे क्या कहूँ - जो नरम शब्दों में कहूँ तो, जब उसके हृदय में वास्तविक या

काल्पनिक चोटें प्रतिशोध की रक्तपिपासी भावना जगाती हैं, तो वह सत्य और सम्मान दोनों की अवहेलना करने के लिए सर्वविदित है। और मेरे प्रभु, दूसरे गवाह के लिए" (यहाँ उसने अपनी गहरी काली आँखें उस झूठे शपथ लेने वाले सेवक पर डालीं जो उसकी नज़र से मानो क्षुब्ध होकर सिकुड़ गया) "मुझे नहीं पता कि किस शैतान ने मेरे जागीरदार के हृदय पर कब्जा कर लिया है, किस नरक से जन्मी वाक्पटुता ने उस अनाथ को, जो जन्म से केवल मेरी कृपा पर ही जीवित रहा है, अपने स्वामी के विनाश में सहायता करने के लिए राजी कर लिया है।" हे उपकारक, परन्तु मैं यह जानता हूँ कि जो लोग इस प्रकार की शापित गवाही के लिए मेरी निंदा करेंगे, वे मनुष्यों और स्वर्गदूतों दोनों की दृष्टि में पाप करेंगे। हे मेरे स्वामियों, उस न्याय के नाम पर पाप से बचिए, जिसके सेवक होने का आप दावा करते हैं और जिसकी प्रतिमा आपके महल की रक्षक के रूप में वहाँ विराजमान है। (जब वह बोल रहा था, तो सबकी निगाहें न्याय की विशाल प्रतिमा की ओर मुड़ गईं, जो ऊँची खिड़की के प्रकाश में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। इसी बीच अर्ल ने आगे कहा,) "मेरे स्वामियों, अपने भले के लिए इससे दूर रहें, क्योंकि मैं आपको चेतावनी देता हूँ कि अंतिम सेंट क्लेयर बिना बदला लिए नहीं मरेगा। मेरे अपने एलिम्बोस की ऊँचाइयों पर दस हज़ार अजेय योद्धा हैं, सात गुना अधिक संख्या में शेरों की तरह भयंकर और उनके मुकुटों पर अंकित चीलों की तरह स्वतंत्र, उन सौ घाटियों की गोद में निवास करते हैं, जिन पर किसी का शासन नहीं है, कोई कानून नहीं है, जो जंगली ब्रान्नी पहाड़ियों के बीच स्थित हैं। और जब यह खबर कि मैं मर गया हूँ, उनके मुखिया का घर गिर गया है, उसका नाम और यश कलंकित हो गया है, कोहरे के इन जंगली बेटों तक पहुँचेगी, तो मेरे rers wजो मुझे तलवार से काट डालेंगे और न्याय के मुखौटे के नीचे अपने ऊँचे स्थानों में काँपेंगे। मेरे स्वामियों, मैं और कुछ नहीं कहूँगा, जैसा आप चाहें करें और अपने कर्मों का फल भोगें।"

अब सवाल यह था कि क्या उनके पास कोई गवाह है जिसे वे पेश कर सकें। एक पल के लिए वे चुप रहे और गहरी सोच में डूबे हुए प्रतीत हुए, लेकिन लगभग तुरंत ही उन्होंने अपना सिर उठाया और दृढ़ स्वर में कहा, "मेरा मानना है कि इस हॉल में एक ऐसा व्यक्ति है जो यदि चाहे तो मेरी बहुत मदद कर सकता है।" कुछ देर का सन्नाटा छा गया, न्यायाधीशों (ड्यूक को छोड़कर, जिन्होंने पूरे मुकदमे के दौरान अपना सामान्य शांत स्वभाव बनाए रखा था) ने आश्चर्य भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा।

कर्नल पर्सी के चेहरे पर खिलने वाली खुशी भरी मुस्कान गायब हो गई, उनका चेहरा पीला पड़ गया, और सेंट क्लेयर के चेहरे पर चिंता और उम्मीद के भाव आ गए। कुछ देर बाद हॉल के एक हिस्से में हल्की सी हलचल सुनाई दी, अब तक लगभग स्थिर खड़े दर्शकों की घनी भीड़ में हलचल दिखाई दी, उनकी कतारें धीरे-धीरे खुलीं और एक सुंदर और सभ्य दिखने वाला युवक, जो एक अधिकारी की वर्दी पहने हुए था, न्यायाधीशों की सीटों की ओर बढ़ा।

“क्या आप कैदी के पक्ष में गवाही देने आए हैं?” ड्यूक ऑफ वेलिंगटन ने पूछा।

“मैं हूँ,” युवा अधिकारी ने अपने पूछताछकर्ता के सामने आदरपूर्वक झुकते हुए उत्तर दिया।

आपका नाम और पेशा क्या है?

मेरा नाम जॉन बड है और मैं कर्नल पर्सी के नेतृत्व वाली पैंसठवीं घुड़सवार रेजिमेंट में एनसाइन के पद पर कार्यरत हूं।

"इस मामले के संबंध में आप जो कुछ भी जानते हैं, उसे दोहराएं, लेकिन पहले उन्हें शपथ दिलाई जाए।"

इस सूत्र का पालन करते हुए, एनसाइन बड ने निम्नलिखित आशय के साक्ष्य प्रस्तुत किए। जिस रात सेना को दुश्मन के शिविर पर हमला करने का आदेश मिला, उससे ठीक पहले वाली रात को वह एक मित्र के साथ शाम बिताने के बाद अपने तंबू लौट रहा था। नदी के किनारे घने पेड़ों के झुरमुट के बाहरी इलाके से गुजरते ही उसके कानों में ये शब्द पड़े, “तू अभी इसी वक्त मेरी बात मान ले, बौना, वरना मैं तुझे दिल में छुरा घोंप दूँगा।” पेड़ों की शाखाओं के बीच से झाँकने पर उसने कर्नल पर्सी और वर्दी पहने एक आदमी को देखा, जिनके बीच एक छोटा लड़का था। उसने माना कि वही लड़का अब उनके दरबार में मौजूद है। बच्चा घुटनों के बल गिर पड़ा और हर बात में उनकी बात मानने का वादा किया। फिर कर्नल ने उसे अफ्रीकी शिविर में जाकर अपने स्वामी, अर्ल ऑफ सेंट क्लेयर के नाम पर एक इनाम का दावा करने को कहा। यह इनाम युद्ध परिषद में अभी-अभी तय की गई कुछ योजनाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए था। जब लड़के ने कहा कि उसे रास्ता नहीं पता, तो कर्नल ने कहा कि वह उसके साथ सीमा तक जाएगा। फिर बच्चे से एक हरी चादर लेकर, उसे ओढ़कर, तीनों वहाँ से चले गए। और वे जल्द ही नजरों से ओझल हो गए। जैसे ही गवाह ने सबूत का यह एकमात्र अंश प्रस्तुत किया, कर्नल पर्सी अपनी सीट से उठे

और बार की ओर कदम बढ़ाने के बजाय उछल पड़े।

"मेरे प्रभु," उसने ऊँची और उत्तेजित आवाज़ में कहा, उसके लाल गाल, उग्र आँखें और माथे पर लगभग फटने वाली नसें उसके भीतर उमड़ रही भावनाओं की तीव्रता को बयां कर रही थीं। "मेरे प्रभु, मैं आपसे विनती करता हूँ कि उस झूठे, दुराचारी के एक भी शब्द पर विश्वास न करें, जिसे नीच प्रतिशोध ने प्रेरित किया है..." वह बढ़ते हुए उग्रता के साथ बोलता रहा, तभी ड्यूक ऑफ वेलिंगटन ने उसे चुप रहने का आदेश दिया।

न्यायाधीशों के बीच एक संक्षिप्त चर्चा हुई जो इतनी धीमी आवाज़ में हुई कि मुश्किल से सुनाई दे रही थी। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने घोषणा की कि एनसाइन बड की गवाही तत्काल बरी करने के लिए पर्याप्त रूप से स्पष्ट और निर्णायक नहीं थी, बल्कि उन्होंने कैदी को फिलहाल हिरासत में रखने का निर्णय लिया ताकि उसे अतिरिक्त साक्ष्य जुटाने का अवसर मिल सके। अदालत अब भंग होने ही वाली थी कि भीड़ में फिर से हलचल दिखाई दी, दरवाजा दूसरी बार खुला और हमारे मित्र श्री स्डेथ प्रकट हुए। उनके पीछे छह आदमी एक पालकी लेकर आए थे जिस पर एक व्यक्ति नीले चांदी के फीते वाले कोट में एक पैदल सैनिक के रूप में लेटा हुआ था। उसका चेहरा भयानक रूप से पीला था और उसके कपड़े खून के ताज़े धब्बों से सने हुए थे। श्री स्डेथ ने फुर्ती से आगे बढ़ते हुए कहा, "उसे उसके स्वामी के चरणों में यहाँ लिटा दो, जैसा कि कर्तव्य है," और सावधानीपूर्वक उन आदमियों की सहायता की जिन्होंने अपने इस दुखद बोझ को कर्नल पर्सी के ठीक बगल में रख दिया।

"इसका क्या मतलब है, दुष्ट?" उसने पूछा, उसका चेहरा उसके सामने मरते हुए आदमी की तरह पीला पड़ गया था। मृत्यु ने इस प्रश्न का उत्तर मन ही मन हल्की हंसी और समझदारी भरी सहमति में सिर हिलाकर दिया, फिर ड्यूक की ओर मुड़कर उसने कहा, "देखिए, मेरे स्वामी, मैं आज सुबह घाटी में ताज़ी हवा लेने के लिए निकला था, तभी एक सुनसान और शांत जगह पर पहुँचते ही मुझे एक लंबी, घुरघुराहट सुनाई दी, मानो कोई आदमी नशे में हो या असंतुष्ट हो। तो मैं उस जगह की ओर मुड़ा जहाँ से आवाज़ आ रही थी, और वहाँ मैंने देखा कि एक मृत शरीर ज़मीन पर कुचले हुए साँप की तरह तड़प रहा था। "तुम्हारा क्या काम है?" मैंने कहा, "और तुम्हें इस गंदी जगह पर कौन लाया है, मेरी सुंदरी?" "कर्नल पर्सी," वह चीखा, "ओह, मुझे वर्दोपोलिस ले चलो, मुझे न्याय के महल में ले चलो; "मरने से पहले मुझे उस नीच से बदला लेने

दो।" इस दयनीय अपील का विरोध करना असंभव था, इसके अलावा मुझे कर्नल से बहुत स्नेह था और यह जानते हुए कि वह एक उग्र स्वभाव का युवक है (युवावस्था में भी बुढ़ापे की तरह ही गलतियाँ होती हैं), मैंने सोचा कि उसके बेचारे नौकर को मृत अवस्था में देखकर शायद उसे अच्छा लगे, इसलिए मैं भागा, एक पालकी किराए पर ली और उसकी इच्छा के अनुसार उसे यहाँ ले आया।

“इन सबका क्या मतलब है?” ड्यूक ने पूछा। “घायल व्यक्ति कौन है?”

“मैं एक दुखी और भ्रमित प्राणी हूँ,” ट्रैवर्स ने खोखली, कांपती हुई आवाज़ में उत्तर दिया, “पर यदि ईश्वर मुझे शक्ति और पश्चाताप के लिए समय दे, तो मैं अपने अंतरात्मा पर पड़े उस भीषण बोझ का कुछ हिस्सा तो हल्का कर ही दूँगा। इस स्थान पर सभी को यह ज्ञात हो कि सेंट क्लेयर के अर्ल पर लगाए गए अपराध के वे पूर्णतः निर्दोष हैं। मेरे स्वामी ही देशद्रोही हैं, हाँ - पर - पर मैं आगे नहीं बोल सकता,” यहाँ वे थकान से रुक गए, उनकी आँखें बंद हो गईं, उनकी साँसें भारी हो गईं और वहाँ उपस्थित सभी को ऐसा लगा जैसे वे मर रहे हों। हालाँकि, उन्हें एक गिलास शराब पिलाने पर वे कुछ हद तक होश में आए, अपनी पालकी में उठते हुए उन्होंने सेंट क्लेयर से अकेले में बात करने का अनुरोध किया। भीड़ को तुरंत बाहर निकालने का आदेश दिया गया, अधीनस्थ न्यायाधीशों को भी हॉल के एक दूर के हिस्से में ले जाया गया और उनके पश्चाताप को सुनने के लिए ड्यूक ऑफ वेलिंगटन, एनसाइन बड और स्वयं अर्ल के अलावा कोई नहीं बचा। यह सब होने के बाद, बेचारा इस प्रकार बोला।

“मेरे स्वामी, कर्नल पर्सी आपसे नफरत करते हैं, जिसके कारण आप स्वयं ही बेहतर जानते हैं। उन्होंने आपको ओलंपिक खेलों में अपने पुराने दुश्मन के रूप में पहचाना और पुरस्कार वितरण के बाद मुझे आपकी गतिविधियों पर नज़र रखने और आपको रात के लिए कहाँ ठहराना है, यह बताने का आदेश दिया। मैंने ज़ेफिर घाटी तक आपका पीछा किया और फिर अपने स्वामी को बताने के लिए वापस आ गया। जब हम लौटे तो आप गहरी नींद में सो रहे थे, और वह लड़का, जिसे उसके पहनावे, छोटे कद और मुरझाए हुए चेहरे के कारण मेरे स्वामी हमेशा 'हरा बौना' कहते थे, आपके चरणों में पड़ा था। कर्नल ने मुझे उस लड़के को लाने के लिए कहा। मैंने ऐसा किया और जब उसे लाया गया, तो पर्सी ने अपनी तलवार निकाली और उसे वहीं जान से मारने की धमकी दी, अगर उसने तुरंत उनकी हर आज्ञा का पालन करने की शपथ नहीं ली। लड़के ने कहा कि अगर वह उनकी आज्ञा का पालन करता है तो वह सजा

की धमकी के बजाय इनाम के वादे के लिए करेगा। मेरे स्वामी ने उसे अपना इनाम खुद तय करने को कहा; उसने कहा कि वह ऐसा तब करेगा जब उसे पता चल जाएगा कि उसका काम क्या है। कर्नल पर्सी ने उसे सबसे पहले बताया कि उसका काम यह बताना है कि उसका स्वामी कौन है। उसने कहा कि वह ऐसा करेगा। पाँच पाउंड के बदले में उसने सीधे-सीधे कबूल कर लिया कि आप अर्ल ऑफ सेंट क्लेयर हैं। इसके बाद कर्नल ने उसे बताया कि उसे आपकी सभी गतिविधियों पर नज़र रखनी है, खासकर यह देखना है कि क्या आप चार्ल्सवर्थ कैसल गए थे, और यदि संभव हो तो उस अपार्टमेंट के दरवाजे पर कान लगाकर सुनना है जहाँ आपको ले जाया जा सकता है, और जो कुछ भी उसे बताया जाए, उसकी रिपोर्ट देनी है। उस छोटे से भाड़े के सैनिक ने सौ पाउंड के बदले में यह सब करने की कसम खाई। फिर उसे बताया गया कि उसका मालिक शहर के किस हिस्से में रहता है, और उसे जासूसी की अपनी घिनौनी योजना शुरू करने के लिए भेज दिया गया। लगभग एक हफ्ते बाद वह हाँफता हुआ और पूरी तरह से बेदम होकर हमारे घर पहुँचा और तुरंत कर्नल से मिलना चाहता था। वह सूचना लाया था कि आपने और लेडी एमिली चार्ल्सवर्थ ने मिलकर भागने की योजना बनाई थी जिसे उस रात बारह बजे अंजाम दिया जाना था। मेरे मालिक ने उसे आदेश दिया कि वह आपको जितना हो सके समय से ज़्यादा रोके रखे और फिर उसे जाने दिया। ग्यारह बजे मैं और वह एक बग्घी में बैठकर महल के लिए रवाना हुए। बारह बजने के कुछ ही देर बाद हम चेस्टनट एवेन्यू स्थित निर्धारित स्थान पर पहुँचे। प्रवेश द्वार पर मेरे मालिक गाड़ी से उतरे और थोड़ी दूर पैदल चले गए। वे थोड़ी देर बाद महिला के साथ लौटे और उन्हें गाड़ी में बिठा दिया।

“क्या वह स्वेच्छा से उसके साथ गई थी?” सेंट क्लेयर ने अत्यंत व्याकुल स्वर में पूछा।

"हाँ, लेकिन ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसने खुद को तुम्हारे रूप में पेश किया था, और चूंकि उसने यात्रा का लबादा पहना हुआ था और पेड़ों की घनी छाया के कारण उसके लिए धोखे का पता लगाना असंभव था।"

"लेकिन हो सकता है उसने उसकी आवाज पहचान ली हो, उसने उससे बात की थी, है ना?"

"बहुत कम ही, और जब भी वह ऐसा करता था, तो उसकी आवाज मुश्किल से उसकी सांसों की आवाज से भी धीमी होती थी।"

"अच्छा, आगे बढ़ो: तुम उसे कहाँ ले गए थे?"

“मैं यह बात बता नहीं सकता, बताने की हिम्मत नहीं कर सकता। मैंने शपथ ली है कि मैं इसे कभी प्रकट नहीं करूंगा, और निश्चित रूप से आप नहीं चाहेंगे कि मैं झूठी गवाही देकर अपनी मृत्यु के क्षणों में और अधिक पीड़ा जोड़ूं?”

वह व्यक्ति अपने इस दृढ़ निश्चय पर अडिग प्रतीत हो रहा था। सेंट क्लेयर ने व्यर्थ ही तर्क-वितर्क, विनती और आदेश देकर उसे समझाने का प्रयास किया, और जब उन्होंने देखा कि उसे मनाना असंभव है और जीवन का समय लगभग समाप्त हो चुका है, तो अंततः उन्होंने उसे अपना पाप स्वीकार करने की अनुमति दे दी।

“जब उसे सुरक्षित कर लिया गया,” उसने कहा, “हम वर्दोपोलिस लौट आए और अगले दिन बाकी सेना के साथ विद्रोहियों के खिलाफ़ मार्च में शामिल हो गए। आप हमारे कुछ ही समय बाद शिविर में पहुँचे। आपको देखते ही मेरे स्वामी ने आपके रूप में अपने घृणित प्रतिद्वंद्वी से छुटकारा पाने का निश्चय किया और ड्यूक ऑफ वेलिंगटन द्वारा आपके साथ किए गए सम्मान को देखकर उनका यह संकल्प और भी पुख्ता हो गया। इसलिए एक रात उन्होंने मुझे हरे बौने को लाने का आदेश दिया। मैं इस उद्देश्य से आपके तंबू में गया और एक विशेष संकेत के माध्यम से, जिससे वह परिचित था, उसे बुलाया। बाद में धमकियों और वादों के माध्यम से बौने को आपके अपमान और मृत्यु के लिए मेरे स्वामी द्वारा रची गई योजना को अंजाम देने में सहायता करने के लिए राजी किया गया। वह शिविर में गया, आपके नाम पर परिषद के रहस्यों को उजागर किया और प्रतिफल के रूप में वे वस्तुएँ वापस लाया जो अब उस मेज पर पड़ी हैं। बाद में उसने इन्हें आपके तंबू में दफना दिया। उसने आपकी कमर से बंधी तलवार को हटा दिया और उसकी जगह वह कृपाण रख दी, और अंत में उसने वह झूठा सबूत देकर अपने विश्वासघात को पूरा किया। जिसकी वजह से आप लगभग एक अनुचित और शर्मनाक मौत के शिकार हो गए थे।

यहां ट्रैवर्स एक बार फिर रुका और अपने पीले पड़ चुके माथे से टपकते पसीने की बड़ी-बड़ी बूंदों को पोंछा।

"आपने सेंट क्लेयर के चरित्र को बड़ी ही गरिमा के साथ निर्दोष साबित किया है," ड्यूक ऑफ वेलिंगटन ने कहा, "अब हमें बताएं कि जिस घाव से आप मर रहे हैं, वह किसने और कैसे पहुंचाया है।"

“मेरे मालिक की कसम,” उस दुखी व्यक्ति ने उत्तर दिया, “आज सुबह जब हम

घाटी में स्थित उनके चाचा के पैतृक घर से लौट रहे थे, तो मैंने उन्हें बताया कि मैं सुधरना चाहता हूँ और एक बेहतर जीवन जीना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने जो पाप किए हैं, वे मेरे हृदय पर भारी बोझ की तरह हैं। पहले तो वे मुझ पर हँसे और ऐसा दिखावा किया जैसे मैं मज़ाक कर रहा हूँ, लेकिन जब मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि मैं अपने जीवन में इतना गंभीर कभी नहीं था, तो वे उदास हो गए। हम कुछ देर तक चुपचाप साथ चलते रहे, लेकिन अंत में जैसे ही हम सड़क के एक सुनसान हिस्से पर पहुँचे, उन्होंने अपनी तलवार निकाली और अचानक मेरी बगल में वार कर दिया। गिरते हुए उन्होंने ज़ोर से हँसते हुए कहा, “अब जाओ और नरक में सुधर जाओ।” मैं अब और कुछ नहीं बोल सकता और बाकी तो आप जानते ही हैं।”

ट्रेवर के संवाद का अंतिम भाग बहुत ही धीमी और टूटी हुई आवाज में बोला गया था; बोलने का उत्साह समाप्त होने के बाद वह एक प्रकार की सुस्ती में डूब गया जो लगभग दस मिनट तक जारी रही और फिर एक गहरी कराह और पूरे शरीर के कांपने के साथ उसकी आत्मा और शरीर हमेशा के लिए अलग हो गए।

अब भीड़ को फिर से हॉल में प्रवेश दिया गया, न्यायाधीश अपने-अपने स्थानों पर लौट आए और ड्यूक ऑफ वेलिंगटन ने सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि सेंट क्लेयर का सम्मान बेदाग है और उन पर लगाया गया आरोप पूरी तरह से एक द्वेषपूर्ण शत्रु की साजिश से उपजा है। इसके बाद उन्होंने उनकी बेड़ियाँ उतारने का आदेश दिया और कर्नल पर्सी और ग्रीन ड्वार्फ के अंगों पर उन्हें बांधने का आदेश दिया। बाद में उन्होंने इन दोनों प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से पहले को मृत्युदंड और दूसरे को दस वर्ष तक नौसेना में काम करने की सजा सुनाई।

इस प्रकार मामला सुलझ जाने पर ड्यूक अपनी सीट से उठे और सेंट क्लेयर का हाथ पकड़कर बोले, "मेरे स्वामी, जब तक आप वर्दोपोलिस में रहेंगे, मैं आपको अपना अतिथि बनाना चाहता हूँ। आपको मेरी इस विनती का पालन करना होगा, भले ही यह केवल यह दर्शाना हो कि आपको छह सप्ताह की कैद के लिए मेरे प्रति कोई द्वेष नहीं है।"

सेंट क्लेयर इस तरह विनम्रतापूर्वक दिए गए निमंत्रण को ठुकरा नहीं सके और तदनुसार वे ड्यूक के साथ वाटरलू पैलेस गए। रास्ते में उन्होंने अपने सम्मानित मार्गदर्शक को उस रहस्यमय गुप्त व्यक्ति के बारे में बताया जो उनके कारागार में उनसे मिलने आया था और यह जानने की तीव्र इच्छा व्यक्त की कि वह कौन था

ताकि वे उसे मिली विशेष सेवा के लिए उचित प्रतिफल दे सकें। ड्यूक ने पूछा, "क्या आपको लगता है कि वह एनसाइन बड था?" सेंट क्लेयर ने उत्तर दिया, "नहीं, वह लंबा था और उसकी आवाज़ का लहजा बिल्कुल अलग था। वास्तव में, यदि मुझे इतने मामूली आधार पर इतना अनुमान लगाने की अनुमति दी जाए, तो मैं कहूंगा कि मैं इस समय अपने अज्ञात मित्र से बात कर रहा हूं।" ड्यूक मुस्कुराए लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।

"तो मैं गलत नहीं हूँ," सेंट क्लेयर ने उत्सुकता से आगे कहा, "और आपके अनुग्रह से ही मुझे जीवन और सम्मान दोनों की निरंतरता प्राप्त हुई है।"

जब वह बोल रहे थे, उनकी सुंदर आंखों से झलकती मौन कृतज्ञता ने उनके धन्यवाद को शब्दों से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त किया। "ठीक है," ड्यूक ने कहा, "मैं मानता हूँ कि आपका अनुमान बिल्कुल सही है, और अब मुझे लगता है कि आप उन कारणों को जानना चाहेंगे जिनकी वजह से मैंने सबसे पहले आपको सेनेगल नदी के किनारे वह चेतावनी दी थी। बात बस इतनी सी थी... मैंने अपने पवेलियन में रात के खाने के दौरान आपके और कर्नल पर्सी के बीच जो झगड़ा हुआ, उसे देखा था। मैंने देखा कि उन्होंने अपनी तलवार पर हाथ रखा और फिर उसे एक नज़र और बुदबुदाते हुए विस्मयबोधक शब्द के साथ छोड़ दिया, जिससे मुझे साफ समझ आ गया कि वर्तमान प्रतिशोध की संतुष्टि केवल किसी और अधिक आकर्षक भविष्य की संभावना के लिए स्थगित कर दी गई थी। और चूंकि मेरी नज़र में क्लैन-अल्बिन के सरदार का जीवन कुछ मूल्यवान था, इसलिए मैंने कम से कम उसे एक कपटी दुश्मन के हमलों से सावधान करने का निश्चय किया। फिर जेल में मेरी मुलाक़ात उस जानकारी के कारण हुई जो एनसाइन बड ने मुझे दी थी, और मैंने सोचा कि गवाही देने के लिए उसे बुलाने का जो तरीका मैंने बताया, वह अन्य न्यायाधीशों के मन पर गवाह को बुलाने के सामान्य तरीके की तुलना में अधिक गहरा प्रभाव डालेगा।"

ड्यूक के इस स्पष्टीकरण के समाप्त होते ही वे वाटरलू पैलेस पहुँच गए। वे तुरंत भोजन कक्ष में गए जहाँ भोजन पहले से ही तैयार था। भोजन के दौरान सेंट क्लेयर ने बहुत कम बात की और कम खाया; सुबह की अप्रत्याशित घटनाओं से उनका उत्साह कुछ हद तक बढ़ा था, लेकिन अब वह कम होने लगा था। लेडी एमिली और उनकी दयनीय स्थिति के विचार ने उनके मन में उदासी भर दी। ड्यूक ने इसे भांप लिया और कुछ व्यर्थ प्रयासों के बाद इसे दूर करने के लिए कहा, "मैं समझता हूँ कि आप क्या

सोच रहे हैं, महाराज, तो आइए, मैं आपको अपनी पत्नी के पास ले चलता हूँ। शायद उनकी सहानुभूति आपके दुख को कुछ हद तक कम कर दे।" सेंट क्लेयर लगभग यंत्रवत ही अपने मेज़बान के पीछे-पीछे ड्राइंग रूम की ओर चल पड़े। अंदर प्रवेश करने पर उन्होंने देखा कि डचेस सोफे पर बैठी सुई से कुछ सजावटी काम कर रही थीं। उनके बगल में एक छोटा सा भारतीय स्टैंड था जिस पर उनका वर्कबॉक्स और कुछ किताबें रखी थीं। इसके पास ही, दरवाजे की ओर पीठ करके, एक और सुंदर महिला बैठी थीं, जिनके घने भूरे बालों पर उस समय के शालीन फैशन के अनुसार सफेद जालीदार कपड़े का एक पारदर्शी घूंघट पड़ा था। उनका सिर एक हाथ पर टिका हुआ था और वे चिंतनशील मुद्रा में थीं। जब ड्यूक और उनके मेहमान के आने की सूचना मिली, तो वे न तो उठीं और न ही उनकी उपस्थिति के प्रति सचेत होने का कोई अन्य संकेत दिया, सिवाय एक अचानक और कंपकंपी भरी प्रतिक्रिया के। हालांकि, डचेस अपनी सीट से उठीं और एक सौम्य मुस्कान के साथ सेंट क्लेयर से मिलने के लिए आगे बढ़ीं।

"मुझे पूरा विश्वास था," उसने कहा, "कि न्याय होगा और आपकी प्रसिद्धि सात बार अग्नि परीक्षा से शुद्ध होकर निकलेगी। अब मेरे स्वामी, क्या आप मुझे अपने एक मित्र से मिलवाने की अनुमति देंगे? यहाँ (चुप बैठी महिला को संबोधित करते हुए) वह व्यक्ति है जिसे भाग्य ने बुरी तरह से आजमाया है और जो अब उससे और आपसे अपने द्वारा झेली गई सभी पीड़ाओं का प्रतिफल चाहता है।"

महिला उठी, अपना घूंघट हटाया, एक क्षणिक विराम आया, एक आनंदमय उद्गार उठा और सेंट क्लेयर ने अपनी प्रिय और लंबे समय से बिछड़ी एमिली को अपने सीने से लगा लिया। अब मेरे लिए केवल यह समझाना बाकी है कि यह सुखद विपत्ति कैसे घटी, और मैं इस कर्तव्य को यथासंभव संक्षेप में पूरा करने का प्रयास करूंगा।

चार सप्ताहों तक लेडी एमिली अपनी एकांत कैद में दुखी रहीं, जहाँ उन पर दुष्ट बर्था की निगरानी रहती थी। बर्था नियमित रूप से दिन में तीन बार उनसे मिलने आती थी और उन्हें भोजन देती थी, लेकिन बाकी समय महल के एक दूर के हिस्से में रहती थी। पाँचवें सप्ताह के पहले दिन, तय समय पर बर्था नहीं आई। दुख और कैद के कारण भूख से व्याकुल लेडी एमिली पहले तो इस बात से कुछ हद तक खुश थीं। लेकिन रात होते-होते उन्हें भूख के लक्षण महसूस होने लगे। अगला दिन भी बीत गया और उनके सूखे और कांपते होठों तक न तो भोजन पहुँचा और न ही पानी। तीसरे दिन

की सुबह, वह भूख से इतनी कमजोर हो गईं कि बिस्तर से उठने में असमर्थ महसूस करने लगीं। जब वह वहाँ लेटी हुई थीं, तो उन्हें मृत्यु की उम्मीद थी और लगभग उसकी कामना कर रही थीं। तभी एक भारी कदमों की आहट और कर्कश आवाज में "क्या इस पुराने खंडहर में उल्लू और चमगादड़ों के अलावा कोई जीवित प्राणी है?" की आवाज ने उन्हें उस सुस्ती से जगा दिया जिसमें वह डूब गई थीं। अपनी बची हुई ताकत को बड़े प्रयास से इकट्ठा करते हुए उसने उत्तर दिया कि यहाँ एक दुखी महिला कैद है जो मुक्ति और अपने दोस्तों के पास वापसी के लिए बहुत कुछ देने को तैयार है।

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रश्नकर्ता ने उसकी धीमी आवाज सुनी, क्योंकि वह तुरंत उसके कमरे का दरवाजा तोड़कर अंदर आ गया और एक लंबे, हट्टे-कट्टे आदमी के रूप में प्रकट हुआ, जो आम लड़कों के वस्त्र पहने हुए था और उसके हाथ में एक लंबी बंदूक थी। "बेचारी, क्या बात है कि तुम इतनी पीली और दुबली दिख रही हो?" वह उसकी ओर बढ़ते हुए बोला। उसने संक्षेप में बताया कि उसने तीन दिनों से कुछ नहीं खाया है और भगवान के लिए थोड़ा सा भोजन मांग रही है। उसने तुरंत अपने कंधे पर लटकी थैली से थोड़ी रोटी और पनीर निकाला। जब वह ये मोटे, लेकिन खाने लायक व्यंजन खा रही थी, तब उसने उसे बताया कि उसका नाम डिक क्रैक-स्कल है और जंगल में शिकार करते समय उसे यह पुराना टावर मिला, जिसमें वह व्यर्थ की जिज्ञासावश बिना शीशे वाली खिड़कियों में से एक से अंदर घुस गया था। सुनसान गलियारों में घूमते हुए उसे एक बूढ़ी और बदसूरत औरत का शव देखकर बहुत डर लगा, जो उसकी नजर में बिल्कुल चुड़ैल जैसी लग रही थी। तब उसने सोचा कि वहाँ कुछ और निवासी भी होंगे और इसलिए वह रोता हुआ तब तक चलता रहा जब तक वह लेडी एमिली के अपार्टमेंट के एंटी-चैंबर तक नहीं पहुँच गया, जिसकी जान उसने इस प्रकार ईश्वरीय कृपा से बचाई थी।

अगले दिन बर्था के शव को पत्थरों के ढेर से ढकने के बाद डिक अपनी प्रेमिका को लेकर वर्दोपोलिस के लिए रवाना हो गया। वहाँ पहुँचकर वह अपनी इच्छा से उस महिला के साथ वाटरलू पैलेस गया। वहाँ उसने स्वयं को डचेस की शरण में रखा, जिसने डिक को इतना बड़ा इनाम दिया कि उसका हृदय आनंद से भर उठा और उसे पूरे सम्मान के साथ विदा किया। मेरी माँ से उस दुर्भाग्यशाली युवती को अत्यंत कोमल और निरंतर स्नेह प्राप्त हुआ, यहाँ तक कि उसने उनका पूरा विश्वास जीत

लिया और लेडी एमिली के दुख भरे प्रेम प्रसंग की सारी कहानी उसकी प्रिय संरक्षिका को सहानुभूतिपूर्वक सुनाई गई। जब लॉर्ड सेंट क्लेयर के राजद्रोह के आरोप में कारावास की खबर आई, तो उसके दुःख का वर्णन करना जितना संभव हो उतना कठिन है। लेकिन अब इस सुखद मिलन का आनंद, जब उसने अपने प्रेमी को बिना किसी क्षति और बेदाग सम्मान के साथ पाया, उसके पिछले सभी आँसुओं और पीड़ा को पूरी तरह से संतुलित कर दिया। अब नेक और सम्मानित मार्क्विस ऑफ चार्ल्सवर्थ को आसानी से उनके विवाह के लिए राजी कर लिया गया और सभी विवरणों के अनुसार, सेंट क्लेयर के महान अर्ल और सुंदर लेडी एमिली चार्ल्सवर्थ के भावी जीवन को सुशोभित करने वाला सुख इतना स्थायी और अटूट कभी नहीं रहा।

इस प्रकार अपने संक्षिप्त और नीरस वृत्तांत का समापन करते हुए, मैं कर्नल पर्सी और उसके साथी के भविष्य पर एक नज़र डालकर अपनी बात समाप्त करूँगा। पर्सी को सुनाई गई मृत्युदंड की सजा को बाद में सोलह वर्षों के निर्वासन में बदल दिया गया। इस दौरान वह दुनिया भर में भटकता रहा, कभी समुद्री डाकू, कभी डाकुओं का सरदार, और हमेशा सबसे भ्रष्ट और दुराचारी लोगों का साथी रहा। निर्वासन की अवधि समाप्त होने पर, वह स्वास्थ्य और धन दोनों से टूटकर वर्दोपोलिस लौट आया, ताकि अपने चाचा ड्यूक ऑफ ब्यूफोर्ट की विरासत पर दावा कर सके, जिनकी कुछ समय पहले मृत्यु हो चुकी थी। हालाँकि, पूछताछ करने पर उसे पता चला कि उस रईस ने अपनी बदनामी का पता चलने के तुरंत बाद शादी कर ली थी और दो बेटों का पिता बन गया था, जिन पर उसकी जागीर और उपाधि आ गई थी। इस प्रकार हताश होकर कर्नल ने अपना ध्यान राजनीतिक मामलों की ओर मोड़ा और अपने सभी रिश्तेदारों द्वारा त्याग दिए जाने पर उसने अपना असली नाम त्याग दिया और एक नकली नाम अपना लिया। आज कुछ ही लोग उस राजद्रोही नेता में उस घिसे-पिटे और फीके पड़ चुके अय्याश अलेक्जेंडर रोग विस्काउंट एलिंगटन को पहचान पाते हैं, जो कभी प्रतिभाशाली और सुंदर युवा सैनिक कर्नल ऑगस्टस पर्सी हुआ करता था। जहाँ तक एंड्रयू की बात है, जब वह गैली पर अपनी सेवा से मुक्त हुआ तो वह एक प्रिंटर का सहायक बन गया, वहाँ से वह कंपोजिटर के पद तक पहुँचा और बचत और चोरी करने की प्रवृत्ति के कारण उसने अंततः किसी तरह सेना में कमीशन खरीदने के लिए पर्याप्त धन अर्जित कर लिया। फिर उसने बेतुकी तुकबंदियाँ लिखना शुरू कर दिया जिन्हें वह कविता कहता था और रोने-धोने वाली कहानियाँ जिन्हें उपन्यास का नाम

दिया गया। मुझे और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, आज भी कई लोग जीवित हैं जो मेरी इस कहानी 'द टेल ऑफ द ग्रीन ड्वार्फ' में कैप्टन ट्री के प्रारंभिक जीवन का एक अंश खोज सकते हैं।

शार्लोट ब्रोंटे, 2 सितंबर 1833

इति

एमिली ब्रोंटे का उपन्यास

एमिली का एक चित्र जो उसके भाई ने बनाया था

वर्थरिंग हाइट्स

एमिली ब्रोंटे का यह एकमात्र उपन्यास है, जो पहली बार 1847 में एलिस बेल के छद्म नाम से प्रकाशित हुआ था। एमिली की असामयिक मृत्यु के बाद, उनकी बहन शार्लोट ने इसका दूसरा संस्करण संपादित किया। उपन्यास का नाम यॉर्कशायर के उस मनोर से लिया गया है, जहाँ कहानी आधारित है, हालाँकि 'वुथरिंग' यॉर्कशायर में तूफानी मौसम के लिए प्रयुक्त शब्द है। यह उपन्यास कैथरीन अर्नशॉ और हीथक्लिफ के बीच के गहन और भावुक, लेकिन अधूरी प्रेम कहानी को बयां करता है। अब अंग्रेजी साहित्य की एक उत्कृष्ट कृति मानी जाने वाली 'वुथरिंग हाइट्स' को जब पहली बार प्रकाशित किया गया था, तब मिली-जुली आलोचनात्मक समीक्षाएँ मिली थीं, मुख्य रूप से मानसिक और शारीरिक क्रूरता के इसके स्पष्ट चित्रण के कारण।

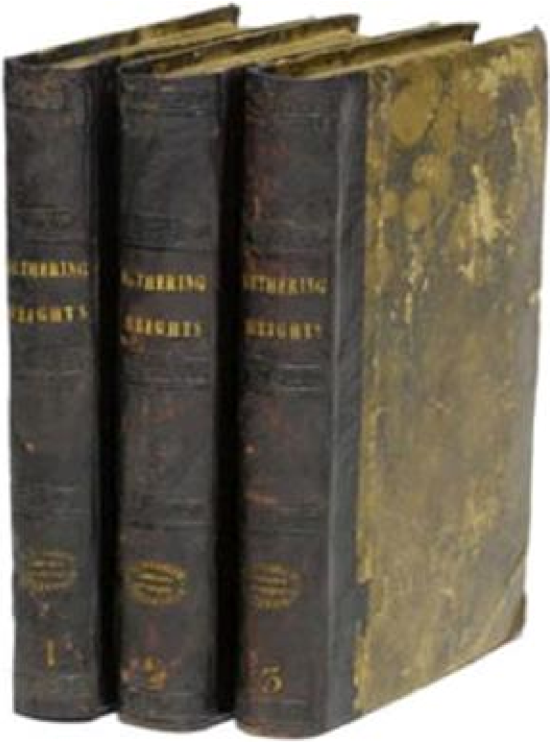

पहला संस्करण

वर्थरिंग हाइट्स

अंतर्वस्तु

अध्याय 1
अध्याय II
अध्याय III
अध्याय IV
अध्याय V

अध्याय VI
अध्याय VII
अध्याय आठ
अध्याय 9
अध्याय X
अध्याय XI
अध्याय XII
अध्याय XIII
अध्याय 14
अध्याय पंद्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह
अध्याय अठारह
अध्याय XIX
अध्याय XX
अध्याय XXI
अध्याय XXII
अध्याय XXIII
अध्याय 24
अध्याय XXV
अध्याय XXVI
अध्याय XXVII
अध्याय XXVIII
अध्याय 29
अध्याय XXX
अध्याय XXXI
अध्याय XXXII
अध्याय XXXIII
अध्याय 34

टॉप विथेंस, एक खंडहर हो चुका फार्महाउस जो दलदली भूमि को देखता है, एमिली के गृहनगर हॉवर्थ के दक्षिण में स्थित है - कई लोगों का मानना है कि यही उपन्यास की प्रेरणा का स्रोत है।

लॉरेंस ओलिवियर ने 1939 में बनी 'वुथरिंग हाइट्स' की मशहूर फिल्म में अभिनय किया था।

उपन्यास पर आधारित 1992 की फिल्म

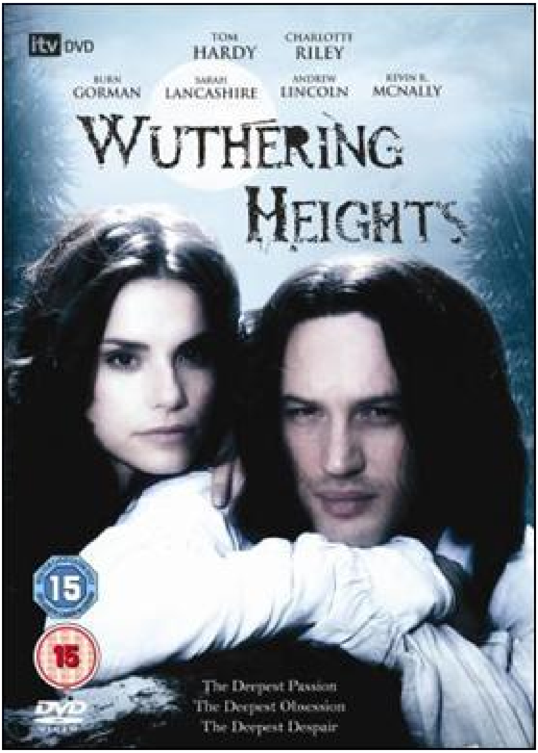

2006 में ब्रिटिश टीवी श्रृंखला रूपांतरण

अध्याय 1

1801. — मैं अभी-अभी अपने मकान मालिक से मिलकर लौटा हूँ — वही अकेला पड़ोसी जिससे मुझे अब परेशानी होगी। यह सचमुच एक खूबसूरत जगह है! पूरे इंग्लैंड में, मुझे नहीं लगता कि मैं समाज की हलचल से इतनी दूर कोई और जगह चुन पाता। एक सच्चे समाज-विरोधी का स्वर्ग: और श्री हीथक्लिफ और मैं इस एकांत को आपस में बाँटने के लिए बिल्कुल उपयुक्त जोड़ी हैं। कमाल का आदमी! उन्हें जरा भी अंदाजा

नहीं था कि जब मैं घोड़े पर सवार होकर उनके पास पहुँचा, तो उनकी काली आँखें संदेह भरी निगाहों से उनकी भौंहों के नीचे छिप गईं, और जब मैंने अपना नाम बताया, तो उन्होंने ईर्ष्या से अपनी उंगलियाँ और भी दृढ़ निश्चय के साथ अपनी जैकेट में छिपा लीं, तब मेरा दिल उनके प्रति कितना पिघल उठा।

‘श्री हीथक्लिफ?’ मैंने कहा।

जवाब में सिर हिलाना ही काफी था।

‘श्रीमान लॉकवुड, आपके नए किरायेदार, महोदय। मैं अपने आगमन के तुरंत बाद आपसे मिलने आया हूँ, यह आशा व्यक्त करने के लिए कि थ्रशक्रॉस ग्रेंज पर कब्जा पाने के लिए मेरे लगातार अनुरोध से आपको कोई असुविधा नहीं हुई होगी: मैंने कल सुना था कि आप कुछ विचार कर रहे थे—’

‘थ्रशक्रॉस ग्रेंज मेरा अपना है, महोदय,’ उसने मुंह बनाते हुए बीच में ही टोक दिया। ‘अगर मैं रोक सकता तो किसी को भी मुझे असुविधा पहुंचाने नहीं देता – अंदर आइए!’

'अंदर आओ' शब्द उसने दांत भींचकर कहा, और इसका भाव था, 'भाड़ में जाओ': यहाँ तक कि जिस द्वार पर वह झुका हुआ था, उसने भी उसके शब्दों पर कोई सहानुभूति नहीं दिखाई; और मुझे लगता है कि इसी बात ने मुझे निमंत्रण स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया: मुझे उस व्यक्ति में दिलचस्पी महसूस हुई जो मुझसे भी कहीं अधिक अतिरंजित रूप से संकोची प्रतीत होता था।

जब उसने देखा कि मेरे घोड़े का सीना लगभग बैरियर को धक्का दे रहा है, तो उसने उसे खोलने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, और फिर उदास भाव से मेरे आगे-आगे पुलिया पर चलने लगा, और जब हम आंगन में दाखिल हुए तो उसने पुकारा, — ‘जोसेफ, मिस्टर लॉकवुड का घोड़ा ले जाओ; और कुछ शराब ले आओ।’

‘यहाँ तो मानो सारे घरेलू नौकर-चाकर मौजूद हैं,’ इस मिश्रित आदेश को देखकर यही विचार आया। ‘इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पत्थरों के बीच घास उग आती है और मवेशी ही एकमात्र बाड़ काटने वाले होते हैं।’

जोसेफ एक बुजुर्ग, बल्कि एक बूढ़े आदमी थे: शायद बहुत बूढ़े, हालांकि तंदुरुस्त और चुस्त-दुरुस्त थे। "भगवान हमारी मदद करें!" उन्होंने चिड़चिड़ेपन भरे स्वर में मन ही मन कहा, जब वे मुझसे मेरा घोड़ा ले रहे थे। साथ ही, वे मेरी ओर इतनी तीखी निगाहों से देख रहे थे कि मैंने दयालुता से अनुमान लगाया कि उन्हें अपना भोजन

पचाने के लिए ईश्वर की सहायता की आवश्यकता होगी, और उनकी ये धार्मिक बात मेरे अचानक आने से संबंधित नहीं थी।

मिस्टर हीथक्लिफ के घर का नाम वुदरिंग हाइट्स है। 'वुदरिंग' एक विशिष्ट स्थानीय विशेषण है, जो तूफानी मौसम में उस स्थान पर होने वाले वायुमंडलीय उथल-पुथल का वर्णन करता है। वहाँ हर समय शुद्ध, ताज़ी हवा आती होगी: घर के अंत में कुछ बौने देवदार के पेड़ों के अत्यधिक झुकाव और कांटेदार झाड़ियों की एक कतार को देखकर, जो अपनी शाखाओं को एक ही दिशा में फैलाए हुए हैं, मानो सूर्य से भीख मांग रही हों, किनारे से बहने वाली उत्तरी हवा की शक्ति का अंदाजा लगाया जा सकता है। सौभाग्य से, वास्तुकार ने दूरदर्शिता दिखाते हुए इसे मजबूत बनाया: संकरी खिड़कियाँ दीवार में गहराई से बनी हैं, और कोनों को बड़े-बड़े उभरे हुए पत्थरों से सुरक्षित किया गया है।

दहलीज पार करने से पहले, मैं सामने की ओर, और विशेष रूप से मुख्य द्वार के चारों ओर की गई विचित्र नक्काशी को निहारने के लिए रुका; जिसके ऊपर, टूटे-फूटे ग्रिफिन और शरारती छोटे लड़कों की आकृतियों के बीच, मैंने '1500' की तारीख और 'हरेटन अर्नशॉ' नाम देखा। मैं कुछ टिप्पणी करना चाहता था और चिड़चिड़े मालिक से इस जगह का संक्षिप्त इतिहास जानना चाहता था; लेकिन दरवाजे पर उसका रवैया ऐसा लग रहा था मानो वह मुझे जल्दी अंदर जाने या तुरंत निकल जाने के लिए कह रहा हो, और मैं अंदर का निरीक्षण करने से पहले उसकी अधीरता को और बढ़ाना नहीं चाहता था।

एक पड़ाव पर हम सीधे परिवार के बैठक कक्ष में पहुँच गए, बिना किसी प्रवेश कक्ष या गलियारे के: यहाँ इसे मुख्य रूप से 'घर' कहा जाता है। इसमें आम तौर पर रसोई और बैठक कक्ष शामिल होते हैं; लेकिन मेरा मानना है कि वुदरिंग हाइट्स में रसोई को पूरी तरह से एक अलग कोने में जाना पड़ता है: कम से कम मैंने अंदर से जुबानों की गुनगुनाहट और खाना पकाने के बर्तनों की खड़खड़ाहट सुनी; और विशाल चूल्हे के आसपास मुझे भूनने, उबालने या पकाने का कोई संकेत नहीं दिखा; न ही दीवारों पर तांबे के बर्तनों और टिन की छलनी की कोई चमक दिखाई दी। एक कोने में, विशाल पीतल के बर्तनों की कतारों से प्रकाश और गर्मी दोनों ही शानदार ढंग से प्रतिबिंबित हो रही थीं, जिनके बीच चांदी के जग और बड़े गिलास रखे थे, जो एक विशाल ओक की अलमारी पर छत तक कतारों में सजे हुए थे। अलमारी को कभी भी

नीचे से ढका नहीं गया था: इसकी पूरी संरचना जिज्ञासु दृष्टि के सामने स्पष्ट थी, सिवाय उस जगह के जहाँ ओटकेक और गोमांस, भेड़ और हैम के टुकड़ों से लदे लकड़ी के फ्रेम ने इसे छिपा रखा था। चिमनी के ऊपर कई पुरानी, खतरनाक बंदूकें और दो घोड़े की पिस्तौलें रखी थीं; और सजावट के तौर पर, उसके किनारे पर तीन चमकीले रंग के डिब्बे रखे थे। फर्श चिकने, सफेद पत्थर का था; कुर्सियाँ ऊँची पीठ वाली, साधारण सी थीं, हरे रंग से रंगी हुई थीं; एक-दो भारी काली कुर्सियाँ छाया में छिपी हुई थीं। ड्रेसर के नीचे एक मेहराब में एक विशाल, गहरे भूरे रंग की कुतिया बैठी थी, जिसके चारों ओर चीखते हुए पिल्लों का झुंड था; और अन्य कुत्ते अन्य कोनों में घूमते रहते थे।

एक साधारण, उत्तरी किसान के लिए, जिसका चेहरा दृढ़ है और जिसके मजबूत शरीर पर घुटनों तक की पैंट और गैटर (एक प्रकार का जूता) लगे हों, उसका अपार्टमेंट और फर्नीचर कोई असाधारण बात नहीं होती। ऐसे व्यक्ति को उसकी आरामकुर्सी पर बैठे, उसके सामने गोल मेज पर बीयर का मग झागदार होता हुआ, इन पहाड़ियों में पांच-छह मील के किसी भी दायरे में देखा जा सकता है, यदि आप भोजन के बाद सही समय पर जाएं। लेकिन श्री हीथक्लिफ अपने निवास और जीवन शैली से बिलकुल विपरीत हैं। वे सांवले रंग के बंजारे जैसे दिखते हैं, लेकिन पहनावे और तौर-तरीकों में एक सज्जन व्यक्ति हैं: यानी, उतने ही सज्जन जितने कई ग्रामीण जमींदार होते हैं: शायद थोड़े लापरवाह, फिर भी उनकी लापरवाही बुरी नहीं लगती, क्योंकि उनका कद सीधा और सुडौल है; और वे थोड़े उदास भी हैं। संभवतः, कुछ लोग उन पर कुछ हद तक कमतर दर्जे के घमंड का संदेह कर सकते हैं; मेरे भीतर एक सहानुभूति की भावना है जो मुझे बताती है कि ऐसा कुछ नहीं है: मैं सहज रूप से जानती हूँ कि उसका संकोच दिखावटी भावनाओं के प्रदर्शन से, आपसी सौहार्द के प्रदर्शन से, अरुचि से उपजा है। वह प्यार और नफरत दोनों को छुपकर ही निभाएगा, और बदले में प्यार या नफरत पाना उसके लिए एक प्रकार की धृष्टता होगी। नहीं, मैं कुछ ज़्यादा ही बोल रही हूँ: मैं अपने गुण उस पर ज़रूरत से ज़्यादा थोप रही हूँ। श्री हीथक्लिफ के किसी संभावित परिचित से मिलने पर हाथ न बढ़ाने के कारण मुझसे बिल्कुल अलग हो सकते हैं। आशा है कि मेरा स्वभाव कुछ ऐसा ही है: मेरी प्यारी माँ कहा करती थीं कि मेरा कभी कोई सुखमय घर नहीं होगा; और पिछली गर्मियों में ही मैंने खुद को इसके बिल्कुल अयोग्य साबित कर दिया।

समुद्र तट पर एक महीने तक सुहावने मौसम का आनंद लेते हुए, मेरा सामना एक बेहद आकर्षक प्राणी से हुआ: मेरी नज़रों में वह सचमुच एक देवी थी, जब तक कि उसने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। मैंने कभी भी अपने प्यार का इज़हार ज़बान से नहीं किया; फिर भी, अगर नज़रें बोलतीं, तो कोई भी मूर्ख समझ सकता था कि मैं उसके प्यार में पागल हो गया था: आख़िरकार वह मुझे समझ गई, और उसने भी मेरी ओर देखा - उसकी नज़रें बेहद प्यारी थीं। और मैंने क्या किया? मैं शर्मिंदगी के साथ स्वीकार करता हूँ - मैं बर्फ़ की तरह अपने आप में सिमट गया, जैसे कोई घोंघा; हर नज़र के साथ और भी ठंडा और दूर होता चला गया; जब तक कि अंत में उस बेचारी भोली को अपने होश पर शक होने लगा, और अपनी कथित गलती पर घबराकर, उसने अपनी माँ को वहाँ से जाने के लिए मना लिया। इस अजीब व्यवहार के कारण मुझे जानबूझकर बेरहम होने की बदनामी मिली; यह कितना अनुचित था, यह केवल मैं ही समझ सकता हूँ।

मैं चूल्हे के उस छोर पर बैठ गया, जिसके सामने मेरा मकान मालिक आगे बढ़ रहा था, और चुप्पी के कुछ क्षणों को भरने के लिए मैंने उस कुतिया को सहलाने की कोशिश की, जो अपने ठिकाने से निकलकर भेड़िये की तरह मेरे पैरों के पीछे रेंग रही थी, उसके होंठ ऊपर की ओर मुड़े हुए थे और उसके सफेद दांत मुझे पकड़ने के लिए ललचा रहे थे। मेरे सहलाने से उसने एक लंबी, कर्कश गुर्राहट निकाली।

मिस्टर हीथक्लिफ ने एक साथ गुर्राते हुए कहा, 'कुत्ते को अकेला छोड़ दो।' उन्होंने पैर से धक्का देकर अपने गुस्से को और भी भड़कने से रोका। 'वह लाड़-प्यार की आदी नहीं है - उसे पालतू जानवर की तरह नहीं रखा जाता।' फिर, एक बगल के दरवाजे की ओर बढ़ते हुए, उन्होंने फिर से चिल्लाकर कहा, 'जोसेफ!'

जोसेफ तहखाने की गहराई में अस्पष्ट रूप से कुछ बुदबुदाया, लेकिन ऊपर आने का कोई संकेत नहीं दिया; इसलिए उसका मालिक उसके पास नीचे कूद गया, मुझे उस बदमाश कुतिया और दो खूंखार, रोएंदार भेड़-कुत्तों के सामने छोड़ दिया, जो उसके साथ मिलकर मेरी हर हरकत पर कड़ी नज़र रख रहे थे। उनके नुकीले दांतों के संपर्क में आने से बचने के लिए, मैं चुपचाप बैठा रहा; लेकिन, यह सोचकर कि वे शायद ही मेरे इशारों को समझ पाएंगे, मैंने दुर्भाग्यवश उन तीनों को आँख मारी और मुँह बनाए, और मेरे चेहरे के किसी हावभाव ने उस कुतिया को इतना चिढ़ा दिया कि वह अचानक गुस्से में भड़क उठी और मेरे घुटनों पर कूद पड़ी। मैंने उसे पीछे धकेल

दिया, और जल्दी से हमारे बीच मेज रख दी। इस हरकत से पूरा झुंड जाग उठा: अलग-अलग आकार और उम्र के लगभग आधा दर्जन चार पैरों वाले शैतान छिपे हुए ठिकानों से निकलकर सबके सामने आ गए। मैंने महसूस किया कि मेरी एड़ियाँ और कोट की गोद उनके हमले का निशाना बन रही हैं; और पोकर से बड़े लड़ाकों को यथासंभव प्रभावी ढंग से रोकते हुए, मुझे शांति बहाल करने में घर के कुछ सदस्यों से सहायता मांगने के लिए विवश होना पड़ा।

श्री हीथक्लिफ और उनका आदमी चिड़चिड़ेपन और अकड़ के साथ तहखाने की सीढ़ियाँ चढ़े: मुझे नहीं लगता कि वे सामान्य से एक सेकंड भी तेज़ चले होंगे, हालाँकि चूल्हा चिंता और चीख-पुकार का एक भयंकर तूफान था। सौभाग्य से, रसोई में मौजूद एक महिला ने तुरंत कार्रवाई की: एक हष्ट-पुष्ट महिला, ऊपर की ओर सँवारी हुई पोशाक, नंगी बाहों और आग से लाल हुए गालों के साथ, एक कड़ाही लहराते हुए हमारे बीच आ दौड़ी: और उसने उस हथियार और अपनी ज़ुबान का इस तरह इस्तेमाल किया कि तूफान जादुई रूप से शांत हो गया, और वह केवल तेज़ हवा के बाद समुद्र की लहरों की तरह उबड़-खाबड़ खड़ी रह गई, तभी उसका मालिक वहाँ आ पहुँचा।

'आखिर बात क्या है?' उसने मुझसे पूछा, और मेरी ओर इस तरह घूर रहा था जिसे मैं इस असभ्य व्यवहार के बाद बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था।

'ये क्या बकवास है!' मैंने बुदबुदाया। 'महोदय, भूत-प्रेत से ग्रसित सूअरों के झुंड में भी आपके इन जानवरों से बदतर आत्माएँ नहीं हो सकती थीं। आप किसी अजनबी को बाघों के झुंड के साथ छोड़ कर बेहतर होगा!'

"जो लोग किसी चीज को हाथ नहीं लगाते, उनसे ये कुत्ते छेड़छाड़ नहीं करते," उन्होंने बोतल मेरे सामने रखते हुए और अपनी जगह से हटी हुई मेज को वापस अपनी जगह पर रखते हुए कहा। "कुत्तों का सतर्क रहना बिल्कुल सही है। एक गिलास वाइन लेंगे?"

'नहीं धन्यवाद।'

'आपको काटा तो नहीं गया?'

'अगर मैं होता, तो मैं काटने वाले पर अपनी मुहर लगा देता।' हीथक्लिफ के चेहरे पर एक मुस्कान खिल उठी।

'आइए, आइए,' उन्होंने कहा, 'आप घबराए हुए लग रहे हैं, श्रीमान लॉकवुड।

लीजिए, थोड़ी सी शराब पीजिए। इस घर में मेहमान इतने कम आते हैं कि मैं और मेरे कुत्ते, मैं स्वीकार करता हूँ, मुश्किल से ही उनका स्वागत करना जानते हैं। आपका स्वास्थ्य कैसा है, महोदय?'

मैंने झुककर अपना वादा निभाया; मुझे समझ आने लगा था कि कुछ कुत्तों के दुर्व्यवहार पर रूठकर बैठना मूर्खता होगी; इसके अलावा, मुझे उसे अपने ऊपर और मज़ा लेने का मौका देने में भी हिचकिचाहट हो रही थी, क्योंकि उसका मूड कुछ ऐसा ही हो गया था। शायद एक अच्छे किराएदार को नाराज़ करने की मूर्खता को समझते हुए, उसने अपने संक्षिप्त सर्वनामों और सहायक क्रियाओं को कम शब्दों में कहने की आदत को थोड़ा नरम किया और एक ऐसा विषय उठाया जो उसे लगा कि मुझे रुचिकर लगेगा - मेरे वर्तमान विश्राम स्थल के फायदे और नुकसान पर चर्चा। मैंने पाया कि जिन विषयों पर हमने बात की, उन पर वह बहुत जानकार था; और घर जाने से पहले, मुझे इतना प्रोत्साहन मिला कि मैंने कल फिर से आने का प्रस्ताव रख दिया। जाहिर है, वह नहीं चाहता था कि मैं दोबारा आऊं। फिर भी, मैं जाऊंगा। यह देखकर आश्चर्य होता है कि मैं उसके मुकाबले खुद को कितना मिलनसार महसूस करता हूं।

अध्याय II

कल दोपहर धुंध और ठंड से भरी थी। मेरा मन कर रहा था कि वूथरिंग हाइट्स तक कीचड़ और झाड़ियों से होकर जाने के बजाय, अपने अध्ययन कक्ष में आग के पास बैठ जाऊं। लेकिन खाना खाकर ऊपर आने पर (ध्यान दें - मैं बारह से एक बजे के बीच खाना खाता हूं; घर की नौकरानी, एक अधेड़ उम्र की महिला, जो घर के साथ ही रहती है, मेरी इस विनती को समझ नहीं पाई या समझना नहीं चाहती थी कि मुझे पांच बजे खाना परोसा जाए) - इसी सुस्त इरादे से सीढ़ियां चढ़ते हुए और कमरे में कदम रखते ही मैंने देखा कि एक नौकरानी घुटनों के बल बैठी थी, चारों ओर झाड़ू

और कोयले की बाल्टियां थीं, और राख के ढेर से आग बुझाते हुए भयानक धूल उड़ा रही थी। यह दृश्य देखकर मैं तुरंत वापस लौट आया; मैंने अपनी टोपी उठाई, और चार मील पैदल चलने के बाद, हीथक्लिफ के बगीचे के गेट पर ठीक समय पर पहुंचा, ताकि बर्फबारी की पहली हल्की फुहार से बच सकूं।

उस सुनसान पहाड़ी की चोटी पर ज़मीन पाले से सख्त हो गई थी और हवा इतनी ठंडी थी कि मेरे शरीर का हर अंग कांप रहा था। जंजीर हटाने में असमर्थ होने के कारण, मैं कूदकर ऊपर चढ़ गया और इधर-उधर उगी आंवले की झाड़ियों से घिरे पक्के रास्ते पर दौड़ते हुए, अंदर जाने के लिए व्यर्थ ही दस्तक देता रहा, जब तक कि मेरी उंगलियों में झनझनाहट नहीं होने लगी और कुत्ते भौंकने लगे।

'अरे दुष्ट कैदियों!' मैंने मन ही मन कहा, 'तुम्हारे इस असभ्य और मेहमाननवाज़ी भरे व्यवहार के लिए तुम्हें अपनी प्रजाति से हमेशा के लिए अलग कर दिया जाना चाहिए। कम से कम मैं तो दिन में अपने दरवाज़े बंद नहीं रखता। मुझे परवाह नहीं – मैं अंदर आऊंगा!' इतना दृढ़ निश्चय करके मैंने कुंडी पकड़ी और उसे ज़ोर से हिलाया। सिरके जैसे लाल चेहरे वाले जोसेफ ने खलिहान की गोल खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला।

'तुम यहाँ किसलिए आए हो?' वह चिल्लाया। 'मालिक मुर्गीखाने में है। अगर उससे बात करनी है तो बाड़े के दूसरे छोर से घूमकर जाओ।'

मैंने हैरानी से पूछा, 'क्या अंदर कोई नहीं है जो दरवाजा खोल सके?'

'वहाँ कोई नहीं है' मिसिस; और रात तक तुम्हारे गंदे शोर को नहीं खोलूंगा।'

'क्यों? क्या तुम उसे यह नहीं बता सकते कि मैं कौन हूँ, जोसेफ?'

'मैं नहीं! मैं इसमें दखल नहीं दूंगा,' मुखिया बुदबुदाते हुए गायब हो गया।

बर्फ़ तेज़ी से गिरने लगी। मैंने एक और कोशिश करने के लिए गाड़ी का हैंडल पकड़ा; तभी पीछे आँगन में एक युवक बिना कोट के, कंधे पर पिचफ़ॉर्क लिए हुए दिखाई दिया। उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया, और एक कपड़े धोने के कमरे और कोयले के गोदाम, पंप और कबूतरखाने वाले एक पक्के रास्ते से गुज़रते हुए, हम अंततः उस विशाल, गर्म और खुशनुमा कमरे में पहुँचे जहाँ पहले मेरा स्वागत किया गया था। वह कमरा कोयले, पीट और लकड़ी से बनी एक विशाल आग की रोशनी में जगमगा रहा था; और शाम के भरपूर भोजन के लिए सजी मेज़ के पास, मुझे 'मालकिन' को देखकर प्रसन्नता हुई, एक ऐसी महिला जिसके अस्तित्व का मुझे

पहले कभी अंदाज़ा नहीं था। मैंने झुककर इंतज़ार किया, यह सोचकर कि वह मुझे बैठने के लिए कहेंगी। वह अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुककर मेरी ओर देखती रहीं और बिना हिले-डुले चुपचाप बैठी रहीं।

‘मौसम बहुत खराब है!’ मैंने कहा। ‘मुझे खेद है, श्रीमती हीथक्लिफ, आपके नौकरों की सुस्ती का नतीजा दरवाजे पर ही भुगतना पड़ रहा है: मुझे उन्हें अपनी बात सुनाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी।’

उसने अपना मुंह नहीं खोला। मैं उसे देखता रहा—वह भी मुझे देखती रही: खैर, उसने अपनी निगाहें मुझ पर एक शांत, उदासीन और बेहद शर्मनाक और अप्रिय तरीके से टिकाए रखीं।

युवक ने रूखे स्वर में कहा, 'बैठ जाओ। वह जल्द ही आ जाएगा।'

मैंने आज्ञा का पालन किया; और हिचकिचाते हुए उस दुष्ट जूनो को पुकारा, जिसने इस दूसरी मुलाकात में, मेरी पहचान स्वीकार करने के प्रतीक के रूप में, अपनी पूंछ के सबसे ऊपरी सिरे को हिलाने की कृपा की।

‘कितना सुंदर जानवर है!’ मैंने फिर से कहना शुरू किया। ‘क्या आप अपने बच्चों को किसी और को देने का इरादा रखती हैं, महोदया?’

'ये मेरे नहीं हैं,' उस मिलनसार मेज़बान ने कहा, जिसका जवाब हीथक्लिफ खुद भी इतने अरुचिकर ढंग से नहीं दे सकता था।

‘अरे, आपकी पसंदीदा चीज़ें इनमें से हैं?’ मैंने बिल्लियों जैसी दिखने वाली किसी चीज़ से भरे एक अस्पष्ट तकिए की ओर मुड़ते हुए पूछा।

‘पसंदीदा चीजों का चुनाव कितना अजीब है!’ उसने तिरस्कारपूर्वक टिप्पणी की।

दुर्भाग्यवश, वह मरे हुए खरगोशों का ढेर था। मैं एक बार फिर हिचकिचाया और चूल्हे के पास जाकर शाम की विचित्रता पर अपनी टिप्पणी दोहराई।

'तुम्हें बाहर नहीं आना चाहिए था,' उसने उठते हुए कहा और चिमनी के ऊपर से रंगे हुए दो कनस्तरों को उठाया।

पहले वह रोशनी से दूर एक सुरक्षित जगह पर थी; अब मुझे उसका पूरा शरीर और चेहरा साफ दिखाई दे रहा था। वह दुबली-पतली थी और देखने में अभी-अभी जवान हुई थी: उसका रूप-रंग बेहद खूबसूरत था और मैंने आज तक जितने भी चेहरे देखे हैं, उनमें से उसका चेहरा इतना सुंदर था; छोटे-छोटे नैन-नक्श, बेहद सुंदर; सुनहरे घुंघराले बाल, या यूँ कहें कि सुनहरे, उसकी कोमल गर्दन पर लटके हुए थे; और उसकी आँखें,

अगर उनमें मधुर भाव होते, तो मैं उन पर मोहित हो जाता: सौभाग्य से मेरे संवेदनशील हृदय के लिए, उनमें केवल तिरस्कार और एक प्रकार की हताशा का भाव था, जो वहाँ होना बिल्कुल स्वाभाविक नहीं था। डिब्बे लगभग उसकी पहुँच से बाहर थे; मैंने उसकी मदद करने के लिए हाथ बढ़ाया; वह मुझ पर ऐसे भड़क उठी जैसे कोई कंजूस अपने सोने को गिनने में मदद करने की कोशिश करने पर भड़क उठता है।

‘मुझे तुम्हारी मदद नहीं चाहिए,’ उसने झल्लाकर कहा; ‘मैं उन्हें खुद हासिल कर सकती हूँ।’

‘माफ़ कीजिए!’ मैंने तुरंत जवाब दिया।

'क्या आपको चाय पर बुलाया गया था?' उसने अपनी साफ-सुथरी काली फ्रॉक के ऊपर एप्रन बांधते हुए और चायदानी के ऊपर एक चम्मच चाय पत्ती रखे हुए खड़े होकर पूछा।

मैंने उत्तर दिया, 'मुझे एक कप मिल जाए तो मुझे खुशी होगी।'

‘क्या आपसे पूछा गया था?’ उसने दोहराया।

‘नहीं,’ मैंने हल्की मुस्कान के साथ कहा। ‘आप ही मुझसे यह सवाल पूछने के लिए सबसे सही व्यक्ति हैं।’

उसने चाय को चम्मच समेत वापस फेंक दिया और नखरे से अपनी कुर्सी पर बैठ गई; उसकी भौंहें सिकुड़ गईं और उसका लाल निचला होंठ बाहर निकल आया, जैसे कोई बच्चा रोने के लिए तैयार हो।

इसी बीच, उस युवक ने अपने ऊपर एक बेहद फटा हुआ सा ऊपरी वस्त्र डाल लिया और आग के सामने खड़ा होकर तिरछी निगाहों से मुझे ऐसे घूरने लगा मानो हमारे बीच कोई अनसुलझी दुश्मनी हो। मुझे शक होने लगा कि कहीं वह नौकर तो नहीं है: उसका पहनावा और बोलने का तरीका दोनों ही असभ्य थे, श्रीमान और श्रीमती हीथक्लिफ में दिखने वाली श्रेष्ठता का उसमें कोई अंश नहीं था; उसके घने भूरे बाल बेतरतीब और बिखरे हुए थे, उसकी दाढ़ी उसके गालों पर फैली हुई थी और उसके हाथ किसी आम मजदूर की तरह भूरे थे: फिर भी उसका व्यवहार बेपरवाह, लगभग अभिमानी था, और घर की मालकिन की सेवा में उसमें कोई तत्परता नहीं दिख रही थी। उसकी स्थिति का कोई स्पष्ट प्रमाण न होने के कारण, मैंने उसके इस अजीब व्यवहार पर ध्यान न देना ही बेहतर समझा; और पाँच मिनट बाद, हीथक्लिफ के आने से मेरी असहज स्थिति कुछ हद तक कम हो गई।

‘देखिए महोदय, मैं वादे के मुताबिक आ गया हूँ!’ मैंने प्रसन्नता का भाव दिखाते हुए कहा; ‘और मुझे आशंका है कि खराब मौसम के कारण मुझे आधे घंटे तक यहीं रुकना पड़ेगा, यदि आप मुझे उस दौरान आश्रय प्रदान कर सकें।’

‘आधा घंटा?’ उसने अपने कपड़ों से बर्फ के सफेद टुकड़े झाड़ते हुए कहा; ‘मुझे आश्चर्य है कि तुमने इस भयंकर हिमपात के बीच घूमने का फैसला क्यों किया। क्या तुम्हें पता है कि दलदल में खो जाने का खतरा है? इन दलदली इलाकों से परिचित लोग अक्सर ऐसी शामों में रास्ता भटक जाते हैं; और मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि फिलहाल स्थिति में कोई बदलाव की संभावना नहीं है।’

'शायद मुझे आपके लड़कों में से कोई गाइड मिल जाए, और वह सुबह तक ग्रेंज में रुक सकता है - क्या आप मुझे एक गाइड दे सकते हैं?'

'नहीं, मैं नहीं कर सकता था।'

'ओह, बिल्कुल! अच्छा, तो फिर मुझे अपनी सूझबूझ पर ही भरोसा करना चाहिए।'

‘उम्फ!’

‘क्या तुम चाय बनाने जा रही हो?’ उसने फटेहाल कोट पहने उस व्यक्ति से पूछा, और अपनी क्रूर निगाहें मुझसे हटाकर उस युवती पर टिका दीं।

‘क्या उसे कुछ मिलेगा?’ उसने हीथक्लिफ से विनती करते हुए पूछा।

“तैयारी कर दो ना?” यह जवाब इतनी बेरहमी से दिया गया कि मैं चौंक गया। शब्दों के लहजे से हीथक्लिफ का असली बुरा स्वभाव झलक रहा था। अब मुझे हीथक्लिफ को अच्छा आदमी कहने का मन नहीं कर रहा था। जब तैयारियाँ पूरी हो गईं, तो उसने मुझे यह कहते हुए बुलाया, “अब महोदय, अपनी कुर्सी आगे ले आइए।” और हम सब, उस देहाती युवक समेत, मेज के चारों ओर बैठ गए: खाने पर चर्चा करते समय चारों ओर सन्नाटा छाया रहा।

मैंने सोचा, अगर मैंने ही इस उदासी का कारण बनाया है, तो इसे दूर करने की कोशिश करना मेरा कर्तव्य है। वे हर दिन इतने गंभीर और चुप नहीं बैठ सकते थे; और चाहे वे कितने भी चिड़चिड़े क्यों न हों, यह असंभव था कि उनके चेहरे पर हमेशा रहने वाला वह उदास भाव ही उनका सामान्य चेहरा हो।

‘यह अजीब है,’ मैंने एक कप चाय पीने और दूसरा कप मिलने के बीच में कहना शुरू किया— ‘यह अजीब है कि कैसे रीति-रिवाज हमारे स्वाद और विचारों को आकार दे सकते हैं: बहुत से लोग आपके जैसे संसार से पूर्ण रूप से अलग-थलग जीवन में

खुशी की कल्पना भी नहीं कर सकते, श्री हीथक्लिफ; फिर भी, मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि, अपने परिवार से घिरे हुए, और आपकी प्यारी पत्नी आपके घर और दिल की संरक्षक के रूप में—’

‘मेरी प्रिय महिला!’ उसने लगभग शैतानी मुस्कान के साथ बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘वह कहाँ है – मेरी प्रिय महिला?’

'श्रीमती हीथक्लिफ, मेरा मतलब आपकी पत्नी से है।'

“जी हाँ—ओह, आपका मतलब यह है कि उनकी आत्मा ने देवदूत का पदभार ग्रहण कर लिया है और उनके शरीर के न रहने पर भी वुदरिंग हाइट्स की रक्षा करती है। क्या यही बात है?”

अपनी गलती का एहसास होने पर मैंने उसे सुधारने का प्रयास किया। मुझे शायद यह देखना चाहिए था कि दोनों पक्षों की उम्र में इतना अधिक अंतर था कि यह मानना मुश्किल था कि वे पति-पत्नी थे। एक की उम्र लगभग चालीस वर्ष थी: मानसिक शक्ति का वह दौर जब पुरुष शायद ही कभी लड़कियों द्वारा प्रेम विवाह का भ्रम पालते हैं: यह सपना तो बुढ़ापे में सुकून पाने के लिए ही होता है। दूसरी सत्रह वर्ष की भी नहीं लग रही थी।

फिर अचानक मेरे मन में एक विचार आया— ‘मेरे बगल में बैठा वो मसखरा, जो कटोरे में चाय पी रहा है और बिना धुले हाथों से अपनी रोटी खा रहा है, शायद उसका पति हो: हीथक्लिफ जूनियर, ज़ाहिर है। ज़िंदा दफ़न होने का यही नतीजा है: उसने सिर्फ़ अज्ञानता में उस गंवार पर खुद को न्योछावर कर दिया, क्योंकि उसे पता ही नहीं था कि उससे बेहतर लोग भी होते हैं! कितना अफ़सोस—मुझे सावधान रहना होगा कि कहीं मैं उसे अपने इस फ़ैसले पर पछतावा न करवा दूँ।’ यह आख़िरी विचार घमंडी लग सकता है; लेकिन ऐसा नहीं था। मेरा पड़ोसी मुझे घिनौना सा लगा; मुझे अपने अनुभव से पता था कि मैं काफ़ी आकर्षक था।

‘श्रीमती हीथक्लिफ मेरी बहू हैं,’ हीथक्लिफ ने कहा, जिससे मेरा अनुमान पुष्ट हो गया। बोलते हुए उन्होंने उसकी ओर एक अजीब सी नज़र डाली: घृणा से भरी नज़र; शायद उनके चेहरे की मांसपेशियां इतनी विकृत थीं कि वे अन्य लोगों की तरह उनके भावों को व्यक्त नहीं कर पाती थीं।

‘अहा, बिल्कुल – अब मुझे समझ आ गया: आप दयालु परी के प्रिय स्वामी हैं,’ मैंने अपने पड़ोसी की ओर मुड़ते हुए कहा।

यह पहले से भी बदतर था: युवक का चेहरा लाल हो गया और उसने मुट्ठी भींच ली, मानो वह जानबूझकर हमला करने जा रहा हो। लेकिन कुछ ही क्षण में उसे होश आया और उसने मेरे लिए एक कठोर अपशब्द बुदबुदाकर अपने गुस्से को शांत किया, जिसे मैंने जानबूझकर अनसुना कर दिया।

‘महोदय, आपके अनुमान गलत हैं,’ मेरे मेज़बान ने कहा; ‘हममें से किसी को भी आपकी उस प्यारी परी पर अधिकार प्राप्त करने का सौभाग्य नहीं है; उसका साथी मर चुका है। मैंने कहा था कि वह मेरी बहू है: इसलिए, उसने मेरे बेटे से ही शादी की होगी।’

और यह युवक है—

'मेरा बेटा तो बिल्कुल नहीं।'

हीथक्लिफ फिर मुस्कुराया, मानो उस भालू के पिता होने का श्रेय उसे देना कुछ ज्यादा ही साहसिक मजाक हो।

दूसरे ने गुर्राते हुए कहा, 'मेरा नाम हरेटन अर्नशॉ है; और मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि तुम इसका सम्मान करो!'

'मैंने कोई अनादर नहीं दिखाया है,' मैंने जवाब दिया, और जिस गरिमा के साथ उन्होंने अपना परिचय दिया, उस पर मन ही मन हंस रहा था।

उसने मुझे इतनी देर तक घूरा कि मैं उसे घूरने की हिम्मत ही नहीं कर पा रही थी, कहीं मैं उसे कान पर एक घूंसा न मार दूं या अपनी हंसी ज़ोर से न सुना दूं। मुझे उस खुशनुमा पारिवारिक माहौल में खुद को बेमेल सा महसूस होने लगा। उदासी भरे आध्यात्मिक वातावरण ने मेरे चारों ओर के सुख-सुविधाओं को पूरी तरह से दबा दिया; और मैंने ठान लिया कि तीसरी बार उन छतों के नीचे कदम रखते समय मैं बहुत सावधान रहूंगी।

भोजन का काम समाप्त हो चुका था और कोई भी सौहार्दपूर्ण बातचीत नहीं कर रहा था, इसलिए मैं मौसम देखने के लिए खिड़की के पास गया। मैंने एक दुखद दृश्य देखा: अँधेरी रात समय से पहले ही छा रही थी, और आकाश और पहाड़ हवा और दम घोंटने वाली बर्फ के एक भयंकर भंवर में मिल गए थे।

‘मुझे नहीं लगता कि अब बिना गाइड के मेरे लिए घर पहुंचना मुमकिन है,’ मैं खुद को रोक नहीं पाया और हैरानी से बोला। ‘सड़कें तो पहले ही बर्फ से ढक चुकी होंगी; और अगर वे साफ भी हों, तो मैं मुश्किल से एक कदम आगे देख पाऊंगा।’

‘हरेटन, उन दर्जन भर भेड़ों को खलिहान के बरामदे में ले जाओ। अगर उन्हें रात भर बाड़े में छोड़ दिया जाए तो वे कीचड़ से ढक जाएंगी: और उनके सामने एक तख्ता रख दो,’ हीथक्लिफ ने कहा।

‘मुझे क्या करना चाहिए?’ मैंने बढ़ती झुंझलाहट के साथ पूछा।

मेरे सवाल का कोई जवाब नहीं मिला; चारों ओर देखने पर मुझे केवल जोसेफ कुत्तों के लिए दलिया की बाल्टी लाते हुए और श्रीमती हीथक्लिफ को आग के पास झुकी हुई, चिमनी से गिरी माचिस की गड्डी को जलाकर अपना मनोरंजन करते हुए दिखाई दिया, क्योंकि वह चाय का डिब्बा वापस रख रही थीं। जोसेफ ने अपना काम निपटाने के बाद कमरे का बारीकी से जायजा लिया और फटी हुई आवाज़ में कहा - 'अरे, समझ नहीं आता कि तुम लोग यहाँ बेकार बैठे कैसे हो, जबकि सब लोग बाहर जा रहे हैं! लेकिन तुम कुछ भी नहीं हो, और बात करने का कोई फायदा नहीं - तुम कभी अपनी बुरी आदतें नहीं सुधारोगे, बल्कि सीधे शैतान के पास जाओगे, अपनी माँ की तरह!'

एक पल के लिए मुझे लगा कि ये वाक्पटुतापूर्ण बातें मुझसे ही कही गई हैं; और मैं बेहद क्रोधित होकर उस बूढ़े बदमाश को दरवाजे से बाहर निकालने के इरादे से उसकी ओर बढ़ा। लेकिन श्रीमती हीथक्लिफ ने अपने जवाब से मुझे रोक दिया।

‘अरे, तुम तो बड़े ही घिनौने पाखंडी हो!’ उसने जवाब दिया। ‘क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि शैतान का नाम लेते ही तुम्हें उठा ले जाया जाएगा? मैं तुम्हें चेतावनी देती हूँ कि मुझे उकसाना बंद करो, वरना मैं तुम्हारा अपहरण करवा दूँगी! रुको! देखो, जोसेफ,’ उसने शेल्फ से एक लंबी, काली किताब निकालते हुए कहा; ‘मैं तुम्हें दिखाऊँगी कि मैंने काला जादू में कितनी तरक्की की है: मैं जल्द ही इसे पूरी तरह से नष्ट करने में सक्षम हो जाऊँगी। लाल गाय की मौत संयोग से नहीं हुई थी; और तुम्हारे गठिया को ईश्वरीय आपदा नहीं माना जा सकता!’

‘ओह, कितनी बुरी बात है!’ बुजुर्ग ने हांफते हुए कहा; ‘भगवान हमें इस बुराई से बचाए!’

‘नहीं, दुष्ट! तू एक बहिष्कृत है – यहाँ से चला जा, वरना मैं तुझे बुरी तरह से चोट पहुँचाऊँगा! मैं तेरे मोम और मिट्टी के सांचे बनवाऊँगा! और जो भी मेरी तय की गई सीमाओं को पार करेगा – मैं यह नहीं बताऊँगा कि उसके साथ क्या किया जाएगा – लेकिन तू देख लेगा! जा, मैं तुझे देख रहा हूँ!’

उस छोटी चुड़ैल ने अपनी सुंदर आँखों में बनावटी द्वेष का भाव भर दिया, और जोसेफ, सच्चे भय से कांपते हुए, प्रार्थना करते हुए और जाते समय 'दुष्ट' बुदबुदाते हुए जल्दी से बाहर निकल गया। मुझे लगा कि उसका यह व्यवहार किसी प्रकार के नीरस मनोरंजन से प्रेरित होगा; और अब जब हम अकेले थे, तो मैंने उसे अपनी परेशानी में दिलचस्पी दिलाने की कोशिश की।

'श्रीमती हीथक्लिफ,' मैंने गंभीरता से कहा, 'मुझे परेशान करने के लिए क्षमा करें। मुझे लगता है, क्योंकि आपके चेहरे को देखकर मुझे यकीन है कि आप दयालु होंगी। कृपया मुझे कुछ ऐसे संकेत दें जिनसे मुझे घर का रास्ता पता चल सके: मुझे वहां जाने का उतना ही अतार्किक ज्ञान है जितना आपको लंदन जाने का!'

"जिस रास्ते से आए हो, उसी रास्ते से जाओ," उसने एक कुर्सी पर बैठते हुए, मोमबत्ती जलाकर और अपने सामने एक लंबी किताब खोलकर जवाब दिया। "यह संक्षिप्त सलाह है, लेकिन मेरी तरफ से दी जाने वाली सबसे सटीक सलाह है।"

तो, अगर आपको पता चले कि मैं किसी दलदल या बर्फ से भरे गड्ढे में मृत पाया गया हूँ, तो क्या आपका अंतरात्मा यह नहीं कहेगा कि इसमें कुछ हद तक आपकी भी गलती है?

'ऐसा कैसे? मैं आपको साथ नहीं ले जा सकता। उन्होंने मुझे बगीचे की दीवार के अंत तक भी नहीं जाने दिया।'

'आप! मुझे बहुत दुख होगा अगर मैं आपसे इस रात में अपनी सुविधा के लिए दहलीज पार करने को कहूँ,' मैंने चिल्लाकर कहा। 'मैं चाहती हूँ कि आप मुझे रास्ता बताएँ, दिखाएँ नहीं: या फिर मिस्टर हीथक्लिफ को मनाएँ कि वे मुझे रास्ता दिखाएँ।'

'कौन? यहाँ वह स्वयं, अर्नशॉ, ज़िल्लाह, जोसेफ और मैं हूँ। आप किसे चुनेंगे?'

क्या फार्म पर कोई लड़के नहीं हैं?

नहीं; ये सभी हैं।

'तो फिर, यह स्पष्ट है कि मुझे यहीं रुकना पड़ेगा।'

आप अपने मेज़बान से बात कर लें। मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं है।

"मुझे उम्मीद है कि इससे तुम्हें सबक मिलेगा और तुम इन पहाड़ियों पर फिर कभी जल्दबाजी में यात्रा नहीं करोगे," रसोई के द्वार से हीथक्लिफ की कठोर आवाज आई। "यहाँ ठहरने की बात है, मैं आगंतुकों के लिए कमरे नहीं रखता: अगर तुम ठहरते हो, तो तुम्हें हैरेटन या जोसेफ के साथ बिस्तर साझा करना होगा।"

मैंने जवाब दिया, 'मैं इस कमरे में कुर्सी पर सो सकता हूँ।'

'नहीं, नहीं! अजनबी तो अजनबी ही होता है, चाहे वह अमीर हो या गरीब: जब मैं पहरा नहीं दे रहा हूँ तो किसी को भी इस जगह पर घूमने की इजाजत देना मुझे ठीक नहीं लगेगा!' उस बदतमीज ने कहा।

इस अपमान से मेरा सब्र टूट गया। मैंने घृणा का भाव प्रकट किया और उसे धक्का देकर आंगन में घुस गया, जल्दबाजी में अर्नशॉ से टकरा गया। इतना अंधेरा था कि मुझे बाहर निकलने का रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था; और जब मैं इधर-उधर भटक रहा था, तो मैंने उनके आपसी असभ्य व्यवहार का एक और नमूना सुना। पहले तो वह युवक मुझसे दोस्ती करने की कोशिश करता हुआ प्रतीत हुआ।

उन्होंने कहा, 'मैं उनके साथ पार्क तक चलूंगा।'

'तुम उसके साथ नरक में जाओगे!' उसके मालिक, या जो भी उसका रिश्तेदार था, चिल्लाकर बोला। 'और घोड़ों की देखभाल कौन करेगा भला?'

'एक आदमी की जिंदगी घोड़ों की एक शाम की उपेक्षा से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है: किसी न किसी को तो जाना ही होगा,' श्रीमती हीथक्लिफ ने उम्मीद से कहीं ज्यादा दयालुता से बुदबुदाते हुए कहा।

'तुम्हारे आदेश पर नहीं!' हैरेटन ने पलटवार किया। 'अगर तुम उस पर भरोसा करते हो, तो बेहतर होगा कि चुप रहो।'

'तो मुझे उम्मीद है कि उसका भूत तुम्हें सताएगा; और मुझे उम्मीद है कि मिस्टर हीथक्लिफ को तब तक कोई दूसरा किरायेदार नहीं मिलेगा जब तक कि ग्रेंज खंडहर न हो जाए,' उसने तीखे स्वर में उत्तर दिया।

'सुनो, सुनो, उन पर लानत हो!' जोसेफ बुदबुदाया, जिसकी ओर मैं गाड़ी चला रहा था।

वह पास ही में बैठा हुआ था और लालटेन की रोशनी में गायों का दूध दुह रहा था, जिसे मैंने बिना किसी औपचारिकता के छीन लिया और यह कहते हुए कि मैं इसे कल वापस कर दूंगा, पास के ही छोटे दरवाजे की ओर दौड़ पड़ा।

'मास्टर, मास्टर, वह लालटेन चुरा रहा है!' बूढ़ा चिल्लाया, मेरा पीछा करते हुए। 'अरे, ग्नाशर! अरे, कुत्ते! अरे भेड़िया, उसे पकड़ो, उसे पकड़ो!'

जैसे ही मैंने छोटा सा दरवाजा खोला, दो रोएंदार राक्षस मेरी गर्दन पर झपटे, मुझे नीचे गिरा दिया और रोशनी बुझा दी; हीथक्लिफ और हैरेटन की मिली-जुली ठहाके ने

मेरे गुस्से और अपमान पर पर्दा डाल दिया। सौभाग्य से, वे जानवर मुझे जिंदा निगलने के बजाय अपने पंजे फैलाने, जम्हाई लेने और अपनी पूंछ लहराने में ज्यादा रुचि रखते थे; लेकिन वे उठने को तैयार नहीं थे, और मुझे तब तक वहीं पड़े रहना पड़ा जब तक उनके दुष्ट मालिक मुझे छोड़ने के लिए नहीं आए: फिर, बिना टोपी के और क्रोध से कांपते हुए, मैंने उन दुष्टों को मुझे छोड़ने का आदेश दिया - एक मिनट भी और रखने पर उन्हें जान से मारने की धमकी दी - और बदले की कई अटपटी धमकियां दीं, जिनकी उग्रता किंग लियर की याद दिलाती थी।

मेरी उग्रता के कारण मेरी नाक से बहुत खून बहने लगा, फिर भी हीथक्लिफ हंसता रहा और मैं उसे डांटती रही। मुझे नहीं पता कि अगर वहाँ मुझसे कहीं अधिक समझदार और मेरे मनोरंजनकर्ता से कहीं अधिक दयालु एक व्यक्ति न होता तो क्या होता। यह ज़िल्लाह थी, हष्ट-पुष्ट गृहिणी; जो अंततः शोर-शराबे की वजह जानने के लिए आगे आई। उसने सोचा कि उनमें से कुछ लोग मुझ पर हाथापाई कर रहे थे; और अपने मालिक पर हमला करने की हिम्मत न करते हुए, उसने अपनी ज़ुबान से उस छोटे बदमाश पर हमला कर दिया।

‘अच्छा, श्रीमान अर्नशॉ,’ वह चिल्लाई, ‘मुझे आश्चर्य है कि अब आप आगे क्या करने वाले हैं? क्या हम अपने ही दरवाज़े पर लोगों की हत्या करने वाले हैं? मुझे लगता है कि यह घर मेरे लिए ठीक नहीं है – बेचारे लड़के को देखो, उसका दम घुट रहा है! काश, काश; आप ऐसे नहीं कर सकते। अंदर आइए, मैं इसे ठीक कर दूंगी: अब, शांत हो जाओ।’

ये कहते हुए उसने अचानक मेरे गले पर एक गिलास बर्फीला पानी छिड़क दिया और मुझे रसोई में खींच ले गई। मिस्टर हीथक्लिफ भी उनके पीछे-पीछे आए, उनकी आकस्मिक खुशी उनकी आदतन उदासी में जल्दी ही गायब हो गई।

मैं बहुत बीमार था, चक्कर आ रहे थे और बेहोशी सी महसूस हो रही थी; इसलिए मजबूरी में मुझे उनके घर में ठहरना पड़ा। उन्होंने ज़िल्लाह से मुझे एक गिलास ब्रांडी देने को कहा और फिर अंदर के कमरे में चले गए; ज़िल्लाह ने मेरी दयनीय हालत पर मुझसे सहानुभूति जताई और उनके आदेश का पालन करते हुए, जिससे मुझे कुछ होश आया, मुझे बिस्तर पर लिटा दिया।

अध्याय III

ऊपर जाते समय उसने मुझे मोमबत्ती छुपाने और शोर न करने की सलाह दी; क्योंकि उसके मालिक का उस कमरे के बारे में एक अजीब विचार था जिसमें वह मुझे रखने वाली थी, और वह कभी किसी को वहाँ स्वेच्छा से रहने नहीं देता था। मैंने कारण पूछा। उसने जवाब दिया, उसे नहीं पता: वह वहाँ केवल एक या दो साल से रह रही थी; और वहाँ इतनी अजीबोगरीब घटनाएँ घटित होती थीं कि वह जिज्ञासु नहीं हो सकती थी।

मैं इतना हैरान था कि खुद कुछ जानने की हिम्मत ही नहीं हुई, मैंने दरवाजा बंद किया और बिस्तर ढूंढने के लिए चारों ओर देखा। सारा फर्नीचर एक कुर्सी, एक अलमारी और एक बड़ा सा ओक का बक्सा था, जिसके ऊपरी हिस्से में खिड़कियाँ जैसी चौकोर खाँचें कटी हुई थीं। पास पहुँचकर मैंने अंदर देखा तो पाया कि यह एक अनोखा पुराने ज़माने का सोफा था, जिसे इस तरह बनाया गया था कि परिवार के हर सदस्य को अलग कमरा लेने की ज़रूरत न पड़े। असल में, यह एक छोटी सी कोठरी जैसा था और इसके अंदर बनी खिड़की की चौखट मेज का काम करती थी। मैंने तख्तों को पीछे सरकाया, अपनी लाइट लेकर अंदर गया, उन्हें फिर से बंद किया और हीथक्लिफ और बाकी सब लोगों की नज़रों से खुद को सुरक्षित महसूस किया।

जिस किनारे पर मैंने अपनी मोमबत्ती रखी थी, उसके एक कोने में कुछ फफूंदी लगी किताबें ढेर लगी हुई थीं; और उस पर पेंट पर कुछ लिखा हुआ था। हालाँकि, यह लिखावट एक ही नाम को बार-बार दोहरा रही थी, बड़े और छोटे अक्षरों में - कैथरीन अर्न्शॉ, कहीं-कहीं कैथरीन हीथक्लिफ के रूप में, और फिर कैथरीन लिंटन के रूप में।

उदासी और सुस्ती में डूबी मैं खिड़की से सिर टिकाकर बैठ गई और कैथरीन अर्नशॉ - हीथक्लिफ - लिंटन के नाम गिनती रही, जब तक मेरी आँखें बंद नहीं हो गईं; लेकिन पाँच मिनट भी आराम नहीं हुआ था कि अँधेरे में से सफेद अक्षरों की एक चमक निकली, मानो भूत-प्रेत हों - हवा में कैथरीन नाम गूंज रहा था; और उस चुभते

नाम को दूर भगाने के लिए मैंने खुद को जगाया तो देखा कि मेरी मोमबत्ती की बाती एक पुरानी किताब पर पड़ी है और भुने हुए बछड़े की खाल जैसी गंध से पूरे कमरे को महका रही है। मैंने उसे बुझा दिया और सर्दी और लगातार जी मिचलाने के कारण बेचैनी से उठकर बैठ गई और उस क्षतिग्रस्त किताब को अपने घुटनों पर फैला लिया। वह एक वसीयतनामा थी, पतले अक्षरों में छपी हुई और भयानक रूप से बासी गंध आ रही थी: एक पन्ने पर लिखा था - 'कैथरीन अर्नशॉ, उनकी किताब' और लगभग पच्चीस साल पुरानी तारीख। मैंने उसे बंद किया और एक के बाद एक किताबें उठाईं, जब तक कि मैंने सभी को देख नहीं लिया। कैथरीन का पुस्तकालय चुनिंदा था, और उसकी जर्जर हालत से पता चलता था कि उसका खूब इस्तेमाल हुआ था, हालांकि पूरी तरह से उचित उद्देश्य के लिए नहीं: शायद ही कोई अध्याय ऐसा बचा हो, जिस पर कलम और स्याही से टिप्पणी लिखी गई हो—कम से कम टिप्पणी जैसी—जो प्रिंटर द्वारा छोड़ी गई हर खाली जगह को भर देती थी। कुछ अलग-अलग वाक्य थे; अन्य भाग एक नियमित डायरी के रूप में थे, जो अविकसित, बचकानी लिखावट में लिखे गए थे। एक अतिरिक्त पृष्ठ के शीर्ष पर (जो शायद पहली बार मिलने पर एक अनमोल खजाना रहा होगा) मुझे अपने मित्र जोसेफ का एक उत्कृष्ट व्यंग्य चित्र देखकर बहुत आनंद हुआ—जो भद्दा था, फिर भी प्रभावशाली ढंग से बनाया गया था। मेरे मन में तुरंत अज्ञात कैथरीन के बारे में जानने की जिज्ञासा जागृत हुई, और मैंने तुरंत उसकी धुंधली लिखावट को समझने का प्रयास शुरू कर दिया।

नीचे दिए गए पैराग्राफ की शुरुआत इस तरह हुई: 'एक भयानक रविवार। काश मेरे पिता वापस आ जाते। हिंडले एक घृणित विकल्प है - हीथक्लिफ के प्रति उसका व्यवहार बेहद बुरा है - एच. और मैं विद्रोह करने जा रहे हैं - हमने आज शाम अपना पहला कदम उठा लिया है।'

दिनभर बारिश होती रही; हम चर्च नहीं जा सके, इसलिए यूसुफ को मजबूरी में अटारी में ही प्रार्थना सभा बुलानी पड़ी; और जब हिंडले और उसकी पत्नी नीचे आरामदायक आग के सामने धूप सेंक रहे थे—मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि वे बाइबल पढ़ने के अलावा कुछ और कर रहे थे—हीथक्लिफ, मैं और बेचारा हल चलाने वाला लड़का, हम सब को अपनी प्रार्थना-पुस्तकें लेकर ऊपर चढ़ने का आदेश दिया गया: हम अनाज की बोरी पर एक कतार में खड़े थे, कराहते और कांपते हुए, और उम्मीद कर रहे थे कि यूसुफ भी कांपे, ताकि वह हमें अपने लिए एक छोटा सा उपदेश

दे दे। सरासर बेकार की उम्मीद! प्रार्थना सभा ठीक तीन घंटे चली; और फिर भी जब मेरे भाई ने हमें नीचे उतरते देखा, तो उसने हैरानी से कहा, “क्या, इतनी जल्दी खत्म हो गई?” रविवार की शाम को हमें खेलने की इजाज़त होती थी, बशर्ते हम ज्यादा शोर न मचाएँ; अब तो हल्की सी हंसी भी हमें कोने में धकेलने के लिए काफी होती है।

“तुम भूल गए हो कि तुम्हारा यहाँ एक मालिक है,” अत्याचारी ने कहा। “जो भी मुझे क्रोधित करेगा, मैं उसे नष्ट कर दूंगा! मैं पूर्ण संयम और मौन पर ज़ोर देता हूँ। अरे, लड़के! क्या यह तुम थे? मेरी प्यारी फ्रांसिस, जाते समय उसके बाल खींचना: मैंने उसे उंगलियां चटकाते सुना।” फ्रांसिस ने उसके बाल दिल खोलकर खींचे, और फिर जाकर अपने पति की गोद में बैठ गई, और वे दोनों दो बच्चों की तरह घंटों तक एक-दूसरे को चूमते और बेतुकी बातें करते रहे—ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें जिन पर हमें शर्म आनी चाहिए। हमने अपने सामर्थ्य के अनुसार ड्रेसर के मेहराब में खुद को जितना हो सके आराम से बिठा लिया। मैंने अभी-अभी अपने एप्रन को एक साथ बांधा था और उसे पर्दे की तरह टांगा ही था कि जोसेफ अस्तबल से एक काम से अंदर आया। उसने मेरी बनाई हुई चीज़ को फाड़ दिया, मेरे कान खींचे और कर्कश आवाज में बोला:

“मालिक को अभी दफनाया ही गया है, और रविवार अभी खत्म नहीं हुआ है, और सुसमाचार की आवाज़ अभी तुम्हारे कानों में गूंज रही है, और तुम ऐसे ही बैठे हो! धिक्कार है तुम पर! बैठ जाओ, दुष्ट बच्चों! अगर तुम पढ़ोगे तो अच्छी किताबें काफी हैं: बैठ जाओ, और अपने मन की सुनो!”

यह कहते हुए, उसने हमें अपनी स्थिति इस प्रकार व्यवस्थित करने के लिए मजबूर किया कि दूर जल रही आग से हमें एक धुंधली किरण मिले जिससे हमें उस भारी भरकम दस्तावेज़ का पाठ दिखाई दे जो उसने हम पर थोप दिया था। मैं यह काम सहन नहीं कर सका। मैंने अपनी पुरानी किताब को पन्ने से पकड़ा और उसे कुत्ते के पिंजरे में फेंक दिया, यह कहते हुए कि मुझे अच्छी किताब से नफरत है। हीथक्लिफ ने भी अपनी किताब को उसी जगह फेंक दिया। फिर वहाँ शोर मच गया!

“हमारे पादरी ने चिल्लाकर कहा, ‘मास्टर हिंडले! मास्टर, इधर आइए! मिस कैथी ने ‘द हेलमेट ऑफ साल्वेशन’ का पिछला हिस्सा फाड़ दिया है, और हीथक्लिफ ने ‘द ब्रॉड वे टू डिस्ट्रक्शन’ के पहले भाग में अपना पैर गड़ा दिया है!’ यह बहुत शर्मनाक है कि आप उन्हें इस तरह जाने दे रहे हैं। उफ़! बूढ़ा आदमी उन्हें ठीक से बांधता – लेकिन वह जा रहा है!”

'हिंडले चूल्हे पर अपने आरामगाह से जल्दी से उठा, और हममें से एक को कॉलर से और दूसरे को बांह से पकड़कर, हम दोनों को पीछे वाले रसोईघर में धकेल दिया; जहाँ, जोसेफ ने ज़ोर देकर कहा, "बूढ़ा निक" हमें ज़रूर लेने आएगा, जैसे हम ज़िंदा हों: और, इतना आश्वस्त होकर, हम दोनों ने उसके आने का इंतज़ार करने के लिए अलग-अलग कोने खोज लिए। मैंने एक शेल्फ से यह किताब और स्याही की एक बोतल निकाली, और रोशनी के लिए घर का दरवाज़ा थोड़ा सा खोल दिया, और बीस मिनट से लिख रहा हूँ; लेकिन मेरा साथी अधीर है, और प्रस्ताव देता है कि हमें दूधवाली का लबादा ले लेना चाहिए, और उसकी ओट में मैदानों पर दौड़ लगानी चाहिए। एक सुखद सुझाव — और फिर, अगर वह चिड़चिड़ा बूढ़ा आदमी अंदर आ जाए, तो वह अपनी भविष्यवाणी को सच मान लेगा — हम यहाँ से ज़्यादा भीगे या ठंडे तो बारिश में नहीं हो सकते।'

* * * * * *

मुझे लगता है कि कैथरीन ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया, क्योंकि अगले वाक्य में एक अलग विषय उठाया गया: वह बहुत रोने लगी।

'मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि हिंडले मुझे इतना रुलाएगा!' उसने लिखा। 'मेरा सिर इतना दुख रहा है कि मैं उसे तकिये पर नहीं रख पा रही; और फिर भी मैं हार नहीं मान पा रही। बेचारा हीथक्लिफ! हिंडले उसे आवारा कहता है, और उसे हमारे साथ बैठने या खाने नहीं देता; और कहता है कि हम दोनों को साथ नहीं खेलना चाहिए, और धमकी देता है कि अगर हमने उसके आदेश नहीं माने तो वह उसे घर से निकाल देगा। वह हमारे पिता (उनकी हिम्मत कैसे हुई?) पर हीथक्लिफ के साथ बहुत उदारता से पेश आने का आरोप लगा रहा है; और कसम खाता है कि वह उसे उसकी औकात दिखा देगा—'

* * * * * *

धुंधले पन्ने पर मेरी आँखें ऊंघने लगीं: मेरी नज़र हस्तलेख से छपे हुए पाठ पर जा रही थी। मैंने लाल रंग से सजा हुआ शीर्षक देखा— 'सत्तर गुना सात, और इकहत्तरवें का पहला।' रेवरेंड जैबेज़ ब्रैंडरहम द्वारा गिम्मरडेन सॉग के चैपल में दिया गया एक

धार्मिक प्रवचन।’ और जब मैं अर्धचेतन अवस्था में यह अनुमान लगाने की कोशिश कर रहा था कि जैबेज़ ब्रैंडरहम इस विषय पर क्या कहेंगे, तभी मैं बिस्तर पर लेट गया और सो गया। हाय, खराब चाय और खराब मिजाज का क्या असर था! आखिर और क्या वजह हो सकती थी जिसने मेरी इतनी भयानक रात गुजार दी? मुझे याद नहीं कि जब से मैं कष्ट सहने में सक्षम हुआ हूँ, तब से ऐसी कोई और रात हुई हो जिसकी तुलना इससे की जा सके।

मुझे सपने आने लगे, लगभग इससे पहले कि मुझे अपने स्थान का होश ही खो जाए। मुझे लगा कि सुबह हो गई है; और मैं यूसुफ के साथ अपने घर की ओर निकल पड़ा था। हमारी सड़क पर कई गज गहरी बर्फ जमी हुई थी; और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, मेरा साथी मुझे लगातार ताने मारता रहा कि मैं तीर्थयात्री की लाठी क्यों नहीं लाया: कहता रहा कि मैं उसके बिना घर में प्रवेश नहीं कर सकता, और घमंड से एक भारी लाठी लहराता रहा, जिसे मैंने इसी नाम से जाना। एक पल के लिए मुझे यह बेतुका लगा कि मुझे अपने ही घर में प्रवेश पाने के लिए ऐसे हथियार की क्या ज़रूरत है। तभी मेरे मन में एक नया विचार आया। मैं वहाँ नहीं जा रहा था: हम प्रसिद्ध जैबेज़ ब्रैंडरहम का उपदेश सुनने जा रहे थे, जो 'सत्तर गुना सात' पाठ पर आधारित था; और या तो उपदेशक यूसुफ ने, या मैंने 'इकहत्तरवें का पहला' अपराध किया था, और हमें सार्वजनिक रूप से बेनकाब किया जाना था और बहिष्कृत किया जाना था।

हम चैपल पहुँचे। मैं अपनी सैर के दौरान इसके पास से दो-तीन बार गुज़रा हूँ; यह दो पहाड़ियों के बीच एक घाटी में स्थित है: एक ऊँची घाटी, एक दलदल के पास, जिसकी दलदली नमी वहाँ रखे गए कुछ शवों के लिए लेप लगाने के सभी उद्देश्यों को पूरा करती है। छत अब तक सही सलामत है; लेकिन पादरी का वेतन केवल बीस पाउंड प्रति वर्ष है, और दो कमरों का घर जल्द ही एक में बदलने वाला है, इसलिए कोई भी पादरी, पादरी का कार्यभार नहीं उठाना चाहता: खासकर इसलिए कि आजकल यह अफवाह है कि उसके अनुयायी अपनी जेब से एक पैसा भी खर्च बढ़ाने के बजाय उसे भूखा मरते देखना पसंद करेंगे। हालाँकि, मेरे सपने में, याबेज़ के पास एक भरी हुई और ध्यान से सुनने वाली मंडली थी; और उसने उपदेश दिया - हे भगवान! क्या उपदेश था; चार सौ नब्बे भागों में विभाजित, प्रत्येक भाग एक सामान्य उपदेश के बराबर, और प्रत्येक भाग एक अलग पाप पर चर्चा कर रहा था! उसने उन्हें कहाँ खोजा, यह मैं नहीं बता सकता। वाक्यांश की व्याख्या करने का उसका अपना

तरीका था, और ऐसा लगता था कि हर अवसर पर भाई को अलग-अलग पाप करने चाहिए। वे बेहद विचित्र किस्म के थे: ऐसे अजीबोगरीब अपराध जिनकी मैंने पहले कभी कल्पना भी नहीं की थी।

ओह, मैं कितना थक गया हूँ! मैं कितना छटपटाया, जम्हाई ली, सिर हिलाया और फिर से तरोताज़ा हुआ! मैंने खुद को चुटकी काटी, चुभोया, आँखें मलीं, खड़ा हुआ, फिर बैठ गया और यूसुफ को इशारा किया कि अगर वह कभी रुकता है तो मुझे बताए। मुझे सब कुछ सुनने के लिए विवश किया गया था: आखिरकार, वह 'इकहत्तरवें अध्याय के पहले अध्याय' पर पहुँचा। उस निर्णायक क्षण में, अचानक मुझ पर एक प्रेरणा उतरी; मैं उठ खड़ा हुआ और याबेज़ ब्रैंडरहम को उस पापी के रूप में निंदा करने के लिए प्रेरित हुआ, जिसे किसी भी ईसाई को क्षमा करने की आवश्यकता नहीं है।

'महोदय,' मैंने वाकया, 'इन चार दीवारों के भीतर बैठे-बैठे मैंने आपके भाषण के चारों सौ नब्बे बिंदुओं को सहन किया है और क्षमा किया है। सत्तर बार सात बार मैंने अपनी टोपी उठाई और जाने ही वाला था — सत्तर बार सात बार आपने मुझे बेतुके ढंग से वापस बैठने के लिए मजबूर किया। चार सौ इक्यावनवाँ बिंदु तो हद से ज़्यादा है। साथी शहीदों, उस पर टूट पड़ो! उसे घसीट कर टुकड़े-टुकड़े कर दो, ताकि वह जगह जो उसे जानती है, उसे फिर कभी न जान पाए!'

'तुम ही हो वो पुरुष!' याबेज़ ने गंभीर विराम के बाद अपने तकिये पर झुकते हुए कहा। 'तुमने सत्तर बार सात बार अपना चेहरा विकृत किया — मैंने सत्तर बार सात बार अपने मन से परामर्श किया — देखो, यह मानवीय कमजोरी है: इसे भी क्षमा किया जा सकता है! इकहत्तरवें का प्रथम आ गया है। भाइयों, उस पर लिखा हुआ न्याय करो। उसके सभी संतों को ऐसा ही सम्मान प्राप्त है!'

उस समापन शब्द के साथ ही, पूरी सभा अपने-अपने हाथों में लाठियाँ लहराते हुए एक साथ मेरे चारों ओर टूट पड़ी; और मेरे पास आत्मरक्षा के लिए कोई हथियार न होने के कारण, मैं अपने सबसे नज़दीकी और सबसे क्रूर हमलावर यूसुफ से उसका हथियार छीनने के लिए भिड़ गया। भीड़ के बीच कई लाठियाँ टकराईं; मुझ पर किए गए वार दूसरे खंभों पर जा गिरे। देखते ही देखते पूरा गिरजाघर एक-दूसरे पर लाठियों की आवाज़ों से गूंज उठा: हर कोई अपने पड़ोसी पर झपट पड़ा था; और ब्रैंडरहम, चुप न बैठने को तैयार, अपने जोश में उपदेश मंच के तख्तों पर ज़ोर-ज़ोर से थपथपाने लगा, जिसकी आवाज़ इतनी तेज़ थी कि अंत में, मुझे असीम राहत मिली, और मैं

जाग गया। और इस भयानक कोलाहल का कारण क्या था? इस झगड़े में याबेज़ की क्या भूमिका थी? तेज हवा के झोंके के दौरान देवदार के पेड़ की एक शाखा मेरी खिड़की से छू गई और उसके सूखे शंकु खिड़की के शीशों से टकराकर खड़खड़ाने लगे! मैंने एक पल के लिए संशय से सुना; शोर मचाने वाले को पहचाना, फिर करवट बदली और ऊंघने लगा, और फिर से सपना देखने लगा: अगर संभव हो तो, पहले से भी कहीं अधिक अप्रिय।

इस बार मुझे याद आया कि मैं ओक की कोठरी में लेटा हुआ था, और मुझे तेज़ हवा और बर्फ़ के गिरने की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी; मुझे देवदार की डाल की चिढ़ाने वाली आवाज़ भी सुनाई दे रही थी, और मैंने उसे सही कारण माना: लेकिन इससे मुझे इतनी चिढ़ हो रही थी कि मैंने उसे चुप कराने का निश्चय किया, यदि संभव हो तो; और, मैंने सोचा, मैं उठा और खिड़की का कुंडा खोलने की कोशिश की। हुक स्टेपल में फंसा हुआ था: यह बात मैंने जागते हुए देखी थी, लेकिन भूल गया था। 'मुझे इसे रोकना ही होगा!' मैंने बुदबुदाते हुए शीशे पर अपनी उंगलियाँ पटकीं, और उस ज़िदगी शाखा को पकड़ने के लिए एक हाथ बढ़ाया; लेकिन इसके बजाय, मेरी उंगलियाँ एक छोटे, बर्फीले ठंडे हाथ की उंगलियों पर जा लगीं! बुरे सपने का भयानक डर मुझ पर छा गया: मैंने अपना हाथ पीछे खींचने की कोशिश की, लेकिन हाथ उससे चिपका रहा, और एक बेहद उदास आवाज़ सिसकते हुए बोली, 'मुझे अंदर आने दो - मुझे अंदर आने दो!' 'तुम कौन हो?' मैंने पूछा, और साथ ही खुद को छुड़ाने की कोशिश करता रहा। ‘कैथरीन लिंटन,’ उसने कांपते हुए उत्तर दिया (मुझे लिंटन का ख्याल क्यों आया? मैंने लिंटन के लिए अर्नशॉ को बीस बार पढ़ा था) – ‘मैं घर आ गई हूँ: मैं दलदल में रास्ता भटक गई थी!’ जैसे ही उसने बोलना शुरू किया, मैंने धुंधले ढंग से खिड़की से झांकते हुए एक बच्चे का चेहरा देखा। भय ने मुझे निर्दयी बना दिया; और उस प्राणी को झटकने का प्रयास व्यर्थ पाकर, मैंने उसकी कलाई टूटे हुए शीशे पर खींच ली और उसे तब तक रगड़ा जब तक खून बहकर चादरों को भिगो नहीं दिया: फिर भी वह रोता रहा, ‘मुझे अंदर आने दो!’ और अपनी पकड़ बनाए रखी, जिससे मैं डर से लगभग पागल हो गई। ‘मैं कैसे आने दूँ!’ मैंने अंत में कहा। ‘अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें अंदर आने दूँ, तो मुझे जाने दो!’ उंगलियाँ ढीली पड़ गईं, मैंने अपनी उंगलियाँ छेद से अंदर डालीं, किताबों को जल्दी से उसके सहारे पिरामिड की तरह ढेर कर दिया, और उस दयनीय प्रार्थना को सुनने से बचने के लिए अपने कान बंद कर

लिए। ऐसा लगा जैसे मैंने अपने कान पंद्रह मिनट से अधिक समय तक बंद रखे हों; फिर भी, जैसे ही मैंने दोबारा सुना, वही दर्द भरी चीख सुनाई दी! ‘चले जाओ!’ मैं चिल्लाई। ‘मैं तुम्हें कभी अंदर नहीं आने दूंगी, चाहे तुम बीस साल तक भीख मांगो।’ ‘बीस साल हो गए,’ आवाज ने विलाप किया: ‘बीस साल। मैं बीस साल से अनाथ रही हूँ!’ तभी बाहर से हल्की-सी खरोंच की आवाज आई, और किताबों का ढेर जैसे आगे धकेल दिया गया हो, हिल गया। मैंने उठने की कोशिश की; लेकिन एक भी अंग हिला नहीं सकी; और इसलिए डर के मारे जोर से चिल्लाई। मुझे हैरानी हुई कि मेरी चीख कारगर नहीं थी: मेरे कमरे के दरवाजे की ओर तेजी से कदमों की आहट सुनाई दी; किसी ने ज़ोर से धक्का देकर दरवाजा खोला, और पलंग के ऊपर बने चौकोर खानों से एक रोशनी अंदर आई। मैं अभी भी कांप रही थी, और अपने माथे से पसीना पोंछ रही थी: घुसपैठिया हिचकिचाया और खुद से कुछ बुदबुदाया। अंत में, उसने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, स्पष्ट रूप से उसे जवाब की उम्मीद नहीं थी, 'क्या यहाँ कोई है?' मैंने अपनी उपस्थिति स्वीकार करना ही बेहतर समझा; क्योंकि मैं हीथक्लिफ के लहजे को पहचानता था, और मुझे डर था कि अगर मैं चुप रहा तो वह और भी खोजबीन कर सकता है। इसी इरादे से, मैं मुड़ा और दरवाज़े के पैनल खोल दिए। मेरे इस कार्य का जो प्रभाव हुआ, उसे मैं जल्दी नहीं भूलूंगा।

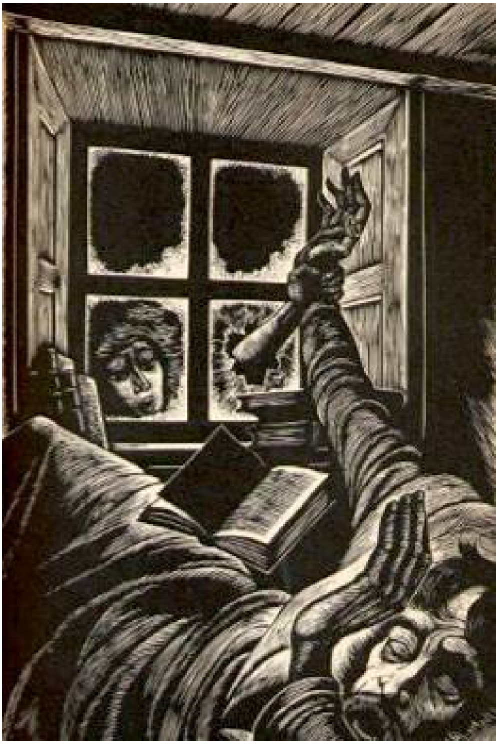

हीथक्लिफ प्रवेश द्वार के पास अपनी कमीज और पतलून पहने खड़ा था; उसकी उंगलियों पर मोमबत्ती की बूँदें टपक रही थीं और उसका चेहरा उसके पीछे की दीवार की तरह पीला पड़ गया था। ओक की लकड़ी की पहली चरमराहट ने उसे बिजली के झटके की तरह चौंका दिया: रोशनी उसके हाथ से कुछ फीट दूर जा गिरी और उसकी घबराहट इतनी तीव्र थी कि वह उसे मुश्किल से ही देख पाया।

'महोदय, मैं तो बस आपका मेहमान हूँ,' मैंने पुकार कर कहा, ताकि उसकी कायरता को और उजागर करके उसे शर्मिंदगी से बचाया जा सके। 'मुझे नींद में एक भयानक सपने के कारण चीखना पड़ा। मुझे खेद है कि मैंने आपको परेशान किया।'

'अरे, श्रीमान लॉकवुड, आप पर लानत हो! काश आप यहाँ होते—' मेरे मेज़बान ने मोमबत्ती को कुर्सी पर रखते हुए कहा, क्योंकि उसे स्थिर रखना उनके लिए नामुमकिन था। 'और आपको इस कमरे में किसने भेजा?' उन्होंने अपनी हथेलियों में नाखून गड़ाते हुए और जबड़े की ऐंठन को दबाने के लिए दांत पीसते हुए कहा। 'कौन था? मेरा मन कर रहा है कि मैं उन्हें अभी घर से बाहर निकाल दूं?'

'यह आपकी नौकरानी ज़िल्लाह थी,' मैंने ज़मीन पर गिरते हुए और जल्दी से अपने

कपड़े समेटते हुए जवाब दिया। 'मुझे परवाह नहीं है अगर आपको परवाह हो, मिस्टर हीथक्लिफ; वह इसके लायक ही थी। मुझे लगता है कि वह मेरे खर्चे पर इस बात का एक और सबूत पाना चाहती थी कि यह जगह भूतिया है। खैर, यह जगह भूतों और जिन्नों से भरी पड़ी है! मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपने इसे बंद करके जो किया है, वह बिल्कुल सही है। ऐसी गुफा में झपकी लेने के लिए कोई आपका शुक्रिया अदा नहीं करेगा!'

'तुम्हारा क्या मतलब है?' हीथक्लिफ ने पूछा, 'और तुम क्या कर रहे हो? लेट जाओ और रात गुजार लो, क्योंकि तुम यहीं हो; लेकिन भगवान के लिए! वह भयानक आवाज दोबारा मत करना: किसी भी हालत में उसे माफ नहीं किया जा सकता, सिवाय इसके कि तुम्हारा गला काटा जा रहा हो!'

'अगर वो छोटी शैतान खिड़की से अंदर आ जाती, तो शायद मेरा गला घोंट देती!' मैंने जवाब दिया। 'मैं तुम्हारे मेहमाननवाज पूर्वजों के अत्याचारों को फिर से सहन नहीं करने वाली। क्या रेवरेंड जैबेज़ ब्रैंडरहम माँ की तरफ से तुम्हारे रिश्तेदार नहीं थे? और वो धूर्त औरत, कैथरीन लिंटन, या अर्नशॉ, या जो भी उसका नाम था – वो ज़रूर कोई दुष्ट आत्मा रही होगी! उसने मुझे बताया कि वो पिछले बीस सालों से धरती पर भटक रही है: उसके नश्वर पापों की उचित सज़ा, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है!'

ये शब्द मेरे मुँह से निकले ही थे कि मुझे किताब में हीथक्लिफ के नाम का कैथरीन के नाम से जुड़ाव याद आ गया, जो मेरे दिमाग से पूरी तरह निकल चुका था, जब तक कि अचानक याद नहीं आया। मैं अपनी लापरवाही पर शर्मिंदा हुआ: लेकिन, अपनी गलती का और एहसास दिखाए बिना, मैंने जल्दी से कहा — 'सच तो ये है, महोदय, मैंने रात का पहला हिस्सा —' यहाँ मैं फिर रुक गया — मैं कहने ही वाला था कि 'उन पुरानी किताबों को पढ़ रहा था,' तब तो यह पता चल जाता कि मुझे उनके लिखित और मुद्रित दोनों विषयों की जानकारी है; इसलिए, खुद को सुधारते हुए, मैं आगे बढ़ा — 'खिड़की की चौखट पर खुदे हुए नाम को गिनने में। एक नीरस काम, जो मुझे नींद ला देता था, गिनती करने की तरह, या —'

'तुम मुझसे इस तरह बात करके क्या मतलब रखते हो!' हीथक्लिफ भयंकर क्रोध से दहाड़ा। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, मेरे घर में? हे भगवान! ये ऐसा बोलकर पागल हो गया है!' और उसने गुस्से से अपना माथा पीट लिया।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस भाषा पर नाराज़ होऊं या अपनी बात जारी

रखूं; लेकिन वह इतना भावुक लग रहा था कि मुझे उस पर दया आ गई और मैंने अपने सपनों के बारे में बताना जारी रखा; मैंने कहा कि मैंने 'कैथरीन लिंटन' नाम पहले कभी नहीं सुना था, लेकिन इसे बार-बार पढ़ने से मेरे मन पर एक ऐसी छाप बन गई थी जो तब साकार हो उठी जब मेरी कल्पना पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं रहा। जैसे-जैसे मैं बोलती गई, हीथक्लिफ धीरे-धीरे बिस्तर की ओट में सिमटता चला गया; अंत में लगभग उसके पीछे छिपकर बैठ गया। हालांकि, उसकी अनियमित और रुक-रुक कर आ रही सांसों से मुझे लगा कि वह अत्यधिक भावनाओं को काबू करने की कोशिश कर रहा है। उसे यह न दिखाना चाहते हुए कि मैंने उसकी ये कशमकश सुन ली है, मैंने शोर मचाते हुए अपना श्रृंगार जारी रखा, अपनी घड़ी देखी और रात की लंबाई पर मन ही मन सोचने लगी: 'अभी तीन बजे भी नहीं! मुझे पक्का यकीन है कि छह बज गए होंगे। यहां समय रुका हुआ है: हमें तो आठ बजे तक सो जाना चाहिए था!'

'सर्दियों में हमेशा नौ बजे उठता हूँ और चार बजे उठ जाता हूँ,' मेरे मेज़बान ने आह दबाते हुए कहा; और जैसा कि मुझे उनके हाथ की परछाईं से लगा, उनकी आँखों से एक आँसू बह निकला। 'श्रीमान लॉकवुड,' उन्होंने आगे कहा, 'आप मेरे कमरे में जा सकते हैं: इतनी जल्दी नीचे आने से आप बस रास्ते में ही रहेंगे: और आपके बचकाने रोने ने मेरी नींद उड़ा दी है।'

'और मेरे लिए भी,' मैंने उत्तर दिया। 'मैं सुबह होने तक आंगन में टहलूँगा, और फिर चला जाऊँगा; और आपको मेरे दोबारा आने की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। अब मैं समाज में आनंद ढूँढ़ने से पूरी तरह मुक्त हो चुका हूँ, चाहे वह गाँव हो या शहर। एक समझदार व्यक्ति को अपने आप में ही पर्याप्त संगति मिल जाती है।'

'वाह, क्या बढ़िया संगत है!' हीथक्लिफ ने बुदबुदाते हुए कहा। 'मोमबत्ती ले लो और जहाँ चाहो जाओ। मैं अभी आता हूँ। लेकिन आँगन में मत जाना, कुत्ते खुले हैं; और घर में – जूनो वहाँ पहरा दे रही है, और – नहीं, तुम केवल सीढ़ियों और गलियारों में ही घूम सकते हो। लेकिन, जाओ! मैं दो मिनट में आता हूँ!'

मैंने कमरे से बाहर निकलने तक बात मानी; लेकिन संकरी गलियों का रास्ता न जानते हुए मैं वहीं रुक गया और अनजाने में अपने मकान मालिक के एक अंधविश्वास का साक्षी बना, जो उसकी समझदारी के बिल्कुल विपरीत था। वह पलंग पर चढ़ गया और जाली को तोड़कर खोल दिया, और उसे खींचते हुए फूट-फूट कर रोने लगा।

'अंदर आओ! अंदर आओ!' वह सिसकते हुए बोला। 'कैथी, आ जाओ। ओह, आ जाओ - एक बार फिर! ओह! मेरे दिल की लाडली! इस बार मेरी बात सुनो, कैथरीन, आखिरकार!' वह प्रेत अपनी सामान्य सनक दिखा रहा था: उसका कोई आभास नहीं था; लेकिन बर्फ और हवा बेतहाशा घूम रही थी, यहाँ तक कि मेरे कमरे तक भी पहुँच गई और रोशनी बुझा दी।

इस प्रलाप के साथ उमड़े दुःख के उफान में इतनी पीड़ा थी कि मेरी करुणा ने मुझे इसकी मूर्खता को नज़रअंदाज़ करने पर मजबूर कर दिया, और मैं वहाँ से हट गई, आधा तो इस बात पर नाराज़ थी कि मैंने सुना ही क्यों, और आधा इस बात पर झुंझला रही थी कि मैंने अपना बेतुका दुःस्वप्न क्यों सुनाया, क्योंकि उसी ने मुझे इतनी पीड़ा दी थी; हालाँकि इसका कारण मेरी समझ से परे था। मैं सावधानी से नीचे के कमरों में उतरी और पीछे की रसोई में पहुँची, जहाँ आग की हल्की सी लौ ने मुझे अपनी मोमबत्ती फिर से जलाने में मदद की। वहाँ एक चितकबरी, भूरी बिल्ली के अलावा कुछ भी हलचल नहीं थी, जो राख से रेंगकर निकली और एक कर्कश म्याऊँ के साथ मेरा अभिवादन किया।

दो बेंच, जो वृत्त के खंडों के आकार में बनी थीं, चूल्हे को लगभग घेरे हुए थीं; मैं एक पर लेट गया और ग्रिमाल्किन दूसरी पर। हम दोनों ऊंघ रहे थे, इससे पहले कि कोई हमारे एकांतवास में दखल दे, तभी जोसेफ आया, एक लकड़ी की सीढ़ी से नीचे उतरता हुआ जो छत में एक जाल के रास्ते गायब हो गई: शायद वह अपने अटारी में जाने का रास्ता था। उसने उस छोटी सी लौ पर एक भयावह नज़र डाली जिसे मैंने पसलियों के बीच जलाने के लिए उकसाया था, बिल्ली को वहाँ से नीचे उतारा और खाली जगह पर बैठकर तीन इंच के पाइप में तंबाकू भरने लगा। उसके पवित्र स्थान में मेरी उपस्थिति स्पष्ट रूप से एक ऐसी गुस्ताखी थी जिस पर टिप्पणी करना भी उचित नहीं था: उसने चुपचाप पाइप को अपने होठों से लगाया, बाहें मोड़ीं और कश लगाने लगा। मैंने उसे बिना किसी परेशानी के इस आनंद का अनुभव करने दिया; और अपना आखिरी कश पीने और एक गहरी आह भरने के बाद, वह उठा और उतनी ही गंभीरता से चला गया जितनी गंभीरता से वह आया था।

फिर एक और तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी; और अब मैंने 'शुभ प्रभात' कहने के लिए अपना मुँह खोला, लेकिन अभिवादन अधूरा ही रह गया, इसलिए मैंने उसे तुरंत बंद कर दिया; क्योंकि हरेटन अर्नशॉ दबी आवाज़ में प्रार्थना कर रहा था, हर उस

चीज़ को कोसते हुए जिसे वह छूता था, और साथ ही बर्फ के ढेर में खोदने के लिए एक कोने में फावड़ा या कुदाल ढूँढ रहा था। उसने बेंच के पीछे से झाँका, अपनी नाक फुलाते हुए, और मेरे साथ शिष्टाचार निभाने को उतना ही तुच्छ समझा जितना मेरे साथी बिल्ली के साथ। मैंने उसकी तैयारियों से अंदाज़ा लगाया कि बाहर जाने की अनुमति है, और अपने कठोर पलंग को छोड़कर उसके पीछे चलने के लिए आगे बढ़ा। उसने यह देखा, और अपने फावड़े के सिरे से एक भीतरी दरवाजे पर धक्का दिया, एक अस्पष्ट आवाज़ में इशारा करते हुए कि अगर मैं अपना स्थान बदलता हूँ तो मुझे वहीं जाना होगा।

घर के अंदर जाने का रास्ता खुला, जहाँ औरतें पहले से ही चहल-पहल में थीं; ज़िल्लाह एक विशाल धौंकनी से चिमनी में आग की लपटें उठा रही थी; और श्रीमती हीथक्लिफ चूल्हे पर घुटनों के बल बैठकर आग की रोशनी में किताब पढ़ रही थीं। उन्होंने अपना हाथ चूल्हे की गर्मी और आँखों के बीच रखा हुआ था और अपने काम में मग्न लग रही थीं; बस कभी नौकर को चिंगारियों से ढकने पर डांटने के लिए या कभी-कभार अपने चेहरे पर नाक रगड़ने वाले कुत्ते को हटाने के लिए ही रुकती थीं। मुझे हीथक्लिफ को भी वहाँ देखकर आश्चर्य हुआ। वह आग के पास खड़े थे, उनकी पीठ मेरी तरफ थी, और वह बेचारी ज़िल्लाह के साथ एक तीखी बहस खत्म कर रहे थे; जो बीच-बीच में अपने काम में दखल देकर अपने एप्रन का कोना खींचती और गुस्से में कराहती थी।

जैसे ही मैं अंदर दाखिल हुई, वो भड़क उठा, ‘और तुम, निकम्मी—’ अपनी बहू की तरफ मुड़ते हुए, और एक ऐसी गाली का इस्तेमाल किया जो बत्तख या भेड़ जितनी सीधी-सादी थी, लेकिन आमतौर पर उसे डैश से दर्शाया जाता है—। ‘लो, फिर से अपनी आलस भरी हरकतों पर उतर आई! बाकी सब तो अपनी रोजी-रोटी खुद कमाते हैं— तुम तो मेरी भीख पर जीती हो! अपना कचरा समेटो और कुछ काम ढूंढो। तुम्हें मेरी नजरों में हमेशा रहने की इस मुसीबत का बदला चुकाना होगा— सुन रही हो, लानत है उस औरत?’

‘मैं अपना कूड़ा-कचरा हटा दूंगी, क्योंकि मना करने पर तुम मुझे मजबूर कर सकते हो,’ युवती ने अपनी किताब बंद करते हुए और उसे कुर्सी पर फेंकते हुए उत्तर दिया। ‘लेकिन मैं कुछ भी नहीं करूंगी, चाहे तुम कितनी भी गालियां क्यों न दो, सिवाय वही करने के जो मुझे पसंद हो!’

हीथक्लिफ ने अपना हाथ उठाया, और वक्ता सुरक्षित दूरी पर हट गया, जाहिर तौर पर उसके हाथ के भार से परिचित था। बिल्ली-कुत्ते की लड़ाई में शामिल होने की कोई इच्छा न होने के कारण, मैं तेज़ी से आगे बढ़ा, मानो चूल्हे की गर्माहट में शामिल होने के लिए उत्सुक हो, और रुके हुए विवाद से अनजान हो। दोनों ने आगे की शत्रुता को स्थगित करने के लिए पर्याप्त शिष्टाचार दिखाया: हीथक्लिफ ने प्रलोभन में आकर अपनी मुट्ठियाँ जेब में डाल लीं; श्रीमती हीथक्लिफ ने अपने होंठ सिकोड़े और दूर एक कुर्सी पर चली गईं, जहाँ उन्होंने मेरे ठहरने के शेष समय के दौरान एक मूर्ति की तरह खड़े रहकर अपना वादा निभाया। यह ज़्यादा देर नहीं था। मैंने उनके नाश्ते में शामिल होने से इनकार कर दिया, और भोर की पहली किरण के साथ ही, ताज़ी हवा में निकलने का अवसर लिया, जो अब साफ़, शांत और बर्फ़ की तरह ठंडी थी।

मेरे मकान मालिक ने बगीचे के अंत तक पहुँचने से पहले ही मुझे रुकने का इशारा किया और मेरे साथ मैदान पार करने की पेशकश की। यह अच्छा ही हुआ कि उन्होंने ऐसा किया, क्योंकि पूरी पहाड़ी एक लहरदार, सफेद सागर जैसी थी; उसकी ऊँचाई-नीचाई ज़मीन की ऊँचाई-नीचाई से मेल नहीं खा रही थी: कई गड्ढे तो लगभग भर चुके थे; और खदानों के अवशेष, टीलों की पूरी श्रृंखलाएँ, उस नक्शे से गायब हो गई थीं जिसकी छवि कल की सैर ने मेरे मन में छोड़ी थी। मैंने सड़क के एक किनारे पर, छह या सात गज के अंतराल पर, खड़ी पत्थरों की एक कतार देखी थी, जो बंजर भूमि की पूरी लंबाई में फैली हुई थी: इन्हें अंधेरे में मार्गदर्शक के रूप में काम करने के लिए, और वर्तमान जैसी किसी दुर्घटना के समय, जब दोनों ओर के गहरे दलदल पक्के रास्ते से अलग हो जाते हैं, तो चूने से लेप करके खड़ा किया गया था: लेकिन, यहाँ-वहाँ ऊपर की ओर इशारा करते एक गंदे बिंदु को छोड़कर, उनके अस्तित्व के सभी निशान गायब हो गए थे: और मेरे साथी को मुझे बार-बार दाएं या बाएं मुड़ने की चेतावनी देना आवश्यक लगा, जब मुझे लगा कि मैं सड़क के घुमावों का सही अनुसरण कर रहा हूँ।

हमारी थोड़ी बातचीत हुई और वह थ्रशक्रॉस पार्क के प्रवेश द्वार पर रुक गया और बोला, "मैं वहाँ कोई गलती नहीं कर सकता।" हमारी विदाई बस एक संक्षिप्त अभिवादन तक ही सीमित रही, और फिर मैं अपने दम पर आगे बढ़ गया; क्योंकि चौकीदार का कमरा अभी तक खाली था। गेट से फार्महाउस तक की दूरी दो मील है; मुझे लगता है कि पेड़ों के बीच खो जाने और गर्दन तक बर्फ में धंस जाने के कारण मैंने इसे चार मील तक ही तय किया: एक ऐसी स्थिति जिसे केवल वही लोग समझ

सकते हैं जिन्होंने इसे अनुभव किया हो। खैर, मेरी भटकन चाहे जैसी भी रही हो, घर में प्रवेश करते ही घड़ी में बारह बज गए; और इससे वुदरिंग हाइट्स से सामान्य रास्ते के प्रत्येक मील के लिए ठीक एक घंटा हो गया।

मेरी साथी और उसके साथी मेरा स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े; शोर मचाते हुए कहने लगे कि उन्होंने मुझे पूरी तरह से खो दिया है: हर कोई यही अनुमान लगा रहा था कि मैं पिछली रात मर गया था; और वे सोच रहे थे कि मेरे अवशेषों की खोज कैसे शुरू करें। मैंने उन्हें चुप रहने को कहा, क्योंकि अब वे मुझे वापस देख चुके थे, और दिल तक सुन्न होकर मैं धीरे-धीरे ऊपर चला गया; वहाँ से, सूखे कपड़े पहनकर और तीस-चालीस मिनट तक इधर-उधर टहलकर शरीर में गर्मी लाने के बाद, मैं अपने अध्ययन कक्ष में चला गया, बिल्ली के बच्चे की तरह कमजोर: इतना कमजोर कि नौकर द्वारा मेरे लिए तैयार की गई खुशनुमा आग और गरमागरम कॉफी का आनंद भी नहीं ले पा रहा था।

अध्याय IV

हम कितने व्यर्थ के लोग हैं! मैंने, जिसने सामाजिक मेलजोल से खुद को अलग रखने का निश्चय किया था और अपने भाग्य को धन्यवाद दिया था कि अंततः मुझे एक ऐसी जगह मिल गई थी जहाँ ऐसा करना लगभग असंभव था — मैं, कमजोर और अभागा, शाम तक उदासी और अकेलेपन से जूझने के बाद, अंततः हार मानने को विवश हो गया; और अपने घर की ज़रूरतों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बहाने, मैंने श्रीमती डीन से, जब वह रात का खाना लेकर आईं, तो मेरे साथ बैठने का अनुरोध किया; इस सच्ची उम्मीद में कि वह एक अच्छी गपशप करने वाली साबित होंगी, और या तो अपनी बातों से मुझे उत्साहित करेंगी या मुझे सुला देंगी।

मैंने बात शुरू करते हुए कहा, 'आप यहां काफी समय से रह रहे हैं; क्या आपने

सोलह साल नहीं कहा था?'

‘अठारह, महोदय: मैं मालकिन की शादी के समय उनकी सेवा करने आई थी; उनकी मृत्यु के बाद, मालिक ने मुझे अपने घर की नौकरानी के रूप में रख लिया।’

'वास्तव में।'

कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। मुझे लगा कि वह गपशप करने वाली नहीं थी; सिवाय अपने निजी मामलों के, जिनमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। हालांकि, कुछ देर सोचने के बाद, दोनों घुटनों पर मुट्ठी रखकर और अपने लाल चेहरे पर गहरी सोच के साथ, उसने कहा - 'अरे, तब से समय कितना बदल गया है!'

‘जी हां,’ मैंने कहा, ‘मुझे लगता है कि आपने काफी सारे बदलाव देखे हैं?’

‘मेरे पास हैं: और परेशानियां भी,’ उसने कहा।

‘ओह, मैं अपने मकान मालिक के परिवार से ही बात शुरू करूँगी!’ मैंने मन ही मन सोचा। ‘शुरुआत के लिए अच्छा विषय है! और उस सुंदर विधवा महिला के बारे में, मैं जानना चाहूँगी: क्या वह यहीं की मूल निवासी है, या, जैसा कि अधिक संभावना है, कोई परदेसी है जिसे यहाँ के चिड़चिड़े स्थानीय लोग रिश्तेदार नहीं मानते।’ इसी इरादे से मैंने श्रीमती डीन से पूछा कि हीथक्लिफ ने थ्रशक्रॉस ग्रेंज क्यों किराए पर दिया और इतनी घटिया जगह और घर में रहना क्यों पसंद किया। ‘क्या वह इतना अमीर नहीं है कि जागीर को अच्छी तरह से रख सके?’ मैंने पूछा।

‘अमीर, साहब!’ उसने जवाब दिया। ‘उसके पास न जाने कितना पैसा है, और हर साल बढ़ता ही जा रहा है। जी हाँ, जी हाँ, वह इतना अमीर है कि इससे भी अच्छे घर में रह सकता है: लेकिन वह बहुत कंजूस है; और अगर उसका इरादा थ्रशक्रॉस ग्रेंज जाने का होता, तो जैसे ही उसे किसी अच्छे किराएदार के बारे में पता चलता, वह कुछ सौ और कमाने का मौका नहीं छोड़ता। यह अजीब बात है कि लोग इतने लालची हो जाते हैं, जब वे दुनिया में अकेले होते हैं!’

'ऐसा लगता है कि उनका एक बेटा था?'

'हां, उसके पास एक था - उसकी मौत हो गई है।'

और वह युवती, श्रीमती हीथक्लिफ, उनकी विधवा हैं?

'हाँ।'

वह मूल रूप से कहाँ से आई थी?

“जी हाँ, महोदय, वह मेरे दिवंगत स्वामी की बेटी है: कैथरीन लिंटन उसका मायके

का नाम था। मैंने उसकी देखभाल की थी, बेचारी! काश श्री हीथक्लिफ यहाँ आ जाते, तो हम फिर से एक साथ हो सकते थे।”

‘क्या! कैथरीन लिंटन?’ मैं आश्चर्यचकित होकर बोला। लेकिन एक मिनट सोचने के बाद मुझे यकीन हो गया कि यह मेरी भूतिया कैथरीन नहीं थी। फिर,’ मैंने आगे कहा, ‘मेरी पूर्ववर्ती का नाम लिंटन था?’

'वह था।'

और वो अर्नशॉ कौन है: हरेटन अर्नशॉ, जो मिस्टर हीथक्लिफ के साथ रहता है? क्या वे रिश्तेदार हैं?

नहीं; वह स्वर्गीय श्रीमती लिंटन के भतीजे हैं।

तो क्या वह युवती की चचेरी बहन है?

'हां; और उसका पति भी उसका चचेरा भाई था: एक मां की तरफ से, दूसरा पिता की तरफ से: हीथक्लिफ ने मिस्टर लिंटन की बहन से शादी की थी।'

‘मैंने वुथरिंग हाइट्स स्थित घर के सामने वाले दरवाजे पर “अर्नशॉ” खुदा हुआ देखा। क्या वे कोई पुराना परिवार हैं?’

“बहुत पुराने हैं, महोदय; और हरेटन उनमें से आखिरी हैं, जैसे हमारी मिस कैथी हम लिंटन परिवार की आखिरी सदस्य हैं। क्या आप वुदरिंग हाइट्स गए हैं? पूछने के लिए क्षमा करें; लेकिन मैं जानना चाहूँगा कि वह कैसी हैं!”

'श्रीमती हीथक्लिफ? वह बहुत अच्छी और बेहद खूबसूरत लग रही थीं; फिर भी, मुझे लगता है, वह बहुत खुश नहीं थीं।'

अरे वाह, मुझे आश्चर्य नहीं! और आपको गुरुजी कैसे लगे?

'वह तो एक असभ्य व्यक्ति है, श्रीमती डीन। क्या यही उसका स्वभाव नहीं है?'

‘वह आरी की धार की तरह खुरदुरा और व्हिनस्टोन की तरह कठोर है! उससे जितना कम छेड़छाड़ करोगे उतना ही अच्छा होगा।’

'उसके जीवन में कई उतार-चढ़ाव जरूर आए होंगे, तभी तो वह इतना अशिष्ट बन गया। क्या आपको उसके इतिहास के बारे में कुछ पता है?'

“यह तो सरासर पागलपन है – मुझे इसके बारे में सब पता है: सिवाय इसके कि वह कहाँ पैदा हुआ था, उसके माता-पिता कौन थे, और उसे शुरू में पैसा कैसे मिला। और हैरेटन को तो जैसे एक अविकसित पक्षी की तरह निकाल दिया गया है! इस पूरे इलाके में वह बेचारा लड़का ही इकलौता है जिसे यह समझ नहीं आ रहा कि उसके

साथ कैसे धोखा हुआ है।”

'अच्छा, श्रीमती डीन, अगर आप मुझे मेरे पड़ोसियों के बारे में कुछ बताएँगी तो यह एक नेक काम होगा: मुझे लगता है कि अगर मैं सोने चली गई तो मुझे चैन नहीं मिलेगा; इसलिए कृपया एक घंटे बैठकर मुझसे बातचीत करें।'

“जी हाँ, बिल्कुल! मैं बस थोड़ी सिलाई का सामान ले आती हूँ, और फिर जितनी देर आप चाहें, मैं बैठ जाऊँगी। लेकिन आपको सर्दी लग गई है: मैंने आपको काँपते हुए देखा, और आपको इसे दूर भगाने के लिए कुछ दलिया खाना चाहिए।”

वह नेक महिला जल्दी से चली गई, और मैं आग के पास दुबक गया; मेरा सिर गर्म था और बाकी शरीर ठंडा: इसके अलावा, मैं अपनी नसों और दिमाग से लगभग मूर्खता की हद तक उत्तेजित था। इससे मुझे असहजता तो नहीं, बल्कि आज और कल की घटनाओं के गंभीर परिणामों का डर सता रहा था (जैसा कि अभी भी है)। वह थोड़ी देर में एक गर्म तवा और काम की टोकरी लेकर लौटी; और तवा चूल्हे पर रखकर, अपनी कुर्सी पर बैठ गई, जाहिर तौर पर मुझे इतना मिलनसार पाकर प्रसन्न हुई।

यहां रहने आने से पहले, उसने अपनी कहानी शुरू की - बिना किसी और आमंत्रण का इंतज़ार किए - मैं लगभग हमेशा वुदरिंग हाइट्स में ही रहती थी; क्योंकि मेरी माँ ने श्री हिंडले अर्नशॉ की देखभाल की थी, जो हैरेटन के पिता थे, और मुझे बच्चों के साथ खेलने की आदत हो गई थी: मैं छोटे-मोटे काम भी करती थी, घास काटने में मदद करती थी, और खेत में इधर-उधर घूमती रहती थी, कोई भी मुझे जो काम देता, मैं उसके लिए तैयार रहती थी। एक सुहावनी गर्मी की सुबह - मुझे याद है, फसल कटाई की शुरुआत थी - श्री अर्नशॉ, बूढ़े मालिक, यात्रा के लिए तैयार होकर नीचे आए; और जोसेफ को दिन भर के कामों के बारे में बताने के बाद, वे हिंडले, कैथी और मेरी ओर मुड़े - क्योंकि मैं उनके साथ दलिया खा रही थी - और अपने बेटे से कहा, 'अब, मेरे प्यारे बेटे, मैं आज लिवरपूल जा रहा हूँ, तुम्हारे लिए क्या लाऊँ?' आप जो चाहें चुन लें: बस छोटी सी चीज लें, क्योंकि मुझे आना-जाना पैदल ही करना होगा: एक तरफ साठ मील, यह तो बहुत लंबा सफर है!’ हिंडले ने एक वायलिन का नाम लिया, और फिर उन्होंने मिस कैथी से पूछा; वह मुश्किल से छह साल की थी, लेकिन अस्तबल में किसी भी घोड़े की सवारी कर सकती थी, और उसने एक चाबुक चुना। वह मुझे नहीं भूले; क्योंकि उनका दिल दयालु था, हालांकि कभी-कभी वह थोड़े सख्त भी हो जाते

थे। उन्होंने मुझे जेब भर सेब और नाशपाती लाने का वादा किया, और फिर उन्होंने अपने बच्चों को चूमा, अलविदा कहा और चल दिए।

हम सबको लगा कि उनकी अनुपस्थिति के तीन दिन बहुत लंबे थे, और छोटी कैथी अक्सर पूछती रहती थी कि वे घर कब लौटेंगे। श्रीमती अर्नशॉ को तीसरी शाम को भोजन के समय तक उनके आने की उम्मीद थी, और वे घंटों तक भोजन टालती रहीं; लेकिन उनके आने का कोई आसार नहीं था, और अंत में बच्चे उन्हें देखने के लिए बार-बार द्वार तक दौड़ते-दौड़ते थक गए। फिर अंधेरा हो गया; वह उन्हें सुलाना चाहती थीं, लेकिन उन्होंने जागने की विनती की; और लगभग ग्यारह बजे, दरवाजे की कुंडी धीरे से उठी, और मालिक अंदर आ गए। वे हंसते-हंसते और कराहते हुए एक कुर्सी पर गिर पड़े, और सबको दूर हटने को कहा, क्योंकि वे बाल-बाल बचे थे - वे तीन राज्यों के लिए भी ऐसी यात्रा दोबारा नहीं करना चाहते थे।

'और अंत में मौत के मुंह में धकेल दिया जाना!' उसने अपनी बाहों में लिपटे हुए ओवरकोट को खोलते हुए कहा। 'देखो पत्नी! जीवन में मुझे कभी किसी चीज से इतनी बुरी तरह नहीं पीटा गया: लेकिन तुम्हें इसे ईश्वर का उपहार ही समझना चाहिए; भले ही यह इतना काला है मानो शैतान की ओर से आया हो।'

हम सब उसके चारों ओर जमा हो गए, और मिस कैथी के सिर के ऊपर से मुझे एक गंदे, फटे-पुराने कपड़ों वाले, काले बालों वाले बच्चे की झलक मिली; वह चलने और बोलने लायक बड़ा था: वास्तव में, उसका चेहरा कैथरीन से भी बड़ा लग रहा था; फिर भी जब उसे अपने पैरों पर खड़ा किया गया, तो वह बस इधर-उधर घूरता रहा, और बार-बार कुछ ऐसी बड़बड़ाहट दोहराता रहा जिसे कोई समझ नहीं पा रहा था। मैं डर गया था, और श्रीमती अर्नशॉ उसे घर से बाहर फेंकने को तैयार थीं: वह भड़क उठीं और पूछने लगीं कि जब उनके अपने बच्चे हैं जिनका उन्हें पालन-पोषण करना है, तो वह उस बंजारे बच्चे को घर में कैसे ला सकते हैं? वह इसके साथ क्या करना चाहते हैं, और क्या वह पागल हैं? मास्टर ने मामला समझाने की कोशिश की; लेकिन वह सचमुच थकान से लगभग मर चुके थे, और उनकी डांट के बीच मैं बस इतना ही समझ पाया कि उन्होंने उसे लिवरपूल की सड़कों पर भूखा, बेघर और लगभग गूंगा देखा था, जहाँ उन्होंने उसे उठाया और उसके मालिक के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि कोई नहीं जानता था कि वह किसका है; चूंकि उनके पास पैसे और समय दोनों सीमित थे, इसलिए उन्होंने सोचा कि इसे तुरंत घर ले जाना ही बेहतर होगा, बजाय वहां व्यर्थ खर्च

करने के: क्योंकि उन्होंने ठान लिया था कि वे इसे उसी हालत में नहीं छोड़ेंगे जैसा उन्हें मिला था। खैर, अंत में, मेरी मालकिन बड़बड़ाते हुए शांत हो गईं; और श्री अर्नशॉ ने मुझे इसे धोने, साफ कपड़े पहनाने और बच्चों के साथ सुलाने के लिए कहा।

शांति बहाल होने तक हिंडले और कैथी देखते और सुनते रहे; फिर, दोनों अपने पिता की जेबों में उन उपहारों की तलाश करने लगे जिनका उन्होंने उनसे वादा किया था। हिंडले चौदह साल का लड़का था, लेकिन जब उसने ओवरकोट में कुचली हुई वायलिन निकाली, तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा; और कैथी, जब उसे पता चला कि मालिक ने अजनबी की सेवा करते हुए अपना चाबुक खो दिया है, तो उसने उस मूर्ख छोटी सी चीज़ पर हंसते हुए और थूकते हुए अपना मज़ाक उड़ाया; जिसके बदले में उसे अपने पिता से एक ज़ोरदार थप्पड़ पड़ा, ताकि उसे तमीज़ सिखाई जा सके। उन्होंने उसे अपने साथ बिस्तर पर या अपने कमरे में भी रखने से साफ इनकार कर दिया; और मुझमें भी इतनी अक्ल नहीं थी, इसलिए मैंने उसे सीढ़ियों के लैंडिंग पर रख दिया, इस उम्मीद में कि वह कल तक गायब हो जाएगी। संयोग से, या शायद उसकी आवाज़ सुनकर आकर्षित होकर, वह मिस्टर अर्नशॉ के दरवाजे तक रेंगकर पहुँच गई, और जब वह अपने कमरे से बाहर निकले तो उन्होंने उसे वहीं पाया। यह पता लगाने के लिए पूछताछ की गई कि वह वहाँ कैसे पहुँची; मुझे अपना अपराध स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा, और मेरी कायरता और अमानवीयता के दंड स्वरूप मुझे घर से निकाल दिया गया।

यह हीथक्लिफ का परिवार से पहला परिचय था। कुछ दिनों बाद जब मैं वापस आया (क्योंकि मैंने अपने निर्वासन को स्थायी नहीं समझा था), तो मैंने पाया कि उन्होंने उसका नाम 'हीथक्लिफ' रख दिया था: यह उसके एक बेटे का नाम था जिसकी बचपन में मृत्यु हो गई थी, और तब से यही नाम उसके ईसाई नाम और उपनाम दोनों के रूप में इस्तेमाल होता आ रहा था। मिस कैथी और वह अब बहुत अच्छे दोस्त बन गए थे; लेकिन हिंडले उससे नफरत करता था: और सच कहूँ तो मैं भी उससे नफरत करता था; और हम उसे शर्मनाक तरीके से परेशान करते रहे: क्योंकि मैं इतना समझदार नहीं था कि अपने साथ हुए अन्याय को समझ सकूँ, और मालकिन ने उसे अपमानित होते देखकर कभी उसकी तरफ से कुछ नहीं कहा।

वह एक उदास, धैर्यवान बच्चा लगता था; शायद दुर्व्यवहार सहने की वजह से कठोर हो गया था: वह हिंडले की मार बिना पलक झपकाए या आंसू बहाए सह लेता

था, और मेरे चुटकी काटने पर भी वह बस एक गहरी सांस लेता और आंखें खोलता था, मानो उसे गलती से चोट लगी हो और किसी को दोष न दिया गया हो। उसकी इस सहनशीलता ने बूढ़े अर्नशॉ को क्रोधित कर दिया, जब उन्होंने देखा कि उनका बेटा उस बेचारे अनाथ बच्चे को सता रहा है, जैसा कि वह उसे बुलाते थे। वह हीथक्लिफ से अजीब तरह से जुड़ गए, उसकी हर बात पर विश्वास करते (वैसे भी, वह बहुत कम बोलता था, और आमतौर पर सच ही बोलता था), और कैथी से कहीं ज्यादा उसे लाड़-प्यार करते थे, जो कि बहुत शरारती और मनमौजी थी, इसलिए पसंदीदा नहीं थी।

तो, शुरू से ही उसने घर में मनमुटाव पैदा कर दिया था; और श्रीमती अर्नशॉ की मृत्यु के बाद, जो दो साल से भी कम समय में हुई, युवा मालिक अपने पिता को मित्र के बजाय उत्पीड़क और हीथक्लिफ को अपने माता-पिता के स्नेह और विशेषाधिकारों का हनन करने वाला समझने लगा था; और इन चोटों पर सोचते-सोचते वह कड़वा हो गया। मैंने कुछ समय तक सहानुभूति दिखाई; लेकिन जब बच्चे खसरा से बीमार पड़ गए, और मुझे उनकी देखभाल करनी पड़ी, और साथ ही एक महिला की ज़िम्मेदारियाँ भी उठानी पड़ीं, तो मेरा विचार बदल गया। हीथक्लिफ बहुत बीमार था; और जब उसकी हालत सबसे खराब थी, तब भी वह मुझे हर समय अपने तकिए के पास रखता था: मुझे लगता है कि उसे लगता था कि मैं उसके लिए बहुत कुछ कर रही हूँ, और उसे यह समझ नहीं थी कि मैं ऐसा करने के लिए मजबूर थी। हालाँकि, मैं यह कहूँगी कि वह अब तक की सबसे शांत बच्ची थी जिसकी देखभाल किसी नर्स ने की थी। उसके और दूसरों के बीच के अंतर ने मुझे कम पक्षपाती होने पर मजबूर कर दिया। कैथी और उसका भाई मुझे बहुत परेशान करते थे: वह मेमने की तरह शिकायत नहीं करता था; हालांकि, उसकी कठोरता ने, न कि कोमलता ने, उसे कम परेशानी देने वाला बना दिया।

वह ठीक हो गया, और डॉक्टर ने पुष्टि की कि इसमें मेरी बहुत बड़ी भूमिका थी, और मेरी देखभाल के लिए मेरी प्रशंसा की। मैं उनकी प्रशंसा से घमंडी हो गया, और उस व्यक्ति के प्रति मेरा दिल नरम पड़ गया जिसकी बदौलत मैंने ये प्रशंसा अर्जित की थी, और इस तरह हिंडले ने अपना आखिरी साथी खो दिया: फिर भी मैं हीथक्लिफ पर मोहित नहीं हो सका, और मैं अक्सर सोचता था कि मेरे मालिक को उस उदास लड़के में इतना क्या पसंद था; जिसने, मेरी याद में, कभी भी कृतज्ञता का कोई संकेत

देकर उनके स्नेह का प्रतिफल नहीं दिया। वह अपने उपकारक के प्रति अभिमानी नहीं था, वह बस बेपरवाह था; हालाँकि वह पूरी तरह से जानता था कि उसके दिल पर उसका कितना प्रभाव है, और उसे पता था कि उसे बस बोलना है और पूरा घर उसकी इच्छाओं के आगे झुक जाएगा। एक उदाहरण के रूप में, मुझे याद है कि एक बार मिस्टर अर्नशॉ ने पैरिश मेले में दो बछड़े खरीदे और लड़कों को एक-एक दे दिया। हीथक्लिफ ने सबसे सुंदर वाला लिया, लेकिन वह जल्द ही लंगड़ा हो गया, और जब उसे इसका पता चला, तो उसने हिंडले से कहा—

‘तुम्हें मुझसे घोड़े बदलने होंगे: मुझे मेरा घोड़ा पसंद नहीं है; और अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो मैं तुम्हारे पिता को इस हफ्ते तुम्हारी दी हुई तीन पिटाई के बारे में बता दूंगा, और उन्हें अपना वह बाँह दिखाऊंगा जो कंधे तक काला पड़ गया है।’ हिंडले ने जीभ बाहर निकाली और उसके कानों पर एक घूंसा मारा। ‘तुम्हें यह तुरंत करना होगा,’ वह अड़ियल रहा और बरामदे की ओर भाग गया (वे अस्तबल में थे): ‘तुम्हें करना ही होगा: और अगर मैंने इन मार-पिटाई के बारे में किसी को बताया, तो तुम्हें ये मार ब्याज सहित वापस खानी पड़ेगी।’ ‘दफा हो जाओ, कुत्ते!’ हिंडले चिल्लाया और आलू और भूसा तौलने के लिए इस्तेमाल होने वाले लोहे के वजन से उसे धमकाया। ‘इसे फेंको,’ उसने वहीं खड़े-खड़े जवाब दिया, ‘और फिर मैं बताऊंगा कि तुमने कैसे शेखी मारी थी कि उसके मरते ही तुम मुझे घर से निकाल दोगे, और फिर देखूंगा कि क्या वह तुम्हें सीधे घर से नहीं निकाल देता।’ हिंडले ने उसे फेंका, जो उसकी छाती पर लगा, और वह गिर पड़ा, लेकिन तुरंत ही लड़खड़ाते हुए उठा, उसकी सांस फूल रही थी और चेहरा पीला पड़ गया था; और अगर मैंने उसे रोका न होता, तो वह सीधे मालिक के पास जाता और अपनी दयनीय हालत का हवाला देकर, जिसने यह सब किया था, उसका पूरा बदला ले लेता। युवा अर्नशॉ ने कहा, ‘तो मेरे बछड़े, जिप्सी को ले जाओ! और मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हारी गर्दन तोड़ दे: उसे ले जाओ, और नरक में जाओ, तुम नीच घुसपैठिए! और मेरे पिता से उनकी सारी संपत्ति छीन लो: उसके बाद ही उन्हें दिखाओ कि तुम क्या हो, शैतान के बच्चे। और यह लो, मुझे उम्मीद है कि वह तुम्हारे दिमाग को बाहर निकाल देगा!’

हीथक्लिफ घोड़े को खोलकर अपने अस्तबल में ले जाने गया था; वह उसके पीछे से गुजर ही रहा था कि हिंडले ने उसे अपने पैरों तले कुचलकर अपनी बात खत्म की और बिना यह देखे कि उसकी उम्मीदें पूरी हुईं या नहीं, जितनी तेज़ी से हो सकता था

भाग गया। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि बच्चा कितनी शांति से संभला और अपने इरादे पर आगे बढ़ा; उसने काठी भी बदली और फिर घर में घुसने से पहले उस जोरदार चोट से हुए डर को दूर करने के लिए भूसे के गट्ठे पर बैठ गया। मैंने उसे आसानी से मना लिया कि मैं उसके चोटों का दोष घोड़े पर डाल दूं: उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि क्या कहानी बनाई जा रही है क्योंकि उसे जो चाहिए था वह मिल गया था। वह इस तरह की छोटी-मोटी घटनाओं पर इतनी कम शिकायत करता था कि मुझे लगा कि वह प्रतिशोधी नहीं है: जैसा कि आप आगे सुनेंगे, मैं पूरी तरह से गलत था।

अध्याय V

समय बीतने के साथ-साथ श्री अर्नशॉ की सेहत बिगड़ने लगी। वे पहले चुस्त-दुरुस्त और स्वस्थ थे, लेकिन अचानक ही उनकी शक्ति क्षीण हो गई; और जब उन्हें चिमनी के कोने में ही रहना पड़ा तो वे बेहद चिड़चिड़े हो गए। छोटी-छोटी बातें भी उन्हें परेशान कर देती थीं; और उनके अधिकार का जरा सा भी अपमान उन्हें लगभग दौरे पड़ने लगते थे। यह विशेष रूप से तब देखने को मिलता था जब कोई उनके चहेते पर दबाव डालने या उस पर हावी होने की कोशिश करता था: उन्हें इस बात की बेहद चिंता रहती थी कि कहीं उनके साथ कोई गलत बात न हो जाए; ऐसा लगता था मानो उन्होंने यह सोच लिया हो कि चूंकि वे हीथक्लिफ को पसंद करते हैं, इसलिए सभी उनसे नफरत करते हैं और उनका बुरा करना चाहते हैं। यह लड़के के लिए नुकसानदायक था; क्योंकि हममें से जो दयालु थे वे मालिक को नाराज नहीं करना चाहते थे, इसलिए हम उनकी पसंद को सह लेते थे; और यह सहने का व्यवहार बच्चे के अहंकार और चिड़चिड़े स्वभाव को और भी बढ़ा देता था। फिर भी यह एक तरह से जरूरी हो गया था; दो-तीन बार, जब हिंडले ने अपने पिता की उपस्थिति में तिरस्कार का प्रदर्शन

किया, तो बूढ़े व्यक्ति का गुस्सा भड़क उठा: उसने उसे मारने के लिए अपनी छड़ी उठाई, और ऐसा न कर पाने के कारण क्रोध से कांप उठा।

अंततः, हमारे सहायक पादरी (उस समय हमारे पास एक सहायक पादरी थे जो छोटे लिंटन और अर्नशॉ को पढ़ाकर और अपनी थोड़ी सी ज़मीन पर खेती करके अपना गुजारा चलाते थे) ने सलाह दी कि उस युवक को कॉलेज भेजा जाना चाहिए; और श्री अर्नशॉ भारी मन से सहमत हो गए, क्योंकि उन्होंने कहा - 'हिंडले कुछ भी नहीं था, और वह जहाँ भटक रहा था वहाँ कभी फल-फूल नहीं पाएगा।'

मुझे पूरी उम्मीद थी कि अब शांति होगी। यह सोचकर मुझे दुख हुआ कि मालिक अपने ही अच्छे काम से परेशान हो रहे हैं। मुझे लगा कि बुढ़ापे और बीमारी की वजह से उनकी असंतुष्टि पारिवारिक कलह से उपजी थी; जैसा कि वे खुद मानते थे: वास्तव में, महोदय, यह उनके कमजोर होते शरीर का कारण था। हम शायद ठीक-ठाक रह पाते, लेकिन दो लोगों की वजह से - मिस कैथी और नौकर जोसेफ: मुझे यकीन है कि आपने उसे ऊपर देखा होगा। वह सबसे उबाऊ, और शायद अभी भी, आत्म-धर्मी फरीसी है जो बाइबल को खंगालकर उसमें से वादे खुद के लिए चुनता है और शाप दूसरों पर डालता है। अपने उपदेश देने और धार्मिक भाषण देने के हुनर से उसने मिस्टर अर्नशॉ पर गहरा प्रभाव डाला; और मालिक जितना कमजोर होता गया, उसका प्रभाव उतना ही बढ़ता गया। वह उन्हें उनकी आत्मा की चिंताओं और अपने बच्चों पर सख्ती से शासन करने के लिए लगातार परेशान करता रहा। उसने उन्हें हिंडले को पापी मानने के लिए उकसाया; और, रात-दर-रात, वह नियमित रूप से हीथक्लिफ और कैथरीन के खिलाफ कहानियों की एक लंबी श्रृंखला सुनाता रहता था: हमेशा अर्नशॉ की कमजोरी का फायदा उठाते हुए, सबसे ज्यादा दोष बाद वाले पर मढ़ता था।

यकीनन, उसका व्यवहार ऐसा था जैसा मैंने पहले कभी किसी बच्चे में नहीं देखा था; और वह दिन में पचास बार से भी ज़्यादा हम सबको परेशान कर देती थी: जब से वह नीचे आती थी तब से लेकर जब तक वह सोने नहीं जाती थी, हमें एक पल के लिए भी तसल्ली नहीं होती थी कि वह कोई शरारत नहीं करेगी। उसका उत्साह हमेशा चरम पर रहता था, उसकी ज़बान चलती रहती थी - गाती, हँसती और हर उस व्यक्ति को तंग करती जो ऐसा नहीं करता था। वह एक बेकाबू, शरारती बच्ची थी - लेकिन उसकी आँखें बेहद प्यारी थीं, मुस्कान सबसे मीठी थी और उसके कदम सबसे हल्के थे: और आखिरकार, मुझे लगता है कि उसका इरादा किसी को नुकसान पहुँचाने का

नहीं था; क्योंकि एक बार जब वह आपको दिल खोलकर रुला देती थी, तो ऐसा कम ही होता था कि वह आपके साथ न रहे और आपको चुप रहने के लिए मजबूर न करे ताकि आप उसे दिलासा दे सकें। वह हीथक्लिफ को बहुत पसंद करती थी। उसके लिए हम जो सबसे बड़ी सज़ा सोच सकते थे, वह थी उसे हीथक्लिफ से अलग रखना: फिर भी हीथक्लिफ की वजह से उसे हम सबसे ज़्यादा डांट पड़ती थी। खेल में, उसे छोटी मालकिन की तरह व्यवहार करना बहुत पसंद था; वह अपने हाथों का खुलकर इस्तेमाल करती और अपने साथियों को आदेश देती थी: वह मेरे साथ भी ऐसा ही करती थी, लेकिन मैं थप्पड़ और आदेश सहन नहीं कर सकता था; इसलिए मैंने उसे यह बात बता दी।

श्री अर्नशॉ अपने बच्चों के मज़ाक नहीं समझते थे: वे हमेशा उनके साथ सख्त और गंभीर रहे थे; और कैथरीन को भी समझ नहीं आता था कि उनके पिता अपनी बीमारी में जवानी के दिनों की तुलना में ज़्यादा चिड़चिड़े और कम धैर्यवान क्यों हो गए हैं। उनकी चिड़चिड़ी डांट-फटकार से कैथरीन को उन्हें चिढ़ाने में शरारती आनंद आता था: वह तब सबसे ज़्यादा खुश होती थी जब हम सब मिलकर उसे डांटते थे और वह अपनी बेबाक, शरारती नज़र और तीखे शब्दों से हमें चुनौती देती थी; जोसेफ के धार्मिक श्रापों का मज़ाक उड़ाती थी, मुझे चिढ़ाती थी और ठीक वही करती थी जो उसके पिता को सबसे ज़्यादा नापसंद था — यह दिखाती थी कि उसकी बनावटी बदतमीज़ी, जिसे वे असली समझते थे, हीथक्लिफ पर उनकी दयालुता से कहीं ज़्यादा असर डालती थी: कि लड़का उसकी हर बात मानता था, और उसकी बात तभी मानता था जब वह उसकी अपनी इच्छा के अनुरूप होती थी। दिन भर जितना हो सके उतना बुरा बर्ताव करने के बाद, वह कभी-कभी रात को उसे मनाने आती थी। 'नहीं, कैथी,' बूढ़ा आदमी कहता, 'मैं तुमसे प्यार नहीं कर सकता, तुम अपने भाई से भी बदतर हो।' जाओ, प्रार्थना करो, बच्ची, और ईश्वर से क्षमा मांगो। मुझे संदेह है कि तुम्हारी माँ और मुझे पछतावा होगा कि हमने तुम्हें पाला-पोसा!’ यह सुनकर वह पहले तो रोने लगी; फिर लगातार ठुकराए जाने से उसका रवैया कठोर हो गया, और अगर मैं उससे कहती कि वह अपनी गलतियों के लिए खेद व्यक्त करे और क्षमा मांगे, तो वह हंसने लगती।

लेकिन अंततः वह घड़ी आ ही गई जिसने श्री अर्नशॉ के इस धरती के कष्टों का अंत कर दिया। अक्टूबर की एक शाम, वे अपनी कुर्सी पर, आग के पास बैठे-बैठे शांति से चल बसे। घर के चारों ओर तेज़ हवा चल रही थी और चिमनी से गड़गड़ाहट

की आवाज़ आ रही थी: यह तूफ़ानी और भयानक लग रही थी, फिर भी ठंड नहीं थी, और हम सब साथ थे - मैं चूल्हे से थोड़ी दूर, बुनाई में व्यस्त थी, और जोसेफ मेज के पास अपनी बाइबिल पढ़ रहे थे (क्योंकि नौकर आमतौर पर अपना काम खत्म होने के बाद घर में ही बैठते थे)। मिस कैथी बीमार थीं, और इसी वजह से वे शांत बैठी थीं; वे अपने पिता के घुटने से टेक लगाकर बैठी थीं, और हीथक्लिफ फर्श पर लेटा हुआ था, उसका सिर उनकी गोद में था। मुझे याद है, सोने से पहले गुरुजी उसके सुंदर बालों को सहला रहे थे—उन्हें उसे इतना शांत देखना बहुत अच्छा लगता था—और कह रहे थे, ‘कैथी, तुम हमेशा अच्छी लड़की क्यों नहीं बन सकती?’ उसने अपना चेहरा उनकी ओर किया, हँसी और जवाब दिया, ‘पिताजी, आप हमेशा अच्छे पुरुष क्यों नहीं बन सकते?’ लेकिन जैसे ही उसने उन्हें फिर से परेशान देखा, उसने उनके हाथ को चूमा और कहा कि वह उन्हें लोरी सुनाकर सुलाएगी। वह बहुत धीमी आवाज़ में गाने लगी, जब तक कि उनकी उंगलियाँ उसके हाथों से छूट नहीं गईं और उनका सिर उनकी छाती पर झुक गया। तब मैंने उसे चुप रहने और हिलने-डुलने से मना किया, कहीं ऐसा न हो कि वह उन्हें जगा दे। हम सब पूरे आधे घंटे तक बिल्कुल चुप रहे, और इससे भी ज़्यादा देर तक चुप रहना चाहते थे, लेकिन जोसेफ, अपना अध्याय समाप्त करने के बाद, उठ गया और कहा कि उसे गुरुजी को प्रार्थना और सोने के लिए जगाना होगा। वह आगे बढ़ा, उनका नाम लेकर पुकारा और उनके कंधे को छुआ; लेकिन वे हिले नहीं: इसलिए उसने मोमबत्ती ली और उनकी ओर देखा। मुझे लगा कि कुछ गड़बड़ है क्योंकि उसने रोशनी नीचे रख दी थी; और उसने बच्चों को बांहों से पकड़कर फुसफुसाते हुए कहा, 'ऊपर चले जाओ और ज्यादा शोर मत करो - तुम उस शाम अकेले प्रार्थना कर सकते हो - उसे कुछ काम है।'

‘पहले मैं पिताजी को शुभ रात्रि कह दूँगी,’ कैथरीन ने हमें रोकने से पहले ही उनके गले में बाहें डाल दीं। बेचारी को तुरंत अपने नुकसान का एहसास हुआ – वह चीख पड़ी – ‘ओह, वह मर गए, हीथक्लिफ! वह मर गए!’ और दोनों एक दिल दहला देने वाले रोने लगे।

मैं भी उनके साथ ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी; लेकिन जोसेफ ने पूछा कि स्वर्ग में एक संत के लिए हम इस तरह क्यों रो रहे हैं? उन्होंने मुझे अपना लबादा पहनने और डॉक्टर और पादरी को लाने के लिए गिम्मर्टन जाने को कहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उस समय उनकी क्या ज़रूरत होगी। फिर भी, मैं तेज़ हवा और बारिश में गई

और डॉक्टर को वापस ले आई; दूसरे ने कहा कि वह सुबह आएगा। जोसेफ को बात समझाने के लिए छोड़कर, मैं बच्चों के कमरे में भागी: उनका दरवाज़ा थोड़ा खुला था, मैंने देखा कि आधी रात हो जाने के बाद भी वे लेटे नहीं थे; लेकिन वे शांत थे और उन्हें मेरी सांत्वना की ज़रूरत नहीं थी। नन्हे बच्चे एक-दूसरे को ऐसी बातें बता रहे थे जो मैं सोच भी नहीं सकती थी: दुनिया में किसी भी पादरी ने स्वर्ग का इतना सुंदर वर्णन नहीं किया होगा जितना उन्होंने अपनी मासूम बातों में किया; और जब मैं सिसकते हुए सुन रही थी, तो मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकी कि काश हम सब वहाँ सुरक्षित होते।

अध्याय VI

श्री हिंडले अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए घर आए; और - एक ऐसी बात जिसने हमें आश्चर्यचकित कर दिया और पड़ोसियों में खूब चर्चा का विषय बन गया - वे अपने साथ अपनी पत्नी को भी लाए थे। वह कौन थी और कहाँ पैदा हुई थी, यह उन्होंने हमें कभी नहीं बताया: शायद, उसके पास न तो धन था और न ही कोई प्रतिष्ठा, वरना वह अपने पिता से इस विवाह को छुपाने की ज़हमत नहीं उठाते।

वह ऐसी नहीं थी जो अपने कारण घर में ज्यादा हलचल मचाती। दहलीज पार करते ही उसे हर चीज से खुशी मिलती थी; उसके आसपास घटने वाली हर घटना से भी; सिवाय अंतिम संस्कार की तैयारियों और शोक मनाने वालों की उपस्थिति के। मुझे लगा कि उस दौरान उसका व्यवहार कुछ अजीब सा था: वह अपने कमरे में भागी और मुझे भी अपने साथ ले गई, जबकि मैं बच्चों को कपड़े पहना रही थी: और वहाँ वह कांपती हुई, हाथ जोड़कर बैठी बार-बार पूछ रही थी - 'क्या वे चले गए?' फिर वह उन्मादी भाव से बताने लगी कि अंधेरा देखने से उस पर क्या असर पड़ता है; वह चौंक गई, कांपने लगी और अंत में रोने लगी - और जब मैंने पूछा कि क्या हुआ, तो उसने जवाब दिया कि उसे नहीं पता; लेकिन उसे मरने से बहुत डर लग रहा था! मुझे लगा

कि उसकी मृत्यु की संभावना उतनी ही कम थी जितनी मेरी। वह दुबली-पतली थी, लेकिन जवान और निखरी हुई थी, और उसकी आँखें हीरे की तरह चमकती थीं। मैंने यह जरूर गौर किया कि सीढ़ियाँ चढ़ते समय उसकी साँसें बहुत तेज हो जाती थीं; ज़रा सी भी अचानक आवाज़ से वह कांप उठती थी, और कभी-कभी उसे बहुत खांसी आती थी: लेकिन मुझे इन लक्षणों के बारे में कुछ भी पता नहीं था, और मुझे उसके प्रति सहानुभूति दिखाने का कोई मन नहीं हुआ। श्रीमान लॉकवुड, हम यहाँ आम तौर पर विदेशियों को पसंद नहीं करते, जब तक कि वे पहले हमें पसंद न करें।

तीन साल की अनुपस्थिति में युवा अर्नशॉ में काफी बदलाव आ गया था। वह दुबले-पतले हो गए थे, उनका रंग फीका पड़ गया था, और उनकी बोलने और पहनने का तरीका भी बिल्कुल बदल गया था; और, जिस दिन वह लौटे, उसी दिन उन्होंने जोसेफ और मुझसे कहा कि अब से हमें पीछे वाले रसोईघर में ही रहना होगा और घर उनके लिए छोड़ देना होगा। दरअसल, वह एक छोटे से खाली कमरे में कालीन और वॉलपेपर लगवाकर उसे बैठक में बदलना चाहते थे; लेकिन उनकी पत्नी ने सफेद फर्श, विशाल जलती हुई चिमनी, पीतल के बर्तनों, दराजों, कुत्ते के पिंजरे और उस विशाल जगह को देखकर इतनी खुशी जताई जहाँ वे आमतौर पर बैठते थे, कि उन्हें लगा कि यह उनकी सुविधा के लिए आवश्यक नहीं है, और इसलिए उन्होंने यह विचार छोड़ दिया।

नए परिचितों में अपनी बहन पाकर वह प्रसन्न भी हुई; शुरुआत में वह कैथरीन से खूब बातें करती, उसे चूमती, उसके साथ खेलती-कूदती और उसे ढेरों उपहार देती रही। लेकिन उसका स्नेह बहुत जल्द ही फीका पड़ गया, और जब वह चिड़चिड़ी हो गई, तो हिंडले अत्याचारी बन गया। हीथक्लिफ के प्रति नापसंदगी जताते हुए उसके कुछ शब्द ही हिंडले के मन में उस लड़के के प्रति पुरानी नफरत को फिर से जगाने के लिए काफी थे। उसने हीथक्लिफ को नौकरों के पास भेज दिया, उसे पादरी के निर्देशों से वंचित कर दिया, और उस पर बाहर काम करने का दबाव डाला; उसे खेत के अन्य लड़कों की तरह ही कड़ी मेहनत करने के लिए मजबूर किया।

हीथक्लिफ ने शुरू में अपनी बदहाली को काफी अच्छी तरह सहन किया, क्योंकि कैथी ने उसे वह सब सिखाया जो उसने सीखा था, और खेतों में उसके साथ काम करती या खेलती थी। दोनों ने जंगली लोगों की तरह असभ्य बनने का पक्का इरादा कर लिया था; युवा मालिक उनके व्यवहार और हरकतों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता

था, इसलिए वे उससे दूर रहते थे। रविवार को चर्च जाने के बाद तो वह उन्हें देखता भी नहीं था, केवल जोसेफ और पादरी ही उनकी लापरवाही पर उन्हें डांटते थे जब वे अनुपस्थित रहते थे; और इससे उसे याद आता था कि हीथक्लिफ को कोड़े मारने का आदेश दे और कैथरीन को दोपहर या रात के खाने से परहेज करने को कह दे। लेकिन सुबह-सुबह मैदानों में भाग जाना और सारा दिन वहीं रहना उनके मुख्य मनोरंजनों में से एक था, और बाद में मिलने वाली सजा उनके लिए हंसी का पात्र बन गई थी। पादरी कैथरीन को याद करने के लिए जितने चाहे उतने अध्याय दे सकता था, और जोसेफ हीथक्लिफ को तब तक पीट सकता था जब तक उसकी बांह में दर्द न होने लगे; जैसे ही वे फिर से एक साथ होते, वे सब कुछ भूल जाते: कम से कम जैसे ही वे बदला लेने की कोई शरारती योजना बना लेते; और कई बार मैं उन्हें दिन-प्रतिदिन और अधिक लापरवाह होते देखकर मन ही मन रोई हूँ, और उन अनाथ प्राणियों पर जो थोड़ा-बहुत अधिकार बचा था, उसे खोने के डर से एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं कर पाई। एक रविवार शाम, संयोग से उन्हें बैठक कक्ष से बाहर निकाल दिया गया था, क्योंकि उन्होंने शोर मचाया था या इसी तरह की कोई छोटी-मोटी गलती की थी; और जब मैं उन्हें रात के खाने पर बुलाने गई, तो वे कहीं नहीं मिले। हमने घर में ऊपर-नीचे, आँगन और अस्तबल में भी तलाशा; वे कहीं नहीं दिखे: और अंत में, हिंडले ने गुस्से में आकर हमें दरवाजे बंद करने को कहा और कसम खाई कि उस रात कोई उन्हें अंदर नहीं आने देगा। घरवाले सो गए; और मैं भी, सोने के लिए उत्सुक, अपनी खिड़की खोलकर बारिश में भी बाहर झाँकने लगी: मैंने ठान लिया था कि अगर वे वापस आए तो मनाही के बावजूद उन्हें अंदर आने दूँगी। थोड़ी देर में, मुझे सड़क पर कदमों की आहट सुनाई दी, और लालटेन की रोशनी फाटक से टिमटिमाती हुई दिखाई दी। मैंने अपने सिर पर शॉल ओढ़ लिया और दौड़कर मिस्टर अर्नशॉ को दरवाजा खटखटाकर जगाने से रोकने की कोशिश की। वहाँ हीथक्लिफ अकेला खड़ा था: उसे अकेले देखकर मैं चौंक गई।

'मिस कैथरीन कहाँ हैं?' मैंने जल्दी से पूछा। 'उम्मीद है कोई दुर्घटना तो नहीं हुई?' 'थ्रशक्रॉस ग्रेंज में,' उन्होंने जवाब दिया; 'और मैं भी वहीं होता, लेकिन उनमें मुझे रुकने के लिए कहने की तमीज़ नहीं थी।' 'अच्छा, अब तो तुम्हें भी भुगतना पड़ेगा!' मैंने कहा: 'जब तक तुम्हें अपना काम नहीं मिल जाता, तब तक तुम्हें चैन नहीं मिलेगा। आखिर किस बात ने तुम्हें थ्रशक्रॉस ग्रेंज तक पहुँचाया?' 'मुझे अपने गीले कपड़े

उतारने दो, फिर मैं तुम्हें सब कुछ बताता हूँ, नेली,' उन्होंने जवाब दिया। मैंने उन्हें मालिक को जगाने से मना किया, और जब तक उन्होंने कपड़े उतारे और मैं मोमबत्ती बुझाने का इंतज़ार कर रही थी, तब तक वे बोलते रहे— 'कैथी और मैं कपड़े धोने के कमरे से निकलकर घूमने निकल गए, और ग्रेंज की रोशनी देखकर हमने सोचा कि चलो जाकर देखते हैं कि क्या लिंटन परिवार अपनी रविवार की शामें ठंड से कांपते हुए कोनों में बिताता है, जबकि उनके माता-पिता खाते-पीते, गाते-हंसते और आग के सामने बैठकर अपनी आँखें गड़ाते रहते हैं। क्या तुम्हें लगता है कि वे ऐसा करते हैं?' या फिर उपदेश पढ़ना, नौकर द्वारा धार्मिक शिक्षा लेना, और अगर वे सही जवाब न दें तो उन्हें बाइबल के नामों की एक पूरी सूची याद करने के लिए कहा जाता है?' 'शायद नहीं,' मैंने जवाब दिया। 'वे अच्छे बच्चे हैं, इसमें कोई शक नहीं, और तुम्हारे बुरे व्यवहार के लिए तुम्हारे साथ जो बर्ताव हो रहा है, वे उसके लायक नहीं हैं।' 'बकवास मत करो, नेली,' उसने कहा: 'बकवास! हम हाइट्स की चोटी से पार्क तक बिना रुके दौड़े - कैथरीन दौड़ में पूरी तरह हार गई, क्योंकि वह नंगे पैर थी। तुम्हें कल दलदल में उसके जूते ढूंढने पड़ेंगे। हम एक टूटी हुई झाड़ी से रेंगते हुए निकले, रास्ते पर टटोलते हुए ऊपर चढ़े, और ड्राइंग रूम की खिड़की के नीचे फूलों के बगीचे में बैठ गए। रोशनी वहीं से आ रही थी; उन्होंने शटर नहीं लगाए थे, और पर्दे आधे ही बंद थे। हम दोनों तहखाने में खड़े होकर और पट्ट को पकड़कर अंदर देख पाए, और हमने देखा - आह!' वह जगह बेहद खूबसूरत थी—लाल रंग के कालीनों से सजी एक शानदार जगह, लाल रंग से ढकी कुर्सियाँ और मेजें, और सोने की किनारी वाली शुद्ध सफेद छत, जिसके बीच में चांदी की जंजीरों से लटकती कांच की बूँदें थीं, और उन पर हल्की-हल्की मोमबत्तियाँ झिलमिला रही थीं। बूढ़े श्रीमान और श्रीमती लिंटन वहाँ नहीं थे; एडगर और उसकी बहनें वहाँ अकेले थे। क्या उन्हें खुश नहीं होना चाहिए था? हमें तो स्वर्ग में होने का एहसास हो रहा था! और अब, अंदाज़ा लगाइए कि आपके प्यारे बच्चे क्या कर रहे थे? इसाबेला—मुझे लगता है वह ग्यारह साल की है, कैथी से एक साल छोटी —कमरे के दूसरे छोर पर चीख रही थी, ऐसे चिल्ला रही थी जैसे चुड़ैलें उसे गर्म सुइयाँ चुभो रही हों। एडगर चूल्हे पर खड़ा चुपचाप रो रहा था, और मेज के बीच में एक छोटा कुत्ता बैठा था, अपना पंजा हिला रहा था और भौंक रहा था; उनके आपसी आरोपों से हमें समझ आया कि उन्होंने उसे लगभग दो टुकड़ों में तोड़ दिया था। बेवकूफ! यही तो उनका मज़ा था! हम इस बात पर झगड़ते थे कि गर्म बालों का ढेर

कौन पकड़ेगा, और दोनों रोने लगते थे क्योंकि दोनों ने उसे पाने के लिए संघर्ष करने के बाद भी उसे लेने से इनकार कर दिया था। हम उन लाड़ले जानवरों पर खुलकर हँसते थे; हम उनसे घृणा करते थे! आप मुझे कब कैथरीन की इच्छा पूरी करने की कामना करते हुए पाएंगे? या हमें अकेले, चिल्लाते, सिसकते और ज़मीन पर लोटते हुए, पूरे कमरे से अलग होकर मनोरंजन करते हुए पाएंगे? मैं अपनी इस हालत को हज़ार जिंदगियों के बदले भी थ्रशक्रॉस ग्रेंज में एडगर लिंटन की हालत से नहीं बदलूंगा - चाहे मुझे जोसेफ को सबसे ऊंचे चेबल से फेंकने और घर के अग्रभाग को हिंडले के खून से रंगने का सौभाग्य ही क्यों न मिल जाए!

'चुप रहो, चुप रहो!' मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'हीथक्लिफ, तुमने अभी तक मुझे यह नहीं बताया कि कैथरीन को कैसे पीछे छोड़ दिया गया है?'

'मैंने तुमसे कहा था कि हम हँसे थे,' उसने जवाब दिया। 'लिंटन परिवार ने हमारी आवाज़ सुन ली और एक साथ तीर की तरह दरवाज़े की ओर भागे; सन्नाटा छा गया, फिर एक चीख सुनाई दी, "ओह, मम्मा, मम्मा! ओह, पापा! ओह, मम्मा, इधर आओ। ओह, पापा, ओह!" वे सचमुच इसी तरह चिल्लाए। हमने उन्हें और डराने के लिए भयानक आवाज़ें निकालीं, और फिर हम छज्जे से नीचे कूद गए, क्योंकि कोई सलाखों को खींच रहा था, और हमें लगा कि भाग जाना ही बेहतर है। मैंने कैथी का हाथ पकड़ा हुआ था और उसे आगे बढ़ने के लिए कह रहा था, तभी अचानक वह गिर पड़ी। "भागो, हीथक्लिफ, भागो!" वह फुसफुसाई। "उन्होंने बुलडॉग को खुला छोड़ दिया है, और उसने मुझे पकड़ रखा है!" शैतान ने उसका टखना पकड़ लिया था, नेली: मैंने उसकी भयानक गुर्राहट सुनी। वह चिल्लाई नहीं — नहीं! अगर उसे पागल गाय के सींगों पर थूक दिया जाता, तब भी वह ऐसा करने से कतराती।' मैंने ऐसा किया: मैंने इतनी गालियाँ बरसाईं कि ईसाई जगत के किसी भी शैतान का नाश हो जाए; और मैंने एक पत्थर उठाया और उसे उसके जबड़ों के बीच में घुसा दिया, और पूरी ताकत से उसे उसके गले में ठूंसने की कोशिश की। अंत में एक क्रूर नौकर लालटेन लेकर आया और चिल्लाया - "ठोकर रहो, स्कल्कर, ठोकर रहो!" हालाँकि, स्कल्कर का खेल देखकर उसका स्वर बदल गया। कुत्ते का गला घोंट दिया गया; उसकी विशाल, बैंगनी जीभ उसके मुँह से आधा फुट बाहर लटक रही थी, और उसके लटकते होंठों से खूनी लार बह रही थी। उस आदमी ने कैथी को उठाया; वह बीमार थी: मुझे यकीन है कि डर से नहीं, बल्कि दर्द से। वह उसे अंदर ले गया; मैं बड़बड़ाते

हुए, गालियाँ और बदला लेते हुए उसके पीछे गया। "क्या शिकार, रॉबर्ट?" लिंटन ने प्रवेश द्वार से आवाज़ लगाई। "स्कल्कर ने एक छोटी लड़की को पकड़ लिया है, महोदय," उसने उत्तर दिया; “और यहाँ एक लड़का है,” उसने मेरी ओर झपट्टा मारते हुए कहा, “जो बिलकुल चोर जैसा दिखता है! बिल्कुल उन लुटेरों जैसा, जिन्होंने सबके सो जाने के बाद दरवाज़े खोलने के लिए उसे खिड़की से अंदर भेजा था, ताकि वे आराम से हमारी हत्या कर सकें। अपनी ज़बान बंद रखो, बदज़ुबान चोर! इसके लिए तुम्हें फांसी पर चढ़ना पड़ेगा। श्रीमान लिंटन, महोदय, अपनी बंदूक मत रखिए।” “नहीं, नहीं, रॉबर्ट,” उस बूढ़े मूर्ख ने कहा। “उन बदमाशों को पता था कि कल मेरा किराया देने का दिन था: उन्होंने मुझे चालाकी से फंसाने की सोची। अंदर आओ; मैं उनका स्वागत करता हूँ। देखो, जॉन, जंजीर लगा दो। जेनी, स्कल्कर को थोड़ा पानी दो। एक मजिस्ट्रेट को उसके गढ़ में, और वह भी रविवार के दिन, चुनौती देना! उनकी गुस्ताखी कहाँ तक जाएगी? ओह, मेरी प्यारी मैरी, इधर देखो! डरो मत, यह तो बस एक लड़का है – फिर भी उस दुष्ट के चेहरे पर साफ-साफ घुरघुराहट दिख रही है; क्या देश के लिए यह बेहतर नहीं होगा कि उसे तुरंत फांसी दे दी जाए, इससे पहले कि वह अपने हाव-भाव और हरकतों से अपना असली रूप दिखा दे?” उसने मुझे झूमर के नीचे खींच लिया, और श्रीमती लिंटन ने अपना चश्मा नाक पर रखा और डर से हाथ ऊपर उठा लिए। डरपोक बच्चे भी पास रेंगते हुए आए, इसाबेला तुतलाते हुए बोली – “भयानक चीज़! इसे तहखाने में डाल दो, पापा। यह बिल्कुल उस ज्योतिषी के बेटे जैसा है जिसने मेरा पालतू तीतर चुराया था। है ना, एडगर?”

जब वे मेरी जाँच कर रहे थे, कैथी को होश आया; उसने आखिरी भाषण सुना और हँस पड़ी। एडगर लिंटन ने उत्सुकता से घूरने के बाद, उसे पहचानने के लिए पर्याप्त बुद्धि जुटाई। आप जानते हैं, वे हमें चर्च में देखते हैं, हालाँकि हम उन्हें कहीं और कम ही मिलते हैं। “क्या ये मिस अर्नशॉ हैं?” उसने अपनी माँ से फुसफुसाते हुए कहा, “और देखो कैसे स्कल्कर ने उन्हें काट लिया है - उनके पैर से कितना खून बह रहा है!”

“मिस अर्नशॉ? बकवास!” महिला चिल्लाई; “मिस अर्नशॉ एक जिप्सी के साथ देश भर में घूम रही हैं! और फिर भी, मेरी प्यारी, बच्ची शोक में है - निश्चित रूप से है - और वह जीवन भर के लिए अपाहिज हो सकती है!”

“उसके भाई की कितनी घोर लापरवाही है!” श्री लिंटन ने मेरी ओर से कैथरीन की

ओर मुड़ते हुए कहा। “मैंने शील्डर्स से सुना है” (वह पादरी थे, महोदय) “कि वह उसे घोर नास्तिकता में पलने-बढ़ने देता है। लेकिन यह कौन है? इसे यह साथी कहाँ से मिला? ओहो! मैं कसम खाता हूँ कि यह वही अजीब साथी है जो मेरे दिवंगत पड़ोसी ने लिवरपूल की यात्रा के दौरान पाया था - कोई छोटा लास्कर, या कोई अमेरिकी या स्पेनिश जहाज़ का यात्री।”

“कम से कम एक दुष्ट लड़का तो है ही,” बूढ़ी औरत ने कहा, “और एक सभ्य घर के लिए बिलकुल अनुपयुक्त! क्या तुमने उसकी भाषा पर ध्यान दिया, लिंटन? मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि मेरे बच्चों ने उसे सुना होगा।”

मैंने फिर से गाली-गलौज शुरू कर दी — गुस्सा मत करो, नेली — और इसलिए रॉबर्ट को मुझे ले जाने का आदेश दिया गया। मैंने कैथी के बिना जाने से इनकार कर दिया; वह मुझे बगीचे में घसीटकर ले गया, मेरे हाथ में लालटेन थमा दी, मुझे आश्वासन दिया कि श्री अर्नशॉ को मेरे व्यवहार के बारे में सूचित किया जाएगा, और मुझे तुरंत चलने का आदेश देकर दरवाजा फिर से बंद कर दिया। पर्दे अभी भी एक कोने से मुड़े हुए थे, और मैंने जासूस के रूप में अपनी जगह फिर से ले ली; क्योंकि, अगर कैथरीन वापस आना चाहती, तो मैं उनके बड़े-बड़े शीशे के टुकड़ों को लाखों टुकड़ों में तोड़ देने का इरादा रखती, जब तक कि वे उसे बाहर नहीं जाने देते। वह चुपचाप सोफे पर बैठ गई। श्रीमती लिंटन ने दूधवाली का धूसर लबादा उतार दिया, जिसे हमने सैर के लिए उधार लिया था, अपना सिर हिलाते हुए और उससे कुछ कहते हुए, मुझे लगता है: वह एक युवती थी, और वे उसके और मेरे साथ व्यवहार में अंतर करते थे। फिर नौकरानी गर्म पानी का एक बेसिन लाई, और उसके पैर धोए; और श्री लिंटन ने एक गिलास नेगस (एक प्रकार का सूप) मिलाया, और इसाबेला ने केक से भरी एक प्लेट अपनी गोद में उड़ेल ली, और एडगर दूर से देखता रह गया। बाद में, उन्होंने उसके सुंदर बालों को सुखाया और कंघी की, और उसे एक जोड़ी बड़ी चप्पलें दीं, और उसे आग के पास ले गए; और मैंने उसे वहीं छोड़ दिया, वह जितनी खुश हो सकती थी, उतनी खुश थी, अपना खाना छोटे कुत्ते और स्कल्कर के बीच बाँट रही थी, जिसकी नाक वह खाते समय चुटकी काट रही थी; और लिंटन परिवार की खाली नीली आँखों में उत्साह की एक चिंगारी जगा रही थी - उसके अपने मनमोहक चेहरे की एक धुंधली झलक। मैंने देखा कि वे मूर्खतापूर्ण प्रशंसा से भरे हुए थे; वह उनसे कहीं अधिक श्रेष्ठ है - पृथ्वी पर हर किसी से, है ना, नेली?

‘इस मामले का नतीजा तुम्हारी सोच से कहीं ज़्यादा बुरा होगा,’ मैंने उसे ढकते हुए और रोशनी बुझाते हुए जवाब दिया। ‘हीथक्लिफ, तुम सुधरने वाले नहीं हो; और मिस्टर हिंडले को हद पार करनी पड़ेगी, देखना अगर वो न करें तो।’ मेरी बात मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा सच साबित हुई। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने अर्नशॉ को बेहद गुस्सा दिला दिया। फिर मिस्टर लिंटन ने मामले को सुलझाने के लिए अगले दिन खुद हमसे मिलने आए और युवा मालिक को उसके परिवार के आचरण के बारे में इतनी खरी-खोटी सुनाई कि वह गंभीरता से सोचने पर मजबूर हो गया। हीथक्लिफ को कोड़े तो नहीं मारे गए, लेकिन उसे कहा गया कि मिस कैथरीन से बोला गया पहला शब्द ही उसकी बर्खास्तगी का कारण बनेगा; और श्रीमती अर्नशॉ ने घर लौटने पर अपनी भाभी को काबू में रखने का जिम्मा लिया; उन्होंने चालाकी से काम लिया, बल प्रयोग से नहीं: बल प्रयोग से यह नामुमकिन था।

अध्याय VII

कैथी क्रिसमस तक पाँच सप्ताह थ्रशक्रॉस ग्रेंज में रही। तब तक उसका टखना पूरी तरह ठीक हो चुका था और उसके व्यवहार में काफी सुधार आ गया था। इस बीच मालकिन उससे अक्सर मिलने आती थी और उसे अच्छे कपड़े पहनाकर और उसकी चापलूसी करके उसका आत्मसम्मान बढ़ाने की कोशिश में सुधार की योजना शुरू की, जिसे उसने आसानी से स्वीकार कर लिया; इसलिए, घर में कूदने वाली और हम सबको बेदम कर देने वाली एक जंगली, बिना टोपी वाली छोटी बच्ची के बजाय, एक सुंदर काले टट्टू से एक बहुत ही गरिमापूर्ण महिला उतरी, जिसके भूरे घुंघराले बाल पंखों वाले बीवर के आवरण से बाहर गिर रहे थे और एक लंबा कपड़ा लबादा था, जिसे उसे दोनों हाथों से ऊपर उठाना पड़ रहा था ताकि वह उसमें आसानी से चल सके। हिंडले ने उसे घोड़े से उठाया और खुशी से कहा, 'अरे, कैथी, तुम तो बहुत सुंदर

हो! मैं तुम्हें पहचान ही नहीं पाया: अब तुम एक सभ्य महिला जैसी दिखती हो। इसाबेला लिंटन की तुलना उससे नहीं की जा सकती, है ना, फ्रांसिस?' 'इसाबेला में उसके प्राकृतिक गुण नहीं हैं,' उसकी पत्नी ने उत्तर दिया: 'लेकिन उसे ध्यान रखना चाहिए और यहाँ फिर से जंगली नहीं बनना चाहिए।' एलेन, मिस कैथरीन को उनका सामान उतारने में मदद करो— रुको, प्यारी, तुम अपने बालों को बिखेर दोगी— मुझे तुम्हारी टोपी खोलने दो।

मैंने अपना वस्त्र उतारा, और उसके नीचे एक भव्य चेकदार रेशमी फ्रॉक, सफेद पतलून और चमकीले जूते चमक रहे थे; और जब कुत्ते दौड़ते हुए उसका स्वागत करने आए तो उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं, लेकिन उसने उन्हें छूने की हिम्मत नहीं की, कहीं वे उसके शानदार वस्त्रों की तारीफ न करने लगें। उसने मुझे धीरे से चूमा: क्रिसमस केक बनाते समय मैं आटे से सना हुआ था, और मुझे गले लगाना ठीक नहीं होता; और फिर उसने हीथक्लिफ को ढूंढने के लिए चारों ओर देखा। श्रीमान और श्रीमती अर्नशॉ उनकी मुलाकात को उत्सुकता से देख रहे थे; सोच रहे थे कि इससे उन्हें कुछ हद तक यह अंदाजा लग जाएगा कि दोनों दोस्तों को अलग करने में सफल होने की उनकी उम्मीद का क्या आधार है।

हीथक्लिफ को पहले तो ढूंढना मुश्किल था। कैथरीन के जाने से पहले अगर वह लापरवाह और उपेक्षित था, तो उसके जाने के बाद तो वह दस गुना ज़्यादा लापरवाह हो गया था। मेरे सिवा किसी ने भी उसे गंदा लड़का कहकर हफ्ते में एक बार नहाने के लिए कहने की जहमत नहीं उठाई; और उसकी उम्र के बच्चों को साबुन और पानी में शायद ही कभी कोई आनंद आता है। इसलिए, उसके कपड़ों की तो बात ही छोड़िए, जो तीन महीने कीचड़ और धूल में पड़े रहे थे, और उसके घने, बिना कंघी किए बालों की, उसके चेहरे और हाथों की त्वचा भी बुरी तरह से मैली थी। घर में अपने जैसे किसी खुरदुरे आदमी के आने की उम्मीद के बजाय, इतनी सुंदर और आकर्षक युवती को देखकर वह शायद सोफे के पीछे छिप जाता। 'क्या हीथक्लिफ यहाँ नहीं है?' उसने अपने दस्ताने उतारते हुए पूछा, और अपनी उंगलियाँ दिखाईं जो घर में कुछ न करने और बैठे रहने से बेहद सफेद हो गई थीं।

‘हीथक्लिफ, तुम आगे आ सकते हो,’ श्री हिंडले ने उसकी हार का आनंद लेते हुए और उसे एक खूंखार बदमाश के रूप में प्रस्तुत होते देखकर प्रसन्नता जताते हुए कहा। ‘तुम आकर मिस कैथरीन का स्वागत कर सकते हो, जैसे अन्य नौकरों ने किया है।’

कैथी ने अपने दोस्त को छिपते हुए देखा और उसे गले लगाने के लिए दौड़ पड़ी; उसने एक ही पल में उसके गालों पर सात-आठ चुंबन दिए, फिर रुक गई और पीछे हटकर खिलखिलाकर हंस पड़ी, 'अरे, तुम कितने गुस्से में और चिड़चिड़े लग रहे हो! और कितने - कितने मज़ेदार और गंभीर! लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे एडगर और इसाबेला लिंटन की आदत है। अच्छा, हीथक्लिफ, क्या तुम मुझे भूल गए हो?'

उसके पास यह सवाल पूछने का कुछ कारण था, क्योंकि शर्म और अहंकार ने उसके चेहरे पर दोहरा दुख का साया डाल दिया था और उसे अविचलित बनाए रखा था।

श्री अर्नशॉ ने तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा, 'हीथक्लिफ, हाथ मिलाओ; एक बार, जिस तरह से अनुमति हो।'

‘मैं नहीं करूँगा,’ लड़के ने आखिरकार बोलते हुए कहा; ‘मैं हँसी का पात्र नहीं बनूँगा। मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगा!’ और वह उस घेरे से बाहर निकलना ही चाहता था कि मिस कैथी ने उसे फिर से पकड़ लिया।

‘मेरा इरादा तुम पर हंसने का नहीं था,’ उसने कहा; ‘मैं खुद को रोक नहीं पाई: हीथक्लिफ, कम से कम हाथ तो मिला लो! तुम इतने रूठे क्यों हो? बस तुम अजीब लग रहे थे। अगर तुम अपना चेहरा धो लो और बाल संवार लो, तो सब ठीक हो जाएगा: लेकिन तुम इतने गंदे हो!’

उसने चिंता से अपनी उंगलियों को देखा जो उसके हाथों में थीं, और साथ ही अपनी पोशाक को भी देखा; उसे डर था कि उसके संपर्क में आने से उसकी पोशाक में कोई निखार नहीं आया होगा।

‘तुम्हें मुझे छूने की ज़रूरत नहीं थी!’ उसने उसकी आँखों का पीछा करते हुए और अपना हाथ झटकते हुए जवाब दिया। ‘मैं जितना चाहूँ उतना गंदा रहूँगा: और मुझे गंदा रहना पसंद है, और मैं गंदा रहूँगा।’

इतना कहकर वह कमरे से सिर के बल बाहर निकल गया, जिससे मालिक और मालकिन में हंसी का माहौल छा गया और कैथरीन काफी परेशान हो गई; वह समझ नहीं पा रही थी कि उसकी बातों से उसे इतना गुस्सा क्यों आया।

नए मेहमान की सेवा करने, अपने केक ओवन में रखने और क्रिसमस की पूर्व संध्या के अनुरूप घर और रसोई को बड़ी-बड़ी आग जलाकर खुशनुमा बनाने के बाद, मैं अकेले बैठकर कैरोल गाने की तैयारी करने लगी; भले ही जोसेफ ने कहा था कि

मेरे चुने हुए मधुर गीत उसे गानों के समान ही लगते हैं। वह अपने कमरे में प्रार्थना करने चला गया था, और श्रीमान और श्रीमती अर्नशॉ मिस्सी का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए तरह-तरह के छोटे-छोटे उपहार खरीद रहे थे, ताकि वह उन्हें लिंटन परिवार को उनकी दयालुता के लिए भेंट कर सके। उन्होंने उन्हें अगले दिन वुदरिंग हाइट्स में बिताने के लिए आमंत्रित किया था, और निमंत्रण एक शर्त पर स्वीकार कर लिया गया था: श्रीमती लिंटन ने निवेदन किया कि उनके बच्चों को उस 'शरारती, गाली देने वाले लड़के' से सावधानीपूर्वक दूर रखा जाए।

इन परिस्थितियों में मैं अकेली रह गई। मुझे गर्म मसालों की मनमोहक खुशबू आ रही थी; और मैं रसोई के चमचमाते बर्तनों, होली से सजी पॉलिश की हुई घड़ी, रात के खाने के लिए गर्म बीयर से भरे जाने के लिए ट्रे पर सजे चांदी के मगों की प्रशंसा कर रही थी; और सबसे बढ़कर, मेरी विशेष देखभाल की बेदाग सफाई - साफ-सुथरा और अच्छी तरह से झाड़ू लगाया हुआ फर्श। मैंने मन ही मन हर वस्तु की सराहना की, और फिर मुझे याद आया कि कैसे बूढ़ा अर्नशॉ सब कुछ साफ होने के बाद आता था, मुझे 'कैंट लस्सी' कहता था, और क्रिसमस बॉक्स के रूप में मेरे हाथ में एक शिलिंग थमा देता था; और फिर मैं हीथक्लिफ के प्रति उसके स्नेह और मृत्यु के बाद उसकी उपेक्षा होने के डर के बारे में सोचने लगी: और इससे स्वाभाविक रूप से मुझे उस बेचारे लड़के की वर्तमान स्थिति के बारे में सोचने पर मजबूर होना पड़ा, और गाने के बजाय मेरा मन रोने पर मजबूर हो गया। लेकिन जल्द ही मुझे यह बात समझ में आ गई कि उसके द्वारा किए गए गलत कामों पर आंसू बहाने से कहीं अधिक समझदारी इसी में होगी: मैं उठी और उसे ढूंढने के लिए आंगन में चली गई। वह ज्यादा दूर नहीं था; मैंने उसे अस्तबल में नए टट्टू के चमकदार बालों को संवारते और रीति-रिवाज के अनुसार अन्य जानवरों को चारा खिलाते हुए पाया।

'जल्दी करो, हीथक्लिफ!' मैंने कहा, 'रसोई बहुत आरामदायक है; और जोसेफ ऊपर है: जल्दी करो, और मिस कैथी के आने से पहले मैं तुम्हें अच्छे कपड़े पहना दूं, फिर तुम दोनों साथ बैठ सकते हो, पूरे चूल्हे के पास, और सोने के समय तक खूब बातें कर सकते हो।'

वह अपना काम करता रहा और उसने मेरी तरफ कभी नहीं देखा।

'आओ—क्या तुम आ रहे हो?' मैंने आगे कहा। 'तुममें से हर एक के लिए एक छोटा केक है, लगभग पर्याप्त; और तुम्हें इसे पहनने में आधा घंटा लगेगा।'

मैंने पाँच मिनट इंतज़ार किया, लेकिन कोई जवाब न मिलने पर वह चला गया। कैथरीन ने अपने भाई और भाभी के साथ रात का खाना खाया: जोसेफ और मैं भी एक बेमेल भोजन में शामिल हुए, जिसमें एक तरफ़ फटकार और दूसरी तरफ़ शरारत भरी बातें हो रही थीं। उसका केक और पनीर रात भर मेज़ पर परियों के लिए रखा रहा। वह नौ बजे तक काम करता रहा, और फिर चुपचाप और उदास होकर अपने कमरे में चला गया। कैथी देर रात तक जागती रही, क्योंकि उसे अपने नए दोस्तों के स्वागत के लिए बहुत सारी चीज़ें व्यवस्थित करनी थीं: वह एक बार अपने पुराने दोस्त से बात करने के लिए रसोई में आई; लेकिन वह जा चुका था, और वह बस यह पूछने के लिए रुकी कि उसे क्या हुआ है, और फिर वापस चली गई। सुबह वह जल्दी उठा; और, क्योंकि छुट्टी थी, इसलिए वह अपना खराब मूड लेकर मैदानों में चला गया; परिवार के चर्च जाने तक वापस नहीं आया। उपवास और चिंतन ने उसे कुछ बेहतर महसूस कराया। वह कुछ देर मेरे आसपास मंडराता रहा, और हिम्मत जुटाकर अचानक बोला - 'नेली, मुझे सभ्य बना दो, मैं अच्छा बनूंगा।'

'हीथक्लिफ, अब बहुत देर हो चुकी है,' मैंने कहा; 'तुमने कैथरीन को दुखी कर दिया है: मुझे लगता है कि उसे घर लौटने का पछतावा हो रहा होगा! ऐसा लगता है जैसे तुम उससे ईर्ष्या करते थे, क्योंकि लोग तुम्हें उससे ज्यादा महत्व देते हैं।'

कैथरीन से ईर्ष्या करने का विचार उसके लिए समझ से परे था, लेकिन उसके लिए शोक करने का विचार वह स्पष्ट रूप से समझता था।

'क्या उसने कहा कि वह दुखी है?' उसने बहुत गंभीरता से पूछा।

'जब मैंने उसे बताया कि तुम आज सुबह फिर छुट्टी पर हो, तो वह रोने लगी।'

"खैर, मैं कल रात रोया था," उसने जवाब दिया, "और मेरे पास उससे ज्यादा रोने का कारण था।"

'हाँ: तुम्हारे अहंकार से भरे दिल और खाली पेट सोने का कारण था,' मैंने कहा। 'अहंकारी लोग अपने लिए दुख ही लाते हैं। लेकिन, अगर तुम्हें अपनी इस संवेदनशीलता पर शर्म आती है, तो जब वह आए तो उससे माफ़ी मांग लेना। तुम्हें उसके पास जाकर उसे चूमने की पेशकश करनी चाहिए और कहना चाहिए— तुम्हें पता है क्या कहना है; बस दिल से कहना, ऐसे नहीं जैसे उसके भव्य वस्त्रों ने उसे अजनबी बना दिया हो। और अब, हालाँकि मुझे खाना तैयार करना है, मैं थोड़ा समय निकालकर तुम्हें ऐसे सजाऊँगी कि एडगर लिंटन तुम्हारे सामने बिल्कुल गुड़िया जैसा

लगे: और वह लगता भी है। तुम उससे छोटे हो, फिर भी, मैं कसम खाकर कहूँगी, तुम उससे लंबे और चौड़े हो; तुम उसे पल भर में गिरा सकते हो; क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?'

हीथक्लिफ का चेहरा एक पल के लिए चमक उठा; फिर वह दोबारा उदासी में डूब गया, और उसने आह भरी।

लेकिन, नेली, अगर मैं उसे बीस बार गिरा भी दूं, तो इससे न तो वह कम सुंदर होगा और न ही मैं ज़्यादा। काश मेरे बाल सुनहरे होते, त्वचा गोरी होती, मैं भी उसी तरह सजती-संवरती और व्यवहार करती, और मुझे भी उसके जितना अमीर बनने का मौका मिलता!

'और हर मोड़ पर माँ के लिए रोते थे,' मैंने आगे कहा, 'और अगर कोई देहाती लड़का तुम्हारे खिलाफ मुक्का मारता तो कांप जाते थे, और बारिश की एक बूँद का इंतज़ार करते हुए सारा दिन घर पर बैठे रहते थे। ओह, हीथक्लिफ, तुम तो बड़े ही कमज़ोर दिख रहे हो! शीशे के पास आओ, और मैं तुम्हें दिखाऊँगी कि तुम्हें क्या चाहना चाहिए। क्या तुम अपनी आँखों के बीच की उन दो रेखाओं को देखते हो; और उन घनी भौहों को, जो धनुषाकार होकर उठने के बजाय बीच में धंस जाती हैं; और उन दो काले शैतानों को, जो इतनी गहराई में दबे हुए हैं, जो कभी खुलकर अपनी खिड़कियाँ नहीं खोलते, बल्कि उनके नीचे चमकते हुए घात लगाए बैठे रहते हैं, जैसे शैतान के जासूस? चाहो और सीखो कि इन रूखी झुर्रियों को कैसे दूर किया जाए, अपनी पलकों को खुलकर कैसे उठाया जाए, और उन शैतानों को आत्मविश्वास से भरे, मासूम फरिश्तों में कैसे बदला जाए, जो किसी बात पर शक न करें और जहाँ दुश्मन न हों, वहाँ हमेशा दोस्त देखें।' उस दुष्ट कुत्ते के भाव को मत अपनाओ जो यह जानता प्रतीत होता है कि उसे मिलने वाली मार ही उसकी सजा है, फिर भी वह पूरी दुनिया से, साथ ही लात मारने वाले से भी, उन सभी कष्टों के लिए नफरत करता है।

'दूसरे शब्दों में कहें तो, मुझे एडगर लिंटन की बड़ी नीली आँखों और समरूप माथे की कामना करनी चाहिए,' उसने जवाब दिया। 'हाँ, मैं करता हूँ – और इससे मुझे वे नहीं मिल पाएँगे।'

'एक अच्छा दिल तुम्हें एक सुंदर चेहरा देगा, मेरे बच्चे,' मैंने आगे कहा, 'अगर तुम सच्चे काले होते; और एक बुरा दिल सबसे सुंदर चेहरे को भी बदसूरत से भी बदतर बना देगा। और अब जब हमने नहाना, कंघी करना और रूठना बंद कर दिया है—मुझे

बताओ, क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम काफी सुंदर हो? मैं तुम्हें बताता हूँ, मुझे तो लगता है। तुम भेस बदले हुए राजकुमार के लायक हो। कौन जानता है कि तुम्हारे पिता चीन के सम्राट थे, और तुम्हारी माँ एक भारतीय रानी, और दोनों एक सप्ताह की कमाई से वुदरिंग हाइट्स और थ्रशक्रॉस ग्रेंज दोनों खरीद सकते थे? और तुम्हें दुष्ट नाविकों ने अगवा कर इंग्लैंड लाया था। अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं अपने जन्म पर गर्व करता; और मैं जो हूँ, उस सोच से मुझे एक छोटे किसान के अत्याचारों को सहने का साहस और सम्मान मिलता!'

तो मैं लगातार बोलती रही; और हीथक्लिफ का गुस्सा धीरे-धीरे कम होता गया और वह काफी खुशमिजाज दिखने लगा, तभी अचानक सड़क से आती हुई एक गड़गड़ाहट की आवाज से हमारी बातचीत रुक गई, जो आंगन में दाखिल हुई। वह खिड़की की ओर भागा और मैं दरवाजे की ओर, ठीक उसी समय जब हमने देखा कि लिंटन दंपति, लबादों और फर से ढके हुए, पारिवारिक गाड़ी से उतरे और अर्नशॉ दंपति अपने घोड़ों से उतरे: वे अक्सर सर्दियों में चर्च जाने के लिए घोड़ों पर सवार होते थे। कैथरीन ने दोनों बच्चों का हाथ पकड़ा और उन्हें घर के अंदर लाकर आग के सामने बिठा दिया, जिससे उनके गोरे चेहरों पर तुरंत रौनक आ गई।

मैंने अपने साथी से जल्दी करने और अपना सौम्य स्वभाव दिखाने का आग्रह किया, और उसने सहर्ष मेरी बात मान ली; लेकिन दुर्भाग्यवश, जैसे ही उसने रसोई से निकलने वाला एक तरफ का दरवाजा खोला, दूसरी तरफ का दरवाजा हिंडले ने खोल दिया। दोनों का आमना-सामना हो गया, और मालिक, उसे साफ-सुथरा और खुश देखकर चिढ़ गया, या शायद श्रीमती लिंटन से किया अपना वादा निभाने की जल्दी में, उसने उसे अचानक धक्का देकर पीछे धकेल दिया, और गुस्से से जोसेफ को आदेश दिया, 'इस आदमी को कमरे से बाहर रखो - इसे खाना खत्म होने तक अटारी में भेज दो। अगर इसे एक मिनट के लिए भी अकेला छोड़ दिया गया, तो यह टार्ट्स में उंगलियां घुसाएगा और फल चुरा लेगा।'

'नहीं, महोदय,' मैं जवाब देने से खुद को रोक नहीं सका, 'वह कुछ भी नहीं छुएगा, बिलकुल नहीं: और मुझे लगता है कि उसे भी हमारी तरह ही स्वादिष्ट व्यंजनों का अपना हिस्सा मिलना चाहिए।'

'अगर मैंने उसे अंधेरा होने से पहले नीचे पकड़ लिया, तो उसे मेरी मार पड़ेगी!' हिंडले चिल्लाया। 'चले जाओ, आवारा! क्या! तू अकड़ दिखाने की कोशिश कर रहा

है? रुक जा, जब मैं तेरे उन खूबसूरत बालों को पकड़ लूँ, तब देख लूँगा कि मैं उन्हें और खींचता हूँ या नहीं!'

मास्टर लिंटन ने दरवाजे से झांकते हुए कहा, 'ये तो पहले से ही काफी लंबे हैं; मुझे आश्चर्य है कि इनसे उसके सिर में दर्द क्यों नहीं होता। ये तो उसकी आंखों पर किसी घोड़े की गर्दन के बालों की तरह हैं!'

उसने ये टिप्पणी अपमान करने के इरादे से नहीं की थी; लेकिन हीथक्लिफ का हिंसक स्वभाव उस व्यक्ति की गुस्ताखी बर्दाश्त नहीं कर सका, जिसे वह उस समय भी प्रतिद्वंद्वी मानता था। उसने गरमा गरम सेब की चटनी से भरा बर्तन (जो सबसे पहले उसके हाथ लगा) उठाया और उसे बोलने वाले के चेहरे और गर्दन पर दे मारा; बोलने वाला तुरंत विलाप करने लगा, जिसे सुनकर इसाबेला और कैथरीन दौड़कर वहाँ पहुँचीं। श्री अर्नशॉ ने तुरंत अपराधी को पकड़ा और उसे अपने कमरे में ले गए; जहाँ, निस्संदेह, उन्होंने उसके गुस्से को शांत करने के लिए उसे कोई कठोर उपाय किया होगा, क्योंकि वह लाल और हाँफ रहा था। मैंने एक कपड़ा लिया और बड़े गुस्से से एडगर की नाक और मुँह को रगड़ा, और कहा कि उसे यही मिलना चाहिए था, क्योंकि उसने दखल दिया था। उसकी बहन घर जाने के लिए रोने लगी, और कैथी वहीं खड़ी रह गई, सबके सामने शर्म से लाल हो रही थी।

'तुम्हें उससे बात नहीं करनी चाहिए थी!' उसने मास्टर लिंटन से नाराज़गी जताते हुए कहा। 'वह बहुत गुस्से में था, और अब तुमने अपनी मुलाक़ात खराब कर दी; और उसे कोड़े पड़ेंगे: मैं उसे कोड़े खाते हुए नहीं देखना चाहती! मैं अपना खाना नहीं खा सकती। तुमने उससे बात क्यों की, एडगर?'

"मैंने नहीं किया," युवक सिसकते हुए मेरे हाथों से छूट गया और अपने रुमाल से शेष शुद्धिकरण पूरा किया। "मैंने माँ से वादा किया था कि मैं उससे एक शब्द भी नहीं कहूँगा, और मैंने नहीं कहा।"

'अच्छा, रोओ मत,' कैथरीन ने तिरस्कारपूर्वक उत्तर दिया; 'तुम मरी नहीं हो। और हंगामा मत करो; मेरा भाई आ रहा है: चुप रहो! चुप रहो, इसाबेला! क्या किसी ने तुम्हें चोट पहुँचाई है?'

'अरे, अरे बच्चों – अपनी-अपनी सीटों पर बैठो!' हिंडले ने अंदर आते हुए चिल्लाकर कहा। 'उस बदमाश लड़के ने मुझे खूब परेशान किया है। अगली बार, मास्टर एडगर, कानून को अपने हाथों में ले लेना – इससे तुम्हें भूख लगेगी!'

सुगंधित दावत देखकर छोटा सा समूह फिर से शांत हो गया। सवारी के बाद उन्हें भूख लगी थी, और चूंकि उन्हें कोई वास्तविक नुकसान नहीं हुआ था, इसलिए वे आसानी से शांत हो गए। श्री अर्नशॉ ने भरपूर मात्रा में व्यंजन परोसे, और मालकिन ने अपनी जीवंत बातों से उन्हें खुश कर दिया। मैं उनकी कुर्सी के पीछे इंतजार कर रहा था, और कैथरीन को सूखी आँखों और उदासीन भाव से अपने सामने हंस का पंख काटते हुए देखकर मुझे दुख हुआ। 'एक बेदर्द बच्ची,' मैंने मन ही मन सोचा; 'वह अपने पुराने साथी की परेशानियों को कितनी आसानी से नजरअंदाज कर रही है। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वह इतनी स्वार्थी होगी।' उसने एक निवाला अपने होठों तक उठाया: फिर उसे नीचे रख दिया: उसके गाल लाल हो गए, और आँसू बहने लगे। उसने अपना कांटा फर्श पर गिरा दिया, और अपनी भावनाओं को छिपाने के लिए जल्दी से कपड़े के नीचे छिप गई। मैंने उसे ज्यादा देर तक बेदर्द नहीं कहा; क्योंकि मैंने देखा कि वह दिन भर यातना में थी, और खुद को अकेला छोड़ने या हीथक्लिफ से मिलने का मौका पाने के लिए संघर्ष कर रही थी, जिसे स्वामी ने कैद कर रखा था: जैसा कि मुझे तब पता चला, जब मैंने उसे भोजन का एक निजी भोज देने का प्रयास किया।

शाम को हमने नृत्य किया। कैथी ने विनती की कि उसे उस समय मुक्त कर दिया जाए, क्योंकि इसाबेला लिंटन के पास कोई साथी नहीं था: उसकी विनती व्यर्थ रही, और मुझे उसकी जगह लेने के लिए कहा गया। नृत्य के उत्साह में हम सब उदासी से बाहर निकल गए, और गिम्मर्टन बैंड के आगमन से हमारी खुशी और बढ़ गई, जिसमें पंद्रह सदस्य थे: एक तुरही, एक ट्रॉम्बोन, क्लैरियोनेट, बेसून, फ्रेंच हॉर्न और एक बेस वायल, साथ ही गायक भी। वे हर क्रिसमस पर सभी प्रतिष्ठित घरों में घूमते हैं और चंदा इकट्ठा करते हैं, और उन्हें सुनना हमारे लिए एक शानदार अनुभव था। सामान्य कैरोल गाने के बाद, हमने उनके साथ गीत और उल्लास गाए। श्रीमती अर्नशॉ को संगीत बहुत पसंद था, इसलिए उन्होंने हमें भरपूर संगीत सुनाया।

कैथरीन को भी यह बहुत पसंद था, लेकिन उसने कहा कि सीढ़ियों के ऊपर यह सबसे मधुर लगता है, और वह अंधेरे में ऊपर चली गई: मैं उसके पीछे गया। नीचे घर का दरवाजा बंद कर दिया गया, लोगों से भरे होने के कारण उन्होंने हमारी अनुपस्थिति पर ध्यान ही नहीं दिया। वह सीढ़ियों के ऊपर नहीं रुकी, बल्कि और ऊपर चढ़ गई, उस अटारी तक जहाँ हीथक्लिफ को कैद किया गया था, और उसे पुकारा। उसने कुछ

देर तक हठपूर्वक जवाब देने से इनकार कर दिया: उसने हार नहीं मानी, और आखिरकार उसे तख्तों के पार से उससे बात करने के लिए मना लिया। मैंने उन दोनों को बिना किसी बाधा के बात करने दिया, जब तक मुझे लगा कि गाने बंद होने वाले हैं, और गायक कुछ जलपान करने जा रहे हैं: तब मैं उसे चेतावनी देने के लिए सीढ़ी पर चढ़ गया। उसे बाहर पाने के बजाय, मैंने उसकी आवाज अंदर सुनी। छोटी बंदरिया एक अटारी की रोशनदान से रेंगकर, छत के सहारे, दूसरी अटारी की रोशनदान में चली गई थी, और बड़ी मुश्किल से मैं उसे वापस बाहर निकाल पाया। जब वह आई, तो हीथक्लिफ भी उसके साथ आया, और उसने ज़िद की कि मैं उसे रसोई में ले जाऊँ, क्योंकि मेरा साथी नौकर हमारे 'शैतान के भजन' (जैसा कि वह उसे कहता था) की आवाज़ से दूर रहने के लिए पड़ोसी के घर चला गया था। मैंने उनसे कहा कि मेरा इरादा उनके इस छल को बढ़ावा देने का बिल्कुल नहीं है: लेकिन चूंकि कैदी ने कल के खाने के बाद से अपना उपवास नहीं तोड़ा था, इसलिए मैं उसके धोखेबाज़ मिस्टर हिंडले को एक बार के लिए नज़रअंदाज़ कर दूँगा। वह नीचे गया: मैंने उसे आग के पास एक स्टूल दिया, और उसे बहुत सी अच्छी चीज़ें पेश कीं: लेकिन वह बीमार था और थोड़ा ही खा सका, और उसे खुश करने के मेरे प्रयास व्यर्थ गए। उसने अपनी दोनों कोहनियाँ अपने घुटनों पर और ठुड्डी अपने हाथों पर टिका लीं और चुपचाप ध्यान में लीन रहा। जब मैंने उससे उसके विचारों के बारे में पूछा, तो उसने गंभीरता से उत्तर दिया - 'मैं यह तय करने की कोशिश कर रहा हूँ कि मैं हिंडले को कैसे चुकाऊँगा। मुझे परवाह नहीं कि मुझे कितना इंतज़ार करना पड़ेगा, बस मैं आखिरकार उसे चुका सकूँ। मुझे उम्मीद है कि वह मेरे चुकाने से पहले नहीं मरेगा!'

‘हीथक्लिफ, तुम्हें शर्म आनी चाहिए!’ मैंने कहा। ‘दुष्ट लोगों को दंडित करना ईश्वर का काम है; हमें क्षमा करना सीखना चाहिए।’

‘नहीं, भगवान को वो संतुष्टि नहीं मिलेगी जो मुझे मिलेगी,’ उसने जवाब दिया। ‘काश मुझे सबसे अच्छा तरीका पता होता! मुझे अकेला छोड़ दो, मैं योजना बना लूंगा: जब मैं इसके बारे में सोच रहा होता हूं तो मुझे कोई पीड़ा नहीं होती।’

लेकिन, श्रीमान लॉकवुड, मैं भूल गई थी कि ये कहानियां आपका मनोरंजन नहीं कर सकतीं। मुझे गुस्सा आ रहा है कि मैं इतनी देर तक बकबक करने का सपना भी कैसे देख सकती हूं; और आपकी ज़ुकाम की वजह से आपको इतनी तकलीफ हो रही है, और आप सोने के लिए ऊंघ रहे हैं! मैं हीथक्लिफ का पूरा इतिहास, जो कुछ भी

आपको सुनने की ज़रूरत है, छह शब्दों में ही बता सकती थी।

* * * * *

अपनी बात बीच में ही रोकते हुए, नौकरानी उठी और सिलाई का सामान एक तरफ रख दिया; लेकिन मैं चूल्हे से हिलने में असमर्थ महसूस कर रही थी, और मुझे नींद भी नहीं आ रही थी। 'शांत बैठिए, श्रीमती डीन,' मैंने कहा; 'आधे घंटे और शांत बैठिए। आपने कहानी को आराम से सुनाकर बिल्कुल सही किया है। मुझे यही तरीका पसंद है; और आपको इसे इसी शैली में समाप्त करना होगा। आपने जिन पात्रों का जिक्र किया है, उनमें से हर एक में मेरी रुचि है।'

'घड़ी में ग्यारह बजने वाले हैं, महोदय।'

कोई बात नहीं— मुझे देर रात तक सोने की आदत नहीं है। जो व्यक्ति रात दस बजे तक सोता है, उसके लिए एक या दो बजे का समय काफी जल्दी है।

'आपको दस बजे तक झूठ नहीं बोलना चाहिए। सुबह का सबसे अच्छा समय तो उससे बहुत पहले ही बीत चुका होता है। जो व्यक्ति दस बजे तक अपने दिन का आधा काम भी पूरा नहीं करता, उसके बाकी का आधा काम अधूरा रह जाने की संभावना रहती है।'

फिर भी, श्रीमती डीन, अपनी कुर्सी पर वापस बैठ जाइए; क्योंकि कल मैं रात को दोपहर तक लंबा करने का इरादा रखता हूँ। कम से कम मुझे तो एक जिद्दी सर्दी होने का अनुमान है।

'मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा, महोदय। खैर, आपको मुझे लगभग तीन साल आगे बढ़ने की अनुमति देनी होगी; उस दौरान श्रीमती अर्नशॉ —'

नहीं, नहीं, मैं ऐसा कुछ भी बर्दाश्त नहीं करूँगा! क्या आप उस मनोदशा से परिचित हैं जिसमें, यदि आप अकेले बैठे हों, और आपके सामने कालीन पर बिल्ली अपने बच्चे को चाट रही हो, तो आप उस क्रिया को इतनी तल्लीनता से देखेंगे कि बिल्ली द्वारा एक कान की उपेक्षा करने पर भी आप बुरी तरह क्रोधित हो जाएँगे?

'मैं कहूंगा कि वह बेहद आलसी मूड में है।'

इसके विपरीत, यह एक थकाऊ रूप से सक्रिय अनुभव है। फिलहाल यह मेरा अनुभव है; इसलिए मैं इसका बारीकी से अध्ययन करता हूँ। मैं देखता हूँ कि इन क्षेत्रों के लोग शहरों के लोगों की तुलना में वही महत्व रखते हैं जो किसी कालकोठरी में बंद

मकड़ी का किसी झोपड़ी में बंद मकड़ी से होता है; फिर भी यह गहरा आकर्षण केवल देखने वाले की स्थिति के कारण नहीं है। वे अधिक गंभीरता से, अधिक आत्म-केंद्रित होकर जीते हैं, और सतही, परिवर्तनशील और तुच्छ बाहरी चीजों में कम रुचि रखते हैं। मुझे लगता है कि यहाँ जीवन के प्रति प्रेम लगभग संभव है; और मैं एक साल तक टिकने वाले किसी भी प्रेम में दृढ़ अविश्वास रखता था। एक स्थिति ऐसी है जैसे किसी भूखे व्यक्ति को एक ही व्यंजन दिया जाए, जिस पर वह अपनी पूरी भूख केंद्रित कर सके और उसका पूरा आनंद ले सके; दूसरी स्थिति ऐसी है जैसे उसे फ्रांसीसी रसोइयों द्वारा सजाई गई मेज पर परोसा जाए: वह शायद पूरे भोजन से उतना ही आनंद प्राप्त कर सके; लेकिन उसकी नज़र और स्मृति में प्रत्येक भाग मात्र एक अणु है।

'ओह! जब आप हमें जान लेंगे, तो आपको पता चलेगा कि हम भी यहाँ बाकी जगहों जैसे ही हैं,' श्रीमती डीन ने मेरी बात सुनकर कुछ हैरानी जताते हुए कहा।

‘क्षमा कीजिए,’ मैंने उत्तर दिया; ‘मेरे प्रिय मित्र, आप उस कथन के घोर खंडन का प्रमाण हैं। कुछ मामूली प्रांतीय बातों को छोड़कर, आपमें उन शिष्टाचारों का कोई अंश नहीं है जिन्हें मैं आपके वर्ग की विशेषता मानता हूँ। मुझे विश्वास है कि आपने आम नौकरों की तुलना में कहीं अधिक चिंतन किया है। आपने अपना जीवन तुच्छ बातों में व्यर्थ न जाने दिया, इसलिए आपको अपनी चिंतनशीलता को विकसित करने के लिए विवश होना पड़ा।’

श्रीमती डीन हंस पड़ीं।

“मैं खुद को एक स्थिर और समझदार इंसान मानती हूँ,” उसने कहा; “पहाड़ों में रहने और साल दर साल एक ही तरह के चेहरे और एक ही तरह की हरकतें देखने से तो नहीं; लेकिन मैंने कठोर अनुशासन का पालन किया है, जिसने मुझे समझदारी सिखाई है; और फिर, मैंने आपकी कल्पना से कहीं ज़्यादा पढ़ा है, मिस्टर लॉकवुड। इस पुस्तकालय में आप शायद ही कोई किताब खोलें जिसे मैंने न पढ़ा हो और उससे कुछ न कुछ न सीखा हो: सिवाय ग्रीक, लैटिन और फ्रेंच की किताबों के; और ये दोनों ही मुझे अच्छी तरह आती हैं: एक गरीब की बेटी से आप इससे ज़्यादा उम्मीद नहीं कर सकते। खैर, अगर मुझे गपशप के असली अंदाज़ में अपनी कहानी आगे बढ़ानी है, तो बेहतर होगा कि मैं आगे बढ़ूँ; और तीन साल का गैप लेने के बजाय, मैं अगले ग्रीष्मकाल तक ही पहुँच जाऊँगी — यानी 1778 के ग्रीष्मकाल तक, जो लगभग तेईस साल पहले की बात है।”

अध्याय आठ

जून के एक सुहावने दिन की सुबह, मेरे पहले प्यारे से नन्हे बच्चे का जन्म हुआ, जो प्राचीन अर्नशॉ वंश का आखिरी बच्चा था। हम दूर एक खेत में घास इकट्ठा करने में व्यस्त थे, तभी वह लड़की जो आमतौर पर हमारे लिए नाश्ता लाती थी, एक घंटा पहले ही घास के मैदान को पार करते हुए और गली में दौड़ती हुई आई और दौड़ते हुए मुझे पुकारने लगी।

'ओह, कितना प्यारा बच्चा!' वह हांफते हुए बोली। 'इतना सुंदर बच्चा! लेकिन डॉक्टर का कहना है कि मालकिन को जाना होगा: उनका कहना है कि उन्हें कई महीनों से टीबी है। मैंने उन्हें मिस्टर हिंडले से कहते सुना: और अब उनके पास गुजारा करने के लिए कुछ नहीं बचा है, और सर्दी से पहले ही उनकी मृत्यु हो जाएगी। तुम्हें तुरंत घर आना होगा। तुम्हें इसकी देखभाल करनी है, नेली: इसे चीनी और दूध पिलाना है, और दिन-रात इसकी देखभाल करनी है। काश मैं तुम्हारी जगह होती, क्योंकि मालकिन के न रहने पर यह बच्चा पूरी तरह से तुम्हारा होगा!'

'लेकिन क्या वह बहुत बीमार है?' मैंने अपना रेक नीचे फेंकते हुए और अपनी टोपी बांधते हुए पूछा।

'मुझे लगता है वो है; फिर भी वो बहादुर दिखती है,' लड़की ने जवाब दिया, 'और वो ऐसे बात करती है जैसे उसे लगता हो कि वो उसे बड़ा होकर मर्द बनते देखेगी। वो खुशी से पागल हो रही है, वो कितना सुंदर है! अगर मैं उसकी जगह होती तो मुझे यकीन है कि मैं मरती नहीं: केनेथ के बावजूद, उसे देखते ही मेरी सेहत सुधर जाती। मैं उससे बहुत नाराज़ थी। डेम आर्चर उस नन्हे बच्चे को घर में मालिक के पास ले आई, और उसका चेहरा बस चमकने ही लगा था कि तभी बूढ़ा आदमी आगे आया और बोला — "अर्नशॉ, ये तो भगवान का आशीर्वाद है कि तुम्हारी पत्नी बच गई और तुम्हें

ये बेटा दे गई। जब वो आई थी, तो मुझे लगा था कि हम उसे ज़्यादा दिन नहीं रख पाएंगे; और अब, मुझे तुम्हें बताना ही पड़ेगा, सर्दी शायद उसे खत्म कर देगी। ज़्यादा परेशान मत हो और चिंता मत करो: कुछ नहीं किया जा सकता। और वैसे भी, तुम्हें ऐसी जल्दबाज़ लड़की को चुनने से पहले सोचना चाहिए था!"'

मैंने पूछा, 'गुरु ने क्या उत्तर दिया?'

'मुझे लगता है उसने कुछ अपशब्द कहे थे, पर मैंने उनकी परवाह नहीं की, मैं तो बस बच्चे को देखने के लिए बेताब थी,' और वह फिर से उत्साह से उसका वर्णन करने लगी। मैं भी उसकी तरह ही उत्सुक थी, इसलिए जल्दी से घर लौट आई ताकि मैं भी उसे देख सकूँ; हालाँकि मुझे हिंडले के लिए बहुत दुख हो रहा था। उसके दिल में केवल दो ही लोगों के लिए जगह थी – उसकी पत्नी और वह खुद: वह दोनों से बहुत प्यार करता था, और एक को तो वह सबसे ज़्यादा पूजता था, और मैं समझ नहीं पा रही थी कि वह इस बिछोह को कैसे सहन करेगा।

जब हम वुदरिंग हाइट्स पहुंचे, तो वह सामने के दरवाजे पर खड़ा था; और जैसे ही मैं अंदर गई, मैंने पूछा, 'बच्चा कैसा है?'

'लगभग दौड़ने के लिए तैयार हो, नेल!' उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

'और मालकिन?' मैंने पूछने की हिम्मत की; 'डॉक्टर का कहना है कि वह —'

'डॉक्टर को धिक्कार है!' वह गुस्से से लाल होते हुए बोला। 'फ्रांसिस बिल्कुल सही कह रही है: अगले हफ्ते इसी समय तक वह पूरी तरह ठीक हो जाएगी। क्या आप ऊपर जा रहे हैं? क्या आप उसे बता देंगे कि मैं आऊंगा, अगर वह वादा करे कि वह बात नहीं करेगी। मैंने उसे इसलिए छोड़ा क्योंकि वह चुप नहीं रह रही थी; और उसे चुप रहना ही होगा – उसे बता दीजिए कि मिस्टर केनेथ ने कहा है कि उसे चुप रहना चाहिए।'

मैंने यह संदेश श्रीमती अर्नशॉ को दिया; वह चंचल भाव से भरी हुई लग रही थीं और उन्होंने हंसते हुए उत्तर दिया, 'एलन, मैंने मुश्किल से एक शब्द भी बोला था और वह दो बार रोते हुए बाहर चला गया। खैर, मान लो मैं वादा करती हूं कि मैं नहीं बोलूंगी: लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं उस पर हंसने से खुद को रोक सकती हूं!'

बेचारी! अपनी मृत्यु से एक सप्ताह पहले तक उसका हंसमुख हृदय कभी कमजोर नहीं हुआ; और उसका पति दृढ़ता से, बल्कि उग्रता से, यह कहता रहा कि उसकी

सेहत दिन-प्रतिदिन सुधर रही है। जब केनेथ ने उसे चेतावनी दी कि बीमारी की इस अवस्था में उसकी दवाइयाँ बेकार हैं, और उसे उसकी देखभाल करके अपना और खर्च बढ़ाने की ज़रूरत नहीं है, तो उसने जवाब दिया, 'मुझे पता है कि आपको ज़रूरत नहीं है - वह ठीक है - उसे आपकी और देखभाल की ज़रूरत नहीं है! उसे कभी टीबी नहीं थी। उसे बुखार था; और वह चला गया है: उसकी नाड़ी अब मेरी तरह धीमी है, और उसका चेहरा उतना ही ठंडा है।'

उसने अपनी पत्नी को भी यही कहानी सुनाई, और ऐसा लगा जैसे उसने उस पर विश्वास कर लिया हो; लेकिन एक रात, जब वह उसके कंधे पर सिर रखकर कह रही थी कि उसे लगता है कि वह कल उठ पाएगी, तभी उसे खांसी का एक हल्का सा दौरा पड़ा - उसने उसे अपनी बाहों में उठा लिया; उसने अपने दोनों हाथ उसकी गर्दन के चारों ओर लपेट लिए, उसका चेहरा बदल गया, और उसकी मृत्यु हो गई।

जैसा कि उस लड़की ने अनुमान लगाया था, बच्चा हरेटन पूरी तरह से मेरे हाथों में आ गया। श्री अर्नशॉ, जब तक उसे स्वस्थ देखते और उसे रोते हुए नहीं सुनते, तब तक संतुष्ट थे। स्वयं के लिए, वे हताश हो गए: उनका दुख उस प्रकार का था जो विलाप नहीं करता था। वे न तो रोते थे, न प्रार्थना करते थे; वे शाप देते और अवज्ञा करते थे: ईश्वर और मनुष्य को कोसते थे, और स्वयं को फिजूलखर्ची में लिप्त कर लेते थे। नौकर उनके अत्याचारी और बुरे व्यवहार को लंबे समय तक सहन नहीं कर सके: जोसेफ और मैं ही दो थे जो रुके रहे। मेरा उसे छोड़ने का मन नहीं हुआ; और इसके अलावा, आप जानते हैं, मैं उसकी पालक बहन थी, और एक अजनबी की तुलना में उसके व्यवहार को अधिक आसानी से क्षमा कर देती थी। जोसेफ किरायेदारों और मजदूरों को धमकाने के लिए वहीं रुका रहा; क्योंकि जहाँ उसे बहुत सारी बुराई को फटकारना था, वहाँ रहना ही उसका काम था।

मास्टर के बुरे तौर-तरीके और बुरे साथी कैथरीन और हीथक्लिफ के लिए एक बुरा उदाहरण थे। हीथक्लिफ के साथ उनका बर्ताव किसी संत को भी शैतान बना सकता था। और सचमुच, ऐसा लगता था मानो उस समय लड़के पर किसी शैतानी ताकत का साया था। उसे हिंडले को इस कदर गिरते देखकर आनंद आता था कि उसका उद्धार असंभव था; और वह दिन-प्रतिदिन अपनी क्रूरता और उग्रता के लिए जाना जाने लगा था। मैं यह बता भी नहीं सकता कि हमारा घर कितना भयानक था। पादरी ने आना-जाना बंद कर दिया, और कोई भी सभ्य व्यक्ति हमारे पास नहीं आता था; सिवाय

एडगर लिंटन के मिस कैथी से मिलने आने के। पंद्रह साल की उम्र में वह पूरे इलाके की रानी थी; उसका कोई मुकाबला नहीं था; और वह एक घमंडी, जिद्दी औरत निकली! मैं मानता हूँ कि बचपन बीत जाने के बाद मुझे वह पसंद नहीं थी; और मैं अक्सर उसके घमंड को तोड़ने की कोशिश करके उसे परेशान करता था: हालाँकि, उसने कभी मुझसे नफरत नहीं की। पुराने रिश्तों के प्रति उनमें अद्भुत निष्ठा थी: यहाँ तक कि हीथक्लिफ भी उनके दिलों में अटूट रूप से बसे रहे; और युवा लिंटन, अपनी सारी श्रेष्ठता के बावजूद, उन पर उतनी गहरी छाप छोड़ने में असमर्थ रहे। वे मेरे दिवंगत गुरु थे: चिमनी के ऊपर उनकी तस्वीर लगी है। पहले एक तरफ उनकी तस्वीर लगी होती थी और दूसरी तरफ उनकी पत्नी की; लेकिन उनकी तस्वीर हटा दी गई है, वरना आप उनके व्यक्तित्व की झलक देख पाते। क्या आप उसे पहचान सकते हैं?

श्रीमती डीन ने मोमबत्ती उठाई, और मुझे एक कोमल चेहरे वाला व्यक्ति दिखाई दिया, जो हाइट्स की उस युवती से बहुत मिलता-जुलता था, लेकिन भाव में अधिक गंभीर और सौम्य था। वह एक मनमोहक चित्र प्रस्तुत करता था। लंबे हल्के बाल कनपटी पर हल्के घुंघराले थे; आँखें बड़ी और गंभीर थीं; शरीर लगभग अति सुंदर था। मुझे इस बात पर आश्चर्य नहीं हुआ कि कैथरीन अर्न्शॉ अपने पहले दोस्त को ऐसे व्यक्ति के लिए कैसे भूल सकती है। मुझे इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि वह व्यक्ति, जिसका मन अपने व्यक्तित्व के अनुरूप था, कैथरीन अर्न्शॉ के बारे में मेरे विचार को कैसे पसंद कर सकता था।

मैंने गृहस्वामी से कहा, 'यह चित्र बहुत ही मनमोहक है। यह कैसा दिखता है?'

'हां,' उसने जवाब दिया; 'लेकिन जब वह उत्साहित होता था तो वह बेहतर दिखता था; यही उसका रोजमर्रा का चेहरा होता था: उसमें आम तौर पर जोश की कमी थी।'

कैथरीन ने लिंटन परिवार के साथ पाँच सप्ताह बिताने के बाद से उनसे अपना संपर्क बनाए रखा था; और उनके बीच अपना कठोर स्वभाव दिखाने का उसे कोई प्रलोभन नहीं था, और जहाँ उसे हमेशा इतना शिष्टाचार मिलता था, वहाँ असभ्य होने पर उसे शर्म आती थी। उसने अनजाने में ही अपनी चतुराई भरी सौहार्दता से उस बुजुर्ग महिला और सज्जन का दिल जीत लिया; इसाबेला की प्रशंसा और उसके भाई का दिल जीत लिया: ये उपलब्धियाँ उसे शुरू से ही लुभाती थीं - क्योंकि वह महत्वाकांक्षा से भरी हुई थी - और इसी वजह से उसने किसी को धोखा देने के इरादे के बिना ही दोहरा व्यवहार अपना लिया। जिस जगह उसने हीथक्लिफ को 'अशिष्ट

युवक बदमाश' और 'जानवर से भी बदतर' कहा जाते सुना, वहाँ उसने उसके जैसा व्यवहार न करने का ध्यान रखा; लेकिन घर पर उसे ऐसे शिष्टाचार का पालन करने की ज़रा भी इच्छा नहीं थी जिस पर केवल हँसी उड़ाई जाए, और न ही अपने उग्र स्वभाव को रोकने की, क्योंकि इससे उसे न तो कोई सम्मान मिलता और न ही कोई प्रशंसा।

श्री एडगर बहुत कम ही खुलेआम वुदरिंग हाइट्स जाने की हिम्मत जुटा पाते थे। उन्हें अर्नशॉ की प्रतिष्ठा का डर सताता था और वे उससे मिलने से कतराते थे; फिर भी उनका हमेशा हमारी तरफ से पूरी विनम्रता के साथ स्वागत किया जाता था: स्वयं मास्टर भी उन्हें नाराज़ करने से बचते थे, क्योंकि वे जानते थे कि वे क्यों आए हैं; और अगर वे विनम्र नहीं हो पाते थे, तो वे दूर ही रहते थे। मुझे लगता है कि कैथरीन को उनका वहाँ आना पसंद नहीं था; वह चालाक नहीं थी, कभी नखरे नहीं दिखाती थी, और जाहिर तौर पर अपने दोनों दोस्तों के मिलने पर आपत्ति जताती थी; क्योंकि जब हीथक्लिफ ने उनकी उपस्थिति में लिंटन के प्रति तिरस्कार व्यक्त किया, तो वह उनकी अनुपस्थिति की तरह उनसे सहमत नहीं हो सकी; और जब लिंटन ने हीथक्लिफ के प्रति घृणा और अरुचि दिखाई, तो उसने उसकी भावनाओं को अनदेखा करने की हिम्मत नहीं की, मानो उसके साथी की बेइज्जती उसके लिए कोई मायने ही न रखती हो। मैंने उसकी उलझनों और अनकही परेशानियों पर कई बार हँसी उड़ाई है, जिन्हें वह मेरे मज़ाक से छिपाने की व्यर्थ कोशिश करती थी। यह बात सुनने में बुरी लगती है, लेकिन वह इतनी अभिमानी थी कि जब तक उसे विनम्रता का पाठ नहीं पढ़ाया जाता, तब तक उसकी पीड़ा पर दया करना सचमुच असंभव हो गया था। अंततः उसने हिम्मत जुटाकर मुझसे अपने दिल की बात कही: क्योंकि सलाहकार के रूप में उसे मेरे अलावा कोई और नहीं सूझा।

एक दोपहर श्री हिंडले घर से बाहर गए थे, और हीथक्लिफ ने इसका फायदा उठाकर छुट्टी ले ली। मुझे लगता है कि तब उनकी उम्र सोलह वर्ष हो चुकी थी, और भले ही उनके चेहरे-मोहरे खराब न हों या बुद्धि में कोई कमी न हो, फिर भी उन्होंने आंतरिक और बाहरी रूप से ऐसी घृणा उत्पन्न करने का प्रयास किया, जिसका उनके वर्तमान रूप में कोई अंश नहीं है। सबसे पहले तो, उस समय तक वे अपनी प्रारंभिक शिक्षा का लाभ खो चुके थे: निरंतर कड़ी मेहनत, जो जल्दी शुरू होती और देर से समाप्त होती, ने ज्ञान की खोज में उनके भीतर मौजूद जिज्ञासा और पुस्तकों या विद्या के प्रति प्रेम को समाप्त कर दिया था। श्री अर्नशॉ के स्नेह से बचपन में उनमें पैदा हुई

श्रेष्ठता की भावना मिट चुकी थी। उन्होंने पढ़ाई में कैथरीन के बराबर बने रहने के लिए लंबे समय तक संघर्ष किया, और अंत में गहरे, हालांकि मौन, खेद के साथ हार मान ली: लेकिन उन्होंने पूरी तरह से हार मान ली; और जब उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें अनिवार्य रूप से अपने पूर्व स्तर से नीचे गिरना होगा, तो उन्हें ऊपर उठने के लिए एक कदम भी उठाने के लिए राजी करना असंभव था। फिर उनका बाहरी रूप-रंग मानसिक पतन के अनुरूप हो गया: उनकी चाल झुकी हुई और चेहरा नीच दिखने लगा; उनका स्वाभाविक रूप से आरक्षित स्वभाव असामाजिक उदासी की लगभग मूर्खतापूर्ण अतिशयता में बदल गया; और वे अपने कुछ परिचितों के सम्मान के बजाय उनकी घृणा को उत्तेजित करने में एक घिनौना आनंद लेने लगे।

कैथरीन और वह अब भी काम से फुर्सत के दिनों में लगातार साथ रहते थे; लेकिन उन्होंने उसके प्रति अपना स्नेह शब्दों में व्यक्त करना बंद कर दिया था, और उसके बचकाने स्पर्शों से नाराज़गी और संदेह के साथ पीछे हट जाते थे, मानो उन्हें यह एहसास हो कि उन पर इस तरह स्नेह बरसाने से उन्हें कोई संतुष्टि नहीं मिलेगी। ऊपर बताए गए अवसर पर वह घर में यह बताने आए कि वह कुछ नहीं करेंगे, जबकि मैं मिस कैथी को उनके कपड़े ठीक करने में मदद कर रही थी: उन्होंने यह नहीं सोचा था कि वह इतना आलसी हो जाएंगे; और यह सोचकर कि पूरा घर उनके लिए खाली होगा, उन्होंने किसी तरह मिस्टर एडगर को अपने भाई की अनुपस्थिति के बारे में सूचित कर दिया, और फिर उनका स्वागत करने की तैयारी कर रही थीं।

हीथक्लिफ ने पूछा, 'कैथी, क्या तुम आज दोपहर व्यस्त हो? क्या तुम कहीं जा रही हो?'

‘नहीं, बारिश हो रही है,’ उसने जवाब दिया।

‘तो फिर तुमने ये रेशमी फ्रॉक क्यों पहनी है?’ उसने कहा। ‘उम्मीद है यहाँ कोई नहीं आ रहा है?’

'मुझे तो नहीं पता,' मिस हकलाते हुए बोलीं: 'लेकिन हीथक्लिफ, तुम्हें अब खेत में होना चाहिए था। खाने के समय से एक घंटा बीत चुका है: मुझे लगा तुम चले गए हो।'

लड़के ने कहा, 'हिंडले हमें अपनी लानत भरी मौजूदगी से अक्सर छुटकारा नहीं दिलाता। मैं आज और काम नहीं करूंगा: मैं आपके साथ ही रहूंगा।'

‘ओह, लेकिन जोसेफ बता देगा,’ उसने सुझाव दिया; ‘तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम चले जाओ!’

‘जोसेफ पेनस्टोन क्रैग्स के दूसरी तरफ चूना लाद रहा है; इसमें उसे अंधेरा होने तक का समय लगेगा, और उसे कभी पता भी नहीं चलेगा।’

यह कहकर वह आग के पास जाकर बैठ गया। कैथरीन ने एक पल सोचा, माथे पर शिकन लिए हुए - उसे लगा कि किसी के दखल देने से पहले स्थिति को संभालना ज़रूरी है। एक मिनट की चुप्पी के बाद उसने कहा, 'इसाबेला और एडगर लिंटन ने आज दोपहर आने की बात कही थी। बारिश हो रही है, इसलिए मुझे उनके आने की उम्मीद कम ही है; लेकिन वे आ सकते हैं, और अगर वे आए, तो तुम्हें बेवजह डांट पड़ने का खतरा रहेगा।'

‘एलेन को आदेश दो कि वह कहे कि तुम्हारी सगाई हो गई है, कैथी,’ उसने ज़िद की; ‘मुझे अपने उन दयनीय, मूर्ख दोस्तों के लिए मत छोड़ो! कभी-कभी तो मेरा मन करता है कि मैं उनकी शिकायत करूँ—लेकिन मैं नहीं करूँगा—’

‘वे क्या?’ कैथरीन ने परेशान चेहरे से उसकी ओर देखते हुए कहा। ‘ओह, नेली!’ उसने चिढ़कर कहा और अपना सिर मेरे हाथों से छुड़ाते हुए बोली, ‘तुमने मेरे बालों की सारी कर्ल बिगाड़ दी हैं! बस करो; मुझे अकेला छोड़ दो। तुम किस बात की शिकायत कर रहे हो, हीथक्लिफ?’

‘कुछ नहीं – बस उस दीवार पर टंगी पंचांग को देखो;’ उसने खिड़की के पास टंगी एक फ्रेम वाली शीट की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘ये क्रॉस उन शामों के लिए हैं जो तुमने लिंटन परिवार के साथ बिताई हैं, और ये बिंदु उन शामों के लिए हैं जो तुमने मेरे साथ बिताई हैं। देखा? मैंने हर दिन को चिह्नित किया है।’

‘हाँ—बहुत मूर्खतापूर्ण: जैसे कि मैंने ध्यान दिया हो!’ कैथरीन ने चिड़चिड़े स्वर में उत्तर दिया। ‘और इसमें क्या समझदारी है?’

'यह दिखाने के लिए कि मैं ध्यान देता हूं,' हीथक्लिफ ने कहा।

‘और क्या मुझे हमेशा तुम्हारे साथ ही बैठना चाहिए?’ वह चिढ़ते हुए बोली। ‘मुझे इससे क्या फायदा होता है? तुम किस बारे में बात करते हो? तुम मुझे हंसाने के लिए जो कुछ भी कहते हो या जो कुछ भी करते हो, उससे लगता है कि तुम बेवकूफ हो या बच्चे हो!’

'कैथी, तुमने मुझे पहले कभी नहीं बताया कि मैं बहुत कम बोलता हूँ, या तुम्हें मेरी संगति पसंद नहीं है!' हीथक्लिफ ने बहुत उत्तेजित होकर कहा।

'जब लोगों को कुछ पता ही नहीं होता और वे कुछ कहते भी नहीं, तो वह कोई

कंपनी ही नहीं होती,' उसने बुदबुदाते हुए कहा।

उसका साथी उठा, पर उसे अपनी भावनाओं को और व्यक्त करने का समय नहीं मिला, क्योंकि फर्श पर घोड़े के चलने की आहट सुनाई दी। धीरे से दस्तक देकर युवा लिंटन अंदर आया, उसका चेहरा अचानक मिले इस बुलावे से प्रसन्नता से दमक रहा था। निस्संदेह कैथरीन ने अपने दोस्तों के बीच का अंतर महसूस किया होगा, क्योंकि एक अंदर आया और दूसरा बाहर चला गया। यह अंतर कुछ ऐसा था जैसे किसी उजाड़, पहाड़ी, कोयले वाले इलाके को एक सुंदर उपजाऊ घाटी से बदल दिया जाए; और उसकी आवाज़ और अभिवादन उसके रूप की तरह ही बिल्कुल विपरीत थे। उसकी बोलने की शैली मधुर और धीमी थी, और वह अपने शब्दों का उच्चारण वैसे ही करता था जैसे आमतौर पर किया जाता है: यह हमारे यहाँ की बातचीत से कम कठोर और नरम है।

'मैं शायद जल्दी नहीं आ गया, है ना?' उसने मेरी तरफ देखते हुए कहा: मैंने प्लेट पोंछना शुरू कर दिया था और ड्रेसर के आखिरी छोर पर कुछ दराजों को व्यवस्थित कर रहा था।

'नहीं,' कैथरीन ने जवाब दिया। 'तुम वहाँ क्या कर रही हो, नेली?'

'मेरा काम है, मिस,' मैंने जवाब दिया। (श्रीमान हिंडले ने मुझे निर्देश दिया था कि लिंटन द्वारा की जाने वाली किसी भी निजी मुलाकात में मैं एक तीसरे पक्ष के रूप में मौजूद रहूँ।)

वह मेरे पीछे खड़ी हो गई और गुस्से से फुसफुसाते हुए बोली, 'खुद को और अपने झाड़ू-पोछा को यहाँ से ले जाओ; जब घर में मेहमान हों, तो नौकर उस कमरे में सफाई और झाड़-पोंछ शुरू नहीं करते जहाँ वे मौजूद हों!'

मैंने ऊँची आवाज़ में जवाब दिया, 'मालिक की अनुपस्थिति में यह एक अच्छा अवसर है। उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं कि मैं उनकी उपस्थिति में इन बातों को लेकर परेशान होती रहूँ। मुझे यकीन है कि श्री एडगर मुझे माफ़ कर देंगे।'

'मुझे तुम्हारी मौजूदगी में इस तरह बेचैनी करते देखना बिल्कुल पसंद नहीं है,' युवती ने अपने मेहमान को बोलने का समय दिए बिना ही दबंगई से कहा: हीथक्लिफ के साथ हुए छोटे से विवाद के बाद से वह अपना संयम नहीं खो पाई थी।

'मुझे इसके लिए खेद है, मिस कैथरीन,' मैंने जवाब दिया; और मैं पूरी लगन से अपने काम में जुट गया।

उसे लगा कि एडगर उसे नहीं देख पा रहा है, इसलिए उसने मेरे हाथ से कपड़ा छीन लिया और बड़ी बेरहमी से मेरी बांह पर चुटकी काट दी। मैंने पहले भी कहा है कि मैं उससे प्यार नहीं करता था, बल्कि कभी-कभी उसकी शान को ठेस पहुँचाने में मुझे मज़ा आता था; इसके अलावा, उसने मुझे बहुत चोट पहुँचाई; इसलिए मैं घुटनों के बल से उछल पड़ा और चिल्लाकर बोला, 'ओह, मिस, यह तो बहुत घटिया हरकत है! आपको मुझे चुटकी काटने का कोई हक नहीं है, और मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूँगा।'

'मैंने तुम्हें छुआ तक नहीं, तुम झूठे प्राणी!' वह चीखी, उसकी उंगलियां फिर से वही करने के लिए फड़क रही थीं और उसके कान गुस्से से लाल हो गए थे। वह कभी भी अपने गुस्से को छिपा नहीं पाती थी, यह हमेशा उसके पूरे चेहरे को आग की तरह भड़का देता था।

'तो फिर वो क्या है?' मैंने पलटवार करते हुए, उसका खंडन करने के लिए एक बैंगनी रंग का सबूत दिखाया।

उसने अपना पैर पटका, एक पल के लिए हिचकिचाई, और फिर, अपने भीतर की शरारती भावना से अनियंत्रित रूप से प्रेरित होकर, मेरे गाल पर एक जोरदार थप्पड़ मारा: एक चुभने वाला प्रहार जिससे मेरी दोनों आंखें पानी से भर गईं।

'कैथरीन, प्रिय! कैथरीन!' लिंटन ने बीच में दखल देते हुए कहा, वह अपनी आदर्श द्वारा किए गए झूठ और हिंसा के दोहरे अपराध से बेहद स्तब्ध था।

'एलन, कमरे से बाहर जाओ!' उसने कांपते हुए दोहराया।

छोटा हरेटन, जो हर जगह मेरे पीछे-पीछे आता था और मेरे पास ज़मीन पर बैठा रहता था, मेरे आँसू देखकर खुद रोने लगा और 'दुष्ट चाची कैथी' के खिलाफ़ शिकायत करते हुए सिसकने लगा। इससे कैथी का गुस्सा उस पर भड़क उठा: उसने उसके कंधे पकड़ लिए और उसे तब तक हिलाया जब तक कि बेचारा बच्चा गुस्से से पीला नहीं पड़ गया। एडगर ने बिना सोचे-समझे उसके हाथ पकड़कर उसे छुड़ाने की कोशिश की। पल भर में उसका एक हाथ छूट गया और हैरान बच्चे ने महसूस किया कि उसे उसके कान पर इस तरह रखा गया है जिसे मज़ाक नहीं समझा जा सकता। वह घबराकर पीछे हट गया। मैंने हरेटन को अपनी बाहों में उठाया और उसे लेकर रसोई की ओर चल दी, बातचीत का रास्ता खुला छोड़ दिया, क्योंकि मैं यह देखने के लिए उत्सुक थी कि वे अपना झगड़ा कैसे सुलझाएंगे। अपमानित मेहमान उस जगह पर गया जहाँ उसने अपनी टोपी रखी थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और होंठ काँप

रहे थे।

‘बिल्कुल सही!’ मैंने मन ही मन कहा। ‘चेतावनी समझो और चले जाओ! तुम्हें उसके असली स्वभाव की एक झलक दिखाना एक तरह की मेहरबानी है।’

‘तुम कहाँ जा रही हो?’ कैथरीन ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए पूछा।

वह एक तरफ मुड़ा और आगे निकलने की कोशिश की।

‘तुम्हें नहीं जाना चाहिए!’ उसने जोश से कहा।

‘मुझे अवश्य ही करना होगा!’ उसने दबी हुई आवाज में उत्तर दिया।

‘नहीं,’ उसने हैंडल पकड़ते हुए ज़िद की; ‘अभी नहीं, एडगर लिंटन: बैठ जाओ; तुम मुझे इस मिजाज में नहीं छोड़ सकते। मैं पूरी रात दुखी रहूंगी, और मैं तुम्हारे लिए दुखी नहीं रहूंगी!’

‘क्या आप मुझे मारने के बाद मैं यहाँ रुक सकता हूँ?’ लिंटन ने पूछा।

कैथरीन गूंगी थी।

उन्होंने आगे कहा, ‘तुमने मुझे डरा दिया है और मुझे तुमसे शर्म आ रही है; मैं अब यहाँ दोबारा नहीं आऊँगा!’

उसकी आंखें चमकने लगीं और पलकें झपकने लगीं।

‘और तुमने जानबूझकर झूठ बोला!’ उसने कहा।

‘मैंने नहीं किया!’ वह अपनी आवाज़ संभालते हुए चिल्लाई; ‘मैंने जानबूझकर कुछ नहीं किया। अच्छा, जाओ अगर तुम चाहो — चले जाओ! और अब मैं रोऊंगी — मैं इतना रोऊंगी कि बीमार पड़ जाऊंगी!’

वह एक कुर्सी के पास घुटनों के बल बैठ गई और फूट-फूटकर रोने लगी। एडगर दरबार तक अपने इरादे पर अडिग रहा; वहाँ वह कुछ देर रुका रहा। मैंने उसे हिम्मत देने का निश्चय किया।

‘श्रीमान, यह बच्ची बेहद बिगड़ैल है,’ मैंने पुकार कर कहा। ‘किसी भी बिगड़े हुए बच्चे की तरह: बेहतर होगा कि आप घर वापस चले जाएं, वरना वह बीमार पड़ जाएगी और हमें और भी दुखी करेगी।’

उस कोमल प्राणी ने खिड़की से तिरछी नज़र से देखा: उसमें जाने की उतनी ही शक्ति थी जितनी किसी बिल्ली में आधे मरे चूहे या आधे खाए पक्षी को छोड़ने की। आह, मैंने सोचा, अब उसे बचाना नामुमकिन है: उसका अंत निश्चित है, और वह अपने भाग्य की ओर उड़ रहा है! और ऐसा ही हुआ: वह अचानक मुड़ा, जल्दी से घर के

अंदर चला गया, और अपने पीछे दरवाजा बंद कर लिया; और जब मैं थोड़ी देर बाद उन्हें यह बताने गई कि अर्नशॉ पागलों की तरह शराब पीकर घर आया है, और पूरे घर में तोड़फोड़ करने को तैयार है (उस हालत में उसका यही हाल होता था), तो मैंने देखा कि झगड़े ने उनके बीच घनिष्ठता को और बढ़ा दिया था - जवानी की झिझक को तोड़ दिया था, और उन्हें दोस्ती का दिखावा छोड़कर एक-दूसरे से प्यार करने की बात कबूल करने में सक्षम बना दिया था।

श्री हिंडले के आगमन की सूचना मिलते ही लिंटन तुरंत अपने घोड़े पर सवार हो गया और कैथरीन अपने कमरे में चली गई। मैं छोटे हरेटन को छिपाने और मास्टर की शिकार-बंदूक से गोले निकालने गया, जिससे वह अपनी पागलपन भरी उत्तेजना में खेलना पसंद करता था, और जो भी उसे उकसाता या उसका ध्यान आकर्षित करता, उसकी जान को खतरा रहता था; और मैंने उसे हटाने की योजना बनाई थी, ताकि अगर वह बंदूक चला भी दे तो कम नुकसान पहुंचा सके।

अध्याय 9

वह भयंकर अपशब्द बोलते हुए अंदर आया; और उसने मुझे रसोई की अलमारी में उसके बेटे को छिपाते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया। हैरेटन को अपने जंगली जानवर जैसे स्नेह या पागलों जैसे क्रोध का सामना करने का गहरा डर सता रहा था; क्योंकि एक स्थिति में उसे गले लगाकर चूमते-चूमते मौत के घाट उतार दिए जाने का खतरा था, और दूसरी स्थिति में आग में फेंक दिए जाने या दीवार से टकरा दिए जाने का; और बेचारा जहाँ भी मैंने उसे रखा, बिल्कुल शांत रहा।

‘आखिरकार मुझे पता चल ही गया!’ हिंडले चिल्लाया और कुत्ते की तरह मेरी गर्दन पकड़कर मुझे पीछे खींच लिया। ‘स्वर्ग और नरक की कसम, तुमने उस बच्चे को जान से मारने की कसम खाई है! अब मुझे समझ आ गया है कि वो हमेशा मेरे रास्ते से

क्यों हट जाता है। लेकिन शैतान की मदद से, मैं तुम्हें वो चाकू निगलवा दूँगा, नेली! तुम्हें हंसने की ज़रूरत नहीं है; क्योंकि मैंने अभी-अभी केनेथ को सिर नीचे करके ब्लैक-हॉर्स दलदल में ठूंस दिया है; और दो एक के बराबर होते हैं — और मैं तुममें से कुछ को मारना चाहता हूँ: जब तक मैं ऐसा नहीं कर देता, मुझे चैन नहीं आएगा!'

'लेकिन मुझे वो नक्काशी वाला चाकू पसंद नहीं है, श्रीमान हिंडले,' मैंने उत्तर दिया; 'उससे तो बस भ्रामक चीजें ही कट रही हैं। कृपया, मैं गोली खाना ज़्यादा पसंद करूँगा।'

'तुम नरक में जाओ!' उसने कहा; 'और तुम जाओगे भी। इंग्लैंड में कोई कानून किसी आदमी को अपना घर साफ-सुथरा रखने से नहीं रोक सकता, और मेरा घर तो घिनौना है! अपना मुंह खोलो।' उसने चाकू हाथ में पकड़ा और उसकी नोक मेरे दांतों के बीच घुसा दी: लेकिन, मैं उसकी मनमानी से कभी नहीं डरा। मैंने थूक दिया और कहा कि इसका स्वाद घिनौना है – मैं इसे किसी भी कीमत पर नहीं लूंगा।

'ओह!' उसने मुझे छोड़ते हुए कहा, 'मैं देख रहा हूँ कि वह बदसूरत छोटा बदमाश हरेटन नहीं है: माफ़ करना, नेल। अगर वही है, तो उसे ज़िंदा जला देना चाहिए क्योंकि वह मेरा स्वागत करने नहीं दौड़ा और ऐसे चिल्लाया जैसे मैं कोई जिन्न हूँ। अप्राकृतिक बच्चे, इधर आओ! मैं तुझे सिखाऊँगा कि एक भले दिल वाले, धोखे में आए पिता को कैसे बेवकूफ बनाया जाता है। अब, क्या तुम्हें नहीं लगता कि बाल कटवाने के बाद वह लड़का ज़्यादा सुंदर लगेगा? इससे कुत्ता और भी खूंखार हो जाता है, और मुझे खूंखार चीज़ें पसंद हैं - मुझे कैंची लाओ - कुछ खूंखार और सँवारी हुई! इसके अलावा, यह घिनौना दिखावा है - शैतानी घमंड है, अपने कानों को संजोना - हम उनके बिना भी गधे ही हैं। चुप रहो, बच्चे, चुप रहो! अच्छा, तो फिर, यह मेरी प्यारी है! काश, अपने आँसू पोंछ लो - कितनी खुशी है; मुझे चूम लो। क्या! नहीं चूमेगा? मुझे चूम लो, हरेटन! धिक्कार है तुम पर, मुझे चूम लो! भगवान की कसम, जैसे मैं ऐसे राक्षस को पालूँगा!' मैं अपनी जान की कसम खाकर कह सकता हूँ कि मैं उस बदमाश की गर्दन तोड़ दूंगा।'

बेचारा हरेटन अपने पिता की बाहों में ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था और लात मार रहा था, और जब उसके पिता उसे सीढ़ियों से ऊपर ले गए और रेलिंग के ऊपर से उठाया तो उसकी चीखें और तेज़ हो गईं। मैंने कहा कि वह बच्चे को इतना डरा देगा कि उसे दौरे पड़ने लगेंगे, और मैं उसे बचाने के लिए दौड़ी। जैसे ही मैं उनके पास पहुँची, हिंडले

नीचे से आ रही आवाज़ सुनने के लिए रेलिंग पर झुक गया; लगभग भूल ही गया था कि उसके हाथों में क्या है। सीढ़ियों के नीचे किसी के आने की आहट सुनकर उसने पूछा, 'कौन है?' मैं भी आगे झुकी, ताकि हीथक्लिफ को, जिसकी आहट मैंने पहचान ली थी, इशारा कर सकूँ कि वह आगे न आए; और जैसे ही मेरी नज़र हरेटन से हटी, उसने अचानक छलांग लगाई, खुद को उस लापरवाह पकड़ से छुड़ा लिया जिसने उसे पकड़ रखा था, और गिर गया।

हमें डर का एक झटपट एहसास भी नहीं हुआ था कि हमने देखा कि वह बेचारा बच्चा सुरक्षित है। हीथक्लिफ ठीक नाजुक क्षण में नीचे पहुँच गया; सहज आवेग में आकर उसने नीचे गिरना रोक दिया और खड़े होकर ऊपर देखा तो उसे दुर्घटना का कारण पता चला। एक कंजूस जिसने पाँच शिलिंग का लॉटरी टिकट बेच दिया हो और अगले दिन पता चले कि उसे पाँच हज़ार पाउंड का नुकसान हो गया है, वह मिस्टर अर्नशॉ को ऊपर देखकर इतना भावहीन चेहरा नहीं बना सकता था। उसके चेहरे पर शब्दों से परे, अपने ही बदले को नाकाम करने का ज़बरदस्त दुख झलक रहा था। अगर अँधेरा होता, तो मुझे यकीन है कि वह हैरेटन की खोपड़ी को सीढ़ियों पर पटककर अपनी गलती सुधारने की कोशिश करता; लेकिन हमने उसकी जान बचती देखी; और मैं तुरंत अपने प्यारे बच्चे को सीने से लगाए नीचे पहुँच गया। हिंडले धीरे-धीरे, शांत और शर्मिंदा होकर नीचे उतरा।

'यह तुम्हारी गलती है, एलेन,' उसने कहा; 'तुम्हें उसे नज़रों से दूर रखना चाहिए था: तुम्हें उसे मुझसे ले जाना चाहिए था! क्या उसे कहीं चोट लगी है?'

'घायल!' मैंने क्रोध से चिल्लाते हुए कहा; 'अगर इसे मारा नहीं गया, तो यह मंदबुद्धि हो जाएगा! ओह! मुझे आश्चर्य है कि इसकी माँ अपनी कब्र से उठकर यह क्यों नहीं देख रही कि तुम इसके साथ कैसा व्यवहार कर रहे हो। तुम तो नास्तिक से भी बदतर हो – अपने ही खून के रिश्ते के साथ ऐसा बर्ताव कर रहे हो!' उसने बच्चे को छूने की कोशिश की, लेकिन बच्चा मुझे पाकर तुरंत ही अपना डर रोकर शांत करने लगा। हालाँकि, जैसे ही उसके पिता ने उस पर उंगली रखी, वह पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चीखा और ऐसे छटपटाने लगा जैसे उसे दौरे पड़ने वाले हों।

मैंने आगे कहा, 'तुम उससे दखल मत दो! वो तुमसे नफरत करता है—सब तुमसे नफरत करते हैं—यही सच है! तुम्हारा परिवार खुशहाल है; और तुम एक खूबसूरत राज्य में आ गए हो!'

‘मैं इससे भी ज़्यादा सुंदर लड़की ढूंढूंगा, नेली,’ गुमराह आदमी हँसते हुए बोला और फिर से अपनी कठोरता दोहराई। ‘अभी तुम और उसे यहाँ से ले जाओ। और सुनो, हीथक्लिफ! तुम भी मेरी पहुँच और सुनने की सीमा से पूरी तरह दूर हो जाओ। मैं आज रात तुम्हारी हत्या नहीं करूंगा; हाँ, शायद घर में आग लगा दूं: लेकिन यह तो मेरी मर्ज़ी पर निर्भर करता है।’

यह कहते हुए उन्होंने ड्रेसर से ब्रांडी की एक छोटी बोतल निकाली और उसमें से थोड़ी सी ब्रांडी एक गिलास में डाल दी।

‘नहीं, ऐसा मत करो!’ मैंने विनती की। ‘श्रीमान हिंडले, कृपया चेतावनी को समझें। अगर आपको अपनी कोई परवाह नहीं है, तो इस अभागे लड़के पर दया कीजिए!’

उसने जवाब दिया, 'मुझसे बेहतर तो कोई भी उसके लिए कर सकता है।'

‘अपनी आत्मा पर दया करो!’ मैंने उसके हाथ से गिलास छीनने की कोशिश करते हुए कहा।

‘मैं नहीं! इसके विपरीत, मुझे इसे इसके रचयिता को दंडित करने के लिए विनाश में भेजने में बहुत आनंद आएगा,’ ईश्वर-निंदा करने वाले ने कहा। ‘इसका हार्दिक अभिशाप हो!’

उसने शराब पी ली और अधीरता से हमें जाने को कहा; अपने आदेश का अंत उसने भयानक अपशब्दों की एक श्रृंखला के साथ किया, जो दोहराने या याद रखने के लिए बहुत ही बुरे थे।

दरवाजा बंद होते ही हीथक्लिफ ने बड़बड़ाते हुए कुछ अपशब्द कहे, “कितनी अफ़सोस की बात है कि वह शराब पीकर आत्महत्या नहीं कर सकता। वह अपनी पूरी कोशिश कर रहा है, पर उसका शरीर उसका साथ नहीं दे रहा। श्री केनेथ कहते हैं कि वह अपनी घोड़ी पर शर्त लगा सकते हैं कि वह गिम्मर्टन के इस तरफ किसी भी आदमी से ज़्यादा जिएगा और एक बूढ़े पापी के रूप में मरेगा; जब तक कि कोई अप्रत्याशित सौभाग्य उसे न मिल जाए।”

मैं रसोई में गई और अपने नन्हे मेमने को सुलाने के लिए बैठ गई। मुझे लगा कि हीथक्लिफ खलिहान की ओर चला गया है। बाद में पता चला कि वह केवल दूसरी तरफ ही गया था, जहाँ पहुँचकर वह दीवार के पास एक बेंच पर गिर पड़ा, आग से दूर हट गया और चुपचाप बैठा रहा।

मैं हरेटन को अपनी गोद में झुला रहा था और एक गाना गुनगुना रहा था जो इस

प्रकार शुरू होता था, —

रात काफी गहरी थी, और बच्चे रो रहे थे,

दलदल के नीचे बैठी माँ ने यह सुना,

जब मिस कैथी, जो अपने कमरे से शोर सुन रही थीं, ने अपना सिर अंदर डाला और फुसफुसाते हुए कहा, "क्या तुम अकेली हो, नेली?"

'जी हां, मिस,' मैंने जवाब दिया।

वह अंदर आई और चूल्हे के पास पहुँची। मुझे लगा कि वह कुछ कहने वाली है, इसलिए मैंने ऊपर देखा। उसके चेहरे पर बेचैनी और चिंता के भाव थे। उसके होंठ आधे खुले हुए थे, मानो वह कुछ बोलना चाहती हो, और उसने एक गहरी साँस ली; लेकिन वह एक वाक्य के बजाय आह बनकर निकली। मैं उसका हाल का व्यवहार भूला नहीं था, इसलिए मैंने अपना गाना फिर से शुरू कर दिया।

उसने मुझे बीच में रोकते हुए कहा, 'हीथक्लिफ कहाँ है?'

मेरा जवाब था, 'अस्तबल में उसके काम के बारे में।'

उसने मेरी बात का खंडन नहीं किया; शायद उसे झपकी आ गई थी। फिर एक लंबा सन्नाटा छा गया, जिसके दौरान मैंने देखा कि कैथरीन के गाल से एक-दो बूँदें फर्श पर गिर रही हैं। क्या उसे अपने शर्मनाक व्यवहार पर पछतावा है? - मैंने खुद से पूछा। यह तो अनोखी बात होगी: लेकिन हो सकता है वह मुद्दे पर आ जाए - जैसा कि वह आएगी - मैं उसकी मदद नहीं करूँगा! नहीं, उसे अपने निजी मामलों को छोड़कर किसी भी विषय में कोई परेशानी नहीं थी।

'ओह, हे भगवान!' वह अंत में रो पड़ी। 'मैं बहुत दुखी हूँ!'

मैंने कहा, 'अफसोस की बात है। तुम्हें खुश करना मुश्किल है; इतने सारे दोस्त और इतनी कम चिंताएं, और तुम खुद को संतुष्ट नहीं कर सकते!'

'नेली, क्या तुम मेरा एक राज़ रखोगी?' उसने मुझसे पूछा, मेरे पास घुटने टेकते हुए और अपनी मनमोहक आँखों से मेरे चेहरे की ओर देखते हुए, उस तरह की नज़र से जो किसी के गुस्से को भी शांत कर देती है, भले ही किसी के पास गुस्सा करने का पूरा अधिकार हो।

मैंने कम नाराज़गी से पूछा, 'क्या इसे रखना उचित है?'

हां, और यह बात मुझे परेशान कर रही है, और मुझे इसे व्यक्त करना ही होगा! मैं जानना चाहती हूं कि मुझे क्या करना चाहिए। आज एडगर लिंटन ने मुझसे शादी का

प्रस्ताव रखा है, और मैंने उसे जवाब दे दिया है। अब, इससे पहले कि मैं आपको बताऊं कि यह सहमति थी या इनकार, आप मुझे बताएं कि यह क्या होना चाहिए था।

‘सच में, मिस कैथरीन, मुझे कैसे पता चलेगा?’ मैंने जवाब दिया। ‘सच कहूँ तो, आज दोपहर आपने उनके सामने जो तमाशा किया, उसे देखते हुए, मेरा मानना है कि उन्हें मना करना ही समझदारी होगी: क्योंकि उन्होंने उसके बाद आपसे पूछा, तो या तो वह हद से ज्यादा बेवकूफ हैं या फिर एक जोखिम उठाने वाले मूर्ख।’

‘अगर तुम ऐसा करती रहोगी तो मैं तुम्हें और कुछ नहीं बताऊंगी,’ उसने चिढ़कर उठते हुए जवाब दिया। ‘मैंने उसे स्वीकार कर लिया है, नेली। जल्दी बताओ, क्या मैं गलत थी!’

‘आपने उसे स्वीकार कर लिया! तो फिर इस मामले पर चर्चा करने का क्या फायदा? आपने अपना वचन दे दिया है, और अब आप उससे पीछे नहीं हट सकते।’

‘लेकिन बताओ कि क्या मुझे ऐसा करना चाहिए था—बताओ!’ उसने चिड़चिड़े स्वर में कहा; अपने हाथों को आपस में रगड़ते हुए और भौंहें चढ़ाते हुए।

मैंने गंभीर स्वर में कहा, 'इस प्रश्न का सही उत्तर देने से पहले कई बातों पर विचार करना होगा। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, क्या आप मिस्टर एडगर से प्यार करती हैं?'

‘इसमें कौन कुछ कर सकता है? बेशक मैं कर सकती हूं,’ उसने जवाब दिया।

फिर मैंने उसे निम्नलिखित धार्मिक शिक्षा दी: बाईस साल की लड़की के लिए यह अनुचित नहीं था।

'आप उससे प्यार क्यों करती हैं, मिस कैथी?'

'मैं बकवास करता हूँ - इतना ही काफी है।'

'बिल्कुल नहीं; आपको कारण बताना होगा?'

'क्योंकि वह सुंदर है और उसके साथ रहना सुखद है।'

‘बुरा!’ यही मेरी टिप्पणी थी।

और क्योंकि वह युवा और हंसमुख है।

'अभी भी बुरा है।'

और क्योंकि वह मुझसे प्यार करता है।

‘उदासीन होकर, वहाँ आ रहे हैं।’

और वह अमीर होगा, और मैं मोहल्ले की सबसे महान महिला बनना चाहूंगी, और

मुझे ऐसे पति को पाकर गर्व होगा।

सबसे बुरी बात। और अब, बताओ कि तुम उससे कितना प्यार करती हो?

‘जैसा कि सभी को पसंद है — तुम मूर्ख हो, नेली।’

‘बिल्कुल नहीं – उत्तर दें।’

मुझे उसके पैरों के नीचे की ज़मीन, उसके सिर के ऊपर की हवा, उसकी हर छुई हुई चीज़, और उसके कहे हर शब्द से प्यार है। मुझे उसकी हर नज़र, हर हरकत, और वह खुद पूरी तरह से पसंद है। बस, अब!

और क्यों?

‘नहीं; तुम इसका मजाक बना रहे हो: यह बेहद ही अभद्र है! मेरे लिए यह कोई मजाक नहीं है!’ युवती ने मुंह फुलाते हुए और अपना चेहरा आग की ओर मोड़ते हुए कहा।

‘मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ, मिस कैथरीन,’ मैंने जवाब दिया। ‘आप मिस्टर एडगर से इसलिए प्यार करती हैं क्योंकि वह सुंदर, जवान, हंसमुख, अमीर हैं और आपसे प्यार करते हैं। लेकिन आखिरी बात मायने नहीं रखती: आप शायद इन सब बातों के बिना भी उनसे प्यार करतीं; और इन सब बातों के साथ भी नहीं करतीं, जब तक कि उनमें पहले के चारों आकर्षण न हों।’

'नहीं, बिलकुल नहीं: मुझे तो उस पर दया ही आएगी - शायद उससे नफरत भी हो, अगर वह बदसूरत और मसखरा होता।'

लेकिन दुनिया में कई और भी सुंदर, धनी युवक हैं: शायद उससे भी ज्यादा सुंदर और धनी। आपको उनसे प्रेम करने से क्या रोक रहा है?

'अगर कोई हैं भी तो वे मेरे रास्ते से हट गए हैं: मैंने एडगर जैसा कोई नहीं देखा।'

'हो सकता है कि आपको उनमें से कुछ दिखें; और वह हमेशा सुंदर, जवान और शायद हमेशा अमीर नहीं होगा।'

‘वह अभी है; और मुझे केवल वर्तमान से मतलब है। काश आप तर्कसंगत ढंग से बात करते।’

‘ठीक है, तो बात पक्की हो गई: अगर आपको सिर्फ वर्तमान से ही मतलब रखना है, तो मिस्टर लिंटन से शादी कर लीजिए।’

मुझे इसके लिए आपकी अनुमति नहीं चाहिए - मैं उससे शादी करूंगी: और फिर भी आपने मुझे यह नहीं बताया कि मैं सही हूं या नहीं।'

बिल्कुल सही; अगर लोग सिर्फ वर्तमान के लिए शादी करना सही समझते हैं। और अब, हमें बताइए कि आप किस बात से नाखुश हैं। आपका भाई खुश होगा; मुझे लगता है कि बुजुर्ग महिला और सज्जन को भी कोई आपत्ति नहीं होगी; आप एक अव्यवस्थित, असुविधाजनक घर से निकलकर एक समृद्ध, सम्मानित घर में जाएंगी; और आप एडगर से प्यार करती हैं, और एडगर आपसे प्यार करता है। सब कुछ सहज और आसान लगता है: बाधा कहाँ है?

'यहाँ! और यहाँ!' कैथरीन ने अपने माथे पर एक हाथ और छाती पर दूसरा हाथ मारते हुए उत्तर दिया: 'जहाँ भी आत्मा निवास करती है। मेरी आत्मा में और मेरे हृदय में, मुझे पूरा विश्वास है कि मैं गलत हूँ!'

'यह तो बहुत अजीब है! मुझे समझ नहीं आ रहा।'

'यह मेरा रहस्य है। लेकिन अगर आप मेरा मजाक नहीं उड़ाएंगे, तो मैं इसे समझा दूंगा: मैं इसे स्पष्ट रूप से नहीं बता सकता; लेकिन मैं आपको यह एहसास दिला दूंगा कि मुझे कैसा महसूस हो रहा है।'

वह फिर से मेरे पास बैठ गई: उसका चेहरा और भी उदास और गंभीर हो गया, और उसकी आपस में जुड़ी हुई हथेलियाँ कांपने लगीं।

कुछ मिनट सोचने के बाद उसने अचानक कहा, 'नेली, क्या तुम कभी समलैंगिक सपने नहीं देखती?'

'हां, कभी-कभार,' मैंने उत्तर दिया।

और मैं भी। मैंने अपने जीवन में ऐसे सपने देखे हैं जो हमेशा मेरे साथ रहे हैं और मेरे विचारों को बदल दिया है: वे मुझमें इस तरह समा गए हैं जैसे पानी में शराब घुल जाती है, और मेरे मन का रंग बदल दिया है। और यह उनमें से एक है: मैं इसे बताने जा रहा हूँ - लेकिन ध्यान रहे कि इसके किसी भी हिस्से पर मुस्कुराना मत।

'अरे! रहने दीजिए, मिस कैथरीन!' मैं चिल्लाई। 'हम पहले से ही काफी उदास हैं, भूत-प्रेतों और कल्पनाओं का सहारा लेकर हमें और परेशान करने की ज़रूरत नहीं है। आइए, आइए, खुश रहिए और अपने स्वभाव के अनुसार रहिए! छोटे हरेटन को देखिए! वह कोई उदास सपना नहीं देख रहा है। नींद में वह कितनी प्यारी मुस्कान दे रहा है!'

हाँ; और उसके पिता अकेले में कितनी मधुरता से गालियाँ देते हैं! मुझे यकीन है कि आपको वह याद होगा, जब वह बिल्कुल उस गोल-मटोल बच्चे जैसा ही था:

लगभग उतना ही जवान और मासूम। खैर, नेली, मैं तुम्हें सुनने के लिए बाध्य हूँ: ज़्यादा देर नहीं है; और आज रात मेरे पास खुश रहने की शक्ति नहीं है।

'मैं इसे नहीं सुनूंगा, मैं इसे नहीं सुनूंगा!' मैंने जल्दी से दोहराया।

मैं उस समय सपनों को लेकर अंधविश्वासी था, और आज भी हूँ; और कैथरीन के चेहरे पर एक अजीब सी उदासी छाई हुई थी, जिससे मुझे किसी बात का डर सताने लगा, जिससे शायद मैं कोई भविष्यवाणी कर सकूँ और किसी भयानक विपत्ति का पूर्वाभास कर सकूँ। वह परेशान थी, लेकिन उसने आगे कुछ नहीं कहा। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह किसी और विषय पर बात कर रही है, और थोड़ी देर बाद उसने फिर से बोलना शुरू कर दिया।

'अगर मैं स्वर्ग में होती, नेली, तो मैं बेहद दुखी होती।'

मैंने उत्तर दिया, 'क्योंकि तुम वहाँ जाने के योग्य नहीं हो। स्वर्ग में सभी पापी दुखी होंगे।'

लेकिन ऐसा नहीं है। मैंने एक बार सपना देखा था कि मैं वहां था।

'मैं आपसे कह रही हूँ, मैं आपके सपनों पर ध्यान नहीं दूंगी, मिस कैथरीन! मैं सोने जा रही हूँ,' मैंने फिर से बात काटते हुए कहा।

वह हंस पड़ी और मुझे वहीं रोक लिया; क्योंकि मैंने अपनी कुर्सी से उठने की कोशिश की थी।

'यह तो कुछ भी नहीं है,' वह रोते हुए बोली: 'मैं तो बस यही कहने वाली थी कि स्वर्ग मुझे अपना घर नहीं लगता; और धरती पर वापस आने के लिए मैं फूट-फूट कर रोई; और स्वर्गदूत इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने मुझे वुदरिंग हाइट्स की चोटी पर स्थित खुले मैदान के बीचोंबीच फेंक दिया; जहाँ मैं खुशी से सिसकते हुए उठी। यही मेरे रहस्य को समझाने के लिए काफी है, बाकी सब भी। एडगर लिंटन से शादी करने का मुझे उतना ही अधिकार नहीं है जितना स्वर्ग में रहने का; और अगर उस दुष्ट ने हीथक्लिफ को इतना नीचा न दिखाया होता, तो मैं इसके बारे में सोचती भी नहीं। अब हीथक्लिफ से शादी करना मेरे लिए अपमानजनक होगा; इसलिए उसे कभी पता नहीं चलेगा कि मैं उससे कितना प्यार करती हूँ: और यह इसलिए नहीं कि वह सुंदर है, नेली, बल्कि इसलिए कि वह मुझसे भी ज़्यादा मैं हूँ। हमारी आत्माएँ चाहे जिस चीज़ से बनी हों, उसकी और मेरी एक ही हैं; और लिंटन की आत्मा चाँद की किरण और बिजली, या पाले और आग की तरह अलग है।'

भाषण समाप्त होने से पहले ही मुझे हीथक्लिफ की उपस्थिति का आभास हो गया। हल्की सी हलचल देखकर मैंने अपना सिर घुमाया और देखा कि वह बेंच से उठा और चुपचाप बाहर चला गया। उसने तब तक सुना जब तक कैथरीन ने यह नहीं कहा कि उससे शादी करना उसके लिए अपमानजनक होगा, और फिर वह आगे कुछ सुनने के लिए नहीं रुका। मेरी सहेली, जो ज़मीन पर बैठी थी, सोफे के पिछले हिस्से के कारण उसकी उपस्थिति या प्रस्थान पर ध्यान नहीं दे पाई; लेकिन मैं चौंक गई और उसे चुप रहने को कहा!

‘क्यों?’ उसने घबराकर चारों ओर देखते हुए पूछा।

मैंने संयोगवश सड़क पर जोसेफ के कलाबाजियों की आवाज सुनकर जवाब दिया, 'जोसेफ यहीं है; और हीथक्लिफ भी उसके साथ आएगा। मुझे पक्का नहीं पता कि वह इस समय दरवाजे पर है या नहीं।'

‘अरे, वो दरवाजे पर मेरी बातें सुन ही नहीं सकता था!’ उसने कहा। ‘जब तक तुम खाना बना रहे हो, मुझे हैरेटन दे दो, और जब खाना तैयार हो जाए तो मुझे भी अपने साथ खाने पर बुला लेना। मैं अपने बेचैन मन को शांत करना चाहती हूँ, और यह यकीन करना चाहती हूँ कि हीथक्लिफ को इन सब बातों का कोई अंदाजा नहीं है। है ना? उसे पता ही नहीं कि प्यार क्या होता है!’

मैंने जवाब दिया, ‘मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि वह तुम्हारे जितना न जानता हो; और अगर तुम उसकी पसंद हो, तो वह दुनिया का सबसे बदनसीब प्राणी होगा! जैसे ही तुम मिसेज़ लिंटन बनोगी, वह दोस्त, प्यार, सब कुछ खो देगा! क्या तुमने सोचा है कि तुम यह जुदाई कैसे सहोगी, और वह दुनिया में बिल्कुल अकेला कैसे रह जाएगा? क्योंकि, मिस कैथरीन—’

‘उसने तो मुझे पूरी तरह छोड़ दिया! हम अलग हो गए!’ उसने गुस्से से भरे लहजे में कहा। ‘हमें कौन अलग कर सकता है? उनका भी वही हाल होगा जो माइलो का हुआ! जब तक मैं ज़िंदा हूँ, एलेन: कोई भी इंसान ऐसा नहीं कर सकता। धरती पर मौजूद हर लिंटन भले ही गायब हो जाए, लेकिन मैं हीथक्लिफ को छोड़ने के लिए राज़ी नहीं हो सकती। ओह, मेरा ऐसा इरादा नहीं है - मेरा मतलब ये बिल्कुल नहीं है! अगर ऐसी कीमत चुकानी पड़े तो मैं मिसेज़ लिंटन नहीं बनूँगी! वो मेरे लिए उतना ही रहेगा जितना वो अपनी पूरी ज़िंदगी रहा है। एडगर को अपनी नफ़रत छोड़नी होगी और कम से कम उसे बर्दाश्त करना होगा। वो करेगा, जब उसे मेरे सच्चे दिल का पता

चलेगा। नेली, अब मुझे समझ आ रहा है कि तुम मुझे स्वार्थी समझती हो; लेकिन क्या तुम्हें कभी ये ख्याल नहीं आया कि अगर हीथक्लिफ और मैं शादी कर लें, तो हम भिखारी हो जाएँगे? जबकि, अगर मैं लिंटन से शादी कर लूँ, तो मैं हीथक्लिफ को आगे बढ़ने में मदद कर सकती हूँ और उसे अपने भाई के चंगुल से बाहर निकाल सकती हूँ।'

'क्या आप अपने पति के पैसों से ऐसा करेंगी, मिस कैथरीन?' मैंने पूछा। 'आप पाएंगी कि वह उतना नरम दिल नहीं है जितना आप सोच रही हैं: और, हालांकि मैं कोई न्यायविद नहीं हूं, मुझे लगता है कि युवा लिंटन की पत्नी बनने के लिए आपने अब तक जो भी कारण बताए हैं, उनमें यह सबसे खराब है।'

'ऐसा नहीं है,' उसने जवाब दिया; 'यह सबसे अच्छा है! बाकी सब मेरी सनक की पूर्ति थे: और एडगर की खातिर भी, उसे संतुष्ट करने के लिए। यह उस व्यक्ति के लिए है जो मेरे एडगर और मेरे प्रति भावों को समझता है। मैं इसे व्यक्त नहीं कर सकती; लेकिन निश्चित रूप से आप और हर कोई यह जानता है कि आपका अस्तित्व आपसे परे भी है या होना चाहिए। अगर मैं पूरी तरह से यहीं समाहित होती, तो मेरे सृजन का क्या लाभ होता? इस संसार में मेरे सबसे बड़े दुख हीथक्लिफ के दुख रहे हैं, और मैंने शुरू से ही हर एक को देखा और महसूस किया है: मेरे जीवन का सबसे बड़ा विचार वही है। अगर सब कुछ नष्ट हो जाए, और वह शेष रहे, तो भी मेरा अस्तित्व बना रहेगा; और अगर सब कुछ शेष रहे, और वह नष्ट हो जाए, तो ब्रह्मांड एक अजनबी में बदल जाएगा: मैं उसका हिस्सा नहीं लगूंगी। — लिंटन के लिए मेरा प्रेम जंगल के पत्तों जैसा है: समय इसे बदल देगा, मैं भली-भांति जानती हूँ, जैसे सर्दी पेड़ों को बदल देती है।' हीथक्लिफ के लिए मेरा प्यार नीचे की शाश्वत चट्टानों जैसा है: एक ऐसा स्रोत जो दृश्य रूप से कम आनंद देता है, लेकिन आवश्यक है। नेली, मैं ही हीथक्लिफ हूँ! वह हमेशा, हमेशा मेरे मन में रहता है: एक आनंद के रूप में नहीं, जैसे मैं हमेशा खुद के लिए आनंद नहीं होता, बल्कि मेरे अस्तित्व के रूप में। इसलिए हमारे बिछड़ने की बात फिर कभी मत करो: यह अव्यावहारिक है; और—

वह रुकी और अपना चेहरा मेरे गाउन की तहों में छिपा लिया; लेकिन मैंने उसे ज़बरदस्ती झटक कर हटा दिया। मैं उसकी इस मूर्खता से तंग आ चुकी थी!

'अगर मैं आपकी इस बेतुकी बात को थोड़ा भी समझ पाऊं, महोदया,' मैंने कहा, 'तो इससे मुझे यही यकीन होता है कि आप शादी के बाद अपने कर्तव्यों से अनभिज्ञ

हैं; या फिर आप एक दुष्ट, सिद्धांतहीन लड़की हैं। लेकिन मुझे और कोई रहस्य बताकर परेशान मत कीजिए: मैं उन्हें गुप्त रखने का वादा नहीं कर सकता।’

‘क्या तुम इसे रखोगे?’ उसने उत्सुकता से पूछा।

‘नहीं, मैं वादा नहीं करूंगा,’ मैंने दोहराया।

वह ज़िद करने ही वाली थी कि जोसेफ के आने से हमारी बातचीत रुक गई; और कैथरीन अपनी कुर्सी एक कोने में ले गई और हैरेटन की देखभाल करने लगी, जबकि मैंने रात का खाना बनाया। खाना पकने के बाद, मेरे साथी नौकर और मैं इस बात पर झगड़ने लगे कि मिस्टर हिंडले को कौन थोड़ा खाना देगा; और यह झगड़ा तब तक सुलझता नहीं जब तक कि सारा खाना लगभग ठंडा नहीं हो गया। फिर हम इस बात पर सहमत हुए कि अगर उन्हें कुछ चाहिए तो हम उन्हें खुद मांगने देंगे; क्योंकि हमें उनके सामने जाने से खास तौर पर डर लगता था जब वह कुछ देर अकेले रहे हों।

‘और अब तक वो खेत से अंदर क्यों नहीं आया? वो क्या कर रहा है? बेकार की नज़रें गड़ाए हुए है!’ बूढ़े आदमी ने हीथक्लिफ को ढूंढते हुए पूछा।

मैंने जवाब दिया, 'मैं उसे फोन करूंगा। मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि वह खलिहान में ही होगा।'

मैं जाकर उसे पुकारा, पर कोई जवाब नहीं मिला। लौटकर मैंने कैथरीन से धीरे से कहा कि उसने उसकी कही हुई बातों का अच्छा-खासा हिस्सा सुन लिया था, मुझे पूरा यकीन था; और बताया कि मैंने उसे रसोई से निकलते हुए देखा, ठीक उसी समय जब वह अपने भाई के उसके प्रति व्यवहार के बारे में शिकायत कर रही थी। वह बुरी तरह डर गई, हरेटन को सोफे पर पटक दिया और खुद अपने दोस्त को ढूंढने दौड़ पड़ी; उसने यह सोचने का समय ही नहीं लिया कि वह इतनी घबराई हुई क्यों थी, या उसकी बातों का उस पर क्या असर हुआ होगा। वह इतनी देर तक अनुपस्थित रही कि जोसेफ ने सुझाव दिया कि हमें अब और इंतजार नहीं करना चाहिए। उसने चालाकी से अनुमान लगाया कि वे उसकी लंबी प्रार्थना सुनने से बचने के लिए बाहर रह रहे हैं। उसने कहा, 'वे किसी भी तरह के शिष्टाचार के लायक नहीं हैं।' और उनकी ओर से उस रात उन्होंने भोजन से पहले की सामान्य पंद्रह मिनट की प्रार्थना में एक विशेष प्रार्थना भी जोड़ दी, और प्रार्थना के अंत में एक और प्रार्थना जोड़ देते, यदि उनकी युवा प्रेमिका ने बीच में आकर उन्हें यह आदेश न दिया होता कि उन्हें सड़क पर दौड़कर जाना होगा, और जहाँ कहीं भी हीथक्लिफ भटक गया हो, उसे ढूंढकर तुरंत वापस

लाना होगा!

“मैं उससे बात करना चाहती हूँ, और मुझे ऊपर जाने से पहले उससे बात करनी ही होगी,” उसने कहा। “और द्वार खुला है: वह कहीं ऐसी जगह है जहाँ से मेरी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही; क्योंकि उसने जवाब नहीं दिया, हालाँकि मैंने बाड़े के ऊपर से पूरी ताकत से चिल्लाकर उसे पुकारा।”

पहले तो जोसेफ ने आपत्ति जताई; लेकिन कैथरीन इतनी गंभीर थी कि वह विरोध बर्दाश्त नहीं कर सकी; और अंत में उसने अपनी टोपी सिर पर रखी और बड़बड़ाते हुए आगे बढ़ गया। इसी बीच, कैथरीन कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाती हुई बोली—‘पता नहीं वो कहाँ है—पता नहीं वो कहाँ हो सकता है! मैंने क्या कहा, नेली? मैं भूल गई। क्या वो आज दोपहर मेरे खराब मूड से नाराज़ हो गया? अरे! बताओ मैंने ऐसा क्या कहा जिससे वो दुखी हो गया? काश वो आ जाता। काश वो आ जाता!’

‘बेवजह इतना शोर मचाना!’ मैं खुद थोड़ा असहज होते हुए भी चिल्लाई। ‘तुम्हें इतनी छोटी सी बात से इतना डर लग रहा है! हीथक्लिफ का चांदनी रात में मैदानों पर टहलना या भूसे के गोदाम में हमसे बात करने से भी कतराना कोई बड़ी चिंता की बात नहीं है। मुझे पूरा यकीन है कि वो वहीं छिपा होगा। देखो, मैं उसे ढूंढ निकालती हूँ!’

मैंने अपनी खोज को पुनः शुरू करने के लिए प्रस्थान किया; इसका परिणाम निराशा ही रहा, और यूसुफ की खोज का भी यही हाल हुआ।

‘वो लड़का तो बस झगड़ा ही करता है!’ उसने अंदर आते ही कहा। ‘वो गेट को पूरी रफ्तार से खोलकर चला गया है, और मालकिन का टट्टू दो बोरी अनाज रौंदकर सीधे मैदान में चला गया है! हे भगवान, मालिक कल शैतान की तरह बर्ताव करेगा, और उसे खूब खरी उतरेगी। ऐसे लापरवाह, गंदे गड्ढों के साथ उसका धैर्य ही उसकी असली ताकत है - कितना धैर्य है उसका! लेकिन वो हमेशा ऐसा नहीं रहेगा - तुम देखोगे, सब तुम्हारी जिम्मेदारी है! उसे बेवजह पागल नहीं करना चाहिए!’

‘क्या तुम्हें हीथक्लिफ मिल गया, बेवकूफ?’ कैथरीन ने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘क्या तुम उसे ढूंढ रहे हो, जैसा मैंने आदेश दिया था?’

‘मुझे घोड़े की तलाश करनी चाहिए,’ उसने जवाब दिया। ‘यह ज़्यादा समझदारी होगी। लेकिन मैं उत्तरी घोड़े की तलाश कर सकता हूँ, ऐसे आदमी की नहीं जो चिमनी की तरह काला हो! और हीथक्लिफ मेरी सीटी पर आने वाला आदमी नहीं है - शायद तुम्हारे साथ वह कम बहरा होगा!’

गर्मी की शाम के हिसाब से वह बहुत ही अँधेरी शाम थी: बादल गरजने वाले लग रहे थे, और मैंने कहा कि बेहतर होगा कि हम सब बैठ जाएँ; आने वाली बारिश उसे बिना किसी और परेशानी के घर ले आएगी। लेकिन कैथरीन शांत नहीं हुई। वह बेचैनी में इधर-उधर घूमती रही, फाटक से दरवाजे तक, उसे ज़रा भी आराम नहीं मिल रहा था; और अंत में वह सड़क के पास दीवार के एक किनारे पर स्थायी रूप से बैठ गई: जहाँ, मेरी चेतावनियों, गरजते बादलों और चारों ओर गिरती बड़ी-बड़ी बूँदों की परवाह किए बिना, वह बैठी रही, कभी पुकारती, कभी सुनती, और कभी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती। ज़ोर-ज़ोर से रोने के मामले में वह हैरेटोन या किसी भी बच्चे से ज़्यादा ज़ोर से रोती थी।

आधी रात के करीब, जब हम अभी भी जाग रहे थे, तभी ज़ोरदार तूफान पहाड़ियों पर गरजता हुआ आ गया। तेज़ हवा के साथ-साथ बिजली भी कड़क रही थी, और इन्हीं दोनों में से किसी एक ने इमारत के कोने पर एक पेड़ को तोड़ दिया: एक विशाल शाखा छत पर गिरी और पूर्वी चिमनी के एक हिस्से को गिरा दिया, जिससे पत्थर और कालिख रसोई की आग में जा गिरे। हमें लगा जैसे हमारे बीच बिजली का झटका लगा हो; और यूसुफ घुटनों के बल गिर पड़ा, प्रभु से प्रार्थना करने लगा कि वह कुलपतियों नूह और लूत को याद रखे और पहले की तरह धर्मियों को बचाए रखे, भले ही वह दुष्टों को दंडित करे। मुझे लगा कि यह हम पर भी न्याय है। मेरे मन में योना श्री अर्नशॉ थे; और मैंने यह पता लगाने के लिए उनके कमरे का हैंडल हिलाया कि क्या वह अभी भी जीवित हैं। उन्होंने काफी स्पष्ट रूप से उत्तर दिया, जिससे मेरा साथी पहले से भी अधिक ज़ोर से चिल्ला उठा कि उनके जैसे संतों और उनके मालिक जैसे पापियों के बीच स्पष्ट अंतर किया जा सकता है। लेकिन बीस मिनट में शोरगुल थम गया और हम सब सुरक्षित रहे; सिवाय कैथी के, जो आश्रय लेने से इनकार करने की अपनी ज़िद के कारण पूरी तरह भीग गई। वह बिना टोपी और शॉल के खड़ी रही और अपने बालों और कपड़ों से जितना हो सके पानी सोखने की कोशिश करती रही। वह अंदर आई और पूरी तरह भीगी हुई सोफे पर लेट गई, अपना चेहरा पीछे की ओर करके और अपने हाथ उसके सामने रख दिए।

'वाह, महोदया!' मैंने उनका कंधा छूते हुए कहा; 'आप अपनी जान जोखिम में तो नहीं डाल रही हैं? आपको पता है कितने बजे हैं? साढ़े बारह बज रहे हैं। आइए, आइए बिस्तर पर! उस मूर्ख लड़के का और इंतज़ार करने का कोई फायदा नहीं: वह गिम्मर्टन

चला गया होगा, और अब वहीं रहेगा। उसे लगता है कि हमें इतनी देर तक उसका इंतज़ार नहीं करना चाहिए: कम से कम, उसे लगता है कि केवल मिस्टर हिंडले ही जागे होंगे; और वह मालिक द्वारा दरवाजा खोले जाने से बचना चाहता है।'

'नहीं, नहीं, वह गिम्मर्टन में नहीं है,' जोसेफ ने कहा। 'मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर वह किसी दलदल में छिपा हो। यह मुलाकात व्यर्थ नहीं गई, और मैं आपसे कहना चाहूंगा, मिस - अगली बारी आपकी ही होगी। भगवान का शुक्र है! सब कुछ अच्छा हो, जो भी चुना गया है और कचरे से निकाला गया है, सब मिलकर काम करते हैं! आप जानती हैं कि पवित्र शास्त्र क्या कहता है।' और उन्होंने कई ग्रंथों का हवाला देना शुरू कर दिया, और हमें उन अध्यायों और छंदों का उल्लेख किया जहाँ हम उन्हें पा सकते थे।

मैंने उस जिद्दी लड़की से उठकर अपने गीले कपड़े उतारने की व्यर्थ विनती की, उसे उपदेश देते और उसे कांपती हुई छोड़कर, छोटे हरेटन के साथ बिस्तर पर चली गई, जो इतनी गहरी नींद में सो रहा था मानो उसके आसपास सभी सो रहे हों। थोड़ी देर बाद मैंने जोसेफ को पढ़ते हुए सुना; फिर मैंने सीढ़ी पर उसके धीमे कदमों की आहट सुनी, और फिर मैं सो गई।

सामान्य से कुछ देर बाद नीचे आते हुए, मैंने खिड़कियों के छेदों से छनकर आती धूप में देखा कि मिस कैथरीन अभी भी अंगीठी के पास बैठी थीं। घर का दरवाजा भी थोड़ा खुला था; खुली खिड़कियों से रोशनी अंदर आ रही थी; हिंडले बाहर आ गया था और रसोई के चूल्हे पर खड़ा था, थका हुआ और नींद में डूबा हुआ।

जब मैं अंदर दाखिल हुई तो वह कह रहा था, 'कैथी, तुम्हें क्या तकलीफ है? तुम भीगे हुए पिल्ले की तरह उदास दिख रही हो। बच्ची, तुम इतनी भीगी और पीली क्यों दिख रही हो?'

उसने अनिच्छा से उत्तर दिया, "मैं भीग गई हूँ, और मुझे ठंड लग रही है, बस इतना ही।"

'अरे, ये तो बहुत शरारती है!' मैंने कहा, क्योंकि मुझे लगा कि मालिक अब काफी होश में है। 'कल शाम की बारिश में ये पूरी तरह भीग गई थी और रात भर वहीं बैठी रही, और मैं इसे हिला भी नहीं सका।'

श्री अर्नशॉ ने आश्चर्य से हमारी ओर देखा। 'पूरी रात,' उन्होंने दोहराया। 'उसे किस बात ने जगाए रखा? बिजली कड़कने का डर तो नहीं था, है ना? वह तो घंटों पहले ही

खत्म हो गया था।'

हम दोनों में से कोई भी हीथक्लिफ की अनुपस्थिति का ज़िक्र नहीं करना चाहता था, जब तक कि हम इसे छुपा सकें; इसलिए मैंने जवाब दिया, मुझे नहीं पता कि उसे उठकर बैठने की हिम्मत कैसे हुई; और उसने कुछ नहीं कहा। सुबह ताज़ी और ठंडी थी; मैंने खिड़की का पर्दा खोला, और देखते ही देखते कमरा बगीचे की मीठी खुशबू से भर गया; लेकिन कैथरीन ने चिढ़कर मुझे पुकारा, 'एलेन, खिड़की बंद कर दो। मुझे बहुत भूख लगी है!' और उसके दांत किटकिटाने लगे जैसे ही वह लगभग बुझ चुकी आग के अंगारों के पास सिमट गई।

'वह बीमार है,' हिंडले ने उसकी कलाई पकड़ते हुए कहा; 'मुझे लगता है इसीलिए वह सोने नहीं जा रही थी। धिक्कार है! मैं यहाँ और बीमारी से परेशान नहीं होना चाहता। तुम बारिश में बाहर क्यों गए थे?'

'हमेशा की तरह लड़कों के पीछे भाग रहे हो!' जोसेफ ने हमारी झिझक का फायदा उठाते हुए अपनी तीखी जुबान चलाते हुए कर्कश स्वर में कहा। 'अगर मैं यहाँ होता, मालिक, तो मैं सीधे-सीधे उनके मुँह पर तख्ते पटक देता! ऐसा कोई दिन नहीं जाता जब आप छुट्टी पर हों, वो लिंटन का वो बदमाश यहाँ चुपके से आ जाता है; और मिस नेली, वो कितनी सुंदर लड़की है! वो रसोई में आपका इंतज़ार करती रहती है; और जैसे ही आप एक दरवाजे से अंदर जाते हैं, वो दूसरे से बाहर निकल जाता है; और फिर, हमारी मालकिन उससे प्रेम करने निकल जाती है! रात के बारह बजे के बाद खेतों में उस घिनौने, बदसूरत जिप्सी, हीथक्लिफ के साथ छुपकर घूमना कितना अजीब है! उन्हें लगता है कि मैं अंधा हूँ; लेकिन मैं अंधा नहीं हूँ: बस एक पल के लिए!' — मैंने युवा लिंटन को आते-जाते देखा, और मैंने तुम्हें (मुझसे बात करते हुए) यह कहते हुए देखा, 'तुम बेकार हो, आलसी चुड़ैल! जैसे ही तुमने मालिक के घोड़े की तेज आवाज सुनी, तुरंत उठकर घर में घुस गई।'

'चुप रहो, छुपकर बातें सुनने वाले!' कैथरीन चिल्लाई; 'मेरे सामने तुम्हारी बदतमीज़ी नहीं चलेगी! एडगर लिंटन कल संयोग से आ गया था, हिंडले; और मैंने ही उसे जाने के लिए कहा था: क्योंकि मुझे पता था कि तुम उससे इस हालत में मिलना पसंद नहीं करोगे।'

'कैथी, तुम झूठ बोल रही हो, इसमें कोई शक नहीं,' उसके भाई ने जवाब दिया, 'और तुम बिलकुल मूर्ख हो! लेकिन अभी लिंटन की चिंता मत करो: बताओ, क्या तुम

कल रात हीथक्लिफ के साथ नहीं थीं? अब सच बोलो। तुम्हें उसे नुकसान पहुँचाने से डरने की ज़रूरत नहीं है: हालाँकि मैं उससे पहले की तरह ही नफ़रत करता हूँ, उसने कुछ समय पहले मेरा एक भला किया था जिससे मेरा ज़मीर उसका गला काटने से भी नहीं हिचकिचा रहा है। ऐसा होने से रोकने के लिए, मैं उसे आज सुबह ही उसके काम पर भेज दूँगा; और उसके जाने के बाद, मैं तुम सबको सतर्क रहने की सलाह दूँगा: तब मेरा मूड तुम पर और भी ज़्यादा अच्छा रहेगा।'

"मैंने कल रात हीथक्लिफ को नहीं देखा," कैथरीन फूट-फूटकर रोने लगी। "और अगर आप उसे घर से बाहर निकाल दें, तो मैं उसके साथ चलूँगी। लेकिन शायद आपको कभी मौका ही न मिले: शायद वह चला गया हो।" यहाँ वह बेकाबू होकर रोने लगी और उसके शब्द अस्पष्ट हो गए।

हिंडले ने उस पर गालियों की बौछार कर दी और उसे तुरंत अपने कमरे में जाने को कहा, नहीं तो वह बेवजह रोएगी! मैंने उसकी बात मान ली; और मैं कभी नहीं भूल सकती कि जब हम उसके कमरे में पहुँचे तो उसने कैसा तमाशा किया: मैं डर गई। मुझे लगा कि वह पागल हो रही है, और मैंने जोसेफ से डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा। यह प्रलाप की शुरुआत साबित हुई: श्री केनेथ ने उसे देखते ही उसे गंभीर रूप से बीमार घोषित कर दिया; उसे बुखार था। उन्होंने उसका खून निकाला और मुझे उसे मट्ठा और पानी का दलिया खिलाकर जीवित रखने को कहा, और ध्यान रखने को कहा कि वह खुद को सीढ़ियों से नीचे या खिड़की से बाहर न फेंक दे; और फिर वह चले गए: क्योंकि उनके पास पैरिश में करने के लिए बहुत काम था, जहाँ एक झोपड़ी से दूसरी झोपड़ी की सामान्य दूरी दो या तीन मील थी।

हालांकि मैं यह नहीं कह सकती कि मैं एक अच्छी नर्स थी, और जोसेफ और मालिक भी मुझसे बेहतर नहीं थे, और हालांकि हमारी मरीज़ जितनी ज़िद्दी और अड़ियल हो सकती थी, उसने सब कुछ सह लिया। बूढ़ी श्रीमती लिंटन कई बार हमसे मिलने आईं, उन्होंने सब कुछ ठीक किया, हम सबको डांटा और आदेश दिया; और जब कैथरीन बीमार थी, तो उन्होंने उसे थ्रशक्रॉस ग्रेंज ले जाने पर ज़ोर दिया: जिसके लिए हम उनके बहुत आभारी थे। लेकिन बेचारी को अपनी इस दयालुता पर पछतावा हुआ: उसे और उसके पति दोनों को बुखार हो गया और कुछ ही दिनों के अंतराल में दोनों की मृत्यु हो गई।

हमारी युवती पहले से कहीं अधिक चंचल, भावुक और अभिमानी होकर लौटी।

उस तूफान वाली शाम के बाद से हीथक्लिफ का कोई अता-पता नहीं था; और एक दिन, जब उसने मुझे बहुत उकसाया, तो मुझे दुर्भाग्यवश उसके गायब होने का दोष उस पर ही लगाना पड़ा: और वास्तव में दोष उसी का था, जैसा कि वह भली-भांति जानती थी। उस घटना के बाद से कई महीनों तक, उसने मुझसे एक नौकरानी के अलावा कोई संपर्क नहीं रखा। जोसेफ पर भी प्रतिबंध लग गया: वह अपनी बात खुलकर कहता और उसे उसी तरह उपदेश देता जैसे वह कोई छोटी बच्ची हो; और वह खुद को एक महिला और हमारी मालकिन समझती थी, और सोचती थी कि उसकी हाल की बीमारी ने उसे सम्मानपूर्वक व्यवहार किए जाने का अधिकार दे दिया है। तब डॉक्टर ने कहा था कि वह ज्यादा विरोध बर्दाश्त नहीं कर पाएगी; उसे अपनी मनमानी करनी चाहिए; और उसकी नजरों में किसी के लिए भी उसका विरोध करना हत्या के बराबर था। वह मिस्टर अर्नशॉ और उनके साथियों से दूर रहने लगी; केनेथ द्वारा प्रशिक्षित होने और अक्सर उसके गुस्से के साथ होने वाले गंभीर प्रकोप के बावजूद, उसका भाई उसकी हर मांग पूरी कर देता था और आमतौर पर उसके उग्र स्वभाव को और भड़काने से बचता था। वह उसकी मनमानी को सहने में कुछ ज्यादा ही उदार था; स्नेह से नहीं, बल्कि गर्व से: वह दिल से चाहता था कि वह लिंटन परिवार से विवाह करके परिवार का नाम रोशन करे, और जब तक वह उसे अकेला छोड़ दे, वह चाहे तो हम पर गुलामों की तरह अत्याचार कर सकती थी, उसे कोई परवाह नहीं थी! एडगर लिंटन, उससे पहले और उसके बाद आने वाले कई लोगों की तरह, उस पर मोहित था: और अपने पिता की मृत्यु के तीन साल बाद, जिस दिन वह उसे गिम्मर्टन चैपल ले गया, उस दिन उसने खुद को दुनिया का सबसे खुश इंसान समझा।

मेरी इच्छा के विरुद्ध, मुझे वुदरिंग हाइट्स छोड़ने और उसके साथ यहाँ आने के लिए मना लिया गया। छोटा हरेटन लगभग पाँच वर्ष का था, और मैंने अभी-अभी उसे अक्षर सिखाना शुरू किया था। हमारा बिछड़ना दुख भरा था; लेकिन कैथरीन के आँसू हमारे आँसुओं से कहीं अधिक शक्तिशाली थे। जब मैंने जाने से इनकार कर दिया, और जब उसने पाया कि उसकी विनतियों का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ, तो वह अपने पति और भाई के पास विलाप करते हुए गई। पति ने मुझे अच्छी तनख्वाह देने की पेशकश की; भाई ने मुझे सामान समेटने का आदेश दिया: उसने कहा कि अब जब कोई मालकिन नहीं है, तो उसे घर में कोई औरत नहीं चाहिए; और हरेटन के बारे में, पादरी उसे जल्द ही अपने हाथ में ले लेगा। इसलिए मेरे पास केवल एक ही विकल्प

बचा था: जैसा मुझे आदेश दिया गया था वैसा करना। मैंने पादरी से कहा कि वह सभी भले लोगों को केवल इसलिए निकाल देता है ताकि वह बर्बादी की ओर थोड़ा और तेज़ी से बढ़ सके; मैंने हरेटन को चूमा, अलविदा कहा; और तब से वह एक अजनबी बन गया है: और यह सोचना बहुत अजीब है, लेकिन मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह एलेन डीन के बारे में पूरी तरह से भूल गया है, और यह कि वह कभी उसके लिए और वह उसके लिए पूरी दुनिया से भी बढ़कर थी!

* * * * *

नौकरानी की कहानी के इस मोड़ पर उसकी नज़र चिमनी के ऊपर लगी घड़ी पर पड़ी; और मिनट की सुई को डेढ़ बजते देख वह अचंभित रह गई। वह एक पल भी और रुकना नहीं चाहती थी: सच कहूँ तो, मेरा भी मन कर रहा था कि मैं उसकी कहानी का अगला भाग बाद में सुनूँ। और अब जब वह सोने चली गई है, और मैंने एक-दो घंटे और सोच-विचार कर लिया है, तो मैं भी हिम्मत जुटाकर जाऊँगा, भले ही मेरे सिर और हाथ-पैर सुस्त पड़े हों।

अध्याय X

एक संन्यासी के जीवन का मनमोहक परिचय! चार सप्ताह की यातना, बेचैनी और बीमारी! ओह, ये ठंडी हवाएँ और कड़वी उत्तरी हवाएँ, और दुर्गम सड़कें, और सुस्त ग्रामीण सर्जन! और ओह, मानव चेहरे की यह कमी! और सबसे बुरा, केनेथ का यह भयानक संकेत कि मुझे वसंत तक घर से बाहर निकलने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए!

श्री हीथक्लिफ ने अभी-अभी मुझे फोन करके सम्मानित किया। लगभग सात दिन पहले उन्होंने मुझे दो तीतर भेजे थे - इस मौसम के आखिरी। बदमाश! मेरी इस

बीमारी में उनका भी पूरा हाथ है; और मेरा मन कर रहा था कि उन्हें बता दूं। लेकिन, अफसोस! मैं उस व्यक्ति को कैसे नाराज़ कर सकता था जो इतना दयालु था कि एक घंटे तक मेरे बिस्तर के पास बैठा रहा और गोलियों, दवाइयों, छालों और जोंकों के अलावा किसी और विषय पर बात की? यह काफी आसान समय है। मैं पढ़ने के लिए बहुत कमजोर हूं; फिर भी मुझे लगता है कि मैं कुछ दिलचस्प पढ़ सकता हूं। क्यों न श्रीमती डीन को बुलाकर उनकी कहानी पूरी करवा दूं? मुझे उसकी मुख्य घटनाएं याद हैं, जहां तक उन्होंने लिखी थीं। हां: मुझे याद है कि उनका नायक भाग गया था और तीन साल तक उसका कोई पता नहीं चला; और नायिका की शादी हो गई थी। मैं फोन करता हूं: उन्हें यह जानकर खुशी होगी कि मैं खुश होकर बात कर पा रहा हूं। श्रीमती डीन आईं।

'सर, दवा लेने में बीस मिनट लगते हैं,' उसने कहना शुरू किया।

‘इसे दूर ले जाओ!’ मैंने उत्तर दिया; ‘मैं चाहता हूँ कि—’

डॉक्टर का कहना है कि आपको पाउडर का सेवन बंद करना होगा।

“सचमुच! मुझे बीच में मत टोको। आओ और यहाँ बैठ जाओ। अपनी उंगलियाँ उन कड़वी बोतलों के ढेर से दूर रखो। अपनी बुनाई का सामान अपनी जेब से निकाल लो—बस इतना ही काफी है—अब श्री हीथक्लिफ का इतिहास वहीं से शुरू करो जहाँ तुमने छोड़ा था, आज तक। क्या उन्होंने महाद्वीप पर अपनी शिक्षा पूरी की और एक सज्जन बनकर लौटे? या उन्हें कॉलेज में दर्जी का पद मिला, या वे अमेरिका भाग गए और अपने पालक देश से खून बहाकर सम्मान अर्जित किया? या उन्होंने अंग्रेजी राजमार्गों पर जल्दी ही दौलत कमा ली?”

श्रीमान लॉकवुड, हो सकता है कि उन्होंने इन सभी व्यवसायों में थोड़ा-बहुत काम किया हो; लेकिन मैं किसी के बारे में पक्की गारंटी नहीं दे सकता। मैंने पहले भी कहा था कि मुझे नहीं पता कि उन्होंने पैसा कैसे कमाया; न ही मुझे इस बात की जानकारी है कि उन्होंने अपने दिमाग को उस घोर अज्ञानता से बाहर निकालने के लिए क्या उपाय किए जिसमें वह डूबा हुआ था: लेकिन, आपकी अनुमति से, मैं अपने तरीके से आगे बढ़ूंगा, अगर आपको लगता है कि इससे आपका मनोरंजन होगा और आप ऊबेंगे नहीं। क्या आज सुबह आप बेहतर महसूस कर रहे हैं?

'अधिकता।'

'वो अच्छी खबर है।'

* * * * *

मैं और मिस कैथरीन थ्रशक्रॉस ग्रेंज पहुँचे; और, मेरी सुखद निराशा के लिए, उन्होंने मेरी अपेक्षा से कहीं बेहतर व्यवहार किया। वह मिस्टर लिंटन के प्रति लगभग अत्यधिक स्नेह रखती थीं; और यहाँ तक कि उनकी बहन के प्रति भी उन्होंने भरपूर स्नेह दिखाया। वे दोनों उनकी सुविधा का पूरा ध्यान रखते थे। यह काँटे का हनीसकल के आगे झुकना नहीं था, बल्कि हनीसकल काँटे को गले लगाना था। कोई आपसी समझौता नहीं था: एक अडिग रहता, और दूसरा झुक जाता: और भला कौन बदमिजाज और चिड़चिड़ा हो सकता है जब उसे न तो विरोध का सामना करना पड़े और न ही उदासीनता का? मैंने देखा कि मिस्टर एडगर को उनके मिजाज को ठेस पहुँचाने का गहरा डर था। वह इसे उनसे छिपाते थे; लेकिन अगर कभी वह मुझे तीखी प्रतिक्रिया देते सुनते, या किसी अन्य नौकर को उनके किसी आदेश पर नाराज़ होते देखते, तो वह अपनी नाराज़गी को ऐसे गुस्से से दिखाते जो कभी उनके कारण कम नहीं होता था। उन्होंने कई बार मेरी उद्दंडता के बारे में मुझसे सख्ती से बात की; और उन्होंने कहा कि चाकू का वार भी उनकी पत्नी को दुखी देखकर होने वाले दर्द से कहीं अधिक पीड़ादायक नहीं हो सकता। दयालु स्वामी को दुखी न करने के लिए, मैंने कम संवेदनशील होना सीख लिया; और, लगभग आधे वर्ष तक, बारूद रेत की तरह हानिरहित पड़ा रहा, क्योंकि कोई आग उसके पास विस्फोट करने के लिए नहीं आई। कैथरीन कभी-कभी उदासी और मौन में डूब जाती थीं: उनके पति सहानुभूतिपूर्ण मौन धारण करते थे, जो इसे उनकी घातक बीमारी के कारण उनके शारीरिक स्वास्थ्य में आए परिवर्तन का परिणाम मानते थे; क्योंकि वह पहले कभी भी अवसादग्रस्त नहीं हुई थीं। धूप की वापसी का उन्होंने भी उसी तरह स्वागत किया। मेरा मानना है कि मैं यह कह सकता हूँ कि वे वास्तव में गहरे और बढ़ते हुए सुख का अनुभव कर रहे थे।

यह सब खत्म हो गया। खैर, अंततः हमें अपने लिए ही सोचना चाहिए; सौम्य और उदार लोग दबंगों की तुलना में अधिक स्वाभाविक रूप से स्वार्थी होते हैं; और यह तब समाप्त हुआ जब परिस्थितियों ने हम दोनों को यह महसूस कराया कि एक का हित दूसरे के विचारों में सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं है। सितंबर की एक सुहावनी शाम को, मैं बगीचे से सेबों से भरी एक भारी टोकरी लेकर आ रही थी, जिन्हें मैं इकट्ठा कर रही थी। शाम ढल रही थी, और चाँद आँगन की ऊँची दीवार के ऊपर से झाँक रहा था,

जिससे इमारत के कई उभरे हुए हिस्सों के कोनों में अस्पष्ट परछाइयाँ बन रही थीं। मैंने रसोई के दरवाजे के पास घर की सीढ़ियों पर अपना बोझ रखा, और आराम करने के लिए कुछ देर रुकी, और नरम, मीठी हवा में कुछ और साँसें लीं; मेरी नज़र चाँद पर थी, और मेरी पीठ प्रवेश द्वार की ओर थी, तभी मैंने अपने पीछे से एक आवाज़ सुनी, — 'नेली, क्या तुम हो?'

आवाज गहरी और विदेशी सी थी; फिर भी मेरे नाम के उच्चारण में कुछ ऐसा था जिससे वह जानी-पहचानी सी लग रही थी। मैं डरते-डरते मुड़ी यह देखने के लिए कि कौन बोल रहा है; क्योंकि दरवाजे बंद थे और सीढ़ियों तक आते समय मुझे कोई दिखाई नहीं दिया था। बरामदे में कुछ हलचल हुई; और पास जाकर मैंने देखा कि एक लंबा आदमी गहरे रंग के कपड़े पहने, काले चेहरे और बालों वाला खड़ा है। वह एक तरफ झुक गया और कुंडी पर उंगलियां रखे हुए था, मानो खुद ही दरवाजा खोलने की कोशिश कर रहा हो। 'कौन हो सकता है?' मैंने सोचा। 'श्री अर्नशॉ? अरे नहीं! आवाज तो उनसे बिल्कुल नहीं मिलती।'

'मैं यहाँ एक घंटे से इंतज़ार कर रहा हूँ,' उसने अपनी बात जारी रखी, जबकि मैं उसे घूरता रहा; 'और उस पूरे समय चारों ओर सन्नाटा छाया रहा, जैसे मौत का सन्नाटा। मेरी हिम्मत नहीं हुई अंदर जाने की। क्या तुम मुझे नहीं जानते? देखो, मैं अजनबी नहीं हूँ!'

उसकी शक्ल पर एक किरण पड़ी; गाल पीले पड़ गए थे और आधे काले बालों से ढके हुए थे; भौंहें झुकी हुई थीं, आंखें गहरी और अनोखी थीं। मुझे उसकी आंखें याद आ गईं।

'क्या!' मैं चौंक उठी, यह तय नहीं कर पा रही थी कि उसे कोई सांसारिक आगंतुक मानूँ या नहीं, और मैंने आश्चर्य से अपने हाथ ऊपर उठा लिए। 'क्या! तुम वापस आ गए? क्या सच में तुम हो? क्या सच में?'

"जी हाँ, हीथक्लिफ," उसने जवाब दिया, मेरी तरफ से नज़र हटाकर खिड़कियों की तरफ देखते हुए, जिनमें दर्जनों चमकते चाँद दिख रहे थे, लेकिन अंदर से कोई रोशनी नहीं आ रही थी। "क्या वे घर पर हैं? वह कहाँ है? नेली, तुम खुश नहीं हो! तुम्हें इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। क्या वह यहाँ है? बोलो! मैं उससे एक बात करना चाहता हूँ - तुम्हारी मालकिन से। जाओ, और कहो कि गिम्मर्टन से कोई उससे मिलना चाहता है।"

‘वह इसे कैसे लेगी?’ मैंने हैरानी से कहा। ‘वह क्या करेगी? यह आश्चर्य मुझे स्तब्ध कर देगा – वह तो अपना आपा ही खो बैठेगी! और तुम हीथक्लिफ हो! लेकिन बदले हुए! नहीं, यह समझ से परे है। क्या तुम सैनिक बन गए हो?’

‘जाओ और मेरा संदेश पहुंचाओ,’ उसने अधीरता से बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘जब तक तुम ऐसा नहीं करोगे, मैं नरक में रहूंगा!’

उन्होंने कुंडी उठाई और मैं अंदर चला गया; लेकिन जब मैं उस बैठक में पहुँचा जहाँ श्रीमान और श्रीमती लिंटन बैठे थे, तो मेरा आगे बढ़ने का मन नहीं हुआ। अंततः मैंने मोमबत्तियाँ जलाने का बहाना बनाने का निश्चय किया और दरवाजा खोल दिया।

वे एक खिड़की के पास बैठे थे, जिसकी जाली दीवार से सटी हुई थी, और बगीचे के पेड़ों और हरे-भरे पार्क के पार, गिम्मर्टन की घाटी दिखाई दे रही थी, जिसकी चोटी तक धुंध की एक लंबी लकीर फैली हुई थी (क्योंकि जैसा कि आपने शायद देखा होगा, चैपल से थोड़ा आगे निकलने के तुरंत बाद, दलदल से बहने वाली धारा एक नाले में मिल जाती है जो घाटी के मोड़ से होकर बहती है)। वुदरिंग हाइट्स इस चांदी जैसी धुंध के ऊपर उठ रही थी; लेकिन हमारा पुराना घर दिखाई नहीं दे रहा था; वह दूसरी तरफ नीचे की ओर झुका हुआ था। कमरा, उसमें बैठे लोग और जिस दृश्य को वे देख रहे थे, सब कुछ अद्भुत रूप से शांत लग रहा था। मैं अनिच्छा से अपना काम करने से हिचकिचा रहा था; और मोमबत्तियों के बारे में अपना सवाल पूछने के बाद, बिना कुछ कहे ही जाने ही वाला था, तभी अपनी मूर्खता का एहसास होने पर मैं वापस लौटा और धीरे से बोला, 'महोदया, गिम्मर्टन से कोई आपसे मिलना चाहता है।'

'वह क्या चाहता है?' श्रीमती लिंटन ने पूछा।

मैंने जवाब दिया, 'मैंने उससे कोई सवाल नहीं किया।'

‘अच्छा, पर्दे बंद कर दो, नेली,’ उसने कहा; ‘और चाय ले आओ। मैं अभी वापस आती हूँ।’

वह अपार्टमेंट से चली गई; श्री एडगर ने लापरवाही से पूछा कि कौन गया था।

‘कोई ऐसा व्यक्ति जिसकी मालकिन को उम्मीद नहीं थी,’ मैंने उत्तर दिया। ‘वह हीथक्लिफ—आपको याद होगा, महोदय—जो श्री अर्नशॉ के यहाँ रहता था।’

‘क्या! जिप्सी—वह हल चलाने वाला लड़का?’ वह चिल्लाया। ‘तुमने कैथरीन को यह बात क्यों नहीं बताई?’

‘चुप रहो! मालिक, उसे उन नामों से मत पुकारो,’ मैंने कहा। ‘वह तुम्हें सुनकर

बहुत दुखी होगी। जब वह भाग गया था तो वह लगभग टूट गई थी। मुझे लगता है कि उसकी वापसी उसके लिए खुशी का कारण बनेगी।’

श्री लिंटन कमरे के दूसरी ओर स्थित उस खिड़की तक गए जहाँ से आंगन दिखाई देता था। उन्होंने खिड़की खोली और बाहर झुक गए। मुझे लगता है कि वे नीचे थे, क्योंकि उन्होंने झट से कहा: 'वहाँ मत खड़ी रहो, प्रिय! अगर कोई खास व्यक्ति हो तो उसे अंदर ले आओ।' थोड़ी देर में, मुझे कुंडी की आवाज सुनाई दी और कैथरीन हांफती हुई और बेकाबू होकर ऊपर की ओर भागी; वह इतनी उत्तेजित थी कि खुशी का कोई भाव नहीं दिखा पा रही थी: वास्तव में, उसके चेहरे को देखकर तो ऐसा लग रहा था मानो कोई भयानक विपत्ति आ गई हो।

‘ओह, एडगर, एडगर!’ वह हांफते हुए बोली और अपनी बाहें उसकी गर्दन में डाल दीं। ‘ओह, प्यारे एडगर! हीथक्लिफ वापस आ गया है—हाँ, आ गया है!’ और उसने उसे और कसकर गले लगा लिया।

‘अच्छा, अच्छा,’ उसके पति ने चिढ़कर कहा, ‘इसके लिए मेरा गला मत घोंटो! वह मुझे कभी इतना अद्भुत खजाना नहीं लगा। इतना परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है!’

‘मुझे पता है कि तुम उसे पसंद नहीं करते थे,’ उसने अपनी खुशी को थोड़ा दबाते हुए जवाब दिया। ‘लेकिन, मेरी खातिर, अब तुम्हें दोस्त बनना होगा। क्या मैं उसे ऊपर आने के लिए कहूँ?’

‘यहाँ,’ उसने कहा, ‘क्या बैठक कक्ष में चलें?’

‘और कहाँ?’ उसने पूछा।

वह नाराज़ लग रहा था और उसने रसोई को अपने लिए अधिक उपयुक्त स्थान बताया। श्रीमती लिंटन ने उसे एक विचित्र भाव से देखा - आधा गुस्से से, आधा उसकी नज़ाकत पर हँसते हुए।

कुछ देर बाद उसने कहा, ‘नहीं, मैं रसोई में नहीं बैठ सकती। एलेन, यहाँ दो मेजें लगा दो: एक तुम्हारे मालिक और मिस इसाबेला के लिए, क्योंकि वे कुलीन वर्ग के हैं; दूसरी हीथक्लिफ और मेरे लिए, क्योंकि हम निम्न वर्ग के हैं। क्या तुम्हें यह ठीक लगेगा, प्रिय? या मुझे कहीं और आग जलानी पड़ेगी? अगर हाँ, तो मुझे बता दो। मैं नीचे जाकर अपने मेहमान को ले आती हूँ। मुझे डर है कि खुशी इतनी ज़्यादा है कि सच नहीं लग रही!’

वह दोबारा भागने ही वाली थी कि एडगर ने उसे रोक लिया।

उन्होंने मुझसे कहा, 'तुम उसे आगे आने के लिए कहो; और, कैथरीन, खुश रहने की कोशिश करो, लेकिन हास्यास्पद मत बनो। पूरे घर को यह देखने की ज़रूरत नहीं है कि तुम एक भागे हुए नौकर का भाई की तरह स्वागत कर रही हो।'

मैं नीचे उतरा और देखा कि हीथक्लिफ बरामदे के नीचे इंतज़ार कर रहा था, मानो अंदर आने के निमंत्रण की प्रतीक्षा कर रहा हो। उसने बिना कुछ कहे मेरा निर्देश माना और मैं उसे मालिक और मालकिन के सामने ले गया, जिनके लाल गाल गर्मजोशी भरी बातचीत के संकेत दे रहे थे। लेकिन जब उनकी सहेली दरवाजे पर आई तो मालकिन के चेहरे पर एक अलग ही चमक आ गई: वह आगे बढ़ी, हीथक्लिफ के दोनों हाथ पकड़े और उसे लिंटन के पास ले गई; फिर उसने लिंटन की हिचकिचाती उंगलियों को पकड़कर अपनी उंगलियों से दबा लिया। अब, आग और मोमबत्ती की रोशनी में पूरी तरह से प्रकाशित होकर, मैं हीथक्लिफ के परिवर्तन को देखकर पहले से कहीं अधिक चकित था। वह एक लंबा, एथलेटिक, सुगठित व्यक्ति बन गया था; जिसके सामने मेरे मालिक काफी दुबले-पतले और युवा लग रहे थे। उसकी सीधी चाल से ऐसा लग रहा था मानो वह सेना में रहा हो। उसका चेहरा श्री लिंटन की तुलना में कहीं अधिक परिपक्व और दृढ़ था; वह बुद्धिमान लग रहा था और उस पर अतीत के अपमान का कोई निशान नहीं था। झुकी हुई भौंहों और काली आग से भरी आँखों में अभी भी एक अर्ध-सभ्य क्रूरता छिपी हुई थी, लेकिन वह दबी हुई थी; और उसका व्यवहार भी गरिमामय था: खुरदरापन पूरी तरह से गायब था, हालांकि शालीनता के लिए उसमें कठोरता थी। मेरे स्वामी का आश्चर्य मेरे बराबर या उससे भी अधिक था: वह एक मिनट तक असमंजस में रहे कि उस हल चलाने वाले लड़के को, जैसा कि उन्होंने उसे पुकारा था, कैसे संबोधित करें। हीथक्लिफ ने अपना पतला हाथ नीचे कर लिया और बोलने का निर्णय लेने तक ठंडे दिमाग से उन्हें देखता रहा।

अंत में उन्होंने कहा, 'बैठ जाइए, महोदय। श्रीमती लिंटन पुराने दिनों को याद करते हुए चाहती हैं कि मैं आपका हार्दिक स्वागत करूं; और निश्चित रूप से, जब भी कोई ऐसी बात होती है जिससे उन्हें प्रसन्नता होती है तो मुझे खुशी होती है।'

'और मैं भी,' हीथक्लिफ ने उत्तर दिया, 'विशेषकर यदि इसमें मेरी कोई भूमिका हो। मैं एक-दो घंटे खुशी-खुशी रुकूंगा।'

वह कैथरीन के सामने बैठ गया, जिसने अपनी निगाहें उस पर इस कदर जमा रखी

थीं मानो उसे डर हो कि अगर उसने नज़र हटाई तो वह गायब हो जाएगा। उसने बार-बार उसकी ओर नहीं देखा: कभी-कभार एक नज़र ही काफी थी; लेकिन हर बार उसकी निगाहों में झलकती खुशी, और भी ज़्यादा आत्मविश्वास से, उसके चेहरे पर झलकती थी। वे दोनों अपनी आपसी खुशी में इतने डूबे हुए थे कि शर्मिंदगी की उन्हें कोई परवाह नहीं थी। लेकिन मिस्टर एडगर का ऐसा हाल नहीं था: वह झुंझलाहट से पीला पड़ गया: यह झुंझलाहट तब चरम पर पहुँच गई जब उसकी पत्नी उठी, कालीन पर कदम रखते हुए, हीथक्लिफ के हाथों को फिर से पकड़ा और पागलों की तरह हंसने लगी।

'कल तो मुझे ये सब सपना ही लगेगा!' वो रोते हुए बोली। 'मुझे यकीन ही नहीं होगा कि मैंने तुम्हें एक बार फिर देखा, छुआ और तुमसे बात की। फिर भी, निर्दयी हीथक्लिफ! तुम इस स्वागत के लायक नहीं हो। तीन साल तक अनुपस्थित और चुप रहना, और कभी मेरे बारे में न सोचना!'

'तुम्हारे मेरे बारे में जितना सोचा है, उससे कहीं ज़्यादा,' उसने धीरे से कहा। 'कैथी, तुम्हारी शादी के बारे में मुझे कुछ समय पहले ही पता चला; और नीचे आँगन में इंतज़ार करते हुए मैंने यह योजना बनाई – बस एक बार तुम्हारा चेहरा देख लूँ, शायद हैरानी भरी नज़र और बनावटी खुशी; उसके बाद हिंडले से अपना हिसाब चुकता कर लूँ; और फिर खुद को फांसी देकर कानून से बच जाऊँ। तुम्हारे स्वागत ने ये सारे विचार मेरे दिमाग से निकाल दिए; लेकिन अगली बार मुझसे किसी और रूप में मिलने से सावधान रहना! नहीं, तुम मुझे फिर से भगा नहीं पाओगी। तुम्हें सच में मेरे लिए अफ़सोस था, है ना? खैर, वजह तो थी। जब से मैंने तुम्हारी आवाज़ सुनी है, तब से मैंने एक कड़वा जीवन जीया है; और तुम्हें मुझे माफ़ करना होगा, क्योंकि मैंने ये सब संघर्ष सिर्फ़ तुम्हारे लिए किया!'

'कैथरीन, अगर हमें ठंडी चाय नहीं पीनी है तो कृपया मेज पर आ जाओ,' लिंटन ने अपनी सामान्य शैली और शिष्टाचार बनाए रखने की कोशिश करते हुए बीच में ही टोक दिया। 'श्री हीथक्लिफ को आज रात लंबी सैर करनी होगी, चाहे वे कहीं भी ठहरें; और मुझे प्यास लगी है।'

वह कलश के सामने अपनी जगह पर खड़ी हो गई; और घंटी बजने पर मिस इसाबेला आ गईं; फिर, उनकी कुर्सियाँ आगे खिसकाकर, मैं कमरे से बाहर निकल गया। खाना मुश्किल से दस मिनट ही चला। कैथरीन का प्याला कभी भरा ही नहीं

गया: वह न खा सकी और न पी सकी। एडगर ने अपनी तश्तरी में थोड़ा सा खाना गिरा दिया था, और मुश्किल से एक निवाला निगला। उनका मेहमान उस शाम एक घंटे से ज़्यादा नहीं रुका। मैंने उसके जाते समय पूछा, क्या वह गिम्मर्टन जा रहा है?

'नहीं, वुदरिंग हाइट्स जाने का न्योता था,' उन्होंने उत्तर दिया: 'श्री अर्नशॉ ने मुझे आज सुबह आमंत्रित किया था।'

श्री अर्नशॉ ने उन्हें आमंत्रित किया था! और उन्होंने श्री अर्नशॉ से मुलाकात की! उनके जाने के बाद मैंने इस वाक्य पर बड़े कष्ट से विचार किया। क्या वह थोड़ा पाखंडी साबित हो रहा है, और देश में छुपकर गड़बड़ी करने आया है? मैंने सोचा: मेरे मन में एक आशंका थी कि बेहतर होता कि वह दूर ही रहता।

लगभग आधी रात को, श्रीमती लिंटन मेरे कमरे में आईं, मेरे बिस्तर के पास बैठ गईं और मुझे जगाने के लिए मेरे बाल खींचे, जिससे मेरी पहली झपकी की आवाज से मेरी नींद खुल गई।

'एलेन, मुझे चैन नहीं आ रहा,' उसने माफी मांगते हुए कहा। 'और मुझे अपनी खुशी में साथ देने के लिए कोई साथी चाहिए! एडगर रूठा हुआ है, क्योंकि मैं उस बात से खुश हूँ जिसमें उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है: वह अपना मुंह खोलने से इनकार कर रहा है, सिवाय चिड़चिड़ी और बेवकूफी भरी बातें करने के; और उसने कहा कि मैं क्रूर और स्वार्थी हूँ क्योंकि मैं उससे तब बात करना चाहती हूँ जब वह इतना बीमार और नींद में है। वह ज़रा सी बात पर भी बीमार होने का बहाना बना लेता है! मैंने हीथक्लिफ की तारीफ में कुछ वाक्य कहे, और वह, शायद सिरदर्द या ईर्ष्या के कारण, रोने लगा: इसलिए मैं उठकर उसे छोड़कर चली गई।'

मैंने जवाब दिया, 'हीथक्लिफ की तारीफ करने का क्या फायदा? बचपन में तो वे एक-दूसरे से चिढ़ते थे, और हीथक्लिफ को भी अपनी तारीफ सुनना उतना ही बुरा लगेगा: यह तो इंसानी फितरत है। मिस्टर लिंटन को उसके बारे में कुछ मत कहने दो, वरना उन दोनों के बीच खुलकर झगड़ा हो जाएगा।'

'पर क्या यह बड़ी कमजोरी नहीं दिखाता?' उसने आगे कहा। 'मैं ईर्ष्यालु नहीं हूँ: इसाबेला के सुनहरे बालों की चमक और उसकी गोरी त्वचा, उसकी सुंदर शालीनता और पूरे परिवार के उसके प्रति स्नेह को देखकर मुझे कभी दुख नहीं होता। यहाँ तक कि तुम भी, नेली, अगर कभी हमारा झगड़ा होता है, तो तुम तुरंत इसाबेला का साथ देती हो; और मैं एक नासमझ माँ की तरह मान जाती हूँ: मैं उसे लाडली कहती हूँ और

उसकी चापलूसी करके उसे शांत कर देती हूँ। उसके भाई को हमें सौहार्दपूर्ण देखकर खुशी होती है, और इससे मुझे भी खुशी मिलती है। पर वे दोनों बहुत हद तक एक जैसी हैं: बिगड़ी हुई बच्चियाँ हैं, और सोचती हैं कि दुनिया उन्हीं के लिए बनी है; और हालाँकि मैं दोनों को खुश रखती हूँ, मुझे लगता है कि एक कड़ा दंड उन्हें सुधार सकता है।'

'आप गलत समझ रही हैं, श्रीमती लिंटन,' मैंने कहा। 'वे आपकी बात मानते हैं: मैं जानता हूँ कि अगर वे ऐसा न करें तो क्या होगा। जब तक उनका काम आपकी सभी इच्छाओं को पूरा करना है, तब तक आप उनकी क्षणिक इच्छाओं को पूरा कर सकती हैं। हालाँकि, अंत में, आप दोनों पक्षों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण किसी मुद्दे पर आपस में झगड़ सकती हैं; और तब जिन्हें आप कमजोर कहती हैं, वे भी आपकी तरह ही जिद्दी हो सकते हैं।'

'और फिर हम मौत तक लड़ेंगे, है ना, नेली?' उसने हंसते हुए जवाब दिया। 'नहीं! मैं तुमसे कहती हूं, मुझे लिंटन के प्यार पर इतना भरोसा है कि मुझे विश्वास है कि मैं उसे मार भी दूं, तो भी वह बदला लेने की इच्छा नहीं करेगा।'

मैंने उसे सलाह दी कि वह उसके स्नेह के लिए उसे और अधिक महत्व दे।

'हाँ,' उसने उत्तर दिया, 'लेकिन उसे छोटी-छोटी बातों पर रोने-धोने की ज़रूरत नहीं है। यह बचकाना है और मेरे यह कहने पर कि हीथक्लिफ अब किसी के भी सम्मान के योग्य है और देश के सबसे प्रतिष्ठित सज्जन के लिए उसका मित्र होना गौरव की बात होगी, उसे आँसू बहाने के बजाय मेरे लिए यह कहना चाहिए था और सहानुभूति से प्रसन्न होना चाहिए था। उसे उससे अभ्यस्त होना होगा और वह उसे पसंद भी कर सकता है: यह देखते हुए कि हीथक्लिफ के पास उससे आपत्ति करने का कारण है, मुझे यकीन है कि उसने बहुत अच्छा व्यवहार किया!'

मैंने पूछा, 'वुथरिंग हाइट्स जाने के बारे में आपका क्या विचार है?' उसने जवाब दिया, 'वह हर तरह से सुधर गया है, जाहिर तौर पर: एक सच्चा ईसाई: अपने चारों ओर के दुश्मनों को दोस्ती का हाथ बढ़ा रहा है!'

'उसने सब कुछ समझाया,' उसने जवाब दिया। 'मुझे भी उतनी ही हैरानी है जितनी तुम्हें। उसने कहा कि वह तुमसे मेरे बारे में जानकारी लेने आया था, यह सोचकर कि तुम अभी भी वहीं रहती हो; और जोसेफ ने हिंडले को बताया, जो बाहर आया और उससे पूछने लगा कि वह क्या कर रहा था और कैसे रह रहा था; और अंत में, उसे

अंदर आने के लिए कहा। कुछ लोग ताश खेल रहे थे; हीथक्लिफ भी उनके साथ शामिल हो गया; मेरे भाई ने उससे कुछ पैसे हारे, और उसे भरपूर धनवान देखकर, उसने उससे शाम को फिर आने का अनुरोध किया: जिस पर वह मान गया। हिंडले इतना लापरवाह है कि वह अपने जान-पहचान वालों को सोच-समझकर नहीं चुनता: वह इस बात पर विचार करने की जहमत भी नहीं उठाता कि जिस व्यक्ति को उसने बुरी तरह से नुकसान पहुँचाया है, उस पर अविश्वास करने के उसके क्या कारण हो सकते हैं। लेकिन हीथक्लिफ का कहना है कि अपने पुराने उत्पीड़क से फिर से संबंध जोड़ने का उसका मुख्य कारण ग्रेंज से पैदल दूरी पर रहने की इच्छा और उस घर से लगाव है जहाँ हम साथ रहते थे; और साथ ही यह उम्मीद भी है कि गिम्मर्टन में बसने की तुलना में मुझे वहाँ उससे मिलने के अधिक अवसर मिलेंगे।' वह हाइट्स में ठहरने की अनुमति के बदले में अच्छी खासी रकम देने का इरादा रखता है; और निःसंदेह मेरे भाई का लालच उसे शर्तें स्वीकार करने के लिए मजबूर कर देगा: वह हमेशा से ही लालची रहा है; हालांकि जो चीज वह एक हाथ से पकड़ता है, उसे दूसरे हाथ से फेंक देता है।

मैंने कहा, 'युवक के लिए घर बसाने के लिए यह एक अच्छी जगह है!' 'श्रीमती लिंटन, क्या आपको इसके परिणामों का कोई डर नहीं है?'

'मेरे दोस्त के लिए कुछ नहीं,' उसने जवाब दिया: 'उसका मजबूत दिमाग उसे खतरे से बचाएगा; हिंडले के लिए थोड़ा बहुत, लेकिन उसे नैतिक रूप से इससे बुरा नहीं बनाया जा सकता जितना वह है; और मैं उसे शारीरिक नुकसान से बचाती हूँ। आज शाम की घटना ने मुझे ईश्वर और मानवता से मिला दिया है! मैं ईश्वर के विरुद्ध क्रोधित विद्रोह में उठ खड़ी हुई थी। ओह, मैंने बहुत, बहुत कड़वी पीड़ा सहन की है, नेली! अगर उस प्राणी को पता होता कि यह कितनी कड़वी है, तो वह व्यर्थ की चिड़चिड़ाहट से इसे दूर करने में शर्म महसूस करता। उसके प्रति दया ने ही मुझे इसे अकेले सहने के लिए प्रेरित किया: अगर मैंने अपनी पीड़ा को व्यक्त किया होता, तो वह भी मेरी तरह ही इससे राहत पाने के लिए तरसने लगता। खैर, अब यह सब खत्म हो गया है, और मैं उसकी मूर्खता का बदला नहीं लूंगी; अब मैं कुछ भी सह सकती हूँ! अगर कोई सबसे नीच प्राणी भी मेरे गाल पर थप्पड़ मारे, तो मैं न केवल दूसरा गाल आगे कर दूंगी, बल्कि उसे उकसाने के लिए क्षमा भी मांगूंगी; और सबूत के तौर पर, मैं तुरंत एडगर से सुलह कर लूंगी।' शुभ रात्रि! मैं एक देवदूत हूँ!

इसी आत्मसंतुष्ट विश्वास के साथ वह चली गई; और उसके संकल्प की सफलता अगले ही दिन स्पष्ट हो गई: श्री लिंटन ने न केवल अपनी चिड़चिड़ाहट त्याग दी (हालाँकि कैथरीन की जीवंतता से उनका मनोबल अभी भी कुछ कम लग रहा था), बल्कि उन्होंने दोपहर में इसाबेला को अपने साथ वुदरिंग हाइट्स ले जाने पर कोई आपत्ति भी नहीं जताई; और बदले में उसने उन्हें इतनी मधुरता और स्नेह से भरी गर्मी दी कि कई दिनों तक घर स्वर्ग बन गया; मालिक और नौकर दोनों ही निरंतर धूप का आनंद लेते रहे।

हीथक्लिफ—भविष्य में मैं उन्हें श्री हीथक्लिफ कहूँगा—ने थ्रशक्रॉस ग्रेंज में आने की आज़ादी का इस्तेमाल शुरू में बड़ी सावधानी से किया: ऐसा लग रहा था कि वे यह अंदाज़ा लगा रहे थे कि वहाँ का मालिक उनकी दखलअंदाज़ी को कितना बर्दाश्त करेगा। कैथरीन ने भी उनका स्वागत करने पर अपनी खुशी को संयमित रखना ही उचित समझा; और धीरे-धीरे उन्होंने वहाँ आने का अपना अधिकार साबित कर दिया। उन्होंने अपने बचपन की उस खास संयमशीलता को काफी हद तक बरकरार रखा, जिसके लिए वे जाने जाते थे; और इसी ने उनकी भावनाओं के किसी भी अचानक प्रदर्शन को दबाने में मदद की। मेरे मालिक की बेचैनी कुछ समय के लिए शांत हुई, और कुछ अन्य घटनाओं ने उसे एक अलग दिशा में मोड़ दिया।

उसकी नई मुसीबत की जड़ अप्रत्याशित दुर्भाग्य से पैदा हुई, जब इसाबेला लिंटन अचानक और अनियंत्रित रूप से उस मेहमान के प्रति आकर्षित हो गई जिसे वह बर्दाश्त कर रही थी। उस समय वह अठारह साल की एक आकर्षक युवती थी; व्यवहार में बचकानी, हालांकि तेज बुद्धि, तीव्र भावनाओं और चिढ़ने पर तेज स्वभाव की भी। उसका भाई, जो उससे बहुत प्यार करता था, इस अजीब पसंद को देखकर स्तब्ध रह गया। एक अनाम व्यक्ति के साथ संबंध बनाने की बदनामी और इस संभावना को दरकिनार करते हुए कि पुरुष उत्तराधिकारियों के अभाव में उसकी संपत्ति ऐसे व्यक्ति के हाथ में जा सकती है, उसने हीथक्लिफ के स्वभाव को समझने की समझ दिखाई: वह जानता था कि भले ही उसका बाहरी रूप बदल गया हो, उसका मन अपरिवर्तनीय और अपरिवर्तित था। और वह उस मन से भयभीत था: वह उसे घृणास्पद लगता था: इसाबेला को उसके भरोसे छोड़ने के विचार से ही वह बुरी तरह कांप उठता था। अगर उसे पता होता कि उसका लगाव अनचाहे ढंग से उत्पन्न हुआ है, और जहाँ बदले में कोई भावना नहीं मिली, वहाँ वह और भी अधिक पीछे हट

जाता, तो वह और भी अधिक पीछे हट जाता; जैसे ही उसे इसके अस्तित्व का पता चला, उसने इसका सारा दोष हीथक्लिफ की जानबूझकर की गई साजिश पर डाल दिया।

हम सबने कुछ समय से यह गौर किया था कि मिस लिंटन किसी बात को लेकर परेशान और उदास रहती थीं। वह चिड़चिड़ी और चिड़चिड़ी होती जा रही थीं; कैथरीन पर लगातार चिल्लाती और उसे चिढ़ाती रहती थीं, जिससे कैथरीन का धैर्य लगभग खत्म होने वाला था। हमने उनकी खराब सेहत का बहाना बनाकर उन्हें कुछ हद तक माफ कर दिया था: वह हमारी आंखों के सामने कमजोर और मुरझाती जा रही थीं। लेकिन एक दिन, जब वह विशेष रूप से मनमानी कर रही थीं, नाश्ता करने से इनकार कर रही थीं, नौकरों से शिकायत कर रही थीं कि वे उनकी बात नहीं मानते; मालकिन उन्हें घर में कुछ भी नहीं करने देतीं, एडगर उनकी उपेक्षा करता है; दरवाजे खुले रहने से उन्हें सर्दी लग गई है, और हमने उन्हें परेशान करने के लिए जानबूझकर बैठक की आग बुझा दी, और सौ और बेबुनियाद आरोप लगा रही थीं, तब श्रीमती लिंटन ने सख्ती से जोर देकर कहा कि उन्हें बिस्तर पर जाना चाहिए; और उन्हें खूब डांटने के बाद, डॉक्टर को बुलाने की धमकी दी। केनेथ का जिक्र सुनते ही उसने तुरंत कहा कि उसका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है और केवल कैथरीन की कठोरता ही उसे दुखी करती है।

‘तुम मुझे कठोर कैसे कह सकते हो, शरारती बच्चे?’ मालकिन ने इस बेतुके दावे पर आश्चर्यचकित होते हुए कहा। ‘तुम्हारा दिमाग खराब हो रहा है। बताओ, मैं कब कठोर रही हूँ?’

‘कल,’ इसाबेला सिसकते हुए बोली, ‘और अब!’

‘कल!’ उसकी भाभी ने कहा। ‘किस अवसर पर?’

'मैदान में हमारी सैर के दौरान: तुमने मुझे जहाँ मन करे वहाँ घूमने के लिए कहा, जबकि तुम मिस्टर हीथक्लिफ के साथ इठलाती हुई आगे बढ़ गईं!'

‘तो यही है तुम्हारी कठोरता की धारणा?’ कैथरीन हंसते हुए बोली। ‘क्या इसका यह मतलब था कि तुम्हारी मौजूदगी अनावश्यक थी? हमें इस बात की परवाह नहीं थी कि तुम हमारे साथ रहो या नहीं; मुझे तो बस इतना लगा कि हीथक्लिफ की बातों में तुम्हारे लिए कुछ भी मनोरंजक नहीं होगा।’

‘ओह, नहीं,’ युवती रोते हुए बोली; ‘आपने मुझे वहाँ से भगा दिया, क्योंकि आप

जानते थे कि मुझे वहाँ रहना अच्छा लगता था!'

'क्या वह मानसिक रूप से स्वस्थ है?' श्रीमती लिंटन ने मुझसे विनती करते हुए पूछा। 'मैं हमारी बातचीत को शब्दशः दोहराती हूँ, इसाबेला; और तुम बताओ कि इसमें तुम्हें क्या आकर्षण लगा होगा।'

उसने जवाब दिया, 'मुझे बातचीत से कोई आपत्ति नहीं है; मैं तो बस साथ रहना चाहती थी—'

'तो?' कैथरीन ने कहा, यह महसूस करते हुए कि वह वाक्य पूरा करने में हिचकिचा रही है।

'उसके साथ: और मुझे हमेशा दूर नहीं भेजा जाएगा!' वह जोश से भर उठी। 'कैथी, तुम एक स्वार्थी कुतिया हो, और खुद के अलावा किसी से प्यार नहीं चाहती!'

'तुम तो बिल्कुल बदतमीज़ हो!' श्रीमती लिंटन ने हैरानी से कहा। 'लेकिन मैं इस मूर्खता पर विश्वास नहीं कर सकती! यह असंभव है कि तुम हीथक्लिफ की प्रशंसा पाने की लालसा रखो—कि तुम उसे एक अच्छा इंसान समझो! मुझे उम्मीद है कि मैंने तुम्हें गलत समझा है, इसाबेला?'

'नहीं, तुमने ऐसा नहीं किया है,' उस मोहित लड़की ने कहा। 'मैं उससे उतना प्यार करती हूँ जितना तुमने कभी एडगर से किया था, और अगर तुम उसे इजाज़त दो तो वह भी मुझसे प्यार कर सकता है!'

'तो मैं किसी भी कीमत पर तुम्हारी जगह नहीं लूंगी!' कैथरीन ने ज़ोर देकर कहा: और ऐसा लग रहा था जैसे वह सच कह रही हो। 'नेली, मुझे उसे उसकी नादानी का एहसास दिलाने में मदद करो। उसे बताओ कि हीथक्लिफ कैसा है: एक बिगड़ा हुआ इंसान, बिना शिष्टाचार, बिना संस्कार के; झाड़ियों और पत्थरों का एक सूखा जंगल। मैं उस नन्ही चिड़िया को सर्दियों के दिन पार्क में छोड़ना ज़्यादा पसंद करूंगी, बजाय इसके कि तुम्हें अपना दिल उस पर लुटाने की सलाह दूं! बच्ची, उसके चरित्र के बारे में तुम्हारी घोर अज्ञानता ही है, और कुछ नहीं, जिसके कारण तुम्हारे मन में यह सपना आया है। कृपया, यह मत सोचो कि वह अपने कठोर बाहरी रूप के नीचे दया और स्नेह की गहराई छुपाता है! वह कोई अनमोल हीरा नहीं है - कोई मोती से भरा देहाती सीप नहीं है: वह एक क्रूर, निर्दयी, भेड़िया जैसा आदमी है। मैं उससे कभी नहीं कहती, "इस या उस दुश्मन को अकेला छोड़ दो, क्योंकि उन्हें नुकसान पहुंचाना अनुदार या क्रूर होगा;" मैं कहती हूँ, "उन्हें अकेला छोड़ दो, क्योंकि मैं नहीं चाहती कि

उनके साथ अन्याय हो।” और अगर उसे तुम एक मुसीबत लगी, तो वह तुम्हें चिड़िया के अंडे की तरह कुचल देगा, इसाबेला। मैं जानती हूँ कि वह लिंटन से प्यार नहीं कर सकता; फिर भी वह तुम्हारी दौलत और उम्मीदों से शादी करने में पूरी तरह सक्षम होगा: लालच उसके लिए एक बड़ा पाप बनता जा रहा है। यही मेरी तस्वीर है: और मैं उसकी दोस्त हूँ—इतनी कि अगर उसने तुम्हें पकड़ने के बारे में गंभीरता से सोचा होता, तो शायद मैं चुप रहती और तुम्हें उसके जाल में फँसने देती।

मिस लिंटन ने अपनी भाभी को आक्रोश भरी नजरों से देखा।

‘शर्मनाक! शर्मनाक!’ उसने क्रोधित होकर दोहराया। ‘तुम बीस दुश्मनों से भी बदतर हो, तुम विषैले दोस्त!’

‘अरे! तो तुम मेरी बात पर विश्वास नहीं करोगे?’ कैथरीन ने कहा। ‘तुम्हें लगता है कि मैं दुष्ट स्वार्थ से बोल रही हूँ?’

‘मुझे पूरा यकीन है कि तुम ऐसा करती हो,’ इसाबेला ने पलटवार किया; ‘और मैं तुमसे कांप उठती हूँ!’

‘शाबाश!’ दूसरे ने कहा। ‘अगर तुम्हारा मन करे तो खुद कोशिश करके देखो: मैंने कर लिया है, और अब मैं तुम्हारी इस धृष्टता के आगे हार मानता हूँ।’

श्रीमती लिंटन के कमरे से बाहर जाते ही वह सिसकते हुए बोली, ‘और मुझे उसके अहंकार का खामियाजा भुगतना पड़ेगा! सब कुछ मेरे खिलाफ है: उसने मेरी इकलौती उम्मीद को भी छीन लिया है। पर उसने झूठ बोला था, है ना? श्री हीथक्लिफ कोई दुष्ट नहीं हैं: उनका दिल नेक और सच्चा है, वरना वह उसे याद कैसे रख पाते?’

‘उसे अपने विचारों से निकाल दो, मिस,’ मैंने कहा। ‘वह अशुभ पक्षी है: तुम्हारे लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं है।’ श्रीमती लिंटन ने दृढ़ता से कहा, फिर भी मैं उनका खंडन नहीं कर सकती। वह उसके दिल की बात मुझसे या किसी और से भी बेहतर जानती हैं; और वह उसे कभी भी उसकी असलियत से ज़्यादा बुरा नहीं बताएँगी। ईमानदार लोग अपने कर्मों को नहीं छिपाते। वह कैसे रह रहा है? वह इतना अमीर कैसे हो गया? वह वुदरिंग हाइट्स में क्यों रह रहा है, उस आदमी के घर में जिससे वह नफरत करता है? लोग कहते हैं कि मिस्टर अर्नशॉ के आने के बाद से उसकी हालत और भी खराब होती जा रही है। वे लगातार पूरी रात एक साथ बैठे रहते हैं, और हिंडले ने अपनी ज़मीन पर कर्ज़ ले रखा है, और खेलने-कूदने और शराब पीने के अलावा कुछ नहीं करता: मैंने एक हफ़्ते पहले ही सुना था - जोसेफ ने मुझे बताया था

- मैं उससे गिम्मर्टन में मिला था: "नेली," उसने कहा, "हमारे घर में तो हद ही हो गई है। उनमें से एक की उंगली लगभग कटने वाली है, दूसरे को बछड़े की तरह खुद को चिपकाने से रोकने की कोशिश में। यह तो मास्टर है, तुम्हें पता है, यह मामला बड़े-बड़े मुकदमों तक पहुँचने वाला है। उसे जजों की बेंच से ज़रा भी डर नहीं लगता, न पॉल से, न पीटर से, न जॉन से, न मैथ्यू से, न ही किसी और से, बिलकुल नहीं! उसे तो बस - उनके सामने अपना बेशर्म चेहरा दिखाने का मन करता है! और वह प्यारा लड़का हीथक्लिफ, तुम्हें याद है, वह तो एक अनोखा आदमी है वह तो किसी भी सीधे-सादे मज़ाक पर किसी भी आम आदमी की तरह हँस सकता है। जब वह ग्रेंज जाता है, तो क्या वह हमारे बीच अपने आलीशान जीवन के बारे में कभी कुछ नहीं कहता? उसका यही हाल है: सूर्यास्त के समय उठना: पासा, ब्रांडी, बंद खिड़कियाँ और अगले दिन दोपहर तक मोमबत्ती की रोशनी: फिर, वह मूर्ख अपने कमरे में जाकर बड़बड़ाता और शोर मचाता है, जिससे भले लोग शर्म से अपने कान खुजलाते हैं; और वह बदमाश, वह तो अपनी सारी दौलत गिन सकता है, बिना खाए, बिना सोए, और फिर अपने पड़ोसी के घर उसकी पत्नी से गपशप करने चला जाता है। बेशक, वह डेम कैथरीन को बताता है कि कैसे उसके पिता का सोना उसकी जेब में आ गया, और उसके पिता का बेटा चौड़ी सड़क पर सरपट दौड़ रहा है, जबकि वह भाले खोलने के लिए आगे भाग जाता है! अब, मिस लिंटन, जोसेफ एक बूढ़ा बदमाश है, लेकिन झूठा नहीं है; और, अगर हीथक्लिफ के आचरण के बारे में उसका बयान सच है, तो आप कभी भी ऐसे पति की इच्छा करने के बारे में नहीं सोचेंगी, है ना?

'तुम भी बाकियों की तरह ही हो, एलेन!' उसने जवाब दिया। 'मैं तुम्हारी निंदा नहीं सुनूंगी। तुममें कितनी दुर्भावना होनी चाहिए कि तुम मुझे यह विश्वास दिलाना चाहती हो कि दुनिया में कोई खुशी नहीं है!'

अगर उसे अकेला छोड़ दिया जाता तो क्या वह इस भ्रम से उबर पाती या इसे हमेशा के लिए अपने मन में पालती रहती, यह मैं नहीं कह सकता: उसके पास सोचने-समझने का समय बहुत कम था। अगले दिन, पास के शहर में न्याय सभा थी; मेरे स्वामी को उपस्थित होना पड़ा; और श्री हीथक्लिफ, उनकी अनुपस्थिति से अवगत होकर, सामान्य से थोड़ा पहले ही आ गए। कैथरीन और इसाबेला पुस्तकालय में बैठी थीं, उनके बीच अनबन थी, लेकिन वे चुप थीं: इसाबेला अपनी हाल की नादानी और क्षणिक आवेश में अपने गुप्त भावों को प्रकट करने से आहत थी; कैथरीन, सोच-

विचार करने के बाद, वास्तव में अपनी सहेली से नाराज़ थी; और अगर वह उसकी उद्दंडता पर फिर से हँसी भी, तो वह इसे हंसी की बात नहीं बनाना चाहती थी। हीथक्लिफ को खिड़की से गुजरते देखकर वह हँसी। मैं चूल्हा साफ कर रहा था, और मैंने उसके होठों पर एक शरारती मुस्कान देखी। इसाबेला, अपने विचारों या किसी किताब में मग्न, तब तक वहीं रही जब तक दरवाजा नहीं खुला; और तब तक भागने का प्रयास करना बहुत देर हो चुकी थी, जो वह संभव होने पर खुशी-खुशी कर लेती।

'अंदर आओ, बिल्कुल सही!' मालकिन ने खुशी से कहा और आग के पास एक कुर्सी खींच ली। 'यहाँ दो लोग हैं जिन्हें अपने बीच की बर्फ पिघलाने के लिए तीसरे की सख्त जरूरत है; और तुम ही वह हो जिसे हम दोनों को चुनना चाहिए। हीथक्लिफ, मुझे तुम्हें यह दिखाते हुए गर्व हो रहा है कि आखिरकार कोई ऐसा है जो मुझसे भी ज्यादा तुमसे प्यार करता है। मुझे उम्मीद है कि तुम खुश होगे। नहीं, यह नेली नहीं है; उसे मत देखो! मेरी बेचारी छोटी भाभी तुम्हारे शारीरिक और नैतिक सौंदर्य को देखकर ही दिल तोड़ रही है। एडगर का भाई बनना तुम्हारे बस में है! नहीं, नहीं, इसाबेला, तुम भागोगी नहीं,' उसने बनावटी चंचलता से उस लड़की को रोकते हुए कहा, जो गुस्से में उठ खड़ी हुई थी। 'हम तुम्हारे लिए बिल्लियों की तरह लड़ रहे थे, हीथक्लिफ; और भक्ति और प्रशंसा के प्रदर्शन में मुझे बुरी तरह हार का सामना करना पड़ा: और तो और, मुझे यह भी बताया गया कि अगर मैं शिष्टाचारवश एक तरफ हट जाऊं, तो मेरी प्रतिद्वंदी, जैसा कि वह खुद को समझती है, तुम्हारी आत्मा में ऐसा तीर चलाएगी जो तुम्हें हमेशा के लिए जकड़ लेगा, और मेरी छवि को हमेशा के लिए विस्मृति में भेज देगा!

'कैथरीन!' इसाबेला ने अपनी गरिमा को संभालते हुए और खुद को जकड़े हुए व्यक्ति की पकड़ से छूटने की कोशिश न करते हुए कहा, 'मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि आप सच का साथ दें और मज़ाक में भी मेरी बदनामी न करें! श्री हीथक्लिफ, कृपया अपनी इस सहेली से मुझे छोड़ने के लिए कहें: वह भूल गई है कि हम दोनों घनिष्ठ परिचित नहीं हैं; और जो बात उसे हंसा रही है, वह मेरे लिए असहनीय पीड़ादायक है।'

जब मेहमान ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि अपनी सीट पर बैठ गया और उसके मन में उसके प्रति जो भी भावनाएं थीं, उनके प्रति पूरी तरह से उदासीन दिखाई दिया, तो वह मुड़ी और अपने उत्पीड़क से स्वतंत्रता के लिए एक गंभीर अपील फुसफुसाई।

‘बिल्कुल नहीं!’ श्रीमती लिंटन ने जवाब में कहा। ‘मैं फिर से किसी के लिए मुसीबत खड़ी करने वाली नहीं कहलाऊँगी। तुम यहीं रहोगे: अब! हीथक्लिफ, मेरी इस अच्छी खबर पर तुम अपनी खुशी क्यों नहीं जताते? इसाबेला कसम खाकर कहती है कि एडगर का मेरे लिए प्यार तुम्हारे लिए उसके प्यार के आगे कुछ भी नहीं है। मुझे यकीन है उसने कुछ ऐसा ही कहा होगा; है ना, एलेन? और कल की सैर से एक दिन पहले से ही उसने उपवास रखा है, इस गम और गुस्से में कि मैंने उसे तुम्हारे समाज से यह सोचकर निकाल दिया कि यह अस्वीकार्य है।’

‘मुझे लगता है कि तुम उसकी बात को गलत साबित कर रहे हो,’ हीथक्लिफ ने अपनी कुर्सी घुमाकर उनकी ओर मुँह करते हुए कहा। ‘कम से कम अब तो वह मेरी संगति से बाहर निकलना चाहती है!’

और वह चर्चा के विषय को इस प्रकार घूर रहा था, मानो कोई किसी विचित्र और घृणित जानवर को घूर रहा हो: उदाहरण के लिए, भारत का कोई कनखजूरा, जिसे देखकर जिज्ञासावश घृणा के बावजूद उसका अवलोकन किया जाता है। बेचारी यह सहन नहीं कर सकी; उसका चेहरा पल भर में सफेद और लाल हो गया, और आँखों में आँसू भरते हुए उसने अपनी छोटी उंगलियों की पूरी ताकत लगाकर कैथरीन की मज़बूत पकड़ को ढीला करने की कोशिश की; और यह देखकर कि जैसे ही वह एक उंगली उठाती, दूसरी बंद हो जाती, और वह पूरी पकड़ को एक साथ नहीं हटा पा रही थी, उसने अपने नाखूनों का सहारा लेना शुरू कर दिया; और उनकी तीक्ष्णता ने तुरंत ही पकड़ने वाले के चेहरे पर लाल रंग के अर्धचंद्राकार निशान बना दिए।

‘अरे, यहाँ तो बाघिन है!’ श्रीमती लिंटन ने उसे मुक्त करते हुए और दर्द से उसका हाथ झटकते हुए कहा। ‘भगवान के लिए, यहाँ से चली जाओ और अपना लोमड़ी जैसा चेहरा छुपा लो! उसके सामने अपने ये पंजे दिखाना कितनी मूर्खता है। क्या तुम कल्पना भी नहीं कर सकती कि वह क्या सोचेगा? देखो, हीथक्लिफ! ये ऐसे हथियार हैं जो जान ले सकते हैं – तुम्हें अपनी आँखों का ध्यान रखना चाहिए।’

जब दरवाजा उसके पीछे बंद हो गया, तो उसने बेरहमी से जवाब दिया, 'अगर उन्होंने कभी मुझे धमकी दी, तो मैं उनकी उंगलियां तोड़ दूंगा।' 'लेकिन कैथी, तुमने उस प्राणी को उस तरह से चिढ़ाकर क्या मतलब निकाला? तुम सच नहीं बोल रही थी, है ना?'

‘मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि मैं थी,’ उसने जवाब दिया। ‘वह कई हफ्तों से

आपके लिए तड़प रही है, और आज सुबह से आपके बारे में बड़बड़ा रही है, और गालियों की बौछार कर रही है, क्योंकि मैंने उसकी दीवानगी को कम करने के उद्देश्य से आपकी कमियों को सबके सामने उजागर कर दिया था। लेकिन इस पर और ध्यान मत दीजिए: मैं बस उसकी बदतमीज़ी को सज़ा देना चाहती थी, बस। मैं उसे बहुत पसंद करती हूँ, मेरे प्यारे हीथक्लिफ, मैं आपको उसे पूरी तरह से हथियाने और उसे खा जाने नहीं दूँगी।'

'और मैं उसे इतना नापसंद करता हूँ कि ऐसा करने की हिम्मत ही नहीं कर सकता,' उसने कहा, 'सिवाय एक बेहद घिनौने तरीके के। अगर मैं उस भावुक, मोम जैसे चेहरे के साथ अकेला रहता, तो तुम अजीबोगरीब बातें सुनते: सबसे आम बात तो यह होती कि मैं उसके सफेद रंग पर इंद्रधनुष के रंग रंग देता और हर एक-दो दिन में उसकी नीली आँखों को काला कर देता: वे घिनौनी तरह से लिंटन की आँखों जैसी दिखती हैं।'

'बेहद खूबसूरत!' कैथरीन ने कहा। 'ये तो कबूतर की आंखें हैं – देवदूत की!'

कुछ देर की चुप्पी के बाद उसने पूछा, 'वह अपने भाई की उत्तराधिकारी है, है ना?'

'मुझे ऐसा सोचना भी दुखद लगेगा,' उसके साथी ने जवाब दिया। 'भगवान करे, उसके आधे दर्जन भतीजे उसका खिताब मिटा दें! फिलहाल इस विषय से अपना ध्यान हटा लें: आप पड़ोसी की संपत्ति पर लालच करने के आदी हैं; याद रखें कि इस पड़ोसी की संपत्ति मेरी है।'

'अगर वे मेरे होते, तो भी वे वैसे ही होते,' हीथक्लिफ ने कहा; 'लेकिन हालांकि इसाबेला लिंटन नासमझ हो सकती है, वह पागल तो बिल्कुल नहीं है; और संक्षेप में, जैसा कि आपने सलाह दी है, हम इस मामले को यहीं समाप्त कर देंगे।'

उन्होंने इस बात को अपने ज़ुबान से निकाल दिया; और कैथरीन ने शायद अपने विचारों से भी। मुझे पूरा यकीन था कि दूसरा व्यक्ति शाम के दौरान बार-बार इस बात को याद करता रहा। मैंने उसे खुद ही मुस्कुराते हुए देखा — बल्कि खिलखिलाते हुए — और जब भी श्रीमती लिंटन कमरे से बाहर जातीं, तो वह अशुभ विचारों में खो जाता था।

मैंने उसकी हर हरकत पर नज़र रखने का निश्चय किया। मेरा दिल हमेशा कैथरीन के बजाय मालिक के पक्ष में ही खिंचा चला जाता था: मुझे लगता था कि इसका कारण भी था, क्योंकि वह दयालु, भरोसेमंद और ईमानदार था; और वह—उसे तो

बिल्कुल विपरीत नहीं कहा जा सकता था, फिर भी वह खुद को इतनी आज़ादी देती हुई प्रतीत होती थी कि मुझे उसके सिद्धांतों पर ज़रा भी भरोसा नहीं था, और उसकी भावनाओं के लिए तो और भी कम सहानुभूति थी। मैं चाहता था कि कुछ ऐसा घटित हो जिससे वुदरिंग हाइट्स और ग्रेंज दोनों ही मिस्टर हीथक्लिफ से चुपचाप मुक्त हो जाएँ; और हम वैसे ही रह जाएँ जैसे उसके आने से पहले थे। उसकी मुलाक़ातें मेरे लिए एक निरंतर दुःस्वप्न थीं; और मुझे शक था कि मेरे मालिक के लिए भी। हाइट्स में उसका निवास एक असहनीय अत्याचार था। मुझे ऐसा लगता था कि ईश्वर ने वहाँ भटकती हुई भेड़ को उसके बुरे रास्ते पर छोड़ दिया है, और एक दुष्ट जानवर उसके और बाड़े के बीच मंडरा रहा है, अपने समय का इंतज़ार कर रहा है कि कब हमला करे और सब कुछ नष्ट कर दे।

अध्याय XI

कभी-कभी, एकांत में इन बातों पर मनन करते हुए, मैं अचानक भयभीत होकर उठ जाती हूँ और टोपी पहनकर खेत का हालचाल देखने चली जाती हूँ। मैं अपने अंतरात्मा को समझाती हूँ कि उसे उसके तौर-तरीकों के बारे में लोगों की बातों से अवगत कराना मेरा कर्तव्य है; फिर मुझे उसकी पक्की बुरी आदतें याद आ जाती हैं, और उसे कोई लाभ न पहुँचा पाने की निराशा में, मैं उस अंधकारमय घर में दोबारा प्रवेश करने से हिचकती हूँ, यह सोचकर कि क्या मैं अपनी बात पर विश्वास किए जाने का सामना कर पाऊँगी।

एक बार मैं गिम्मर्टन जाते समय, अपने रास्ते से हटकर, उस पुराने द्वार से गुज़रा। यह लगभग वही समय था जब मेरी कहानी आगे बढ़ी थी: एक चमकदार, ठंडी दोपहर; ज़मीन बंजर थी और सड़क सूखी और कठोर थी। मैं एक पत्थर के पास पहुँचा जहाँ राजमार्ग बाईं ओर दलदली भूमि की ओर मुड़ता है; एक खुरदुरा रेत का खंभा, जिसके

उत्तरी किनारे पर W.H., पूर्व में G., और दक्षिण-पश्चिम में T.G. खुदे हुए थे। यह ग्रेंज, हाइट्स और गाँव के लिए मार्गदर्शक का काम करता है। सूरज की पीली किरणें इसके भूरे शिखर पर पड़ रही थीं, जो मुझे गर्मियों की याद दिला रही थीं; और मैं नहीं कह सकता क्यों, लेकिन अचानक मेरे दिल में बचपन की भावनाएँ उमड़ आईं। बीस साल पहले हिंडले और मैं इसे अपना पसंदीदा स्थान मानते थे। मैंने उस मौसम से जर्जर पत्थर को देर तक देखा; और झुककर देखा तो उसके तल के पास एक छेद था जो अभी भी घोंघे के खोल और कंकड़ों से भरा था, जिन्हें हम वहाँ जल्दी खराब होने वाली चीज़ों के साथ जमा करना पसंद करते थे; और, मानो वास्तविकता की तरह, मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने अपने बचपन के साथी को सूखी घास पर बैठे देखा हो: उसका काला, चौकोर सिर आगे की ओर झुका हुआ था, और उसका छोटा हाथ स्लेट के एक टुकड़े से मिट्टी खोद रहा था। 'बेचारा हिंडले!' मैंने अनायास ही कहा। मैं चौंक गया: मेरी आँखों को पल भर के लिए यह भ्रम हुआ कि बच्चे ने अपना चेहरा उठाया और सीधे मेरी आँखों में देखा! वह पलक झपकते ही गायब हो गया; लेकिन तुरंत ही मुझे हाइट्स पर जाने की तीव्र इच्छा हुई। अंधविश्वास ने मुझे इस आवेग का पालन करने के लिए प्रेरित किया: मान लीजिए कि वह मर गया हो! मैंने सोचा - या जल्द ही मर जाए! - मान लीजिए कि यह मृत्यु का संकेत हो! जैसे-जैसे मैं घर के करीब पहुँचता गया, मेरी बेचैनी बढ़ती गई; और उसे देखते ही मेरा पूरा शरीर काँप उठा। वह आकृति मुझसे आगे निकल गई थी: वह फाटक से झाँक रही थी। एक बौने जैसे बालों वाले, भूरी आँखों वाले लड़के को सलाखों के सामने अपना लाल चेहरा टिकाए देखकर मेरे मन में सबसे पहला यही विचार आया। और अधिक विचार करने पर यह सुझाव मिला कि यह वही हरेटन होना चाहिए, मेरा हरेटन, जो मेरे उसे छोड़ने के दस महीने बाद से बहुत ज्यादा नहीं बदला है।

'भगवान तुम्हारा भला करे, प्रिय!' मैं अपने मूर्खतापूर्ण डर को पल भर में भूलकर चिल्लाई। 'हरेटन, यह नेली है! नेली, तुम्हारी नर्स।'

वह हाथ की पहुँच से थोड़ा पीछे हट गया और एक बड़ा चकमक पत्थर उठा लिया।

मैंने आगे कहा, 'मैं तुम्हारे पिता, हरेटन से मिलने आया हूँ,' और उनके हावभाव से यह अनुमान लगाया कि नेली, अगर वह उनकी यादों में जरा भी जीवित थी, तो उसे मेरे साथ एक के रूप में नहीं पहचाना गया।

उसने अपना पत्थर फेंकने के लिए उठाया; मैंने उसे शांत करने की कोशिश की,

पर उसका हाथ नहीं रोक सका: पत्थर मेरी टोपी पर लगा; और फिर उस नन्हे बच्चे के लड़खड़ाते होंठों से गालियों की बौछार हो गई, जो चाहे उसे समझ में आई हो या नहीं, उसने बड़ी कुशलता से और ज़ोर-ज़ोर से बोलीं, और उसके मासूम चेहरे पर दुर्भावना का भयानक भाव उभर आया। आप यकीन मानिए, इससे मुझे गुस्सा कम और दुख ज़्यादा हुआ। रोने का मन कर रहा था, तो मैंने अपनी जेब से एक संतरा निकाला और उसे मनाने के लिए दिया। वह हिचकिचाया, और फिर मेरे हाथ से छीन लिया; मानो उसे लगा हो कि मैं उसे सिर्फ़ लुभाने और निराश करने का इरादा रखता हूँ। मैंने उसे दूसरा संतरा दिखाया, लेकिन उसे उसकी पहुँच से दूर रखा।

मैंने पूछा, ‘मेरे बच्चे, ये सुंदर शब्द तुम्हें किसने सिखाए?’ तुमने कहा, ‘पुजारी ने?’

‘उस पादरी और तुम्हें धिक्कार है! मुझे वह दो,’ उसने उत्तर दिया।

मैंने कहा, 'हमें बताओ कि तुमने ये शिक्षा कहाँ से ली है, और तुम्हें वो मिल जाएगी। तुम्हारा गुरु कौन है?'

उसका जवाब था, 'शैतान पिता।'

मैंने आगे पूछा, ‘और तुम पापा से क्या सीखते हो?’

वह फल पर झपटा; मैंने उसे और ऊपर उठा दिया। मैंने पूछा, 'यह तुम्हें क्या सिखाता है?'

उसने कहा, 'कुछ नहीं, बस उसके रास्ते से दूर रहना। पिताजी मुझे बर्दाश्त नहीं कर सकते, क्योंकि मैं उन्हें गालियां देता हूं।'

‘अरे! और शैतान तुम्हें पापा को गाली देना सिखाता है?’ मैंने कहा।

‘ओह—नहीं,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।

तो फिर कौन?

‘हीथक्लिफ।’

मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें मिस्टर हीथक्लिफ पसंद हैं।

‘ओह!’ उसने फिर जवाब दिया।

मुझे यह जानने की इच्छा थी कि वह उसे क्यों पसंद करता है, लेकिन मैं केवल कुछ वाक्य ही समझ पाया — ‘मुझे पता है: वह पिताजी को वही लौटाता है जो पिताजी मुझे देते हैं — वह पिताजी को मुझे कोसने के लिए कोसता है। वह कहता है कि मुझे वही करना चाहिए जो मैं चाहूँ।’

‘तो क्या पादरी तुम्हें पढ़ना-लिखना नहीं सिखाता?’ मैंने पूछा।

'नहीं, मुझे बताया गया था कि अगर पादरी ने दहलीज पार की तो उसके दांत उसके गले में ठूंस दिए जाएंगे - हीथक्लिफ ने ऐसा वादा किया था!'

मैंने संतरा उसके हाथ में थमा दिया और उससे कहा कि वह अपने पिता से कहे कि नेली डीन नाम की एक महिला बगीचे के द्वार पर उससे बात करने के लिए इंतज़ार कर रही है। वह पगडंडी पर चढ़कर घर में दाखिल हुआ; लेकिन हिंडले की जगह हीथक्लिफ दरवाजे पर खड़ा दिखाई दिया; और मैं तुरंत मुड़कर जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, उतनी तेज़ी से सड़क पर भागा, बिना रुके तब तक भागा जब तक कि मुझे खंभा नहीं मिल गया, और मैं इतना डरा हुआ था मानो मैंने किसी भूत को जगा दिया हो। इसका मिस इसाबेला के मामले से ज़्यादा संबंध नहीं है: सिवाय इसके कि इसने मुझे और भी सतर्क रहने और ग्रेंज में इस तरह के बुरे प्रभाव को फैलने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए प्रेरित किया, भले ही श्रीमती लिंटन की इच्छा को ठेस पहुँचाकर मुझे घर में हंगामा क्यों न मचाना पड़े।

अगली बार जब हीथक्लिफ आया, तो मेरी पत्नी आंगन में कबूतरों को दाना चुग रही थी। उसने तीन दिन से अपनी भाभी से एक शब्द भी नहीं बोला था; लेकिन उसने अपनी झुंझलाहट भी छोड़ दी थी, और इससे हमें बहुत राहत मिली। मैं जानती थी कि हीथक्लिफ को मिस लिंटन पर अनावश्यक शिष्टाचार दिखाने की आदत नहीं थी। अब, जैसे ही उसने उसे देखा, उसकी पहली सावधानी घर के सामने का एक चक्कर लगाना थी। मैं रसोई की खिड़की के पास खड़ी थी, लेकिन मैं नज़र से ओझल हो गई। फिर वह फुटपाथ पार करके उसके पास गया और कुछ कहा: वह शर्मिंदा लग रही थी और वहाँ से जाना चाहती थी; उसे रोकने के लिए, उसने अपना हाथ उसकी बांह पर रख दिया। उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लिया: जाहिर तौर पर उसने कोई सवाल पूछा जिसका जवाब देने का उसका मन नहीं था। उसने घर पर एक और सरसरी नज़र डाली, और खुद को अनदेखा समझते हुए, उस बदमाश ने उसे गले लगाने की गुस्ताखी की।

‘यहूदा! गद्दार!’ मैंने चीखते हुए कहा। ‘तुम भी पाखंडी हो, है ना? एक शातिर धोखेबाज।’

'कौन है नेली?' कैथरीन की आवाज मेरे बगल में सुनाई दी: मैं उसके आने का इंतजार करते हुए बाहर खड़े दोनों लोगों को देखने में कुछ ज्यादा ही मग्न थी।

‘तुम्हारा निकम्मा दोस्त!’ मैंने गर्मजोशी से जवाब दिया: ‘वो बदमाश कहीं छिपा

हुआ है। अरे, उसने हमें देख लिया है – वो अंदर आ रहा है! मुझे आश्चर्य है कि क्या उसमें मिस के साथ प्रेम करने का कोई तर्कसंगत बहाना ढूंढने की हिम्मत होगी, जबकि उसने तुमसे कहा था कि वह उससे नफरत करता है?'

श्रीमती लिंटन ने देखा कि इसाबेला ने खुद को छुड़ाया और बगीचे की ओर भागी; और एक मिनट बाद हीथक्लिफ ने दरवाजा खोल दिया। मैं अपना गुस्सा रोक नहीं पाई; लेकिन कैथरीन ने गुस्से से चुप रहने को कहा और धमकी दी कि अगर मैंने अपनी बदतमीजी भरी जुबान चलाने की हिम्मत की तो वह मुझे रसोई से बाहर निकाल देगी।

'तुम्हारी बातें सुनकर लोग सोचेंगे कि तुम मालकिन हो!' वह चिल्लाई। 'तुम्हें अपनी औकात में लाना ज़रूरी है! हीथक्लिफ, तुम ये हंगामा क्यों मचा रहे हो? मैंने कहा था कि तुम्हें इसाबेला को अकेला छोड़ देना चाहिए! – मैं तुमसे विनती करती हूँ कि ऐसा करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम यहाँ स्वागत से तंग आ गए हो और चाहते हो कि लिंटन तुम्हारे खिलाफ़ दरवाज़े खोल दे!'

'भगवान न करे कि वह ऐसा करने की कोशिश करे!' उस काले बदमाश ने जवाब दिया। उसी क्षण मुझे उससे घृणा होने लगी। 'भगवान उसे विनम्र और धैर्यवान बनाए रखे! उसे स्वर्ग भेजने के बाद मैं हर दिन और भी क्रोधित होता जा रहा हूँ!'

'चुप रहो!' कैथरीन ने अंदर का दरवाजा बंद करते हुए कहा! 'मुझे परेशान मत करो। तुमने मेरी विनती क्यों अनसुनी कर दी? क्या वह जानबूझकर तुमसे मिली थी?'

'तुम्हें इससे क्या लेना-देना?' वह गुर्राया। 'अगर वह चाहे तो मुझे उसे चूमने का पूरा अधिकार है; और तुम्हें आपत्ति करने का कोई हक नहीं है। मैं तुम्हारा पति नहीं हूँ: तुम्हें मुझसे ईर्ष्या करने की ज़रूरत नहीं है!'

'मैं तुमसे ईर्ष्या नहीं करती,' मालकिन ने उत्तर दिया; 'मैं तुम्हारे लिए ईर्ष्या करती हूँ। अपना चेहरा साफ करो: मुझ पर गुस्सा मत करो! अगर तुम्हें इसाबेला पसंद है, तो उससे शादी करो। लेकिन क्या तुम उसे पसंद करते हो? सच बताओ, हीथक्लिफ! अब तुम जवाब नहीं दोगे। मुझे यकीन है कि तुम उसे पसंद नहीं करते।'

मैंने पूछा, 'क्या मिस्टर लिंटन अपनी बहन की उस आदमी से शादी को मंजूरी देंगे?'

'श्री लिंटन को इसे मंजूरी देनी चाहिए,' मेरी पत्नी ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

'वह खुद को इस झंझट से बचा सकता है,' हीथक्लिफ ने कहा: 'मुझे उसकी

मंजूरी के बिना भी काम चल सकता है। और जहाँ तक तुम्हारी बात है, कैथरीन, मैं अभी कुछ कहना चाहता हूँ, जब हम इस बारे में बात कर रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम जानो कि मुझे पता है कि तुमने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया है—बहुत बुरा! क्या तुम सुन रही हो? और अगर तुम्हें लगता है कि मुझे इसका एहसास नहीं है, तो तुम मूर्ख हो; और अगर तुम्हें लगता है कि मैं मीठे शब्दों से शांत हो जाऊँगा, तो तुम बेवकूफ हो: और अगर तुम्हें लगता है कि मैं बिना बदला लिए रहूँगा, तो मैं तुम्हें बहुत जल्द इसका उल्टा साबित कर दूँगा! इस बीच, मुझे अपनी भाभी का राज़ बताने के लिए धन्यवाद: मैं कसम खाता हूँ कि मैं इसका पूरा फायदा उठाऊँगा। और तुम एक तरफ हट जाओ!'

श्रीमती लिंटन ने आश्चर्य से कहा, "ये उसके चरित्र का कौन सा नया रूप है? मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया है – और तुम इसका बदला लोगे! कैसे लोगे, कृतघ्न दरिंदे? मैंने तुम्हारे साथ इतना बुरा बर्ताव कैसे किया है?"

'मैं तुमसे बदला नहीं लेना चाहता,' हीथक्लिफ ने कम उग्रता से जवाब दिया। 'यह मेरा इरादा नहीं है। अत्याचारी अपने गुलामों को कुचलता है और वे उसके खिलाफ विद्रोह नहीं करते; वे अपने अधीन लोगों को कुचलते हैं। तुम मुझे तड़पा-तड़पा कर मार डालो, बस मुझे भी उसी तरह थोड़ा मनोरंजन करने दो, और जहाँ तक हो सके अपमान से बचो। मेरे महल को ध्वस्त करने के बाद, झोपड़ी मत बनाओ और मुझे उसमें घर देकर अपनी उदारता का घमंड मत करो। अगर मुझे पता चला कि तुम सच में चाहते हो कि मैं इसाबेल से शादी करूँ, तो मैं अपना गला काट लूँगा!'

'अरे, बुराई तो यह है कि मुझे जलन नहीं होती, है ना?' कैथरीन चिल्लाई। 'खैर, मैं पत्नी का प्रस्ताव नहीं दोहराऊँगी: यह शैतान को खोई हुई आत्मा देने जैसा है। तुम्हारा सुख, उसकी तरह, दूसरों को दुख देने में है। तुम इसे साबित करते हो। तुम्हारे आने पर एडगर का जो गुस्सा फूट पड़ा था, वह अब शांत हो गया है; मैं भी सुरक्षित और शांत महसूस करने लगी हूँ; और तुम, हमें शांति से देखकर बेचैन हो रहे हो, झगड़ा करवाने पर तुले हुए लगते हो। हीथक्लिफ, अगर तुम चाहो तो एडगर से झगड़ा करो और उसकी बहन को धोखा दो: यही तो मुझसे बदला लेने का सबसे कारगर तरीका होगा।'

बातचीत रुक गई। श्रीमती लिंटन आग के पास बैठ गईं, उनका चेहरा लाल और उदास था। उनके अंदर का वह भाव उनके लिए बेकाबू होता जा रहा था: वह न तो उसे शांत कर पा रही थीं और न ही उसे नियंत्रित कर पा रही थीं। वह हाथ बांधे चूल्हे पर

खड़े अपने बुरे विचारों में डूबे हुए थे; और इसी स्थिति में मैं उन्हें छोड़कर मालिक को ढूंढने चला गया, जो सोच रहे थे कि कैथरीन इतनी देर तक नीचे क्यों रुकी हुई है।

जब मैं अंदर दाखिल हुई तो उसने कहा, 'एलेन, क्या तुमने अपनी मालकिन को देखा है?'

जी हाँ; वह रसोई में हैं, महोदय,' मैंने उत्तर दिया। 'श्री हीथक्लिफ के व्यवहार से वह बहुत नाराज़ हैं: और वास्तव में, मुझे लगता है कि अब उनके आने-जाने का तरीका बदलने का समय आ गया है। बहुत नरमी बरतना नुकसानदायक होता है, और अब बात यहाँ तक पहुँच गई है —।' और मैंने अदालत का पूरा दृश्य और, जहाँ तक मैं बता सकता था, उसके बाद का सारा विवाद सुनाया। मुझे लगा कि श्रीमती लिंटन के लिए यह बहुत हानिकारक नहीं होगा; जब तक कि वह बाद में अपने मेहमान का पक्ष लेकर इसे हानिकारक न बना दें। एडगर लिंटन को मेरी बात पूरी सुनने में कठिनाई हुई। उनके पहले शब्दों से ही पता चल गया कि वह अपनी पत्नी को दोषमुक्त नहीं मानते थे।

'यह असहनीय है!' वह चिल्लाया। 'यह शर्मनाक है कि वह उसे दोस्त मानती है और मुझ पर उसकी संगति थोपती है! एलेन, मुझे हॉल से दो आदमियों को बुलाओ। कैथरीन अब उस नीच बदमाश से बहस करने के लिए और देर नहीं करेगी—मैंने उसे काफी खुश कर दिया है।'

वह नीचे उतरा और नौकरों को गलियारे में रुकने का आदेश देकर, मेरे पीछे-पीछे रसोई में चला गया। वहाँ मौजूद लोगों ने फिर से तीखी बहस शुरू कर दी थी: श्रीमती लिंटन, कम से कम, और भी जोश से डांट रही थीं; हीथक्लिफ खिड़की के पास चला गया था और अपना सिर झुकाए खड़ा था, जाहिर तौर पर उनकी तीखी डांट से थोड़ा सहमा हुआ था। उसने सबसे पहले मालकिन को देखा और जल्दी से इशारा किया कि वह चुप रहे; जिसे मालकिन ने उसके इशारे का कारण पता चलते ही तुरंत मान लिया।

'ये क्या बात है?' लिंटन ने उससे कहा; 'उस बदमाश के द्वारा इस्तेमाल की गई भाषा के बाद भी यहाँ रहने के लिए तुम्हारे पास शिष्टाचार की कैसी समझ होनी चाहिए? मुझे लगता है, क्योंकि ये उसकी आम बातचीत है, इसलिए तुम इसे कुछ नहीं समझती: तुम उसकी नीचता की आदी हो चुकी हो, और शायद सोचती हो कि मैं भी इसकी आदी हो जाऊँगी!'

'क्या तुम दरवाजे पर कान लगाकर सुन रहे थे, एडगर?' मालकिन ने अपने पति

को चिढ़ाने के इरादे से जानबूझकर ऐसा लहजा अपनाया, जिसमें उसकी झुंझलाहट के प्रति लापरवाही और तिरस्कार दोनों झलक रहे थे। हीथक्लिफ, जिसने पहली बात पर अपनी आँखें ऊपर उठाई थीं, दूसरी बात पर व्यंग्यात्मक हँसी हँसा; ऐसा लग रहा था कि वह जानबूझकर मिस्टर लिंटन का ध्यान अपनी ओर खींचना चाहता था। वह इसमें सफल भी हुआ; लेकिन एडगर का इरादा किसी भी तरह के भावुक प्रदर्शन से उनका मनोरंजन करने का नहीं था।

"अब तक मैं आपके प्रति सहनशील रहा हूँ, महोदय," उसने शांत स्वर में कहा; "ऐसा नहीं था कि मैं आपके घृणित, पतित चरित्र से अनभिज्ञ था, लेकिन मुझे लगा कि इसके लिए आप आंशिक रूप से ही जिम्मेदार हैं; और कैथरीन आपसे जान-पहचान बनाए रखना चाहती थी, इसलिए मैंने मूर्खतापूर्ण ढंग से सहमति दे दी। आपकी उपस्थिति एक नैतिक विष है जो सबसे गुणी व्यक्ति को भी दूषित कर देगी: इसी कारण से, और इससे भी बुरे परिणामों से बचने के लिए, मैं अब से आपको इस घर में प्रवेश नहीं दूंगा, और अभी से सूचित करता हूँ कि मुझे आपके तत्काल प्रस्थान की आवश्यकता है। तीन मिनट की देरी आपके लिए अनैच्छिक और अपमानजनक होगी।"

हीथक्लिफ ने वक्ता की लंबाई और चौड़ाई को तिरस्कार भरी नजरों से देखा।

'कैथी, तुम्हारा यह मेमना बैल की तरह धमकी दे रहा है!' उसने कहा। 'यह मेरे हाथों की उंगलियों से टकराकर अपनी खोपड़ी फोड़ने के कगार पर है। हे भगवान! श्रीमान लिंटन, मुझे बहुत खेद है कि आप गिराने लायक भी नहीं हैं!'

मेरे मालिक ने गलियारे की ओर देखा और मुझे आदमियों को बुलाने का इशारा किया; उनका व्यक्तिगत मुठभेड़ का कोई इरादा नहीं था। मैंने संकेत का पालन किया; लेकिन श्रीमती लिंटन को कुछ संदेह हुआ और वह मेरे पीछे आईं; और जब मैंने उन्हें बुलाने की कोशिश की, तो उन्होंने मुझे पीछे खींच लिया, दरवाजा जोर से बंद कर दिया और ताला लगा दिया।

'उचित तरीके!' उसने अपने पति के गुस्से और हैरानी भरे चेहरे को देखकर जवाब दिया। 'अगर तुममें उस पर हमला करने की हिम्मत नहीं है, तो माफी मांग लो, या खुद को पिटने दो। इससे तुम्हें अपनी असलियत से ज़्यादा बहादुरी का दिखावा करने की सीख मिल जाएगी। नहीं, मैं चाबी तुम्हारे हाथ लगने से पहले ही निगल जाऊंगी! मुझे हर किसी के प्रति अपनी दयालुता का भरपूर इनाम मिला है! एक की कमज़ोरी और

दूसरे की बुरी आदतों को लगातार बर्दाश्त करने के बाद, मुझे बदले में दो ऐसे नमूने मिले हैं जो कृतघ्नता की हद पार कर देते हैं! एडगर, मैं तुम्हारी और तुम्हारे परिवार की रक्षा कर रही थी; और मैं चाहती हूं कि हीथक्लिफ तुम्हें बुरी तरह पीटे, क्योंकि तुमने मेरे बारे में बुरा सोचने की हिम्मत की!'

मालिक पर ऐसा असर डालने के लिए कोड़े मारने की ज़रूरत नहीं थी। उसने कैथरीन के हाथ से चाबी छीनने की कोशिश की, और सुरक्षा के लिए उसने उसे आग के सबसे गर्म हिस्से में फेंक दिया; जिसके बाद श्री एडगर कांपने लगे और उनका चेहरा पीला पड़ गया। अपनी जान की बाजी लगाकर भी वे उस अतिरंजित भावना को रोक नहीं सके: पीड़ा और अपमान का मिलाजुला भाव उन पर पूरी तरह हावी हो गया। वे कुर्सी के पीछे झुक गए और अपना चेहरा ढक लिया।

'अरे बाप रे! पुराने ज़माने में तो इससे शूरवीरता की उपाधि मिल जाती!' श्रीमती लिंटन ने हैरानी से कहा। 'हम हार गए! हम हार गए! हीथक्लिफ तुम्हारे ऊपर उंगली भी नहीं उठाएगा, जैसे राजा चूहों की बस्ती पर अपनी सेना उतार देता है। हिम्मत रखो! तुम्हें चोट नहीं लगेगी! तुम तो मेमने नहीं, बल्कि दूध पीते खरगोश के बच्चे हो।'

कैथी, मैं तुम्हें उस डरपोक कायर की तरह खुश देखना चाहती हूँ! उसकी सहेली ने कहा। मैं तुम्हारी पसंद की तारीफ़ करती हूँ। और यही वो लचर, कांपता हुआ जीव है जिसे तुमने मुझसे ज़्यादा पसंद किया! मैं उसे मुक्के से तो नहीं मारूंगी, लेकिन लात मारकर उसे खूब तसल्ली दूंगी। क्या वो रो रहा है, या डर से बेहोश होने वाला है?

वह आदमी पास आया और उस कुर्सी को धक्का दिया जिस पर लिंटन बैठा था। उसे दूर ही रहना चाहिए था: मेरे मालिक ने झट से उठकर उसके गले पर ऐसा प्रहार किया कि दुबला-पतला आदमी तो गिर ही जाता। इससे उसकी सांस एक मिनट के लिए रुक गई; और जब वह घुट रहा था, श्री लिंटन पीछे के दरवाजे से आंगन में निकले और वहां से सामने के प्रवेश द्वार तक गए।

'लो! तुम्हारा यहाँ आना बेकार गया,' कैथरीन चिल्लाई। 'अभी यहाँ से चले जाओ; वो दो पिस्तौल और आधा दर्जन सहायकों के साथ वापस आएगा। अगर उसने हमारी बातें सुन लीं, तो ज़ाहिर है वो तुम्हें कभी माफ़ नहीं करेगा। तुमने मेरे साथ बुरा बर्ताव किया है, हीथक्लिफ़! लेकिन जाओ—जल्दी करो! मैं एडगर को फँसा हुआ देखना ज़्यादा पसंद करूँगी, तुम्हें नहीं।'

'क्या तुम्हें लगता है कि मैं गले में जलन पैदा करने वाले उस वार के साथ जा रहा

हूँ?’ वह गरज उठा। ‘बिल्कुल नहीं! दहलीज पार करने से पहले ही मैं उसकी पसलियों को सड़े हुए हेज़लनट की तरह चूर-चूर कर दूंगा! अगर मैंने उसे अभी नहीं गिराया, तो मैं उसे कभी न कभी मार डालूंगा; इसलिए, अगर तुम उसकी जान की परवाह करते हो, तो मुझे उस पर हमला करने दो!’

मैंने बीच में ही टोकते हुए थोड़ा झूठ बोला, ‘वह नहीं आ रहा है। वहाँ कोचवान और दो माली हैं; आप उनके द्वारा सड़क पर धकेले जाने का इंतज़ार तो नहीं करेंगे! हर एक के पास लाठी है; और मालिक शायद बैठक की खिड़की से देख रहा होगा कि वे उसके आदेशों का पालन कर रहे हैं या नहीं।’

माली और कोचवान वहाँ मौजूद थे, लेकिन लिंटन भी उनके साथ था। वे पहले ही आंगन में प्रवेश कर चुके थे। हीथक्लिफ ने अपने विचार बदलते हुए तीन अधीनस्थों से संघर्ष से बचने का फैसला किया: उसने पोकर उठाया, भीतरी दरवाजे का ताला तोड़ दिया और जैसे ही वे अंदर आए, वह भाग निकला।

श्रीमती लिंटन, जो बहुत उत्तेजित थीं, ने मुझे अपने साथ ऊपर चलने को कहा। उन्हें इस बात का पता नहीं था कि गड़बड़ी में मेरा भी हाथ था, और मैं उन्हें इस बात से अनजान रखना चाहती थी।

‘मैं लगभग पागल हो गई हूँ, नेली!’ वह सोफे पर गिरते हुए बोली। ‘मेरे सिर में हज़ारों हथौड़े बज रहे हैं! इसाबेला से कहो कि वह मुझसे दूर रहे; यह सारा हंगामा उसी की वजह से है; और अगर वह या कोई और अभी मेरे गुस्से को भड़काएगा, तो मैं बेकाबू हो जाऊँगी। और, नेली, अगर तुम आज रात एडगर से फिर मिलो, तो उससे कहना कि मैं गंभीर रूप से बीमार होने वाली हूँ। काश यह सच हो जाए। उसने मुझे बुरी तरह डरा दिया है और परेशान कर दिया है! मैं उसे डराना चाहती हूँ। इसके अलावा, वह आकर गालियों और शिकायतों की झड़ी लगा सकता है; मुझे यकीन है कि मैं भी उसे दोषी ठहराऊँगी, और भगवान जाने हमारा क्या अंजाम होगा! क्या तुम ऐसा करोगी, मेरी प्यारी नेली? तुम जानती हो कि इस मामले में मेरी कोई गलती नहीं है। उसे क्या सूझा कि वह सुनने लगा? तुम्हारे जाने के बाद हीथक्लिफ की बातें बहुत ही बेतुकी थीं; लेकिन मैं उसे इसाबेला से दूर कर सकती थी, और बाकी सब बेकार था। अब सब कुछ गड़बड़ हो गया है; खुद के बारे में बुराई सुनने की मूर्खता की लालसा, जो कुछ लोगों को शैतान की तरह सताती है! अगर एडगर ने हमारी बातचीत न सुनी होती, तो उसे कभी कोई नुकसान न होता। सच में, जब मैंने हीथक्लिफ को

इतना डांटा कि मेरी आवाज़ बैठ गई, तो उसके बाद जब उसने उस अनुचित नाराज़गी भरे लहजे में मुझ पर हमला किया, तो मुझे ज़रा भी परवाह नहीं थी कि वे एक-दूसरे के साथ क्या करते हैं; खासकर इसलिए क्योंकि मुझे लग रहा था कि चाहे जो भी हो, हम सब न जाने कब तक अलग रहेंगे! खैर, अगर मैं हीथक्लिफ को अपना दोस्त नहीं रख सकती - अगर एडगर नीच और ईर्ष्यालु रहेगा, तो मैं अपना दिल तोड़कर उनका दिल तोड़ने की कोशिश करूंगी। जब मैं हद से ज़्यादा परेशान हो जाऊंगी, तो यह सब खत्म करने का एक तेज़ तरीका होगा! लेकिन यह एक निराशाजनक स्थिति के लिए ही है; मैं लिंटन को इससे चौंकाना नहीं चाहती। अब तक वह मुझे उकसाने से डरकर समझदारी से काम ले रहा है; आपको उसे इस नीति को छोड़ने के खतरे के बारे में बताना होगा, और उसे मेरे उग्र स्वभाव की याद दिलानी होगी, जो भड़कने पर उन्माद की हद तक पहुंच जाता है। काश तुम अपने चेहरे से उस उदासीनता को दूर कर सको और मेरे बारे में थोड़ा और चिंतित दिख सको।'

इन निर्देशों को जिस बेरुखी से मैंने सुना, वह निस्संदेह काफी निराशाजनक था: क्योंकि ये पूरी ईमानदारी से दिए गए थे; लेकिन मेरा मानना था कि जो व्यक्ति अपने आवेश को पहले से ही नियंत्रित करने की योजना बना सकता है, वह अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग करके, उनके प्रभाव में भी, खुद को काफी हद तक काबू में रख सकता है; और मैं उसके पति को, जैसा कि उसने कहा था, 'डराना' और उसके स्वार्थ के लिए उसकी परेशानियों को बढ़ाना नहीं चाहता था। इसलिए जब मैंने मालिक को बैठक की ओर आते देखा तो मैंने कुछ नहीं कहा; लेकिन मैंने यह सुनने के लिए पीछे मुड़कर देखा कि क्या वे अपना झगड़ा फिर से शुरू करेंगे। उसने पहले बोलना शुरू किया।

‘कैथरीन, तुम जहाँ हो वहीं रहो,’ उसने गुस्से के बिना, लेकिन गहरे दुख और निराशा से कहा। ‘मैं नहीं रुकूँगा। मैं न तो झगड़ा करने आया हूँ और न ही सुलह करने; बल्कि मैं बस यह जानना चाहता हूँ कि आज शाम की घटनाओं के बाद, क्या तुम अपना रिश्ता जारी रखना चाहती हो या नहीं—’

‘अरे, भगवान के लिए,’ मालकिन ने पैर पटकते हुए बीच में ही टोक दिया, ‘भगवान के लिए, अब इसके बारे में और कुछ मत सुनो! तुम्हारा ठंडा खून बुखार में नहीं बदल सकता: तुम्हारी नसें बर्फ के पानी से भरी हैं; लेकिन मेरी तो खौल रही हैं, और ऐसी ठंड देखकर तो मेरी नसें कांपने लगती हैं।’

‘मुझसे छुटकारा पाने के लिए, मेरे सवाल का जवाब दो,’ श्री लिंटन ने दृढ़ता से कहा। ‘तुम्हें इसका जवाब देना ही होगा; और उस हिंसा से मुझे डर नहीं लगता। मैंने पाया है कि जब तुम चाहो तो किसी से कम नहीं, बल्कि किसी से कम नहीं, धैर्यवान बन सकते हो। क्या तुम आगे चलकर हीथक्लिफ को छोड़ दोगे, या मुझे? तुम्हारे लिए एक ही समय में मेरा और उसका दोस्त होना असंभव है; और मुझे यह जानना बेहद ज़रूरी है कि तुम किसे चुनते हो।’

‘मुझे अकेला छोड़ दो!’ कैथरीन ने क्रोध से कहा। ‘मैं यही चाहती हूँ! क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि मैं मुश्किल से खड़ी रह पा रही हूँ? एडगर, तुम—मुझे अकेला छोड़ दो!’

उसने घंटी तब तक बजाई जब तक वह टूट नहीं गई; मैं धीरे से अंदर गया। ऐसे बेतुके, दुष्ट क्रोध देखकर तो संत का भी धैर्य टूट जाता! वह सोफे के आर्मरेस्ट पर अपना सिर पटक रही थी और दांत पीस रही थी, मानो उन्हें चूर-चूर कर देगी! श्री लिंटन उसे देखकर अचानक पछतावे और भय से भर गए। उन्होंने मुझे पानी लाने को कहा। उसकी सांस फूल रही थी, बोलने की भी नहीं। मैं एक गिलास भरकर पानी लाया; और चूंकि उसने पानी नहीं पिया, मैंने उसे उसके चेहरे पर छिड़क दिया। कुछ ही पलों में वह अकड़कर लेट गई और आंखें ऊपर उठा लीं, जबकि उसके गाल एकदम पीले और पीले पड़ गए, मानो मृत्यु के साये में हों। लिंटन भयभीत दिख रहे थे।

मैंने फुसफुसाते हुए कहा, 'दुनिया में ऐसी कोई बात नहीं है।' मैं नहीं चाहती थी कि वह हार मान ले, हालाँकि मेरे दिल में डर भी था।

‘उसके होठों पर खून लगा है!’ उसने कांपते हुए कहा।

‘छोड़ो!’ मैंने तीखे लहजे में जवाब दिया। और मैंने उसे बताया कि उसके आने से पहले ही उसने उन्माद का प्रदर्शन करने का निश्चय कर लिया था। मैंने बिना सोचे-समझे यह बात ज़ोर से कह दी, और उसने मुझे सुन लिया; क्योंकि वह चौंककर उठ खड़ी हुई – उसके बाल कंधों पर उड़ रहे थे, उसकी आँखें चमक रही थीं, और उसकी गर्दन और बाहों की मांसपेशियाँ असामान्य रूप से उभरी हुई थीं। मैंने कम से कम हड्डियाँ टूटने का मन बना लिया था; लेकिन वह बस एक पल के लिए इधर-उधर घूरी, और फिर कमरे से बाहर भाग गई। मालिक ने मुझे उसके पीछे जाने का आदेश दिया; मैं उसके कमरे के दरवाजे तक गया: उसने दरवाजा बंद करके मुझे आगे जाने से रोक दिया।

चूंकि अगली सुबह वह नाश्ते के लिए नीचे नहीं आई, इसलिए मैंने उससे पूछा कि क्या वह कुछ नाश्ता ऊपर मंगवाएगी। उसने दृढ़ता से जवाब दिया, 'नहीं!' यही सवाल दोपहर के भोजन और चाय के समय भी दोहराया गया; और अगले दिन भी, और वही जवाब मिला। श्री लिंटन ने अपना समय पुस्तकालय में बिताया और अपनी पत्नी के कामों के बारे में कोई पूछताछ नहीं की। इसाबेला और उन्होंने एक घंटे तक बातचीत की, जिसके दौरान उन्होंने हीथक्लिफ के दुस्साहस के प्रति उससे उचित घृणा की भावना जानने की कोशिश की, लेकिन उसके टालमटोल भरे जवाबों से उन्हें कुछ भी समझ नहीं आया और उन्हें बातचीत को असंतोषजनक ढंग से समाप्त करना पड़ा; हालांकि, उन्होंने एक गंभीर चेतावनी भी दी कि यदि वह इतनी पागल हुई कि उस निकम्मे प्रेमी को प्रोत्साहित करे, तो उसके और उसके बीच के सभी रिश्ते टूट जाएंगे।

अध्याय XII

मिस लिंटन पार्क और बगीचे में उदास घूमती रहती थीं, हमेशा चुप और लगभग हमेशा रोती रहती थीं; और उनका भाई किताबों में सिमटकर बैठा रहता था जिन्हें वह कभी खोलता नहीं था—शायद इस लगातार अस्पष्ट उम्मीद से थक गया था कि कैथरीन अपने व्यवहार पर पछताते हुए खुद आकर क्षमा मांगेगी और सुलह की कोशिश करेगी—और वह दृढ़ता से उपवास करती थी, शायद इस सोच से कि हर भोजन पर एडगर उसकी अनुपस्थिति में घुटन महसूस कर रहा होगा, और केवल स्वाभिमान ही उसे उसके चरणों में गिरने से रोक रहा होगा; मैं अपने घरेलू कामों में लगी रही, इस विश्वास के साथ कि ग्रेंज की दीवारों में केवल एक ही समझदार आत्मा है, और वह मेरे शरीर में निवास करती है। मैंने मिस के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई, न ही अपनी मालकिन से कोई शिकायत की; न ही मैंने अपने मालिक की आहों पर ज्यादा ध्यान दिया, जो अपनी पत्नी का नाम सुनने के लिए तरस रहे थे, क्योंकि उन्हें उसकी

आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। मैंने तय किया कि मेरे लिए जो भी हो, होने दो। और यद्यपि यह एक बेहद धीमी और थकाऊ प्रक्रिया थी, लेकिन अंततः मुझे इसकी प्रगति की एक धुंधली सी झलक देखकर खुशी होने लगी: जैसा कि मैंने पहले सोचा था।

तीसरे दिन, श्रीमती लिंटन ने अपना दरवाजा खोला और अपने घड़े और गिलास का पानी खत्म होने के बाद, उन्होंने और पानी और दलिया मांगा, क्योंकि उन्हें लग रहा था कि वह मर रही हैं। मैंने यह बात एडगर के लिए कही गई समझी; मुझे ऐसा कुछ भी नहीं लगता था, इसलिए मैंने इसे अपने तक ही रखा और उनके लिए चाय और सूखा टोस्ट ले आई। उन्होंने बड़े चाव से खाया-पिया और फिर से तकिये पर लेट गईं, हाथ भींचकर कराहने लगीं। 'ओह, मैं मर जाऊंगी,' वह चिल्लाईं, 'क्योंकि कोई मेरी परवाह नहीं करता। काश मैंने वह दवा न ली होती।' फिर कुछ देर बाद मैंने उन्हें धीरे से कहते सुना, 'नहीं, मैं नहीं मरूंगी - वह खुश होगा - वह मुझसे बिल्कुल प्यार नहीं करता - उसे मेरी कमी कभी महसूस नहीं होगी!'

'क्या आपको कुछ चाहिए, महोदया?' मैंने पूछा, उनके भयावह चेहरे और अजीबोगरीब, अतिरंजित व्यवहार के बावजूद, मैंने अपनी बाहरी शांति बनाए रखने की कोशिश की।

‘वह उदासीन व्यक्ति क्या कर रहा है?’ उसने अपने मुरझाए चेहरे से उलझे हुए घने बालों को हटाते हुए पूछा। ‘क्या वह सुस्ती में डूब गया है, या मर गया है?’

‘दोनों में से कोई नहीं,’ मैंने उत्तर दिया; ‘अगर आपका मतलब श्री लिंटन से है। मुझे लगता है कि वह ठीक-ठाक हैं, हालांकि उनकी पढ़ाई उन्हें जरूरत से ज्यादा व्यस्त रखती है: वह लगातार अपनी किताबों में डूबे रहते हैं, क्योंकि उनके पास कोई और साथी नहीं है।’

अगर मुझे उसकी असली हालत पता होती तो मुझे ऐसा नहीं बोलना चाहिए था, लेकिन मैं इस धारणा से छुटकारा नहीं पा सकी कि वह अपने विकार के एक हिस्से के रूप में ऐसा व्यवहार कर रही थी।

‘उनकी किताबों के बीच!’ वह व्याकुल होकर चिल्लाई। ‘और मैं मर रही हूँ! मैं कब्र के कगार पर हूँ! हे भगवान! क्या उन्हें पता है कि मैं कितनी बदल गई हूँ?’ वह सामने वाली दीवार पर लगे दर्पण में अपना प्रतिबिंब देखते हुए बोलीं। ‘क्या यह कैथरीन लिंटन है? वह मुझे किसी पालतू जानवर के रूप में कल्पना करते हैं—शायद खेल में। क्या आप उन्हें यह नहीं बता सकतीं कि यह कितना गंभीर है? नेली, अगर बहुत देर न

हुई हो, तो जैसे ही मुझे पता चलेगा कि वह क्या महसूस करते हैं, मैं इन दो विकल्पों में से एक चुनूँगी: या तो तुरंत भूखी मर जाऊँ—यह कोई सजा नहीं होगी अगर उनमें दिल न हो—या ठीक होकर देश छोड़ दूँ। क्या आप उनके बारे में सच कह रही हैं? अपना ख्याल रखना। क्या वह सचमुच मेरी जिंदगी के प्रति इतने उदासीन हैं?'

मैंने उत्तर दिया, 'मैडम, मालिक को आपके मानसिक रूप से विक्षिप्त होने का जरा भी अंदाजा नहीं है; और निश्चित रूप से उन्हें इस बात का डर नहीं है कि आप भूख से मर जाएंगी।'

'तुम्हें ऐसा नहीं लगता? क्या तुम उसे बता नहीं सकते कि मैं ऐसा करूँगी?' उसने पलटकर कहा। 'उसे मनाओ! अपने मन की बात कहो: कहो कि तुम्हें पूरा यकीन है कि मैं ऐसा करूँगी!'

'नहीं, आप भूल रही हैं, श्रीमती लिंटन,' मैंने सुझाव दिया, 'कि आपने आज शाम बड़े चाव से भोजन किया है, और कल आपको इसके अच्छे परिणाम दिखाई देंगे।'

'अगर मुझे बस इतना यकीन होता कि इससे उसकी मौत हो जाएगी,' उसने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'तो मैं खुद को मार डालती! इन तीन भयानक रातों में मैंने पलकें भी नहीं झपकाईं—और ओह, मैं कितनी परेशान रही हूँ! मुझे भूत सता रहे हैं, नेली! लेकिन मुझे लगने लगा है कि तुम मुझे पसंद नहीं करती। कितना अजीब है! मैंने सोचा था कि भले ही सब एक-दूसरे से नफरत और घृणा करते हों, फिर भी वे मुझसे प्यार किए बिना नहीं रह सकते। और वे सब कुछ ही घंटों में दुश्मन बन गए हैं: मुझे पूरा यकीन है; यहाँ के लोग। उनके ठंडे चेहरों से घिरे हुए मौत का सामना करना कितना उदास करने वाला है! इसाबेला, डरी हुई और घबराई हुई, कमरे में जाने से डर रही है, कैथरीन को जाते हुए देखना कितना भयानक होगा। और एडगर गंभीरता से खड़ा होकर यह सब देखेगा; फिर अपने घर में शांति बहाल करने के लिए भगवान का शुक्रिया अदा करेगा, और अपनी किताबों में वापस चला जाएगा! भला उसे किताबों से क्या लेना-देना है, जब मैं मर रही हूँ?'

वह उस विचार को सहन नहीं कर पा रही थी जो मैंने उसके मन में श्री लिंटन के दार्शनिक त्याग के बारे में डाला था। करवटें बदलते हुए, उसका बुखार भरा भ्रम पागलपन में बदल गया और उसने तकिया अपने दाँतों से फाड़ दिया; फिर जलती हुई सी उठ खड़ी हुई और मुझसे खिड़की खोलने की विनती की। हम सर्दियों के बीच में थे, उत्तर-पूर्व से तेज़ हवा चल रही थी, और मैंने आपत्ति जताई। उसके चेहरे के बदलते

भाव और मनोदशा में परिवर्तन मुझे बुरी तरह से चिंतित करने लगे; और मुझे उसकी पिछली बीमारी और डॉक्टर की उस हिदायत की याद आ गई कि उसे नाराज़ नहीं किया जाना चाहिए। एक मिनट पहले वह हिंसक थी; अब, एक हाथ के सहारे, और मेरी बात न मानने पर भी ध्यान न देते हुए, वह अपने द्वारा बनाए गए छेदों से पंख निकालकर चादर पर अलग-अलग प्रजातियों के अनुसार सजाने में बच्चों जैसा आनंद ले रही थी: उसका मन कहीं और ही सोच रहा था।

'ये तो टर्की का है,' वो मन ही मन बुदबुदाई; 'और ये जंगली बत्तख का है; और ये कबूतर का है। आह, तकियों में कबूतर के पंख रखते हैं – इसीलिए तो मैं मरी नहीं! लेटते समय इसे ज़मीन पर फेंकना याद रखना। और ये मुर्गे का है; और ये – मैं इसे हज़ारों में भी पहचान लूँगी – ये लैपविंग का है। सुंदर पक्षी; दलदल के बीचोंबीच हमारे सिर के ऊपर चक्कर लगा रहा था। ये अपने घोंसले तक जाना चाहता था, क्योंकि बादल पहाड़ियों को छू रहे थे, और इसे बारिश आने का आभास हो रहा था। ये पंख झाड़ियों से उठाया गया था, पक्षी को गोली नहीं मारी गई थी: हमने सर्दियों में उसका घोंसला देखा था, छोटे कंकालों से भरा हुआ। हीथक्लिफ ने उस पर जाल बिछाया था, और बूढ़े आने की हिम्मत नहीं कर रहे थे। मैंने उससे वादा लिया था कि वो इसके बाद कभी लैपविंग को गोली नहीं मारेगा, और उसने नहीं मारा। हाँ, यहाँ और भी हैं! क्या उसने मेरी लैपविंग को गोली मारी, नेली? क्या उनमें से कोई लाल है?' मुझे देखने दीजिए।

'ये बच्चों वाला काम बंद करो!' मैंने बीच में ही टोकते हुए तकिया एक तरफ खींच लिया और उसके छेद गद्दे की तरफ कर दिए, क्योंकि वो मुट्ठी भर-भरकर उसमें से सामान निकाल रही थी। 'लेट जाओ और आंखें बंद कर लो: तुम्हारा ध्यान कहीं और भटक रहा है। ये सब कितना गंदा है! रुई बर्फ की तरह उड़ रही है।'

मैंने इसे इकट्ठा करने के लिए इधर-उधर चक्कर लगाया।

'नेली, मैं तुममें एक बूढ़ी औरत को देखती हूँ,' वह स्वप्निल भाव से बोली। 'तुम्हारे बाल सफ़ेद हैं और कंधे झुके हुए हैं। यह पलंग पेनिस्टोन चट्टानों के नीचे परियों की गुफा है, और तुम हमारी बछियों को चोट पहुँचाने के लिए परियों के बाण इकट्ठा कर रही हो; मेरे पास रहते हुए, तुम दिखावा करती हो कि वे केवल ऊन के गुच्छे हैं। पचास साल बाद तुम ऐसी ही हो जाओगी: मुझे पता है कि अभी तुम ऐसी नहीं हो। मैं भटक नहीं रही हूँ: तुम गलत हो, वरना मैं तुम्हें सचमुच वह मुरझाई हुई बुढ़िया मान लेती,

और सोचती कि मैं पेनिस्टोन चट्टानों के नीचे हूँ; और मुझे पता है कि रात है, और मेज पर दो मोमबत्तियाँ हैं जो काली इस्त्री को काले रंग की तरह चमका रही हैं।'

'ब्लैक प्रेस? वो कहाँ है?' मैंने पूछा। 'तुम नींद में बोल रहे हो!'

'यह दीवार के सहारे रखा है, जैसा कि हमेशा रहता है,' उसने जवाब दिया। 'यह वाकई अजीब लग रहा है – मुझे इसमें एक चेहरा दिखाई दे रहा है!'

मैंने अपनी सीट पर वापस बैठते हुए और पर्दा ऊपर उठाते हुए कहा, 'कमरे में कोई प्रेस नहीं है, और कभी थी भी नहीं,' ताकि मैं उसे देख सकूं।

'क्या तुम्हें वह चेहरा नहीं दिख रहा?' उसने दर्पण में ध्यान से देखते हुए पूछा।

और मैं चाहे जो भी कह सकूँ, मैं उसे यह समझाने में असमर्थ थी कि यह उसका अपना है; इसलिए मैं उठी और उसे शॉल से ढक दिया।

'वो अभी भी वहीं है!' उसने घबराते हुए पूछा। 'और वो हिला भी। कौन है? मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे जाने के बाद वो बाहर नहीं आएगा! ओह! नेली, ये कमरा भूतिया है! मुझे अकेले रहने से डर लगता है!'

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और उसे शांत रहने को कहा; क्योंकि उसके शरीर में लगातार कंपकंपी दौड़ रही थी और वह लगातार शीशे की ओर टकटकी लगाए देख रही थी।

'यहाँ कोई नहीं है!' मैंने जोर देकर कहा। 'यह आप ही थीं, श्रीमती लिंटन: आपको यह बात कुछ समय पहले से ही पता थी।'

'मैं खुद!' वह हांफते हुए बोली, 'और घड़ी में बारह बज रहे हैं! तो फिर यह सच है! यह तो बहुत भयानक है!'

उसकी उंगलियों ने कपड़ों को कसकर पकड़ लिया और उन्हें अपनी आंखों पर लपेट लिया। मैंने उसके पति को बुलाने के इरादे से दरवाजे की ओर जाने की कोशिश की; लेकिन एक तीखी चीख ने मुझे वापस बुला लिया - शॉल दरवाजे के फ्रेम से गिर गई थी।

'अरे, क्या बात है?' मैं चिल्लाई। 'अब कायर कौन है? जाग जाओ! वह शीशा है—वह दर्पण है, श्रीमती लिंटन; और आप उसमें खुद को देख रही हैं, और मैं भी आपके बगल में खड़ी हूँ।'

कांपती और स्तब्ध होकर उसने मुझे कसकर पकड़ लिया, लेकिन धीरे-धीरे उसके चेहरे से भय का भाव गायब हो गया; उसकी पीली रंगत शर्म की चमक में बदल गई।

‘ओह, हे भगवान! मुझे लगा मैं घर पर हूँ,’ उसने आह भरी। ‘मुझे लगा मैं वुदरिंग हाइट्स में अपने कमरे में लेटी हूँ। क्योंकि मैं कमजोर हूँ, मेरा दिमाग भ्रमित हो गया और मैं अनजाने में चीख पड़ी। कुछ मत कहो; बस मेरे साथ रहो। मुझे सोने से डर लगता है: मेरे सपने मुझे डरा देते हैं।’

मैंने उत्तर दिया, 'आपको अच्छी नींद आएगी, महोदया, और मुझे आशा है कि यह कष्ट आपको दोबारा भूखे रहने की कोशिश करने से रोकेगा।'

‘काश, मैं अपने पुराने घर में अपने बिस्तर पर होती!’ वह कड़वाहट से बोलती रही, अपने हाथ मलते हुए। ‘और वो हवा जो जाली के पास देवदार के पेड़ों में गूंज रही है। काश मैं उसे महसूस कर पाती—वो सीधे मैदान से आ रही है—काश मैं एक सांस ले पाती!’ उसे शांत करने के लिए मैंने खिड़की का शीशा कुछ सेकंड के लिए खुला रखा। एक ठंडी हवा अंदर आई; मैंने उसे बंद कर दिया और अपने काम पर लौट गया। अब वह शांत लेटी थी, उसका चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था। शरीर की थकावट ने उसकी आत्मा को पूरी तरह से वश में कर लिया था: हमारी जोशीली कैथरीन एक रोते हुए बच्चे से कम नहीं थी।

'कितने समय से मैंने खुद को यहां बंद कर रखा है?' उसने अचानक होश में आते हुए पूछा।

मैंने जवाब दिया, 'यह सोमवार की शाम थी, और अभी गुरुवार की रात है, या यूं कहें कि शुक्रवार की सुबह है।'

‘क्या! उसी सप्ताह में?’ वह अचंभित होकर बोली। ‘केवल इतने कम समय में?’

‘इतना लंबा समय कि सिर्फ ठंडे पानी और चिड़चिड़ेपन पर ही गुजारा किया जा सके,’ मैंने टिप्पणी की।

“खैर, ये तो बहुत थका देने वाले घंटे लग रहे हैं,” उसने संशय से बुदबुदाते हुए कहा: “ज़रूर इससे ज़्यादा होंगे। मुझे याद है, उनके झगड़े के बाद मैं बैठक में थी, एडगर मुझे बेरहमी से उकसा रहा था, और मैं हताश होकर इस कमरे में भागी आई। जैसे ही मैंने दरवाज़ा बंद किया, मुझे एकदम अंधेरा छा गया और मैं ज़मीन पर गिर पड़ी। मैं एडगर को समझा नहीं पाई कि अगर वह मुझे चिढ़ाता रहा तो मुझे कितना डर लग रहा था कि कहीं मुझे दौरा न पड़ जाए या मैं पागल न हो जाऊँ! मेरी ज़बान और दिमाग़ दोनों काम नहीं कर रहे थे, और शायद उसे मेरी पीड़ा का अंदाज़ा भी नहीं था: बस किसी तरह उससे और उसकी आवाज़ से बचने की कोशिश करना ही मेरे लिए

काफ़ी था। जब तक मैं होश में आई और मुझे दिखाई और सुनाई देने लगा, सुबह होने लगी थी, और नेली, मैं तुम्हें बताती हूँ कि मैंने क्या सोचा, और क्या बात बार-बार मेरे दिमाग़ में घूमती रही, यहाँ तक कि मुझे अपनी सोचने-समझने की शक्ति खोने का डर सताने लगा।" जब मैं वहाँ लेटी हुई थी, मेरा सिर मेज के उस पैर से टिका हुआ था, और मेरी आँखें खिड़की के धुंधले से चौकोर हिस्से को देख पा रही थीं, तब मुझे लगा कि मैं घर के ओक की लकड़ी के बने बिस्तर पर लेटी हूँ; और मेरा दिल किसी गहरे दुख से तड़प रहा था, जिसे जागते ही मैं याद नहीं कर पा रही थी। मैं सोचती रही, और यह पता लगाने की कोशिश करती रही कि आखिर यह क्या हो सकता है, और सबसे अजीब बात यह थी कि मेरे जीवन के पिछले सात साल पूरी तरह से खाली हो गए! मुझे याद ही नहीं था कि वे कभी थे भी। मैं एक बच्ची थी; मेरे पिता का अभी-अभी अंतिम संस्कार हुआ था, और मेरा दुख उस अलगाव से उपजा था जो हिंडले ने मुझे और हीथक्लिफ को अलग करने का आदेश दिया था। मुझे पहली बार अकेले सुलाया गया था; और रोने से भरी रात के बाद एक भयानक नींद से जागते हुए, मैंने पैनलों को हटाने के लिए अपना हाथ उठाया: वह मेज के ऊपरी हिस्से से टकरा गया! मैंने उसे कालीन पर घसीटा, और फिर यादें उमड़ पड़ीं: मेरा पिछला दुख निराशा के एक तीव्र झटके में समा गया। मैं नहीं कह सकती कि मैं इतनी बुरी तरह दुखी क्यों थी: यह शायद कुछ समय के लिए मेरा मानसिक संतुलन बिगड़ने जैसा था; क्योंकि इसका कोई खास कारण नहीं है। लेकिन मान लीजिए कि बारह साल की उम्र में मुझे हाइट्स से, मेरे हर बचपन के साथी से, और मेरे सब कुछ से, हीथक्लिफ की तरह छीन लिया गया होता, और एक ही झटके में मुझे थ्रशक्रॉस ग्रेंज की मालकिन, श्रीमती लिंटन, और एक अजनबी की पत्नी बना दिया गया होता: एक निर्वासित, और बहिष्कृत, उस दुनिया से जो कभी मेरी थी। आप उस खाई की एक झलक की कल्पना कर सकते हैं जहाँ मैं रेंगती थी! नेली, तुम चाहे जितना सिर हिलाओ, तुमने मुझे परेशान करने में मदद की है! तुम्हें एडगर से बात करनी चाहिए थी, सचमुच करनी चाहिए थी, और उसे मुझे अकेला छोड़ने के लिए मजबूर करना चाहिए था! ओह, मैं जल रही हूँ! काश मैं बाहर होती! काश मैं फिर से एक लड़की होती, आधी जंगली, साहसी, और स्वतंत्र; और चोटों पर हँसती, न कि उनके नीचे पागल हो जाती! मैं इतनी बदल क्यों गई हूँ? कुछ शब्दों पर मेरा खून क्यों उथल-पुथल के नरक में दौड़ जाता है? मुझे यकीन है कि अगर मैं उन पहाड़ियों पर हीथर के बीच होती तो मैं फिर से वही होती। खिड़की को

फिर से पूरी तरह खोलो: इसे खुला ही बंद कर दो! जल्दी करो, क्यों नहीं हटते?

मैंने उत्तर दिया, 'क्योंकि मैं तुम्हें ठंड से मरने नहीं दूंगा।'

'तुम मुझे जीने का मौका ही नहीं दोगे,' उसने उदास स्वर में कहा। 'लेकिन मैं अभी भी असहाय नहीं हूँ; मैं इसे खुद खोल लूंगी।'

इससे पहले कि मैं उसे रोक पाता, वह बिस्तर से फिसलकर कमरे के उस पार चली गई। वह बहुत ही अनिश्चित ढंग से चल रही थी, उसने बिस्तर पीछे की ओर झुकाया और झुक गई, ठंडी हवा की उसे कोई परवाह नहीं थी जो उसके कंधों को चाकू की तरह चुभ रही थी। मैंने उससे विनती की और अंत में उसे पीछे हटने के लिए मजबूर करने की कोशिश की। लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि उसकी बेहोशी की हालत में उसकी ताकत मेरी ताकत से कहीं अधिक थी (उसके बाद के कार्यों और बड़बड़ाहट से मुझे यकीन हो गया कि वह बेहोश थी)। चाँद नहीं था, और नीचे सब कुछ धुंधले अंधेरे में डूबा हुआ था: किसी भी घर से कोई रोशनी नहीं चमक रही थी, दूर हो या पास, सब कुछ बहुत पहले बुझ चुका था: और वुदरिंग हाइट्स के घर कभी दिखाई नहीं देते थे - फिर भी वह दावा करती रही कि उसने उनकी चमक देखी।

'देखो!' वह उत्सुकता से चिल्लाई, 'वह मेरा कमरा है जिसमें मोमबत्ती जल रही है और उसके सामने पेड़ झूल रहे हैं; और दूसरी मोमबत्ती जोसेफ के अटारी में है। जोसेफ देर रात तक जागता रहता है, है ना? वह मेरे घर आने का इंतज़ार कर रहा है ताकि वह दरवाज़ा बंद कर सके। खैर, वह अभी थोड़ा और इंतज़ार करेगा। यह एक कठिन यात्रा है, और इसे तय करने के लिए दिल उदास है; और उस यात्रा के लिए हमें गिम्मर्टन चर्च से होकर गुज़रना होगा! हमने कई बार साथ मिलकर इसके भूतों का सामना किया है, और एक-दूसरे को कब्रों के बीच खड़े होकर उन्हें आने के लिए कहने की हिम्मत दी है। लेकिन, हीथक्लिफ, अगर मैं अब तुम्हें चुनौती दूं, तो क्या तुम हिम्मत करोगे? अगर तुम करोगे, तो मैं तुम्हें अपने पास रखूंगी। मैं वहाँ अकेले नहीं लेटूंगी: चाहे वे मुझे बारह फीट गहरा दफना दें, और चर्च को मेरे ऊपर गिरा दें, लेकिन जब तक तुम मेरे साथ नहीं होगे, मैं चैन से नहीं बैठूंगी। मैं कभी नहीं बैठूंगी!'

वह रुकी और फिर एक अजीब सी मुस्कान के साथ बोली, 'वह सोच रहा है - वह चाहता है कि मैं उसके पास जाऊं! तो कोई रास्ता ढूंढो! उस कब्रिस्तान से होकर नहीं। तुम बहुत सुस्त हो! संतुष्ट रहो, तुम हमेशा मेरे पीछे-पीछे चलती रही हो!'

उसकी पागलपन की बात को नकारना व्यर्थ समझते हुए, मैं सोच रहा था कि मैं

उसे पकड़े रहने के लिए कुछ कैसे लाऊं (क्योंकि मैं उसे खुली हुई खिड़की के पास अकेले नहीं छोड़ सकता था), तभी अचानक मुझे दरवाजे के हैंडल की खड़खड़ाहट सुनाई दी और श्री लिंटन अंदर आ गए। वे अभी-अभी पुस्तकालय से आए थे; और लॉबी से गुजरते हुए उन्होंने हमारी बातचीत सुनी और जिज्ञासा या डर के मारे यह जानने के लिए आकर्षित हुए कि इतनी देर रात में इसका क्या मतलब है।

‘ओह, महोदय!’ मैंने चीखते हुए कहा, सामने का दृश्य और कमरे का उदास वातावरण देखकर उनके होंठों पर उठने वाले विस्मयबोध को रोकते हुए। ‘मेरी बेचारी मालकिन बीमार हैं, और उन्होंने मुझे पूरी तरह से काबू में कर लिया है: मैं उन्हें बिल्कुल भी संभाल नहीं पा रही हूँ; कृपया आइए और उन्हें बिस्तर पर जाने के लिए मनाइए। अपना गुस्सा भूल जाइए, क्योंकि उन्हें अपने मन मुताबिक चलने के अलावा किसी और तरह से समझाना मुश्किल है।’

‘कैथरीन बीमार है?’ वह हमारी ओर दौड़ते हुए बोला। ‘खिड़की बंद करो, एलेन! कैथरीन! क्यों—’

वह चुप रहा। श्रीमती लिंटन के चेहरे की उदासी ने उसे अवाक कर दिया, और वह भयभीत होकर केवल उनकी ओर और मेरी ओर ही देखता रहा।

मैंने आगे कहा, ‘वह यहाँ परेशान है, बहुत कम खा रही है और कभी शिकायत नहीं करती: उसने आज शाम तक हममें से किसी को भी अंदर नहीं आने दिया, इसलिए हम आपको उसकी हालत के बारे में नहीं बता सके, क्योंकि हमें खुद भी इसकी जानकारी नहीं थी; लेकिन यह कुछ भी नहीं है।’

मुझे लगा कि मैंने अपनी बात ठीक से नहीं रखी; मालिक ने भौंहें चढ़ा लीं। ‘कोई बात नहीं, है ना एलेन डीन?’ उन्होंने सख्ती से कहा। ‘मुझे इस बारे में अनजान रखने का तुम्हें स्पष्ट कारण बताना होगा!’ और उन्होंने अपनी पत्नी को बाहों में भर लिया और दुख भरी निगाहों से उसकी ओर देखा।

पहले तो उसने उसे पहचान की एक झलक भी नहीं दिखाई: उसकी खोई हुई निगाहों के लिए वह अदृश्य था। हालाँकि, यह भ्रम स्थिर नहीं था; बाहरी अंधेरे को निहारते हुए, धीरे-धीरे उसकी नज़र उस पर केंद्रित हुई और उसे पता चला कि उसे किसने थामे रखा था।

‘आह! तुम आ गए, एडगर लिंटन?’ उसने गुस्से और जोश से कहा। ‘तुम उन चीजों में से एक हो जो सबसे कम जरूरत के समय ही मिलते हैं, और जब जरूरत होती है,

तब कभी नहीं! मुझे लगता है अब खूब विलाप होगा—मुझे लगता है होगा—लेकिन वे मुझे मेरे उस छोटे से घर से नहीं रोक सकते: मेरा विश्राम स्थल, जहाँ मुझे बसंत खत्म होने से पहले ही जाना है! ये रहा: ध्यान रहे, लिंटन परिवार के बीच, चैपल की छत के नीचे नहीं, बल्कि खुले आसमान के नीचे, एक समाधि-पत्थर के साथ; और तुम चाहो तो उनके पास जाओ या मेरे पास आओ!'

'कैथरीन, तुमने क्या किया?' गुरु ने बोलना शुरू किया। 'क्या मैं अब तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं हूँ? क्या तुम उस नीच हीथ से प्यार करती हो?'

'चुप रहो!' श्रीमती लिंटन चिल्लाईं। 'अभी चुप रहो! अगर तुमने उस नाम का ज़िक्र किया तो मैं खिड़की से कूदकर तुरंत सब कुछ खत्म कर दूंगी! अभी जो भी तुम छू रहे हो, वो तुम्हारे पास हो सकता है; लेकिन मेरी आत्मा उस पहाड़ी की चोटी पर पहुँच चुकी होगी, इससे पहले कि तुम मुझे दोबारा छू सको। मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है, एडगर: मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं है। अपनी किताबों में लौट जाओ। मुझे खुशी है कि तुम्हारे पास कोई सांत्वना है, क्योंकि जो कुछ भी तुम्हारे लिए मुझमें था, वो सब चला गया है।'

'महोदय, उसका मन भटक रहा है,' मैंने बीच में कहा। 'वह पूरी शाम से बेतुकी बातें कर रही है; लेकिन उसे शांति और उचित देखभाल मिलने दीजिए, तो वह ठीक हो जाएगी। अब से हमें सावधान रहना होगा कि हम उसे परेशान न करें।'

श्री लिंटन ने उत्तर दिया, "मुझे आपसे और कोई सलाह नहीं चाहिए। आप अपनी मालकिन के स्वभाव को जानते थे, और आपने मुझे उसे परेशान करने के लिए उकसाया। और इन तीन दिनों में वह कैसी रही, इसके बारे में मुझे एक भी संकेत नहीं दिया! यह निर्दयता थी! महीनों की बीमारी से ऐसा बदलाव नहीं आ सकता!"

मैंने अपना बचाव करना शुरू किया, यह सोचकर कि किसी और की दुष्टतापूर्ण मनमानी के लिए दोषी ठहराया जाना बहुत बुरा है। मैंने कहा, 'मैं श्रीमती लिंटन के जिद्दी और दबंग स्वभाव को जानती थी, लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि आप उनके उग्र स्वभाव को और बढ़ावा देना चाहती थीं! मुझे यह नहीं पता था कि उन्हें खुश करने के लिए मुझे मिस्टर हीथक्लिफ को आँख मारनी चाहिए। मैंने आपको बताकर एक वफादार नौकर का कर्तव्य निभाया, और मुझे एक वफादार नौकर का वेतन मिला! खैर, इससे मुझे अगली बार सावधान रहना सीख मिलेगी। अगली बार आप खुद ही जानकारी जुटा लें!'

‘अगली बार जब तुम मेरे पास कोई कहानी लेकर आओगी, तो तुम मेरी सेवा छोड़ दोगी, एलेन डीन,’ उसने जवाब दिया।

‘मुझे लगता है कि आप इसके बारे में कुछ भी सुनना नहीं चाहते, श्रीमान लिंटन?’ मैंने कहा। ‘हीथक्लिफ को आपकी अनुमति है कि वह मिस से प्रेम निवेदन करे और आपकी अनुपस्थिति में हर मौके पर आकर मालकिन को आपके खिलाफ भड़काए?’

कैथरीन भले ही भ्रमित थी, लेकिन हमारी बातचीत को लागू करने में वह काफी सतर्क थी।

‘आह! नेली ने गद्दारी की है!’ वह जोश से चिल्लाई। ‘नेली मेरी छिपी हुई दुश्मन है। हे डायन! तो क्या तुम हमें नुकसान पहुँचाने के लिए जादुई तीर चला रही हो! मुझे जाने दो, और मैं उसे पछतावा करवाऊँगी! मैं उसे अपना गुनाह कबूल करने पर मजबूर कर दूँगी!’

उसके माथे पर एक पागल जैसी क्रोध की आग भड़क उठी; वह लिंटन की बाहों से खुद को छुड़ाने के लिए बेताब होकर छटपटाने लगी। मुझे वहां रुकने की कोई इच्छा नहीं थी; और अपनी जिम्मेदारी पर चिकित्सा सहायता लेने का निश्चय करके मैं कमरे से बाहर निकल गया।

सड़क तक पहुँचने के लिए बगीचे से गुज़रते समय, जहाँ दीवार में लगाम का हुक लगा हुआ था, मैंने कुछ सफ़ेद चीज़ को अनियमित रूप से हिलते हुए देखा, जो स्पष्ट रूप से हवा के अलावा किसी और चीज़ के कारण हो रहा था। अपनी जल्दी के बावजूद, मैं उसे देखने के लिए रुक गया, कहीं ऐसा न हो कि बाद में मेरे मन में यह धारणा बैठ जाए कि यह किसी दूसरी दुनिया का प्राणी है। मुझे बहुत आश्चर्य और उलझन हुई जब मैंने स्पर्श से, दृष्टि से नहीं, मिस इसाबेला के स्प्रिंगर कुत्ते, फैनी को एक रूमाल से लटका हुआ पाया, और वह लगभग अपनी अंतिम साँसें ले रहा था। मैंने तुरंत जानवर को मुक्त किया और उसे बगीचे में ले आया। मैंने उसे अपनी मालकिन के पीछे-पीछे ऊपर जाते हुए देखा था जब वह सोने गई थी; और मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि वह वहाँ कैसे पहुँच गया होगा, और किस शरारती व्यक्ति ने उसके साथ ऐसा किया होगा। हुक के चारों ओर की गाँठ खोलते समय, मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे बार-बार कुछ दूरी पर सरपट दौड़ते घोड़ों के पैरों की आवाज़ सुनाई दे रही हो; लेकिन मेरे मन में इतनी सारी बातें चल रही थीं कि मैंने उस घटना पर शायद ही ध्यान दिया: हालांकि उस जगह पर, सुबह दो बजे वह आवाज अजीब थी।

जब मैं गली से गुज़र रहा था, तभी श्री केनेथ सौभाग्यवश अपने घर से गाँव में एक मरीज़ को देखने के लिए निकल रहे थे; और कैथरीन लिंटन की बीमारी के बारे में सुनकर वे तुरंत मेरे साथ वापस चलने को तैयार हो गए। वे एक सीधे-सादे, रूखे स्वभाव के व्यक्ति थे; और उन्होंने कैथरीन के इस दूसरे हमले से बचने की संभावना पर संदेह व्यक्त करने में कोई संकोच नहीं किया; बशर्ते कि वह पहले की तुलना में उनके निर्देशों का अधिक पालन न करे।

'नेली डीन,' उसने कहा, 'मुझे लगता है इसके पीछे कोई और वजह ज़रूर है। ग्रेंज में क्या चल रहा है? यहाँ से अजीबोगरीब खबरें आ रही हैं। कैथरीन जैसी हष्ट-पुष्ट और तंदुरुस्त लड़की मामूली बात पर बीमार नहीं पड़ती; और ऐसे लोगों को तो पड़ना भी नहीं चाहिए। बुखार वगैरह में उन्हें संभालना बहुत मुश्किल काम होता है। आखिर ये सब शुरू कैसे हुआ?'

मैंने उत्तर दिया, 'मालिक आपको बता देंगे; लेकिन आप अर्नशॉ परिवार के हिंसक स्वभाव से तो परिचित ही हैं, और श्रीमती लिंटन तो उनमें सबसे ऊपर हैं। मैं बस इतना कह सकता हूँ कि यह सब एक झगड़े से शुरू हुआ। आवेश में आकर उन्हें दौरा पड़ गया। कम से कम उनका यही कहना है: क्योंकि गुस्से के चरम पर पहुँचकर वह भाग गईं और खुद को कमरे में बंद कर लिया। उसके बाद उन्होंने खाना-पीना छोड़ दिया, और अब वह कभी बड़बड़ाती हैं तो कभी आधी नींद में रहती हैं; अपने आसपास के लोगों को पहचानती हैं, लेकिन उनका दिमाग तरह-तरह के अजीब विचारों और भ्रमों से भरा रहता है।'

'मिस्टर लिंटन को पछतावा होगा?' केनेथ ने प्रश्नवाचक स्वर में पूछा।

'माफ़ कीजिए? अगर कुछ हो गया तो उसका दिल टूट जाएगा!' मैंने जवाब दिया। 'उसे ज़रूरत से ज़्यादा परेशान मत कीजिए।'

'खैर, मैंने उसे सावधान रहने को कहा था,' मेरे साथी ने कहा; 'और उसे मेरी चेतावनी को नजरअंदाज करने के परिणाम भुगतने ही होंगे! क्या वह हाल ही में मिस्टर हीथक्लिफ के साथ अंतरंग नहीं रहा है?'

मैंने उत्तर दिया, 'हीथक्लिफ अक्सर ग्रेंज में आता रहता है, हालाँकि मालिक को उसकी संगति पसंद नहीं है, बल्कि इसलिए आता है क्योंकि मालकिन उसे बचपन से जानती हैं। फिलहाल उसे आने की कोई ज़रूरत नहीं है; क्योंकि उसने मिस लिंटन के प्रति कुछ घमंडी इच्छाएँ ज़ाहिर की थीं। मुझे नहीं लगता कि वह दोबारा आएगा।'

'और क्या मिस लिंटन उससे मुंह मोड़ लेती हैं?' डॉक्टर का अगला सवाल था।

मैंने विषय को आगे बढ़ाने में अनिच्छा जताते हुए जवाब दिया, 'मैं उसकी विश्वासपात्र नहीं हूं।'

'नहीं, वो तो बड़ी चालाक है,' उसने सिर हिलाते हुए कहा। 'वो अपनी बात किसी को नहीं बताती! पर वो बड़ी बड़ी बेवकूफ है। मुझे पक्की जानकारी मिली है कि कल रात (और वो रात कितनी खूबसूरत थी!) वो और हीथक्लिफ आपके घर के पीछे वाले बागान में दो घंटे से ज़्यादा घूम रहे थे; और हीथक्लिफ उस पर दबाव डाल रहा था कि वो अंदर न जाए, बल्कि उसके घोड़े पर सवार होकर उसके साथ चली जाए! मेरे मुखबिर ने बताया कि वो उसे तभी टाल पाई जब उसने वादा किया कि अगली मुलाकात में वो तैयार रहेगी: लेकिन जब मुलाकात होनी थी, तब हीथक्लिफ को पता ही नहीं चला; पर आप श्री लिंटन से कहिए कि वो सतर्क रहें!'

इस खबर ने मुझे नए सिरे से भयभीत कर दिया; मैं केनेथ से भी आगे निकल गया और लगभग पूरा रास्ता दौड़कर वापस आया। छोटा कुत्ता अभी भी बगीचे में भौंक रहा था। मैंने एक मिनट रुककर उसके लिए गेट खोला, लेकिन घर के दरवाजे की ओर जाने के बजाय, वह घास सूंघते हुए इधर-उधर भाग रहा था, और अगर मैंने उसे पकड़कर अपने साथ अंदर न लाया होता, तो वह सड़क पर भाग जाता। इसाबेला के कमरे में पहुँचकर मेरा संदेह पुष्ट हो गया: कमरा खाली था। अगर मैं कुछ घंटे पहले आ जाता, तो श्रीमती लिंटन की बीमारी ने शायद उनके इस जल्दबाजी भरे कदम को रोक दिया होता। लेकिन अब क्या किया जा सकता था? तुरंत पीछा करने पर उन्हें पकड़ने की बहुत कम संभावना थी। हालाँकि, मैं उनका पीछा नहीं कर सकता था; और मैं परिवार को जगाने और जगह को अफरा-तफरी में भरने की हिम्मत नहीं कर सकता था; और तो और, अपने मालिक को, जो अपनी वर्तमान विपत्ति में डूबे हुए थे और जिनके पास दूसरे दुख के लिए कोई जगह नहीं थी, इस बारे में बताने की तो बात ही छोड़िए! मुझे चुप रहने और मामले को अपने आप सुलझने देने के अलावा कोई चारा नहीं दिख रहा था; केनेथ के आने पर, मैं बेबस चेहरे के साथ उसका स्वागत करने गया। कैथरीन बेचैन नींद में थी: उसके पति ने उसके उन्माद को शांत करने में कामयाबी हासिल कर ली थी; अब वह उसके तकिये पर झुका हुआ था, उसके दर्द से भरे भावपूर्ण चेहरे के हर बदलाव और हर रंग को देख रहा था।

डॉक्टर ने स्वयं मामले की जांच करने के बाद, आशापूर्वक उससे कहा कि यदि हम

उसके आसपास पूर्ण और निरंतर शांति बनाए रख सकें, तो इसका परिणाम अनुकूल होगा। मेरे लिए, उसका तात्पर्य मृत्यु से उतना नहीं था, जितना कि बौद्धिक विच्छेद का स्थायी खतरा था।

उस रात मैंने अपनी आँखें बंद नहीं कीं, न ही मिस्टर लिंटन ने: वास्तव में, हम कभी सोए ही नहीं; और नौकर-चाकर अपने तय समय से बहुत पहले ही उठ गए थे, घर में दबे पांव घूम रहे थे और अपने-अपने काम में एक-दूसरे से फुसफुसाते हुए बातें कर रहे थे। मिस इसाबेला को छोड़कर सभी लोग सक्रिय थे; और वे कहने लगे कि वह कितनी गहरी नींद सो रही हैं: उनके भाई ने भी पूछा कि क्या वह उठ गई हैं, और उनकी उपस्थिति के लिए बेचैन लग रहे थे, और इस बात से दुखी थे कि वह अपनी भाभी के लिए इतनी कम चिंता दिखा रही थीं। मैं डर गई थी कि कहीं वह मुझे उन्हें बुलाने के लिए न भेज दें; लेकिन मुझे उनके भागने की खबर सबसे पहले देने का कष्ट नहीं सहना पड़ा। नौकरानियों में से एक, एक लापरवाह लड़की, जो सुबह-सुबह गिम्मर्टन के किसी काम से गई थी, हाँफती हुई ऊपर आई, मुँह खुला हुआ था, और कमरे में घुसकर चिल्लाई: 'अरे बाप रे! अब आगे क्या मुसीबत आने वाली है? मालिक, मालिक, हमारी युवती —'

‘चुप रहो!’ मैंने उसकी शोरगुल भरी हरकत पर क्रोधित होकर जल्दी से चिल्लाया।

‘धीरे बोलो, मैरी—क्या बात है?’ श्री लिंटन ने कहा। ‘तुम्हारी युवती को क्या तकलीफ है?’

‘वो चली गई, वो चली गई! वो हीथक्लिफ उसे लेकर भाग गया!’ लड़की हांफते हुए बोली।

‘यह सच नहीं है!’ लिंटन ने उत्तेजित होकर कहा। ‘ऐसा हो ही नहीं सकता: यह विचार तुम्हारे दिमाग में आया ही कैसे? एलेन डीन, जाओ और उससे मिलो। यह अविश्वसनीय है: ऐसा हो ही नहीं सकता।’

बोलते-बोलते वह नौकरानी को दरवाजे तक ले गया और फिर उससे इस तरह के बयान के पीछे के कारणों को जानने की अपनी मांग दोहराई।

“अरे, मुझे रास्ते में एक लड़का मिला जो यहाँ दूध लाता है,” वह हकलाते हुए बोली, “उसने पूछा कि क्या हम ग्रेंज में किसी मुसीबत में तो नहीं हैं। मुझे लगा कि वह मालकिन की बीमारी के बारे में पूछ रहा है, इसलिए मैंने हाँ में जवाब दिया। फिर उसने कहा, “लगता है कोई उनके पीछे गया है?” मैं उसे घूरने लगी। उसने देखा कि

मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता, और उसने बताया कि कैसे एक सज्जन और महिला आधी रात के कुछ ही समय बाद, गिम्मर्टन से दो मील दूर एक लोहार की दुकान पर घोड़े की नाल लगवाने के लिए रुके थे! और कैसे लोहार की नौकरानी यह देखने के लिए उठी कि वे कौन हैं: वह उन दोनों को अच्छी तरह जानती थी। और उसने देखा कि वह आदमी—हीथक्लिफ ही था, उसे पूरा यकीन था: कोई उसे पहचानने में गलती नहीं कर सकता था—उसने भुगतान के रूप में उसके पिता के हाथ में एक सोने का सिक्का रख दिया। महिला ने अपने चेहरे पर एक लबादा ओढ़ा हुआ था; लेकिन पानी का एक घूंट पीने की इच्छा होने पर, वह पानी पीते समय पीछे गिर गई, और उसने उसे साफ-साफ देख लिया।" हीथक्लिफ ने दोनों लगामें पकड़ रखी थीं और वे गांव से मुंह मोड़कर, उबड़-खाबड़ सड़कों पर जितनी तेज़ी से चल सकते थे, उतनी तेज़ी से चलने लगे। लड़की ने अपने पिता से कुछ नहीं कहा, लेकिन उसने आज सुबह गिम्मर्टन में सबको यह बात बता दी।

मैंने औपचारिकतावश ही इसाबेला के कमरे में झाँका; और लौटकर देखा तो नौकर की बात सही साबित हुई। श्री लिंटन पलंग के पास अपनी जगह पर वापस बैठ चुके थे; मेरे दोबारा अंदर आते ही उन्होंने अपनी नज़रें उठाईं, मेरे भावहीन चेहरे का अर्थ समझा और बिना कोई आदेश दिए या एक शब्द बोले नज़रें झुका लीं।

मैंने पूछा, 'क्या हमें उसे पकड़ने और वापस लाने के लिए कोई उपाय करने चाहिए? हमें क्या करना चाहिए?'

'वह अपनी मर्जी से गई,' स्वामी ने उत्तर दिया; 'अगर वह जाना चाहती तो उसे जाने का पूरा अधिकार था। अब उसके बारे में मुझे परेशान मत करो। अब से वह सिर्फ नाम की बहन है: इसलिए नहीं कि मैंने उसे त्याग दिया है, बल्कि इसलिए कि उसने मुझे त्याग दिया है।'

और इस विषय पर उन्होंने बस इतना ही कहा: उन्होंने आगे कोई पूछताछ नहीं की, न ही उनका किसी भी तरह से जिक्र किया, सिवाय इसके कि मुझे निर्देश दिया कि घर में जो भी सामान है, उसे उनके नए घर में भेज दूं, चाहे वह कहीं भी हो, जब मुझे उसका पता चल जाए।

अध्याय XIII

दो महीने तक भगोड़े अनुपस्थित रहे; इन दो महीनों में, श्रीमती लिंटन को मस्तिष्क ज्वर नामक गंभीर आघात का सामना करना पड़ा और उन्होंने उस पर विजय प्राप्त की। कोई भी माँ अपने इकलौते बच्चे की इतनी लगन से देखभाल नहीं कर सकती थी जितनी एडगर ने की। दिन-रात वह निगरानी करता रहा और चिड़चिड़े तंत्रिकाओं और डगमगाती बुद्धि के कारण होने वाली सभी परेशानियों को धैर्यपूर्वक सहन करता रहा; और यद्यपि केनेथ ने टिप्पणी की कि जिसे उसने मृत्यु से बचाया है, वह उसकी देखभाल का प्रतिफल केवल भविष्य की निरंतर चिंता का स्रोत बनकर ही देगा - वास्तव में, उसका स्वास्थ्य और शक्ति मानवता के एक मात्र खंडहर को बचाने के लिए बलिदान हो रही थी - कैथरीन के जीवन के खतरे से बाहर घोषित होने पर उसकी कृतज्ञता और आनंद की कोई सीमा नहीं थी; और घंटों वह उसके पास बैठा रहता, उसके धीरे-धीरे स्वस्थ होने का अवलोकन करता, और इस भ्रम से अपनी अति आशावादी आशाओं को शांत करता कि उसका दिमाग भी सही संतुलन में आ जाएगा, और वह जल्द ही पूरी तरह से पहले जैसी हो जाएगी।

वह पहली बार अपने कमरे से अगले मार्च की शुरुआत में निकलीं। सुबह श्री लिंटन ने उनके तकिए पर सुनहरे क्रोकस के कुछ फूल रख दिए थे; उनकी आंखें, जो लंबे समय से किसी भी प्रकार की खुशी से वंचित थीं, जागते ही उन फूलों पर पड़ीं और उन्हें उत्सुकता से इकट्ठा करते हुए उनकी आंखें आनंदित हो उठीं।

'ये हाइट्स पर खिले सबसे पहले फूल हैं,' उसने उत्साह से कहा। 'ये मुझे पिघलती हुई कोमल हवाओं, गर्म धूप और लगभग पिघली हुई बर्फ की याद दिलाते हैं। एडगर, क्या यहाँ दक्षिण की ओर से हवा नहीं चल रही है, और क्या बर्फ लगभग पिघल नहीं गई है?'

'यहाँ तो बर्फ पूरी तरह से पिघल चुकी है, प्रिय,' उसके पति ने उत्तर दिया; 'और मुझे पूरे मैदान में केवल दो सफेद धब्बे ही दिखाई दे रहे हैं: आकाश नीला है, लार्क पक्षी गा रहे हैं, और सभी नदियाँ और झरने पानी से लबालब भरे हुए हैं। कैथरीन,

पिछली वसंत ऋतु में इस समय, मैं तुम्हें इस छत के नीचे पाकर बहुत तरसा रहा था; अब, मेरी इच्छा है कि तुम उन पहाड़ियों पर एक-दो मील ऊपर होतीं: वहाँ की हवा इतनी मीठी बहती है, मुझे लगता है कि वह तुम्हें ठीक कर देगी।'

'मैं यहाँ सिर्फ एक बार और आऊँगा,' उस बीमार व्यक्ति ने कहा; 'और फिर तुम मुझे छोड़कर चले जाओगे, और मैं हमेशा के लिए यहीं रह जाऊँगा। अगली बसंत में तुम मुझे फिर से इस छत के नीचे पाने के लिए तरसोगे, और तुम पीछे मुड़कर देखोगे और सोचोगे कि आज तुम कितने खुश थे।'

लिंटन ने उसे बड़े प्यार से सहलाया और स्नेह भरे शब्दों से उसका मन बहलाने की कोशिश की; लेकिन फूलों को अनसुना करते हुए, उसने अपनी पलकों पर आँसू जमा होने दिए और उन्हें गालों पर बहने दिया। हम जानते थे कि वह वास्तव में बेहतर थी, इसलिए हमने फैसला किया कि एक ही जगह पर लंबे समय तक बंद रहने से उसकी यह उदासी काफी हद तक बढ़ गई थी, और शायद जगह बदलने से यह कुछ हद तक दूर हो सकती है। मालिक ने मुझे कई हफ्तों से खाली पड़े बैठक कक्ष में आग जलाने और खिड़की के पास धूप में एक आरामकुर्सी लगाने को कहा; फिर वह उसे नीचे ले आया, और वह काफी देर तक सुखद गर्मी का आनंद लेती रही, और जैसा कि हमने उम्मीद की थी, अपने आसपास की चीजों से उसे ताजगी मिली: जो परिचित तो थीं, लेकिन उसके नफरत भरे बीमार कमरे से जुड़ी उदास यादों से मुक्त थीं। शाम तक वह बहुत थकी हुई लग रही थी; फिर भी कोई भी तर्क उसे उस कमरे में वापस जाने के लिए राजी नहीं कर सका, और मुझे बैठक कक्ष के सोफे को उसके बिस्तर के रूप में इस्तेमाल करना पड़ा, जब तक कि दूसरा कमरा तैयार न हो जाए। सीढ़ियों पर चढ़ने-उतरने की थकान से बचने के लिए, हमने यह कमरा बनवाया, जहाँ आप इस समय लेटी हैं—यह बैठक कक्ष के साथ ही एक ही तल पर है; और वह जल्द ही इतनी स्वस्थ हो गईं कि एडगर का सहारा लेकर एक कमरे से दूसरे कमरे में जा सकें। आह, मैंने मन ही मन सोचा, जिस तरह से उनकी देखभाल की जा रही थी, शायद वह ठीक हो जाएँगी। और ऐसा चाहने का दोहरा कारण था, क्योंकि उनका जीवन एक और व्यक्ति के जीवन पर निर्भर था: हमें आशा थी कि कुछ ही समय में श्री लिंटन का हृदय प्रसन्न हो जाएगा, और एक उत्तराधिकारी के जन्म से उनकी ज़मीनें किसी अजनबी के चंगुल से सुरक्षित हो जाएँगी।

मुझे यह बताना चाहिए कि इसाबेला ने अपने जाने से लगभग छह सप्ताह पहले

अपने भाई को एक छोटा सा पत्र भेजा था, जिसमें उसने हीथक्लिफ से अपनी शादी की घोषणा की थी। यह पत्र नीरस और बेजान सा लग रहा था; लेकिन नीचे पेंसिल से एक अस्पष्ट माफीनामा लिखा था, और यह विनती थी कि अगर उसके इस कदम से उसे ठेस पहुंची हो तो वह उसे याद रखे और सुलह कर ले। उसने कहा कि उस समय वह कुछ नहीं कर सकती थी, और अब जब यह हो चुका है, तो उसके पास इसे वापस लेने की कोई शक्ति नहीं है। मुझे लगता है कि लिंटन ने इसका जवाब नहीं दिया; और दो सप्ताह बाद मुझे एक लंबा पत्र मिला, जो मुझे अजीब लगा, क्योंकि यह एक ऐसी दुल्हन के हाथ से आया था जो अभी-अभी हनीमून से लौटी थी। मैं इसे पढ़ूंगा: क्योंकि यह अभी भी मेरे पास है। अगर किसी मृत व्यक्ति को जीवित रहते हुए महत्व दिया जाता था, तो उसकी कोई भी निशानी अनमोल होती है।

* * * * *

प्रिय एलेन, पत्र की शुरुआत इस प्रकार होती है— मैं कल रात वुदरिंग हाइट्स आया और पहली बार सुना कि कैथरीन बहुत बीमार है और अभी भी बीमार है। मुझे लगता है कि मुझे उसे पत्र नहीं लिखना चाहिए, और मेरा भाई या तो बहुत क्रोधित है या बहुत दुखी है, इसलिए वह मेरे भेजे गए पत्र का उत्तर नहीं दे पाएगा। फिर भी, मुझे किसी को तो पत्र लिखना ही होगा, और मेरे पास एकमात्र विकल्प तुम ही हो।

एडगर को बता देना कि मैं उसका चेहरा फिर से देखने के लिए दुनिया भी दे दूंगी — मेरा दिल थ्रशक्रॉस ग्रेंज छोड़ने के चौबीस घंटे के भीतर ही वापस लौट आया है, और इस समय वहीं है, उसके और कैथरीन के लिए गर्मजोशी भरी भावनाओं से भरा हुआ! हालांकि मैं इसे समझ नहीं पा रही हूँ — (ये शब्द रेखांकित हैं) — उन्हें मेरी उम्मीद नहीं करनी चाहिए, और वे जो चाहें निष्कर्ष निकाल सकते हैं; लेकिन इस बात का ध्यान रखना कि मेरी कमज़ोर इच्छाशक्ति या अपर्याप्त स्नेह को दोष न दें।

इस पत्र का शेष भाग केवल आपके लिए है। मैं आपसे दो प्रश्न पूछना चाहता हूँ: पहला यह है कि जब आप यहाँ रहते थे, तो आपने मानव स्वभाव की सामान्य सहानुभूति को कैसे बनाए रखा? मुझे ऐसा कोई भाव नहीं दिखता जो मेरे आस-पास के लोगों में समान हो।

दूसरा सवाल जिसमें मेरी गहरी दिलचस्पी है, वह यह है—क्या मिस्टर हीथक्लिफ एक इंसान हैं? अगर हाँ, तो क्या वे पागल हैं? और अगर नहीं, तो क्या वे शैतान हैं?

मैं इस सवाल को पूछने का कारण नहीं बताऊँगी; लेकिन मैं आपसे विनती करती हूँ कि अगर आप बता सकें, तो मेरी शादी किससे हुई है, यह समझाएँ: यानी, जब आप मुझसे मिलने आएँ; और आपको आना ही होगा, एलेन, बहुत जल्द। लिखना मत, बल्कि आना, और एडगर की तरफ से मेरे लिए कुछ लाना।

अब आप सुनेंगे कि मेरे नए घर में मेरा कैसा स्वागत हुआ है, जैसा कि मुझे लगता है कि हाइट्स में होगा। मैं बाहरी सुख-सुविधाओं की कमी जैसे विषयों पर इसलिए विचार कर रही हूँ ताकि मेरा मन बहल जाए: ये बातें मेरे मन में कभी नहीं आतीं, सिवाय उस पल के जब मुझे इनकी कमी खलती है। अगर मुझे पता चले कि इनकी कमी ही मेरी सारी तकलीफें हैं और बाकी सब एक अप्राकृतिक सपना है, तो मैं खुशी से झूम उठूँगी!

जैसे ही हम दलदली भूमि की ओर मुड़े, सूरज ग्रेंज के पीछे डूब गया; इससे मुझे लगा कि छह बज चुके हैं; और मेरे साथी ने पार्क, बगीचों और शायद खुद उस जगह का जितना हो सके निरीक्षण करने के लिए आधा घंटा रुका; इसलिए जब हम फार्महाउस के पक्के आंगन में उतरे तो अंधेरा हो चुका था, और आपका पुराना साथी नौकर, जोसेफ, एक मोमबत्ती की रोशनी में हमारा स्वागत करने के लिए बाहर आया। उसने बड़े ही सलीके से हमारा स्वागत किया। सबसे पहले उसने अपनी मशाल मेरे चेहरे के सामने उठाई, तिरछी नज़र से देखा, अपना निचला होंठ आगे निकाला और मुँह फेर लिया। फिर उसने दोनों घोड़ों को लिया और उन्हें अस्तबल में ले गया; फिर वह बाहरी द्वार को बंद करने के लिए वापस आया, मानो हम किसी प्राचीन किले में रहते हों।

हीथक्लिफ उससे बात करने के लिए रुक गया, और मैं रसोई में दाखिल हुआ - एक गंदी, मैली-कुचैली जगह; मुझे यकीन है कि आप इसे पहचान भी नहीं पाएंगे, यह आपके समय से अब तक इतनी बदल चुकी है। आग के पास एक शरारती सा दिखने वाला बच्चा खड़ा था, तगड़ा और गंदे कपड़ों वाला, जिसकी आँखों और मुँह में कैथरीन की झलक थी।

मैंने मन ही मन सोचा, 'यह एडगर का कानूनी भतीजा है—एक तरह से मेरा भी; मुझे उससे हाथ मिलाना चाहिए, और—हाँ—मुझे उसे चूमना भी चाहिए। शुरुआत में ही अच्छे संबंध स्थापित करना उचित है।'

मैं उसके पास गया और उसकी गोल-मटोल मुट्ठी पकड़ने की कोशिश करते हुए

कहा— ‘आप कैसे हैं, मेरे प्यारे?’

उसने ऐसी तकनीकी भाषा में जवाब दिया जो मुझे समझ नहीं आई।

'क्या हम दोनों दोस्त बन सकते हैं, हैरेटन?' यह मेरी अगली बातचीत की कोशिश थी।

मेरी लगन को एक शपथ और 'फ्रेम ऑफ' न करने पर थ्रॉटलर को मुझ पर छोड़ने की धमकी से पुरस्कृत किया गया।

‘अरे, थ्रॉटलर, लड़के!’ उस छोटे बदमाश ने फुसफुसाते हुए एक कोने में दुबले-पतले बुलडॉग को जगाया। ‘अब तुम जाओगे क्या?’ उसने अधिकारिक स्वर में पूछा।

अपनी जान बचाने के प्यार ने मुझे आज्ञा मानने पर मजबूर कर दिया; मैं दहलीज पार करके दूसरों के आने का इंतज़ार करने लगा। मिस्टर हीथक्लिफ कहीं नज़र नहीं आ रहे थे; और जोसेफ, जिसके पीछे-पीछे मैं अस्तबल तक गया और उसे अंदर आने के लिए कहा, कुछ देर तक घूरने और खुद से कुछ बुदबुदाने के बाद, नाक सिकोड़कर बोला - 'मिम! मिम! मिम! क्या किसी ईसाई ने कभी ऐसी आवाज़ सुनी है? नखरे और चबाना! मैं कैसे समझूँ कि तुम क्या कह रहे हो?'

‘मैं कहती हूँ, मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे साथ घर में चलो!’ मैंने चिल्लाकर कहा, यह सोचते हुए कि वह बहरा है, फिर भी उसकी बदतमीज़ी से मुझे बहुत घृणा हो रही थी।

‘मैं नहीं! मुझे कुछ और काम करना है,’ उसने जवाब दिया और अपना काम जारी रखा; इस बीच वह अपने लंबे जबड़े हिलाता रहा और मेरे पहनावे और चेहरे को (पहला तो बहुत ही बढ़िया था, लेकिन दूसरा, मुझे यकीन है, उतना ही उदास था जितना वह चाहता था) घोर तिरस्कार के साथ देखता रहा।

मैं आंगन के चारों ओर घूमा और एक छोटे से दरवाज़े से होते हुए दूसरे दरवाजे तक गया, जहाँ मैंने यह सोचकर दस्तक दी कि शायद कोई और सरकारी कर्मचारी सामने आ जाए। कुछ देर के इंतज़ार के बाद, एक लंबे, दुबले-पतले आदमी ने दरवाजा खोला, जिसके गले में रुमाल नहीं था और वह बेहद अस्त-व्यस्त दिख रहा था; उसके चेहरे के हाव-भाव कंधों पर लटके हुए घने बालों में छिपे हुए थे; और उसकी आँखें भी किसी प्रेतवाधित कैथरीन जैसी थीं, जिनकी सारी सुंदरता गायब हो चुकी थी।

‘तुम्हारा यहाँ क्या काम है?’ उसने गंभीर स्वर में पूछा। ‘तुम कौन हो?’

मैंने जवाब दिया, 'मेरा नाम इसाबेला लिंटन है। आपने मुझे पहले भी देखा होगा, महोदय। मेरी हाल ही में मिस्टर हीथक्लिफ से शादी हुई है, और वे मुझे यहाँ लाए हैं -

मुझे लगता है, आपकी अनुमति से।'

'तो क्या वह वापस आ गया है?' साधु ने भूखे भेड़िये की तरह घूरते हुए पूछा।

'हां—हम अभी-अभी आए थे,' मैंने कहा; 'लेकिन उसने मुझे रसोई के दरवाजे पर छोड़ दिया; और जब मैं अंदर जाने वाली थी, तो आपके छोटे लड़के ने पहरा दिया और एक बुलडॉग की मदद से मुझे डराकर भगा दिया।'

'अच्छा हुआ कि उस दुष्ट ने अपना वादा निभाया!' मेरे भावी मेज़बान ने गुर्राते हुए कहा, और हीथक्लिफ को खोजने की उम्मीद में मेरे पीछे अंधेरे में चारों ओर देखने लगा; और फिर उसने शापों और धमकियों का एक लंबा भाषण दिया कि अगर उस 'शैतान' ने उसे धोखा दिया होता तो वह क्या करता।

मुझे इस दूसरे प्रवेश द्वार से अंदर आने की कोशिश करने पर पछतावा हुआ, और मैं लगभग उसके गाली-गलौज खत्म होने से पहले ही चुपके से निकल जाने वाली थी, लेकिन इससे पहले कि मैं ऐसा कर पाती, उसने मुझे अंदर आने का आदेश दिया और दरवाजा बंद करके फिर से कुंडी लगा दी। अंदर एक बड़ी आग जल रही थी, और उस विशाल कमरे में बस उतनी ही रोशनी थी, जिसका फर्श पूरी तरह से भूरा हो गया था; और कभी चमकते हुए पीतल के बर्तन, जो बचपन में मेरी निगाहें अपनी ओर खींचते थे, अब धूल और मैल के कारण धुंधले पड़ गए थे। मैंने पूछा कि क्या मैं नौकरानी को बुला सकती हूँ और उसे एक कमरे में ले जाने के लिए कह सकती हूँ! श्री अर्नशॉ ने कोई जवाब नहीं दिया। वह अपने हाथों को जेब में डाले इधर-उधर घूम रहे थे, मानो मेरी मौजूदगी को पूरी तरह से भूल गए हों; और उनका ध्यान इतना गहरा था, और उनका पूरा चेहरा इतना निराशावादी था, कि मैं उन्हें फिर से परेशान करने से हिचक रही थी।

एलेन, तुम्हें आश्चर्य नहीं होगा कि मैं उस निर्जन चूल्हे पर अकेलेपन से भी बदतर स्थिति में बैठी हुई कितनी उदास थी, और मुझे याद आ रहा था कि चार मील दूर मेरा प्यारा घर था, जहाँ धरती पर मेरे सबसे प्रिय लोग रहते थे; और उन चार मीलों की जगह मानो अटलांटिक महासागर ही हमें अलग कर रहा हो: मैं उन्हें पार नहीं कर सकती थी! मैंने खुद से सवाल किया - मुझे सांत्वना कहाँ से मिलेगी? और - ध्यान रहे, एडगर या कैथरीन को मत बताना - बाकी सभी दुखों से ऊपर, यह दुख सबसे बड़ा था: हीथक्लिफ के खिलाफ मेरा साथ देने वाला कोई नहीं मिला, इस बात की निराशा! मैंने लगभग खुशी-खुशी वुदरिंग हाइट्स में शरण ली थी, क्योंकि उस व्यवस्था

से मैं उसके साथ अकेले रहने से बच गई थी; लेकिन वह उन लोगों को जानता था जिनके बीच हम जा रहे थे, और उसे उनके दखलंदाजी का कोई डर नहीं था।

मैं बैठकर उदास मन से सोचती रही: घड़ी में आठ और नौ बज चुके थे, फिर भी मेरा साथी सिर सीने पर झुकाए इधर-उधर टहल रहा था, एकदम चुप, बस कभी-कभार कोई कराह या कड़वी आह निकल जाती थी। मैं घर में किसी औरत की आवाज़ सुनने की कोशिश करती रही, और इस बीच गहरे अफसोस और निराशाजनक आशंकाओं से भरी रही, जो अंततः अनियंत्रित आहों और रोने के रूप में ज़ाहिर हो गईं। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कितनी खुलकर दुखी थी, जब तक कि अर्नशॉ अपनी धीमी चाल से मेरे सामने आकर रुक नहीं गया और उसने मुझे हैरानी भरी निगाहों से नहीं देखा। उसका ध्यान वापस मिलने का फ़ायदा उठाते हुए, मैंने कहा - 'मैं सफ़र से थक गई हूँ, और सोना चाहती हूँ! नौकरानी कहाँ है? मुझे उसके पास ले चलो, क्योंकि वह मेरे पास नहीं आ रही!'

'हमारे पास कोई नहीं है,' उसने उत्तर दिया; 'आपको स्वयं ही व्यवस्था करनी होगी!'

'तो फिर मुझे कहाँ सोना चाहिए?' मैं सिसकते हुए बोली; मैं आत्मसम्मान की परवाह करना छोड़ चुकी थी, थकान और दुख से बोझिल थी।

उसने कहा, 'जोसेफ तुम्हें हीथक्लिफ का कमरा दिखाएगा; वह दरवाजा खोलो— वह अंदर है।'

मैं उसकी बात मानने ही वाला था, लेकिन उसने अचानक मुझे रोक लिया और बड़े अजीब लहजे में कहा, 'कृपा करके अपना ताला लगा दो और कुंडी लगा दो - इसे मत भूलो!'

'अच्छा!' मैंने कहा। 'लेकिन क्यों, श्री अर्नशॉ?' मुझे जानबूझकर हीथक्लिफ के साथ जुड़ने का विचार अच्छा नहीं लग रहा था।

'देखो यहाँ!' उसने अपनी जैकेट से एक अजीबोगरीब ढंग से बनी पिस्तौल निकालते हुए जवाब दिया, जिसके बैरल पर दोधारी स्प्रिंग वाला चाकू लगा हुआ था। 'यह किसी हताश आदमी के लिए बड़ा प्रलोभन है, है ना? मैं हर रात इसे लेकर उसके दरवाजे पर जाने से खुद को रोक नहीं पाता। अगर एक बार दरवाजा खुला मिल जाए तो उसका काम तमाम; मैं हमेशा ऐसा करता हूँ, भले ही ठीक एक मिनट पहले मैं सौ कारण सोच रहा होता हूँ जो मुझे ऐसा करने से रोकते हैं: कोई शैतान मुझे उसे मारकर

अपनी ही योजनाओं को विफल करने के लिए उकसाता है। तुम उस शैतान से प्यार के लिए जितना चाहो लड़ो; जब समय आएगा, तो स्वर्ग के सारे फ़रिश्ते भी उसे नहीं बचा पाएंगे!'

मैंने उत्सुकता से हथियार का निरीक्षण किया। मेरे मन में एक भयानक विचार आया: ऐसा हथियार अपने पास रखकर मैं कितना शक्तिशाली हो जाऊंगा! मैंने उसे उसके हाथ से छीन लिया और ब्लेड को छुआ। एक पल के लिए मेरे चेहरे पर आए भाव को देखकर वह अचंभित रह गया: वह भय नहीं, बल्कि लालच था। उसने ईर्ष्या से पिस्तौल वापस छीन ली; चाकू बंद किया और उसे छिपा दिया।

'मुझे परवाह नहीं कि तुम उसे बताओ या नहीं,' उसने कहा। 'उसे सावधान कर दो और उस पर नज़र रखो। मुझे लगता है कि तुम हमारी शर्तों को समझते हो: उसका खतरा तुम्हें चौंकाता नहीं है।'

मैंने पूछा, 'हीथक्लिफ ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? उसने तुम्हारे साथ ऐसा क्या गलत किया है कि तुम उससे इतनी घृणा करती हो? क्या बेहतर नहीं होगा कि तुम उसे घर छोड़ने के लिए कह दो?'

'नहीं!' अर्न्शॉ गरजते हुए बोली; 'अगर वह मुझे छोड़ने की पेशकश करे, तो वह मरा हुआ है; अगर उसे ऐसा करने के लिए उकसाया, तो तुम हत्यारी कहलाओगी! क्या मैं सब कुछ खो दूँगी, बिना वापसी की कोई उम्मीद के? क्या हैरेटन भिखारी बन जाएगा? ओह, धिक्कार है! मैं इसे वापस लेकर रहूँगी; और उसका सोना भी; और फिर उसका खून; और उसकी आत्मा नरक में जाएगी! उस मेहमान के आने से वह नरक पहले से दस गुना ज़्यादा काला हो जाएगा!'

एलेन, तुमने मुझे अपने पुराने मालिक की आदतों से अवगत करा दिया है। वह स्पष्ट रूप से पागलपन की कगार पर हैं: कम से कम कल रात तो ऐसा ही था। मुझे उनके पास खड़े होने से डर लग रहा था, और नौकर की बदतमीज़ी भरी उदासी मुझे तुलनात्मक रूप से सुखद लग रही थी। अब वह फिर से अपने उदास अंदाज़ में चलने लगे, और मैंने कुंडी उठाई और रसोई में भाग गई। जोसेफ आग के ऊपर झुके हुए थे, और उसके ऊपर झूल रहे एक बड़े बर्तन में झाँक रहे थे; और पास ही बेंच पर दलिया से भरा एक लकड़ी का कटोरा रखा था। बर्तन में रखी चीज़ें उबलने लगीं, और उन्होंने कटोरे में हाथ डालने के लिए मुड़ा; मैंने अनुमान लगाया कि यह शायद हमारे रात के खाने के लिए था, और भूखी होने के कारण, मैंने सोचा कि यह खाने लायक होगा;

इसलिए, ज़ोर से चिल्लाते हुए, 'मैं दलिया बनाऊँगी!' मैंने बर्तन को उनकी पहुँच से दूर कर दिया, और अपनी टोपी और घुड़सवारी का वस्त्र उतारने लगी। 'श्री अर्नशॉ,' मैंने आगे कहा, 'मुझे खुद सेवा करने का निर्देश दिया है: मैं करूँगी।' मैं तुम्हारे बीच की सभ्य महिला की तरह व्यवहार नहीं करने वाली, कहीं मैं भूखी न मर जाऊं।'

‘हे भगवान!’ वह बैठते हुए बुदबुदाया और घुटने से टखने तक अपनी धारीदार मोजों को सहलाने लगा। ‘अगर नए आदेश आने ही वाले हैं—ठीक उसी समय जब मैं दो स्वामियों के साथ रहने का आदी हुआ हूँ, अगर मुझे अपने सिर पर एक और स्वामिनी रखनी पड़ी, तो लगता है भागने का समय आ गया है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुझे यह पुरानी जगह छोड़नी पड़ेगी—लेकिन मुझे शक है कि वह दिन अब दूर है!’

मेरी इस विलाप पर मैंने कोई ध्यान नहीं दिया: मैं फुर्ती से काम पर चला गया, उस दौर को याद करके आहें भरता रहा जब सब कुछ कितना आनंदमय रहा होगा; लेकिन उस याद को तुरंत मन से मिटाने के लिए मजबूर हो गया। बीते सुखों को याद करना मुझे व्याकुल कर देता था और जैसे-जैसे समय बीतता गया और आटे के मुट्ठी भर दाने पानी में गिरते गए, वैसे-वैसे उसके भूत को फिर से प्रकट करने का खतरा बढ़ता गया। जोसेफ मेरी खाना पकाने की शैली को बढ़ती हुई नाराजगी से देख रहा था।

‘अरे!’ वह चीख उठा। ‘हैरेटन, तुम आज रात अपना दलिया नहीं खा पाओगे; वो मेरे घुटने जितने बड़े-बड़े टुकड़े मात्र होंगे। अरे, फिर से! अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं उसे कटोरे में फेंक देता! लो, पीला पड़ जाएगा, फिर तुम्हारा काम तमाम हो जाएगा। धमाका, धमाका। शुक्र है कि नीचे का हिस्सा कटा हुआ नहीं है!’

मैं मानता हूँ कि जब दूध को बर्तनों में डाला गया तो वह काफी गंदा हो गया था; चार बर्तन रखे गए थे और डेयरी से एक गैलन का नया दूध का जग लाया गया था, जिसे हैरेटोन ने छीन लिया और पीने लगा, और उसके चौड़े किनारे से दूध गिराता रहा। मैंने विरोध किया और उससे कहा कि वह अपना दूध मग में ले; मैंने कहा कि मैं इतने गंदे तरीके से तैयार किए गए तरल का स्वाद नहीं ले सकता। उस बूढ़े सनकी को मेरी इस बात पर बहुत बुरा लगा; वह बार-बार मुझे यकीन दिलाता रहा कि 'गोदाम भी मेरे जितना ही अच्छा है', 'और उतना ही सुंदर भी', और सोचता रहा कि मैं इतना घमंडी कैसे हो सकता हूँ। इस बीच, वह नन्हा बदमाश दूध पीता रहा; और जग में लार टपकाते हुए मुझे घूरता रहा।

मैंने कहा, 'मैं अपना भोजन दूसरे कमरे में करूँगा। क्या आपके पास कोई बैठक कक्ष नहीं है?'

'पार्लर!' उसने व्यंग्यपूर्वक दोहराया, 'पार्लर! नहीं, हमारे पास कोई पार्लर नहीं है। अगर आपको हमारी संगति पसंद नहीं है, तो मालिक का घर है; और अगर आपको मालिक पसंद नहीं है, तो हम हैं।'

'तो मैं ऊपर चलता हूँ,' मैंने उत्तर दिया; 'मुझे एक कमरा दिखाओ।'

मैंने अपना कटोरा एक ट्रे पर रखा और खुद थोड़ा और दूध लेने चला गया। वह आदमी बड़े बड़बड़ाते हुए उठा और मेरे आगे-आगे चलने लगा: हम अटारी में चढ़ गए; वह बीच-बीच में एक दरवाजा खोलकर उन कमरों में झाँकता रहा जिनसे हम गुज़र रहे थे।

अंत में, उसने कब्ज़ों पर लगे एक खस्ताहाल तख्ते को पीछे फेंकते हुए कहा, 'ये लो एक रम्म। इसमें थोड़ा दलिया खा सकते हैं। कोने में मक्के का एक पैकेट रखा है, एकदम साफ-सुथरा; अगर आपको अपने कीमती रेशमी कपड़ों के गंदे होने का डर है, तो अपना रूमाल इसके ऊपर फैला दें।'

वह 'रहम' एक प्रकार का लकड़ी का गड्ढा था जिसमें माल्ट और अनाज की तेज गंध आ रही थी; उसके चारों ओर सामान से भरे कई बोरे ढेर थे, जिससे बीच में एक चौड़ा, खाली स्थान बचा हुआ था।

'अरे यार,' मैंने गुस्से से उसकी ओर मुँह करके कहा, 'यह सोने की जगह नहीं है। मुझे अपना शयनकक्ष देखना है।'

'बेडरूम!' उसने उपहास भरे लहजे में दोहराया। 'तुमने सारे बेडरूम देख लिए हैं – ये मेरा है।'

उसने दूसरे अटारी कक्ष की ओर इशारा किया, जो पहले वाले से केवल इस मायने में भिन्न था कि उसकी दीवारें अधिक खुली थीं, और उसके एक छोर पर एक बड़ा, नीचा, बिना पर्दे वाला बिस्तर था, जिस पर नीले रंग की रजाई बिछी हुई थी।

मैंने पलटकर कहा, 'मुझे तुम्हारे वाले से क्या चाहिए?' 'मुझे लगता है कि मिस्टर हीथक्लिफ घर के सबसे ऊपरी हिस्से में नहीं रहते होंगे, है ना?'

'अरे! आप लोग मास्टर हैथक्लिफ की तलाश में हैं?' उसने मानो कोई नई खोज करते हुए कहा। 'क्या आप शुरू में ही ऐसा नहीं कह सकते थे? और फिर, मैं आपको इस सारी मेहनत के बावजूद बता देता कि यह एक ऐसी चीज है जिसे आप देख नहीं

सकते — वह हमेशा इसे बंद रखता है, और उसके अलावा कोई भी इसे कभी नहीं छूता।'

'जोसेफ, तुम्हारा घर बहुत अच्छा है,' मैं खुद को कहने से रोक नहीं पाई, 'और यहाँ रहने वाले लोग भी अच्छे हैं; और मुझे लगता है कि जिस दिन मैंने अपना भाग्य उनसे जोड़ा, उस दिन दुनिया के सारे पागलपन का सार मेरे दिमाग में समा गया! खैर, अभी यह बात मायने नहीं रखती – और भी कमरे हैं। भगवान के लिए जल्दी करो, और मुझे कहीं बसने दो!'

इस चेतावनी का उसने कोई उत्तर नहीं दिया; वह लकड़ी की सीढ़ियों से धीरे-धीरे नीचे उतरता गया और एक कमरे के सामने रुक गया, जिसे देखकर मुझे लगा कि वह सबसे अच्छा कमरा होगा। वहाँ एक कालीन था—अच्छा था, लेकिन धूल से उसका पैटर्न मिट गया था; एक चिमनी थी जिस पर कटे हुए कागज लटके हुए थे, जो गिर रहे थे; एक सुंदर ओक का पलंग था जिस पर महंगे और आधुनिक ढंग के लाल रंग के बड़े पर्दे लगे थे; लेकिन स्पष्ट रूप से उनका बहुत अधिक उपयोग हुआ था: झालरें अपनी छल्लों से उखड़कर लटक रही थीं, और उन्हें सहारा देने वाली लोहे की छड़ एक तरफ से चाप की तरह मुड़ी हुई थी, जिससे पर्दे फर्श पर घिसट रहे थे। कुर्सियाँ भी क्षतिग्रस्त थीं, कई तो बुरी तरह से; और दीवारों के पैनलों पर गहरे निशान पड़ गए थे। मैं अंदर जाने और उस पर कब्ज़ा करने का साहस जुटाने की कोशिश कर ही रहा था कि मेरे मूर्ख गाइड ने घोषणा की,— 'यह यहाँ मालिक का कमरा है।' तब तक मेरा खाना ठंडा हो चुका था, मेरी भूख खत्म हो चुकी थी, और मेरा धैर्य भी टूट चुका था। मैंने तत्काल शरणस्थल और विश्राम के साधन उपलब्ध कराने पर जोर दिया।

'ये शैतान कहाँ है?' धार्मिक बुजुर्ग ने कहना शुरू किया। 'भगवान हमें आशीर्वाद दें! भगवान हमें क्षमा करें! तुम कहाँ जा रहे हो? तुम निकम्मे, उबाऊ लोग! तुमने हैरेटन के कमरे के अलावा सब कुछ देख लिया है। यहाँ बैठने के लिए कोई और जगह नहीं है!'

मैं इतना परेशान हो गया था कि मैंने अपनी ट्रे और उसमें रखी चीजें जमीन पर फेंक दीं; और फिर सीढ़ियों के सबसे ऊपरी सिरे पर बैठ गया, अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया और रोने लगा।

'एह! एह!' जोसेफ चिल्लाया। 'शाबाश, मिस कैथी! शाबाश, मिस कैथी! खैर, मालिक उन टूटे हुए बर्तनों को उलट-पुलट कर फेंकेंगे; फिर हम कुछ सुनेंगे; हम सुनेंगे

कि आगे क्या होने वाला है। निकम्मी पागल! तुम इस क्रिसमस तक तड़पने की हकदार हो, भगवान के अनमोल उपहारों को अपने भयानक गुस्से में पैरों तले रौंद रही हो! लेकिन मुझे लगता है कि तुम अपना हौसला ज्यादा देर तक नहीं रखोगी। क्या हैथक्लिफ ऐसे अच्छे रास्ते पर चलेगा, तुम्हें क्या लगता है? मैं बस यही चाहता हूँ कि वह तुम्हें रंगे हाथों पकड़ ले। मैं बस यही चाहता हूँ कि वह तुम्हें पकड़ ले।'

और इसलिए वह मोमबत्ती लेकर नीचे अपने मांद में डांटते हुए चला गया; और मैं अंधेरे में रह गया। इस मूर्खतापूर्ण हरकत के बाद हुए चिंतन ने मुझे अपने अहंकार को दबाने और अपने क्रोध को कुचलने की आवश्यकता को स्वीकार करने और इसके प्रभावों को दूर करने के लिए खुद को तैयार करने के लिए मजबूर किया। तभी अचानक थ्रॉटलर के रूप में एक अप्रत्याशित सहायता प्रकट हुई, जिसे अब मैंने हमारे पुराने स्कल्कर के बेटे के रूप में पहचान लिया था: इसने अपना बचपन ग्रेंज में बिताया था, और मेरे पिता ने इसे मिस्टर हिंडले को दे दिया था। मुझे लगता है कि वह मुझे जानता था: उसने अभिवादन के रूप में अपनी नाक मेरी नाक से सटा दी, और फिर दलिया खाने के लिए जल्दी से चला गया; जबकि मैं सीढ़ी-दर-सीढ़ी टटोलता हुआ टूटे हुए मिट्टी के बर्तनों को इकट्ठा कर रहा था, और अपने रूमाल से रेलिंग पर गिरे दूध के छींटों को पोंछ रहा था। हमारा काम अभी मुश्किल से ही खत्म हुआ था कि मैंने गलियारे में अर्नशॉ के कदमों की आहट सुनी; मेरे सहायक ने अपनी पूंछ अंदर कर ली, और दीवार से सट गया; मैं चुपके से पास के दरवाजे में घुस गया। कुत्ते का उससे बचने का प्रयास असफल रहा; नीचे से आती सरसराहट और एक लंबी, दयनीय चीख से मुझे यही आभास हुआ था। मेरी किस्मत अच्छी थी: वह आगे बढ़ गया, अपने कमरे में गया और दरवाजा बंद कर लिया। उसके तुरंत बाद जोसेफ हरेटन को सुलाने के लिए ऊपर आया। मैंने हरेटन के कमरे में शरण ली थी, और बूढ़े आदमी ने मुझे देखकर कहा, - 'अब तुम दोनों के घमंड के लिए कोई जगह नहीं है, मुझे लगता है कि यह खाली है; तुम इसे पूरी तरह से अपने लिए रख सकते हो, सिवाय उसके जो हमेशा ऐसी बुरी संगत में तीसरा हिस्सा होता है!'

मैंने इस सूचना का लाभ उठाया; और जैसे ही मैं आग के पास कुर्सी पर बैठा, मुझे हल्की सी नींद आई और मैं सो गया। मेरी नींद गहरी और मीठी थी, हालांकि बहुत जल्दी खत्म हो गई। मिस्टर हीथक्लिफ ने मुझे जगाया; वह अभी-अभी अंदर आए थे, और अपने स्नेहपूर्ण लहजे में पूछा कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ? मैंने उन्हें इतनी देर तक

जागने का कारण बताया - कि हमारे कमरे की चाबी उनकी जेब में थी। 'हमारा' शब्द ने उन्हें बहुत आहत किया। उन्होंने कसम खाई कि यह मेरी नहीं है, और न ही कभी होगी; और उन्होंने - लेकिन मैं उनके शब्दों को दोहराऊंगा नहीं, न ही उनके सामान्य व्यवहार का वर्णन करूंगा: वह मुझे घृणा दिलाने के लिए बहुत चालाक और अथक प्रयास करते हैं! कभी-कभी मैं उन पर इतनी तीव्रता से आश्चर्यचकित होता हूँ कि मेरा डर भी खत्म हो जाता है: फिर भी, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, एक बाघ या एक विषैला साँप भी मुझमें उतना भय नहीं जगा सकता जितना वह जगाते हैं। उसने मुझे कैथरीन की बीमारी के बारे में बताया और मेरे भाई पर इसका कारण होने का आरोप लगाते हुए वादा किया कि जब तक वह एडगर को पकड़ नहीं लेता, तब तक मैं उसकी जगह कष्ट सहने के लिए मौजूद रहूँगी।

मैं उससे नफरत करती हूँ—मैं बहुत दुखी हूँ—मैं मूर्ख थी! ग्रेंज में किसी से भी इस बारे में ज़रा भी मत कहना। मैं रोज़ तुम्हारा इंतज़ार करूँगी—मुझे निराश मत करना! —इसाबेला।

अध्याय 14

जैसे ही मैंने यह पत्र पढ़ा, मैं मास्टर के पास गया और उन्हें सूचित किया कि उनकी बहन हाइट्स पहुँच गई हैं और उन्होंने मुझे एक पत्र भेजा है जिसमें उन्होंने श्रीमती लिंटन की स्थिति पर अपना दुख व्यक्त किया है और उनसे मिलने की अपनी तीव्र इच्छा जताई है; साथ ही यह भी कामना की है कि वे जल्द से जल्द मेरी ओर से क्षमा का कोई प्रतीक उन्हें भेज दें।

'माफ़ी!' लिंटन ने कहा। 'एलन, मुझे उसे माफ़ करने की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर तुम चाहो तो आज दोपहर वुदरिंग हाइट्स आ सकती हो और कह देना कि मैं नाराज़ नहीं हूँ, बल्कि उसे खोने का अफ़सोस है; खासकर इसलिए कि मुझे नहीं

लगता कि वह कभी खुश रहेगी। लेकिन मेरा उससे मिलने जाना नामुमकिन है: हम हमेशा के लिए अलग हो चुके हैं; और अगर वह सच में मेरी मदद करना चाहे, तो वह अपने पति को देश छोड़ने के लिए मना ले।'

'क्या आप उसे एक छोटा सा पत्र नहीं लिखेंगे, महोदय?' मैंने विनती भरे लहजे में पूछा।

'नहीं,' उसने उत्तर दिया। 'इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। हीथक्लिफ के परिवार के साथ मेरा संवाद उतना ही सीमित रहेगा जितना उसका मेरे परिवार के साथ। यह बिल्कुल नहीं होगा!'

श्री एडगर की निर्ममता ने मुझे बेहद निराश कर दिया; और ग्रेंज से आते समय मैं यही सोचता रहा कि उनकी कही बातों को दोहराते समय उनमें और अधिक भाव कैसे डालूँ; और इसाबेला को सांत्वना देने के लिए कुछ शब्द भी न कहने के उनके इनकार को कैसे नरम करूँ। मुझे लगता है कि वह सुबह से ही मेरा इंतज़ार कर रही थी: जब मैं बगीचे के रास्ते से आ रहा था, तो मैंने उसे जाली से झाँकते हुए देखा, और मैंने उसे सिर हिलाकर अभिवादन किया; लेकिन वह पीछे हट गई, मानो किसी के द्वारा देखे जाने से डर रही हो। मैं बिना दरवाजा खटखटाए अंदर चला गया। पहले जो घर इतना खुशहाल रहता था, अब उसका दृश्य इतना उदास और निराशाजनक कभी नहीं था! मुझे यह स्वीकार करना होगा कि अगर मैं उस युवती की जगह होता, तो कम से कम चूल्हा तो साफ कर देता और मेजों को कपड़े से पोंछ देता। लेकिन वह पहले से ही उस उपेक्षा की भावना से ग्रस्त थी जिसने उसे घेर रखा था। उसका सुंदर चेहरा पीला और बेजान था; उसके बाल बिखरे हुए थे: कुछ लटें ढीली लटक रही थीं, और कुछ लापरवाही से उसके सिर के चारों ओर लिपटी हुई थीं। शायद उसने कल शाम से अपने कपड़े नहीं छुए थे। हिंडले वहां नहीं थे। मिस्टर हीथक्लिफ एक मेज पर बैठे अपने पर्स में कुछ कागज़ पलट रहे थे; लेकिन जब मैं आई तो वे उठे, मुझसे बड़े दोस्ताना अंदाज़ में मेरा हालचाल पूछा और मुझे बैठने के लिए कुर्सी दी। वहां मौजूद लोगों में वही एक सभ्य व्यक्ति लग रहे थे; और मुझे लगा कि वे पहले से कहीं ज़्यादा अच्छे दिख रहे हैं। हालातों ने उनकी स्थिति इतनी बदल दी थी कि किसी अजनबी को तो वे जन्म से ही सभ्य लगते; और उनकी पत्नी एकदम लापरवाह! वे उत्सुकता से मेरा स्वागत करने के लिए आगे आईं और अपेक्षित पत्र लेने के लिए एक हाथ बढ़ाया। मैंने अपना सिर हिला दिया। वे इशारा नहीं समझ पाईं, लेकिन मेरे पीछे-पीछे एक

साइडबोर्ड तक आईं, जहां मैं अपनी टोपी रखने गई थी, और फुसफुसाते हुए मुझसे विनती की कि मैं जो लाई हूँ, वह उन्हें तुरंत दे दूँ। हीथक्लिफ उनकी चाल समझ गए और बोले - 'अगर तुम्हारे पास इसाबेला के लिए कुछ है (जैसा कि तुम्हें ज़रूर होगा, नेली), तो उसे दे दो। इसे छुपाने की ज़रूरत नहीं है: हमारे बीच कोई राज़ नहीं है।'

'ओह, मेरे पास कुछ नहीं है,' मैंने जवाब दिया, यह सोचते हुए कि सीधे-सीधे सच बोल देना ही बेहतर होगा। 'मेरे मालिक ने मुझे अपनी बहन से यह कहने को कहा है कि वह फिलहाल उनसे न तो पत्र की उम्मीद करे और न ही मुलाकात की। महोदया, वह अपना प्यार भेजते हैं, आपकी खुशी की कामना करते हैं और आपके कारण हुए दुख के लिए क्षमा मांगते हैं; लेकिन उनका मानना है कि इस समय के बाद उनके परिवार और यहां के परिवार को आपस में बातचीत बंद कर देनी चाहिए, क्योंकि इसे जारी रखने से कोई लाभ नहीं होगा।'

श्रीमती हीथक्लिफ के होंठ हल्के से कांपे और वह खिड़की के पास अपनी सीट पर लौट गईं। उनके पति मेरे पास चूल्हे के पत्थर पर खड़े हो गए और कैथरीन के बारे में सवाल पूछने लगे। मैंने उन्हें उसकी बीमारी के बारे में उतना ही बताया जितना मुझे उचित लगा, और उन्होंने जिरह करके मुझसे बीमारी के मूल कारण से जुड़े लगभग सभी तथ्य निकलवा लिए। मैंने उसे दोषी ठहराया, क्योंकि वह इसके लिए पूरी तरह से जिम्मेदार थी; और अंत में आशा व्यक्त की कि वह श्री लिंटन का उदाहरण अपनाएंगे और भविष्य में अपने परिवार के मामलों में किसी भी तरह का हस्तक्षेप नहीं करेंगे, चाहे अच्छा हो या बुरा।

मैंने कहा, 'श्रीमती लिंटन अब धीरे-धीरे ठीक हो रही हैं; वो पहले जैसी तो कभी नहीं होंगी, पर उनकी जान बच गई है; और अगर आप सचमुच उनकी परवाह करते हैं, तो उनसे दोबारा कभी न मिलें: बल्कि, आप इस देश से पूरी तरह चले जाएं; और ताकि आपको इसका पछतावा न हो, मैं आपको बता दूं कि कैथरीन लिंटन अब आपकी पुरानी दोस्त कैथरीन अर्नशॉ से उतनी ही अलग हैं, जितनी वो युवती मुझसे अलग है। उनका रूप-रंग बहुत बदल गया है, उनका स्वभाव तो उससे भी कहीं ज़्यादा; और जो व्यक्ति मजबूरी में उनका साथी बनेगा, वो उनके प्रति अपना स्नेह केवल उनकी पुरानी यादों, उनकी सामान्य मानवता और कर्तव्यबोध के सहारे ही बनाए रख पाएगा!'

'यह बिल्कुल संभव है,' हीथक्लिफ ने खुद को शांत दिखाने की कोशिश करते हुए

कहा: ‘यह बिल्कुल संभव है कि आपके स्वामी के पास सामान्य मानवता और कर्तव्यबोध के अलावा कोई सहारा न हो। लेकिन क्या आपको लगता है कि मैं कैथरीन को उनके कर्तव्य और मानवता के भरोसे छोड़ दूँगा? और क्या आप कैथरीन के प्रति मेरी भावनाओं की तुलना उनकी भावनाओं से कर सकते हैं? इस घर से जाने से पहले, मुझे आपसे एक वादा चाहिए कि आप मुझे उससे मिलवा देंगे: चाहे आप सहमत हों या इनकार करें, मैं उससे मिलूँगा! आपका क्या कहना है?’

मैंने उत्तर दिया, ‘श्री हीथक्लिफ, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए: मेरे माध्यम से आप ऐसा कभी नहीं कर पाएंगे। आपके और मालिक के बीच एक और मुठभेड़ उसे पूरी तरह से मार डालेगी।’

‘आपकी मदद से इसे टाला जा सकता है,’ उसने आगे कहा; ‘और अगर ऐसी घटना का खतरा हुआ — अगर वह उसके जीवन में एक और मुसीबत बढ़ा दे — तो मुझे लगता है कि मैं हद पार करने में जायज़ रहूंगा! काश आपमें इतनी ईमानदारी होती कि आप मुझे बता सकें कि क्या कैथरीन को उसके जाने से बहुत दुख होगा: यही डर मुझे रोक रहा है। और यहीं हमारे विचारों में अंतर दिखता है: अगर वह मेरी जगह होता और मैं उसकी जगह, भले ही मैं उससे इतनी नफरत करता कि मेरा जीवन कड़वा हो जाता, मैं कभी उस पर हाथ नहीं उठाता। आप चाहें तो अविश्वास जता सकते हैं! जब तक वह उसकी चाहत रखती, मैं उसे कभी भी कैथरीन की संगति से दूर नहीं करता। जिस पल उसकी नज़र उससे हटती, मैं उसका दिल निकाल कर उसका खून पी जाता! लेकिन तब तक — अगर आप मुझ पर विश्वास नहीं करते, तो आप मुझे नहीं जानते — तब तक, मैं उसके सिर के एक बाल को भी छूने से पहले धीरे-धीरे मरना पसंद करता!’

‘और फिर भी,’ मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा, ‘आपको उसके पूर्ण पुनरुद्धार की सभी उम्मीदों को पूरी तरह से नष्ट करने में कोई संकोच नहीं है, जब वह आपको लगभग भूल चुकी है, तब आप खुद को उसकी याद में लाकर उसे कलह और संकट के एक नए कोलाहल में घसीट रहे हैं।’

‘तुम्हें लगता है कि वह मुझे लगभग भूल चुकी है?’ उसने कहा। ‘अरे, नेली! तुम जानती हो कि वह नहीं भूली है! तुम भी उतना ही जानती हो जितना मैं, कि लिंटन के बारे में वह जितना सोचती है, उससे हज़ार गुना ज़्यादा मेरे बारे में सोचती है! मेरे जीवन के सबसे दुखद दौर में, मेरे मन में ऐसा ही एक ख्याल आया था: पिछली

गर्मियों में मोहल्ले में लौटने पर वह ख्याल मुझे सताता रहा; लेकिन केवल उसके आश्वासन से ही मैं उस भयानक विचार को फिर से स्वीकार कर पाया। और फिर, लिंटन कुछ भी नहीं रह जाएगा, न हिंडले, न ही मेरे सारे सपने। दो शब्द मेरे भविष्य को बयां करेंगे - मृत्यु और नरक: उसे खोने के बाद, मेरा जीवन नरक बन जाएगा। फिर भी, एक पल के लिए भी यह सोचना मेरी मूर्खता थी कि वह एडगर लिंटन के लगाव को मुझसे ज़्यादा महत्व देती है। अगर वह अपने छोटे से शरीर की पूरी ताकत से प्यार भी करे, तो भी वह अस्सी साल में उतना प्यार नहीं कर सकता जितना मैं एक दिन में कर सकता हूँ। और कैथरीन का दिल उतना ही गहरा है जितना मेरा: उस घोड़े के कुंड में समुद्र भी उतनी ही आसानी से समा सकता है जितना उसका सारा स्नेह उस पर एकाधिकार कर सकता है। धत् तेरे की!' वह उसके लिए उसके कुत्ते या घोड़े से ज़रा भी ज़्यादा प्यारा नहीं है। उसमें मेरे जैसा प्यार पाने की क्षमता नहीं है: वह उसमें वह प्यार कैसे पा सकती है जो उसमें है ही नहीं?

'कैथरीन और एडगर एक-दूसरे को उतना ही प्यार करते हैं जितना कोई भी दो लोग कर सकते हैं,' इसाबेला ने अचानक जोश से कहा। 'किसी को भी इस तरह बात करने का अधिकार नहीं है, और मैं अपने भाई को चुपचाप अपमानित होते हुए नहीं सुनूंगी!'

'तुम्हारा भाई भी तुम्हें बहुत प्यार करता है, है ना?' हीथक्लिफ ने तिरस्कारपूर्वक कहा। 'वह तुम्हें बड़ी आसानी से दुनिया के भरोसे छोड़ देता है।'

उसने जवाब दिया, 'उसे इस बात का अंदाजा नहीं है कि मैं क्या झेल रही हूं। मैंने उसे यह बात नहीं बताई।'

'तो फिर आप उसे कुछ बता रहे थे: आपने लिखा है, है ना?'

'मैंने यह लिखने के लिए कि मैं शादीशुदा थी, लिखा था - आपने वह नोट देखा होगा।'

'और उसके बाद से कुछ नहीं?'

'नहीं।'

मैंने कहा, 'मेरी प्रेमिका की हालत में आए इस बदलाव से वह काफी उदास दिख रही है। जाहिर है, किसी का प्यार उसे नहीं मिल पा रहा है; किसका, इसका मैं अनुमान लगा सकता हूँ; लेकिन शायद मुझे कहना नहीं चाहिए।'

'मुझे लगता है ये उसकी अपनी गलती है,' हीथक्लिफ ने कहा। 'वो एकदम

बदचलन औरत बन गई है! मुझे खुश करने की कोशिश करते-करते वो बहुत जल्दी थक गई है। यकीन नहीं होता, लेकिन हमारी शादी के अगले ही दिन वो घर जाने के लिए रो रही थी। खैर, उसका इतना ज्यादा नखरे वाला स्वभाव इस घर के लिए और भी बढ़िया रहेगा, और मैं ध्यान रखूंगा कि वो बाहर जाकर मुझे शर्मिंदा न करे।'

'जी महोदय,' मैंने उत्तर दिया, 'मुझे आशा है कि आप समझेंगे कि श्रीमती हीथक्लिफ को देखभाल और सेवा की आदत है; और उनका पालन-पोषण एक इकलौती बेटी की तरह हुआ है, जिसकी सेवा के लिए हर कोई तत्पर था। आपको उनके लिए एक नौकरानी रखनी चाहिए जो उनके घर को साफ-सुथरा रखे, और आपको उनके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। श्री एडगर के बारे में आपकी जो भी राय हो, आप इस बात में संदेह नहीं कर सकते कि उनमें मजबूत लगाव पैदा करने की क्षमता है, अन्यथा वह अपने पुराने घर की शान-शौकत, सुख-सुविधाओं और दोस्तों को छोड़कर, इस सुनसान जगह में आपके साथ संतुष्ट होकर नहीं बसतीं।'

"उसने भ्रम में आकर उन्हें छोड़ दिया," उसने उत्तर दिया; "मुझमें एक प्रेम-नायक की छवि बनाकर और मेरी वीर भक्ति से असीमित सुख-सुविधाओं की अपेक्षा करके। मैं उसे एक समझदार प्राणी नहीं मान सकता, क्योंकि उसने मेरे चरित्र के बारे में एक मनगढ़ंत धारणा बनाने और अपने झूठे विचारों पर अमल करने में इतनी हठपूर्वक लगी रही। लेकिन, अंततः, मुझे लगता है कि वह मुझे समझने लगी है: मुझे वे मूर्खतापूर्ण मुस्कानें और चेहरे के हाव-भाव नहीं दिखते जिन्होंने मुझे पहले चिढ़ाया था; और न ही वह यह समझ पा रही है कि जब मैंने उसे उसके प्रेम और उसके बारे में अपनी राय दी थी तो मैं गंभीर था। यह पता लगाना एक अद्भुत दूरदर्शिता का प्रयास था कि मैं उससे प्रेम नहीं करता था। एक समय मुझे विश्वास था कि कोई भी पाठ उसे यह नहीं सिखा सकता! और फिर भी यह बात उसे ठीक से समझ नहीं आई; क्योंकि आज सुबह उसने एक भयानक खबर के रूप में घोषणा की कि मैं वास्तव में उसे मुझसे नफरत करने में सफल हो गया हूँ! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, यह सचमुच हरक्यूलिस का काम है! यदि ऐसा हो गया है, तो मुझे धन्यवाद देने का कारण है।" क्या मैं तुम्हारे दावे पर भरोसा कर सकता हूँ, इसाबेला? क्या तुम्हें यकीन है कि तुम मुझसे नफ़रत करती हो? अगर मैं तुम्हें आधे दिन के लिए अकेला छोड़ दूँ, तो क्या तुम फिर से गिड़गिड़ाते और गिड़गिड़ाते हुए मेरे पास नहीं आओगी? मुझे लगता है कि वह चाहती होगी कि मैं तुम्हारे सामने पूरी तरह से कोमल भाव से पेश आऊँ: सच्चाई के सामने आने से उसके

अहंकार को ठेस पहुँचती है। लेकिन मुझे परवाह नहीं कि किसे पता है कि सारा जुनून एकतरफ़ा था: और मैंने इस बारे में उससे कभी झूठ नहीं बोला। वह मुझ पर ज़रा भी कपटपूर्ण कोमलता दिखाने का आरोप नहीं लगा सकती। ग्रेंज से बाहर आते ही उसने मुझे सबसे पहले अपने छोटे कुत्ते को फाँसी पर लटकाते देखा; और जब उसने इसके लिए गिड़गिड़ाया, तो मेरे मुँह से निकले पहले शब्द थे कि मैं उसके सभी प्राणियों को फाँसी पर लटका दूँ, सिवाय एक के: शायद उसने वह अपवाद खुद के लिए मान लिया हो। लेकिन किसी भी क्रूरता से उसे घृणा नहीं होती: मुझे लगता है कि उसके मन में क्रूरता के लिए एक स्वाभाविक प्रशंसा है, काश उसकी कीमती जान चोट से सुरक्षित होती! अब, क्या यह घोर मूर्खता नहीं थी - उस दयनीय, गुलाम, नीच मानसिकता वाली कुतिया का यह सपना देखना कि मैं उससे प्यार कर सकता हूँ? अपने मालिक से कहो, नेली, कि मैंने अपने पूरे जीवन में उसके जैसी नीच चीज़ कभी नहीं देखी। वह तो लिंटन के नाम को भी कलंकित करती है; और मैंने कई बार, केवल सूझबूझ की कमी के कारण, यह देखने के प्रयोगों में ढील दी है कि वह क्या सहन कर सकती है, और फिर भी शर्म से पीछे हट जाती है! लेकिन उसे यह भी कहो कि वह अपने भाईचारे और अधिकारिक हृदय को शांत करे: कि मैं कानून की सीमाओं का सख्ती से पालन करता हूँ। मैंने अब तक उसे अलग होने का ज़रा सा भी अधिकार नहीं दिया है; और तो और, वह हमें अलग करने के लिए किसी को धन्यवाद नहीं देगी। अगर वह जाना चाहती है, तो जा सकती है: उसकी उपस्थिति की परेशानी उसे सताने से मिलने वाली संतुष्टि से कहीं अधिक है!

‘श्री हीथक्लिफ,’ मैंने कहा, ‘यह तो किसी पागल की बातें हैं; आपकी पत्नी को शायद यकीन हो गया है कि आप पागल हैं; और इसी वजह से वह अब तक आपका साथ दे रही हैं: लेकिन अब जब आप कह रहे हैं कि वह जा सकती हैं, तो वह ज़रूर इस अनुमति का लाभ उठाएंगी। आप इतनी भी जादू-टोने में तो नहीं उलझी हैं, महोदया, कि अपनी मर्जी से उनके साथ रहें?’

‘एलन, अपना ख्याल रखना!’ इसाबेला ने गुस्से से चमकती आँखों से जवाब दिया; उसकी आँखों के भाव से साफ था कि उसके साथी ने खुद को नफरत का पात्र बनाने की पूरी कोशिश की थी। ‘उसकी एक भी बात पर भरोसा मत करना। वह झूठा शैतान है! एक राक्षस है, इंसान नहीं! मुझे पहले भी कहा गया था कि मैं उसे छोड़ सकती हूँ; और मैंने कोशिश भी की थी, लेकिन अब हिम्मत नहीं कर पा रही! बस, एलेन, वादा

करो कि तुम उसकी उस घिनौनी बात का एक शब्द भी मेरे भाई या कैथरीन को नहीं बताओगी। चाहे वह कुछ भी बहाना बनाए, वह एडगर को हताश करना चाहता है: वह कहता है कि उसने मुझसे जानबूझकर शादी की है ताकि उस पर अपना अधिकार जमा सके; और वह ऐसा नहीं कर पाएगा – मैं पहले मर जाऊँगी! मैं बस यही दुआ करती हूँ, प्रार्थना करती हूँ, कि वह अपनी शैतानी समझदारी को भूल जाए और मुझे मार डाले! मुझे बस एक ही सुख मिल सकता है, या तो मर जाना, या उसे मरा हुआ देखना!'

'बस, अभी के लिए इतना काफी है!' हीथक्लिफ ने कहा। 'अगर तुम्हें अदालत में बुलाया गया, तो उसकी भाषा याद रखना, नेली! और उसके चेहरे को ध्यान से देखो: वह लगभग वैसी ही है जैसी मुझे पसंद आएगी। नहीं; तुम अभी अपनी अभिभावक बनने के लायक नहीं हो, इसाबेला; और मैं तुम्हारा कानूनी संरक्षक होने के नाते, तुम्हें अपनी हिरासत में रखूंगा, चाहे यह दायित्व कितना भी अप्रिय क्यों न हो। ऊपर जाओ; मुझे एलेन डीन से अकेले में कुछ कहना है। यह रास्ता नहीं है: ऊपर जाओ, मैं तुम्हें बता रहा हूँ! अरे, यही तो ऊपर जाने का रास्ता है, बच्ची!'

उसने उसे पकड़ा और कमरे से बाहर धकेल दिया; और बड़बड़ाते हुए लौटा — 'मुझे कोई दया नहीं है! मुझे कोई दया नहीं है! कीड़े जितना तड़पते हैं, उतना ही मेरा मन करता है कि मैं उनकी आँतें कुचल दूँ! यह एक नैतिक पीड़ा है; और दर्द बढ़ने के साथ-साथ मेरी पीसने की शक्ति भी बढ़ती जाती है।'

मैंने जल्दी से अपनी टोपी समेटते हुए कहा, 'क्या तुम दया शब्द का अर्थ समझते हो? क्या तुमने कभी अपने जीवन में इसका थोड़ा सा भी अनुभव किया है?'

'इसे नीचे रखो!' उसने मुझे जाते हुए भांपते हुए कहा। 'तुम अभी नहीं जा रही हो। अभी यहीं आओ, नेली: मुझे कैथरीन से मिलने के अपने इरादे को पूरा करने के लिए तुम्हें मनाना या मजबूर करना ही होगा, और वो भी बिना देरी किए। मैं कसम खाता हूँ कि मेरा कोई बुरा इरादा नहीं है: मैं कोई गड़बड़ी नहीं करना चाहता, न ही मिस्टर लिंटन को गुस्सा दिलाना या उनका अपमान करना चाहता हूँ; मैं बस उससे सुनना चाहता हूँ कि वह कैसी है, और क्यों बीमार है; और यह पूछना चाहता हूँ कि क्या मैं कुछ ऐसा कर सकता हूँ जो उसके लिए उपयोगी हो। कल रात मैं ग्रेंज के बगीचे में छह घंटे था, और आज रात भी मैं वहीं जाऊँगा; और हर रात और हर दिन मैं उस जगह पर तब तक मंडराता रहूँगा जब तक मुझे अंदर जाने का मौका नहीं मिल जाता। अगर

एडगर लिंटन मुझसे मिलता है, तो मैं उसे नीचे गिराने में ज़रा भी संकोच नहीं करूँगा, और उसे इतना मारूँगा कि जब तक मैं वहाँ रहूँ, वह चुप रहे। अगर उसके नौकर मेरा विरोध करते हैं, तो मैं उन्हें इन पिस्तौलों से डराकर भगा दूँगा। लेकिन क्या यह बेहतर नहीं होगा कि मैं उनसे या उनके मालिक से संपर्क में न आऊँ?' और तुम इसे इतनी आसानी से कर सकते हो। मैं आने से पहले तुम्हें चेतावनी दे दूंगा, और फिर तुम मुझे चुपके से अंदर आने दोगे, जैसे ही वह अकेली हो, और मेरे जाने तक निगरानी रखोगे, तुम्हारा विवेक बिल्कुल शांत रहेगा: तुम गड़बड़ी को रोक रहे होगे।'

मैंने अपने मालिक के घर में इस तरह की विश्वासघाती भूमिका निभाने का विरोध किया; और इसके अलावा, मैंने श्रीमती लिंटन की शांति को अपने स्वार्थ के लिए भंग करने की उनकी क्रूरता और स्वार्थपरता पर भी बल दिया। मैंने कहा, 'मामूली सी बात भी उन्हें बुरी तरह चौंका देती है। वह बहुत संवेदनशील हैं और मुझे पूरा यकीन है कि वह इस तरह के अचानक होने वाले व्यवहार को सहन नहीं कर पाएंगी। महोदय, ऐसा करना बंद कीजिए! वरना मुझे आपके इरादों की जानकारी अपने मालिक को देनी पड़ेगी; और वह अपने घर और उसमें रहने वालों को इस तरह की किसी भी अनुचित घुसपैठ से सुरक्षित रखने के लिए कदम उठाएंगे!'

'तो फिर मैं तुम्हें सुरक्षित रखने के लिए कदम उठाऊंगा, स्त्री!' हीथक्लिफ ने कहा; 'तुम कल सुबह तक वुदरिंग हाइट्स नहीं छोड़ोगी। यह कहना बेवकूफी है कि कैथरीन मुझे देखना बर्दाश्त नहीं कर सकती; और उसे अचानक चौंकाने की बात तो मैं नहीं चाहता: तुम्हें उसे तैयार करना होगा— उससे पूछना होगा कि क्या मैं आ सकता हूँ। तुम कहती हो कि वह मेरा नाम कभी नहीं लेती, और न ही कोई उससे मेरे बारे में बात करता है। अगर घर में मेरा ज़िक्र करना मना है, तो वह किससे बात करेगी? वह सोचती है कि तुम सब उसके पति के जासूस हो। ओह, मुझे इसमें कोई शक नहीं कि वह तुम्हारे बीच नरक में है! मैं उसकी चुप्पी से ही समझ जाता हूँ कि वह क्या महसूस करती है। तुम कहती हो कि वह अक्सर बेचैन और चिंतित दिखती है: क्या यह शांति का प्रमाण है? तुम उसके मन के अशांत होने की बात करती हो। उसकी इस भयानक एकांत में भला ऐसा कैसे हो सकता है? और वह नीरस, तुच्छ प्राणी कर्तव्य और मानवता के नाम पर उसकी सेवा कर रहा है! दया और करुणा के नाम पर!' क्या वह गमले में बलूत का पेड़ लगाकर उसके फलने-फूलने की उम्मीद कर सकता है, जैसे यह सोचना कि वह अपनी खोखली चिंताओं की मिट्टी में उसे फिर से जीवंत कर

सकता है? चलो इसे तुरंत तय कर लेते हैं: क्या तुम यहीं रहोगी, और क्या मुझे लिंटन और उसके नौकर से लड़ते हुए कैथरीन तक पहुंचना होगा? या तुम मेरी दोस्त बनी रहोगी, जैसा कि अब तक रही हो, और मेरी बात मानोगी? फैसला करो! क्योंकि अगर तुम अपने हठी और बुरे स्वभाव पर अड़ी रही, तो मेरे लिए एक मिनट भी रुकने का कोई कारण नहीं है!

श्रीमान लॉकवुड, मैंने उनसे बहस की, शिकायतें कीं और पचास बार साफ-साफ मना कर दिया; लेकिन अंततः उन्होंने मुझे समझौता करने पर मजबूर कर दिया। मैंने उनकी ओर से अपनी मालकिन को एक पत्र पहुँचाने का वादा किया; और यदि वह मान जातीं, तो मैंने वादा किया कि मैं उन्हें लिंटन के अगली बार घर से अनुपस्थित रहने की सूचना दे दूँगी, जब वह आ सकें, और जैसे ही संभव हो, अंदर आ जाएँगी: मैं वहाँ नहीं रहूँगी, और मेरे साथी नौकर भी उसी तरह रास्ते से हट जाएँगे। क्या यह सही था या गलत? मुझे डर है कि यह गलत था, हालाँकि यह सुविधाजनक था। मैंने सोचा कि मैंने अपनी सहमति से एक और विस्फोट को रोक दिया; और मैंने यह भी सोचा कि इससे कैथरीन की मानसिक बीमारी में कुछ सुधार हो सकता है: और फिर मुझे श्रीमान एडगर की मेरी चुगली करने पर दी गई कड़ी फटकार याद आई; और मैंने बार-बार यह कहकर इस विषय पर सारी बेचैनी को दूर करने की कोशिश की कि विश्वासघात, यदि इसे इतना कठोर नाम दिया जाना चाहिए, तो यह आखिरी होगा। फिर भी, घर वापसी की मेरी यात्रा जाने की यात्रा से कहीं अधिक दुखद थी; और मुझे कई आशंकाएं थीं, इससे पहले कि मैं खुद को यह पत्र श्रीमती लिंटन के हाथों में सौंपने के लिए मना पाता।

लेकिन ये रहा केनेथ; मैं नीचे जाकर उसे बताऊँगा कि तुम कितने बेहतर हो। मेरी कहानी नीरस है, जैसा कि हम कहते हैं, और एक और सुबह बिताने के लिए काफी है।

कितना नीरस और उदास! मैंने सोचा जब वह महिला डॉक्टर का स्वागत करने के लिए नीचे उतरी: और यह उस तरह का डॉक्टर नहीं है जिसे मैं अपना मनोरंजन करने के लिए चुनता। खैर, कोई बात नहीं! मैं श्रीमती डीन की कड़वी जड़ी-बूटियों से भी अच्छी दवाइयाँ निकाल लूँगा; और सबसे पहले, मुझे कैथरीन हीथक्लिफ की चमकदार आँखों में छिपे आकर्षण से सावधान रहना चाहिए। अगर मैंने अपना दिल उस युवती को सौंप दिया, और बेटी अपनी माँ की ही दूसरी प्रति निकली, तो मैं एक अजीब

स्थिति में पड़ जाऊँगा।

अध्याय पंद्रह

एक और सप्ताह बीत गया — और मैं सेहतमंद होने और वसंत ऋतु के और करीब आ गई हूँ! मैंने अब अपनी पड़ोसी की पूरी कहानी अलग-अलग बैठकों में सुनी है, जब भी गृहणी को अपने ज़रूरी कामों से समय मिला। मैं इसे उन्हीं के शब्दों में, थोड़ा संक्षिप्त करके बताऊँगी। कुल मिलाकर, वह बहुत अच्छी कहानी सुनाती हैं, और मुझे नहीं लगता कि मैं उनकी शैली को और बेहतर बना सकती हूँ।

शाम को, उसने बताया, जिस शाम मैं हाइट्स गई थी, मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने उसे देखा हो, कि मिस्टर हीथक्लिफ वहीं आसपास थे; और मैं बाहर जाने से बच रही थी, क्योंकि उनकी चिट्ठी अभी भी मेरी जेब में थी, और मैं अब और धमकी या छेड़छाड़ नहीं सहना चाहती थी। मैंने ठान लिया था कि जब तक मेरे मालिक कहीं नहीं जाते, मैं उसे नहीं दूंगी, क्योंकि मैं यह नहीं समझ पा रही थी कि कैथरीन पर इसका क्या असर होगा। नतीजा यह हुआ कि तीन दिन बीतने से पहले वह चिट्ठी उस तक नहीं पहुंची। चौथा दिन रविवार था, और परिवार के चर्च जाने के बाद मैं उसे उसके कमरे में ले गई। मेरे साथ घर की देखभाल के लिए एक नौकर था, और हम आम तौर पर पूजा के समय दरवाजे बंद रखते थे; लेकिन उस दिन मौसम इतना सुहावना था कि मैंने दरवाजे खुले छोड़ दिए, और अपना वादा निभाने के लिए, क्योंकि मुझे पता था कि कौन आने वाला है, मैंने अपने साथी से कहा कि मालकिन को संतरे बहुत पसंद हैं, और उसे गांव जाकर कुछ संतरे लाने होंगे, जिनका भुगतान कल कर दिया जाएगा। वह चला गया, और मैं ऊपर चला गया।

श्रीमती लिंटन हमेशा की तरह खुली खिड़की के कोने में ढीली सफेद पोशाक पहने, कंधों पर हल्का शॉल ओढ़े बैठी थीं। बीमारी की शुरुआत में उनके घने, लंबे बाल

आंशिक रूप से काट दिए गए थे, और अब उन्होंने उन्हें कंघी करके कनपटी और गर्दन पर प्राकृतिक लटों में रखा हुआ था। जैसा कि मैंने हीथक्लिफ को बताया था, उनका रूप बदल गया था; लेकिन जब वह शांत होती थीं, तो उस बदलाव में एक अलौकिक सुंदरता झलकती थी। उनकी आँखों की चमक की जगह एक स्वप्निल और उदास कोमलता ने ले ली थी; अब वे आसपास की वस्तुओं को नहीं देख रही थीं: ऐसा लगता था मानो वे हमेशा परे, और बहुत दूर तक देख रही हों—आप कह सकते थे कि इस दुनिया से परे। फिर, उनके चेहरे का पीलापन—जैसे-जैसे उनका स्वास्थ्य सुधर रहा था, उसकी मुरझाई हुई छवि गायब हो गई थी—और उनकी मानसिक स्थिति से उत्पन्न होने वाले विशेष भाव, हालांकि उनके कारणों का दर्दनाक संकेत देते थे, फिर भी उनके द्वारा जगाई गई मार्मिक रुचि को और बढ़ा देते थे; और - मुझे पता है, और मुझे लगता है कि उसे देखने वाले किसी भी व्यक्ति को - हमेशा की तरह उसके स्वस्थ होने के अधिक ठोस सबूतों का खंडन हुआ, और उसे क्षय के लिए अभिशप्त मान लिया गया।

उसके सामने खिड़की की चौखट पर एक किताब फैली हुई थी, और हल्की-हल्की हवा उसके पन्नों को धीरे-धीरे फड़फड़ा रही थी। मेरा मानना है कि लिंटन ने ही उसे वहाँ रखा था: क्योंकि वह कभी भी पढ़ने या किसी भी तरह के काम में अपना ध्यान नहीं लगाती थी, और वह घंटों उसे किसी ऐसे विषय की ओर आकर्षित करने की कोशिश में बिताता था जो पहले उसका शौक हुआ करता था। वह उसका इरादा जानती थी, और अच्छे मूड में वह शांति से उसकी कोशिशों को सहन कर लेती थी, बस कभी-कभी एक थकी हुई आह दबाकर और अंत में सबसे उदास मुस्कान और चुंबन से उसे रोककर उनकी व्यर्थता को दर्शाती थी। कभी-कभी वह चिढ़कर मुँह फेर लेती, अपना चेहरा हाथों में छिपा लेती, या यहाँ तक कि गुस्से से उसे धक्का भी दे देती; और तब वह उसे अकेला छोड़ देता, क्योंकि उसे यकीन था कि उसकी कोशिश बेकार जाएगी।

गिम्मर्टन चैपल की घंटियाँ अब भी बज रही थीं; और घाटी में बहती हुई छोटी नदी की मधुर ध्वनि कानों को सुकून दे रही थी। यह गर्मियों के पत्तों की सरसराहट की एक मीठी जगह थी, जो पेड़ों पर पत्ते आने पर ग्रेंज के आसपास के उस संगीत को दबा देती थी। वुदरिंग हाइट्स में, बर्फ पिघलने या लगातार बारिश के मौसम के बाद शांत दिनों में यह ध्वनि हमेशा सुनाई देती थी। कैथरीन सुनते हुए वुदरिंग हाइट्स के बारे में

सोच रही थी: यानी, अगर वह सोच भी रही थी या सुन भी रही थी; लेकिन उसकी आँखों में वही धुंधली, दूर की नज़र थी जिसका मैंने पहले ज़िक्र किया था, जो न तो कानों से और न ही आँखों से भौतिक चीज़ों को पहचान पा रही थी।

‘श्रीमती लिंटन, आपके लिए एक पत्र है,’ मैंने धीरे से उसे उनके घुटने पर रखे एक हाथ में देते हुए कहा। ‘आपको इसे तुरंत पढ़ना होगा, क्योंकि इसका उत्तर देना बाकी है। क्या मैं सील तोड़ दूं?’ ‘जी,’ उन्होंने बिना नज़रें हटाए जवाब दिया। मैंने उसे खोला —वह बहुत छोटा था। ‘अब,’ मैंने आगे कहा, ‘इसे पढ़िए।’ उन्होंने अपना हाथ पीछे खींच लिया और उसे नीचे गिरा दिया। मैंने उसे वापस उनकी गोद में रख दिया और तब तक इंतज़ार करता रहा जब तक कि वह नीचे देखने की कृपा न करें; लेकिन यह क्रिया इतनी देर से हुई कि आखिरकार मैंने फिर से कहा— ‘क्या मुझे इसे पढ़ना ही होगा, महोदया? यह श्री हीथक्लिफ की ओर से है।’

वह चौंक गई, उसकी आँखों में यादों की एक धुंधली सी झलक दिखाई दी और वह अपने विचारों को व्यवस्थित करने के लिए संघर्ष करने लगी। उसने पत्र उठाया और उसे ध्यान से पढ़ने लगी; हस्ताक्षर पर पहुँचकर उसने आह भरी: फिर भी मुझे लगा कि वह इसका अर्थ नहीं समझ पाई थी, क्योंकि जब मैंने उससे जवाब मांगा, तो उसने केवल नाम की ओर इशारा किया और उदास और प्रश्नवाचक उत्सुकता से मेरी ओर देखने लगी।

मैंने यह समझते हुए कि उसे दुभाषिए की ज़रूरत होगी, कहा, 'अच्छा, वह तुमसे मिलना चाहता है। वह इस समय तक बगीचे में होगा और यह जानने के लिए बेचैन होगा कि मैं क्या जवाब लेकर आऊँगी।'

जब मैं बोल रहा था, तभी मैंने देखा कि धूप में घास पर लेटा एक बड़ा कुत्ता अपने कान ऐसे उठा रहा था मानो भौंकने वाला हो, और फिर उन्हें वापस समेटकर, पूंछ हिलाकर यह जता रहा था कि कोई आ रहा है जिसे वह अजनबी नहीं समझता। श्रीमती लिंटन आगे झुकीं और सांस रोककर सुनने लगीं। एक मिनट बाद ही एक कदम हॉल से गुजरा; खुला घर इतना लुभावना था कि हीथक्लिफ अंदर जाने से खुद को रोक नहीं पाया: शायद उसने सोचा होगा कि मैं अपना वादा तोड़ने वाला हूँ, इसलिए उसने अपनी हिम्मत पर भरोसा करने का फैसला किया। कैथरीन बड़ी उत्सुकता से अपने कमरे के प्रवेश द्वार की ओर देख रही थी। वह सीधे सही कमरे में नहीं पहुँचा: उसने मुझे उसे अंदर आने का इशारा किया, लेकिन मेरे दरवाजे तक

पहुँचने से पहले ही उसे पता चल गया, और एक-दो कदम में ही वह उसके पास पहुँच गया और उसे अपनी बाहों में भर लिया।

लगभग पाँच मिनट तक वह न तो बोला और न ही उसने अपनी पकड़ छोड़ी, इस दौरान उसने शायद अपने जीवन में पहले कभी इतने चुंबन नहीं दिए थे। लेकिन मेरी प्रेमिका ने उसे पहले चूमा था, और मैंने साफ देखा कि वह असहनीय पीड़ा से उसका चेहरा देख भी नहीं पा रहा था! उसे भी वही यकीन हो गया था जो मुझे, उसे देखते ही, कि अब उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है - उसकी मृत्यु निश्चित थी।

'ओह, कैथी! हे भगवान! मैं इसे कैसे सहन करूँ?' यह पहला वाक्य था जो उसने अपने निराशा भरे स्वर में कहा। और अब वह उसे इतनी गंभीरता से घूर रहा था कि मुझे लगा कि उसकी निगाहों की तीव्रता ही उसकी आँखों में आँसू ला देगी; लेकिन वे पीड़ा से जल रहे थे: पिघले नहीं।

'अब क्या?' कैथरीन ने पीछे झुकते हुए कहा, और अचानक उदास हुई भौंहों से उसकी ओर देखा: उसका हास्य-विनोद लगातार बदलते मिजाज का मात्र एक संकेत था। 'तुम और एडगर ने मेरा दिल तोड़ दिया है, हीथक्लिफ! और तुम दोनों मेरे सामने इस कृत्य पर विलाप करने आए हो, मानो तुम दया के पात्र हो! मैं तुम पर दया नहीं करूंगी, बिलकुल नहीं। तुमने मुझे मार डाला है - और मुझे लगता है कि तुम इस पर फल-फूल रहे हो। तुम कितने बलवान हो! मेरे जाने के बाद तुम कितने साल जीने का इरादा रखते हो?'

हीथक्लिफ उसे गले लगाने के लिए एक घुटने पर बैठ गया था; उसने उठने की कोशिश की, लेकिन उसने उसके बाल पकड़ लिए और उसे नीचे ही रोके रखा।

'काश, मैं तुम्हें तब तक थामे रख पाती, जब तक हम दोनों मर न जाते! मुझे परवाह नहीं कि तुम क्या सहते। मुझे तुम्हारे कष्टों से कोई लेना-देना नहीं। तुम्हें कष्ट क्यों नहीं सहना चाहिए? मैं तो सहती हूँ! क्या तुम मुझे भूल जाओगे? क्या तुम खुश रहोगे जब मैं इस दुनिया से चली जाऊँगी? क्या तुम बीस साल बाद कहोगे, "यह कैथरीन अर्नशॉ की कब्र है? मैंने उससे बहुत पहले प्यार किया था, और उसे खोने का मुझे बहुत दुख हुआ था; लेकिन अब वह बात बीत चुकी है। मैंने उसके बाद कई और लोगों से प्यार किया है: मेरे बच्चे मुझे उससे कहीं ज़्यादा प्यारे हैं; और मृत्यु के समय, मैं उसके पास जाने की खुशी नहीं मनाऊँगी: मुझे इस बात का दुख होगा कि मुझे उन्हें छोड़ना पड़ रहा है!" क्या तुम ऐसा कहोगे, हीथक्लिफ?'

'मुझे तब तक यातना मत दो जब तक मैं तुम्हारी तरह पागल न हो जाऊं,' उसने अपना सिर झटकते हुए छुड़ाया और दांत पीसते हुए चिल्लाया।

एक शांत दर्शक के लिए, वे दोनों एक विचित्र और भयावह दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। कैथरीन का यह सोचना उचित ही था कि स्वर्ग उसके लिए निर्वासन की भूमि होगा, जब तक कि वह अपने नश्वर शरीर के साथ-साथ अपने नैतिक चरित्र का भी त्याग न कर दे। उसके चेहरे पर सफेद गालों में एक प्रचंड प्रतिशोध झलक रहा था, होंठ निर्जीव और आँखें चमक रही थीं; और उसने अपनी बंद उंगलियों में अपने पकड़े हुए बालों का एक हिस्सा थाम रखा था। जहाँ तक उसके साथी की बात है, उसने एक हाथ से उठते हुए दूसरे हाथ से उसका हाथ पकड़ लिया था; और उसकी कोमलता उसकी स्थिति की आवश्यकताओं के लिए इतनी अपर्याप्त थी कि उसके हाथ छोड़ने पर मैंने उसकी निर्जीव त्वचा पर नीले रंग के चार स्पष्ट निशान देखे।

'क्या तुम पर किसी शैतान का साया है, जो मरते हुए मुझसे इस तरह बात कर रही हो? क्या तुम्हें यह ख्याल है कि तुम्हारे जाने के बाद भी ये सारे शब्द मेरी याद में हमेशा के लिए बस जाएंगे और मुझे गहरे घाव देते रहेंगे? तुम जानती हो कि यह कहना झूठ है कि मैंने तुम्हें मार डाला है: और, कैथरीन, तुम जानती हो कि मैं तुम्हें अपने अस्तित्व की तरह ही भूल जाना चाहता हूँ! क्या तुम्हारे इस घिनौने स्वार्थ के लिए इतना काफी नहीं है कि जब तुम शांति से हो, मैं नरक की यातनाओं में तड़पता रहूँ?'

'मुझे चैन नहीं मिलेगा,' कैथरीन कराह उठी, अपने दिल की तेज़, अनियमित धड़कन से उसे शारीरिक कमज़ोरी का एहसास हो रहा था, जो इस अत्यधिक बेचैनी के कारण स्पष्ट रूप से और सुनाई देने के साथ धड़क रही थी। उसने तब तक कुछ नहीं कहा जब तक कि यह दौरा शांत नहीं हो गया; फिर उसने अधिक विनम्रता से बोलना शुरू किया—

'हीथक्लिफ, मैं तुम्हें मुझसे ज़्यादा तकलीफ़ देने की कामना नहीं कर रही हूँ। मैं बस यही चाहती हूँ कि हम कभी अलग न हों: और अगर भविष्य में मेरे किसी शब्द से तुम्हें दुख पहुँचे, तो समझ लेना कि मुझे भी ज़मीन के नीचे उतना ही दुख हो रहा है, और मेरी खातिर मुझे माफ़ कर देना! यहाँ आकर फिर से घुटने टेक दो! तुमने अपने जीवन में कभी मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। बल्कि, अगर तुम मुझसे नाराज़ हो, तो मेरे कठोर शब्दों से भी ज़्यादा तुम्हें वही याद रखना बुरा लगेगा! क्या तुम फिर से

यहाँ नहीं आओगे? ज़रूर!’

हीथक्लिफ उसकी कुर्सी के पीछे गया और झुक गया, लेकिन इतना भी नहीं कि वह उसका चेहरा देख सके, जो भावनाओं से पीला पड़ गया था। वह उसे देखने के लिए मुड़ी; लेकिन उसने ऐसा होने नहीं दिया: अचानक मुड़कर वह चिमनी की ओर चला गया, जहाँ वह चुपचाप, हमारी ओर पीठ करके खड़ा रहा। श्रीमती लिंटन की निगाहें संदेह से उसका पीछा करती रहीं: हर हरकत उनके मन में एक नई भावना जगा रही थी। कुछ देर रुकने और देर तक देखने के बाद, उन्होंने फिर बोलना शुरू किया; मुझसे नाराज़गी और निराशा भरे लहजे में बोलीं: —

‘ओह, देखो नेली, वह मुझे मौत के मुंह से बचाने के लिए एक पल भी नहीं रुका। यही तो है मेरा प्यार! खैर, छोड़ो। वह मेरा हीथक्लिफ नहीं है। मैं अपने हीथक्लिफ से प्यार करूंगी; और उसे अपने साथ ले जाऊंगी: वह मेरी आत्मा में है। और,’ उसने सोचते हुए कहा, ‘सबसे ज्यादा मुझे यही टूटी-फूटी जेल परेशान करती है। मैं यहां कैद होकर थक गई हूं। मैं उस शानदार दुनिया में भागने के लिए तड़प रही हूं, और हमेशा वहीं रहना चाहती हूं: आंसुओं से धुंधली सी उसे देखना नहीं, और दर्द भरे दिल की दीवारों से उसके लिए तरसना नहीं: बल्कि सचमुच उसके साथ, और उसमें रहना चाहती हूं। नेली, तुम सोचती हो कि तुम मुझसे बेहतर और ज्यादा भाग्यशाली हो; पूरी तरह स्वस्थ और मजबूत हो: तुम्हें मेरे लिए दुख हो रहा है - बहुत जल्द यह बदल जाएगा। मुझे तुम्हारे लिए दुख होगा। मैं तुम सबसे कहीं ज्यादा आगे और ऊपर हो जाऊंगी। मुझे आश्चर्य है कि वह मेरे पास नहीं होगा!’ वह खुद से कहती रही। ‘मुझे लगा था कि वह यही चाहता था। हीथक्लिफ, प्यारे!’ अब उदास मत रहो। मेरे पास आओ, हीथक्लिफ।

अपनी बेचैनी में वह उठी और कुर्सी के बाजू पर सहारा लेकर खड़ी हो गई। उसकी उस भावुक अपील पर वह उसकी ओर मुड़ा, मानो पूरी तरह हताश हो। उसकी आँखें चौड़ी और नम थीं, और अंत में उस पर क्रोध से चमक उठीं; उसका सीना ज़ोर से धड़क रहा था। एक पल के लिए वे अलग हुए, और फिर कैसे मिले, यह मैं मुश्किल से देख पाई, लेकिन कैथरीन ने छलांग लगाई, और उसने उसे पकड़ लिया, और वे एक ऐसे आलिंगन में जकड़ गए जिससे मुझे लगा कि मेरी मालकिन कभी जीवित नहीं छूट पाएगी: वास्तव में, मेरी आँखों के सामने, वह तुरंत बेहोश हो गई। उसने खुद को पास की कुर्सी पर फेंक दिया, और जब मैं यह देखने के लिए जल्दी से उसके पास गई कि

क्या वह बेहोश हो गई है, तो उसने मुझ पर घुरघुराया, पागल कुत्ते की तरह झाग निकाला, और लालची ईर्ष्या से उसे अपने पास खींच लिया। मुझे ऐसा महसूस नहीं हो रहा था जैसे मैं अपने ही जैसे किसी प्राणी के साथ हूँ: ऐसा लग रहा था कि वह समझ नहीं रहा है, भले ही मैं उससे बात करूँ; इसलिए मैं दूर खड़ी रही, और बड़ी उलझन में चुप रही।

कैथरीन की एक हरकत ने मुझे थोड़ी राहत दी: उसने अपना हाथ बढ़ाकर उसकी गर्दन को थाम लिया और अपना गाल उसके गाल से लगा दिया; बदले में, उसने उसे उन्मादी स्पर्शों से भरते हुए बेतहाशा कहा—

'अब तुम मुझे सिखा रही हो कि तुम कितनी क्रूर रही हो— क्रूर और झूठी। तुमने मुझे क्यों तुच्छ समझा? तुमने अपने दिल के साथ विश्वासघात क्यों किया, कैथी? मेरे पास तुम्हें सांत्वना देने के लिए एक शब्द भी नहीं है। तुम इसी लायक हो। तुमने खुद को मार डाला है। हाँ, तुम मुझे चूम सकती हो, और रो सकती हो; और मेरे चुंबन और आँसू निचोड़ सकती हो: वे तुम्हें बर्बाद कर देंगे— वे तुम्हें नरक में भेज देंगे। तुमने मुझसे प्यार किया—तो तुम्हें मुझे छोड़ने का क्या अधिकार था? क्या अधिकार—मुझे जवाब दो—लिंटन के लिए तुम्हारे उस तुच्छ लगाव का? क्योंकि दुख, अपमान, और मृत्यु, और कुछ भी जो ईश्वर या शैतान दे सकता था, हमें अलग नहीं कर सकता था, तुमने अपनी मर्जी से ऐसा किया। मैंने तुम्हारा दिल नहीं तोड़ा— तुमने तोड़ा है; और इसे तोड़कर, तुमने मेरा दिल तोड़ दिया है। मेरे लिए और भी बुरा है कि मैं मजबूत हूँ। क्या मैं जीना चाहती हूँ? यह किस तरह का जीवन होगा जब तुम—हे भगवान! क्या तुम अपनी आत्मा को कब्र में रखकर जीना चाहोगी?'

'मुझे अकेला छोड़ दो। मुझे अकेला छोड़ दो,' कैथरीन सिसकते हुए बोली। 'अगर मैंने कुछ गलत किया है, तो मैं उसके लिए तड़प रही हूँ। बस बहुत हो गया! तुमने भी मुझे छोड़ दिया था: लेकिन मैं तुम्हें दोष नहीं दूंगी! मैं तुम्हें माफ करती हूँ। मुझे माफ कर दो!'

'माफ़ करना मुश्किल है, उन आँखों को देखना और उन बेजान हाथों को महसूस करना भी मुश्किल है,' उसने जवाब दिया। 'मुझे फिर से चूम लो; और मुझे अपनी आँखें मत देखने दो! तुमने मेरे साथ जो किया है, मैं उसे माफ़ करता हूँ। मैं अपने हत्यारे से प्यार करता हूँ – लेकिन तुम्हारे हत्यारे से! मैं कैसे कर सकता हूँ?'

वे चुप थे—उनके चेहरे एक-दूसरे से लिपटे हुए थे, और एक-दूसरे के आँसुओं से

भीगे हुए थे। कम से कम, मुझे लगता है कि रोना दोनों तरफ से था; क्योंकि ऐसा लग रहा था कि हीथक्लिफ इस तरह के बड़े मौके पर भी रो सकता है।

इसी बीच मैं बहुत असहज हो गया; क्योंकि दोपहर तेजी से बीत रही थी, जिस व्यक्ति को मैंने विदा किया था वह अपने काम से लौट आया था, और मैं घाटी में पश्चिम की ओर से आती सूरज की रोशनी से गिम्मर्टन चैपल के बरामदे के बाहर बढ़ती भीड़ को देख सकता था।

मैंने घोषणा की, 'सेवा समाप्त हो गई है। मेरे स्वामी आधे घंटे में यहाँ आ जाएँगे।'

हीथक्लिफ ने गुस्से में अपशब्द कहे और कैथरीन को अपने करीब खींचने की कोशिश की: लेकिन वह टस से मस नहीं हुई।

कुछ देर बाद मैंने नौकरों के एक समूह को रसोई की ओर सड़क पर जाते देखा। श्री लिंटन भी उनके पीछे-पीछे थे; उन्होंने खुद फाटक खोला और धीरे-धीरे अंदर चले गए, शायद उस सुहावनी दोपहर का आनंद ले रहे थे जो गर्मियों की तरह कोमल हवा दे रही थी।

‘अब वो आ गया है!’ मैंने हैरानी से कहा। ‘भगवान के लिए, जल्दी नीचे आओ! सामने की सीढ़ियों पर तुम्हें कोई नहीं मिलेगा। जल्दी करो; और जब तक वो पूरी तरह अंदर न आ जाए, तब तक पेड़ों के बीच ही रहना।’

‘मुझे जाना होगा, कैथी,’ हीथक्लिफ ने अपनी साथी की बाहों से खुद को छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा। ‘लेकिन अगर मैं जीवित रहा, तो तुम्हारे सोने से पहले तुमसे फिर मिलूंगा। मैं तुम्हारी खिड़की से पांच गज से ज्यादा दूर नहीं जाऊंगा।’

‘तुम्हें नहीं जाना चाहिए!’ उसने अपनी पूरी ताकत से उसे कसकर पकड़ते हुए जवाब दिया। ‘मैं तुमसे कहती हूँ, तुम्हें नहीं जाना चाहिए।’

‘एक घंटे के लिए,’ उसने गंभीरतापूर्वक विनती की।

‘एक मिनट के लिए भी नहीं,’ उसने जवाब दिया।

'मुझे जाना ही होगा—लिंटन तुरंत उठ जाएगा,' घबराए हुए घुसपैठिए ने जोर देकर कहा।

वह उठ खड़ा होता और इस हरकत से उसकी उंगलियां छूट जातीं - वह हांफते हुए उससे लिपट गई: उसके चेहरे पर पागलपन भरा दृढ़ संकल्प था।

‘नहीं!’ वह चीखी। ‘ओह, मत जाओ, मत जाओ। यह आखिरी बार है! एडगर हमें नुकसान नहीं पहुंचाएगा। हीथक्लिफ, मैं मर जाऊंगी! मैं मर जाऊंगी!’

‘धिक्कार है उस मूर्ख पर! वह रहा!’ हीथक्लिफ चिल्लाया और अपनी सीट पर वापस बैठ गया। ‘चुप रहो, मेरी जान! चुप रहो, चुप रहो, कैथरीन! मैं यहीं रहूंगा। अगर उसने मुझे इस तरह गोली मारी, तो मैं अपने होठों पर आशीर्वाद लिए मर जाऊंगा।’

और वे फिर से तेज़ी से चलने लगे। मैंने अपने मालिक को सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सुना—मेरे माथे से ठंडा पसीना बहने लगा: मैं भयभीत हो गया था।

मैंने जोश से कहा, ‘क्या तुम उसकी बकवास सुनोगे? उसे पता नहीं कि वह क्या बोल रही है। क्या तुम उसे बर्बाद कर दोगे, सिर्फ इसलिए कि उसमें खुद की मदद करने की अक्ल नहीं है? उठो! तुम पल भर में आज़ाद हो सकते हो। यह तुम्हारा सबसे घिनौना काम है। हम सब बर्बाद हो गए हैं – मालिक, मालकिन और नौकर।’

मैंने अपने हाथ मलते हुए चीख मारी; और मेरी आवाज़ सुनकर श्री लिंटन तेज़ी से आगे बढ़े। मेरी घबराहट के बीच, मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि कैथरीन की बाहें ढीली पड़ गई थीं और उसका सिर नीचे झुक गया था।

मैंने सोचा, 'वह बेहोश हो गई है, या मर गई है: और यह तो और भी अच्छा है। उसके लिए मर जाना कहीं बेहतर है, बजाय इसके कि वह बोझ बनकर इधर-उधर भटकती रहे और अपने आसपास के सभी लोगों के लिए दुख का कारण बने।'

एडगर अचानक अपने बिन बुलाए मेहमान की ओर दौड़ा, उसका चेहरा हैरानी और गुस्से से पीला पड़ गया था। वह क्या करने वाला था, यह मैं नहीं कह सकता; लेकिन दूसरे ने तुरंत ही सारे प्रदर्शन रोक दिए और उस बेजान से दिखने वाले शरीर को अपनी बाहों में उठा लिया।

‘वहाँ देखो!’ उसने कहा। ‘अगर तुम शैतान नहीं हो, तो पहले उसकी मदद करो—फिर मुझसे बात करोगे!’

वह बैठक में दाखिल हुआ और बैठ गया। श्री लिंटन ने मुझे बुलाया, और बड़ी मुश्किल से, कई उपाय करने के बाद, हम उसे होश में लाने में कामयाब हुए; लेकिन वह पूरी तरह से भ्रमित थी; वह आहें भर रही थी, कराह रही थी, और किसी को पहचान नहीं पा रही थी। एडगर, उसकी चिंता में, उसके उस घृणित मित्र को भूल गया। मैं नहीं भूला। मैं जल्द से जल्द गया, और उससे जाने की विनती की; यह कहते हुए कि कैथरीन बेहतर है, और वह सुबह मुझसे सुनेगा कि उसने रात कैसे बिताई।

‘मैं बाहर जाने से मना नहीं करूँगा,’ उसने उत्तर दिया; ‘लेकिन मैं बगीचे में ही रहूँगा; और, नेली, कल अपना वादा निभाना। मैं उन लार्च के पेड़ों के नीचे रहूँगा।

ध्यान रखना! वरना मैं फिर आऊँगा, चाहे लिंटन घर पर हो या न हो।’

उसने कमरे के आधे खुले दरवाजे से एक त्वरित नजर डाली, और यह सुनिश्चित करते हुए कि मैंने जो कहा वह स्पष्ट रूप से सच था, उसने उस घर से अपनी दुर्भाग्यपूर्ण उपस्थिति समाप्त कर दी।

अध्याय सोलह

उस रात करीब बारह बजे कैथरीन का जन्म हुआ, जिसे आपने वुदरिंग हाइट्स में देखा था: एक कमजोर, सात महीने की बच्ची; और दो घंटे बाद उसकी माँ का निधन हो गया, जो कभी होश में नहीं आ पाई और न ही हीथक्लिफ को याद कर पाई, न ही एडगर को जान पाई। एडगर की मृत्यु के बाद की पीड़ा इतनी गहरी थी कि उसका वर्णन करना संभव नहीं; इसके परिणामों से पता चलता है कि उसका दुख कितना गहरा था। मेरी नज़र में, एक और बड़ी बात यह थी कि उसका कोई वारिस नहीं था। उस कमजोर अनाथ को देखते हुए मैं बहुत दुखी हुआ; और मैंने मन ही मन बूढ़े लिंटन को (जो कि स्वाभाविक पक्षपात था) अपनी संपत्ति अपने बेटे की बजाय अपनी बेटी को देने के लिए कोसा। बेचारा, वह एक अवांछित शिशु था! वह शायद मरते-मरते मर जाता, और जीवन के उन शुरुआती घंटों में किसी ने उसकी परवाह नहीं की। हमने बाद में इस उपेक्षा की भरपाई की; लेकिन उसकी शुरुआत उतनी ही बेसहारा थी जितनी कि उसका अंत होने की संभावना है।

अगली सुबह—बाहर का उजाला और खुशनुमा वातावरण—शांत कमरे के पर्दों से छनकर अंदर आया और सोफे और उस पर लेटे व्यक्ति को एक मधुर, कोमल आभा से भर दिया। एडगर लिंटन ने अपना सिर तकिए पर रखा हुआ था और आँखें बंद थीं। उनके युवा और सुंदर चेहरे लगभग उतने ही मृत्युमय और स्थिर थे जितने उनके बगल में लेटी महिला के: लेकिन उनका चेहरा थकी हुई पीड़ा की खामोशी थी, और उनका

चेहरा पूर्ण शांति का। उनका माथा चिकना था, पलकें बंद थीं, होंठों पर मुस्कान थी; स्वर्ग में कोई देवदूत भी उनसे अधिक सुंदर नहीं हो सकता था। और मैंने उस असीम शांति का अनुभव किया जिसमें वह लेटी थीं: मेरा मन उस दिव्य विश्राम की शांत छवि को निहारते हुए कभी भी इतने पवित्र नहीं हुआ था। मैंने सहज रूप से उन शब्दों को दोहराया जो उन्होंने कुछ घंटे पहले कहे थे: 'हम सभी से अतुलनीय रूप से परे और ऊपर! चाहे वह अभी भी पृथ्वी पर हों या अब स्वर्ग में, उनकी आत्मा ईश्वर के साथ है!'

पता नहीं ये मेरी कोई खासियत है या नहीं, लेकिन मृत्यु के कक्ष में बैठकर मैं शायद ही कभी प्रसन्न होता हूँ, बशर्ते कोई उन्मादी या निराश शोक मनाने वाला मेरे साथ ये कर्तव्य न निभाए। मुझे एक ऐसी शांति दिखाई देती है जिसे न धरती और न ही नरक भंग कर सकता है, और मुझे अनंत और अंधकारमय परलोक का आश्वासन मिलता है— वो शाश्वतता जिसमें वे प्रवेश कर चुके हैं—जहाँ जीवन असीम है, प्रेम सहानुभूति से परिपूर्ण है, और आनंद परिपूर्ण है। उस अवसर पर मैंने देखा कि श्री लिंटन जैसे प्रेम में भी कितना स्वार्थ है, जब उन्होंने कैथरीन की मुक्ति पर इतना दुख व्यक्त किया! वास्तव में, उसके अशांत और अधीर जीवन के बाद, कोई संदेह कर सकता था कि क्या वह अंततः शांति के आश्रय की हकदार थी। ठंडे मन से सोचने पर संदेह हो सकता है; लेकिन उस समय नहीं, उसके शव के सामने। उसने अपनी शांति का दावा किया, जो उसके पूर्व निवासी के लिए भी उतनी ही शांति का वादा प्रतीत हुआ।

क्या आपको लगता है कि ऐसे लोग परलोक में खुश रहते हैं, महोदय? मुझे यह जानने की बहुत इच्छा है।

मैंने श्रीमती डीन के प्रश्न का उत्तर देने से इनकार कर दिया, जो मुझे कुछ अपरंपरागत लगा। उन्होंने आगे कहा:

कैथरीन लिंटन के जीवन पथ का अनुसरण करते हुए, मुझे डर है कि हमें यह सोचने का कोई अधिकार नहीं है कि वह जीवित है; लेकिन हम उसे उसके ईश्वर के हवाले छोड़ देंगे।

मालिक सो रहा था, और सूर्योदय के तुरंत बाद मैंने हिम्मत करके कमरे से बाहर निकलकर ताज़ी हवा में जाने का फैसला किया। नौकरों को लगा कि मैं लंबे समय तक पहरा देने की थकान मिटाने के लिए गया हूँ; असल में, मेरा मुख्य उद्देश्य श्री

हीथक्लिफ से मिलना था। अगर वह पूरी रात लार्च के पेड़ों के बीच ही रहे होते, तो उन्हें ग्रेंज में हो रही हलचल के बारे में कुछ भी पता नहीं चलता; सिवाय इसके कि शायद उन्हें गिम्मर्टन जा रहे संदेशवाहक के घोड़े की सरपट दौड़ सुनाई दे जाती। अगर वह पास आए होते, तो शायद इधर-उधर टिमटिमाती रोशनी और बाहरी दरवाजों के खुलने-बंद होने से उन्हें पता चल जाता कि अंदर कुछ गड़बड़ है। मैं उन्हें ढूंढना चाहता था, फिर भी डर रहा था। मुझे लगा कि यह भयानक खबर बतानी ही होगी, और मैं इसे जल्द से जल्द बताना चाहता था; लेकिन कैसे बताऊँ, यह मुझे नहीं पता था। वह वहीं थे—कम से कम, पार्क में कुछ गज आगे; एक पुराने राख के पेड़ से टिके हुए, उनकी टोपी उतरी हुई थी, और उनके बाल कलियों वाली शाखाओं पर जमा ओस से भीगे हुए थे, जो उनके चारों ओर टपक रही थी। वह काफी देर से उसी जगह पर खड़ा था, क्योंकि मैंने देखा कि दो बछड़े उसके पास से मुश्किल से तीन फीट की दूरी पर आते-जाते रहे, अपना घोंसला बनाने में व्यस्त थे और उसकी मौजूदगी को लकड़ी के टुकड़े से ज़्यादा अहमियत नहीं दे रहे थे। मेरे पास आते ही वे उड़ गए, और उसने आँखें उठाकर कहा: — 'वह मर गई!' उसने कहा; 'मैंने तुम्हारे यह जानने का इंतज़ार नहीं किया। अपना रुमाल दूर रखो — मेरे सामने रोना-धोना बंद करो। तुम सब नरक में जाओ! उसे तुम्हारे आँसुओं की कोई ज़रूरत नहीं है!'

मैं उसके लिए भी उतना ही रो रहा था जितना उसके लिए: कभी-कभी हमें उन प्राणियों पर दया आती है जिनमें न तो स्वयं के लिए और न ही दूसरों के लिए कोई भावना होती है। जब मैंने पहली बार उसके चेहरे की ओर देखा, तो मुझे लगा कि उसे विपत्ति की खबर मिल गई है; और मेरे मन में एक मूर्खतापूर्ण विचार आया कि उसका हृदय शांत हो गया है और वह प्रार्थना कर रहा है, क्योंकि उसके होंठ हिल रहे थे और उसकी निगाहें जमीन पर टिकी हुई थीं।

'हाँ, वो मर गई!' मैंने सिसकियाँ रोकते हुए और गाल पोंछते हुए जवाब दिया। 'उम्मीद है, वो स्वर्ग चली गई होगी; जहाँ हम सब भी उससे मिल सकेंगे, अगर हम सबक लें और अपने बुरे रास्ते छोड़कर अच्छे रास्ते पर चलें!'

'तो क्या उसने चेतावनी को गंभीरता से लिया था?' हीथक्लिफ ने व्यंग्य करते हुए पूछा। 'क्या वह संत की तरह मरी? मुझे इस घटना का सही-सही ब्योरा दीजिए। कैसे...?'

उसने नाम बोलने की कोशिश की, पर बोल नहीं पाया; और मुँह दबाकर वह अपने

भीतर के दर्द से चुपचाप जूझ रहा था, साथ ही साथ अपनी निर्भीक, क्रूर निगाहों से मेरी सहानुभूति को भी नकार रहा था। 'उसकी मृत्यु कैसे हुई?' उसने अंत में पूछा—अपनी हिम्मत के बावजूद, उसे सहारे की ज़रूरत थी; क्योंकि संघर्ष के बाद, वह अपने आप पर काबू न रख पाने के कारण काँप रहा था।

'बेचारा!' मैंने सोचा; 'तुम्हारे पास भी अपने साथी मनुष्यों की तरह ही दिल और भावनाएँ हैं! इन्हें छिपाने की इतनी चिंता क्यों? तुम्हारा अहंकार ईश्वर को अंधा नहीं कर सकता! तुम तो उसे इतना परेशान कर रहे हो कि वह तुम्हें अपमानित करने पर विवश हो जाए।'

'एक मेमने की तरह शांत!' मैंने ऊँची आवाज़ में उत्तर दिया। 'उसने एक आह भरी और अंगड़ाई ली, जैसे कोई बच्चा जागकर फिर से सो जाता है; और पाँच मिनट बाद मुझे उसके दिल की एक हल्की सी धड़कन महसूस हुई, बस इतना ही!'

'और—क्या उसने कभी मेरा ज़िक्र किया?' उसने हिचकिचाते हुए पूछा, मानो उसे डर हो कि उसके सवाल के जवाब में ऐसी बातें सामने आ जाएँगी जिन्हें वह सुनना बर्दाश्त नहीं कर पाएगा।

मैंने कहा, 'उसकी चेतना कभी वापस नहीं आई: जब से तुम उसे छोड़कर गए थे, तब से वह किसी को नहीं पहचानती थी। उसके चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान है; और उसके मन में बसे विचार सुखद शुरुआती दिनों की यादों में खो गए हैं। उसका जीवन एक शांत सपने में समाप्त हुआ - ईश्वर करे वह परलोक में भी उतनी ही सौम्यता से जागे!'

'वह पीड़ा में जाग उठे!' वह भयानक क्रोध से चिल्लाया, पैर पटकते हुए और अनियंत्रित आवेश में कराहते हुए बोला। 'अरे, वह अंत तक झूठी है! वह कहाँ है? वहाँ नहीं – स्वर्ग में नहीं – मरी नहीं – कहाँ? ओह! तुमने कहा था कि तुम्हें मेरे कष्टों की कोई परवाह नहीं! और मैं एक प्रार्थना करता हूँ – मैं इसे तब तक दोहराता हूँ जब तक मेरी जीभ जम न जाए – कैथरीन अन्‍र्शॉ, जब तक मैं जीवित हूँ, तुम्हें शांति न मिले; तुमने कहा था कि मैंने तुम्हें मार डाला – तो मुझे सताओ! मेरा मानना है कि मारे गए लोग अपने हत्यारों को सताते हैं। मैं जानता हूँ कि भूत धरती पर भटकते हैं। हमेशा मेरे साथ रहो – कोई भी रूप धारण करो – मुझे पागल कर दो! बस मुझे इस खाई में मत छोड़ो, जहाँ मैं तुम्हें नहीं पा सकता! हे भगवान! यह अवर्णनीय है! मैं अपने जीवन के बिना नहीं जी सकता! मैं अपनी आत्मा के बिना नहीं जी सकता!'

उसने अपना सिर पेड़ के गांठदार तने पर पटक दिया; और आँखें उठाकर चीखने लगा, किसी इंसान की तरह नहीं, बल्कि किसी खूंखार जानवर की तरह जिसे चाकू और भाले से मौत के घाट उतारा जा रहा हो। मैंने पेड़ की छाल पर खून के कई छींटे देखे, और उसका हाथ और माथा दोनों खून से सने हुए थे; शायद जो दृश्य मैंने देखा वह रात में घटी अन्य घटनाओं की पुनरावृत्ति थी। इससे मुझमें दया का कोई आभास नहीं हुआ - बल्कि मैं भयभीत हो गया: फिर भी, मुझे उसे ऐसे छोड़ने में हिचकिचाहट हो रही थी। लेकिन जैसे ही उसे होश आया और उसने मुझे देखते हुए देखा, उसने मुझे जाने का आदेश दिया, और मैंने उसकी बात मान ली। उसे शांत करना या दिलासा देना मेरे बस की बात नहीं थी!

श्रीमती लिंटन का अंतिम संस्कार उनकी मृत्यु के बाद शुक्रवार को होना था; और तब तक उनका ताबूत खुला ही रखा रहा, फूलों और सुगंधित पत्तियों से सजा हुआ, बड़े ड्राइंग रूम में। लिंटन दिन-रात वहीं जागते रहे, एक बेचैन संरक्षक की तरह; और - एक ऐसी बात जो मुझसे ही छिपी थी - हीथक्लिफ कम से कम रातें बाहर ही बिताते थे, उन्हें भी चैन नहीं मिलता था। मेरा उनसे कोई संपर्क नहीं था; फिर भी, मुझे उनके अंदर जाने के इरादे का एहसास था, अगर संभव हो तो; और मंगलवार को, अंधेरा होने के कुछ देर बाद, जब मेरे मालिक, अत्यधिक थकान के कारण, कुछ घंटों के लिए सोने चले गए, तो मैं गया और एक खिड़की खोल दी; उनकी लगन से प्रेरित होकर, उन्हें अपनी प्रियतम की धुंधली छवि को अंतिम विदाई देने का मौका देने के लिए। उन्होंने इस अवसर का लाभ उठाया, सावधानीपूर्वक और संक्षेप में; इतनी सावधानी से कि जरा सी भी आवाज से उनकी उपस्थिति का पता न चले। दरअसल, मुझे उसके वहाँ होने का पता ही नहीं चलता, सिवाय इसके कि शव के चेहरे के चारों ओर कपड़ा अस्त-व्यस्त था, और ज़मीन पर चांदी के धागे से बंधा हुआ हल्के बालों का एक गुच्छा दिखाई दिया; जाँच करने पर मुझे पता चला कि वह कैथरीन के गले में लटके लॉकेट से निकाला गया था। हीथक्लिफ ने लॉकेट खोलकर उसके अंदर के बाल बाहर फेंक दिए थे और उनकी जगह अपने काले बालों का एक गुच्छा रख दिया था। मैंने उन दोनों को आपस में लपेटकर एक साथ बंद कर दिया।

श्री अर्नशॉ को उनकी बहन के पार्थिव शरीर को कब्र तक ले जाने के लिए आमंत्रित किया गया था; उन्होंने अनुपस्थिति का कोई बहाना नहीं बनाया, लेकिन वे कभी आए ही नहीं; इसलिए, उनके पति के अलावा, शोक मनाने वालों में पूरी तरह से

किराएदार और नौकर ही शामिल थे। इसाबेला को आमंत्रित नहीं किया गया था।

गांव वालों को आश्चर्य हुआ कि कैथरीन को न तो लिंटन परिवार के स्मारक के नीचे बने चैपल में दफनाया गया था, न ही बाहर स्थित उनके रिश्तेदारों की कब्रों के पास। उनकी कब्र चर्च के प्रांगण के एक कोने में हरी ढलान पर खोदी गई थी, जहां दीवार इतनी नीची है कि दलदली भूमि से झाड़ियां और बेर के पौधे उस पर चढ़ गए हैं; और पीट की मिट्टी लगभग उसे ढक लेती है। उनके पति भी अब उसी स्थान पर दफन हैं; और दोनों की कब्रों के ऊपर एक-एक साधारण समाधि-पत्थर है, और उनके पैरों के पास एक सादा धूसर पत्थर का ब्लॉक है, जो कब्रों को चिह्नित करता है।

अध्याय सत्रह

उस शुक्रवार ने एक महीने के लिए हमारे अच्छे दिनों का आखिरी दिन बना दिया। शाम को मौसम बदल गया: हवा दक्षिण से उत्तर-पूर्व की ओर चलने लगी और पहले बारिश, फिर ओले और बर्फ़बारी होने लगी। अगले दिन यह कल्पना करना भी मुश्किल था कि तीन सप्ताह की गर्मी बीत चुकी है: प्रिमरोज़ और क्रोकस बर्फ़ की मोटी परतों के नीचे छिपे हुए थे; लार्क पक्षी चुप थे, शुरुआती पेड़ों के नए पत्ते मुरझाकर काले पड़ गए थे। और वह अगला दिन उदास, ठंडा और निराशाजनक था! मेरे मालिक अपने कमरे में ही रहे; मैंने अकेले बैठक कक्ष पर कब्ज़ा कर लिया और उसे बच्चों की नर्सरी में बदल दिया: और मैं वहाँ अपनी गोद में एक रोती हुई गुड़िया को लिए बैठी थी; उसे आगे-पीछे झुला रही थी और साथ ही साथ बिना पर्दे वाली खिड़की पर गिरते हुए बर्फ़ के टुकड़ों को देख रही थी, तभी दरवाज़ा खुला और कोई हाँफता हुआ और हँसता हुआ अंदर आया! एक पल के लिए मेरा गुस्सा मेरे आश्चर्य से कहीं ज़्यादा था। मैंने सोचा कि यह नौकरानियों में से कोई एक होगी, और मैं चिल्लाई - 'बस करो!' तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहाँ अपनी चंचलता दिखाने की; अगर मिस्टर लिंटन तुम्हें सुन लें तो

क्या कहेंगे?

'माफ़ कीजिए!' एक जानी-पहचानी आवाज़ ने जवाब दिया; 'लेकिन मुझे पता है कि एडगर बिस्तर पर है, और मैं खुद को रोक नहीं पा रही हूँ।'

इतना कहकर वक्ता हांफते हुए और अपना हाथ बगल में रखे हुए आग की ओर आगे बढ़ी।

'मैं वुदरिंग हाइट्स से पूरे रास्ते दौड़ती हुई आई हूँ!' उसने कुछ देर रुककर कहा; 'सिवाय उन जगहों के जहाँ मैं उड़ी हूँ। मैं कितनी बार गिरी हूँ, गिन भी नहीं सकती। ओह, मेरा पूरा शरीर दुख रहा है! घबराइए मत! मैं जल्द ही इसका कारण बता दूँगी; बस इतनी कृपा कीजिए कि मैं बाहर निकलकर गाड़ी को मुझे गिम्मर्टन ले जाने का आदेश दे दूँ और एक नौकर को कह दूँ कि वह मेरी अलमारी में से कुछ कपड़े ढूंढ निकाले।'

घुसपैठिया श्रीमती हीथक्लिफ थीं। वह किसी हँसी-मज़ाक वाली स्थिति में नहीं लग रही थीं: उनके बाल कंधों पर बिखरे हुए थे, बर्फ और पानी से भीगे हुए; उन्होंने वही आम सी लड़की वाली पोशाक पहनी हुई थी जो उनकी उम्र से ज़्यादा उनके पद के अनुरूप थी: छोटी आस्तीन वाली एक नीची फ्रॉक, और सिर-गर्दन पर कुछ भी नहीं। फ्रॉक हल्के रेशम की थी, जो गीलेपन से उनके शरीर से चिपकी हुई थी, और उनके पैरों में केवल पतली चप्पलें थीं; इसके अलावा एक कान के नीचे गहरा घाव था, जिसे ठंड ने ही खून बहने से रोका था, खरोंचों और चोटों से भरा उनका सफ़ेद चेहरा, और थकान से उनका शरीर लगभग बेहाल था; और आप कल्पना कर सकते हैं कि जब मुझे उन्हें ध्यान से देखने का मौका मिला तो मेरा पहला डर कुछ कम नहीं हुआ।

'मेरी प्यारी युवती,' मैंने कहा, 'जब तक तुम अपने सारे कपड़े उतारकर सूखे कपड़े नहीं पहन लेतीं, मैं कहीं नहीं हिलूंगा और कुछ नहीं सुनूंगा; और निश्चित रूप से तुम आज रात गिम्मर्टन नहीं जाओगी, इसलिए गाड़ी मंगवाने की कोई आवश्यकता नहीं है।'

'ज़रूर,' उसने कहा; 'चाहे पैदल चलूँ या सवारी करूँ: फिर भी मुझे शालीन कपड़े पहनने में कोई आपत्ति नहीं है। और—अरे, देखो ये मेरे गले से कैसे बह रहा है! आग से तो चुभ रहा है।'

उसने मुझसे कहा कि मैं उसके निर्देशों का पालन करूं, तभी वह मुझे उसे छूने देगी; और जब तक कोचवान को तैयार होने का निर्देश नहीं दिया गया और एक

नौकरानी को कुछ आवश्यक कपड़े पैक करने के लिए नहीं कहा गया, तब तक मुझे घाव पर पट्टी बांधने और उसके कपड़े बदलने में मदद करने के लिए उसकी सहमति नहीं मिली।

'अब, एलेन,' मेरा काम खत्म होने और चूल्हे पर रखी आरामकुर्सी पर चाय का प्याला लिए बैठने के बाद उसने कहा, 'तुम मेरे सामने बैठो और बेचारी कैथरीन के बच्चे को दूर रखो: मुझे उसे देखना अच्छा नहीं लगता! तुम्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं कैथरीन की परवाह नहीं करती, क्योंकि मैंने अंदर आते ही इतनी मूर्खतापूर्ण हरकत की: मैं भी बहुत रोई हूँ—हाँ, जितना किसी और को रोने का कारण नहीं है। तुम्हें याद है, हम सुलह किए बिना अलग हुए थे, और मैं खुद को कभी माफ नहीं करूँगी। लेकिन, इन सबके बावजूद, मैं उस पर दया नहीं दिखाने वाली थी—वह दरिंदा! ओह, मुझे पोकर दो! यह उसकी आखिरी चीज है जो मेरे पास है:' उसने अपनी तीसरी उंगली से सोने की अंगूठी उतारी और उसे फर्श पर फेंक दिया। 'मैं इसे तोड़ दूँगी!' उसने बचकाने गुस्से से उसे मारते हुए कहा, 'और फिर मैं इसे जला दूँगी!' और उसने उस टूटी हुई चीज को उठाया और कोयलों के बीच फेंक दिया। 'लो!' अगर वो मुझे वापस पा लेता है, तो वो दूसरा खरीद लेगा। वो मुझे ढूंढने, एडगर को चिढ़ाने के लिए आ सकता है। मैं यहाँ रुकने की हिम्मत नहीं कर सकती, कहीं ये विचार उसके दिमाग में घर न कर ले! और वैसे भी, एडगर मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर रहा है, है ना? और मैं उसकी मदद के लिए गिड़गिड़ाने नहीं आऊँगी; न ही मैं उसे और मुसीबत में डालूँगी। मजबूरी ने मुझे यहाँ शरण लेने के लिए मजबूर किया; हालाँकि, अगर मुझे पता न होता कि वो रास्ते से हट गया है, तो मैं रसोई में रुकती, अपना चेहरा धोती, खुद को गर्म करती, तुमसे अपनी ज़रूरत का सामान मंगवाती, और फिर कहीं ऐसी जगह चली जाती जहाँ मैं अपने उस शापित - उस साक्षात शैतान - की पहुँच से दूर रह सकूँ! आह, वो कितना गुस्से में था! अगर उसने मुझे पकड़ लिया होता! ये अफ़सोस की बात है कि अर्नशॉ ताकत में उसका मुकाबला नहीं कर सकता: अगर हिंडले ऐसा कर पाता, तो मैं तब तक नहीं भागती जब तक मैं उसे पूरी तरह से ध्वस्त न देख लेती!

'अरे, इतनी जल्दी-जल्दी मत बोलो, मैडम!' मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा; 'तुम्हारे चेहरे पर बंधा रुमाल बिगड़ जाएगा और घाव से फिर खून बहने लगेगा। अपनी चाय पियो, गहरी सांस लो और हंसना बंद करो: इस घर में और तुम्हारी हालत में

हंसना बिलकुल भी ठीक नहीं है!'

'यह एक अकाट्य सत्य है,' उसने उत्तर दिया। 'उस बच्चे की आवाज़ सुनो! वह लगातार रो रहा है — उसे एक घंटे के लिए मेरी पहुँच से दूर भेज दो; मैं अब और नहीं रुकूँगी।'

मैंने घंटी बजाई और उसे एक नौकर के हवाले कर दिया; और फिर मैंने उससे पूछा कि ऐसी अप्रत्याशित परिस्थिति में उसे वुदरिंग हाइट्स से भागने के लिए किसने प्रेरित किया और वह कहाँ जाना चाहती है, क्योंकि उसने हमारे साथ रहने से इनकार कर दिया था।

"मुझे यहीं रहना चाहिए था, और मैं रहना चाहती भी थी," उसने उत्तर दिया, "एडगर को खुश करने और बच्चे की देखभाल करने के लिए, दो कारणों से, और इसलिए भी क्योंकि ग्रेंज मेरा असली घर है। लेकिन मैं आपको बता दूँ, उसने मुझे रहने नहीं दिया! क्या आपको लगता है कि वह मुझे मोटा और खुश देखकर बर्दाश्त कर सकता था—यह सोचकर बर्दाश्त कर सकता था कि हम शांति से हैं, और हमारे आराम को नष्ट करने का फैसला नहीं करेगा? अब, मुझे इस बात का पूरा यकीन है कि वह मुझसे नफरत करता है, इस हद तक कि मेरी मौजूदगी या नज़र उसे बहुत परेशान करती है: मैं देखती हूँ, जब मैं उसके सामने आती हूँ, तो उसके चेहरे की मांसपेशियाँ अनायास ही नफरत के भाव में बदल जाती हैं; आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि वह जानता है कि मेरे मन में उसके लिए यह भावना रखने के अच्छे कारण हैं, और आंशिक रूप से उसकी जन्मजात घृणा के कारण। यह इतनी प्रबल है कि मुझे पूरा यकीन है कि अगर मैं किसी तरह बच भी जाऊँ, तो वह मेरा पीछा इंग्लैंड भर में नहीं करेगा; और इसलिए मुझे उससे पूरी तरह दूर हो जाना चाहिए। मैं उससे मारे जाने की अपनी पहली इच्छा से उबर चुकी हूँ: इससे बेहतर है कि वह खुद को मार डाले!" उसने मेरे प्यार को पूरी तरह से बुझा दिया है, इसलिए मैं अब निश्चिंत हूँ। मुझे अब भी याद है कि मैं उससे कितना प्यार करती थी; और मुझे धुंधला सा लगता है कि अगर — नहीं, नहीं! अगर वह मुझ पर मोहित भी होता, तो भी उसकी शैतानी प्रवृत्ति किसी न किसी तरह सामने आ ही जाती। कैथरीन का उसे इतना प्रिय मानना बहुत ही विकृत था, जबकि वह उसे अच्छी तरह जानती थी। राक्षस! काश, वह इस दुनिया से और मेरी यादों से मिट जाता!

'चुप रहो, चुप रहो! वह भी एक इंसान है,' मैंने कहा। 'थोड़ा दयालु बनो: उससे भी

बुरे लोग हैं!'

'वह इंसान नहीं है,' उसने पलटकर जवाब दिया; 'और उसे मेरी दया का कोई हक नहीं है। मैंने उसे अपना दिल दिया, और उसने उसे लेकर कुचल-कुचला कर मार डाला, और फिर मुझे वापस फेंक दिया। लोग अपने दिल से महसूस करते हैं, एलेन: और चूंकि उसने मेरा दिल तोड़ दिया है, इसलिए मुझमें उसके लिए कोई भावना नहीं बची है: और मैं नहीं रखूंगी, चाहे वह अपनी आखिरी सांस तक कराहता रहे, और कैथरीन के लिए खून के आंसू बहाए! नहीं, बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं!' और यहाँ इसाबेला रोने लगी; लेकिन, तुरंत अपनी पलकों से पानी पोंछकर, उसने फिर से बोलना शुरू किया। 'तुमने पूछा, आखिर मुझे भागने पर किसने मजबूर किया? मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि मैं उसके गुस्से को उसकी दुर्भावना से भी ऊपर ले जाने में कामयाब हो गई थी। लाल गर्म चिमटे से नसें खींचना सिर पर चोट करने से कहीं ज्यादा धैर्य की मांग करता है। वह उस शैतानी समझदारी को भूलने के लिए उत्तेजित हो गया, जिसका वह डींग मारता था, और उसने जानलेवा हिंसा की।' मुझे उसे चिढ़ाने में आनंद मिला: इस आनंद ने मेरी आत्मरक्षा की प्रवृत्ति को जगा दिया, इसलिए मैं उससे पूरी तरह से मुक्त हो गया; और अगर मैं कभी फिर से उसके हाथों में आ गया तो वह मुझसे करारा बदला ले सकता है।

कल, आपको पता है, श्री अर्नशॉ को अंतिम संस्कार में होना चाहिए था। उन्होंने इसके लिए खुद को संयमित रखा - काफी हद तक संयमित: न तो रात छह बजे नशे में धुत होकर सोए और न ही रात बारह बजे नशे में धुत होकर उठे। नतीजतन, वे आत्महत्या करने की इच्छा से भरे बेहद उदास मन से उठे, चर्च जाने के लिए उतने ही अनुपयुक्त जितने कि नाचने के लिए; और इसके बजाय, वे आग के पास बैठ गए और गिलास भर-भरकर जिन या ब्रांडी गटकते रहे।

हीथक्लिफ—उसका नाम लेते ही मुझे कंपकंपी छूट जाती है! पिछले रविवार से आज तक वह घर में अजनबी बना हुआ है। पता नहीं स्वर्गदूतों ने उसे भोजन दिया है या उसके रिश्तेदारों ने; लेकिन उसने लगभग एक सप्ताह से हमारे साथ भोजन नहीं किया है। वह भोर होते ही घर आया और ऊपर अपने कमरे में चला गया; खुद को अंदर बंद कर लिया—जैसे कि कोई उसकी संगति का सपना भी देखता हो! वहाँ वह एक मेथोडिस्ट की तरह प्रार्थना करता रहा: लेकिन जिस देवता से वह विनती करता था, वह निर्जीव धूल और राख था; और जब उसने ईश्वर को संबोधित किया, तो उसने

अजीब तरह से उसे अपने काले पिता से मिला दिया! इन कीमती प्रार्थनाओं को समाप्त करने के बाद—जो आमतौर पर तब तक चलती थीं जब तक कि उसकी आवाज बैठ नहीं जाती और गले में अटक नहीं जाती—वह फिर से चला जाता; हमेशा सीधे ग्रेंज की ओर! मुझे आश्चर्य है कि एडगर ने किसी कांस्टेबल को क्यों नहीं बुलाया और उसे हिरासत में क्यों नहीं लिया! मेरे लिए, कैथरीन के लिए दुखी होने के बावजूद, इस अपमानजनक उत्पीड़न से मुक्ति के समय को छुट्टी की तरह मानना असंभव था।

मैंने जोसेफ के लंबे-लंबे उपदेश बिना रोए सहने लायक हिम्मत जुटा ली है, और अब मैं पहले की तरह डरे हुए चोर की तरह इधर-उधर नहीं घूमती। आपको शायद यकीन न हो कि मैं जोसेफ की किसी भी बात पर रोऊँगी; लेकिन वो और हैरेटन बहुत ही बुरे साथी हैं। मैं हिंडले के साथ बैठना और उसकी भयानक बातें सुनना ज़्यादा पसंद करूँगी, बजाय उस "छोटे मालिक" और उसके कट्टर समर्थक, उस घिनौने बूढ़े आदमी के साथ बैठने के! जब हीथक्लिफ घर पर होता है, तो मुझे अक्सर रसोई में जाकर उनकी संगति में बैठना पड़ता है, या फिर उन नम और सुनसान कमरों में भूखी मरना पड़ता है; जब वो नहीं होता, जैसा कि इस हफ्ते हुआ, तो मैं घर के चूल्हे के एक कोने में मेज और कुर्सी लगा लेती हूँ, और मिस्टर अर्नशॉ की परवाह नहीं करती; और वो मेरे इंतज़ाम में दखल नहीं देते। अगर कोई उन्हें उकसाता नहीं है, तो वो अब पहले से ज़्यादा शांत हैं: ज़्यादा उदास और निराश, और कम गुस्सैल। जोसेफ का कहना है कि उन्हें पूरा यकीन है कि वे बदल गए हैं: प्रभु ने उनके हृदय को स्पर्श किया है, और वे "आग से बचकर" उद्धार पा चुके हैं। मुझे इस सकारात्मक बदलाव के संकेत नज़र नहीं आ रहे हैं, लेकिन यह मेरा विषय नहीं है।

कल शाम मैं अपने कोने में बैठकर देर रात तक, लगभग बारह बजे तक कुछ पुरानी किताबें पढ़ता रहा। बाहर तेज़ बर्फ़बारी हो रही थी, ऊपर जाना बहुत ही निराशाजनक लग रहा था, और मेरे विचार बार-बार कब्रिस्तान और नई बनी कब्र की ओर लौट रहे थे! मैं मुश्किल से ही पन्ने से नज़रें उठा पा रहा था, वह उदास दृश्य तुरंत ही पन्ने की जगह ले रहा था। हिंडले मेरे सामने बैठा था, उसका सिर हाथ पर टिका हुआ था; शायद वह भी उसी विषय पर सोच रहा था। उसने हद से ज़्यादा शराब पी ली थी, और दो-तीन घंटे से न हिला था, न बोला था। घर में हवा की सरसराहट के अलावा कोई आवाज़ नहीं थी, जो बीच-बीच में खिड़कियों को हिला रही थी, कोयलों की हल्की चटकने की आवाज़, और मोमबत्ती की लंबी बाती को बीच-बीच में बुझाने

के लिए मेरे स्नफ़र की क्लिक की आवाज़। हैरेटन और जोसेफ़ शायद बिस्तर पर गहरी नींद में सो रहे थे। यह बहुत ही दुखद था: और पढ़ते-पढ़ते मैं आहें भर रहा था, क्योंकि ऐसा लग रहा था मानो दुनिया से सारी खुशियाँ गायब हो गई हों, और फिर कभी वापस न आएँ।

रसोई के कुंडी की आवाज से उदासी भरी खामोशी आखिरकार टूटी: हीथक्लिफ अपनी ड्यूटी से सामान्य से जल्दी लौट आया था; शायद अचानक आए तूफान के कारण। वह दरवाजा बंद था, और हमने उसे दूसरे दरवाजे से अंदर आते हुए सुना। मेरे होठों पर जो भावनाएं थीं, उन्हें अनियंत्रित रूप से व्यक्त करते हुए मैं उठ खड़ी हुई, जिससे मेरा साथी, जो दरवाजे की ओर देख रहा था, मुड़कर मेरी ओर देखने लगा।

"मैं उसे पाँच मिनट के लिए बाहर रखूँगा," उसने कहा। "आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?"

"नहीं, आप उसे मेरे लिए पूरी रात बाहर रख सकते हैं," मैंने जवाब दिया। "ठीक है! चाबी को लॉक में डालो और कुंडी लगा दो।"

'अर्नशॉ ने अपने मेहमान के सामने पहुँचने से पहले ही यह काम पूरा कर लिया; फिर वह आया और अपनी कुर्सी मेरी मेज के दूसरी तरफ ले आया, उस पर झुककर, मेरी आँखों में उस जलती हुई नफरत के प्रति सहानुभूति खोजने लगा जो उसकी आँखों से झलक रही थी: चूंकि वह देखने और महसूस करने में एक हत्यारे जैसा था, इसलिए उसे वह ठीक-ठीक नहीं मिला; लेकिन उसे इतना ज़रूर मिल गया जिससे उसे बोलने की प्रेरणा मिली।'

"तुम और मैं," उसने कहा, "उस आदमी के प्रति हमारा बहुत बड़ा कर्ज है! अगर हम दोनों कायर न होते, तो हम मिलकर इसे चुका सकते थे। क्या तुम अपने भाई की तरह नरम दिल हो? क्या तुम अंत तक सहन करने को तैयार हो, और एक बार भी कर्ज चुकाने की कोशिश नहीं करोगे?"

"अब मैं यह सब सहते-सहते थक गया हूँ," मैंने उत्तर दिया; "और मुझे ऐसे प्रतिशोध की खुशी होगी जो मुझ पर ही न पलटे; लेकिन छल और हिंसा दोनों सिरों से नुकीली भाले की तरह हैं; वे उनका सहारा लेने वालों को उनके शत्रुओं से भी अधिक घायल करते हैं।"

"धोखा और हिंसा, धोखे और हिंसा का उचित बदला है!" हिंडले चिल्लाया। "श्रीमती हीथक्लिफ, मैं आपसे कुछ नहीं करने को कहूँगा; बस चुपचाप बैठिए और

चुप रहिए। बताइए, क्या आप बता सकती हैं? मुझे यकीन है कि उस शैतान के अंत को देखकर आपको भी उतना ही आनंद आएगा जितना मुझे। अगर आप उसे हरा नहीं पाईं तो वह आपकी मौत का कारण बनेगा; और वह मेरा भी विनाश करेगा। उस शैतानी बदमाश को धिक्कार है! वह ऐसे दरवाज़ा खटखटा रहा है मानो वह यहाँ का मालिक हो! वादा कीजिए कि आप चुप रहेंगी, और इससे पहले कि घड़ी की घंटी बजे — उसमें एक मिनट का तीन मिनट बाकी है — आप आज़ाद हो जाएँगी!"

'उसने अपनी छाती से वे औजार निकाले जिनका मैंने अपने पत्र में आपको वर्णन किया था, और मोमबत्ती को बुझाने की कोशिश की। लेकिन मैंने उसे छीन लिया और उसकी बांह पकड़ ली।'

मैंने कहा, "मैं चुप नहीं रहूंगी; तुम उसे हाथ मत लगाओ। दरवाजा बंद रखो और चुप रहो!"

"नहीं! मैंने अपना संकल्प कर लिया है, और ईश्वर की कसम, मैं इसे पूरा करके रहूंगा!" हताश होकर वह चिल्लाया। "मैं तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध भी तुम पर कृपा करूंगा और हैरेटन को न्याय दिलाऊंगा! और तुम्हें मुझे बचाने की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है; कैथरीन जा चुकी है। अगर मैं अभी इसी वक्त अपना गला काट लूं, तो भी कोई जीवित व्यक्ति मेरे लिए पछताएगा या शर्मिंदा होगा – और अब अंत करने का समय आ गया है!"

'मैं मानो किसी भालू से लड़ रहा होता या किसी पागल से तर्क कर रहा होता। मेरे पास एकमात्र उपाय यही बचा था कि मैं किसी जाली की ओर भागूं और उसके शिकार को उसके अंजाम के बारे में चेतावनी दूं।'

"आज रात कहीं और शरण लेना बेहतर होगा!" मैंने कुछ विजयी स्वर में कहा। "अगर तुमने अंदर जाने की कोशिश जारी रखी तो मिस्टर अर्नशॉ तुम्हें गोली मारने की सोच रहे हैं।"

"बेहतर होगा कि तुम दरवाजा खोल दो, तुम—" उसने मुझे संबोधित करते हुए किसी ऐसे सुरुचिपूर्ण शब्द का प्रयोग किया जिसे मैं दोहराना नहीं चाहता।

"मैं इस मामले में दखल नहीं दूंगा," मैंने फिर जवाब दिया। "अगर आप चाहें तो अंदर आएं और गोली खा लें। मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है।"

इतना कहकर मैंने खिड़की बंद कर दी और आग के पास अपनी जगह पर लौट आई; मेरे पास इतना कम ढोंग था कि मैं उस पर मंडरा रहे खतरे के लिए किसी भी

तरह की चिंता का दिखावा नहीं कर सकती थी। अर्नशॉ ने गुस्से में मुझ पर चिल्लाते हुए कहा कि मैं अब भी उस दुष्ट से प्यार करती हूँ; और मेरे नीच स्वभाव के लिए मुझे तरह-तरह के नामों से पुकारा। और मैंने अपने मन में (और मेरा विवेक कभी मुझे दोषी नहीं ठहराता था) सोचा कि उसके लिए कितना बड़ा आशीर्वाद होगा अगर हीथक्लिफ उसे इस दुख से मुक्ति दिला दे; और मेरे लिए कितना बड़ा आशीर्वाद होगा अगर वह हीथक्लिफ को उसके सही ठिकाने पर भेज दे! जब मैं इन विचारों में डूबी बैठी थी, तभी मेरे पीछे की खिड़की उस व्यक्ति के एक जोरदार प्रहार से ज़मीन पर गिर पड़ी, और उसका काला चेहरा भयानक रूप से बाहर झाँका। खंभे इतने पास थे कि उसके कंधे बाहर नहीं निकल पाए, और मैं अपनी काल्पनिक सुरक्षा पर मुस्कुरा उठी। उसके बाल और कपड़े बर्फ से सफेद हो गए थे, और ठंड और क्रोध से उजागर हुए उसके नुकीले नरभक्षी दांत अंधेरे में चमक रहे थे।

"इसाबेला, मुझे अंदर आने दो, वरना मैं तुम्हें पश्चाताप करवा दूंगा!" उसने गुस्से से कहा, जैसा कि यूसुफ इसे कहता है।

मैंने जवाब दिया, "मैं हत्या नहीं कर सकता। श्री हिंडले चाकू और भरी हुई पिस्तौल लेकर पहरा दे रहे हैं।"

"मुझे रसोई के दरवाजे से अंदर आने दो," उसने कहा।

"हिंडले मुझसे पहले वहाँ पहुँच जाएगा," मैंने उत्तर दिया: "और तुम्हारा यह प्रेम कितना कमज़ोर है जो बर्फ़बारी भी सहन नहीं कर सकता! जब तक ग्रीष्म ऋतु का चाँद चमकता रहा, हम अपने बिस्तरों में शांति से रहे, लेकिन जैसे ही सर्दियों का झोंका लौटता है, तुम्हें आश्रय के लिए भागना पड़ता है! हीथक्लिफ, अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं उसकी कब्र पर लेटकर एक वफ़ादार कुत्ते की तरह मर जाता। अब दुनिया जीने लायक नहीं रही, है ना? तुमने मुझे स्पष्ट रूप से यह एहसास दिलाया था कि कैथरीन तुम्हारे जीवन की सारी खुशियाँ थी: मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि तुम उसके जाने के दुख से कैसे उबर पाओगे।"

"वो वहाँ है ना?" मेरे साथी ने चिल्लाते हुए कहा और उस खाली जगह की ओर दौड़ पड़ा। "अगर मैं अपना हाथ बाहर निकाल सकूँ तो उसे मार सकता हूँ!"

एलेन, मुझे डर है कि तुम मुझे सचमुच दुष्ट समझोगी; लेकिन तुम सब कुछ नहीं जानती, इसलिए फैसला मत सुनाओ। मैं किसी भी कीमत पर उसकी जान लेने के प्रयास में भी मदद या उकसावा नहीं देता। मैं चाहता हूँ कि वह मर जाए; और इसलिए

मैं बहुत निराश हुआ और अपने ताने भरे शब्दों के परिणामों से भयभीत हो गया, जब उसने अर्नशॉ के हथियार पर झपट्टा मारा और उसे उसके हाथ से छीन लिया।

‘गोला फटा, और चाकू उछलकर वापस आते ही अपने मालिक की कलाई में जा लगा। हीथक्लिफ ने पूरी ताकत से उसे खींचकर अलग किया, जिससे मांस कटता चला गया, और उसे टपकते हुए अपनी जेब में डाल लिया। फिर उसने एक पत्थर उठाया, दो खिड़कियों के बीच की दीवार तोड़ दी, और अंदर कूद गया। उसका दुश्मन अत्यधिक दर्द और धमनी या बड़ी नस से बहते खून से बेहोश होकर गिर पड़ा था। उस बदमाश ने उसे लात मारी और पैरों से कुचला, और बार-बार उसका सिर फर्श पर पटका, इस बीच उसने मुझे एक हाथ से पकड़ रखा था ताकि मैं जोसेफ को न बुला सकूँ। उसने उसे पूरी तरह से खत्म न करने के लिए असाधारण आत्मसंयम दिखाया; लेकिन साँस फूलने पर, आखिरकार वह रुक गया, और उस लगभग बेजान शरीर को घसीटकर बेंच पर ले गया। वहाँ उसने अर्नशॉ के कोट की आस्तीन फाड़ दी, और बेरहमी से घाव पर पट्टी बाँधी; इस दौरान वह उतनी ही ज़ोर से थूक रहा था और गालियाँ दे रहा था जितनी ज़ोर से उसने पहले लात मारी थी। आज़ाद होते ही, मैंने बूढ़े नौकर को ढूँढ़ने में ज़रा भी देर नहीं की; मेरी जल्दबाजी में सुनाई गई कहानी का सार धीरे-धीरे समझकर, वह हांफते हुए, दो-दो सीढ़ियाँ एक साथ उतरते हुए तेजी से नीचे भागा।

“अब क्या करें? अब क्या करें?”

“देखो, तुम्हारा मालिक पागल हो गया है; और अगर वो एक महीना और ज़िंदा रहा, तो मैं उसे पागलखाने भेज दूँगा। और तुम मुझे यहाँ क्यों बाँधने आए हो, बेवकूफ कुत्ते? वहाँ खड़े-खड़े बड़बड़ाना बंद करो। चलो, मैं उसकी देखभाल नहीं करने वाला। उस चीज़ को धो डालो; और अपनी मोमबत्ती की चिंगारियों से सावधान रहो — उसमें आधे से ज़्यादा ब्रांडी है!”

“तो तुम लोग उसका कत्ल कर रहे थे?” यूसुफ ने भयभीत होकर अपने हाथ और आँखें ऊपर उठाते हुए कहा। “अगर मैंने कभी ऐसा दृश्य देखा हो! भगवान न करे—”

हीथक्लिफ ने उसे खून के बीचोंबीच घुटनों के बल धकेल दिया और उसकी ओर एक तौलिया फेंका; लेकिन उसे पोंछने के बजाय, उसने हाथ जोड़कर प्रार्थना शुरू कर दी, जिसकी विचित्र शब्दावली पर मुझे हंसी आ गई। मैं उस समय ऐसी मानसिक स्थिति में था कि किसी भी बात पर मुझे आश्चर्य नहीं होता था: वास्तव में, मैं उतना ही

लापरवाह था जितना कुछ अपराधी फांसी के तख्ते पर खड़े होकर खुद को दिखाते हैं।

"अरे, मैं तुम्हें भूल ही गया था," अत्याचारी ने कहा। "तुम्हें यही करना होगा। तुम्हारा नाश हो। और तुम मेरे खिलाफ उसके साथ साजिश रच रहे हो, नागिन? लो, यही काम तुम्हारे लिए सही है!"

उसने मुझे तब तक हिलाया जब तक मेरे दांत बजने लगे, और मुझे जोसेफ के बगल में पटक दिया, जिसने धैर्यपूर्वक अपनी प्रार्थनाएँ पूरी कीं, और फिर उठकर कसम खाई कि वह सीधे ग्रेंज के लिए रवाना होगा। श्री लिंटन एक मजिस्ट्रेट थे, और भले ही उनकी पचास पत्नियाँ मर चुकी हों, उन्हें इसकी जाँच करनी चाहिए। वह अपने संकल्प में इतना हठी था कि हीथक्लिफ ने मुझसे जो कुछ हुआ था उसका पूरा ब्यौरा निकलवाना उचित समझा; मेरे ऊपर खड़ा होकर, दुर्भावना से कांपता हुआ, जब मैंने अनिच्छा से उसके सवालों के जवाब में विवरण दिया। बूढ़े आदमी को यह विश्वास दिलाने में बहुत मेहनत लगी कि हीथक्लिफ हमलावर नहीं था; खासकर मेरे मुश्किल से दिए गए जवाबों के कारण। हालाँकि, श्री अर्नशॉ ने जल्द ही उसे आश्वस्त कर दिया कि वह अभी भी जीवित है; जोसेफ ने जल्दी से उसे शराब की एक खुराक दी, और उसकी मदद से उसके मालिक ने तुरंत गति और चेतना वापस पा ली। हीथक्लिफ, यह जानते हुए कि उसका प्रतिद्वंद्वी बेहोशी की हालत में मिले व्यवहार से अनजान था, उसे बेसुध होकर नशे में धुत बताया; और उन्होंने कहा कि उसे उसके इस घिनौने व्यवहार पर और ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि उसे सोने की सलाह दी। मेरी खुशी के लिए, यह समझदारी भरी सलाह देने के बाद वह हमें छोड़कर चले गए, और हिंडले चूल्हे पर लेट गया। मैं अपने कमरे में चला गया, यह सोचकर आश्चर्यचकित था कि मैं इतनी आसानी से बच गया।

आज सुबह जब मैं दोपहर से लगभग आधा घंटा पहले नीचे आया, तो श्री अर्नशॉ आग के पास बैठे थे, बेहद बीमार; उनका दुष्ट चेहरा, लगभग उतना ही दुबला-पतला और भयानक, चिमनी से टिका हुआ था। दोनों में से कोई भी भोजन करने के लिए इच्छुक नहीं लग रहा था, और मेज पर सब कुछ ठंडा होने तक इंतजार करने के बाद, मैंने अकेले ही खाना शुरू किया। मुझे भरपूर खाने से कोई नहीं रोक सका, और मुझे एक विशेष प्रकार की संतुष्टि और श्रेष्ठता का अहसास हुआ, क्योंकि मैं बीच-बीच में अपने मौन साथियों की ओर देखता था, और अपने भीतर एक शांत अंतरात्मा का सुकून महसूस करता था। भोजन करने के बाद, मैंने आग के पास जाने, अर्नशॉ की

सीट के चारों ओर घूमने और उनके बगल में कोने में घुटने टेकने की असामान्य स्वतंत्रता का अनुभव किया।

हीथक्लिफ ने मेरी ओर देखा तक नहीं, और मैंने ऊपर देखा, और उसके चेहरे को लगभग उसी आत्मविश्वास से निहारा जैसे वह पत्थर का बन गया हो। उसका माथा, जिसे मैं कभी मर्दाना समझता था, और जिसे अब शैतानी समझता हूँ, घने बादलों से ढका हुआ था; उसकी बेसिलिस्क जैसी आँखें नींद की कमी से लगभग बुझी हुई थीं, और शायद रो रही थीं, क्योंकि पलकें उस समय नम थीं: उसके होंठों से वह क्रूर व्यंग्य गायब था, और एक अकथनीय उदासी का भाव था। अगर कोई और होता, तो मैं ऐसे दुख के सामने अपना चेहरा ढक लेता। उसके मामले में, मुझे संतुष्टि मिली; और, भले ही गिरे हुए दुश्मन का अपमान करना नीच लगे, मैं उस पर वार करने का यह मौका नहीं छोड़ सकता था: उसकी कमजोरी ही वह समय था जब मैं गलत का बदला गलत से लेने का आनंद ले सकता था।

'छी, छी, मैडम!' मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'ऐसा लगता है मानो आपने जीवन में कभी बाइबल खोली ही न हो। अगर ईश्वर आपके शत्रुओं को कष्ट देता है, तो यकीनन यही आपके लिए काफी होना चाहिए। उसकी पीड़ा में अपनी पीड़ा जोड़ना नीचता और धृष्टता दोनों है!'

'आम तौर पर तो मैं मानती हूँ कि ऐसा ही होगा, एलेन,' उसने आगे कहा; 'लेकिन हीथक्लिफ पर जो भी दुख आएगा, उससे मुझे तब तक संतोष नहीं होगा, जब तक उसमें मेरा हाथ न हो? मैं चाहूँगी कि उसे कम कष्ट सहना पड़े, अगर मैं उसके कष्टों का कारण बन सकूँ और उसे पता चले कि मैं ही इसका कारण हूँ। ओह, मैं उसकी बहुत ऋणी हूँ। केवल एक शर्त पर ही मैं उसे क्षमा कर सकती हूँ। वह यह है कि आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत; हर पीड़ा का बदला दाँत से दो: उसे मेरे स्तर पर ला दो। क्योंकि उसने पहले चोट पहुँचाई, इसलिए उसे ही पहले क्षमा माँगने दो; और फिर —तो फिर, एलेन, मैं तुम पर थोड़ी दया दिखा सकती हूँ। लेकिन मेरे लिए बदला लेना बिल्कुल असंभव है, और इसलिए मैं उसे क्षमा नहीं कर सकती। हिंडले को पानी चाहिए था, और मैंने उसे एक गिलास दिया, और उससे पूछा कि वह कैसा है।'

"उतना बीमार नहीं जितना मैं चाहता था," उसने जवाब दिया। "लेकिन मेरे हाथ को छोड़ दें तो, मेरे शरीर का हर इंच इतना दर्द कर रहा है मानो मैं शैतानों की सेना से लड़ रहा हो!"

“हाँ, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं,” मैंने अगली टिप्पणी की। “कैथरीन शेखी बघारती थी कि वह तुम्हें शारीरिक नुकसान से बचाती है: उसका मतलब था कि कुछ लोग उसे नाराज़ करने के डर से तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाते थे। शुक्र है कि लोग सचमुच अपनी कब्र से नहीं उठते, वरना कल रात वह एक घिनौना दृश्य देख सकती थी! क्या तुम्हें चोट के निशान नहीं हैं, और तुम्हारी छाती और कंधों पर कट नहीं लगे हैं?”

“मैं कुछ नहीं कह सकता,” उसने उत्तर दिया, “लेकिन आपका क्या मतलब है? क्या उसने मुझे तब मारने की हिम्मत की जब मैं नीचे गिरा हुआ था?”

“उसने तुम्हें रौंदा, लात मारी और ज़मीन पर पटक दिया,” मैंने फुसफुसाते हुए कहा। “और उसका मुंह तुम्हें अपने दांतों से नोंचने के लिए ललचा रहा था; क्योंकि वह आधा ही इंसान है: बाकी सब शैतान है।”

'श्री अर्नशॉ ने मेरी ही तरह हमारे साझा शत्रु के चेहरे की ओर देखा; जो अपनी पीड़ा में डूबा हुआ था और अपने आसपास की किसी भी चीज से बेखबर प्रतीत हो रहा था: वह जितनी देर खड़ा रहा, उसके चेहरे से झलकती उसकी काली परछाईं उतनी ही स्पष्ट रूप से प्रकट होती गई।'

“काश, भगवान मुझे अपनी अंतिम पीड़ा में उसका गला घोंटने की शक्ति दे देते, तो मैं खुशी से नरक चला जाता,” अधीर व्यक्ति कराहते हुए उठा, उठने के लिए छटपटाया, और फिर निराशा में डूब गया, क्योंकि उसे यकीन था कि वह इस संघर्ष में सक्षम नहीं है।

“नहीं, इतना ही काफी है कि उसने तुममें से एक की हत्या कर दी है,” मैंने ज़ोर से कहा। “ग्रेंज में हर कोई जानता है कि अगर मिस्टर हीथक्लिफ न होते तो तुम्हारी बहन आज ज़िंदा होती। आख़िरकार, उससे नफ़रत किए जाने से बेहतर है कि उससे प्यार किया जाए। जब मुझे याद आता है कि हम कितने खुश थे — कैथरीन उसके आने से पहले कितनी खुश थी — तो मुझे उस दिन को कोसने का मन करता है।”

संभवतः हीथक्लिफ ने कही गई बात की सच्चाई पर अधिक ध्यान दिया, न कि कहने वाले के भाव पर। मैंने देखा कि उसका ध्यान जागृत हो गया था, क्योंकि उसकी आँखों से राख के बीच आँसू बह रहे थे और वह घुटन भरी साँसें ले रहा था। मैंने उसे घूरकर देखा और तिरस्कारपूर्वक हँसा। नरक की धुंधली खिड़कियाँ एक पल के लिए मेरी ओर चमक उठीं; हालाँकि, वह शैतान जो आमतौर पर बाहर देखता था, इतना

धुंधला और डूबा हुआ था कि मुझे उपहास की एक और आवाज़ निकालने से डर नहीं लगा।

“उठो और मेरी नजरों से दूर चले जाओ,” शोक मनाने वाले ने कहा।

'मैंने अनुमान लगाया कि उसने कम से कम वे शब्द तो कहे ही होंगे, हालांकि उसकी आवाज मुश्किल से समझ में आ रही थी।'

“माफ़ कीजिएगा,” मैंने जवाब दिया। “लेकिन मैं भी कैथरीन से प्यार करता था; और उसके भाई को देखभाल की ज़रूरत है, जो मैं उसकी खातिर करूँगा। अब जब वह मर चुकी है, तो मुझे वह हिंडले में दिखती है: हिंडले की आँखें बिल्कुल उसकी जैसी हैं, मानो उन्हें नोचकर काला-लाल न कर दिया गया हो; और उसकी —”

“उठो, मूर्ख कहीं के, इससे पहले कि मैं तुझे कुचल कर मार डालूँ!” वह चिल्लाया, और उसने एक ऐसी हरकत की जिससे मुझे भी वैसी ही हरकत करनी पड़ी।

“लेकिन फिर,” मैंने भागने के लिए खुद को तैयार रखते हुए कहा, “अगर बेचारी कैथरीन ने तुम पर भरोसा किया होता, और मिसेज हीथक्लिफ की हास्यास्पद, घृणित, नीच उपाधि धारण कर ली होती, तो वह भी जल्द ही ऐसी ही स्थिति में होती! वह तुम्हारे घृणित व्यवहार को चुपचाप सहन नहीं करती: उसकी घृणा और नाराजगी जरूर व्यक्त होती।”

सोफे का पिछला हिस्सा और अर्नशॉ का शरीर मेरे और उसके बीच आ गए; इसलिए मुझ तक पहुँचने की कोशिश करने के बजाय, उसने मेज से एक खाने का चाकू उठाया और मेरे सिर पर फेंक दिया। वह मेरे कान के नीचे लगा और मेरा वाक्य रुक गया; लेकिन, चाकू निकालते ही मैं दरवाजे की ओर भागा और एक और वार किया; जो मुझे उम्मीद है कि उसके वार से थोड़ा गहरा लगा होगा। उसकी आखिरी झलक जो मैंने देखी, वह थी उसकी ओर से गुस्से में की गई दौड़, जिसे उसके मेज़बान के आलिंगन ने रोक दिया; और दोनों चूल्हे पर एक साथ गिर पड़े। रसोई से भागते हुए मैंने जोसेफ को उसके मालिक के पास जल्दी जाने के लिए कहा; मैंने हरेटन को धक्का दिया, जो दरवाजे पर एक कुर्सी के पीछे पिल्लों का झुंड लटका रहा था; और, जैसे कोई आत्मा नरक से बच निकली हो, मैं उछला-कूदा और तेज़ी से ढलान वाली सड़क पर भागा; फिर, उसके घुमावों को छोड़कर, सीधे दलदल के पार, किनारों को पार करते हुए और दलदलों से गुज़रते हुए, वास्तव में, ग्रेंज की रोशनी की ओर तेज़ी से बढ़ रहा था। और मैं नरकलोक में हमेशा के लिए रहना कहीं अधिक पसंद करूंगा,

बजाय इसके कि एक रात के लिए भी फिर से वुदरिंग हाइट्स की छत के नीचे रहूं।

इसाबेला चुप हो गई और चाय का एक घूंट पिया; फिर वह उठी और मुझे अपना बोनट और मेरे द्वारा लाया गया बड़ा शॉल पहनने को कहा। मेरी एक घंटे और रुकने की विनती को अनसुना करते हुए, वह एक कुर्सी पर चढ़ी, एडगर और कैथरीन के चित्रों को चूमा, मुझे भी वैसा ही अभिवादन किया और अपनी मालकिन को पाकर खुशी से चिल्लाती हुई फैनी के साथ गाड़ी की ओर चली गई। उसे वहाँ से भगा दिया गया और वह फिर कभी इस इलाके में नहीं लौटी: लेकिन जब हालात थोड़े सामान्य हो गए, तो उसके और मेरे मालिक के बीच नियमित पत्र व्यवहार शुरू हो गया। मेरा मानना है कि उसका नया निवास दक्षिण में, लंदन के पास था; वहाँ उसके भागने के कुछ महीनों बाद उसका एक बेटा पैदा हुआ। उसका नाम लिंटन रखा गया और शुरू से ही उसने उसे एक बीमार, चिड़चिड़ा प्राणी बताया।

एक दिन गाँव में मेरी मुलाक़ात हुई तो श्री हीथक्लिफ़ ने मुझसे पूछा कि वह कहाँ रहती है। मैंने बताने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि यह कोई बड़ी बात नहीं है, बस उसे अपने भाई के पास जाने से सावधान रहना चाहिए: अगर उसे खुद उसकी देखभाल करनी पड़े तो उसे उसके साथ नहीं रहना चाहिए। हालाँकि मैंने कोई जानकारी नहीं दी, फिर भी उन्होंने कुछ अन्य नौकरों के ज़रिए उसके रहने का पता और बच्चे के बारे में जानकारी जुटा ली। फिर भी, उन्होंने उसे परेशान नहीं किया: शायद इसी सहनशीलता के लिए वह उनकी इस अरुचि की आभारी होगी। जब भी वह मुझे देखते, वह अक्सर बच्चे के बारे में पूछते; और उसका नाम सुनकर, गंभीर मुस्कान के साथ कहते, 'क्या वे चाहते हैं कि मैं भी इससे नफ़रत करूँ?'

मैंने जवाब दिया, 'मुझे नहीं लगता कि वे चाहते हैं कि आपको इसके बारे में कुछ भी पता चले।'

‘लेकिन मुझे यह तब मिलेगा जब मैं इसे चाहूंगा। वे शायद इसी बात का फायदा उठाएंगे!’ उसने कहा।

सौभाग्यवश, समय आने से पहले ही उसकी माँ का निधन हो गया; कैथरीन की मृत्यु के लगभग तेरह वर्ष बाद, जब लिंटन बारह वर्ष का था, या उससे थोड़ा अधिक।

इसाबेला के अचानक आगमन के अगले दिन मुझे अपने स्वामी से बात करने का कोई अवसर नहीं मिला: वे बातचीत से कतराते थे और किसी भी बात पर चर्चा करने के लिए तैयार नहीं थे। जब मैं उन्हें सुनने के लिए मना पाया, तो मैंने देखा कि उन्हें

इस बात से खुशी हुई कि उनकी बहन ने अपने पति को छोड़ दिया था; जिनसे वे इतनी घृणा करते थे कि उनके सौम्य स्वभाव के आगे यह घृणा शायद ही स्वीकार्य होती। उनकी घृणा इतनी गहरी और संवेदनशील थी कि वे ऐसी किसी भी जगह जाने से बचते थे जहाँ उन्हें हीथक्लिफ को देखने या उसके बारे में सुनने की संभावना हो। दुःख और उस घृणा ने मिलकर उन्हें पूर्णतः संन्यासी बना दिया: उन्होंने मजिस्ट्रेट का पद त्याग दिया, चर्च जाना भी बंद कर दिया, हर अवसर पर गाँव से दूर रहे और अपने उद्यान और मैदानों की सीमाओं के भीतर पूर्ण एकांत जीवन व्यतीत किया; केवल कभी-कभी ही वे मैदानों में अकेले टहलने जाते थे और अपनी पत्नी की कब्र पर जाते थे, अधिकतर शाम को या सुबह-सुबह, जब अन्य लोग बाहर नहीं निकले होते थे। लेकिन वे इतने अच्छे थे कि लंबे समय तक इतने दुखी नहीं रह सकते थे। उन्होंने कैथरीन की आत्मा के लिए प्रार्थना नहीं की कि वह उन्हें सताए। समय ने उन्हें धैर्य और एक ऐसी उदासी दी जो सामान्य आनंद से कहीं अधिक मधुर थी। उसने उसकी यादों को भावुक, कोमल प्रेम और बेहतर दुनिया की आशा भरी आकांक्षा के साथ याद किया; जहाँ उसे कोई संदेह नहीं था कि वह जा चुकी है।

और उसके पास सांसारिक सांत्वना और स्नेह भी थे। मैंने कहा, कुछ दिनों के लिए, वह दिवंगत की नन्ही उत्तराधिकारी के प्रति उदासीन प्रतीत हुआ: वह शीतलता अप्रैल की बर्फ की तरह तेज़ी से पिघल गई, और इससे पहले कि वह नन्ही सी बच्ची एक शब्द भी लड़खड़ा पाती या एक कदम भी डगमगा पाती, उसने उसके हृदय में एक निरंकुश शासक का शासन स्थापित कर लिया। उसका नाम कैथरीन था; लेकिन उसने कभी भी उसे पूरे नाम से नहीं पुकारा, जैसे उसने पहली कैथरीन को कभी भी संक्षिप्त नाम से नहीं पुकारा था: शायद इसलिए कि हीथक्लिफ की ऐसा करने की आदत थी। वह छोटी बच्ची हमेशा कैथी ही कहलाती थी: वह उसके लिए माँ से अलग थी, फिर भी उससे एक जुड़ाव रखती थी; और उसका लगाव उसके अपने होने से कहीं अधिक, उससे उसके संबंध के कारण था।

मैं अक्सर उसकी और हिंडले अर्नशॉ की तुलना करता था, और यह समझाने की कोशिश करता था कि एक जैसी परिस्थितियों में उनका व्यवहार इतना विपरीत क्यों था। दोनों ही अपने बच्चों से स्नेह करते थे और उनसे बेहद प्यार करते थे; और मुझे समझ नहीं आता था कि अच्छे या बुरे के लिए दोनों ने एक ही रास्ता क्यों नहीं चुना। लेकिन, मैंने मन ही मन सोचा, हिंडले, जो देखने में ज़्यादा समझदार लगता था, उसने

खुद को दुखद रूप से कमज़ोर और नासमझ साबित कर दिया। जब उसका जहाज़ डूबा, तो कप्तान ने अपना पद छोड़ दिया; और चालक दल ने जहाज़ को बचाने की कोशिश करने के बजाय दंगा और अफरा-तफरी मचा दी, जिससे उस बदकिस्मत जहाज़ के बचने की कोई उम्मीद नहीं बची। इसके विपरीत, लिंटन ने एक वफ़ादार और ईमानदार आत्मा का सच्चा साहस दिखाया: उसने ईश्वर पर भरोसा किया; और ईश्वर ने उसे सांत्वना दी। एक ने आशा रखी, और दूसरे ने निराशा: उन्होंने अपनी किस्मत खुद चुनी, और उन्हें उसी के अनुसार जीना पड़ा। लेकिन आप मेरी उपदेशात्मक बातें नहीं सुनना चाहेंगे, श्रीमान लॉकवुड; आप भी मेरी तरह इन सब बातों का आकलन करेंगे: कम से कम, आपको लगेगा कि आप करेंगे, और बात एक ही है। अर्नशॉ का अंत वैसा ही हुआ जैसा अपेक्षित था; यह उनकी बहन की मृत्यु के तुरंत बाद हुआ: दोनों के बीच मुश्किल से छह महीने का अंतर था। ग्रेंज में हमें उनकी मृत्यु से पहले की स्थिति के बारे में कोई संक्षिप्त जानकारी नहीं मिली; मुझे जो कुछ भी पता चला वह अंतिम संस्कार की तैयारियों में सहायता करने के दौरान ही पता चला। श्री केनेथ मेरे स्वामी को यह सूचना देने आए थे।

“अच्छा, नेली,” वह एक सुबह आंगन में घोड़े पर सवार होकर आया, इतनी जल्दी कि मुझे तुरंत किसी बुरी खबर का पूर्वाभास हो गया, “अब शोक मनाने की बारी तुम्हारी और मेरी है। तुम्हें क्या लगता है, अब हमें किसने चकमा दिया है?”

मैंने हड़बड़ी में पूछा, 'कौन?'

‘अरे, अंदाज़ा लगाओ!’ वह घोड़े से उतरते हुए और दरवाज़े के पास एक हुक पर लगाम टांगते हुए बोला। ‘और अपने एप्रन का कोना भी कस लो: मुझे यकीन है कि तुम्हें इसकी ज़रूरत पड़ेगी।’

‘ज़रूर मिस्टर हीथक्लिफ तो नहीं?’ मैंने हैरानी से कहा।

‘क्या! क्या तुम उसके लिए आंसू बहाओगे?’ डॉक्टर ने कहा। ‘नहीं, हीथक्लिफ एक मजबूत नौजवान है: वह आज एकदम तंदुरुस्त दिख रहा है। मैंने अभी उसे देखा है। अपनी पत्नी को खोने के बाद से वह तेजी से तरोताजा हो रहा है।’

‘तो फिर कौन है, श्रीमान केनेथ?’ मैंने अधीरता से दोहराया।

‘हिंडले अर्नशॉ! तुम्हारा पुराना दोस्त हिंडले,’ उसने जवाब दिया, ‘और मेरा शरारती गपशप करने वाला: हालाँकि वह काफी समय से मेरे लिए कुछ ज्यादा ही बेकाबू रहा है। लो! मैंने कहा था कि हमें पानी खींचना चाहिए। लेकिन खुश हो जाओ! वह अपने

स्वभाव के अनुरूप ही मरा: एक रईस की तरह नशे में धुत। बेचारा! मुझे भी अफ़सोस है। एक पुराने साथी को याद किए बिना कोई नहीं रह सकता: हालाँकि उसके पास ऐसी शरारतें थीं जिनकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था, और उसने मेरे साथ कई बदमाशी कीं। लगता है वह मुश्किल से सत्ताईस साल का है; यही तुम्हारी उम्र है: किसने सोचा होगा कि तुम एक साल में पैदा हुए थे?'

मैं स्वीकार करता हूँ कि यह आघात मेरे लिए श्रीमती लिंटन की मृत्यु के सदमे से भी कहीं अधिक गहरा था: पुरानी यादें मेरे हृदय में गूंज रही थीं; मैं बरामदे में बैठ गया और एक रक्त संबंधी के लिए रोने लगा, श्री केनेथ से विनती कर रहा था कि वे किसी अन्य नौकर को बुलाकर उसे मालिक से मिलवाएँ। मैं इस प्रश्न पर विचार करने से खुद को रोक नहीं पा रहा था - 'क्या उसके साथ न्याय हुआ था?' मैं कुछ भी करता, यह विचार मुझे परेशान करता रहता: यह इतना कष्टदायक और दृढ़ था कि मैंने वुदरिंग हाइट्स जाने और मृतक के अंतिम संस्कार में सहायता करने के लिए छुट्टी लेने का निश्चय किया। श्री लिंटन अत्यंत अनिच्छुक थे, लेकिन मैंने उनकी असहाय स्थिति के लिए बहुत ही मार्मिक ढंग से विनती की; और मैंने कहा कि मेरे पुराने मालिक और पालक भाई का भी मुझ पर उतना ही अधिकार है जितना उनका। इसके अलावा, मैंने उन्हें याद दिलाया कि बच्चा हरेटन उनकी पत्नी का भतीजा था, और निकट संबंधी न होने के कारण, उन्हें उसका संरक्षक बनना चाहिए; और उन्हें यह पता लगाना चाहिए था कि संपत्ति का क्या हाल है, और अपने बहनोई के मामलों को देखना चाहिए था। उस समय वे ऐसे मामलों में ध्यान देने के लिए उपयुक्त नहीं थे, लेकिन उन्होंने मुझे अपने वकील से बात करने के लिए कहा; और अंततः मुझे जाने की अनुमति दी। उनके वकील अर्नशॉ के भी वकील थे: मैं गाँव गया और उनसे मेरे साथ चलने का अनुरोध किया। उन्होंने सिर हिलाया और सलाह दी कि हीथक्लिफ को अकेला छोड़ दिया जाए; यह कहते हुए कि अगर सच्चाई पता चले तो हैरेटन की हालत भिखारी से ज्यादा कुछ नहीं होगी।

उन्होंने कहा, 'उनके पिता कर्ज में डूबे हुए मरे; सारी संपत्ति गिरवी रखी हुई है, और स्वाभाविक उत्तराधिकारी के लिए एकमात्र मौका यही है कि वह उसे लेनदार के मन में कुछ रुचि पैदा करने का अवसर दे, ताकि वह उसके प्रति नरमी बरतने के लिए तैयार हो जाए।'

जब मैं हाइट्स पहुँचा, तो मैंने बताया कि मैं सब कुछ ठीक से संपन्न होते देखने

आया हूँ; और जोसेफ, जो काफी परेशान दिख रहा था, मेरी उपस्थिति से संतुष्ट हुआ। श्री हीथक्लिफ ने कहा कि उन्हें मेरी आवश्यकता महसूस नहीं हुई; लेकिन अगर मैं चाहूँ तो रुककर अंतिम संस्कार की व्यवस्था कर सकता हूँ।

उन्होंने कहा, "बिल्कुल सही, उस मूर्ख के शरीर को चौराहे पर बिना किसी रस्म के दफना देना चाहिए। कल दोपहर मैं उसे दस मिनट के लिए अकेला छोड़कर गया था, और उस दौरान उसने घर के दोनों दरवाजे मेरे लिए बंद कर लिए, और उसने पूरी रात जानबूझकर शराब पीकर अपनी जान दे दी! आज सुबह हम जबरदस्ती अंदर घुसे, क्योंकि हमने उसे घोड़े की तरह उछलते हुए सुना; और वह वहीं पड़ा था, बेंच पर: उसकी खाल उतारना और सिर की खाल नोचना भी उसे नहीं जगा पाता। मैंने केनेथ को बुलवाया, और वह आया; लेकिन तब तक वह जानवर पूरी तरह से मुर्दा हो चुका था: वह मरा हुआ, ठंडा और बेजान था; इसलिए आप मानेंगे कि उसके बारे में और शोर मचाना बेकार था!"

बूढ़े नौकर ने इस कथन की पुष्टि की, लेकिन बुदबुदाते हुए कहा:

'काश वह खुद डॉक्टर के पास चला जाता! मुझे तो उससे बेहतर यही लगता कि मैं खुद ही डॉक्टर के पास चला जाता — और जब मैं वहां से निकला तो वह मरा नहीं था, ऐसा कुछ भी नहीं था!'

मैंने अंतिम संस्कार को गरिमापूर्ण रखने पर जोर दिया। श्री हीथक्लिफ ने कहा कि मैं इस मामले में भी अपनी मर्ज़ी चला सकता हूँ: बस, उन्होंने मुझे याद दिलाया कि इस पूरे खर्च का पैसा उनकी जेब से आया था। उनका व्यवहार कठोर और लापरवाह था, जो न तो खुशी और न ही दुख को दर्शाता था: बल्कि, यह किसी कठिन कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने पर मिली कठोर संतुष्टि को व्यक्त करता था। एक बार मैंने उनके चेहरे पर सचमुच उल्लास देखा: यह तब की बात है जब लोग ताबूत को घर से बाहर ले जा रहे थे। उन्होंने शोक मनाने का ढोंग किया: और हैरेटोन के साथ जाने से पहले, उन्होंने उस अभागे बच्चे को मेज पर उठाया और बड़े उत्साह से बुदबुदाया, 'अब, मेरे प्यारे बच्चे, तुम मेरे हो! और हम देखेंगे कि क्या एक ही हवा से झुकने पर एक पेड़ दूसरे पेड़ की तरह टेढ़ा नहीं हो जाता!' भोला-भाला बच्चा इस बात से खुश हो गया: वह हीथक्लिफ की मूंछों से खेलने लगा और उनके गालों को सहलाने लगा; लेकिन मैंने इसका अर्थ समझ लिया और तीखे लहजे में कहा, 'उस लड़के को मेरे साथ थ्रशक्रॉस ग्रेंज वापस जाना होगा, महोदय। दुनिया में उससे कम आपका कोई

नहीं है!'

'क्या लिंटन ने ऐसा कहा है?' उसने पूछा।

'बिल्कुल— उसने मुझे उसे ले जाने का आदेश दिया है,' मैंने जवाब दिया।

"खैर," उस बदमाश ने कहा, "अभी इस विषय पर बहस नहीं करेंगे: लेकिन मेरा मन कर रहा है कि मैं एक बच्चे को पालने की कोशिश करूं; इसलिए अपने मालिक को बता देना कि अगर वह इसे हटाने की कोशिश करे तो मुझे इसकी जगह अपना बच्चा रखना होगा। मैं हरेटन को बिना किसी विरोध के जाने देने का वादा नहीं करता; लेकिन मैं दूसरे को ज़रूर बुलाऊंगा! उसे बताना याद रखना।"

यह संकेत हमारे हाथ बांधने के लिए काफी था। मैंने लौटकर इसका सार दोहराया; और एडगर लिंटन, जो शुरू में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखा रहे थे, ने हस्तक्षेप करने की बात ही नहीं कही। मुझे नहीं लगता कि अगर वे इतने इच्छुक भी होते तो भी वे ऐसा कर पाते।

अब वह मेहमान वुदरिंग हाइट्स का मालिक बन चुका था: उसका उस पर पूरा अधिकार था, और उसने वकील को यह साबित कर दिया - जिसने बदले में इसे मिस्टर लिंटन को साबित कर दिया - कि अर्नशॉ ने जुए की लत को पूरा करने के लिए अपनी सारी ज़मीन गिरवी रख दी थी; और गिरवी रखने वाला हीथक्लिफ था। इस तरह हरेटन, जो अब उस इलाके का सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति होना चाहिए था, अपने पिता के कट्टर दुश्मन पर पूरी तरह निर्भर हो गया; और अपने ही घर में नौकर बनकर रह रहा है, वेतन के लाभ से वंचित: अपने अकेलेपन और अपने साथ हुए अन्याय की अज्ञानता के कारण वह खुद को संभालने में पूरी तरह असमर्थ है।

अध्याय अठारह

श्रीमती डीन ने आगे कहा, उस निराशाजनक दौर के बाद के बारह साल मेरे जीवन के

सबसे सुखद वर्ष थे: इस दौरान मेरी सबसे बड़ी परेशानियाँ हमारी नन्ही बच्ची की मामूली बीमारियों से उत्पन्न हुईं, जो उसे अमीर-गरीब सभी बच्चों की तरह झेलनी पड़ती थीं। पहले छह महीनों के बाद, वह एक लर्च के पेड़ की तरह बढ़ती गई, और श्रीमती लिंटन की धूल पर दोबारा हरियाली आने से पहले ही वह अपने तरीके से चलने-फिरने और बोलने लगी थी। वह एक उजाड़ घर में धूप लाने वाली सबसे प्यारी चीज थी: चेहरे से बेहद खूबसूरत, अर्नशॉ परिवार की तरह सुंदर गहरी आँखें, लेकिन लिंटन परिवार की तरह गोरी त्वचा, छोटे नैन-नक्श और सुनहरे घुंघराले बाल। उसका मन ऊँचा था, हालांकि कठोर नहीं, और एक संवेदनशील और भावुक हृदय से परिपूर्ण था। गहन लगाव की उसकी क्षमता मुझे उसकी माँ की याद दिलाती थी: फिर भी वह उससे मिलती-जुलती नहीं थी: क्योंकि वह कबूतर की तरह कोमल और सौम्य हो सकती थी, उसकी आवाज मधुर और भावपूर्ण थी: उसका गुस्सा कभी उग्र नहीं होता था; उसका प्यार कभी प्रचंड नहीं होता था: वह गहरा और कोमल था। हालांकि, यह मानना पड़ेगा कि उसकी प्रतिभा में कुछ कमियां भी थीं। शरारती स्वभाव और जिद्दीपन उनमें से एक था; और बिगड़ैल बच्चे, चाहे वे अच्छे स्वभाव के हों या चिड़चिड़े, अक्सर ऐसे ही जिद्दी हो जाते हैं। अगर कोई नौकर उसे परेशान कर देता, तो वह हमेशा कहती, 'मैं पापा को बता दूंगी!' और अगर पापा उसे एक नजर से भी डांटते, तो ऐसा लगता जैसे उसका दिल टूट गया हो: मुझे नहीं लगता कि उन्होंने कभी उससे कोई कठोर शब्द कहा हो। उन्होंने उसकी शिक्षा का पूरा जिम्मा खुद उठाया और इसे एक मनोरंजन बना लिया। सौभाग्य से, उसकी जिज्ञासा और तेज बुद्धि ने उसे एक कुशल विद्यार्थी बना दिया: उसने जल्दी और लगन से सीखा और पापा की शिक्षा को सार्थक किया।

तेरह साल की उम्र तक वह कभी भी अकेले पार्क की सीमा से बाहर नहीं गई थी। श्री लिंटन कभी-कभार ही उसे अपने साथ एक मील दूर तक ले जाते थे; लेकिन वह उसे किसी और के भरोसे नहीं छोड़ते थे। गिम्मर्टन नाम उसके लिए महत्वहीन था; अपने घर के अलावा, वह चैपल ही एकमात्र इमारत थी जिसके पास वह गई थी या जिसमें प्रवेश किया था। वुदरिंग हाइट्स और श्री हीथक्लिफ का उसके लिए कोई अस्तित्व नहीं था: वह पूर्णतया एकांतप्रिय थी; और जाहिर तौर पर, पूर्णतया संतुष्ट भी। कभी-कभी, अपने बचपन की खिड़की से देश का नजारा देखते हुए, वह गौर करती थी—

‘एलेन, मुझे उन पहाड़ियों की चोटी तक पैदल जाने में कितना समय लगेगा? मुझे आश्चर्य है कि दूसरी तरफ क्या है—क्या वह समुद्र है?’

‘नहीं, मिस कैथी,’ मैं जवाब देता; ‘ये फिर से पहाड़ियाँ हैं, बिल्कुल इन्हीं की तरह।’

‘और जब आप उन सुनहरी चट्टानों के नीचे खड़े होते हैं तो वे कैसी दिखती हैं?’ उसने एक बार पूछा था।

पेनिस्टोन क्रैग्स की अचानक ढलान ने विशेष रूप से उसका ध्यान आकर्षित किया; खासकर जब डूबता सूरज उस पर और सबसे ऊँची चोटियों पर चमक रहा था, और आसपास का पूरा इलाका छाया में डूबा हुआ था। मैंने समझाया कि वे पत्थरों के नंगे ढेर थे, जिनकी दरारों में इतनी मिट्टी भी नहीं थी कि एक बौना पेड़ भी पनप सके।

‘और शाम होने के काफी देर बाद भी ये इतने चमकीले क्यों रहते हैं?’ उसने आगे पूछा।

मैंने उत्तर दिया, ‘क्योंकि वे हमसे बहुत ऊँचाई पर हैं; आप उन पर चढ़ नहीं सकते, वे बहुत ऊँचे और ढलान वाले हैं। सर्दियों में वहाँ पाला हमसे पहले ही पड़ जाता है; और गर्मियों के अंत तक मैंने उत्तर-पूर्व की ओर उस काले गड्ढे के नीचे बर्फ देखी है!’

‘अरे, आप तो उन पर सवार थीं!’ वह खुशी से चिल्लाई। ‘तो मैं भी जा सकती हूँ, जब मैं बड़ी हो जाऊँगी। क्या पापा भी गए थे, एलेन?’

‘पापा आपको बताते, मिस,’ मैंने जल्दी से जवाब दिया, ‘कि वे घूमने लायक जगहें नहीं हैं। वो मैदानी इलाके, जहाँ आप उनके साथ घूमती हैं, कहीं ज़्यादा अच्छे हैं; और थ्रशक्रॉस पार्क तो दुनिया की सबसे खूबसूरत जगह है।’

‘लेकिन मैं इस पार्क को जानती हूँ, और मैं इन्हें नहीं जानती,’ उसने मन ही मन बुदबुदाया। ‘और मुझे उस सबसे ऊँचे शिखर से अपने चारों ओर देखना बहुत अच्छा लगेगा: मेरी छोटी टट्टू मिन्नी मुझे इसमें कुछ समय ले जाएगी।’

एक नौकरानी ने जब परियों की गुफा का ज़िक्र किया, तो कैथरीन उस सपने को पूरा करने की चाहत से भर उठीं। उन्होंने मिस्टर लिंटन से इस बारे में मज़ाक किया और उन्होंने वादा किया कि जब वह बड़ी हो जाएंगी, तो उन्हें यह यात्रा करने का मौका मिलेगा। लेकिन मिस कैथरीन अपनी उम्र महीनों में नापती थीं, और उनके मन में हमेशा यही सवाल रहता था, 'क्या मैं पेनस्टोन क्रैग्स जाने लायक बड़ी हो गई हूँ?' वहाँ जाने का रास्ता वूथरिंग हाइट्स के पास से होकर गुज़रता था। एडगर की हिम्मत नहीं

होती थी कि वह वहाँ से गुज़रे; इसलिए उन्हें हमेशा यही जवाब मिलता था, 'अभी नहीं, प्रिय: अभी नहीं।'

मैंने कहा कि श्रीमती हीथक्लिफ ने अपने पति को छोड़ने के बाद बारह साल से अधिक समय तक जीवित रहीं। उनका परिवार नाजुक स्वास्थ्य वाला था: उनमें और एडगर दोनों में वह स्वस्थता नहीं थी जो आमतौर पर इन इलाकों में देखने को मिलती है। उनकी अंतिम बीमारी क्या थी, मुझे निश्चित रूप से नहीं पता: मेरा अनुमान है कि दोनों की मृत्यु एक ही बीमारी से हुई, एक प्रकार का बुखार, जो शुरुआत में धीमा था, लेकिन लाइलाज था और अंत में तेजी से जीवन छीन लेता था। उन्होंने अपने भाई को पत्र लिखकर बताया कि वह चार महीने से बीमार थीं और अब उनके पास आने वाली हैं; क्योंकि उन्हें बहुत कुछ निपटाना था और वह उन्हें विदाई देना चाहती थीं और लिंटन को सुरक्षित उनके हवाले करना चाहती थीं। उनकी आशा थी कि लिंटन को उनके पास छोड़ दिया जाए, जैसे वह उनके साथ था: वह खुद को यह विश्वास दिलाना चाहती थीं कि उसके पिता उसकी देखभाल या शिक्षा का बोझ उठाने के इच्छुक नहीं थे। मेरे गुरु ने उनकी विनती को मानने में एक पल भी संकोच नहीं किया: हालांकि वह आम तौर पर घर से निकलने में हिचकिचाते थे, फिर भी वह इस पत्र का उत्तर देने के लिए तुरंत चले गए; कैथरीन को अपनी अनुपस्थिति में मेरी विशेष निगरानी में रखने का आदेश देते हुए, उन्होंने बार-बार यह आदेश दिया कि वह मेरे संरक्षण में भी पार्क से बाहर न भटके, लेकिन उन्होंने यह अनुमान नहीं लगाया था कि वह अकेले जाएगी।

वह तीन सप्ताह के लिए बाहर गए थे। पहले एक-दो दिन मेरी देखरेख में रहने वाली बच्ची पुस्तकालय के एक कोने में बैठी रही, इतनी उदास कि न तो पढ़ पा रही थी और न ही खेल पा रही थी: उस शांत अवस्था में उसने मुझे ज़्यादा परेशान नहीं किया; लेकिन उसके बाद वह चिड़चिड़ी और उदास रहने लगी; और मैं बहुत व्यस्त और बूढ़ा हो चुका था, इसलिए उसके मनोरंजन के लिए इधर-उधर भागना संभव नहीं था, तो मैंने एक ऐसा तरीका सोचा जिससे वह अपना मनोरंजन खुद कर सके। मैं उसे परिसर के चारों ओर घूमने के लिए भेजता था - कभी पैदल, कभी टट्टू पर; और जब वह लौटती थी तो मैं धैर्यपूर्वक उसकी सभी वास्तविक और काल्पनिक रोमांचक कहानियाँ सुनता था।

गर्मी अपने पूरे शबाब पर थी; और उसे अकेले घूमने का इतना शौक हो गया था कि वह अक्सर नाश्ते से लेकर शाम की चाय तक बाहर ही रहती थी; और फिर शामें

अपनी मनगढ़ंत कहानियाँ सुनाने में बीतती थीं। मुझे उसके सीमा तोड़ने का डर नहीं था; क्योंकि द्वार आमतौर पर बंद रहते थे, और मुझे लगता था कि अगर वे खुले भी होते तो वह शायद ही अकेले बाहर निकलती। दुर्भाग्य से, मेरा विश्वास गलत साबित हुआ। एक सुबह, आठ बजे, कैथरीन मेरे पास आई और बोली कि वह उस दिन एक अरब व्यापारी है, जो अपने कारवां के साथ रेगिस्तान पार करने जा रही है; और मुझे उसके और उसके जानवरों के लिए पर्याप्त भोजन देना होगा: एक घोड़ा, और तीन ऊँट, जिन्हें एक बड़े शिकारी कुत्ते और दो शिकारी कुत्तों द्वारा दर्शाया गया था। मैंने स्वादिष्ट व्यंजनों का अच्छा भंडार इकट्ठा किया, और उन्हें काठी के एक तरफ टोकरी में टांग दिया; और वह परी की तरह खुशी से उछल पड़ी, अपनी चौड़ी किनारी वाली टोपी और जालीदार घूंघट से जुलाई की धूप से बचते हुए, और खिलखिलाती हंसी के साथ भाग गई, मेरी सावधानी भरी सलाह का मज़ाक उड़ाते हुए कि सरपट न दौड़ें और जल्दी लौट आएं। वह शरारती बच्ची चाय के समय फिर कभी नहीं दिखी। एक यात्री, शिकारी कुत्ता, बूढ़ा और आरामपसंद होने के कारण लौट आया; लेकिन न तो कैथी, न टट्टू, न ही दोनों शिकारी कुत्ते किसी भी दिशा में दिखाई दिए: मैंने इस रास्ते और उस रास्ते पर दूत भेजे, और अंत में खुद उसकी तलाश में भटकने लगा। मैदान की सीमा पर एक बागान के चारों ओर बाड़ लगा रहा एक मजदूर था। मैंने उससे पूछा कि क्या उसने हमारी युवती को देखा है।

'मैंने उसे सुबह देखा,' उसने जवाब दिया: 'वह मुझसे हेज़ल की एक टहनी काटने को कह रही थी, और फिर उसने अपने गैलोवे घोड़े को उस झाड़ी के ऊपर से छलांग लगा दी, जहाँ वह सबसे नीची थी, और आँखों से ओझल हो गई।'

आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि यह खबर सुनकर मुझे कैसा लगा होगा। मुझे तुरंत समझ आ गया कि वह पेनस्टोन क्रैग्स के लिए निकल पड़ी होगी। 'उसका क्या होगा?' मैंने मन ही मन सोचा, उस जगह से धक्का देकर निकलते हुए जिसे वह आदमी ठीक कर रहा था, और सीधे मुख्य सड़क पर चल पड़ा। मैं मानो शर्त लगाकर चल रहा था, मील दर मील, जब तक कि एक मोड़ ने मुझे पहाड़ियों के नज़ारे तक नहीं पहुँचा दिया; लेकिन कैथरीन मुझे दूर-दूर तक कहीं भी नज़र नहीं आई। क्रैग्स मिस्टर हीथक्लिफ के घर से लगभग डेढ़ मील आगे हैं, और ग्रेंज से चार मील दूर हैं, इसलिए मुझे डर लगने लगा कि वहाँ पहुँचने से पहले ही रात हो जाएगी। 'और अगर वह वहाँ चढ़ते समय फिसल गई हो,' मैंने सोचा, 'और मर गई हो, या उसकी कुछ हड्डियाँ टूट गई हों?' मेरा

डर सचमुच असहनीय था; और, पहले तो मुझे फार्महाउस के पास से तेज़ी से गुज़रते हुए चार्ली, सबसे खूंखार शिकारी कुत्ते को, खिड़की के नीचे सूजे हुए सिर और खून बहते कान के साथ लेटे हुए देखकर सुखद राहत मिली। मैंने खिड़की खोली और दरवाजे की ओर दौड़कर अंदर आने के लिए ज़ोर-ज़ोर से दस्तक दी। एक महिला, जिसे मैं जानती थी और जो पहले गिम्मर्टन में रहती थी, ने दरवाजा खोला: वह श्री अर्नशॉ की मृत्यु के बाद से वहाँ नौकरानी के रूप में काम कर रही थी।

'अरे,' उसने कहा, 'तुम अपनी छोटी मालकिन को ढूंढने आए हो! घबराओ मत। वह यहाँ सुरक्षित है: लेकिन मुझे खुशी है कि यह मालिक नहीं है।'

'तो वो घर पर नहीं है, है ना?' मैंने हांफते हुए कहा, तेज चलने और घबराहट के कारण मेरी सांस फूल रही थी।

'नहीं, नहीं,' उसने जवाब दिया: 'वह और जोसेफ दोनों चले गए हैं, और मुझे लगता है कि वे इस घंटे या उससे अधिक समय में वापस नहीं आएंगे। आप अंदर जाइए और थोड़ा आराम कर लीजिए।'

मैं अंदर गया और देखा कि मेरी बिछड़ी हुई भेड़ चूल्हे पर बैठी है, एक छोटी सी कुर्सी पर झूल रही है जो बचपन में उसकी माँ की थी। उसकी टोपी दीवार पर टंगी थी, और वह बिल्कुल सहज लग रही थी, हँस रही थी और बातें कर रही थी, पूरी तरह खुश थी, हरेटन से - जो अब अठारह साल का एक हट्टा-कट्टा लड़का था - जो उसे बड़ी उत्सुकता और आश्चर्य से देख रहा था: उसकी ज़बान से लगातार निकल रहे शब्दों और सवालों में से उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

'बहुत खूब, मिस!' मैंने गुस्से भरे चेहरे के पीछे अपनी खुशी छुपाते हुए कहा। 'पापा के वापस आने तक यह तुम्हारी आखिरी सवारी है। मैं तुम्हें दोबारा दहलीज पार नहीं करने दूंगी, तुम शरारती बच्ची!'

'अहा, एलेन!' वह खुशी से चिल्लाई, उछलकर मेरे पास दौड़ आई। 'आज रात मेरे पास सुनाने के लिए एक मजेदार कहानी होगी; और इस तरह तुमने मुझे पहचान लिया। क्या तुम अपनी जिंदगी में पहले कभी यहाँ आई हो?'

'वो टोपी पहनो और तुरंत घर चलो,' मैंने कहा। 'मिस कैथी, मुझे तुमसे बहुत दुख हुआ है: तुमने बहुत बड़ी गलती की है! रूठने और रोने से कोई फायदा नहीं: इससे मेरी मेहनत की भरपाई नहीं होगी, जो मैंने तुम्हें ढूंढने के लिए पूरे देश में की है। सोचो मिस्टर लिंटन ने मुझे तुम्हें घर में रखने का जिम्मा सौंपा था; और तुम ऐसे ही भाग

गई! इससे पता चलता है कि तुम एक चालाक लोमड़ी हो, और अब कोई तुम पर भरोसा नहीं करेगा।'

'मैंने क्या किया?' वह सिसकते हुए बोली, और तुरंत संभल गई। 'पापा ने मुझ पर कोई आरोप नहीं लगाया: वह मुझे डांटेंगे नहीं, एलेन – वह कभी गुस्सा नहीं होते, तुम्हारी तरह!'

'आओ, आओ!' मैंने दोहराया। 'मैं रिबन बांध दूँगा। अब, नखरे मत दिखाओ। अरे, शर्म की बात है! तेरह साल के होकर भी तुम बिल्कुल बच्चे हो!'

यह विस्मयबोधक ध्वनि तब उत्पन्न हुई जब उसने अपने सिर से टोपी हटा दी और मेरी पहुँच से दूर चिमनी की ओर पीछे हट गई।

"नहीं," नौकर ने कहा, "श्रीमती डीन, उस प्यारी लड़की पर इतनी सख्ती मत कीजिए। हमने उसे रोक दिया: वह आगे बढ़ना चाहती थी, क्योंकि उसे डर था कि आप असहज हो जाएँगी। हैरेटन ने उसके साथ जाने की पेशकश की थी, और मुझे लगा कि उसे जाना चाहिए: पहाड़ियों के ऊपर का रास्ता बहुत ही खतरनाक है।"

चर्चा के दौरान, हैरेटोन अपने हाथों को अपनी जेब में डाले खड़ा रहा, बोलने में बहुत असहज महसूस कर रहा था; हालाँकि ऐसा लग रहा था कि उसे मेरा दखल पसंद नहीं आया।

'मुझे कब तक इंतजार करना पड़ेगा?' मैंने उस महिला की दखलंदाजी को अनसुना करते हुए कहा। 'दस मिनट में अंधेरा हो जाएगा। मिस कैथी, टट्टू कहाँ है? और फीनिक्स कहाँ है? अगर आप जल्दी नहीं आईं तो मैं आपको छोड़कर चला जाऊँगा; तो आप अपनी मर्जी से जा सकती हैं।'

उसने जवाब दिया, "घोड़ा बाड़े में है और फीनिक्स वहीं बंद है। उसे किसी ने काट लिया है और चार्ली को भी। मैं तुम्हें सब कुछ बताने वाली थी; लेकिन तुम बहुत गुस्से में हो और सुनने के लायक नहीं हो।"

मैंने उसकी टोपी उठाई और उसे वापस रखने के लिए उसके पास गया; लेकिन यह देखकर कि घरवाले उसका साथ दे रहे हैं, वह कमरे में इधर-उधर उछलने लगी; और जब मैंने उसका पीछा किया, तो वह चूहे की तरह फर्नीचर के ऊपर, नीचे और पीछे भागने लगी, जिससे मेरा पीछा करना हास्यास्पद हो गया। हैरेटन और वह महिला हंसने लगे, और वह भी उनके साथ हंसने लगी, और अधिक बदतमीजी करने लगी; तब तक मैं बहुत चिढ़कर चिल्लाया, — 'अच्छा, मिस कैथी, अगर आपको पता होता

कि यह किसका घर है तो आप खुशी-खुशी यहां से चली जातीं।’

‘यह तुम्हारे पिता की है, है ना?’ उसने हरेटन की ओर मुड़ते हुए कहा।

'नहीं,' उसने नीचे देखते हुए और शर्म से चेहरा लाल करते हुए उत्तर दिया।

वह उसकी आँखों की लगातार निगाहों को सहन नहीं कर पा रहा था, भले ही वे आँखें उसकी अपनी ही क्यों न हों।

‘तो फिर किसके हैं— तुम्हारे मालिक के?’ उसने पूछा।

उसका चेहरा और भी लाल हो गया, उसके चेहरे पर एक अलग ही भाव आ गया, उसने कुछ अपशब्द बुदबुदाए और मुंह फेर लिया।

‘उसका मालिक कौन है?’ उस चिड़चिड़ी लड़की ने मुझसे विनती करते हुए पूछा। ‘उसने “हमारे घर” और “हमारे लोगों” के बारे में बात की। मुझे लगा कि वह मालिक का बेटा है। और उसने कभी 'मालकिन' नहीं कहा: उसे कहना चाहिए था, है ना, अगर वह नौकर है?’

इस बचकानी बात पर हरेटन का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। मैंने चुपचाप प्रश्नकर्ता को हिलाया और अंततः उसे जाने के लिए तैयार करने में सफल रही।

‘अब, मेरा घोड़ा लाओ,’ उसने अपने अनजान रिश्तेदार से ऐसे कहा जैसे वह किसी अस्तबल के नौकर से बात कर रही हो। ‘और तुम मेरे साथ आ सकते हो। मैं देखना चाहती हूँ कि दलदल में जिन्न का शिकारी कहाँ से निकलता है, और उन परियों के बारे में सुनना चाहती हूँ, जैसा कि तुम उन्हें कहते हो: लेकिन जल्दी करो! क्या बात है? मेरा घोड़ा लाओ, मैं कहती हूँ।’

‘मैं तेरा सेवक बनने से पहले तुझे नरक में जाते हुए देखूंगा!’ लड़के ने गुर्राते हुए कहा।

‘तुम मुझे क्या करते हुए देखोगे!’ कैथरीन ने आश्चर्य से पूछा।

‘धिक्कार है तुम पर—बेशर्म चुड़ैल!’ उसने जवाब दिया।

‘देखो, मिस कैथी! देखो, तुम तो बड़ी अच्छी संगत में पड़ गई हो,’ मैंने बीच में कहा। ‘एक युवती के लिए ये कितने अच्छे शब्द हैं! कृपया उससे बहस मत करो। चलो, हम खुद मिन्नी को ढूंढते हैं और यहाँ से चले जाओ।’

‘लेकिन, एलेन,’ वह अचरज से घूरते हुए चिल्लाई, ‘उसकी हिम्मत कैसे हुई मुझसे ऐसा बोलने की? क्या उसे मेरी बात नहीं माननी चाहिए? तुम दुष्ट प्राणी, मैं पापा को बता दूंगी कि तुमने क्या कहा। — अब बताओ!’

हैरेटोन को इस खतरे का एहसास नहीं हुआ; इसलिए गुस्से से उसकी आँखों में आंसू आ गए। उसने महिला की ओर मुड़कर कहा, 'तुम टट्टू लाओ और मेरे कुत्ते को अभी इसी वक्त आज़ाद करो!'

'नरमी से, महोदया,' उसने उत्तर दिया; 'शिष्ट व्यवहार करने से आपका कुछ भी नुकसान नहीं होगा। यद्यपि श्री हरेटन, स्वामी के पुत्र नहीं हैं, वे आपके चचेरे भाई हैं: और मुझे कभी भी आपकी सेवा करने के लिए नियुक्त नहीं किया गया था।'

कैथी ने तिरस्कारपूर्ण हंसी के साथ चिल्लाकर कहा, 'वह मेरा चचेरा भाई है!'

'जी हां, बिलकुल,' उसके आलोचक ने जवाब दिया।

'ओह, एलेन! उन्हें ऐसी बातें कहने मत दो,' वह बड़ी मुश्किल से बोली। 'पापा मेरे चचेरे भाई को लंदन से लाने गए हैं: मेरा चचेरा भाई एक रईस का बेटा है। मेरा...' वह रुक गई और फूट-फूटकर रोने लगी; ऐसे मसखरे के साथ रिश्ते के ख्याल मात्र से ही वह परेशान हो गई थी।

'चुप रहो, चुप रहो!' मैंने फुसफुसाते हुए कहा; 'मिस कैथी, लोगों के कई चचेरे भाई-बहन हो सकते हैं और वे हर तरह के हो सकते हैं, इससे कोई नुकसान नहीं होता; बस अगर वे अप्रिय और बुरे हों तो उनकी संगति में रहने की जरूरत नहीं है।'

'वह मेरा चचेरा भाई नहीं है, एलेन!' वह सोच-विचार से नए दुख में डूबती हुई बोली और इस विचार से राहत पाने के लिए मेरी बाहों में लिपट गई।

मुझे उस महिला और नौकर के आपसी खुलासों पर बहुत गुस्सा आया; मुझे पूरा यकीन था कि लिंटन के आने की खबर, जो महिला ने दी थी, मिस्टर हीथक्लिफ को बता दी गई होगी; और मुझे पूरा विश्वास था कि कैथरीन अपने पिता के लौटने पर सबसे पहले उनके उस बयान का स्पष्टीकरण मांगेगी जिसमें उन्होंने उसके असभ्य खानदान के रिश्तेदारों के बारे में कहा था। हरेटन, नौकर समझे जाने की अपनी झुंझलाहट से उबरते हुए, उसकी परेशानी से प्रभावित हुआ; और टट्टू को दरवाजे तक लाकर, उसने उसे शांत करने के लिए, कुत्ते के बाड़े से एक सुंदर टेढ़ी टांगों वाला टेरियर पिल्ला निकाला और उसके हाथ में देते हुए उसे सीटी बजाने को कहा! क्योंकि उसका इरादा कुछ और नहीं था। अपने विलाप को रोकते हुए, उसने भय और आतंक भरी निगाहों से उसे देखा, फिर फूट-फूट कर रोने लगी।

उस बेचारे के प्रति इस घृणा को देखकर मैं अपनी हंसी नहीं रोक पाया; वह एक सुगठित, एथलेटिक युवक था, जिसके चेहरे के भाव सुंदर थे, वह हट्टा-कट्टा और

स्वस्थ था, लेकिन उसने ऐसे कपड़े पहने थे जो उसके खेत में काम करने और जंगली मैदानों में खरगोशों और शिकार की तलाश में घूमने के दैनिक कार्यों के अनुरूप थे। फिर भी, मुझे लगा कि उसके चेहरे में उसके पिता से कहीं अधिक गुण थे। बेशक, ये गुण खरपतवारों के जंगल में खो गए थे, जिनकी सघनता उनकी उपेक्षित वृद्धि को भी ढक रही थी; फिर भी, उपजाऊ मिट्टी के प्रमाण थे, जो अन्य और अनुकूल परिस्थितियों में भरपूर फसल दे सकती थी। मेरा मानना है कि श्री हीथक्लिफ ने उसके साथ शारीरिक दुर्व्यवहार नहीं किया था; यह उसके निडर स्वभाव के कारण था, जिसने उसे इस तरह के अत्याचार का कोई प्रलोभन नहीं दिया: उसमें वह डरपोकपन नहीं था जो हीथक्लिफ के विचार में दुर्व्यवहार को बढ़ावा देता। ऐसा प्रतीत होता था कि उसने अपनी सारी दुर्भावना उसे एक दरिंदा बनाने पर उतार रखी थी: उसे कभी पढ़ना-लिखना नहीं सिखाया गया; उसकी किसी भी बुरी आदत के लिए उसे कभी डांटा नहीं गया, सिवाय उसके रखवाले को नाराज़ करने के; उसे कभी भी सद्गुण की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ाया गया, न ही उसे किसी उपदेश से बुराई से बचाया गया। और मैंने जो सुना है, उसके अनुसार जोसेफ ने उसके पतन में बहुत योगदान दिया, अपनी संकीर्ण मानसिकता और पक्षपात के कारण, जिसने उसे बचपन से ही चापलूसी और दुलार करने के लिए प्रेरित किया, क्योंकि वह पुराने परिवार का मुखिया था। और जिस प्रकार वह कैथरीन अर्नशॉ और हीथक्लिफ पर, जब वे बच्चे थे, मालिक को परेशान करने और उन्हें शराब में सुकून ढूंढने के लिए मजबूर करने का आरोप लगाता था, जिसे वह उनके 'घटिया तरीके' कहता था, उसी प्रकार अब उसने हैरेटन की सारी गलतियों का बोझ अपनी संपत्ति पर कब्जा करने वाले के कंधों पर डाल दिया। अगर लड़का गाली देता, तो वह उसे सुधारता नहीं: चाहे वह कितना भी दोषी व्यवहार करे। जोसेफ को उसे सबसे बुरे अंजाम तक पहुँचते देखकर संतोष मिलता था: उसने माना कि लड़का बर्बाद हो चुका है, उसकी आत्मा विनाश की ओर जा रही है; लेकिन फिर उसने सोचा कि हीथक्लिफ को इसका हिसाब देना होगा। हैरेटन का खून उसी के हाथों लिया जाएगा; और इस विचार में उसे अपार सांत्वना मिली। जोसेफ ने उसके मन में नाम और वंश का गौरव भर दिया था; अगर हिम्मत होती तो वह उसके और हाइट्स के वर्तमान मालिक के बीच नफरत पैदा कर देता: लेकिन उस मालिक के प्रति उसका डर अंधविश्वास मात्र था; और उसने उसके बारे में अपनी भावनाओं को दबी आवाज़ में इशारों और निजी बातों तक ही सीमित रखा। मैं यह

दावा नहीं करता कि मुझे वुदरिंग हाइट्स में उन दिनों के रहन-सहन की अच्छी जानकारी है: मैं केवल सुनी-सुनाई बातों के आधार पर बोल रहा हूँ; क्योंकि मैंने बहुत कम देखा है। ग्रामीणों ने बताया कि मिस्टर हीथक्लिफ पास में ही रहते थे, और अपने किरायेदारों के प्रति एक क्रूर और कठोर जमींदार थे; लेकिन घर के भीतर, महिलाओं के प्रबंधन में उसका पुराना आरामदायक स्वरूप फिर से प्राप्त हो गया था, और हिंडले के समय में आम तौर पर होने वाले दंगे-फसाद अब उसकी दीवारों के भीतर नहीं होते थे। मालिक इतना उदास था कि वह अच्छे या बुरे, किसी से भी मेलजोल नहीं रखना चाहता था; और वह आज भी वैसा ही है।

लेकिन इससे मेरी कहानी आगे नहीं बढ़ रही है। मिस कैथी ने टेरियर की सुलह की पेशकश ठुकरा दी और अपने कुत्तों, चार्ली और फीनिक्स को वापस माँग लिया। वे लंगड़ाते और सिर झुकाए हुए आए; और हम सब उदास होकर घर के लिए निकल पड़े। मैं अपनी छोटी सी प्रेमिका से यह नहीं जान पाया कि उसने दिन कैसे बिताया; सिवाय इसके कि, जैसा कि मैंने अनुमान लगाया, उसकी तीर्थयात्रा का लक्ष्य पेनस्टोन क्रैग्स था; और वह बिना किसी परेशानी के फार्महाउस के द्वार पर पहुँची, तभी हरेटन कुछ कुत्तों के साथ बाहर आया, जिन्होंने उसके पीछे लगे कुत्तों पर हमला कर दिया। उनके मालिकों के अलग करने से पहले ही उनके बीच एक भयंकर लड़ाई हुई: यही परिचय था। कैथरीन ने हरेटन को बताया कि वह कौन है और कहाँ जा रही है; और उससे रास्ता दिखाने के लिए कहा: अंत में, उसे अपने साथ चलने के लिए मना लिया। उसने परी गुफा और बीस अन्य विचित्र स्थानों के रहस्य खोले। लेकिन, अपमानित होने के कारण, मुझे उन दिलचस्प चीजों का वर्णन करने का अवसर नहीं मिला जो उसने देखीं। मुझे यह समझ में आया कि उसका गाइड उसका चहेता था, जब तक कि उसने उसे नौकर कहकर संबोधित नहीं किया, जिससे उसकी भावनाएं आहत हुईं; और हीथक्लिफ की नौकरानी ने उसे चचेरा भाई कहकर उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई। फिर उसके द्वारा इस्तेमाल की गई भाषा उसके दिल में चुभ गई; वह जो ग्रेंज में सभी के लिए हमेशा 'प्यार', 'डार्लिंग', 'रानी' और 'परी' कहलाती थी, उसे एक अजनबी द्वारा इस तरह अपमानित किया जाना! वह इसे समझ नहीं पाई; और मुझे बड़ी मुश्किल से उससे यह वादा लेना पड़ा कि वह अपने पिता के सामने यह शिकायत नहीं रखेगी। मैंने समझाया कि कैसे उसके पिता पूरे घर के हाइट्स में रहने पर आपत्ति जताते हैं, और यह जानकर उन्हें कितना दुख होगा कि वह वहाँ थी; लेकिन मैंने सबसे

ज़्यादा इस बात पर ज़ोर दिया कि अगर उसने मेरे द्वारा उनके आदेशों की अनदेखी का खुलासा किया, तो शायद वह इतना नाराज़ हो जाएँगे कि मुझे वहाँ से जाना पड़ेगा; और कैथी यह सोच भी नहीं सकती थी: उसने अपना वचन दिया, और मेरे लिए उसे निभाया। आख़िरकार, वह एक प्यारी सी बच्ची थी।

अध्याय XIX

काले बॉर्डर वाले एक पत्र में मेरे स्वामी के लौटने की सूचना दी गई थी। इसाबेला का निधन हो चुका था; और उन्होंने मुझे अपनी बेटी के लिए शोक मनाने और अपने युवा भतीजे के लिए एक कमरा और अन्य व्यवस्था करने के लिए लिखा था। अपने पिता के वापस आने की उम्मीद से कैथरीन खुशी से झूम उठी; और अपने 'असली' चचेरे भाई के अनगिनत गुणों की आशा में डूब गई। उनके आने की अपेक्षित शाम आ गई। सुबह से ही वह अपने छोटे-मोटे कामों में व्यस्त थी; और अब अपनी नई काली फ्रॉक पहने हुए—बेचारी! उसकी चाची की मृत्यु का उस पर कोई खास दुख नहीं था—वह लगातार चिंता जताते हुए मुझे मजबूर कर रही थी कि मैं उसके साथ मैदान से नीचे जाकर उनसे मिलूँ।

‘लिंटन मुझसे सिर्फ छह महीने छोटा है,’ वह बड़बड़ा रही थी, जब हम पेड़ों की छाँव में, काईदार घास के ऊबड़-खाबड़ मैदानों पर इत्मीनान से टहल रहे थे। ‘उसके साथ खेलना कितना सुखद होगा! चाची इसाबेला ने पापा को उनके बालों की एक सुंदर लट भेजी थी; वह मेरे बालों से हल्की थी – ज़्यादा सुनहरी और उतनी ही सुंदर। मैंने उसे एक छोटे से कांच के डिब्बे में संभाल कर रखा है; और मैं अक्सर सोचती हूँ कि उसके मालिक को देखना कितना सुखद होगा। ओह! मैं कितनी खुश हूँ – और पापा, प्यारे पापा! आओ, एलेन, चलो दौड़ें! आओ, दौड़ें।’

वह दौड़ी, लौटी और फिर दौड़ी, ऐसा कई बार हुआ जब तक कि मेरे शांत कदमों

की आहट द्वार तक नहीं पहुंची, और फिर वह रास्ते के किनारे घास के मैदान पर बैठ गई, और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने की कोशिश की; लेकिन यह असंभव था: वह एक मिनट भी स्थिर नहीं रह सकती थी।

'कितनी देर हो गई है!' वह चिल्लाई। 'अरे, मैंने देखा, सड़क पर धूल है – वे आ रहे हैं! नहीं! वे कब आएंगे? क्या हम थोड़ा आगे नहीं जा सकते – आधा मील, एलेन, बस आधा मील? हाँ कहो: मोड़ पर बर्च के पेड़ों के उस झुंड की ओर!'

मैंने दृढ़ता से इनकार कर दिया। आखिरकार उसका इंतज़ार खत्म हुआ: चलती गाड़ी नज़र आ गई। मिस कैथी ने खिड़की से झांकते अपने पिता का चेहरा देखते ही चीख मारी और अपनी बाहें फैला दीं। वह भी लगभग उतनी ही उत्सुकता से नीचे उतरे; और काफी देर तक उन्हें एक-दूसरे के अलावा किसी और के बारे में सोचने का समय नहीं मिला। जब वे एक-दूसरे को प्यार से सहला रहे थे, मैंने लिंटन को देखने के लिए अंदर झाँका। वह एक कोने में सो रहा था, गर्म, फर से लिपटे हुए लबादे में, मानो सर्दी का मौसम हो। एक पीला, नाज़ुक, स्त्री जैसा लड़का, जो मेरे मालिक का छोटा भाई लग सकता था, इतनी समानता थी: लेकिन उसके चेहरे पर एक कमज़ोर चिड़चिड़ाहट थी जो एडगर लिंटन में कभी नहीं थी। बाद वाले ने मुझे देखते हुए देखा; और हाथ मिलाने के बाद, मुझे दरवाज़ा बंद करने और उसे परेशान न करने की सलाह दी; क्योंकि यात्रा ने उसे थका दिया था। कैथी बस एक नजर डालना चाहती थी, लेकिन उसके पिता ने उसे आने के लिए कहा, और वे दोनों साथ में पार्क में चले गए, जबकि मैं नौकरों को तैयार करने के लिए आगे-आगे जल्दी से चला गया।

"अब, मेरी प्यारी बेटी," श्री लिंटन ने अपनी बेटी से कहा, जब वे सामने की सीढ़ियों के नीचे रुके: "तुम्हारा चचेरा भाई तुम्हारी तरह इतना बलवान या हंसमुख नहीं है, और याद है ना, उसने कुछ ही समय पहले अपनी माँ को खो दिया है; इसलिए, उससे तुरंत तुम्हारे साथ खेलने-कूदने की उम्मीद मत करना। और उससे ज्यादा बातें करके उसे परेशान मत करना: कम से कम आज शाम तो उसे चुप रहने दो, ठीक है?"

'जी हां, पापा,' कैथरीन ने उत्तर दिया: 'लेकिन मैं उनसे मिलना चाहती हूं; और उन्होंने एक बार भी बाहर नहीं देखा है।'

गाड़ी रुक गई; और सोए हुए व्यक्ति के जागने पर, उसके चाचा ने उसे उठाकर जमीन पर लिटा दिया।

'यह तुम्हारी चचेरी बहन कैथी है, लिंटन,' उसने उनके छोटे हाथों को एक साथ

मिलाते हुए कहा। 'वह तुम्हें पहले से ही बहुत पसंद करती है; और ध्यान रखना कि आज रात रोकर उसे दुखी मत करना। अब खुश रहने की कोशिश करो; यात्रा समाप्त हो गई है, और अब तुम्हारे पास आराम करने और अपनी इच्छानुसार मनोरंजन करने के अलावा और कुछ नहीं है।'

'तो मुझे सोने दो,' लड़के ने कैथरीन के अभिवादन से पीछे हटते हुए उत्तर दिया; और उसने अपनी उंगलियों से आने वाले आँसू पोंछे।

'आओ, आओ, यहाँ एक अच्छा बच्चा है,' मैंने फुसफुसाते हुए उसे अंदर ले जाते हुए कहा। 'तुम उसे भी रुला दोगे – देखो उसे तुम्हारे लिए कितना दुख हो रहा है!'

मुझे नहीं पता कि उसे उसके लिए दुख था या नहीं, लेकिन उसकी चचेरी बहन ने भी उसी की तरह उदास चेहरा बना लिया और अपने पिता के पास लौट गई। तीनों अंदर गए और पुस्तकालय में चढ़ गए, जहाँ चाय तैयार रखी थी। मैंने लिंटन की टोपी और लबादा उतारकर उसे मेज के पास एक कुर्सी पर बिठा दिया; लेकिन बैठते ही वह फिर से रोने लगा। मेरे गुरु ने पूछा कि क्या बात है।

'मैं कुर्सी पर नहीं बैठ सकता,' लड़के ने रोते हुए कहा।

'तो सोफे पर जाओ, एलेन तुम्हारे लिए चाय लाएगी,' उसके चाचा ने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया।

मुझे पूरा यकीन था कि यात्रा के दौरान वह अपने बीमार और चिड़चिड़े साथी की वजह से बहुत परेशान हो गया था। लिंटन धीरे-धीरे थककर लेट गया। कैथी एक छोटा सा स्टूल और अपना प्याला उसके पास ले आई। पहले तो वह चुपचाप बैठी रही; लेकिन यह ज्यादा देर तक नहीं चल सका: उसने अपने छोटे चचेरे भाई को लाड़-प्यार करने का निश्चय कर लिया था, जैसा वह चाहती थी; और उसने उसके घुंघराले बालों को सहलाना, उसके गालों को चूमना और उसे अपनी तश्तरी में चाय पिलाना शुरू कर दिया, जैसे किसी बच्चे को पिलाती है। इससे उसे अच्छा लगा, क्योंकि उसकी हालत में कुछ खास सुधार नहीं हुआ था: उसने अपनी आँखें पोंछीं और उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

'ओह, वह बहुत अच्छा करेगा,' एक मिनट तक उन्हें देखने के बाद मालिक ने मुझसे कहा। 'बेहद अच्छा, अगर हम उसे अपने पास रख सकें, एलेन। अपनी उम्र के बच्चे की संगति से उसमें जल्द ही नई ऊर्जा का संचार होगा, और शक्ति की कामना करके वह उसे प्राप्त भी कर लेगा।'

‘हाँ, अगर हम उसे अपने पास रख सकें!’ मैंने मन ही मन सोचा; और मुझे इस बात का गहरा संदेह होने लगा कि इसकी कोई उम्मीद नहीं है। फिर मैंने सोचा, वो कमज़ोर बच्चा वुदरिंग हाइट्स में कैसे रहेगा? उसके पिता और हैरेटन के बीच, कैसे साथी और शिक्षक बनेंगे वो। हमारी शंकाएँ जल्द ही दूर हो गईं—मेरी उम्मीद से भी पहले। चाय खत्म होने के बाद, मैं बच्चों को ऊपर ले गई थी और देखा कि लिंटन सो रहा है—जब तक वो सो नहीं गया, तब तक उसने मुझे जाने नहीं दिया—मैं नीचे आई और हॉल में मेज के पास खड़ी होकर मिस्टर एडगर के लिए एक मोमबत्ती जला रही थी, तभी एक नौकरानी रसोई से बाहर आई और मुझे बताया कि मिस्टर हीथक्लिफ का नौकर जोसेफ दरवाजे पर है और मालिक से बात करना चाहता है।

मैंने बड़ी घबराहट के साथ कहा, 'मैं पहले उनसे पूछूंगा कि वे क्या चाहते हैं। लोगों को परेशान करने का यह बहुत ही अनुचित समय है, और वह भी तब जब वे लंबी यात्रा से लौटे हों। मुझे नहीं लगता कि मालिक उनसे मिल सकते हैं।'

मेरे ये शब्द कहते ही जोसेफ रसोई से आगे बढ़ चुका था और अब हॉल में आ गया। उसने रविवार के वस्त्र पहन रखे थे, उसका चेहरा अत्यंत पाखंडी और चिड़चिड़ा था, और एक हाथ में टोपी और दूसरे हाथ में छड़ी पकड़े हुए वह चटाई पर अपने जूते साफ करने लगा।

मैंने ठंडे स्वर में कहा, 'शुभ संध्या, जोसेफ। आज रात आप यहाँ किस काम से आए हैं?'

'मैंने मास्टर लिंटन से बात की थी,' उसने मुझे तिरस्कारपूर्वक एक तरफ धकेलते हुए जवाब दिया।

मैंने आगे कहा, ‘श्रीमान लिंटन सोने जा रहे हैं; अगर आपको कुछ खास कहना न हो, तो मुझे यकीन है कि वे अभी नहीं सुनेंगे। आप बेहतर होगा कि वहीं बैठ जाइए और अपना संदेश मुझे सौंप दीजिए।’

‘उसका रहम कौन सा है?’ उस व्यक्ति ने बंद दरवाजों की कतार का जायजा लेते हुए पूछा।

मुझे समझ आ गया था कि वह मेरी मध्यस्थता को अस्वीकार करने पर तुला हुआ है, इसलिए मैं बड़ी अनिच्छा से पुस्तकालय गया और उस असमय आगंतुक की सूचना देते हुए उसे अगले दिन तक के लिए छुट्टी देने का सुझाव दिया। श्री लिंटन के पास मुझे ऐसा करने की अनुमति देने का समय ही नहीं था, क्योंकि जोसेफ मेरे ठीक पीछे

आ गया और कमरे में घुसकर मेज के दूसरी तरफ बैठ गया, अपनी दोनों मुट्ठियों को अपनी छड़ी के सिरे पर रखकर, और ऊंचे स्वर में बोलने लगा, मानो किसी विरोध की आशंका जता रहा हो।

'हैथक्लिफ ने मुझे अपने बेटे को बुलाने के लिए भेजा है, और मुझे उसके बारे में वापस नहीं जाना चाहिए।'

एडगर लिंटन एक मिनट तक चुप रहे; उनके चेहरे पर गहरे दुःख के भाव छा गए: वे अपने कारण बच्चे पर तरस खाना चाहते थे; लेकिन, इसाबेला की आशाओं, आशंकाओं, अपने बेटे के लिए उसकी चिंताओं और उसे उनकी देखरेख में सौंपने की उसकी सिफारिशों को याद करके, उसे सौंपने की संभावना से उन्हें गहरा दुख हुआ और वे मन ही मन सोचने लगे कि इसे कैसे टाला जा सकता है। कोई उपाय समझ में नहीं आया: उसे अपने पास रखने की इच्छा जताने मात्र से ही दावेदार और भी दृढ़ हो जाता: उसे सौंपने के अलावा कोई चारा नहीं बचा था। हालांकि, वे उसे नींद से जगाने वाले नहीं थे।

उन्होंने शांत भाव से उत्तर दिया, “श्री हीथक्लिफ को बता दीजिए कि उनका बेटा कल वुदरिंग हाइट्स आएगा। वह बिस्तर पर है और इतनी दूर जाने के लिए बहुत थका हुआ है। आप उन्हें यह भी बता दीजिए कि लिंटन की मां चाहती हैं कि वह मेरी देखरेख में रहे; और इस समय उसका स्वास्थ्य बहुत नाजुक है।”

‘नोआ!’ जोसेफ ने फर्श पर अपना सहारा पटकते हुए और अधिकारपूर्ण लहजा अपनाते हुए कहा। ‘नोआ! इसका कोई मतलब नहीं है। हैथक्लिफ न तो अपनी माँ को गिनता है, न ही तुम्हें; लेकिन वह अपने बेटे को अपने पास रखेगा; और मुझे उसे ले जाना होगा - तो अब तुम जान गए!’

‘आज रात तुम ऐसा नहीं करोगी!’ लिंटन ने दृढ़ता से उत्तर दिया। ‘तुरंत नीचे जाओ और अपने मालिक को वही दोहराओ जो मैंने कहा है। एलेन, उन्हें नीचे ले चलो। जाओ—’

और, उसने गुस्से में भरे बुजुर्ग को बांह से उठाकर कमरे से बाहर निकाल दिया और दरवाजा बंद कर दिया।

‘वर्राह वेल!’ यूसुफ ने धीरे-धीरे पीछे हटते हुए चिल्लाकर कहा। ‘कल सुबह वो खुद आएगा, और अगर हिम्मत है तो उसे बाहर निकाल दो!’

अध्याय XX

इस खतरे को टालने के लिए, श्री लिंटन ने मुझे लड़के को कैथरीन के टट्टू पर बिठाकर जल्दी घर ले जाने का आदेश दिया; और उन्होंने कहा, 'चूंकि अब उसके भाग्य, चाहे अच्छा हो या बुरा, पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं रहेगा, इसलिए मेरी बेटी को उसके बारे में कुछ भी मत बताना: वह अब उससे मेलजोल नहीं रख सकती, और उसके लिए बेहतर है कि वह उसकी निकटता से अनजान रहे; कहीं ऐसा न हो कि वह बेचैन हो जाए और हाइट्स जाने के लिए उत्सुक हो जाए। बस उसे बता देना कि उसके पिता ने उसे अचानक बुलवाया था, और उसे हमें छोड़कर जाना पड़ा है।'

लिंटन को सुबह पांच बजे बिस्तर से उठना बिल्कुल पसंद नहीं था, और जब उसे बताया गया कि उसे आगे की यात्रा के लिए तैयार होना होगा तो वह आश्चर्यचकित रह गया; लेकिन मैंने यह कहकर बात को नरम कर दिया कि वह अपने पिता, श्री हीथक्लिफ के साथ कुछ समय बिताने जा रहा है, जो उससे मिलने के लिए इतने उत्सुक थे कि वे अपनी पिछली यात्रा से ठीक होने तक इस खुशी को टालना नहीं चाहते थे।

'मेरे पिताजी!' वह अजीब सी उलझन में चिल्लाया। 'माँ ने मुझे कभी नहीं बताया कि मेरे पिताजी भी हैं। वे कहाँ रहते हैं? मैं चाचा के साथ रहना पसंद करूँगा।'

मैंने जवाब दिया, 'वह ग्रेंज से थोड़ी दूरी पर रहते हैं; उन पहाड़ियों के ठीक उस पार: ज़्यादा दूर नहीं, लेकिन जब आप तरोताज़ा हो जाएँ तो पैदल चलकर यहाँ आ सकती हैं। और आपको घर जाकर उनसे मिलने की खुशी होनी चाहिए। आपको उनसे वैसे ही प्यार करने की कोशिश करनी चाहिए जैसे आपने अपनी माँ से किया था, और फिर वह भी आपसे प्यार करेंगे।'

'लेकिन मैंने उसके बारे में पहले कभी क्यों नहीं सुना?' लिंटन ने पूछा। 'माँ और वह दूसरे लोगों की तरह साथ क्यों नहीं रहते थे?'

मैंने उत्तर दिया, 'उन्हें कुछ काम के सिलसिले में उत्तर में रहना पड़ा, और आपकी माँ की सेहत के लिए उन्हें दक्षिण में रहना आवश्यक था।'

‘और मम्मी ने मुझसे उनके बारे में बात क्यों नहीं की?’ बच्चे ने ज़िद करते हुए पूछा। ‘वह अक्सर चाचा के बारे में बात करती थीं, और मुझे उनसे बहुत पहले ही प्यार हो गया था। मैं पापा से कैसे प्यार करूँ? मैं उन्हें जानता ही नहीं।’

‘ओह, सभी बच्चे अपने माता-पिता से प्यार करते हैं,’ मैंने कहा। ‘शायद तुम्हारी माँ ने सोचा होगा कि अगर वह तुम्हारे सामने उनका ज़िक्र बार-बार करेगी तो तुम उनके साथ रहना चाहोगे। चलो जल्दी करें। इतनी खूबसूरत सुबह में जल्दी सवारी करना एक घंटे और सोने से कहीं बेहतर है।’

‘क्या वह हमारे साथ चलेगी,’ उसने पूछा, ‘वह छोटी लड़की जिसे मैंने कल देखा था?’

‘अभी नहीं,’ मैंने उत्तर दिया।

‘क्या वह चाचा हैं?’ उसने आगे पूछा।

‘नहीं, मैं वहाँ आपका साथी बनूँगा,’ मैंने कहा।

लिंटन अपने तकिए पर वापस लेट गया और गहरी सोच में डूब गया।

‘मैं चाचा के बिना नहीं जाऊंगा,’ उसने अंततः रोते हुए कहा। ‘मुझे नहीं पता कि आप मुझे कहाँ ले जाना चाहते हैं।’

मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि अपने पिता से मिलने में आनाकानी करना कितनी बड़ी गलती है; फिर भी वह कपड़े पहनने से लगातार इनकार करता रहा, और मुझे उसे बिस्तर से उठाने के लिए अपने मालिक की मदद लेनी पड़ी। आखिरकार, कई झूठे आश्वासनों के साथ वह आखिरकार उठ खड़ा हुआ: कि मिस्टर एडगर और कैथी उससे मिलने आएंगे, और ऐसे ही कई झूठे वादे, जो मैंने रास्ते भर बीच-बीच में दोहराए। कुछ देर बाद, हीथर की खुशबू से भरी हवा, तेज धूप और मिन्नी की मधुर चाल ने उसकी उदासी दूर कर दी। वह अपने नए घर और वहां रहने वालों के बारे में अधिक रुचि और उत्साह से सवाल पूछने लगा।

'क्या वुदरिंग हाइट्स थ्रशक्रॉस ग्रेंज जितना ही सुखद स्थान है?' उसने घाटी में अंतिम नज़र डालने के लिए मुड़ते हुए पूछा, जहाँ से एक हल्की धुंध उठ रही थी और नीले आकाश के तल पर एक ऊनी बादल का रूप ले रही थी।

मैंने जवाब दिया, ‘यह उतना घने पेड़ों से घिरा हुआ नहीं है, और उतना बड़ा भी

नहीं है, लेकिन चारों ओर का नज़ारा बेहद खूबसूरत है; और यहाँ की हवा भी सेहतमंद है – ताज़ी और सूखी। शायद आपको पहली नज़र में यह इमारत पुरानी और अंधेरी लगे; हालाँकि यह एक अच्छा घर है: आस-पड़ोस में सबसे बढ़िया घरों में से एक। और आप खुले मैदानों में खूब सैर कर पाएँगी। हरेटन अर्नशॉ – यानी मिस कैथी का दूसरा चचेरा भाई, और एक तरह से आपका भी – आपको सबसे खूबसूरत जगहें दिखाएगा; और अच्छे मौसम में आप एक किताब लेकर किसी हरे-भरे मैदान में बैठ सकती हैं और उसे अपना अध्ययन कक्ष बना सकती हैं; और कभी-कभी आपके चाचा भी आपके साथ सैर पर आ सकते हैं: वे अक्सर पहाड़ियों पर घूमने जाते हैं।'

'और मेरे पिता कैसे हैं?' उसने पूछा। 'क्या वह चाचा की तरह जवान और सुंदर हैं?'

मैंने कहा, 'वह जवान तो है, लेकिन उसके बाल और आंखें काली हैं, और वह पहले से ज्यादा गंभीर दिखता है; और वह पहले से लंबा और बड़ा भी है। शायद पहली बार में वह आपको उतना सौम्य और दयालु न लगे, क्योंकि यह उसका स्वभाव नहीं है: फिर भी, ध्यान रखना, उसके साथ खुलकर और सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना; और स्वाभाविक रूप से वह तुम्हें किसी भी चाचा से ज्यादा प्यार करेगा, क्योंकि तुम उसके अपने हो।'

'काले बाल और काली आंखें!' लिंटन ने सोचा। 'मैं उसे पसंद नहीं कर सकती। तो फिर मैं उसके जैसी नहीं हूँ, है ना?'

'ज्यादा नहीं,' मैंने उत्तर दिया: एक निवाला भी नहीं, मैंने अफसोस के साथ अपने साथी के गोरे रंग और दुबले-पतले शरीर और उसकी बड़ी सुस्त आँखों को देखते हुए सोचा - उसकी माँ की आँखें, सिवाय इसके कि जब तक कोई अस्वस्थ संवेदनशीलता उन्हें क्षण भर के लिए प्रज्वलित नहीं करती, उनमें उसकी माँ की चमकती हुई भावना का कोई अंश नहीं था।

'कितनी अजीब बात है कि वो कभी माँ और मुझसे मिलने नहीं आए!' उसने धीरे से कहा। 'क्या उन्होंने कभी मुझे देखा है? अगर देखा भी होगा, तो मैं तो बच्चा ही रहा हूँगा। मुझे उनके बारे में कुछ भी याद नहीं!'

'मास्टर लिंटन,' मैंने कहा, 'तीन सौ मील बहुत लंबी दूरी होती है; और दस साल एक वयस्क व्यक्ति के लिए बहुत अलग लगते हैं, जबकि आपके लिए ऐसा नहीं है। शायद श्री हीथक्लिफ ने गर्मियों में यात्रा करने का विचार किया होगा, लेकिन उन्हें

कभी उपयुक्त अवसर नहीं मिला; और अब बहुत देर हो चुकी है। इस विषय पर उनसे प्रश्न पूछकर उन्हें परेशान न करें: इससे वे व्यर्थ ही विचलित होंगे।'

बाकी की यात्रा के दौरान लड़का अपने ही विचारों में डूबा रहा, जब तक कि हम फार्महाउस के बगीचे के द्वार के सामने नहीं रुके। मैंने उसके चेहरे के भावों को समझने की कोशिश की। उसने नक्काशीदार अग्रभाग, नीची जालीदार खिड़कियों, इधर-उधर फैली करौंदे की झाड़ियों और टेढ़े-मेढ़े देवदार के पेड़ों को गंभीर भाव से देखा और फिर अपना सिर हिलाया: उसके मन में अपने नए घर के बाहरी हिस्से को लेकर कोई खास असंतोष नहीं था। लेकिन उसने शिकायत न करने का फैसला किया: शायद अंदर कुछ अच्छा मिल जाए। उसके उतरने से पहले, मैं गया और दरवाजा खोला। साढ़े छह बज रहे थे; परिवार ने अभी-अभी नाश्ता किया था: नौकर मेज साफ कर रहा था। जोसेफ अपने मालिक की कुर्सी के पास खड़ा होकर किसी लंगड़े घोड़े की कहानी सुना रहा था; और हरेटन घास के मैदान के लिए तैयार हो रहा था।

'हैलो, नेली!' श्री हीथक्लिफ ने मुझे देखकर कहा। 'मुझे डर था कि मुझे खुद आकर अपना सामान लाना पड़ेगा। तुम ले आई हो, है ना? चलो देखते हैं इससे क्या बनता है।'

वह उठा और दरवाजे की ओर बढ़ा: हरेटन और जोसेफ उत्सुकता से उसके पीछे-पीछे गए। बेचारा लिंटन तीनों के चेहरों पर भयभीत निगाहें दौड़ाता रहा।

'ज़रूर,' जोसेफ ने गंभीरता से निरीक्षण करने के बाद कहा, 'उसने तुम्हारे साथ अदला-बदली की है, महाराज, और वह उसकी प्रेमिका है!'

अपने बेटे को घबराहट से कांपते हुए घूरने के बाद, हीथक्लिफ ने तिरस्कारपूर्ण हंसी हंसी।

'हे भगवान! क्या खूबसूरती है! कितनी प्यारी और मनमोहक चीज है!' उसने कहा। 'क्या उन्होंने इसे घोंघे और खट्टे दूध पर पाला है, नेली? ओह, मेरी आत्मा को धिक्कार है! लेकिन यह मेरी उम्मीद से भी बदतर है - और भगवान जानता है कि मैं आशावादी नहीं था!'

मैंने कांपते और घबराए हुए बच्चे को नीचे उतरने और अंदर आने को कहा। वह अपने पिता के शब्दों का अर्थ पूरी तरह से नहीं समझ पाया था, और न ही उसे यह पता था कि वे शब्द उसी के लिए थे: वास्तव में, उसे अभी तक यह भी यकीन नहीं था कि वह गंभीर, व्यंग्यपूर्ण अजनबी उसका पिता ही है। लेकिन वह बढ़ती घबराहट के

साथ मुझसे लिपट गया; और जब मिस्टर हीथक्लिफ बैठ गए और उसे 'इधर आओ' कहा, तो उसने अपना चेहरा मेरे कंधे पर छिपा लिया और रोने लगा।

‘अरे, अरे!’ हीथक्लिफ ने हाथ बढ़ाकर उसे अपने घुटनों के बीच घसीटते हुए कहा और फिर उसकी ठुड्डी पकड़कर उसका सिर ऊपर उठा लिया। ‘ये सब बकवास बंद करो! हम तुम्हें चोट नहीं पहुँचाएँगे, लिंटन—क्या यही तुम्हारा नाम है? तुम अपनी माँ के ही बच्चे हो, बिलकुल! तुममें मेरा क्या हिस्सा है, बेवकूफ?’

उसने लड़के की टोपी उतार दी और उसके घने सुनहरे बालों को पीछे धकेलते हुए उसकी पतली भुजाओं और छोटी उंगलियों को महसूस किया; इस जांच के दौरान लिंटन ने रोना बंद कर दिया और निरीक्षक को देखने के लिए अपनी बड़ी नीली आंखें ऊपर उठाईं।

'क्या तुम मुझे जानते हो?' हीथक्लिफ ने यह सुनिश्चित करने के बाद पूछा कि सभी अंग समान रूप से कमजोर और दुर्बल थे।

'नहीं,' लिंटन ने खाली भय भरी निगाहों से कहा।

'मुझे लगता है कि आपने मेरे बारे में सुना होगा?'

‘नहीं,’ उसने फिर जवाब दिया।

नहीं! तुम्हारी माँ पर कितना अफ़सोस है, जिसने कभी तुम्हारे मन में मेरे लिए स्नेह नहीं जगाया! तो तुम मेरे बेटे हो, मैं तुम्हें बता दूँ; और तुम्हारी माँ कितनी दुष्ट थी जिसने तुम्हें तुम्हारे पिता के बारे में अनभिज्ञ रखा। अब, घबराओ मत और शर्म से लाल मत हो जाओ! हालाँकि यह देखकर दुख होता है कि तुम गोरे नहीं हो। अच्छे बच्चे बनो; और मैं तुम्हारे लिए ठीक हूँ। नेली, अगर तुम थकी हुई हो तो बैठ जाओ; अगर नहीं, तो वापस घर जाओ। मुझे लगता है कि तुम जो कुछ भी सुनोगी और देखोगी, वह ग्रेंज के अधिकारी को बता दोगी; और जब तक तुम इसमें देर करोगी, यह मामला सुलझ नहीं पाएगा।

‘अच्छा,’ मैंने उत्तर दिया, ‘मुझे आशा है कि आप लड़के के प्रति दयालु रहेंगे, श्री हीथक्लिफ, अन्यथा आप उसे अधिक समय तक अपने पास नहीं रख पाएंगे; और वह इस विशाल संसार में आपका एकमात्र रिश्तेदार है, जिसे आप कभी जानेंगे - याद रखें।’

‘मैं उसके प्रति बहुत दयालु रहूंगा, आपको डरने की ज़रूरत नहीं है,’ उसने हंसते हुए कहा। ‘बस कोई और उसके प्रति दयालु न हो: मैं उसके स्नेह पर एकाधिकार

चाहता हूं। और, मेरी दयालुता की शुरुआत के तौर पर, जोसेफ, लड़के के लिए कुछ नाश्ता ले आओ। हैरेटन, तुम शैतान बछड़े, जाओ अपने काम पर। हां, नेल,' उनके चले जाने के बाद उसने कहा, 'मेरा बेटा तुम्हारी जगह का भावी मालिक है, और मैं नहीं चाहता कि जब तक मुझे उसका उत्तराधिकारी होने का पूरा भरोसा न हो जाए, तब तक उसकी मृत्यु हो। इसके अलावा, वह मेरा है, और मैं अपने वंशज को उनकी जागीरों का सच्चा स्वामी बनते हुए देखना चाहता हूं; मेरा बच्चा अपने बच्चों को अपने पिता की ज़मीन पर मजदूरी के लिए काम पर लगाए। यही एकमात्र कारण है जो मुझे उस बच्चे को सहन करने के लिए मजबूर करता है: मैं उससे उसके अपने लिए घृणा करता हूं, और उन यादों के लिए उससे नफरत करता हूं जो वह ताजा करता है! लेकिन यह विचार पर्याप्त है: वह मेरे साथ उतना ही सुरक्षित है, और उसकी देखभाल उतनी ही सावधानी से की जाएगी जितनी तुम्हारे मालिक अपने बच्चों की करते हैं। मेरे पास ऊपर एक कमरा है, जो उसके लिए शानदार ढंग से सजाया गया है; मैंने एक शिक्षक भी नियुक्त किया है, जो बीस मील दूर से सप्ताह में तीन बार आकर उसे वह सब कुछ सिखाएगा जो वह सीखना चाहता है। मैंने हैरेटन को आदेश दिया है कि वह उसकी बात माने: और वास्तव में मैंने सब कुछ इस तरह से व्यवस्थित किया है ताकि उसके साथियों के मुकाबले उसमें मौजूद श्रेष्ठता और सज्जनता बनी रहे। हालांकि, मुझे अफसोस है कि वह इस सब के लायक बिल्कुल नहीं है: अगर मैं दुनिया में कोई आशीर्वाद चाहता, तो वह यही होता कि वह गर्व का पात्र बने; और मैं उस पीले चेहरे वाले, रोने वाले अभागे से बुरी तरह निराश हूँ!

जब वह बोल ही रहा था, जोसेफ दूध की दलिया से भरा एक कटोरा लेकर लौटा और उसे लिंटन के सामने रख दिया। लिंटन ने घृणा भरी नज़र से उस बेस्वाद दलिया को हिलाया और कहा कि वह उसे नहीं खा सकता। मैंने देखा कि बूढ़ा नौकर भी अपने मालिक की तरह ही उस बच्चे के प्रति तिरस्कार भाव रखता था; हालाँकि उसे अपने मन में यह भावना दबाए रखनी पड़ी, क्योंकि हीथक्लिफ स्पष्ट रूप से चाहता था कि उसके अधीनस्थ उसका सम्मान करें।

'क्या इसे नहीं खा सकते?' उसने लिंटन के चेहरे पर टकटकी लगाते हुए दोहराया, और कहीं कोई सुन न ले, इसलिए उसने अपनी आवाज़ को फुसफुसाते हुए धीमा कर दिया। 'लेकिन जब मास्टर हैरेटन छोटे थे, तब तो उन्होंने इसके अलावा कुछ और खाया ही नहीं था; और जो उनके लिए अच्छा था, वह तुम्हारे लिए भी अच्छा होगा,

मुझे ऐसा ही लगता है!’

‘मैं इसे नहीं खाऊंगा!’ लिंटन ने चिढ़कर जवाब दिया। ‘इसे यहाँ से ले जाओ।’

जोसेफ ने गुस्से से खाना उठाया और हमारे पास ले आया।

‘क्या खाने में कोई खराबी है?’ उसने ट्रे को हीथक्लिफ की नाक के नीचे धकेलते हुए पूछा।

उन्होंने कहा, 'उन्हें क्या तकलीफ होनी चाहिए?'

‘वाह!’ जोसेफ ने उत्तर दिया, ‘वह नन्हा सा लड़का कहता है कि वह उन्हें नहीं खा सकता। लेकिन मुझे लगता है कि यह सही है! उसकी माँ बस गीली थी—हम इतने गंदे थे कि उसकी रोटी बनाने के लिए मक्का बोना भी लगभग असंभव था।’

‘उसकी माँ का ज़िक्र मुझसे मत करो,’ मालिक ने गुस्से से कहा। ‘उसे कुछ खाने को दो, बस। नेली, उसका रोज़ का खाना क्या है?’

मैंने उबला हुआ दूध या चाय का सुझाव दिया; और नौकरानी को कुछ तैयार करने के निर्देश दिए गए। चलो, मैंने सोचा, उसके पिता का स्वार्थ शायद उसे आराम दे। वह उसकी नाज़ुक सेहत को समझते हैं, और उसके साथ नरमी से पेश आने की ज़रूरत को भी। मैं मिस्टर एडगर को हीथक्लिफ के मिजाज में आए बदलाव के बारे में बताकर उन्हें दिलासा दूँगा। अब और देर रुकने का कोई बहाना न होने पर, मैं चुपके से निकल गया, जबकि लिंटन एक दोस्ताना भेड़-कुत्ते के आगे बढ़ने के प्रयासों को दबे स्वर में ठुकरा रहा था। लेकिन वह इतना सतर्क था कि धोखा नहीं खा सकता था: जैसे ही मैंने दरवाज़ा बंद किया, मुझे एक चीख सुनाई दी, और शब्दों का उन्मादी दोहराव —

मुझे छोड़कर मत जाओ! मैं यहाँ नहीं रुकूँगा! मैं यहाँ नहीं रुकूँगा!

फिर कुंडी उठी और गिर गई: उन्होंने उसे बाहर नहीं आने दिया। मैं मिन्नी पर सवार हुआ और उसे दौड़ने के लिए प्रेरित किया; और इस तरह मेरी संक्षिप्त संरक्षकता समाप्त हुई।

अध्याय XXI

उस दिन छोटी कैथी के साथ हमारा काम बहुत दुखद रहा: वह अपने चचेरे भाई से मिलने के लिए बेहद खुशी से उछल पड़ी, और उसके जाने की खबर सुनकर वह इतनी भावुक होकर रोने और विलाप करने लगी कि एडगर को खुद उसे दिलासा देना पड़ा। एडगर ने आश्वासन दिया कि वह जल्द ही वापस आ जाएगा: हालांकि, उसने यह भी कहा, 'अगर मैं उसे ला सका तो'; और इसकी कोई उम्मीद नहीं थी। इस आश्वासन से भी वह पूरी तरह शांत नहीं हुई; लेकिन समय का प्रभाव अधिक था; और हालांकि वह बीच-बीच में अपने पिता से लिंटन के लौटने का समय पूछती रही, लेकिन उसे दोबारा देखने से पहले ही उसकी याद में उसका चेहरा इतना धुंधला हो गया था कि वह उसे पहचान नहीं पाई।

जब मैं गिम्मर्टन में काम के सिलसिले में आती-जाती थी और संयोग से वुथरिंग हाइट्स की गृहणी से मिलती थी, तो मैं अक्सर उससे पूछती थी कि युवा मास्टर कैसे हैं; क्योंकि वे कैथरीन की तरह ही एकांत में रहते थे और कभी दिखाई नहीं देते थे। उससे मुझे पता चला कि उनका स्वास्थ्य खराब था और वे कमरे में बहुत उतावले रहते थे। उसने बताया कि श्री हीथक्लिफ उन्हें पहले से कहीं ज्यादा नापसंद करते थे, हालांकि वे इसे छिपाने की कोशिश करते थे: उन्हें उनकी आवाज से चिढ़ थी और वे उनके साथ एक ही कमरे में कुछ मिनट भी नहीं बैठ सकते थे। उनके बीच बहुत कम बातचीत होती थी: लिंटन अपनी पढ़ाई करते थे और शामें एक छोटे से कमरे में बिताते थे जिसे वे बैठक कक्ष कहते थे; या फिर सारा दिन बिस्तर पर पड़े रहते थे; क्योंकि उन्हें लगातार खांसी, जुकाम और तरह-तरह के दर्द होते रहते थे।

औरत ने आगे कहा, 'मैंने कभी इतना डरपोक प्राणी नहीं देखा, न ही इतना आत्म-सचेत। अगर मैं शाम को थोड़ी देर खिड़की खुली छोड़ दूं, तो वह चलता ही रहेगा। ओह! रात की हवा का एक झोंका भी जानलेवा होता है! और उसे गर्मियों के बीच में भी आग चाहिए होती है; और जोसेफ का तंबाकू उसके लिए ज़हर है; और उसे हमेशा मिठाइयाँ और स्वादिष्ट व्यंजन चाहिए होते हैं, और हमेशा दूध, हमेशा के लिए दूध—इस बात की परवाह किए बिना कि हम बाकी लोग सर्दियों में कैसे तंगी में रहते हैं; और वह आग के पास अपनी कुर्सी पर, फर वाले लबादे में लिपटा हुआ, चूल्हे पर रखे कुछ टोस्ट और पानी या कुछ और पीने के लिए रखेगा; और अगर हैरेटोन दया करके

उसका मनोरंजन करने आ जाए—हैरेटोन बुरे स्वभाव का नहीं है, हालांकि वह थोड़ा रूखा है—तो वे ज़रूर एक-दूसरे से अलग हो जाएँगे, एक गाली देते हुए और दूसरा रोते हुए। मुझे लगता है कि अगर अर्नशॉ उसका बेटा न होता, तो मालिक उसे पीट-पीटकर अधमरा कर देने में आनंद लेता।' और मुझे पूरा यकीन है कि अगर उसे पता होता कि वह खुद की कितनी देखभाल करता है, तो वह उसे घर से बाहर निकाल देता। लेकिन वह प्रलोभन के खतरे में नहीं पड़ना चाहता: वह कभी बैठक में नहीं जाता, और अगर लिंटन उसे घर में कहीं भी गलत तरीके से पेश करे, तो वह उसे सीधे ऊपर भेज देता है।

इस विवरण से मुझे यह समझ आया कि सहानुभूति की घोर कमी ने युवा हीथक्लिफ को स्वार्थी और अप्रिय बना दिया था, भले ही वह जन्म से ऐसा न रहा हो; और परिणामस्वरूप, उसके प्रति मेरी रुचि कम हो गई: हालाँकि मुझे अब भी उसकी हालत पर दुख था और यह इच्छा थी कि काश वह हमारे साथ ही रह गया होता। श्री एडगर ने मुझे जानकारी जुटाने के लिए प्रोत्साहित किया: मुझे लगता है कि वे उसके बारे में बहुत सोचते थे और उससे मिलने के लिए जोखिम उठाने को भी तैयार थे; और उन्होंने एक बार मुझे गृहणी से पूछने के लिए कहा कि क्या वह कभी गाँव आया था? उसने बताया कि वह केवल दो बार आया था, घोड़े पर सवार होकर, अपने पिता के साथ; और दोनों बार उसने बाद में तीन-चार दिनों तक पूरी तरह से थका हुआ होने का बहाना किया। अगर मुझे ठीक से याद है, तो वह गृहणी उसके आने के दो साल बाद चली गई; और उसकी जगह एक दूसरी गृहणी आई, जिसे मैं नहीं जानती थी; वह अभी भी वहीं रहती है।

ग्रेंज में समय पहले की तरह सुखद ढंग से बीतता रहा, जब तक कि मिस कैथी सोलह वर्ष की नहीं हो गईं। उनके जन्मदिन की सालगिरह पर हमने कभी कोई खुशी नहीं मनाई, क्योंकि यह मेरी दिवंगत मालकिन की पुण्यतिथि भी थी। उनके पिता हमेशा उस दिन पुस्तकालय में अकेले समय बिताते थे; और शाम ढलते ही गिम्मर्टन चर्चयार्ड तक पैदल जाते थे, जहाँ वे अक्सर आधी रात के बाद तक रुकते थे। इसलिए कैथरीन को मनोरंजन के लिए खुद ही प्रयास करना पड़ता था। 20 मार्च का वह दिन सुहाना था, और जब उनके पिता सोने चले गए, तो मेरी युवती बाहर जाने के लिए तैयार होकर नीचे आई और बोली कि वह मेरे साथ खुले मैदान के किनारे टहलने जाना चाहती है: श्री लिंटन ने उन्हें अनुमति दे दी थी, बशर्ते हम थोड़ी दूर जाकर एक घंटे के

भीतर वापस आ जाएँ।

'तो जल्दी करो, एलेन!' वह चिल्लाई। 'मुझे पता है कि मैं कहाँ जाना चाहती हूँ; जहाँ जंगली जानवरों का एक झुंड बसा हुआ है: मैं देखना चाहती हूँ कि क्या उन्होंने अपने घोंसले बना लिए हैं या नहीं।'

मैंने जवाब दिया, 'वह काफी दूर होगा; वे दलदली भूमि के किनारे पर प्रजनन नहीं करते।'

'नहीं, ऐसा नहीं है,' उसने कहा। 'मैं पापा के साथ बहुत करीब गई थी।'

मैंने अपनी टोपी पहनी और बिना कुछ सोचे-समझे बाहर निकल गया। वह मेरे आगे उछली, फिर मेरे पास लौट आई और एक युवा ग्रेहाउंड की तरह फिर से दौड़ पड़ी; और, शुरू में, मुझे दूर-दूर तक चिड़ियों के गीत सुनने और मीठी, गर्म धूप का आनंद लेने में खूब मजा आया; और उसे, मेरी लाडली और मेरी खुशी को, उसके सुनहरे घुंघराले बालों को लहराते हुए, उसके चमकीले गालों को, जो जंगली गुलाब की तरह कोमल और शुद्ध थे, और उसकी आँखों को असीम आनंद से दमकते हुए देखना भी अच्छा लगता था। उन दिनों वह एक खुशमिजाज प्राणी और एक फरिश्ता थी। यह दुख की बात है कि वह संतुष्ट नहीं रह सकी।

मैंने कहा, 'अच्छा, मिस कैथी, आपके जंगली जानवर कहाँ हैं? हमें उनके पास जाना चाहिए: ग्रेंज पार्क की बाड़ अब बहुत दूर है।'

'ओह, बस थोड़ा और आगे—बस थोड़ा और आगे, एलेन,' वह लगातार यही जवाब देती थी। 'उस छोटी पहाड़ी पर चढ़ो, उस किनारे को पार करो, और जब तक तुम दूसरी तरफ पहुँचोगी, मैं पक्षियों को भगा चुकी होंगी।'

लेकिन इतनी सारी छोटी-छोटी पहाड़ियाँ और ढलानें थीं जिन पर चढ़ना और पार करना था कि आखिरकार मैं थकने लगा और उससे कहा कि हमें रुकना होगा और वापस लौटना होगा। मैंने उसे आवाज़ दी क्योंकि वह मुझसे बहुत आगे निकल चुकी थी; उसने या तो सुना नहीं या ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वह फिर भी आगे बढ़ती रही और मुझे उसका पीछा करना पड़ा। अंत में, वह एक खोखले में घुस गई; और इससे पहले कि मैं उसे फिर से देख पाता, वह अपने घर से दो मील आगे वुदरिंग हाइट्स के करीब पहुँच चुकी थी; और मैंने कुछ लोगों को उसे गिरफ्तार करते देखा, जिनमें से एक मुझे पूरा यकीन था कि मिस्टर हीथक्लिफ खुद थे।

कैथी को घोंसलों की लूटपाट करते हुए, या कम से कम घोंसलों का शिकार करते

हुए रंगे हाथों पकड़ा गया था। हाइट्स हीथक्लिफ की ज़मीन थी, और वह उस शिकारी को फटकार लगा रहा था।

जब मैं उनके पास जाने के लिए मेहनत कर रहा था, तो उसने अपने हाथ फैलाते हुए कहा, 'मैंने न तो कोई अंडा लिया है और न ही कोई अंडा पाया है।' 'मेरा उन्हें लेने का इरादा नहीं था; लेकिन पापा ने मुझे बताया था कि यहाँ बहुत सारे अंडे हैं, और मैं अंडे देखना चाहती थी।'

हीथक्लिफ ने एक द्वेषपूर्ण मुस्कान के साथ मेरी ओर देखा, जिससे पार्टी के साथ उसकी जान-पहचान और फलस्वरूप उसके प्रति उसकी दुर्भावना व्यक्त हुई, और उसने पूछा कि 'पापा' कौन था?

'थ्रशक्रॉस ग्रेंज के श्री लिंटन,' उसने जवाब दिया। 'मुझे लगा कि आप मुझे नहीं जानते, वरना आप इस तरह से बात नहीं करते।'

'तो क्या तुम यह सोचते हो कि पापा को बहुत सम्मान और आदर प्राप्त है?' उसने व्यंग्यपूर्वक कहा।

'और आप कौन हैं?' कैथरीन ने वक्ता को उत्सुकता से देखते हुए पूछा। 'वह आदमी जिसे मैंने पहले भी देखा है। क्या वह आपका बेटा है?'

उसने दूसरे व्यक्ति, हरेटन की ओर इशारा किया, जिसकी उम्र में दो साल की वृद्धि के बावजूद उसके शरीर का आकार और ताकत ही बढ़ी थी: वह पहले की तरह ही अनाड़ी और खुरदरा लग रहा था।

'मिस कैथी,' मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'अभी हमें एक घंटे के बजाय तीन घंटे बाहर रहना पड़ेगा। हमें सच में वापस जाना होगा।'

'नहीं, वह आदमी मेरा बेटा नहीं है,' हीथक्लिफ ने मुझे एक तरफ धकेलते हुए उत्तर दिया। 'लेकिन मेरा एक बेटा है, और आप उसे पहले भी देख चुके हैं; और, हालांकि आपकी नर्स जल्दी में है, मुझे लगता है कि आप दोनों को थोड़ा आराम करने से फायदा होगा। क्या आप बस इस खुले मैदान को पार करके मेरे घर में आ जाएँगे? इससे आप जल्दी घर पहुँच जाएँगे; और आपका हार्दिक स्वागत किया जाएगा।'

मैंने कैथरीन के कान में फुसफुसाकर कहा कि उसे किसी भी हालत में इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करना चाहिए: यह बिल्कुल असंभव था।

'क्यों?' उसने ऊँची आवाज़ में पूछा। 'मैं दौड़ते-दौड़ते थक गई हूँ, और ज़मीन ओस से भीगी है: मैं यहाँ नहीं बैठ सकती। चलो चलते हैं, एलेन। वैसे भी, वह कहता है कि

मैंने उसके बेटे को देखा है। मुझे लगता है कि वह गलत है; लेकिन मुझे लगता है कि वह कहाँ रहता है: उसी फार्महाउस में जहाँ मैं पेनस्टोन क्रैग्स से आते समय गई थी। क्या तुम्हें नहीं पता?'

'हाँ, मैं करती हूँ। आओ, नेली, चुप रहो—हमारे बीच आकर उसे बहुत अच्छा लगेगा। हैरेटन, उस लड़की को लेकर जल्दी चलो। तुम मेरे साथ चलोगी, नेली।'

'नहीं, वह ऐसी किसी जगह नहीं जा रही है,' मैंने चिल्लाते हुए अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश की, जिसे उसने पकड़ रखा था: लेकिन वह लगभग दरवाजे के पास पहुँच चुकी थी, पूरी रफ्तार से पहाड़ी की चोटी पर दौड़ रही थी। उसका साथी उसका साथ देने का दिखावा भी नहीं कर रहा था: वह सड़क के किनारे हट गया और गायब हो गया।

'मिस्टर हीथक्लिफ, यह बहुत गलत है,' मैंने आगे कहा: 'आप जानते हैं कि आपका इरादा अच्छा नहीं है। और वह वहाँ लिंटन को देखेगी, और जैसे ही हम लौटेंगे, सब कुछ पता चल जाएगा; और सारा दोष मुझ पर आएगा।'

'मैं चाहता हूँ कि वह लिंटन से मिले,' उसने जवाब दिया; 'पिछले कुछ दिनों से उसकी सेहत बेहतर लग रही है; वह अक्सर इतना स्वस्थ नहीं होता कि लोग उससे मिल सकें। और हम उसे जल्द ही इस मुलाकात को गुप्त रखने के लिए मना लेंगे: इसमें क्या हर्ज है?'

मैंने जवाब दिया, 'इसका नुकसान यह है कि अगर उसके पिता को पता चला कि मैंने उसे आपके घर में आने दिया, तो वह मुझसे नफरत करेंगे; और मुझे यकीन है कि ऐसा करने के लिए उसे प्रोत्साहित करने के पीछे आपका कोई बुरा इरादा है।'

'मेरी योजना यथासंभव ईमानदार है। मैं आपको इसके पूरे दायरे के बारे में बताऊँगा,' उसने कहा। 'कि दोनों चचेरे भाई-बहन एक-दूसरे से प्यार करें और शादी कर लें। मैं आपके मालिक पर उदारता दिखा रहा हूँ: उनकी युवा प्रेमिका की कोई अपेक्षा नहीं है, और यदि वह मेरी इच्छाओं का समर्थन करती है, तो उसे लिंटन के साथ संयुक्त उत्तराधिकारी के रूप में तुरंत नियुक्त कर दिया जाएगा।'

मैंने जवाब दिया, 'अगर लिंटन की मृत्यु हो जाती है, और उनका जीवन बिल्कुल अनिश्चित है, तो कैथरीन उत्तराधिकारी होंगी।'

'नहीं, वह ऐसा नहीं करेगी,' उसने कहा। 'वसीयत में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जिससे यह सुनिश्चित हो सके: उसकी संपत्ति मुझे ही मिलेगी; लेकिन विवादों से बचने

के लिए, मैं उनका मिलन चाहता हूँ और इसे पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ।'

'और मैंने ठान लिया है कि वह मेरे साथ फिर कभी आपके घर नहीं आएगी,' मैंने जवाब दिया, जब हम द्वार पर पहुंचे, जहां मिस कैथी हमारे आने का इंतजार कर रही थीं।

हीथक्लिफ ने मुझे चुप रहने को कहा; और हमसे आगे रास्ते पर चलकर जल्दी से दरवाजा खोला। मेरी प्रेमिका ने उसे कई बार देखा, मानो वह तय नहीं कर पा रही थी कि उसके बारे में क्या सोचे; लेकिन अब जब उसकी नज़र उससे मिली तो वह मुस्कुराया और उससे बात करते समय उसकी आवाज़ नरम हो गई; और मैं इतनी मूर्ख थी कि मैंने सोचा कि उसकी माँ की याद उसे उसे नुकसान पहुँचाने की इच्छा से रोक देगी। लिंटन चूल्हे के पास खड़ा था। वह खेतों में टहलने गया था, क्योंकि उसने टोपी पहन रखी थी, और वह जोसेफ को सूखे जूते लाने के लिए बुला रहा था। वह अपनी उम्र से कहीं ज़्यादा लंबा हो गया था, अभी सोलह साल का होने में कुछ महीने बाकी थे। उसके चेहरे के हाव-भाव अभी भी सुंदर थे, और उसकी आँखें और रंगत मेरी यादों से कहीं ज़्यादा निखरी हुई थी, हालाँकि यह चमक ताज़ी हवा और धूप से मिली अस्थायी चमक मात्र थी।

'अब, वह कौन है?' श्री हीथक्लिफ ने कैथी की ओर मुड़ते हुए पूछा। 'क्या तुम बता सकती हो?'

'आपका बेटा?' उसने संदेह भरी निगाहों से पहले एक को और फिर दूसरे को देखते हुए कहा।

'जी हाँ,' उसने उत्तर दिया: 'लेकिन क्या तुमने उसे केवल एक ही बार देखा है? सोचो! आह! तुम्हारी याददाश्त बहुत कमजोर है। लिंटन, क्या तुम्हें अपना चचेरा भाई याद नहीं है, जिसे देखने की इच्छा जताकर तुम हमें अक्सर चिढ़ाते थे?'

'अरे वाह, लिंटन!' कैथी नाम सुनकर खुशी से झूम उठी। 'क्या यह छोटा लिंटन है? यह तो मुझसे भी लंबा है! क्या आप लिंटन हैं?'

युवक आगे बढ़ा और उसने अपना परिचय दिया: उसने उसे प्रेमपूर्वक चूमा, और वे समय के साथ एक-दूसरे के रूप में आए परिवर्तन को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। कैथरीन अपनी पूरी लंबाई तक पहुँच चुकी थी; उसका शरीर भरा हुआ और पतला, लोहे की तरह लचीला था, और उसका पूरा चेहरा स्वास्थ्य और उत्साह से दमक रहा था। लिंटन की नज़रें और हरकतें बहुत सुस्त थीं, और उसका शरीर बेहद दुबला-पतला

था; लेकिन उसके व्यवहार में एक ऐसी शालीनता थी जिसने इन कमियों को कम कर दिया और उसे अप्रिय नहीं बनाया। उससे स्नेह के कई संकेत साझा करने के बाद, उसकी चचेरी बहन मिस्टर हीथक्लिफ के पास गई, जो दरवाजे के पास खड़े होकर अंदर और बाहर की वस्तुओं पर ध्यान बाँट रहे थे: यानी, दिखावा कर रहे थे कि वे बाहर की वस्तुओं को देख रहे हैं, जबकि वास्तव में वे केवल अंदर की वस्तुओं पर ही ध्यान दे रहे थे।

'तो फिर आप मेरे चाचा हैं!' वह चिल्लाई और उन्हें प्रणाम करने के लिए हाथ ऊपर उठाया। 'मुझे लगा था कि मैं आपको पसंद करती हूँ, हालाँकि आप शुरू में थोड़े चिड़चिड़े थे। आप लिंटन के साथ ग्रेंज में क्यों नहीं आते? इतने सालों तक इतने करीबी पड़ोसी होने के बावजूद हमसे कभी न मिलना अजीब है: आपने ऐसा क्यों किया?'

'तुम्हारे जन्म से पहले मैं वहाँ एक-दो बार ज़रूरत से ज़्यादा चला गया था,' उसने जवाब दिया। 'लो – धिक्कार है! अगर तुम्हारे पास कुछ चुंबन बचे हों, तो उन्हें लिंटन को दे दो: वे मुझ पर बेकार जा रहे हैं।'

'शरारती एलेन!' कैथरीन चिल्लाई और अपनी भरपूर स्नेह भरी स्पर्शों से मुझ पर झपट पड़ी। 'दुष्ट एलेन! मुझे अंदर आने से रोकने की कोशिश कर रही हो। लेकिन मैं अब हर सुबह इस सैर पर जाऊंगी: क्या मैं जा सकती हूँ, चाचा जी? और कभी-कभी पापा को भी साथ लाऊंगी। क्या आपको हमें देखकर खुशी नहीं होगी?'

'ज़रूर,' चाचा ने प्रस्तावित दोनों मेहमानों के प्रति अपनी गहरी अरुचि को मुश्किल से दबाते हुए गुस्से से कहा। 'लेकिन रुकिए,' उन्होंने युवती की ओर मुड़ते हुए कहा। 'अब मुझे याद आ रहा है, तो बेहतर होगा कि मैं आपको बता दूं। श्री लिंटन मुझसे नाराज़ हैं: हमारे जीवन में एक समय ऐसा था जब हमारा बहुत भयंकर झगड़ा हुआ था; और अगर आप उनके सामने यहाँ आने का ज़िक्र करेंगी, तो वे आपके आने पर पूरी तरह रोक लगा देंगे। इसलिए, आपको इसका ज़िक्र नहीं करना चाहिए, जब तक कि आप भविष्य में अपनी चचेरी बहन से मिलने को लेकर लापरवाह न हों: आप आ सकती हैं, अगर आप आना चाहें, लेकिन आपको इसका ज़िक्र नहीं करना चाहिए।'

'तुम दोनों ने झगड़ा क्यों किया?' कैथरीन ने काफी निराश होकर पूछा।

हीथक्लिफ ने उत्तर दिया, 'उसे लगा कि मैं उसकी बहन से शादी करने के लिए बहुत गरीब हूँ, और उसे इस बात का दुख हुआ कि मैंने उसे पा लिया: उसके

स्वाभिमान को ठेस पहुंची, और वह इसे कभी माफ नहीं करेगा।'

'यह गलत है!' युवती ने कहा: 'मैं उसे कभी न कभी बता दूंगी। लेकिन लिंटन और मेरा आपके झगड़े से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए मैं यहाँ नहीं आऊंगी; वह ग्रेंज में आएगा।'

'यह मेरे लिए बहुत दूर होगा,' उसकी चचेरी बहन ने धीरे से कहा: 'चार मील चलना तो मेरी जान ले लेगा। नहीं, मिस कैथरीन, कभी-कभी यहाँ आ जाइए: हर सुबह नहीं, लेकिन सप्ताह में एक या दो बार।'

पिता ने अपने बेटे की ओर घृणा भरी नजर से देखा।

'मुझे डर है, नेली, मेरी मेहनत बेकार जाएगी,' उसने मुझसे बुदबुदाते हुए कहा। 'मिस कैथरीन, जैसा कि वो बेवकूफ उसे बुलाती है, उसकी अहमियत जान जाएगी और उसे नरक में भेज देगी। अब, अगर वो हरेटन होता! — क्या तुम जानती हो कि मैं दिन में बीस बार हरेटन को, उसकी सारी बेइज्जती के साथ, पाने की इच्छा करता हूँ? अगर वो कोई और होता तो मैं उस लड़के से प्यार करता। लेकिन मुझे लगता है कि वो उसके प्यार से बचा हुआ है। मैं उसे उस तुच्छ प्राणी के सामने खड़ा कर दूँगा, जब तक कि वो जल्दी हरकत में न आ जाए। हमारा अनुमान है कि उसका रिश्ता अठारह साल की उम्र तक भी मुश्किल से टिकेगा। ओह, उस नीरस चीज़ को धिक्कार है! वो अपने पैर सुखाने में मग्न है और कभी उसकी तरफ देखता भी नहीं। — लिंटन!'

'जी पिताजी,' लड़के ने उत्तर दिया।

'क्या तुम्हारे पास अपनी चचेरी बहन को दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है, यहाँ तक कि एक खरगोश या नेवले का घोंसला भी नहीं? अपने जूते बदलने से पहले उसे बगीचे में ले जाओ; और उसे अस्तबल में ले जाकर अपना घोड़ा दिखाओ।'

'क्या आप यहां बैठना पसंद नहीं करेंगी?' लिंटन ने कैथी से ऐसे स्वर में पूछा जिससे पता चलता था कि वह दोबारा हिलने को तैयार नहीं है।

'मुझे नहीं पता,' उसने दरवाजे की ओर एक हसरत भरी नजर डालते हुए जवाब दिया, और जाहिर तौर पर वह सक्रिय होने के लिए उत्सुक थी।

वह अपनी जगह पर बैठा रहा और आग के पास और सट गया। हीथक्लिफ उठा और रसोई में गया, फिर वहाँ से आँगन में जाकर हरेटन को पुकारने लगा। हरेटन ने जवाब दिया और थोड़ी देर में दोनों वापस अंदर आ गए। युवक नहा रहा था, यह उसके

गालों की चमक और गीले बालों से स्पष्ट था।

‘ओह, मैं आपसे पूछूंगी, अंकल,’ मिस कैथी ने नौकरानी की बात याद करते हुए कहा। ‘वह मेरा चचेरा भाई तो नहीं है?’

‘जी हां,’ उसने जवाब दिया, ‘तुम्हारी मां का भतीजा। क्या तुम उसे पसंद नहीं करती!’

कैथरीन अजीब लग रही थी।

उन्होंने आगे कहा, 'क्या वह एक सुंदर लड़का नहीं है?'

वह असभ्य छोटा बच्चा पैर की उंगलियों पर खड़ा हुआ और हीथक्लिफ के कान में एक वाक्य फुसफुसाया। हीथक्लिफ हँसा; हैरेटन का चेहरा उतर गया: मैंने महसूस किया कि वह छोटी-छोटी बातों पर भी बहुत संवेदनशील था, और जाहिर तौर पर उसे अपनी हीनता का हल्का सा एहसास था। लेकिन उसके मालिक या संरक्षक ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा—

“तुम हम सबके चहेते बन जाओगे, हैरेटन! वो कहती है कि तुम एक— क्या कहा था? खैर, कुछ बहुत ही तारीफ वाली बात। लो! तुम उसके साथ खेत का चक्कर लगाओ। और ध्यान रखना, एक सज्जन की तरह व्यवहार करना! कोई अपशब्द मत बोलना; और जब युवती तुम्हारी तरफ न देख रही हो तो उसे घूरना मत, और जब वो देख रही हो तो अपना चेहरा छुपा लेना; और जब बोलना हो तो धीरे-धीरे बोलना, और अपने हाथ जेब से बाहर रखना। जाओ, और उसका जितना हो सके उतना अच्छा सत्कार करना।”

वह खिड़की के पास से गुजरते हुए दंपति को देखता रहा। अर्नशॉ ने अपना चेहरा अपने साथी से पूरी तरह फेर लिया था। वह एक अजनबी और एक कलाकार की रुचि से परिचित परिदृश्य का अध्ययन करता हुआ प्रतीत हो रहा था। कैथरीन ने उसे तिरछी नज़र से देखा, मानो थोड़ी प्रशंसा व्यक्त कर रही हो। फिर उसने अपना ध्यान अपने मनोरंजन के साधन खोजने में लगाया और बातचीत की कमी को पूरा करने के लिए मधुर धुन गुनगुनाते हुए खुशी-खुशी आगे बढ़ गई।

‘मैंने उसकी ज़बान बंद कर दी है,’ हीथक्लिफ ने कहा। ‘वह एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं करता! नेली, तुम्हें मेरी याद आती है जब मैं उसकी उम्र का था — बल्कि उससे कुछ साल छोटा था। क्या मैं कभी इतना बेवकूफ दिखता था: इतना अनाड़ी, जैसा कि जोसेफ कहता है?’

मैंने जवाब दिया, 'और भी बुरा, क्योंकि इससे वह और भी ज्यादा उदास हो जाता है।'

'मुझे उसमें आनंद मिलता है,' वह मन ही मन सोचते हुए बोला। 'उसने मेरी उम्मीदों पर खरा उतरा है। अगर वह जन्मजात मूर्ख होता तो मुझे इतना आनंद नहीं मिलता। लेकिन वह मूर्ख नहीं है; और मैं उसकी सभी भावनाओं को समझ सकता हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं उन्हें महसूस किया है। उदाहरण के लिए, मैं जानता हूँ कि वह अभी क्या सह रहा है: हालाँकि यह तो उसके आगे के कष्टों की बस शुरुआत है। और वह कभी भी अपनी अशिष्टता और अज्ञानता के दलदल से बाहर नहीं निकल पाएगा। मैंने उसे उसके दुष्ट पिता से भी जल्दी और नीची स्थिति में पा लिया है; क्योंकि उसे अपनी क्रूरता पर गर्व है। मैंने उसे सिखाया है कि हर पशुवत चीज़ को मूर्ख और कमज़ोर समझे। क्या आपको नहीं लगता कि अगर हिंडले उसे देख पाता तो उसे अपने बेटे पर गर्व होता? लगभग उतना ही गर्व जितना मुझे अपने बेटे पर है। लेकिन एक अंतर है; एक सोने का बना है जिसे फ़र्श के पत्थरों में लगाया गया है, और दूसरा टिन का बना है जिसे चाँदी जैसा दिखाने के लिए पॉलिश किया गया है। मेरे वाले में कुछ भी कीमती नहीं है; फिर भी, इस तुच्छ चीज़ को जितना आगे ले जाया जा सकता है, उतना आगे ले जाने का श्रेय मुझे ही मिलेगा। उसमें उत्कृष्ट गुण थे, जो खो गए: निरर्थक से भी बदतर हो गए। मुझे कोई पछतावा नहीं है; उसे मुझसे ज़्यादा पछतावा होता, सिवाय उन लोगों के जिन्हें मैं जानता हूँ। और सबसे अच्छी बात यह है कि हैरेटन मुझसे बहुत प्यार करता है! आप मानेंगे कि मैंने इस मामले में हिंडले को भी मात दे दी है। अगर वह मरा हुआ खलनायक अपनी कब्र से उठकर अपने बच्चों के अन्याय के लिए मुझे गाली दे, तो मुझे उस बच्चे को उससे लड़ते हुए देखने में मज़ा आएगा, जो इस बात से नाराज़ होगा कि उसने दुनिया में अपने इकलौते दोस्त पर गाली देने की हिम्मत कैसे की!

हीथक्लिफ इस विचार पर एक शैतानी हंसी हंस पड़ा। मैंने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि मुझे पता था कि उसे किसी जवाब की उम्मीद नहीं थी। इसी बीच, हमारा युवा साथी, जो हमसे इतनी दूर बैठा था कि उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, बेचैनी के लक्षण दिखाने लगा, शायद उसे इस बात का पछतावा हो रहा था कि उसने थोड़ी सी थकान के डर से कैथरीन की संगति का आनंद लेने से खुद को वंचित कर लिया था। उसके पिता ने खिड़की की ओर भटकती बेचैन निगाहों और टोपी की ओर अनिश्चित

रूप से बढ़ते हाथ को देखा।

‘उठो, आलसी लड़के!’ उसने बनावटी उत्साह के साथ कहा।

‘उनके पीछे जाओ! वे बस कोने पर, मधुमक्खी के छत्ते के पास हैं।’

लिंटन ने अपनी ऊर्जा समेटी और चूल्हे से बाहर निकला। जाली खुली हुई थी, और जैसे ही वह बाहर निकला, मैंने कैथी को उसकी असामाजिक नौकरानी से पूछते हुए सुना, "दरवाजे के ऊपर वह क्या लिखा है?" हैरेटन ने ऊपर देखा और एक असली मसखरे की तरह अपना सिर खुजलाया।

उन्होंने जवाब दिया, 'यह तो बेहद घटिया लिखावट है। मैं इसे पढ़ नहीं सकता।'

‘क्या आप इसे पढ़ नहीं सकते?’ कैथरीन चिल्लाई; ‘मैं इसे पढ़ सकती हूँ: यह अंग्रेजी है। लेकिन मैं यह जानना चाहती हूँ कि यह यहाँ क्यों है।’

लिंटन खिलखिलाकर हँसा: यह पहली बार था जब उसने हँसी का प्रदर्शन किया था।

उसने अपने चचेरे भाई से कहा, 'उसे अक्षर ज्ञान नहीं है। क्या तुम ऐसे घोर मूर्ख के अस्तित्व पर विश्वास कर सकते हो?'

मिस कैथी ने गंभीरता से पूछा, 'क्या वह बिल्कुल ठीक है? या फिर वह बस ठीक नहीं है? मैंने उससे दो बार पूछताछ की है, और हर बार वह इतना मूर्ख लग रहा था कि मुझे लगता है कि वह मुझे समझ ही नहीं पा रहा है। मुझे यकीन है कि मैं भी उसे मुश्किल से ही समझ पाती हूँ!'

लिंटन ने अपनी हंसी दोहराई और हरेटन की ओर व्यंग्यपूर्ण ढंग से देखा; जो उस समय निश्चित रूप से पूरी तरह से समझ में नहीं आ रहा था।

‘अरे, बात सिर्फ आलस की है, है ना अर्नशॉ?’ उसने कहा। ‘मेरे चचेरे भाई को लगता है कि तुम बेवकूफ हो। तुम्हें “किताबी ज्ञान” को तुच्छ समझने का नतीजा भुगतना पड़ रहा है, जैसा कि तुम कहते हो। क्या तुमने गौर किया है, कैथरीन, उसका यॉर्कशायर उच्चारण कितना भयानक है?’

“अरे, इसका क्या फायदा?” हैरेटोन ने अपने रोज़ के साथी को जवाब देने में तत्परता दिखाते हुए गुस्से से कहा। वह आगे कुछ कहने ही वाला था कि दोनों युवक खिलखिलाकर हंसने लगे: मेरी चंचल पत्नी यह जानकर बहुत खुश हुई कि वह उसकी अजीबोगरीब बातों को मनोरंजन का विषय बना सकती है।

‘इस वाक्य में शैतान का क्या उपयोग है?’ लिंटन हँसते हुए बोला। ‘पापा ने तुमसे

कहा था कि कोई अपशब्द मत बोलना, और तुम बिना अपशब्द बोले मुँह खोल ही नहीं सकते। ज़रा सज्जन की तरह व्यवहार करने की कोशिश करो!'

"अगर तुम लड़के से ज़्यादा लड़की न होतीं, तो मैं तुम्हें अभी गिरा देता, ज़रूर गिरा देता; बेचारे गड्ढे के टुकड़े!" क्रोधित गंवार ने पीछे हटते हुए कहा, जबकि उसका चेहरा गुस्से और अपमान के मिले-जुले भाव से जल रहा था! क्योंकि उसे अपने अपमान का एहसास था और वह समझ नहीं पा रहा था कि इसका जवाब कैसे दे।

श्री हीथक्लिफ ने मेरी तरह ही वह बातचीत सुन ली थी, इसलिए जब उन्होंने उसे जाते देखा तो मुस्कुरा दिए; लेकिन तुरंत बाद ही उन्होंने उस चंचल जोड़ी पर घृणा भरी नज़र डाली, जो दरवाजे पर ही बकबक करते रहे: लड़का हैरेटोन की कमियों और खामियों पर चर्चा करते हुए और उसके कारनामों के किस्से सुनाते हुए काफी उत्साहित हो रहा था; और लड़की उसकी चुटीली और द्वेषपूर्ण बातों का आनंद ले रही थी, बिना यह सोचे कि उनमें कितनी दुर्भावना झलक रही थी। मुझे लिंटन के प्रति सहानुभूति से कहीं अधिक अरुचि होने लगी, और उसके पिता द्वारा उसे तुच्छ समझने के लिए मैं कुछ हद तक क्षमा करने लगा।

हम दोपहर तक वहीं रुके रहे: मैं मिस कैथी को जल्दी वहाँ से नहीं ले जा सका; लेकिन सौभाग्य से मेरे मालिक ने अपना कमरा नहीं छोड़ा था और उन्हें हमारी लंबी अनुपस्थिति का पता ही नहीं चला। घर लौटते समय, मैं उन्हें उन लोगों के बारे में बताना चाहता था जिनसे हम मिले थे: लेकिन उन्होंने मन ही मन सोच लिया कि मैं उनके प्रति पूर्वाग्रही हूँ।

'अहा!' वह चिल्लाई, 'एलन, तुम पापा का पक्ष ले रही हो: मुझे पता है तुम पक्षपाती हो; वरना तुमने इतने सालों तक मुझे यह भ्रम में न रखा होता कि लिंटन यहाँ से बहुत दूर रहता है। मैं सचमुच बहुत गुस्से में हूँ; बस मुझे इतनी खुशी है कि मैं इसे दिखा नहीं सकती! लेकिन मेरे चाचा के बारे में चुप रहो; याद रखो, वह मेरे चाचा हैं; और मैं पापा को उनसे झगड़ा करने के लिए डांटूँगी।'

और वह तब तक बोलती रही जब तक मैंने उसे उसकी गलती का एहसास दिलाने की कोशिश करना छोड़ नहीं दिया। उस रात उसने उस मुलाकात का ज़िक्र नहीं किया, क्योंकि उसकी मुलाकात मिस्टर लिंटन से नहीं हुई थी। अगले दिन सब कुछ सामने आ गया, जिससे मुझे बहुत दुख हुआ; फिर भी मुझे पूरी तरह से अफसोस नहीं था: मुझे लगा कि मार्गदर्शन और चेतावनी देने का भार मुझसे ज़्यादा कुशलता से वही उठा

सकते थे। लेकिन वह हाइट्स परिवार से संबंध न रखने की अपनी इच्छा के लिए संतोषजनक कारण बताने में बहुत झिझक रहे थे, और कैथरीन को अपनी इच्छा पर लगाए गए हर प्रतिबंध के लिए अच्छे कारण पसंद थे।

सुबह की शुभकामनाओं के बाद, उसने कहा, 'पापा! अंदाज़ा लगाइए, कल मैंने मैदानों में टहलते हुए किसे देखा। अरे पापा, आप चौंक गए! आपने ठीक नहीं किया, है ना? मैंने देखा - लेकिन सुनिए, और आपको पता चलेगा कि मैंने आपका पर्दाफ़ाश कैसे किया; और एलेन, जो आपके साथ मिली हुई है, और फिर भी मुझ पर तरस खाने का नाटक करती रही, जबकि मैं लिंटन के वापस आने की उम्मीद करती रही, और हमेशा निराश होती रही!'

उसने अपनी यात्रा और उसके परिणामों का सटीक वर्णन किया; और मेरे स्वामी ने, यद्यपि मेरी ओर एक से अधिक तिरस्कारपूर्ण दृष्टि डाली, तब तक कुछ नहीं कहा जब तक उसने अपना वर्णन समाप्त नहीं कर दिया। फिर उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और पूछा कि क्या वह जानती है कि उन्होंने लिंटन के निकटवर्ती इलाके को उससे क्यों छिपाया था? क्या वह सोच सकती है कि ऐसा उसे उस आनंद से वंचित करने के लिए किया गया था जिसका वह निःसंदेह आनंद ले सकती थी?

'ऐसा इसलिए था क्योंकि आप मिस्टर हीथक्लिफ को नापसंद करते थे,' उसने जवाब दिया।

'तो क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारी भावनाओं से ज़्यादा अपनी भावनाओं की परवाह करता हूँ, कैथी?' उसने कहा। 'नहीं, ऐसा इसलिए नहीं था कि मैं मिस्टर हीथक्लिफ को नापसंद करती थी, बल्कि इसलिए कि मिस्टर हीथक्लिफ मुझे नापसंद करते हैं; और वह एक बेहद दुष्ट व्यक्ति हैं, जो अपने दुश्मनों को नुकसान पहुँचाने और बर्बाद करने में आनंद लेते हैं, अगर उन्हें ज़रा सा भी मौका मिले। मुझे पता था कि तुम अपने चचेरे भाई से बिना उसके संपर्क में आए जान-पहचान नहीं रख सकतीं; और मुझे पता था कि वह मेरी वजह से तुमसे नफरत करेगा; इसलिए सिर्फ़ तुम्हारी भलाई के लिए, और किसी कारण से नहीं, मैंने सावधानी बरती कि तुम लिंटन से दोबारा न मिलो। मेरा इरादा था कि जब तुम बड़ी हो जाओगी तो मैं तुम्हें यह बात समझाऊँगी, और मुझे अफ़सोस है कि इसमें देरी हो गई।'

'लेकिन मिस्टर हीथक्लिफ तो काफी मिलनसार थे, पापा,' कैथरीन ने कहा, लेकिन उसे बिल्कुल भी यकीन नहीं हुआ; 'और उन्हें हमारे मिलने पर कोई आपत्ति

नहीं थी: उन्होंने कहा कि मैं जब चाहूँ उनके घर आ सकती हूँ; बस मुझे आपको बताना नहीं है, क्योंकि आपका उनसे झगड़ा हुआ था, और आप आंटी इसाबेला से शादी करने के लिए उन्हें माफ नहीं करेंगे। और आप करेंगे भी नहीं। गलती आपकी है: कम से कम वह तो हमें दोस्त बने रहने देना चाहते हैं; लिंटन और मुझे; और आप नहीं।'

मेरे स्वामी ने यह भाँति जान लिया कि वह अपने ससुर के बुरे स्वभाव पर विश्वास नहीं करेगी, इसलिए उन्होंने इसाबेला को उनके आचरण और वुदरिंग हाइट्स के उनके कब्ज़े में आने के बारे में संक्षेप में बताया। वे इस विषय पर अधिक देर तक बात नहीं कर सकते थे; क्योंकि यद्यपि वे इसके बारे में कम बोलते थे, फिर भी उनके मन में अपने पुराने शत्रु के प्रति वही भय और घृणा थी जो श्रीमती लिंटन की मृत्यु के बाद से उनके हृदय में बसी हुई थी। 'अगर वह न होता तो वह आज भी जीवित होती!' यह उनका निरंतर कड़वा चिंतन था; और उनकी नज़रों में हीथक्लिफ एक हत्यारा प्रतीत होता था। मिस कैथी - जिन्होंने अपने छोटे-मोटे अवज्ञा, अन्याय और आवेशपूर्ण कार्यों के अलावा कोई बुरा काम नहीं किया था, जो क्रोध और लापरवाही से उत्पन्न हुए थे और जिन्हें उन्होंने उसी दिन कर दिया था जिस दिन उन्होंने उन्हें किया था - उस निर्मम मानसिकता को देखकर चकित थीं जो वर्षों तक प्रतिशोध की भावना को मन में संजोए रख सकती है और बिना किसी पश्चाताप के जानबूझकर अपनी योजनाओं को अंजाम दे सकती है। मानव स्वभाव के इस नए दृष्टिकोण से वह इतनी गहरी प्रभावित और स्तब्ध प्रतीत हुई - जो अब तक उसके सभी अध्ययनों और विचारों से पूरी तरह से अछूता था - कि श्री एडगर ने इस विषय पर आगे चर्चा करना अनावश्यक समझा। उन्होंने बस इतना कहा: 'प्रिय, तुम्हें बाद में पता चल जाएगा कि मैं तुम्हें उसके घर और परिवार से दूर रहने के लिए क्यों कह रहा हूँ; अब अपने पुराने कामों और मनोरंजन में लौट जाओ, और उनके बारे में और मत सोचो।'

कैथरीन ने अपने पिता को चूमा और रिवाज के अनुसार कुछ घंटों के लिए चुपचाप बैठकर अपनी पढ़ाई की; फिर वह उनके साथ बगीचे में गई और पूरा दिन हमेशा की तरह बीत गया: लेकिन शाम को, जब वह अपने कमरे में चली गई और मैं उसे कपड़े उतारने में मदद करने गया, तो मैंने उसे बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठकर रोते हुए पाया।

'अरे, धिक्कार है, नासमझ बच्ची!' मैंने कहा। 'अगर तुम्हें सच में कोई दुख होता तो इस छोटी सी बात पर आंसू बहाने में तुम्हें शर्म आती। मिस कैथरीन, तुमने कभी

कोई बड़ा दुख महसूस नहीं किया। एक पल के लिए सोचो कि मैं और मेरे गुरु मर गए हैं और तुम दुनिया में अकेली हो: तब तुम्हें कैसा लगेगा? इस वर्तमान स्थिति की तुलना उस तरह के दुख से करो और अधिक की लालसा करने के बजाय अपने दोस्तों के लिए आभारी रहो।'

'मैं अपने लिए नहीं रो रही हूँ, एलेन,' उसने जवाब दिया, 'मैं उसके लिए रो रही हूँ। उसे कल मुझसे दोबारा मिलने की उम्मीद थी, और वहाँ वह बहुत निराश होगा: और वह मेरा इंतज़ार करेगा, और मैं नहीं आऊँगी!'

'बकवास!' मैंने कहा, 'क्या तुम्हें लगता है कि उसने तुम्हारे बारे में उतना ही सोचा होगा जितना तुमने उसके बारे में? क्या उसका साथी हैरेटन नहीं है? सौ में से एक भी ऐसा रिश्तेदार नहीं होगा जो दो दोपहरों के लिए दो बार मिलने के बाद बिछड़ने पर रोएगा। लिंटन तो बस अंदाज़ा लगाएगा कि मामला क्या है, और तुम्हारे बारे में ज़्यादा सोचेगा भी नहीं।'

'लेकिन क्या मैं उन्हें एक पत्र लिखकर यह नहीं बता सकती कि मैं क्यों नहीं आ सकती?' वह उठते हुए बोलीं। 'और क्या मैं उन्हें वे किताबें भेज सकती हूँ जो मैंने उन्हें उधार देने का वादा किया था? उनकी किताबें मेरी किताबों जितनी अच्छी नहीं हैं, और जब मैंने उन्हें बताया कि वे कितनी दिलचस्प हैं, तो वे उन्हें पाने के लिए बहुत उत्सुक थे। क्या मैं ऐसा कर सकती हूँ, एलेन?'

'नहीं, बिलकुल नहीं! बिलकुल नहीं!' मैंने दृढ़ता से उत्तर दिया। 'फिर वह आपको पत्र लिखेगा, और यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होगा। नहीं, मिस कैथरीन, यह जान-पहचान पूरी तरह से खत्म करनी होगी: पापा यही चाहते हैं, और मैं यह सुनिश्चित करूँगी कि ऐसा ही हो।'

'लेकिन एक छोटा सा नोट कैसे...?' उसने विनती भरे चेहरे के साथ फिर से कहना शुरू किया।

'चुप रहो!' मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'हम तुम्हारे इन छोटे-छोटे नोट्स से शुरुआत नहीं करेंगे। बिस्तर पर जाओ।'

उसने मुझे एक बेहद शरारती नज़र से देखा, इतनी शरारती कि मैंने पहले तो उसे गुड नाइट किस नहीं किया: मैंने उसे कंबल ओढ़ाया और बड़े गुस्से में उसका दरवाज़ा बंद कर दिया; लेकिन, थोड़ा पछतावा करते हुए, मैं धीरे से वापस लौटा, और देखो! मिस मेज पर खड़ी थी, उसके सामने एक खाली कागज़ का टुकड़ा और हाथ में एक

पेंसिल थी, जिसे उसने मेरे आते ही चुपके से नज़रों से ओझल कर दिया।

मैंने कहा, 'कैथरीन, अगर तुम इसे लिखोगी तो इसे लेने वाला कोई नहीं मिलेगा; और अभी मैं तुम्हारी मोमबत्ती बुझा देता हूँ।'

मैंने आग बुझाने वाले यंत्र को आग पर रख दिया, ऐसा करते ही मुझे हाथ पर एक थप्पड़ पड़ा और चिड़चिड़ेपन से 'गुस्से वाली औरत!' सुनाई दी। फिर मैं उससे दूर चला गया, और उसने अपने सबसे बुरे और चिड़चिड़े स्वभाव में कुंडी लगा दी। चिट्ठी पूरी हो चुकी थी और गाँव से आए एक दूधवाले ने उसे उसके गंतव्य तक पहुँचा दिया था; लेकिन मुझे यह बात कुछ समय बाद पता चली। कई हफ्ते बीत गए, और कैथी का स्वभाव फिर से सामान्य हो गया; हालाँकि उसे अकेले ही कोनों में छिपकर पढ़ने का बहुत शौक हो गया था और अक्सर, अगर मैं पढ़ते समय अचानक उसके पास आ जाता, तो वह चौंक जाती और किताब पर झुक जाती, मानो उसे छुपाने की कोशिश कर रही हो; और मैंने पन्नों के बाहर निकले हुए कागज़ के किनारों को देखा। उसे सुबह जल्दी नीचे आने और रसोई में इधर-उधर घूमने की भी आदत पड़ गई थी, मानो वह किसी चीज़ के आने की प्रतीक्षा कर रही हो; और पुस्तकालय में एक अलमारी में उसका एक छोटा सा दराज था, जिसमें वह घंटों तक कुछ न कुछ देखती रहती थी, और जिसकी चाबी वह छोड़ते समय विशेष सावधानी से निकाल कर रखती थी।

एक दिन, जब वह दराज का निरीक्षण कर रही थी, तो मैंने देखा कि उसमें रखे खिलौने और छोटी-मोटी चीज़ें अब कागज़ के टुकड़ों में बदल गई थीं। मेरी जिज्ञासा और संदेह जागा; मैंने उसके रहस्यमय खजाने को देखने का निश्चय किया; इसलिए, रात में, जैसे ही वह और मेरे मालिक ऊपर सुरक्षित चले गए, मैंने खोजबीन की और घर की चाबियों में से एक चाबी आसानी से मिल गई जो ताले में फिट हो गई। ताला खोलकर, मैंने सारा सामान अपने एप्रन में निकाल लिया और उसे अपने कमरे में आराम से देखने के लिए ले गया। हालाँकि मुझे संदेह होना स्वाभाविक था, फिर भी मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे लिंटन हीथक्लिफ के पत्रों का एक बड़ा संग्रह थे - लगभग रोज़ाना, ऐसा ही लगता होगा - उसके द्वारा भेजे गए दस्तावेजों के जवाब। पहले के पत्र संक्षिप्त और अटपटे थे; हालाँकि, धीरे-धीरे वे प्रेम पत्रों में बदल गए, जो लेखक की उम्र के हिसाब से स्वाभाविक रूप से मूर्खतापूर्ण थे, फिर भी उनमें कहीं-कहीं ऐसे अंश थे जो मुझे किसी अनुभवी लेखक से लिए गए प्रतीत हुए। उनमें से कुछ मुझे जोश और नीरसता का एक विचित्र मिश्रण लगे; उनकी शुरुआत तीव्र भावनाओं

से होती थी और अंत बनावटी, शब्दों से भरे उस अंदाज़ में होता था जैसे कोई स्कूली बच्चा अपनी काल्पनिक, निराकार प्रेमिका से करता हो। मुझे नहीं पता कि कैथी को वे पसंद आए या नहीं; लेकिन मुझे वे बिल्कुल बेकार और महत्वहीन लगे। मैंने जितने उचित समझे उतने पत्र पलटने के बाद उन्हें एक रुमाल में बांधकर अलग रख दिया और खाली दराज को दोबारा बंद कर दिया।

अपनी आदत के अनुसार, मेरी युवती सुबह जल्दी नीचे उतरी और रसोई में गई: मैंने उसे एक छोटे लड़के के आने पर दरवाजे तक जाते देखा; और जब दूधवाली उसके डिब्बे में दूध भर रही थी, तो उसने उसकी जैकेट की जेब में कुछ रखा और कुछ निकाल लिया। मैं बगीचे के पास गया और संदेशवाहक का इंतज़ार करने लगा; जिसने अपने भरोसे की रक्षा के लिए बहादुरी से संघर्ष किया, और हम दोनों के बीच दूध गिर गया; लेकिन मैं पत्र चुराने में सफल रहा; और उसे चेतावनी देते हुए कि अगर वह जल्दी घर नहीं लौटा तो उसे गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे, मैं दीवार के नीचे छिपकर मिस कैथी की स्नेहपूर्ण रचना पढ़ने लगा। यह उसकी चचेरी बहन की रचना से कहीं अधिक सरल और प्रभावशाली थी: बहुत सुंदर और बहुत ही मूर्खतापूर्ण। मैंने अपना सिर हिलाया और सोचते हुए घर में चला गया। दिन गीला होने के कारण, वह पार्क में घूमकर अपना मनोरंजन नहीं कर सकी; इसलिए, सुबह की पढ़ाई पूरी करने के बाद, उसने दराज में सुकून पाया। उसके पिता मेज पर बैठकर पढ़ रहे थे; और मैंने जानबूझकर खिड़की के पर्दे के कुछ बिना फटे किनारों में थोड़ा काम ढूँढ़ लिया था, और अपनी नज़र लगातार उसकी हरकतों पर टिकाए रखी थी। कोई भी पक्षी, जो अपने चूजों से भरे घोंसले को लूटे जाने के बाद वापस लौटता है, अपनी पीड़ा भरी चीखों और फड़फड़ाहट में उससे ज़्यादा पूर्ण निराशा व्यक्त नहीं कर सकता, जितनी उसने अपने एक शब्द 'ओह!' से और अपने पहले के खुश चेहरे में आए बदलाव से व्यक्त की। श्री लिंटन ने ऊपर देखा।

‘क्या बात है, प्रिय? क्या तुम्हें चोट लगी है?’ उसने कहा।

उसके लहजे और हावभाव से उसे यकीन हो गया कि वह खजाने का खोजकर्ता नहीं था।

‘नहीं, पापा!’ वह हांफते हुए बोली। ‘एलेन! एलेन! ऊपर आओ — मुझे उल्टी आ रही है!’

मैंने उसकी बात मानी और उसके साथ बाहर चला गया।

‘ओह, एलेन! तुमने उन्हें ले लिया है!’ जब हम अकेले कमरे में थे, तो वह तुरंत घुटनों के बल बैठते हुए बोली, ‘ओह, मुझे दे दो, और मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूंगी! पापा को मत बताना। तुमने पापा को नहीं बताया, एलेन? सच में नहीं बताया? मैं बहुत शरारती थी, लेकिन अब ऐसा नहीं करूंगी!’

मैंने अपने लहजे में अत्यंत गंभीरता दिखाते हुए उसे खड़े होने का आदेश दिया।

‘तो,’ मैंने हैरानी से कहा, ‘मिस कैथरीन, लगता है आप काफी आगे बढ़ चुकी हैं: आपको इन पर शर्म आनी चाहिए! आप अपने खाली समय में कचरे का एक बड़ा गट्ठा पढ़ती हैं, वाकई: अरे वाह, ये तो छपने लायक है! और आपको क्या लगता है जब मैं इसे मास्टर के सामने पेश करूँगी तो वो क्या सोचेंगे? मैंने अभी तक इसे दिखाया नहीं है, लेकिन आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं आपके इन बेतुके रहस्यों को छुपा कर रखूँगी। धिक्कार है! और ऐसी बेतुकी बातें लिखने में तो आपने ही पहल की होगी: मुझे यकीन है कि उन्होंने ऐसा करने के बारे में सोचा भी नहीं होगा।’

‘मैंने नहीं किया! मैंने नहीं किया!’ कैथी फूट-फूट कर रोते हुए बोली, मानो उसका दिल टूट रहा हो। ‘मैंने उससे प्यार करने के बारे में एक बार भी नहीं सोचा था जब तक कि—’

‘प्यार!’ मैंने पूरी शिद्दत से कहा। ‘प्यार! क्या किसी ने कभी ऐसा सुना है! मैं तो मानो उस चक्कीवाले से प्यार करने की बात कर रही हूँ जो साल में एक बार हमारा अनाज खरीदने आता है। वाकई, कितना प्यारा प्यार! और दोनों बार मिलाकर तुमने लिंटन को अपनी पूरी ज़िंदगी में मुश्किल से चार घंटे ही देखा है! अब ये तो बचकाना बकवास है। मैं इसे लेकर पुस्तकालय जा रही हूँ; और फिर देखते हैं तुम्हारे पिताजी ऐसे प्यार के बारे में क्या कहते हैं।’

वह अपने अनमोल पत्रों पर झपट पड़ी, लेकिन मैंने उन्हें अपने सिर के ऊपर रख दिया; और फिर उसने मुझसे और भी ज़ोरदार विनती की कि मैं उन्हें जला दूँ—कुछ भी करूँ, बस उन्हें किसी को न दिखाऊँ। और सच कहूँ तो मुझे डाँटने के बजाय हँसने का मन ज़्यादा कर रहा था—क्योंकि मुझे यह सब बचकाना घमंड लगा—अंततः मैं कुछ हद तक नरम पड़ गई और पूछा,— ‘अगर मैं उन्हें जलाने के लिए राज़ी हो जाऊँ, तो क्या तुम वादा करोगी कि न तो फिर कभी कोई पत्र भेजोगी और न ही कोई किताब (क्योंकि मुझे पता चला है कि तुमने उसे किताबें भेजी हैं), न बालों की लटें, न अंगूठियाँ, न खिलौने?’

‘हम खिलौने नहीं भेजते,’ कैथरीन ने शर्म पर गर्व का भाव हावी होते हुए चिल्लाकर कहा।

‘तो फिर कुछ भी नहीं, मेरी महिला?’ मैंने कहा। ‘अगर आप चाहें तो मैं जा रहा हूँ।’

‘मैं वादा करती हूँ, एलेन!’ उसने मेरी पोशाक पकड़ते हुए चिल्लाकर कहा। ‘ओह, इन्हें आग में डाल दो, डाल दो!’

लेकिन जब मैंने पोकर से छेद खोलने की कोशिश की तो वह दर्द असहनीय था। उसने मुझसे विनती की कि मैं उसे एक-दो छेद बख्श दूं।

‘एक या दो, एलेन, लिंटन के लिए रख लेना!’

मैंने रूमाल की गांठ खोली और उन्हें एक कोण से अंदर डालना शुरू किया, और आग की लपटें चिमनी से ऊपर की ओर उठने लगीं।

‘मुझे एक चाहिए, हे निर्दयी!’ वह चीखी और अपना हाथ आग में डालकर अपनी उंगलियों को गंवाते हुए कुछ अधजले टुकड़े बाहर निकाल लाई।

‘बहुत खूब – और मैं पापा को दिखाने के लिए भी कुछ रखूंगी!’ मैंने जवाब दिया, बाकी बचे हुए को वापस बंडल में डालते हुए और दरवाजे की ओर मुड़ते हुए।

उसने अपने जले हुए टुकड़े आग में डाल दिए और मुझे आत्मदाह की प्रक्रिया पूरी करने का इशारा किया। काम पूरा हो गया; मैंने राख को उछाला और उसे एक फावड़े भर कोयले के नीचे दबा दिया; और वह चुपचाप, और गहरे आहत भाव से, अपने निजी कमरे में चली गई। मैं अपने स्वामी को यह बताने के लिए नीचे गया कि युवती की बीमारी लगभग ठीक हो गई है, लेकिन मुझे लगा कि उसके लिए थोड़ी देर आराम करना ही बेहतर होगा। उसने भोजन नहीं किया; लेकिन चाय के समय वह फिर से प्रकट हुई, पीली पड़ी हुई, आँखों के आसपास लालिमा लिए हुए, और बाहरी रूप से आश्चर्यजनक रूप से उदास। अगली सुबह मैंने पत्र का उत्तर एक पर्ची से दिया, जिस पर लिखा था, 'मास्टर हीथक्लिफ से अनुरोध है कि वे मिस लिंटन को और पत्र न भेजें, क्योंकि वह उन्हें स्वीकार नहीं करेंगी।' और, इसके बाद से, वह छोटा लड़का खाली जेबों के साथ आने लगा।

अध्याय XXII

ग्रीष्म ऋतु समाप्त हो रही थी और शरद ऋतु का आरंभ हो गया था: माइकलमास बीत चुका था, लेकिन उस वर्ष फसल कटाई में देरी हुई थी, और हमारे कुछ खेत अभी भी उजाड़ नहीं हुए थे। श्री लिंटन और उनकी बेटी अक्सर फसल काटने वालों के बीच टहलने जाते थे; अंतिम गठ्ठियाँ ढोने के समय वे शाम तक वहीं रुके रहे, और शाम ठंडी और नम होने के कारण, मेरे स्वामी को ज़ुकाम हो गया, जो उनके फेफड़ों में बुरी तरह जम गया और उन्हें लगभग पूरी सर्दी घर के अंदर ही रहना पड़ा।

बेचारी कैथी, अपने छोटे से प्रेम प्रसंग के टूटने से भयभीत होकर, उसके अधूरे रह जाने के बाद से काफी उदास और सुस्त हो गई थी; और उसके पिता उस पर पढ़ने की बजाय व्यायाम करने का दबाव डालते थे। अब उसे उनका साथ नहीं मिल रहा था; मैंने उनकी कमी को यथासंभव पूरा करना अपना कर्तव्य समझा: हालांकि यह एक अप्रभावी विकल्प था; क्योंकि मैं अपने दिनभर के कामों में से केवल दो या तीन घंटे ही उसके पीछे-पीछे चलने के लिए निकाल पाता था, और तब भी मेरा साथ उनके साथ से कहीं कम वांछनीय था।

अक्टूबर या नवंबर की शुरुआत की एक दोपहर—ताज़ा, पानी से भरी दोपहर, जब घास और पगडंडियाँ नम, मुरझाई पत्तियों से सरसरा रही थीं, और ठंडा नीला आकाश बादलों से आधा ढका हुआ था—गहरे भूरे रंग के बादल पश्चिम से तेज़ी से ऊपर उठ रहे थे, और भारी बारिश का संकेत दे रहे थे—मैंने अपनी प्रेमिका से सैर छोड़ने का अनुरोध किया, क्योंकि मुझे बारिश का पूरा भरोसा था। उसने मना कर दिया; और मैंने अनिच्छा से एक लबादा ओढ़ा और अपना छाता लेकर उसके साथ पार्क के निचले हिस्से तक टहलने चला गया: एक औपचारिक सैर जो वह आम तौर पर उदास मन से करती थी—और वह हमेशा तब उदास रहती थी जब मिस्टर एडगर की तबीयत सामान्य से ज़्यादा खराब होती थी, यह बात उनके कबूलनामे से कभी पता नहीं चली, लेकिन हम दोनों को उनकी बढ़ती चुप्पी और चेहरे की उदासी से इसका अंदाज़ा हो जाता था। वह उदास होकर चलती रही: अब न तो दौड़ना था और न ही उछलना,

हालाँकि ठंडी हवा उसे दौड़ने के लिए ललचा सकती थी। और अक्सर, मेरी नज़र के कोने से, मैं उसे हाथ उठाते और अपने गाल से कुछ झाड़ते हुए देख सकता था। मैंने उसके विचारों को बदलने का कोई उपाय ढूंढने के लिए चारों ओर देखा। सड़क के एक किनारे पर एक ऊँचा, ऊबड़-खाबड़ टीला था, जहाँ हेज़ल और बौने ओक के पेड़, जिनकी जड़ें आधी बाहर निकली हुई थीं, अनिश्चित रूप से टिके हुए थे: मिट्टी ओक के पेड़ों के लिए बहुत ढीली थी; और तेज़ हवाओं ने कुछ पेड़ों को लगभग क्षैतिज स्थिति में ला दिया था। गर्मियों में मिस कैथरीन को इन पेड़ों के तनों पर चढ़ना और शाखाओं में बैठकर ज़मीन से बीस फीट ऊपर झूलना बहुत पसंद था; और मैं, उसकी फुर्ती और उसके कोमल, बचकाने दिल से प्रसन्न होकर, हर बार जब मैं उसे इतनी ऊँचाई पर देखता, तो उसे डांटना उचित समझता था, लेकिन इस तरह से कि उसे पता रहे कि नीचे उतरने की कोई ज़रूरत नहीं है। दोपहर के भोजन से लेकर शाम के खाने तक वह अपने हवा से हिलते झूले में लेटी रहती, कुछ नहीं करती सिवाय पुराने गीत गुनगुनाने के - जो मेरे बचपन के गीत थे - या पक्षियों को देखती, जो उसके साथ रहते थे, अपने बच्चों को खाना खिलाते और उड़ने के लिए लुभाते थे; या बंद पलकों के साथ लेटी रहती, आधा सोचती, आधा सपने देखती, इतनी खुश कि शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

‘देखो, मिस!’ मैंने एक टेढ़े-मेढ़े पेड़ की जड़ों के नीचे एक कोने की ओर इशारा करते हुए कहा। ‘अभी सर्दी नहीं आई है। वहाँ ऊपर एक छोटा सा फूल खिला है, जुलाई में उन घास की सीढ़ियों को बैंगनी धुंध से ढकने वाले अनगिनत नीले घंटियों के फूलों में से यह आखिरी कली है। क्या तुम ऊपर चढ़कर इसे तोड़कर पापा को दिखाओगी?’ कैथी ने मिट्टी की ओट में कांपते हुए उस अकेले फूल को काफी देर तक देखा और अंत में जवाब दिया— ‘नहीं, मैं इसे नहीं छूऊँगी: लेकिन यह उदास लग रहा है, है ना, एलेन?’

‘हाँ,’ मैंने कहा, ‘तुम भी मेरी तरह ही भूखे-प्यासे हो: तुम्हारे गाल खूनहीन हैं; चलो हाथ पकड़कर भागते हैं। तुम इतने दुबले-पतले हो कि मुझे लगता है मैं तुम्हारे साथ चल पाऊँगा।’

'नहीं,' उसने दोहराया, और टहलते हुए आगे बढ़ती रही, बीच-बीच में रुककर काई के एक टुकड़े, या मुरझाई हुई घास के एक गुच्छे, या भूरे पत्तों के ढेर के बीच अपना चमकीला नारंगी रंग फैला रही एक फफूंद पर विचार करती रही; और, बार-बार,

उसका हाथ उसके दूसरी ओर मुड़े हुए चेहरे पर उठ जाता था।

'कैथरीन, तुम क्यों रो रही हो, प्यारी?' मैंने पास जाकर उसके कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा। 'पापा को जुकाम हो गया है, इसलिए रोना नहीं चाहिए; शुक्र मनाओ कि इससे ज्यादा बुरा कुछ नहीं हुआ है।'

अब उसने अपने आंसुओं को रोकने की कोई कोशिश नहीं की; सिसकियों से उसकी सांसें रुक गईं।

'ओह, ये तो और भी बुरा होगा,' उसने कहा। 'और जब पापा और तुम मुझे छोड़कर चले जाओगे और मैं अकेली रह जाऊंगी, तो मैं क्या करूंगी? मैं तुम्हारे शब्द नहीं भूल सकती, एलेन; वे हमेशा मेरे कानों में गूंजते रहते हैं। पापा और तुम मर जाओगे, तो ज़िंदगी कितनी बदल जाएगी, दुनिया कितनी उदास हो जाएगी।'

'कोई नहीं कह सकता कि आप हमसे पहले नहीं मरेंगे,' मैंने जवाब दिया। 'बुराई की आशंका करना ठीक नहीं है। हम उम्मीद करते हैं कि हममें से किसी के जाने से पहले कई साल बाकी हैं: मालिक जवान हैं, और मैं तंदुरुस्त हूँ, और मेरी उम्र मुश्किल से पैंतालीस साल है। मेरी माँ अस्सी साल तक जीवित रहीं, आखिरी समय तक हंसमुख महिला। और मान लीजिए कि श्री लिंटन साठ साल तक जीवित रहे, तो यह आपके द्वारा गिने गए वर्षों से कहीं अधिक होगा, महोदया। और क्या बीस साल से अधिक पहले किसी विपत्ति का शोक मनाना मूर्खता नहीं होगी?'

'लेकिन आंटी इसाबेला पापा से छोटी थीं,' उसने थोड़ी सी उम्मीद के साथ ऊपर देखते हुए कहा, ताकि उसे और सांत्वना मिल सके।

मैंने जवाब दिया, 'आंटी इसाबेला की देखभाल करने के लिए न तो तुम थीं और न ही मैं। वो मास्टर जितनी खुश नहीं थीं: उनके पास जीने के लिए उतना कुछ नहीं था। तुम्हें बस इतना करना है कि अपने पिता की अच्छी तरह से देखभाल करो और उन्हें खुश देखकर उनका मन बहलाओ; और किसी भी बात पर उन्हें चिंता मत दिलाओ: ध्यान रखना, कैथी! मैं छुपा नहीं रही, लेकिन अगर तुम बेकाबू और लापरवाह हो गईं, और उस व्यक्ति के बेटे के लिए मूर्खतापूर्ण, काल्पनिक स्नेह पालती रहीं जो तुम्हें कब्र में देखकर खुश होगा; और उन्हें यह पता चलने दिया कि तुम उनके द्वारा किए गए अलगाव से परेशान हो, तो तुम उन्हें मार सकती हो।'

'पापा की बीमारी के सिवा मुझे किसी बात की चिंता नहीं है,' मेरे साथी ने उत्तर दिया। 'पापा के सामने मेरी कोई परवाह नहीं। और मैं कभी भी—कभी नहीं—जब

तक होश में हूँ, ऐसा कोई काम नहीं करूँगी या ऐसा कोई शब्द नहीं कहूँगी जिससे उन्हें दुख हो। एलेन, मैं उनसे खुद से भी ज़्यादा प्यार करती हूँ; और यह बात मैं इस बात से जानती हूँ: मैं हर रात प्रार्थना करती हूँ कि मैं उनके बाद जीवित रहूँ; क्योंकि मैं दुखी रहना ज़्यादा पसंद करूँगी बजाय इसके कि वे दुखी हों: यही इस बात का प्रमाण है कि मैं उनसे खुद से भी ज़्यादा प्यार करती हूँ।'

मैंने जवाब दिया, 'अच्छी बातें हैं। लेकिन कर्मों से भी यह साबित होना चाहिए; और उसके ठीक होने के बाद, याद रखना कि भय के क्षण में लिए गए संकल्पों को नहीं भूला जाता।'

बातचीत करते-करते हम सड़क पर खुलने वाले एक दरवाजे के पास पहुँचे; और मेरी प्रेमिका, सूरज की रोशनी में फिर से चमकती हुई, ऊपर चढ़ गई और दीवार के शीर्ष पर बैठ गई, और सड़क के किनारे छाया कर रहे जंगली गुलाब के पेड़ों की ऊपरी शाखाओं पर खिले हुए लाल रंग के कुछ फल तोड़ने लगी: नीचे के फल तो गायब हो चुके थे, लेकिन ऊपर के फलों को केवल पक्षी ही छू सकते थे, कैथी की वर्तमान स्थिति को छोड़कर। उन्हें तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाते समय उसकी टोपी गिर गई; और चूंकि दरवाजा बंद था, उसने उसे वापस लाने के लिए नीचे उतरने का प्रस्ताव रखा। मैंने उसे गिरने से बचने के लिए सावधान रहने को कहा, और वह फुर्ती से चली गई। लेकिन वापसी इतनी आसान नहीं थी: पत्थर चिकने और अच्छी तरह से सीमेंटेड थे, और गुलाब की झाड़ियाँ और ब्लैकबेरी की लताएँ वापस चढ़ने में कोई मदद नहीं कर सकती थीं। मैं, मूर्ख की तरह, यह तब तक याद नहीं कर पाया, जब तक मैंने उसे हंसते और चिल्लाते हुए नहीं सुना - 'एलेन! तुम्हें चाबी लानी होगी, नहीं तो मुझे पोर्टर के लॉज तक दौड़ना पड़ेगा।' मैं इस तरफ से प्राचीर पर नहीं चढ़ सकता!

मैंने जवाब दिया, 'वहीं रहो; मेरी जेब में चाबियों का गुच्छा है: शायद मैं इसे खोलने में कामयाब हो जाऊं; अगर नहीं, तो मैं चला जाऊंगा।'

कैथरीन दरवाजे के सामने इधर-उधर नाचकर अपना मनोरंजन कर रही थी, जबकि मैंने एक-एक करके सभी बड़ी चाबियाँ आज़माईं। मैंने आखिरी चाबी भी लगाई, लेकिन कोई भी काम नहीं आई; इसलिए, उससे वहीं रहने की विनती दोहराते हुए, मैं जितनी जल्दी हो सके घर की ओर भागने ही वाला था कि तभी एक आती हुई आवाज़ ने मुझे रोक दिया। यह घोड़े के चलने की आवाज़ थी; कैथी का नाच भी रुक गया।

मैंने फुसफुसाते हुए कहा, 'वह कौन है?'

'एलेन, काश तुम दरवाजा खोल पाती,' मेरे साथी ने घबराकर फुसफुसाते हुए जवाब दिया।

'हो, मिस लिंटन!' एक गहरी आवाज (घुड़सवार की) ने पुकारा, 'आपसे मिलकर खुशी हुई। अंदर आने में जल्दी न करें, क्योंकि मुझे आपसे कुछ पूछना और जानना है।'

'मैं आपसे बात नहीं करूंगी, मिस्टर हीथक्लिफ,' कैथरीन ने उत्तर दिया। 'पापा कहते हैं कि आप एक दुष्ट व्यक्ति हैं, और आप उनसे और मुझसे दोनों से नफरत करते हैं; और एलेन भी यही कहती है।'

'इसका कोई महत्व नहीं है,' हीथक्लिफ ने कहा। (वास्तव में, उसका ही महत्व था।) 'मुझे लगता है कि मैं अपने बेटे से नफरत नहीं करता; और उसी के बारे में मैं आपका ध्यान चाहता हूँ। हाँ; आपको शर्म आनी चाहिए। दो-तीन महीने पहले, क्या आप लिंटन को पत्र नहीं लिखती थीं? खेल-खेल में प्यार कर रही थीं, है ना? इसके लिए आप दोनों को कोड़े पड़ने चाहिए थे! खासकर आपको, बड़े वाले को; और जैसा कि पता चला, आप कम संवेदनशील हैं। मुझे आपके पत्र मिल गए हैं, और अगर आप थोड़ी भी हिम्मत दिखाएँगी तो मैं उन्हें आपके पिता को भेज दूँगा। मुझे लगता है कि आप उस मनोरंजन से ऊब गईं और उसे छोड़ दिया, है ना? खैर, आपने लिंटन को भी उसके साथ निराशा के दलदल में धकेल दिया। वह गंभीर था: सचमुच प्यार में था। मेरी कसम, वह आपके लिए तड़प रहा है; आपकी चंचलता से उसका दिल टूट रहा है: लाक्षणिक रूप से नहीं, बल्कि सचमुच।' हालांकि हैरेटन ने छह सप्ताह से उसका मजाक उड़ाया है, और मैंने अधिक गंभीर उपाय अपनाए हैं, और उसकी मूर्खता को दूर करने के लिए उसे डराने की कोशिश की है, फिर भी उसकी हालत दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है; और अगर आप उसे ठीक नहीं करते हैं, तो गर्मी से पहले ही वह मर जाएगा!

'तुम उस बेचारे बच्चे से इतना बड़ा झूठ कैसे बोल सकती हो?' मैंने अंदर से आवाज़ लगाई। 'बस करो! तुम जानबूझकर ऐसे तुच्छ झूठ कैसे गढ़ सकती हो? मिस कैथी, मैं पत्थर से ताला तोड़ दूंगी: तुम इस घिनौनी बकवास पर विश्वास नहीं करोगी। तुम अपने भीतर महसूस कर सकती हो कि किसी अजनबी के प्यार में किसी की जान जाना नामुमकिन है।'

पकड़े गए बदमाश ने बुदबुदाते हुए कहा, 'मुझे पता नहीं था कि कोई हमारी बातें

सुन रहा है।' उसने ज़ोर से कहा, 'महोदय श्रीमती डीन, मैं आपको पसंद करता हूँ, लेकिन आपका दोहरा व्यवहार मुझे पसंद नहीं। आपने इतना बड़ा झूठ कैसे बोल दिया कि मैंने उस "बेचारी बच्ची" से नफ़रत की? और उसे मेरे घर से दूर रखने के लिए डरावनी कहानियाँ गढ़ीं? कैथरीन लिंटन (तुम्हारा नाम ही मुझे सुकून देता है), मेरी प्यारी बच्ची, मैं इस पूरे हफ़्ते घर से बाहर रहूँगा; जाकर देख लो कि मैंने सच कहा है या नहीं: ज़रूर, प्यारी! ज़रा सोचो कि तुम्हारे पिता मेरी जगह होते, और लिंटन तुम्हारी जगह; फिर सोचो कि अगर तुम्हारा लापरवाह प्रेमी तुम्हें दिलासा देने के लिए एक कदम भी न उठाए, जबकि तुम्हारे पिता ने खुद उससे विनती की हो, तो तुम उसकी कितनी कदर करोगी; और अपनी मूर्खता में आकर वही गलती मत दोहराना। मैं अपनी कसम खाता हूँ, वह अपनी कब्र में जा रहा है, और उसे सिर्फ़ तुम ही बचा सकती हो!'

ताला खुल गया और मैं बाहर निकल गया।

'मैं कसम खाता हूँ कि लिंटन मर रहा है,' हीथक्लिफ ने मेरी ओर घूरते हुए दोहराया। 'और दुख और निराशा उसकी मौत को और तेज़ कर रहे हैं। नेली, अगर तुम उसे जाने नहीं दोगी, तो तुम खुद जा सकती हो। लेकिन मैं अगले हफ्ते इसी समय तक नहीं लौटूँगा; और मुझे लगता है कि तुम्हारे मालिक को भी उसके चचेरे भाई से मिलने पर कोई आपत्ति नहीं होगी।'

मैंने कैथी का हाथ पकड़कर उसे जबरदस्ती अंदर ले जाते हुए कहा, 'अंदर आओ;' क्योंकि वह वहीं रुकी हुई थी और वक्ता के चेहरे को परेशान निगाहों से देख रही थी, जो अपने भीतर छिपे छल को व्यक्त करने के लिए बहुत कठोर था।

उसने अपने घोड़े को पास लाया और झुककर कहा, "मिस कैथरीन, मैं मानता हूँ कि मुझे लिंटन से ज़रा भी सब्र नहीं है; और हैरेटन और जोसेफ को तो उससे भी कम। मैं मानता हूँ कि वह कठोर लोगों के साथ रहता है। वह प्यार के साथ-साथ दया का भी भूखा है; और आपके एक मीठे शब्द उसके लिए सबसे अच्छी दवा होंगे। श्रीमती डीन की कठोर चेतावनियों पर ध्यान मत दीजिए; बल्कि उदार बनिए और उससे मिलने का प्रबंध कीजिए। वह दिन-रात आपके सपने देखता है, और उसे यकीन नहीं दिलाया जा सकता कि आप उससे नफरत नहीं करतीं, क्योंकि आप न तो पत्र लिखती हैं और न ही फोन करती हैं।"

मैंने दरवाजा बंद किया और ढीले ताले को टिकाए रखने के लिए एक पत्थर लुढ़काया; और छाता फैलाकर मैंने अपनी बच्ची को उसके नीचे खींच लिया, क्योंकि

बारिश पेड़ों की कराहती शाखाओं से होकर बहने लगी थी और हमें चेतावनी दे रही थी कि देर न करें। घर की ओर बढ़ते हुए, जल्दबाजी में हम हीथक्लिफ से हुई मुलाकात के बारे में कुछ भी नहीं कह पाए; लेकिन मुझे सहज ही समझ आ गया कि कैथरीन का दिल अब गहरे अंधकार में डूबा हुआ है। उसके चेहरे पर इतनी उदासी थी कि वह उसकी अपनी नहीं लग रही थी: जाहिर है, उसने जो कुछ भी सुना था, उसे वह अक्षरशः सच मान रही थी।

हमारे आने से पहले ही मास्टर आराम करने चले गए थे। कैथी चुपके से उनके कमरे में गई यह पूछने के लिए कि वे कैसे हैं; वे सो गए थे। वह लौटी और मुझे पुस्तकालय में अपने साथ बैठने के लिए कहा। हमने साथ में चाय पी; और बाद में वह कालीन पर लेट गई और मुझसे कहा कि मैं बात न करूँ, क्योंकि वह थकी हुई थी। मैंने एक किताब ली और पढ़ने का नाटक किया। जैसे ही उसने मुझे अपने काम में मग्न देखा, वह फिर से चुपचाप रोने लगी: ऐसा लग रहा था कि आजकल यही उसका पसंदीदा मनोरंजन था। मैंने उसे थोड़ी देर रोने दिया; फिर मैंने विरोध किया: मिस्टर हीथक्लिफ के अपने बेटे के बारे में सभी दावों का उपहास और मजाक उड़ाया, मानो मुझे पूरा यकीन था कि वह मान जाएगी। अफसोस! मेरे पास उनके बयान के प्रभाव को बेअसर करने की क्षमता नहीं थी: यही तो उनका इरादा था।

‘हो सकता है तुम सही कह रही हो, एलेन,’ उसने जवाब दिया; ‘लेकिन जब तक मुझे पता नहीं चल जाता, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा। और मुझे लिंटन को बताना होगा कि मेरा न लिखना मेरी गलती नहीं है, और उसे यकीन दिलाना होगा कि मैं नहीं बदलूंगी।’

उसके भोलेपन और आसानी से विश्वास कर लेने पर गुस्सा करने और विरोध करने का क्या फायदा? उस रात हम अलग हो गए - मनमुटाव के साथ; लेकिन अगले दिन उसने मुझे वुदरिंग हाइट्स जाने वाली सड़क पर, मेरी ज़िद्दी युवा मालकिन के टट्टू के साथ देखा। मैं उसका दुख सहन नहीं कर सका: उसका पीला, उदास चेहरा और भारी आँखें देखना मेरे लिए असहनीय था: और मैंने हार मान ली, इस धुंधली उम्मीद में कि शायद लिंटन खुद हमारे स्वागत से यह साबित कर दे कि कहानी में सच्चाई का कितना कम हिस्सा था।

अध्याय XXIII

बरसात की रात के बाद धुंध भरी सुबह हुई—आधी बर्फ़ जमी थी, आधी बूंदा-बांदी—और रास्ते में छोटी-छोटी नदियाँ बह रही थीं—ऊपरी इलाकों से आती कलकल करती हुई। मेरे पैर पूरी तरह भीग चुके थे; मैं चिड़चिड़ा और उदास था; ठीक ऐसा ही मूड था जो इन अप्रिय चीज़ों का भरपूर आनंद उठाने के लिए उपयुक्त था। हम रसोई के रास्ते से फार्महाउस में दाखिल हुए, यह पता लगाने के लिए कि क्या मिस्टर हीथक्लिफ़ सचमुच घर से बाहर हैं: क्योंकि मुझे उनके अपने बयान पर ज़रा भी भरोसा नहीं था।

जोसेफ जलती हुई आग के पास अकेले, मानो स्वर्ग में बैठे हों; उनके पास मेज पर एक क्वार्ट (लगभग 1 लीटर) बीयर रखी थी, जिसमें भुने हुए ओट्स के बड़े-बड़े टुकड़े भरे थे; और उनके मुंह में उनकी काली, छोटी सी पाइप थी। कैथरीन खुद को गर्म करने के लिए चूल्हे की ओर दौड़ी। मैंने पूछा कि क्या मालिक अंदर हैं? मेरे सवाल का जवाब इतनी देर तक नहीं मिला कि मुझे लगा कि बूढ़ा आदमी बहरा हो गया है, और मैंने अपना सवाल और जोर से दोहराया।

‘ना — अय!’ वह गुर्राया, या यूँ कहें कि नाक से चीखा। ‘ना — अय! याह मु गोआ बैक व्हेयर याह कम फ्रॉ।’

‘जोसेफ!’ अंदर के कमरे से एक चिड़चिड़ी आवाज आई, ठीक मेरे साथ। ‘मैं तुम्हें कितनी बार बुलाऊं? अब तो बस कुछ ही लाल राख बची है। जोसेफ! अभी इसी वक्त आओ।’

तेज़-तेज़ धुएँ के कश और अंगीठी में टकटकी लगाए उसकी निगाहें इस अपील पर कोई ध्यान नहीं दे रही थीं। नौकरानी और हरेटन कहीं नज़र नहीं आ रहे थे; एक किसी काम से बाहर गया था और दूसरा शायद अपने काम पर। हम लिंटन की आवाज़ पहचान गए थे और अंदर चले गए।

‘ओह, मुझे उम्मीद है कि तुम किसी अटारी में भूख से मर जाओगे!’ लड़के ने कहा, हमारे आने को अपने लापरवाह सेवक का संकेत समझकर।

अपनी गलती का एहसास होते ही वह रुक गया: तभी उसका चचेरा भाई उसके पास उड़कर आया।

‘क्या आप हैं, मिस लिंटन?’ उसने अपनी बड़ी कुर्सी की भुजा से सिर उठाते हुए कहा, जिस पर वह लेटा हुआ था। ‘नहीं – मुझे मत चूमो: मेरी सांस रुक जाती है। अरे! पापा ने कहा था कि आप आएंगी,’ कैथरीन के आलिंगन से थोड़ा संभलने के बाद उसने आगे कहा; जबकि कैथरीन बहुत पछतावे भरी नज़रों से खड़ी थी। ‘कृपा करके दरवाज़ा बंद कर दीजिए? आपने उसे खुला छोड़ दिया था; और वे – वे घिनौने जीव आग में अंगारे नहीं लाएंगे। बहुत ठंड है!’

मैंने राख को उछाला और खुद भी एक टोकरी भर राख ले आई। बीमार व्यक्ति ने राख से ढके होने की शिकायत की; लेकिन उसे लगातार खांसी थी और वह बुखार से पीड़ित और बीमार लग रहा था, इसलिए मैंने उसके गुस्से पर उसे डांटा नहीं।

जब लिंटन की झुर्रीदार भौंहें थोड़ी शांत हुईं, तो कैथरीन ने धीरे से कहा, 'अच्छा, लिंटन, क्या तुम मुझे देखकर खुश हो? क्या मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकती हूँ?'

‘तुम पहले क्यों नहीं आई?’ उसने पूछा। ‘तुम्हें चिट्ठी लिखने के बजाय आना चाहिए था। उन लंबी चिट्ठियों को लिखते-लिखते मैं बुरी तरह थक गई थी। मैं तुमसे बात करना ज़्यादा पसंद करती। अब तो न तो बात कर सकती हूँ, न ही कुछ और। पता नहीं ज़िल्लाह कहाँ है! क्या तुम’ (मेरी तरफ देखते हुए) ‘रसोई में जाकर देखोगी?’

मुझे अपनी दूसरी सेवा के लिए कोई धन्यवाद नहीं मिला था; और उसके कहने पर इधर-उधर भागने की अनिच्छा के कारण, मैंने उत्तर दिया - 'वहाँ जोसेफ के अलावा कोई नहीं है।'

‘मुझे पीना है,’ उसने चिड़चिड़ाते हुए कहा और मुँह फेर लिया। ‘पापा के जाने के बाद से ज़िला लगातार गिम्मर्टन जा रही है: यह बहुत बुरा है! और मुझे यहाँ नीचे आना पड़ रहा है — उन्होंने ऊपर मेरी बात न सुनने का फैसला कर लिया है।’

'क्या आपके पिता आप पर ध्यान देते हैं, मास्टर हीथक्लिफ?' मैंने पूछा, क्योंकि मैंने देखा कि कैथरीन अपनी मैत्रीपूर्ण पहल में हिचकिचा रही थी।

‘ध्यान देते हैं? कम से कम वो उन्हें थोड़ा और ध्यान देने लायक तो बना देते हैं,’ वो चिल्लाया। ‘ये बदमाश! क्या आपको पता है, मिस लिंटन, वो जाहिल हरेटन मुझ पर हंसता है! मैं उससे नफरत करता हूँ! सच में, मैं उन सबसे नफरत करता हूँ: वे घिनौने लोग हैं।’

कैथी पानी की तलाश करने लगी; उसे अलमारी में एक जग मिला, उसने एक गिलास भरा और उसे ले आई। उसने उसे मेज पर रखी बोतल से एक चम्मच शराब मिलाने को कहा; और थोड़ी सी शराब पीने के बाद वह शांत हो गई और बोली कि वह बहुत दयालु है।

'और क्या आपको मुझे देखकर खुशी हुई?' उसने अपना पिछला सवाल दोहराते हुए पूछा और चेहरे पर हल्की सी मुस्कान देखकर प्रसन्न हुई।

'जी हाँ, मैं हूँ। तुम्हारी जैसी आवाज़ सुनना एक नया अनुभव है!' उसने जवाब दिया। 'लेकिन मैं नाराज़ था, क्योंकि तुम नहीं आई थीं। और पापा कसम खाकर कहते थे कि यह मेरी वजह से था: उन्होंने मुझे दयनीय, निकम्मा, बेकार कहा; और कहा कि तुम मुझे तुच्छ समझती हो; और अगर वह मेरी जगह होते, तो अब तक वह तुम्हारे पिता से भी ज़्यादा ग्रेंज के मालिक होते। लेकिन तुम मुझे तुच्छ नहीं समझतीं, है ना, मिस —?'

'काश आप कैथरीन या कैथी कहतीं,' मेरी युवती ने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'तुम्हें तुच्छ समझती हूँ? नहीं! पापा और एलेन के बाद, मैं तुम्हें सबसे ज़्यादा प्यार करती हूँ। हालाँकि, मैं मिस्टर हीथक्लिफ से प्यार नहीं करती; और जब वह लौटेंगे तो मैं आने की हिम्मत नहीं करूँगी: क्या वह कई दिनों तक दूर रहेंगे?'

'ज़्यादा नहीं,' लिंटन ने उत्तर दिया; 'लेकिन शिकार का मौसम शुरू होने के बाद से वह अक्सर मैदानों में जाता रहता है; और उसकी अनुपस्थिति में आप मेरे साथ एक-दो घंटे बिता सकते हैं। कृपया बताएँ कि आप ऐसा करेंगे। मुझे नहीं लगता कि मैं आपसे नाराज़ होऊंगा: आप मुझे उकसाएंगे नहीं, और आप हमेशा मेरी मदद के लिए तैयार रहेंगे, है ना?'

'हां,' कैथरीन ने उसके लंबे, मुलायम बालों को सहलाते हुए कहा, 'अगर पापा की सहमति मिल जाए, तो मैं अपना आधा समय तुम्हारे साथ बिताऊंगी। प्यारे लिंटन! काश तुम मेरे भाई होते।'

'तो फिर तुम मुझे अपने पिता की तरह ही पसंद करोगी?' उसने अधिक प्रसन्नता से कहा। 'लेकिन पापा कहते हैं कि अगर तुम मेरी पत्नी बन जाओ तो तुम मुझे उनसे और पूरी दुनिया से भी ज्यादा प्यार करोगी; इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम वही बन जाओ।'

'नहीं, मैं पापा से ज़्यादा किसी से प्यार नहीं कर सकती,' उसने गंभीरता से जवाब

दिया। ‘लोग कभी-कभी अपनी पत्नियों से नफ़रत करते हैं; लेकिन अपने भाई-बहनों से नहीं: और अगर तुम भाई-बहन होते, तो तुम हमारे साथ रहते, और पापा तुम्हें भी उतना ही प्यार करते जितना मुझे करते हैं।’

लिंटन ने इस बात से इनकार किया कि लोग कभी अपनी पत्नियों से नफरत करते हैं; लेकिन कैथी ने कहा कि वे करते हैं, और अपनी समझदारी में, उसने अपने पिता की अपनी चाची के प्रति घृणा का उदाहरण दिया। मैंने उसकी हड़बड़ी को रोकने की कोशिश की। लेकिन जब तक उसने सब कुछ नहीं कह दिया, मैं सफल नहीं हो सका। मास्टर हीथक्लिफ, बहुत चिढ़कर, ने कहा कि उसका बयान झूठा है।

‘पापा ने मुझे बताया था; और पापा झूठ नहीं बोलते,’ उसने चंचलता से जवाब दिया।

‘मेरे पापा तुम्हारे पापा को कोसते हैं!’ लिंटन चिल्लाया। ‘वे उसे धूर्त मूर्ख कहते हैं।’

‘तुम्हारा आदमी दुष्ट है,’ कैथरीन ने पलटवार किया; ‘और तुमने उसकी कही बातों को दोहराने की हिम्मत करके बहुत ही गुस्ताखी की है। उसने आंटी इसाबेला को जिस तरह से उसे छोड़ने पर मजबूर किया, वह ज़रूर दुष्ट होगा।’

लड़के ने कहा, 'उसने उसे नहीं छोड़ा; तुम मेरी बात का खंडन नहीं कर सकते।'

‘हाँ, उसने किया,’ मेरी युवती चिल्लाई।

‘अच्छा, मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ!’ लिंटन ने कहा। ‘तुम्हारी माँ तुम्हारे पिता से नफरत करती थी: अब सुनो।’

‘ओह!’ कैथरीन ने गुस्से में कहा, वह इतनी क्रोधित थी कि आगे बोलने में असमर्थ थी।

उन्होंने आगे कहा, 'और उसे मेरा वाला पसंद था।'

‘तुम छोटे झूठे! अब मैं तुमसे नफरत करती हूँ!’ वह हांफते हुए बोली और उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

'उसने किया! उसने किया!' लिंटन गाते हुए अपनी कुर्सी के खांचे में धंस गया और अपना सिर पीछे की ओर झुकाकर पीछे खड़े दूसरे वाद-विवादकर्ता की उत्तेजना का आनंद लेने लगा।

‘चुप रहो, मास्टर हीथक्लिफ!’ मैंने कहा; ‘मुझे लगता है कि यह कहानी तुम्हारे पिता की भी है।’

‘ऐसा नहीं है: तुम चुप रहो!’ उसने जवाब दिया। ‘उसने ऐसा किया, उसने ऐसा किया, कैथरीन! उसने ऐसा किया, उसने ऐसा किया!’

कैथी आपा खो बैठी और उसने कुर्सी को ज़ोर से धक्का दिया, जिससे वह एक हाथ के सहारे गिर पड़ा। उसे तुरंत ही दम घोंटने वाली खांसी आ गई, जिसने जल्द ही उसकी जीत को खत्म कर दिया। खांसी इतनी देर तक चली कि मुझे भी डर लग गया। उसकी चचेरी बहन, अपने किए पर पछतावे से भरी हुई, फूट-फूट कर रो रही थी, हालांकि उसने कुछ नहीं कहा। मैंने उसे तब तक थामे रखा जब तक कि खांसी शांत नहीं हो गई। फिर उसने मुझे धक्का देकर दूर कर दिया और चुपचाप अपना सिर नीचे झुका लिया। कैथरीन ने भी अपना विलाप शांत किया, सामने बैठ गई और गंभीरता से आग को देखने लगी।

'मास्टर हीथक्लिफ, अब आपको कैसा लग रहा है?' मैंने दस मिनट इंतजार करने के बाद पूछा।

‘काश वो भी मेरी तरह महसूस करती,’ उसने जवाब दिया: ‘कितनी द्वेषपूर्ण, निर्दयी है! हैरेटन मुझे कभी छूता नहीं: उसने अपने जीवन में कभी मुझे मारा नहीं। और आज मैं बेहतर था: और तभी—’ उसकी आवाज़ धीमी और सिसकते हुए बंद हो गई।

कैथी ने अपने होंठ चबाते हुए बुदबुदाते हुए कहा, 'मैंने तुम्हें नहीं मारा!' ताकि वह फिर से भावुक न हो जाए।

वह गहरे कष्ट में डूबे व्यक्ति की तरह आहें भरता और कराहता रहा, और ऐसा वह पंद्रह मिनट तक करता रहा; जाहिरा तौर पर जानबूझकर अपनी चचेरी बहन को परेशान करने के लिए, क्योंकि जब भी उसे उसकी दबी हुई सिसकी सुनाई देती, तो वह अपनी आवाज में और अधिक दर्द और करुणा भर देता।

‘मुझे माफ करना, लिंटन, मैंने तुम्हें चोट पहुंचाई,’ उसने बहुत देर तक बेबस होकर कहा। ‘लेकिन उस हल्के से धक्के से मुझे चोट नहीं लग सकती थी, और मुझे यह भी नहीं पता था कि तुम्हें भी लग सकती है: तुम कोई खास नहीं हो, है ना, लिंटन? मुझे यह सोचकर घर मत जाने देना कि मैंने तुम्हें नुकसान पहुंचाया है। जवाब दो! मुझसे बात करो।’

“मैं तुमसे बात नहीं कर सकता,” वह बुदबुदाया; “तुमने मुझे इतना दुख पहुँचाया है कि मैं पूरी रात खाँसी से घुटता रहूँगा। अगर तुम्हें यह होता तो तुम समझ जाते कि क्या होता है; लेकिन तुम आराम से सो रहे होगे जबकि मैं दर्द से तड़प रहा हूँगा, और

मेरे आस-पास कोई नहीं होगा। मुझे आश्चर्य है कि तुम उन भयानक रातों को कैसे गुजारना चाहोगे!” और वह खुद पर तरस खाकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

मैंने कहा, ‘चूंकि आपको भयानक रातें गुजारने की आदत है, इसलिए आपकी चैन भंग करने वाली मिस नहीं होंगी: अगर वह कभी न भी आतीं तो भी आपकी हालत ऐसी ही होती। खैर, वह अब आपको परेशान नहीं करेंगी; और शायद हमारे जाने के बाद आप शांत हो जाएंगी।’

‘क्या मुझे जाना ही होगा?’ कैथरीन ने उदास स्वर में उससे झुकते हुए पूछा। ‘क्या तुम चाहते हो कि मैं जाऊं, लिंटन?’

उसने चिड़चिड़ेपन से जवाब दिया, उससे दूर हटते हुए, 'तुमने जो किया है उसे बदल नहीं सकतीं, जब तक कि तुम मुझे इतना चिढ़ाकर बुखार न दिला दो कि स्थिति और खराब हो जाए।'

‘तो फिर मुझे जाना होगा?’ उसने दोहराया।

‘कम से कम मुझे अकेला छोड़ दो,’ उसने कहा; ‘मैं तुम्हारी बातें बर्दाश्त नहीं कर सकता।’

वह वहीं रुकी रही और मेरे बार-बार मना करने पर भी नहीं मानी; लेकिन चूंकि उसने न तो ऊपर देखा और न ही कुछ बोला, इसलिए आखिरकार वह दरवाजे की ओर बढ़ी और मैं उसके पीछे-पीछे गया। तभी एक चीख सुनाई दी और हम वापस आ गए। लिंटन अपनी सीट से फिसलकर चूल्हे पर गिर पड़ा था और एक बिगड़े हुए बच्चे की तरह तड़प रहा था, मानो वह जानबूझकर दूसरों को परेशान कर रहा हो। मैंने उसके व्यवहार से ही उसके स्वभाव को भांप लिया और तुरंत समझ गया कि उसे बहलाने की कोशिश करना मूर्खता होगी। लेकिन मेरी साथी ऐसी नहीं थी: वह डर के मारे वापस भागी, घुटनों के बल बैठ गई और रोने लगी, उसे दिलासा देने लगी और उससे विनती करने लगी, जब तक कि वह सांस फूलने से शांत नहीं हो गया: उसे परेशान करने के पछतावे से तो बिलकुल नहीं।

मैंने कहा, ‘मैं उसे उठाकर बेंच पर लिटा देता हूँ, और वो जैसे चाहे लुढ़क सकता है: हम उसे देखने के लिए रुक नहीं सकते। मुझे उम्मीद है कि आप संतुष्ट हैं, मिस कैथी, कि आप उसके लिए फायदेमंद व्यक्ति नहीं हैं; और उसकी सेहत की यह हालत आपसे लगाव के कारण नहीं है। अब, देखो, वो रहा! चलो यहाँ से: जैसे ही उसे पता चलेगा कि उसकी इस हरकत पर ध्यान देने वाला कोई नहीं है, वो चैन से लेट

जाएगा।'

उसने उसके सिर के नीचे एक तकिया रखा और उसे पानी दिया; उसने पानी लेने से इनकार कर दिया और तकिए पर बेचैनी से करवटें बदलने लगा, मानो वह कोई पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा हो। उसने उसे थोड़ा आराम देने की कोशिश की।

उन्होंने कहा, 'मैं इससे काम नहीं चला सकता; यह काफी ऊंचा नहीं है।'

कैथरीन उसके ऊपर लेटने के लिए एक और ले आई.

'यह बहुत ऊंचा है,' उस उत्तेजक वस्तु ने बुदबुदाते हुए कहा।

'तो फिर मुझे इसका इंतजाम कैसे करना चाहिए?' उसने निराशा से पूछा।

जब वह बेंच के पास आधे घुटने के बल बैठी थी, तो वह उससे लिपट गया और उसके कंधे को सहारा बना लिया।

'नहीं, यह ठीक नहीं है,' मैंने कहा। 'मास्टर हीथक्लिफ, आपको तकिये से ही संतोष करना होगा। मिस ने आप पर पहले ही बहुत समय बर्बाद कर दिया है: हम यहाँ पाँच मिनट भी नहीं रुक सकते।'

'हाँ, हाँ, हम कर सकते हैं!' कैथी ने जवाब दिया। 'वह अब अच्छा और धैर्यवान है। उसे लगने लगा है कि अगर मैंने यह मान लिया कि मेरे आने से उसे कोई नुकसान हुआ है, तो आज रात मुझे उससे कहीं ज़्यादा तकलीफ़ होगी: और फिर मैं दोबारा आने की हिम्मत नहीं करूँगी। लिंटन, सच बताओ; क्योंकि अगर मैंने तुम्हें दुख पहुँचाया है, तो मुझे आना ही नहीं चाहिए।'

'तुम्हें आना ही होगा, मुझे ठीक करने के लिए,' उसने उत्तर दिया। 'तुम्हें आना चाहिए, क्योंकि तुमने मुझे चोट पहुँचाई है: तुम जानती हो कि तुमने मुझे बहुत चोट पहुँचाई है! जब तुम आई थीं तब मैं इतना बीमार नहीं था जितना कि अभी हूँ — क्या मैं था?'

"लेकिन रोने और गुस्से में आकर तुमने खुद को बीमार कर लिया है। — मैंने तो कुछ नहीं किया," उसके चचेरे भाई ने कहा। "खैर, अब हम दोस्त रहेंगे। और तुम मुझे चाहते हो: क्या तुम सच में कभी-कभी मुझसे मिलना चाहोगे?"

'मैंने तुमसे कहा था ना,' उसने अधीरता से जवाब दिया। 'सोफे पर बैठो और मुझे अपनी गोद में सहारा लेने दो। माँ भी ऐसा ही करती थीं, पूरा दोपहर साथ बिताती थीं। एकदम शांत बैठो और बात मत करो: लेकिन अगर तुम गा सकती हो तो गाना गा सकती हो; या कोई अच्छी लंबी दिलचस्प लोकगीत सुना सकती हो—उनमें से एक

जो तुमने मुझे सिखाने का वादा किया था; या कोई कहानी सुना सकती हो। वैसे मुझे लोकगीत सुनना ज्यादा पसंद है: शुरू करो।'

कैथरीन ने अपनी याददाश्त के अनुसार सबसे लंबी बात दोहराई। यह काम दोनों को बेहद पसंद आया। मेरे कड़े विरोध के बावजूद, लिंटन ने एक और काम करने की ज़िद की, और फिर एक और; और इस तरह वे बारह बजने तक करते रहे, और फिर हमने आंगन में हरेटन को अपने भोजन के लिए लौटते हुए सुना।

'और कल, कैथरीन, क्या तुम कल यहाँ आओगी?' युवा हीथक्लिफ ने अनिच्छा से उठते हुए उसकी फ्रॉक को पकड़ते हुए पूछा।

'नहीं,' मैंने उत्तर दिया, 'न ही अगले दिन।' हालांकि, उसने स्पष्ट रूप से अलग प्रतिक्रिया दी, क्योंकि जब वह झुकी और उसके कान में फुसफुसाया तो उसका माथा सिकुड़ गया।

'कल आप नहीं जाएंगी, याद रखिएगा ना, मैडम!' घर से बाहर निकलते ही मैंने कहना शुरू किया। 'आप सपने तो नहीं देख रही हैं?'

वह मुस्कुराई।

'ओह, मैं इसका पूरा ख्याल रखूंगा,' मैंने आगे कहा: 'मैं उस ताले की मरम्मत करवा दूंगा, और फिर आप किसी और तरीके से भाग नहीं पाएंगे।'

'मैं दीवार फांद सकती हूँ,' वह हँसते हुए बोली। 'द ग्रेंज कोई जेल नहीं है, एलेन, और तुम मेरी जेलर नहीं हो। और वैसे भी, मैं लगभग सत्रह साल की हूँ: मैं एक औरत हूँ। और मुझे यकीन है कि अगर मैं लिंटन की देखभाल करूँ तो वह जल्दी ठीक हो जाएगा। तुम्हें पता है, मैं उससे बड़ी हूँ और ज़्यादा समझदार भी: कम बचकानी, है ना? और थोड़ी सी मिन्नत करने पर वह जल्दी ही मेरी बात मान लेगा। जब वह अच्छा व्यवहार करता है तो बहुत प्यारा बच्चा है। अगर वह मेरा होता तो मैं उसे बहुत लाड़-प्यार करती। एक-दूसरे को समझने के बाद हम कभी झगड़ा नहीं करेंगे, है ना? क्या तुम्हें वह पसंद नहीं है, एलेन?'

'बिल्कुल उसके जैसा!' मैंने हैरानी से कहा। 'किशोरावस्था में कदम रखने वाला वह बदमिजाज और कमजोर लड़का। शुक्र है, जैसा कि मिस्टर हीथक्लिफ ने अनुमान लगाया था, वह बीस साल का भी नहीं होगा। मुझे तो शक है कि वह बसंत भी देख पाएगा। उसके परिवार को उसके जाने से कोई खास नुकसान नहीं होगा। और हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि उसके पिता ने उसे अपने साथ ले लिया: उसके साथ

जितना अच्छा व्यवहार किया जाता, वह उतना ही चिड़चिड़ा और स्वार्थी होता। मुझे खुशी है कि मिस कैथरीन, आपको उससे शादी करने का कोई मौका नहीं मिलेगा।'

यह भाषण सुनकर मेरी साथी गंभीर हो गई। उनकी मृत्यु के बारे में इतनी बेपरवाही से बात करना उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचा रहा था।

'वह मुझसे छोटा है,' उसने कुछ देर सोचने के बाद उत्तर दिया, 'और उसे सबसे लंबी उम्र जीनी चाहिए: वह जिएगा ही – उसे मेरी जितनी लंबी उम्र जीनी ही होगी। वह अब भी उतना ही तंदुरुस्त है जितना उत्तर में आने पर था; मुझे इस बात का पूरा यकीन है। उसे बस सर्दी-जुकाम है, बिल्कुल पापा की तरह। आप कहती हैं कि पापा ठीक हो जाएंगे, और क्यों नहीं होंगे?'

'अच्छा, अच्छा,' मैं चिल्लाई, 'आखिरकार, हमें परेशान होने की ज़रूरत नहीं है; क्योंकि सुनो, मिस, — और याद रखना, मैं अपना वादा निभाऊँगी, — अगर तुम मेरे साथ या मेरे बिना फिर से वुदरिंग हाइट्स जाने की कोशिश करोगी, तो मैं मिस्टर लिंटन को सूचित कर दूँगी, और जब तक वह अनुमति न दें, तुम्हारे चचेरे भाई के साथ तुम्हारी घनिष्ठता फिर से जीवित नहीं होनी चाहिए।'

कैथी ने रूठते हुए बुदबुदाया, 'इसे पुनर्जीवित कर दिया गया है।'

मैंने कहा, 'तो फिर इसे जारी नहीं रखना चाहिए।'

'देखते हैं,' उसने जवाब दिया और तेजी से घोड़े दौड़ाते हुए चली गई, मुझे पीछे मेहनत करने के लिए छोड़ दिया।

हम दोनों खाने के समय से पहले घर पहुँच गए; मेरे मालिक को लगा कि हम पार्क में घूम रहे थे, इसलिए उन्होंने हमारी अनुपस्थिति का कोई कारण नहीं पूछा। घर में घुसते ही मैंने जल्दी से अपने भीगे हुए जूते और मोज़े बदले; लेकिन हाइट्स पर इतनी देर बैठे रहने से ही ये खराब हो गए थे। अगली सुबह मैं बीमार पड़ गया, और तीन सप्ताह तक मैं अपने कर्तव्यों का पालन करने में असमर्थ रहा: ऐसी विपत्ति मैंने इससे पहले कभी अनुभव नहीं की थी, और शुक्र है कि उसके बाद भी कभी नहीं हुई।

मेरी नन्ही स्वामिनी मेरी सेवा करने और मेरे अकेलेपन को दूर करने के लिए किसी देवदूत की तरह व्यवहार करती थी; कैद ने मुझे बेहद उदास कर दिया था। एक सक्रिय शरीर के लिए यह थका देने वाला होता है: लेकिन शिकायत करने के लिए शायद ही किसी के पास मुझसे कम कारण हों। कैथरीन जैसे ही मिस्टर लिंटन के कमरे से निकलती, वह मेरे बिस्तर के पास आ जाती। उसका पूरा दिन हम दोनों के बीच बँटा

रहता था; मनोरंजन के लिए एक मिनट भी नहीं मिलता था: वह अपने भोजन, पढ़ाई और खेल को भी नज़रअंदाज़ कर देती थी; और वह सबसे स्नेही नर्स थी। अपने पिता से इतना प्यार करने के कारण उसका हृदय कितना कोमल रहा होगा, तभी तो वह मुझे इतना कुछ देती थी। मैंने कहा कि उसका पूरा दिन हम दोनों के बीच बँटा रहता था; लेकिन मालिक जल्दी सो जाते थे, और मुझे आमतौर पर शाम छह बजे के बाद किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं होती थी, इसलिए शाम का समय उसका अपना होता था। बेचारी! मैंने कभी सोचा ही नहीं कि चाय के बाद वह क्या करती होगी। और हालांकि अक्सर, जब वह मुझे शुभ रात्रि कहने के लिए अंदर देखती थी, तो मैं उसके गालों में एक ताजगी भरी चमक और उसकी पतली उंगलियों पर एक गुलाबीपन देखता था, लेकिन ठंडे मैदानों में सवारी करने से उधार ली गई इस बात को समझने के बजाय, मैं इसे पुस्तकालय में लगी तेज आग का परिणाम मानता था।

अध्याय 24

तीन सप्ताह बीतने के बाद मैं अपने कमरे से बाहर निकलकर घर में घूमने-फिरने लगा। और पहली बार जब मैं शाम को जागकर बैठा, तो मैंने कैथरीन से मुझे पढ़कर सुनाने को कहा, क्योंकि मेरी आँखें कमजोर हो गई थीं। हम पुस्तकालय में थे, मालिक सो चुके थे: उसने कुछ अनिच्छा से ही सही, लेकिन मान लिया; और यह सोचकर कि मेरी पसंद की किताबें उसे पसंद नहीं हैं, मैंने उसे अपनी पसंद की किताब चुनने को कहा। उसने अपनी पसंदीदा किताबों में से एक चुनी और लगभग एक घंटे तक लगातार पढ़ती रही; फिर वह बार-बार सवाल पूछने लगी।

‘एलन, क्या तुम थकी नहीं हो? क्या तुम्हें अब लेट जाना चाहिए? इतनी देर तक जागते रहने से तुम्हें उल्टी हो जाएगी, एलेन।’

‘नहीं, नहीं, प्रिय, मैं थकी हुई नहीं हूँ,’ मैंने लगातार जवाब दिया।

मुझे अविचल देखकर, उसने अपने काम के प्रति अरुचि दिखाने का एक और तरीका आजमाया। वह जम्हाई लेने, अंगड़ाई लेने और... में बदल गई।

'एलेन, मैं थक गई हूँ।'

'तो फिर चुप रहो और बात करो,' मैंने जवाब दिया।

यह और भी बुरा था: वह बेचैन और आहें भरती रही, रात आठ बजे तक घड़ी देखती रही, और अंत में अपने कमरे में चली गई, नींद से पूरी तरह थकी हुई; उसके चिड़चिड़े, भारी चेहरे और बार-बार आंखें मलने से यही लग रहा था। अगली रात वह और भी बेचैन लग रही थी; और मेरे साथ वापस आने के तीसरे दिन उसने सिरदर्द की शिकायत की और मुझे छोड़कर चली गई। मुझे उसका व्यवहार अजीब लगा; और काफी देर अकेले रहने के बाद, मैंने जाकर यह पता लगाने का फैसला किया कि क्या वह ठीक है, और उससे अंधेरे में ऊपर जाने के बजाय सोफे पर आकर लेटने के लिए कहा। मुझे ऊपर न तो कैथरीन मिली और न ही नीचे। नौकरों ने भी कहा कि उन्होंने उसे नहीं देखा। मैंने मिस्टर एडगर के दरवाजे पर कान लगाए; सब सन्नाटा था। मैं उसके कमरे में लौटा, अपनी मोमबत्ती बुझाई और खिड़की पर बैठ गया।

चाँद खूब चमक रहा था; ज़मीन पर हल्की बर्फ़ जमी हुई थी, और मैंने सोचा कि शायद उसने ताज़गी पाने के लिए बगीचे में टहलने का मन बना लिया होगा। मैंने पार्क की भीतरी बाड़ के पास किसी को रेंगते हुए देखा; लेकिन वह मेरी मालकिन नहीं थी: जैसे ही वह उजाले में आई, मैंने उसे घोड़ों की देखभाल करने वालों में से एक के रूप में पहचाना। वह काफी देर तक खड़ा रहा, मैदान से होकर जाने वाली गाड़ी की सड़क को देखता रहा; फिर तेज़ी से चलने लगा, मानो उसने कुछ देख लिया हो, और थोड़ी देर बाद मालकिन के टट्टू को लेकर फिर से दिखाई दिया; और वहाँ वह अभी-अभी घोड़े से उतरी थी और उसके बगल में चल रही थी। वह आदमी चुपके से घास के पार अस्तबल की ओर चला गया। कैथी ड्राइंग रूम की खिड़की से अंदर आई और चुपचाप वहाँ पहुँच गई जहाँ मैं उसका इंतज़ार कर रहा था। उसने धीरे से दरवाज़ा बंद किया, अपने बर्फीले जूते उतारे, अपनी टोपी खोली, और मेरी जासूसी से बेखबर, अपना लबादा उतारने लगी, तभी मैं अचानक उठा और खुद को प्रकट कर दिया। आश्चर्य ने उसे एक पल के लिए स्तब्ध कर दिया: उसने अस्पष्ट विस्मयबोध व्यक्त किया और वहीं जम गई।

'मेरी प्यारी मिस कैथरीन,' मैंने कहना शुरू किया, हाल ही में उनकी दयालुता से

इतना प्रभावित था कि डांटने की हिम्मत ही नहीं हुई, ‘आप इस समय कहाँ बाहर गई थीं? और मुझे झूठ बोलकर धोखा देने की कोशिश क्यों कर रही थीं? आप कहाँ थीं? बोलिए!’

‘पार्क के बिल्कुल नीचे,’ वह हकलाते हुए बोली। ‘मैंने कोई कहानी नहीं सुनाई।’

‘और कहीं नहीं?’ मैंने पूछा।

‘नहीं,’ धीमी आवाज़ में जवाब आया।

‘ओह, कैथरीन!’ मैंने दुखी स्वर में कहा। ‘तुम जानती हो कि तुम गलत कर रही हो, वरना तुम मुझसे झूठ बोलने पर मजबूर न होती। इससे मुझे बहुत दुख हुआ है। मैं तीन महीने बीमार रहना पसंद करूंगी, बजाय इसके कि तुम जानबूझकर झूठ बोलो।’

वह झट से आगे बढ़ी और फूट-फूटकर रोने लगी, उसने अपनी बाहें मेरी गर्दन के चारों ओर डाल दीं।

‘एलन, मुझे तुम्हारे नाराज़ होने का बहुत डर है,’ उसने कहा। ‘वादा करो कि तुम नाराज़ नहीं होगी, और तुम्हें सच्चाई पता चल जाएगी: मुझे इसे छिपाना बिल्कुल पसंद नहीं है।’

हम खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गए; मैंने उसे आश्वासन दिया कि मैं उसे डांटूंगी नहीं, चाहे उसका रहस्य कुछ भी हो, और मैंने उसका अनुमान भी लगा लिया था; इसलिए उसने बोलना शुरू किया—

एलेन, मैं वुदरिंग हाइट्स गया था, और जब से तुम बीमार पड़ी हो, तब से मैं एक भी दिन नहीं गया; सिवाय तुम्हारे कमरे से निकलने से पहले तीन बार और तुम्हारे जाने के बाद दो बार। मैंने माइकल को हर शाम मिन्नी को तैयार करने और उसे वापस अस्तबल में छोड़ने के लिए किताबें और तस्वीरें दीं: ध्यान रहे, उसे डांटना मत। मैं साढ़े छह बजे तक हाइट्स पहुँच जाता था और आमतौर पर साढ़े आठ बजे तक वहीं रहता था, फिर घोड़े पर सवार होकर घर लौट आता था। मैं मनोरंजन के लिए नहीं गया था: मैं अक्सर हर समय दुखी रहता था। कभी-कभार ही मैं खुश होता था: शायद हफ्ते में एक बार। पहले तो मुझे लगा था कि तुम्हें लिंटन से किया अपना वादा निभाने के लिए मनाना मुश्किल होगा: क्योंकि मैंने उससे विदा लेने के बाद अगले दिन फिर आने का वादा किया था; लेकिन, चूंकि तुम अगले दिन ऊपर ही रुकी रहीं, इसलिए मैं उस परेशानी से बच गया। दोपहर में जब माइकल पार्क के दरवाजे का ताला लगा रहा था, तभी मुझे चाबी मिल गई और मैंने उसे बताया कि मेरा चचेरा भाई मुझसे मिलने आना

चाहता है, क्योंकि वह बीमार है और ग्रेंज नहीं आ सकता; और पापा को मेरा जाना पसंद नहीं आएगा। फिर मैंने उससे टट्टू के बारे में बात की। उसे पढ़ने का शौक है और वह जल्द ही शादी करने के लिए जाने की सोच रहा है; इसलिए उसने प्रस्ताव दिया कि अगर मैं उसे पुस्तकालय से किताबें उधार दे दूं, तो वह जो चाहे कर सकता है: लेकिन मैंने उसे अपनी किताबें देना बेहतर समझा, और इससे वह ज्यादा संतुष्ट हुआ।

मेरी दूसरी मुलाकात में लिंटन काफी खुशमिजाज लग रहे थे; और ज़िल्लाह (यानी उनकी गृहणी) ने हमारे लिए एक साफ कमरा और अच्छी आग जलाई, और बताया कि चूंकि यूसुफ प्रार्थना सभा में गए हुए हैं और हरेटन अर्नशॉ अपने कुत्तों के साथ हमारे जंगलों से तीतर चुराने गए हैं - जैसा कि मैंने बाद में सुना - इसलिए हम जो चाहें कर सकते हैं। वह मेरे लिए गर्म शराब और जिंजरब्रेड लाईं, और बेहद मिलनसार लग रही थीं, और लिंटन आरामकुर्सी पर बैठे थे, और मैं चूल्हे के पत्थर पर रखी छोटी सी झूला कुर्सी पर, और हम खूब हँसे और बातें कीं, और हमारे पास कहने के लिए बहुत कुछ था: हमने योजना बनाई कि हम कहाँ जाएँगे, और गर्मियों में क्या करेंगे। मुझे इसे दोहराने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि आप इसे मूर्खतापूर्ण कहेंगे।

एक बार हम लगभग झगड़ने ही वाले थे। उनका कहना था कि जुलाई की गर्मी में दिन बिताने का सबसे सुखद तरीका है सुबह से शाम तक दलदली भूमि के बीचोंबीच किसी झाड़ी पर लेटना, जहाँ मधुमक्खियाँ फूलों के बीच मधुर गुनगुनाती हों, लार्क पक्षी आसमान में ऊँची उड़ान भरते हों, और नीला आकाश और चमकीला सूरज लगातार बिना बादलों के चमकता रहे। स्वर्ग की खुशी के बारे में उनकी यही कल्पना थी: मेरी कल्पना थी किसी सरसराते हरे पेड़ पर झूलना, पश्चिम से आती हवा का आनंद लेना, और ऊपर तेज़ी से तैरते चमकीले सफेद बादल; और न केवल लार्क पक्षी, बल्कि थ्रॉस्टल, ब्लैकबर्ड, लिनेट और कोयल चारों ओर मधुर संगीत बिखेर रहे हों, और दूर से दलदली भूमि ठंडी, धुंधली घाटियों में बंटी हुई दिखाई दे; लेकिन पास ही लंबी घास के बड़े-बड़े टीले हवा में लहरों की तरह लहरा रहे हों; और जंगल, बहता पानी, और पूरी दुनिया जागृत और आनंद से सराबोर हो। वह चाहते थे कि सब शांति के परमानंद में डूबे रहें; मैं चाहती थी कि सब एक शानदार उत्सव में जगमगाते और नाचते रहें। मैंने कहा कि उसका स्वर्ग आधा ही जीवंत होगा; और उसने कहा कि मेरा स्वर्ग मदहोश होगा: मैंने कहा कि मैं उसकी गोद में सो जाऊंगी; और उसने कहा कि वह मेरी गोद में सांस नहीं ले सकता, और बहुत चिड़चिड़ाने लगा। आखिरकार, हम

दोनों ने अनुकूल मौसम आते ही दोनों को आजमाने का फैसला किया; और फिर हमने एक-दूसरे को चूमा और दोस्त बन गए।

एक घंटे तक चुपचाप बैठे रहने के बाद, मैंने उस बड़े कमरे को देखा जिसकी फर्श चिकनी और बिना कालीन वाली थी, और सोचा कि अगर हम मेज हटा दें तो उसमें खेलना कितना अच्छा होगा; और मैंने लिंटन से ज़िला को बुलाने के लिए कहा ताकि वह हमारी मदद करे, और हम ब्लाइंडमैन्स-बफ का खेल खेलेंगे; उसे हमें पकड़ने की कोशिश करनी चाहिए: तुम भी तो ऐसा करती थी, एलेन। वह नहीं माना: उसने कहा कि इसमें कोई मज़ा नहीं है; लेकिन वह मेरे साथ गेंद खेलने के लिए राज़ी हो गया। हमें अलमारी में पुराने खिलौनों, लट्टूओं, गोल घेरों, और शटलकॉक के ढेर के बीच दो गेंदें मिलीं। एक पर C लिखा था, और दूसरी पर H; मैं C वाली गेंद लेना चाहती थी, क्योंकि वह कैथरीन का प्रतीक था, और H शायद हीथक्लिफ, उसके नाम का प्रतीक था; लेकिन H से भूसा निकलता था, और लिंटन को यह पसंद नहीं आया। मैंने उसे लगातार हराया: और वह फिर से नाराज़ हो गया, खांसा, और अपनी कुर्सी पर लौट गया। लेकिन उस रात, उनका मूड तुरंत ठीक हो गया: उन्हें दो-तीन प्यारे गाने बहुत पसंद आए — एलेन, ये तुम्हारे गाने थे; और जब मुझे जाना पड़ा, तो उन्होंने मुझसे अगली शाम आने की बहुत मिन्नतें कीं; और मैंने वादा कर दिया। मिन्नी और मैं हवा की तरह हल्के होकर घर लौट आए; और मैं सुबह तक वुदरिंग हाइट्स और अपने प्यारे चचेरे भाई के सपने देखती रही।

अगले दिन मैं उदास थी; कुछ तो इसलिए कि तुम बीमार थे, और कुछ इसलिए कि मैं चाहती थी कि मेरे पिताजी को पता चले और वे मेरी सैर को मंज़ूरी दें: लेकिन चाय के बाद चाँदनी बहुत सुंदर थी; और जैसे ही मैं आगे बढ़ी, उदासी छंट गई। मैंने मन ही मन सोचा, मेरी एक और खुशनुमा शाम होगी; और जो मुझे और भी ज़्यादा खुशी देता है, वह यह है कि मेरी प्यारी लिंटन भी खुश होगी। मैं उनके बगीचे में गई और पीछे की ओर मुड़ने ही वाली थी कि तभी अर्नशॉ नाम का वह आदमी मुझसे मिला, उसने मेरी लगाम पकड़ी और मुझे सामने के दरवाज़े से अंदर जाने को कहा। उसने मिन्नी की गर्दन थपथपाई और कहा कि वह एक सुंदर जानवर है, और ऐसा लग रहा था जैसे वह मुझसे बात करना चाहता हो। मैंने बस इतना कहा कि मेरे घोड़े को अकेला छोड़ दो, नहीं तो वह उसे लात मार देगा। उसने अपने अशिष्ट लहजे में जवाब दिया, "अगर लात मार भी दी तो कुछ नहीं होगा;" और मुस्कुराते हुए उसके पैरों को देखा। मेरा मन कर

रहा था कि मैं उसे ऐसा करने के लिए उकसाऊँ; हालांकि, वह दरवाजा खोलने के लिए आगे बढ़ा, और जैसे ही उसने कुंडी उठाई, उसने ऊपर लिखे शिलालेख को देखा और मूर्खतापूर्ण ढंग से अटपटापन और खुशी के मिश्रण के साथ कहा: "मिस कैथरीन! मैं अब इसे पढ़ सकता हूँ।"

"अद्भुत!" मैंने कहा। "कृपया हमें अपनी आवाज़ सुनाइए—आप तो बड़े बुद्धिमान हो गए हैं!"

उसने नाम को अक्षरशः बोलते हुए और धीरे-धीरे बोलते हुए कहा - "हेयरटन अर्नशॉ।"

"और आंकड़े?" मैंने उत्साहपूर्वक पूछा, यह देखकर कि वह एकदम रुक गया था।

"मैं उन्हें अभी नहीं बता सकता," उन्होंने उत्तर दिया।

"अरे, तुम तो मूर्ख हो!" मैंने उसकी असफलता पर दिल खोलकर हंसते हुए कहा।

वह मूर्ख होंठों पर मुस्कान लिए और आँखों में गुस्से का भाव लिए घूर रहा था, मानो उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि वह मेरी हंसी में शामिल हो सकता है या नहीं: कहीं यह सुखद आत्मीयता तो नहीं थी, या वास्तव में जो था, वह तिरस्कार था। मैंने अचानक गंभीरता दिखाते हुए और उसे चले जाने का इशारा करके उसके संदेह दूर कर दिए, क्योंकि मैं लिंटन से मिलने आया था, उससे नहीं। चाँदनी में मैंने देखा कि उसका चेहरा लाल हो गया, उसने कुंडी से हाथ हटा लिया और शर्म से लाल हो गया, मानो वह अपने अहंकार से पूरी तरह टूट गया हो। मुझे लगता है कि वह खुद को लिंटन जितना ही कुशल समझता था, क्योंकि वह अपना नाम सही से लिख सकता था; और उसे यह देखकर बहुत बुरा लगा कि मैं ऐसा नहीं सोचता था।

'रुको, मिस कैथरीन, प्रिय!' — मैंने बीच में ही टोक दिया। 'मैं डांटना नहीं चाहती, लेकिन मुझे तुम्हारा व्यवहार पसंद नहीं आया। अगर तुम्हें याद होता कि हैरेटन तुम्हारा उतना ही चचेरा भाई था जितना मास्टर हीथक्लिफ, तो तुम्हें समझ आता कि इस तरह का व्यवहार कितना अनुचित था। कम से कम, लिंटन जितना कुशल बनने की उसकी इच्छा सराहनीय महत्वाकांक्षा थी; और शायद उसने सिर्फ दिखावा करने के लिए नहीं सीखा था: मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि तुमने पहले भी उसे उसकी अज्ञानता पर शर्मिंदा किया था; और वह इसे सुधारना और तुम्हें खुश करना चाहता था। उसके अपूर्ण प्रयास का उपहास करना बहुत ही खराब व्यवहार था। अगर तुम उसकी परिस्थितियों में पली-बढ़ी होतीं, तो क्या तुम इतनी असभ्य नहीं होतीं? वह तुम्हारी

तरह ही तेज और बुद्धिमान बच्चा था; और मुझे दुख है कि अब उसे तिरस्कृत किया जा रहा है, क्योंकि उस नीच हीथक्लिफ ने उसके साथ इतना अन्याय किया है।'

'अच्छा, एलेन, तुम इस बारे में रोओगी नहीं, है ना?' मेरी गंभीरता देखकर वह आश्चर्यचकित होकर बोली। 'लेकिन रुको, और तुम्हें पता चल जाएगा कि क्या उसने मुझे खुश करने के लिए अपनी औकात दिखाई; और क्या उस जानवर के साथ नरमी बरतना सार्थक था।' मैं अंदर गई; लिंटन सोफे पर लेटा हुआ था, और मेरा स्वागत करने के लिए आधा उठ खड़ा हुआ।

"आज रात मेरी तबीयत ठीक नहीं है, कैथरीन, मेरी प्यारी," उसने कहा; "तुम्हें ही सारी बातें करनी होंगी, मुझे सुनने दो। आओ, मेरे पास बैठो। मुझे पूरा यकीन था कि तुम अपना वादा नहीं तोड़ोगी, और जाने से पहले मैं तुमसे फिर से वादा करवा लूंगा।"

अब मुझे पता चल गया था कि मुझे उसे परेशान नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह बीमार था; इसलिए मैंने धीरे से बात की और कोई सवाल नहीं पूछा, और उसे किसी भी तरह से चिढ़ाने से परहेज किया। मैं उसके लिए अपनी कुछ बेहतरीन किताबें लाया था: उसने मुझसे उनमें से एक को थोड़ा पढ़ने के लिए कहा, और मैं लगभग मान ही गया था कि तभी अर्नशॉ ने गुस्से में दरवाजा खोल दिया। वह सीधे हमारी ओर बढ़ा, लिंटन को बांह से पकड़ा और उसे कुर्सी से नीचे धकेल दिया।

"अपने कमरे में जाओ!" उसने गुस्से से लगभग बेबस आवाज में कहा; उसका चेहरा सूजा हुआ और क्रोधित लग रहा था। "अगर वह तुमसे मिलने आए तो उसे भी वहीं ले जाओ: मुझे इससे दूर मत रखो। तुम दोनों यहाँ से चले जाओ!"

उसने हमें गालियां दीं और लिंटन को जवाब देने का समय भी नहीं दिया, लगभग उसे रसोई में धकेल दिया; और जब मैं उसके पीछे गया तो उसने अपनी मुट्ठी भींच ली, मानो मुझे गिराने की ठान रहा हो। मैं एक पल के लिए डर गया और मैंने एक किताब नीचे गिरा दी; उसने उसे मेरे पीछे लात मारी और हमें बाहर निकाल दिया। मैंने आग के पास एक भयानक, कर्कश हंसी सुनी और मुड़कर देखा तो वह घिनौना जोसेफ अपनी हड्डियों वाले हाथों को रगड़ता हुआ कांप रहा था।

"मुझे पूरा यकीन था कि वो तुम्हें बचा लेगा! वो बहुत अच्छा लड़का है! उसमें सच्ची भावना है! वो जानता है—हाँ, वो उतना ही जानता है जितना मैं जानता हूँ, कि वहाँ का मालिक कौन होना चाहिए—मैं, मैं, मैं! उसने तुम्हें सही तरीके से भागने में मदद की! मैं, मैं, मैं!"

“हमें कहाँ जाना चाहिए?” मैंने अपने चचेरे भाई से पूछा, उस बूढ़े दुष्ट के उपहास को नजरअंदाज करते हुए।

‘लिंटन का चेहरा पीला पड़ गया था और वह कांप रहा था। एलेन, वह उस समय सुंदर नहीं लग रहा था: ओह, नहीं! वह भयानक दिख रहा था; क्योंकि उसका पतला चेहरा और बड़ी-बड़ी आंखें उन्मादपूर्ण, शक्तिहीन क्रोध की अभिव्यक्ति में ढली हुई थीं। उसने दरवाजे का हैंडल पकड़ा और उसे हिलाया: वह अंदर से बंद था।’

“अगर तुमने मुझे अंदर नहीं आने दिया, तो मैं तुम्हें मार डालूँगा! — अगर तुमने मुझे अंदर नहीं आने दिया, तो मैं तुम्हें मार डालूँगा!” वह चीखते हुए बोला, “शैतान! शैतान! — मैं तुम्हें मार डालूँगा — मैं तुम्हें मार डालूँगा!”

जोसेफ ने फिर से अपनी कर्कश हंसी हंसी।

“देखो, ये तो पिता हैं!” वह चिल्लाया। “ये तो पिता हैं! हम सब में कुछ न कुछ अच्छाई है। चिंता मत करो, हरेटन, बेटा – डरो मत – वो तुम तक नहीं पहुँच सकते!”

मैंने लिंटन के हाथ पकड़े और उसे खींचकर दूर ले जाने की कोशिश की; लेकिन वह इतनी ज़ोर से चीखा कि मेरी हिम्मत ही नहीं हुई। अंत में उसकी चीखें भयानक खांसी के दौरे से रुक गईं; उसके मुंह से खून बहने लगा और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। मैं डर के मारे आंगन में भागी और ज़िल्लाह को अपनी पूरी ताकत से पुकारा। उसने जल्द ही मेरी आवाज़ सुन ली: वह खलिहान के पीछे एक शेड में गायों का दूध दुह रही थी और काम से जल्दी से आकर उसने पूछा कि क्या करना है? मेरे पास कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी; उसे अंदर खींचते हुए, मैं लिंटन को ढूंढने लगी। अर्नशॉ अपने किए का मुआयना करने के लिए बाहर आया था और उस बेचारे को ऊपर ले जा रहा था। ज़िल्लाह और मैं उसके पीछे चढ़े; लेकिन उसने मुझे सीढ़ियों के ऊपर रोक दिया और कहा कि मुझे अंदर नहीं जाना चाहिए: मुझे घर जाना है। मैंने चिल्लाकर कहा कि उसने लिंटन को मार डाला है और मैं अंदर जाऊंगी। जोसेफ ने दरवाजा बंद कर दिया और कहा कि मुझे "ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए", और मुझसे पूछा कि क्या मैं "उसके जितनी पागल हो गई हूँ"। मैं तब तक रोती रही जब तक नौकरानी वापस नहीं आ गई। उसने कहा कि थोड़ी देर में वह ठीक हो जाएगा, लेकिन वह इस चीख-पुकार और शोर को सहन नहीं कर सकता; और उसने मुझे उठाया और लगभग मुझे उठाकर घर के अंदर ले गई।

एलेन, मैं अपने सिर के बाल नोचने को तैयार थी! मैं इतना रोई कि मेरी आँखें

लगभग धुंधली हो गईं; और वह बदमाश जिसके प्रति तुम्हें इतनी सहानुभूति है, मेरे सामने खड़ा था: बीच-बीच में मुझे "काश" कहकर पुकारता और अपनी गलती मानने से इनकार करता; और अंत में, मेरे इस दावे से डरकर कि मैं पापा को बता दूँगी और उसे जेल में डालकर फाँसी दे दूँगी, वह भी सिसकने लगा और अपनी कायरतापूर्ण घबराहट को छिपाने के लिए जल्दी से बाहर भाग गया। फिर भी, मैं उससे पीछा नहीं छुड़ा पाई: जब आखिरकार उन्होंने मुझे जाने के लिए मजबूर किया और मैं परिसर से कुछ सौ गज दूर चली गई, तो वह अचानक सड़क के किनारे की छाया से निकला और मिन्नी को रोककर मुझे पकड़ लिया।

“मिस कैथरीन, मुझे बहुत दुख है,” उन्होंने कहना शुरू किया, “लेकिन यह कुछ ज्यादा ही बुरा हुआ —”

मैंने उसे अपनी चाबुक से एक वार किया, यह सोचकर कि शायद वह मेरी हत्या कर देगा। उसने मुझे छोड़ दिया और अपनी भयानक गालियों में से एक बड़बड़ाने लगा, और मैं लगभग बेहोशी की हालत में घोड़े दौड़ाकर घर पहुँच गया।

उस शाम मैंने तुम्हें शुभ रात्रि नहीं कहा, और अगले दिन मैं वुदरिंग हाइट्स नहीं गई: मैं बहुत जाना चाहती थी; लेकिन मैं अजीब तरह से घबराई हुई थी, और कभी-कभी लिंटन की मौत की खबर सुनकर डर जाती थी; और कभी-कभी हैरेटन से मिलने के ख्याल से ही कांप जाती थी। तीसरे दिन मैंने हिम्मत जुटाई: कम से कम, मैं और इंतज़ार नहीं कर सकती थी, और एक बार फिर चुपके से निकल गई। मैं पाँच बजे गई, और चलने लगी; मुझे लगा कि मैं चुपके से घर में घुस जाऊंगी, और लिंटन के कमरे तक बिना किसी को देखे पहुँच जाऊंगी। लेकिन कुत्तों ने मेरे आने की आहट दे दी। ज़िल्लाह ने मेरा स्वागत किया, और यह कहते हुए कि "लड़का ठीक हो रहा है," मुझे एक छोटे, साफ-सुथरे, कालीन बिछे कमरे में ले गई, जहाँ, मेरी असीम खुशी के लिए, मैंने लिंटन को एक छोटे सोफे पर लेटे हुए, मेरी एक किताब पढ़ते हुए देखा। लेकिन वह पूरे एक घंटे तक न तो मुझसे बोला और न ही मेरी तरफ देखा, एलेन: उसका मिजाज बहुत खराब है। और जब उसने अपना मुंह खोला, तो मुझे सबसे ज्यादा हैरानी इस बात से हुई कि उसने झूठा दावा किया कि मैंने ही हंगामा खड़ा किया था और हैरेटोन का इसमें कोई दोष नहीं था! मैं गुस्से में कुछ कह नहीं पाई और उठकर कमरे से बाहर चली गई। उसने धीमी आवाज़ में "कैथरीन!" कहा। उसे उम्मीद नहीं थी कि मुझे ऐसा जवाब मिलेगा: लेकिन मैं वापस नहीं लौटी; और अगले दिन दूसरा दिन था

जब मैं घर पर ही रही, लगभग ठान लिया था कि अब उससे मिलने नहीं जाऊंगी। लेकिन सोने और उठने में इतनी तकलीफ हो रही थी और उसके बारे में कुछ भी पता नहीं चल रहा था कि मेरा इरादा बनने से पहले ही हवा में उड़ गया। एक बार यात्रा करना गलत लग रहा था; अब तो यात्रा न करना भी गलत लग रहा था। माइकल ने मुझसे पूछा कि क्या उसे मिन्नी पर काठी कसनी चाहिए; मैंने "हाँ" कहा और खुद को एक कर्तव्य मानते हुए उसे पहाड़ियों से होते हुए ले गई। मुझे आंगन तक पहुँचने के लिए सामने की खिड़कियों से होकर गुजरना पड़ा: अपनी उपस्थिति छिपाने की कोशिश करना बेकार था।

"छोटे मालिक घर में हैं," ज़िल्लाह ने मुझे बैठक की ओर जाते देख कहा। मैं अंदर गया; अर्नशॉ भी वहीं थे, लेकिन वे तुरंत कमरे से बाहर निकल गए। लिंटन बड़ी सी आरामकुर्सी पर अधनी नींद में बैठे थे; आग के पास जाकर मैंने गंभीर स्वर में बोलना शुरू किया, हालांकि मेरा इरादा कुछ हद तक सच बोलने का था।

"चूंकि तुम मुझे पसंद नहीं करते, लिंटन, और जैसा कि तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें चोट पहुंचाने के इरादे से आता हूं, और हर बार ऐसा ही दिखावा करता हूं, इसलिए यह हमारी आखिरी मुलाकात है: चलो अलविदा कह देते हैं; और मिस्टर हीथक्लिफ को बता देना कि तुम मुझसे मिलना नहीं चाहते, और उन्हें इस विषय पर और कोई झूठ नहीं गढ़ना चाहिए।"

"बैठ जाओ और अपनी टोपी उतार दो, कैथरीन," उसने उत्तर दिया। "तुम मुझसे कहीं ज़्यादा खुश हो, तुम्हें बेहतर होना चाहिए। पापा मेरी कमियों के बारे में बहुत बातें करते हैं और मेरा इतना मज़ाक उड़ाते हैं कि स्वाभाविक है कि मुझे खुद पर शक हो। मुझे शक होता है कि कहीं मैं उतना ही बेकार तो नहीं जितना वो मुझे अक्सर कहते हैं; और फिर मैं इतना गुस्सा और कड़वाहट महसूस करता हूँ कि मुझे सबसे नफ़रत हो जाती है! मैं लगभग हमेशा ही बेकार, चिड़चिड़ा और दुखी रहता हूँ; और अगर तुम चाहो तो अलविदा कह सकती हो: एक झंझट से छुटकारा पा लोगी। बस, कैथरीन, मेरे साथ यह न्याय करो: मानो कि अगर मैं तुम्हारे जितना मीठा, दयालु और अच्छा हो सकता, तो मैं होता; खुशी-खुशी, और उससे भी ज़्यादा, जितना खुश और स्वस्थ। और मानो कि तुम्हारी दयालुता ने मुझे तुमसे इतना गहरा प्यार करने पर मजबूर कर दिया है जितना कि मैं तुम्हारे प्यार के लायक भी नहीं था: और हालाँकि मैं तुम्हें अपना स्वभाव दिखाने से खुद को रोक नहीं सका, और रोक भी नहीं सकता, मुझे इसका

अफ़सोस है और मैं पश्चाताप करता हूँ; और मरने तक इसका अफ़सोस करता रहूँगा!”

मुझे लगा कि उसने सच कहा था; और मुझे लगा कि मुझे उसे माफ कर देना चाहिए: और, भले ही अगले ही पल हमारा झगड़ा हो जाए, मुझे उसे फिर से माफ कर देना चाहिए। हमारा सुलह हो गया; लेकिन जब तक मैं वहाँ रही, हम दोनों रोते रहे: पूरी तरह से दुख के कारण नहीं; फिर भी मुझे इस बात का अफसोस था कि लिंटन का स्वभाव इतना विकृत था। वह अपने दोस्तों को कभी चैन से नहीं रहने देता, और वह खुद भी कभी चैन से नहीं रहता! उस रात के बाद से मैं हमेशा उसके छोटे से बैठक कक्ष में जाती रही हूँ; क्योंकि उसके पिता अगले दिन लौट आए थे।

मुझे लगता है कि लगभग तीन बार हम खुश और आशावान रहे, जैसे पहली शाम थे; बाकी की मुलाकातें नीरस और परेशान करने वाली रहीं: कभी उनकी स्वार्थपरता और द्वेष के कारण, तो कभी उनके कष्टों के कारण: लेकिन मैंने पहले वाले को लगभग उतनी ही कम नाराजगी के साथ सहना सीख लिया है जितना कि दूसरे वाले को। श्री हीथक्लिफ जानबूझकर मुझसे बचते हैं: मैंने उन्हें मुश्किल से ही देखा है। दरअसल, पिछले रविवार को, सामान्य से जल्दी आकर, मैंने उन्हें पिछली रात के व्यवहार के लिए बेचारे लिंटन को बुरी तरह कोसते हुए सुना। मैं नहीं बता सकती कि उन्हें कैसे पता चला, जब तक कि उन्होंने सुना न हो। लिंटन ने निश्चित रूप से उकसाने वाला व्यवहार किया था: हालांकि, यह केवल मेरा मामला था, और मैंने श्री हीथक्लिफ के भाषण को बीच में रोककर उन्हें यह बात बताई। वह जोर से हँसे और यह कहते हुए चले गए कि उन्हें खुशी है कि मैंने इस मामले को इस तरह देखा। तब से, मैंने लिंटन से कहा है कि वह अपनी कड़वी बातें दबे स्वर में कहें। अब, एलेन, तुमने सब कुछ सुन लिया है। मुझे वुदरिंग हाइट्स जाने से कोई नहीं रोक सकता, सिवाय दो लोगों को तकलीफ पहुँचाने के; जबकि, अगर तुम पापा को नहीं बताओगी, तो मेरे जाने से किसी की शांति भंग नहीं होगी। तुम नहीं बताओगी, है ना? अगर तुमने बताया तो यह बहुत निर्दयता होगी।

‘मिस कैथरीन, मैं कल तक इस बारे में फैसला कर लूंगा,’ मैंने जवाब दिया। ‘इसमें कुछ अध्ययन की आवश्यकता है; इसलिए मैं आपको आराम करने देता हूं और इस पर विचार करता हूं।’

मैंने अपने मालिक की उपस्थिति में इस पर विचार किया; सीधे उसके कमरे से उनके कमरे में जाकर, मैंने पूरी कहानी सुनाई—सिवाय उसकी चचेरी बहन के साथ

हुई बातचीत और हैरेटोन के किसी भी ज़िक्र के। श्री लिंटन चिंतित और परेशान थे, जितना उन्होंने मुझसे स्वीकार किया उससे कहीं ज़्यादा। सुबह, कैथरीन को मेरे विश्वासघात के बारे में पता चला, और उसे यह भी पता चला कि उसकी गुप्त मुलाकातें अब समाप्त होने वाली हैं। वह निषेध के विरुद्ध व्यर्थ ही रोई और गिड़गिड़ाई, और अपने पिता से लिंटन पर दया करने की विनती की: उसे सांत्वना के रूप में केवल इतना ही मिला कि वह पत्र लिखकर उसे जब चाहे ग्रेंज आने की अनुमति देंगे; लेकिन यह स्पष्ट किया कि अब उसे वुदरिंग हाइट्स में कैथरीन से मिलने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। शायद, यदि उन्हें अपने भतीजे के स्वभाव और स्वास्थ्य की स्थिति का पता होता, तो वे इस मामूली सांत्वना को भी न देने को ही उचित समझते।

अध्याय XXV

श्रीमती डीन ने कहा, "ये सब बातें पिछली सर्दियों में घटी थीं, महोदय; लगभग एक साल पहले। पिछली सर्दियों में, मैंने सोचा भी नहीं था कि बारह महीने बीतने पर मुझे परिवार के एक अजनबी को ये सब बातें सुनाकर मनोरंजन करना पड़ेगा! फिर भी, कौन जानता है कि आप कब तक अजनबी रहेंगे? आप अकेले रहकर हमेशा संतुष्ट रहने के लिए बहुत छोटे हैं; और मुझे लगता है कि कैथरीन लिंटन को देखकर कोई भी उनसे प्यार किए बिना नहीं रह सकता। आप मुस्कुराते हैं; लेकिन जब मैं उनके बारे में बात करती हूँ तो आप इतने उत्साहित और उत्सुक क्यों दिखते हैं? और आपने मुझसे उनकी तस्वीर अपने फायरप्लेस के ऊपर टांगने के लिए क्यों कहा है? और क्यों—?"

'रुको, मेरे प्यारे दोस्त!' मैं चिल्लाया। 'हो सकता है कि मैं उससे प्यार करता हूँ; लेकिन क्या वह मुझसे प्यार करेगी? मुझे इस बात पर बहुत संदेह है कि प्रलोभन में पड़कर अपनी शांति को दांव पर लगाना कितना मुश्किल होगा: और फिर मेरा घर यहाँ नहीं है। मैं व्यस्त दुनिया का हिस्सा हूँ, और मुझे उसी की बाहों में लौटना है। आगे

बोलो। क्या कैथरीन अपने पिता के आदेशों का पालन करती थी?'

"हाँ, वो ठीक थी," नौकरानी ने आगे कहा। "उसके दिल में उसके लिए स्नेह अभी भी सबसे प्रबल था; और उसने बिना क्रोध के बात की: उसने उस गहरे स्नेह से बात की, जैसे कोई अपने खजाने को खतरों और दुश्मनों के बीच छोड़कर जा रहा हो, जहाँ उसके याद किए हुए शब्द ही एकमात्र सहारा होंगे जो वो उसे राह दिखाने के लिए दे सकता है। कुछ दिनों बाद उसने मुझसे कहा, "काश मेरा भतीजा एलेन को चिट्ठी लिखे या फोन करे। मुझे ईमानदारी से बताओ कि तुम उसके बारे में क्या सोचती हो: क्या उसमें सुधार हुआ है, या जैसे-जैसे वो बड़ा होता जाएगा, उसमें सुधार की कोई संभावना है?"

"वह बहुत नाज़ुक है, महोदय," मैंने उत्तर दिया; "और उसके जवान होने की संभावना बहुत कम है; लेकिन मैं इतना कह सकता हूँ कि वह अपने पिता जैसा नहीं दिखता; और अगर मिस कैथरीन की उससे शादी करने की बदकिस्मती हुई, तो वह उसके नियंत्रण से बाहर नहीं होगी: बशर्ते वह हद से ज़्यादा और मूर्खतापूर्ण तरीके से उसे लाड़-प्यार न करे। वैसे, स्वामी, आपके पास उससे परिचित होने और यह देखने के लिए काफ़ी समय है कि वह उसके लिए उपयुक्त होगा या नहीं: उसके बालिग होने में अभी चार साल से ज़्यादा का समय है।"

एडगर ने आह भरी और खिड़की की ओर चलते हुए गिम्मर्टन चर्च की ओर देखा। दोपहर धुंधली थी, लेकिन फरवरी की धूप हल्की चमक रही थी, और हम आंगन में लगे दो देवदार के पेड़ों और कुछ-कुछ बिखरी हुई कब्रों को मुश्किल से देख पा रहे थे।

'मैंने अक्सर प्रार्थना की है,' वह आधे मन ही मन बोले, 'जो आने वाला है उसके आने के लिए; और अब मैं सिहरने लगा हूँ, और उससे डरने लगा हूँ। मैंने सोचा था कि जिस पल मैं उस घाटी से दूल्हा बनकर आया था, उसकी याद उस प्रत्याशा से कम मीठी होगी कि कुछ ही महीनों में, या शायद हफ़्तों में, मुझे ऊपर ले जाया जाएगा, और उस सुनसान घाटी में दफनाया जाएगा! एलेन, मैं अपनी छोटी कैथी के साथ बहुत खुश रहा हूँ: सर्दियों की रातों और गर्मियों के दिनों में वह मेरे साथ एक जीवित आशा थी। लेकिन मैं उस पुराने चर्च के नीचे, उन पत्थरों के बीच अकेले में सोचते हुए भी उतना ही खुश रहा हूँ: जून की लंबी शामों में, उसकी माँ की कब्र के हरे टीले पर लेटे हुए, और उस समय की कामना करते हुए - तरसते हुए जब मैं भी उसके नीचे लेट सकूँ। मैं कैथी के लिए क्या करूँ? मैं उसे कैसे विदा करूँ? मुझे इस बात की ज़रा भी

परवाह नहीं है कि लिंटन हीथक्लिफ का बेटा है; और न ही इस बात की कि वह उसे मुझसे ले जाए, अगर वह मेरे जाने के दुख में उसे सांत्वना दे सके।' मुझे इस बात की परवाह नहीं कि हीथक्लिफ अपने मकसद में कामयाब हो जाए और मुझसे मेरा आखिरी सुख छीन ले! लेकिन अगर लिंटन नालायक निकला—सिर्फ अपने पिता का एक कमजोर मोहरा—तो मैं उसे उसके हवाले नहीं कर सकती! और, भले ही उसके हंसमुख मन को कुचलना कितना भी मुश्किल हो, मुझे जीते जी उसे दुखी रखना होगा और मरने के बाद उसे अकेला छोड़ना होगा। प्रियतमा! मैं उसे ईश्वर को सौंपना और उसे अपने सामने धरती में दफनाना ज़्यादा पसंद करूंगी।

'श्रीमान, उसे ईश्वर के भरोसे छोड़ दीजिए,' मैंने उत्तर दिया, 'और यदि हम आपको खो दें—भगवान न करे—तो उनकी कृपा से, मैं अंत तक उसका मित्र और सलाहकार बना रहूँगा। मिस कैथरीन एक अच्छी लड़की है: मुझे डर नहीं है कि वह जानबूझकर गलत रास्ते पर जाएगी; और जो लोग अपना कर्तव्य निभाते हैं, उन्हें अंततः पुरस्कृत किया जाता है।'

वसंत ऋतु आगे बढ़ रही थी; फिर भी मेरे स्वामी में कोई वास्तविक शक्ति नहीं आई, हालांकि उन्होंने अपनी बेटी के साथ बगीचे में टहलना फिर से शुरू कर दिया था। उसकी अनुभवहीन धारणा के अनुसार, यही उनके स्वास्थ्य में सुधार का संकेत था; और उनके गाल अक्सर लाल हो जाते थे, और उनकी आँखें चमक उठती थीं; उसे उनके ठीक होने का पूरा भरोसा हो गया था। उसके सत्रहवें जन्मदिन पर, वे कब्रिस्तान नहीं गए: बारिश हो रही थी, और मैंने कहा - 'आप आज रात बाहर नहीं जाएंगे, महोदय?'

उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं, मैं इस साल इसे थोड़ा और टाल दूँगा।" उन्होंने लिंटन को फिर से पत्र लिखकर उनसे मिलने की अपनी तीव्र इच्छा व्यक्त की; और यदि बीमार लिंटन स्वस्थ होते, तो मुझे पूरा विश्वास है कि उनके पिता उन्हें आने की अनुमति दे देते। लेकिन निर्देश मिलने पर उन्होंने उत्तर दिया कि श्री हीथक्लिफ को ग्रेंज में उनके आने पर आपत्ति है; परन्तु अपने चाचा की स्नेहपूर्ण स्मृति से उन्हें प्रसन्नता हुई, और उन्होंने आशा व्यक्त की कि वे कभी सैर के दौरान उनसे मिलेंगे और व्यक्तिगत रूप से उनसे निवेदन करेंगे कि उनके चचेरे भाई और उनके बीच लंबे समय तक इतना गहरा अलगाव न रहे।

उसके पत्र का वह हिस्सा सरल था, और संभवतः उसका अपना ही था।

हीथक्लिफ जानता था कि तब वह कैथरीन का साथ पाने के लिए प्रभावी ढंग से विनती कर सकता था।

'मैं यह नहीं कह रहा,' उसने कहा, 'कि वह यहाँ आए; लेकिन क्या मैं उसे कभी नहीं देख पाऊँगा, क्योंकि मेरे पिता मुझे उसके घर जाने से मना करते हैं, और आप उसे मेरे घर आने से मना करते हैं? कभी-कभी उसके साथ हाइट्स की ओर चलें; और आपकी उपस्थिति में हम कुछ बातें कर लें! हमने ऐसा कुछ नहीं किया है जिसके कारण हमें यह जुदाई सहनी पड़े; और आप मुझसे नाराज़ नहीं हैं: आप खुद मानते हैं कि आपको मुझे नापसंद करने का कोई कारण नहीं है। प्यारे चाचा! कल मुझे एक प्यारा सा पत्र भेजिएगा, और मैं आपको थ्रशक्रॉस ग्रेंज को छोड़कर, जहाँ भी आप चाहें, आपसे मिलने की अनुमति देता हूँ। मुझे विश्वास है कि एक मुलाकात आपको यह विश्वास दिला देगी कि मेरे पिता का स्वभाव मेरे जैसा नहीं है: वह कहते हैं कि मैं उनका बेटा नहीं, बल्कि आपका भतीजा हूँ; और यद्यपि मुझमें कुछ कमियाँ हैं जो मुझे कैथरीन के योग्य नहीं बनातीं, उसने उन्हें माफ कर दिया है, और उसके लिए आपको भी ऐसा ही करना चाहिए। आप मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछते हैं - यह बेहतर है; लेकिन जब तक मैं सारी उम्मीदों से कटा हुआ हूँ, और एकांत में रहने के लिए अभिशप्त हूँ, या उन लोगों की संगति में हूँ जो मुझे कभी पसंद नहीं करते थे और कभी नहीं करेंगे, तब तक मैं कैसे खुश और स्वस्थ रह सकता हूँ?

एडगर को लड़के के लिए सहानुभूति तो थी, लेकिन वह उसकी विनती नहीं मान सका; क्योंकि वह कैथरीन के साथ नहीं जा सकता था। उसने कहा कि शायद गर्मियों में उनकी मुलाकात हो सकती है; इस बीच, उसने चाहा कि वह समय-समय पर पत्र लिखता रहे, और वादा किया कि वह पत्र के माध्यम से उसे यथासंभव सलाह और सांत्वना देगा; क्योंकि वह परिवार में उसकी कठिन स्थिति से भलीभांति परिचित था। लिंटन मान गया; और यदि उसे कोई रोक-टोक न होती, तो शायद वह अपने पत्रों को शिकायतों और विलापों से भरकर सब कुछ बिगाड़ देता; लेकिन उसके पिता उस पर कड़ी नज़र रखते थे; और ज़ाहिर है, इस बात पर ज़ोर देते थे कि मेरे गुरु द्वारा भेजा गया हर पत्र दिखाया जाए; इसलिए, अपने व्यक्तिगत कष्टों और परेशानियों को लिखने के बजाय, जो विषय उसके विचारों में हमेशा सबसे ऊपर रहते थे, उसने अपने मित्र और प्रेम से अलग रहने की क्रूर बाध्यता पर ज़ोर दिया; और धीरे से संकेत दिया कि श्री लिंटन को जल्द ही मिलने की अनुमति देनी होगी, अन्यथा उन्हें डर होगा कि

वह जानबूझकर झूठे वादों से उन्हें धोखा दे रहा है।

कैथी घर पर एक शक्तिशाली सहयोगी थी; और अंततः उन दोनों ने मिलकर मेरे स्वामी को इस बात के लिए राजी कर लिया कि वे सप्ताह में एक बार मेरी देखरेख में, ग्रेंज के निकटतम मैदानों पर घुड़सवारी या सैर कर सकें, क्योंकि जून में उनकी सेहत लगातार बिगड़ती जा रही थी। हालाँकि उन्होंने अपनी आय का एक हिस्सा हर साल मेरी युवती के भविष्य के लिए अलग रखा था, फिर भी उनकी स्वाभाविक इच्छा थी कि वह अपने पूर्वजों के घर में ही रहें—या कम से कम कुछ समय बाद वहाँ लौट जाएँ; और उनका मानना था कि ऐसा करने का एकमात्र रास्ता उनके उत्तराधिकारी से विवाह करना ही था; उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनका उत्तराधिकारी भी लगभग उन्हीं की तरह तेजी से कमजोर होता जा रहा था; और मुझे लगता है कि किसी को भी इस बात का अंदाजा नहीं था: कोई डॉक्टर हाइट्स नहीं आया, और किसी ने भी स्वामी हीथक्लिफ को हमारे बीच उनकी हालत के बारे में बताने के लिए नहीं देखा। मैं, जहाँ तक मेरी बात है, यह सोचने लगी थी कि मेरी आशंकाएँ झूठी थीं, और वह वास्तव में स्वस्थ हो रहे थे, जब उन्होंने मैदानों पर घुड़सवारी और सैर का जिक्र किया, और अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए इतने गंभीर दिखाई दिए। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि कोई पिता अपने मरते हुए बच्चे के साथ उतना ही अत्याचारी और दुष्ट व्यवहार करेगा जितना कि बाद में मुझे पता चला कि हीथक्लिफ ने उसके साथ किया था, जिससे यह स्पष्ट उत्सुकता उत्पन्न हुई: जैसे-जैसे उसकी लालची और निर्मम योजनाएँ मृत्यु से पराजित होने के कगार पर पहुँचती गईं, उसके प्रयास और भी तेज होते गए।

अध्याय XXVI

गर्मी का मौसम अपने चरम पर पहुँच चुका था, जब एडगर ने अनिच्छा से उनकी

विनतियों को मान लिया, और कैथरीन और मैं उसके चचेरे भाई से मिलने के लिए अपनी पहली यात्रा पर निकल पड़े। वह एक उमस भरा, गर्म दिन था: धूप नहीं थी, लेकिन आसमान में बादल छितरे हुए थे और बारिश की कोई आशंका नहीं थी: और हमारे मिलने का स्थान चौराहे के पास स्थित मार्गदर्शक पत्थर पर तय किया गया था। हालाँकि, वहाँ पहुँचने पर, एक छोटे चरवाहे लड़के ने, जिसे संदेशवाहक बनाकर भेजा गया था, हमें बताया कि, – 'मास्टर लिंटन बस हाइट्स के इस पार ही हैं: और अगर हम थोड़ा आगे चलें तो वे हमारे बहुत आभारी होंगे।'

मैंने कहा, 'तो मास्टर लिंटन अपने चाचा के पहले आदेश को भूल गए हैं: उन्होंने हमें ग्रेंज की जमीन पर ही रहने को कहा था, और हम तुरंत यहाँ से निकल पड़े हैं।'

'ठीक है, जब हम उसके पास पहुँचेंगे तो हम अपने घोड़ों का रुख मोड़ लेंगे,' मेरे साथी ने उत्तर दिया; 'हमारी यात्रा घर की ओर होगी।'

लेकिन जब हम उसके पास पहुँचे, जो उसके घर से मुश्किल से एक चौथाई मील दूर था, तो हमने पाया कि उसके पास घोड़ा नहीं था; और हमें मजबूरन अपने घोड़े चरने के लिए छोड़कर उतरना पड़ा। वह मैदान में लेटा हुआ हमारे आने का इंतज़ार कर रहा था, और जब तक हम कुछ ही गज की दूरी पर नहीं आ गए, तब तक नहीं उठा। फिर वह इतनी कमजोरी से चलने लगा और इतना पीला दिख रहा था कि मैंने तुरंत कहा, – 'अरे, हीथक्लिफ साहब, आप आज सुबह सैर करने के लायक नहीं हैं। आप कितने बीमार दिख रहे हैं!'

कैथरीन ने दुख और आश्चर्य से उसकी ओर देखा: उसके होठों पर खुशी के भाव की जगह चिंता के भाव आ गए; और लंबे समय बाद हुई उनकी मुलाकात पर बधाई ने एक चिंतित पूछताछ में बदल दिया, क्या उसकी हालत पहले से भी बदतर थी?

'नहीं—बेहतर—बेहतर!' वह हांफते हुए, कांपते हुए बोला, और उसका हाथ ऐसे थामे रहा मानो उसे सहारे की ज़रूरत हो, जबकि उसकी बड़ी नीली आँखें डरते हुए उस पर घूम रही थीं; उनकी आँखों के चारों ओर का खालीपन उस सुस्त भाव को एक थकी हुई जंगलीपन में बदल रहा था जो कभी उनमें था।

'लेकिन तुम्हारी हालत और भी खराब हो गई है,' उसके चचेरे भाई ने जोर देकर कहा; 'पिछली बार जब मैंने तुम्हें देखा था, उससे भी ज्यादा खराब; तुम दुबले हो गए हो, और—'

'मैं थक गया हूँ,' उसने जल्दी से बात काटते हुए कहा। 'चलने के लिए बहुत गर्मी

है, चलो यहीं आराम करते हैं। और, सुबह-सुबह मुझे अक्सर तबीयत खराब लगती है — पापा कहते हैं कि मैं बहुत जल्दी बढ़ रहा हूँ।’

कुछ हद तक संतुष्ट होकर कैथी बैठ गई, और वह उसके बगल में लेट गया।

‘यह तो मानो तुम्हारा स्वर्ग है,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। ‘तुम्हें याद है वो दो दिन जो हमने अपनी-अपनी पसंद की जगह और तरीके से बिताने का तय किया था? यह लगभग तुम्हारा ही स्वर्ग है, बस यहाँ बादल हैं; पर वे इतने कोमल और सुहावने हैं कि धूप से भी ज़्यादा सुहावना लगता है। अगले हफ्ते, अगर तुम आ सको, तो हम ग्रेंज पार्क तक चलेंगे और मेरे यहाँ का नज़ारा देखेंगे।’

लिंटन को याद नहीं था कि वह क्या कह रही थी और जाहिर तौर पर उसे बातचीत जारी रखने में बहुत कठिनाई हो रही थी। जिन विषयों पर वह चर्चा शुरू करती थी, उनमें उसकी अरुचि और उसका मनोरंजन करने में उसकी अक्षमता इतनी स्पष्ट थी कि वह अपनी निराशा छिपा नहीं सकी। उसके पूरे व्यक्तित्व और व्यवहार में एक अनिश्चित बदलाव आ गया था। वह चिड़चिड़ापन, जिसे प्यार से दुलार कर शांत किया जा सकता था, अब एक उदासीन भाव में बदल गया था; उसमें अब उस बच्चे का चिड़चिड़ापन नहीं था जो जानबूझकर चिढ़ाता और परेशान करता है, बल्कि एक पक्के बीमार व्यक्ति की आत्ममग्न उदासी थी, जो सांत्वना को ठुकरा देता था और दूसरों की हंसी-मजाक को अपमान समझता था। कैथरीन ने, मेरी तरह ही, महसूस किया कि वह हमारी संगति को आनंद से अधिक एक सजा समझ रहा था; और उसने तुरंत जाने का प्रस्ताव रखने में कोई संकोच नहीं किया। उस प्रस्ताव ने अप्रत्याशित रूप से लिंटन को उसकी सुस्ती से जगा दिया और उसे एक अजीब सी बेचैनी में डाल दिया। उसने भयभीत होकर पहाड़ियों की ओर देखा और उससे विनती की कि वह कम से कम आधे घंटे और रुक जाए।

कैथी ने कहा, 'लेकिन मुझे लगता है कि आप यहाँ बैठने की बजाय घर पर ज़्यादा आराम से रहेंगे; और मुझे लगता है कि आज मैं अपनी कहानियों, गीतों और बातों से आपका मनोरंजन नहीं कर सकती: इन छह महीनों में आप मुझसे ज़्यादा समझदार हो गए हैं; अब आपको मेरे मनोरंजन में कोई दिलचस्पी नहीं है: वरना, अगर मैं आपका मनोरंजन कर पाती, तो मैं खुशी-खुशी यहीं रुक जाती।'

‘तुम यहीं आराम करो,’ उसने जवाब दिया। ‘और, कैथरीन, यह मत सोचना या कहना कि मैं बहुत बीमार हूँ: यह खराब मौसम और गर्मी है जो मुझे सुस्त बना देती है;

और तुम्हारे आने से पहले मैं काफी पैदल चला था। चाचा को बता देना कि मेरी सेहत ठीक है, ठीक है?'

'मैं उसे बता दूंगी कि तुमने ऐसा कहा है, लिंटन। मैं इस बात की पुष्टि नहीं कर सकती कि तुम हो,' मेरी युवती ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, क्योंकि वह स्पष्ट रूप से झूठ को लेकर इतनी हठपूर्वक दावा कर रहा था।

'और अगले गुरुवार को फिर आना,' उसने उसकी उलझन भरी निगाहों को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा। 'और उन्हें मेरी तरफ से धन्यवाद देना कि उन्होंने तुम्हें आने की अनुमति दी – बहुत-बहुत धन्यवाद, कैथरीन। और – और, अगर तुम मेरे पिता से मिलीं, और उन्होंने मेरे बारे में पूछा, तो उन्हें यह मत लगने देना कि मैं बहुत चुप और नासमझ रहा हूँ: उदास और निराश मत दिखना, जैसा तुम अभी दिख रही हो – उन्हें गुस्सा आ जाएगा।'

कैथी ने यह कल्पना करते हुए कहा, 'मुझे उसके गुस्से की कोई परवाह नहीं है,' कि वह खुद उसके गुस्से का शिकार होगी।

'लेकिन मैं करती हूँ,' उसकी चचेरी बहन कांपते हुए बोली। 'कैथरीन, उसे मेरे खिलाफ भड़काओ मत, क्योंकि वह बहुत कठोर है।'

'क्या वह आपके प्रति कठोर है, मास्टर हीथक्लिफ?' मैंने पूछा। 'क्या वह उदारता से ऊब गया है, और निष्क्रिय घृणा से सक्रिय घृणा की ओर बढ़ गया है?'

लिंटन ने मेरी ओर देखा, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया; और, उसके बगल में दस मिनट और बैठने के बाद, जिसके दौरान उसका सिर नींद से उसकी छाती पर टिका रहा और उसने थकावट या दर्द की दबी हुई आहों के अलावा कुछ नहीं कहा, कैथी ने ब्लूबेरी की तलाश में सांत्वना ढूंढना शुरू कर दिया और अपनी खोज से मिली उपज मेरे साथ साझा की: उसने उन्हें उसे नहीं दिया, क्योंकि उसने देखा कि आगे की चर्चा केवल उसे थकाएगी और परेशान करेगी।

'क्या अब आधा घंटा हो गया है, एलेन?' उसने आखिरकार मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा। 'मुझे समझ नहीं आ रहा कि हमें क्यों रुकना चाहिए। वह सो रहा है, और पापा हमें वापस बुलाना चाहेंगे।'

मैंने उत्तर दिया, 'अच्छा, हमें उसे सोते हुए नहीं छोड़ना चाहिए; उसके जागने तक प्रतीक्षा करो और धैर्य रखो। तुम तो जाने के लिए बहुत उत्सुक थे, लेकिन बेचारे लिंटन को देखने की तुम्हारी लालसा जल्द ही खत्म हो गई!'

‘वह मुझसे क्यों मिलना चाहते थे?’ कैथरीन ने जवाब दिया। ‘पहले तो उनके चिड़चिड़े स्वभाव में भी मैं उन्हें उनकी इस अजीब मनोदशा से कहीं ज़्यादा पसंद करती थी। ऐसा लगता है जैसे यह मुलाक़ात उन्हें मजबूरी में करनी पड़ी हो, कहीं उनके पिता उन्हें डांट न दें। लेकिन मैं मिस्टर हीथक्लिफ को खुश करने वाली तो बिल्कुल नहीं हूँ, चाहे लिंटन को यह सज़ा भुगतने का आदेश देने का उनका जो भी कारण हो। और, हालाँकि मुझे खुशी है कि उनकी सेहत में सुधार हुआ है, मुझे दुख है कि वह अब उतने खुशमिजाज़ नहीं रहे और मेरे प्रति उतने स्नेहहीन भी नहीं हैं।’

मैंने कहा, 'तो आपको लगता है कि उसकी सेहत बेहतर है?'

‘हां,’ उसने जवाब दिया; ‘क्योंकि वह हमेशा अपनी तकलीफों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताता था, तुम्हें पता है। उसकी तबीयत कुछ खास अच्छी नहीं है, जैसा कि उसने मुझे पापा को बताने के लिए कहा था; लेकिन वह बेहतर हो रहा है, बहुत संभव है।’

‘इस मामले में आप मुझसे असहमत हैं, मिस कैथी,’ मैंने टिप्पणी की; ‘मेरा अनुमान है कि वह कहीं ज्यादा बुरा होगा।’

लिंटन अचानक भयभीत होकर अपनी नींद से जाग गया और पूछने लगा कि क्या किसी ने उसका नाम पुकारा है।

‘नहीं,’ कैथरीन ने कहा; ‘सपनों में ही ऐसा होता है। मुझे समझ नहीं आता कि आप सुबह-सुबह घर के बाहर कैसे झपकी ले लेते हैं।’

‘मुझे लगा मैंने अपने पिता की आवाज सुनी,’ उसने हांफते हुए ऊपर खड़े गुस्से से भरे चौकीदार की ओर देखा। ‘क्या आपको यकीन है कि किसी ने कुछ नहीं कहा?’

‘बिल्कुल,’ उसके चचेरे भाई ने जवाब दिया। ‘तुम्हारे स्वास्थ्य को लेकर तो सिर्फ़ एलेन और मैं ही बहस कर रहे थे। लिंटन, क्या तुम सच में पहले से ज़्यादा स्वस्थ हो? अगर हो, तो मुझे पूरा यकीन है कि एक चीज़ में कोई कमी नहीं आई है – मेरे लिए तुम्हारा स्नेह: बोलो, – है ना?’

लिंटन की आंखों से आंसू बहने लगे और उसने जवाब दिया, 'हां, हां, मैं ही हूं!' और, अभी भी उस काल्पनिक आवाज के जादू में डूबा हुआ, उसकी निगाहें उसके मालिक को खोजने के लिए ऊपर-नीचे घूमने लगीं।

कैथी उठी। उसने कहा, 'आज हमें विदा होना पड़ेगा। और मैं यह नहीं छिपाऊंगी कि हमारी मुलाकात से मुझे बहुत निराशा हुई है; हालांकि मैं यह बात सिर्फ आपसे

कहूंगी: ऐसा नहीं है कि मैं मिस्टर हीथक्लिफ से बहुत प्रभावित हूं।'

'चुप रहो,' लिंटन ने बुदबुदाते हुए कहा; 'भगवान के लिए, चुप रहो! वह आ रहा है।' और वह कैथरीन की बांह से लिपट गया, उसे रोकने की कोशिश करते हुए; लेकिन यह घोषणा सुनते ही वह झट से खुद को छुड़ाकर मिन्नी को सीटी बजाने लगी, जिसने कुत्ते की तरह उसकी बात मानी।

'मैं अगले गुरुवार को यहाँ आऊँगी,' वह घोड़े की पीठ पर उछलते हुए चिल्लाई। 'अलविदा। जल्दी करो, एलेन!'

और इस तरह हम उसे वहीं छोड़कर चले गए, उसे हमारे जाने का शायद ही एहसास हुआ, क्योंकि वह अपने पिता के आने की प्रतीक्षा में इतना मग्न था।

घर पहुँचने से पहले ही, कैथरीन की नाराज़गी दया और पछतावे की मिलीभगत में बदल गई, जिसमें लिंटन की वास्तविक परिस्थितियों, शारीरिक और सामाजिक, के बारे में अस्पष्ट और बेचैन शंकाएँ भी शामिल थीं। मैं भी उनमें शामिल था, हालाँकि मैंने उसे ज़्यादा कुछ न कहने की सलाह दी; क्योंकि दूसरी यात्रा से हम बेहतर निर्णय ले सकेंगे। मेरे मालिक ने हमारी गतिविधियों का ब्यौरा माँगा। उनके भतीजे की ओर से धन्यवाद का संदेश विधिवत दिया गया, और मिस कैथी ने बाकी बातों को हल्के से बताया। मैंने भी उनके सवालों का ज़्यादा जवाब नहीं दिया, क्योंकि मुझे खुद भी नहीं पता था कि क्या छुपाना है और क्या बताना है।

अध्याय XXVII

सात दिन पलक झपकते बीत गए, हर दिन एडगर लिंटन की हालत में तेज़ी से हो रहे बदलाव से प्रभावित था। महीनों पहले जो तबाही मची थी, अब घंटों के बीतने से वैसी ही तबाही मचने लगी थी। हम कैथरीन को दिलासा देना चाहते थे; पर उसकी तेज़ बुद्धि ने उसे दिलासा देने से इनकार कर दिया: उसने मन ही मन आशंका जताई और उस

भयानक संभावना पर विचार करती रही, जो धीरे-धीरे निश्चितता में तब्दील होती जा रही थी। गुरुवार आने पर उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वह अपनी सवारी का ज़िक्र करे; मैंने उसकी तरफ से ज़िक्र किया और उसे बाहर जाने की अनुमति ली: क्योंकि पुस्तकालय, जहाँ उसके पिता रोज़ाना कुछ देर के लिए रुकते थे—जितनी देर तक वे बैठ सकते थे—और उनका कमरा, उसकी पूरी दुनिया बन गया था। वह हर उस पल से दुखी थी जो उसे उनके तकिए पर झुके हुए या उनके बगल में बैठे हुए नहीं मिलता था। उसका चेहरा उदासी और तड़प से पीला पड़ गया था, और मेरे मालिक ने खुशी-खुशी उसे विदा कर दिया, जिसे उन्होंने अपने आप को सुखद बदलाव और समाज में बदलाव बताया; इस उम्मीद से सांत्वना पाते हुए कि अब उसकी मृत्यु के बाद वह पूरी तरह अकेली नहीं रह जाएगी।

मुझे उनके द्वारा कही गई कई बातों से यह आभास हुआ कि उनके मन में एक निश्चित धारणा थी कि चूंकि उनका भतीजा शारीरिक रूप से उन्हीं जैसा दिखता है, इसलिए वह मानसिक रूप से भी उन्हीं जैसा होगा; क्योंकि लिंटन के पत्रों में उनके दोषपूर्ण चरित्र का कोई संकेत नहीं मिलता था। और मैंने, अपनी क्षमायोग्य कमजोरी के कारण, इस गलती को सुधारने से परहेज किया; मैंने मन ही मन सोचा कि उनके अंतिम क्षणों को ऐसी जानकारी से परेशान करने का क्या लाभ होगा जिसका उपयोग करने का उनके पास न तो कोई अधिकार था और न ही कोई अवसर।

हमने अपनी सैर दोपहर तक के लिए टाल दी; अगस्त की एक सुनहरी दोपहर: पहाड़ियों से आती हर साँस जीवन से भरपूर थी, मानो जो भी साँस ले रहा हो, मर रहा हो, फिर से जीवित हो उठेगा। कैथरीन का चेहरा भी उस परिदृश्य जैसा ही था—उस पर छायाएँ और धूप तेज़ी से आती-जाती रहती थीं; लेकिन छायाएँ ज़्यादा देर तक टिकती थीं, और धूप क्षणिक होती थी; और उसका बेचारा छोटा सा दिल अपनी चिंताओं को इतनी जल्दी भूल जाने के लिए खुद को कोस रहा था।

हमने देखा कि लिंटन उसी जगह पर देख रहा था जहाँ उसने पहले देखा था। मेरी युवा मालकिन नीचे उतरी और मुझसे कहा कि चूंकि वह थोड़ी देर रुकने वाली है, इसलिए बेहतर होगा कि मैं टट्टू को पकड़कर घोड़े पर ही रहूँ; लेकिन मैंने असहमति जताई: मैं एक मिनट के लिए भी अपने ऊपर सौंपे गए दायित्व से नज़रें नहीं हटाना चाहता था; इसलिए हम साथ-साथ बंजर ज़मीन की ढलान पर चढ़ गए। इस बार मास्टर हीथक्लिफ ने हमारा अधिक उत्साह से स्वागत किया: हालांकि यह उत्साह न

तो उमंग का था और न ही खुशी का; यह डर जैसा लग रहा था।

'बहुत देर हो गई है!' उसने संक्षिप्त और मुश्किल से बोलते हुए कहा। 'क्या आपके पिताजी बहुत बीमार नहीं हैं? मुझे लगा था कि आप नहीं आएंगे।'

'तुम खुलकर क्यों नहीं बोलते?' कैथरीन ने अपनी अभिवादन की भावना को दबाते हुए कहा। 'तुम सीधे-सीधे क्यों नहीं कह देते कि तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं है? यह अजीब बात है, लिंटन, कि दूसरी बार तुम मुझे जानबूझकर यहाँ लाए हो, जाहिर तौर पर हम दोनों को परेशान करने के लिए, और इसके अलावा कोई और कारण नहीं है!'

लिंटन कांप उठा और उसने आधी विनती और आधी शर्मिंदगी के साथ उसकी ओर देखा; लेकिन उसकी चचेरी बहन का धैर्य इस रहस्यमय व्यवहार को सहन करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

"मेरे पिता बहुत बीमार हैं," उसने कहा; "और मुझे उनके बिस्तर के पास से क्यों बुलाया गया है? जब आप चाहते थे कि मैं अपना वादा न निभाऊं, तो आपने मुझे उससे मुक्त करने के लिए क्यों नहीं भेजा? आइए! मुझे स्पष्टीकरण चाहिए: खेल-कूद और मौज-मस्ती मेरे दिमाग से पूरी तरह निकल चुकी है; और मैं अब आपकी बनावटी बातों में नहीं पड़ सकती!"

'मेरी ये बनावटी बातें!' वह बुदबुदाया; 'ये क्या हैं? भगवान के लिए, कैथरीन, इतना गुस्सा मत करो! जितना चाहो मुझे तुच्छ समझो; मैं एक निकम्मा, कायर और नीच इंसान हूँ: मुझे जितना भी तिरस्कार किया जाए कम है; लेकिन मैं तुम्हारे गुस्से के लिए बहुत नीच हूँ। मेरे पिता से नफरत करो, और मुझे तिरस्कार के लिए छोड़ दो।'

'बकवास!' कैथरीन गुस्से में चिल्लाई। 'बेवकूफ, मूर्ख लड़का! और देखो! वो कांप रहा है: मानो मैं सचमुच उसे छूने वाली हूँ! तुम्हें तिरस्कार दिखाने की ज़रूरत नहीं है, लिंटन: कोई भी स्वेच्छा से तुम्हारे प्रति तिरस्कार दिखाएगा। दूर हटो! मैं घर लौट जाऊंगी: तुम्हें घर से घसीटकर लाना और दिखावा करना मूर्खता है—हम क्या दिखावा करें? मेरी फ्रॉक छोड़ो! अगर मुझे तुम्हारे रोने और इतना डरे हुए दिखने पर दया आती है, तो तुम्हें ऐसी दया को ठुकरा देना चाहिए। एलेन, उसे बताओ कि यह व्यवहार कितना शर्मनाक है। उठो, और खुद को एक नीच सरीसृप मत बनाओ—बिल्कुल मत!'

आँसू भरी आँखों और पीड़ा के भावों के साथ, लिंटन ने अपने बेजान शरीर को जमीन पर पटक दिया: वह अत्यधिक भय से कांप रहा था।

'ओह!' वह सिसकते हुए बोला, 'मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता! कैथरीन, कैथरीन, मैं भी गद्दार हूँ, और मैं तुम्हें बताने की हिम्मत नहीं कर सकता! लेकिन अगर तुम मुझे छोड़ दोगी, तो मैं मारा जाऊँगा! प्यारी कैथरीन, मेरी ज़िंदगी तुम्हारे हाथों में है: और तुमने कहा था कि तुम मुझसे प्यार करती हो, और अगर तुम करती भी हो, तो इससे तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा। तो तुम नहीं जाओगी? दयालु, प्यारी, अच्छी कैथरीन! और शायद तुम मान जाओगी — और वह मुझे तुम्हारे साथ मरने देगा!'

मेरी प्रेमिका ने उसकी तीव्र पीड़ा देखकर उसे उठाने के लिए झुकी। उसके भीतर की अपार स्नेहपूर्ण भावना ने उसकी झुंझलाहट पर विजय प्राप्त कर ली, और वह अत्यंत भावुक और भयभीत हो गई।

'किस बात पर सहमति?' उसने पूछा। 'रहने पर! मुझे इस अजीबोगरीब बातचीत का मतलब बताओ, और मैं बता दूंगा। तुम अपने ही शब्दों का खंडन कर रहे हो, और मुझे भ्रमित कर रहे हो! शांत और स्पष्ट रहो, और अपने दिल का सारा बोझ एक पल में कबूल कर लो। तुम मुझे चोट नहीं पहुँचाओगे, लिंटन, है ना? अगर तुम रोक सकते हो, तो तुम किसी दुश्मन को मुझे नुकसान नहीं पहुँचाने दोगे? मैं तुम्हें अपने लिए कायर मान लूँगी, लेकिन अपने सबसे अच्छे दोस्त के साथ विश्वासघात करने वाले कायर नहीं।'

'लेकिन मेरे पिता ने मुझे धमकी दी है,' लड़के ने अपनी पतली उंगलियों को पकड़ते हुए हांफते हुए कहा, 'और मैं उनसे डरता हूँ—मैं उनसे डरता हूँ! मैं बताने की हिम्मत नहीं करता!'

'ओह, अच्छा!' कैथरीन ने तिरस्कारपूर्ण दया भाव से कहा, 'अपना रहस्य अपने पास रखो: मैं कायर नहीं हूँ। खुद को बचाओ: मैं डरती नहीं हूँ!'

उसकी उदारता ने उसके आँसू बहा दिए: वह फूट-फूटकर रोने लगा, उसके सहारा देने वाले हाथों को चूमने लगा, फिर भी बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। मैं सोच रही थी कि आखिर रहस्य क्या हो सकता है, और मैंने ठान लिया था कि कैथरीन को मेरी सद्भावना से उसे या किसी और को लाभ पहुँचाने से कभी नहीं रोकना चाहिए; तभी, मुर्गियों में सरसराहट सुनकर मैंने ऊपर देखा और मिस्टर हीथक्लिफ को लगभग हमारे पास, पहाड़ियों से नीचे उतरते हुए देखा। उन्होंने मेरे साथियों की ओर एक नज़र भी नहीं डाली, हालाँकि वे इतने करीब थे कि लिंटन के सिसकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी; लेकिन लगभग उसी हार्दिक स्वर में मुझे पुकारते हुए, जिस स्वर में वह किसी

और से नहीं पुकारते थे, और जिसकी सच्चाई पर मुझे संदेह हुए बिना नहीं रह सका, उन्होंने कहा—

‘नेली, तुम्हें अपने घर के इतने करीब देखकर अच्छा लग रहा है। ग्रेंज में तुम कैसी हो? हमें बताओ। अफवाह है,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा, ‘कि एडगर लिंटन अपनी मृत्युशय्या पर हैं: शायद वे उनकी बीमारी को बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे हैं?’

‘नहीं; मेरे स्वामी मर रहे हैं,’ मैंने उत्तर दिया: ‘यह बिल्कुल सच है। यह हम सबके लिए दुखद बात होगी, लेकिन उनके लिए एक आशीर्वाद होगा!’

‘तुम्हें क्या लगता है, वह कितने दिन टिक पाएगा?’ उसने पूछा।

मैंने कहा, 'मुझे नहीं पता।'

‘क्योंकि,’ उसने अपनी बात जारी रखते हुए उन दोनों युवकों की ओर देखा, जो उसकी निगाहों के सामने टकटकी लगाए बैठे थे—लिंटन मानो हिलने-डुलने या सिर उठाने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहा था, और कैथरीन भी उसके कारण हिल नहीं पा रही थी— ‘क्योंकि वह लड़का मुझे हराने पर तुला हुआ लगता है; और मैं उसके चाचा से गुज़ारिश करूँगा कि वे जल्दी करें और उससे पहले चले जाएँ! अरे! क्या वह बदमाश बहुत दिनों से यह खेल खेल रहा है? मैंने उसे रोने-धोने के कुछ सबक सिखाए थे। क्या वह आम तौर पर मिस लिंटन के साथ बहुत शरारती रहता है?’

‘जीवंत? नहीं – वह बेहद परेशान दिख रहा है,’ मैंने उत्तर दिया। ‘उसे देखकर तो ऐसा लगता है कि अपनी प्रेमिका के साथ पहाड़ियों पर घूमने के बजाय उसे बिस्तर पर डॉक्टर की देखरेख में होना चाहिए।’

‘एक-दो दिन में वो उठ जाएगा,’ हीथक्लिफ ने बुदबुदाते हुए कहा। ‘लेकिन पहले — उठो, लिंटन! उठो!’ उसने चिल्लाते हुए कहा। ‘अभी इसी वक्त उठो, ज़मीन पर मत लोटना!’

लिंटन एक बार फिर असहाय भय के एक और दौरे में ज़मीन पर गिर पड़ा, शायद अपने पिता की एक नज़र के कारण: इससे ज़्यादा अपमान का कारण और कुछ नहीं हो सकता था। उसने आज्ञा मानने के कई प्रयास किए, लेकिन उसकी थोड़ी सी शक्ति उस समय तक खत्म हो चुकी थी, और वह कराहते हुए फिर से गिर पड़ा। श्री हीथक्लिफ आगे बढ़े और उसे उठाकर घास के एक टीले से टिका दिया।

‘अब,’ उसने संयमित क्रोध के साथ कहा, ‘मुझे गुस्सा आ रहा है और अगर तुमने अपनी उस तुच्छ आत्मा को काबू में नहीं रखा तो धिक्कार है तुम पर! तुरंत उठो!’

‘जी पिताजी, मैं करूँगा,’ वह हाँफते हुए बोला। ‘बस मुझे अकेला छोड़ दीजिए, वरना मैं बेहोश हो जाऊँगा। मुझे पूरा यकीन है कि मैंने आपकी इच्छा के अनुसार ही किया है। कैथरीन आपको बताएगी कि मैं — मैं — खुश था। आह! मेरे पास रहिए, कैथरीन; मुझे अपना हाथ दीजिए।’

उसके पिता ने कहा, ‘मेरी वाली लो; खड़े हो जाओ। अब देखो— वो तुम्हें अपना हाथ दे देगी: जी हाँ, उसे देखो। मिस लिंटन, तुम सोचोगी कि मैं खुद शैतान हूँ जो इतना डर पैदा कर रहा हूँ। कृपा करके उसके साथ घर चलोगी? अगर मैं उसे छूता हूँ तो वो काँप उठता है।’

‘प्यारे लिंटन!’ कैथरीन ने फुसफुसाते हुए कहा, ‘मैं वुदरिंग हाइट्स नहीं जा सकती: पापा ने मुझे मना किया है। वो तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएँगे: तुम इतना क्यों डर रहे हो?’

उसने जवाब दिया, 'मैं उस घर में कभी दोबारा प्रवेश नहीं कर सकता। तुम्हारे बिना मुझे उसमें दोबारा प्रवेश करने की अनुमति नहीं है!'

‘रुको!’ उसके पिता चिल्लाए। ‘हम कैथरीन की पुत्रवत भावनाओं का सम्मान करेंगे। नेली, उसे अंदर ले आओ, और मैं बिना देरी किए डॉक्टर के बारे में तुम्हारी सलाह का पालन करूंगा।’

मैंने उत्तर दिया, 'तुम अच्छा करोगे। लेकिन मुझे अपनी मालकिन के साथ रहना होगा: तुम्हारे बेटे की देखभाल करना मेरा काम नहीं है।'

‘तुम बहुत अकड़ू हो,’ हीथक्लिफ ने कहा, ‘मुझे पता है: लेकिन तुम मुझे बच्चे को चुटकी काटने और उसे चीखने पर मजबूर कर दोगे, तब जाकर वह तुम्हारी मदद के लिए आगे बढ़ेगा। तो आओ, मेरे हीरो। क्या तुम मेरे साथ वापस चलने को तैयार हो?’

वह एक बार फिर पास आया और ऐसा लगा जैसे वह उस कमज़ोर इंसान को पकड़ लेगा; लेकिन लिंटन पीछे हट गया और अपनी चचेरी बहन से लिपट गया और उससे अपने साथ चलने की विनती करने लगा, उसकी विनती इतनी ज़ोरदार थी कि इनकार की गुंजाइश ही नहीं थी। हालाँकि मैं इसका विरोध कर रहा था, मैं उसे रोक नहीं सका: आख़िर वह खुद उसे कैसे मना कर सकती थी? उसे किस बात का डर सता रहा था, यह हम नहीं समझ पा रहे थे; लेकिन वह उस डर के आगे बेबस था, और कोई भी अतिरिक्त डर उसे मूर्ख बना सकता था। हम दहलीज पर पहुँचे; कैथरीन अंदर चली गई, और मैं तब तक इंतज़ार करता रहा जब तक उसने बीमार व्यक्ति को

कुर्सी पर नहीं बिठा दिया, और उसके तुरंत बाहर आने की उम्मीद कर रहा था; तभी मिस्टर हीथक्लिफ ने मुझे आगे धकेलते हुए कहा - 'नेली, मेरे घर में प्लेग नहीं फैला है; और आज मेरा मन मेहमाननवाज़ी करने का है: बैठ जाओ, और मुझे दरवाज़ा बंद करने दो।'

उसने दरवाजा बंद करके ताला भी लगा दिया। मैं चौंक गया।

'घर जाने से पहले आपको चाय मिल जाएगी,' उसने आगे कहा। 'मैं अकेला हूँ। हैरेटन कुछ मवेशियों के साथ लीज़ के पास गया है, और ज़िल्लाह और जोसेफ़ मौज-मस्ती के लिए निकले हैं; और, हालाँकि मुझे अकेले रहने की आदत है, फिर भी अगर हो सके तो मैं किसी दिलचस्प साथी के साथ रहना पसंद करूँगा। मिस लिंटन, आप उनके पास बैठ जाइए। मेरे पास जो है, मैं आपको वही दे रहा हूँ: यह उपहार स्वीकार करने लायक नहीं है; लेकिन मेरे पास देने के लिए और कुछ नहीं है। मेरा मतलब लिंटन से है। वह कैसे घूरती है! यह अजीब है कि जो भी मुझसे डरता हुआ लगता है, उसके प्रति मेरे मन में कितना क्रूर भाव आ जाता है! अगर मेरा जन्म ऐसी जगह हुआ होता जहाँ कानून इतने सख्त न हों और पसंद इतनी नाजुक न हो, तो मैं शाम के मनोरंजन के तौर पर उन दोनों का धीरे-धीरे विच्छेदन कर देता।'

उसने गहरी सांस ली, मेज पर हाथ पटका और मन ही मन बड़बड़ाया, 'भाड़ में जाओ! मुझे उनसे नफरत है।'

'मैं तुमसे नहीं डरती!' कैथरीन ने कहा, जो उसके भाषण का अंतिम भाग नहीं सुन पाई थी। वह उसके करीब आई; उसकी काली आँखों में जोश और दृढ़ संकल्प झलक रहा था। 'मुझे वह चाबी दो: मैं उसे लेकर रहूँगी!' उसने कहा। 'अगर मैं भूखी भी होती, तो भी मैं यहाँ कुछ खाती-पीती नहीं।'

हीथक्लिफ के हाथ में मेज पर पड़ी चाबी थी। उसने ऊपर देखा, उसकी इस हिम्मत पर उसे एक तरह का आश्चर्य हुआ; या शायद उसकी आवाज़ और नज़र ने उसे उस व्यक्ति की याद दिला दी जिससे उसे यह चाबी विरासत में मिली थी। उसने चाबी छीनने की कोशिश की और उसके ढीले हाथों से उसे निकालने में आधी-अधूरी सफलता प्राप्त कर ली: लेकिन उसके इस कृत्य ने उसे वर्तमान में वापस ला दिया; उसने चाबी तुरंत वापस ले ली।

'अब, कैथरीन लिंटन,' उसने कहा, 'पीछे हट जाओ, वरना मैं तुम्हें पीट कर गिरा दूंगा; और इससे श्रीमती डीन बहुत क्रोधित हो जाएंगी।'

इस चेतावनी के बावजूद, उसने फिर से उसकी बंद मुट्ठी और उसके अंदर की चीज़ें पकड़ लीं। 'हम चलेंगे!' उसने दोहराया, अपनी पूरी ताकत लगाकर उसकी लोहे जैसी मांसपेशियों को ढीला करने की कोशिश की; और जब उसने देखा कि उसके नाखूनों का कोई असर नहीं हो रहा है, तो उसने अपने दाँत तेज़ी से गड़ा दिए। हीथक्लिफ ने मेरी तरफ एक नज़र डाली, जिससे मैं एक पल के लिए भी दखल नहीं दे पाया। कैथरीन उसकी उंगलियों पर इतनी मग्न थी कि उसने उसका चेहरा देखा ही नहीं। उसने अचानक अपनी उंगलियाँ खोल दीं और विवाद की वस्तु को छोड़ दिया; लेकिन इससे पहले कि वह उसे पूरी तरह से पकड़ पाती, उसने उसे अपने मुक्त हाथ से पकड़ लिया और उसे अपने घुटने पर खींचकर दूसरे हाथ से उसके सिर के दोनों तरफ ज़ोरदार थप्पड़ों की बौछार कर दी, हर थप्पड़ इतना ज़ोरदार था कि अगर वह गिर जाती तो उसकी धमकी पूरी हो जाती।

इस भयानक हिंसा को देखकर मैं गुस्से से उस पर टूट पड़ी। ‘तू नीच!’ मैं चिल्लाने लगी, ‘तू नीच!’ सीने पर एक स्पर्श ने मुझे चुप करा दिया: मैं हष्ट-पुष्ट हूँ और जल्दी ही मेरी साँस फूल जाती है; और इसी वजह से और गुस्से में, मैं लड़खड़ाकर पीछे हट गई और मुझे लगा जैसे मेरा दम घुट जाएगा या मेरी कोई नस फट जाएगी। दो मिनट में ही सब कुछ खत्म हो गया; कैथरीन को जब छोड़ा गया, तो उसने अपने दोनों हाथ कनपटी पर रख लिए और ऐसा लग रहा था जैसे उसे खुद भी समझ नहीं आ रहा हो कि उसके कान कटे हैं या नहीं। बेचारी, वह सरकंडे की तरह काँप रही थी और पूरी तरह से घबराई हुई मेज से टिक गई।

‘देखो, मुझे बच्चों को सजा देना आता है,’ उस बदमाश ने कठोर स्वर में कहा, और फर्श पर गिरी चाबी को वापस उठाने के लिए नीचे झुका। ‘अब लिंटन जाओ, जैसा मैंने तुमसे कहा था; और जी भर के रोओ! कल मैं तुम्हारा बाप बनूँगा—कुछ ही दिनों में तुम्हें सारा पिता मिल जाएगा—और तुम्हें भरपूर प्यार मिलेगा। तुम बहुत कुछ सह सकते हो; तुम कमज़ोर नहीं हो: अगर मैंने तुम्हें फिर से इतना गुस्सा करते देखा, तो तुम्हें रोज़ाना इसका स्वाद चखना पड़ेगा!’

कैथी लिंटन के बजाय मेरे पास दौड़ी और घुटनों के बल बैठकर अपना जलता हुआ गाल मेरी गोद में रखकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। उसका चचेरा भाई चुपचाप सोफे के एक कोने में दुबक गया, मानो खुद को बधाई दे रहा हो कि डांट उसे नहीं पड़ी। हम सबको परेशान देखकर मिस्टर हीथक्लिफ उठे और जल्दी से खुद चाय बनाई। प्याले

और तश्तरियां तैयार रखी थीं। उन्होंने चाय परोसी और मुझे एक प्याला पकड़ा दिया।

उसने कहा, 'अपना गुस्सा धो लो। और अपने और मेरे शरारती पालतू जानवर की मदद करो। इसमें जहर नहीं है, हालांकि मैंने इसे तैयार किया है। मैं तुम्हारे घोड़ों को ढूंढने जा रहा हूँ।'

उसके जाने पर हमारा पहला विचार यही आया कि कहीं से निकलने का रास्ता खोज लें। हमने रसोई के दरवाजे की कोशिश की, लेकिन वह बाहर से बंद था: हमने खिड़कियों की तरफ देखा - वे कैथी के छोटे कद के लिए भी बहुत संकरी थीं।

'मास्टर लिंटन,' मैंने चिल्लाकर कहा, यह देखकर कि हमें नियमित रूप से कैद किया जा रहा था, 'आप जानते हैं कि आपके शैतानी पिता क्या चाहते हैं, और आप हमें बताएँगे, वरना मैं आपके कान खींच दूँगा, जैसे उन्होंने आपके चचेरे भाई के कान खींचे हैं।'

'हां, लिंटन, तुम्हें बताना ही होगा,' कैथरीन ने कहा। 'मैं तुम्हारे लिए ही आई थी; और अगर तुम मना करोगे तो यह घोर कृतघ्नता होगी।'

'मुझे चाय दो, मुझे प्यास लगी है, फिर मैं तुम्हें बताऊंगा,' उसने जवाब दिया। 'श्रीमती डीन, चली जाओ। मुझे तुम्हारा मेरे ऊपर खड़े रहना पसंद नहीं है। अब, कैथरीन, तुम अपने आँसू मेरे प्याले में गिरा रही हो। मैं इसे नहीं पीऊँगा। मुझे दूसरा दो।' कैथरीन ने उसे एक और प्याला दिया और अपना चेहरा पोंछा। मुझे उस बेचारे की शांति पर घृणा हुई, क्योंकि अब उसे अपने लिए कोई डर नहीं था। मैदान पर उसने जो पीड़ा दिखाई थी, वह वुदरिंग हाइट्स में प्रवेश करते ही शांत हो गई; इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि उसे भयानक क्रोध की धमकी दी गई थी यदि वह हमें वहाँ फँसाने में विफल रहा; और, ऐसा हो जाने के बाद, उसे अब कोई तत्काल भय नहीं था।

'पापा चाहते हैं कि हमारी शादी हो जाए,' उसने थोड़ा सा पेय पीते हुए कहा। 'और उन्हें पता है कि तुम्हारे पापा अभी हमारी शादी नहीं होने देंगे; और उन्हें डर है कि अगर हम इंतज़ार करेंगे तो मेरी मौत हो जाएगी; इसलिए हमारी शादी सुबह होगी, और तुम्हें पूरी रात यहीं रुकना होगा; और अगर तुम उनकी इच्छा पूरी करोगी, तो अगले दिन घर लौट आना, और मुझे भी अपने साथ ले जाना।'

'तुम्हें भी उसके साथ ले जाऊँ, बेचारे धोखेबाज़!' मैंने कहा। 'तुम शादी करोगे? अरे, वो आदमी पागल है! या फिर वो हम सबको मूर्ख समझता है। और क्या तुम सोचते हो कि वो खूबसूरत युवती, वो तंदुरुस्त, हष्ट-पुष्ट लड़की, तुम्हारे जैसे नन्हे-मुन्ने

बंदर से शादी कर लेगी? क्या तुम ये सोचते हो कि कोई भी, मिस कैथरीन लिंटन तो दूर की बात है, तुम्हें पति के रूप में स्वीकार करेगा? अपनी इन घिनौनी हरकतों से हमें यहाँ लाने के लिए तुम्हें कोड़े पड़ने चाहिए: और – अब इतना मूर्ख मत बनो! मैं तुम्हें तुम्हारी इस घिनौनी धोखेबाज़ी और मूर्खतापूर्ण घमंड के लिए बुरी तरह से कोड़े मारने का मन कर रहा है।'

मैंने उसे हल्का सा हिलाया; लेकिन इससे उसे खांसी आ गई, और वह हमेशा की तरह कराहने और रोने लगा, और कैथरीन ने मुझे डांट दिया।

'पूरी रात यहीं रुकना? नहीं,' उसने धीरे-धीरे चारों ओर देखते हुए कहा। 'एलेन, मैं उस दरवाजे को जला दूंगी लेकिन मैं बाहर निकल जाऊंगी।'

और वह अपनी धमकी को तुरंत अंजाम देना शुरू कर देती, लेकिन लिंटन अपनी जान की चिंता में फिर से जाग गया। उसने उसे अपनी कमजोर बाहों में जकड़ लिया और सिसकते हुए बोला, "क्या तुम मुझे अपनाकर बचाओगी नहीं? मुझे ग्रेंज नहीं आने दोगी? ओह, मेरी प्यारी कैथरीन! तुम्हें जाना नहीं चाहिए। तुम्हें मेरे पिता की बात माननी ही होगी—तुम्हें माननी ही होगी!"

"मुझे अपने मन की बात माननी ही होगी," उसने जवाब दिया, "और उसे इस भयानक अनिश्चितता से मुक्ति दिलानी होगी। पूरी रात! वह क्या सोचेगा? वह पहले से ही परेशान होगा। मैं या तो घर तोड़कर या जलाकर बाहर निकल जाऊंगी। चुप रहो! तुम्हें कोई खतरा नहीं है; लेकिन अगर तुमने मुझे रोका तो – लिंटन, मैं पापा को तुमसे ज़्यादा प्यार करती हूँ!" मिस्टर हीथक्लिफ के गुस्से के डर ने लड़के में फिर से कायरतापूर्ण वाक्पटुता जगा दी। कैथरीन लगभग व्याकुल थी: फिर भी, वह घर जाने पर अड़ी रही, और बदले में उसने भी विनती करने की कोशिश की, उसे अपने स्वार्थी व्यथा को दबाने के लिए राजी किया। जब वे इस तरह बातचीत कर रहे थे, तभी हमारा जेलर फिर से अंदर आ गया।

'तुम्हारे जानवर चले गए हैं,' उसने कहा, 'और – अब लिंटन! फिर से रोने लगे? उसने तुम्हारे साथ क्या किया है? चलो, चलो – काम खत्म करो और बिस्तर पर जाओ। एक-दो महीने में, मेरे बच्चे, तुम उसके वर्तमान अत्याचारों का करारा जवाब दे पाओगे। तुम सच्चे प्यार के लिए तड़प रहे हो, है ना? दुनिया में और कुछ नहीं: और वह तुम्हें पाकर रहेगी! लो, बिस्तर पर जाओ! ज़िल्लाह आज रात यहाँ नहीं होगी; तुम्हें खुद कपड़े उतारने होंगे। चुप रहो! शोर मत करो! अपने कमरे में पहुँचने के बाद, मैं

तुम्हारे पास नहीं आऊँगा: तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है। संयोग से, तुमने ठीक-ठाक काम चला लिया है। बाकी का मैं ध्यान रखूँगा।'

ये शब्द कहते हुए उसने अपने बेटे के लिए दरवाज़ा खुला रखा, और बेटा ठीक उसी तरह बाहर निकल गया जैसे कोई स्पैनियल कुत्ता अपने सेवक पर जानबूझकर दबाव डालने का शक होने पर निकलता है। ताला फिर से लगा दिया गया। हीथक्लिफ आग के पास पहुँचा, जहाँ मैं और मेरी मालकिन चुपचाप खड़े थे। कैथरीन ने ऊपर देखा और सहज ही अपना हाथ अपने गाल पर रख लिया: उसकी मौजूदगी से उसे दर्द का एहसास फिर से होने लगा। कोई और होता तो इस बचकाने काम को गंभीरता से नहीं लेता, लेकिन उसने उस पर तेवर चढ़ाए और बुदबुदाया - 'ओह! तुम मुझसे डरती नहीं हो? तुम्हारी हिम्मत तो बड़ी भद्दी है: तुम तो बुरी तरह डरी हुई लगती हो!'

"अब मुझे डर लग रहा है," उसने जवाब दिया, "क्योंकि अगर मैं यहाँ रुकी तो पापा बहुत दुखी होंगे: और मैं उन्हें दुखी कैसे कर सकती हूँ — जब वो — जब वो — श्री हीथक्लिफ, मुझे घर जाने दीजिए! मैं लिंटन से शादी करने का वादा करती हूँ: पापा चाहते हैं कि मैं उनसे शादी करूँ: और मैं उनसे प्यार करती हूँ। आप मुझे वह करने के लिए क्यों मजबूर करना चाहते हैं जो मैं स्वेच्छा से करना चाहती हूँ?"

मैंने चिल्लाकर कहा, 'उसे तुम्हें धमकाने की हिम्मत करने दो। भगवान का शुक्र है, यहाँ कानून है! भले ही हम एक सुनसान जगह पर हों। अगर वह मेरा अपना बेटा होता, तो मैं उसकी शिकायत कर देती: और यह बिना कानूनी सहायता के भी गंभीर अपराध है!'

'चुप रहो!' बदमाश बोला। 'तुम्हारे शोर-शराबे से मुझे कोई लेना-देना नहीं! मैं नहीं चाहता कि तुम कुछ बोलो। मिस लिंटन, तुम्हारे पिता को दुखी देखकर मुझे बहुत मज़ा आएगा: मैं चैन से सो नहीं पाऊंगा। अगले चौबीस घंटे मेरे घर में रहने का इससे बेहतर तरीका और कोई नहीं हो सकता था कि तुमने मुझे ऐसी खबर दी। लिंटन से शादी करने के तुम्हारे वादे की बात करें, तो मैं ध्यान रखूंगा कि तुम उसे निभाओ; क्योंकि जब तक वह वादा पूरा नहीं हो जाता, तुम इस जगह से नहीं जाओगी।'

'तो एलेन को भेजो, पापा को बता दे कि मैं सुरक्षित हूँ!' कैथरीन फूट-फूटकर रोते हुए बोली। 'या फिर अभी मुझसे शादी कर लो। बेचारे पापा! एलेन, उन्हें लगेगा कि हम खो गए हैं। अब हम क्या करेंगे?'

'नहीं, वो नहीं! उसे लगेगा कि तुम उसकी सेवा करते-करते थक गई हो और थोड़ा

मनोरंजन करने चली गई हो,’ हीथक्लिफ ने उत्तर दिया। ‘तुम इस बात से इनकार नहीं कर सकती कि तुम उसकी मनाही के बावजूद अपनी मर्जी से मेरे घर में आई हो। और तुम्हारी उम्र में मनोरंजन की इच्छा होना स्वाभाविक है; और एक बीमार आदमी की सेवा करते-करते थक जाना भी स्वाभाविक है, और वो आदमी तो सिर्फ तुम्हारा पिता ही है। कैथरीन, तुम्हारे जन्म के साथ ही उसके सबसे खुशहाल दिन बीत चुके थे। मुझे यकीन है कि उसने तुम्हें दुनिया में आने के लिए कोसा होगा (कम से कम मैंने तो किया ही था); और अगर वो जाते समय भी तुम्हें कोसे तो ठीक ही होगा। मैं भी उसके साथ चला जाऊंगा। मैं तुमसे प्यार नहीं करता! मैं कैसे करूँ? जी भर के रो लो। जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, आगे चलकर यही तुम्हारा मुख्य मनोरंजन होगा; जब तक कि लिंटन अन्य नुकसानों की भरपाई न कर दे: और तुम्हारे समझदार पिता को लगता है कि वो ऐसा कर सकता है। उसके सलाह और सांत्वना भरे पत्रों ने मेरा खूब मनोरंजन किया। अपने आखिरी पत्र में उसने मेरी प्रेमिका को उसकी देखभाल करने और उसे पाने पर उसके साथ अच्छा व्यवहार करने की सलाह दी थी।’ सावधान और दयालु—यह तो पिता तुल्य स्वभाव है। लेकिन लिंटन को अपनी सारी देखभाल और दयालुता खुद के लिए चाहिए। लिंटन एक छोटा तानाशाह बनने में माहिर है। अगर उसके दांत निकाल दिए जाएं और पंजे काट दिए जाएं, तो वह कितनी भी बिल्लियों को यातना देने को तैयार है। मैं आपको यकीन दिलाता हूं, जब आप घर लौटेंगे, तो आप उसके चाचा को उसकी दयालुता की अच्छी-अच्छी कहानियां सुना पाएंगे।

मैंने कहा, 'आप बिल्कुल सही कह रहे हैं! अपने बेटे के चरित्र के बारे में बताइए। उसकी अपने से समानता दिखाइए: और फिर, मुझे उम्मीद है, मिस कैथी उस तोते को लेने से पहले दो बार सोचेंगी!'

“अभी मुझे उसके अच्छे गुणों के बारे में बात करने में कोई आपत्ति नहीं है,” उसने उत्तर दिया; “क्योंकि उसे या तो उसे स्वीकार करना होगा या कैदी बनकर रहना होगा, और तुम भी उसके साथ, जब तक तुम्हारा स्वामी मर नहीं जाता। मैं तुम दोनों को यहाँ पूरी तरह से छिपाकर रख सकता हूँ। अगर तुम्हें संदेह है, तो उसे अपना वचन वापस लेने के लिए प्रोत्साहित करो, और तुम्हें निर्णय लेने का अवसर मिल जाएगा!”

‘मैं अपना वचन नहीं तोड़ूंगी,’ कैथरीन ने कहा। ‘मैं इसी वक्त उससे शादी कर लूंगी, अगर बाद में मुझे थ्रशक्रॉस ग्रेंज जाने की इजाजत मिल जाए। श्री हीथक्लिफ, आप एक क्रूर व्यक्ति हैं, लेकिन आप शैतान नहीं हैं; और आप महज़ द्वेष से मेरी सारी

खुशियाँ हमेशा के लिए नष्ट नहीं कर सकते। अगर पापा को लगा कि मैंने जानबूझकर उन्हें छोड़ा है, और अगर मेरे लौटने से पहले उनकी मृत्यु हो गई, तो क्या मैं जी पाऊंगी? मैंने रोना छोड़ दिया है: लेकिन मैं यहाँ आपके घुटनों पर बैठूंगी; और मैं तब तक नहीं उठूंगी, और अपनी नज़रें आपके चेहरे से नहीं हटाऊंगी जब तक आप मेरी तरफ नहीं देखते! नहीं, मुँह मत फेरिए! देखिए! आपको कुछ भी ऐसा नहीं दिखेगा जो आपको क्रोधित करे। मैं आपसे नफरत नहीं करती। मुझे इस बात का गुस्सा नहीं है कि आपने मुझे मारा। क्या आपने अपने पूरे जीवन में कभी किसी से प्यार नहीं किया, चाचा? कभी नहीं? आह! आपको एक बार देखना ही होगा। मैं इतनी दुखी हूँ कि आप मुझ पर तरस खाए बिना नहीं रह सकते।'

'अपनी उंगलियाँ दूर रखो; और हट जाओ, वरना मैं तुम्हें लात मार दूँगा!' हीथक्लिफ ने उसे बेरहमी से पीछे धकेलते हुए चिल्लाकर कहा। 'मैं तो साँप से गले लगना ज़्यादा पसंद करूँगा। तुम मेरे सामने गिड़गिड़ाने का सपना भी कैसे देख सकती हो? मुझे तुमसे नफ़रत है!'

उसने अपने कंधे उचकाए: मानो घृणा से उसका शरीर कांप रहा हो; और अपनी कुर्सी पीछे धकेल दी; वहीं मैं उठ खड़ा हुआ और गालियों की बौछार करने के लिए मुंह खोला। लेकिन पहले ही वाक्य के बीच में मुझे धमकी मिली कि जैसे ही मैं कोई शब्द बोलूंगा, मुझे अकेले कमरे में बंद कर दिया जाएगा, जिससे मैं चुप हो गया। अंधेरा हो रहा था - हमें बगीचे के द्वार पर कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। हमारा मेज़बान तुरंत बाहर भागा: वह होश में था; हम नहीं। दो-तीन मिनट की बातचीत हुई और वह अकेला लौट आया।

मैंने कैथरीन से कहा, 'मुझे लगा था कि यह तुम्हारा चचेरा भाई हैरेटन है। काश वह आ जाता! कौन जानता है, शायद वह हमारा साथ दे दे?'

'तीन नौकर तुम्हें ग्रेंज से बुलाने आए थे,' हीथक्लिफ ने मेरी बातें सुनते हुए कहा। 'तुम्हें एक जाली खोलकर आवाज़ देनी चाहिए थी: लेकिन मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि वह लड़की खुश है कि तुमने ऐसा नहीं किया। मुझे पूरा यकीन है कि वह यहाँ रुकने के लिए मजबूर होकर खुश है।'

जब हमें पता चला कि हमने एक मौका गंवा दिया है, तो हम दोनों ने बेकाबू होकर अपना दुख व्यक्त किया; और उसने हमें नौ बजे तक रोने दिया। फिर उसने हमें रसोई से होते हुए ऊपर ज़िल्लाह के कमरे में जाने को कहा; और मैंने अपने साथी से

फुसफुसाकर कहा कि वह मेरी बात माने: शायद हम वहाँ की खिड़की से या अटारी में घुसकर रोशनदान से बाहर निकल सकें। लेकिन खिड़की नीचे वाली खिड़कियों की तरह ही संकरी थी, और अटारी का जाल हमारे प्रयासों से सुरक्षित था; क्योंकि हम पहले की तरह ही अंदर बंद थे। हम दोनों में से कोई भी नहीं लेटा: कैथरीन जाली के पास बैठ गई और सुबह का बेसब्री से इंतज़ार करने लगी; मेरे बार-बार आराम करने के अनुरोध के बावजूद मुझे केवल एक गहरी आह ही सुनाई दी। मैं एक कुर्सी पर बैठ गया और इधर-उधर झूलता रहा, अपने कर्तव्य के प्रति कई लापरवाहियों पर कठोर विचार करता रहा; जिससे मुझे तब यह एहसास हुआ कि मेरे मालिकों की सारी मुसीबतें पैदा होती हैं। मुझे पता है कि असल में ऐसा नहीं था; लेकिन मेरी कल्पना में, वह एक भयानक रात थी; और मुझे लगा कि हीथक्लिफ खुद मुझसे कम दोषी था।

सात बजे वह आया और पूछा कि क्या मिस लिंटन उठ गई हैं। वह तुरंत दरवाजे की ओर दौड़ीं और बोलीं, 'हाँ।' 'तो यहाँ,' उसने दरवाजा खोलते हुए कहा और उन्हें बाहर खींच लिया। मैं भी उनके पीछे जाने के लिए उठी, लेकिन उन्होंने ताला फिर से लगा दिया। मैंने अपनी रिहाई की मांग की।

'धैर्य रखिए,' उसने उत्तर दिया; 'मैं थोड़ी देर में आपका नाश्ता भेज दूंगा।'

मैंने दरवाज़े के पैनल पर ज़ोर से थपथपाया और कुंडी को गुस्से से हिलाया, और कैथरीन ने पूछा कि मैं अभी भी अंदर क्यों बंद हूँ? उसने जवाब दिया, मुझे एक घंटा और सहना होगा, और वे चले गए। मैंने दो-तीन घंटे तक इसे सहा; आखिरकार, मुझे एक कदम की आहट सुनाई दी: हीथक्लिफ की नहीं।

एक आवाज ने कहा, 'मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने को लाया हूँ; दरवाजा खोलो!'

मैंने उत्सुकतापूर्वक आज्ञा का पालन किया और हरेटन को देखा, जो पूरे दिन के लिए पर्याप्त भोजन से लदा हुआ था।

'इसे ले लो,' उसने ट्रे मेरे हाथ में थमाते हुए कहा।

मैंने कहा, 'एक मिनट रुकिए।'

'नहीं,' वह चिल्लाया और चला गया, चाहे मैं उसे रोकने के लिए कितनी भी प्रार्थना कर लूं।

और मैं पूरे दिन और अगली पूरी रात वहीं बंद रहा; फिर एक और रात, फिर एक और रात। कुल मिलाकर मैं पाँच रात और चार दिन वहीं रहा, हर सुबह एक बार हरेटन के अलावा किसी को नहीं देख पाता था; और वह एक आदर्श जेलर था: चिड़चिड़ा,

गूंगा और न्याय या करुणा की भावना जगाने के हर प्रयास के प्रति बहरा।

अध्याय XXVIII

पांचवीं सुबह, या यूं कहें कि दोपहर को, एक अलग तरह के कदमों की आहट सुनाई दी—हल्के और छोटे; और इस बार, एक व्यक्ति कमरे में दाखिल हुआ। वह ज़िल्लाह थी; उसने लाल रंग की शॉल ओढ़ी हुई थी, सिर पर रेशमी काली टोपी थी, और हाथ में विलो की टोकरी लटकी हुई थी।

'अरे, प्यारी! श्रीमती डीन!' वह चौंक उठीं। 'वाह! गिम्मर्टन में आपके बारे में चर्चा हो रही है। मुझे तो लगा ही नहीं था कि आप और आपकी बेटी ब्लैकहॉर्स दलदल में डूब गई थीं, जब तक कि मालिक ने मुझे बताया कि आप मिल गई हैं और उन्होंने आपको यहाँ ठहराया है! क्या! और आप ज़रूर किसी द्वीप पर पहुँच गई होंगी? और आप कितने समय तक उस गड्ढे में थीं? क्या मालिक ने आपको बचाया, श्रीमती डीन? लेकिन आप इतनी दुबली तो नहीं हैं - आप इतनी बीमार भी नहीं थीं, है ना?'

मैंने जवाब दिया, 'तुम्हारा मालिक सचमुच एक बदमाश है! लेकिन उसे इसका हिसाब देना होगा। उसे यह कहानी गढ़ने की ज़रूरत नहीं थी: सब कुछ बेनकाब हो जाएगा!'

'तुम्हारा क्या मतलब है?' ज़िल्लाह ने पूछा। 'यह उसकी कहानी नहीं है: गाँव में सब यही कहते हैं—कि तुम दलदल में खो गई थी; और जब मैं अंदर आई तो मैंने अर्नशॉ को पुकारा—"अरे, मिस्टर हरेटन, मेरे जाने के बाद से अजीबोगरीब चीज़ें हो रही हैं। उस होनहार युवती और भोली नेली डीन का क्या हाल हुआ?" वह घूरने लगा। मुझे लगा कि उसने कुछ सुना ही नहीं, इसलिए मैंने उसे अफवाह के बारे में बताया।' मालिक ने सुना, और मन ही मन मुस्कुराते हुए बोला, "अगर वे दलदल में थे, तो अब बाहर आ गए हैं, ज़िल्लाह। नेली डीन इस समय तुम्हारे कमरे में ठहरी हुई है। जब तुम

ऊपर जाओ, तो उसे कह देना कि वह तुरंत निकल जाए; चाबी यहीं है। दलदल का पानी उसके दिमाग में चढ़ गया था, और वह घबराकर घर भाग जाती; लेकिन मैंने उसे तब तक संभाला जब तक वह होश में नहीं आ गई। अगर वह जा सके, तो उसे तुरंत ग्रेंज जाने के लिए कह देना, और मेरी तरफ से यह संदेश ले जाना कि उसकी प्रेमिका समय पर आकर जमींदार के अंतिम संस्कार में शामिल होगी।"

'मिस्टर एडगर मरे नहीं?' मैंने हांफते हुए कहा। 'ओह! ज़िल्लाह, ज़िल्लाह!'

'नहीं, नहीं; बैठ जाइए, मेरी प्यारी मालकिन,' उसने उत्तर दिया; 'आप अभी भी काफी बीमार हैं। वह मरा नहीं है; डॉक्टर केनेथ को लगता है कि वह एक और दिन जीवित रह सकता है। मैं उससे रास्ते में मिली और उससे पूछा।'

बैठने के बजाय, मैंने अपना बाहर का सामान उठाया और जल्दी से नीचे चली गई, क्योंकि रास्ता खाली था। घर में घुसते ही मैंने कैथरीन के बारे में जानकारी देने के लिए किसी को ढूँढा। घर धूप से भरा हुआ था और दरवाजा खुला हुआ था; लेकिन आस-पास कोई नहीं दिख रहा था। मैं दुविधा में थी कि तुरंत चली जाऊँ या वापस आकर अपनी मालकिन को ढूँढूँ, तभी एक हल्की खांसी की आवाज ने मेरा ध्यान चूल्हे की ओर खींचा। लिंटन सोफे पर अकेला लेटा हुआ था, एक चीनी कैंडी चूस रहा था और उदासीन निगाहों से मेरी हरकतों को देख रहा था। 'मिस कैथरीन कहाँ हैं?' मैंने सख्ती से पूछा, यह सोचकर कि इस तरह अकेले में पकड़कर मैं उसे डराकर उससे जानकारी निकलवा लूँगी। वह मासूमियत से चूसता रहा।

मैंने कहा, 'क्या वह चली गई?'

'नहीं,' उसने जवाब दिया; 'वह ऊपर है: उसे जाने की अनुमति नहीं है; हम उसे जाने नहीं देंगे।'

'तुम उसे ऐसा नहीं करने दोगे, छोटे बेवकूफ!' मैंने चिल्लाकर कहा। 'मुझे तुरंत उसके कमरे का रास्ता दिखाओ, वरना मैं तुम्हें जोर से चिल्लाने पर मजबूर कर दूंगा।'

'अगर तुमने वहाँ जाने की कोशिश की, तो पापा तुम्हें चिल्लाने पर मजबूर कर देंगे,' उसने जवाब दिया। 'वो कहते हैं कि मुझे कैथरीन के साथ नरमी नहीं बरतनी चाहिए: वो मेरी पत्नी है, और ये शर्मनाक है कि वो मुझे छोड़ना चाहती है। वो कहते हैं कि वो मुझसे नफरत करती है और चाहती है कि मैं मर जाऊँ, ताकि उसे मेरा पैसा मिल जाए; लेकिन उसे नहीं मिलेगा: और वो घर नहीं जाएगी! वो कभी नहीं जाएगी! – वो जितना चाहे रो सकती है, और बीमार पड़ सकती है!'

उसने अपनी पलकें बंद करते हुए अपना पुराना काम फिर से शुरू कर दिया, मानो वह सोने की कोशिश कर रहा हो।

'मास्टर हीथक्लिफ,' मैंने फिर से कहा, 'क्या आप पिछली सर्दियों में कैथरीन की सारी दयालुता भूल गए हैं, जब आपने उससे अपने प्यार का इज़हार किया था, जब वह आपके लिए किताबें लाती थी, गाने गाती थी और कई बार हवा और बर्फ में भी आपसे मिलने आती थी? एक शाम वह आपसे न मिल पाने पर रोई थी, क्योंकि आप निराश हो जाते; और तब आपको लगा था कि वह आपके प्रति सौ गुना ज़्यादा दयालु थी: और अब आप अपने पिता के झूठ पर विश्वास कर रहे हैं, जबकि आप जानते हैं कि वह आप दोनों से नफ़रत करते हैं। और आप उसके खिलाफ़ उनके साथ हो रहे हैं। यह तो बड़ी बड़ी कृतज्ञता है, है ना?'

लिंटन के होंठों का कोना नीचे की ओर झुक गया, और उसने अपने होठों से चीनी की मिठाई हटा ली।

'क्या वह वुदरिंग हाइट्स इसलिए आई थी क्योंकि वह तुमसे नफरत करती थी?' मैंने आगे कहा। 'खुद सोचो! तुम्हारे पैसों की तो उसे यह भी नहीं पता कि तुम्हारे पास पैसे होंगे। और तुम कहते हो कि वह बीमार है; फिर भी उसे उस अनजान घर में अकेला छोड़ देते हो! तुम जिसने उपेक्षा का दर्द सहा है! तुम अपने दुखों पर तरस खा सकते थे; और उसने भी खाया था; लेकिन तुम उसके दुखों पर तरस नहीं खाओगे! मैं आंसू बहाती हूँ, मास्टर हीथक्लिफ, देखो – एक बूढ़ी औरत, और सिर्फ एक नौकरानी – और तुम, इतना स्नेह जताने का दिखावा करने के बाद, और लगभग उसकी पूजा करने का कारण होने के बावजूद, अपने सारे आंसू अपने लिए बचाकर रखते हो, और वहाँ आराम से लेटे रहते हो। आह! तुम कितने निर्दयी और स्वार्थी लड़के हो!'

'मैं उसके साथ नहीं रह सकता,' उसने चिढ़कर जवाब दिया। 'मैं अकेला नहीं रह सकता। वह इतना रोती है कि मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। और वह चुप नहीं होती, चाहे मैं कहूँ कि मैं अपने पिता को बुलाऊँगा। मैंने एक बार उन्हें फोन किया था, और उन्होंने धमकी दी थी कि अगर वह चुप नहीं हुई तो वे उसका गला घोंट देंगे; लेकिन जैसे ही वह कमरे से निकले, वह फिर से रोने लगी, पूरी रात कराहती और विलाप करती रही, जबकि मैं नींद न आने के कारण झुंझलाहट में चीखता रहा।'

मैंने पूछा, 'क्या मिस्टर हीथक्लिफ बाहर हैं?' यह समझते हुए कि उस बेचारे प्राणी में अपने चचेरे भाई की मानसिक पीड़ाओं के प्रति सहानुभूति दिखाने की कोई क्षमता

नहीं थी।

‘वह अदालत में हैं,’ उसने जवाब दिया, ‘डॉक्टर केनेथ से बात कर रहे हैं; डॉक्टर कह रहे हैं कि चाचा सचमुच मर रहे हैं। मुझे खुशी है, क्योंकि उनके बाद मैं ग्रेंज का मालिक बनूंगा। कैथरीन हमेशा इसे अपना घर कहती थी। यह उसका नहीं है! यह मेरा है: पापा कहते हैं कि उसकी हर चीज़ मेरी है। उसकी सारी प्यारी किताबें मेरी हैं; उसने मुझे उन्हें, अपने सुंदर पक्षियों और अपने टट्टू मिन्नी को देने की पेशकश की, अगर मैं हमारे कमरे की चाबी लाकर उसे बाहर जाने देता; लेकिन मैंने उससे कहा कि उसके पास देने के लिए कुछ नहीं है, ये सब मेरी हैं। तब वह रोने लगी और अपने गले से एक छोटी सी तस्वीर उतारकर बोली कि यह मेरी है; सोने के डिब्बे में दो तस्वीरें, एक तरफ उसकी माँ और दूसरी तरफ चाचा, जब वे जवान थे। यह कल की बात है - मैंने कहा कि वे भी मेरी हैं; और उनसे लेने की कोशिश की। उस चिड़चिड़ी ने मुझे लेने नहीं दिया: उसने मुझे धक्का दिया और मुझे चोट पहुँचाई।’ मैं चीख पड़ी—यह सुनकर वह डर गई—उसने पापा को आते सुना, और उसने कब्ज़े तोड़ दिए और केस को दो हिस्सों में बाँट दिया, और मुझे अपनी माँ की तस्वीर दे दी; दूसरी तस्वीर उसने छिपाने की कोशिश की: लेकिन पापा ने पूछा कि क्या हुआ, और मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया। उन्होंने मेरी तस्वीर ले ली, और उसे अपनी तस्वीर मुझे देने का आदेश दिया; उसने मना कर दिया, और उन्होंने—उन्होंने उसे नीचे गिरा दिया, और तस्वीर को चेन से खींचकर अलग कर दिया, और अपने पैर से उसे कुचल दिया।

मैंने पूछा, 'क्या आपको उसे पिटते देखकर खुशी हुई?' मेरा इरादा उसकी बातों को बढ़ावा देना था।

‘मैंने आँख मारी,’ उसने जवाब दिया: ‘मैं अपने पिता को कुत्ते या घोड़े को पीटते देखकर आँख मारता हूँ, वो इतनी ज़ोर से पीटते हैं। वैसे तो पहले तो मुझे खुशी हुई – उसने मुझे धक्का दिया था, इसलिए उसे सज़ा मिलनी ही चाहिए थी: लेकिन जब पापा चले गए, तो उसने मुझे खिड़की के पास बुलाया और मुझे अपने गाल पर अंदर से, दाँतों के पास लगी चोट दिखाई, और उसका मुँह खून से भर गया था; फिर उसने तस्वीर के टुकड़े समेटे और जाकर दीवार से मुँह लगाकर बैठ गई, और तब से उसने मुझसे कभी बात नहीं की: और कभी-कभी मुझे लगता है कि वो दर्द के मारे बोल नहीं सकती। मैं ऐसा सोचना पसंद नहीं करता; लेकिन वो लगातार रोने की वजह से बहुत शरारती है; और वो इतनी पीली और बेजान दिखती है कि मुझे उससे डर लगता है।’

‘और अगर आप चाहें तो आपको चाबी मिल सकती है?’ मैंने कहा।

‘हां, जब मैं ऊपर होता हूं,’ उसने उत्तर दिया; ‘लेकिन मैं अभी सीढ़ियों से ऊपर नहीं जा सकता।’

मैंने पूछा, 'यह किस अपार्टमेंट में है?'

“ओह,” वह चिल्लाया, “मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा कि यह कहाँ है। यह हमारा राज़ है। न तो हैरेटन को और न ही ज़िल्लाह को पता चलना चाहिए। बस! तुमने मुझे थका दिया है – चले जाओ, चले जाओ!” और उसने अपना चेहरा अपनी बांह पर टिका लिया और फिर से अपनी आँखें बंद कर लीं।

मैंने श्री हीथक्लिफ से मिले बिना ही वहाँ से चले जाना बेहतर समझा और अपनी युवती को ग्रेंज से छुड़ाने के लिए किसी को लाने का सोचा। वहाँ पहुँचकर, मुझे देखकर मेरे साथी नौकरों का आश्चर्य और खुशी दोनों ही चरम पर थे; और जब उन्हें पता चला कि उनकी मालकिन सुरक्षित हैं, तो दो-तीन लोग श्री एडगर के दरवाजे पर जाकर यह खबर सुनाने ही वाले थे: लेकिन मैंने खुद ही यह खबर सुनाने का फैसला किया। मैंने उन्हें कुछ ही दिनों में कितना बदला हुआ पाया! वे उदासी और निराशा की मूर्ति की तरह अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे बहुत युवा दिख रहे थे: हालाँकि उनकी वास्तविक आयु उनतालीस वर्ष थी, फिर भी उन्हें कम से कम दस वर्ष छोटा कहा जा सकता था। वे कैथरीन के बारे में सोच रहे थे; क्योंकि उन्होंने उसका नाम धीरे से लिया। मैंने उनका हाथ छुआ और उनसे बात की।

‘कैथरीन आ रही है, प्रिय स्वामी!’ मैंने फुसफुसाते हुए कहा; ‘वह जीवित और स्वस्थ है; और मुझे उम्मीद है कि वह आज रात यहाँ होगी।’

इस खबर के पहले ही असर से मैं कांप उठा: वह आधा उठा, कमरे में उत्सुकता से चारों ओर देखा, और फिर बेहोश होकर गिर पड़ा। जैसे ही वह संभला, मैंने उसे हाइट्स में हमारी अनिवार्य मुलाकात और नज़रबंदी के बारे में बताया। मैंने कहा कि हीथक्लिफ ने मुझे अंदर जाने के लिए मजबूर किया था: जो पूरी तरह सच नहीं था। मैंने लिंटन के खिलाफ जितना हो सके कम बोला; और न ही मैंने उसके पिता के क्रूर व्यवहार का पूरा वर्णन किया — मेरा इरादा था कि अगर संभव हो तो मैं उसके पहले से ही भरे हुए प्याले में और कड़वाहट न डालूँ।

उन्हें आभास हो गया था कि उनके शत्रु का एक उद्देश्य निजी संपत्ति के साथ-साथ जागीर भी अपने पुत्र को, या यों कहें कि स्वयं को, सुरक्षित करना था; फिर भी, मेरे

स्वामी के लिए यह एक पहेली थी कि उसने उनकी मृत्यु तक प्रतीक्षा क्यों नहीं की, क्योंकि उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि वे और उनका भतीजा लगभग एक साथ इस दुनिया से विदा होंगे। हालांकि, उन्होंने महसूस किया कि अपनी वसीयत में बदलाव करना बेहतर होगा: कैथरीन की संपत्ति को उसके अपने अधिकार में छोड़ने के बजाय, उन्होंने इसे न्यासियों के हाथों में सौंपने का निश्चय किया ताकि वह अपने जीवनकाल में इसका उपयोग कर सके और उसके बाद, यदि उसके बच्चे हों, तो उनका उपयोग कर सके। इस प्रकार, लिंटन की मृत्यु होने पर यह संपत्ति श्री हीथक्लिफ के हाथ में नहीं आएगी।

आदेश मिलते ही मैंने एक आदमी को वकील को लाने के लिए भेजा, और चार अन्य लोगों को, जो अच्छे हथियारों से लैस थे, मेरी युवती को उसके जेलर से छुड़ाने के लिए भेजा। दोनों पक्षों को आने में बहुत देर हो गई। अकेला नौकर सबसे पहले लौटा। उसने बताया कि जब वह अपने घर पहुँचा तो वकील श्री ग्रीन बाहर थे, और उसे उनके दोबारा अंदर आने के लिए दो घंटे इंतजार करना पड़ा; फिर श्री ग्रीन ने उसे बताया कि गाँव में उनका एक छोटा सा काम है; लेकिन वे सुबह होने से पहले थ्रशक्रॉस ग्रेंज पहुँच जाएँगे। चारों आदमी भी अकेले ही वापस आए। वे यह खबर लाए कि कैथरीन बीमार है: इतनी बीमार कि अपने कमरे से बाहर नहीं निकल सकती; और हीथक्लिफ उन्हें उससे मिलने नहीं दे रहा था। मैंने उन मूर्खों को उस कहानी पर विश्वास करने के लिए खूब डाँटा, जिसे मैं अपने मालिक को नहीं बताऊँगा; और मैंने निश्चय किया कि अगर कैदी को चुपचाप हमारे हवाले नहीं किया गया तो मैं सुबह होते ही पूरी टोली लेकर हाइट्स पर चढ़ जाऊँगा और वहाँ धावा बोल दूँगा। मैंने कसम खाई, और बार-बार कसम खाई, कि अगर वह शैतान उसे रोकने की कोशिश में अपने ही दरवाजे पर मारा जाए, तो भी उसका पिता उसे देखेगा!

सौभाग्य से, मुझे यात्रा और परेशानी से छुटकारा मिल गया। मैं तीन बजे पानी का जग लेने नीचे गई थी; और उसे हाथ में लिए हॉल से गुज़र रही थी, तभी सामने के दरवाज़े पर ज़ोर से दस्तक हुई और मैं चौंक गई। 'ओह! यह ग्रीन है,' मैंने खुद को संभालते हुए कहा - 'केवल ग्रीन,' और मैं आगे बढ़ गई, किसी और को दरवाज़ा खोलने के लिए भेजने का इरादा था; लेकिन दस्तक फिर से हुई: ज़ोर से नहीं, और फिर भी ज़िद भरी थी। मैंने जग को रेलिंग पर रखा और जल्दी से उसे अंदर आने दिया। बाहर पूर्णिमा का चाँद चमक रहा था। वह वकील नहीं था। मेरी प्यारी छोटी

मालकिन मेरे गले लग गई और रोने लगी, 'एलेन, एलेन! क्या पापा ज़िंदा हैं?'

'हां,' मैं रो पड़ी: 'हां, मेरे फरिश्ते, वह है, ईश्वर का धन्यवाद, तुम फिर से हमारे साथ सुरक्षित हो!'

वह हांफते हुए मिस्टर लिंटन के कमरे में दौड़ना चाहती थी; लेकिन मैंने उसे कुर्सी पर बैठने के लिए मजबूर किया, उसे पानी पिलाया और उसका पीला चेहरा अपने एप्रन से रगड़कर हल्का लाल कर दिया। फिर मैंने कहा कि मुझे पहले जाना होगा और उसके आने की खबर देनी होगी; मैंने उससे विनती की कि वह कहे कि वह युवा हीथक्लिफ के साथ खुश रहेगी। वह घूरती रही, लेकिन जल्द ही समझ गई कि मैंने उसे झूठ बोलने की सलाह क्यों दी, और उसने मुझे आश्वासन दिया कि वह शिकायत नहीं करेगी।

मैं उनकी बैठक में उपस्थित नहीं हो सका। मैं पंद्रह मिनट तक कमरे के दरवाजे के बाहर खड़ा रहा, और मुश्किल से ही बिस्तर के पास जाने की हिम्मत कर पाया। फिर भी सब कुछ शांत था: कैथरीन की निराशा उसके पिता के आनंद की तरह ही खामोश थी। वह देखने में शांत भाव से उनका सहारा बनी हुई थी; और उनकी उठी हुई आँखें मानो परमानंद से चौड़ी हो रही थीं, कैथरीन के चेहरे पर टिकी हुई थीं।

श्री लॉकवुड, उनकी मृत्यु अत्यंत आनंदमय हुई। उनके गाल चूमते हुए उन्होंने धीरे से कहा, "मैं उसके पास जा रहा हूँ; और तुम, मेरी प्यारी बच्ची, हमारे पास आओगी!" और फिर कभी हिले-डुले या बोले नहीं; बल्कि उनकी वही भावपूर्ण, तेजस्वी दृष्टि बनी रही, जब तक कि उनकी नब्ज़ धीरे-धीरे रुक नहीं गई और उनकी आत्मा शरीर से विदा नहीं हो गई। उनकी मृत्यु का ठीक समय किसी को पता नहीं चला, क्योंकि यह इतनी सहजता से हुई कि कोई संघर्ष नहीं हुआ।

कैथरीन के आंसू बह चुके थे या दुख इतना गहरा था कि वो बह ही नहीं पा रही थी, फिर भी वो सुबह सूरज उगने तक वहीं बैठी रही, उसकी आंखें सूखी थीं। वो दोपहर तक बैठी रही और उस मृत्युशय्या पर सोचती रहती, लेकिन मैंने उसे वहाँ से जाने और थोड़ा आराम करने के लिए ज़ोर दिया। अच्छा हुआ कि मैं उसे वहाँ से ले जाने में सफल रहा, क्योंकि खाने के समय वकील वहाँ आ गया, जो वूथरिंग हाइट्स में आकर यह निर्देश लेना चाहता था कि उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए। उसने खुद को मिस्टर हीथक्लिफ को बेच दिया था: यही कारण था कि मेरे मालिक के बुलावे का पालन करने में उसे देरी हुई। सौभाग्य से, बेटी के आने के बाद सांसारिक मामलों का कोई

ख्याल उसके मन में नहीं आया, जिससे वो परेशान हो सके।

श्री ग्रीन ने उस जगह के सभी लोगों और हर चीज़ पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। उन्होंने मुझे छोड़कर बाकी सभी नौकरों को घर खाली करने का नोटिस दे दिया। वे अपनी इस अधिकारिता का इस्तेमाल इस हद तक करना चाहते थे कि एडगर लिंटन को उनकी पत्नी के बगल में नहीं, बल्कि चैपल में उनके परिवार के साथ दफनाया जाए। लेकिन मैंने ऐसा होने से रोकने की इच्छाशक्ति दिखाई और निर्देशों के किसी भी उल्लंघन का ज़ोरदार विरोध किया। अंतिम संस्कार जल्दी से निपटाया गया; कैथरीन, जो अब श्रीमती लिंटन हीथक्लिफ थीं, को उनके पिता के शव के वहाँ से चले जाने तक ग्रेंज में रहने की अनुमति दी गई।

उसने मुझे बताया कि उसकी पीड़ा ने अंततः लिंटन को उसे मुक्त कराने का जोखिम उठाने के लिए प्रेरित किया। उसने मेरे भेजे हुए आदमियों को दरवाजे पर बहस करते सुना और हीथक्लिफ के जवाब का सार समझ लिया। इससे वह हताश हो गई। मेरे जाने के तुरंत बाद लिंटन को छोटे से बैठक कक्ष में ले जाया गया था, और वह अपने पिता के वापस आने से पहले चाबी लाने के लिए भयभीत हो गया। उसने चतुराई से दरवाजा बंद किए बिना ही उसे खोला और बंद किया; और जब उसे सोने जाना चाहिए था, तो उसने हैरेटन के साथ सोने की विनती की, और इस बार उसकी विनती मान ली गई। कैथरीन भोर होने से पहले ही चुपके से निकल गई। उसने दरवाजे खोलने की कोशिश नहीं की, कहीं कुत्ते शोर न मचा दें; उसने खाली कमरों का दौरा किया और उनकी खिड़कियों की जाँच की; और सौभाग्य से, अपनी माँ की खिड़की पर पहुँचकर, वह पास के देवदार के पेड़ की मदद से आसानी से जाली से बाहर निकलकर जमीन पर आ गई। उसके साथी को भागने में अपनी भूमिका के लिए भुगतना पड़ा, भले ही उसने कायरतापूर्ण तरीके अपनाए हों।

अध्याय 29

अंतिम संस्कार के बाद वाली शाम को, मैं और मेरी प्रेमिका पुस्तकालय में बैठे थे; कभी हम शोक में डूबे हुए थे - हममें से एक निराशा में डूबा हुआ था - अपने नुकसान पर, तो कभी हम अंधकारमय भविष्य के बारे में अटकलें लगा रहे थे।
हम अभी-अभी इस बात पर सहमत हुए थे कि कैथरीन के लिए सबसे अच्छा भविष्य यही होगा कि उसे ग्रेंज में रहने की अनुमति मिल जाए; कम से कम लिंटन के जीवनकाल तक: उसे भी वहाँ कैथरीन के साथ रहने की अनुमति मिल जाए, और मैं गृहस्वामी के रूप में बनी रहूँ। यह व्यवस्था कुछ ज़्यादा ही अनुकूल लग रही थी; फिर भी मुझे उम्मीद थी, और अपना घर, अपना काम और सबसे बढ़कर, अपनी प्यारी युवा मालकिन को बनाए रखने की संभावना से मैं थोड़ा खुश होने लगी थी; तभी एक नौकर - निकाले गए नौकरों में से एक, जो अभी तक गया नहीं था - जल्दी से अंदर आया और बोला, 'वह शैतान हीथक्लिफ' आंगन से आ रहा है: क्या उसे उसके मुँह पर दरवाज़ा बंद कर देना चाहिए?

अगर हम उस कार्यवाही का आदेश देने की मूर्खता करते, तो हमारे पास समय नहीं होता। उसने न तो दरवाजा खटखटाया और न ही अपना नाम बताया: वह मालिक था, और मालिक होने के नाते उसने बिना कुछ कहे सीधे अंदर जाने का विशेषाधिकार प्राप्त कर लिया। हमारे मुखबिर की आवाज सुनकर वह पुस्तकालय की ओर आ गया; वह अंदर गया और उसे बाहर जाने का इशारा करके दरवाजा बंद कर दिया।

यह वही कमरा था जिसमें अठारह साल पहले उन्हें अतिथि के रूप में लाया गया था: खिड़की से वही चाँद चमक रहा था; और बाहर वही शरद ऋतु का नज़ारा था। हमने अभी तक मोमबत्ती नहीं जलाई थी, लेकिन पूरा कमरा दिखाई दे रहा था, यहाँ तक कि दीवार पर लगे चित्र भी: श्रीमती लिंटन का शानदार चेहरा और उनके पति का सुंदर चेहरा। हीथक्लिफ चूल्हे की ओर बढ़े। समय ने उनके व्यक्तित्व में भी कोई खास बदलाव नहीं किया था। वही व्यक्ति थे: उनका सांवला चेहरा थोड़ा पीला और शांत हो गया था, उनका शरीर शायद एक-दो किलो भारी हो गया था, और कोई अन्य अंतर नहीं था। कैथरीन उन्हें देखते ही बाहर भागने के लिए उठ खड़ी हुई।

'रुको!' उसने उसका हाथ पकड़कर उसे रोकते हुए कहा। 'अब और भागना नहीं! तुम कहाँ जाओगी? मैं तुम्हें घर ले जाने आया हूँ; और मुझे उम्मीद है कि तुम एक आज्ञाकारी बेटी बनोगी और मेरे बेटे को और अवज्ञा करने के लिए प्रोत्साहित नहीं

करोगी। जब मुझे इस मामले में उसकी भूमिका का पता चला तो मुझे समझ नहीं आया कि उसे कैसे दंडित करूँ: वह इतना डरपोक है कि एक चुटकी भी उसे खत्म कर देगी; लेकिन तुम उसके चेहरे से समझ जाओगी कि उसे उसकी करनी का फल मिल गया है! मैं उसे परसों एक शाम नीचे लाया और बस एक कुर्सी पर बिठा दिया, और उसके बाद उसे छुआ तक नहीं। मैंने हैरेटन को बाहर भेज दिया, और हम दोनों कमरे में अकेले थे। दो घंटे बाद, मैंने जोसेफ को उसे वापस ऊपर ले जाने के लिए बुलाया; और तब से मेरी उपस्थिति उसके तंत्रिकाओं पर भूत की तरह असर डालती है; और मुझे लगता है कि वह मुझे अक्सर देखता है, हालाँकि मैं पास नहीं हूँ। हैरेटन कहता है कि वह रात में घंटों तक जागता है और चीखता है, और तुम्हें मुझसे बचाने के लिए पुकारता है; और चाहे आपको अपना प्रिय साथी पसंद हो या न हो, आपको आना ही होगा: अब वह आपकी चिंता का विषय है; मैं उसमें अपनी सारी रुचि आपको सौंपता हूँ।'

मैंने विनती करते हुए कहा, 'कैथरीन को यहीं रहने क्यों नहीं देते, और मास्टर लिंटन को उसके पास क्यों नहीं भेज देते? चूंकि आप उन दोनों से नफरत करते हैं, इसलिए आपको उनकी कमी महसूस नहीं होगी: वे आपके अस्वाभाविक हृदय के लिए केवल एक दैनिक कष्ट ही होंगे।'

“मैं ग्रेंज के लिए किराएदार ढूंढ रहा हूँ,” उसने जवाब दिया; “और मैं अपने बच्चों को अपने आस-पास रखना चाहता हूँ। इसके अलावा, उस लड़की पर मेरी सेवाएँ देने का कर्ज़ है। लिंटन के जाने के बाद मैं उसे विलासिता और आलस्य में नहीं पालना चाहता। जल्दी करो और तैयार हो जाओ; और मुझे मजबूर मत करो।”

‘मैं ऐसा करूंगी,’ कैथरीन ने कहा। ‘लिंटन ही दुनिया में मेरा एकमात्र प्रिय है, और भले ही तुमने उसे मेरे लिए और मुझे उसके लिए घृणित बनाने की हर संभव कोशिश की हो, तुम हमें एक-दूसरे से नफरत नहीं करवा सकते। और मैं तुम्हें चुनौती देती हूं कि जब मैं आस-पास रहूं तो उसे नुकसान पहुंचा कर दिखाओ, और मैं तुम्हें चुनौती देती हूं कि मुझे डरा कर दिखाओ!’

‘तुम तो बड़े घमंडी योद्धा हो,’ हीथक्लिफ ने उत्तर दिया; ‘पर मैं तुम्हें इतना पसंद नहीं करता कि उसे चोट पहुँचाऊँ: जब तक यह पीड़ा जारी रहेगी, तुम्हें इसका पूरा आनंद मिलेगा। यह मैं नहीं हूँ जो उसे तुम्हारे लिए घृणित बनाऊँगा - यह उसकी अपनी कोमल आत्मा है। तुम्हारे त्याग और उसके परिणामों से वह बहुत दुखी है: इस महान

निष्ठा के लिए धन्यवाद की अपेक्षा मत करना। मैंने उसे ज़िल्लाह को यह बताते हुए सुना कि अगर वह मेरी तरह बलवान होता तो क्या करता: यह इच्छा उसके भीतर है, और उसकी कमजोरी ही उसे बल का विकल्प खोजने के लिए प्रेरित करेगी।'

'मैं जानती हूँ कि उसका स्वभाव बुरा है,' कैथरीन ने कहा: 'वह आपका बेटा है। लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे पास उससे बेहतर बेटा है, जो उसकी इस बुराई को माफ कर सकता है; और मैं जानती हूँ कि वह मुझसे प्यार करता है, और इसी वजह से मैं भी उससे प्यार करती हूँ। श्री हीथक्लिफ, आपको प्यार करने वाला कोई नहीं है; और आप हमें चाहे जितना भी दुखी करें, हम इस बात का बदला जरूर लेंगे कि आपकी क्रूरता आपके गहरे दुख से उपजी है। आप दुखी हैं, है ना? शैतान की तरह अकेले, और उसी की तरह ईर्ष्यालु? कोई आपसे प्यार नहीं करता—आपके मरने पर कोई आपके लिए नहीं रोएगा! मैं आपकी जगह नहीं होना चाहूँगी!'

कैथरीन ने एक प्रकार की उदास विजय के साथ बात की: ऐसा प्रतीत होता था कि उसने अपने भावी परिवार की भावना में प्रवेश करने और अपने शत्रुओं के दुखों से आनंद प्राप्त करने का निश्चय कर लिया था।

उसके ससुर ने कहा, 'अगर तुम यहाँ एक मिनट भी खड़ी रही तो तुम्हें अभी खुद पर पछतावा होगा। चली जाओ, डायन, और अपना सामान ले आओ!'

वह तिरस्कारपूर्वक चली गई। उसकी अनुपस्थिति में मैंने हाइट्स में ज़िल्लाह की जगह के लिए गिड़गिड़ाना शुरू कर दिया, और अपनी जगह उसे देने की पेशकश की; लेकिन वह किसी भी कीमत पर ऐसा नहीं होने देना चाहता था। उसने मुझे चुप रहने को कहा; और फिर, पहली बार, उसने कमरे में चारों ओर एक नज़र डाली और तस्वीरों को देखा। श्रीमती लिंटन की तस्वीर देखने के बाद, उसने कहा - 'मैं वह घर ले लूँगा। इसलिए नहीं कि मुझे उसकी ज़रूरत है, बल्कि -' वह अचानक आग की ओर मुड़ा, और एक मुस्कान के साथ बोला - 'मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैंने कल क्या किया! मैंने लिंटन की कब्र खोद रहे कब्रिस्तान के कर्मचारी से उसके ताबूत के ढक्कन से मिट्टी हटवाई, और मैंने उसे खोला। एक पल के लिए मुझे लगा कि मैं वहीं रुक जाऊँगा: जब मैंने उसका चेहरा फिर से देखा - यह अभी भी उसका ही है! - तो उसे मुझे हिलाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ी; लेकिन उसने कहा कि हवा लगने पर यह बदल जाएगा, इसलिए मैंने ताबूत का एक हिस्सा ढीला कर दिया और उसे ढक दिया: लिंटन का हिस्सा नहीं, धिक्कार है उसे! काश उसे सीसे में जड़ा होता। और मैंने

कब्रिस्तान के रखवाले को रिश्वत दी है कि जब मुझे वहाँ रखा जाए तो वह इसे हटा दे और मेरा भी बाहर निकाल दे; मैं ऐसा ही करवाऊँगी: और फिर जब तक लिंटन हमारे पास पहुँचेगा, उसे पता ही नहीं चलेगा कि कौन सा किसका है!

'आप बहुत दुष्ट थे, श्री हीथक्लिफ!' मैंने कहा; 'क्या आपको मृतकों को परेशान करने में शर्म नहीं आई?'

'मैंने किसी को परेशान नहीं किया, नेली,' उसने जवाब दिया; 'और मैंने खुद को थोड़ा आराम दिया। अब मैं बहुत ज़्यादा आराम से रहूँगा; और जब मैं वहाँ पहुँचूँगा, तो तुम्हें मुझे ज़मीन के नीचे रखने का बेहतर मौका मिलेगा। उसे परेशान किया? नहीं! उसने मुझे अठारह साल तक, दिन-रात, लगातार, निर्दयता से, कल रात तक परेशान किया; और कल रात मैं शांत था। मैंने सपना देखा कि मैं उस सोई हुई के पास आखिरी नींद सो रहा था, मेरा दिल रुका हुआ था और मेरा गाल उसके गाल से सटा हुआ था।'

'और अगर वह धरती में विलीन हो गई होती, या इससे भी बुरा कुछ हुआ होता, तो तुम उस समय क्या सपने देखते?' मैंने कहा।

'उसके साथ विलीन हो जाने और और भी अधिक खुश हो जाने का!' उसने उत्तर दिया। 'क्या तुम्हें लगता है कि मैं इस तरह के किसी भी बदलाव से डरता हूँ? मुझे ढक्कन उठाते ही ऐसे परिवर्तन की उम्मीद थी—लेकिन मुझे इस बात की ज़्यादा खुशी है कि यह तब तक शुरू नहीं होगा जब तक मैं इसे खुद अनुभव न कर लूँ। इसके अलावा, अगर मुझे उसके भावहीन चेहरे की स्पष्ट झलक न मिली होती, तो वह अजीब सी भावना शायद ही दूर होती। यह अजीब तरह से शुरू हुई। तुम जानते हो कि उसकी मृत्यु के बाद मैं पागल हो गया था; और हमेशा, सुबह से सुबह तक, उससे प्रार्थना करता रहता था कि वह अपनी आत्मा मुझे लौटा दे! मुझे भूतों पर गहरा विश्वास है: मुझे पूरा यकीन है कि वे हमारे बीच मौजूद हो सकते हैं, और होते भी हैं! जिस दिन उसे दफ़नाया गया, उस दिन बर्फ़बारी हुई। शाम को मैं कब्रिस्तान गया। वहाँ कड़ाके की ठंड पड़ रही थी—चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। मुझे डर नहीं था कि उसका मूर्ख पति इतनी देर रात घाटी में भटकता रहेगा; और उन्हें वहाँ लाने का किसी और को कोई काम नहीं था।' अकेले होने और इस बात से अवगत होने पर कि हमारे बीच केवल दो गज ढीली मिट्टी की ही बाधा थी, मैंने मन ही मन कहा— "मैं उसे फिर से अपनी बाहों में भर लूँगा! अगर वह ठंडी हो, तो मैं सोचूँगा कि यह उत्तरी हवा मुझे

ठंडक पहुँचा रही है; और अगर वह गतिहीन हो, तो वह सो रही है।” मैंने औजारों के कमरे से एक फावड़ा लिया और पूरी ताकत से खोदना शुरू कर दिया— फावड़ा ताबूत को खरोंच रहा था; मैं अपने हाथों से काम करने में जुट गया; पेंचों के आसपास लकड़ी चटकने लगी; मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने ही वाला था, तभी मुझे लगा कि ऊपर से किसी की आह सुनाई दी, कब्र के किनारे पर, जो नीचे झुक रहा था। “काश मैं इसे हटा पाता,” मैंने बुदबुदाया, “काश वे हम दोनों के ऊपर मिट्टी डाल दें!” और मैं और भी बेताबी से उसे खींचने लगा। मेरे कान के पास एक और आह सुनाई दी। मुझे ऐसा लगा जैसे उसकी गर्म साँस ओलों से भरी हवा को हटा रही हो। मुझे पता था कि वहाँ कोई जीवित प्राणी नहीं था; लेकिन, जिस निश्चितता से आप अंधेरे में किसी ठोस शरीर के आने का आभास करते हैं, भले ही उसे देखा न जा सके, ठीक उसी निश्चितता से मैंने महसूस किया कि कैथी वहाँ थी: मेरे नीचे नहीं, बल्कि धरती पर। राहत की एक अचानक लहर मेरे हृदय से मेरे हर अंग में दौड़ गई। मैंने अपनी पीड़ा का श्रम त्याग दिया और तुरंत ही सुकून से भर गया: असीम सुकून से। उसकी उपस्थिति मेरे साथ थी: जब मैंने कब्र को फिर से भरा तब भी वह मेरे साथ रही और मुझे घर ले आई। आप चाहें तो हंस सकते हैं; लेकिन मुझे यकीन था कि मैं उसे वहाँ देखूंगा। मुझे यकीन था कि वह मेरे साथ थी, और मैं उससे बात किए बिना नहीं रह सका। हाइट्स पहुँचकर, मैं उत्सुकता से दरवाजे की ओर भागा। दरवाजा बंद था; और मुझे याद है, उस लानत अर्नशॉ और मेरी पत्नी ने मेरे प्रवेश का विरोध किया। मुझे याद है कि मैंने उसे लात मारकर उसकी सांस रोक दी, और फिर जल्दी से ऊपर अपने और उसके कमरे में चला गया। मैंने बेचैनी से चारों ओर देखा - मैंने उसे अपने पास महसूस किया - मैं उसे लगभग देख सकता था, और फिर भी नहीं देख पा रहा था! उस समय तो मुझे अपनी तड़प से खून-पसीना बहा देना चाहिए था, अपनी उस तीव्र प्रार्थना से कि बस एक झलक मिल जाए! मुझे वो भी नहीं मिली। उसने, जैसा कि वह अक्सर अपने जीवन में करती थी, मेरे लिए एक शैतान का रूप धारण कर लिया! और तब से, कभी ज़्यादा तो कभी कम, मैं उस असहनीय यातना का शिकार रहा हूँ! नरक जैसी! मेरी नसों को इतना तनाव में रखती थी कि अगर वे बिल्ली की आंत जैसी न होतीं, तो बहुत पहले ही लिंटन की तरह कमज़ोर हो गई होतीं। जब मैं हरेटन के साथ घर में बैठा होता, तो ऐसा लगता था कि बाहर जाते ही उससे मिलूँगा; जब मैं मैदानों पर चलता, तो आते ही उससे मिलूँगा। जब मैं घर से निकलता, तो जल्दी वापस आता; मुझे

यकीन था कि वह हाइट्स में कहीं न कहीं होगी! और जब मैं उसके कमरे में सोता, तो मुझे वहाँ से भगा दिया जाता था। मैं वहाँ लेट नहीं सकता था; जब भी मैं अपनी आँखें बंद करता, वह या तो खिड़की के बाहर होती, या पर्दे हटा रही होती, या कमरे में प्रवेश कर रही होती, या फिर बचपन में जिस तकिये पर सिर रखती थी, उसी पर अपना प्यारा सा सिर टिकाए होती; और मुझे देखने के लिए अपनी पलकें खोलनी ही पड़ती थीं। और इस तरह मैं रात में सौ बार अपनी आँखें खोलता और बंद करता—और हर बार निराशा ही हाथ लगती! इसने मुझे व्याकुल कर दिया! मैं अक्सर ज़ोर-ज़ोर से कराहता था, यहाँ तक कि उस बूढ़े बदमाश जोसेफ को यकीन हो जाता था कि मेरा अंतरात्मा ही मेरे अंदर शैतान की तरह व्यवहार कर रहा है। अब, जब से मैंने उसे देखा है, मुझे थोड़ी शांति मिली है। यह मारने का एक अजीब तरीका था: इंच-इंच करके नहीं, बल्कि बाल बराबर-बाल बराबर करके, अठारह वर्षों तक मुझे आशा के भूत से बहलाना!

श्री हीथक्लिफ रुके और अपना माथा पोंछा; उनके बाल पसीने से भीगे हुए माथे से चिपके हुए थे; उनकी आँखें आग के लाल अंगारों पर टिकी हुई थीं, भौंहें सिकुड़ी हुई नहीं थीं, बल्कि कनपटी तक उठी हुई थीं; इससे उनके चेहरे का गंभीर भाव कुछ कम हो गया, लेकिन एक अजीब सी परेशानी और किसी विषय में मग्न मानसिक तनाव का भाव झलक रहा था। उन्होंने मुझसे आधी-अधूरी बात की, और मैं चुप रहा। मुझे उनकी बातें सुनना पसंद नहीं था! थोड़ी देर बाद वे फिर से चित्र पर ध्यान केंद्रित करने लगे, उसे नीचे उतारा और बेहतर ढंग से देखने के लिए सोफे के सहारे टिका दिया; और जब वे चित्र में मग्न थे, कैथरीन अंदर आईं और बताया कि वह तैयार हैं, उनके टट्टू पर काठी कस दी जाएगी।

‘इसे कल भेज देना,’ हीथक्लिफ ने मुझसे कहा; फिर उसकी ओर मुड़कर उसने कहा: ‘तुम्हें अपने टट्टू की ज़रूरत नहीं है: आज शाम सुहावनी है, और वुदरिंग हाइट्स में तुम्हें टट्टुओं की ज़रूरत नहीं पड़ेगी; क्योंकि तुम जो भी यात्रा करोगी, तुम्हारे अपने पैर ही काफी होंगे। चलो।’

‘अलविदा, एलेन!’ मेरी प्यारी छोटी मालकिन ने फुसफुसाते हुए कहा।

जब उसने मुझे चूमा, तो उसके होंठ बर्फ जैसे ठंडे लगे। 'मुझसे मिलने आना, एलेन; भूलना मत।'

‘श्रीमती डीन, ऐसा कुछ मत करना!’ उनके नए पिता ने कहा। ‘जब मुझे आपसे

बात करनी होगी, मैं यहीं आऊंगा। मुझे आपके मेरे घर में ताक-झांक करने की कोई ज़रूरत नहीं है!'

उसने उसे अपने आगे चलने का इशारा किया; और मेरे दिल को चीर देने वाली एक नज़र से पीछे हटते हुए, उसने आज्ञा का पालन किया। मैंने खिड़की से उन्हें बगीचे में जाते हुए देखा। हीथक्लिफ ने कैथरीन का हाथ अपने हाथ में थाम लिया: हालाँकि उसने पहले तो इसका विरोध किया; और तेज़ कदमों से वह उसे गली में ले गया, जहाँ पेड़ों ने उन्हें छिपा लिया।

अध्याय XXX

मैं हाइट्स गई थी, लेकिन उसके जाने के बाद से मैंने उसे नहीं देखा: जब मैं उसका हालचाल पूछने गई, तो जोसेफ ने दरवाज़ा अपने हाथ में पकड़ रखा था और मुझे अंदर नहीं जाने दिया। उसने कहा कि श्रीमती लिंटन बहुत व्यस्त हैं और मालिक घर पर नहीं हैं। ज़िला ने मुझे उनके बारे में कुछ बताया है, नहीं तो मुझे शायद ही पता चलता कि कौन ज़िंदा है और कौन मर गया है। उसकी बातों से मुझे लगता है कि वह कैथरीन को घमंडी समझती है और उसे पसंद नहीं करती। जब मेरी युवती पहली बार आई थी, तो उसने ज़िला से कुछ मदद मांगी थी; लेकिन श्री हीथक्लिफ ने उसे अपना काम करने को कहा और अपनी बहू को अपना ख्याल खुद रखने को कहा; और ज़िला ने संकीर्ण सोच वाली, स्वार्थी औरत होने के कारण खुशी-खुशी उनकी बात मान ली। कैथरीन ने इस उपेक्षा पर बच्चों जैसी नाराज़गी दिखाई; उसने तिरस्कार से जवाब दिया और इस तरह मेरी सूचना देने वाली को अपने दुश्मनों में शामिल कर लिया, मानो उसने उसके साथ कोई बड़ा अन्याय किया हो। लगभग छह सप्ताह पहले, आपके आने से कुछ समय पहले, जब हम एक दिन खुले मैदान में इकट्ठा हुए थे, तब मेरी ज़िल्लाह से लंबी बातचीत हुई थी; और उसने मुझे यही बताया था।

उन्होंने बताया, “हाइट्स पहुंचते ही श्रीमती लिंटन ने सबसे पहले ऊपर की ओर दौड़ लगाई, मुझे और जोसेफ को शुभ संध्या तक नहीं कहा; उन्होंने खुद को लिंटन के कमरे में बंद कर लिया और सुबह तक वहीं रहीं। फिर, जब मालिक और अर्नशॉ नाश्ता कर रहे थे, वह घर में आईं और कांपते हुए सबसे पूछा कि क्या डॉक्टर को बुलाया जा सकता है? उनके चचेरे भाई बहुत बीमार थे।”

“हमें यह पता है!” हीथक्लिफ ने उत्तर दिया; “लेकिन उसकी जान एक पैसे की भी कीमत नहीं है, और मैं उस पर एक पैसा भी खर्च नहीं करूंगा।”

“लेकिन मुझे नहीं पता कि क्या करना है,” उसने कहा; “और अगर कोई मेरी मदद नहीं करेगा, तो वह मर जाएगा!”

“कमरे से बाहर निकल जाओ,” मालिक चिल्लाया, “और मुझे उसके बारे में फिर कभी एक शब्द भी न सुनना पड़े! यहाँ किसी को परवाह नहीं कि उसका क्या होगा; अगर तुम्हें परवाह है, तो नर्स की तरह व्यवहार करो; अगर नहीं, तो उसे बंद करके छोड़ दो।”

फिर वह मुझे परेशान करने लगी, और मैंने कहा कि मैं इस थकाऊ काम से तंग आ चुका हूँ; हम दोनों के अपने-अपने काम थे, और उसका काम लिंटन की सेवा करना था: श्री हीथक्लिफ ने मुझे वह काम उसे सौंपने के लिए कहा।

वे दोनों साथ कैसे रहते थे, यह मैं नहीं बता सकती। मुझे लगता है कि वह बहुत परेशान रहता था और दिन-रात विलाप करता रहता था; और उसे भी बहुत कम आराम मिलता था: यह उसके पीले चेहरे और भारी आँखों से पता चलता था। वह कभी-कभी रसोई में बिल्कुल बेहाल होकर आती थी और ऐसा लगता था जैसे मदद की भीख माँग रही हो; लेकिन मैं मालिक की अवज्ञा नहीं करने वाली थी: मैं कभी भी उनकी अवज्ञा करने की हिम्मत नहीं करती, श्रीमती डीन; और, हालाँकि मुझे यह गलत लगा कि केनेथ को नहीं बुलाया गया, लेकिन सलाह देना या शिकायत करना मेरा काम नहीं था, और मैंने हमेशा दखल देने से इनकार किया। एक-दो बार, जब हम सो गए थे, मैंने गलती से अपना दरवाजा खोला और उसे सीढ़ियों के ऊपर बैठकर रोते हुए देखा; और फिर मैंने दखल देने के डर से खुद को जल्दी से अंदर बंद कर लिया। मुझे यकीन है कि तब मुझे उस पर दया आई थी: फिर भी मैं अपनी जगह खोना नहीं चाहती थी, आप जानती हैं।

अंततः, एक रात वह साहसपूर्वक मेरे कमरे में आई और यह कहकर मुझे बुरी तरह

डरा दिया, “श्री हीथक्लिफ को बताओ कि उनका बेटा मर रहा है - मुझे पूरा यकीन है कि इस बार वह मर ही जाएगा। तुरंत उठो और उसे बताओ।”

यह भाषण देने के बाद वह फिर गायब हो गई। मैं पंद्रह मिनट तक कांपते हुए सुनता रहा। कुछ भी नहीं हिला - घर एकदम शांत था।

मैंने मन ही मन कहा, ‘वह गलतफहमी में है। वह इस बात को भूल चुका है। मुझे उन्हें परेशान करने की जरूरत नहीं है।’ और मुझे नींद आने लगी। लेकिन घंटी की तेज आवाज से मेरी नींद फिर से टूट गई – हमारे पास बस यही एक घंटी है, जिसे खास तौर पर लिंटन के लिए लगाया गया था; और मालिक ने मुझे यह देखने के लिए बुलाया कि क्या हुआ है, और उन्हें बताया कि वह दोबारा ऐसी आवाज नहीं होने देंगे।

मैंने कैथरीन का संदेश पहुँचा दिया। उसने मन ही मन कुछ बुदबुदाया, और कुछ ही मिनटों में जलती हुई मोमबत्ती लेकर बाहर आया और उनके कमरे की ओर चल पड़ा। मैं भी उसके पीछे गया। श्रीमती हीथक्लिफ पलंग के पास बैठी थीं, उनके हाथ घुटनों पर मुड़े हुए थे। उनके ससुर उनके पास गए, लिंटन के चेहरे पर रोशनी डाली, उन्हें देखा और छुआ; उसके बाद वे उनकी ओर मुड़े।

“अब—कैथरीन,” उसने कहा, “तुम कैसा महसूस कर रही हो?”

वह गूंगी थी।

“कैथरीन, तुम कैसा महसूस कर रही हो?” उसने दोहराया।

“वह सुरक्षित है, और मैं आज़ाद हूँ,” उसने उत्तर दिया: “मुझे अच्छा महसूस करना चाहिए — लेकिन,” उसने अपनी बात जारी रखते हुए, उस कड़वाहट के साथ कहा जिसे वह छिपा नहीं सकती थी, “तुमने मुझे मृत्यु से अकेले जूझने के लिए इतना लंबा समय दे दिया है कि मुझे केवल मृत्यु ही दिखाई देती है! मुझे मृत्यु जैसा महसूस होता है!”

और वो दिखती भी वैसी ही थी! मैंने उसे थोड़ी शराब पिलाई। हैरेटन और जोसेफ, जो घंटी बजने और पैरों की आहट से जाग गए थे और बाहर से हमारी बातें सुन रहे थे, अब अंदर आए। मुझे लगता है कि जोसेफ लड़के के जाने से नाराज़ थे; हैरेटन थोड़ा परेशान लग रहे थे: हालाँकि वे लिंटन के बारे में सोचने के बजाय कैथरीन को घूरने में ज़्यादा मशगूल थे। लेकिन मालिक ने उन्हें वापस बिस्तर पर जाने को कहा: हमें उनकी मदद नहीं चाहिए थी। बाद में उन्होंने जोसेफ को शव को अपने कमरे में ले जाने को कहा और मुझे अपने कमरे में लौटने को कहा, और श्रीमती हीथक्लिफ वहीं अकेली

रह गईं।

सुबह उसने मुझे उसे यह बताने के लिए भेजा कि उसे नाश्ते के लिए नीचे आना चाहिए: उसने कपड़े उतार दिए थे और सोने जैसी लग रही थी, और कहा कि वह बीमार है; जिस पर मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। मैंने मिस्टर हीथक्लिफ को सूचित किया, और उन्होंने जवाब दिया, "ठीक है, उसे अंतिम संस्कार के बाद तक रहने दो; और बीच-बीच में उसके लिए आवश्यक चीजें लाते रहना; और जैसे ही वह बेहतर महसूस करे, मुझे बता देना।"

ज़िल्लाह के अनुसार, कैथी दो सप्ताह तक ऊपर वाले कमरे में रही; ज़िल्लाह उससे दिन में दो बार मिलने जाती थी और वह और भी अधिक मित्रवत व्यवहार करती, लेकिन उसकी दयालुता बढ़ाने के प्रयासों को ज़िल्लाह ने गर्वपूर्वक और तुरंत ही ठुकरा दिया।

हीथक्लिफ एक बार लिंटन की वसीयत दिखाने के लिए उसके पास गया। लिंटन ने अपनी और उसकी सारी चल संपत्ति अपने पिता को दे दी थी। उसके चाचा की मृत्यु के बाद, जब वह एक सप्ताह के लिए अनुपस्थित थी, तब उस बेचारी को धमकाकर या फुसलाकर यह काम करने के लिए मजबूर किया गया था। चूंकि जमीनें नाबालिग थीं, इसलिए वह उनमें दखल नहीं दे सकता था। हालांकि, मिस्टर हीथक्लिफ ने उन जमीनों पर दावा किया है और उन्हें अपनी पत्नी और खुद के अधिकार में रखा है: मेरा मानना है कि कानूनी तौर पर; खैर, कैथरीन, जिसके पास न तो पैसे हैं और न ही दोस्त, उसके कब्जे में दखल नहीं दे सकती।

ज़िल्लाह ने कहा, "उस एक बार के अलावा, मेरे अलावा कोई भी उसके दरवाजे के पास नहीं गया; और किसी ने भी उसके बारे में कुछ नहीं पूछा। पहली बार वह रविवार की दोपहर को घर में आई थी। जब मैं उसका खाना लेकर ऊपर गई, तो वह चिल्लाई कि वह अब और ठंड बर्दाश्त नहीं कर सकती; और मैंने उसे बताया कि मालिक थ्रशक्रॉस ग्रेंज जा रहा है, और अर्नशॉ और मुझे उसे नीचे आने से रोकने की ज़रूरत नहीं है; इसलिए, जैसे ही उसने हीथक्लिफ के घोड़े की सरपट दौड़ की आवाज़ सुनी, वह काले कपड़े पहने हुए और अपने पीले घुंघराले बालों को कानों के पीछे कंघी करके, बिल्कुल एक क्वेकर की तरह, प्रकट हुई: वह उन्हें कंघी नहीं कर सकती थी।"

श्रीमती डीन ने बताया, "जोसेफ और मैं आम तौर पर रविवार को चैपल जाते हैं: आपको पता है, चर्च में अब कोई पादरी नहीं है; और गिम्मर्टन में मेथोडिस्ट या

बैपटिस्ट चर्च (मैं नहीं कह सकती कि कौन सा है) को चैपल कहते हैं। जोसेफ चला गया था," उन्होंने आगे कहा, "लेकिन मैंने घर पर रहना उचित समझा। युवाओं को बड़ों की देखरेख से हमेशा फायदा होता है; और हैरेटन, अपनी शर्म के बावजूद, अच्छे व्यवहार का आदर्श नहीं है। मैंने उसे बताया कि उसकी चचेरी बहन शायद हमारे साथ बैठेगी, और वह हमेशा से रविवार का सम्मान होते हुए देखने की आदी थी; इसलिए जब तक वह रुकती है, तब तक वह अपने हथियार और घर के काम छोड़ दे तो बेहतर होगा। यह सुनकर उसका चेहरा लाल हो गया, और उसने अपने हाथों और कपड़ों पर नज़र डाली। ट्रेन का तेल और बारूद एक मिनट में नज़र से ओझल हो गए। मैंने देखा कि वह उसे अपना साथ देना चाहता था; और मैंने उसके हाव-भाव से अंदाज़ा लगाया कि वह अच्छे से पेश आना चाहता था।" इसलिए, मैं हंसते हुए (क्योंकि मालिक के सामने हंसने की हिम्मत नहीं होती थी) उसे मदद करने की पेशकश की, अगर वह चाहे तो, और उसकी उलझन पर मजाक किया। वह उदास हो गया और गाली-गलौज करने लगा।

'अब, श्रीमती डीन,' ज़िला ने आगे कहा, यह देखकर कि मैं उसके व्यवहार से प्रसन्न नहीं थी, 'आपको लगता है कि आपकी युवती श्री हरेटन के लिए बहुत ही नज़ाकत भरी है; और आप सही भी हैं: लेकिन मैं मानती हूँ कि मैं उसका घमंड थोड़ा कम करना चाहूँगी। और अब उसकी सारी विद्या और नज़ाकत उसके क्या काम आएगी? वह आप या मेरे जितनी ही गरीब है: बल्कि मुझसे भी ज़्यादा गरीब, मैं शर्त लगा सकती हूँ: आप कह रही हैं, और मैं इस बात को बस यूँ ही कह रही हूँ।'

हैरेटोन ने ज़िल्लाह को अपनी सहायता करने की अनुमति दी; और उसने उसकी चापलूसी करके उसे खुश कर दिया; इसलिए, जब कैथरीन आई, तो उसने अपने पूर्व अपमानों को आधा भूलकर, गृहस्वामी के अनुसार, खुद को उसके अनुकूल बनाने की कोशिश की।

"मालकिन अंदर आईं," उसने कहा, "बिल्कुल ठंडी और राजकुमारी की तरह सजी-धजी। मैं उठी और उन्हें कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। लेकिन उन्होंने मेरी विनम्रता को ठुकरा दिया। अर्नशॉ भी उठे और उन्हें मेज पर आकर आग के पास बैठने को कहा: उन्हें यकीन था कि उन्हें बहुत भूख लगी है।"

"मुझे एक महीने से अधिक समय से भूखा रखा गया है," उसने जवाब दिया, उस शब्द पर यथासंभव तिरस्कारपूर्ण ढंग से जोर देते हुए।

और उसने अपने लिए एक कुर्सी ली और उसे हम दोनों से कुछ दूरी पर रख दिया। जब तक उसे गर्मी महसूस नहीं हुई, तब तक वह बैठी रही और इधर-उधर देखने लगी, और उसने अलमारी पर कई किताबें देखीं; वह तुरंत फिर से खड़ी हो गई और उन्हें लेने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन वे बहुत ऊपर थीं। उसके चचेरे भाई ने कुछ देर तक उसकी कोशिशों को देखने के बाद आखिरकार हिम्मत जुटाकर उसकी मदद की; उसने उसकी फ्रॉक पकड़ी और उसने उसे जो भी किताब हाथ लगी, उससे भर दिया।

लड़के के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि थी। उसने उसे धन्यवाद नहीं दिया; फिर भी, उसे इस बात की खुशी थी कि उसने उसकी मदद स्वीकार कर ली थी, और उसने हिम्मत करके उसके पीछे खड़े होकर उन पुरानी तस्वीरों को देखा, और यहाँ तक कि झुककर उनमें से कुछ पुरानी तस्वीरों में जो उसे पसंद आई, उसे दिखाया; और जिस शरारती अंदाज़ में उसने उसकी उंगली से पन्ना छीन लिया, उससे भी वह विचलित नहीं हुआ: उसने थोड़ा और पीछे हटकर किताब की बजाय उसे देखना ही बेहतर समझा। वह पढ़ती रही, या पढ़ने के लिए कुछ ढूंढती रही। धीरे-धीरे उसका ध्यान पूरी तरह से उसके घने रेशमी बालों पर केंद्रित हो गया: उसका चेहरा वह नहीं देख पा रहा था, और वह उसे नहीं देख पा रही थी। और, शायद, उसे अपने किए का पूरा एहसास नहीं था, लेकिन मोमबत्ती की रोशनी में बच्चे की तरह आकर्षित होकर, आखिरकार वह घूरने से छूने की ओर बढ़ गया; उसने अपना हाथ बढ़ाया और एक लट को इतनी कोमलता से सहलाया जैसे वह कोई पक्षी हो। वह इतनी चौंक गई कि मानो उसने उसकी गर्दन में चाकू घोंप दिया हो।

“अभी इसी वक्त दूर हटो! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे छूने की? तुम यहीं क्यों रुक रहे हो?” वह घृणा भरे स्वर में चिल्लाई। “मैं तुम्हें बर्दाश्त नहीं कर सकती! अगर तुम मेरे पास आए तो मैं फिर से ऊपर चली जाऊंगी।”

'श्री हरेटन पीछे हट गए, जितना मूर्ख दिख सकते थे उतना ही मूर्ख दिख रहे थे: वे बहुत चुपचाप सोफे पर बैठ गए, और वह अगले आधे घंटे तक अपनी किताबों के पन्ने पलटती रही; अंत में, अर्नशॉ मेरे पास आए और मुझसे फुसफुसाकर कुछ कहा।'

“क्या तुम ज़िल्लाह से कहोगी कि वह हमें पढ़कर सुनाए? मैं कुछ न करते-करते थक गई हूँ; और मुझे अच्छा लगता है—काश मैं उसे पढ़ते हुए सुन पाती! यह मत कहना कि मैं चाहती हूँ, बल्कि खुद से पूछ लो।”

“श्रीमान हरेटन चाहते हैं कि आप हमें पढ़कर सुनाएं, महोदया,” मैंने तुरंत कहा।

“उन्हें बहुत खुशी होगी—वे आपके बहुत आभारी होंगे।”

उसने भौंहें चढ़ाईं; और ऊपर देखते हुए उत्तर दिया—

श्रीमान हरेटन और आप सभी कृपया यह समझें कि मैं आपके दिखावटी दयालुता के किसी भी रूप को अस्वीकार करता हूँ! मैं आप सभी से घृणा करता हूँ और आप में से किसी से भी कुछ नहीं कहना चाहता! जब मैं एक दयालु शब्द के लिए, यहाँ तक कि आप में से किसी एक का चेहरा देखने के लिए भी अपनी जान देने को तैयार था, तब भी आप सभी मुझसे दूर रहे। लेकिन मैं आपसे शिकायत नहीं करूँगा! मैं ठंड से मजबूर होकर यहाँ आया हूँ; न तो आपका मनोरंजन करने के लिए और न ही आपकी संगति का आनंद लेने के लिए।

“मैं क्या कर सकता था?” अर्नशॉ ने पूछना शुरू किया। “इसमें मेरी क्या गलती थी?”

“ओह! आप तो अपवाद हैं,” श्रीमती हीथक्लिफ ने उत्तर दिया। “मैंने कभी आपकी जैसी चिंता को नहीं भुलाया।”

“लेकिन मैंने एक से अधिक बार पेशकश की और पूछा,” उसने उसकी चंचलता पर उत्तेजित होते हुए कहा, “मैंने मिस्टर हीथक्लिफ से अनुरोध किया कि मुझे आपके लिए जागने दें—”

“चुप रहो! मैं बाहर चली जाऊंगी, या कहीं भी चली जाऊंगी, बजाय इसके कि तुम्हारी अप्रिय आवाज मेरे कानों में गूंजे!” मेरी पत्नी ने कहा।

हैरेटोन ने बुदबुदाते हुए कहा, "वह उसके लिए नरक में जाए!" और अपनी बंदूक कंधे से उतारकर, उसने अपने रविवार के कामों से खुद को और नहीं रोका। अब वह खुलकर बोलने लगा; और उसने तुरंत अपने एकांत में लौटना उचित समझा: लेकिन ठंड बढ़ चुकी थी, और अपने स्वाभिमान के बावजूद, वह हमारी संगति में अधिकाधिक विनम्रता दिखाने के लिए विवश हो गई। हालाँकि, मैंने इस बात का ध्यान रखा कि मेरे अच्छे स्वभाव का और अधिक उपहास न हो: तब से, मैं भी उसी की तरह कठोर हो गया हूँ; और हममें से उसका कोई प्रेमी या चाहने वाला नहीं है: और वह इसके लायक भी नहीं है; क्योंकि, अगर कोई उसे एक शब्द भी कह दे, तो वह किसी की परवाह किए बिना पलट जाएगी। वह मालिक पर भी झपटेगी, और मानो उसे पीटने की चुनौती देगी; और उसे जितना अधिक दुख होता है, वह उतनी ही अधिक विषैली हो जाती है।

पहले तो, ज़िल्लाह से यह सब सुनकर मैंने अपनी नौकरी छोड़ने, एक झोपड़ी लेने और कैथरीन को अपने साथ रहने के लिए बुलाने का निश्चय किया; लेकिन श्री हीथक्लिफ ऐसा करने की अनुमति देने को तैयार नहीं थे, जैसे कि वे हैरेटन को एक अलग घर में बसाने की अनुमति नहीं देंगे; और फिलहाल मुझे कोई उपाय नज़र नहीं आता, सिवाय इसके कि वह दोबारा शादी कर ले; और यह व्यवस्था करना मेरे बस की बात नहीं है।

* * * * *

इस तरह श्रीमती डीन की कहानी समाप्त हुई। डॉक्टर की भविष्यवाणी के बावजूद, मैं तेजी से स्वस्थ हो रही हूँ; और यद्यपि अभी जनवरी का दूसरा सप्ताह ही है, मैं एक-दो दिन में घोड़े पर सवार होकर वुदरिंग हाइट्स जाने का इरादा रखती हूँ, ताकि अपने मकान मालिक को सूचित कर सकूँ कि मैं अगले छह महीने लंदन में बिताऊँगी; और यदि उन्हें पसंद हो, तो वे अक्टूबर के बाद मेरे लिए कोई दूसरा किरायेदार ढूंढ सकते हैं। मैं यहाँ एक और सर्दी नहीं गुजारना चाहती।

अध्याय XXXI

कल का दिन धूपदार, शांत और सर्द था। मैं तय समय पर हाइट्स गया: मेरी गृहणी ने मुझसे अपनी नौकरानी को एक छोटा सा संदेश देने का अनुरोध किया, और मैंने मना नहीं किया, क्योंकि उस नेक महिला को अपने अनुरोध में कुछ भी अजीब नहीं लगा। सामने का दरवाजा खुला था, लेकिन पिछली बार की तरह ही गेट बंद था; मैंने दस्तक दी और बगीचे की क्यारियों के बीच से अर्नशॉ को पुकारा; उसने गेट खोला और मैं अंदर चला गया। वह देहाती दिखने में बेहद आकर्षक था। इस बार मैंने उस पर विशेष ध्यान दिया; लेकिन वह अपनी खूबियों को कम से कम दिखाने की पूरी कोशिश करता

है।

मैंने पूछा कि क्या श्री हीथक्लिफ घर पर हैं? उन्होंने उत्तर दिया, नहीं; लेकिन वे भोजन के समय आ जाएँगे। ग्यारह बज रहे थे, और मैंने अंदर जाकर उनका इंतज़ार करने का इरादा ज़ाहिर किया; जिस पर उन्होंने तुरंत अपने औज़ार फेंक दिए और मेरे साथ चौकीदार की भूमिका में आ गए, मेज़बान के विकल्प के रूप में नहीं।

हम दोनों साथ में अंदर गए; कैथरीन वहाँ थी, आने वाले भोजन के लिए कुछ सब्जियाँ तैयार करने में व्यस्त थी; वह पहले की तुलना में अधिक उदास और कम उत्साहित लग रही थी। उसने मुश्किल से ही मेरी ओर देखा और शिष्टाचार के सामान्य नियमों की अवहेलना करते हुए पहले की तरह ही अपना काम जारी रखा; मेरे अभिवादन और सुप्रभात का उसने जरा सा भी जवाब नहीं दिया।

मैंने सोचा, ‘वह उतनी मिलनसार नहीं लगती जितनी श्रीमती डीन मुझे यकीन दिलाना चाहती हैं। वह खूबसूरत तो है, लेकिन कोई फरिश्ता नहीं।’

अर्नशॉ ने चिड़चिड़ेपन से उसे अपना सामान रसोई में ले जाने को कहा। 'खुद ही ले जाओ,' उसने कहा और जैसे ही उसने सामान हटाया, उसने उसे एक तरफ धकेल दिया; और खिड़की के पास एक स्टूल पर बैठ गई, जहाँ वह अपनी गोद में रखे शलजम के छिलकों से पक्षियों और जानवरों की आकृतियाँ बनाने लगी। मैं उसके पास गया, बगीचे का नज़ारा देखने का बहाना करते हुए; और, जैसा मैंने सोचा था, मैंने चतुराई से श्रीमती डीन का नोट उसके घुटने पर रख दिया, हरेटन को पता भी नहीं चला — लेकिन उसने ज़ोर से पूछा, 'यह क्या है?' और उसे फेंक दिया।

‘तुम्हारी पुरानी परिचित, ग्रेंज की हाउसकीपर का पत्र है,’ मैंने उत्तर दिया; मुझे इस बात पर गुस्सा आ रहा था कि उसने मेरे इस नेक काम का खुलासा कर दिया था, और मुझे डर था कि कहीं इसे मेरा पत्र न समझ लिया जाए। यह जानकर वह खुशी-खुशी पत्र ले लेती, लेकिन हैरेटन ने उससे पहले ही पत्र छीन लिया और अपनी जैकेट में रख लिया, यह कहते हुए कि मिस्टर हीथक्लिफ को इसे पहले देख लेना चाहिए। इस पर, कैथरीन चुपचाप हमसे मुंह फेर लिया, और बहुत चुपके से अपना रूमाल निकालकर अपनी आंखों पर रख लिया; और उसके चचेरे भाई ने कुछ देर तक अपनी कोमल भावनाओं को दबाने की कोशिश करने के बाद, पत्र निकाला और उसे जितना हो सके बेरुखी से उसके बगल में फर्श पर फेंक दिया। कैथरीन ने उसे उठाया और उत्सुकता से पढ़ा; फिर उसने अपने पुराने घर के निवासियों, समझदार और नासमझ, के बारे में

मुझसे कुछ सवाल पूछे; और पहाड़ियों की ओर देखते हुए, मन ही मन बड़बड़ाने लगी:

'काश मैं मिन्नी पर सवार होकर नीचे जा पाती! काश मैं ऊपर चढ़ पाती! ओह! मैं थक गई हूँ – मैं अटक गई हूँ, हैरेटन!' और उसने अपना सुंदर सिर खिड़की की चौखट पर टिका दिया, आधी जम्हाई और आधी आह भरते हुए, और एक उदास भाव में डूब गई: उसे इस बात की परवाह भी नहीं थी और न ही उसे पता था कि हमने उसे देखा या नहीं।

कुछ देर चुप बैठने के बाद मैंने कहा, 'श्रीमती हीथक्लिफ, क्या आपको पता नहीं कि मैं आपकी परिचित हूँ? इतनी घनिष्ठ जान-पहचान है कि मुझे अजीब लगता है कि आप आकर मुझसे बात नहीं करतीं। मेरी गृहणी कभी आपके बारे में बात करते-करते नहीं थकती; और अगर मैं आपसे या आपके बारे में कोई खबर लेकर न लौटूँ, सिवाय इसके कि आपको उसका पत्र मिला और आपने कुछ नहीं कहा, तो वह बहुत निराश होगी!'

वह इस भाषण पर आश्चर्यचकित प्रतीत हुई और उसने पूछा, —

क्या एलेन तुम्हें पसंद करती है?

'जी हां, बहुत अच्छा,' मैंने हिचकिचाते हुए जवाब दिया।

उसने आगे कहा, 'आपको उसे बताना होगा कि मैं उसके पत्र का उत्तर देना चाहती थी, लेकिन मेरे पास लिखने के लिए कोई सामग्री नहीं है: यहां तक कि कोई किताब भी नहीं है जिससे मैं एक पन्ना फाड़ सकूं।'

'किताबें नहीं!' मैंने हैरानी से कहा। 'मैं पूछने की हिम्मत करूँ तो, आप यहाँ इनके बिना कैसे गुज़ारा करते हैं? हालाँकि यहाँ एक बड़ी लाइब्रेरी है, फिर भी मैं अक्सर ग्रेंज में बहुत उबाऊ महसूस करता हूँ; मेरी किताबें छीन ली जाएँ, तो मैं बिल्कुल निराश हो जाऊँगा!'

कैथरीन ने कहा, "जब मेरे पास किताबें थीं, मैं हमेशा पढ़ती रहती थी; और मिस्टर हीथक्लिफ कभी पढ़ते नहीं हैं; इसलिए उन्होंने मेरी किताबें नष्ट करने का फैसला किया। हफ्तों से मुझे एक भी किताब नहीं मिली। सिर्फ एक बार, मैंने जोसेफ के धर्मशास्त्र के भंडार में खोजबीन की, जिससे वह बहुत चिढ़ गए; और एक बार, हैरेटन, मुझे तुम्हारे कमरे में कुछ गुप्त किताबें मिलीं - कुछ लैटिन और ग्रीक, और कुछ कहानियां और कविताएं: सभी पुरानी दोस्त। मैं आखिरी वाली यहां ले आई - और तुमने उन्हें ऐसे इकट्ठा कर लिया जैसे कोई मैगपाई चांदी के चम्मच इकट्ठा करती है,

सिर्फ चोरी के शौक में! वे तुम्हारे किसी काम की नहीं हैं; या फिर तुमने उन्हें इस बुरी भावना से छिपा दिया कि जब तुम उनका आनंद नहीं ले सकती, तो कोई और भी नहीं ले पाएगा। शायद तुम्हारी ईर्ष्या ने मिस्टर हीथक्लिफ को मेरे खजाने लूटने के लिए उकसाया हो? लेकिन उनमें से ज्यादातर मेरे दिमाग में लिखी हुई हैं और मेरे दिल में छपी हुई हैं, और तुम मुझे उनसे वंचित नहीं कर सकते!"

जब उनकी चचेरी बहन ने उनके निजी साहित्यिक संग्रहों का खुलासा किया तो अर्नशॉ शर्म से लाल हो गए और उन्होंने हकलाते हुए गुस्से में उनके आरोपों का खंडन किया।

मैंने उनकी मदद करते हुए कहा, 'श्री हरेटन अपना ज्ञान बढ़ाना चाहते हैं। उन्हें आपकी उपलब्धियों से ईर्ष्या नहीं, बल्कि प्रतिस्पर्धा की भावना है। कुछ ही वर्षों में वे एक प्रतिभाशाली विद्वान बन जाएंगे।'

'और वो चाहता है कि मैं इस बीच बेवकूफ बन जाऊं,' कैथरीन ने जवाब दिया। 'हां, मैं उसे खुद से स्पेलिंग और रीडिंग करने की कोशिश करते हुए सुन रही हूं, और वो बड़ी-बड़ी गलतियां कर रहा है! काश तुम कल की तरह शेवी चेज़ का नाटक दोहराते: वो बहुत ही मजेदार था। मैंने तुम्हें सुना था; और मैंने तुम्हें मुश्किल शब्दों को ढूंढने के लिए डिक्शनरी पलटते हुए और फिर उनके मतलब न पढ़ पाने पर कोसते हुए भी सुना था!'

उस युवक को स्पष्ट रूप से यह बहुत बुरा लगा कि उसकी अज्ञानता का मज़ाक उड़ाया जाए, और फिर उसे दूर करने की कोशिश करने पर भी उसका मज़ाक उड़ाया जाए। मेरे मन में भी कुछ ऐसा ही विचार आया; और श्रीमती डीन द्वारा सुनाए गए उस किस्से को याद करते हुए, जिसमें उसने अपने बचपन के अंधकार को दूर करने का पहला प्रयास किया था, मैंने कहा, — 'लेकिन, श्रीमती हीथक्लिफ, हम सभी की शुरुआत हुई है, और हम सभी दहलीज पर ठोकर खाते और लड़खड़ाते हुए पहुंचे हैं; अगर हमारे शिक्षकों ने हमारी मदद करने के बजाय हमारा तिरस्कार किया होता, तो हम आज भी ठोकर खाते और लड़खड़ाते रहते।'

'ओह!' उसने उत्तर दिया, 'मैं उसकी उपलब्धियों को सीमित नहीं करना चाहती: फिर भी, उसे मेरी चीज़ों पर अपना अधिकार जताने और अपनी घिनौनी गलतियों और गलत उच्चारणों से उन्हें मेरे लिए हास्यास्पद बनाने का कोई हक नहीं है! गद्य और पद्य दोनों ही वे पुस्तकें अन्य स्मृतियों से मेरे लिए पवित्र हैं; और मैं नहीं चाहती कि वह उन्हें

अपने मुँह से अपमानित और अपवित्र करे! इसके अलावा, उसने जानबूझकर मेरी उन पसंदीदा रचनाओं को चुना है जिन्हें मैं सबसे ज्यादा दोहराना पसंद करती हूँ।'

एक मिनट तक हैरेटोन की छाती खामोशी से ऊपर-नीचे होती रही: वह घोर अपमान और क्रोध से ग्रस्त था, जिसे दबाना आसान नहीं था। मैं उठा और उसकी शर्मिंदगी कम करने के नेक इरादे से दरवाजे पर खड़ा हो गया, बाहर का नजारा देखता रहा। उसने भी मेरा अनुसरण किया और कमरे से बाहर चला गया; लेकिन थोड़ी देर बाद वापस आया, उसके हाथों में आधा दर्जन किताबें थीं, जिन्हें उसने कैथरीन की गोद में फेंकते हुए कहा, — 'इन्हें ले लो! मैं इन्हें फिर कभी सुनना, पढ़ना या इनके बारे में सोचना नहीं चाहता!'

'मैं उन्हें अभी स्वीकार नहीं करूंगी,' उसने उत्तर दिया। 'मैं उन्हें तुमसे जोड़कर देखूंगी और उनसे नफरत करूंगी।'

उसने एक किताब खोली जो स्पष्ट रूप से कई बार पलटी जा चुकी थी, और एक नौसिखिए की धीमी आवाज़ में उसका एक अंश पढ़ा; फिर हँसी और उसे फेंक दिया। 'और सुनो,' उसने उकसाते हुए कहा और उसी अंदाज़ में एक पुराने लोकगीत की एक पंक्ति शुरू कर दी।

लेकिन उसका आत्म-प्रेम अब और कष्ट सहन नहीं कर सकता था: मैंने सुना, और पूरी तरह से नापसंदगी से नहीं, कि उसने उसकी धूर्तता पर शारीरिक प्रहार किया। उस छोटी दुष्ट ने अपनी चचेरी बहन की संवेदनशील, यद्यपि असभ्य, भावनाओं को ठेस पहुँचाने की पूरी कोशिश की थी, और शारीरिक बल प्रयोग ही एकमात्र तरीका था जिससे वह हिसाब बराबर कर सके और चोट पहुँचाने वाले को उसका परिणाम भुगतने दे सके। बाद में उसने किताबें उठाईं और उन्हें आग में फेंक दिया। मैंने उसके चेहरे पर वह पीड़ा पढ़ी जो उसे क्रोध को यह बलिदान अर्पित करने में हुई थी। मुझे लगा कि जैसे-जैसे वे जलती गईं, उसे उनसे प्राप्त आनंद और उनसे मिलने वाली विजय और निरंतर बढ़ते आनंद की याद आती रही; और मुझे लगा कि मैंने उसके गुप्त अध्ययन के पीछे की प्रेरणा का भी अनुमान लगा लिया। वह दैनिक परिश्रम और कठोर पशुवत सुखों से संतुष्ट था, जब तक कि कैथरीन उसके जीवन में नहीं आई। उसके तिरस्कार पर शर्म और उसकी स्वीकृति की आशा ही उसके उच्च लक्ष्यों की ओर पहला प्रेरक थी; और उसे एक से बचाने और दूसरे की ओर आकर्षित करने के बजाय, खुद को ऊपर उठाने के उसके प्रयासों का ठीक विपरीत परिणाम निकला।

‘हाँ, तुम जैसे जाहिल को उनसे बस इतना ही मिल सकता है!’ कैथरीन ने अपने क्षतिग्रस्त होंठ को चूसते हुए और आक्रोशित आँखों से आग को देखते हुए कहा।

‘अब तो बेहतर होगा कि तुम चुप रहो,’ उसने गुस्से से जवाब दिया।

उनकी घबराहट के कारण वे आगे कुछ बोल नहीं पाए; वे जल्दी से प्रवेश द्वार की ओर बढ़े, जहाँ मैंने उनके लिए रास्ता बनाया। लेकिन इससे पहले कि वे प्रवेश द्वार पार कर पाते, श्री हीथक्लिफ पुल से आते हुए उनसे मिले और उनका कंधा पकड़कर पूछा, “अब क्या करें, मेरे बच्चे?”

'कुछ नहीं, कुछ नहीं,' उसने कहा और अपने दुख और क्रोध का अकेले आनंद लेने के लिए वहां से चला गया।

हीथक्लिफ ने उसे जाते हुए देखा और आह भरी।

“अगर मैं खुद को नाकाम कर दूं तो यह अजीब होगा,” वह बुदबुदाया, इस बात से बेखबर कि मैं उसके पीछे खड़ा हूँ। “लेकिन जब मैं उसके चेहरे में उसके पिता को ढूंढता हूँ, तो मुझे हर दिन वही दिखती है! आखिर वह शैतान से इतना मिलता-जुलता कैसे है? मैं उसे देखना भी मुश्किल से बर्दाश्त कर पाता हूँ।”

उसने अपनी निगाहें ज़मीन पर टिका दीं और उदास भाव से अंदर चला गया। उसके चेहरे पर बेचैनी और चिंता के भाव थे। मैंने पहले कभी ऐसा नहीं देखा था; और वह पहले से भी दुबला-पतला लग रहा था। उसकी बहू ने खिड़की से उसे देखते ही तुरंत रसोई में भाग गई, जिससे मैं अकेली रह गई।

मेरे अभिवादन के जवाब में उन्होंने कहा, 'आपको फिर से बाहर देखकर मुझे खुशी हुई, श्रीमान लॉकवुड; कुछ हद तक स्वार्थवश भी: मुझे नहीं लगता कि इस वीरान जगह में मैं आपकी कमी को आसानी से पूरा कर सकता हूँ। मैंने कई बार सोचा है कि आप यहाँ क्यों आए हैं।'

‘मुझे डर है कि यह एक व्यर्थ की सनक है, महोदय,’ मैंने जवाब दिया; ‘या फिर यह व्यर्थ की सनक ही मुझे यहाँ से ले जाएगी। मैं अगले सप्ताह लंदन के लिए रवाना हो रहा हूँ; और मैं आपको पहले ही बता देना चाहता हूँ कि थ्रशक्रॉस ग्रेंज को किराए पर लेने के लिए मैंने जो बारह महीने का समझौता किया था, उससे आगे इसे रखने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। मेरा मानना है कि मैं अब वहाँ नहीं रहूँगा।’

‘ओह, सच में; तुम दुनिया से निकाले जाने से थक गए हो, है ना?’ उसने कहा। ‘लेकिन अगर तुम उस जगह के लिए भुगतान न करने की गुहार लगाने आए हो जहाँ

तुम रहोगे ही नहीं, तो तुम्हारी यात्रा व्यर्थ है: मैं किसी से भी अपना हक लेने में कभी नरमी नहीं बरतता।’

मैंने काफी चिढ़कर कहा, 'मैं यहाँ किसी बात पर माफी मांगने नहीं आया हूँ।' 'अगर आप चाहें तो मैं अभी आपसे बात कर लूँगा,' और मैंने अपनी नोटबुक जेब से निकाली।

‘नहीं, नहीं,’ उसने शांत भाव से उत्तर दिया; ‘यदि तुम वापस नहीं लौटीं, तो अपने कर्ज़ चुकाने के लिए पर्याप्त धन छोड़ जाओगी; मुझे इतनी जल्दी नहीं है। बैठो और हमारे साथ भोजन करो; जो अतिथि दोबारा नहीं आएगा, उसका आमतौर पर स्वागत किया जाता है। कैथरीन! सामान अंदर लाओ: तुम कहाँ हो?’

कैथरीन चाकू और कांटे की एक ट्रे लेकर दोबारा प्रकट हुई।

हीथक्लिफ ने धीरे से बुदबुदाते हुए कहा, 'तुम जोसेफ के साथ अपना खाना खा सकते हो, और उसके जाने तक रसोई में ही रहना।'

उसने उसके निर्देशों का पूरी निष्ठा से पालन किया: शायद उसे उल्लंघन करने का कोई प्रलोभन ही नहीं था। मसखरों और मानवद्वेषियों के बीच रहते हुए, शायद वह बेहतर किस्म के लोगों से मिलने पर उनकी कद्र नहीं कर पाती।

एक तरफ गंभीर और उदास श्री हीथक्लिफ और दूसरी तरफ बिल्कुल चुप रहने वाले हैरेटन के बीच, मैंने कुछ नीरस भोजन किया और जल्दी विदा ले ली। मैं कैथरीन की आखिरी झलक पाने और बूढ़े जोसेफ को परेशान करने के लिए पीछे के रास्ते से जाना चाहता था; लेकिन हैरेटन को मेरे घोड़े को लाने का आदेश मिला और मेरे मेज़बान ने मुझे दरवाजे तक पहुँचाया, इसलिए मैं अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सका।

सड़क पर चलते हुए मैंने सोचा, ‘उस घर में जीवन कितना नीरस हो जाता है!’ ‘अगर श्रीमती लिंटन हीथक्लिफ और मैं, उनकी नर्स की इच्छा के अनुसार, एक दूसरे से जुड़ जाते और हम साथ मिलकर शहर के जीवंत वातावरण में बस जाते, तो यह किसी परी कथा से भी कहीं अधिक रोमांटिक वास्तविकता होती!’

अध्याय XXXII

1802. — इस सितंबर में मुझे उत्तर में एक मित्र के दलदली इलाकों को तबाह करने का निमंत्रण मिला, और उसके निवास स्थान की यात्रा के दौरान, मैं अप्रत्याशित रूप से गिम्मर्टन से पंद्रह मील की दूरी पर पहुँच गया। सड़क किनारे एक शराबखाने का अस्तबल का कर्मचारी मेरे घोड़ों को तरोताज़ा करने के लिए पानी की बाल्टी लिए खड़ा था, तभी ताज़ी कटी हुई हरी जई से भरी एक गाड़ी गुज़री, और उसने टिप्पणी की, — 'यह गिम्मर्टन का रास्ता है, है ना! ये सब लोग अपनी फसल काटने के लिए दूसरों की तरह तीन बत्ती जला रहे हैं।'

'गिमर्टन?' मैंने दोहराया— उस इलाके में मेरा निवास अब धुंधला और स्वप्निल सा लगने लगा था। 'आह! मुझे याद है। यह यहाँ से कितनी दूर है?'

'पहाड़ियों के ऊपर चौदह मील का रास्ता है; और सड़क ऊबड़-खाबड़ है,' उसने उत्तर दिया।

अचानक मुझे थ्रशक्रॉस ग्रेंज जाने की तीव्र इच्छा हुई। दोपहर के मुश्किल से ही दिन हुए थे, और मैंने सोचा कि किसी सराय में रात बिताने की बजाय अपने घर में ही रात गुजारना बेहतर होगा। इसके अलावा, मैं अपने मकान मालिक से बात करने के लिए आसानी से एक दिन निकाल सकता था, और इस तरह दोबारा उस इलाके में जाने की परेशानी से बच सकता था। कुछ देर आराम करने के बाद, मैंने अपने नौकर को गाँव का रास्ता पता करने को कहा; और, हमारे जानवरों को बहुत थकाने के बावजूद, हमने लगभग तीन घंटे में वह दूरी तय कर ली।

मैंने उसे वहीं छोड़ दिया और अकेले ही घाटी में आगे बढ़ गया। धूसर रंग का गिरजाघर और भी धूसर लग रहा था, और सुनसान कब्रिस्तान और भी अकेला। मैंने कब्रों पर उगी छोटी घास चरती हुई एक भेड़ को देखा। मौसम सुहावना और गर्म था— यात्रा के लिए बहुत गर्म; लेकिन गर्मी ने मुझे ऊपर और नीचे के मनमोहक दृश्यों का आनंद लेने से नहीं रोका: अगर मैंने इसे अगस्त के आसपास देखा होता, तो मुझे यकीन है कि यह मुझे इसके एकांत में एक महीना बिताने के लिए ललचाता। सर्दियों में इससे ज्यादा नीरस कुछ नहीं, गर्मियों में इससे ज्यादा दिव्य कुछ नहीं, पहाड़ियों से घिरी वे घाटियाँ, और वे ऊँची, विशाल बंजर भूमि।

मैं सूर्यास्त से पहले ग्रेंज पहुँच गया और अंदर जाने के लिए दरवाजा खटखटाया;

लेकिन रसोई की चिमनी से लटकती एक पतली, नीली माला देखकर मुझे लगा कि परिवार पीछे के कमरे में चला गया है और उन्होंने मेरी आवाज़ नहीं सुनी। मैं आँगन में घुस गया। बरामदे के नीचे नौ-दस साल की एक लड़की बुनाई कर रही थी और एक बूढ़ी औरत घर की सीढ़ियों पर लेटी हुई ध्यानमग्न होकर पाइप पी रही थी।

मैंने उस महिला से पूछा, 'क्या श्रीमती डीन अंदर हैं?'

'मिस्ट्रेस डीन? नहीं!' उसने उत्तर दिया, 'वह यहाँ नहीं रहतीं: वह हाइट्स पर चली गई हैं।'

'तो क्या आप नौकरानी हैं?' मैंने आगे पूछा।

'ईएए, मैं घर संभाल कर रखूंगी,' उसने जवाब दिया।

'अच्छा, मैं श्रीमान लॉकवुड हूँ, मालिक। क्या मेरे ठहरने के लिए कोई कमरे हैं? मैं पूरी रात यहीं रुकना चाहता हूँ।'

'महाराज!' वह आश्चर्य से चिल्लाई। 'अरे, किसे पता था कि आप आ रहे हैं? आपको सूचना भेजनी चाहिए थी। उस जगह पर कुछ भी सूखा या उपजाऊ नहीं है: कुछ भी नहीं!'

उसने अपना पाइप नीचे फेंक दिया और जल्दी से अंदर चली गई, लड़की भी उसके पीछे-पीछे आई और मैं भी अंदर चला गया; जल्द ही यह समझकर कि उसकी बात सच थी, और उससे भी बढ़कर, मेरे अचानक आने से वह लगभग घबरा गई थी, मैंने उसे शांत रहने को कहा। मैं टहलने के लिए बाहर जा रहा था; और इस बीच उसे मेरे लिए बैठक में खाने के लिए एक कोना और सोने के लिए एक कमरा तैयार करना था। झाड़ू-पोछा करने की ज़रूरत नहीं थी, बस अच्छी आग और सूखी चादरें चाहिए थीं। वह अपनी पूरी कोशिश करने को तैयार लग रही थी; हालाँकि उसने गलती से चूल्हे की सफाई करने वाली छड़ी को अंगीठी में डाल दिया और अपने काम की कई दूसरी चीज़ें भी इधर-उधर रख दीं: लेकिन मैं वापस चला गया, यह सोचकर कि वह मेरे लौटने तक आराम करने की जगह का इंतजाम कर देगी। मेरी प्रस्तावित यात्रा का लक्ष्य वुदरिंग हाइट्स था। दरबार से निकलते समय मुझे एक विचार आया और मैं वापस लौट आया।

मैंने उस महिला से पूछा, 'हाइट्स पर सब ठीक है?'

'ईएए, मुझे क्या पता!' उसने गर्म अंगारों से भरा एक बर्तन लेकर भागते हुए जवाब दिया।

मैं श्रीमती डीन से पूछना चाहता था कि उन्होंने ग्रेंज क्यों छोड़ दिया, लेकिन ऐसे संकट के समय उन्हें रोकना असंभव था, इसलिए मैं मुड़कर निकल गया और इत्मीनान से टहलते हुए आगे बढ़ गया। डूबते सूरज की हल्की रोशनी पीछे थी और उगते चाँद की हल्की चमक आगे थी—एक फीकी पड़ रही थी और दूसरी चमक रही थी—जैसे ही मैं पार्क से निकला और श्री हीथक्लिफ के घर की ओर जाने वाली पथरीली सड़क पर चढ़ गया। घर के पास पहुँचने से पहले ही, पश्चिम दिशा में दिन की हल्की सुनहरी रोशनी ही बची थी: लेकिन उस शानदार चाँदनी में मुझे रास्ते का हर कंकड़ और घास का हर तिनका दिखाई दे रहा था। मुझे न तो फाटक पर चढ़ना पड़ा और न ही खटखटाना पड़ा—वह मेरे हाथ से खुल गया। यह तो अच्छी बात है, मैंने सोचा। और मैंने अपनी नाक से एक और बात महसूस की; साधारण से फलों के पेड़ों के बीच से स्टॉक और वॉलफ्लावर की खुशबू हवा में तैर रही थी।

दरवाजे और खिड़कियाँ दोनों खुली थीं; फिर भी, जैसा कि कोयला खदानों वाले इलाकों में अक्सर होता है, चिमनी में एक लाल रंग की सुंदर आग जल रही थी: आँखों को मिलने वाला सुकून अतिरिक्त गर्मी को सहने योग्य बना देता था। लेकिन वुदरिंग हाइट्स का घर इतना बड़ा है कि उसमें रहने वालों के पास घर की गर्मी से बचने के लिए पर्याप्त जगह है; और इसलिए जो भी लोग वहाँ थे, वे खिड़कियों में से एक के पास ही बैठे थे। अंदर जाने से पहले ही मैं उन्हें देख और उनकी बातें सुन सकता था, और इसलिए मैंने भी देखा और सुना; जिज्ञासा और ईर्ष्या की मिली-जुली भावना से प्रेरित होकर, जो वहाँ रुकने पर बढ़ती गई।

'बिल्कुल!' एक मधुर आवाज ने कहा, मानो कोई चांदी की घंटी हो। 'यह तीसरी बार कह रही हो, मूर्ख! मैं तुम्हें दोबारा नहीं बताऊंगी। याद करो, वरना मैं तुम्हारे बाल खींच लूंगी!'

'इसके विपरीत,' दूसरे ने गहरी लेकिन कोमल आवाज़ में उत्तर दिया। 'और अब, इतनी अच्छी तरह से बात मानने के लिए मुझे चूम लो।'

नहीं, पहले इसे बिना किसी गलती के सही ढंग से पढ़ लें।

वक्ता ने पढ़ना शुरू किया: वह एक युवक था, सलीके से कपड़े पहने हुए, मेज पर बैठा था और उसके सामने एक किताब थी। उसके सुंदर चेहरे पर खुशी झलक रही थी, और उसकी नज़रें बार-बार पन्ने से हटकर उसके कंधे पर रखे एक छोटे से सफेद हाथ पर जा रही थीं, जो लापरवाही के संकेत मिलते ही उसके गाल पर एक ज़ोरदार

थप्पड़ मारकर उसे याद दिलाता था। उसकी मालकिन पीछे खड़ी थी; उसके हल्के, चमकदार घुंघराले बाल बीच-बीच में उसके सांवले रंग में घुलमिल जाते थे, जब वह झुककर उसकी पढ़ाई पर नज़र रखती थी; और उसका चेहरा—यह सौभाग्य की बात थी कि वह उसका चेहरा नहीं देख पा रहा था, वरना वह इतना स्थिर नहीं रह पाता। मैं देख सकती थी; और मुझे इस बात का बहुत दुख हुआ कि मैंने उस मौके को गँवा दिया जो मुझे उसकी मोहक सुंदरता को निहारने के अलावा कुछ और करने का मिल सकता था।

कार्य पूरा हो गया, हालांकि कुछ और गलतियाँ भी हुईं; लेकिन छात्र ने इनाम की मांग की और उसे कम से कम पाँच चुंबन मिले; जिन्हें उसने उदारतापूर्वक लौटा दिया। फिर वे दरवाजे पर आए, और उनकी बातचीत से मुझे लगा कि वे बाहर निकलकर मैदानों में टहलने जा रहे हैं। मुझे लगा कि अगर मैं उस समय हरेटन अर्नशॉ के आसपास दिखाई देता, तो शायद मैं उनके दिल में, उनके मुँह से नहीं, नरक के सबसे निचले गड्ढे में पहुँच जाता; और बहुत ही नीच और द्वेषपूर्ण महसूस करते हुए, मैं रसोई में शरण लेने के लिए चुपके से चला गया। उस तरफ भी कोई रुकावट नहीं थी; और दरवाजे पर मेरी पुरानी दोस्त नेली डीन सिलाई करते हुए एक गाना गा रही थी; जिसे अंदर से कठोर, अपमानजनक और असहिष्णुता भरे शब्दों से बार-बार बाधित किया जा रहा था, जो बिल्कुल भी मधुर नहीं थे।

रसोई के किरायेदार ने नेली के अनसुने भाषण के जवाब में कहा, “मैं कसम खाता हूँ, मैं तो ये चाहता हूँ कि ये सुबह से रात तक मेरे कानों में कसम खाएँ, और तुम्हारी बात न सुनें! ये बहुत शर्म की बात है कि मैं पवित्र पुस्तक नहीं खोल सकता, लेकिन तुम लोग शैतान और दुनिया में पैदा हुई सारी घिनौनी बुराइयों की महिमा करते हो! ओह! तुम बिल्कुल बेकार हो; और एक और भी बेकार है; और वह बेचारा लड़का तुम दोनों के बीच खो जाएगा। बेचारा लड़का!” उसने कराहते हुए कहा; “उस पर जादू किया गया है: मुझे यकीन है। हे भगवान, उनका न्याय करो, क्योंकि हमारे शासकों के बीच न तो कोई कानून है और न ही कोई न्याय!”

‘नहीं! वरना हम जलती हुई लकड़ियों के ढेर में बैठे होते, मुझे लगता है,’ गायक ने जवाब दिया। ‘लेकिन रहने दो, बूढ़े आदमी, और एक ईसाई की तरह अपनी बाइबिल पढ़ो, और मेरी परवाह मत करो। यह “फेयरी एनी की शादी” है – एक प्यारी धुन – यह नृत्य के लिए उपयुक्त है।’

श्रीमती डीन अपनी बात फिर से शुरू करने ही वाली थीं कि मैं उनके पास पहुंचा; और मुझे पहचानते ही वह उछल पड़ीं और चिल्लाईं - 'अरे, श्रीमान लॉकवुड! आप इस तरह वापस आने के बारे में सोच भी कैसे सकते हैं? थ्रशक्रॉस ग्रेंज में सब कुछ बंद है। आपको हमें पहले सूचना देनी चाहिए थी!'

मैंने जवाब दिया, 'मैंने वहाँ ठहरने की व्यवस्था कर ली है, जब तक मैं यहाँ रहूँगी। मैं कल वापस जा रही हूँ। और आप यहाँ कैसे आई हैं, श्रीमती डीन? मुझे बताइए।'

ज़िला चली गई, और श्री हीथक्लिफ चाहते थे कि मैं आपके लंदन जाने के तुरंत बाद आऊं और आपके लौटने तक यहीं रहूं। लेकिन, ज़रा अंदर आइए! क्या आप आज शाम गिम्मर्टन से पैदल चलकर आए हैं?

मैंने जवाब दिया, 'मैं ग्रेंज से हूँ; और जब तक वे मेरे लिए वहाँ रहने का कमरा तैयार करते हैं, मैं आपके मालिक के साथ अपना काम खत्म करना चाहता हूँ; क्योंकि मुझे नहीं लगता कि मुझे जल्दी में दूसरा मौका मिलेगा।'

'क्या काम है, महोदय?' नेली ने मुझे घर के अंदर ले जाते हुए कहा। 'वह अभी बाहर गए हैं और जल्दी नहीं लौटेंगे।'

मैंने जवाब दिया, 'किराए के बारे में।'

'ओह! तो फिर आपको श्रीमती हीथक्लिफ से ही बात करनी होगी,' उसने कहा; 'या यूं कहें कि मुझसे। उन्हें अभी तक अपने मामलों को संभालना नहीं आया है, और मैं ही उनकी तरफ से काम करती हूं: उनके अलावा कोई और विकल्प नहीं है।'

मैंने हैरानी भरी नजरों से देखा।

'अरे! मुझे लगता है कि आपने हीथक्लिफ की मौत के बारे में नहीं सुना है,' उसने आगे कहा।

'हीथक्लिफ मर गया!' मैंने आश्चर्यचकित होकर कहा। 'कितने समय पहले?'

तीन महीने बीत चुके हैं: लेकिन बैठ जाओ, मुझे अपनी टोपी लेने दो, मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगा। रुको, तुमने कुछ खाया तो नहीं है, है ना?

मुझे कुछ नहीं चाहिए: मैंने घर पर रात का खाना मंगवाया है। आप भी बैठ जाइए। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उनकी मृत्यु हो जाएगी! मुझे बताइए कि यह सब कैसे हुआ। आप कहते हैं कि आपको कुछ समय तक उनके लौटने की उम्मीद नहीं है - उन युवाओं के?

नहीं—मुझे हर शाम उन्हें देर रात तक घूमने के लिए डांटना पड़ता है, लेकिन उन्हें

मेरी कोई परवाह नहीं है। कम से कम, हमारी पुरानी बीयर का एक घूंट पी लो; इससे तुम्हें अच्छा लगेगा: तुम थके हुए लग रहे हो।

मेरे मना करने से पहले ही वह उसे लाने के लिए दौड़ पड़ी, और मैंने जोसेफ को यह पूछते हुए सुना कि क्या यह शर्मनाक बात नहीं है कि इस उम्र में भी उसके अनुयायी हों? और फिर, उन लोगों को मालिक के तहखाने से बाहर निकालना! वह चुपचाप खड़े होकर यह सब देखने में शर्म महसूस कर रहा था।

वह जवाबी कार्रवाई करने के लिए नहीं रुकी, बल्कि एक मिनट में ही चांदी का एक भरा हुआ गिलास लेकर वापस आ गई, जिसकी मैंने पूरी गंभीरता से प्रशंसा की। और बाद में उसने मुझे हीथक्लिफ के इतिहास का अगला भाग सुनाया। जैसा कि उसने कहा, उसका अंत 'अजीब' था।

उसने कहा, "तुम्हारे हमें छोड़कर जाने के दो सप्ताह के भीतर ही मुझे वुदरिंग हाइट्स बुलाया गया था; और मैंने कैथरीन की खातिर खुशी-खुशी आज्ञा का पालन किया। उससे मेरी पहली मुलाकात ने मुझे दुखी और स्तब्ध कर दिया: हमारे अलग होने के बाद से वह बहुत बदल गई थी। मिस्टर हीथक्लिफ ने मेरे यहाँ आने के बारे में अपना विचार बदलने का कोई कारण नहीं बताया; उन्होंने बस इतना कहा कि उन्हें मेरी ज़रूरत है और वह कैथरीन को देखकर थक गए हैं: मुझे छोटे से बैठक कक्ष को अपना बैठक कक्ष बनाना होगा और उसे अपने साथ रखना होगा। अगर उन्हें दिन में एक या दो बार ही उससे मिलना पड़े तो भी काफी होगा।" वह इस व्यवस्था से खुश लग रही थी; और धीरे-धीरे मैंने बड़ी संख्या में किताबें और अन्य वस्तुएँ चुपके से वहाँ पहुँचा दीं, जो ग्रेंज में उसके मनोरंजन का साधन थीं; और मैंने खुद को यह तसल्ली दी कि हम ठीक-ठाक आराम से रह लेंगे। यह भ्रम ज्यादा देर तक नहीं चला। कैथरीन, जो पहले तो संतुष्ट थी, थोड़े ही समय में चिड़चिड़ी और बेचैन हो गई। एक तो उसे बगीचे से बाहर निकलने की मनाही थी, और वसंत ऋतु के आगमन के साथ ही उसकी तंग सीमाओं में कैद रहना उसे बहुत परेशान करता था; दूसरा, घर के पीछे-पीछे चलने के कारण मुझे अक्सर उसे अकेला छोड़ना पड़ता था, और वह अकेलेपन की शिकायत करती थी: वह रसोई में जोसेफ से झगड़ा करना अपनी एकांत में शांति से बैठने से ज़्यादा पसंद करती थी। मुझे उनके झगड़ों से कोई आपत्ति नहीं थी: लेकिन जब मालिक घर में अकेले रहना चाहता था, तो हरेटन को भी अक्सर रसोई में जाना पड़ता था! और यद्यपि शुरुआत में वह या तो उसके आने पर रसोई छोड़ देती थी, या चुपचाप

मेरे कामों में लग जाती थी, और उससे कोई टिप्पणी या बात करने से बचती थी — और यद्यपि वह हमेशा जितना संभव हो उतना उदास और चुप रहता था — कुछ समय बाद, उसका व्यवहार बदल गया, और वह उसे अकेला नहीं छोड़ सकती थी: उससे बातें करती; उसकी मूर्खता और आलस्य पर टिप्पणी करती; आश्चर्य व्यक्त करती कि वह इस तरह का जीवन कैसे सहन कर सकता है — वह पूरी शाम आग को घूरते हुए और ऊंघते हुए कैसे बैठ सकता है।

'वह बिल्कुल कुत्ते जैसा है, है ना, एलेन?' उसने एक बार कहा था, 'या फिर गाड़ी खींचने वाले घोड़े जैसा? वह अपना काम करता है, खाना खाता है और हमेशा सोता रहता है! उसका दिमाग कितना खाली और नीरस होगा! क्या तुम कभी सपने देखते हो, हैरेटोन? और अगर देखते हो, तो किस बारे में? लेकिन तुम मुझसे बात नहीं कर सकते!'

फिर उसने उसकी ओर देखा; लेकिन उसने न तो अपना मुंह खोला और न ही दोबारा देखा।

'शायद वह अभी सपना देख रहा है,' उसने आगे कहा। 'उसने भी अपना कंधा वैसे ही हिलाया जैसे जूनो हिलाती है। उससे पूछ लो, एलेन।'

मैंने कहा, 'अगर तुम ठीक से बर्ताव नहीं करोगे, तो मिस्टर हैरेटोन मास्टर से तुम्हें ऊपर भेजने के लिए कहेंगे!' उसने न केवल अपना कंधा झटका, बल्कि मुट्ठी भींच ली, मानो उसे मारने का मन कर रहा हो।

एक और मौके पर उसने कहा, 'मुझे पता है कि जब मैं रसोई में होती हूँ तो हरेटन क्यों नहीं बोलता। उसे डर है कि मैं उस पर हँस दूँगी। एलेन, तुम क्या सोचती हो? उसने एक बार खुद से पढ़ना सीखना शुरू किया था; और क्योंकि मैं हँसी, उसने अपनी किताबें जला दीं और उन्हें फेंक दिया: क्या वह मूर्ख नहीं था?'

मैंने कहा, 'क्या तुम शरारती नहीं थे?' 'मुझे इसका जवाब दो।'

'शायद मैं थी,' उसने आगे कहा; 'लेकिन मुझे उससे इतनी मूर्खता की उम्मीद नहीं थी। हैरेटन, अगर मैं तुम्हें एक किताब दूं, तो क्या तुम उसे अभी ले लोगे? मैं कोशिश करूंगी!'

उसने अपनी एक किताब उसके हाथ पर रख दी; उसने उसे झटक कर फेंक दिया और बुदबुदाया कि अगर वह नहीं मानी तो वह उसकी गर्दन तोड़ देगा।

'ठीक है, मैं इसे यहाँ रख देती हूँ,' उसने कहा, 'टेबल की दराज में; और मैं सोने

जा रही हूँ।'

फिर उसने मेरे कान में फुसफुसाकर कहा कि मैं देखूँ कि वह उसे छूता है या नहीं, और चली गई। लेकिन वह उसके पास नहीं आया; इसलिए मैंने सुबह उसे बताया, जिससे उसे बहुत निराशा हुई। मैंने देखा कि वह उसकी लगातार रूठने और आलस्य से दुखी थी: उसका अंतरात्मा उसे धिक्कार रहा था कि उसने उसे सुधार करने से डरा दिया था: उसने यह काम प्रभावी ढंग से कर दिया था। लेकिन उसकी सूझबूझ इस नुकसान की भरपाई करने में लगी थी: जब मैं इस्त्री कर रही होती, या ऐसे ही दूसरे स्थिर काम कर रही होती जो मैं बैठक में ठीक से नहीं कर सकती थी, तो वह कोई अच्छी किताब लाती और मुझे जोर से पढ़कर सुनाती। जब हैरेटन वहाँ होता, तो वह आम तौर पर किसी दिलचस्प हिस्से पर रुक जाती और किताब वहीं पड़ी रहने देती: वह ऐसा बार-बार करती थी; लेकिन वह खच्चर की तरह जिद्दी था, और बारिश के मौसम में उसकी बातों में आने के बजाय, वह जोसेफ के साथ सिगरेट पीने लगता; और वे दोनों मशीनों की तरह आग के दोनों ओर बैठे रहते, बड़ा भाई इतना बहरा था कि उसकी बेतुकी बातों को समझ ही नहीं पाता था, जैसा कि वह उसे कहता था, छोटा भाई उसे अनसुना करने की पूरी कोशिश करता। सुहावनी शामों में वह अपने शिकार अभियानों के पीछे-पीछे जाता था, और कैथरीन जम्हाई लेती और आहें भरती, और मुझे उससे बात करने के लिए चिढ़ाती, और जैसे ही मैं बात शुरू करता, वह आंगन या बगीचे में भाग जाती; और, अंतिम उपाय के रूप में, रोती और कहती कि वह जीने से थक गई है: उसका जीवन व्यर्थ है।

मिस्टर हीथक्लिफ, जिनका समाज से मोह भंग होता जा रहा था, ने अर्नशॉ को लगभग अपने कमरे से निकाल ही दिया था। मार्च की शुरुआत में एक दुर्घटना के कारण, वह कुछ दिनों तक रसोई में ही रहने लगे। पहाड़ियों पर अकेले शिकार करते समय उनकी बंदूक फट गई; एक छर्रा उनके हाथ में लग गया और घर पहुँचने से पहले ही उनका काफी खून बह गया। नतीजा यह हुआ कि जब तक वह ठीक नहीं हो गए, तब तक उन्हें मजबूरी में चूल्हे के पास बैठकर शांति से रहना पड़ा। कैथरीन को उनका वहाँ रहना ठीक लग रहा था: कम से कम, इससे उन्हें ऊपर वाले कमरे से पहले से भी ज़्यादा नफ़रत होने लगी थी और वह मुझे नीचे काम ढूंढने के लिए मजबूर करती थीं ताकि वह मेरे साथ आ सकें।

ईस्टर सोमवार को, जोसेफ कुछ मवेशियों के साथ गिम्मर्टन मेले में गया; और

दोपहर में, मैं रसोई में चादरें समेटने में व्यस्त थी। अर्नशॉ हमेशा की तरह उदास होकर चिमनी के कोने पर बैठा था, और मेरी छोटी मालकिन खिड़की के शीशों पर चित्र बनाकर अपना समय बिता रही थी, बीच-बीच में दबे हुए गीत गाकर, फुसफुसाकर बातें करके और अपने चचेरे भाई की ओर झुंझलाहट और अधीरता भरी निगाहें डालकर अपना मनोरंजन कर रही थी, जो लगातार सिगरेट पी रहा था और अंगीठी में देख रहा था। जब मुझे एहसास हुआ कि अब वह मेरी रोशनी में बाधा नहीं डाल रही है, तो वह चूल्हे के पास चली गई। मैंने उसकी हरकतों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, लेकिन थोड़ी देर बाद मैंने उसे कहते सुना - 'मुझे पता चल गया है, हैरेटन, कि मैं चाहती हूँ - कि मुझे खुशी है - कि मैं चाहती हूँ कि तुम अब मेरे चचेरे भाई बन जाओ, अगर तुम मेरे प्रति इतने चिड़चिड़े और इतने कठोर न हुए होते।'

हैरेटन ने कोई जवाब नहीं दिया।

'हरेटन, हरेटन, हरेटन! क्या तुम सुन रहे हो?' उसने आगे कहा।

'यहाँ से चले जाओ!' उसने कठोर स्वर में गुर्राते हुए कहा।

'मुझे वो पाइप लेने दो,' उसने सावधानी से अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा और उसे उसके मुंह से निकाल लिया।

इससे पहले कि वह उसे उठाने की कोशिश करता, वह टूट गया और आग के पीछे जा गिरा। उसने उसे कोसते हुए दूसरा उठा लिया।

'रुको,' वह चिल्लाई, 'पहले मेरी बात सुनो; और जब तक ये बादल मेरे चेहरे पर मंडरा रहे हैं, मैं बोल नहीं सकती।'

'क्या तुम नरक में जाओगे!' उसने उग्र स्वर में कहा, 'और मुझे अकेला छोड़ दोगे!'

'नहीं,' उसने ज़िद करते हुए कहा, 'मैं ऐसा नहीं करूँगी: मुझे नहीं पता कि तुम्हें मुझसे बात करवाने के लिए क्या करूँ; और तुम समझने को बिल्कुल तैयार नहीं हो। जब मैं तुम्हें मूर्ख कहती हूँ, तो मेरा कोई गलत इरादा नहीं होता: मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं तुमसे नफ़रत करती हूँ। आओ, तुम मेरी बात मानो, हैरेटोन: तुम मेरे चचेरे भाई हो, और तुम्हें मुझे अपना मानना होगा।'

'मैं तुमसे और तुम्हारे गंदे घमंड से, और तुम्हारी उन घिनौनी हरकतों से कोई वास्ता नहीं रखूंगा!' उसने जवाब दिया। 'मैं तन-मन से नरक में चला जाऊंगा, लेकिन दोबारा तुम्हारी तरफ देखूंगा नहीं। अभी इसी वक्त यहाँ से निकल जाओ!'

कैथरीन ने भौंहें चढ़ाईं और होंठ चबाते हुए खिड़की के पास वाली सीट पर पीछे

हट गई, और एक विचित्र धुन गुनगुनाते हुए, रोने की बढ़ती प्रवृत्ति को छिपाने की कोशिश की।

मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'आपको अपनी चचेरी बहन से दोस्ती कर लेनी चाहिए, श्रीमान हरेटन, क्योंकि वह अपने दुस्साहस पर पछता रही है। इससे आपको बहुत लाभ होगा: उसे साथी के रूप में पाकर आप एक अलग ही इंसान बन जाएंगे।'

'एक साथी!' वह चिल्लाया; 'जब वह मुझसे नफरत करती है, और मुझे अपने जूते पोंछने के भी लायक नहीं समझती! बल्कि, अगर इससे मैं राजा बन भी जाऊं, तो भी मैं उसकी सद्भावना पाने की कोशिश करने पर तिरस्कार नहीं सहूंगा।'

'मैं तुमसे नफरत नहीं करती, तुम मुझसे नफरत करते हो!' कैथी रोते हुए बोली, अब वह अपनी परेशानी छुपा नहीं पा रही थी। 'तुम मुझसे उतनी ही नफरत करते हो जितनी मिस्टर हीथक्लिफ करते हैं, बल्कि उससे भी ज्यादा।'

'तुम सरासर झूठे हो,' अर्नशॉ ने कहना शुरू किया: 'मैंने तुम्हारा पक्ष लेकर उसे सौ बार क्यों नाराज किया? और वह भी तब जब तुमने मेरा उपहास किया और मुझे नीचा दिखाया, और — मुझे परेशान करते रहो, वरना मैं वहाँ आकर कह दूँगा कि तुमने मुझे रसोई से बाहर निकाल दिया!'

'मुझे नहीं पता था कि आपने मेरा साथ दिया,' उसने अपनी आँखें पोंछते हुए उत्तर दिया; 'मैं बहुत दुखी और सबसे नाराज़ थी; लेकिन अब मैं आपका धन्यवाद करती हूँ और आपसे क्षमा माँगती हूँ: मैं और क्या कर सकती हूँ?'

वह चूल्हे के पास लौटी और बेझिझक अपना हाथ बढ़ाया। वह गुस्से से लाल हो गया और उसकी मुट्ठियाँ मजबूती से भींची हुई थीं, और उसकी निगाहें ज़मीन पर टिकी हुई थीं। कैथरीन ने सहज ही समझ लिया होगा कि यह हठधर्मी ज़िद थी, न कि नापसंदगी; क्योंकि एक पल असमंजस में रहने के बाद, वह झुकी और उसके गाल पर धीरे से चुंबन किया। उस छोटी बदमाश लड़की को लगा कि मैंने उसे नहीं देखा है, और पीछे हटकर, वह खिड़की के पास अपनी पुरानी जगह पर बड़ी शालीनता से खड़ी हो गई। मैंने तिरस्कार से सिर हिलाया, और फिर वह शरमा गई और फुसफुसाते हुए बोली - 'अच्छा! मैं क्या करती, एलेन? उसने हाथ नहीं मिलाया, और देखा भी नहीं: मुझे उसे किसी तरह दिखाना होगा कि मैं उसे पसंद करती हूँ - कि मैं उससे दोस्ती करना चाहती हूँ।'

क्या उस चुंबन ने हैरेटोन को राजी कर लिया, यह मैं नहीं कह सकता: वह कुछ

मिनटों तक बहुत सावधान रहा कि उसका चेहरा किसी को दिखाई न दे, और जब उसने अपना चेहरा ऊपर उठाया, तो वह बुरी तरह असमंजस में था कि अपनी निगाहें कहाँ घुमाए।

कैथरीन ने एक खूबसूरत किताब को सफेद कागज में बड़े करीने से लपेटने और उसे एक रिबन से बांधने में खुद को व्यस्त कर लिया, और उस पर 'श्री हरेटन अर्नशॉ' का पता लिखा। उसने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उसकी दूत बनकर उपहार को उसके नियत प्राप्तकर्ता तक पहुंचा दूं।

और उससे कह देना कि अगर वह मान जाए तो मैं आकर उसे सही तरीके से पढ़ना सिखा दूंगी,' उसने कहा; 'और अगर वह मना कर दे तो मैं ऊपर चली जाऊंगी और फिर कभी उसे परेशान नहीं करूंगी।'

मैंने उसे उठाया और संदेश दोहराया; मेरे मालिक मुझे बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। हैरेटोन ने अपनी उंगलियां नहीं खोलीं, इसलिए मैंने उसे उनके घुटने पर रख दिया। उन्होंने भी उसे मिटाया नहीं। मैं अपने काम पर लौट गया। कैथरीन ने अपना सिर और बाहें मेज पर टिका दीं, जब तक कि उसे कवर हटने की हल्की सी सरसराहट सुनाई नहीं दी; फिर वह चुपके से चली गई और चुपचाप अपने चचेरे भाई के बगल में बैठ गई। वह कांप रहा था और उसका चेहरा लाल हो गया था: उसकी सारी अशिष्टता और उसकी सारी रूखी कठोरता गायब हो गई थी: वह पहले तो उसकी प्रश्नवाचक दृष्टि और बुदबुदाती विनती का जवाब देने के लिए एक शब्द भी नहीं बोल पाया।

'मुझे माफ कर दो, हैरेटन। बस एक छोटा सा शब्द बोलकर तुम मुझे बहुत खुश कर सकते हो।'

उसने कुछ अस्पष्ट सा बुदबुदाया।

'और तुम मेरी दोस्त बनोगी?' कैथरीन ने सवालिया लहजे में पूछा।

'नहीं, तुम जीवन भर मुझसे शर्मिंदा रहोगे,' उसने उत्तर दिया; 'और जितना अधिक तुम मुझे जानोगे, उतना ही अधिक शर्मिंदा होगे; और मैं इसे सहन नहीं कर सकता।'

'तो तुम मेरे दोस्त नहीं बनोगे?' उसने शहद जैसी मीठी मुस्कान के साथ कहा और धीरे-धीरे मेरे करीब आ गई।

मुझे आगे कोई स्पष्ट बातचीत सुनाई नहीं दी, लेकिन जब मैंने दोबारा चारों ओर देखा, तो मुझे स्वीकृत पुस्तक के पृष्ठ पर झुके हुए दो ऐसे तेजस्वी चेहरे दिखाई दिए, जिससे मुझे संधि की पुष्टि दोनों पक्षों द्वारा हो जाने में कोई संदेह नहीं रहा; और शत्रु,

अब से, शपथित सहयोगी बन गए थे।

जिस काम का वे अध्ययन कर रहे थे, वह कीमती चित्रों से भरा हुआ था; और वे चित्र और उनकी स्थिति इतनी आकर्षक थी कि जोसेफ के घर आने तक वे अविचलित रहे। बेचारा जोसेफ, कैथरीन को हरेटन अर्नशॉ के साथ एक ही बेंच पर बैठे और उसके कंधे पर हाथ रखे देखकर पूरी तरह से स्तब्ध रह गया; और अपनी प्रियतमा की इतनी निकटता सहन करने की क्षमता देखकर वह हैरान रह गया: इस दृश्य ने उसे इतना गहरा आघात पहुँचाया कि उस रात वह इस विषय पर कुछ कह नहीं सका। उसकी भावनाएँ केवल उसकी गहरी आहों से प्रकट हुईं, जब उसने गंभीरता से अपनी बड़ी बाइबिल मेज पर फैलाई और उस पर अपनी जेब से दिन भर के लेन-देन से प्राप्त गंदे नोटों को रख दिया। अंत में उसने हरेटन को अपनी सीट से उठने के लिए कहा।

‘इन्हें मालिक के पास ले जाओ, बेटा,’ उसने कहा, ‘और वहीं रहो। मैं अपने घर जा रहा हूँ। यह घर हमारे लिए न तो उपयुक्त है और न ही उचित: हमें यहाँ से निकलकर दूसरा घर ढूंढना चाहिए।’

‘चलो, कैथरीन,’ मैंने कहा, ‘हमें भी “बाहर निकलना” चाहिए: मैंने अपने कपड़े इस्त्री कर लिए हैं। क्या तुम जाने के लिए तैयार हो?’

‘अभी आठ बजे नहीं हैं!’ उसने अनिच्छा से उठते हुए उत्तर दिया।

'हैरटन, मैं यह किताब चिमनी के ऊपर छोड़ देता हूँ, और कल कुछ और ले आऊँगा।'

‘जो भी किताबें तुम छोड़ जाओगे, मैं उन्हें अपने साथ ले जाऊंगा,’ यूसुफ ने कहा, ‘और अगर तुम्हें वे दोबारा मिलें तो बहुत मुश्किल होगी; इसलिए, तुम निश्चिंत रहो!’

कैथी ने धमकी दी कि उसकी लाइब्रेरी का खर्च उसकी लाइब्रेरी उठाएगी; और हरेटन से गुजरते हुए मुस्कुराते हुए, गाते हुए ऊपर चली गई: मैं कह सकता हूँ कि उस छत के नीचे वह पहले कभी इतनी हल्की नहीं हुई थी; शायद लिंटन की अपनी शुरुआती यात्राओं को छोड़कर।

इस प्रकार शुरू हुई घनिष्ठता तेजी से बढ़ी; हालांकि इसमें अस्थायी रुकावटें भी आईं। अर्नशॉ को इच्छा से वश में करना आसान नहीं था, और मेरी प्रेमिका न तो दार्शनिक थी और न ही धैर्य की मिसाल; लेकिन दोनों के मन एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर थे - एक प्रेम और सम्मान की चाहत रखता था, और दूसरा प्रेम और सम्मान की चाहत रखता था - और अंततः वे उस लक्ष्य तक पहुँचने में सफल रहे।

देखिए, श्रीमान लॉकवुड, श्रीमती हीथक्लिफ का दिल जीतना तो बहुत आसान था। लेकिन अब, मुझे खुशी है कि आपने कोशिश ही नहीं की। मेरी सबसे बड़ी इच्छा उन दोनों का मिलन है। उनकी शादी के दिन मैं किसी से ईर्ष्या नहीं करूंगी: इंग्लैंड में मुझसे ज्यादा खुश कोई महिला नहीं होगी!

अध्याय XXXIII

उस सोमवार के अगले दिन, अर्नशॉ अभी भी अपने सामान्य कामों में असमर्थ था और घर पर ही रहा, इसलिए मुझे जल्दी ही एहसास हो गया कि उसे पहले की तरह अपने पास रखना अव्यावहारिक होगा। वह मुझसे पहले ही नीचे उतरकर बगीचे में चली गई, जहाँ उसने अपने चचेरे भाई को कुछ आसान काम करते देखा था; और जब मैं उन्हें नाश्ते के लिए बुलाने गई, तो मैंने देखा कि उसने उसे करौंदे और आंवले की झाड़ियों से ज़मीन का एक बड़ा हिस्सा साफ़ करने के लिए मना लिया था, और वे दोनों मिलकर ग्रेंज से पौधे मंगवाने की योजना बना रहे थे।

आधे घंटे के भीतर हुई तबाही को देखकर मैं भयभीत हो गया था; काले करंट के पेड़ जोसेफ की आंखों के तारे थे, और उसने अभी-अभी उनके बीच में एक फूलों की क्यारी का चुनाव किया था।

'देखो! ये सब मालिक को पता चलते ही दिखा दिया जाएगा!' मैंने चिल्लाकर कहा। 'और बगीचे के साथ ऐसी मनमानी करने का तुम्हारा क्या बहाना है? इसके ऊपर एक ज़बरदस्त धमाका होगा: देखना! मिस्टर हरेटन, मुझे हैरानी है कि तुममें इतनी अक्ल कैसे आ गई कि तुम उसके कहने पर जाकर ये सब गड़बड़ कर बैठे!'

'मैं भूल गया था कि ये जोसेफ के हैं,' अर्नशॉ ने कुछ हैरानी से जवाब दिया; 'लेकिन मैं उसे बता दूंगा कि मैंने ऐसा किया है।'

हम हमेशा श्री हीथक्लिफ के साथ भोजन करते थे। चाय बनाने और खाना काटने

में मैं मालकिन की भूमिका निभाती थी; इसलिए मेज पर मेरा होना अनिवार्य था। कैथरीन आमतौर पर मेरे पास बैठती थी, लेकिन आज वह हरेटन के पास चुपके से चली गई; और मैंने तुरंत देखा कि वह अपनी मित्रता में उतनी ही अविवेकी थी जितनी अपनी शत्रुता में।

कमरे में प्रवेश करते ही मैंने फुसफुसाते हुए निर्देश दिए, 'ध्यान रखना, अपने चचेरे भाई से ज्यादा बात मत करना और उस पर ज्यादा ध्यान मत देना। इससे मिस्टर हीथक्लिफ जरूर नाराज हो जाएंगे और तुम दोनों पर गुस्सा करेंगे।'

उसने जवाब दिया, 'मैं ऐसा नहीं करने वाली।'

इसके एक मिनट बाद ही वह उसके पास सरक कर आई और उसके दलिया की थाली में प्रिमरोज़ के फूल रखने लगी।

वहाँ उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वह उससे बात करे; उसकी हिम्मत तो उसकी तरफ देखने की भी नहीं हुई; फिर भी वह उसे चिढ़ाती रही, यहाँ तक कि दो बार तो वह हँसने ही वाला था। मैंने भौंहें चढ़ाईं, और फिर उसने मालिक की तरफ देखा: जिसका ध्यान अपने साथ के लोगों से हटकर किसी और बात पर था, जैसा कि उसके चेहरे से ज़ाहिर हो रहा था; और वह एक पल के लिए गंभीर हो गई, और उसे गहरी नज़रों से देखने लगी। फिर वह मुड़ी और अपनी बेतुकी बातें फिर से शुरू कर दीं; आखिरकार, हरेटन ने दबी हुई हँसी हँसी। मिस्टर हीथक्लिफ चौंक गए; उनकी नज़रें तेज़ी से हमारे चेहरों पर घूमीं, कैथरीन ने हमेशा की तरह घबराहट और फिर भी चुनौती भरी नज़र से उनका सामना किया, जिसे वह नापसंद करते थे।

‘अच्छा हुआ कि तुम मेरी पहुँच से बाहर हो,’ उसने तीखे स्वर में कहा। ‘किस शैतान ने तुम्हें जकड़ रखा है कि तुम लगातार उन भयानक आँखों से मुझे घूर रही हो? इन्हें हटाओ! और फिर कभी मुझे अपने अस्तित्व की याद मत दिलाओ। मुझे लगा था कि मैंने तुम्हारी हँसी छुड़ा दी है।’

'यह मैं ही था,' हैरेटन ने बुदबुदाते हुए कहा।

‘तुम क्या कहते हो?’ स्वामी ने पूछा।

हैरेटोन ने अपनी थाली की ओर देखा और अपना गुनाह कबूल नहीं किया। श्री हीथक्लिफ ने उन्हें थोड़ी देर देखा और फिर चुपचाप अपना नाश्ता और बीच में रुकी हुई सोच में डूबे रहे। हम लगभग नाश्ता खत्म कर चुके थे और दोनों युवक समझदारी से एक-दूसरे से दूर हट गए थे, इसलिए मुझे उस बैठक के दौरान और किसी गड़बड़ी

की उम्मीद नहीं थी: तभी जोसेफ दरवाजे पर प्रकट हुआ, उसके कांपते होंठ और गुस्से से भरी आँखों से पता चल गया कि उसके कीमती पौधों पर हुए अत्याचार का उसे पता चल गया है। उसने वहाँ पहुँचने से पहले कैथी और उसकी चचेरी बहन को ज़रूर देखा होगा, क्योंकि उसके जबड़े गाय की तरह जुगाली कर रहे थे और उसकी बात समझना मुश्किल था, फिर भी उसने बोलना शुरू किया: —

मुझे अपनी तनख्वाह चाहिए, और मुझे जाना ही होगा! मेरा इरादा वहीं मरने का था जहाँ मैंने साठ साल सेवा की थी; और मैंने सोचा था कि मैं अपनी किताबें और अपना सारा सामान अटारी में ले जाऊँगा, और शांति के लिए रसोई को वे अपने लिए इस्तेमाल कर लेंगे। अपने चूल्हे को छोड़ना मुश्किल था, लेकिन मैंने सोचा था कि मैं ऐसा कर सकता हूँ! लेकिन नहीं, उन्होंने मेरा बगीचा मुझसे छीन लिया, और कसम से, मालिक, मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता! आप चाहे जितना भी जुए के आगे झुकें - मुझे इसकी आदत नहीं है, और एक बूढ़ा आदमी जल्दी नई परिस्थितियों का आदी नहीं होता। मैं सड़क पर हथौड़ा चलाकर अपना खाना-पीना कमाना ज़्यादा पसंद करूँगा!

'अरे, अरे, बेवकूफ!' हीथक्लिफ ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'संकोच बोलना बंद करो! तुम्हारी शिकायत क्या है? मैं तुम्हारे और नेली के बीच किसी भी झगड़े में दखल नहीं दूंगा। चाहे कुछ भी हो जाए, वो तुम्हें कोयले के गड्ढे में धकेल देगी।'

'ये नेली नहीं है!' जोसेफ ने जवाब दिया। 'मैं नेली की परवाह नहीं करता— वो कितनी बुरी और घिनौनी है! भगवान का शुक्र है! वो किसी की आत्मा को नहीं चुरा सकती! वो इतनी खूबसूरत कभी नहीं थी, लेकिन उसे आँख मारते हुए देखो तो क्या ही शरीर है! ये वही बदसूरत, भद्दी औरत है जिसने हमारे लड़के को अपने धूर्त आँखों और अड़ियल हरकतों से मोहित कर लिया है— नहीं! मेरा दिल टूट गया है! वो सब कुछ भूल गया है जो मैंने उसके लिए किया था, और उस पर ज़ुल्म किया है, और जाकर बगीचे में लगे सबसे शानदार करौंदे के पेड़ों की पूरी कतार उखाड़ दी है!' और यहाँ वो खुलकर विलाप करने लगा; अपने गहरे ज़ख्मों और अर्नशॉ की कृतघ्नता और खतरनाक हालत के एहसास से बेहाल।

'क्या वह मूर्ख नशे में है?' श्री हीथक्लिफ ने पूछा। 'हैरेटन, क्या वह तुम पर ही दोष मढ़ रहा है?'

'मैंने दो-तीन झाड़ियाँ उखाड़ दी हैं,' युवक ने उत्तर दिया; 'लेकिन मैं उन्हें फिर से

लगाने जा रहा हूँ।'

'और तुमने इन्हें क्यों उखाड़ा है?' मालिक ने कहा।

कैथरीन ने समझदारी से अपनी जीभ अंदर रख ली।

'हम वहां कुछ फूल लगाना चाहते थे,' वह रोते हुए बोली। 'इसके लिए सिर्फ मैं ही दोषी हूं, क्योंकि मैं चाहती थी कि वह ऐसा करे।'

'तुम्हें यहाँ छड़ी छूने की इजाज़त किसने दी?' उसके ससुर ने बड़े आश्चर्य से पूछा। 'तुम्हें उसका कहना मानने का आदेश किसने दिया?' उन्होंने हरेटन की ओर मुड़ते हुए कहा।

बाद वाला अवाक रह गया; उसके चचेरे भाई ने जवाब दिया - 'जब तुमने मेरी सारी जमीन ले ली है, तो मुझे सजाने के लिए कुछ गज मिट्टी देने में तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए!'

'तेरी ज़मीन, बदतमीज़ कुतिया! तेरे पास कभी कोई ज़मीन थी ही नहीं,' हीथक्लिफ ने कहा।

'और मेरे पैसे,' उसने उसकी गुस्से भरी निगाहों का जवाब देते हुए कहा, और इसी बीच अपने नाश्ते के बचे हुए टुकड़े को चबाते हुए बोली।

'चुप रहो!' उसने गरजते हुए कहा। 'काम खत्म करो और चले जाओ!'

'और हैरेटन की ज़मीन, और उसका पैसा,' उस बेपरवाह प्राणी ने आगे कहा। 'हैरेटन और मैं अब दोस्त हैं; और मैं उसे तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दूँगा!'

स्वामी एक क्षण के लिए स्तब्ध प्रतीत हुआ: उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह उठ खड़ा हुआ, लगातार उसे घृणा भरी निगाहों से देखता रहा।

उसने कहा, 'अगर तुम मुझे मारोगे तो हरेटन तुम्हें मारेगा; इसलिए बेहतर होगा कि तुम बैठ जाओ।'

'अगर हैरेटन तुम्हें कमरे से बाहर नहीं निकालता, तो मैं उसे नरक में भेज दूँगा,' हीथक्लिफ गरजते हुए बोला। 'लानत है चुड़ैल! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई उसे मेरे खिलाफ भड़काने की? इसे बाहर निकालो! सुना तुमने? इसे रसोई में फेंक दो! मैं इसे जान से मार दूँगा, एलेन डीन, अगर तुमने इसे दोबारा मेरी नज़र में आने दिया!'

हैरटन ने दबी आवाज़ में उसे जाने के लिए मनाने की कोशिश की।

'इसे घसीटकर ले जाओ!' वह क्रूरता से चिल्लाया। 'क्या तुम यहाँ बात करने के लिए रुक रही हो?' और वह अपने ही आदेश को पूरा करने के लिए आगे बढ़ा।

‘वह अब तुम्हारी बात नहीं मानेगा, हे दुष्ट पुरुष,’ कैथरीन ने कहा; ‘और वह जल्द ही तुमसे उतनी ही नफरत करने लगेगा जितनी मैं करती हूँ।’

‘काश! काश!’ युवक ने नाराज़गी से बुदबुदाते हुए कहा; ‘मैं तुम्हें उससे इस तरह बात करते हुए नहीं सुनूंगा। बस करो।’

‘लेकिन तुम उसे मुझे मारने नहीं दोगे?’ वह रोते हुए बोली।

‘तो फिर आओ,’ उसने फुसफुसाते हुए गंभीरता से कहा।

बहुत देर हो चुकी थी: हीथक्लिफ ने उसे पकड़ लिया था।

‘अब तुम जाओ!’ उसने अर्नशॉ से कहा। ‘शापित चुड़ैल! इस बार इसने मुझे तब उकसाया है जब मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता था; और मैं इसे हमेशा के लिए पश्चाताप करवाऊंगा!’

उसका हाथ कैथरीन के बालों में था; हैरेटोन ने उसके बालों को छुड़ाने की कोशिश की और उससे विनती की कि वह उसे इस बार चोट न पहुँचाए। हीथक्लिफ की काली आँखें गुस्से से लाल हो उठीं; ऐसा लग रहा था मानो वह कैथरीन के टुकड़े-टुकड़े कर देगा, और मैं बस बचाव के लिए आगे आने ही वाला था कि अचानक उसकी उंगलियाँ ढीली पड़ गईं; उसने अपना हाथ कैथरीन के सिर से हटाकर उसकी बांह पर रख दिया और उसके चेहरे को ध्यान से देखने लगा। फिर उसने अपना हाथ अपनी आँखों पर रख लिया, कुछ पल खुद को संभालने के लिए खड़ा रहा, और कैथरीन की ओर मुड़कर बनावटी शांति से बोला - 'तुम्हें मुझे क्रोधित करना सीखना होगा, वरना मैं सचमुच किसी दिन तुम्हारी हत्या कर दूंगा! श्रीमती डीन के साथ जाओ और उनके साथ रहो; और अपनी बदतमीज़ी उन्हीं के कानों तक सीमित रखो। जहाँ तक हैरेटोन अर्नशॉ की बात है, अगर मैंने उसे तुम्हारी बात सुनते हुए देखा, तो मैं उसे रोटी के लिए इधर-उधर भटकने पर मजबूर कर दूंगा! तुम्हारा प्यार उसे समाज से बहिष्कृत और भिखारी बना देगा। नेली, उसे ले जाओ; और मुझे छोड़ दो, तुम सब! मुझे छोड़ दो!'

मैं अपनी प्रेमिका को बाहर ले गया: वह अपनी इस आज़ादी से इतनी खुश थी कि विरोध ही नहीं कर सकी; दूसरी भी मेरे पीछे-पीछे आ गई, और मिस्टर हीथक्लिफ दोपहर के भोजन तक कमरे में अकेले रहे। मैंने कैथरीन को ऊपर के कमरे में भोजन करने की सलाह दी थी; लेकिन जैसे ही उन्होंने उसकी खाली सीट देखी, उन्होंने मुझे उसे बुलाने के लिए भेजा। उन्होंने हममें से किसी से बात नहीं की, बहुत कम खाना खाया और तुरंत बाद बाहर चले गए, यह कहते हुए कि वे शाम से पहले नहीं लौटेंगे।

उनकी अनुपस्थिति में दोनों नए मित्र घर में ही बस गए; जहाँ मैंने हैरेटन को अपनी चचेरी बहन को सख्ती से रोकते हुए सुना, जब उसने अपने ससुर के आचरण का खुलासा उनके पिता के सामने किया। उन्होंने कहा कि वे उनके अपमान में एक शब्द भी बर्दाश्त नहीं करेंगे: चाहे वे शैतान ही क्यों न हों; वे उनके साथ खड़े रहेंगे; और वे चाहेंगे कि वह उन्हें ही बुरा-भला कहे, जैसा कि वह पहले करती थीं, बजाय इसके कि मिस्टर हीथक्लिफ के बारे में बात करें। कैथरीन इस पर नाराज़ हो रही थी; लेकिन उन्होंने उसे चुप कराने का उपाय ढूंढ लिया, यह पूछकर कि वह अपने पिता के बारे में बुरा-भला कैसे सुनना पसंद करेंगी? तब उसे समझ आया कि अर्नशॉ मालिक की प्रतिष्ठा अपने साथ घर ले गया था; और वह ऐसे बंधनों से बंधा हुआ था जिन्हें तर्क से तोड़ा नहीं जा सकता था - आदत की जंजीरें, जिन्हें ढीला करने का प्रयास करना क्रूरता होगी। इसके बाद से उसने हीथक्लिफ के बारे में न तो शिकायत की और न ही घृणा व्यक्त की, जिससे उसने अच्छा हृदय दिखाया; और उसने मुझसे अपने दुख को स्वीकार किया कि उसने उसके और हरेटन के बीच दुश्मनी पैदा करने की कोशिश की थी: वास्तव में, मुझे नहीं लगता कि उसने तब से हरेटन की मौजूदगी में अपने उत्पीड़क के खिलाफ एक शब्द भी बोला है।

जब यह मामूली मतभेद समाप्त हुआ, तो वे फिर से दोस्त बन गए और शिष्य और शिक्षक के रूप में अपने-अपने कामों में पूरी तरह से व्यस्त हो गए। अपना काम खत्म करने के बाद मैं उनके साथ बैठने आया; और उन्हें देखकर मुझे इतना सुकून और आराम मिला कि मुझे समय बीतने का पता ही नहीं चला। आप जानते हैं, वे दोनों एक तरह से मेरे बच्चों जैसे लगते थे: मुझे एक पर लंबे समय से गर्व था; और अब, मुझे यकीन था, दूसरा भी उतना ही संतोष देगा। उसका ईमानदार, स्नेही और बुद्धिमान स्वभाव अज्ञानता और पतन के उन बादलों को तेजी से हटा रहा था जिनमें वह पला-बढ़ा था; और कैथरीन की सच्ची प्रशंसा ने उसकी मेहनत को और भी प्रेरित किया। उसके उज्ज्वल मन ने उसके चेहरे को और भी निखार दिया और उसके रूप में जोश और बड़प्पन भर दिया: मैं शायद ही कल्पना कर पा रहा था कि यह वही व्यक्ति है जिसे मैंने उस दिन देखा था जब मैंने अपनी नन्ही सी राजकुमारी को क्रैग्स की यात्रा के बाद वुदरिंग हाइट्स में पाया था। जब मैं उनकी प्रशंसा कर रहा था और वे काम कर रहे थे, शाम ढलने लगी और उसके साथ ही गुरुजी लौट आए। वह अचानक ही सामने के रास्ते से अंदर आ गया और हमारे सिर उठाकर उसे देखने से पहले ही उसने हम

तीनों को देख लिया। मैंने सोचा, इससे सुखद और हानिरहित दृश्य तो कभी हो ही नहीं सकता था; और उन्हें डांटना तो सरासर नाइंसाफी होगी। लाल आग की रोशनी उनके सुंदर चेहरों पर पड़ रही थी और उनके चेहरे बच्चों जैसी उत्सुकता से भरे हुए थे; क्योंकि यद्यपि वह तेईस वर्ष का था और वह अठारह वर्ष की, फिर भी दोनों को इतना कुछ नया अनुभव करना और सीखना था कि उनमें से किसी ने भी परिपक्व और शांत स्वभाव की भावनाएँ न तो दिखाईं और न ही प्रदर्शित कीं।

उन्होंने एक साथ अपनी निगाहें उठाईं और श्री हीथक्लिफ को देखा: शायद आपने कभी ध्यान नहीं दिया होगा कि उनकी आँखें बिल्कुल एक जैसी हैं, और वे कैथरीन अर्नशॉ की आँखें हैं। वर्तमान कैथरीन में उनसे कोई और समानता नहीं है, सिवाय माथे की चौड़ाई और नाक के नथुनों की एक विशेष बनावट के, जो उन्हें कुछ अभिमानी प्रतीत कराती है, चाहे वह ऐसा चाहे या न चाहे। हैरेटोन के साथ यह समानता और भी अधिक है: यह हमेशा विलक्षण रहती है, उस समय यह विशेष रूप से ध्यान देने योग्य थी; क्योंकि उनकी इंद्रियाँ सचेत थीं, और उनकी मानसिक क्षमताएँ असामान्य रूप से सक्रिय थीं। मेरा मानना है कि इस समानता ने श्री हीथक्लिफ को निहत्था कर दिया: वे स्पष्ट रूप से घबराए हुए चूल्हे की ओर चले गए; लेकिन जैसे ही उन्होंने उस युवक को देखा, उनकी घबराहट तुरंत शांत हो गई: या, मैं कहूँ, उसका स्वरूप बदल गया; क्योंकि वह अभी भी मौजूद थी। उन्होंने उसके हाथ से किताब ली, खुले पन्ने पर एक नज़र डाली, फिर बिना कुछ कहे उसे वापस कर दिया; बस कैथरीन को जाने का इशारा किया: उसका साथी उसके पीछे थोड़ी देर रुका रहा, और मैं भी जाने ही वाला था, लेकिन उन्होंने मुझे वहीं बैठने को कहा।

'यह एक निराशाजनक निष्कर्ष है, है ना?' उसने अभी-अभी देखे दृश्य पर कुछ देर विचार करने के बाद कहा: 'मेरे ज़बरदस्त प्रयासों का एक बेतुका अंत? मैंने दोनों मकानों को गिराने के लिए लीवर और कुदालें लीं, और खुद को हरक्यूलिस की तरह काम करने में सक्षम बनाया, और जब सब कुछ तैयार था और मेरे बस में था, तो मुझे पता चला कि किसी भी छत से एक स्लेट उठाने की इच्छा ही गायब हो गई है! मेरे पुराने दुश्मन मुझे हरा नहीं पाए; अब उनके प्रतिनिधियों से बदला लेने का सही समय है: मैं यह कर सकता हूँ; और कोई मुझे रोक नहीं सकता। लेकिन इसका क्या फायदा? मुझे हड़ताल करने में कोई दिलचस्पी नहीं है: मैं हाथ उठाने की भी जहमत नहीं उठा सकता! ऐसा लगता है जैसे मैं पूरे समय केवल उदारता का दिखावा करने के

लिए मेहनत कर रहा था। ऐसा बिल्कुल नहीं है: मुझे उनके विनाश का आनंद लेने की क्षमता खो चुकी है, और मैं इतना आलसी हूँ कि व्यर्थ में विनाश नहीं कर सकता।'

'नेली, एक अजीब बदलाव आ रहा है; मैं इस समय उसकी छाया में हूँ। मुझे अपने दैनिक जीवन में इतनी कम रुचि है कि मुझे खाना-पीना भी मुश्किल से याद रहता है। कमरे से चले गए वे दोनों ही मेरे लिए एकमात्र ऐसी वस्तुएँ हैं जिनका भौतिक स्वरूप अभी भी स्पष्ट है; और वह स्वरूप मुझे पीड़ा देता है, असहनीय पीड़ा। मैं उसके बारे में बात नहीं करूँगा; और मैं सोचना भी नहीं चाहता; लेकिन मैं दिल से चाहता हूँ कि वह अदृश्य हो जाए: उसकी उपस्थिति केवल पागलपन भरी भावनाएँ जगाती है। वह मुझे अलग तरह से प्रभावित करता है: और फिर भी अगर मैं बिना पागल दिखे ऐसा कर पाता, तो मैं उसे फिर कभी नहीं देखता! शायद तुम सोचोगी कि मैं पागल होने की ओर अग्रसर हूँ,' उसने मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा, 'अगर मैं अतीत की उन हज़ारों यादों और विचारों का वर्णन करने की कोशिश करूँ जो वह जगाता है या उनमें समाहित करता है। लेकिन तुम मेरी बताई बातों पर चर्चा नहीं करोगी; और मेरा मन इतना अंतर्मुखी है कि अंत में उसे किसी और के सामने खोलना लुभावना लगता है।'

पांच मिनट पहले हैरेटोन मुझे मेरी जवानी का साक्षात रूप लग रहा था, कोई इंसान नहीं; मैं उससे इतने अलग-अलग तरीकों से जुड़ाव महसूस कर रहा था कि उससे तर्कसंगत रूप से बात करना नामुमकिन था। सबसे पहले तो, कैथरीन से उसकी चौंकाने वाली समानता ने उसे उससे भयभीत रूप से जोड़ दिया था। लेकिन, जो बात मेरी कल्पना को सबसे ज़्यादा प्रभावित करती है, वह असल में सबसे कमज़ोर है: क्योंकि मेरे लिए उससे क्या जुड़ा नहीं है? और क्या उसे याद नहीं दिलाता? मैं इस फर्श पर नीचे देखे बिना भी, पत्थरों में उसकी आकृति उभरती है! हर बादल में, हर पेड़ में - रात में हवा में फैली हुई, और दिन में हर वस्तु में झलकती हुई - मैं उसकी छवि से घिरा हुआ हूँ! पुरुषों और महिलाओं के सबसे साधारण चेहरे - मेरे अपने चेहरे - मुझे उससे मिलती-जुलती शक्ल दिखाकर चिढ़ाते हैं। पूरी दुनिया इस बात की भयानक यादों का संग्रह है कि वह कभी अस्तित्व में थी, और मैंने उसे खो दिया है! खैर, हैरेटोन का चेहरा मेरे अमर प्रेम का भूत था; मेरे अधिकार को बनाए रखने के मेरे बेतहाशा प्रयासों का भूत था; मेरा अपमान, मेरा अभिमान, मेरी खुशी और मेरी पीड़ा —

लेकिन इन विचारों को आपके सामने दोहराना पागलपन है: इससे आपको केवल

यही पता चलेगा कि अकेले रहने की अनिच्छा के कारण, उसकी संगति मेरे लिए कोई लाभ नहीं है; बल्कि यह मेरे निरंतर कष्ट को और बढ़ा देती है: और यह आंशिक रूप से मुझे इस बात से बेपरवाह बना देती है कि वह और उसका चचेरा भाई एक साथ कैसे रहते हैं। मैं अब उन पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे सकती।

'लेकिन बदलाव से आपका क्या मतलब है, मिस्टर हीथक्लिफ?' मैंने उनके हावभाव से घबराकर कहा: हालाँकि मेरी समझ से न तो उन्हें होश खोने का खतरा था और न ही मरने का: वे पूरी तरह से स्वस्थ और तंदुरुस्त थे; और जहाँ तक उनकी बुद्धि की बात है, बचपन से ही उन्हें रहस्यमयी विषयों पर विचार करने और अजीबोगरीब कल्पनाओं में खो जाने का शौक था। हो सकता है कि उन्हें अपने दिवंगत आदर्श के विषय में जुनून सवार हो गया हो; लेकिन बाकी सभी मामलों में उनकी बुद्धि मेरी ही तरह तेज थी।

उन्होंने कहा, 'जब तक यह होगा नहीं, तब तक मुझे इसका पता नहीं चलेगा; अभी तो मुझे इसका आधा ही आभास है।'

मैंने पूछा, 'आपको बीमारी का कोई लक्षण तो नहीं है?'

'नहीं, नेली, मैंने नहीं किया है,' उसने उत्तर दिया।

'तो फिर तुम्हें मौत से डर नहीं लगता?' मैंने पूछा।

'डर? नहीं!' उसने उत्तर दिया। 'मुझे न तो मृत्यु का भय है, न ही पूर्वाभास, न ही आशा। मुझे क्यों होना चाहिए? मेरे मजबूत शरीर, संयमित जीवनशैली और सुरक्षित व्यवसायों के साथ, मुझे जीवित रहना चाहिए, और शायद रह भी जाऊँगा, जब तक मेरे सिर पर शायद ही कोई काला बाल बचे। फिर भी मैं इस स्थिति में नहीं रह सकता! मुझे खुद को सांस लेने की याद दिलानी पड़ती है—लगभग अपने दिल को धड़कने की याद दिलानी पड़ती है! और यह एक कठोर स्प्रिंग को वापस मोड़ने जैसा है: यह मजबूरी है कि मैं बिना किसी विचार के कोई भी छोटा सा काम करता हूँ; और मजबूरी है कि मैं किसी भी जीवित या मृत चीज पर ध्यान देता हूँ, जो किसी एक सार्वभौमिक विचार से जुड़ी नहीं है। मेरी एक ही इच्छा है, और मेरा पूरा अस्तित्व और मेरी सारी इंद्रियाँ उसे प्राप्त करने के लिए तड़प रही हैं। वे इतने लंबे समय से, और इतनी दृढ़ता से, इसके लिए तड़प रही हैं कि मुझे विश्वास है कि यह पूरी हो जाएगी—और जल्द ही —क्योंकि इसने मेरे अस्तित्व को निगल लिया है: मैं इसकी पूर्ति की प्रत्याशा में डूबा हुआ हूँ। मेरे पश्चाताप ने मुझे राहत नहीं दी है; लेकिन शायद वे मेरे हास्य के कुछ ऐसे

पहलुओं की व्याख्या कर सकते हैं जिन्हें अन्यथा समझाना मुश्किल है। हे भगवान! यह एक लंबी लड़ाई है; काश यह खत्म हो जाए!

वह कमरे में इधर-उधर घूमने लगा, अपने आप से भयानक बातें बुदबुदा रहा था, यहाँ तक कि मुझे भी यकीन होने लगा, जैसा कि उसने कहा था कि जोसेफ को भी यकीन था, कि अंतरात्मा ने उसके दिल को धरती के नरक की ओर मोड़ दिया है। मैं बहुत चिंतित था कि इसका अंत क्या होगा। हालाँकि उसने पहले कभी इस तरह की मानसिक स्थिति का खुलासा नहीं किया था, यहाँ तक कि हाव-भाव से भी नहीं, यह उसकी आदत बन चुकी थी, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था: उसने खुद भी यह बात कही थी; लेकिन उसके सामान्य व्यवहार से कोई भी इस बात का अंदाजा नहीं लगा सकता था। आपने भी उसे देखकर ऐसा नहीं सोचा होगा, मिस्टर लॉकवुड: और जिस समय की मैं बात कर रहा हूँ, वह तब भी बिल्कुल वैसा ही था; बस उसे अकेले रहना ज़्यादा पसंद था, और शायद लोगों के बीच वह और भी कम बोलता था।

अध्याय 34

उस शाम के बाद कुछ दिनों तक श्री हीथक्लिफ ने हमारे साथ भोजन करने से परहेज किया; फिर भी उन्होंने हैरेटन और कैथी को औपचारिक रूप से बाहर करने पर सहमति नहीं दी। उन्हें अपनी भावनाओं के आगे पूरी तरह झुकना पसंद नहीं था, इसलिए उन्होंने अनुपस्थित रहना बेहतर समझा; और चौबीस घंटे में एक बार भोजन करना ही उनके लिए पर्याप्त पोषण प्रतीत होता था।

एक रात, जब परिवार के लोग सो गए थे, मैंने उन्हें नीचे जाते और सामने के दरवाजे से बाहर आते सुना। मैंने उन्हें वापस अंदर आते नहीं सुना, और सुबह मैंने पाया कि वे अभी भी बाहर थे। तब अप्रैल का महीना था: मौसम सुहावना और गर्म था, घास बारिश और धूप से हरी-भरी हो गई थी, और दक्षिणी दीवार के पास लगे दो बौने सेब

के पेड़ पूरी तरह खिले हुए थे। नाश्ते के बाद, कैथरीन ने मुझसे एक कुर्सी लाने और घर के आखिरी छोर पर देवदार के पेड़ों के नीचे बैठकर अपना काम करने पर जोर दिया; और उन्होंने हरेटन को, जो अपनी दुर्घटना से पूरी तरह उबर चुके थे, अपने छोटे से बगीचे को खोदने और सजाने के लिए मना लिया, जिसे जोसेफ की शिकायतों के कारण उस कोने में स्थानांतरित कर दिया गया था। मैं चारों ओर फैली वसंत की सुगंध और ऊपर के सुंदर नीले आकाश में आराम से मग्न थी, तभी मेरी पत्नी, जो क्यारी के लिए कुछ प्रिमरोज़ की जड़ें लेने के लिए गेट के पास गई थी, आधी लदी हुई लौटी और हमें बताया कि मिस्टर हीथक्लिफ आ रहे हैं। 'और उन्होंने मुझसे बात की,' उसने उलझन भरे चेहरे के साथ कहा।

'उसने क्या कहा?' हैरेटन ने पूछा।

उसने जवाब दिया, 'उसने मुझे जितनी जल्दी हो सके वहां से चले जाने को कहा। लेकिन वह अपने सामान्य रूप से इतना अलग दिख रहा था कि मैं एक पल के लिए रुककर उसे देखती रह गई।'

‘कैसे?’ उसने पूछा।

‘क्यों, लगभग उज्ज्वल और हंसमुख। नहीं, लगभग कुछ भी नहीं — बहुत उत्साहित, बेकाबू और खुश!’ उसने जवाब दिया।

‘तो रात में टहलना उसे अच्छा लगता है,’ मैंने लापरवाही का भाव दिखाते हुए कहा: असल में मैं भी उतनी ही हैरान थी जितनी वह थी, और उसके कथन की सच्चाई जानने के लिए उत्सुक थी; क्योंकि मालिक को खुश देखना कोई रोज़ की बात नहीं थी। मैंने अंदर जाने का बहाना बनाया। हीथक्लिफ खुले दरवाजे पर खड़ा था; उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह कांप रहा था: फिर भी, उसकी आँखों में एक अजीब सी खुशी की चमक थी, जिसने उसके पूरे चेहरे का भाव बदल दिया था।

मैंने कहा, 'क्या आप नाश्ता करेंगे? आपको भूख तो लगी ही होगी, आप पूरी रात इधर-उधर भटकते रहे!' मैं यह जानना चाहता था कि वह कहाँ था, लेकिन सीधे पूछना मुझे ठीक नहीं लगा।

'नहीं, मुझे भूख नहीं है,' उसने अपना सिर दूसरी तरफ झुकाते हुए और कुछ तिरस्कारपूर्ण लहजे में जवाब दिया, मानो उसे अंदाजा हो गया हो कि मैं उसके अच्छे मूड का कारण जानने की कोशिश कर रहा हूँ।

मैं असमंजस में पड़ गया: मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या यह थोड़ी सी

चेतावनी देने का उचित अवसर था या नहीं।

मैंने कहा, 'बिस्तर पर रहने के बजाय घर से बाहर घूमना ठीक नहीं है: यह बुद्धिमानी नहीं है, कम से कम इस उमस भरे मौसम में तो बिल्कुल नहीं। मुझे लगता है कि आपको सर्दी या बुखार हो जाएगा: आपको कुछ तो गड़बड़ है!'

'मैं उतना ही सहन कर सकता हूँ जितना मैं सहन कर सकूँ,' उसने उत्तर दिया; 'और मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी, बशर्ते आप मुझे अकेला छोड़ दें: अंदर आइए, और मुझे परेशान मत कीजिए।'

मैंने उसकी बात मान ली: और इसी दौरान मैंने देखा कि वह बिल्ली की तरह तेजी से सांस ले रहा था।

'हाँ!' मैंने मन ही मन सोचा, 'हमें बीमारी का दौरा पड़ेगा। मैं समझ ही नहीं पा रहा हूँ कि वह क्या कर रहा है।'

उस दोपहर वह हमारे साथ भोजन करने बैठा और मेरे हाथों से एक भरी हुई थाली स्वीकार की, मानो वह पिछले उपवास के लिए प्रायश्चित करना चाहता हो।

'मुझे न तो सर्दी है और न ही बुखार, नेली,' उन्होंने मेरी सुबह की बात का जिक्र करते हुए कहा; 'और मैं तुम्हारे दिए हुए भोजन का पूरा आनंद लेने के लिए तैयार हूं।'

उन्होंने चाकू और कांटा उठाया और खाना शुरू ही किया था कि अचानक उनका मन खाने का नहीं रहा। उन्होंने उन्हें मेज पर रखा, खिड़की की ओर उत्सुकता से देखा, फिर उठे और बाहर चले गए। खाना खत्म होने तक हमने उन्हें बगीचे में इधर-उधर घूमते देखा, और अर्नशॉ ने कहा कि वह जाकर पूछेंगे कि उन्होंने खाना क्यों नहीं खाया: उन्हें लगा कि हमने उन्हें किसी तरह से दुखी किया है।

'तो क्या वह आ रहा है?' कैथरीन ने अपने चचेरे भाई के लौटने पर चिल्लाकर पूछा।

'नहीं,' उसने उत्तर दिया; 'लेकिन वह नाराज़ नहीं है: वह शायद ही कभी खुश होता था; मैंने उससे दो बार बात करके उसे अधीर कर दिया; और फिर उसने मुझे तुम्हारे पास जाने को कहा: उसे आश्चर्य हुआ कि मुझे किसी और की संगति की आवश्यकता क्यों हो सकती है।'

मैंने उसकी थाली को गर्म रखने के लिए फेंडर पर रख दिया; और एक-दो घंटे बाद, जब कमरा खाली हो गया, तो वह फिर से अंदर आया, लेकिन उसकी शांति में कोई कमी नहीं आई थी: उसकी काली भौंहों के नीचे वही अस्वाभाविक - वास्तव में

अस्वाभाविक - खुशी का भाव था; वही निर्जीव रंगत, और उसके दांत कभी-कभी एक तरह की मुस्कान में दिखाई दे रहे थे; उसका शरीर कांप रहा था, ठंड या कमजोरी से कांपने वाले व्यक्ति की तरह नहीं, बल्कि एक कसकर खींची हुई रस्सी के कंपन की तरह - एक तीव्र सिहरन, कांपना नहीं।

मैंने सोचा, मुझे पूछना चाहिए कि क्या बात है; या किसे पूछना चाहिए? और मैंने हैरानी से कहा — 'क्या आपने कोई अच्छी खबर सुनी है, मिस्टर हीथक्लिफ? आप तो आज कुछ ज्यादा ही उत्साहित लग रहे हैं।'

उन्होंने कहा, 'मुझे अच्छी खबर कहां से मिलेगी? मुझे बहुत भूख लगी है; और ऐसा लगता है कि मुझे खाना नहीं खाना चाहिए।'

मैंने जवाब दिया, 'आपका खाना आ गया है; आप इसे क्यों नहीं ले रहे हैं?'

'मुझे अभी इसकी ज़रूरत नहीं है,' उसने जल्दी से बुदबुदाते हुए कहा। 'मैं रात के खाने तक इंतज़ार करूँगा। और, नेली, मैं तुमसे एक बार फिर विनती करता हूँ कि तुम हैरेटन और बाकी सबको मुझसे दूर रहने की चेतावनी दे दो। मैं किसी से भी परेशान नहीं होना चाहता: मैं इस जगह पर अकेला रहना चाहता हूँ।'

'क्या इस निर्वासन का कोई नया कारण है?' मैंने पूछा। 'मुझे बताइए, आप इतने अजीब क्यों हैं, श्री हीथक्लिफ? आप कल रात कहाँ थे? मैं यह सवाल यूँ ही जिज्ञासावश नहीं पूछ रहा हूँ, बल्कि...'

'तुम ये सवाल बेवजह की जिज्ञासा से पूछ रहे हो,' उसने हंसते हुए बीच में ही टोक दिया। 'फिर भी मैं जवाब दूंगा। कल रात मैं नरक के द्वार पर था। आज मैं अपने स्वर्ग के बिल्कुल करीब हूँ। मेरी निगाहें उस पर टिकी हैं: बस तीन फीट की दूरी मुझे अलग कर सकती है! और अब बेहतर होगा कि तुम चले जाओ! अगर तुम ताक-झांक नहीं करोगे तो तुम्हें न तो कुछ दिखेगा और न ही कुछ सुनाई देगा जिससे तुम डरोगे।'

चूल्हा साफ करने और मेज पोंछने के बाद, मैं पहले से कहीं अधिक उलझन में वहां से चला गया।

उस दोपहर वह घर से बाहर नहीं निकला, और किसी ने भी उसकी एकांतता में दखल नहीं दिया; जब तक कि आठ बजे, बिना बुलाए ही, मुझे उसके लिए मोमबत्ती और रात का खाना ले जाना उचित लगा। वह खुली जाली के किनारे पर टिका हुआ था, लेकिन बाहर नहीं देख रहा था: उसका चेहरा अंदर के अंधेरे में था। आग सुलगकर राख हो चुकी थी; कमरा बादलों से घिरी शाम की नम, हल्की हवा से भरा हुआ था;

और इतनी शांति थी कि गिम्मर्टन से बहने वाली छोटी नदी की कलकल ध्वनि ही नहीं, बल्कि कंकड़ों पर उसकी लहरें और कलकल की आवाज़, या उन बड़े पत्थरों के बीच से बहने की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी जिन्हें वह ढक नहीं सकती थी। उस भयानक अंगीठी को देखकर मैंने असंतोष व्यक्त किया, और एक-एक करके खिड़कियाँ बंद करने लगा, जब तक कि मैं उसकी खिड़की तक नहीं पहुँच गया।

मैंने उसे जगाने के लिए पूछा, 'क्या मुझे इसे बंद करना होगा?' क्योंकि वह हिल नहीं रहा था।

जैसे ही मैंने बोलना शुरू किया, रोशनी उनके चेहरे पर चमक उठी। ओह, श्रीमान लॉकवुड, उस पल भर के दृश्य को देखकर मैं कितना चौंक गई, यह मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती! वो गहरी काली आँखें! वो मुस्कान, और भयानक पीलापन! मुझे लगा जैसे वो श्रीमान हीथक्लिफ नहीं, बल्कि कोई जिन्न हो; और डर के मारे मैंने मोमबत्ती को दीवार की ओर झुका दिया, और फिर अंधेरा छा गया।

‘जी हां, इसे बंद कर दो,’ उसने अपनी जानी-पहचानी आवाज़ में जवाब दिया। ‘देखो, ये तो सरासर बेवकूफी है! तुमने मोमबत्ती को आड़ा क्यों पकड़ा हुआ है? जल्दी करो, दूसरी लाओ।’

मैं डर के मारे मूर्खतापूर्ण ढंग से जल्दी से बाहर भागा और यूसुफ से कहा, 'मालिक चाहते हैं कि तुम उनके लिए एक माचिस ले जाओ और आग फिर से जला दो।' क्योंकि उस समय मैं खुद अंदर जाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

जोसेफ ने फावड़े में थोड़ी आग भरी और चला गया; लेकिन वह तुरंत वापस आ गया, दूसरे हाथ में खाने की थाली लिए हुए, यह समझाते हुए कि श्री हीथक्लिफ सोने जा रहे हैं और उन्हें सुबह तक कुछ नहीं खाना है। हमने उसे सीधे सीढ़ियों पर चढ़ते सुना; वह अपने सामान्य कमरे में नहीं गया, बल्कि पैनल वाले पलंग वाले कमरे में चला गया: जैसा कि मैंने पहले बताया, उसकी खिड़की इतनी चौड़ी है कि कोई भी उसमें से निकल सकता है; और मुझे लगा कि वह आधी रात को किसी और सैर की योजना बना रहा है, जिसके बारे में वह नहीं चाहता कि हमें कोई शक हो।

‘क्या वह कोई भूत है या पिशाच?’ मैंने मन ही मन सोचा। मैंने ऐसे भयानक साक्षात राक्षसों के बारे में पढ़ा था। फिर मैंने यह सोचना शुरू किया कि कैसे मैंने बचपन में उसकी देखभाल की थी, उसे जवान होते देखा था, और लगभग उसके पूरे जीवन में उसका साथ दिया था; और उस भय के आगे झुक जाना कितना बेतुका था।

‘लेकिन वह कहाँ से आया, वह छोटा सा काला जीव, जिसे एक भले आदमी ने अपने विनाश के लिए पनाह दी?’ अंधविश्वास ने बुदबुदाते हुए कहा, जैसे ही मैं बेहोशी की ओर बढ़ने लगा। और मैं आधे सपने में ही, उसके लिए किसी उपयुक्त माता-पिता की कल्पना करने में खुद को थकाने लगा; और, जागते हुए अपने विचारों को दोहराते हुए, मैंने उसके अस्तित्व को फिर से, भयावह विविधताओं के साथ, खोजा; अंत में, उसकी मृत्यु और अंतिम संस्कार की कल्पना की: जिसके बारे में मुझे बस इतना याद है कि उसके स्मारक के लिए शिलालेख लिखवाने का काम सौंपे जाने और उसके बारे में कब्रिस्तान के कर्मचारी से सलाह लेने पर मैं बहुत परेशान था; और, चूंकि उनका कोई उपनाम नहीं था, और हम उनकी उम्र का पता नहीं लगा सकते थे, इसलिए हमें केवल एक शब्द, 'हीथक्लिफ' से ही संतोष करना पड़ा। और यह बात सच साबित हुई: हम हीथक्लिफ थे। यदि आप कब्रिस्तान में प्रवेश करेंगे, तो उनकी समाधि पर आपको केवल यही शब्द और उनकी मृत्यु की तिथि लिखी मिलेगी।

भोर होते ही मुझे होश आया। मैं उठी और जैसे ही मुझे दिखाई दिया, बगीचे में गई, यह देखने के लिए कि क्या उसकी खिड़की के नीचे किसी के पैरों के निशान हैं। कोई निशान नहीं थे। मैंने सोचा, 'वह घर पर ही है, और आज वह ठीक रहेगा।' मैंने हमेशा की तरह घर के सभी लोगों के लिए नाश्ता तैयार किया, लेकिन हैरेटन और कैथरीन को कहा कि वे मालिक के आने से पहले अपना नाश्ता ले लें, क्योंकि वह देर से उठने वाले थे। उन्होंने बाहर पेड़ों के नीचे नाश्ता करना पसंद किया, और मैंने उनके लिए एक छोटी सी मेज लगा दी।

जब मैं वापस कमरे में आया, तो मैंने श्री हीथक्लिफ को नीचे पाया। वह और जोसेफ खेती-बाड़ी के किसी काम के बारे में बातचीत कर रहे थे; उन्होंने चर्चा के विषय में स्पष्ट और विस्तृत निर्देश दिए, लेकिन वे तेज़ी से बोल रहे थे, लगातार अपना सिर इधर-उधर घुमा रहे थे, और उनके चेहरे पर वही उत्तेजित भाव था, बल्कि और भी ज़्यादा। जब जोसेफ कमरे से बाहर निकले, तो वे अपनी पसंदीदा जगह पर बैठ गए, और मैंने उनके सामने कॉफी का एक कटोरा रख दिया। उन्होंने उसे पास खींच लिया, फिर अपनी बाहें मेज पर टिका दीं, और सामने वाली दीवार को देखने लगे, जैसा कि मैंने अनुमान लगाया, वे किसी खास हिस्से को ऊपर से नीचे तक, चमकती हुई, बेचैन आँखों से, और इतनी उत्सुकता से देख रहे थे कि लगभग आधे मिनट तक उनकी साँसें रुक गईं।

मैंने उसके हाथ में रोटी का एक टुकड़ा थमाते हुए कहा, 'चलो अब, इसे गरमागरम खाओ और पी लो: यह लगभग एक घंटे से इंतजार कर रही है।'

उसने मुझे देखा तक नहीं, फिर भी मुस्कुराया। मुझे तो उसकी मुस्कुराहट से ज्यादा दांत पीसते देखना अच्छा लगता।

‘श्री हीथक्लिफ! स्वामी!’ मैंने चिल्लाकर कहा, ‘भगवान के लिए, ऐसे मत घूरिए जैसे आपने कोई अलौकिक दृश्य देख लिया हो।’

‘भगवान के लिए, इतनी जोर से मत चिल्लाओ,’ उसने जवाब दिया। ‘पीछे मुड़ो और मुझे बताओ, क्या हम अकेले हैं?’

मेरा जवाब था, 'बिल्कुल; हम बिल्कुल हैं।'

फिर भी, मैंने अनजाने में ही उसकी बात मान ली, मानो मुझे पूरी तरह से यकीन न हो। उसने हाथ के इशारे से नाश्ते के सामान के बीच सामने की खाली जगह बनाई और आराम से आगे झुककर और गौर से देखने लगा।

अब मुझे एहसास हुआ कि वह दीवार की ओर नहीं देख रहा था; क्योंकि जब मैंने उसे अकेले में देखा, तो ऐसा लगा कि वह दो गज की दूरी पर किसी चीज़ को घूर रहा है। और वह जो भी था, उसमें स्पष्ट रूप से सुख और दुख दोनों का चरम भाव झलक रहा था: कम से कम उसके चेहरे के व्यथित, फिर भी आनंदित भाव से तो यही आभास होता था। वह काल्पनिक वस्तु भी स्थिर नहीं थी: उसकी आँखें अथक परिश्रम से उसका पीछा कर रही थीं, और मुझसे बात करते समय भी, उनकी नज़रें उससे नहीं हटीं। मैंने व्यर्थ ही उसे भोजन से उसके लंबे समय तक परहेज की याद दिलाई: यदि वह मेरी विनतियों के अनुसार किसी चीज़ को छूने के लिए हिलता भी, यदि वह रोटी का एक टुकड़ा लेने के लिए हाथ बढ़ाता, तो उसकी उंगलियाँ उस तक पहुँचने से पहले ही मुट्ठी बन जातीं, और मेज पर ही रह जातीं, अपने लक्ष्य को भूल जातीं।

मैं धैर्य की मिसाल बनकर बैठी रही, उसकी तल्लीनता भरी सोच से ध्यान हटाने की कोशिश करती रही; जब तक कि वह चिड़चिड़ा नहीं हो गया और उठकर मुझसे पूछने लगा कि मैं उसे अपने हिसाब से खाना क्यों नहीं खाने दे रही? और कहा कि अगली बार मुझे इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है: मैं खाना रखकर जा सकती हूँ। ये शब्द कहकर वह घर से निकल गया, धीरे-धीरे बगीचे के रास्ते पर चला गया और फाटक से बाहर निकलकर गायब हो गया।

घंटे बेचैनी से बीतते गए: एक और शाम आ गई। मैं देर से सोने गई, और जब गई

तो मुझे नींद नहीं आई। वह आधी रात के बाद लौटा, और बिस्तर पर जाने के बजाय, नीचे वाले कमरे में खुद को बंद कर लिया। मैं सुनती रही, करवटें बदलती रही, और आखिरकार कपड़े पहनकर नीचे उतर गई। वहाँ लेटे रहना और सौ बेकार की आशंकाओं से अपने दिमाग को परेशान करना बहुत कष्टदायक था।

मैंने श्री हीथक्लिफ के कदमों की आहट सुनी, वे बेचैनी से फर्श को नाप रहे थे, और वे बार-बार गहरी आह भरकर चुप्पी तोड़ रहे थे, जो किसी कराह जैसी लग रही थी। वे कुछ अस्पष्ट शब्द भी बुदबुदा रहे थे; उनमें से केवल एक शब्द जो मैं सुन पाई, वह था कैथरीन का नाम, जिसके साथ स्नेह या पीड़ा के कुछ अटपटे शब्द जुड़े हुए थे; और वे ऐसे बोल रहे थे जैसे किसी उपस्थित व्यक्ति से बात कर रहे हों; धीमी और गंभीर, मानो उनके दिल की गहराई से निकली हुई आवाज़ हो। मुझमें सीधे कमरे में जाने की हिम्मत नहीं थी; लेकिन मैं उन्हें उनकी तल्लीनता से बाहर निकालना चाहती थी, इसलिए रसोई की आग के पास गई, उसे हिलाया और राख को खुरचने लगी। इससे वे मेरी उम्मीद से जल्दी बाहर आ गए। उन्होंने तुरंत दरवाजा खोला और कहा - 'नेली, इधर आओ - क्या सुबह हो गई है? अपनी बत्ती लेकर अंदर आओ।'

मैंने जवाब दिया, 'चार बजने वाले हैं। आपको ऊपर ले जाने के लिए मोमबत्ती चाहिए: आप इस आग में एक मोमबत्ती जला सकते थे।'

'नहीं, मैं ऊपर नहीं जाना चाहता,' उसने कहा। 'अंदर आओ, मेरे लिए आग जलाओ, और कमरे में जो भी काम करना हो, कर दो।'

'मुझे पहले कोयलों को लाल होने तक गर्म करना होगा, तभी मैं उन्हें उठा पाऊंगा,' मैंने एक कुर्सी और धौंकनी लेते हुए उत्तर दिया।

वह लगभग विक्षिप्त अवस्था में इधर-उधर भटक रहा था; उसकी गहरी आहें इतनी तीव्र थीं कि उनके बीच सामान्य सांस लेने की भी गुंजाइश नहीं थी।

"सुबह होते ही मैं ग्रीन को बुलवा लूँगा," उसने कहा; "मैं उससे कुछ कानूनी पूछताछ करना चाहता हूँ, ताकि मैं इन मामलों पर सोच-विचार कर सकूँ और शांत मन से काम कर सकूँ। मैंने अभी तक अपनी वसीयत नहीं लिखी है; और अपनी संपत्ति कैसे बाँटूँ, यह मैं तय नहीं कर पा रहा हूँ। काश मैं इसे धरती से मिटा पाता।"

'श्री हीथक्लिफ, मैं इस तरह बात नहीं करूँगा,' मैंने बीच में कहा। 'अपनी इच्छा को कुछ समय के लिए रहने दीजिए: आपको अपने अनेक अन्यायों के लिए पश्चाताप करने का और समय मिलेगा! मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि आपके तंत्रिका तंत्र में

गड़बड़ी होगी: लेकिन इस समय वे आश्चर्यजनक रूप से खराब हैं; और लगभग पूरी तरह से आपकी अपनी गलती के कारण। जिस तरह से आपने पिछले तीन दिन बिताए हैं, वह किसी विशालकाय को भी कमजोर कर सकता है। कुछ खा लीजिए और आराम कीजिए। आपको बस एक दर्पण में खुद को देखने की जरूरत है, यह समझने के लिए कि आपको दोनों की कितनी आवश्यकता है। आपके गाल पिचके हुए हैं, और आपकी आँखें लाल हैं, जैसे कोई भूख से बेहाल हो रहा हो और नींद की कमी से अंधा हो रहा हो।'

'मैं खा-पी नहीं पा रहा हूँ और आराम भी नहीं कर पा रहा हूँ, इसमें मेरी कोई गलती नहीं है,' उसने जवाब दिया। 'मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि यह किसी सोची-समझी योजना की वजह से नहीं है। मैं दोनों काम जल्द से जल्द करूँगा। लेकिन आप तो मानो पानी में संघर्ष कर रहे आदमी को किनारे से बस कुछ ही दूरी पर आराम करने के लिए कह रहे हैं! मुझे पहले किनारे तक पहुँचना होगा, फिर आराम करूँगा। खैर, मिस्टर ग्रीन, चिंता मत कीजिए: जहाँ तक मेरे अन्याय के पश्चाताप की बात है, मैंने कोई अन्याय नहीं किया है, और मुझे किसी बात का पछतावा नहीं है। मैं बहुत खुश हूँ; फिर भी मैं पूरी तरह खुश नहीं हूँ। मेरी आत्मा का आनंद मेरे शरीर को मार रहा है, लेकिन फिर भी संतुष्ट नहीं हो रहा।'

'खुश हैं आप?' मैंने हैरानी से कहा। 'अजीब सी खुशी! अगर आप बिना गुस्सा किए मेरी बात सुन लें, तो मैं आपको कुछ ऐसी सलाह दे सकता हूँ जिससे आप और भी खुश हो जाएँगे।'

'यह क्या है?' उसने पूछा। 'इसे दो।'

'श्री हीथक्लिफ, आप जानते हैं कि तेरह वर्ष की आयु से ही आपने स्वार्थी और गैर-ईसाई जीवन व्यतीत किया है; और संभवतः उस पूरे समय में आपने बाइबल को कभी छुआ भी नहीं होगा। आप उस पुस्तक की विषयवस्तु भूल चुके होंगे, और अब शायद आपके पास उसे खोजने का समय भी न हो। क्या किसी को बुलाना हानिकारक होगा—किसी भी संप्रदाय के किसी पादरी को, चाहे कोई भी संप्रदाय हो—जो आपको बाइबल समझाए और दिखाए कि आप उसके उपदेशों से कितना भटक गए हैं; और आप उसके स्वर्ग के लिए कितने अयोग्य होंगे, यदि मरने से पहले आपमें परिवर्तन न आए?'

'नेली, मुझे गुस्सा नहीं आ रहा, बल्कि मैं आभारी हूँ,' उसने कहा, 'क्योंकि तुमने

मुझे याद दिला दिया कि मैं किस तरह दफनाया जाना चाहता हूँ। मुझे शाम को कब्रिस्तान ले जाया जाना है। तुम और हैरेटन, अगर चाहो तो मेरे साथ आ सकते हो: और खास तौर पर ध्यान रखना कि कब्रिस्तान का रखवाला दोनों ताबूतों के बारे में मेरे निर्देशों का पालन करे! किसी पादरी को आने की ज़रूरत नहीं है; न ही मेरे ऊपर कुछ कहने की। – मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं लगभग अपने स्वर्ग को पा चुका हूँ; और दूसरों का स्वर्ग मेरे लिए बिल्कुल भी मायने नहीं रखता और न ही उसकी कोई लालसा है।'

'और मान लीजिए कि आप अपने हठपूर्वक उपवास पर अडिग रहे और इसी तरह आपकी मृत्यु हो गई, और वे आपको चर्च परिसर में दफनाने से इनकार कर दें?' मैंने उसकी ईश्वरविहीन उदासीनता पर स्तब्ध होकर कहा। 'आपको कैसा लगेगा?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'वे ऐसा नहीं करेंगे; यदि उन्होंने ऐसा किया, तो आपको मुझे चुपके से हटवाना होगा; और यदि आप इसमें लापरवाही करते हैं, तो आप व्यावहारिक रूप से यह साबित कर देंगे कि मृतकों का नाश नहीं होता!'

परिवार के अन्य सदस्यों की हलचल सुनते ही वह अपने कमरे में लौट गया, और मुझे राहत की सांस मिली। लेकिन दोपहर में, जब जोसेफ और हरेटन अपने काम में व्यस्त थे, वह फिर रसोई में आया, और गुस्से भरी नज़रों से मुझे घर में आकर बैठने को कहा: उसे अपने साथ किसी की ज़रूरत थी। मैंने मना कर दिया; मैंने उसे साफ-साफ कह दिया कि उसकी अजीब बातें और व्यवहार मुझे डराते हैं, और अकेले उसका साथी बनने की मुझमें न तो हिम्मत है और न ही इच्छाशक्ति।

'मुझे लगता है तुम मुझे शैतान समझते हो,' उसने अपनी उदास हंसी के साथ कहा: 'ऐसा भयानक इंसान जो किसी सभ्य छत के नीचे नहीं रह सकता।' फिर कैथरीन की ओर मुड़ते हुए, जो वहीं थी और उसके आने पर मेरे पीछे हट गई, उसने आधे व्यंग्य भरे लहजे में कहा, 'क्या तुम आओगी, बेवकूफ? मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाऊँगा। नहीं! तुम्हारे लिए तो मैंने खुद को शैतान से भी बदतर बना लिया है। खैर, एक ऐसी है जो मेरी संगति से नहीं कतराएगी! भगवान कसम! वह निर्दयी है। ओह, धिक्कार है! यह तो मेरे जैसे इंसान के लिए भी असहनीय है।'

उन्होंने किसी से भी संगति नहीं चाही। शाम ढलते ही वे अपने कमरे में चले गए। पूरी रात और सुबह तक हम उन्हें कराहते और बड़बड़ाते सुनते रहे। हैरेटन अंदर जाने के लिए बेचैन था; लेकिन मैंने उससे कहा कि वह श्री केनेथ को बुला लाए और अंदर जाकर उनसे मिले। जब वह आए और मैंने अंदर जाने की अनुमति मांगी और दरवाजा

खोलने की कोशिश की, तो वह बंद मिला; और हीथक्लिफ ने हमें गालियां दीं। उनकी हालत बेहतर थी और वे अकेले रहना चाहते थे; इसलिए डॉक्टर चले गए।

अगली शाम बहुत बारिश वाली थी: वास्तव में, सुबह होने तक मूसलाधार बारिश होती रही; और जब मैं घर के चारों ओर सुबह की सैर कर रहा था, तो मैंने देखा कि मालिक की खिड़की खुली हुई थी और बारिश सीधे अंदर आ रही थी। मैंने सोचा, वह बिस्तर पर नहीं हो सकते: इतनी बारिश उन्हें पूरी तरह भिगो देगी। वह या तो उठ गए होंगे या बाहर चले गए होंगे। लेकिन मैं अब और देर नहीं करूंगा, मैं हिम्मत करके जाकर देखूंगा।

दूसरी चाबी से अंदर जाने में कामयाब होकर, मैं पर्दों को खोलने के लिए दौड़ा, क्योंकि कमरा खाली था; जल्दी से उन्हें हटाकर मैंने अंदर झाँका। श्री हीथक्लिफ वहाँ पीठ के बल लेटे हुए थे। उनकी आँखें मेरी आँखों से इतनी तीखी और उग्रता से मिलीं कि मैं चौंक गया; और फिर ऐसा लगा जैसे वे मुस्कुरा रहे हों। मैं उन्हें मरा हुआ नहीं मान सकता था: लेकिन उनका चेहरा और गला बारिश से भीगा हुआ था; बिस्तर की चादरें टपक रही थीं, और वे बिल्कुल स्थिर थे। जाली, इधर-उधर फड़फड़ाते हुए, चौखट पर रखे उनके एक हाथ को छू गई थी; फटी हुई त्वचा से खून नहीं टपका, और जब मैंने अपनी उंगलियाँ उस पर रखीं, तो मुझे कोई संदेह नहीं रहा: वे मर चुके थे और बिल्कुल निर्जीव थे!

मैंने खिड़की को कुरेदा; मैंने उसके माथे से उसके काले लंबे बाल हटाए; मैंने उसकी आँखें बंद करने की कोशिश की: हो सके तो, किसी और के देखने से पहले ही, उस भयानक, जीवंत उल्लास भरी नज़र को मिटाने की कोशिश की। लेकिन आँखें बंद नहीं हुईं: मानो वे मेरे प्रयासों का उपहास कर रही हों; और उसके खुले होंठ और नुकीले सफेद दाँत भी उपहास कर रहे थे! कायरता के एक और दौरे से व्याकुल होकर, मैंने यूसुफ को पुकारा। यूसुफ लड़खड़ाते हुए आया और एक आवाज़ निकाली, लेकिन उसने उससे उलझने से साफ इनकार कर दिया।

“शैतान ने उसकी आत्मा छीन ली है,” वह चिल्लाया, “और चाहे उसकी लाश भी उसके साथ चली जाए, मुझे कोई परवाह नहीं! उफ़! वह कितना दुष्ट दिखता है, मौत को देखकर मुस्कुरा रहा है!” और बूढ़ा पापी उपहास में मुस्कुराया। मुझे लगा कि वह बिस्तर के चारों ओर उछल-कूद करने वाला है; लेकिन अचानक खुद को संभालते हुए, वह घुटनों के बल गिर पड़ा, हाथ ऊपर उठाए और इस बात के लिए धन्यवाद दिया कि

वैध स्वामी और प्राचीन वंश को उनके अधिकार वापस मिल गए हैं।

मैं उस भयानक घटना से स्तब्ध रह गया; और मेरी यादें अनायास ही अतीत की ओर एक गहरे दुख के साथ लौट आईं। लेकिन बेचारा हरेटन, जिसके साथ सबसे ज़्यादा अन्याय हुआ था, वही वास्तव में सबसे ज़्यादा पीड़ित था। वह पूरी रात शव के पास बैठा रहा, फूट-फूटकर रोता रहा। उसने शव का हाथ दबाया, और उस व्यंग्यपूर्ण, क्रूर चेहरे को चूमा जिसे देखने से हर कोई कतराता था; और उस गहरे दुःख के साथ विलाप किया जो एक उदार हृदय से स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है, चाहे वह कितना भी कठोर क्यों न हो।

श्री केनेथ यह बताने में असमंजस में थे कि स्वामी की मृत्यु किस बीमारी से हुई। मैंने यह तथ्य छुपाया कि उन्होंने चार दिनों तक कुछ भी नहीं खाया था, क्योंकि मुझे डर था कि इससे परेशानी हो सकती है, और मुझे पूरा विश्वास है कि उन्होंने जानबूझकर परहेज नहीं किया था: यह उनकी विचित्र बीमारी का परिणाम था, न कि कारण।

हमने उसकी इच्छा के अनुसार, पूरे मोहल्ले में हंगामा मचाते हुए, उसे दफना दिया। अर्नशॉ और मैं, कब्रिस्तान का रखवाला, और ताबूत उठाने के लिए छह आदमी, कुल मिलाकर मौजूद थे। ताबूत को कब्र में उतारने के बाद वे छह आदमी चले गए: हम उसे पूरी तरह ढकने के लिए रुके रहे। हरेटन ने नम आँखों से हरी घास खोदी और उसे खुद भूरी मिट्टी पर बिछाया: इस समय वह मिट्टी बाकी टीलों की तरह चिकनी और हरी-भरी है - और मुझे उम्मीद है कि उसमें दफन व्यक्ति चैन से सो रहा होगा। लेकिन अगर आप देहाती लोगों से पूछेंगे, तो वे बाइबल की कसम खाकर कहेंगे कि वह चलता है: कुछ लोग कहते हैं कि उन्होंने उसे चर्च के पास, मैदान में और यहाँ तक कि इस घर में भी देखा है। आप कहेंगे, ये सब मनगढ़ंत कहानियाँ हैं, और मैं भी यही कहता हूँ। फिर भी रसोई की आग के पास बैठा वह बूढ़ा आदमी कहता है कि उसकी मृत्यु के बाद से हर बरसात की रात को उसने अपने कमरे की खिड़की से दो लोगों को झाँकते हुए देखा है: - और लगभग एक महीने पहले मेरे साथ एक अजीब घटना घटी। एक शाम मैं ग्रेंज जा रहा था - एक अंधेरी शाम, गरजने का खतरा मंडरा रहा था - और, जैसे ही पहाड़ियों के मोड़ पर, मेरी मुलाकात एक छोटे लड़के से हुई जिसके सामने एक भेड़ और दो मेमने थे; वह बहुत जोर से रो रहा था; और मुझे लगा कि मेमने डरपोक थे, और मार्गदर्शन नहीं ले रहे थे।

मैंने पूछा, 'क्या बात है, मेरे प्यारे बच्चे?'

'वहाँ हीथक्लिफ और एक औरत हैं, जो कैद में हैं,' वह रोते हुए बोला, 'और मैं उनके पास से बिल्कुल नहीं गुजर सकता।'

मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया; लेकिन न तो भेड़ें और न ही वह आगे बढ़ रहे थे, इसलिए मैंने उसे नीचे की ओर जाने को कहा। शायद अकेले दलदली भूमि पार करते समय, अपने माता-पिता और साथियों को दोहराते हुए सुनी हुई बेतुकी बातों पर सोचते हुए उसने ये भ्रम पैदा कर लिए थे। फिर भी, मुझे अब अंधेरे में बाहर रहना अच्छा नहीं लगता; और मुझे इस भयानक घर में अकेले रहना भी अच्छा नहीं लगता: मैं कुछ नहीं कर सकती; मुझे खुशी होगी जब वे इसे छोड़कर ग्रेंज में चले जाएंगे।

'तो वे ग्रेंज जा रहे हैं?' मैंने कहा।

'जी हां,' श्रीमती डीन ने उत्तर दिया, 'जैसे ही उनकी शादी हो जाएगी, और वह नए साल के दिन होगी।'

'तो फिर यहाँ कौन रहेगा?'

"क्यों, जोसेफ घर की देखभाल करेगा, और शायद, एक लड़का भी उसके साथ रहेगा। वे रसोई में रहेंगे, और बाकी सब बंद रहेंगे।"

'क्या इसका उपयोग उन भूतों के लिए किया जाता है जो इसमें निवास करना चुनते हैं?' मैंने कहा।

'नहीं, श्रीमान लॉकवुड,' नेली ने सिर हिलाते हुए कहा। 'मेरा मानना है कि मृत आत्माएं शांति में हैं, लेकिन उनके बारे में हल्के-फुल्के ढंग से बात करना उचित नहीं है।'

उसी क्षण बगीचे का द्वार खुल गया; टहलने वाले लोग लौट रहे थे।

मैंने खिड़की से उनकी उपस्थिति देखते हुए बुदबुदाया, 'वे किसी से नहीं डरते। वे मिलकर शैतान और उसकी तमाम सेनाओं का सामना कर लेंगे।'

जैसे ही वे दहलीज पर कदम रखकर रुके और चाँद को आखिरी बार निहारा—या यूँ कहें कि उसकी रोशनी में एक-दूसरे को देखा—मुझे उनसे फिर से भागने की तीव्र इच्छा हुई; और श्रीमती डीन के हाथ में एक स्मृति चिन्ह थमाकर और मेरी बदतमीज़ी पर उनकी आपत्तियों को अनसुना करते हुए, जैसे ही उन्होंने घर का दरवाजा खोला, मैं रसोई से होते हुए गायब हो गया; और इस तरह जोसेफ अपने साथी नौकर की शरारतों के बारे में अपनी राय पर कायम रह जाता, अगर सौभाग्य से उसने मुझे अपने

पैरों पर पड़े सोने के सिक्के की मधुर ध्वनि से न पहचाना होता।

घर लौटते समय मेरा रास्ता चर्च की ओर मुड़ने के कारण लंबा हो गया। जब मैं उसकी दीवारों के नीचे पहुँचा, तो मैंने देखा कि सात महीनों में भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था काफी बढ़ गई थी: कई खिड़कियों में कांच के बिना काले छेद दिखाई दे रहे थे; और छत की सीधी रेखा से परे जगह-जगह स्लेटें निकली हुई थीं, जो आने वाले शरद ऋतु के तूफानों में धीरे-धीरे टूटकर गिर जाएँगी।

मैंने खोजबीन की और जल्द ही दलदली भूमि के बगल वाली ढलान पर तीन समाधियों को खोज निकाला: बीच वाली समाधि धूसर थी और आधी झाड़ियों में दबी हुई थी; एडगर लिंटन की समाधि केवल उसके तल पर उगने वाली घास और काई से ही मेल खाती थी; हीथक्लिफ की समाधि अभी भी नंगी थी।

मैं उस शांत आकाश के नीचे उनके आसपास कुछ देर रुका रहा: झाड़ियों और हरेबेल के बीच पतंगों को फड़फड़ाते हुए देखा, घास के बीच से बहती नरम हवा को सुना, और सोचा कि कोई उस शांत धरती में सो रहे लोगों के लिए अशांत नींद की कल्पना कैसे कर सकता है।

ऐनी ब्रोंटे के उपन्यास

शार्लोट ब्रोंटे द्वारा 1845 में बनाया गया ऐनी का चित्र

एग्नेस ग्रे

यह ऐनी का पहला उपन्यास है, जो पहली बार 1847 में प्रकाशित हुआ और 1850 में इसका दूसरा संस्करण पुनः प्रकाशित हुआ। उपन्यास में इसी नाम की गवर्नेंस की कहानी है, जो कई बुर्जुआ परिवारों में काम करती है। शोध और ऐनी की बहन शार्लोट ब्रोंटे की टिप्पणियों से पता चलता है कि उपन्यास काफी हद तक ऐनी ब्रोंटे के पांच साल तक गवर्नेंस के रूप में बिताए गए अनुभवों पर आधारित है। अपनी बहन शार्लोट के उपन्यास जेन आयर की तरह, यह भी गवर्नेंस की अनिश्चित स्थिति और एक युवा

महिला पर इसके प्रभाव को दर्शाता है। मुख्य पात्र के चयन से ऐनी को महिलाओं और गवर्नेंस के उत्पीड़न और दुर्व्यवहार, अलगाव और सहानुभूति जैसे मुद्दों से निपटने का अवसर मिलता है। एग्नेस ग्रे कुछ बिल्डुंग्सरोमांस की शैलीगत विशेषताओं का अनुकरण भी करती है, जिसमें व्यक्तिगत विकास और परिपक्वता के विचारों का उपयोग किया गया है, लेकिन वास्तव में एक ऐसे चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है जो सद्गुणों में वृद्धि नहीं करती है।

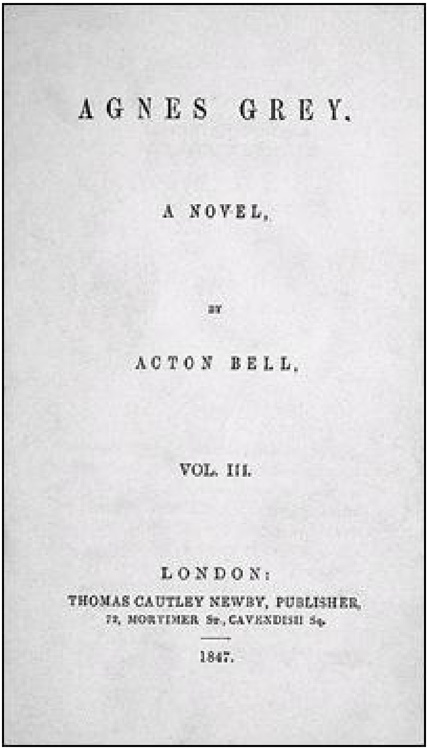

प्रथम संस्करण का शीर्षक पृष्ठ

अंतर्वस्तु

अध्याय I — पादरी का निवास
अध्याय II — शिक्षण कला के पहले पाठ
अध्याय III — कुछ और सबक
अध्याय IV — दादी माँ
अध्याय V — चाचा
अध्याय VI — फिर से पादरी का निवास
अध्याय VII — हॉर्टन लॉज
अध्याय VIII — 'खुले तौर पर सामने आना'
अध्याय IX — गेंद
अध्याय X — चर्च
अध्याय XI — झोपड़ीवासी
अध्याय XII — स्नान
अध्याय XIII — प्रिमरोज़
अध्याय 14 — रेक्टर
अध्याय पंद्रह — पैदल यात्रा
अध्याय सोलह — प्रतिस्थापन
अध्याय सत्रह — स्वीकारोक्तियाँ
अध्याय 18वीं — हर्ष और मातम
अध्याय XIX — पत्र
अध्याय XX — विदाई
अध्याय XXI — विद्यालय
अध्याय XXII — यात्रा
अध्याय XXIII — पार्क
अध्याय XXIV — रेत

अध्याय XXV — निष्कर्ष

अध्याय I — पादरी का निवास

सभी सच्ची ऐतिहासिक कहानियों में शिक्षाप्रद बातें होती हैं; हालांकि, कुछ कहानियों में यह ज्ञान का खजाना ढूंढना मुश्किल होता है, और मिलने पर इतना कम होता है कि सूखा, मुरझाया हुआ बीज अखरोट को तोड़ने की मेहनत के लायक भी नहीं होता। मेरी कहानी के साथ भी ऐसा है या नहीं, इसका निर्णय करना मेरे बस की बात नहीं। कभी-कभी मुझे लगता है कि यह कुछ लोगों के लिए उपयोगी और कुछ के लिए मनोरंजक साबित हो सकती है; लेकिन दुनिया खुद ही इसका फैसला करेगी। अपनी गुमनामी, बीते वर्षों और कुछ काल्पनिक नामों की आड़ में, मैं निडर होकर यह बात कहने से नहीं डरता; और जनता के सामने वह सब कुछ स्पष्ट रूप से रखूंगा जो मैं अपने सबसे करीबी दोस्त को भी नहीं बताऊंगा।

मेरे पिता उत्तरी इंग्लैंड के एक पादरी थे, जिनका सभी परिचित सम्मान करते थे; और अपनी युवावस्था में, वे एक छोटे से पादरी पद और अपनी निजी संपत्ति की संयुक्त आय पर काफी आराम से जीवन व्यतीत करते थे। मेरी माँ, जिन्होंने अपने दोस्तों की इच्छा के विरुद्ध उनसे विवाह किया था, एक जमींदार की पुत्री और दृढ़ निश्चयी महिला थीं। उन्हें यह समझाने का प्रयास व्यर्थ ही किया गया कि यदि वे उस गरीब पादरी की पत्नी बन जाएँगी, तो उन्हें अपनी गाड़ी, अपनी दासी और धन-दौलत के सभी सुख-सुविधाओं को छोड़ना पड़ेगा; जो उनके लिए जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ थीं। गाड़ी और दासी उनके लिए बड़ी सुविधाएँ थीं; लेकिन ईश्वर का धन्यवाद, उनके पास चलने-फिरने के लिए पैर और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हाथ थे। एक आलीशान घर और विशाल मैदान उन्हें तुच्छ नहीं लगते थे; लेकिन

वे दुनिया के किसी भी पुरुष के साथ महल में रहने की बजाय रिचर्ड ग्रे के साथ एक झोपड़ी में रहना पसंद करतीं।

तर्कों का कोई फायदा न देखकर, पिता ने अंततः प्रेमियों से कहा कि वे चाहें तो शादी कर सकते हैं; लेकिन ऐसा करने पर उनकी बेटी अपनी सारी संपत्ति खो देगी। उन्हें उम्मीद थी कि इससे दोनों का प्यार ठंडा पड़ जाएगा; लेकिन वे गलत थे। मेरे पिता मेरी माँ के श्रेष्ठ गुणों को भली-भांति जानते थे और यह समझते थे कि वह स्वयं एक अनमोल संपत्ति थीं: और यदि वह उनके साधारण घर को सजाने के लिए तैयार हो जातीं, तो वे उन्हें किसी भी शर्त पर स्वीकार कर लेते; वहीं मेरी माँ अपने हाथों से मेहनत करना पसंद करतीं, बजाय उस व्यक्ति से अलग होने के, जिसकी खुशी में उनका दिल लगता था और जो दिल और आत्मा से उनके साथ एक हो चुका था। इस प्रकार उनकी संपत्ति एक समझदार बहन के खाते में चली गई, जिसने एक धनी नवाब से शादी कर ली थी; और वह, अपने सभी परिचितों के आश्चर्य और करुणापूर्ण दुःख के बीच, पहाड़ियों के बीच स्थित एक साधारण से गाँव के पादरी के घर में जाकर बस गईं। और फिर भी, इन सब के बावजूद, और मेरी माँ के उच्च मनोबल और मेरे पिता की सनक के बावजूद, मेरा मानना है कि आप पूरे इंग्लैंड में खोजबीन कर लें, तो भी आपको इससे अधिक खुशहाल जोड़ा नहीं मिलेगा।

छह बच्चों में से, मेरी बहन मैरी और मैं ही दो ऐसे थे जो शैशवावस्था और प्रारंभिक बाल्यावस्था के खतरों से बच पाए। मैं, अपनी बहन से पाँच या छह साल छोटा होने के कारण, हमेशा लाडला और परिवार का दुलारा माना जाता था: पिता, माता और बहन, सभी ने मिलकर मुझे खूब बिगाड़ा - मूर्खतापूर्ण लाड़-प्यार से नहीं, जिससे मैं चिड़चिड़ा और अनियंत्रित हो जाऊं, बल्कि निरंतर दयालुता से, जिससे मैं इतना असहाय और आश्रित हो गया - जीवन की चिंताओं और उथल-पुथल का सामना करने के लिए इतना अयोग्य।

मैरी और मेरा पालन-पोषण अत्यंत एकांत में हुआ। मेरी माँ अत्यंत कुशल, ज्ञानवान और काम की शौकीन थीं, इसलिए उन्होंने हमारी शिक्षा का पूरा भार स्वयं उठाया, सिवाय लैटिन के—जिसे हमारे पिता ने हमें पढ़ाने का जिम्मा लिया—इसलिए हम कभी स्कूल भी नहीं गए; और, क्योंकि आस-पड़ोस में कोई सामाजिक परिवेश नहीं था, इसलिए दुनिया से हमारा एकमात्र संपर्क कभी-कभार होने वाली एक भव्य चाय पार्टी तक ही सीमित था, जिसमें आस-पास के प्रमुख किसान और व्यापारी

शामिल होते थे (ताकि पड़ोसियों के साथ मेलजोल न रखने के कारण हमें कलंकित न समझा जाए), और अपने दादाजी के यहाँ वार्षिक यात्रा; जहाँ हम केवल अपने दादाजी, हमारी दयालु दादी, एक अविवाहित चाची और दो-तीन बुजुर्ग महिलाओं और पुरुषों को ही देखते थे। कभी-कभी हमारी माँ हमें अपने युवा दिनों की कहानियाँ और किस्से सुनाकर हमारा मनोरंजन करती थीं, जो हमें बहुत मनोरंजक तो लगते थे, लेकिन अक्सर—कम से कम मुझमें—दुनिया को थोड़ा और देखने की एक गुप्त इच्छा जगा देते थे।

मुझे लगा कि वह बहुत खुश होंगी; पर ऐसा लगता था कि उन्हें बीते समय का कभी पछतावा नहीं था। लेकिन मेरे पिता, जिनका स्वभाव न तो शांत था और न ही हंसमुख, अक्सर अपनी प्यारी पत्नी द्वारा उनके लिए किए गए बलिदानों के बारे में सोचकर खुद को बहुत परेशान करते थे; और अपनी छोटी-सी संपत्ति को बढ़ाने के लिए अंतहीन योजनाएँ बनाते रहते थे, उनकी और हमारी खातिर। मेरी माँ उन्हें हर बार आश्वस्त करती थीं कि वह पूरी तरह संतुष्ट हैं; और अगर वह बच्चों के लिए थोड़ा सा पैसा बचा लें, तो हम सबके पास वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए पर्याप्त धन होगा; लेकिन बचत करना मेरे पिता की खासियत नहीं थी। वह कर्ज में नहीं डूबते थे (कम से कम, मेरी माँ इस बात का पूरा ध्यान रखती थीं कि वह ऐसा न करें), लेकिन जब तक उनके पास पैसा होता था, वह उसे खर्च करना नहीं भूलते थे: उन्हें अपना घर आरामदायक और अपनी पत्नी और बेटियों को अच्छे कपड़े पहनाकर रखना और उनकी अच्छी देखभाल करना पसंद था; और इसके अलावा, वह दानशील स्वभाव के थे, और अपनी सामर्थ्य के अनुसार गरीबों को दान देना पसंद करते थे; या, जैसा कि कुछ लोग सोच सकते हैं, अपनी सामर्थ्य से अधिक भी।

अंततः, एक दयालु मित्र ने उन्हें एक ऐसा उपाय सुझाया जिससे वे अपनी निजी संपत्ति को एक झटके में दोगुना कर सकते थे; और भविष्य में इसे और भी अधिक बढ़ा सकते थे। यह मित्र एक व्यापारी था, उद्यमशील स्वभाव और निर्विवाद प्रतिभा का धनी, जो पूंजी की कमी के कारण अपने व्यापारिक कार्यों में कुछ तंगी का सामना कर रहा था; लेकिन उसने उदारतापूर्वक मेरे पिता को अपने लाभ का उचित हिस्सा देने का प्रस्ताव रखा, बशर्ते कि वे उसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुछ दे दें; और उसने विश्वासपूर्वक आश्वासन दिया कि मेरे पिता जो भी राशि उसे देंगे, उस पर उसे शत प्रतिशत लाभ होगा। छोटी पैतृक संपत्ति शीघ्र ही बेच दी गई, और उसकी पूरी कीमत

उस मित्र व्यापारी के हाथों में जमा कर दी गई; जिसने तुरंत अपना माल जहाज पर चढ़ाया और अपनी यात्रा की तैयारी शुरू कर दी।

मेरे पिता बहुत प्रसन्न थे, और हम सब भी, अपने उज्ज्वल भविष्य को देखकर बहुत खुश थे। यह सच है कि फिलहाल हम पादरी के पद से मिलने वाली सीमित आमदनी पर ही निर्भर थे; लेकिन मेरे पिता को लगता था कि खर्च को उसी तक सीमित रखने की कोई आवश्यकता नहीं है; इसलिए, मिस्टर जैक्सन, स्मिथ और हॉब्सन के यहाँ नियमित बिलों के साथ, हम पहले से भी अधिक आराम से गुजारा कर रहे थे: हालाँकि मेरी माँ का कहना था कि हमें खर्च पर नियंत्रण रखना चाहिए, क्योंकि धनवान बनने की हमारी संभावनाएँ अनिश्चित थीं; और अगर मेरे पिता सब कुछ उनके भरोसे छोड़ दें, तो उन्हें कभी भी पैसों की कमी महसूस नहीं होगी: लेकिन वे इस बार अपनी बात पर अड़े रहे।

मैंने और मैरी ने आग के पास बैठकर काम करते हुए, या हरे-भरे मैदानों में घूमते हुए, या बगीचे के इकलौते बड़े पेड़ (रोते हुए बर्च के पेड़) के नीचे बैठकर कितने सुखद पल बिताए हैं। हम आपस में और अपने माता-पिता से भविष्य की खुशियों के बारे में बातें करते थे, कि हम क्या करेंगे, क्या देखेंगे और क्या हासिल करेंगे; हमारी इस शानदार इमारत की नींव उस धन-दौलत के सिवा कुछ नहीं थी जो उस नेक व्यापारी के सफल निवेश से हम पर बरसने की उम्मीद थी। हमारे पिता भी लगभग हमारी ही तरह थे; बस फर्क इतना था कि वे इतने गंभीर होने का दिखावा नहीं करते थे: वे अपनी उज्ज्वल आशाओं और आशावादी उम्मीदों को मज़ाक और चुटकुलों में व्यक्त करते थे, जो मुझे हमेशा बेहद हास्यपूर्ण और सुखद लगते थे। हमारी माँ उन्हें इतना आशावान और खुश देखकर खुशी से हँसती थीं; लेकिन फिर भी उन्हें डर था कि कहीं वे इस मामले को लेकर बहुत ज्यादा चिंतित तो नहीं हैं; और एक बार मैंने उन्हें कमरे से निकलते हुए फुसफुसाते हुए सुना, 'भगवान करे उन्हें निराशा न हो! मुझे नहीं पता कि वे इसे कैसे सहन करेंगे।'

वह बेहद निराश था; और बहुत दुखी भी। हम सबके लिए यह खबर किसी बिजली के झटके जैसी थी कि जिस जहाज में हमारा खजाना था, वह टूट गया था और अपने सारे सामान, चालक दल के कई सदस्यों और उस दुर्भाग्यशाली व्यापारी के साथ समुद्र में डूब गया था। मुझे उसके लिए बहुत दुख हुआ; मुझे अपने सारे हवाई किले ढह जाने का बहुत दुख हुआ: लेकिन जवानी के जोश के साथ, मैं जल्द ही इस सदमे

से उबर गया।

धन-दौलत का आकर्षण तो था, लेकिन मुझ जैसी अनुभवहीन लड़की के लिए गरीबी का कोई डर नहीं था। सच कहूँ तो, विपत्ति में फँसने और अपने दम पर गुज़ारा करने के विचार में एक अलग ही रोमांच था। काश पापा, मम्मी और मैरी भी मेरी ही तरह सोचते; तब बीते समय की विपत्तियों पर शोक मनाने के बजाय हम सब मिलकर उन्हें सुधारने के काम में जुट जाते; और जितनी कठिनाइयाँ होतीं, वर्तमान अभाव जितना कठिन होता, उतना ही अधिक उत्साह से हम वर्तमान अभावों को सहते और उनसे लड़ने का साहस दिखाते।

मैरी ने शोक तो नहीं जताया, लेकिन वह लगातार उस दुर्भाग्य के बारे में सोचती रही और गहरे अवसाद में डूब गई, जिससे मेरे किसी भी प्रयास से उसे बाहर निकालना असंभव था। मैं उसे इस मामले के सकारात्मक पहलू को समझने के लिए प्रेरित नहीं कर सका, जैसा कि मैं समझता था। वास्तव में, मुझे बचकानापन या मूर्खतापूर्ण असंवेदनशीलता का आरोप लगने का इतना डर था कि मैंने अपने अधिकांश सकारात्मक विचारों और उत्साहवर्धक धारणाओं को अपने तक ही सीमित रखा; क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि उनकी सराहना नहीं की जा सकती।

मेरी माँ केवल पिता को सांत्वना देने, कर्ज चुकाने और हर संभव तरीके से खर्च कम करने के बारे में सोचती थीं; लेकिन पिता इस विपत्ति से पूरी तरह टूट चुके थे: उनका स्वास्थ्य, शक्ति और मनोबल सब कुछ धराशायी हो गया और वे कभी पूरी तरह से उबर नहीं पाए। माँ ने उनकी भक्ति, साहस और अपने तथा हमारे प्रति उनके स्नेह का हवाला देकर उन्हें दिलासा देने का व्यर्थ प्रयास किया। यही स्नेह उनके लिए सबसे बड़ा कष्ट था: हमारे लिए ही उन्होंने अपनी संपत्ति बढ़ाने की इतनी तीव्र इच्छा रखी थी - हमारे हित ने ही उनकी आशाओं को इतनी चमक दी थी और उनके वर्तमान संकट में इतनी कड़वाहट भर दी थी। अब वे माँ की सलाह न मानने के पश्चाताप से व्याकुल थे; जिससे कम से कम वे कर्ज के अतिरिक्त बोझ से बच जाते - वे व्यर्थ ही खुद को कोसते थे कि उन्होंने माँ को उनके पूर्व के सम्मान, आराम और विलासिता से निकालकर गरीबी की चिंताओं और कठिनाइयों में उनके साथ काम करने के लिए क्यों लाया। उस शानदार, अत्यंत कुशल महिला को, जिसे कभी इतना प्यार और सम्मान मिलता था, एक सक्रिय गृहिणी के रूप में बदलते देखना, जिसके हाथ और दिमाग लगातार घरेलू कामों और घर के कामकाज में लगे रहते थे, उसकी आत्मा को क्षोभ

और पीड़ा पहुँचा रहा था। जिस तत्परता से वह इन कर्तव्यों का निर्वाह करती थी, जिस प्रसन्नता से वह अपनी कठिनाइयों को सहती थी, और जिस दयालुता से वह उसे जरा सा भी दोष नहीं देती थी, उन सभी को इस धूर्त आत्म-यातनादाता ने अपने कष्टों को और बढ़ाने के लिए विकृत कर दिया था। इस प्रकार मन ने शरीर पर अपना प्रभुत्व जमा लिया, तंत्रिका तंत्र को अव्यवस्थित कर दिया, और बदले में तंत्रिका तंत्र ने मन की परेशानियों को बढ़ा दिया, यहाँ तक कि क्रिया और प्रतिक्रिया के कारण उसका स्वास्थ्य गंभीर रूप से बिगड़ गया; और हममें से कोई भी उसे यह विश्वास नहीं दिला सका कि हमारी स्थिति उतनी निराशाजनक नहीं थी जितनी उसकी विकृत कल्पना ने दर्शा रखी थी।

उपयोगी पोनी फैटन को बेच दिया गया, साथ ही उस हट्टे-कट्टे, स्वस्थ टट्टू को भी - हमारा वह पुराना पसंदीदा टट्टू जिसे हमने पूरी तरह से शांति से अपने अंतिम दिन बिताने देने और कभी भी हमारे हाथों से न जाने देने का निश्चय किया था; छोटा कोचहाउस और अस्तबल किराए पर दे दिया गया; नौकर लड़के और दो नौकरानियों में से अधिक कुशल (क्योंकि वह अधिक खर्चीली थी) को निकाल दिया गया। हमारे कपड़ों की मरम्मत, तह और रस्सा इस हद तक किया गया कि वे शालीन दिखें; हमारा भोजन, जो हमेशा सादा होता था, अब अभूतपूर्व रूप से सरल कर दिया गया - सिवाय मेरे पिता के पसंदीदा व्यंजनों के; हमारे कोयले और मोमबत्तियों का बड़े ही कम उपयोग किया गया - दो मोमबत्तियों में से एक ही बची, और उसका भी बहुत कम उपयोग किया गया; आधे खाली अंगीठी में कोयले को बड़ी सावधानी से रखा गया: खासकर जब मेरे पिता अपने पैरिश के कामों के लिए बाहर होते थे, या बीमारी के कारण बिस्तर पर होते थे - तब हम अपने पैर फेंडर पर रखकर बैठते थे, बुझते हुए अंगारों को समय-समय पर आपस में रगड़ते थे, और कभी-कभी उन्हें जलता रखने के लिए थोड़ी सी धूल और कोयले के टुकड़े छिड़कते थे। हमारे कालीनों की बात करें तो, समय के साथ वे घिस-घिस कर घिस गए थे और हमारे कपड़ों से भी ज़्यादा उनकी मरम्मत और पैबंद लगाने पड़े थे। माली का खर्च बचाने के लिए, मैरी और मैंने बगीचे की देखभाल का जिम्मा उठाया; और खाना पकाने और घर के सारे काम जो एक नौकरानी के बस की बात नहीं थे, मेरी माँ और बहन करती थीं, कभी-कभार मैं भी थोड़ी-बहुत मदद करती थी: बस थोड़ी-बहुत, क्योंकि मैं खुद को औरत मानती थी, पर उनकी नज़र में मैं अभी भी बच्ची ही थी; और मेरी माँ, ज़्यादातर सक्रिय और ज़िम्मेदार

महिलाओं की तरह, उतनी सक्रिय बेटियाँ नहीं थीं: इसका कारण यह था कि स्वयं इतनी चतुर और मेहनती होने के कारण, उन्होंने कभी भी अपने कामों को किसी और को सौंपने का मन नहीं बनाया, बल्कि इसके विपरीत, वे दूसरों के लिए भी उतनी ही तत्पर रहती थीं जितना अपने लिए; और चाहे कोई भी काम हो, उन्हें लगता था कि उसे उनसे बेहतर कोई नहीं कर सकता: इसलिए जब भी मैं उनकी मदद करने की पेशकश करती, मुझे ऐसा जवाब मिलता था - 'नहीं, प्यारी, तुम नहीं कर सकती - यहाँ तुम्हारे बस की कोई बात नहीं है।' जाओ और अपनी बहन की मदद करो, या उसे अपने साथ टहलने के लिए मनाओ—उसे समझाओ कि उसे इतना ज्यादा नहीं बैठना चाहिए, और घर में इतना ज्यादा समय नहीं बिताना चाहिए—नहीं तो वह दुबली-पतली और उदास दिख सकती है।'

'मैरी, मम्मी कहती हैं कि मुझे तुम्हारी मदद करनी है; या तुम्हें मेरे साथ टहलने ले जाना है; वह कहती हैं कि अगर तुम घर में लगातार बैठी रहोगी तो तुम दुबली-पतली और उदास दिखने लगोगी।'

'तुम मेरी मदद नहीं कर सकतीं, एग्नेस; और मैं तुम्हारे साथ बाहर नहीं जा सकता — मुझे बहुत काम करना है।'

‘तो मुझे आपकी मदद करने दीजिए।’

'बिल्कुल नहीं, प्यारे बच्चे। जाओ और अपने संगीत का अभ्यास करो, या बिल्ली के बच्चे के साथ खेलो।'

सिलाई का काम हमेशा भरपूर रहता था; पर मुझे एक भी कपड़ा काटना नहीं सिखाया गया था, और साधारण हेमिंग और सिलाई के अलावा, मुझे उस क्षेत्र में भी कुछ खास नहीं आता था; क्योंकि वे दोनों कहते थे कि मेरे लिए काम तैयार करने की बजाय खुद करना कहीं ज्यादा आसान है: और इसके अलावा, वे मुझे पढ़ाई करते या अपना मनोरंजन करते देखना ज्यादा पसंद करते थे — मेरे लिए किसी गंभीर महिला की तरह काम पर झुके रहने का समय तब तक काफी था, जब तक मेरी प्यारी छोटी बिल्ली एक स्थिर बूढ़ी बिल्ली नहीं बन गई थी। ऐसी परिस्थितियों में, हालांकि मैं बिल्ली के बच्चे से ज्यादा उपयोगी नहीं थी, फिर भी मेरी आलस्य पूरी तरह से निराधार नहीं थी।

हमारी तमाम परेशानियों के बावजूद, मैंने अपनी माँ को पैसों की कमी के बारे में कभी शिकायत करते नहीं सुना। जैसे-जैसे गर्मी का मौसम करीब आ रहा था, उन्होंने

मैरी और मुझसे कहा, 'तुम्हारे पापा के लिए कुछ हफ़्ते किसी जल-स्थल पर बिताना कितना अच्छा होगा। मुझे पूरा यकीन है कि समुद्र की ताज़ी हवा और माहौल में बदलाव उनके लिए बहुत फ़ायदेमंद होगा। लेकिन देखो, हमारे पास पैसे नहीं हैं,' उन्होंने आह भरते हुए कहा। हम दोनों की दिली इच्छा थी कि ऐसा हो जाए, और इस बात का बहुत अफ़सोस था कि ऐसा नहीं हो सकता। 'कोई बात नहीं!' उन्होंने कहा, 'शिकायत करने का कोई फ़ायदा नहीं। शायद इस योजना को आगे बढ़ाने के लिए कुछ किया जा सके। मैरी, तुम बहुत सुंदर चित्रकार हो। क्या तुम अपनी बेहतरीन शैली में कुछ और चित्र बनाओगी, उन्हें फ़्रेम करवाओगी, साथ ही अपने पहले से बनाए हुए जलरंग चित्रों को भी, और उन्हें किसी उदार चित्रकार को बेचने की कोशिश करोगी, जो उनकी खूबियों को पहचान सके?'

'मम्मी, अगर आपको लगता है कि इन्हें बेचा जा सकता है, और वो भी अच्छी कीमत पर, तो मुझे बहुत खुशी होगी।'

“लेकिन कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं है, मेरी प्यारी: क्या तुम चित्र उपलब्ध करा सकती हो, और मैं खरीदार ढूंढने की कोशिश करूंगा।”

मैंने कहा, 'काश मैं कुछ कर पाता।'

'एग्नेस, तुम! कौन जाने? तुम तो काफी अच्छी चित्रकारी भी करती हो: अगर तुम अपने विषय के लिए कोई सरल सा चित्र चुन लो, तो मुझे पूरा यकीन है कि तुम कुछ ऐसा बना पाओगी जिसे प्रदर्शित करने पर हम सभी को गर्व होगा।'

लेकिन मेरे दिमाग में एक और योजना है, माँ, और यह बहुत पहले से है, बस मैं इसका जिक्र करना पसंद नहीं करती थी।'

'जी हां! कृपया हमें बताएं कि यह क्या है।'

मैं एक गवर्नेंस बनना चाहूंगी।

मेरी माँ आश्चर्य से बोलीं और हँस पड़ीं। मेरी बहन ने हैरानी से अपना काम छोड़ दिया और बोली, 'तुम एक गवर्नेंस बनोगी, एग्नेस! तुम किस बात का सपना देख रही हो?'

‘अच्छा! मुझे इसमें कुछ भी असाधारण नहीं लगता। मैं बड़ी लड़कियों को पढ़ाने का दावा तो नहीं करती; लेकिन मैं छोटी बच्चियों को ज़रूर पढ़ा सकती हूँ: और मुझे यह बहुत अच्छा लगेगा: मुझे बच्चे बहुत प्यारे हैं। मुझे पढ़ाने दीजिए, माँ!’

लेकिन, मेरी प्रियतमा, तुमने अभी तक अपना ख्याल रखना नहीं सीखा है: और

छोटे बच्चों को संभालने के लिए बड़ों की तुलना में अधिक विवेक और अनुभव की आवश्यकता होती है।

लेकिन, माँ, मैं अठारह साल से ऊपर हूँ, और अपना और दूसरों का ख्याल रखने में पूरी तरह सक्षम हूँ। आप मेरी बुद्धिमत्ता और विवेक का आधा भी नहीं जानतीं, क्योंकि मैंने कभी किसी मुश्किल का सामना नहीं किया है।

'ज़रा सोचो,' मैरी ने कहा, 'अगर तुम अजनबियों से भरे घर में होती, मेरे या माँ के बिना, जो तुम्हारे लिए बोलें और काम करें—और तुम्हारे अलावा ढेर सारे बच्चों की देखभाल करनी होती; और सलाह के लिए कोई नहीं होता, तो तुम क्या करती? तुम्हें तो यह भी नहीं पता होता कि कौन से कपड़े पहनने हैं।'

'तुम्हें लगता है कि क्योंकि मैं हमेशा तुम्हारी आज्ञा का पालन करता हूँ, इसलिए मुझमें खुद का कोई विवेक नहीं है: लेकिन बस मुझे एक बार आजमा कर देखो - मैं बस यही चाहता हूँ - और तुम देखोगे कि मैं क्या कर सकता हूँ।'

उसी समय मेरे पिता अंदर आए और उन्हें हमारी बातचीत का विषय समझाया गया।

'अरे वाह, मेरी प्यारी एग्नेस एक गवर्नेस बनेगी!' वह चिल्लाया, और अपनी निराशा के बावजूद, वह इस विचार पर हँस पड़ा।

'जी पापा, इसके खिलाफ कुछ मत कहिए: मुझे यह बहुत पसंद आएगा; और मुझे पूरा यकीन है कि मैं इसे बहुत अच्छे से संभाल लूंगी।'

लेकिन, मेरी जान, हम तुम्हें नहीं छोड़ सकते।' और उसकी आँखों में एक आँसू चमक उठा, उसने आगे कहा— 'नहीं, नहीं! हम चाहे कितने भी पीड़ित हों, अभी तक ऐसी स्थिति नहीं आई है।'

'अरे नहीं!' मेरी माँ ने कहा। 'ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं है; यह तो बस उसकी अपनी मनमानी है। इसलिए चुप रहो, शरारती बच्ची; क्योंकि भले ही तुम हमें छोड़कर जाने को इतनी उत्सुक हो, तुम अच्छी तरह जानती हो कि हम तुमसे अलग नहीं हो सकते।'

उस दिन और उसके बाद कई दिनों तक मैं चुप रही; लेकिन फिर भी मैंने अपनी प्यारी योजना को पूरी तरह नहीं छोड़ा। मैरी ने अपना ड्राइंग का सामान लिया और लगन से काम में जुट गई। मैंने भी अपना सामान लिया; लेकिन ड्राइंग करते हुए मैं दूसरी बातों के बारे में सोच रही थी। एक गवर्नेस बनना कितना सुखद होगा! दुनिया में

जाना; एक नए जीवन में प्रवेश करना; अपने लिए काम करना; अपनी अप्रयुक्त प्रतिभाओं का उपयोग करना; अपनी अनजानी क्षमताओं को आजमाना; अपना भरण-पोषण खुद कमाना, और अपने माता-पिता और बहन को सहारा और मदद देना, साथ ही उन्हें मेरे खाने-पीने के खर्च से मुक्त करना; पापा को दिखाना कि उनकी नन्ही एग्नेस क्या कर सकती है; मम्मी और मैरी को यह विश्वास दिलाना कि मैं उतनी असहाय और नासमझ नहीं हूँ जितना वे समझते हैं। और फिर, बच्चों की देखभाल और शिक्षा का जिम्मा मिलना कितना प्यारा होगा! दूसरे चाहे कुछ भी कहें, मुझे लगता था कि मैं इस काम के लिए पूरी तरह सक्षम हूँ: बचपन में मेरे अपने विचारों की स्पष्ट स्मृति सबसे अनुभवी सलाहकार के निर्देशों से भी अधिक विश्वसनीय मार्गदर्शक होगी। मुझे बस अपने नन्हे विद्यार्थियों से हटकर उनकी उम्र में खुद पर ध्यान देना था, और मैं तुरंत जान जाता कि उनका विश्वास और स्नेह कैसे जीता जाए; गलती करने वालों के पश्चाताप को कैसे जगाया जाए; डरपोक को कैसे प्रोत्साहित किया जाए और दुखी को कैसे सांत्वना दी जाए; सद्गुण को व्यवहारिक, शिक्षा को वांछनीय और धर्म को सुंदर और बोधगम्य कैसे बनाया जाए।

— कितना आनंददायक कार्य! युवा विचार को शूटिंग करना सिखाना!

कोमल पौधों को प्रशिक्षित करने और दिन-प्रतिदिन उनकी कलियों को खिलते हुए देखने के लिए!

कई प्रलोभनों से प्रभावित होकर, मैंने फिर भी प्रयास जारी रखने का निश्चय किया; हालाँकि माँ को नाराज़ करने या पिता की भावनाओं को ठेस पहुँचाने के डर से मैं कई दिनों तक इस विषय पर दोबारा बात नहीं कर पाई। अंततः, मैंने फिर से अकेले में माँ से इस बारे में बात की; और बड़ी मुश्किल से उन्हें अपने प्रयासों में मेरी मदद करने का वादा लेने के लिए मना लिया। इसके बाद पिता की अनिच्छा से सहमति मिली, और फिर, हालाँकि मैरी अब भी अपनी असहमति जताती रही, मेरी प्यारी, दयालु माँ ने मेरे लिए नौकरी की तलाश शुरू कर दी। उन्होंने पिता के रिश्तेदारों को पत्र लिखे और अखबारों में विज्ञापन देखे — अपने रिश्तेदारों से तो उन्होंने बहुत पहले ही संपर्क तोड़ दिया था: शादी के बाद से उनका एकमात्र संपर्क कभी-कभार पत्रों के माध्यम से ही रहा था, और इस तरह के मामले में वे कभी भी उनसे संपर्क नहीं करतीं। लेकिन मेरे माता-पिता इतने लंबे समय से और पूरी तरह से दुनिया से अलग-थलग रहे थे कि उपयुक्त नौकरी मिलने में कई सप्ताह बीत गए। अंततः, मेरी अपार प्रसन्नता के साथ,

यह निर्णय लिया गया कि मुझे श्रीमती ब्लूमफील्ड के युवा परिवार की देखभाल का जिम्मा सौंपा जाएगा; जिन्हें मेरी दयालु और संस्कारी चाची ग्रे अपने युवावस्था में जानती थीं और एक बहुत ही नेक महिला बताती थीं। उनके पति एक सेवानिवृत्त व्यापारी थे, जिन्होंने काफी धन-संपत्ति अर्जित कर ली थी; लेकिन वे अपने बच्चों की शिक्षिका को पच्चीस पाउंड से अधिक वेतन देने के लिए राजी नहीं हुए। हालाँकि, मुझे यह पद स्वीकार करने में खुशी हुई, क्योंकि मेरे माता-पिता इसे बेहतर योजना मानते थे।

लेकिन तैयारियों में अभी कुछ और सप्ताह बाकी थे। वे सप्ताह मुझे कितने लंबे और उबाऊ लग रहे थे! फिर भी वे ज्यादातर खुशियों से भरे थे - उज्ज्वल आशाओं और प्रबल अपेक्षाओं से भरपूर। मुझे अपने नए कपड़े सिलवाने और बाद में अपने बक्सों की पैकिंग में मदद करने में कितना विशेष आनंद आया! लेकिन इस काम में थोड़ी कड़वाहट भी मिली हुई थी; और जब यह सब हो गया - जब कल मेरे जाने की सारी तैयारी हो गई और घर पर आखिरी रात करीब आ रही थी - अचानक मेरे दिल में एक पीड़ा उमड़ पड़ी। मेरे प्यारे दोस्त इतने उदास दिख रहे थे और इतनी दयालुता से बातें कर रहे थे कि मैं अपनी आँखों से आँसू बहने से मुश्किल से रोक पा रही थी: लेकिन फिर भी मैंने खुश रहने का दिखावा किया। मैंने मैरी के साथ मैदानों में आखिरी सैर की थी, बगीचे में और घर के चारों ओर आखिरी बार टहली थी; मैंने उसके साथ अपने पालतू कबूतरों को आखिरी बार दाना खिलाया था - वे प्यारे जीव जिन्हें हमने अपने हाथों से खाना चुगने के लिए पालतू बना लिया था: जब वे मेरी गोद में सिमट गए थे, तब मैंने उनकी रेशमी पीठों को अंतिम विदाई का स्पर्श दिया था। मैंने अपने प्यारे, बर्फ़ जैसे सफ़ेद पंखों वाले पक्षियों के जोड़े को प्यार से चूमा था; मैंने अपने पुराने परिचित पियानो पर अपनी आखिरी धुन बजाई थी, और पापा के लिए अपना आखिरी गीत गाया था: उम्मीद है कि यह आखिरी नहीं था, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि यह बहुत लंबे समय के लिए आखिरी था। और शायद, जब मैं ये सब फिर से करूँगी तो भावनाएँ अलग होंगी: परिस्थितियाँ बदल सकती हैं, और यह घर शायद फिर कभी मेरा स्थायी घर न बन पाए। मेरी प्यारी छोटी दोस्त, बिल्ली का बच्चा, निश्चित रूप से बदल गया होगा: वह पहले से ही एक सुंदर बिल्ली बन रही थी; और जब मैं क्रिसमस पर जल्दबाजी में मिलने भी लौटूँगी, तो शायद वह अपने साथी और अपनी शरारतों को भूल चुकी होगी। मैंने उसके साथ आखिरी बार खेला था; और जब

मैंने उसकी कोमल चमकदार फर को सहलाया, जब वह मेरी गोद में सो रही थी, तो मेरे अंदर एक उदासी थी जिसे मैं आसानी से छिपा नहीं सकती थी। फिर सोने के समय, जब मैं मैरी के साथ अपने शांत छोटे से कमरे में गया, जहाँ मेरी अलमारियाँ पहले से ही खाली थीं और किताबों की अलमारी में मेरा हिस्सा भी खाली था — और जहाँ अब उसे अकेले, उदास एकांत में सोना था, जैसा कि उसने कहा था — मेरा दिल पहले से कहीं ज़्यादा उदास हो गया: मुझे लगा जैसे उसे छोड़कर जाने का ज़िद करना स्वार्थी और गलत था; और जब मैं एक बार फिर अपने छोटे से बिस्तर के पास घुटने टेककर बैठा, तो मैंने पहले से कहीं ज़्यादा श्रद्धा से मैरी और अपने माता-पिता के लिए आशीर्वाद माँगा। अपनी भावनाओं को छिपाने के लिए, मैंने अपना चेहरा अपने हाथों में छुपा लिया, और वे तुरंत आँसुओं से भीग गए। उठकर मैंने देखा कि वह भी रो रही थी: लेकिन हम दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा; और चुपचाप हम दोनों सो गए, इस एहसास से और करीब आते गए कि हमें इतनी जल्दी अलग होना है।

लेकिन सुबह उम्मीद और हौसले को फिर से जगाने वाली थी। मुझे जल्दी निकलना था; ताकि मुझे ले जाने वाला वाहन (गांव के कपड़े, किराने और चाय विक्रेता श्री स्मिथ से किराए पर ली गई एक बग्घी) उसी दिन वापस आ सके। मैं उठी, नहाई, कपड़े पहने, जल्दी से नाश्ता किया, अपने पिता, माता और बहन के प्यार भरे आलिंगन को पाया, बिल्ली को चूमा - नौकरानी सैली के बड़े आश्चर्य के बीच - उससे हाथ मिलाया, बग्घी पर बैठी, अपना चेहरा घूंघट से ढक लिया, और फिर, लेकिन तभी, फूट-फूट कर रोने लगी। बग्घी आगे बढ़ गई; मैंने पीछे मुड़कर देखा; मेरी प्यारी माँ और बहन अभी भी दरवाजे पर खड़ी थीं, मुझे देख रही थीं और हाथ हिलाकर विदाई दे रही थीं। मैंने भी उन्हें अभिवादन किया और दिल से भगवान से उनके लिए आशीर्वाद की प्रार्थना की: हम पहाड़ी से नीचे उतरे, और मैं उन्हें फिर कभी नहीं देख सकी।

'मिस एग्नेस, आपके लिए आज सुबह काफी ठंडी है,' स्मिथ ने कहा; 'और अंधेरा भी है; लेकिन हम बारिश शुरू होने से पहले उस जगह पर पहुंच जाएंगे।'

'हां, मुझे उम्मीद है,' मैंने यथासंभव शांत भाव से उत्तर दिया।

'कल रात भी बढ़िया खाना मिला।'

'हाँ।'

लेकिन ये ठंडी हवा चलेगी, इसे दूर रखो।

'शायद ऐसा होगा।'

हमारी बातचीत यहीं समाप्त हुई। हमने घाटी पार की और सामने वाली पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ रहे थे, मैंने फिर पीछे मुड़कर देखा; वहाँ गाँव का शिखर था, और उसके पीछे पुराना धूसर रंग का पादरी का घर, धूप की एक तिरछी किरण में नहाया हुआ था—वह किरण तो फीकी थी, लेकिन गाँव और आसपास की पहाड़ियाँ घने अंधेरे में डूबी हुई थीं, और मैंने उस भटकती हुई किरण को अपने घर के लिए शुभ संकेत माना। मैंने हाथ जोड़कर वहाँ के निवासियों के लिए आशीर्वाद की प्रार्थना की और जल्दी से मुँह फेर लिया; क्योंकि मैंने देखा कि धूप ढल रही थी; और मैंने सावधानी से दोबारा देखने से परहेज किया, कहीं ऐसा न हो कि मैं उसे बाकी परिदृश्य की तरह गहरे अंधेरे में डूबा हुआ देख लूँ।

अध्याय II — शिक्षण कला के पहले पाठ

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, मेरा उत्साह फिर से जागृत हो गया और मैं प्रसन्नतापूर्वक उस नए जीवन के चिंतन में लीन हो गया जिसमें मैं प्रवेश कर रहा था। यद्यपि सितंबर का मध्य अभी बीता ही था, फिर भी घने बादल और तेज़ उत्तर-पूर्वी हवा ने मिलकर दिन को बेहद ठंडा और उदास बना दिया था; और यात्रा बहुत लंबी प्रतीत हो रही थी, क्योंकि जैसा कि स्मिथ ने कहा था, सड़कें 'बहुत ऊबड़-खाबड़' थीं; और निश्चित रूप से, उसका घोड़ा भी बहुत भारी था: वह पहाड़ियों पर रेंगता हुआ चढ़ता था, और धीरे-धीरे नीचे उतरता था, और केवल वहीं सरपट दौड़ते समय अपने शरीर को हिलाता था जहाँ सड़क बिल्कुल समतल या बहुत हल्की ढलान वाली होती थी, जो उन ऊबड़-खाबड़ क्षेत्रों में शायद ही कभी होता था; इसलिए हमें अपने गंतव्य तक पहुँचने में लगभग एक बज गया। फिर भी, आखिरकार, जब हम ऊंचे लोहे के द्वार से अंदर दाखिल हुए, जब हम दोनों ओर हरे-भरे लॉन से घिरी, युवा पेड़ों से सजी,

चिकनी, समतल सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़े और मशरूम जैसे चिनार के पेड़ों के बीच खड़ी वेलवुड की नई लेकिन भव्य हवेली के पास पहुँचे, तो मेरा दिल बैठ गया और मैंने चाहा कि वह एक-दो मील और दूर होती। जीवन में पहली बार मुझे अकेले खड़ा होना था: अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था। मुझे उस घर में प्रवेश करना था और उसके अजनबी निवासियों के बीच अपना परिचय देना था। लेकिन यह कैसे किया जा सकता था? सच है, मैं लगभग उन्नीस साल की थी; लेकिन, अपने एकांत जीवन और अपनी माँ और बहन की सुरक्षात्मक देखभाल के कारण, मैं अच्छी तरह जानती थी कि पंद्रह या उससे कम उम्र की कई लड़कियाँ मुझसे कहीं अधिक स्त्रीत्वपूर्ण व्यवहार, सहजता और आत्म-नियंत्रण से संपन्न थीं। फिर भी, अगर श्रीमती ब्लूमफील्ड एक दयालु, मातृत्वपूर्ण महिला होतीं, तो शायद मैं वहाँ अच्छा कर पाती; और बच्चों के साथ, बेशक, मैं जल्द ही सहज हो जाऊंगी - और श्री ब्लूमफील्ड के साथ, मुझे उम्मीद है, मेरा बहुत कम वास्ता पड़ेगा।

'शांत रहो, शांत रहो, चाहे कुछ भी हो जाए,' मैंने मन ही मन कहा; और सचमुच मैंने इस संकल्प को इतनी अच्छी तरह निभाया, और अपने मन को शांत करने और दिल की बेचैनी को दबाने में इतना मशगूल था कि जब मुझे हॉल में प्रवेश मिला और श्रीमती ब्लूमफील्ड के सामने पेश किया गया, तो मैं उनकी विनम्र अभिवादन का जवाब देना लगभग भूल ही गया; और बाद में मुझे एहसास हुआ कि मैंने जो कुछ थोड़ा-बहुत कहा, वह किसी अधमरे या अधनी नींद में बोले गए स्वर में था। बाद में सोचने पर मुझे पता चला कि वह महिला भी कुछ हद तक रूखी थी। वह लंबी, दुबली-पतली, गरिमामयी महिला थीं, जिनके घने काले बाल, ठंडी धूसर आँखें और बेहद पीला रंग था।

लेकिन उन्होंने बड़ी विनम्रता से मुझे मेरा कमरा दिखाया और मुझे थोड़ा आराम करने के लिए वहीं छोड़ दिया। शीशे में अपना चेहरा देखकर मैं थोड़ा निराश हुआ: ठंडी हवा से मेरे हाथ फूल गए थे और लाल हो गए थे, बाल उलझ गए थे और चेहरा हल्का बैंगनी हो गया था; इसके अलावा मेरा कॉलर बुरी तरह सिकुड़ा हुआ था, मेरी फ्रॉक पर कीचड़ लगा था, मेरे पैरों में नए मोटे जूते थे, और चूंकि अलमारी ऊपर नहीं लाई गई थी, इसलिए कोई उपाय नहीं था; इसलिए मैंने जैसे-तैसे अपने बालों को संवारा और बार-बार अपने अड़ियल कॉलर को झटका दिया, और बड़बड़ाते हुए सीढ़ियों की दो मंजिलें नीचे उतरा; और बड़ी मुश्किल से उस कमरे में पहुँचा जहाँ श्रीमती ब्लूमफील्ड

मेरा इंतजार कर रही थीं।

वह मुझे भोजन कक्ष में ले गई, जहाँ परिवार का दोपहर का भोजन लगा हुआ था। मेरे सामने कुछ गोमांस के टुकड़े और अधपके आलू रखे गए; और जब मैं इन्हें खा रहा था, वह मेरे सामने बैठी मुझे देख रही थी (जैसा कि मुझे लगा) और बातचीत जारी रखने की कोशिश कर रही थी - जिसमें मुख्य रूप से नीरस औपचारिकता के साथ कही गई सामान्य टिप्पणियों की एक श्रृंखला शामिल थी: लेकिन यह शायद उसकी गलती से ज़्यादा मेरी गलती थी, क्योंकि मैं वास्तव में बातचीत नहीं कर पा रहा था। वास्तव में, मेरा ध्यान लगभग पूरी तरह से अपने भोजन में ही लगा हुआ था: भूख के कारण नहीं, बल्कि गोमांस के टुकड़ों की कठोरता और मेरे हाथों के सुन्न होने के कारण, जो पाँच घंटे तक कड़वी हवा में रहने से लगभग लकवाग्रस्त हो गए थे। मैं आलू खाकर मांस को छोड़ देना चाहता था, लेकिन मेरे प्लेट में मांस का एक बड़ा टुकड़ा आ जाने के कारण, मैं इतना असभ्य नहीं हो सकता था कि उसे छोड़ दूं; तो, चाकू से काटने, कांटे से फाड़ने या दोनों हाथों से खींचकर अलग करने की कई अटपटी और नाकाम कोशिशों के बाद, यह जानते हुए कि वह भयानक महिला पूरी घटना को देख रही थी, मैंने आखिरकार दो साल के बच्चे की तरह चाकू और कांटे को मुट्ठी में कसकर पकड़ लिया और अपनी बची-खुची ताकत से काम पर लग गया। लेकिन इसके लिए मुझे थोड़ी माफी मांगनी पड़ी - हल्की सी हंसी के साथ मैंने कहा, 'ठंड से मेरे हाथ इतने सुन्न हो गए हैं कि मैं चाकू और कांटे को मुश्किल से पकड़ पा रहा हूँ।'

'मुझे लगता है कि आपको ठंड लगेगी,' उसने एक शांत, अटल गंभीरता के साथ जवाब दिया, जिससे मुझे कोई तसल्ली नहीं मिली।

जब समारोह समाप्त हो गया, तो वह मुझे फिर से बैठक कक्ष में ले गई, जहाँ उसने घंटी बजाई और बच्चों को बुलवाया।

उन्होंने कहा, “आप पाएंगे कि उनकी पढ़ाई-लिखाई में वे बहुत आगे नहीं बढ़े हैं, क्योंकि मुझे उनकी शिक्षा पर ध्यान देने का बहुत कम समय मिला है, और हमने अब तक उन्हें किसी गवर्नेंस के लिए बहुत छोटा समझा है; लेकिन मुझे लगता है कि वे होशियार बच्चे हैं और सीखने में बहुत रुचि रखते हैं, खासकर छोटा लड़का; मुझे लगता है कि वह सबसे होनहार है - एक उदार, नेक दिल लड़का, जिसे नेतृत्व में चलाया जा सकता है, लेकिन मजबूर नहीं किया जा सकता, और हमेशा सच बोलने के

लिए मशहूर है। वह छल को तुच्छ समझता है" (यह अच्छी खबर थी)। उन्होंने आगे कहा, "उसकी बहन मैरी एन पर नज़र रखने की ज़रूरत होगी, लेकिन वह कुल मिलाकर बहुत अच्छी लड़की है; हालाँकि मैं चाहती हूँ कि उसे नर्सरी से जितना हो सके दूर रखा जाए, क्योंकि वह अब लगभग छह साल की हो गई है, और नर्सों से बुरी आदतें सीख सकती है। मैंने उसका पालना आपके कमरे में रखवा दिया है, और यदि आप कृपा करके उसके कपड़े धोने और पहनाने का ध्यान रखेंगी, तो उसे नर्सरी मेड से आगे कोई वास्ता नहीं रखना पड़ेगा।"

मैंने जवाब दिया कि मैं ऐसा करने के लिए पूरी तरह से तैयार हूँ; और उसी क्षण मेरे युवा विद्यार्थी अपनी दो छोटी बहनों के साथ कमरे में दाखिल हुए। मास्टर टॉम ब्लूमफील्ड सात साल का एक सुगठित लड़का था, जिसका शरीर कुछ दुबला-पतला, सुनहरे बाल, नीली आँखें, छोटी सी उठी हुई नाक और गोरा रंग था। मैरी ऐन भी लंबी लड़की थी, अपनी माँ की तरह कुछ सांवली, लेकिन उसका चेहरा गोल और भरा हुआ था और गालों पर लाली थी। दूसरी बहन फैनी थी, एक बहुत ही प्यारी बच्ची; श्रीमती ब्लूमफील्ड ने मुझे बताया कि वह एक असाधारण रूप से कोमल बच्ची थी और उसे प्रोत्साहन की आवश्यकता थी: उसने अभी तक कुछ भी नहीं सीखा था; लेकिन कुछ ही दिनों में वह चार साल की हो जाएगी, और तब वह वर्णमाला का अपना पहला पाठ लेगी और कक्षा में प्रवेश कर सकेगी। शेष एक हैरियट थी, मुश्किल से दो साल की एक छोटी, गोल-मटोल, हंसमुख और चंचल बच्ची, जिसे मैं बाकी सभी से ज़्यादा चाहती थी - लेकिन उसके साथ मेरा कोई काम नहीं था।

मैंने अपने नन्हे विद्यार्थियों से यथासंभव अच्छे से बात की और उनके साथ सहज व्यवहार करने की कोशिश की; लेकिन मुझे डर है कि इसमें मुझे ज़्यादा सफलता नहीं मिली, क्योंकि उनकी माँ की मौजूदगी ने मुझे असहज रूप से बांधे रखा। हालाँकि, वे बिल्कुल भी शर्मीले नहीं थे। वे साहसी और चंचल बच्चे लग रहे थे, और मुझे उम्मीद थी कि मैं जल्द ही उनसे दोस्ती कर लूँगी—खासकर उस छोटे लड़के से, जिसके बारे में मैंने उसकी माँ से बहुत अच्छी बातें सुनी थीं। मैरी ऐन में एक बनावटी मुस्कान और ध्यान आकर्षित करने की लालसा थी, जिसे देखकर मुझे दुख हुआ। लेकिन उसके भाई ने मेरा सारा ध्यान अपनी ओर खींच लिया; वह मेरे और आग के बीच सीधा खड़ा था, हाथ पीछे करके, एक वक्ता की तरह बोलता जा रहा था, और बीच-बीच में अपनी बहनों को शोर मचाने पर तीखी फटकार भी लगा रहा था।

‘ओह, टॉम, तुम कितने प्यारे हो!’ उसकी माँ ने कहा। ‘आओ और प्यारी माँ को चूम लो; और फिर क्या तुम मिस ग्रे को अपना स्कूलरूम और अपनी नई किताबें नहीं दिखाओगे?’

‘मैं आपको चूमूंगी नहीं, माँ; लेकिन मैं मिस ग्रे को अपना स्कूलरूम और अपनी नई किताबें दिखाऊंगी।’

‘और मेरा स्कूल का कमरा, और मेरी नई किताबें, टॉम,’ मैरी एन ने कहा। ‘वे भी मेरी ही हैं।’

‘ये मेरे हैं,’ उसने दृढ़ता से उत्तर दिया। ‘आइए, मिस ग्रे—मैं आपको साथ ले चलता हूँ।’

कमरा और किताबें दिखाए जाने के बाद, भाई-बहन के बीच कुछ कहा-सुनी हुई जिसे मैंने शांत करने की पूरी कोशिश की। तभी मैरी ऐन अपनी गुड़िया मेरे पास लाई और उसके सुंदर कपड़ों, पलंग, दराजों वाली अलमारी और अन्य सामानों के बारे में बहुत बातें करने लगी। लेकिन टॉम ने उसे चुप रहने को कहा ताकि मिस ग्रे उसका झूला देख सकें। उसने बड़े ही शान से उस घोड़े को कोने से खींचकर कमरे के बीच में लाया और मुझे ज़ोर से पुकारा कि मैं उसकी देखभाल करूं। फिर उसने अपनी बहन को लगाम पकड़ने को कहा और घोड़े पर सवार हो गया। उसने मुझे दस मिनट तक खड़ा रखा और देखने को कहा कि वह कितनी बहादुरी से चाबुक और स्पर्स का इस्तेमाल कर रहा है। इस बीच, मैं मैरी ऐन की सुंदर गुड़िया और उसके सभी सामानों की प्रशंसा करता रहा; और फिर मैंने मास्टर टॉम से कहा कि वह एक बेहतरीन घुड़सवार है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि जब वह असली टट्टू की सवारी करेगा तो वह अपने चाबुक और स्पर्स का इतना इस्तेमाल नहीं करेगा।

‘ओह, हाँ, मैं ज़रूर करूँगा!’ उसने दुगने जोश के साथ कहा। ‘मैं उसे धुएँ की तरह चीर दूँगा! उफ़! मेरी बात मानो! लेकिन उसे इसके लिए पसीना बहाना पड़ेगा।’

यह बहुत ही चौंकाने वाला था; लेकिन मुझे उम्मीद थी कि समय के साथ मैं सुधार लाने में सक्षम हो पाऊंगा।

‘अब तुम्हें अपनी टोपी और शॉल पहननी होगी,’ नन्हे नायक ने कहा, ‘और मैं तुम्हें अपना बगीचा दिखाऊंगा।’

‘और मेरा भी,’ मैरी एन ने कहा।

टॉम ने धमकी भरे अंदाज में अपनी मुट्ठी उठाई; वह जोर से चीखी, मेरे दूसरी तरफ

भागी और उसे घूरकर देखा।

'टॉम, तुम अपनी बहन पर हाथ नहीं उठाओगे! मुझे उम्मीद है कि मैं तुम्हें ऐसा करते हुए कभी नहीं देखूंगा।'

'कभी-कभी आपको ऐसा करना पड़ेगा: मुझे उसे नियंत्रण में रखने के लिए समय-समय पर ऐसा करना पड़ता है।'

लेकिन उसे नियंत्रण में रखना तुम्हारा काम नहीं है, तुम्हें पता है ना— वो तो—'

'अच्छा, अब जाओ और अपनी कार का बोनट पहन लो।'

'मुझे नहीं पता— बहुत बादल छाए हुए हैं और ठंड है, ऐसा लग रहा है कि बारिश होगी;— और आप जानते हैं कि मैंने लंबी ड्राइव की है।'

'कोई बात नहीं – तुम्हें आना ही होगा; मैं कोई बहाना नहीं सुनूंगा,' उस छोटे से सज्जन ने जवाब दिया। और, चूंकि हमारी जान-पहचान का पहला दिन था, मैंने सोचा कि क्यों न मैं उसकी बात मान लूं। मैरी ऐन के लिए बाहर निकलना बहुत ठंडा था, इसलिए वह अपनी माँ के साथ ही रुक गई, जिससे उसके भाई को बहुत राहत मिली, जिसे मेरे साथ अकेले रहना अच्छा लगता था।

बगीचा बड़ा और सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया था; कई शानदार डहलिया के अलावा, कुछ अन्य सुंदर फूल भी खिले हुए थे: लेकिन मेरे साथी ने मुझे उन्हें देखने का समय नहीं दिया: मुझे उसके साथ गीली घास पार करके एक एकांत कोने में जाना था, जो परिसर का सबसे महत्वपूर्ण स्थान था, क्योंकि वहीं उसका बगीचा था। वहाँ दो गोल क्यारियाँ थीं, जिनमें कई प्रकार के पौधे लगे थे। एक में एक छोटा सा सुंदर गुलाब का पेड़ था। मैं उसके सुंदर फूलों को निहारने के लिए रुक गया।

'अरे, छोड़ो भी!' उसने तिरस्कारपूर्वक कहा। 'वह तो केवल मैरी ऐन का बगीचा है; देखो, यह मेरा है।'

प्रत्येक फूल का अवलोकन करने और प्रत्येक पौधे पर विस्तृत विवेचन सुनने के बाद मुझे जाने की अनुमति दी गई; लेकिन उससे पहले, उन्होंने बड़े धूमधाम से एक पॉलीएंथस का फूल तोड़ा और मुझे भेंट किया, मानो कोई अत्यंत कृपा कर रहे हों। मैंने उनके बगीचे के आसपास की घास पर कुछ डंडियों और अनाज से बनी संरचनाएँ देखीं और पूछा कि वे क्या हैं।

'पक्षियों के लिए जाल।'

'आप उन्हें क्यों पकड़ते हैं?'

पापा कहते हैं कि वे नुकसान पहुंचाते हैं।

और जब आप उन्हें पकड़ लेते हैं तो आप उनके साथ क्या करते हैं?

'अलग-अलग चीजें। कभी-कभी मैं उन्हें बिल्ली को दे देता हूँ; कभी-कभी मैं उन्हें अपने पेननाइफ से टुकड़ों में काट देता हूँ; लेकिन अगली बार, मेरा इरादा उन्हें जिंदा भूनने का है।'

और तुम ऐसा भयानक काम क्यों करना चाहते हो?

'दो कारणों से: पहला, यह देखने के लिए कि यह कितने समय तक जीवित रहेगा - और दूसरा, यह देखने के लिए कि इसका स्वाद कैसा होगा।'

लेकिन क्या आप नहीं जानते कि ऐसा करना बेहद बुरा है? याद रखिए, पक्षी भी आपकी तरह महसूस कर सकते हैं; और सोचिए, आपको खुद कैसा लगेगा?

'अरे, ये तो कुछ भी नहीं है! मैं कोई पक्षी नहीं हूँ, और मुझे इस बात का एहसास नहीं होता कि मैं उनके साथ क्या करता हूँ।'

लेकिन टॉम, तुम्हें कभी न कभी इसका एहसास जरूर होगा: तुमने सुना होगा कि दुष्ट लोग मरने के बाद कहाँ जाते हैं; और अगर तुम निर्दोष पक्षियों को सताना बंद नहीं करोगे, तो याद रखना, तुम्हें भी वहाँ जाना होगा, और वही कष्ट सहना होगा जो तुमने उन्हें सहने के लिए मजबूर किया है।

अरे नहीं! मैं ऐसा नहीं करूँगा। पापा जानते हैं कि मैं उनके साथ कैसा बर्ताव करता हूँ, और वो इसके लिए मुझे कभी दोष नहीं देते: वो कहते हैं कि बचपन में वो भी ऐसा ही करते थे। पिछली गर्मियों में, उन्होंने मुझे गौरैयों के बच्चों से भरा एक घोंसला दिया था, और उन्होंने मुझे उनके पैर, पंख और सिर नोचते हुए देखा था, और उन्होंने कुछ नहीं कहा; सिवाय इसके कि वे गंदे जीव हैं, और मुझे उन्हें अपनी पैंट गंदी नहीं करने देनी चाहिए: और अंकल रॉबसन भी वहाँ थे, और वो हँसे, और कहा कि मैं एक अच्छा लड़का हूँ।

लेकिन तुम्हारी मां क्या कहेगी?

‘अरे, उसे तो कोई परवाह ही नहीं! वह कहती है कि सुंदर गाने वाले पक्षियों को मारना तो दुख की बात है, लेकिन शरारती गौरैयों, चूहों और गिलहरियों के साथ मैं जो चाहूँ कर सकती हूँ। तो अब, मिस ग्रे, आप समझ गई होंगी कि यह कोई बुराई नहीं है।’

‘टॉम, मुझे अब भी यही लगता है; और शायद तुम्हारे पापा और मम्मी भी यही

सोचते, अगर वे इस बारे में गंभीरता से सोचते। लेकिन,' मैंने मन ही मन कहा, 'वे जो चाहें कह सकते हैं, पर मैंने ठान लिया है कि जब तक मेरे पास इसे रोकने की शक्ति है, तुम ऐसा कुछ भी नहीं करोगे।'

इसके बाद वह मुझे लॉन के उस पार ले गया ताकि मैं उसके छछूंदर पकड़ने के जाल देख सकूँ, और फिर खलिहान में ले गया ताकि मैं उसके नेवले पकड़ने के जाल देख सकूँ: जिनमें से एक में, उसकी बड़ी खुशी के लिए, एक मरा हुआ नेवला था; और फिर अस्तबल में ले गया, जहाँ उसने बढ़िया घोड़ों को नहीं, बल्कि एक छोटे से खुरदुरे घोड़े को दिखाया, जिसके बारे में उसने मुझे बताया कि उसे खास तौर पर उसके लिए पाला गया था, और जैसे ही वह ठीक से प्रशिक्षित हो जाएगा, वह उस पर सवारी करेगा। मैंने उस छोटे से घोड़े का मनोरंजन करने की कोशिश की, और उसकी सारी बातें यथासंभव शांति से सुनीं; क्योंकि मैंने सोचा कि अगर उसके मन में ज़रा भी स्नेह है, तो मैं उसे जीतने का प्रयास करूँगा; और फिर, समय आने पर, मैं उसे उसकी गलतियों का एहसास करा सकूँगा: लेकिन मैंने उसकी माँ द्वारा वर्णित उस उदार, नेक स्वभाव को व्यर्थ ही खोजा; हालाँकि मैं देख सकता था कि जब वह चाहे तो उसमें कुछ हद तक चतुराई और समझदारी भी थी।

जब हम घर में वापस आए तो लगभग चाय का समय हो चुका था। मास्टर टॉम ने मुझे बताया कि पापा घर पर नहीं हैं, इसलिए हम तीनों, मैं और मैरी ऐन, मम्मी के साथ चाय पीने वाले हैं; क्योंकि ऐसे मौकों पर मम्मी हमेशा शाम छह बजे के बजाय दोपहर के खाने पर ही उनके साथ खाना खाती थीं। चाय के तुरंत बाद मैरी ऐन सोने चली गई, लेकिन टॉम ने आठ बजे तक हमारे साथ समय बिताया और बातें कीं। उनके जाने के बाद, मिसेज़ ब्लूमफील्ड ने मुझे अपने बच्चों के स्वभाव और गुणों के बारे में और उन्हें क्या सीखना है, उनका पालन-पोषण कैसे करना है, इस बारे में विस्तार से बताया और मुझे चेतावनी दी कि मैं उनकी कमियों का ज़िक्र सिर्फ़ उन्हीं से करूँ। मेरी माँ ने मुझे पहले ही चेतावनी दी थी कि मैं उनके सामने इन कमियों का ज़िक्र जितना हो सके कम करूँ, क्योंकि लोगों को अपने बच्चों की कमियाँ सुनना पसंद नहीं होता, इसलिए मैंने तय किया कि मुझे इस बारे में बिल्कुल चुप रहना है। लगभग साढ़े नौ बजे, मिसेज़ ब्लूमफील्ड ने मुझे ठंडे मांस और रोटी के सादे भोजन के लिए आमंत्रित किया। जब वह सब खत्म हो गया और उसने अपने कमरे का मोमबत्ती स्टैंड उठाया और सोने चली गई, तो मुझे खुशी हुई; क्योंकि हालांकि मैं उससे खुश रहना चाहता

था, लेकिन उसकी संगति मुझे बेहद कष्टदायक लगती थी; और मैं इस भावना से खुद को रोक नहीं पा रहा था कि वह ठंडी, गंभीर और कठोर थी - उस दयालु, गर्मजोशी वाली महिला के बिल्कुल विपरीत, जिसकी मैंने उससे उम्मीद की थी।

अध्याय III — कुछ और सबक

अगली सुबह मैं आशा और उत्साह से भरी हुई उठी, हालांकि मुझे पहले ही कई निराशाएँ झेलनी पड़ी थीं; लेकिन मैंने पाया कि मैरी ऐन को तैयार करना आसान काम नहीं था, क्योंकि उसके घने बालों में पोमेड लगाना था, तीन लंबी चोटियाँ बनानी थीं और रिबन से बांधना था: एक ऐसा काम जिसे करने में मेरी अपरिचित उंगलियों को बहुत कठिनाई हो रही थी। उसने मुझे बताया कि उसकी नर्स यह काम आधे समय में कर सकती है, और लगातार बेचैनी जताते हुए उसने मुझे और भी ज़्यादा समय लेने के लिए मजबूर कर दिया। जब सब काम हो गया, तो हम कक्षा में गए, जहाँ मेरी मुलाकात मेरे दूसरे छात्र से हुई और मैंने नाश्ते के समय तक उन दोनों से बातचीत की। नाश्ता समाप्त होने के बाद और श्रीमती ब्लूमफील्ड से कुछ शिष्टाचारपूर्ण बातें करने के बाद, हम फिर से कक्षा में गए और दिन का काम शुरू किया। मैंने पाया कि मेरे छात्र वास्तव में बहुत सुस्त थे; लेकिन टॉम, हालांकि हर तरह के मानसिक परिश्रम से दूर भागता था, प्रतिभाहीन नहीं था। मैरी ऐन मुश्किल से एक शब्द भी पढ़ पाती थी, और इतनी लापरवाह और बेपरवाह थी कि मैं उसके साथ ठीक से बातचीत भी नहीं कर पा रही थी। फिर भी, बड़ी मेहनत और धैर्य से मैंने सुबह के समय कुछ काम निपटा लिया, और फिर दोपहर के भोजन से पहले थोड़ा मनोरंजन करने के लिए अपनी छोटी बच्ची को बगीचे और आसपास के मैदान में ले गई। वहाँ हम ठीक-ठाक साथ-साथ रहे, सिवाय इसके कि उन्हें मेरे साथ चलने का कोई मन ही नहीं था: मुझे उनके साथ जाना ही था, जहाँ भी वे मुझे ले जाना चाहें। मुझे दौड़ना, चलना या खड़ा

रहना पड़ता था, ठीक वैसे ही जैसे उन्हें अच्छा लगता था। मुझे लगा कि यह नियमों का उल्टा-पुल्टा करना है; और मुझे यह और भी बुरा लगा, क्योंकि इस बार और आगे भी, वे सबसे गंदी जगहों और सबसे नीरस कामों को ही चुनती थीं। लेकिन कोई उपाय नहीं था; या तो मुझे उनके पीछे-पीछे चलना पड़ता, या उनसे पूरी तरह अलग रहना पड़ता, और इस तरह अपनी बच्ची की उपेक्षा करना दिखता। आज, उन्होंने लॉन के नीचे बने एक कुएँ से विशेष लगाव दिखाया, जहाँ वे आधे घंटे से अधिक समय तक डंडियों और पत्थरों से खेलती रहीं। मुझे लगातार डर सता रहा था कि उनकी माँ उन्हें खिड़की से देख लेंगी और मुझे दोष देंगी कि मैंने उन्हें व्यायाम करने के बजाय अपने कपड़े गंदे करने और हाथ-पैर गीले करने की इजाज़त दी है; लेकिन कोई भी तर्क, आदेश या विनती उन्हें वहाँ से नहीं हटा सकी। अगर उन्होंने उन्हें नहीं देखा, तो किसी और ने देख लिया - एक सज्जन घोड़े पर सवार होकर फाटक से अंदर आए और सड़क पर आगे बढ़ रहे थे; हमसे कुछ कदम की दूरी पर आकर वे रुके और बच्चों को तीखी और तीखी आवाज़ में पुकारते हुए कहा, 'उस पानी से दूर रहो।' उन्होंने कहा, 'मिस ग्रे (मुझे लगता है कि यह मिस ग्रे ही हैं), मुझे आश्चर्य है कि आप उन्हें इस तरह अपने कपड़े गंदे करने दे रही हैं! क्या आप नहीं देख रही हैं कि मिस ब्लूमफील्ड ने अपनी फ्रॉक कैसे गंदी कर ली है? और मास्टर ब्लूमफील्ड के मोज़े कितने गीले हैं? और दोनों ने दस्ताने भी नहीं पहने हैं? हे भगवान! मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि भविष्य में कम से कम उन्हें ठीक से कपड़े पहनाएँ!' इतना कहकर वे मुड़ गए और घर की ओर अपने घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ गए। ये मिस्टर ब्लूमफील्ड थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने अपने बच्चों, मास्टर और मिस ब्लूमफील्ड को इस पद के लिए नामांकित किया; और उससे भी अधिक आश्चर्य हुआ कि उन्होंने मुझसे, जो उनकी गवर्नेंस थी और उनके लिए बिल्कुल अजनबी थी, इतनी असभ्यता से बात की। तभी घंटी बजी और हमें अंदर बुलाया गया। मैंने बच्चों के साथ एक मेज पर भोजन किया, जबकि उन्होंने और उनकी पत्नी ने उसी मेज पर दोपहर का भोजन किया। वहाँ उनके व्यवहार से उनके प्रति मेरी नज़र में कोई खास सम्मान नहीं जागा। वे सामान्य कद-काठी के व्यक्ति थे - कद में छोटे, मोटे नहीं - और मोटे से दुबले-पतले, जिनकी उम्र तीस से चालीस के बीच लग रही थी: उनका मुँह बड़ा था, रंग पीला और मटमैला था, आँखें दूधिया नीली थीं और बाल भांग की रस्सी के रंग के थे। उनके सामने भुने हुए भेड़ के मांस का एक टुकड़ा रखा था: उन्होंने श्रीमती ब्लूमफील्ड, बच्चों और मेरी मदद

की और मुझसे बच्चों के लिए मांस काटने को कहा; फिर, भेड़ के मांस को अलग-अलग दिशाओं में घुमाकर और अलग-अलग कोण से देखकर, उन्होंने इसे खाने योग्य नहीं बताया और ठंडा मांस मंगवाया।

'मेरे प्रिय, इस मटन में क्या खराबी है?' उसके साथी ने पूछा।

'यह तो हद से ज़्यादा पक गया है। क्या आपको इसका स्वाद नहीं आ रहा, श्रीमती ब्लूमफील्ड, कि इसमें से सारी अच्छाई भुन कर निकल गई है? और क्या आपको यह नहीं दिख रहा कि वह स्वादिष्ट लाल ग्रेवी पूरी तरह से सूख गई है?'

'खैर, मुझे लगता है कि गोमांस आपको पसंद आएगा।'

उसके सामने गोमांस का टुकड़ा रखा गया और उसने उसे काटना शुरू किया, लेकिन उसके चेहरे पर असंतोष के अत्यंत खेदजनक भाव थे।

'मिस्टर ब्लूमफील्ड, इस गोमांस में क्या खराबी है? मुझे तो यह बहुत स्वादिष्ट लगा था।'

"और यह बहुत अच्छा था। इससे बेहतर जगह हो ही नहीं सकती थी; लेकिन यह पूरी तरह से खराब हो गया है," उसने उदास स्वर में उत्तर दिया।

'ऐसा कैसे?'

'ऐसा कैसे! अरे, क्या आपको नहीं दिख रहा कि इसे कैसे काटा गया है? हे भगवान! यह तो बहुत ही चौंकाने वाला है!'

'उन्होंने रसोई में इसे गलत तरीके से काटा होगा, क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि मैंने कल इसे यहां बिल्कुल सही तरीके से काटा था।'

'इसमें कोई शक नहीं कि रसोई में इसे गलत तरीके से काटा गया होगा – ये जाहिल लोग! हे भगवान! क्या किसी ने कभी गोमांस के इतने बढ़िया टुकड़े को इस तरह बर्बाद होते देखा है? लेकिन याद रखना, भविष्य में जब भी कोई बढ़िया व्यंजन इस मेज से जाए, तो रसोई में उसे हाथ नहीं लगाना। याद रखना, श्रीमती ब्लूमफील्ड!'

गोमांस की खराब हालत के बावजूद, उस सज्जन ने किसी तरह अपने लिए गोमांस के कुछ स्वादिष्ट टुकड़े निकाल लिए, जिनमें से कुछ उन्होंने चुपचाप खा लिए। अगली बार जब उन्होंने बात की, तो कम चिड़चिड़े स्वर में, उन्होंने पूछा कि रात के खाने में क्या है।

संक्षिप्त उत्तर था, 'टर्की और ग्राउज़'।

और इसके अलावा क्या?

'मछली।'

‘किस तरह की मछली?’

'मुझें नहीं पता।'

‘तुम्हें नहीं पता?’ उसने अपनी थाली से गंभीरतापूर्वक ऊपर देखते हुए और आश्चर्य से अपने चाकू और कांटे को हवा में लटकाते हुए कहा।

नहीं। मैंने रसोइए को कुछ मछली लाने को कहा था - मैंने यह नहीं बताया था कि कौन सी मछली।

वाह, ये तो हद ही हो गई! एक महिला गृहस्थी होने का दावा करती है, और उसे यह भी नहीं पता कि रात के खाने में मछली क्या होती है! मछली ऑर्डर करने का दावा करती है, और यह नहीं बताती कि कौन सी मछली चाहिए!

'शायद, श्रीमान ब्लूमफील्ड, भविष्य में आप स्वयं ही भोजन का ऑर्डर देंगे।'

इसके बाद और कुछ नहीं कहा गया; और मुझे अपने विद्यार्थियों के साथ कमरे से बाहर निकलने की बहुत खुशी हुई; क्योंकि मैंने अपने जीवन में कभी भी किसी ऐसी चीज के लिए इतना शर्मिंदा और असहज महसूस नहीं किया था जो मेरी गलती नहीं थी।

दोपहर में हम फिर से पढ़ाई के लिए बैठ गए; फिर बाहर गए; फिर स्कूल के कमरे में चाय पी; फिर मैंने मैरी ऐन को मिठाई के लिए तैयार किया; और जब वह और उसका भाई खाने के कमरे में चले गए, तो मैंने घर पर अपने प्यारे दोस्तों को पत्र लिखना शुरू करने का मौका लिया: लेकिन आधा पत्र पूरा होने से पहले ही बच्चे ऊपर आ गए। सात बजे मुझे मैरी ऐन को सुलाना पड़ा; फिर मैं आठ बजे तक टॉम के साथ खेली, जब वह भी सो गया; और मैंने अपना पत्र पूरा किया और अपने कपड़े निकाले, जिसके लिए मुझे अब तक कोई मौका नहीं मिला था, और अंत में मैं खुद भी सो गई।

लेकिन यह एक दिन की कार्यवाही का बहुत ही अनुकूल नमूना है।

मेरे विद्यार्थियों को निर्देश देने और उन पर निगरानी रखने का मेरा काम, मेरे और मेरे विद्यार्थियों के बीच बेहतर तालमेल होने के साथ आसान होने के बजाय, उनके बदलते स्वभाव के कारण और भी कठिन होता चला गया। मुझे जल्द ही पता चल गया कि मेरे लिए 'गवर्नेस' का नाम मात्र एक मज़ाक था: मेरे विद्यार्थियों में आज्ञाकारिता का उतना ही अभाव था जितना एक जंगली, अनियंत्रित घोड़े के बच्चे में। अपने पिता के चिड़चिड़े स्वभाव का डर और उनके द्वारा चिढ़ने पर दी जाने वाली

सजाओं का भय उन्हें आमतौर पर उनकी उपस्थिति में नियंत्रण में रखता था। लड़कियों को भी अपनी माँ के क्रोध का कुछ डर था; और लड़के को कभी-कभी इनाम की उम्मीद में माँ की बात मनवाने के लिए रिश्वत दी जा सकती थी; लेकिन मेरे पास देने के लिए कोई इनाम नहीं था; और जहाँ तक सजाओं की बात है, मुझे बताया गया कि यह अधिकार माता-पिता के पास ही था; फिर भी वे मुझसे अपने विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने की अपेक्षा करते थे। अन्य बच्चे क्रोध के भय और प्रशंसा की इच्छा से निर्देशित हो सकते हैं; लेकिन इन पर न तो इसका और न ही इसका कोई प्रभाव पड़ा।

मास्टर टॉम, नियमों का पालन करने से इनकार करने के बावजूद, शासक बनने पर तुला हुआ था और उसने न केवल अपनी बहनों को, बल्कि अपनी गवर्नेस को भी, ज़बरदस्त शारीरिक और शारीरिक बल प्रयोग से काबू में रखने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। और, चूंकि वह अपनी उम्र के हिसाब से लंबा और मजबूत लड़का था, इसलिए इससे उसे काफी परेशानी होती थी। ऐसे मौकों पर कान पर एक-दो थप्पड़ मारकर मामला आसानी से सुलझ सकता था: लेकिन उस स्थिति में, वह अपनी माँ को कोई मनगढ़ंत कहानी सुना सकता था जिस पर वह यकीन कर लेती, क्योंकि उसे उसकी सच्चाई पर अटूट विश्वास था - हालांकि मुझे पहले ही पता चल चुका था कि उसका विश्वास बिल्कुल भी अचूक नहीं था - इसलिए मैंने आत्मरक्षा में भी उसे न मारने का निश्चय किया। और, उसके सबसे हिंसक दौर में, मेरा एकमात्र उपाय उसे पीठ के बल गिराना और उसके हाथ-पैर तब तक पकड़े रखना था जब तक कि उसका गुस्सा थोड़ा शांत न हो जाए। उसे वह करने से रोकना जो उसे नहीं करना चाहिए था, एक चुनौती थी, और उसे वह करने के लिए मजबूर करना जो उसे करना चाहिए था। अक्सर वह सीखने से, अपने पाठ दोहराने से, या यहाँ तक कि अपनी किताब की ओर देखने से भी साफ इनकार कर देता था। ऐसे में, एक अच्छी छड़ी काम आ सकती थी; लेकिन, मेरी क्षमताएँ इतनी सीमित थीं कि मुझे जो मेरे पास था उसी से काम चलाना पड़ा।

पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद के लिए कोई निश्चित समय नहीं था, इसलिए मैंने अपने विद्यार्थियों को एक ऐसा काम देने का निश्चय किया, जिसे वे थोड़ी सी एकाग्रता से थोड़े समय में पूरा कर सकें; और जब तक यह काम पूरा नहीं हो जाता, चाहे मैं कितना भी थका हुआ क्यों न होता, या वे कितने भी जिद्दी क्यों न होते, माता-पिता के

हस्तक्षेप के बिना मैं उन्हें कक्षा से बाहर नहीं जाने देता, चाहे मुझे उन्हें अंदर रखने के लिए अपनी कुर्सी दरवाजे के सामने ही क्यों न लगानी पड़े। धैर्य, दृढ़ता और लगन ही मेरे एकमात्र हथियार थे; और मैंने इन्हें पूरी तरह से इस्तेमाल करने का संकल्प लिया। मैंने अपने द्वारा किए गए वादों और धमकियों को सख्ती से निभाने का निश्चय किया; और इसके लिए, मुझे ऐसी किसी भी बात की धमकी या वादा करने से बचना चाहिए जिसे मैं पूरा न कर सकूँ। फिर, मैं अनावश्यक चिड़चिड़ाहट और अपने चिड़चिड़ेपन से पूरी तरह परहेज करता: जब वे ठीक से व्यवहार करते, तो मैं उनके प्रति यथासंभव दयालु और विनम्र रहता, ताकि अच्छे और बुरे व्यवहार के बीच स्पष्ट अंतर कर सकूँ; मैं उनसे सरलतम और प्रभावी तरीके से तर्क भी करता। जब मैं उनकी किसी बड़ी गलती के बाद उन्हें डांटता या उनकी इच्छा पूरी करने से इनकार करता, तो मेरा लहजा क्रोध से ज़्यादा दुःख से भरा होता; मैं उनके छोटे-छोटे भजन और प्रार्थनाएँ उन्हें सरल और स्पष्ट रूप से समझाता; जब वे रात को प्रार्थना करते और अपने अपराधों के लिए क्षमा मांगते, तो मैं उन्हें पिछले दिन के पापों की याद दिलाता, गंभीरता से, लेकिन पूरी दयालुता के साथ, ताकि उनके मन में कोई विरोध उत्पन्न न हो; शरारती बच्चे पश्चाताप के भजन गाते, और अपेक्षाकृत अच्छे बच्चे प्रसन्नता के भजन गाते; और हर तरह की शिक्षा मैं उन्हें यथासंभव मनोरंजक बातचीत के माध्यम से देता—स्पष्ट रूप से उनके मनोरंजन के अलावा किसी और उद्देश्य के बिना।

इन तरीकों से मुझे उम्मीद थी कि समय आने पर मैं बच्चों का भला कर सकूंगा और उनके माता-पिता की स्वीकृति प्राप्त कर सकूंगा; साथ ही घर पर अपने दोस्तों को यह विश्वास दिला सकूंगा कि मैं उतना भी कौशल और विवेकहीन नहीं हूं जितना वे समझते हैं। मैं जानता था कि मुझे जिन कठिनाइयों का सामना करना है वे बहुत बड़ी हैं; लेकिन मैं जानता था (कम से कम मुझे विश्वास था) कि निरंतर धैर्य और दृढ़ता से उन पर विजय प्राप्त की जा सकती है; और इसके लिए मैं दिन-रात ईश्वर से प्रार्थना करता था। लेकिन या तो बच्चे इतने जिद्दी थे, माता-पिता इतने अविवेकी थे, या मैं अपने विचारों में इतना गलत था, या उन्हें पूरा करने में इतना असमर्थ था, कि मेरे सर्वोत्तम इरादे और अथक प्रयास बच्चों के लिए मनोरंजन, उनके माता-पिता के लिए असंतोष और मेरे लिए पीड़ा के अलावा कोई बेहतर परिणाम नहीं दे पाए।

शिक्षण का कार्य शरीर और मन दोनों के लिए उतना ही कठिन था। मुझे अपने विद्यार्थियों के पीछे दौड़कर उन्हें पकड़ना पड़ता था, उन्हें खींचकर या घसीटकर मेज

तक लाना पड़ता था, और अक्सर पाठ समाप्त होने तक उन्हें जबरदस्ती वहीं रोके रखना पड़ता था। मैं अक्सर टॉम को एक कोने में बिठा देता था, उसके सामने कुर्सी पर बैठ जाता था, और मेरे हाथ में एक किताब होती थी जिसमें वह छोटा सा कार्य लिखा होता था जिसे उसे छोड़ने से पहले कहना या पढ़ना होता था। वह इतना मजबूत नहीं था कि मुझे और कुर्सी दोनों को हटा सके, इसलिए वह अपने शरीर और चेहरे को सबसे विचित्र और अनोखे ढंग से मोड़ता हुआ खड़ा रहता था - जो निस्संदेह किसी उदासीन दर्शक के लिए हास्यास्पद होता, लेकिन मेरे लिए नहीं - और जोर-जोर से चिल्लाता और कराहता था, जो रोने का दिखावा होता था लेकिन वास्तव में उसकी आँखों में आँसू नहीं होते थे। मैं जानता था कि वह यह सब केवल मुझे परेशान करने के लिए करता था; इसलिए, चाहे मैं मन ही मन अधीरता और चिड़चिड़ाहट से कांप रही थी, मैंने उत्पीड़न के सभी प्रत्यक्ष संकेतों को दबाने का भरसक प्रयास किया और शांत भाव से बैठी रही, यह प्रतीक्षा करती रही कि वह कब इस खेल को बंद करके बगीचे में दौड़ने की तैयारी करे, किताब पर नज़र डालकर और उसे जो कुछ शब्द बोलने या दोहराने को कहा गया था, उन्हें पढ़कर। कभी-कभी वह जानबूझकर खराब लिखता था; और मुझे उसका हाथ पकड़ना पड़ता था ताकि वह जानबूझकर कागज़ को खराब न कर दे। अक्सर मैं उसे धमकी देती थी कि अगर उसने सुधार नहीं किया, तो उसे एक और पंक्ति लिखनी पड़ेगी: तब वह हठपूर्वक उस पंक्ति को लिखने से इनकार कर देता था; और अपनी बात को सुरक्षित रखने के लिए, मुझे अंततः उसकी उंगलियों को कलम पर पकड़कर, उसके हाथ को ज़बरदस्ती ऊपर-नीचे करना पड़ता था, जब तक कि उसके प्रतिरोध के बावजूद, पंक्ति किसी तरह पूरी न हो जाए।

फिर भी टॉम मेरे विद्यार्थियों में सबसे ज़्यादा अनियंत्रित नहीं था: कभी-कभी, मेरी बड़ी खुशी के लिए, वह यह समझ जाता था कि उसके लिए सबसे समझदारी भरा कदम यही होगा कि वह अपना काम खत्म करे और बाहर जाकर तब तक मनोरंजन करे जब तक मैं और उसकी बहनें उसके पास न आ जाएँ; लेकिन अक्सर ऐसा नहीं होता था, क्योंकि मैरी ऐन इस मामले में शायद ही कभी उसका अनुसरण करती थी: वह जाहिरा तौर पर किसी भी अन्य मनोरंजन की तुलना में फर्श पर लोटना पसंद करती थी: वह एक भारी वजन की तरह नीचे गिर जाती थी; और जब मैं बड़ी मुश्किल से उसे वहाँ से उठा पाती थी, तब भी मुझे उसे एक हाथ से थामे रखना पड़ता था, जबकि दूसरे हाथ में मैं वह किताब पकड़े रहती थी जिससे उसे अपना पाठ पढ़ना या

वर्तनी करनी होती थी। जब छह साल की उस बड़ी बच्ची का भारी वजन एक हाथ के लिए असहनीय हो जाता था, तो मैं उसे दूसरे हाथ में ले लेती थी; या फिर, अगर हम दोनों बोझ से थक जाते, तो मैं उसे एक कोने में ले जाती और कहती कि जब वह अपने पैरों पर खड़ी हो पाएगी, तब बाहर आ सकती है। लेकिन वह आमतौर पर दोपहर के भोजन या चाय के समय तक वहीं लकड़ी के लट्ठे की तरह लेटी रहती, और जब मैं उसे भोजन से वंचित नहीं कर सकती थी, तब उसे आज़ाद करना पड़ता था, और वह अपने गोल, लाल चेहरे पर विजय की मुस्कान लिए रेंगती हुई बाहर आती थी। अक्सर वह अपने पाठ में किसी विशेष शब्द का उच्चारण करने से हठपूर्वक इनकार कर देती थी; और अब मुझे उसकी हठधर्मिता को दूर करने के प्रयासों में व्यर्थ की मेहनत का पछतावा है। अगर मैंने इसे महत्वहीन मानकर नज़रअंदाज़ कर दिया होता, तो यह हम दोनों के लिए बेहतर होता, बजाय इसके कि मैं इसे दूर करने के लिए व्यर्थ प्रयास करती रही; लेकिन मैंने इस बुरी प्रवृत्ति को जड़ से खत्म करना अपना परम कर्तव्य समझा: और ऐसा ही हुआ, अगर मैं ऐसा कर पाती; और अगर मेरी शक्तियाँ कम सीमित होतीं, तो मैं उसे आज्ञाकारी बना सकती थी; लेकिन, जैसा कि था, यह उसके और मेरे बीच शक्ति की परीक्षा थी, जिसमें वह आमतौर पर विजयी होती थी। और हर जीत उसे आने वाली प्रतियोगिता के लिए प्रोत्साहित और मजबूत करती थी। मैंने व्यर्थ ही उससे बहस की, फुसलाया, विनती की, धमकाया, डांटा; व्यर्थ ही मैंने उसे खेलने से रोका, या अगर मजबूरी में उसे बाहर ले जाना पड़ा, तो उसके साथ खेलने से इनकार कर दिया, उससे प्यार से बात नहीं की, उससे कोई वास्ता नहीं रखा; व्यर्थ ही मैंने उसे आज्ञा मानने, प्यार पाने और बदले में अच्छा व्यवहार मिलने के फायदे और अपनी बेतुकी ज़िद पर अड़े रहने के नुकसान समझाने की कोशिश की। कभी-कभी, जब वह मुझसे कुछ करने को कहती, तो मैं जवाब देता, - 'हाँ, मैं करूँगा, मैरी एन, अगर तुम बस एक शब्द कह दो। आओ! बेहतर होगा कि तुम अभी कह दो, और फिर कोई झंझट नहीं।'

'नहीं।'

‘तो फिर, बेशक, मैं आपके लिए कुछ नहीं कर सकता।’

मेरी उम्र में, या उससे भी कम उम्र में, उपेक्षा और अपमान सबसे भयानक सजाएँ होती थीं; लेकिन उन पर इनका कोई असर नहीं होता था। कभी-कभी, हद से ज़्यादा गुस्से में आकर, मैं उन्हें कंधे से ज़ोर से हिला देता, या उनके लंबे बाल खींच लेता, या

उन्हें कोने में धकेल देता; जिसके बदले में वे मुझे तेज़, तीखी, चुभने वाली चीखों से दंडित करतीं, जो मेरे दिमाग में चाकू की तरह चुभती थीं। उन्हें पता था कि मुझे यह पसंद नहीं है, और जब वे अपनी पूरी ताकत से चीख चुकी होतीं, तो प्रतिशोध भरी संतुष्टि के भाव से मेरे चेहरे की ओर देखतीं और कहतीं, — 'अब, तो! ये तुम्हारे लिए है!' और फिर बार-बार चीखतीं, जब तक कि मुझे अपने कान बंद करने के लिए मजबूर न होना पड़ता। अक्सर इन भयानक चीखों को सुनकर श्रीमती ब्लूमफील्ड यह पूछने के लिए आतीं कि क्या हुआ है?

'मैरी एन एक शरारती लड़की है, महोदया।'

लेकिन ये भयानक चीखें क्या हैं?

वह गुस्से में चीख रही है।

मैंने ऐसी भयानक आवाज पहले कभी नहीं सुनी! आप उसे मार रहे होंगे। वह अपने भाई के साथ बाहर क्यों नहीं है?

मैं उसे अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए राजी नहीं कर पा रही हूँ।

"लेकिन मैरी एन को अच्छी बच्ची बनना होगा और अपनी पढ़ाई पूरी करनी होगी।" यह बात बच्ची से नरमी से कही गई। "और मुझे उम्मीद है कि मुझे फिर कभी ऐसी भयानक चीखें नहीं सुननी पड़ेंगी!"

और अपनी ठंडी, कठोर आँखों से मुझे घूरते हुए, एक ऐसी नज़र से जिसे गलत नहीं समझा जा सकता था, वह दरवाज़ा बंद करके चली जाती। कभी-कभी मैं उस छोटी सी जिद्दी बच्ची को अचानक पकड़ने की कोशिश करता और जब वह किसी और चीज़ के बारे में सोच रही होती, तो उससे casually वह शब्द पूछ लेता; अक्सर वह शब्द बोलना शुरू करती और फिर अचानक खुद को रोक लेती, एक ऐसी चुनौती भरी नज़र से जो मानो कह रही हो, 'अरे! मैं तुमसे ज़्यादा चालाक हूँ; तुम मुझसे यह शब्द धोखे से नहीं निकलवा पाओगे।'

एक और मौके पर, मैंने ऐसा दिखाया जैसे मैं सारा मामला भूल गया हूँ; और हमेशा की तरह उससे बातें करता रहा और खेलता रहा, रात तक, जब तक मैंने उसे बिस्तर पर नहीं लिटाया; फिर उसके ऊपर झुककर, जब वह मुस्कुराती हुई और खुशमिजाज लेटी थी, जाने से ठीक पहले, मैंने पहले की तरह ही प्रसन्नता और प्यार से कहा — 'अब, मैरी ऐन, मुझे शुभ रात्रि का चुंबन देने से पहले बस वह शब्द कह दो। अब तुम अच्छी बच्ची हो, और, बेशक, तुम वह शब्द कहोगी।'

नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा।

‘तो फिर मैं तुम्हें किस नहीं कर सकता।’

मुझे परवाह नहीं है।

मैंने व्यर्थ ही अपना दुख व्यक्त किया; व्यर्थ ही पश्चाताप के किसी लक्षण की प्रतीक्षा की; उसे सचमुच कोई परवाह नहीं थी, और मैं उसे अकेला, अंधेरे में छोड़कर चला गया, सबसे अधिक आश्चर्य उसकी इस संवेदनहीन हठधर्मिता के अंतिम प्रमाण पर हुआ। अपने बचपन में मैं माँ द्वारा रात में मुझे चूमने से इनकार करने से अधिक कष्टदायक दंड की कल्पना भी नहीं कर सकता था: यह विचार ही भयानक था। इस विचार से अधिक मैंने कभी कुछ महसूस नहीं किया, क्योंकि सौभाग्य से मैंने कभी ऐसा कोई अपराध नहीं किया जो इस दंड के योग्य समझा जाए; लेकिन मुझे याद है, एक बार मेरी बहन की किसी गलती के लिए, हमारी माँ ने उसे यह दंड देना उचित समझा: उसने क्या महसूस किया, मैं नहीं बता सकता; लेकिन उसके लिए मेरे सहानुभूति के आँसू और पीड़ा मैं जल्दी नहीं भूलूँगा।

मैरी ऐन की एक और परेशानी वाली आदत थी उसकी बार-बार नर्सरी में जाकर अपनी छोटी बहनों और नर्स के साथ खेलने की ज़िद। यह स्वाभाविक तो था, लेकिन उसकी माँ की स्पष्ट इच्छा के विरुद्ध होने के कारण, मैंने उसे ऐसा करने से मना किया और उसे अपने साथ रखने की पूरी कोशिश की; लेकिन इससे नर्सरी के प्रति उसका लगाव और बढ़ गया, और जितना मैं उसे वहाँ से दूर रखने की कोशिश करती, वह उतनी ही बार जाती और उतनी ही देर तक वहाँ रहती, जिससे श्रीमती ब्लूमफील्ड बहुत नाराज़ होतीं, और मुझे अच्छी तरह पता था कि वह सारा दोष मुझ पर ही मढ़ देंगी। मेरी एक और परेशानी सुबह उसे कपड़े पहनाना था: कभी वह नहाना नहीं चाहती थी; कभी वह कपड़े नहीं पहनना चाहती थी, जब तक कि उसे कोई खास फ्रॉक न पहना दी जाए, जो मुझे पता था कि उसकी माँ उसे नहीं पहनाना चाहती थी; कभी वह चीखती और भाग जाती अगर मैं उसके बालों को छूने की कोशिश करती। इसलिए, अक्सर जब बहुत मशक्कत के बाद मैं उसे नीचे लाने में कामयाब होती, तब तक नाश्ता लगभग आधा खत्म हो चुका होता था; और 'मम्मी' की तीखी निगाहें और 'पापा' की चुभती टिप्पणियाँ, जो मुझसे सीधे नहीं तो मुझ पर ही कही जाती थीं, मेरे लिए दंड समान थीं: क्योंकि खाने के समय की पाबंदी न होने से पापा को सबसे ज़्यादा गुस्सा आता था। फिर, छोटी-मोटी परेशानियों में से एक यह भी थी कि मैं

श्रीमती ब्लूमफील्ड को उनकी बेटी के कपड़ों से संतुष्ट नहीं कर पाती थी; और बच्ची के बाल तो देखने लायक ही नहीं होते थे। कभी-कभी, मुझे कड़ा फटकार लगाने के लिए, वह खुद ही सारा काम कर देती थीं और फिर इस काम में होने वाली परेशानी की शिकायत करती थीं।

जब नन्ही फैनी स्कूल के कमरे में आई, तो मुझे उम्मीद थी कि वह कम से कम सौम्य और विनम्र होगी; लेकिन कुछ ही दिनों में, बल्कि कुछ घंटों में ही, मेरा यह भ्रम टूट गया: मैंने उसे एक शरारती, जिद्दी बच्ची पाया, जो अपनी कम उम्र में ही झूठ और छल में लिप्त थी, और अपने दो पसंदीदा हथियारों का इस्तेमाल करने की उसे बेहद आदत थी: जो लोग उसे नाराज करते थे, उनके चेहरे पर थूकना, और जब उसकी अनुचित इच्छाएं पूरी नहीं होती थीं, तो बैल की तरह चिल्लाना। चूंकि वह आमतौर पर अपने माता-पिता की उपस्थिति में काफी शांत रहती थी, और वे उसे एक बेहद सौम्य बच्ची मानते थे, इसलिए उसके झूठ पर आसानी से विश्वास कर लिया जाता था, और उसके शोर-शराबे से उन्हें मुझ पर उसके साथ कठोर और अनुचित व्यवहार का संदेह हुआ; और जब अंततः उसका बुरा स्वभाव उनकी पूर्वाग्रही नजरों में भी स्पष्ट हो गया, तो मुझे लगा कि सारा दोष मुझ पर ही है।

'फैनी कितनी शरारती होती जा रही है!' श्रीमती ब्लूमफील्ड अपने पति से कहतीं। 'क्या तुमने नहीं देखा, मेरे प्रिय, कि स्कूल में आने के बाद से वह कितनी बदल गई है? वह जल्द ही बाकी दोनों की तरह बिगड़ जाएगी; और मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि वे दोनों हाल ही में काफी बिगड़ गई हैं।'

'आप ऐसा कह सकते हैं,' जवाब मिला। 'मैं भी यही सोच रही थी। मुझे लगा था कि जब हम उनके लिए एक गवर्नेंस रखेंगे तो वे सुधर जाएंगे; लेकिन इसके बजाय, वे और भी बिगड़ते जा रहे हैं: मुझे नहीं पता कि उनकी पढ़ाई का क्या हाल है, लेकिन उनकी आदतों में कोई सुधार नहीं हो रहा है; वे दिन-ब-दिन और भी बदतमीज़, गंदे और अशोभनीय होते जा रहे हैं।'

मुझे पता था कि ये सब मुझ पर ही लक्षित था; और ये, और इसी तरह के सभी अप्रत्यक्ष संकेत, मुझे किसी भी खुले आरोप से कहीं अधिक गहराई से प्रभावित करते थे; क्योंकि खुले आरोपों के विरुद्ध तो मैं अपने बचाव में बोलने के लिए प्रेरित हो जाता। अब मैंने यही उचित समझा कि मैं अपने हर आक्रोश को दबा लूँ, अपनी हर संवेदनशीलता को कुचल दूँ, और दृढ़ता से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करता रहूँ; क्योंकि

मेरी स्थिति चाहे कितनी भी कष्टदायक क्यों न हो, मैं इसे बनाए रखना चाहता था। मैंने सोचा, यदि मैं अटूट दृढ़ता और ईमानदारी के साथ संघर्ष करता रहूँ, तो बच्चे समय के साथ अधिक मानवीय हो जाएँगे: हर महीना उन्हें थोड़ा-थोड़ा समझदार बनाने में योगदान देगा, और परिणामस्वरूप, वे अधिक प्रबंधनीय हो जाएँगे; क्योंकि नौ या दस साल का बच्चा अगर छह और सात साल के इन बच्चों की तरह ही उन्मत्त और अनियंत्रित हो तो वह पागल हो जाएगा।

मैंने खुद को यह तसल्ली दी कि यहाँ रहकर मैं अपने माता-पिता और बहन का भला कर रही हूँ; क्योंकि भले ही तनख्वाह कम थी, फिर भी मैं कुछ कमा रही थी, और अगर वे मुझे स्वीकार कर लें तो मैं मितव्ययिता बरतकर उनके लिए आसानी से कुछ बचा सकती थी। फिर भी, यह मेरी अपनी इच्छा थी कि मुझे यह पद मिले: मैंने यह सारी मुसीबत खुद ही मोल ली थी, और मैं इसे सहने के लिए दृढ़ थी; बल्कि, इससे भी बढ़कर, मुझे अपने उठाए गए कदम पर जरा भी पछतावा नहीं था। मैं अपने दोस्तों को यह दिखाना चाहती थी कि अब भी मैं इस जिम्मेदारी को निभाने में सक्षम हूँ, और अंत तक ईमानदारी से इसे निभा सकती हूँ; और अगर कभी मुझे इतनी शांति से समर्पण करना अपमानजनक लगे, या लगातार मेहनत करना असहनीय लगे, तो मैं अपने घर की ओर मुड़ जाऊँगी, और मन ही मन कहूँगी—

वे मुझे कुचल सकते हैं, लेकिन वे मुझे वश में नहीं कर पाएंगे! मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ, उनके बारे में नहीं।

क्रिसमस के आसपास मुझे घर जाने की अनुमति मिली; लेकिन मेरी छुट्टियाँ केवल दो सप्ताह की थीं: श्रीमती ब्लूमफील्ड ने कहा, 'क्योंकि मुझे लगा कि तुम अपने दोस्तों से हाल ही में मिली हो, इसलिए तुम्हें ज़्यादा दिन रुकना पसंद नहीं होगा।' मैंने उन्हें यही सोचने दिया: लेकिन उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मेरे लिए वो चौदह सप्ताह की अनुपस्थिति कितनी लंबी और कितनी कष्टदायक रही थी; मैं अपनी छुट्टियों के लिए कितनी तरस रही थी, और उनके कम होने से मुझे कितनी निराशा हुई थी। फिर भी इसमें उनकी कोई गलती नहीं थी। मैंने उन्हें कभी अपने मन की बात नहीं बताई थी, और उनसे यह उम्मीद भी नहीं की जा सकती थी कि वे इसे समझ लेंगी; मैं उनके साथ पूरे सत्र तक नहीं रही थी, और मुझे पूरी छुट्टी न देने का उनका निर्णय उचित था।

अध्याय IV — दादी माँ

मैं अपने पाठकों को घर लौटने पर अपनी खुशी, वहां बिताए अपने सुख - उस प्यारे, परिचित स्थान पर, प्यार करने वालों और प्यार पाने वालों के बीच थोड़े समय के आराम और स्वतंत्रता का आनंद लेने - और उन्हें एक बार फिर से लंबी विदाई देने के लिए मजबूर होने पर अपने दुख का वर्णन नहीं करना चाहता।

लेकिन मैं पूरे जोश के साथ अपने काम पर लौट आया—यह एक ऐसा कठिन कार्य था जिसकी कल्पना भी कोई नहीं कर सकता, जिसने कभी उस पीड़ा को न महसूस किया हो जब उसे शरारती, उपद्रवी विद्रोहियों के एक समूह की देखभाल और मार्गदर्शन का दायित्व सौंपा जाता है, जिन्हें उसके तमाम प्रयासों से भी अपने कर्तव्य का पालन नहीं कराया जा सकता; साथ ही, वह उनके आचरण के लिए एक उच्च अधिकारी के प्रति उत्तरदायी होता है, जो उससे वह अपेक्षा रखता है जो वरिष्ठ अधिकारी के अधिक शक्तिशाली अधिकार के बिना पूरी नहीं हो सकती; और जिसे वह या तो आलस्य के कारण, या उक्त विद्रोही गिरोह के बीच अलोकप्रिय होने के भय से, देने से इनकार कर देता है। मैं इससे अधिक कष्टदायक स्थिति की कल्पना नहीं कर सकता, जिसमें आप सफलता की कितनी भी कामना करें, अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए कितना भी परिश्रम करें, आपके प्रयासों को आपके अधीनस्थों द्वारा विफल और व्यर्थ कर दिया जाता है, और वरिष्ठों द्वारा अन्यायपूर्ण ढंग से निंदा और गलत मूल्यांकन किया जाता है।

मैंने अपने विद्यार्थियों की आधी शरारतों और अपनी भारी जिम्मेदारियों से उत्पन्न होने वाली आधी परेशानियों का भी वर्णन नहीं किया है, क्योंकि मुझे डर है कि इससे पाठक का धैर्य भंग हो जाएगा; जैसा कि शायद मैंने पहले ही कर दिया है; लेकिन अंतिम कुछ पन्ने लिखने का मेरा उद्देश्य मनोरंजन करना नहीं, बल्कि उन लोगों को लाभ पहुंचाना था जिनसे इसका संबंध हो सकता है; जिन लोगों को इन विषयों में कोई रुचि नहीं है, उन्होंने निस्संदेह इन्हें सरसरी नजर से देखा होगा और शायद लेखक

की अतिशयता पर मन ही मन आपत्ति भी जताई होगी; लेकिन यदि किसी अभिभावक को इससे कोई उपयोगी संकेत मिला हो, या किसी दुर्भाग्यशाली शिक्षिका को इससे जरा सा भी लाभ हुआ हो, तो मेरी मेहनत सार्थक हो जाएगी।

परेशानी और भ्रम से बचने के लिए, मैंने अपने विद्यार्थियों को एक-एक करके लिया और उनके विभिन्न गुणों पर चर्चा की; लेकिन इससे उन तीनों के एक साथ होने की चिंता का पर्याप्त अंदाजा नहीं लगाया जा सकता; जब, जैसा कि अक्सर होता था, सभी 'शरारत करने, मिस ग्रे को चिढ़ाने और उन्हें क्रोधित करने' पर तुले रहते थे।

कभी-कभी, ऐसे मौकों पर, अचानक मेरे मन में यह ख्याल आता है - 'अगर वे मुझे अभी देख पाते!' मेरा मतलब ज़ाहिर तौर पर घर पर मेरे दोस्तों से है; और यह सोचकर कि वे मुझ पर कितना तरस खाएंगे, मुझे खुद पर इतना तरस आने लगता है कि मुझे अपने आँसू रोकना बहुत मुश्किल हो जाता है: लेकिन मैं उन्हें तब तक रोके रखती हूँ जब तक कि मेरे नन्हे सताने वाले मिठाई खाने नहीं चले जाते या बिस्तर पर नहीं चले जाते (मेरी राहत की एकमात्र उम्मीद), और फिर, अकेलेपन के सुकून में, मैं जी भर कर रोने लगती हूँ। लेकिन यह एक ऐसी कमजोरी थी जिसका मैं अक्सर आनंद नहीं उठाती थी: मेरे काम इतने ज़्यादा थे, मेरे खाली समय इतने कीमती थे कि व्यर्थ के विलाप में समय देना मुमकिन नहीं था।

मुझे जनवरी में लौटने के कुछ ही समय बाद की एक बर्फीली, तूफानी दोपहर विशेष रूप से याद है: बच्चे रात के खाने के बाद ऊपर आए और जोर-जोर से चिल्लाते हुए कहने लगे कि वे 'शरारत करने वाले हैं'; और उन्होंने अपना इरादा पूरी तरह से निभाया, हालाँकि मैंने उन्हें समझाने की व्यर्थ कोशिश में अपनी आवाज़ खराब कर ली थी और गले की हर मांसपेशी थक गई थी। मैंने टॉम को एक कोने में खड़ा कर दिया था और उससे कहा था कि जब तक वह अपना काम पूरा नहीं कर लेता, तब तक वह वहाँ से नहीं भाग सकता। इसी बीच, फैनी ने मेरा काम का थैला ले लिया था और उसमें से सामान निकाल रही थी - और साथ ही उसमें थूक भी रही थी। मैंने उससे कहा कि उसे छोड़ दो, लेकिन ज़ाहिर है, कोई फायदा नहीं हुआ। 'इसे जला दो, फैनी!' टॉम चिल्लाया: और फैनी ने तुरंत मेरी बात मान ली। मैं आग से थैला छीनने के लिए दौड़ी और टॉम दरवाजे की ओर भागा। ‘मैरी ऐन, उसकी मेज खिड़की से बाहर फेंक दो!’ वह चिल्लाया: और मेरी कीमती मेज, जिसमें मेरे पत्र और कागज, थोड़े से पैसे और मेरी सारी कीमती चीजें थीं, तीन मंजिला खिड़की से गिरने ही वाली थी। मैं उसे

बचाने के लिए दौड़ी। इसी बीच टॉम कमरे से निकलकर सीढ़ियों से नीचे भाग रहा था, उसके पीछे फैनी भी थी। अपनी मेज को सुरक्षित करके मैं उन्हें पकड़ने के लिए दौड़ी, और मैरी ऐन भी मेरे पीछे-पीछे भागती हुई आई। तीनों मुझसे बचकर घर से बाहर बगीचे में भाग गईं, जहाँ वे बर्फ में उछल-कूद करने लगीं और खुशी से चिल्लाने लगीं।

मुझे क्या करना चाहिए? अगर मैं उनका पीछा करता, तो शायद मैं उनमें से एक को भी पकड़ नहीं पाता, और उन्हें और दूर भगा देता; अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो मैं उन्हें अंदर कैसे लाता? और उनके माता-पिता मेरे बारे में क्या सोचते, अगर वे बच्चों को बिना टोपी, बिना बोनट, बिना दस्ताने और बिना जूते के, गहरी नरम बर्फ में दंगा करते हुए देखते या सुनते? जब मैं इस दुविधा में दरवाजे के ठीक बाहर खड़ा था, गंभीर निगाहों और गुस्से भरे शब्दों से उन्हें डराकर वश में करने की कोशिश कर रहा था, तभी मैंने अपने पीछे से एक कर्कश, तीखी आवाज सुनी, जो चिल्ला रही थी, —

'मिस ग्रे! क्या यह संभव है? आखिर आप क्या सोच रही हैं?'

‘मैं उन्हें अंदर नहीं ला सकता, महोदय,’ मैंने मुड़कर कहा, और श्री ब्लूमफील्ड को देखा, जिनके बाल खड़े हो गए थे और उनकी पीली नीली आँखें अपनी जगह से बाहर निकल रही थीं।

'लेकिन मैं उन्हें अंदर लाने पर अड़ा हूं!' वह चिल्लाया, और करीब आकर पूरी तरह से क्रूर दिखने लगा।

‘तो फिर, महोदय, कृपया आप स्वयं ही उन्हें फोन करें, क्योंकि वे मेरी बात नहीं सुनेंगे,’ मैंने पीछे हटते हुए उत्तर दिया।

‘अंदर आ जाओ, गंदे बच्चों; वरना मैं तुम सबको कोड़े मारूंगा!’ वह दहाड़ा; और बच्चे तुरंत मान गए। ‘देखो! – ये एक शब्द सुनते ही आ जाते हैं!’

'हां, जब आप बोलते हैं।'

और ये बहुत अजीब बात है कि जब आप उनकी देखभाल कर रहे होते हैं, तब भी आप उन पर इससे बेहतर नियंत्रण नहीं रख पाते! — अब, ये रहे — अपने गंदे बर्फीले पैरों के साथ ऊपर चले गए! भगवान के लिए, उनके पीछे जाओ और उन्हें ठीक करो!

उस सज्जन की माताजी उस समय घर में ठहरी हुई थीं; और जैसे ही मैं सीढ़ियाँ चढ़कर ड्राइंग रूम के दरवाजे से गुजरी, मुझे यह सुनकर संतोष हुआ कि वह बूढ़ी महिला अपनी बहू से जोर-जोर से कुछ कह रही थी (क्योंकि मैं केवल उनके बोले गए

शब्दों को ही स्पष्ट रूप से समझ पाई) —

हे भगवान! — मैंने अपने पूरे जीवन में कभी भी — ! — उनकी मृत्यु इतनी निश्चित नहीं देखी — ! क्या तुम्हें लगता है, मेरी प्रिय, वह एक सभ्य व्यक्ति है? मेरी बात मानो — '

मुझे इसके बाद और कुछ नहीं सुनाई दिया; लेकिन इतना ही काफी था।

वरिष्ठ श्रीमती ब्लूमफील्ड मेरे प्रति बहुत ही सजग और विनम्र थीं; और अब तक मैं उन्हें एक अच्छी, दयालु और बातूनी बुज़ुर्ग महिला समझती थी। वह अक्सर मेरे पास आकर गोपनीय लहजे में बातें करतीं; सिर हिलातीं, हाथों और आँखों से इशारे करतीं, जैसा कि कुछ खास तरह की बुज़ुर्ग महिलाएँ करती हैं; हालाँकि मैंने कभी किसी ऐसी महिला को नहीं देखा था जो इस खासियत को इतनी हद तक अपनाती हो। वह बच्चों के साथ मेरी परेशानियों के लिए मुझसे सहानुभूति भी जतातीं और कभी-कभी आधे-अधूरे वाक्यों में, बीच-बीच में सिर हिलाकर और आँख मारकर, बच्चों की माँ के मेरे अधिकारों को सीमित करने और मुझे अपना अधिकार न देने के अनुचित व्यवहार पर अपनी संवेदना व्यक्त करतीं। असहमति जताने का यह तरीका मुझे पसंद नहीं था; और मैं आमतौर पर उनकी बातों पर ध्यान नहीं देती थी, और जो खुलकर कहा जाता था, उससे ज़्यादा कुछ समझने की कोशिश भी नहीं करती थी। कम से कम, मैंने इस बात को केवल अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार किया था कि यदि परिस्थितियाँ अलग होतीं तो मेरा काम इतना कठिन नहीं होता और मैं अपने शिष्य का बेहतर मार्गदर्शन और प्रशिक्षण कर पाता; परन्तु अब मुझे दुगना सतर्क रहना होगा। अब तक, यद्यपि मैंने उस वृद्ध महिला में कुछ कमियाँ देखी थीं (जिनमें से एक अपनी खूबियों का बखान करने की प्रवृत्ति थी), मैं हमेशा उन्हें क्षमा करने और उसके द्वारा बताए गए सभी गुणों के लिए उसे श्रेय देने की इच्छा रखता था, और यहाँ तक कि उसके कुछ अनकहे गुणों की कल्पना भी करता था। दयालुता, जो इतने वर्षों तक मेरे जीवन का आधार रही थी, हाल ही में मुझसे पूरी तरह से छीन ली गई थी, इसलिए मैं उसकी थोड़ी सी भी झलक पाकर कृतज्ञतापूर्वक प्रसन्न होता था। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मेरा हृदय उस वृद्ध महिला के प्रति प्रेम से भर गया और मैं उसके आने पर प्रसन्न होता तथा उसके जाने पर दुःख व्यक्त करता।

लेकिन अब, संयोगवश या संयोग से सुनी गई कुछ बातों ने उसके प्रति मेरे विचारों को पूरी तरह से बदल दिया था: अब मैं उसे पाखंडी और कपटी, चापलूस और मेरे

शब्दों और कार्यों की जासूस समझने लगा था। निस्संदेह, पहले की तरह ही हंसमुख मुस्कान और सम्मानजनक सौहार्दपूर्ण लहजे में उससे मिलना मेरे हित में होता; लेकिन चाहकर भी मैं ऐसा नहीं कर सका: मेरे भावों के साथ मेरा व्यवहार भी बदल गया, और इतना ठंडा और संकोची हो गया कि वह इसे अनदेखा नहीं कर सकी। उसने जल्द ही इसे देख लिया, और उसका व्यवहार भी बदल गया: परिचित अभिवादन एक कठोर प्रणाम में बदल गया, सौम्य मुस्कान की जगह गॉर्गन जैसी भयंकर घूरती निगाहें आ गईं; उसकी जीवंत वाचालता पूरी तरह से मुझसे हटकर 'प्यारे लड़के और लड़कियों' पर केंद्रित हो गई, जिनकी वह उनकी माँ से भी कहीं अधिक बेतुके ढंग से चापलूसी और दुलार करती रही।

मैं स्वीकार करता हूँ कि इस बदलाव से मैं थोड़ा परेशान हुआ था: मुझे उनकी नाराज़गी के परिणामों का डर था, और मैंने अपनी खोई हुई स्थिति को सुधारने के लिए कुछ प्रयास भी किए — और मुझे उम्मीद से कहीं अधिक सफलता मिली। एक बार, मैंने मात्र शिष्टाचारवश उनसे उनकी खांसी के बारे में पूछा; तुरंत ही उनका उदास चेहरा मुस्कान में बदल गया, और उन्होंने मुझे अपनी खांसी और अन्य बीमारियों का विस्तृत विवरण दिया, जिसके बाद उन्होंने अपने धार्मिक समर्पण का वर्णन किया, जो उन्होंने अपने उस विशिष्ट प्रभावशाली और जोशीले अंदाज में किया, जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

'परन्तु सभी समस्याओं का एक ही उपाय है, मेरी प्रिय, और वो है त्याग' (सिर हिलाते हुए), 'स्वर्ग की इच्छा के प्रति त्याग!' (हाथ और आँखें ऊपर उठाते हुए)। 'इसने हमेशा मेरी सभी परीक्षाओं में मेरा साथ दिया है, और हमेशा देता रहेगा' (लगातार सिर हिलाते हुए)। 'परन्तु, यह बात हर कोई नहीं कह सकता' (सिर हिलाते हुए); 'परन्तु मैं तो धर्मपरायण लोगों में से एक हूँ, मिस ग्रे!' (एक बहुत ही महत्वपूर्ण इशारा करते हुए सिर हिलाना)। 'और, ईश्वर का धन्यवाद, मैं हमेशा से धर्मपरायण रही हूँ' (एक और इशारा करते हुए), 'और मुझे इस पर गर्व है!' (जोरदार ढंग से हाथ जोड़ते हुए और सिर हिलाते हुए)। और धर्मग्रंथों के कई उद्धरणों को गलत तरीके से उद्धृत या गलत ढंग से लागू करते हुए, और धार्मिक उद्गारों के साथ, जो प्रस्तुति शैली और प्रस्तुतीकरण में इतने हास्यास्पद थे, भले ही अभिव्यक्ति में नहीं, कि मैं उन्हें दोहराना नहीं चाहती, वह चली गई; उसने अपना बड़ा सा सिर ऊँची मुस्कान के साथ हिलाया - कम से कम खुद पर तो ऐसा ही लग रहा था - और मुझे यह उम्मीद करने

पर मजबूर कर दिया कि आखिरकार वह दुष्ट होने के बजाय कमजोर ही थी।

अगली बार जब वह वेलवुड हाउस आईं, तो मैंने उनसे यह कह दिया कि उन्हें इतना स्वस्थ देखकर मुझे खुशी हुई। इसका असर जादुई था: शिष्टाचार के तौर पर कहे गए मेरे शब्द, एक प्रशंसा के रूप में लिए गए; उनका चेहरा खिल उठा, और उस पल से वह इतनी दयालु और सौम्य हो गईं जितनी कोई कामना कर सकता है - कम से कम बाहरी रूप से तो। अब मैंने उन्हें जैसा देखा और बच्चों से जो सुना, उससे मुझे पता चला कि उनकी हार्दिक मित्रता पाने के लिए मुझे बस हर उपयुक्त अवसर पर उनकी थोड़ी सी प्रशंसा करनी थी: लेकिन यह मेरे सिद्धांतों के विरुद्ध था; और इसी कारण उस नखरेबाज़ बुढ़िया ने जल्द ही मुझे फिर से अपनी कृपा से वंचित कर दिया, और मुझे लगता है कि उन्होंने मुझे बहुत दुख पहुँचाया।

वह अपनी बहू को मेरे विरुद्ध भड़काने में ज़्यादा सफल नहीं हो सकीं, क्योंकि उन दोनों के बीच आपसी नापसंदगी थी—जो मुख्य रूप से उनकी ओर से गुप्त निंदा और बदनामी के ज़रिए ज़ाहिर होती थी; वहीं दूसरी ओर, उनके व्यवहार में अत्यधिक रूखापन और औपचारिकता झलकती थी; और बड़ी बहू की चापलूसी भी छोटी बहू द्वारा उनके बीच खड़ी की गई बर्फ की दीवार को पिघला नहीं सकी। लेकिन अपने बेटे के साथ, बुढ़िया को बेहतर सफलता मिली: वह उनकी सारी बातें सुन लेता था, बशर्ते वह उसके चिड़चिड़े स्वभाव को शांत कर सकें और अपनी कठोर बातों से उसे और ज़्यादा परेशान न करें; और मुझे विश्वास है कि उन्होंने मेरे प्रति उसके पूर्वाग्रह को और भी मज़बूत कर दिया। वह उसे बताती थीं कि मैं बच्चों की शर्मनाक तरीके से उपेक्षा करता हूँ, और यहाँ तक कि उसकी पत्नी भी उनकी ठीक से देखभाल नहीं करती; और उसे खुद ही उनकी देखभाल करनी चाहिए, वरना वे सब बर्बाद हो जाएँगे।

इस तरह उत्तेजित होकर, वह अक्सर खेलते समय खिड़कियों से उन्हें देखने की जहमत उठाता; कभी-कभी वह मैदान में उनका पीछा करता, और अक्सर उन्हें वर्जित कुएँ में खेलते हुए, अस्तबल में कोचवान से बात करते हुए, या खेत की गंदगी में मस्ती करते हुए अचानक पकड़ लेता — और मैं, इस बीच, थकी हुई खड़ी रहती, क्योंकि उन्हें वहाँ से हटाने के व्यर्थ प्रयासों में मेरी सारी ऊर्जा समाप्त हो चुकी होती। अक्सर, वह भोजन करते समय अचानक स्कूल के कमरे में झाँक लेता, और उन्हें मेज और अपने ऊपर दूध गिराते हुए, अपने या एक-दूसरे के मग में उंगलियाँ डालते हुए, या बाघ के शावकों की तरह अपने भोजन के लिए झगड़ते हुए पाता। अगर मैं उस समय

चुप रहती, तो मैं उनके अनुशासनहीन व्यवहार को अनदेखा कर रही होती; अगर (जैसा कि अक्सर होता था) मैं अनुशासन बनाए रखने के लिए अपनी आवाज़ बुलंद कर रही होती, तो मैं अनुचित हिंसा का प्रयोग कर रही होती, और अपने लहजे और भाषा की कठोरता से लड़कियों के लिए एक बुरा उदाहरण पेश कर रही होती।

मुझे वसंत ऋतु की एक दोपहर याद है, जब बारिश के कारण वे बाहर नहीं जा सके थे; लेकिन सौभाग्य से, उन सभी की पढ़ाई पूरी हो चुकी थी, फिर भी वे अपने माता-पिता को चिढ़ाने के लिए नीचे नहीं भागे थे—यह शरारत मुझे बहुत परेशान करती थी, लेकिन बरसात के दिनों में मैं उन्हें ऐसा करने से शायद ही रोक पाता था; क्योंकि नीचे उन्हें कुछ नया और मनोरंजक मिल जाता था—खासकर जब घर में मेहमान होते थे; और उनकी माँ, हालाँकि वह मुझे उन्हें कक्षा में रखने के लिए कहती थी, उन्हें बाहर जाने पर कभी डांटती नहीं थी, न ही उन्हें वापस भेजने की जहमत उठाती थी। लेकिन उस दिन वे अपने वर्तमान घर से संतुष्ट लग रहे थे, और इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह थी कि वे मनोरंजन के लिए मुझ पर निर्भर हुए बिना, और आपस में झगड़ा किए बिना, एक साथ खेलने के लिए तैयार थे। उनका काम कुछ अजीब था: वे सभी खिड़की के पास फर्श पर, टूटे हुए खिलौनों के ढेर और पक्षियों के अंडों के ढेर पर—या यूँ कहें कि अंडों के छिलकों पर—एक साथ बैठे थे, क्योंकि सौभाग्य से उनके अंदर का भाग निकाल लिया गया था। ये लोग सीपियों को तोड़कर छोटे-छोटे टुकड़ों में पीस रहे थे, किसलिए? मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वे ऐसा क्यों कर रहे थे; लेकिन जब तक वे शांत थे और कोई शरारत नहीं कर रहे थे, मुझे कोई फ़िक्र नहीं थी; और एक अजीब सी शांति के साथ मैं आग के पास बैठकर मैरी ऐन की गुड़िया के लिए एक फ्रॉक को अंतिम रूप दे रही थी; मेरा इरादा था कि जब यह काम पूरा हो जाएगा, तो मैं अपनी माँ को एक पत्र लिखना शुरू करूँगी। अचानक दरवाज़ा खुला और मिस्टर ब्लूमफ़ील्ड का धुंधला सा चेहरा अंदर झाँका।

'यहाँ सब एकदम शांत है! तुम लोग क्या कर रहे हो?' उसने कहा। 'आज तो कोई नुकसान नहीं है,' मैंने सोचा। लेकिन उसकी राय अलग थी। खिड़की के पास जाकर, बच्चों को काम करते देख, वह चिढ़कर बोला — 'आखिर तुम लोग क्या कर रहे हो?'

'हम अंडे के छिलके पीस रहे हैं, पापा!' टॉम चिल्लाया।

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इतनी गंदगी फैलाने की, नन्हे शैतानों! क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि तुम कालीन का क्या हाल कर रहे हो?' (कालीन सादा भूरा था)। 'मिस ग्रे,

क्या आपको पता था कि वे क्या कर रहे थे?’

'जी श्रीमान।'

'आप यह जानते थे?'

'हाँ।'

‘तुम्हें पता था! और तुम सचमुच वहीं बैठे रहे और उन्हें बिना एक शब्द भी डांट-फटकार लगाए ऐसा करने दिया!’

मुझे नहीं लगता था कि वे कोई नुकसान पहुंचा रहे थे।

‘कोई नुकसान! अरे, ज़रा वहाँ देखो! उस कालीन को देखो, और समझो—क्या इससे पहले किसी ईसाई घर में ऐसा कुछ था? कोई आश्चर्य नहीं कि तुम्हारा कमरा सूअरखाने के लायक नहीं है—कोई आश्चर्य नहीं कि तुम्हारे छात्र सूअरों के बच्चों से भी बदतर हैं!—कोई आश्चर्य नहीं—ओह! कसम से, मेरा सब्र टूट रहा है’ और वह दरवाज़ा ज़ोर से बंद करके चला गया, जिससे बच्चे हँस पड़े।

‘यह तो मेरी सहनशीलता की सीमा भी पार कर रहा है!’ मैंने उठते हुए बुदबुदाया; और लोहे की छड़ को पकड़कर उसे बार-बार राख में पटका और असामान्य ऊर्जा से उसे उछाला; इस प्रकार आग को ठीक करने के बहाने अपनी झुंझलाहट को शांत किया।

इसके बाद, श्री ब्लूमफील्ड लगातार यह देखने के लिए आते रहते थे कि कक्षा साफ-सुथरी है या नहीं; और चूंकि बच्चे लगातार फर्श पर खिलौनों के टुकड़े, लकड़ियाँ, पत्थर, भूसे, पत्ते और अन्य कूड़ा बिखेरते रहते थे, जिसे मैं न तो रोक सकता था और न ही उन्हें उठाने के लिए बाध्य कर सकता था, और नौकर भी उसे साफ करने से इनकार कर देते थे, इसलिए मुझे अपने कीमती खाली समय का एक बड़ा हिस्सा फर्श पर घुटनों के बल बैठकर, बड़ी मेहनत से चीजों को व्यवस्थित करने में बिताना पड़ता था। एक बार मैंने उनसे कहा कि जब तक वे कालीन से सब कुछ नहीं उठा लेते, तब तक उन्हें रात का खाना नहीं खाना चाहिए; फैनी को अपना खाना तब मिलेगा जब वह एक निश्चित मात्रा उठा लेगी, मैरी ऐन को तब जब वह उससे दुगुनी मात्रा उठा लेगी, और टॉम को बाकी सब साफ करना था। आश्चर्य की बात है, लड़कियों ने अपना काम किया; लेकिन टॉम इतना क्रोधित था कि वह मेज पर टूट पड़ा, रोटी और दूध फर्श पर बिखेर दिया, अपनी बहनों को पीटा, कोयले के बर्तन से कोयले बाहर फेंक दिए, मेज और कुर्सियों को पलटने की कोशिश की, और ऐसा लग

रहा था कि वह कमरे की सारी चीजों को तहस-नहस कर देगा: लेकिन मैंने उसे पकड़ लिया, और मैरी एन को उसकी माँ को बुलाने के लिए भेजकर, लातों, घूंसे, चीख-पुकार और गालियों के बावजूद, उसे तब तक पकड़े रखा जब तक श्रीमती ब्लूमफील्ड नहीं आ गईं।

उसने कहा, 'मेरे बेटे को क्या हुआ है?'

और जब उसे यह मामला समझाया गया, तो उसने बस इतना ही किया कि उसने कमरे को व्यवस्थित करने और मास्टर ब्लूमफील्ड के लिए रात का खाना लाने के लिए नर्स की नौकरानी को बुलवाया।

'देखो अब!' टॉम ने विजयी भाव से चिल्लाते हुए, अपने भोजन से नज़रें उठाते हुए कहा, उसका मुँह इतना भरा हुआ था कि वह कुछ बोल ही नहीं पा रहा था। 'देखो अब, मिस ग्रे! देखो, मुझे तुम्हारे बावजूद मेरा खाना मिल गया है: और मैंने एक भी चीज़ नहीं उठाई!'

घर में एकमात्र व्यक्ति जिसे मेरे प्रति सच्ची सहानुभूति थी, वह नर्स थी; क्योंकि उसने भी इसी तरह की पीड़ाएँ झेली थीं, हालाँकि कम हद तक; क्योंकि उसका काम पढ़ाना नहीं था, और न ही वह अपने मरीज़ के आचरण के लिए इतनी ज़िम्मेदार थी।

'ओह, मिस ग्रे!' वह कहतीं, 'आपको अपने बच्चों के साथ कुछ परेशानी तो है ही!'

'जी हां, बेट्टी; और मुझे पूरा यकीन है कि तुम जानती हो कि वह क्या है।'

'हाँ, मैं ऐसा करता हूँ! लेकिन मैं तुम्हारी तरह उन पर इतना गुस्सा नहीं करता। और हाँ, कभी-कभी मैं उन्हें एक थप्पड़ भी मार देता हूँ: और उन छोटे बच्चों को—मैं कभी-कभी उन्हें अच्छी तरह पीटता हूँ: उनके लिए और कोई चारा नहीं है, जैसा कि वे कहते हैं। खैर, मैंने इसके लिए अपनी नौकरी खो दी है।'

'क्या तुमने ऐसा किया है, बेट्टी? मैंने सुना था कि तुम जाने वाली हो।'

अरे वाह, भगवान भला करे! मालकिन ने मुझे तीन हफ्ते के पाप की चेतावनी दी थी। उन्होंने क्रिसमस से पहले ही बता दिया था कि अगर मैंने उन्हें दोबारा मारा तो क्या होगा; लेकिन मैं उन्हें मारने से खुद को रोक नहीं पाया। मुझे नहीं पता कि आप कैसे कर रहे हैं, क्योंकि मिस मैरी एन और उनकी बहनें तो उनसे कहीं ज्यादा बुरी हैं!

अध्याय V — चाचा

उस बुज़ुर्ग महिला के अलावा, परिवार का एक और रिश्तेदार था, जिसकी मुलाक़ातें मुझे बहुत परेशान करती थीं - ये थे 'अंकल रॉबसन', श्रीमती ब्लूमफ़ील्ड के भाई; लंबे, आत्मनिर्भर व्यक्ति, काले बाल और अपनी बहन की तरह पीला रंग, ऐसी नाक जो मानो धरती को भी नकारती हो, और छोटी-छोटी भूरी आँखें, जो अक्सर आधी बंद रहती थीं, जिनमें असली मूर्खता और आसपास की हर चीज़ के प्रति बनावटी तिरस्कार का मिश्रण दिखता था। वे गठीले और मज़बूत शरीर वाले थे, लेकिन उन्होंने किसी तरह अपनी कमर को बेहद पतला कर लिया था; और यह, साथ ही उनके शरीर की अस्वाभाविक स्थिरता, यह दर्शाती थी कि ऊँचे विचारों वाले, मर्दाना श्री रॉबसन, जो महिलाओं को तुच्छ समझते थे, दिखावे से भी ऊपर नहीं थे। वे शायद ही कभी मेरी ओर ध्यान देते थे; और जब देते भी थे, तो उनके लहजे और व्यवहार में एक खास तरह का घमंड और अकड़ होती थी जिससे मुझे यकीन हो जाता था कि वे सज्जन नहीं हैं: हालाँकि उनका इरादा इसके विपरीत प्रभाव डालना होता था। लेकिन मुझे उसका आना नापसंद नहीं था, बल्कि इसलिए नापसंद था क्योंकि उसने बच्चों को नुकसान पहुंचाया - उनकी सभी बुरी प्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया, और कुछ ही मिनटों में उस थोड़े से अच्छे काम को बर्बाद कर दिया जिसे हासिल करने में मुझे महीनों की मेहनत लगी थी।

फैनी और छोटी हैरियट पर वह शायद ही कभी ध्यान देता था; लेकिन मैरी ऐन उसकी पसंदीदा थी। वह लगातार उसके दिखावे की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता रहता था (जिसे मैंने कुचलने की पूरी कोशिश की थी), उसके सुंदर चेहरे की तारीफ करता रहता था, और उसके मन में उसकी दिखावट के बारे में तरह-तरह के घमंडी विचार भरता रहता था (जिन्हें मैंने उसे सिखाया था कि अपने मन और व्यवहार के विकास के मुकाबले तुच्छ समझना चाहिए); और मैंने कभी किसी बच्चे को इतना आसानी से चापलूसी से प्रभावित होते नहीं देखा जितना वह होती थी। चाहे उसमें या उसके भाई में कोई भी कमी होती, वह उसकी प्रशंसा न करके भी उस पर हंसकर उसे बढ़ावा देता

था: लोग यह नहीं जानते कि बच्चों की गलतियों पर हंसकर और उनके सच्चे दोस्तों द्वारा उन्हें सिखाई गई घृणा को हंसी में उड़ाकर वे उन्हें कितना नुकसान पहुंचाते हैं।

हालांकि श्री रॉबसन पक्के शराबी नहीं थे, फिर भी वे आदतन बड़ी मात्रा में शराब पीते थे और कभी-कभार बड़े चाव से ब्रांडी और पानी का एक गिलास पीते थे। उन्होंने अपने भतीजे को भी पूरी लगन से उनका अनुकरण करना सिखाया और यह विश्वास दिलाया कि वह जितनी अधिक शराब और मादक पेय पी सकता है और उसे जितना अधिक पसंद आता है, उतना ही वह अपने साहसी और मर्दाना स्वभाव को प्रदर्शित करता है और अपनी बहनों से श्रेष्ठ बनता है। श्री ब्लूमफील्ड को इस पर ज्यादा आपत्ति नहीं थी, क्योंकि उनका पसंदीदा पेय जिन और पानी था; जिसे वे प्रतिदिन लगातार घूंट-घूंट करके पीते थे - और इसी कारण से उनका सांवला रंग और चिड़चिड़ा स्वभाव था।

श्री रॉबसन ने भी उपदेश और उदाहरण दोनों से टॉम की निम्न प्राणियों पर अत्याचार करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। जब वह अक्सर अपने बहनोई के खेत में शिकार करने आते थे, तो अपने पसंदीदा कुत्तों को साथ लाते थे; और उनके साथ इतना क्रूर व्यवहार करते थे कि मैं, भले ही गरीब था, किसी भी दिन एक सोना देने को तैयार था यह देखने के लिए कि उनमें से कोई एक कुत्ता उन्हें काट ले, बशर्ते कि जानवर ऐसा बिना किसी दंड के कर सके। कभी-कभी, जब वह बहुत ही खुशमिजाज मूड में होते थे, तो बच्चों के साथ चिड़ियों के घोंसले ढूंढने चले जाते थे, जिससे मुझे बहुत चिढ़ होती थी; क्योंकि लगातार कोशिशों से, मुझे लगता था कि मैंने उन्हें इस शौक की बुराई कुछ हद तक दिखा दी है, और उम्मीद थी कि समय के साथ उनमें न्याय और मानवता की भावना आ जाएगी; लेकिन चाचा रॉबसन के साथ दस मिनट चिड़ियों के घोंसले ढूंढना, या उनकी पिछली बर्बरताओं के बारे में सुनकर उनकी एक हंसी भी, मेरे सारे तर्क और समझाने के प्रयासों को तुरंत नष्ट करने के लिए काफी थी। लेकिन खुशी की बात यह थी कि उस वसंत ऋतु में, उन्हें केवल एक बार खाली घोंसले या अंडे ही मिले - क्योंकि वे पक्षियों के अंडे से बच्चे निकलने तक उन्हें छोड़ने के लिए बहुत अधीर थे; उस एक बार, टॉम, जो अपने चाचा के साथ पास के बागान में गया था, खुशी से झूमता हुआ बगीचे में दौड़ा आया, उसके हाथों में नन्हे-नन्हे चूजों का झुंड था। मैरी ऐन और फैनी, जिन्हें मैं अभी बाहर ला रहा था, उसकी इस उपलब्धि को देखने और अपने लिए एक-एक पक्षी मांगने के लिए दौड़ पड़ीं। 'नहीं,

एक भी नहीं!' टॉम चिल्लाया। 'ये सब मेरे हैं; चाचा रॉबसन ने मुझे दिए हैं - एक, दो, तीन, चार, पांच - तुम इनमें से एक को भी हाथ नहीं लगाओगी! नहीं, एक को भी नहीं, अपनी जान की बाजी लगाकर!' वह खुशी से झूमता हुआ बोला; उसने घोंसला जमीन पर रख दिया और उस पर पैर फैलाकर खड़ा हो गया, हाथ अपनी पैंट की जेबों में डाले, शरीर आगे की ओर झुका हुआ था और खुशी के मारे उसका चेहरा तरह-तरह के भावों से भरा हुआ था।

लेकिन तुम मुझे उन्हें ठीक करते हुए देखोगे। मेरी कसम, मैं उन्हें बुरी तरह पीटूँगा! देखो, मैं ऐसा करता हूँ या नहीं। कसम से! उस घोंसले में मेरे लिए बहुत ही बढ़िया खेल है।

‘लेकिन, टॉम,’ मैंने कहा, ‘मैं तुम्हें उन पक्षियों को यातना देने की अनुमति नहीं दूंगा। या तो उन्हें तुरंत मार दिया जाए या फिर उन्हें उसी स्थान पर वापस ले जाया जाए जहाँ से तुम उन्हें लाए थे, ताकि बूढ़े पक्षी उन्हें भोजन देना जारी रख सकें।’

'लेकिन आपको नहीं पता कि वह जगह कहाँ है, मैडम: यह बात सिर्फ मुझे और अंकल रॉबसन को ही पता है।'

लेकिन अगर तुम मुझे नहीं बताओगे, तो मैं उन्हें खुद मार डालूंगा - भले ही मुझे ऐसा करना कितना भी नापसंद हो।'

‘तुम्हारी हिम्मत नहीं होगी। जान बचाने के लिए भी तुम उन्हें छूने की हिम्मत नहीं करोगी! क्योंकि तुम्हें पता है पापा, मम्मी और अंकल रॉबसन गुस्सा हो जाएंगे। हा हा! मैंने तुम्हें पकड़ लिया, मिस!’

‘इस तरह के मामले में मैं बिना किसी से सलाह लिए वही करूंगा जो मुझे सही लगेगा। अगर तुम्हारे पापा और मम्मी को यह मंजूर नहीं है, तो मुझे उन्हें नाराज करने का अफसोस होगा; लेकिन तुम्हारे चाचा रॉबसन की राय मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती।’

इसलिए, कर्तव्य की भावना से प्रेरित होकर, स्वयं को बीमार करने और अपने मालिकों के क्रोध का शिकार होने के जोखिम पर भी, मैंने माली द्वारा चूहेदानी के लिए रखे गए एक बड़े चपटे पत्थर को उठाया; फिर, उस छोटे तानाशाह को पक्षियों को वापस ले जाने देने के लिए एक बार फिर व्यर्थ प्रयास करने के बाद, मैंने उससे पूछा कि वह उनके साथ क्या करने वाला है। उसने शैतानी खुशी के साथ यातनाओं की एक सूची शुरू कर दी; और जब वह अपनी यातनाओं में व्यस्त था, मैंने पत्थर को उसके

शिकारों पर गिरा दिया और उन्हें उसके नीचे कुचल दिया। इस दुस्साहसी अत्याचार के परिणामस्वरूप चीख-पुकार मच गई, गालियाँ भयानक थीं; चाचा रॉबसन अपनी बंदूक लेकर रास्ते से आ रहे थे, और उसी समय अपने कुत्ते को लात मारने के लिए रुके थे। टॉम उनकी ओर दौड़ा, और कसम खाई कि वह जूनो के बजाय मुझे लात मारने पर मजबूर करेगा। श्री रॉबसन अपनी बंदूक पर झुक गए, और अपने भतीजे के क्रोध की हिंसा और मेरे ऊपर बरसाई गई कड़वी गालियों और अपमानजनक शब्दों पर खूब हँसे। 'वाह, तुम तो बड़े अच्छे हो!' उसने आखिरकार हथियार उठाते हुए और घर की ओर बढ़ते हुए कहा। 'अरे यार, इस लड़के में तो बहुत हिम्मत भी है। कसम से, मैंने इससे बड़ा बदमाश कभी नहीं देखा। यह तो पहले से ही किसी के दबाव में नहीं है: भगवान कसम! यह तो माँ, दादी, नौकरानी, सबकी बात नहीं मानता! हा हा हा! कोई बात नहीं, टॉम, मैं कल तुम्हारे लिए और बच्चे ला दूँगा।'

'अगर आपने ऐसा किया, मिस्टर रॉबसन, तो मैं उन्हें भी मार डालूंगा,' मैंने कहा।

'हम्फ!' उसने जवाब दिया और मुझे घूरकर देखा—जिस पर, उसकी उम्मीदों के विपरीत, मैंने बिना पलक झपकाए उसे सहन किया—फिर वह घोर तिरस्कार के भाव से मुँह फेरकर घर में चला गया। इसके बाद टॉम अपनी माँ को बताने गया। उनकी आदत किसी भी विषय पर ज़्यादा बोलने की नहीं थी; लेकिन, जब उन्होंने मुझे दोबारा देखा, तो उनका चेहरा और व्यवहार पहले से कहीं ज़्यादा गंभीर और ठंडा था। मौसम के बारे में कुछ हल्की-फुल्की टिप्पणी करने के बाद, उन्होंने कहा— 'मुझे खेद है, मिस ग्रे, आपको मास्टर ब्लूमफील्ड के मनोरंजन में दखल देना ज़रूरी लगा; पक्षियों को मारने से वे बहुत दुखी थे।'

मैंने उत्तर दिया, 'जब मास्टर ब्लूमफील्ड का मनोरंजन सजीव प्राणियों को चोट पहुँचाने में निहित है, तो मुझे हस्तक्षेप करना अपना कर्तव्य लगता है।'

उसने शांत भाव से कहा, 'ऐसा लगता है कि तुम भूल गए हो कि ये सभी जीव हमारी सुविधा के लिए ही बनाए गए थे।'

मैंने सोचा कि उस सिद्धांत में कुछ संदेह की गुंजाइश है, लेकिन मैंने केवल इतना ही उत्तर दिया - 'यदि वे ऐसा करते भी हैं, तो हमें अपने मनोरंजन के लिए उन्हें प्रताड़ित करने का कोई अधिकार नहीं है।'

उसने कहा, 'मुझे लगता है कि एक बच्चे के मनोरंजन की तुलना किसी आत्माहीन जानवर के कल्याण से नहीं की जा सकती।'

“परन्तु, बच्चे के भले के लिए, उसे ऐसे मनोरंजन के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए,” मैंने अपनी इस असामान्य ज़िद की भरपाई करने के लिए यथासंभव विनम्रता से उत्तर दिया। “धन्य हैं वे जो दयालु हैं, क्योंकि उन्हें दया प्राप्त होगी।”

‘ओह! बिल्कुल; लेकिन यह हमारे एक-दूसरे के प्रति व्यवहार से संबंधित है।’

मैंने यह कहने का साहस किया, “दयालु व्यक्ति अपने पशु पर दया दिखाता है।”

‘मुझे लगता है कि आपने दया नहीं दिखाई,’ उसने एक छोटी, कड़वी हंसी के साथ जवाब दिया; ‘बेचारे पक्षियों को उस भयानक तरीके से थोक में मार डाला, और एक मामूली सनक के लिए उस प्यारे लड़के को इतनी पीड़ा दी।’

मैंने इससे अधिक न बोलना ही उचित समझा। श्रीमती ब्लूमफील्ड के साथ मेरा झगड़ा होने की यह सबसे करीबी घटना थी; साथ ही, उनके साथ मेरे पहले आगमन के दिन से लेकर अब तक मैंने उनसे एक बार में इतने अधिक शब्द भी कभी नहीं बोले थे।

लेकिन श्री रॉबसन और बूढ़ी श्रीमती ब्लूमफील्ड ही वेलवुड हाउस में आने वाले एकमात्र मेहमान नहीं थे जिनसे मुझे चिढ़ होती थी; हर आगंतुक मुझे कमोबेश परेशान करता था; ऐसा इसलिए नहीं था कि वे मेरी उपेक्षा करते थे (हालाँकि इस मामले में उनका व्यवहार मुझे अजीब और अप्रिय लगता था), बल्कि इसलिए कि मेरे लिए अपने विद्यार्थियों को उनसे दूर रखना असंभव था, जैसा कि मुझसे बार-बार कहा जाता था: टॉम को उनसे बात करनी ही थी, और मैरी ऐन को उनकी नज़र में आना ही था। न तो उनमें से किसी को शर्मिंदगी या सामान्य शालीनता का भी एहसास था। वे अभद्र और शोर-शराबे के साथ अपने बड़ों की बातचीत में दखल देते, उनसे सबसे अभद्र प्रश्न पूछते, सज्जनों के गले को ज़ोर से पकड़ते, बिना बुलाए उनकी गोद में चढ़ जाते, उनके कंधों पर लटकते या उनकी जेबें टटोलते, महिलाओं के गाउन खींचते, उनके बाल बिखेरते, उनके कॉलर उलटते और उनके गहने माँगते।

श्रीमती ब्लूमफील्ड को यह सब देखकर हैरानी और गुस्सा तो आया, लेकिन उन्होंने इसे रोकने की समझदारी नहीं दिखाई: उन्हें मुझसे ही इसे रोकने की उम्मीद थी। लेकिन मैं कैसे रोक सकती थी—जब मेहमान, अपने अच्छे कपड़ों और नए चेहरों के साथ, अपने माता-पिता को खुश करने के लिए लगातार उनकी चापलूसी और लाड़-प्यार कर रहे थे—मैं अपने साधारण कपड़ों, आम चेहरे और ईमानदार शब्दों से उन्हें कैसे अपनी ओर खींच सकती थी? मैंने इसके लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी: उन्हें

हंसाने की कोशिश करके, मैंने उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास किया; अपने अधिकार का इस्तेमाल करके और अपनी हिम्मत से सख्ती बरतकर, मैंने उन्हें मेहमानों को परेशान करने से रोकने की कोशिश की; और उनके अभद्र व्यवहार की निंदा करके, उन्हें ऐसा करने से शर्मिंदा करने की कोशिश की। लेकिन उन्हें कोई शर्म नहीं थी; उन्होंने उस अधिकार का तिरस्कार किया जिसके पीछे कोई भय नहीं था; और जहाँ तक दया और स्नेह की बात है, या तो उनके पास दिल ही नहीं था, या जो था भी, वह इतना छिपा हुआ था कि मैं अपने सभी प्रयासों के बावजूद, अभी तक उन तक पहुँचने का तरीका नहीं खोज पाई थी।

लेकिन जल्द ही इस क्षेत्र में मेरी परीक्षाएँ समाप्त हो गईं—जितनी मैंने उम्मीद या इच्छा की थी, उससे कहीं जल्दी। मई के अंत में एक सुहावनी शाम को, जब मैं छुट्टियों के नज़दीक आने की खुशी मना रहा था और अपने विद्यार्थियों के साथ कुछ प्रगति करने पर खुद को बधाई दे रहा था (कम से कम उनकी पढ़ाई के मामले में, क्योंकि मैंने उनके दिमाग में कुछ तो डाला था और आखिरकार उन्हें थोड़ा—बहुत थोड़ा—समझदार बना दिया था कि वे अपने पाठ समय पर पूरे कर लें ताकि उन्हें मनोरंजन के लिए कुछ समय मिल सके, बजाय इसके कि वे सारा दिन व्यर्थ में खुद को और मुझे परेशान करते रहें), श्रीमती ब्लूमफील्ड ने मुझे बुलवाया और शांति से बताया कि ग्रीष्म संक्रांति के बाद मेरी सेवाओं की आवश्यकता नहीं होगी। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि मेरा चरित्र और सामान्य आचरण निर्दोष था; लेकिन मेरे आने के बाद से बच्चों में इतना कम सुधार हुआ था कि श्री ब्लूमफील्ड और उन्हें लगा कि उन्हें शिक्षा का कोई दूसरा तरीका खोजना चाहिए। हालाँकि वे अपनी उम्र के अधिकांश बच्चों से क्षमताओं में श्रेष्ठ थे, लेकिन शैक्षणिक उपलब्धियों में वे उनसे काफी पीछे थे; उनके तौर-तरीके असभ्य थे और उनका स्वभाव अनियंत्रित था। और इसका कारण उन्होंने मेरी ओर से पर्याप्त दृढ़ता और लगन तथा निरंतर सावधानी की कमी को बताया।

अटूट दृढ़ता, समर्पित परिश्रम, अथक लगन और निरंतर सावधानी - ये वे गुण थे जिन पर मुझे मन ही मन गर्व था; और जिनके द्वारा मैंने आशा की थी कि समय आने पर मैं सभी कठिनाइयों को पार कर लूंगा और अंततः सफलता प्राप्त कर लूंगा। मैं अपनी बात का बचाव करना चाहता था; लेकिन बोलने का प्रयास करते ही मेरी आवाज़ लड़खड़ा गई; और किसी भी भावना को व्यक्त करने या आँखों में उमड़ रहे आँसुओं को बहने देने के बजाय, मैंने चुप रहना और स्वयं को दोषी ठहराए गए

अपराधी की तरह सब कुछ सहन करना चुना।

इस प्रकार मुझे बर्खास्त कर दिया गया, और इस प्रकार मैं अपने घर की तलाश में निकल पड़ी। हाय! वे मेरे बारे में क्या सोचेंगे? अपने सारे दावों के बावजूद, मैं तीन छोटे बच्चों की गवर्नेंस के पद पर एक साल भी नहीं टिक पाई, जिनकी माँ के बारे में मेरी चाची ने कहा था कि वह एक 'बहुत अच्छी महिला' हैं। इस तरह परखे जाने और कमतर पाए जाने के बाद, मुझे उम्मीद नहीं थी कि वे मुझे फिर से मौका देंगे। और यह एक अप्रिय विचार था; क्योंकि मैं भले ही परेशान, व्यथित और निराश हो चुकी थी, और अपने घर से मुझे कितना भी प्यार और सम्मान हो गया था, मैं अभी भी रोमांच से नहीं थकी थी, और न ही अपने प्रयासों में ढील देने को तैयार थी। मैं जानती थी कि सभी माता-पिता श्रीमान और श्रीमती ब्लूमफील्ड जैसे नहीं होते, और मुझे यकीन था कि सभी बच्चे उनके बच्चों जैसे नहीं होते। अगला परिवार अलग होगा, और कोई भी बदलाव बेहतर के लिए ही होगा। मैंने कठिनाइयों का सामना किया था, अनुभव से सीखा था, और मैं उन लोगों की नजरों में अपना खोया हुआ सम्मान वापस पाना चाहती थी, जिनकी राय मेरे लिए पूरी दुनिया से बढ़कर थी।

अध्याय VI — फिर से पादरी का निवास

कुछ महीनों तक मैं शांतिपूर्वक घर पर रहा, स्वतंत्रता और विश्राम का आनंद लेता रहा, और सच्ची मित्रता का अनुभव करता रहा, जिनसे मैं इतने लंबे समय से वंचित था; और अपनी पढ़ाई में पूरी लगन से लगा रहा, ताकि वेलवुड हाउस में रहने के दौरान जो कुछ खोया था, उसकी भरपाई कर सकूँ और भविष्य के लिए नई नींव रख सकूँ। मेरे पिता का स्वास्थ्य अभी भी काफी कमजोर था, लेकिन पिछली बार जब मैंने उन्हें देखा था, उससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा था; और मुझे खुशी थी कि मैं अपने लौटने से उन्हें खुश कर सका और उनके पसंदीदा गीत गाकर उनका मनोरंजन कर

सका।

मेरी असफलता पर किसी ने खुशी नहीं जताई, न ही किसी ने कहा कि मुझे उनकी सलाह मानकर चुपचाप घर पर ही रहना चाहिए था। सभी मुझे वापस पाकर खुश थे और मेरे कष्टों की भरपाई के लिए पहले से कहीं अधिक स्नेह बरसा रहे थे; लेकिन किसी ने भी उस पैसे को हाथ नहीं लगाया जो मैंने इतनी खुशी से कमाया था और इतनी सावधानी से बचाया था, इस उम्मीद में कि मैं उसे उनके साथ बाँट सकूँगी। थोड़ी-थोड़ी बचत करके, हमारा कर्ज लगभग चुका दिया गया था। मैरी को चित्रकारी में अच्छी सफलता मिली थी; लेकिन हमारे पिता ने जोर देकर कहा था कि वह भी अपनी सारी मेहनत की कमाई अपने पास ही रखे। हमारे साधारण कपड़ों और छोटे-मोटे खर्चों में से जो भी बचत होती थी, उसे उन्होंने बचत खाते में जमा करने का निर्देश दिया; यह कहते हुए कि हमें नहीं पता कि हम कब तक केवल उसी पर निर्भर हो जाएँगे: क्योंकि उन्हें लगता था कि वे हमारे साथ ज्यादा दिन नहीं रहेंगे, और उनके जाने के बाद हमारी माँ और हमारा क्या होगा, यह तो केवल भगवान ही जानते हैं!

प्यारे पापा! अगर उन्होंने अपनी मृत्यु के बाद हम पर आने वाले कष्टों के बारे में कम चिंता की होती, तो मुझे पूरा विश्वास है कि वह भयानक घटना इतनी जल्दी घटित नहीं होती। मेरी माँ उन्हें इस विषय पर सोचने भी नहीं देतीं, अगर वह ऐसा करने से रोक सकतीं।

एक बार उसने कहा, 'ओह, रिचर्ड! अगर तुम ऐसे निराशाजनक विषयों को अपने मन से निकाल दो, तो तुम हममें से किसी के भी बराबर जीओगे; कम से कम तुम लड़कियों की शादी देख पाओगे, और खुद एक खुशमिजाज दादा बन पाओगे, और तुम्हारे साथ एक हंसमुख बूढ़ी औरत होगी।'

मेरी मां हंसी, और मेरे पिता भी हंसे: लेकिन उनकी हंसी जल्द ही एक उदास आह में विलीन हो गई।

‘उन्होंने शादी कर ली – बेचारे बेसहारा!’ उसने कहा; ‘पता नहीं उन्हें कौन अपनाएगा!’

‘अरे, जो उनके लिए आभारी नहीं है, वो ऐसा क्यों करेगा? जब तुमने मुझे लिया था, तब मैं बिल्कुल कंगाल था, है ना? और तुमने कम से कम ऐसा दिखावा तो किया था कि तुम मुझे पाकर बहुत खुश हो। लेकिन उनकी शादी हो या न हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता: हम जीविका कमाने के हज़ार ईमानदार तरीके निकाल सकते हैं।

और मुझे हैरानी होती है, रिचर्ड, कि तुम अपनी मृत्यु की स्थिति में हमारी गरीबी के बारे में सोच भी कैसे सकते हो; मानो वह तुम्हारे खोने की विपत्ति के मुकाबले कुछ भी हो – एक ऐसा दुख जिसे तुम अच्छी तरह जानते हो कि वह बाकी सभी दुखों को निगल जाएगा, और जिससे हमें बचाने के लिए तुम्हें हर संभव प्रयास करना चाहिए: और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए प्रसन्न मन से बढ़कर कुछ नहीं है।'

'मुझे पता है, ऐलिस, मेरे जैसा लगातार शिकायत करना गलत है, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता: तुम्हें मेरा साथ देना होगा।'

'अगर मैं तुम्हें बदल सकती हूँ, तो मैं तुम्हें बर्दाश्त नहीं करूँगी,' मेरी माँ ने उत्तर दिया: लेकिन उनके शब्दों की कठोरता उनके स्वर में निहित स्नेह और मनमोहक मुस्कान से कम हो गई, जिससे मेरे पिता फिर से मुस्कुरा उठे, इस बार उनकी मुस्कान पहले की तुलना में कम उदास और कम क्षणिक थी।

'मम्मा,' मैंने उनसे अकेले में बात करने का मौका मिलते ही कहा, 'मेरे पास पैसे बहुत कम हैं और ज्यादा दिन नहीं चलेंगे; अगर मैं इन्हें बढ़ा सकूँ, तो कम से कम पापा की चिंता तो कम हो जाएगी। मैं मैरी की तरह चित्र नहीं बना सकती, इसलिए मेरे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि मैं कोई और नौकरी ढूंढ लूँ।'

'तो क्या तुम सच में दोबारा कोशिश करोगी, एग्नेस?'

'निश्चित रूप से, मैं ऐसा करूंगा।'

'अरे, मेरी प्यारी, मुझे लगा था कि तुम इससे ऊब चुकी हो।'

मैंने कहा, 'मुझे पता है, हर कोई मिस्टर और मिसेज ब्लूमफील्ड जैसा नहीं होता —'

'कुछ तो और भी बुरे हैं,' मेरी माँ ने बीच में ही टोकते हुए कहा।

'लेकिन मुझे नहीं लगता कि बहुत से बच्चे ऐसे होते हैं,' मैंने उत्तर दिया, 'और मुझे यकीन है कि सभी बच्चे उनके बच्चों जैसे नहीं होते; क्योंकि मैं और मैरी भी वैसे नहीं थे: हम हमेशा वही करते थे जो आप हमसे कहते थे, है ना?'

'सामान्य तौर पर: लेकिन फिर भी, मैंने तुम्हें बिगाड़ा नहीं था; और तुम आखिरकार पूर्ण रूप से देवदूत नहीं थे: मरियम में थोड़ी सी हठधर्मिता थी, और तुम स्वभाव के मामले में कुछ हद तक दोषपूर्ण थे; लेकिन कुल मिलाकर तुम बहुत अच्छे बच्चे थे।'

'मुझे पता है कि मैं भी कभी-कभी रूठ जाती थी, और मुझे इन बच्चों को भी कभी-कभी रूठते देखकर खुशी होती; क्योंकि तब मैं उन्हें समझ पाती: लेकिन वे कभी

रूठे नहीं थे, क्योंकि वे न तो नाराज हो सकते थे, न ही आहत हो सकते थे, न ही शर्मिंदा हो सकते थे: वे किसी भी तरह से दुखी नहीं हो सकते थे, सिवाय तब जब वे किसी आवेश में होते थे।'

'खैर, अगर वे ऐसा नहीं कर सके, तो यह उनकी गलती नहीं थी: आप पत्थर से मिट्टी की तरह लचीला होने की उम्मीद नहीं कर सकते।'

नहीं, लेकिन फिर भी ऐसे भावहीन, समझ से परे प्राणियों के साथ रहना बहुत अप्रिय है। आप उनसे प्यार नहीं कर सकते; और अगर कर भी लें, तो आपका प्यार पूरी तरह व्यर्थ हो जाएगा: वे न तो उसे लौटा सकते हैं, न उसकी कदर कर सकते हैं, न उसे समझ सकते हैं। लेकिन फिर भी, अगर मुझे कभी फिर से ऐसा कोई परिवार मिल जाए, जिसकी संभावना बहुत कम है, तो मेरे पास शुरुआत में यह सारा अनुभव है, और मैं अगली बार बेहतर तरीके से संभाल लूंगी; और इस प्रस्तावना का अंतिम उद्देश्य यही है कि मुझे एक बार फिर कोशिश करनी चाहिए।

“अच्छा, मेरी बच्ची, मैं देख सकता हूँ कि तुम आसानी से निराश नहीं होती हो: मुझे इस बात की खुशी है। लेकिन, मैं तुम्हें बता दूं, जब तुम पहली बार घर से निकली थी तब की तुलना में तुम काफी पीली और पतली हो गई हो; और हम तुम्हें अपने या दूसरों के लिए पैसे जमा करने के लिए अपने स्वास्थ्य को खतरे में डालने की अनुमति नहीं दे सकते।”

मैरी मुझसे कहती है कि मैं भी बदल गया हूँ; और मुझे इस पर ज्यादा आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि मैं पूरे दिन लगातार बेचैनी और चिंता की स्थिति में था: लेकिन अगली बार मैं चीजों को शांत भाव से लेने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ।

कुछ और बातचीत के बाद, मेरी माँ ने एक बार फिर मेरी मदद करने का वादा किया, बशर्ते मैं धैर्य रखूँ और धैर्य बनाए रखूँ; और मैंने उन्हें यह मामला मेरे पिता से उठाने के लिए छोड़ दिया, जब और जैसे उन्हें सबसे उचित लगे: मुझे उनकी सहमति प्राप्त करने की क्षमता पर कभी संदेह नहीं था। इस बीच, मैंने बड़ी दिलचस्पी से अखबारों के विज्ञापन कॉलम देखे और हर उस 'गवर्नेस चाहिए' के लिए जवाब लिखा जो मुझे उपयुक्त लगा; लेकिन मेरे सभी पत्र, और जब भी मुझे कोई जवाब मिला, मैंने उन्हें पूरी ईमानदारी से अपनी माँ को दिखाया; और उन्होंने, मेरी निराशा के बावजूद, मुझे एक-एक करके उन पदों को अस्वीकार करने के लिए मजबूर किया: ये लोग नीच थे, इनकी माँगें बहुत अधिक थीं, और इनका पारिश्रमिक बहुत कम था।

“एग्नेस, तुम्हारी प्रतिभा हर गरीब पादरी की बेटी के पास नहीं होती,” वह कहती थी, “और तुम्हें इसे व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। याद रखो, तुमने धैर्य रखने का वादा किया था: जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं है: तुम्हारे पास बहुत समय है, और तुम्हें अभी कई मौके मिल सकते हैं।”

अंततः, उसने मुझे सलाह दी कि मैं स्वयं अखबार में एक विज्ञापन दूं, जिसमें मेरी योग्यताएं आदि बताई जाएं।

उन्होंने कहा, “संगीत, गायन, चित्रकला, फ्रेंच, लैटिन और जर्मन का यह कोई मामूली संग्रह नहीं है: बहुत से लोग एक ही शिक्षक से इतना कुछ सीखकर प्रसन्न होंगे; और इस बार, आप किसी उच्च परिवार में, किसी सच्चे, संभ्रांत सज्जन के घर में अपना भाग्य आजमाएं; क्योंकि ऐसे लोग आपको उन घमंडी व्यापारियों और अभिमानी नवसिखियों की तुलना में कहीं अधिक सम्मान और ध्यान देंगे। मैंने उच्च वर्ग के कई लोगों को देखा है जो अपनी शिक्षिकाओं को परिवार के सदस्य की तरह मानते थे; हालांकि मैं मानती हूं कि कुछ शिक्षिकाएं भी उतनी ही उद्दंड और सख्त होती हैं जितनी कोई और हो सकता है: क्योंकि हर वर्ग में अच्छे और बुरे लोग होते हैं।”

विज्ञापन तुरंत लिखा गया और भेज दिया गया। जिन दो पक्षों ने जवाब दिया, उनमें से केवल एक ही मुझे पचास पाउंड देने को तैयार हुआ, जो मेरी माँ ने मुझे वेतन के रूप में तय करने को कहा था; और यहाँ, मैं खुद को इस काम में लगाने से हिचकिचा रहा था, क्योंकि मुझे डर था कि बच्चे बड़े हो चुके होंगे, और उनके माता-पिता मुझसे अधिक दिखावटी या अधिक अनुभवी, या कम से कम मुझसे अधिक कुशल व्यक्ति की तलाश करेंगे। लेकिन मेरी माँ ने मुझे इस कारण से इसे अस्वीकार करने से मना कर दिया: उन्होंने कहा कि अगर मैं केवल अपनी झिझक को दूर कर लूँ और खुद पर थोड़ा और भरोसा कर लूँ, तो मैं बहुत अच्छा करूँगा। मुझे बस अपनी योग्यताओं और गुणों का स्पष्ट और सच्चा विवरण देना था, और अपनी शर्तें बतानी थीं, और फिर परिणाम की प्रतीक्षा करनी थी। मैंने जो एकमात्र शर्त रखने का साहस किया, वह यह थी कि मुझे ग्रीष्मकाल और क्रिसमस पर अपने दोस्तों से मिलने के लिए साल में दो महीने की छुट्टियाँ दी जाएँ। उस अज्ञात महिला ने अपने जवाब में इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई, और कहा कि मेरी योग्यताओं के बारे में, उन्हें कोई संदेह नहीं है कि मैं उन्हें संतुष्ट कर सकूँगा; लेकिन शिक्षिकाओं की नियुक्ति में वह इन बातों को गौण मानती थी; क्योंकि ओ-- के पड़ोस में स्थित होने के कारण वह इस संबंध में किसी भी

कमी को पूरा करने के लिए स्वामी नियुक्त कर सकती थी: लेकिन, उसकी राय में, त्रुटिहीन नैतिकता के बाद, सौम्य और हंसमुख स्वभाव और मिलनसार व्यवहार सबसे आवश्यक योग्यताएं थीं।

मेरी माँ को यह बिल्कुल भी पसंद नहीं आया और उन्होंने इस पद को स्वीकार करने पर कई आपत्तियाँ उठाईं; मेरी बहन ने उनका पूरा समर्थन किया: लेकिन दोबारा मना किए जाने से बचने के लिए, मैंने उन सभी की बात अनसुनी कर दी; और पहले अपने पिता की सहमति प्राप्त करने के बाद (जिन्हें कुछ समय पहले ही इन बातों की जानकारी दे दी गई थी), मैंने अपने अज्ञात पत्र-व्यवहारकर्ता को एक अत्यंत विनम्र पत्र लिखा, और अंततः सौदा पूरा हो गया।

यह तय हुआ कि जनवरी के आखिरी दिन मुझे श्री मरे के परिवार में गवर्नेंस के रूप में अपना नया पदभार ग्रहण करना था। श्री मरे हॉर्टन लॉज में रहते थे, जो हमारे गाँव से लगभग सत्तर मील दूर था। यह दूरी मेरे लिए बहुत अधिक थी, क्योंकि अपने बीस वर्षों के जीवन में मैं कभी भी घर से बीस मील से अधिक दूर नहीं गई थी; और इसके अलावा, उस परिवार और आस-पड़ोस का हर व्यक्ति मेरे और मेरे सभी परिचितों के लिए पूरी तरह से अनजान था। लेकिन इससे यह मेरे लिए और भी रोमांचक हो गया। अब मैं उस बुरी शर्मिंदगी से कुछ हद तक मुक्त हो चुकी थी जिसने मुझे पहले बहुत परेशान किया था; इन अनजान क्षेत्रों में प्रवेश करने और वहाँ के अजनबी निवासियों के बीच अकेले अपना रास्ता बनाने के विचार में एक सुखद उत्साह था। अब मैं खुद को यह तसल्ली दे रही थी कि मैं दुनिया में कुछ देखने जा रही हूँ: श्री मरे का निवास एक बड़े शहर के पास था, न कि किसी औद्योगिक क्षेत्र में, जहाँ लोगों के पास पैसा कमाने के अलावा और कोई काम नहीं होता; जहाँ तक मुझे पता चला, उनका पद श्री ब्लूमफील्ड से ऊँचा प्रतीत होता था; और, निःसंदेह, वह उन सच्चे कुलीन लोगों में से एक थे जिनके बारे में मेरी माँ बात करती थीं, जो अपनी गवर्नेंस को एक सम्मानित, सुशिक्षित महिला, अपने बच्चों की शिक्षिका और मार्गदर्शक के रूप में उचित सम्मान देते थे, न कि केवल एक नौकरानी के रूप में। फिर, मेरे विद्यार्थी बड़े होने के कारण, अधिक तर्कसंगत, अधिक सीखने योग्य और पिछले वाले की तुलना में कम शरारती होंगे; वे कक्षा में कम ही सीमित रहेंगे, और उन्हें निरंतर परिश्रम और निगरानी की आवश्यकता नहीं होगी; और, अंत में, मेरी आशाओं में उज्ज्वल सपने भी शामिल थे, जिनका बच्चों की देखभाल और गवर्नेंस के मात्र कर्तव्यों से कोई लेना-देना नहीं था।

इस प्रकार, पाठक देखेंगे कि मुझे माता-पिता के आराम और भरण-पोषण के लिए धन जुटाने के एकमात्र उद्देश्य से शांति और स्वतंत्रता का त्याग करने वाले पितृभक्त के रूप में माने जाने का कोई अधिकार नहीं था: हालाँकि निश्चित रूप से मेरे पिता का आराम और मेरी माँ का भविष्य का भरण-पोषण मेरी गणनाओं में एक बड़ा हिस्सा था; और पचास पाउंड मुझे कोई साधारण राशि नहीं लगती थी। मुझे अपनी स्थिति के अनुरूप अच्छे कपड़े चाहिए; मुझे अपने कपड़े धोने के लिए बाहर निकालने ही थे, साथ ही हॉर्टन लॉज और घर के बीच की अपनी चार वार्षिक यात्राओं का किराया भी देना था; लेकिन अगर मैं मितव्ययिता का पूरा ध्यान रखूँ, तो बीस पाउंड या उससे थोड़ा अधिक में ये खर्चे पूरे हो जाएँगे, और फिर बैंक के लिए तीस पाउंड या उससे थोड़ा कम बच जाएँगे: हमारी जमा पूंजी में कितना मूल्यवान इजाफा होगा! ओह, मुझे इस पद को हर हाल में बनाए रखना होगा, चाहे कुछ भी हो जाए! अपने दोस्तों के बीच अपनी प्रतिष्ठा के लिए भी और वहाँ रहकर मैं उन्हें जो ठोस सेवाएँ दे सकूँ, उसके लिए भी।

अध्याय VII — हॉर्टन लॉज

31 जनवरी का दिन बेहद तूफानी था: उत्तर दिशा से तेज हवा चल रही थी और लगातार बर्फ गिर रही थी, जो जमीन पर जम रही थी और हवा में उड़ रही थी। मेरे दोस्तों ने मुझे अपना प्रस्थान टालने के लिए कहा, लेकिन अपने काम की शुरुआत में समय की पाबंदी न रखने के कारण अपने मालिकों के मन में मेरे प्रति नकारात्मक भावना पैदा होने के डर से, मैं तय समय पर ही जाने के लिए दृढ़ रहा।

मैं अपने पाठकों पर उस अंधेरी सर्दी की सुबह घर छोड़ने का विस्तृत वर्णन नहीं थोपना चाहता: भावुक विदाई, ओ— तक की लंबी यात्रा, कोच या ट्रेन के लिए सराय में अकेला इंतज़ार—क्योंकि तब कुछ रेलगाड़ियाँ हुआ करती थीं—और अंत में, ओ—

पर श्री मरे के नौकर से मुलाकात, जिसे मुझे वहाँ से हॉर्टन लॉज तक ले जाने के लिए फैटन के साथ भेजा गया था। मैं बस इतना कहूँगा कि भारी बर्फ ने घोड़ों और स्टीम इंजनों दोनों के रास्ते में ऐसी बाधाएँ खड़ी कर दी थीं कि यात्रा के अंत तक पहुँचने से कई घंटे पहले ही अंधेरा हो गया था, और अंत में एक भयंकर तूफान आ गया, जिसने ओ— और हॉर्टन लॉज के बीच कुछ मील की दूरी को एक लंबा और कठिन सफर बना दिया। मैं निराश होकर बैठा रहा, ठंडी, नुकीली बर्फ मेरे घूंघट से होकर मेरी गोद में भर रही थी, मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, और मैं सोच रहा था कि बेचारा घोड़ा और चालक इतनी आसानी से अपना रास्ता कैसे तय कर पा रहे हैं; और वास्तव में, यह एक बेहद थकाऊ, रेंगती हुई यात्रा थी, इसे कम से कम शब्दों में कहा जाए तो। कुछ देर बाद हम रुके; और ड्राइवर के बुलावे पर किसी ने पार्क के फाटकों जैसे दिखने वाले दरवाज़ों को खोलकर उनके चरमराते कब्ज़ों पर पीछे की ओर सरका दिया। फिर हम एक समतल सड़क पर आगे बढ़े, जहाँ से कभी-कभी मुझे अँधेरे में से कोई विशाल, सफ़ेद आकृति चमकती हुई दिखाई दी, जिसे मैंने बर्फ़ से ढके पेड़ का एक हिस्सा समझा। काफ़ी देर बाद हम फिर रुके, एक बड़े घर के भव्य बरामदे के सामने, जिसकी लंबी खिड़कियाँ ज़मीन तक जाती थीं।

मैं बड़ी मुश्किल से बर्फ के ढेर से उठा और गाड़ी से उतरा, यह उम्मीद करते हुए कि मेरा गर्मजोशी से स्वागत दिन भर की मेहनत और कठिनाइयों की भरपाई कर देगा। काले वस्त्र पहने एक सज्जन ने दरवाजा खोला और मुझे एक विशाल हॉल में प्रवेश कराया, जो छत से लटकते एक सुनहरे रंग के दीपक से रोशन था; वह मुझे उस हॉल से होते हुए एक गलियारे से ले गए और पीछे के कमरे का दरवाजा खोलकर बताया कि वह स्कूल का कमरा है। मैं अंदर गया और वहाँ दो युवतियाँ और दो युवक मिले - मेरे भावी छात्र, मैंने अनुमान लगाया। औपचारिक अभिवादन के बाद, बड़ी लड़की, जो कैनवास के एक टुकड़े और जर्मन ऊन की टोकरी से खेल रही थी, ने पूछा कि क्या मैं ऊपर जाना चाहूँगा। मैंने हाँ में जवाब दिया।

'मटिल्डा, एक मोमबत्ती लो और उसे उसका कमरा दिखाओ,' उसने कहा।

लगभग चौदह साल की, चुस्त-दुरुस्त सी दिखने वाली मिस मटिल्डा, जिसने छोटी फ्रॉक और पतलून पहनी हुई थी, ने अपने कंधे उचकाए और थोड़ा मुंह बनाया, लेकिन एक मोमबत्ती लेकर मुझसे पहले पीछे की सीढ़ियों (एक लंबी, खड़ी, दोहरी सीढ़ी) से ऊपर चढ़ गई और एक लंबे, संकरे गलियारे से होते हुए एक छोटे लेकिन आरामदायक

कमरे में पहुँच गई। फिर उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं चाय या कॉफी लेना चाहूँगी। मैं 'ना' कहने ही वाली थी; लेकिन यह याद करके कि मैंने उस सुबह सात बजे से कुछ नहीं खाया था और परिणामस्वरूप कमजोरी महसूस कर रही थी, मैंने कहा कि मैं एक कप चाय ले लूँगी। यह कहकर कि वह 'ब्राउन' को बता देगी, वह युवती चली गई; और जब तक मैंने अपना भारी, गीला लबादा, शॉल, टोपी आदि उतारे, एक नज़ाकत से सजी युवती आकर बोली कि युवतियाँ जानना चाहती हैं कि क्या मैं अपनी चाय ऊपर पीऊँगी या स्कूल के कमरे में। थकान का बहाना बनाकर मैंने वहीं पीने का विकल्प चुना। वह चली गई; और थोड़ी देर बाद, वह एक छोटी चाय की ट्रे लेकर लौटी और उसे दराजों वाली अलमारी पर रख दिया, जो ड्रेसिंग टेबल का काम करती थी। मैंने विनम्रतापूर्वक उनका धन्यवाद किया और पूछा कि मुझे सुबह कितने बजे उठना चाहिए।

‘मैडम, यहाँ के युवा लड़के-लड़कियाँ साढ़े आठ बजे नाश्ता करते हैं,’ उसने कहा; ‘वे जल्दी उठते हैं; लेकिन, चूंकि वे नाश्ते से पहले शायद ही कभी कोई पढ़ाई करते हैं, इसलिए मुझे लगता है कि अगर आप सात बजे के तुरंत बाद उठ जाएँ तो ठीक रहेगा।’

मैंने उनसे सात बजे मुझे फोन करने की कृपा करने का अनुरोध किया, और वादा करके वे चली गईं। फिर, एक कप चाय और थोड़े से पतले ब्रेड-बटर से अपना लंबा उपवास तोड़ने के बाद, मैं छोटी, सुलगती हुई आग के पास बैठ गई और जी भर कर रोने लगी; इसके बाद, मैंने प्रार्थना की, और फिर काफी राहत महसूस करते हुए, सोने की तैयारी करने लगी। यह देखकर कि मेरा कोई भी सामान ऊपर नहीं लाया गया था, मैंने घंटी की तलाश शुरू की; और कमरे के किसी भी कोने में घंटी का कोई निशान न मिलने पर, मैं अपनी मोमबत्ती लेकर लंबे गलियारे से होते हुए, खड़ी सीढ़ियों से नीचे, घंटी की तलाश में निकल पड़ी। रास्ते में एक सजी-धजी महिला से मुलाकात हुई, मैंने उसे अपनी बात बताई; लेकिन काफी झिझक के साथ, क्योंकि मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं था कि वह ऊपर की नौकरानियों में से एक है या खुद श्रीमती मरे: हालांकि, वह नौकरानी निकली। एक असाधारण कृपा करने वाले के अंदाज में, उसने मेरा सामान ऊपर भेजने का वादा किया; और जब मैं अपने कमरे में वापस आ गया, और काफी देर तक इंतज़ार करता रहा और सोचता रहा (मुझे बहुत डर था कि कहीं वह अपना वादा भूल न गई हो या निभाना भूल गई हो, और मैं दुविधा में था कि

इंतज़ार करता रहूँ या सो जाऊँ या फिर नीचे जाऊँ), तभी गलियारे में आती आवाज़ों और हँसी की आवाज़ से मेरी उम्मीदें फिर से जाग उठीं; और थोड़ी देर में एक खुरदरी सी दिखने वाली नौकरानी और एक आदमी सामान लेकर अंदर आए, दोनों का व्यवहार मेरे प्रति बहुत सम्मानजनक नहीं था। उनके जाते ही मैंने दरवाज़ा बंद कर दिया और अपना कुछ सामान खोलकर आराम करने चला गया; शुक्र है, क्योंकि मैं शरीर और मन से थका हुआ था।

अगली सुबह जब मैं जागा, तो मेरे मन में एक अजीब सी उदासी छाई हुई थी, साथ ही अपनी स्थिति की नवीनता का गहरा एहसास और जो कुछ अभी तक अज्ञात था, उसके प्रति एक नीरस जिज्ञासा भी थी। ऐसा लग रहा था मानो मैं किसी जादू के प्रभाव में बह गया हूँ और अचानक बादलों से किसी दूर और अनजान जगह पर आ गिरा हूँ, जो मेरे देखे और जाने हुए हर चीज़ से पूरी तरह अलग-थलग है; या जैसे कोई काँटेदार पौधे का बीज हवा में उड़कर किसी अनुपयुक्त मिट्टी के कोने में आ गया हो, जहाँ उसे जड़ पकड़ने और अंकुरित होने से पहले काफी समय तक पड़े रहना होगा, और अपनी प्रकृति से बिल्कुल अलग दिखने वाली चीज़ों से पोषण प्राप्त करना होगा: अगर वह कभी अंकुरित हो भी पाता है। लेकिन इससे मेरी भावनाओं का सही वर्णन नहीं होता; और जिसने मेरे जैसा एकांत और स्थिर जीवन नहीं जिया है, वह कल्पना भी नहीं कर सकता कि वे भावनाएँ कैसी थीं: यहाँ तक कि अगर उसने कभी यह भी जाना हो कि किसी सुबह जागना और खुद को न्यूजीलैंड के पोर्ट नेल्सन में पाना कैसा होता है, जहाँ उसके और उसे जानने वाले हर व्यक्ति के बीच पानी का एक विशाल सागर हो।

मैं उस विचित्र अनुभूति को जल्दी नहीं भूल पाऊंगा जिसके साथ मैंने अपना पर्दा उठाया और अज्ञात दुनिया की ओर देखा: एक विशाल, सफेद वीरान मैदान ही मेरी निगाहों के सामने था; एक बंजर भूमि

बर्फ से ढके रेगिस्तान, और भारी लदे उपवन।

मैं अपने विद्यार्थियों के साथ बैठने की कोई खास उत्सुकता के बिना ही कक्षा में उतरा, हालांकि आगे की जान-पहचान से क्या पता चलेगा, इस बारे में थोड़ी जिज्ञासा जरूर थी। कई अन्य महत्वपूर्ण बातों के साथ-साथ, मैंने एक बात तय की - मुझे उन्हें 'मिस' और 'मास्टर' कहकर पुकारना शुरू करना होगा। मुझे यह एक परिवार के बच्चों और उनके शिक्षक और दैनिक साथी के बीच शिष्टाचार का एक अजीब और

अस्वाभाविक पहलू लगा; खासकर जब बच्चे अपने बचपन में थे, जैसे कि वेलवुड हाउस में; लेकिन वहां भी, मेरे द्वारा छोटे ब्लूमफील्ड्स को उनके सरल नामों से पुकारना एक अपमानजनक स्वतंत्रता माना गया था: जैसा कि उनके माता-पिता ने मुझे यह दिखाने के लिए सावधानी से उन्हें 'मास्टर' और 'मिस ब्लूमफील्ड' आदि कहकर संबोधित किया था। मुझे यह बात समझने में बहुत देर लगी, क्योंकि यह सब मुझे बहुत ही बेतुका लगा; लेकिन अब मैंने समझदारी से काम लेने का निश्चय किया और परिवार के किसी भी सदस्य की अपेक्षा के अनुसार पूरी औपचारिकता के साथ शुरुआत करने का फैसला किया: और वास्तव में, चूंकि बच्चे काफी बड़े थे, इसलिए इसमें ज्यादा कठिनाई नहीं होगी; हालांकि, 'मिस' और 'मास्टर' जैसे छोटे-छोटे शब्दों का आश्चर्यजनक प्रभाव यह हुआ कि उन्होंने सभी प्रकार की परिचित, खुले दिल वाली दयालुता को दबा दिया और हमारे बीच उत्पन्न होने वाली सौहार्द की हर झलक को बुझा दिया।

डॉगबेरी की तरह, मैं पाठक पर अपनी सारी उबाऊ बातें थोपना नहीं चाहता, इसलिए मैं आज और अगले दिन की सभी खोजों और घटनाओं का विस्तृत वर्णन करके उन्हें उबाऊ नहीं बनाऊंगा। निस्संदेह, परिवार के विभिन्न सदस्यों का संक्षिप्त परिचय और उनके बीच मेरे पहले एक-दो वर्षों का सामान्य अवलोकन ही उन्हें पर्याप्त संतुष्टि प्रदान करेगा।

सबसे पहले उनके बारे में: श्री मरे, सभी के अनुसार, एक उद्दंड, मौज-मस्ती करने वाले, देहाती जमींदार थे: एक समर्पित लोमड़ी शिकारी, कुशल घुड़सवार और लोहार, एक सक्रिय, व्यावहारिक किसान, और एक दिलेर मौजमस्ती करने वाले व्यक्ति। मैं यह बात सभी के अनुसार कह रही हूँ; क्योंकि रविवार को छोड़कर, जब वे चर्च जाते थे, मैंने उन्हें महीने दर महीने कभी नहीं देखा: सिवाय इसके कि जब मैं हॉल पार कर रही होती या मैदान में टहल रही होती, तो लाल गालों और लाल नाक वाले एक लंबे, मजबूत सज्जन की आकृति मेरी नज़र में आ जाती; ऐसे अवसरों पर, यदि वे बोलने लायक पास से गुजरते, तो वे आमतौर पर एक अनौपचारिक अभिवादन के साथ 'सुप्रभात, मिस ग्रे' या इसी तरह का कोई संक्षिप्त अभिवादन करते। वास्तव में, अक्सर उनकी ज़ोरदार हंसी दूर से ही मुझ तक पहुँच जाती थी; और उससे भी ज़्यादा बार मैंने उन्हें नौकरों, घोड़ों की देखभाल करने वाले, कोचवान या किसी अन्य बेचारे आश्रित के खिलाफ गालियाँ देते और अपशब्द बोलते सुना।

श्रीमती मरे चालीस वर्ष की एक सुंदर, आकर्षक महिला थीं, जिन्हें अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए न तो मेकअप की आवश्यकता थी और न ही किसी और चीज़ की; और जिनका मुख्य आनंद पार्टियों का आयोजन करने या उनमें भाग लेने और फैशन के अनुसार कपड़े पहनने में था, या ऐसा प्रतीत होता था। मैंने उन्हें अपने आगमन के बाद अगली सुबह ग्यारह बजे तक नहीं देखा; जब उन्होंने मुझे मिलने आकर सम्मानित किया, ठीक वैसे ही जैसे मेरी माँ किसी नई नौकरानी को देखने के लिए रसोई में आती हैं: फिर भी ऐसा नहीं था, क्योंकि मेरी माँ तो उनके आते ही उनसे मिल लेतीं, अगले दिन तक प्रतीक्षा नहीं करतीं; और तो और, वह उनसे अधिक दयालु और मैत्रीपूर्ण ढंग से बात करतीं, उन्हें कुछ सांत्वना भरे शब्द कहतीं और साथ ही उनके कर्तव्यों को स्पष्ट रूप से समझातीं; लेकिन श्रीमती मरे ने न तो ऐसा किया और न ही ऐसा। वह गृहस्वामी के कमरे में खाना मंगवाकर लौटीं और सीधे स्कूल के कमरे में आईं, मुझे सुप्रभात कहा, दो मिनट तक आग के पास खड़ी रहीं, मौसम और कल की मेरी 'काफी कठिन' यात्रा के बारे में कुछ बातें कहीं; उन्होंने अपने सबसे छोटे बच्चे—दस साल के लड़के—को प्यार से सहलाया, जो अभी-अभी हाउसकीपर के स्टोर से कुछ स्वादिष्ट खाने के बाद उनके गाउन पर अपना मुंह और हाथ पोंछ रहा था; मुझे बताया कि वह कितना प्यारा और अच्छा लड़का है; और फिर अपने चेहरे पर आत्मसंतुष्ट मुस्कान लिए बाहर चली गईं: निस्संदेह, यह सोचते हुए कि उन्होंने अभी के लिए काफी कुछ कर दिया है, और साथ ही बड़े ही दयालुतापूर्ण ढंग से व्यवहार भी किया है। उनके बच्चों की भी यही राय थी, और केवल मेरी राय अलग थी।

इसके बाद, मेरे विद्यार्थियों की अनुपस्थिति में, वह एक-दो बार मुझसे मिलने आई, ताकि मुझे उनके प्रति मेरे कर्तव्यों के बारे में समझा सके। लड़कियों के लिए, वह केवल उन्हें यथासंभव ऊपरी तौर पर आकर्षक और दिखावटी रूप से निपुण बनाने के लिए उत्सुक प्रतीत होती थी, बिना उन्हें वर्तमान में कोई परेशानी या असुविधा पहुँचाए; और मुझे तदनुसार कार्य करना था - अध्ययन करना और उन्हें मनोरंजन और सुविधा प्रदान करने, शिक्षित करने, परिष्कृत करने और संवारने का प्रयास करना, उनकी ओर से कम से कम प्रयास के साथ, और मेरे द्वारा किसी भी प्रकार के अधिकार का प्रयोग किए बिना। दोनों लड़कों के संबंध में भी स्थिति लगभग समान थी; केवल निपुणता के बजाय, मुझे उन्हें स्कूल के लिए तैयार करने के लिए यथासंभव अधिक से अधिक लैटिन व्याकरण और वैल्पी की डिलेक्टस को उनके दिमाग में बिठाना था - कम से

कम उन्हें कोई परेशानी न हो। जॉन थोड़ा 'उत्साही' हो सकता है, और चार्ल्स थोड़ा 'घबराया हुआ और उबाऊ' हो सकता है।

‘लेकिन हर हाल में, मिस ग्रे,’ उसने कहा, ‘मुझे उम्मीद है कि आप अपना आपा नहीं खोएंगी और पूरे समय सौम्य और धैर्यवान रहेंगी; खासकर प्यारे छोटे चार्ल्स के साथ; वह बहुत ही घबराया हुआ और संवेदनशील है, और उसे कोमल व्यवहार के अलावा किसी और चीज़ की आदत नहीं है। आप मुझे इन बातों का ज़िक्र करने के लिए क्षमा करेंगी; क्योंकि सच तो यह है कि मैंने अब तक सभी गवर्नेंस को, यहाँ तक कि उनमें से सबसे अच्छी को भी, इस मामले में दोषपूर्ण पाया है। उनमें वह नम्र और शांत स्वभाव नहीं था, जिसके बारे में सेंट मैथ्यू, या उनमें से कुछ अन्य, कहते हैं कि यह कपड़े पहनने से बेहतर है - आप उस वचन को जानती होंगी जिसका मैं जिक्र कर रही हूँ, क्योंकि आप एक पादरी की बेटी हैं। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि आप इस मामले में भी बाकी सब बातों की तरह ही संतोषजनक साबित होंगी। और याद रखें, जब भी कोई बच्चा कुछ गलत करे, अगर समझाना-बुझाना और प्यार से डांटना काम न आए, तो किसी और को आकर मुझे बताने के लिए कहें; क्योंकि मैं उनसे आपसे ज़्यादा स्पष्ट रूप से बात कर सकती हूँ।’ और उन्हें जितना हो सके उतना खुश रखें, मिस ग्रे, और मुझे पूरा विश्वास है कि आप बहुत अच्छा करेंगी।

मैंने देखा कि श्रीमती मरे अपने बच्चों के आराम और खुशी के लिए इतनी चिंतित रहती थीं और लगातार इसके बारे में बात करती रहती थीं, लेकिन उन्होंने एक बार भी मेरे बारे में बात नहीं की; हालांकि वे घर पर दोस्तों से घिरे हुए थे, और मैं अजनबियों के बीच एक अजनबी थी; और मुझे अभी दुनिया का इतना ज्ञान नहीं था कि इस विसंगति पर मुझे काफी आश्चर्य न हो।

मिस मरे, जिन्हें रोज़ाली भी कहा जाता था, जब मैं आया तब लगभग सोलह वर्ष की थीं और बेहद खूबसूरत थीं। दो साल बाद, जैसे-जैसे समय के साथ उनका शरीर और निखरता गया और उनके हाव-भाव और व्यवहार में और अधिक शालीनता आई, वे और भी अधिक सुंदर हो गईं; और यह असाधारण था। वे लंबी और पतली थीं, फिर भी दुबली नहीं थीं; उनका शरीर सुगठित था, बेहद गोरा था, हालांकि उनकी चमक और सुंदरता में निखार था; उनके बाल, जिन्हें वे लंबे घुंघराले गुच्छों में रखती थीं, हल्के भूरे रंग के थे जिनमें पीलेपन की झलक थी; उनकी आंखें हल्की नीली थीं, लेकिन इतनी साफ और चमकदार थीं कि शायद ही कोई उन्हें गहरा रंग देना चाहेगा; उनके

बाकी चेहरे के अंग छोटे थे, पूरी तरह से एक जैसे नहीं थे, और वैसे तो उनमें कोई खास बात नहीं थी: लेकिन कुल मिलाकर आप उन्हें बेहद प्यारी लड़की कहने में संकोच नहीं कर सकते थे। काश मैं उनके रूप और चेहरे की जितनी तारीफ कर सकता हूँ, उतनी ही उनकी बुद्धि और स्वभाव की भी कर पाता।

लेकिन यह न सोचें कि मुझे कोई भयानक खुलासा करना है: वह हंसमुख, हंसमुख और उन लोगों के साथ बहुत मिलनसार थीं जो उनकी मर्जी के खिलाफ नहीं जाते थे। जब मैं पहली बार आई, तो वह मेरे प्रति ठंडी और घमंडी थीं, फिर उद्दंड और दबंग हो गईं; लेकिन, जैसे-जैसे जान-पहचान बढ़ी, उन्होंने धीरे-धीरे अपना व्यवहार बदल दिया और समय के साथ मुझसे उतना ही गहरा लगाव हो गया जितना मेरे जैसे चरित्र और पद वाले व्यक्ति से हो सकता था: क्योंकि वह शायद ही कभी आधे घंटे से अधिक समय तक इस तथ्य को भूलती थीं कि मैं एक नौकरानी और एक गरीब पादरी की बेटी हूँ। फिर भी, कुल मिलाकर, मेरा मानना है कि वह मेरा जितना सम्मान करती थीं, उससे कहीं अधिक सम्मान करती थीं; क्योंकि मैं उस घर में एकमात्र ऐसी व्यक्ति थी जो दृढ़ सिद्धांतों का पालन करती थी, हमेशा सच बोलती थी और आम तौर पर अपने कर्तव्य के आगे झुकने का प्रयास करती थी; और यह मैं निश्चित रूप से अपनी प्रशंसा में नहीं कह रही हूँ, बल्कि उस परिवार की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को दर्शाने के लिए कह रही हूँ, जिसके लिए मैं फिलहाल अपनी सेवाएं समर्पित कर रही थी। उस समूह में मिस मरे से ज़्यादा किसी और में मुझे सिद्धांतों की इस दुखद कमी का इतना अफसोस नहीं हुआ था; न केवल इसलिए कि वह मुझे पसंद करने लगी थीं, बल्कि इसलिए भी कि उनमें इतनी सारी अच्छी और मनमोहक बातें थीं कि उनकी कमियों के बावजूद, मैं उन्हें सचमुच पसंद करता था - जब तक कि वह मुझे नाराज़ न करतीं या अपनी कमियों को ज़्यादा दिखाकर मेरा गुस्सा न भड़कातीं। हालाँकि, मैं खुद को यह समझाने की कोशिश करता था कि ये कमियाँ उनके स्वभाव की बजाय उनकी शिक्षा का परिणाम थीं: उन्हें कभी भी सही और गलत के बीच का अंतर पूरी तरह से नहीं सिखाया गया था; अपने भाई-बहनों की तरह, उन्हें बचपन से ही नर्सों, गवर्नेस और नौकरों पर अत्याचार करने दिया गया था; उन्हें अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करना, अपने गुस्से पर काबू रखना, अपनी इच्छाशक्ति पर लगाम लगाना या दूसरों की भलाई के लिए अपने सुख का त्याग करना नहीं सिखाया गया था। स्वभाव से अच्छी होने के कारण, वह कभी हिंसक या उदास नहीं होती थीं, लेकिन लगातार लाड़-प्यार और तर्क

की आदतन अवहेलना के कारण, वह अक्सर चिड़चिड़ी और मनमौजी हो जाती थीं; उसका दिमाग कभी विकसित नहीं हुआ था: उसकी बुद्धि, ज़्यादा से ज़्यादा, कुछ हद तक सतही थी; उसमें काफ़ी चंचलता, कुछ हद तक शीघ्र समझ और संगीत तथा भाषा सीखने की प्रतिभा थी, लेकिन पंद्रह साल की उम्र तक उसने कुछ भी सीखने की कोशिश नहीं की थी; फिर दिखावे के लालच ने उसकी प्रतिभा को जगाया और उसे सीखने के लिए प्रेरित किया, लेकिन केवल दिखावटी कलाओं में। और जब मैं आई, तब भी यही हाल था: फ्रेंच, जर्मन, संगीत, गायन, नृत्य, कल्पनात्मक कला और थोड़ी-बहुत चित्रकारी के अलावा बाकी सब कुछ उपेक्षित था — ऐसी चित्रकारी जिससे कम से कम मेहनत में सबसे ज़्यादा प्रभाव पैदा हो सके, और जिसके मुख्य भाग आमतौर पर मैं ही बनाती थी। संगीत और गायन के लिए, मेरे कभी-कभार दिए जाने वाले निर्देशों के अलावा, उसे देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक का मार्गदर्शन प्राप्त था; और इन कलाओं के साथ-साथ नृत्य में भी उसने काफ़ी निपुणता हासिल की। वास्तव में, वह संगीत को ज़रूरत से ज़्यादा समय देती थी, जैसा कि मैं, उसकी देखभाल करने वाली होने के बावजूद, उसे अक्सर कहती थी; लेकिन उसकी माँ का मानना था कि अगर उसे यह पसंद है, तो वह इतनी आकर्षक कला को सीखने में ज़रूरत से ज़्यादा समय नहीं दे सकती। कलात्मक कार्यों के बारे में मुझे अपने शिष्य से मिली जानकारी और अपने स्वयं के अवलोकन के अलावा कुछ भी नहीं पता था; लेकिन दीक्षा लेते ही उसने मुझे बीस अलग-अलग तरीकों से उपयोगी बना दिया: उसके काम के सभी थकाऊ हिस्से मेरे कंधों पर डाल दिए गए; जैसे फ्रेम फैलाना, कैनवास सिलना, ऊन और रेशम छांटना, आधार तैयार करना, टांके गिनना, गलतियों को सुधारना और उन कृतियों को पूरा करना जिनसे वह ऊब चुकी थी।

सोलह वर्ष की आयु में, मिस मरे कुछ हद तक चंचल स्वभाव की थीं, हालांकि उस उम्र की लड़की के लिए यह स्वाभाविक और स्वीकार्य था। लेकिन सत्रह वर्ष की आयु में, यह प्रवृत्ति, अन्य सभी चीजों की तरह, प्रबल जुनून के आगे फीकी पड़ने लगी और जल्द ही दूसरे लिंग को आकर्षित करने और मोहित करने की प्रबल महत्वाकांक्षा में समाहित हो गई। लेकिन उनके बारे में इतना ही काफी है: अब आइए उनकी बहन की ओर रुख करें।

मिस मटिल्डा मरे एक बेहद चंचल स्वभाव की महिला थीं, जिनके बारे में ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है। वह अपनी बहन से लगभग ढाई साल छोटी थीं; उनके

चेहरे की बनावट बड़ी थी और रंग सांवला था। वह शायद एक खूबसूरत महिला बन सकती थीं; लेकिन उनकी हड्डियां बहुत भारी थीं और उनका शरीर इतना भद्दा था कि उन्हें कभी सुंदर लड़की नहीं कहा जा सकता था, और फिलहाल उन्हें इसकी कोई परवाह भी नहीं थी। रोज़ाली उनके सारे आकर्षण जानती थी और उन्हें उनकी असलियत से कहीं ज्यादा महत्व देती थी, और उन्हें इतना महत्व देती थी जितना उन्हें तीन गुना ज्यादा भी नहीं देना चाहिए था; मटिल्डा खुद को ठीक-ठाक समझती थी, लेकिन इस बात की उसे कोई परवाह नहीं थी; और न ही उसे अपने दिमाग को विकसित करने और सजावटी हुनर हासिल करने की कोई परवाह थी। जिस तरह से वह अपनी पढ़ाई करती और संगीत का अभ्यास करती थी, उसे देखकर कोई भी गवर्नेंस निराश हो जाती। उनके काम चाहे छोटे और आसान ही क्यों न हों, अगर किए भी जाते थे, तो उन्हें किसी भी समय और किसी भी तरह से टाल दिया जाता था; लेकिन आम तौर पर सबसे असुविधाजनक समय पर, और ऐसे तरीके से जो न तो उसके लिए और न ही मेरे लिए सबसे कम फायदेमंद था: अभ्यास का छोटा सा आधा घंटा बुरी तरह से बर्बाद हो गया; इस बीच, वह मुझे लगातार कोसती रही, या तो उसे टोकने के लिए, या उसकी गलतियों को होने से पहले ठीक न करने के लिए, या इसी तरह के किसी और अनुचित कारण से। एक-दो बार मैंने उसके ऐसे तर्कहीन व्यवहार के लिए उससे गंभीरता से विरोध करने का साहस किया; लेकिन हर बार मुझे उसकी माँ से इतनी निंदा भरी बातें सुनने को मिलीं कि मुझे यकीन हो गया कि अगर मैं इस स्थिति को बनाए रखना चाहता हूँ, तो मुझे मिस मटिल्डा को अपनी मनमानी करने देना होगा।

जब उसकी पढ़ाई खत्म हो जाती थी, तो आमतौर पर उसका चिड़चिड़ापन भी दूर हो जाता था: अपने फुर्तीले टट्टू पर सवारी करते हुए, या कुत्तों या अपने भाई-बहनों के साथ खेलते हुए, लेकिन विशेष रूप से अपने प्यारे भाई जॉन के साथ, वह चिड़िया की तरह खुश रहती थी। एक जानवर के रूप में, मटिल्डा ठीक थी, जीवन, जोश और सक्रियता से भरपूर; एक बुद्धिमान प्राणी के रूप में, वह बेहद अज्ञानी, अवज्ञाकारी, लापरवाह और तर्कहीन थी; और, परिणामस्वरूप, उसके विवेक को विकसित करने, उसके व्यवहार को सुधारने और उसे उन अलंकारिक गुणों को प्राप्त करने में मदद करने का काम करने वाले व्यक्ति के लिए बहुत कष्टदायी थी, जिन्हें वह अपनी बहन के विपरीत, बाकी सभी की तरह ही तुच्छ समझती थी। उसकी माँ उसकी कमियों से

कुछ हद तक अवगत थी, और मुझे कई बार उपदेश देती थी कि मुझे कैसे उसकी रुचियों को आकार देने की कोशिश करनी चाहिए, और उसके सुप्त अहंकार को जगाने और पोषित करने का प्रयास करना चाहिए; और, चालाकी भरी चापलूसी से उसका ध्यान वांछित वस्तुओं की ओर आकर्षित करना चाहिए - जो मैं नहीं करता था; और मुझे सीखने का मार्ग कैसे तैयार और सुगम बनाना चाहिए ताकि वह बिना किसी प्रयास के उस पर सहजता से चल सके: जो मैं नहीं कर सकता था, क्योंकि सीखने वाले के थोड़े से प्रयास के बिना कुछ भी सार्थक रूप से नहीं सिखाया जा सकता है।

एक नैतिक व्यक्तित्व के रूप में, मटिल्डा लापरवाह, जिद्दी, हिंसक और तर्कहीन थी। उसकी मानसिक स्थिति की दयनीयता का एक प्रमाण यह था कि अपने पिता के उदाहरण से उसने सैनिकों की तरह गालियाँ देना सीख लिया था। उसकी माँ इस 'अशोभनीय हरकत' से बहुत हैरान थी और सोचती थी कि 'उसने यह आदत कैसे सीख ली।' उसने कहा, 'लेकिन आप उसकी यह आदत जल्दी छुड़ा सकती हैं, मिस ग्रे: यह सिर्फ एक आदत है; और अगर आप उसे हर बार ऐसा करने पर प्यार से याद दिलाती रहें, तो मुझे यकीन है कि वह इसे जल्द ही छोड़ देगी।' मैंने न केवल उसे प्यार से याद दिलाया, बल्कि उसे यह समझाने की भी कोशिश की कि यह कितना गलत है और सभ्य लोगों के कानों को कितना कष्ट देता है: लेकिन सब व्यर्थ: मुझे केवल एक लापरवाह हंसी और 'ओह, मिस ग्रे, आप कितनी हैरान हैं! मुझे बहुत खुशी है!' या 'ठीक है! मैं क्या करूँ; पापा को मुझे यह नहीं सिखाना चाहिए था: मैंने यह सब उनसे सीखा है; और शायद थोड़ा बहुत कोचवान से।'

जब मैं आई, तब उसका भाई जॉन, उर्फ मास्टर मरे, लगभग ग्यारह साल का था: एक सुंदर, हट्टा-कट्टा, स्वस्थ लड़का, स्वभाव से स्पष्टवादी और नेक, और अगर उसे ठीक से शिक्षा मिली होती तो वह एक अच्छा लड़का बन सकता था; लेकिन अब वह एक जवान भालू की तरह उबड़-खाबड़, उद्दंड, सिद्धांतहीन, अनपढ़ और अशिक्षित था—कम से कम अपनी माँ की देखरेख में एक शिक्षिका के लिए तो बिलकुल भी नहीं। स्कूल में उसके शिक्षक शायद उसे बेहतर ढंग से संभाल सकते थे—क्योंकि उसे एक साल के भीतर ही स्कूल भेज दिया गया, जिससे मुझे बहुत राहत मिली; यह सच है कि वह लैटिन के साथ-साथ अन्य उपयोगी लेकिन उपेक्षित विषयों के बारे में भी घोर अज्ञानता की स्थिति में था: और निस्संदेह, इसका सारा दोष उसकी शिक्षा का जिम्मा एक अज्ञानी महिला शिक्षिका को सौंपे जाने पर डाला जाएगा, जिसने वह काम अपने

हाथ में लेने का साहस किया था जिसे करने में वह पूरी तरह से अक्षम थी। मुझे उसके भाई से पूरे बारह महीने बाद तक छुटकारा नहीं मिला, जब उसे भी उसी शर्मनाक अज्ञानता की स्थिति में स्कूल भेज दिया गया।

मास्टर चार्ल्स अपनी माँ का लाडला था। वह जॉन से लगभग एक साल छोटा था, लेकिन बहुत छोटा, पीला और कम फुर्तीला था; एक चिड़चिड़ा, डरपोक, मनमौजी, स्वार्थी छोटा बच्चा, जो केवल शरारत करने में ही सक्रिय रहता था और केवल झूठ गढ़ने में ही माहिर था: न केवल अपनी गलतियों को छिपाने के लिए, बल्कि दूसरों पर बदनामी लाने के लिए भी। वास्तव में, मास्टर चार्ल्स मेरे लिए बहुत बड़ी मुसीबत था: उसके साथ शांति से रहना धैर्य की परीक्षा थी; उसकी देखभाल करना उससे भी बुरा था; और उसे पढ़ाना, या पढ़ाने का दिखावा करना, असंभव था। दस साल की उम्र में, वह सबसे सरल किताब की सबसे सरल पंक्ति भी सही ढंग से नहीं पढ़ पाता था; और जैसा कि उसकी माँ के सिद्धांत के अनुसार, उसे हर शब्द बिना हिचकिचाए या उसकी वर्तनी की जाँच किए बिना ही बता दिया जाता था, और उसे कभी भी, परिश्रम को प्रोत्साहित करने के लिए, यह भी नहीं बताया जाता था कि अन्य लड़के उससे अधिक प्रगतिशील हैं, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि मेरे द्वारा उसकी शिक्षा का प्रभार संभालने के दो वर्षों के दौरान उसने बहुत कम प्रगति की। लैटिन व्याकरण आदि के उसके छोटे-छोटे अंश उसे तब तक दोहराए जाते थे जब तक कि वह यह न कह दे कि उसे वे याद हैं, और फिर उसे उन्हें बोलने में मदद की जाती थी; यदि वह अंकगणित के अपने छोटे-छोटे आसान सवालों में गलती करता था, तो उसे तुरंत वे सवाल दिखाए जाते थे और उसके लिए हल कर दिए जाते थे, बजाय इसके कि उसे खुद उन्हें हल करने के लिए अपनी बुद्धि का प्रयोग करने के लिए छोड़ दिया जाए; इसलिए, स्वाभाविक रूप से, उसने गलतियों से बचने के लिए कोई प्रयास नहीं किया, बल्कि अक्सर बिना किसी गणना के ही अपने आंकड़े बेतरतीब ढंग से लिख देता था।

मैं हमेशा इन नियमों का पालन नहीं करती थी: ऐसा करना मेरी अंतरात्मा के विरुद्ध था; लेकिन मैं शायद ही कभी इन नियमों से जरा सा भी भटकने का साहस कर पाती थी, वरना मेरे छोटे शिष्य और बाद में उसकी माँ का क्रोध मुझे सताता था; वह मेरी गलतियों को बढ़ा-चढ़ाकर या अपनी ओर से कुछ जोड़कर बताता था; और अक्सर, इसके परिणामस्वरूप, मैं अपनी नौकरी खोने या छोड़ने की कगार पर पहुँच जाती थी। लेकिन, घर पर उनके लिए, मैंने अपने स्वाभिमान को दबा दिया और अपने

गुस्से को काबू में रखा, और किसी तरह संघर्ष करती रही जब तक कि मेरे उस छोटे से सताने वाले को स्कूल नहीं भेज दिया गया; उसके पिता ने कहा कि घर पर शिक्षा उसके लिए ठीक नहीं थी; यह स्पष्ट था; उसकी माँ ने उसे हद से ज्यादा बिगाड़ दिया था, और उसकी देखभाल करने वाली उसे बिल्कुल भी संभाल नहीं पाती थी।

हॉर्टन लॉज और वहां की गतिविधियों के बारे में कुछ और बातें बता दूं, और फिलहाल इस नीरस वर्णन को यहीं समाप्त करता हूं। घर बहुत ही शानदार था; श्री ब्लूमफील्ड के घर से उम्र, आकार और भव्यता तीनों ही मामलों में श्रेष्ठ था: बगीचा उतना सुरुचिपूर्ण ढंग से नहीं बनाया गया था; लेकिन चिकनी कटी हुई घास, बाड़ से घिरे युवा पेड़, नए उगे चिनार के पेड़ों का झुरमुट और देवदार के वृक्षारोपण के बजाय, एक विशाल पार्क था, जो हिरणों से भरा हुआ था और सुंदर पुराने पेड़ों से सुशोभित था। आसपास का इलाका भी सुखद था, जहां तक उपजाऊ खेत, हरे-भरे पेड़, शांत हरी गलियां और किनारों पर बिखरे जंगली फूलों से सजी झाड़ियां इसे बना सकती थीं; लेकिन - - की ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों में जन्मे और पले-बढ़े व्यक्ति के लिए यह निराशाजनक रूप से सपाट था।

हमारा घर गाँव के गिरजाघर से लगभग दो मील दूर था, इसलिए हर रविवार सुबह, और कभी-कभी उससे भी ज़्यादा, परिवार की गाड़ी का इस्तेमाल करना पड़ता था। श्रीमान और श्रीमती मरे आमतौर पर दिन में एक बार गिरजाघर जाना ही काफी समझते थे; लेकिन अक्सर बच्चे दिन भर मैदान में खाली बैठे रहने के बजाय दूसरी बार गिरजाघर जाना पसंद करते थे। अगर मेरे कुछ छात्र पैदल चलना चुनते और मुझे भी साथ ले जाते, तो यह मेरे लिए अच्छा ही होता; क्योंकि अन्यथा गाड़ी में मेरी जगह खुली खिड़की से सबसे दूर कोने में दबकर, घोड़ों की तरफ पीठ करके बैठने की होती थी: इस स्थिति से मुझे हमेशा ही उल्टी जैसा महसूस होता था; और अगर मुझे प्रार्थना के बीच में गिरजाघर छोड़ना न पड़ता, तो भी सुस्ती और कमजोरी की भावना, और इसके और भी बदतर होने के डर से मेरी प्रार्थना में खलल पड़ता था: और पूरे दिन मेरा सिरदर्द बना रहता था, जबकि अन्यथा वह दिन सुकून भरा और पवित्र, शांत आनंद का होता।

'यह बहुत अजीब बात है, मिस ग्रे, कि गाड़ी में बैठने से आपको हमेशा उल्टी आती है: मुझे तो कभी नहीं आती,' मिस मटिल्डा ने टिप्पणी की।

'मैं भी नहीं,' उसकी बहन ने कहा; 'लेकिन मुझे यकीन है कि अगर मैं उसकी जगह

बैठती तो मुझे भी ऐसा ही लगता—कितनी गंदी, भयानक जगह है, मिस ग्रे; मुझे आश्चर्य है कि आप इसे कैसे सहन कर पाती हैं!'

'मुझे इसे सहना ही पड़ेगा, क्योंकि मेरे पास कोई और विकल्प नहीं बचा है,' — मैं जवाब दे सकती थी; लेकिन उनकी भावनाओं के प्रति सहानुभूति रखते हुए मैंने केवल इतना ही कहा, — 'ओह! यह तो बस थोड़ी ही दूर है, और अगर चर्च में मुझे उल्टी न हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।'

अगर मुझे दिन के सामान्य विभाजन और व्यवस्थाओं का वर्णन करने को कहा जाए, तो यह मेरे लिए बहुत मुश्किल होगा। मैं अपने विद्यार्थियों के साथ कक्षा में ही उनके मनचाहे समय पर भोजन करता था: कभी-कभी वे आधा पका होने से पहले ही भोजन के लिए घंटी बजा देते थे; कभी-कभी वे भोजन को एक घंटे से अधिक समय तक मेज पर रखे रहने देते थे और फिर आलू ठंडे होने और ग्रेवी पर चर्बी के टुकड़े जमे होने के कारण नाराज़ हो जाते थे; कभी-कभी वे चार बजे चाय पीते थे; अक्सर वे नौकरों पर इसलिए चिल्लाते थे क्योंकि भोजन ठीक पाँच बजे नहीं आता था; और जब इन आदेशों का पालन किया जाता था, तो समय की पाबंदी को प्रोत्साहित करने के लिए, वे भोजन को सात या आठ बजे तक मेज पर रखे रहने देते थे।

उनकी पढ़ाई का समय भी लगभग इसी तरह तय होता था; मेरी राय या सुविधा का कभी ध्यान नहीं रखा जाता था। कभी-कभी मटिल्डा और जॉन नाश्ते से पहले सारा झंझट खत्म करने का फैसला करते और बिना किसी झिझक या माफी मांगे नौकरानी को साढ़े पांच बजे मुझे बुलाने भेज देते; कभी-कभी मुझे ठीक छह बजे तैयार रहने को कहा जाता और मैं जल्दी से कपड़े पहनकर नीचे आता तो कमरा खाली होता, और काफी देर तक इंतज़ार करने के बाद पता चलता कि उन्होंने अपना इरादा बदल लिया है और अभी भी बिस्तर पर हैं; या, शायद, अगर गर्मी की कोई सुहावनी सुबह होती, तो ब्राउन आकर मुझे बताता कि लड़के-लड़कियां छुट्टी पर गए हैं और बाहर घूमने गए हैं; और फिर मुझे नाश्ते के लिए तब तक इंतज़ार करना पड़ता जब तक मैं लगभग बेहोश होने की हालत में न पहुँच जाता: क्योंकि वे जाने से पहले कुछ खा-पीकर खुद को तरोताज़ा कर लेते।

अक्सर वे खुले में बैठकर पढ़ाई करते थे; मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं थी: सिवाय इसके कि मुझे अक्सर गीली घास पर बैठने से, या शाम की ओस से, या किसी ठंडी हवा से सर्दी लग जाती थी, जबकि उन पर इसका कोई बुरा असर नहीं

पड़ता था। उनका मजबूत होना बिल्कुल सही था; फिर भी, निश्चित रूप से, उन्हें दूसरों के प्रति कुछ सम्मान सिखाया जा सकता था जो उनसे कम मजबूत थे। लेकिन मुझे उन्हें दोष नहीं देना चाहिए, शायद यह मेरी ही गलती थी; क्योंकि मैंने उन्हें जहाँ चाहें बैठने पर कभी कोई आपत्ति नहीं जताई; मूर्खतापूर्ण ढंग से मैंने अपनी सुविधा के लिए उन्हें परेशान करने के बजाय परिणामों का जोखिम उठाना बेहतर समझा। उनके पढ़ने का अशोभनीय तरीका उतना ही उल्लेखनीय था जितना कि समय और स्थान के चुनाव में उनकी मनमानी। मेरे निर्देश सुनते समय, या जो उन्होंने सीखा था उसे दोहराते समय, वे सोफे पर आराम करते, कालीन पर लेटते, अंगड़ाई लेते, जम्हाई लेते, आपस में बातें करते, या खिड़की से बाहर देखते; जबकि, मैं आग को हिलाने तक या अपने गिरे हुए रूमाल को उठाने तक की कोशिश भी नहीं कर सकती थी, बिना किसी छात्र द्वारा लापरवाही के लिए डांटे जाने या यह कहे जाने के कि 'मम्मी को मेरा इतना लापरवाह होना पसंद नहीं आएगा।'

नौकरों ने देखा कि माता-पिता और बच्चे दोनों ही गवर्नेस को कितना कम सम्मान देते थे, इसलिए उन्होंने भी अपना व्यवहार उसी मानदंड के अनुसार किया। मैंने अक्सर अपने आप को चोट पहुँचाने का जोखिम उठाकर भी उनके युवा मालिकों और मालकिनों के अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध उनका पक्ष लिया; और मैंने हमेशा उन्हें यथासंभव कम से कम कष्ट देने का प्रयास किया: परन्तु उन्होंने मेरी सुविधा की पूरी तरह उपेक्षा की, मेरे अनुरोधों को ठुकराया और मेरे निर्देशों को अनसुना किया। मुझे विश्वास है कि सभी नौकर ऐसा नहीं करते; परन्तु सामान्यतः घरेलू नौकर अज्ञानी और तर्क-वितर्क के कम अभ्यस्त होने के कारण अपने से वरिष्ठों की लापरवाही और बुरे उदाहरण से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं; और मुझे लगता है कि ये नौकर शुरू से ही अच्छे दर्जे के नहीं थे।

कभी-कभी मुझे अपने जीवन से अपमानित महसूस होता था, और इतनी सारी अपमानजनक बातों को सहने पर शर्म आती थी; और कभी-कभी मैं खुद को मूर्ख समझती थी कि मैं इन सब बातों की इतनी परवाह क्यों करती हूँ, और मुझे डर लगता था कि मुझमें ईसाई विनम्रता या उस परोपकार की कमी है जो 'धैर्यवान और दयालु होता है, स्वार्थ नहीं देखता, आसानी से क्रोधित नहीं होता, सब कुछ सहता है, सब कुछ सहन करता है।'

लेकिन समय और धैर्य के साथ, हालात धीरे-धीरे सुधरने लगे: यह सच है कि धीरे-

धीरे और लगभग न के बराबर; लेकिन मैंने अपने पुरुष विद्यार्थियों से छुटकारा पा लिया (यह कोई मामूली लाभ नहीं था), और लड़कियाँ, जैसा कि मैंने उनमें से एक के बारे में पहले बताया था, थोड़ी कम उद्दंड हो गईं और सम्मान के कुछ लक्षण दिखाने लगीं। 'मिस ग्रे एक अजीब शख्सियत थीं: वह कभी चापलूसी नहीं करती थीं और उनकी उतनी प्रशंसा नहीं करती थीं जितनी करनी चाहिए थी; लेकिन जब भी वह उनके बारे में या उनसे संबंधित किसी भी चीज़ के बारे में सकारात्मक रूप से बोलती थीं, तो वे पूरी तरह आश्वस्त हो सकती थीं कि उनकी स्वीकृति सच्ची थी। वह बहुत ही विनम्र, शांत और सौम्य स्वभाव की थीं, लेकिन कुछ बातें थीं जो उन्हें चिढ़ा देती थीं: वे इसे ज्यादा पसंद नहीं करती थीं, लेकिन फिर भी उन्हें शांत रखना बेहतर था; क्योंकि जब वह अच्छे मूड में होती थीं तो वह उनसे बात करती थीं और कभी-कभी अपने तरीके से बहुत ही मनमोहक और मनोरंजक होती थीं; जो माँ के स्वभाव से बिल्कुल अलग था, लेकिन फिर भी बदलाव के लिए अच्छा था। हर विषय पर उसकी अपनी राय होती थी और वह उन पर अडिग रहती थी—अक्सर ये राय बहुत उबाऊ होती थीं; क्योंकि वह हमेशा सही और गलत के बारे में सोचती रहती थी, धर्म से जुड़े मामलों के प्रति उसका एक अजीब सा आदर था और अच्छे लोगों के प्रति उसका एक अकथनीय लगाव था।

अध्याय VIII — 'खुले तौर पर सामने आना'

अठारह वर्ष की आयु में, मिस मरे विद्यालय के शांत और गुमनाम माहौल से निकलकर फैशन की चकाचौंध भरी दुनिया में कदम रखने वाली थीं—कम से कम लंदन से बाहर जितना संभव हो सके उतना; क्योंकि उनके पिता को ग्रामीण सुख-सुविधाओं और शौक को छोड़कर शहर में कुछ हफ्तों के लिए भी आने के लिए राजी नहीं किया जा सका था। 3 जनवरी को एक भव्य भोज में उनका पदार्पण होने वाला था, जिसे उनकी

माँ ने ओ— और उसके आसपास के बीस मील के क्षेत्र के सभी कुलीन और प्रतिष्ठित लोगों के लिए आयोजित करने का प्रस्ताव रखा था। बेशक, वह इस अवसर का बेसब्री से इंतजार कर रही थीं और उन्हें अपार खुशी की उम्मीद थी।

एक शाम, उस महत्वपूर्ण दिन से एक महीने पहले, जब मैं अपनी बहन का एक लंबा और बेहद दिलचस्प पत्र पढ़ रही थी—जिसे मैंने सुबह बस सरसरी तौर पर देखा था क्योंकि उसमें कोई बुरी खबर नहीं थी, और अब तक उसे पढ़ने के लिए शांत समय न मिलने के कारण संभाल कर रखा था—उसने कहा, 'मिस ग्रे, कृपया उस नीरस, बेवकूफी भरे पत्र को एक तरफ रख दें और मेरी बात सुनें! मुझे यकीन है कि मेरी बातें उससे कहीं ज्यादा मनोरंजक होंगी।'

वह मेरे पैरों के पास रखी छोटी सी कुर्सी पर बैठ गई; और मैंने झुंझलाहट भरी आह को दबाते हुए पत्र को समेटना शुरू कर दिया।

उन्होंने कहा, 'घर के भले लोगों से कह देना कि वे तुम्हें इतने लंबे-लंबे पत्रों से परेशान न करें; और सबसे बढ़कर, उनसे कहना कि वे अच्छे कागज़ पर लिखें, न कि उन बड़े-बड़े भद्दे कागज़ों पर। तुम्हें देखना चाहिए कि माँ अपने दोस्तों को कितने प्यारे और शालीन पत्र लिखती हैं।'

मैंने जवाब दिया, 'घर पर जो अच्छे लोग हैं, वे अच्छी तरह जानते हैं कि उनके पत्र जितने लंबे होते हैं, मुझे उतने ही अच्छे लगते हैं। अगर उनमें से किसी से मुझे कोई प्यारा सा, शालीन पत्र मिले तो मुझे बहुत दुख होगा; और मुझे लगा था कि आप स्वयं भी इतनी शालीन हैं, मिस मरे, कि बड़े कागज पर लिखने की "अशिष्टता" के बारे में बात करना उचित नहीं होगा।'

'खैर, मैंने तो बस आपको चिढ़ाने के लिए ऐसा कहा था। लेकिन अब मैं उस गेंद के बारे में बात करना चाहता हूँ; और आपको यह बताना चाहता हूँ कि जब तक वह खत्म नहीं हो जाती, तब तक आपको अपनी छुट्टियाँ स्थगित कर देनी चाहिए।'

'ऐसा क्यों? — मैं उस भोज में उपस्थित नहीं रहूंगा।'

नहीं, लेकिन कार्यक्रम शुरू होने से पहले आप कमरे सजे-धजे देखेंगे, संगीत सुनेंगे और सबसे बढ़कर, मुझे मेरी शानदार नई पोशाक में देखेंगे। मैं इतनी आकर्षक लगूंगी कि आप मेरी पूजा करने को तैयार हो जाएंगे - आपको सचमुच यहीं रुकना चाहिए।

'मैं आपसे मिलना बहुत पसंद करूंगा; लेकिन मुझे अनगिनत समारोहों और पार्टियों के दौरान आपसे मिलने के कई मौके मिलेंगे, और मैं अपनी वापसी को इतना लंबा

टालकर अपने दोस्तों को निराश नहीं कर सकता।'

‘अरे, अपने दोस्तों की चिंता मत करो! उनसे कह दो कि हम तुम्हें जाने नहीं देंगे।’

लेकिन सच कहूं तो, यह मेरे लिए निराशाजनक होगा: मैं उन्हें देखने के लिए उतना ही तरसता हूं जितना वे मुझे देखने के लिए तरसते हैं - शायद उससे भी ज्यादा।

'अच्छा, लेकिन यह तो बहुत ही कम समय है।'

'मेरे अनुमान के अनुसार लगभग दो सप्ताह; और इसके अलावा, मैं घर से दूर क्रिसमस बिताने के विचार को सहन नहीं कर सकता: और तो और, मेरी बहन की शादी होने वाली है।'

‘क्या वह — कब?’

'अगले महीने तक नहीं; लेकिन मैं वहां मौजूद रहना चाहता हूं ताकि तैयारियों में उसकी मदद कर सकूं और जब तक वह हमारे साथ है, उसके साथ का भरपूर आनंद उठा सकूं।'

‘आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?’

'मुझे खबर सिर्फ इस पत्र में मिली है, जिसे आप नीरस और मूर्खतापूर्ण बताकर खारिज करते हैं और मुझे पढ़ने नहीं देते।'

उसकी शादी किससे होगी?

'पड़ोसी पल्ली के पादरी श्री रिचर्डसन को।'

क्या वह अमीर है?

नहीं; सिर्फ आरामदायक।

'क्या वो खूबसूरत है?'

नहीं; बस ठीक-ठाक।

'युवा?'

नहीं; बस औसत दर्जे का।

‘हे भगवान! कितना नीच आदमी है! यह कैसा घर है?’

‘एक शांत छोटा पादरी का घर, जिसमें बेलों से ढका बरामदा, एक पुराने जमाने का बगीचा और —’

अरे, रुक जाओ! — मुझे उल्टी आ जाएगी। वह इसे कैसे सहन कर पाएगी?’

मुझे उम्मीद है कि वह न केवल इसे सहन कर पाएगी, बल्कि बहुत खुश भी होगी। आपने मुझसे यह नहीं पूछा कि मिस्टर रिचर्डसन एक अच्छे, बुद्धिमान या मिलनसार

व्यक्ति हैं या नहीं; मैं इन सभी सवालों का जवाब हां में दे सकता था - कम से कम मैरी तो यही सोचती है, और मुझे उम्मीद है कि वह गलत नहीं होगी।

लेकिन—बेचारी! वो अपना जीवन वहाँ उस घिनौने बूढ़े आदमी के साथ कैद में बिताने के बारे में कैसे सोच सकती है; और बदलाव की कोई उम्मीद भी नहीं?

'वह बूढ़ा नहीं है: उसकी उम्र केवल छत्तीस या सवा चार साल है; और वह खुद अट्ठाईस साल की है, और इतनी संयमित है मानो वह पचास साल की हो।'

'ओह! तो यह बेहतर है—वे एक-दूसरे के लिए बिल्कुल उपयुक्त हैं; लेकिन क्या वे उन्हें "योग्य पादरी" कहते हैं?'

मुझे नहीं पता; लेकिन अगर वे ऐसा करते हैं, तो मेरा मानना है कि वह इस उपाधि के हकदार हैं।

'हे भगवान, यह तो बहुत ही चौंकाने वाली बात है! और क्या वह सफेद एप्रन पहनकर पाई और पुडिंग बनाएगी?'

मुझे सफेद एप्रन के बारे में तो नहीं पता, लेकिन मुझे यकीन है कि वह कभी-कभार पाई और पुडिंग जरूर बनाएगी; लेकिन यह कोई बड़ी कठिनाई नहीं होगी, क्योंकि वह पहले भी ऐसा कर चुकी है।

और क्या वह एक साधारण शॉल और एक बड़ी भूसे की टोपी पहनकर, अपने पति के गरीब पैरिशवासियों के लिए पर्चे और हड्डी का सूप लेकर घूमेगी?

मुझे इस बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं है; लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि वह हमारी मां के उदाहरण के अनुरूप, उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से सहज महसूस कराने के लिए अपनी पूरी कोशिश करेगी।

अध्याय IX — गेंद

चार सप्ताह के अवकाश से लौटने के बाद, जब मैंने अपने बाहरी कपड़े उतार दिए, तो

जैसे ही मैं कक्षा में दाखिल हुई, मिस मरे ने तुरंत कहा, 'अब, मिस ग्रे, दरवाजा बंद करो और बैठ जाओ, मैं तुम्हें बॉल के बारे में सब कुछ बताऊंगी।'

'नहीं— बिलकुल नहीं!' मिस मटिल्डा चिल्लाईं। 'चुप रहो, क्या तुम चुप नहीं रह सकती? और मुझे उसे अपनी नई घोड़ी के बारे में बताने दो— कितनी शानदार है, मिस ग्रे! एक बेहतरीन नस्ल की घोड़ी—'

'चुप रहो, मटिल्डा; और मुझे पहले अपनी खबर बताने दो।'

'नहीं, नहीं, रोज़ाली; इसमें तुम्हें बहुत लंबा समय लग जाएगा - उसे पहले मेरी बात सुननी होगी - अगर उसने नहीं सुनी तो मैं फांसी पर चढ़ जाऊंगी!'

'मुझे यह सुनकर बहुत दुख हुआ, मिस मटिल्डा, कि आप अभी तक उस घिनौनी आदत से छुटकारा नहीं पा सकी हैं।'

'खैर, मैं कुछ नहीं कर सकती: लेकिन अगर आप मेरी बात सुन लें और रोसली को अपनी जुबान बंद रखने के लिए कह दें, तो मैं फिर कभी कोई बुरा शब्द नहीं बोलूंगी।'

रोसली ने विरोध किया, और मुझे लगा कि मैं उन दोनों के बीच टुकड़े-टुकड़े हो जाऊँगी; लेकिन मिस मटिल्डा की आवाज़ सबसे तेज़ थी, इसलिए उनकी बहन अंततः मान गईं और उन्हें अपनी कहानी पहले सुनाने दी: इस प्रकार मुझे उनकी शानदार घोड़ी, उसके प्रजनन और वंशावली, उसकी चाल, उसकी हरकत, उसका जोश आदि, और उसे चलाने में उनके अपने अद्भुत कौशल और साहस का लंबा विवरण सुनने के लिए मजबूर होना पड़ा; अंत में उन्होंने दावा किया कि वह पाँच सलाखों वाले गेट को 'पलक झपकते ही' पार कर सकती है, पापा ने कहा कि अगली बार जब शिकारी कुत्ते मिलेंगे तो वह शिकार पर जा सकती है, और मम्मी ने उसके लिए एक चमकीला लाल रंग का शिकार का वस्त्र मंगवाया है।

'ओह, मटिल्डा! तुम कितनी दिलचस्प कहानियाँ सुना रही हो!' उसकी बहन ने कहा।

'खैर,' उसने जरा भी शर्मिंदा हुए जवाब दिया, 'मुझे पता है कि अगर मैं कोशिश करूं तो पांच सलाखों वाला गेट भी पार कर सकती हूं, और पापा कहेंगे कि मैं शिकार कर सकती हूं, और मम्मी मेरे कहने पर मुझे शिकार का लिबास दिलवा देंगी।'

'अच्छा, अब जाओ,' मिस मरे ने जवाब दिया; 'और हाँ, प्यारी मटिल्डा, थोड़ी और सभ्य बनने की कोशिश करो। मिस ग्रे, काश आप उसे ऐसे भद्दे शब्दों का इस्तेमाल न करने के लिए कहतीं; वह अपने घोड़े को घोड़ी कहती है: यह कितना घिनौना है! और

फिर उसका वर्णन करते समय वह इतने भयानक शब्दों का इस्तेमाल करती है: उसने ये सब घोड़ों की देखभाल करने वालों से सीखा होगा। जब वह ऐसा करना शुरू करती है तो मुझे लगभग हंसी आ जाती है।'

'मैंने ये सब पापा से सीखा है, बेवकूफ! और उनके दोस्तों से,' युवती ने अपने हाथ में हमेशा की तरह रखी हुई शिकार की चाबुक को जोर से चलाते हुए कहा। 'मैं घोड़ों को पहचानने में उतनी ही माहिर हूँ जितनी कि उनमें से सबसे अच्छी।'

'अच्छा, अब जाओ, तुम कितनी अजीब लड़की हो! अगर तुम ऐसे ही बोलती रही तो मुझे सच में बहुत गुस्सा आएगा। और अब, मिस ग्रे, मेरी बात सुनो; मैं तुम्हें उस बॉल के बारे में बताने जा रही हूँ। मुझे पता है, तुम इसके बारे में सुनने के लिए बेताब होगी। ओह, क्या बॉल थी! तुमने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी ऐसी कोई चीज़ न देखी होगी, न सुनी होगी, न पढ़ी होगी, न सपने में भी सोची होगी। सजावट, मनोरंजन, खाना, संगीत सब लाजवाब थे! और फिर मेहमान! वहाँ दो रईस, तीन बैरोनेट, पाँच प्रतिष्ठित महिलाएँ और अनगिनत अन्य महिलाएँ और पुरुष थे। बेशक, महिलाएँ मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती थीं, सिवाय इसके कि वे मुझे यह दिखाकर खुश कर दें कि उनमें से ज़्यादातर कितनी बदसूरत और भद्दी थीं; और माँ ने मुझे बताया था कि उनमें से सबसे अच्छी - सबसे असाधारण सुंदरियाँ भी मेरे सामने कुछ नहीं थीं। जहाँ तक मेरी बात है, मिस ग्रे - मुझे बहुत अफ़सोस है कि तुम मुझे नहीं देख पाईं! मैं कितनी प्यारी थी - थी ना, मटिल्डा?'

'औसत दर्जे का।'

नहीं, लेकिन मैं सचमुच ऐसी ही थी—कम से कम माँ तो यही कहती थीं—और ब्राउन एंड विलियमसन भी। ब्राउन कहती थीं कि उन्हें पूरा यकीन है कि कोई भी सज्जन मुझे देखते ही मुझसे प्यार किए बिना नहीं रह सकता; इसलिए मुझे थोड़ा घमंडी होने की छूट दी जा सकती है। मुझे पता है कि आप मुझे एक घमंडी, अभिमानी और चंचल लड़की समझते हैं; लेकिन फिर, आप जानते हैं, मैं इसका सारा श्रेय अपने व्यक्तिगत आकर्षण को नहीं देती: मैं कुछ श्रेय हेयरड्रेसर को देती हूँ, और कुछ अपनी बेहद खूबसूरत पोशाक को—आपको इसे कल देखना चाहिए—गुलाबी साटन के ऊपर सफेद जालीदार कपड़ा—और कितनी खूबसूरती से बनी है! और सुंदर, बड़े मोतियों का हार और कंगन भी!

मुझे इसमें कोई शक नहीं कि आप बहुत आकर्षक लग रही थीं: लेकिन क्या इससे

आपको इतनी खुशी मिलनी चाहिए?

‘अरे नहीं! — केवल यही नहीं: बल्कि, मुझे इतनी प्रशंसा मिली; और मैंने उस एक रात में इतनी सारी विजय प्राप्त की — आप सुनकर आश्चर्यचकित हो जाएंगे —’

लेकिन इनसे तुम्हें क्या फायदा होगा?

‘वाह! सोचो अगर कोई महिला यह सवाल पूछे तो क्या होगा!’

'खैर, मुझे लगता है कि एक ही विजय काफी होगी; और अगर अधीनता पारस्परिक न हो तो यह बहुत ज्यादा होगी।'

“ओह, लेकिन आप जानते हैं कि मैं उन बातों पर आपसे कभी सहमत नहीं होती। अब, ज़रा रुकिए, मैं आपको अपने प्रमुख प्रशंसकों के बारे में बताती हूँ — वे लोग जिन्होंने उस रात और उसके बाद खुद को बहुत प्रमुखता से पेश किया: क्योंकि मैं तब से दो पार्टियों में जा चुकी हूँ। दुर्भाग्य से वे दोनों रईस, लॉर्ड जी — - और लॉर्ड एफ — -, विवाहित थे, वरना मैं शायद उनके प्रति विशेष रूप से दयालु होती; लेकिन ऐसा नहीं हुआ: हालाँकि लॉर्ड एफ — -, जो अपनी पत्नी से नफ़रत करते हैं, स्पष्ट रूप से मुझसे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने मुझे दो बार उनके साथ नृत्य करने के लिए कहा — वैसे, वह एक शानदार नर्तक हैं, और मैं भी: आप कल्पना नहीं कर सकते कि मैंने कितना अच्छा नृत्य किया — मैं खुद पर चकित थी। मेरे स्वामी ने भी मेरी बहुत प्रशंसा की — बल्कि कुछ ज़्यादा ही — और मैंने थोड़ा घमंडी और अप्रिय होना उचित समझा; लेकिन मुझे उनकी चिड़चिड़ी, गुस्सैल पत्नी को द्वेष और झुंझलाहट से मरते हुए देखने का आनंद मिला —”

‘ओह, मिस मरे! आपका मतलब यह तो नहीं है कि ऐसी चीज़ आपको सचमुच आनंद दे सकती है? चाहे आप कितनी भी नाराज़ हों या—’

खैर, मुझे पता है यह बहुत गलत है; लेकिन कोई बात नहीं! मैं कभी न कभी अच्छा बनने की कोशिश करूंगी - बस अभी उपदेश मत दो, मैं एक अच्छी इंसान हूँ। मैंने अभी तुम्हें आधी बात भी नहीं बताई है। मुझे देखने दो। ओह! मैं तुम्हें बताने वाली थी कि मेरे कितने सारे प्रशंसक थे: - सर थॉमस एशबी उनमें से एक थे, - सर ह्यू मेलथम और सर ब्रॉडली विल्सन बूढ़े हैं, केवल पापा और मम्मी के ही लायक साथी हैं। सर थॉमस जवान, अमीर और खुशमिजाज हैं; लेकिन फिर भी एक बदसूरत जानवर हैं: हालांकि, मम्मी कहती हैं कि कुछ महीनों की जान-पहचान के बाद मुझे इस बात की परवाह नहीं रहेगी। फिर, हेनरी मेलथम थे, सर ह्यू के छोटे बेटे; दिखने में

अच्छे और साथ में फ्लर्ट करने में अच्छे: लेकिन छोटा बेटा होने के नाते, वह बस इसी काम के लायक है; फिर युवा मिस्टर ग्रीन थे, काफी अमीर, लेकिन परिवारहीन, और एक बड़े मूर्ख, बिल्कुल देहाती! और फिर, हमारे अच्छे रेक्टर, मिस्टर हैटफील्ड: उन्हें खुद को एक विनम्र प्रशंसक समझना चाहिए; लेकिन मुझे डर है कि वह अपने ईसाई गुणों में विनम्रता को गिनना भूल गया है।'

‘क्या मिस्टर हैटफील्ड उस बॉल में मौजूद थे?’

'हां, बिल्कुल। क्या आपको लगता था कि वह जाने के लिए बहुत अच्छा था?'

मुझे लगा कि वह इसे गैर-धार्मिक समझ सकता है।

बिलकुल नहीं। नाचकर उन्होंने अपने पद का अपमान तो नहीं किया; लेकिन बेचारे, बड़ी मुश्किल से खुद को रोक पाए: ऐसा लग रहा था मानो वो मुझसे शादी का प्रस्ताव रखने के लिए बेताब हों; और - अरे! वैसे - उन्हें एक नया सहायक मिल गया है: उस बूढ़े और बदचलन मिस्टर ब्लाइ को आखिरकार उनकी मनचाही नौकरी मिल गई है, और वो चले गए हैं।

और नया वाला कैसा है?

‘अरे, ये तो बिल्कुल ही जानवर है! इसका नाम वेस्टन है। मैं इसका वर्णन तीन शब्दों में कर सकता हूँ — एक संवेदनहीन, बदसूरत, मूर्ख गधा। वैसे तो ये चार शब्द हो गए, लेकिन कोई बात नहीं — अब इसके बारे में बस इतना ही।’

फिर वह बॉल में लौट आई और उसने मुझे वहां और उसके बाद जिन-जिन पार्टियों में वह शामिल हुई थी, उनमें अपने व्यवहार का विस्तृत विवरण दिया; और सर थॉमस एशबी और श्रीमान मेलथम, ग्रीन और हैटफील्ड के बारे में और अधिक जानकारी दी, और उन सभी पर उसने जो अमिट छाप छोड़ी थी, उसका भी जिक्र किया।

मैंने अपनी तीसरी या चौथी जम्हाई को दबाते हुए कहा, 'अच्छा, इन चारों में से आपको सबसे ज्यादा कौन सा पसंद है?'

‘मैं उन सभी से नफरत करती हूँ!’ उसने अपने चमकीले घुंघराले बालों को चंचल तिरस्कार के साथ हिलाते हुए उत्तर दिया।

‘इसका मतलब शायद यह है कि, “मुझे वे सभी पसंद हैं” — लेकिन सबसे ज्यादा कौन से?’

नहीं, मैं सचमुच उन सभी से नफरत करती हूँ; लेकिन हैरी मेलथम सबसे सुंदर और मनोरंजक है, और मिस्टर हैटफील्ड सबसे चतुर, सर थॉमस सबसे दुष्ट और मिस्टर

ग्रीन सबसे मूर्ख। लेकिन अगर मुझे उनमें से किसी एक को चुनना ही है, तो शायद मुझे सर थॉमस एशबी को ही चुनना पड़ेगा।

'अगर वह इतना दुष्ट है, और अगर आप उसे नापसंद करते हैं, तो ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता?'

'ओह, मुझे उसके दुष्ट होने से कोई आपत्ति नहीं है: वह तो इसी में और भी अच्छा है; और जहाँ तक उसे नापसंद करने की बात है - अगर मुझे शादी करनी ही पड़े तो मुझे एशबी पार्क की लेडी एशबी कहलाने में कोई खास आपत्ति नहीं होगी। लेकिन अगर मैं हमेशा जवान रह सकती, तो मैं हमेशा अविवाहित ही रहती। मैं जी भर के आनंद लेना चाहती हूँ, और पूरी दुनिया के साथ नखरे करना चाहती हूँ, जब तक कि मुझे बूढ़ी कुंवारी कहलाने की नौबत न आ जाए; और फिर, उस बदनामी से बचने के लिए, दस हज़ार विजय प्राप्त करने के बाद, एक को छोड़कर बाकी सभी का दिल तोड़ दूँ, किसी ऊँचे खानदान के, अमीर, उदार पति से शादी करके, जिसे पाने के लिए दूसरी तरफ पचास औरतें तरस रही हों।'

'खैर, जब तक आप इन विचारों को मानते हैं, तब तक हर हाल में अविवाहित रहें, और कभी शादी न करें: यहां तक कि बुढ़ापे में कुंवारे रहने के कलंक से बचने के लिए भी नहीं।'

अध्याय X — चर्च

'अच्छा, मिस ग्रे, आप नए क्यूरेट के बारे में क्या सोचती हैं?' मिस मरे ने हमारी ड्यूटी फिर से शुरू होने के बाद वाले रविवार को चर्च से लौटने पर पूछा।

मेरा जवाब था, 'मैं मुश्किल से ही बता सकता हूँ, मैंने तो उन्हें उपदेश देते हुए सुना भी नहीं है।'

“अच्छा, लेकिन आपने उसे देखा था ना?”

'हां, लेकिन मैं किसी व्यक्ति के चेहरे पर सरसरी नजर डालकर उसके चरित्र का अंदाजा लगाने का दावा नहीं कर सकता।'

लेकिन क्या वह बदसूरत नहीं है?

मुझे ऐसा नहीं लगा कि वह कोई खास व्यक्ति है; मुझे उसका चेहरा नापसंद नहीं है: लेकिन उसके बारे में मैंने जो एक बात विशेष रूप से देखी, वह थी उसकी पढ़ने की शैली; जो मुझे अच्छी लगी - कम से कम श्री हैटफील्ड की शैली से कहीं बेहतर। वह पाठों को ऐसे पढ़ता था मानो वह हर अंश को पूरी तरह से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने पर तुला हो; ऐसा लगता था मानो सबसे लापरवाह व्यक्ति भी ध्यान दिए बिना नहीं रह सकता था, और सबसे अनपढ़ व्यक्ति भी समझने में असफल नहीं हो सकता था; और वह प्रार्थनाओं को ऐसे पढ़ता था मानो वह पढ़ ही नहीं रहा हो, बल्कि अपने दिल से पूरी लगन और ईमानदारी से प्रार्थना कर रहा हो।

'हाँ, बस यही उसकी खासियत है: वह सेवा को ठीक-ठाक ढंग से निभा सकता है; लेकिन इसके अलावा उसके पास कोई विचार नहीं है।'

'आपको कैसे मालूम?'

ओह! मुझे अच्छी तरह पता है; मैं ऐसे मामलों में बहुत अच्छा पारखी हूँ। क्या आपने देखा कि वह चर्च से कैसे निकला? लड़खड़ाते हुए चल रहा था - मानो वहाँ उसके सिवा कोई और न हो - न दाएं-बाएं देख रहा था, और जाहिर तौर पर चर्च से बाहर निकलने और शायद घर जाकर खाना खाने के अलावा और कुछ नहीं सोच रहा था: उसके बड़े मूर्ख दिमाग में इसके अलावा कोई और विचार ही नहीं आ रहा था।

'मुझे लगता है कि आपने उससे जमींदार की सीट पर एक नजर डलवाई होगी,' मैंने उसकी तीव्र शत्रुता पर हंसते हुए कहा।

'सचमुच! अगर उसने ऐसा करने की हिम्मत की होती तो मैं बहुत नाराज़ होती!' उसने सिर हिलाते हुए घमंड से जवाब दिया; फिर एक पल सोचने के बाद उसने कहा — 'अच्छा, अच्छा! मुझे लगता है कि वह अपनी जगह के लिए ठीक है: लेकिन मुझे खुशी है कि मैं मनोरंजन के लिए उस पर निर्भर नहीं हूँ—बस इतना ही। क्या आपने देखा कि मिस्टर हैटफील्ड मुझसे धनुष लेने के लिए कितनी जल्दी बाहर गए और हमें गाड़ी में बिठाने के लिए समय पर पहुँच गए?'

'हाँ,' मैंने उत्तर दिया; मन ही मन सोचते हुए, 'और मुझे लगा कि एक पादरी के रूप में उनकी गरिमा के लिए यह कुछ अपमानजनक था कि वे उपदेश मंच से इतनी

जल्दबाजी में आकर जमींदार से हाथ मिलाएँ और उनकी पत्नी और बेटियों को उनकी गाड़ी में बिठाएँ: और तो और, मुझे उनसे इस बात का भी मलाल है कि उन्होंने मुझे लगभग गाड़ी से बाहर ही कर दिया था'; दरअसल, हालाँकि मैं उनके सामने, गाड़ी की सीढ़ियों के ठीक बगल में खड़ा होकर अंदर जाने का इंतज़ार कर रहा था, फिर भी वे तब तक सीढ़ियाँ चढ़ाते और दरवाज़ा बंद करते रहे, जब तक कि परिवार के किसी सदस्य ने यह कहकर उन्हें नहीं रोका कि नौकरानी अभी तक नहीं आई है; तब, बिना एक शब्द भी माफी मांगे, वे उन्हें सुप्रभात कहकर चले गए और नौकर को बाकी काम सौंप दिया।

ध्यान दें— श्री हैटफील्ड ने मुझसे कभी बात नहीं की, न ही सर ह्यू या लेडी मेलथम ने, न ही श्री हैरी या मिस मेलथम ने, न ही श्री ग्रीन या उनकी बहनों ने, न ही उस चर्च में आने वाले किसी अन्य महिला या पुरुष ने; वास्तव में, हॉर्टन लॉज में आने वाले किसी भी व्यक्ति ने मुझसे बात नहीं की।

मिस मरे ने दोपहर में अपने और अपनी बहन के लिए फिर से गाड़ी मंगवाई: उन्होंने कहा कि बगीचे में घूमने के लिए बहुत ठंड थी; और इसके अलावा, उन्हें विश्वास था कि हैरी मेलथम चर्च में होंगे। उन्होंने शीशे में अपनी सुंदर छवि को देखकर शरारती मुस्कान के साथ कहा, 'पिछले कुछ रविवारों से वह चर्च में बहुत ही नियमित रूप से आते रहे हैं: आपको लगेगा कि वह एक सच्चे ईसाई हैं। और आप हमारे साथ चल सकती हैं, मिस ग्रे: मैं चाहती हूँ कि आप उन्हें देखें; विदेश से लौटने के बाद से उनमें कितना सुधार आया है - आप सोच भी नहीं सकतीं! और इसके अलावा, तब आपको सुंदर श्री वेस्टन को फिर से देखने और उनका उपदेश सुनने का अवसर मिलेगा।'

मैंने उनका उपदेश सुना और उनके उपदेश की सुसमाचार संबंधी सच्चाई, उनके व्यवहार की गंभीरतापूर्ण सादगी और उनकी शैली की स्पष्टता और प्रभाव से मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ। पूर्व पादरी के नीरस, उबाऊ प्रवचनों और पादरी के उससे भी कम शिक्षाप्रद भाषणों को इतने लंबे समय तक सुनने के बाद, ऐसा उपदेश सुनना वास्तव में स्फूर्तिदायक था। श्री हैटफील्ड गलियारे में तेज़ी से आते, या यूँ कहें कि बवंडर की तरह आगे बढ़ते, उनका रेशमी गाउन उनके पीछे लहराता और बेंच के दरवाजों से टकराता, वे एक विजेता की तरह अपने विजय रथ पर सवार होकर मंच पर चढ़ते; फिर, मखमली गद्दी पर सज-धज कर बैठ जाते और कुछ देर तक मौन प्रणाम करते रहते; फिर प्रार्थना के दौरान कुछ बुदबुदाते हुए, प्रभु की प्रार्थना को गुनगुनाते हुए,

उठकर अपना एक चमकीला लैवेंडर रंग का दस्ताना उतारते हैं ताकि सभा को उनकी चमकती अंगूठियों का दर्शन हो सके, अपने सुडौल बालों में हल्के से उंगलियां फेरते हैं, एक कैम्ब्रिक रूमाल लहराते हैं, अपने प्रवचन की शुरुआत के रूप में धर्मग्रंथ का एक छोटा सा अंश या शायद एक मात्र वाक्यांश सुनाते हैं, और अंत में एक रचना प्रस्तुत करते हैं जो एक रचना के रूप में अच्छी मानी जा सकती है, हालांकि यह मेरे लिए बहुत अधिक सोची-समझी और बनावटी लगती है: प्रस्ताव अच्छी तरह से रखे गए थे, तर्क तार्किक रूप से प्रस्तुत किए गए थे; फिर भी, थोड़ी सी असहमति या अधीरता दिखाए बिना, पूरी बात चुपचाप सुनना कभी-कभी मुश्किल होता था।

उनके पसंदीदा विषय थे चर्च का अनुशासन, रीति-रिवाज और समारोह, प्रेरितों का उत्तराधिकार, पादरियों के प्रति आदर और आज्ञापालन का कर्तव्य, असहमति का जघन्य अपराध, ईश्वर भक्ति के सभी रूपों का पालन करने की परम आवश्यकता, धर्म से संबंधित मामलों में स्वयं विचार करने या शास्त्रों की अपनी व्याख्याओं से निर्देशित होने का प्रयास करने वाले व्यक्तियों का निंदनीय दुस्साहस, और कभी-कभी (अपने धनी अनुयायियों को प्रसन्न करने के लिए) गरीबों द्वारा अमीरों के प्रति आदरपूर्ण आज्ञापालन की आवश्यकता। वे अपने उपदेशों और नसीहतों को पूरे समय धर्मपिताओं के उद्धरणों से पुष्ट करते थे: जिनसे वे प्रेरितों और सुसमाचार प्रचारकों की तुलना में कहीं अधिक परिचित प्रतीत होते थे, और जिनका महत्व वे कम से कम उनके बराबर मानते थे। लेकिन कभी-कभी वे हमें एक अलग प्रकार का उपदेश भी देते थे - जिसे कुछ लोग बहुत अच्छा कहेंगे; लेकिन वह नीरस और कठोर होता था: जिसमें वे ईश्वर को एक दयालु पिता के बजाय एक भयानक मालिक के रूप में प्रस्तुत करते थे। फिर भी, जब मैं सुन रहा था, तो मुझे लगा कि वह व्यक्ति अपनी हर बात में सच्चा था: उसने अपने विचार बदल लिए होंगे और निश्चित रूप से धार्मिक, गंभीर और संयमी हो गया होगा, फिर भी अभी भी धर्मनिष्ठ होगा। लेकिन चर्च से बाहर आते ही, मेलथम या ग्रीन परिवार के कुछ सदस्यों या शायद खुद मुर्रे परिवार के सदस्यों के साथ उसकी हंसमुख बातचीत सुनकर, ये भ्रम आमतौर पर दूर हो जाते थे; शायद वह अपने ही उपदेश पर हंस रहा होगा और उम्मीद कर रहा होगा कि उसने उन दुष्ट लोगों को कुछ सोचने को दिया है; शायद इस विचार से प्रसन्न हो रहा होगा कि बूढ़ी बेट्टी होम्स अब अपनी पाइप पीने की पापी आदत को छोड़ देगी, जो तीस से अधिक वर्षों से उसका दैनिक सहारा थी; कि जॉर्ज हिगिंस रविवार की शाम की सैर से डर जाएगा

और थॉमस जैक्सन का अंतरात्मा उसे बुरी तरह परेशान करेगा और अंतिम दिन आनंदमय पुनरुत्थान की उसकी पक्की आशा डगमगा जाएगी।

इसलिए, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बाध्य था कि श्री हैटफील्ड उन लोगों में से एक थे जो 'भारी और असहनीय बोझ दूसरों के कंधों पर लाद देते हैं, जबकि वे स्वयं उसे हिलाने तक को तैयार नहीं होते'; और जो 'मनुष्यों की आज्ञाओं को सिद्धांतों के रूप में सिखाकर ईश्वर के वचन को निष्प्रभावी बना देते हैं'। मुझे यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि जहाँ तक मेरी दृष्टि है, नए सहायक पादरी इन किसी भी मामले में उनसे मिलते-जुलते नहीं थे।

'अच्छा, मिस ग्रे, अब आप उनके बारे में क्या सोचती हैं?' मिस मरे ने कहा, जब हम प्रार्थना सभा के बाद गाड़ी में अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए।

'फिर भी कोई नुकसान नहीं है,' मैंने उत्तर दिया।

'कोई नुकसान नहीं!' उसने हैरानी से दोहराया। 'आपका क्या मतलब है?'

'मेरा मतलब है, मुझे उसके बारे में पहले से ज्यादा बुरा नहीं लगता।'

'बुरा नहीं! मुझे तो ऐसा बिल्कुल नहीं लगता – बल्कि इसके विपरीत! क्या उसमें बहुत सुधार नहीं हुआ है?'

'ओह, जी हाँ; बिल्कुल,' मैंने उत्तर दिया; क्योंकि अब मुझे पता चल गया था कि उनका मतलब हैरी मेल्थम से था, न कि मिस्टर वेस्टन से। वह सज्जन उन युवतियों से बात करने के लिए उत्सुकता से आगे आए थे: अगर उनकी माताएँ मौजूद होतीं तो वे शायद ही ऐसा करने की हिम्मत करते; उन्होंने उन्हें विनम्रतापूर्वक गाड़ी में भी बिठाया था। उन्होंने मिस्टर हैटफील्ड की तरह मुझे बाहर निकालने की कोशिश नहीं की थी; और न ही उन्होंने मुझे अपनी सहायता की पेशकश की थी (अगर उन्होंने ऐसा किया होता तो मैं उसे स्वीकार नहीं करता), लेकिन जब तक दरवाजा खुला रहा, वे मुस्कुराते हुए उनके साथ बातें करते रहे, फिर अपनी टोपी उठाई और अपने घर की ओर चले गए: लेकिन मैंने पूरे समय उन पर शायद ही ध्यान दिया हो। हालाँकि, मेरे साथी अधिक चौकस थे; और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, वे आपस में न केवल उनके हाव-भाव, शब्दों और हरकतों पर चर्चा करते रहे, बल्कि उनके चेहरे की हर विशेषता और उनके पहनावे की हर चीज़ पर भी चर्चा करते रहे।

'रोज़ाली, तुम उसे अकेले नहीं रख पाओगी,' इस चर्चा के अंत में मिस मटिल्डा ने कहा; 'मैं उसे पसंद करती हूँ: मुझे पता है कि वह मेरे लिए एक अच्छा, हंसमुख साथी

बनेगा।'

'खैर, तुम उसे अपने पास रख सकती हो, मटिल्डा,' उसकी बहन ने बनावटी उदासीनता के लहजे में जवाब दिया।

'और मुझे पूरा यकीन है,' दूसरे ने आगे कहा, 'वह मेरी उतनी ही प्रशंसा करता है जितनी आपकी; है ना, मिस ग्रे?'

मुझे नहीं पता; मैं उनके विचारों से परिचित नहीं हूं।

'खैर, लेकिन वह ऐसा करता तो है।'

'मेरी प्यारी मटिल्डा! जब तक तुम अपने रूखे और भद्दे तौर-तरीकों से छुटकारा नहीं पाओगी, तब तक कोई भी तुम्हारी प्रशंसा नहीं करेगा।'

अरे बाप रे! हैरी मेलथम को ऐसे शिष्टाचार पसंद हैं; और पापा के दोस्तों को भी।

'ठीक है, आप बूढ़े पुरुषों और युवा बेटों को मोहित कर सकती हैं; लेकिन मुझे यकीन है कि कोई और कभी भी आपकी ओर आकर्षित नहीं होगा।'

मुझे परवाह नहीं: मैं तुम्हारी और मम्मी की तरह हमेशा पैसे के पीछे नहीं भागती। अगर मेरे पति कुछ अच्छे घोड़े और कुत्ते पाल सकें, तो मैं पूरी तरह संतुष्ट हो जाऊंगी; बाकी सब भाड़ में जाए!

"खैर, अगर आप इस तरह के आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल करेंगी, तो मुझे यकीन है कि कोई भी सच्चा सज्जन आपके पास आने की हिम्मत नहीं करेगा। सच में, मिस ग्रे, आपको उसे ऐसा करने ही नहीं देना चाहिए।"

'मैं इसे रोक नहीं सकता, मिस मरे।'

'और तुम यह सोचकर सरासर गलतफहमी में हो, मटिल्डा, कि हैरी मेलथम तुम्हारी प्रशंसा करता है: मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि वह ऐसा कुछ भी नहीं करता।'

मटिल्डा गुस्से में जवाब देने ही वाली थी कि हमारी यात्रा अब समाप्त हो चुकी थी; और नौकर द्वारा गाड़ी का दरवाजा खोलकर और हमें नीचे उतारने के लिए सीढ़ियाँ नीचे करके विवाद को समाप्त कर दिया गया।

अध्याय XI — झोपड़ीवासी

अब मेरे पास केवल एक ही नियमित छात्रा थी - हालाँकि वह मुझे तीन-चार सामान्य छात्राओं जितना ही परेशान करती थी, और उसकी बहन अभी भी जर्मन और चित्रकला की कक्षाएं ले रही थी - इसलिए मेरे पास पहले की तुलना में कहीं अधिक समय था, जब से मैंने शिक्षिका का कार्यभार संभाला था; इस समय का कुछ हिस्सा मैं अपने दोस्तों के साथ पत्राचार में, कुछ पढ़ने, अध्ययन करने और संगीत, गायन आदि का अभ्यास करने में, और कुछ हिस्सा परिसर या आस-पास के खेतों में घूमने में लगाती थी, अगर मेरी छात्राएं चाहतीं तो उनके साथ, और अगर वे नहीं चाहतीं तो अकेले।

अक्सर, जब उनके पास करने के लिए कोई और सुखद काम नहीं होता था, तो मिस मरे अपने पिता की जागीर में रहने वाले गरीब झोपड़ियों में जाकर अपना मनोरंजन करती थीं, ताकि उनकी प्रशंसा सुन सकें, या उन बातूनी बूढ़ी महिलाओं की पुरानी कहानियाँ या गपशप सुन सकें; या शायद, अपनी खुशनुमा उपस्थिति और कभी-कभार दिए जाने वाले उपहारों से उन गरीबों को प्रसन्न करने के शुद्ध आनंद का अनुभव कर सकें, जिन्हें वे बड़ी आसानी से दे देते थे और कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर लेते थे। कभी-कभी मुझे इन मुलाकातों में एक या दोनों बहनों के साथ जाने के लिए कहा जाता था; और कभी-कभी मुझे अकेले जाने के लिए कहा जाता था, ताकि मैं उनके किसी वादे को पूरा कर सकूँ, जिसे वे करने में तो तत्पर रहती थीं, लेकिन निभाने में नहीं; कोई छोटा सा दान देने के लिए, या किसी बीमार या गंभीर रूप से विक्षिप्त व्यक्ति को पढ़कर सुनाने के लिए: और इस तरह झोपड़ियों में रहने वालों के बीच मेरी कुछ जान-पहचान हो गई; और कभी-कभी मैं अपने आप भी उनसे मिलने चला जाता था।

आम तौर पर मुझे दोनों युवतियों के साथ जाने की बजाय अकेले जाना ज़्यादा अच्छा लगता था; क्योंकि वे, मुख्यतः अपनी अपूर्ण शिक्षा के कारण, अपने से कमतर लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करती थीं जिसे देखना मेरे लिए बेहद अप्रिय था। वे कभी भी उनके साथ अपनी जगह बदलने की कल्पना नहीं करती थीं; और परिणामस्वरूप, उनकी भावनाओं का कोई लिहाज़ नहीं करती थीं, उन्हें अपने से बिल्कुल अलग प्राणी मानती थीं। वे भोजन करते समय उन बेचारे लोगों को देखती रहतीं, उनके भोजन और

खाने के तरीके पर अभद्र टिप्पणियाँ करतीं; वे उनके सरल विचारों और देहाती लहजों पर हँसतीं, यहाँ तक कि उनमें से कुछ बोलने की हिम्मत भी नहीं कर पाते थे; वे गंभीर बूढ़े पुरुषों और महिलाओं को उनके सामने ही बूढ़े मूर्ख और नासमझ बूढ़े गँवार कहती थीं: और यह सब बिना किसी को ठेस पहुँचाने के इरादे के करती थीं। मैं देख सकता था कि लोग अक्सर ऐसे व्यवहार से आहत और नाराज़ होते थे, हालाँकि 'बड़ी महिलाओं' के डर के कारण वे अपनी नाराज़गी ज़ाहिर नहीं करते थे; पर उन्हें कभी इसका एहसास नहीं होता था। वे सोचते थे कि ये झोपड़ी में रहने वाले लोग गरीब और अशिक्षित हैं, इसलिए वे मूर्ख और असभ्य होंगे; और जब तक उनके उच्च अधिकारी उनसे बात करने और उन्हें शिलिंग और हाफ-क्राउन या कपड़े देने की कृपा करते रहे, तब तक उन्हें अपने खर्च पर भी मनोरंजन करने का अधिकार था; और लोगों को उन्हें प्रकाश के दूतों के रूप में पूजना चाहिए, जो उनकी जरूरतों को पूरा करने और उनके साधारण घरों को रोशन करने की कृपा करते हैं।

मैंने अपने विद्यार्थियों को इन भ्रामक धारणाओं से मुक्त कराने के लिए अनेक प्रयास किए, ताकि उनके स्वाभिमान को ठेस न पहुँचे—जो आसानी से आहत हो जाता था और जल्दी शांत नहीं होता था—पर इसका कोई खास परिणाम नहीं निकला; और मुझे नहीं पता कि दोनों में से कौन अधिक निंदनीय थी: मटिल्डा अधिक असभ्य और उद्दंड थी; लेकिन रोज़ाली की उम्र और शालीन व्यवहार को देखते हुए उससे बेहतर व्यवहार की उम्मीद थी: फिर भी वह बारह साल की चंचल बच्ची की तरह ही लापरवाह और असावधान थी।

फरवरी के आखिरी सप्ताह के एक सुहावने दिन, मैं पार्क में टहल रहा था, एकांत, किताब और सुहावने मौसम के तिहरे आनंद का लुत्फ़ उठा रहा था; क्योंकि मिस मटिल्डा अपनी रोज़ाना की सवारी पर निकल चुकी थीं और मिस मरे अपनी माँ के साथ गाड़ी में बैठकर सुबह के कुछ काम निपटाने गई थीं। लेकिन तभी मेरे मन में यह विचार आया कि मुझे इन स्वार्थी सुखों को, और उस पार्क को, जहाँ नीले आसमान की शानदार छटा बिखरी थी, पश्चिम की हवा पत्तों से रहित शाखाओं से होकर बह रही थी, जहाँ बर्फ की चादर अभी भी गड्ढों में जमी थी, लेकिन सूरज की गर्मी में तेज़ी से पिघल रही थी, और सुंदर हिरण वसंत की ताजगी और हरियाली से भरी नम घास चर रहे थे, छोड़कर नैन्सी ब्राउन की कुटिया में जाना चाहिए। नैन्सी ब्राउन एक विधवा थीं, जिनका बेटा दिन भर खेतों में काम करता था, और जिनकी आँखों में सूजन थी;

जिसके कारण वे कुछ समय से पढ़ नहीं पा रही थीं: यह उनके लिए बहुत दुख की बात थी, क्योंकि वे एक गंभीर और विचारशील स्वभाव की महिला थीं। इसलिए मैं वहाँ गया और हमेशा की तरह उसे उसकी छोटी, तंग, अंधेरी कुटिया में अकेला पाया, जो धुएँ और घुटन भरी हवा से भरी थी, लेकिन उसने उसे यथासंभव साफ-सुथरा रखा था। वह अपनी छोटी सी आग (जिसमें कुछ लाल अंगारे और एक लकड़ी का टुकड़ा था) के पास बैठी बुनाई में व्यस्त थी, उसके पैरों के पास एक छोटा सा बोरी का तकिया रखा था, जो उसकी प्यारी दोस्त बिल्ली के आराम के लिए था। बिल्ली उस पर बैठी थी, अपनी लंबी पूंछ को अपने मखमली पंजों के चारों ओर आधा लपेटे हुए, और अपनी आधी बंद आँखों से नीची, टेढ़ी फेंडर को स्वप्निल रूप से निहार रही थी।

‘नैन्सी, आज तुम कैसी हो?’

‘अरे वाह, महोदया, मेरी तो आँखें पहले जैसी ही हैं, लेकिन मेरा मन पहले से कहीं ज़्यादा शांत है,’ उसने संतुष्ट मुस्कान के साथ मेरा स्वागत करते हुए कहा; जिसे देखकर मुझे खुशी हुई, क्योंकि नैंसी कुछ समय से धार्मिक उदासी से ग्रस्त थी। मैंने उसे इस बदलाव पर बधाई दी। उसने भी माना कि यह एक बड़ा आशीर्वाद है और इसके लिए ‘बहुत आभारी’ व्यक्त करते हुए कहा, ‘अगर ईश्वर मेरी दृष्टि बचाए रखे और मुझे फिर से बाइबल पढ़ने लायक बना दे, तो मैं रानी के समान प्रसन्न हो जाऊँगी।’

‘मुझे उम्मीद है कि वह ऐसा करेंगे, नैन्सी,’ मैंने उत्तर दिया; ‘और इस बीच, जब भी मुझे थोड़ा खाली समय मिलेगा, मैं आकर तुम्हें पढ़कर सुनाऊँगी।’

कृतज्ञता और प्रसन्नता के भावों के साथ, वह गरीब महिला मेरे लिए कुर्सी लाने के लिए आगे बढ़ी; लेकिन, चूंकि मैंने उसकी परेशानी बचा ली, इसलिए वह आग को हिलाने और बुझते अंगारों में कुछ और लकड़ियाँ डालने में व्यस्त हो गई; और फिर, अपनी पुरानी बाइबिल को शेल्फ से निकालकर, उसे ध्यान से साफ किया और मुझे दे दी। जब मैंने पूछा कि क्या कोई विशेष भाग है जिसे वह चाहती है कि मैं पढ़ूँ, तो उसने उत्तर दिया—

'अच्छा, मिस ग्रे, अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं संत जॉन के पहले पत्र का वह अध्याय सुनना चाहूँगा, जिसमें लिखा है, "ईश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में रहता है वह ईश्वर में रहता है, और ईश्वर उसमें रहता है।"'

थोड़ी खोजबीन करने पर मुझे ये शब्द चौथे अध्याय में मिले। जब मैं सातवें श्लोक

पर पहुँचा तो उसने मुझे बीच में ही रोक दिया और इस तरह की स्वतंत्रता के लिए अनावश्यक क्षमा याचना करते हुए मुझसे इसे बहुत धीरे-धीरे पढ़ने का अनुरोध किया, ताकि वह इसे पूरी तरह समझ सके और हर शब्द पर ध्यान दे सके; उसे उम्मीद थी कि मैं उसे क्षमा कर दूँगा, क्योंकि वह तो बस एक 'साधारण इंसान' थी।

मैंने उत्तर दिया, 'सबसे बुद्धिमान व्यक्ति भी इनमें से प्रत्येक श्लोक पर एक घंटे तक विचार कर सकता है, और इससे उसे बहुत लाभ होगा; और मैं इन्हें न पढ़ने की बजाय धीरे-धीरे पढ़ना पसंद करूंगा।'

इसलिए, मैंने अध्याय को आवश्यकतानुसार धीमी गति से और साथ ही यथासंभव प्रभावशाली ढंग से समाप्त किया; मेरी श्रोता ने पूरी बात ध्यान से सुनी और समाप्त होने पर मुझे हार्दिक धन्यवाद दिया। मैंने उन्हें इस पर विचार करने का समय देने के लिए लगभग आधा मिनट तक चुपचाप बैठी रही; तभी, मुझे कुछ आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने मौन तोड़ते हुए मुझसे पूछा कि मुझे मिस्टर वेस्टन कैसे लगे?

'मुझे नहीं पता,' मैंने प्रश्न की अचानकता से थोड़ा चौंकते हुए उत्तर दिया; 'मुझे लगता है कि वह बहुत अच्छा उपदेश देते हैं।'

'हां, वह ऐसा करता है; और अच्छी तरह से बात भी करता है।'

'क्या उस?'

'हाँ, वो करता है। शायद आपने उसे देखा नहीं है—इसलिए अभी तक उससे ज्यादा बात नहीं की है?'

'नहीं, मुझे हॉल की युवतियों के अलावा बात करने के लिए कोई नहीं मिलता।'

'अरे; वे अच्छी, दयालु युवतियाँ हैं; लेकिन वे उसकी तरह बात नहीं कर सकतीं।'

'तो फिर वो तुमसे मिलने आता है, नैन्सी?'

'जी हाँ, महोदया; और मैं इसके लिए आभारी हूँ। वह हम सभी गरीबों से मिलने अक्सर आते हैं, जितना कि मास्टर ब्लाइ या रेक्टर कभी नहीं आए; और यह अच्छी बात है कि वह आते हैं, क्योंकि उनका हमेशा स्वागत होता है: हम रेक्टर के बारे में ऐसा नहीं कह सकते - कहते हैं कि लोग उनसे बहुत डरते हैं। जब वह किसी घर में आते हैं, तो कहते हैं कि उन्हें कुछ न कुछ गड़बड़ ज़रूर मिलती है, और दरवाज़े से अंदर आते ही वह उन्हें टोकना शुरू कर देते हैं: लेकिन शायद वह उन्हें यह बताना अपना कर्तव्य समझते हैं कि क्या गलत है। और अक्सर वह लोगों को चर्च न आने, या दूसरों के साथ घुटने टेकने और खड़े होने पर ऐसा न करने, या मेथोडिस्ट चैपल

जाने, या इसी तरह की किसी बात के लिए डांटने आते हैं: लेकिन मैं यह नहीं कह सकती कि उन्होंने कभी मुझमें कोई बड़ी गलती पाई हो। मास्टर वेस्टन के आने से पहले, जब मैं मानसिक रूप से बहुत परेशान थी, तब वह एक-दो बार मुझसे मिलने आए थे; और मेरी सेहत भी बहुत खराब थी, इसलिए मैंने हिम्मत करके उसे बुलवाया —और वो आ भी गया। मैं बहुत परेशान थी, मिस ग्रे—भगवान का शुक्र है, अब सब ठीक है—लेकिन जब मैंने बाइबल उठाई, तो मुझे उससे ज़रा भी तसल्ली नहीं मिली। जिस अध्याय को आप अभी पढ़ रही थीं, उसने मुझे बहुत परेशान किया—"जो प्रेम नहीं करता, वो ईश्वर को नहीं जानता।" यह मुझे डरावना लगा; क्योंकि मुझे लगा कि मैं न तो ईश्वर से प्रेम करती हूँ और न ही मनुष्य से, जैसा मुझे करना चाहिए, और न ही कर सकती हूँ, चाहे मैं कितनी भी कोशिश कर लूँ। और उससे पहले वाला अध्याय, जहाँ लिखा है,—"जो ईश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं कर सकता।" और एक और जगह जहाँ लिखा है,—"प्रेम ही व्यवस्था को पूरा करता है।" और भी बहुत सारे अध्याय हैं, मिस: अगर मैं उन सबको बताऊँ तो आप थक जाएँगी। लेकिन ऐसा लगा जैसे सब मुझे दोषी ठहरा रहे हों, और दिखा रहे हों कि मैं सही रास्ते पर नहीं हूँ; और चूंकि मुझे इसमें प्रवेश करने का तरीका नहीं पता था, इसलिए मैंने अपने बिल को मास्टर हैटफील्ड से विनती करने के लिए भेजा कि वे कृपा करके किसी दिन मुझसे मिलने आएं और जब वे आए, तो मैंने उन्हें अपनी सारी परेशानियां बता दीं।

'और उसने क्या कहा, नैन्सी?'

"अरे, महोदया, ऐसा लगा जैसे वह मेरा उपहास कर रहे हों। शायद मैं गलत हूँ—लेकिन उन्होंने एक सीटी जैसी आवाज़ निकाली, और मैंने उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान देखी; और उन्होंने कहा, "अरे, ये सब बकवास है! आप मेथोडिस्टों के बीच रही हैं, मेरी प्यारी महिला।" लेकिन मैंने उन्हें बताया कि मैं कभी मेथोडिस्टों के आस-पास भी नहीं गई। और फिर उन्होंने कहा,— "अच्छा," उन्होंने कहा, "आपको चर्च आना चाहिए, जहाँ आपको धर्मग्रंथों की सही व्याख्या सुनने को मिलेगी, बजाय इसके कि आप घर पर बैठकर अपनी बाइबिल को रटती रहें।"

लेकिन मैंने उनसे कहा कि जब मैं स्वस्थ थी तब मैं हमेशा चर्च आती थी; लेकिन इस भीषण ठंड के मौसम में इतनी दूर जाने की हिम्मत ही नहीं हो रही है - और मैं गठिया से भी बहुत परेशान हूँ।

लेकिन वह कहता है, "चर्च तक लंगड़ाते हुए जाना तुम्हारे गठिया के लिए अच्छा

रहेगा: गठिया के लिए व्यायाम से बेहतर कुछ नहीं है। तुम घर में तो ठीक से चल-फिर सकते हो; तो चर्च तक क्यों नहीं चल सकते? असल बात यह है," वह कहता है, "तुम्हें अपने आराम की कुछ ज्यादा ही आदत हो गई है। अपने कर्तव्य से बचने के लिए बहाने ढूंढना हमेशा आसान होता है।"

लेकिन फिर, आप जानती हैं, मिस ग्रे, ऐसा नहीं था। फिर भी, मैंने उनसे कहा कि मैं कोशिश करूंगी। "लेकिन कृपया, महोदय," मैंने कहा, "अगर मैं चर्च जाती हूँ, तो मुझे क्या लाभ होगा? मैं चाहती हूँ कि मेरे पाप मिट जाएँ, और मुझे यह महसूस हो कि वे अब मेरे विरुद्ध याद नहीं किए जाते, और ईश्वर का प्रेम मेरे हृदय में फैल जाए; और अगर मुझे घर पर बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने से कोई लाभ नहीं मिलता, तो चर्च जाने से क्या लाभ होगा?"

उन्होंने कहा, "चर्च ईश्वर द्वारा उनकी उपासना के लिए निर्धारित स्थान है। आपका कर्तव्य है कि आप जहाँ तक हो सके वहाँ जाएँ। यदि आप सांत्वना चाहते हैं, तो उसे अपने कर्तव्य के मार्ग में खोजें।" उन्होंने और भी बहुत कुछ कहा, लेकिन मुझे उनके सारे अच्छे शब्द याद नहीं हैं। संक्षेप में, बात यह थी कि मुझे जितनी बार हो सके चर्च जाना था, अपनी प्रार्थना-पुस्तक साथ लानी थी, क्लर्क के बाद सभी प्रार्थनाएँ पढ़नी थीं, खड़ा होना था, घुटने टेकना था, बैठना था, और वह सब करना था जो मुझे करना चाहिए था, और हर अवसर पर प्रभु भोज ग्रहण करना था, उनके और मास्टर ब्लाइ के उपदेश सुनने थे, और सब ठीक हो जाएगा: यदि मैं अपना कर्तव्य निभाता रहूँगा, तो मुझे अंत में आशीर्वाद मिलेगा।

"लेकिन अगर आपको उस तरह से कोई राहत नहीं मिलती," वह कहता है, "तो सब कुछ खत्म हो गया है।"

"तो फिर, महोदय," मैंने कहा, "क्या आपको लगता है कि मैं एक पापी हूँ?"

"क्यों," वह कहता है—वह कहता है, "यदि तुम स्वर्ग तक पहुँचने के लिए अपनी पूरी कोशिश करते हो और सफल नहीं हो पाते, तो तुम उन लोगों में से होगे जो संकरे द्वार से प्रवेश करने का प्रयास करते हैं और सफल नहीं हो पाते।"

फिर उसने मुझसे पूछा कि क्या मैंने उस सुबह हॉल की किसी महिला को देखा था; तो मैंने उसे बताया कि मैंने उन युवतियों को मॉस लेन पर कहाँ जाते देखा था; और उसने मेरी बेचारी बिल्ली को ज़मीन पर लात मार दी, और खुशी-खुशी उनके पीछे चला गया: लेकिन मैं बहुत उदास थी। उसके उस प्यारे से आखिरी शब्द ने मेरे दिल में

गहरा घाव कर दिया, और वहाँ सीसे के टुकड़े की तरह पड़ा रहा, जब तक कि मैं उसे सहन करने से थक नहीं गई।

फिर भी, मैंने उनकी सलाह मानी: मुझे लगा कि उनका इरादा भले ही अच्छा हो, हालांकि उनका व्यवहार थोड़ा अजीब था। लेकिन आप जानती हैं, महोदया, वह अमीर और जवान हैं, और ऐसे व्यक्ति मुझ जैसी गरीब बूढ़ी औरत के विचारों को ठीक से समझ नहीं सकते। फिर भी, मैंने उनकी हर बात मानने की पूरी कोशिश की—लेकिन शायद मेरी बकबक आपको परेशान कर रही है, महोदया।

'अरे नहीं, नैन्सी! बताओ, मुझे सब कुछ बताओ।'

खैर, मेरा गठिया ठीक हो गया - मुझे नहीं पता कि चर्च जाने से हुआ या नहीं, लेकिन एक सर्द रविवार को मेरी आँखों में सर्दी-जुकाम हो गया। सूजन एक साथ नहीं आई, बल्कि धीरे-धीरे बढ़ी - लेकिन मैं आपको अपनी आँखों के बारे में नहीं बताने जा रही थी, मैं अपने मन की परेशानी के बारे में बात कर रही थी; - और सच कहूँ तो, मिस ग्रे, मुझे नहीं लगता कि चर्च आने से मेरी परेशानी में कोई राहत मिली - कम से कम कहने लायक तो नहीं: मेरी सेहत तो बेहतर हो गई; लेकिन इससे मेरी आत्मा को शांति नहीं मिली। मैंने पादरियों की बातें ध्यान से सुनीं और अपनी प्रार्थना-पुस्तक को बार-बार पढ़ा; लेकिन यह सब बेमानी था: उपदेश मुझे समझ नहीं आते थे, और प्रार्थना-पुस्तक तो बस मेरी दुष्टता को ही दर्शाती थी, कि मैं इतने अच्छे शब्द पढ़ तो सकता हूँ, पर उससे कोई लाभ नहीं होता, और अक्सर यह मेरे लिए एक कठिन परिश्रम और बोझ लगता है, आशीर्वाद और सौभाग्य की बजाय, जैसा कि सभी अच्छे ईसाईयों के लिए होता है। सब कुछ मुझे बंजर और अंधकारमय सा लगता था। और फिर, वे भयानक शब्द, "बहुत से लोग प्रवेश करने की कोशिश करेंगे, पर प्रवेश नहीं कर पाएंगे।" मानो वे शब्द मेरे प्राण को सुखा चुके हों।

लेकिन एक रविवार को, जब मैस्टर हैटफील्ड ने संस्कार के बारे में उपदेश दिया, तो मैंने ध्यान दिया कि उन्होंने कहा, "यदि आप में से कोई ऐसा है जो अपने अंतरात्मा को शांत नहीं कर पा रहा है, और उसे और अधिक सांत्वना या सलाह की आवश्यकता है, तो वह मेरे पास या ईश्वर के वचन के किसी अन्य विवेकशील और विद्वान सेवक के पास आए और अपना दुख प्रकट करे!" इसलिए अगले रविवार की सुबह, प्रार्थना से पहले, मैं सीधे चर्च के कक्ष में गया और रेक्टर से फिर से बात करने लगा। मैं इतनी हिम्मत तो नहीं जुटा पा रहा था, लेकिन मैंने सोचा कि जब मेरी आत्मा दांव पर लगी

हो तो मुझे छोटी-मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। लेकिन उन्होंने कहा कि उनके पास उस समय मेरी बात सुनने का समय नहीं है।

"और हाँ," वह कहता है, "मुझे तुमसे पहले कही गई बातों के अलावा कुछ नहीं कहना है। बेशक, संस्कार ग्रहण करो और अपना कर्तव्य निभाते रहो; और अगर इससे भी तुम्हारा भला नहीं होगा, तो किसी और चीज़ से नहीं होगा। इसलिए मुझे अब और परेशान मत करो।"

तो फिर मैं चली गई। लेकिन मैंने सुना कि मैस्टर वेस्टन—मैस्टर वेस्टन वहाँ थे, मिस—हॉर्टन में यह उनका पहला रविवार था, आप जानती हैं, और वे अपने सरप्लस में वेस्टरी में थे, रेक्टर को उनका गाउन पहनने में मदद कर रहे थे—'

'जी हां, नैन्सी।'

और मैंने उसे मैस्टर हैटफील्ड से पूछते हुए सुना कि मैं कौन हूँ, और उसने कहा, "ओह, वह एक पाखंडी बुढ़िया मूर्ख है।"

"और मैं बहुत दुखी थी, मिस ग्रे; लेकिन मैं अपनी जगह पर गई और पहले की तरह अपना कर्तव्य निभाने की कोशिश की, पर मुझे ज़रा भी शांति नहीं मिली। मैंने पवित्र भोज भी लिया; लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हर समय अपने ही विनाश की ओर बढ़ रही हूँ। इसलिए मैं बहुत परेशान होकर घर लौट गई।"

लेकिन अगले दिन, इससे पहले कि मैं ठीक से तैयार हो पाती—क्योंकि सच में, महोदया, मेरा झाड़ू लगाने, सफाई करने और बर्तन धोने का मन नहीं था; इसलिए मैं कीचड़ में ही बैठ गई—तभी अंदर आ गए मास्टर वेस्टन! मैंने तब सामान समेटना, झाड़ू लगाना और बाकी काम करना शुरू कर दिया; और मुझे लगा कि वे मेरे आलसीपन के लिए मुझे डांटेंगे, जैसा कि मास्टर हैटफील्ड करते थे; लेकिन मैं गलत थी: उन्होंने मुझे बस शांत और शालीन तरीके से सुप्रभात कहा। तो मैंने उनकी कुर्सी से धूल झाड़ी और चिमनी को थोड़ा साफ किया; लेकिन मैं रेक्टर के शब्दों को भूली नहीं थी, इसलिए मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य है, महोदय, आप मुझ जैसे 'बकवास करने वाले बूढ़े मूर्ख' से मिलने के लिए इतनी दूर तक आने की परेशानी क्यों उठाते हैं।"

वह यह सुनकर थोड़ा अचंभित लग रहा था; लेकिन उसने मुझे यह समझाने की पूरी कोशिश की कि रेक्टर तो बस मजाक कर रहे थे; और जब इससे बात नहीं बनी, तो उसने कहा, "नैन्सी, तुम्हें इतना परेशान नहीं होना चाहिए: श्री हैटफील्ड उस समय थोड़े मूडी थे: तुम जानती हो कि हममें से कोई भी परिपूर्ण नहीं है - यहाँ तक कि मूसा

ने भी बिना सोचे-समझे बोल दिया था। लेकिन अब अगर तुम्हारे पास समय हो तो एक मिनट बैठो और मुझे अपने सारे संदेह और डर बताओ; मैं उन्हें दूर करने की कोशिश करूंगा।”

तो मैं उसके पास बैठ गई। वह बिल्कुल अजनबी था, आप जानती हैं, मिस ग्रे, और मुझे लगता है कि वह मास्टर हैटफील्ड से भी छोटा था; और मैंने उसे उनके जितना आकर्षक नहीं समझा था, बल्कि पहली नज़र में थोड़ा चिड़चिड़ा सा लगा था; लेकिन वह इतनी विनम्रता से बात कर रहा था - और जब बेचारी बिल्ली उसकी गोद में कूद गई, तो उसने बस उसे सहलाया और हल्की सी मुस्कान दी: तो मैंने सोचा कि यह एक अच्छा संकेत है; क्योंकि एक बार जब उसने रेक्टर के साथ ऐसा किया, तो उसने उसे गुस्से और तिरस्कार में धक्का दे दिया, बेचारी। लेकिन आप एक बिल्ली से ईसाई की तरह शिष्टाचार की उम्मीद नहीं कर सकतीं, आप जानती हैं, मिस ग्रे।

‘नहीं; बिलकुल नहीं, नैन्सी। लेकिन मिस्टर वेस्टन ने तब क्या कहा था?’

उन्होंने कुछ नहीं कहा; लेकिन उन्होंने मेरी बात को यथासंभव शांत और धैर्यपूर्वक सुना, और उनके चेहरे पर जरा भी तिरस्कार का भाव नहीं था; इसलिए मैंने अपनी बात जारी रखी और उन्हें सब कुछ बताया, जैसा कि मैंने आपको बताया है - और उससे भी अधिक।

“खैर,” उन्होंने कहा, “श्री हैटफील्ड ने आपको अपने कर्तव्य का पालन करने में लगे रहने के लिए कहकर बिलकुल सही किया; लेकिन चर्च जाने और प्रार्थना सभा में शामिल होने आदि की सलाह देकर उनका मतलब यह नहीं था कि यही एक ईसाई का पूरा कर्तव्य है: उनका तो बस यही मानना था कि आप वहाँ और क्या करना है यह सीख सकेंगी और उन कार्यों में आनंद लेने लगेंगी, न कि उन्हें बोझ या बोझ समझेंगी। और अगर आपने उनसे उन शब्दों का अर्थ पूछा होता जो आपको इतना परेशान कर रहे हैं, तो मुझे लगता है कि उन्होंने आपको बताया होता कि अगर बहुत से लोग संकरे द्वार से प्रवेश करने की कोशिश करते हैं और सफल नहीं हो पाते, तो यह उनके अपने पाप ही हैं जो उन्हें रोकते हैं; ठीक वैसे ही जैसे पीठ पर भारी बोरी लिए कोई व्यक्ति संकरे दरवाजे से गुजरना चाहे, और जब तक वह अपनी बोरी पीछे न छोड़ दे, तब तक ऐसा करना असंभव हो। लेकिन नैन्सी, मुझे पूरा विश्वास है कि आपके ऐसे कोई पाप नहीं हैं जिन्हें आप खुशी-खुशी त्याग न दें, अगर आपको पता हो कि कैसे त्यागना है?”

“जी हां, महोदय, आप सच कह रहे हैं,” मैंने कहा।

“अच्छा,” वह कहता है, “तुम पहली और महान आज्ञा को जानते हो—और दूसरी को, जो उसके समान है—जिन दो आज्ञाओं पर समस्त व्यवस्था और भविष्यवाणियाँ टिकी हैं? तुम कहते हो कि तुम ईश्वर से प्रेम नहीं कर सकते; परन्तु मुझे यह बात समझ आती है कि यदि तुम ठीक से विचार करो कि वह कौन और क्या है, तो तुम ऐसा करने से स्वयं को रोक नहीं पाओगे। वह तुम्हारा पिता है, तुम्हारा सबसे अच्छा मित्र है: हर आशीष, हर अच्छी, सुखद या उपयोगी चीज़ उससे आती है; और हर बुराई, हर वह चीज़ जिससे तुम्हें घृणा करने, बचने या भयभीत होने का कारण है, शैतान से आती है—जो उसका शत्रु है और हमारा भी। और इसी कारण ईश्वर देहधारी होकर प्रकट हुआ, ताकि वह शैतान के कामों को नष्ट कर सके: एक शब्द में, ईश्वर प्रेम है; और हमारे भीतर जितना अधिक प्रेम होगा, हम उसके उतने ही निकट होंगे और उसकी आत्मा को उतना ही अधिक धारण करेंगे।”

“खैर, महोदय,” मैंने कहा, “अगर मैं हमेशा इन चीजों के बारे में सोचता रहूँ, तो शायद मैं ईश्वर से प्रेम कर पाऊँगा: लेकिन मैं अपने पड़ोसियों से कैसे प्रेम कर सकता हूँ, जब वे मुझे परेशान करते हैं, और उनमें से कुछ की तरह इतने जिद्दी और पापी होते हैं?”

“अपने पड़ोसियों से प्रेम करना कठिन लग सकता है, जिनमें बहुत सी बुराइयाँ हैं और जिनके दोष अक्सर हमारे भीतर छिपी बुराई को जगा देते हैं; लेकिन याद रखें कि उन्होंने ही उन्हें बनाया है और वे उनसे प्रेम करते हैं; और जो कोई अपने जन्मदाता से प्रेम करता है, वह अपने पुत्र से भी प्रेम करता है। और यदि ईश्वर हमसे इतना प्रेम करता है कि उसने अपने इकलौते पुत्र को हमारे लिए मरने के लिए दे दिया, तो हमें भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। लेकिन यदि आप उन लोगों के लिए सकारात्मक स्नेह महसूस नहीं कर सकते जो आपकी परवाह नहीं करते, तो कम से कम उनके साथ वैसा ही व्यवहार करने का प्रयास करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ करें: आप उनकी कमियों पर दया करने और उनके अपराधों को क्षमा करने का प्रयास कर सकते हैं, और अपने आस-पास के लोगों के लिए यथासंभव भलाई कर सकते हैं। और यदि आप स्वयं को इसकी आदत डाल लें, नैन्सी, तो यह प्रयास ही आपको उनसे कुछ हद तक प्रेम करने के लिए प्रेरित करेगा - आपकी दयालुता से उनमें जो सद्भावना उत्पन्न होगी, उसकी तो बात ही क्या, भले ही उनमें और कुछ अच्छा न हो। यदि हम

ईश्वर से प्रेम करते हैं और उनकी सेवा करना चाहते हैं, तो आइए हम उनके जैसा बनने का प्रयास करें।” ईश्वर की कृपा से, हम उनका कार्य करें, उनकी महिमा के लिए परिश्रम करें—जो मनुष्य का भला है—उनके राज्य के आगमन को शीघ्र करें, जो समस्त संसार की शांति और सुख है: हम चाहे कितने भी शक्तिहीन प्रतीत हों, जीवन भर अपनी क्षमता के अनुसार भलाई करके, हममें से सबसे विनम्र व्यक्ति भी इसमें बहुत योगदान दे सकता है: और आइए हम प्रेम में निवास करें, ताकि वह हममें और हम उनमें निवास करें। हम जितना अधिक सुख प्रदान करेंगे, उतना ही अधिक हमें यहाँ प्राप्त होगा; और स्वर्ग में जब हम अपने परिश्रम से विश्राम करेंगे, तो हमारा पुरस्कार उतना ही बड़ा होगा।” मुझे विश्वास है, महोदया, ये उनके ही शब्द हैं, क्योंकि मैंने इन पर कई बार विचार किया है। फिर उन्होंने वह बाइबल उठाई, उसमें से कुछ अंश पढ़े, और उन्हें दिन के उजाले की तरह स्पष्ट रूप से समझाया: और ऐसा लगा जैसे मेरी आत्मा में एक नया प्रकाश आ गया हो; और मेरा हृदय अत्यंत प्रज्वलित हो गया, और मेरी बस यही इच्छा थी कि बेचारा बिल और समस्त संसार वहाँ होते, और यह सब सुनते, और मेरे साथ आनंदित होते।

उनके जाने के बाद, पड़ोस में रहने वाली हन्ना रोजर्स अंदर आईं और मुझसे बर्तन धोने में मदद करने को कहा। मैंने उनसे कहा कि अभी नहीं कर सकती, क्योंकि मैंने रात के खाने के लिए आलू नहीं रखे थे और न ही नाश्ते के बर्तन धोए थे। तब उन्होंने मेरे आलसीपन के लिए मुझे ताने मारना शुरू कर दिया। पहले तो मुझे थोड़ा गुस्सा आया, लेकिन मैंने उनसे कुछ भी गलत नहीं कहा: मैंने उन्हें बस शांत स्वर में बताया कि नए पादरी मुझसे मिलने आए थे; लेकिन मैं जितनी जल्दी हो सके काम खत्म करके उनकी मदद करने आ जाऊंगी। तब उनका गुस्सा शांत हो गया; और मेरा दिल उनके लिए पिघल उठा, और देखते ही देखते हम बहुत अच्छे दोस्त बन गए। और यही सच है, मिस ग्रे, "नरम जवाब क्रोध को शांत कर देता है; लेकिन कठोर शब्द क्रोध को भड़काते हैं।" आप न केवल दूसरों से बात कर रहे हैं, बल्कि अपने भीतर से भी बात कर रहे हैं।

‘बिल्कुल सही कहा, नैन्सी, अगर हम इसे हमेशा याद रख सकें।’

‘काश, हम ऐसा कर पाते!’

और क्या मिस्टर वेस्टन कभी आपसे दोबारा मिलने आए?

हां, कई बार; और चूंकि मेरी आंखें बहुत कमजोर हैं, इसलिए वह आधे घंटे तक मेरे

साथ बैठकर मुझे पढ़कर सुनाते रहे हैं: लेकिन आप जानती हैं, मिस, उन्हें और भी लोगों से मिलना होता है, और भी काम होते हैं - भगवान उनका भला करे! और अगले रविवार को उन्होंने ऐसा उपदेश दिया! उनका उपदेश था, "हे परिश्रम करने वाले और बोझ से दबे हुए सभी लोग मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा," और उसके बाद के वे दो पवित्र श्लोक। आप वहां नहीं थीं, मिस, आप तब अपने दोस्तों के साथ थीं - लेकिन इससे मुझे बहुत खुशी हुई! और मैं अब भी खुश हूं, भगवान का शुक्र है! और अब मुझे अपने पड़ोसियों के लिए छोटे-मोटे काम करने में आनंद आता है - जैसे कि एक अधमरी दृष्टि वाली बूढ़ी औरत कर सकती है; और वे मेरी बात को सहर्ष स्वीकार करते हैं, जैसा कि उन्होंने कहा था। देखिए, मिस, मैं अभी मोजे बुन रही हूं; — ये थॉमस जैक्सन के लिए हैं: वो एक अजीब से बूढ़े आदमी हैं, और हम दोनों ने एक-दूसरे के साथ कई बार बुनाई की है; और कई बार हमारे बीच बहुत मतभेद भी हुए हैं। इसलिए मैंने सोचा कि मैं उनके लिए गर्म मोजों की एक जोड़ी बुनने से बेहतर कुछ नहीं कर सकती; और जब से मैंने बुनना शुरू किया है, मुझे बेचारे बूढ़े आदमी से बहुत लगाव हो गया है। ये बिल्कुल वैसा ही हुआ जैसा मास्टर वेस्टन ने कहा था।

‘नैन्सी, तुम्हें इतना खुश और इतना समझदार देखकर मुझे बहुत खुशी हुई; लेकिन अब मुझे जाना होगा; हॉल में मेरी ज़रूरत होगी,’ मैंने कहा; और उसे अलविदा कहते हुए मैं वहाँ से चली गई, और वादा किया कि जब समय मिलेगा तो फिर आऊँगी, और मैं भी लगभग उतनी ही खुश थी जितनी वह खुद थी।

एक बार मैं एक गरीब मजदूर को पढ़कर सुनाने गया, जो टीबी की अंतिम अवस्था में था। युवतियाँ उससे मिलने गई थीं और किसी तरह उनसे पढ़कर सुनाने का वादा ले लिया गया था; लेकिन यह बहुत झंझट भरा काम था, इसलिए उन्होंने मुझसे यह काम करने की विनती की। मैं खुशी-खुशी चला गया; और वहाँ भी मुझे बीमार आदमी और उसकी पत्नी दोनों से श्री वेस्टन की प्रशंसा सुनकर प्रसन्नता हुई। पादरी ने मुझे बताया कि नए पादरी के आने से उसे बहुत सुकून और लाभ मिलता है, जो अक्सर उससे मिलने आते थे और श्री हैटफील्ड के लिए 'एक तरह के अतिथि' थे; जो हॉर्टन में आने से पहले, कभी-कभी उससे मिलने आते थे; और उन अवसरों पर वे हमेशा अपनी सुविधा के लिए झोपड़ी का दरवाजा खुला रखने पर जोर देते थे, ताकि ताजी हवा अंदर आ सके, बिना यह सोचे कि इससे पीड़ित को कितना नुकसान हो सकता है; और अपनी प्रार्थना-पुस्तक खोलकर और बीमारों के लिए प्रार्थना के एक भाग को

जल्दी से पढ़कर, वह फिर से जल्दी से चला जाता: अगर वह पीड़ित पत्नी को कोई कठोर फटकार लगाने या कोई विचारहीन, बल्कि कहें तो निर्दयी टिप्पणी करने के लिए नहीं रुकता, जो पीड़ित दंपति की परेशानियों को कम करने के बजाय बढ़ाने के लिए ही होती।

उस व्यक्ति ने कहा, 'जबकि मास्टर वेस्टन मेरे साथ बिल्कुल अलग तरीके से प्रार्थना करेंगे, और मुझसे अत्यंत विनम्रता से बात करेंगे; और अक्सर मुझे पढ़कर भी सुनाएंगे, और एक भाई की तरह मेरे बगल में बैठेंगे।'

'अरे वाह!' उसकी पत्नी ने कहा; 'लगभग तीन हफ्ते पहले', जब उसने देखा कि बेचारा जेम ठंड से कांप रहा है और हम कितनी दयनीय आग जला रहे हैं, तो उसने पूछा कि क्या हमारा कोयला लगभग खत्म हो गया है। मैंने उसे बताया कि हाँ, और हमारे पास और कोयला लाने की कोई योजना नहीं थी: लेकिन आप जानती हैं, माँ, मैंने सोचा भी नहीं था कि वह हमारी मदद करेगा; लेकिन फिर भी, उसने अगले दिन हमें कोयले की एक बोरी भेज दी; और तब से हमारी आग अच्छी जल रही है: और इस सर्दी के मौसम में यह हमारे लिए बहुत बड़ी राहत है। लेकिन यही तो उसका तरीका है, मिस ग्रे: जब वह किसी गरीब के घर बीमार लोगों को देखने जाता है, तो वह ध्यान देता है कि उन्हें सबसे ज्यादा किस चीज की जरूरत है; और अगर उसे लगता है कि वे खुद वह चीज आसानी से नहीं जुटा सकते, तो वह इसके बारे में कुछ नहीं कहता, बल्कि उनके लिए वह चीज ले आता है। और हर कोई ऐसा नहीं कर सकता, जिसके पास उसके जितना कम हो: क्योंकि आप जानती हैं, माँ, उसके पास जीने के लिए कुछ भी नहीं है सिवाय उसके जो उसे रेक्टर से मिलता है, और वे कहते हैं कि वह भी बहुत कम है।

तब मुझे एक प्रकार के उल्लास के साथ याद आया कि मिलनसार मिस मरे अक्सर उन्हें एक अशिष्ट और असभ्य व्यक्ति कहती थीं, क्योंकि वह चांदी की घड़ी पहनते थे और उनके कपड़े मिस्टर हैटफील्ड के कपड़ों जितने चमकीले और साफ-सुथरे नहीं थे।

लॉज लौटकर मुझे बहुत खुशी हुई और मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया कि अब मेरे पास सोचने के लिए कुछ है; कुछ ऐसा जिस पर मैं मनन कर सकूँ, जो मेरे वर्तमान जीवन की नीरस एकरसता और अकेलेपन से राहत दे सके; क्योंकि मैं सचमुच अकेला था। महीने दर महीने, साल दर साल, घर पर थोड़े समय के आराम के अलावा, मुझे

कभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिससे मैं अपने दिल की बात कह सकूँ या खुलकर अपने विचार व्यक्त कर सकूँ, इस उम्मीद के साथ कि मुझे सहानुभूति या समझ मिलेगी: कभी नहीं, सिवाय बेचारी नैन्सी ब्राउन के, जिसके साथ मैं एक पल के लिए भी वास्तविक सामाजिक मेलजोल का आनंद ले सका, या जिसकी बातचीत से मैं पहले से बेहतर, समझदार या खुश हो पाता; या जिसे, जहाँ तक मैं देख सकता था, मेरी बातों से बहुत लाभ हो सकता था। मेरे एकमात्र साथी अप्रिय बच्चे और अज्ञानी, नासमझ लड़कियाँ थीं; जिनकी थका देने वाली मूर्खता से, अटूट एकांत अक्सर एक ऐसी राहत होती थी जिसकी मुझे बहुत तीव्र इच्छा होती थी और जिसे मैं दिल से संजो कर रखता था। लेकिन ऐसे साथियों तक सीमित रहना एक गंभीर बुराई थी, न केवल इसके तात्कालिक प्रभावों के लिहाज से, बल्कि भविष्य में होने वाले संभावित परिणामों के लिहाज से भी। मुझे कभी कोई नया विचार या प्रेरक भावना बाहर से नहीं मिली; और जो भी मेरे भीतर उठीं, वे अधिकतर या तो तुरंत कुचल दी गईं, या बीमार पड़ गईं या लुप्त हो गईं, क्योंकि वे प्रकाश को देख नहीं पाईं।

नियमित संगति एक-दूसरे के मन और व्यवहार पर गहरा प्रभाव डालती है। जिनके कार्य हमारी आँखों के सामने होते हैं, जिनके शब्द हमारे कानों में गूंजते रहते हैं, वे स्वाभाविक रूप से हमें, भले ही हमारी इच्छा के विरुद्ध ही सही, धीरे-धीरे, सूक्ष्मतः, शायद अनजाने में ही, उनके जैसा व्यवहार करने और बोलने के लिए प्रेरित करते हैं। मैं यह कहने का साहस नहीं करूँगा कि आत्मसात करने की यह अदम्य शक्ति कितनी दूर तक फैली हुई है; परन्तु यदि किसी सभ्य व्यक्ति को बारह वर्ष किसी हठी और असभ्य जाति के बीच बिताने पड़ें, और यदि उसके पास उन्हें सुधारने की शक्ति न हो, तो मुझे इस बात पर गहरा संदेह है कि उस अवधि के अंत तक वह स्वयं कम से कम एक बर्बर न बन जाए। और मैं, क्योंकि मैं अपने युवा साथियों को बेहतर नहीं बना सका, इस बात से अत्यधिक भयभीत था कि वे मुझे और भी बदतर बना देंगे—धीरे-धीरे मेरी भावनाओं, आदतों, क्षमताओं को अपने स्तर पर ले आएंगे; यद्यपि वे मुझे अपना हल्कापन और हंसमुख जीवंतता प्रदान नहीं करेंगे।

मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा था कि मेरी बुद्धि क्षीण हो रही है, मेरा हृदय कठोर होता जा रहा है, मेरी आत्मा संकुचित होती जा रही है; और मैं कांप रहा था कि कहीं मेरी नैतिक चेतना ही कुंद न हो जाए, सही-गलत का भेद धुंधला न हो जाए, और अंततः मेरी सभी श्रेष्ठ क्षमताएँ इस प्रकार के जीवन के हानिकारक प्रभाव में डूब न जाएँ।

पृथ्वी की घनी धुंध मेरे चारों ओर एकत्रित हो रही थी, और मेरे अंतर्मन को घेर रही थी; और तभी श्री वेस्टन अंततः मेरे सामने प्रकट हुए, मेरे क्षितिज में भोर के तारे की तरह, मुझे घोर अंधकार के भय से बचाने के लिए; और मुझे प्रसन्नता हुई कि अब मेरे पास चिंतन का एक विषय था जो मुझसे ऊपर था, नीचे नहीं। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि सारा संसार ब्लूमफील्ड, मुर्रे, हैटफील्ड, एशबी आदि से बना नहीं है; और मानवीय उत्कृष्टता केवल कल्पना का एक सपना नहीं है। जब हम किसी व्यक्ति के बारे में थोड़ी अच्छाई और कोई बुराई नहीं सुनते हैं, तो उसके बारे में और अधिक कल्पना करना आसान और सुखद होता है: संक्षेप में, मेरे सभी विचारों का विश्लेषण करना अनावश्यक है; लेकिन रविवार का दिन अब मेरे लिए विशेष आनंद का दिन बन गया था (मैं गाड़ी के पिछले कोने में लगभग दुबक कर बैठती थी), क्योंकि मुझे उसे सुनना अच्छा लगता था - और उसे देखना भी अच्छा लगता था; हालाँकि मैं जानती थी कि वह बाहरी रूप से सुंदर या मनमोहक नहीं था; लेकिन निश्चित रूप से वह बदसूरत भी नहीं था।

कद में वह थोड़ा, बहुत थोड़ा, औसत से थोड़ा ऊपर था; उसके चेहरे की बनावट देखने में भले ही थोड़ी चौकोर लगे, लेकिन मुझे वह दृढ़ चरित्र का प्रतीक लगी; उसके गहरे भूरे बाल श्री हैटफील्ड की तरह करीने से घुंघराले नहीं थे, बल्कि एक चौड़े सफेद माथे पर बिखरे हुए थे; उसकी भौहें शायद थोड़ी उभरी हुई थीं, लेकिन उन गहरी भौहों के नीचे से एक विलक्षण शक्ति से भरी आंख चमक रही थी, भूरे रंग की, छोटी और थोड़ी धंसी हुई, लेकिन बेहद चमकदार और भावपूर्ण; उसके होंठों में भी एक खास अंदाज था, जो एक दृढ़ निश्चयी और चिंतनशील व्यक्ति की झलक देता था; और जब वह मुस्कुराता था - लेकिन मैं अभी उस बारे में बात नहीं करूँगा, क्योंकि उस समय मैंने उसे कभी मुस्कुराते हुए नहीं देखा था: और वास्तव में, उसकी सामान्य दिखावट से मुझे ऐसा नहीं लगा कि वह इतना आरामपसंद व्यक्ति है, न ही वैसा व्यक्ति जैसा कि झोपड़ी वालों ने उसका वर्णन किया था। मैंने उसके बारे में अपनी राय पहले ही बना ली थी; और, मिस मरे की निंदा के बावजूद, मुझे पूरा विश्वास था कि वह एक मजबूत समझ, दृढ़ आस्था और तीव्र धार्मिकता वाला व्यक्ति था, लेकिन विचारशील और गंभीर भी था; और जब मुझे पता चला कि उसके अन्य अच्छे गुणों के साथ-साथ सच्ची परोपकारिता और सौम्य, विचारशील दयालुता का गुण भी जुड़ा हुआ था, तो शायद इस खोज ने मुझे और भी अधिक प्रसन्न किया, क्योंकि मैं इसकी उम्मीद करने

के लिए तैयार नहीं थी।

अध्याय XII — स्नान

नैन्सी ब्राउन से मेरी अगली मुलाकात मार्च के दूसरे सप्ताह में हुई: क्योंकि, हालांकि मेरे पास दिन में कई खाली मिनट होते थे, फिर भी मुझे शायद ही कभी कोई घंटा पूरी तरह से अपना मिल पाता था; क्योंकि जहाँ सब कुछ मिस मटिल्डा और उनकी बहन की मनमर्जी पर निर्भर था, वहाँ कोई व्यवस्था या नियमितता नहीं हो सकती थी। मैं जो भी काम चुनती, जब मैं उनके या उनके मामलों में व्यस्त नहीं होती थी, तो मुझे मानो कमर कस कर, पैर में जूते पहने और हाथ में लाठी लिए रहना पड़ता था; क्योंकि बुलाए जाने पर तुरंत हाजिर न होना एक गंभीर और अक्षम्य अपराध माना जाता था: न केवल मेरे विद्यार्थियों और उनकी माताओं द्वारा, बल्कि उस नौकरानी द्वारा भी, जो हाँफते हुए जल्दी से मुझे बुलाने आई और चिल्लाई, 'माँ, आप सीधे स्कूल के कमरे में जाइए, छोटी बच्चियाँ इंतज़ार कर रही हैं!!' भयावहता की पराकाष्ठा! सचमुच अपनी गवर्नेंस का इंतज़ार कर रही थीं!!!

लेकिन इस बार मुझे पूरा यकीन था कि मुझे एक-दो घंटे का समय मिल जाएगा; क्योंकि मटिल्डा एक लंबी सवारी की तैयारी कर रही थी, और रोज़ाली लेडी एशबी के यहाँ डिनर पार्टी के लिए तैयार हो रही थी: इसलिए मैंने विधवा की कुटिया में जाने का मौका लिया, जहाँ मैंने उसे अपनी बिल्ली के बारे में चिंतित पाया, जो पूरे दिन से गायब थी। मैंने उसे उस जानवर की आवारागर्दी की जितनी भी कहानियाँ याद थीं, सुनाकर दिलासा दिया। उसने कहा, 'मुझे गेमकीपरों से डर लगता है: मैं बस यही सोचती रहती हूँ। अगर वे दोनों सज्जन घर पर होते, तो मुझे लगता कि वे अपने कुत्तों को उस पर छोड़ देते, और उसे परेशान कर देते, बेचारी, जैसा कि वे कई बेचारी बिल्लियों के साथ करते हैं; लेकिन अब मुझे उस बात का डर नहीं है।' नैन्सी की आँखें

पहले से बेहतर थीं, लेकिन पूरी तरह ठीक नहीं थीं: वह अपने बेटे के लिए एक संडे शर्ट बनाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन उसने मुझे बताया कि वह बस थोड़ा-थोड़ा करके ही काम कर पाती है, इसलिए काम बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था, हालाँकि बेचारा लड़का उसे बहुत चाहता था। इसलिए मैंने उसे पढ़कर सुनाने के बाद थोड़ी मदद करने का प्रस्ताव रखा, क्योंकि उस शाम मेरे पास काफी समय था और मुझे सूर्यास्त तक वापस नहीं आना था। उसने सहर्ष प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। 'और आप मेरे लिए थोड़ी साथी भी बनेंगी, मिस,' उसने कहा; 'मुझे अच्छा लगता है क्योंकि मैं अपनी बिल्ली के बिना अकेलापन महसूस करती हूँ।' लेकिन जब मैंने पढ़ना समाप्त किया और नैन्सी की बड़ी पीतल की अंगुली को कागज के रोल की मदद से अपनी उंगली पर बाँधकर आधी सिलाई कर ली, तभी मिस्टर वेस्टन उसी बिल्ली को गोद में लिए हुए अंदर आ गए, जिससे मेरा ध्यान भंग हो गया। अब मैंने देखा कि वह मुस्कुरा सकते थे, और बहुत ही सुखद तरीके से।

'नैन्सी, मैंने तुम्हारा एक अच्छा काम किया है,' उसने कहना शुरू किया: फिर मुझे देखकर उसने थोड़ा झुककर मेरी उपस्थिति का आभास दिया। हैटफील्ड या उस इलाके के किसी भी अन्य सज्जन के लिए मैं अदृश्य ही होती। 'मैंने तुम्हारी बिल्ली को,' उसने आगे कहा, 'श्री मरे के गेमकीपर के हाथों से, या यूँ कहें कि उसकी बंदूक से बचा लिया है।'

'भगवान आपका भला करे, महोदय!' कृतज्ञता से भरी बूढ़ी महिला ने कहा, खुशी के आंसू बहाने को तैयार थी क्योंकि उसने अपने प्रिय को उसकी बाहों से प्राप्त किया था।

उन्होंने कहा, 'इसका ध्यान रखना, और इसे खरगोशों के बिल के पास मत जाने देना, क्योंकि रखवाले ने कसम खाई है कि अगर उसने इसे वहाँ दोबारा देखा तो वह इसे गोली मार देगा: अगर मैं समय पर आकर उसे रोक न देती तो वह आज ही ऐसा कर देता। मुझे लगता है बारिश हो रही है, मिस ग्रे,' उन्होंने धीरे से कहा, यह देखते हुए कि मैंने अपना काम एक तरफ रख दिया था और जाने की तैयारी कर रही थी। 'मैं आपको परेशान नहीं करना चाहता – मैं दो मिनट भी नहीं रुकूँगा।'

नैन्सी ने आग को हिलाते हुए और उसके बगल में एक और कुर्सी रखते हुए कहा, 'जब तक इस शावर में पानी भर जाता है, आप दोनों यहीं रुकिए; वाह! सबके लिए जगह है।'

‘नैन्सी, यहाँ मुझे बेहतर दिख रहा है, धन्यवाद,’ मैंने जवाब दिया और अपना काम खिड़की के पास ले गई। वहाँ उसने मुझे बिना किसी बाधा के बैठे रहने दिया, जबकि वह मिस्टर वेस्टन के कोट से बिल्ली के बाल हटाने के लिए ब्रश ले आई, उनकी टोपी से बारिश का पानी सावधानी से पोंछा और बिल्ली को उसका खाना खिलाया। वह लगातार बातें करती रही: कभी अपने पादरी मित्र को उनके काम के लिए धन्यवाद देती, कभी आश्चर्य करती कि बिल्ली को बिल का पता कैसे चला; और कभी इस खोज के संभावित परिणामों पर अफसोस जताती। वह शांत, सौम्य मुस्कान के साथ सुनता रहा और अंत में उसके बार-बार कहने पर बैठ गया, लेकिन फिर दोहराया कि उसका वहाँ रुकने का इरादा नहीं है।

उन्होंने कहा, 'मुझे कहीं और जाना है,' और (मेज पर रखी किताब की ओर देखते हुए) 'मुझे लगता है कि कोई और आपको पढ़कर सुना रहा था।'

जी हाँ, महोदय; मिस ग्रे ने कृपा करके मुझे एक अध्याय पढ़कर सुनाया है; और अब वो हमारे बिल के लिए कमीज़ सिलने में मेरी मदद कर रही हैं— लेकिन मुझे डर है कि उन्हें वहाँ ठंड लग जाएगी। क्या आप आग के पास नहीं आएँगी, महोदया?

'नहीं, धन्यवाद नैन्सी, मुझे काफी गर्मी लग रही है। यह बारिश खत्म होते ही मुझे जाना होगा।'

‘ओह, मिस! आपने कहा था कि आप शाम होते-होते रुक सकती हैं!’ उस चिढ़ाने वाली बूढ़ी औरत ने चिल्लाकर कहा, और मिस्टर वेस्टन ने अपनी टोपी पकड़ ली।

‘नहीं, महोदय,’ उसने कहा, ‘कृपया अभी मत जाइए, क्योंकि बारिश बहुत तेज हो रही है।’

लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं आपके मेहमान को आग से दूर रख रहा हूँ।

'नहीं, आप नहीं हैं, श्री वेस्टन,' मैंने उत्तर दिया, यह उम्मीद करते हुए कि इस तरह के झूठ से कोई नुकसान नहीं होगा।

‘नहीं, बिलकुल!’ नैन्सी चिल्लाई। ‘अरे, यहाँ तो बहुत जगह है!’

‘मिस ग्रे,’ उसने आधे मज़ाक में कहा, मानो उसे वर्तमान विषय बदलना ज़रूरी लग रहा हो, चाहे उसे कुछ कहना हो या न कहना हो, ‘मैं चाहता हूँ कि जब आप जमींदार से मिलें तो आप उससे मेरी सुलह करवा दें। जब मैंने नैन्सी की बिल्ली को बचाया था, तब वह वहाँ मौजूद था और उसे यह काम बिल्कुल पसंद नहीं आया। मैंने उससे कहा कि मुझे लगता है कि वह अपनी बिल्ली की बजाय अपने सभी खरगोशों को बख्श दे

तो बेहतर होगा, जिस पर उसने मेरे साथ कुछ असभ्य भाषा का प्रयोग किया; और मुझे डर है कि मैंने कुछ ज़्यादा ही तीखे शब्दों में जवाब दिया।'

'ओह, महोदय! मुझे उम्मीद है कि आपने मेरी बिल्ली के खातिर मालिक से झगड़ा नहीं किया होगा! वह दोबारा जवाब देना बर्दाश्त नहीं कर सकता - मालिक कर सकता है क्या?'

'अरे! कोई बात नहीं, नैन्सी: मुझे इसकी परवाह नहीं है, सच में; मैंने कुछ भी असभ्य नहीं कहा; और मुझे लगता है कि श्री मरे गुस्से में आने पर कुछ कठोर भाषा का प्रयोग करने के आदी हैं।'

जी हाँ, महोदय: यह तो बहुत दुख की बात है।

और अब, मुझे सचमुच जाना होगा। मुझे यहाँ से एक मील दूर एक जगह जाना है; और आप नहीं चाहेंगी कि मैं अंधेरे में लौटूँ: इसके अलावा, अब बारिश लगभग रुक चुकी है - तो शुभ संध्या, नैन्सी। शुभ संध्या, मिस ग्रे।

'शुभ संध्या, श्री वेस्टन; लेकिन श्री मरे के साथ सुलह कराने के लिए मुझ पर निर्भर न रहें, क्योंकि मैं उनसे कभी मिलता नहीं हूँ - उनसे बात करने के लिए।'

'नहीं, ऐसा मत करो; फिर तो कुछ किया ही नहीं जा सकता,' उसने उदास भाव से जवाब दिया; फिर एक अजीब सी आधी मुस्कान के साथ उसने कहा, 'पर कोई बात नहीं; मुझे लगता है कि जमींदार को मुझसे ज्यादा माफी मांगनी होगी;' और वह झोपड़ी से चला गया।

जब तक मेरी नज़र चल सकी, मैं सिलाई करती रही, और फिर नैन्सी को शुभ संध्या कहा; उसकी अति उत्साही कृतज्ञता को इस दृढ़ विश्वास से शांत करते हुए कि मैंने उसके लिए वही किया है जो वह मेरे लिए करती, अगर वह मेरी जगह होती और मैं उसकी जगह। मैं जल्दी से हॉर्टन लॉज लौट आई, जहाँ स्कूल के कमरे में प्रवेश करते ही मैंने देखा कि चाय की मेज पूरी तरह अस्त-व्यस्त थी, ट्रे छींटों से लथपथ थी, और मिस मटिल्डा बेहद गुस्से में थीं।

'मिस ग्रे, आप कहाँ थीं? मैंने आधे घंटे पहले चाय पी थी, और मुझे उसे खुद बनाना पड़ा और अकेले ही पीना पड़ा! काश आप जल्दी आ जातीं!'

'मैं नैन्सी ब्राउन से मिलने गया था। मुझे लगा था कि आप अपनी सवारी से वापस नहीं लौटेंगे।'

'मैं बारिश में कैसे सवारी कर सकता था, मैं जानना चाहता हूँ। वह लानत बारिश

बहुत परेशान करने वाली थी - ठीक उसी समय जब मैं पूरे जोश में था: और फिर चाय के लिए कोई आया ही नहीं! और आप जानते हैं कि मैं अपनी पसंद की चाय नहीं बना सकता।'

मैंने जवाब दिया, 'मैंने शावर के बारे में नहीं सोचा था' (और वास्तव में, शावर से उसे घर ले जाने का विचार मेरे दिमाग में कभी आया ही नहीं था)।

'नहीं, बिल्कुल; आप खुद भी आश्रय में थे, और आपने कभी दूसरे लोगों के बारे में नहीं सोचा।'

मैंने उसकी कठोर निंदा को आश्चर्यजनक शांति और प्रसन्नता के साथ सहन किया; क्योंकि मुझे एहसास था कि मैंने नैंसी ब्राउन का जितना भला किया था, उतना नुकसान नहीं पहुँचाया था: और शायद कुछ अन्य विचारों ने भी मेरे मनोबल को बनाए रखने में मदद की, और ठंडी, अधिक उबली हुई चाय के प्याले को स्वादिष्ट बना दिया, और उस बदसूरत मेज को भी आकर्षक बना दिया; और - मैं लगभग कह ही चुका था - मिस मटिल्डा के अप्रिय चेहरे को भी। लेकिन वह जल्द ही अस्तबल की ओर चली गई, और मुझे अकेले भोजन का आनंद लेने के लिए छोड़ दिया।

अध्याय XIII — प्रिमरोज़

मिस मरे अब हमेशा दो बार चर्च जाती थीं, क्योंकि उन्हें प्रशंसा इतनी पसंद थी कि वे इसका एक भी अवसर खोना नहीं चाहती थीं; और वे जहाँ भी जाती थीं, उन्हें इस बात का इतना यकीन होता था कि चाहे हैरी मेलथम और मिस्टर ग्रीन वहाँ हों या न हों, रेक्टर के अलावा कोई न कोई ऐसा ज़रूर मौजूद होता था जो उनके आकर्षण से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था, क्योंकि रेक्टर को आमतौर पर अपनी आधिकारिक भूमिका के कारण वहाँ जाना ही पड़ता था। आमतौर पर, अगर मौसम ठीक होता, तो वे और उनकी बहन दोनों पैदल घर जाती थीं; मटिल्डा इसलिए क्योंकि

उन्हें गाड़ी की बंद जगह पसंद नहीं थी; और वह इसलिए क्योंकि उन्हें गाड़ी की एकांतता नापसंद थी और वे उस संगति का आनंद लेती थीं जो आमतौर पर चर्च से मिस्टर ग्रीन के पार्क के गेट तक की यात्रा के पहले मील को जीवंत बना देती थी: जिसके पास से हॉर्टन लॉज की निजी सड़क शुरू होती थी, जो विपरीत दिशा में स्थित था, जबकि राजमार्ग सीधे सर ह्यू मेलथम के और भी दूर स्थित हवेली की ओर जाता था। इस प्रकार, अब तक, उनके साथ हैरी मेलथम (मिस मेलथम के साथ या उनके बिना) या मिस्टर ग्रीन (शायद उनकी एक या दोनों बहनों के साथ) और उनके साथ आने वाले किसी भी सज्जन आगंतुक के होने की हमेशा संभावना थी।

मैं युवतियों के साथ पैदल चलती या उनके माता-पिता के साथ सवारी करती, यह उनकी अपनी मनमर्जी पर निर्भर करता था: अगर वे मुझे साथ ले जाना चाहतीं, तो मैं जाती; अगर, अपने ही ज्ञात कारणों से, वे अकेले जाना चाहतीं, तो मैं गाड़ी में बैठ जाती। मुझे पैदल चलना ज्यादा पसंद था, लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति पर अपनी उपस्थिति थोपने की अनिच्छा के कारण जो ऐसा नहीं चाहता था, मैं हमेशा ऐसे और इसी तरह के अवसरों पर चुप रहती थी; और मैंने कभी भी उनकी बदलती इच्छाओं के कारणों की पूछताछ नहीं की। वास्तव में, यही सबसे अच्छी नीति थी - क्योंकि आज्ञा मानना और उनका पालन करना गवर्नेस का काम था, जबकि अपनी खुशी का ध्यान रखना विद्यार्थियों का काम था। लेकिन जब मैं पैदल चलती, तो यात्रा का पहला आधा हिस्सा आमतौर पर मेरे लिए बहुत असुविधाजनक होता था। चूंकि उपर्युक्त महिलाओं और पुरुषों में से किसी ने भी कभी मेरी ओर ध्यान नहीं दिया, इसलिए उनके बगल में चलना अप्रिय लगता था, मानो मैं उनकी बातें सुन रही हूँ, या उनमें से एक समझी जाना चाहती हूँ, जबकि वे मेरे ऊपर या मेरे ऊपर से बात करती रहती थीं; और अगर बोलते समय उनकी नज़रें गलती से मुझ पर पड़ जातीं, तो ऐसा लगता मानो वे मुझे देख ही नहीं रहे हों—जैसे कि वे मुझे देख ही नहीं रहे हों, या जानबूझकर ऐसा दिखाना चाहते हों। उनके पीछे चलना भी मुझे अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि सच तो यह था कि मैं खुद को उनमें से सबसे अच्छे के लगभग बराबर समझती थी, और चाहती थी कि वे यह जानें, और यह न सोचें कि मैं खुद को महज़ एक घरेलू नौकरानी समझती हूँ, जो अपनी जगह इतनी अच्छी तरह जानती है कि उनके जैसे सभ्य महिलाओं और सज्जनों के साथ चलने की ज़रूरत नहीं समझती—भले ही उनकी नौकरानियाँ उन्हें अपने साथ रखना पसंद करती हों, और यहाँ तक कि जब कोई बेहतर साथी न हो, तब

भी उनसे बात करने की कृपा करती हों। इस प्रकार—मुझे यह स्वीकार करते हुए लगभग शर्म आती है—लेकिन सच में, मैं उनके साथ चलने की कोशिश में (अगर मैं उनके साथ चल भी पाती) खुद को पूरी तरह से बेखबर या उनकी मौजूदगी से अनभिज्ञ दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ती थी, मानो मैं पूरी तरह से अपने विचारों में या आसपास की वस्तुओं के चिंतन में डूबी हुई हूँ; या फिर, अगर मैं पीछे रह जाता, तो कोई पक्षी या कीड़ा, कोई पेड़ या फूल मेरा ध्यान आकर्षित कर लेता, और उसका ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने के बाद, मैं अपनी सैर अकेले, इत्मीनान से जारी रखता, जब तक कि मेरे छात्र अपने साथियों को अलविदा कहकर शांत निजी सड़क पर मुड़ नहीं जाते।

मुझे एक ऐसा ही अवसर विशेष रूप से याद है; मार्च के अंत के आसपास एक सुहावनी दोपहर थी; श्री ग्रीन और उनकी बहनों ने अपनी गाड़ी खाली ही वापस भेज दी थी, ताकि वे अपने मेहमानों, कैप्टन समबडी और लेफ्टिनेंट समबडी-एल्स (सैनिकों का एक जोड़ा), और मिस मरे के साथ, जो किसी तरह उनके साथ शामिल हो गईं, चहल-पहल भरी धूप और सुहावनी हवा का आनंद लेते हुए आराम से घर लौट सकें। रोज़ाली को ऐसा समूह बहुत पसंद आया; लेकिन मुझे यह उतना अच्छा नहीं लगा, इसलिए मैं तुरंत पीछे हट गया और हरी-भरी ढलानों और कलियों से भरी झाड़ियों के किनारे-किनारे वनस्पतियों और कीटों का अध्ययन करने लगा, जब तक कि समूह मुझसे काफी आगे नहीं निकल गया और मुझे चहलकदमी का मधुर गीत सुनाई देने लगा; तब मेरे मन में मानवद्वेष की भावना नरम, शुद्ध हवा और सुहावनी धूप में पिघलने लगी; लेकिन इसके बजाय बचपन की उदास यादें और बीते हुए सुखों या एक उज्जवल भविष्य की कामनाएं मन में उठने लगीं। जब मेरी निगाहें युवा घास और हरे पत्तों वाले पौधों से ढके ऊंचे ढलानों पर, और कलियों से भरी झाड़ियों पर पड़ीं, तो मुझे किसी ऐसे परिचित फूल की तीव्र लालसा हुई जो मुझे घर की जंगली घाटियों या हरी पहाड़ियों की याद दिला सके: जाहिर है, बंजर भूमि का तो कोई सवाल ही नहीं था। ऐसी खोज से मेरी आंखें निःसंदेह भर उठतीं; लेकिन यही अब मेरे लिए सबसे बड़ा आनंद था। अंततः मैंने एक ओक के पेड़ की मुड़ी हुई जड़ों के बीच ऊँचाई पर तीन सुंदर प्रिमरोज़ देखे, जो अपने छिपने की जगह से इतनी मधुरता से झाँक रहे थे कि उन्हें देखते ही मेरी आँखों में आँसू आ गए; लेकिन वे फूल मुझसे इतने ऊँचे उग गए थे कि मैंने एक-दो फूल तोड़ने की व्यर्थ कोशिश की, ताकि मैं उनके बारे में सोच

सकूँ और उन्हें अपने साथ ले जा सकूँ। मैं उन्हें तब तक नहीं तोड़ सकती थी जब तक मैं किनारे पर न चढ़ जाऊँ। लेकिन तभी मेरे पीछे किसी के कदमों की आहट सुनकर मैं ऐसा करने से रुक गई। मैं मुड़ने ही वाली थी कि तभी एक जानी-पहचानी आवाज़ के गंभीर और धीमे स्वर में बोले गए शब्दों से मैं चौंक गई: 'मिस ग्रे, मुझे आपके लिए इन्हें तोड़ने दीजिए।' तुरंत ही फूल तोड़कर मेरे हाथ में आ गए। ज़ाहिर है, वे मिस्टर वेस्टन ही थे - भला मेरे लिए इतना सब करने की जहमत कौन उठाएगा?

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया; चाहे गर्मजोशी से या ठंडेपन से, मैं नहीं कह सकती: लेकिन मुझे यकीन है कि मैंने अपनी कृतज्ञता का आधा भी व्यक्त नहीं किया। शायद कृतज्ञता महसूस करना मूर्खता थी; लेकिन उस क्षण मुझे ऐसा लगा जैसे यह उनके अच्छे स्वभाव का एक असाधारण उदाहरण था: एक दयालुता का कार्य, जिसका मैं प्रतिफल नहीं दे सकती थी, लेकिन जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगी: मैं इस तरह के शिष्टाचार की बिल्कुल आदी नहीं थी, हॉर्टन लॉज से पचास मील के दायरे में किसी से भी इसकी उम्मीद करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थी। फिर भी, इससे मुझे उनकी उपस्थिति में थोड़ा असहज महसूस करने से नहीं रोका जा सका; और मैं अपने छात्रों के पीछे पहले से कहीं अधिक तेज़ी से चलने लगी; हालाँकि, शायद, अगर श्री वेस्टन ने इशारा समझ लिया होता, और मुझे बिना कुछ कहे जाने दिया होता, तो मैं एक घंटे बाद इसे दोहरा सकती थी: लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। मेरे लिए थोड़ी तेज़ चाल उनके लिए सामान्य गति थी।

उन्होंने कहा, 'तुम्हारी युवतियां तुम्हें अकेला छोड़कर चली गई हैं।'

'हां, वे अधिक सुखद संगति में व्यस्त हैं।'

‘तो फिर उन्हें पकड़ने की कोशिश मत करो।’ मैंने अपनी गति धीमी कर दी; लेकिन अगले ही पल मुझे ऐसा करने का पछतावा हुआ: मेरा साथी कुछ नहीं बोला; और मेरे पास कहने के लिए कुछ भी नहीं था, और मुझे डर था कि कहीं वह भी इसी दुविधा में न हो। आखिरकार, उसने अपनी खास शांत और अचानक शैली में चुप्पी तोड़ते हुए पूछा कि क्या मुझे फूल पसंद हैं।

‘हां; बहुत ज्यादा,’ मैंने उत्तर दिया, ‘विशेषकर जंगली फूल।’

उन्होंने कहा, ‘मुझे जंगली फूल पसंद हैं; बाकी फूलों से मुझे कोई खास लगाव नहीं है, क्योंकि उनसे मेरा कोई विशेष जुड़ाव नहीं है—सिर्फ एक-दो को छोड़कर। आपके पसंदीदा फूल कौन से हैं?’

‘प्रिमरोज़, ब्लूबेल्स और हीथ के फूल।’

‘वायलेट नहीं?’

'नहीं; क्योंकि, जैसा कि आपने कहा, मेरा उनसे कोई विशेष जुड़ाव नहीं है; क्योंकि मेरे घर के आसपास की पहाड़ियों और घाटियों में मीठे वायलेट के फूल नहीं हैं।'

'मिस ग्रे, आपके लिए घर होना बहुत बड़ी तसल्ली की बात होगी,' मेरे साथी ने थोड़ी देर रुकने के बाद कहा: 'चाहे वह कितना भी दूर हो, या चाहे कितनी ही कम बार वहां जाया जाता हो, फिर भी यह एक उम्मीद की किरण है।'

मैंने उत्साह से जवाब दिया, 'यह इतना महत्वपूर्ण है कि मुझे लगता है कि मैं इसके बिना नहीं रह सकता,' लेकिन मुझे तुरंत ही इस उत्साह पर पछतावा हुआ; क्योंकि मुझे लगा कि यह बात सुनने में मूर्खतापूर्ण लग रही होगी।

‘ओह, हाँ, आप कर सकते हैं,’ उसने विचारशील मुस्कान के साथ कहा। ‘जीवन से जुड़े बंधन आपकी कल्पना से कहीं अधिक मजबूत हैं, या उस व्यक्ति की कल्पना से भी कहीं अधिक मजबूत हैं जिसने यह अनुभव नहीं किया है कि उन्हें बिना तोड़े कितना भी खींचा जाए। आप बिना घर के दुखी हो सकते हैं, लेकिन आप फिर भी जी सकते हैं; और उतना दुखी नहीं जितना आप सोचते हैं। मनुष्य का हृदय रबर के समान है; थोड़ा सा आघात इसे फुला देता है, लेकिन बहुत अधिक आघात इसे फोड़ नहीं सकता। यदि “कुछ न होने से ही यह विचलित हो सकता है, तो लगभग सब कुछ होने से ही यह टूट सकता है”। जैसे हमारे शरीर के बाहरी अंगों में एक अंतर्निहित जीवन शक्ति होती है जो इसे बाहरी हिंसा से बचाती है। हर आघात जो इसे हिलाता है, वह इसे भविष्य के आघात से बचाने के लिए और अधिक मजबूत बनाता है; जैसे निरंतर परिश्रम से हाथ की त्वचा मोटी हो जाती है और उसकी मांसपेशियां कमजोर होने के बजाय मजबूत हो जाती हैं: इसलिए एक कठिन परिश्रम का दिन, जो एक महिला की हथेली को छील सकता है, एक मेहनती किसान की हथेली पर कोई खास असर नहीं डालेगा।’

मैं अपने अनुभव से बोल रहा हूँ—कुछ हद तक अपने अनुभव से। एक समय था जब मैं भी आपकी तरह सोचता था—कम से कम, मुझे पूरा यकीन था कि घर और उससे जुड़े स्नेह ही जीवन को सहनीय बनाते हैं: कि अगर इनसे वंचित हो जाऊं, तो जीवन एक असहनीय बोझ बन जाएगा; लेकिन अब मेरा कोई घर नहीं है—जब तक कि आप हॉर्टन में मेरे दो किराए के कमरों को घर का नाम न दे दें;—और बारह महीने

पहले ही मैंने अपने सबसे प्यारे और आखिरी दोस्त को खो दिया; फिर भी, मैं न केवल जीवित हूँ, बल्कि इस जीवन में भी आशा और सांत्वना से पूरी तरह वंचित नहीं हूँ: हालाँकि मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं दिन ढलने के बाद शायद ही कभी किसी साधारण झोपड़ी में प्रवेश कर पाता हूँ और उसके निवासियों को शांतिपूर्वक अपने चूल्हे के चारों ओर इकट्ठा देखता हूँ, और उनके घरेलू सुख को देखकर लगभग ईर्ष्या महसूस करता हूँ।

मैंने कहा, 'तुम्हें अभी यह नहीं पता कि तुम्हारे सामने कौन सी खुशी है; तुम अभी तो अपनी यात्रा के आरंभ में ही हो।'

उन्होंने उत्तर दिया, 'सर्वोत्तम सुख तो मुझे पहले से ही प्राप्त है - उपयोगी होने की शक्ति और इच्छाशक्ति।'

अब हम एक ऐसे बाड़े के पास पहुँचे जो एक पगडंडी से जुड़ा था और एक फार्महाउस की ओर जाता था, जहाँ, मेरा अनुमान है, श्री वेस्टन कुछ 'उपयोगी' बनना चाहते थे; क्योंकि उन्होंने मुझसे विदा ली, बाड़ा पार किया और अपने हमेशा की तरह दृढ़, लचीले कदमों से उस रास्ते पर चल दिए, मुझे उनके शब्दों पर विचार करने के लिए अकेला छोड़कर मैं अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया। मैंने पहले सुना था कि उनके आने से कुछ ही महीने पहले उनकी माँ का निधन हो गया था। तब वह उनकी शुरुआती सहेलियों में से आखिरी और सबसे प्यारी थीं; और उनका कोई घर नहीं था। मुझे उन पर दिल से दया आई: मैं सहानुभूति से लगभग रो पड़ा। और, मैंने सोचा, यही कारण था कि उनके माथे पर अक्सर उदासी छा जाती थी, और इसी वजह से दयालु मिस मरे और उनके सभी रिश्तेदारों के बीच उन्हें एक उदास और चिड़चिड़े स्वभाव का समझा जाता था। 'लेकिन,' मैंने सोचा, 'वह उतने दुखी नहीं हैं जितना मैं ऐसी कमी में होता: वह एक सक्रिय जीवन जीते हैं; और उनके सामने उपयोगी प्रयासों के लिए एक विशाल क्षेत्र है। वह दोस्त बना सकते हैं; और वह चाहे तो घर भी बसा सकता है; और निःसंदेह, वह कभी न कभी ऐसा करेगा। ईश्वर करे कि उस घर का साथी उसकी पसंद के योग्य हो और उसे सुखमय बनाए—ऐसा घर जैसा वह हकदार हो! और यह कितना सुखद होगा—' लेकिन मैंने जो भी सोचा, कोई फर्क नहीं पड़ता।

मैंने इस पुस्तक को कुछ भी न छिपाने के इरादे से शुरू किया था; ताकि जो लोग चाहें उन्हें एक साथी इंसान के दिल की बात जानने का लाभ मिल सके: लेकिन हमारे कुछ विचार ऐसे हैं जिन्हें स्वर्ग के सभी देवदूत देख सकते हैं, लेकिन हमारे भाई-बंधु

नहीं—यहां तक कि उनमें से सबसे अच्छे और दयालु भी नहीं।

तब तक ग्रीन परिवार अपने घर जा चुका था और मुर्रे परिवार निजी सड़क पर मुड़ चुका था, जहाँ मैं भी उनके पीछे-पीछे गया। मैंने देखा कि दोनों लड़कियाँ दोनों युवा अधिकारियों की खूबियों पर गरमागरम बहस कर रही थीं; लेकिन मुझे देखते ही रोज़ाली ने बीच वाक्य में ही रुककर शरारती खुशी से कहा—

'ओह-हो, मिस ग्रे! आखिरकार आप आ ही गईं! इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि आप इतनी देर से रुकी रहीं; और इसमें भी कोई हैरानी की बात नहीं कि जब मैं मिस्टर वेस्टन को बुरा-भला कहता हूँ तो आप हमेशा इतनी मजबूती से उनका बचाव करती हैं। आह-हा! अब मुझे सब समझ आ गया!'

'अब आइए, मिस मरे, मूर्खता मत कीजिए,' मैंने सौम्य हंसी का प्रयास करते हुए कहा; 'आप जानती हैं कि ऐसी बकवास मुझ पर कोई असर नहीं डाल सकती।'

लेकिन वह लगातार असहनीय बातें करती रही - उसकी बहन उस अवसर के लिए उपयुक्त काल्पनिक कहानियां गढ़कर उसकी मदद कर रही थी - इसलिए मुझे अपनी ओर से कुछ कहना आवश्यक लगा।

'यह सब कितनी बेवकूफी है!' मैंने हैरानी से कहा। 'अगर मिस्टर वेस्टन का रास्ता कुछ गज के लिए मेरे रास्ते से मिलता है, और अगर वे आते-जाते एक-दो शब्द बोलना चाहें, तो इसमें इतनी बड़ी बात क्या है? मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, मैंने उनसे पहले कभी बात नहीं की: सिवाय एक बार के।'

'कहाँ? कहाँ? और कब?' वे उत्सुकता से चिल्लाए।

'नैन्सी की कुटिया में।'

'अहा! तुम उससे वहाँ मिल चुकी हो, है ना?' रोज़ाली ने खुशी से हंसते हुए कहा। 'अहा! अब मुझे पता चल गया, मटिल्डा, कि वह नैन्सी ब्राउन के यहाँ जाना इतना क्यों पसंद करती है! वह वहाँ मिस्टर वेस्टन के साथ इश्कबाजी करने जाती है।'

'सच में, इसका खंडन करने लायक कुछ नहीं है - मैंने उसे वहाँ केवल एक बार देखा था, मैं आपको बता रहा हूँ - और मुझे कैसे पता चलता कि वह आ रहा है?'

उनकी मूर्खतापूर्ण हंसी और चिढ़ाने वाले आरोपों से मैं चिढ़ गया था, लेकिन मेरी बेचैनी ज़्यादा देर तक नहीं रही: जब उनकी हंसी थम गई, तो वे कप्तान और लेफ्टिनेंट के पास लौट आए; और जब वे उन पर बहस और टिप्पणी कर रहे थे, तो मेरा गुस्सा जल्दी ही शांत हो गया; इसका कारण जल्दी ही भुला दिया गया, और मैंने अपने

विचारों को एक सुखद दिशा में मोड़ दिया। इस प्रकार हम पार्क से होते हुए हॉल में पहुँचे; और जब मैं अपने कमरे की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, तो मेरे मन में बस एक ही विचार था: मेरा हृदय एक ही सच्ची इच्छा से भरा हुआ था। कमरे में प्रवेश करके और दरवाजा बंद करके, मैं घुटनों के बल गिर पड़ा और एक भावपूर्ण लेकिन संयमित प्रार्थना की: 'तेरी इच्छा पूरी हो,' मैं पूरी प्रार्थना के दौरान यही कहता रहा; लेकिन 'हे पिता, तेरे लिए सब कुछ संभव है, और तेरी इच्छा पूरी हो,' यह कहना मेरे लिए स्वाभाविक था। वह इच्छा—वह प्रार्थना—जिसके लिए पुरुष और स्त्री दोनों ही मेरा उपहास करते— ‘परन्तु, हे पिता, तू मेरा उपहास नहीं करेगा!’ मैंने कहा, और मुझे लगा कि यह सच है। मुझे ऐसा लगा कि दूसरों के कल्याण के लिए भी उतनी ही लगन से प्रार्थना की जा रही है जितनी कि अपने लिए; बल्कि, यही मेरे हृदय की सबसे बड़ी तमन्ना थी। शायद मैं स्वयं को धोखा दे रही थी; लेकिन इस विचार ने मुझे प्रार्थना करने का आत्मविश्वास दिया, और यह आशा करने की शक्ति दी कि मेरी प्रार्थना व्यर्थ नहीं गई। जहाँ तक प्रिमरोज़ की बात है, मैंने उनमें से दो को अपने कमरे में एक गिलास में तब तक रखा जब तक वे पूरी तरह मुरझा नहीं गए, और नौकरानी ने उन्हें फेंक दिया; और दूसरे की पंखुड़ियों को मैंने अपनी बाइबिल के पन्नों के बीच दबाकर रखा—वे आज भी मेरे पास हैं, और मैं उन्हें हमेशा संभाल कर रखना चाहती हूँ।

अध्याय 14 — रेक्टर

अगला दिन भी पिछले दिन की तरह ही सुहावना था। नाश्ते के तुरंत बाद, मिस मटिल्डा ने कुछ निरर्थक पाठों में भागदौड़ और गड़बड़ करने के बाद, और अपनी माँ द्वारा छुट्टी न दिए जाने के कारण मुझसे और पियानो दोनों से बेहद नाराज़ होकर, एक घंटे तक पियानो को ज़ोर-ज़ोर से पीटने के बाद, अपने पसंदीदा विश्राम स्थलों,

अस्तबलों, कुत्तों के बाड़ों और कुत्ते-कुत्तों के घरों की ओर प्रस्थान किया; और मिस मरे एक नए लोकप्रिय उपन्यास के साथ शांत सैर का आनंद लेने के लिए बाहर चली गईं, मुझे कक्षा में उस जलरंग चित्र पर कड़ी मेहनत करते हुए छोड़कर, जिसे मैंने उनके लिए बनाने का वादा किया था, और जिस पर उन्होंने ज़ोर दिया था कि मैं उसे उसी दिन पूरा करूँ।

मेरे पैरों के पास एक छोटा सा खुरदुरा टेरियर कुत्ता पड़ा था। यह मिस मटिल्डा की संपत्ति थी; लेकिन वह इस जानवर से नफरत करती थी और इसे बेचने का इरादा रखती थी, यह कहते हुए कि यह पूरी तरह बिगड़ चुका है। वास्तव में यह अपनी प्रजाति का एक उत्कृष्ट कुत्ता था; लेकिन वह कहती थी कि यह किसी काम का नहीं है और इसमें अपनी मालकिन को पहचानने की भी समझ नहीं है।

असल बात तो यह थी कि उसने उसे तब खरीदा था जब वह एक छोटा पिल्ला ही था, और पहले तो उसने ज़िद की कि उसके अलावा कोई उसे न छुए; लेकिन जल्द ही उस असहाय और परेशान करने वाले पिल्ले से तंग आकर, उसने मेरी विनती मान ली और उसे अपने पास रख लिया; और मैंने उस नन्हे से जीव की बचपन से लेकर किशोरावस्था तक देखभाल करके उसका स्नेह पा लिया: यह एक ऐसा इनाम था जिसे मैं बहुत महत्व देता और उसके साथ हुई सारी परेशानियों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण मानता, अगर बेचारे स्नैप की कृतज्ञता ने उसे अपनी मालकिन के कठोर शब्दों और कई बार लातों और चुटकीों का शिकार न बनाया होता, और अगर अब उसे 'छोड़ दिए जाने' या किसी कठोर, निर्दयी मालिक के पास भेजे जाने का खतरा न होता। लेकिन मैं क्या कर सकता था? मैं क्रूर व्यवहार से कुत्ते को मुझसे नफरत करने पर मजबूर नहीं कर सकता था, और वह दयालुता से उसे शांत नहीं कर सकता था।

हालांकि, जब मैं इस तरह बैठकर अपनी पेंसिल से काम कर रहा था, तभी श्रीमती मरे आधी तैरती हुई और आधी भागती हुई कमरे में आईं।

‘मिस ग्रे,’ उसने कहना शुरू किया, ‘अरे! आप इस दिन भी ड्राइंग में कैसे बैठी रह सकती हैं?’ (उसे लगा कि मैं यह अपने निजी आनंद के लिए कर रही हूँ।) ‘मुझे आश्चर्य है कि आप अपनी टोपी पहनकर युवतियों के साथ बाहर क्यों नहीं जातीं।’

'मुझे लगता है, महोदया, मिस मरे पढ़ रही हैं; और मिस मटिल्डा अपने कुत्तों के साथ समय बिता रही हैं।'

‘अगर आप मिस मटिल्डा का थोड़ा और मनोरंजन करने की कोशिश करें, तो मुझे

लगता है कि वह कुत्तों, घोड़ों और नौकरों की संगति में इतना आनंद नहीं लेंगी; और अगर आप मिस मरे के साथ थोड़ा और हंसमुख और बातूनी व्यवहार करें, तो वह हाथ में किताब लेकर खेतों में इतनी बार नहीं घूमेंगी। खैर, मैं आपको परेशान नहीं करना चाहती,' उन्होंने कहा, शायद यह देखकर कि मेरे गाल लाल हो रहे थे और मेरा हाथ किसी अप्रिय भावना से कांप रहा था। 'कृपया, इतना संवेदनशील न बनें—नहीं तो आपसे बात करना मुश्किल है। और मुझे बताएं कि क्या आपको पता है कि रोज़ाली कहाँ गई है: और उसे इतना अकेला रहना क्यों पसंद है?'

वह कहती है कि जब उसके पास पढ़ने के लिए कोई नई किताब होती है तो उसे अकेले रहना अच्छा लगता है।

लेकिन वह इसे पार्क या बगीचे में क्यों नहीं पढ़ सकती? उसे खेतों और गलियों में क्यों जाना चाहिए? और मिस्टर हैटफील्ड उसे इतनी बार बाहर कैसे ढूंढ लेते हैं? उसने मुझे पिछले हफ्ते बताया था कि वह मॉस लेन में उसके साथ-साथ अपने घोड़े पर टहल रहे थे; और अब मुझे यकीन है कि मैंने अपने ड्रेसिंग रूम की खिड़की से उन्हें ही पार्क के गेट के पास से तेज़ी से गुजरते हुए और उस खेत की ओर जाते हुए देखा था जहाँ वह अक्सर जाती है। काश आप जाकर देख लेते कि वह वहाँ है या नहीं; और उसे धीरे से याद दिला देते कि उसके ओहदे और भविष्य की उम्मीदों वाली एक युवती के लिए इस तरह अकेले घूमना और किसी भी ऐसे व्यक्ति के ध्यान का शिकार होना उचित नहीं है जो उससे बात करने की हिम्मत करे; जैसे कोई बेचारी उपेक्षित लड़की जिसके पास घूमने के लिए कोई पार्क न हो और देखभाल करने वाला कोई दोस्त न हो: और उसे बता देते कि अगर उसके पापा को पता चला कि वह मिस्टर हैटफील्ड के साथ इस तरह का दोस्ताना व्यवहार कर रही है, तो वे बहुत गुस्सा होंगे; और — ओह! अगर तुममें—अगर किसी भी गवर्नेस में माँ की आधी भी सतर्कता—माँ की आधी भी चिंता होती, तो मुझे इस परेशानी से मुक्ति मिल जाती; और तुम तुरंत समझ जातीं कि उस पर नज़र रखना और उसके साथ सुखद व्यवहार करना कितना ज़रूरी है —खैर, जाओ—जाओ; समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है,' उसने चिल्लाकर कहा, जब उसने देखा कि मैंने अपना ड्राइंग का सामान समेट लिया था और उसके भाषण के समाप्त होने का इंतज़ार करते हुए दरवाजे पर खड़ी थी।

उनकी भविष्यवाणी के अनुसार, मैंने मिस मरे को पार्क के ठीक बाहर उनके पसंदीदा खेत में पाया; और, दुर्भाग्य से, वह अकेली नहीं थीं; क्योंकि श्री हैटफील्ड की

लंबी, गरिमामय आकृति धीरे-धीरे उनके बगल में टहल रही थी।

मेरे सामने एक दुविधा खड़ी हो गई। मेरा फर्ज था कि मैं उनकी बातचीत में दखल दूं, लेकिन कैसे? श्री हैटफील्ड मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति से तो नहीं भाग सकते थे; और मिस मरे के दूसरी तरफ जाकर, उनके साथी को देखे बिना अपनी अवांछित उपस्थिति दर्ज कराना, एक ऐसी बदतमीजी थी जिसका मैं दोषी नहीं हो सकता था: न ही मुझमें इतनी हिम्मत थी कि मैं मैदान के ऊपर से चिल्लाकर कह सकूं कि उन्हें कहीं और बुलाया गया है। इसलिए मैंने बीच का रास्ता अपनाया और धीरे-धीरे लेकिन स्थिर रूप से उनकी ओर चलने लगा; यह तय करते हुए कि अगर मेरे आने से वह आदमी नहीं भागा, तो मैं वहां से गुजर जाऊंगा और मिस मरे को बता दूंगा कि उनकी मां उन्हें बुला रही हैं।

पार्क की बाड़ पर फैली कलियों वाले हॉर्स-चेस्टनट के पेड़ों के नीचे टहलते हुए वह निश्चित रूप से बहुत आकर्षक लग रही थी; एक हाथ में उसकी बंद किताब थी और दूसरे हाथ में मर्टल की एक सुंदर टहनी, जो उसके लिए एक सुंदर खिलौने की तरह थी; उसकी छोटी सी टोपी से उसके चमकीले घुंघराले बाल हवा में लहरा रहे थे, उसका गोरा गाल संतुष्टि भरी खुशी से लाल हो रहा था, उसकी मुस्कुराती नीली आँखें कभी अपने प्रशंसक की ओर शरारती ढंग से देख रही थीं, तो कभी नीचे अपनी मर्टल की टहनी को निहार रही थीं। लेकिन स्नैप, जो मुझसे पहले दौड़ रहा था, ने उसकी आधी चंचल, आधी शरारती बातचीत के बीच में ही उसकी पोशाक पकड़कर उसे ज़ोर से खींचकर उसे रोक दिया; तभी श्री हैटफील्ड ने अपनी छड़ी से जानवर की खोपड़ी पर ज़ोरदार प्रहार किया और वह चीखता हुआ मेरी ओर वापस आ गया, जिससे आदरणीय महोदय को खूब मज़ा आया। लेकिन मुझे इतना पास देखकर, शायद उन्होंने सोचा होगा कि अब चले जाना ही बेहतर है; और जब मैं उनकी कठोरता के प्रति अपनी असहमति जताते हुए दिखावटी दया भाव से कुत्ते को सहलाने के लिए झुकी, तो मैंने उन्हें कहते सुना: 'मिस मरे, आपसे दोबारा कब मिलूँगी?'

'शायद चर्च में,' उसने जवाब दिया, 'जब तक कि आपका काम आपको ठीक उसी समय यहाँ न ले आए जब मैं यहाँ से गुजर रही हूँ।'

'अगर मुझे ठीक-ठीक पता हो कि आपको कब और कहाँ ढूँढना है, तो मैं यहाँ हमेशा व्यापार करने का प्रबंध कर सकता हूँ।'

लेकिन अगर मैं बता भी दूं, तो भी मैं आपको सूचित नहीं कर सकता, क्योंकि मैं

इतना अनियमित हूं कि मैं आज यह नहीं बता सकता कि मैं कल क्या करूंगा।

‘तो फिर मुझे वह दे दो, ताकि मुझे तसल्ली मिल सके,’ उसने आधे मजाक में और आधे गंभीरता से कहा, और मर्टल की टहनी के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

नहीं, बिलकुल नहीं।

‘कृपा करके ही कीजिए! अगर आपने ऐसा नहीं किया तो मैं सबसे दुखी व्यक्ति हो जाऊंगा। आप इतने निर्दयी नहीं हो सकते कि मुझे इतनी आसानी से मिलने वाली और फिर भी इतनी मूल्यवान कृपा से वंचित कर दें!’ उसने इतनी दृढ़ता से विनती की मानो उसका जीवन इस पर निर्भर हो।

इस समय तक मैं उनसे कुछ ही गज की दूरी पर खड़ा था, बेसब्री से उनके जाने का इंतजार कर रहा था।

‘तो फिर! इसे लो और जाओ,’ रोसैली ने कहा।

उसने खुशी-खुशी उपहार स्वीकार किया, कुछ बुदबुदाया जिससे वह शरमा गई और अपना सिर हिलाया, लेकिन एक हल्की हंसी के साथ यह दिखाया कि उसकी नाराजगी पूरी तरह से बनावटी थी; और फिर एक विनम्र अभिवादन के साथ चला गया।

‘क्या आपने कभी ऐसे आदमी को देखा है, मिस ग्रे?’ उसने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा; ‘मुझे बहुत खुशी है कि आप आ गईं! मुझे लगा था कि मैं उससे कभी छुटकारा नहीं पा सकूंगी; और मुझे पापा के उसे देख लेने से बहुत डर लग रहा था।’

‘क्या वह लंबे समय से तुम्हारे साथ है?’

'नहीं, ज्यादा देर नहीं, लेकिन वह बेहद बदतमीज है: और वह हमेशा इधर-उधर मंडराता रहता है, यह दिखावा करता है कि उसके व्यवसाय या उसके लिपिकीय कर्तव्यों के लिए उसे इन इलाकों में उपस्थित होना आवश्यक है, और वास्तव में वह बेचारे मुझ पर नजर रखता है, और जहां भी मुझे देखता है, मुझ पर झपट पड़ता है।'

“खैर, तुम्हारी माँ का मानना है कि तुम्हें मेरे जैसी किसी समझदार, सजग महिला के बिना पार्क या बगीचे से बाहर नहीं जाना चाहिए, जो तुम्हारे साथ रहे और सभी घुसपैठियों को रोके रखे। उन्होंने श्री हैटफील्ड को पार्क के फाटकों के पास से जल्दी से गुजरते हुए देखा और तुरंत मुझे तुम्हें ढूंढने और तुम्हारी देखभाल करने के साथ-साथ चेतावनी देने के निर्देश देकर भेजा —”

‘ओह, मम्मी कितनी परेशान करती हैं! जैसे कि मैं अपना ख्याल खुद नहीं रख

सकती। उन्होंने पहले मिस्टर हैटफील्ड के बारे में मुझसे पूछताछ की थी; और मैंने उनसे कहा था कि वे मुझ पर भरोसा कर सकती हैं: मैं अपने रुतबे और प्रतिष्ठा को उस सबसे प्यारे इंसान के लिए कभी नहीं भूलूंगी। काश वो कल मेरे सामने घुटने टेककर मुझसे विनती करें कि मैं उनकी पत्नी बन जाऊं, ताकि मैं उन्हें दिखा सकूं कि उनका यह सोचना कितना गलत है कि मैं कभी— ओह, मुझे कितना गुस्सा आता है! यह सोचकर कि मैं इतनी मूर्ख हो सकती हूं कि प्यार में पड़ जाऊं! ऐसा करना एक औरत की गरिमा के बिल्कुल विपरीत है। प्यार! मुझे इस शब्द से नफरत है! हमारे जैसी स्त्री के लिए, मुझे लगता है यह एक घोर अपमान है। पसंद को मैं मान सकती हूं; लेकिन बेचारे मिस्टर हैटफील्ड जैसे किसी के लिए कभी नहीं, जिनके पास साल भर में सात सौ डॉलर भी नहीं हैं। मुझे उनसे बात करना अच्छा लगता है, क्योंकि वो बहुत चतुर और मनोरंजक हैं— काश सर थॉमस एशबी आधे भी अच्छे होते; इसके अलावा, मुझे किसी के साथ फ्लर्ट करने की जरूरत है, और यहां आने की समझ किसी और में नहीं है; और जब हम बाहर जाते हैं, तो माँ मुझे सर थॉमस के अलावा किसी और से इश्कबाज़ी नहीं करने देतीं—अगर वो वहाँ हों तो; और अगर वो वहाँ न हों, तो मुझे हाथ-पैर बाँधकर रखा जाता है, इस डर से कि कोई जाकर कोई बढ़ा-चढ़ाकर कहानी न बना दे और उनके दिमाग में यह बात न डाल दे कि मेरी सगाई किसी और से हो चुकी है, या होने वाली है; या, जो कि ज़्यादा मुमकिन है, इस डर से कि उनकी बदमिज़ाज बूढ़ी माँ मेरी हरकतों के बारे में देख या सुन न लें और यह निष्कर्ष न निकाल लें कि मैं उनके बेहतरीन बेटे के लिए एक अच्छी पत्नी नहीं हूँ: मानो वो बेटा ईसाई जगत का सबसे बड़ा बदमाश न हो; और मानो कोई भी सभ्य महिला उसके लिए बहुत अच्छी न हो।

'क्या सचमुच ऐसा है, मिस मरे? और क्या आपकी मां को यह पता है, फिर भी वह चाहती हैं कि आप उससे शादी करें?'

“हाँ, बिल्कुल! मुझे लगता है कि वो उसके बारे में मुझसे ज़्यादा जानती है: वो मुझसे ये बात छुपाती है ताकि मैं निराश न हो जाऊँ; उसे पता नहीं कि मुझे ऐसी बातों की कितनी कम परवाह है। वैसे ये कोई बड़ी बात नहीं है: मम्मी कहती हैं ना, शादी के बाद सब ठीक हो जाएगा; और सुधरे हुए आवारा सबसे अच्छे पति बनते हैं, ये तो सब जानते हैं। काश वो इतना बदसूरत न होता—बस यही सोचती रहती हूँ: पर यहाँ गाँव में कोई चारा नहीं है; और पापा हमें लंदन नहीं जाने देंगे—”

लेकिन मुझे लगता है कि मिस्टर हैटफील्ड कहीं बेहतर रहेंगे।

'और अगर वह एशबी पार्क का स्वामी होता तो वह ऐसा ही करता - इसमें कोई संदेह नहीं है: लेकिन सच्चाई यह है कि एशबी पार्क मुझे चाहिए, चाहे कोई भी इसे मेरे साथ साझा करे।'

लेकिन मिस्टर हैटफील्ड को लगता है कि आप उन्हें हमेशा से पसंद करते आए हैं; आप यह नहीं सोचते कि जब उन्हें अपनी गलती का एहसास होगा तो उन्हें कितनी गहरी निराशा होगी।

नहीं, बिलकुल नहीं! यह उसकी धृष्टता के लिए उचित दंड होगा—उसके इस दुस्साहस के लिए कि उसने कभी यह सोचने की हिम्मत की कि मैं उसे पसंद कर सकती हूँ। मुझे उसकी आँखों से पर्दा हटाने से ज़्यादा आनंद किसी और चीज़ में नहीं आएगा।

जितनी जल्दी हो सके उतना अच्छा है।

नहीं; मैं तुम्हें बता दूं, मुझे उसके साथ मज़ाक करना अच्छा लगता है। वैसे भी, उसे लगता नहीं कि मैं उसे पसंद करती हूँ। मैं इस बात का पूरा ध्यान रखती हूँ: तुम्हें पता नहीं मैं कितनी चतुराई से काम करती हूँ। वह शायद यह सोचता हो कि वह मुझे पसंद करने के लिए मना सकता है; जिसके लिए मैं उसे उसकी करनी का फल दूंगी।

‘ठीक है, ध्यान रहे कि आप इस तरह के अनुमान के लिए बहुत अधिक कारण न दें—बस इतना ही,’ मैंने उत्तर दिया।

लेकिन मेरी सारी कोशिशें व्यर्थ गईं: उन्होंने तो बस इतना किया कि वह अपनी इच्छाओं और विचारों को मुझसे और भी छुपाने के लिए और भी ज़्यादा उत्सुक हो गईं। उन्होंने मुझसे रेक्टर के बारे में और बात नहीं की; लेकिन मैं समझ गया था कि उनका मन, भले ही दिल नहीं, अब भी उन्हीं पर टिका हुआ था, और वह उनसे दोबारा मिलने की कोशिश में लगी हुई थीं: क्योंकि हालांकि, अपनी माँ के अनुरोध पर, मैं कुछ समय के लिए उनके साथ सैर पर जाने लगा था, फिर भी वह सड़क के नज़दीक के खेतों और गलियों में घूमती रहीं; और चाहे वह मुझसे बात करतीं या अपने हाथ में रखी किताब पढ़तीं, वह बार-बार रुककर अपने चारों ओर देखतीं या सड़क पर नज़र डालतीं कि कोई आ तो नहीं रहा; और अगर कोई घुड़सवार वहाँ से गुज़रता, तो मैं उस बेचारे घुड़सवार के प्रति उनकी बेहिचक गालियों से समझ जाता, चाहे वह कोई भी हो, कि वह उससे नफ़रत करती हैं क्योंकि वह मिस्टर हैटफील्ड नहीं हैं।

मैंने सोचा, 'निश्चित रूप से, वह उसके प्रति उतनी उदासीन नहीं है जितना वह खुद को मानती है, या जितना वह दूसरों को विश्वास दिलाना चाहती है; और उसकी माँ की चिंता उतनी निराधार नहीं है जितना वह दावा करती है।'

तीन दिन बीत गए, और वह प्रकट नहीं हुआ। चौथे दिन की दोपहर को, जब हम उस यादगार मैदान में पार्क की बाड़ के पास टहल रहे थे, हम दोनों के पास एक-एक किताब थी (क्योंकि जब वह मुझसे बात करने के लिए नहीं कहती थी, तो मैं हमेशा अपने लिए कुछ न कुछ करने का इंतजाम करता था), तभी उसने अचानक मेरी पढ़ाई में खलल डालते हुए कहा—

‘ओह, मिस ग्रे! कृपा करके मार्क वुड से मिलिए और उनकी पत्नी को मेरी तरफ से आधा क्राउन दे दीजिए— मुझे एक हफ़्ते पहले ही दे देना चाहिए था या भेज देना चाहिए था, पर मैं बिल्कुल भूल गई थी। लीजिए!’ उसने अपना पर्स मेरी तरफ फेंकते हुए और बहुत तेज़ी से बोलते हुए कहा— ‘अभी पर्स निकालने की कोई बात नहीं, पर्स लीजिए और उन्हें जो चाहें दे दीजिए; मैं आपके साथ चलती, पर मुझे यह किताब खत्म करनी है। खत्म होने पर मैं आपसे मिलने आ जाऊंगी। जल्दी कीजिएगा—और —अरे, रुकिए; क्या आपको उन्हें थोड़ा पढ़कर नहीं सुनाना चाहिए? घर जाइए और कोई अच्छी किताब ले आइए। कुछ भी चलेगा।’

मैंने वैसा ही किया जैसा मुझे कहा गया था; लेकिन, उसकी जल्दबाजी और अचानक किए गए अनुरोध से मुझे कुछ संदेह हुआ, इसलिए खेत छोड़ने से पहले मैंने पीछे मुड़कर देखा, और वहाँ श्री हैटफील्ड नीचे द्वार से प्रवेश करने ही वाले थे। मुझे किताब लाने के लिए घर भेजकर, उसने मुझे सड़क पर उनसे मिलने से बचा लिया था।

‘कोई बात नहीं!’ मैंने सोचा, ‘कोई बड़ी हानि नहीं होगी। बेचारा मार्क आधे क्राउन से खुश होगा, और शायद पवित्र पुस्तक से भी; और अगर रेक्टर मिस रोज़ाली का दिल जीत भी लेता है, तो इससे उसका अहंकार थोड़ा कम ही होगा; और अगर अंत में उनकी शादी हो भी जाती है, तो यह उसे एक और बुरे भाग्य से बचा लेगा; और वह उसके लिए काफी अच्छी साथी साबित होगी, और वह भी उसके लिए।’

मार्क वुड वही क्षय रोग से पीड़ित मजदूर थे जिनका मैंने पहले जिक्र किया था। उनकी हालत तेजी से बिगड़ रही थी। मिस मरे ने अपनी उदारता से उस मरणासन्न व्यक्ति का आशीर्वाद प्राप्त कर लिया था; क्योंकि यद्यपि आधा क्राउन उनके लिए

बहुत कम काम आ सकता था, फिर भी वे अपनी पत्नी और बच्चों के लिए इसे पाकर प्रसन्न थे, जो जल्द ही विधवा और अनाथ होने वाले थे। कुछ मिनट बैठने और उन्हें और उनकी पीड़ित पत्नी को सांत्वना और प्रोत्साहन देने के लिए थोड़ा पढ़ने के बाद, मैं वहां से चला गया; लेकिन पचास गज आगे बढ़ने से पहले ही मेरी मुलाकात मिस्टर वेस्टन से हुई, जो जाहिर तौर पर उसी घर की ओर जा रहे थे। उन्होंने हमेशा की तरह शांत और सहज तरीके से मेरा अभिवादन किया, बीमार व्यक्ति और उसके परिवार की स्थिति के बारे में जानने के लिए रुके, और एक प्रकार की सहज, भाईचारे वाली औपचारिकता की अवहेलना करते हुए मेरे हाथ से वह किताब ले ली जिसे मैं पढ़ रहा था, उसके पन्ने पलटे, कुछ संक्षिप्त लेकिन बहुत ही सार्थक बातें कहीं और उसे वापस कर दिया; फिर उन्होंने मुझे एक बेचारे पीड़ित के बारे में बताया, जिनसे वे अभी-अभी मिलकर आए थे, नैन्सी ब्राउन के बारे में थोड़ी बात की, मेरे छोटे से प्यारे टेरियर कुत्ते के बारे में कुछ टिप्पणियाँ कीं, जो उनके पैरों के पास उछल-कूद कर रहा था, और अंत में मौसम की सुंदरता के बारे में बात की, और चले गए।

मैंने उनके शब्दों का विस्तृत वर्णन नहीं किया है, क्योंकि मुझे लगा कि वे पाठक को उतने रुचिकर नहीं लगेंगे जितने मुझे लगे, और इसलिए नहीं कि मैं उन्हें भूल गया हूँ। नहीं; मुझे वे शब्द अच्छी तरह याद हैं; क्योंकि मैंने उस दिन और उसके बाद के कई दिनों में, न जाने कितनी बार, उनके बारे में बार-बार सोचा; और उनकी गहरी, स्पष्ट आवाज़ की हर लय, उनकी तेज़, भूरी आँखों की हर चमक, और उनकी मनमोहक, लेकिन क्षणभंगुर मुस्कान की हर झलक मुझे याद है। मुझे डर है कि यह स्वीकारोक्ति बहुत हास्यास्पद लगेगी: लेकिन कोई बात नहीं: मैंने इसे लिख दिया है: और जो इसे पढ़ेंगे वे लेखक को नहीं जानेंगे।

मैं मन ही मन प्रसन्न और अपने आस-पास के माहौल से खुश होकर चल रही थी, तभी मिस मरे मुझसे मिलने के लिए दौड़ती हुई आईं; उनके चंचल कदम, लाल गाल और मनमोहक मुस्कान से पता चल रहा था कि वे भी अपने तरीके से खुश थीं। मेरे पास आकर उन्होंने अपना हाथ मेरे हाथ में डाला और सांस लेने का भी समय न लेते हुए बोलना शुरू किया - 'मिस ग्रे, आप खुद को बहुत सम्मानित समझें, क्योंकि मैं आपको अपनी खबर बताने आई हूं, इससे पहले कि मैंने इसके बारे में किसी और को बताया हो।'

'अच्छा, यह क्या है?'

अरे वाह! सबसे पहले तो आपको पता होना चाहिए कि आपके जाने के तुरंत बाद मिस्टर हैटफील्ड मुझसे मिलने आए। मुझे डर था कि पापा या मम्मी उन्हें देख लेंगे; लेकिन आप जानते हैं कि मैं आपको वापस बुला नहीं सकती थी, और इसलिए! — ओह, भगवान! मैं अभी आपको सब कुछ नहीं बता सकती, क्योंकि मुझे लगता है कि मटिल्डा पार्क में है, और मुझे जाकर उसे अपना बजट दिखाना है। लेकिन, हैटफील्ड बहुत ही साहसी, बेहद तारीफ करने वाले और अभूतपूर्व रूप से कोमल थे — कम से कम उन्होंने ऐसा बनने की कोशिश तो की — लेकिन वे इसमें पूरी तरह सफल नहीं हुए, क्योंकि यह उनका स्वभाव नहीं है। उन्होंने जो कुछ कहा, वह मैं आपको किसी और समय बताऊंगी।

लेकिन आपने क्या कहा— मुझे उसमें ज्यादा दिलचस्पी है?

मैं आपको यह भी कभी बताऊँगा। उस समय मेरा मूड बहुत अच्छा था; हालाँकि मैं विनम्र और शालीन था, मैंने हर तरह से अपनी प्रतिष्ठा को खतरे में न डालने का पूरा ध्यान रखा। लेकिन उस अहंकारी ने मेरे सौम्य स्वभाव का गलत अर्थ निकाल लिया और अंततः मेरी उदारता का इतना फायदा उठाया कि – आप क्या सोचते हैं? – उसने मुझे एक प्रस्ताव ही दे दिया!

'और आप - '

मैंने गर्व से खुद को सीधा खड़ा किया और अत्यंत शांत भाव से ऐसी घटना पर अपना आश्चर्य व्यक्त किया, और आशा जताई कि मेरे व्यवहार में उन्हें ऐसा कुछ भी नहीं दिखा होगा जिससे उनकी अपेक्षाएँ जायज़ हों। आपको देखना चाहिए था कि उनका चेहरा कैसे उतर गया! उनका चेहरा बिलकुल सफेद पड़ गया। मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि मैं उनका सम्मान करती हूँ और सब कुछ ठीक है, लेकिन मैं उनके प्रस्ताव को किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं कर सकती; और अगर मैंने ऐसा किया भी, तो पापा और मम्मी कभी भी अपनी सहमति नहीं देंगे।

"लेकिन अगर वे ऐसा कर सकते," उसने कहा, "तो क्या आपके यहाँ कोई कमी रह जाएगी?"

"ज़रूर, श्रीमान हैटफील्ड," मैंने शांत और दृढ़ निश्चय से उत्तर दिया, जिससे सारी उम्मीदें पल भर में टूट गईं। ओह, अगर आपने देखा होता कि वह कितना बुरी तरह से अपमानित हुआ था—अपनी निराशा से कितना चूर-चूर हो गया था! सच में, मुझे खुद उस पर लगभग तरस आ रहा था।

फिर भी, उन्होंने एक और हताश प्रयास किया। काफी देर तक चुप्पी छाई रही, इस दौरान उन्होंने शांत रहने की कोशिश की और मैंने भी गंभीर बने रहने की, क्योंकि मुझे ज़ोर से हँसने का मन कर रहा था, जिससे सब कुछ बिगड़ जाता। फिर उन्होंने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "लेकिन मुझे साफ-साफ बताइए, मिस मरे, अगर मेरे पास सर ह्यू मेलथम की दौलत होती, या उनके बड़े बेटे की तरह भविष्य की संभावनाएं होतीं, तो क्या आप फिर भी मुझे मना करतीं? ईमानदारी से जवाब दीजिए।"

“बिल्कुल,” मैंने कहा। “इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।”

'यह एक बड़ा झूठ था, लेकिन वह अपने आकर्षण को लेकर इतना आश्वस्त दिख रहा था कि मैंने उसे जरा भी नहीं छोड़ने का निश्चय किया। उसने मेरी आंखों में आंखें डालकर देखा; लेकिन मैंने अपने चेहरे के भावों को इतनी अच्छी तरह से नियंत्रित रखा कि वह यह कल्पना भी नहीं कर सका कि मैं सच के अलावा कुछ और कह रही हूं।'

“तो फिर सब खत्म हो गया, मुझे लगता है,” उसने कहा, मानो वह झुंझलाहट और घोर निराशा से वहीं मर जाना चाहता हो। लेकिन वह निराश होने के साथ-साथ क्रोधित भी था। एक तरफ वह असहनीय पीड़ा झेल रहा था, और दूसरी तरफ मैं, इस सब की निर्दयी वजह, उसकी निगाहों और शब्दों के हर वार से अप्रभावित, इतनी शांत, ठंडी और अभिमानी कि वह कुछ नाराजगी महसूस किए बिना नहीं रह सका; और असाधारण कड़वाहट के साथ उसने कहना शुरू किया — “मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी, मिस मरे। मैं आपके पिछले आचरण और उन उम्मीदों के बारे में कुछ कह सकता था जो आपने मुझे जगाने के लिए प्रेरित की थीं, लेकिन मैं एक शर्त पर चुप रहता हूँ —”

“कोई शर्त नहीं, श्रीमान हैटफील्ड!” मैंने कहा, अब मैं उनकी धृष्टता पर सचमुच क्रोधित था।

“तो मैं आपसे एक विनती करता हूँ,” उसने तुरंत अपनी आवाज़ धीमी करते हुए और विनम्र स्वर में उत्तर दिया: “मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप इस मामले का ज़िक्र किसी से भी न करें। यदि आप इस बारे में चुप रहेंगी, तो दोनों पक्षों में कोई अप्रियता नहीं होगी—मेरा मतलब है, जो अपरिहार्य है, उससे ज़्यादा कुछ नहीं। मैं अपनी भावनाओं को अपने तक ही सीमित रखने का प्रयास करूँगा, यदि मैं उन्हें मिटा नहीं सकता—मैं क्षमा करने का प्रयास करूँगा, यदि मैं अपने कष्टों के कारण को भूल नहीं सकता। मैं यह नहीं मानूँगा, मिस मरे, कि आप जानती हैं कि आपने मुझे कितना

गहरा दुख पहुँचाया है। मैं नहीं चाहता कि आपको इसका एहसास हो; लेकिन यदि, उस चोट के अलावा जो आपने मुझे पहले ही पहुँचाई है—मुझे क्षमा करें, लेकिन, चाहे अनजाने में हो या नहीं, आपने यह किया है—और यदि आप इस दुर्भाग्यपूर्ण मामले को सार्वजनिक करके या इसका ज़िक्र करके इसे और बढ़ाती हैं, तो आप पाएँगी कि मैं भी बोल सकता हूँ, और यद्यपि आपने मेरे प्रेम का तिरस्कार किया, आप शायद ही मेरे—"

वह रुका, लेकिन उसने अपने खूनहीन होंठ काट लिए और उसका चेहरा इतना भयानक था कि मैं पूरी तरह से भयभीत हो गया। हालाँकि, मेरे स्वाभिमान ने मुझे फिर भी सहारा दिया और मैंने तिरस्कारपूर्ण ढंग से उत्तर दिया; "मुझे नहीं पता कि आप क्या सोचते हैं कि मैं किसी को इसके बारे में क्यों बताऊँगा, श्री हैटफील्ड; लेकिन अगर मैं ऐसा करने को तैयार भी होता, तो आप मुझे धमकियों से नहीं रोकते; और ऐसा करने का प्रयास करना किसी सज्जन व्यक्ति के लिए उचित नहीं है।"

"क्षमा कीजिए, मिस मरे," उसने कहा, "मैंने आपसे अत्यंत प्रेम किया है—मैं आज भी आपसे इतना गहरा स्नेह रखता हूँ कि मैं आपको ठेस पहुँचाना नहीं चाहता; परन्तु यद्यपि मैंने कभी किसी स्त्री से इतना प्रेम नहीं किया, और न ही कभी कर सकता हूँ, जितना आपसे किया है, यह भी उतना ही निश्चित है कि किसी ने भी मेरे साथ इतना बुरा बर्ताव नहीं किया। इसके विपरीत, मैंने हमेशा आप स्त्री जाति को ईश्वर की रचना में सबसे दयालु, कोमल और मददगार पाया है, अब तक।" (ज़रा उस घमंडी आदमी के बारे में सोचो जो ऐसा कह रहा है!) "और आज तुमने मुझे जो सबक सिखाया है, उसकी नवीनता और कठोरता, और मेरे जीवन की खुशी जिस एकमात्र क्षेत्र पर टिकी थी, उससे मिली निराशा की कड़वाहट, मेरी किसी भी कठोरता को जायज़ ठहराती है। अगर मेरी उपस्थिति आपको अप्रिय लग रही है, मिस मरे," उसने कहा (क्योंकि मैं इधर-उधर देखकर यह जता रही थी कि मुझे उसकी परवाह नहीं है, इसलिए उसने सोचा कि मैं उससे ऊब चुकी हूँ, शायद) — "अगर मेरी उपस्थिति आपको अप्रिय लग रही है, मिस मरे, तो बस मुझे वह एहसान करने का वादा कर दो जिसका मैंने ज़िक्र किया है, और मैं तुम्हें तुरंत राहत दे दूँगा। कई महिलाएँ हैं — कुछ तो इसी इलाके में भी — जो उस चीज़ को पाकर प्रसन्न होंगी जिसे तुमने इतने तिरस्कारपूर्वक अपने पैरों तले रौंद दिया है। वे स्वाभाविक रूप से उस व्यक्ति से नफरत करेंगी जिसकी असाधारण सुंदरता ने मेरे दिल को उनसे पूरी तरह से अलग

कर दिया है और मुझे उनके आकर्षण से अंधा कर दिया है; और मेरे द्वारा इनमें से किसी एक को भी सच्चाई का एक संकेत देना तुम्हारे खिलाफ ऐसी बातें फैलाने के लिए काफी होगा जो तुम्हारी संभावनाओं को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचाएगी, और किसी भी अन्य के साथ तुम्हारी सफलता की संभावना को कम कर देगी। महोदय, आप या आपकी मां किसी को उलझाने की योजना बना सकते हैं।"

"आपका क्या मतलब है, महोदय?" मैंने गुस्से से पैर पटकने के लिए तैयार होकर कहा।

"मेरा मतलब है कि यह मामला शुरू से अंत तक मुझे खुलेआम छेड़छाड़ जैसा लगता है, कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है – ऐसा मामला जिसे दुनिया भर में प्रचारित करना आपके लिए काफी असुविधाजनक होगा: खासकर आपकी महिला प्रतिद्वंद्वियों के बयानों और अतिशयोक्तियों के साथ, जो इसे प्रकाशित करने में बहुत खुश होंगी, अगर मैं उन्हें बस एक बहाना दे दूं। लेकिन मैं आपको एक सज्जन व्यक्ति की कसम खाकर वादा करता हूं कि मेरे मुख से एक भी शब्द या अक्षर ऐसा नहीं निकलेगा जो आपके प्रति पूर्वाग्रह पैदा कर सके, बशर्ते आप –"

"अच्छा, अच्छा, मैं इसका जिक्र नहीं करूंगा," मैंने कहा। "अगर इससे आपको कोई तसल्ली मिल सकती है, तो आप मेरी चुप्पी पर भरोसा कर सकते हैं।"

"क्या आप इसका वादा करते हैं?"

"हां," मैंने उत्तर दिया; क्योंकि मैं अब उससे छुटकारा पाना चाहता था।

"तो अलविदा!" उसने अत्यंत उदास, हृदयविहीन स्वर में कहा; और एक ऐसे चेहरे के साथ जहाँ अभिमान निराशा से व्यर्थ संघर्ष कर रहा था, वह मुड़ा और चला गया: निस्संदेह, घर पहुँचने के लिए तरस रहा था, ताकि वह अपने अध्ययन कक्ष में खुद को बंद कर सके और रो सके — अगर वह वहाँ पहुँचने से पहले ही फूट-फूट कर रोने न लगे।

'लेकिन तुम तो अपना वादा पहले ही तोड़ चुकी हो,' मैंने उसकी बेवफाई से सचमुच भयभीत होकर कहा।

'ओह! यह सिर्फ आपके लिए है; मुझे पता है आप इसे दोहराएंगे नहीं।'

'बिल्कुल नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा: लेकिन आप कह रहे हैं कि आप अपनी बहन को बताने जा रहे हैं; और जब आपके भाई घर लौटेंगे तो वह उन्हें बता देगी, और अगर आप खुद उसे नहीं बताते हैं तो वह तुरंत ब्राउन को बता देगी; और ब्राउन इसे पूरे देश

में प्रचारित कर देगा, या प्रचार का माध्यम बन जाएगा।'

'नहीं, बिलकुल नहीं। हम उसे बिल्कुल नहीं बताएंगे, जब तक कि वह पूरी गोपनीयता का वादा न करे।'

लेकिन आप उससे यह उम्मीद कैसे कर सकते हैं कि वह अपनी अधिक प्रबुद्ध मालकिन की तुलना में अपने वादों को बेहतर ढंग से निभाएगी?

'अच्छा, अच्छा, तो फिर उसे यह सुनने को नहीं मिलेगा,' मिस मरे ने कुछ चिड़चिड़ेपन से कहा।

'लेकिन तुम अपनी मम्मी को जरूर बताओगे,' मैंने आगे कहा; 'और वो तुम्हारे पापा को बता देंगी।'

'बेशक मैं मम्मी को बताऊंगी—यही तो मुझे सबसे ज्यादा खुशी देता है। अब मैं उन्हें समझा पाऊंगी कि मेरे बारे में उनके डर कितने गलत थे।'

'ओह, तो यही बात है? मैं सोच रहा था कि आपको किस बात से इतनी खुशी हुई।'

'हाँ; और दूसरी बात यह है कि मैंने श्री हैटफील्ड को इतने आकर्षक ढंग से विनम्र बना दिया है; और एक और बात - क्यों, आपको मुझमें स्त्रीत्व का कुछ अंश तो स्वीकार करना ही होगा: मैं यह दावा नहीं करती कि मुझमें हमारे स्त्रीत्व का यह सबसे आवश्यक गुण नहीं है - और यदि आपने बेचारे हैटफील्ड की उस तीव्र उत्सुकता को देखा होता जब उन्होंने अपनी जोशीली घोषणा और चापलूसी भरा प्रस्ताव रखा था, और उनके मन की उस पीड़ा को देखा होता जिसे अभिमान का कोई भी प्रयास छिपा नहीं सका, जब उन्हें अस्वीकार कर दिया गया, तो आप मान लेते कि मुझे संतुष्ट होने का कुछ कारण था।'

'मुझे लगता है कि उसकी पीड़ा जितनी अधिक होगी, आपकी संतुष्टि का कारण उतना ही कम होगा।'

'अरे, बकवास!' युवती झुंझलाहट से खुद को झटकते हुए बोली। 'या तो आप मुझे समझ नहीं सकते, या समझना नहीं चाहते। अगर मुझे आपकी उदारता पर भरोसा न होता, तो मैं सोचती कि आप मुझसे ईर्ष्या करते हैं। लेकिन शायद आप इस आनंद के कारण को समझ जाएँगे—जो किसी भी अन्य आनंद जितना ही महान है—अर्थात्, मैं अपने विवेक, अपने आत्म-नियंत्रण, और अपनी निर्ममता पर प्रसन्न हूँ। मैं ज़रा भी आश्चर्यचकित नहीं हुई, ज़रा भी भ्रमित, अटपटी या मूर्ख नहीं थी; मैंने बस वही किया और बोला जो मुझे करना चाहिए था, और पूरी तरह से अपने ऊपर नियंत्रण रखा।

और यहाँ एक ऐसा व्यक्ति था, जो निश्चित रूप से सुंदर था—जेन और सुसान ग्रीन उसे मोहक रूप से सुंदर कहती हैं। मुझे लगता है कि वे दो ऐसी महिलाएं हैं जिनके बारे में वह दिखावा करता है कि वे उसे पाकर बहुत खुश होंगी; लेकिन, फिर भी, वह निश्चित रूप से एक बहुत ही चतुर, मजाकिया और मिलनसार साथी था—जिसे आप चतुर कहते हैं, उतना तो नहीं, लेकिन इतना ज़रूर कि वह मनोरंजक लगे; और एक ऐसा व्यक्ति जिससे कहीं भी शर्मिंदा होने की ज़रूरत नहीं है, और जिससे जल्दी ऊबने की ज़रूरत नहीं है; और सच कहूँ तो, मुझे वो काफी पसंद था — हाल के दिनों में हैरी मेल्थम से भी ज्यादा — और जाहिर तौर पर वो मुझे बहुत मानता था; फिर भी, भले ही वो मेरे पास बिल्कुल अकेला और बिना तैयारी के आया, मुझमें उसे मना करने की समझदारी, गर्व और हिम्मत थी — और मैंने उसे इतने तिरस्कारपूर्ण और ठंडेपन से मना किया: मुझे इस बात पर गर्व करने का पूरा कारण है।

और क्या आपको इस बात पर भी उतना ही गर्व है कि आपने उससे कहा था कि सर ह्यू मेलथम की संपत्ति होने से आपको कोई फर्क नहीं पड़ेगा, जबकि ऐसा नहीं था; और इस बात पर भी कि आपने उसकी इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बारे में किसी को न बताने का वादा किया था, जबकि जाहिर तौर पर आपका अपना वादा निभाने का जरा भी इरादा नहीं था?

‘बिल्कुल! मैं और क्या कर सकती थी? आप मुझे स्वीकार नहीं करतीं—लेकिन मुझे लगता है, मिस ग्रे, आपका मूड ठीक नहीं है। ये रही मटिल्डा; मैं देखती हूँ कि इस बारे में उसका और उसकी माँ का क्या कहना है।’

वह मुझे छोड़कर चली गई, मेरी सहानुभूति की कमी से नाराज़ होकर, और शायद यह सोचकर कि मैं उससे ईर्ष्या करता हूँ। मैं ऐसा नहीं करता था—कम से कम, मुझे पूरा विश्वास था कि मैं ऐसा नहीं करता था। मुझे उस पर दया आई; मैं उसकी निर्मम घमंड से चकित और घृणास्पद था; मुझे आश्चर्य हुआ कि इतनी सुंदरता उन लोगों को क्यों दी जाती है जो इसका इतना बुरा उपयोग करते हैं, और उन लोगों को क्यों नहीं दी जाती जो इसका उपयोग स्वयं और दूसरों दोनों के लिए लाभप्रद बना सकते हैं।

लेकिन, मैंने अंत में सोचा, ईश्वर ही सब जानता है। मेरा मानना है कि कुछ पुरुष उसके जितने ही घमंडी, स्वार्थी और निर्दयी होते हैं, और शायद ऐसी महिलाओं का उपयोग उन्हें दंडित करने के लिए किया जा सकता है।

अध्याय पंद्रह — पैदल यात्रा

'अरे बाप रे! काश हैटफील्ड ने इतनी जल्दबाज़ी न की होती!' अगले दिन शाम चार बजे रोज़ाली ने जम्हाई लेते हुए अपना ऊनी कपड़ा नीचे रखा और बेजान आँखों से खिड़की की तरफ देखा। 'अब बाहर जाने का कोई मन नहीं कर रहा; और आगे देखने के लिए कुछ भी नहीं है। जब कोई पार्टी नहीं होगी तो दिन बहुत लंबे और नीरस लगेंगे; और इस हफ्ते या अगले हफ्ते भी मुझे ऐसी कोई पार्टी नहीं दिख रही है।'

'अफसोस है कि तुम उससे इतनी नाराज़ थीं,' मटिल्डा ने कहा, जिससे यह विलाप किया गया था। 'वह फिर कभी नहीं आएगा: और मुझे लगता है कि तुम उसे पसंद करती थीं। मुझे उम्मीद थी कि तुम उसे अपना प्रेमी बना लोगी और प्यारे हैरी को मेरे लिए छोड़ दोगी।'

'हम्म! मेरा प्रेमी सचमुच एक एडोनिस होना चाहिए, मटिल्डा, सबकी नज़रों का चहेता, तभी तो मुझे उससे संतुष्ट रहना है। मैं स्वीकार करती हूँ कि हैटफील्ड को खोने का मुझे दुख है; लेकिन जो भी पहला अच्छा आदमी, या कई अच्छे आदमी, उसकी जगह लेने के लिए आएंगे, उनका मैं तहे दिल से स्वागत करूंगी। कल रविवार है - मुझे हैरानी हो रही है कि वह कैसा दिखेगा और क्या वह पूजा में शामिल हो पाएगा। शायद वह सर्दी-जुकाम का बहाना करेगा और मिस्टर वेस्टन से ही सब कुछ करवाएगा।'

'नहीं, वो नहीं!' मटिल्डा ने कुछ तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा। 'भले ही वो मूर्ख हो, लेकिन इतना नरम दिल नहीं है।'

उसकी बहन थोड़ी नाराज़ थी; लेकिन इस घटना ने साबित कर दिया कि मटिल्डा सही थी: निराश प्रेमी ने हमेशा की तरह अपने पादरी कर्तव्यों का पालन किया। रोज़ाली ने वास्तव में पुष्टि की कि वह बहुत पीला और उदास दिख रहा था: वह शायद थोड़ा और पीला हो गया था; लेकिन अगर कोई अंतर था भी, तो वह मुश्किल से ही दिखाई दे रहा था। जहाँ तक उसकी उदासी की बात है, मैंने निश्चित रूप से उसकी

हंसी को हमेशा की तरह चर्च के कमरे से गूंजते हुए नहीं सुना, न ही उसकी हंसी को हंसी-मज़ाक में बुलंद होते हुए सुना; हालाँकि मैंने उसे चर्च के चौकीदार को इस तरह से डांटते हुए सुना कि मंडली उसे घूरने लगी; और, उपदेश मंच और भोज की मेज पर आने-जाने में, अधिक गंभीर आडंबर था, और उस अनादरपूर्ण, आत्मविश्वासी, या बल्कि आत्म-प्रशंसित दबंगता की कमी थी जिसके साथ वह आमतौर पर चलता था - वह आभा जो कहती प्रतीत होती थी, 'मुझे पता है, आप सभी मेरा आदर और आराधना करते हैं; लेकिन अगर कोई ऐसा नहीं करता है, तो मैं उसे चुनौती देता हूँ!' लेकिन सबसे उल्लेखनीय बदलाव यह था कि उसने एक बार भी अपनी नज़रें मिस्टर मरे की सीट की ओर नहीं जाने दीं, और जब तक हम चले नहीं गए, तब तक वह चर्च से बाहर नहीं निकला।

श्री हैटफील्ड को निस्संदेह बहुत गहरा आघात लगा था; लेकिन उनके स्वाभिमान ने उन्हें इसके प्रभाव को छिपाने के लिए हर संभव प्रयास करने को मजबूर किया। उन्हें न केवल एक सुंदर और उनके लिए बेहद आकर्षक पत्नी पाने की, बल्कि ऐसी पत्नी पाने की भी पक्की उम्मीद थी, जिसकी पदवी और धन-दौलत कमतर आकर्षणों को भी चमका सकती थी। वे अपने इस तिरस्कार से भी बेहद आहत थे और मिस मरे के पूरे व्यवहार से बहुत दुखी थे। यह जानकर उन्हें काफी तसल्ली मिलती कि उन्हें इतना शांत देखकर और दोनों समारोहों के दौरान उनकी ओर एक भी नज़र न डालने से रोककर मिस मरे कितनी निराश हुई होंगी; हालाँकि, उन्होंने कहा कि इससे पता चलता है कि वे हर समय उनके बारे में सोच रहे थे, वरना अगर संयोग से भी होता तो उनकी नज़र उन पर पड़ ही जाती: लेकिन अगर संयोग से भी पड़ी होती, तो वे कहतीं कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वे आकर्षण का विरोध नहीं कर सकीं। उसे शायद कुछ हद तक यह देखकर भी खुशी हुई होगी कि उस पूरे सप्ताह (कम से कम उसके अधिकांश भाग में) वह कितनी उदास और असंतुष्ट थी, क्योंकि उसे हमेशा की तरह उत्साह का स्रोत नहीं मिल रहा था; और वह कितनी बार इस बात पर पछता रही थी कि उसने उसे इतनी जल्दी इस्तेमाल कर लिया, ठीक वैसे ही जैसे कोई बच्चा अपना प्लमकेक जल्दी से खाकर अपनी उंगलियां चूसता है और व्यर्थ ही अपने लालच पर पछताता है।

अंततः एक सुहावनी सुबह मुझे उसके साथ गाँव की सैर पर जाने का बुलावा आया। ज़ाहिर तौर पर वह आस-पास की महिलाओं द्वारा संचालित एक ठीक-ठाक

दुकान से बर्लिन ऊन के कुछ शेड्स खरीदने गई थी: वास्तव में - मुझे विश्वास है कि यह मानना कोई अनुचित बात नहीं होगी कि वह या तो स्वयं रेक्टर से, या रास्ते में किसी अन्य प्रशंसक से मिलने के इरादे से गई थी; क्योंकि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, वह सोचती रही कि 'अगर हम हैटफील्ड से मिले तो वह क्या करेगा या क्या कहेगा,' इत्यादि; जब हम मिस्टर ग्रीन के पार्क के गेट के पास से गुज़रे, तो वह सोचने लगी कि 'क्या वह घर पर है - बड़ा बेवकूफ'; जब लेडी मेलथम की गाड़ी हमारे पास से गुज़री, तो वह सोचने लगी कि 'मिस्टर हैरी इस सुहावने दिन क्या कर रहे होंगे'; और फिर उसके बड़े भाई को 'शादी करके लंदन जाकर रहने की मूर्खता' के लिए कोसने लगी।

मैंने कहा, 'क्यों? मुझे लगा था कि आप खुद लंदन में रहना चाहते हैं।'

'हां, क्योंकि यहां बहुत नीरसता है: लेकिन फिर वह खुद को वहां से हटाकर इसे और भी नीरस बना देता है: और अगर वह शादीशुदा न होता तो मैं उस घृणित सर थॉमस की जगह उसे चुन लेती।'

फिर, कुछ कीचड़ भरी सड़क पर घोड़े के पैरों के निशान देखकर, वह सोचने लगी कि क्या यह किसी सज्जन का घोड़ा था, और अंत में उसने निष्कर्ष निकाला कि यह उसी का घोड़ा था, क्योंकि निशान इतने छोटे थे कि किसी भारी-भरकम गाड़ी खींचने वाले घोड़े के नहीं हो सकते थे; फिर वह सोचने लगी कि सवार कौन हो सकता है, और क्या हमें वह वापस आते हुए मिलेगा, क्योंकि उसे यकीन था कि वह उसी सुबह यहाँ से गुजरा था; और अंत में, जब हम गाँव में दाखिल हुए और वहाँ के कुछ ही साधारण निवासियों को घूमते-फिरते देखा, तो वह सोचने लगी कि ये मूर्ख लोग अपने घरों में क्यों नहीं रह सकते; उसे यकीन था कि वह उनके बदसूरत चेहरे और गंदे, भद्दे कपड़े नहीं देखना चाहती थी - वह हॉर्टन इसलिए तो नहीं आई थी!

इन सबके बीच, मैं स्वीकार करता हूँ, मेरे मन में भी यह सवाल उठा कि क्या हमारी मुलाकात होगी या हमें कोई और दिख जाएगा; और जब हम उसके कमरे के पास से गुज़रे, तो मुझे यह भी लगा कि कहीं वह खिड़की पर तो नहीं है। दुकान में प्रवेश करते ही, मिस मरे ने मुझसे कहा कि जब तक वह अपना काम निपटा रही हैं, मैं दरवाज़े पर खड़ा रहूँ और अगर कोई आए तो उन्हें बताऊँ। लेकिन अफ़सोस! गाँव वालों के अलावा कोई नज़र नहीं आया, सिवाय जेन और सुसान ग्रीन के जो उस एक गली से नीचे आ रही थीं, शायद टहलने के बाद लौट रही थीं।

सौदा पूरा करने के बाद बाहर आते हुए उसने बुदबुदाते हुए कहा, 'बेवकूफी भरी बातें! वे अपने उस मूर्ख भाई को अपने साथ क्यों नहीं रख सकते थे? वह भी कुछ न होने से तो बेहतर ही होता।'

उन्होंने मुस्कुराते हुए उनका अभिवादन किया और उनकी तरह ही इस सुखद मुलाकात पर अपनी खुशी जाहिर की। वे तीनों उनके दोनों ओर बैठ गईं और बातें करती-करती, हंसती-हंसती चली गईं, जैसा कि युवतियां अक्सर मिलती-जुलती हैं, खासकर जब उनके बीच थोड़ी बहुत घनिष्ठता हो। लेकिन मैं, खुद को ज़रूरत से ज़्यादा समझते हुए, उन्हें उनकी मस्ती में अकेला छोड़कर पीछे रह गया, जैसा कि ऐसे मौकों पर हमेशा होता है: मुझे मिस ग्रीन या मिस सुसान के बगल में एक बहरे-गूंगा व्यक्ति की तरह चलना अच्छा नहीं लग रहा था, जो न बोल सकता था और न ही उससे बात की जा सकती थी।

लेकिन इस बार मैं ज़्यादा देर तक अकेला नहीं रहा। पहले तो मुझे यह बहुत अजीब लगा कि जब मैं मिस्टर वेस्टन के बारे में सोच रहा था, तभी वे आकर मुझसे बात करने लगे; लेकिन बाद में, थोड़ा सोच-विचार करने पर, मुझे लगा कि इसमें कुछ भी अजीब नहीं था, सिवाय इसके कि वे मुझसे बात कर रहे थे; क्योंकि ऐसी सुबह और उनके घर के इतने पास, उनका यहाँ होना स्वाभाविक ही था; और जहाँ तक उनके बारे में सोचने की बात है, तो मैं अपनी यात्रा शुरू करने के बाद से लगातार उनके बारे में सोच रहा था; इसलिए इसमें कुछ भी खास नहीं था।

‘आप फिर से अकेली हैं, मिस ग्रे,’ उसने कहा।

'हाँ।'

‘ये महिलाएं किस तरह की हैं – मिस ग्रीन?’

मुझे सच में नहीं पता।

‘यह तो अजीब बात है – जब आप इतने पास रहते हैं और उन्हें इतनी बार देखते हैं!’

'खैर, मुझे लगता है कि वे हंसमुख और अच्छे स्वभाव वाली लड़कियां हैं; लेकिन मुझे लगता है कि आप उन्हें मुझसे बेहतर जानते होंगे, क्योंकि मैंने उनमें से किसी से भी कभी बात नहीं की।'

'सचमुच? वे मुझे विशेष रूप से संकोची नहीं लगते।'

'संभवतः वे अपने ही वर्ग के लोगों के लिए ऐसे नहीं हैं; लेकिन वे खुद को मुझसे

बिल्कुल अलग क्षेत्र में काम करने वाला मानते हैं!'

उन्होंने इसका कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन थोड़ी देर रुकने के बाद उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि यही वो बातें हैं, मिस ग्रे, जिनकी वजह से आपको लगता है कि आप बिना घर के नहीं रह सकतीं?"

'बिल्कुल नहीं। असल बात तो यह है कि मैं सामाजिक स्वभाव का होने के कारण बिना दोस्त के संतुष्ट नहीं रह सकता; और चूंकि मेरे जितने भी दोस्त हैं, या होने की संभावना है, वे सब घर पर ही हैं, अगर वे चले गए तो मैं यह तो नहीं कहूंगा कि मैं जी नहीं सकता - लेकिन मैं ऐसे उजाड़ संसार में जीना पसंद नहीं करूंगा।'

लेकिन आप ऐसा क्यों कहते हैं कि आपके केवल वही दोस्त होंगे जो आपके होने की संभावना है? क्या आप इतने असामाजिक हैं कि आप दोस्त नहीं बना सकते?

नहीं, लेकिन मैंने अभी तक किसी से जान-पहचान नहीं बनाई है; और मेरी वर्तमान स्थिति में ऐसा करने या किसी से सामान्य जान-पहचान बनाने की भी कोई संभावना नहीं है। गलती शायद कुछ हद तक मेरी ही हो, लेकिन मुझे उम्मीद है कि पूरी तरह से नहीं।

‘दोष कुछ हद तक समाज का है, और कुछ हद तक, मेरे विचार से, आपके आस-पड़ोस का: और कुछ हद तक आपका भी; क्योंकि आपकी स्थिति में कई महिलाएं खुद को ध्यान आकर्षित करने और महत्व पाने की कोशिश करती हैं। लेकिन आपके विद्यार्थी किसी न किसी रूप में आपके साथी होने चाहिए; वे आपसे कुछ ही साल छोटे हो सकते हैं।’

'हाँ, कभी-कभी वे अच्छी संगत देते हैं; लेकिन मैं उन्हें दोस्त नहीं कह सकता, और न ही वे मुझे ऐसा नाम देने के बारे में सोचेंगे - उनके पास अन्य साथी हैं जो उनकी पसंद के लिए अधिक उपयुक्त हैं।'

'शायद आप उनसे कहीं ज्यादा समझदार हैं। अकेले में आप अपना मनोरंजन कैसे करते हैं—क्या आप बहुत पढ़ते हैं?'

'पढ़ना मेरा पसंदीदा शौक है, जब मेरे पास इसके लिए फुर्सत होती है और पढ़ने के लिए किताबें होती हैं।'

सामान्य तौर पर किताबों की बात करते-करते वे विशेष रूप से अलग-अलग किताबों पर आ गए और तेज़ी से एक विषय से दूसरे विषय पर जाते रहे, यहाँ तक कि आधे घंटे के भीतर ही रुचि और राय से जुड़े कई मामलों पर विस्तार से चर्चा हो चुकी

थी, लेकिन उन्होंने अपनी ओर से कोई विशेष टिप्पणी नहीं की; ऐसा प्रतीत होता था कि वे अपने विचारों और पसंदों को व्यक्त करने के बजाय मेरे विचारों और पसंदों को जानने में अधिक रुचि रखते थे। उनमें इतनी कुशलता या हुनर नहीं था कि वे अपने विचारों या भावनाओं को अप्रत्यक्ष या स्पष्ट रूप से व्यक्त करके या बातचीत को धीरे-धीरे उन विषयों की ओर ले जाकर, जिन पर वे चर्चा करना चाहते थे, ऐसा कर सकें: लेकिन उनकी यह सहजता और स्पष्टवादिता मुझे किसी भी तरह से नाराज़ नहीं कर सकती थी।

'और उसे मेरी नैतिक और बौद्धिक क्षमताओं में दिलचस्पी क्यों होनी चाहिए: मेरे विचार या भावनाएँ उसके लिए क्या मायने रखती हैं?' मैंने खुद से पूछा। और इस सवाल के जवाब में मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

लेकिन जेन और सुसान ग्रीन जल्द ही अपने घर पहुँच गईं। जब वे पार्क के गेट पर खड़ी होकर मिस मरे को अंदर आने के लिए मनाने की कोशिश कर रही थीं, तो मेरी इच्छा हुई कि मिस्टर वेस्टन चले जाएँ, ताकि जब वह मुड़कर देखें तो उन्हें मेरे साथ न देखें; लेकिन, दुर्भाग्य से, उनका काम, जो बेचारे मार्क वुड से एक और बार मिलना था, उन्हें हमारे साथ उसी रास्ते पर चलने के लिए मजबूर कर रहा था, जब तक कि हमारी यात्रा लगभग समाप्त नहीं हो गई। हालाँकि, जब उन्होंने देखा कि रोज़ाली अपने दोस्तों से विदा ले चुकी है और मैं उसके पास पहुँचने ही वाला हूँ, तो वह मुझे छोड़कर तेज़ी से आगे बढ़ जाते; लेकिन, जब उन्होंने विनम्रता से टोपी उतारकर रोज़ाली के पास से गुज़रे, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि अभिवादन का जवाब अभद्र और असभ्य तरीके से देने के बजाय, रोज़ाली ने अपनी सबसे प्यारी मुस्कान के साथ उनका अभिवादन किया, और उनके साथ चलते हुए, पूरी प्रसन्नता और सौहार्द के साथ उनसे बातें करने लगीं; और इस तरह हम तीनों एक साथ आगे बढ़े।

बातचीत में थोड़ी देर रुकने के बाद, श्री वेस्टन ने मुझसे विशेष रूप से कुछ कहा, जो हमारी पहले हुई बातचीत से संबंधित था; लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ उत्तर दे पाता, मिस मरे ने उनकी बात का जवाब देते हुए उसे और विस्तार से समझाया: उन्होंने भी अपनी बात दोहराई; और तब से लेकर बातचीत के अंत तक, उन्होंने श्री वेस्टन को पूरी तरह से अपने में मग्न कर लिया। शायद यह कुछ हद तक मेरी अपनी मूर्खता, सूझबूझ और आत्मविश्वास की कमी के कारण था: लेकिन मुझे लगा जैसे मेरे साथ अन्याय हुआ है: मैं भय से कांप रहा था; और मैं ईर्ष्या से उनकी सहज, तीव्र

वाणी को सुन रहा था, और चिंता से उस उज्ज्वल मुस्कान को देख रहा था जिससे वह समय-समय पर श्री वेस्टन के चेहरे की ओर देखती थीं: क्योंकि वह थोड़ा आगे चल रही थीं, ताकि (जैसा कि मैंने अनुमान लगाया) उन्हें सुना जाने के साथ-साथ देखा भी जा सके। यदि उनकी बातचीत हल्की-फुल्की और सामान्य होती, तो वह मनोरंजक होती, और उनके पास कहने के लिए हमेशा कुछ न कुछ होता था, या उसे व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिलते थे। अब उनके व्यवहार में कोई चंचलता या लापरवाही नहीं थी, जैसा कि मिस्टर हैटफील्ड के साथ चलते समय होता था; केवल एक सौम्य, चंचल प्रकार की जीवंतता थी, जो मुझे लगता है कि मिस्टर वेस्टन के स्वभाव और मिजाज के व्यक्ति को विशेष रूप से प्रसन्न करती होगी।

जब वह चला गया तो वह हंसने लगी और मन ही मन बुदबुदाई, 'मुझे लगा था कि मैं यह कर सकती हूँ!'

मैंने पूछा, ‘क्या करें?’

‘उस आदमी को ठीक करो।’

‘तुम्हारा मतलब क्या है?’

‘मेरा मतलब है कि वह घर जाकर मेरे सपने देखेगा। मैंने उसे दिल में गोली मारी है!’

'आपको कैसे मालूम?'

कई अचूक प्रमाणों से: विशेष रूप से जब वह जाने लगा तो उसने मुझे जो नज़र से देखा। वह कोई धृष्टता भरी नज़र नहीं थी - मैं उसे इससे बरी करता हूँ - वह श्रद्धापूर्ण, कोमल स्नेह भरी नज़र थी। हा हा! वह उतना मूर्ख नहीं है जितना मैंने सोचा था!

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, या कुछ ऐसा ही, और मैं बोलने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी। ‘हे भगवान, इसे रोक दो!’ मैंने मन ही मन पुकारा — ‘उसके लिए, मेरे लिए नहीं!’

पार्क से गुजरते समय मिस मरे ने कई मामूली टिप्पणियाँ कीं, जिनका (अपनी भावनाओं को ज़ाहिर न होने देने की अनिच्छा के बावजूद) मैं केवल एक-एक शब्द में ही जवाब दे सका। उनका इरादा मुझे परेशान करना था या केवल अपना मनोरंजन करना, यह मैं नहीं कह सकता था - और मुझे इसकी परवाह भी नहीं थी; लेकिन मैंने उस गरीब आदमी और उसके इकलौते मेमने, और उस अमीर आदमी के बारे में सोचा जिसके पास हज़ारों भेड़ें थीं; और मुझे डर था कि मिस्टर वेस्टन के साथ क्या होगा,

मेरी अपनी टूटी हुई उम्मीदों से अलग।

घर में पहुँचकर और अपने कमरे में फिर से अकेले पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरा पहला मन हुआ कि मैं पलंग के बगल वाली कुर्सी पर बैठ जाऊँ; और तकिये पर सिर रखकर फूट-फूटकर रोने लगूँ: ऐसी इच्छा बहुत प्रबल थी; लेकिन अफसोस! मुझे अपने भावों को रोकना और दबाना पड़ा: घंटी बज गई - स्कूल के खाने की वो अप्रिय घंटी; और मुझे शांत चेहरे के साथ नीचे जाना था, मुस्कुराना था, हँसना था, बेतुकी बातें करनी थीं - हाँ, अगर हो सके तो खाना भी खाना था, मानो सब ठीक हो और मैं अभी-अभी एक सुखद सैर से लौटी हूँ।

अध्याय सोलह — प्रतिस्थापन

अगला रविवार अप्रैल के सबसे उदास दिनों में से एक था—घने, काले बादलों और भारी बारिश का दिन। रोज़ाली को छोड़कर मुर्रे परिवार में से कोई भी दोपहर में चर्च जाने के लिए तैयार नहीं था: वह हमेशा की तरह जाने पर अड़ी हुई थी; इसलिए उसने गाड़ी का इंतज़ाम किया और मैं उसके साथ चला गया: मुझे ज़रा भी संकोच नहीं था, क्योंकि चर्च में मैं बिना किसी तिरस्कार या निंदा के उस रूप और चेहरे को देख सकता था जो मुझे ईश्वर की सबसे सुंदर रचनाओं से भी अधिक प्रिय था; मैं बिना किसी बाधा के उस आवाज़ को सुन सकता था जो मेरे कानों को सबसे मधुर संगीत से भी अधिक सुकून देती थी; मैं उस आत्मा के साथ संवाद स्थापित कर सकता था जिसमें मेरी गहरी रुचि थी, और उसके शुद्धतम विचारों और पवित्रतम आकांक्षाओं को आत्मसात कर सकता था, इस आनंद में मेरे अंतरात्मा की गुप्त आपत्तियों के अलावा कोई मिलावट नहीं थी, जो अक्सर फुसफुसाती थी कि मैं खुद को धोखा दे रहा हूँ, और सृष्टिकर्ता से अधिक सृष्टि पर केंद्रित हृदय से ईश्वर की सेवा करके उसका उपहास कर रहा हूँ।

कभी-कभी ऐसे विचार मुझे काफी परेशान कर देते थे; लेकिन कभी-कभी मैं यह सोचकर उन्हें शांत कर लेता था कि मुझे उस व्यक्ति से नहीं, बल्कि उसकी अच्छाई से प्रेम है। 'जो कुछ भी पवित्र है, जो कुछ भी प्यारा है, जो कुछ भी ईमानदार और प्रशंसनीय है, उन पर ध्यान करो।' ईश्वर की आराधना उनके कार्यों में करना उचित है; और मैं उनके किसी भी कार्य को नहीं जानता जिसमें उनके इतने गुण - उनकी आत्मा की इतनी झलक हो, जितनी उनके इस निष्ठावान सेवक में; जिसे जानना और उसकी सराहना न करना मेरे लिए घोर संवेदनहीनता होगी, क्योंकि मेरे मन में और कुछ करने को नहीं है।

प्रार्थना सभा समाप्त होते ही मिस मरे चर्च से चली गईं। बारिश हो रही थी और गाड़ी अभी तक नहीं आई थी, इसलिए हमें बरामदे में खड़ा रहना पड़ा। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह इतनी जल्दी क्यों चली गईं, क्योंकि न तो युवा मेलथम और न ही स्क्वाइर ग्रीन वहाँ थे; लेकिन मुझे जल्द ही पता चल गया कि वह मिस्टर वेस्टन से मिलने के लिए आई थीं, जो थोड़ी देर बाद बाहर आ गए। हम दोनों को नमस्कार करके वह आगे बढ़ने ही वाले थे, लेकिन उन्होंने उन्हें रोक लिया; पहले तो उन्होंने खराब मौसम के बारे में बताया और फिर पूछा कि क्या वह कल किसी समय चौकीदार के कमरे की रखवाली करने वाली बूढ़ी औरत की पोती से मिलने आ सकते हैं, क्योंकि लड़की को बुखार था और वह उनसे मिलना चाहती थी। उन्होंने आने का वादा किया।

“और श्रीमान वेस्टन, आपके आने की सबसे अधिक संभावना किस समय है? बुढ़िया को यह जानना अच्छा लगेगा कि आप कब आएंगे—आप जानते हैं कि ऐसे लोग भले लोगों के आने पर अपनी झोपड़ियों को व्यवस्थित रखने के बारे में हमारी सोच से कहीं अधिक सोचते हैं।”

यह बेपरवाह मिस मरे की ओर से एक अद्भुत विचारशीलता का उदाहरण था। श्री वेस्टन ने सुबह का एक समय तय किया, जिस समय वे वहाँ पहुँचने का प्रयास करेंगे। तब तक गाड़ी तैयार थी और नौकर छाता लिए मिस मरे को गिरजाघर के प्रांगण से ले जाने के लिए इंतज़ार कर रहा था। मैं भी उनके पीछे जाने ही वाला था; लेकिन श्री वेस्टन के पास भी छाता था और उन्होंने मुझे भी उसकी छाया में खड़े होने का प्रस्ताव दिया, क्योंकि ज़ोरदार बारिश हो रही थी।

‘नहीं, धन्यवाद, मुझे बारिश से कोई आपत्ति नहीं है,’ मैंने कहा। अचानक किसी

स्थिति में फंसने पर मैं हमेशा ही अक्ल खो बैठता था।

‘लेकिन मुझे लगता है कि आपको यह पसंद नहीं है? – कम से कम छाते से तो कोई नुकसान नहीं होगा,’ उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, जिससे पता चलता था कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी; जबकि कम समझदार या चिड़चिड़े स्वभाव का व्यक्ति उनकी मदद से इनकार करने पर नाराज़ हो जाता। मैं उनकी बात की सच्चाई से इनकार नहीं कर सका, और इसलिए उनके साथ गाड़ी तक गया; गाड़ी में बैठते समय उन्होंने मुझे अपना हाथ भी बढ़ाया: यह एक अनावश्यक शिष्टाचार था, लेकिन मैंने उसे भी स्वीकार कर लिया, कहीं उन्हें बुरा न लग जाए। विदाई के समय उन्होंने एक नज़र डाली, एक हल्की सी मुस्कान दी – यह बस एक पल के लिए था; लेकिन उसमें मैंने एक ऐसा अर्थ पढ़ा, या मुझे लगा कि मैंने पढ़ा, जिसने मेरे दिल में आशा की एक ऐसी लौ जला दी जो पहले कभी नहीं जली थी।

'अगर आप एक पल रुक जातीं, तो मैं नौकर को आपके लिए वापस भेज देती, मिस ग्रे - आपको मिस्टर वेस्टन का छाता लेने की ज़रूरत नहीं थी,' रोज़ाली ने अपने सुंदर चेहरे पर एक बहुत ही अप्रिय उदासी के साथ कहा।

मैंने शांत भाव से मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, 'मैं बिना छाते के ही आ जाता, लेकिन श्री वेस्टन ने मुझे अपना छाता देने की पेशकश की, और मैं उन्हें नाराज़ किए बिना इससे ज़्यादा मना नहीं कर सकता था।' मेरी आंतरिक खुशी ने उस बात को मनोरंजक बना दिया, जो किसी और समय मुझे दुख पहुँचा सकती थी।

गाड़ी अब चलने लगी थी। मिस मरे आगे झुकीं और खिड़की से बाहर देखने लगीं, जब हम मिस्टर वेस्टन के पास से गुज़र रहे थे। वे पुलिया पर घर की ओर टहल रहे थे और उन्होंने अपना सिर नहीं घुमाया।

‘बेवकूफ!’ वह चिल्लाई और सीट पर पीछे की ओर झुक गई। ‘तुम्हें पता नहीं है कि इस तरफ न देखकर तुमने क्या खो दिया है!’

उसने क्या खोया है?

'मेरे एक प्रणाम से ही वह सातवें आसमान पर पहुंच जाता!'

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने देखा कि उसका मूड खराब था, और मुझे इस बात से एक अजीब सी संतुष्टि मिली कि वह नाराज़ नहीं थी, बल्कि उसे नाराज़ होने का कारण सूझ रहा था। इससे मुझे लगा कि मेरी उम्मीदें पूरी तरह से मेरी इच्छाओं और कल्पनाओं की उपज नहीं थीं।

कुछ देर रुकने के बाद, मेरी सहेली ने अपनी हमेशा वाली खुशी में लौटते हुए कहा, 'मैं मिस्टर हैटफील्ड की जगह मिस्टर वेस्टन से शादी करने का सोच रही हूँ। तुम्हें पता है, एशबी पार्क में मंगलवार को बॉल पार्टी है; और माँ को लगता है कि सर थॉमस उसी दिन मुझे शादी का प्रस्ताव देंगे: ऐसी बातें अक्सर बॉल रूम की चारदीवारी में ही होती हैं, जब सज्जन सबसे आसानी से फँस जाते हैं और महिलाएँ सबसे आकर्षक लगती हैं। लेकिन अगर मेरी शादी इतनी जल्दी होनी है, तो मुझे इस समय का पूरा फायदा उठाना होगा: मैंने ठान लिया है कि हैटफील्ड ही एकमात्र ऐसा आदमी नहीं होगा जो मुझ पर अपना दिल लुटाएगा और मुझसे इस बेकार से तोहफे को व्यर्थ में स्वीकार करने की विनती करेगा।'

मैंने बनावटी उदासीनता से कहा, 'यदि आप श्री वेस्टन को अपने पीड़ितों में से एक बनाना चाहते हैं, तो आपको स्वयं ऐसी पहल करनी होगी कि जब वह आपसे अपनी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए कहें, तो आपके लिए पीछे हटना मुश्किल हो जाए।'

मुझे नहीं लगता कि वह मुझसे शादी का प्रस्ताव रखेगा, और न ही मैं ऐसा चाहूँगी: यह तो कुछ ज़्यादा ही गुस्ताखी होगी! लेकिन मैं चाहती हूँ कि वह मेरी शक्ति का अनुभव करे। वास्तव में, वह इसका अनुभव पहले ही कर चुका है: लेकिन वह इसे स्वीकार भी करेगा; और उसकी जो भी काल्पनिक आशाएँ हों, उसे अपने तक ही सीमित रखना चाहिए, और केवल कुछ समय के लिए मुझे उनके परिणामों से अवगत कराते रहना चाहिए।

‘काश, कोई दयालु आत्मा ये शब्द उसके कान में फुसफुसा दे,’ मैंने मन ही मन कहा। मैं इतनी नाराज़ थी कि उसकी बात का ज़ोर से जवाब देने की हिम्मत ही नहीं हुई; और उस दिन मिस्टर वेस्टन के बारे में न तो मैंने कुछ कहा और न ही किसी ने सुना। लेकिन अगली सुबह, नाश्ते के तुरंत बाद, मिस मरे स्कूल के कमरे में आईं, जहाँ उनकी बहन पढ़ाई कर रही थीं, या यूँ कहें कि पाठ पढ़ रही थीं, क्योंकि पढ़ाई तो पढ़ाई नहीं थी, और बोलीं, ‘मटिल्डा, मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे साथ लगभग ग्यारह बजे टहलने चलो।’

'ओह, मैं नहीं जा सकती, रोज़ाली! मुझे अपनी नई लगाम और काठी के कपड़े के बारे में आदेश देने हैं, और चूहे पकड़ने वाले से उसके कुत्तों के बारे में बात करनी है: मिस ग्रे को तुम्हारे साथ जाना होगा।'

'नहीं, मुझे तुम चाहिए,' रोज़ाली ने कहा; और अपनी बहन को खिड़की के पास

बुलाकर, उसने उसके कान में धीरे से कुछ समझाया; जिस पर बादवाली जाने के लिए राजी हो गई।

मुझे याद आया कि श्री वेस्टन ने चौकीदार के लॉज में ग्यारह बजे आने का प्रस्ताव रखा था; और यह याद करके मैंने पूरी योजना पर गौर किया। तदनुसार, भोजन के समय, मुझे यह विस्तृत विवरण सुनने को मिला कि कैसे श्री वेस्टन ने सड़क पर चलते समय उन्हें रोक लिया था; और कैसे उन्होंने उनके साथ लंबी सैर और बातचीत की थी, और वास्तव में उन्हें एक बहुत ही सुखद साथी पाया था; और कैसे वे उनसे और उनके अद्भुत विनम्र व्यवहार से प्रसन्न हुए होंगे, और स्पष्ट रूप से हुए भी थे, इत्यादि।

अध्याय सत्रह — स्वीकारोक्तियाँ

चूंकि मैं अपनी गलतियों को स्वीकार कर ही रही हूँ, तो यह भी मान लेती हूँ कि उस समय के आसपास मैंने अपने पहनावे पर पहले से कहीं अधिक ध्यान देना शुरू कर दिया था। यह कोई बड़ी बात नहीं है—क्योंकि अब तक मैं इस मामले में थोड़ी लापरवाह ही रही थी; लेकिन अब तो शीशे में अपनी छवि को निहारने में दो मिनट तक बिताना भी आम बात हो गई थी; हालाँकि ऐसे निहारने से मुझे कभी कोई सुकून नहीं मिला। मुझे उन विशिष्ट नैन-नक्शों, उस पीले पिचके गालों और साधारण गहरे भूरे बालों में कोई सुंदरता नहीं दिखती थी; हो सकता है माथे में बुद्धिमत्ता हो, हो सकता है गहरी धूसर आँखों में भाव हों, लेकिन उससे क्या?—एक नीचा यूनानी माथा और भावहीन बड़ी काली आँखें कहीं अधिक सुंदर लगतीं। सुंदरता की कामना करना मूर्खता है। समझदार लोग न तो स्वयं के लिए सुंदरता चाहते हैं और न ही दूसरों में इसकी परवाह करते हैं। यदि मन सुसंस्कृत हो और हृदय प्रसन्न हो, तो कोई भी बाहरी दिखावे की परवाह नहीं करता। यही बात हमारे बचपन के शिक्षकों ने कही थी; और यही बात हम आज के बच्चों से कहते हैं। ये सब बातें निस्संदेह बहुत विवेकपूर्ण और

उचित हैं; लेकिन क्या ऐसे दावे वास्तविक अनुभव से समर्थित हैं?

हम स्वभाव से ही उन चीजों से प्रेम करते हैं जो हमें आनंद देती हैं, और एक सुंदर चेहरे से बढ़कर और क्या मनभावन हो सकता है—जब कम से कम हमें उसके स्वामी के बारे में कोई हानि न पता हो? एक छोटी बच्ची अपने पक्षी से प्रेम करती है—क्यों? क्योंकि वह जीवित है और महसूस करती है; क्योंकि वह असहाय और हानिरहित है? इसी प्रकार, एक मेंढक भी जीवित है और महसूस करता है, और उतना ही असहाय और हानिरहित है; लेकिन यद्यपि वह मेंढक को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहेगी, फिर भी वह उसे पक्षी की तरह प्रेम नहीं कर सकती, उसके सुंदर रूप, कोमल पंखों और चमकीली, बोलती आँखों के कारण। यदि कोई स्त्री सुंदर और मनमोहक है, तो अधिकांश लोग उसके इन दोनों गुणों की प्रशंसा करते हैं, विशेषकर पहले गुण की: दूसरी ओर, यदि वह दिखने में और स्वभाव में अप्रिय है, तो उसकी सादगी को आमतौर पर उसका सबसे बड़ा अपराध माना जाता है, क्योंकि आम लोगों के लिए यह सबसे बड़ा अपराध है; जबकि, यदि वह सरल और अच्छी है, बशर्ते वह एकांतप्रिय और एकांत जीवन जीने वाली हो, तो उसके करीबी लोगों के अलावा कोई भी उसकी अच्छाई के बारे में नहीं जानता। दूसरी ओर, कुछ लोग उसके मन और स्वभाव के बारे में नकारात्मक राय बना लेते हैं, केवल इसलिए कि वे प्रकृति द्वारा कम आकर्षक दिखने वाले व्यक्ति के प्रति अपनी सहज नापसंदगी को सही ठहरा सकें; और ठीक इसके विपरीत, उस महिला के बारे में भी जिसकी देवदूत जैसी सूरत एक दुष्ट हृदय को छुपाती है, या जो उन दोषों और कमजोरियों पर झूठा, कपटपूर्ण आकर्षण डालती है जिन्हें किसी और में बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। जिनके पास सुंदरता है, उन्हें इसके लिए आभारी होना चाहिए और अन्य प्रतिभाओं की तरह इसका सदुपयोग करना चाहिए; जिनके पास यह नहीं है, उन्हें खुद को सांत्वना देनी चाहिए और इसके बिना जितना हो सके उतना अच्छा करना चाहिए: निश्चित रूप से, हालांकि इसे बढ़ा-चढ़ाकर बताया जा सकता है, यह ईश्वर का उपहार है और इसे तुच्छ नहीं समझा जाना चाहिए। बहुत से लोग इसे महसूस करेंगे जिन्होंने प्रेम करने की क्षमता का अनुभव किया है, और जिनके दिल कहते हैं कि वे फिर से प्रेम पाने के योग्य हैं; फिर भी वे इस या इसी तरह की किसी छोटी सी बात की कमी के कारण उस खुशी को देने और प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं जिसे वे महसूस करने और देने के लिए लगभग बने हुए प्रतीत होते हैं। जैसे एक साधारण जुगनू उस प्रकाश देने वाली शक्ति को तुच्छ समझ सकता

है, जिसके बिना मक्खी उसे हजारों बार पार कर सकती है, और कभी उसके पास नहीं ठहर सकती: वह अपने पंख वाले प्रियतम को अपने ऊपर और आसपास भिनभिनाते हुए सुन सकती है; वह व्यर्थ ही उसे खोजता है, वह भी उसके मिलने की लालसा रखती है, लेकिन अपनी उपस्थिति का आभास कराने की शक्ति के बिना, उसे पुकारने की आवाज के बिना, उसकी उड़ान का पीछा करने के लिए पंखों के बिना; मक्खी को दूसरा साथी खोजना होगा, और जुगनू को अकेले ही जीना और मरना होगा।

इस दौर के बारे में मेरे कुछ विचार ऐसे ही थे। मैं और भी बहुत कुछ लिख सकता था, और भी गहराई में जा सकता था, और भी विचार प्रकट कर सकता था, ऐसे प्रश्न उठा सकता था जिनका उत्तर देने में पाठक को कठिनाई हो सकती थी, और ऐसे तर्क प्रस्तुत कर सकता था जो उसके पूर्वाग्रहों को झकझोर सकते थे, या शायद उसे उपहास का पात्र बना सकते थे, क्योंकि वह उन्हें समझ नहीं पाता; लेकिन मैं ऐसा नहीं करता।

तो चलिए, अब मिस मरे की बात करते हैं। मंगलवार को वो अपनी माँ के साथ बॉल पार्टी में गई थीं; ज़ाहिर है, शानदार पोशाक में, और अपने भविष्य और आकर्षण से बेहद खुश थीं। चूंकि एशबी पार्क हॉर्टन लॉज से लगभग दस मील दूर था, इसलिए उन्हें काफी जल्दी निकलना पड़ा, और मेरा इरादा नैन्सी ब्राउन के साथ शाम बिताने का था, जिनसे मैं लंबे समय से नहीं मिली थी; लेकिन मेरी प्यारी छात्रा ने मुझे एक संगीत का टुकड़ा दिया जिसे मुझे कॉपी करना था, और इस तरह मैं सोने के समय तक व्यस्त रही, और इस तरह उसने मुझे यह सुनिश्चित किया कि मैं न तो वहाँ जाऊँ और न ही स्कूल के कमरे की सीमा से बाहर कहीं और जाऊँ। अगली सुबह लगभग ग्यारह बजे, जैसे ही वो अपने कमरे से निकलीं, उन्होंने मुझे अपनी खबर सुनाई। सर थॉमस ने सचमुच बॉल पार्टी में उन्हें शादी का प्रस्ताव दिया था; यह घटना उनकी माँ की दूरदर्शिता को दर्शाती है, भले ही उनकी योजना बनाने की कुशलता को नहीं। मेरा मानना है कि उन्होंने पहले अपनी योजना बनाई और फिर उसकी सफलता का अनुमान लगाया। प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया था, और होने वाला दूल्हा उसी दिन मिस्टर मरे के साथ मामले को सुलझाने के लिए आ रहा था।

रोसली एशबी पार्क की मालकिन बनने के विचार से प्रसन्न थी; विवाह समारोह और उससे जुड़ी भव्यता और धूमधाम, विदेश में हनीमून और उसके बाद लंदन और अन्य जगहों पर होने वाले आनंद के बारे में सोचकर वह बेहद खुश थी; फिलहाल तो

वह सर थॉमस से भी काफी संतुष्ट लग रही थी, क्योंकि उसने हाल ही में उनसे मुलाकात की थी, उनके साथ नृत्य किया था और उनकी प्रशंसा सुनी थी; लेकिन फिर भी, इतनी जल्दी शादी करने के विचार से वह घबरा रही थी: वह चाहती थी कि शादी कम से कम कुछ महीनों के लिए टल जाए; और मैं भी यही चाहती थी। इस अशुभ विवाह को जल्दबाजी में कराना और उस बेचारी को इस अटल कदम के बारे में सोचने और विचार करने का समय न देना मुझे बहुत बुरा लग रहा था। मैं 'एक माँ की सतर्क और चिंतित देखभाल' का दावा नहीं कर रही थी, लेकिन श्रीमती मरे की निर्दयता और अपने बच्चे की भलाई के प्रति उनकी असंवेदनशीलता देखकर मैं चकित और भयभीत थी; और मेरी अनसुनी चेतावनियों और आग्रहों के बावजूद, मैंने इस बुराई को दूर करने का व्यर्थ प्रयास किया। मिस मरे मेरी बातों पर केवल हँसती रहीं; और मुझे जल्द ही पता चल गया कि उनकी तत्काल शादी न करने की अनिच्छा का मुख्य कारण यह था कि वे अपने परिचित युवा सज्जनों के बीच जितना हो सके उतना फायदा उठाना चाहती थीं, इससे पहले कि वे इस तरह की और शरारतें करने में असमर्थ हो जाएँ। इसी कारण से, अपनी सगाई का रहस्य मुझे बताने से पहले, उन्होंने मुझसे वादा लिया था कि मैं इस विषय पर किसी से एक शब्द भी नहीं कहूँगा। और जब मैंने यह देखा, और जब मैंने उन्हें पहले से कहीं अधिक निर्दयी नखरेबाज़ी की गहराई में डूबते देखा, तो मुझे उन पर ज़रा भी दया नहीं आई। 'जो भी हो,' मैंने सोचा, 'वह इसकी हकदार है। सर थॉमस उनके लिए बहुत बुरे नहीं हो सकते; और जितनी जल्दी वह दूसरों को धोखा देने और नुकसान पहुँचाने में असमर्थ हो जाएँ, उतना ही अच्छा है।'

शादी 1 जून को तय हुई थी। उस दिन से लेकर अहम समारोह तक छह सप्ताह से कुछ अधिक का समय था; लेकिन रोज़ाली की निपुणता और दृढ़ निश्चय के चलते इतने समय में भी बहुत कुछ किया जा सकता था; खासकर इसलिए क्योंकि सर थॉमस ने इस बीच का अधिकांश समय लंदन में बिताया; कहा जाता है कि वे अपने वकील से बात करने और आगामी विवाह की अन्य तैयारियों के लिए वहाँ गए थे। उन्होंने लगातार प्रेम पत्र भेजकर अपनी अनुपस्थिति की भरपाई करने का प्रयास किया; लेकिन इन पत्रों से पड़ोसियों का ध्यान आकर्षित नहीं हुआ और न ही उनकी आँखें खुलीं, जैसा कि व्यक्तिगत मुलाकातों से होता; और वृद्ध लेडी एशबी के अभिमानी और संकोची स्वभाव ने उन्हें यह खबर फैलाने से रोक रखा था, जबकि उनकी खराब सेहत के कारण वे अपनी होने वाली बहू से मिलने नहीं आ सकीं; इस

प्रकार, कुल मिलाकर, यह मामला आम तौर पर होने वाली ऐसी चीजों की तुलना में कहीं अधिक गुप्त रखा गया।

रोज़ाली कभी-कभी मुझे अपने प्रेमी के पत्र दिखाती थी, ताकि मुझे यकीन दिला सके कि वह कितना दयालु और समर्पित पति बनेगा। उसने मुझे एक और व्यक्ति, बेचारे मिस्टर ग्रीन के पत्र भी दिखाए, जिनमें खुद अपनी बात रखने का साहस नहीं था, या जैसा कि उसने कहा, 'हिम्मत' नहीं थी, लेकिन एक इनकार से संतुष्ट नहीं हुए: उन्हें बार-बार लिखना ही था। अगर वह अपनी प्रेमिका के भावों को अपनी भावनाओं से भर देने वाली अपीलों पर उसके चेहरे के हाव-भाव देख पाते, उसकी तिरस्कारपूर्ण हंसी सुन पाते और उसके दृढ़ संकल्प के लिए उस पर बरसाए गए अपमानजनक शब्दों को सुन पाते, तो वह ऐसा नहीं करते।

मैंने पूछा, 'तुम उसे तुरंत क्यों नहीं बता देती कि तुम्हारी सगाई हो गई है?'

‘ओह, मैं नहीं चाहती कि उसे यह पता चले,’ उसने जवाब दिया। ‘अगर उसे पता चल गया, तो उसकी बहनों और सबको पता चल जाएगा, और फिर मेरा सब कुछ खत्म हो जाएगा—अहम! और, इसके अलावा, अगर मैंने उसे यह बताया, तो वह सोचेगा कि मेरी सगाई ही एकमात्र बाधा है, और अगर मैं आज़ाद होती तो मैं उससे संबंध बना लेती; जो मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती कि कोई भी आदमी सोचे, और वह, खासकर वह। इसके अलावा, मुझे उसके पत्रों की परवाह नहीं है,’ उसने तिरस्कारपूर्वक कहा; ‘वह जितनी बार चाहे लिख सकता है, और जब मैं उससे मिलती हूँ तो वह जितना चाहे बेवकूफ दिख सकता है; इससे मुझे बस मनोरंजन मिलता है।’

इस बीच, युवा मेलथम अक्सर घर आता-जाता रहता था; और मटिल्डा की शिकायतों और ताने-बाने से लगता था कि उसकी बहन शिष्टाचार से परे उस पर ध्यान देती थी; दूसरे शब्दों में, वह अपने माता-पिता की मौजूदगी में जितना संभव हो उतना खुलकर उससे इश्कबाज़ी करती थी। उसने मिस्टर हैटफील्ड को फिर से अपने वश में करने की कोशिश की; लेकिन असफल होने पर उसने उनकी घमंडी उदासीनता का जवाब और भी ऊँचे दर्जे के तिरस्कार से दिया, और उसके बारे में उतनी ही घृणा और तिरस्कार से बात की जितनी उसने पहले उसके सहायक के बारे में की थी। लेकिन, इन सबके बीच, उसने एक पल के लिए भी मिस्टर वेस्टन को नज़रअंदाज़ नहीं किया। वह उससे मिलने का हर मौका नहीं छोड़ती थी, उसे मोहित करने के लिए हर संभव कोशिश करती थी, और उतनी ही लगन से उसका पीछा करती थी मानो वह सचमुच

उससे ही प्यार करती हो और किसी और से नहीं, और उसके जीवन की खुशी बदले में प्यार पाने पर निर्भर हो। ऐसा व्यवहार मेरी समझ से बिल्कुल परे था। अगर मैंने इसे किसी उपन्यास में देखा होता, तो मुझे यह अस्वाभाविक लगता; अगर मैंने इसे दूसरों के वर्णन में सुना होता, तो मैं इसे गलती या अतिशयोक्ति समझता; लेकिन जब मैंने इसे स्वयं अपनी आँखों से देखा और स्वयं इसका अनुभव किया, तो मैं केवल यही निष्कर्ष निकाल सका कि अत्यधिक घमंड, नशे की तरह, हृदय को कठोर बना देता है, इंद्रियों को गुलाम बना लेता है और भावनाओं को विकृत कर देता है; और कुत्ते ही एकमात्र ऐसे प्राणी नहीं हैं जो पेट भर जाने पर भी उस भोजन पर प्रसन्न होते हैं जिसे वे खा नहीं सकते और भूखे भाई को छोटा सा टुकड़ा भी देने से कतराते हैं।

अब वह गरीब झोपड़ीवासियों के प्रति अत्यंत उदार हो गई थी। उनके बीच उसका परिचय व्यापक हो गया था, और वह पहले से कहीं अधिक बार उनके साधारण घरों में जाती थी। इस प्रकार, उसने उनके बीच एक दयालु और अत्यंत परोपकारी युवती के रूप में ख्याति अर्जित की; और उनकी प्रशंसा श्री वेस्टन तक अवश्य पहुँचती थी: जिनसे उसकी लगभग हर रोज उनके किसी न किसी घर में या आने-जाने के दौरान मुलाकात हो जाती थी; और अक्सर, वह उनकी गपशप से यह भी जान लेती थी कि वह अमुक समय पर कहाँ जाने वाले हैं, चाहे किसी बच्चे का बपतिस्मा कराने के लिए, या वृद्धों, बीमारों, दुखी लोगों या मरणासन्न लोगों से मिलने के लिए; और वह बड़ी कुशलता से उसी के अनुसार अपनी योजनाएँ बनाती थी। इन यात्राओं में वह कभी-कभी अपनी बहन के साथ जाती थी - जिसे उसने किसी तरह से अपनी योजनाओं में शामिल होने के लिए राजी या रिश्वत दी थी - कभी-कभी अकेले, और अब कभी भी मेरे साथ नहीं। इस वजह से मुझे श्री वेस्टन को देखने या किसी और से बातचीत करते हुए उनकी आवाज़ सुनने का सुख नहीं मिल पाया: जो निश्चित रूप से बहुत बड़ा सुख होता, चाहे कितना भी कष्टदायक या पीड़ादायक क्यों न हो। मैं उन्हें चर्च में भी नहीं देख सका: क्योंकि मिस मरे ने किसी मामूली बहाने से परिवार की उस बेंच के कोने पर कब्ज़ा कर लिया था जो मेरे आने के बाद से मेरा था; और जब तक मैं श्री और श्रीमती मरे के बीच बैठने की हिम्मत न करता, मुझे उपदेश मंच की ओर पीठ करके बैठना पड़ता था, और मैंने वैसा ही किया।

अब, मैं अपने विद्यार्थियों के साथ कभी पैदल घर नहीं जाती थी: वे कहते थे कि उनकी माँ को लगता है कि परिवार के तीन सदस्यों का पैदल जाना और केवल दो का

गाड़ी में जाना अच्छा नहीं लगता; और, क्योंकि उन्हें अच्छे मौसम में पैदल चलना बहुत पसंद था, इसलिए बड़ों के साथ जाना मेरे लिए सम्मान की बात होगी। 'और वैसे भी,' वे कहते थे, 'आप हमारी तरह तेज़ नहीं चल सकतीं; आप जानती हैं कि आप हमेशा पीछे रह जाती हैं।' मैं जानती थी कि ये झूठे बहाने हैं, लेकिन मैंने कोई आपत्ति नहीं जताई और न ही कभी उनके दावों का खंडन किया, क्योंकि मैं उनके पीछे के मकसद को भली-भांति जानती थी। और उन छह यादगार हफ़्तों के दौरान, दोपहर में मैं चर्च बिल्कुल नहीं जाती थी। अगर मुझे सर्दी-ज़ुकाम होता या कोई मामूली बीमारी होती, तो वे इसका फ़ायदा उठाकर मुझे घर पर ही रोक लेते; और अक्सर वे मुझसे कहते कि वे उस दिन खुद नहीं जा रहे हैं, और फिर अपना इरादा बदलने का नाटक करते और मुझे बिना बताए निकल जाते: इस तरह वे इस तरह से रवाना होते कि मुझे उनके इरादे में बदलाव का पता तब तक नहीं चलता जब तक बहुत देर हो चुकी होती। घर लौटने पर, एक बार उन्होंने मुझे रास्ते में मिस्टर वेस्टन के साथ हुई बातचीत का एक मजेदार किस्सा सुनाया। मटिल्डा ने कहा, 'उन्होंने पूछा कि क्या आप बीमार हैं, मिस ग्रे? लेकिन हमने उन्हें बताया कि आप बिल्कुल ठीक हैं, बस आप चर्च नहीं आना चाहतीं - इसलिए उन्हें लगेगा कि आप बिगड़ गई हैं।'

कार्यदिवसों में भी आकस्मिक मुलाकातों को सावधानीपूर्वक रोका जाता था; क्योंकि कहीं मैं बेचारी नैन्सी ब्राउन या किसी और से मिलने न चला जाऊं, इसलिए मिस मरे ने मेरे खाली समय के लिए पर्याप्त काम का इंतजाम कर रखा था। हमेशा कोई न कोई चित्र पूरा करना होता था, कोई संगीत की नकल करनी होती थी, या कोई न कोई काम करना होता था, जो मुझे बगीचे में थोड़ी देर टहलने के अलावा और कुछ करने में असमर्थ बना देता था, चाहे वह या उनकी बहन किसी भी काम में व्यस्त हों।

एक सुबह, श्री वेस्टन से मिलकर और उन्हें रास्ते में रोककर, वे बड़ी हर्षोल्लास से लौटकर मुझे अपनी मुलाकात का ब्योरा देने लगीं। "और उन्होंने फिर से तुम्हारे बारे में पूछा," मटिल्डा ने अपनी बहन के मौन लेकिन ज़ोरदार इशारे के बावजूद कहा कि उसे चुप रहना चाहिए। "उन्होंने आश्चर्य जताया कि तुम कभी हमारे साथ क्यों नहीं रहतीं, और सोचा कि तुम्हारा स्वास्थ्य ज़रूर नाज़ुक होगा, क्योंकि तुम बहुत कम बाहर आती हो।"

'उसने ऐसा नहीं किया, मटिल्डा— तुम क्या बकवास कर रही हो!'

‘ओह, रोज़ाली, कितना बड़ा झूठ! उसने किया था, तुम्हें पता है; और तुमने कहा था— नहीं, रोज़ाली— धिक्कार है!— मैं इस तरह से धोखा नहीं खाऊंगी! और, मिस ग्रे, रोज़ाली ने उसे बताया था कि तुम बिल्कुल ठीक हो, लेकिन तुम हमेशा अपनी किताबों में इतनी डूबी रहती थीं कि तुम्हें किसी और चीज़ में आनंद नहीं आता था।’

मैंने सोचा, ‘वह मेरे बारे में क्या-क्या सोचता होगा!’

और, मैंने पूछा, क्या बूढ़ी नैन्सी कभी मेरे बारे में पूछती है?

'हां; और हम उसे बताते हैं कि तुम्हें पढ़ने और चित्र बनाने का इतना शौक है कि तुम इसके अलावा कुछ और कर ही नहीं सकती।'

'लेकिन ऐसा नहीं है; अगर आपने उसे बताया होता कि मैं इतना व्यस्त हूं कि उससे मिलने नहीं आ सकता, तो यह सच्चाई के ज्यादा करीब होता।'

'मुझे नहीं लगता ऐसा होगा,' मिस मरे ने अचानक जोश में आकर जवाब दिया; 'मुझे यकीन है कि अब आपके पास अपने लिए काफी समय है, क्योंकि आपको पढ़ाने का काम बहुत कम है।'

ऐसे बिगड़े हुए, तर्कहीन लोगों से बहस करने का कोई फायदा नहीं था, इसलिए मैं चुप रही। अब मुझे अप्रिय बातें सुनने पर चुप रहने की आदत हो गई थी; और अब मुझे अपने दिल में कड़वाहट होने पर भी चेहरे पर शांत मुस्कान बनाए रखने की आदत हो गई थी। केवल वही लोग मेरी भावनाओं को समझ सकते हैं जिन्होंने ऐसा अनुभव किया हो, जब मैं मुस्कुराते हुए उदासीनता का भाव लिए बैठी थी और श्री वेस्टन के साथ उन मुलाकातों और मुलाकातों के किस्से सुन रही थी, जिन्हें वे मुझे सुनाने में इतना आनंद ले रहे थे; और उनके बारे में कही गई ऐसी बातें सुन रही थी जो उनके स्वभाव से मुझे पता था कि अतिशयोक्ति और सच्चाई का विकृत रूप थीं, या पूरी तरह से झूठी थीं - उनके लिए अपमानजनक और उनके लिए, खासकर मिस मरे के लिए, प्रशंसात्मक बातें - जिनका खंडन करने या कम से कम अपने संदेह को प्रकट करने की मेरी तीव्र इच्छा थी, लेकिन हिम्मत नहीं कर पाई; कहीं ऐसा न हो कि अविश्वास व्यक्त करते हुए मैं अपना स्वार्थ भी प्रकट कर दूं। मैंने कुछ और बातें भी सुनीं, जो मुझे सच लगीं या जिनका मुझे डर था; लेकिन फिर भी मुझे उनके बारे में अपनी चिंता और उनके प्रति अपने गुस्से को एक बेपरवाह चेहरे के पीछे छिपाना पड़ा; कुछ और बातें, बस कही या की गई किसी बात के संकेत मात्र थीं, जिनके बारे में मैं और जानना चाहती थी, लेकिन पूछने की हिम्मत नहीं कर पाई। इस तरह थका देने

वाला समय बीत गया। मैं खुद को यह कहकर भी दिलासा नहीं दे पाई, 'उसकी जल्द ही शादी हो जाएगी; और तब शायद उम्मीद की किरण जगेगी।'

उसकी शादी के कुछ ही समय बाद छुट्टियां आ जाएंगी; और जब मैं घर से लौटूंगा, तो संभवतः श्री वेस्टन जा चुके होंगे, क्योंकि मुझे बताया गया था कि वह और रेक्टर आपस में सहमत नहीं हो पा रहे थे (बेशक, इसमें रेक्टर की ही गलती थी), और वह कहीं और जाने वाले थे।

नहीं— ईश्वर में मेरी आस्था के अलावा, मेरा एकमात्र सहारा यह सोचना था कि भले ही वह न जानता हो, मैं रोज़ाली मरे से कहीं अधिक उसके प्रेम के योग्य थी, चाहे वह कितनी भी आकर्षक और मनमोहक क्यों न हो; क्योंकि मैं उसकी खूबियों को समझ सकती थी, जो वह नहीं समझ सकती थी: मैं अपना जीवन उसकी खुशी के लिए समर्पित कर दूंगी; वह अपने क्षणिक अहंकार के लिए उसकी खुशी को नष्ट कर देगी। 'काश, वह यह अंतर जान पाता!' मैं पूरी शिद्दत से कहती। 'लेकिन नहीं! मैं उसे अपना दिल नहीं दिखाना चाहती: फिर भी, अगर वह उसकी खोखलेपन, उसकी व्यर्थ, हृदयहीन तुच्छता को जान पाता, तो वह सुरक्षित होता, और मैं—लगभग खुश होती, भले ही मैं उसे फिर कभी न देख पाती!'

मुझे डर है कि अब तक पाठक मेरी उस मूर्खता और कमजोरी से लगभग तंग आ चुके होंगे जिसे मैंने इतनी खुलकर उनके सामने रख दिया है। मैंने तब इसका खुलासा नहीं किया था, और अगर मेरी बहन या मेरी माँ घर में मेरे साथ होतीं तो भी मैं ऐसा नहीं करती। मैं एक पक्की और दृढ़ निश्चयी धोखेबाज थी—कम से कम इस एक मामले में तो। मेरी प्रार्थनाएँ, मेरे आँसू, मेरी इच्छाएँ, मेरे डर और मेरे विलाप, सब कुछ केवल मेरे और स्वर्ग के ही साक्षी थे।

जब हम दुखों या चिंताओं से व्याकुल होते हैं, या किसी प्रबल भावना से लंबे समय तक दबे रहते हैं जिसे हमें अपने भीतर ही रखना पड़ता है, जिसके लिए हमें किसी भी जीवित प्राणी से सहानुभूति नहीं मिल सकती और न ही हम उसकी तलाश करते हैं, और जिसे हम पूरी तरह से कुचल नहीं सकते या कुचलना नहीं चाहते, तो अक्सर हम स्वाभाविक रूप से कविता में राहत ढूंढते हैं - और अक्सर पाते भी हैं - चाहे वह दूसरों की रचनाओं में हो, जो हमारी वर्तमान स्थिति से मेल खाती प्रतीत होती हैं, या उन विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के हमारे अपने प्रयासों में हो, जो शायद कम मधुर हों, लेकिन अधिक उपयुक्त हों, और इसलिए अधिक मर्मस्पर्शी और

सहानुभूतिपूर्ण हों, और उस समय के लिए अधिक सुखदायक हों, या दबे हुए और सूजे हुए हृदय को जगाने और हल्का करने में अधिक शक्तिशाली हों। इससे पहले, वेलवुड हाउस में और यहाँ, जब मैं घर की याद में उदास था, मैंने सांत्वना के इस गुप्त स्रोत से दो-तीन बार राहत पाई थी; और अब मैं पहले से कहीं अधिक उत्सुकता से इसकी ओर दौड़ा, क्योंकि मुझे इसकी अधिक आवश्यकता महसूस हो रही थी। मैं अब भी अतीत के उन कष्टों और अनुभवों के अवशेषों को सहेज कर रखता हूँ, मानो जीवन की घाटी में यात्रा करते हुए विशेष घटनाओं को चिह्नित करने के लिए गवाह स्तंभों की तरह खड़े हों। पदचिह्न अब मिट गए हैं; देश का स्वरूप बदल गया होगा; लेकिन स्तंभ अभी भी वहीं है, मुझे याद दिलाने के लिए कि जब इसे खड़ा किया गया था तब सब कुछ कैसा था। कहीं पाठक इन भावों को देखने के लिए उत्सुक न हो जाए, इसलिए मैं उन्हें एक छोटा सा नमूना प्रस्तुत करूँगा: भले ही पंक्तियाँ ठंडी और सुस्त लगें, लेकिन उनका अस्तित्व लगभग एक तीव्र शोक की अनुभूति से उपजा है:

ओह, उन्होंने मुझसे वह आशा छीन ली है जो मेरी आत्मा को इतनी प्रिय थी; वे मुझे वह आवाज नहीं सुनने देंगे जिसे सुनकर मेरी आत्मा को आनंद मिलता है।

वे मुझे वह चेहरा नहीं देखने देंगे जिसे देखकर मुझे इतना आनंद आता है; और उन्होंने तुम्हारी सारी मुस्कानें, और तुम्हारा सारा प्यार मुझसे छीन लिया है।

खैर, उन्हें जितना हो सके उतना हथियाने दो; —
एक खजाना अभी भी मेरा है, —
एक हृदय जो तुम्हारे बारे में सोचना पसंद करता है,
और तुम्हारे मूल्य को महसूस करता है।

हाँ, कम से कम वे मुझे इससे वंचित नहीं कर सके: मैं दिन-रात उसके बारे में सोच सकती थी; और मैं महसूस कर सकती थी कि वह याद किए जाने योग्य था। उसे कोई नहीं जानता था जितना मैं जानती थी; कोई उसकी कद्र नहीं कर सकता था जितना मैं करती थी; कोई उससे प्यार नहीं कर सकता था जितना मैं कर सकती थी, अगर मैं कर पाती: लेकिन बुराई यही थी। मुझे उस व्यक्ति के बारे में इतना सोचने का क्या हक था जिसने कभी मेरे बारे में नहीं सोचा? क्या यह मूर्खता नहीं थी? क्या यह गलत नहीं था? फिर भी, अगर मुझे उसके बारे में सोचने में इतना गहरा आनंद मिलता था, और अगर मैं उन विचारों को अपने तक ही सीमित रखती, और किसी और को उनसे परेशान नहीं करती, तो इसमें क्या बुराई थी? मैं खुद से पूछती थी। और इस तरह के

तर्क ने मुझे अपनी बेड़ियों को तोड़ने के लिए कोई ठोस प्रयास करने से रोक दिया।

लेकिन, अगर उन विचारों से आनंद मिलता भी था, तो वह एक पीड़ादायक, कष्टदायक आनंद था, जो पीड़ा के बहुत करीब था; और ऐसा आनंद जिससे मुझे जितना एहसास था, उससे कहीं अधिक हानि हो रही थी। यह एक ऐसा सुख था जिसे अधिक बुद्धिमान या अनुभवी व्यक्ति निस्संदेह त्याग देता। फिर भी, उस उज्ज्वल वस्तु के चिंतन से अपनी दृष्टि हटाकर आसपास के नीरस, धूसर, उजाड़ दृश्य पर ध्यान केंद्रित करना कितना निराशाजनक था: मेरे सामने फैला हुआ आनंदहीन, निराशाहीन, एकाकी मार्ग। इतना आनंदहीन, इतना निराश होना गलत था; मुझे ईश्वर को अपना मित्र बनाना चाहिए था, और उनकी इच्छा का पालन करना अपने जीवन का सुख और उद्देश्य बनाना चाहिए था; लेकिन विश्वास कमजोर था, और भावनाएँ प्रबल थीं।

इस मुश्किल घड़ी में मेरे दुख के दो और कारण थे। पहला भले ही मामूली लगे, पर इसने मुझे बहुत रुलाया: स्नैप, मेरा छोटा, मूक, खुरदुरे चेहरे वाला, लेकिन चमकीली आँखों वाला, दयालु दिल का साथी, जो मुझे प्यार करने वाला एकमात्र सहारा था, मुझसे छीन लिया गया और गाँव के चूहे पकड़ने वाले के हवाले कर दिया गया, जो अपने पालतू कुत्तों के साथ क्रूरता से पेश आने के लिए कुख्यात था। दूसरा कारण काफी गंभीर था; घर से आए पत्रों से पता चला कि मेरे पिता का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। कोई गंभीर आशंका तो व्यक्त नहीं की गई, लेकिन मैं डरपोक और निराश हो गई थी, और मुझे डर सता रहा था कि वहाँ कोई भयानक विपत्ति हमारा इंतजार कर रही है। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरे गाँव की पहाड़ियों के चारों ओर काले बादल मंडरा रहे हों, और एक भयंकर तूफान की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही हो जो बस फटने ही वाला है और हमारे घर को तबाह कर देगा।

अध्याय 18वीं — हर्ष और मातम

अंततः 1 जून आ ही गया: और रोज़ाली मरे लेडी एशबी में बदल गईं। दुल्हन के लिबास में वह बेहद खूबसूरत लग रही थीं। समारोह के बाद चर्च से लौटते ही वह उत्साह से लाल-पीली होकर हंसती हुई स्कूल के कमरे में दौड़ती हुई आईं, उनकी हंसी आधी खुशी से और आधी बेतहाशा बेचैनी से भरी हुई थी, जैसा कि मुझे लगा।

'अब, मिस ग्रे, मैं लेडी एशबी हूँ!' उसने उत्साह से कहा। 'हो गया, मेरा भाग्य तय हो चुका है: अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है। मैं आपकी बधाई स्वीकार करने और आपको अलविदा कहने आई हूँ; और फिर मैं पेरिस, रोम, नेपल्स, स्विट्जरलैंड, लंदन के लिए रवाना हो जाऊँगी — ओह, कितनी सारी जगहें देखूँगी और सुनूँगी, इससे पहले कि मैं वापस आऊँ। लेकिन मुझे मत भूलना: मैं तुम्हें नहीं भूलूँगी, भले ही मैं थोड़ी शरारती रही हूँ। आइए, आप मुझे बधाई क्यों नहीं देते?'

मैंने उत्तर दिया, 'जब तक मुझे यह पता नहीं चल जाता कि यह बदलाव वास्तव में बेहतर है या नहीं, तब तक मैं आपको बधाई नहीं दे सकता; लेकिन मैं दिल से आशा करता हूं कि यह बेहतर ही हो; और मैं आपके लिए सच्ची खुशी और ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ।'

'अच्छा, अलविदा, गाड़ी इंतजार कर रही है, और वे मुझे बुला रहे हैं।'

उसने मुझे जल्दी से चूमा और जल्दी से जाने लगी; लेकिन अचानक लौटकर उसने मुझे इतने प्यार से गले लगाया जितना मैंने सोचा भी नहीं था कि वह दिखा पाएगी, और आँखों में आँसू लिए चली गई। बेचारी! उस समय मैं उससे सचमुच प्यार करता था; और मैंने उसे दिल से उन सभी चोटों के लिए माफ कर दिया जो उसने मुझे और दूसरों को पहुँचाई थीं: मुझे यकीन था कि उसे इसका आधा भी एहसास नहीं था; और मैंने भगवान से प्रार्थना की कि वह उसे भी क्षमा कर दे।

उस उत्सवपूर्ण उदासी भरे दिन के शेष समय में, मैं अपने हाल पर छोड़ दिया गया था। किसी भी स्थिर काम के लिए अत्यधिक विचलित होने के कारण, मैं कई घंटों तक हाथ में किताब लिए इधर-उधर घूमता रहा, पढ़ने से ज़्यादा सोचता रहा, क्योंकि मेरे पास सोचने के लिए बहुत कुछ था। शाम को, मैंने अपनी छुट्टी का लाभ उठाकर अपनी पुरानी दोस्त नैन्सी से एक बार फिर मिलने गया; अपनी लंबी अनुपस्थिति के लिए माफ़ी मांगने के लिए (जो उसे बहुत ही लापरवाही और निर्दयतापूर्ण लगी होगी) उसे यह बताने के लिए कि मैं कितना व्यस्त था; और उससे बात करने, या पढ़ने, या उसके लिए काम करने के लिए, जो भी उसे सबसे ज़्यादा स्वीकार्य हो, और निश्चित

रूप से, उसे इस महत्वपूर्ण दिन की खबर बताने के लिए: और शायद बदले में उससे श्री वेस्टन के अपेक्षित प्रस्थान के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करने के लिए। लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था, और मैंने, उसकी तरह, आशा की कि यह सब एक झूठी खबर थी। वह मुझे देखकर बहुत खुश हुई; लेकिन, सौभाग्य से, उसकी आँखें अब लगभग ठीक हो चुकी थीं, इसलिए उसे मेरी सेवाओं की लगभग आवश्यकता नहीं थी। वह शादी में बहुत दिलचस्पी रखती थी; लेकिन जब मैं उसे उत्सव के विवरण, बारात की भव्यता और स्वयं दुल्हन के बारे में बताकर उसका मनोरंजन कर रही थी, तो वह अक्सर आहें भरती, सिर हिलाती और कामना करती कि सब कुछ अच्छा हो; ऐसा लगता था कि वह भी मेरी तरह इसे खुशी से ज्यादा दुख का विषय मानती थी। मैं काफी देर तक उससे इस बारे में और अन्य बातों के बारे में बात करती रही—पर कोई आया ही नहीं।

क्या मैं यह स्वीकार करूँ कि मैं कभी-कभी इस उम्मीद से दरवाजे की ओर देखता था कि वह खुलेगा और श्री वेस्टन अंदर आएंगे, जैसा कि पहले एक बार हुआ था? और यह कि गलियों और खेतों से लौटते समय, मैं अक्सर रुककर चारों ओर देखता था, और ज़रूरत से ज़्यादा धीरे चलता था—क्योंकि शाम सुहावनी तो थी, लेकिन गर्म नहीं थी—और अंत में, घर पहुँचकर किसी से न मिलने या दूर से भी किसी की झलक न देख पाने पर मुझे खालीपन और निराशा का एहसास हुआ, सिवाय कुछ कामगारों के जो अपने काम से लौट रहे थे?

रविवार नजदीक आ रहा था: मुझे उससे तब मिलना चाहिए था: क्योंकि मिस मरे के जाने के बाद, मुझे अपना पुराना कोना वापस मिल सकता था। मुझे उससे मिलना चाहिए था, और उसके हाव-भाव, बोलने के तरीके और व्यवहार से मैं अंदाजा लगा सकता था कि उसकी शादी की घटना ने उसे कितना प्रभावित किया था। सौभाग्य से मुझे कोई बदलाव नजर नहीं आया: वह दो महीने पहले जैसा ही दिख रहा था - आवाज, नजर, व्यवहार, सब कुछ अपरिवर्तित था: उसके भाषण में वही तीक्ष्ण दृष्टि और निर्मल सत्यता थी, उसकी शैली में वही प्रभावशाली स्पष्टता थी, उसके हर शब्द और कार्य में वही गंभीर सरलता थी, जो न केवल आंखों और कानों से दिखाई देती थी, बल्कि श्रोताओं के दिलों को छू जाती थी।

मैं मिस मटिल्डा के साथ घर चली गई; लेकिन वह हमारे साथ नहीं आया। मटिल्डा अब मनोरंजन के लिए बहुत परेशान थी और उसे एक साथी की सख्त जरूरत थी:

उसके भाई स्कूल में थे, उसकी बहन की शादी हो चुकी थी और वह समाज में शामिल होने के लिए बहुत छोटी थी; जिसके लिए, रोज़ाली के उदाहरण से, वह कुछ हद तक रुचि विकसित करने लगी थी - कम से कम कुछ खास वर्गों के सज्जनों की संगति के लिए; साल के इस नीरस समय में - न तो शिकार हो रहा था, न ही शूटिंग - क्योंकि, हालांकि वह इसमें शामिल नहीं हो सकती थी, अपने पिता या गेमकीपर को कुत्तों के साथ बाहर जाते देखना और उनके लौटने पर उनके द्वारा मारे गए विभिन्न पक्षियों के बारे में उनसे बात करना उसके लिए एक सुखद अनुभव था। अब, उसे कोचमैन, घोड़ों की देखभाल करने वालों, घोड़ों, ग्रेहाउंड और पॉइंटर्स की संगति से मिलने वाला सुकून भी नहीं मिल रहा था; क्योंकि उसकी माँ ने, ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों के बावजूद, अपनी बड़ी बेटी का इतनी अच्छी तरह से निपटारा कर दिया था, इसलिए उसके दिल का स्वाभिमान गंभीरता से छोटी बेटी की ओर मुड़ने लगा था; और, उसके कठोर व्यवहार से वास्तव में चिंतित होकर, और यह सोचकर कि अब सुधार का समय आ गया है, अंततः उसने अपना अधिकार जताने का निश्चय किया और आंगन, अस्तबल, कुत्तेघर और कोचहाउस में उसके प्रवेश पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया। बेशक, उसकी बात पूरी तरह से नहीं मानी गई; लेकिन, अब तक उदार रहने के बावजूद, एक बार जब उसका गुस्सा भड़क उठा, तो उसका स्वभाव उतना सौम्य नहीं रहा जितना वह अपनी शासीदियों से चाहती थी, और उसकी इच्छा को बिना दंड के दबाया नहीं जा सकता था। माँ और बेटी के बीच कई बार झगड़े हुए, कई बार हिंसक झड़पें हुईं जिन्हें देखकर मुझे शर्म आती थी, जिनमें अक्सर पिता को शपथ और धमकियों के साथ माँ के उपेक्षित प्रतिबंधों की पुष्टि करने के लिए अपने अधिकार का इस्तेमाल करना पड़ता था - क्योंकि वह भी देख सकता था कि 'टिली, हालांकि वह एक अच्छी लड़की बन सकती थी, एक युवती के लिए उपयुक्त नहीं थी' - अंततः मटिल्डा को पता चला कि उसके लिए सबसे आसान उपाय वर्जित क्षेत्रों से दूर रहना था; जब तक कि वह कभी-कभार अपनी सतर्क मां की जानकारी के बिना मिलने न निकल जाए।

इन सबके बीच, यह न समझें कि मैं कई फटकारों और अप्रत्यक्ष निंदाओं से बच गया, जिनका सीधा उच्चारण न होने के बावजूद उनका दर्द कम नहीं हुआ; बल्कि इससे और भी गहरा घाव हुआ, क्योंकि ऐसा लगता था कि इससे आत्मरक्षा का कोई रास्ता नहीं बचा था। अक्सर मुझे मिस मटिल्डा का मनोरंजन करने और उन्हें उनकी माँ

के उपदेशों और निषेधों की याद दिलाने के लिए कहा जाता था। मैंने अपनी पूरी कोशिश की: लेकिन वह अपनी इच्छा के विरुद्ध मनोरंजन नहीं करती थीं और न ही अपनी पसंद के विरुद्ध कर सकती थीं; और यद्यपि मैंने केवल याद दिलाने से आगे बढ़कर भी प्रयास किए, फिर भी मेरे द्वारा किए गए सौम्य निवारण भी पूरी तरह से अप्रभावी रहे।

'प्रिय मिस ग्रे! यह तो बहुत ही अजीब बात है। मुझे लगता है कि आप इसमें कुछ नहीं कर सकतीं, अगर यह आपके स्वभाव में नहीं है - लेकिन मुझे आश्चर्य है कि आप उस लड़की का विश्वास क्यों नहीं जीत पातीं, और कम से कम रॉबर्ट या जोसेफ की तरह ही उसके साथ समय बिताना उसे अच्छा क्यों नहीं लगता!'

मैंने जवाब दिया, 'वे उन चीजों के बारे में सबसे अच्छी तरह बात कर सकते हैं जिनमें उसकी सबसे ज्यादा दिलचस्पी है।'

"वाह! ये तो उसकी गवर्नेंस की तरफ से एक अजीब स्वीकारोक्ति है! मुझे आश्चर्य होता है कि अगर गवर्नेंस न करे तो एक युवती की पसंद-नापसंद कौन तय करेगा? मैंने ऐसी गवर्नेंस देखी हैं जो अपनी छात्राओं की शालीनता और शिष्टाचार की प्रतिष्ठा से इतनी जुड़ी हुई थीं कि उनके खिलाफ एक शब्द भी बोलने में उन्हें शर्म आती थी; और अपनी छात्राओं पर जरा सा भी दोष लगना उनके लिए खुद की निंदा से भी बदतर था – और सच कहूँ तो मुझे ये बहुत स्वाभाविक लगता है।"

'क्या आप ऐसा करती हैं, महोदया?'

जी हाँ, बिलकुल: एक युवती की कुशलता और शालीनता, उसकी स्वयं की योग्यता और शालीनता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है, और यह बात दुनिया के लिए भी उतनी ही मायने रखती है। यदि वह अपने पेशे में सफल होना चाहती है, तो उसे अपनी सारी ऊर्जा अपने काम में लगानी होगी: उसके सारे विचार और सारी महत्वाकांक्षाएँ उसी एक लक्ष्य की पूर्ति की ओर अग्रसर होंगी। जब हम किसी गवर्नेंस की योग्यता का आकलन करना चाहते हैं, तो हम स्वाभाविक रूप से उन युवतियों को देखते हैं जिन्हें उसने शिक्षित किया है, और उसी के अनुसार निर्णय लेते हैं। समझदार गवर्नेंस यह जानती है: वह जानती है कि जब तक वह स्वयं गुमनामी में रहेगी, उसके विद्यार्थियों के गुण और दोष सबके सामने होंगे; और जब तक वह उनके पालन-पोषण में स्वयं को उपजे नहीं कर लेती, तब तक उसे सफलता की आशा नहीं करनी चाहिए। देखिए, मिस ग्रे, यह किसी भी अन्य व्यापार या पेशे के समान ही है: जो लोग सफल

होना चाहते हैं, उन्हें तन-मन से अपने काम में समर्पित होना होगा; और यदि वे आलस्य या आत्म-भोग में लिप्त होने लगें तो वे जल्द ही बुद्धिमान प्रतियोगियों से पीछे छूट जाते हैं: एक ऐसी व्यक्ति जो उपेक्षा से अपने विद्यार्थियों को बर्बाद करती है, और एक ऐसी व्यक्ति जो अपने उदाहरण से उन्हें भ्रष्ट करती है, इन दोनों में बहुत कम अंतर है। आप मेरे इन छोटे-छोटे संकेतों के लिए मुझे क्षमा करेंगी: आप जानती हैं कि यह सब आपके भले के लिए है। कई महिलाएं आपसे और भी सख्ती से बात करतीं; और कई तो बोलने की जहमत ही नहीं उठातीं, बल्कि चुपचाप किसी और को अपना विकल्प तलाशतीं। बेशक, यह सबसे आसान योजना होती: लेकिन मैं जानती हूँ कि आपकी स्थिति में इस तरह के स्थान के क्या लाभ हैं; और मैं आपको छोड़ना नहीं चाहती, क्योंकि मुझे यकीन है कि यदि आप इन बातों पर ध्यान देंगी और थोड़ा और प्रयास करेंगी तो आप बहुत अच्छा करेंगी: तब, मुझे विश्वास है, आप जल्द ही वह सूक्ष्म कौशल प्राप्त कर लेंगी जिसकी कमी आपको अपने विद्यार्थी के मन पर उचित प्रभाव डालने के लिए है।

मैं उस महिला को उसकी उम्मीदों की खामी का कुछ आशय दिलाने ही वाला था; लेकिन जैसे ही उसने अपना भाषण समाप्त किया, वह तुरंत चली गई। अपनी इच्छा पूरी कर लेने के बाद, मेरे उत्तर की प्रतीक्षा करना उसकी योजना का हिस्सा नहीं था: मेरा काम सुनना था, बोलना नहीं।

हालांकि, जैसा कि मैंने कहा, मटिल्डा अंततः अपनी माँ के अधिकार को कुछ हद तक स्वीकार करने लगी (काश उसने पहले ही ऐसा किया होता); और इस प्रकार मनोरंजन के लगभग सभी साधनों से वंचित होने के कारण, उसके पास केवल यही विकल्प बचा था कि वह घोड़ों की देखभाल करने वाले के साथ लंबी सवारी करे और गवर्नेंस के साथ लंबी सैर करे, और अपने पिता की जागीर पर बने कॉटेज और फार्महाउसों में जाकर वहाँ रहने वाले बूढ़े पुरुषों और महिलाओं से बातचीत करके समय बिताए। ऐसी ही एक सैर के दौरान, हमें मिस्टर वेस्टन से मिलने का मौका मिला। यही वह चीज़ थी जिसकी मुझे लंबे समय से इच्छा थी; लेकिन अब, एक पल के लिए, मैं चाहती थी कि या तो वह या मैं वहाँ से दूर हो जाएँ: मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि मुझे डर था कि कहीं मेरी भावनाओं के कुछ बाहरी लक्षण दिखाई न दें; लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने मेरी ओर मुश्किल से ही देखा, और मैं जल्द ही शांत हो गई। हम दोनों को संक्षिप्त अभिवादन करने के बाद, उन्होंने मटिल्डा से पूछा

कि क्या उसने हाल ही में अपनी बहन से कोई खबर सुनी है।

'हां,' उसने जवाब दिया। 'जब उसने लिखा था तब वह पेरिस में थी, और वह बहुत अच्छी और बहुत खुश थी।'

उसने आखिरी शब्द ज़ोर देकर और शरारती अंदाज़ में कहा। उसने मानो इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया, बल्कि उतने ही ज़ोर से और बहुत गंभीरता से जवाब दिया—

मुझे उम्मीद है कि वह आगे भी ऐसी ही बनी रहेगी।

मैंने पूछने की हिम्मत की, 'क्या आपको लगता है कि ऐसा संभव है?' क्योंकि मटिल्डा अपने कुत्ते का पीछा करने लगी थी, जो एक खरगोश के बच्चे का पीछा कर रहा था।

'मैं कुछ नहीं कह सकता,' उसने उत्तर दिया। 'सर थॉमस शायद मेरी सोच से भी बेहतर इंसान हों; लेकिन मैंने जो कुछ सुना और देखा है, उससे तो यही लगता है कि इतनी जवान, हंसमुख और दिलचस्प लड़की, जिसकी सबसे बड़ी, बल्कि शायद इकलौती गलती, नासमझी है—जो बेशक कोई मामूली गलती नहीं है, क्योंकि इससे इंसान लगभग हर तरह की गलती का शिकार हो जाता है और कई तरह के प्रलोभनों में फंस जाता है—लेकिन ऐसे आदमी के साथ उसे छोड़ देना वाकई दुखद है। शायद यही उसकी माँ की इच्छा थी?'

'हां; और मुझे लगता है कि वह खुद भी ऐसा ही सोचती थी, क्योंकि जब भी मैं उसे यह कदम उठाने से रोकने की कोशिश करता था, वह हमेशा हंसती थी।'

'क्या आपने ऐसा करने की कोशिश की? तो कम से कम आपको यह तसल्ली तो रहेगी कि अगर इससे कोई नुकसान होता है तो इसमें आपकी कोई गलती नहीं है। जहाँ तक श्रीमती मरे की बात है, मुझे नहीं पता कि वह अपने आचरण को कैसे उचित ठहरा सकती हैं: अगर मैं उन्हें अच्छी तरह जानती होती, तो मैं उनसे पूछती।'

'यह अस्वाभाविक लगता है, लेकिन कुछ लोग पद और धन को सबसे बड़ा कल्याण मानते हैं; और यदि वे अपने बच्चों के लिए इसे सुरक्षित कर लेते हैं, तो वे सोचते हैं कि उन्होंने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है।'

'सच है: लेकिन क्या यह अजीब नहीं है कि अनुभवी लोग, जो खुद शादीशुदा हैं, इतना गलत फैसला सुनाएं?' मटिल्डा हांफते हुए वापस आई, उसके हाथ में उस युवा खरगोश का क्षत-विक्षत शरीर था।

'मिस मरे, क्या आपका इरादा उस खरगोश को मारने का था, या उसे बचाने का?'

श्री वेस्टन ने उनके प्रसन्न चेहरे को देखकर हैरानी जताते हुए पूछा।

उसने ईमानदारी से जवाब दिया, “मैंने उसे बचाने का नाटक किया, क्योंकि वह मौसम के हिसाब से बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं थी; लेकिन मुझे उसे ऐसे ही पड़ा देखकर ज़्यादा खुशी हुई। हालांकि, आप दोनों गवाह हैं कि मैं कुछ नहीं कर सकती थी: राजकुमार उसे पाने के लिए बेताब था; और उसने उसे पीछे से पकड़ा और पल भर में मार डाला! क्या यह एक शानदार शिकार नहीं था?”

‘बहुत! एक युवा महिला के लिए जो एक छोटे खरगोश के बच्चे की तलाश में है।’

उसके जवाब के लहजे में एक हल्की सी व्यंग्य भरी बात थी जो उसे समझ आ गई; उसने कंधे उचकाए और एक अर्थपूर्ण 'हम्फ!' कहते हुए मुँह फेर लिया और मुझसे पूछा कि मुझे मज़ा कैसा लगा। मैंने जवाब दिया कि मुझे इसमें कोई मज़ा नहीं आया; लेकिन यह स्वीकार किया कि मैंने पूरी घटना को बारीकी से नहीं देखा था।

‘क्या तुमने नहीं देखा कि यह कैसे दुगुना हो गया – बिल्कुल एक बूढ़े खरगोश की तरह? और क्या तुमने इसकी चीख नहीं सुनी?’

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि मैंने ऐसा नहीं किया।

वह बिल्कुल बच्चे की तरह रोया।

'बेचारी! तुम इसका क्या करोगे?'

'चलो मेरे साथ—मैं इसे पहले घर में ही छोड़ दूंगी। मैं इसे घर नहीं ले जाना चाहती, कहीं पापा मुझे डांट न दें कि मैंने कुत्ते को इसे मारने दिया।'

श्री वेस्टन जा चुके थे, और हम भी अपने रास्ते पर चल पड़े; लेकिन जब हम एक फार्महाउस में खरगोश को छोड़कर और बदले में कुछ मसालेदार केक और किशमिश की शराब पीकर वापस लौटे, तो हमें वह भी अपने मिशन को पूरा करके लौटते हुए मिले, चाहे वह कुछ भी हो। उनके हाथ में सुंदर नीले घंटियों का एक गुच्छा था, जो उन्होंने मुझे भेंट किया; मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि उन्होंने पिछले दो महीनों में मुझे बहुत कम देखा था, फिर भी वह यह नहीं भूले थे कि नीले घंटियाँ मेरे पसंदीदा फूलों में से एक हैं। यह केवल सद्भावना का एक सरल कार्य था, बिना किसी प्रशंसा या विशेष शिष्टाचार के, या किसी ऐसी नज़र के जिसे 'श्रद्धापूर्ण, कोमल आराधना' (देखें रोज़ाली मरे) के रूप में समझा जा सके; फिर भी, मेरी कही हुई एक मामूली बात को इतनी अच्छी तरह से याद रखना मेरे लिए एक अद्भुत अनुभव था: यह बात मेरे लिए बहुत मायने रखती थी कि उन्होंने उस समय भी इसे इतनी सटीकता से देखा

था जब मैं दिखाई देना बंद हो गया था।

उन्होंने कहा, 'मुझे बताया गया था कि आप एक पूर्ण पुस्तकप्रेमी थीं, मिस ग्रे: आप अपनी पढ़ाई में इतनी तल्लीन रहती थीं कि आपको अन्य किसी भी सुख से कोई मतलब नहीं रह जाता था।'

'हां, और यह बिल्कुल सच है!' मटिल्डा चिल्लाई।

नहीं, श्री वेस्टन: इस पर विश्वास मत कीजिए: यह एक अपमानजनक मानहानि है। ये युवतियाँ अपने दोस्तों की कीमत पर मनमाने दावे करने की बहुत शौकीन हैं; और आपको उनकी बातों को ध्यान से सुनना चाहिए।

'कम से कम मुझे उम्मीद है कि यह दावा निराधार है।'

'क्यों? क्या आपको विशेष रूप से महिलाओं के अध्ययन करने पर आपत्ति है?'

नहीं; लेकिन मैं किसी ऐसे व्यक्ति का विरोध करता हूँ जो स्वयं को अध्ययन में इतना समर्पित कर दे कि वह बाकी सब कुछ भूल जाए। विशेष परिस्थितियों को छोड़कर, मैं गहन और निरंतर अध्ययन को समय की बर्बादी और मन एवं शरीर दोनों के लिए हानिकारक मानता हूँ।

खैर, मेरे पास ऐसे अपराधों के लिए न तो समय है और न ही इच्छा।

हम फिर अलग हो गए।

तो! इसमें ऐसी क्या खास बात है? मैंने इसे क्यों लिखा? क्योंकि, पाठक, यह इतना महत्वपूर्ण था कि इसने मुझे एक खुशनुमा शाम, सुखद सपनों से भरी रात और आशाओं से भरी सुबह दी। आप कहेंगे कि यह खोखली खुशी, मूर्खतापूर्ण सपने और निराधार आशाएं हैं; और मैं इससे इनकार नहीं करूंगा: मेरे मन में भी अक्सर ऐसे ही संदेह उठते थे। लेकिन हमारी इच्छाएं माचिस की तीली की तरह होती हैं: परिस्थितियां लगातार चिंगारियां पैदा करती हैं, जो तुरंत बुझ जाती हैं, जब तक कि वे हमारी इच्छाओं की माचिस की तीली पर न गिरें; तब वे तुरंत आग पकड़ लेती हैं, और आशा की लौ पल भर में प्रज्वलित हो जाती है।

लेकिन अफसोस! उसी सुबह, मेरी आशा की टिमटिमाती लौ मेरी माँ के एक पत्र से बुरी तरह बुझ गई, जिसमें मेरे पिता की बढ़ती बीमारी के बारे में इतनी गंभीरता से लिखा था कि मुझे डर लगने लगा कि उनके ठीक होने की कोई उम्मीद नहीं है; और, चूंकि छुट्टियां नजदीक थीं, मैं लगभग कांप रही थी कि कहीं ऐसा न हो कि उनसे इस दुनिया में मिलने में बहुत देर हो जाए। दो दिन बाद, मैरी के एक पत्र से मुझे पता चला

कि उनके जीवन की कोई उम्मीद नहीं है, और उनका अंत तेजी से नजदीक आ रहा है। तब, मैंने तुरंत छुट्टी पहले लेने और बिना देरी किए जाने की अनुमति मांगी। श्रीमती मरे ने मुझे हैरानी से देखा और मेरी इस विनती में दिखाई गई असामान्य ऊर्जा और साहस पर आश्चर्य व्यक्त किया, और सोचा कि जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं है; लेकिन अंत में उन्होंने मुझे जाने की अनुमति दे दी: हालांकि, उन्होंने कहा कि 'इस मामले में इतना परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है - यह सब झूठा साबित हो सकता है; और अगर नहीं - तो यह तो प्रकृति का सामान्य नियम है: हम सभी को एक दिन मरना ही है; और मुझे यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं दुनिया में एकमात्र पीड़ित व्यक्ति हूँ;' और यह कहते हुए बात समाप्त की कि मुझे ओ— तक ले जाने के लिए फैटन (एक प्रकार की गाड़ी) मिल सकती है। 'और शोक करने के बजाय, मिस ग्रे, आपको प्राप्त सुविधाओं के लिए आभारी रहें। कई गरीब पादरी ऐसे हैं जिनका परिवार उनकी मृत्यु के कारण बर्बाद हो जाएगा; लेकिन आप, आप देख रही हैं, आपके पास प्रभावशाली मित्र हैं जो अपना संरक्षण जारी रखने और आपके प्रति हर तरह का सम्मान दिखाने के लिए तैयार हैं।'

मैंने उनकी 'सहानुभूति' के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और जल्दी से अपने कमरे में जाकर जाने की तैयारी करने लगी। मैंने अपनी टोपी और शॉल ओढ़ ली और कुछ सामान अपने सबसे बड़े ट्रंक में ठूंस-ठूंस कर भर लिया, फिर मैं नीचे उतरी। लेकिन मैं यह काम आराम से कर सकती थी, क्योंकि किसी को जल्दी नहीं थी; और मुझे अभी भी फाएटन (बस) का इंतज़ार करने के लिए काफी समय था। आखिरकार वह दरवाजे पर आ गई, और मैं चल पड़ी: लेकिन, ओह, वह कितनी उबाऊ यात्रा थी! घर वापसी की मेरी पिछली यात्राओं से कितनी अलग! आखिरी बस के लिए बहुत देर हो जाने के कारण, मुझे दस मील के लिए एक टैक्सी किराए पर लेनी पड़ी, और फिर ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों को पार करने के लिए एक कार किराए पर लेनी पड़ी।

मैं साढ़े दस बजे घर पहुँचा। वे बिस्तर पर नहीं थे।

मेरी मां और बहन दोनों गलियारे में मुझसे मिलीं - उदास - चुप - पीली पड़ी हुई! मैं इतना सदमे में और भयभीत था कि मैं बोल नहीं सका, वह जानकारी नहीं मांग सका जिसे पाने के लिए मैं बहुत उत्सुक था लेकिन साथ ही भयभीत भी था।

'एग्नेस!' मेरी माँ ने कहा, मानो वह अपनी किसी प्रबल भावना को दबाने की कोशिश कर रही हो।

‘ओह, एग्नेस!’ मैरी चिल्लाई और फूट-फूटकर रोने लगी।

मैंने हांफते हुए जवाब के लिए पूछा, 'वह कैसा है?'

'मृत!'

मुझे इसी जवाब की उम्मीद थी: लेकिन फिर भी झटका उतना ही जबरदस्त लगा।

अध्याय XIX — पत्र

मेरे पिता के पार्थिव शरीर को समाधि में दफना दिया गया था; और हम, उदास चेहरों और गंभीर वस्त्रों के साथ, सादे नाश्ते की मेज पर बैठे अपने भविष्य के जीवन की योजनाओं पर विचार कर रहे थे। मेरी माँ का दृढ़ मन इस पीड़ा के आगे भी नहीं झुका था: उनका हौसला, भले ही टूट गया था, लेकिन टूटा नहीं था। मैरी की इच्छा थी कि मैं हॉर्टन लॉज वापस जाऊँ, और हमारी माँ उनके और मिस्टर रिचर्डसन के साथ विकारेज में आकर रहें: उन्होंने कहा कि वे भी यही चाहते हैं, और यह व्यवस्था सभी पक्षों के लिए लाभकारी होगी; क्योंकि मेरी माँ का साथ और अनुभव उनके लिए अमूल्य होगा, और वे उन्हें खुश रखने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। लेकिन कोई भी तर्क या विनती काम नहीं आई: मेरी माँ जाने के लिए दृढ़ थीं। ऐसा नहीं था कि उन्होंने अपनी बेटी की नेक इच्छाओं और इरादों पर एक पल के लिए भी संदेह किया हो; बल्कि उन्होंने कहा कि जब तक ईश्वर उन्हें स्वास्थ्य और शक्ति प्रदान करते हैं, वे उनका उपयोग अपनी आजीविका कमाने के लिए करेंगी, और किसी पर बोझ नहीं बनेंगी; क्या उसकी निर्भरता बोझ के रूप में महसूस की जाएगी या नहीं। यदि वह किसी पादरी के निवास में किराएदार के रूप में रहने का खर्च उठा सकती, तो वह अन्य सभी घरों से पहले उसी को अपना निवास स्थान चुनती; लेकिन ऐसी परिस्थितियाँ न होने के कारण, वह कभी भी वहाँ नहीं आती, सिवाय कभी-कभार आने-जाने के: जब तक कि बीमारी या विपत्ति के कारण उसकी सहायता वास्तव में

आवश्यक न हो जाए, या जब तक कि उम्र या दुर्बलता उसे अपना भरण-पोषण करने में असमर्थ न बना दे।

‘नहीं, मैरी,’ उसने कहा, ‘अगर रिचर्डसन और तुम्हारे पास कुछ बचता है, तो उसे अपने परिवार के लिए बचाकर रखना चाहिए; और एग्नेस और मुझे अपने लिए शहद इकट्ठा करना चाहिए। बेटियों को पढ़ाने के कारण, मैं अपनी उपलब्धियों को भूली नहीं हूँ। ईश्वर की कृपा से, मैं इस व्यर्थ के पछतावे को रोक लूँगी,’ उसने कहा, जबकि उसकी कोशिशों के बावजूद उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे; लेकिन उसने उन्हें पोंछ लिया और दृढ़ता से सिर हिलाते हुए आगे कहा, ‘मैं प्रयास करूँगी और किसी घनी आबादी वाले लेकिन स्वस्थ इलाके में सुविधाजनक स्थान पर एक छोटा सा घर ढूँढूँगी, जहाँ हम कुछ युवतियों को रहने और पढ़ाने के लिए रखेंगे — अगर हमें मिल सकें — और जितने भी विद्यार्थी आएँ या जितने हम पढ़ा सकें, उन्हें पढ़ाएँगे। तुम्हारे पिता के रिश्तेदार और पुराने दोस्त हमें कुछ विद्यार्थी भेज सकेंगे या अपनी सिफ़ारिशों से हमारी मदद कर सकेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है: मैं अपने रिश्तेदारों से नहीं पूछूँगी। एग्नेस, तुम्हारा क्या कहना है? क्या तुम अपनी वर्तमान स्थिति छोड़कर कोशिश करने को तैयार हो?’

'बिल्कुल तैयार हूं, मां; और मैंने जो पैसे बचाए हैं, उनसे घर का सामान आ जाएगा। ये सीधे बैंक से लिए जाएंगे।'

जब इसकी जरूरत होगी, तब हमें पहले घर हासिल करना होगा और प्रारंभिक तैयारियों को पूरा करना होगा।

मैरी ने अपने पास जो थोड़ा-बहुत था, उसे उधार देने की पेशकश की; लेकिन मेरी माँ ने इसे यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि हमें मितव्ययी योजना से शुरुआत करनी होगी; और उन्हें उम्मीद थी कि मेरी पूरी या आंशिक संपत्ति, फर्नीचर की बिक्री से मिलने वाली राशि और हमारे प्यारे पापा ने कर्ज चुकाने के बाद से जो थोड़ी-बहुत बचत की थी, वह क्रिसमस तक हमारे लिए पर्याप्त होगी; और उम्मीद थी कि क्रिसमस तक हम सब मिलकर कुछ न कुछ कमा लेंगे। अंततः यही योजना तय हुई; और पूछताछ और तैयारियाँ तुरंत शुरू कर दी जाएँगी; और जब मेरी माँ इन कामों में व्यस्त होंगी, मैं अपनी चार सप्ताह की छुट्टियों के अंत में हॉर्टन लॉज लौट आऊँगी और स्कूल के शीघ्र प्रारंभ के लिए सब कुछ व्यवस्थित हो जाने पर अपने अंतिम प्रस्थान की सूचना दे दूँगी।

जिस सुबह का मैंने जिक्र किया है, मेरे पिता की मृत्यु के लगभग दो सप्ताह बाद, हम इन्हीं बातों पर चर्चा कर रहे थे, तभी मेरी माँ के लिए एक पत्र लाया गया। उसे देखते ही उनका चेहरा लाल हो गया - जो हाल ही में चिंता और अत्यधिक शोक के कारण काफी पीला पड़ गया था। 'मेरे पिता का पत्र!' उन्होंने बुदबुदाते हुए जल्दी से पत्र का कवर फाड़ दिया। कई वर्षों से उन्हें अपने किसी रिश्तेदार से कोई पत्र नहीं मिला था। स्वाभाविक रूप से यह जानने की उत्सुकता में कि पत्र में क्या लिखा होगा, मैंने उन्हें पढ़ते हुए देखा और उन्हें गुस्से में होंठ काटते और भौंहें सिकोड़ते देखकर थोड़ा आश्चर्यचकित हुआ। पत्र पढ़ने के बाद, उन्होंने कुछ अनादरपूर्वक उसे मेज पर फेंक दिया और तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ कहा - 'तुम्हारे दादाजी ने मुझ पर इतनी कृपा की है कि मुझे पत्र लिखा है।' वह कहते हैं कि उन्हें कोई संदेह नहीं है कि मैं अपने "दुर्भाग्यपूर्ण विवाह" के लिए लंबे समय से पश्चाताप कर रही हूँ, और यदि मैं इसे स्वीकार कर लूँ, और मान लूँ कि मैंने उनकी सलाह को अनदेखा करके गलती की और इसके लिए मुझे उचित रूप से कष्ट सहना पड़ा, तो वह मुझे एक बार फिर से एक सभ्य महिला बना देंगे - यदि मेरे लंबे अपमान के बाद यह संभव हो - और अपनी वसीयत में मेरी बेटियों को याद रखेंगे। एग्नेस, मेरा डेस्क ले आओ और ये चीजें भेज दो: मैं पत्र का उत्तर तुरंत दूंगी। लेकिन पहले, चूंकि मैं आप दोनों को विरासत से वंचित कर सकती हूँ, इसलिए यह उचित है कि मैं आपको बता दूँ कि मैं क्या कहना चाहती हूँ। मैं कहूँगी कि वह यह मानकर गलत हैं कि मुझे अपनी बेटियों के जन्म (जो मेरे जीवन का गौरव रही हैं, और संभवतः मेरे बुढ़ापे का सहारा होंगी) या अपने सबसे अच्छे और प्रिय मित्र के साथ बिताए तीस वर्षों पर पछतावा हो सकता है; - कि, यदि हमारे दुर्भाग्य तीन गुना अधिक होते (जब तक कि वे मेरी गलती न हों), तो भी मुझे आपके पिता के साथ उन्हें साझा करने और उन्हें यथासंभव सांत्वना देने पर और अधिक खुशी होती; और, यदि बीमारी में उनके कष्ट दस गुना भी होते, तो भी मुझे उनकी देखभाल करने और उन्हें कम करने के लिए किए गए प्रयासों पर कोई पछतावा नहीं होता; यदि उन्होंने किसी धनी महिला से विवाह किया होता, तो निस्संदेह उन पर विपत्तियाँ और कठिनाइयाँ आती रहतीं; जबकि मैं इतनी स्वार्थी हूँ कि यह मानती हूँ कि कोई और स्त्री उन्हें इन सबमें इतना अच्छा सहारा नहीं दे सकती थी: ऐसा नहीं है कि मैं बाकियों से श्रेष्ठ हूँ, बल्कि मैं उनके लिए बनी थी, और वह मेरे लिए; और मैं उन घंटों, दिनों, वर्षों की खुशियों पर उतना ही पछतावा नहीं कर सकती जो हमने साथ

बिताए हैं, और जो हम दोनों एक-दूसरे के बिना नहीं पा सकते थे, जितना कि बीमारी में उनकी देखभाल करने और दुख में उनका सहारा बनने के सौभाग्य पर।

'क्या इतना काफी है, बच्चों? — या मैं कहूँ कि पिछले तीस वर्षों में जो कुछ हुआ है, उसके लिए हम सभी बहुत दुखी हैं, और मेरी बेटियाँ चाहती हैं कि वे कभी पैदा ही न हुई होतीं; लेकिन चूंकि उन्हें यह दुर्भाग्य झेलना पड़ा है, इसलिए वे अपने दादाजी द्वारा दी जाने वाली किसी भी छोटी-मोटी चीज़ के लिए आभारी होंगी?'

बेशक, हम दोनों ने अपनी माँ के दृढ़ संकल्प की सराहना की; मैरी ने नाश्ते का सामान समेटा; मैं डेस्क ले आया; पत्र जल्दी से लिखा गया और भेज दिया गया; और उस दिन से, हमें अपने दादाजी के बारे में फिर कभी कोई खबर नहीं मिली, जब तक कि काफी समय बाद हमने अखबार में उनकी मृत्यु की घोषणा नहीं देखी - उनकी सारी सांसारिक संपत्ति, ज़ाहिर है, हमारे धनी अज्ञात चचेरे भाइयों को दे दी गई थी।

अध्याय XX — विदाई

ए-- नामक लोकप्रिय मनोरंजन स्थल में एक घर हमारे शिक्षण संस्थान के लिए किराए पर लिया गया; और शुरुआत में दो या तीन विद्यार्थियों का वादा प्राप्त किया गया। मैं जुलाई के मध्य में हॉर्टन लॉज लौट आया, और अपनी माँ को घर का सौदा पूरा करने, और अधिक विद्यार्थियों की व्यवस्था करने, हमारे पुराने घर का फर्नीचर बेचने और नए घर को सजाने का काम सौंप दिया।

हम अक्सर गरीबों पर तरस खाते हैं, क्योंकि उनके पास अपने दिवंगत रिश्तेदारों के लिए शोक मनाने का समय नहीं होता, और मजबूरी उन्हें अपने सबसे कठिन कष्टों में भी मेहनत करने के लिए विवश करती है: लेकिन क्या सक्रिय कार्य ही घोर दुःख का सबसे अच्छा उपाय नहीं है—निराशा का सबसे अचूक इलाज नहीं है? यह एक कठोर सांत्वना हो सकती है: जीवन की चिंताओं से परेशान होना कठिन लग सकता है

जब हमें इसके सुखों में कोई रुचि न हो; काम करने के लिए प्रेरित होना कठिन लग सकता है जब दिल टूटने को तैयार हो, और व्याकुल आत्मा केवल मौन रोने के लिए विश्राम की याचना करती हो: लेकिन क्या परिश्रम उस विश्राम से बेहतर नहीं है जिसकी हम लालसा करते हैं? और क्या वे छोटी-छोटी, कष्टदायक चिंताएँ उस महान पीड़ा पर निरंतर चिंतन करने से कम हानिकारक नहीं हैं जो हमें दबा रही है? इसके अलावा, हम आशा के बिना चिंताओं, परेशानियों और परिश्रम को सहन नहीं कर सकते—भले ही वह आशा हमारे आनंदहीन कार्य को पूरा करने, किसी आवश्यक परियोजना को पूरा करने या किसी और परेशानी से बचने की ही क्यों न हो। बहरहाल, मुझे इस बात की खुशी थी कि मेरी माँ के पास अपने कर्मठ शरीर की हर क्षमता को इस्तेमाल करने के लिए पर्याप्त काम था। हमारे दयालु पड़ोसियों ने इस बात पर शोक व्यक्त किया कि धन और प्रतिष्ठा में इतनी समृद्ध होने के बावजूद, उन्हें दुख के इस समय में इतनी कठिनाई का सामना करना पड़ा; लेकिन मुझे विश्वास है कि अगर उन्हें समृद्धि में रहने दिया जाता, उन्हें उस घर में रहने की स्वतंत्रता दी जाती, जो उनके बचपन के सुख और बाद के दुख का गवाह था, और उन पर कोई कठोर बाध्यता न होती जो उन्हें अपने शोक में डूबे रहने और विलाप करने से रोकती, तो उन्हें तीन गुना अधिक पीड़ा सहनी पड़ती।

मैं उन भावनाओं का विस्तार से वर्णन नहीं करूँगा जिनके साथ मैंने पुराने घर, जाने-माने बगीचे, छोटे से गाँव के गिरजाघर को छोड़ा - जो मेरे लिए दुगना प्रिय था, क्योंकि मेरे पिता, जिन्होंने तीस वर्षों तक इसकी दीवारों के भीतर पढ़ाया और प्रार्थना की थी, अब इसकी लकड़ियों के नीचे सो रहे थे - और पुरानी बंजर पहाड़ियों को, जो अपनी वीरानगी में ही मनमोहक थीं, जिनके बीच संकरी घाटियाँ हरे-भरे जंगल और चमचमाते पानी से मुस्कुराती थीं - वह घर जहाँ मेरा जन्म हुआ था, मेरी सभी प्रारंभिक यादों का केंद्र, वह स्थान जहाँ जीवन भर मेरी सांसारिक भावनाएँ केंद्रित रहीं; - और उन्हें हमेशा के लिए छोड़कर चला गया! सच है, मैं हॉर्टन लॉज लौट रहा था, जहाँ अनेक बुराइयों के बीच, सुख का एक स्रोत अभी भी शेष था: लेकिन वह सुख अत्यधिक पीड़ा से मिला हुआ था; और मेरा प्रवास, अफसोस! केवल छह सप्ताह तक सीमित था। और उस अनमोल समय में भी, दिन-ब-दिन बीतते गए और मैं उन्हें देख नहीं पाया: गिरजाघर के अलावा, लौटने के बाद दो सप्ताह तक मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। मुझे तो यह बहुत लंबा समय लगा: और, चूंकि मैं अक्सर अपने उस चंचल

शिष्य के साथ बाहर रहती थी, इसलिए स्वाभाविक रूप से आशाएँ बढ़ती रहतीं और निराशाएँ भी आतीं; और फिर, मैं अपने मन से कहती, 'यह एक पुख्ता सबूत है - अगर तुम इसे समझने की समझ या इसे स्वीकार करने की ईमानदारी दिखा सको - कि वह तुम्हारी परवाह नहीं करता। अगर वह तुम्हारे बारे में उतना ही सोचता जितना तुम उसके बारे में सोचती हो, तो वह तुमसे कई बार मिलने का प्रबंध कर चुका होता: तुम्हें यह अपने मन की भावनाओं से समझना चाहिए। इसलिए, इस बकवास को छोड़ दो: तुम्हारे पास आशा का कोई आधार नहीं है: इन दुखद विचारों और मूर्खतापूर्ण इच्छाओं को तुरंत अपने मन से निकाल दो, और अपने कर्तव्य और अपने सामने पड़े नीरस, खाली जीवन की ओर मुड़ जाओ। तुम्हें पता होना चाहिए था कि ऐसी खुशी तुम्हारे लिए नहीं थी।'

लेकिन आखिरकार मैंने उसे देख ही लिया। मैं नैन्सी ब्राउन से मिलकर लौट रहा था और खेत पार कर रहा था, तभी अचानक वह मेरे सामने आ गया। मैंने नैन्सी ब्राउन से मिलने का मौका तब लिया था जब मटिल्डा मरे अपनी बेजोड़ घोड़ी पर सवार थीं। उसने मेरे गहरे दुख के बारे में ज़रूर सुना होगा: उसने कोई सहानुभूति नहीं दिखाई, कोई संवेदना नहीं जताई: लेकिन उसके मुंह से निकले पहले शब्द थे, — ‘आपकी माँ कैसी हैं?’ और यह कोई सामान्य सवाल नहीं था, क्योंकि मैंने उसे कभी नहीं बताया था कि मेरी माँ हैं: अगर उसे पता भी था, तो उसने दूसरों से ही सुना होगा; और इसके अलावा, उसके लहजे और तरीके में सच्ची सद्भावना और गहरी, मार्मिक, सहज सहानुभूति झलक रही थी। मैंने शिष्टाचारपूर्वक उसे धन्यवाद दिया और बताया कि वह ठीक हैं। ‘वह क्या करेंगी?’ अगला सवाल था। कई लोग इसे अनुचित प्रश्न समझकर टालमटोल वाला जवाब दे देते; लेकिन ऐसा विचार मेरे मन में कभी नहीं आया, और मैंने अपनी माँ की योजनाओं और भविष्य के बारे में संक्षेप में, लेकिन स्पष्ट रूप से बताया।

‘तो क्या आप जल्द ही इस जगह से चले जाएंगे?’ उसने कहा।

'हां, एक महीने में।'

वह एक मिनट के लिए रुका, मानो सोच में डूबा हो। जब उसने दोबारा बोलना शुरू किया, तो मुझे उम्मीद थी कि वह मेरे जाने पर अपनी चिंता व्यक्त करेगा; लेकिन उसने केवल इतना कहा, "मुझे लगता है कि आप जाने के लिए तैयार होंगे?"

‘हां—कुछ चीजों के लिए,’ मैंने जवाब दिया।

‘कुछ चीजों के लिए ही – मुझे आश्चर्य है कि किस बात पर आपको पछतावा होना चाहिए?’

मुझे इस बात पर कुछ हद तक गुस्सा आया; क्योंकि इससे मुझे शर्मिंदगी हुई: मुझे इस बात का पछतावा होने का केवल एक ही कारण था; और वह एक गहरा रहस्य था, जिसके बारे में मुझे परेशान करने का उसे कोई अधिकार नहीं था।

मैंने कहा, 'क्यों?' 'आपको ऐसा क्यों लगता है कि मुझे यह जगह नापसंद है?'

‘तुमने खुद ही मुझसे ऐसा कहा था,’ निर्णायक जवाब था। ‘तुमने कम से कम इतना तो कहा ही था कि तुम बिना दोस्त के संतुष्ट जीवन नहीं जी सकते; और यह कि तुम्हारा यहाँ कोई दोस्त नहीं है, और न ही दोस्त बनाने की कोई संभावना है — और इसके अलावा, मैं जानता हूँ कि तुम्हें यह पसंद नहीं होगा।’

लेकिन अगर आपको ठीक से याद हो, तो मैंने कहा था, या कहने का इरादा था, कि मैं दुनिया में एक दोस्त के बिना संतुष्ट नहीं रह सकता: मैं इतना भी नासमझ नहीं था कि मुझे हमेशा अपने पास एक दोस्त की ज़रूरत हो। मुझे लगता है कि मैं दुश्मनों से भरे घर में भी खुश रह सकता हूँ, अगर—’ लेकिन नहीं; यह वाक्य जारी नहीं रखना चाहिए— मैं रुका, और जल्दी से जोड़ा,— ‘और, इसके अलावा, हम उस जगह को आसानी से नहीं छोड़ सकते जहाँ हम दो या तीन साल रहे हों, बिना किसी पछतावे के।’

'क्या आपको अपनी इकलौती बची हुई छात्रा और साथी मिस मरे से बिछड़ने का अफसोस होगा?'

'मैं कह सकता हूँ कि मैं कुछ हद तक ऐसा करूँगा: उसकी बहन से बिछड़ना मेरे लिए दुखदायी रहा।'

मैं इसकी कल्पना कर सकता हूँ।

‘खैर, मिस मटिल्डा भी उतनी ही अच्छी हैं - बल्कि एक मामले में बेहतर हैं।’

'वह क्या है?'

वह ईमानदार है।

और दूसरा नहीं है?

'मैं उसे बेईमान नहीं कहूंगा; लेकिन यह स्वीकार करना होगा कि वह थोड़ी चालाक है।'

‘क्या वह धूर्त है? – मैंने उसे चंचल और अभिमानी देखा था – और अब,’ उसने

कुछ देर रुककर कहा, 'मुझे पूरा यकीन है कि वह धूर्त भी थी; लेकिन इतनी अधिक कि उसने अत्यंत सरलता और बेबाक खुलेपन का रूप धारण कर लिया था। हाँ,' उसने सोचते हुए आगे कहा, 'इसीलिए कुछ छोटी-छोटी बातें मुझे पहले थोड़ी उलझन में डाल रही थीं।'

उसके बाद, उन्होंने बातचीत को सामान्य विषयों की ओर मोड़ दिया। जब तक हम लगभग पार्क के द्वार तक नहीं पहुँच गए, तब तक वे मेरे साथ ही रहे: मुझे इतनी दूर तक साथ लाने के लिए उन्होंने निश्चित रूप से थोड़ा रास्ता बदला था, क्योंकि अब वे वापस मुड़ गए और मॉस लेन में गायब हो गए, जिसके प्रवेश द्वार से हम कुछ देर पहले ही गुज़रे थे। मुझे इस बात का ज़रा भी अफ़सोस नहीं था: अगर मेरे दिल में कोई दुख था, तो वह यही था कि वे आखिरकार चले गए थे—कि वे अब मेरे साथ नहीं चल रहे थे, और सुखद मुलाकात का वह छोटा सा समय समाप्त हो गया था। उन्होंने प्यार का एक शब्द भी नहीं कहा था, न ही कोमलता या स्नेह का कोई संकेत दिया था, फिर भी मैं बेहद खुश थी। उनके पास होना, उनकी बातें सुनना, और यह महसूस करना कि वे मुझे इस तरह की बातों के योग्य समझते हैं—कि मैं उनकी बातों को समझ सकती हूँ और उनकी सराहना कर सकती हूँ—यही मेरे लिए काफ़ी था।

"हाँ, एडवर्ड वेस्टन, मैं सचमुच दुश्मनों से भरे घर में भी खुश रह सकती हूँ, अगर मेरा एक भी ऐसा दोस्त हो जो मुझे सच्चे दिल से, दिल से और वफ़ादारी से प्यार करता हो; और अगर वो दोस्त तुम हो—भले ही हम दूर हों—एक-दूसरे से कभी-कभार ही बात हो, और मिलना तो और भी कम—भले ही मेहनत, मुसीबतें और परेशानियाँ मुझे घेरे रहें—तो भी वो मेरे लिए सपने में भी न सोची जा सकने वाली खुशी होगी! फिर भी कौन जानता है," मैंने मन ही मन कहा, जैसे ही मैं पार्क में आगे बढ़ी— "कौन जानता है कि इस एक महीने में क्या होगा? मैं लगभग तेईस साल जी चुकी हूँ, और मैंने बहुत दुख झेला है, और अभी तक बहुत कम सुख का स्वाद चखा है; क्या यह संभव है कि मेरा पूरा जीवन इतना ही अंधकारमय रहेगा? क्या यह संभव नहीं है कि ईश्वर मेरी प्रार्थनाएँ सुन लें, इन अंधकारमय सायों को दूर कर दें, और मुझे स्वर्ग की धूप की कुछ किरणें प्रदान करें? क्या वह मुझे उन आशीर्वादों से पूरी तरह वंचित कर देंगे जो दूसरों को इतनी आसानी से दिए जाते हैं, जो न तो उन्हें मांगते हैं और न ही प्राप्त होने पर स्वीकार करते हैं? क्या मैं अब भी आशा और भरोसा नहीं कर सकती?" मैंने कुछ समय के लिए आशा और भरोसा बनाए रखा: लेकिन,

अफसोस! समय बीतता चला गया: एक सप्ताह के बाद दूसरा सप्ताह बीतता गया, और मिस मटिल्डा के साथ टहलते समय एक दूर से झलक और दो क्षणिक मुलाकातों को छोड़कर - जिनमें मुश्किल से कुछ कहा गया था - मैंने उसे कहीं नहीं देखा: सिवाय, बेशक, चर्च में।

और अब, आखिरी रविवार आ गया था, और आखिरी प्रार्थना सभा। प्रवचन के दौरान मैं अक्सर आँसू बहाने को बेताब हो जाती थी—यह आखिरी बार था जब मैं उनसे कुछ सुन पा रही थी: मुझे पूरा यकीन था कि यही सबसे अच्छा था जो मैं किसी से सुन पाऊँगी। प्रवचन समाप्त हो गया— सभी लोग जा रहे थे; और मुझे भी उनके पीछे जाना था। मैंने उन्हें देखा था, और उनकी आवाज़ भी सुनी थी, शायद आखिरी बार। गिरजाघर के प्रांगण में, मटिल्डा पर दो मिस ग्रीन टूट पड़ीं। उन्हें उसकी बहन के बारे में कई सवाल पूछने थे, और न जाने क्या-क्या। काश वे बस इतना ही कहतीं, ताकि हम जल्दी से हॉर्टन लॉज वापस जा सकें: मैं अपने कमरे में या परिसर के किसी एकांत कोने में जाकर अपने भावों में खो जाना चाहती थी—आखिरी विदाई के आँसू बहाना चाहती थी, और अपनी झूठी आशाओं और व्यर्थ भ्रमों पर विलाप करना चाहती थी। बस एक बार, और फिर व्यर्थ सपनों को अलविदा—उसके बाद, केवल गंभीर, ठोस, दुखद वास्तविकता ही मेरे मन में बसी रहे। लेकिन जब मैंने यह फैसला कर लिया, तभी मेरे ठीक बगल से एक धीमी आवाज़ आई— ‘मुझे लगता है कि आप इस हफ्ते जा रही हैं, मिस ग्रे?’ ‘हाँ,’ मैंने जवाब दिया। मैं बहुत चौंक गई; और अगर मैं थोड़ी भी घबराई हुई होती, तो मैं निश्चित रूप से उसी समय कुछ फैसला कर लेती। शुक्र है, मैं नहीं थी।

श्री वेस्टन ने कहा, 'ठीक है, मैं आपसे विदा लेना चाहता हूँ - आपके जाने से पहले आपसे दोबारा मिलने की संभावना नहीं है।'

‘अलविदा, श्रीमान वेस्टन,’ मैंने कहा। ओह, शांत भाव से यह कहना मेरे लिए कितना मुश्किल था! मैंने उन्हें अपना हाथ दिया। उन्होंने कुछ सेकंड तक मेरा हाथ थामे रखा।

उन्होंने कहा, 'हो सकता है हम फिर मिलें; क्या इससे आपको कोई फर्क पड़ेगा कि हम मिलें या न मिलें?'

'जी हां, मुझे आपसे दोबारा मिलकर बहुत खुशी होगी।'

मैं इससे कम कुछ कह ही नहीं सकती थी। उन्होंने प्यार से मेरा हाथ दबाया और

चले गए। अब मैं फिर से खुश थी—हालांकि पहले से कहीं ज़्यादा रोने को बेताब थी। अगर उस समय मुझे बोलने के लिए मजबूर किया जाता, तो सिसकियों का सिलसिला शुरू हो जाता; और जैसा कि था, मैं अपनी आँखों से पानी नहीं रोक पा रही थी। मैं मिस मरे के साथ चलती रही, अपना चेहरा दूसरी तरफ़ करके, और कई बातों पर ध्यान न देते हुए, जब तक कि उन्होंने चिल्लाकर यह नहीं कह दिया कि मैं या तो बहरी हूँ या बेवकूफ़; और फिर (खुद को संभालते हुए), जैसे कोई गहरी सोच से जागता है, मैंने अचानक ऊपर देखा और पूछा कि वह क्या कह रही थीं।

अध्याय XXI — विद्यालय

मैंने हॉर्टन लॉज छोड़ दिया और ए-- में अपने नए घर में अपनी माँ के पास चली गई। मैंने उन्हें स्वस्थ, शांत और प्रसन्न पाया, हालाँकि उनका व्यवहार संयमित और गंभीर था। शुरुआत में हमारे पास केवल तीन बोर्डिंग छात्र और आधा दर्जन डे-स्टूडेंट थे; लेकिन उचित देखभाल और लगन से हमें उम्मीद थी कि हम जल्द ही दोनों की संख्या बढ़ा लेंगे।

मैंने इस नए जीवन शैली के कर्तव्यों को निभाने के लिए पूरी ऊर्जा से खुद को तैयार किया। मैं इसे नया इसलिए कहती हूँ, क्योंकि वास्तव में अपनी माँ के साथ अपने ही स्कूल में काम करने और अजनबियों के बीच एक मज़दूर के रूप में काम करने में बहुत बड़ा अंतर था, जहाँ बूढ़े और जवान सभी मुझे तिरस्कृत और कुचलते थे; और पहले कुछ हफ्तों तक मैं बिल्कुल भी दुखी नहीं थी। 'हो सकता है हम फिर मिलें,' और 'क्या इससे तुम्हें कोई फर्क पड़ेगा कि हम मिलें या न मिलें?' - ये शब्द अब भी मेरे कानों में गूँज रहे थे और मेरे दिल में बसे हुए थे: ये मेरे लिए गुप्त सांत्वना और सहारा थे। 'मैं उसे फिर देखूँगी। - वह आएगा; या वह लिखेगा।' वास्तव में, आशा के लिए कोई भी वादा इतना अच्छा या इतना बढ़ा-चढ़ाकर नहीं था कि वह मेरे कान में

फुसफुसा न सके। मुझे उसकी आधी बातों पर भी विश्वास नहीं था: मैंने सब पर हँसने का नाटक किया; लेकिन मैं जितना सोचती थी उससे कहीं अधिक भोली थी; वरना, जब सामने के दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी और नौकरानी ने दरवाजा खोला तो मेरी माँ को यह बताने के लिए कि एक सज्जन उनसे मिलना चाहते हैं, मेरा दिल इतनी जोर से क्यों धड़का? और मैं पूरे दिन उदास क्यों रही, क्योंकि पता चला कि वह हमारे स्कूल में अपनी सेवाएं देने आए एक संगीत शिक्षक थे? और मेरी सांसें एक पल के लिए क्यों थम गईं, जब डाकिया दो-तीन पत्र लेकर आया और मेरी माँ ने कहा, 'लो, एग्नेस, यह तुम्हारे लिए है,' और उनमें से एक पत्र मेरी तरफ फेंक दिया? और जब मैंने देखा कि यह एक सज्जन के नाम से है तो मेरे चेहरे पर इतनी गर्मी क्यों दौड़ गई? और क्यों—ओह! क्यों मुझे निराशा का वह ठंडा, घिनौना एहसास हुआ, जब मैंने पत्र का कवर फाड़ा और पाया कि यह केवल मैरी का पत्र था, जो किसी कारणवश उसके पति ने उसके नाम से भेजा था?

क्या बात यहाँ तक आ गई थी कि मुझे अपनी इकलौती बहन का पत्र पाकर निराशा हुई, वो भी इसलिए कि वो किसी अनजान व्यक्ति ने नहीं लिखा था? प्यारी मैरी! उसने तो उसे इतने प्यार से लिखा था — और यह सोचकर कि मुझे उसे पाकर बहुत खुशी होगी! — मैं उसे पढ़ने के लायक भी नहीं समझ रही थी! और मुझे लगता है कि अपने आप पर आहत होकर, मुझे उसे तब तक के लिए अलग रख देना चाहिए था जब तक मैं अपने मन को बेहतर स्थिति में न ढाल लूँ और उसे पढ़ने के सम्मान और विशेषाधिकार के योग्य न हो जाऊँ: लेकिन मेरी माँ देख रही थीं और यह जानने के लिए उत्सुक थीं कि उसमें क्या खबर है; इसलिए मैंने उसे पढ़ा और उन्हें दे दिया, और फिर विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए कक्षा में चली गई: लेकिन कॉपियों और गणित की चिंताओं के बीच — यहाँ गलतियाँ सुधारने और वहाँ कर्तव्य की उपेक्षा करने के बीच, मैं मन ही मन खुद को बहुत कठोरता से कोस रही थी। 'तुम कितनी मूर्ख हो,' मेरे दिमाग ने मेरे दिल से कहा, या मेरे कठोर मन ने मेरे कोमल मन से कहा; — 'तुम यह सपना भी कैसे देख सकती थी कि वह तुम्हें पत्र लिखेगा? ऐसी उम्मीद रखने का तुम्हारा क्या आधार है— या यह कि वह तुमसे मिलेगा, या तुम्हारे बारे में कोई चिंता करेगा— या तुम्हारे बारे में दोबारा सोचेगा भी?' 'क्या आधार?' — और फिर होप ने मेरे सामने वह आखिरी, संक्षिप्त मुलाकात रखी, और उन शब्दों को दोहराया जिन्हें मैंने अपनी स्मृति में बड़ी ईमानदारी से संजो कर रखा था। 'अच्छा, तो उसमें क्या था?—

भला कौन इतनी कमजोर टहनी पर अपनी उम्मीदें टिकाता है? उन शब्दों में ऐसा क्या था जो कोई आम परिचित किसी दूसरे से नहीं कह सकता था? बेशक, यह संभव था कि तुम दोबारा मिलो: अगर तुम न्यूजीलैंड जा रही होती तो वह ऐसा कह सकता था; लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि उसका तुमसे मिलने का कोई इरादा था— और फिर, इसके बाद जो सवाल आया, वह तो कोई भी पूछ सकता है: और तुमने क्या जवाब दिया?— बस एक मूर्खतापूर्ण, साधारण सा जवाब, जैसा कि तुम मास्टर मरे को या किसी और को देतीं, जिनके साथ तुम्हारे अच्छे संबंध रहे हों।' 'लेकिन फिर,' होप ने जोर देकर कहा, 'जिस लहजे और तरीके से उसने बात की।' 'अरे, यह तो बकवास है!' वह हमेशा प्रभावशाली ढंग से बोलते हैं; और उस समय उनके ठीक सामने ग्रीन्स और मिस मटिल्डा मरे थीं, और अन्य लोग भी वहाँ से गुज़र रहे थे, इसलिए उन्हें आपके बिल्कुल पास खड़ा होना पड़ा और बहुत धीमी आवाज़ में बोलना पड़ा, अन्यथा वह चाहते थे कि हर कोई उनकी बात सुने, जो कि - हालाँकि यह कोई खास बात नहीं थी - ज़ाहिर है, वह नहीं चाहते थे। लेकिन फिर, सबसे बढ़कर, हाथ का वह ज़ोरदार, फिर भी कोमल स्पर्श, जो मानो कह रहा हो, 'मुझ पर भरोसा करो;' और इसके अलावा भी कई अन्य बातें - इतनी मनमोहक, लगभग इतनी चापलूसी भरी कि खुद से भी दोहराना मुश्किल हो। 'घोर मूर्खता - इतनी बेतुकी कि खंडन की आवश्यकता ही नहीं - केवल कल्पना की उपज, जिस पर आपको शर्म आनी चाहिए। अगर आप अपने अनाकर्षक बाहरी रूप, अपने अरुचिकर संकोच, अपनी मूर्खतापूर्ण झिझक पर विचार करें - जो आपको ठंडा, नीरस, अनाड़ी और शायद चिड़चिड़ा भी दिखाती होगी; अगर तुमने शुरू से ही इन बातों पर सही से विचार किया होता, तो तुम कभी ऐसे घमंडी विचार मन में नहीं लाते: और अब जब तुमने इतनी मूर्खता की है, तो कृपया पश्चाताप करो और सुधर जाओ, और अब ऐसा दोबारा न हो!

मैं यह तो नहीं कह सकती कि मैंने अपने ही निर्देशों का पूर्णतया पालन किया: परन्तु समय बीतने के साथ-साथ इस प्रकार का तर्क और भी प्रभावी होता गया, और श्री वेस्टन का न तो कोई आभास हुआ और न ही कोई खबर; अंततः, मैंने आशा ही छोड़ दी, क्योंकि मेरे हृदय ने भी स्वीकार कर लिया था कि सब व्यर्थ है। परन्तु फिर भी, मैं उनके बारे में सोचती रहती: मैं उनकी छवि को अपने मन में संजोए रखती; और उनके हर शब्द, हर दृष्टि और हर हावभाव को संजो कर रखती; और उनके गुणों और उनकी विशिष्टताओं पर, और वास्तव में, उनके बारे में मैंने जो कुछ भी देखा, सुना या

कल्पना की थी, उस पर विचार करती रहती।

एग्नेस, मुझे लगता है कि समुद्र की ताज़ी हवा और जगह बदलने से तुम्हें कोई फायदा नहीं हो रहा है: मैंने तुम्हें इतना उदास कभी नहीं देखा। लगता है तुम बहुत ज्यादा बैठती हो और पढ़ाई-लिखाई की चिंताओं को अपने ऊपर हावी होने देती हो। तुम्हें चीजों को सहजता से लेना सीखना चाहिए और अधिक सक्रिय और खुश रहना चाहिए; जब भी मौका मिले व्यायाम करो और सबसे थकाऊ काम मुझे सौंप दो: इनसे केवल मेरे धैर्य की परीक्षा होगी और शायद मेरा गुस्सा भी थोड़ा बढ़ जाएगा।

ईस्टर की छुट्टियों के दौरान एक सुबह जब हम काम पर बैठे थे, मेरी माँ ने ये कहा। मैंने उन्हें भरोसा दिलाया कि मेरा काम ज़रा भी बोझिल नहीं है; मैं ठीक हूँ; या अगर कुछ गड़बड़ है भी, तो वसंत के कठिन महीने बीतते ही ठीक हो जाएगी: गर्मी आने पर मैं उतनी ही तंदुरुस्त और स्वस्थ हो जाऊँगी जितनी वो मुझे देखना चाहती हैं: लेकिन अंदर ही अंदर उनकी बात सुनकर मैं चौंक गई। मैं जानती थी कि मेरी ताकत कम हो रही है, मेरी भूख खत्म हो गई है, और मैं उदास और निराश हो गई हूँ; और अगर सच में वो मेरी कभी परवाह नहीं कर सकते, और मैं उन्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगी — अगर मुझे उनकी खुशी में योगदान देने से मना कर दिया गया है — हमेशा के लिए प्यार के सुखों का स्वाद चखने, आशीर्वाद देने और आशीर्वाद पाने से मना कर दिया गया है — तो जीवन एक बोझ होगा, और अगर मेरे स्वर्गिक पिता मुझे बुला लें, तो मुझे आराम करने में खुशी होगी। लेकिन मरना और अपनी माँ को छोड़ना ठीक नहीं होगा। स्वार्थी, नालायक बेटी, उन्हें एक पल के लिए भी भूल जाना! क्या उनकी खुशी का एक बड़ा हिस्सा मेरे ऊपर नहीं था? — और हमारे युवा विद्यार्थियों का कल्याण भी? क्या मुझे उस काम से पीछे हट जाना चाहिए जो ईश्वर ने मेरे सामने रखा था, क्योंकि वह मेरी रुचि के अनुरूप नहीं था? क्या उन्हें ही सबसे अच्छी तरह पता नहीं था कि मुझे क्या करना चाहिए और कहाँ परिश्रम करना चाहिए? क्या मुझे अपना कार्य पूरा करने से पहले ही उनकी सेवा छोड़ देनी चाहिए और बिना परिश्रम किए ही उनके विश्राम में प्रवेश करने की आशा रखनी चाहिए? नहीं; उनकी सहायता से मैं उठूंगा और अपने निर्धारित कर्तव्य को लगन से पूरा करूंगा। यदि इस संसार में सुख मेरे लिए नहीं है, तो मैं अपने आस-पास के लोगों के कल्याण के लिए प्रयास करूंगा, और मेरा प्रतिफल परलोक में अवश्य मिलेगा। मैंने अपने मन में यही कहा; और उस क्षण से मैंने अपने विचारों को केवल एडवर्ड वेस्टन की ओर ही जाने दिया — या कम से कम

कभी-कभार ही उनके बारे में सोचा — मानो कभी-कभार ही: और चाहे यह वास्तव में ग्रीष्म ऋतु का आगमन हो, या इन अच्छे संकल्पों का प्रभाव, या समय का बीत जाना, या इन सबका मिला-जुला प्रभाव, मन की शांति शीघ्र ही बहाल हो गई; और शारीरिक स्वास्थ्य और स्फूर्ति भी धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, वापस आने लगी।

जून की शुरुआत में मुझे लेडी एशबी, स्वर्गीय मिस मरे का पत्र मिला। उन्होंने अपनी शादी की यात्रा के दौरान दो-तीन बार मुझे पत्र लिखे थे, हर बार उनका मूड अच्छा रहता था और वे बेहद खुश होने का दावा करती थीं। हर बार मुझे आश्चर्य होता था कि इतनी खुशियों और अलग-अलग नज़ारों के बीच वे मुझे भूली तो नहीं थीं। लेकिन फिर अचानक एक लंबा अंतराल आ गया; और ऐसा लगा कि वे मुझे भूल ही गई थीं, क्योंकि सात महीने से ज़्यादा समय बीत गया और कोई पत्र नहीं आया। बेशक, मुझे इस बात का दुख नहीं हुआ, हालांकि मैं अक्सर सोचती रहती थी कि वे कैसी हैं; और जब यह आखिरी पत्र अचानक आया, तो मुझे इसे पाकर बहुत खुशी हुई। यह एशबी पार्क से लिखा गया था, जहाँ वे आखिरकार बसने आई थीं, इससे पहले वे अपना समय महाद्वीप और महानगर के बीच बाँटती थीं। उन्होंने इतने लंबे समय तक मेरी उपेक्षा करने के लिए बहुत माफी मांगी, मुझे यकीन दिलाया कि वे मुझे भूली नहीं थीं, और अक्सर पत्र लिखने का इरादा रखती थीं, वगैरह-वगैरह, लेकिन हमेशा किसी न किसी कारण से लिख नहीं पाती थीं। उसने स्वीकार किया कि वह बहुत ही अय्याशी भरी जिंदगी जी रही थी, और मैं उसे बहुत दुष्ट और लापरवाह समझती थी; लेकिन इसके बावजूद, वह बहुत सोचती थी, और अन्य बातों के अलावा, वह मुझसे मिलना चाहती थी। उसने लिखा, 'हम यहाँ कई दिनों से हैं। हमारे साथ एक भी दोस्त नहीं है, और शायद हम बहुत नीरस होंगे। आप जानते हैं कि मुझे अपने पति के साथ घोंसले में दो कछुओं की तरह रहना कभी पसंद नहीं आया, चाहे वह कोट पहनने वाला सबसे प्यारा प्राणी ही क्यों न हो; इसलिए मुझ पर दया कीजिए और आइए। मुझे लगता है कि आपकी ग्रीष्मकालीन छुट्टियाँ जून में शुरू होती हैं, जैसे बाकी लोगों की होती हैं; इसलिए आप समय की कमी का बहाना नहीं बना सकते; और आपको आना ही होगा - वास्तव में, अगर आप नहीं आए तो मैं मर जाऊंगी। मैं चाहती हूँ कि आप एक दोस्त की तरह मुझसे मिलने आएं और लंबे समय तक रुकें। जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, मेरे साथ सर थॉमस और बूढ़ी लेडी एशबी के अलावा कोई नहीं है: लेकिन आपको उनकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है - उनकी संगति से

हमें ज़्यादा परेशानी नहीं होगी।' और आपके लिए एक अलग कमरा होगा, जब भी आप चाहें, आराम करने के लिए, और जब मेरी संगति पर्याप्त मनोरंजक न हो, तो पढ़ने के लिए ढेर सारी किताबें होंगी। मुझे याद नहीं कि आपको बच्चे पसंद हैं या नहीं; अगर पसंद हैं, तो आप मेरे बच्चे को देखने का आनंद ले सकती हैं - निस्संदेह दुनिया का सबसे प्यारा बच्चा; और इससे भी अधिक खुशी की बात यह है कि मुझे उसकी देखभाल करने की चिंता नहीं है - मैंने ठान लिया था कि मैं इस झंझट में नहीं पड़ूंगी। दुर्भाग्य से, यह एक लड़की है, और सर थॉमस ने मुझे कभी माफ नहीं किया है: लेकिन, अगर आप आ जाएंगी, तो मैं वादा करती हूं कि जैसे ही वह बोलना सीख जाएगी, आप उसकी देखभाल करने वाली बन जाएंगी; और आप उसका सही तरीके से पालन-पोषण करेंगी, और उसे उसकी माँ से भी बेहतर महिला बनाएंगी। और आप मेरे पूडल को भी देखेंगी: पेरिस से आयातित एक शानदार छोटा सा प्यारा कुत्ता: और दो बेहतरीन इतालवी पेंटिंग - मुझे कलाकार का नाम याद नहीं है। निस्संदेह आप उनमें अद्भुत सुंदरता खोज पाएंगी, जिसे आपको मुझे बताना होगा, क्योंकि मैं केवल सुनी-सुनाई बातों से ही प्रशंसा करती हूं; और इसके अलावा कई और खूबसूरत अनोखी चीज़ें भी हैं, जिन्हें मैंने रोम और अन्य जगहों से खरीदा था; और अंत में, आप मेरा नया घर देखेंगे - वह शानदार घर और ज़मीन जिसकी मैं बहुत ज़्यादा चाहत रखती थी। अफ़सोस! उम्मीद की खुशी, उसे पाने की खुशी से कितनी कहीं ज़्यादा होती है! वाह, क्या बात है! मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि मैं अब एक गंभीर बुज़ुर्ग महिला बन गई हूँ: कृपया आइए, भले ही सिर्फ़ इस अद्भुत बदलाव को देखने के लिए ही सही। मुझे डाक से जवाब लिखिएगा और बताइएगा कि आपकी छुट्टियाँ कब से शुरू हो रही हैं, और यह भी कहिएगा कि आप परसों आएँगे और छुट्टी खत्म होने से एक दिन पहले तक रुकेंगे - मुझ पर दया करके।

‘आपकी स्नेहपूर्वक,

‘रोसाली एशबी।’

मैंने यह अजीबोगरीब पत्र अपनी माँ को दिखाया और उनसे सलाह ली कि मुझे क्या करना चाहिए। उन्होंने मुझे जाने की सलाह दी; और मैं चला गया — लेडी एशबी और उनके बच्चे से मिलने के लिए और उन्हें सांत्वना या सलाह देकर जो भी मदद कर सकता था, करने के लिए पूरी तरह से तैयार था; क्योंकि मुझे लगा कि वह दुखी होंगी,

वरना वह मुझसे इस तरह अनुरोध नहीं करतीं — लेकिन जैसा कि आसानी से समझा जा सकता है, मुझे यह महसूस हुआ कि निमंत्रण स्वीकार करके मैंने उनके लिए एक बड़ा त्याग किया है और अपनी भावनाओं को कई तरह से ठेस पहुँचाई है, बजाय इसके कि बैरोनेट की पत्नी द्वारा एक मित्र के रूप में उनसे मिलने का अनुरोध किए जाने के सम्मान से प्रसन्न होऊं। हालाँकि, मैंने तय किया कि मेरी यात्रा ज़्यादा से ज़्यादा कुछ दिनों की ही होगी; और मैं यह नहीं नकारूंगा कि मुझे इस विचार से कुछ सांत्वना मिली कि एशबी पार्क हॉर्टन से बहुत दूर नहीं था, इसलिए शायद मैं मिस्टर वेस्टन से मिल सकूँ, या कम से कम उनके बारे में कुछ सुन सकूँ।

अध्याय XXII — यात्रा

एशबी पार्क निःसंदेह एक बेहद रमणीय निवास था। हवेली बाहर से भव्य और भीतर से विशाल एवं सुरुचिपूर्ण थी; पार्क विशाल और सुंदर था, मुख्यतः अपने भव्य पुराने वृक्षों, हिरणों के विशाल झुंडों, विशाल जलराशि और उससे आगे फैले प्राचीन जंगलों के कारण: क्योंकि यहाँ भूदृश्य में विविधता लाने के लिए कोई उबड़-खाबड़ ज़मीन नहीं थी, और न ही वह लहरदार उभार था जो पार्क के नज़ारे में चार चांद लगाता है। और इसलिए, यह वह जगह थी जिसे रोज़ाली मरे अपना बनाना चाहती थी, और वह किसी भी कीमत पर, चाहे वह किसी भी शर्त पर मिले, इस पर अपना अधिकार चाहती थी - मालकिन का दर्जा पाने के लिए चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े, और चाहे जो भी इस संपत्ति के सम्मान और सुख में उसका साथी बने! खैर, मैं अब उसकी निंदा करने के लिए तैयार नहीं हूँ।

उन्होंने मेरा बहुत ही स्नेहपूर्वक स्वागत किया; और यद्यपि मैं एक गरीब पादरी की बेटी, एक गवर्नेंस और एक स्कूल टीचर थी, फिर भी उन्होंने मुझे अपने घर में सहज प्रसन्नता से आमंत्रित किया; और – जिसने मुझे थोड़ा आश्चर्यचकित किया – उन्होंने

मेरी यात्रा को सुखद बनाने के लिए काफी प्रयास किए। यह सच है कि मैं समझ सकती थी कि उन्हें उम्मीद थी कि मैं उनके चारों ओर फैली भव्यता से बहुत प्रभावित होऊंगी; और मैं स्वीकार करती हूं कि मुझे उनके इस प्रयास से थोड़ी झुंझलाहट हुई कि मैं इतनी भव्यता से अभिभूत न हो जाऊं – या तो उनके पति और सास से मिलने के विचार से बहुत भयभीत हो जाऊं, या अपने साधारण रूप से शर्मिंदा हो जाऊं। मुझे इस बात पर बिल्कुल भी शर्म नहीं थी; क्योंकि, हालांकि मैं सादी दिखती थी, मैंने इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि मैं भद्दी या घटिया न दिखूं, और अगर मेरी दयालु मेज़बान ने मुझे ऐसा महसूस कराने के लिए इतने प्रयास न किए होते, तो मैं काफी सहज महसूस करती; और जहां तक उनके चारों ओर फैली भव्यता की बात है, तो मेरी आंखों के सामने जो कुछ भी आया, उसने मुझे उनके बदले हुए रूप जितना प्रभावित नहीं किया। चाहे फैशन के दुराचार के प्रभाव से हो या किसी अन्य बुराई से, बारह महीने से कुछ अधिक समय में ही वह प्रभाव पड़ गया था जो उतने ही वर्षों में अपेक्षित हो सकता है, यानी उसके शरीर की गोलाई, उसके रंग की ताजगी, उसकी चाल की जीवंतता और उसके उत्साह में कमी आना।

मैं जानना चाहता था कि क्या वह दुखी है; लेकिन मुझे लगा कि यह पूछना मेरा काम नहीं है: मैं उसका विश्वास जीतने की कोशिश कर सकता था; लेकिन अगर वह अपनी वैवाहिक चिंताओं को मुझसे छिपाना चाहती थी, तो मैं उससे कोई दखलंदाजी वाले सवाल नहीं पूछता। इसलिए, मैंने पहले तो उसके स्वास्थ्य और कुशलक्षेम के बारे में कुछ सामान्य पूछताछ की और पार्क की सुंदरता और उस नन्ही बच्ची की प्रशंसा की जो लड़का होना चाहिए था: सात-आठ सप्ताह का एक छोटा, नाज़ुक शिशु, जिसकी माँ को उसमें कोई खास दिलचस्पी या स्नेह नहीं दिख रहा था, हालाँकि उतना ही जितना मुझे उससे उम्मीद थी।

मेरे आगमन के कुछ ही समय बाद, उन्होंने अपनी नौकरानी को मुझे मेरे कमरे तक ले जाने और यह सुनिश्चित करने का आदेश दिया कि मुझे मेरी सभी ज़रूरतें पूरी हों; यह एक छोटा, सादा, लेकिन पर्याप्त रूप से आरामदायक कमरा था। जब मैं वहाँ से नीचे उतरा—यात्रा के सभी सामान उतारकर और अपनी मेज़बान की भावनाओं का ध्यान रखते हुए अपना श्रृंगार करके—तो वह मुझे स्वयं उस कमरे तक ले गईं जहाँ मुझे अकेले रहने पर, या जब वह मेहमानों के साथ व्यस्त हों, या अपनी सास के साथ हों, या किसी अन्य कारण से, जैसा कि उन्होंने कहा, मेरी संगति का आनंद लेने से

वंचित हों, तब रहना था। यह एक शांत, साफ-सुथरा छोटा बैठक कक्ष था; और मुझे ऐसे सुरक्षित ठिकाने का लाभ उठाने में कोई अफ़सोस नहीं था।

'और कभी-कभी,' उसने कहा, 'मैं आपको पुस्तकालय दिखाऊँगी: मैंने कभी उसकी अलमारियों को नहीं देखा, लेकिन मुझे यकीन है कि वह ज्ञानवर्धक पुस्तकों से भरी हुई है; और आप जब चाहें उनमें से कुछ भी पढ़ सकते हैं। और अब आप चाय पीजिए—जल्द ही दोपहर के भोजन का समय हो जाएगा, लेकिन मैंने सोचा, क्योंकि आपको दोपहर के भोजन की आदत है, शायद आपको इस समय चाय पीना और दोपहर के भोजन के समय खाना खाना ज़्यादा अच्छा लगेगा: और फिर, आप जानते हैं, आप इस कमरे में चाय पी सकते हैं, और इससे आपको लेडी एशबी और सर थॉमस के साथ भोजन करने से मुक्ति मिल जाएगी: जो कि थोड़ा अटपटा होगा—कम से कम, अटपटा तो नहीं, लेकिन थोड़ा—आप समझ रहे हैं ना मेरा मतलब। मैंने सोचा कि शायद आपको यह इतना अच्छा न लगे—खासकर इसलिए कि कभी-कभी हमारे साथ अन्य महिलाएँ और पुरुष भी भोजन करने आ सकते हैं।'

मैंने कहा, 'ज़रूर, मुझे आपकी बात मानना ज़्यादा पसंद होगा, और अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं अपने सारे भोजन इसी कमरे में करना पसंद करूँगा।'

'ऐसा किस लिए?'

'क्योंकि, मुझे लगता है, यह लेडी एशबी और सर थॉमस को अधिक पसंद आएगा।'

'कुछ भी ऐसा नही।'

'कम से कम यह मेरे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।'

उसने कुछ हल्की आपत्तियां उठाईं, लेकिन जल्द ही मान गई; और मैं देख सकता था कि यह प्रस्ताव उसके लिए काफी राहत भरा था।

'अब ड्राइंग रूम में आ जाओ,' उसने कहा। 'ड्रेस बदलने की घंटी बज रही है; लेकिन मैं अभी नहीं जाऊंगी: जब कोई देखने वाला ही न हो तो ड्रेस बदलने का कोई फायदा नहीं; और मैं थोड़ी बातचीत करना चाहती हूं।'

ड्राइंग रूम वाकई एक भव्य और बेहद सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ कमरा था; लेकिन जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए, मैंने देखा कि उसकी युवा मालकिन ने मेरी तरफ एक नज़र डाली, मानो यह देख रही हो कि मैं उस दृश्य से कितना प्रभावित हुआ हूँ। इसलिए मैंने पत्थर जैसी उदासीनता का भाव बनाए रखने का निश्चय किया, मानो

मुझे कुछ भी खास नज़र नहीं आया हो। लेकिन यह केवल एक पल के लिए था: तुरंत ही अंतरात्मा ने फुसफुसाया, 'मैं अपने स्वाभिमान को बचाने के लिए उसे क्यों निराश करूँ? नहीं - बल्कि अपने स्वाभिमान का त्याग करके उसे थोड़ी सी मासूम खुशी दूँ।' और मैंने ईमानदारी से चारों ओर देखा और उसे बताया कि यह एक शानदार कमरा है और बहुत ही सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया है। उसने ज्यादा कुछ नहीं कहा, लेकिन मैंने देखा कि वह खुश थी।

उसने मुझे अपना मोटा-ताज़ा फ्रेंच पूडल दिखाया, जो रेशमी तकिये पर सिकुड़कर लेटा हुआ था, और दो बेहतरीन इतालवी पेंटिंग्स भी दिखाईं। हालाँकि, उसने मुझे उन्हें देखने का समय नहीं दिया, बल्कि यह कहते हुए कि मुझे उन्हें किसी और दिन देखना चाहिए, उसने जिनेवा से खरीदी हुई अपनी छोटी सी रत्नजड़ित घड़ी की प्रशंसा करने पर ज़ोर दिया। फिर वह मुझे कमरे में घुमाकर इटली से लाई हुई विभिन्न कीमती वस्तुएँ दिखाने लगी: एक सुंदर छोटी घड़ी, कई मूर्तियाँ, छोटी-छोटी आकर्षक आकृतियाँ और फूलदान, सभी सफेद संगमरमर में खूबसूरती से तराशे गए थे। वह इन सबके बारे में उत्साह से बात कर रही थी और मेरी प्रशंसा भरी टिप्पणियों को सुनकर प्रसन्नता से मुस्कुरा रही थी: हालाँकि, वह मुस्कान जल्द ही गायब हो गई और उसकी जगह एक उदास आह भर गई; मानो वह इस बात पर विचार कर रही हो कि ये सभी छोटी-मोटी वस्तुएँ मानव हृदय की खुशी के लिए अपर्याप्त हैं और उसकी अतृप्त मांगों को पूरा करने में असमर्थ हैं।

फिर, सोफे पर लेटते हुए, उन्होंने मुझे सामने रखी एक विशाल आरामकुर्सी की ओर इशारा किया—आग के सामने नहीं, बल्कि एक खुली खिड़की के सामने; क्योंकि गर्मियों का मौसम था, याद रहे; जून के उत्तरार्ध की एक सुहावनी, गर्म शाम। मैं कुछ पल चुपचाप बैठा रहा, शांत, शुद्ध हवा का आनंद लेता रहा, और मेरे सामने फैले पार्क के रमणीय दृश्य को निहारता रहा, जो हरियाली और पत्तों से भरपूर था, और ढलते दिन की लंबी छायाओं से हल्की होती पीली धूप में नहा रहा था। लेकिन मुझे इस विराम का लाभ उठाना था: मुझे कुछ पूछताछ करनी थी, और एक महिला के परिशिष्ट की तरह, सबसे महत्वपूर्ण बात अंत में पूछनी चाहिए। इसलिए मैंने श्रीमान और श्रीमती मरे, और मिस मटिल्डा और उन युवा सज्जनों के बारे में पूछकर शुरुआत की।

मुझे बताया गया कि पापा को गठिया हो गया था, जिससे वे बहुत चिड़चिड़े हो गए थे; और वे अपनी पसंदीदा शराब और भरपेट भोजन नहीं छोड़ते थे, और अपने डॉक्टर

से झगड़ा भी कर बैठे थे, क्योंकि डॉक्टर ने यह कहने की हिम्मत की थी कि जब तक वे इतनी आज़ादी से जी रहे हैं, कोई दवा उन्हें ठीक नहीं कर सकती; मम्मी और बाकी सब ठीक थे। मटिल्डा अभी भी चंचल और लापरवाह थी, लेकिन उसे एक फैशनेबल गवर्नेस मिल गई थी, और उसके तौर-तरीकों में काफी सुधार हो गया था, और जल्द ही उसे दुनिया से परिचित कराया जाने वाला था; और जॉन और चार्ल्स (जो अब छुट्टियों के लिए घर आए हुए थे) सभी के अनुसार, 'अच्छे, साहसी, उद्दंड और शरारती लड़के' थे।

मैंने कहा, 'और बाकी लोग कैसे काम कर रहे हैं?' - 'उदाहरण के लिए, ग्रीन पार्टी के लोग?'

'आह! श्री ग्रीन का दिल टूट गया है, आप जानते हैं,' उसने सुस्त मुस्कान के साथ जवाब दिया: 'वह अभी तक अपनी निराशा से उबर नहीं पाए हैं, और मुझे लगता है कि कभी उबर भी नहीं पाएंगे। उनका बुढ़ापा कुंवारा ही रहने की नियति है; और उनकी बहनें शादी करने की पूरी कोशिश कर रही हैं।'

'और मेलथम्स?'

'ओह, मुझे लगता है कि वे हमेशा की तरह अपने काम में लगे हुए हैं: लेकिन मैं उनमें से किसी के बारे में बहुत कम जानती हूँ — सिवाय हैरी के,' उसने थोड़ा शर्माते हुए और फिर मुस्कुराते हुए कहा। 'लंदन में रहते हुए मैंने उसे बहुत देखा; क्योंकि जैसे ही उसे पता चला कि हम वहाँ हैं, वह अपने भाई से मिलने का बहाना बनाकर आ गया, और या तो परछाई की तरह मेरे पीछे-पीछे हर जगह जाता, या परछाई की तरह हर मोड़ पर मुझसे मिलता। आपको इतना हैरान होने की ज़रूरत नहीं है, मिस ग्रे; मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि मैं बहुत सावधान थी, लेकिन, आप जानती हैं, प्रशंसा से बचना नामुमकिन है। बेचारा! वह मेरा इकलौता प्रशंसक नहीं था; हालाँकि वह निश्चित रूप से सबसे ज़्यादा ध्यान खींचने वाला और, मुझे लगता है, उन सब में सबसे ज़्यादा समर्पित था। और वह घिनौना — अहेम — और सर थॉमस ने उससे नाराज़गी जताई — या मेरे फिजूलखर्ची से, या किसी और बात से — मुझे ठीक से नहीं पता क्या — और मुझे तुरंत गाँव भेज दिया; जहाँ मुझे लगता है कि मुझे ज़िंदगी भर संन्यासी बनकर रहना है।'

और उसने अपने होंठ काट लिए, और उस सुंदर क्षेत्र पर प्रतिशोधी भाव से भौंहें चढ़ाईं जिसे वह कभी अपना कहने की इतनी लालसा रखती थी।

मैंने कहा, ‘और मिस्टर हैटफील्ड का क्या हुआ?’

फिर से उसका चेहरा खिल उठा और उसने खुशी से जवाब दिया— 'ओह! उसने कुछ समय पहले ही एक बूढ़ी अविवाहित महिला को पटा लिया और उससे शादी कर ली; उसके भारी बटुए और फीके पड़ते आकर्षण को तौलते हुए, और सोने में उस सुकून की उम्मीद करते हुए जो उसे प्यार में नहीं मिला— हा हा!'

‘ठीक है, और मुझे लगता है कि बस इतना ही है — सिवाय मिस्टर वेस्टन के: वो क्या कर रहे हैं?’

मुझे नहीं पता, लेकिन मुझे यकीन है। वह हॉर्टन से चला गया है।

‘कितना समय बीत गया? और वह कहाँ गया है?’

‘मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानती,’ उसने जम्हाई लेते हुए उत्तर दिया— ‘सिवाय इसके कि वह लगभग एक महीने पहले चला गया— मैंने कभी नहीं पूछा कि कहाँ’ (मैं पूछना चाहती थी कि क्या वह किसी पद पर गया था या केवल किसी अन्य पादरी के पद पर, लेकिन मैंने सोचा कि पूछना उचित नहीं होगा); ‘और लोगों ने उसके जाने पर बहुत हंगामा किया,’ उसने आगे कहा, ‘श्री हैटफील्ड को बहुत बुरा लगा; क्योंकि हैटफील्ड उसे पसंद नहीं करते थे, क्योंकि आम लोगों पर उसका बहुत प्रभाव था, और क्योंकि वह उनके प्रति पर्याप्त रूप से आज्ञाकारी और विनम्र नहीं था— और कुछ अन्य अक्षम्य पापों के लिए, मुझे नहीं पता क्या। लेकिन अब मुझे निश्चित रूप से जाकर कपड़े पहनने होंगे: दूसरी घंटी तुरंत बजने वाली है, और अगर मैं इस वेश में भोजन पर आई, तो लेडी एशबी मुझे ताने मारना बंद नहीं करेंगी। यह अजीब बात है कि कोई अपने ही घर में मालकिन नहीं हो सकता! बस घंटी बजा दीजिए, मैं अपनी नौकरानी को बुलवा दूंगी, और उनसे कहूंगी कि आपके लिए चाय लाएं। बस उस असहनीय महिला के बारे में सोचिए—’

‘कौन— तुम्हारी नौकरानी?’

नहीं; मेरी सास – और मेरी दुर्भाग्यपूर्ण गलती! शादी के समय उन्होंने जो वादा किया था, उसे छोड़कर मैं इतनी मूर्ख थी कि मैंने उन्हें यहीं रहने और घर का सारा काम संभालने के लिए कह दिया; क्योंकि पहली बात तो यह थी कि मैं चाहती थी कि हम साल का ज़्यादातर समय शहर में बिताएँ, और दूसरी बात, इतनी कम उम्र और अनुभवहीन होने के कारण, मुझे नौकरों से भरे घर को संभालने, खाना बनाने, पार्टियों का आयोजन करने और बाकी सब कामों के बारे में सोचकर डर लगता था, और मैंने

सोचा कि उनका अनुभव मेरी मदद कर सकता है; मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह एक धोखेबाज़, अत्याचारी, बुरी नज़र वाली, जासूस और हर वो चीज़ साबित होंगी जो घृणित है। काश वह मर जाती!

फिर वह दरवाज़े के भीतर सीधे खड़े नौकर को आदेश देने के लिए मुड़ी, जिसने पिछले आधे मिनट से उसकी कुछ आलोचनाएँ सुनी थीं; और ज़ाहिर है, उसने ड्राइंग रूम में अपने कठोर, भावहीन चेहरे के बावजूद उन पर अपनी प्रतिक्रियाएँ भी दी थीं। बाद में जब मैंने कहा कि उसने उसकी बातें ज़रूर सुनी होंगी, तो उसने जवाब दिया—'अरे, कोई बात नहीं! मुझे नौकरों की कोई परवाह नहीं; वे तो बस मशीन हैं: उनके लिए उनके मालिक क्या कहते हैं या क्या करते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; वे इसे दोहराने की हिम्मत भी नहीं करेंगे; और जहाँ तक उनके विचारों की बात है—अगर वे सोचने की हिम्मत भी करते हैं—तो ज़ाहिर है, किसी को परवाह नहीं है। यह तो वाकई बड़ी बात होगी, अगर हमारे नौकर हमें चुप करा दें!'

इतना कहकर वह जल्दी से तैयार होने के लिए चली गई, और मुझे अपने बैठक कक्ष में वापस जाने के लिए अकेला छोड़ दिया, जहाँ कुछ देर बाद मुझे चाय परोसी गई। उसके बाद, मैं लेडी एशबी के अतीत और वर्तमान स्थिति के बारे में सोचता रहा; और मिस्टर वेस्टन के बारे में मुझे जो थोड़ी-बहुत जानकारी मिली थी, उसके बारे में और इस बात की बहुत कम संभावना थी कि मैं अपने शांत, नीरस जीवन में कभी उनसे कुछ देख या सुन पाऊँगा: जो अब आगे से केवल बारिश के दिनों और बिना बारिश के धुंधले बादलों वाले दिनों के बीच कोई विकल्प नहीं दिखाता था। आखिरकार, मैं अपने विचारों से ऊबने लगा, और सोचने लगा कि काश मुझे पता होता कि मेरी मेज़बान ने जिस पुस्तकालय की बात की थी, वह कहाँ है; और यह भी सोचने लगा कि क्या मुझे सोने के समय तक वहीं बैठकर कुछ नहीं करना है।

चूंकि मेरे पास घड़ी रखने जितना धन नहीं था, इसलिए मैं समय बीतने का अंदाजा नहीं लगा सकता था, सिवाय खिड़की से धीरे-धीरे लंबी होती परछाइयों को देखकर। खिड़की से एक तरफ का दृश्य दिखाई देता था, जिसमें पार्क का एक कोना, पेड़ों का एक झुंड जिसकी सबसे ऊपरी शाखाओं पर अनगिनत शोर मचाते कौवों का झुंड बैठा था, और एक विशाल लकड़ी के गेट वाली ऊंची दीवार शामिल थी: निस्संदेह यह अस्तबल के आंगन से जुड़ा हुआ था, क्योंकि पार्क से एक चौड़ी सड़क ऊपर की ओर जाती थी। इस दीवार की परछाई ने जल्द ही मेरी दृष्टि के अनुसार पूरे मैदान को घेर

लिया, जिससे सुनहरी धूप धीरे-धीरे पीछे हटती गई और अंत में पेड़ों की चोटियों में जाकर छिप गई। कुछ ही देर में, वे भी परछाई में आ गए - दूर की पहाड़ियों की परछाई में, या स्वयं धरती की परछाई में; और कौवों के झुंड के व्यस्त निवासियों के प्रति सहानुभूति में, मुझे उनके निवास को देखकर दुख हुआ, जो कुछ समय पहले ही शानदार रोशनी में नहाया हुआ था, अब निचले जगत के उदास, रोजमर्रा के रंग में, या मेरे अपने भीतर के संसार के रंग में सिमट गया था। एक पल के लिए, जो पक्षी बाकियों से ऊपर उड़ रहे थे, उनके पंखों पर वह चमक अभी भी बरकरार थी, जिसने उनके काले पंखों को गहरे लाल सोने जैसा रंग और दमक प्रदान की थी; अंततः, वह चमक भी चली गई। शाम ढलने लगी; कौवे शांत हो गए; मैं और भी थका हुआ महसूस करने लगा, और कल घर जाने की कामना करने लगा। आखिरकार अंधेरा हो गया; और मैं मोमबत्ती जलाने और सोने जाने के बारे में सोच ही रहा था कि मेरी मेज़बान प्रकट हुई, और इतने लंबे समय तक मेरी उपेक्षा करने के लिए बहुत माफी माँगते हुए, सारा दोष उस 'बदमिजाज बुढ़िया' पर मढ़ दिया, जैसा कि वह अपनी सास को बुलाती थी।

उसने कहा, “अगर मैं सर थॉमस के शराब पीते समय ड्राइंग रूम में उसके साथ न बैठूँ, तो वह मुझे कभी माफ़ नहीं करेगी; और फिर, अगर मैं उसके आते ही कमरे से निकल जाऊँ—जैसा कि मैंने एक-दो बार किया है—तो यह उसके प्यारे थॉमस के प्रति एक अक्षम्य अपराध होगा। उसने अपने पति के प्रति कभी ऐसा अनादर नहीं दिखाया: और जहाँ तक स्नेह की बात है, आजकल पत्नियाँ इसके बारे में सोचती ही नहीं हैं, ऐसा वह मानती है: लेकिन उसके ज़माने में चीज़ें अलग थीं—जैसे कि कमरे में रहने से कोई फ़ायदा हो, जब वह बुरे मूड में होने पर बड़बड़ाता और डांटता है, अच्छे मूड में होने पर घिनौनी बकवास करता है, और जब वह दोनों के लिए बहुत बेवकूफ़ होता है तो सोफ़े पर सो जाता है; जो कि आजकल अक्सर होता है, जब उसके पास शराब में डूबने के अलावा कुछ करने को नहीं होता।”

लेकिन क्या आप उनका ध्यान किसी बेहतर चीज़ में लगाने की कोशिश नहीं कर सकतीं; और उन्हें ऐसी आदतें छोड़ने के लिए राजी नहीं कर सकतीं? मुझे यकीन है कि आपमें समझाने की कला है, और एक सज्जन व्यक्ति का मनोरंजन करने की ऐसी योग्यताएं हैं जो कई महिलाएं पाना चाहेंगी।

तो आपको लगता है कि मैं उसके मनोरंजन के लिए खुद को कुर्बान कर दूंगी!

नहीं: पत्नी होने का मेरा यह विचार नहीं है। पति का कर्तव्य है पत्नी को खुश रखना, न कि उसका पति को खुश रखना; और अगर वह उसे जैसी है वैसी ही स्वीकार नहीं करता और उसे पाकर आभारी भी नहीं है, तो वह उसके लायक नहीं है, बस। और जहाँ तक समझाने-बुझाने की बात है, मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मैं इसमें समय बर्बाद नहीं करूंगी: मुझे उसे जैसा है वैसा ही सहने में ही बहुत कुछ करना है, उसे सुधारने की कोशिश किए बिना। लेकिन मुझे खेद है कि मैंने आपको इतनी देर तक अकेला छोड़ दिया, मिस ग्रे। आपने समय कैसे बिताया?

मुख्यतः कौवों पर नजर रखने में।

अरे बाप रे, तुम कितने सुस्त रहे होगे! मुझे तुम्हें पुस्तकालय दिखाना ही होगा; और तुम्हें अपनी हर ज़रूरत के लिए घंटी बजानी होगी, ठीक वैसे ही जैसे किसी सराय में बजाते हो, और आराम से बैठो। तुम्हें खुश करने की मेरी इच्छा के पीछे स्वार्थी कारण हैं, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो, और एक-दो दिन में भाग जाने की अपनी भयानक धमकी को पूरा न करो।

'ठीक है, आज रात मैं आपको ड्राइंग रूम से और अधिक देर तक बाहर नहीं रखूंगा, क्योंकि इस समय मैं थक गया हूं और सोने जाना चाहता हूं।'

अध्याय XXIII — पार्क

अगली सुबह आठ बजे से कुछ पहले मैं नीचे आया, जैसा कि मुझे दूर लगी घड़ी की आवाज़ से पता चला। नाश्ते का कोई नामोनिशान नहीं था। मैं एक घंटे से ज़्यादा इंतज़ार करता रहा, फिर भी पुस्तकालय जाने की मेरी उम्मीद अधूरी ही रही; और उस अकेले नाश्ते के बाद, मैं फिर से लगभग डेढ़ घंटे तक बड़ी बेचैनी और तनाव में इंतज़ार करता रहा, समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। आखिरकार लेडी एशबी मुझे सुप्रभात कहने आईं। उन्होंने बताया कि उन्होंने अभी-अभी नाश्ता किया है और अब

वह चाहती हैं कि मैं उनके साथ पार्क में टहलने चलूँ। उन्होंने पूछा कि मैं कितनी देर से जागा हूँ, और मेरा जवाब सुनकर उन्होंने बहुत खेद व्यक्त किया और फिर से मुझे पुस्तकालय दिखाने का वादा किया। मैंने सुझाव दिया कि उन्हें अभी ही ऐसा करना चाहिए, ताकि याद रखने या भूलने की कोई परेशानी न हो। वह मान गईं, इस शर्त पर कि मैं अभी पढ़ने या किताबों से परेशान न होऊँ; क्योंकि वह मुझे बगीचे दिखाना चाहती थीं और मेरे साथ पार्क में टहलना चाहती थीं, इससे पहले कि गर्मी इतनी बढ़ जाए कि आनंद न लिया जा सके; जो कि वास्तव में लगभग हो ही चुका था। मैंने तुरंत सहमति दे दी; और हम उसी के अनुसार टहलने निकल पड़े।

हम पार्क में टहल रहे थे और अपनी सहेली के यात्रा अनुभव के बारे में बातें कर रहे थे, तभी घोड़े पर सवार एक सज्जन हमारे पास से गुजरे। जैसे ही वे मुड़े और मेरी ओर घूरने लगे, मुझे उन्हें देखने का अच्छा मौका मिला। वे लंबे, पतले और कमजोर थे, उनके कंधे थोड़े झुके हुए थे, चेहरा पीला था, लेकिन कुछ धब्बेदार भी था, और पलकों के आसपास लालिमा अप्रिय थी, चेहरे की बनावट सादी थी, और कुल मिलाकर सुस्ती और उदासी झलक रही थी, उनके मुंह पर एक भयावह भाव और उनकी बेजान, भावहीन आंखें इसे और भी बढ़ा रही थीं।

'मुझे उस आदमी से नफरत है!' लेडी एशबी ने कड़वाहट भरे स्वर में फुसफुसाते हुए कहा, जब वह धीरे-धीरे वहां से गुजरा।

मैंने पूछा, 'यह कौन है?' मैं यह मानने को तैयार नहीं था कि वह अपने पति के बारे में ऐसा कहेगी।

'सर थॉमस एशबी,' उसने नीरस भाव से उत्तर दिया।

'और क्या आप उससे नफरत करती हैं, मिस मरे?' मैंने कहा, क्योंकि मैं उस समय इतना सदमे में थी कि मुझे उसका नाम याद नहीं आ रहा था।

'हां, मैं करता हूं, मिस ग्रे, और मैं उससे नफरत भी करता हूं; और अगर आप उसे जानतीं तो आप मुझे दोष नहीं देतीं।'

लेकिन शादी से पहले ही आप जानती थीं कि वह कैसा इंसान था।

नहीं; मैंने तो बस ऐसा सोचा था: मैं उसे ठीक से जानती भी नहीं थी। मुझे पता है तुमने मुझे इसके खिलाफ चेतावनी दी थी, और काश मैंने तुम्हारी बात मान ली होती: लेकिन अब पछताने का कोई फायदा नहीं। और वैसे भी, माँ को हम दोनों से ज़्यादा बेहतर पता होना चाहिए था, और उन्होंने कभी इसके खिलाफ कुछ नहीं कहा - बल्कि

इसके विपरीत ही कहा। और तब मुझे लगा था कि वह मुझसे प्यार करता है, और मुझे अपनी मर्ज़ी से चलने देगा: उसने पहले तो ऐसा दिखावा किया, लेकिन अब उसे मेरी ज़रा भी परवाह नहीं है। फिर भी मुझे इसकी परवाह नहीं है: वह जो चाहे कर सकता है, अगर मुझे बस खुद का मनोरंजन करने और लंदन में रहने की आज़ादी मिल जाए, या यहाँ कुछ दोस्त बनाने की आज़ादी मिल जाए: लेकिन वह अपनी मर्ज़ी से ही चलेगा, और मुझे कैदी और गुलाम बनकर रहना होगा। जैसे ही उसने देखा कि मैं उसके बिना भी मज़े कर सकती हूँ, और दूसरे लोग मेरी अहमियत उससे ज़्यादा जानते हैं, उस स्वार्थी ने मुझ पर नखरे और फिजूलखर्ची का आरोप लगाना शुरू कर दिया; और हैरी मेलथम को गालियाँ देने लगा, जिसके जूते साफ करने के भी वह लायक नहीं था। और फिर उसे मुझे गाँव में भेजना ही होगा, ताकि मैं नन का जीवन व्यतीत करूँ, कहीं मैं उसे बदनाम न कर दूँ या उसे बर्बाद न कर दूँ; मानो वह हर तरह से दस गुना बुरा न हो, अपनी सट्टेबाजी की किताब, जुए की मेज, ओपेरा गायिकाओं, लेडी दिस और मिसेज दैट के साथ—हाँ, और शराब की बोतलों और ब्रांडी-पानी के गिलासों के साथ भी! ओह, मैं फिर से मिस मरे बनने के लिए दस हजार दुनिया दे दूँगी! ऐसे दरिंदे के लिए जीवन, स्वास्थ्य और सुंदरता को यूँ ही बर्बाद होते देखना कितना दुखद है!' उसने अपनी झुंझलाहट में फूट-फूटकर रोते हुए कहा।

निःसंदेह, मुझे उस पर अत्यंत दया आई; उसकी सुख की झूठी धारणा और कर्तव्य की अवहेलना के लिए, और उस अभागे साथी के लिए भी जिसके साथ उसका भाग्य जुड़ा हुआ था। मैंने उसे सांत्वना देने के लिए यथासंभव बातें कहीं और वे सलाहें दीं जिनकी उसे सबसे अधिक आवश्यकता थी: मैंने उसे पहले कोमल तर्क, दया, उदाहरण और समझा-बुझाकर अपने पति को सुधारने का प्रयास करने की सलाह दी; और फिर, जब वह अपनी पूरी कोशिश कर ले, और फिर भी उसे वह सुधरने योग्य न लगे, तो उससे खुद को अलग करने का प्रयास करे— अपनी ईमानदारी में लीन रहे और उसके बारे में जितना हो सके कम सोचे। मैंने उसे ईश्वर और मनुष्य के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने में सांत्वना खोजने, स्वर्ग पर भरोसा रखने और अपनी छोटी बेटी की देखभाल और पालन-पोषण में सांत्वना पाने के लिए प्रेरित किया; उसे विश्वास दिलाया कि उसकी शक्ति और बुद्धि में प्रगति देखकर और उसका सच्चा स्नेह प्राप्त करके उसे भरपूर प्रतिफल मिलेगा।

'लेकिन मैं अपना पूरा ध्यान बच्चे पर नहीं लगा सकती,' उसने कहा; 'हो सकता है

उसकी मृत्यु हो जाए – जो कि बिलकुल भी असंभव नहीं है।'

लेकिन, देखभाल के साथ, कई नाज़ुक शिशु एक मजबूत पुरुष या महिला बन गए हैं।

लेकिन यह अपने पिता की तरह इतना असहनीय रूप से विकसित हो सकता है कि मैं इससे नफरत करने लगूं।

'ऐसा होने की संभावना नहीं है; यह एक छोटी बच्ची है, और अपनी माँ से काफी मिलती-जुलती है।'

कोई बात नहीं; मुझे तो लड़का ही ज़्यादा अच्छा लगता — बस दिक्कत ये है कि उसके बाप के पास ऐसी कोई विरासत नहीं है जिसे वो यूँ ही लुटा दे। एक लड़की को बड़ा होकर मुझसे भी आगे निकलते और उन सुखों का आनंद लेते देखकर मुझे क्या खुशी मिलेगी जिनसे मैं हमेशा के लिए वंचित रह गई हूँ? लेकिन मान भी लूँ कि मैं इतनी उदार हो जाऊँ कि इसमें आनंद ले लूँ, फिर भी वो तो बस एक बच्ची है; और मैं अपनी सारी उम्मीदें एक बच्ची पर नहीं टिका सकती: ये तो कुत्ते पर समय बर्बाद करने से बस एक कदम बेहतर है। और जहाँ तक उस सारी समझदारी और अच्छाई की बात है जो तुम मुझमें भरने की कोशिश कर रही हो — मुझे लगता है कि ये सब ठीक है, और अगर मैं बीस साल बड़ी होती, तो शायद मैं इसे फलदायी बना पाती: लेकिन जवानी में लोगों को मौज-मस्ती करनी चाहिए; और अगर दूसरे उन्हें ऐसा करने से रोकते हैं — तो उन्हें इसके लिए उनसे नफरत करनी ही चाहिए!

आनंद लेने का सबसे अच्छा तरीका सही काम करना और किसी से नफरत न करना है। धर्म का उद्देश्य हमें मरना नहीं, बल्कि जीना सिखाना है; और जितनी जल्दी आप बुद्धिमान और अच्छे बनेंगे, उतनी ही अधिक खुशी आपको मिलेगी। और अब, लेडी एशबी, मैं आपको एक और सलाह देना चाहती हूँ, और वह यह है कि आप अपनी सास को अपना दुश्मन न बनाएँ। उनसे दूरी बनाए रखने और ईर्ष्या और अविश्वास की नज़र से देखने की कोशिश न करें। मैंने उन्हें कभी नहीं देखा, लेकिन उनके बारे में अच्छी और बुरी दोनों बातें सुनी हैं; और मुझे लगता है कि, भले ही उनका व्यवहार कठोर और अभिमानी हो, और उनकी अपेक्षाएँ भी बहुत सख्त हों, लेकिन जो लोग उन्हें समझ सकते हैं, उनके लिए उनके मन में गहरा स्नेह है; और, भले ही वे अपने बेटे से इतनी अंधभक्त हों, लेकिन उनमें अच्छे सिद्धांत हैं और वे तर्क को समझने में असमर्थ नहीं हैं। अगर आप उससे थोड़ा सा भी समझौता कर लें, और

दोस्ताना, खुले दिल से पेश आएं—और यहां तक कि अपनी शिकायतें भी उससे साझा करें—वास्तविक शिकायतें, जिनके बारे में शिकायत करने का आपको पूरा अधिकार है—तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि समय के साथ वह आपकी सच्ची दोस्त बन जाएगी, और आपके लिए सहारा और सांत्वना बनेगी, न कि वह बोझ जिसके बारे में आप उसे बताते हैं।' लेकिन मुझे डर है कि मेरी सलाह का उस अभागी युवती पर कोई खास असर नहीं हुआ; और यह जानकर कि मैं उसकी कोई खास मदद नहीं कर सका, एशबी पार्क में मेरा रहना और भी कष्टदायक हो गया। फिर भी, मुझे उस दिन और अगले दिन भी वहीं रहना था, जैसा कि मैंने वादा किया था: हालांकि, अपनी यात्रा को और आगे बढ़ाने के सभी अनुरोधों और प्रलोभनों का विरोध करते हुए, मैंने अगली सुबह जाने पर जोर दिया; यह कहते हुए कि मेरी माँ मेरे बिना अकेली महसूस करेंगी, और वह बेसब्री से मेरे लौटने का इंतजार कर रही हैं। फिर भी, भारी मन से मैंने बेचारी लेडी एशबी को अलविदा कहा, और उन्हें उनके आलीशान घर में छोड़ दिया। यह उसकी उदासी का एक और बड़ा सबूत था कि वह मेरी उपस्थिति से मिलने वाली सांत्वना से इतनी चिपकी रहती थी, और एक ऐसे व्यक्ति की संगति की इतनी तीव्र इच्छा रखती थी जिसके सामान्य स्वाद और विचार उसके अपने विचारों से बिल्कुल मेल नहीं खाते थे - जिसे वह अपनी समृद्धि के समय में पूरी तरह से भूल चुकी थी, और जिसकी उपस्थिति उसके लिए आनंद की अपेक्षा एक उपद्रव ही साबित होगी, भले ही उसकी आधी इच्छा भी पूरी हो जाए।

अध्याय XXIV — रेत

हमारा स्कूल शहर के बीचोंबीच स्थित नहीं था: उत्तर-पश्चिम से प्रवेश करते ही चौड़ी, सफेद सड़क के दोनों ओर सलीके से बने घरों की कतार दिखाई देती है, जिनके सामने छोटे-छोटे बगीचे हैं, खिड़कियों पर वेनेशियन ब्लाइंड्स लगे हैं, और हर सजे-धजे

पीतल के हैंडल वाले दरवाजे तक सीढ़ियाँ जाती हैं। इन्हीं घरों में से एक सबसे बड़े घर में मेरी माँ और मैं रहते थे, साथ ही कुछ ऐसी युवतियाँ भी थीं जिन्हें हमारे दोस्तों और आम जनता ने हमारी देखरेख में सौंपा था। इसलिए, हम समुद्र से काफी दूर थे, और गलियों और घरों के एक जाल ने हमें समुद्र से अलग कर रखा था। लेकिन समुद्र मेरा प्रिय था; और मैं अक्सर खुशी-खुशी शहर पार करके उसके किनारे टहलने चला जाता था, चाहे विद्यार्थियों के साथ हो या छुट्टियों के दौरान अपनी माँ के साथ। यह मुझे हर मौसम और हर समय आनंददायक लगता था, लेकिन विशेष रूप से उफनती समुद्री हवा के शोर में और गर्मियों की सुबह की ताजगी में।

एशबी पार्क से लौटने के बाद तीसरी सुबह मैं जल्दी उठ गया—खिड़की के पर्दे से सूरज की रोशनी छनकर आ रही थी, और मैंने सोचा कि कितना अच्छा होगा इस शांत कस्बे से गुज़रना और दुनिया के आधे लोगों के सो जाने के बाद अकेले रेत पर टहलना। मैंने यह फैसला तुरंत कर लिया और उस पर अमल भी कर दिया। ज़ाहिर है, मैं अपनी माँ को परेशान नहीं करना चाहता था, इसलिए मैं चुपचाप नीचे गया और दरवाज़ा धीरे से खोला। मैं तैयार होकर बाहर निकल चुका था, तभी चर्च की घड़ी में पौने छह बजे। गलियों में एक ताजगी और स्फूर्ति का एहसास था; और जब मैं शहर से बाहर निकला, जब मेरा पैर रेत पर पड़ा और मेरा चेहरा चौड़ी, चमकीली खाड़ी की ओर, आकाश और समुद्र के गहरे, निर्मल नीले रंग, हरी-भरी पहाड़ियों से घिरी चट्टानी अर्धवृत्ताकार दीवार पर चमकीली सुबह की धूप, चिकनी, चौड़ी रेत और समुद्र में नीची चट्टानों पर पड़ रहे प्रभाव का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता - जो घास और काई से ढके हुए छोटे-छोटे घास से ढके द्वीपों की तरह दिख रही थीं - और सबसे बढ़कर, चमकीली, झिलमिलाती लहरों पर। और फिर, हवा की असीम शुद्धता और ताजगी! हवा की महक बढ़ाने के लिए पर्याप्त गर्मी थी, और पूरे समुद्र को गतिमान रखने के लिए पर्याप्त हवा थी, जिससे लहरें खुशी से झूमती हुई, झागदार और चमकती हुई, मानो किनारे पर उछलती आ रही थीं। और कुछ भी हलचल नहीं कर रहा था - मेरे अलावा कोई भी जीवित प्राणी दिखाई नहीं दे रहा था। मेरे कदम सबसे पहले ठोस, अटूट रेत पर पड़े; पिछली रात के ज्वार ने कल के गहरे निशानों को मिटा दिया था और उन्हें साफ-सुथरा और समतल छोड़ दिया था, तब से पहले किसी चीज ने उन्हें रौंदा नहीं था, सिवाय उन जगहों के जहां घटते पानी ने अपने पीछे गड्ढेदार तालाबों और छोटी बहती धाराओं के निशान छोड़ दिए थे।

तरोताज़ा, प्रसन्न और ऊर्जावान होकर मैं चलता रहा, अपनी सारी चिंताओं को भूलकर, मानो मेरे पैरों में पंख लग गए हों और मैं बिना थके कम से कम चालीस मील चल सकता हूँ। मुझे एक ऐसा उत्साह महसूस हो रहा था जिससे मैं जवानी के दिनों से पूरी तरह अनजान था। लगभग साढ़े छह बजे, घोड़ों की देखभाल करने वाले अपने मालिकों के घोड़ों को हवा देने के लिए नीचे आने लगे - पहले एक, फिर दूसरा, जब तक कि लगभग एक दर्जन घोड़े और पाँच-छह सवार नहीं हो गए: लेकिन इससे मुझे परेशान होने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वे उन नीची चट्टानों तक नहीं आएँगे जिनकी ओर मैं अब बढ़ रहा था। जब मैं वहाँ पहुँचा और गीली, फिसलन भरी समुद्री शैवाल पर चलकर (उनके बीच मौजूद साफ़, खारे पानी के कई कुंडों में से किसी एक में गिरने के जोखिम पर) एक छोटे से काईदार टीले पर पहुँचा, जिसके चारों ओर समुद्र की लहरें टकरा रही थीं, तो मैंने पीछे मुड़कर देखा कि अगला कौन हलचल कर रहा है। फिर भी, वहाँ केवल घोड़ों के साथ कुछ ही लोग थे, और एक सज्जन अपने छोटे से काले कुत्ते के साथ आगे-आगे दौड़ रहे थे, और एक पानी की गाड़ी शहर से स्नानघरों के लिए पानी लेने आ रही थी। एक-दो मिनट में, दूर स्थित स्नान मशीनें चलने लगेंगी, और फिर नियमित आदतों वाले बुजुर्ग सज्जन और गंभीर क्वेकर महिलाएं अपनी सुखदायक सुबह की सैर के लिए आने लगेंगी। लेकिन ऐसा दृश्य कितना भी रोचक क्यों न हो, मैं इसे देखने के लिए और इंतजार नहीं कर सकता था, क्योंकि उस दिशा में सूर्य और समुद्र ने मेरी आँखों को इतना चकाचौंध कर दिया था कि मैं बस एक नज़र ही डाल सका; और फिर मैं वापस मुड़कर समुद्र के दृश्य और ध्वनि का आनंद लेने लगा, जो मेरे चट्टानी किनारे से टकरा रहा था - कोई ज़बरदस्त बल नहीं था, क्योंकि लहरें उलझी हुई समुद्री शैवाल और नीचे की अदृश्य चट्टानों से टूट रही थीं; अन्यथा मैं जल्द ही पानी की बौछारों से भीग जाता। लेकिन ज्वार आ रहा था; पानी बढ़ रहा था; खाड़ियाँ और झीलें भर रही थीं; जलडमरूमध्य चौड़ा हो रहा था: अब किसी सुरक्षित जगह की तलाश करने का समय था; इसलिए मैं चलता, उछलता-कूदता और लड़खड़ाता हुआ वापस चिकनी, चौड़ी रेत पर आ गया, और चट्टानों में बने एक खास उभार की ओर बढ़ने और फिर वापस लौटने का निश्चय किया।

तभी मुझे अपने पीछे से सूंघने की आवाज़ सुनाई दी और फिर एक कुत्ता उछलता-कूदता मेरे पैरों के पास आ आया। यह मेरा अपना स्नैप था - छोटा सा काला, तार

जैसे बालों वाला टेरियर! जब मैंने उसका नाम लिया, तो वह मेरे चेहरे पर उछल पड़ा और खुशी से चिल्लाने लगा। मैं भी लगभग उतना ही खुश था, मैंने उस नन्हे से जीव को अपनी बाहों में भर लिया और उसे बार-बार चूमा। लेकिन वह यहाँ कैसे आया? वह आसमान से तो नहीं गिरा होगा, न ही इतनी दूर अकेला आया होगा: या तो उसका मालिक, चूहे पकड़ने वाला, या कोई और उसे लाया होगा; इसलिए, अपने अत्यधिक दुलार को रोकते हुए, और उसे भी ऐसा ही करने से रोकने की कोशिश करते हुए, मैंने चारों ओर देखा, और पाया - मिस्टर वेस्टन!

'मिस ग्रे, आपका कुत्ता आपको अच्छी तरह से याद रखता है,' उसने कहा और मेरे द्वारा बढ़ाए गए हाथ को गर्मजोशी से पकड़ लिया, हालांकि उसे स्पष्ट रूप से पता नहीं था कि मैं क्या कहना चाह रही थी। 'आप सुबह जल्दी उठती हैं।'

मैंने मामले की सभी परिस्थितियों पर विचार करते हुए आश्चर्यजनक संयम के साथ उत्तर दिया, 'ऐसा अक्सर इतनी जल्दी नहीं होता।'

आप अपनी पैदल यात्रा को कितनी दूर तक बढ़ाने का इरादा रखते हैं?

'मैं लौटने के बारे में सोच रहा था - मुझे लगता है कि अब लगभग समय आ गया है।'

उन्होंने अपनी घड़ी देखी — जो अब सोने की थी — और मुझे बताया कि सात बजकर केवल पांच मिनट ही हुए हैं।

'लेकिन, निस्संदेह, आप काफी लंबी सैर कर चुके हैं,' उसने शहर की ओर मुड़ते हुए कहा, जिसकी ओर मैं अब आराम से अपने कदमों के निशान पर वापस चलने लगा; और वह मेरे बगल में चलने लगा।

'आप शहर के किस हिस्से में रहते हैं?' उसने पूछा। 'मुझे कभी पता नहीं चल पाया।'

क्या वह कभी पता नहीं लगा सका? क्या उसने तब ऐसा करने का प्रयास किया था? मैंने उसे अपने निवास स्थान के बारे में बताया। उसने पूछा कि हमारे व्यवसाय में कैसी तरक्की हो रही है। मैंने उसे बताया कि हम बहुत अच्छा कर रहे हैं - क्रिसमस की छुट्टियों के बाद हमारे विद्यार्थियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है, और इस छुट्टी के अंत में और भी वृद्धि की उम्मीद है।

उन्होंने कहा, 'आप एक कुशल प्रशिक्षक होंगे।'

'नहीं, यह मेरी माँ है,' मैंने जवाब दिया; 'वह सब कुछ बहुत अच्छे से संभालती है,

और बहुत सक्रिय, बुद्धिमान और दयालु है।'

मैं आपकी मां से मिलना चाहूंगा। अगर मैं कभी आऊं तो क्या आप मुझे उनसे मिलवा देंगे?

'हां, स्वेच्छा से।'

और क्या आप मुझे एक पुराने दोस्त होने का सौभाग्य देंगे, कि मैं कभी-कभी आपसे मिलने आ सकूं?

'हां, अगर— मुझे लगता है ऐसा ही होगा।'

यह बहुत ही मूर्खतापूर्ण उत्तर था, लेकिन सच तो यह था कि मुझे लगता था कि मुझे अपनी माँ की जानकारी के बिना किसी को भी उनके घर आमंत्रित करने का कोई अधिकार नहीं है; और अगर मैंने कहा होता, 'हाँ, अगर मेरी माँ को कोई आपत्ति न हो,' तो ऐसा लगता कि उनके प्रश्न से मुझे अपेक्षा से अधिक समझ आ गया है; इसलिए, यह मानकर कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी, मैंने कहा, 'मुझे लगता है ऐसा ही होगा:' लेकिन अगर मैं होश में होता तो निश्चित रूप से कुछ अधिक समझदारी भरा और विनम्र जवाब देता। हम एक मिनट तक चुपचाप टहलते रहे; हालाँकि, यह चुप्पी कुछ ही देर में टूट गई (मेरे लिए यह कोई छोटी राहत नहीं थी) जब श्री वेस्टन ने सुबह की चमक और खाड़ी की सुंदरता पर टिप्पणी की, और फिर ए - - को अन्य कई लोकप्रिय पर्यटन स्थलों की तुलना में मिलने वाले लाभों के बारे में बताया।

'तुम मुझसे ये मत पूछो कि मैं ए—- क्यों आया हूँ,' उसने कहा। 'तुम ये नहीं सोच सकते कि मैं इतना अमीर हूँ कि सिर्फ अपने मनोरंजन के लिए यहाँ आऊँ।'

मैंने सुना था कि तुमने हॉर्टन छोड़ दिया है।

'तो फिर तुमने यह नहीं सुना कि मुझे एफ — - की जीविका मिल गई थी?'

एफ — - ए — - से लगभग दो मील दूर स्थित एक गाँव था।

'नहीं,' मैंने कहा; 'हम यहाँ भी दुनिया से इतने कटे हुए रहते हैं कि मुझे शायद ही कभी किसी माध्यम से कोई खबर मिलती है; सिवाय गजट के माध्यम से। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आपको अपना नया पैरिश पसंद आएगा; और क्या मैं आपको इस अधिग्रहण पर बधाई दे सकता हूँ?'

मुझे उम्मीद है कि एक-दो साल बाद मुझे अपना पैरिश और भी अच्छा लगने लगेगा, जब मैं अपने मन में ठान चुके कुछ सुधारों को पूरा कर लूंगा—या कम से कम उस दिशा में कुछ कदम बढ़ा लूंगा। लेकिन अभी आप मुझे बधाई दे सकते हैं; क्योंकि

मुझे यह बहुत अच्छा लग रहा है कि मेरा पैरिश पूरी तरह से मेरा है, मेरे काम में कोई दखल नहीं देता—मेरी योजनाओं को नाकाम नहीं करता या मेरे प्रयासों को कमजोर नहीं करता: और इसके अलावा, मेरे पास एक अच्छे पड़ोस में एक सम्मानजनक घर है, और सालाना तीन सौ पाउंड की आमदनी है; और सच कहूं तो, मुझे अकेलेपन के अलावा और कुछ शिकायत नहीं है, और एक साथी की चाहत के अलावा और कुछ नहीं।

अपनी बात समाप्त करते हुए उन्होंने मेरी ओर देखा और उनकी गहरी आँखों की चमक से मेरा चेहरा मानो आग की तरह लाल हो गया; इससे मुझे बहुत असहजता हुई, क्योंकि ऐसे मौके पर घबराहट दिखाना असहनीय था। इसलिए मैंने इस गलती को सुधारने का प्रयास किया और जल्दबाजी में, अस्पष्ट ढंग से जवाब देकर उस टिप्पणी को व्यक्तिगत रूप से नकार दिया। मैंने कहा कि अगर वे आस-पड़ोस में अच्छी तरह से जाने-पहचाने जाने तक इंतजार करते, तो उन्हें एफ - - और उसके आसपास के निवासियों या ए - - - के आगंतुकों के बीच अपनी ज़रूरत पूरी करने के कई अवसर मिल सकते थे, अगर उन्हें इतने विकल्प चाहिए थे। मैंने इस कथन में छिपी प्रशंसा को तब तक नहीं समझा, जब तक उनके जवाब ने मुझे इसका एहसास नहीं कराया।

उन्होंने कहा, 'मैं इतना अभिमानी नहीं हूँ कि इस बात पर विश्वास कर लूँ, भले ही आप मुझे ऐसा कह रही हों; लेकिन अगर ऐसा होता भी है, तो जीवन साथी के बारे में मेरी धारणाएँ काफी विशिष्ट हैं, और शायद मुझे आपके द्वारा बताई गई महिलाओं में से कोई मेरे लिए उपयुक्त न मिले।'

'यदि आप पूर्णता की अपेक्षा रखते हैं, तो आपको कभी पूर्णता नहीं मिलेगी।'

'मैं ऐसा नहीं करता—मुझे इसकी मांग करने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि मैं स्वयं पूर्णता से बहुत दूर हूं।'

यहाँ हमारी बातचीत एक पानी की गाड़ी के हमारे पास से धीरे-धीरे गुज़रने से बाधित हो गई, क्योंकि अब हम रेत के व्यस्त हिस्से में आ चुके थे; और अगले आठ-दस मिनट तक, गाड़ियों, घोड़ों, गधों और आदमियों के बीच, सामाजिक मेलजोल के लिए बहुत कम जगह थी, जब तक कि हमने समुद्र को पीछे नहीं छोड़ दिया और शहर की ओर जाने वाली खड़ी सड़क पर चढ़ना शुरू नहीं कर दिया। यहाँ मेरे साथी ने मुझे अपना हाथ बढ़ाया, जिसे मैंने स्वीकार कर लिया, हालाँकि मेरा इरादा उसे सहारे के

रूप में इस्तेमाल करने का नहीं था।

उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि आप अक्सर रेत पर नहीं आते, क्योंकि जब से मैं आया हूँ, मैं कई बार सुबह और शाम को वहाँ से गुजरा हूँ, लेकिन अब तक आपको नहीं देखा; और कई बार शहर से गुजरते हुए मैंने आपके स्कूल को भी ढूंढा है - लेकिन मुझे उस सड़क का ख्याल नहीं आया; और एक-दो बार मैंने पूछताछ भी की, लेकिन आवश्यक जानकारी नहीं मिल पाई।'

जब हम चढ़ाई पार कर चुके थे, मैं अपना हाथ उसके हाथ से छुड़ाने ही वाला था, लेकिन कोहनी के हल्के से हिलने से मुझे यह संकेत मिल गया कि ऐसा करना उसकी इच्छा नहीं है, और इसलिए मैं रुक गया। अलग-अलग विषयों पर बात करते हुए हम कस्बे में दाखिल हुए और कई गलियों से गुजरे। मैंने देखा कि लंबी पैदल यात्रा बाकी होने के बावजूद वह मेरे साथ चलने के लिए अपना रास्ता बदल रहा था; और मुझे डर था कि कहीं वह शिष्टाचारवश ही ऐसा न कर रहा हो, इसलिए मैंने कहा - 'मुझे लगता है कि मैं आपको बेवजह परेशान कर रहा हूँ, मिस्टर वेस्टन - मुझे लगता है कि F जाने वाली सड़क बिल्कुल दूसरी दिशा में है।'

उसने कहा, 'मैं तुम्हें अगली गली के अंत में छोड़ दूंगा।'

और तुम माँ से मिलने कब आओगे?

'कल—ईश्वर की कृपा से।'

अगली गली का अंत लगभग मेरी यात्रा का अंतिम पड़ाव था। हालाँकि, वह वहाँ रुका, मुझे सुप्रभात कहा और स्नैप को बुलाया, जो थोड़ा असमंजस में था कि अपनी पुरानी मालकिन के पीछे जाए या अपने नए मालिक के पीछे, लेकिन बाद वाले के बुलावे पर वह दौड़ पड़ा।

मिस्टर वेस्टन ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं उसे आपको वापस देने की पेशकश नहीं करूंगा, मिस ग्रे, क्योंकि मैं उसे पसंद करता हूं।'

'ओह, मुझे उसकी जरूरत नहीं है,' मैंने जवाब दिया, 'अब जब उसे एक अच्छा मालिक मिल गया है; मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।'

'तो आप यह मानकर चलते हैं कि मैं एक अच्छा व्यक्ति हूँ?'

वह आदमी और कुत्ता चले गए, और मैं घर लौट आया, इतनी सारी खुशियों के लिए ईश्वर का आभारी था, और प्रार्थना कर रहा था कि मेरी आशाएँ फिर से न टूटें।

अध्याय XXV — निष्कर्ष

“एग्नेस, नाश्ते से पहले इतनी लंबी सैर मत करना,” मेरी माँ ने कहा, यह देखकर कि मैंने एक कप अतिरिक्त कॉफ़ी पी ली थी और कुछ नहीं खाया था – और इसके लिए मैंने गर्मी और लंबी सैर की थकान का बहाना बनाया था। मुझे सचमुच बुखार और थकान महसूस हो रही थी।

‘आप हमेशा अतिवादी रवैया अपनाते हैं: अगर आप हर सुबह थोड़ी देर टहलते और ऐसा करना जारी रखते, तो यह आपके लिए अच्छा होता।’

‘ठीक है, माँ, मैं करूँगा।’

लेकिन यह बिस्तर पर लेटने या किताबों में डूबे रहने से भी बदतर है: आपने खुद को सचमुच बुखार की स्थिति में डाल दिया है।'

मैंने कहा, 'मैं ऐसा दोबारा नहीं करूंगा।'

मैं सोच-सोचकर परेशान हो रही थी कि मिस्टर वेस्टन के बारे में उन्हें कैसे बताऊं, क्योंकि उन्हें पता होना चाहिए कि वह कल आ रहे हैं। खैर, मैंने नाश्ते का सामान हटने तक इंतजार किया, और तब मैं थोड़ी शांत हुई; फिर, अपनी ड्राइंग बनाने के लिए बैठते ही मैंने लिखना शुरू किया - 'आज मैं समुद्र तट पर अपने एक पुराने दोस्त से मिली, माँ।'

‘एक पुराना दोस्त! कौन हो सकता है?’

‘सचमुच दो पुराने दोस्त। एक कुत्ता था;’ और फिर मैंने उसे स्नैप की याद दिलाई, जिसका इतिहास मैंने पहले सुनाया था, और उसके अचानक प्रकट होने और उल्लेखनीय पहचान की घटना का वर्णन किया; ‘और दूसरा,’ मैंने आगे कहा, ‘हॉर्टन के क्यूरेट श्री वेस्टन थे।’

‘श्री वेस्टन! मैंने उनके बारे में पहले कभी नहीं सुना।’

'हां, आपने किया है: मुझे लगता है मैंने उनका कई बार जिक्र किया है: लेकिन

आपको याद नहीं है।'

मैंने आपको मिस्टर हैटफील्ड के बारे में बात करते सुना है।

श्री हैटफील्ड रेक्टर थे और श्री वेस्टन क्यूरेट: मैं कभी-कभी श्री हैटफील्ड की तुलना में उनका ज़िक्र करता था, क्योंकि वे ज़्यादा कुशल पादरी थे। लेकिन आज सुबह वे अपने कुत्ते के साथ समुद्र तट पर थे—मुझे लगता है उन्होंने उसे चूहे पकड़ने वाले से खरीदा था; और वे मुझे उतना ही अच्छी तरह जानते थे जितना कुत्ता—शायद उसी के ज़रिए: और मेरी उनसे थोड़ी बातचीत हुई, जिसके दौरान, जब उन्होंने हमारे स्कूल के बारे में पूछा, तो मैंने आपके और आपके कुशल प्रबंधन के बारे में कुछ कह दिया; और उन्होंने कहा कि वे आपसे मिलना चाहेंगे, और पूछा कि क्या मैं उन्हें आपसे मिलवा सकता हूँ, अगर वे कल आने की अनुमति लें; तो मैंने हाँ कह दी। क्या मैं सही था?

'बेशक। वह किस तरह का आदमी है?'

'मुझे लगता है कि वह बहुत ही सम्मानित व्यक्ति हैं; लेकिन आप उन्हें कल देखेंगे। वह एफ—- के नए पादरी हैं, और चूंकि उन्हें वहां आए कुछ ही सप्ताह हुए हैं, इसलिए मुझे लगता है कि उन्होंने अभी तक कोई दोस्त नहीं बनाया है, और उन्हें थोड़ी संगति की जरूरत है।'

अगला दिन आ गया। सुबह नाश्ते से लेकर दोपहर तक मैं चिंता और उम्मीद के भंवर में घिरी रही — और तभी वह आ गए! उन्हें मेरी माँ से मिलवाने के बाद, मैं अपना काम खिड़की के पास ले गई और मुलाकात के नतीजे का इंतज़ार करने के लिए बैठ गई। उन दोनों की आपस में बहुत अच्छी बातचीत हुई — जिससे मुझे बहुत संतोष हुआ, क्योंकि मैं इस बात को लेकर बहुत चिंतित थी कि मेरी माँ उनके बारे में क्या सोचेंगी। वह उस समय ज़्यादा देर नहीं रुके: लेकिन जब वह जाने के लिए उठे, तो मेरी माँ ने कहा कि जब भी उन्हें दोबारा आने का समय मिले, तो उन्हें उनसे मिलकर खुशी होगी; और उनके जाने के बाद, मुझे यह सुनकर बहुत अच्छा लगा कि मेरी माँ ने कहा, — 'वाह! मुझे लगता है कि वह बहुत समझदार आदमी हैं। लेकिन एग्नेस, तुम वहाँ पीछे क्यों बैठी रहीं,' उन्होंने आगे कहा, 'और इतनी कम बात क्यों की?'

'माँ, क्योंकि आप बहुत अच्छी तरह से बात करती थीं, इसलिए मुझे लगा कि आपको मेरी सहायता की आवश्यकता नहीं है; और वैसे भी, वह आपका मेहमान था,

मेरा नहीं।'

उसके बाद, वह अक्सर हमसे मिलने आते थे—एक सप्ताह में कई बार। वे आम तौर पर अपनी अधिकांश बातचीत मेरी माँ से करते थे; और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि वह बहुत अच्छी वक्ता थीं। मुझे उनकी बेरोक, सशक्त और धाराप्रवाह बातचीत और उनके हर शब्द में झलकने वाले गहरे भाव से लगभग ईर्ष्या होती थी—फिर भी, ऐसा नहीं था; क्योंकि, यद्यपि मैं कभी-कभी उनके लिए अपनी कमियों पर खेद व्यक्त करती थी, फिर भी मुझे उन दो व्यक्तियों को, जिन्हें मैं दुनिया में सबसे अधिक प्रेम और सम्मान देती थी, इतनी सौहार्दपूर्ण, इतनी बुद्धिमानी से और इतनी अच्छी तरह से बातचीत करते हुए सुनना बहुत सुख देता था। हालाँकि, मैं हमेशा चुप नहीं रहती थी; और न ही मुझे बिल्कुल उपेक्षित किया जाता था। मुझे उतना ही ध्यान दिया जाता था जितना मैं चाहती थी: दयालु शब्दों और दयालु निगाहों की कोई कमी नहीं थी, कोमल ध्यान की कोई कमी नहीं थी, जो इतने सूक्ष्म और सूक्ष्म थे कि शब्दों में व्यक्त नहीं किए जा सकते थे, और इसलिए अवर्णनीय थे—लेकिन हृदय में गहराई से महसूस किए गए थे।

हमारे बीच औपचारिकताएं जल्दी ही समाप्त हो गईं: श्री वेस्टन एक अपेक्षित अतिथि की तरह आए, जिनका हमेशा स्वागत होता था और वे हमारे घरेलू कामकाज में कभी बाधा नहीं डालते थे। वे मुझे 'एग्नेस' कहकर बुलाते थे: पहले तो मैं झिझकते हुए यह नाम बोलती थी, लेकिन यह जानकर कि इससे किसी को कोई आपत्ति नहीं है, वे 'मिस ग्रे' की तुलना में इस नाम को अधिक पसंद करने लगे; और मैं भी। वे दिन कितने उबाऊ और उदास होते थे जब वे नहीं आते थे! फिर भी इतने दुखी नहीं; क्योंकि मुझे पिछली मुलाकात की याद और अगली मुलाकात की आशा से थोड़ी राहत मिलती थी। लेकिन जब दो-तीन दिन बिना उनसे मिले बीत जाते, तो मैं निश्चित रूप से बहुत चिंतित हो जाती थी—बेहद बेवजह, अनुचित रूप से; क्योंकि, ज़ाहिर है, उन्हें अपने व्यवसाय और अपने पैरिश के मामलों को भी संभालना होता था। और मुझे छुट्टियों के खत्म होने का डर सताता था, जब मेरा काम भी शुरू हो जाता था, और मैं कभी-कभी उनसे मिल नहीं पाती थी, और कभी-कभी—जब मेरी माँ स्कूल में होती थीं—उनके साथ अकेले रहने के लिए मजबूर हो जाती थी: घर में ऐसी स्थिति जो मैं बिल्कुल नहीं चाहती थी; हालांकि, उनसे खुले में मिलना और उनके साथ चलना किसी भी तरह से अप्रिय साबित नहीं हुआ था।

हालांकि, छुट्टियों के आखिरी सप्ताह की एक शाम, वह अप्रत्याशित रूप से आ गया: क्योंकि दोपहर के दौरान हुई भारी और लंबी बारिश ने उस दिन उसे देखने की मेरी उम्मीदों को लगभग खत्म कर दिया था; लेकिन अब तूफान थम गया था, और सूरज तेज चमक रहा था।

‘सुंदर संध्या, श्रीमती ग्रे!’ उसने प्रवेश करते हुए कहा। ‘एग्नेस, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ टहलने चलो — (उसने तट के एक विशेष भाग का नाम लिया — ज़मीन की तरफ एक ऊँची पहाड़ी और समुद्र की तरफ एक खड़ी चट्टान, जिसके शिखर से एक शानदार दृश्य दिखाई देता है)। ‘बारिश ने धूल को हटा दिया है, हवा को ठंडा और साफ कर दिया है, और नज़ारा बहुत ही सुंदर होगा। क्या तुम आओगी?’

‘क्या मैं जा सकता हूँ, माँ?’

'हां; बिल्कुल।'

मैं तैयार होने गई और कुछ ही मिनटों में वापस आ गई; हालाँकि, ज़ाहिर है, मैंने अपने कपड़ों पर थोड़ा ज़्यादा ध्यान दिया, बजाय इसके कि मैं सिर्फ़ खरीदारी के लिए ही बाहर जा रही होती। गरज के साथ हुई बारिश का मौसम पर वाकई बहुत अच्छा असर पड़ा था और शाम बहुत सुहावनी थी। श्री वेस्टन चाहते थे कि मैं उनका हाथ पकड़ लूँ; भीड़ भरी सड़कों से गुज़रते समय उन्होंने ज़्यादा कुछ नहीं कहा, लेकिन बहुत तेज़ चल रहे थे और गंभीर और खोए हुए से लग रहे थे। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या बात है और मुझे एक अनिश्चित डर सता रहा था कि उनके मन में कुछ अप्रिय चल रहा है; और इस बारे में अस्पष्ट अटकलों ने मुझे काफ़ी परेशान कर दिया और मुझे गंभीर और चुप कर दिया। लेकिन कस्बे के शांत बाहरी इलाके में पहुँचते ही ये सारी कल्पनाएँ गायब हो गईं; क्योंकि जैसे ही हम आदरणीय पुराने चर्च और उसके पीछे गहरे नीले आसमान वाली पहाड़ी के पास पहुँचे, मैंने पाया कि मेरे साथी काफ़ी खुश थे।

“मुझे खेद है कि मैं तुम्हारे लिए बहुत तेज़ चल रहा था, एग्नेस,” उसने कहा। “शहर से निकलने की जल्दी में, मैं तुम्हारी सुविधा का ध्यान रखना भूल गया; लेकिन अब हम तुम्हारी इच्छानुसार धीरे-धीरे चलेंगे। पश्चिम में उन हल्के बादलों को देखकर मुझे लग रहा है कि सूर्यास्त बहुत ही सुंदर होगा, और हम धीमी गति से चलते हुए समय पर समुद्र पर उसके प्रभाव को देख सकेंगे।”

जब हम पहाड़ी पर लगभग आधे रास्ते तक पहुँच गए, तो हम फिर से चुप हो गए;

और हमेशा की तरह, सबसे पहले उसने ही चुप्पी तोड़ी।

‘मेरा घर अभी भी वीरान है, मिस ग्रे,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा, ‘और मैं अब अपने इलाके की सभी महिलाओं से परिचित हूँ, और इस शहर की भी कई महिलाओं से; और कई अन्य को मैं देखकर और उनके बारे में सुनकर जानता हूँ; लेकिन उनमें से कोई भी मुझे जीवनसाथी के रूप में उपयुक्त नहीं लगती; वास्तव में, दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति है जो उपयुक्त है: और वह आप हैं; और मैं आपका निर्णय जानना चाहता हूँ?’

'क्या आप सचमुच ऐसा कह रहे हैं, मिस्टर वेस्टन?'

'सच में! आप कैसे सोच सकते हैं कि मैं ऐसे विषय पर मजाक करूंगा?'

उसने अपना हाथ मेरे हाथ पर रखा, जो उसकी बांह पर टिका हुआ था: उसने मेरे हाथ में कंपन महसूस किया होगा - लेकिन अब यह कोई बड़ी बात नहीं थी।

उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, 'मुझे उम्मीद है कि मैंने जल्दबाजी नहीं की होगी। आपको पता ही होगा कि चापलूसी करना, मीठी-मीठी बातें करना या अपनी प्रशंसा व्यक्त करना मेरी आदत नहीं थी; और मेरे एक शब्द या एक नज़र का अर्थ अधिकांश अन्य पुरुषों के मीठे शब्दों और भावुक बयानों से कहीं अधिक था।'

मैंने अपनी मां को छोड़कर न जाने और उनकी सहमति के बिना कुछ भी न करने के बारे में कुछ कहा।

‘जब तुम अपनी टोपी पहन रहे थे, तब मैंने श्रीमती ग्रे से सब कुछ तय कर लिया था,’ उसने उत्तर दिया। ‘उन्होंने कहा कि अगर मैं तुम्हारी सहमति प्राप्त कर लूँ, तो मुझे उनकी सहमति मिल जाएगी; और मैंने उनसे पूछा कि अगर मैं इतना खुश हो जाऊँ, तो क्या वह हमारे साथ आकर रहेंगी—क्योंकि मुझे यकीन था कि तुम्हें यह ज़्यादा अच्छा लगेगा। लेकिन उन्होंने मना कर दिया, यह कहते हुए कि अब उनके पास एक सहायक रखने के लिए पैसे नहीं हैं, और जब तक वह अपने लिए आरामदायक आवास का खर्च उठाने के लिए पर्याप्त पेंशन नहीं खरीद लेतीं, तब तक वह स्कूल चलाती रहेंगी; और इस बीच, वह अपनी छुट्टियाँ बारी-बारी से हमारे और तुम्हारी बहन के साथ बिताएंगी, और अगर तुम खुश रहो तो वह पूरी तरह संतुष्ट रहेंगी। इसलिए अब मैंने उनकी वजह से तुम्हारी आपत्तियों को खारिज कर दिया है। क्या तुम्हारे पास कोई और कारण है?’

'नहीं कोई नहीं।'

‘तो तुम मुझसे प्यार करते हो?’ उसने मेरा हाथ जोर से दबाते हुए कहा।
'हाँ।'

यहां मैं विराम लेता हूं। मेरी डायरी, जिससे मैंने ये पृष्ठ संकलित किए हैं, इससे आगे नहीं जाती। मैं वर्षों तक लिख सकता था, लेकिन मैं इतना ही कहकर संतुष्ट रहूंगा कि मैं उस शानदार ग्रीष्म संध्या को कभी नहीं भूलूंगा, और उस ऊंचे पहाड़ और खाई के किनारे को हमेशा प्रसन्नता से याद करूंगा, जहां हम साथ खड़े होकर अपने पैरों के नीचे अशांत जलधारा में प्रतिबिंबित होते हुए भव्य सूर्यास्त को देख रहे थे - हमारे हृदय ईश्वर के प्रति कृतज्ञता, खुशी और प्रेम से भरे हुए थे - इतने भरे हुए कि शब्दों में व्यक्त करना लगभग असंभव था।

उसके कुछ सप्ताह बाद, जब मेरी माँ ने एक सहायक रख लिया, तो मैं एडवर्ड वेस्टन की पत्नी बन गई; और मुझे कभी इसका पछतावा नहीं हुआ, और मुझे पूरा यकीन है कि कभी नहीं होगा। हमने कई कठिनाइयाँ झेली हैं, और हम जानते हैं कि आगे भी झेलनी पड़ेंगी; लेकिन हम उन्हें मिलकर अच्छी तरह से सहते हैं, और अंतिम बिछड़ने के दुख से खुद को और एक-दूसरे को बचाने का प्रयास करते हैं—जो कि सबसे बड़ा दुख है। लेकिन, अगर हम उस गौरवशाली स्वर्ग को याद रखें, जहाँ हम दोनों फिर से मिल सकते हैं, और जहाँ पाप और दुख का कोई अस्तित्व नहीं है, तो निश्चित रूप से हम उस दुख को भी सह सकते हैं; और इस बीच, हम उस परमेश्वर की महिमा के लिए जीने का प्रयास करते हैं जिसने हमारे जीवन में इतनी सारी आशीषें बिखेरी हैं।

एडवर्ड ने अपने अथक प्रयासों से अपने पल्ली में आश्चर्यजनक सुधार किए हैं और वहां के निवासियों द्वारा उनका सम्मान और प्रेम किया जाता है - जैसा कि वे हकदार हैं; क्योंकि एक इंसान के रूप में उनमें चाहे जो भी कमियां हों (और कोई भी पूरी तरह से दोषरहित नहीं होता), मैं किसी को भी एक पादरी, एक पति या एक पिता के रूप में उन पर दोष लगाने की चुनौती देता हूं।

हमारे बच्चे एडवर्ड, एग्नेस और छोटी मैरी होनहार हैं; उनकी शिक्षा की ज़िम्मेदारी फिलहाल मुझ पर है; और उन्हें माँ के प्यार से मिलने वाली हर अच्छी चीज़ की कमी नहीं होगी। हमारी सीमित आमदनी हमारी ज़रूरतों के लिए पर्याप्त है: और कठिन समय में सीखी हुई मितव्ययिता का अभ्यास करके, और अपने अमीर पड़ोसियों की

नकल करने की कोशिश न करके, हम न केवल स्वयं सुख-सुविधा का आनंद लेते हैं, बल्कि हर साल अपने बच्चों के लिए कुछ बचत भी कर लेते हैं और ज़रूरतमंदों को कुछ दे भी देते हैं।

और अब मुझे लगता है कि मैंने पर्याप्त कह दिया है।

वाइल्डफेल हॉल का किरायेदार

ऐनी का दूसरा और अंतिम उपन्यास पहली बार 1848 में एक्टन बेल के छद्म नाम से प्रकाशित हुआ था। यह गिल्बर्ट मार्खम द्वारा अपने मित्र और बहनोई को लिखे गए एक पत्र के रूप में लिखा गया है, जिसमें उनकी पत्नी से मुलाकात से पहले की घटनाओं का वर्णन है। 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल' को तुरंत ही अपार सफलता मिली और इसने एमिली के 'वुथरिंग हाइट्स' को भी पीछे छोड़ दिया। छह सप्ताह के भीतर ही उपन्यास की सभी प्रतियां बिक गईं।

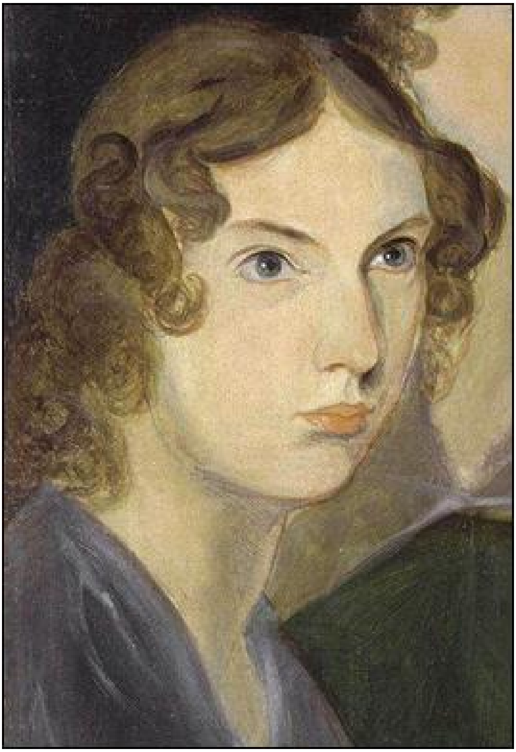
ऐनी ब्रोंटे

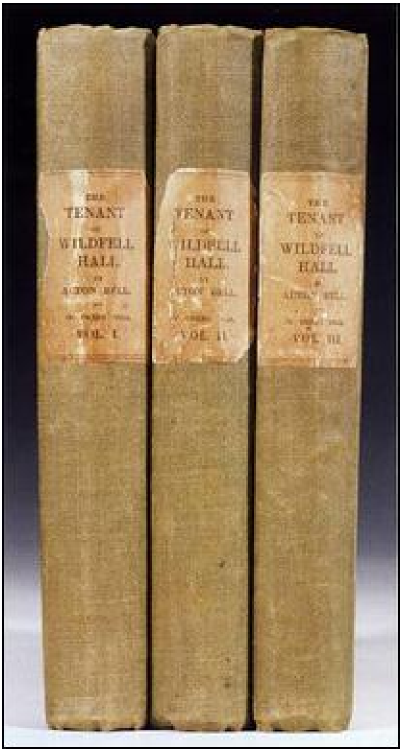

पहला संस्करण

अंतर्वस्तु

अध्याय 1
अध्याय II
अध्याय III
अध्याय IV
अध्याय V
अध्याय VI

अध्याय VII
अध्याय आठ
अध्याय 9
अध्याय X
अध्याय XI
अध्याय XII
अध्याय XIII
अध्याय 14
अध्याय पंद्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह
अध्याय अठारह
अध्याय XIX
अध्याय XX
अध्याय XXI
अध्याय XXII
अध्याय XXIII
अध्याय 24
अध्याय XXV
अध्याय XXVI
अध्याय XXVII
अध्याय XXVIII
अध्याय 29
अध्याय XXX
अध्याय XXXI
अध्याय XXXII
अध्याय XXXIII
अध्याय 34
अध्याय XXXV

अध्याय 36
अध्याय 37
अध्याय 38
अध्याय 39
अध्याय XL
अध्याय XLI
अध्याय 32
अध्याय XLIII
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 166
अध्याय 147
अध्याय 148
अध्याय 69
अध्याय L
अध्याय 11
अध्याय LII
अध्याय LIII

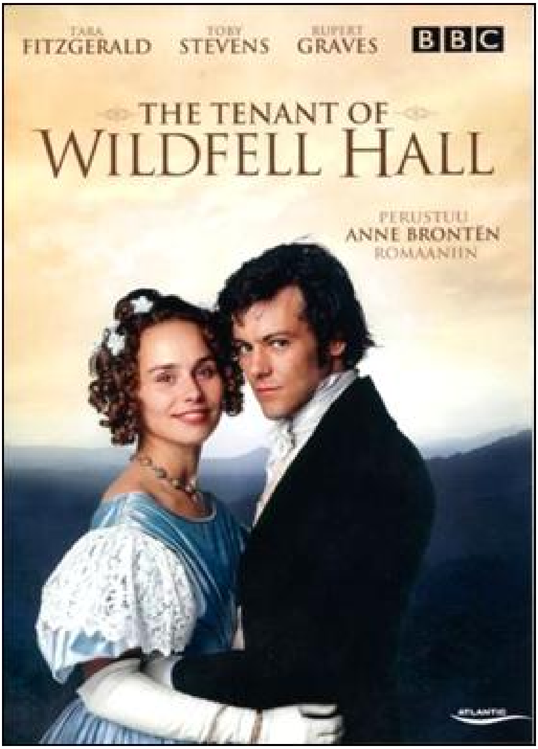

उपन्यास का 1996 का टीवी रूपांतरण

अध्याय 1

आपको मेरे साथ 1827 की शरद ऋतु में वापस जाना होगा।

जैसा कि आप जानते हैं, मेरे पिता एक साधारण किसान थे; और उनकी इच्छा से मैंने भी उसी शांत पेशे को अपनाया, हालांकि मैं बहुत इच्छुक नहीं था, क्योंकि महत्वाकांक्षा मुझे उच्च लक्ष्यों की ओर प्रेरित कर रही थी, और अहंकार मुझे यह विश्वास दिलाता था कि उसकी आवाज़ को अनसुना करके मैं अपनी प्रतिभा को दबा

रहा हूँ और अपनी प्रतिभा को छुपा रहा हूँ। मेरी माँ ने मुझे यह समझाने की पूरी कोशिश की कि मैं महान उपलब्धियाँ प्राप्त करने में सक्षम हूँ; लेकिन मेरे पिता, जो महत्वाकांक्षा को बर्बादी का सबसे पक्का रास्ता और परिवर्तन को विनाश का दूसरा नाम मानते थे, मेरी या मेरे साथी मनुष्यों की स्थिति सुधारने की किसी भी योजना को सुनने को तैयार नहीं थे। उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि यह सब बकवास है, और अपनी अंतिम साँस लेते हुए मुझे पुराने अच्छे रास्ते पर चलने, उनके और उनके पिता के पदचिन्हों पर चलने और अपनी सर्वोच्च महत्वाकांक्षा को दुनिया में ईमानदारी से चलने, न दाएं हाथ की ओर देखने और अपने बच्चों को पैतृक भूमि कम से कम उतनी ही समृद्ध स्थिति में सौंपने का आग्रह किया, जितनी समृद्ध स्थिति में उन्होंने मुझे सौंपी थी।

"वाह! एक ईमानदार और मेहनती किसान समाज के सबसे उपयोगी सदस्यों में से एक है; और यदि मैं अपनी प्रतिभा को अपने खेत की खेती और कृषि में सुधार के लिए समर्पित करूँ, तो इससे न केवल मेरे करीबी रिश्तेदार और आश्रित लाभान्वित होंगे, बल्कि कुछ हद तक पूरी मानवता को भी लाभ होगा: – इसलिए मेरा जीवन व्यर्थ नहीं जाएगा।" अक्टूबर के अंत में एक ठंडी, नम, बादलों से घिरी शाम को खेतों से घर लौटते समय मैं ऐसे ही विचारों से खुद को सांत्वना देने की कोशिश कर रहा था। लेकिन बैठक की खिड़की से आती हुई तेज लाल आग की चमक ने मेरे मन को प्रसन्न करने और मेरी कृतघ्न शिकायतों को दूर करने में उन सभी ज्ञानवर्धक विचारों और अच्छे संकल्पों से कहीं अधिक प्रभाव डाला, जिन्हें मैंने अपने मन में बिठाने की कोशिश की थी; – क्योंकि मैं तब युवा था, याद है ना – केवल 24 वर्ष का – और अपने मन पर उतना नियंत्रण नहीं था जितना अब है – भले ही वह मामूली ही क्यों न हो।

हालांकि, उस आनंदमय स्थान में तब तक प्रवेश नहीं किया जा सकता था जब तक कि मैंने अपने कीचड़ से सने बूटों को साफ जूतों से और अपने खुरदुरे ओवरकोट को एक सभ्य कोट से बदल नहीं लिया था, और खुद को सभ्य समाज के सामने समग्र रूप से प्रस्तुत करने योग्य नहीं बना लिया था; क्योंकि मेरी माँ, अपनी सारी दयालुता के बावजूद, कुछ मामलों में बहुत ही सख्त थीं।

अपने कमरे में चढ़ते समय सीढ़ियों पर मेरी मुलाकात उन्नीस साल की एक सुंदर, आकर्षक लड़की से हुई, जिसका शरीर सुडौल और गठीला था, गोल चेहरा,

खिलखिलाते गाल, घने घुंघराले बाल और छोटी-छोटी हंसमुख भूरी आंखें थीं। आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि यह मेरी बहन रोज़ थी। मुझे पता है, वह आज भी एक सुंदर महिला है, और निस्संदेह, आपकी नज़रों में, उस दिन से कम प्यारी नहीं है जब आपने उसे पहली बार देखा था। तब मुझे यह बिल्कुल भी नहीं पता था कि कुछ वर्षों बाद वह एक ऐसे व्यक्ति की पत्नी बनेगी जिसे मैं अभी तक पूरी तरह से नहीं जानती थी, लेकिन जो आगे चलकर मेरी उससे भी ज़्यादा करीबी दोस्त बनने वाला था, उस सत्रह साल के बदतमीज़ लड़के से भी ज़्यादा घनिष्ठ, जिसने मुझे नीचे आते समय गलियारे में पकड़ लिया था और मेरा संतुलन लगभग बिगाड़ दिया था, और जिसने अपनी गुस्ताखी के लिए, दीवार पर ज़ोरदार थप्पड़ खाया था, हालांकि उस थप्पड़ से दीवार को कोई गंभीर चोट नहीं आई थी; क्योंकि, सामान्य से अधिक घने होने के अलावा, यह छोटे, लाल रंग के घुंघराले बालों के एक अतिरिक्त गुच्छे से सुरक्षित था, जिसे मेरी माँ ऑबर्न कहती थी।

बैठक में प्रवेश करते ही हमने देखा कि आदरणीय महिला अपनी कुर्सी पर, चूल्हे के पास बैठी, अपनी बुनाई कर रही थीं, जैसा कि वह अक्सर करती थीं जब उनके पास करने के लिए कुछ और नहीं होता था। उन्होंने चूल्हा साफ कर दिया था और हमारे स्वागत के लिए एक तेज जलती हुई आग जला दी थी; नौकरानी अभी-अभी चाय की ट्रे लेकर आई थी; और रोज़ काले ओक की साइडबोर्ड में बनी अलमारी से चीनी का डिब्बा और चायदानी निकाल रही थीं, जो बैठक के खुशनुमा धुंधले प्रकाश में पॉलिश किए हुए आबनूस की तरह चमक रही थी।

'वाह! ये दोनों आ गए!' मेरी माँ ने अपनी फुर्तीली उंगलियों और चमकती सुइयों की गति को बिना रोके हम सब पर नज़र डालते हुए कहा। 'अब दरवाज़ा बंद करो और आग के पास आओ, जब तक रोज़ चाय तैयार करती है; मुझे यकीन है कि तुम्हें बहुत भूख लगी होगी; और मुझे बताओ कि तुमने दिन भर क्या किया; मुझे यह जानना अच्छा लगता है कि मेरे बच्चे क्या कर रहे हैं।'

'मैं भूरे रंग के घोड़े को प्रशिक्षण दे रहा हूँ - यह कोई आसान काम नहीं है - आखिरी गेहूं के ठूंठ की जुताई का निर्देशन कर रहा हूँ - क्योंकि हल चलाने वाले लड़के में खुद को निर्देशित करने की समझ नहीं है - और निचले घास के मैदानों की व्यापक और कुशल जल निकासी की योजना को क्रियान्वित कर रहा हूँ।'

'वाह, मेरा बहादुर बेटा! — और फर्गस, तुम क्या कर रहे थे?'

‘बैजर को लड़ाना।’

और यहाँ उन्होंने अपने खेल का विस्तृत वर्णन करना शुरू किया, और बिज्जू और कुत्तों द्वारा प्रदर्शित पराक्रम के संबंधित गुणों के बारे में बताया; मेरी माँ गहरी एकाग्रता से सुनने का नाटक कर रही थीं, और उनके जीवंत चेहरे को मातृत्व प्रशंसा की एक ऐसी भावना से देख रही थीं जो मुझे उसके उद्देश्य के अनुपात में बहुत अधिक प्रतीत होती थी।

'अब समय आ गया है कि तुम कुछ और करो, फर्गस,' मैंने उसकी कहानी में क्षण भर के विराम के दौरान कहा, जिससे मुझे कुछ कहने का मौका मिला।

‘मैं क्या करूँ?’ उसने उत्तर दिया; ‘मेरी माँ मुझे समुद्र में जाने या सेना में भर्ती होने नहीं देगी; और मैंने ठान लिया है कि मैं इसके अलावा कुछ और नहीं करूँगा— सिवाय इसके कि मैं आप सभी के लिए इतना कष्टदायक बन जाऊँ कि आप किसी भी कीमत पर मुझसे छुटकारा पाने के लिए आभारी हों।’

हमारे माता-पिता ने उसके कड़े, छोटे घुंघराले बालों को प्यार से सहलाया। वह गुर्राया और रूठने का नाटक किया, और फिर हम सब रोज़ के तीन बार बुलावे पर मेज पर अपनी-अपनी जगह बैठ गए।

‘अब चाय पीजिए,’ उसने कहा; ‘और मैं आपको बताती हूँ कि मैं क्या कर रही थी। मैं विल्सन परिवार से मिलने गई थी; और यह बहुत अफसोस की बात है कि आप मेरे साथ नहीं गए, गिल्बर्ट, क्योंकि एलिजा मिलवर्ड वहाँ थी!’

‘अच्छा! उसका क्या हुआ?’

‘अरे, कुछ नहीं! — मैं उसके बारे में आपको कुछ नहीं बताने वाली; — बस इतना ही कि जब वह खुशमिजाज होती है तो वह एक प्यारी, मनोरंजक छोटी बच्ची होती है, और मुझे उसे बुलाने में कोई आपत्ति नहीं होगी —’

‘चुप रहो, चुप रहो, मेरी प्यारी! तुम्हारे भाई का ऐसा कोई इरादा नहीं है!’ मेरी माँ ने उंगली उठाते हुए गंभीरता से फुसफुसाया।

“अच्छा,” रोज़ ने बात जारी रखते हुए कहा; “मैं आपको एक महत्वपूर्ण खबर बताने वाली थी जो मैंने वहाँ सुनी थी — मैं तब से इसके बारे में बहुत सोच रही हूँ। आपको पता है, एक महीने पहले खबर आई थी कि कोई वाइल्डफेल हॉल पर कब्जा करने वाला है — और — आप क्या सोचती हैं? वहाँ तो एक हफ्ते से ज़्यादा समय से लोग रह रहे हैं! — और हमें पता ही नहीं चला!”

‘असंभव!’ मेरी माँ चिल्लाई।

‘बेहद अकल्पनीय!!!’ फर्गस चीख उठा।

‘जी हां, बिल्कुल! और वो भी एक अकेली महिला द्वारा!’

‘हे भगवान! यह जगह तो खंडहर हो चुकी है!’

‘उसने दो-तीन कमरों को रहने लायक बनवा लिया है; और वह वहीं अकेली रहती है — बस एक बूढ़ी औरत नौकरानी के रूप में रहती है!’

‘अरे बाप रे! ये तो सब गड़बड़ कर गया – मुझे तो उम्मीद थी कि वो चुड़ैल होगी,’ फर्गस ने अपनी एक इंच मोटी ब्रेड और मक्खन की स्लाइस काटते हुए कहा। ‘बकवास, फर्गस! पर ये अजीब नहीं है ना, माँ?’

‘अजीब! मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा।’

लेकिन आप इस पर विश्वास कर सकते हैं; क्योंकि जेन विल्सन ने उसे देखा है। वह अपनी माँ के साथ गई थी, जो स्वाभाविक रूप से, जब पड़ोस में किसी अजनबी के होने की खबर सुनती, तो उसे देखने और उससे हर संभव जानकारी निकालने तक बेचैन रहती। उसका नाम श्रीमती ग्राहम है, और वह शोक में है - विधवा का शोक नहीं, बल्कि हल्का शोक - और वे काफी युवा हैं, लोग कहते हैं, - 20-26 से अधिक नहीं, - लेकिन बहुत ही शांत! उन्होंने यह पता लगाने की पूरी कोशिश की कि वह कौन है, कहाँ से आई है, और उसके बारे में सब कुछ, लेकिन न तो श्रीमती विल्सन, अपने अड़ियल और उद्दंड घरेलू सवालों के साथ, और न ही मिस विल्सन, अपनी कुशल चालों के साथ, एक भी संतोषजनक उत्तर, यहाँ तक कि एक आकस्मिक टिप्पणी, या संयोगवश कही गई कोई बात भी नहीं निकलवा सकी जिससे उनकी जिज्ञासा शांत हो सके, या उसके इतिहास, परिस्थितियों या संबंधों पर प्रकाश की एक हल्की सी भी किरण दिखाई दे सके। इसके अलावा, वह उनसे मुश्किल से ही शिष्टाचार से पेश आती थी, और जाहिर तौर पर 'आप कैसे हैं' कहने के बजाय 'अलविदा' कहना ज्यादा पसंद करती थी। लेकिन एलिजा मिलवर्ड कहती हैं कि उनके पिता जल्द ही उनसे मिलने आने वाले हैं, ताकि उन्हें कुछ धार्मिक सलाह दे सकें, जिसकी उन्हें जरूरत महसूस हो रही है, क्योंकि हालांकि यह पता चला है कि वह पिछले हफ्ते की शुरुआत में पड़ोस में आई थीं, लेकिन रविवार को चर्च में नहीं आईं; और वह - यानी एलिजा - उनके साथ जाने की विनती करेंगी, और उन्हें पूरा यकीन है कि वह उनसे कुछ न कुछ मनवा लेंगी - आप जानते हैं, गिल्बर्ट, वह कुछ भी कर सकती हैं। और हमें कभी न कभी

जरूर आना चाहिए, माँ; यह उचित ही होगा, आप जानते हैं।

'बिल्कुल, मेरी प्यारी। बेचारी! उसे कितना अकेलापन महसूस होता होगा!'

"और कृपया, जल्दी करो; और मुझे यह जरूर बताना कि वह अपनी चाय में कितनी चीनी डालती है, किस तरह की टोपी और एप्रन पहनती है, और बाकी सब कुछ; क्योंकि जब तक मुझे यह पता नहीं चलेगा, मैं कैसे जी पाऊंगा," फर्गस ने बहुत गंभीरता से कहा।

लेकिन अगर उनका इरादा अपने भाषण को हास्य-विनोद की उत्कृष्ट कृति साबित करवाना था, तो वे बुरी तरह असफल रहे, क्योंकि कोई भी नहीं हंसा। हालांकि, वे इससे ज्यादा विचलित नहीं हुए; क्योंकि जब उन्होंने रोटी और मक्खन का एक टुकड़ा खाया और चाय का एक घूंट पीने ही वाले थे, तभी उस बात का हास्य उन पर इतनी ज़ोर से हावी हो गया कि वे मेज से उछल पड़े और हांफते-हंसते कमरे से बाहर भाग गए; और एक मिनट बाद, बगीचे में उनकी चीखें भयानक पीड़ा में सुनाई दीं।

मैं भूखा था, और चुपचाप चाय, हैम और टोस्ट खाकर ही संतुष्ट रहा, जबकि मेरी माँ और बहन बातें करती रहीं और उस रहस्यमयी महिला की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिस्थितियों और संभावित या असंभव इतिहास पर चर्चा करती रहीं; लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मेरे भाई की उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बाद, मैंने एक-दो बार प्याला होठों तक उठाया और बिना चखे ही वापस रख दिया, कहीं ऐसा न हो कि मैं भी वैसी ही कोई बात कहकर अपनी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचा दूँ।

अगले दिन मेरी माँ और रोज़ उस सुंदर संन्यासिनी को प्रणाम करने के लिए जल्दी से गईं; और लौटते समय उन्हें पहले से कुछ खास ज्ञान नहीं हुआ था; हालाँकि मेरी माँ ने कहा कि उन्हें यात्रा का कोई पछतावा नहीं है, क्योंकि भले ही उन्हें बहुत लाभ न हुआ हो, लेकिन उन्होंने खुद को तसल्ली दी कि उन्होंने कुछ ज्ञान दिया है, और यह बेहतर है: उन्होंने कुछ उपयोगी सलाह दी थी, जिसे, उन्हें उम्मीद थी, व्यर्थ नहीं जाने दिया जाएगा; क्योंकि श्रीमती ग्राहम, हालाँकि वे सार्थक बातें कम बोलती थीं और कुछ हद तक आत्ममुग्ध प्रतीत होती थीं, फिर भी चिंतनशील प्रतीत होती थीं, - हालाँकि बेचारी, उन्हें पता नहीं था कि वे अपना पूरा जीवन कहाँ बिता चुकी हैं, क्योंकि कुछ मामलों में उनकी अज्ञानता स्पष्ट थी, और उन्हें इस बात का ज़रा भी अफ़सोस नहीं था।

'माँ, किन बातों पर?' मैंने पूछा।

घरेलू मामलों, खाना पकाने की बारीकियों और ऐसी ही अन्य चीजों के बारे में, जिनसे हर महिला को परिचित होना चाहिए, चाहे उसे अपने ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग करना पड़े या नहीं। मैंने उसे कुछ उपयोगी जानकारी और कई बेहतरीन व्यंजन विधियां दीं, जिनका महत्व वह स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाई, क्योंकि उसने मुझसे विनती की कि मैं खुद को परेशान न करूं, क्योंकि वह इतनी सादगी और शांत जीवन जीती थी कि उसे यकीन था कि उसे कभी भी इनका उपयोग नहीं करना पड़ेगा। "कोई बात नहीं, मेरी प्यारी," मैंने कहा; "यह वह सब है जो हर सम्मानित महिला को जानना चाहिए; और इसके अलावा, हालांकि आप अभी अकेली हैं, आप हमेशा अकेली नहीं रहेंगी; आपकी शादी हो चुकी है, और शायद - मैं कह सकती हूं कि लगभग निश्चित रूप से - फिर से होगी।" "आप गलत हैं, महोदया," उसने लगभग घमंड से कहा; "मुझे यकीन है कि मेरी शादी कभी नहीं होगी।" - लेकिन मैंने उससे कहा कि मुझे बेहतर पता है।

मैंने कहा, 'शायद कोई रोमांटिक युवा विधवा वहां अपने अंतिम दिन एकांत में बिताने और अपने प्रिय दिवंगत के लिए गुप्त रूप से शोक मनाने आई होगी - लेकिन यह ज्यादा देर तक नहीं चलेगा।'

‘नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,’ रोज़ ने कहा; ‘क्योंकि वह इतनी उदास नहीं लग रही थी; और वह बेहद खूबसूरत है—बल्कि आकर्षक है—गिल्बर्ट, तुम्हें उसे देखना चाहिए; तुम उसे एक आदर्श सुंदरी कहोगे, हालाँकि तुम शायद ही उसमें और एलिज़ा मिलवर्ड में कोई समानता देख पाओगे।’

‘खैर, मैं एलिजा के चेहरे से कहीं अधिक सुंदर, लेकिन उससे अधिक आकर्षक नहीं, कई चेहरों की कल्पना कर सकता हूँ। मैं मानता हूँ कि वह पूर्णता के मामले में थोड़ी बहुत खरी उतरती है; लेकिन फिर भी, मेरा मानना है कि अगर वह और अधिक परिपूर्ण होती, तो वह कम रोचक होती।’

तो क्या आप दूसरों की खूबियों के मुकाबले उसकी कमियों को पसंद करते हैं?

‘बिल्कुल सही—मेरी माँ की उपस्थिति को सहेजने के लिए।’

'ओह, मेरे प्यारे गिल्बर्ट, तुम क्या बकवास कर रहे हो! - मुझे पता है तुम्हारा यह मतलब नहीं है; यह बिल्कुल असंभव है,' मेरी माँ ने उठते हुए और घर के काम का बहाना बनाकर कमरे से बाहर निकलते हुए कहा, ताकि मेरे मुंह से निकले उस विरोधाभास से बच सकें जो मेरी जुबान पर कांप रहा था।

उसके बाद रोज़ ने मुझे श्रीमती ग्राहम के बारे में और अधिक जानकारी दी। उनका रूप-रंग, व्यवहार, पहनावा और यहाँ तक कि उनके कमरे का फर्नीचर भी, सब कुछ मेरे सामने इतनी स्पष्टता और सटीकता से प्रस्तुत किया गया जितना मैं देखना नहीं चाहता था; लेकिन, चूंकि मैं ध्यान से सुनने वाला नहीं था, इसलिए चाहकर भी मैं उस वर्णन को दोहरा नहीं सकता था।

अगला दिन शनिवार था; और रविवार को, सभी लोग सोच रहे थे कि क्या वह अनजान सुंदरी पादरी की चेतावनी से सबक लेकर चर्च आएगी या नहीं। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने स्वयं भी वाइल्डफेल हॉल से संबंधित उस पुरानी पारिवारिक बेंच की ओर कुछ रुचि से देखा, जहाँ फीके लाल रंग के कुशन और अस्तर इतने वर्षों से बिना इस्त्री किए और बिना बदले पड़े थे, और जंग लगे काले कपड़े के उदास किनारों वाले गंभीर प्रतीक ऊपर की दीवार से घूर रहे थे।

और वहाँ मैंने काले वस्त्र पहने एक लंबी, सुंदर महिला को देखा। उसका चेहरा मेरी ओर था, और उसमें कुछ ऐसा था जिसे एक बार देखने के बाद मैं उसे दोबारा देखने के लिए ललचा गया। उसके बाल काले थे और लंबे, चमकदार घुंघराले थे, जो उन दिनों में एक असामान्य शैली थी, लेकिन हमेशा ही आकर्षक और सुंदर लगती थी; उसका रंग साफ और पीला था; उसकी आँखें मैं नहीं देख सका, क्योंकि वह अपनी प्रार्थना-पुस्तक में डूबी हुई थी, इसलिए उसकी झुकी हुई पलकों और लंबी काली पलकों से ढकी हुई थीं, लेकिन उसकी भौहें भावपूर्ण और सुस्पष्ट थीं; उसका माथा ऊंचा और बौद्धिक था, नाक एकदम नुकीली थी और कुल मिलाकर उसके चेहरे की बनावट निर्दोष थी - केवल गालों और आँखों के आसपास थोड़ी सी धंसी हुई थी, और उसके होंठ, हालांकि सुंदर आकार के थे, थोड़े पतले, थोड़े ज्यादा कसे हुए थे, और उनमें कुछ ऐसा था जो मुझे लगा कि बहुत कोमल या मिलनसार स्वभाव का संकेत नहीं देता था; और मैंने मन ही मन कहा— 'हे सुंदर स्त्री, मैं दूर से ही आपकी प्रशंसा करना अधिक पसंद करूंगा, बजाय इसके कि मैं आपके घर का साथी बनूं।'

तभी उसने अपनी निगाहें उठाईं और मेरी निगाहों से मिलीं; मैंने अपनी निगाहें हटाना उचित नहीं समझा और वह फिर से अपनी किताब की ओर मुड़ गई, लेकिन क्षणिक रूप से उसके चेहरे पर एक अवर्णनीय, शांत तिरस्कार का भाव था, जो मुझे बेहद उत्तेजित कर गया।

मैंने सोचा, 'वह मुझे एक उद्दंड पिल्ला समझती है।' 'हम्म! – अगर मुझे लगा कि

यह उचित है, तो वह जल्द ही अपना विचार बदल लेगी।'

लेकिन तभी मुझे एहसास हुआ कि ये विचार किसी पूजा स्थल के लिए बिल्कुल अनुचित थे, और इस अवसर पर मेरा व्यवहार बिल्कुल भी उचित नहीं था। प्रार्थना में ध्यान लगाने से पहले, मैंने चर्च में चारों ओर नज़र घुमाई कि कहीं कोई मुझे देख तो नहीं रहा है; लेकिन नहीं, जो लोग अपनी प्रार्थना-पुस्तकों में ध्यान नहीं दे रहे थे, वे सभी उस अजनबी महिला पर ध्यान दे रहे थे, जिनमें मेरी माँ और बहन, श्रीमती विल्सन और उनकी बेटी भी शामिल थीं; और यहाँ तक कि एलिज़ा मिलवर्ड भी तिरछी नज़रों से उस महिला को देख रही थी जिस पर सबकी नज़रें टिकी थीं। फिर उसने मेरी तरफ देखा, थोड़ा मुस्कुराई, शरमाई, विनम्रता से अपनी प्रार्थना-पुस्तक देखी और अपने चेहरे के भावों को संवारने की कोशिश की।

मैंने फिर से गलती कर दी थी; और इस बार मेरे शरारती भाई ने कोहनी से मेरी पसलियों पर ज़ोरदार धक्का मारकर मुझे अपनी गलती का एहसास कराया। फिलहाल, मैं केवल उसके पैर की उंगलियों पर पैर रखकर ही इस अपमान का बदला ले सकता था, और चर्च से बाहर निकलने तक बदला लेने का विचार टाल दिया।

अब, हैलफोर्ड, इस पत्र को समाप्त करने से पहले, मैं आपको बता दूँ कि एलिज़ा मिलवर्ड कौन थी: वह पादरी की छोटी बेटी थी, और एक बेहद आकर्षक लड़की थी, जिसके प्रति मेरे मन में काफी स्नेह था; और वह यह जानती थी, हालाँकि मैंने कभी उसे कोई प्रत्यक्ष कारण नहीं बताया था, और न ही ऐसा करने का मेरा कोई निश्चित इरादा था, क्योंकि मेरी माँ, जो मानती थी कि मेरे लिए बीस मील के दायरे में कोई भी अच्छी लड़की नहीं है, उस तुच्छ लड़की से मेरी शादी के बारे में सोच भी नहीं सकती थी, जिसके पास अपनी कई अन्य कमियों के अलावा, बीस पाउंड भी नहीं थे। एलिज़ा का शरीर दुबला-पतला और गोल-मटोल था, उसका चेहरा छोटा और लगभग मेरी बहन जैसा गोल था, रंगत भी कुछ हद तक मेरी बहन जैसी थी, लेकिन अधिक कोमल और कम खिलखिलाती हुई, नाक उभरी हुई, चेहरे की बनावट आम तौर पर अनियमित थी; और कुल मिलाकर, वह सुंदर से कहीं अधिक आकर्षक थी। लेकिन उसकी आँखें - मैं उन उल्लेखनीय विशेषताओं को नहीं भूल सकता, क्योंकि उनका मुख्य आकर्षण उन्हीं में था - कम से कम बाहरी रूप से; उनकी आँखें लंबी और पतली थीं, पुतलियाँ काली या गहरे भूरे रंग की थीं, भाव बदलते रहते थे, लेकिन हमेशा या तो अलौकिक रूप से - मैंने लगभग शैतानी रूप से कह दिया था - दुष्ट, या अप्रतिरोध्य रूप से मोहक

- अक्सर दोनों। उनकी आवाज़ कोमल और बचकानी थी, उनके कदम बिल्ली की तरह हल्के और कोमल थे: - लेकिन उनका व्यवहार अक्सर एक प्यारी, चंचल बिल्ली के बच्चे जैसा होता था, जो कभी चंचल और शरारती होती है, कभी डरपोक और शांत, अपनी इच्छा के अनुसार।

उसकी बहन मैरी उससे कई साल बड़ी, कई इंच लंबी और अधिक हष्ट-पुष्ट शरीर की थी। वह एक सीधी-सादी, शांत और समझदार लड़की थी, जिसने अपनी माँ की अंतिम लंबी और कष्टदायक बीमारी के दौरान धैर्यपूर्वक उनकी देखभाल की थी और तब से लेकर अब तक घर की सारी ज़िम्मेदारियाँ और घरेलू काम संभाले हुए थी। उसके पिता उस पर भरोसा करते थे और उसे बहुत महत्व देते थे; सभी कुत्ते, बिल्लियाँ, बच्चे और गरीब लोग उससे प्यार करते थे और उसे अपने करीब रखते थे, जबकि बाकी सभी लोग उसे नज़रअंदाज़ करते थे।

रेवरेंड माइकल मिलवर्ड स्वयं एक लंबे, भारी-भरकम बुजुर्ग सज्जन थे, जो अपने बड़े, चौकोर और मजबूत चेहरे पर फावड़े के आकार की टोपी रखते थे, हाथ में एक मजबूत छड़ी रखते थे और अपने अभी भी शक्तिशाली अंगों को घुटनों तक की पैंट और गैटर में रखते थे, या राजकीय अवसरों पर काले रेशमी मोजे पहनते थे। वे दृढ़ सिद्धांतों, प्रबल पूर्वाग्रहों और नियमित आदतों वाले व्यक्ति थे, जो किसी भी रूप में असहमति को बर्दाश्त नहीं करते थे, और इस दृढ़ विश्वास के साथ कार्य करते थे कि उनके विचार हमेशा सही होते हैं, और जो कोई भी उनसे असहमत होता है वह या तो अत्यंत अज्ञानी होता है, या जानबूझकर अंधा होता है।

बचपन में, मैं हमेशा उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव रखता था—लेकिन आजकल, यहाँ तक कि अब भी, यह भाव प्रबल हो गया है, क्योंकि यद्यपि वे अच्छे व्यवहार वाले बच्चों के प्रति पिता तुल्य दयालु थे, वे एक सख्त अनुशासनवादी थे, और अक्सर हमारी बचकानी गलतियों और भूलों पर हमें कड़ी फटकार लगाते थे; और तो और, उन दिनों, जब भी वे हमारे माता-पिता से मिलने आते थे, हमें उनके सामने खड़े होकर अपनी धार्मिक शिक्षा पढ़नी पड़ती थी, या 'हाउ डौथ द लिटिल बिज़ी बी' या कोई अन्य भजन दोहराना पड़ता था, या—सबसे बुरा—उनके पिछले पाठ और प्रवचन के मुख्य बिंदुओं के बारे में प्रश्न पूछे जाते थे, जो हमें कभी याद नहीं रहते थे। कभी-कभी, वे सज्जन मेरी माँ को अपने बेटों के प्रति अत्यधिक उदार होने के लिए पुराने एली, या डेविड और अबशालोम का हवाला देते हुए डांटते थे, जो उन्हें विशेष रूप से

आहत करता था; और यद्यपि वे उनका और उनके सभी कथनों का बहुत सम्मान करती थीं, मैंने एक बार उन्हें यह कहते हुए सुना, 'काश उनका भी एक बेटा होता!' तब वह दूसरों को सलाह देने में इतना तत्पर नहीं होता; उसे पता चल जाता कि दो लड़कों को अनुशासित रखना कितना मुश्किल होता है।

वे अपने शारीरिक स्वास्थ्य का बहुत ध्यान रखते थे—सुबह जल्दी उठते थे, नाश्ते से पहले नियमित रूप से टहलते थे, गर्म और सूखे कपड़ों के प्रति बेहद सतर्क थे, और बिना कच्चा अंडा खाए कभी उपदेश नहीं देते थे—हालांकि उनके फेफड़े अच्छे थे और आवाज दमदार थी—और आम तौर पर अपने खाने-पीने के प्रति बेहद सतर्क रहते थे, हालांकि वे बिल्कुल भी संयमी नहीं थे, और उनका खान-पान का तरीका भी अनोखा था—वे चाय और ऐसे ही हल्के पेय पदार्थों से घृणा करते थे, और माल्टेड पेय, बेकन और अंडे, हैम, हंग बीफ और अन्य मजबूत मांस के शौकीन थे, जो उनके पाचन तंत्र को अच्छी तरह से सूट करते थे, और इसलिए वे इन्हें सभी के लिए अच्छा और पौष्टिक मानते थे, और सबसे नाजुक बीमार या बदहजमी के रोगियों को भी आत्मविश्वास से इनकी सलाह देते थे, जिन्हें अगर उनकी सलाह से अपेक्षित लाभ नहीं मिलता था, तो उन्हें बताया जाता था कि यह उनकी लगन की कमी के कारण हुआ है, और अगर वे इससे असुविधा की शिकायत करते थे, तो उन्हें आश्वासन दिया जाता था कि यह सब सिर्फ कल्पना है।

मैं संक्षेप में उन दो अन्य व्यक्तियों का उल्लेख करूँगा जिनका मैंने पहले जिक्र किया है, और फिर इस लंबे पत्र को समाप्त करूँगा। ये हैं श्रीमती विल्सन और उनकी बेटी। श्रीमती विल्सन एक संपन्न किसान की विधवा थीं, एक संकीर्ण सोच वाली, चुगली करने वाली बूढ़ी महिला, जिनके चरित्र का वर्णन करना उचित नहीं है। उनके दो बेटे थे, रॉबर्ट, एक देहाती किसान, और रिचर्ड, एक शांत, अध्ययनशील युवक, जो पादरी की सहायता से क्लासिक्स का अध्ययन कर रहा था, कॉलेज में दाखिले की तैयारी कर रहा था, ताकि वह चर्च में प्रवेश कर सके।

उनकी बहन जेन एक प्रतिभाशाली और महत्वाकांक्षी युवती थीं। उन्होंने अपनी इच्छा से एक उच्च स्तरीय बोर्डिंग स्कूल में शिक्षा प्राप्त की थी, जो परिवार के किसी भी सदस्य द्वारा पहले प्राप्त की गई शिक्षा से कहीं बेहतर थी। उन्होंने शिष्टाचार को अच्छी तरह आत्मसात कर लिया था, उनके तौर-तरीकों में काफी शालीनता आ गई थी, उनका देहाती लहजा पूरी तरह से गायब हो गया था, और वे पादरी की बेटियों से

भी अधिक योग्यताओं का दावा कर सकती थीं। उन्हें सुंदर भी माना जाता था; लेकिन एक पल के लिए भी वह मुझे अपने प्रशंसकों में नहीं गिन सकती थीं। उनकी उम्र लगभग छब्बीस वर्ष थी, वे काफी लंबी और दुबली-पतली थीं, उनके बाल न तो भूरे थे और न ही गहरे भूरे, बल्कि चमकीले हल्के लाल रंग के थे; उनका रंग बेहद गोरा और दमकता हुआ था, उनका सिर छोटा, गर्दन लंबी, ठुड्डी सुडौल लेकिन बहुत छोटी, होंठ पतले और लाल, आंखें साफ भूरी, तेज और भेदक थीं, लेकिन उनमें कविता या भावना का कोई अंश नहीं था। उनके अपने सामाजिक स्तर के कई चाहने वाले थे, या हो सकते थे, लेकिन उन्होंने उन सभी को तिरस्कारपूर्वक ठुकरा दिया था; क्योंकि केवल एक सज्जन ही उसके परिष्कृत स्वाद को संतुष्ट कर सकता था, और केवल एक धनी ही उसकी ऊँची महत्वाकांक्षा को पूरा कर सकता था। एक सज्जन ऐसा था, जिससे उसे हाल ही में कुछ तीखे संकेत मिले थे, और फुसफुसाहट में कहा जाता था कि वह उसके दिल, नाम और संपत्ति पर गंभीर इरादे रखती थी। यह थे श्री लॉरेंस, युवा जमींदार, जिनका परिवार पहले वाइल्डफेल हॉल में रहता था, लेकिन लगभग पंद्रह साल पहले पड़ोसी इलाके में एक अधिक आधुनिक और विशाल हवेली में रहने के लिए उसे छोड़ दिया था।

अब, हैलफोर्ड, मैं आपसे अभी विदा लेता हूँ। यह मेरे कर्ज की पहली किस्त है। अगर आपको यह सिक्का पसंद आए, तो मुझे बता दीजिए, और मैं बाकी पैसे आपको फुर्सत में भेज दूँगा: अगर आप ऐसे भद्दे, भारी सिक्कों से अपना पर्स भरने के बजाय मेरे लेनदार बने रहना चाहते हैं, तो भी मुझे बता दीजिए, और मैं आपकी इस बेस्वाद पसंद को माफ कर दूँगा, और खुशी-खुशी इस खजाने को अपने पास रख लूँगा।

आपका, अपरिवर्तनीय रूप से,

गिल्बर्ट मार्खम।

अध्याय II

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है, मेरे प्रिय मित्र, कि आपके असंतोष के बादल छंट गए हैं; आपके चेहरे की रोशनी एक बार फिर मुझ पर चमक रही है, और आप मेरी कहानी का आगे का भाग सुनना चाहते हैं: इसलिए, बिना किसी देरी के, यह कहानी आपको प्रस्तुत है।

मुझे लगता है कि जिस दिन का मैंने आखिरी बार जिक्र किया था, वह अक्टूबर 1827 का कोई रविवार था। अगले मंगलवार को मैं अपने कुत्ते और बंदूक के साथ लिंडेन-कार के इलाके में शिकार की तलाश में निकला था; लेकिन कुछ भी न मिलने पर मैंने बाज और कौवों का सामना किया, जिनके हमलों ने, जैसा कि मुझे संदेह था, मुझे बेहतर शिकार से वंचित कर दिया था। इसके लिए मैंने अधिक भीड़भाड़ वाले इलाकों, जंगली घाटियों, खेतों और घास के मैदानों को छोड़कर वाइल्डफेल की खड़ी चढ़ाई की ओर प्रस्थान किया, जो हमारे पड़ोस की सबसे जंगली और सबसे ऊंची पहाड़ी थी। जैसे-जैसे आप ऊपर चढ़ते हैं, झाड़ियाँ और पेड़ दोनों ही कम और बौने होते जाते हैं; झाड़ियाँ अंततः खुरदरी पत्थर की बाड़ में बदल जाती हैं, जो आंशिक रूप से आइवी और काई से ढकी होती हैं, जबकि झाड़ियाँ लार्च और स्कॉच फर के पेड़ों या अलग-थलग ब्लैकथॉर्न में बदल जाती हैं। खेत ऊबड़-खाबड़ और पथरीले थे, और हल चलाने के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त थे; वे अधिकतर भेड़ों और मवेशियों के चरने के लिए इस्तेमाल होते थे; मिट्टी पतली और बंजर थी: घास के टीलों से जगह-जगह धूसर चट्टानों के टुकड़े झाँकते थे; दीवारों के नीचे बेर और हीथर के पौधे उगते थे - जो अधिक जंगलीपन के अवशेष थे; और कई बाड़ों में, जंगली घास और सरकंडे ने कम वनस्पति पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया था; लेकिन ये मेरी संपत्ति नहीं थे।

इस पहाड़ी की चोटी के पास, लिंडेन-कार से लगभग दो मील दूर, वाइल्डफेल हॉल स्थित था, जो एलिज़ाबेथ युग की एक जीर्ण-शीर्ण हवेली थी, जो गहरे भूरे रंग के पत्थरों से बनी थी। देखने में यह भव्य और सुरम्य थी, लेकिन निस्संदेह, अपने मोटे पत्थर के स्तंभों और छोटी जालीदार खिड़कियों, समय के साथ क्षीण हो चुके हवा के छिद्रों और अपनी अत्यधिक एकांत और असुरक्षित स्थिति के कारण रहने के लिए काफी ठंडी और उदास थी। इसे केवल स्कॉटिश देवदार के पेड़ों के एक समूह द्वारा हवा और मौसम के प्रकोप से बचाया जाता था, जो स्वयं तूफानों से आधे मुरझा चुके थे और हॉल की तरह ही कठोर और उदास दिखते थे। इसके पीछे कुछ उजाड़ खेत थे,

और फिर पहाड़ी की भूरी झाड़ियों से ढकी चोटी थी। इसके सामने (पत्थर की दीवारों से घिरा हुआ, और लोहे के फाटक से प्रवेश किया जाता था, जिसके खंभों पर छत और छज्जों को सजाने वाले बड़े-बड़े भूरे ग्रेनाइट के गोले लगे थे) एक बगीचा था, - जो कभी ऐसे कठोर पौधों और फूलों से भरा हुआ था जो मिट्टी और जलवायु को सबसे अच्छी तरह सहन कर सकते थे, और ऐसे पेड़ों और झाड़ियों से भरा हुआ था जो माली की कठोर कटाई को सबसे अच्छी तरह सहन कर सकते थे, और आसानी से उसके द्वारा दिए गए आकार को धारण कर सकते थे, - अब, इतने वर्षों तक बिना जोते और बिना काटे-छांटे छोड़ दिए जाने के बाद, खरपतवारों और घास, पाले और हवा, बारिश और सूखे के हवाले कर दिए जाने के कारण, यह वास्तव में एक बहुत ही विचित्र रूप प्रस्तुत करता था। प्रिवेट की घनी हरी दीवारें, जो मुख्य रास्ते के किनारे थीं, दो-तिहाई सूख चुकी थीं, और बाकी सभी उचित सीमाओं से परे बढ़ गई थीं; खुरचनी के बगल में बैठा बूढ़ा हंस अपनी गर्दन और आधे शरीर को खो चुका था: बगीचे के बीच में लॉरेल के बुर्ज, द्वार के एक तरफ खड़ा विशालकाय योद्धा और दूसरी तरफ पहरा देने वाला शेर, ऐसे विचित्र आकार में उग आए थे जो न तो स्वर्ग में, न पृथ्वी पर, और न ही पृथ्वी के नीचे के जल में किसी से मिलते-जुलते थे; लेकिन, मेरी छोटी सी कल्पना में, वे सभी एक प्रेतवाधित रूप प्रस्तुत करते थे, जो उस भूतिया हॉल और उसके दिवंगत निवासियों के बारे में हमारी बूढ़ी नर्स द्वारा बताई गई प्रेतवाधित सेनाओं और अंधेरी परंपराओं के साथ अच्छी तरह से मेल खाता था।

जब मैं हवेली के पास पहुँचा, तब तक मैं एक बाज़ और दो कौवों को मार चुका था; फिर, आगे और शिकार करने का इरादा छोड़कर, मैं उस पुरानी जगह को देखने

और यह जानने के लिए आगे बढ़ गया कि उसके नए निवासी ने उसमें क्या बदलाव किए हैं। मुझे बिल्कुल सामने जाकर द्वार के अंदर झाँकना अच्छा नहीं लगा; इसलिए मैं बगीचे की दीवार के पास रुक गया और देखा, और मुझे कोई बदलाव नहीं दिखा - सिवाय एक हिस्से के, जहाँ टूटी हुई खिड़कियाँ और जर्जर छत की मरम्मत स्पष्ट रूप से हो चुकी थी, और जहाँ चिमनियों से धुएँ का एक पतला छल्ला ऊपर उठ रहा था।

जब मैं इस प्रकार अपनी बंदूक पर टिका हुआ, अंधेरे छज्जों की ओर देखता हुआ, एक उदासीन तन्मयता में डूबा हुआ, मन में तरह-तरह की कल्पनाओं का ताना-बाना बुन रहा था, जिसमें पुरानी यादें और उन दीवारों के भीतर मौजूद वह सुंदर युवा साधु लगभग बराबर भूमिका निभा रहे थे, तभी मुझे बगीचे के भीतर हल्की सरसराहट और खड़खड़ाहट सुनाई दी; और जिस दिशा से आवाज़ आ रही थी, उस ओर देखते ही मैंने दीवार के ऊपर एक छोटा सा हाथ उठा हुआ देखा: वह सबसे ऊपरी पत्थर से चिपका हुआ था, और फिर एक और छोटा हाथ उसे और मजबूती से पकड़ने के लिए उठा, और फिर एक छोटा सा सफेद माथा दिखाई दिया, जिसके ऊपर हल्के भूरे बालों की लटें थीं, नीचे गहरी नीली आँखों की एक जोड़ी और एक छोटी सी हाथीदांत जैसी नाक का ऊपरी हिस्सा।

मेरी ओर तो किसी ने ध्यान नहीं दिया, लेकिन मेरी खूबसूरत काली-सफेद सेटर, सांचो को देखकर उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं, जो मैदान में थूथन ज़मीन पर टिकाए दौड़ रहा था। उस नन्हे जीव ने अपना चेहरा ऊपर उठाया और कुत्ते को ज़ोर से पुकारा। दयालु जानवर रुका, ऊपर देखा और अपनी पूंछ हिलाई, लेकिन आगे नहीं बढ़ा। बच्चा (लगभग पाँच साल का एक छोटा लड़का) दीवार के ऊपर चढ़ गया और बार-बार पुकारा; लेकिन जब इसका कोई फायदा नहीं हुआ, तो उसने मुहम्मद की तरह पहाड़ पर जाने का मन बना लिया, क्योंकि पहाड़ उसके पास नहीं आ रहा था, और उसने पार करने की कोशिश की; लेकिन पास ही उगे एक पुराने, टेढ़े-मेढ़े चेरी के पेड़ ने अपनी दीवार के ऊपर फैली एक टेढ़ी-मेढ़ी शाखा में उसे जकड़ लिया। खुद को छुड़ाने की कोशिश में उसका पैर फिसल गया और वह नीचे गिर पड़ा - लेकिन ज़मीन पर नहीं; - पेड़ ने उसे अभी भी लटकाए रखा था। एक खामोश संघर्ष हुआ, और फिर एक तीखी चीख सुनाई दी; लेकिन, पलक झपकते ही मैंने अपनी बंदूक घास पर गिरा दी और उस नन्हे बच्चे को अपनी बाहों में पकड़ लिया।

मैंने उसके कपड़े से उसकी आँखें पोंछीं, उसे बताया कि वह ठीक है और उसे शांत

करने के लिए सांचो को बुलाया। वह कुत्ते की गर्दन पर अपना छोटा हाथ रख ही रहा था कि आँसुओं के बीच मुस्कुराने लगा, तभी मुझे पीछे से लोहे के गेट के खुलने की आवाज़ सुनाई दी, और महिलाओं के कपड़ों की सरसराहट हुई, और देखो! श्रीमती ग्राहम मेरी ओर दौड़ पड़ीं - उनकी गर्दन खुली थी, उनके काले बाल हवा में लहरा रहे थे।

'मुझे बच्चा दो!' उसने फुसफुसाहट से भी धीमी आवाज़ में कहा, लेकिन स्वर में चौंकाने वाली उग्रता थी, और लड़के को पकड़कर मुझसे छीन लिया, मानो मेरे स्पर्श में कोई भयानक संक्रमण हो, और फिर एक हाथ से उसका हाथ कसकर पकड़े और दूसरे हाथ से उसके कंधे पर रखकर, अपनी बड़ी, चमकदार काली आँखों से मुझे घूरने लगी - पीली, बेदम, घबराहट से कांपती हुई।

'मैं बच्चे को नुकसान नहीं पहुंचा रहा था, महोदया,' मैंने कहा, यह तय करना मुश्किल था कि मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य होना चाहिए या नाराजगी; 'वह दीवार से नीचे गिर रहा था; और मैं इतना भाग्यशाली था कि मैंने उसे उस पेड़ से सिर के बल लटकते हुए पकड़ लिया, और न जाने किस भयानक दुर्घटना को होने से रोक दिया।'

'माफ़ कीजिए, महोदय,' वह हकलाते हुए बोली; अचानक शांत होते हुए, मानो उसके उदास मन पर तर्क का प्रकाश फूट पड़ा हो, और उसके गालों पर हल्की सी लाली छा गई – 'मैं आपको नहीं जानती थी; और मैंने सोचा –'

वह बच्चे को चूमने के लिए झुकी और स्नेहपूर्वक अपना हाथ उसकी गर्दन के चारों ओर लपेट लिया।

'मुझे लगता है कि आपको लगा था कि मैं आपके बेटे का अपहरण करने जा रहा हूँ?'

उसने थोड़ी शर्मिंदगी भरी हंसी के साथ उसके सिर पर हाथ फेरा और जवाब दिया, "मुझे नहीं पता था कि उसने दीवार पर चढ़ने की कोशिश की थी। मुझे लगता है कि मुझे श्री मार्खम को संबोधित करने का सौभाग्य प्राप्त है?" उसने कुछ अचानक ही कहा।

मैंने झुककर अभिवादन किया, लेकिन यह पूछने की हिम्मत भी की कि वह मुझे कैसे जानती है।

'आपकी बहन कुछ दिन पहले श्रीमती मार्खम के साथ यहां आई थीं।'

'तो क्या वाकई समानता इतनी प्रबल है?' मैंने कुछ आश्चर्य के साथ पूछा, और इस

विचार से मुझे उतनी खुशी नहीं हुई जितनी होनी चाहिए थी।

‘मुझे लगता है कि तुम्हारी आँखों और रंग में कुछ समानता है,’ उसने कुछ संदेह भरी निगाहों से मेरा चेहरा देखते हुए उत्तर दिया; ‘और मुझे लगता है कि मैंने तुम्हें रविवार को चर्च में देखा था।’

मैं मुस्कुराया। — उस मुस्कान में या उससे जागृत हुई यादों में कुछ ऐसा था जो उसे विशेष रूप से अप्रिय लगा, क्योंकि उसने अचानक फिर से वही अभिमानी, निर्मम भाव धारण कर लिया जिसने चर्च में मेरे मन में घोर घृणा उत्पन्न कर दी थी — घृणास्पद तिरस्कार का एक ऐसा भाव, जो इतनी आसानी से प्रकट हो जाता था, और चेहरे के किसी भी भाव में जरा भी बदलाव के बिना, कि जब तक वह भाव बना रहा, वह चेहरे की स्वाभाविक अभिव्यक्ति प्रतीत होती थी, और मेरे लिए यह और भी अधिक उत्तेजक था, क्योंकि मैं इसे बनावटी नहीं मान सकता था।

‘सुप्रभात, श्रीमान मार्खम,’ उसने कहा; और बिना कुछ और कहे या देखे, वह अपने बच्चे के साथ बगीचे में चली गई; और मैं घर लौट आया, क्रोधित और असंतुष्ट — मैं आपको शायद ही बता पाऊँ कि क्यों, और इसलिए बताने की कोशिश भी नहीं करूँगा।

मैं केवल अपनी बंदूक और बारूद रखने के लिए रुका, और एक किसान को कुछ आवश्यक निर्देश दिए, और फिर एलिजा मिलवर्ड की संगति और बातचीत से अपने मन को शांति देने और अपने चिड़चिड़े स्वभाव को शांत करने के लिए पादरी के घर चला गया।

मैंने उसे हमेशा की तरह किसी न किसी मुलायम कढ़ाई के काम में व्यस्त पाया (बर्लिन की ऊन के प्रति दीवानगी अभी शुरू नहीं हुई थी), जबकि उसकी बहन चिमनी के कोने पर बैठी थी, अपनी गोद में बिल्ली को लिए हुए, मोजों के ढेर की मरम्मत कर रही थी।

‘मैरी – मैरी! इन्हें हटा दो!’ एलिजा जल्दी-जल्दी कह रही थी, ठीक उसी समय जब मैं कमरे में दाखिल हुआ।

'मैं तो बिलकुल नहीं!' यह शांत भाव से दिया गया उत्तर था; और मेरी उपस्थिति ने आगे की चर्चा को रोक दिया।

‘आप कितने बदनसीब हैं, मिस्टर मार्खम!’ छोटी बहन ने तिरछी नज़र से देखते हुए कहा। ‘पापा अभी-अभी चर्च गए हैं, और एक घंटे तक उनके लौटने की संभावना नहीं

है!’

‘कोई बात नहीं; अगर वे मुझे अनुमति दें तो मैं उनकी बेटियों के साथ कुछ मिनट बिता सकता हूँ,’ मैंने बिना पूछे ही एक कुर्सी आग के पास लाकर उस पर बैठते हुए कहा।

'ठीक है, अगर आप बहुत अच्छे और मनोरंजक होंगे, तो हमें कोई आपत्ति नहीं होगी।'

मैंने उत्तर दिया, ‘कृपा करके मुझे बिना शर्त अनुमति दें; क्योंकि मैं आनंद देने नहीं, बल्कि आनंद प्राप्त करने आया हूँ।’

हालांकि, मुझे लगा कि अपनी संगत को खुशनुमा बनाने के लिए थोड़ी सी कोशिश करना उचित था; और मैंने जो थोड़ी सी कोशिश की, वह काफी हद तक सफल रही, क्योंकि मिस एलिज़ा का मूड बहुत अच्छा था। हम दोनों एक-दूसरे से काफी खुश लग रहे थे और आपस में एक खुशनुमा और जीवंत बातचीत कर रहे थे, हालांकि वह बहुत गंभीर नहीं थी। यह एक आम बातचीत से कुछ बेहतर नहीं थी, क्योंकि मिस मिलवर्ड ने अपने होंठ तभी खोले जब कभी-कभार अपनी बहन के किसी बेतुके कथन या अतिशयोक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति को सुधारना था, और एक बार उनसे मेज के नीचे लुढ़की रुई की गेंद उठाने के लिए कहा। हालांकि, कर्तव्यवश मैंने वह काम खुद ही कर दिया।

जब मैंने उसे वह भेंट किया तो उसने कहा, 'धन्यवाद, श्रीमान मार्खम। मैं इसे खुद ही उठा लेती; लेकिन मैं बिल्ली को परेशान नहीं करना चाहती थी।'

‘मैरी, प्यारी, इससे मिस्टर मार्खम की नज़रों में तुम माफ़ नहीं हो पाओगी,’ एलिज़ा ने कहा; ‘मुझे लगता है कि उन्हें बिल्लियों से उतनी ही नफ़रत है जितनी कुंवारी महिलाओं से – बाकी सभी सज्जनों की तरह। है ना, मिस्टर मार्खम?’

मैंने उत्तर दिया, 'मेरा मानना है कि हमारी जैसी अप्रिय स्त्री जाति के लिए इन प्राणियों को नापसंद करना स्वाभाविक है; क्योंकि आप महिलाएं उन पर इतना स्नेह बरसाती हैं।'

'भगवान उन्हें आशीर्वाद दें - नन्हे प्यारे बच्चे!' वह अचानक उत्साह से चिल्लाई, मुड़ी और अपनी बहन के पालतू जानवर पर चुंबनों की बौछार कर दी।

'नहीं, एलिजा!' मिस मिलवर्ड ने कुछ रूखेपन से कहा और अधीरता से उसे धक्का देकर दूर कर दिया।

लेकिन मेरे जाने का समय हो गया था: मैं कितनी भी जल्दी कर लूँ, चाय के लिए तो बहुत देर हो ही जाती; और मेरी माँ तो व्यवस्था और समय की पाबंदी की मूर्ति थीं।

मेरी प्यारी सहेली मुझे विदाई देने के लिए स्पष्ट रूप से अनिच्छुक थी। विदाई के समय मैंने उसका छोटा सा हाथ प्यार से दबाया; और उसने मुझे अपनी सबसे कोमल मुस्कान और मोहक निगाहों से जवाब दिया। मैं बहुत खुश होकर घर लौटा, मेरा दिल आत्मसंतुष्टि से भरा हुआ था और एलिज़ा के लिए प्रेम से लबालब था।

अध्याय III

दो दिन बाद, रोज़ की उम्मीदों के विपरीत, श्रीमती ग्राहम लिंडेन-कार आईं। रोज़ को लग रहा था कि वाइल्डफेल हॉल की रहस्यमयी निवासी सभ्य जीवन के सामान्य रीति-रिवाजों की बिल्कुल अवहेलना करेंगी। विल्सन परिवार ने भी इस बात का समर्थन किया और बताया कि न तो उनके और न ही मिलवर्ड्स के फोन का जवाब मिला है। अब, इस चूक का कारण स्पष्ट हो गया, हालांकि रोज़ पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुई। श्रीमती ग्राहम अपने बच्चे को साथ लाई थीं, और जब मेरी माँ ने आश्चर्य व्यक्त किया कि वह इतनी दूर कैसे चल सकता है, तो उन्होंने जवाब दिया, "उसके लिए यह लंबी दूरी है; लेकिन मुझे या तो उसे अपने साथ ले जाना पड़ता, या फिर मिलने का विचार ही छोड़ देना पड़ता; क्योंकि मैं उसे कभी अकेला नहीं छोड़ती; और मुझे लगता है, श्रीमती मार्खम, जब आप मिलवर्ड्स और श्रीमती विल्सन से मिलें, तो कृपया मेरी ओर से उन्हें क्षमा मांग लें, क्योंकि मुझे डर है कि जब तक मेरा छोटा आर्थर मेरे साथ चलने लायक नहीं हो जाता, तब तक मैं उनसे मिलने नहीं जा सकती।"

‘लेकिन आपके पास एक नौकर है,’ रोज़ ने कहा; ‘क्या आप उसे उसके पास नहीं छोड़ सकते?’

'उसे अपने कामों पर ध्यान देना है; और इसके अलावा, वह बच्चे के पीछे भागने के

लिए बहुत बूढ़ी है, और वह इतना चंचल है कि एक बुजुर्ग महिला से बंधा नहीं रह सकता।'

लेकिन तुम उसे छोड़कर चर्च आ गए।

'हां, एक बार; लेकिन मैं उसे किसी और उद्देश्य से नहीं छोड़ती; और मुझे लगता है कि भविष्य में मुझे उसे अपने साथ लाने का प्रबंध करना होगा, या घर पर ही रहना होगा।'

‘क्या वह इतना शरारती है?’ मेरी माँ ने काफी हैरान होकर पूछा।

‘नहीं,’ महिला ने उदास मुस्कान के साथ उत्तर दिया, और अपने बेटे के लहराते बालों को सहलाते हुए बोली, जो उसके पैरों के पास एक छोटी सी चौकी पर बैठा था; ‘लेकिन वह मेरा एकमात्र खजाना है, और मैं उसकी एकमात्र मित्र हूँ: इसलिए हम अलग होना पसंद नहीं करते।’

‘लेकिन, मेरे प्यारे, मैं इसे हद से ज़्यादा प्यार करना कहती हूँ,’ मेरे सीधे-सादे माता-पिता ने कहा। ‘तुम्हें इस तरह के मूर्खतापूर्ण लगाव को दबाने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि तुम अपने बेटे को बर्बादी से बचा सको और खुद को उपहास से बचा सको।’

‘बर्बाद! श्रीमती मार्खम!’

'हां; यह बच्चे को बिगाड़ रहा है। इस उम्र में भी उसे हमेशा अपनी मां के आँचल से बंधा नहीं रहना चाहिए; उसे इस बात पर शर्म महसूस करना सीखना चाहिए।'

'श्रीमती मार्खम, मैं आपसे विनती करती हूँ कि कम से कम उनकी उपस्थिति में ऐसी बातें न कहें। मुझे विश्वास है कि मेरा बेटा अपनी माँ से प्यार करने में कभी शर्म महसूस नहीं करेगा!' श्रीमती ग्राहम ने गंभीर स्वर में कहा, जिससे वहाँ मौजूद सभी लोग चौंक गए।

मेरी माँ ने स्पष्टीकरण देकर उसे शांत करने का प्रयास किया; लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने सोचा कि इस विषय पर काफी कुछ कहा जा चुका है, और उसने अचानक बातचीत का रुख बदल दिया।

मैंने मन ही मन कहा, 'जैसा मैंने सोचा था, वैसा ही है: उस महिला का स्वभाव बिल्कुल भी सौम्य नहीं है, भले ही उसका चेहरा प्यारा और पीला हो और माथा ऊंचा हो, जिस पर विचार और पीड़ा दोनों के समान ही निशान दिखाई देते हों।'

इस पूरे समय मैं कमरे के दूसरी तरफ एक मेज पर बैठा था, जाहिर तौर पर

फार्मर्स मैगज़ीन के एक अंक को पढ़ने में मग्न था, जिसे मैं संयोगवश उस समय पढ़ रहा था जब हमारी मेहमान आई थीं; और, अधिक शिष्टाचार दिखाने की बजाय, मैंने उनके प्रवेश करते ही बस झुककर अभिवादन किया और पहले की तरह अपना काम जारी रखा।

कुछ ही देर में, मुझे एहसास हुआ कि कोई मेरी ओर आ रहा है, हल्के, लेकिन धीमे और हिचकिचाते कदमों से। यह छोटा आर्थर था, जो मेरे कुत्ते सांचो से बेहद आकर्षित था और मेरे पैरों के पास लेटा हुआ था। ऊपर देखने पर मैंने उसे लगभग दो गज की दूरी पर खड़ा पाया, उसकी नीली आँखें कुत्ते को निहार रही थीं, वह वहीं स्थिर खड़ा था, जानवर के डर से नहीं, बल्कि अपने मालिक के पास जाने की झिझक से। हालाँकि, थोड़ा प्रोत्साहन देने पर वह आगे आया। बच्चा शर्मीला तो था, लेकिन उदास नहीं था। एक मिनट में वह कालीन पर घुटनों के बल बैठ गया, सांचो की गर्दन में अपनी बाहें डाले हुए, और एक-दो मिनट में वह छोटा बच्चा मेरी गोद में बैठ गया, और मेरे सामने रखी किताब में चित्रित घोड़ों, मवेशियों, सूअरों और मॉडल खेतों के विभिन्न नमूनों को उत्सुकता से देखने लगा। मैं बीच-बीच में उसकी माँ की ओर देखता था कि वह इस नए घनिष्ठ संबंध का कितना आनंद ले रही है; और मैंने उसकी आंखों की बेचैनी से देखा कि किसी न किसी कारण से वह बच्चे की स्थिति से असहज थी।

अंत में उसने कहा, 'आर्थर, इधर आओ। तुम मिस्टर मार्खम को परेशान कर रहे हो: वह पढ़ना चाहते हैं।'

‘बिल्कुल नहीं, श्रीमती ग्राहम; कृपया उन्हें रुकने दीजिए। मुझे भी उतना ही आनंद आ रहा है जितना उन्हें,’ मैंने विनती की। लेकिन फिर भी, इशारों और संकेतों से, उन्होंने चुपचाप उन्हें अपने पास बुला लिया।

‘नहीं, माँ,’ बच्चे ने कहा; ‘मुझे पहले ये तस्वीरें देखने दो; फिर मैं आकर तुम्हें इनके बारे में सब कुछ बताऊंगा।’

मेरी माँ ने कहा, ‘हम सोमवार, पाँच नवंबर को एक छोटी सी पार्टी करने जा रहे हैं; और मुझे उम्मीद है कि आप भी आएंगी, श्रीमती ग्राहम। आप अपने छोटे बेटे को भी साथ ला सकती हैं, मुझे पूरा यकीन है कि हम उसका मनोरंजन कर पाएंगे; और फिर आप मिलवर्ड्स और विल्सन्स से अपनी ओर से माफी मांग सकती हैं – मुझे उम्मीद है कि वे सभी यहाँ होंगे।’

'धन्यवाद, मैं कभी पार्टियों में नहीं जाता।'

'ओह! लेकिन यह तो पूरी तरह से पारिवारिक मामला होगा - सुबह-सुबह का समय होगा, और हमारे अलावा यहाँ कोई नहीं होगा, और बस मिलवर्ड और विल्सन परिवार के लोग होंगे, जिनमें से अधिकांश को आप पहले से ही जानते हैं, और आपके मकान मालिक श्री लॉरेंस होंगे, जिनसे आपको जान-पहचान कर लेनी चाहिए।'

मैं उनके बारे में कुछ तो जानता हूँ—पर इस बार मुझे क्षमा करें; क्योंकि अब शामें अँधेरी और उमस भरी होती हैं, और मुझे डर है कि आर्थर इतने नाज़ुक हैं कि वे बिना किसी दंड के इनके प्रभाव में आने का जोखिम नहीं उठा सकते। हमें आपके आतिथ्य का आनंद तब तक के लिए स्थगित करना होगा जब तक दिन लंबे और रातें गर्म नहीं हो जातीं।

मेरी माँ के इशारे पर रोज़ ने अलमारी और ओक की साइडबोर्ड से शराब का एक बड़ा बर्तन, गिलास और केक निकाला और मेहमानों को दावत दी। दोनों ने केक तो खाया, लेकिन मेज़बान के बार-बार कहने पर भी शराब पीने से साफ इनकार कर दिया। आर्थर तो खासकर लाल शराब से ऐसे मुंह फेर रहा था मानो डर और घृणा से, और जब उसे पीने के लिए ज़ोर दिया गया तो वह रोने को तैयार था।

'कोई बात नहीं, आर्थर,' उसकी माँ ने कहा; 'श्रीमती मार्खम सोचती हैं कि यह तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा, क्योंकि तुम पैदल चलने से थक गए थे; लेकिन वह तुम्हें इसे लेने के लिए मजबूर नहीं करेंगी! मुझे पूरा यकीन है कि तुम इसके बिना भी ठीक रहोगे। उसे शराब देखना भी पसंद नहीं है,' उन्होंने आगे कहा, 'और उसकी गंध से तो उसे उल्टी आने लगती है। जब वह बीमार होता था, तो मैं उसे दवा के तौर पर थोड़ी सी शराब या हल्का पेय पिलाती थी, और सच कहूँ तो, मैंने उसे इनसे नफरत करवाने के लिए हर संभव कोशिश की है।'

युवा विधवा और उसके बेटे को छोड़कर बाकी सब लोग हंस पड़े।

'वाह, श्रीमती ग्राहम,' मेरी माँ ने अपनी चमकीली नीली आँखों से खुशी के आँसू पोंछते हुए कहा, 'वाह, आपने तो मुझे आश्चर्यचकित कर दिया! मैंने तो आपको ज़्यादा समझदार समझा था। बेचारा बच्चा तो बिलकुल ही सीधा-सादा होगा! सोचिए, अगर आप अपनी ज़िद पर अड़ी रहीं तो आप उसे कैसा आदमी बना देंगी!'

श्रीमती ग्राहम ने शांत भाव से बीच में ही टोकते हुए कहा, 'मुझे यह एक बहुत ही बढ़िया योजना लगती है। इस तरह मैं उसे कम से कम एक घिनौनी बुराई से बचा पाऊंगी। काश मैं उसके मामले में बाकी सभी बुराइयों के लिए भी प्रोत्साहन को उतना

ही हानिरहित बना पाती।'

‘परन्तु इस तरह से,’ मैंने कहा, ‘आप उसे कभी भी सद्गुणी नहीं बना पाएँगी। सद्गुण क्या होता है, श्रीमती ग्राहम? क्या यह प्रलोभनों का सामना करने में सक्षम और इच्छुक होना है; या प्रलोभनों का सामना न कर पाना? क्या वह एक बलवान व्यक्ति है जो बड़ी-बड़ी बाधाओं को पार करता है और आश्चर्यजनक उपलब्धियाँ हासिल करता है, भले ही इसके लिए उसे बहुत शारीरिक परिश्रम करना पड़े और बाद में थकान का जोखिम उठाना पड़े, या वह व्यक्ति है जो दिन भर अपनी कुर्सी पर बैठा रहता है, आग जलाने और खाना लाने के अलावा कोई और कठिन काम नहीं करता? यदि आप चाहती हैं कि आपका पुत्र संसार में सम्मानपूर्वक चले, तो आपको उसके मार्ग से पत्थर हटाने का प्रयास नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे उन पर दृढ़ता से चलना सिखाना चाहिए – उसका हाथ पकड़कर ले जाने पर जोर नहीं देना चाहिए, बल्कि उसे अकेले चलना सीखना चाहिए।’

श्रीमान मार्खम, मैं उसका हाथ पकड़कर तब तक उसका मार्गदर्शन करूँगा जब तक उसमें अकेले चलने की शक्ति न आ जाए; और मैं उसके रास्ते से यथासंभव पत्थर हटा दूँगा और उसे बाकी पत्थरों से बचना सिखाऊँगा—या जैसा कि आप कहते हैं, उन पर दृढ़ता से चलना सिखाऊँगा;—क्योंकि जब मैं पत्थर हटाने का अपना पूरा प्रयास कर लूँगा, तब भी उसके पास अपनी सारी फुर्ती, स्थिरता और सावधानी का अभ्यास करने के लिए पर्याप्त पत्थर बचे रहेंगे।— महान प्रतिरोध और सद्गुणों की परीक्षा की बातें करना तो ठीक है; लेकिन पचास—या पाँच सौ लोगों में से, जो प्रलोभन के आगे झुक गए हैं, मुझे एक भी ऐसा व्यक्ति दिखाओ जिसने प्रतिरोध करने का सद्गुण दिखाया हो। और मैं यह मानकर क्यों चलूँ कि मेरा बेटा हज़ारों में एक होगा?—और इसके बजाय सबसे बुरे के लिए तैयारी क्यों न करूँ, और यह मान लूँ कि वह भी मेरे जैसा—बाकी इंसानों जैसा ही होगा, जब तक कि मैं इसे रोकने के लिए सावधानी न बरतूँ?

मैंने कहा, 'आप हम सभी की बहुत प्रशंसा करते हैं।'

मैं तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानता— मैं उन्हीं के बारे में बात कर रहा हूँ जिन्हें मैं जानता हूँ— और जब मैं देखता हूँ कि पूरी मानव जाति (कुछ दुर्लभ अपवादों को छोड़कर) जीवन के मार्ग पर ठोकरें खा रही है, हर गड्ढे में गिर रही है, और अपने रास्ते में आने वाली हर बाधा से अपने पैर तोड़ रही है, तो क्या मैं उसके लिए सुगम और

सुरक्षित मार्ग सुनिश्चित करने के लिए अपनी शक्ति में सभी साधनों का उपयोग नहीं करूँगा?

'हां, लेकिन सबसे कारगर तरीका यही होगा कि उसे प्रलोभन से बचाने के लिए उसे मजबूत बनाया जाए, न कि उसे उसके रास्ते से हटा दिया जाए।'

'मैं दोनों काम करूँगा, श्रीमान मार्खम। ईश्वर जानता है कि जब मैं बुराई को उसके लिए उतना ही अरुचिकर बना दूँगा जितना कि वह अपने आप में घृणित है, तब भी उसे भीतर और बाहर दोनों ओर से पर्याप्त प्रलोभनों का सामना करना पड़ेगा। वास्तव में, मुझे स्वयं दुनिया जिसे बुराई कहती है, उसके लिए बहुत कम प्रोत्साहन मिले हैं, फिर भी मैंने अलग तरह के प्रलोभनों और परीक्षाओं का सामना किया है, जिनके विरुद्ध प्रतिरोध करने के लिए कई बार मुझे पहले की तुलना में अधिक सतर्कता और दृढ़ता की आवश्यकता पड़ी है। और मेरा मानना है कि जो लोग आत्मचिंतन करने के आदी हैं और अपनी स्वाभाविक बुराइयों से लड़ने के इच्छुक हैं, वे भी इस बात को स्वीकार करेंगे।'

'जी हां,' मेरी मां ने कहा, हालांकि उन्हें कुछ हद तक उनकी बात समझ आ रही थी; 'पर तुम किसी लड़के का आकलन खुद से नहीं कर सकतीं—और, मेरी प्यारी श्रीमती ग्राहम, मैं तुम्हें समय रहते इस गलती—एक घातक गलती, मैं इसे कह सकती हूं—के बारे में चेतावनी देना चाहती हूं कि तुम उस लड़के की शिक्षा का जिम्मा खुद पर नहीं लोगी। क्योंकि तुम कुछ चीजों में होशियार और जानकार हो, इसलिए तुम्हें लग सकता है कि तुम यह काम कर सकती हो; लेकिन वास्तव में तुम नहीं कर सकतीं; और अगर तुम इस कोशिश में लगी रहीं, तो यकीन मानो, जब नुकसान हो जाएगा तो तुम्हें इसका बहुत पछतावा होगा।'

'मुझे लगता है कि मुझे उसे स्कूल भेजना होगा, ताकि वह अपनी माँ के अधिकार और स्नेह को तुच्छ समझना सीखे!' महिला ने कुछ कड़वी मुस्कान के साथ कहा।

'अरे नहीं! - लेकिन अगर आप चाहते हैं कि आपका बेटा अपनी माँ से नफरत करे, तो उसे घर पर ही रखें, और अपना पूरा जीवन उसे लाड़-प्यार करने और उसकी मूर्खताओं और सनक को पूरा करने में व्यतीत करने दें।'

'मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं, श्रीमती मार्खम; लेकिन मेरे सिद्धांतों और व्यवहार से इससे अधिक दूर कुछ भी नहीं हो सकता कि ऐसी आपराधिक कमजोरी हो।'

"ठीक है, लेकिन आप उसके साथ लड़की जैसा व्यवहार करेंगी—आप उसका

मनोबल गिरा देंगी और उसे महज़ मिस नैन्सी बना देंगी—हाँ, श्रीमती ग्राहम, आप चाहे जो भी सोचें। लेकिन मैं श्री मिलवर्ड से इस बारे में आपसे बात करवाऊँगा:—वे आपको इसके परिणाम बताएँगे;—वे इसे आपके सामने बिल्कुल स्पष्ट रूप से रखेंगे; —और आपको बताएँगे कि आपको क्या करना चाहिए, और इसके बारे में सब कुछ; —और मुझे पूरा यकीन है कि वे आपको एक मिनट में समझा देंगे।”

श्रीमती ग्राहम ने मेरी ओर देखते हुए कहा, 'पादरी को परेशान करने की कोई ज़रूरत नहीं है।' मुझे लगता है कि मैं उस सज्जन पर अपनी माँ के असीम विश्वास को देखकर मुस्कुरा रही थी। 'श्रीमान मार्खम यहाँ सोचते हैं कि उनकी विश्वासशक्ति कम से कम श्री मिलवर्ड के बराबर है। अगर मैं उनकी बात न सुनूँ, तो मैं तब भी विश्वास नहीं करूँगी, चाहे कोई मुर्दों में से जी उठे, वे आपको बताएँगे। अच्छा, श्रीमान मार्खम, आप जो यह मानते हैं कि लड़के को बुराई से नहीं बचाना चाहिए, बल्कि उसे अकेले और बिना किसी सहायता के उससे लड़ने के लिए भेजना चाहिए - उसे जीवन के जाल से बचना नहीं सिखाना चाहिए, बल्कि साहसपूर्वक उनमें कूदना या उन्हें पार करना सिखाना चाहिए - खतरे से बचने के बजाय उसे खोज निकालना चाहिए, और प्रलोभन से अपने सद्गुणों को बढ़ाना चाहिए, - क्या आप ऐसा कहेंगे?'

'श्रीमती ग्राहम, मुझे क्षमा करें—लेकिन आप बहुत जल्दी बोल रही हैं। मैंने अभी तक यह नहीं कहा है कि किसी लड़के को जीवन के जाल में फँसना सिखाया जाना चाहिए,—या यहाँ तक कि जानबूझकर प्रलोभन का सामना करना चाहिए ताकि वह उस पर विजय प्राप्त करके अपने सद्गुण का अभ्यास कर सके;—मैं केवल इतना कह रहा हूँ कि अपने नायक को हथियारबंद और मजबूत बनाना, शत्रु को निहत्था और कमजोर करने से बेहतर है;—और यदि आप किसी ओक के पौधे को ग्रीनहाउस में उगाएँ, दिन-रात उसकी सावधानीपूर्वक देखभाल करें, और उसे हवा के हर झोंके से बचाएँ, तो आप उससे उस कठोर वृक्ष बनने की उम्मीद नहीं कर सकते, जैसा कि पहाड़ की ढलान पर उगा हुआ पेड़ होता है, जो प्रकृति के सभी प्रभावों के संपर्क में रहता है, और यहाँ तक कि आंधी के झटके से भी सुरक्षित नहीं रहता।'

'ठीक है; लेकिन क्या आप लड़की के मामले में भी यही तर्क देंगे?'

'हरगिज नहीं।'

नहीं; आप चाहते हैं कि उसे कोमल और नाजुक तरीके से पाला-पोसा जाए, जैसे ग्रीनहाउस में रखे पौधे को पाला जाता है—उसे सिखाया जाए कि वह मार्गदर्शन और

सहारे के लिए दूसरों पर निर्भर रहे, और जहाँ तक संभव हो, उसे बुराई के ज्ञान से दूर रखा जाए। लेकिन क्या आप कृपया मुझे यह बताएँगे कि आप यह अंतर क्यों करते हैं? क्या आपको लगता है कि उसमें कोई सद्गुण नहीं है?

'बिल्कुल नहीं।'

"अच्छा, लेकिन आप कहते हैं कि सद्गुण केवल प्रलोभन से ही उत्पन्न होते हैं; और आप सोचते हैं कि किसी स्त्री को प्रलोभन से कम से कम अवगत कराया जाए, या उसे दुर्गुणों या उनसे संबंधित किसी भी चीज़ से कम से कम परिचित कराया जाए तो कोई फर्क नहीं पड़ता। या तो आप सोचते हैं कि वह स्वभाव से इतनी दुष्ट है, या इतनी कमजोर बुद्धि की है कि वह प्रलोभन का सामना नहीं कर सकती, और यद्यपि वह अज्ञानता और संयम में रहने तक पवित्र और निर्दोष हो सकती है, फिर भी, वास्तविक सद्गुण से रहित होने के कारण, उसे पाप करना सिखाना उसे पापी बनाना है, और उसका ज्ञान जितना अधिक होगा, उसकी स्वतंत्रता जितनी अधिक होगी, उसका दुराचार उतना ही गहरा होगा, जबकि श्रेष्ठ स्त्री में अच्छाई की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, जो एक श्रेष्ठ धैर्य द्वारा संरक्षित होती है, और जितनी अधिक परीक्षाओं और खतरों से इसका अभ्यास किया जाता है, उतना ही यह और विकसित होती है।"

'भगवान न करे कि मैं ऐसा सोचूं!' मैंने आखिरकार उसे बीच में ही रोक दिया।

तो फिर, आप यही सोचते होंगे कि वे दोनों कमज़ोर और गलती करने की प्रवृत्ति वाले हैं, और ज़रा सी भी गलती, ज़रा सी भी अशुद्धि, एक को बर्बाद कर देगी, जबकि दूसरे का चरित्र मज़बूत और निखराएगा – वर्जित चीज़ों के थोड़े से व्यावहारिक अनुभव से उसकी शिक्षा पूरी हो जाएगी। ऐसा अनुभव, उसके लिए (एक घिसी-पिटी उपमा का प्रयोग करें तो), बलूत के पेड़ के लिए तूफ़ान जैसा होगा, जो भले ही पत्तियों को बिखेर दे और छोटी शाखाओं को तोड़ दे, लेकिन जड़ों को मज़बूत करता है और पेड़ के रेशों को कठोर और सघन बनाता है। आप चाहते हैं कि हम अपने बेटों को हर चीज़ को अपने अनुभव से परखने के लिए प्रोत्साहित करें, जबकि हमारी बेटियों को दूसरों के अनुभव से भी लाभ न मिले। अब मैं चाहता हूँ कि दोनों दूसरों के अनुभव और उच्चतर सत्ता के उपदेशों से इस प्रकार लाभान्वित हों कि वे बुराई को अस्वीकार करना और अच्छाई को चुनना पहले से ही जान लें, और उन्हें पाप के बुरे परिणाम सिखाने के लिए किसी भी अनुभवजन्य प्रमाण की आवश्यकता न हो। मैं किसी गरीब लड़की को दुनिया में निहत्था, उसके दुश्मनों से बेखबर और उसके रास्ते में आने वाले

जालों से अनभिज्ञ नहीं भेजूंगी; न ही मैं उसकी रक्षा करूंगी, जब तक कि आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता से वंचित होकर वह खुद की रक्षा करने की शक्ति या इच्छा खो न दे; और जहाँ तक मेरे बेटे की बात है—अगर मुझे लगता है कि वह बड़ा होकर दुनियादार बनेगा—ऐसा आदमी जिसने "जीवन देखा" है और अपने अनुभव पर गर्व करता है, भले ही वह अंततः समाज का एक उपयोगी और सम्मानित सदस्य बनकर ही क्यों न बने—तो मैं चाहूंगी कि वह कल ही मर जाए!—हजार गुना बेहतर!' उसने गंभीरता से दोहराया, अपने प्यारे बेटे को गले लगाते हुए और उसके माथे को गहरे स्नेह से चूमते हुए। वह पहले ही अपने नए साथी को छोड़कर कुछ देर से अपनी माँ के घुटने के पास खड़ा था, उसके चेहरे की ओर देख रहा था और चुपचाप आश्चर्य से उसकी समझ से परे बातों को सुन रहा था।

'अच्छा! मुझे लगता है कि आप महिलाओं की ही बात हमेशा अंतिम होती है,' मैंने उसे उठते और मेरी माँ से विदा लेते हुए देखकर कहा।

आप जितना चाहें उतना बोल सकते हैं, लेकिन मैं उन्हें सुनने के लिए रुक नहीं सकता।

'नहीं; यही तरीका है: आप जितनी चाहें उतनी ही दलील सुन सकते हैं; बाकी की बातें हवा में उड़ जाती हैं।'

"अगर आप इस विषय पर और कुछ कहना चाहती हैं," उसने रोज़ से हाथ मिलाते हुए उत्तर दिया। "किसी दिन अपनी बहन को मुझसे मिलने के लिए ले आइए, और मैं आपकी हर बात को पूरी धैर्य से सुनूँगी। मैं पादरी से उपदेश सुनने के बजाय आपसे उपदेश सुनना पसंद करूँगी, क्योंकि प्रवचन के अंत में आपको यह बताने में मुझे कम पछतावा होगा कि मेरा अपना मत प्रारंभ में जैसा था वैसा ही है—जैसा कि मुझे पूरा विश्वास है, दोनों तर्कशास्त्रियों के मामले में भी होगा।"

'जी हां, बिल्कुल,' मैंने जवाब दिया, खुद भी उतनी ही उत्तेजक होने का निश्चय करते हुए; 'क्योंकि जब कोई महिला अपने विचारों के विरुद्ध किसी तर्क को सुनने के लिए सहमत हो जाती है, तो वह हमेशा उसका विरोध करने के लिए पूर्वनिर्धारित होती है—केवल अपने शारीरिक कानों से सुनने के लिए, और अपने मानसिक अंगों को सबसे मजबूत तर्क के विरुद्ध भी दृढ़ता से बंद रखने के लिए।'

'सुप्रभात, श्रीमान मार्खम,' मेरी सुंदर प्रतिद्वंद्वी ने दया भरी मुस्कान के साथ कहा; और आगे कोई उत्तर न देते हुए, उसने थोड़ा झुककर अभिवादन किया और जाने ही

वाली थी कि उसके बेटे ने बचकानी शरारत करते हुए उसे रोकते हुए कहा, ‘मम्मा, आपने श्रीमान मार्खम से हाथ नहीं मिलाया है!’

वह हंसते हुए मुड़ी और अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने गुस्से में उसका हाथ दबा दिया, क्योंकि हमारी जान-पहचान की शुरुआत से ही उसने मेरे साथ जो लगातार अन्याय किया था, उससे मैं नाराज़ था। मेरे असली स्वभाव और सिद्धांतों के बारे में कुछ भी जाने बिना, वह स्पष्ट रूप से मेरे प्रति पूर्वाग्रही थी, और ऐसा लग रहा था कि वह मुझे यह दिखाना चाहती थी कि मेरे बारे में उसकी राय, हर मामले में, मेरी अपनी राय से कहीं कमतर थी। मैं स्वभाव से थोड़ा संवेदनशील था, वरना मुझे इतना बुरा नहीं लगता। शायद, मैं अपनी माँ और बहन और कुछ अन्य परिचित महिलाओं द्वारा थोड़ा बिगड़ा हुआ भी था; और फिर भी मैं किसी भी तरह से दिखावटी नहीं था - इस बात से मैं पूरी तरह आश्वस्त हूँ, चाहे आप हों या न हों।

अध्याय IV

श्रीमती ग्राहम की अनुपस्थिति के बावजूद, 5 नवंबर को हमारी पार्टी बहुत अच्छी तरह संपन्न हुई। वास्तव में, यह संभव है कि यदि वह वहाँ होतीं, तो हमारे बीच उतनी सौहार्दता, स्वतंत्रता और उल्लास नहीं होता जितना उनके बिना था।

मेरी माँ हमेशा की तरह हंसमुख और बातूनी थीं, सक्रिय और मिलनसार स्वभाव की थीं, और उनमें बस एक ही कमी थी कि वे अपने मेहमानों को खुश करने के लिए कुछ ज़्यादा ही चिंतित रहती थीं, जिसके चलते उनमें से कई लोगों को वो काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा जो उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था - खाना-पीना, धधकती आग के सामने बैठना या चुप रहने के बजाय बातें करना। फिर भी, उन्होंने इसे बहुत अच्छे से सहन किया, क्योंकि वे सभी छुट्टियों के आनंद में डूबे हुए थे।

श्री मिलवर्ड महत्वपूर्ण सिद्धांतों और उपदेशात्मक चुटकुलों, आडंबरपूर्ण किस्सों

और भविष्यसूचक प्रवचनों में निपुण थे, जिन्हें वे आम तौर पर पूरी सभा और विशेष रूप से प्रशंसक श्रीमती मार्खम, विनम्र श्री लॉरेंस, शांत मैरी मिलवर्ड, मौन रिचर्ड विल्सन और व्यावहारिक रॉबर्ट के ज्ञानवर्धन के लिए सुनाते थे, क्योंकि वे सबसे ध्यानपूर्वक सुनने वाले श्रोता थे।

श्रीमती विल्सन हमेशा की तरह बेहद प्रतिभाशाली थीं, ताजा खबरों और पुराने घोटालों को तुच्छ सवालों, टिप्पणियों और बार-बार दोहराई जाने वाली बातों के साथ मिलाकर, मानो सिर्फ अपनी अथक बोलने की क्षमता को एक पल भी आराम न देने के उद्देश्य से बोल रही हों। वह अपने साथ बुनाई का सामान भी लाई थीं, और ऐसा लग रहा था मानो उनकी जीभ ने अपनी उंगलियों से तेज और निरंतर गति में उन्हें मात देने की शर्त लगा रखी हो।

उनकी बेटी जेन बेशक उतनी ही सुंदर, शालीन, बुद्धिमान और मोहक थी जितनी वह हो सकती थी; क्योंकि यहाँ सभी महिलाओं को मात देना था, सभी पुरुषों को मोहित करना था, और विशेष रूप से मिस्टर लॉरेंस को अपने वश में करना था। उन्हें वश में करने की उनकी छोटी-छोटी तरकीबें इतनी सूक्ष्म और अस्पष्ट थीं कि मेरी नज़र उन पर नहीं पड़ी; लेकिन मुझे लगा कि उनमें श्रेष्ठता का एक खास तरह का बनावटीपन और एक अजीब सी आत्म-चेतना थी, जिसने उनकी सारी खूबियों को नकार दिया; और उनके जाने के बाद, रोज़ ने मुझे उनके हाव-भाव, शब्दों और हरकतों का एक मिश्रित तीक्ष्णता और कटुता से वर्णन किया, जिससे मुझे उस महिला की चालाकी और मेरी बहन की अंतर्दृष्टि पर समान रूप से आश्चर्य हुआ, और मैंने खुद से पूछा कि क्या उसकी भी उस जमींदार पर नज़र थी - लेकिन कोई बात नहीं, हैलफोर्ड; ऐसा नहीं था।

जेन का छोटा भाई रिचर्ड विल्सन एक कोने में बैठा था, देखने में तो वह शांत स्वभाव का लग रहा था, लेकिन चुपचाप और शर्मीला था। वह लोगों की नजरों से बचना चाहता था, फिर भी सुनने और देखने के लिए उत्सुक था। हालांकि वह थोड़ा असहज महसूस कर रहा था, फिर भी अगर मेरी माँ उसे अकेला छोड़ देती, तो वह अपने शांत तरीके से खुश रहता। लेकिन अपनी गलतफहमी भरी दयालुता में, वह उस पर लगातार ध्यान देती रहती थी - उसे हर तरह का खाना परोसने के लिए दबाव डालती रहती थी, इस सोच में कि वह इतना शर्मीला है कि खुद कुछ ले नहीं सकता, और उसे कमरे के उस पार चिल्लाकर उन अनगिनत सवालों और टिप्पणियों का एक-

एक शब्द में जवाब देने के लिए मजबूर करती रहती थी, जिनके जरिए वह व्यर्थ ही उसे बातचीत में शामिल करने की कोशिश करती थी।

रोज़ ने मुझे बताया कि अगर उनकी बहन जेन ने बार-बार ज़िद न की होती, तो वे हमें कभी भी अपने साथ समय बिताने का मौका न देते। जेन मिस्टर लॉरेंस को यह दिखाना चाहती थीं कि उनका एक भाई रॉबर्ट से कहीं ज़्यादा सभ्य और शिष्ट है। जेन उस भले इंसान को हमसे दूर रखना चाहती थीं; लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें मार्खम और उस बुज़ुर्ग महिला (मेरी माँ सच में बुज़ुर्ग नहीं थीं) और प्यारी मिस रोज़ और पादरी के साथ अच्छा समय बिताने में कोई बुराई नहीं दिखती; और उनका यह कहना सही भी था। इसलिए उन्होंने मेरी माँ और रोज़ से आम बातें कीं, पादरी से चर्च के मामलों पर चर्चा की, मुझसे खेती-बाड़ी के बारे में बात की और हम दोनों से राजनीति के बारे में बात की।

मैरी मिलवर्ड भी एक मूक महिला थीं, डिक विल्सन की तरह उन पर इतनी क्रूरता नहीं थी, क्योंकि उनका जवाब देने और मना करने का तरीका संक्षिप्त और दृढ़ था, और उन्हें संकोची की बजाय कुछ हद तक चिड़चिड़ी माना जाता था। हालांकि, वह निश्चित रूप से संगति को ज्यादा आनंद नहीं देती थीं; और न ही उन्हें इससे कोई खास आनंद मिलता हुआ प्रतीत होता था। एलिजा ने मुझे बताया कि वह केवल इसलिए आई थीं क्योंकि उनके पिता ने जोर दिया था, क्योंकि उनके मन में यह बात बैठ गई थी कि वह अपने घरेलू कामों में ही इतनी मग्न रहती हैं कि अपनी उम्र और लिंग के अनुरूप आराम और आनंद के पलों की उपेक्षा करती हैं। कुल मिलाकर वह मुझे काफी हंसमुख लगीं। एक-दो बार वह हममें से किसी खास व्यक्ति की हाजिरजवाबी या हंसी पर हंस पड़ीं; और तब मैंने देखा कि उन्होंने रिचर्ड विल्सन की ओर देखा, जो उनके सामने बैठे थे। चूंकि वह उनके पिता के साथ पढ़ाई करते थे, इसलिए दोनों के एकांतप्रिय स्वभाव के बावजूद उनकी उनसे कुछ जान-पहचान थी, और मुझे लगता है कि उनके बीच एक तरह की आत्मीयता बन गई थी।

मेरी एलिज़ा बेहद आकर्षक थी, बनावटीपन के बिना चंचल, और स्पष्ट रूप से कमरे में मौजूद बाकी सभी लोगों की तुलना में मेरा ध्यान आकर्षित करने की अधिक इच्छुक थी। मेरे उसके पास होने, उसके बगल में बैठने या खड़े होने, उसके कान में फुसफुसाने या नृत्य में उसका हाथ पकड़ने से मिलने वाली उसकी खुशी उसके दमकते चेहरे और धड़कते सीने में साफ झलकती थी, भले ही उसके चंचल शब्दों और

हाव-भाव से यह बात छिपी रहती। लेकिन बेहतर यही होगा कि मैं चुप रहूँ: अगर मैं अभी इन बातों का बखान करूँगा, तो मुझे बाद में शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी।

तो चलिए, अब हमारी पार्टी के विभिन्न सदस्यों की बात करते हैं; रोज हमेशा की तरह सरल और सहज थी, और हंसी-मजाक और जीवंतता से भरपूर थी।

फर्गस उद्दंड और बेतुका था; लेकिन उसकी उद्दंडता और मूर्खता दूसरों को हंसाने का काम करती थी, भले ही इससे उसकी नज़र में उसका सम्मान न बढ़ता हो।

और अंत में (क्योंकि मैं खुद को छोड़ रहा हूँ), श्री लॉरेंस सभी के प्रति सज्जन और सौम्य थे, और पादरी और महिलाओं, विशेष रूप से अपनी मेज़बान और उनकी बेटी, और मिस विल्सन के प्रति विनम्र थे - एक गुमराह व्यक्ति; उन्हें एलिज़ा मिलवर्ड को पसंद करने का शौक नहीं था। श्री लॉरेंस और मेरे बीच काफी घनिष्ठ संबंध थे। स्वभाव से आरक्षित और अपने जन्मस्थान के एकांत स्थान से शायद ही कभी बाहर निकलने वाले, जहाँ वे अपने पिता की मृत्यु के बाद से एकांत में रह रहे थे, उन्हें बहुत से लोगों से जान-पहचान बनाने का न तो अवसर मिला और न ही इच्छा; और, जितने लोगों को वे जानते थे, उनमें से (परिणामों को देखते हुए) मैं ही उनकी पसंद का सबसे सुखद साथी था। मैं उन्हें काफी पसंद करता था, लेकिन वे बहुत ठंडे, शर्मीले और आत्म-नियंत्रित थे, इसलिए मुझे उनसे सहानुभूति नहीं हुई। स्पष्टवादिता और खुलेपन की भावना, जब पूरी तरह से अशिष्टता से रहित हो, तो वे दूसरों में इसकी प्रशंसा करते थे, लेकिन वे स्वयं इसे प्राप्त नहीं कर सके। अपने निजी मामलों पर उनका अत्यधिक संकोच वास्तव में उत्तेजक और ठंडा था; लेकिन मैंने इसे माफ कर दिया, इस विश्वास से कि यह अहंकार और दोस्तों पर भरोसे की कमी से कम, बल्कि एक विशेष प्रकार की अस्वस्थ संवेदनशीलता और संकोच से उपजा था, जिसे वह महसूस तो करता था, लेकिन उस पर काबू पाने की शक्ति उसमें नहीं थी। उसका हृदय एक संवेदनशील पौधे की तरह था, जो धूप में एक पल के लिए खिलता है, लेकिन उंगली के हल्के स्पर्श या हवा के हल्के झोंके से ही सिकुड़ जाता है। और कुल मिलाकर, हमारी घनिष्ठता एक गहरी और ठोस मित्रता से कहीं अधिक आपसी पसंद थी, जैसी कि बाद में मेरे और आपके बीच, हैलफोर्ड, विकसित हुई, जिसे, आपकी कभी-कभार की रूखेपन के बावजूद, मैं एक पुराने कोट से तुलना कर सकता हूँ, जो बनावट में बेदाग है, लेकिन आरामदायक और ढीला है - जो पहनने वाले के आकार में ढल गया है, और जिसे वह खराब होने के डर के बिना अपनी इच्छानुसार पहन सकता है;

जबकि मिस्टर लॉरेंस एक नए वस्त्र की तरह थे, देखने में बेहद साफ-सुथरे और सुव्यवस्थित, लेकिन कोहनियों में इतने तंग कि आप अपनी बाहों की अनियंत्रित गति से सिलाई फटने से डरते थे, और सतह इतनी चिकनी और महीन थी कि आप उस पर बारिश की एक बूंद भी पड़ने से हिचकिचाते थे।

मेहमानों के आने के तुरंत बाद, मेरी माँ ने श्रीमती ग्राहम का ज़िक्र किया, इस बात का अफ़सोस जताया कि वह उनसे मिलने के लिए वहाँ मौजूद नहीं थीं, और मिलवर्ड्स और विल्सन्स को उनके फ़ोन का जवाब न देने के अपने कारण बताए, उम्मीद करते हुए कि वे उन्हें माफ़ कर देंगे, क्योंकि उन्हें पूरा यकीन था कि उनका इरादा असभ्य होने का नहीं था, और वह किसी भी समय उनसे मिलकर खुश होंगी। — 'लेकिन वह बहुत ही अनोखी महिला हैं, मिस्टर लॉरेंस,' उन्होंने आगे कहा; 'हमें समझ नहीं आ रहा कि उनके बारे में क्या सोचें — लेकिन मुझे लगता है कि आप उनके बारे में कुछ बता सकते हैं, क्योंकि वह आपकी किरायेदार हैं, आप जानते हैं, — और उन्होंने कहा कि वह आपको थोड़ा-बहुत जानती हैं।'

सभी की निगाहें मिस्टर लॉरेंस पर टिकी थीं। मुझे लगा कि इतनी अपील किए जाने पर वे बेवजह भ्रमित दिख रहे थे।

'मैं, श्रीमती मार्खम!' उसने कहा; 'आप गलत समझ रही हैं — मैं नहीं — मतलब — मैंने उन्हें देखा तो है, लेकिन श्रीमती ग्राहम के बारे में जानकारी के लिए आपको मुझसे संपर्क नहीं करना चाहिए।'

फिर वह तुरंत रोज़ की ओर मुड़ा और उससे कंपनी को एक गीत या पियानो पर एक धुन सुनाने का अनुरोध किया।

'नहीं,' उसने कहा, 'आपको मिस विल्सन से पूछना चाहिए: वह गायन और संगीत दोनों में हम सभी से कहीं बेहतर हैं।'

मिस विल्सन ने आपत्ति जताई।

'वह आसानी से गा देगी,' फर्गस ने कहा, 'अगर आप उसके पास खड़े रहने का जिम्मा लेंगे, मिस्टर लॉरेंस, और उसके लिए पन्ने पलटेंगे।'

'मुझे ऐसा करने में बहुत खुशी होगी, मिस विल्सन; क्या आप मुझे इसकी अनुमति देंगी?'

उसने अपनी लंबी गर्दन को संजोया और मुस्कुराई, और उसे वाद्य यंत्र तक ले जाने दिया, जहाँ उसने अपनी पूरी प्रतिभा से एक के बाद एक धुनें बजाईं और गाईं; जबकि

वह धैर्यपूर्वक उसके पास खड़ा रहा, एक हाथ उसकी कुर्सी की पीठ पर टिकाए और दूसरे हाथ से उसकी किताब के पन्ने पलटता रहा। शायद वह भी उसके प्रदर्शन से उतना ही मुग्ध था जितना वह खुद थी। यह सब अपने तरीके से बहुत अच्छा था; लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि इसने मुझे बहुत गहराई से प्रभावित किया। कौशल और प्रस्तुति तो भरपूर थी, लेकिन भावना का कोई नामोनिशान नहीं था।

लेकिन श्रीमती ग्राहम से हमारा काम अभी खत्म नहीं हुआ था।

'श्रीमती मार्खम, मैं शराब नहीं पीता,' श्री मिलवर्ड ने उस पेय के प्रस्ताव पर कहा; 'मैं आपकी घर की बनी थोड़ी सी बीयर लूंगा। मुझे हमेशा आपकी घर की बनी बीयर ही सबसे ज्यादा पसंद आती है।'

इस प्रशंसा से प्रसन्न होकर मेरी माँ ने घंटी बजाई, और तुरंत ही हमारी सबसे अच्छी बीयर से भरा एक चीनी मिट्टी का जग लाया गया और उस सज्जन के सामने रख दिया गया जो इसकी खूबियों को भलीभांति जानते थे।

‘अब यही तो बात है!’ वह चिल्लाया और उसी पेय को एक लंबी धार में जग से गिलास में डाला, बड़ी कुशलता से इस तरह कि बिना एक बूंद गिराए खूब झाग बन गया; और मोमबत्ती के सामने एक पल के लिए गिलास को निहारने के बाद, उसने एक गहरा घूंट लिया, फिर अपने होंठों को चटकाया, एक लंबी सांस ली और अपना गिलास फिर से भर लिया, मेरी माँ अत्यंत संतुष्टि के साथ यह सब देख रही थी।

‘श्रीमती मार्खम, इसके जैसा कुछ नहीं है!’ उसने कहा। ‘मैं हमेशा यही कहता हूं कि आपके घर में बनी बीयर की कोई तुलना नहीं है।’

'मुझे पूरा यकीन है कि आपको यह पसंद आया होगा, महोदय। मैं हमेशा खुद ही बीयर बनाने, पनीर और मक्खन का ध्यान रखता हूँ - मुझे हर काम अच्छे से करना पसंद है।'

'बिल्कुल सही, श्रीमती मार्खम!'

‘लेकिन फिर, श्रीमान मिलवर्ड, क्या आपको कभी-कभार थोड़ी शराब पीना गलत नहीं लगता—या थोड़ी सी स्पिरिट भी!’ मेरी माँ ने श्रीमती विल्सन को जिन-पानी से भरा एक गर्म गिलास देते हुए कहा, जिन्होंने पुष्टि की कि शराब उनके पेट को भारी कर देती है, और जिनका बेटा रॉबर्ट उस समय उसी शराब का एक काफी कड़ा गिलास पी रहा था।

‘बिल्कुल नहीं!’ भविष्यवक्ता ने बृहस्पति की तरह सिर हिलाते हुए उत्तर दिया; ‘ये

सब आशीर्वाद और कृपा हैं, अगर हम इनका उपयोग करना जानते हों।'

लेकिन श्रीमती ग्राहम ऐसा नहीं सोचतीं। आप अभी सुनेंगे कि उन्होंने हमें उस दिन क्या बताया था - मैंने उनसे कहा था कि मैं आपको बताऊंगी।

और मेरी माँ ने उस महिला के इस मामले के संबंध में गलत विचारों और आचरण का विस्तृत विवरण देते हुए अंत में कहा, 'अब, क्या आपको नहीं लगता कि यह गलत है?'

'गलत!' पादरी ने असाधारण गंभीरता से दोहराया — 'यह तो आपराधिक है — आपराधिक! यह न केवल लड़के को मूर्ख बना रहा है, बल्कि ईश्वर की देन का अपमान कर रहा है और उसे उन्हें पैरों तले रौंदना सिखा रहा है।'

फिर उन्होंने इस विषय पर विस्तार से चर्चा की और इस तरह की कार्यवाही की मूर्खता और अधार्मिकता को समझाया। मेरी माँ ने अत्यंत श्रद्धा से उनकी बातें सुनीं; और श्रीमती विल्सन ने भी एक पल के लिए अपनी ज़बान बंद कर ली और चुपचाप सुनती रहीं, जबकि वे आराम से अपना जिन-पानी पी रही थीं। श्री लॉरेंस मेज पर कोहनी रखकर बैठे रहे, लापरवाही से अपने आधे खाली शराब के गिलास से खेलते रहे और मन ही मन मुस्कुराते रहे।

'लेकिन क्या आपको नहीं लगता, श्री मिलवर्ड,' उन्होंने सुझाव दिया, जब वह सज्जन अंततः अपने भाषण में विराम लेकर रुके, 'कि जब कोई बच्चा स्वाभाविक रूप से असंयम का शिकार हो सकता है — उदाहरण के लिए, अपने माता-पिता या पूर्वजों की गलती से — तो कुछ सावधानियां बरतना उचित है?' (अब यह आम तौर पर माना जाता था कि श्री लॉरेंस के पिता ने असंयम के कारण ही अपनी आयु कम कर ली थी।)

'कुछ सावधानियां बरती जा सकती हैं; लेकिन महोदय, संयम एक बात है और परहेज दूसरी।'

लेकिन मैंने सुना है कि कुछ लोगों के लिए संयम—अर्थात, संतुलन—लगभग असंभव है; और यदि परहेज़ एक बुराई है (जिस पर कुछ लोगों ने संदेह किया है), तो कोई भी इस बात से इनकार नहीं करेगा कि अति एक बड़ी बुराई है। कुछ माता-पिता ने अपने बच्चों को मादक पेय पदार्थों का स्वाद चखने से पूरी तरह मना कर दिया है; लेकिन माता-पिता का अधिकार हमेशा के लिए नहीं रह सकता; बच्चे स्वाभाविक रूप से वर्जित चीजों के प्रति लालसा रखते हैं; और ऐसे मामले में, एक बच्चे में दूसरों द्वारा

इतनी प्रशंसा और आनंदित की गई, लेकिन स्वयं के लिए इतनी सख्ती से वर्जित चीज का स्वाद चखने और उसके प्रभाव को जानने की तीव्र जिज्ञासा होगी—यह जिज्ञासा आमतौर पर पहले सुविधाजनक अवसर पर ही पूरी हो जाएगी; और एक बार संयम टूट जाने पर, गंभीर परिणाम हो सकते हैं। मैं ऐसे मामलों का विशेषज्ञ होने का दावा नहीं करता, लेकिन मुझे लगता है कि श्रीमती ग्राहम की यह योजना, जैसा कि आपने इसका वर्णन किया है, श्रीमती मार्खम, चाहे वह कितनी भी असाधारण क्यों न हो, इसके अपने लाभ हैं; क्योंकि यहाँ आप देखते हैं कि बच्चा प्रलोभन से तुरंत मुक्त हो जाता है; उसमें कोई गुप्त जिज्ञासा नहीं रहती, कोई लालसा नहीं रहती; वह मादक पेय पदार्थों से उतना ही परिचित है जितना वह होना चाहता है; और उनके दुष्प्रभावों से पीड़ित हुए बिना ही उनसे पूरी तरह घृणा करता है।

'और क्या यह सही है, महोदय? क्या मैंने आपको यह साबित नहीं किया है कि यह कितना गलत है—शास्त्रों और तर्क के कितना विपरीत है कि एक बच्चे को ईश्वर की कृपा से प्राप्त आशीर्वादों को सही ढंग से उपयोग करने के बजाय उनका तिरस्कार और घृणा की दृष्टि से देखना सिखाया जाए?'

श्री लॉरेंस ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, 'आप लाउडैनम को ईश्वर का आशीर्वाद मान सकते हैं, महोदय; फिर भी, आप यह मानेंगे कि हममें से अधिकांश के लिए इससे परहेज करना बेहतर है, भले ही वह सीमित मात्रा में ही क्यों न हो; लेकिन,' उन्होंने आगे कहा, 'मैं आपसे मेरी उपमा का बहुत बारीकी से अनुसरण करने की अपेक्षा नहीं करूंगा – इसके प्रमाण स्वरूप मैं अपना गिलास समाप्त करता हूं।'

'और उम्मीद है, मिस्टर लॉरेंस, आप एक और ले लीजिए,' मेरी माँ ने बोतल उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

उन्होंने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया, और अपनी कुर्सी को मेज से थोड़ा दूर धकेलते हुए, मेरी ओर झुक गए - मैं उनसे थोड़ा पीछे, एलिजा मिलवर्ड के बगल में सोफे पर बैठी थी - और लापरवाही से मुझसे पूछा कि क्या मैं श्रीमती ग्राहम को जानती हूँ।

मैंने जवाब दिया, 'मैं उससे एक-दो बार मिल चुका हूं।'

'आप उसके बारे में क्या सोचते हैं?'

मैं यह नहीं कह सकता कि मैं उसे बहुत पसंद करता हूँ। वह दिखने में सुंदर है—या यूँ कहूँ कि विशिष्ट और दिलचस्प है—लेकिन बिल्कुल भी मिलनसार नहीं है—मुझे

लगता है कि वह ऐसी महिला है जो पूर्वाग्रहों को गहराई से अपनाती है और हर हाल में उन पर अड़ी रहती है, हर बात को अपने पूर्वकल्पित विचारों के अनुरूप ढालने की कोशिश करती है—मेरे लिए बहुत कठोर, बहुत तीखी, बहुत कड़वी।

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि नीचे देखकर अपने होंठ काट लिए, और थोड़ी देर बाद उठकर मिस विल्सन के पास चले गए। मुझे लगता है कि वे मुझसे जितना आकर्षित थे, उतना ही मुझसे घृणा भी कर रहे थे। उस समय तो मैंने इस पर ध्यान ही नहीं दिया, लेकिन बाद में मुझे यह और इसी तरह की कुछ और छोटी-मोटी बातें याद आ गईं, जब—लेकिन मैं आगे की बात नहीं बताऊँगा।

हमने नृत्य के साथ शाम का समापन किया - हमारे आदरणीय पादरी ने इस अवसर पर उपस्थित रहना कोई अपराधबोध नहीं समझा, हालांकि गाँव के एक संगीतकार को अपने वायलिन से हमारे नृत्य का निर्देशन करने के लिए बुलाया गया था। लेकिन मैरी मिलवर्ड ने हठपूर्वक हमारे साथ शामिल होने से इनकार कर दिया; और रिचर्ड विल्सन ने भी, हालांकि मेरी माँ ने उनसे ऐसा करने के लिए बहुत विनती की और यहाँ तक कि उनकी साथी बनने की पेशकश भी की।

हमने उनके बिना भी बहुत अच्छे से काम चला लिया। केवल एक क्वाड्रिल नृत्य और कुछ पारंपरिक नृत्यों के साथ, हमने इसे काफी देर रात तक जारी रखा; और अंत में, अपने संगीतकार को वाल्ट्ज़ बजाने के लिए कहने पर, मैं लॉरेंस और जेन विल्सन, और फर्गस और रोज़ के साथ एलिज़ा को उस मनमोहक नृत्य में घुमाने ही वाला था, तभी श्री मिलवर्ड ने बीच में दखल देते हुए कहा: — 'नहीं, नहीं; मैं इसकी अनुमति नहीं देता! आइए, अब जाने का समय हो गया है।'

'ओह, नहीं, पापा!' एलिजा ने विनती की।

'बहुत देर हो गई है, मेरी बच्ची—बहुत देर हो गई है! हर बात में संयम बरतना, याद रखना! यही योजना है—"तुम्हारा संयम सभी को ज्ञात हो जाए!"'

लेकिन बदले की भावना से मैंने एलिज़ा का पीछा करते हुए उस मंद रोशनी वाले गलियारे में प्रवेश किया, जहाँ शॉल ओढ़ने में मदद करने के बहाने, मुझे डर है कि मुझे उसके पिता की पीठ पीछे उन्हें चूमने का जुर्म कबूल करना पड़ेगा, जब वे अपने गले और ठुड्डी को एक भारी कंबल में लपेटे हुए थे। लेकिन अफसोस! मुड़कर देखा तो मेरी माँ मेरे ठीक बगल में खड़ी थीं। नतीजा यह हुआ कि मेहमानों के जाते ही मुझे एक बहुत ही गंभीर फटकार सुननी पड़ी, जिसने मेरे उत्साह को बुरी तरह से रोक दिया

और शाम का अप्रिय अंत कर दिया।

‘मेरे प्यारे गिल्बर्ट,’ उसने कहा, ‘काश तुम ऐसा न करते! तुम जानते हो कि मैं तुम्हारा कितना भला चाहती हूँ, तुमसे कितना प्यार करती हूँ और तुम्हें दुनिया में हर चीज़ से बढ़कर मानती हूँ, और तुम्हें जीवन में अच्छी तरह से बसते हुए देखने के लिए कितना तरसती हूँ—और उस लड़की से—या आस-पड़ोस की किसी भी लड़की से—तुम्हारी शादी देखकर मुझे कितना गहरा दुख होगा। मुझे नहीं पता कि तुम्हें उसमें क्या दिखता है। मैं सिर्फ़ पैसों की लालसा के बारे में नहीं सोचती—ऐसा कुछ भी नहीं—बल्कि उसमें न तो सुंदरता है, न बुद्धिमत्ता, न अच्छाई, न ही कोई और ऐसी चीज़ जो मनभावन हो। अगर तुम अपनी कीमत जानते, जैसा कि मैं जानती हूँ, तो तुम ऐसा सपने में भी नहीं सोचते। ज़रा रुककर देखो! अगर तुम उससे शादी कर लेते हो, तो तुम्हें जीवन भर पछतावा होगा जब तुम चारों ओर देखोगे और पाओगे कि उससे कहीं बेहतर लड़कियाँ हैं। मेरी बात मानो, तुम्हें पछतावा होगा।’

‘माँ, चुप रहो! मुझे उपदेश सुनना बिल्कुल पसंद नहीं! मैं अभी शादी नहीं करने वाली, मैं तुम्हें बता रही हूँ; लेकिन – हे भगवान! क्या मैं थोड़ा आनंद नहीं ले सकती?’

जी हाँ, मेरे प्यारे बेटे, लेकिन उस तरह से नहीं। दरअसल, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। अगर वो लड़की सही होती, तो तुम उसके साथ अन्याय कर रहे होते; लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ कि वो बहुत ही चालाक और धूर्त है; और तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि तुम कहाँ पहुँच गए। और अगर तुमने उससे शादी कर ली, गिल्बर्ट, तो मेरा दिल टूट जाएगा - बस यहीं बात खत्म।

‘खैर, इसके बारे में रोना मत,’ मैंने कहा, क्योंकि उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे; ‘लो, इस चुंबन से एलिज़ा को दिए गए मेरे चुंबन का दाग मिट जाएगा; अब उसे और बुरा-भला मत कहो, और निश्चिंत हो जाओ; क्योंकि मैं वादा करती हूँ कि कभी नहीं—अर्थात्, मैं वादा करती हूँ कि कोई भी महत्वपूर्ण कदम उठाने से पहले दो बार सोचूँगी, अगर आपको वह बिल्कुल भी पसंद नहीं है।’

इतना कहकर मैंने अपनी मोमबत्ती जलाई और काफी हद तक निराश होकर सोने चला गया।

अध्याय V

महीने के लगभग अंत में, रोज़ के बार-बार आग्रह पर, मैं उसके साथ वाइल्डफेल हॉल घूमने गया। हमें आश्चर्य हुआ जब हमें एक ऐसे कमरे में ले जाया गया जहाँ सबसे पहले हमारी नज़र एक चित्रकार के स्टैंड पर पड़ी, जिसके बगल में एक मेज थी जो कैनवास के रोल, तेल और वार्निश की बोतलों, पैलेट, ब्रश, पेंट आदि से ढकी हुई थी। दीवार के सहारे कई स्केच रखे थे जो अलग-अलग चरणों में बन रहे थे, और कुछ तैयार पेंटिंग भी थीं - जिनमें ज़्यादातर प्राकृतिक दृश्य और मानव आकृतियाँ थीं।

श्रीमती ग्राहम ने कहा, 'मुझे अपने स्टूडियो में आपका स्वागत करना चाहिए; आज बैठक कक्ष में आग नहीं जल रही है, और इतनी ठंड है कि आपको खाली अंगीठी वाले कमरे में ले जाना ठीक नहीं होगा।'

कुछ कुर्सियों को उनके ऊपर रखे हुए सजावटी सामान से हटाकर, उन्होंने हमें बैठने का इशारा किया और ईज़ल के बगल में अपनी जगह पर वापस बैठ गईं—ठीक ईज़ल की ओर मुंह करके नहीं, बल्कि बातचीत के दौरान बीच-बीच में उस पर बनी तस्वीर पर नज़र डालती रहीं और ब्रश से उसे हल्का-हल्का रंग देती रहीं, मानो उनके लिए अपने काम से ध्यान हटाकर मेहमानों पर ध्यान केंद्रित करना नामुमकिन हो। यह वाइल्डफेल हॉल का दृश्य था, जो सुबह-सुबह नीचे खेत से दिखाई देता था, साफ चांदी जैसे नीले आसमान के बीच गहरे रंग में उभरा हुआ, क्षितिज पर कुछ लाल धारियाँ थीं, जिसे बड़ी सटीकता से बनाया और रंगा गया था, और बेहद सुंदर और कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया था।

मैंने कहा, 'श्रीमती ग्राहम, मुझे लगता है कि आप अपने काम में पूरी तरह से लगी हुई हैं। मुझे आपसे विनती करनी होगी कि आप इसे जारी रखें; क्योंकि यदि आप हमारी उपस्थिति को अपने काम में बाधा डालने देंगी, तो हम खुद को अवांछित घुसपैठिए समझने के लिए विवश हो जाएंगे।'

‘अरे नहीं!’ उसने विनम्रता से चौंकते हुए अपना ब्रश मेज पर पटकते हुए उत्तर दिया। ‘मेरे पास इतने मेहमान नहीं आते कि मैं उन कुछ लोगों को कुछ मिनट न दे

सकूँ जो मुझे अपने साथ समय देने के लिए आते हैं।'

'आपकी पेंटिंग लगभग पूरी हो चुकी है,' मैंने पास आकर उसे और करीब से देखते हुए कहा, और उसे निहारते हुए मेरे मन में जितनी प्रशंसा और खुशी थी, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल था। 'मुझे लगता है कि अग्रभाग में कुछ और स्पर्श करने से यह पूरी हो जाएगी। लेकिन आपने इसे वाइल्डफेल हॉल (शायर) के बजाय फर्न्ले मैनर, कंबरलैंड क्यों कहा है?' मैंने कैनवास के नीचे छोटे अक्षरों में लिखे नाम की ओर इशारा करते हुए पूछा।

लेकिन मुझे तुरंत एहसास हो गया कि ऐसा करके मैंने एक गुस्ताखी कर दी है; क्योंकि उसका चेहरा लाल हो गया और वह हिचकिचाई; लेकिन एक पल के विराम के बाद, एक तरह की हताश स्पष्टता के साथ, उसने जवाब दिया: —

'क्योंकि दुनिया में मेरे कुछ दोस्त हैं — कम से कम कुछ परिचित तो हैं — जिनसे मैं अपना वर्तमान निवास छिपाना चाहता हूँ; और चूंकि वे तस्वीर देख सकते हैं, और कोने में लिखे मेरे नकली अक्षरों के बावजूद शैली को पहचान सकते हैं, इसलिए मैं एहतियात के तौर पर जगह का नाम भी नकली रखता हूँ, ताकि अगर वे इसके जरिए मेरा पता लगाने की कोशिश करें तो उन्हें गुमराह कर सकूँ।'

'तो फिर आपका इरादा तस्वीर को रखने का नहीं है?' मैंने उत्सुकतावश कुछ भी कहकर विषय बदलने की कोशिश करते हुए कहा।

नहीं; मैं अपने मनोरंजन के लिए चित्रकारी करने का जोखिम नहीं उठा सकता।

आर्थर ने कहा, 'मम्मा अपनी सारी तस्वीरें लंदन भेजती हैं; और वहां कोई उन्हें बेचकर हमें पैसे भेज देता है।'

अन्य कलाकृतियों को देखते हुए, मैंने पहाड़ी की चोटी से लिंडेन-होप का एक सुंदर रेखाचित्र देखा; एक शांत गर्मी की दोपहर की धूप में नहाए हुए पुराने हॉल का एक और दृश्य; और एक सरल लेकिन प्रभावशाली छोटी सी तस्वीर जिसमें एक बच्चा मुरझाए हुए फूलों के गुच्छे पर चुपचाप लेकिन गहरे और दुख भरे पछतावे के भाव से उदास बैठा है, जिसके पीछे अंधेरी नीची पहाड़ियों और शरद ऋतु के खेतों की झलक है, और ऊपर एक धुंधला बादल छाए हुए आकाश है।

'देखिए, विषय बहुत कम हैं,' सुंदर कलाकार ने कहा। 'मैंने एक बार चांदनी रात में पुराने हॉल की तस्वीर ली थी, और मुझे लगता है कि मुझे फिर से बर्फीले सर्दियों के दिन, और फिर एक अंधेरी, बादलों वाली शाम को उसकी तस्वीर लेनी होगी; क्योंकि

मेरे पास पेंट करने के लिए और कुछ नहीं है। मुझे बताया गया है कि आपके आस-पास कहीं समुद्र का सुंदर दृश्य है। क्या यह सच है? और क्या यह पैदल दूरी पर है?’

'हां, अगर आपको चार मील - या लगभग इतना - यानी लगभग आठ मील (आने-जाने का) पैदल चलने में कोई आपत्ति नहीं है, और वह भी कुछ हद तक ऊबड़-खाबड़ और थका देने वाली सड़क पर।'

यह किस दिशा में स्थित है?

मैंने स्थिति का यथासंभव वर्णन किया, और वहाँ तक पहुँचने के लिए पार किए जाने वाले विभिन्न रास्तों, गलियों और खेतों, सीधे जाने वाले रास्तों और दाएं-बाएं मुड़ने वाले रास्तों के बारे में बताने ही वाला था कि तभी उसने मुझे रोकते हुए कहा, —

अरे, रुकिए! अभी मत बताइए: मुझे आपके निर्देशों की ज़रूरत पड़ने से पहले ही मैं एक-एक शब्द भूल जाऊँगी। मैं अगली बसंत तक जाने के बारे में नहीं सोचूँगी; और तब शायद मैं आपको परेशान करूँगी। अभी तो हमारे सामने सर्दियाँ हैं, और—’

वह अचानक रुक गई, दबी हुई हैरानी के साथ, अपनी सीट से उठ खड़ी हुई और 'मुझे एक पल के लिए क्षमा करें' कहते हुए कमरे से जल्दी से बाहर निकल गई और अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया।

यह जानने की उत्सुकता में कि किस बात ने उसे इतना चौंका दिया था, मैंने खिड़की की ओर देखा - क्योंकि कुछ क्षण पहले उसकी निगाहें लापरवाही से खिड़की पर टिकी हुई थीं - और मैंने देखा कि खिड़की और बरामदे के बीच खड़े एक बड़े हॉली झाड़ी के पीछे एक आदमी के कोट का निचला हिस्सा गायब हो रहा था।

‘यह मम्मी की दोस्त है,’ आर्थर ने कहा।

रोज और मैंने एक दूसरे की तरफ देखा।

'मुझे उसके बारे में कुछ भी समझ नहीं आ रहा है,' रोज़ ने फुसफुसाते हुए कहा।

बच्चे ने बड़ी हैरानी से उसकी ओर देखा। वह तुरंत उससे बेमतलब की बातें करने लगी, जबकि मैं तस्वीरों को देखकर अपना मनोरंजन करने लगा। एक तस्वीर एक कोने में थी जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उसमें एक छोटा बच्चा घास पर बैठा था और उसकी गोद फूलों से भरी थी। उसके नन्हे चेहरे और बड़ी नीली आँखें, हल्के भूरे घुंघराले बालों के बीच से मुस्कुराती हुई, माथे पर लहराती हुई, अपने खजाने को देखने के लिए झुकी हुई थीं। ये नन्ही सी शक्ल मेरे सामने बैठे उस युवक से इतनी

मिलती-जुलती थी कि इसे आर्थर ग्राहम का बचपन का चित्र कहना सही होगा।

इसे प्रकाश में लाने के लिए उठाते समय, मुझे इसके पीछे एक और चित्र मिला, जिसका मुख दीवार की ओर था। मैंने उसे भी उठाने का साहस किया। यह एक ऐसे सज्जन का चित्र था जो अपनी युवावस्था के चरम पर थे—काफी आकर्षक और बढ़िया ढंग से बनाया गया था; लेकिन अगर इसे भी उन्हीं के हाथ ने बनाया था जिन्होंने बाकी चित्र बनाए थे, तो यह स्पष्ट रूप से कुछ साल पहले का था; क्योंकि इसमें विवरण की बारीकी कहीं अधिक थी, और रंगों की वह ताजगी और निपुणता नहीं थी जिसने मुझे बाकी चित्रों में प्रसन्न और आश्चर्यचकित किया था। फिर भी, मैंने इसे काफी रुचि से देखा। चेहरे और भावों में एक विशिष्ट व्यक्तित्व था जिसने इसे तुरंत एक सफल चित्र बना दिया। चमकीली नीली आँखें दर्शक को एक प्रकार की शरारती मुस्कान से देख रही थीं—ऐसा लग रहा था मानो वे पलक झपका रही हों; होंठ—थोड़े अधिक भरे हुए—मुस्कान में फूटने के लिए तैयार लग रहे थे; गर्म रंग से रंगे गाल लाल रंग की घनी मूंछों से सुशोभित थे; जबकि चमकीले भूरे बाल, घने, लहराते घुंघराले बालों के गुच्छों में, माथे पर बहुत अधिक फैले हुए थे, और ऐसा प्रतीत होता था कि वे संकेत दे रहे थे कि इसके स्वामी को अपनी बुद्धि की तुलना में अपनी सुंदरता पर अधिक गर्व था - जैसा कि शायद उसके पास होने का कारण भी था; और फिर भी वह मूर्ख नहीं दिखता था।

सुंदर कलाकार के लौटने से पहले मुझे वह चित्र मिले दो मिनट भी नहीं हुए थे।

अचानक चले जाने के लिए माफी मांगते हुए उसने कहा, 'तस्वीरों के बारे में कोई आया था, मैंने उसे इंतजार करने के लिए कहा था।'

उन्होंने कहा, 'मुझे डर है कि कलाकार द्वारा दीवार की ओर घुमाए गए चित्र को देखने का साहस करना धृष्टता का कार्य माना जाएगा; लेकिन क्या मैं पूछ सकता हूँ —'

'यह बहुत ही गुस्ताखी भरा काम है, महोदय; इसलिए मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप इसके बारे में कुछ भी न पूछें, क्योंकि आपकी जिज्ञासा शांत नहीं होगी,' उसने अपनी फटकार की कड़वाहट को मुस्कान से छिपाने की कोशिश करते हुए उत्तर दिया; लेकिन मैं उसके लाल गाल और चमकती आँखों से समझ गया कि वह गंभीर रूप से नाराज थी।

मैंने रूठते हुए तस्वीर उसके हाथों में सौंपते हुए कहा, 'मैं तो बस यही पूछने वाला

था कि क्या तुमने इसे खुद बनाया है?' लेकिन उसने बिना किसी औपचारिकता के मुझसे तस्वीर ले ली; और झट से उसे वापस उसी अंधेरे कोने में दीवार की ओर मुंह करके रख दिया, दूसरी तस्वीर को पहले की तरह उसके सामने रख दिया, और फिर मेरी ओर मुड़कर हंस पड़ी।

लेकिन मेरा मज़ाक करने का कोई मूड नहीं था। मैंने लापरवाही से खिड़की की ओर मुड़कर उस सुनसान बगीचे को देखना शुरू कर दिया, और उसे रोज़ से एक-दो मिनट बात करने दिया; फिर, अपनी बहन से कहा कि जाने का समय हो गया है, उस छोटे सज्जन से हाथ मिलाया, महिला को शांत भाव से प्रणाम किया और दरवाजे की ओर बढ़ गया। लेकिन, रोज़ को विदा करने के बाद, श्रीमती ग्राहम ने मुझसे हाथ मिलाया और कोमल स्वर में, और बिना किसी अप्रिय मुस्कान के, कहा, — 'श्रीमान मार्खम, अपने गुस्से को सूरज डूबने तक न रहने दें। मुझे खेद है कि मेरी रूखेपन से आपको ठेस पहुंची।'

जब कोई महिला क्षमा मांगने की कृपा करती है, तो जाहिर है कि क्रोध को रोकना असंभव हो जाता है; इसलिए हम एक बार के लिए अच्छे दोस्तों की तरह विदा हुए; और इस बार मैंने उनका हाथ द्वेषपूर्ण दबाव के बजाय सौहार्दपूर्ण ढंग से दबाया।

अध्याय VI

अगले चार महीनों तक मैं श्रीमती ग्राहम के घर नहीं गई, न ही वह मेरे घर; लेकिन फिर भी महिलाएं उनके बारे में बातें करती रहीं, और हमारी जान-पहचान धीरे-धीरे बढ़ती रही। उनकी बातों पर मैंने ज्यादा ध्यान नहीं दिया (मेरा मतलब उस सुंदर साध्वी के बारे में), और मुझे बस इतना ही पता चला कि एक सर्द दिन वह अपने छोटे बेटे को लेकर पादरी के घर तक गई थीं, और दुर्भाग्य से घर पर मिस मिलवर्ड के अलावा कोई नहीं था; फिर भी, वह काफी देर तक बैठी रहीं, और सभी के अनुसार, उन्होंने एक-

दूसरे से बहुत कुछ कहा, और फिर से मिलने की इच्छा जताते हुए विदा हुईं। लेकिन मैरी को बच्चे पसंद थे, और स्नेही माताएं उन्हें पसंद करती थीं जो अपने बच्चों के खजाने की कद्र कर सकें।

लेकिन कभी-कभी मैं उन्हें स्वयं देखता था, न केवल जब वे चर्च आती थीं, बल्कि जब वे अपने बेटे के साथ पहाड़ियों पर होती थीं, चाहे वे लंबी, उद्देश्यपूर्ण सैर कर रही हों, या विशेष रूप से सुहावने दिनों में, पुराने हॉल के आसपास के बंजर मैदानों या सुनसान चरागाहों में इत्मीनान से टहल रही हों, उनके हाथ में एक किताब होती थी और उनका बेटा उनके आसपास खेलता रहता था; और, इन सभी अवसरों पर, जब भी मैं अपनी एकांत सैर या घुड़सवारी के दौरान, या अपने कृषि कार्यों के दौरान उन्हें देखता था, तो मैं आमतौर पर उनसे मिलने या उनसे आगे निकलने का प्रयास करता था, क्योंकि मुझे श्रीमती ग्राहम को देखना और उनसे बात करना अच्छा लगता था, और मुझे उनके छोटे साथी से बात करना विशेष रूप से अच्छा लगता था, जो एक बार अपनी शर्म को दूर कर लेने के बाद, मुझे एक बहुत ही मिलनसार, बुद्धिमान और मनोरंजक छोटा बच्चा लगा; और हम जल्द ही बहुत अच्छे दोस्त बन गए - उनकी माँ को इससे कितनी खुशी हुई, यह मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। मुझे पहले तो शक हुआ कि वह हमारी बढ़ती घनिष्ठता पर पानी फेरना चाहती है— मानो हमारी दोस्ती की लौ को बुझाना चाहती हो— लेकिन अंततः, मेरे प्रति अपने पूर्वाग्रह के बावजूद, जब उसे पता चला कि मैं पूरी तरह से निर्दोष और नेक इरादे वाला व्यक्ति हूँ, और मेरे और मेरे कुत्ते के बीच, उसके बेटे को उस जान-पहचान से बहुत आनंद मिलता है जो उसे अन्यथा नहीं मिलती, तो उसने आपत्ति करना बंद कर दिया, और यहाँ तक कि मुस्कुराते हुए मेरे आने का स्वागत किया।

आर्थर दूर से ही मेरा स्वागत करते हुए चिल्लाता और अपनी माँ के पास से पचास गज की दूरी पर दौड़कर मुझसे मिलने आता। अगर मैं घोड़े पर सवार होता, तो उसे सरपट दौड़ने या सरपट भागने का मौका ज़रूर मिलता; या अगर आस-पास कोई भार ढोने वाला घोड़ा होता, तो उसे उस पर आराम से सवारी करने का मौका मिलता, जो उसके लिए लगभग उतना ही अच्छा होता; लेकिन उसकी माँ हमेशा उसके पीछे-पीछे चलती और उसके साथ-साथ कदम बढ़ाती रहती - मुझे लगता है कि ऐसा उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उतना नहीं था, जितना कि यह देखने के लिए कि मैं उसके शिशु मन में कोई गलत विचार न डाल दूँ, क्योंकि वह हमेशा चौकस रहती और

उसे कभी भी अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने देती। उन्हें सबसे ज़्यादा खुशी तब होती थी जब वह मेरे बेटे को सांचो के साथ खेलते-कूदते और दौड़ते देखती थीं, जबकि मैं उनके बगल में चलता था - मुझे डर है कि ऐसा मेरी संगति के प्रति प्रेम के कारण नहीं था (हालाँकि कभी-कभी मैं खुद को इस भ्रम में डाल लेता था), बल्कि इसलिए कि उन्हें अपने बेटे को उन सक्रिय खेलों का आनंद लेते हुए देखकर बहुत खुशी होती थी जो उसके कोमल शरीर को स्फूर्ति प्रदान करते थे, फिर भी उसकी उम्र के अनुरूप खेलकूद के साथियों की कमी के कारण वह उन्हें बहुत कम ही खेल पाता था: और शायद, उनकी खुशी इस बात से भी कुछ कम नहीं थी कि मैं उनके साथ था, न कि उसके साथ, और इसलिए मैं उसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, जानबूझकर या अनजाने में, कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता था, इसके लिए उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद।

लेकिन कभी-कभी, मुझे लगता है, उसे मुझसे बातचीत करने में सचमुच थोड़ी संतुष्टि मिलती थी; और एक सुहावनी फरवरी की सुबह, मैदान में बीस मिनट की सैर के दौरान, उसने अपनी सामान्य कठोरता और संकोच को एक तरफ रख दिया, और मुझसे बातचीत में मग्न हो गई, एक ऐसे विषय पर इतनी वाक्पटुता और गहन विचार एवं भावना के साथ चर्चा की जो मेरे अपने विचारों से मेल खाता था, और साथ ही वह इतनी सुंदर भी लग रही थी कि मैं मंत्रमुग्ध होकर घर लौट आया; और रास्ते में (नैतिक रूप से) खुद को यह सोचते हुए पाया कि, आखिरकार, शायद एलिजा मिलवर्ड के साथ रहने की तुलना में ऐसी महिला के साथ दिन बिताना बेहतर होगा; और फिर मैं (लाक्षणिक रूप से) अपनी बेवफाई पर शर्मिंदा हुआ।

बैठक में प्रवेश करते ही मैंने एलिज़ा को रोज़ के साथ वहाँ पाया, और कोई नहीं था। यह आश्चर्य उतना सुखद नहीं था जितना होना चाहिए था। हमने काफी देर तक बातचीत की, लेकिन मुझे वह श्रीमती ग्राहम की तुलना में कुछ चंचल और थोड़ी नीरस लगी, जो अधिक परिपक्व और गंभीर थीं। धिक्कार है मानवीय निष्ठा पर!

'लेकिन,' मैंने सोचा, 'मुझे एलिज़ा से शादी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि मेरी माँ इसका कड़ा विरोध करती है, और मुझे उस लड़की को यह भ्रम नहीं देना चाहिए कि मेरा ऐसा इरादा है। अब, अगर यही मनोदशा बनी रही, तो मुझे उसके कोमल लेकिन कठोर प्रभाव से अपने स्नेह को मुक्त करने में कम कठिनाई होगी; और, हालाँकि श्रीमती ग्राहम भी उतनी ही आपत्तिजनक हो सकती हैं, मुझे डॉक्टरों की तरह, एक

बड़ी समस्या का इलाज एक छोटी समस्या से करने की अनुमति मिल सकती है, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि मैं उस युवा विधवा के साथ गंभीर रूप से प्यार में पड़ूँगा, और न ही वह मेरे साथ—यह निश्चित है—लेकिन अगर मुझे उसकी संगति में थोड़ा आनंद मिलता है तो मुझे निश्चित रूप से उसे पाने की अनुमति मिल सकती है; और अगर उसकी दिव्यता का सितारा एलिज़ा की चमक को फीका करने के लिए काफी चमकीला हो, तो और भी अच्छा, लेकिन मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।'

और उसके बाद शायद ही कोई ऐसा दिन बीतता था जब मैं वाइल्डफेल में अपनी नई परिचित से मिलने न जाता, लगभग उसी समय जब वह अपने आश्रम से निकलती थी; लेकिन अक्सर मेरी उससे दोबारा मिलने की उम्मीदें धरी रह जाती थीं, वह अपने आने-जाने के समय और जगहों में इतनी परिवर्तनशील थी, और मुझे जो कभी-कभार झलकियाँ मिल पाती थीं, वे इतनी क्षणिक थीं कि मुझे लगभग यह सोचने का मन करता था कि वह मेरी संगति से बचने के लिए उतनी ही मेहनत करती है जितनी मैं उसकी संगति पाने के लिए; लेकिन यह एक ऐसा अप्रिय विचार था जिसे आसानी से खारिज किया जा सकता था, इसलिए इस पर विचार करना उचित नहीं था।

मार्च के महीने में एक शांत, साफ दोपहर को, जब मैं घाटी में घास के मैदान की जुताई और बाड़ की मरम्मत का काम देख रहा था, तभी मैंने श्रीमती ग्राहम को नाले के किनारे एक रेखाचित्र लिए अपनी पसंदीदा कला में मग्न देखा, जबकि आर्थर उथले, पथरीले नाले में बांध और तटबंध बनाने में समय बिता रहे थे। मुझे मनोरंजन की बहुत ज़रूरत थी, और ऐसे दुर्लभ अवसर को गंवाना नहीं चाहिए था; इसलिए, घास के मैदान और बाड़ दोनों को छोड़कर, मैं तुरंत उस जगह पर पहुंचा, लेकिन सांचो से पहले नहीं, जिसने अपने युवा मित्र को देखते ही पूरी रफ्तार से दौड़ लगाई और उस पर ऐसे उछल-कूद की कि बच्चा लगभग नाले के बीचोंबीच गिर पड़ा; लेकिन सौभाग्य से, पत्थरों ने उसे ज़्यादा भीगने से बचा लिया, और उनकी चिकनाई ने उसे इतना चोट लगने से रोक दिया कि वह इस अप्रिय घटना पर हंस भी न सके।

श्रीमती ग्राहम सर्दियों में पेड़ों की विभिन्न किस्मों के विशिष्ट लक्षणों का अध्ययन कर रही थीं और बड़े उत्साह और कोमलता से उनकी शाखाओं का चित्र बना रही थीं। वह ज्यादा बोलती नहीं थीं, लेकिन मैं खड़ा होकर उनकी कलम की गति देखता रहा: उन सुंदर और आकर्षक उंगलियों द्वारा इतनी कुशलता से चलाई जा रही कलम को देखना एक सुखद अनुभव था। लेकिन कुछ ही देर में उनकी कुशलता कम होने लगी,

वे हिचकिचाने लगीं, थोड़ा कांपने लगीं और गलत स्ट्रोक लगाने लगीं, और फिर अचानक रुक गईं। तभी श्रीमती ग्राहम ने हंसते हुए अपना चेहरा मेरी ओर उठाया और कहा कि मेरे मार्गदर्शन से उनके रेखाचित्र को कोई फायदा नहीं हुआ।

'तो फिर,' मैंने कहा, 'जब तक आप बात खत्म नहीं कर लेते, मैं आर्थर से बात कर लूंगा।'

'अगर मम्मी इजाज़त दें तो मैं भी सवारी करना चाहूंगा, मिस्टर मार्खम,' बच्चे ने कहा।

'क्या चल रहा है, मेरे लड़के?'

'मुझे लगता है उस खेत में एक घोड़ा है,' उसने जवाब दिया और उस जगह की ओर इशारा किया जहां मजबूत काली घोड़ी रोलर खींच रही थी।

'नहीं, नहीं, आर्थर; यह बहुत दूर है,' उसकी माँ ने आपत्ति जताई।

लेकिन मैंने वादा किया कि घास के मैदान में एक-दो चक्कर लगाने के बाद मैं उसे सुरक्षित वापस ले आऊंगा; और जब उसने उसका उत्सुक चेहरा देखा तो वह मुस्कुराई और उसे जाने दिया। यह पहली बार था जब उसने मुझे उसे अपने पास से आधे खेत की दूरी तक भी ले जाने की अनुमति दी थी।

अपने विशालकाय घोड़े पर सवार होकर, चौड़े और ढलानदार मैदान में गंभीर भाव से आगे-पीछे चलते हुए, वह शांत, प्रसन्नतापूर्ण संतुष्टि और आनंद का साक्षात अवतार प्रतीत हो रहा था। हालाँकि, यह चक्कर जल्द ही समाप्त हो गया; लेकिन जब मैंने उस वीर घुड़सवार को घोड़े से उतारा और उसकी माँ को सौंप दिया, तो वह मुझे

इतनी देर तक रोके रखने से कुछ नाराज़ दिखी। उसने अपनी रेखाचित्र पुस्तिका बंद कर दी थी और शायद कुछ मिनटों से बेसब्री से उसके लौटने का इंतज़ार कर रही थी।

अब घर जाने का समय हो गया था, उसने कहा और मुझे शुभ संध्या कहना चाहती थी, लेकिन मैं उसे अभी छोड़कर नहीं जाना चाहता था: मैं उसके साथ पहाड़ी पर आधे रास्ते तक गया। वह अधिक मिलनसार हो गई और मुझे बहुत खुशी होने लगी; लेकिन, उस भयानक पुराने हॉल के पास पहुँचते ही, वह वहीं रुक गई और बोलते हुए मेरी ओर मुड़ गई, मानो उसे उम्मीद हो कि मैं आगे नहीं जाऊँगा, बातचीत यहीं समाप्त हो जाएगी और मुझे अब विदा लेकर चले जाना चाहिए - और वास्तव में, जाने का समय हो ही गया था, क्योंकि 'साफ़, ठंडी शाम' तेज़ी से 'ढल रही' थी, सूरज डूब चुका था और हल्के भूरे आकाश में अर्धचंद्राकार चाँद चमक रहा था; लेकिन दया की भावना ने मुझे वहीं रोक दिया। उसे ऐसे अकेले, असुविधाजनक घर में छोड़ना कठिन लग रहा था। मैंने ऊपर उसकी ओर देखा। खामोश और गंभीर वह घर हमारे सामने गुस्से से घूर रहा था। एक हिस्से की निचली खिड़कियों से हल्की लाल रोशनी चमक रही थी, लेकिन बाकी सभी खिड़कियां अंधेरे में डूबी हुई थीं, और कई खिड़कियों के काले, गुफा जैसे छेद दिखाई दे रहे थे, जिनमें न तो शीशा लगा था और न ही कोई ढांचा।

कुछ क्षण मौन चिंतन करने के बाद मैंने कहा, 'क्या आपको यह रहने के लिए एक उजाड़ जगह नहीं लगती?'

‘हाँ, कभी-कभी,’ उसने उत्तर दिया। ‘सर्दियों की शामों में, जब आर्थर बिस्तर पर होता है और मैं वहाँ अकेली बैठी होती हूँ, चारों ओर बहती ठंडी हवा की सरसराहट और खंडहर हो चुके पुराने कमरों में गरजती हुई हवा को सुनती हूँ, तो कोई किताब या काम उन निराशाजनक विचारों और आशंकाओं को दबा नहीं सकते जो मुझ पर हावी हो जाते हैं—लेकिन मैं जानती हूँ कि ऐसी कमजोरी के आगे झुकना मूर्खता है। अगर राहेल ऐसे जीवन से संतुष्ट है, तो मैं क्यों न रहूँ?—वास्तव में, जब तक यह आश्रय मेरे पास है, मैं इसके लिए बहुत आभारी हूँ।’

अंतिम वाक्य उसने दबी आवाज़ में कहा, मानो मुझसे नहीं बल्कि खुद से कह रही हो। फिर उसने मुझे शुभ संध्या कहा और चली गई।

घर लौटते समय मैं अभी कुछ ही कदम आगे बढ़ा था कि मैंने श्री लॉरेंस को उनके सुंदर भूरे टट्टू पर सवार होकर पहाड़ी की चोटी से गुजरने वाली ऊबड़-खाबड़ पगडंडी पर आते देखा। मैं उनसे बात करने के लिए थोड़ा रास्ता बदलकर उनके पास गया;

क्योंकि हमारी मुलाकात काफी समय से नहीं हुई थी।

‘क्या आप अभी श्रीमती ग्राहम से बात कर रही थीं?’ हमारे बीच अभिवादन के कुछ शुरुआती शब्दों के बाद उन्होंने कहा।

'हाँ।'

‘हम्म! मुझे लगा ही था।’ उसने अपने घोड़े की गर्दन के बालों को ध्यान से देखा, मानो उसे उससे कोई गंभीर असंतोष हो, या कुछ और।

‘अच्छा! फिर क्या?’

‘अरे, कुछ नहीं!’ उसने जवाब दिया। ‘मुझे लगा था कि तुम उसे नापसंद करते हो,’ उसने धीरे से कहा, और अपने होंठों को हल्के व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ सिकोड़ा।

'मान लीजिए मैंने ऐसा किया; क्या आगे की जान-पहचान होने पर कोई व्यक्ति अपना विचार नहीं बदल सकता?'

“जी हाँ, बिल्कुल,” उसने जवाब दिया और टट्टू के पुराने, सफ़ेद बालों में उलझी लट को बड़े सलीके से सुलझाया। फिर अचानक मेरी ओर मुड़कर, अपनी शर्मीली भूरी आँखों से मुझे टकटकी लगाकर गहरी दृष्टि से देखते हुए बोला, “तो क्या तुमने अपना मन बदल लिया?”

'मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने बिल्कुल ऐसा ही किया है। नहीं; मुझे लगता है कि उसके बारे में मेरी राय पहले जैसी ही है - लेकिन थोड़ी बेहतर हो गई है।'

‘ओह!’ उसने बात करने के लिए कुछ और ढूंढने के लिए चारों ओर देखा; और चाँद की ओर देखते हुए, शाम की सुंदरता पर कुछ टिप्पणी की, जिसका मैंने जवाब नहीं दिया, क्योंकि वह विषय से अप्रासंगिक थी।

मैंने शांत भाव से उसकी ओर देखते हुए कहा, 'लॉरेंस, क्या तुम मिसेज ग्राहम से प्यार करते हो?'

मुझे पूरी उम्मीद थी कि वह इस बात से बहुत नाराज होंगे, लेकिन इसके बजाय, उस दुस्साहसी प्रश्न पर पहले तो उन्हें आश्चर्य हुआ, लेकिन बाद में वह हल्की हंसी में बदल गए, मानो उन्हें यह विचार बहुत मजेदार लगा हो।

‘मैं उससे प्यार करता हूँ!’ उसने दोहराया। ‘तुम्हें ऐसे सपने क्यों आते हैं?’

'उस महिला के साथ मेरी जान-पहचान में हो रही प्रगति और उसके बारे में मेरे बदलते विचारों में आपकी रुचि देखकर मुझे लगा कि शायद आप ईर्ष्या कर रहे हैं।'

वह फिर हँसा। 'ईर्ष्या! नहीं। लेकिन मुझे लगा था कि तुम एलिजा मिलवर्ड से शादी

करने वाले हो।'

‘तो फिर आपने गलत सोचा; मैं इनमें से किसी से भी शादी नहीं करने वाली हूँ — जहाँ तक मुझे पता है —’

‘तो मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि आप उन्हें अकेला छोड़ दें।’

क्या आप जेन विल्सन से शादी करने जा रहे हैं?

उसने रंग लगाया और फिर से अयाल से खेलने लगा, लेकिन जवाब दिया - 'नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता।'

‘तो बेहतर होगा कि आप उसे अकेला छोड़ दें।’

‘वह मुझे अकेला नहीं छोड़ रही,’ वह शायद कह सकता था; लेकिन वह केवल मूर्ख की तरह दिखता रहा और आधे मिनट तक कुछ नहीं बोला, फिर बातचीत का रुख मोड़ने की एक और कोशिश की; और इस बार मैंने उसे जाने दिया; क्योंकि वह बहुत कुछ सह चुका था: इस विषय पर एक और शब्द ऊंट की पीठ तोड़ने वाले आखिरी परमाणु के समान होता।

मुझे चाय के लिए देर हो गई थी; लेकिन मेरी माँ ने दयालुता से चायदानी और मफिन को चूल्हे पर गर्म रखा था, और हालाँकि उन्होंने मुझे थोड़ा डांटा, फिर भी उन्होंने मेरी माफी को आसानी से मान लिया; और जब मैंने अधिक उबली हुई चाय के स्वाद की शिकायत की, तो उन्होंने बची हुई चाय को कूड़ेदान में डाल दिया, और रोज़ को केतली में थोड़ी ताज़ी चाय डालने और केतली को फिर से उबालने के लिए कहा, जिसे बड़े हंगामे और कुछ उल्लेखनीय टिप्पणियों के साथ पूरा किया गया।

“वाह! अगर मैं होती तो मुझे चाय बिल्कुल नहीं मिलती – अगर फर्गस होता तो उसे भी जो मिलता उसी से काम चलाना पड़ता और शुक्रगुजार होने को कहा जाता, क्योंकि वह उसके लिए बहुत अच्छा होता; लेकिन तुम – हम तुम्हारे लिए ज्यादा कुछ नहीं कर सकते। हमेशा ऐसा ही होता है – अगर खाने की मेज पर कुछ खास स्वादिष्ट होता है, तो माँ मुझे आँख मारती है और इशारा करती है कि मैं उसे न खाऊँ, और अगर मैं उनकी बात नहीं मानती, तो वह फुसफुसाती है, “इतना ज्यादा मत खाओ, रोज़; गिल्बर्ट को रात के खाने में यह पसंद आएगा।” – मैं कुछ भी नहीं हूँ। बैठक में, वह कहती है, “आओ, रोज़, अपना सामान समेट लो, और कमरे को साफ-सुथरा कर लो ताकि वे अंदर न आ सकें; और आग अच्छी तरह जलाए रखना; गिल्बर्ट को अच्छी आग पसंद है।” रसोई में— “रोज़, वो पाई बड़ी बनाओ; मुझे लगता है लड़के भूखे

होंगे; और उसमें इतनी काली मिर्च मत डालना, उन्हें पसंद नहीं आएगी, मुझे पक्का यकीन है”—या, “रोज़, पुडिंग में इतने मसाले मत डालना, गिल्बर्ट को सादा पसंद है”—या, “केक में खूब किशमिश डालना, फर्गस को खूब किशमिश पसंद थी।” अगर मैं कहूँ, “माँ, मैं नहीं डालूँगी,” तो मुझे कहा जाता है कि मुझे अपने बारे में नहीं सोचना चाहिए। “जानती हो रोज़, घर के सभी मामलों में हमें सिर्फ दो बातों का ध्यान रखना होता है, पहली, क्या करना उचित है; और दूसरी, घर के पुरुषों को क्या सबसे ज़्यादा पसंद है—महिलाओं के लिए तो कुछ भी चलेगा।”

‘और यह बहुत ही बढ़िया सिद्धांत भी है,’ मेरी माँ ने कहा। ‘मुझे पूरा यकीन है कि गिल्बर्ट भी यही सोचता है।’

मैंने कहा, ‘हमारे लिए तो यह सिद्धांत बहुत सुविधाजनक है; लेकिन अगर आप सचमुच मेरी खुशी का ख्याल रखना चाहती हैं, माँ, तो आपको अपनी सुविधा और आराम का थोड़ा और ध्यान रखना होगा—जहाँ तक रोज़ की बात है, मुझे पूरा यकीन है कि वह अपना ख्याल रखेगी; और जब भी वह कोई त्याग करेगी या कोई असाधारण भक्तिपूर्ण कार्य करेगी, तो वह मुझे इसके बारे में जरूर बताएगी। लेकिन अगर रोज़ मुझे समय-समय पर जागरूक न करती, तो मैं आत्म-भोग और दूसरों की ज़रूरतों के प्रति लापरवाही की घोर स्थिति में डूब सकता था, क्योंकि मुझे हमेशा अपनी देखभाल करवाने और अपनी सभी ज़रूरतों को पहले से ही पूरा करवाने की आदत हो गई है, जबकि मुझे इस बात का बिल्कुल भी पता नहीं होता कि मेरे लिए क्या किया जा रहा है; और मैं आपकी सारी दयालुता को स्वाभाविक रूप से प्राप्त करता रहूँगा और कभी जान ही नहीं पाऊँगा कि मैं आपका कितना ऋणी हूँ।’

‘अरे! और गिलबर्ट, तुम्हें शादी से पहले कभी पता नहीं चलेगा। फिर, जब तुम्हारी शादी एलिजा मिलवर्ड जैसी तुच्छ, आत्ममुग्ध लड़की से होगी, जिसे अपने तात्कालिक सुख और लाभ के अलावा किसी और चीज़ की परवाह नहीं है, या श्रीमती ग्राहम जैसी गुमराह, हठी महिला से होगी, जो अपने मुख्य कर्तव्यों से अनभिज्ञ है, और केवल उन्हीं चीजों में चतुर है जो उसके लिए सबसे कम मायने रखती हैं — तब तुम्हें फर्क समझ आएगा।’

‘माँ, इससे मुझे फायदा होगा; मुझे इस दुनिया में सिर्फ दूसरों की अच्छी क्षमताओं और भावनाओं का उपयोग करने के लिए नहीं भेजा गया था—क्या ऐसा था?—बल्कि उनके प्रति अपनी खुद की अच्छी भावनाओं और गुणों को प्रदर्शित करने के

लिए भेजा गया था; और जब मेरी शादी होगी, तो मुझे अपनी पत्नी को खुश और आरामदायक बनाने में उससे अधिक आनंद मिलेगा, बजाय इसके कि वह मुझे खुश और आरामदायक बनाए: मैं लेने से ज्यादा देना पसंद करूंगा।'

'अरे! ये सब बकवास है, मेरे प्यारे। ये तो बस लड़कों की बातें हैं! तुम अपनी पत्नी को लाड़-प्यार करने और खुश करने से जल्द ही ऊब जाओगे, चाहे वो कितनी भी आकर्षक क्यों न हो, और फिर असली परीक्षा शुरू होगी।'

तो फिर हमें एक दूसरे का बोझ उठाना ही होगा।

तो फिर तुम दोनों को अपनी-अपनी जगह पर आ जाना चाहिए। तुम अपना काम करोगे, और वह, अगर वह तुम्हारे लायक है, तो अपना काम करेगी; लेकिन तुम्हारा काम खुद को खुश रखना है, और उसका काम तुम्हें खुश रखना है। मुझे यकीन है कि तुम्हारे प्यारे, बेचारे पिता अब तक के सबसे अच्छे पति थे, और पहले छह महीने बीत जाने के बाद, मुझे उनसे यह उम्मीद करने की बजाय कि वे मुझे खुश करने के लिए इतनी मेहनत करेंगे, यह उम्मीद करना ज्यादा आसान था कि वे भाग जाएंगे। वे हमेशा कहते थे कि मैं एक अच्छी पत्नी हूँ और अपना कर्तव्य निभाती हूँ; और वे हमेशा अपना कर्तव्य निभाते थे - भगवान उन्हें आशीर्वाद दें! - वे स्थिर और समय के पाबंद थे, बिना कारण के शायद ही कभी कोई गलती निकालते थे, मेरे अच्छे खाने का हमेशा पूरा ख्याल रखते थे, और शायद ही कभी देरी करके मेरे खाने को खराब करते थे - और यही किसी भी महिला की किसी भी पुरुष से अपेक्षा हो सकती है।

क्या ऐसा ही है, हैलफोर्ड? क्या यही आपके घरेलू गुणों की सीमा है; और क्या आपकी प्रसन्न पत्नी इससे अधिक की अपेक्षा नहीं करती?

अध्याय VII

इसके कुछ ही दिनों बाद, एक सुहावनी धूप वाली सुबह—पैरों के नीचे ज़मीन काफी

नरम थी; क्योंकि पिछली बर्फ़बारी अभी-अभी पिघली थी, झाड़ियों के नीचे ताज़ी हरी घास पर जगह-जगह बर्फ़ की पतली सी परत बची थी; लेकिन उनके बगल में ही नन्हे प्रिमरोज़ अपने नम, गहरे पत्तों के बीच से झाँक रहे थे, और ऊपर चिड़िया गर्मी, आशा, प्रेम और हर दिव्य चीज़ के गीत गा रही थी—मैं पहाड़ी पर इन सुखों का आनंद ले रहा था, और अपने मेमनों और उनकी माताओं की देखभाल कर रहा था, तभी चारों ओर नज़र घुमाते हुए मैंने नीचे घाटी से तीन लोगों को ऊपर आते देखा। वे एलिज़ा मिलवर्ड, फर्गस और रोज़ थे; इसलिए मैं उनसे मिलने के लिए खेत पार करके गया; और जब मुझे पता चला कि वे वाइल्डफेल हॉल जा रहे हैं, तो मैंने उनके साथ जाने की इच्छा जताई और एलिज़ा को अपना हाथ दिया, जिसे उसने मेरे भाई के बदले सहर्ष स्वीकार कर लिया, और उससे कहा कि वह वापस जा सकता है, क्योंकि मैं इन महिलाओं के साथ चलूँगा।

'माफ़ कीजिए!' वह बोला। 'ये महिलाएं मेरे साथ हैं, मैं नहीं। आप सबने इस अद्भुत अजनबी को देख लिया था, सिवाय मेरे, और मैं अपनी इस अज्ञानता को और सहन नहीं कर सका – चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे संतुष्ट होना ही था; इसलिए मैंने रोज़ से मेरे साथ हॉल चलने और मुझे उससे मिलवाने की विनती की। उसने कसम खाई कि वह नहीं जाएगी, जब तक कि मिस एलिज़ा भी साथ न चलें; इसलिए मैं पादरी के घर भागा और उसे ले आया; और हम पूरे रास्ते एक-दूसरे से चिपके रहे, जैसे प्रेमी जोड़े हों – और अब आपने उसे मुझसे छीन लिया है; और आप मुझे मेरी सैर और मेरी मुलाक़ात से भी वंचित करना चाहते हैं। अपने खेतों और अपने मवेशियों के पास वापस जाओ, बेवकूफ आदमी;' आप हम जैसे सज्जनों और महिलाओं के साथ रहने के लायक नहीं हैं, जिनके पास पड़ोसियों के घरों में ताक-झांक करने, उनके निजी कोनों में झाँकने, उनके रहस्यों को जानने और उनकी कमियाँ निकालने के अलावा और कोई काम नहीं है, जब वे हमें तैयार माल न मिलें - आप आनंद के ऐसे परिष्कृत स्रोतों को नहीं समझते।

'क्या आप दोनों नहीं जा सकते?' एलिजा ने भाषण के उत्तरार्ध को नजरअंदाज करते हुए सुझाव दिया।

'हाँ, दोनों ही!' रोज़ चिल्लाई; 'जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही मज़ा आएगा — और मुझे यकीन है कि हमें उस बड़े, अंधेरे, उदास कमरे में, जिसकी संकरी जालीदार खिड़कियाँ और पुराना, निराशाजनक फर्नीचर है, अपने साथ ले जाने वाली सारी

खुशियों की ज़रूरत पड़ेगी — जब तक कि वह हमें फिर से अपने स्टूडियो में न ले जाए।'

तो हम सब एक साथ चले गए; और दुबली-पतली बूढ़ी नौकरानी, जिसने दरवाजा खोला, हमें एक ऐसे कमरे में ले गई जैसा कि रोज़ ने मुझे श्रीमती ग्राहम से अपनी पहली मुलाकात के स्थान के रूप में वर्णित किया था - एक काफी विशाल और ऊँचा कमरा, लेकिन पुरानी शैली की खिड़कियों से धुंधली रोशनी आ रही थी। छत, पैनल और चिमनी काले रंग की ओक की लकड़ी से बने थे - चिमनी पर नक्काशी तो बहुत ही बारीकी से की गई थी, लेकिन वह बहुत सुरुचिपूर्ण नहीं थी - साथ ही मेज और कुर्सियाँ भी उसी के अनुरूप थीं, चिमनी के एक तरफ किताबों से भरी एक पुरानी अलमारी थी, और दूसरी तरफ एक पुराना कैबिनेट पियानो था।

महिला एक सख्त, ऊँची पीठ वाली आरामकुर्सी पर बैठी थी, उसके एक तरफ एक छोटी गोल मेज थी, जिस पर एक डेस्क और काम करने की टोकरी रखी थी, और दूसरी तरफ उसका छोटा बेटा बैठा था, जो अपनी कोहनी उसकी गोद पर टिकाए खड़ा था और उसकी गोद में रखी एक छोटी सी किताब से बड़ी धाराप्रवाह ढंग से उसे पढ़कर सुना रहा था; जबकि वह अपना हाथ उसके कंधे पर रखे हुए थी और अनमने ढंग से उसकी गोरी गर्दन पर गिरे लंबे, लहराते बालों से खेल रही थी। मुझे लगा कि वे आसपास की सभी चीजों के विपरीत एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं; लेकिन जाहिर है कि हमारे प्रवेश करते ही उनकी स्थिति तुरंत बदल गई। मैं उस दृश्य को केवल उन कुछ क्षणों के लिए ही देख सका जब राहेल ने हमारे प्रवेश के लिए दरवाजा पकड़े रखा।

मुझे नहीं लगता कि श्रीमती ग्राहम हमें देखकर विशेष रूप से प्रसन्न हुईं: उनकी शांत, सौम्य विनम्रता में कुछ अवर्णनीय शीतलता थी; लेकिन मैंने उनसे ज्यादा बात नहीं की। खिड़की के पास, समूह से थोड़ा पीछे बैठकर, मैंने आर्थर को अपने पास बुलाया, और हम तीनों, आर्थर और सांचो, बड़े आनंद से एक साथ बातचीत करने लगे, जबकि दोनों युवतियाँ उनकी माँ से हल्की-फुल्की बातें करती रहीं, और फर्गस सामने पैर मोड़कर, हाथ अपनी पैंट की जेब में डाले, कुर्सी पर पीछे की ओर झुककर बैठा रहा, कभी छत को घूरता, कभी अपनी मेज़बान की ओर सीधा देखता (जिस तरह से वह कर रहा था, उसे देखकर मेरा मन करता था कि उसे कमरे से बाहर निकाल दूं), कभी अपने पसंदीदा गाने की कोई धुन गुनगुनाता, कभी बातचीत में दखल देता, या

(जरूरत पड़ने पर) किसी मौन को किसी अभद्र प्रश्न या टिप्पणी से भर देता। एक समय ऐसा था, — ‘श्रीमती ग्राहम, मुझे आश्चर्य होता है कि आपने रहने के लिए इस तरह की जर्जर, खस्ताहाल पुरानी जगह को कैसे चुना। यदि आप पूरे घर को किराए पर लेकर उसकी मरम्मत नहीं करवा सकती थीं, तो आप एक सुंदर छोटा सा कॉटेज क्यों नहीं ले सकती थीं?’

‘शायद मैं कुछ ज्यादा ही घमंडी थी, मिस्टर फर्गस,’ उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया; ‘शायद मुझे यह रोमांटिक, पुराने ज़माने की जगह कुछ ज़्यादा ही पसंद आ गई थी — लेकिन सच में, एक कॉटेज के मुकाबले इसके कई फायदे हैं — पहली बात तो यह है कि कमरे बड़े और हवादार हैं; दूसरी बात, जो खाली कमरे हैं, जिनका किराया मैं नहीं देती, उन्हें मैं सामान रखने के लिए इस्तेमाल कर सकती हूँ, अगर मुझे उनमें कुछ रखना हो; और बारिश के दिनों में जब मेरा छोटा बेटा बाहर नहीं जा सकता, तो वह उनमें दौड़-भाग कर सकता है; और फिर उसके खेलने के लिए बगीचा है, और मेरे काम करने के लिए। आप देख सकते हैं कि मैंने पहले ही कुछ सुधार कर लिए हैं,’ उसने खिड़की की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘उस कोने में ताज़ी सब्जियों की क्यारी है, और यहाँ कुछ स्नोड्रॉप और प्रिमरोज़ खिल चुके हैं — और वहाँ भी एक पीला क्रोकस धूप में खिल रहा है।’

लेकिन फिर ऐसी स्थिति को आप कैसे सहन कर सकते हैं — आपके सबसे करीबी पड़ोसी दो मील दूर हैं, और कोई अंदर झाँकने वाला या राहगीर नहीं है? रोज़ ऐसी जगह पर बिल्कुल पागल हो जाएगी। वह तब तक जीवन नहीं जी सकती जब तक उसे दिन में आधा दर्जन नए गाउन और टोपियाँ न दिखें — अंदर के चेहरों की तो बात ही छोड़िए; लेकिन आप इन खिड़कियों पर सारा दिन देखते रह सकते हैं, और आपको एक बूढ़ी औरत भी अपने अंडे बाज़ार ले जाते हुए नहीं दिखेगी।

'मुझे यकीन नहीं है कि उस जगह का अकेलापन उसकी मुख्य खूबियों में से एक नहीं था। मुझे खिड़कियों से लोगों को आते-जाते देखना अच्छा नहीं लगता; और मुझे शांत रहना पसंद है।'

'ओह! ऐसा कहने का मतलब है कि आप चाहते हैं कि हम सब अपने-अपने काम से काम रखें और आपको अकेला छोड़ दें।'

नहीं, मुझे बहुत सारे जान-पहचान वाले लोग पसंद नहीं हैं; लेकिन अगर मेरे कुछ दोस्त हैं, तो बेशक मैं उनसे कभी-कभार मिलकर खुश होती हूँ। कोई भी हमेशा अकेले

रहकर खुश नहीं रह सकता। इसलिए, श्री फर्गस, अगर आप मेरे घर में एक दोस्त के रूप में आना चाहें, तो मैं आपका स्वागत करूँगी; अगर नहीं, तो मुझे मानना पड़ेगा कि मैं चाहूँगी कि आप दूर ही रहें।' फिर वह मुड़ी और रोज़ या एलिज़ा से कुछ कहा।

'और, श्रीमती ग्राहम,' उन्होंने पाँच मिनट बाद फिर कहा, 'आते-आते हम एक ऐसे प्रश्न पर बहस कर रहे थे जिसका उत्तर आप आसानी से दे सकती हैं, क्योंकि यह मुख्य रूप से आपसे संबंधित है — और वास्तव में, हम अक्सर आपके बारे में चर्चा करते रहते हैं; क्योंकि हममें से कुछ लोगों के पास अपने पड़ोसियों की चिंताओं पर बात करने के अलावा और कोई काम नहीं होता, और हम, इस धरती के मूल निवासी, एक-दूसरे को इतने लंबे समय से जानते हैं और इतनी बार एक-दूसरे के बारे में बात कर चुके हैं कि हम इस खेल से पूरी तरह ऊब चुके हैं; इसलिए हमारे बीच किसी अजनबी का आना हमारे मनोरंजन के समाप्त हो चुके स्रोतों में एक अमूल्य योगदान है। खैर, वह प्रश्न, या प्रश्न, जिनका उत्तर देने का आपसे अनुरोध है —'

'अपनी ज़बान बंद रखो, फर्गस!' रोज़ ने आशंका और क्रोध के आवेश में चिल्लाकर कहा।

'मैं नहीं करूँगा, मैं तुम्हें बता रहा हूँ। तुमसे जिन सवालों के जवाब देने का अनुरोध किया गया है, वे ये हैं: — पहला, तुम्हारे जन्म, वंश और पूर्व निवास के बारे में। कुछ लोग कहेंगे कि तुम विदेशी हो, और कुछ अंग्रेज़ महिला; कुछ उत्तर देश की मूल निवासी, और कुछ दक्षिण देश की; कुछ कहते हैं —'

'अच्छा, श्री फर्गस, मैं आपको बताती हूँ। मैं एक अंग्रेज़ महिला हूँ—और मुझे नहीं लगता कि किसी को इस पर संदेह होना चाहिए—और मेरा जन्म ग्रामीण इलाके में हुआ था, न तो हमारे इस खुशहाल द्वीप के सुदूर उत्तर में और न ही सुदूर दक्षिण में; और मैंने अपना अधिकांश जीवन ग्रामीण इलाके में ही बिताया है, और अब मुझे आशा है कि आप संतुष्ट हैं; क्योंकि मैं फिलहाल और कोई प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार नहीं हूँ।'

'इसको छोड़ के - '

'नहीं, अब और नहीं!' वह हंसते हुए बोली और तुरंत अपनी सीट छोड़कर उस खिड़की के पास शरण लेने लगी जहाँ मैं बैठा था, और अपने भाई के उत्पीड़न से बचने के लिए हताशा में मुझसे बातचीत शुरू करने का प्रयास किया।

'श्रीमान मार्खम,' उसने अपनी तेज़ आवाज़ और चेहरे पर उभरे गहरे रंग से उसकी

बेचैनी को स्पष्ट रूप से दर्शाते हुए कहा, 'क्या आप उस खूबसूरत समुद्री दृश्य को भूल गए हैं जिसके बारे में हम कुछ देर पहले बात कर रहे थे? मुझे लगता है कि अब मुझे आपको परेशान करना ही पड़ेगा, कृपया मुझे वहाँ जाने का सबसे नज़दीकी रास्ता बताएँ; क्योंकि अगर यह सुहावना मौसम बना रहा, तो शायद मैं वहाँ पैदल जा सकूँगी और अपना स्केच बना सकूँगी; मैंने पेंटिंग के लिए बाकी सभी विषय आज़मा लिए हैं; और मैं उसे देखने के लिए तरस रही हूँ।'

मैं उसकी बात मानने ही वाला था, लेकिन रोज़ ने मुझे आगे बढ़ने नहीं दिया।

'अरे, उसे मत बताओ, गिल्बर्ट!' वह चिल्लाई; 'वह हमारे साथ चलेगी। मुझे लगता है कि आप बे के बारे में सोच रही हैं, श्रीमती ग्राहम? यह बहुत लंबी पैदल यात्रा है, आपके लिए बहुत दूर है, और आर्थर के लिए तो बिल्कुल ही असंभव है। लेकिन हम किसी अच्छे दिन वहाँ पिकनिक मनाने जाने की सोच रहे थे; और अगर आप मौसम के सुहाना होने तक इंतजार करेंगी, तो मुझे यकीन है कि हम सभी को आपको अपने बीच पाकर बहुत खुशी होगी।'

बेचारी श्रीमती ग्राहम हताश दिखीं और बहाने बनाने की कोशिश की, लेकिन रोज़, या तो उनके अकेलेपन पर तरस खाकर या उनसे जान-पहचान बढ़ाने की चाह में, उन्हें बुलाने के लिए दृढ़ थीं; और उनकी हर आपत्ति को नज़रअंदाज़ कर दिया गया। उन्हें बताया गया कि यह एक छोटी सी पार्टी होगी, जिसमें सभी दोस्त होंगे, और सबसे अच्छा नज़ारा पाँच मील दूर स्थित चट्टानों से दिखाई देगा।

'सज्जनों के लिए बस एक अच्छी सैर,' रोज़ ने आगे कहा; 'लेकिन महिलाएं बारी-बारी से गाड़ी चलाएंगी और पैदल चलेंगी; क्योंकि हमारे पास टट्टू गाड़ी होगी, जो नन्हे आर्थर और तीन महिलाओं के साथ-साथ आपके रेखाचित्र बनाने के उपकरण और हमारे राशन को रखने के लिए काफी बड़ी होगी।'

अतः अंततः प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया गया; और प्रस्तावित भ्रमण के समय और तरीके के संबंध में कुछ और चर्चा के बाद, हम उठे और विदा ली।

लेकिन यह तो मार्च का महीना था: एक सर्द, गीला अप्रैल और मई के दो सप्ताह बीत गए, तब जाकर हम उस सुखद दृश्य, खुशनुमा माहौल, ताजी हवा, आनंद और व्यायाम की उम्मीद के साथ अपने अभियान पर निकल पड़े, जिसमें खराब सड़कों, ठंडी हवाओं या काले बादलों जैसी परेशानियाँ नहीं थीं। फिर, एक शानदार सुबह, हमने अपनी सेना को इकट्ठा किया और निकल पड़े। हमारे दल में श्रीमती और मास्टर

ग्राहम, मैरी और एलिजा मिलवर्ड, जेन और रिचर्ड विल्सन, और रोज़, फर्गस और गिल्बर्ट मार्खम शामिल थे।

श्री लॉरेंस को हमारे साथ आने का निमंत्रण दिया गया था, लेकिन उन्होंने किसी कारणवश, जो केवल उन्हीं को ज्ञात था, हमारे साथ आने से इनकार कर दिया। मैंने स्वयं उनसे यह अनुरोध किया। जब मैंने ऐसा किया, तो वे झिझके और पूछा कि कौन-कौन जा रहा है। जब मैंने बाकी लोगों के साथ मिस विल्सन का नाम लिया, तो वे जाने के लिए कुछ हद तक तैयार दिखे, लेकिन जब मैंने श्रीमती ग्राहम का नाम लिया, यह सोचकर कि शायद इससे उन्हें और प्रोत्साहन मिले, तो इसका उल्टा असर हुआ और उन्होंने पूरी तरह से मना कर दिया। सच कहूँ तो, मुझे उनका यह निर्णय बुरा नहीं लगा, हालाँकि मैं आपको यह नहीं बता सकता कि क्यों।

दोपहर के करीब हम अपनी मंज़िल पर पहुँचे। श्रीमती ग्राहम चट्टानों तक पूरा रास्ता पैदल चलकर गईं; और छोटा आर्थर भी ज़्यादातर पैदल ही चला; क्योंकि अब वह पहले की तुलना में कहीं ज़्यादा चुस्त और फुर्तीला हो गया था, और उसे अजनबियों के साथ गाड़ी में बैठना पसंद नहीं था, जबकि उसके चारों दोस्त, माँ, सांचो, श्री मार्खम और मिस मिलवर्ड, पैदल ही बहुत पीछे चल रहे थे या दूर-दराज के खेतों और गलियों से गुज़र रहे थे।

मुझे उस सैर की बहुत सुखद यादें हैं, जब मैं कठोर, सफेद, धूप से भरी सड़क पर चल रही थी, जो जगह-जगह चमकीले हरे पेड़ों से घिरी थी, और फूलों से सजी हुई थी, जिनमें से मनमोहक सुगंध वाली झाड़ियाँ थीं; या फिर सुखद खेतों और गलियों से होकर गुजर रही थी, जो मई के सुहावने मौसम में मीठे फूलों और शानदार हरियाली से सराबोर थीं। यह सच था कि एलिज़ा मेरे साथ नहीं थी; लेकिन वह अपने दोस्तों के साथ टट्टू गाड़ी में थी, और मुझे विश्वास था कि वे भी मेरी ही तरह खुश थीं; और जब हम पैदल यात्री, खेतों के बीच से होकर जाने वाले शॉर्टकट के लिए मुख्य सड़क छोड़कर आगे बढ़े, और दूर हरे-भरे पेड़ों के बीच उस छोटी सी गाड़ी को गायब होते देखा, तब भी मुझे उन पेड़ों से कोई घृणा नहीं हुई जिन्होंने मेरी प्यारी सी टोपी और शॉल को मेरी आँखों से ओझल कर दिया था, और न ही मुझे लगा कि ये सारी चीज़ें मेरी खुशी और मेरे बीच बाधा बन रही हैं; क्योंकि सच कहूँ तो, मैं श्रीमती ग्राहम की संगति में इतनी खुश थी कि मुझे एलिज़ा मिलवर्ड की अनुपस्थिति का कोई अफसोस ही नहीं था।

सच है कि पहली वाली बेहद असामाजिक थी—ऐसा लगता था मानो वह मैरी मिलवर्ड और आर्थर के अलावा किसी से बात ही नहीं करना चाहती थी। वह और मैरी आमतौर पर बच्चे को बीच में रखकर साथ-साथ यात्रा करती थीं; लेकिन जहाँ रास्ता अनुमति देता था, मैं हमेशा उनके पीछे चलता था, रिचर्ड विल्सन मिस मिलवर्ड के पीछे चलते थे, और फर्गस अपनी मर्जी से इधर-उधर घूमता रहता था; और कुछ समय बाद, वह अधिक मिलनसार हो गईं, और अंततः मैं उनका पूरा ध्यान अपनी ओर खींचने में सफल हो गया—और तब मैं सचमुच खुश था; क्योंकि जब भी वह बातचीत करने की कृपा करतीं, मुझे सुनना अच्छा लगता था। जहाँ उनके विचार और भावनाएँ मुझसे मेल खाती थीं, वहाँ उनकी असाधारण समझदारी, उनका उत्कृष्ट स्वाद और भावनाएँ मुझे प्रसन्न करती थीं; जहां हमारे बीच मतभेद थे, फिर भी उस मतभेद को स्वीकार करने या उसका बचाव करने में उसकी अडिग निडरता, उसकी लगन और उत्साह ही मुझे आकर्षित करते थे: और यहां तक कि जब वह अपने कठोर शब्दों या नजरों से, और मेरे बारे में अपने अनुचित विचारों से मुझे नाराज करती थी, तो इससे केवल मुझे खुद पर और अधिक असंतोष होता था कि मैंने उसे इतना प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है, और मैं उसकी नजरों में अपने चरित्र और स्वभाव को सही साबित करने और, यदि संभव हो तो, उसका सम्मान जीतने के लिए और अधिक उत्सुक हो जाता था।

अंततः हमारी सैर समाप्त हुई। पहाड़ियों की बढ़ती ऊँचाई और भव्यता ने कुछ समय के लिए दृश्य को बाधित कर दिया था; लेकिन एक खड़ी ढलान की चोटी पर पहुँचकर नीचे देखने पर, हमारे सामने एक खुला मैदान था - और नीला सागर हमारी दृष्टि में फूट पड़ा! - गहरा बैंगनी नीला - एकदम शांत नहीं, बल्कि चमकती लहरों से ढका हुआ - उसकी सतह पर टिमटिमाते छोटे-छोटे सफेद धब्बे, जिन्हें सबसे तेज दृष्टि से भी ऊपर तैरती छोटी-छोटी मछलियों से अलग करना मुश्किल था, जिनके सफेद पंख धूप में चमक रहे थे: केवल एक या दो जहाज दिखाई दे रहे थे, और वे भी बहुत दूर थे।

मैंने अपनी साथी की ओर देखा कि वह इस शानदार दृश्य के बारे में क्या सोचती है। उसने कुछ नहीं कहा; वह स्थिर खड़ी रही और उसकी निगाहें उस दृश्य पर टिकी रहीं, जिससे मुझे यकीन हो गया कि वह निराश नहीं थी। उसकी आँखें बहुत सुंदर थीं —पता नहीं मैंने आपको पहले बताया है या नहीं, लेकिन वे भावपूर्ण, बड़ी, स्पष्ट और

लगभग काली थीं—भूरी नहीं, बल्कि गहरे भूरे रंग की। समुद्र से एक ठंडी, स्फूर्तिदायक हवा बह रही थी—नरम, शुद्ध, सुखदायक: इसने उसके लहराते बालों को फड़फड़ाया और उसके आमतौर पर फीके होंठों और गालों को एक जीवंत रंग दिया। उसने भी इसका उत्साहवर्धक प्रभाव महसूस किया, और मैंने भी—मैंने इसे अपने शरीर में झनझनाहट के रूप में महसूस किया, लेकिन जब तक वह इतनी शांत रही, मैंने खुद को इसके आगे झुकने नहीं दिया। उसके चेहरे पर एक दबी हुई खुशी थी, जो उसकी नज़रें मिलते ही एक उदात्त, प्रसन्न बुद्धि की मुस्कान में बदल गई। वह पहले कभी इतनी सुंदर नहीं दिखी थी: मेरा दिल पहले कभी उससे इतना गहराई से नहीं जुड़ा था जितना अब। अगर हमें वहाँ दो मिनट और अकेले खड़े रहना पड़ता, तो उसके परिणामों के लिए मैं कुछ नहीं कह सकता। सौभाग्य से, मेरी समझदारी के लिए, और शायद दिन के शेष समय के मेरे आनंद के लिए भी, हमें जल्दी ही भोजन के लिए बुलाया गया - एक बहुत ही शानदार भोज, जिसे रोज़ ने मिस विल्सन और एलिज़ा की सहायता से, जो गाड़ी में उसके साथ ही बैठी थीं और बाकियों से थोड़ा पहले उसके साथ पहुँच गई थीं, समुद्र के किनारे बने एक ऊँचे चबूतरे पर परोसा था, जो एक ढलान वाली चट्टान और लटकते पेड़ों से चिलचिलाती धूप से सुरक्षित था।

श्रीमती ग्राहम मुझसे कुछ दूरी पर बैठ गईं। एलिज़ा मेरी सबसे नज़दीकी पड़ोसी थीं। उन्होंने अपने सौम्य और सहज स्वभाव से सबको प्रसन्न करने का प्रयास किया, और निःसंदेह, अगर मैं उन्हें महसूस कर पाता, तो वह पहले की तरह ही आकर्षक और मनमोहक थीं। लेकिन जल्द ही मेरा दिल उनके प्रति फिर से नरम पड़ने लगा; और जहाँ तक मेरी नज़र में संभव हो, पूरे लंबे सामाजिक भोज के दौरान हम सब बहुत प्रसन्न और आनंदित थे।

जब यह सब समाप्त हो गया, तो रोज़ ने फर्गस को बुलाया ताकि वह टूटे हुए टुकड़ों, चाकू, बर्तन आदि को इकट्ठा करने और उन्हें टोकरियों में वापस रखने में उसकी मदद करे; और श्रीमती ग्राहम ने अपना कैंप-स्टूल और ड्राइंग का सामान लिया; और मिस मिलवर्ड से अपने प्यारे बेटे की देखभाल करने का अनुरोध करके, और उसे सख्ती से हिदायत देकर कि वह अपने नए अभिभावक के पास से न भटके, वह हमें छोड़कर खड़ी, पथरीली पहाड़ी पर आगे बढ़ी, कुछ दूरी पर एक ऊँची, अधिक खड़ी पहाड़ी की ओर, जहाँ से और भी सुंदर दृश्य दिखाई देता था, जहाँ उसने अपना स्केच बनाना बेहतर समझा, हालाँकि कुछ महिलाओं ने उसे बताया कि वह एक

भयानक जगह है, और उसे वहाँ जाने की कोशिश न करने की सलाह दी।

जब वह चली गई, तो मुझे ऐसा लगा मानो अब कोई मज़ा नहीं बचा हो—हालाँकि यह कहना मुश्किल है कि पार्टी की रौनक में उसका क्या योगदान था। उसके होंठों से कोई चुटकुला नहीं निकला, न ही बहुत कम हँसी; लेकिन उसकी मुस्कान ने मेरी खुशी को और बढ़ा दिया था; उसकी एक पैनी नज़र या एक खुशनुमा शब्द ने अनजाने में ही मेरी बुद्धि को तेज़ कर दिया था, और बाकी लोगों के हर काम और बात में दिलचस्पी पैदा कर दी थी। यहाँ तक कि एलिज़ा के साथ मेरी बातचीत भी उसकी मौजूदगी से जीवंत हो उठी थी, हालाँकि मुझे इसका एहसास नहीं था; और अब जब वह चली गई थी, तो एलिज़ा की चंचल बातें मुझे अब मज़ेदार नहीं लग रही थीं—बल्कि, मेरी आत्मा को थका देने वाली लगने लगी थीं, और मैं उसे हँसाने से थक गया था: मैं खुद को उस दूर के बिंदु की ओर खिंचा चला जा रहा था जहाँ वह सुंदर कलाकार बैठी अपना एकांत काम कर रही थी—और मैंने इसका विरोध करने की कोशिश भी नहीं की: जब मेरी छोटी पड़ोसी मिस विल्सन से कुछ बातें कर रही थी, मैं उठा और चालाकी से वहाँ से निकल गया। कुछ तेज़ कदमों और थोड़ी सी सक्रिय चढ़ाई के बाद, मैं जल्द ही उस जगह पर पहुँच गया जहाँ वह बैठी थी - चट्टान के बिल्कुल किनारे पर एक संकरी चट्टानी पट्टी, जो एक खड़ी, खतरनाक ढलान के साथ सीधे चट्टानी तट तक उतरती थी।

उसे मेरे आने की आहट नहीं सुनाई दी: मेरे साये के उसके कागज पर पड़ने से वह एकदम चौंक गई; और उसने जल्दी से पीछे मुड़कर देखा - मेरी जान-पहचान की कोई भी दूसरी महिला इस तरह के अचानक खतरे में चीख पड़ती।

'अरे! मुझे पता ही नहीं था कि आप हैं। आपने मुझे इतना चौंका क्यों दिया?' उसने कुछ चिड़चिड़ेपन से कहा। 'मुझे बिल्कुल पसंद नहीं कि कोई अचानक मेरे सामने आ जाए।'

मैंने कहा, 'अरे, तुमने मुझे क्या समझ लिया? अगर मुझे पता होता कि तुम इतने घबराए हुए हो, तो मैं और सावधान रहता; लेकिन—'

'खैर, कोई बात नहीं। आप यहाँ किसलिए आए हैं? क्या वे सब आ रहे हैं?'

नहीं; यह छोटी सी चट्टान उन सभी को समाहित करने में शायद ही सक्षम हो।

मुझे खुशी है, क्योंकि मैं बोलते-बोलते थक गया हूँ।

'ठीक है, तो मैं कुछ नहीं बोलूंगा। मैं बस बैठकर तुम्हारी ड्राइंग देखूंगा।'

'अरे, लेकिन तुम्हें पता है कि मुझे यह पसंद नहीं है।'

'तो मैं इस शानदार दृश्य की प्रशंसा करके ही संतुष्ट हो जाऊंगा।'

उन्होंने इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई; और कुछ देर तक चुपचाप रेखाचित्र बनाती रहीं। लेकिन मैं बार-बार अपने पैरों के सामने के शानदार दृश्य से नज़र हटाकर पेंसिल पकड़े हुए उस सुंदर सफेद हाथ और कागज़ पर लटकती उसकी आकर्षक गर्दन और चमकदार काले बालों पर नज़र डालने से खुद को रोक नहीं पाई।

मैंने सोचा, 'अगर मेरे पास सिर्फ एक पेंसिल और कागज का एक टुकड़ा होता, तो मैं उसकी रेखाचित्र से भी अधिक सुंदर रेखाचित्र बना सकता था, बशर्ते कि मुझमें सामने मौजूद चीज को ईमानदारी से चित्रित करने की क्षमता हो।'

लेकिन, हालांकि मुझे यह संतुष्टि नहीं मिली, मैं उसके बगल में वहीं बैठे रहने और कुछ न कहने से ही पूरी तरह संतुष्ट था।

'क्या आप अभी भी यहीं हैं, श्रीमान मार्खम?' उसने अंततः मेरी ओर देखते हुए कहा—क्योंकि मैं चट्टान के एक काईदार उभार पर थोड़ा पीछे बैठा था। 'आप क्यों नहीं जाकर अपने दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करते?'

क्योंकि मैं भी तुम्हारी तरह उनसे थक चुका हूँ; और कल या कभी भी उनसे मेरा मन भर जाएगा; लेकिन तुम्हें दोबारा देखने का सुख मुझे न जाने कितने समय तक न मिले।

जब आप वहां से आए तो आर्थर क्या कर रहा था?

'वह मिस मिलवर्ड के साथ था, जहाँ आपने उसे छोड़ा था—ठीक है, लेकिन उम्मीद है कि माँ ज़्यादा देर तक दूर नहीं रहेंगी। वैसे, आपने उसे मेरे भरोसे नहीं छोड़ा,' मैंने बड़बड़ाते हुए कहा, 'हालांकि मुझे उससे कहीं ज़्यादा समय से जान-पहचान थी; लेकिन मिस मिलवर्ड बच्चों को मनाने और उनका मनोरंजन करने में माहिर हैं,' मैंने लापरवाही से कहा, 'अगर और किसी काम की न भी हों तो।'

'मिस मिलवर्ड में कई प्रशंसनीय गुण हैं, जिन्हें आप जैसे लोग न तो समझ सकते हैं और न ही सराह सकते हैं। क्या आप आर्थर को बता देंगे कि मैं कुछ ही मिनटों में आ जाऊंगी?'

'यदि ऐसा है, तो मैं आपकी अनुमति से उन कुछ मिनटों के बीतने तक प्रतीक्षा करूंगा; और फिर मैं इस कठिन रास्ते से नीचे उतरने में आपकी सहायता कर सकता हूं।'

'धन्यवाद - ऐसे अवसरों पर मैं बिना किसी सहायता के ही सबसे अच्छा काम कर पाती हूं।'

लेकिन, कम से कम मैं तुम्हारा स्टूल और स्केचबुक तो उठा सकता हूँ।

उन्होंने मुझे यह सुविधा देने से मना नहीं किया; लेकिन मुझे उनकी मुझसे छुटकारा पाने की स्पष्ट इच्छा से थोड़ी ठेस पहुंची और मैं अपनी ज़िद पर पछतावा करने लगा था, तभी उन्होंने अपनी ड्राइंग के एक संदिग्ध विषय पर मेरी राय और विवेक जानने की कोशिश करके मुझे कुछ हद तक शांत किया। सौभाग्य से, मेरी राय उन्हें पसंद आई और मैंने जो सुधार सुझाया, उसे बिना किसी संकोच के अपना लिया गया।

उसने कहा, 'मैंने अक्सर व्यर्थ ही किसी दूसरे के विवेक का सहारा लेने की कामना की है, जब मैं मुश्किल से अपनी ही आंख और दिमाग की दिशा पर भरोसा कर पाती थी, क्योंकि वे इतने लंबे समय तक एक ही वस्तु के चिंतन में लगे रहते थे कि उसके बारे में उचित विचार बनाने में लगभग असमर्थ हो जाते थे।'

मैंने उत्तर दिया, ‘यह तो उन अनेक बुराइयों में से एक है जिनसे एकांत जीवन हमें अवगत कराता है।’

'सच है,' उसने कहा; और हम फिर से चुप हो गए।

हालांकि, लगभग दो मिनट बाद, उसने अपने स्केच को पूरा घोषित कर दिया और किताब बंद कर दी।

भोजन स्थल पर लौटने पर हमने पाया कि तीन लोगों को छोड़कर बाकी सभी लोग जा चुके थे - मैरी मिलवर्ड, रिचर्ड विल्सन और आर्थर ग्राहम। युवा सज्जन महिला की गोद में सिर रखकर गहरी नींद में सो रहे थे; दूसरे उनके बगल में किसी प्रसिद्ध लेखक की छोटी सी किताब हाथ में लिए बैठे थे। वे अपने खाली समय को सँवारने के लिए ऐसे साथी के बिना कहीं नहीं जाते थे: अध्ययन में बिताए समय या जीवन निर्वाह के लिए शारीरिक रूप से आवश्यक परिश्रम के अलावा उनका सारा समय व्यर्थ लगता था। अब भी वे उस शुद्ध हवा और सुहावनी धूप का आनंद नहीं ले पा रहे थे - उस शानदार दृश्य का, और उन सुखदायक ध्वनियों का, लहरों के संगीत का, और ऊपर छायादार पेड़ों में बहती कोमल हवा का - यहाँ तक कि अपने बगल में एक महिला के होते हुए भी (हालाँकि वह बहुत आकर्षक नहीं थी, मैं मानती हूँ) - उन्हें अपनी किताब निकालनी ही थी, और अपने संयमित भोजन को पचाते हुए और अपने थके हुए अंगों को आराम देते हुए, जो इतने व्यायाम के आदी नहीं थे, अपने समय का सदुपयोग

करना ही था।

हालांकि, शायद वह कभी-कभार अपनी साथी से एक शब्द या एक नज़र का आदान-प्रदान करने के लिए समय निकाल लेता था - किसी भी हालत में, वह उसके व्यवहार से बिल्कुल भी नाराज़ नहीं दिखी; क्योंकि उसके साधारण चेहरे पर एक असामान्य प्रसन्नता और शांति का भाव था, और जब हम पहुंचे तो वह बड़े संतोष के साथ उसके पीले, विचारशील चेहरे को देख रही थी।

घर वापसी का सफर दिन के पहले हिस्से जितना सुखद नहीं था: क्योंकि अब श्रीमती ग्राहम गाड़ी में थीं और एलिज़ा मिलवर्ड मेरी साथी थीं। उन्होंने देखा कि मुझे उस युवा विधवा में ज़्यादा रुचि थी और ज़ाहिर तौर पर उन्हें उपेक्षित महसूस हो रहा था। उन्होंने अपनी नाराज़गी तीखी फटकार, कड़वे व्यंग्य या रूठे हुए मौन से ज़ाहिर नहीं की - इनमें से कोई भी या सभी बातें मैं आसानी से सहन कर सकता था या हल्के से हंसकर टाल सकता था; लेकिन उन्होंने इसे एक तरह की कोमल उदासी, एक हल्की, निंदा भरी मायूसी से दिखाया जिसने मेरे दिल को चोट पहुँचाई। मैंने उन्हें खुश करने की कोशिश की और सैर खत्म होने से पहले कुछ हद तक सफल भी हुआ; लेकिन ऐसा करते ही मेरा अंतरात्मा मुझे धिक्कारने लगा, क्योंकि मैं जानता था कि देर-सवेर यह रिश्ता टूटना ही है और यह केवल झूठी उम्मीदों को पाल रहा था और बुरे दिन को टाल रहा था।

जब टट्टू गाड़ी वाइल्डफेल हॉल के जितना करीब पहुँच सकती थी, पहुँच गई — सिवाय उस लंबी, ऊबड़-खाबड़ गली के, जिसकी श्रीमती ग्राहम ने बिल्कुल अनुमति नहीं दी — तो युवा विधवा और उसका बेटा गाड़ी से उतर गए और ड्राइवर की सीट रोज़ को दे दी; और मैंने एलिज़ा को उसकी जगह बैठने के लिए मना लिया। उसे आराम से बिठाने के बाद, मैंने उसे शाम की हवा का ध्यान रखने को कहा और उसे शुभ रात्रि की शुभकामना दी। मुझे काफी राहत मिली और मैं श्रीमती ग्राहम को उनका सामान खेतों तक ले जाने में मदद करने के लिए जल्दी से आगे बढ़ा, लेकिन वह पहले ही अपनी कुर्सी बांह पर टांग चुकी थीं और अपना स्केच-बुक हाथ में ले चुकी थीं, और बाकी लोगों के साथ मुझे वहीं विदा करने पर अड़ी रहीं। लेकिन इस बार उन्होंने मेरी मदद को इतने विनम्र और दोस्ताना तरीके से ठुकरा दिया कि मैंने लगभग उन्हें माफ कर दिया।

अध्याय आठ

छह सप्ताह बीत चुके थे। जून के अंत के आसपास एक शानदार सुबह थी। अधिकांश घास कट चुकी थी, लेकिन पिछला सप्ताह बहुत प्रतिकूल रहा था; और अब जब अंततः अच्छा मौसम आ गया था, तो इसका पूरा लाभ उठाने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर, मैंने सभी मजदूरों को घास के खेत में इकट्ठा किया था, और मैं खुद भी उनके बीच में, अपनी कमीज की आस्तीनों में, सिर पर एक हल्की, छायादार भूसे की टोपी पहने, गीली, महकती घास के गट्ठे तोड़कर, उन्हें आसमान की ओर झाड़ रहा था, नौकरों और मजदूरों की एक अच्छी-खासी कतार के आगे-आगे चल रहा था - सुबह से रात तक, उतनी ही लगन और परिश्रम से काम करने का इरादा था जितना मैं उनमें से किसी से भी उम्मीद कर सकता था, ताकि अपने परिश्रम से काम को सफल बना सकूं और अपने उदाहरण से मजदूरों को प्रेरित कर सकूं - तभी अचानक! मेरे सारे संकल्प पल भर में धराशायी हो गए, जब मेरा भाई दौड़कर मेरे पास आया और मेरे हाथ में लंदन से आया एक छोटा सा पार्सल थमा दिया, जिसका मैं काफी समय से इंतज़ार कर रहा था। मैंने पार्सल का कवर फाड़ा और अंदर 'मार्मियन' का एक सुंदर और पोर्टेबल संस्करण देखा।

'मुझे लगता है कि मैं जानता हूँ कि यह किसके लिए है,' फर्गस ने कहा, जो मुझे संतुष्ट भाव से किताब का अध्ययन करते हुए देखता रहा। 'यह मिस एलिजा के लिए है।'

उन्होंने यह बात इतने असाधारण ज्ञान से भरे लहजे और हावभाव के साथ कही कि मुझे उनका खंडन करने में खुशी हुई।

'तुम गलत हो, मेरे बच्चे,' मैंने कहा; और अपना कोट उठाकर, किताब को उसकी एक जेब में रख दिया, और फिर उसे पहन लिया (यानी कोट को)। 'अब इधर आओ, निकम्मे कुत्ते, और एक बार तो काम कर दिखाओ,' मैंने आगे कहा। 'अपना कोट

उतारो, और मेरे वापस आने तक खेत में मेरी जगह ले लो।'

'जब तक तुम वापस नहीं आते? — और तुम कहाँ जा रहे हो, बताओ ना?' 'कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम कहाँ जाओगे — तुम्हें बस समय से मतलब है; — और मैं कम से कम रात के खाने तक तो वापस आ जाऊँगा।'

'अरे बाप रे! और तब तक मुझे मेहनत करनी पड़ेगी, है ना? और इन सबको भी काम में लगाए रखना पड़ेगा? वाह वाह! मैं मान जाता हूँ – कम से कम एक बार तो। – आओ, मेरे साथियों, तैयार हो जाओ: मैं तुम्हारी मदद करने आया हूँ: – और उस आदमी या औरत का बुरा हाल होगा जो तुम्हारे बीच एक पल के लिए भी रुकेगा – चाहे इधर-उधर देखने के लिए, सिर खुजलाने के लिए, या नाक पोंछने के लिए – कोई बहाना नहीं चलेगा – बस पसीना बहाकर काम करो, काम करो, काम करो,' इत्यादि।

उन्हें इस प्रकार लोगों को संबोधित करते हुए छोड़कर, जो उनके लिए ज्ञानवर्धक होने के बजाय मनोरंजन का साधन अधिक था, मैं घर लौट आया और अपने वस्त्रों में कुछ बदलाव करके, पुस्तक को अपनी जेब में लेकर वाइल्डफेल हॉल की ओर चल पड़ा; क्योंकि यह श्रीमती ग्राहम की अलमारियों के लिए थी।

'क्या! तो फिर तुम दोनों के बीच इतनी अच्छी बनती थी कि तुम एक-दूसरे को उपहार देने और लेने लगे?' — बिलकुल नहीं, दोस्त; यह उस क्षेत्र में मेरा पहला प्रयोग था; और मैं इसका परिणाम देखने के लिए बहुत उत्सुक था।

खाड़ी की सैर के बाद से हम कई बार मिल चुके थे, और मैंने पाया कि अगर मैं अपनी बातचीत को अमूर्त विषयों या सामान्य रुचि के विषयों तक सीमित रखता, तो वह मेरी संगति से परहेज नहीं करती थी; जैसे ही मैं भावुकतापूर्ण या प्रशंसात्मक बातें करता, या शब्दों या नज़र से थोड़ी सी भी कोमलता दिखाता, मुझे न केवल उस समय उसके व्यवहार में तत्काल बदलाव का सामना करना पड़ता, बल्कि अगली बार जब मैं उसकी संगति चाहता, तो वह और भी ठंडी और दूर हो जाती, या कहें तो पूरी तरह से पहुंच से बाहर हो जाती। हालाँकि, इस बात से मैं बहुत विचलित नहीं हुआ, क्योंकि मैंने इसे अपने प्रति किसी नापसंदगी से नहीं, बल्कि हमारी जान-पहचान से पहले ही दूसरी शादी न करने के उसके पक्के इरादे से जोड़ा, चाहे वह उसके दिवंगत पति के प्रति अत्यधिक स्नेह के कारण हो, या इसलिए कि वह उससे और वैवाहिक जीवन से तंग आ चुकी थी। वास्तव में, शुरू में तो ऐसा लगता था कि उसे मेरे घमंड को ठेस पहुँचाने और मेरे अहंकार को कुचलने में आनंद आता था - जैसे ही कोई कली फूटने

की हिम्मत करती, वह उसे बेरहमी से कुचल देती थी; और फिर, मैं स्वीकार करता हूँ, मुझे गहरा आघात पहुँचा, हालाँकि साथ ही साथ बदला लेने की प्रेरणा भी मिली; लेकिन बाद में जब उसे यह पक्का पता चल गया कि मैं वह भोला-भाला घमंडी नहीं था जैसा उसने पहले सोचा था, तो उसने मेरे विनम्र प्रस्तावों को बिल्कुल अलग भाव से ठुकरा दिया। यह एक प्रकार की गंभीर, लगभग दुखभरी नाराज़गी थी, जिसे मैंने जल्द ही सावधानी से ज़ाहिर न करना सीख लिया।

मैंने सोचा, ‘पहले मुझे एक मित्र के रूप में अपनी स्थिति स्थापित करने दो – उसके बेटे का संरक्षक और खेल साथी, उसका एक गंभीर, भरोसेमंद और स्पष्टवादी मित्र, और फिर, जब मैं उसके जीवन में सुख और आनंद के लिए खुद को पूरी तरह से आवश्यक बना लूंगा (जैसा कि मुझे विश्वास है कि मैं कर सकता हूं), तब हम देखेंगे कि आगे क्या किया जा सकता है।’

तो हमने चित्रकला, कविता, संगीत, धर्मशास्त्र, भूविज्ञान और दर्शनशास्त्र पर बातें कीं: एक-दो बार मैंने उसे एक किताब उधार दी, और एक बार उसने बदले में मुझे एक किताब दी: मैं उससे उसकी सैर के दौरान जितनी बार हो सके मिलती थी; मैं उसके घर जितनी बार हिम्मत करती थी, जाती थी। उसके घर में जाने का मेरा पहला बहाना था आर्थर के लिए एक छोटा सा पिल्ला लाना, जिसका पिता सांचो था, और जिसे देखकर बच्चा बहुत खुश हुआ, और इसलिए उसकी माँ को भी बहुत प्रसन्न होना था। दूसरा बहाना था उसके लिए एक किताब लाना, जिसे उसकी माँ की पसंद को जानते हुए मैंने ध्यान से चुना था, और उसे देने से पहले मैंने उसकी स्वीकृति ली थी। फिर, मैं अपनी बहन के नाम पर उसके बगीचे के लिए कुछ पौधे लाई - मैंने पहले ही रोज़ को उन्हें भेजने के लिए मना लिया था। इन सभी मौकों पर मैंने उस चित्र के बारे में पूछा जो वह चट्टान पर लिए गए रेखाचित्र से बना रही थी, और मुझे स्टूडियो में जाने दिया गया, और मैंने उसकी प्रगति के बारे में अपनी राय या सलाह पूछी।

मेरी पिछली मुलाक़ात उन्हें उधार दी गई किताब लौटाने के लिए थी; और तब सर वाल्टर स्कॉट की कविताओं पर बातचीत के दौरान, उन्होंने 'मार्मियन' देखने की इच्छा ज़ाहिर की थी, और मैंने उन्हें वह किताब उपहार में देने का दुस्साहसी विचार किया, और घर लौटते ही मैंने तुरंत वह सुंदर सी छोटी किताब मंगवा ली जो मुझे आज सुबह मिली थी। लेकिन आश्रम में आने के लिए माफ़ी माँगना ज़रूरी था; इसलिए मैंने आर्थर के छोटे कुत्ते के लिए एक नीले रंग का मोरक्को का कॉलर भी ले लिया था; और जब

मैंने वह कॉलर दिया और पाया, तो पाने वाले ने उपहार की कीमत या देने वाले के स्वार्थी इरादे से कहीं ज़्यादा खुशी और कृतज्ञता दिखाई, तो मैंने श्रीमती ग्राहम से एक बार फिर उस तस्वीर को देखने का अनुरोध किया, अगर वह अभी भी वहाँ हो।

‘ओह, जी हाँ! अंदर आइए,’ उसने कहा (क्योंकि मैं उनसे बगीचे में मिली थी)। ‘यह बनकर तैयार हो गया है और फ्रेम भी बन चुका है, भेजने के लिए बिल्कुल तैयार है; लेकिन मुझे अपनी अंतिम राय दीजिए, और यदि आप कोई और सुधार सुझा सकते हैं, तो उस पर कम से कम गंभीरता से विचार किया जाएगा।’

वह तस्वीर बेहद खूबसूरत थी; मानो जादू से वही दृश्य कैनवास पर उतर आया हो; लेकिन मैंने अपनी प्रशंसा संयमित शब्दों में और कम शब्दों में व्यक्त की, कहीं वह नाराज़ न हो जाए। फिर भी, वह ध्यान से मेरी ओर देखती रही, और मेरी आँखों में मेरी हार्दिक प्रशंसा देखकर उसके कलाकार होने का गर्व निस्संदेह संतुष्ट हुआ। लेकिन, जब मैं उसे निहार रहा था, तो मैंने किताब के बारे में सोचा और सोचने लगा कि इसे कैसे भेंट किया जाए। मेरा दिल बैठ गया; लेकिन मैंने ठान लिया कि मैं बिना कोशिश किए वापस नहीं लौटूँगा। अवसर की प्रतीक्षा करना व्यर्थ था, और उस अवसर के लिए भाषण गढ़ने की कोशिश करना भी व्यर्थ था। मैंने सोचा कि जितना सरल और स्वाभाविक तरीके से किया जाए, उतना ही अच्छा है; इसलिए मैंने हिम्मत जुटाने के लिए खिड़की से बाहर देखा, और फिर किताब निकाली, मुड़ा और उसे उसके हाथ में देते हुए संक्षेप में यह कहा:

'श्रीमती ग्राहम, आप 'मार्मियन' देखना चाहती थीं; और यह रही, यदि आप इसे लेने की कृपा करें।'

उसके चेहरे पर क्षण भर के लिए शर्मिंदगी छा गई—शायद, प्रस्तुति के ऐसे अटपटे अंदाज़ के लिए सहानुभूतिपूर्ण शर्मिंदगी की शर्मिंदगी: उसने गंभीरता से पुस्तक के दोनों ओर का निरीक्षण किया; फिर चुपचाप पन्ने पलटे, गंभीर चिंतन में अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए; फिर पुस्तक बंद की, और उससे मुड़कर मेरी ओर देखते हुए, चुपचाप उसकी कीमत पूछी—मुझे लगा जैसे मेरे चेहरे पर खून का दौरा तेज़ हो गया हो।

‘मुझे खेद है कि मैंने आपको नाराज किया, श्रीमान मार्खम,’ उसने कहा, ‘लेकिन जब तक मैं किताब के पैसे नहीं चुका दूंगी, मैं इसे नहीं ले जा सकती।’ और उसने किताब मेज पर रख दी।

‘आप ऐसा क्यों नहीं कर सकते?’

‘क्योंकि,’ — वह रुकी और कालीन की ओर देखने लगी।

मैंने चिढ़कर दोहराया, 'तुम क्यों नहीं कर सकती?' यह सुनकर वह चौंक गई और उसने अपनी आँखें उठाकर मेरी ओर सीधे देखा।

क्योंकि मैं खुद को ऐसे दायित्वों के अधीन नहीं करना चाहता जिनका मैं कभी प्रतिफल न दे सकूं - मैं आपके द्वारा मेरे बेटे के प्रति दिखाई गई दयालुता के लिए पहले से ही आपका आभारी हूं; लेकिन उसका कृतज्ञ स्नेह और आपकी अपनी नेक भावनाएं आपको इसका प्रतिफल अवश्य देंगी।

‘बकवास!’ मैंने कहा।

उसने एक बार फिर मेरी ओर देखा, शांत और गंभीर आश्चर्य भरी नज़र से, जिसका प्रभाव एक फटकार जैसा था, चाहे उसका इरादा ऐसा हो या न हो।

‘तो फिर तुम किताब नहीं लोगे?’ मैंने पहले की तुलना में अधिक सौम्य स्वर में पूछा।

‘मैं इसे सहर्ष स्वीकार कर लूँगी, बशर्ते आप मुझे इसका भुगतान करने दें।’ मैंने उसे सटीक कीमत और गाड़ी का किराया भी यथासंभव शांत स्वर में बताया—क्योंकि वास्तव में मैं निराशा और झुंझलाहट से रोने को तैयार थी।

उसने अपना पर्स निकाला और बड़ी सहजता से पैसे गिने, लेकिन मेरे हाथ में देने में हिचकिचाई। मुझे ध्यान से देखते हुए, कोमल स्वर में उसने कहा, “श्री मार्खम, आपको लगता है कि आपका अपमान हुआ है – काश मैं आपको समझा पाती कि – कि मैं –”

मैंने कहा, ‘मैं आपकी बात पूरी तरह समझता हूँ। आपको लगता है कि अगर आप मुझसे यह मामूली सी चीज़ अभी ले लें, तो मैं भविष्य में इसका फायदा उठाऊँगा; लेकिन आप गलत हैं: अगर आप इसे लेकर मुझ पर एहसान करेंगे, तो यकीन मानिए, मैं इस पर कोई उम्मीद नहीं रखूँगा और इसे भविष्य में एहसान पाने का कोई संकेत नहीं मानूँगा: और यह कहना सरासर बेवकूफी है कि आप मुझ पर एहसानमंद हो रहे हैं, जबकि आप जानते हैं कि ऐसी स्थिति में एहसान पूरी तरह से मेरा है, और एहसान आपका।’

‘ठीक है, तो मैं आपकी बात मान लेती हूँ,’ उसने एक बेहद मासूम सी मुस्कान के साथ जवाब दिया और उस घिनौने पैसे को अपने पर्स में वापस रख लिया — ‘लेकिन याद रखना!’

मैंने हाथ बढ़ाते हुए विदा लेते हुए कहा, 'मैं अपनी कही हुई बातें याद रखूंगा; लेकिन मेरी धृष्टता के लिए मुझसे अपनी मित्रता पूरी तरह से न तोड़ें, या मुझसे यह अपेक्षा न करें कि मैं पहले से भी अधिक दूर रहकर इसका प्रायश्चित करूं।' मैं इतना उत्तेजित था कि वहां रुकना मेरे लिए संभव नहीं था।

"अच्छा, तो फिर! चलो पहले जैसे ही रहें," उसने बेझिझक अपना हाथ मेरे हाथ में रखते हुए जवाब दिया; और जब तक मैंने उसका हाथ वहाँ थामे रखा, मुझे उसे अपने होठों से लगाने से रोकना मुश्किल हो रहा था; — लेकिन ऐसा करना आत्मघाती पागलपन होता: मैं पहले ही बहुत साहसी हो चुका था, और यह समय से पहले की पेशकश मेरी उम्मीदों को लगभग अंतिम झटका दे चुकी थी।

मेरा दिल और दिमाग बेचैन और जल रहा था, मैं दोपहर की चिलचिलाती धूप की परवाह किए बिना घर की ओर भागा— मैं उसे छोड़कर बाकी सब कुछ भूल चुका था — मुझे उसकी रहस्यमयी प्रकृति और अपनी जल्दबाजी और सूझबूझ की कमी के अलावा किसी बात का पछतावा नहीं था— मुझे उसके घृणित संकल्प और उसे पार करने में अपनी असमर्थता के अलावा किसी बात का डर नहीं था— मुझे बस यही उम्मीद थी— मैं रुक गया— मैं आपको अपनी परस्पर विरोधी आशाओं और आशंकाओं— अपने गंभीर चिंतन और संकल्पों से उबाऊ नहीं बनाऊंगा।

अध्याय 9

हालांकि अब एलिज़ा मिलवर्ड से मेरा लगाव काफी हद तक कम हो चुका था, फिर भी मैंने पादरी के घर जाना पूरी तरह से नहीं छोड़ा था, क्योंकि मैं उन्हें सहजता से विदा करना चाहता था; बिना ज्यादा दुख या नाराजगी पैदा किए, और न ही खुद को पूरे इलाके में चर्चा का विषय बनाए रखना चाहता था; और इसके अलावा, अगर मैं पूरी तरह से दूर रहता, तो पादरी, जो मेरी मुलाकातों को मुख्य रूप से, या लगभग पूरी

तरह से, अपने लिए ही मानते थे, मेरी उपेक्षा से बहुत अपमानित महसूस करते। लेकिन श्रीमती ग्राहम से मुलाकात के अगले दिन जब मैं वहां गया, तो संयोग से वे घर पर नहीं थे - यह बात अब मुझे पहले की तरह बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी। यह सच है कि मिस मिलवर्ड वहां थीं, लेकिन जाहिर है, उनकी मौजूदगी नगण्य ही थी। फिर भी, मैंने अपनी मुलाकात को संक्षिप्त रखने और एलिज़ा से भाईचारे और दोस्ताना तरीके से बात करने का फैसला किया, जैसा कि हमारी लंबी जान-पहचान के कारण संभव था, और मुझे लगा कि इससे न तो उन्हें ठेस पहुंचेगी और न ही झूठी उम्मीदें बढ़ेंगी।

श्रीमती ग्राहम के बारे में न तो उनसे और न ही किसी और से बात करना मेरी कभी आदत नहीं थी; लेकिन मुझे बैठे हुए तीन मिनट भी नहीं हुए थे कि उन्होंने उस महिला को खुद ही एक उल्लेखनीय तरीके से चर्चा के लिए कालीन पर बुला लिया।

‘ओह, श्रीमान मार्खम!’ उसने सदमे भरे भाव और लगभग फुसफुसाती हुई आवाज में कहा, ‘श्रीमती ग्राहम के बारे में इन चौंकाने वाली खबरों के बारे में आपका क्या विचार है? क्या आप हमें इन पर अविश्वास करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं?’

‘कौन सी रिपोर्टें?’

‘अरे, अब पता चला!’ उसने शरारती मुस्कान के साथ सिर हिलाया।

‘मुझे उनके बारे में कुछ नहीं पता। एलिजा, तुम्हारा मतलब क्या है?’

‘अरे, मुझसे मत पूछो! मैं इसे समझा नहीं सकती।’ उसने कैम्ब्रिक का रूमाल उठाया जिसे वह गहरे लेस बॉर्डर से सजा रही थी, और बहुत तेज़ी से काम करने लगी।

‘क्या बात है, मिस मिलवर्ड? उनका क्या मतलब है?’ मैंने उनकी बहन से पूछा, जो एक बड़ी, खुरदरी चादर की सिलाई में मग्न लग रही थीं।

‘मुझे नहीं पता,’ उसने जवाब दिया। ‘शायद किसी ने ये बेबुनियाद अफवाह फैलाई है। मैंने इसके बारे में तब तक नहीं सुना था जब तक एलिज़ा ने मुझे कुछ दिन पहले नहीं बताया, लेकिन अगर पूरे मोहल्ले के लोग भी ये बात मेरे कानों में गूँजते, तो भी मैं इस पर ज़रा भी विश्वास नहीं करती— मैं श्रीमती ग्राहम को बहुत अच्छी तरह जानती हूँ!’

'बिल्कुल सही, मिस मिलवर्ड! - और मैं भी - चाहे जो भी हो।'

‘खैर,’ एलिजा ने एक हल्की आह भरते हुए कहा, ‘अपने प्रियजनों के महत्व के

बारे में इतना आश्वस्त होना अच्छी बात है। मेरी बस यही कामना है कि आपका यह विश्वास व्यर्थ न साबित हो।'

और उसने अपना चेहरा ऊपर उठाया, और मुझे ऐसी दुखभरी कोमलता भरी नज़र से देखा कि मेरा दिल पिघल जाता, लेकिन उन आँखों में कुछ ऐसा छिपा था जो मुझे पसंद नहीं आया; और मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं कभी उनकी प्रशंसा कैसे कर सकता था - उसकी बहन का सीधा-सादा चेहरा और छोटी-छोटी धूसर आँखें कहीं अधिक आकर्षक लगती थीं। लेकिन उस समय मैं एलिज़ा से नाराज़ था क्योंकि उसने श्रीमती ग्राहम के खिलाफ़ झूठे आरोप लगाए थे, जो मुझे पूरा यकीन था, चाहे उसे पता हो या न हो।

मैंने उस समय इस विषय पर और कुछ नहीं कहा, और अन्य विषयों पर भी बहुत कम ही बोला; क्योंकि यह देखकर कि मैं अपना धैर्य बनाए नहीं रख पा रहा हूँ, मैं तुरंत उठा और खेत में काम होने का बहाना बनाकर विदा ली; और खेत की ओर चल पड़ा, इन रहस्यमय खबरों की संभावित सच्चाई के बारे में जरा भी सोचे बिना, बल्कि केवल यह सोचकर कि ये क्या हैं, किसने इन्हें फैलाया है, किस आधार पर इन्हें गढ़ा गया है, और इन्हें सबसे प्रभावी ढंग से कैसे चुप कराया जा सकता है या गलत साबित किया जा सकता है।

इसके कुछ दिनों बाद हमने एक और छोटी सी, शांत पार्टी रखी, जिसमें हमेशा की तरह दोस्तों और पड़ोसियों को आमंत्रित किया गया था, और श्रीमती ग्राहम भी मौजूद थीं। अब वे अंधेरी शामों या खराब मौसम का बहाना बनाकर अनुपस्थित नहीं रह सकती थीं, और मुझे बड़ी राहत मिली कि वे आईं। उनके बिना मुझे यह सारा आयोजन असहनीय रूप से उबाऊ लगता; लेकिन उनके आते ही घर में नई रौनक आ गई, और हालांकि मैं उनके लिए अन्य मेहमानों की उपेक्षा नहीं कर सकता था, या यह उम्मीद नहीं कर सकता था कि उनका सारा ध्यान और बातचीत केवल मुझ पर ही केंद्रित रहेगी, फिर भी मुझे एक असाधारण आनंदमय शाम की उम्मीद थी।

श्री लॉरेंस भी आ गए। बाकी सब लोगों के इकट्ठा होने के कुछ देर बाद ही वे आए। मुझे यह देखने की उत्सुकता थी कि वे श्रीमती ग्राहम के साथ कैसा व्यवहार करेंगे। उनके प्रवेश करते ही दोनों के बीच बस एक हल्की सी अभिवादन की बात हुई; और बाकी सभी लोगों को विनम्रतापूर्वक नमस्कार करने के बाद, वे मेरी माँ और रोज़ के बीच, उस युवा विधवा से कुछ दूरी पर बैठ गए।

‘क्या तुमने कभी ऐसी कला देखी है?’ मेरी सबसे करीबी पड़ोसी एलिजा ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘क्या तुम नहीं कहोगे कि वे बिलकुल अजनबी थे?’

‘लगभग; लेकिन फिर क्या?’

तो फिर क्या हुआ; आप अनजान होने का नाटक क्यों नहीं कर सकते?

मैंने इतनी तीखी आवाज में पूछा, ‘किस बात से अनभिज्ञ?’ कि वह चौंक गई और जवाब दिया, —

‘अरे, चुप रहो! इतनी जोर से मत बोलो।’

‘अच्छा, तो फिर मुझे बताओ,’ मैंने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, ‘तुम्हारा मतलब क्या है? मुझे पहेलियाँ बिल्कुल पसंद नहीं हैं।’

‘खैर, आप जानते हैं, मैं इसकी सत्यता की गारंटी नहीं देता — वास्तव में, इससे बहुत दूर — लेकिन क्या आपने नहीं सुना — ?’

‘मैंने तुम्हारे सिवा कुछ नहीं सुना।’

'तो फिर तुम जानबूझकर बहरे हो, क्योंकि कोई भी तुम्हें यही बताएगा; लेकिन मुझे लगता है कि इसे दोहराने से तुम और भी नाराज हो जाओगे, इसलिए बेहतर है कि मैं चुप रहूँ।'

उसने अपने होंठ बंद कर लिए और अपने हाथों को अपने सामने जोड़ लिया, मानो वह घायल और विनम्र हो।

'अगर तुम मुझे नाराज नहीं करना चाहते थे, तो तुम्हें शुरू से ही चुप रहना चाहिए था, या फिर जो कुछ भी कहना था, उसे स्पष्ट और ईमानदारी से कह देना चाहिए था।'

उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लिया, अपना रुमाल निकाला, उठी और खिड़की के पास चली गई, जहाँ वह कुछ देर खड़ी रही, मानो आँसुओं में डूबी हुई हो। मैं स्तब्ध, क्रोधित और शर्मिंदा था— अपनी कठोरता से ज़्यादा उसकी बचकानी कमज़ोरी पर। हालाँकि, किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया, और थोड़ी देर बाद हमें चाय की मेज़ पर बुलाया गया: उन इलाकों में हर मौके पर चाय के समय मेज़ पर बैठना और भरपेट खाना खाना रिवाज़ था, क्योंकि हम जल्दी खाना खाते थे। जब मैं अपनी कुर्सी पर बैठा, तो मेरे एक तरफ रोज़ बैठी थी और दूसरी तरफ खाली कुर्सी थी।

‘क्या मैं आपके पास बैठ सकती हूँ?’ मेरे बगल में एक कोमल आवाज आई।

‘अगर आपको पसंद हो,’ जवाब मिला; और एलिज़ा खाली कुर्सी पर बैठ गई; फिर, आधे उदास, आधे चंचल मुस्कान के साथ मेरी ओर देखते हुए, उसने फुसफुसाते

हुए कहा, — ‘आप बहुत सख्त हैं, गिल्बर्ट।’

मैंने थोड़ी तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ उसे चाय थमा दी और कुछ नहीं कहा, क्योंकि मेरे पास कहने के लिए कुछ था ही नहीं।

उसने और भी दुखी स्वर में कहा, 'मैंने ऐसा क्या किया है जिससे आपको बुरा लगा? काश मुझे पता होता।'

‘आओ, अपनी चाय लो, एलिजा, और मूर्खता मत करो,’ मैंने उसे चीनी और क्रीम देते हुए जवाब दिया।

तभी मेरे दूसरी तरफ थोड़ी हलचल मच गई, क्योंकि मिस विल्सन रोज़ के साथ सीटों की अदला-बदली के लिए बातचीत करने आई थीं।

‘क्या आप कृपया मेरे साथ जगह बदल लेंगी, मिस मार्खम?’ उसने कहा; ‘क्योंकि मुझे श्रीमती ग्राहम के पास बैठना पसंद नहीं है। अगर आपकी माँ को ऐसे लोगों को अपने घर बुलाना उचित लगता है, तो उन्हें अपनी बेटी के उनके साथ रहने पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।’

यह अंतिम वाक्य रोज़ के चले जाने के बाद एक प्रकार के एकालाप में जोड़ा गया था; लेकिन मैं इतना विनम्र नहीं था कि इसे अनदेखा कर दूं।

‘क्या आप कृपया मुझे समझाएंगी कि आपका क्या मतलब है, मिस विल्सन?’ मैंने कहा।

इस सवाल ने उसे थोड़ा चौंका दिया, लेकिन ज्यादा नहीं।

‘क्यों, श्रीमान मार्खम,’ उसने शांत भाव से, आत्मसंयम बरतते हुए उत्तर दिया, ‘मुझे यह जानकर आश्चर्य होता है कि श्रीमती मार्खम श्रीमती ग्राहम जैसी व्यक्ति को अपने घर आमंत्रित करें; लेकिन शायद उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं है कि उस महिला का चरित्र शायद ही सम्मानजनक माना जाता है।’

'न तो वह है, न ही मैं; इसलिए कृपया अपने कहने का अर्थ थोड़ा और स्पष्ट करके मेरी कृपा करें।'

'यह इस तरह की व्याख्याओं के लिए न तो सही समय है और न ही सही जगह; लेकिन मुझे लगता है कि आप उतने अनजान नहीं हो सकते जितना आप दिखावा करते हैं - आप उसे उतना ही जानते होंगे जितना मैं जानता हूं।'

'मुझे लगता है कि मैं बेहतर जानता हूँ; और इसलिए, यदि आप मुझे उसके बारे में सुनी या सोची गई बातों की जानकारी देंगे, तो शायद मैं आपको सही जानकारी दे

सकूँ।'

तो क्या आप मुझे बता सकते हैं कि उसका पति कौन था, या क्या उसका कभी कोई पति था?

आक्रोश ने मुझे चुप रहने पर मजबूर कर दिया। ऐसे समय और स्थान पर मैं खुद पर भरोसा नहीं कर सकता था कि मैं जवाब दे पाऊंगा।

एलिजा ने कहा, 'क्या तुमने कभी गौर नहीं किया कि उसके उस बच्चे और...'

'और कौन?' मिस विल्सन ने ठंडे लेकिन तीखे लहजे में पूछा।

एलिजा चौंक गई; उसने दबी आवाज में जो सुझाव दिया था, वह केवल मेरे लिए था।

'ओह, मुझे माफ़ कर दीजिए!' उसने विनती करते हुए कहा; 'हो सकता है मैं गलत हूँ—शायद मैं गलत थी।' लेकिन इन शब्दों के साथ ही उसने अपनी कपटी आँखों के कोने से मेरी ओर तिरस्कार भरी एक धूर्त दृष्टि डाली।

'माफ़ी मांगने की कोई ज़रूरत नहीं है,' उसकी सहेली ने जवाब दिया, 'लेकिन मुझे यहाँ उस बच्चे से मिलती-जुलती कोई नज़र नहीं आती, सिवाय उसकी माँ के। और जब आप बुरी बातें सुनें, मिस एलिज़ा, तो मैं आपसे निवेदन करूँगी, यानी मुझे लगता है कि आप उन्हें दोहराने से बचेंगी। मेरा अनुमान है कि आप मिस्टर लॉरेंस की बात कर रही हैं; लेकिन मुझे लगता है कि मैं आपको आश्वस्त कर सकती हूँ कि इस संबंध में आपके संदेह पूरी तरह से निराधार हैं; और अगर उनका उस महिला से कोई विशेष संबंध है भी (जिस पर किसी को भी दावा करने का अधिकार नहीं है), तो कम से कम उनमें (जो कुछ अन्य लोगों के बारे में नहीं कहा जा सकता) इतनी शालीनता तो है कि वे सम्मानित व्यक्तियों की उपस्थिति में केवल झुककर अभिवादन करने से ही परहेज़ करते हैं; जाहिर तौर पर उन्हें उसे यहाँ देखकर आश्चर्य और नाराज़गी दोनों हुई होगी।'

'जल्दी करो!' फर्गस चिल्लाया, जो एलिजा के दूसरी तरफ बैठा था और मेज के उस तरफ हम सबके साथ बैठा एकमात्र व्यक्ति था। 'ईंटों की तरह जल्दी करो! ध्यान रखना कि एक पत्थर दूसरे पत्थर के ऊपर न रह जाए।'

मिस विल्सन ने कठोर तिरस्कार भरी नज़र से खुद को समेट लिया, लेकिन कुछ नहीं बोलीं। एलिज़ा जवाब देना चाहती थी, लेकिन मैंने उसे रोकते हुए यथासंभव शांत स्वर में कहा, हालांकि मेरे लहजे से निस्संदेह मेरे भीतर की कुछ भावनाएं झलक रही थीं, — 'इस विषय पर बहुत चर्चा हो चुकी है; यदि हम केवल अपने से बड़ों की निंदा

करने के लिए ही बोल सकते हैं, तो चुप ही रहें।'

'मुझे लगता है कि आपके लिए बेहतर होगा,' फर्गस ने कहा, 'और हमारे पादरी जी भी यही सोचते हैं; वे पूरी देर से सभा को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से संबोधित कर रहे हैं, और बीच-बीच में आपको घृणा भरी निगाहों से देख रहे हैं, जबकि आप वहाँ अनादरपूर्वक फुसफुसाते और बड़बड़ाते हुए बैठे हैं; और एक बार तो वे किसी कहानी या उपदेश के बीच में ही रुक गए, पता नहीं किस बात पर, और अपनी निगाहें आप पर, गिल्बर्ट, इस तरह टिका दीं मानो कह रहे हों, "जब श्री मार्खम उन दोनों महिलाओं के साथ इश्कबाजी खत्म कर लेंगे, तब मैं आगे बढ़ूंगा।"'

चाय की मेज पर और क्या बातें हुईं, यह मैं नहीं बता सकती, और न ही यह कि खाना खत्म होने तक बैठने का धैर्य मुझमें कैसे आया। हालांकि, मुझे याद है कि मैंने अपने कप में बची हुई चाय बड़ी मुश्किल से पी और कुछ नहीं खाया; और सबसे पहले मैंने आर्थर ग्राहम को देखा, जो मेज के दूसरी तरफ अपनी माँ के बगल में बैठे थे, और फिर मिस्टर लॉरेंस को देखा, जो नीचे बैठे थे; और पहली बार मुझे लगा कि उनमें कुछ समानता है; लेकिन और सोचने पर मुझे एहसास हुआ कि यह सिर्फ मेरी कल्पना थी।

सच है कि दोनों के चेहरे की बनावट आम तौर पर पुरुषों की तुलना में अधिक कोमल और हड्डियाँ छोटी थीं। लॉरेंस का रंग पीला और साफ था, जबकि आर्थर का रंग हल्का और गोरा था; लेकिन आर्थर की छोटी, थोड़ी चपटी नाक कभी भी मिस्टर लॉरेंस की तरह लंबी और सीधी नहीं हो सकती थी; और उनके चेहरे की आकृति, हालांकि गोल होने के लिए पर्याप्त भरी हुई नहीं थी, और छोटी, गड्ढेदार ठुड्डी की ओर इतनी बारीक रूप से अभिसरित होती थी कि चौकोर नहीं हो सकती थी, फिर भी दूसरे के लंबे अंडाकार चेहरे की तरह नहीं बन सकती थी। वहीं, बच्चे के बाल स्पष्ट रूप से बड़े सज्जन के बालों की तुलना में हल्के और गर्म रंग के थे, और उनकी बड़ी, साफ नीली आँखें, हालांकि कभी-कभी समय से पहले गंभीर हो जाती थीं, मिस्टर लॉरेंस की शर्मीली भूरी आँखों से बिल्कुल अलग थीं, जिनसे संवेदनशील आत्मा इतनी अविश्वास भरी निगाहों से बाहर देखती थी, मानो हमेशा एक बहुत ही कठोर, बहुत ही प्रतिकूल दुनिया के अपराधों से बचने के लिए भीतर लौटने को तैयार हो। मैं कितनी अभागी थी कि मैंने एक पल के लिए भी वह घिनौना विचार मन में रखा! क्या मैं श्रीमती ग्राहम को नहीं जानती थी? क्या मैंने उसे बार-बार नहीं देखा था, उससे बातचीत नहीं की थी? क्या मुझे इस बात का पूरा यकीन नहीं था कि वह बुद्धि,

पवित्रता और उच्च आत्मा से अपने आलोचकों से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी; कि वह वास्तव में अपनी जाति की सबसे श्रेष्ठ, सबसे प्यारी स्त्री थी जिसे मैंने कभी देखा था, या जिसके अस्तित्व की मैंने कल्पना भी की थी? हाँ, और मैं मैरी मिलवर्ड (जो एक समझदार लड़की थी) के साथ यही कहूँगी कि अगर सारा इलाका, या पूरी दुनिया, ये भयानक झूठ मेरे कानों में गूँजें, तो भी मैं उन पर विश्वास नहीं करूँगी, क्योंकि मैं उसे उनसे कहीं बेहतर जानती थी।

इस बीच, मेरा दिमाग गुस्से से आग बबूला था, और मेरा दिल भावनाओं के टकराव से बेहाल होकर मानो फटने को बेताब था। मैं अपनी दोनों सुंदर पड़ोसियों को घृणा और नफरत की नज़रों से देखता था, जिसे मैं मुश्किल से ही छिपा पाता था। कई तरफ से मेरी उदासीनता और महिलाओं के प्रति मेरे असभ्य व्यवहार के लिए मुझे फटकार लगाई गई; लेकिन मुझे इसकी ज़रा भी परवाह नहीं थी: मेरे मन में चल रहे उस एक बड़े विषय के अलावा, मुझे बस यही चिंता थी कि चाय के प्याले चाय की ट्रे तक जाएं और फिर नीचे न आएं। मुझे लगता था कि मिस्टर मिलवर्ड हमें यह कहना कभी बंद नहीं करेंगे कि वे चाय नहीं पीते, और पौष्टिक भोजन को छोड़कर पेट को लगातार घटिया पेय से भरना बहुत हानिकारक है, ताकि उन्हें अपना चौथा प्याला खत्म करने का समय मिल सके।

अंततः यह सब समाप्त हो गया; और मैं बिना एक शब्द भी माफी मांगे, मेज और मेहमानों को छोड़कर चला गया—मैं अब और उनकी संगति सहन नहीं कर सकता था। मैं शाम की सुहावनी हवा में अपने दिमाग को शांत करने और बगीचे के एकांत में अपने मन को स्थिर करने या अपने भावुक विचारों में डूबने के लिए जल्दी से बाहर निकल गया।

खिड़कियों से नज़रें बचाने के लिए मैं एक शांत छोटी सी गली में चला गया जो बाड़े के एक किनारे से होकर गुजरती थी, जिसके अंत में गुलाब और हनीसकल से घिरी एक कुटिया थी। यहाँ बैठकर मैं वाइल्डफेल हॉल की मालकिन के गुणों और अवगुणों पर विचार करने लगा; लेकिन दो मिनट भी नहीं बीते थे कि आवाज़ें, हँसी और पेड़ों के बीच से हिलती हुई चीज़ों की झलक ने मुझे बताया कि सभी लोग बगीचे में टहलने के लिए निकल आए हैं। फिर भी, मैं कुटिया के एक कोने में दुबक गया और उम्मीद की कि मैं उस जगह पर ही बैठा रहूँगा, किसी की नज़र या दखलंदाज़ी से सुरक्षित। लेकिन नहीं—अरे बाप रे—कोई गली से आ रहा था! वे खुले बगीचे के फूलों

और धूप का आनंद क्यों नहीं ले सकते, और उस धूपविहीन कोने को मेरे लिए, और मच्छरों और मक्खियों के लिए क्यों नहीं छोड़ सकते?

लेकिन, आपस में गुंथी हुई शाखाओं की सुगंधित ओट से झाँककर यह देखने की कोशिश करते हुए कि घुसपैठिए कौन थे (क्योंकि कई आवाज़ों की गूंज से मुझे पता चला कि एक से ज़्यादा लोग थे), मेरी झुंझलाहट तुरंत शांत हो गई, और कहीं ज़्यादा अन्य भावनाएँ मेरी अभी भी अशांत आत्मा को झकझोरने लगीं; क्योंकि वहाँ श्रीमती ग्राहम थीं, आर्थर के साथ धीरे-धीरे रास्ते पर चल रही थीं, और कोई और नहीं था। वे अकेले क्यों थे? क्या निंदा करने वाली ज़ुबानों का ज़हर पहले ही सब में फैल चुका था; और क्या सबने उनसे मुँह मोड़ लिया था? मुझे अब याद आया कि मैंने श्रीमती विल्सन को शाम के शुरुआती हिस्से में अपनी कुर्सी मेरी माँ के पास खिसकाते और आगे झुकते हुए देखा था, जाहिर तौर पर कोई महत्वपूर्ण गोपनीय सूचना देते हुए; और उनके लगातार सिर हिलाने, उनके झुर्रीदार चेहरे के बार-बार विकृत होने, और उनकी छोटी बदसूरत आँखों की शरारती और दुष्ट चमक से, मैंने अनुमान लगाया कि वह किसी सनसनीखेज घोटाले में लगी हुई थीं; और उस गुप्त बातचीत की सावधानी से मैंने अनुमान लगाया कि वहाँ मौजूद कोई व्यक्ति ही उसकी निंदा का शिकार था: और इन सभी संकेतों के साथ-साथ मेरी माँ के मिले-जुले भय और अविश्वास भरे हाव-भाव से मैंने निष्कर्ष निकाला कि वह श्रीमती ग्राहम ही थीं। मैं अपने छिपने की जगह से तब तक नहीं निकला जब तक वह लगभग रास्ते के अंत तक नहीं पहुँच गई, कहीं ऐसा न हो कि मेरे दिखने से वह भाग जाए; और जब मैं आगे बढ़ा तो वह वहीं खड़ी रह गई और मानो वापस मुड़ने को तैयार थी।

‘ओह, श्रीमान मार्खम, हमें आपको परेशान करने की अनुमति न दें!’ उसने कहा। ‘हम स्वयं यहाँ एकांतवास के लिए आए हैं, न कि आपकी एकांतता में दखल देने के लिए।’

'मैं कोई संन्यासी नहीं हूँ, श्रीमती ग्राहम - हालाँकि मैं यह स्वीकार करता हूँ कि अपने मेहमानों से इस तरह असभ्य तरीके से अनुपस्थित रहना कुछ हद तक संन्यासी जैसा ही लगता है।'

'मुझे लगा था कि आप अस्वस्थ हैं,' उसने वास्तविक चिंता के भाव से कहा।

‘मैं तो कुछ ऐसा ही सोच रहा था, लेकिन अब सब खत्म हो गया है। थोड़ी देर यहाँ बैठो और आराम करो, और मुझे बताओ कि तुम्हें यह मंडप कैसा लगा,’ मैंने कहा,

और आर्थर को कंधों से उठाकर, उसकी माँ को सुरक्षित रखने के लिए उसे आसन के बीचोंबीच बिठा दिया। उसकी माँ को यह जगह आरामदायक लगी और वह एक कोने में पीछे की ओर झुक गई, जबकि मैंने दूसरे कोने पर कब्जा कर लिया।

लेकिन शरण शब्द ने मुझे परेशान कर दिया। क्या उनकी निर्दयता ने सचमुच उसे एकांत में शांति की तलाश करने के लिए मजबूर किया था?

मैंने पूछा, 'उन्होंने तुम्हें अकेला क्यों छोड़ दिया?'

मुस्कुराते हुए उसने जवाब दिया, 'मैंने ही उन्हें छोड़ा है। मैं फालतू की बातों से इतना ऊब गया था कि मुझे और कुछ इतना नहीं थकाता। मैं सोच भी नहीं सकता कि वे अब भी ऐसे ही कैसे जी रहे हैं।'

उसकी गहरी हैरानी देखकर मैं मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।

उसने आगे पूछा, 'क्या वे लगातार बोलते रहना अपना कर्तव्य समझते हैं, और इसलिए कभी सोचने के लिए रुकते नहीं, बल्कि जब वास्तविक रुचि के विषय सामने नहीं आते तो निरर्थक तुच्छ बातों और व्यर्थ दोहरावों से अपना समय भर लेते हैं, या क्या वे वास्तव में इस तरह के संवाद में आनंद लेते हैं?'

मैंने कहा, 'संभवतः वे ऐसा ही करते हैं; उनके उथले दिमाग में कोई महान विचार नहीं समा सकते, और उनके हल्के दिमाग तुच्छ बातों में उलझ जाते हैं जो एक बेहतर दिमाग को हिला भी नहीं सकतीं; और ऐसे विचारों के अलावा उनके पास एकमात्र विकल्प है घोटालों के दलदल में सिर और कान तक डूब जाना - जो उनका सबसे बड़ा आनंद है।'

'यकीनन उनमें से सभी नहीं?' मेरी टिप्पणी की कड़वाहट पर आश्चर्यचकित होकर महिला ने कहा।

'नहीं, बिल्कुल; मैं अपनी बहन को ऐसी घटिया रुचियों से बरी करता हूँ, और मेरी माँ को भी, यदि आपने उन्हें भी अपनी आलोचनाओं में शामिल किया है।'

मेरा किसी के प्रति कोई दुर्भावना रखने का इरादा नहीं था, और निश्चित रूप से आपकी माँ के प्रति कोई अनादरपूर्ण टिप्पणी करने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैंने कुछ समझदार लोगों को ऐसी बातचीत शैली में माहिर होते देखा है जब परिस्थितियाँ उन्हें ऐसा करने के लिए विवश करती हैं; लेकिन यह एक ऐसी प्रतिभा है जिसका दावा मैं नहीं कर सकता। मैंने इस अवसर पर यथासंभव ध्यान केंद्रित रखा, लेकिन जब मेरी शक्ति समाप्त हो गई तो मैं कुछ मिनटों के लिए इस शांत सैर में विश्राम करने के लिए

चुपके से चला गया। मुझे ऐसी बातचीत से नफरत है जहाँ विचारों या भावनाओं का कोई आदान-प्रदान न हो, और न ही कोई लाभ दिया या लिया जाए।

मैंने कहा, 'अच्छा, अगर कभी मेरी वाचालता से आपको परेशानी हो, तो मुझे तुरंत बता देना, और मैं वादा करता हूँ कि मुझे बुरा नहीं लगेगा; क्योंकि मुझमें अपने दोस्तों की संगति का आनंद लेने की क्षमता है, चाहे मौन में हो या बातचीत में।'

मुझे आपकी बात पर पूरी तरह यकीन नहीं है; लेकिन अगर ऐसा है तो आप मेरे लिए एक आदर्श साथी साबित होंगे।

'तो फिर, अन्य मामलों में मैं आपकी सभी इच्छाओं को पूरा करता हूँ?'

'नहीं, मेरा मतलब वो नहीं है। सूरज की किरणें पत्तियों के उन छोटे-छोटे गुच्छों के पीछे से आती हैं, वे कितने सुंदर दिखते हैं!' उसने जानबूझकर विषय बदलते हुए कहा।

और वे वाकई खूबसूरत दिख रहे थे, जहां बीच-बीच में सूर्य की सीधी किरणें हमारे सामने रास्ते के दूसरी ओर घने पेड़ों और झाड़ियों को भेदकर उनकी धुंधली हरियाली को चमकीली सुनहरी हरी पत्तियों के अर्ध-पारदर्शी धब्बों को प्रदर्शित करके एक अलग ही रंग दे रही थीं।

मेरे साथी ने कहा, 'काश मैं चित्रकार न होता।'

'ऐसा क्यों? कोई सोचेगा कि ऐसे समय में तो आपको प्रकृति के विभिन्न शानदार और मनमोहक स्पर्शों की नकल करने के विशेषाधिकार पर सबसे अधिक प्रसन्न होना चाहिए।'

नहीं; क्योंकि दूसरों की तरह उनका पूरा आनंद लेने के बजाय, मैं हमेशा इस बात को लेकर परेशान रहता हूँ कि मैं कैनवास पर वही प्रभाव कैसे उत्पन्न कर सकता हूँ; और चूंकि ऐसा कभी संभव नहीं है, इसलिए यह और भी व्यर्थ और मन को व्याकुल करने वाला है।

'हो सकता है कि आप इसे स्वयं को संतुष्ट करने के लिए न कर सकें, लेकिन आप अपने प्रयासों के परिणाम से दूसरों को प्रसन्न करने में सफल हो सकते हैं और होते भी हैं।'

खैर, मुझे शिकायत नहीं करनी चाहिए: शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो मेरी तरह परिश्रम में इतना आनंद लेकर अपनी आजीविका कमाता हो। देखो, कोई आ रहा है।'

वह व्यवधान से नाराज प्रतीत हुई।

मैंने कहा, ‘ये तो सिर्फ मिस्टर लॉरेंस और मिस विल्सन हैं, जो शांति से टहलने आए हैं। वे हमें परेशान नहीं करेंगे।’

मैं उसके चेहरे के भावों को पूरी तरह से समझ नहीं पाई; लेकिन मुझे इस बात का संतोष था कि उसमें ईर्ष्या का कोई भाव नहीं था। भला मुझे उसे ढूंढने की क्या ज़रूरत थी?

‘मिस विल्सन किस तरह की इंसान हैं?’ उसने पूछा।

'वह अपने जन्म और पद के सामान्य लोगों की तुलना में कहीं अधिक सुरुचिपूर्ण और निपुण है; और कुछ लोग कहते हैं कि वह शालीन और मिलनसार है।'

मुझे आज उसका व्यवहार कुछ हद तक रूखा और कुछ हद तक घमंडी लगा।

'संभवतः वह आपके प्रति ऐसा ही रवैया रखती हो। उसने शायद आपके प्रति पूर्वाग्रह पाल रखा है, क्योंकि मुझे लगता है कि वह आपको एक प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखती है।'

‘मैं! असंभव, मिस्टर मार्खम!’ उसने हैरानी और नाराजगी जताते हुए कहा।

मैंने कुछ हठपूर्वक जवाब दिया, 'खैर, मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता;' क्योंकि मुझे लगा कि उसकी नाराजगी मुख्य रूप से मेरे प्रति ही थी।

अब वे दोनों हमारे बिल्कुल करीब आ चुके थे। हमारा मंडप एक कोने में आराम से बना हुआ था, जिसके सामने से होकर जाने वाला रास्ता बगीचे के निचले हिस्से में बने खुले और हवादार रास्ते में मुड़ जाता था। जैसे ही वे यहाँ पहुँचे, मैंने जेन विल्सन के हाव-भाव से समझ लिया कि वह अपने साथी का ध्यान हमारी ओर खींच रही थी; और उसकी ठंडी, व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ-साथ उसकी बातों के कुछ अधूरे शब्दों से, जो मुझ तक पहुँचे, मैं अच्छी तरह समझ गया कि वह उसे यह जताने की कोशिश कर रही थी कि हम दोनों एक-दूसरे से बहुत गहराई से जुड़े हुए हैं। मैंने देखा कि उसका चेहरा कनपटी तक लाल हो गया, उसने गुजरते हुए हमें एक दबी नज़र से देखा और गंभीर भाव से आगे बढ़ गया, मानो उसने जेन की बातों का कोई जवाब ही न दिया हो।

यह सच था कि उसके मन में श्रीमती ग्राहम के प्रति कुछ बुरी नज़र थी; और अगर वह नेक इरादे रखती, तो वह उन्हें छिपाने की इतनी कोशिश नहीं करता। श्रीमती ग्राहम तो बेशक निर्दोष थीं, लेकिन वह व्यक्ति हद से ज़्यादा घृणित था।

ये विचार मेरे मन में कौंध रहे थे कि तभी मेरी साथी अचानक उठी और अपने बेटे

को पुकारकर बोली कि अब वे उस टोली की तलाश में निकलेंगी और सड़क पर चली गई। निस्संदेह उसने मिस विल्सन की बातों का कुछ न कुछ सुना या अंदाज़ा लगा लिया था, इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि उसने आगे बातचीत न करने का फैसला किया, खासकर तब जब उस समय मेरे गाल अपनी पूर्व मित्र के प्रति आक्रोश से लाल हो रहे थे, जिसे वह शायद मूर्खतापूर्ण शर्मिंदगी समझ बैठी हो। इस बात पर मुझे मिस विल्सन से एक और शिकायत हो गई; और जितना मैं उसके व्यवहार के बारे में सोचती, उतना ही उससे नफरत करती जाती।

शाम ढलने के काफी बाद मैं वहां पहुंचा। मैंने देखा कि श्रीमती ग्राहम जाने के लिए तैयार थीं और घर लौट चुके बाकी लोगों से विदा ले रही थीं। मैंने उनसे घर तक साथ चलने की पेशकश की, बल्कि विनती की। उस समय श्री लॉरेंस वहीं खड़े किसी और से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने हमारी तरफ देखा तक नहीं, लेकिन मेरी विनती सुनकर वे बीच में ही रुक गए और श्रीमती ग्राहम के जवाब का इंतज़ार करने लगे। जैसे ही उन्हें इनकार का पता चला, वे शांत संतुष्टि के भाव से आगे बढ़ गए।

इनकार ही अंतिम था, हालांकि यह कठोर नहीं था। उसे यह विश्वास दिलाना असंभव था कि अकेले उन सुनसान गलियों और खेतों से गुजरने में उसे या उसके बच्चे को कोई खतरा है। अभी दिन का उजाला था, और उसे किसी से मिलना नहीं चाहिए था; या अगर कोई मिलता भी, तो लोग शांत और हानिरहित थे, उसे पूरा भरोसा था। वास्तव में, वह किसी के भी उसके साथ जाने की बात सुनने को तैयार नहीं थी, हालांकि फर्गस ने अपनी सेवाएं देने का वादा किया था, अगर वे मेरी सेवाओं से बेहतर साबित हों, और मेरी माँ ने विनती की कि वह किसी किसान को उसके साथ भेज दे।

उसके जाने के बाद सब कुछ सन्नाटा छा गया, या उससे भी बदतर। लॉरेंस ने मुझे बातचीत में शामिल करने की कोशिश की, लेकिन मैंने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया और कमरे के दूसरे हिस्से में चला गया। थोड़ी देर बाद पार्टी खत्म हो गई और वह खुद चला गया। जब वह मेरे पास आया तो मैंने उसके बढ़ाए हुए हाथ को अनदेखा कर दिया, और उसकी शुभ रात्रि को तब तक अनसुना कर दिया जब तक उसने इसे दूसरी बार नहीं दोहराया; और फिर, उससे पीछा छुड़ाने के लिए, मैंने एक अस्पष्ट जवाब बुदबुदाया और रूठ कर सिर हिला दिया।

'क्या बात है, मार्खम?' उसने फुसफुसाते हुए कहा।

मैंने क्रोध और तिरस्कार भरी निगाहों से जवाब दिया।

'क्या तुम इसलिए नाराज़ हो क्योंकि श्रीमती ग्राहम ने तुम्हें अपने साथ घर नहीं जाने दिया?' उसने एक हल्की सी मुस्कान के साथ पूछा, जिससे मुझे लगभग बेकाबू होकर गुस्सा आ गया।

लेकिन, अपने सभी तीखे जवाबों को दबाते हुए, मैंने बस इतना पूछा, — 'इससे तुम्हारा क्या लेना-देना है?'

'क्यों, कुछ नहीं,' उसने चिढ़ाने वाली खामोशी से जवाब दिया; 'केवल,' — और उसने अपनी आँखें मेरे चेहरे की ओर उठाईं, और असामान्य गंभीरता से बोला, — 'केवल मैं तुम्हें बता दूँ, मार्खम, कि यदि उस दिशा में तुम्हारी कोई योजना है, तो वह निश्चित रूप से विफल होगी; और मुझे तुम्हें झूठी आशाएँ पालते और व्यर्थ प्रयासों में अपनी शक्ति बर्बाद करते देखकर दुख होता है, क्योंकि —'

'पाखंडी!' मैंने कहा; और वह अपनी सांस रोककर, एकदम खाली निगाहों से देखने लगा, उसका चेहरा पीला पड़ गया, और बिना कुछ कहे चला गया।

मैंने उसे बहुत गहरा घाव दिया था; और मुझे इस बात की खुशी थी।

अध्याय X

जब सब चले गए, तब मुझे पता चला कि वह घिनौनी अफवाह सचमुच कंपनी में, पीड़ित के सामने ही फैलाई गई थी। रोज़ ने कसम खाई कि वह इस पर विश्वास नहीं करती और न ही करेगी, और मेरी माँ ने भी यही बात कही, हालाँकि मुझे डर है कि उनके मन में उतना सच्चा और अटल अविश्वास नहीं था। ऐसा लगता था कि यह बात लगातार उनके दिमाग में घूमती रहती थी, और वह समय-समय पर मुझे ऐसे वाक्यों से चिढ़ाती रहती थीं जैसे - 'अरे, अरे, किसने सोचा होगा! - वाह! मुझे हमेशा से उसमें कुछ अजीब सा लगता था। - देखो, औरतें दूसरों से अलग दिखने का दिखावा कैसे

करती हैं।' और एक बार तो उन्होंने कहा, - 'मुझे तो शुरू से ही उसके उस रहस्यमयी रूप पर शक था - मुझे लगा था कि इससे कुछ अच्छा नहीं होगा; लेकिन यह तो वाकई बहुत दुखद बात है!'

'क्यों, माँ, आपने तो कहा था कि आपको इन कहानियों पर विश्वास नहीं है,' फर्गस ने कहा।

'अब मैं ऐसा नहीं करता, मेरी प्रिय; लेकिन फिर भी, तुम्हें पता है, कोई न कोई आधार तो होना ही चाहिए।'

मैंने कहा, ‘इसकी बुनियाद दुनिया की बुराई और झूठ में है, और इस तथ्य में कि श्री लॉरेंस को शाम को एक-दो बार उस रास्ते जाते देखा गया है—और गाँव की गपशप करने वाली औरतें कहती हैं कि वह उस अजनबी औरत से मिलने जाते हैं, और अफवाह फैलाने वालों ने लालच से इस अफवाह को पकड़ लिया है, और इसे अपनी ही घिनौनी साजिश का आधार बना लिया है।’

'खैर, लेकिन गिल्बर्ट, उसके व्यवहार में कुछ तो ऐसा जरूर होगा जिससे ऐसी खबरों को बल मिलता है।'

‘क्या आपने उसके व्यवहार में कुछ देखा?’

'नहीं, बिल्कुल; लेकिन फिर, आप जानते हैं, मैंने हमेशा कहा था कि उसमें कुछ अजीब बात थी।'

मुझे लगता है कि उसी शाम मैंने वाइल्डफेल हॉल में एक और बार जाने का साहस किया। हमारी पार्टी के बाद से, जो लगभग एक सप्ताह पहले हुई थी, मैं रोज़ाना उसकी मालकिन से मिलने की कोशिश करता था; और हमेशा निराश होकर (शायद उसने जानबूझकर ऐसा किया होगा), हर रात मैं उससे मिलने का कोई बहाना सोचता रहता था। आखिरकार मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि अब और जुदाई सहन नहीं की जा सकती (आप देखेंगे कि इस समय तक मैं काफी परेशान हो चुका था); और किताबों की अलमारी से एक पुरानी किताब निकाली, जिसमें मुझे लगा कि शायद उसे दिलचस्पी हो, हालाँकि उसकी बदसूरत और कुछ हद तक जर्जर हालत के कारण मैंने अभी तक उसे पढ़ने के लिए देने की हिम्मत नहीं की थी, और जल्दी से निकल पड़ा, - लेकिन इस बात को लेकर कई आशंकाओं के साथ कि वह मेरा स्वागत कैसे करेगी, या मैं इतने मामूली बहाने से खुद को पेश करने की हिम्मत कैसे जुटा पाऊँगा। लेकिन, शायद, मैं उसे खेत या बगीचे में देख लूँ, और तब कोई बड़ी कठिनाई नहीं होगी: मुझे

सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात दरवाजे पर औपचारिक दस्तक थी, जिसके बाद राहेल द्वारा मुझे गंभीरता से अंदर ले जाने और एक आश्चर्यचकित, असभ्य मालकिन के सामने पेश किए जाने की संभावना थी।

लेकिन मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई। श्रीमती ग्राहम स्वयं तो कहीं नज़र नहीं आईं; लेकिन आर्थर अपने चंचल छोटे कुत्ते के साथ बगीचे में खेल रहा था। मैंने फाटक के ऊपर से झाँका और उसे अपने पास बुलाया। वह चाहता था कि मैं अंदर आ जाऊँ; लेकिन मैंने उससे कहा कि मैं उसकी माँ की अनुमति के बिना अंदर नहीं आ सकती।

बच्चे ने कहा, 'मैं जाकर उससे पूछूंगा।'

'नहीं, नहीं, आर्थर, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए; लेकिन अगर वह व्यस्त नहीं है, तो बस उसे एक मिनट के लिए यहाँ आने के लिए कहो। उसे बताओ कि मैं उससे बात करना चाहता हूँ।'

वह मेरी आज्ञा का पालन करने के लिए दौड़ा और जल्दी ही अपनी माँ के साथ लौट आया। वह कितनी प्यारी लग रही थी, उसके काले घुंघराले बाल गर्मियों की हल्की हवा में लहरा रहे थे, उसका गोरा गाल हल्का सा लाल था और उसका चेहरा मुस्कान से दमक रहा था। प्यारे आर्थर! इस और हर दूसरी सुखद मुलाकात के लिए मैं तुम्हारा कितना ऋणी हूँ! उसके कारण मैं तुरंत ही सभी औपचारिकताओं, भय और बंधनों से मुक्त हो गया। प्रेम संबंधों में, एक हंसमुख, सरल हृदय वाले बच्चे जैसा कोई मध्यस्थ नहीं होता - जो हमेशा टूटे हुए दिलों को जोड़ने, रीति-रिवाजों की खाई को पाटने, ठंडे संकोच की बर्फ को पिघलाने और भय, औपचारिकता और अहंकार की विभाजक दीवारों को ध्वस्त करने के लिए तैयार रहता है।

‘अच्छा, श्रीमान मार्खम, क्या बात है?’ युवा मां ने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा।

‘मैं चाहता हूँ कि आप इस पुस्तक को देखें, और यदि आप चाहें तो इसे ले लें और फुर्सत में इसका अध्ययन करें। इतनी सुहावनी शाम में आपको बुलाने के लिए मुझे कोई खेद नहीं है, भले ही यह कोई बहुत महत्वपूर्ण बात न हो।’

‘उसे अंदर आने के लिए कहो, माँ,’ आर्थर ने कहा।

‘क्या आप अंदर आना चाहेंगे?’ महिला ने पूछा।

'जी हां; मैं आपके बगीचे में किए गए सुधारों को देखना चाहूंगा।'

'और मेरी देखरेख में तुम्हारी बहन की जड़ें कितनी फली-फूली हैं,' उसने द्वार खोलते हुए कहा।

हम बगीचे में टहलते हुए फूलों, पेड़ों और किताब के बारे में बातें करते रहे, और फिर दूसरी बातों पर भी। शाम सुहावनी और खुशनुमा थी, और मेरी साथी भी वैसी ही थी। धीरे-धीरे मैं पहले से कहीं ज़्यादा भावुक और कोमल हो गया; लेकिन फिर भी मैंने कुछ भी स्पष्ट नहीं कहा, और उसने भी कोई आपत्ति नहीं जताई, जब तक कि कुछ हफ़्ते पहले मेरी बहन के नाम पर लाए गए एक गुलाब के पेड़ के पास से गुज़रते हुए, उसने एक सुंदर अधखिली कली तोड़ ली और मुझसे कहा कि इसे रोज़ को दे दो।

मैंने पूछा, 'क्या मैं इसे अपने पास नहीं रख सकता?'

नहीं; लेकिन ये आपके लिए एक और है।

चुपचाप सहने के बजाय, मैंने भी उस हाथ को थाम लिया जिसने उसे आगे बढ़ाया था, और उसके चेहरे की ओर देखा। उसने मुझे एक पल के लिए हाथ थामे रहने दिया, और मैंने उसकी आँखों में आनंद की एक चमक देखी, उसके चेहरे पर खुशी और उत्साह की एक दमक देखी - मुझे लगा कि मेरी जीत का समय आ गया है - लेकिन तुरंत ही एक दर्दनाक याद उसके मन में कौंध गई; पीड़ा के बादल उसके माथे पर छा गए, उसके गाल और होंठ संगमरमर की तरह पीले पड़ गए; ऐसा लगा जैसे उसके भीतर एक संघर्ष चल रहा हो, और अचानक उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया, और एक-दो कदम पीछे हट गई।

‘अब, श्रीमान मार्खम,’ उसने एक प्रकार की हताश शांति के साथ कहा, ‘मुझे आपसे स्पष्ट रूप से कहना होगा कि मैं इसे सहन नहीं कर सकती। मुझे आपकी संगति अच्छी लगती है, क्योंकि मैं यहाँ अकेली हूँ, और आपकी बातचीत मुझे किसी और की बातचीत से कहीं अधिक प्रसन्न करती है; लेकिन यदि आप मुझे एक मित्र के रूप में नहीं मान सकते – एक साधारण, भावहीन, माँ जैसी या बहन जैसी मित्र – तो मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप मुझे अभी छोड़ दें, और आगे से मुझे अकेला छोड़ दें: वास्तव में, हमें भविष्य के लिए अजनबी बनना होगा।’

‘तो मैं तुम्हारा दोस्त, या भाई, या जो भी तुम चाहो बन जाऊंगा, बशर्ते तुम मुझे तुमसे मिलते रहने दो; लेकिन मुझे बताओ कि मैं इससे अधिक कुछ क्यों नहीं हो सकता?’

कुछ देर तक असमंजस और विचारमग्नता का माहौल रहा।

क्या यह किसी जल्दबाजी में लिए गए संकल्प का परिणाम है?

“कुछ ऐसा ही है,” उसने उत्तर दिया। “शायद किसी दिन मैं तुम्हें बताऊँगी, लेकिन

अभी बेहतर होगा कि तुम मुझे अकेला छोड़ दो; और गिल्बर्ट, मुझे कभी भी वह बात दोहराने की तकलीफ मत देना जो मैंने अभी तुमसे कही है,” उसने गंभीरता से कहा और अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाते हुए प्यार से बोला। उसके मुँह से मेरा नाम कितना मधुर और सुरीला लग रहा था!

मैंने उत्तर दिया, 'मैं ऐसा नहीं करूंगा।' 'लेकिन क्या आप इस अपराध को क्षमा करेंगे?'

‘इस शर्त पर कि आप इसे कभी नहीं दोहराएंगे।’

और क्या मैं कभी-कभार आपसे मिलने आ सकता हूँ?

'शायद—कभी-कभार; बशर्ते आप इस विशेषाधिकार का कभी दुरुपयोग न करें।'

मैं कोई झूठे वादे नहीं करता, लेकिन आप खुद देखेंगे।

'जिस क्षण तुम ऐसा करोगे, हमारी अंतरंगता समाप्त हो जाएगी, बस इतना ही।'

और क्या तुम मुझे हमेशा गिल्बर्ट ही बुलाओगी? यह ज्यादा बहन जैसा लगता है, और इससे मुझे हमारे समझौते की याद आती रहेगी।

वह मुस्कुराई और एक बार फिर मुझे जाने का इशारा किया; आखिरकार मैंने उसकी बात मानना ही उचित समझा, और वह घर में वापस चली गई और मैं पहाड़ी से नीचे उतर गया। लेकिन जैसे ही मैं नीचे उतरा, घोड़ों के खुरों की आवाज मेरे कानों में पड़ी और ओस भरी शाम की खामोशी को भंग कर दिया; और गली की ओर देखते हुए, मैंने एक अकेले घुड़सवार को आते देखा। शाम ढल रही थी, इसलिए मैंने उसे एक नज़र में पहचान लिया: वह श्री लॉरेंस थे, अपने भूरे टट्टू पर। मैं खेत पार करके भागा, पत्थर की बाड़ फांदकर गली में उनसे मिलने के लिए आगे बढ़ा। मुझे देखते ही उन्होंने अचानक अपने छोटे घोड़े को रोका और वापस मुड़ने का मन बनाया, लेकिन फिर शायद उन्होंने पहले की तरह आगे बढ़ना ही बेहतर समझा। उन्होंने थोड़ा झुककर मेरा अभिवादन किया और दीवार के पास आकर आगे बढ़ने की कोशिश की; लेकिन मेरा इरादा ऐसा नहीं था। मैंने उनके घोड़े की लगाम पकड़कर कहा, — ‘अब, लॉरेंस, मैं इस रहस्य का हल निकालूंगा!’ मुझे बताओ कि तुम कहाँ जा रहे हो और क्या करने का इरादा रखते हो—तुरंत और स्पष्ट रूप से!

‘क्या तुम लगाम से अपना हाथ हटाओगे?’ उसने धीरे से कहा — ‘तुम मेरे टट्टू के मुंह को चोट पहुंचा रहे हो।’

‘तुम और तुम्हारा टट्टू —’

'मार्कहम, तुम इतने असभ्य और क्रूर क्यों हो? मुझे तुम पर बहुत शर्म आती है।'

'मेरे सवालों का जवाब दो - इस जगह से जाने से पहले मुझे पता चल जाएगा कि इस कपटपूर्ण धोखे से तुम्हारा क्या मतलब है!'

'जब तक तुम लगाम नहीं छोड़ोगे, मैं किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दूंगा, - चाहे तुम सुबह तक खड़े रहो।'

'तो अब,' मैंने अपना हाथ खोलते हुए कहा, लेकिन मैं अभी भी उसके सामने खड़ा था।

'मुझसे किसी और समय पूछो, जब तुम एक सज्जन की तरह बात कर सको,' उसने जवाब दिया और मुझे फिर से पार करने की कोशिश की; लेकिन मैंने तुरंत टट्टू को पकड़ लिया, और इस तरह के असभ्य व्यवहार पर उसके मालिक से कम आश्चर्यचकित नहीं था।

'सचमुच, श्रीमान मार्खम, यह तो हद हो गई!' दूसरे ने कहा। 'क्या मैं अपने किरायेदार से व्यापारिक मामलों पर मिलने भी नहीं जा सकता, बिना इस तरह के हमले का शिकार हुए?'

'यह व्यापार करने का समय नहीं है, महोदय! — मैं अभी आपको बता देता हूँ कि मैं आपके आचरण के बारे में क्या सोचता हूँ।'

'बेहतर होगा कि आप अपनी राय किसी और सुविधाजनक समय पर दें,' उसने धीमी आवाज़ में बीच में ही टोकते हुए कहा, 'ये रहे पादरी जी।' और सचमुच, पादरी जी मेरे ठीक पीछे थे, अपने इलाके के किसी दूरदराज कोने से घर की ओर धीरे-धीरे लौट रहे थे। मैंने तुरंत उस व्यक्ति को जाने दिया; और वह श्री मिलवर्ड को नमस्कार करते हुए अपने रास्ते चले गए।

'क्या! झगड़ा कर रहे हो, मार्खम?' मार्खम ने मुझसे कहा, 'और उस युवा विधवा के बारे में, मुझे संदेह है?' उसने तिरस्कारपूर्ण ढंग से सिर हिलाते हुए आगे कहा। 'लेकिन सुनो, नौजवान' (यहाँ उसने अपना चेहरा मेरे चेहरे के बिल्कुल करीब लाकर एक महत्वपूर्ण, गोपनीय भाव दिखाया), 'वह इसके लायक नहीं है!' और उसने गंभीर भाव से सिर हिलाकर अपनी बात की पुष्टि की।

'श्री मिलवर्ड!' मैंने क्रोध और धमकी भरे स्वर में कहा, जिससे आदरणीय महोदय चौंककर पीछे मुड़े - ऐसी असामान्य गुस्ताखी देखकर दंग रह गए - और मेरी ओर घूरने लगे, मानो कह रहे हों, 'क्या, मुझसे ऐसा व्यवहार!' लेकिन मैं इतना क्रोधित था

कि माफी मांगने या उनसे एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं हुई: मैं मुड़कर तेजी से घर की ओर चल पड़ा, ऊबड़-खाबड़ और ढलान वाली गली से तेजी से नीचे उतर गया, और उन्हें अपने पीछे आने के लिए छोड़ दिया।

अध्याय XI

आप मान लीजिए कि लगभग तीन सप्ताह बीत चुके थे। श्रीमती ग्राहम और मैं अब पक्के दोस्त बन चुके थे—या यूँ कहें कि भाई-बहन, जैसा कि हम खुद को मानना पसंद करते थे। मेरी इच्छा पर वह मुझे गिल्बर्ट कहकर बुलाती थीं, और मैं उन्हें हेलेन कहकर बुलाता था, क्योंकि मैंने उनकी किताबों में यही नाम लिखा देखा था। मैं उनसे सप्ताह में दो बार से ज़्यादा मिलने की कोशिश नहीं करता था; और फिर भी मैं अपनी मुलाकातों को यथासंभव संयोगवश दिखाने की कोशिश करता था—क्योंकि मुझे बेहद सावधान रहना ज़रूरी लगता था—और कुल मिलाकर, मैं इतने सलीके से पेश आता था कि उन्हें मुझे कभी डांटने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। फिर भी मैं यह महसूस किए बिना नहीं रह सका कि वह कभी-कभी दुखी और खुद से या अपनी स्थिति से असंतुष्ट रहती थीं, और सच कहूँ तो मैं खुद भी अपनी स्थिति से पूरी तरह संतुष्ट नहीं था: भाईचारे की इस बेफिक्री को बनाए रखना बहुत मुश्किल था, और मैं अक्सर खुद को इस सब के साथ एक बड़ा पाखंडी महसूस करता था; मैंने यह भी देखा, या यूँ कहूँ कि मैंने महसूस किया, कि अपनी इच्छा के विरुद्ध भी, 'मैं उसके प्रति उदासीन नहीं था,' जैसा कि उपन्यास के नायक विनम्रतापूर्वक व्यक्त करते हैं, और यद्यपि मैं अपने वर्तमान सौभाग्य का आनंद ले रहा था, फिर भी मैं भविष्य में कुछ बेहतर की कामना और आशा किए बिना नहीं रह सका; लेकिन, निश्चित रूप से, मैंने ऐसे सपनों को पूरी तरह से अपने तक ही सीमित रखा।

एक शाम, चाय के कुछ ही समय बाद, जब मैं दिन भर खेत के कामों में व्यस्त था,

तो रोज़ ने कहा, 'गिल्बर्ट, तुम कहाँ जा रहे हो?'

जवाब मिला, 'टहलने के लिए।'

'क्या आप हमेशा अपनी टोपी को इतनी सावधानी से साफ करते हैं, अपने बालों को इतनी अच्छी तरह से संवारते हैं और जब आप टहलने जाते हैं तो इतने स्मार्ट नए दस्ताने पहनते हैं?'

'हमेशा नहीं।'

'तुम वाइल्डफेल हॉल जा रहे हो, है ना?'

'आपके ऐसा सोचने की वजह क्या है?'

'क्योंकि तुम ऐसे दिखते हो जैसे तुम हो—लेकिन काश तुम इतनी बार न जाते।'

'बकवास है, बच्चे! मैं छह सप्ताह में एक बार भी नहीं जाता— तुम्हारा मतलब क्या है?'

खैर, लेकिन अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं श्रीमती ग्राहम से इतना ज्यादा वास्ता नहीं रखता।

'रोज़, तुम भी प्रचलित राय के आगे क्यों झुक रही हो?'

'नहीं,' उसने हिचकिचाते हुए जवाब दिया— 'लेकिन मैंने हाल ही में उसके बारे में बहुत कुछ सुना है, विल्सन के घर और पादरी के घर दोनों जगह;— और इसके अलावा, माँ कहती हैं, अगर वह एक सभ्य महिला होती तो वह वहाँ अकेले नहीं रहती — और क्या तुम्हें पिछली सर्दी याद नहीं है, गिल्बर्ट, तस्वीर पर लिखे झूठे नाम के बारे में सब कुछ; और उसने कैसे इसका स्पष्टीकरण दिया— यह कहते हुए कि उसके कुछ दोस्त या परिचित हैं जिनसे वह अपना वर्तमान निवास छिपाना चाहती है, और उसे डर है कि वे उसका पता लगा लेंगे;— और फिर, वह कितनी अचानक उठकर कमरे से बाहर चली गई जब वह व्यक्ति आया— जिसकी एक झलक भी उसने हमें न देखने देने का पूरा ध्यान रखा, और जिसके बारे में आर्थर ने बड़े रहस्यमय अंदाज़ में हमें बताया कि वह उसकी माँ का दोस्त है?'

"हाँ, रोज़, मुझे सब याद है; और मैं तुम्हारे कठोर निष्कर्षों को क्षमा कर सकता हूँ; क्योंकि शायद, अगर मैं उसे स्वयं न जानता होता, तो मैं भी इन सब बातों को जोड़कर वही मानता जो तुम मानती हो; लेकिन ईश्वर का धन्यवाद, मैं उसे जानता हूँ; और अगर मैं उसके मुख से सुने बिना उसके विरुद्ध कही गई किसी भी बात पर विश्वास कर लेता, तो मैं मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं होता। — मैं तुम्हारे बारे में भी

ऐसी ही बातों पर विश्वास कर लूँगा, रोज़।”

‘ओह, गिल्बर्ट!’

‘अच्छा, क्या आपको लगता है कि मैं इस तरह की किसी भी बात पर विश्वास कर सकता हूँ, चाहे विल्सन और मिलवर्ड्स कुछ भी फुसफुसाने की हिम्मत करें?’

मुझे उम्मीद है कि ऐसा बिल्कुल नहीं होगा!

‘और क्यों नहीं? क्योंकि मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ, और मैं उसे भी उतनी ही अच्छी तरह जानता हूँ।’

'अरे नहीं! आपको उसके पूर्व जीवन के बारे में कुछ नहीं पता; और पिछले साल, इसी समय, आपको यह भी नहीं पता था कि ऐसा कोई व्यक्ति अस्तित्व में था।'

कोई बात नहीं। किसी व्यक्ति की आँखों से उसके हृदय में झाँकने की भी एक अनोखी क्षमता होती है, और एक घंटे में ही हम उसकी आत्मा की ऊँचाई, चौड़ाई और गहराई के बारे में उतना जान लेते हैं जितना कि जीवन भर में भी नहीं जान पाते, यदि वह व्यक्ति इसे प्रकट करने को तैयार न हो, या यदि आपमें इसे समझने की समझ न हो।

तो क्या आप आज शाम उससे मिलने जा रहे हैं?

‘मैं बिल्कुल हूँ!’

लेकिन माँ क्या कहेंगी, गिल्बर्ट!

'मम्मी को पता नहीं चलना चाहिए।'

लेकिन अगर तुम ऐसे ही चलते रहे तो उसे कभी न कभी पता चल ही जाएगा।

‘आगे बढ़ो! इस मामले में कुछ भी नहीं चल रहा है। श्रीमती ग्राहम और मैं दो दोस्त हैं — और रहेंगे; और कोई भी जीवित व्यक्ति इसे रोक नहीं सकता, — या हमारे बीच दखल देने का किसी को कोई अधिकार नहीं है।’

लेकिन अगर आपको पता होता कि वे कैसे बात करते हैं तो आप अधिक सावधान रहते, उसके साथ-साथ अपने लिए भी। जेन विल्सन पुराने हॉल में आपके आने को अपनी भ्रष्टता का एक और सबूत मानती है।

‘जेन विल्सन को धिक्कार है!’

और एलिजा मिलवर्ड आपके बारे में बहुत दुखी हैं।

मुझे उम्मीद है कि वह ऐसा ही करेगी।

लेकिन अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो ऐसा नहीं करता।

‘क्या नहीं? — उन्हें कैसे पता चलेगा कि मैं वहां जाता हूँ?’

उनसे कुछ भी छिपा नहीं है: वे हर चीज की जासूसी करते हैं।

अरे, मैंने तो इस बारे में सोचा ही नहीं था! — और वे मेरी दोस्ती को उसके खिलाफ और बदनामी फैलाने के लिए इस्तेमाल करने की हिम्मत कर रहे हैं! — इससे कम से कम उनके बाकी झूठ तो झूठे साबित हो ही जाते हैं, अगर किसी सबूत की कमी हो तो। — रोज़, जब भी मौका मिले, उनका खंडन करना।

लेकिन वे मुझसे खुलकर ऐसी बातें नहीं करते: मुझे केवल इशारों और संकेतों से, और दूसरों की बातों से ही पता चलता है कि वे क्या सोचते हैं।

“ठीक है, तो मैं आज नहीं जाऊँगा, क्योंकि काफी देर हो चुकी है। लेकिन उनकी उन शापित, विषैली ज़ुबानों का क्या होगा!” मैंने अपने मन की कड़वाहट में बुदबुदाया।

और ठीक उसी क्षण पादरी ने कमरे में प्रवेश किया: हम अपनी बातचीत में इतने मग्न थे कि हमने उनकी दस्तक पर ध्यान ही नहीं दिया। रोज़ का, जो उस बुज़ुर्ग सज्जन की प्रिय थी, उन्होंने हमेशा की तरह हंसमुख और पिता तुल्य अभिवादन किया और फिर कुछ सख्ती से मेरी ओर मुड़े: —

“जी हाँ, महोदय!” उसने कहा, “आप तो बिलकुल अजनबी हैं। ज़रा मुझे बताइए,” उसने धीरे-धीरे बोलते हुए अपना भारी-भरकम शरीर उस कुर्सी पर टिका दिया जिसे रोज़ ने बड़ी विनम्रता से उसके पास लाया था; “मेरे हिसाब से तो बस छह हफ्ते ही हुए हैं जब से आपने मेरे घर में कदम रखा है!” उसने ज़ोर देकर कहा और अपनी छड़ी ज़मीन पर पटकी।

‘क्या सच में?’ मैंने कहा।

‘अरे! ऐसा ही है!’ उसने सहमति में सिर हिलाया और गुस्से भरी गंभीरता से मेरी ओर देखता रहा, अपनी भारी-भरकम छड़ी को घुटनों के बीच दबाए हुए, जिसके सिरे पर उसके हाथ जुड़े हुए थे।

मैंने कहा, 'मैं व्यस्त था,' क्योंकि स्पष्ट रूप से मुझसे माफी मांगने की उम्मीद की जा रही थी।

‘व्यस्त हो!’ उसने उपहासपूर्वक दोहराया।

'हां, आपको पता है कि मैंने अपना चारा इकट्ठा कर लिया है; और अब कटाई शुरू हो रही है।'

‘हम्फ!’

तभी मेरी माँ अंदर आईं और आदरणीय अतिथि का बड़े उत्साह और जोश से स्वागत करके उन्होंने मेरी ओर ध्यान आकर्षित कर लिया। उन्हें इस बात का गहरा अफसोस था कि वे चाय के समय थोड़ा पहले नहीं आ पाए, लेकिन उन्होंने कहा कि अगर वे चाय में शामिल होने की कृपा करें तो वे तुरंत चाय तैयार करवा देंगी।

‘मेरे लिए कोई नहीं, धन्यवाद,’ उसने उत्तर दिया; ‘मैं कुछ ही मिनटों में घर पहुँच जाऊँगा।’

“ओह, लेकिन रुकिए और थोड़ा सा ले लीजिए! यह पांच मिनट में तैयार हो जाएगा।”

लेकिन उन्होंने हाथ के एक भव्य इशारे से उस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

‘श्रीमती मार्खम, मैं आपको बताता हूँ कि मैं क्या लूँगा,’ उसने कहा: ‘मैं आपके बेहतरीन बियर का एक गिलास लूँगा।’

‘खुशी से!’ मेरी माँ ने खुशी से कहा और तुरंत घंटी बजाकर अपना पसंदीदा पेय मंगवा लिया।

उन्होंने आगे कहा, ‘मैंने सोचा कि गुजरते समय आपसे मिल लूं और आपकी घर में बनी बीयर का स्वाद चख लूं। मैं श्रीमती ग्राहम से मिलने गया था।’

‘क्या सचमुच?’

उन्होंने गंभीरता से सिर हिलाया और बेहद जोर देकर कहा— 'मुझे लगा कि ऐसा करना मेरा कर्तव्य है।'

‘सचमुच!’ मेरी माँ ने हैरानी से कहा।

‘ऐसा क्यों, श्रीमान मिलवर्ड?’ मैंने पूछा।

उन्होंने मुझे कुछ सख्ती से देखा, और मेरी माँ की ओर मुड़कर फिर दोहराया, “मुझे लगा कि यह मेरा कर्तव्य है!” और अपनी छड़ी को फिर से ज़मीन पर पटका। मेरी माँ सामने बैठी थीं, विस्मय से भरी हुई लेकिन प्रशंसा करती हुई श्रोता।

“श्रीमती ग्राहम,” मैंने कहा,’ उन्होंने सिर हिलाते हुए आगे कहा, “ये तो बहुत बुरी खबरें हैं!” “क्या, श्रीमान?” उन्होंने अनभिज्ञता जताते हुए कहा। “एक पादरी के रूप में यह मेरा कर्तव्य है,” मैंने कहा, “कि मैं आप दोनों को आपके आचरण में जो कुछ भी मुझे निंदनीय लगता है, और जिस बात पर मुझे संदेह है, और जो कुछ भी दूसरे लोग आपके बारे में मुझे बताते हैं, वह सब बताऊं।” — तो मैंने उन्हें यही कहा!

‘जी हाँ, श्रीमान?’ मैं अपनी सीट से उठकर मेज पर मुट्ठी पटकते हुए चिल्लाया। उन्होंने मेरी ओर बस एक नज़र डाली और अपनी मेज़बान से बात करते हुए आगे कहा: —

'यह एक कष्टदायक कर्तव्य था, श्रीमती मार्खम - लेकिन मैंने उन्हें बता दिया!'

‘और उसने इस पर कैसी प्रतिक्रिया दी?’ मेरी माँ ने पूछा।

‘मुझे डर है कि वह कठोर हो गई है—पूरी तरह कठोर!’ उसने निराशा से सिर हिलाते हुए उत्तर दिया; ‘और साथ ही, अनियंत्रित, गलत दिशा में निर्देशित भावनाओं का स्पष्ट प्रदर्शन भी हुआ। उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह जंगलीपन से दाँतों के बीच से साँस ले रही थी;—लेकिन उसने कोई बचाव या स्पष्टीकरण नहीं दिया; और एक प्रकार की निर्लज्ज शांति के साथ—इतनी कम उम्र में यह देखना वाकई चौंकाने वाला था—उसने लगभग मुझे बता दिया कि मेरा विरोध व्यर्थ था और मेरी सलाह उस पर बिल्कुल बेकार गई—बल्कि, जब मैं ऐसी बातें कह रहा था तो मेरी उपस्थिति ही उसे अप्रिय लग रही थी। और अंत में मैं वहाँ से चला गया, यह स्पष्ट रूप से देखते हुए कि कुछ नहीं किया जा सकता—और उसकी स्थिति इतनी निराशाजनक देखकर मुझे बहुत दुख हुआ। लेकिन मैं पूरी तरह से दृढ़ संकल्पित हूँ, श्रीमती मार्खम, कि मेरी बेटियाँ—उसके साथ—नहीं—मिलेंगी। आप भी अपनी बेटियों के संबंध में यही संकल्प लें!—जहाँ तक आपके बेटों का सवाल है—जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, नौजवान,’ उसने सख्ती से मेरी ओर मुड़ते हुए कहा—

‘जहाँ तक मेरी बात है, महोदय,’ मैंने कहना शुरू किया, लेकिन बोलने में किसी तरह की रुकावट के कारण रुक गया, और यह महसूस करते हुए कि मेरा पूरा शरीर गुस्से से कांप रहा था, मैंने आगे कुछ नहीं कहा, बल्कि समझदारी दिखाते हुए अपनी टोपी उठाई और कमरे से बाहर भाग गया, और अपने पीछे दरवाजा इतनी जोर से बंद कर दिया कि घर की नींव तक हिल गई, मेरी माँ चीख पड़ी, और मेरे उत्तेजित भावों को क्षण भर के लिए राहत मिली।

अगले ही पल मैं तेज़ी से कदमों से वाइल्डफेल हॉल की ओर चल पड़ा— मेरा इरादा या उद्देश्य क्या था, यह मैं ठीक से बता नहीं सकता था, लेकिन मुझे कहीं न कहीं जाना ही था, और कोई दूसरा लक्ष्य मंज़ूर नहीं था— मुझे उससे मिलना था, उससे बात करनी थी— यह तो निश्चित था; लेकिन क्या कहूँ, या क्या करूँ, इसका मुझे कोई स्पष्ट विचार नहीं था। इतने उथल-पुथल भरे विचार— इतने सारे अलग-

अलग संकल्प मुझ पर उमड़ रहे थे कि मेरा दिमाग परस्पर विरोधी भावनाओं के एक अराजक जाल जैसा हो गया था।

अध्याय XII

लगभग बीस मिनट में ही यात्रा पूरी हो गई। मैंने द्वार पर रुककर अपने पसीने से तर माथे को पोंछा और थोड़ी देर के लिए सांस रोकी और खुद को थोड़ा शांत किया। तेज़ चलने से मेरी उत्तेजना कुछ हद तक कम हो गई थी; और मैंने दृढ़ और स्थिर कदमों से बगीचे के रास्ते पर चलना शुरू किया। इमारत के रिहायशी हिस्से से गुज़रते हुए, खुली खिड़की से मैंने श्रीमती ग्राहम को अपने एकांत कमरे में धीरे-धीरे इधर-उधर टहलते हुए देखा।

मेरे आने पर वह व्याकुल और यहाँ तक कि भयभीत लग रही थी, मानो उसे लगा हो कि मैं भी उस पर आरोप लगाने आया हूँ। मैं उसके सामने संसार की बुराइयों पर उसे सांत्वना देने और पादरी तथा उसके नीच मुखबिरों की निंदा करने में उसकी मदद करने के इरादे से आया था, लेकिन अब मुझे इस विषय का उल्लेख करने में बेहद शर्म आ रही थी और मैंने निश्चय कर लिया था कि जब तक वह स्वयं पहल न करे, मैं इस बारे में बात नहीं करूँगा।

मैंने उसे आश्वस्त करने के लिए, मन में न होते हुए भी, प्रसन्नता का भाव दिखाते हुए कहा, 'मैं असमय आ गया हूँ; लेकिन मैं यहाँ ज़्यादा देर नहीं रुकूँगा।'

उसने मेरी तरफ मुस्कुराया, हालांकि हल्की सी मुस्कान थी, लेकिन बेहद दयालुता से - मैंने लगभग कृतज्ञता से कहा था, क्योंकि उसकी आशंकाएं दूर हो गई थीं।

‘हेलेन, तुम कितनी उदास लग रही हो! तुम्हारे पास आग क्यों नहीं है?’ मैंने उस अंधकारमय कमरे में चारों ओर देखते हुए कहा।

‘अभी तो गर्मी का मौसम है,’ उसने जवाब दिया।

लेकिन हम शाम को हमेशा आग जलाते हैं, अगर हम बर्दाश्त कर सकें; और इस ठंडे घर और उदास कमरे में आपको इसकी विशेष रूप से आवश्यकता है।'

'तुम्हें थोड़ा जल्दी आना चाहिए था, और मैं तुम्हारे लिए एक जला देता: लेकिन अब इसका कोई फायदा नहीं है - तुम कहती हो कि तुम ज्यादा मिनट नहीं रुकोगी, और आर्थर सोने चला गया है।'

लेकिन फिर भी मुझे आग जलाने का मन कर रहा है। अगर मैं फोन करूं तो क्या आप एक आग मंगवा देंगे?

'अरे, गिल्बर्ट, तुम्हें ठंड तो नहीं लग रही!' उसने मेरे चेहरे को देखकर मुस्कुराते हुए कहा, जो निस्संदेह काफी गर्म लग रहा था।

'नहीं,' मैंने उत्तर दिया, 'लेकिन जाने से पहले मैं तुम्हें आराम से देखना चाहता हूँ।'

'मुझे आराम मिल रहा है!' उसने कड़वी हंसी के साथ दोहराया, मानो इस विचार में कुछ हास्यास्पद बात हो। 'यह जैसा है वैसा ही मुझे ज़्यादा ठीक लगता है,' उसने उदास और निराश स्वर में कहा।

लेकिन अपनी बात मनवाने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर मैंने घंटी बजा दी।

'हेलेन, अब आओ!' मैंने कहा, क्योंकि मेरी पुकार के जवाब में राहेल के कदमों की आहट सुनाई दी। अब मेरे पास मुड़कर नौकरानी से आग जलाने के लिए कहने के अलावा कोई चारा नहीं था।

मैं आज भी राहेल से नाराज़ हूँ क्योंकि उसने अपने मिशन पर जाने से पहले मुझे जिस तरह से देखा था, वह एक तीखी, संदेह भरी, पूछताछ भरी नज़र थी जो साफ़ तौर पर पूछ रही थी, 'पता नहीं तुम यहाँ किसलिए आए हो?' उसकी मालकिन ने इसे नज़रअंदाज़ नहीं किया और उसके माथे पर बेचैनी की एक लकीर उभर आई।

जब दरवाजा हमारे ऊपर बंद हो गया, तो उसने कहा, 'गिल्बर्ट, तुम्हें ज्यादा देर नहीं रुकना चाहिए।'

मैंने कुछ चिड़चिड़ेपन से कहा, हालाँकि मेरे दिल में उस दखलंदाज़ बुढ़िया के अलावा किसी के प्रति ज़रा भी गुस्सा नहीं था, "मैं नहीं जा रही हूँ। लेकिन हेलेन, जाने से पहले मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

'यह क्या है?'

'नहीं, अभी नहीं—मुझे अभी ठीक से पता नहीं है कि यह क्या है, या इसे कैसे कहूँ,' मैंने समझदारी से ज़्यादा सच्चाई से जवाब दिया; और फिर, कहीं वह मुझे घर से

बाहर न निकाल दे, इस डर से मैंने समय बिताने के लिए बेमतलब की बातें करना शुरू कर दिया। इसी बीच राहेल आग जलाने आई, और उसने अंगीठी की सलाखों के बीच एक गर्म लोहे की छड़ डालकर आग जला दी, जहाँ पहले से ही ईंधन रखा हुआ था। जाते समय उसने मुझे अपनी कठोर, रूखी नज़र से देखा, लेकिन ज़रा भी विचलित हुए बिना मैं बातें करता रहा; और श्रीमती ग्राहम के लिए चूल्हे के एक तरफ और अपने लिए दूसरी तरफ एक कुर्सी लगाकर, मैंने बैठने की हिम्मत की, हालाँकि मुझे आधा शक था कि वह मुझे जाते हुए देखना ज़्यादा पसंद करेंगी।

कुछ देर बाद हम दोनों फिर से चुप हो गए, और कई मिनट तक अनमने भाव से आग को निहारते रहे—वह अपने उदास विचारों में डूबी हुई थी, और मैं सोच रहा था कि उसके बगल में इस तरह बैठे रहना कितना सुखद होगा, बिना किसी और की मौजूदगी के जो हमारे संवाद को बाधित करे—यहां तक कि हमारे साझा मित्र आर्थर की मौजूदगी भी नहीं, जिसके बिना हम पहले कभी नहीं मिले थे—काश मैं अपने मन की बात कहने का साहस कर पाता, और अपने दिल में दबी उन भावनाओं को बाहर निकाल पाता जिन्होंने इतने लंबे समय से उसे दबा रखा था, और जिन्हें वह अब बड़ी मुश्किल से रोक पा रहा था—और इस बात पर विचार कर रहा था कि क्या मैं वहीं और उसी क्षण उसके सामने अपना दिल खोल दूं, और बदले में स्नेह की याचना करूं, उसे हमेशा के लिए अपना मानने की अनुमति मांगूं, और उसे दुर्भावनापूर्ण जुबानों की निंदा से बचाने का अधिकार और शक्ति मांगूं। एक ओर, मुझे अपनी बात मनवाने की क्षमता पर नया-नया भरोसा हुआ—एक दृढ़ विश्वास कि मेरे आत्म-उत्साह से ही मेरी वाक्पटुता सिद्ध हो जाएगी—कि मेरा दृढ़ संकल्प—सफलता के लिए परम आवश्यक—मुझे वह सब दिला देगा जो मैं चाहता था; वहीं दूसरी ओर, मुझे डर था कि कहीं मैं अपनी मेहनत और कौशल से हासिल की गई सारी ज़मीन न खो दूं और एक ही जल्दबाजी भरे प्रयास से भविष्य की सारी उम्मीदें तोड़ न दूं, जबकि समय और धैर्य से सफलता मिल सकती थी। यह मानो अपनी ज़िंदगी को पासे पर दांव पर लगाने जैसा था; फिर भी मैं प्रयास करने के लिए तैयार था। किसी भी हालत में, मैं उससे वह स्पष्टीकरण मांगूंगा जो उसने पहले देने का आधा वादा किया था; मैं इस घृणित बाधा, मेरी खुशी में इस रहस्यमय रुकावट का कारण पूछूंगा, और जैसा कि मुझे विश्वास था, उसकी खुशी में भी।

लेकिन जब मैं इस बात पर विचार कर रहा था कि मैं अपने अनुरोध को सबसे

अच्छे तरीके से कैसे प्रस्तुत करूँ, तभी मेरी साथी, एक धीमी सी आह के साथ अपनी तल्लीनता से जागी और खिड़की की ओर देखते हुए, जहाँ खून जैसे लाल रंग का पूर्णिमा का चाँद, एक भयानक, अद्भुत सदाबहार पेड़ के ऊपर से उग रहा था, हम पर चमक रहा था, बोली, — 'गिल्बर्ट, बहुत देर हो रही है।'

मैंने कहा, 'मैं समझ गया। शायद आप चाहते हैं कि मैं जाऊं?'

'मुझे लगता है आपको ऐसा करना चाहिए। अगर मेरे भले पड़ोसियों को इस मुलाकात के बारे में पता चल गया — जैसा कि उन्हें ज़रूर पता चलेगा — तो वे इसका मेरे लिए कोई खास फायदा नहीं उठाएंगे।' उसने ये बात एक ऐसी मुस्कान के साथ कही जिसे पादरी शायद क्रूर मुस्कान कहते।

मैंने कहा, 'उन्हें इसे जैसे चाहें वैसे तोड़-मरोड़ कर पेश करने दो। जब तक हम स्वयं से और एक-दूसरे से संतुष्ट हैं, तब तक उनके विचारों से हमें क्या लेना-देना? उन्हें अपनी घिनौनी बातों और झूठे आविष्कारों के साथ भाड़ में जाने दो!'

इस अचानक हुई प्रतिक्रिया से उसके चेहरे पर लाली आ गई।

'तो तुमने सुन लिया है कि लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं?'

'मैंने कुछ घिनौनी झूठी बातें सुनी हैं; लेकिन हेलेन, केवल मूर्ख ही एक पल के लिए उन पर विश्वास करेंगे, इसलिए उन्हें लेकर परेशान मत हो।'

'मैंने श्री मिलवर्ड को मूर्ख नहीं समझा, और वह सब कुछ सच मानते हैं; लेकिन आप अपने आसपास के लोगों की राय को चाहे कितना भी कम महत्व दें—आप उन्हें व्यक्तिगत रूप से चाहे कितना भी कम सम्मान दें, झूठा और पाखंडी कहलाना, जिस बात से आपको घृणा है उसे करने का आरोप लगना, और जिन बुराइयों को आप अस्वीकार करते हैं उन्हें बढ़ावा देना, अपने अच्छे इरादों को विफल होते देखना, अपनी कथित अयोग्यता के कारण अपने हाथ पंगु होते देखना, और जिन सिद्धांतों का आप दावा करते हैं उन पर कलंक लगाना सुखद नहीं होता।'

'सच है; और अगर मैंने अपनी लापरवाही और दिखावे की अनदेखी करके आपको इन बुराइयों के हवाले करने में किसी भी तरह से मदद की है, तो मैं आपसे विनती करता हूँ कि न केवल मुझे क्षमा करें, बल्कि मुझे प्रायश्चित करने का अवसर भी दें; मुझे हर आरोप से आपका नाम साफ़ करने की अनुमति दें: मुझे आपके सम्मान को अपने सम्मान के बराबर मानने और आपकी प्रतिष्ठा की रक्षा करने का अधिकार दें, क्योंकि यह मेरे जीवन से भी अधिक मूल्यवान है!'

क्या आपमें इतनी हिम्मत है कि आप उस व्यक्ति से जुड़ सकें जिसे आप जानते हैं कि आपके चारों ओर के सभी लोग संदेह और तिरस्कार की नजर से देखते हैं, और अपने हितों और सम्मान को उसके साथ जोड़ सकें? सोचिए! यह एक गंभीर मामला है।

'हेलेन, मुझे ऐसा करने में गर्व होगा! — बेहद खुशी होगी — शब्दों में बयां नहीं कर सकता! — और अगर यही हमारे मिलन में एकमात्र बाधा थी, तो वह अब दूर हो गई है, और तुम्हें — तुम मेरी हो जाओगी!'

और जोश से भरे उन्माद में अपनी सीट से उठते हुए, मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे अपने होठों से लगाने ही वाला था कि उसने अचानक ही मेरा हाथ छुड़ा लिया और तीव्र पीड़ा से भरी कड़वाहट में चिल्लाते हुए कहा, — 'नहीं, नहीं, बात यहीं खत्म नहीं होती!'

तो फिर बात क्या है? आपने वादा किया था कि मुझे कभी न कभी पता चल जाएगा, और—'

'तुम्हें कभी न कभी पता चल ही जाएगा – लेकिन अभी नहीं – मेरे सिर में बहुत तेज दर्द हो रहा है,' उसने अपना हाथ माथे पर दबाते हुए कहा, 'और मुझे थोड़ा आराम चाहिए – और आज तो मैंने बहुत दुख झेला है!' उसने लगभग बेकाबू होकर आगे कहा।

मैंने जोर देकर कहा, 'लेकिन इसे बताने से आपको कोई नुकसान नहीं होगा; इससे आपका मन शांत होगा; और तब मुझे पता चल जाएगा कि आपको कैसे सांत्वना देनी है।'

उसने निराशा से अपना सिर हिलाया। "अगर तुम्हें सब पता होता, तो तुम भी मुझे ही दोषी ठहराते—शायद मेरी औकात से भी ज़्यादा—भले ही मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा किया हो," उसने धीमी आवाज़ में कहा, मानो वह मन ही मन सोच रही हो।

'हेलेन, तुम? असंभव?'

'हां, स्वेच्छा से नहीं; क्योंकि मैं आपके लगाव की ताकत और गहराई को नहीं जानता था। मैंने सोचा था - कम से कम मैंने यही सोचने की कोशिश की थी - कि आपके मन में मेरे लिए जो भाव थे, वे उतने ही ठंडे और भाईचारे वाले थे जितना आप दावा करते थे।'

'या फिर तुम्हारे जैसा?'

‘या जैसा मेरा होना चाहिए था—इतना हल्का और स्वार्थी, सतही स्वभाव का कि—’

'हाँ, तुमने सचमुच मेरे साथ अन्याय किया है।'

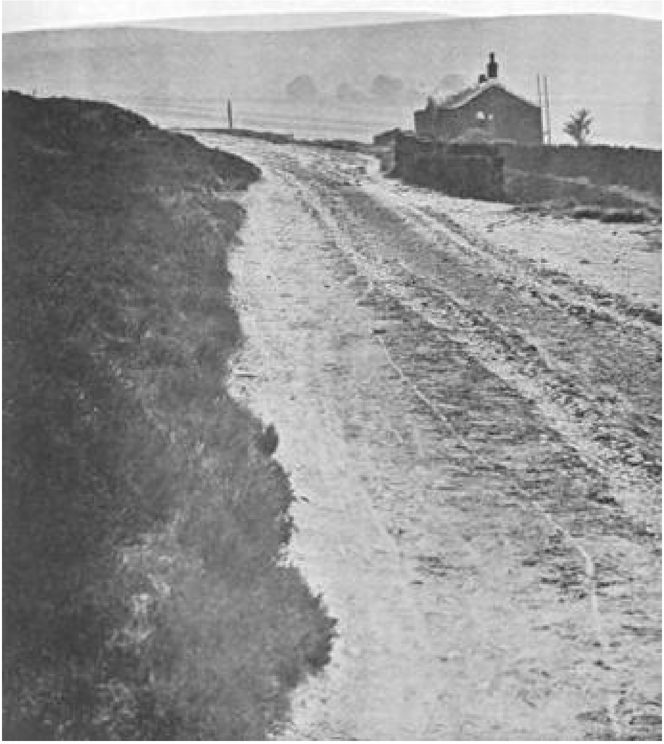

‘मुझे पता है मैंने ऐसा किया था; और कभी-कभी मुझे तब भी इस बात का शक होता था; लेकिन मैंने सोचा कि कुल मिलाकर, आपकी कल्पनाओं और आशाओं को यूं ही व्यर्थ होने देने में—या किसी अधिक उपयुक्त लक्ष्य की ओर उड़ जाने देने में—कोई बड़ा नुकसान नहीं होगा, जबकि आपकी मित्रतापूर्ण सहानुभूति मेरे साथ बनी रहे; लेकिन अगर मुझे आपके स्नेह की गहराई, आपके द्वारा महसूस किए जाने वाले उदार, निस्वार्थ स्नेह का पता होता—’

‘हेलेन, ऐसा लगता है?’

'अगर आपको ऐसा लगता है, तो मैं अलग तरह से व्यवहार करता।'

‘कैसे? आपने मुझे इससे कम प्रोत्साहन नहीं दिया होगा, और न ही मेरे साथ इससे अधिक कठोर व्यवहार किया होगा! और यदि आपको लगता है कि आपने मुझे अपनी मित्रता देकर, और कभी-कभार मुझे अपनी संगति और बातचीत का आनंद लेने की

अनुमति देकर, जब घनिष्ठता की सभी आशाएँ व्यर्थ हो गईं - जैसा कि आपने हमेशा मुझे समझाया - तो आपने मेरे साथ अन्याय किया है, तो आप गलत हैं; क्योंकि ऐसे उपकार, अपने आप में, न केवल मेरे हृदय को आनंदित करते हैं, बल्कि मेरी आत्मा को शुद्ध, उन्नत और महान बनाते हैं; और मैं दुनिया की किसी भी अन्य स्त्री के प्रेम से अधिक आपकी मित्रता को प्राथमिकता दूंगा!'

इससे उसे कोई खास तसल्ली नहीं मिली, उसने अपने हाथ घुटनों पर रखे और ऊपर देखते हुए मानो खामोश पीड़ा में ईश्वर से मदद की गुहार लगा रही हो; फिर मेरी ओर मुड़कर उसने शांत भाव से कहा, "कल, अगर तुम दोपहर के आसपास मैदान में मुझसे मिलो, तो मैं तुम्हें वह सब बता दूंगी जो तुम जानना चाहते हो; और शायद तब तुम्हें हमारी घनिष्ठता खत्म करने की जरूरत समझ आ जाएगी — अगर तुम मुझे स्वेच्छा से ऐसे व्यक्ति के रूप में स्वीकार नहीं कर लेते जो अब सम्मान के योग्य नहीं है।"

'मैं इसका जवाब बेझिझक 'नहीं' में दे सकती हूँ: आप इतने गंभीर खुलासे नहीं कर सकतीं - आप मेरी आस्था की परीक्षा ले रही होंगी, हेलेन।'

'नहीं, नहीं, नहीं,' उसने गंभीरता से दोहराया — 'काश ऐसा होता! ईश्वर का शुक्र है!' उसने आगे कहा, 'मुझे कोई बड़ा अपराध स्वीकार नहीं करना है; लेकिन मेरे पास उससे कहीं अधिक है जो आप सुनना पसंद नहीं करेंगे, या शायद आसानी से क्षमा कर पाएंगे, — और जितना मैं आपको अभी बता सकती हूँ उससे कहीं अधिक है; इसलिए कृपया मुझे अकेला छोड़ दें!'

'मैं करूँगा; लेकिन पहले मुझे इस एक सवाल का जवाब दो; क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?'

मैं इसका जवाब नहीं दूंगा!

'तो मैं यही मानूंगा कि आप ऐसा करते हैं; और इसलिए शुभ रात्रि।'

उसने अपनी भावनाओं को छिपाने के लिए मुझसे मुंह फेर लिया, जिन पर वह पूरी तरह से काबू नहीं कर पा रही थी; लेकिन मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसे जोश से चूम लिया।

'गिल्बर्ट, मुझे छोड़ दो!' वह इतनी पीड़ादायक स्वर में चिल्लाई कि मुझे लगा कि उसकी बात न मानना क्रूरता होगी।

लेकिन दरवाजा बंद करने से पहले मैंने एक बार पीछे मुड़कर देखा और पाया कि

वह मेज पर आगे की ओर झुकी हुई थी, अपने हाथों से अपनी आँखें दबाए हुए, सिसक-सिसक कर रो रही थी; फिर भी मैं चुपचाप पीछे हट गया। मुझे लगा कि उस समय उसे सांत्वना देना उसके कष्टों को और बढ़ा देगा।

पहाड़ी से उतरते समय मेरे मन में उमड़ रहे सारे सवाल, अटकलें, डर, उम्मीदें और बेतहाशा भावनाएं, अगर मैं उन्हें बयां करूँ तो एक पूरी किताब भर जाएगी। लेकिन आधे रास्ते तक पहुँचने से पहले ही, जिसे मैं पीछे छोड़ आई थी, उसके लिए मेरे मन में उठी गहरी सहानुभूति ने बाकी सारी भावनाओं को पीछे धकेल दिया और मुझे वापस खींचने लगी: मैं सोचने लगी, 'मैं इतनी जल्दी इस दिशा में क्यों भाग रही हूँ? क्या मुझे घर पर सुकून, तसल्ली, शांति, यकीन, संतोष, सब कुछ मिल सकता है? और क्या मैं वहाँ सारी बेचैनी, दुख और चिंता को पीछे छोड़ सकती हूँ?'

और मैं मुड़कर पुराने हॉल को देखने लगा। मेरे सीमित क्षितिज के ऊपर चिमनियों के अलावा कुछ खास दिखाई नहीं दे रहा था। मैं उसे बेहतर ढंग से देखने के लिए वापस चला गया। जब वह नज़र आया, तो मैं एक पल के लिए रुककर उसे देखता रहा, और फिर उस अंधकारमय आकर्षण की ओर बढ़ने लगा। कोई चीज़ मुझे और पास बुला रही थी—और भी पास—और क्यों नहीं, भला? क्या मुझे उस पूजनीय इमारत के चिंतन में, जिसके ऊपर बादल रहित आकाश में पूर्णिमा का चाँद इतनी शांति से चमक रहा था—अगस्त की रात की उस खास गर्म पीली चमक के साथ—और भीतर मेरी आत्मा की स्वामिनी के साथ—अपने घर लौटने से ज़्यादा लाभ नहीं मिल सकता था, जहाँ तुलनात्मक रूप से सब कुछ प्रकाश, जीवन और प्रसन्नता से भरा था, और इसलिए मेरी वर्तमान मनस्थिति के लिए प्रतिकूल था—और उससे भी ज़्यादा इसलिए कि वहाँ के सभी निवासी कमोबेश उस घृणित विश्वास से ग्रस्त थे, जिसके विचार मात्र से ही मेरा खून खौल उठता था—और मैं उसे खुलेआम घोषित होते हुए या सावधानी से इशारों में कहते हुए कैसे सहन कर सकता था—कौन सा ज़्यादा बुरा था? मुझे पहले ही काफी परेशानी हो चुकी थी, एक बड़बड़ाते शैतान से जो मेरे कान में फुसफुसाता रहता था, 'यह सच हो सकता है,' जब तक कि मैं जोर से चिल्लाकर यह न कह दूं, 'यह झूठ है! मैं तुम्हें चुनौती देता हूं कि तुम मुझे यह मानने पर मजबूर कर दो!'

मुझे उसके बैठक कक्ष की खिड़की से लाल रंग की हल्की रोशनी दिखाई दे रही थी। मैं बगीचे की दीवार तक गया और उस पर झुककर खड़ा हो गया, मेरी निगाहें

जाली पर टिकी हुई थीं, मैं सोच रहा था कि वह इस समय क्या कर रही होगी, क्या सोच रही होगी या किस पीड़ा से गुजर रही होगी, और काश मैं उससे एक शब्द भी कह पाता, या जाने से पहले उसकी एक झलक ही देख पाता।

मैंने बहुत देर तक देखा, चाहा और सोचा नहीं था कि मैं दीवार फांदकर अंदर चला गया, खिड़की से एक नज़र डालने के प्रलोभन को रोक नहीं पाया, बस यह देखने के लिए कि क्या वह हमारे बिछड़ने के समय से ज़्यादा शांत थी; और अगर मैंने उसे अभी भी गहरे दुख में पाया, तो शायद मैं उसे सांत्वना देने की हिम्मत करूँ—उन कई बातों में से एक कहूँ जो मुझे पहले कहनी चाहिए थीं, बजाय इसके कि अपनी मूर्खतापूर्ण जल्दबाजी से उसके दुख को और बढ़ाऊँ। मैंने देखा। उसकी कुर्सी खाली थी: कमरा भी खाली था। लेकिन उसी क्षण किसी ने बाहरी दरवाजा खोला, और एक आवाज़—उसकी आवाज़—ने कहा,— 'बाहर आओ— मैं चाँद देखना चाहती हूँ, और शाम की हवा में साँस लेना चाहती हूँ: ये मुझे अच्छा महसूस कराएँगी—अगर कुछ भी अच्छा महसूस करा सकता है।'

तो यहाँ, वह और राहेल बगीचे में टहलने आ रही थीं। मैं दुआ कर रही थी कि मैं दीवार के उस पार सुरक्षित वापस चली जाऊँ। मैं ऊँची होली की झाड़ी की छाया में खड़ी थी, जो खिड़की और बरामदे के बीच खड़ी थी और फिलहाल मुझे किसी की नज़र से छिपा रही थी, लेकिन मुझे चाँदनी में दो आकृतियाँ बाहर आते देखने से नहीं रोक पा रही थी: श्रीमती ग्राहम, उनके पीछे एक और व्यक्ति - राहेल नहीं, बल्कि एक दुबला-पतला और लंबा युवक। हे भगवान, मेरे माथे में कितनी घबराहट होने लगी! तीव्र चिंता ने मेरी दृष्टि धुंधली कर दी; लेकिन मैंने सोचा - हाँ, और आवाज़ ने इसकी पुष्टि की - यह श्री लॉरेंस थे!

'हेलेन, तुम्हें इस बात की इतनी चिंता नहीं करनी चाहिए,' उसने कहा; 'मैं भविष्य में और अधिक सतर्क रहूंगा; और समय आने पर—'

मैंने वाक्य का शेष भाग नहीं सुना; क्योंकि वह उसके बिल्कुल पास चल रहा था और इतनी धीमी आवाज़ में बोल रहा था कि मैं शब्द नहीं सुन पाई। मेरा हृदय घृणा से फट रहा था; फिर भी मैंने उसकी प्रतिक्रिया सुनने के लिए ध्यानपूर्वक सुना। मैंने उसे स्पष्ट रूप से सुना।

'लेकिन मुझे यह जगह छोड़नी ही होगी, फ्रेडरिक,' उसने कहा— 'मैं यहाँ कभी खुश नहीं रह सकती,— और न ही कहीं और,' उसने एक फीकी हंसी के साथ कहा

— 'लेकिन मुझे यहाँ चैन नहीं मिल सकता।'

'लेकिन इससे बेहतर जगह आपको कहां मिल सकती है?' उसने जवाब दिया, 'इतनी एकांत जगह – मेरे इतने करीब, अगर आप इसे कुछ समझते हैं तो।'

'हां,' उसने बात काटते हुए कहा, 'अगर वे मुझे अकेला छोड़ देते तो मेरी सारी इच्छाएं पूरी हो जातीं।'

लेकिन हेलेन, तुम जहाँ भी जाओगी, तुम्हें वही परेशानियाँ झेलनी पड़ेंगी। मैं तुम्हें खोने को तैयार नहीं हूँ: मुझे तुम्हारे साथ जाना होगा, या तुम्हारे पास आना होगा; और यहाँ के साथ-साथ हर जगह भी दखल देने वाले मूर्ख मौजूद हैं।

इस प्रकार बातें करते हुए वे धीरे-धीरे मेरे पास से गुजरे, रास्ते पर आगे बढ़ गए, और मैंने उनकी बातचीत फिर कभी नहीं सुनी; लेकिन मैंने देखा कि उसने अपना हाथ उसकी कमर में डाल दिया, जबकि उसने प्यार से अपना हाथ उसके कंधे पर रखा; और फिर, एक कांपते हुए अंधेरे ने मेरी दृष्टि को धुंधला कर दिया, मेरा दिल घबरा गया और मेरा सिर आग की तरह जलने लगा: मैं उस जगह से आधा भागा, आधा लड़खड़ाया, जहाँ भय ने मुझे जड़वत जमा रखा था, और दीवार के ऊपर से छलांग लगाई या लुढ़क गया— मुझे ठीक से याद नहीं— लेकिन मुझे पता है कि, उसके बाद, एक भावुक बच्चे की तरह, मैंने खुद को जमीन पर पटक दिया और क्रोध और निराशा के दौरे में वहीं पड़ा रहा— कितनी देर तक, मैं कह नहीं सकता; लेकिन यह काफी समय रहा होगा; जब मैंने आंसुओं के आँसुओं से अपने कष्ट को कुछ हद तक कम किया और चाँद की ओर देखा, जो इतनी शांति और बेफिक्री से चमक रहा था, मानो मेरी पीड़ा से उतना ही अप्रभावित जितना मैं उसकी शांतिपूर्ण चमक से, और मैंने मृत्यु या विस्मृति के लिए पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की, तो मैं उठा और घर की ओर चल पड़ा - रास्ते की परवाह किए बिना, सहज रूप से अपने पैरों से दरवाजे तक खिंचा चला गया, मैंने पाया कि दरवाजा मेरे लिए बंद था, और मेरी माँ को छोड़कर सभी बिस्तर पर थे, जो मेरे अधीरता से खटखटाने का जवाब देने के लिए जल्दी से आई और सवालों और फटकारों की बौछार के साथ मेरा स्वागत किया।

'अरे, गिल्बर्ट! तुमने ऐसा कैसे कर दिया? कहाँ थे तुम? अंदर आओ और खाना खा लो। मैंने सब कुछ तैयार कर लिया है, हालाँकि तुम इसके लायक नहीं हो, क्योंकि तुमने आज शाम जिस अजीब तरीके से घर छोड़ा, उससे मुझे बहुत डर लग गया। श्री मिलवर्ड तो बिल्कुल... बेचारे! कितने बीमार लग रहे हैं! अरे, क्या बात है?'

‘कुछ नहीं, कुछ नहीं— मुझे एक मोमबत्ती दे दो।’

लेकिन क्या आप रात का खाना नहीं खाएंगे?

'नहीं; मैं सोना चाहती हूँ,' मैंने कहा और एक मोमबत्ती लेकर उसके हाथ में पकड़ी हुई मोमबत्ती में जला दी।

‘ओह, गिल्बर्ट, तुम कितने कांप रहे हो!’ मेरे चिंतित माता-पिता ने कहा। ‘तुम बिल्कुल पीले पड़ गए हो! मुझे बताओ क्या हुआ? क्या कुछ हुआ है?’

मोमबत्ती न जलने पर झुंझलाहट से पैर पटकते हुए मैं चिल्लाई, ‘कुछ नहीं।’ फिर अपनी झुंझलाहट को दबाते हुए मैंने कहा, ‘मैं थोड़ी तेज़ चल रही थी, बस। शुभ रात्रि।’ और नीचे से आ रही ‘तेज़ चल रही हो! कहाँ थी?’ की आवाज़ की परवाह किए बिना मैं बिस्तर पर चली गई।

मेरी माँ मेरे स्वास्थ्य और व्यवहार के बारे में सवाल-जवाब और सलाह देते हुए मेरे कमरे के दरवाजे तक मेरे पीछे-पीछे आईं; लेकिन मैंने उनसे सुबह तक मुझे अकेला छोड़ने की विनती की; और वह चली गईं, और आखिरकार मुझे उनके अपने दरवाजे को बंद करने की आवाज़ सुनकर संतोष हुआ। हालाँकि, मुझे उस रात नींद नहीं आई, और सोने की कोशिश करने के बजाय, मैंने अपने जूते उतारकर कमरे में तेज़ी से चक्कर लगाना शुरू कर दिया, ताकि मेरी माँ मुझे सुन न लें। लेकिन तख्तों से चरमराहट की आवाज़ आई, और वह चौकस थीं। मैं पंद्रह मिनट भी नहीं चली थी कि वह फिर से दरवाजे पर आ गईं।

'गिल्बर्ट, तुम बिस्तर पर क्यों नहीं हो - तुमने कहा था कि तुम जाना चाहते हो?'

‘धिक्कार है! मैं जा रहा हूँ,’ मैंने कहा।

लेकिन आप इतनी देर क्यों लगा रहे हैं? आपके मन में कुछ तो चल रहा होगा —

'भगवान के लिए, मुझे अकेला छोड़ दो, और तुम खुद जाकर सो जाओ।'

‘क्या यह श्रीमती ग्राहम ही हैं जो आपको इतना परेशान कर रही हैं?’

नहीं, नहीं, मैं आपको बताता हूँ—यह कुछ भी नहीं है।

'काश ऐसा न हो,' उसने आह भरते हुए बुदबुदाया और अपने कमरे में लौट गई, जबकि मैं बिस्तर पर लेट गया, उसके प्रति बेहद असंतुष्ट महसूस कर रहा था क्योंकि उसने मुझसे एकमात्र बची हुई सांत्वना छीन ली थी और मुझे उस कांटों के बिस्तर से जकड़ दिया था।

मैंने कभी इतनी लंबी, इतनी कष्टदायक रात नहीं बिताई थी। फिर भी, यह पूरी

तरह से नींदहीन रात नहीं थी। सुबह होते-होते मेरे विचलित करने वाले विचार अपनी सुसंगति खोने लगे और उलझे हुए, बेचैन सपनों में बदलने लगे, और अंत में, कुछ देर के लिए अचेतन नींद आ गई। लेकिन फिर कड़वी यादों का सैलाब उमड़ पड़ा - जागने पर जीवन खाली, और उससे भी बदतर, पीड़ा और दुख से भरा हुआ लगा - केवल बंजर रेगिस्तान नहीं, बल्कि कांटों और झाड़ियों से भरा हुआ - खुद को ठगा हुआ, धोखा खाया हुआ, निराश, अपने प्रेम को कुचला हुआ, अपने देवदूत को देवदूत न और अपने मित्र को साक्षात शैतान पाया - यह उससे भी बदतर था अगर मैं बिल्कुल भी न सोया होता।

सुबह का मौसम उदास और नीरस था; मौसम मेरी उम्मीदों की तरह बदल गया था और बारिश की बूँदें खिड़की पर पड़ रही थीं। फिर भी मैं उठा और बाहर चला गया; खेत की देखभाल करने के लिए नहीं, हालाँकि यह मेरा बहाना हो सकता था, बल्कि अपने दिमाग को शांत करने और संभव हो तो इतना संयम हासिल करने के लिए कि सुबह के नाश्ते पर परिवार से बिना किसी अप्रिय टिप्पणी के मिल सकूँ। अगर मैं भीग जाता, तो नाश्ते से पहले की गई अत्यधिक मेहनत के बहाने से मेरी अचानक भूख न लगने की समस्या का बहाना मिल जाता; और अगर सर्दी लग जाती, तो जितनी ज़्यादा हो उतना अच्छा—यह मेरे उदास मिजाज और लंबे समय तक रहने वाली मायूसी का कारण बताने में मदद करती।

अध्याय XIII

एक सुबह जब मैंने बेवजह चिड़चिड़ापन दिखाया, तो मेरी माँ ने कहा, ‘मेरे प्यारे गिल्बर्ट, काश तुम थोड़ा और मिलनसार बनने की कोशिश करते। तुम कहते हो कि तुम्हें कुछ नहीं हुआ है, और ऐसा कुछ नहीं हुआ जिससे तुम्हें दुख हो, फिर भी पिछले कुछ दिनों में मैंने किसी को इतना बदला हुआ नहीं देखा जितना तुम्हें। तुम किसी के

लिए भी अच्छे शब्द नहीं बोलते—दोस्त हों या अजनबी, बराबर हों या कमतर—सब एक जैसे हैं। काश तुम इसे सुधारने की कोशिश करते।'

'क्या जाँचें?'

अरे, तुम्हारा ये अजीब स्वभाव! तुम्हें पता ही नहीं कि ये तुम्हें कितना बिगाड़ रहा है। मुझे यकीन है कि अगर तुम इसे सही तरीके से खेलने देते, तो स्वभाव से इससे बेहतर स्वभाव किसी का नहीं हो सकता था: इसलिए इस मामले में तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है।

जब वह इस तरह विरोध कर रही थी, मैंने एक किताब उठाई और उसे अपने सामने मेज पर खोलकर पढ़ने का नाटक किया, क्योंकि मैं न तो खुद को सही ठहरा पा रहा था और न ही अपनी गलतियों को स्वीकार करना चाहता था; और मैं इस मामले पर कुछ भी नहीं कहना चाहता था। लेकिन मेरी नेक माँ उपदेश देती रहीं, फिर प्यार से मनाने लगीं और मेरे बालों को सहलाने लगीं; और मैं खुद को काफी अच्छा लड़का समझने लगा था, लेकिन मेरा शरारती भाई, जो कमरे में इधर-उधर घूम रहा था, अचानक चिल्लाकर मेरी शरारत को फिर से जगा दिया, — 'माँ, इसे मत छुओ! यह काट लेगा! यह इंसान के रूप में साक्षात शेर है। मैंने उसे पूरी तरह से त्याग दिया है — उसे बेदखल कर दिया है — जड़ से उखाड़ फेंका है। उसके छह गज के दायरे में आना मेरी जान के बराबर है। पिछले दिन उसने मुझे एक सुंदर, हानिरहित प्रेम गीत गाने पर लगभग मेरी खोपड़ी तोड़ दी थी, जो मैंने उसे खुश करने के लिए गाया था।'

'ओह, गिल्बर्ट! तुमने ऐसा कैसे किया?' मेरी माँ ने हैरानी से कहा।

मैंने कहा, 'मैंने तुमसे पहले चुप रहने को कहा था, फर्गस।'

"हाँ, लेकिन जब मैंने आपको आश्वस्त किया कि इसमें कोई परेशानी नहीं है और यह सोचकर कि आपको अगला छंद ज़्यादा पसंद आएगा, मैं आगे बढ़ गया, तो आपने मुझे कंधे से पकड़कर ज़ोर से धक्का दिया और दीवार से टकरा दिया, इतनी ज़ोर से कि मुझे लगा जैसे मेरी जीभ दो टुकड़ों में कट गई हो, और मुझे लगा कि वह जगह मेरे दिमाग से भर जाएगी; और जब मैंने अपना हाथ अपने सिर पर रखा और पाया कि मेरी खोपड़ी नहीं टूटी है, तो मुझे लगा कि यह एक चमत्कार है, कोई गलती नहीं। लेकिन, बेचारा!" उसने एक भावुक आह भरते हुए कहा — "उसका दिल टूट गया है — यही सच है — और उसका सिर —"

'अब चुप रहोगे?' मैं चौंककर उठ खड़ी हुई और उस आदमी को इतनी गुस्से से

घूरने लगी कि मेरी माँ को लगा कि मैं उसे कोई गंभीर शारीरिक चोट पहुँचाने वाली हूँ, इसलिए उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझसे उसे अकेला छोड़ने की विनती की। फिर वह आराम से जेब में हाथ डाले, उत्तेजक गीत गाते हुए बाहर चला गया – 'क्या मैं ऐसा करूँ, क्योंकि एक औरत सुंदर है,' इत्यादि।

मैंने माँ की विनती के जवाब में कहा, 'मैं उसके साथ अपने हाथ गंदे नहीं करने वाली। मैं उसे चिमटे से भी नहीं छूऊँगी।'

अब मुझे याद आया कि रॉबर्ट विल्सन के साथ मेरा एक काम था, मेरे खेत से सटी एक ज़मीन की खरीद के बारे में— एक ऐसा काम जिसे मैं दिन-ब-दिन टालता आ रहा था; क्योंकि अब मेरी किसी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं थी; और इसके अलावा, मैं मानव-द्वेषी स्वभाव का था, और तो और, जेन विल्सन या उसकी माँ से मिलने पर मुझे विशेष आपत्ति थी; क्योंकि हालाँकि अब मेरे पास श्रीमती ग्राहम के बारे में उनकी बातों पर विश्वास करने का ठोस कारण था, फिर भी मुझे वे ज़रा भी पसंद नहीं थीं— न ही एलिज़ा मिलवर्ड— और उनसे मिलने का विचार मुझे और भी ज़्यादा अप्रिय लग रहा था क्योंकि अब मैं उनके झूठे आरोपों का खंडन नहीं कर सकता था और पहले की तरह अपने विश्वासों पर अडिग नहीं रह सकता था। लेकिन आज मैंने अपने कर्तव्य पर लौटने का प्रयास करने का निश्चय किया। हालाँकि मुझे इसमें कोई आनंद नहीं मिल रहा था, फिर भी यह आलस्य से कम कष्टदायक होगा— किसी भी हालत में यह अधिक लाभदायक होगा। यदि जीवन मेरे पेशे में कोई आनंद नहीं देता, तो कम से कम इससे बाहर कोई प्रलोभन तो नहीं देता; और अब से मैं पूरी लगन से काम करूंगा और मेहनत करूंगा, ठीक वैसे ही जैसे कोई बेचारा घोड़ा जो अपने काम में पूरी तरह से ढल चुका हो, और जीवन में धीरे-धीरे आगे बढ़ूंगा, पूरी तरह से बेकार नहीं, बल्कि सुखद, और बिना शिकायत किए, भले ही अपने भाग्य से संतुष्ट न होऊं।

इस प्रकार, एक प्रकार की उदास स्वीकृति के साथ, यदि ऐसा शब्द इस्तेमाल करने की अनुमति हो, तो मैंने रायकोट फार्म की ओर अपना रास्ता बनाया, इस समय उसके मालिक के वहां मिलने की शायद ही उम्मीद थी, लेकिन यह जानने की आशा थी कि वह परिसर के किस हिस्से में मिलने की सबसे अधिक संभावना है।

वह अनुपस्थित थे, लेकिन कुछ ही मिनटों में घर लौटने की उम्मीद थी; और मुझे बैठक में जाकर प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया। श्रीमती विल्सन रसोई में व्यस्त थीं, लेकिन कमरा खाली नहीं था; और जैसे ही मैं अंदर दाखिल हुई, मैं अनजाने में ही पीछे

हट गई; क्योंकि वहाँ श्रीमती विल्सन एलिज़ा मिलवर्ड के साथ बातें कर रही थीं। हालाँकि, मैंने शांत और विनम्र रहने का निश्चय किया। एलिज़ा ने भी ऐसा ही संकल्प लिया था। चाय पार्टी की शाम के बाद से हमारी मुलाकात नहीं हुई थी; लेकिन उनमें न तो खुशी का भाव था, न ही दुख का, न ही करुणा दिखाने का प्रयास, न ही आहत स्वाभिमान का प्रदर्शन: वह शांत स्वभाव की और विनम्र व्यवहार वाली थीं। उनके हाव-भाव में एक सहजता और प्रसन्नता थी, जो मुझमें नहीं थी; लेकिन उनकी अति भावुक आँखों में द्वेष की गहराई थी, जिससे मुझे स्पष्ट रूप से पता चल गया कि मुझे माफ़ नहीं किया गया है; क्योंकि, यद्यपि अब उन्हें मुझे जीतने की कोई उम्मीद नहीं थी, फिर भी वह अपनी प्रतिद्वंद्वी से नफरत करती थीं, और स्पष्ट रूप से मुझ पर अपना द्वेष निकालने में आनंदित थीं। दूसरी ओर, मिस विल्सन बेहद मिलनसार और विनम्र थीं, और हालाँकि मैं खुद बातचीत करने के मूड में नहीं था, फिर भी दोनों महिलाओं ने आपस में लगातार हल्की-फुल्की बातें कीं। लेकिन एलिज़ा ने पहले सुविधाजनक विराम का फायदा उठाते हुए पूछा कि क्या मैंने हाल ही में श्रीमती ग्राहम को देखा है, उनका लहजा महज़ एक सामान्य पूछताछ जैसा था, लेकिन उनकी तिरछी नज़र शरारत भरी थी, जो असल में द्वेष से भरी हुई थी।

मैंने लापरवाही भरे लहजे में जवाब दिया, 'हाल ही में नहीं,' लेकिन अपनी आँखों से उसकी घृणास्पद निगाहों को सख्ती से दूर करते हुए; क्योंकि मैं परेशान था और अपने माथे का रंग लाल होते हुए महसूस कर रहा था, हालांकि मैंने अविचलित दिखने की पूरी कोशिश की थी।

‘क्या! क्या तुम अभी से थकने लगे हो? मुझे लगा था कि इतना महान प्राणी कम से कम एक साल तक तुम्हें बांधे रखने की शक्ति रखेगा!’

मैं अभी उसके बारे में बात नहीं करना चाहूंगा।

‘आह! तो अंततः आपको अपनी गलती का एहसास हो गया है— आपने अंततः यह जान लिया है कि आपकी दिव्यता पूरी तरह से निष्कलंक नहीं है—’

'मैंने आपसे अनुरोध किया था कि आप उसके बारे में बात न करें, मिस एलिजा।'

'ओह, मुझे क्षमा करें! मुझे लगता है कि कामदेव के तीर आपके लिए बहुत तेज थे: घाव, जो केवल ऊपरी तौर पर नहीं हैं, अभी तक भरे नहीं हैं, और प्रियजन का नाम लेते ही फिर से रिसने लगते हैं।'

‘बल्कि कहिए,’ मिस विल्सन ने बीच में टोकते हुए कहा, ‘श्री मार्खम को लगता है

कि उस नाम का जिक्र नेक सोच वाली महिलाओं के सामने करना उचित नहीं है। मुझे आश्चर्य है, एलिजा, कि आप उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति का जिक्र करने के बारे में सोच भी क्यों रही हैं – आप जानती होंगी कि उसका जिक्र यहां मौजूद किसी को भी अच्छा नहीं लगेगा।'

यह सब कैसे सहन किया जा सकता था? मैं उठी और गुस्से से आग बबूला होकर घर से बाहर निकलने ही वाली थी कि तभी मुझे याद आया—ठीक समय रहते अपनी इज्जत बचाते हुए—कि ऐसा करना मूर्खता होगी, और इससे मेरे उन सताने वालों को ही मेरे ऊपर हंसने का मौका मिलेगा, उस शख्स के लिए जिसे मैं अपने दिल से जरा भी कुर्बानी देने के लायक नहीं समझती—हालाँकि मेरे मन में उसके लिए पहले जैसा आदर और प्यार अभी भी इतना था कि मैं दूसरों के मुंह से उसका नाम खराब होते हुए नहीं सुन सकती थी—मैं बस खिड़की तक गई, और कुछ पल तक गुस्से से अपने होंठ भींचे और सीने में उठ रही तीव्र भावनाओं को सख्ती से दबाए रखकर, मैंने मिस विल्सन से कहा कि मुझे उनके भाई कहीं नजर नहीं आ रहे हैं, और आगे कहा कि चूंकि मेरा समय कीमती है, इसलिए शायद कल फिर आना बेहतर होगा, जब मुझे यकीन हो कि वह घर पर होंगे।

'अरे नहीं!' उसने कहा; 'अगर आप एक मिनट रुकेंगे, तो वह ज़रूर आ जाएगा; क्योंकि उसे एल— (वह हमारा बाज़ार कस्बा था) में कुछ काम है, और जाने से पहले उसे थोड़ा जलपान चाहिए होगा।'

मैंने यथासंभव विनम्रता से अपनी बात रखी; और सौभाग्य से मुझे ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा। श्री विल्सन जल्द ही आ गए, और उस समय मेरा काम करने का मन नहीं था, और मुझे न तो खेत से कोई मतलब था और न ही उसके मालिक से, फिर भी मैंने बड़े दृढ़ संकल्प के साथ अपना पूरा ध्यान काम पर लगाया और जल्दी ही सौदा पूरा कर लिया—शायद उस मेहनती किसान को मेरी संतुष्टि से कहीं ज़्यादा, जितना वह स्वीकार करना चाहता था। फिर, उन्हें उनके स्वादिष्ट 'नाश्ते' पर चर्चा करने के लिए छोड़कर, मैं खुशी-खुशी घर से निकल गया और अपनी फसल काटने वाली मशीनों को देखने चला गया।

उन्हें घाटी के किनारे काम में व्यस्त छोड़कर, मैं पहाड़ी पर चढ़ गया, मेरा इरादा ऊँचे इलाकों में स्थित एक अनाज के खेत को देखने का था, और यह पता लगाने का कि वह कब कटाई के लिए तैयार होगा। लेकिन उस दिन मैं वहाँ नहीं जा सका;

क्योंकि जैसे ही मैं पास पहुँचा, मैंने थोड़ी ही दूरी पर श्रीमती ग्राहम और उनके बेटे को विपरीत दिशा से नीचे आते देखा। उन्होंने मुझे देख लिया; और आर्थर पहले से ही मेरी ओर दौड़ रहा था; लेकिन मैं तुरंत वापस मुड़ गया और स्थिर गति से घर की ओर चल पड़ा; क्योंकि मैंने ठान लिया था कि मैं उसकी माँ से फिर कभी नहीं मिलूँगा; और मेरे कानों में गूंजती तीखी आवाज़ को अनसुना करते हुए, जो मुझे 'एक पल रुको' कह रही थी, मैं अपने रास्ते पर चलता रहा; और उसने जल्द ही पीछा करना छोड़ दिया, या तो उसकी माँ ने उसे बुला लिया। खैर, जब मैंने पाँच मिनट बाद पीछे मुड़कर देखा, तो उनमें से किसी का भी कोई निशान नहीं था।

इस घटना ने मुझे बेहद बेचैन और विचलित कर दिया—शायद इसलिए कि कामदेव के तीर न केवल मेरे लिए बहुत तीखे थे, बल्कि कांटेदार और गहरे धंसे हुए थे, और मैं उन्हें अभी तक अपने दिल से निकाल नहीं पाई थी। खैर, उस दिन के बाकी समय तक मैं दुगनी पीड़ा में डूबी रही।

अध्याय 14

अगली सुबह, मुझे याद आया कि मुझे भी एल— पर काम है; इसलिए मैंने अपने घोड़े पर सवार होकर नाश्ते के तुरंत बाद यात्रा शुरू कर दी। दिन धुंध भरा और हल्की बारिश वाला था; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा: यह मेरे मन की स्थिति के लिए और भी अनुकूल था। यह एक एकांत यात्रा होने की संभावना थी; क्योंकि आज बाजार का दिन नहीं था, और जिस रास्ते से मैं जा रहा था, उस पर आम तौर पर ज्यादा आवाजाही नहीं होती थी; लेकिन यह बात भी मुझे और अच्छी लगी।

जैसे-जैसे मैं कड़वी कल्पनाओं में खोया हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था, तभी मुझे अपने पीछे थोड़ी दूरी पर एक और घोड़े की आवाज़ सुनाई दी; लेकिन मैंने कभी यह अनुमान नहीं लगाया कि सवार कौन होगा, या उसके बारे में ज़्यादा सोचा भी नहीं,

जब तक कि एक हल्की चढ़ाई पर चढ़ते समय मैंने अपनी गति धीमी नहीं की, या यूँ कहूँ कि अपने घोड़े को आलस भरी चाल चलने दी — क्योंकि मैं अपनी ही सोच में डूबा हुआ था, उसे अपनी मर्ज़ी से चलने दे रहा था — मैं पीछे छूट गया, और मेरा साथी यात्री मुझसे आगे निकल गया। उसने मेरा नाम लेकर पुकारा, क्योंकि वह कोई अजनबी नहीं था — वह श्री लॉरेंस थे! सहज ही मेरे चाबुक वाले हाथ की उंगलियाँ फड़क उठीं, और मैंने चाबुक को ज़ोर से पकड़ लिया; लेकिन मैंने उस आवेग को रोका, और उसकी अभिवादन का जवाब सिर हिलाकर दिया, और आगे बढ़ने की कोशिश की; लेकिन वह मेरे बगल में ही आगे बढ़ता रहा, और मौसम और फसलों के बारे में बातें करने लगा। मैंने उसके सवालों और टिप्पणियों का जितना हो सके संक्षिप्त जवाब दिया, और पीछे रह गया। वह भी पीछे हट गया और पूछा कि क्या मेरा घोड़ा लंगड़ा है। मैंने इशारे से जवाब दिया, जिस पर वह शांति से मुस्कुराया।

मैं उसकी इस अनोखी दृढ़ता और अविचल आत्मविश्वास को देखकर आश्चर्यचकित और क्रोधित दोनों था। मैंने सोचा था कि हमारी पिछली मुलाकात की घटनाओं ने उसके मन पर ऐसा प्रभाव डाला होगा कि वह हमेशा के लिए ठंडा और उदासीन हो जाएगा: इसके विपरीत, ऐसा प्रतीत हुआ कि वह न केवल पिछली सभी गलतियों को भूल गया था, बल्कि वर्तमान में किसी भी तरह के असभ्य व्यवहार से भी अप्रभावित था। पहले, जरा सा भी इशारा, या लहजे या नजर में मात्र दिखावटी ठंडक ही उसे दूर भगाने के लिए काफी थी: अब, स्पष्ट अशिष्टता भी उसे दूर नहीं कर सकती थी। क्या उसे मेरी निराशा के बारे में पता चल गया था; और क्या वह परिणाम देखने और मेरी हताशा में विजय पाने आया था? मैंने पहले से कहीं अधिक दृढ़ता से अपना चाबुक पकड़ा - लेकिन फिर भी उसे उठाने से परहेज किया, और चुपचाप आगे बढ़ता रहा, किसी और ठोस कारण की प्रतीक्षा करता रहा, इससे पहले कि मैं अपने भीतर उमड़ रहे क्रोध को उंडेल दूं।

'मार्कहम,' उसने अपने शांत स्वर में कहा, 'तुम अपने दोस्तों से क्यों झगड़ते हो, सिर्फ इसलिए कि तुम्हें एक तरफ निराशा मिली है? तुम्हारी उम्मीदें टूट गई हैं; लेकिन इसमें मेरी क्या गलती है? मैंने तुम्हें पहले ही चेतावनी दी थी, तुम्हें पता है, लेकिन तुमने नहीं मानी—'

उसने कुछ नहीं कहा; क्योंकि मेरे बगल में बैठे किसी शैतान के उकसावे पर, मैंने अपने चाबुक का छोटा सिरा पकड़ा और बिजली की तरह तेज़ी से दूसरे सिरे से उसके

सिर पर वार किया। उसके चेहरे पर पल भर में छाए उस भयानक पीलेपन और माथे से टपकती लाल बूंदों को देखकर मुझे एक क्रूर संतुष्टि का एहसास हुआ। वह एक पल के लिए काठी पर लड़खड़ाया और फिर पीछे की ओर ज़मीन पर गिर गया। टट्टू, अपने बोझ से अचानक मुक्त होकर हैरान रह गया, उछला-कूदा, थोड़ा लात मारी और फिर आज़ादी का फ़ायदा उठाकर झाड़ियों की घास चरने चला गया; जबकि उसका मालिक एक लाश की तरह शांत पड़ा रहा। क्या मैंने उसे मार डाला? - जैसे ही मैं उसके ऊपर झुका, उसकी भयानक, ऊपर उठी हुई शक्ल को बेदम निगाहों से देखते हुए, मानो किसी ठंडे हाथ ने मेरे दिल को थाम लिया हो और उसकी धड़कन रोक दी हो। लेकिन नहीं; उसने अपनी पलकें झपकाईं और हल्की सी कराह निकाली। मैंने राहत की सांस ली - वह गिरने से बस सुन्न हो गया था। उसके साथ यही होना चाहिए था—इससे उसे भविष्य में बेहतर शिष्टाचार सीखने को मिलेगा। क्या मुझे उसे घोड़े तक पहुँचाने में मदद करनी चाहिए? नहीं। अन्य किसी भी अपराध के लिए मैं ज़रूर करता; लेकिन उसके अपराध इतने अक्षम्य थे। अगर वह चाहे तो थोड़ी देर में खुद ही घोड़े पर चढ़ सकता है: वह पहले से ही हिलने-डुलने और इधर-उधर देखने लगा था—और वहाँ उसका घोड़ा सड़क के किनारे चुपचाप चर रहा था।

इसलिए बड़बड़ाते हुए मैंने उस आदमी को उसके हाल पर छोड़ दिया और अपने घोड़े को एड़ी मारकर सरपट भाग गया। मेरे मन में कई तरह की भावनाएं उमड़ रही थीं जिनका विश्लेषण करना आसान नहीं था; और शायद, अगर मैंने ऐसा किया भी, तो यह मेरे स्वभाव के लिए अच्छा नहीं साबित होगा; क्योंकि मुझे यकीन नहीं है कि मैंने जो किया था उस पर एक तरह का उल्लास भी इसका एक मुख्य कारण था।

कुछ ही क्षणों में मेरा उत्साह कम होने लगा, और कुछ ही मिनटों में मैं मुड़कर अपने शिकार का हाल देखने चला गया। यह कोई उदारतापूर्ण भावना या दया का भाव नहीं था जिसने मुझे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया, न ही मुझे इस बात का डर था कि अगर मैं उस जमींदार को इस तरह उपेक्षित और आगे की चोट के लिए असुरक्षित छोड़कर अपना हमला समाप्त कर देता, तो मेरे लिए क्या परिणाम होंगे; यह बस अंतरात्मा की आवाज थी; और मैंने इतनी जल्दी उसकी बात मानने पर खुद को बहुत श्रेय दिया - और इस कार्य की सार्थकता का आकलन करते हुए, जो बलिदान मुझे देना पड़ा, मैं बहुत गलत नहीं था।

श्री लॉरेंस और उनका टट्टू दोनों अपनी जगह से थोड़ा हिल गए थे। टट्टू आठ-दस

गज और दूर चला गया था; और श्री लॉरेंस किसी तरह सड़क के बीच से हट गए थे: मैंने उन्हें किनारे पर लेटे हुए पाया, वे अभी भी बहुत पीले और बीमार लग रहे थे, और अपने सिर पर अपना कैम्ब्रिक रूमाल (जो अब सफेद से ज्यादा लाल हो गया था) रखे हुए थे। यह एक जोरदार प्रहार रहा होगा; लेकिन इसका आधा श्रेय - या दोष (जो आप चाहें) चाबुक को जाता है, जिस पर धातु से बना एक विशाल घोड़े का सिर लगा हुआ था। बारिश से भीगी घास ने उस युवक को सोने के लिए असुविधाजनक जगह दी थी; उनके कपड़े काफी गंदे थे; और उनकी टोपी सड़क के दूसरी ओर कीचड़ में लुढ़क रही थी। लेकिन उनके विचार मुख्य रूप से अपने टट्टू पर टिके हुए थे, जिसे वे बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे - आधा असहाय चिंता में, और आधा अपने भाग्य के आगे निराशा में।

मैं घोड़े से उतरा और अपने जानवर को पास के पेड़ से बांधकर पहले उसकी टोपी उठाई, ताकि उसे उसके सिर पर पहना सकूँ; लेकिन या तो उसने अपने सिर को टोपी के लिए अनुपयुक्त समझा, या टोपी को उसकी वर्तमान स्थिति में अपने सिर के लिए अनुपयुक्त समझा; क्योंकि एक बात को ठुकराते हुए उसने दूसरी टोपी मेरे हाथ से ले ली और तिरस्कारपूर्वक फेंक दी।

मैंने बुदबुदाते हुए कहा, 'यह तुम्हारे लिए काफी है।'

मेरा अगला नेक काम उसके टट्टू को पकड़कर उसके पास लाना था, जो जल्द ही पूरा हो गया; क्योंकि जानवर आमतौर पर काफी शांत था, और जब तक मैंने लगाम नहीं पकड़ी तब तक वह केवल थोड़ा सा झिझका और फड़फड़ाया - लेकिन फिर, मुझे उसे घोड़े की पीठ पर देखना था।

‘लो, तुम बदमाश—कुत्ते—मुझे अपना हाथ दो, और मैं तुम्हें चढ़ने में मदद करूँगा।’

नहीं; वह घृणा से मुझसे मुंह फेर लिया। मैंने उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की। वह ऐसे पीछे हट गया मानो मेरे स्पर्श में कोई अशुद्धि हो।

‘क्या, तुम नहीं करोगे! अच्छा! तुम चाहे तो कयामत के दिन तक वहीं बैठे रहो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन मुझे लगता है कि तुम अपने शरीर का सारा खून खोना नहीं चाहते – मैं तुम्हारी यह समस्या सुलझाने की कृपा कर देता हूँ।’

'कृपया मुझे अकेला छोड़ दें।'

'हम्म; पूरे दिल से। अगर आप चाहें तो आप डी—एल जा सकते हैं—और कह

सकते हैं कि मैंने आपको भेजा है।'

लेकिन उसे उसके हाल पर छोड़ने से पहले, मैंने उसके टट्टू की लगाम झाड़ी में लगे एक खंभे पर फेंक दी और उसे अपना रूमाल दे दिया, क्योंकि उसका रूमाल खून से लथपथ था। उसने उसे उठाया और घृणा और तिरस्कार से, अपनी पूरी ताकत से, वापस मेरी ओर फेंक दिया। उसके अपराधों की सीमा पूरी करने के लिए बस यही काफी था। गहरी, लेकिन ऊँचे स्वर में अपशब्द कहते हुए, मैं उसे जीने या मरने के लिए छोड़ गया, इस बात से संतुष्ट कि मैंने उसे बचाने का प्रयास करके अपना कर्तव्य पूरा कर दिया था - लेकिन यह भूलकर कि उसे इस हालत में लाने में मेरी कितनी बड़ी गलती थी, और मेरी बाद की सेवाएँ कितनी अपमानजनक थीं - और अगर वह यह कहे कि मैंने उसकी हत्या का प्रयास किया है, तो उसके परिणामों का सामना करने के लिए मैं उदास मन से तैयार था - जो मुझे असंभव नहीं लगता था, क्योंकि ऐसा लगता था कि मेरी सहायता को लगातार अस्वीकार करने के पीछे उसके मन में द्वेषपूर्ण इरादे ही थे।

अपने घोड़े पर दोबारा सवार होकर, मैंने पीछे मुड़कर देखा कि वह कैसा है, फिर मैं आगे बढ़ गया। वह ज़मीन से उठ खड़ा हुआ था और अपने टट्टू की गर्दन पकड़कर काठी पर बैठने की कोशिश कर रहा था; लेकिन जैसे ही उसने रकाब में पैर रखा, उसे चक्कर आने लगे: वह एक पल के लिए आगे झुका, उसका सिर घोड़े की पीठ पर झुका हुआ था, और फिर उसने एक और कोशिश की, जो नाकाम रही, और वह वापस किनारे पर गिर पड़ा, जहाँ मैंने उसे छोड़ दिया, उसका सिर गीली घास पर टिका हुआ था, और देखने में ऐसा लग रहा था जैसे वह घर पर अपने सोफे पर आराम कर रहा हो।

मुझे उसकी इच्छा के विरुद्ध भी उसकी मदद करनी चाहिए थी—उसके घाव पर पट्टी बांधनी चाहिए थी जिसे वह खुद नहीं रोक पा रहा था, और उसे घोड़े पर बिठाकर सुरक्षित घर पहुंचाने पर जोर देना चाहिए था; लेकिन, उसके प्रति मेरे घोर आक्रोश के अलावा, यह सवाल भी था कि उसके नौकरों और अपने परिवार से क्या कहूँ। या तो मुझे उस कृत्य को स्वीकार करना पड़ता, जिससे मुझे पागल समझा जाता, जब तक कि मैं मकसद भी स्वीकार न कर लूँ—और यह असंभव लग रहा था—या मुझे झूठ बोलना पड़ता, जो उतना ही असंभव लग रहा था—खासकर इसलिए कि मिस्टर लॉरेंस शायद पूरी सच्चाई उजागर कर देते, और इस तरह मुझे दस गुना बदनाम कर

देते—जब तक कि मैं इतना दुष्ट न होता कि गवाहों की अनुपस्थिति का फायदा उठाकर, अपनी ही कहानी पर अड़ा रहता, और उसे उससे भी बड़ा बदमाश साबित कर देता जितना वह था। नहीं; उसे केवल कनपटी के ऊपर एक कट लगा था, और शायद गिरने से या उसके अपने टट्टू के खुरों से कुछ चोटें आई थीं: अगर वह आधे दिन तक वहीं पड़ा रहता तो भी उसकी मौत नहीं हो सकती थी; और, अगर वह खुद को रोक नहीं सकता था, तो यकीनन कोई न कोई तो वहाँ से गुजर रहा होगा: यह असंभव था कि पूरा दिन बीत जाए और हमारे अलावा कोई भी उस सड़क से न गुजरे। जहाँ तक उसके आगे के कथन का सवाल है, मैं जोखिम लेने को तैयार थी: अगर वह झूठ बोलता, तो मैं उसका खंडन करती; अगर वह सच बोलता, तो मैं यथासंभव सहन कर लेती। मुझे ज़रूरत से ज़्यादा स्पष्टीकरण देने की कोई बाध्यता नहीं थी। शायद वह इस विषय पर चुप रहना ही बेहतर समझता, क्योंकि उसे झगड़े के कारण को लेकर पूछताछ होने और श्रीमती ग्राहम के साथ अपने संबंध पर जनता का ध्यान आकर्षित होने का डर था, जिसे वह, चाहे उनके लिए हो या अपने लिए, छिपाने की बहुत कोशिश कर रहा था।

इस प्रकार सोचते हुए, मैं शहर की ओर चल पड़ा, जहाँ मैंने अपना काम निपटाया और अपनी माँ और रोज़ के लिए कई छोटे-मोटे काम अत्यंत सराहनीय सटीकता के साथ किए, मामले की विभिन्न परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए। घर लौटते समय, मैं दुर्भाग्यपूर्ण लॉरेंस के बारे में कई आशंकाओं से परेशान था। यह सवाल कि क्या होगा यदि मैं उसे गीली ज़मीन पर पड़ा हुआ पाऊँ, ठंड और थकावट से मर रहा होऊँ - या पहले से ही निर्मम और ठंडा हो चुका हो? मेरे मन में अत्यंत अप्रिय रूप से घर कर गया, और जैसे ही मैं उस स्थान के पास पहुँचा जहाँ मैंने उसे छोड़ा था, यह भयावह संभावना मेरी कल्पना में दर्दनाक स्पष्टता के साथ चित्रित हो गई। लेकिन नहीं, ईश्वर का शुक्र है, न तो आदमी और न ही घोड़ा जा चुके थे, और मेरे विरुद्ध गवाही देने के लिए केवल दो वस्तुएँ ही बची थीं - जो अपने आप में काफी अप्रिय थीं, और एक बहुत ही बदसूरत, बल्कि कहें तो जानलेवा रूप प्रस्तुत कर रही थीं - एक ही स्थान पर, बारिश से भीगी और कीचड़ से सनी टोपी, जो उस दुष्ट चाबुक के हैंडल से किनारे के ऊपर से धँसी और टूटी हुई थी; दूसरी ओर, गहरे लाल रंग का रूमाल पानी के एक गहरे रंग के कुंड में भीगा हुआ था - क्योंकि इस बीच काफी बारिश हुई थी।

बुरी खबर बहुत तेजी से फैलती है: जब मैं घर पहुँचा तो मुश्किल से चार बजे थे,

लेकिन मेरी माँ ने गंभीर स्वर में मुझसे कहा — ‘ओह, गिल्बर्ट! — कितना भयानक हादसा! रोज़ गाँव में खरीदारी करने गई थी, और उसने सुना है कि श्री लॉरेंस अपने घोड़े से गिर गए हैं और मरणासन्न अवस्था में घर लाए गए हैं!’

जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, इससे मुझे थोड़ा झटका लगा; लेकिन यह सुनकर मुझे तसल्ली हुई कि उसकी खोपड़ी बुरी तरह से टूट गई थी और एक पैर भी टूट गया था; क्योंकि इस बात के झूठे होने का यकीन होने पर, मुझे लगा कि बाकी कहानी भी उतनी ही बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई होगी; और जब मैंने अपनी माँ और बहन को उसकी हालत पर इतना दुख जताते हुए सुना, तो मुझे खुद को रोकने में काफी मुश्किल हुई कि मैं उन्हें चोटों की वास्तविक जानकारी न दे पाऊँ, जहाँ तक मुझे पता था।

मेरी मां ने कहा, 'तुम्हें कल जाकर उससे मिलना चाहिए।'

‘या फिर आज ही,’ रोज़ ने सुझाव दिया: ‘काफी समय है; और तुम टट्टू ले जा सकते हो, क्योंकि तुम्हारा घोड़ा थक गया है। क्या तुम नहीं जाओगे, गिल्बर्ट – बस कुछ खा लो?’

नहीं, नहीं—हम यह कैसे कह सकते हैं कि यह पूरी तरह से झूठी रिपोर्ट नहीं है? यह बहुत ही महत्वपूर्ण है-

'ओह, मुझे यकीन है कि ऐसा नहीं है; क्योंकि पूरा गांव इस बारे में उत्साहित है; और मैंने दो लोगों को देखा जिन्होंने अन्य लोगों को देखा था जिन्होंने उस आदमी को देखा था जिसने उसे पाया था। यह सुनने में अजीब लगता है; लेकिन जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो ऐसा नहीं है।'

“खैर, लॉरेंस एक अच्छा घुड़सवार है; उसके घोड़े से गिरने की संभावना न के बराबर है; और अगर वह गिर भी जाए, तो इस तरह से उसकी हड्डियाँ टूटने की संभावना बहुत कम है। यह कम से कम एक घोर अतिशयोक्ति ही होगी।”

'नहीं; लेकिन घोड़े ने उसे लात मारी थी - या कुछ और हुआ था।'

‘क्या, उसका शांत छोटा टट्टू?’

‘आपको कैसे पता चला कि यह वही था?’

वह शायद ही कभी किसी और पर सवारी करता है।

मेरी माँ ने कहा, 'खैर, तुम कल फोन करना। चाहे यह सच हो या झूठ, बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया हो या नहीं, हम जानना चाहेंगे कि वह कैसा है।'

'फर्गस जा सकता है।'

'आप क्यों नहीं?'

'उनके पास ज्यादा समय है। मैं अभी व्यस्त हूं।'

'अरे! लेकिन गिल्बर्ट, तुम इस बारे में इतने शांत कैसे रह सकते हो? इस तरह के मामले में, जब तुम्हारा दोस्त मौत के कगार पर हो, तो तुम एक-दो घंटे के लिए अपने काम पर ध्यान नहीं देते।'

'वह ऐसा नहीं है, मैं तुमसे कहता हूँ।'

'जहाँ तक आपको पता है, वह हो सकता है: जब तक आप उसे देख नहीं लेते, तब तक आप कुछ नहीं कह सकते। किसी भी हालत में, उसके साथ कोई भयानक दुर्घटना हुई होगी, और आपको उससे मिलना चाहिए: अगर आप नहीं मिलेंगे तो उसे बहुत बुरा लगेगा।'

'अरे बाप रे! मैं नहीं कर सकता। हाल ही में मेरे और उसके बीच संबंध अच्छे नहीं रहे हैं।'

'ओह, मेरे प्यारे बेटे! तुम निश्चित रूप से इतने निर्दयी नहीं होगे कि अपने छोटे-मोटे मतभेदों को इतनी हद तक ले जाओ—'

'सचमुच, मामूली अंतर हैं!' मैंने बुदबुदाया।

"अच्छा, लेकिन सिर्फ उस अवसर को याद रखना। सोचो कैसे—"

'अच्छा, अच्छा, अभी मुझे परेशान मत करो—मैं इसके बारे में देख लूंगा,' मैंने जवाब दिया।

और मैंने यही किया कि अगली सुबह फर्गस को अपनी माँ का अभिवादन देकर आवश्यक पूछताछ करने के लिए भेज दिया; क्योंकि ज़ाहिर है, मेरा जाना तो मुमकिन ही नहीं था—न ही कोई संदेश भेजना। वह खबर लेकर लौटा कि युवा जमींदार सिर की हड्डी टूटने और कुछ चोटों (गिरने के कारण—जिसका उसने विवरण देने की ज़हमत नहीं उठाई—और उसके बाद उसके घोड़े के दुर्व्यवहार के कारण) तथा बारिश में गीली ज़मीन पर लेटने के परिणामस्वरूप भयंकर सर्दी से पीड़ित था; लेकिन कोई हड्डी नहीं टूटी थी, और मृत्यु की कोई तत्काल संभावना नहीं थी।

तब यह स्पष्ट था कि श्रीमती ग्राहम के हित में उनका इरादा मुझे दोषी ठहराने का नहीं था।

अध्याय पंद्रह

वह दिन भी पिछले दिन की तरह बारिश वाला था; लेकिन शाम होते-होते मौसम थोड़ा साफ होने लगा और अगली सुबह सुहावनी और उम्मीद भरी थी। मैं फसल काटने वालों के साथ पहाड़ी पर था। हल्की हवा अनाज के खेतों पर बह रही थी और प्रकृति धूप में खिलखिला रही थी। चांदी जैसे तैरते बादलों के बीच लार्क पक्षी आनंदित हो रहा था। देर से हुई बारिश ने हवा को इतनी मीठी ताजगी और शुद्ध कर दिया था, आसमान को धो डाला था और डालियों और पत्तियों पर ऐसे चमकीले रत्न छोड़ दिए थे कि किसान भी उसे दोष नहीं दे सकते थे। लेकिन सूरज की कोई किरण मेरे दिल तक नहीं पहुँच सकी, कोई हवा उसे तरोताज़ा नहीं कर सकी; हेलेन ग्राहम में मेरे विश्वास, आशा और आनंद ने जो खालीपन छोड़ दिया था, उसे कोई नहीं भर सका, न ही उस गहरे अफसोस और कड़वे प्रेम के अवशेषों को दूर कर सका जो अब भी उसे दबाए हुए थे।

जब मैं हाथ बांधे, अनमने ढंग से मक्के के लहराते खेतों को निहार रही थी, जहाँ अभी तक कटाई करने वालों की कोई हलचल नहीं हुई थी, तभी किसी ने धीरे से मेरे कपड़े खींचे, और एक धीमी सी आवाज़, जो अब मेरे कानों को अप्रिय लग रही थी, ने मुझे चौंकाते हुए शब्दों से जगा दिया, — ‘श्रीमान मार्खम, माँ आपको बुला रही हैं।’

‘क्या तुम मुझे चाहते हो, आर्थर?’

‘हाँ। तुम इतने अजीब क्यों दिख रहे हो?’ उसने मेरी ओर अचानक मुड़ने पर मेरे चेहरे के अप्रत्याशित भाव को देखकर आधा हंसते हुए और आधा डरते हुए कहा, ‘और तुम इतने समय से दूर क्यों रहे? आओ! क्या तुम नहीं आओगे?’

मैंने जवाब दिया, 'मैं अभी व्यस्त हूँ,' मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दूं।

उसने बचकाने आश्चर्य से ऊपर देखा; लेकिन इससे पहले कि मैं दोबारा कुछ बोल

पाता, वह महिला स्वयं मेरे पास आ गई।

‘गिल्बर्ट, मुझे तुमसे बात करनी ही है!’ उसने दबी हुई तीव्रता के स्वर में कहा।

मैंने उसके पीले गाल और चमकती आंख को देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा।

‘बस एक पल के लिए,’ उसने विनती की। ‘बस ज़रा इस दूसरे खेत में आ जाइए।’ उसने फसल काटने वालों की ओर देखा, जिनमें से कुछ उत्सुकता भरी निगाहों से उसकी ओर देख रहे थे। ‘मैं आपको एक मिनट भी नहीं रोकूँगी।’

मैं उसके साथ उस दर्रे से होकर गुजरा।

“आर्थर, प्यारे, जाओ और उन नीले फूलों को तोड़ लाओ,” उसने कहा और कुछ दूर झाड़ियों के नीचे चमकते हुए फूलों की ओर इशारा किया, जिनके किनारे हम चल रहे थे। बच्चा झिझका, मानो मेरा साथ छोड़ना नहीं चाहता था। “जाओ, प्यारे!” उसने और भी ज़ोर से दोहराया, और उसकी आवाज़ में कोई कठोरता नहीं थी, लेकिन तुरंत आज्ञापालन की मांग थी, और उसे मिल भी गया।

‘तो, श्रीमती ग्राहम?’ मैंने शांत और ठंडे स्वर में कहा; क्योंकि यद्यपि मैंने देखा कि वह दुखी थीं और मुझे उन पर दया भी आई, लेकिन मुझे उन्हें सताने की शक्ति पाकर खुशी महसूस हुई।

उसने मुझे ऐसी निगाहों से देखा जो मेरे दिल को भेद गईं; फिर भी मुझे मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया।

‘मैं इस बदलाव का कारण नहीं पूछ रही, गिल्बर्ट,’ उसने कड़वी शांति से कहा: ‘मैं इसे अच्छी तरह जानती हूँ; लेकिन भले ही मैं खुद को दूसरों द्वारा संदेह और निंदा का पात्र बनते हुए शांति से सहन कर सकती हूँ, मैं इसे तुमसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। — जिस दिन मैंने स्पष्टीकरण देने का समय तय किया था, उस दिन तुम मेरी बात सुनने क्यों नहीं आए?’

'क्योंकि इस बीच मुझे वह सब कुछ पता चल गया जो आप मुझे बताना चाहते थे - और शायद थोड़ा और भी।'

‘असंभव, क्योंकि मैं तुम्हें सब कुछ बता देती!’ वह भावुक होकर चिल्लाई — ‘लेकिन अब नहीं बताऊंगी, क्योंकि मुझे लगता है कि तुम इसके लायक नहीं हो!’

और उसके पीले होंठ घबराहट से कांपने लगे।

'क्यों नहीं, क्या मैं पूछ सकता हूँ?'

उसने मेरी व्यंग्यात्मक मुस्कान को घृणा भरी नजर से ठुकरा दिया।

‘क्योंकि तुम मुझे कभी समझ नहीं पाए, वरना तुम मेरे निंदकों की बात इतनी जल्दी न सुनते — तुम पर मेरा भरोसा करना गलत साबित होता — तुम वो इंसान नहीं हो जैसा मैंने सोचा था। जाओ! मुझे परवाह नहीं कि तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो।’

वह मुँह फेरकर चली गई, और मैं चला गया; क्योंकि मुझे लगा कि इससे उसे सबसे ज़्यादा तकलीफ़ होगी; और मुझे लगता है कि मैं सही था; क्योंकि एक मिनट बाद पीछे मुड़कर देखने पर मैंने उसे आधा मुड़ते हुए देखा, मानो वह उम्मीद कर रही हो कि मैं अभी भी उसके पास हूँ; और फिर वह वहीं खड़ी हो गई, और एक नज़र पीछे डाली। उसकी नज़र में क्रोध से ज़्यादा गहरी पीड़ा और निराशा झलक रही थी; लेकिन मैंने तुरंत उदासीनता का भाव दिखाया, और ऐसा जताने लगा जैसे मैं लापरवाही से इधर-उधर देख रहा हूँ, और मुझे लगता है कि वह आगे बढ़ गई; क्योंकि कुछ देर रुककर यह देखने के बाद कि क्या वह वापस आएगी या मुझे बुलाएगी, मैंने एक और नज़र डाली, और उसे दूर खेत में तेज़ी से जाते हुए देखा, छोटा आर्थर उसके साथ दौड़ रहा था और लगता है कि वह बातें कर रहा था; लेकिन उसने अपना चेहरा उससे दूर रखा हुआ था, मानो किसी अनियंत्रित भावना को छिपा रही हो। और मैं अपने काम में लग गया।

लेकिन मुझे जल्द ही उसे इतनी जल्दी छोड़ने के अपने फैसले पर पछतावा होने लगा। यह स्पष्ट था कि वह मुझसे प्यार करती थी—शायद वह मिस्टर लॉरेंस से ऊब चुकी थी और मुझे उसके बदले पाना चाहती थी; और अगर मैंने शुरू में उससे कम प्यार और सम्मान किया होता, तो शायद यह पसंद मुझे खुशी और आनंद देती; लेकिन अब उसके बाहरी रूप और उसके अंतर्मन के बीच का अंतर, जैसा कि मैंने अनुमान लगाया—उसके बारे में मेरी पहले और अब की राय में जो अंतर था, वह इतना गहरा और कष्टदायक था—मेरे मन को इतना ठेस पहुँचाने वाला था कि उसने हर सुखद विचार को निगल लिया।

लेकिन फिर भी मुझे यह जानने की उत्सुकता थी कि वह मुझे क्या स्पष्टीकरण देती—या अब देती, अगर मैं उससे बार-बार पूछता—वह कितना कबूल करती, और खुद को कैसे बचाने की कोशिश करती। मैं यह जानना चाहता था कि उसमें क्या घृणा और क्या प्रशंसा का पात्र है; कितना दया और कितना घृणा;—और सबसे बढ़कर, मैं यह जानना चाहता था। बिछड़ने से पहले मैं उसे एक बार फिर देखना चाहता था, और

यह तय करना चाहता था कि उसे किस नजरिए से देखना चाहिए। बेशक, वह हमेशा के लिए मुझसे बिछड़ गई थी; लेकिन फिर भी मैं यह सोचकर दुखी था कि हम आखिरी बार इतनी बेरहमी और दुख के साथ बिछड़े थे। उसकी वह आखिरी नजर मेरे दिल में बस गई थी; मैं उसे भूल नहीं पा रहा था। लेकिन मैं कितना मूर्ख था! क्या उसने मुझे धोखा नहीं दिया, मुझे चोट नहीं पहुंचाई—मेरी जिंदगी भर की खुशी छीन नहीं ली? 'खैर, मैं उससे मिलूंगा,' मैंने अंत में निश्चय किया, 'लेकिन आज नहीं: आज और आज रात वह अपने पापों के बारे में सोच सकती है और जितना चाहे दुखी हो सकती है: कल मैं उससे फिर मिलूंगा और उसके बारे में कुछ और जानूंगा। यह मुलाकात उसके लिए फायदेमंद हो भी सकती है और नहीं भी। कम से कम, इससे उसके ठहराव भरे जीवन में एक नई ऊर्जा आएगी और कुछ परेशान करने वाले विचार शांत हो सकते हैं।'

मैं अगले दिन गया, लेकिन शाम के समय, दिन भर का काम खत्म होने के बाद, यानी छह और सात बजे के बीच। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो ढलता सूरज पुराने हॉल पर लालिमा बिखेर रहा था और जालीदार खिड़कियों से आग की तरह चमक रहा था, जिससे उस जगह में एक अलग ही रौनक आ गई थी। मुझे उन भावनाओं का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है जिनके साथ मैं अपने पूर्व देवत्व के उस पवित्र स्थान पर पहुँचा - वह स्थान जो हजारों सुखद यादों और शानदार सपनों से भरा हुआ था - अब एक विनाशकारी सच्चाई से अंधकारमय हो गया था।

राहेल ने मुझे बैठक में आने दिया और अपनी मालकिन को बुलाने चली गई, क्योंकि वह वहाँ नहीं थी। लेकिन ऊँची पीठ वाली कुर्सी के बगल में छोटी गोल मेज पर उसकी मेज खुली पड़ी थी, जिस पर एक किताब रखी थी। किताबों का उसका सीमित लेकिन चुनिंदा संग्रह मेरे लिए लगभग उतना ही परिचित था जितना मेरा अपना; लेकिन यह किताब मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। मैंने उसे उठाया। यह सर हम्फ्री डेवी की 'लास्ट डेज़ ऑफ़ अ फिलॉसफर' थी, और पहले पन्ने पर 'फ्रेडरिक लॉरेंस' लिखा था। मैंने किताब बंद कर दी, लेकिन उसे हाथ में ही रखा और दरवाजे की ओर मुँह करके, चिमनी की ओर पीठ करके, शांति से उसके आने का इंतज़ार करने लगा; क्योंकि मुझे पूरा यकीन था कि वह आएगी। और जल्द ही मैंने उसे हॉल में आते सुना। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा था, लेकिन मैंने मन ही मन उसे शांत किया और अपना संयम बनाए रखा - कम से कम बाहर से तो। वह अंदर आई, शांत, पीली

पड़ी हुई, गंभीर।

‘श्रीमान मार्खम, इस कृपा के लिए मैं किसकी ऋणी हूँ?’ उसने इतने गंभीर लेकिन शांत गरिमापूर्ण लहजे में कहा कि मैं लगभग विचलित हो गया; लेकिन मैंने मुस्कुराते हुए और काफी बेशर्मी से जवाब दिया, —

'ठीक है, मैं आपका स्पष्टीकरण सुनने आया हूँ।'

उसने कहा, 'मैंने तुमसे कहा था कि मैं इसे नहीं दूंगी। मैंने कहा था कि तुम मेरे भरोसे के लायक नहीं हो।'

‘ओह, बहुत अच्छा,’ मैंने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए जवाब दिया।

‘थोड़ी देर रुकिए,’ उसने कहा। ‘यह आखिरी बार है जब मैं आपको देख रही हूँ: अभी मत जाइए।’

मैं वहीं रुका रहा और उसके आगे के आदेशों की प्रतीक्षा करता रहा।

उसने फिर पूछा, ‘मुझे बताइए, आप मेरे खिलाफ इन बातों पर किस आधार पर विश्वास करते हैं; आपको किसने बताया; और उन्होंने क्या कहा?’

मैं एक पल के लिए रुक गया। उसने मेरी आँखों में इस तरह देखा मानो उसका हृदय सचेत निर्दोषता से दृढ़ हो गया हो। वह सबसे बुरे को जानने के लिए दृढ़ थी, और उसका सामना करने के लिए भी दृढ़ संकल्पित थी। 'मैं उस साहसी भावना को कुचल सकता हूँ,' मैंने सोचा। लेकिन जहाँ एक ओर मैं अपनी शक्ति पर मन ही मन प्रसन्न हो रहा था, वहीं दूसरी ओर मुझे अपने शिकार के साथ बिल्ली की तरह खेलने का मन कर रहा था। मैंने उसे वह किताब दिखाई जो अभी भी मेरे हाथ में थी, और पहले पन्ने पर लिखे नाम की ओर इशारा किया, लेकिन अपनी नज़र उसके चेहरे पर टिकाए हुए, मैंने पूछा, - 'क्या आप उस सज्जन को जानती हैं?'

‘बिल्कुल,’ उसने जवाब दिया; और अचानक उसके चेहरे पर शर्मिंदगी या गुस्से का भाव उभर आया—मैं बता नहीं सकता था: यह गुस्से जैसा ही लग रहा था। ‘अब आगे क्या, महोदय?’

‘उसे देखे हुए कितना समय हो गया है?’

‘आपको किसने अधिकार दिया कि आप मुझसे इस या किसी अन्य विषय पर प्रश्न पूछें?’

‘अरे, कोई नहीं! — जवाब देना है या नहीं, यह पूरी तरह से आपकी मर्ज़ी है। और अब, मुझे पूछने दीजिए — क्या आपने सुना है कि आपके इस दोस्त के साथ हाल ही

में क्या हुआ है? — क्योंकि, अगर आपने नहीं सुना है तो —’

‘मैं अपमानित नहीं होऊंगी, श्रीमान मार्खम!’ मेरे व्यवहार पर लगभग क्रोधित होकर वह चिल्लाई। ‘इसलिए यदि आप केवल इसी उद्देश्य से आए हैं, तो बेहतर होगा कि आप तुरंत घर छोड़ दें।’

मैं आपका अपमान करने नहीं आया था: मैं आपकी व्याख्या सुनने आया था।

‘और मैं तुमसे कहती हूँ, मैं इसे नहीं दूँगी!’ वह उत्तेजित अवस्था में कमरे में इधर-उधर घूमते हुए, हाथों को कसकर पकड़े हुए, हाँफते हुए और आँखों में आक्रोश की आग लिए हुए बोली। ‘मैं उस व्यक्ति को स्पष्टीकरण देने की जहमत नहीं उठाऊँगी जो इतनी भयानक शंकाओं का मज़ाक उड़ा सकता है और इतनी आसानी से उन पर विश्वास कर लेता है।’

‘मैं उनका मज़ाक नहीं उड़ा रहा, श्रीमती ग्राहम,’ मैंने व्यंग्य भरे लहजे को तुरंत छोड़ते हुए जवाब दिया। ‘काश मैं उन्हें मज़ाक का विषय मान पाता। और जहाँ तक आसानी से शक करने की बात है, तो भगवान ही जानता है कि मैं अब तक कितना अंधा और अविश्वासी मूर्ख रहा हूँ, जो लगातार अपनी आँखें बंद करके और कान बंद करके हर उस चीज़ को अनसुना करता रहा जिसने आप पर मेरे भरोसे को हिला देने की धमकी दी, जब तक कि खुद सबूत ने मेरे भ्रम को तोड़ नहीं दिया!’

‘क्या सबूत हैं, महोदय?’

‘अच्छा, मैं तुम्हें बताता हूँ। तुम्हें वह शाम याद है जब मैं पिछली बार यहाँ आया था?’

'मैं करता हूं।'

फिर भी तुमने कुछ ऐसे संकेत दिए जिनसे किसी समझदार व्यक्ति की आंखें खुल सकती थीं; लेकिन मुझ पर उनका कोई असर नहीं हुआ: मैं भरोसा करता रहा, विश्वास करता रहा, निराशा में भी आशा रखता रहा, और जहां मैं समझ नहीं सकता था वहां भी श्रद्धा करता रहा। हालांकि, ऐसा हुआ कि तुम्हारे जाने के बाद मैं वापस लौट आया - गहरी सहानुभूति और स्नेह की तीव्रता से प्रेरित होकर - तुम्हारे सामने खुलकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की हिम्मत तो नहीं कर पाया, लेकिन खिड़की से एक झलक पाने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सका, बस यह देखने के लिए कि तुम कैसी हो: क्योंकि मैंने तुम्हें बहुत दुख में छोड़ा था, और इसके लिए मैं अपनी सहनशीलता और विवेक की कमी को आंशिक रूप से जिम्मेदार मानता हूं। अगर मैंने

कुछ गलत किया था, तो केवल प्रेम ही मेरा कारण था, और सजा काफी कड़ी थी; क्योंकि जैसे ही मैं उस पेड़ के पास पहुंचा, तुम अपने दोस्त के साथ बगीचे में आ गईं। ऐसी स्थिति में खुद को न दिखाते हुए, मैं छाया में तब तक खड़ा रहा जब तक तुम दोनों गुजर नहीं गए।

'और आपने हमारी बातचीत का कितना हिस्सा सुना?'

'हेलेन, मैंने काफी कुछ सुन लिया है। और यह मेरे लिए अच्छा ही हुआ कि मैंने इसे सुना; क्योंकि इससे कम कुछ भी मेरे मोह को दूर नहीं कर सकता था। मैंने हमेशा कहा और सोचा है कि मैं तुम्हारे खिलाफ कही गई किसी भी बात पर तब तक विश्वास नहीं करूंगा, जब तक कि मैं उसे तुम्हारे मुंह से न सुन लूं। दूसरों के सभी इशारों और दावों को मैंने दुर्भावनापूर्ण, निराधार निंदा माना; तुम्हारे खुद के आरोपों को मैंने अतिरंजित समझा; और तुम्हारी स्थिति में जो कुछ भी समझ से परे लगता था, मुझे विश्वास था कि यदि तुम चाहो तो उसका हिसाब दे सकती हो।'

श्रीमती ग्राहम ने चलना बंद कर दिया था। वह चिमनी के एक सिरे से टिककर खड़ी थीं, ठीक उस चिमनी के सामने जहाँ मैं खड़ा था, उनकी ठुड्डी बंद हथेली पर टिकी हुई थी, उनकी आँखें - अब क्रोध से नहीं, बल्कि बेचैन उत्तेजना से चमक रही थीं - कभी-कभी मेरी ओर देखतीं जब मैं बोल रहा था, फिर सामने वाली दीवार पर नज़र डालतीं, या कालीन पर टिकी रहतीं।

"तुम्हें आखिरकार मेरे पास आना चाहिए था, और मेरी बात सुननी चाहिए थी। इतने भावुक प्रेम-प्रसंग के बाद अचानक और चुपके से खुद को अलग कर लेना, बिना कोई कारण बताए, अनुचित और गलत था। तुम्हें मुझे सब कुछ बता देना चाहिए था —चाहे कितना भी कड़वाहट से ही क्यों न हो। यह चुप्पी से तो बेहतर होता।"

मैंने ऐसा क्यों किया होता? आप मुझे उस विषय पर और अधिक जानकारी नहीं दे सकती थीं, जो केवल मेरे लिए ही प्रासंगिक था; न ही आप मुझे मेरी इंद्रियों के प्रमाण को नकार सकती थीं। मैं चाहता था कि हमारी घनिष्ठता तुरंत समाप्त हो जाए, जैसा कि आपने स्वयं स्वीकार किया था कि यदि मुझे सब कुछ पता चल जाता तो शायद ऐसा ही होता; लेकिन मैं आपको फटकारना नहीं चाहता था, - हालाँकि (जैसा कि आपने भी स्वीकार किया) आपने मुझे बहुत दुख पहुँचाया था। हाँ, आपने मुझे ऐसा दुख पहुँचाया है जिसकी भरपाई आप कभी नहीं कर सकतीं - या कोई और भी नहीं - आपने मेरी जवानी की ताजगी और उम्मीद को नष्ट कर दिया है, और मेरे जीवन को

वीरान बना दिया है! मैं सौ साल जी सकता हूँ, लेकिन मैं इस विनाशकारी आघात के प्रभाव से कभी उबर नहीं पाऊँगा - और इसे कभी भूल नहीं पाऊँगा! अब से - आप मुस्कुराएँगी, श्रीमती ग्राहम,' मैंने अचानक रुकते हुए कहा, अपने जोशीले भाषण को अवर्णनीय भावनाओं ने रोक दिया, जब मैंने उन्हें अपने द्वारा किए गए विनाश की तस्वीर पर वास्तव में मुस्कुराते हुए देखा।

'क्या मैंने ऐसा किया?' उसने गंभीरता से ऊपर देखते हुए उत्तर दिया; 'मुझे इसका एहसास नहीं था। अगर मैंने ऐसा किया भी, तो यह आपके प्रति मेरे द्वारा किए गए नुकसान के विचारों से मिलने वाली खुशी के लिए नहीं था। ईश्वर ही जानता है कि इस संभावना मात्र से ही मुझे बहुत पीड़ा हुई है; यह इस बात की खुशी थी कि आपमें भी आत्मा और भावनाओं की गहराई है, और यह आशा थी कि आपके महत्व को समझने में मैं पूरी तरह से गलत नहीं थी। लेकिन मेरे लिए मुस्कान और आंसू एक जैसे ही हैं, वे किसी विशेष भावना तक सीमित नहीं हैं: मैं अक्सर खुश होने पर रोती हूँ और दुखी होने पर मुस्कुराती हूँ।'

उसने मेरी तरफ दोबारा देखा और ऐसा लगा जैसे वह मुझसे जवाब की उम्मीद कर रही हो; लेकिन मैं चुप रहा।

उसने आगे कहा, 'क्या आपको यह जानकर बहुत खुशी होगी कि आप अपने निष्कर्षों में गलत थे?'

'हेलेन, तुम यह सवाल कैसे पूछ सकती हो?'

'मैं यह नहीं कहती कि मैं खुद को पूरी तरह से निर्दोष साबित कर सकती हूँ,' उसने धीमी और तेज़ आवाज़ में कहा, जबकि उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था और उत्तेजना से उसका सीना फूल रहा था, 'लेकिन क्या आपको यह जानकर खुशी होगी कि मैं आपकी सोच से कहीं बेहतर हूँ?'

"कोई भी ऐसी चीज़ जो तुम्हारे प्रति मेरी पुरानी राय को ज़रा सा भी बहाल कर सके, तुम्हारे लिए मेरे मन में अभी भी जो स्नेह है उसे उचित ठहरा सके, और इसके साथ जुड़े असहनीय खेद के दर्द को कम कर सके, उसे मैं अत्यंत खुशी से, अत्यंत उत्सुकता से स्वीकार करूँगी!" उसके गाल लाल हो गए और उसका पूरा शरीर अत्यधिक घबराहट से काँप रहा था। वह कुछ बोली नहीं, बल्कि अपनी मेज की ओर दौड़ी और वहाँ से एक मोटी सी एल्बम या पांडुलिपि जैसी दिखने वाली वस्तु को झट से उठाकर, अंत से कुछ पन्ने फाड़ दिए और बाकी मेरे हाथ में थमाते हुए कहा, "तुम्हें

इसे पूरा पढ़ने की ज़रूरत नहीं है; बस इसे अपने साथ घर ले जाओ," और कमरे से जल्दी से चली गई। लेकिन जब मैं घर से निकलकर रास्ते पर चल रहा था, तो उसने खिड़की खोली और मुझे वापस बुलाया। उसने बस इतना कहा, "पढ़ने के बाद इसे वापस ले आना; और इसमें जो कुछ भी लिखा है, उसके बारे में किसी को भी मत बताना। मुझे तुम्हारी इज़्ज़त की चिंता है।"

इससे पहले कि मैं कुछ जवाब दे पाती, उसने खिड़की बंद कर ली और मुँह फेर लिया। मैंने देखा कि वह पुरानी ओक की कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गई और अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। उसकी भावनाएँ इतनी तीव्र हो गई थीं कि उसे आँसुओं के माध्यम से राहत पाना आवश्यक हो गया था।

उत्सुकता से हांफते हुए और अपनी उम्मीदों को दबाने की कोशिश करते हुए, मैं जल्दी से घर पहुंचा और अपने कमरे में भागा। पहले मैंने अपने लिए एक मोमबत्ती का इंतजाम किया, हालांकि अभी शाम का अंधेरा भी नहीं हुआ था। फिर मैंने दरवाजा बंद कर दिया और कुंडी लगा दी, किसी भी तरह की रुकावट बर्दाश्त न करने का निश्चय कर लिया; और मेज के सामने बैठकर, अपनी पुरस्कार-प्राप्त पुस्तक खोली और उसे पढ़ने में जुट गया। पहले मैंने जल्दी-जल्दी पन्ने पलटे और इधर-उधर से एक-दो वाक्य पढ़े, फिर पूरी पुस्तक को ध्यान से पढ़ने लगा।

यह अब मेरे सामने है; और यद्यपि आप इसे मेरी तरह आधे मन से नहीं पढ़ सकते, मुझे पता है कि आप इसके संक्षिप्त रूप से संतुष्ट नहीं होंगे, इसलिए आपको पूरा पाठ मिलेगा, सिवाय कुछ अंशों के जो लेखक के लिए केवल अस्थायी रुचि के हों, या ऐसे अंश जो कहानी को स्पष्ट करने के बजाय बोझिल बना दें। इसकी शुरुआत कुछ अचानक होती है, इस प्रकार — लेकिन हम इसकी शुरुआत को एक और अध्याय के लिए सुरक्षित रखेंगे।

अध्याय सोलह

1 जून, 1821। — हम अभी-अभी स्टैनिंगली लौटे हैं — यानी, कुछ दिन पहले लौटे हैं, और मैं अभी तक यहाँ सहज महसूस नहीं कर पा रही हूँ, बल्कि ऐसा लगता है जैसे कभी सहज महसूस नहीं कर पाऊँगी। मेरे चाचा की अस्वस्थता के कारण हमें योजना से पहले ही शहर छोड़ना पड़ा; — मुझे आश्चर्य होता है कि अगर हम पूरे समय तक यहीं रहते तो क्या होता। मुझे ग्रामीण जीवन के प्रति अपनी इस नई अरुचि पर बहुत शर्म आती है। मेरे सभी पुराने काम उबाऊ और नीरस लगते हैं, मेरे पुराने मनोरंजन नीरस और निरर्थक लगते हैं। मैं अपने संगीत का आनंद नहीं ले पाती, क्योंकि उसे सुनने वाला कोई नहीं है। मैं अपनी सैर का आनंद नहीं ले पाती, क्योंकि मिलने वाला कोई नहीं है। मैं अपनी किताबों का आनंद नहीं ले पाती, क्योंकि उनमें मेरा ध्यान आकर्षित करने की शक्ति नहीं है: पिछले कुछ हफ्तों की यादें मेरे दिमाग में इतनी भरी हुई हैं कि मैं उन पर ध्यान नहीं दे पाती। चित्रकारी मुझे सबसे अच्छी लगती है, क्योंकि मैं एक ही समय में चित्रकारी और सोच-विचार कर सकती हूँ; और अगर मेरी रचनाएँ अब मेरे सिवा कोई नहीं देख सकता, और वो भी वो लोग जो उनकी परवाह नहीं करते, तो शायद भविष्य में देख पाएँ। लेकिन फिर भी, एक चेहरा ऐसा है जिसे मैं हमेशा चित्रित करने या रेखाचित्र बनाने की कोशिश करता रहता हूँ, और हमेशा असफल रहता हूँ; और यह बात मुझे परेशान करती है। उस चेहरे के स्वामी की बात करें तो, मैं उसे अपने मन से निकाल नहीं पाता—और सच कहूँ तो, मैं कभी कोशिश भी नहीं करता। मैं सोचता हूँ कि क्या वह कभी मेरे बारे में सोचता है; और मैं सोचता हूँ कि क्या मैं उसे कभी फिर देख पाऊँगा। और फिर कई और आश्चर्यों का सिलसिला शुरू हो सकता है—समय और भाग्य के उत्तर के लिए प्रश्न—अंत में—मान लीजिए कि बाकी सभी प्रश्नों का उत्तर हाँ में है, तो मैं सोचता हूँ कि क्या मुझे कभी इसका पछतावा होगा? जैसा कि मेरी चाची मुझसे कहतीं, अगर उन्हें पता होता कि मैं क्या सोच रहा हूँ।

मुझे वह शाम अच्छी तरह याद है जब हम शहर जाने से पहले आग के पास बैठे थे और हमारे बीच बातचीत हुई थी, मेरे चाचा गठिया के हल्के दौरे के कारण सोने चले गए थे।

कुछ देर चुप रहने के बाद उसने कहा, 'हेलेन, क्या तुम कभी शादी के बारे में सोचती हो?'

'जी हां, चाची, अक्सर।'

और क्या आप कभी इस बात पर विचार करते हैं कि सीज़न खत्म होने से पहले आपकी शादी हो जाएगी या आपकी सगाई हो जाएगी?

'कभी-कभी; लेकिन मुझे नहीं लगता कि ऐसा कभी होने की संभावना है।'

'ऐसा किस लिए?'

क्योंकि, मुझे लगता है, दुनिया में ऐसे बहुत ही कम पुरुष होंगे जिनसे मैं शादी करना चाहूँगी; और उनमें से भी, दस में से एक संभावना है कि मैं उनमें से किसी एक से कभी मिल ही न पाऊँ; या अगर मिल भी जाऊँ, तो बीस में से एक संभावना है कि वह अविवाहित न हो, या मुझे पसंद न करे।

'यह तो बिलकुल भी तर्क नहीं है। यह बिल्कुल सच हो सकता है—और मुझे आशा है कि यह सच है—कि ऐसे बहुत कम पुरुष होंगे जिन्हें आप स्वयं से विवाह के लिए चुनेंगी। वास्तव में, यह मानना उचित नहीं है कि आप बिना पूछे किसी से भी विवाह करना चाहेंगी: किसी लड़की का स्नेह बिना मांगे नहीं जीता जा सकता। लेकिन जब उसे चाहा जाता है—जब दिल के किले को घेर लिया जाता है—तो वह मालिक को पता चलने से पहले ही आत्मसमर्पण कर देता है, और अक्सर उसकी बेहतर समझ के विरुद्ध, और उन सभी पूर्वकल्पित विचारों के विपरीत जिन्हें वह प्यार कर सकती थी, जब तक कि वह अत्यंत सावधान और विवेकशील न हो। अब, मैं आपको, हेलेन, इन बातों के बारे में चेतावनी देना चाहती हूँ, और आपको अपने जीवन की शुरुआत से ही सतर्क और सावधान रहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहती हूँ, और अपने दिल को पहले मूर्ख या सिद्धांतहीन व्यक्ति के हाथों चोरी न होने देने के लिए कहना चाहती हूँ जो उस पर अधिकार करना चाहता है।— मेरी प्यारी, तुम जानती हो कि तुम अभी केवल अठारह वर्ष की हो; तुम्हारे पास अभी बहुत समय है, और न तो तुम्हारे चाचा और न ही मुझे तुम्हें अपने हाथों से विदा करने की कोई जल्दी है, और मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि दूल्हों की कमी नहीं होगी; क्योंकि तुम एक अच्छे परिवार, अच्छी खासी संपत्ति और उम्मीदों पर गर्व कर सकती हो, और मैं तुम्हें यह भी बता दूँ - क्योंकि अगर मैं नहीं बताऊँगा तो दूसरे बता देंगे - कि तुम खूबसूरती की धनी भी हो - और मुझे आशा है कि तुम्हें कभी इसका पछतावा नहीं होगा!

'मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा, चाची; लेकिन आपको इससे डरने की क्या जरूरत है?'

क्योंकि, मेरी प्रिय, सुंदरता वह गुण है जो धन के बाद, आमतौर पर सबसे बुरे किस्म के पुरुषों को भी सबसे अधिक आकर्षित करता है; और इसलिए, इसके धारक के लिए बहुत सारी मुसीबतें आने की संभावना होती है।

'क्या आपको भी इस तरह की कोई परेशानी हुई है, चाची?'

'नहीं, हेलेन,' उसने गंभीर और निंदात्मक लहजे में कहा, 'लेकिन मैं ऐसे कई लोगों को जानती हूँ जिनके साथ ऐसा हुआ है; और कुछ, लापरवाही के कारण, धोखे के दुर्भाग्यपूर्ण शिकार हुए हैं; और कुछ, कमजोरी के कारण, ऐसे जाल और प्रलोभनों में फँस गए हैं जिनका वर्णन करना भी भयानक है।'

'ठीक है, मैं न तो लापरवाह रहूंगा और न ही कमजोर।'

'पीटर, हेलेन, याद रखना! घमंड मत करो, बल्कि सतर्क रहो। अपनी आँखों और कानों पर पहरा रखो, क्योंकि वे तुम्हारे हृदय के द्वार हैं, और अपने होठों पर, क्योंकि वे तुम्हारे हृदय का निकास द्वार हैं, कहीं ऐसा न हो कि असावधानी के क्षण में वे तुम्हें धोखा दे दें। हर तरह के ध्यान को ठंडे और तटस्थ भाव से ग्रहण करो, जब तक कि तुम आकांक्षी की योग्यता का पता न लगा लो और उस पर ठीक से विचार न कर लो; और तुम्हारा स्नेह केवल स्वीकृति के बाद ही उत्पन्न होना चाहिए। पहले अध्ययन करो; फिर स्वीकृति दो; फिर प्रेम करो। अपनी आँखों को सभी बाहरी आकर्षणों से अंधा रखो, अपने कानों को चापलूसी और हल्की-फुल्की बातों के सभी मोहक प्रभावों से बहरा रखो। — ये कुछ भी नहीं हैं — और कुछ भी नहीं से भी बदतर हैं — प्रलोभन देने वाले के जाल और छल हैं, जो लापरवाह लोगों को उनके विनाश की ओर ले जाते हैं। आख़िरकार, सिद्धांत सर्वोपरि है; और उसके बाद, विवेक, सम्मान और संयमित धन।' यदि आप दुनिया के सबसे सुंदर, सबसे गुणी और ऊपरी तौर पर मनभावन पुरुष से शादी कर लें, तो आपको उस दुख का जरा भी अंदाजा नहीं होगा जो आपको तब घेर लेगा जब अंततः आप उसे एक निकम्मा, दुष्ट या यहाँ तक कि एक अव्यावहारिक मूर्ख पाएँगी।

लेकिन बेचारे मूर्ख और पापी लोग क्या करें, चाची? अगर सब लोग आपकी सलाह मान लें तो दुनिया जल्द ही खत्म हो जाएगी।

"डरो मत, मेरी प्यारी! मूर्ख और दुष्ट पुरुषों को कभी साथी की कमी नहीं होगी, क्योंकि उनके लिए स्त्रीलिंग की इतनी सारी महिलाएं मौजूद हैं; लेकिन मेरी सलाह मानो। और यह कोई मज़ाक का विषय नहीं है, हेलेन – मुझे दुख है कि तुम इसे हल्के

में ले रही हो। यकीन मानो, शादी एक गंभीर मामला है।” और उसने इतनी गंभीरता से कहा कि मानो उसे इसका गहरा अनुभव हो; लेकिन मैंने कोई और बेतुका सवाल नहीं पूछा और बस इतना ही कहा, “मैं जानती हूँ; और मैं जानती हूँ कि तुम्हारी बातों में सच्चाई और समझदारी है; लेकिन तुम्हें मुझसे डरने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मैं न केवल ऐसे पुरुष से शादी करना गलत समझूँगी जिसमें समझ या सिद्धांत की कमी हो, बल्कि मैं कभी ऐसा करने के बारे में सोचूँगी भी नहीं; क्योंकि मैं उसे पसंद नहीं कर सकती, चाहे वह कितना भी सुंदर और आकर्षक क्यों न हो; मैं उससे नफरत करूँगी – उसे तुच्छ समझूँगी – उस पर तरस खाऊँगी – कुछ भी करूँगी, लेकिन उससे प्यार नहीं करूँगी।” मेरी भावनाएँ न केवल स्वीकृति पर आधारित होनी चाहिए, बल्कि होंगी भी और अवश्य होंगी: क्योंकि स्वीकृति के बिना मैं प्रेम नहीं कर सकती। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मुझे अपने जीवनसाथी का सम्मान और आदर करने के साथ-साथ उससे प्रेम भी करना चाहिए, क्योंकि बिना स्वीकृति के मैं उससे प्रेम नहीं कर सकती। इसलिए निश्चिंत रहें।

‘मुझे उम्मीद है कि ऐसा ही हो,’ उसने उत्तर दिया।

‘मुझे पता है कि ऐसा ही है,’ मैंने दृढ़ता से कहा।

‘हेलेन, अभी तक तुम्हारी परीक्षा नहीं हुई है—हम केवल आशा ही कर सकते हैं,’ उसने अपने ठंडे और सतर्क लहजे में कहा।

मुझे उसकी अविश्वास भरी बातों पर गुस्सा आया; लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि उसके संदेह पूरी तरह से निराधार थे; मुझे डर है कि उसकी सलाह को याद रखना उससे लाभ उठाने से कहीं अधिक आसान रहा है; वास्तव में, कई बार तो मुझे उन विषयों पर उसके सिद्धांतों की सत्यता पर संदेह होने लगा है। उसकी सलाह अच्छी हो सकती है, कम से कम मुख्य बिंदुओं में तो; लेकिन कुछ चीजें उसने अपनी गणना में नजरअंदाज कर दी हैं। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वह कभी प्यार में पड़ी थी।

मैंने अपने करियर की शुरुआत की—या यूं कहें कि अपने पहले अभियान की, जैसा कि मेरे चाचा इसे कहते हैं—उज्ज्वल आशाओं और कल्पनाओं से भरी हुई—मुख्यतः इस बातचीत से प्रेरित—और अपने विवेक पर पूरे विश्वास के साथ। आरंभ में, मैं लंदन के जीवन की नवीनता और रोमांच से प्रसन्न थी; परन्तु शीघ्र ही मैं इसकी मिश्रित उथल-पुथल और बंधनों से ऊबने लगी, और घर की ताजगी और स्वतंत्रता के लिए तरसने लगी। मेरे नए परिचित, पुरुष और महिला दोनों, ने मेरी अपेक्षाओं को

निराश किया, और मुझे बारी-बारी से परेशान और उदास किया; क्योंकि मैं जल्द ही उनकी विचित्रताओं का अध्ययन करने और उनकी कमजोरियों पर हंसने से ऊब गई—विशेषकर इसलिए कि मुझे अपनी आलोचनाओं को अपने तक ही सीमित रखना पड़ता था, क्योंकि मेरी चाची उन्हें सुनना नहीं चाहती थीं—और वे—विशेषकर महिलाएं—बेहद मूर्ख, हृदयहीन और बनावटी प्रतीत होती थीं। सज्जन बेहतर प्रतीत होते थे, लेकिन शायद इसलिए कि मैं उन्हें कम जानती थी—शायद इसलिए कि वे मेरी चापलूसी करते थे; परन्तु मुझे उनमें से किसी से भी प्रेम नहीं हुआ; और, अगर एक पल के लिए उनका ध्यान मुझे प्रसन्न करता था, तो अगले ही पल वे मुझे उत्तेजित कर देते थे, क्योंकि वे मेरे अहंकार को उजागर करके और मुझे यह डर पैदा करके कि मैं उन कुछ महिलाओं की तरह बन रही हूँ जिनसे मैं इतनी घृणा करती थी, मुझे खुद से नाराज कर देते थे।

एक बुजुर्ग सज्जन थे जो मुझे बहुत परेशान करते थे; मेरे चाचा के एक धनी पुराने मित्र, जो, मेरा मानना है, सोचते थे कि उनसे शादी करने से बेहतर मेरे लिए कोई और नहीं हो सकता; लेकिन, बूढ़े होने के अलावा, वह बदसूरत और अप्रिय थे, और निश्चित रूप से दुष्ट भी थे, हालांकि मेरी चाची ने मुझे ऐसा कहने पर डांटा था; लेकिन उन्होंने माना कि वह कोई संत नहीं थे। और एक और व्यक्ति था, जो उतना घृणित नहीं था, लेकिन फिर भी अधिक कष्टदायक था, क्योंकि वह उसका पक्ष लेती थी, और हमेशा उसे मुझ पर थोपती रहती थी, और मेरे कानों में उसकी प्रशंसा करती रहती थी - उसका नाम मिस्टर बोअरहम था, जिसे मैं बोर’एम लिखना पसंद करती हूँ, क्योंकि वह एक भयानक उबाऊ व्यक्ति था: मुझे आज भी उसकी आवाज़ याद आते ही सिहरन हो जाती है - मेरे कानों में गूंजती हुई, नीरस, नीरस, नीरस - जब वह मेरे बगल में बैठा रहता था, आधे घंटे तक लगातार गद्य सुनाता रहता था, और इस सोच में डूबा रहता था कि वह उपयोगी जानकारी देकर मेरे दिमाग को बेहतर बना रहा है, या अपने सिद्धांतों को मुझ पर थोपकर मेरी गलतियों को सुधार रहा है, या शायद वह मेरे स्तर पर आकर मुझसे मनोरंजक बातें कर रहा है और मेरा मनोरंजन कर रहा है। फिर भी, मैं कह सकती हूँ कि वह मूलतः एक सभ्य व्यक्ति था; और अगर उसने मुझसे दूरी बनाए रखी होती, तो मैं उससे कभी नफरत नहीं करती। लेकिन ऐसा करना लगभग असंभव था, क्योंकि वह न केवल अपनी उपस्थिति से मुझे परेशान करता था, बल्कि मुझे बेहतर संगति का आनंद लेने से भी रोकता था।

लेकिन एक रात, एक पार्टी में, वह हमेशा की तरह हद से ज़्यादा परेशान कर रहा था, और मेरा सब्र पूरी तरह टूट चुका था। ऐसा लग रहा था मानो पूरी शाम असहनीय ही होने वाली थी: मैंने अभी-अभी एक बेवकूफ़ के साथ एक डांस किया ही था कि मिस्टर बोअरहम मेरे पास आ गए और ऐसा लग रहा था मानो पूरी रात मुझसे चिपके रहना चाहते हों। उन्होंने खुद कभी डांस नहीं किया, और वहीं बैठे रहे, अपना सिर मेरे चेहरे के सामने करते रहे, और सभी देखने वालों को यह जताते रहे कि वह मेरे पक्के आशिक हैं; मेरी चाची पूरे समय संतुष्ट भाव से देखती रहीं और उन्हें शुभकामनाएं देती रहीं। मैंने अपनी झुंझलाहट भरी भावनाओं को ज़ाहिर करके, यहाँ तक कि सीधे-सीधे बदतमीज़ी करके भी, उन्हें दूर भगाने की व्यर्थ कोशिश की: कुछ भी उन्हें यह यकीन नहीं दिला सका कि उनकी मौजूदगी मुझे पसंद नहीं आ रही थी। मेरी खामोशी को उन्होंने गहरी एकाग्रता समझा, और इससे उन्हें बोलने का और मौका मिल गया; तीखे जवाबों को मैंने लड़कियों जैसी चंचलता की चुटीली बातें समझाईं, जिनके लिए बस एक नरम फटकार ही काफ़ी थी; और स्पष्ट विरोधाभास आग में घी डालने के समान थे, जो उनके सिद्धांतों का समर्थन करने के लिए तर्कों की नई कड़ियों को जन्म देते थे, और मुझ पर तर्कों की अंतहीन बाढ़ लाते थे ताकि मुझे दृढ़ विश्वास से अभिभूत कर सकें।

लेकिन वहाँ एक ऐसा व्यक्ति मौजूद था जो मेरी मनोदशा को बेहतर ढंग से समझता प्रतीत होता था। एक सज्जन व्यक्ति पास ही खड़े थे, जो कुछ समय से हमारी बातचीत देख रहे थे। वे मेरे साथी की निर्मम दृढ़ता और मेरी स्पष्ट झुंझलाहट पर काफी आनंदित थे, और मेरे कठोर और अडिग उत्तरों पर मन ही मन हंस रहे थे। अंततः, वे वहाँ से चले गए और घर की मालकिन के पास गए, जाहिर तौर पर मुझसे परिचय करवाने के उद्देश्य से, क्योंकि थोड़ी देर बाद वे दोनों आए और मालकिन ने उनका परिचय श्री हंटिंगडन के रूप में कराया, जो मेरे चाचा के एक दिवंगत मित्र के पुत्र थे। उन्होंने मुझे नृत्य के लिए आमंत्रित किया। मैंने सहर्ष सहमति दी; और वे मेरे शेष प्रवास के दौरान मेरे साथी रहे, जो कि बहुत लंबा नहीं था, क्योंकि मेरी चाची ने हमेशा की तरह जल्दी प्रस्थान करने पर जोर दिया।

मुझे जाने का दुख हुआ, क्योंकि मुझे अपना नया परिचित एक बहुत ही जीवंत और मनोरंजक साथी लगा। उसके हर कथन और व्यवहार में एक विशेष प्रकार की सहजता और स्वतंत्रता थी, जिससे मुझे बहुत अधिक बंधन और औपचारिकता झेलने

के बाद मन को शांति और विस्तार का अनुभव हुआ। यह सच है कि उसके व्यवहार और बातचीत में थोड़ी सी बेपरवाही और निडरता थी, लेकिन मैं इतने अच्छे मूड में था और श्री बोअरहम से छुटकारा पाकर इतना खुश था कि मुझे इस बात से कोई आपत्ति नहीं हुई।

'हेलेन, अब तुम्हें मिस्टर बोअरहम कैसे लगते हैं?' मेरी चाची ने कहा, जब हम गाड़ी में अपनी सीटों पर बैठ गए और गाड़ी चल पड़ी।

मैंने जवाब दिया, 'पहले से भी बदतर।'

वह नाखुश दिखीं, लेकिन उन्होंने इस विषय पर और कुछ नहीं कहा।

कुछ देर रुकने के बाद उसने फिर पूछा, 'आखिरी बार आपने जिस सज्जन के साथ नृत्य किया था, वह कौन थे—वह कौन थे जो शॉल ओढ़ने में आपकी इतनी मदद कर रहे थे?'

‘वह बिलकुल भी दखलंदाजी करने वाला नहीं था, चाची: उसने मेरी मदद करने की कोशिश तब तक नहीं की जब तक उसने मिस्टर बोअरहम को ऐसा करने के लिए आते नहीं देखा; और फिर वह हंसते हुए आगे बढ़ा और बोला, “आइए, मैं आपको उस कष्ट से बचा लूंगा।”’

‘मैं पूछती हूँ, वह कौन था?’ उसने ठंडे स्वर में गंभीरता से कहा।

‘वह मिस्टर हंटिंगडन थे, जो चाचा के पुराने दोस्त के बेटे थे।’

मैंने तुम्हारे चाचा को युवा श्री हंटिंगडन के बारे में बात करते सुना है। मैंने उन्हें कहते सुना है, “वह युवा हंटिंगडन एक अच्छा लड़का है, लेकिन मुझे लगता है कि वह थोड़ा मनमौजी है।” इसलिए मैं तुम्हें उससे सावधान रहने की सलाह दूंगा।

मैंने पूछा, "“थोड़ा जंगलीपन” का क्या मतलब है?”

इसका अर्थ है सिद्धांतों से रहित होना, और युवावस्था में पाए जाने वाले हर प्रकार के दुर्गुणों के प्रति प्रवृत्त होना।

लेकिन मैंने चाचाजी को कहते सुना है कि जब वे जवान थे तो वे खुद भी एक उदास और बेपरवाह किस्म के इंसान थे।

उसने दृढ़ता से अपना सिर हिलाया।

मैंने कहा, 'मुझे लगता है कि तब वह मजाक कर रहा था, और यहाँ वह बेतरतीब ढंग से बोल रहा था - कम से कम, मुझे विश्वास नहीं होता कि उसकी हँसती हुई नीली आँखों में कोई बुराई है।'

‘हेलेन, तुम्हारा तर्क गलत है!’ उसने आह भरते हुए कहा।

‘खैर, हमें दयालु होना चाहिए, आप जानती हैं, चाची—वैसे भी, मुझे नहीं लगता कि यह झूठ है: मैं चेहरे की पहचान करने में माहिर हूँ, और मैं हमेशा लोगों के चरित्र का अंदाजा उनके रूप-रंग से लगाती हूँ—वे सुंदर हैं या बदसूरत, इससे नहीं, बल्कि चेहरे की बनावट से। उदाहरण के लिए, मैं आपके चेहरे को देखकर जान जाऊँगी कि आप हंसमुख या आशावादी स्वभाव की नहीं हैं; और मैं श्री विल्मोट के चेहरे को देखकर जान जाऊँगी कि वह एक निकम्मा बूढ़ा बदमाश है; और श्री बोअरहम के चेहरे को देखकर जान जाऊँगी कि वह एक अच्छा साथी नहीं है; और श्री हंटिंगडन के चेहरे को देखकर जान जाऊँगी कि वह न तो मूर्ख है और न ही धूर्त, हालाँकि, शायद, न तो बुद्धिमान है और न ही संत—लेकिन इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि मुझे उससे दोबारा मिलने की संभावना नहीं है—सिवाय कभी-कभार बॉलरूम में साथी के रूप में।’

लेकिन ऐसा नहीं था, क्योंकि अगली सुबह मेरी उनसे फिर मुलाकात हुई। वे मेरे चाचा से मिलने आए थे और पहले न आ पाने के लिए माफी मांगते हुए कहा कि वे हाल ही में महाद्वीप से लौटे हैं और पिछली रात तक उन्हें मेरे चाचा के शहर आने की खबर नहीं मिली थी। इसके बाद मैं उनसे अक्सर मिलता रहा; कभी सार्वजनिक रूप से, कभी घर पर; क्योंकि वे अपने पुराने मित्र का बहुत सम्मान करते थे, हालांकि मेरे चाचा इस सम्मान से खुद को बहुत आभारी नहीं मानते थे।

‘मुझे समझ नहीं आता कि वो लड़का इतनी बार आकर क्या कहना चाहता है,’ वो कहता था, ‘क्या तुम बता सकती हो, हेलेन? अरे? उसे मेरी संगति बिल्कुल नहीं चाहिए, न ही मुझे उसकी – ये तो पक्का है।’

‘काश तुम उसे यह बात बता देते,’ मेरी चाची ने कहा।

‘क्यों, किसलिए? अगर मैं उसे नहीं चाहती, तो शायद कोई और चाहेगा’ (मेरी तरफ आँख मारते हुए)। ‘वैसे भी, वो काफी अमीर है, पेगी, तुम्हें पता है ना – विल्मोट जितना आकर्षक तो नहीं है; लेकिन हेलेन तो इस रिश्ते के बारे में सोचेगी भी नहीं: क्योंकि, पता नहीं क्यों, ये बूढ़े लोग लड़कियों को पसंद नहीं आते – चाहे उनके पास कितना भी पैसा हो और अनुभव भी। मैं शर्त लगा सकती हूँ कि वो सोने से भरे घर वाले विल्मोट से ज़्यादा इस नौजवान को पसंद करेगी, भले ही उसके पास एक पैसा भी न हो। है ना, नेल?’

'जी हां, चाचा जी; लेकिन इससे मिस्टर हंटिंगडन के बारे में कुछ खास पता नहीं चलता; क्योंकि मैं मिसेज विल्मोट बनने की बजाय एक बूढ़ी कुंवारी और कंगाल रहना पसंद करूंगी।'

और मिसेज हंटिंगडन? आप मिसेज हंटिंगडन बनने के बजाय क्या बनना पसंद करेंगी?

मैं इस मामले पर विचार करने के बाद आपको बताऊंगा।

'अरे! तो इस पर विचार करने की जरूरत है? लेकिन अब बताओ—क्या तुम बूढ़ी कुंवारी रहना पसंद करोगी—गरीब होने की तो बात ही छोड़ो?'

जब तक मुझसे पूछा नहीं जाएगा, मैं नहीं बता सकता।

और आगे की पूछताछ से बचने के लिए मैं तुरंत कमरे से बाहर निकल गया। लेकिन पाँच मिनट बाद, खिड़की से देखने पर मैंने श्री बोअरहम को दरवाजे की ओर आते देखा। मैं लगभग आधे घंटे तक बेचैनी से इंतज़ार करता रहा, हर मिनट के बीतने का इंतज़ार करता रहा और उनके जाने की व्यर्थ ही कामना करता रहा। तभी सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनाई दी और मेरी चाची गंभीर चेहरे के साथ कमरे में आईं और अपने पीछे दरवाजा बंद कर लिया।

'हेलेन, ये रहे मिस्टर बोअरहम। वो आपसे मिलना चाहते हैं,' उसने कहा।

'ओह, चाची! — क्या आप उन्हें बता नहीं सकतीं कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है? — मुझे यकीन है कि मैं उनसे मिलने के लिए तैयार नहीं हूँ।'

'बकवास, मेरी प्यारी! यह कोई मामूली बात नहीं है। वह एक बहुत ही महत्वपूर्ण काम से आया है - तुम्हारे चाचा और मुझसे तुम्हारा हाथ मांगने।'

'मुझे उम्मीद है कि मेरे चाचा और आपने उसे बता दिया होगा कि इसे देना आपके अधिकार में नहीं था। मुझसे पहले किसी से भी पूछने का उसे क्या अधिकार था?'

'हेलेन!'

मेरे चाचा ने क्या कहा?

उन्होंने कहा कि वे इस मामले में हस्तक्षेप नहीं करेंगे; यदि आप श्री बोअरहम के उदार प्रस्ताव को स्वीकार करना चाहें, तो आप—

क्या उसने 'सहयोगी प्रस्ताव' कहा?

'नहीं; उसने कहा कि अगर तुम उसे लेना चाहो तो ले जा सकते हो; और अगर नहीं, तो तुम अपनी मर्जी से ले सकते हो।'

‘उसने सही कहा; और तुमने क्या कहा?’

‘मैंने जो कहा, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आप क्या कहेंगे? — यही सवाल है। वह अब आपसे खुद पूछने का इंतजार कर रहा है; लेकिन जाने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लें; और अगर आप उसे मना करने का इरादा रखते हैं, तो मुझे अपने कारण बता दें।’

मैं उसे मना कर दूंगी, बिल्कुल; लेकिन आपको मुझे बताना होगा कि कैसे, क्योंकि मैं विनम्र होने के साथ-साथ दृढ़ भी रहना चाहती हूं — और जब मैं उससे छुटकारा पा लूंगी, तो मैं आपको बाद में अपने कारण बता दूंगी।'

“लेकिन रुको, हेलेन; थोड़ी देर बैठो और शांत हो जाओ। श्री बोअरहम को कोई जल्दी नहीं है, क्योंकि उन्हें तुम्हारी स्वीकृति के बारे में कोई संदेह नहीं है; और मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ। मुझे बताओ, मेरी प्यारी, तुम्हें उनसे क्या आपत्ति है? क्या तुम इस बात से इनकार करती हो कि वह एक ईमानदार, सम्माननीय व्यक्ति हैं?”

'नहीं।'

क्या आप इस बात से इनकार करते हैं कि वह समझदार, संयमी और सम्माननीय है?

नहीं; वह ये सब हो सकता है, लेकिन—

लेकिन, हेलेन! दुनिया में आपको ऐसे कितने पुरुष मिलने की उम्मीद है? ईमानदार, सम्माननीय, समझदार, संयमी, आदरणीय! क्या ये इतना आम चरित्र है कि आप ऐसे महान गुणों वाले व्यक्ति को बिना एक पल भी संकोच किए अस्वीकार कर दें? हाँ, मैं उन्हें महान कह सकती हूँ; क्योंकि प्रत्येक गुण के पूर्ण अर्थ पर विचार करें, और उनमें निहित अनगिनत गुणों पर (और मैं इस सूची में और भी कई गुण जोड़ सकती हूँ), और सोचें कि ये सब आपके चरणों में है। जीवन भर के लिए इस अनमोल आशीर्वाद को प्राप्त करना आपके वश में है - एक योग्य और उत्कृष्ट पति, जो आपसे कोमल प्रेम करता है, लेकिन इतना अधिक नहीं कि आपकी कमियों को अनदेखा कर दे, और जीवन भर की यात्रा में आपका मार्गदर्शक और शाश्वत सुख में आपका साथी बने। सोचो कैसे -

‘लेकिन मुझे उससे नफरत है, चाची,’ मैंने इस असाधारण वाक्पटुता के प्रवाह को रोकते हुए कहा।

‘हेलेन, उससे नफरत करो! क्या यह ईसाई भावना है? — तुम उससे नफरत

करती हो? और वह इतना अच्छा आदमी है!'

'मैं उससे एक पुरुष के रूप में नहीं, बल्कि एक पति के रूप में नफरत करती हूँ। एक पुरुष के रूप में, मैं उससे इतना प्यार करती हूँ कि मैं चाहती हूँ कि उसे मुझसे बेहतर पत्नी मिले—जो उसके जैसी ही अच्छी हो, या उससे भी बेहतर—अगर आपको लगता है कि यह संभव है—बशर्ते वह उसे पसंद कर सके; लेकिन मैं कभी नहीं कर सकी, और इसलिए—'

लेकिन क्यों नहीं? आपको इसमें क्या आपत्ति है?

'पहली बात तो यह है कि वह कम से कम चालीस साल का है — मेरे ख्याल से तो काफी ज्यादा — और मैं सिर्फ अठारह साल की हूँ; दूसरी बात, वह बेहद संकीर्ण सोच वाला और कट्टर है; तीसरी बात, उसकी पसंद और भावनाएँ मुझसे बिल्कुल अलग हैं; चौथी बात, उसका रूप, आवाज और व्यवहार मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं है; और अंत में, मुझे उसके पूरे व्यक्तित्व से इतनी घृणा है कि मैं उस पर कभी काबू नहीं पा सकती।'

तो फिर आपको इस पर काबू पा लेना चाहिए। और कृपया एक पल के लिए उनकी तुलना मिस्टर हंटिंगडन से करें, और अच्छी शक्ल-सूरत को एक तरफ रखते हुए (जो किसी व्यक्ति के गुण या वैवाहिक जीवन की खुशी में कोई योगदान नहीं देती, और जिसे आप अक्सर हल्के में लेने का दावा करती रही हैं), मुझे बताएं कि दोनों में से बेहतर कौन है।

मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि मिस्टर हंटिंगडन आपकी सोच से कहीं बेहतर इंसान हैं; लेकिन हम अभी उनके बारे में नहीं, बल्कि मिस्टर बोअरहम के बारे में बात कर रहे हैं; और चूंकि मैं उनकी पत्नी बनने के बजाय अविवाहित रहकर सुखमय जीवन जीना और मरना पसंद करूंगी, इसलिए यह उचित ही है कि मैं उन्हें यह बात तुरंत बता दूं और उनकी शंका दूर कर दूं - तो मुझे जाने दीजिए।

लेकिन उसे सीधे-सीधे इनकार मत करो; उसे ऐसी किसी बात का अंदाजा नहीं है, और इससे उसे बहुत बुरा लगेगा: कहो कि फिलहाल तुम्हारा शादी का कोई इरादा नहीं है — '

लेकिन मेरे मन में इसके विचार आते हैं।

या फिर आप और अधिक जान-पहचान चाहते हों।

लेकिन मैं आगे कोई जान-पहचान नहीं चाहता — बल्कि इसके बिल्कुल विपरीत।

और आगे की चेतावनी का इंतजार किए बिना मैं कमरे से निकलकर मिस्टर बोअरहम को ढूंढने चला गया। वे ड्राइंग रूम में इधर-उधर घूम रहे थे, धुन के कुछ अंश गुनगुना रहे थे और अपनी छड़ी के सिरे को कुतर रहे थे।

‘मेरी प्यारी युवती,’ उसने झुककर और बड़े आत्मसंतुष्टि से मुस्कुराते हुए कहा, ‘मुझे आपके दयालु अभिभावक की अनुमति प्राप्त है—’

‘जी हाँ, महोदय,’ मैंने कहा, जितना हो सके बात को छोटा करने की इच्छा से, ‘और मैं आपकी पसंद के लिए बहुत आभारी हूँ, लेकिन मुझे आपके द्वारा दिए जाने वाले सम्मान को अस्वीकार करना होगा, क्योंकि मुझे लगता है कि हम एक-दूसरे के लिए नहीं बने हैं, जैसा कि आप स्वयं जल्द ही जान लेंगे यदि यह प्रयोग करके देखा जाए।’

मेरी चाची सही थीं। यह बिल्कुल स्पष्ट था कि उन्हें मेरी स्वीकृति पर ज़रा भी संदेह नहीं था, और इनकार की तो उन्हें कोई आशंका ही नहीं थी। वे ऐसे उत्तर पर अचंभित थे, लेकिन इतने अविश्वासी थे कि उन्हें ज़्यादा बुरा नहीं लगा; और थोड़ी देर हिचकिचाने के बाद, उन्होंने फिर से हमला शुरू कर दिया।

मुझे पता है, मेरी प्रियतमा, कि हम दोनों में उम्र, स्वभाव और शायद कुछ अन्य बातों में काफी अंतर है; लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, मैं तुम्हारे जैसे युवा और उत्साही स्वभाव की कमियों और खामियों को लेकर कठोर नहीं होऊंगा, और यद्यपि मैं उन्हें अपने मन में स्वीकार करता हूँ, और एक पिता के स्नेह से उन्हें सुधारता भी हूँ, विश्वास करो, कोई भी युवा प्रेमी अपनी प्रेमिका के प्रति मुझसे अधिक कोमल और स्नेहपूर्ण नहीं हो सकता; और दूसरी ओर, मुझे आशा है कि मेरे अधिक अनुभवी वर्ष और चिंतनशील आदतें तुम्हारी नज़र में कोई अपमान नहीं होंगी, क्योंकि मैं इन सभी को तुम्हारी खुशी के लिए सहायक बनाने का प्रयास करूंगा। अब बताओ! तुम्हारा क्या कहना है? चलो, लड़कियों की तरह नखरे और नखरे न करें, बल्कि खुलकर बोलें।

'मैं ऐसा करूंगा, लेकिन केवल वही दोहराने के लिए जो मैंने पहले कहा था, कि मुझे यकीन है कि हम एक दूसरे के लिए नहीं बने थे।'

'तुम सच में ऐसा लगता है?'

'मैं करता हूं।'

लेकिन आप मुझे नहीं जानते — आप और अधिक परिचय चाहते हैं — और अधिक समय चाहते हैं — ’

'नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता। मैं तुम्हें उतना ही जानता हूँ जितना मैं कभी जान पाऊँगा, और तुमसे भी बेहतर जानता हूँ, वरना तुम कभी सपने में भी ऐसे व्यक्ति से जुड़ने का सपना नहीं देखते जो तुम्हारे लिए इतना असंगत हो—जो हर तरह से तुम्हारे लिए बिलकुल अनुपयुक्त हो।'

लेकिन, मेरी प्यारी युवती, मैं पूर्णता की तलाश नहीं करता; मैं माफ कर सकता हूँ —

'धन्यवाद, श्री बोअरहम, लेकिन मैं आपकी उदारता का दुरुपयोग नहीं करूंगा। आप अपनी उदारता और दयालुता किसी अधिक योग्य कार्य के लिए बचा सकते हैं, जो इन पर इतना बोझ न डाले।'

लेकिन मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप अपनी चाची से सलाह लें; मुझे पूरा विश्वास है कि वह उत्कृष्ट महिला —

मैंने उससे सलाह ली है; और मैं जानता हूँ कि उसकी इच्छाएँ आपकी इच्छाओं से मेल खाती हैं; लेकिन ऐसे महत्वपूर्ण मामलों में, मैं स्वयं निर्णय लेने का अधिकार रखता हूँ; और कोई भी बात मेरे झुकाव को बदल नहीं सकती, या मुझे यह विश्वास नहीं दिला सकती कि ऐसा कदम मेरी या आपकी खुशी के लिए लाभकारी होगा — और मुझे आश्चर्य है कि आपके जैसे अनुभवी और विवेकशील व्यक्ति ऐसी पत्नी चुनने के बारे में कैसे सोच सकते हैं।

“अरे वाह!” उसने कहा, “मैं भी कई बार इस बात पर हैरान हुआ हूँ। मैंने कई बार खुद से कहा है, “बोरहम, आखिर तुम क्या चाहते हो? सावधान रहो, दोस्त – सोच समझकर कदम उठाओ! यह एक प्यारी, मोहक स्त्री है, लेकिन याद रखो, प्रेमी को लुभाने वाली सबसे आकर्षक चीजें अक्सर पति के लिए सबसे बड़ी पीड़ा साबित होती हैं!” मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने यह चुनाव बिना सोचे-समझे नहीं किया है। इस रिश्ते की नासमझी ने मुझे दिन-रात कई चिंताजनक विचारों में उलझाए रखा और रातों को कई बार जगाए रखा; लेकिन अंततः मैंने खुद को संतुष्ट कर लिया कि यह वास्तव में नासमझी नहीं थी।” मैंने देखा कि मेरी प्यारी बेटी में कुछ कमियाँ थीं, लेकिन मुझे विश्वास था कि ये कमियाँ उसकी जवानी में नहीं थीं, बल्कि अभी तक पूरी तरह विकसित न हुए गुणों का प्रमाण थीं। मुझे पूरा विश्वास था कि उसके स्वभाव की छोटी-मोटी कमियाँ और निर्णय, राय या व्यवहार में हुई गलतियाँ अपूरणीय नहीं थीं, बल्कि एक सतर्क और विवेकशील सलाहकार के धैर्यपूर्ण प्रयासों से आसानी से

दूर या कम की जा सकती थीं। और जहाँ मैं उसे सही राह दिखाने और नियंत्रित करने में असफल रहा, वहाँ मैंने उसकी अनेक खूबियों के कारण क्षमा करने का जोखिम उठाया। इसलिए, मेरी प्रिय बेटी, जब मैं संतुष्ट हूँ, तो तुम्हें आपत्ति क्यों होनी चाहिए - कम से कम मेरी वजह से तो?

लेकिन सच कहूँ तो, श्री बोअरहम, मुझे मुख्य रूप से अपने कारण आपत्ति है; इसलिए आइए इस विषय को यहीं समाप्त करें,' मैंने कहा होता, 'क्योंकि इसे आगे बढ़ाना व्यर्थ से भी बदतर है,' लेकिन उन्होंने हठपूर्वक मुझे बीच में ही रोकते हुए कहा, 'लेकिन ऐसा क्यों? मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम्हारा ख्याल रखता हूँ, तुम्हारी रक्षा करता हूँ,' इत्यादि।

हमारे बीच जो कुछ भी हुआ, उसे विस्तार से लिखने की मैं ज़हमत नहीं उठाऊँगी। इतना कहना ही काफी है कि मुझे वह बहुत परेशान करने वाला लगा, और उसे यह समझाना बहुत मुश्किल था कि मैं सचमुच अपनी बात पर अड़ी हुई थी और अपने स्वार्थों के प्रति इतनी अंधी थी कि न तो वह और न ही मेरी चाची कभी मेरी आपत्तियों को दूर कर पाएँगे। सच कहूँ तो, मुझे यकीन नहीं है कि मैं आखिरकार सफल हुई भी; हालाँकि वह बार-बार एक ही बात दोहराता रहता था और मुझे बार-बार वही जवाब दोहराने पर मजबूर करता था, जिससे मैं थक गई थी, इसलिए अंत में मैंने उस पर तीखे शब्दों में जवाब दिया, और मेरे आखिरी शब्द थे, — 'मैं तुमसे साफ-साफ कह देती हूँ कि ऐसा नहीं हो सकता। कोई भी बात मुझे अपनी इच्छा के विरुद्ध शादी करने के लिए राजी नहीं कर सकती। मैं तुम्हारा सम्मान करती हूँ — कम से कम, करती अगर तुम एक समझदार आदमी की तरह व्यवहार करते — लेकिन मैं तुमसे प्यार नहीं कर सकती, और कभी नहीं कर सकती — और तुम जितना बोलते हो, उतना ही मुझे दूर करते हो; इसलिए कृपया इसके बारे में और कुछ मत कहो।'

इस पर उन्होंने मुझे सुप्रभात कहा और चले गए, निस्संदेह वे परेशान और नाराज थे; लेकिन निश्चित रूप से इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी।

अध्याय सत्रह

अगले दिन मैं अपने चाचा और चाची के साथ श्री विल्मोट के यहाँ एक रात्रिभोज में गया। उनके यहाँ दो महिलाएँ ठहरी हुई थीं: उनकी भतीजी एनाबेला, एक सुंदर और आकर्षक युवती, या यूँ कहें कि एक युवती, लगभग पच्चीस वर्ष की, अपने ही शब्दों में कहें तो शादी के लायक नहीं, लेकिन सभी सज्जनों द्वारा बहुत सराही जाती थी, जो उसे एक शानदार महिला मानते थे; और उनकी सौम्य चचेरी बहन, मिलिसेंट हार्ग्रेव, जो मुझ पर बुरी तरह मोहित हो गई थी, मुझे अपनी असलियत से कहीं बेहतर समझती थी। और मैं भी बदले में उसे बहुत पसंद करता था। मुझे अपनी जान-पहचान की महिलाओं के प्रति अपनी सामान्य आलोचनाओं में बेचारी मिलिसेंट को पूरी तरह से शामिल नहीं करना चाहिए। लेकिन मैंने इस पार्टी का ज़िक्र न तो उसके लिए किया है और न ही उसकी चचेरी बहन के लिए: बल्कि श्री विल्मोट के एक अन्य मेहमान, श्री हंटिंगडन के लिए किया है। मुझे उनकी उपस्थिति याद रखने का अच्छा कारण है, क्योंकि यह आखिरी बार था जब मैंने उन्हें देखा था।

खाने के समय वह मेरे पास नहीं बैठा; क्योंकि उसकी किस्मत में एक भारी-भरकम बूढ़ी विधवा को पेश करना लिखा था, और मेरी किस्मत में उसके दोस्त मिस्टर ग्रिम्सबी को पेश करना लिखा था, जो मुझे बिल्कुल पसंद नहीं था: उसके चेहरे पर एक भयावह भाव था, और उसके व्यवहार में छिपी क्रूरता और दिखावटी बेईमानी का मिश्रण था, जिसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। वैसे, यह कितनी उबाऊ प्रथा है - इस अति-सभ्य जीवन की बनावटी झुंझलाहटों के कई स्रोतों में से एक। अगर सज्जनों को महिलाओं को भोजन कक्ष में ले जाना ही है, तो वे उन्हें क्यों नहीं ले जा सकते जिन्हें वे सबसे ज्यादा पसंद करते हैं?

हालांकि, मुझे यकीन नहीं है कि अगर श्री हंटिंगडन को अपनी पसंद चुनने की स्वतंत्रता होती, तो वे मुझे चुनते। यह पूरी तरह संभव है कि उन्होंने मिस विल्मोट को चुना होता; क्योंकि वह उनका ध्यान अपनी ओर खींचने पर तुली हुई थीं, और वे भी उनकी मांग के अनुसार सम्मान देने में कोई संकोच नहीं कर रहे थे। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा, जब मैंने देखा कि वे कैसे बातें कर रहे थे, हंस रहे थे और मेज के उस पार एक-दूसरे को देख रहे थे, अपने-अपने पड़ोसियों की अनदेखी और स्पष्ट नाराजगी के बावजूद - और बाद में, जब सज्जन ड्राइंग रूम में हमारे साथ शामिल हुए,

तो उनके प्रवेश करते ही उन्होंने जोर से उन्हें अपने और एक अन्य महिला के बीच विवाद का मध्यस्थ बनने के लिए कहा, और उन्होंने तुरंत उनकी बात मान ली, और बिना एक पल भी हिचकिचाए उनके पक्ष में फैसला सुनाया - हालांकि, मेरे विचार से, वह स्पष्ट रूप से गलत थीं - और फिर उनके और अन्य महिलाओं के एक समूह के साथ सहजता से बातचीत करने लगे; मैं कमरे के दूसरे छोर पर मिलिसेंट हार्ग्रेव के साथ बैठी थी, उनकी रेखाचित्रों को देख रही थी और उनकी विशेष इच्छा के अनुसार अपनी आलोचनात्मक टिप्पणियों और सलाह से उनकी सहायता कर रही थी। लेकिन संयम बनाए रखने के मेरे प्रयासों के बावजूद, मेरा ध्यान रेखाचित्रों से हटकर उस हंसमुख समूह पर चला गया, और मेरी समझ के विरुद्ध मेरा क्रोध उमड़ आया, और निस्संदेह मेरा चेहरा उतर गया; क्योंकि मिलिसेंट ने देखा कि मैं उनके रेखाचित्रों से ऊब गई हूँ, और उन्होंने मुझसे विनती की कि मैं अभी उनके साथ बैठ जाऊँ और बाकी रेखाचित्रों को किसी और अवसर पर देखूँ। लेकिन जब मैं उन्हें आश्वस्त कर रही थी कि मेरी उनके साथ बैठने की कोई इच्छा नहीं है और मैं थकी नहीं हूँ, तभी श्री हंटिंगडन स्वयं उस छोटी गोल मेज पर आ गए जहाँ हम बैठे थे।

‘क्या ये आपके हैं?’ उसने लापरवाही से एक चित्र उठाते हुए कहा।

नहीं, ये मिस हरग्रेव के हैं।

‘ओह! चलिए, इन्हें देख लेते हैं।’

और, मिस हरग्रेव के इस विरोध के बावजूद कि वे देखने लायक नहीं थे, उन्होंने मेरे बगल में एक कुर्सी खींच ली, और मेरे हाथ से एक-एक करके चित्र लेकर, उन्हें बारी-बारी से देखा और मेज पर फेंक दिया, लेकिन उनके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा, हालांकि वे लगातार बोलते रहे। मुझे नहीं पता कि मिलिसेंट हरग्रेव ने ऐसे व्यवहार के बारे में क्या सोचा होगा, लेकिन मुझे उनकी बातचीत बेहद दिलचस्प लगी; हालांकि, जैसा कि मैंने बाद में विश्लेषण करने पर पाया, यह मुख्य रूप से उपस्थित लोगों से पूछताछ तक ही सीमित थी; और यद्यपि उन्होंने कुछ चतुराई भरी बातें कहीं, और कुछ हद से अधिक हास्यास्पद भी, मुझे नहीं लगता कि अगर यहाँ लिखा जाए तो यह सब कुछ खास लगेगा, बिना उनकी नज़र, लहजे, हाव-भाव और उस अवर्णनीय लेकिन अनिश्चित आकर्षण के, जिसने उनके हर काम और बात पर एक आभा बिखेर दी थी, और जिसके कारण उनके चेहरे को देखना और उनकी आवाज़ का संगीत सुनना आनंददायक होता, भले ही वे सरासर बकवास कर रहे होते — और इसके अलावा,

इसी कारण से मुझे अपनी चाची पर बहुत गुस्सा आया जब उन्होंने इस आनंद को रोक दिया, चित्रों को देखने की इच्छा जताते हुए, जिनके बारे में उन्हें कोई परवाह नहीं थी और कुछ भी पता नहीं था, और उनका निरीक्षण करने का नाटक करते हुए, श्री हंटिंगडन से अपने सबसे ठंडे और घृणित चेहरे के साथ बात करने लगीं, और सबसे सामान्य और बेहद औपचारिक प्रश्नों और टिप्पणियों की एक श्रृंखला शुरू कर दी, जिसका उद्देश्य उनका ध्यान मुझसे हटाना था — मुझे परेशान करना था, जैसा कि मैंने सोचा था: और अब पोर्टफोलियो देखने के बाद, मैंने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया। मैंने आपस में बातचीत की और खुद को सोफे पर बैठा लिया, बाकी लोगों से बिल्कुल अलग - यह कभी नहीं सोचा कि ऐसा व्यवहार कितना अजीब लगेगा, बल्कि केवल उस क्षण की झुंझलाहट को दूर करने के लिए, और बाद में अपने निजी विचारों का आनंद लेने के लिए।

लेकिन मैं ज्यादा देर तक अकेली नहीं रही, क्योंकि मिस्टर विल्मोट, जो सबसे कम स्वागत योग्य व्यक्ति थे, ने मेरी एकांत स्थिति का फायदा उठाकर आकर मेरे बगल में डेरा डाल दिया। मैंने खुद को यह तसल्ली दी थी कि मैंने पहले के सभी मौकों पर उनके प्रस्तावों को इतनी प्रभावी ढंग से ठुकरा दिया था कि मुझे उनकी इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रवृत्ति से अब और कुछ डरने की जरूरत नहीं थी; लेकिन लगता है मैं गलत थी: उनका आत्मविश्वास, या तो अपनी दौलत पर या अपने आकर्षण की बची हुई शक्ति पर, और स्त्री की कमजोरी के बारे में उनका दृढ़ विश्वास, इतना प्रबल था कि उन्होंने खुद को दोबारा कोशिश करने का अधिकार समझा, और उन्होंने ऐसा नए जोश के साथ किया, जो उनके द्वारा पी गई शराब की मात्रा से और भी बढ़ गया था - एक ऐसी बात जिसने उन्हें और भी ज्यादा घृणित बना दिया; लेकिन उस समय मैं उनसे कितनी भी घृणा करती थी, मैं उनके साथ असभ्य व्यवहार नहीं करना चाहती थी, क्योंकि अब मैं उनकी मेहमान थी, और अभी-अभी उनके आतिथ्य का आनंद ले रही थी; और मैं विनम्रतापूर्वक लेकिन दृढ़ता से मना करने में माहिर नहीं थी, और अगर मैं ऐसा कर भी लेती तो भी मुझे कोई खास फायदा नहीं होता, क्योंकि वह इतना कठोर मन का था कि अपने ही दुस्साहस के अलावा किसी भी सीधे और स्पष्ट इनकार को बर्दाश्त नहीं कर पाता। नतीजा यह हुआ कि वह और भी ज्यादा भावुक और बेरुखी से भर उठा, और मैं हताशा के कगार पर पहुँच गई, और पता नहीं क्या कहने ही वाली थी कि तभी मैंने महसूस किया कि सोफे के आर्मरेस्ट पर लटका मेरा हाथ अचानक किसी और ने

पकड़ लिया और धीरे से लेकिन जोश से दबा दिया। सहज ही मैंने अंदाज़ा लगा लिया कि कौन है, और ऊपर देखते ही मुझे आश्चर्य से ज्यादा खुशी हुई कि मिस्टर हंटिंगडन मुझ पर मुस्कुरा रहे थे। ऐसा लगा जैसे किसी यातना के राक्षस से प्रकाश के देवदूत के सामने आ गई हो, मानो यह घोषणा करने आया हो कि कष्ट का समय बीत चुका है।

'हेलेन,' उन्होंने कहा (वे अक्सर मुझे हेलेन कहकर बुलाते थे, और मुझे इस आजादी से कभी कोई शिकायत नहीं थी), 'मैं चाहता हूं कि तुम इस तस्वीर को देखो। मुझे यकीन है कि श्री विल्मोट तुम्हें एक पल के लिए समय देंगे।'

मैं फुर्ती से उठ खड़ी हुई। उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और मुझे कमरे के उस पार वैंडाइक की एक शानदार पेंटिंग के पास ले गए, जिसे मैंने पहले भी देखा था, लेकिन ठीक से निहारा नहीं था। कुछ क्षण मौन चिंतन के बाद, मैं उसकी सुंदरता और विशिष्टताओं पर टिप्पणी करने ही वाली थी कि उन्होंने शरारती अंदाज़ में मेरे हाथ को दबाते हुए मुझे बीच में ही रोक दिया और कहा, "चित्र की चिंता मत करो: मैं तुम्हें यहाँ इसके लिए नहीं लाया था; मैं तुम्हें उस दुष्ट बूढ़े अय्याश से दूर ले जाने के लिए लाया था, जो मुझे इस अपमान के लिए चुनौती देना चाहता है।"

मैंने कहा, 'मैं आपका बहुत आभारी हूं। आपने मुझे दूसरी बार ऐसी अप्रिय संगति से मुक्ति दिलाई है।'

'इतना शुक्रगुजार मत हो,' उसने उत्तर दिया: 'यह सब तुम्हारे प्रति दया भाव नहीं है; तुम्हारे सताने वालों के प्रति द्वेष की भावना से प्रेरित होकर ही मुझे उन बूढ़े लोगों को सबक सिखाने में आनंद आता है, हालाँकि मुझे नहीं लगता कि मुझे उन्हें प्रतिद्वंद्वी मानने का कोई बड़ा कारण है। क्या सच में है, हेलेन?'

'तुम्हें पता है कि मैं उन दोनों से नफरत करता हूँ।'

'और मुझे?'

मुझे तुमसे नफरत करने का कोई कारण नहीं है।

लेकिन मेरे प्रति आपकी भावनाएँ क्या हैं? हेलेन—बोलिए! आप मुझे कैसे देखती हैं?

और उसने फिर मेरा हाथ दबाया; लेकिन मुझे डर था कि उसके व्यवहार में कोमलता से ज़्यादा ज़बरदस्ती झलक रही थी, और मुझे लगा कि जब उसने खुद कोई प्रेम का इज़हार नहीं किया है, तो उसे मुझसे प्रेम की बात निकलवाने का कोई

अधिकार नहीं है, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दे। अंत में मैंने कहा, — 'आप मुझे कैसे देखते हैं?'

'मेरी प्यारी परी, मैं तुमसे प्यार करता हूँ! मैं—'

'हेलेन, मुझे तुमसे थोड़ी देर बात करनी है,' हमारे बिल्कुल पास खड़ी मेरी चाची की धीमी, स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी। और मैं उसे छोड़कर चली गई, मन ही मन उसके दुष्ट फ़रिश्ते को कोसते हुए।

'आंटी, क्या बात है? आप क्या चाहती हैं?' मैंने खिड़की के पास जाकर उनके पीछे-पीछे चलते हुए कहा।

'जब तुम दिखने लायक हो जाओ, तब कंपनी में शामिल हो जाना,' उसने मुझे घूरते हुए सख्ती से जवाब दिया; 'लेकिन कृपया कुछ समय यहीं रुकना, जब तक तुम्हारा चेहरा थोड़ा लाल न हो जाए और तुम्हारी आँखों में स्वाभाविक भाव वापस न आ जाएँ। मैं तुम्हें इस हालत में किसी को भी दिखाते हुए शर्मिंदा महसूस करूंगी।'

बेशक, ऐसी टिप्पणी से उस 'भयानक रंग' में कोई कमी नहीं आई; बल्कि इसके विपरीत, मेरे चेहरे पर भावनाओं का एक जटिल मिश्रण उमड़ पड़ा, जिससे मेरा चेहरा और भी ज़्यादा लाल हो गया, और उनमें उग्र क्रोध सबसे प्रमुख था। मैंने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि पर्दा हटाकर रात के अंधेरे में—या यूँ कहें कि दीपकों से जगमगाते चौक में—देखा।

'क्या मिस्टर हंटिंगडन तुम्हें शादी का प्रस्ताव दे रहे थे, हेलेन?' मेरी अति सतर्क रिश्तेदार ने पूछा।

'नहीं।'

'वह तब क्या कह रहा था? मैंने कुछ ऐसा ही सुना था।'

'मुझे नहीं पता कि अगर आपने उसे बीच में नहीं टोका होता तो वह क्या कहता।'

'और अगर उसने तुम्हें शादी का प्रस्ताव दिया होता, तो क्या तुम उसे स्वीकार कर लेती, हेलेन?'

'बिल्कुल नहीं—चाचा और आपसे सलाह लिए बिना।'

'ओह! मुझे खुशी है, मेरे प्रिय, कि तुममें अभी भी इतनी समझदारी बची है। अच्छा, अब,' उसने एक पल रुककर कहा, 'तुमने आज शाम के लिए खुद को काफी हद तक सबके सामने ला दिया है। मैं देख रही हूँ कि इस समय महिलाएं हमारी ओर उत्सुकता भरी निगाहों से देख रही हैं: मैं भी उनके साथ शामिल हो जाऊँगी। जब तुम सामान्य

रूप से दिखने के लिए पर्याप्त रूप से सहज हो जाओ, तो तुम भी आ जाना।’

मैं अब ऐसा ही हूँ।

‘तो फिर नरमी से बात करो, और इतना द्वेषपूर्ण चेहरा मत बनाओ,’ मेरी शांत, लेकिन उत्तेजक चाची ने कहा। ‘हम जल्द ही घर लौटेंगे, और फिर,’ उन्होंने गंभीरता से कहा, ‘मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है।’

तो मैं एक कठिन प्रवचन के लिए तैयार होकर घर लौटी। घर की छोटी सी यात्रा के दौरान गाड़ी में दोनों में से किसी ने भी ज्यादा बात नहीं की; लेकिन जब मैं अपने कमरे में पहुँचकर आरामकुर्सी पर बैठ गई और दिन भर की घटनाओं पर विचार करने लगी, तो मेरी चाची भी मेरे पीछे-पीछे वहाँ आ गईं। उन्होंने राहेल को, जो मेरे गहने संभाल कर रख रही थी, विदा किया और दरवाजा बंद कर दिया; फिर मेरे बगल में, या यूँ कहें कि मेरे बगल में समकोण पर एक कुर्सी रखकर बैठ गईं। मैंने आदरपूर्वक उन्हें अपनी अधिक आरामदायक कुर्सी की पेशकश की। उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया और इस तरह बातचीत शुरू हुई: 'हेलेन, क्या तुम्हें स्टैनिंगली छोड़ने से एक रात पहले हमारी बातचीत याद है?'

जी हां, चाची।

और क्या तुम्हें याद है कि मैंने तुम्हें कैसे चेतावनी दी थी कि तुम अपना दिल उन लोगों के हाथों न चुराओ जो इसके लायक नहीं हैं, और अपना स्नेह उन जगहों पर न लगाओ जहाँ स्वीकृति नहीं है, और जहाँ तर्क और विवेक अपनी स्वीकृति नहीं देते?

‘हाँ; लेकिन मेरा कारण—’

'मुझे क्षमा करें—और क्या आपको याद है कि आपने मुझे आश्वस्त किया था कि आपकी ओर से चिंता का कोई कारण नहीं है; क्योंकि आपको कभी भी ऐसे व्यक्ति से विवाह करने का प्रलोभन नहीं होना चाहिए जो विवेक या सिद्धांतों से रहित हो, चाहे वह अन्य मामलों में कितना भी सुंदर या आकर्षक क्यों न हो, क्योंकि आप उससे प्रेम नहीं कर सकतीं; आप उससे घृणा करेंगी—उसे तुच्छ समझेंगी—उस पर दया करेंगी—कुछ भी करेंगी, लेकिन उससे प्रेम नहीं करेंगी—क्या ये आपके ही शब्द नहीं थे?'

‘हाँ; लेकिन—’

और क्या आपने यह नहीं कहा था कि आपका स्नेह अनुमोदन पर आधारित होना चाहिए; और यह कि जब तक आप अनुमोदन, सम्मान और आदर नहीं कर सकते, तब तक आप प्रेम नहीं कर सकते?

‘हाँ; लेकिन मैं अनुमोदन करता हूँ, सम्मान करता हूँ और आदर करता हूँ—’

‘ऐसा क्यों, मेरी प्यारी? क्या मिस्टर हंटिंगडन एक अच्छे आदमी हैं?’

वह आपकी सोच से कहीं बेहतर इंसान है।

‘इसका कोई महत्व नहीं है। क्या वह एक अच्छा आदमी है?’

'हां—कुछ मायनों में। उनका स्वभाव अच्छा है।'

क्या वह सिद्धांतों वाला व्यक्ति है?

‘शायद बिलकुल नहीं; लेकिन यह केवल विचार की कमी के कारण है। अगर उसे सलाह देने वाला और सही-गलत का स्मरण कराने वाला कोई होता तो—’

‘तुम्हें लगता है कि वह जल्दी सीख जाएगा—और तुम खुद खुशी-खुशी उसकी शिक्षिका बनने को तैयार हो जाओगी? लेकिन, मेरी प्यारी, मुझे लगता है कि वह तुमसे पूरे दस साल बड़ा है—फिर तुम नैतिक ज्ञान में उससे इतनी आगे कैसे हो?’

‘आपकी बदौलत, चाची, मेरी परवरिश अच्छी हुई है और मुझे हमेशा अच्छे उदाहरण देखने को मिले हैं, जो शायद उन्हें नहीं मिले होंगे; और इसके अलावा, उनका स्वभाव आशावादी और हंसमुख है, और मैं स्वभाव से चिंतनशील हूं।’

‘अच्छा, अब आपने अपने ही बयान से उसे बुद्धि और सिद्धांत दोनों में कमी वाला साबित कर दिया है—’

‘तब, मेरी समझ और मेरे सिद्धांत उनकी सेवा में हैं।’

'हेलेन, यह तो कुछ ज़्यादा ही गुस्ताखी लग रही है। क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारे पास दोनों के लिए काफ़ी है? और क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारा यह खुशमिजाज, लापरवाह और अय्याश पति तुम्हारे जैसी किसी युवा लड़की के बहकावे में आ जाएगा?'

नहीं; मैं उसका मार्गदर्शन नहीं करना चाहूँगी; लेकिन मुझे लगता है कि मुझमें उसे कुछ गलतियों से बचाने के लिए पर्याप्त प्रभाव हो सकता है, और मुझे लगता है कि इतने नेक स्वभाव को विनाश से बचाने के प्रयास में मेरा जीवन सार्थक व्यतीत होगा। अब जब मैं उससे गंभीरता से बात करती हूँ तो वह हमेशा ध्यान से सुनता है (और मैं अक्सर उसके बेतरतीब बोलने के तरीके पर उसे डांटने का साहस करती हूँ), और कभी-कभी वह कहता है कि अगर मैं हमेशा उसके साथ होती तो वह कभी कोई बुरा काम या बात नहीं करता, और मुझसे थोड़ी सी रोज़ाना की बातचीत उसे बिल्कुल संत बना देती। यह शायद कुछ मज़ाक और कुछ चापलूसी हो, लेकिन फिर भी—

लेकिन फिर भी आपको लगता है कि यह सच हो सकता है?

'अगर मुझे इसमें थोड़ी भी सच्चाई लगती है, तो यह मेरे अपने आत्मविश्वास से नहीं, बल्कि उसकी स्वाभाविक अच्छाई से है। और आपको उसे दुराचारी कहने का कोई अधिकार नहीं है, चाची; वह बिल्कुल भी ऐसा नहीं है।'

'तुम्हें यह किसने बताया, मेरी प्यारी? उस विवाहित महिला के साथ उसके षड्यंत्र की कहानी क्या थी—वह महिला कौन थी?—जो मिस विल्मोट ने तुम्हें कुछ दिन पहले बताई थी?'

'यह झूठ था—झूठा!' मैं चिल्लाई। 'मुझे इस पर ज़रा भी विश्वास नहीं है।'

'तो क्या आपको लगता है कि वह एक गुणी, सुचारु युवक है?'

मुझे उसके चरित्र के बारे में कुछ भी पक्का पता नहीं है। मैं बस इतना जानती हूँ कि मैंने उसके खिलाफ कोई ठोस बात नहीं सुनी है—कम से कम ऐसी कोई बात नहीं जिसे साबित किया जा सके; और जब तक लोग अपने झूठे आरोपों को साबित नहीं कर देते, मैं उन पर विश्वास नहीं करूँगी। और मैं यह जानती हूँ कि अगर उसने कोई गलती की भी है, तो वह सिर्फ़ जवानी में होने वाली आम गलतियाँ हैं, जिनके बारे में कोई सोचता भी नहीं; क्योंकि मैं देखती हूँ कि हर कोई उसे पसंद करता है, और सभी माताएँ उस पर मुस्कुराती हैं, और उनकी बेटियाँ—और खुद मिस विल्मोट भी—उसका ध्यान आकर्षित करने में बहुत खुश होती हैं।

हेलेन, दुनिया ऐसे अपराधों को मामूली समझ सकती है; कुछ बेईमान माताएँ चरित्र की परवाह किए बिना किसी धनवान युवक से शादी करने के लिए उत्सुक हो सकती हैं; और नासमझ लड़कियाँ किसी आकर्षक सज्जन की मुस्कान पाने के लिए ऊपरी तौर पर जानने की कोशिश किए बिना ही खुश हो सकती हैं; लेकिन मुझे विश्वास था कि तुम उनकी नज़रों से देखने और उनके विकृत निर्णय से आंकलन करने से कहीं अधिक समझदार हो। मुझे नहीं लगा था कि तुम इन्हें मामूली गलतियाँ कहोगी!

'मैं भी नहीं, चाची; लेकिन अगर मैं पापों से घृणा करती हूँ, तो मैं पापी से प्रेम करती हूँ, और उसके उद्धार के लिए बहुत कुछ करूँगी, भले ही आपके संदेह काफी हद तक सही हों, जिस पर मैं विश्वास नहीं करती और न ही करूँगी।'

"अच्छा, मेरी प्यारी, अपने चाचा से पूछो कि वह किस तरह की संगत में रहते हैं, और क्या वह कुछ आवारा, अय्याश नौजवानों के समूह में नहीं हैं, जिन्हें वह अपने

दोस्त, अपने मौज-मस्ती करने वाले साथी कहते हैं, और जिनका मुख्य आनंद बुराइयों में लिप्त रहना और एक-दूसरे से होड़ करना है कि कौन शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार किए गए स्थान की ओर जाने वाले बेकाबू रास्ते पर सबसे तेज और सबसे दूर तक दौड़ सकता है।"

तब मैं उसे उनसे बचा लूंगा।

'ओह, हेलेन, हेलेन! तुम्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं है कि ऐसे आदमी के साथ अपना भाग्य जोड़ने का कितना बड़ा दुख है!'

"चाची, आप चाहे जो भी कहें, मुझे उस पर इतना भरोसा है कि मैं उसकी सुरक्षा के लिए अपनी खुशी भी दांव पर लगा दूंगी। मैं बेहतर लोगों को उन लोगों के लिए छोड़ दूंगी जो सिर्फ अपने फायदे के बारे में सोचते हैं। अगर उसने कोई गलती की है, तो मैं उसे उसकी शुरुआती गलतियों के परिणामों से बचाने और उसे सद्गुण के मार्ग पर वापस लाने के प्रयास में अपना जीवन सार्थक मानूंगी। ईश्वर मुझे सफलता प्रदान करे!"

बातचीत यहीं खत्म हो गई, क्योंकि इसी समय मेरे चाचा की आवाज़ उनके कमरे से सुनाई दी, जो मेरी चाची को बिस्तर पर आने के लिए ज़ोर से बुला रहे थे। उस रात उनका मूड खराब था; क्योंकि उनका गठिया बढ़ गया था। जब से हम शहर आए थे, तब से यह धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था; और मेरी चाची ने अगली सुबह इस बात का फायदा उठाकर उन्हें सीज़न खत्म होने का इंतज़ार किए बिना तुरंत गाँव लौटने के लिए मना लिया। उनके डॉक्टर ने भी उनकी बातों का समर्थन किया और उन्हें और मज़बूत किया; और अपनी आदत के विपरीत, उन्होंने जाने की तैयारियों में इतनी जल्दी की (मुझे लगता है कि मेरे लिए भी और मेरे चाचा के लिए भी), कि कुछ ही दिनों में हम चले गए; और मैंने मिस्टर हंटिंगडन को फिर कभी नहीं देखा। मेरी चाची खुद को तसल्ली देती हैं कि मैं उन्हें जल्द ही भूल जाऊँगी — शायद उन्हें लगता है कि मैं उन्हें पहले ही भूल चुकी हूँ, क्योंकि मैं उनका नाम कभी नहीं लेती; और हो सकता है कि वह ऐसा ही सोचती रहें, जब तक हम फिर से न मिलें — अगर कभी ऐसा हुआ तो। मुझे हैरानी होती है कि क्या ऐसा होगा?

अध्याय अठारह

25 अगस्त। — मैं अब अपनी नियमित दिनचर्या में स्थिर कामों और शांत मनोरंजनों में पूरी तरह रम चुकी हूँ — काफी संतुष्ट और खुश हूँ, लेकिन फिर भी वसंत ऋतु का इंतज़ार कर रही हूँ, शहर लौटने की उम्मीद में, वहाँ की मौज-मस्ती और अय्याशी के लिए नहीं, बल्कि श्री हंटिंगडन से एक बार फिर मिलने के अवसर के लिए; क्योंकि वे अब भी मेरे विचारों और सपनों में हमेशा रहते हैं। मेरे सभी कामों में, मैं जो कुछ भी करती हूँ, देखती हूँ या सुनती हूँ, उसका अंततः उनसे ही संबंध है; मैं जो भी कौशल या ज्ञान प्राप्त करती हूँ, वह किसी दिन उनके लाभ या मनोरंजन के लिए उपयोग किया जाएगा; प्रकृति या कला में मैं जो भी नई सुंदरता खोजती हूँ, उसे उनकी नज़रों के सामने चित्रित किया जाएगा, या अपनी स्मृति में संजोया जाएगा ताकि भविष्य में उन्हें बता सकूँ। कम से कम यही वह आशा है जिसे मैं संजोती हूँ, वह कल्पना जो मुझे मेरे अकेले रास्ते पर रोशन करती है। यह शायद एक भ्रम मात्र ही हो, लेकिन जब तक यह मुझे उस रास्ते से न भटकाए जिस पर मुझे चलना चाहिए, तब तक इसे अपनी आँखों से देखना और इसकी चमक में आनंद लेना कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता; और मुझे लगता है कि ऐसा नहीं होगा, क्योंकि मैंने अपनी चाची की सलाह पर गहराई से विचार किया है, और अब मुझे स्पष्ट रूप से समझ आ रहा है कि उस व्यक्ति पर अपना जीवन न्योछावर करना कितनी मूर्खता है जो मेरे सारे प्रेम के योग्य नहीं है, और जो मेरे हृदय की गहरी भावनाओं का जवाब देने में असमर्थ है। यह समझ इतनी स्पष्ट है कि अगर मैं उससे दोबारा मिल भी जाऊं, और अगर वह मुझे याद रखे और मुझसे अब भी प्रेम करे (जो कि, अफसोस! उसकी स्थिति और उसके आसपास के लोगों को देखते हुए बहुत कम संभव है), और अगर वह मुझसे शादी का प्रस्ताव रखे, तो भी मैं तब तक अपनी सहमति नहीं दूंगी जब तक मुझे यह निश्चित रूप से पता न चल जाए कि उसके बारे में मेरी चाची की राय या मेरी राय में से कौन सी सच के सबसे करीब है; क्योंकि अगर मेरी राय पूरी तरह गलत है, तो मैं उससे प्रेम नहीं करती; यह तो मेरी कल्पना की उपज है। लेकिन मुझे लगता है कि यह गलत नहीं है - नहीं, नहीं - एक

गुप्त बात है - एक अंतर्मन की भावना जो मुझे आश्वस्त करती है कि मैं सही हूं। उसमें मूलभूत अच्छाई है; और उसे उजागर करने में कितना आनंद आएगा! अगर वह भटक गया है, तो उसे वापस लाने में कितना सुख मिलेगा! यदि अब वह भ्रष्ट और दुष्ट साथियों के हानिकारक प्रभाव में आ गया है, तो उसे उनसे बचाना कितना गौरव की बात होगी! काश! मैं यह विश्वास कर पाता कि स्वर्ग ने मुझे इसी कार्य के लिए चुना है!

* * * * *

आज 1 सितंबर है; लेकिन मेरे चाचा ने गेमकीपर को आदेश दिया है कि जब तक सज्जन न आ जाएं, तब तक तीतरों को न मारा जाए। 'कौन से सज्जन?' यह सुनकर मैंने पूछा। उन्होंने एक छोटे से समूह को शिकार के लिए आमंत्रित किया था। उनके मित्र श्री विल्मोट उनमें से एक थे, और मेरी चाची के मित्र श्री बोअरहम दूसरे। यह खबर मुझे उस समय बहुत बुरी लगी; लेकिन जब मैंने सुना कि श्री हंटिंगडन वास्तव में तीसरे व्यक्ति होंगे, तो मेरी सारी चिंता और आशंका एक सपने की तरह गायब हो गई! मेरी चाची उनके आने के सख्त खिलाफ हैं, बेशक: उन्होंने मेरे चाचा को उन्हें आमंत्रित न करने के लिए बहुत समझाने की कोशिश की; लेकिन उन्होंने उनकी आपत्तियों पर हंसते हुए कहा कि कहने का कोई फायदा नहीं, क्योंकि जो होना था सो हो गया: उन्होंने हंटिंगडन और उनके मित्र लॉर्ड लोबोरो को लंदन छोड़ने से पहले ही आमंत्रित कर दिया था, और अब केवल उनके आने की तारीख तय करनी बाकी थी। तो वे सुरक्षित हैं, और मुझे उनसे मिलने का पूरा भरोसा है। मैं अपनी खुशी शब्दों में बयां नहीं कर सकती। मुझे अपनी चाची से इसे छुपाना बहुत मुश्किल लग रहा है; लेकिन मैं अपनी भावनाओं को व्यक्त करके उसे परेशान नहीं करना चाहती, जब तक मुझे यह पता न चल जाए कि मुझे उन्हें व्यक्त करना चाहिए या नहीं। अगर मुझे उन्हें दबाना ही अपना परम कर्तव्य लगे, तो वे सिर्फ मुझे ही परेशान करेंगी; और अगर मैं सचमुच इस लगाव को निभाने में खुद को सही ठहरा सकूं, तो मैं कुछ भी सह सकती हूं, यहां तक कि अपनी सबसे अच्छी दोस्त के गुस्से और दुख को भी झेल सकती हूं - यकीनन, मुझे जल्द ही पता चल जाएगा। लेकिन ये भावनाएं महीने के मध्य तक तो नहीं आएंगी।

हमारे यहाँ दो महिला मेहमान भी आने वाली हैं: श्री विल्मोट अपनी भतीजी और

उसकी चचेरी बहन मिलिसेंट को ला रहे हैं। मुझे लगता है मेरी चाची सोचती हैं कि मिलिसेंट की संगति से मुझे लाभ होगा, और उसके सौम्य व्यवहार और विनम्र स्वभाव का उदाहरण मेरे लिए उपयोगी होगा; और मुझे संदेह है कि भतीजी को वह श्री हंटिंगडन का ध्यान मेरी ओर आकर्षित करने के लिए एक तरह के आकर्षण के रूप में ला रही हैं। मैं इसके लिए उन्हें धन्यवाद नहीं देती; लेकिन मुझे मिलिसेंट की संगति से खुशी होगी: वह एक प्यारी, अच्छी लड़की है, और काश मैं भी उसके जैसी होती — कम से कम उससे ज़्यादा तो होती।

* * * * *

19 तारीख — वे आ गए हैं। परसों ही आ गए थे। सभी सज्जन शिकार पर गए हैं, और महिलाएं मेरी चाची के साथ ड्राइंग रूम में काम कर रही हैं। मैं पुस्तकालय में आ गया हूँ, क्योंकि मैं बहुत दुखी हूँ और अकेला रहना चाहता हूँ। किताबें मेरा ध्यान नहीं भटका सकतीं; इसलिए मैंने अपनी मेज खोली है और अपनी बेचैनी का कारण लिखकर कुछ राहत पाने की कोशिश करूँगा। यह कागज़ मेरे लिए एक भरोसेमंद दोस्त का काम करेगा, जिसके कान में मैं अपने दिल की सारी बातें उंडेल सकूँ। यह मेरी परेशानियों पर सहानुभूति नहीं दिखाएगा, लेकिन उन पर हँसेगा भी नहीं, और अगर मैं इसे अपने पास रखूँ, तो यह किसी को बता नहीं पाएगा; इसलिए शायद यही मेरे लिए सबसे अच्छा दोस्त है।

सबसे पहले, मैं उनके आगमन के बारे में बात करना चाहूँगी — मैं अपनी खिड़की पर बैठी रही और लगभग दो घंटे तक उनकी गाड़ी के पार्क के गेट में प्रवेश करने का इंतज़ार करती रही — क्योंकि सभी गाड़ियाँ उनसे पहले ही आ चुकी थीं — और हर आगमन पर मुझे कितनी निराशा हुई, क्योंकि वह उनकी गाड़ी नहीं थी। सबसे पहले श्री विल्मोट और महिलाएँ आईं। जब मिलिसेंट अपने कमरे में पहुँच गईं, तो मैं कुछ मिनटों के लिए अपनी जगह से उठी और उनसे थोड़ी निजी बातचीत की, क्योंकि अब वह मेरी घनिष्ठ मित्र बन चुकी थीं, हमारे बिछड़ने के बाद से हमारे बीच कई लंबे पत्र लिखे जा चुके थे। अपनी खिड़की पर लौटकर मैंने दरवाजे पर एक और गाड़ी देखी। क्या वह उनकी थी? नहीं; वह श्री बोअरहम की सादी काली गाड़ी थी; और वह सीढ़ियों पर खड़े होकर अपने विभिन्न बक्सों और पैकेजों को उतारने का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कर रहे थे। क्या ही सामान था! कोई सोच सकता था कि उन्होंने कम से कम

छह महीने की यात्रा की योजना बनाई थी। काफी समय बाद, लॉर्ड लोबोरो अपनी बग्घी में आए। क्या वह उन अय्याश दोस्तों में से एक हैं, मुझे आश्चर्य होता है? मुझे नहीं लगता; मुझे यकीन है कि कोई भी उन्हें हंसमुख साथी नहीं कह सकता, और इसके अलावा, उनका व्यवहार इतना गंभीर और सज्जन प्रतीत होता है कि उन पर इस तरह का संदेह करना उचित नहीं है। वह एक लंबा, पतला, गंभीर दिखने वाला व्यक्ति है, जिसकी उम्र तीस से चालीस के बीच लगती है, और वह कुछ हद तक बीमार और चिंतित दिखता है।

अंततः, श्री हंटिंगडन की हल्की-फुल्की गाड़ी लॉन में तेज़ी से आती हुई दिखाई दी। मुझे उनकी एक झलक ही मिली: जैसे ही गाड़ी रुकी, वे तुरंत बरामदे की सीढ़ियों पर कूद पड़े और घर के अंदर गायब हो गए।

अब मैं रात के खाने के लिए तैयार होने को तैयार हो गया—यह एक ऐसा कर्तव्य था जिसके लिए राहेल पिछले बीस मिनटों से मुझे आग्रह कर रही थी; और जब यह महत्वपूर्ण काम पूरा हो गया, तो मैं ड्राइंग रूम में गया, जहाँ मैंने श्रीमान और श्रीमती विल्मोट और मिलिसेंट हरग्रेव को पहले से ही उपस्थित पाया। कुछ देर बाद, लॉर्ड लोबोरो अंदर आए, और फिर श्रीमान बोअरहम, जो मेरे पिछले व्यवहार को भूलने और क्षमा करने के लिए पूरी तरह से तैयार लग रहे थे, और आशा कर रहे थे कि उनकी थोड़ी सी सुलह और निरंतर प्रयास से शायद मैं सुधर जाऊँ। जब मैं खिड़की पर खड़ा मिलिसेंट से बात कर रहा था, तभी वह मेरे पास आए और लगभग अपने सामान्य लहजे में बात करने लगे, तभी श्रीमान हंटिंगडन कमरे में दाखिल हुए।

'पता नहीं वो मेरा अभिवादन कैसे करेंगे?' मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा; और उनसे मिलने के बजाय, मैंने अपनी भावनाओं को छिपाने या दबाने के लिए खिड़की की ओर मुँह कर लिया। लेकिन अपने मेज़बान और बाकी सभी को नमस्कार करने के बाद, वो मेरे पास आए, मेरा हाथ प्यार से दबाया और धीरे से कहा कि मुझे फिर से देखकर उन्हें खुशी हुई। उसी समय भोजन की घोषणा हुई: मेरी चाची ने उनसे मिस हरग्रेव को भोजन कक्ष में ले जाने का अनुरोध किया, और घृणित श्री विल्मोट ने, अवर्णनीय भावों के साथ, मुझे अपना हाथ दिया; और मुझे उनके और श्री बोअरहम के बीच बैठने के लिए विवश होना पड़ा। लेकिन बाद में, जब हम सब फिर से ड्राइंग रूम में इकट्ठा हुए, तो श्री हंटिंगडन के साथ कुछ सुखद बातचीत के क्षणों ने मेरी सारी पीड़ा को दूर कर दिया।

शाम के दौरान, मिस विल्मोट को सभा के मनोरंजन के लिए गाने और वादन करने के लिए कहा गया, और मुझे अपने चित्र प्रदर्शित करने के लिए कहा गया, और यद्यपि उन्हें संगीत पसंद है, और वह एक कुशल संगीतकार हैं, मुझे लगता है कि मैं यह कहने में सही हूं कि उन्होंने उनके संगीत की तुलना में मेरे चित्रों पर अधिक ध्यान दिया।

अब तक तो सब ठीक था; लेकिन जब मैंने उसे धीमी आवाज़ में, लेकिन विशेष ज़ोर देकर, एक चित्र के बारे में कहते सुना, 'यह सबसे अच्छा है!' तो मैं उत्सुकता से देखने के लिए ऊपर देखने लगा कि वह कौन सा चित्र है, और मुझे यह देखकर बहुत डर लगा कि वह संतुष्ट भाव से चित्र के पीछे देख रहा था: – वह उसका ही चेहरा था जिसे मैंने वहाँ बनाया था और मिटाना भूल गया था! स्थिति और बिगड़ गई, उस क्षण की पीड़ा में, मैंने उसे उसके हाथ से छीनने की कोशिश की; लेकिन उसने मुझे रोक दिया, और चिल्लाते हुए, 'नहीं – जॉर्ज की कसम, मैं इसे रखूँगा!' उसे अपनी जैकेट के पास रख दिया और खुशी से हंसते हुए अपनी जैकेट के बटन बंद कर लिए।

फिर, मोमबत्ती को अपनी कोहनी के पास लाकर, उसने सभी रेखाचित्रों को अपने पास समेट लिया, चाहे वो उसने देखे हों या दूसरों के, और बुदबुदाते हुए, 'मुझे अब दोनों तरफ देखना होगा,' उसने उत्सुकता से उनका निरीक्षण शुरू किया, जिसे मैंने पहले तो काफी शांत भाव से देखा, इस विश्वास के साथ कि उसकी अभिमान किसी और खोज से संतुष्ट नहीं होगी; क्योंकि, हालांकि मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने उस आकर्षक चेहरे को चित्रित करने के असफल प्रयासों में कई रेखाचित्रों के पीछे के हिस्से को बिगाड़ दिया था, मुझे यकीन था कि उस एक दुर्भाग्यपूर्ण अपवाद को छोड़कर, मैंने अपने मोह के सभी निशानों को सावधानीपूर्वक मिटा दिया था। लेकिन पेंसिल अक्सर गत्ते पर ऐसे निशान छोड़ देती है जिन्हें कितना भी रगड़ने से मिटाया नहीं जा सकता। ऐसा ही कुछ इनमें से अधिकांश के साथ हुआ था; और, मैं स्वीकार करता हूँ, जब मैंने उसे उन्हें मोमबत्ती के इतने करीब पकड़े हुए और उन खाली जगहों को इतनी ध्यान से देखते हुए देखा तो मैं कांप गया; लेकिन फिर भी, मुझे विश्वास था कि वह इन धुंधले निशानों को अपनी संतुष्टि के लिए नहीं देख पाएगा। हालाँकि, मैं गलत था। अपनी जांच पूरी करने के बाद, उन्होंने चुपचाप टिप्पणी की, - 'मुझे लगता है कि युवतियों के चित्रों के पीछे का भाग, उनके पत्रों के परिशिष्ट की तरह, इस विषय का सबसे महत्वपूर्ण और रोचक हिस्सा है।'

फिर, अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर, वह कुछ मिनटों तक चुपचाप चिंतन करते रहे,

आत्मसंतुष्ट मुस्कान के साथ, और जब मैं उनकी इस संतुष्टि को कम करने के लिए कोई तीखा भाषण सोच रहा था, तभी वह उठे और एनाबेला विल्मोट के पास गए, जो लॉर्ड लोबोरो के साथ बड़े चाव से बातें कर रही थीं, और उनके बगल में सोफे पर बैठ गए, और बाकी शाम उनके साथ ही बिताई।

'तो फिर,' मैंने सोचा, 'वह मुझसे इसलिए नफरत करता है, क्योंकि वह जानता है कि मैं उससे प्यार करती हूं।'

और उस विचार ने मुझे इतना दुखी कर दिया कि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। मिलिसेंट आई और मेरी चित्रकारी की प्रशंसा करने लगी और उस पर टिप्पणी करने लगी; लेकिन मैं उससे बात नहीं कर सकी—मैं किसी से बात नहीं कर पा रही थी, और चाय का प्रस्ताव आते ही, मैंने खुले दरवाजे और उसके प्रवेश से हुए थोड़े से ध्यान भटकाने का फायदा उठाकर चुपके से बाहर निकल गई—क्योंकि मुझे यकीन था कि मैं चाय नहीं पी सकती—और पुस्तकालय में जाकर शरण ली। मेरी चाची ने थॉमस को मुझे ढूंढने भेजा, यह पूछने के लिए कि क्या मैं चाय पर नहीं आ रही हूँ; लेकिन मैंने उससे कहा कि मैं आज रात चाय नहीं पीऊँगी, और सौभाग्य से, वह उस समय अपने मेहमानों में इतनी व्यस्त थी कि आगे कोई पूछताछ नहीं कर सकी।

चूंकि कंपनी के अधिकांश लोग उस दिन काफी दूर से आए थे, इसलिए वे जल्दी आराम करने चले गए; और जैसा कि मैंने सोचा, उन सभी को ऊपर जाते हुए सुनकर, मैं ड्राइंग रूम के साइडबोर्ड से अपना मोमबत्ती स्टैंड लेने के लिए बाहर निकला। लेकिन श्री हंटिंगडन बाकियों से पीछे रह गए थे। जैसे ही मैंने दरवाजा खोला, वे सीढ़ियों के ठीक नीचे थे, और हॉल में मेरे कदमों की आहट सुनकर - हालांकि मुझे खुद मुश्किल से सुनाई दे रही थी - वे तुरंत वापस मुड़ गए।

'हेलेन, क्या तुम हो?' उसने कहा। 'तुम हमसे क्यों भाग गई?'

'शुभ रात्रि, श्री हंटिंगडन,' मैंने ठंडे स्वर में कहा, प्रश्न का उत्तर न देते हुए। और मैं ड्राइंग रूम में प्रवेश करने के लिए मुड़ गया।

'लेकिन आप हाथ तो मिलाएंगे ना?' उसने मेरे सामने दरवाजे पर खड़े होते हुए कहा। और उसने मेरी इच्छा के विरुद्ध मेरा हाथ पकड़ लिया और थामे रखा।

मैंने कहा, 'मुझे जाने दीजिए, श्री हंटिंगडन। मुझे एक मोमबत्ती चाहिए।'

'मोमबत्ती जलती रहेगी,' उसने जवाब दिया।

मैंने अपना हाथ उसकी पकड़ से छुड़ाने के लिए बेताब कोशिश की।

‘हेलेन, तुम मुझे छोड़कर इतनी जल्दी में क्यों हो?’ उसने बेहद ही उत्तेजक आत्मविश्वास भरी मुस्कान के साथ कहा। ‘तुम्हें पता है, तुम मुझसे नफरत नहीं करती।’

'हां, मैं करता हूं - इस समय।'

'तुम नहीं। तुम एनाबेला विल्मोट से नफरत करते हो, मुझसे नहीं।'

मैंने आक्रोश से आग बबूला होकर कहा, 'मेरा एनाबेला विल्मोट से कोई लेना-देना नहीं है।'

‘लेकिन मैंने किया है, तुम्हें पता है,’ उसने विशेष जोर देते हुए जवाब दिया।

‘इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, महोदय,’ मैंने जवाब दिया।

‘क्या तुम्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, हेलेन? क्या तुम कसम खाओगी? क्या तुम खाओगी?’

'नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा, मिस्टर हंटिंगडन! और मैं जाऊँगा,' मैं चिल्लाया, यह न जानते हुए कि मुझे हँसना चाहिए, रोना चाहिए या क्रोध के बवंडर में फूट पड़ना चाहिए।

‘तो जाओ, चालाक औरत!’ उसने कहा; लेकिन जैसे ही उसने मेरा हाथ छोड़ा, उसने बेशर्मी से मेरी गर्दन में हाथ डाल दिया और मुझे चूम लिया।

क्रोध और बेचैनी से कांपते हुए, और न जाने किस-किस भावना से, मैं वहाँ से भागी, अपनी मोमबत्ती ली और दौड़कर अपने कमरे में ऊपर चली गई। अगर वह घृणित तस्वीर न होती तो वह ऐसा न करता। और वह तस्वीर अब भी उसके पास थी, उसके अहंकार और मेरी बेइज्जती का एक चिरस्थायी स्मारक।

उस रात मुझे बहुत कम नींद आई, और सुबह उठते ही मैं नाश्ते पर उससे मिलने के ख्याल से परेशान और उलझन में थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह कैसे हो। मेरे प्रति गरिमापूर्ण, ठंडी उदासीनता का दिखावा करना शायद ही कारगर होता, खासकर उसके सामने मेरी भक्ति को देखते हुए। फिर भी, उसकी धृष्टता को रोकने के लिए कुछ तो करना ही था - मैं उन चमकीली, हंसमुख आंखों के अत्याचार को बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। और इसलिए, मैंने उसकी हंसमुख सुबह की शुभकामना को उतनी ही शांति और ठंडेपन से स्वीकार किया जितना मेरी चाची चाहती थीं, और मुझे बातचीत में खींचने के उसके एक-दो प्रयासों को संक्षिप्त उत्तरों से विफल कर

दिया, जबकि मैंने पार्टी के हर दूसरे सदस्य, विशेष रूप से एनाबेला विल्मोट के प्रति असामान्य रूप से प्रसन्नता और विनम्रता का व्यवहार किया, और यहां तक कि उसके चाचा और श्री बोअरहम के साथ भी उस अवसर पर अतिरिक्त शिष्टाचार से पेश आई, नखरे के किसी इरादे से नहीं, बल्कि सिर्फ उसे यह दिखाने के लिए कि मेरी विशेष शीतलता और संयम किसी सामान्य खराब मनोदशा या उदासी के कारण नहीं था।

लेकिन वह इस तरह के व्यवहार से विचलित होने वाला नहीं था। उसने मुझसे ज्यादा बात नहीं की, लेकिन जब भी उसने बात की, तो उसकी बातों में एक तरह की सहजता, खुलापन और दयालुता झलक रही थी, जिससे साफ पता चलता था कि उसे पता था कि उसके शब्द मेरे कानों को मधुर लग रहे हैं; और जब उसकी नजरें मुझसे मिलीं, तो उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी—शायद थोड़ी घमंडी—लेकिन ओह! इतनी प्यारी, इतनी उज्ज्वल, इतनी सौम्य कि मैं अपना गुस्सा रोक ही नहीं पाई; सारी नाराजगी उसके नीचे ऐसे गायब हो गई जैसे गर्मी के सूरज के सामने सुबह के बादल।

नाश्ते के तुरंत बाद, एक को छोड़कर बाकी सभी सज्जन, लड़कपन के उत्साह के साथ, बेचारे तीतरों के शिकार के लिए निकल पड़े; मेरे चाचा और श्री विल्मोट अपने शिकार करने वाले टट्टुओं पर, श्री हंटिंगडन और लॉर्ड लोबोरो पैदल। एकमात्र अपवाद श्री बोअरहम थे, जिन्होंने रात भर हुई बारिश को ध्यान में रखते हुए, थोड़ा पीछे रुकना और धूप से घास सूखने के बाद उनसे मिलना उचित समझा। उन्होंने गीले पैरों से होने वाली बुराइयों और खतरों पर हमें विस्तृत और गहन व्याख्यान दिया, जिसे उन्होंने अत्यंत शांत भाव से दिया। श्री हंटिंगडन और मेरे चाचा ने उनका मज़ाक उड़ाया और हँसे। उन्होंने उस समझदार शिकारी को महिलाओं का मनोरंजन करने के लिए छोड़कर, अपनी बंदूकें लेकर अस्तबल की ओर प्रस्थान किया, ताकि घोड़ों को देख सकें और कुत्तों को बाहर निकाल सकें।

पूरी सुबह मिस्टर बोअरहम के साथ समय बिताना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था, इसलिए मैं पुस्तकालय चला गया और वहाँ अपना ईज़ल निकालकर चित्र बनाने लगा। अगर मेरी चाची शिकायत करने आतीं, तो ईज़ल और पेंटिंग का सामान ड्राइंग रूम छोड़ने का बहाना बन जाता, और वैसे भी मैं चित्र पूरा करना चाहता था। यह वह चित्र था जिस पर मैंने बहुत मेहनत की थी और इसे अपनी उत्कृष्ट कृति बनाना चाहता था, हालाँकि इसका डिज़ाइन कुछ हद तक महत्वाकांक्षी था। आसमान के चमकीले नीले रंग, गर्म और चमकदार रोशनी और गहरी लंबी छायाओं के माध्यम से, मैंने एक धूप

वाली सुबह का आभास देने का प्रयास किया था। मैंने घास और पत्तों को वसंत या शुरुआती गर्मियों की हरियाली से कहीं अधिक जीवंत बनाने का साहस किया था, जितना आमतौर पर पेंटिंग में नहीं किया जाता। दृश्य एक जंगल में खुले मैदान का था। बाकी हिस्से की ताजगी को कम करने के लिए, मध्य दूरी में गहरे रंग के स्कॉटिश देवदार के पेड़ों का एक समूह बनाया गया था; लेकिन अग्रभाग में एक विशाल वन वृक्ष का टेढ़ा-मेढ़ा तना और फैली हुई शाखाएँ थीं, जिसकी पत्तियाँ चमकीले सुनहरे हरे रंग की थीं - शरद ऋतु की कोमलता से सुनहरा रंग नहीं, बल्कि धूप और अभी-अभी खिली पत्तियों की अपरिपक्वता के कारण। इस शाखा पर, जो घने देवदार के पेड़ों के बीच स्पष्ट रूप से उभरी हुई थी, प्रेम में डूबे कबूतरों का एक जोड़ा बैठा था, जिनके कोमल, उदास रंग के पंख एक अलग ही तरह का विरोधाभास पैदा कर रहे थे; और उसके नीचे एक युवती डेज़ी से सजी घास पर घुटनों के बल बैठी थी, सिर पीछे की ओर झुका हुआ था और सुनहरे बालों का गुच्छा उसके कंधों पर बिखरा हुआ था, उसके हाथ जुड़े हुए थे, होंठ खुले हुए थे, और आँखें ऊपर की ओर उन पंख वाले प्रेमियों को प्रसन्न और गंभीर भाव से निहार रही थीं - जो एक-दूसरे में इतने मग्न थे कि उन्हें युवती का ध्यान ही नहीं था।

मैंने अभी ठीक से काम शुरू ही किया था कि कुछ ही फिनिशिंग टच बाकी थे, तभी अस्तबल से लौटते हुए शिकारी खिड़की के पास से गुजरे। खिड़की थोड़ी खुली हुई थी, और मिस्टर हंटिंगडन ने मुझे जाते हुए जरूर देखा होगा, क्योंकि आधे मिनट में ही वे वापस आए और अपनी बंदूक दीवार पर टिकाकर खिड़की का शीशा ऊपर उठाया और अंदर कूदकर मेरी तस्वीर के सामने खड़े हो गए।

कुछ पल ध्यान से देखने के बाद उसने कहा, ‘सच में बहुत सुंदर है; और एक युवती के लिए बिल्कुल उपयुक्त चित्र है। बसंत से ग्रीष्म ऋतु का आरंभ हो रहा है—सुबह से दोपहर का समय ढल रहा है—बचपन से स्त्रीत्व का विकास हो रहा है, और आशा पूर्ण होने के कगार पर है। वह कितनी प्यारी है! लेकिन तुमने उसके बाल काले क्यों नहीं बनाए?’

मुझे लगा कि हल्के बाल उस पर ज्यादा जंचेंगे। आप देखिए, मैंने उसे नीली आंखों वाली, गोल-मटोल, गोरी और गुलाबी रंगत वाली बनाया है।

'सच कहूँ तो - बिलकुल हेबे जैसी! अगर मेरे सामने वो कलाकार न होता तो मैं उससे प्यार कर बैठता। भोली-भाली मासूम! वो सोच रही है कि एक दिन ऐसा आएगा

जब उसे भी उस प्यारी कबूतरी की तरह किसी दीवाने और उत्साही प्रेमी द्वारा रिझाया और जीता जाएगा; और वो सोच रही है कि यह कितना सुखद होगा, और वो प्रेमी उसे कितना कोमल और वफादार पाएगा।'

‘और शायद,’ मैंने सुझाव दिया, ‘वह उसे कितना कोमल और वफादार पाएगी।’

'शायद, क्योंकि इतनी कम उम्र में होप की कल्पनाओं की असीम अतिशयता की कोई सीमा नहीं है।'

तो क्या आप इसे उसकी बेतुकी, अतिरंजित कल्पनाओं में से एक कहेंगे?

नहीं; मेरा दिल कहता है कि ऐसा नहीं है। मैंने कभी ऐसा सोचा होगा, लेकिन अब, मैं कहता हूँ, मुझे मेरी प्रेमिका दे दो, और मैं उसके प्रति और केवल उसके प्रति ही शाश्वत निष्ठा की शपथ लूँगा, ग्रीष्म और शीत ऋतु में, यौवन और वृद्धावस्था में, जीवन और मृत्यु में! चाहे वृद्धावस्था और मृत्यु अवश्य ही आएँ।

उन्होंने यह बात इतनी गंभीरता से कही कि मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा; लेकिन अगले ही पल उन्होंने अपना लहजा बदल दिया और एक भावपूर्ण मुस्कान के साथ पूछा कि क्या मेरे पास 'और भी चित्र हैं?'

‘नहीं,’ मैंने उलझन और क्रोध से लाल होते हुए उत्तर दिया।

लेकिन मेरा पोर्टफोलियो मेज पर पड़ा था: उसने उसे उठाया और शांत भाव से बैठकर उसकी सामग्री की जांच करने लगा।

‘श्री हंटिंगडन, ये मेरे अधूरे रेखाचित्र हैं,’ मैंने चिल्लाकर कहा, ‘और मैंने इन्हें कभी किसी को नहीं दिखाया।’

और मैंने उससे पोर्टफोलियो छीनने के लिए अपना हाथ उस पर रखा, लेकिन उसने अपनी पकड़ बनाए रखी और मुझे आश्वस्त किया कि उसे 'सभी चीजों के अधूरे रेखाचित्र पसंद हैं।'

‘लेकिन मैं नहीं चाहता कि वे दिखाई दें,’ मैंने जवाब दिया। ‘मैं तुम्हें इसे लेने नहीं दे सकता, बिलकुल नहीं!’

‘तो मुझे इसके अंदर की सारी जानकारी दे दो,’ उसने कहा; और जैसे ही मैंने उसके हाथ से पोर्टफोलियो छीना, उसने बड़ी कुशलता से उसमें से अधिकांश सामग्री निकाल ली, और एक पल के लिए उन्हें पलटने के बाद चिल्लाया, ‘हे भगवान, ये लो एक और;’ और उसने हाथीदांत के रंग के कागज का एक छोटा सा अंडाकार टुकड़ा अपनी जैकेट की जेब में रख लिया—एक पूरा लघु चित्र जिसे मैंने इतनी अच्छी तरह

से बनाया था कि मैंने बड़ी मेहनत और लगन से उसमें रंग भरे थे। लेकिन मैंने ठान लिया था कि वह इसे अपने पास नहीं रखेगा।

‘श्री हंटिंगडन,’ मैं चिल्लाई, ‘मुझे वह वापस चाहिए! वह मेरा है, और आपको उसे लेने का कोई अधिकार नहीं है। मुझे तुरंत दे दीजिए—अगर आपने ऐसा नहीं किया तो मैं आपको कभी माफ नहीं करूंगी!’

लेकिन जितना अधिक मैंने आग्रह किया, उतना ही उसने अपनी अपमानजनक, प्रसन्नतापूर्ण हंसी से मेरी पीड़ा को और बढ़ा दिया। अंततः, उसने मुझे वह लौटाते हुए कहा, "अच्छा, अच्छा, क्योंकि आप इसे इतना महत्व देते हैं, मैं इसे आपसे छीनूंगा नहीं।"

उसे यह दिखाने के लिए कि मैं इसे कितना महत्व देता हूँ, मैंने इसे दो टुकड़ों में फाड़ दिया और आग में फेंक दिया। वह इसके लिए तैयार नहीं था। उसकी हंसी अचानक रुक गई और वह जलते हुए खजाने को अवाक होकर देखता रहा; और फिर, लापरवाही से 'हम्फ! मैं अब जाकर शिकार करता हूँ' कहते हुए, वह मुड़ा और खिड़की के पास वाले कमरे से बाहर निकल गया, और अपनी टोपी को शान से रखते हुए, अपनी बंदूक उठाई और सीटी बजाते हुए चला गया - और मुझे अपनी तस्वीर पूरी करने के लिए ज्यादा परेशान नहीं किया, क्योंकि उस समय मुझे खुशी थी कि मैंने उसे परेशान कर दिया था।

जब मैं ड्राइंग रूम में लौटा, तो मैंने देखा कि श्री बोअरहम अपने साथियों के साथ मैदान में चले गए थे; और दोपहर के भोजन के कुछ ही समय बाद, जिसके लिए वे वापस नहीं लौटे, मैंने महिलाओं के साथ टहलने जाने और एनाबेला और मिलिसेंट को देश की सुंदरता दिखाने की पेशकश की। हमने लंबी सैर की और पार्क में तब प्रवेश किया जब शिकारी अपने अभियान से लौट रहे थे। परिश्रम से थके और यात्रा की थकान से सने हुए, उनमें से अधिकांश ने हमसे बचने के लिए घास पार कर ली, लेकिन श्री हंटिंगडन, जो पूरी तरह से खून से सने हुए थे और अपने शिकार के खून से लथपथ थे - मेरी चाची की शिष्टाचार की सख्त भावना को ठेस पहुँचाते हुए - हमसे मिलने के लिए रास्ते से हट गए, मुस्कुराते हुए और मेरे अलावा सभी से बात करते हुए, और एनाबेला विल्मोट और मेरे बीच खड़े होकर, सड़क पर चलने लगे और दिन भर के विभिन्न कारनामों और आपदाओं का वर्णन करने लगे, इस तरह से कि अगर मेरे उनसे अच्छे संबंध होते तो मैं हँसी से लोटपोट हो जाता; लेकिन उन्होंने अपना

सारा ध्यान एनाबेला पर केंद्रित कर लिया, और मैंने, ज़ाहिर है, सारी हंसी-मज़ाक और चुटकुलों को एनाबेला पर छोड़ दिया, और उनके बीच जो कुछ भी हो रहा था, उससे पूरी तरह बेपरवाह होकर, उनसे कुछ कदम दूर चलती रही, और हर तरफ देखती रही, सिवाय उनकी तरफ देखे, जबकि मेरी चाची और मिलिसेंट आगे-आगे हाथ में हाथ डाले, गंभीरता से बातें करती रहीं। अंत में मिस्टर हंटिंगडन मेरी तरफ मुड़े, और मुझसे दबी आवाज़ में फुसफुसाते हुए बोले, — 'हेलेन, तुमने मेरी तस्वीर क्यों जलाई?'

मैंने कठोर स्वर में उत्तर दिया, 'क्योंकि मैं इसे नष्ट करना चाहता था,' और अब उस कठोर स्वर पर पछताने का कोई फायदा नहीं है।

'ओह, बहुत बढ़िया!' जवाब मिला; 'अगर आप मेरी कदर नहीं करते, तो मुझे किसी ऐसे व्यक्ति के पास जाना होगा जो मेरी कदर करेगा।'

मुझे लगा कि यह कुछ हद तक मज़ाक था - बनावटी त्याग और दिखावटी उदासीनता का एक मिलाजुला मज़ाकिया अंदाज़: लेकिन तुरंत ही वह मिस विल्मोट के बगल में अपनी जगह पर वापस बैठ गया, और उस पल से लेकर आज तक - उस पूरी शाम, और अगले दिन, और उसके अगले दिन, और उसके अगले दिन, और आज सुबह (22 तारीख) तक, उसने मुझे एक भी दयालु शब्द या एक भी सुखद नज़र नहीं दी - उसने मुझसे कभी बात नहीं की, सिवाय बेहद मजबूरी के - उसने मेरी तरफ कभी देखा भी नहीं, सिवाय एक ठंडी, अमित्र नज़र के, जो मुझे लगा कि वह कभी नहीं अपना सकता।

मेरी चाची ने मुझमें आए बदलाव को देखा है, और हालाँकि उन्होंने न तो इसका कारण पूछा है और न ही इस विषय पर मुझसे कोई टिप्पणी की है, फिर भी मुझे लगता है कि उन्हें इससे खुशी मिलती है। मिस विल्मोट भी इसे देखती हैं और गर्व से इसका श्रेय अपने आकर्षण और मीठी बातों को देती हैं; लेकिन मैं सचमुच दुखी हूँ—जितना मैं स्वीकार करना चाहती हूँ उससे कहीं ज़्यादा। मेरा अहंकार मेरी मदद करने से इनकार कर रहा है। इसी ने मुझे इस मुसीबत में डाला है, और न ही इससे निकलने में मेरी मदद करेगा।

उसका इरादा किसी को नुकसान पहुँचाने का नहीं था—यह तो बस उसका हंसमुख और चंचल स्वभाव था; और मैंने अपनी कटु नाराजगी से—जो इतनी गंभीर और अपराध के अनुपात में इतनी अधिक थी—उसकी भावनाओं को इतना ठेस पहुँचाई है, उसे इतना गहरा आहत किया है कि मुझे डर है कि वह मुझे कभी माफ नहीं करेगा—

और यह सब महज़ एक मज़ाक के लिए! उसे लगता है कि मैं उसे नापसंद करती हूँ, और उसे ऐसा ही सोचना होगा। मुझे उसे हमेशा के लिए खोना पड़ेगा, और एनाबेला उसे जीत सकती है, और चाहे जो भी हो।

लेकिन मुझे इतना दुख न तो अपनी हानि का है और न ही उसकी जीत का, जितना कि उसके लाभ के लिए मेरी प्यारी आशाओं के टूटने का, उसके स्नेह के अयोग्य होने का, और उस चोट का जो वह अपनी खुशी उस पर सौंपकर खुद को पहुंचाएगा। वह उससे प्यार नहीं करती: वह केवल अपने बारे में सोचती है। वह उसमें मौजूद अच्छाई को समझ नहीं सकती: न तो वह उसे देखेगी, न उसकी कद्र करेगी, न ही उसे संजोएगी। वह न तो उसकी गलतियों पर अफसोस करेगी और न ही उन्हें सुधारने का प्रयास करेगी, बल्कि अपनी गलतियों से उन्हें और बढ़ा देगी। और मुझे संदेह है कि कहीं वह उसे धोखा न दे दे। मैं देख रही हूं कि वह उसके और लॉर्ड लोबोरो के बीच दोहरी चाल चल रही है, और जब वह चंचल हंटिंगडन के साथ समय बिता रही होती है, तो वह उसके मूडी दोस्त को अपने वश में करने की पूरी कोशिश करती है; और अगर वह दोनों को अपने वश में करने में सफल हो भी जाती है, तो उस आकर्षक आम लड़की के पास उस रईस रईस के सामने टिकने का कोई मौका नहीं होगा। अगर वह उसकी चालाकी भरी चालों को देख भी लेता है, तो इससे उसे कोई बेचैनी नहीं होती, बल्कि उसके मनोरंजन में एक नया जोश आ जाता है, क्योंकि यह उसकी आसान जीत पर एक कड़ा प्रहार करता है।

श्रीमान विल्मोट और श्री बोअरहम ने मेरी उपेक्षा का फायदा उठाकर मुझसे फिर से संबंध बनाने की कोशिश की है; और अगर मैं एनाबेला और कुछ अन्य लोगों की तरह होती, तो मैं उनकी इस ज़िद का लाभ उठाकर उसे फिर से मेरे प्रति स्नेह जगाने का प्रयास करती; लेकिन न्याय और ईमानदारी को एक तरफ रखते हुए, मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं उनके वर्तमान उत्पीड़न से पहले ही काफी परेशान हूँ, उन्हें और बढ़ावा देने की ज़रूरत नहीं है; और अगर मैंने ऐसा किया भी, तो इसका उस पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा। वह मुझे एक के तिरस्कारपूर्ण व्यवहार और नीरस बातों से, और दूसरे के घृणित व्यवहार से पीड़ित देखता है, लेकिन मेरे लिए उसमें ज़रा भी सहानुभूति नहीं है, न ही मेरे उत्पीड़कों के प्रति कोई आक्रोश है। वह मुझसे कभी प्यार नहीं कर सकता था, वरना वह मुझे इतनी आसानी से नहीं छोड़ देता, और वह हर किसी से इतनी खुशी से बात नहीं करता - लॉर्ड लोबोरो और मेरे चाचा के साथ हंसता-मज़ाक करता है,

मिलिसेंट हरग्रेव को चिढ़ाता है, और एनाबेला विल्मोट के साथ ऐसे इश्कबाज़ी करता है जैसे उसके मन में कुछ चल ही न रहा हो। ओह! मैं उससे नफरत क्यों नहीं कर सकती? मैं ज़रूर उसके प्यार में पागल हो गई हूँ, वरना मुझे उसके लिए इतना पछतावा होता। लेकिन मुझे अपनी बची हुई सारी ताकत इकट्ठा करनी होगी और उसे अपने दिल से निकालना होगा। तभी खाने की घंटी बज गई और मेरी चाची मुझे डांटने आ गईं कि मैं सारा दिन यहाँ डेस्क पर बैठी रही, बजाय इसके कि मैं कंपनी के साथ रहती: काश कंपनी चली जाती!

अध्याय XIX

बाईसवाँ: रात। — मैंने क्या कर दिया? और इसका अंत क्या होगा? मैं इस पर शांति से विचार नहीं कर पा रहा हूँ; मुझे नींद नहीं आ रही है। मुझे फिर से अपनी डायरी का सहारा लेना होगा; मैं आज रात इसे कागज पर लिखूंगा और देखूंगा कि कल मैं इसके बारे में क्या सोचता हूँ।

मैं प्रसन्न और सलीके से पेश आने का निश्चय करके भोजन करने नीचे गई, और सिरदर्द और आंतरिक पीड़ा को देखते हुए मैंने अपने इस निश्चय को बखूबी निभाया। पता नहीं आजकल मुझ पर क्या बीत रहा है; मेरी मानसिक और शारीरिक ऊर्जा दोनों ही बुरी तरह से कमज़ोर हो गई हैं, वरना मैं कई मामलों में इतनी कमज़ोर न होती; लेकिन पिछले एक-दो दिनों से मेरी तबीयत ठीक नहीं है। शायद कम सोने-खाने, ज़्यादा सोचने और लगातार उदास रहने की वजह से ऐसा हो रहा है। खैर, मुद्दे पर आते हैं। सज्जनों के ड्राइंग रूम में आने से पहले, मैं अपनी चाची और मिलिसेंट के मनोरंजन के लिए और उनके अनुरोध पर गाने और बजाने की कोशिश कर रही थी (मिस विल्मोट कभी भी अपनी संगीत प्रतिभा को केवल महिलाओं के लिए ही इस्तेमाल करना पसंद नहीं करतीं)। मिलिसेंट ने एक छोटा सा स्कॉटिश गीत गाने का अनुरोध

किया था, और उनके आने के समय मैं उसे गा ही रही थी। श्री हंटिंगडन ने सबसे पहले एनाबेला के पास जाकर बात की।

‘मिस विल्मोट, क्या आप आज रात हमें कुछ संगीत सुनाएंगी?’ उसने कहा। ‘अभी सुनाइए! मुझे पता है आप सुनाएंगी, क्योंकि मैं दिन भर से आपकी आवाज़ सुनने के लिए तरस रही हूँ। आइए! पियानो खाली है।’

ऐसा इसलिए था क्योंकि उसकी विनती सुनते ही मैंने तुरंत वहाँ से इस्तीफा दे दिया था। अगर मुझमें थोड़ा भी संयम होता, तो मैं खुद उस महिला के पास जाती और खुशी-खुशी उसकी विनती में अपनी विनती जोड़ देती, जिससे अगर अपमान जानबूझकर किया गया होता तो मैं उसकी उम्मीदों पर पानी फेर देती, या अगर यह सिर्फ लापरवाही से हुआ होता तो उसे उसकी गलती का एहसास करा देती; लेकिन मुझे इतना गहरा दुख हुआ कि मैं संगीत की कुर्सी से उठकर सोफे पर वापस गिरने के अलावा कुछ नहीं कर सकी, और अपने अंदर की कड़वाहट को बड़ी मुश्किल से दबा पाई। मैं जानती थी कि एनाबेला की संगीत प्रतिभा मुझसे कहीं बेहतर थी, लेकिन इसका यह मतलब नहीं था कि मुझे पूरी तरह से महत्वहीन समझा जाए। जिस समय और जिस तरीके से उसने उससे यह बात पूछी, वह मुझे एक बेवजह का अपमान लगा; और मैं घोर निराशा से रो सकती थी।

इसी बीच, वह हर्षोल्लास से पियानो पर बैठ गई और उसे उसके दो पसंदीदा गीत इतनी उत्कृष्ट शैली में सुनाए कि मेरा क्रोध भी जल्द ही प्रशंसा में बदल गया, और मैं एक उदास आनंद के साथ उसकी सुरीली और शक्तिशाली आवाज़ के कुशल उतार-चढ़ाव को सुनता रहा, जिसे उसके मधुर और जोशीले स्पर्श ने बड़ी चतुराई से सहारा दिया था; और जब मेरे कान उस ध्वनि में डूबे हुए थे, मेरी निगाहें उसके मुख्य श्रोता के चेहरे पर टिकी थीं, और उसके बगल में खड़े उसके बोलते हुए चेहरे को देखकर मुझे उतना ही या उससे भी अधिक आनंद मिला - उसकी आंखें और माथे तीव्र उत्साह से चमक रहे थे, और उसकी प्यारी मुस्कान अप्रैल के दिन धूप की किरणों की तरह आती-जाती रहती थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह उसे गाते हुए सुनने के लिए इतना तरसता था। अब मैंने उसे दिल से माफ कर दिया कि उसने मेरा कितना अपमान किया था, और मुझे अपनी उस तुच्छ बात पर अपनी छोटी सी नाराजगी पर शर्म आई - उन कड़वी ईर्ष्या की पीड़ाओं पर भी शर्म आई जो इस सारी प्रशंसा और आनंद के बावजूद मेरे दिल को कुरेद रही थीं।

दूसरा गाना खत्म करने के बाद उसने चंचल अंदाज़ में अपनी उंगलियाँ कीबोर्ड पर फिराते हुए कहा, 'लो, अब! अब मैं तुम्हें आगे क्या दूं?'

लेकिन यह कहते हुए उन्होंने लॉर्ड लोबोरो की ओर देखा, जो थोड़ा पीछे खड़े थे, कुर्सी के पीछे झुके हुए, ध्यान से सुन रहे थे, और उनके चेहरे से लग रहा था कि वे भी मेरी तरह ही सुख और दुख के मिले-जुले भावों का अनुभव कर रहे थे। लेकिन उनकी नज़र से साफ पता चल रहा था, 'अब आप मेरे लिए चुनिए: मैंने उनके लिए काफी कुछ किया है, और मैं आपको खुश करने के लिए पूरी कोशिश करूंगी;' और इससे उत्साहित होकर, लॉर्ड लोबोरो आगे आए, और संगीत को पलटते हुए, तुरंत उनके सामने एक छोटा सा गीत रख दिया जिसे मैंने पहले भी देखा था, और एक से अधिक बार पढ़ा था, क्योंकि मेरे मन में उस गीत का संबंध मेरे विचारों के उस तानाशाह से था। और अब, मेरी नसें पहले से ही उत्तेजित और आधी बेहाल थीं, मैं उन मधुर शब्दों को बिना किसी रोक-टोक के सुन नहीं पा रहा था। मेरी आँखों में अनायास ही आँसू आ गए, और मैंने अपना चेहरा सोफे के तकिये में छिपा लिया ताकि सुनते समय वे किसी को दिखाई न दें। वातावरण सरल, मधुर और उदास था। यह बात अभी भी मेरे दिमाग में गूंज रही है, और वे शब्द भी:

अलविदा! लेकिन अलविदा नहीं, मेरी उन सभी प्यारी यादों को जो मुझे याद हैं: वे मेरे दिल में हमेशा बसी रहेंगी; और वे मुझे खुश और दिलासा देंगी।

ओह, सुंदर और अनुग्रह से परिपूर्ण! यदि तुम मेरी आँखों से कभी न मिली होती, तो मैंने सपने में भी नहीं सोचा होता कि कोई जीवित चेहरा इतने अद्भुत आकर्षणों को मात दे सकता है।

यदि मैं उस रूप और चेहरे को फिर कभी न देख पाऊं जो मुझे इतना प्रिय है, और न ही तुम्हारी आवाज़ सुन पाऊं, तब भी मैं उनकी स्मृति को हमेशा के लिए संजो कर रखना चाहूंगा।

वो आवाज, जिसके स्वर का जादू मेरे सीने में एक गूंज जगा सकता है, ऐसी भावनाएं पैदा कर सकता है जो अकेले ही मेरी समाधि जैसी आत्मा को धन्य कर सकती हैं।

वो हँसती हुई आँख, जिसकी धूप जैसी चमक मेरी यादों को कभी कम नहीं छुपेगी; और ओह, वो मुस्कान! वो आनंदमयी चमक जिसे कोई भी इंसान व्यक्त नहीं कर सकता।

अलविदा! लेकिन मुझे अभी भी उस आशा को संजोने दो, जिससे मैं अलग नहीं हो सकता। तिरस्कार भले ही घाव दे, और शीतलता ठंडक पहुंचाए, लेकिन फिर भी यह मेरे दिल में बसी रहेगी।

और कौन कह सकता है कि अंत में स्वर्ग मेरी सभी हज़ार प्रार्थनाओं का उत्तर देगा, और भविष्य को अतीत का बदला चुकाने का आदेश देगा, पीड़ा के बदले खुशी और आँसुओं के बदले मुस्कान देगा।

जब यह सब शांत हुआ, तो मेरी सबसे बड़ी इच्छा कमरे से बाहर निकलने की थी। सोफा दरवाजे से ज्यादा दूर नहीं था, लेकिन मैंने सिर उठाने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि मुझे पता था कि मिस्टर हंटिंगडन मेरे पास ही खड़े हैं, और लॉर्ड लोबोरो की किसी टिप्पणी के जवाब में उनकी आवाज से मुझे पता चल गया था कि उनका चेहरा मेरी तरफ मुड़ा हुआ है। शायद मेरी दबी हुई सिसकी उनके कानों तक पहुँच गई हो और उन्होंने मुड़कर देखा हो - भगवान न करे! लेकिन मैंने बड़ी मुश्किल से अपनी कमजोरी के सारे लक्षण रोके, अपने आँसू पोंछे, और जब मुझे लगा कि उन्होंने फिर से मुँह फेर लिया है, तो मैं उठी और तुरंत कमरे से बाहर निकलकर अपने पसंदीदा ठिकाने, पुस्तकालय में चली गई।

वहाँ कोई रोशनी नहीं थी, बस बुझी हुई आग की हल्की लाल चमक थी; लेकिन मुझे रोशनी नहीं चाहिए थी; मैं बस अपने विचारों में खो जाना चाहती थी, बिना किसी की नज़र में आए और बिना किसी बाधा के; और आरामकुर्सी के सामने एक छोटी सी चौकी पर बैठकर, मैंने अपना सिर उसके गद्देदार आसन पर टिका दिया और सोचती रही, सोचती रही, जब तक कि मेरी आँखों से फिर से आँसू बहने लगे और मैं किसी बच्चे की तरह रोने लगी। तभी, दरवाज़ा धीरे से खुला और कोई कमरे में दाखिल हुआ। मुझे लगा कि वह कोई नौकर ही होगा, इसलिए मैं हिली नहीं। दरवाज़ा फिर से बंद हो गया — लेकिन मैं अकेली नहीं थी; किसी ने धीरे से मेरे कंधे को छुआ और एक आवाज़ ने धीमी आवाज़ में कहा, — 'हेलेन, क्या बात है?'

मैं इस समय उत्तर नहीं दे सकता।

'तुम्हें बताना ही होगा, और तुम बताओगे ही,' और अधिक उग्रता से कहा गया, और वक्ता मेरे बगल में कालीन पर घुटनों के बल बैठ गया, और जबरदस्ती मेरा हाथ पकड़ लिया; लेकिन मैंने जल्दी से अपना हाथ छुड़ा लिया और जवाब दिया, – 'इससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ता, श्री हंटिंगडन।'

‘क्या तुम्हें यकीन है कि इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता?’ उसने पलटकर पूछा; ‘क्या तुम कसम खाकर कह सकती हो कि रोते समय तुम मेरे बारे में नहीं सोच रही थी?’ यह असहनीय था। मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन वह मेरे कपड़े पर घुटनों के बल बैठा था।

‘मुझे बताओ,’ उसने आगे कहा, ‘मैं जानना चाहता हूँ, क्योंकि अगर तुम सच में सच में सच में सच में सच में सच हो, तो मुझे तुमसे कुछ कहना है, और अगर नहीं, तो मैं चला जाऊँगा।’

‘तो जाओ!’ मैंने चिल्लाकर कहा; लेकिन, इस डर से कि वह मेरी बात बहुत अच्छे से मान लेगा और फिर कभी वापस नहीं आएगा, मैंने जल्दी से कहा— ‘या फिर जो कहना है कहो और बात खत्म करो!’

‘लेकिन कौन सा?’ उसने कहा— ‘क्योंकि मैं यह तभी कहूंगा जब तुम सचमुच मेरे बारे में सोच रही हो। तो बताओ, हेलेन।’

‘आप हद से ज्यादा धृष्ट हैं, श्री हंटिंगडन!’

‘बिल्कुल नहीं—आपका मतलब है कि यह बहुत प्रासंगिक है। तो आप मुझे नहीं बताएँगे?—ठीक है, मैं आपकी स्त्री-अभिमान को ठेस नहीं पहुँचाऊँगी, और आपकी चुप्पी को “हाँ” मानकर, मैं यह मान लूँगी कि मैं आपके विचारों का विषय थी, और आपके दुख का कारण थी—’

जी हाँ, महोदय—

'अगर तुम इससे इनकार करोगी, तो मैं तुम्हें अपना रहस्य नहीं बताऊंगा,' उसने धमकी दी; और मैंने उसे फिर से टोका नहीं, न ही उसे रोकने की कोशिश की: हालांकि उसने एक बार फिर मेरा हाथ पकड़ लिया था, और दूसरे हाथ से मुझे आधा गले लगा लिया था, लेकिन उस समय मुझे इसका शायद ही एहसास हुआ था।

‘बात ये है,’ उसने फिर कहा: ‘तुम्हारे मुकाबले एनाबेला विल्मोट एक दिखावटी फूल जैसी है, जबकि सामने ओस से भीगी एक मीठी, जंगली गुलाब की कली है – और मैं तुमसे बेइंतहा प्यार करता हूँ! – अब बताओ, क्या ये जानकर तुम्हें कोई खुशी मिलती है? फिर से चुप्पी? इसका मतलब है हाँ। तो मुझे ये भी कहने दो कि मैं तुम्हारे बिना जी नहीं सकता, और अगर तुमने इस आखिरी सवाल का जवाब ना में दिया, तो तुम मुझे पागल कर दोगी। – क्या तुम खुद को मुझे सौंपोगी? – ज़रूर सौंपोगी!’ वो चिल्लाया, और लगभग मुझे अपनी बाहों में कसकर जकड़ लिया।

‘नहीं, नहीं!’ मैंने उससे खुद को छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा— ‘आपको मेरे चाचा और चाची से पूछना होगा।’

'अगर आप मुझे मना नहीं करेंगे, तो वे भी मुझे मना नहीं करेंगे।'

मुझे इस बारे में पक्का यकीन नहीं है—मेरी चाची तुम्हें पसंद नहीं करतीं।'

'लेकिन तुम ऐसा नहीं करोगी, हेलेन - कह दो कि तुम मुझसे प्यार करती हो, और मैं चली जाऊंगी।'

मैंने जवाब दिया, 'काश तुम चले जाते!'

'मैं अभी इसी वक्त ऐसा करूँगा, अगर तुम बस इतना कह दो कि तुम मुझसे प्यार करती हो।'

‘तुम जानते हो कि मैं करती हूँ,’ मैंने जवाब दिया। और फिर उसने मुझे अपनी बाहों में भर लिया और मुझे चुंबनों से सराबोर कर दिया।

उसी क्षण मेरी चाची ने दरवाजा चौड़ा खोल दिया और हमारे सामने मोमबत्ती हाथ में लिए खड़ी हो गईं। वे सदमे और भय से भरी हुई थीं, बारी-बारी से मिस्टर हंटिंगडन और मुझे देख रही थीं—क्योंकि हम दोनों चौंक गए थे और अब एक-दूसरे से काफी दूर खड़े थे। लेकिन उनका भ्रम क्षण भर के लिए ही था। पल भर में संभलकर, अत्यंत आत्मविश्वास के साथ, उन्होंने कहना शुरू किया— ‘श्रीमती मैक्सवेल, मैं आपसे दस हजार बार क्षमा मांगता हूँ! मुझ पर इतनी सख्ती मत कीजिए। मैं आपकी प्यारी भतीजी से अच्छे-बुरे समय में भी मुझे अपनाने का अनुरोध कर रहा हूँ; और वह, एक अच्छी लड़की की तरह, मुझे बताती है कि वह अपने चाचा और चाची की सहमति के बिना ऐसा सोच भी नहीं सकती। इसलिए मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे शाश्वत दुख में न डालें: यदि आप मेरा पक्ष लेंगी, तो मैं सुरक्षित हूँ; क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि मिस्टर मैक्सवेल आपको मना नहीं कर सकते।’

‘हम इस बारे में कल बात करेंगे, श्रीमान,’ मेरी चाची ने ठंडे लहजे में कहा। ‘यह एक ऐसा विषय है जिस पर गंभीरता से विचार-विमर्श करने की आवश्यकता है। अभी तो बेहतर होगा कि आप ड्राइंग रूम में लौट जाएं।’

लेकिन इस बीच,’ उसने विनती की, ‘मुझे अपना मामला आपके सबसे उदार व्यक्ति के समक्ष प्रस्तुत करने दीजिए—’

'मिस्टर हंटिंगडन, आपके द्वारा दी जाने वाली किसी भी प्रकार की रियायतें मेरी भतीजी की खुशी के विचार और मेरे बीच बाधा नहीं बननी चाहिए।'

आह, सच है! मैं जानता हूँ कि वह एक फरिश्ता है, और ऐसे खजाने को पाने का सपना देखना मेरी मूर्खता है; लेकिन फिर भी, मैं स्वर्ग जाने वाले सबसे अच्छे आदमी के लिए उसे छोड़ने से बेहतर मरना पसंद करूँगा—और जहाँ तक उसकी खुशी की बात है, मैं अपना तन-मन कुर्बान कर दूँगा—।

‘श्री हंटिंगडन, तन-मन से — क्या आप अपनी आत्मा का बलिदान देंगे?’

‘खैर, मैं अपनी जान कुर्बान कर दूंगा—’

आपको इसे नीचे रखने की आवश्यकता नहीं होगी।

‘तो मैं इसे खर्च कर दूंगा — अपना जीवन — और इसकी सारी शक्तियाँ इसके प्रचार और संरक्षण के लिए समर्पित कर दूंगा —’

'महोदय, हम इस बारे में किसी और समय बात करेंगे - और अगर आपने भी कोई और समय और स्थान चुना होता, और मैं यह भी कहना चाहूंगा - अपनी घोषणा के लिए कोई और तरीका चुना होता, तो मैं आपके दावों के बारे में अधिक अनुकूल राय रखता।'

‘देखिए, श्रीमती मैक्सवेल,’ उन्होंने कहना शुरू किया—

‘क्षमा कीजिए, महोदय,’ उसने गरिमापूर्ण लहजे में कहा, ‘कंपनी दूसरे कमरे में आपका इंतजार कर रही है।’ और वह मेरी ओर मुड़ी।

‘तो फिर तुम्हें मेरे लिए पैरवी करनी होगी, हेलेन,’ उसने कहा और अंत में चला गया।

‘हेलेन, बेहतर होगा कि तुम अपने कमरे में चली जाओ,’ मेरी चाची ने गंभीरता से कहा। ‘मैं कल तुमसे इस मामले पर भी चर्चा करूंगी।’

‘गुस्सा मत होइए, चाची,’ मैंने कहा।

‘मेरे प्रिय, मैं क्रोधित नहीं हूँ,’ उसने उत्तर दिया: ‘मैं आश्चर्यचकित हूँ। यदि यह सच है कि आपने उससे कहा था कि आप हमारी सहमति के बिना उसका प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकते —’

‘यह सच है,’ मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा।

तो फिर आपने इसकी अनुमति कैसे दी?

‘मैं क्या करूँ, चाची!’ मैं फूट-फूटकर रोने लगी। ये आँसू न तो पूरी तरह से दुख के थे, न ही चाची की नाराज़गी के डर के, बल्कि मेरी भावनाओं के उफान का नतीजा थे। लेकिन मेरी प्यारी चाची मेरी घबराहट देखकर भावुक हो गईं। उन्होंने नरम स्वर में मुझे

सोने की सलाह दोहराई, मेरे माथे पर प्यार से चूमकर मुझे शुभ रात्रि कहा और मेरे हाथ में मोमबत्ती थमा दी। मैं सो गई; लेकिन मेरा दिमाग इतना चल रहा था कि मुझे नींद नहीं आ रही थी। अब ये सब लिखने के बाद मुझे थोड़ा सुकून मिल रहा है; मैं सोने जा रही हूँ और थकी हुई प्रकृति की मीठी ताज़गी पाने की कोशिश करूँगी।

अध्याय XX

24 सितंबर। सुबह मैं हल्का-फुल्का और प्रसन्न होकर उठा— बल्कि अत्यंत प्रसन्न था। मेरी चाची के विचारों और उनकी सहमति न मिलने के भय से मंडरा रहा उदासी का बादल मेरी आशाओं की उज्ज्वल चमक और प्रेम के प्रतिफल की अत्यंत सुखद अनुभूति में खो गया। यह एक शानदार सुबह थी; और मैं अपने आनंदमय विचारों के साथ शांत सैर पर निकल पड़ा। घास पर ओस थी, और हवा में दस हजार रेशमी कपड़े लहरा रहे थे; प्रसन्न लाल छाती वाला पक्षी अपने छोटे से दिल को गीत में उड़ेल रहा था, और मेरा हृदय कृतज्ञता और ईश्वर की स्तुति के मौन गीतों से भर गया था।

लेकिन मैं अभी ज्यादा दूर नहीं भटकी थी कि मेरी एकांतता में उस एकमात्र व्यक्ति ने खलल डाला जो उस समय बिना अवांछित घुसपैठिए समझे मेरी सोच को भंग कर सकता था: श्री हंटिंगडन अचानक मेरे सामने आ गए। उनका प्रकट होना इतना अप्रत्याशित था कि अगर केवल मेरी दृष्टि ही उनकी उपस्थिति की गवाह होती, तो मैं इसे अपनी अति-उत्तेजित कल्पना की उपज समझ सकती थी; लेकिन तुरंत ही मैंने उनकी मजबूत बांह को अपनी कमर के चारों ओर और उनके गर्म चुंबन को अपने गाल पर महसूस किया, जबकि उनका तीखा और प्रसन्न अभिवादन, 'मेरी प्यारी हेलेन!' मेरे कानों में गूंज रहा था।

‘अभी तक तो नहीं!’ मैंने जल्दी से इस अतिशयोक्तिपूर्ण अभिवादन से बचते हुए कहा। ‘मेरे अभिभावकों को याद रखिए। मेरी चाची की सहमति आपको आसानी से

नहीं मिलेगी। क्या आपको नहीं लगता कि वह आपके प्रति पूर्वाग्रही हैं?’

“हाँ, प्रियतम; और तुम्हें मुझे कारण बताना होगा, ताकि मैं उसकी आपत्तियों का बेहतर ढंग से सामना कर सकूँ। मुझे लगता है कि वह सोचती है कि मैं फिजूलखर्ची हूँ,” उसने आगे कहा, यह देखते हुए कि मैं जवाब देने को तैयार नहीं थी, “और उसका मानना है कि मेरे पास अपनी पत्नी को देने के लिए बहुत कम सांसारिक संपत्ति होगी? यदि ऐसा है, तो तुम्हें उसे बताना होगा कि मेरी अधिकांश संपत्ति वसीयत में है, और मैं इसे बेच नहीं सकता। बाकी संपत्ति पर कुछ गिरवी रखी हुई हैं—कुछ मामूली कर्ज और देनदारियाँ इधर-उधर हैं, लेकिन कुछ खास नहीं; और यद्यपि मैं मानता हूँ कि मैं उतना अमीर नहीं हूँ जितना मैं हो सकता था—या रहा हूँ—फिर भी, मुझे लगता है कि जो बचा है उससे हम आराम से गुजारा कर सकते हैं। मेरे पिता, तुम्हें पता है, थोड़े कंजूस थे, और अपने अंतिम दिनों में विशेष रूप से उन्हें धन इकट्ठा करने के अलावा जीवन में कोई आनंद नहीं मिलता था; इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उनके बेटे ने उन्हें खर्च करना ही अपना मुख्य आनंद बना लिया, और ऐसा ही होता रहा, जब तक कि तुमसे, प्रिय हेलेन, मेरी जान-पहचान ने मुझे दूसरे विचार और महान उद्देश्य नहीं सिखा दिए।” और आपके मेरे घर में रहने और मेरी देखभाल करने का विचार ही मुझे अपने खर्चों में संयम बरतने और एक ईसाई की तरह जीवन जीने के लिए मजबूर कर देगा - इसके अलावा, आप अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह और मधुर, आकर्षक अच्छाई से मेरे मन में जो विवेक और सद्गुण भर देंगी, उसका तो कहना ही क्या।

मैंने कहा, 'लेकिन बात वो नहीं है; मेरी चाची पैसे के बारे में नहीं सोचतीं। वो जानती हैं कि सांसारिक धन को उसकी कीमत से ऊपर रखना ठीक नहीं है।'

'तो वो क्या है?'

वह चाहती है कि मैं किसी अच्छे आदमी के अलावा किसी और से शादी न करूं।

‘क्या, एक “पक्के धर्मनिष्ठ” व्यक्ति? — अहा! — अच्छा, चलो, मैं वो भी कर लूँगा! आज रविवार है ना? मैं सुबह, दोपहर और शाम चर्च जाऊँगा, और इस तरह से धार्मिक व्यवहार करूँगा कि वह मुझे प्रशंसा और बहन जैसे प्रेम से देखेगी, जैसे जलती हुई आग से निकाला हुआ कोई अंगारा। मैं भट्टी की तरह आहें भरता हुआ घर लौटूँगा, और प्रिय श्री ब्लैटेंट के प्रवचन के स्वाद और अभिषेक से भरा हुआ —’

मैंने रूखेपन से कहा, 'श्रीमान लेटन।'

‘क्या मिस्टर लेटन एक “मधुर उपदेशक” हैं, हेलेन — एक “प्यारे, मनमोहक,

आध्यात्मिक व्यक्ति”?’

'वह एक अच्छे आदमी हैं, श्री हंटिंगडन। काश मैं आपके बारे में भी इतनी ही अच्छी बातें कह पाता।'

'ओह, मैं भूल गया था, आप भी एक संत हैं। मुझे आपकी क्षमा की आवश्यकता है, प्रियतम - लेकिन मुझे मिस्टर हंटिंगडन मत कहिए; मेरा नाम आर्थर है।'

मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूँगी—क्योंकि अगर तुमने इस तरह बात करना जारी रखा तो मैं तुमसे कोई वास्ता नहीं रखूँगी। अगर तुम सचमुच मेरी चाची को धोखा देना चाहते हो, जैसा कि तुम कह रहे हो, तो तुम बहुत दुष्ट हो; और अगर नहीं, तो ऐसे विषय पर मज़ाक करना तुम्हारी बहुत बड़ी गलती है।

‘मैं अपनी गलती मानता हूँ,’ उसने दुख भरी आह के साथ अपनी हंसी रोकते हुए कहा। ‘अब,’ क्षण भर के विराम के बाद उसने फिर कहा, ‘चलिए किसी और विषय पर बात करते हैं। और मेरे पास आओ, हेलेन, और मेरा हाथ पकड़ो; तब मैं तुम्हें अकेला छोड़ दूँगा। जब तक मैं तुम्हें वहाँ चलते हुए देखता रहूँगा, मैं चुप नहीं रह सकता।’

मैंने उनकी बात मान ली; लेकिन कहा कि हमें जल्द ही घर लौटना होगा।

‘अभी नाश्ते के लिए कोई नहीं आएगा, काफी देर तक,’ उसने जवाब दिया। ‘हेलेन, तुमने अभी अपने अभिभावकों के बारे में बात की, लेकिन क्या तुम्हारे पिता अभी भी जीवित नहीं हैं?’

हां, लेकिन मैं हमेशा अपने चाचा और चाची को अपना संरक्षक मानती हूं, क्योंकि नाम से भले ही न हों, वे वास्तव में मेरे संरक्षक हैं। मेरे पिता ने मुझे पूरी तरह से उनकी देखरेख में सौंप दिया है। जब मैं बहुत छोटी थी, तब मेरी प्यारी मां का निधन हो गया था, और तब से मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। मेरी चाची ने उनकी इच्छा पर मेरी देखभाल करने का जिम्मा उठाया और मुझे स्टैनिंगली ले गईं, जहां मैं तब से रह रही हूं; और मुझे नहीं लगता कि वह मेरे लिए किसी भी ऐसी बात पर आपत्ति करेंगे जिसे वह उचित समझें।

लेकिन क्या वह किसी ऐसी बात को मंजूरी देगा जिस पर वह आपत्ति करना उचित समझे?

नहीं, मुझे नहीं लगता कि वह मेरी उतनी परवाह करता है।

'इसमें उनकी बहुत बड़ी गलती है - लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि उनकी बेटी उनके

लिए कितनी अनमोल है - और यह मेरे लिए और भी अच्छा है, क्योंकि अगर उन्हें पता होता, तो वे ऐसे अनमोल रत्न से अलग होने को तैयार नहीं होते।'

'और श्री हंटिंगडन,' मैंने कहा, 'मुझे लगता है कि आप जानते हैं कि मैं कोई उत्तराधिकारी नहीं हूँ?'

उन्होंने कहा कि उन्होंने इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था, और मुझसे विनती की कि मैं ऐसे नीरस विषयों का ज़िक्र करके उनके वर्तमान आनंद में खलल न डालूँ। मुझे उनके इस निस्वार्थ स्नेह से प्रसन्नता हुई; क्योंकि एनाबेला विल्मोट अपने चाचा की सारी संपत्ति की संभावित उत्तराधिकारी हैं, साथ ही उनके दिवंगत पिता की संपत्ति भी उनके पास पहले से ही है।

मैंने अब घर वापस जाने पर ज़ोर दिया; लेकिन हम धीरे-धीरे चले और चलते-चलते बातें करते रहे। मुझे सारी बातें दोहराने की ज़रूरत नहीं है: बल्कि नाश्ते के बाद मेरी चाची और मेरे बीच जो बातचीत हुई, उसका ज़िक्र करना बेहतर होगा, जब मिस्टर हंटिंगडन ने मेरे चाचा को एक तरफ बुलाया, शायद अपने प्रस्ताव रखने के लिए, और उन्होंने मुझे दूसरे कमरे में बुलाया, जहाँ उन्होंने एक बार फिर गंभीर विरोध शुरू किया, हालाँकि, इससे मुझे यह बिल्कुल भी यकीन नहीं हुआ कि इस मामले में उनका नज़रिया मेरे नज़रिए से बेहतर था।

'मैं जानती हूँ, चाची, आप उसके बारे में बहुत ही अनुचित राय रखती हैं।' मैंने कहा। 'उसके दोस्त भी उतने बुरे नहीं हैं जितना आप उन्हें बताती हैं। उदाहरण के लिए, मिलिसेंट का भाई वाल्टर हरग्रेव ही ले लीजिए: अगर मिलिसेंट की कही आधी बातें भी सच हैं, तो वह फरिश्तों से थोड़ा ही कम है। मिलिसेंट लगातार मुझसे उसके बारे में बातें करती रहती है और उसकी खूबियों की बहुत प्रशंसा करती है।'

उसने जवाब दिया, "किसी व्यक्ति के चरित्र का सही आकलन आप उसकी स्नेही बहन की बातों के आधार पर करेंगे। उनमें से सबसे बुरे लोग भी आम तौर पर अपने कुकर्मों को अपनी बहनों और यहां तक कि अपनी मां की नजरों से भी छुपाना जानते हैं।"

मैंने आगे कहा, 'और ये रहे लॉर्ड लोबोरो, जो काफी नेक इंसान हैं।'

'तुम्हें किसने बताया? लॉर्ड लोबोरो एक धूर्त आदमी है। उसने जुए और अन्य चीजों में अपनी सारी दौलत लुटा दी है, और अब उसे वापस पाने के लिए एक वारिस की तलाश में है। मैंने मिस विल्मोट को यही बताया था; लेकिन तुम सब एक जैसी हो:

उसने घमंड से जवाब दिया कि वह मेरी बहुत आभारी है, लेकिन उसे लगता है कि वह जानती है कि कोई आदमी उसकी दौलत के लिए उसके पास आ रहा है या खुद के लिए; उसने खुद को तसल्ली दी कि इन मामलों में उसे इतना अनुभव है कि वह अपने विवेक पर भरोसा कर सकती है — और जहाँ तक लॉर्ड की दौलत की कमी की बात है, उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी, क्योंकि उसे उम्मीद थी कि उसकी अपनी दौलत दोनों के लिए काफी होगी; और जहाँ तक उसकी अय्याशी की बात है, उसे लगता था कि वह दूसरों से बुरा नहीं है — इसके अलावा, वह अब सुधर गया है। हाँ, जब वे किसी भोली-भाली, गुमराह औरत को अपने साथ रखना चाहते हैं तो वे सब पाखंडी बन जाते हैं!'

मैंने कहा, 'खैर, मुझे लगता है कि वह भी लगभग उसी की तरह अच्छा है। लेकिन जब मिस्टर हंटिंगडन की शादी हो जाएगी, तो उन्हें अपने कुंवारे दोस्तों के साथ मेलजोल करने के ज्यादा मौके नहीं मिलेंगे; और वे जितने बुरे होंगे, उतना ही मैं उन्हें उनसे छुटकारा दिलाने के लिए तरसूँगा।'

'बिल्कुल, मेरी प्रिय; और मुझे लगता है कि वह जितना बुरा होता है, उतना ही आप उसे खुद से मुक्ति दिलाने के लिए तरसती हैं।'

हाँ, बशर्ते कि वह सुधरने योग्य न हो — यानी, मैं उसे उसकी गलतियों से मुक्त करने के लिए और भी अधिक उत्सुक हूँ — उसे अपने से भी बुरे लोगों के संपर्क से मिली आकस्मिक बुराई को दूर करने और अपनी सच्ची अच्छाई के निर्मल प्रकाश में चमकने का अवसर देने के लिए — उसके बुरे पक्ष के विरुद्ध उसके बेहतर पक्ष की सहायता करने के लिए और उसे वह बनाने के लिए जो वह होता यदि उसे शुरू से ही एक बुरा, स्वार्थी, कंजूस पिता न मिला होता, जिसने अपनी नीच वासनाओं को संतुष्ट करने के लिए उसे बचपन और युवावस्था के सबसे मासूम आनंदों से वंचित कर दिया और उसे हर प्रकार के बंधन से विरक्त कर दिया; — और एक मूर्ख माँ जिसने अपने पति को धोखा देकर उसे उसकी हद से अधिक लाड़-प्यार दिया और मूर्खता और बुराई के उन कीटाणुओं को बढ़ावा देने की पूरी कोशिश की जिन्हें दबाना उसका कर्तव्य था, — और फिर, ऐसे साथियों का समूह जैसा कि आप उसके दोस्तों का वर्णन करते हैं —'

'बेचारा!' उसने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'उसके जैसे लोगों ने उसके साथ बहुत अन्याय किया है!'

‘उन्होंने कर दिया है!’ मैं चिल्लाई – ‘और वे अब उसके साथ और अन्याय नहीं करेंगे – उसकी पत्नी वही करेगी जो उसकी माँ ने किया था!’

‘खैर,’ उसने कुछ देर रुकने के बाद कहा, ‘हेलेन, मुझे कहना पड़ेगा कि मैंने तुम्हारे विवेक और पसंद के बारे में इससे बेहतर सोचा था। तुम ऐसे आदमी से कैसे प्यार कर सकती हो, या उसकी संगति में तुम्हें क्या आनंद मिलता है, यह मैं नहीं समझ सकती; क्योंकि “अंधकार के साथ प्रकाश का क्या मेल है; या नास्तिक के साथ विश्वासी का क्या मेल है?”’

‘वह नास्तिक नहीं है; और मैं प्रकाश नहीं हूँ, और वह अंधकार नहीं है; उसका सबसे बुरा और एकमात्र दोष विचारहीनता है।’

मेरी चाची ने आगे कहा, “और लापरवाही हर अपराध की ओर ले जा सकती है, और ईश्वर की दृष्टि में हमारी गलतियों को माफ करने का कोई ठोस कारण नहीं है। मुझे लगता है कि श्री हंटिंगडन में भी आम इंसानों जैसी ही समझ है: वे इतने लापरवाह नहीं हैं कि गैर-जिम्मेदार हो जाएं: उनके ईश्वर ने उन्हें भी हम सब की तरह ही तर्क और विवेक दिया है; पवित्र शास्त्र उनके लिए भी उतने ही सुलभ हैं जितने दूसरों के लिए; और “अगर वे उन्हें नहीं सुनते, तो वे तब भी नहीं सुनेंगे जब कोई मुर्दों में से जी उठे।” और याद रखना, हेलेन,” उन्होंने गंभीरता से कहा, “दुष्ट नरक में जाएंगे, और वे भी जो ईश्वर को भूल जाते हैं!” और मान लो कि वे तुमसे प्यार करते रहें, और तुम भी उनसे, और तुम दोनों जीवन भर आराम से साथ रहो — अंत में कैसा होगा, जब तुम दोनों हमेशा के लिए अलग हो जाओगे; शायद तुम शाश्वत आनंद में चली जाओ, और उन्हें उस झील में फेंक दिया जाए जो कभी न बुझने वाली आग से जलती है — हमेशा के लिए —।”

मैंने कहा, “हमेशा के लिए नहीं, बल्कि तब तक जब तक वह अपना पूरा पैसा न चुका दे; क्योंकि यदि किसी का काम आग में न टिके, तो उसे हानि तो होगी, परन्तु वह स्वयं तो बच जाएगा, परन्तु आग से बचकर।” और जो सब कुछ अपने अधीन करने में समर्थ है, वह सब मनुष्यों का उद्धार करेगा, और समय की पूर्णता में, मसीह यीशु में सब चीजों को एक साथ एकत्रित करेगा, जिसने प्रत्येक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखा, और जिसमें परमेश्वर सब चीजों को अपने साथ मिला लेगा, चाहे वे पृथ्वी पर हों या स्वर्ग में।”

‘ओह, हेलेन! तुमने यह सब कहाँ से सीखा?’

'बाइबल में, चाची। मैंने इसे पूरी तरह से खोज लिया है, और लगभग तीस ऐसे अंश पाए हैं, जो सभी एक ही सिद्धांत का समर्थन करते हैं।'

क्या आप अपनी बाइबिल का यही उपयोग करते हैं? क्या आपको ऐसे कोई अंश नहीं मिले जो इस तरह के विश्वास के खतरे और असत्यता को साबित करते हों?

नहीं: वास्तव में, मुझे कुछ ऐसे अंश मिले हैं जो अपने आप में उस मत का खंडन करते प्रतीत हो सकते हैं; लेकिन उन सभी का अर्थ सामान्य अर्थ से भिन्न होगा, और अधिकांश में एकमात्र कठिनाई उस शब्द में है जिसका अनुवाद हम "शाश्वत" या "अनंत" करते हैं। मुझे ग्रीक भाषा का ज्ञान नहीं है, लेकिन मेरा मानना है कि इसका सटीक अर्थ युगों तक है, और इसका अर्थ अंतहीन या दीर्घकालिक दोनों हो सकता है। और इस विश्वास के खतरे की बात करें तो, अगर मुझे लगता कि कोई बेचारा व्यक्ति इस पर विश्वास करके अपना विनाश कर लेगा, तो मैं इसे सार्वजनिक रूप से प्रकाशित नहीं करता, लेकिन यह एक गौरवशाली विचार है जिसे अपने हृदय में संजोकर रखना चाहिए, और मैं इसे दुनिया के सारे लाभों के बदले भी नहीं छोड़ूंगा!

हमारी सभा यहीं समाप्त हुई, क्योंकि अब चर्च जाने की तैयारी का समय हो गया था। सुबह की प्रार्थना में सभी उपस्थित थे, सिवाय मेरे चाचा के, जो शायद ही कभी जाते हैं, और श्री विल्मोट के, जो उनके साथ घर पर रहकर शांति से क्रिबेज का खेल खेल रहे थे। दोपहर में मिस विल्मोट और लॉर्ड लोबोरो ने भी प्रार्थना में न आने का बहाना बनाया; लेकिन श्री हंटिंगडन फिर से हमारे साथ आने के लिए तैयार हो गए। क्या यह मेरी चाची को खुश करने के लिए था, यह मैं नहीं कह सकती, लेकिन अगर ऐसा था, तो उन्हें निश्चित रूप से बेहतर व्यवहार करना चाहिए था। मुझे स्वीकार करना होगा कि प्रार्थना के दौरान उनका व्यवहार मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आया। अपनी प्रार्थना-पुस्तक को उल्टा पकड़े हुए, या दाईं ओर के अलावा किसी और जगह से खोले हुए, वह बस इधर-उधर घूरते रहते थे, जब तक कि उनकी नज़र मेरी चाची या मेरी नज़र से न मिल जाए, और फिर वह अपनी नज़रें अपनी पुस्तक पर गिरा देते थे, एक बनावटी गंभीरता के साथ जो हास्यास्पद होती, अगर वह बहुत उत्तेजक न होती। एक बार प्रवचन के दौरान, श्री लेटन को कुछ मिनटों तक ध्यान से देखने के बाद, उन्होंने अचानक अपना सोने का पेंसिल बॉक्स निकाला और बाइबल उठा ली। यह देखकर कि मैंने उनकी हरकत पर ध्यान दिया है, उन्होंने धीरे से कहा कि वे प्रवचन के नोट्स बनाने जा रहे हैं; लेकिन इसके बजाय, उनके बगल में बैठे होने के कारण, मैं यह देखे

बिना नहीं रह सका कि वे उपदेशक का मज़ाक उड़ा रहे थे, उस सम्मानित, धर्मनिष्ठ, बुजुर्ग सज्जन को एक बेहद हास्यास्पद पाखंडी बूढ़े व्यक्ति का रूप दे रहे थे। फिर भी, लौटने पर, उन्होंने मेरी चाची से प्रवचन के बारे में इतनी विनम्रता और गंभीरता से बात की कि मुझे विश्वास हो गया कि उन्होंने वास्तव में प्रवचन को ध्यान से सुना था और उससे लाभ उठाया था।

रात के खाने से ठीक पहले मेरे चाचा ने मुझे एक बहुत ही महत्वपूर्ण मामले पर चर्चा के लिए पुस्तकालय में बुलाया, जिसे कुछ ही शब्दों में समाप्त कर दिया गया।

'अब, नेल,' उसने कहा, 'यह युवा हंटिंगडन तुम्हारे बारे में पूछ रहा है: मुझे इसके बारे में क्या कहना चाहिए? तुम्हारी चाची तो "नहीं" कहेंगी – लेकिन तुम क्या कहती हो?'

मैंने बिना एक पल भी हिचकिचाए जवाब दिया, 'हां, चाचा जी।' क्योंकि मैंने इस विषय पर अपना मन पूरी तरह से बना लिया था।

'बहुत खूब!' वह चिल्लाया। 'वाह, ये तो बहुत ही ईमानदार जवाब है – एक लड़की के लिए तो कमाल है! – अच्छा, मैं कल तुम्हारे पिताजी को लिखूंगा। वो ज़रूर मान जाएंगे; तो समझ लो कि मामला सुलझ गया। मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि अगर तुमने विल्मोट से शादी कर ली होती तो तुम्हारा कहीं ज़्यादा भला होता; पर तुम इस बात पर यकीन नहीं करोगी। तुम्हारी उम्र में प्यार ही सब कुछ होता है: मेरी उम्र में तो कीमती सोना ही सब कुछ है। मुझे लगता है अब तुम कभी अपने पति की आर्थिक स्थिति के बारे में सोचने या मुआवज़े व निपटान के बारे में परेशान होने का सपना भी नहीं देखोगी?'

मुझे नहीं लगता कि मुझे ऐसा करना चाहिए।

"अच्छा, शुक्र मनाओ कि तुम्हारे लिए सोचने को समझदार लोग हैं। मुझे अभी तक इस बदमाश लड़के के मामलों की पूरी तरह से जांच करने का समय नहीं मिला है, लेकिन मैं देख रहा हूँ कि उसके पिता की कीमती संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा बर्बाद हो गया है; — लेकिन फिर भी, मुझे लगता है कि उसका एक अच्छा-खासा हिस्सा बचा है, और थोड़ी सी देखभाल से उसे और भी अच्छा बनाया जा सकता है; और फिर हमें तुम्हारे पिता को मनाना होगा कि वह तुम्हें एक अच्छी संपत्ति दें, क्योंकि तुम्हारे अलावा उन्हें केवल एक ही व्यक्ति की देखभाल करनी है; — और, अगर तुम अच्छा व्यवहार करोगे, तो कौन जाने क्या हो सकता है कि मैं तुम्हें अपनी वसीयत में शामिल कर

लूँ!” उसने अपनी उंगलियाँ नाक पर रखते हुए, शरारती मुस्कान के साथ कहा।

‘इसके लिए और आपकी सारी दयालुता के लिए धन्यवाद, चाचा जी,’ मैंने उत्तर दिया।

‘खैर, मैंने इस नौजवान से बस्तियों के मामले पर सवाल किया,’ उन्होंने आगे कहा; ‘और वह इस मामले में काफी उदार प्रतीत हुआ —’

मैंने कहा, ‘मुझे पता था वो ऐसा ही करेगा!’ ‘लेकिन कृपया इस बारे में चिंता मत करो—न उसके लिए, न मेरे लिए; क्योंकि जो कुछ मेरा है वो उसका होगा, और जो कुछ उसका है वो मेरा होगा; और हम दोनों को इससे ज़्यादा क्या चाहिए?’ और मैं जाने ही वाली थी कि उसने मुझे वापस बुला लिया।

‘रुको, रुको!’ वह चिल्लाया; ‘हमने अभी तक समय का ज़िक्र नहीं किया है। यह कब होना चाहिए? तुम्हारी चाची इसे न जाने कब तक टालती रहेंगी, लेकिन वह जल्द से जल्द बंधना चाहते हैं: वह अगले महीने से आगे इंतज़ार नहीं करेंगे; और मुझे लगता है कि तुम भी यही सोचोगी, इसलिए—’

'बिल्कुल नहीं, चाचा जी; इसके विपरीत, मैं कम से कम क्रिसमस के बाद तक इंतजार करना चाहूंगा।'

“अरे! धिक्कार है! मुझे ये कहानी कभी मत सुनाना—मैं बेहतर जानता हूँ,” वो चिल्लाया और अपनी अविश्वास भरी बात पर अड़ा रहा। फिर भी, ये बिल्कुल सच है। मुझे ज़रा भी जल्दी नहीं है। भला मैं जल्दी में कैसे हो सकती हूँ, जब मैं उस बड़े बदलाव के बारे में सोचती हूँ जो मेरा इंतज़ार कर रहा है, और उन सभी चीज़ों के बारे में जो मुझे छोड़नी हैं? ये जानकर ही काफ़ी खुशी है कि हम एक होने वाले हैं; और वो मुझसे सचमुच प्यार करता है, और मैं भी उससे उतना ही प्यार कर सकती हूँ, और जब चाहूँ उसके बारे में सोच सकती हूँ। हालाँकि, मैंने शादी के समय के बारे में अपनी चाची से सलाह लेने पर ज़ोर दिया, क्योंकि मैंने ठान लिया था कि उनकी सलाह को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए; और इस बारे में अभी तक कोई फ़ैसला नहीं हुआ है।

अध्याय XXI

1 अक्टूबर। — अब सब कुछ तय हो गया है। मेरे पिता ने अपनी सहमति दे दी है, और क्रिसमस का समय तय हो गया है, जल्दी और देरी के समर्थकों के बीच एक तरह के समझौते के बाद। मिलिसेंट हार्ग्रेव एक ब्राइड्समेड होंगी और एनाबेला विल्मोट दूसरी — ऐसा नहीं है कि मैं एनाबेला को बहुत पसंद करती हूँ, लेकिन वह परिवार की करीबी हैं, और मेरी कोई दूसरी दोस्त नहीं है।

जब मैंने मिलिसेंट को अपनी सगाई के बारे में बताया, तो उसके हावभाव ने मुझे थोड़ा चिढ़ा दिया। कुछ पल मौन आश्चर्य से घूरने के बाद, उसने कहा, "हेलेन, मुझे लगता है कि मुझे तुम्हें बधाई देनी चाहिए - और तुम्हें इतना खुश देखकर मुझे खुशी है; लेकिन मुझे नहीं लगा था कि तुम उसे स्वीकार करोगी; और मुझे आश्चर्य हो रहा है कि तुम उसे इतना पसंद करती हो।"

'ऐसा किस लिए?'

'क्योंकि आप हर तरह से उससे कहीं बेहतर हैं, और उसमें कुछ ऐसा निर्भीक और बेपरवाह स्वभाव है - इसलिए, मुझे नहीं पता कैसे - लेकिन जब भी मैं उसे पास आते हुए देखता हूँ तो मुझे हमेशा उसके रास्ते से हट जाने की इच्छा होती है।'

‘तुम डरपोक हो, मिलिसेंट; लेकिन इसमें उसकी कोई गलती नहीं है।’

‘और फिर उसका रूप,’ उसने आगे कहा। ‘लोग कहते हैं कि वह सुंदर है, और बेशक वह है; लेकिन मुझे उस तरह की सुंदरता पसंद नहीं है, और मुझे आश्चर्य होता है कि आपको क्यों पसंद है।’

‘ऐसा क्यों, कृपया बताएं?’

'खैर, आप जानते हैं, मुझे लगता है कि उसकी शक्ल-सूरत में कुछ भी महान या उदात्त नहीं है।'

'दरअसल, आपको आश्चर्य होता है कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति को कैसे पसंद कर सकती हूँ जो प्रेम कहानियों के बनावटी नायकों से इतना अलग हो। खैर, मुझे मेरा सच्चा प्रेमी दे दीजिए, और मैं सारे सर हर्बर्ट और वैलेंटाइन आपके लिए छोड़ दूँगी - अगर आप उन्हें ढूंढ सकें तो।'

‘मुझे उनकी ज़रूरत नहीं है,’ उसने कहा। ‘मैं हाड़-मांस से भी संतुष्ट रहूँगी – बस

आत्मा का प्रकाश होना चाहिए और वही सर्वोपरि होनी चाहिए। लेकिन क्या आपको नहीं लगता कि मिस्टर हंटिंगडन का चेहरा कुछ ज़्यादा ही लाल है?'

'नहीं!' मैंने क्रोध से कहा। 'यह बिलकुल भी लाल नहीं है। उसके चेहरे पर बस एक सुखद चमक है, एक स्वस्थ ताजगी है—पूरे चेहरे का गर्म, गुलाबी रंग गालों के गहरे रंग के साथ सामंजस्य बिठा रहा है, बिल्कुल वैसे ही जैसे होना चाहिए। मुझे किसी पुरुष का लाल और सफेद रंग, किसी रंगी हुई गुड़िया की तरह, या बिल्कुल बीमार सफेद, या धुएँ के रंग का काला, या मुर्दा जैसा पीला होना बिल्कुल पसंद नहीं है।'

'खैर, सबकी पसंद अलग-अलग होती है – लेकिन मुझे गोरा या सांवला रंग पसंद है,' उसने जवाब दिया। 'लेकिन सच कहूँ तो, हेलेन, मैं इस उम्मीद में जी रही थी कि एक दिन तुम मेरी बहन बनोगी। मुझे उम्मीद थी कि अगले सीज़न में वाल्टर से तुम्हारी मुलाकात होगी; और मुझे लगा था कि तुम उसे पसंद करोगी, और मुझे पूरा यकीन था कि वह भी तुम्हें पसंद करेगा; और मैंने खुद को यह सोचकर खुश किया था कि इस तरह मुझे दुनिया में सबसे प्यारे दो लोगों को – माँ के अलावा – एक साथ देखने का सौभाग्य मिलेगा। हो सकता है कि वह उतना सुंदर न हो जितना तुम उसे समझो, लेकिन वह मिस्टर हंटिंगडन से कहीं ज़्यादा आकर्षक, अच्छा और बेहतर दिखता है; – और मुझे यकीन है कि अगर तुम उसे जानती तो तुम भी यही कहती।'

'असंभव, मिलिसेंट! तुम ऐसा सोचती हो, क्योंकि तुम उसकी बहन हो; और इसी वजह से मैं तुम्हें माफ कर दूंगी; लेकिन कोई और मेरे सामने आर्थर हंटिंगडन की इतनी बेशर्मी से निंदा नहीं कर सकता।'

मिस विल्मोट ने भी इस विषय पर लगभग उतनी ही खुलकर अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

'तो हेलेन,' उसने मेरे पास आते हुए, एक ऐसी मुस्कान के साथ कहा जिसका कोई सौहार्दपूर्ण भाव नहीं था, 'मुझे लगता है कि आप मिसेज हंटिंगडन बनने वाली हैं?'

'हां,' मैंने उत्तर दिया। 'क्या तुम्हें मुझसे ईर्ष्या नहीं होती?'

'अरे नहीं!' उसने हैरानी से कहा। 'शायद एक दिन मैं लेडी लोबोरो बन जाऊंगी, और तब, प्रिय, मैं यह पूछने की स्थिति में होऊंगी, "क्या तुम्हें मुझसे ईर्ष्या नहीं होती?"'

मैंने उत्तर दिया, 'अब से मैं किसी से ईर्ष्या नहीं करूंगा।'

‘सचमुच! तो क्या तुम इतने खुश हो?’ उसने सोच-विचार करते हुए कहा; और उसके चेहरे पर निराशा के बादल छा गए। ‘और क्या वह तुमसे प्यार करता है—मेरा मतलब है, क्या वह तुम्हें उतना ही पूजता है जितना तुम उसे?’ उसने जवाब की उम्मीद में अपनी आँखें मुझ पर गड़ाते हुए पूछा।

मैंने जवाब दिया, 'मैं नहीं चाहती कि लोग मुझे पूजें; लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि वह दुनिया में किसी और से ज्यादा मुझसे प्यार करता है - जैसा कि मैं उससे करती हूं।'

‘बिल्कुल,’ उसने सिर हिलाते हुए कहा। ‘काश…’ वह थोड़ी देर रुकी।

मैंने उसके चेहरे पर दिख रहे प्रतिशोधी भाव को देखकर चिढ़कर पूछा, 'तुम क्या चाहती हो?'

‘काश,’ उसने हल्की हंसी के साथ जवाब दिया, ‘कि इन दोनों सज्जनों के सभी आकर्षक गुण और वांछनीय विशेषताएँ एक में समाहित हो जाएँ—कि लॉर्ड लोबोरो के पास हंटिंगडन का सुंदर चेहरा, अच्छा स्वभाव, उनकी सारी बुद्धि, विनोद और आकर्षण हो, या फिर हंटिंगडन के पास लोबोरो की वंशावली, उपाधि और रमणीय प्राचीन पारिवारिक संपत्ति हो, और मुझे वह मिल जाए; और आपको दूसरा मिल जाए और आपका स्वागत हो।’

‘धन्यवाद, प्रिय एनाबेला: मैं स्वयं तो जैसी स्थिति में हूँ, उससे अधिक संतुष्ट हूँ; और तुम्हारे लिए, मेरी यही कामना है कि तुम भी अपने होने वाले जीवनसाथी से उतनी ही संतुष्ट रहो जितनी मैं अपने जीवनसाथी से हूँ,’ मैंने कहा; और यह बात काफी हद तक सच भी थी; क्योंकि यद्यपि शुरू में उसके अप्रिय स्वभाव से मैं थोड़ा परेशान था, लेकिन उसकी स्पष्टवादिता ने मुझे प्रभावित किया, और हमारी परिस्थितियों में इतना अंतर था कि मैं उस पर दया कर सकता था और उसकी भलाई की कामना कर सकता था।

श्री हंटिंगडन के परिचित भी हमारे आगामी मिलन से उतने ही उदासीन प्रतीत होते हैं जितने कि मैं। आज सुबह डाक से उन्हें उनके कई मित्रों के पत्र मिले, जिन्हें नाश्ते की मेज पर पढ़ते समय उन्होंने अपने विचित्र भाव-भंगिमाओं से सबका ध्यान आकर्षित किया। लेकिन उन्होंने उन सभी पत्रों को मन ही मन हंसते हुए अपनी जेब में रख लिया और भोजन समाप्त होने तक कुछ नहीं कहा। फिर, जब सब लोग आग के पास बैठे थे या कमरे में इधर-उधर घूम रहे थे, अपने-अपने सुबह के कामों में लगने से

पहले, वह आए और मेरी कुर्सी के पीछे झुक गए, उनका चेहरा मेरे घुंघराले बालों से छू रहा था, और एक छोटे से चुंबन से शुरू करते हुए, उन्होंने मेरे कान में निम्नलिखित शिकायतें फुसफुसाईं: —

'हेलेन, हे डायन! क्या तुम्हें पता है कि तुमने मेरे सारे दोस्तों का श्राप मुझ पर मढ़ दिया है? मैंने कुछ दिन पहले उन्हें पत्र लिखकर अपने अच्छे भविष्य के बारे में बताया था, और अब बधाई के बदले मुझे कड़वी गालियों और निंदाओं से भरी जेब मिली है। उनमें से किसी ने भी मेरे लिए कोई अच्छी शुभकामना नहीं दी, न ही तुम्हारे लिए कोई अच्छा शब्द कहा। वे कहते हैं कि अब कोई मज़ा नहीं रहेगा, कोई खुशनुमा दिन और शानदार रातें नहीं रहेंगी - और यह सब मेरी गलती है - मैं ही वह पहली व्यक्ति हूँ जिसने खुशियों के इस समूह को तोड़ा है, और दूसरे भी घोर निराशा में मेरा अनुसरण करेंगे। वे मुझे यह कहने का सम्मान देते हैं कि मैं समुदाय की जान और सहारा थी, और मैंने शर्मनाक तरीके से अपने भरोसे को धोखा दिया है -'

'अगर आप चाहें तो आप उनसे दोबारा मिल सकते हैं,' मैंने उनकी बातों के उदास लहजे पर थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा। 'मुझे किसी भी व्यक्ति—या व्यक्तियों के समूह—और इतनी खुशी के बीच खड़ा होना दुखद लगेगा; और शायद मैं आपके बिना, साथ ही आपके बेचारे बिछड़े हुए दोस्तों के बिना भी काम चला सकता हूँ।'

'भगवान आपका भला करे,' उसने धीमी आवाज़ में कहा। 'मेरे लिए तो "प्यार के लिए सब कुछ कुर्बान करना ही बेहतर है"। उन्हें जाने दो—जहां वे रहने लायक हैं, अगर मैं विनम्रता से कहूं तो। लेकिन अगर तुम देखतीं कि वे मेरा कितना अपमान करते हैं, हेलेन, तो तुम मुझे और भी ज़्यादा प्यार करतीं क्योंकि मैंने तुम्हारे लिए इतना जोखिम उठाया है।'

उसने अपने मुड़े-तुड़े पत्र निकाले। मुझे लगा कि वह मुझे उन्हें दिखाने वाला है, इसलिए मैंने उससे कहा कि मैं उन्हें देखना नहीं चाहती।

'मैं तुम्हें ये नहीं दिखाऊंगा, प्रिय,' उसने कहा। 'इनमें से ज़्यादातर किसी महिला की नज़र के लायक नहीं हैं। लेकिन यहाँ देखो। ये ग्रिम्सबी की लिखावट है – सिर्फ़ तीन लाइनें, ये रूठा हुआ कुत्ता! बेशक वो ज़्यादा कुछ नहीं बोलता, लेकिन उसकी चुप्पी ही बाकी सब के शब्दों से कहीं ज़्यादा बातें कह देती है, और जितना कम वो बोलता है, उतना ही ज़्यादा वो सोचता है – और ये हरग्रेव का पत्र है। वो मुझसे बहुत नाराज़ है, क्योंकि उसने अपनी बहन की बातों से तुम्हें पसंद करने लगा था, और

अपनी जवानी की अय्याशी पूरी होते ही तुमसे शादी करने का इरादा रखता था।’

‘मैं उनका बहुत आभारी हूं,’ मैंने कहा।

‘और मैं भी,’ उसने कहा। ‘और इसे देखो। यह हैटर्सले की रचना है—हर पन्ना आरोपों, कड़वी गालियों और दुख भरी शिकायतों से भरा हुआ है, और अंत में यह कसम खाने पर खत्म होता है कि वह बदला लेने के लिए खुद शादी कर लेगा: वह पहली कुंवारी लड़की पर खुद को लुटा देगा जो उस पर अपना दिल लुटाएगी,— मानो मुझे इस बात की परवाह हो कि वह अपने साथ क्या करता है।’

मैंने कहा, 'खैर, अगर तुम इन पुरुषों से अपनी घनिष्ठता छोड़ देती हो, तो मुझे नहीं लगता कि तुम्हें उनकी संगति खोने का ज्यादा अफसोस होगा; क्योंकि मेरा मानना है कि उन्होंने तुम्हें कभी कोई खास फायदा नहीं पहुंचाया।'

'शायद नहीं; लेकिन हमने भी खूब मौज-मस्ती की, हालांकि उसमें दुख और दर्द भी शामिल थे, जैसा कि लोबोरो को अपने अनुभव से पता है - हा हा!' और जब वह लोबोरो की परेशानियों को याद करके हंस रहा था, तभी मेरे चाचा आए और उन्होंने उसके कंधे पर थपथपाया।

‘आओ, मेरे लड़के!’ उसने कहा। ‘क्या तुम मेरी भतीजी के साथ प्रेम करने में इतने व्यस्त हो कि तीतरों से लड़ने का समय ही नहीं निकाल पा रहे? — याद है, 1 अक्टूबर है! धूप खिली है — बारिश रुक गई है — यहाँ तक कि बोअरहम भी अपने वाटरप्रूफ बूट पहनकर बाहर निकलने से नहीं डर रहा; और विल्मोट और मैं तुम सबको हराने वाले हैं। मैं कसम खाता हूँ, हम बूढ़े लोग सबसे उत्साही शिकारी हैं!’

‘लेकिन आज मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि मैं क्या कर सकता हूं,’ मेरे साथी ने कहा। ‘मैं तुम्हारे सारे पक्षियों को मार डालूंगा, सिर्फ इसलिए कि तुमने मुझे तुमसे या उनसे बेहतर संगत से दूर रखा है।’

इतना कहकर वह चला गया; और मैंने उसे दोपहर के भोजन तक फिर कभी नहीं देखा। वह समय बहुत थका देने वाला लगा; मुझे समझ नहीं आ रहा कि उसके बिना मैं क्या करूँगी।

यह बिल्कुल सच है कि तीनों बड़े सज्जनों ने खुद को दो छोटे सज्जनों की तुलना में कहीं अधिक उत्साही खिलाड़ी साबित किया है; क्योंकि लॉर्ड लोबोरो और आर्थर हंटिंगडन दोनों ही हाल के दिनों में लगभग हर दिन शिकार यात्राओं को छोड़कर हमारे साथ घुड़सवारी और सैर पर जाने लगे हैं। लेकिन ये खुशनुमा दिन अब जल्द ही

समाप्त होने वाले हैं। दो सप्ताह से भी कम समय में यह सिलसिला टूट जाएगा, जिससे मुझे बहुत दुख होगा, क्योंकि मैं हर दिन इसका और भी अधिक आनंद ले रहा हूँ - अब जब श्री बोअरहम और विल्मोट ने मुझे चिढ़ाना बंद कर दिया है, मेरी चाची ने मुझे उपदेश देना बंद कर दिया है, और मैंने एनाबेला से ईर्ष्या करना - और यहाँ तक कि उसे नापसंद करना भी बंद कर दिया है - और अब जब श्री हंटिंगडन मेरे आर्थर बन गए हैं, और मैं बिना किसी रोक-टोक के उनकी संगति का आनंद ले सकता हूँ। मैं उनके बिना क्या करूँगा, मैं फिर से पूछता हूँ?

अध्याय XXII

5 अक्टूबर। — मेरी मिठाई का प्याला शुद्ध नहीं है: इसमें एक कड़वाहट भी घुली है जिसे मैं खुद से छुपा नहीं सकती, चाहे कितना भी छुपा लूँ। मैं खुद को यह समझाने की कोशिश कर सकती हूँ कि मिठास उस पर हावी है; मैं इसे एक सुखद सुगंधित स्वाद कह सकती हूँ; लेकिन चाहे जो कहूँ, वह अभी भी मौजूद है, और मैं उसे महसूस किए बिना नहीं रह सकती। मैं आर्थर की कमियों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती; और जितना अधिक मैं उससे प्रेम करती हूँ, उतना ही वे मुझे परेशान करती हैं। मुझे डर है कि उसका हृदय, जिस पर मैंने इतना भरोसा किया था, उतना गर्मजोशी और उदारता से भरा नहीं है जितना मैंने सोचा था। कम से कम, उसने आज मुझे अपने चरित्र का एक ऐसा नमूना दिखाया जो लापरवाही से कहीं अधिक कठोर नाम के योग्य प्रतीत होता है। वह और लॉर्ड लोबोरो एनाबेला और मेरे साथ एक लंबी, आनंददायक सवारी पर थे; वह हमेशा की तरह मेरे बगल में सवार थे, और एनाबेला और लॉर्ड लोबोरो हमसे थोड़ा आगे थे, लॉर्ड लोबोरो अपने साथी की ओर झुके हुए थे मानो किसी कोमल और गोपनीय बातचीत में हों।

हंटिंगडन ने कहा, 'हेलेन, अगर हम सतर्क नहीं रहे तो वे दोनों हमसे आगे निकल

जाएंगे। वे मुकाबला कड़ा कर देंगे, इसमें कोई शक नहीं। वह लोबोरो तो उस पर पूरी तरह फिदा है। लेकिन मुझे शक है कि जब वह उसे पा लेगा तो वह मुश्किल में पड़ जाएगा।'

मैंने कहा, 'अगर मैंने उसके बारे में जो सुना है वह सच है, तो उसे उसके मिलने पर परेशानी का सामना करना पड़ेगा।'

बिलकुल नहीं। वह जानती है कि वह क्या कर रही है; लेकिन वह बेचारा मूर्ख इस भ्रम में जी रहा है कि वह उसके लिए एक अच्छी पत्नी बनेगी, और क्योंकि उसने प्रेम और विवाह के मामलों में पद और धन को तुच्छ समझने के बारे में कुछ शेखी बघार कर उसका मनोरंजन किया है, इसलिए वह खुद को यह सोचकर खुश कर रहा है कि वह उससे पूरी तरह से जुड़ी हुई है; कि वह उसकी गरीबी के कारण उसे अस्वीकार नहीं करेगी, और न ही उसके पद के कारण उसका प्रेम निवेदन करती है, बल्कि उससे केवल उसके अपने आप के लिए प्यार करती है।

लेकिन क्या वह उसकी दौलत के लिए उसे रिझाने की कोशिश नहीं कर रहा है?

नहीं, वो नहीं। बेशक, पहली नज़र में तो वो ही आकर्षण था; लेकिन अब वो इसे पूरी तरह भूल चुका है: अब तो वो इसके बारे में सोचता भी नहीं, सिवाय इसके कि उसके लिए ये एक ज़रूरी शर्त है, जिसके बिना वो उस महिला की खातिर उससे शादी करने के बारे में सोच भी नहीं सकता। नहीं; वो सचमुच प्यार में है। उसने सोचा था कि उसे दोबारा कभी प्यार नहीं होगा, लेकिन अब फिर से उसी चक्कर में पड़ गया है। उसकी शादी दो-तीन साल पहले होने वाली थी; लेकिन उसने अपनी दौलत गंवाकर अपनी दुल्हन को खो दिया। लंदन में हमारे बीच उसकी बुरी आदतें पड़ गईं: उसे जुए की बुरी लत लग गई; और यकीनन वो बदकिस्मती के नक्षत्र में पैदा हुआ था, क्योंकि वो जहाँ एक बार कमाता था, वहाँ तीन बार हार जाता था। खुद को तकलीफ देने का ये तरीका मुझे कभी पसंद नहीं आया। जब मैं पैसा खर्च करता हूँ, तो मैं उसका पूरा आनंद लेना चाहता हूँ: मुझे चोरों और बदमाशों पर पैसा बर्बाद करने में कोई मज़ा नहीं आता; और जहाँ तक पैसे कमाने की बात है, अब तक तो मेरे पास हमेशा पर्याप्त रहा है; मुझे लगता है कि जब आपके पास जो है वो खत्म होने लगे, तब और ज़्यादा पाने की चाहत पैदा करने का समय आ जाता है। लेकिन मैं कभी-कभी जुआघरों में सिर्फ उन सनकी जुआरियों की हरकतों को देखने के लिए जाया करता था - यह एक बहुत ही दिलचस्प अध्ययन था, हेलेन, और कभी-कभी बहुत मनोरंजक भी: मैंने उन

बेवकूफों और पागलों पर खूब हँसी उड़ाई है। लोबोरो पूरी तरह से इस लत में डूबा हुआ था - अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि मजबूरी में - वह हमेशा इसे छोड़ने का संकल्प लेता था, और हमेशा अपने संकल्पों को तोड़ देता था। हर जुआ उसके लिए 'बस एक बार और' जैसा होता था: अगर उसे थोड़ा सा भी लाभ होता, तो वह अगली बार और अधिक लाभ की उम्मीद करता, और अगर उसे नुकसान होता, तो वह वहीं रुक नहीं जाता; उसे तब तक जारी रखना होता था जब तक कि वह उस पिछली हार से उबर न जाए: बदकिस्मती हमेशा के लिए नहीं रह सकती; और हर भाग्यशाली जीत को बेहतर समय की शुरुआत के रूप में देखा जाता था, जब तक कि अनुभव इसके विपरीत साबित न कर दे। आखिरकार वह हताश हो गया, और हम रोज़ाना उसके आत्महत्या करने के डर से सतर्क रहते थे - कोई बड़ी बात नहीं, हममें से कुछ फुसफुसाते थे, क्योंकि उसका अस्तित्व अब हमारे क्लब के लिए कोई मायने नहीं रखता था। अंततः, वह एक निर्णायक मोड़ पर आ गया। उसने एक बड़ी रकम दांव पर लगाई, और निश्चय किया कि चाहे वह जीते या हारे, यही उसकी आखिरी दांव होगी। उसने पहले भी कई बार ऐसा ही निश्चय किया था, और उतनी ही बार अपने निश्चय को तोड़ा भी था; और इस बार भी ऐसा ही हुआ। वह हार गया; और जब उसका प्रतिद्वंद्वी मुस्कुराते हुए दांव को समेट रहा था, तो वह एकदम पीला पड़ गया, चुपचाप पीछे हट गया और अपना माथा पोंछा। मैं उस समय वहीं मौजूद था; और जब वह बाहें मोड़े और निगाहें ज़मीन पर गड़ाए खड़ा था, तो मैं अच्छी तरह समझ गया था कि उसके मन में क्या चल रहा था।

"क्या यह आखिरी होगा, लोबोरो?" मैंने उसके पास जाकर कहा।

"आखिरी से एक पहले," उसने गंभीर मुस्कान के साथ उत्तर दिया; और फिर मेज पर वापस दौड़कर, उसने अपना हाथ उस पर पटका, और कमरे में खनकते सिक्कों और बुदबुदाती गालियों और अपशब्दों के शोर के बीच अपनी आवाज़ बुलंद करते हुए, उसने गहरी और गंभीर शपथ ली कि चाहे कुछ भी हो जाए, यह परीक्षा आखिरी होगी, और अपने सिर पर अकल्पनीय अभिशाप की कसम खाई कि अगर उसने कभी ताश फेंटा या पासा हिलाया तो वह फिर कभी ऐसा नहीं करेगा। फिर उसने अपनी पिछली बाज़ी को दुगुना कर दिया, और वहाँ मौजूद किसी को भी उसके खिलाफ खेलने की चुनौती दी। ग्रिम्सबी तुरंत उपस्थित हो गया। लोबोरो ने उसे गुस्से से घूरा, क्योंकि ग्रिम्सबी अपनी किस्मत के लिए उतना ही प्रसिद्ध था जितना कि वह अपनी

बदकिस्मती के लिए। खैर, वे खेल में जुट गए। लेकिन ग्रिम्सबी में बहुत कौशल था और नैतिकता की कमी थी, और क्या उसने दूसरे की कांपती, अंधी उत्सुकता का फायदा उठाकर उसके साथ अन्याय किया, यह मैं नहीं कह सकता; लेकिन लोबोरो फिर हार गया, और बुरी तरह बीमार पड़ गया।

"तुम्हें एक बार और कोशिश करनी चाहिए," ग्रिम्सबी ने मेज के उस पार झुकते हुए कहा। और फिर उसने मेरी तरफ आँख मारी।

"मेरे पास कोशिश करने के लिए कुछ भी नहीं है," उस बेचारे ने एक भयानक मुस्कान के साथ कहा।

"ओह, हंटिंगडन तुम्हें जो चाहिए वो उधार दे देगा," दूसरे ने कहा।

"नहीं; तुमने मेरी कसम सुनी थी," लोबोरो ने चुपचाप निराशा में मुंह फेरते हुए जवाब दिया। और मैंने उसका हाथ पकड़कर उसे बाहर ले गया।

"क्या यह आखिरी बार होगा, लोबोरो?" मैंने उससे पूछा, जब मैं उसे सड़क पर ले आया।

"आखिरी वाला," उसने मेरी उम्मीद के कुछ विपरीत जवाब दिया। और मैं उसे घर ले गया—यानी अपने क्लब में—क्योंकि वह एक बच्चे की तरह आज्ञाकारी था—और उसे ब्रांडी और पानी पिलाता रहा जब तक कि वह थोड़ा बेहतर—कम से कम थोड़ा अधिक जीवंत—दिखने लगा।

"हंटिंगडन, मैं बर्बाद हो गया!" उसने मेरे हाथ से तीसरा गिलास लेते हुए कहा - उसने बाकी गिलास बिल्कुल खामोशी से पी लिए थे।

"तुम नहीं," मैंने कहा। "तुम्हें पता चलेगा कि एक आदमी अपने पैसे के बिना उतनी ही खुशी से रह सकता है जितना कि एक कछुआ अपने सिर के बिना या एक ततैया अपने शरीर के बिना।"

"लेकिन मैं कर्ज में डूबा हुआ हूँ," उसने कहा— "बहुत गहरे कर्ज में। और मैं इससे कभी भी, कभी भी बाहर नहीं निकल सकता।"

"अच्छा, तो फिर क्या हुआ? तुमसे कहीं बेहतर लोग कर्ज में जीते और मरते रहे; और तुम्हें जेल में नहीं डाल सकते, क्योंकि तुम एक रईस हो।" और मैंने उसे उसका चौथा गिलास थमा दिया।

"लेकिन मुझे कर्ज में डूबना बिल्कुल पसंद नहीं!" वह चिल्लाया। "मैं इसके लिए पैदा ही नहीं हुआ था, और मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

मैंने पाँचवाँ मिश्रण बनाना शुरू करते हुए कहा, "जिसका इलाज नहीं हो सकता, उसे सहना ही पड़ता है।"

“और फिर, मैंने अपनी कैरोलीन को खो दिया।” और फिर वह सिसकने लगा, क्योंकि ब्रांडी ने उसके दिल को नरम कर दिया था।

मैंने जवाब दिया, “कोई बात नहीं, दुनिया में एक से ज्यादा कैरोलाइन हैं।”

“मेरे लिए तो बस एक ही है,” उसने एक गहरी आह भरते हुए उत्तर दिया। “और अगर पचास और हों, तो मुझे आश्चर्य है कि बिना पैसे के उन्हें कौन लाएगा?”

“ओह, कोई न कोई आपसे आपकी उपाधि छीन लेगा; और फिर भी आपके पास आपकी पारिवारिक संपत्ति है; वह तो उत्तराधिकार में मिलती है, आप जानते हैं।”

“काश मैं इसे बेचकर अपना कर्ज चुका पाता,” उसने बुदबुदाते हुए कहा।

“और फिर,” अभी-अभी अंदर आए ग्रिम्सबी ने कहा, “तुम दोबारा कोशिश कर सकते हो। अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मुझे एक से ज़्यादा मौके मिलते। मैं यहाँ कभी नहीं रुकता।”

“मैं ऐसा नहीं करूँगा, मैं तुम्हें बता रहा हूँ!” वह चिल्लाया। और वह उठ खड़ा हुआ और कमरे से बाहर चला गया—शराब का नशा चढ़ जाने के कारण वह लड़खड़ाते हुए चल रहा था। उस समय तो उसे शराब की इतनी आदत नहीं थी, लेकिन उसके बाद उसने अपनी चिंताओं को दूर करने के लिए इसे अपना लिया।

‘उसने जुए के बारे में अपनी शपथ निभाई (हम सभी के लिए यह काफी आश्चर्य की बात थी), हालांकि ग्रिम्सबी ने उसे इसे तोड़ने के लिए हर संभव प्रयास किया, लेकिन अब उसे एक और आदत लग गई थी जो उसे लगभग उतनी ही परेशान करती थी, क्योंकि उसने जल्द ही महसूस किया कि शराब का दानव जुए के दानव जितना ही काला था, और उससे छुटकारा पाना लगभग उतना ही कठिन था - खासकर इसलिए कि उसके दयालु दोस्तों ने उसकी अतृप्त लालसाओं को पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास किया।’

‘तो फिर वे स्वयं ही राक्षस थे,’ मैंने अपने आक्रोश को नियंत्रित न कर पाने के कारण चिल्लाकर कहा। ‘और श्री हंटिंगडन, ऐसा लगता है कि आपने ही सबसे पहले उसे उकसाया था।’

‘खैर, हम क्या कर सकते थे?’ उसने निराशा भरे लहजे में जवाब दिया। ‘हमने तो दया भाव से ऐसा कहा था – हम बेचारे को इतना दुखी नहीं देख सकते थे: और वैसे

भी, जब वह अपनी प्रेमिका के खोने, अपनी दौलत खोने और पिछली रात की अय्याशी के असर में था, तो वहाँ चुपचाप उदास बैठा रहना हमारे लिए भी बहुत निराशाजनक था; जबकि, जब उसका मूड ठीक होता था, अगर वह खुद खुश नहीं भी होता था, तो वह हमारे लिए हमेशा हँसी का स्रोत होता था। यहाँ तक कि ग्रिम्सबी भी उसकी अजीब बातों पर हँस पड़ता था: वे उसे मेरी हँसी भरी चुटकुलों या हैटर्सले की दंगा मचाने वाली हँसी से कहीं ज़्यादा पसंद आती थीं।' लेकिन एक शाम, जब हम अपने क्लब के डिनर के बाद शराब पीते हुए बैठे थे और सबने खूब मौज-मस्ती की थी, - लोबोरो हमें जोश भरे टोस्ट दे रहे थे, हमारे जोशीले गाने सुन रहे थे और तालियों में अपना हाथ बटा रहे थे, अगर वे खुद हमारे साथ गाने में मदद नहीं कर रहे थे, - अचानक वे चुप हो गए, अपना सिर हाथ पर टिका लिया और अपना गिलास होठों तक नहीं उठाया; - लेकिन यह कोई नई बात नहीं थी; इसलिए हमने उन्हें अकेला छोड़ दिया और अपनी मौज-मस्ती जारी रखी, तभी अचानक उन्होंने अपना सिर उठाया और ज़ोरदार हंसी के बीच हमें रोकते हुए कहा, - 'सज्जनों, यह सब कहाँ जाकर खत्म होगा? - क्या आप मुझे अभी बताएँगे? - यह सब कहाँ जाकर खत्म होगा?' वे उठ खड़े हुए।

“भाषण, भाषण!” हम चिल्लाए। “सुनो, सुनो! लोबोरो हमें भाषण देने जा रहा है!”

वह तालियों की गड़गड़ाहट और गिलासों की खनक शांत होने तक शांति से इंतजार करता रहा, और फिर बोला, "बस यही बात है, सज्जनों, कि मुझे लगता है कि हमें आगे नहीं बढ़ना चाहिए। जब तक हम रुक सकते हैं, हमें यहीं रुक जाना चाहिए।"

“बिल्कुल!” हैटर्सले चिल्लाया —

“रुको, बेचारे पापी, रुको और सोचो, आगे बढ़ने से पहले, शाश्वत दुख के कगार पर अब और खिलवाड़ मत करो।”

“बिल्कुल!” महाराज ने अत्यंत गंभीरता से उत्तर दिया। “और यदि आप अथाह गड्ढे में जाने का चुनाव करते हैं, तो मैं आपके साथ नहीं जाऊँगा—हमें अलग होना होगा, क्योंकि मैं कसम खाता हूँ कि मैं उसकी ओर एक कदम भी नहीं बढ़ाऊँगा!—यह क्या है?” उन्होंने शराब का गिलास उठाते हुए कहा।

मैंने सुझाव दिया, “इसे चखकर देखो।”

“यह तो नरक का शोरबा है!” वह चिल्लाया। “मैं इसे हमेशा के लिए त्यागता हूँ!”

और उसने उसे मेज के बीचोंबीच फेंक दिया।

“फिर से भर दो!” मैंने उसे बोतल देते हुए कहा, “और चलो तुम्हारे त्याग के लिए पीते हैं।”

“यह तो घिनौना ज़हर है,” उसने बोतल का गला पकड़ते हुए कहा, “और मैं कसम खाता हूँ! मैंने जुआ खेलना छोड़ दिया है, और इसे भी छोड़ दूँगा।” वह जानबूझकर बोतल का सारा तरल मेज़ पर उड़ेलने ही वाला था, लेकिन हरग्रेव ने उससे बोतल छीन ली। “तो फिर श्राप तुम पर पड़े!” उसने कहा। और कमरे से पीछे हटते हुए चिल्लाया, “अलविदा, बहकाने वालों!” और हँसी और तालियों के बीच गायब हो गया।

हमें उम्मीद थी कि वह अगले दिन हमारे बीच लौट आएगा; लेकिन, हमारी हैरानी की बात यह थी कि वह जगह खाली ही रही: हमने उसे पूरे एक हफ्ते तक नहीं देखा; और हमें सचमुच लगने लगा था कि वह अपना वादा निभाएगा। आखिरकार, एक शाम, जब हममें से अधिकांश लोग फिर से एक साथ इकट्ठा हुए, तो वह भूत की तरह चुपचाप और गंभीर होकर अंदर आया, और चुपचाप मेरी बगल में अपनी हमेशा वाली सीट पर बैठ जाना चाहता था, लेकिन हम सभी उसका स्वागत करने के लिए उठ खड़े हुए, और कई आवाज़ें उठीं कि वह क्या लेना चाहेगा, और कई हाथ बोतल और गिलास लेकर उसे परोसने में जुट गए; लेकिन मुझे पता था कि ब्रांडी और पानी से भरा एक गर्म गिलास उसे सबसे ज्यादा सुकून देगा, और मैंने उसे लगभग तैयार ही कर लिया था, तभी उसने चिड़चिड़ाकर उसे दूर धकेल दिया और कहा, —

“मुझे अकेला छोड़ दो, हंटिंगडन! तुम सब चुप रहो! मैं तुम्हारे साथ बैठने नहीं आया हूँ: मैं बस कुछ देर तुम्हारे साथ रहने आया हूँ, क्योंकि मैं अपने विचारों को सहन नहीं कर सकता।” और उसने अपनी बाहें मोड़ लीं और कुर्सी पर पीछे झुक गया; इसलिए हमने उसे अकेला छोड़ दिया। लेकिन मैंने गिलास उसके पास ही छोड़ दिया; और थोड़ी देर बाद, ग्रिम्सबी ने आँख मारकर मेरा ध्यान उसकी ओर दिलाया; और जब मैंने अपना सिर घुमाया, तो देखा कि गिलास पूरी तरह खाली था। उसने मुझे गिलास भरने का इशारा किया और चुपचाप बोतल ऊपर कर दी। मैंने खुशी-खुशी ऐसा किया; लेकिन लोबोरो ने इस नाटक को भांप लिया, और हमारे बीच हो रही समझदारी भरी मुस्कानों से चिढ़कर, मेरे हाथ से गिलास छीन लिया, उसका सारा पानी ग्रिम्सबी के चेहरे पर फेंक दिया, खाली गिलास मेरी ओर फेंक दिया, और फिर कमरे से भाग गया।”

मैंने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि उसने तुम्हारा सिर फोड़ दिया होगा।'

'नहीं, प्रिय,' उसने पूरी घटना को याद करते हुए बेहिसाब हंसते हुए उत्तर दिया; 'वह ऐसा कर देता, और शायद मेरा चेहरा भी बिगाड़ देता, लेकिन सौभाग्य से, मेरे घुंघराले बालों के इस जंगल ने' (अपनी टोपी उतारते हुए और अपने घने भूरे बालों को दिखाते हुए) 'मेरी खोपड़ी बचा ली, और मेज तक पहुँचने से पहले गिलास को टूटने से रोक दिया।'

उसके बाद,' उन्होंने आगे कहा, 'लोबोरो एक-दो सप्ताह तक हमसे दूर रहे। मैं उनसे कभी-कभार शहर में मिलता था; और फिर, चूंकि मैं इतना नेक दिल था कि उनके असभ्य व्यवहार पर मुझे कोई आपत्ति नहीं थी, और उनके मन में भी मेरे प्रति कोई द्वेष नहीं था, — वे मुझसे बात करने में कभी भी अनिच्छुक नहीं होते थे; इसके विपरीत, वे मुझसे चिपके रहते थे और क्लब, जुआघरों और ऐसे ही खतरनाक ठिकानों को छोड़कर कहीं भी मेरे पीछे-पीछे आते थे — वे अपने उदास, निराशावादी मन से इतने तंग आ चुके थे। आखिरकार, मैंने उन्हें इस शर्त पर क्लब में अपने साथ आने के लिए मना लिया कि मैं उन्हें शराब पीने के लिए उकसाऊंगा नहीं; और कुछ समय तक, वे शाम को लगभग नियमित रूप से हमसे मिलने आते रहे, — और अद्भुत दृढ़ता के साथ उस "जहरीले नशे" से दूर रहे, जिसे उन्होंने इतनी बहादुरी से त्यागने की कसम खाई थी। लेकिन हमारे कुछ सदस्यों ने उनके इस व्यवहार का विरोध किया।' उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि वह दावत में कंकाल की तरह बैठा रहे, मनोरंजन में अपना योगदान देने के बजाय, सब पर उदासी का साया डाले रहे और लालची निगाहों से दूसरों के होठों तक जाने वाली हर बूंद को देखता रहे। उन्होंने कसम खाई कि यह ठीक नहीं है; और उनमें से कुछ का कहना था कि या तो उसे दूसरों की तरह व्यवहार करने के लिए मजबूर किया जाए, या समाज से निकाल दिया जाए; और उन्होंने कसम खाई कि अगली बार जब वह दिखेगा, तो वे उसे यही कहेंगे, और अगर उसने चेतावनी नहीं मानी, तो वे उसके खिलाफ सख्त कदम उठाएंगे। हालांकि, इस बार मैंने उससे दोस्ती कर ली और उन्हें सलाह दी कि उसे कुछ समय के लिए अकेला छोड़ दें, यह कहते हुए कि अगर हम थोड़ा धैर्य रखें, तो वह जल्द ही सुधर जाएगा। लेकिन, सच कहूं तो, यह बात उसे काफी परेशान कर रही थी; क्योंकि, हालांकि वह एक सच्चे ईसाई की तरह शराब पीने से इनकार करता था, मुझे अच्छी तरह पता था कि वह अपने पास लाउडैनम की एक निजी बोतल रखता था, जिसे वह लगातार पीता रहता था - या यूं

कहें कि कभी पीता था, कभी नहीं पीता था, कभी नहीं पीता था, एक दिन परहेज करता था और अगले दिन हद से ज्यादा पी लेता था - ठीक शराब की तरह।

लेकिन एक रात, हमारी एक अय्याशी के दौरान—मेरा मतलब है, हमारे एक भव्य उत्सव के दौरान—वह "मैकबेथ" के भूत की तरह चुपके से अंदर आया और हमेशा की तरह मेज से थोड़ा पीछे, उस कुर्सी पर बैठ गया जो हम हमेशा "भूत" के लिए रखते थे, चाहे वह उस पर बैठना चाहे या नहीं। मैंने उसके चेहरे से देखा कि वह अपने उस कपटी दिलासे के अतिभोग से पीड़ित था; लेकिन किसी ने उससे बात नहीं की, और उसने भी किसी से बात नहीं की। कुछ तिरछी निगाहों और फुसफुसाते हुए इस बात से ही उसने सबका ध्यान खींचा कि "भूत आ गया है।" हम सब पहले की तरह ही मौज-मस्ती में लगे रहे, तभी अचानक उसने अपनी कुर्सी समेट ली और मेज पर कोहनी टिकाकर आगे झुकते हुए गंभीर स्वर में कहा, "वाह! मुझे समझ नहीं आता कि तुम लोग इतनी खुश क्यों रहते हो। जीवन में तुम्हें क्या दिखता है, यह तो मैं नहीं जानता - मुझे तो बस घोर अंधकार और न्याय की प्रतीक्षा और भयंकर क्रोध ही दिखाई देता है!"

सभी साथियों ने एक साथ उसके सामने अपने गिलास उठाए, और मैंने उन्हें उसके सामने अर्धवृत्त में रख दिया, और स्नेहपूर्वक उसकी पीठ थपथपाते हुए उसे पीने के लिए कहा, और कहा कि वह जल्द ही हममें से किसी के समान उज्ज्वल भविष्य देखेगा; लेकिन उसने बड़बड़ाते हुए गिलास वापस रख दिए, —

“इन्हें ले जाओ! मैं इसे नहीं चखूँगा, मैं तुमसे कहता हूँ। मैं नहीं चखूँगा—मैं नहीं चखूँगा!” इसलिए मैंने उन्हें वापस मालिकों को सौंप दिया; लेकिन मैंने देखा कि उनके जाने के बाद वह भूखी अफ़सोस भरी निगाहों से उनका पीछा करता रहा। फिर उसने अपनी आँखों के सामने हाथ रख लिए ताकि वह दृश्य न देख पाए, और दो मिनट बाद उसने अपना सिर फिर से उठाया और कर्कश लेकिन ज़ोरदार फुसफुसाहट में कहा, —

“और फिर भी मुझे जाना ही होगा! हंटिंगडन, मेरे लिए एक गिलास लाओ!”

“बोतल ले लो, यार!” मैंने ब्रांडी की बोतल उसके हाथ में थमाते हुए कहा—लेकिन रुको, मैं बहुत कुछ बता रहा हूँ,’ कथावाचक ने मेरी ओर मुड़ी नज़र देखकर चौंकते हुए बुदबुदाया। “पर कोई बात नहीं,” उसने बेपरवाही से कहा, और इस तरह अपना वर्णन जारी रखा: “अपनी बेताबी में उसने बोतल पकड़ी और इतनी तेज़ी से पीने लगा कि अचानक वह अपनी कुर्सी से गिर पड़ा और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच मेज़ के

नीचे गायब हो गया। इस नासमझी का नतीजा एक तरह का मिर्गी का दौरा था, जिसके बाद उसे तेज़ दिमागी बुखार हो गया—”

‘और आपको अपने बारे में क्या लगता है, महोदय?’ मैंने झट से कहा।

‘बेशक, मुझे बहुत पश्चाताप हुआ,’ उसने उत्तर दिया। ‘मैं उससे एक-दो बार मिलने गया – नहीं, दो-तीन बार – या मेरी पत्नी की कसम, लगभग चार बार – और जब वह ठीक हो गया, तो मैंने उसे बड़े प्यार से वापस अपने समूह में शामिल कर लिया।’

'आपका क्या मतलब है?'

‘मेरा मतलब है, मैंने उसे क्लब में वापस लाया, और उसकी कमज़ोर सेहत और बेहद उदास मन को देखकर, मैंने उसे “पेट भरने के लिए थोड़ी शराब पीने” की सलाह दी, और जब वह ठीक हो गया, तो बीच का रास्ता अपनाने को कहा — न तो मूर्ख की तरह आत्महत्या करने को, न ही नासमझ की तरह शराब से दूर रहने को — दूसरे शब्दों में, एक समझदार प्राणी की तरह आनंद लेने को, और वैसा ही करने को जैसा मैंने किया; क्योंकि, हेलेन, यह मत सोचो कि मैं शराबी हूँ; मैं बिल्कुल भी ऐसा नहीं हूँ, न कभी था, न कभी होऊँगा। मैं अपने आराम को बहुत महत्व देता हूँ। मैं देखता हूँ कि कोई भी व्यक्ति शराब के आगे बेबस होकर अपने आधे दिन दुखी और बाकी आधे दिन पागल हुए बिना नहीं रह सकता; इसके अलावा, मैं अपने जीवन का हर पहलू से आनंद लेना चाहता हूँ, जो एक ही प्रवृत्ति का गुलाम बनकर नहीं रह सकता - और तो और, शराब पीने से सुंदरता बिगड़ जाती है,' उसने एक बेहद घमंडी मुस्कान के साथ अपनी बात समाप्त की, जिससे मुझे जितना गुस्सा आना चाहिए था, उससे कहीं ज्यादा गुस्सा आया।

मैंने पूछा, 'क्या लॉर्ड लोबोरो को आपकी सलाह से फायदा हुआ?'

हाँ, एक तरह से। कुछ समय तक तो उसने बहुत अच्छा काम किया; वास्तव में, वह संयम और विवेक का आदर्श था—हमारे उग्र समुदाय के लिए कुछ ज़्यादा ही; लेकिन, किसी तरह, लोबोरो में संयम का गुण नहीं था: अगर वह ज़रा सा भी लड़खड़ा जाता, तो खुद को संभालने से पहले ही गिर जाता: अगर एक रात वह हद से ज़्यादा शराब पी लेता, तो अगले दिन उसका असर इतना बुरा होता कि उसे उसे सुधारने के लिए वही गलती दोहरानी पड़ती; और यह सिलसिला दिन-ब-दिन चलता रहता, जब तक कि उसकी अंतरात्मा उसे रोक नहीं देती। और फिर, जब वह शांत होता, तो वह अपने पश्चाताप, भय और दुखों से अपने दोस्तों को इतना परेशान करता कि आत्मरक्षा

में उन्हें उसे शराब या जो भी नशीला पेय हाथ लगे, उसमें डुबोने के लिए मजबूर होना पड़ता; और जब उसकी अंतरात्मा की पहली दुविधा दूर हो जाती, तो उसे और समझाने की जरूरत नहीं पड़ती, वह अक्सर हताश हो जाता और उतना ही बड़ा बदमाश बन जाता जितना उनमें से कोई भी चाह सकता था - लेकिन जब यह दौरा खत्म हो जाता तो वह अपनी अकथनीय दुष्टता और पतन पर और भी अधिक पछताता।

अंततः, एक दिन जब हम दोनों अकेले थे, कुछ देर तक अपनी उदास, खोई-खोई सी मनोदशा में, हाथ बांधे और सिर सीने पर टिकाए, सोचते-विचारते वह अचानक जाग उठा, और मेरा हाथ कसकर पकड़ते हुए बोला, —

"हंटिंगडन, यह बर्दाश्त नहीं किया जाएगा! मैंने इसे पूरी तरह से खत्म करने का दृढ़ संकल्प लिया है।"

"क्या तुम खुद को गोली मारने जा रहे हो?" मैंने कहा।

"नहीं; मैं सुधार करूंगा।"

"अरे, यह तो कोई नई बात नहीं है! आप पिछले बारह महीनों से और उससे भी अधिक समय से सुधार करने की कोशिश कर रहे हैं।"

"हाँ, लेकिन तुमने मुझे ऐसा करने नहीं दिया; और मैं इतना मूर्ख था कि तुम्हारे बिना जी नहीं सकता था। लेकिन अब मुझे समझ आ गया है कि मुझे क्या रोके हुए है, और मुझे बचाने के लिए क्या चाहिए; और मैं उसे पाने के लिए समुद्र-ज़मीन पार कर जाऊँगा— बस मुझे डर है कि कोई उम्मीद नहीं है।" और उसने आह भरी, मानो उसका दिल टूट जाएगा।

"क्या बात है, लोबोरो?" मैंने कहा, यह सोचते हुए कि वह आखिरकार पूरी तरह से पागल हो गया है।

"एक पत्नी," उसने उत्तर दिया; "क्योंकि मैं अकेला नहीं रह सकता, क्योंकि मेरा अपना मन मुझे विचलित करता है, और मैं तुम्हारे साथ भी नहीं रह सकता, क्योंकि तुम मेरे विरुद्ध शैतान का पक्ष लेती हो।"

"कौन— मैं?"

"हाँ—आप सभी ऐसा करते हैं—और आप तो उन सभी से कहीं ज़्यादा, आप जानते हैं। लेकिन अगर मुझे एक ऐसी पत्नी मिल जाए, जिसके पास इतना धन हो कि वह मेरे सारे कर्ज चुका दे और मुझे दुनिया में सही राह पर ले आए—"

“हाँ, बिल्कुल,” मैंने कहा।

“और घर को सहने लायक बनाने और खुद से समझौता करने के लिए पर्याप्त मिठास और अच्छाई ही काफी है,” उसने आगे कहा। “मुझे लगता है कि मैं अब कभी प्यार में नहीं पड़ूंगा। यह निश्चित है; लेकिन शायद यह कोई बड़ी बात नहीं होगी, इससे मुझे अपनी आँखें खोलकर चुनाव करने की शक्ति मिलेगी — और इसके बावजूद मैं एक अच्छा पति बनूंगा; लेकिन क्या कोई मुझसे प्यार कर सकता है? — यही सवाल है। तुम्हारी खूबसूरती और मोहक शक्ति के साथ” (उसने प्रसन्नता से कहा), “मैं उम्मीद कर सकता हूँ; लेकिन हंटिंगडन, क्या तुम्हें लगता है कि कोई मुझे अपनाएगा — इस बर्बाद और दुखी हालत में?”

"'हां बेशक।"

"'कौन?"

“क्यों, कोई भी उपेक्षित बूढ़ी कुंवारी, जो निराशा में डूबती जा रही हो, प्रसन्न होगी —”

“नहीं, नहीं,” उसने कहा— “यह कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिससे मैं प्यार कर सकूं।”

“अरे, तुमने तो अभी कहा था कि तुम फिर कभी प्यार नहीं कर सकते!”

“खैर, प्यार सही शब्द नहीं है – बल्कि कोई ऐसा जिसे मैं पसंद कर सकूँ। मैं हर हाल में पूरे इंग्लैंड में खोजूंगा!” वह अचानक आशा या हताशा से भर उठा। “सफल हो या असफल, उस घिनौने क्लब में जाकर बर्बादी की ओर भागने से तो बेहतर ही होगा: तो अलविदा, उसे और तुम्हें। जब भी मैं तुमसे किसी पवित्र स्थान पर या किसी ईसाई चर्च में मिलूंगा, मुझे तुमसे मिलकर खुशी होगी; लेकिन अब तुम मुझे कभी भी उस शैतान के अड्डे में नहीं ले जा पाओगी!”

यह शर्मनाक भाषा थी, फिर भी मैंने उससे हाथ मिलाया और हम अलग हो गए। उसने अपना वादा निभाया; और तब से, जहाँ तक मुझे पता है, वह शिष्टाचार का आदर्श बन गया है; लेकिन हाल तक मेरा उससे बहुत कम वास्ता रहा है। वह कभी-कभी मेरी संगति चाहता था, लेकिन अक्सर मुझसे दूर भाग जाता था, इस डर से कि कहीं मैं उसे फिर से विनाश की ओर न धकेल दूँ, और मुझे उसका व्यवहार बहुत मनोरंजक नहीं लगा, खासकर जब वह कभी-कभी मेरी अंतरात्मा को जगाने और मुझे उस विनाश से बाहर निकालने की कोशिश करता था जिससे वह खुद को बचा हुआ

मानता था; लेकिन जब भी मेरी उससे मुलाक़ात होती थी, मैं अक्सर उसके वैवाहिक प्रयासों और खोजों की प्रगति के बारे में पूछता था, और आम तौर पर वह मुझे बहुत कम जानकारी दे पाता था। उसकी खाली जेब और जुए की बदनामी से माताएँ उससे दूर रहती थीं, और बेटियाँ उसके उदास चेहरे और निराशावादी स्वभाव से—इसके अलावा, वह उन्हें समझ नहीं पाता था; उसमें अपनी बात मनवाने के लिए साहस और आत्मविश्वास की कमी थी।

जब मैं महाद्वीप गई तो मैंने उसे वहीं छोड़ दिया; और साल के अंत में जब मैं लौटी, तो मैंने उसे अभी भी एक उदास कुंवारा पाया—हालांकि, निश्चित रूप से, वह पहले की तुलना में कब्र से निकले अभागे निर्वासित की तरह कम दिख रहा था। युवतियाँ उससे डरना बंद कर चुकी थीं, और उसे काफी दिलचस्प समझने लगी थीं; लेकिन उसकी माताएँ अभी भी अड़ी हुई थीं। हेलेन, लगभग इसी समय मेरे अच्छे देवदूत ने मुझे तुमसे मिलवाया; और उसके बाद मेरी नज़रें और कान किसी और के लिए नहीं थे। लेकिन, इसी बीच, लोबोरो का परिचय हमारी प्यारी दोस्त, मिस विल्मोट से हो गया—निश्चित रूप से वह तुम्हें बताएगा कि यह उसके अच्छे देवदूत के हस्तक्षेप से हुआ, हालांकि उसने इतनी लोकप्रिय और प्रशंसित महिला पर अपनी आशाएँ टिकाने की हिम्मत नहीं की, जब तक कि स्टैनिंगली में उनका आमना-सामना नहीं हुआ, और उसने, अपने अन्य प्रशंसकों की अनुपस्थिति में, निस्संदेह उसका ध्यान आकर्षित किया और उसके संकोची प्रयासों को हर तरह से प्रोत्साहित किया। तब, वास्तव में, उसने उज्ज्वल दिनों की सुबह की आशा करना शुरू कर दिया; और अगर कुछ समय के लिए मैंने उसके और उसके जीवन के बीच खड़े होकर उसकी संभावनाओं को धूमिल कर दिया—और उसे लगभग फिर से निराशा के गहरे अंधकार में धकेल दिया—तो इससे उसका उत्साह और भी बढ़ गया और उसकी उम्मीदें और भी मजबूत हो गईं जब मैंने एक उज्जवल खजाने की तलाश में मैदान छोड़ने का फैसला किया। संक्षेप में, जैसा कि मैंने आपको बताया, वह पूरी तरह से उसके प्यार में पागल है। पहले तो वह उसकी कमियों को धुंधला सा देख पाता था, और उनसे उसे काफी बेचैनी होती थी; लेकिन अब उसका जुनून और उसकी कला ने मिलकर उसे उसकी खूबियों और उसके अद्भुत सौभाग्य के अलावा सब कुछ देखने से अंधा कर दिया है। कल रात वह अपनी इस नई खुशी से लबालब मेरे पास आया:

“हंटिंगडन, मैं बेसहारा नहीं हूँ!” उसने मेरा हाथ पकड़कर कसकर दबाते हुए कहा।

“मेरे लिए अभी भी खुशियाँ बाकी हैं—इस जीवन में भी—वह मुझसे प्यार करती है!”

“जी हां!” मैंने कहा। “क्या उसने तुम्हें ऐसा बताया है?”

“नहीं, लेकिन अब मुझे इस पर कोई संदेह नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि वह कितनी दयालु और स्नेही है? और वह मेरी गरीबी की हद को भली-भांति जानती है, और उसे इसकी ज़रा भी परवाह नहीं! वह मेरे पिछले जीवन की सारी मूर्खता और सारी बुराई जानती है, और मुझ पर भरोसा करने से नहीं डरती—और मेरा पद और उपाधि उसके लिए कोई आकर्षण नहीं हैं; वह उन्हें बिल्कुल भी महत्व नहीं देती। वह कल्पना से परे सबसे उदार और उच्च विचारों वाली हस्ती है। वह मुझे तन-मन से विनाश से बचाएगी। उसने पहले ही मुझे मेरी नज़र में ऊंचा उठा दिया है, और मुझे पहले से तीन गुना बेहतर, बुद्धिमान और महान बना दिया है। ओह! काश मैं उसे पहले जान पाता, तो मैं कितनी बदनामी और दुख से बच जाता! लेकिन मैंने ऐसा क्या किया है कि मुझे इतनी महान हस्ती मिली?”

‘और मज़ाक का सबसे अहम हिस्सा,’ श्री हंटिंगडन ने हंसते हुए आगे कहा, ‘यह है कि वह धूर्त स्त्री उसके बारे में उसकी उपाधि और वंश के अलावा और कुछ भी पसंद नहीं करती, और वह “मनमोहक पुरानी पारिवारिक संपत्ति” भी।’

मैंने कहा, 'तुम्हें कैसे पता?'

उसने खुद मुझसे ऐसा कहा था; उसने कहा, “जहाँ तक उस आदमी की बात है, मैं उससे पूरी तरह नफरत करती हूँ; लेकिन फिर, मुझे लगता है, अब चुनाव करने का समय आ गया है, और अगर मैं किसी ऐसे व्यक्ति का इंतजार करती जो मेरा सम्मान और स्नेह प्राप्त कर सके, तो मुझे अपना पूरा जीवन अकेले ही गुजारना पड़ेगा, क्योंकि मैं तुम सभी से नफरत करती हूँ!” हा हा! मुझे लगता है कि वह वहाँ गलत थी; लेकिन, फिर भी, यह स्पष्ट है कि उसे उस बेचारे से कोई प्यार नहीं है।

तो फिर आपको उसे यह बात बता देनी चाहिए।

‘क्या! और उसकी सारी योजनाएँ और भविष्य बर्बाद कर दूँ, बेचारी लड़की? नहीं, नहीं: यह विश्वासघात होगा, है ना, हेलेन? हा हा! इसके अलावा, इससे उसका दिल टूट जाएगा।’ और वह फिर हँस पड़ा।

‘खैर, श्री हंटिंगडन, मुझे नहीं पता कि आपको इस मामले में इतना मनोरंजक क्या लगता है; मुझे तो इसमें हंसने लायक कुछ भी नहीं दिखता।’

'मैं अभी तुम पर हंस रहा हूं, प्रिय,' उसने अपनी चालों को और तेज करते हुए

कहा।

उसे अकेले ही उसकी खुशी का आनंद लेने के लिए छोड़कर, मैंने रूबी को चाबुक से हल्का सा छुआ और अपने साथियों से मिलने के लिए सरपट दौड़ पड़ी; क्योंकि हम इतनी देर से अपने घोड़ों को पैदल चला रहे थे, और इसलिए काफी पीछे रह गए थे। आर्थर जल्द ही फिर से मेरे पास आ गया; लेकिन उससे बात करने का मन न होने के कारण, मैं सरपट दौड़ने लगी। उसने भी ऐसा ही किया; और हम तब तक अपनी गति धीमी नहीं करते रहे जब तक कि हम मिस विल्मोट और लॉर्ड लोबोरो के पास नहीं पहुँच गए, जो पार्क के द्वार से आधा मील की दूरी पर थे। मैंने उससे तब तक कोई बातचीत नहीं की जब तक कि हमारी सवारी खत्म नहीं हो गई, और मेरा इरादा था कि इससे पहले कि वह मेरी मदद कर पाता, मैं अपने घोड़े से कूदकर घर में गायब हो जाऊं; लेकिन जब मैं अपनी पोशाक को बैसाखी से अलग कर रही थी, तो उसने मुझे उठा लिया और दोनों हाथों से पकड़ लिया, यह कहते हुए कि जब तक मैं उसे माफ नहीं कर देती, वह मुझे नहीं छोड़ेगा।

मैंने कहा, 'मुझे कुछ भी माफ करने की जरूरत नहीं है। तुमने मुझे कोई चोट नहीं पहुंचाई है।'

'नहीं, प्रिय - भगवान न करे ऐसा हो! लेकिन तुम इसलिए नाराज़ हो क्योंकि एनाबेला ने अपने प्रेमी के प्रति अपने अनादर को मुझसे ही स्वीकार किया था।'

नहीं, आर्थर, मुझे उस बात से आपत्ति नहीं है: मुझे तुम्हारे दोस्त के प्रति तुम्हारे पूरे व्यवहार से आपत्ति है, और अगर तुम चाहते हो कि मैं इसे भूल जाऊं, तो अभी जाओ और उसे बताओ कि वह किस तरह की औरत की इतनी दीवानगी से पूजा करता है और किस पर उसने अपने भविष्य के सुख की उम्मीदें टिका रखी हैं।

‘हेलेन, मैं तुमसे कहती हूँ, इससे उसका दिल टूट जाएगा—यह उसकी जान ले लेगा—साथ ही बेचारी एनाबेला के लिए यह एक शर्मनाक चाल भी होगी। अब उसके लिए कोई मदद नहीं है; उसके लिए प्रार्थना करना असंभव है। इसके अलावा, वह इस धोखे को अध्याय के अंत तक जारी रख सकती है; और तब वह इस भ्रम में उतना ही खुश रहेगा जितना कि वास्तविकता में; या शायद उसे अपनी गलती का एहसास तभी होगा जब वह उससे प्यार करना छोड़ देगा; और अगर ऐसा नहीं है, तो बेहतर है कि सच्चाई धीरे-धीरे उसके सामने आ जाए। तो अब, मेरी परी, मुझे उम्मीद है कि मैंने अपना पक्ष स्पष्ट कर दिया है, और तुम्हें पूरी तरह से आश्वस्त कर दिया है कि मैं वह

प्रायश्चित नहीं कर सकती जो तुम चाहती हो। तुम्हारी और क्या माँग है? बोलो, और मैं सहर्ष आज्ञा का पालन करूँगी।'

मैंने पहले की तरह ही गंभीरता से कहा, 'मेरे पास बस यही कहने को है कि भविष्य में तुम कभी दूसरों के कष्टों का मजाक मत उड़ाना, और अपने मित्रों पर अपने प्रभाव का प्रयोग हमेशा उनकी बुरी प्रवृत्तियों के विरुद्ध उनके लाभ के लिए करना, न कि उनकी बुरी प्रवृत्तियों को स्वयं उनके विरुद्ध बढ़ावा देना।'

उन्होंने कहा, 'मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा कि मेरी मार्गदर्शक देवदूत के निर्देशों को याद रखूं और उनका पालन करूं;' और मेरे दोनों दस्ताने पहने हाथों को चूमने के बाद उन्होंने मुझे जाने दिया।

जब मैं अपने कमरे में दाखिल हुआ, तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एनाबेला विल्मोट मेरी टॉयलेट टेबल के सामने खड़ी थी, शांत भाव से शीशे में अपने चेहरे को निहार रही थी, एक हाथ से अपने सोने की मूठ वाले चाबुक को लहरा रही थी और दूसरे हाथ से अपनी लंबी पोशाक को थामे हुए थी।

'वह सचमुच एक भव्य महिला है!' मैंने सोचा, जब मैंने उस लंबे, सुगठित शरीर और सामने लगे दर्पण में उसके सुंदर चेहरे का प्रतिबिंब देखा, जिसमें चमकदार काले बाल थे, जो हवा के झोंकों से थोड़े बिखरे हुए थे, व्यायाम से दमकता हुआ उसका गहरा भूरा रंग और असाधारण चमक से दमकती उसकी काली आँखें थीं। मुझे देखते ही वह मुड़ी और हँसी से चिल्लाई, जिसमें खुशी से ज़्यादा द्वेष झलक रहा था, – 'हेलेन! इतनी देर से क्या कर रही थी? मैं तुम्हें अपनी खुशखबरी सुनाने आई थी,' उसने राहेल की मौजूदगी की परवाह किए बिना कहा। 'लॉर्ड लोबोरो ने मुझे शादी का प्रस्ताव दिया है, और मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। क्या तुम्हें मुझसे ईर्ष्या नहीं हो रही, प्रिय?'

'नहीं, प्रिय,' मैंने कहा — 'न ही वो,' मैंने मन ही मन जोड़ा। 'और क्या तुम उसे पसंद करती हो, एनाबेला?'

'बिल्कुल उसकी तरह! हाँ, बिल्कुल - प्यार में पागल!'

'खैर, मुझे उम्मीद है कि तुम उसके लिए एक अच्छी पत्नी साबित होओगी।'

'धन्यवाद, मेरी प्रिय! और इसके अलावा आप क्या उम्मीद करती हैं?'

मुझे उम्मीद है कि आप दोनों एक दूसरे से प्यार करेंगे और खुश रहेंगे।

'धन्यवाद; और मुझे उम्मीद है कि आप मिस्टर हंटिंगडन के लिए एक बहुत अच्छी

पत्नी साबित होंगी!’ उसने शाही अंदाज में झुकते हुए कहा और चली गई।

‘ओह, मिस! आप उससे ऐसा कैसे कह सकती हैं!’ राहेल चिल्लाई।

‘क्या कहा?’ मैंने उत्तर दिया।

‘अरे वाह, आपने तो यह उम्मीद की थी कि वह उसके लिए एक अच्छी पत्नी बनेगी। मैंने तो ऐसी बात कभी सुनी ही नहीं!’

'क्योंकि मुझे उम्मीद तो है, या यूं कहूं कि मैं यही चाहता हूं; उसके ठीक होने की उम्मीद लगभग खत्म हो चुकी है।'

‘खैर,’ उसने कहा, ‘मुझे पूरा यकीन है कि मुझे उम्मीद है कि वह उसके लिए एक अच्छा पति साबित होगा। नीचे लोग उसके बारे में अजीबोगरीब बातें करते हैं। वे कह रहे थे—’

‘मुझे पता है, रेचल। मैंने उसके बारे में सब कुछ सुना है; लेकिन अब वह सुधर गया है। और उन्हें अपने मालिकों के बारे में चुगली करने का कोई अधिकार नहीं है।’

‘नहीं, माँ—नहीं तो, उन्होंने मिस्टर हंटिंगडन के बारे में भी कुछ बातें कही होंगी।’
‘मैं उनकी बातें नहीं सुनूँगी, रेचल; वे झूठ बोलती हैं।’

'हां, मां,' उसने धीरे से कहा, और मेरे बालों को संवारने लगी।

‘क्या तुम उन पर विश्वास करती हो, रेचल?’ मैंने थोड़ी देर रुककर पूछा।

नहीं, महोदया, सभी नहीं। आप जानती हैं कि जब बहुत सारे नौकर इकट्ठा होते हैं तो वे अपने से ऊंचे लोगों के बारे में बातें करना पसंद करते हैं; और कुछ, अपनी शान दिखाने के लिए, ऐसा जताते हैं जैसे उन्हें असलियत से ज़्यादा पता हो, और दूसरों को चौंकाने के लिए इशारे और बातें करते हैं। लेकिन मुझे लगता है, अगर मैं आपकी जगह होती, मिस हेलेन, तो मैं कोई भी कदम उठाने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लेती। मेरा मानना है कि एक युवती को शादी करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए।

‘बिल्कुल नहीं,’ मैंने कहा; ‘लेकिन जल्दी करो, रेचल? मुझे कपड़े पहनने हैं।’

और सच कहूँ तो, मैं उस महिला से छुटकारा पाने के लिए बेचैन था, क्योंकि मैं इतना उदास था कि जब वह मुझे कपड़े पहना रही थी तो मैं मुश्किल से अपने आँसू रोक पा रहा था। वे लॉर्ड लोबोरो के लिए नहीं, एनाबेला के लिए नहीं, मेरे लिए नहीं, बल्कि आर्थर हंटिंगडन के लिए उठे थे।

* * * * *

तेरहवाँ — वे चले गए, और वह भी चला गया। हमें दो महीने से ज़्यादा, दस हफ़्तों से भी ज़्यादा समय तक अलग रहना होगा! उसे देखे बिना जीना बहुत लंबा समय है। लेकिन उसने अक्सर लिखने का वादा किया है, और मुझसे भी ज़्यादा बार लिखने का वादा करवाया है, क्योंकि वह अपने कामों में व्यस्त रहेगा, और मेरे पास करने के लिए कुछ और नहीं होगा। खैर, मुझे लगता है कि मेरे पास कहने के लिए हमेशा बहुत कुछ होगा। लेकिन ओह! उस समय के लिए तरस रहा हूँ जब हम हमेशा साथ रहेंगे, और कलम, स्याही और कागज़ जैसे इन ठंडे बिचौलियों के बिना अपने विचार साझा कर सकेंगे!

* * * * *

22 तारीख — मुझे आर्थर से कई पत्र मिल चुके हैं। वे लंबे नहीं हैं, लेकिन बेहद प्यारे हैं, और बिल्कुल उनके स्वभाव के अनुरूप, गहरे स्नेह और चंचल, जीवंत हास्य से भरे हुए हैं; लेकिन इस अपूर्ण दुनिया में हमेशा एक 'लेकिन' होता है, और मैं चाहती हूँ कि वह कभी-कभी गंभीर भी हों। मैं उन्हें वास्तविक, ठोस गंभीरता से लिखने या बोलने के लिए राजी नहीं कर सकती। मुझे अभी तो इसकी ज़्यादा परवाह नहीं है, लेकिन अगर हमेशा ऐसा ही रहा, तो मैं अपने गंभीर स्वभाव का क्या करूँगी?

अध्याय XXIII

18 फ़रवरी, 1822 — आज सुबह-सुबह आर्थर अपने शिकारी घोड़े पर सवार होकर बड़ी खुशी से शिकारी कुत्तों से मिलने निकल पड़ा। वह पूरे दिन बाहर रहेगा, इसलिए मैं अपनी उपेक्षित डायरी से अपना समय बिताऊँगी, अगर मैं इस अनियमित रचना को डायरी कह सकूँ तो। इसे खोले हुए ठीक चार महीने हो गए हैं।

अब मेरी शादी हो चुकी है और मैं ग्रासडेल मैनर की श्रीमती हंटिंगडन के रूप में बस गई हूँ। मुझे वैवाहिक जीवन के आठ सप्ताह हो चुके हैं। क्या मुझे अपने इस कदम पर पछतावा है? नहीं, हालाँकि मुझे अपने मन में यह स्वीकार करना होगा कि आर्थर वैसा नहीं है जैसा मैंने उसे पहले समझा था, और अगर मैं उसे शुरुआत में उतना ही अच्छी तरह जानती जितना अब जानती हूँ, तो शायद मैं उससे कभी प्यार नहीं करती, और अगर मैंने उससे पहले प्यार किया होता और फिर सच्चाई का पता चला होता, तो मुझे डर है कि मैं उससे शादी न करना ही अपना कर्तव्य समझती। बेशक, मैं उसे जान सकती थी, क्योंकि हर कोई उसके बारे में मुझे बताने को तैयार था, और वह खुद भी कोई माहिर पाखंडी नहीं था, लेकिन मैं जानबूझकर अनजान बनी रही; और अब, उससे अटूट बंधन में बंधने से पहले उसके पूरे चरित्र को न समझने का पछतावा करने के बजाय, मैं खुश हूँ, क्योंकि इससे मुझे अपने अंतरात्मा से बहुत संघर्ष करने और परिणामस्वरूप होने वाली बहुत सारी परेशानियों और पीड़ाओं से मुक्ति मिली है; और, मुझे जो कुछ भी करना चाहिए था, अब मेरा कर्तव्य स्पष्ट रूप से उससे प्रेम करना और उसके प्रति वफादार रहना है, और यह मेरी प्रवृत्ति के बिल्कुल अनुरूप है।

वह मुझसे बहुत प्यार करता है, हद से ज़्यादा। मुझे कम दुलार और ज़्यादा समझदारी चाहिए। अगर मुझे चुनने का मौका मिले, तो मैं लाड़-प्यार की बजाय एक दोस्त बनना चाहूँगी; लेकिन मैं इसकी शिकायत नहीं करूँगी: मुझे बस इस बात का डर है कि जहाँ उसका स्नेह जोश में बढ़ता है, वहीं गहराई में कहीं खो न जाए। मैं कभी-कभी इसकी तुलना सूखी टहनियों और शाखाओं की आग से करती हूँ, जिसकी तुलना ठोस कोयले की तेज़ और गर्म आग से की जाती है; लेकिन अगर यह जलकर राख हो जाए, तो मैं क्या करूँगी? लेकिन ऐसा नहीं होगा, मैं दृढ़ निश्चयी हूँ; और यकीनन मेरे पास इसे ज़िंदा रखने की शक्ति है। तो चलिए इस विचार को तुरंत त्याग देती हूँ। लेकिन आर्थर स्वार्थी है; मुझे यह स्वीकार करना ही होगा; और वास्तव में, यह स्वीकारोक्ति मुझे उम्मीद से कम पीड़ा देती है, क्योंकि मैं उससे बहुत प्यार करती हूँ, इसलिए मैं उसे खुद से प्यार करने के लिए आसानी से माफ़ कर सकती हूँ: उसे खुश रहना अच्छा लगता है, और उसे खुश करना मुझे आनंद देता है; और जब मुझे उसकी इस प्रवृत्ति पर अफ़सोस होता है, तो यह उसके लिए होता है, मेरे लिए नहीं।

पहला उदाहरण उन्होंने हमारी शादी की यात्रा के दौरान दिया। वे इसे जल्दी खत्म करना चाहते थे, क्योंकि महाद्वीप के सभी दृश्य उनके लिए पहले से ही परिचित थे:

कई दृश्य उनकी नजरों से ओझल हो चुके थे, और कुछ में खोने के लिए कुछ था ही नहीं। नतीजा यह हुआ कि फ्रांस और इटली के कुछ हिस्सों से सरसरी तौर पर गुजरने के बाद, मैं लगभग उतनी ही अनभिज्ञ होकर लौटी जितनी गई थी, लोगों और रीति-रिवाजों से कोई परिचय नहीं हुआ था, और चीजों के बारे में तो बहुत कम ही जानकारी थी, मेरा दिमाग वस्तुओं और दृश्यों के एक बेतरतीब मिश्रण से भरा हुआ था; यह सच है कि कुछ दृश्यों ने दूसरों की तुलना में अधिक गहरा और सुखद प्रभाव छोड़ा, लेकिन ये इस याद से कड़वे हो गए कि मेरी भावनाओं को मेरे साथी ने नहीं समझा, बल्कि इसके विपरीत, जब मैंने किसी भी चीज में विशेष रुचि दिखाई जो मैंने देखी या देखना चाहा, तो यह उन्हें अप्रिय लगा, क्योंकि इससे यह साबित हो गया कि मैं उनसे असंबंधित किसी भी चीज में आनंद ले सकती हूँ।

पेरिस की बात करें तो, हमने बस उसे सरसरी तौर पर ही देखा था, और उन्होंने मुझे रोम की सुंदरता और दिलचस्प चीजों का दसवां हिस्सा भी देखने का समय नहीं दिया। उन्होंने कहा कि वे मुझे घर ले जाना चाहते हैं, ताकि मैं पूरी तरह से उनकी हो जाऊं, और मुझे ग्रासडेल मैनर की मालकिन के रूप में सुरक्षित रूप से स्थापित होते

हुए देखें, ठीक उसी तरह जैसे मैं एकनिष्ठ, भोली और चंचल थी; और मानो मैं कोई नाजुक तितली हूँ, उन्होंने मुझे समाज, विशेषकर पेरिस और रोम के समाज के संपर्क में लाने से मेरे पंखों की चमक फीकी पड़ने के डर को व्यक्त किया; और तो और, उन्होंने मुझे यह बताने में भी संकोच नहीं किया कि दोनों जगहों पर ऐसी महिलाएं हैं जो अगर मुझसे उनकी मुलाकात हो जाए तो उनकी आंखें निकाल लेंगी।

बेशक मैं इन सब बातों से परेशान थी; लेकिन फिर भी, मुझे अपनी निराशा से ज़्यादा उसकी निराशा खटक रही थी, और अपने दोस्तों को यह समझाने में मुझे काफ़ी मशक्कत करनी पड़ रही थी कि मैंने उसे इतना कम देखा और समझा, और अपने साथी पर ज़रा भी दोष न लगाऊं। लेकिन जब हम घर पहुंचे - अपने नए, प्यारे घर में - मैं इतनी खुश थी और वह इतना दयालु था कि मैंने उसे सब कुछ माफ़ कर दिया; और मुझे लगने लगा था कि मेरी किस्मत कुछ ज़्यादा ही अच्छी है, और मेरा पति मेरे लिए बहुत अच्छा है, शायद इस दुनिया के लिए भी बहुत अच्छा है, तभी हमारे आने के दूसरे रविवार को, उसने अपनी एक और अनुचित माँग से मुझे चौंका दिया और डरा दिया। हम सुबह की प्रार्थना से घर लौट रहे थे, क्योंकि वह एक सुहावना, बर्फीला दिन था, और चर्च के इतने पास होने के कारण, मैंने अनुरोध किया था कि गाड़ी का इस्तेमाल न किया जाए।

‘हेलेन,’ उसने असामान्य गंभीरता से कहा, ‘मैं तुमसे पूरी तरह संतुष्ट नहीं हूँ।’

मैं यह जानना चाहता था कि क्या गड़बड़ है।

लेकिन अगर मैं तुम्हें बताऊं तो क्या तुम सुधरने का वादा करोगे?

'हां, अगर मैं कर सकता हूं, और बिना किसी उच्च अधिकारी को नाराज किए।'

‘अरे! बात तो यही है: तुम मुझे पूरे दिल से प्यार नहीं करते।’

‘मैं तुम्हें समझ नहीं पा रहा हूँ, आर्थर (कम से कम मुझे उम्मीद है कि मैं नहीं समझ पा रहा हूँ): कृपया मुझे बताओ कि मैंने क्या गलत किया या कहा है।’

‘यह आपके किसी काम या बात की वजह से नहीं है; यह आपके स्वभाव की वजह से है—आप बहुत ज़्यादा धार्मिक हैं। मुझे महिलाओं का धार्मिक होना अच्छा लगता है, और मुझे लगता है कि आपकी धार्मिकता आपके सबसे बड़े आकर्षणों में से एक है; लेकिन, बाकी सभी अच्छी चीजों की तरह, यह भी हद से ज़्यादा हो सकती है। मेरे विचार से, किसी महिला का धर्म उसके सांसारिक स्वामी के प्रति उसकी भक्ति को कम नहीं करना चाहिए। उसे अपनी आत्मा को शुद्ध और आध्यात्मिक बनाने के लिए

पर्याप्त धार्मिकता होनी चाहिए, लेकिन इतनी नहीं कि उसका हृदय शुद्ध हो जाए और वह सभी मानवीय भावनाओं से ऊपर उठ जाए।'

मैंने कहा, 'क्या मैं सभी मानवीय सहानुभूतियों से परे हूँ?'

नहीं, प्रिय; लेकिन तुम संत बनने की ओर मेरी इच्छा से कहीं अधिक बढ़ रही हो; इन दो घंटों से मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा हूँ और तुम्हारी नज़रें अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रहा हूँ, और तुम अपनी प्रार्थनाओं में इतनी लीन थी कि तुमने मुझे देखने के लिए एक नज़र भी नहीं डाली – मैं कसम खाता हूँ कि यह देखकर अपने ईश्वर से ईर्ष्या होने लगती है – जो कि बहुत गलत है, तुम जानती हो; इसलिए मेरी आत्मा की खातिर फिर कभी ऐसी बुरी भावनाएँ मत जगाना।

मैंने उत्तर दिया, 'यदि संभव हो तो मैं अपना पूरा हृदय और आत्मा अपने ईश्वर को समर्पित कर दूँगा, और आपको उतना ही दूंगा जितना वह अनुमति देते हैं। आप कौन हैं, महोदय, जो स्वयं को ईश्वर मानते हैं, और मेरे हृदय पर अधिकार के लिए उस ईश्वर से विवाद करने का साहस करते हैं, जिसके प्रति मैं अपने सब कुछ, अपने अस्तित्व, अपने सभी आशीर्वादों का ऋणी हूँ - और आप भी उनमें से एक हैं - यदि आप आशीर्वाद हैं, जिस पर मुझे संदेह है।'

'हेलेन, मुझ पर इतनी सख्ती मत करो; और मेरी बांह को इस तरह मत चुटकी काटो: तुम अपनी उंगलियों को हड्डी में दबा रही हो।'

'आर्थर,' मैंने उसकी बांह से अपनी पकड़ ढीली करते हुए कहा, 'तुम मुझसे उतना प्यार नहीं करते जितना मैं तुमसे करती हूँ; और फिर भी, अगर तुम मुझसे बहुत कम प्यार करते, तो मुझे कोई शिकायत नहीं होती, बशर्ते तुम अपने ईश्वर से ज़्यादा प्यार करते। मुझे तुम्हें कभी भी अपनी भक्ति में इतना मग्न देखकर खुशी होगी कि तुम्हारे मन में मेरे लिए एक भी विचार न हो। लेकिन, वास्तव में, मुझे इस बदलाव से कुछ भी नुकसान नहीं होगा, क्योंकि जितना अधिक तुम अपने ईश्वर से प्यार करोगे, उतना ही गहरा, पवित्र और सच्चा तुम्हारा प्यार मेरे लिए होगा।'

इस पर वह केवल हँसे और मेरा हाथ चूमते हुए मुझे एक प्यारी उत्साही कहा। फिर अपनी टोपी उतारते हुए उन्होंने कहा, 'लेकिन देखो हेलेन - इस तरह के सिर के साथ एक आदमी क्या कर सकता है?'

सिर देखने में तो ठीक लग रहा था, लेकिन जब उसने मेरा हाथ उसके ऊपर रखा, तो वह घुंघराले बालों के बीच में धंस गया, काफी चिंताजनक रूप से नीचे, खासकर

बीच में।

'देखिए, मुझे संत बनने के लिए नहीं बनाया गया था,' उसने हंसते हुए कहा। 'अगर भगवान चाहते कि मैं धार्मिक बनूं, तो उन्होंने मुझे पूजा-अर्चना का उचित अंग क्यों नहीं दिया?'

मैंने उत्तर दिया, 'तुम उस सेवक के समान हो, जिसने अपनी एकमात्र प्रतिभा को स्वामी की सेवा में लगाने के बजाय, उसे बिना सुधारे ही लौटा दिया, और बहाना बनाते हुए कहा कि वह स्वामी को "कठोर व्यक्ति जानता है, जो बिना मेहनत किए फसल काटता है और बिना कुछ किए फसल इकट्ठा करता है।" जिसे कम दिया जाता है, उससे कम ही अपेक्षा की जाती है, परन्तु हम सभी से अपने सर्वोत्तम प्रयास की अपेक्षा की जाती है। यदि तुम चाहो तो तुममें श्रद्धा, विश्वास, आशा, विवेक, तर्क और एक ईसाई चरित्र के लिए आवश्यक सभी गुण मौजूद हैं; परन्तु हमारी सभी प्रतिभाएँ उपयोग से बढ़ती हैं, और हर क्षमता, चाहे अच्छी हो या बुरी, अभ्यास से मजबूत होती है: इसलिए, यदि तुम बुरी या बुराई की ओर ले जाने वाली क्षमताओं का उपयोग तब तक करते हो जब तक वे तुम्हारे स्वामी न बन जाएँ, और अच्छी क्षमताओं की उपेक्षा करते हो जब तक वे क्षीण न हो जाएँ, तो इसके लिए तुम स्वयं ही दोषी हो।' लेकिन आर्थर, आपमें प्रतिभा है—दिल, दिमाग और स्वभाव की ऐसी स्वाभाविक खूबियाँ हैं, जिन्हें कई अच्छे ईसाई पाना चाहेंगे, बशर्ते आप उन्हें ईश्वर की सेवा में लगाएं। मैं आपसे कभी भी एक सच्चे भक्त बनने की उम्मीद नहीं करता, लेकिन एक खुशमिजाज और हंसमुख इंसान बने रहना बिल्कुल संभव है।

हेलेन, तुम तो मानो भविष्यवक्ता हो, और तुम्हारी हर बात निर्विवाद रूप से सच है; लेकिन मेरी बात सुनो: मुझे भूख लगी है, और मेरे सामने एक बढ़िया, पौष्टिक भोजन रखा है; मुझे बताया गया है कि अगर मैं आज इसे नहीं खाऊँगी तो कल मुझे तरह-तरह के स्वादिष्ट पकवानों से भरा एक भव्य भोज मिलेगा। अब, पहली बात तो यह है कि मुझे कल तक इंतज़ार करने में हिचकिचाहट हो रही है, जबकि मेरे सामने ही भूख मिटाने के साधन मौजूद हैं; दूसरी बात, आज का पौष्टिक भोजन मुझे उन स्वादिष्ट पकवानों से कहीं ज़्यादा पसंद है जिनका वादा किया गया है; तीसरी बात, मुझे कल का भोज दिखाई नहीं दे रहा है, और मैं कैसे कहूँ कि यह सब उस चिकने चेहरे वाले आदमी की मनगढ़ंत कहानी नहीं है जो मुझे इसलिए खाने से मना कर रहा है ताकि वह सारा अच्छा खाना खुद खा सके? चौथे स्थान पर, यह मेज किसी न किसी के लिए

तो सजाई ही जाएगी, और जैसा कि सुलेमान कहते हैं, "मुझसे ज्यादा कौन खा सकता है, या कौन जल्दी कर सकता है?" और अंत में, आपकी अनुमति से, मैं बैठूंगा और आज की अपनी इच्छाओं को पूरा करूंगा, और कल की चिंता छोड़ दूंगा - कौन जानता है कि मुझे यह और वह दोनों ही मिल जाएं?'

लेकिन आज के पौष्टिक भोजन से परहेज़ करना आपके लिए अनिवार्य नहीं है: आपको केवल इन कम पौष्टिक भोजन का सेवन संयम से करने की सलाह दी जाती है ताकि आप कल के उत्तम भोज का आनंद लेने से वंचित न रह जाएँ। यदि आप इस सलाह की अवहेलना करते हुए आज ही अत्यधिक भोजन और शराब का सेवन करके अपने आप को पशुवत बना लेते हैं, और इस प्रकार अच्छे भोजन को विष में परिवर्तित कर देते हैं, तो इसमें किसकी गलती होगी यदि बाद में, जब आप कल के अत्यधिक भोजन और शराबखोरी के कष्ट भोग रहे हों, तो आप अधिक संयमी लोगों को उस शानदार भोज का आनंद लेते हुए देखें जिसका स्वाद आप नहीं ले पा रहे हैं?

'बिल्कुल सही, मेरे संरक्षक संत; लेकिन फिर, हमारे मित्र सुलेमान कहते हैं, "मनुष्य के लिए खाने-पीने और आनंद मनाने से बेहतर कुछ नहीं है।"'

'और फिर,' मैंने उत्तर दिया, 'वह कहता है, "हे जवान, अपनी जवानी में आनंदित हो; और अपने मन के मार्ग पर और अपनी आँखों के सामने चलो; परन्तु यह जान लो कि इन सब बातों के लिए परमेश्वर तुम्हारा न्याय करेगा।"'

"अच्छा, लेकिन हेलेन, मुझे यकीन है कि पिछले कुछ हफ्तों में मैं बहुत अच्छा रहा हूँ। आपको मुझमें क्या कमी दिखी, और आप मुझसे क्या करवाना चाहती हैं?"

'आर्थर, मैं तुमसे ज्यादा कुछ नहीं चाहता: तुम्हारे काम अब तक तो ठीक हैं; लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी सोच बदले; मैं चाहता हूँ कि तुम प्रलोभन से खुद को बचाओ, और बुराई को अच्छाई और अच्छाई को बुरा न कहो; मैं चाहता हूँ कि तुम और गहराई से सोचो, और आगे देखो, और अपने लक्ष्य से भी ऊँचा लक्ष्य रखो।'

अध्याय 24

25 मार्च — आर्थर ऊब रहा है — मुझे उम्मीद है कि मुझसे नहीं, बल्कि अपने आलसी, शांत जीवन से — और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि उसके पास मनोरंजन के बहुत कम साधन हैं: वह अखबारों और खेल पत्रिकाओं के अलावा कुछ नहीं पढ़ता; और जब वह मुझे किताब में व्यस्त देखता है, तो मुझे तब तक चैन नहीं लेने देता जब तक मैं उसे बंद न कर दूं। अच्छे मौसम में वह आमतौर पर समय अच्छे से बिता लेता है, लेकिन बारिश के दिनों में, जो कि हाल ही में काफी हुए हैं, उसकी उदासी देखना बहुत कष्टदायक होता है। मैं उसे खुश करने के लिए हर संभव प्रयास करती हूं, लेकिन उसे उन विषयों में रुचि दिलाना असंभव है जिनके बारे में मैं सबसे ज्यादा बात करना पसंद करती हूं, जबकि दूसरी ओर, उसे उन चीजों के बारे में बात करना पसंद है जिनमें मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है — या जो मुझे परेशान भी करती हैं — और ये चीजें उसे सबसे ज्यादा पसंद आती हैं: क्योंकि उसका पसंदीदा मनोरंजन सोफे पर मेरे बगल में बैठकर या लेटकर मुझे अपने पुराने प्रेम प्रसंगों की कहानियां सुनाना है, जो हमेशा किसी विश्वास करने वाली लड़की के बर्बाद होने या किसी भोले-भाले पति के धोखे पर आधारित होती हैं; और जब मैं अपनी घृणा और आक्रोश व्यक्त करती हूँ, तो वह इसे ईर्ष्या का आरोप लगाता है और तब तक हँसता है जब तक उसकी आँखों से आँसू न बहने लगें। पहले तो मैं आवेश में आ जाती थी या रोने लगती थी, लेकिन यह देखकर कि मेरी क्रोध और बेचैनी के अनुपात में उसकी खुशी बढ़ती जाती थी, मैंने तब से अपनी भावनाओं को दबाने और उसकी बातों को शांत तिरस्कार के साथ सुनने का प्रयास किया है; लेकिन फिर भी वह मेरे चेहरे पर आंतरिक संघर्ष को पढ़ लेता है और अपनी अयोग्यता के कारण मेरे मन की कड़वाहट को घायल ईर्ष्या की पीड़ा समझ लेता है; और जब वह इससे अपना ध्यान भटका लेता है, या उसे डर लगता है कि मेरी नाराजगी उसके लिए असहनीय हो जाएगी, तो वह मुझे चूमकर और शांत करके फिर से मुस्कुराने की कोशिश करता है - उसके स्पर्श तब इतने अप्रिय लगते थे! यह मेरे प्रति और उसके पूर्व प्रेम के शिकार लोगों के प्रति प्रदर्शित दोहरा स्वार्थ है। कई बार, एक पल के लिए तीव्र पीड़ा के साथ—घोर निराशा की एक लहर के साथ, मैं स्वयं से पूछती हूँ, ‘हेलेन, तुमने क्या कर दिया?’ लेकिन मैं भीतर के उस प्रश्नकर्ता को फटकारती हूँ, और अपने ऊपर उमड़ने वाले उन अवांछित

विचारों को दूर भगाती हूँ; क्योंकि यदि वह दस गुना अधिक कामुक और अच्छे एवं उच्च विचारों से अप्रभावित भी होता, तो भी मैं भली-भांति जानती हूँ कि मुझे शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है। और मैं शिकायत नहीं करती और न ही करूँगी। मैं उससे अब भी प्रेम करती हूँ और करती रहूँगी; और मुझे इस बात का कोई पछतावा नहीं है और न ही होगा कि मैंने अपना भाग्य उससे जोड़ लिया है।

4 अप्रैल। — हमारा जमकर झगड़ा हुआ। विवरण इस प्रकार है: आर्थर ने मुझे अलग-अलग समय पर लेडी एफ के साथ अपने षड्यंत्र की पूरी कहानी सुनाई, जिस पर मुझे पहले विश्वास नहीं हुआ था। हालांकि, यह जानकर कुछ राहत मिली कि इस मामले में लेडी उससे ज़्यादा दोषी थी, क्योंकि उस समय वह बहुत छोटा था, और अगर उसकी बातें सच हैं तो लेडी ने ही पहले पहल की थी। मुझे उससे नफरत हो गई, क्योंकि ऐसा लग रहा था मानो उसी ने उसके भ्रष्ट होने में मुख्य भूमिका निभाई हो; और जब वह पिछले दिन उसके बारे में बात करने लगा, तो मैंने उससे विनती की कि वह उसका नाम न ले, क्योंकि मुझे उसका नाम सुनना भी पसंद नहीं था।

'ध्यान रहे, आर्थर, यह इसलिए नहीं कि तुम उससे प्यार करते थे, बल्कि इसलिए कि उसने तुम्हें चोट पहुंचाई और अपने पति को धोखा दिया, और वह कुल मिलाकर एक बहुत ही घृणित महिला थी, जिसका नाम लेने में तुम्हें शर्म आनी चाहिए।'

लेकिन उसने उसका बचाव करते हुए कहा कि उसका एक बूढ़ा पति है जो उससे बहुत प्यार करता है, और उससे प्यार करना असंभव है।

मैंने कहा, 'तो फिर उसने उससे शादी क्यों की?'

जवाब मिला, 'उसके पैसों के लिए।'

'तो वह एक और अपराध था, और उससे प्रेम करने और उसका सम्मान करने का उसका गंभीर वादा एक और अपराध था, जिसने पिछले अपराध की भयावहता को और बढ़ा दिया।'

'आप उस बेचारी महिला पर बहुत कठोर हो रहे हैं,' वह हँसते हुए बोला। 'पर कोई बात नहीं, हेलेन, मुझे अब उसकी परवाह नहीं है; और मैंने उनमें से किसी से भी उतना प्यार नहीं किया जितना तुमसे करता हूँ, इसलिए तुम्हें उनके जैसे त्यागे जाने से डरने की ज़रूरत नहीं है।'

'अगर तुमने मुझे ये बातें पहले बताई होतीं, आर्थर, तो मैं तुम्हें कभी मौका ही नहीं देता।'

‘क्या तुम नहीं चाहोगी, मेरी जान?’

'बिल्कुल नहीं!'

वह अविश्वास से हँस पड़ा।

‘काश मैं अभी आपको इस बात के लिए मना पाती!’ मैं उसके बगल से उठते हुए चिल्लाई: और अपने जीवन में पहली बार, और मुझे उम्मीद है कि आखिरी बार, मुझे लगा कि काश मैंने उससे शादी न की होती।

‘हेलेन,’ उसने और भी गंभीर स्वर में कहा, ‘क्या तुम जानती हो कि अगर मैं अब तुम्हारी बात मान लेता तो मुझे बहुत गुस्सा आता? लेकिन शुक्र है कि मुझे गुस्सा नहीं आता। हालांकि तुम वहां सफेद चेहरे और चमकती आंखों के साथ खड़ी हो, मुझे शेरनी की तरह देख रही हो, मैं तुम्हारे दिल की बात शायद तुमसे थोड़ा बेहतर जानता हूं।’

बिना कुछ कहे मैं कमरे से बाहर निकल गया और खुद को अपने कमरे में बंद कर लिया। लगभग आधे घंटे बाद वह दरवाजे पर आया, पहले उसने हैंडल को आजमाया, फिर उसने दरवाजा खटखटाया।

‘हेलेन, क्या तुम मुझे अंदर नहीं आने दोगी?’ उसने कहा। ‘नहीं; तुमने मुझे नाराज़ कर दिया है,’ मैंने जवाब दिया, ‘और मैं सुबह तक तुम्हारा चेहरा या तुम्हारी आवाज़ दोबारा नहीं देखना चाहती।’

वह एक पल के लिए रुका, मानो अवाक हो गया हो या समझ न पा रहा हो कि ऐसी बात का जवाब कैसे दे, फिर मुड़कर चला गया। यह खाना खाने के एक घंटे बाद की बात थी: मैं जानती थी कि उसे पूरी शाम अकेले बैठे रहना बहुत उबाऊ लगेगा; और इससे मेरी नाराज़गी कुछ हद तक कम हो गई, हालाँकि मैं नरम नहीं पड़ी। मैंने ठान लिया था कि मैं उसे दिखाऊँगी कि मेरा दिल उसका गुलाम नहीं है, और अगर मैं चाहूँ तो उसके बिना भी रह सकती हूँ; और मैं बैठ गई और अपनी चाची को एक लंबा पत्र लिखा, जिसमें मैंने उन्हें इस सब के बारे में कुछ नहीं बताया। दस बजे के कुछ देर बाद मैंने उसे फिर से आते सुना, लेकिन वह मेरे दरवाजे से आगे निकल गया और सीधे अपने ड्रेसिंग रूम में चला गया, जहाँ उसने रात के लिए खुद को बंद कर लिया।

मैं यह देखने के लिए काफी उत्सुक था कि वह सुबह मुझसे कैसे मिलेगा, और उसे लापरवाही भरी मुस्कान के साथ नाश्ते के कमरे में प्रवेश करते देखकर मुझे थोड़ी निराशा भी हुई।

‘हेलेन, क्या तुम अब भी नाराज़ हो?’ उसने मुझे नमस्कार करते हुए पास आते हुए कहा। मैंने ठंडेपन से मेज की ओर मुड़कर कॉफी परोसनी शुरू कर दी, और देखा कि वह काफी देर से आया था।

उसने धीमी सी सीटी बजाई और खिड़की की ओर चला गया, जहाँ वह कुछ मिनटों तक उदास भूरे बादलों, बरसती बारिश, भीगी हुई घास और टपकते पत्तों वाले पेड़ों के मनमोहक दृश्य को देखता रहा और मौसम को कोसता रहा, फिर नाश्ता करने बैठ गया। कॉफी पीते हुए उसने बुदबुदाया कि 'बहुत ठंड है।'

मैंने कहा, 'तुम्हें इतना लंबा इंतजार नहीं करना चाहिए था।'

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया और खाना खामोशी में खत्म हो गया। जब चिट्ठियों का थैला लाया गया तो हम दोनों को राहत मिली। उसमें एक अखबार और उनके लिए एक-दो चिट्ठियाँ थीं, और मेरे लिए भी दो चिट्ठियाँ थीं, जिन्हें उन्होंने बिना कुछ कहे मेज पर फेंक दिया। एक मेरे भाई की थी, दूसरी मिलिसेंट हार्ग्रेव की, जो इस समय अपनी माँ के साथ लंदन में हैं। मुझे लगता है कि उनकी चिट्ठियाँ व्यापारिक थीं, और जाहिर तौर पर उन्हें उनमें कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, क्योंकि उन्होंने उन्हें कुछ अपशब्द बुदबुदाते हुए अपनी जेब में रख लिया, जिसके लिए मैं उन्हें किसी और समय पर डांटता। अखबार उन्होंने अपने सामने रखा और नाश्ते के बाकी समय और उसके बाद भी काफी देर तक उसमें डूबे रहने का नाटक करते रहे।

मेरे पत्रों को पढ़ना और उनका उत्तर देना, तथा घर के कामों को निपटाना, इन सबने मुझे सुबह का भरपूर समय दिया: दोपहर के भोजन के बाद मैं चित्रकारी करती थी, और रात के खाने से लेकर सोने तक पढ़ती रहती थी। वहीं, बेचारा आर्थर अपना मनोरंजन करने या समय बिताने के लिए कुछ न कुछ ढूंढता रहता था। वह मेरी तरह ही व्यस्त और बेफिक्र दिखना चाहता था। अगर मौसम ठीक होता, तो वह नाश्ते के तुरंत बाद अपने घोड़े को बुलाकर किसी दूर देश के लिए निकल पड़ता और रात तक वापस नहीं आता। अगर आस-पास पंद्रह से पैंतालीस साल की कोई महिला होती, तो वह बदला लेने की कोशिश करता और उससे छेड़छाड़ करने का प्रयास करता; लेकिन मेरी निजी संतुष्टि के लिए, इन दोनों मनोरंजन के साधनों से पूरी तरह वंचित होने के कारण, उसकी पीड़ा सचमुच दयनीय थी। जब वह अपने कागज़ पर जम्हाई लेते हुए और अपने छोटे पत्रों के संक्षिप्त उत्तर लिखते-लिखते थक गया, तो उसने बाकी की सुबह और पूरी दोपहर एक कमरे से दूसरे कमरे में बेचैनी से घूमते हुए, बादलों को

देखते हुए, बारिश को कोसते हुए, अपने कुत्तों को बारी-बारी से सहलाते, छेड़ते और डांटते हुए, कभी सोफे पर बैठकर कोई किताब पढ़ते हुए बिताई, जिसे पढ़ने के लिए वह खुद को मजबूर नहीं कर पा रहा था, और अक्सर मुझे घूरता रहता जब उसे लगता कि मैं उसे नहीं देख रही हूँ, इस व्यर्थ उम्मीद में कि शायद मेरे चेहरे पर आँसुओं के कुछ निशान या पछतावे की पीड़ा के कुछ संकेत मिल जाएँ। लेकिन मैं पूरे दिन गंभीर शांति बनाए रखने में कामयाब रही। मैं वास्तव में क्रोधित नहीं थी: मुझे हर समय उसके लिए दुख होता था, और मैं सुलह करना चाहती थी; लेकिन मैंने ठान लिया था कि उसे ही पहल करनी चाहिए, या कम से कम पहले विनम्रता और पश्चाताप के कुछ संकेत दिखाने चाहिए; क्योंकि, अगर मैंने शुरुआत की, तो इससे केवल उसका अहंकार बढ़ेगा, उसका घमंड बढ़ेगा, और वह सबक पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा जो मैं उसे सिखाना चाहती थी।

रात के खाने के बाद वह भोजन कक्ष में काफी देर तक रुका रहा, और मुझे लगता है कि उसने कुछ ज़्यादा ही शराब पी ली थी, लेकिन इतनी नहीं कि उसकी ज़बान खुल जाए: क्योंकि जब वह अंदर आया और मुझे चुपचाप अपनी किताब में डूबा हुआ पाया, इतना व्यस्त कि उसके आने पर मैंने सिर भी नहीं उठाया, तो उसने बस दबी हुई नाराज़गी का भाव बुदबुदाया, और दरवाज़ा ज़ोर से बंद करके सोफे पर लेट गया और सोने की कोशिश करने लगा। लेकिन उसका पसंदीदा कुतिया, डैश, जो मेरे पैरों के पास लेटा हुआ था, उस पर कूद पड़ा और उसका चेहरा चाटने लगा। उसने उसे ज़ोर से झटका दिया, और बेचारा कुत्ता चीखा और डरकर मेरे पास वापस भाग आया। जब वह लगभग आधे घंटे बाद जागा, तो उसने उसे फिर से बुलाया, लेकिन डैश बस शर्मिंदा सा दिख रहा था और अपनी पूंछ हिला रहा था। उसने फिर से तेज़ आवाज़ में बुलाया, लेकिन डैश बस मुझसे और चिपक गया, और मेरा हाथ चाटने लगा, मानो सुरक्षा की भीख मांग रहा हो। इससे क्रोधित होकर उसके मालिक ने एक भारी किताब उठाई और उसके सिर पर फेंक दी। बेचारा कुत्ता दर्द भरी चीखें निकालते हुए दरवाजे की ओर भागा। मैंने उसे बाहर जाने दिया और फिर चुपचाप किताब उठा ली।

'मुझे वह किताब दे दो,' आर्थर ने कुछ असभ्य लहजे में कहा। मैंने उसे वह किताब दे दी।

उसने पूछा, 'तुमने कुत्ते को बाहर क्यों जाने दिया? तुम्हें पता था कि मैं उसे चाहता था।'

‘किस आधार पर?’ मैंने उत्तर दिया; ‘क्या आपने उस पर किताब फेंककर ऐसा किया? लेकिन शायद वह मेरे लिए ही थी?’

'नहीं; लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें इसका थोड़ा सा अनुभव हो गया है,' उसने मेरे हाथ की ओर देखते हुए कहा, जिस पर भी चोट लगी थी और काफी गंभीर खरोंचें थीं।

मैं फिर से पढ़ने लगा, और उसने भी उसी तरह पढ़ने की कोशिश की; लेकिन थोड़ी देर बाद, कई बार उबासी लेने के बाद, उसने अपनी किताब को 'बकवास' कहा और उसे मेज पर फेंक दिया। फिर आठ-दस मिनट तक सन्नाटा छाया रहा, जिसके अधिकांश समय तक, मेरा मानना है, वह मुझे घूरता रहा। आखिरकार उसका धैर्य टूट गया।

‘हेलेन, वह किताब क्या है?’ उसने हैरानी से कहा।

मैंने उससे कहा।

क्या यह दिलचस्प है?

'हाँ बहुत है।'

मैं पढ़ती रही, या कम से कम पढ़ने का नाटक करती रही—मैं यह नहीं कह सकती कि मेरी आँखों और दिमाग के बीच कोई खास तालमेल था; क्योंकि जहाँ एक ओर मेरी आँखें पन्नों पर दौड़ रही थीं, वहीं मेरा दिमाग बेसब्री से सोच रहा था कि आर्थर अगली बार कब बोलेगा, क्या बोलेगा और मुझे क्या जवाब देना चाहिए। लेकिन जब तक मैं चाय बनाने के लिए नहीं उठी, तब तक वह दोबारा नहीं बोला, और तब भी उसने बस इतना कहा कि वह चाय न पिए। वह सोफे पर आराम से लेटा रहा, बारी-बारी से अपनी आँखें बंद करता, अपनी घड़ी देखता और फिर मुझे देखता रहा, सोने के समय तक। फिर मैं उठी, अपनी मोमबत्ती ली और सोने चली गई।

जैसे ही मैं कमरे से बाहर निकली, उसने पुकारा, 'हेलेन!' मैं वापस मुड़ी और उसके आदेशों की प्रतीक्षा करने लगी।

‘आर्थर, तुम क्या चाहते हो?’ मैंने आखिरकार कहा।

‘कुछ नहीं,’ उसने उत्तर दिया। ‘जाओ!’

मैं चली गई, लेकिन दरवाजा बंद करते समय उसे कुछ बुदबुदाते हुए सुनकर मैं वापस मुड़ गई। उसकी आवाज़ 'बेशर्म कुतिया' जैसी लग रही थी, लेकिन मैं चाहती थी कि वह कुछ और ही हो।

‘क्या आप बोल रहे थे, आर्थर?’ मैंने पूछा।

‘नहीं,’ यह जवाब मिला और मैंने दरवाजा बंद कर दिया और वहां से चला गया। अगली सुबह नाश्ते के समय तक मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा, जब वह अपने तय समय से पूरे एक घंटे बाद नीचे आया।

'आप बहुत देर से आए हैं,' यह मेरी सुबह की पहली शुभकामना थी।

‘तुम्हें मेरा इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं थी,’ उसने कहा; और वह फिर से खिड़की के पास चला गया। मौसम बिल्कुल कल जैसा ही था।

‘अरे, ये लानत बारिश!’ उसने बुदबुदाया। लेकिन एक-दो मिनट तक ध्यान से देखने के बाद, उसे अचानक एक बढ़िया विचार आया और वह बोला, ‘लेकिन मुझे पता है मैं क्या करूँगा!’ और फिर वापस आकर मेज़ पर बैठ गया। चिट्ठियों से भरा थैला पहले से ही वहाँ रखा था, खुलने का इंतज़ार कर रहा था। उसने उसे खोला और अंदर रखी चीज़ों को देखा, लेकिन उनके बारे में कुछ नहीं कहा।

मैंने पूछा, 'क्या मेरे लिए कुछ है?'

'नहीं।'

उसने अखबार खोला और पढ़ना शुरू कर दिया।

मैंने सुझाव दिया, 'बेहतर होगा कि आप अपनी कॉफी ले लें; नहीं तो वह फिर से ठंडी हो जाएगी।'

उसने कहा, 'अगर तुम्हारा काम हो गया है तो तुम जा सकते हो; मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है।'

मैं उठा और अगले कमरे में चला गया, यह सोचकर कि क्या आज भी कल की तरह ही दुख भरा दिन होगा, और इन आपसी पीड़ाओं के अंत की दिली कामना कर रहा था। थोड़ी देर बाद मैंने उसे घंटी बजाते और अपने कपड़ों के बारे में कुछ आदेश देते सुना, जो किसी लंबी यात्रा की तैयारी जैसा लग रहा था। फिर उसने कोचवान को बुलवाया, और मैंने गाड़ी, घोड़ों, लंदन और कल सुबह सात बजे के बारे में कुछ सुना, जिससे मैं चौंक गया और काफी परेशान हो गया।

मैंने मन ही मन कहा, ‘चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे उसे लंदन नहीं जाने देना चाहिए; वह हर तरह की मुसीबत में फँस जाएगा और मैं ही उसका कारण बनूँगा। लेकिन सवाल यह है कि मैं उसका इरादा कैसे बदलूँ? ठीक है, मैं कुछ देर इंतजार करूँगा और देखूँगा कि क्या वह इस बारे में कुछ कहता है।’

मैं घंटों तक बड़ी बेसब्री से इंतज़ार करता रहा; लेकिन उस विषय पर या किसी

और विषय पर मुझसे एक शब्द भी नहीं बोला गया। वह सीटी बजाता रहा, अपने कुत्तों से बातें करता रहा और पिछले दिन की तरह ही एक कमरे से दूसरे कमरे में घूमता रहा। आखिरकार मुझे लगा कि मुझे खुद ही इस विषय को उठाना चाहिए और मैं सोच रहा था कि इसे कैसे शुरू करूं, तभी अनजाने में जॉन ने कोचवान का यह संदेश देकर मेरी मदद की:

"कृपया महोदय, रिचर्ड का कहना है कि एक घोड़े को बहुत तेज जुकाम हो गया है, और उनका मानना है, महोदय, यदि आप कल के बजाय परसों आने की व्यवस्था कर सकें, तो वह आज ही उसका इलाज करवा सकते हैं, ताकि—"

'उसकी धृष्टता पर धिक्कार है!' गुरु ने बीच में ही कहा।

'कृपया, महोदय, उनका कहना है कि अगर आप ऐसा कर सकें तो बहुत अच्छा होगा,' जॉन ने ज़िद करते हुए कहा, 'क्योंकि उन्हें उम्मीद है कि मौसम में जल्द ही बदलाव आएगा, और उनका कहना है कि ऐसा होने की संभावना नहीं है, जब घोड़ा इतनी बुरी तरह से सर्दी से पीड़ित है, और उसे दवाइयाँ भी दी जा चुकी हैं—'

'घोड़े को शैतान ले जाए!' सज्जन चिल्लाए। 'ठीक है, उसे बता देना कि मैं इस बारे में सोचूंगा,' उन्होंने कुछ देर सोचने के बाद कहा। नौकर के जाते ही उन्होंने मेरी ओर एक तीखी नज़र डाली, मानो मुझे गहरी हैरानी या घबराहट का कोई संकेत दिख रहा हो; लेकिन पहले से तैयार होने के कारण मैंने अपने चेहरे पर एक शांत भाव बनाए रखा। मेरी स्थिर निगाहों से मिलते ही उनका चेहरा उतर गया, और वे स्पष्ट निराशा में मुँह फेरकर चूल्हे के पास चले गए, जहाँ वे घोर निराशा में डूबे हुए चिमनी के सहारे खड़े हो गए और अपना माथा अपनी बांह पर टिका लिया।

मैंने कहा, 'आर्थर, तुम कहाँ जाना चाहते हो?'

'लंदन के लिए,' उसने गंभीरता से उत्तर दिया।

मैंने पूछा, 'किसलिए?'

क्योंकि मैं यहां खुश नहीं रह सकता।

'क्यों नहीं?'

क्योंकि मेरी पत्नी मुझसे प्यार नहीं करती।

'अगर तुम इसके लायक होते, तो वह तुम्हें पूरे दिल से प्यार करती।'

मुझे इसे पाने के लिए क्या करना होगा?

यह काफी विनम्र और गंभीर प्रतीत हुआ; और मैं दुख और खुशी के बीच इतना

भावुक हो गया था कि मुझे जवाब देने से पहले अपनी आवाज को स्थिर करने के लिए कुछ सेकंड के लिए रुकना पड़ा।

मैंने कहा, 'अगर वह तुम्हें अपना दिल दे दे, तो तुम्हें उसे कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए, उसका सदुपयोग करना चाहिए, उसे टुकड़ों में नहीं तोड़ना चाहिए और उसके चेहरे पर हंसना नहीं चाहिए, क्योंकि वह उसे तुमसे छीन नहीं सकती।'

अब वह मुड़ा और आग की ओर पीठ करके मेरी ओर मुंह करके खड़ा हो गया। उसने कहा, 'तो आओ, हेलेन, क्या तुम अच्छी बच्ची बनोगी?'

यह कुछ ज्यादा ही घमंड भरा लगा, और इसके साथ आई मुस्कान मुझे अच्छी नहीं लगी। इसलिए मैंने जवाब देने में हिचकिचाहट महसूस की। शायद मेरे पहले जवाब में कुछ ज्यादा ही संकेत था: उसने मेरी आवाज लड़खड़ाते हुए सुनी थी, और शायद मुझे आंसू पोंछते हुए भी देखा था।

'क्या तुम मुझे माफ कर दोगी, हेलेन?' उसने अधिक विनम्रता से पूछा।

मैंने उसके पास जाकर और उसके चेहरे पर मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'क्या तुम पश्चाताप कर रहे हो?'

'दिल टूट गया!' उसने उदास चेहरे से जवाब दिया, फिर भी उसकी आँखों और होंठों के कोनों पर एक हल्की सी मुस्कान थी; लेकिन इससे मैं विचलित नहीं हुई और उसकी बाहों में दौड़ पड़ी। उसने मुझे पूरी शिद्दत से गले लगाया, और हालाँकि मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे, मुझे लगता है कि उस पल से ज़्यादा खुशी मुझे अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं हुई थी।

'तो फिर तुम लंदन नहीं जाओगे, आर्थर?' मैंने कहा, जब आंसुओं और चुंबनों का पहला दौर शांत हो गया था।

'नहीं, प्रिय, जब तक तुम मेरे साथ नहीं चलोगी।'

मैंने उत्तर दिया, 'मैं खुशी-खुशी ऐसा करूँगा, अगर आपको लगता है कि यह बदलाव आपको अच्छा लगेगा, और अगर आप यात्रा को अगले सप्ताह तक टाल देंगे।'

उन्होंने तुरंत सहमति दे दी, लेकिन कहा कि ज़्यादा तैयारी की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वे ज़्यादा दिन नहीं रुकेंगे। वे नहीं चाहते थे कि मैं लंदन की संस्कृति में ढल जाऊं और दुनियावी महिलाओं के साथ ज़्यादा मेलजोल से अपनी देहाती ताजगी और मौलिकता खो दूं। मुझे यह बात मूर्खतापूर्ण लगी; लेकिन मैं अब उनका विरोध नहीं

करना चाहती थी: मैंने बस इतना कहा कि मेरी आदतें बहुत घरेलू हैं, जैसा कि वे अच्छी तरह जानते हैं, और मुझे दुनिया से घुलने-मिलने की कोई खास इच्छा नहीं है।

तो हम सोमवार को, यानी परसों, लंदन जा रहे हैं। हमारे झगड़े के खत्म हुए अब चार दिन हो गए हैं, और मुझे यकीन है कि इससे हम दोनों को ही फायदा हुआ है: मुझे आर्थर पहले से कहीं ज्यादा पसंद आने लगा है, और उसका व्यवहार भी मेरे प्रति काफी बेहतर हो गया है। तब से उसने मुझे कभी भी परेशान करने की कोशिश नहीं की, न तो लेडी एफ — का ज़िक्र करके, न ही अपने बीते जीवन की उन अप्रिय यादों को याद करके। काश मैं उन्हें अपनी याददाश्त से मिटा पाती, या फिर उसे भी इन बातों को उसी नज़रिए से देखने के लिए मना पाती, जैसे मैं देखती हूँ। खैर! फिर भी, उसे यह समझाना तो बनता है कि ये बातें वैवाहिक मज़ाक का विषय नहीं हैं। शायद उसे कभी समझ आ जाए। मैं अपनी उम्मीदों पर कोई सीमा नहीं लगाऊंगी; और अपनी चाची की आशंकाओं और अपने अनकहे डर के बावजूद, मुझे विश्वास है कि हम अभी भी खुश रहेंगे।

अध्याय XXV

आठ अप्रैल को हम लंदन गए, आठ मई को मैं आर्थर की इच्छा का पालन करते हुए लौट आई; हालांकि यह मेरी इच्छा के बिल्कुल विपरीत था, क्योंकि मैं उसे पीछे छोड़ आई थी। अगर वह मेरे साथ आया होता, तो मुझे घर वापस आकर बहुत खुशी होती, क्योंकि उसने मुझे वहाँ रहते हुए इतनी अय्याशी में उलझा दिया था कि इतने कम समय में ही मैं पूरी तरह थक गई थी। ऐसा लगता था कि वह मुझे हर संभव अवसर पर, विशेष रूप से अपने मित्रों और परिचितों के सामने, और आम जनता के सामने, अधिकतम लाभ के लिए प्रदर्शित करने पर तुला हुआ था। यह जानकर अच्छा लगा कि वह मुझे गर्व का पात्र मानता था; लेकिन इस संतुष्टि के लिए मुझे भारी कीमत

चुकानी पड़ी: क्योंकि, सबसे पहले, उसे खुश करने के लिए मुझे अपनी प्रिय पसंदों, अपने लगभग स्थापित सिद्धांतों का उल्लंघन करना पड़ा और सादे, गहरे, संयमित पहनावे को अपनाना पड़ा - मुझे महंगे गहनों से जगमगाना पड़ा और खुद को एक रंगी हुई तितली की तरह सजाना पड़ा, जैसा कि मैंने बहुत पहले ही तय कर लिया था कि मैं कभी नहीं करूंगी - और यह कोई मामूली बलिदान नहीं था; दूसरे, मैं लगातार उनकी आशावादी अपेक्षाओं को पूरा करने और अपने सामान्य आचरण और व्यवहार से उनकी पसंद का सम्मान करने का प्रयास कर रही थी, और किसी अप्रिय दुर्व्यवहार या समाज के रीति-रिवाजों के बारे में अनुभवहीनता के कारण उन्हें निराश करने से डर रही थी, खासकर जब मैं मेज़बान की भूमिका निभाती थी, जो मुझे अक्सर निभानी पड़ती थी; और तीसरे, जैसा कि मैंने पहले बताया, मैं भीड़-भाड़, भागदौड़ और निरंतर बदलाव से ऊब चुकी थी, क्योंकि यह जीवन मेरी पिछली सभी आदतों से बिल्कुल अलग था। अंततः, उन्हें अचानक पता चला कि लंदन की हवा मुझे रास नहीं आ रही है, और मैं अपने गाँव के घर के लिए तड़प रही थी, और मुझे तुरंत ग्रासडेल लौटना पड़ा।

मैंने हंसते हुए उन्हें आश्वस्त किया कि मामला उतना ज़रूरी नहीं है जितना उन्हें लग रहा है, लेकिन अगर वे घर जाना चाहें तो मैं भी जाने को तैयार हूँ। उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें एक-दो सप्ताह और रुकना पड़ेगा, क्योंकि उनका कुछ ज़रूरी काम है।

'तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा,' मैंने कहा।

‘लेकिन मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता, हेलेन,’ उसने जवाब दिया: ‘जब तक तुम यहाँ रहोगी, मैं तुम्हारी देखभाल करूंगा और अपने काम की उपेक्षा करूंगा।’

‘लेकिन मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगा,’ मैंने जवाब दिया; ‘अब जबकि मुझे पता है कि तुम्हें कुछ काम निपटाने हैं, मैं तुमसे यही कहूँगा कि तुम अपना काम निपटाओ और मुझे अकेला छोड़ दो; और सच कहूँ तो, मुझे थोड़ा आराम मिल जाए तो अच्छा होगा। मैं पार्क में हमेशा की तरह घुड़सवारी और सैर कर सकता हूँ; और तुम्हारा काम तुम्हारा सारा समय नहीं ले सकता: मैं तुमसे खाने के समय और कम से कम शाम को तो मिल ही लूँगा, और यह तुमसे मीलों दूर रहकर कभी न मिलने से बेहतर होगा।’

लेकिन, मेरी प्रियतमा, मैं तुम्हें यहाँ नहीं रहने दे सकता। मैं अपने मामलों को कैसे सुलझा सकता हूँ जब मुझे पता है कि तुम यहाँ उपेक्षित पड़ी हो?

‘मैं उपेक्षित महसूस नहीं करूंगी: जब तक तुम अपना कर्तव्य निभा रहे हो, आर्थर, मैं कभी भी उपेक्षा की शिकायत नहीं करूंगी। अगर तुमने मुझे पहले ही बता दिया होता कि तुम्हें कुछ काम है, तो वह आधा काम अब तक हो चुका होता; और अब तुम्हें दुगने परिश्रम से बीते समय की भरपाई करनी होगी। मुझे बताओ कि क्या काम है; और मैं तुम्हारे लिए बाधा बनने के बजाय तुम्हारा नेतृत्व करूंगी।’

‘नहीं, नहीं,’ उस अव्यावहारिक प्राणी ने ज़िद करते हुए कहा; ‘हेलेन, तुम्हें घर जाना ही होगा; मुझे यह जानकर तसल्ली होनी चाहिए कि तुम दूर होने के बावजूद सुरक्षित और स्वस्थ हो। तुम्हारी चमकीली आँखें मुरझा गई हैं, और तुम्हारे गालों की वह कोमल, नाजुक रौनक पूरी तरह से गायब हो गई है।’

'ऐसा केवल अत्यधिक उल्लास और थकान के साथ ही संभव है।'

“ऐसा नहीं है, मैं तुमसे कहती हूँ; यह लंदन की हवा है: तुम अपने गाँव की ताज़ी हवाओं के लिए तरस रही हो, और दो दिन बीतने से पहले ही तुम उन्हें महसूस करोगी। और अपनी स्थिति को याद रखो, प्यारी हेलेन; तुम जानती हो, तुम्हारे स्वास्थ्य पर ही हमारी भावी आशा का स्वास्थ्य, बल्कि जीवन भी निर्भर करता है।”

‘तो क्या आप सचमुच मुझसे छुटकारा पाना चाहते हैं?’

'जी हां, बिल्कुल; और मैं आपको खुद ग्रासडेल ले जाऊंगा और फिर वापस आ जाऊंगा। मैं ज़्यादा से ज़्यादा एक या दो सप्ताह से अधिक अनुपस्थित नहीं रहूंगा।'

लेकिन अगर मुझे जाना ही है, तो मैं अकेला जाऊंगा: अगर आपको रुकना ही है, तो आने-जाने की यात्रा में अपना समय बर्बाद करना अनावश्यक है।

लेकिन उन्हें मुझे अकेले भेजने का विचार पसंद नहीं आया।

मैंने जवाब दिया, 'अरे, तुम मुझे कितना असहाय समझते हो कि तुम मुझ पर भरोसा नहीं कर सकते कि मैं अपने ही रथ में, अपने ही नौकर और नौकरानी के साथ सौ मील का सफर तय करूँ? अगर तुम मेरे साथ आओगे तो मैं तुम्हें ज़रूर सुरक्षित रखूँगा। लेकिन बताओ, आर्थर, यह सारा झंझट क्या है; और तुमने इसके बारे में पहले कभी क्यों नहीं बताया?'

उन्होंने कहा, 'मेरे वकील के साथ बस एक छोटा सा काम है' और उन्होंने मुझे अपनी संपत्ति के बारे में कुछ बताया जिसे वे अपनी जायदाद पर लगे कुछ कर्ज़ चुकाने के लिए बेचना चाहते थे; लेकिन या तो उनकी बात थोड़ी उलझी हुई थी, या मेरी समझ कुछ कमज़ोर थी, क्योंकि मुझे यह ठीक से समझ नहीं आया कि मेरे जाने के दो हफ्ते बाद भी वह शहर में कैसे रुके रहेंगे। अब तो मुझे यह और भी कम समझ आ रहा है कि वह एक महीना कैसे रुकेंगे, क्योंकि मुझे उन्हें छोड़े हुए लगभग उतना ही समय हो गया है, और अभी तक उनके लौटने का कोई आसार नहीं है। हर चिट्ठी में वह कुछ दिनों में मेरे पास आने का वादा करते हैं, और हर बार मुझे या खुद को धोखा देते हैं। उनके बहाने अस्पष्ट और अपर्याप्त हैं। मुझे पूरा यकीन है कि वह अपने पुराने साथियों के बीच फिर से मिल गए हैं। ओह, मैंने उन्हें क्यों छोड़ दिया! काश—मैं दिल से चाहती हूँ कि वह लौट आएँ!

29 जून। — अभी तक आर्थर का कोई पत्र नहीं आया; और कई दिनों से मैं व्यर्थ ही उसके पत्र की प्रतीक्षा कर रही हूँ। जब भी उसके पत्र आते हैं, तो वे भले ही मधुर हों, भले ही उन्हें मीठे शब्दों और स्नेहपूर्ण विशेषणों से कहा जा सके — लेकिन बहुत संक्षिप्त होते हैं, और तुच्छ बहाने और ऐसे वादे से भरे होते हैं जिन पर मैं भरोसा नहीं कर सकती; फिर भी मैं कितनी बेसब्री से उनका इंतज़ार करती हूँ! मैं कितनी उत्सुकता से उसके उन तीन-चार लंबे पत्रों के जवाब खोलती हूँ, जिनका उसने अभी तक कोई उत्तर नहीं दिया है!

ओह, मुझे इतने लंबे समय तक अकेला छोड़ना कितना अत्याचार है! वह जानता है कि मेरे पास राहेल के सिवा बात करने वाला कोई नहीं है, क्योंकि यहाँ हमारे कोई पड़ोसी नहीं हैं, सिवाय हरग्रेव्स के, जिनका घर मुझे घाटी के उस पार उन नीची, जंगली पहाड़ियों के बीच बनी इन ऊपरी खिड़कियों से धुंधला सा दिखाई देता है। मुझे खुशी हुई जब मुझे पता चला कि मिलिसेंट हमारे इतने करीब है; और उसकी संगति

अब मेरे लिए एक सुकून भरी तसल्ली होती; लेकिन वह अभी भी अपनी माँ के साथ शहर में है; ग्रोव में छोटी एस्थर और उसकी फ्रांसीसी गवर्नेंस के सिवा कोई नहीं है, क्योंकि वाल्टर हमेशा बाहर रहता है। मैंने उस आदर्श पुरुष को लंदन में देखा: वह अपनी माँ और बहन की प्रशंसा के लायक शायद ही लगता था, हालाँकि वह निश्चित रूप से लॉर्ड लोबोरो से अधिक बातूनी और मिलनसार, मिस्टर ग्रिम्सबी से अधिक स्पष्टवादी और उच्च विचारों वाला, और मिस्टर हैटर्सले से अधिक सभ्य और सज्जन प्रतीत होता था, जो आर्थर का एकमात्र दूसरा मित्र था जिसे उसने मुझसे मिलवाना उचित समझा। — ओह, आर्थर, तुम क्यों नहीं आओगे? कम से कम मुझे चिट्ठी क्यों नहीं लिखती? तुमने मेरी सेहत के बारे में बात की थी: तुम मुझसे यहाँ अकेलेपन और रोज़ाना की बेचैनी में तड़पते हुए ताजगी और स्फूर्ति पाने की उम्मीद कैसे कर सकती हो? — अगर तुम वापस आओ और मेरी खूबसूरती पूरी तरह से बर्बाद पाओ तो यही तुम्हारे लिए सही होगा। मैं अपने चाचा-चाची या अपने भाई से मिलने आने की विनती करती, लेकिन मुझे उनके सामने अपने अकेलेपन की शिकायत करना अच्छा नहीं लगता, और सच तो यह है कि अकेलापन मेरे सबसे छोटे दुखों में से एक है। लेकिन वह क्या कर रहा है — ऐसी क्या बात है जो उसे मुझसे दूर रखती है? यही सवाल बार-बार मेरे मन में उठता है, और इससे जुड़े भयानक विचार ही मुझे परेशान करते हैं।

3 जुलाई — मेरे आखिरी कड़वे पत्र का अंततः उन्होंने जवाब दे ही दिया, और वह भी सामान्य से कुछ लंबा; लेकिन फिर भी मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसका क्या मतलब निकालूँ। वह मेरे नवीनतम पत्र में मौजूद कड़वाहट और कटुता के लिए मज़ाकिया अंदाज़ में मेरी आलोचना करते हैं, कहते हैं कि मैं उन असंख्य व्यस्तताओं की कल्पना भी नहीं कर सकती जो उन्हें मुझसे दूर रखती हैं, लेकिन साथ ही यह भी कहते हैं कि इन सबके बावजूद वह अगले सप्ताह के अंत से पहले मुझसे ज़रूर मिलेंगे; हालाँकि उनके जैसे व्यस्त व्यक्ति के लिए उनके लौटने की सही तारीख़ तय करना असंभव है: इस बीच वह मुझे धैर्य रखने के लिए प्रेरित करते हैं, 'जो स्त्री का सर्वोपरि गुण है,' और मुझसे यह कहावत याद रखने को कहते हैं, 'दूर रहने से प्रेम बढ़ता है,' और इस आश्वासन से खुद को दिलासा देने को कहते हैं कि वह जितना अधिक समय दूर रहेंगे, लौटने पर उतना ही अधिक प्रेम करेंगे; और जब तक वह लौटते हैं, वह मुझसे अनुरोध करते हैं कि मैं उन्हें लगातार पत्र लिखती रहूँ, क्योंकि यद्यपि वह कभी-कभी इतने खाली और अक्सर इतने व्यस्त होते हैं कि मेरे पत्रों का तुरंत जवाब नहीं दे

पाते, फिर भी उन्हें रोज़ाना पत्र मिलना अच्छा लगता है; और अगर मैं उसकी कथित उपेक्षा के बदले में लिखना बंद करने की अपनी धमकी को पूरा करता हूँ, तो वह इतना क्रोधित होगा कि मुझे भूलने की पूरी कोशिश करेगा। वह बेचारी मिलिसेंट हार्ग्रेव के बारे में यह जानकारी भी जोड़ता है:

"तुम्हारी छोटी दोस्त मिलिसेंट भी जल्द ही तुम्हारे नक्शे कदम पर चलकर मेरे एक दोस्त के साथ शादी के बंधन में बंध जाएगी। तुम्हें पता है, हैटर्सले ने अभी तक अपनी उस भयानक धमकी को पूरा नहीं किया है कि वह अपनी कीमती जान उस पहली कुंवारी लड़की को दे देगा जो उससे प्यार दिखाएगी; लेकिन वह इस साल के अंत से पहले शादी करने का पक्का इरादा रखता है। "बस," उसने मुझसे कहा, "मुझे कोई ऐसा चाहिए जो मुझे हर बात में अपनी मर्जी चलाने दे – तुम्हारी पत्नी हंटिंगडन जैसी नहीं: वह देखने में तो आकर्षक है, लेकिन ऐसा लगता है जैसे उसकी अपनी मर्जी है और वह कभी-कभी नखरे भी दिखा सकती है" (मैंने मन ही मन सोचा "तुम सही कह रहे हो," लेकिन मैंने कहा नहीं)। "मुझे कोई शांत, नेक इंसान चाहिए जो मुझे जो चाहूँ वो करने दे, जहाँ चाहूँ वहाँ जाने दे, घर पर रहूँ या बाहर रहूँ, बिना किसी डांट-फटकार या शिकायत के; क्योंकि मुझे किसी की दखलअंदाजी पसंद नहीं है।" "अच्छा," मैंने कहा, "अगर आपको पैसों की परवाह नहीं है, तो मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानती हूँ जो आपके लिए एकदम सही रहेगा, और वो हैं हरग्रेव की बहन मिलिसेंट।" उन्होंने तुरंत उनसे मिलने की इच्छा जताई, क्योंकि उन्होंने कहा कि उनके पास खुद भी पर्याप्त धन है, या होना चाहिए था जब उनके पुराने गवर्नर ने राजनीति छोड़ दी थी। तो देखा आपने, हेलेन, मैंने आपके और अपने दोनों दोस्तों के लिए काफी अच्छा इंतजाम कर लिया है।

बेचारी मिलिसेंट! लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह कभी ऐसे दूल्हे को स्वीकार करेगी - जो सम्मान और प्रेम के योग्य पुरुष के बारे में उसकी सभी धारणाओं के बिल्कुल विपरीत है।

5वां — अफसोस! मैं गलत था। मुझे आज सुबह उससे एक लंबा पत्र मिला है, जिसमें उसने बताया है कि उसकी सगाई हो चुकी है और उसे उम्मीद है कि महीने के अंत से पहले उसकी शादी हो जाएगी।

'मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसके बारे में क्या कहूँ,' वह लिखती हैं, 'या क्या सोचूँ। सच कहूँ तो, हेलेन, मुझे इसके बारे में सोचना भी अच्छा नहीं लगता। अगर मुझे

मिस्टर हैटर्सले की पत्नी बनना है, तो मुझे उनसे प्यार करने की कोशिश करनी होगी; और मैं पूरी कोशिश कर रही हूँ; लेकिन अभी तक बहुत कम प्रगति हुई है; और सबसे बुरी बात यह है कि वह मुझसे जितना दूर होते हैं, मुझे वह उतने ही अच्छे लगते हैं: उनके रूखे व्यवहार और अजीब धौंस जमाने के तरीके मुझे डराते हैं, और मुझे उनसे शादी करने के विचार से ही डर लगता है। “तो फिर तुमने उन्हें क्यों स्वीकार कर लिया?” तुम पूछोगी; और मुझे पता भी नहीं था कि मैंने उन्हें स्वीकार कर लिया है; लेकिन माँ कहती हैं कि मैंने कर लिया है, और उन्हें भी ऐसा ही लगता है। मेरा ऐसा करने का बिल्कुल इरादा नहीं था; लेकिन मैं उन्हें सीधे मना नहीं करना चाहती थी, क्योंकि मुझे डर था कि माँ दुखी और नाराज़ हो जाएँगी (क्योंकि मैं जानती थी कि वह चाहती थीं कि मैं उनसे शादी करूँ), और मैं पहले उनसे इस बारे में बात करना चाहती थी: इसलिए मैंने उन्हें एक टालमटोल वाला, आधा-अधूरा नकारात्मक जवाब दिया; लेकिन वह कहती है कि यह एक तरह से स्वीकृति ही थी, और अगर मैं पीछे हटने की कोशिश करती तो वह मुझे बहुत ज़िद्दी समझता—और सच कहूँ तो मैं उस समय इतनी उलझन में और डरी हुई थी कि मुझे ठीक से याद भी नहीं कि मैंने क्या कहा। और अगली बार जब मैंने उसे देखा, तो उसने पूरी गोपनीयता से मुझे अपनी मंगेतर बताकर बात की, और तुरंत माँ से मामले सुलझाने लगा। तब मुझमें उनका विरोध करने की हिम्मत नहीं थी, और अब कैसे कर सकती हूँ? मैं नहीं कर सकती; वे मुझे पागल समझेंगे। इसके अलावा, माँ इस रिश्ते के विचार से बहुत खुश हैं; उन्हें लगता है कि उन्होंने मेरे लिए बहुत अच्छा किया है; और मैं उन्हें निराश नहीं कर सकती। मैं कभी-कभी आपत्ति करती हूँ, और उन्हें अपने मन की बात बताती हूँ, लेकिन आप नहीं जानते कि वह कैसे बात करती हैं। मिस्टर हैटर्सले, आप जानते हैं, एक अमीर बैंकर के बेटे हैं, और चूंकि एस्थर और मेरे पास कोई दौलत नहीं है, और वाल्टर के पास तो बहुत कम है, इसलिए हमारी प्यारी माँ हम सभी को अच्छे जीवनसाथी से शादी करते हुए देखना चाहती हैं। यह मेरे हिसाब से अच्छी शादी नहीं है, लेकिन वह सब कुछ अच्छे के लिए ही चाहती हैं। वह कहती है कि जब मैं उसके चंगुल से मुक्त हो जाऊंगी तो उसे बहुत राहत मिलेगी; और वह मुझे विश्वास दिलाती है कि यह मेरे साथ-साथ परिवार के लिए भी अच्छा होगा। वाल्टर भी इस संभावना से खुश है, और जब मैंने उससे अपनी अनिच्छा व्यक्त की, तो उसने कहा कि यह सब बचकाना बकवास है। क्या तुम्हें भी यह बकवास लगता है, हेलेन? अगर मुझे उससे प्यार करने और उसकी

प्रशंसा करने की कोई संभावना दिखती तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन ऐसा नहीं है। उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिस पर कोई अपना सम्मान और स्नेह टिका सके; वह मेरे पति के बारे में मेरी कल्पना से बिलकुल विपरीत है। मुझे पत्र लिखो, और मुझे प्रोत्साहित करने के लिए जो कुछ भी कह सको कहो। मुझे हतोत्साहित करने का प्रयास मत करो, क्योंकि मेरा भाग्य तय है: मेरे चारों ओर इस महत्वपूर्ण घटना की तैयारियां पहले से ही चल रही हैं; और मिस्टर हैटर्सले के खिलाफ एक शब्द भी मत कहना, क्योंकि मैं उनके बारे में अच्छा सोचना चाहती हूं; और हालांकि मैंने खुद उनके खिलाफ कुछ कहा है, लेकिन यह आखिरी बार है: इसके बाद, मैं खुद को कभी भी उनकी निंदा करने की अनुमति नहीं दूंगी, चाहे वह इसके कितने भी योग्य क्यों न हों; और जो कोई भी उस व्यक्ति के बारे में अपमानजनक शब्द बोलने का साहस करेगा, जिसे मैंने प्यार करने, सम्मान देने और आज्ञा मानने का वादा किया है, उसे मेरी गंभीर नाराजगी का सामना करना पड़ेगा। आखिरकार, मुझे लगता है कि वह मिस्टर हंटिंगडन जितने ही अच्छे हैं, बल्कि उनसे भी बेहतर हैं; और फिर भी आप उनसे प्यार करती हैं, और खुश और संतुष्ट दिखती हैं; और शायद मैं भी ऐसा ही कर पाऊं। यदि आप बता सकती हैं, तो आपको मुझे बताना होगा कि मिस्टर हैटर्सले जितने दिखते हैं उससे कहीं बेहतर हैं - कि वह ईमानदार, सम्माननीय और खुले दिल के हैं - वास्तव में, एक अनमोल हीरा हैं। हो सकता है कि वह ये सब हों, लेकिन मैं उन्हें नहीं जानती। मैं केवल उनका बाहरी रूप जानती हूं, और मुझे विश्वास है कि उनका सबसे बुरा पहलू भी।

वह अंत में कहती हैं, 'अलविदा, प्यारी हेलेन। मैं बेसब्री से आपकी सलाह का इंतजार कर रही हूँ - लेकिन ध्यान रखना कि आपकी सलाह सही पक्ष में हो।'

हाय! बेचारी मिलिसेंट, मैं तुम्हें क्या प्रोत्साहन दे सकती हूँ? या क्या सलाह दे सकती हूँ— सिवाय इसके कि माँ, भाई और प्रेमी को निराश और क्रोधित करने की कीमत पर भी, अभी एक साहसिक कदम उठाना बेहतर है, बजाय इसके कि तुम अपना पूरा जीवन दुख और व्यर्थ पछतावे में बिताओ?

शनिवार, 13 तारीख — सप्ताह समाप्त हो गया है, और वह नहीं आया। सारी सुहावनी गर्मी बिना मेरे लिए एक पल की भी खुशी और उसके लिए एक पल का भी लाभ लिए बीत रही है। और मैं हमेशा से इस मौसम का इस प्यारी, भ्रामक आशा के साथ इंतज़ार कर रही थी कि हम इसे एक साथ बड़े आनंद से मनाएंगे; और यह कि,

ईश्वर की कृपा और मेरे प्रयासों से, यह उसके मन को उन्नत करने और प्रकृति के सुखदायक और शुद्ध आनंद, शांति और पवित्र प्रेम के प्रति उसकी रुचि को परिष्कृत करने का साधन बनेगा। लेकिन अब — शाम को, जब मैं गोल लाल सूरज को उन जंगली पहाड़ियों के पीछे धीरे-धीरे डूबते हुए देखती हूँ, उन्हें एक गर्म, लाल, सुनहरी धुंध में सोते हुए छोड़कर, मैं बस यही सोचती हूँ कि एक और प्यारा दिन हम दोनों के लिए खो गया है; और सुबह, जब गौरैयों की चहचहाहट और अबाबीलों की हर्षोल्लास भरी चहचहाहट से मेरी नींद खुलती है — ये सभी अपने बच्चों को खिलाने में मग्न हैं, और अपने छोटे से शरीर में जीवन और आनंद से भरपूर हैं — मैं खिड़की खोलकर उस सुखद, आत्मा को तरोताज़ा करने वाली हवा में सांस लेती हूँ, और ओस और धूप में खिलखिलाते सुंदर परिदृश्य को देखती हूँ — मैं अक्सर उस शानदार दृश्य को कृतघ्न दुख के आँसुओं से शर्मिंदा कर देती हूँ, क्योंकि वह इसके ताज़गी भरे प्रभाव को महसूस नहीं कर सकता; और जब मैं प्राचीन जंगलों में घूमता हूँ, और अपने रास्ते में मुस्कुराते हुए छोटे जंगली फूलों से मिलता हूँ, या पानी के किनारे हमारे महान राख के पेड़ों की छाया में बैठता हूँ, जिनकी शाखाएँ हल्की गर्मी की हवा में धीरे-धीरे हिलती हैं जो उनके पंखुड़ीदार पत्तों से होकर गुजरती है - मेरे कान उस धीमी संगीत से भरे होते हैं जो कीड़ों की स्वप्निल भिनभिनाहट के साथ मिश्रित होती है, मेरी आँखें अनमने ढंग से मेरे सामने छोटी झील की कांच जैसी सतह पर टकटकी लगाए रहती हैं, उसके किनारे पर घने पेड़, कुछ सुंदर ढंग से झुककर उसके पानी को चूमते हैं, कुछ अपने राजसी सिर ऊपर उठाते हैं, लेकिन अपनी चौड़ी भुजाओं को उसके किनारे पर फैलाते हैं, सभी दूर, दूर उसकी कांच जैसी गहराई में ईमानदारी से प्रतिबिंबित होते हैं - हालांकि कभी-कभी जलीय कीड़ों के खेल से छवियाँ आंशिक रूप से टूट जाती हैं, और कभी-कभी, एक पल के लिए, पूरी तस्वीर एक क्षणिक हवा से कांपते हुए टुकड़ों में बिखर जाती है जो सतह को बहुत तेजी से बहाती है - फिर भी मुझे कोई आनंद नहीं मिलता; प्रकृति मुझे जितना अधिक सुख प्रदान करती है, उतना ही मुझे इस बात का अफसोस होता है कि वह इसे चखने के लिए यहाँ नहीं है; हम जितना अधिक आनंद एक साथ प्राप्त कर सकते थे, उतना ही मुझे अलग होने के कारण हमारी वर्तमान दयनीयता का एहसास होता है (हाँ, हमारी; वह भी दयनीय होगा, भले ही उसे इसका एहसास न हो); और मेरी इंद्रियाँ जितनी अधिक प्रसन्न होती हैं, उतना ही मेरा हृदय व्याकुल हो जाता है; क्योंकि वह इसे अपने साथ लंदन की धूल और धुएँ के बीच

कैद रखता है—शायद अपने ही घृणित क्लब की दीवारों के भीतर बंद।

लेकिन सबसे बढ़कर, रात में, जब मैं अपने एकांत कक्ष में प्रवेश करता हूँ, और ग्रीष्म ऋतु के चाँद को देखता हूँ, 'आकाश का मधुर स्वामी', जो मेरे ऊपर 'अंधकार के काले-नीले गुंबद' में तैरता है, पार्क, जंगल और पानी पर चाँदी जैसी चमक बिखेरता है, इतनी शुद्ध, इतनी शांत, इतनी दिव्य — और सोचता हूँ, वह अब कहाँ है? — वह इस क्षण क्या कर रहा है? इस दिव्य दृश्य से पूरी तरह बेखबर — शायद अपने शुभ मित्रों के साथ आनंद मना रहा हो, शायद — हे भगवान, यह बहुत — बहुत अधिक है!

23 तारीख — शुक्र है, आखिरकार वो आ ही गया! पर कितना बदल गया है! चेहरा लाल और बुखार से ग्रस्त, सुस्त और थका हुआ, उसकी सुंदरता अजीब तरह से फीकी पड़ गई है, उसका जोश और उत्साह बिल्कुल गायब हो गया है। मैंने उसे शब्दों या नज़रों से डांटा नहीं; मैंने उससे यह भी नहीं पूछा कि वो क्या कर रहा था। मेरा ऐसा करने का मन ही नहीं हुआ, क्योंकि मुझे लगता है कि उसे खुद पर शर्म आ रही है —उसे ज़रूर आ रही होगी, और ऐसी पूछताछ हम दोनों के लिए कष्टदायी ही होती। मेरा धैर्य उसे प्रसन्न करता है—मुझे लगता है कि उसे छू भी जाता है। वो कहता है कि घर वापस आकर उसे खुशी हुई है, और भगवान जानता है कि उसे इस हालत में वापस पाकर मुझे कितनी खुशी हुई है। वो लगभग सारा दिन सोफे पर लेटा रहता है; और मैं घंटों उसके साथ खेलती और गाती रहती हूँ। मैं उसके लिए चिट्ठियाँ लिखती हूँ, और उसे वो सब कुछ देती हूँ जो वो चाहता है; और कभी-कभी मैं उसे पढ़कर सुनाती हूँ, कभी-कभी बातें करती हूँ, और कभी-कभी बस उसके पास बैठकर उसे चुपचाप प्यार से सहलाती हूँ। मुझे पता है कि वो इसके लायक नहीं है; और मुझे डर है कि मैं उसे बिगाड़ रही हूँ; लेकिन इस बार, मैं उसे पूरी तरह से और बिना किसी स्वार्थ के माफ कर दूंगी। अगर हो सके तो मैं उसे शर्मिंदा करके उसे सद्गुणों की ओर ले जाऊंगी, और मैं उसे फिर कभी मुझे छोड़कर जाने नहीं दूंगी।

मेरी देखभाल से वह प्रसन्न हैं—शायद इसके लिए आभारी भी हैं। उन्हें मेरा अपने पास होना अच्छा लगता है; और यद्यपि वह अपने नौकरों और कुत्तों के प्रति चिड़चिड़े और गुस्सैल हैं, फिर भी मेरे प्रति कोमल और दयालु हैं। अगर मैं उनकी ज़रूरतों का इतनी सावधानी से अनुमान न लगाती, और उन्हें चिढ़ाने या परेशान करने वाली किसी भी चीज़ से इतनी सावधानी से बचती या तुरंत न रुकती, चाहे कारण कितना भी छोटा क्यों न हो, तो वह कैसे होते, यह मैं नहीं बता सकती। काश वह इस सारी देखभाल के

योग्य होते! कल रात, जब मैं उनके बगल में बैठी थी, उनका सिर मेरी गोद में था, और मैं अपनी उंगलियाँ उनके सुंदर घुंघराले बालों में फेर रही थी, तो इस विचार से मेरी आँखों से दुख भरे आँसू बहने लगे—जैसा कि अक्सर होता है; लेकिन इस बार एक आँसू उनके चेहरे पर गिरा और उन्होंने ऊपर देखा। वह मुस्कुराए, लेकिन अपमानजनक ढंग से नहीं।

'प्यारी हेलेन!' उसने कहा— 'तुम क्यों रो रही हो? तुम जानती हो कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ' (और उसने मेरा हाथ अपने बुखार से तर होठों से लगाया), 'और तुम्हें इससे ज़्यादा क्या चाहिए?'

'बस, आर्थर, काश तुम खुद से उतना ही सच्चा और निष्ठापूर्वक प्रेम करते जितना मैं तुमसे करता हूँ।'

'यह तो वाकई मुश्किल होगा!' उसने मेरा हाथ प्यार से दबाते हुए जवाब दिया।

24 अगस्त। — आर्थर फिर से अपने पुराने अंदाज़ में लौट आया है, उतना ही जोशीला और बेपरवाह, पहले की तरह ही बेफिक्र, और बिगड़े हुए बच्चे की तरह ही बेचैन और बहलाना मुश्किल, और लगभग उतना ही शरारती भी, खासकर जब बारिश के मौसम में उसे घर के अंदर रहना पड़ता है। काश उसके पास कुछ करने को होता, कोई उपयोगी काम, पेशा या नौकरी — कुछ भी जिससे उसका दिमाग या हाथ दिन में कुछ घंटों के लिए व्यस्त रहें, और उसे अपने सुख के अलावा कुछ और सोचने को मिले। अगर वह देहाती सज्जन बनकर खेत-खलिहान का काम संभाले — लेकिन उसे इसके बारे में कुछ भी नहीं पता, और वह इस पर ध्यान भी नहीं देना चाहता — या अगर वह कुछ साहित्य पढ़े, या चित्रकारी सीखे या वादन सीखे — क्योंकि उसे संगीत का बहुत शौक है, मैं अक्सर उसे पियानो सीखने के लिए मनाने की कोशिश करती हूँ, लेकिन वह इतना आलसी है कि ऐसे काम के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं है: उसे बाधाओं को पार करने के लिए मेहनत करने का उतना ही ज्ञान नहीं है जितना अपनी स्वाभाविक इच्छाओं को नियंत्रित करने का; और यही दो बातें उसकी बर्बादी का कारण हैं। मैं इन दोनों के लिए उसके कठोर लेकिन लापरवाह पिता और उसकी हद से ज़्यादा लाड़-प्यार करने वाली माँ को ज़िम्मेदार ठहराती हूँ। अगर मैं कभी माँ बनी तो मैं अत्यधिक लाड़-प्यार के इस अपराध के खिलाफ पूरी लगन से संघर्ष करूंगी। इसके दुष्परिणामों को देखते हुए मैं इसे इससे हल्का नाम नहीं दे सकती।

खुशी की बात है कि जल्द ही शिकार का मौसम शुरू होने वाला है, और फिर,

अगर मौसम ठीक रहा, तो वह तीतर और बटेरों का शिकार करने और उन्हें मारने में व्यस्त रहेगा: हमारे पास ग्राउज़ नहीं हैं, वरना वह इस समय बबूल के पेड़ के नीचे लेटकर बेचारे डैश के कान खींचने के बजाय इसी काम में लगा होता। लेकिन वह कहता है कि अकेले शिकार करना उबाऊ काम है; उसे मदद के लिए एक-दो दोस्तों की ज़रूरत है।

'तो फिर उन्हें थोड़ा सभ्य रहने दो, आर्थर,' मैंने कहा। उसके मुँह से 'मित्र' शब्द सुनकर मुझे सिहरन होती है: मैं जानता हूँ कि उसके कुछ 'मित्रों' ने ही उसे लंदन में मेरे पीछे रुकने के लिए उकसाया था, और उसे इतने लंबे समय तक दूर रखा था: वास्तव में, उसने जो कुछ भी मुझसे अनजाने में कहा है, या समय-समय पर संकेत दिए हैं, उससे मुझे कोई संदेह नहीं है कि वह अक्सर उन्हें मेरे पत्र दिखाता था, ताकि वे देख सकें कि उसकी पत्नी कितनी स्नेहपूर्वक उसकी देखभाल करती थी, और उसकी अनुपस्थिति से कितना दुखी थी; और उन्हीं मित्रों ने उसे सप्ताह दर सप्ताह रुकने और हर तरह की हदें पार करने के लिए उकसाया, ताकि पत्नी के वश में रहने वाले मूर्ख के रूप में उसका मज़ाक न उड़ाया जाए, और शायद यह दिखाने के लिए कि वह उस प्रिय पत्नी के अटूट लगाव को भंग किए बिना कितनी दूर तक जा सकता है। यह एक घृणित विचार है, लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता कि यह झूठा है।

"अच्छा," उसने जवाब दिया, "मैंने लॉर्ड लोबोरो के बारे में सोचा था; लेकिन हमारी साझा मित्र एनाबेला, उनकी पत्नी के बिना उनसे मिलना संभव नहीं है; इसलिए हमें उन दोनों से ही पूछना होगा। हेलेन, तुम उससे डरती तो नहीं हो ना?" उसने आँखों में शरारती चमक के साथ पूछा।

मैंने जवाब दिया, 'बिल्कुल नहीं। मैं ऐसा क्यों करूँ? और मेरे अलावा कौन करेगा?'

'हारग्रेव तो ठीक रहेगा। वह आने में खुश होगा, भले ही उसका घर इतना पास है, क्योंकि उसके पास शिकार करने के लिए बहुत कम ज़मीन है, और अगर हम चाहें तो हम उस पर भी अपना कब्ज़ा जमा सकते हैं; और वैसे भी, हेलेन, वह बहुत ही इज़्ज़तदार आदमी है - एकदम महिलाओं का चहेता। और मुझे लगता है, ग्रिम्सबी भी ठीक रहेगा: वह भी एक सभ्य और शांत स्वभाव का आदमी है। तुम्हें ग्रिम्सबी से कोई आपत्ति तो नहीं है?'

'मैं उससे नफरत करता हूँ: लेकिन, अगर आप चाहें तो मैं कुछ समय के लिए उसकी मौजूदगी बर्दाश्त करने की कोशिश करूँगा।'

‘हेलेन, यह सब पूर्वाग्रह है, महज़ एक स्त्री की घृणा।’

नहीं; मेरी नापसंदगी के ठोस कारण हैं। और क्या बस इतना ही है?

“हाँ, मुझे तो ऐसा ही लगता है। हैटर्सले अपनी दुल्हन के साथ प्यार-दुलार करने में इतना व्यस्त होगा कि उसके पास अभी बंदूकों और कुत्तों के लिए समय ही नहीं होगा,” उसने जवाब दिया। और इससे मुझे याद आया कि मिलिसेंट की शादी के बाद से मुझे उसके कई पत्र मिले हैं, और वह या तो अपनी किस्मत से पूरी तरह संतुष्ट है, या ऐसा दिखावा करती है। वह कहती है कि उसने अपने पति में अनगिनत गुण और खूबियाँ पाई हैं, जिनमें से कुछ को, मुझे डर है, कम संवेदनशील आँखें, चाहे आँसुओं के साथ कितनी भी सावधानी से खोजें, पहचान नहीं पाएंगी; और अब जब वह उसकी तेज़ आवाज़ और रूखे, असभ्य व्यवहार की आदी हो गई है, तो वह कहती है कि उसे एक पत्नी के रूप में उससे प्यार करने में कोई कठिनाई नहीं होती, और मुझसे विनती करती है कि मैं वह पत्र जला दूँ जिसमें उसने उसके खिलाफ इतनी नासमझी भरी बातें लिखी थीं। इसलिए मुझे उम्मीद है कि वह अभी भी खुश होगी; लेकिन अगर वह खुश है, तो यह पूरी तरह से उसके अपने अच्छे दिल का इनाम होगा; क्योंकि अगर उसने खुद को भाग्य का शिकार या अपनी माँ की सांसारिक समझ का शिकार माना होता, तो वह पूरी तरह से दुखी हो सकती थी; और यदि उसने कर्तव्य के नाम पर अपने पति से प्रेम करने का हर संभव प्रयास न किया होता, तो निःसंदेह वह अपने जीवन के अंत तक उससे घृणा करती।

अध्याय XXVI

23 सितंबर। — हमारे मेहमान लगभग तीन सप्ताह पहले आए थे। लॉर्ड और लेडी लोबोरो की शादी को अब आठ महीने से अधिक हो चुके हैं; और मैं लेडी की प्रशंसा करते हुए यह कहना चाहूँगा कि उनके पति में ज़बरदस्त बदलाव आया है; जब मैंने

उन्हें आखिरी बार देखा था, तब से उनके रूप, उनके मन और उनके स्वभाव में स्पष्ट रूप से सुधार हुआ है। लेकिन अभी भी सुधार की गुंजाइश है। वे हमेशा खुश नहीं रहते, न ही हमेशा संतुष्ट रहते हैं, और वह अक्सर उनके चिड़चिड़े स्वभाव की शिकायत करती हैं, हालाँकि, सभी लोगों में से, उन्हें उन पर इसका आरोप लगाने का अधिकार नहीं है, क्योंकि वे कभी भी उनके विरुद्ध ऐसा व्यवहार नहीं करते, सिवाय ऐसे व्यवहार के जो किसी संत को भी क्रोधित कर दे। वे अब भी उनसे बहुत प्यार करते हैं, और उन्हें खुश करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। वह अपनी शक्ति को जानती हैं, और उसका उपयोग भी करती हैं; लेकिन यह अच्छी तरह से जानते हुए कि आदेश देने से बेहतर है फुसलाना और मनाना, वह अपने निरंकुशता को चतुराई से चापलूसी और मीठी बातों से संतुलित करती हैं, जिससे वे खुद को भाग्यशाली और खुशकिस्मत महसूस करते हैं।

लेकिन उसका उसे सताने का एक तरीका है, जिसमें मैं भी सह-पीड़ित हूँ, या हो सकती हूँ, अगर मैं खुद को ऐसा मानूँ। वह खुलेआम, लेकिन बहुत ज्यादा स्पष्ट रूप से नहीं, मिस्टर हंटिंगडन के साथ नखरे करती है, जो इस खेल में उसका साथी बनने को तैयार है; लेकिन मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है, क्योंकि मैं जानती हूँ कि उसके साथ केवल व्यक्तिगत घमंड और मेरी ईर्ष्या जगाने की शरारती इच्छा है, और शायद उसके दोस्त को सताने की भी; और वह भी निस्संदेह इन्हीं इरादों से प्रेरित है; बस, उसकी चालों में शरारत कम और द्वेष ज्यादा है। इसलिए, जहाँ तक मेरा सवाल है, उन दोनों को निराश करना ही मेरे हित में है, और इसके लिए मुझे हमेशा एक प्रसन्न और शांत चेहरा बनाए रखना होगा; और इसलिए, मैं अपने पति पर पूरा भरोसा दिखाने और अपनी आकर्षक मेहमान की हरकतों के प्रति पूरी तरह से उदासीन रहने का प्रयास करती हूँ। मैंने पहले वाले को कभी फटकारा नहीं, सिवाय एक बार के, और वह भी तब जब एक शाम लॉर्ड लोबोरो के उदास और चिंतित चेहरे पर मैं हँस पड़ी थी, जब वे दोनों काफी उकसाने वाले थे; और तब, वास्तव में, मैंने इस विषय पर काफी कुछ कहा और उन्हें काफी सख्ती से फटकारा; लेकिन वे केवल हँसे और बोले, - 'हेलेन, तुम उनके लिए सहानुभूति रख सकती हो, है ना?'

मैंने जवाब दिया, 'मैं उन सभी लोगों के लिए सहानुभूति महसूस कर सकता हूँ जिनके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया जाता है, और मैं उन लोगों के लिए भी सहानुभूति महसूस कर सकता हूँ जो उन्हें चोट पहुँचाते हैं।'

‘हेलेन, तुम भी उतनी ही ईर्ष्यालु हो जितना वो है!’ वो और भी ज़ोर से हंसते हुए बोला; और मुझे उसे उसकी गलती का एहसास दिलाना नामुमकिन लगा। इसलिए, उस समय से मैंने इस विषय पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया और लॉर्ड लोबोरो को अपने हाल पर छोड़ दिया। उनमें या तो मेरी तरह व्यवहार करने की समझ नहीं है या क्षमता, हालांकि वो अपनी बेचैनी को जितना हो सके छिपाने की कोशिश करते हैं; फिर भी, ये उनके चेहरे पर दिख जाती है, और उनका चिड़चिड़ापन बीच-बीच में झलक जाता है, हालांकि खुलेआम आक्रोश के रूप में नहीं – वो कभी भी इतनी हद तक नहीं जाते। लेकिन मैं मानती हूँ कि मुझे भी कभी-कभी ईर्ष्या होती है, बेहद तकलीफदेह, बहुत ज़्यादा; जब वो उसके लिए गाती और बजाती है, और वो वाद्य यंत्र पर झुककर बिना किसी बनावटी दिलचस्पी के उसकी आवाज़ को निहारता रहता है; क्योंकि तब मुझे पता चलता है कि वो सचमुच खुश है, और मुझमें वैसी ही खुशी जगाने की शक्ति नहीं है। मैं अपने सरल गीतों से उसका मनोरंजन और उसे प्रसन्न कर सकती हूँ, लेकिन उसे इस तरह से प्रसन्न नहीं कर सकती।

28 तारीख — कल हम सब श्री हरग्रेव के उपेक्षित घर, द ग्रोव गए थे। उनकी माँ अक्सर हमें अपने प्रिय वाल्टर के साथ समय बिताने के लिए बुलाती हैं; और इस बार उन्होंने हमें रात्रिभोज के लिए आमंत्रित किया था और आस-पास के जितने भी संभ्रांत लोग आ सकते थे, उन्हें हमारे लिए बुलाया था। दावत बहुत अच्छी तरह से आयोजित की गई थी; लेकिन मैं हर समय उसके खर्च के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकी। मुझे श्रीमती हरग्रेव पसंद नहीं हैं; वह एक कठोर, दिखावटी और दुनियादारी में डूबी महिला हैं। उनके पास आराम से रहने के लिए पर्याप्त धन है, अगर वह इसे समझदारी से इस्तेमाल करना जानतीं और अपने बेटे को भी यही सिखातीं; लेकिन वह हमेशा दिखावा करने में लगी रहती हैं, उस घृणित घमंड के साथ जो गरीबी को एक शर्मनाक अपराध की तरह टालता है। वह अपने आश्रितों को कुचलती है, अपने नौकरों को कंजूसी करती है, और यहाँ तक कि अपनी बेटियों और खुद को भी जीवन के वास्तविक सुखों से वंचित रखती है, क्योंकि वह दिखावे में उन लोगों के सामने झुकना नहीं चाहती जिनके पास उससे तीन गुना अधिक धन है; और सबसे बढ़कर, क्योंकि वह दृढ़ संकल्पित है कि उसका प्रिय पुत्र 'देश के सबसे प्रतिष्ठित सज्जनों के साथ सिर ऊंचा करके खड़ा हो सके।' मुझे लगता है कि यही पुत्र खर्चीली आदतों वाला व्यक्ति है, न तो फिजूलखर्ची करने वाला है और न ही व्यभिचारी, बल्कि ऐसा व्यक्ति है जिसे

'अपने आस-पास हर चीज आकर्षक' रखना पसंद है, और युवावस्था के भोग-विलास में हद से ज्यादा आगे जाता है, न केवल अपनी रुचियों को संतुष्ट करने के लिए बल्कि दुनिया में एक फैशनेबल व्यक्ति के रूप में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए, और अपने ही अधर्मी साथियों के बीच एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए। वह इतना स्वार्थी है कि उसे इस बात का ज़रा भी ख्याल नहीं आता कि जो पैसा वह अपने ऊपर लुटाता है, उससे उसकी प्यारी माँ और बहनों को कितनी सुख-सुविधाएँ मिल सकती थीं। जब तक वे साल में एक बार शहर आकर सम्मानजनक उपस्थिति दर्ज करा पाती हैं, तब तक वह घर पर उनकी निजी तंगी और संघर्षों की परवाह नहीं करता। 'प्यारे, नेक दिल और उदार वाल्टर' के बारे में ऐसा कहना कठोर होगा, लेकिन मुझे डर है कि यह बहुत ही सटीक है।

श्रीमती हरग्रेव की अपनी बेटियों के लिए अच्छे रिश्ते तय करने की चिंता, इन गलतियों का आंशिक कारण और आंशिक परिणाम है: दुनिया में नाम कमाकर और उन्हें शान-शौकत दिखाकर, वह उनके लिए बेहतर अवसर पाने की उम्मीद करती हैं; और इस तरह अपनी जायज़ आमदनी से ज़्यादा खर्च करके और उनके भाई पर इतना ज़्यादा पैसा लुटाकर, वह उन्हें बेसहारा बना देती हैं और उन्हें अपने कंधों पर बोझ बना लेती हैं। मुझे डर है कि बेचारी मिलिसेंट पहले ही इस नासमझ माँ की चालों का शिकार हो चुकी है, जो अपने मातृत्व कर्तव्य को इतनी अच्छी तरह निभाने पर खुद को बधाई देती है और एस्थर के लिए भी ऐसा ही करने की उम्मीद करती है। लेकिन एस्थर अभी बच्ची है, चौदह साल की एक चंचल और नन्ही सी लड़की: अपनी बहन की तरह ही नेक दिल, भोली और सरल, लेकिन अपने आप में एक निडर स्वभाव वाली, मुझे लगता है कि उसकी माँ को उसके इरादों के आगे झुकाने में कुछ मुश्किल होगी।

अध्याय XXVII

9 अक्टूबर। — चौथी तारीख की रात, चाय के कुछ देर बाद, एनाबेला गा रही थी और वाद्य यंत्र बजा रही थी, हमेशा की तरह आर्थर उसके साथ था: उसने अपना गाना खत्म कर दिया था, लेकिन वह अभी भी वाद्य यंत्र पर बैठी थी; और वह उसकी कुर्सी की पीठ पर झुककर, बहुत धीमी आवाज़ में बातें कर रहा था, उसका चेहरा उसके चेहरे के बहुत करीब था। मैंने लॉर्ड लोबोरो की ओर देखा। वह कमरे के दूसरे छोर पर श्रीमान हरग्रेव और ग्रिम्सबी से बात कर रहे थे; लेकिन मैंने देखा कि वह अपनी पत्नी और मेज़बान की ओर एक तेज़, अधीर नज़र से देखने लगे, जो तीव्र बेचैनी को व्यक्त कर रही थी, जिस पर ग्रिम्सबी मुस्कुराए। उनकी बातचीत में दखल देने के लिए दृढ़ निश्चय करके, मैं उठा, और संगीत स्टैंड से एक संगीत की धुन चुनकर पियानो के पास गया, ताकि मैं उस महिला से उसे बजाने के लिए कह सकूँ; लेकिन उसे वहाँ बैठे, उसकी कोमल फुसफुसाहट सुनते हुए, मानो उसके लाल चेहरे पर एक आनंदित मुस्कान थी, और उसका हाथ चुपचाप उसके हाथों में थामे हुए देखकर मैं स्तब्ध और अवाक रह गया। खून पहले मेरे दिल में दौड़ा, फिर मेरे दिमाग में; क्योंकि बात इससे भी आगे बढ़ गई थी: मेरे पास आते ही, उसने कमरे में मौजूद अन्य लोगों की ओर एक त्वरित नज़र डाली, और फिर बिना किसी विरोध के अपने हाथ को अपने होठों से लगा लिया। आँखें उठाते ही उसने मुझे देखा, और फिर हैरान और भयभीत होकर अपनी नज़रें नीचे कर लीं। उसने भी मुझे देखा, और कठोर चुनौती भरी नज़र से मेरा सामना किया। मैंने पियानो पर संगीत रखा, और चला गया। मुझे अस्वस्थ महसूस हो रहा था; लेकिन मैं कमरे से बाहर नहीं निकला: सौभाग्य से, देर हो रही थी, और जल्द ही सभी लोग चले जाएँगे।

मैं आग के पास गया और चिमनी के ऊपर सिर टिका दिया। एक-दो मिनट में किसी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं अस्वस्थ महसूस कर रहा हूँ। मैंने कोई जवाब नहीं दिया; दरअसल, उस समय मुझे पता ही नहीं था कि क्या कहा गया था; लेकिन मैंने अनायास ही ऊपर देखा और श्री हरग्रेव को अपने बगल में कालीन पर खड़ा पाया।

'क्या मैं आपके लिए एक गिलास वाइन लाऊं?' उसने कहा।

'नहीं, धन्यवाद,' मैंने उत्तर दिया; और उनसे मुँह मोड़कर चारों ओर देखा। लेडी लोबोरो अपने पति के बगल में बैठी थीं, उनके कंधे पर हाथ रखकर उनके ऊपर झुकी हुई थीं, धीरे-धीरे बातें कर रही थीं और उनके चेहरे पर मुस्कुरा रही थीं; और आर्थर

मेज पर नक्काशी की एक किताब पलट रहे थे। मैं पास वाली कुर्सी पर बैठ गई; और श्री हरग्रेव ने देखा कि उनकी ज़रूरत नहीं है, इसलिए वे समझदारी से वहाँ से चले गए। थोड़ी देर बाद, मेहमानों का समूह चला गया, और जब वे अपने कमरों में जाने लगे, तो आर्थर अत्यंत आत्मविश्वास से मुस्कुराते हुए मेरे पास आए।

‘क्या तुम बहुत गुस्से में हो, हेलेन?’ उसने धीरे से कहा।

मैंने गंभीरता से, लेकिन यथासंभव शांत भाव से कहा, 'यह कोई मजाक नहीं है, आर्थर—जब तक कि तुम मेरे स्नेह को हमेशा के लिए खोना मजाक न समझो।'

‘क्या! इतना कड़वा?’ उसने हंसते हुए कहा और मेरा हाथ अपने दोनों हाथों के बीच पकड़ लिया; लेकिन मैंने गुस्से में अपना हाथ झटक लिया—लगभग घृणा से, क्योंकि वह स्पष्ट रूप से शराब के नशे में था।

‘तो मुझे घुटनों के बल बैठना होगा,’ उसने कहा; और मेरे सामने घुटनों के बल बैठकर, हाथ जोड़कर, बनावटी विनम्रता दिखाते हुए, वह गिड़गिड़ाता रहा — ‘मुझे क्षमा कर दो, हेलेन — प्यारी हेलेन, मुझे क्षमा कर दो, और मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा!’ और, अपना चेहरा रूमाल में छिपाकर, वह जोर-जोर से रोने का नाटक करने लगा।

उसे इस काम में व्यस्त छोड़कर, मैंने अपनी मोमबत्ती ली और चुपके से कमरे से निकलकर जितनी जल्दी हो सके ऊपर की ओर भागी। लेकिन उसे जल्द ही पता चल गया कि मैं उसे छोड़कर चली गई हूँ, और वह मेरे पीछे दौड़कर आया और जैसे ही मैं कमरे में दाखिल हुई और उसके चेहरे पर दरवाजा बंद करने वाली थी, उसने मुझे अपनी बाहों में पकड़ लिया।

‘नहीं, नहीं, भगवान की कसम, तुम मुझसे बच नहीं पाओगे!’ वह चिल्लाया। फिर, मेरी घबराहट देखकर वह चिंतित हो गया और मुझसे विनती करने लगा कि मैं इतना क्रोधित न होऊं, और कहने लगा कि मेरा चेहरा पीला पड़ गया है, और अगर मैंने ऐसा किया तो मुझे खुद को मार लेना चाहिए।

‘तो मुझे जाने दो,’ मैंने धीरे से कहा; और उसने तुरंत मुझे छोड़ दिया—और यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि मैं सचमुच गुस्से में थी। मैं आरामकुर्सी पर बैठ गई और खुद को शांत करने की कोशिश की, क्योंकि मैं उससे शांति से बात करना चाहती थी। वह मेरे बगल में खड़ा रहा, लेकिन कुछ सेकंड तक उसने मुझे छूने या बोलने की हिम्मत नहीं की; फिर, थोड़ा और पास आकर, वह एक घुटने पर बैठ गया—दिखावटी

विनम्रता दिखाने के लिए नहीं, बल्कि मेरे स्तर के करीब आने के लिए, और कुर्सी के आर्मरेस्ट पर हाथ रखकर, उसने धीमी आवाज़ में कहना शुरू किया: 'यह सब बकवास है, हेलेन—एक मज़ाक, एक तुच्छ बात—जिसके बारे में सोचने की भी ज़रूरत नहीं है। क्या तुम कभी नहीं समझोगी,' उसने और अधिक साहस से कहा, 'कि तुम्हें मुझसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं है? कि मैं तुमसे पूरी तरह से प्यार करता हूँ?' — या फिर,' उसने एक शरारती मुस्कान के साथ कहा, 'अगर मैं कभी किसी और के बारे में सोचूँ, तो बेहतर होगा कि तुम इसे छोड़ दो, क्योंकि वो ख्याल बिजली की तरह आते-जाते रहते हैं, जबकि तुम्हारे लिए मेरा प्यार सूरज की तरह हमेशा जलता रहेगा। तुम छोटे से अत्याचारी, क्या ऐसा नहीं होगा —?'

'एक पल के लिए चुप रहो, आर्थर?' मैंने कहा, 'और मेरी बात सुनो—यह मत सोचो कि मैं ईर्ष्या से आवेशित हूँ: मैं बिल्कुल शांत हूँ। मेरा हाथ महसूस करो।' और मैंने गंभीरता से अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया—लेकिन फिर उसे इतनी ज़ोर से पकड़ा कि मानो मेरा दावा गलत साबित हो गया हो, और वह मुस्कुरा उठा। 'आपको मुस्कुराने की ज़रूरत नहीं है, महोदय,' मैंने अपनी पकड़ और कसते हुए कहा, और उसे तब तक घूरती रही जब तक वह लगभग मेरे सामने कांपने नहीं लगा। 'मिस्टर हंटिंगडन, आपको मेरी ईर्ष्या जगाकर अपना मनोरंजन करना बहुत अच्छा लग सकता है; लेकिन ध्यान रखें कि आप मेरी नफरत न जगा दें। और एक बार जब आप मेरे प्यार को बुझा देंगे, तो उसे फिर से जगाना आसान नहीं होगा।'

'हेलेन, मैं वह गलती नहीं दोहराऊंगा। लेकिन मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था, मैं आपको यकीन दिलाता हूं। मैंने बहुत ज्यादा शराब पी ली थी, और उस समय मैं होश में नहीं था।'

'तुम अक्सर हद से ज़्यादा पीते हो; और यह एक और आदत है जिससे मुझे नफ़रत है।' मेरी बात सुनकर वह अचंभित होकर ऊपर देखने लगा। 'जी हाँ,' मैंने आगे कहा; 'मैंने पहले कभी इसका ज़िक्र नहीं किया, क्योंकि मुझे ऐसा करने में शर्म आती थी; लेकिन अब मैं तुम्हें बता दूँगी कि इससे मुझे दुख होता है, और अगर तुम इसे जारी रखते रहे और इस आदत को अपने ऊपर हावी होने दिया, तो मुझे घिन भी आ सकती है, क्योंकि अगर तुमने इसे समय रहते नहीं रोका तो यह आदत बढ़ ही जाएगी। लेकिन लेडी लोबोरो के प्रति तुम्हारा पूरा व्यवहार शराब से जुड़ा नहीं है; और आज रात तुम अच्छी तरह जानते थे कि तुम क्या कर रहे हो।'

‘खैर, मुझे इसके लिए खेद है,’ उसने पश्चाताप से अधिक रूठते हुए उत्तर दिया: ‘आपको और क्या चाहिए?’

मैंने ठंडे लहजे में जवाब दिया, 'तुम्हें इस बात का अफसोस होगा कि मैंने तुम्हें देख लिया।'

“अगर तुमने मुझे न देखा होता,” उसने कालीन पर निगाहें गड़ाते हुए बुदबुदाया, “तो कोई नुकसान नहीं होता।”

मेरा दिल मानो फटने वाला था; लेकिन मैंने दृढ़ता से अपनी भावनाओं को काबू में किया और शांत भाव से उत्तर दिया,

‘क्या आपको ऐसा नहीं लगता?’

‘नहीं,’ उसने साहसपूर्वक उत्तर दिया। ‘आखिर मैंने किया क्या है? कुछ नहीं – सिवाय इसके कि आप इसे आरोप और पीड़ा का विषय बनाना चाहते हैं।’

'अगर आपके मित्र लॉर्ड लोबोरो को सब पता चल जाए तो वे क्या सोचेंगे? या आप खुद क्या सोचेंगे, अगर उन्होंने या किसी और ने मेरे साथ वही व्यवहार किया होता, जैसा आपने एनाबेला के साथ किया है?'

मैं उसके दिमाग के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।

तो फिर, आर्थर, तुम इसे मामूली कैसे कह सकते हो—एक ऐसा अपराध जिसके लिए तुम किसी दूसरे आदमी का सिर उड़ा देने को जायज़ समझते हो? क्या अपने और मेरे दोस्त की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना मामूली बात है—किसी औरत का प्यार उसके पति से छीनने की कोशिश करना—जो उसके लिए सोने से भी ज़्यादा कीमती है, और इसलिए जिसे लेना सबसे ज़्यादा बेईमानी है? क्या शादी की कसमें मज़ाक हैं; और क्या उन्हें तोड़ना और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए उकसाना मामूली बात है? क्या मैं ऐसे आदमी से प्यार कर सकती हूँ जो ऐसे काम करता है और बड़ी बेफिक्री से कहता है कि यह मामूली बात है?

‘तुम खुद अपने विवाह के वचन तोड़ रही हो,’ वह गुस्से से उठकर इधर-उधर टहलते हुए बोला। ‘तुमने मुझसे वादा किया था कि तुम मेरा सम्मान करोगी और मेरी आज्ञा मानोगी, और अब तुम मुझ पर धौंस जमाने की कोशिश कर रही हो, मुझे धमका रही हो, मुझ पर आरोप लगा रही हो और मुझे लुटेरे से भी बदतर कह रही हो। अगर तुम्हारी स्थिति ऐसी न होती, हेलेन, तो मैं इतनी आसानी से यह सब बर्दाश्त नहीं करता। मैं किसी औरत के इशारों पर नहीं चलूंगा, चाहे वह मेरी पत्नी ही क्यों न हो।’

‘तब तुम क्या करोगे? क्या तुम तब तक ऐसा करते रहोगे जब तक मैं तुमसे नफरत न करने लगूँ, और फिर मुझ पर अपने वचन तोड़ने का आरोप लगाओगे?’

वह एक पल चुप रहा, फिर बोला: 'तुम मुझसे कभी नफरत नहीं करोगे।' मेरे पैरों के पास वापस आकर, उसने और भी ज़ोर से दोहराया - 'जब तक मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम मुझसे नफरत नहीं कर सकते।'

लेकिन अगर तुम इसी तरह बर्ताव करते रहे तो मैं कैसे मान लूँ कि तुम मुझसे प्यार करते हो? ज़रा मेरी जगह खुद को रखकर देखो: अगर मैं तुमसे प्यार करता, तो क्या तुम समझते कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ? क्या तुम मेरी बातों पर यकीन करोगे, और ऐसी परिस्थितियों में मेरा सम्मान और मुझ पर भरोसा करोगे?

‘मामले अलग-अलग हैं,’ उसने उत्तर दिया। ‘एक स्त्री का स्वभाव होता है कि वह स्थिर रहे—केवल एक से ही अंधाधुंध, कोमल और सदा प्रेम करे—हे प्रिय प्राणियों, उन्हें आशीर्वाद मिले! और तुम तो सबसे बढ़कर हो; लेकिन हेलेन, तुम्हें हम पर थोड़ी दया दिखानी चाहिए; तुम्हें हमें थोड़ी और छूट देनी चाहिए, क्योंकि जैसा कि शेक्सपियर ने कहा है—

हालांकि हम अपनी प्रशंसा अवश्य करते हैं, हमारी कल्पनाएँ महिलाओं की तुलना में अधिक चंचल और अस्थिर होती हैं, अधिक लालसापूर्ण, डगमगाती हुई, जल्दी खो जाती हैं और फिर पा ली जाती हैं।

'क्या आपका मतलब यह है कि आपकी कल्पनाएँ मुझसे दूर हो गई हैं और लेडी लोबोरो ने उन्हें जीत लिया है?'

नहीं! ईश्वर साक्षी है कि मैं उसे तुम्हारे सामने धूल-मिट्टी समझता हूँ, और ऐसा ही समझता रहूँगा, जब तक तुम मुझे अत्यधिक कठोरता से विमुख नहीं कर देती। वह धरती की पुत्री है; तुम स्वर्ग की देवदूत हो; बस अपनी दिव्यता में अत्यधिक कठोर मत बनो, और याद रखो कि मैं एक तुच्छ, नश्वर प्राणी हूँ। चलो अब, हेलेन; क्या तुम मुझे क्षमा नहीं करोगी?’ उसने मेरा हाथ धीरे से पकड़ते हुए और मासूम मुस्कान के साथ ऊपर देखते हुए कहा।

'अगर मैंने ऐसा किया, तो तुम वही अपराध दोहराओगे।'

मैं कसम खाता हूँ—

'गाली मत दो; मैं तुम्हारी बात और तुम्हारी कसम दोनों पर विश्वास करूंगा। काश मैं दोनों पर भरोसा कर पाता।'

‘तो फिर, हेलेन, मुझे आजमा कर देखो: बस एक बार मुझ पर भरोसा करो और मुझे क्षमा कर दो, और तुम देख लोगी! आओ, जब तक तुम एक शब्द भी नहीं बोलती, मैं नरक की यातनाओं में हूँ।’

मैंने ये बात कही नहीं, बस उनके कंधे पर हाथ रखा और उनके माथे को चूमा, और फिर फूट-फूटकर रोने लगी। उन्होंने मुझे प्यार से गले लगाया; और तब से हम अच्छे दोस्त हैं। खाने के समय उनका व्यवहार शालीन और संयमित रहा है, और लेडी लोबोरो के प्रति उनका बर्ताव भी अच्छा रहा है। पहले दिन उन्होंने उनसे दूरी बनाए रखी, जहाँ तक हो सके मेहमाननवाज़ी का उल्लंघन किए बिना: उसके बाद से वे दोस्ताना और सभ्य रहे हैं, लेकिन इससे ज़्यादा कुछ नहीं—कम से कम मेरी मौजूदगी में, और मुझे लगता है कि किसी और समय भी नहीं; क्योंकि वह अभिमानी और नाराज़ लग रही हैं, और लॉर्ड लोबोरो पहले से कहीं ज़्यादा खुशमिजाज़ और अपने मेज़बान के प्रति ज़्यादा सौहार्दपूर्ण हैं। लेकिन मुझे खुशी होगी जब वे चले जाएँगे, क्योंकि मुझे एनाबेला से इतना कम प्यार है कि उनके साथ सभ्य व्यवहार करना मेरे लिए बहुत मुश्किल है, और चूंकि मेरे अलावा वह यहाँ अकेली महिला हैं, इसलिए हम दोनों अक्सर साथ रहते हैं। अगली बार जब श्रीमती हरग्रेव आएँगी तो मुझे बहुत राहत मिलेगी। मेरा मन कर रहा है कि मैं आर्थर से इजाज़त लेकर उस बुज़ुर्ग महिला को अपने मेहमानों के जाने तक हमारे साथ रहने के लिए आमंत्रित करूँ। मुझे लगता है मैं ऐसा करूँगा। वह इसे एक स्नेहपूर्ण व्यवहार समझेगी, और यद्यपि मुझे उसकी संगति में ज़्यादा रुचि नहीं है, फिर भी लेडी लोबोरो और मेरे बीच एक तीसरे व्यक्ति के रूप में उसका स्वागत होगा।

उस मनहूस शाम के बाद, जब हम दोनों पहली बार अकेले थे, तो अगले दिन नाश्ते के एक-दो घंटे बाद का समय था, जब सज्जन लोग पत्रों के लेखन, अखबारों के पढ़ने और बेतरतीब बातचीत में बिताए गए सामान्य समय के बाद बाहर जा चुके थे। हम दो-तीन मिनट तक चुपचाप बैठे रहे। वह अपने काम में व्यस्त थी, और मैं एक अखबार के कॉलम पलट रहा था, जिसमें से मैंने लगभग बीस मिनट पहले ही सारी सार-संक्षेप निकाल ली थी। यह मेरे लिए बेहद शर्मिंदगी का क्षण था, और मुझे लगा कि उसके लिए यह कहीं अधिक शर्मिंदगी भरा होगा; लेकिन लगता है कि मैं गलत था। वह पहली थी जिसने बोलना शुरू किया; और, अत्यंत आत्मविश्वास से मुस्कुराते हुए, उसने कहा, —

‘हेलेन, तुम्हारे पति कल रात बहुत खुश थे: क्या वे अक्सर ऐसे ही रहते हैं?’

मेरा खून खौल उठा; लेकिन बेहतर यही था कि वह उसके इस व्यवहार का कारण किसी और चीज से ज्यादा इसी को माने।

‘नहीं,’ मैंने उत्तर दिया, ‘और मुझे विश्वास है कि ऐसा फिर कभी नहीं होगा।’

‘आपने उसे लंबी-चौड़ी फटकार लगाई, है ना?’

'नहीं! लेकिन मैंने उनसे कहा कि मुझे ऐसा व्यवहार पसंद नहीं है, और उन्होंने मुझसे वादा किया कि वे इसे नहीं दोहराएंगे।'

‘मुझे लगा कि आज सुबह वह कुछ उदास लग रहा था,’ उसने आगे कहा; ‘और तुम, हेलेन? मुझे लगता है कि तुम रो रही हो – यही तो हमारा सबसे बड़ा सहारा है। लेकिन क्या इससे तुम्हारी आँखों में जलन नहीं होती? और क्या तुम हमेशा इससे जवाब पा लेती हो?’

मैं दिखावे के लिए कभी नहीं रोता; और न ही मैं समझ सकता हूँ कि कोई ऐसा कैसे कर सकता है।

खैर, मुझे नहीं पता: मुझे कभी ऐसा करने का मौका नहीं मिला; लेकिन मुझे लगता है कि अगर लोबोरो ऐसी कोई हरकत करे, तो मैं उसे रुला दूंगी। मुझे आपके गुस्से पर हैरानी नहीं है, क्योंकि मुझे यकीन है कि मैं अपने पति को इससे मामूली गलती के लिए भी ऐसा सबक सिखा दूंगी जिसे वो जल्दी नहीं भूलेंगे। लेकिन वो कभी ऐसा कुछ करेंगे ही नहीं; क्योंकि मैं उन्हें बहुत अच्छे अनुशासन में रखती हूँ।

'क्या आपको यकीन है कि आप इसका श्रेय खुद को बहुत ज्यादा नहीं दे रही हैं? मैंने सुना है कि लॉर्ड लोबोरो आपसे शादी करने से पहले भी कुछ समय तक अपनी संयमशीलता के लिए उतने ही उल्लेखनीय थे जितने कि अब हैं।'

'ओह, शराब के बारे में आपका क्या मतलब है? हां, वह इसके लिए काफी सुरक्षित है। और किसी दूसरी महिला को तिरछी नजरों से देखने की बात हो, तो जब तक मैं जीवित हूं, वह इसके लिए भी काफी सुरक्षित है, क्योंकि वह मेरा बहुत सम्मान करता है।'

'बिल्कुल! और क्या आपको यकीन है कि आप इसके हकदार हैं?'

“वैसे, इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकती: तुम जानती हो कि हम सब नपुंसक प्राणी हैं, हेलेन; हममें से कोई भी पूजा के योग्य नहीं है। लेकिन क्या तुम्हें यकीन है कि तुम्हारा प्यारा हंटिंगडन उस सारे प्यार का हकदार है जो तुम उसे देती हो?”

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इसका क्या जवाब दूं। मैं गुस्से से जल रहा था; लेकिन मैंने अपने गुस्से को पूरी तरह से दबा लिया और बस होंठ दबाकर काम करने का नाटक किया।

‘खैर,’ उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, ‘आप इस आश्वासन से खुद को तसल्ली दे सकते हैं कि आप उसके द्वारा दिए गए सभी प्यार के योग्य हैं।’

मैंने कहा, 'आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं; लेकिन कम से कम मैं इसके योग्य बनने की कोशिश तो कर सकता हूँ।' और फिर मैंने बातचीत का रुख मोड़ दिया।

अध्याय XXVIII

25 दिसंबर। — पिछले क्रिसमस पर मैं दुल्हन थी, मेरा दिल वर्तमान सुख से भरा हुआ था और भविष्य के लिए असीम आशाओं से परिपूर्ण था, हालांकि मन में कुछ आशंकाएं भी थीं। अब मैं एक पत्नी हूँ: मेरा सुख थोड़ा कम हुआ है, पर नष्ट नहीं हुआ; मेरी आशाएं कम हुई हैं, पर समाप्त नहीं हुईं; मेरी आशंकाएं बढ़ी हैं, पर पूरी तरह से पुष्ट नहीं हुईं; और, ईश्वर का धन्यवाद, मैं एक माँ भी हूँ। ईश्वर ने मुझे स्वर्ग के लिए शिक्षित करने हेतु एक आत्मा भेजी है, और मुझे एक नया और शांत सुख तथा मुझे सांत्वना देने वाली मजबूत आशाएं प्रदान की हैं।

25 दिसंबर, 1823 — एक और साल बीत गया। मेरा छोटा आर्थर स्वस्थ है और खूब फल-फूल रहा है। वह सेहतमंद है, पर बहुत हट्टा-कट्टा नहीं, चंचलता और जीवंतता से भरपूर है, पहले से ही स्नेहशील है, और उन भावनाओं और आवेशों के प्रति संवेदनशील है जिन्हें व्यक्त करने के लिए उसे अभी बहुत समय लगेगा। उसने आखिरकार अपने पिता का दिल जीत लिया है; और अब मेरी निरंतर चिंता यही है कि कहीं वह अपने पिता के लापरवाह दुलार से बर्बाद न हो जाए। लेकिन मुझे अपनी कमजोरी से भी सावधान रहना होगा, क्योंकि मुझे अब तक यह पता नहीं था कि एक

माता-पिता के लिए अपने इकलौते बच्चे को बिगाड़ने का प्रलोभन कितना प्रबल होता है।

मुझे अपने बेटे से सांत्वना चाहिए, क्योंकि (इस मौन कागज़ पर मैं यह स्वीकार करती हूँ) मुझे अपने पति से बहुत कम सांत्वना मिलती है। मैं अब भी उससे प्रेम करती हूँ; और वह भी मुझसे अपने तरीके से प्रेम करता है—पर, ओह, यह उस प्रेम से कितना भिन्न है जो मैं दे सकती थी, और जिसे पाने की मैंने कभी आशा की थी! हमारे बीच सच्ची सहानुभूति कितनी कम है; मेरे कितने विचार और भावनाएँ मेरे मन में ही अंधकारमय रूप से सिमटी हुई हैं; मेरा कितना उच्चतर और बेहतर स्वरूप वास्तव में अविवाहित है—या तो एकांत की सूर्यविहीन छाया में कठोर और कड़वा होने के लिए अभिशप्त है, या इस अस्वस्थ मिट्टी में पोषण की कमी के कारण पूरी तरह से पतित और नष्ट होने के लिए! लेकिन, मैं दोहराती हूँ, मुझे शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है; बस मुझे सच कहने दीजिए—कम से कम कुछ सच—और देखते हैं कि आगे कोई और गहरा सच इन पन्नों को धूमिल करता है या नहीं। अब हमारे साथ दो साल पूरे हो चुके हैं; हमारे लगाव का 'रोमांस' तो मिट ही गया होगा। अब मैं आर्थर के स्नेह के सबसे निचले स्तर तक पहुँच चुकी हूँ और उसके स्वभाव की सारी बुराइयाँ जान चुकी हूँ: अगर कोई और बदलाव आएगा भी, तो वह बेहतर ही होगा, क्योंकि हम एक-दूसरे के और भी आदी हो जाएँगे; यकीनन हम इससे नीचे नहीं गिरेंगे। और अगर ऐसा हुआ भी, तो मैं इसे सह सकती हूँ — कम से कम उतना तो सह ही सकती हूँ जितना अब तक सहती आई हूँ।

आर्थर को आम तौर पर बुरा आदमी नहीं कहा जाता: उसमें कई अच्छे गुण हैं; लेकिन वह आत्मसंयम और उच्च आकांक्षाओं से रहित, सुख-सुविधाओं का प्रेमी और शारीरिक सुखों में लिप्त है। वह बुरा पति नहीं है, लेकिन वैवाहिक कर्तव्यों और सुख-सुविधाओं के बारे में उसके विचार मेरे विचारों से भिन्न हैं। देखने से लगता है कि उसकी नज़र में पत्नी वह है जो उससे पूरी निष्ठा से प्रेम करे, घर पर रहकर अपने पति की सेवा करे, उसका मनोरंजन करे और हर संभव तरीके से उसकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखे, जब तक वह उसके साथ रहना चाहे; और जब वह अनुपस्थित हो, तो उसके घरेलू और अन्य हितों का ध्यान रखे और धैर्यपूर्वक उसके लौटने की प्रतीक्षा करे, चाहे वह इस बीच किसी भी काम में व्यस्त हो।

वसंत ऋतु की शुरुआत में उन्होंने लंदन जाने की घोषणा की: उन्होंने कहा कि वहाँ

उनके कुछ कामों के लिए उनकी उपस्थिति अनिवार्य थी और वे अब इसे टाल नहीं सकते थे। उन्होंने मुझे छोड़कर जाने पर खेद व्यक्त किया, लेकिन आशा जताई कि उनके लौटने तक मैं बच्चे के साथ समय बिता लूँगी।

'लेकिन मुझे छोड़कर क्यों जा रहे हो?' मैंने कहा। 'मैं तुम्हारे साथ जा सकता हूँ: मैं किसी भी समय तैयार हो सकता हूँ।'

'क्या तुम उस बच्चे को शहर नहीं ले जाओगे?'

'हां; क्यों नहीं?'

यह बात बेतुकी थी: शहर का माहौल निश्चित रूप से उन्हें और मुझे, एक नर्स के रूप में, रास नहीं आएगा; देर रात तक जागना और लंदन की आदतें ऐसी परिस्थितियों में मुझे रास नहीं आएंगी; और कुल मिलाकर उन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि यह बेहद कष्टदायक, हानिकारक और असुरक्षित होगा। मैंने उनकी आपत्तियों को यथासंभव खारिज कर दिया, क्योंकि उनके अकेले जाने के विचार से ही मैं कांप रही थी और उन्हें रोकने के लिए मैं अपने लिए, यहाँ तक कि अपने बच्चे के लिए भी, लगभग कुछ भी त्यागने को तैयार थी; लेकिन अंत में उन्होंने मुझे स्पष्ट और कुछ चिड़चिड़ेपन से कहा कि वह मेरे साथ नहीं रह सकते: वह बच्चे की बेचैन रातों से थक चुके थे और उन्हें कुछ आराम चाहिए था। मैंने अलग अपार्टमेंट का प्रस्ताव रखा; लेकिन यह भी ठीक नहीं था।

'सच तो यह है, आर्थर,' मैंने अंत में कहा, 'तुम मेरी संगति से ऊब चुके हो, और मुझे अपने साथ न रखने का निश्चय कर चुके हो। तुम्हें यह बात सीधे-सीधे कह देनी चाहिए थी।'

उसने इससे इनकार किया; लेकिन मैं तुरंत कमरे से बाहर निकल गई और अपनी भावनाओं को छिपाने के लिए नर्सरी की ओर भागी, अगर मैं उन्हें वहां शांत नहीं कर सकती थी।

मुझे इतना गहरा दुख हुआ था कि मैं उसकी योजनाओं पर और अधिक असंतोष व्यक्त नहीं कर सका, और न ही इस विषय पर दोबारा चर्चा कर सका। उसके जाने से ठीक एक दिन पहले तक मैंने उससे पूरी गंभीरता से आग्रह किया कि वह अपना ख्याल रखे और प्रलोभनों से दूर रहे। उसने मेरी चिंता पर हँसा, लेकिन मुझे आश्वस्त किया कि चिंता का कोई कारण नहीं है, और मेरी सलाह मानने का वादा किया।

मैंने कहा, 'मुझे लगता है कि आपसे वापसी की तारीख तय करने के लिए कहना

बेकार है?'

'नहीं, बिलकुल नहीं; इन परिस्थितियों में तो मैं ऐसा कर ही नहीं सकता; लेकिन यकीन मानो, प्रिय, मैं ज्यादा देर तक दूर नहीं रहूंगा।'

मैंने जवाब दिया, 'मैं तुम्हें घर में कैद करके नहीं रखना चाहता; अगर तुम मेरे बिना इतने लंबे समय तक खुश रह सकते हो, तो मुझे तुम्हारे पूरे महीनों तक दूर रहने पर कोई आपत्ति नहीं होगी, बशर्ते मुझे पता हो कि तुम सुरक्षित हो; लेकिन मुझे यह विचार पसंद नहीं है कि तुम वहाँ अपने दोस्तों के बीच रहो, जैसा कि तुम उन्हें कहते हो।'

'छी, छी, तुम मूर्ख लड़की! क्या तुम्हें लगता है कि मैं अपना ख्याल खुद नहीं रख सकती?'

'पिछली बार तो तुम ऐसा नहीं कर पाए थे। लेकिन इस बार, आर्थर,' मैंने गंभीरता से कहा, 'मुझे दिखाओ कि तुम ऐसा कर सकते हो, और मुझे सिखाओ कि मुझे तुम पर भरोसा करने से डरने की ज़रूरत नहीं है!'

उन्होंने अच्छे व्यवहार का वादा किया, लेकिन इस तरह जैसे हम किसी बच्चे को बहलाते हैं। क्या उन्होंने अपना वादा निभाया? नहीं; और अब से मैं उनके वचन पर कभी भरोसा नहीं कर सकती। कड़वा, कड़वा कबूलनामा! लिखते समय मेरी आँखों में आँसू भर आए। मार्च की शुरुआत में वे चले गए और जुलाई तक नहीं लौटे। इस बार उन्होंने पहले की तरह बहाने बनाने की ज़हमत नहीं उठाई, और उनके पत्र कम आते थे, छोटे होते थे और उनमें स्नेह भी कम होता था, खासकर पहले कुछ हफ्तों के बाद: वे धीरे-धीरे आते गए, और हर बार अधिक संक्षिप्त और लापरवाह होते गए। लेकिन फिर भी, जब मैंने पत्र लिखना छोड़ दिया, तो उन्होंने मेरी लापरवाही की शिकायत की। जब मैंने कठोर और ठंडे लहजे में लिखा, जैसा कि मैं स्वीकार करती हूँ कि मैंने अंत में अक्सर किया, तो उन्होंने मेरी कठोरता को दोषी ठहराया और कहा कि यह उन्हें घर से डराने के लिए काफी था: जब मैंने प्यार से समझाने की कोशिश की, तो वे अपने जवाबों में थोड़ा नरम हुए और लौटने का वादा किया; लेकिन अंततः मैंने उनके वादों को नज़रअंदाज़ करना सीख लिया था।

अध्याय 29

वे चार महीने बेहद कष्टदायक थे, जिनमें तीव्र चिंता, निराशा और आक्रोश, उसके लिए दया और खुद के लिए दया, सब कुछ उतार-चढ़ाव से भरा था। फिर भी, इन सबके बावजूद मैं पूरी तरह से असहाय नहीं थी: मेरा प्यारा, निर्दोष, मासूम बच्चा मुझे सांत्वना देता था; लेकिन यह सांत्वना भी इस विचार से कड़वी हो जाती थी कि 'मैं उसे भविष्य में अपने पिता का सम्मान करना और फिर भी उनके उदाहरण से बचना कैसे सिखाऊँगी?'

लेकिन मुझे याद आया कि मैंने ये सारी मुसीबतें जानबूझकर खुद पर लाई थीं; और मैंने बिना शिकायत किए इन्हें सहने का निश्चय किया। साथ ही मैंने यह भी तय किया कि मैं किसी और के गुनाहों के लिए खुद को दुखी नहीं होने दूंगी, और जितना हो सके खुद को व्यस्त रखने की कोशिश की; और अपने बच्चे और अपनी प्यारी, वफादार राहेल के साथ के अलावा, जो जाहिर तौर पर मेरे दुखों को समझती थी और उन्हें महसूस करती थी, हालांकि वह इतनी समझदार थी कि उनका जिक्र नहीं करती थी, मेरे पास मेरी किताबें और पेंसिल, मेरे घरेलू काम और आर्थर के गरीब किरायेदारों और मजदूरों के कल्याण और आराम का ध्यान रखने के लिए था: और मैं कभी-कभी अपनी युवा दोस्त एस्थर हरग्रेव की संगति में मनोरंजन ढूंढती और पाती थी: कभी-कभी मैं उससे मिलने जाती थी, और एक-दो बार मैंने उसे अपने साथ हवेली में पूरा दिन बिताने के लिए बुलाया था। श्रीमती हरग्रेव उस मौसम में लंदन नहीं आईं: शादी के लिए कोई बेटी न होने के कारण, उन्होंने घर पर रहना और खर्च कम करना बेहतर समझा; और आश्चर्य की बात यह थी कि वाल्टर जून की शुरुआत में उससे मिलने आया और अगस्त के अंत तक वहीं रहा।

मैंने उसे पहली बार एक सुहावनी, गर्म शाम को देखा था, जब मैं छोटे आर्थर और राहेल के साथ पार्क में टहल रही थी। राहेल मेरी नर्स और नौकरानी दोनों का काम करती है। क्योंकि, मेरे एकांत जीवन और अपेक्षाकृत सक्रिय स्वभाव के कारण, मुझे बहुत कम देखभाल की आवश्यकता होती है, और चूंकि उसने मेरी देखभाल की थी

और मेरे बच्चे की भी देखभाल करना चाहती थी, और वह बहुत भरोसेमंद भी थी, इसलिए मैंने किसी और को नियुक्त करने के बजाय उसे यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपना बेहतर समझा, साथ ही उसकी देखरेख में एक युवा नर्स भी रखी। इसके अलावा, इससे पैसे की भी बचत होती है; और चूंकि मैं आर्थर के मामलों से परिचित हो चुकी हूं, इसलिए मैंने इसे एक महत्वपूर्ण सिफारिश मानना सीख लिया है; क्योंकि, मेरी इच्छा के अनुसार, मेरी संपत्ति की लगभग पूरी आय आने वाले कई वर्षों तक उसके कर्ज चुकाने में ही खर्च होगी, और वह लंदन में जिस तरह से पैसा लुटाता है, वह समझ से परे है। लेकिन श्री हरग्रेव की बात पर वापस आते हैं। मैं राहेल के साथ पानी के किनारे खड़ी थी, उसकी गोद में हँसते हुए बच्चे को सुनहरी कलगी से लदी विलो की टहनी से बहला रही थी, तभी अचानक मुझे आश्चर्य हुआ जब वह अपने महंगे काले शिकारी घोड़े पर सवार होकर पार्क में आया और घास पार करके मुझसे मिलने आया। उसने बड़े ही सलीके से, नज़ाकत से और विनम्रता से मेरा अभिवादन किया, जिसे उसने शायद सवारी करते हुए ही गढ़ा था। उसने मुझे बताया कि वह अपनी माँ का संदेश लाया है, जो उस रास्ते से गुजरते हुए उससे मनोर में आने और कल परिवार के साथ रात्रिभोज में शामिल होने का अनुरोध करने के लिए कह रही थी।

उन्होंने कहा, “हम दोनों के अलावा और कोई मिलने वाला नहीं है; लेकिन एस्थर आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक है; और मेरी माँ को डर है कि आप इस बड़े घर में अकेलेपन का अनुभव करेंगे, और वह चाहती हैं कि आप उन्हें अधिक बार अपने साथ समय बिताने का मौका दें, और जब तक मिस्टर हंटिंगडन वापस नहीं आ जाते, तब तक हमारे छोटे से घर में आराम से रहें, ताकि यहाँ आपको थोड़ा और आराम मिल सके।”

मैंने उत्तर दिया, 'वह बहुत दयालु हैं, लेकिन मैं अकेला नहीं हूँ, आप देख रहे हैं; और जिनका समय पूरी तरह से व्यस्त रहता है, वे शायद ही कभी अकेलेपन की शिकायत करते हैं।'

तो क्या आप कल नहीं आएंगे? अगर आप मना कर देंगे तो वह बहुत निराश हो जाएगी।

मुझे अपनी एकाकीपन के लिए इस तरह सहानुभूति दिखाए जाने में कोई आनंद नहीं आया; लेकिन फिर भी, मैंने आने का वादा किया।

‘यह शाम कितनी प्यारी है!’ उसने धूप से जगमगाते पार्क को देखते हुए कहा, जिसमें भव्य उभार और ढलान, शांत जल और पेड़ों के राजसी समूह थे। ‘और आप कितने स्वर्ग में रहते हैं!’

‘आज शाम कितनी सुहावनी है,’ मैंने उत्तर दिया; और यह सोचकर आह भरी कि मैंने इसकी सुंदरता को कितना कम महसूस किया था, और मेरे लिए ग्रासडेल जैसा प्यारा सा इलाका कितना कम स्वर्ग था—और उससे भी कम, उस व्यक्ति के लिए जो स्वेच्छा से उससे दूर हो गया था। श्री हरग्रेव ने मेरे विचारों को समझा या नहीं, यह मैं नहीं कह सकती, लेकिन उन्होंने कुछ हिचकिचाहट भरे, सहानुभूतिपूर्ण और गंभीर स्वर में पूछा कि क्या मैंने हाल ही में श्री हंटिंगडन से कोई खबर सुनी है।

मैंने जवाब दिया, 'हाल ही में नहीं।'

'मुझे ऐसा नहीं लगा,' उसने बुदबुदाते हुए कहा, मानो खुद से कह रहा हो, और सोच-विचार करते हुए जमीन की ओर देखने लगा।

मैंने पूछा, 'क्या आप हाल ही में लंदन से नहीं लौटे हैं?'

'केवल गुजरा कल।'

‘और क्या आपने उसे वहाँ देखा?’

'हां—मैंने उसे देखा था।'

क्या वह ठीक था?

“हाँ—यानी,” उसने बढ़ती हिचकिचाहट और दबी हुई नाराजगी के भाव से कहा, “वह उतना ही अच्छा था जितना उसे होना चाहिए था, लेकिन उन परिस्थितियों में जिन्हें मैं उसके जैसे इतने सौभाग्यशाली व्यक्ति के लिए अविश्वसनीय मानता।” फिर उसने ऊपर देखा और गंभीरता से झुककर मेरी ओर इशारा किया। मेरा चेहरा शर्म से लाल हो गया था।

'मुझे क्षमा करें, श्रीमती हंटिंगडन,' उन्होंने आगे कहा, 'लेकिन जब मैं इस तरह की आसक्तिपूर्ण अंधता और स्वाद की विकृति देखता हूँ तो मैं अपने आक्रोश को दबा नहीं सकता; - लेकिन, शायद, आप इससे अवगत नहीं हैं -' वह रुक गए।

मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं है, महोदय— सिवाय इसके कि वह उम्मीद से ज़्यादा देर से आ रहा है; और अगर फिलहाल वह अपनी पत्नी की बजाय अपने दोस्तों की संगति को पसंद करता है, और गाँव के शांत जीवन की बजाय शहर की अय्याशी को पसंद करता है, तो मुझे लगता है कि इसके लिए मुझे उसके दोस्तों का शुक्रगुजार

होना चाहिए। उनकी पसंद और काम उसके जैसे ही हैं, और मुझे समझ नहीं आता कि उसके इस व्यवहार से उन्हें कोई नाराज़गी या हैरानी क्यों होनी चाहिए।

‘तुम मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव कर रहे हो,’ उसने उत्तर दिया। ‘पिछले कुछ हफ्तों से मुझे श्री हंटिंगडन की संगति का बहुत कम ही अनुभव हुआ है; और जहाँ तक उनके शौक और रुचियों की बात है, वे मेरी समझ से परे हैं— मैं तो एक अकेला घुमक्कड़ हूँ। जहाँ मैंने बस थोड़ा सा स्वाद चखा है, वहीं वे प्याला पूरा खाली कर देते हैं; और अगर कभी एक पल के लिए भी मैंने अपने मन की आवाज़ को पागलपन और मूर्खता में डुबोने की कोशिश की हो, या अगर मैंने अपना बहुत सारा समय और प्रतिभा लापरवाह और अय्याश साथियों के बीच बर्बाद की हो, तो भगवान जानता है कि मैं उन्हें हमेशा के लिए पूरी तरह से त्याग दूँगा, अगर मुझे उन आशीर्वादों का आधा भी मिल जाए जिन्हें वह इतनी कृतघ्नता से पीछे छोड़ देता है—सद्गुण और घरेलू, व्यवस्थित आदतों के लिए आधे भी प्रोत्साहन मिल जाएँ जिन्हें वह तुच्छ समझता है— लेकिन ऐसा घर, और ऐसा साथी जिसे साझा करना पड़े! यह तो शर्मनाक है!’ उसने दाँतों के बीच से बुदबुदाया। ‘और श्रीमती हंटिंगडन, ऐसा मत सोचिए कि मैं उसे उसके वर्तमान कार्यों में लगे रहने के लिए उकसाने का दोषी हो सकता हूँ: इसके विपरीत, मैंने उसे बार-बार समझाया है; मैंने उसके आचरण पर अक्सर आश्चर्य व्यक्त किया है, और उसे उसके कर्तव्यों और विशेषाधिकारों की याद दिलाई है — लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ; वह केवल —’

'बस करो, मिस्टर हरग्रेव; आपको यह समझना चाहिए कि मेरे पति की चाहे जो भी खामियां हों, उन्हें किसी अजनबी के मुंह से सुनना मेरे लिए केवल बुराई को और बढ़ाएगा।'

‘तो क्या मैं अजनबी हूँ?’ उसने दुखी स्वर में कहा। ‘मैं आपका सबसे करीबी पड़ोसी हूँ, आपके बेटे का धर्मपिता हूँ और आपके पति का मित्र हूँ; क्या मैं आपका भी नहीं हो सकता?’

'वास्तविक मित्रता से पहले घनिष्ठ परिचय आवश्यक है; श्री हरग्रेव, मैं आपके बारे में सुनी-सुनाई बातों के अलावा बहुत कम जानता हूँ।'

क्या आप पिछली शरद ऋतु में आपके घर में बिताए गए मेरे छह या सात सप्ताह भूल गई हैं? मैं उन्हें नहीं भूली हूँ। और मैं आपको इतना जानती हूँ, श्रीमती हंटिंगडन, कि मुझे लगता है कि आपके पति दुनिया के सबसे प्रशंसनीय व्यक्ति हैं, और अगर

आप मुझे अपनी मित्रता के योग्य समझें तो मैं भी उनके बाद दूसरे स्थान पर आ सकती हूँ।

'अगर आप मेरे बारे में और अधिक जानते, तो आप ऐसा नहीं सोचते, या अगर जानते भी तो आप ऐसा नहीं कहते और यह उम्मीद नहीं करते कि मैं इस तारीफ से खुश हो जाऊं।'

बोलते-बोलते मैं पीछे हट गई। उसने समझ लिया कि मैं बातचीत खत्म करना चाहती हूँ; और तुरंत इशारा समझते हुए, उसने गंभीरता से झुककर मुझे शुभ संध्या कहा और अपने घोड़े को सड़क की ओर मोड़ दिया। मेरी सहानुभूति भरी बातों को उसने जिस तरह से ठुकराया, उससे वह दुखी और आहत लग रहा था। मुझे यकीन नहीं था कि उससे इतनी सख्ती से बात करना सही था; लेकिन उस समय मुझे उसकी हरकत पर गुस्सा आया था—लगभग अपमानित महसूस हुआ था; ऐसा लग रहा था जैसे वह मेरे पति की अनुपस्थिति और उपेक्षा का फायदा उठा रहा हो और उनके खिलाफ सच्चाई से भी कहीं ज़्यादा आरोप लगा रहा हो।

हमारी बातचीत के दौरान राहेल कुछ गज की दूरी पर चली गई थी। वह घोड़े पर सवार होकर उसके पास आया और बच्चे को देखने के लिए कहा। उसने बच्चे को सावधानी से अपनी बाहों में लिया, लगभग पिता तुल्य मुस्कान के साथ उसे देखा, और जैसे ही मैं पास पहुंचा, मैंने उसे कहते सुना, —

और उसने इसे भी त्याग दिया है!

फिर उसने उसे प्यार से चूमा और संतुष्ट नर्स को लौटा दिया।

'क्या आपको बच्चे पसंद हैं, श्रीमान हरग्रेव?' मैंने उनके प्रति थोड़ा नरम पड़ते हुए कहा।

‘आम तौर पर नहीं,’ उसने जवाब दिया, ‘लेकिन वह बच्चा बहुत प्यारा है, और अपनी माँ जैसा दिखता है,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।

आप वहां गलत हैं; यह अपने पिता से मिलता जुलता है।

‘क्या मैं सही नहीं हूँ, नर्स?’ उसने राहेल से विनती करते हुए कहा।

‘मुझे लगता है, महोदय, इसमें दोनों बातें थोड़ी-थोड़ी हैं,’ उसने जवाब दिया।

वह चला गया; और राहेल ने उसे एक बहुत ही नेक इंसान बताया। मुझे इस विषय पर अभी भी संदेह था।

अगले छह हफ्तों के दौरान मेरी उससे कई बार मुलाकात हुई, लेकिन एक बार को

छोड़कर, हर बार वह अपनी माँ, बहन या दोनों के साथ ही मिला। जब भी मैं उनसे मिलने जाता, वह हमेशा घर पर ही होता, और जब भी वे मुझसे मिलने आते, तो वही उन्हें अपनी गाड़ी में बिठाकर लाता। जाहिर है, उसकी माँ उसके कर्तव्यपरायण व्यवहार और नई घरेलू आदतों से बहुत प्रसन्न थी।

जब मैं उनसे अकेले में मिली, वह जुलाई की शुरुआत का एक सुहाना, लेकिन असहनीय गर्मी वाला दिन था: मैं छोटे आर्थर को पार्क के किनारे वाले जंगल में ले गई थी और उसे एक पुराने ओक के पेड़ की काई से ढकी जड़ों पर बैठा दिया था; और मुट्ठी भर नीले फूल और जंगली गुलाब तोड़कर, मैं उनके सामने घुटने टेककर, एक-एक करके उनकी नन्ही उंगलियों को दे रही थी; उनकी मुस्कुराती आँखों के माध्यम से फूलों की दिव्य सुंदरता का आनंद ले रही थी: उस पल के लिए, अपनी सारी चिंताओं को भूलकर, उनकी प्रसन्नता भरी हंसी पर हंस रही थी और उनकी खुशी में आनंदित हो रही थी, - तभी अचानक हमारे सामने घास पर धूप की थोड़ी सी जगह पर एक छाया छा गई; और ऊपर देखते ही मैंने वाल्टर हरग्रेव को खड़े होकर हमें घूरते हुए देखा।

“माफ़ कीजिए, श्रीमती हंटिंगडन,” उन्होंने कहा, “लेकिन मैं मंत्रमुग्ध हो गया था; मेरे पास न तो आगे आकर आपको टोकने की शक्ति थी, न ही ऐसे दृश्य को देखकर पीछे हटने की। मेरा छोटा धर्मपुत्र कितना चुस्त-दुरुस्त हो रहा है! और आज सुबह कितना खुश है!” वे बच्चे के पास गए और उसका हाथ पकड़ने के लिए झुके; लेकिन यह देखकर कि उनके स्पर्श से बच्चे के आँसू और विलाप उत्पन्न हो सकते हैं, न कि बदले में स्नेहपूर्ण भाव, उन्होंने समझदारी से अपना हाथ पीछे खींच लिया।

'श्रीमती हंटिंगडन, वह नन्हा सा बच्चा आपके लिए कितना सुख और सुकून का स्रोत होगा!' उन्होंने अपनी आवाज़ में थोड़ी उदासी के साथ कहा, और उस शिशु को प्रशंसा भरी निगाहों से देखा।

मैंने उत्तर दिया, 'हाँ,' और फिर मैंने उसकी माँ और बहन के बारे में पूछा।

उन्होंने विनम्रतापूर्वक मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया, और फिर उस विषय पर लौट आए जिससे मैं बचना चाहता था; हालांकि उनके लहजे में कुछ झिझक थी जो इस बात का प्रमाण थी कि उन्हें किसी को नाराज करने का डर था।

उन्होंने कहा, 'क्या आपको हाल ही में हंटिंगडन से कोई खबर नहीं मिली?'

‘इस हफ्ते नहीं,’ मैंने जवाब दिया। ‘इन तीन हफ्तों में भी नहीं,’ शायद मैंने कहा

होता।

‘मुझे आज सुबह उसका एक पत्र मिला। काश, वो ऐसा पत्र होता जिसे मैं उसकी पत्नी को दिखा पाता।’ उसने अपनी वेस्टकोट की जेब से आधा पत्र निकाला, जिस पर आर्थर के प्यारे अक्षरों में पता लिखा था, उसे घूरकर देखा और वापस रख दिया, साथ ही कहा— ‘लेकिन उसने मुझे बताया है कि वह अगले हफ्ते लौटने वाला है।’

'वह मुझे हर बार लिखते समय यही बताता है।'

'बिल्कुल! ठीक है, यह तो उन्हीं की तरह है। लेकिन उन्होंने हमेशा मुझसे यही कहा था कि उनका इरादा इस महीने तक यहीं रहने का है।'

यह मेरे लिए एक आघात की तरह था, यह सुनियोजित अपराध और सत्य की व्यवस्थित अवहेलना का प्रमाण था।

'यह तो उनके बाकी आचरण के अनुरूप ही है,' श्री हरग्रेव ने मुझे ध्यान से देखते हुए कहा, और मुझे लगता है कि उन्होंने मेरे चेहरे पर मेरी भावनाओं को पढ़ लिया था।

‘तो क्या वह सचमुच अगले हफ्ते आ रहा है?’ मैंने कुछ देर रुककर कहा।

“अगर इस आश्वासन से आपको कुछ खुशी मिलती है, तो आप इस पर भरोसा कर सकती हैं। और क्या यह संभव है, श्रीमती हंटिंगडन, कि आप उनके लौटने पर खुश हों?” उन्होंने मेरी ओर ध्यान से देखते हुए कहा।

'बिल्कुल, श्री हरग्रेव; क्या वह मेरे पति नहीं हैं?'

‘ओह, हंटिंगडन; तुम नहीं जानते कि तुम किसका अपमान कर रहे हो!’ उसने भावुक होकर बुदबुदाया।

मैंने अपने बच्चे को गोद में उठाया और उसे सुप्रभात कहकर, अपने घर की पवित्रता में, बिना किसी रोक-टोक के अपने विचारों में खो जाने के लिए वहां से चली गई।

और क्या मैं खुश थी? हाँ, बहुत खुश थी; हालाँकि मैं आर्थर के व्यवहार से क्रोधित थी, और हालाँकि मुझे लगा कि उसने मेरे साथ अन्याय किया है, और मैंने ठान लिया था कि उसे भी इसका एहसास होना चाहिए।

अध्याय XXX

अगली सुबह मुझे स्वयं उनसे कुछ पंक्तियाँ मिलीं, जिनसे हार्ग्रेव के उनके शीघ्र लौटने के आशय की पुष्टि हुई। और वे अगले सप्ताह आ तो गए, पर शारीरिक और मानसिक रूप से पहले से भी बदतर हालत में। हालाँकि, इस बार मैं उनकी लापरवाही को अनदेखा नहीं करना चाहता था; मुझे लगा कि यह उचित नहीं होगा। लेकिन पहले दिन वे यात्रा से थके हुए थे, और मुझे उन्हें वापस पाकर खुशी हुई: मैंने उन्हें तब डांटने का इरादा नहीं किया; मैंने कल तक इंतजार किया। अगली सुबह भी वे थके हुए थे: मैंने थोड़ा और इंतजार किया। लेकिन रात के खाने के समय, जब बारह बजे एक बोतल सोडा वाटर और एक कप कड़क कॉफी से नाश्ता करने और दो बजे ब्रांडी में मिलाए गए सोडा वाटर की एक और बोतल से दोपहर का भोजन करने के बाद, वे मेज पर रखी हर चीज में कमी निकालने लगे और कहने लगे कि हमें अपना रसोइया बदलना होगा, तब मुझे लगा कि अब समय आ गया है।

'आर्थर, आपके जाने से पहले जो रसोइया थी, वही यहाँ भी है,' मैंने कहा। 'आप तब भी उससे काफी संतुष्ट थे।'

'मेरे जाने के दौरान तुमने उसे गंदी आदतें अपनाने दी होंगी। ऐसा घिनौना खाना किसी को भी ज़हर का शिकार बना सकता है!' और उसने चिढ़कर अपनी प्लेट एक तरफ धकेल दी और हताशा से कुर्सी पर पीछे झुक गया।

मैंने अत्यंत विनम्रता से कहा, 'मुझे लगता है कि तुम बदल गए हो, वह नहीं,' क्योंकि मैं उसे नाराज नहीं करना चाहता था।

'ऐसा हो सकता है,' उसने लापरवाही से जवाब दिया, और शराब और पानी का गिलास उठाते हुए, उसे झट से पीते हुए कहा, 'क्योंकि मेरी रगों में एक ऐसी भयंकर आग है जिसे सागर का सारा पानी भी बुझा नहीं सकता!'

'आग किस बात से भड़की?' मैं पूछने ही वाला था, लेकिन उसी क्षण बटलर अंदर आया और सामान ले जाने लगा।

'जल्दी करो, बेन्सन; यह भयानक शोर बंद करो!' उसके मालिक ने चिल्लाकर कहा। 'और पनीर मत लाना, वरना मैं बीमार पड़ जाऊँगा!'

बेन्सन ने कुछ हैरानी के साथ पनीर हटाया और बाकी बचे सामान को चुपचाप और

जल्दी से निपटाने की पूरी कोशिश की; लेकिन, दुर्भाग्य से, अपने मालिक की कुर्सी को जल्दबाजी में पीछे धकेलने के कारण कालीन में एक सिलवट पड़ गई, जिससे वह लड़खड़ा गया और उसके हाथों में बर्तनों से भरी ट्रे के साथ एक जोरदार टक्कर हुई, हालांकि कोई खास नुकसान नहीं हुआ, बस एक सॉस ट्यूरिन गिरकर टूट गई; लेकिन, मेरी असहनीय शर्म और निराशा के लिए, आर्थर गुस्से से उसकी ओर मुड़ा और उसे भयंकर गालियां दीं। बेचारा आदमी पीला पड़ गया और टूटे हुए टुकड़ों को उठाते समय स्पष्ट रूप से कांप रहा था।

'उसकी कोई गलती नहीं थी, आर्थर,' मैंने कहा; 'कालीन पर उसका पैर फंस गया, और कोई बड़ी बात नहीं है। अभी इन टुकड़ों की चिंता मत करो, बेन्सन; तुम इन्हें बाद में हटा सकते हो।'

रिहा होने पर खुशी जताते हुए, बेन्सन ने झटपट मिठाई परोसी और वहां से चले गए।

जैसे ही दरवाजा बंद हुआ, आर्थर ने कहा, 'हेलेन, तुम मेरे खिलाफ नौकर का पक्ष लेकर क्या कहना चाहती हो, जबकि तुम्हें पता था कि मैं विचलित था?'

'मुझे नहीं पता था कि तुम विचलित हो, आर्थर: और बेचारा आदमी तुम्हारे अचानक हुए विस्फोट से काफी डर गया और उसे चोट भी आई।'

'बेचारा आदमी! और क्या आपको लगता है कि मैं उस जैसे संवेदनहीन जानवर की भावनाओं पर विचार करने के लिए रुक सकता हूँ, जबकि उसकी घिनौनी गलतियों से मेरी अपनी नसें चकनाचूर हो चुकी हैं?'

मैंने तुम्हें पहले कभी घबराहट की शिकायत करते नहीं सुना।

और मुझे भी तुम्हारी तरह घबराहट क्यों नहीं होनी चाहिए?

'ओह, मैं आपके उन पर अधिकार के दावे का विरोध नहीं करता, लेकिन मैं अपने अधिकार के बारे में कभी शिकायत नहीं करता।'

'नहीं, आपको कैसे पता चलेगा, जब आप उन्हें आजमाने के लिए कभी कुछ करते ही नहीं?'

'तो फिर तुम अपना क्यों आजमाते हो, आर्थर?'

'क्या आपको लगता है कि मेरे पास घर पर रहने और एक महिला की तरह अपना ख्याल रखने के अलावा और कोई काम नहीं है?'

तो क्या विदेश जाते समय एक पुरुष की तरह अपना ख्याल रखना असंभव है?

तुमने मुझसे कहा था कि तुम ऐसा कर सकते हो, और करोगे भी; और तुमने वादा भी किया था—'

'आइए, आइए, हेलेन, अब उस बकवास की शुरुआत मत कीजिए; मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

'क्या बर्दाश्त नहीं कर सकते? — उन वादों की याद दिलाए जाने को जिन्हें आपने तोड़ा है?'

'हेलेन, तुम बहुत निर्दयी हो। अगर तुम्हें पता होता कि जब तुम बोल रही थी तो मेरा दिल कितनी ज़ोर से धड़क रहा था और मेरी हर नस कैसे कांप रही थी, तो तुम मुझे बख्श देतीं। तुम एक मूर्ख नौकर पर तरस खा सकती हो जिसने एक थाली तोड़ दी; लेकिन मुझ पर ज़रा भी दया नहीं दिखातीं जब मेरा सिर दो टुकड़ों में फट गया है और मैं इस जानलेवा बुखार से जल रहा हूँ।'

उसने अपना सिर हाथ पर टिकाया और आह भरी। मैं उसके पास गया और अपना हाथ उसके माथे पर रखा। उसका माथा सचमुच जल रहा था।

'तो मेरे साथ ड्राइंग रूम में आओ, आर्थर; और अब और शराब मत पीना: तुमने रात के खाने के बाद से कई गिलास पी लिए हैं, और दिन भर नाममात्र का ही खाया है। इससे तुम्हें क्या फायदा होगा?'

कुछ प्यार और समझा-बुझाकर मैंने उसे मेज़ से उठने के लिए मना लिया। जब बच्चा लाया गया तो मैंने उसे उससे बहलाने की कोशिश की; लेकिन बेचारा छोटा आर्थर अभी दाँत निकाल रहा था, और उसके पिता उसकी शिकायतें बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे: थोड़ी सी भी बेचैनी दिखाते ही उसे तुरंत बाहर निकाल दिया गया; और क्योंकि शाम के दौरान मैं भी थोड़ी देर के लिए उसके साथ बाहर चली गई, तो लौटने पर मुझे अपने पति से ज़्यादा अपने बच्चे को प्राथमिकता देने के लिए फटकार लगाई गई। मैंने उसे सोफे पर ठीक उसी तरह लेटा हुआ पाया जैसे मैंने उसे छोड़ा था।

'अच्छा!' घायल व्यक्ति ने बनावटी निराशा भरे स्वर में कहा। 'मैंने सोचा था कि मैं आपको नहीं बुलाऊंगा; मैंने सोचा था कि मैं बस यह देखूंगा कि आप मुझे कब तक अकेला छोड़ना पसंद करेंगे।'

'मैं ज्यादा देर तक यहाँ नहीं रहा, है ना, आर्थर? मुझे यकीन है कि मैं एक घंटे से भी कम समय से यहाँ हूँ।'

'ओह, बिल्कुल, आपके लिए एक घंटा कुछ भी नहीं है, आप तो बड़े आनंद से

व्यस्त हैं; लेकिन मेरे लिए—’

मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'इसका उपयोग सुखद नहीं रहा है। मैं अपने बेचारे छोटे बच्चे की देखभाल कर रही थी, जिसकी तबीयत बिल्कुल भी ठीक नहीं है, और जब तक मैं उसे सुला नहीं देती, मैं उसे छोड़कर नहीं जा सकती थी।'

'ओह, बिल्कुल, आप मेरे अलावा हर चीज के लिए दया और करुणा से भरे हुए हैं।'

‘और मुझे तुम पर दया क्यों करनी चाहिए? तुम्हें क्या हुआ है?’

वाह! ये तो सब कुछ है! इतनी थकान और तनाव के बाद, जब मैं बीमार और थका हुआ घर आता हूँ, आराम की चाह में, और कम से कम अपनी पत्नी से ध्यान और दया की उम्मीद करता हूँ, तो वह शांति से पूछती है कि मुझे क्या हुआ है!

मैंने जवाब दिया, 'तुम्हें कोई समस्या नहीं है, सिवाय इसके कि तुमने मेरी बार-बार की गई विनती और आग्रह के बावजूद जानबूझकर अपने ऊपर यह विपत्ति मोल ली है।'

‘अब, हेलेन,’ उसने जोर देकर कहा, लेटी हुई मुद्रा से आधा उठते हुए, ‘अगर तुमने मुझे एक और शब्द भी कहा, तो मैं घंटी बजाकर शराब की छह बोतलें मंगवा लूंगा, और कसम से, इस जगह से हिलने से पहले मैं उन्हें पूरा पी जाऊंगा!’

मैंने और कुछ नहीं कहा, बल्कि मेज के सामने बैठ गया और अपनी ओर एक किताब खींच ली।

‘अगर तुम मुझे बाकी सभी सुख-सुविधाओं से वंचित कर दो, तो कम से कम मुझे शांति तो रहने दो!’ उसने आगे कहा; और आह और कराहट के बीच अधीरता से सांस छोड़ते हुए, अपनी पिछली स्थिति में वापस बैठते हुए, उसने सुस्ती से अपनी आँखें बंद कर लीं, मानो सोने जा रहा हो।

मेरे सामने मेज पर जो किताब खुली पड़ी थी, वह क्या थी, मैं नहीं बता सकती, क्योंकि मैंने उसे देखा ही नहीं। अपनी दोनों कोहनियों को किताब के दोनों ओर टिकाकर और हाथों को आँखों के सामने जोड़कर, मैं चुपचाप रोने लगी। लेकिन आर्थर सोया नहीं था: हल्की सी सिसकी सुनते ही उसने अपना सिर उठाया और चारों ओर देखते हुए अधीरता से बोला, 'हेलेन, तुम क्यों रो रही हो? आखिर बात क्या है?'

‘मैं तुम्हारे लिए रो रही हूँ, आर्थर,’ मैंने जल्दी से अपने आँसू पोंछते हुए उत्तर दिया; और उठकर उसके सामने घुटनों के बल बैठ गई, और उसका बेजान हाथ अपने हाथों

में थामकर बोली: ‘क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम मेरा ही एक हिस्सा हो? और क्या तुम्हें लगता है कि तुम खुद को चोट पहुँचा सकते हो और खुद को अपमानित कर सकते हो, और मुझे इसका एहसास न हो?’

‘हेलेन, क्या मुझे खुद को अपमानित करना चाहिए?’

‘हाँ, नीचा दिखाओ! तुम इतने समय से क्या कर रहे थे?’

'तुम यह सवाल न ही पूछो तो बेहतर होगा,' उसने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा।

और बेहतर होगा कि तुम किसी को न बताओ; लेकिन तुम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि तुमने खुद को बुरी तरह से अपमानित किया है। तुमने अपने शरीर और मन से, और मेरे साथ भी शर्मनाक अन्याय किया है; और मैं इसे चुपचाप सहन नहीं कर सकता, और न ही करूँगा!

अरे, मेरा हाथ इतनी ज़ोर से मत दबाओ, और मुझे इतना परेशान मत करो, भगवान के लिए! ओह, हैटर्सले! तुम सही थे: यह औरत अपनी तीव्र भावनाओं और अपने दिलचस्प व्यक्तित्व के साथ मेरी जान ले लेगी। बस करो, बस करो, मुझे थोड़ा आराम दो।

‘आर्थर, तुम्हें पश्चाताप करना होगा!’ मैं हताशा के उन्माद में चिल्लाई, उसे बाहों में भरते हुए और अपना चेहरा उसकी छाती में छिपाते हुए। ‘तुम्हें अपने किए पर खेद व्यक्त करना होगा!’

'अच्छा, अच्छा, मैं हूँ।'

‘तुम नहीं हो! तुम फिर से वही गलती करोगे।’

“अगर तुम मेरे साथ इतना बेरहमी से पेश आओगे तो मैं दोबारा ऐसा करने के लिए ज़िंदा नहीं रहूँगा,” उसने मुझे धक्का देते हुए जवाब दिया। “तुमने तो मेरी साँस ही निचोड़ ली है।” उसने अपना हाथ अपने दिल पर रखा और वह सचमुच बहुत परेशान और बीमार लग रहा था।

‘अब मुझे एक गिलास शराब लाओ,’ उसने कहा, ‘तुमने जो किया है, उसका प्रायश्चित करने के लिए, शेरनी! मैं लगभग बेहोश होने वाला हूँ।’

मैं आवश्यक इलाज लाने के लिए हवाई जहाज से गया। इससे उसकी हालत में काफी सुधार हुआ।

मैंने उसके हाथ से खाली गिलास लेते हुए कहा, 'यह कितनी शर्मनाक बात है कि

आप जैसे मजबूत युवक को खुद को ऐसी हालत में पहुंचाना पड़ा!'

‘अगर तुम्हें सब पता होता, मेरी बच्ची, तो तुम शायद कहतीं, “यह कितना आश्चर्य की बात है कि तुम इसे इतनी अच्छी तरह से सहन कर सकती हो!” हेलेन, मैंने इन चार महीनों में उतना जी लिया है जितना तुमने अपने पूरे जीवन में नहीं जिया, या अपने जीवन के अंत तक नहीं जी पाओगी, चाहे तुम्हारे जीवन के सौ वर्ष ही क्यों न हों; इसलिए मुझे किसी न किसी रूप में इसकी कीमत चुकानी ही पड़ेगी।’

'अगर तुमने सावधानी नहीं बरती, तो तुम्हें अनुमान से कहीं अधिक कीमत चुकानी पड़ेगी: तुम्हारा स्वास्थ्य पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा, और मेरा स्नेह भी, अगर उसकी तुम्हारे लिए कोई कीमत है।'

‘क्या! तुम फिर से मुझे अपना प्यार खोने की धमकी देने लगे हो? मुझे लगता है कि अगर यह इतनी आसानी से टूट जाता है, तो शुरू से ही यह सच्चा नहीं रहा होगा। अगर तुम्हें बुरा न लगे, मेरी प्यारी तानाशाह, तो तुम मुझे अपने चुनाव पर सचमुच पछतावा करवा दोगी, और मुझे अपने दोस्त हैटर्सले की सीधी-सादी पत्नी से ईर्ष्या करवा दोगी: हेलेन तो अपनी स्त्री जाति में एक आदर्श है। वह पूरे सीजन लंदन में उसके साथ रहा, और उसने ज़रा भी परेशानी नहीं दी। वह अपनी मर्ज़ी से, एक आम कुंवारे की तरह, अपना मनोरंजन कर सकता था, और उसने कभी उपेक्षा की शिकायत नहीं की; वह रात या सुबह किसी भी समय घर आ सकता था, या बिल्कुल भी घर नहीं आ सकता था; उदास, शांत या नशे में धुत हो सकता था; और बिना किसी डर या परेशानी के अपनी मर्ज़ी से मूर्ख या पागल बन सकता था। वह चाहे कुछ भी करे, वह उसे कभी फटकार या शिकायत नहीं करती। वह कहता है कि पूरे इंग्लैंड में उसके जैसा रत्न नहीं है, और कसम खाता है कि वह उसके लिए अपना राज्य भी नहीं छोड़ेगा।’

लेकिन वह उसके जीवन को अभिशाप बना देता है।

'वह नहीं! उसकी इच्छा केवल उसी की है, और जब तक वह आनंदित रहता है, वह हमेशा संतुष्ट और खुश रहती है।'

‘उस स्थिति में वह भी उतनी ही मूर्ख है जितना वह है; लेकिन ऐसा नहीं है। मुझे उसके कई पत्र मिले हैं जिनमें उसने उसकी हरकतों को लेकर गहरी चिंता व्यक्त की है और शिकायत की है कि आप उसे ऐसी फिजूलखर्ची करने के लिए उकसाते हैं — खासकर एक पत्र में, जिसमें वह मुझसे विनती करती है कि मैं अपने प्रभाव का

इस्तेमाल करके आपको लंदन से दूर ले जाऊं, और कहती है कि आपके आने से पहले उसके पति ने कभी ऐसा नहीं किया था, और आपके जाते ही वह निश्चित रूप से ऐसा करना बंद कर देगा और उसे अपने विवेक के मार्गदर्शन में छोड़ देगा।'

'वह नीच छोटा गद्दार! मुझे वह पत्र दो, और वह उसे देख लेगा, यह उतना ही निश्चित है जितना कि मैं जीवित हूं।'

नहीं, वह उसकी सहमति के बिना इसे नहीं देखेगा; लेकिन अगर उसने देख भी लिया, तो इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे उसे गुस्सा आए, न ही किसी और में। वह उसके खिलाफ कभी एक शब्द भी नहीं बोलती: वह केवल उसके लिए चिंता व्यक्त करती है। वह उसके आचरण का जिक्र बहुत ही कोमल शब्दों में करती है, और उसके लिए हर संभव बहाना बनाती है; और जहाँ तक उसकी अपनी पीड़ा की बात है, मैं उसे उसके पत्रों में व्यक्त होते देखने के बजाय महसूस करती हूँ।

लेकिन वह मुझे गाली देती है; और इसमें कोई शक नहीं कि तुमने उसकी मदद की है।

नहीं; मैंने उससे कहा कि वह तुम्हारे साथ मेरे प्रभाव को बढ़ा-चढ़ाकर बता रही है, कि अगर मैं कर सकता तो तुम्हें शहर के प्रलोभनों से दूर ले जाता, लेकिन सफलता की बहुत कम उम्मीद है, और मुझे लगता है कि उसका यह मानना गलत है कि तुमने मिस्टर हैटर्सले या किसी और को गुमराह किया है। एक समय मैं खुद इसके विपरीत राय रखता था, लेकिन अब मेरा मानना है कि तुम दोनों एक-दूसरे को भ्रष्ट कर रहे हो; और शायद, अगर वह अपने पति से थोड़ी नरमी से लेकिन गंभीरता से बात करे, तो कुछ फायदा हो सकता है; क्योंकि, हालांकि वह मेरे पति से ज्यादा कठोर है, मेरा मानना है कि वह उतना आसानी से बहकावे में नहीं आता।

और इस तरह तुम लोग आगे बढ़ते रहते हो—एक-दूसरे को विद्रोह के लिए उकसाते रहते हो, एक-दूसरे के साथियों को गाली देते रहते हो, और अपने ही लोगों के खिलाफ आरोप लगाते रहते हो, जिससे दोनों को आपसी संतुष्टि मिलती है!

मैंने कहा, 'तुम्हारे अपने ही कथन के अनुसार, मेरी बुरी सलाह का उस पर नगण्य प्रभाव पड़ा है। और जहाँ तक गाली-गलौज और निंदा की बात है, हम दोनों अपने जीवनसाथियों की गलतियों और अवगुणों से इतने गहरे लज्जित हैं कि उन्हें अपने पत्रों में चर्चा का विषय नहीं बनाते। हम भले ही मित्र हों, लेकिन हम तुम्हारी कमियों को अपने तक ही रखना चाहेंगे—यहाँ तक कि खुद से भी, अगर उन्हें जानकर हम तुम्हें

उनसे मुक्ति दिला सकें।’

अरे वाह! मुझे उनकी चिंता मत करो: इससे कुछ भी अच्छा नहीं होगा। मुझ पर थोड़ा सब्र रखो, और मेरी सुस्ती और चिड़चिड़ेपन को कुछ देर सहन करो, जब तक कि यह मनहूस बुखार मेरे शरीर से उतर न जाए, और फिर तुम मुझे पहले की तरह खुश और दयालु पाओगे। तुम पिछली बार की तरह कोमल और अच्छे क्यों नहीं हो सकते? मुझे यकीन है कि मैं इसके लिए बहुत आभारी था।

और तुम्हारी कृतज्ञता से क्या लाभ हुआ? मैंने खुद को इस भ्रम में रखा कि तुम्हें अपने गुनाहों पर शर्म आ रही है, और आशा की कि तुम उन्हें फिर कभी नहीं दोहराओगे; लेकिन अब तुमने मुझे आशा करने के लिए कुछ भी नहीं छोड़ा!

‘मेरी स्थिति वाकई बेहद निराशाजनक है, है ना? अगर इससे मुझे मेरी प्यारी चिंतित पत्नी के मुझे धर्म परिवर्तन कराने के प्रयासों के दर्द और चिंता से मुक्ति मिल जाए, और उसे ऐसे प्रयासों की मेहनत और परेशानी से, और उसके प्यारे चेहरे और मधुर स्वरों को इसके विनाशकारी प्रभावों से बचाया जा सके, तो यह एक बड़ी राहत की बात होगी। हेलेन, कभी-कभी भावनाओं का उफान एक अद्भुत उत्तेजना पैदा करने वाली चीज होती है, और आंसुओं की बाढ़ भी बेहद मार्मिक होती है, लेकिन जब इन्हें बार-बार किया जाता है, तो ये दोनों ही सुंदरता को बिगाड़ने और दोस्तों को थकाने के लिए बेहद हानिकारक होती हैं।’

उसके बाद से मैंने यथासंभव अपने आँसू और भावनाओं को नियंत्रित किया। मैंने उसे समझाने-बुझाने और परिवर्तन के व्यर्थ प्रयास भी नहीं किए, क्योंकि मुझे समझ आ गया था कि यह सब व्यर्थ है: ईश्वर शायद उसके उस हृदय को जगा दे, जो आत्म-भोग में डूबा हुआ था, और उसकी आँखों से इंद्रिय-विहीन अंधकार का पर्दा हटा दे, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती थी। अपने अधीनस्थों के प्रति, जो अपना बचाव नहीं कर सकते थे, उसके अन्याय और दुर्भावना का मैं अब भी विरोध करती थी और सहन करती थी; लेकिन जब अक्सर ऐसा होता था कि केवल मैं ही उसका निशाना बनती थी, तो मैं इसे शांत भाव से सहन करती थी, सिवाय उन समयों के जब बार-बार होने वाली परेशानियों से मेरा स्वभाव थक जाता था, या किसी नई अतार्किकता से मेरा गुस्सा भड़क उठता था, और मैं खुद पर काबू नहीं रख पाती थी, और मुझे क्रूरता, निर्दयता और अधीरता के आरोपों का सामना करना पड़ता था। मैं उसकी ज़रूरतों और मनोरंजन का ध्यान रखती थी, लेकिन मैं मानती हूँ कि पहले जैसी लगन और स्नेह से

नहीं, क्योंकि मैं ऐसा महसूस नहीं कर पाती थी; इसके अलावा, अब मेरे समय और देखभाल पर एक और दावेदार था - मेरा बीमार शिशु, जिसके लिए मैं अक्सर उसके अनुचित रूप से सख्त पिता के निंदनीयतापूर्ण आरोपों और शिकायतों को सहन करती थी।

लेकिन आर्थर स्वभाव से चिड़चिड़ा या गुस्सैल नहीं था; बल्कि इसके विपरीत, उसकी यह अचानक उत्पन्न हुई झुंझलाहट और घबराहट भरी चिड़चिड़ाहट लगभग हास्यास्पद थी, जो क्रोध के बजाय हंसी पैदा करने वाली थी, अगर उसके शरीर की इस गड़बड़ी से जुड़े अत्यंत कष्टदायक पहलुओं को ध्यान में न रखा जाए। और जैसे-जैसे उसका शारीरिक स्वास्थ्य सुधरता गया, उसका स्वभाव भी धीरे-धीरे बेहतर होता गया, जो मेरे अथक प्रयासों के बिना संभव नहीं था; क्योंकि उसके बारे में एक बात ऐसी थी जिसे मैंने निराशा में भी नहीं छोड़ा था, और उसकी रक्षा के लिए एक प्रयास ऐसा था जिसे मैं नहीं छोड़ना चाहता था। शराब के प्रति उसकी लालसा बढ़ गई थी, जैसा कि मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया था। अब यह उसके लिए सामाजिक आनंद का एक सहायक साधन मात्र नहीं था: यह अपने आप में आनंद का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया था। कमजोरी और निराशा के इस दौर में वह इसे अपना सहारा, अपना दिलासा, अपना मनोरंजन और अपना दोस्त बना लेता और इस तरह गहरे से गहरे डूबता चला जाता, और हमेशा के लिए उस दलदल में फंस जाता जिसमें वह गिर चुका था। लेकिन मैंने ठान लिया था कि जब तक मेरा प्रभाव बाकी है, ऐसा कभी नहीं होने दूँगा; और यद्यपि मैं उसे उसकी ज़रूरत से ज़्यादा लेने से नहीं रोक सका, फिर भी निरंतर लगन, दयालुता, दृढ़ता, सतर्कता, समझा-बुझाकर, साहस और दृढ़ संकल्प से मैं उसे उस घृणित प्रवृत्ति के पूर्ण बंधन से बचाने में सफल रहा, जो अपने आगमन में इतनी कपटी, अपने अत्याचार में इतनी निर्दयी और अपने परिणामों में इतनी विनाशकारी है।

और यहाँ मुझे यह नहीं भूलना चाहिए कि मैं उनके मित्र श्री हरग्रेव का बहुत ऋणी हूँ। उस समय वे अक्सर ग्रासडेल आते थे और हमारे साथ भोजन करते थे, और मुझे डर है कि ऐसे अवसरों पर आर्थर खुशी-खुशी विवेक और शिष्टाचार को ताक पर रख देते और खूब मौज-मस्ती करते, जब भी उनका मित्र उस आनंदमय मनोरंजन में शामिल होने के लिए सहमत होता; और यदि बाद वाला मान जाता, तो वह एक या दो रातों में हफ्तों की मेहनत को बर्बाद कर सकता था और उस नाजुक सुरक्षा कवच को

एक स्पर्श से ध्वस्त कर सकता था जिसे बनाने में मुझे इतनी मेहनत और परिश्रम करना पड़ा था। मुझे शुरू में इतना डर था कि मैंने विनम्रतापूर्वक उनसे निजी तौर पर आर्थर की इन अतिभोग प्रवृत्ति के बारे में अपनी आशंकाएँ व्यक्त कीं और आशा जताई कि वे इसे बढ़ावा नहीं देंगे। वे मेरे इस विश्वास से प्रसन्न हुए और निश्चित रूप से उन्होंने इसे प्रकट नहीं किया। उस अवसर पर और उसके बाद हर बार उनकी उपस्थिति ने मेजबान को और अधिक असंयम के कृत्यों के लिए उकसाने के बजाय एक तरह से नियंत्रण का काम किया; और वह हमेशा उसे भोजन कक्ष से समय पर और ठीक-ठाक हालत में लाने में सफल रहता था; क्योंकि अगर आर्थर 'ठीक है, मुझे आपको आपकी पत्नी से दूर नहीं रखना चाहिए' या 'हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि श्रीमती हंटिंगडन अकेली हैं' जैसे संकेतों को अनसुना कर देता, तो वह खुद मेज छोड़कर मेरे पास आने पर जोर देता, और उसका मेज़बान, चाहे कितना भी अनिच्छा से हो, उसके पीछे जाने के लिए बाध्य हो जाता।

इसलिए मैंने श्री हरग्रेव को परिवार के सच्चे मित्र, आर्थर के लिए एक हानिरहित साथी, उसका मनोबल बढ़ाने वाले और उसे पूर्ण निष्क्रियता और मेरे सिवा किसी भी समाज से अलग-थलग रहने की नीरसता से बचाने वाले, तथा मेरे लिए एक उपयोगी सहयोगी के रूप में स्वीकार करना सीख लिया। ऐसी परिस्थितियों में मैं उनके प्रति कृतज्ञ हुए बिना नहीं रह सका; और मैंने पहले उपयुक्त अवसर पर ही अपना आभार व्यक्त करने में कोई संकोच नहीं किया; फिर भी, ऐसा करते हुए, मेरे दिल ने फुसफुसाया कि सब ठीक नहीं है, और मेरे चेहरे पर एक उदासी छा गई, जिसे उन्होंने अपनी स्थिर, गंभीर निगाहों से और भी बढ़ा दिया, जबकि उनके द्वारा उन आभारों को स्वीकार करने के तरीके ने मेरी आशंकाओं को और भी बढ़ा दिया। मेरी सेवा करने में सक्षम होने की उनकी अपार खुशी मेरे प्रति सहानुभूति और स्वयं के लिए करुणा से दब गई - मुझे नहीं पता किस बात पर, क्योंकि मैं यह जानने के लिए नहीं रुका, और न ही उन्हें अपने दुख मुझसे साझा करने दिया। उनकी आहें और दबी हुई पीड़ा के संकेत एक भरे हुए दिल से निकले प्रतीत होते थे; लेकिन या तो उसे उन्हें अपने भीतर ही रखना होगा, या फिर मेरे अलावा किसी और को बताना होगा: हमारे बीच पहले से ही काफी विश्वास था। यह गलत लग रहा था कि मेरे पति के दोस्त और मेरे बीच, उसकी जानकारी के बिना, एक गुप्त समझौता हो, जिसका वह शिकार हो। लेकिन बाद में मेरे मन में ख्याल आया, 'अगर यह गलत है, तो निश्चित रूप से गलती आर्थर

की है, मेरी नहीं।'

और वास्तव में मुझे नहीं पता कि उस समय मैं अपने लिए नहीं बल्कि उसके लिए शर्मिंदा थी या नहीं; क्योंकि, चूंकि वह और मैं एक हैं, मैं स्वयं को उससे इतना जोड़ लेती हूँ कि मैं उसकी गिरावट, उसकी कमियों और उसके गुनाहों को अपना ही समझती हूँ: मैं उसके लिए शर्मिंदा होती हूँ, उसके लिए डरती हूँ; मैं उसके लिए पश्चाताप करती हूँ, रोती हूँ, प्रार्थना करती हूँ और उसके लिए स्वयं की तरह महसूस करती हूँ; लेकिन मैं उसके लिए कुछ नहीं कर सकती; और इसलिए मुझे अपने आप में और वास्तविकता में भी, इस मिलन से दूषित और भ्रष्ट होना ही है, और मैं हूँ भी। मैं उससे प्रेम करने के लिए इतनी दृढ़ हूँ, उसकी गलतियों को माफ करने के लिए इतनी उत्सुक हूँ कि मैं लगातार उन पर विचार करती रहती हूँ, और उसके सबसे ढीले सिद्धांतों और सबसे बुरे व्यवहारों को कम करने का प्रयास करती रहती हूँ, यहाँ तक कि मैं बुराई से परिचित हो जाती हूँ, और लगभग उसके पापों में भागीदार बन जाती हूँ। जो बातें पहले मुझे चौंकाती और घृणास्पद लगती थीं, अब मुझे स्वाभाविक लगती हैं। मैं जानती हूँ कि वे गलत हैं, क्योंकि तर्क और ईश्वर का वचन उन्हें गलत घोषित करते हैं; लेकिन धीरे-धीरे मैं वह सहज भय और घृणा खो रही हूँ जो मुझे प्रकृति से मिली थी, या मेरी चाची के उपदेशों और उदाहरण से मुझमें समाहित हुई थी। शायद तब मैं अपने निर्णयों में बहुत कठोर थी, क्योंकि मैं पापी और पाप दोनों से घृणा करती थी; अब मैं खुद को यह कहकर दिलासा देती हूँ कि मैं अधिक दयालु और विचारशील हूँ; लेकिन क्या मैं अधिक उदासीन और संवेदनहीन भी नहीं होती जा रही हूँ? मैं कितनी मूर्ख थी, यह सोचकर कि मुझमें खुद को और उसे बचाने के लिए पर्याप्त शक्ति और पवित्रता है! ऐसा व्यर्थ घमंड तब सार्थक होगा, जब मैं उसी खाई में उसके साथ मर जाऊँगी जिससे मैंने उसे बचाने की कोशिश की थी! फिर भी, ईश्वर मुझे और उसे भी इससे बचाए! हाँ, बेचारे आर्थर, मैं अब भी तुम्हारे लिए आशा और प्रार्थना करूँगी; और यद्यपि मैं ऐसे लिख रही हूँ जैसे तुम कोई परित्यक्त अभागे हो, आशा और क्षमा से परे, यह केवल मेरे चिंतित भय और मेरी प्रबल इच्छाएँ हैं जो मुझे ऐसा करने पर मजबूर करती हैं; जो तुम्हें कम प्यार करता, वह कम कड़वा और कम असंतुष्ट होता।

हाल ही में उनका आचरण ऐसा रहा है जिसे दुनिया बेदाग कहती है; लेकिन मैं जानती हूं कि उनका दिल अभी भी नहीं बदला है; और मैं जानती हूं कि वसंत ऋतु

नजदीक आ रही है, और मुझे इसके परिणामों का गहरा भय है।

जैसे-जैसे उनके थके-हारे शरीर में फिर से जोश और ऊर्जा आने लगी, और साथ ही आराम और विश्राम के प्रति उनकी पूर्वप्रसंग भी कुछ हद तक जागृत होने लगी, मैंने उनके मनोरंजन और तरोताजगी के लिए, और हमारे छोटे बच्चे के लाभ के लिए भी, समुद्र किनारे कुछ समय के लिए रहने का सुझाव दिया। लेकिन नहीं: जलपान स्थल बहुत ही उबाऊ थे; इसके अलावा, उनके एक मित्र ने उन्हें स्कॉटलैंड में एक-दो महीने बिताने के लिए आमंत्रित किया था, जहाँ वे तीतर और हिरण का शिकार जैसे बेहतर मनोरंजन का आनंद ले सकते थे, और उन्होंने जाने का वादा भी कर दिया था।

'तो क्या तुम मुझे फिर से छोड़ जाओगे, आर्थर?' मैंने कहा।

जी हां, प्रियतम, लेकिन मैं केवल इसलिए लौट रहा हूं ताकि लौटने पर तुम्हें और भी अधिक प्यार कर सकूं, और पिछली सभी गलतियों और कमियों की भरपाई कर सकूं; और इस बार तुम्हें मुझसे डरने की जरूरत नहीं है: पहाड़ों पर कोई प्रलोभन नहीं है। और मेरी अनुपस्थिति में, यदि तुम चाहो तो स्टैनिंगली जा सकती हो: तुम्हें पता है, तुम्हारे चाचा और चाची बहुत समय से चाहते हैं कि हम वहां जाएं; लेकिन किसी तरह मेरे और उस महिला के बीच इतनी अरुचि है कि मैं कभी भी वहां जाने के लिए तैयार नहीं हो पाया।

अगस्त के लगभग तीसरे सप्ताह में, आर्थर स्कॉटलैंड के लिए रवाना हुए, और श्री हरग्रेव भी उनके साथ गए, जिससे मुझे व्यक्तिगत रूप से संतुष्टि मिली। कुछ समय बाद, मैं अपने छोटे आर्थर और राहेल के साथ अपने प्यारे पुराने घर स्टैनिंगली गई, जहाँ मैंने अपने प्यारे पुराने दोस्तों और निवासियों को फिर से देखा। मेरे मन में सुख और दुख की मिली-जुली भावनाएँ थीं, जो इतनी गहराई से घुलमिल गई थीं कि मैं मुश्किल से ही एक को दूसरे से अलग कर पा रही थी, और यह बता पा रही थी कि उन पुराने परिचित दृश्यों, स्वरों और चेहरों को देखकर मेरी आँखों में उमड़ रहे आँसू, मुस्कान और आहें किस वजह से थीं।

ग्रासडेल लौटने के कई हफ़्तों बाद तक आर्थर घर नहीं आया; लेकिन अब मुझे उसकी उतनी चिंता नहीं थी; स्कॉटलैंड की जंगली पहाड़ियों में उसे खेलों में व्यस्त देखना, लंदन के दुष्परिणामों और प्रलोभनों में डूबे रहने से कितना अलग था। उसके पत्र अब, हालांकि न तो लंबे थे और न ही प्रेम भरे, पहले से कहीं अधिक नियमित थे; और जब वह लौटा, तो मेरी अपार खुशी के लिए, जाने से पहले की तुलना में वह और

भी बुरा होने के बजाय अधिक प्रसन्न, ऊर्जावान और हर तरह से बेहतर था। तब से मुझे शिकायत करने का कोई खास कारण नहीं मिला है। उसे अब भी खाने-पीने के सुखों का शौक है, जिस पर मुझे लगाम कसनी पड़ती है; लेकिन उसने अपने बेटे पर ध्यान देना शुरू कर दिया है, और यह घर के अंदर उसके लिए मनोरंजन का एक बढ़ता हुआ स्रोत है, जबकि बाहर, जब जमीन पाले से सख्त नहीं होती, तो लोमड़ी का शिकार और घुड़सवारी उसके लिए पर्याप्त मनोरंजन है; इसलिए वह मनोरंजन के लिए पूरी तरह से मुझ पर निर्भर नहीं है। लेकिन अब जनवरी का महीना है; वसंत आ रहा है; और, मैं फिर से दोहराती हूँ, मुझे इसके आगमन के परिणामों से डर लगता है। वह मधुर मौसम, जिसका मैंने कभी आशा और खुशी के समय के रूप में बड़े हर्षोल्लास से स्वागत किया था, अब अपनी वापसी से बिलकुल अलग तरह की उम्मीदें जगाता है।

अध्याय XXXI

20 मार्च, 1824। वह भयानक समय आ ही गया, और आर्थर चला गया, जैसा कि मुझे उम्मीद थी। इस बार उसने लंदन में थोड़े समय के लिए रुकने और महाद्वीप जाने का इरादा जताया था, जहाँ वह शायद कुछ हफ़्ते रुकेगा; लेकिन मुझे कई हफ़्तों के बाद ही उसके आने की उम्मीद है: अब मैं जानती हूँ कि उसके लिए दिन हफ़्तों के बराबर होते हैं और हफ़्ते महीनों के बराबर।

30 जुलाई। — वह लगभग तीन सप्ताह पहले लौटा, स्वास्थ्य में पहले से कुछ बेहतर, लेकिन स्वभाव में अभी भी बिगड़ा हुआ। और फिर भी, शायद मैं गलत हूँ: मैं ही कम धैर्यवान और सहनशील हूँ। मैं उसके अन्याय, स्वार्थ और घोर दुराचार से थक चुकी हूँ। काश कोई नरम शब्द होता; मैं कोई देवदूत नहीं हूँ, और मेरा भ्रष्टाचार इसके विरुद्ध उठ खड़ा होता है। मेरे बेचारे पिता का पिछले सप्ताह निधन हो गया: आर्थर यह

सुनकर परेशान हो गया, क्योंकि उसने देखा कि मैं सदमे में थी और दुखी थी, और उसे डर था कि यह बात उसके आराम में खलल डालेगी। जब मैंने अपने शोक के बारे में बात की, तो वह चिल्लाया, — ‘ओह, मुझे काला रंग बिल्कुल पसंद नहीं! लेकिन फिर भी, मुझे लगता है कि तुम्हें कुछ समय के लिए इसे पहनना ही होगा, रस्म के लिए; लेकिन मुझे उम्मीद है, हेलेन, तुम अपने चेहरे और व्यवहार को अपने अंतिम संस्कार के वस्त्र के अनुरूप ढालना अपना कर्तव्य नहीं समझोगी।’ आप आहें क्यों भर रहे हैं और मुझे असहज क्यों कर रहे हैं, सिर्फ इसलिए कि एक बुजुर्ग सज्जन, जो हम दोनों के लिए बिलकुल अजनबी थे, ने शराब पीकर अपनी जान दे दी? अब देखिए, आप रो रहे हैं! खैर, यह तो दिखावा ही होगा।

वह मुझे अंतिम संस्कार में शामिल होने या बेचारे फ्रेडरिक के अकेलेपन को दूर करने के लिए एक-दो दिन जाने की बात सुनने को भी तैयार नहीं था। उसने कहा कि यह बिल्कुल अनावश्यक है और ऐसा चाहना मेरा कतई नासमझी है। मेरे पिता मेरे लिए क्या थे? मैंने उन्हें बचपन से सिर्फ एक बार देखा था और मैं अच्छी तरह जानती थी कि उन्हें मेरी ज़रा भी परवाह नहीं थी; और मेरा भाई भी मेरे लिए किसी अजनबी से कम नहीं था। 'इसके अलावा, प्यारी हेलेन,' उसने मुझे प्यार से गले लगाते हुए कहा, 'मैं तुम्हें एक दिन के लिए भी नहीं छोड़ सकता।'

मैंने कहा, ‘तो फिर इतने दिनों तक मेरे बिना तुमने कैसे काम चलाया?’

‘आह! तब मैं दुनिया भर में भटक रहा था, अब मैं घर पर हूँ, और आपके बिना, मेरे गृहस्थ देवता, घर असहनीय होगा।’

‘हाँ, जब तक मैं तुम्हारे आराम के लिए ज़रूरी हूँ; लेकिन तुमने पहले ऐसा नहीं कहा था, जब तुमने मुझे तुम्हें छोड़कर जाने के लिए उकसाया था, ताकि तुम मेरे बिना अपने घर से निकल सको,’ मैंने जवाब दिया; लेकिन मेरे मुँह से शब्द पूरी तरह निकले बिना ही मुझे अपने इस बयान पर पछतावा हुआ। यह आरोप बहुत गंभीर लग रहा था: अगर झूठा था, तो घोर अपमान; अगर सच था, तो इतनी शर्मनाक बात कि इस तरह खुलेआम उसके सामने कही गई। लेकिन मैं खुद को उस क्षणिक आत्म-निंदा से बचा सकती थी। इस आरोप ने न तो उसमें शर्मिंदगी जगाई और न ही आक्रोश: उसने न तो इनकार किया और न ही कोई बहाना बनाया, बल्कि केवल एक लंबी, धीमी, खिलखिलाती हंसी के साथ जवाब दिया, मानो वह पूरी घटना को शुरू से अंत तक एक चतुर, मजेदार मजाक समझ रहा हो। निश्चित रूप से वह आदमी मुझे अंततः

नापसंद करने पर मजबूर कर देगा!

हे मेरी प्यारी युवती, जब तुम शराब बनाओ, ध्यान रखना कि तुम्हें वह शराब पीनी ही होगी।

हाँ; और मैं इसे आखिरी बूंद तक पीऊंगा; और मेरे सिवा कोई नहीं जानेगा कि यह मुझे कितना कड़वा लगता है!

20 अगस्त। — हम एक बार फिर लगभग अपनी सामान्य स्थिति में आ गए हैं। आर्थर लगभग अपनी पुरानी हालत और आदतों में लौट आया है; और मैंने उसके लिए अतीत और भविष्य से आँखें मूंद लेना ही सबसे समझदारी भरा कदम समझा है, कम से कम उसके मामले में, और केवल वर्तमान में जीना: जब संभव हो तो उससे प्यार करना; जब वह मुस्कुराए तो मुस्कुराना (यदि संभव हो), जब वह खुश हो तो खुश रहना, और जब वह अच्छा व्यवहार करे तो प्रसन्न होना; और जब वह खुश न हो, तो उसे खुश करने की कोशिश करना; और अगर इससे भी बात न बने, तो उसे सहन करना, उसे माफ़ करना, और जितना हो सके उसे क्षमा करना, और अपनी बुरी भावनाओं को उसकी भावनाओं को और भड़काने से रोकना; और फिर भी, जब मैं उसकी आत्म-भोग की कम हानिकारक प्रवृत्तियों को बढ़ावा दे रही हूँ और उनका समर्थन कर रही हूँ, तो उसे और बुरे हालातों से बचाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करना।

लेकिन हम ज़्यादा देर अकेले नहीं रहेंगे। मुझे जल्द ही उन्हीं चुनिंदा दोस्तों के समूह की मेजबानी करनी होगी, जो पिछली शरद ऋतु में हमारे साथ थे, साथ ही श्री हैटर्सले और मेरे विशेष अनुरोध पर उनकी पत्नी और बच्चे भी शामिल होंगे। मैं मिलिसेंट और उसकी छोटी बच्ची से मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। उसकी बच्ची अब एक साल से ज़्यादा की हो गई है; वह मेरे छोटे आर्थर के लिए एक प्यारी सहेली बनेगी।

30 सितंबर। — हमारे मेहमान एक-दो सप्ताह से यहाँ हैं; लेकिन अब तक मुझे उनके बारे में कुछ कहने का समय नहीं मिला। लेडी लोबोरो के प्रति मेरी नापसंदगी कम नहीं हो रही है। यह केवल व्यक्तिगत द्वेष पर आधारित नहीं है; बल्कि मुझे वह महिला ही नापसंद है, क्योंकि मैं उनसे पूरी तरह असहमत हूँ। मैं आतिथ्य सत्कार के नियमों का उल्लंघन किए बिना यथासंभव उनकी संगति से बचता हूँ; लेकिन जब भी हम बात करते हैं या बातचीत करते हैं, तो वह अत्यंत विनम्रता से, यहाँ तक कि दिखावटी सौहार्द से भी बात करती हैं; लेकिन मुझे ऐसे सौहार्द से बचाओ! यह

काँटेदार गुलाब और मई के फूलों को छूने जैसा है, जो देखने में चमकीले और छूने में कोमल लगते हैं, लेकिन आप जानते हैं कि उनके नीचे कांटे हैं, और कभी-कभी आप उन्हें महसूस भी करते हैं; और शायद अपनी उंगलियों को थोड़ा नुकसान पहुँचाते हुए, उन्हें कुचलकर उनकी शक्ति नष्ट करने का बदला लेते हैं।

लेकिन हाल ही में, आर्थर के प्रति उसके व्यवहार में मुझे ऐसा कुछ भी नहीं दिखा जिससे मुझे गुस्सा आए या चिंता हो। पहले कुछ दिनों तक मुझे लगा कि वह उसकी प्रशंसा पाने के लिए बहुत उत्सुक थी। उसके प्रयास आर्थर की नज़र से छिपे नहीं थे: मैंने अक्सर उसे उसकी चालाकी भरी हरकतों पर मन ही मन मुस्कुराते देखा था: लेकिन, उसकी प्रशंसा करनी होगी, उसके सामने उसके तीर बेअसर साबित हुए। उसकी मोहक मुस्कानें, उसके घमंडी गुस्से को भी वह हमेशा उसी अटल, बेपरवाह सौम्य भाव से स्वीकार करती थी; जब तक कि उसे यह एहसास नहीं हुआ कि वह वास्तव में भेदने योग्य नहीं है, उसने अचानक अपने प्रयास बंद कर दिए और दिखने में आर्थर की तरह ही पूरी तरह से उदासीन हो गई। न ही मैंने तब से आर्थर की ओर से किसी प्रकार की नाराजगी का संकेत देखा है, न ही उसे जीतने के लिए कोई नया प्रयास करते देखा है।

यह तो होना ही चाहिए; लेकिन आर्थर मुझे कभी संतुष्ट नहीं होने देता। उससे शादी करने के बाद से एक पल के लिए भी मुझे वह सुखद एहसास नहीं हुआ, 'शांति और विश्वास में ही तुम्हारा विश्राम होगा।' ग्रिम्सबी और हैटर्सले, उन दो घृणित पुरुषों ने शराब के प्रति उसके प्रेम के खिलाफ मेरी सारी मेहनत बर्बाद कर दी है। वे उसे रोज़ संयम की सीमा पार करने के लिए उकसाते हैं, और अक्सर हद से ज़्यादा शराब पीकर उसे शर्मिंदा भी करते हैं। उनके आने के बाद की दूसरी रात मैं कभी नहीं भूलूंगी। जैसे ही मैं महिलाओं के साथ भोजन कक्ष से बाहर निकली, दरवाज़ा बंद होने से पहले ही आर्थर ने कहा, - 'तो फिर, मेरे दोस्तों, क्या कहते हो एक बढ़िया जश्न के बारे में?'

मिलिसेंट ने मुझे आधे तिरस्कार भरे भाव से देखा, मानो मैं उसे रोक सकता था; लेकिन जब उसने हैटर्सले की आवाज़ सुनी, जो दरवाज़े और दीवार के पार से चिल्ला रहा था, "मैं तुम्हारा आदमी हूँ! और शराब मंगवाओ: यहाँ आधी भी काफ़ी नहीं है!", तो उसका चेहरा बदल गया।

हम अभी ड्राइंग रूम में दाखिल ही हुए थे कि लॉर्ड लोबोरो भी हमारे साथ आ गए।

‘आपको इतनी जल्दी आने के लिए क्या प्रेरित कर सकता है?’ उसकी पत्नी ने

अत्यंत अभद्र और असंतुष्ट भाव से कहा।

‘तुम्हें पता है, एनाबेला,’ उसने गंभीरता से जवाब दिया।

'अच्छा, लेकिन आप उनके साथ थोड़ी देर रुक सकते हैं: हमेशा महिलाओं के पीछे मंडराते रहना बहुत मूर्खतापूर्ण लगता है; मुझे आश्चर्य है कि आप ऐसा कर सकते हैं या नहीं!'

उसने कटुता और आश्चर्य से भरी नज़रों से उसे फटकारा, और एक कुर्सी पर बैठते हुए, एक गहरी आह को दबाया, अपने पीले होंठों को काटा और अपनी आँखें फर्श पर टिका दीं।

‘आपने उन्हें छोड़कर सही किया, लॉर्ड लोबोरो,’ मैंने कहा। ‘मुझे उम्मीद है कि आप हमेशा हमें इतनी जल्दी अपने साथ आने का सौभाग्य देते रहेंगे। और अगर एनाबेला को सच्ची बुद्धिमत्ता का मूल्य, मूर्खता और असंयम के दुष्परिणामों का ज्ञान होता, तो वह ऐसी बकवास बातें – यहाँ तक कि मजाक में भी – न करती।’

जब मैं बोल रहा था, तो उन्होंने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और गंभीरता से मेरी ओर देखा, उनके चेहरे पर आधा आश्चर्य और आधा विस्मय का भाव था, और फिर उन्होंने अपनी पत्नी की ओर रुख कर लिया।

उसने कहा, 'कम से कम, मैं एक दयालु हृदय और एक साहसी, मर्दाना भावना का महत्व जानती हूँ।'

‘अच्छा, एनाबेला,’ उसने गहरी और खोखली आवाज़ में कहा, ‘चूंकि मेरी उपस्थिति तुम्हें अप्रिय लगती है, इसलिए मैं तुम्हें इससे मुक्ति दिला दूंगा।’

‘तो क्या तुम उनके पास वापस जा रहे हो?’ उसने लापरवाही से कहा।

‘नहीं,’ उसने कठोर और चौंकाने वाले स्वर में कहा। ‘मैं उनके पास वापस नहीं जाऊँगा! और मैं तुम्हारे या किसी भी अन्य प्रलोभन देने वाले के लिए, जितना उचित समझूँ उससे एक पल भी अधिक उनके साथ नहीं रहूँगा! लेकिन तुम्हें इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है; मैं फिर कभी इस तरह अनुचित समय पर तुम्हारे सामने आकर तुम्हें परेशान नहीं करूँगा।’

वह कमरे से बाहर चला गया: मैंने हॉल का दरवाजा खुलते और बंद होते सुना, और तुरंत बाद, पर्दा हटाते ही, मैंने उसे नम, बादलों से घिरी धुंधली शाम के असहनीय अंधकार में पार्क में टहलते हुए देखा।

अंत में मैंने कहा, 'एनाबेला, तुम्हारे साथ यही होना चाहिए, अगर लॉर्ड लोबोरो

अपनी पुरानी आदतों पर लौट आएं, जिन्होंने लगभग उनका विनाश कर दिया था और जिन्हें छोड़ने के लिए उन्हें इतना प्रयास करना पड़ा था: तब तुम्हें ऐसे आचरण पर पछतावा करने का कारण समझ आएगा।'

'बिल्कुल नहीं, मेरी प्यारी! मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी अगर उनके लॉर्डशिप हर दिन नशा करना चाहें: मैं तो उनसे छुटकारा पाना ही चाहूंगी।'

'ओह, एनाबेला!' मिलिसेंट चिल्लाई। 'तुम इतनी बुरी बातें कैसे कह सकती हो! तुम्हारे लिए तो वाकई एक उचित दंड होगा, अगर ईश्वर तुम्हारी बात मान ले और तुम्हें भी वही एहसास दिलाए जो दूसरों को होता है, कि—' वह अचानक भोजन कक्ष से तेज़ बातचीत और हँसी की आवाज़ सुनकर रुक गई, जिसमें हैटर्सले की आवाज़ मेरे जैसे अनुभवहीन व्यक्ति को भी साफ सुनाई दे रही थी।

'मुझे लगता है कि आप इस समय कैसा महसूस कर रही हैं?' लेडी लोबोरो ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, और अपनी चचेरी बहन के व्यथित चेहरे पर अपनी निगाहें गड़ा दीं।

दूसरी ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लिया और एक आंसू पोंछ लिया। उसी क्षण दरवाजा खुला और श्री हरग्रेव अंदर आए, उनका चेहरा थोड़ा लाल था, उनकी गहरी आंखें अप्रत्याशित चमक से दमक रही थीं।

'ओह, मुझे बहुत खुशी है कि तुम आ गए, वाल्टर?' उसकी बहन ने कहा। 'लेकिन काश तुम राल्फ को भी साथ ला पाते।'

'बिल्कुल असंभव, प्रिय मिलिसेंट,' उसने प्रसन्नता से उत्तर दिया। 'मुझे खुद यहाँ से भागने में बहुत मशक्कत करनी पड़ी। राल्फ ने मुझे ज़बरदस्ती रोकने की कोशिश की; हंटिंगडन ने अपनी मित्रता हमेशा के लिए खोने की धमकी दी; और ग्रिम्सबी, सबसे बुरा, मुझे मेरे सद्गुणों पर शर्मिंदा करने की कोशिश कर रहा था, ऐसे चुभने वाले व्यंग्य और ताने मारकर जिनसे मुझे सबसे ज़्यादा दुख पहुँचेगा। तो आप देखिए, देवियों, जब मैंने आपकी मधुर संगति के लिए इतना कुछ सहा और बर्दाश्त किया है, तो आपको मेरा स्वागत करना चाहिए।' वाक्य समाप्त करते हुए वह मुस्कुराते हुए मेरी ओर मुड़ा और झुककर अभिवादन किया।

'हेलेन, अब वो कितना सुंदर लग रहा है!' मिलिसेंट ने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी बहन होने का गर्व उस पल के लिए बाकी सभी बातों पर हावी हो गया।

मैंने जवाब दिया, 'वह ऐसा ही होता, अगर उसकी आंखों, होंठों और गालों की वह

चमक स्वाभाविक होती; लेकिन कुछ घंटों बाद फिर से देखना।'

यहां वह सज्जन मेज पर मेरे पास आकर बैठ गए और एक कप कॉफी मांगी।

जब मैंने उसे एक चीज़ दी, तो उसने कहा, 'मैं इसे स्वर्ग पर कब्ज़ा करने का सटीक उदाहरण मानता हूँ। मैं अब स्वर्ग में हूँ; लेकिन इसे पाने के लिए मुझे बाढ़ और आग से लड़ना पड़ा। राल्फ हैटर्सले का आखिरी उपाय था दरवाजे से पीठ टिकाकर खड़े होना और कसम खाना कि मुझे उसके शरीर (जो काफी मजबूत था) के अलावा कोई रास्ता नहीं मिलेगा। सौभाग्य से, वह एकमात्र दरवाजा नहीं था, और मैं बटलर की पेंट्री के बगल वाले दरवाजे से भाग निकला, जिससे बेन्सन, जो प्लेटें साफ कर रहा था, बेहद आश्चर्यचकित रह गया।'

मिस्टर हरग्रेव हँसे, और उनके चचेरे भाई भी हँसे; लेकिन उनकी बहन और मैं चुप और गंभीर बने रहे।

'मेरी हल्की-फुल्की बातों के लिए मुझे माफ़ करना, श्रीमती हंटिंगडन,' उसने गंभीरता से बुदबुदाते हुए मेरी ओर देखा। 'आपको इन बातों की आदत नहीं है: आप इन्हें अपने कोमल मन पर बहुत जल्दी असर करने देती हैं। लेकिन उन अय्याशों के बीच भी मुझे आपकी याद आई; और मैंने श्री हंटिंगडन को भी आपके बारे में सोचने के लिए मनाने की कोशिश की; पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ: मुझे डर है कि वह आज रात मौज-मस्ती करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं; और उनके या उनके साथियों के लिए कॉफ़ी का इंतज़ार करने का कोई फ़ायदा नहीं होगा; अगर वे चाय पर हमारे साथ शामिल हो जाएँ तो भी ठीक रहेगा। इस बीच, मैं दिल से चाहता हूँ कि मैं उनके बारे में आपके और अपने मन से भी विचार मिटा सकूँ, क्योंकि मुझे उनके बारे में सोचना भी पसंद नहीं है—हाँ—यहाँ तक कि अपने प्यारे दोस्त हंटिंगडन के बारे में भी, जब मैं उस शक्ति के बारे में सोचता हूँ जो उनके पास अपने से कहीं ज़्यादा श्रेष्ठ व्यक्ति की खुशी पर है, और जिस तरह से वह इसका इस्तेमाल करते हैं—मैं सचमुच उस आदमी से नफ़रत करता हूँ!'

मैंने कहा, 'तो बेहतर होगा कि तुम मुझसे ऐसा न कहो; क्योंकि चाहे वह कितना भी बुरा हो, वह मेरा ही एक हिस्सा है, और तुम बिना मुझे नाराज किए उसकी निंदा नहीं कर सकते।'

'मुझे क्षमा करें, क्योंकि मैं आपको नाराज करने की बजाय मरना पसंद करूंगा। लेकिन कृपया अभी उसके बारे में और बात न करें।'

अंततः वे आ ही गए; लेकिन दस बज चुके थे, जब तक कि चाय, जो आधे घंटे से अधिक विलंबित हो चुकी थी, लगभग समाप्त हो चुकी थी। हालाँकि मैं उनके आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी, लेकिन उनके आगमन के शोरगुल से मेरा दिल बैठ गया; और मिलिसेंट का चेहरा पीला पड़ गया, और वह अपनी सीट से लगभग उछल पड़ी, जब श्री हैटर्सले गालियों की बौछार करते हुए कमरे में घुस आए, जिसे हरग्रेव ने महिलाओं को याद रखने की विनती करके रोकने का प्रयास किया।

"अरे! तुमने मुझे उन महिलाओं की याद दिलाकर अच्छा किया, धूर्त भगोड़े!" उसने अपने बहनोई पर अपनी ताकतवर मुट्ठी लहराते हुए कहा। "अगर वे न होतीं, तो तुम भली-भांति जानते हो, मैं तुम्हें पलक झपकते ही मार डालता और तुम्हारे शरीर को स्वर्ग के पक्षियों और खेतों के लिली के लिए परोस देता!" फिर, लेडी लोबोरो के बगल में एक कुर्सी लगाकर, वह उस पर बैठ गया और उनसे बेतुकेपन और धृष्टता के मिश्रण से बात करने लगा, जिससे उन्हें ठेस पहुँचने के बजाय मनोरंजन होता प्रतीत हुआ; हालाँकि उन्होंने उसकी धृष्टता का विरोध करने का दिखावा किया और तीखे और चुटीले जवाबों से उसे दूर रखने की कोशिश की।

इसी बीच श्री ग्रिम्सबी मेरे पास, हरग्रेव के आने पर खाली हुई कुर्सी पर बैठ गए और गंभीरता से कहा कि वे मुझे एक कप चाय पिलाएँगे। वहीं आर्थर बेचारी मिलिसेंट के बगल में बैठ गया, धीरे से अपना सिर उसके चेहरे के पास ले जाकर, उसके और करीब आने लगा, जबकि मिलिसेंट उससे दूर हटती जा रही थी। वह हैटर्सले जितना शोर मचाने वाला तो नहीं था, लेकिन उसका चेहरा बेहद लाल था: वह लगातार हँस रहा था, और हालाँकि मैं उसे देखकर और सुनकर शर्म से लाल हो रही थी, मुझे इस बात की खुशी थी कि उसने अपनी साथी से इतनी धीमी आवाज़ में बात की कि उसके अलावा कोई और उसकी बात नहीं सुन पा रहा था।

'ये कितने मूर्ख हैं!' श्री ग्रिम्सबी ने धीमी आवाज़ में कहा, जो मेरे बगल में खड़े होकर पूरे समय गंभीर भाव से बातें कर रहे थे; लेकिन मैं बाकी दोनों की दयनीय स्थिति, खासकर आर्थर की, पर विचार करने में इतना मग्न था कि उनकी बात पर ध्यान ही नहीं दे पाया।

'क्या आपने कभी ऐसी बकवास सुनी है, श्रीमती हंटिंगडन?' उन्होंने आगे कहा। 'मुझे उन पर बहुत शर्म आती है: वे एक बोतल भी नहीं पी सकते, वरना उसका असर उनके दिमाग पर हो जाता है—'

'आप मलाई को अपनी तश्तरी में डाल रहे हैं, श्री ग्रिम्सबी।'

'अरे! हाँ, मैं समझ गया, लेकिन यहाँ लगभग अंधेरा हो चुका है। हरग्रेव, कृपया उन मोमबत्तियों को बुझा दें?'

मैंने कहा, 'ये मोम के बने हैं; इन्हें बुझाने के लिए फूंक मारने की जरूरत नहीं है।'

"शरीर का प्रकाश आँख है," हरग्रेव ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा। "यदि तुम्हारी आँख एक हो, तो तुम्हारा सारा शरीर प्रकाश से भर जाएगा।"

ग्रिम्सबी ने हाथ के गंभीर इशारे से उसे पीछे हटा दिया, और फिर मेरी ओर मुड़कर, उसी धीमी आवाज़, अस्पष्ट अनिश्चितता और गंभीर चेहरे के साथ आगे बोला: 'लेकिन जैसा कि मैं कह रहा था, श्रीमती हंटिंगडन, उनमें बिल्कुल भी अक्ल नहीं है: वे आधी बोतल भी बिना किसी न किसी तरह प्रभावित हुए नहीं पी सकते; जबकि मैं - खैर, मैंने आज रात उनसे तीन गुना ज़्यादा पी है, और आप देख सकती हैं कि मैं बिल्कुल स्थिर हूँ। अब यह आपको बहुत अजीब लग सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि मैं इसे समझा सकता हूँ: देखिए, उनके दिमाग - मैं किसी का नाम नहीं ले रहा हूँ, लेकिन आप समझ जाएँगी कि मैं किसका जिक्र कर रहा हूँ - उनके दिमाग वैसे भी हल्के होते हैं, और किण्वित शराब की भाप उन्हें और भी हल्का कर देती है, जिससे पूरा चक्कर या सिर घूमना शुरू हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप नशा हो जाता है; जबकि मेरा दिमाग, अधिक ठोस पदार्थों से बना होने के कारण, इस मादक वाष्प की काफी मात्रा को बिना किसी स्पष्ट परिणाम के अवशोषित कर लेता है -'

श्री हारग्रेव ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि आपने चाय में जितनी चीनी डाली है, उससे आपको अच्छा परिणाम मिलेगा। आप आमतौर पर एक टुकड़ा डालते हैं, लेकिन आपने छह टुकड़े डाले हैं।'

'क्या मैंने ऐसा किया है?' दार्शनिक ने चम्मच से प्याले में डुबकी लगाते हुए उत्तर दिया और अपनी बात की पुष्टि करते हुए कुछ अधघुले टुकड़े ऊपर निकाले। 'हम्म! मैं समझ गया। इस प्रकार, महोदया, आप मन की अनुपस्थिति की बुराई देख रही हैं—जीवन के सामान्य कामों में व्यस्त रहते हुए बहुत अधिक सोचने की। अब, अगर मैं एक दार्शनिक की तरह अपने भीतर सोचने के बजाय, आम आदमी की तरह होश में होता, तो मैं इस चाय को बर्बाद नहीं करता और आपको दूसरी चाय के लिए परेशान नहीं करता।'

'यह चीनी का पात्र है, श्री ग्रिम्सबी। अब आपने चीनी भी खराब कर दी है; और मैं

आपसे कुछ और चीनी मंगवाने का अनुरोध करूंगा, क्योंकि अंततः लॉर्ड लोबोरो आ गए हैं; और मुझे आशा है कि वे हम जैसे लोगों के साथ बैठने की कृपा करेंगे और मुझे उन्हें चाय पिलाने की अनुमति देंगे।'

मेरे अनुरोध के उत्तर में उनके लॉर्डशिप ने गंभीरता से सिर झुकाया, लेकिन कुछ नहीं कहा। इसी बीच, हरग्रेव ने चीनी लाने के लिए घंटी बजाने की पेशकश की, जबकि ग्रिम्सबी ने अपनी गलती पर खेद व्यक्त किया और यह साबित करने का प्रयास किया कि यह कलश की छाया और खराब रोशनी के कारण हुआ था।

लॉर्ड लोबोरो एक-दो मिनट पहले चुपके से अंदर आ गए थे, केवल मुझे ही पता चला था, और वे दरवाजे के सामने खड़े होकर गंभीर मुद्रा में उपस्थित लोगों का जायजा ले रहे थे। अब वे एनाबेला के पास गए, जो उनकी ओर पीठ करके बैठी थी, और हैटर्सले अभी भी उसके बगल में था, हालांकि अब वह एनाबेला पर ध्यान नहीं दे रहा था, बल्कि अपने मेज़बान को ज़ोर-ज़ोर से गाली-गलौज और धमकाने में व्यस्त था।

'अच्छा, एनाबेला,' उसके पति ने उसकी कुर्सी के पीछे झुकते हुए कहा, 'इन तीन "साहसी, मर्दाना आत्माओं" में से तुम मुझे किसके जैसा देखना चाहती हो?'

'स्वर्ग और पृथ्वी की कसम, तुम हम सब जैसे दिखोगे!' हैटर्सले चिल्लाया, चौंककर उठा और उसे बांह से पकड़ लिया। 'हेलो, हंटिंगडन!' वह चिल्लाया — 'मैंने उसे पकड़ लिया है! आओ, और मेरी मदद करो! और अगर मैं उसे छोड़ने से पहले शराब न पिलाऊं तो मुझे धिक्कार है! वह अपने सारे पिछले गुनाहों की भरपाई करेगा, यह मेरी कसम!'

इसके बाद एक शर्मनाक संघर्ष शुरू हुआ: लॉर्ड लोबोरो, हताशा में और गुस्से से पीले पड़ चुके, चुपचाप उस शक्तिशाली पागल आदमी से खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रहे थे जो उन्हें कमरे से बाहर घसीटने का प्रयास कर रहा था। मैंने आर्थर से अपने अपमानित अतिथि की ओर से हस्तक्षेप करने का आग्रह करने की कोशिश की, लेकिन वह हंसने के अलावा कुछ नहीं कर सके।

'हंटिंगडन, तुम मूर्ख, आकर मेरी मदद कर सकते हो क्या!' हैटर्सले चिल्लाया, जो खुद अपनी अतिभोग की आदतों से कुछ कमजोर हो गया था।

'हैटर्सले, मैं तुम्हारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ और तुम्हारे लिए प्रार्थना करता हूँ: अगर मेरी जान भी दांव पर लगी हो तो भी मैं कुछ नहीं कर सकता! मैं पूरी तरह

थक चुका हूँ। ओह—ओह!’ और अपनी सीट पर पीछे झुकते हुए, उसने अपने हाथों को अपनी कमर पर मारा और ज़ोर से कराह उठा।

'एनाबेला, मुझे एक मोमबत्ती दो!' लोबोरो ने कहा, जिसका प्रतिद्वंद्वी अब उसकी कमर से उसे पकड़ चुका था और उसे दरवाजे के चौखट से उखाड़ने की कोशिश कर रहा था, जिससे वह हताशा की सारी ताकत से चिपका हुआ था।

“मैं तुम्हारे इन असभ्य खेलों में हिस्सा नहीं लूंगी!” महिला ने ठंडे लहजे में पीछे हटते हुए जवाब दिया। “मुझे आश्चर्य है कि तुम इसकी उम्मीद कैसे कर सकते हो।” लेकिन मैंने झट से एक मोमबत्ती उठाई और उसे उसके पास ले आई। उसने मोमबत्ती ली और उसकी लौ हैटर्सले के हाथों पर तब तक रखी जब तक कि वह जंगली जानवर की तरह दहाड़ते हुए अपने हाथ छोड़कर उसे जाने नहीं दिया। वह गायब हो गया, शायद अपने कमरे में, क्योंकि सुबह तक उसका कोई अता-पता नहीं चला। पागलों की तरह गालियां और अपशब्द बोलते हुए, हैटर्सले खिड़की के पास रखे सोफे पर गिर पड़ा। दरवाजा खुला देखकर मिलिसेंट ने अपने पति की इस बेइज्जती से बचने की कोशिश की; लेकिन उसने उसे वापस बुला लिया और अपने पास आने के लिए ज़िद की।

‘तुम क्या चाहते हो, राल्फ?’ वह अनिच्छा से उसके पास आते हुए बुदबुदाई।

‘मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हें क्या हुआ है,’ उसने उसे बच्चे की तरह अपनी गोद में बिठाते हुए कहा। ‘तुम क्यों रो रही हो, मिलिसेंट? मुझे बताओ!’

मैं रो नहीं रही हूँ।

‘तुम हो,’ उसने अड़ियली बोलते हुए उसके चेहरे से हाथ खींच लिए। ‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसा झूठ बोलने की!’

‘मैं अब नहीं रो रही हूँ,’ उसने विनती करते हुए कहा।

‘लेकिन तुम यहाँ थे, और अभी इसी क्षण भी; और मैं जानूंगा कि किसलिए। चलो, अब मुझे बताओ!’

‘मुझे अकेला छोड़ दो, राल्फ! याद रखो, हम घर पर नहीं हैं।’

‘कोई बात नहीं: तुम्हें मेरे सवाल का जवाब देना होगा!’ उसके उत्पीड़क ने चिल्लाकर कहा; और उसने उसे हिलाकर और अपनी शक्तिशाली उंगलियों की जकड़ में उसकी पतली बाहों को बेरहमी से कुचलकर उससे कबूलनामा निकलवाने की कोशिश की।

मैंने मिस्टर हरग्रेव से कहा, 'उसे अपनी बहन के साथ ऐसा व्यवहार न करने दें।'

'अरे, हैटर्सले, मैं ऐसा होने नहीं दे सकता,' उस सज्जन ने उस बेमेल जोड़े के पास जाकर कहा। 'कृपया मेरी बहन को अकेला छोड़ दें।'

और उसने उस बदमाश की उंगलियों को उसकी बांह से छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन अचानक उसे पीछे धकेल दिया गया और सीने पर एक जोरदार प्रहार से वह लगभग ज़मीन पर गिर पड़ा, साथ ही उसे चेतावनी भी दी गई, 'अपनी गुस्ताखी का यही नतीजा भुगतो! और फिर कभी मेरे और मेरे अपनों के बीच दखल न देना सीखो।'

'अगर तुम नशे में नहीं होते, तो मुझे इस बात का संतोष होता!' हार्ग्रेव हांफते हुए बोला, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह मुक्के के तात्कालिक प्रभावों के साथ-साथ भावनाओं से भी बेहाल था।

'भाड़ में जाओ!' उसके बहनोई ने जवाब दिया। 'अब, मिलिसेंट, मुझे बताओ कि तुम किसलिए रो रही थी।'

'मैं तुम्हें किसी और समय बताऊंगी,' उसने धीरे से कहा, 'जब हम अकेले होंगे।'

'मुझे अभी बताओ!' उसने एक और झटके और दबाव के साथ कहा, जिससे वह अपनी सांस रोककर दर्द की चीख को दबाने के लिए अपने होंठ काटने लगी।

मैंने कहा, 'मैं आपको बताता हूँ, श्रीमान हैटर्सले। वह आपके लिए घोर शर्म और अपमान से रो रही थी; क्योंकि वह आपको इस तरह का अपमानजनक व्यवहार करते हुए नहीं देख सकती थी।'

'तुम्हें धिक्कार है, महोदया!' उसने मेरी 'बेशर्मी' पर मूर्खतापूर्ण आश्चर्य से घूरते हुए बुदबुदाया। 'ऐसा तो नहीं था ना, मिलिसेंट?'

वह चुप रही।

'आओ, बोलो, बच्चे!'

'मैं अभी नहीं बता सकती,' वह सिसकते हुए बोली।

लेकिन आप "हां" या "ना" के साथ-साथ "मैं नहीं बता सकता" भी कह सकते हैं। — आइए!

'हां,' उसने सिर झुकाते हुए फुसफुसाया और उस भयानक स्वीकारोक्ति पर शर्म से लाल हो गई।

'तुम्हें लानत हो, बदतमीज़ औरत!' वह चिल्लाया और उसे इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि वह एक तरफ गिर पड़ी; लेकिन मेरे या उसके भाई के मदद के लिए पहुँचने

से पहले ही वह उठ खड़ी हुई और तेज़ी से कमरे से बाहर निकल गई, और मुझे लगता है कि बिना समय गंवाए ऊपर चली गई।

अगला निशाना आर्थर था, जो सामने बैठा था और निस्संदेह उसने पूरे दृश्य का भरपूर आनंद लिया था।

'अब, हंटिंगडन,' उसके चिड़चिड़े दोस्त ने चिल्लाकर कहा, 'मैं तुम्हें वहाँ बैठकर मूर्खों की तरह हंसते हुए नहीं देखूंगा!'

'ओह, हैटर्सले,' उसने अपनी भीगी आँखों को पोंछते हुए कहा, 'तुम मेरी जान ले लोगे।'

"हाँ, मैं करूँगा, लेकिन जैसा तुम सोच रहे हो वैसा नहीं: अगर तुमने अपनी उस मंदबुद्धि वाली हँसी से मुझे और परेशान किया, तो मैं तुम्हारा दिल निकाल लूँगा! — क्या! अभी भी हँस रहे हो? — लो! देखो, इससे शांत होते हो या नहीं!" हैटर्सले चिल्लाया और एक फुटस्टूल उठाकर अपने मेज़बान के सिर पर मारा; लेकिन उसका निशाना भी चूक गया, और मेज़बान अभी भी वहीं ढेर हो गया और कमज़ोर हँसी से काँप रहा था, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे: सचमुच एक दयनीय दृश्य।

हैटर्सले ने गाली-गलौज करने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ: फिर उसने अपने पास रखी मेज से कई किताबें उठाईं और एक-एक करके अपने गुस्से के शिकार पर फेंक दीं; लेकिन आर्थर और भी ज्यादा हंसने लगा; और अंत में, हैटर्सले गुस्से में पागल होकर उस पर टूट पड़ा और उसे कंधों से पकड़कर जोर से हिलाया, जिससे वह चीखता-चिल्लाता हुआ जोर से हंसने लगा। लेकिन मैंने आगे कुछ नहीं देखा: मुझे लगा कि मैंने अपने पति का अपमान काफी देख लिया है; और एनाबेला और बाकी लोगों को जब चाहें आने के लिए छोड़कर, मैं वहां से चली गई, लेकिन बिस्तर पर नहीं गई। राहेल को सोने के लिए भेजकर, मैं अपने कमरे में इधर-उधर घूमती रही, जो कुछ हुआ था उसके लिए बहुत दुखी थी और इस डर से कांप रही थी कि आगे क्या होगा, या वह बेचारी कब और कैसे बिस्तर पर आएगी।

अंततः वह धीरे-धीरे लड़खड़ाते हुए सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ आया, ग्रिम्सबी और हैटर्सले उसका सहारा दे रहे थे। वे दोनों खुद भी ठीक से चल नहीं पा रहे थे, लेकिन उस पर हंस रहे थे और मज़ाक कर रहे थे, और इतना शोर मचा रहे थे कि सभी नौकर सुन सकें। वह खुद अब हंस नहीं रहा था, बल्कि बीमार और बेसुध सा लग रहा था। मैं इसके बारे में और नहीं लिखूंगा।

ऐसे शर्मनाक दृश्य (या लगभग ऐसे ही) एक से अधिक बार दोहराए जा चुके हैं। मैं आर्थर से इस बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहता, क्योंकि अगर मैं कहता तो इससे फायदे से ज्यादा नुकसान होता; लेकिन मैं उसे बता देता हूँ कि मुझे इस तरह के प्रदर्शन बिल्कुल पसंद नहीं हैं; और हर बार उसने वादा किया है कि ऐसा दोबारा कभी नहीं होगा। लेकिन मुझे डर है कि वह अपना थोड़ा-बहुत आत्म-नियंत्रण और आत्म-सम्मान खो रहा है जो कभी उसके पास था: पहले, उसे ऐसा करने में शर्म आती थी - कम से कम, अपने करीबी दोस्तों या उनके जैसे लोगों के अलावा किसी और गवाह के सामने तो बिल्कुल नहीं। उसका दोस्त हरग्रेव, जिसकी समझदारी और संयम की मैं प्रशंसा करता हूँ, कभी भी जरूरत से ज्यादा शराब पीकर खुद को शर्मिंदा नहीं करता, और हमेशा लॉर्ड लोबोरो के बाद सबसे पहले मेज से उठता है, जो उससे भी ज्यादा समझदार है और हमारे तुरंत बाद भोजन कक्ष खाली कर देता है: लेकिन जब से एनाबेला ने उसे इतना गहरा आहत किया है, तब से वह कभी भी बाकियों से पहले ड्राइंग रूम में नहीं गया है; वह अक्सर बीच का समय पुस्तकालय में बिताती थी, जिसे मैं उसकी सुविधा के लिए रोशन रखती थी; या फिर चांदनी रातों में बगीचे में घूमती रहती थी। लेकिन मुझे लगता है कि उसे अपने इस व्यवहार पर पछतावा है, क्योंकि उसने तब से ऐसा कभी नहीं किया, और हाल ही में उसका व्यवहार आर्थर के प्रति अद्भुत रूप से उचित हो गया है, वह उससे पहले की तुलना में कहीं अधिक दयालुता और सम्मान से पेश आती है। मैं इस सुधार का समय तब से मानती हूँ जब उसने आर्थर की प्रशंसा पाने की उम्मीद और कोशिश करना छोड़ दिया था।

अध्याय XXXII

5 अक्टूबर। एस्थर हार्ग्रेव को एक प्यारी सी बच्ची हो रही है। वह अभी स्कूल से निकली भी नहीं है, लेकिन उसकी माँ अक्सर उसे सुबह घर ले आती है जब घर के

सज्जन लोग बाहर होते हैं। कभी-कभी वह अपनी बहन, मेरे और बच्चों के साथ एक-दो घंटे बिताती है। जब हम ग्रोव जाते हैं, तो मैं हमेशा उससे मिलने का मौका निकाल लेती हूँ और बाकी सब लोगों से ज़्यादा उससे बात करती हूँ, क्योंकि मैं अपनी छोटी दोस्त से बहुत लगाव रखती हूँ और वह भी मुझसे। मुझे हैरानी होती है कि उसे मुझमें क्या पसंद आता है, क्योंकि मैं अब वैसी खुशमिजाज और चंचल लड़की नहीं रही जैसी पहले थी। लेकिन उसके पास अपनी बेमेल माँ और अपनी गवर्नेंस (जो उस समझदार माँ के लिए एक बनावटी और रूढ़िवादी इंसान है, ताकि वह छात्रा के स्वाभाविक गुणों को सुधार सके) के अलावा कोई और संगति नहीं है, और कभी-कभी उसकी शांत और गंभीर बहन भी होती है। मैं अक्सर सोचती हूँ कि उसका भविष्य क्या होगा, और वह भी यही सोचती है; लेकिन भविष्य के बारे में उसकी सोच आशा से भरी है; कभी मेरी भी हुआ करती थी। यह सोचकर ही मुझे कंपकंपी छूट जाती है कि कहीं उसे भी मेरी तरह उनके झूठे घमंड का एहसास न हो जाए। ऐसा लगता है मानो मुझे उसकी निराशा अपने से भी कहीं ज़्यादा गहराई से महसूस करनी चाहिए। मुझे लगभग ऐसा लगता है जैसे मेरा ही ऐसा हाल होना तय था, लेकिन वह इतनी खुशमिजाज और तरोताज़ा है, इतनी सहज और मुक्त मन वाली, और इतनी भोली और मासूम भी। ओह, उसे भी वही महसूस कराना कितना क्रूर होगा जो मैं अभी महसूस कर रही हूँ, और उसे वह सब जानना जो मैंने जाना है!

उसकी बहन भी उसके लिए कांप रही है। कल सुबह, अक्टूबर के सबसे चमकीले और प्यारे दिनों में से एक, मिलिसेंट और मैं बगीचे में अपने बच्चों के साथ कुछ पल बिता रहे थे, जबकि एनाबेला ड्राइंग रूम के सोफे पर लेटी हुई थी और अपने नए उपन्यास में मग्न थी। हम उन नन्हे-मुन्ने बच्चों के साथ खेल रहे थे, जो लगभग उतने ही चंचल और बेफिक्र थे जितने कि वे खुद, और अब हम ऊंचे तांबे के रंग के बीच के पेड़ की छाया में रुके, ताकि सांस ले सकें और अपने बालों को ठीक कर सकें, जो उनके खेलने और हवा के झोंकों से बिखरे हुए थे, जबकि वे चौड़े, धूप वाले रास्ते पर साथ-साथ चल रहे थे; मेरा आर्थर उसकी छोटी हेलेन के कमजोर कदमों को सहारा दे रहा था, और चतुराई से उसे किनारे की सबसे खूबसूरत चीजें दिखा रहा था, अपनी अधूरी-सी बातों से, जो उसे किसी भी अन्य बातचीत की तरह ही अच्छी लग रही थीं। उस सुंदर दृश्य पर हंसते-हंसते, हम बच्चों के भविष्य के जीवन के बारे में बात करने लगे; और इससे हम सोचने लगे। जैसे-जैसे हम धीरे-धीरे रास्ते पर आगे बढ़े, हम दोनों

फिर से चुपचाप सोचने लगे; और मुझे लगता है कि मिलिसेंट, कई तरह की यादों के चलते, अपनी बहन के बारे में सोचने लगी होगी।

'हेलेन,' उसने कहा, 'तुम एस्थर को अक्सर देखती हो, है ना?'

'ज्यादा नहीं।'

लेकिन तुम्हें उससे मिलने के मुझसे कहीं अधिक अवसर मिलते हैं; और मुझे पता है कि वह तुमसे प्यार करती है और तुम्हारा आदर भी करती है: वह किसी की राय को इतना महत्व नहीं देती; और वह कहती है कि तुम माँ से भी ज्यादा समझदार हो।

'ऐसा इसलिए है क्योंकि वह अपनी मर्जी पर अड़ी रहती है, और मेरे विचार आम तौर पर तुम्हारी माँ के विचारों की तुलना में उसके विचारों से अधिक मिलते हैं। लेकिन फिर क्या, मिलिसेंट?'

'खैर, चूंकि आपका उस पर इतना प्रभाव है, इसलिए मैं चाहूंगा कि आप उसे गंभीरता से समझाएं कि वह किसी भी कीमत पर, या किसी के भी बहकावे में आकर, धन, पद, प्रतिष्ठा या किसी भी सांसारिक चीज के लिए शादी न करे, बल्कि सच्चे स्नेह और सुस्थापित सम्मान के आधार पर शादी करे।'

मैंने कहा, 'इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम इस विषय पर पहले ही कुछ चर्चा कर चुके हैं, और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि प्रेम और विवाह के बारे में उसके विचार उतने ही रोमांटिक हैं जितने कोई भी चाह सकता है।'

लेकिन रोमांटिक धारणाएं काम नहीं आएंगी: मैं चाहता हूं कि उसकी धारणाएं सच्ची हों।

'बिल्कुल सही: लेकिन मेरे विचार में, जिसे दुनिया रोमांटिक कहकर बदनाम करती है, वह अक्सर सच्चाई के कहीं अधिक करीब होती है जितना आमतौर पर माना जाता है; क्योंकि, यदि युवावस्था के उदार विचार अक्सर परलोक के घिनौने विचारों से ढक जाते हैं, तो यह शायद ही उन्हें झूठा साबित करता है।'

अच्छा, लेकिन अगर आपको लगता है कि उसके विचार सही हैं, तो उन्हें और मजबूत कीजिए, प्लीज़? और जहाँ तक हो सके, उन्हें पुष्ट कीजिए; क्योंकि एक समय मेरे भी रोमांटिक विचार थे, और— मेरा मतलब यह नहीं है कि मुझे अपने भाग्य पर पछतावा है, क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि ऐसा नहीं है—

मैंने कहा, 'मैं आपकी बात समझता हूँ; आप अपने लिए तो संतुष्ट हैं, लेकिन आप नहीं चाहेंगे कि आपकी बहन को भी वही कष्ट सहना पड़े जो आपको सहना पड़ रहा

है।'

‘नहीं—या इससे भी बदतर। उसे मुझसे कहीं अधिक कष्ट सहना पड़ सकता है, क्योंकि मैं वास्तव में संतुष्ट हूँ, हेलेन, भले ही तुम ऐसा न सोचो: मैं पूरी सच्चाई से कह रही हूँ कि अगर इस पत्ते को तोड़कर भी मैं ऐसा कर सकती, तो भी मैं अपने पति को धरती के किसी भी पुरुष से नहीं बदलती।’

'ठीक है, मैं आपकी बात पर विश्वास करता हूँ: अब जब वह आपके पास है, तो आप उसे किसी और से बदलना नहीं चाहेंगे; लेकिन फिर आप खुशी-खुशी उसके कुछ गुणों को बेहतर पुरुषों के गुणों से बदल लेंगे।'

‘हाँ: ठीक वैसे ही जैसे मैं अपनी कुछ खूबियों को बेहतर महिलाओं की खूबियों से खुशी-खुशी बदल लूँगा; क्योंकि न तो वह और न ही मैं परिपूर्ण हैं, और मैं उसकी उन्नति की उतनी ही दिली इच्छा रखता हूँ जितनी अपनी। और वह ज़रूर सुधरेगा, क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता, हेलेन? वह अभी तो केवल छब्बीस साल का ही है।’

मैंने उत्तर दिया, 'हो सकता है।'

‘वह करेगा, वह करेगा!’ उसने दोहराया।

'मेरी इस बेरुखी भरी सहमति के लिए मुझे क्षमा करें, मिलिसेंट, मैं दुनिया के लिए आपकी आशाओं को हतोत्साहित नहीं करना चाहता, लेकिन मेरी आशाएं इतनी बार टूट चुकी हैं कि मैं अपनी उम्मीदों में उतना ही ठंडा और संशयपूर्ण हो गया हूँ जितना कि अस्सी साल का सबसे सपाट व्यक्ति।'

‘और फिर भी आप मिस्टर हंटिंगडन के लिए भी उम्मीद रखते हैं?’

मैं स्वीकार करती हूँ, “हाँ” उसके लिए; क्योंकि ऐसा लगता है मानो जीवन और आशा दोनों एक साथ समाप्त हो जाएँगी। और क्या वह मिस्टर हैटर्सले से इतना बुरा है, मिलिसेंट?

खैर, मैं अपनी स्पष्ट राय दूं तो मुझे लगता है कि उनमें कोई तुलना नहीं है। लेकिन आपको बुरा नहीं मानना चाहिए, हेलेन, क्योंकि आप जानती हैं कि मैं हमेशा अपने मन की बात कहता हूं, और आप भी अपने मन की बात कह सकती हैं। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

'मुझे बुरा नहीं लगा, प्रिय; और मेरी राय यह है कि यदि दोनों की तुलना की जाए, तो अधिकांश मामलों में अंतर निश्चित रूप से हैटर्सले के पक्ष में है।'

मिलिसेंट के दिल ने उसे बताया कि इस बात को स्वीकार करने में मुझे कितना

कष्ट हुआ; और एक मासूमियत भरी भावना से उसने बिना कुछ कहे अचानक मेरे गाल पर चुंबन करके अपनी सहानुभूति व्यक्त की, फिर जल्दी से मुड़कर अपने बच्चे को गोद में उठा लिया और अपना चेहरा उसकी फ्रॉक में छिपा लिया। यह कितनी अजीब बात है कि हम अक्सर एक-दूसरे के दुखों पर रोते हैं, जबकि अपने दुखों पर एक आंसू भी नहीं बहाते! उसका दिल अपने दुखों से भरा हुआ था, लेकिन मेरे दुखों के ख्याल से ही वह छलक उठा; और मैं भी उसकी सहानुभूति देखकर रो पड़ा, हालांकि मैं कई हफ्तों से अपने लिए नहीं रोया था।

पिछले हफ्ते एक बरसात का दिन था; कंपनी के अधिकांश लोग बिलियर्ड रूम में समय बिता रहे थे, लेकिन मिलिसेंट और मैं छोटे आर्थर और हेलेन के साथ पुस्तकालय में थे, और अपनी किताबों, अपने बच्चों और एक-दूसरे के बीच, हमें उम्मीद थी कि सुबह बहुत सुखद बीतेगी। हालाँकि, हमें इस तरह एकांत में बैठे हुए दो घंटे भी नहीं हुए थे कि मिस्टर हैटर्सले अंदर आ गए, मुझे लगता है कि वे हॉल पार करते समय अपनी बच्ची की आवाज़ से आकर्षित हुए होंगे, क्योंकि वे उससे बहुत प्यार करते हैं, और वह भी उनसे।

उसके शरीर से अस्तबल की महक आ रही थी, जहाँ वह सुबह के नाश्ते के बाद से ही अपने साथी घोड़ों के साथ मौज-मस्ती कर रहा था। लेकिन मेरी नन्ही हमनाम के लिए यह कोई मायने नहीं रखता था; जैसे ही उसके पिता का विशालकाय शरीर

दरवाजे पर आया, वह खुशी से चीख पड़ी और अपनी माँ का सहारा छोड़कर, काँपते हुए उसकी ओर दौड़ी, बाहें फैलाकर संतुलन बनाते हुए, उसके घुटने को गले लगाया, अपना सिर पीछे की ओर झुकाया और उसके चेहरे पर हँसने लगी। वह शायद उन छोटे, सुंदर चेहरों को देखकर मुस्कुरा रहा होगा, जो मासूमियत भरी खुशी से दमक रहे थे, उन साफ नीली चमकती आँखों को और उन कोमल सुनहरे बालों को जो उसकी छोटी सी गर्दन और कंधों पर बिखरे हुए थे। क्या उसने यह नहीं सोचा कि वह ऐसी संपत्ति के लायक नहीं है? मुझे डर है कि ऐसा कोई विचार उसके मन में नहीं आया होगा। उसने उसे गोद में उठा लिया, और कुछ मिनटों तक खूब मस्ती-मजाक हुआ, जिसके दौरान यह कहना मुश्किल है कि पिता या बेटी में से कौन सबसे ज़ोर से हँसा और चिल्लाया। अंततः, जैसा कि अपेक्षित था, वह शोरगुल भरा खेल अचानक समाप्त हो गया: बच्चा घायल हो गया था और रोने लगा; और उस निर्दयी साथी ने उसे उसकी माँ की गोद में फेंक दिया और कहा, 'सब ठीक कर दो।' उस कोमल दिलासा देने वाली के पास वापस लौटकर बच्चा उतना ही प्रसन्न था जितना कि उसे छोड़कर जाने पर, वह उसकी बाहों में सिमट गया और पल भर में उसका रोना बंद हो गया; और अपना छोटा सा थका हुआ सिर उसकी छाती पर रखकर, जल्दी ही सो गया।

इसी बीच मिस्टर हैटर्सले आग के पास पहुंचे और अपनी लंबाई और चौड़ाई को हमारे और आग के बीच रखकर, बांहें कमर पर रखकर, सीना फुलाकर खड़े हो गए और अपने चारों ओर ऐसे देखने लगे मानो घर और उसकी सभी चीजें और सामान उनकी अपनी निर्विवाद संपत्ति हों।

'मौसम बहुत खराब है!' उन्होंने कहना शुरू किया। 'लगता है आज शिकार नहीं होगा।' फिर अचानक ऊँची आवाज़ में उन्होंने हमें एक जोशीले गाने की कुछ पंक्तियाँ सुनाईं, जो अचानक रुक गई। उन्होंने सीटी बजाकर धुन पूरी की और फिर आगे कहा: – 'सुनो, श्रीमती हंटिंगडन, आपके पति के पास कितने बढ़िया घोड़े हैं! बड़े तो नहीं, लेकिन अच्छे हैं। मैंने आज सुबह उन्हें थोड़ा देखा; और कसम से, ब्लैक बॉस, ग्रे टॉम और वह छोटा निम्रोड, मैंने कई दिनों में सबसे बेहतरीन जानवर देखे हैं!' फिर उन्होंने उनके विभिन्न गुणों पर विस्तार से चर्चा की, और उसके बाद घुड़सवारी के क्षेत्र में अपने उन बड़े कामों का ब्यौरा दिया जो वे तब करना चाहते थे जब उनके पुराने गवर्नर खेल से विदा हो जाएँ। 'ऐसा नहीं है कि मैं चाहता हूँ कि वे अपना हिसाब-किताब बंद

कर दें,’ उन्होंने आगे कहा: ‘पुराने ट्रोजन जब तक चाहें मेरे लिए अपना हिसाब-किताब खुला रख सकते हैं।’

'मुझे पूरी उम्मीद है, श्री हैटर्सले।'

‘ओह, हाँ! ये तो बस मेरे बात करने का तरीका है। वो घटना तो कभी न कभी होनी ही है, इसलिए मैं इसके सकारात्मक पहलू पर ध्यान दे रही हूँ: यही सही योजना है, है ना, श्रीमती एच.? आप दोनों यहाँ क्या कर रही हैं? वैसे, लेडी लोबोरो कहाँ हैं?’

बिलियर्ड रूम में।

‘वह कितनी खूबसूरत है!’ उसने अपनी पत्नी पर नज़रें गड़ाते हुए कहा, जिसका चेहरा रंग बदल गया और जैसे-जैसे वह बोलता गया, वह और भी ज़्यादा परेशान दिखने लगी। ‘उसका व्यक्तित्व कितना शानदार है; उसकी काली आँखें कितनी खूबसूरत हैं; उसका स्वभाव कितना नेक है; और जब उसका मन करता है तो उसकी ज़बान भी कितनी तेज़ है। मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ! लेकिन चिंता मत करो, मिलिसेंट: मैं उसे अपनी पत्नी नहीं बनाऊँगा, चाहे वह दहेज में पूरा राज्य ही क्यों न दे! मैं अपनी पत्नी से ही संतुष्ट हूँ। अब! तुम इतनी नाराज़ क्यों हो? क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है?’

'हां, मुझे आप पर विश्वास है,' उसने आधे उदास और आधे उदास भाव से बुदबुदाते हुए कहा, और फिर सोफे पर अपने बगल में लेटे हुए सो रहे शिशु के बालों को सहलाने के लिए मुड़ गई।

'तो फिर, तुम्हें इतना गुस्सा क्यों आ रहा है? इधर आओ, मिली, और मुझे बताओ कि तुम मेरे आश्वासन से संतुष्ट क्यों नहीं हो सकती।'

वह गई और अपना छोटा सा हाथ उसकी बांह में रखकर, उसके चेहरे की ओर देखकर धीरे से बोली, —

‘इसका मतलब क्या है, राल्फ? बस यही कि तुम एनाबेला की इतनी प्रशंसा करते हो, और उन गुणों के लिए जो मुझमें नहीं हैं, फिर भी तुम मुझे उससे ज़्यादा अपनी पत्नी बनाना चाहते हो, जो केवल यह साबित करता है कि तुम अपनी पत्नी से प्यार करना ज़रूरी नहीं समझते; तुम संतुष्ट हो अगर वह तुम्हारा घर संभाल सके और तुम्हारे बच्चे की देखभाल कर सके। लेकिन मैं नाराज़ नहीं हूँ; मैं बस दुखी हूँ; क्योंकि,’ उसने कांपती हुई धीमी आवाज़ में कहा, अपना हाथ उसकी बांह से हटाते हुए और अपनी नज़रें कालीन पर झुकाते हुए, ‘अगर तुम मुझसे प्यार नहीं करते, तो नहीं करते, और

इसमें कुछ नहीं किया जा सकता।'

'बिल्कुल सही; लेकिन आपको किसने बताया कि मैंने ऐसा नहीं कहा? क्या मैंने कहा था कि मैं एनाबेला से प्यार करता हूँ?'

आपने कहा था कि आप उसे बहुत पसंद करते हैं।

'सच है, लेकिन आराधना प्रेम नहीं है। मैं एनाबेला की आराधना करता हूँ, पर उससे प्रेम नहीं करता; और मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, मिलिसेंट, पर तुम्हारी आराधना नहीं करता।' अपने स्नेह के प्रमाण स्वरूप, उसने उसके हल्के भूरे घुंघराले बालों का एक गुच्छा पकड़ा और उन्हें बेरहमी से मरोड़ने लगा।

'क्या सच में, राल्फ?' उसने आँसुओं के बीच हल्की सी मुस्कान लिए हुए धीरे से कहा, और अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाते हुए यह जताने की कोशिश की कि वह उसे कुछ ज्यादा ही जोर से खींच रहा था।

'बिल्कुल, मैं करता हूँ,' उसने जवाब दिया: 'बस कभी-कभी तुम मुझे थोड़ा परेशान कर देते हो।'

'मैं आपको परेशान कर रही हूँ!' उसने बड़े ही स्वाभाविक आश्चर्य के साथ कहा।

हाँ, तुम—लेकिन सिर्फ़ तुम्हारी असाधारण अच्छाई के कारण। जब कोई लड़का दिन भर किशमिश और बेर खाता रहता है, तो उसे बदलाव के लिए खट्टे संतरे का रस पीने की इच्छा होती है। और क्या तुमने कभी समुद्र तट की रेत को नहीं देखा, मिली? वह कितनी चिकनी और सुंदर दिखती है, और पैरों को कितनी कोमल लगती है? लेकिन अगर तुम आधे घंटे तक इस नरम, चिकनी कालीन पर धीरे-धीरे चलो—हर कदम पर धंसती हुई, जितना ज़ोर से दबाओगे उतना ही धंसती हुई—तो तुम्हें यह काफ़ी थका देने वाला काम लगेगा, और तुम एक मज़बूत, ठोस चट्टान पर पहुँचकर खुश हो जाओगी, जो तुम्हारे खड़े होने, चलने या पैर पटकने पर भी एक इंच भी नहीं हिलेगी; और, भले ही वह चक्की के पत्थर की तरह कठोर हो, फिर भी तुम्हें अंततः उस पर चलना ज़्यादा आसान लगेगा।

'मैं समझती हूँ तुम क्या कहना चाहते हो, राल्फ,' उसने घबराते हुए अपने वॉचगार्ड से खेलते हुए और अपने छोटे से पैर की नोक से कालीन पर बनी आकृति को छूते हुए कहा — 'मैं समझती हूँ तुम क्या कहना चाहते हो: लेकिन मुझे लगा था कि तुम्हें हमेशा मेरी बात मानना पसंद था, और अब मैं इसे बदल नहीं सकती।'

'मुझे यह पसंद है,' उसने उसके बालों को एक और बार खींचकर उसे अपनी ओर

खींचते हुए जवाब दिया। ‘मेरी बातों पर ध्यान मत दो, मिली। एक आदमी को शिकायत करने के लिए कुछ न कुछ तो चाहिए ही; और अगर वह इस बात की शिकायत नहीं कर सकता कि उसकी पत्नी अपने नखरे और चिड़चिड़े स्वभाव से उसे परेशान कर रही है, तो उसे इस बात की शिकायत जरूर करनी चाहिए कि वह अपनी दयालुता और कोमलता से उसे थका देती है।’

लेकिन शिकायत करने की ज़रूरत ही क्या है, सिवाय इसके कि आप थके हुए और असंतुष्ट हों?

'अपनी गलतियों को माफ करने के लिए, बेशक। क्या आपको लगता है कि मैं अपने सारे पापों का बोझ अपने कंधों पर उठा लूँगी, जब तक कोई और मेरी मदद करने के लिए तैयार है, जिसके पास खुद का कोई बोझ नहीं है?'

'धरती पर ऐसा कोई नहीं है,' उसने गंभीरता से कहा; और फिर, उसके हाथ को अपने सिर से हटाकर, उसने सच्ची भक्ति के भाव से उसे चूमा, और दरवाजे की ओर चल पड़ी।

‘अब क्या?’ उसने कहा। ‘तुम कहाँ जा रहे हो?’

‘अपने बालों को संवारने के लिए,’ उसने अपने बिखरे बालों के बीच मुस्कुराते हुए जवाब दिया; ‘आपने तो इन्हें पूरी तरह से बिखेर दिया है।’

“तो जाओ! – बहुत ही प्यारी औरत है,” उसके जाने के बाद उसने कहा, “लेकिन थोड़ी ज़्यादा ही कोमल है – मानो हाथों में पिघल जाती है। मुझे पक्का लगता है कि कभी-कभी ज़्यादा पी लेने पर मैं उसके साथ बुरा बर्ताव करता हूँ – पर मैं कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि वह कभी शिकायत नहीं करती, न उस समय और न ही बाद में। मुझे लगता है कि उसे बुरा नहीं लगता।”

मैंने कहा, 'मैं इस विषय पर आपको जानकारी दे सकता हूँ, श्रीमान हैटर्सले: उसे इस बात की परवाह है; और कुछ अन्य बातों की भी उसे बहुत परवाह है, जिनके बारे में आप उसे कभी शिकायत करते हुए नहीं सुन पाएंगे।'

‘तुम्हें कैसे पता? क्या वह तुमसे शिकायत करती है?’ उसने गुस्से की एक चिंगारी के साथ पूछा, जो अगर मैंने “हाँ” में जवाब दिया तो आग की लपटों में बदलने के लिए तैयार थी।

‘नहीं,’ मैंने उत्तर दिया; ‘लेकिन मैं उसे आपसे कहीं अधिक समय से जानता हूँ और उसका आपसे कहीं अधिक गहन अध्ययन किया है। — और मैं आपको बता सकता

हूँ, श्री हैटर्सले, कि मिलिसेंट आपसे आपकी अपेक्षा से कहीं अधिक प्रेम करती है, और आपके पास उसे बहुत खुश करने की क्षमता है, इसके विपरीत आप उसके लिए एक दुष्ट शक्ति हैं, और मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि एक भी दिन ऐसा नहीं गुजरता जब आप उसे कोई ऐसा कष्ट न देते हों जिससे आप उसे बचाना चाहते हों।'

'खैर—इसमें मेरी कोई गलती नहीं है,' उसने लापरवाही से छत की ओर देखते हुए और अपने हाथ जेब में डालते हुए कहा: 'अगर मेरा व्यवहार उसे पसंद नहीं आता, तो उसे मुझे बता देना चाहिए।'

'क्या वह बिल्कुल वैसी पत्नी नहीं है जैसी आप चाहते थे? क्या आपने मिस्टर हंटिंगडन से यह नहीं कहा था कि आपको ऐसी पत्नी चाहिए जो बिना किसी शिकायत के सब कुछ स्वीकार कर ले और आप चाहे कुछ भी करें, वह कभी आपको दोष न दे?'

'सच है, लेकिन हमें हमेशा वो नहीं मिलना चाहिए जो हम चाहते हैं: इससे अच्छे से अच्छे गुण भी बिगड़ जाते हैं, है ना? मैं कैसे खुद को रोक सकता हूँ जब मैं देखता हूँ कि उसके लिए एक ही बात मायने रखती है चाहे मैं एक ईसाई की तरह व्यवहार करूँ या एक बदमाश की तरह, जैसा कि प्रकृति ने मुझे बनाया है? और मैं कैसे उसे चिढ़ाने से खुद को रोक सकता हूँ जब वह इतनी प्यारी और शांत है, जब वह मेरे पैरों पर एक स्पैनियल की तरह लेट जाती है और मुझे यह बताने के लिए एक हल्की सी आवाज़ भी नहीं करती कि बस बहुत हो गया?'

'यदि आप स्वभाव से ही अत्याचारी हैं, तो प्रलोभन प्रबल होता है, मैं यह स्वीकार करता हूँ; लेकिन कोई भी उदार मन कमजोरों पर अत्याचार करना पसंद नहीं करता, बल्कि उनका पालन-पोषण और रक्षा करना पसंद करता है।'

'मैं उस पर अत्याचार नहीं करता; लेकिन हमेशा उसे प्यार और सुरक्षा देते रहना कितना बेतुका है; और फिर, मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं उस पर अत्याचार कर रहा हूँ जब वह "गायब हो जाती है और कोई संकेत नहीं देती"? कभी-कभी मुझे लगता है कि उसमें कोई भावना ही नहीं है; और फिर मैं तब तक करता रहता हूँ जब तक वह रोने न लगे, और इससे मुझे संतुष्टि मिलती है।'

तो क्या तुम्हें उस पर अत्याचार करने में आनंद आता है?

'मैं ऐसा नहीं करता, मैं तुम्हें बताता हूँ! केवल तभी जब मेरा मूड खराब हो, या बहुत अच्छा हो, और मैं उसे दिलासा देने के आनंद के लिए उसे परेशान करना चाहता

हूँ; या जब वह उदास दिखती है और उसे थोड़ा जगाने की ज़रूरत होती है। और कभी-कभी वह बिना किसी कारण के रोकर मुझे उकसाती है, और मुझे यह नहीं बताती कि वह किस लिए रो रही है; और तब, मैं मानता हूँ, यह मुझे असहनीय रूप से क्रोधित कर देता है, खासकर जब मैं अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रख पाता।'

मैंने कहा, 'जैसा कि ऐसे मौकों पर आम तौर पर होता है,' 'लेकिन भविष्य में, श्री हैटर्सले, जब आप उसे उदास देखें, या बिना किसी कारण के रोते हुए देखें (जैसा कि आप कहते हैं), तो इसका सारा दोष खुद पर लें: निश्चिंत रहें कि यह आपकी किसी गलती या आपके सामान्य दुराचार के कारण ही वह दुखी है।'

मुझे इस पर विश्वास नहीं होता। अगर ऐसा होता, तो वह मुझे बता देती: मुझे चुपचाप उदास बैठे रहना और कुछ न कहना पसंद नहीं है: यह ईमानदारी नहीं है। इस गति से वह मुझसे अपने व्यवहार में सुधार की उम्मीद कैसे कर सकती है?

'शायद वह आपको आपकी असलियत से कहीं अधिक समझदार समझती है, और इस उम्मीद में खुद को धोखा देती है कि अगर आपको आत्मचिंतन पर छोड़ दिया जाए तो आप एक दिन अपनी गलतियों को पहचान लेंगे और उन्हें सुधार लेंगे।'

'श्रीमती हंटिंगडन, आपकी ये उपहास भरी बातें बेकार हैं। मुझे यह समझ है कि मैं हमेशा पूरी तरह सही नहीं होती, लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है कि इससे कोई बड़ी बात नहीं है, जब तक मैं खुद के अलावा किसी और को नुकसान न पहुंचाऊं—'

मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'यह एक गंभीर मामला है, आपके लिए भी (जैसा कि आपको बाद में इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा) और आपसे जुड़े सभी लोगों के लिए, विशेषकर आपकी पत्नी के लिए। लेकिन वास्तव में, केवल स्वयं को ही हानि पहुँचाने की बात करना निरर्थक है: स्वयं को हानि पहुँचाना असंभव है, विशेषकर उन कृत्यों से जिनका हम उल्लेख कर रहे हैं, बिना सैकड़ों, बल्कि हजारों लोगों को, कम या ज्यादा, हानि पहुँचाए, चाहे वह आपके द्वारा किए गए बुरे कार्यों से हो या आपके द्वारा न किए गए अच्छे कार्यों से।' उन्होंने आगे कहा, 'और जैसा कि मैं कह रहा था, या कहता अगर आपने मुझे बीच में ही न टोका होता, मुझे कभी-कभी लगता है कि अगर मैं किसी ऐसे साथी के साथ होता जो मुझे हमेशा मेरी गलतियों की याद दिलाता और मुझे अच्छे कार्य करने और बुरे कार्यों से बचने के लिए प्रेरित करता, तो मैं बेहतर होता, क्योंकि वह स्पष्ट रूप से अच्छे कार्यों का समर्थन करती और बुरे कार्यों का विरोध करती।'

'यदि आपके मन में अपने साथी मनुष्यों की स्वीकृति के अलावा कोई उच्चतर उद्देश्य न हो, तो इससे आपको कोई खास लाभ नहीं होगा।'

"खैर, अगर मुझे कोई ऐसी साथी मिल जाए जो हमेशा झुकने वाली और हमेशा एक जैसी दयालु न हो, बल्कि कभी-कभी मुझसे दूरी बनाए रखने का साहस रखे और हमेशा ईमानदारी से अपने मन की बात कहे, जैसे कि आप। अब, अगर मैं आपके साथ भी वैसा ही व्यवहार करूं जैसा मैं लंदन में उसके साथ करता हूं, तो आप घर को इतना गर्म कर देंगी कि कभी-कभी मुझे गले लगाना भी मुश्किल हो जाएगा, कसम से।"

'आप मुझे गलत समझ रहे हैं: मैं झगड़ालू औरत नहीं हूँ।'

'खैर, यह तो और भी अच्छा है, क्योंकि मैं आम तौर पर विरोधाभास बर्दाश्त नहीं कर सकता, और मैं अपनी इच्छा का उतना ही शौकीन हूं जितना कोई और; बस मुझे लगता है कि इसकी अति किसी के लिए भी उचित नहीं है।'

'खैर, मैं बिना किसी कारण के कभी आपका विरोध नहीं करूंगा, लेकिन निश्चित रूप से मैं आपको हमेशा यह बता दूंगा कि मैं आपके आचरण के बारे में क्या सोचता हूं; और यदि आपने मुझे शारीरिक, मानसिक या आर्थिक रूप से प्रताड़ित किया, तो कम से कम आपके पास यह मानने का कोई कारण नहीं होना चाहिए कि "मुझे इसकी परवाह नहीं थी।"'

'मुझे पता है, मेरी लेडी; और मुझे लगता है कि अगर मेरी छोटी पत्नी भी इसी योजना का पालन करे, तो यह हम दोनों के लिए बेहतर होगा।'

मैं उसे बता दूंगी।

नहीं, नहीं, उसे रहने दो; दोनों पक्षों की बहुत सी बातें कही जा सकती हैं, और अब जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो हंटिंगडन को अक्सर इस बात का अफ़सोस होता है कि तुम उसके जैसी क्यों नहीं हो, वह कितना बदमाश है, और देखो, आख़िरकार, तुम उसे सुधार नहीं सकतीं: वह मुझसे दस गुना ज़्यादा बुरा है। वह तुमसे डरता तो है, यह तो पक्का है; मतलब, वह तुम्हारी मौजूदगी में हमेशा अच्छा बर्ताव करता है — लेकिन —'

'मुझे आश्चर्य होता है कि उसका सबसे बुरा व्यवहार कैसा होगा?' मैं यह देखने से खुद को रोक नहीं पाई।

'सच कहूँ तो, यह वाकई बहुत बुरा है, है ना, हरग्रेव?' उन्होंने उस सज्जन से कहा,

जो मेरी जानकारी के बिना कमरे में दाखिल हो गए थे, क्योंकि मैं उस समय आग के पास दरवाजे की ओर पीठ करके खड़ा था। ‘हंटिंगडन,’ उन्होंने आगे कहा, ‘क्या उतना ही बड़ा बदमाश नहीं है जितना पहले कभी हुआ था?’

श्री हारग्रेव ने आगे आकर उत्तर दिया, 'उनकी पत्नी उन्हें बिना किसी दंड के निंदा करते हुए नहीं सुनेगी; लेकिन मुझे कहना होगा, मैं ईश्वर का आभारी हूं कि मैं वैसा दूसरा व्यक्ति नहीं हूं।'

मैंने कहा, 'शायद तुम्हारे लिए यह बेहतर होगा कि तुम अपने आप को देखो और कहो, "हे ईश्वर, मुझ पापी पर दया करो।"'

‘आप बहुत कठोर हैं,’ उसने थोड़ा झुकते हुए और गर्व तथा आहत भाव से खुद को सीधा करते हुए जवाब दिया। हैटर्सले हँसा और उसके कंधे पर थपथपाया। अपमानित महसूस करते हुए, श्री हरग्रेव ने अपना हाथ उसके हाथ से छुड़ाया और कालीन के दूसरे छोर पर चले गए।

‘श्रीमती हंटिंगडन, यह कितनी शर्म की बात है?’ उनके बहनोई चिल्लाए; ‘जब हम यहाँ आए थे, उसके दूसरे दिन रात को ही मैंने नशे में धुत होकर वाल्टर हरग्रेव पर हमला कर दिया था, और तब से उसने मुझसे मुंह मोड़ लिया है; जबकि मैंने घटना के ठीक अगले दिन सुबह ही उससे माफी मांग ली थी!’

दूसरे ने जवाब दिया, "जिस तरह से तुमने यह सवाल पूछा और जिस स्पष्टता से तुम्हें पूरी घटना याद थी, उससे पता चलता है कि तुम इतने नशे में नहीं थे कि तुम्हें अपने कार्यों की पूरी जानकारी न हो और तुम उस कृत्य के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार थे।"

'तुम मेरे और मेरी पत्नी के बीच दखल देना चाहते थे,' हैटर्सले ने बड़बड़ाते हुए कहा, 'और यह किसी भी आदमी को भड़काने के लिए काफी है।'

'तो क्या तुम इसे जायज ठहराते हो?' उसके प्रतिद्वंद्वी ने उस पर बेहद प्रतिशोधी निगाह डालते हुए कहा।

नहीं, मैं तुमसे कहता हूँ कि अगर मैं उत्तेजित न होता तो मैं ऐसा नहीं करता; और अगर मेरे द्वारा कही गई सभी अच्छी बातों के बाद भी तुम इसके लिए द्वेष रखना चाहते हो, तो रखो और भाड़ में जाओ!

'मैं कम से कम एक महिला की उपस्थिति में ऐसी भाषा का प्रयोग करने से परहेज करूंगा,' श्री हरग्रेव ने घृणा के मुखौटे के नीचे अपना गुस्सा छुपाते हुए कहा।

‘मैंने क्या कहा?’ हैटर्सले ने जवाब दिया: ‘बिल्कुल सच। श्रीमती हंटिंगडन, अगर वह अपने भाई के गुनाहों को माफ नहीं करता है, तो वह नरक में जाएगा, है ना?’

‘मिस्टर हरग्रेव, आपको उसे माफ कर देना चाहिए, क्योंकि वह आपसे माफी मांग रहा है,’ मैंने कहा।

‘क्या आप ऐसा कहते हैं? तो मैं करूँगा!’ और लगभग खुलकर मुस्कुराते हुए, वह आगे बढ़ा और अपना हाथ बढ़ाया। उसके रिश्तेदार ने तुरंत उसका हाथ थाम लिया, और दोनों पक्षों के बीच सुलह सौहार्दपूर्ण प्रतीत हुई।

हरग्रेव ने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा, 'इस अपमान की आधी कड़वाहट इस तथ्य के कारण थी कि यह आपकी उपस्थिति में किया गया था; और चूंकि आपने मुझे इसे क्षमा करने के लिए कहा है, इसलिए मैं इसे क्षमा कर दूंगा और भूल भी जाऊंगा।'

‘मुझे लगता है कि सबसे अच्छा प्रतिफल यही होगा कि मैं खुद को यहाँ से हटा लूँ,’ हैटर्सले ने चौड़ी मुस्कान के साथ बुदबुदाया। उसका साथी मुस्कुराया और वह कमरे से बाहर चला गया। इससे मैं सतर्क हो गया। श्री हरग्रेव गंभीरता से मेरी ओर मुड़े और पूरी लगन से बोलने लगे, —

‘प्रिय श्रीमती हंटिंगडन, मैं इस घड़ी का कितना बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, फिर भी इससे कितना डरता था! घबराइए मत,’ उन्होंने आगे कहा, क्योंकि मेरा चेहरा गुस्से से लाल हो गया था: ‘मैं किसी व्यर्थ की विनती या शिकायत से आपको नाराज़ नहीं करने वाला हूँ। मैं अपनी भावनाओं या आपकी खूबियों का ज़िक्र करके आपको परेशान करने का साहस नहीं करूँगा, लेकिन मुझे आपसे कुछ ऐसा कहना है जो आपको जानना चाहिए, और जिसे जानकर मुझे असहनीय पीड़ा हो रही है—’

तो फिर इसे प्रकट करने की जहमत क्यों उठाएं!

लेकिन यह महत्वपूर्ण है —

'अगर ऐसा है तो मुझे जल्द ही पता चल जाएगा, खासकर अगर यह बुरी खबर है, जैसा कि आप सोच रहे हैं। फिलहाल मैं बच्चों को नर्सरी ले जा रहा हूँ।'

लेकिन क्या आप उन्हें फोन करके भेज नहीं सकते?

नहीं; मुझे घर की छत तक दौड़कर व्यायाम करना है। आओ, आर्थर।

लेकिन क्या तुम वापस आओगे?

अभी नहीं; प्रतीक्षा मत करो।

तो फिर मैं आपसे दोबारा कब मिल सकता हूँ?

मैंने कहा, 'दोपहर के भोजन पर,' और एक हाथ में छोटी हेलेन को पकड़े हुए और आर्थर का हाथ पकड़कर वहां से चली गई।

वह मुंह फेरकर कुछ बुदबुदाया, जिसमें अधीरता या निंदा का भाव था और 'निर्दयी' ही एकमात्र स्पष्ट शब्द था।

‘यह क्या बकवास है, मिस्टर हरग्रेव?’ मैंने दरवाजे पर रुकते हुए कहा। ‘आपका मतलब क्या है?’

“ओह, कुछ नहीं; मेरा इरादा आपको अपना एकालाप सुनाने का नहीं था। लेकिन सच तो यह है, श्रीमती हंटिंगडन, मुझे एक बात कहनी है, जो मेरे लिए कहना और आपके लिए सुनना दोनों ही कष्टदायक है; और मैं चाहता हूँ कि आप मुझे कुछ मिनटों का समय और स्थान दें, जब आप चाहें। मैं यह किसी स्वार्थवश नहीं माँग रहा हूँ, न ही किसी ऐसे कारण से जिससे आपकी अलौकिक पवित्रता को ठेस पहुँचे: इसलिए आपको मुझे उस ठंडी और निर्मम तिरस्कार भरी नज़र से देखने की ज़रूरत नहीं है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि बुरी खबर देने वालों को आमतौर पर किस नज़र से देखा जाता है—”

मैंने अधीरता से उसे रोकते हुए कहा, 'यह अद्भुत जानकारी क्या है? अगर यह वाकई महत्वपूर्ण है, तो मेरे जाने से पहले इसे तीन शब्दों में बता दो।'

‘तीन शब्दों में मैं नहीं कह सकता। उन बच्चों को यहाँ से भेज दो और मेरे साथ रहो।’

नहीं; अपनी बुरी खबर अपने तक ही रखो। मुझे पता है कि यह ऐसी बात है जिसे मैं सुनना नहीं चाहता, और जिसे बताकर तुम मुझे नाराज कर दोगे।

'मुझे डर है कि आपने कुछ ज्यादा ही सही भविष्यवाणी कर दी है; लेकिन फिर भी, चूंकि मैं इसे जानता हूं, इसलिए मैं इसे आपको बताने को अपना कर्तव्य समझता हूं।'

‘ओह, हम दोनों को इस कष्ट से बचाओ, और मैं तुम्हें इस कर्तव्य से मुक्त कर दूंगा। तुमने बताने की पेशकश की थी; मैंने सुनने से इनकार कर दिया: मेरी अज्ञानता का दोष तुम पर नहीं लगाया जाएगा।’

ऐसा ही हो: तुम इसे मुझसे नहीं सुनोगे। लेकिन अगर जब यह आघात तुम पर अचानक पड़े, तो याद रखना कि मैं इसे नरम करना चाहता था!

मैंने उसे छोड़ दिया। मैंने ठान लिया था कि उसकी बातों से मुझे डर नहीं लगना चाहिए। आख़िर उस आदमी के पास भला ऐसी कौन सी बात हो सकती है जो मेरे

लिए जानना ज़रूरी हो? शायद वो मेरे बदकिस्मत पति के बारे में कोई बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई कहानी सुना रहा होगा, जिसका फ़ायदा उठाकर वो अपने बुरे इरादों को पूरा करना चाहता होगा।

छठा. — उन्होंने तब से इस महत्वपूर्ण रहस्य का कोई जिक्र नहीं किया है, और मुझे इसे सुनने की अनिच्छा पर पछतावा करने का कोई कारण नहीं दिखता। जिस आघात की आशंका थी, वह अभी तक नहीं हुआ है, और मुझे इसका ज्यादा डर नहीं है। फिलहाल मैं आर्थर से खुश हूँ: उन्होंने दो सप्ताह से अधिक समय से कोई अपमानजनक कार्य नहीं किया है, और पिछले पूरे सप्ताह उन्होंने भोजन के समय बहुत संयम बरता है, जिससे उनके स्वभाव और रूप-रंग में स्पष्ट बदलाव दिखाई देता है। क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि यह सिलसिला जारी रहेगा?

अध्याय XXXIII

सातवाँ। — हाँ, मैं आशा करूँगा! आज रात मैंने ग्रिम्सबी और हैटर्सले को अपने मेज़बान के आतिथ्य सत्कार के बारे में आपस में बड़बड़ाते सुना। उन्हें पता नहीं था कि मैं पास ही हूँ, क्योंकि मैं खिड़की के आगे के पर्दे के पीछे खड़ा था, लॉन के नीचे ऊँचे-ऊँचे काले एल्म के पेड़ों के झुंड के ऊपर चाँद को उगते हुए देख रहा था, और सोच रहा था कि आर्थर इतना भावुक क्यों है कि वह बाहर बरामदे के बाहरी खंभे से टेक लगाकर खड़ा है, मानो वह भी उसे देख रहा हो।

'तो, मुझे लगता है कि इस घर में हमारी मौज-मस्ती का आखिरी दौर अब खत्म हो गया है,' श्री हैटर्सले ने कहा; 'मुझे लगा था कि उनकी दोस्ती ज्यादा दिन नहीं चलेगी। लेकिन,' उन्होंने हंसते हुए कहा, 'मुझे उम्मीद नहीं थी कि इसका अंत इस तरह होगा। मुझे तो लगा था कि हमारी प्यारी मेजबान अपने कांटेदार पंजे निकाल लेंगी और अगर हमने तमीज़ से काम नहीं लिया तो हमें घर से बाहर निकालने की धमकी देंगी।'

‘तो तुमने इसकी कल्पना नहीं की थी?’ ग्रिम्सबी ने गहरी हंसी के साथ जवाब दिया। ‘लेकिन जब वह उससे ऊब जाएगा तो फिर से बदल जाएगा। अगर हम एक-दो साल बाद यहाँ आए तो हम अपनी मनमानी करेंगे, तुम देख लेना।’

दूसरे ने जवाब दिया, 'मुझे नहीं पता। वह उस तरह की औरत नहीं है जिससे जल्दी ऊब जाए। लेकिन जो भी हो, अब यह बेहद निराशाजनक है कि हम खुश नहीं रह सकते, क्योंकि वह अच्छा व्यवहार करने का नाटक कर रहा है।'

‘ये सब तो ये शापित औरतें ही हैं!’ ग्रिम्सबी बुदबुदाया: ‘ये तो दुनिया की सबसे बड़ी मुसीबत हैं! अपने झूठे, सुंदर चेहरों और कपटी ज़ुबानों से ये जहाँ भी जाती हैं, मुसीबत और असुविधा लेकर आती हैं।’

इस समय मैं अपने एकांतवास से बाहर निकली और श्री ग्रिम्सबी को देखकर मुस्कुराते हुए कमरे से निकलकर आर्थर की तलाश में चली गई। उसे झाड़ियों की ओर मुड़ते देख मैं उसके पीछे-पीछे गई और उसे छायादार रास्ते में प्रवेश करते हुए पाया। मेरा मन इतना हल्का था, स्नेह से इतना भरा हुआ था कि मैं उस पर झपटी और उसे अपनी बाहों में भर लिया। मेरे इस अचानक व्यवहार का उस पर एक अनोखा प्रभाव पड़ा: पहले तो उसने धीरे से कहा, 'भगवान आपका भला करे, प्रिय!' और पुराने दिनों की तरह जोश से मुझे गले लगाया, फिर वह चौंक गया और घोर भयभीत होकर बोला, 'हेलेन! यह क्या हो रहा है?' और मैंने छायादार पेड़ से छनकर आती हल्की रोशनी में देखा कि वह सदमे से बिल्कुल पीला पड़ गया था।

यह कितनी अजीब बात है कि स्नेह की सहज भावना पहले आई, और फिर आश्चर्य का झटका! इससे कम से कम यह तो पता चलता है कि स्नेह सच्चा है: वह अभी तक मुझसे ऊबा नहीं है।

‘मैंने तुम्हें चौंका दिया, आर्थर,’ मैंने खुशी से हंसते हुए कहा। ‘तुम कितने घबराए हुए हो!’

‘तुमने ये सब किसलिए किया?’ वह चिढ़कर चिल्लाया, मेरी बाहों से खुद को छुड़ाते हुए और अपने रुमाल से अपना माथा पोंछते हुए बोला। ‘हेलेन, वापस जाओ—तुम्हें तुरंत वापस जाना चाहिए! तुम्हें ठंड लग जाएगी और तुम मर जाओगी!’

‘मैं तब तक नहीं बताऊंगी, जब तक मैं आपको यह न बता दूं कि मैं किस लिए आई हूं। आर्थर, लोग आपके संयम और सादगी के लिए आपको दोषी ठहरा रहे हैं, और मैं इसके लिए आपको धन्यवाद देने आई हूं। वे कहते हैं कि यह सब “इन शापित

महिलाओं" की वजह से है, और हम दुनिया के लिए अभिशाप हैं; लेकिन उन्हें आप पर हंसने या शिकायत करने न दें, न ही आपके अच्छे संकल्पों को तोड़ने दें, न ही मेरे प्रति आपके स्नेह को।'

वह हँस पड़ा। मैंने उसे फिर से अपनी बाहों में भर लिया और आँसू भरी आवाज़ में रोते हुए कहा, 'हिम्मत मत हारो! और मैं तुम्हें पहले से भी ज़्यादा प्यार करूँगी!'

'अच्छा, अच्छा, मैं करूँगा!' उसने जल्दी से मुझे चूमते हुए कहा। 'लो, अब जाओ। तुम पागल हो, इस ठंडी पतझड़ की रात में अपनी हल्की शाम की पोशाक में बाहर कैसे आ गईं?'

मैंने कहा, 'यह एक शानदार रात है।'

'यह वो रात है जो तुम्हें पल भर में मौत दे देगी। भाग जाओ, भाग जाओ!'

'क्या तुम्हें उन पेड़ों के बीच मेरी मृत्यु दिखाई दे रही है, आर्थर?' मैंने कहा, क्योंकि वह झाड़ियों को ध्यान से देख रहा था, मानो उसे अपनी मृत्यु का आभास हो रहा हो। मैं अपनी नव-प्राप्त खुशी और आशा व प्रेम के पुनरुत्थान में डूबी हुई उसे छोड़कर जाने से हिचकिचा रही थी। लेकिन मेरे देर करने पर वह नाराज़ हो गया, इसलिए मैंने उसे चूमा और दौड़कर घर वापस चली गई।

उस रात मेरा मूड बहुत अच्छा था: मिलिसेंट ने कहा कि मैं पार्टी की जान थी, और फुसफुसाते हुए कहा कि उसने मुझे इतना खुशमिजाज पहले कभी नहीं देखा था। सच में, मैंने बीस लोगों के बराबर बातें कीं और उन सभी पर मुस्कुराई। ग्रिम्सबी, हैटर्सले, हरग्रेव, लेडी लोबोरो, सभी ने मेरी बहन जैसी दयालुता का अनुभव किया। ग्रिम्सबी मुझे घूर रहा था और आश्चर्य कर रहा था; हैटर्सले हँस रहा था और मज़ाक कर रहा था (उतनी कम शराब पीने के बावजूद), लेकिन फिर भी उसने अपनी समझदारी से व्यवहार किया। हरग्रेव और एनाबेला, अलग-अलग कारणों से और अलग-अलग तरीकों से, मेरा अनुकरण कर रहे थे, और निस्संदेह दोनों मुझसे आगे निकल गए, हरग्रेव अपनी वाक्पटुता और बोलने की कला में, और एनाबेला कम से कम साहस और जीवंतता में। मिलिसेंट, अपने पति, अपने भाई और अपनी अति-प्रशंसित दोस्त को इतना अच्छा प्रदर्शन करते देखकर प्रसन्न थी, और वह भी अपने शांत स्वभाव में खुश और उत्साहित थी। यहां तक कि लॉर्ड लोबोरो भी इस उत्साह से भर गए: उनकी गहरी हरी आंखें उदास भौंहों के नीचे चमक उठीं; उनका गंभीर चेहरा मुस्कान से सुशोभित हो गया; उदासी और अभिमान या ठंडेपन के सारे निशान कुछ समय के

लिए गायब हो गए; और उन्होंने न केवल अपनी सामान्य प्रसन्नता और जीवंतता से, बल्कि समय-समय पर प्रकट होने वाली सच्ची शक्ति और प्रतिभा की चमक से भी हम सभी को चकित कर दिया। आर्थर ज्यादा नहीं बोलते थे, लेकिन वे हंसते थे, बाकी लोगों की बातें सुनते थे और पूरी तरह से खुशमिजाज थे, हालांकि शराब से उत्तेजित नहीं थे। कुल मिलाकर, हम सब एक बहुत ही आनंदमय, सरल और मनोरंजक पार्टी बन गए।

9वां — कल जब राहेल मुझे रात के खाने के लिए तैयार करने आई, तो मैंने देखा कि वह रो रही थी। मैं रोना का कारण जानना चाहता था, लेकिन वह बताने में हिचकिचा रही थी। क्या वह बीमार थी? नहीं। क्या उसने अपने दोस्तों से कोई बुरी खबर सुनी थी? नहीं। क्या किसी नौकर ने उसे परेशान किया था?

‘ओह, नहीं महोदया!’ उसने उत्तर दिया; ‘यह मेरे लिए नहीं है।’

‘तो फिर क्या हुआ, रेचल? क्या तुम उपन्यास पढ़ रही हो?’

‘बिल्कुल नहीं!’ उसने दुख से सिर हिलाते हुए कहा; फिर उसने आह भरी और आगे कहा: ‘लेकिन सच कहूँ तो, महोदया, मुझे स्वामी जी का व्यवहार पसंद नहीं है।’

‘तुम्हारा क्या मतलब है, रेचल? वह तो आजकल बहुत अच्छे से चल रहा है।’

'जी महोदया, अगर आप ऐसा सोचती हैं तो यह सही है।'

और वह जल्दबाजी में मेरे बाल संवारने लगी, जो उसके सामान्य शांत और संयमित स्वभाव से बिल्कुल अलग था। वह धीरे-धीरे, लगभग खुद से ही बुदबुदा रही थी कि उसे यकीन है कि मेरे बाल बहुत सुंदर हैं: 'काश कोई और भी ऐसे ही बाल संवार पाता।' बाल संवारने के बाद, उसने प्यार से मेरे बालों को सहलाया और धीरे से मेरे सिर पर थपथपाया।

‘क्या यह स्नेहपूर्ण उमंग मेरे बालों के लिए है, या मेरे लिए, नर्स?’ मैंने हंसते हुए उसकी ओर मुड़कर कहा; लेकिन उसकी आंखों में अभी भी आंसू थे।

‘तुम्हारा क्या मतलब है, रेचल?’ मैंने हैरानी से कहा।

‘खैर, महोदया, मुझे नहीं पता; लेकिन अगर—’

'अगर?'

“खैर, अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं उस लेडी लोबोरो को घर में एक मिनट भी और नहीं रहने देता—एक मिनट भी नहीं!”

मैं स्तब्ध रह गया; लेकिन इससे पहले कि मैं सदमे से उबरकर स्पष्टीकरण मांग

पाता, मिलिसेंट मेरे कमरे में आ गई, जैसा कि वह अक्सर मेरे सामने तैयार होते समय करती है; और वह मेरे साथ तब तक रही जब तक नीचे जाने का समय नहीं हो गया। इस बार उसे मैं बहुत असामाजिक साथी लगा होगा, क्योंकि राहेल के आखिरी शब्द मेरे कानों में गूंज रहे थे। लेकिन फिर भी मुझे उम्मीद थी, मुझे विश्वास था कि उनका कोई आधार नहीं था, सिवाय नौकरों की किसी अफवाह के जो उन्होंने पिछले महीने लेडी लोबोरो के व्यवहार को देखकर फैलाई थी; या शायद उनकी मालकिन और राहेल के बीच उनकी पिछली यात्रा के दौरान हुई किसी बात के कारण। रात के खाने पर मैंने उसे और आर्थर दोनों को ध्यान से देखा, और दोनों के व्यवहार में मुझे कुछ भी असामान्य नहीं लगा, कुछ भी ऐसा नहीं जिससे संदेह पैदा हो, सिवाय उन लोगों के जो संदेह करते हैं, और मेरा दिमाग ऐसा नहीं था, इसलिए मैं संदेह नहीं करूंगा।

रात के खाने के तुरंत बाद एनाबेला अपने पति के साथ चांदनी रात में टहलने निकल गई, क्योंकि पिछली शाम की तरह ही वह भी एक शानदार शाम थी। श्री हरग्रेव बाकियों से कुछ देर पहले ड्राइंग रूम में दाखिल हुए और मुझे शतरंज खेलने की चुनौती दी। उन्होंने ऐसा बिना उस उदास लेकिन गर्वित विनम्रता के किया जो वे आमतौर पर मुझसे बात करते समय दिखाते हैं, सिवाय तब जब वे शराब के नशे में चूर होते हैं। मैंने उनके चेहरे की ओर देखा कि क्या अभी भी ऐसा ही है। उनकी नज़रें मेरी आँखों से मिलीं, लेकिन स्थिर थीं: उनमें कुछ ऐसा था जो मुझे समझ नहीं आया, लेकिन वे काफी संयमित लग रहे थे। उनसे बहस न करते हुए, मैंने उन्हें मिलिसेंट के पास जाने का इशारा किया।

‘वह खराब बजाती है,’ उसने कहा। ‘मैं अपनी कला का मुकाबला तुम्हारी कला से करना चाहता हूँ। चलो अब! तुम यह बहाना नहीं कर सकती कि तुम्हें अपना काम छोड़ने में हिचकिचाहट हो रही है। मुझे पता है कि तुम इसे केवल खाली समय बिताने के लिए ही उठाती हो, जब तुम्हारे पास करने के लिए कुछ बेहतर नहीं होता।’

मैंने आपत्ति जताते हुए कहा, 'लेकिन शतरंज खिलाड़ी तो बहुत असामाजिक होते हैं; वे अपने अलावा किसी और के लिए संगति नहीं रखते।'

यहां मिलिसेंट के अलावा कोई नहीं है, और वह—

‘ओह, मुझे आप दोनों को खेलते देखना बहुत अच्छा लगेगा!’ हमारे एक साझा मित्र ने कहा। ‘दो ऐसे खिलाड़ी – यह तो वाकई देखने लायक होगा! मुझे आश्चर्य है कि कौन जीतेगा।’

मैंने सहमति दे दी।

‘अब, श्रीमती हंटिंगडन,’ हार्ग्रेव ने बोर्ड पर मोहरों को व्यवस्थित करते हुए स्पष्ट और विशेष लहजे में कहा, मानो उनके हर शब्द का दोहरा अर्थ हो, ‘आप एक अच्छी खिलाड़ी हैं, लेकिन मैं आपसे बेहतर हूँ: हमारा खेल लंबा चलेगा, और आप मुझे कुछ परेशानी देंगी; लेकिन मैं आपकी तरह ही धैर्यवान हूँ, और अंत में मैं ही जीतूँगा।’ उन्होंने अपनी निगाहें मुझ पर गड़ा दीं, एक ऐसी नज़र जो मुझे पसंद नहीं आई, तीखी, चालाक, साहसी और लगभग धृष्ट; — अपनी संभावित जीत में पहले से ही आधा विजयी।

‘मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा, श्री हरग्रेव!’ मैंने इतने जोश से जवाब दिया कि मिलिसेंट कम से कम चौंक गई होगी; लेकिन वह केवल मुस्कुराए और धीरे से बोले, ‘समय बताएगा।’

हम काम पर लग गए: वह खेल में पर्याप्त रुचि रखता था, लेकिन अपनी श्रेष्ठता के प्रति सचेत रहते हुए शांत और निडर था; मैं उसकी उम्मीदों पर पानी फेरने के लिए बेताब था, क्योंकि मैं इसे एक गंभीर मुकाबले के रूप में देख रहा था, जैसा कि मुझे लगा कि वह भी देख रहा होगा, और मुझे हारने का एक तरह का अंधविश्वासी डर सता रहा था: किसी भी हालत में, मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि वर्तमान सफलता उसकी सचेत शक्ति (मुझे कहना चाहिए उसका उद्दंड आत्मविश्वास) में जरा भी इजाफा करे, या भविष्य में जीत के उसके सपने को एक पल के लिए भी बढ़ावा दे। उसका खेल सतर्क और गंभीर था, लेकिन मैंने उसके खिलाफ कड़ी टक्कर दी। कुछ समय तक मुकाबला अनिश्चित बना रहा: अंत में, मेरी खुशी के लिए, जीत मेरी ओर झुकती हुई प्रतीत हुई: मैंने उसके कई बेहतरीन मोहरे ले लिए थे, और स्पष्ट रूप से उसकी योजनाओं को विफल कर दिया था। उसने अपना हाथ माथे पर रखा और रुक गया, स्पष्ट रूप से उलझन में। मैं अपनी बढ़त से खुश था, लेकिन अभी उस पर गर्व करने की हिम्मत नहीं कर रहा था। अंत में, उसने अपना सिर उठाया, और चुपचाप अपनी चाल चलते हुए, मेरी ओर देखा और शांत भाव से कहा, 'अब तुम्हें लगता है कि तुम जीत जाओगे, है ना?'

‘मुझे उम्मीद है,’ मैंने जवाब दिया और उसके उस प्यादे को उठा लिया जिसे उसने मेरे बिशप के रास्ते में इतनी लापरवाही से धकेल दिया था कि मुझे लगा कि यह एक चूक थी, लेकिन उस समय मैं इतना उदार नहीं था कि उसका ध्यान इस ओर दिला

सकूँ, और उस क्षण इतना लापरवाह था कि अपने इस कदम के परिणामों का अनुमान नहीं लगा सका। 'मुझे तो ये बिशप परेशान कर रहे हैं,' उसने कहा; 'लेकिन बहादुर घोड़ा इन सम्मानित सज्जनों को पार कर सकता है,' और अपने घोड़े से मेरे आखिरी बिशप को भी ले गया; 'और अब, जब ये पवित्र व्यक्ति हट गए हैं, तो मैं सब कुछ अपने कब्जे में कर लूँगा।'

'ओह, वाल्टर, तुम कितनी बातें करते हो!' मिलिसेंट चिल्लाई; 'उसके पास तुमसे कहीं ज्यादा टुकड़े हैं।'

मैंने कहा, 'मैं अभी आपको कुछ परेशानी में डालने का इरादा रखता हूँ; और शायद, महोदय, आपको पता चलने से पहले ही आप मात खा जाएँगे। अपनी रानी पर ध्यान दें।'

मुकाबला और भी तीखा हो गया। खेल लंबा चला, और मैंने उसे कुछ हद तक परेशान भी किया: लेकिन वह मुझसे बेहतर खिलाड़ी था।

'आप लोग तो बड़े ही सट्टेबाज हैं!' श्री हैटर्सले ने कहा, जो अब अंदर आ चुके थे और कुछ देर से हमें देख रहे थे। 'अरे, श्रीमती हंटिंगडन, आपका हाथ ऐसे कांप रहा है जैसे आपने अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया हो! और, वाल्टर, तुम कुत्ते, तुम इतने गंभीर और शांत दिख रहे हो जैसे तुम्हें जीत का पूरा यकीन हो, और इतने तेज और क्रूर जैसे उसका खून चूस लेना चाहते हो! लेकिन अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं उसे बिल्कुल नहीं पीटता: अगर तुमने ऐसा किया तो वह तुमसे नफरत करेगी—भगवान कसम! मैं उसकी आंखों में देख सकता हूं।'

'चुप रहो, क्या तुम?' मैंने कहा: उसकी बातों ने मेरा ध्यान भटका दिया, क्योंकि मैं बेहद उत्तेजित हो गया था। कुछ और कदम, और मैं अपने प्रतिद्वंद्वी के जाल में बुरी तरह फंस जाता।

'चेक!' वह चिल्लाया: मैं पीड़ा से बचने का कोई रास्ता ढूंढने लगा। 'मेट!' उसने धीरे से, लेकिन स्पष्ट आनंद के साथ कहा। उसने उस आखिरी घातक शब्द को जानबूझकर रोक लिया ताकि मेरी घबराहट का पूरा आनंद ले सके। मैं इस घटना से मूर्खतापूर्ण रूप से विचलित हो गया था। हैटर्सले हँसा; मिलिसेंट मुझे इतना परेशान देखकर दुखी हुई। हरग्रेव ने मेज पर रखे मेरे हाथ पर अपना हाथ रखा और उसे हल्के से दबाते हुए धीरे से कहा, 'हार गया, हार गया!' और मेरे चेहरे को ऐसी नज़रों से देखा जहाँ उल्लास के साथ-साथ एक और भी अपमानजनक जोश और कोमलता का भाव

भी था।

‘नहीं, कभी नहीं, मिस्टर हरग्रेव!’ मैंने झट से अपना हाथ पीछे खींचते हुए कहा।

‘क्या आप इनकार करते हैं?’ उसने बोर्ड की ओर इशारा करते हुए मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। ‘नहीं, नहीं,’ मैंने जवाब दिया, यह याद करते हुए कि मेरा व्यवहार कितना अजीब लग रहा होगा: ‘आपने मुझे उस खेल में हरा दिया है।’

‘तो क्या आप दूसरा तरीका आजमाएंगे?’

'नहीं।'

‘क्या आप मेरी श्रेष्ठता को स्वीकार करते हैं?’

'हां, एक शतरंज खिलाड़ी के रूप में।'

मैं अपना काम फिर से शुरू करने के लिए उठा।

कमरे में चारों ओर नजर घुमाने के बाद हरग्रेव ने गंभीरता से पूछा, 'एनाबेला कहाँ है?'

‘लॉर्ड लोबोरो के साथ बाहर गई हूँ,’ मैंने उत्तर दिया, क्योंकि वह मुझसे जवाब की उम्मीद में देख रहा था।

‘और अभी तक लौटे भी नहीं!’ उन्होंने गंभीरता से कहा।

मुझे नहीं लगता।

‘हंटिंगडन कहाँ है?’ उसने फिर से चारों ओर देखा।

‘जैसा कि आप जानती हैं, वह ग्रिम्सबी के साथ बाहर गई थी,’ हैटर्सले ने अपनी हंसी दबाते हुए कहा, जो वाक्य समाप्त होते ही फूट पड़ी। वह क्यों हँसा? हरग्रेव ने उन दोनों को इस तरह क्यों जोड़ा? क्या यह सच था? और क्या यही वह भयानक रहस्य था जिसे वह मुझे बताना चाहता था? मुझे जानना ही होगा, और जल्दी। मैं तुरंत उठी और राहेल को ढूंढने और उसके शब्दों का स्पष्टीकरण मांगने के लिए कमरे से बाहर चली गई; लेकिन मिस्टर हरग्रेव मेरे पीछे-पीछे प्रतीक्षालय में आ गए, और इससे पहले कि मैं उसका बाहरी दरवाजा खोल पाती, उन्होंने धीरे से ताले पर हाथ रख दिया। ‘क्या मैं आपको कुछ बता सकता हूँ, श्रीमती हंटिंगडन?’ उन्होंने गंभीर, झुकी हुई आँखों से दबी हुई आवाज़ में कहा।

'अगर यह सुनने लायक कुछ है,' मैंने जवाब दिया, खुद को शांत रखने की कोशिश करते हुए, क्योंकि मेरा हर अंग कांप रहा था।

उसने चुपचाप मेरी तरफ एक कुर्सी खिसका दी। मैंने बस उस पर अपना हाथ रखा

और उसे आगे बढ़ने के लिए कहा।

उन्होंने कहा, ‘घबराइए मत, मैं जो कहना चाहता हूँ वह अपने आप में कुछ भी नहीं है; और आप इससे स्वयं निष्कर्ष निकाल सकते हैं। आपका कहना है कि एनाबेला अभी तक नहीं लौटी है?’

‘जी हाँ, जी हाँ—आगे बोलो!’ मैंने अधीरता से कहा; क्योंकि मुझे डर था कि उसकी बात पूरी होने से पहले ही मेरी बनावटी शांति भंग हो जाएगी, चाहे वह कुछ भी हो।

‘और तुमने सुना है,’ उसने आगे कहा, ‘कि हंटिंगडन ग्रिम्सबी के साथ मिल गया है?’

'कुंआ?'

मैंने सुना है कि वह व्यक्ति तुम्हारे पति से—या उस व्यक्ति से जो खुद को पति कहता है—कह रहा था।

‘जी हां, महोदय!’

उन्होंने विनम्रतापूर्वक सिर झुकाया और आगे कहा: ‘मैंने उन्हें कहते सुना, — “मैं कर लूंगा, तुम देखोगे! वे पानी के किनारे गए हैं; मैं उनसे वहीं मिलूंगा और उनसे कहूंगा कि मैं उनसे कुछ ऐसी बातों पर चर्चा करना चाहता हूं जिनके बारे में हमें महिला को परेशान करने की ज़रूरत नहीं है; और वह कहेंगी कि वह वापस घर जा सकती हैं; और फिर मैं माफी मांगूंगा, तुम्हें पता है, और वह सब, और उन्हें झाड़ियों वाले रास्ते से जाने के लिए आंख मारूंगा। मैं उन्हें वहां उन बातों पर, जिनका मैंने जिक्र किया, और जो कुछ भी मेरे दिमाग में आएगा, जितनी देर हो सके, बात करता रहूंगा, और फिर उन्हें दूसरे रास्ते से ले आऊंगा, रास्ते में पेड़ों, खेतों और बातचीत के लिए जो कुछ भी मिलेगा, उसे देखते हुए।’ श्री हरग्रेव रुके और मेरी ओर देखा।

बिना कुछ कहे या कोई सवाल किए, मैं उठी और कमरे से निकलकर घर से बाहर भाग गई। अनिश्चितता का दर्द असहनीय था: मैं इस आदमी के आरोप पर अपने पति पर झूठा शक नहीं कर सकती थी, और न ही उस पर बेवजह भरोसा कर सकती थी - मुझे तुरंत सच्चाई जाननी थी। मैं झाड़ियों की ओर भागी। जैसे ही मैं वहाँ पहुँची, कुछ आवाज़ों ने मेरी बेदम दौड़ रोक दी।

'हम बहुत देर तक रुके रहे; वह वापस आएगा,' लेडी लोबोरो की आवाज ने कहा।

‘बिल्कुल नहीं, प्रियतम!’ उसने जवाब दिया; ‘लेकिन तुम लॉन पार करके दौड़

सकती हो और जितना हो सके चुपचाप अंदर आ सकती हो; मैं थोड़ी देर में तुम्हारे पीछे आ जाऊंगा।'

मेरे घुटने कांप रहे थे; मेरा दिमाग चकरा रहा था। मैं बेहोश होने ही वाली थी। उसे मुझे इस हालत में नहीं देखना चाहिए था। मैं झाड़ियों के बीच छिप गई और उसे रास्ता देने के लिए एक पेड़ के तने से टिक गई।

'आह, हंटिंगडन!' उसने तिरस्कार भरे स्वर में कहा, उस जगह रुकते हुए जहाँ मैं पिछली रात उसके साथ खड़ा था — 'यहीं तुमने उस औरत को चूमा था!' उसने पत्तों की छाया में पीछे मुड़कर देखा। वहाँ से आगे बढ़ते हुए, उसने लापरवाही भरी हंसी के साथ उत्तर दिया, —

'खैर, प्रियतम, मैं कुछ नहीं कर सकती थी। तुम जानती हो कि मुझे उससे यथासंभव ईमानदारी बरतनी होगी। क्या मैंने तुम्हें अपने मूर्ख पति को दर्जनों बार चूमते नहीं देखा है? और क्या मैं कभी शिकायत करती हूँ?'

'लेकिन मुझे बताओ, क्या तुम अब भी उससे थोड़ा सा भी प्यार नहीं करते?' उसने अपना हाथ उसकी बांह पर रखते हुए, उसके चेहरे की ओर गंभीरता से देखते हुए कहा —क्योंकि मैं उन्हें स्पष्ट रूप से देख सकता था, चांद की रोशनी उस पेड़ की शाखाओं के बीच से उन पर पूरी तरह से पड़ रही थी जिसने मुझे आश्रय दिया था।

'बिल्कुल नहीं, भगवान की कसम!' उसने उसके दमकते गाल को चूमते हुए जवाब दिया।

'हे भगवान, मुझे जाना होगा!' वह अचानक उससे अलग होकर चिल्लाई और उड़ गई।

वह मेरे सामने खड़ा था; लेकिन अब मुझमें उसका सामना करने की हिम्मत नहीं थी: मेरी जीभ मुंह से चिपक गई थी; मैं लगभग ज़मीन में धंस रही थी, और मुझे लगभग आश्चर्य हो रहा था कि हवा की धीमी सरसराहट और गिरते पत्तों की रुक-रुक कर आने वाली आवाज़ के बीच उसने मेरे दिल की धड़कन क्यों नहीं सुनी। मेरी इंद्रियां मानो मेरा साथ छोड़ रही थीं, फिर भी मैंने उसकी धुंधली आकृति को अपने सामने से गुज़रते देखा, और कानों में गूंजती तेज़ आवाज़ के बीच मैंने उसे लॉन की ओर देखते हुए साफ़-साफ़ कहते सुना — 'देखो, वह मूर्ख जा रहा है! भागो, एनाबेला, भागो! अंदर आओ! आह, — उसने देखा नहीं! ठीक है, ग्रिम्सबी, उसे रोको!' और उसके जाते समय उसकी धीमी हंसी भी मुझ तक पहुंची।

‘हे ईश्वर, अब मेरी मदद करो!’ मैं नम घास और झाड़ियों के बीच घुटनों के बल बैठते हुए बुदबुदाया, और ऊपर कम पत्तों के बीच से चांदनी रात में जगमगाते आकाश की ओर देखने लगा। मेरी धुंधली दृष्टि में सब कुछ धुंधला और कांपता हुआ प्रतीत हो रहा था। मेरा जलता हुआ, फटता हुआ हृदय ईश्वर के सामने अपनी पीड़ा प्रकट करने के लिए तड़प रहा था, पर प्रार्थना का रूप नहीं ले पा रहा था; तभी हवा का एक झोंका मेरे ऊपर से गुजरा, जिसने मुरझाई हुई उम्मीदों की तरह सूखे पत्तों को बिखेर दिया, मेरे माथे को ठंडक पहुँचाई और मेरे कमजोर शरीर को थोड़ी सी ऊर्जा प्रदान की। फिर, जब मैंने मौन, गंभीर प्रार्थना में अपनी आत्मा को ऊपर उठाया, तो ऐसा लगा जैसे किसी दिव्य शक्ति ने मुझे भीतर से मजबूत कर दिया हो: मैंने खुलकर सांस ली; मेरी दृष्टि साफ हुई; मैंने स्पष्ट रूप से चमकते हुए शुद्ध चंद्रमा और साफ, अंधेरे आकाश में तैरते हुए हल्के बादलों को देखा; और फिर मैंने अपने ऊपर टिमटिमाते हुए शाश्वत तारों को देखा; मैं जान गया कि उनका ईश्वर मेरा है, और वह बचाने में समर्थ और शीघ्र सुनने वाला है। ‘मैं तुम्हें कभी नहीं छोडूंगा, न ही तुम्हें त्यागूंगा,’ मानो उनकी असंख्य आँखों के ऊपर से फुसफुसाहट सुनाई दी। नहीं, नहीं; मुझे लगा कि वह मुझे बेसहारा नहीं छोड़ेगा: धरती और नरक के बावजूद मुझे अपनी सभी परीक्षाओं का सामना करने की शक्ति मिलेगी, और अंत में मुझे एक शानदार विश्राम प्राप्त होगा!

तरोताज़ा और ऊर्जावान महसूस करते हुए, हालांकि शांत नहीं, मैं उठा और घर लौट आया। मैं स्वीकार करता हूँ कि घर में प्रवेश करते ही मेरी नवजात शक्ति और साहस का बहुत कुछ मुझसे दूर हो गया, और ताज़ी हवा और शानदार आकाश मेरे सामने नहीं आए: जो कुछ भी मैंने देखा और सुना, उससे मेरा दिल बीमार सा हो गया - हॉल, लैंप, सीढ़ियाँ, अलग-अलग कमरों के दरवाजे, ड्राइंग रूम से आती बातचीत और हँसी की आवाज़। मैं अपना भविष्य कैसे सहन कर पाऊँगा! इस घर में, इन लोगों के बीच - ओह, मैं कैसे जी पाऊँगा! तभी जॉन हॉल में आया और मुझे देखकर बताया कि उसे मुझे ढूंढने के लिए भेजा गया था, और यह भी बताया कि उसने चाय पी ली थी, और मालिक जानना चाहते थे कि मैं आ रहा हूँ या नहीं।

मैंने कहा, 'जॉन, श्रीमती हैटर्सले से कहो कि वे कृपा करके चाय बना दें। उनसे कहो कि आज रात मेरी तबीयत ठीक नहीं है और मुझे छुट्टी चाहिए।'

मैं बड़े, खाली भोजन कक्ष में चली गई, जहाँ सन्नाटा और अंधेरा छाया हुआ था, सिवाय बाहर से आती हवा की हल्की सरसराहट और पर्दों से छनकर आती चाँदनी की

धुंधली रोशनी के। वहाँ मैं तेज़ी से इधर-उधर टहलती रही, अकेले अपने कड़वे विचारों में खोई हुई। कल शाम से यह कितना अलग था! ऐसा लगता है कि वह मेरे जीवन की खुशियों की आखिरी चमक थी। मैं कितनी मूर्ख थी, जो इतनी खुश थी! अब मुझे झाड़ियों में आर्थर के मेरे प्रति अजीब व्यवहार का कारण समझ में आ गया था; उसकी दयालुता तो उसकी प्रेमिका के लिए थी, लेकिन उसकी पत्नी के लिए भय का भाव। अब मैं हैटर्सले और ग्रिम्सबी के बीच की बातचीत को भी बेहतर ढंग से समझ सकती थी; वे निस्संदेह उसके लिए ग्रिम्सबी के प्यार की बात कर रहे थे, मेरे लिए नहीं।

मैंने ड्राइंग रूम का दरवाजा खुलते सुना: आगे वाले कमरे से एक हल्की, तेज़ कदमों की आहट आई, हॉल पार किया और सीढ़ियाँ चढ़ गईं। ये मिलिसेंट थी, बेचारी मिलिसेंट, मुझसे मिलने आई थी—मेरी परवाह करने वाला कोई और नहीं था; फिर भी वो दयालु थी। पहले तो मैंने कभी आँसू नहीं बहाए थे, लेकिन अब वे बह निकले, तेज़ी से और बेहिसाब। इस तरह उसने बिना मेरे पास आए ही मेरा भला किया। अपनी खोज में निराश होकर, मैंने उसे नीचे आते सुना, जितनी धीमी गति से वह ऊपर गई थी। क्या वह अंदर आएगी और मुझे ढूँढ़ लेगी? नहीं, वह दूसरी दिशा में मुड़ी और ड्राइंग रूम में वापस चली गई। मैं खुश थी, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि उससे कैसे मिलूँ या क्या कहूँ। मुझे अपनी परेशानी में किसी साथी की ज़रूरत नहीं थी। मैं किसी के लायक नहीं थी, और न ही मुझे किसी की ज़रूरत थी। मैंने बोझ खुद उठा लिया था; इसे अकेले ही सहने दो।

जैसे ही सोने का समय नज़दीक आया, मैंने अपनी आँखें पोंछीं और अपनी आवाज़ साफ़ करने और मन को शांत करने की कोशिश की। मुझे आज रात आर्थर से मिलना है और उससे बात करनी है; लेकिन मैं शांति से बात करूँगी: कोई हंगामा नहीं होना चाहिए—उसके साथियों के सामने शिकायत करने या शेखी बघारने जैसा कुछ नहीं होना चाहिए—उसकी प्रेमिका के साथ हँसने जैसा कुछ नहीं होना चाहिए। जब सभी लोग अपने कमरों में जाने लगे, तो मैंने धीरे से दरवाज़ा खोला और जैसे ही वह वहाँ से गुज़रा, मैंने उसे अंदर आने का इशारा किया।

‘हेलेन, तुम्हारा यहाँ क्या काम है?’ उसने कहा। ‘तुम हमारे लिए चाय बनाने क्यों नहीं आई? और अंधेरे में यहाँ क्या कर रही हो? तुम्हें क्या हुआ है, युवती: तुम भूत जैसी लग रही हो!’ उसने अपनी मोमबत्ती की रोशनी में मुझे देखते हुए आगे कहा।

मैंने उत्तर दिया, 'कोई बात नहीं; ऐसा लगता है कि अब आपको मेरी कोई परवाह

नहीं है; और मुझे भी अब आपकी कोई परवाह नहीं है।'

'अरे! ये सब क्या चल रहा है?' उसने बुदबुदाते हुए कहा। 'मैं तुम्हें कल ही छोड़कर चली जाती,' मैंने आगे कहा, 'और फिर कभी इस छत के नीचे नहीं आती, लेकिन मेरे बच्चे के लिए' — मैंने अपनी आवाज़ को स्थिर करने के लिए एक पल का विराम लिया।

'हेलेन, यह सब क्या है?' वह चिल्लाया। 'तुम क्या कहना चाह रही हो?'

'आप अच्छी तरह जानते हैं। आइए व्यर्थ की व्याख्या में समय बर्बाद न करें, लेकिन मुझे बताइए, क्या आप बताएँगे?'

उसने पूरी दृढ़ता से कसम खाई कि उसे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है, और यह सुनने पर जोर दिया कि किस जहरीली बुढ़िया ने उसका नाम खराब किया है, और मैंने किन कुख्यात झूठों पर विश्वास करने की मूर्खता की है।

मैंने ठंडे लहजे में जवाब दिया, 'अपना झूठ बोलने का प्रयास करके और सच्चाई को झूठ से दबाने के लिए अपना दिमाग खपाने की बजाय, खुद को झूठा साबित करने की कोशिश करें। मैंने किसी तीसरे व्यक्ति की गवाही पर भरोसा नहीं किया है। मैं आज शाम झाड़ियों में था, और मैंने स्वयं देखा और सुना है।'

बस इतना ही काफी था। उसने घबराहट और निराशा से भरी एक दबी हुई चीख निकाली और बुदबुदाते हुए कहा, 'अब मैं इसे पकड़ लूंगा!' और अपनी मोमबत्ती को पास की कुर्सी पर रख दिया, और दीवार से पीठ टिकाकर, हाथ बांधकर मेरे सामने खड़ा हो गया।

'तो फिर क्या?' उसने मिश्रित निर्लज्जता और हताशा के शांत उद्दंडता भरे लहजे में कहा।

मैंने जवाब दिया, 'बस इतना ही; क्या आप मुझे हमारे बच्चे और मेरी बची हुई संपत्ति को लेकर जाने देंगे?'

'जहां जाना है?'

'ऐसी कोई भी जगह जहाँ वह आपके दूषित प्रभाव से सुरक्षित रहे, और मैं आपकी उपस्थिति से मुक्त हो जाऊँ, और आप मेरी उपस्थिति से।'

'नहीं।'

'क्या आप मुझे बिना पैसे के बच्चा दे देंगे?'

'नहीं, और न ही आप बच्चे के बिना। क्या आपको लगता है कि आपकी इन

नखरेबाज़ियों के लिए मैं पूरे देश में चर्चा का विषय बन जाऊँगा?'

‘तो मुझे यहीं रहना होगा, नफरत और तिरस्कार सहते हुए। लेकिन अब से हम सिर्फ नाम के लिए ही पति-पत्नी हैं।’

'बहुत अच्छा।'

मैं तुम्हारे बच्चे की माँ और तुम्हारी गृहणी हूँ, इससे अधिक कुछ नहीं। इसलिए तुम्हें अब उस प्रेम का दिखावा करने की आवश्यकता नहीं है जो तुम महसूस नहीं कर सकते: मैं तुमसे अब और निर्मम स्नेह की अपेक्षा नहीं करूँगी, न ही मैं ऐसा करूँगी और न ही इसे सहन करूँगी। मैं वैवाहिक स्नेह के खोखले आवरण से उपहास नहीं सहूँगी, जब तुमने वह सार किसी और को दे दिया है!

'बहुत अच्छा, अगर आप चाहें तो। देखते हैं पहले कौन थकता है, मेरी महिला।'

अगर मैं थक जाऊँगी, तो तुम्हारे साथ इस दुनिया में जीने से थक जाऊँगी, न कि तुम्हारे प्रेम के दिखावे के बिना जीने से। जब तुम अपने पापी रास्तों से थक जाओगे और सचमुच पश्चाताप करोगे, तब मैं तुम्हें क्षमा कर दूँगी और शायद फिर से तुमसे प्रेम करने की कोशिश करूँगी, हालाँकि यह बहुत कठिन होगा।

‘हम्म! और इस बीच तुम जाकर मिसेज हरग्रेव से मेरी बात करोगी, और आंटी मैक्सवेल को लंबे-लंबे पत्र लिखकर उस दुष्ट औरत की शिकायत करोगी जिससे तुमने शादी की है?’

मैं किसी से शिकायत नहीं करूंगा। अब तक मैंने तुम्हारी बुराइयों को सबकी नजरों से छिपाने और तुम्हें उन गुणों से परिपूर्ण करने के लिए बहुत संघर्ष किया है जो तुम्हारे पास कभी नहीं थे; लेकिन अब तुम्हें खुद का ख्याल रखना होगा।

मैंने उसे बड़बड़ाते हुए वहीं छोड़ दिया और ऊपर चला गया।

'आपकी तबीयत ठीक नहीं है, मैडम,' रेचल ने गहरी चिंता के साथ मेरी ओर देखते हुए कहा।

‘यह बिलकुल सच है, रेचल,’ मैंने उसके शब्दों के बजाय उसकी उदास निगाहों का जवाब देते हुए कहा।

मुझे पता था, वरना मैं ऐसी बात का जिक्र ही नहीं करता।

‘लेकिन तुम इसके बारे में चिंता मत करो,’ मैंने उसके पीले, मुरझाए हुए गाल को चूमते हुए कहा। ‘मैं इसे तुम्हारी कल्पना से कहीं बेहतर सहन कर सकता हूँ।’

“हाँ, तुम हमेशा “सहन करने” के पक्ष में थे। लेकिन अगर मैं तुम्हारी जगह होती

तो मैं इसे सहन नहीं करती; मैं इसके आगे हार मान लेती और खूब रोती! और मैं बोलती भी, बस बोलती ही — मैं उसे बता देती कि इसका क्या मतलब है —”

मैंने कहा, ‘मैंने बोल दिया है; मैंने काफी कुछ कह दिया है।’

‘तब मैं रो पड़ती,’ उसने जोर देकर कहा। ‘मैं इतनी सफेद और शांत नहीं दिखती, और अपने दिल को अंदर दबाकर रखने से मेरा दिल फूट पड़ता।’

मैंने अपनी पीड़ा के बावजूद मुस्कुराते हुए कहा, ‘मैं रोई थी; और अब मैं सचमुच शांत हूँ: इसलिए मुझे फिर से परेशान मत करो, नर्स: इसके बारे में और कुछ मत कहो, और नौकरों से भी इसका ज़िक्र मत करो। लो, अब तुम जा सकती हो। शुभ रात्रि; और मेरी वजह से अपनी नींद मत खराब करना: मैं अच्छी नींद सोऊँगी - अगर सो सकी तो।’

इस संकल्प के बावजूद, मुझे बिस्तर इतना असहनीय लगा कि दो बजे से पहले ही मैं उठ गई और जलती हुई मशाल की रोशनी में मोमबत्ती जलाकर, अपनी मेज पर बैठी और ड्रेसिंग गाउन पहने ही पिछली शाम की घटनाओं को याद करने लगी। बिस्तर पर लेटे-लेटे बीते हुए कल की यादों और भविष्य की भयावह आशंकाओं से अपने दिमाग को परेशान करने से बेहतर था कि मैं कुछ सोच-विचार कर लूँ। मुझे उन परिस्थितियों का वर्णन करने में राहत मिली है जिन्होंने मेरी शांति भंग की है, साथ ही उनके सामने आने से जुड़ी छोटी-छोटी बातों का भी। आज रात मुझे जितनी नींद आती, उससे भी मेरा मन इतना शांत नहीं होता और मैं दिन भर की चुनौतियों का सामना करने के लिए इतनी तैयार नहीं हो पाती। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है; फिर भी, जब मैं लिखना बंद करती हूँ, तो मेरा सिर बुरी तरह दुखने लगता है; और जब मैं शीशे में देखती हूँ, तो अपनी थकी-हारी, मुरझाई हुई शक्ल देखकर चौंक जाती हूँ।

रेचल ने मुझे कपड़े पहनाए और कहा कि मेरी रात बहुत खराब गुज़री है, वह देख सकती है। मिलिसेंट अभी-अभी मुझसे पूछने आई थी कि मैं कैसी हूँ। मैंने उसे बताया कि मैं ठीक हूँ, लेकिन अपनी हालत को ठीक करने के लिए मान लिया कि मेरी रात बेचैन गुज़री थी। काश यह दिन जल्दी खत्म हो जाए! नाश्ते के लिए नीचे जाने के ख्याल से ही मुझे डर लग रहा है। मैं उन सबका सामना कैसे करूँगी? फिर भी मुझे याद रखना चाहिए कि मैं दोषी नहीं हूँ: मुझे डरने की कोई वजह नहीं है; और अगर वे मुझे अपने गुनाह का शिकार समझकर मेरा मज़ाक उड़ाते हैं, तो मैं उनकी मूर्खता पर

तरस खा सकती हूँ और उनके तिरस्कार को तुच्छ समझ सकती हूँ।

अध्याय 34

शाम। — नाश्ता अच्छे से बीत गया: मैं पूरे समय शांत और स्थिर रही। मैंने अपने स्वास्थ्य के बारे में पूछे गए सभी सवालों का संयम से जवाब दिया; और मेरे चेहरे या व्यवहार में जो भी असामान्यता थी, उसका कारण आमतौर पर उस मामूली अस्वस्थता को माना गया जिसके कारण मैं कल रात जल्दी सो गई थी। लेकिन उनके जाने से पहले जो दस-बारह दिन बीतने हैं, उन्हें मैं कैसे गुजारूँगी? फिर भी उनके जाने का इतना इंतज़ार क्यों? जब वे चले जाएँगे, तो मैं अपने आने वाले जीवन के महीनों या वर्षों को उस आदमी के साथ कैसे गुज़ारूँगी — जो मेरा सबसे बड़ा दुश्मन है? क्योंकि उसने मुझे जितना नुकसान पहुँचाया है, उतना कोई और नहीं पहुँचा सकता। ओह! जब मैं सोचती हूँ कि मैंने उसे कितने प्यार से, कितनी मूर्खता से प्यार किया है, उस पर कितने पागलपन से भरोसा किया है, उसके भले के लिए मैंने कितनी लगन से मेहनत की है, पढ़ाई की है, प्रार्थना की है और संघर्ष किया है; और उसने कितनी बेरहमी से मेरे प्यार को कुचला है, मेरे भरोसे को धोखा दिया है, मेरी प्रार्थनाओं, आंसुओं और उसकी रक्षा के प्रयासों का तिरस्कार किया है, मेरी आशाओं को चूर-चूर किया है, मेरी जवानी की सबसे अच्छी भावनाओं को नष्ट किया है, और मुझे निराशा और दुख भरे जीवन के लिए अभिशप्त किया है, जहाँ तक मनुष्य कर सकता है, यह कहना पर्याप्त नहीं है कि मैं अब अपने पति से प्यार नहीं करती - मैं उससे नफरत करती हूँ! यह शब्द मेरे सामने एक दोषी स्वीकारोक्ति की तरह खड़ा है, लेकिन यह सच है: मैं उससे नफरत करती हूँ - मैं उससे नफरत करती हूँ! लेकिन हे भगवान, उसकी दुखी आत्मा पर दया करो! और उसे अपना अपराध देखने और महसूस करने दो - मैं इसके अलावा कोई और बदला नहीं मांगती! अगर वह मेरे साथ हुए अन्याय

को पूरी तरह से जान और महसूस कर पाता, तो मैं पूरा बदला ले लेती, और मैं उसे पूरी तरह से क्षमा कर देती; लेकिन वह इतना खो गया है, अपनी निर्मम दुष्टता में इतना कठोर हो गया है, कि मुझे विश्वास है कि इस जीवन में वह कभी नहीं करेगा। लेकिन इस विषय पर विचार करना व्यर्थ है: आइए एक बार फिर से बीतती घटनाओं के छोटे-छोटे विवरणों में अपना ध्यान भटकाने का प्रयास करें।

श्री हरग्रेव ने अपनी गंभीर, सहानुभूतिपूर्ण और (जैसा कि वे सोचते हैं) दिखावटी विनम्रता से मुझे पूरे दिन परेशान किया है। अगर यह और अधिक दिखावटी होती तो मुझे इतनी परेशानी नहीं होती, क्योंकि तब मैं उन्हें नज़रअंदाज़ कर सकता था; लेकिन, जैसा कि है, वे इतने वास्तविक रूप से दयालु और विचारशील दिखने का प्रयास करते हैं कि मैं ऐसा किए बिना असभ्य और कृतघ्नतापूर्ण प्रतीत नहीं कर सकता। कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे उनकी इस अच्छी भावना के लिए उन्हें श्रेय देना चाहिए जिसका वे इतनी अच्छी तरह से दिखावा करते हैं; और फिर, मुझे लगता है कि इन विशेष परिस्थितियों में उन पर संदेह करना मेरा कर्तव्य है। उनकी दयालुता पूरी तरह से बनावटी नहीं हो सकती; लेकिन फिर भी, उनके प्रति कृतज्ञता की शुद्ध भावना मुझे स्वयं को भूलने न दे: मुझे शतरंज का खेल, उस अवसर पर उनके द्वारा इस्तेमाल किए गए भाव और उनकी उन अवर्णनीय निगाहों को याद रखना चाहिए, जिन्होंने मेरे गुस्से को सही ठहराया, और मुझे लगता है कि मैं काफी सुरक्षित रहूंगा। मैंने उन्हें इतनी बारीकी से रिकॉर्ड करके अच्छा किया है।

मुझे लगता है कि वह मुझसे अकेले में बात करने का मौका ढूंढ रहा है: वह दिन भर चौकन्ना सा लग रहा था; लेकिन मैंने उसे निराश करने का पूरा ध्यान रखा है—ऐसा नहीं है कि मुझे उसके कुछ कहने से डर लगता है, बल्कि मुझे पहले से ही काफी परेशानी है, ऊपर से उसकी अपमानजनक सांत्वना, शोक संवेदना या जो कुछ भी वह करने की कोशिश करे, वह और भी मुश्किल बना देगा; और मिलिसेंट की खातिर, मैं उससे झगड़ा नहीं करना चाहता। उसने सुबह दूसरे सज्जनों के साथ शिकार पर जाने से यह कहकर मना कर दिया कि उसे पत्र लिखने हैं; और उस उद्देश्य से पुस्तकालय में जाने के बजाय, उसने अपना डेस्क सुबह के कमरे में मंगवाया, जहाँ मैं मिलिसेंट और लेडी लोबोरो के साथ बैठा था। वे अपने काम में लग गए थे; मैंने अपना ध्यान भटकाने के बजाय बातचीत से बचने के लिए एक किताब ले ली थी। मिलिसेंट ने देखा कि मैं शांत रहना चाहता हूँ, और इसलिए उसने मुझे अकेला छोड़ दिया। एनाबेला ने भी

निस्संदेह यह देखा होगा: लेकिन यह कोई कारण नहीं था कि वह अपनी ज़बान पर लगाम लगाए या अपने हंसमुख स्वभाव को दबाए: वह लगातार बकबक करती रही, लगभग पूरी तरह से मुझसे ही बात करती रही, और अत्यंत आत्मविश्वास और आत्मीयता के साथ, जैसे-जैसे मेरे जवाब ठंडे और संक्षिप्त होते गए, वह और अधिक उत्साहित और मित्रवत होती गई। श्री हरग्रेव ने देखा कि मैं इसे सहन नहीं कर पा रहा था, और अपनी मेज से ऊपर देखते हुए, उन्होंने यथासंभव मेरे लिए उसके प्रश्नों और टिप्पणियों का उत्तर दिया, और एनाबेला का ध्यान मुझसे हटाकर अपनी ओर करने का प्रयास किया; लेकिन यह कारगर नहीं हुआ। शायद उसने सोचा कि मुझे सिरदर्द है, और मैं बात नहीं कर सकता; खैर, उसने देखा कि उसकी बातूनी जीवंतता मुझे परेशान कर रही थी, जैसा कि मैं उसकी लगातार शरारती ज़िद से समझ गया था। लेकिन मैंने उसे वह किताब थमाकर, जिसे मैं पढ़ने की कोशिश कर रहा था, जिसके पहले पन्ने पर मैंने जल्दबाजी में कुछ लिखा था, इसे प्रभावी ढंग से रोक दिया।

मैं आपके चरित्र और व्यवहार से इतना भलीभांति परिचित हूँ कि आपके प्रति सच्ची मित्रता की भावना नहीं रख सकता, और चूंकि मुझमें आपकी तरह छल करने की कला नहीं है, इसलिए मैं मित्रता का दिखावा भी नहीं कर सकता। अतः मैं निवेदन करता हूँ कि अब से हमारे बीच सभी प्रकार के अनौपचारिक संबंध समाप्त कर दिए जाएँ; और यदि मैं अब भी आपके साथ शिष्टाचारपूर्वक व्यवहार करता रहूँ, मानो आप सम्मान और आदर के योग्य महिला हों, तो कृपया समझ लें कि यह आपकी चचेरी बहन मिलिसेंट की भावनाओं के प्रति सम्मान के कारण है, न कि आपकी भावनाओं के प्रति।

इसे पढ़ते ही उसका चेहरा लाल हो गया और उसने अपने होंठ काट लिए। चुपके से उसने पन्ना फाड़कर उसे मसल दिया और आग में डाल दिया, फिर वह किताब के पन्ने पलटने लगी और मानो सचमुच या दिखावे के लिए उसकी सामग्री पढ़ने लगी। थोड़ी देर में मिलिसेंट ने नर्सरी जाने की अपनी इच्छा बताई और मुझसे पूछा कि क्या मैं उसके साथ चलूँगी।

'एनाबेला हमें माफ कर देगी,' उसने कहा; 'वह पढ़ने में व्यस्त है।'

'नहीं, मैं नहीं जाऊंगी,' एनाबेला ने अचानक ऊपर देखते हुए और अपनी किताब मेज पर फेंकते हुए कहा; 'मुझे हेलेन से एक मिनट बात करनी है। तुम जाओ, मिलिसेंट, वो थोड़ी देर में आ जाएगी।' (मिलिसेंट चली गई।) 'क्या तुम मेरी मदद

करोगी, हेलेन?' उसने आगे पूछा।

उसकी धृष्टता ने मुझे चकित कर दिया; लेकिन मैंने उसकी बात मान ली और उसके पीछे-पीछे पुस्तकालय में चला गया। उसने दरवाजा बंद किया और आग के पास चली गई।

उसने कहा, 'तुम्हें यह किसने बताया?'

कोई नहीं: मैं स्वयं देखने में असमर्थ नहीं हूं।

'अरे, तुम तो शक कर रहे हो!' उसने मुस्कुराते हुए, उम्मीद की एक किरण के साथ कहा। अब तक उसके साहस में एक तरह की हताशा थी; अब वह स्पष्ट रूप से राहत महसूस कर रही थी।

मैंने जवाब दिया, 'अगर मुझे शक होता, तो मुझे आपकी बदनामी का पता बहुत पहले ही चल जाता। नहीं, लेडी लोबोरो, मेरा आरोप शक पर आधारित नहीं है।'

'तो फिर आपको यह किस आधार पर मिला?' उसने एक आर्मचेयर पर बैठते हुए और अपने पैरों को फेंडर पर फैलाते हुए कहा, मानो वह शांत दिखने की कोशिश कर रही हो।

मैंने अपनी निगाहें उस पर टिकाते हुए जवाब दिया, 'मुझे भी तुम्हारी तरह चांदनी रात में टहलना अच्छा लगता है; और झाड़ियाँ मेरी पसंदीदा जगहों में से एक हैं।'

वह फिर से अत्यधिक लाल हो गई और चुप रही, अपनी उंगली दांतों पर दबाए आग को घूरती रही। मैंने कुछ क्षण उसे द्वेषपूर्ण संतुष्टि की भावना से देखा; फिर दरवाजे की ओर बढ़ते हुए, मैंने शांति से पूछा कि क्या उसे कुछ और कहना है।

'जी हां!' वह उत्सुकता से चिल्लाई और लेटने की मुद्रा से उठ खड़ी हुई। 'मैं जानना चाहती हूं कि क्या आप लॉर्ड लोबोरो को बताएंगे?'

'मान लो मैं ऐसा करूँ?'

'खैर, अगर आप इस मामले को प्रकाशित करने के इच्छुक हैं, तो मैं आपको मना नहीं कर सकती, बेशक—लेकिन अगर आप ऐसा करते हैं तो बहुत काम होगा—और अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो मैं आपको सबसे उदार इंसान मानूंगी—और अगर दुनिया में मैं आपके लिए कुछ भी कर सकती हूं—कुछ भी कम—' वह हिचकिचाई।

मैंने कहा, 'मेरा मतलब है कि आप मेरे पति के साथ अपने दोषी संबंध को त्यागने के अलावा और क्या कर सकती हैं?'

वह रुक गई, स्पष्ट रूप से घबराहट और उलझन में, साथ ही उस गुस्से में भी जिसे

वह दिखाने की हिम्मत नहीं कर रही थी।

‘मैं उस चीज़ को नहीं छोड़ सकती जो जीवन से भी प्यारी है,’ उसने धीमी, जल्दबाज़ी भरी आवाज़ में बुदबुदाया। फिर अचानक अपना सिर उठाकर और अपनी चमकती आँखों से मुझे देखते हुए, उसने गंभीरता से कहा: ‘लेकिन, हेलेन – या श्रीमती हंटिंगडन, या जो भी आप मुझे आपको बुलाने के लिए कहें – क्या आप उसे बताएँगी? यदि आप उदार हैं, तो यह आपकी उदारता दिखाने का एक उपयुक्त अवसर है: यदि आप अभिमानी हैं, तो मैं – आपकी प्रतिद्वंदी – आपके द्वारा किए गए इस महान धैर्य के लिए स्वयं को आपका ऋणी मानने को तैयार हूँ।’

मैं उसे नहीं बताऊंगा।

‘तुम ऐसा नहीं करोगे!’ वह प्रसन्नता से चिल्लाई। ‘तो मेरी हार्दिक धन्यवाद स्वीकार करो!’

वह उछलकर खड़ी हो गई और उसने मुझे अपना हाथ बढ़ाया। मैंने अपना हाथ पीछे खींच लिया।

‘मुझे धन्यवाद मत दीजिए; मैं आपके लिए ऐसा नहीं कर रहा हूँ। न ही यह किसी प्रकार की सहनशीलता का कार्य है: मैं आपकी शर्मिंदगी को सार्वजनिक नहीं करना चाहता। मुझे आपके पति को इसके बारे में बताकर दुखी करना पड़ेगा।’

और मिलिसेंट? क्या तुम उसे बताओगे?

नहीं: इसके विपरीत, मैं इसे उससे छुपाने की पूरी कोशिश करूंगा। मैं नहीं चाहता कि उसे अपने रिश्तेदार की बदनामी और कलंक के बारे में पता चले!

'आपने कठोर शब्दों का प्रयोग किया, श्रीमती हंटिंगडन, लेकिन मैं आपको क्षमा कर सकता हूँ।'

‘और अब, लेडी लोबोरो,’ मैंने आगे कहा, ‘मैं आपको सलाह देना चाहता हूँ कि आप जितनी जल्दी हो सके इस घर को छोड़ दें। आपको पता होना चाहिए कि आपका यहाँ रहना मुझे बेहद अप्रिय है—मिस्टर हंटिंगडन के लिए नहीं,’ मैंने उनके चेहरे पर विजय की एक द्वेषपूर्ण मुस्कान को देखते हुए कहा— ‘अगर आप उन्हें पसंद करती हैं, तो आप उनके साथ रह सकती हैं, जहाँ तक मेरा सवाल है—लेकिन इसलिए कि आपके प्रति अपनी सच्ची भावनाओं को हमेशा छुपाना और उस व्यक्ति के प्रति शिष्टाचार और सम्मान का दिखावा करना मेरे लिए कष्टदायक है, जिसके लिए मेरे मन में जरा भी सम्मान नहीं है; और इसलिए भी कि, यदि आप यहाँ रहती हैं, तो आपका

आचरण घर के उन दो लोगों से ज्यादा समय तक छिपा नहीं रह सकता जो इसे पहले से नहीं जानते हैं। और, आपके पति के लिए, एनाबेला, और यहाँ तक कि आपके अपने लिए भी, मैं चाहता हूँ—मैं आपसे पूरी गंभीरता से आग्रह करता हूँ और विनती करता हूँ कि आप इस अवैध संबंध को तुरंत तोड़ दें और भयानक परिणामों से पहले, जब तक संभव हो, अपने कर्तव्य पर लौट जाएँ—'

'जी हाँ, बिल्कुल,' उसने अधीरता का भाव दिखाते हुए मेरी बात काटते हुए कहा। 'लेकिन मैं तय समय से पहले नहीं जा सकती, हेलेन। मैं इसके लिए क्या बहाना बना सकती हूँ? चाहे मैं अकेले वापस जाने का प्रस्ताव रखूँ—जिसके बारे में लोबोरो बिल्कुल भी नहीं सुनना चाहेगा—या उसे अपने साथ ले जाऊँ, यह बात ही संदेह पैदा कर देगी—और जब हमारी यात्रा लगभग समाप्त होने वाली है—एक सप्ताह से थोड़ा ही अधिक—तो आप मेरी उपस्थिति को इतने लंबे समय तक कैसे सहन कर सकती हैं! मैं अपनी और अधिक दोस्ताना बदतमीज़ी से आपको परेशान नहीं करूँगी।'

'ठीक है, मुझे आपसे और कुछ नहीं कहना है।'

जब मैं कमरे से बाहर निकल रहा था, तो उसने पूछा, 'क्या आपने हंटिंगडन को इस मामले के बारे में बताया है?'

मैंने बस यही जवाब दिया, 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई उसका नाम मेरे सामने लेने की!'

तब से हमारे बीच कोई बातचीत नहीं हुई है, सिवाय उन शब्दों के जो बाहरी शिष्टाचार या विशुद्ध आवश्यकता के कारण आवश्यक थे।

अध्याय XXXV

उन्नीसवीं। - जैसे-जैसे लेडी लोबोरो को मुझसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं दिखती और प्रस्थान का समय नज़दीक आता है, वैसे-वैसे वह और भी ज़्यादा दुस्साहसी और उद्दंड

होती जाती है। वह मेरे सामने, जब कोई और नहीं होता, मेरे पति से स्नेहपूर्ण आत्मीयता से बात करने में ज़रा भी संकोच नहीं करती और विशेष रूप से उनके स्वास्थ्य और कल्याण या उनसे संबंधित किसी भी चीज़ में अपनी रुचि दिखाने की शौकीन है, मानो वह अपनी दयालु चिंता को मेरी ठंडी उदासीनता से अलग दिखाना चाहती हो। और वह उसे ऐसी मुस्कानों और निगाहों, फुसफुसाते शब्दों या बेबाकी से बोले गए इशारों से जवाब देता है, जो उसकी अच्छाई और मेरी उपेक्षा के प्रति उसके बोध को दर्शाते हैं, जिससे मेरा चेहरा लाल हो जाता है, भले ही मैं ऐसा न करूँ - क्योंकि मैं इन सब बातों को पूरी तरह से अनदेखा करना चाहती हूँ - उनके बीच जो कुछ भी होता है, उसके प्रति बहरी और अंधी, क्योंकि जितना ज़्यादा मैं उनकी दुष्टता को महसूस करती हूँ, उतना ही वह अपनी जीत का जश्न मनाती है, और उतना ही वह खुद को यह तसल्ली देता है कि मेरी दिखावटी उदासीनता के बावजूद मैं अब भी उससे पूरी तरह प्यार करती हूँ। ऐसे मौकों पर, मैं कभी-कभी एक सूक्ष्म, शैतानी सुझाव से चौंक जाती हूँ जो मुझे हरग्रेव की हरकतों को बढ़ावा देकर उसे गलत साबित करने के लिए उकसाता है; लेकिन ऐसे विचार पल भर में भय और आत्म-अपमान के साथ गायब हो जाते हैं; और फिर मैं उसे पहले से दस गुना ज़्यादा नफ़रत करती हूँ क्योंकि उसने मुझे इस स्थिति में पहुँचाया है! - ईश्वर मुझे इसके लिए और मेरे सभी पापी विचारों के लिए क्षमा करे! अपनी पीड़ाओं से विनम्र और शुद्ध होने के बजाय, मुझे लगता है कि वे मेरे स्वभाव को कड़वा बना रही हैं। यह मेरी उतनी ही गलती है जितनी उनकी जिन्होंने मुझे नुकसान पहुँचाया है। कोई भी सच्चा ईसाई उसके और उसके प्रति, विशेषकर बाद वाले के प्रति, मेरे जैसी कड़वी भावनाएँ नहीं रख सकता: उसे, मुझे अब भी लगता है कि मैं पश्चाताप के थोड़े से भी संकेत पर उसे - खुशी-खुशी - क्षमा कर सकती हूँ; लेकिन उसके प्रति - मेरे घृणा को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। तर्क मना करता है, लेकिन जुनून ज़ोर से उकसाता है; और मुझे प्रार्थना करनी होगी और लंबे समय तक संघर्ष करना होगा इससे पहले कि मैं इसे वश में कर सकूँ।

अच्छा हुआ कि वह कल जा रही है, क्योंकि मैं एक और दिन उसकी मौजूदगी बर्दाश्त नहीं कर सकता था। आज सुबह वह हमेशा से जल्दी उठ गई। जब मैं नाश्ता करने नीचे गया तो मैंने उसे कमरे में अकेला पाया।

‘ओह, हेलेन! क्या तुम हो?’ मेरे अंदर आते ही उसने मुड़कर कहा।

उसे देखकर मैं अनजाने में चौंक गया, जिस पर उसने हल्की हंसी हंसते हुए कहा,

'मुझे लगता है कि हम दोनों निराश हैं।'

मैं आगे आया और नाश्ते की तैयारियों में व्यस्त हो गया।

मेज पर बैठते हुए उसने कहा, 'आज आखिरी दिन है जब मैं आपकी मेहमाननवाजी का बोझ उठाऊंगी।' आर्थर के कमरे में प्रवेश करते ही उसने धीरे से बुदबुदाया, 'अरे, यहाँ तो कोई ऐसा आ गया है जो इससे खुश नहीं होगा!'

उसने उससे हाथ मिलाया और उसे सुप्रभात कहा; फिर, उसके चेहरे को प्यार से देखते हुए, और उसका हाथ अपने हाथ में पकड़े हुए, उसने दयनीय स्वर में कहा, 'आखिरी - आखिरी दिन!'

'हाँ,' उसने कुछ कठोरता से कहा; 'और मैं इसका पूरा फायदा उठाने के लिए जल्दी उठ गई थी—मैं यहाँ आधे घंटे से अकेली हूँ, और तुम—तुम आलसी प्राणी—'

'खैर, मुझे भी लगा कि मैं जल्दी आ गया हूँ,' उसने कहा; 'लेकिन,' अपनी आवाज़ को लगभग फुसफुसाते हुए, 'देखो, हम अकेले नहीं हैं।'

'हम कभी अकेले नहीं होते,' उसने जवाब दिया। लेकिन वे लगभग अकेले ही थे, क्योंकि मैं अब खिड़की पर खड़ा होकर बादलों को देख रहा था और अपने गुस्से को दबाने की कोशिश कर रहा था।

उनके बीच कुछ और बातें हुईं, जिन्हें सौभाग्य से मैंने नहीं सुना; लेकिन एनाबेला ने इतनी हिम्मत दिखाई कि वह आकर मेरे बगल में बैठ गई, और यहाँ तक कि उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखकर धीरे से कहा, 'हेलेन, तुम्हें उससे मुझे बचाने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मैं उससे उतना प्यार करती हूँ जितना तुम कभी नहीं कर सकती।'

इससे मैं आपा खो बैठा। मैंने उसका हाथ पकड़ा और घृणा और आक्रोश से भर कर झटक दिया। मेरे चेहरे पर घृणा और आक्रोश के भाव थे जिन्हें मैं दबा नहीं सका। इस अचानक हुए व्यवहार से वह चौंक गई, मानो भयभीत हो गई हो, और चुपचाप पीछे हट गई। मैं अपने गुस्से में और कुछ कह देता, लेकिन आर्थर की धीमी हंसी ने मुझे होश में ला दिया। मैंने अपने अधूरे अपशब्दों को रोक लिया और तिरस्कारपूर्वक मुँह फेर लिया, यह सोचकर कि मैंने उसे इतना मनोरंजन दिया था। जब मिस्टर हरग्रेव आए तब भी वह हंस रहा था। उन्होंने कितना कुछ देखा, यह मैं नहीं जानता, क्योंकि जब वे अंदर आए तो दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था। उन्होंने अपने मेज़बान और चचेरे भाई दोनों का ठंडेपन से अभिवादन किया, और मुझे एक ऐसी नज़र से देखा जिसमें

गहरी सहानुभूति के साथ-साथ उच्च प्रशंसा और सम्मान भी झलक रहा था।

'उस आदमी के प्रति आपकी कितनी निष्ठा है?' उसने दबी आवाज़ में पूछा, जब वह खिड़की पर मेरे बगल में खड़ा था और मौसम पर टिप्पणी करने का नाटक कर रहा था।

'कोई नहीं,' मैंने उत्तर दिया। और तुरंत मेज पर लौटकर मैं चाय बनाने में जुट गया। वह भी मेरे पीछे आया और मुझसे कुछ बातचीत करना चाहता था, लेकिन अब दूसरे मेहमान भी आने लगे थे, इसलिए मैंने उसे कॉफी देने के अलावा उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

नाश्ते के बाद, लेडी लोबोरो के साथ जितना हो सके कम समय बिताने का निश्चय करके, मैं चुपके से उनके बीच से निकलकर पुस्तकालय में चला गया। श्री हरग्रेव भी किताब लेने के बहाने मेरे पीछे-पीछे वहाँ आ गए; पहले तो उन्होंने अलमारियों की ओर मुड़कर एक किताब चुनी, फिर चुपचाप, लेकिन बिना किसी झिझक के, मेरे पास आकर खड़े हो गए, अपना हाथ मेरी कुर्सी की पीठ पर रखकर धीरे से बोले, 'तो अब तुम आखिरकार खुद को आज़ाद समझ रहे हो?'

'हां,' मैंने बिना हिले-डुले या अपनी किताब से नज़रें उठाए बिना कहा, 'मैं कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हूं, सिवाय भगवान और अपनी अंतरात्मा को ठेस पहुंचाने के।'

कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया।

उन्होंने कहा, 'बिल्कुल सही, बशर्ते आपका विवेक अत्यधिक संवेदनशील न हो और ईश्वर के प्रति आपके विचार अत्यधिक कठोर न हों; लेकिन क्या आप यह सोच सकते हैं कि उस दयालु सत्ता को ठेस पहुंचेगी कि वह आपके लिए मरने को तैयार किसी व्यक्ति को सुख दे? — एक समर्पित हृदय को यातनाओं से निकालकर स्वर्गिक आनंद की अवस्था तक पहुंचाए, जबकि आप यह काम स्वयं को या किसी और को जरा भी हानि पहुंचाए बिना कर सकते हैं?'

यह बात उन्होंने मेरे ऊपर झुकते हुए धीमी, गंभीर और कोमल आवाज़ में कही। मैंने अपना सिर उठाया और उनकी निगाहों का सामना करते हुए शांत स्वर में उत्तर दिया, 'श्री हरग्रेव, क्या आप मेरा अपमान करना चाहते हैं?'

वह इसके लिए तैयार नहीं थे। सदमे से उबरने के लिए उन्होंने एक पल का विराम लिया; फिर, खुद को संभालते हुए और मेरी कुर्सी से अपना हाथ हटाते हुए, उन्होंने गर्व भरी उदासी के साथ उत्तर दिया, "मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था।"

मैंने बस सिर हिलाकर दरवाजे की तरफ एक नजर डाली और फिर अपनी किताब में वापस लग गई। वह तुरंत पीछे हट गया। यह बेहतर था कि मैं और ज्यादा शब्दों में जवाब देती, और उस गुस्से में जवाब देती जो मेरी पहली प्रतिक्रिया होती। अपने गुस्से पर काबू रखना कितना अच्छा होता है! मुझे इस अनमोल गुण को निखारने के लिए मेहनत करनी चाहिए: भगवान ही जानता है कि इस कठिन, अंधेरे रास्ते पर मुझे इसकी कितनी बार जरूरत पड़ेगी।

सुबह के समय मैं उन दोनों महिलाओं के साथ ग्रोव गई, ताकि मिलिसेंट को अपनी माँ और बहन को विदाई देने का मौका मिल सके। उन्होंने उसे दिन भर उनके साथ रहने के लिए मना लिया, श्रीमती हरग्रेव ने वादा किया कि वह उसे शाम को वापस ले आएंगी और अगले दिन पार्टी खत्म होने तक वहीं रहेंगी। इस तरह, लेडी लोबोरो और मुझे गाड़ी में एक साथ बैठकर आमने-सामने बातचीत करने का मौका मिला। पहले एक-दो मील तक हम चुप रहे, मैं अपनी खिड़की से बाहर देख रही थी और वह अपने कोने में पीछे की ओर झुकी हुई थी। लेकिन मैं उसके लिए किसी खास स्थिति में नहीं बैठना चाहती थी; जब ठंडी, तेज हवा मेरे चेहरे पर लग रही थी और मैं आगे की ओर झुककर, लाल रंग की झाड़ियों और उनके किनारों की गीली, उलझी हुई घास को देखते-देखते थक गई, तो मैंने भी पीछे झुकना शुरू कर दिया। अपनी हमेशा की बेशर्मी के साथ, मेरी साथी ने फिर बातचीत शुरू करने की कोशिश की; लेकिन उनकी कई टिप्पणियों पर मैं बस एक-एक शब्द ही कह पाया, 'हाँ', 'ना' या 'हम्फ'। अंत में, जब उन्होंने मुझसे किसी मामूली मुद्दे पर मेरी राय पूछी, तो मैंने जवाब दिया, 'आप मुझसे बात क्यों करना चाहती हैं, लेडी लोबोरो? आपको पता होना चाहिए कि मैं आपके बारे में क्या सोचता हूँ।'

"ठीक है, अगर तुम मुझसे इतनी नाराज़ हो," उसने जवाब दिया, "मैं क्या करूँ; लेकिन मैं किसी के लिए रूठने वाली नहीं हूँ।" हमारी छोटी सी यात्रा अब समाप्त हो गई थी। गाड़ी का दरवाज़ा खुलते ही वह उछलकर बाहर निकली और पार्क की ओर उन सज्जनों से मिलने चली गई जो अभी-अभी जंगल से लौट रहे थे। ज़ाहिर है, मैं उसके पीछे नहीं गया।

लेकिन उसकी धृष्टता अभी शांत नहीं हुई थी: खाने के बाद, मैं हमेशा की तरह ड्राइंग रूम में चली गई, और वह भी मेरे साथ आई, लेकिन मेरे साथ दोनों बच्चे भी थे, और मैंने उन पर पूरा ध्यान दिया, और ठान लिया कि जब तक सज्जन लोग नहीं आ

जाते या मिलिसेंट अपनी माँ के साथ नहीं आ जाती, तब तक उन्हें संभाल कर रखूँगी। हालाँकि, छोटी हेलेन जल्द ही खेलते-खेलते थक गई और सोने की ज़िद करने लगी; और जब मैं उसे अपनी गोद में लेकर सोफे पर बैठी थी, और आर्थर मेरे बगल में बैठकर उसके कोमल, सुनहरे बालों से धीरे-धीरे खेल रहा था, तभी लेडी लोबोरो शांत भाव से आईं और दूसरी तरफ बैठ गईं।

‘कल, श्रीमती हंटिंगडन,’ उसने कहा, ‘आप मेरी उपस्थिति से मुक्त हो जाएंगी, जिससे निस्संदेह आपको बहुत खुशी होगी—यह स्वाभाविक है; लेकिन क्या आप जानती हैं कि मैंने आपकी बहुत बड़ी सेवा की है? क्या मैं आपको बताऊं कि वह क्या है?’

मैंने शांत रहने का दृढ़ निश्चय करते हुए कहा, 'आपने मेरी जो भी सेवा की है, उसके बारे में सुनकर मुझे खुशी होगी,' क्योंकि मैं उसकी आवाज के लहजे से समझ गया था कि वह मुझे उकसाना चाहती है।

“अच्छा,” उसने बात जारी रखते हुए कहा, “क्या आपने श्री हंटिंगडन में आए सुखद बदलाव को नहीं देखा? क्या आप नहीं देखते कि वे कितने संयमी और गंभीर व्यक्ति बन गए हैं? मुझे पता है कि आपने उनकी बुरी आदतों को देखकर खेद व्यक्त किया था; और मुझे यह भी पता है कि आपने उन्हें उन आदतों से छुटकारा दिलाने की पूरी कोशिश की, लेकिन मेरी सहायता मिलने तक आप सफल नहीं हुए। मैंने उन्हें संक्षेप में कहा कि मैं उन्हें इस तरह खुद को अपमानित करते हुए नहीं देख सकती, और मैं ऐसा करना बंद कर दूंगी—चाहे मैंने उन्हें कुछ भी कहा हो, लेकिन आप देख सकते हैं कि मैंने उनमें कितना सुधार किया है; और इसके लिए आपको मेरा धन्यवाद करना चाहिए।”

मैं उठा और नर्स को बुलाने के लिए घंटी बजाई।

‘लेकिन मुझे किसी धन्यवाद की इच्छा नहीं है,’ उसने आगे कहा; ‘मैं बस इतना ही चाहती हूँ कि मेरे जाने के बाद आप उसका ख्याल रखें, और कठोरता और उपेक्षा से उसे उसके पुराने रास्ते पर वापस न धकेलें।’

मैं भावनाओं से लगभग बीमार पड़ गया था, लेकिन राहेल अब दरवाजे पर थी। मैंने बच्चों की ओर इशारा किया, क्योंकि मैं बोलने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था: वह उन्हें अपने साथ ले गई, और मैं उसके पीछे-पीछे चला गया।

‘क्या तुम ऐसा करोगी, हेलेन?’ वक्ता ने आगे पूछा।

मैंने उसे ऐसी नज़र से देखा जिससे उसके चेहरे की द्वेषपूर्ण मुस्कान फीकी पड़ गई, या कम से कम एक पल के लिए रुक गई, और मैं वहाँ से चली गई। प्रतीक्षालय में मेरी मुलाकात मिस्टर हरग्रेव से हुई। उन्होंने देखा कि मैं बात करने के मूड में नहीं थी, और बिना कुछ कहे मुझे जाने दिया; लेकिन जब पुस्तकालय में कुछ मिनटों के एकांतवास के बाद, मैं शांत हुई और श्रीमती हरग्रेव और मिलिसेंट के पास वापस जा रही थी, जिन्हें मैंने अभी-अभी नीचे आकर ड्राइंग रूम में जाते हुए सुना था, तो मैंने उन्हें अभी भी उस मंद रोशनी वाले कमरे में रुका हुआ पाया, और स्पष्ट रूप से मेरा इंतजार कर रहे थे।

जब मैं वहां से गुजरी तो उसने कहा, 'श्रीमती हंटिंगडन, क्या आप मुझे एक शब्द बोलने की अनुमति देंगी?'

‘तो फिर क्या है? कृपया जल्दी बताइए।’

मैंने आज सुबह आपको नाराज कर दिया; और मैं आपकी नाराजगी के साये में नहीं रह सकता।

‘तो जाओ, और फिर कभी पाप मत करना,’ मैंने मुँह मोड़ते हुए उत्तर दिया।

‘नहीं, नहीं!’ उसने जल्दी से मेरे सामने खड़े होते हुए कहा। ‘मुझे क्षमा करें, लेकिन मुझे आपकी क्षमा चाहिए। मैं कल आपसे विदा ले रहा हूँ, और शायद फिर कभी आपसे बात करने का मौका न मिले। मैंने जो किया, वह गलत था; लेकिन मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरी जल्दबाजी में की गई इस गलती को भूल जाइए और मुझे क्षमा कर दीजिए, और मुझे ऐसे समझिए जैसे मैंने कभी ये शब्द कहे ही न हों; क्योंकि, मेरा विश्वास कीजिए, मुझे इसका गहरा अफसोस है, और आपका सम्मान खोना मेरे लिए बहुत बड़ी सजा है: मैं इसे सहन नहीं कर सकता।’

'विस्मयबोध को इच्छा से खरीदा नहीं जा सकता; और मैं उन सभी को अपना सम्मान नहीं दे सकता जो इसकी इच्छा रखते हैं, जब तक कि वे इसके योग्य न हों।'

'अगर आप इस अपराध को क्षमा कर देंगे, तो मैं इसे पाने के लिए किए गए परिश्रम को अपना सार्थक समय मानूंगा - क्या आप करेंगे?'

'हाँ।'

'जी हाँ! लेकिन ये तो बेरुखी से कहा गया है। मुझे अपना हाथ दो और मैं तुम्हारी बात मान लूँगी। नहीं दोगी? तो फिर, श्रीमती हंटिंगडन, तुम मुझे कभी माफ नहीं करोगी!'

'हां; यह रहा, और इसके साथ मेरी क्षमा भी: बस, अब और पाप मत करना।'

उन्होंने भावुकता से मेरा ठंडा हाथ दबाया, लेकिन कुछ नहीं कहा और मुझे कमरे में जाने देने के लिए एक तरफ हट गए, जहाँ अब सभी लोग इकट्ठा थे। श्री ग्रिम्सबी दरवाजे के पास बैठे थे: मुझे अंदर आते देख, और लगभग तुरंत ही हरग्रेव भी अंदर आ गए, उन्होंने मुझे घूरकर देखा, मानो मेरा कोई अपमान हो। मैंने उनकी आँखों में तब तक देखा जब तक कि वे उदास होकर मुँह फेर नहीं लिया, शायद शर्मिंदा नहीं, लेकिन उस पल के लिए भ्रमित ज़रूर हो गए। इसी बीच हैटर्सले ने हरग्रेव का हाथ पकड़ लिया और उनके कान में कुछ फुसफुसा रहे थे—शायद कोई भद्दा मज़ाक, क्योंकि हरग्रेव न तो हँसे और न ही कुछ बोले, बल्कि होंठों को हल्का सा मोड़कर उनसे मुँह फेर लिया और अपनी माँ के पास चले गए, जो लॉर्ड लोबोरो को बता रही थीं कि उन्हें अपने बेटे पर कितना गर्व है।

भगवान का शुक्र है, वे सब कल जा रहे हैं।

अध्याय 36

20 दिसंबर, 1824 — हमारे सुखद वैवाहिक जीवन की तीसरी वर्षगांठ है। हमारे मेहमानों के एक-दूसरे के साथ समय बिताने के लिए चले जाने के बाद अब दो महीने बीत चुके हैं; और मैंने वैवाहिक जीवन के इस नए चरण का नौ सप्ताह का अनुभव किया है — दो व्यक्ति घर के मालिक और मालकिन के रूप में, और एक प्यारे, हंसमुख छोटे बच्चे के माता-पिता के रूप में, इस आपसी समझ के साथ साथ रह रहे हैं कि उनके बीच कोई प्रेम, मित्रता या सहानुभूति नहीं है। जहाँ तक संभव हो, मैं उनके साथ शांतिपूर्वक रहने का प्रयास करती हूँ: मैं उनके साथ पूरी विनम्रता से पेश आती हूँ, जहाँ भी संभव हो, अपनी सुविधा उनकी सुविधा के लिए छोड़ देती हूँ, और घरेलू मामलों में उनसे व्यावहारिक ढंग से परामर्श करती हूँ, उनकी इच्छा और निर्णय का

सम्मान करती हूँ, भले ही मैं जानती हूँ कि वे मेरे अपने से कमतर हैं।

जहाँ तक उसकी बात है, पहले एक-दो हफ़्ते तक वह चिड़चिड़ा और उदास रहा, शायद अपनी प्यारी एनाबेला के जाने से दुखी था, और मुझसे तो उसका व्यवहार और भी खराब था: मैं जो भी करती, उसे वह गलत समझता; मैं पत्थर दिल, कठोर और संवेदनहीन थी; मेरा पीला-सा चेहरा उसे बिल्कुल घिनौना लगता था; मेरी आवाज़ सुनकर वह काँप उठता था; उसे समझ नहीं आता था कि वह मेरे साथ सर्दी कैसे गुज़ारेगा; मैं उसे धीरे-धीरे मार डालूँगी। मैंने फिर से अलग होने का प्रस्ताव रखा, लेकिन बात नहीं बनी: वह मोहल्ले की सारी गपशपों का विषय नहीं बनना चाहता था; वह यह नहीं सुनना चाहता था कि वह इतना निर्दयी है कि उसकी पत्नी उसके साथ नहीं रह सकती। नहीं; उसे किसी तरह मुझे बर्दाश्त करना ही होगा।

'आपका मतलब है कि मुझे किसी तरह आपके साथ रहना होगा,' मैंने कहा; 'जब तक मैं प्रबंधक और गृहस्वामी के अपने कर्तव्यों को इतनी ईमानदारी और कुशलता से बिना वेतन और बिना धन्यवाद के निभाता रहूंगा, तब तक आप मुझे जाने नहीं दे सकते। इसलिए, जब मेरी गुलामी असहनीय हो जाएगी, तो मैं इन कर्तव्यों को छोड़ दूंगा।' मैंने सोचा, अगर कोई और तरीका काम करेगा, तो यह धमकी ही उसे काबू में रखने का काम करेगी।

मुझे लगता है कि वह बहुत निराश थे कि मैंने उनकी अपमानजनक बातों को इतनी गंभीरता से नहीं लिया, क्योंकि जब भी उन्होंने जानबूझकर मेरी भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली कोई बात कही होती, तो वे मेरी आँखों में टकटकी लगाकर देखते और फिर मेरे 'कठोर हृदय' या 'क्रूर असंवेदनशीलता' की शिकायत करते। अगर मैं फूट-फूटकर रोती और उनके खोए हुए प्यार पर शोक मनाती, तो शायद वे मुझ पर दया करते और कुछ समय के लिए मुझे अपना लेते, ताकि उनका अकेलापन दूर हो सके और उनकी प्रियतमा एनाबेला की अनुपस्थिति में उन्हें सांत्वना मिल सके, जब तक कि वे उससे दोबारा न मिल लें या कोई और उपयुक्त साथी न मिल जाए। शुक्र है, मैं इतनी कमज़ोर नहीं हूँ! एक समय मैं भी उनके प्रति एक मूर्खतापूर्ण, दीवानेपन भरे प्यार में पागल थी, जो उनकी अयोग्यता के बावजूद उनसे जुड़ा रहा, लेकिन अब वह पूरी तरह से खत्म हो चुका है - पूरी तरह से कुचलकर मुरझा गया है; और इसके लिए वे खुद और अपनी बुराइयों के सिवा किसी और को नहीं धिक्कार सकते।

शुरू में (शायद अपनी प्यारी पत्नी के निर्देशों का पालन करते हुए), उन्होंने शराब

में अपने दुख भुलाने की कोशिश से बहुत अच्छी तरह परहेज किया; लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने अपने नेक प्रयासों में ढील देना शुरू कर दिया, और कभी-कभी हद से ज्यादा पीने लगे, और अब भी ऐसा करते हैं; बल्कि कभी-कभी तो काफी ज्यादा। जब वे इन अतिचारों के उत्तेजक प्रभाव में होते हैं, तो कभी-कभी वे उग्र हो जाते हैं और जानवरों जैसा व्यवहार करने की कोशिश करते हैं; और तब मैं अपनी घृणा और तिरस्कार को बड़ी मुश्किल से दबा पाती हूँ। जब वे इसके परिणामों के निराशाजनक प्रभाव में होते हैं, तो वे अपने कष्टों और अपनी गलतियों पर विलाप करते हैं, और दोनों का दोष मुझ पर डालते हैं; वे जानते हैं कि इस तरह की लत उनके स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाती है, और उन्हें लाभ से ज्यादा हानि पहुँचाती है; लेकिन वे कहते हैं कि मैं अपने अप्राकृतिक, स्त्री-विरोधी व्यवहार से उन्हें ऐसा करने पर मजबूर करती हूँ; अंत में यही उनका विनाश होगा, लेकिन यह सब मेरी गलती है; और तब मैं अपना बचाव करने के लिए उत्तेजित हो जाती हूँ, कभी-कभी कड़वी निंदा के साथ। यह एक ऐसा अन्याय है जिसे मैं धैर्यपूर्वक सहन नहीं कर सकती। क्या मैंने उसे इस दुर्गुण से बचाने के लिए लंबे समय तक अथक परिश्रम नहीं किया? क्या मैं उसे इससे मुक्त कराने के लिए अभी भी प्रयास नहीं करूँगी, यदि मैं कर सकती? लेकिन क्या मैं उसकी चापलूसी और दुलार करके ऐसा कर सकती हूँ, जबकि मैं जानती हूँ कि वह मेरा तिरस्कार करता है? क्या यह मेरी गलती है कि मैंने उस पर अपना प्रभाव खो दिया है, या उसने मेरे स्नेह का सारा अधिकार खो दिया है? और क्या मुझे उससे सुलह की कोशिश करनी चाहिए, जबकि मुझे लगता है कि मैं उससे घृणा करती हूँ, और वह मुझे तुच्छ समझता है? और जबकि वह अभी भी लेडी लोबोरो के साथ पत्र व्यवहार करता है, जैसा कि मैं जानती हूँ? नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं! वह चाहे जितना भी शराब पीकर मर जाए, इसमें मेरी कोई गलती नहीं है!

फिर भी मैं उसे बचाने की पूरी कोशिश करता हूँ: मैं उसे समझाता हूँ कि शराब पीने से उसकी आँखें बेजान हो जाती हैं, चेहरा लाल और फूला हुआ हो जाता है; और यह उसे शरीर और मन से मंदबुद्धि बना देती है; और अगर एनाबेला उसे उतनी बार देखे जितनी बार मैं देखता हूँ, तो वह जल्दी ही निराश हो जाएगी; और अगर वह ऐसा करता रहा तो वह निश्चित रूप से उससे अपना मोहभंग कर लेगी। इस तरह की सलाह देने पर मुझे केवल गालियाँ ही सुननी पड़ती हैं—और सच कहूँ तो, मुझे लगभग ऐसा लगता है जैसे मैं इसके लायक ही हूँ, क्योंकि मुझे ऐसे तर्क देना पसंद नहीं है; लेकिन

ये बातें उसके सुन्न पड़े दिल में उतर जाती हैं, और उसे सोचने, विचार करने और शराब छोड़ने के लिए मजबूर कर देती हैं, जितना कि मैं कुछ और कह नहीं सकता।

फिलहाल मुझे उसकी गैरमौजूदगी से कुछ राहत मिली है: वह हरग्रेव के साथ एक दूर के शिकार पर गया है, और शायद कल शाम से पहले वापस नहीं आएगा। उसकी गैरमौजूदगी का एहसास कितना अलग हुआ करता था!

श्री हरग्रेव अभी भी ग्रोव में हैं। वह और आर्थर अक्सर अपने ग्रामीण खेलों के लिए मिलते हैं: वह अक्सर हमसे मिलने आते हैं, और आर्थर भी अक्सर उनके पास घोड़े पर सवार होकर जाते हैं। मुझे नहीं लगता कि इन दोनों तथाकथित दोस्तों में से कोई भी एक-दूसरे के लिए बहुत प्यार करता है; लेकिन इस तरह की मुलाक़ात से समय बीत जाता है, और मैं चाहती हूँ कि यह जारी रहे, क्योंकि इससे आर्थर की संगति में बिताए जाने वाले कुछ घंटों की असुविधा से मुक्ति मिलती है, और उसे अपनी कामुक इच्छाओं में लिप्त रहने के बजाय कुछ बेहतर काम मिल जाता है। श्री हरग्रेव के आस-पास होने पर मेरी एकमात्र आपत्ति यह है कि ग्रोव में उनसे मिलने के डर से मैं उनकी बहन से उतनी बार नहीं मिल पाती जितनी बार मुझे मिलना चाहिए था; क्योंकि हाल ही में उन्होंने मेरे साथ इतना सलीके से व्यवहार किया है कि मैं उनके पहले के व्यवहार को लगभग भूल ही गई हूँ। मुझे लगता है कि वह 'मेरा सम्मान जीतने' की कोशिश कर रहे हैं। अगर वह इसी तरह व्यवहार करते रहे, तो शायद वह इसे जीत लें; लेकिन फिर क्या? जिस क्षण वह इससे अधिक की मांग करने की कोशिश करेंगे, वह इसे फिर से खो देंगे।

10 फरवरी। — अपनी दयालु भावनाओं और नेक इरादों को ठुकराए जाने का अनुभव बहुत कठिन और कड़वा होता है। मैं अपने दुखी साथी के प्रति नरम पड़ने लगी थी; उसकी दयनीय, असहाय स्थिति पर तरस खाने लगी थी, जो बौद्धिक संसाधनों के सहारे या ईश्वर के प्रति अच्छे विवेक से भी कम नहीं हो रही थी; और सोचने लगी थी कि मुझे अपना अहंकार त्यागकर उसके घर को सुखद बनाने और उसे सदाचार के मार्ग पर वापस लाने के लिए फिर से प्रयास शुरू करने चाहिए; झूठे प्रेम के वादों से नहीं, दिखावटी पश्चाताप से नहीं, बल्कि अपने स्वभावगत ठंडेपन को कम करके और अवसर मिलते ही अपनी कठोर विनम्रता को दयालुता में बदलकर। और न केवल मैं ऐसा सोचने लगी थी, बल्कि मैंने इस विचार पर अमल करना भी शुरू कर दिया था — और परिणाम क्या हुआ? दयालुता की कोई झलक नहीं, पश्चाताप की कोई

जागृति नहीं, बल्कि एक अतृप्त चिड़चिड़ापन, और अत्याचारी मांग की भावना जो उदारता के साथ बढ़ती गई, और मेरे व्यवहार में नरमी के हर संकेत पर आत्मसंतुष्ट विजय की एक छिपी हुई चमक, जिसने मुझे बार-बार पत्थर की तरह जमा दिया; और आज सुबह उसने अपना काम पूरा कर दिया: — मुझे लगता है कि अंततः पत्थर की तरह जम जाना इतना पूर्ण हो गया है कि अब मुझे कोई पिघला नहीं सकता। उसके पत्रों में से एक पत्र उसने असामान्य संतुष्टि के साथ पढ़ा, और फिर उसे मुझे चेतावनी देते हुए मेज पर फेंक दिया, —

'लो! इसे पढ़ो, और इससे सबक लो!'

यह लेडी लोबोरो की स्वतंत्र, जोशीली लिखावट में था। मैंने पहले पन्ने पर एक नज़र डाली; ऐसा लग रहा था जैसे यह स्नेह के अतिरंजित इज़हारों से भरा हो; शीघ्र पुनर्मिलन की तीव्र इच्छाएँ—और ईश्वर के आदेशों की घोर अवहेलना, और उनकी नियति के विरुद्ध क्रोध, जिसने उनके भाग्य को अलग कर दिया और उन्हें उन लोगों के साथ घृणित बंधन में जकड़ दिया जिनसे वे प्रेम नहीं कर सकते थे। मुझे रंग बदलते देख वह हल्की सी हँसी। मैंने पत्र को मोड़कर समेटा, उठी और बिना कुछ कहे उसे वापस कर दिया—

'धन्यवाद, मैं इससे सबक लूंगा!'

मेरा छोटा आर्थर घुटनों के बीच खड़ा था, अपनी उंगली में चमकीली माणिक की अंगूठी से बड़े चाव से खेल रहा था। अपने बेटे को उस दूषित प्रभाव से बचाने की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर, मैंने उसे अपनी बाहों में उठाया और कमरे से बाहर ले गई। अचानक हुए इस अलगाव को पसंद न करते हुए, बच्चा रूठ गया और रोने लगा। यह मेरे पहले से ही दुखी दिल पर एक और चोट थी। मैं उसे जाने नहीं देना चाहती थी; बल्कि उसे अपने साथ पुस्तकालय में ले जाकर, मैंने दरवाजा बंद कर लिया और उसके बगल में फर्श पर घुटने टेककर, उसे गले लगाया, चूमा और उसके साथ प्रेम से रोई। इससे शांत होने के बजाय, वह डर गया और मुझसे दूर हटकर अपने पापा को पुकारने लगा। मैंने उसे अपनी बाहों से छोड़ दिया, और अब मेरी अंधी, जलती हुई आँखों से उसे छुपाने वाले आँसू पहले से कहीं अधिक कड़वे थे। उसकी चीखें सुनकर पिता कमरे में आए। मैं तुरंत दूसरी तरफ मुड़ गई, कहीं वह मेरी भावनाओं को देखकर गलत न समझ लें। उन्होंने मुझे गालियाँ दीं और अब शांत हो चुके बच्चे को अपने साथ ले गए।

यह बहुत दुखदायी है कि मेरा लाडला उसे मुझसे ज़्यादा प्यार करता है; और जब मेरे बेटे का कल्याण और शिक्षा ही मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य है, तब मैं देखूँ कि मेरा प्रभाव उस व्यक्ति द्वारा नष्ट किया जा रहा है जिसका स्वार्थी स्नेह सबसे कठोर उदासीनता या सबसे क्रूर अत्याचार से भी अधिक हानिकारक है। यदि मैं उसकी भलाई के लिए उसे कोई छोटी-मोटी चीज़ देने से मना कर दूँ, तो वह अपने पिता के पास चला जाता है, और बाद वाला, अपनी स्वार्थी आलस्य के बावजूद, बच्चे की इच्छाओं को पूरा करने के लिए कुछ प्रयास भी करेगा: यदि मैं उसकी इच्छा को नियंत्रित करने का प्रयास करूँ, या बचकानी अवज्ञा के किसी कार्य के लिए उसे गंभीरता से देखूँ, तो वह जानता है कि उसका दूसरा अभिभावक मुस्कुराएगा और मेरे विरुद्ध उसका पक्ष लेगा। इस प्रकार, मुझे न केवल पुत्र में निहित पिता की आत्मा से लड़ना है, उसकी बुरी प्रवृत्तियों के कीटाणुओं को खोजकर जड़ से उखाड़ फेंकना है, और परलोक में उसके भ्रष्ट आचरण और उदाहरण का प्रतिकार करना है, बल्कि वह पहले से ही बच्चे के हित के लिए मेरे अथक परिश्रम को निष्फल कर रहा है, उसके कोमल मन पर मेरे प्रभाव को नष्ट कर रहा है, और मुझसे उसका प्रेम ही छीन रहा है; मेरे पास इस सांसारिक आशा के सिवा कोई आशा नहीं थी, और ऐसा लगता है कि वह इसे छीनने में शैतानी आनंद ले रहा है।

लेकिन निराश होना गलत है; मैं उस प्रेरित लेखक की सलाह को याद रखूंगा जो उसने उसे दी थी, 'जो प्रभु से डरता है और उसके सेवक की वाणी मानता है, जो अंधकार में बैठा है और जिसके पास कोई प्रकाश नहीं है; उसे प्रभु के नाम पर भरोसा रखना चाहिए और अपने परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए!'

अध्याय 37

20 दिसंबर, 1825 — एक और साल बीत गया; और मैं इस जीवन से थक चुकी हूँ।

फिर भी मैं इसे छोड़ना नहीं चाहती: चाहे यहाँ मुझे कितनी भी परेशानियाँ क्यों न झेलनी पड़ें, मैं अपने प्यारे को इस अंधेरी और दुष्ट दुनिया में अकेला छोड़कर जाना नहीं चाहती, जहाँ उसे इसके थकाऊ रास्तों में मार्गदर्शन करने वाला, इसके हज़ारों जालों से आगाह करने वाला और हर तरफ से मंडराते खतरों से बचाने वाला कोई दोस्त न हो। मैं जानती हूँ कि मैं उसकी इकलौती साथी बनने के योग्य नहीं हूँ; लेकिन मेरी जगह कोई और नहीं ले सकता। मैं इतनी गंभीर हूँ कि एक नर्स या माँ की तरह उसके मनोरंजन में शामिल नहीं हो सकती और उसके बचकाने खेलों में हिस्सा नहीं ले सकती, और अक्सर उसकी उल्लास भरी हँसी मुझे परेशान और चिंतित कर देती है; मुझे उनमें उसके पिता की भावना और स्वभाव दिखाई देता है, और मैं परिणामों से कांप जाती हूँ; और अक्सर उस मासूम खुशी को फीका कर देती हूँ जिसमें मुझे शामिल होना चाहिए। इसके विपरीत, उस पिता के मन पर उदासी का कोई बोझ नहीं है; उन्हें अपने बेटे के भविष्य की भलाई के बारे में कोई चिंता या संकोच नहीं है; और खासकर शाम के समय, जब बच्चा उन्हें सबसे ज़्यादा देखता है, वे हमेशा बेहद हंसमुख और खुले दिल के होते हैं: मेरे अलावा किसी भी व्यक्ति या किसी भी चीज़ के साथ हंसने और मज़ाक करने के लिए तैयार रहते हैं, और मैं बेहद शांत और उदास रहती हूँ: इसलिए, स्वाभाविक रूप से, बच्चा अपने हंसमुख, हंसमुख और हमेशा लाड़-प्यार करने वाले पिता पर लट्टू है, और किसी भी समय खुशी-खुशी मेरी संगति को उनकी संगति से बदल देगा। यह बात मुझे बहुत परेशान करती है; मेरे बेटे के स्नेह के लिए इतना नहीं (हालाँकि मैं उसे बहुत महत्व देती हूँ, और हालाँकि मैं इसे अपना अधिकार मानती हूँ, और जानती हूँ कि मैंने इसे पाने के लिए बहुत कुछ किया है) जितना उस प्रभाव के लिए जो मैं उसके अपने फायदे के लिए हासिल करने और बनाए रखने की कोशिश करती हूँ, और जिसे उसके पिता जानबूझकर मुझसे छीनने में आनंद लेते हैं, और केवल स्वार्थवश खुद के लिए हासिल करने में प्रसन्न होते हैं; इसका उपयोग वे केवल मुझे सताने और बच्चे को बर्बाद करने के लिए करते हैं। मुझे बस यही तसल्ली है कि वह घर पर अपेक्षाकृत कम समय बिताता है, और जिन महीनों में वह लंदन या कहीं और जाता है, उन महीनों में मुझे खोई हुई स्थिति को सुधारने और उसके जानबूझकर किए गए कुप्रबंधन से हुए नुकसान को अच्छे से दूर करने का मौका मिल जाता है। लेकिन फिर भी, उसके लौटने पर उसे मेरी मेहनत को बर्बाद करते और मेरे भोले-भाले, स्नेही, आज्ञाकारी बच्चे को स्वार्थी, अवज्ञाकारी और

शरारती लड़के में बदलते देखना एक कड़वी परीक्षा होती है; इस प्रकार वह उन बुराइयों के लिए ज़मीन तैयार करता है जिन्हें उसने अपने विकृत स्वभाव में सफलतापूर्वक पनपाया है।

खुशी की बात है कि पिछली शरद ऋतु में ग्रासडेल में आर्थर के किसी भी 'दोस्त' को आमंत्रित नहीं किया गया था: इसके बजाय वह खुद ही उनमें से कुछ से मिलने चला गया। काश वह हमेशा ऐसा ही करता, और काश उसके दोस्त इतने हों और इतने स्नेही हों कि वह साल भर उनके बीच रहे। श्री हरग्रेव, मेरी नाराज़गी के बावजूद, उसके साथ नहीं गए; लेकिन मुझे लगता है कि अब उस सज्जन से मेरा नाता टूट गया है।

सात-आठ महीनों तक उसने इतना अच्छा व्यवहार किया और इतनी कुशलता से काम संभाला कि मैं लगभग पूरी तरह से बेफिक्र हो गई थी और सचमुच उसे एक दोस्त की तरह मानने लगी थी, और कुछ विवेकपूर्ण पाबंदियों के साथ (जिन्हें मैं शायद ही ज़रूरी समझती थी) उसके साथ वैसा ही व्यवहार करने लगी थी; तभी, मेरी भोली-भाली दयालुता का फायदा उठाते हुए, उसने शालीनता और मर्यादा की सीमाओं को पार करने का साहस किया, जिन्होंने उसे इतने लंबे समय तक रोके रखा था। यह मई के अंत में एक सुहावनी शाम थी: मैं पार्क में घूम रही थी, और उसने मुझे वहाँ घोड़े पर सवार होकर गुजरते हुए देखा, और हिम्मत करके अंदर आने और मेरे पास आने का फैसला किया, अपने घोड़े से उतरकर उसे गेट पर ही छोड़ दिया। यह पहली बार था जब उसने पार्क की चारदीवारी के अंदर आने का साहस किया था, जब से मैं उसकी माँ या बहन की अनुमति के बिना, या कम से कम उनके संदेश के बहाने के बिना अकेली रह गई थी। लेकिन वह इतने शांत और सहज, इतने सम्मानजनक और आत्मसंयमी ढंग से मित्रतापूर्ण व्यवहार कर रहे थे कि, हालांकि मैं थोड़ा आश्चर्यचकित थी, फिर भी उनकी इस असामान्य स्वतंत्रता से न तो घबराई और न ही नाराज हुई। वे मेरे साथ राख के पेड़ों के नीचे और नदी किनारे टहलते रहे और कई विषयों पर बड़ी जीवंतता, सलीके और बुद्धिमत्ता से बातें करते रहे, इससे पहले कि मैं उन्हें वहां से हटाने के बारे में सोचने लगूँ। फिर, कुछ देर रुकने के बाद, जब हम दोनों शांत, नीले पानी को निहार रहे थे - मैं मन ही मन अपने साथी को विनम्रतापूर्वक विदा करने के सर्वोत्तम तरीके के बारे में सोच रही थी, और वह निस्संदेह अन्य बातों पर विचार कर रहे थे जो उनके लिए मौजूद मधुर दृश्यों और ध्वनियों से बिल्कुल अलग थीं - तभी अचानक उन्होंने एक विशेष स्वर में, धीमी, कोमल, लेकिन बिल्कुल स्पष्ट रूप से,

अपने सच्चे और भावुक प्रेम की स्पष्ट अभिव्यक्ति करते हुए मुझे झकझोर दिया; अपनी बात को पूरी हिम्मत और चतुराई से रखने की कोशिश की। लेकिन मैंने उसकी अपील को बीच में ही रोक दिया और उसे इतने दृढ़, इतने निर्णायक ढंग से और तिरस्कारपूर्ण आक्रोश के साथ, उसके अज्ञानी मन के लिए शांत, तटस्थ दुःख और दया के मिश्रण से इतना हतोत्साहित कर दिया कि वह आश्चर्यचकित, अपमानित और असहज होकर चला गया; और कुछ दिनों बाद मुझे पता चला कि वह लंदन के लिए रवाना हो गया है। हालाँकि, वह आठ या नौ सप्ताह बाद लौट आया, और मुझसे पूरी तरह से अलग नहीं रहा, बल्कि उसने इस तरह से व्यवहार किया कि उसकी तेज नजर वाली बहन ने इस बदलाव को तुरंत देख लिया।

एक सुबह जब मैं ग्रोव में उनसे मिलने गई थी और वाल्टर कुछ देर की बेरुखी भरी बातचीत के बाद कमरे से निकले ही थे, तब उन्होंने कहा, 'श्रीमती हंटिंगडन, आपने वाल्टर के साथ क्या किया है?' 'वह आजकल बहुत ही गंभीर और संजीदा व्यवहार कर रहे हैं, मुझे समझ नहीं आ रहा कि आखिर बात क्या है, जब तक कि आपने उन्हें बहुत बुरी तरह नाराज न कर दिया हो। मुझे बताइए कि क्या बात है, ताकि मैं आप दोनों के बीच मध्यस्थता कर सकूं और आप दोनों को फिर से दोस्त बना सकूं।'

मैंने कहा, 'मैंने जानबूझकर ऐसा कुछ नहीं किया जिससे उसे ठेस पहुंचे। अगर उसे ठेस पहुंची है, तो वह खुद ही सबसे बेहतर बता सकता है कि बात क्या है।'

'मैं उससे पूछूंगी,' चंचल लड़की चिल्लाई, उछलकर खिड़की से अपना सिर बाहर निकालते हुए बोली: 'वह तो बगीचे में ही है – वाल्टर!'

'नहीं, नहीं, एस्तेर! अगर तुमने ऐसा किया तो तुम मुझे बहुत नाराज करोगी; और मैं तुम्हें तुरंत छोड़कर चला जाऊंगा, और महीनों तक—शायद सालों तक—वापस नहीं आऊंगा।'

'क्या तुमने फोन किया था, एस्थर?' उसके भाई ने खिड़की के बाहर से आते हुए कहा।

'हां; मैं आपसे पूछना चाहता था—'

'सुप्रभात, एस्थर,' मैंने उसका हाथ पकड़कर उसे जोर से दबाते हुए कहा।

'मैं आपसे पूछना चाहती हूँ,' उसने आगे कहा, 'श्रीमती हंटिंगडन के लिए एक गुलाब लाना।' वह चला गया। 'श्रीमती हंटिंगडन,' उसने मेरी ओर मुड़ते हुए और मेरा हाथ कसकर पकड़े हुए कहा, 'मैं आपसे बहुत हैरान हूँ – आप भी उसकी तरह ही

गुस्से में हैं, दूर हैं और ठंडे हैं: और मैं ठान लेती हूँ कि जाने से पहले आप दोनों पहले की तरह ही अच्छे दोस्त बने रहेंगे।’

‘एस्थर, तुम इतनी बदतमीज़ कैसे हो सकती हो!’ श्रीमती हरग्रेव चिल्लाईं, जो अपनी आरामकुर्सी पर गंभीरता से बुनाई कर रही थीं। ‘यकीन मानिए, तुम कभी भी एक सभ्य महिला की तरह व्यवहार करना नहीं सीखोगी!’

‘अच्छा, माँ, आपने खुद ही कहा था—’ लेकिन युवती को उसकी माँ की उठी हुई उंगली और सिर के कड़े झटके से चुप करा दिया गया।

‘क्या वह नाराज़ नहीं है?’ उसने मुझसे फुसफुसाते हुए कहा; लेकिन, इससे पहले कि मैं अपनी ओर से कुछ फटकार लगा पाती, श्री हरग्रेव अपने हाथ में एक सुंदर मॉस-रोज़ लिए खिड़की पर फिर से प्रकट हो गए।

‘ये लो, एस्थर, मैं तुम्हारे लिए गुलाब लाया हूँ,’ उसने गुलाब उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

‘उसे खुद ही दे दो, बेवकूफ!’ वह चिल्लाई और हमारे बीच से उछलकर पीछे हट गई।

‘श्रीमती हंटिंगडन इसे आपसे लेना पसंद करेंगी,’ उसने बहुत गंभीर स्वर में उत्तर दिया, लेकिन अपनी आवाज़ धीमी कर ली ताकि उसकी माँ न सुन सके। उसकी बहन ने गुलाब लिया और मुझे दे दिया।

‘मेरे भाई की ओर से आपको नमस्कार, श्रीमती हंटिंगडन, और उन्हें उम्मीद है कि आप दोनों के बीच धीरे-धीरे सुलह हो जाएगी। क्या इतना काफी है, वाल्टर?’ खिड़की की चौखट पर झुके हुए वाल्टर की ओर मुड़ते हुए और उसकी गर्दन में हाथ डालते हुए उस चुलबुली लड़की ने कहा— ‘या मुझे यह कहना चाहिए था कि आपको अपने इतने संवेदनशील व्यवहार पर खेद है? या यह कि आपको उम्मीद है कि वह आपके अपराध को क्षमा कर देंगी?’

‘अरे मूर्ख लड़की! तुम्हें पता नहीं कि तुम क्या कह रही हो,’ उसने गंभीरता से जवाब दिया।

'सचमुच मुझे नहीं पता: क्योंकि मुझे इस बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं है!'

'अब, एस्थर,' श्रीमती हरग्रेव ने बीच में कहा, जो हमारे अलगाव के विषय में समान रूप से अनभिज्ञ थीं, लेकिन कम से कम यह तो देख ही रही थीं कि उनकी बेटी बहुत ही अनुचित व्यवहार कर रही थी, 'मुझे आपसे कमरे से बाहर जाने के लिए कहना ही

होगा!'

'कृपा करके ऐसा न करें, श्रीमती हरग्रेव, क्योंकि मैं इसे स्वयं ही छोड़ने जा रहा हूँ,' मैंने कहा और तुरंत विदा ले ली।

श्री हरग्रेव के अपनी बहन को मुझसे मिलवाने के लगभग एक सप्ताह बाद, उनका व्यवहार शुरू में हमेशा की तरह ठंडा, दूर, आधा शाही, आधा उदास और कुल मिलाकर दुखी था; लेकिन इस बार एस्थर ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की: जाहिर तौर पर उसे बेहतर शिष्टाचार सिखाया गया था। उसने मुझसे बात की, और अपने प्यारे और स्नेही साथी छोटे आर्थर के साथ हँसी-मजाक किया और खेली। आर्थर ने, मुझे थोड़ी असहजता देते हुए, उसे कमरे से बाहर हॉल में और फिर बगीचे में दौड़ने के लिए फुसलाया। मैं आग जलाने के लिए उठा। श्री हरग्रेव ने पूछा कि क्या मुझे ठंड लग रही है, और दरवाजा बंद कर दिया - यह बहुत ही अनुचित हस्तक्षेप था, क्योंकि मैंने सोचा था कि अगर वे शोर मचाने वाले साथी जल्दी वापस नहीं आए तो मैं उनके पीछे चला जाऊँगा। फिर उन्होंने स्वयं आग के पास जाकर मुझसे पूछा कि क्या मुझे पता है कि श्री हंटिंगडन अब लॉर्ड लोबोरो के निवास पर हैं, और संभवतः कुछ समय तक वहीं रहेंगे।

'नहीं; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,' मैंने लापरवाही से जवाब दिया; और अगर मेरा गाल आग की तरह लाल हो गया था, तो वह प्रश्न के कारण था न कि उस जानकारी के कारण जो उसने दी थी।

उन्होंने कहा, 'आपको इस पर कोई आपत्ति तो नहीं है?'

'बिल्कुल नहीं, अगर लॉर्ड लोबोरो को उनकी संगति पसंद है।'

तो क्या अब तुम्हारे मन में उसके लिए कोई प्यार नहीं बचा है?

'बिल्कुल भी नहीं।'

मुझे पता था—मुझे पता था कि तुम इतने उच्च विचारों वाले और स्वभाव से इतने पवित्र हो कि तुम ऐसे व्यक्ति को, जो पूरी तरह से झूठा और आक्रोश और घृणा के अलावा किसी भी भावना से दूषित हो, देखना जारी नहीं रख सकते!

'क्या वह तुम्हारा दोस्त नहीं है?' मैंने आग से अपनी निगाहें हटाकर उसके चेहरे की ओर करते हुए कहा, शायद मेरे चेहरे पर भी वही भाव झलक रहे थे जो वह किसी और के प्रति रखता था।

'हाँ, वो था,' उसने पहले जैसी ही शांत गंभीरता से उत्तर दिया; 'लेकिन यह

सोचकर मुझे गलत मत समझिए कि मैं उस व्यक्ति के प्रति अपनी मित्रता और सम्मान बनाए रख सकता हूँ जिसने इतने घृणित और निर्दयी तरीके से एक इतने महान व्यक्ति को त्याग दिया और उसे चोट पहुँचाई – खैर, मैं इस बारे में बात नहीं करूँगा। लेकिन मुझे बताइए, क्या आप कभी बदला लेने के बारे में नहीं सोचते?'

'बदला! नहीं— उससे क्या फायदा होगा?— इससे न तो वह सुधरेगा और न ही मैं खुश होऊंगी।'

'श्रीमती हंटिंगडन, मुझे नहीं पता कि आपसे कैसे बात करूं,' उसने मुस्कुराते हुए कहा; 'आप आधी स्त्री हैं – आपका स्वभाव आधा मानवीय और आधा देवदूत जैसा होना चाहिए। आपकी ऐसी अच्छाई मुझे अभिभूत कर देती है; मुझे समझ नहीं आता कि इसका क्या अर्थ निकालूं।'

'तो फिर, महोदय, मुझे डर है कि आपकी हालत आपकी अपेक्षा से कहीं अधिक खराब होगी, यदि मैं, एक साधारण मनुष्य, आपके स्वयं के स्वीकारोक्ति के अनुसार, आपसे इतना श्रेष्ठ हूँ; और चूंकि हमारे बीच कोई सहानुभूति नहीं है, मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि हम दोनों कोई अधिक अनुकूल साथी खोज लें।' और तुरंत खिड़की की ओर बढ़ते हुए, मैं अपने छोटे बेटे और उसके हंसमुख युवा मित्र को देखने लगा।

'नहीं, मैं तो एक साधारण इंसान हूँ,' श्री हरग्रेव ने उत्तर दिया। 'मैं खुद को अपने साथियों से कमतर नहीं होने दूँगा; लेकिन आप, महोदया – मैं भी यही मानता हूँ कि आपके जैसा कोई नहीं है। लेकिन क्या आप खुश हैं?' उन्होंने गंभीर स्वर में पूछा।

'मुझे लगता है कि मैं भी कुछ अन्य लोगों की तरह ही खुश हूं।'

क्या आप उतने खुश हैं जितना आप होना चाहते हैं?

'इस दुनिया से परे आने वाले व्यक्ति से अधिक सौभाग्यशाली कोई नहीं है।'

'एक बात तो मैं जानता हूँ,' उसने गहरी उदास आह भरते हुए उत्तर दिया; 'तुम मुझसे कहीं अधिक खुश हो।'

'तो मुझे आपके लिए बहुत दुख है,' मैंने जवाब देने से खुद को रोक नहीं पाया।

'क्या सचमुच? नहीं, क्योंकि अगर आप होते तो मुझे राहत देने में आपको खुशी होती।'

और अगर मैं खुद को या किसी और को चोट पहुंचाए बिना ऐसा कर सकता, तो मैं ऐसा जरूर करता।

'क्या आप सोच सकती हैं कि मैं चाहूँ कि आप खुद को चोट पहुँचाएँ? नहीं: इसके

विपरीत, मुझे अपनी खुशी से ज़्यादा आपकी खुशी की कामना है। आप अभी दुखी हैं, श्रीमती हंटिंगडन,’ उन्होंने मेरी आँखों में सीधे देखते हुए कहा। ‘आप शिकायत नहीं करतीं, लेकिन मैं देखता हूँ—और महसूस करता हूँ—और जानता हूँ कि आप दुखी हैं—और तब तक दुखी रहेंगी जब तक आप अपने गर्म और धड़कते दिल के चारों ओर बर्फ की अभेद्य दीवारें बनाए रखेंगी; और मैं भी दुखी हूँ। मुझ पर मुस्कुराइए और मैं खुश हो जाऊँगा: मुझ पर भरोसा कीजिए, और आप भी खुश हो जाएँगी, क्योंकि अगर आप एक स्त्री हैं तो मैं आपको खुश कर सकता हूँ—और मैं यह आपकी मर्ज़ी के बिना भी करूँगा!’ उन्होंने दाँतों के बीच से बुदबुदाते हुए कहा; ‘और जहाँ तक दूसरों की बात है, यह सिर्फ़ हमारे बीच का मामला है: आप अपने पति को चोट नहीं पहुँचा सकतीं, आप जानती हैं, और इस मामले में किसी और का कोई लेना-देना नहीं है।’

'मेरा एक बेटा है, मिस्टर हरग्रेव, और आपकी एक माँ है,' मैंने खिड़की से पीछे हटते हुए कहा, जहाँ वह मेरे पीछे-पीछे आया था।

‘उन्हें जानने की ज़रूरत नहीं है,’ उसने कहना शुरू किया; लेकिन इससे पहले कि दोनों तरफ से कुछ और कहा जा सकता, एस्थर और आर्थर कमरे में वापस आ गए। एस्थर ने वाल्टर के लाल, उत्तेजित चेहरे पर एक नज़र डाली, और फिर मेरे चेहरे पर – जो शायद थोड़ा लाल और उत्तेजित था, हालाँकि कारण बिल्कुल अलग थे। उसने सोचा होगा कि हम दोनों के बीच बहुत ज़ोरदार झगड़ा हुआ था, और वह इस बात से स्पष्ट रूप से परेशान और विचलित थी; लेकिन वह या तो बहुत विनम्र थी या अपने भाई के गुस्से से बहुत डरती थी, इसलिए उसने इस बारे में कुछ नहीं कहा। वह सोफे पर बैठ गई, और अपने सुनहरे घुंघराले बालों को, जो उसके चेहरे पर बिखरे हुए थे, समेटते हुए, तुरंत बगीचे और अपने छोटे साथी के बारे में बातें करने लगी, और अपने सामान्य लहजे में तब तक बकबक करती रही जब तक कि उसके भाई ने उसे जाने के लिए नहीं कहा।

‘अगर मैंने कुछ ज़्यादा ही भावुक होकर बोल दिया हो तो मुझे माफ़ कर देना,’ विदा लेते हुए उसने धीरे से कहा, ‘वरना मैं खुद को कभी माफ़ नहीं कर पाऊँगा।’ एस्थर मुस्कुराई और मेरी तरफ देखा: मैंने बस झुककर अभिवादन किया, और उसका चेहरा उतर गया। उसे लगा कि वाल्टर की उदारता का यह अच्छा प्रतिफल नहीं था, और वह अपने दोस्त से निराश थी। बेचारी बच्ची, उसे अपने आस-पास की दुनिया का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है!

इसके बाद कई हफ्तों तक श्री हरग्रेव को मुझसे अकेले में मिलने का मौका नहीं मिला; लेकिन जब भी वे मिले, उनके व्यवहार में पहले से कहीं अधिक घमंड और गहरी उदासी झलक रही थी। ओह, उन्होंने मुझे कितना परेशान किया! अंततः मुझे ग्रोव में आना-जाना लगभग पूरी तरह बंद करना पड़ा, जिससे श्रीमती हरग्रेव बहुत नाराज हुईं और बेचारी एस्थर को बहुत दुख हुआ, जो वास्तव में मेरी संगति को बहुत महत्व देती थी और जिसे अपने भाई की गलती का खामियाजा नहीं भुगतना चाहिए था। लेकिन वह अथक शत्रु अभी पराजित नहीं हुआ था: ऐसा लगता था मानो वह हमेशा चौकन्ना रहता हो। मैं अक्सर उसे परिसर के पास से धीरे-धीरे घोड़े पर सवार होकर गुजरते हुए देखता था, वह जाते समय चारों ओर ध्यान से देखता रहता था - या, अगर मैं नहीं देखता था, तो राहेल देख लेती थी। उस तेज नजर वाली महिला ने जल्द ही हमारे बीच के हालात को भांप लिया और नर्सरी की खिड़की से दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखते हुए, अगर वह मुझे सैर पर जाने की तैयारी करते हुए देखती, तो मुझे चुपके से सूचना दे देती, खासकर तब जब उसे लगता कि वह आसपास है या जिस रास्ते से मैं जा रहा हूं, उस रास्ते में वह मुझसे मिल सकता है या मुझे पकड़ सकता है। तब मैं अपनी सैर टाल देता, या उस दिन पार्क और बगीचों में ही रहता, या अगर प्रस्तावित सैर कोई जरूरी काम होता, जैसे बीमार या पीड़ित से मिलना, तो मैं राहेल को अपने साथ ले जाता, और तब मुझे कभी कोई परेशान नहीं करता था।

लेकिन नवंबर की शुरुआत में, एक सुहावने, धूप भरे दिन, मैं गाँव के स्कूल और कुछ गरीब किरायेदारों से मिलने के लिए अकेले ही निकली थी। लौटते समय, मुझे अपने पीछे एक घोड़े के तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी, जो तेज़ी से और लगातार दौड़ता हुआ आ रहा था। आस-पास कोई बाड़ या रास्ता नहीं था जिससे मैं खेतों में भाग सकूँ, इसलिए मैं चुपचाप चलती रही और मन ही मन सोचती रही, 'शायद वह न हो; और अगर वह है, और अगर वह मुझे परेशान करता है, तो यह आखिरी बार होगा, मैं ठान चुकी हूँ, अगर शब्दों और नज़र में उसकी निर्मम धृष्टता और अथाह भावुकता के खिलाफ कोई शक्ति हो।'

घोड़ा जल्द ही मेरे पास आ गया और लगाम कसकर मेरे बगल में आ गया। वह श्री हरग्रेव थे। उन्होंने मुझे एक कोमल और उदास मुस्कान के साथ अभिवादन किया, लेकिन मुझे आखिरकार पकड़ लेने की उनकी विजयी संतुष्टि इतनी स्पष्ट थी कि यह

प्रयास पूरी तरह विफल रहा। उनके अभिवादन का संक्षिप्त उत्तर देने और ग्रोव में मौजूद महिलाओं के बारे में पूछने के बाद, मैं मुड़कर आगे बढ़ गया; लेकिन वह मेरे पीछे-पीछे आए और अपने घोड़े को मेरे बगल में ही रखा: यह स्पष्ट था कि उनका इरादा पूरी यात्रा में मेरा साथी बनने का था।

'अच्छा! मुझे ज्यादा परवाह नहीं। अगर आपको एक और अस्वीकृति चाहिए, तो ले लीजिए—स्वागत है,' मैंने मन ही मन कहा। 'अब आगे क्या?'

यह प्रश्न, हालांकि अनकहा था, लेकिन इसका उत्तर जल्द ही मिल गया; कुछ उदासीन विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणियों के बाद, उन्होंने गंभीर स्वर में मेरी मानवता से निम्नलिखित अपील शुरू की: —

अगले अप्रैल में आपको पहली बार देखे हुए चार साल हो जाएंगे, श्रीमती हंटिंगडन - आप शायद वह घटना भूल गई हों, लेकिन मैं कभी नहीं भूल सकता। तब मैं आपकी बहुत प्रशंसा करता था, लेकिन आपसे प्रेम करने की हिम्मत नहीं कर पाया। अगली शरद ऋतु में मैंने आपके इतने सारे गुण देखे कि मैं आपसे प्रेम किए बिना नहीं रह सका, हालांकि इसे दिखाने की हिम्मत नहीं कर पाया। तीन साल से अधिक समय से मैं पूर्ण पीड़ा झेल रहा हूँ। दबी हुई भावनाओं, तीव्र और व्यर्थ इच्छाओं, मौन दुःख, कुचली हुई आशाओं और कुचले हुए स्नेह की पीड़ा से मैंने इतना कष्ट सहा है जितना मैं बता नहीं सकता, या आप कल्पना भी नहीं कर सकतीं - और आप इसकी वजह थीं, और पूरी तरह से निर्दोष नहीं। मेरी जवानी ढल रही है; मेरे भविष्य अंधकारमय हो गए हैं; मेरा जीवन एक उजाड़ खालीपन है; मुझे दिन-रात आराम नहीं मिलता: मैं अपने और दूसरों के लिए बोझ बन गया हूँ, और आप मुझे एक शब्द से - एक नज़र से - बचा सकती थीं, और आप ऐसा नहीं करेंगी - क्या यह सही है?

मैंने उत्तर दिया, 'पहली बात तो यह है कि मुझे आप पर विश्वास नहीं है; दूसरी बात यह है कि यदि आप इतने मूर्ख बनना चाहते हैं, तो मैं इसे रोक नहीं सकता।'

"यदि तुम दिखावा करती हो," उसने गंभीरता से उत्तर दिया, "कि तुम हमारी प्रकृति की सर्वोत्तम, सबसे प्रबल, सबसे दिव्य प्रेरणाओं को मूर्खता समझती हो, तो मैं तुम पर विश्वास नहीं करता। मैं जानता हूँ कि तुम वह निर्दयी, कठोर प्राणी नहीं हो जैसा तुम होने का नाटक करती हो—तुम्हारे पास भी कभी हृदय था, जो तुमने अपने पति को दे दिया। जब तुमने पाया कि वह उस अनमोल खजाने के बिल्कुल अयोग्य है, तो तुमने उसे वापस पा लिया; और तुम यह दिखावा नहीं करोगी कि तुमने उस

कामुक, सांसारिक मन वाले दुराचारी से इतना गहरा, इतना समर्पित प्रेम किया कि तुम कभी किसी और से प्रेम नहीं कर सकती? मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रकृति में ऐसी भावनाएँ हैं जो अभी तक प्रकट नहीं हुई हैं; मैं यह भी जानता हूँ कि अपनी वर्तमान उपेक्षित, अकेली अवस्था में तुम दुखी हो और दुखी ही रहोगी। तुममें दो मनुष्यों को वास्तविक पीड़ा की अवस्था से ऐसी असीम परमानंद की अवस्था तक पहुँचाने की शक्ति है जो केवल उदार, महान, आत्म-विस्मृत प्रेम ही दे सकता है (क्योंकि यदि तुम चाहो तो मुझसे प्रेम कर सकती हो); आप मुझसे कह सकते हैं कि आप मुझे तुच्छ समझते हैं और मुझसे घृणा करते हैं, लेकिन चूंकि आपने मुझे स्पष्ट बोलने का उदाहरण दिया है, इसलिए मैं जवाब दूंगा कि मैं आपकी बात पर विश्वास नहीं करता। लेकिन आप ऐसा नहीं करेंगे! आप तो हमें दुखी ही छोड़ना चाहते हैं; और आप बड़ी बेपरवाही से कहते हैं कि यह ईश्वर की इच्छा है कि हम ऐसे ही रहें। आप इसे धर्म कह सकते हैं, लेकिन मैं इसे बेतहाशा कट्टरता कहता हूँ!

मैंने कहा, 'तुम्हारे और मेरे लिए एक और जीवन है। अगर ईश्वर की यही इच्छा है कि हम आज आँसुओं में बीज बोएँ, तो ऐसा केवल इसलिए है ताकि हम परलोक में आनंद पा सकें। उनकी यही इच्छा है कि हम अपनी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए दूसरों को दुख न पहुँचाएँ; और तुम्हारे पास माँ, बहनें और मित्र हैं जिन्हें तुम्हारी बदनामी से बहुत दुख होगा; और मेरे भी मित्र हैं, जिनकी मन की शांति मेरी या तुम्हारी खुशी के लिए मेरी सहमति के बिना कभी नहीं कुर्बान होगी; और अगर मैं संसार में अकेला होता, तब भी मेरे पास मेरा ईश्वर और मेरा धर्म होता, और मैं अपने कर्तव्य को बदनाम करने और स्वर्ग के प्रति अपने विश्वास को तोड़ने के बजाय मरना पसंद करता, ताकि कुछ क्षणिक और झूठी खुशी के कुछ पल न गुज़ार सकूँ - ऐसी खुशी जो यहाँ भी दुख में ही समाप्त होगी - न अपने लिए और न ही किसी और के लिए!'

"किसी भी तरह की बदनामी, दुख या त्याग की कोई ज़रूरत नहीं है," वह अड़े रहे। "मैं तुमसे घर छोड़ने या दुनिया की राय को चुनौती देने के लिए नहीं कह रहा हूँ।" लेकिन मुझे उनके सभी तर्कों को दोहराने की ज़रूरत नहीं है। मैंने अपनी पूरी क्षमता से उनका खंडन किया; लेकिन उस समय मेरी क्षमता बहुत कम थी, क्योंकि मैं इस बात से बहुत क्रोधित और शर्मिंदा था कि उन्होंने मुझसे इस तरह बात करने की हिम्मत कैसे की। मैं उनके शक्तिशाली कुतर्कों का ठीक से जवाब देने के लिए अपने विचारों और शब्दों पर पर्याप्त नियंत्रण नहीं रख पा रहा था। हालाँकि, यह देखकर कि उन्हें

तर्क से चुप नहीं कराया जा सकता, और वे अपने कथित लाभ पर मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे, और उन दावों का मज़ाक उड़ाने का साहस कर रहे थे जिन्हें साबित करने की हिम्मत मुझमें नहीं थी, मैंने अपना तरीका बदल दिया और एक दूसरी योजना अपनाई।

मैंने गंभीरता से कहा, 'क्या तुम मुझसे सचमुच प्यार करते हो?', थोड़ा रुककर और शांत भाव से उसके चेहरे की ओर देखते हुए।

'क्या मैं तुमसे प्यार करता हूँ!' वह चिल्लाया।

'सचमुच?' मैंने पूछा।

उसका चेहरा चमक उठा; उसे लगा कि उसकी जीत निकट है। उसने अपने प्रेम की सच्चाई और दृढ़ता का जोशीला प्रदर्शन शुरू किया, जिसे मैंने एक अन्य प्रश्न पूछकर रोक दिया:

लेकिन क्या यह स्वार्थी प्रेम नहीं है? क्या आपमें इतना निःस्वार्थ स्नेह है कि आप मेरे लिए अपनी खुशी का त्याग कर सकें?

मैं आपकी सेवा में अपना जीवन भी दे दूंगा।

'मुझे तुम्हारी जिंदगी नहीं चाहिए; लेकिन क्या तुम्हें मेरी पीड़ाओं के प्रति इतनी सच्ची सहानुभूति है कि तुम खुद को थोड़ी असुविधा होने के बावजूद उन्हें दूर करने का प्रयास करो?'

'मुझे आजमा कर देखो।'

यदि आपने ऐसा किया है, तो इस विषय का ज़िक्र फिर कभी न करें। आप किसी भी तरह से इस विषय को नहीं उठा सकते, अन्यथा आपके दुख और भी बढ़ जाएँगे, जिनका आप इतने भावुकता से बखान करते हैं। मेरे पास एक नेक अंतरात्मा और ईश्वर में आशा और भरोसे के सिवा कुछ नहीं बचा है, और आप लगातार इन्हें मुझसे छीनने का प्रयास कर रहे हैं। यदि आप ऐसा करना जारी रखते हैं, तो मुझे आपको अपना सबसे बड़ा शत्रु मानना पड़ेगा।

लेकिन मेरी बात एक पल के लिए सुनो —

नहीं, महोदय! आपने कहा था कि आप मेरी सेवा में अपना प्राण त्याग देंगे; मैं आपसे केवल एक विशेष बिंदु पर मौन रहने का अनुरोध करता हूँ। मैंने स्पष्ट रूप से कहा है; और जो मैं कहता हूँ, वही करता हूँ। यदि आप मुझे इस प्रकार और परेशान करते रहे, तो मुझे यह निष्कर्ष निकालना होगा कि आपके दावे पूरी तरह झूठे हैं, और

आप अपने हृदय में मुझसे उतनी ही घृणा करते हैं जितना आप प्रेम का दावा करते हैं!

उसने अपने होंठ दबाए और कुछ देर तक चुपचाप जमीन पर अपनी नजरें गड़ाए रहा।

अंत में, उसने मेरी ओर टकटकी लगाए हुए कहा, "तो मुझे तुम्हें छोड़ना होगा। मानो वह आखिरी उम्मीद लगाए बैठा हो कि उन गंभीर शब्दों से मेरे भीतर उत्पन्न हुई असहनीय पीड़ा या निराशा का कोई संकेत मुझे दिखाई दे। मुझे तुम्हें छोड़ना होगा। मैं यहाँ नहीं रह सकता और अपने विचारों और इच्छाओं के इस सर्वव्यापी विषय पर हमेशा के लिए चुप नहीं रह सकता।"

मैंने उत्तर दिया, 'पहले, मुझे लगता है, आप घर पर बहुत कम समय बिताते थे; यदि वास्तव में आवश्यक हो तो कुछ समय के लिए फिर से घर से बाहर जाने में आपको कोई नुकसान नहीं होगा।'

'अगर यह सचमुच संभव हो,' उसने बुदबुदाते हुए कहा; 'और क्या तुम मुझे इतनी बेरुखी से जाने के लिए कह सकते हो? क्या तुम सचमुच ऐसा चाहते हो?'

'बिल्कुल, मैं ऐसा ही चाहता हूँ। अगर आप मुझे बिना सताए नहीं देख सकते, जैसा कि आपने हाल ही में किया है, तो मैं खुशी-खुशी विदा ले लूँगा और फिर कभी आपसे नहीं मिलूँगा।'

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि घोड़े से झुककर मेरी ओर हाथ बढ़ाया। मैंने उनके चेहरे की ओर देखा और उसमें आत्मा की ऐसी सच्ची पीड़ा देखी कि चाहे घोर निराशा हो, घायल स्वाभिमान हो, मंद प्रेम हो या प्रचंड क्रोध, मैं बिना झिझक के अपना हाथ उनके हाथ में ऐसे रख दिया जैसे किसी मित्र को विदाई दे रही हो। उन्होंने मेरा हाथ कसकर पकड़ा और तुरंत अपने घोड़े को एड़ी मारकर सरपट दौड़ पड़े। कुछ ही समय बाद मुझे पता चला कि वे पेरिस चले गए हैं, जहाँ वे अभी भी हैं; और वे जितने लंबे समय तक वहाँ रहें, मेरे लिए उतना ही अच्छा है।

मैं इस मुक्ति के लिए ईश्वर का आभारी हूं!

अध्याय 38

20 दिसंबर, 1826 — मेरी शादी की पाँचवीं सालगिरह, और मुझे उम्मीद है कि इस छत के नीचे बिताई जाने वाली ये मेरी आखिरी सालगिरह होगी। मैंने अपना संकल्प बना लिया है, योजना तैयार कर ली है, और कुछ हद तक उसे अमल में भी ला दिया है। मेरा अंतरात्मा मुझे दोष नहीं देता, लेकिन जब तक मेरा इरादा पूरी तरह से विकसित नहीं हो जाता, तब तक मैं इन लंबी सर्दियों की शामों में से कुछ समय अपनी संतुष्टि के लिए इस बात को बताने में बिताना चाहता हूँ: यह एक नीरस मनोरंजन तो है, लेकिन एक उपयोगी काम का आभास होने और एक कर्तव्य के रूप में किए जाने के कारण, यह मुझे किसी हल्के-फुल्के काम से कहीं अधिक पसंद आएगा।

सितंबर में, शांत ग्रासडेल एक बार फिर महिलाओं और पुरुषों (जिन्हें ऐसा कहा जाता था) के एक समूह से गुलजार हो उठा, जिसमें पिछले वर्ष आमंत्रित किए गए लोगों के साथ-साथ दो-तीन और लोग शामिल थे, जिनमें श्रीमती हरग्रेव और उनकी छोटी बेटी भी थीं। मेज़बान की सुविधा और आनंद के लिए सज्जनों और लेडी लोबोरो को आमंत्रित किया गया था; अन्य महिलाओं को, मेरा मानना है, दिखावे के लिए, और मुझे नियंत्रण में रखने और मेरे व्यवहार को विवेकपूर्ण और सभ्य बनाने के लिए बुलाया गया था। लेकिन महिलाएं केवल तीन सप्ताह ही रुकीं; दो अपवादों को छोड़कर, सज्जन दो महीने से अधिक समय तक रुके: क्योंकि उनके आतिथ्य सत्कारकर्ता उनसे विदा नहीं लेना चाहते थे और अपने तेज बुद्धि, अपने निर्मल विवेक और अपनी प्रिय और प्रेममयी पत्नी के साथ अकेले नहीं रहना चाहते थे।

लेडी लोबोरो के आगमन के दिन, मैं उनके कमरे में उनके पीछे गया और उनसे साफ-साफ कहा कि अगर मुझे यह मानने का कोई कारण मिला कि उनका मिस्टर हंटिंगडन के साथ अभी भी आपराधिक संबंध है, तो मैं उनके पति को इस बात की जानकारी देना अपना परम कर्तव्य समझूंगा—या कम से कम उनके संदेह को जगाना—चाहे यह कितना भी कष्टदायक हो या इसके परिणाम कितने भी भयानक हों। पहले तो वह इस अप्रत्याशित और दृढ़ता से, फिर भी शांत भाव से कही गई बात से चौंक गईं; लेकिन पल भर में संभलकर उन्होंने शांत भाव से उत्तर दिया कि अगर मुझे उनके व्यवहार में कुछ भी निंदनीय या संदिग्ध दिखाई दे, तो वह मुझे उनके पति को सब कुछ बताने की पूरी छूट देंगी। इससे संतुष्ट होकर मैं वहां से चला गया; और निश्चित

रूप से उसके बाद मुझे उनके व्यवहार में कुछ भी विशेष रूप से निंदनीय या संदिग्ध नहीं दिखाई दिया; लेकिन मुझे अन्य मेहमानों का भी ध्यान रखना था, और मैंने उन पर कड़ी नजर नहीं रखी—क्योंकि सच कहूं तो, मुझे उनके बीच कुछ भी देखने से डर लग रहा था। अब मैं इसे अपनी चिंता का विषय नहीं मानता था, और यदि लॉर्ड लोबोरो को इस बारे में जानकारी देना मेरा कर्तव्य था, तो यह एक कष्टदायक कर्तव्य था, और मुझे इसे निभाने के लिए बुलाए जाने से डर लगता था।

लेकिन मेरे डर का अंत एक ऐसे तरीके से हुआ जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। एक शाम, आगंतुकों के आगमन के लगभग दो सप्ताह बाद, मैं पुस्तकालय में कुछ मिनटों के लिए जबरन खुशमिजाजी और उबाऊ बातचीत से राहत पाने के लिए चली गई थी, क्योंकि इतने लंबे समय तक एकांतवास के बाद, जो मुझे अक्सर नीरस लगता था, मैं हमेशा अपनी भावनाओं पर अत्याचार करना और बोलने, मुस्कुराने, सुनने और एक चौकस मेज़बान या यहां तक कि एक हंसमुख दोस्त की भूमिका निभाने के लिए अपनी शक्ति को उकसाना बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। मैं खिड़की के पास आराम से बैठी थी और पश्चिम की ओर देख रही थी, जहां शाम की साफ सुनहरी रोशनी में अंधेरा छाई पहाड़ियाँ स्पष्ट रूप से उभर रही थीं, जो धीरे-धीरे ऊपर के आकाश के शुद्ध, हल्के नीले रंग में विलीन होती जा रही थीं, जहां एक चमकीला तारा चमक रहा था, मानो वादा कर रहा हो - 'जब वह बुझती रोशनी चली जाएगी, तो दुनिया अंधेरे में नहीं रहेगी, और जो लोग ईश्वर पर भरोसा करते हैं, जिनके मन अविश्वास और पाप के कोहरे से मुक्त हैं, वे कभी भी पूरी तरह से निराश नहीं होंगे,' - तभी मैंने पास आते हुए एक तेज़ कदम की आवाज़ सुनी, और लॉर्ड लोबोरो ने प्रवेश किया। यह कमरा अब भी उसका पसंदीदा ठिकाना था। उसने असामान्य ताकत से दरवाज़ा खोला और अपनी टोपी को बेपरवाही से फेंक दिया। आखिर उसे क्या हो गया था? उसका चेहरा भयानक रूप से पीला पड़ गया था; उसकी आँखें ज़मीन पर टिकी हुई थीं; उसके दाँत भींचे हुए थे; उसका माथा पीड़ा की बूंदों से चमक रहा था। यह स्पष्ट था कि उसे आखिरकार अपने साथ हुए अन्याय का एहसास हो गया था!

मेरी उपस्थिति से बेखबर, वह भयभीत होकर बेचैनी से कमरे में इधर-उधर घूमने लगा, अपने हाथों को ज़ोर से मलने लगा और धीमी कराहें या अस्पष्ट शब्द बुदबुदाने लगा। मैंने उसे यह बताने के लिए एक हरकत की कि वह अकेला नहीं है; लेकिन वह इतना मग्न था कि उसने इस पर ध्यान ही नहीं दिया। शायद, जब उसकी पीठ मेरी

तरफ थी, मैं कमरे के उस पार जाकर चुपके से निकल जाऊं। मैंने ऐसा करने की कोशिश करने के लिए उठना शुरू किया, लेकिन तभी उसने मुझे देख लिया। वह चौंक गया और एक पल के लिए स्थिर खड़ा रहा; फिर उसने अपने बहते माथे को पोंछा, और एक प्रकार की अस्वाभाविक शांति के साथ मेरी ओर बढ़ते हुए, गहरी, लगभग गंभीर आवाज़ में बोला, — 'श्रीमती हंटिंगडन, मुझे कल आपसे विदा लेनी होगी।'

‘कल!’ मैंने दोहराया। ‘मैं कारण नहीं पूछता।’

'तो फिर तुम यह जानते हो, और तुम इतने शांत कैसे हो सकते हो!' उसने गहरी हैरानी से मेरी ओर देखते हुए कहा, जिसमें एक प्रकार की द्वेषपूर्ण कड़वाहट भी मिली हुई थी, जैसा कि मुझे प्रतीत हुआ।

‘मैं अपने पति के चरित्र के बारे में इतने लंबे समय से जानती हूँ—’ मैंने थोड़ा रुककर कहा, ‘कि अब मुझे कोई भी बात चौंकाती नहीं है।’

‘लेकिन यह—आपको इसके बारे में कब से पता है?’ उसने अपनी मुट्ठी बंद करके बगल की मेज पर रखते हुए और मेरी ओर ध्यान से देखते हुए पूछा।

मुझे एक अपराधी जैसा महसूस हुआ।

मैंने उत्तर दिया, 'ज्यादा देर नहीं लगेगी।'

‘तुम्हें पता था!’ वह घोर आक्रोश के साथ चिल्लाया, ‘और तुमने मुझे नहीं बताया! तुमने मुझे धोखा देने में मदद की!’

'मेरे स्वामी, मैंने आपको धोखा देने में कोई सहायता नहीं की।'

‘तो फिर तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?’

क्योंकि मुझे पता था कि इससे आपको दुख होगा। मुझे उम्मीद थी कि वह अपने काम पर लौट आएगी, और फिर इस तरह से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंचाने की कोई जरूरत नहीं होगी।

‘हे भगवान! यह कब से चल रहा है? श्रीमती हंटिंगडन, कब से? — मुझे बताइए — मुझे जानना ही होगा!’ उसने तीव्र और भयभीत उत्सुकता के साथ कहा।

'दो साल, मुझे लगता है।'

‘हे भगवान! और इसने मुझे इतने समय तक धोखा दिया!’ वह दर्द से कराहते हुए मुंह फेरकर फिर से बेचैनी में कमरे में इधर-उधर घूमने लगा। मेरा दिल त्रस्त हो गया; लेकिन मैं उसे सांत्वना देने की कोशिश करना चाहता था, हालांकि मुझे नहीं पता था कि कैसे।

मैंने कहा, ‘वह एक दुष्ट स्त्री है। उसने तुम्हें नीचतापूर्वक धोखा दिया है और तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है। वह तुम्हारे पछतावे के भी उतनी ही अयोग्य है जितनी तुम्हारे स्नेह के। उसे तुम्हें और नुकसान न पहुँचाने दो; उससे दूरी बना लो और अकेले खड़े रहो।’

‘और आप, महोदया,’ उसने सख्ती से कहा, खुद को रोकते हुए और मेरी ओर मुड़ते हुए, ‘आपने भी इस अनुदार छिपाव से मुझे चोट पहुंचाई है!’

मेरे मन में अचानक घृणा उत्पन्न हुई। मेरे भीतर कुछ उठा और मुझे अपनी हार्दिक सहानुभूति के इस कठोर प्रतिफल पर आक्रोश व्यक्त करने और उसी कठोरता से अपना बचाव करने के लिए उकसाया। सौभाग्य से, मैंने उस आवेग के आगे घुटने नहीं टेके। मैंने उसकी पीड़ा देखी जब उसने अचानक अपना माथा पीटते हुए खिड़की की ओर मुड़ा और शांत आकाश की ओर देखते हुए भावुक स्वर में कहा, 'हे भगवान, काश मैं मर जाऊं!' — और मुझे लगा कि उस पहले से ही भरे हुए प्याले में एक बूंद भी कड़वाहट डालना वास्तव में अनुचित होगा। फिर भी मुझे डर है कि मेरे शांत उत्तर में कोमलता से अधिक शीतलता थी: — 'मैं कई बहाने पेश कर सकता हूं जिन्हें कुछ लोग वैध मानेंगे, लेकिन मैं उन्हें गिनने का प्रयास नहीं करूंगा —'

‘मैं उन्हें जानता हूँ,’ उसने जल्दी से कहा: ‘तुम कहोगे कि यह तुम्हारा काम नहीं था: कि मुझे अपना ख्याल खुद रखना चाहिए था; कि अगर मेरी अपनी अज्ञानता ने मुझे इस नरक के गड्ढे में धकेल दिया है, तो मुझे किसी और को दोष देने का कोई अधिकार नहीं है कि उसने मुझे मेरी अपेक्षा से अधिक बुद्धिमान समझा —’

‘मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं गलत था,’ मैंने इस कड़वी बात को अनसुना करते हुए कहा; ‘लेकिन चाहे मेरी गलती साहस की कमी या गलत दयालुता के कारण हुई हो, मुझे लगता है कि आप मुझे बहुत कठोर दोष दे रहे हैं। मैंने लेडी लोबोरो को दो हफ्ते पहले, ठीक उसी समय जब वह आई थीं, बताया था कि अगर वह आपको धोखा देना जारी रखती हैं तो मैं निश्चित रूप से आपको सूचित करना अपना कर्तव्य समझूंगा: उन्होंने मुझे ऐसा करने की पूरी छूट दी थी यदि मुझे उनके आचरण में कुछ भी निंदनीय या संदिग्ध दिखाई दे; मुझे कुछ भी नहीं दिखाई दिया; और मुझे विश्वास था कि उन्होंने अपना रवैया बदल लिया होगा।’

जब मैं बोल रहा था तब भी वह खिड़की से बाहर देखता रहा और उसने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन मेरे शब्दों से जागृत हुई यादों से आहत होकर उसने फर्श पर

पैर पटका, दांत पीसे और माथे पर शिकन डाली, मानो वह तीव्र शारीरिक पीड़ा से ग्रस्त हो।

‘यह गलत था, यह गलत था!’ वह धीरे से बुदबुदाया। ‘इसे कोई माफ नहीं कर सकता; इसका कोई प्रायश्चित नहीं कर सकता, क्योंकि उन वर्षों की अंधभक्ति को कोई वापस नहीं ला सकता; उन्हें मिटा नहीं सकता! कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं!’ उसने फुसफुसाते हुए दोहराया, जिसकी निराशा भरी कड़वाहट में किसी भी प्रकार का आक्रोश नहीं था।

मैंने उत्तर दिया, 'जब मैंने खुद से इस मामले का विश्लेषण किया, तो मैंने स्वीकार किया कि यह गलत था; लेकिन अब मुझे केवल इस बात का अफसोस है कि मैंने इसे पहले इस नजरिए से नहीं देखा, और जैसा कि आप कहते हैं, अतीत को कोई वापस नहीं ला सकता।'

मेरी आवाज़ में या मेरे जवाब के भाव में कुछ ऐसा था जिससे उनका मिजाज बदल गया। मेरी ओर मुड़ते हुए और धुंधली रोशनी में मेरे चेहरे को ध्यान से देखते हुए, उन्होंने पहले की तुलना में नरम स्वर में कहा, "मुझे लगता है कि आपने भी कष्ट सहा है।"

'मुझे शुरू में बहुत कष्ट सहना पड़ा।'

'वह कब था?'

'दो साल पहले; और दो साल बाद आप भी मेरी तरह शांत होंगे, और मुझे विश्वास है कि आप कहीं अधिक खुश होंगे, क्योंकि आप एक पुरुष हैं, और अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं।'

एक पल के लिए उसके चेहरे पर मुस्कान जैसी कोई चीज दिखाई दी, लेकिन वह मुस्कान बहुत ही कड़वी थी।

'क्या आप आजकल खुश नहीं हैं?' उसने संयम बनाए रखने की कोशिश करते हुए और अपनी विपत्ति पर आगे चर्चा न करने का दृढ़ निश्चय करते हुए कहा।

‘खुश?’ मैंने लगभग चिढ़कर दोहराया। ‘क्या मैं ऐसे पति के साथ खुश हो सकती हूँ?’

‘शादी के शुरुआती सालों से ही मैंने तुम्हारे रूप में बदलाव देखा है,’ उसने आगे कहा: ‘मैंने उस शैतान को भी यह बात बताई थी,’ वह दांत पीसते हुए बुदबुदाया; ‘और उसने कहा कि तुम्हारा चिड़चिड़ा स्वभाव ही तुम्हारी खूबसूरती को खत्म कर रहा है:

यह तुम्हें समय से पहले बूढ़ा और बदसूरत बना रहा है, और उसके घर को किसी मठ की कोठरी की तरह घुटन भरा बना चुका है। तुम मुस्कुराती हो, श्रीमती हंटिंगडन; कोई बात तुम्हें विचलित नहीं करती। काश मेरा स्वभाव भी तुम्हारे जैसा शांत होता।’

मैंने कहा, 'मेरा स्वभाव शुरू से शांत नहीं था। मैंने कठिन अनुभवों और अनेक प्रयासों के बल पर शांत दिखना सीखा है।'

इसी समय श्री हैटर्सले कमरे में घुस आए।

‘हैलो, लोबोरो!’ उसने बोलना शुरू किया — ‘ओह! मुझे माफ़ करना,’ मुझे देखते ही वह चौंक उठा। ‘मुझे नहीं पता था कि यह एक आम बातचीत है। खुश हो जाओ, यार,’ उसने आगे कहा और लॉर्ड लोबोरो की पीठ पर एक थपकी दी, जिससे लोबोरो घृणा और चिड़चिड़ाहट भरे भावों के साथ उससे दूर हट गया। ‘आइए, मैं आपसे थोड़ी बात करना चाहता हूँ।’

‘तो फिर बोलो।’

लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि जो मैं कहने वाला हूं वह उस महिला को बिल्कुल पसंद आएगा।

‘तो फिर यह मुझे स्वीकार्य नहीं होगा,’ उनके लॉर्ड ने कमरे से बाहर जाने के लिए मुड़ते हुए कहा।

‘हाँ, ऐसा ही होगा,’ दूसरा चिल्लाया और उसके पीछे-पीछे हॉल में चला गया। ‘अगर तुम्हारे अंदर हिम्मत है, तो यही तुम्हारे लिए सबसे सही मौका होगा। बात बस इतनी सी है, मेरे लड़के,’ उसने अपनी आवाज़ थोड़ी धीमी करते हुए कहा, हालाँकि आधा बंद दरवाज़ा हमारे बीच था, फिर भी मैं उसके कहे हर शब्द को सुन सकता था। ‘मुझे लगता है कि तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव हुआ है—नहीं, अब गुस्सा मत करो; मैं तुम्हें नाराज़ नहीं करना चाहता: ये बस मेरे बोलने का थोड़ा रूखा तरीका है। तुम्हें पता है, मुझे सीधे-सीधे बोलना ही पड़ता है, वरना मैं चुप ही रहता हूँ; और मैं आया हूँ—अब रुको! मुझे समझाने दो—मैं तुम्हें अपनी सेवाएँ देने आया हूँ, क्योंकि हंटिंगडन मेरा दोस्त तो है, पर जैसा कि हम सब जानते हैं, वो एक शैतान बदमाश है, और मैं कुछ समय के लिए तुम्हारा दोस्त बनूँगा। मुझे पता है कि तुम क्या चाहते हो, बात साफ़ करने के लिए: बस उससे एक बार मुकाबला करना है, और फिर तुम ठीक महसूस करोगे; और अगर कोई दुर्घटना हो भी जाए तो— खैर, मुझे यकीन है कि तुम्हारे जैसे हताश इंसान के लिए सब ठीक ही होगा। चलो, अपना हाथ दो, और उस पर इतनी

उदासी मत दिखाओ। समय और जगह बता दो, बाकी मैं संभाल लूंगा।

“यही उपाय है जो मेरे दिल ने, या उसमें छिपे शैतान ने सुझाया है—उससे मिलना और बिना खून बहाए अलग न होना। चाहे मैं गिरूँ या वह, या दोनों, मेरे लिए यह एक असीम राहत होगी, अगर—”

‘बिल्कुल! अच्छा तो फिर, —’

‘नहीं!’ उनके लॉर्ड ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा। ‘यद्यपि मैं उससे हृदय से घृणा करता हूँ और उस पर आने वाली किसी भी विपत्ति पर प्रसन्न होऊँगा, फिर भी मैं उसे ईश्वर के भरोसे छोड़ दूँगा; और यद्यपि मैं अपने जीवन से घृणा करता हूँ, फिर भी मैं उसे भी उसी के भरोसे छोड़ दूँगा जिसने मुझे यह दिया है।’

‘लेकिन देखिए, इस मामले में,’ हैटर्सले ने विनती की —

‘मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूंगा!’ उसके साथी ने झट से मुँह मोड़ते हुए कहा। ‘एक शब्द भी नहीं! मुझे अपने भीतर के शैतान से लड़ने के लिए पहले से ही बहुत कुछ करना है।’

‘तो तुम एक डरपोक मूर्ख हो, और मैं तुमसे अपना हाथ धो लेता हूँ,’ प्रलोभक बड़बड़ाते हुए मुड़ा और चला गया।

‘जी हाँ, जी हाँ, लॉर्ड लोबोरो!’ मैं चिल्लाई और सीढ़ियों की ओर बढ़ते हुए उनका जलता हुआ हाथ थाम लिया। ‘मुझे लगने लगा है कि यह दुनिया आपके लायक नहीं है!’ मेरी इस अचानक उत्तेजना को न समझते हुए, उन्होंने उदास और हैरान निगाहों से मेरी ओर देखा, जिससे मुझे अपने उस आवेग पर शर्म आ गई; लेकिन जल्द ही उनके चेहरे पर एक अधिक मानवीय भाव आ गया, और इससे पहले कि मैं अपना हाथ हटा पाती, उन्होंने उसे प्यार से थाम लिया, और उनकी आँखों में सच्ची भावना की एक चमक दिखाई दी, जब उन्होंने धीरे से कहा, ‘भगवान हम दोनों की मदद करें!’

मैंने उत्तर दिया, ‘आमीन!’ और हम अलग हो गए।

मैं ड्राइंग रूम में लौट आया, जहाँ निस्संदेह अधिकांश लोग मेरी उपस्थिति की अपेक्षा कर रहे होंगे, और एक-दो लोग मेरी उपस्थिति चाहते होंगे। प्रतीक्षालय में श्री हैटर्सले, चुनिंदा श्रोताओं के सामने लॉर्ड लोबोरो की कायरता की निंदा कर रहे थे, जिनमें श्री हंटिंगडन भी शामिल थे, जो मेज से टेक लगाकर आराम से बैठे थे, अपनी धूर्तता पर गर्व कर रहे थे और अपने शिकार का उपहास उड़ा रहे थे, और श्री ग्रिम्सबी, जो पास खड़े चुपचाप अपने हाथ मल रहे थे और शैतानी संतुष्टि के साथ खिलखिला

रहे थे।

ड्राइंग रूम में मुझे लेडी लोबोरो मिलीं, जो स्पष्ट रूप से किसी अच्छी मानसिक स्थिति में नहीं थीं और अपनी बेचैनी को छिपाने के लिए बनावटी ढंग से अत्यधिक प्रसन्नता और जीवंतता का दिखावा कर रही थीं, जो उस समय बिल्कुल अनुचित था। उन्होंने खुद ही सबको बताया था कि उनके पति को घर से अप्रिय समाचार मिला है, जिसके कारण उन्हें तुरंत जाना पड़ा है, और यह बात उनके मन को इतनी परेशान कर रही है कि उन्हें पित्त का तेज सिरदर्द हो गया है। इसी कारण और उनके जाने में जल्दबाजी करने के लिए उन्होंने जो तैयारियां की हैं, उनके चलते उन्हें लगता है कि आज रात उनसे मिलने का सौभाग्य नहीं मिलेगा। हालांकि, उन्होंने जोर देकर कहा कि यह केवल एक व्यावसायिक मामला है, इसलिए वह इसे लेकर परेशान नहीं होना चाहतीं। जब मैं अंदर आया, तभी वह यही कह रही थीं और उन्होंने मुझे ऐसी दृढ़ता और चुनौती भरी निगाह से देखा कि मैं एक साथ आश्चर्यचकित और विचलित हो गया।

'लेकिन मैं परेशान हूँ,' उसने आगे कहा, 'और नाराज़ भी हूँ, क्योंकि मैं अपने स्वामी के साथ जाना अपना कर्तव्य समझती हूँ, और निश्चित रूप से मुझे अपने सभी प्यारे दोस्तों से इतनी अप्रत्याशित रूप से और इतनी जल्दी बिछड़ने का बहुत दुख है।'

'और फिर भी, एनाबेला,' उसके बगल में बैठी एस्थर ने कहा, 'मैंने तुम्हें अपने जीवन में कभी इतने खुशमिजाज नहीं देखा।'

'बिल्कुल सही, मेरी प्रियतमा: क्योंकि मैं आप सबकी संगति का भरपूर आनंद लेना चाहती हूँ, क्योंकि ऐसा लगता है कि यह आखिरी रात है जब तक पता नहीं कब तक मैं आप सबके साथ रह पाऊँगी; और मैं आप सब पर एक अच्छा प्रभाव छोड़ना चाहती हूँ,' — उसने चारों ओर देखा, और अपनी चाची की निगाहें खुद पर टिकी हुई देखकर, शायद उन्हें लगा कि वह उन्हें कुछ ज्यादा ही बारीकी से देख रही हैं, वह चौंक गई और बोली: 'इसी उद्देश्य से मैं आपको एक गीत सुनाऊँगी — क्या मैं सुनाऊँ, चाची? क्या मैं सुनाऊँ, श्रीमती हंटिंगडन? क्या मैं सुनाऊँ, देवियों और सज्जनों? ठीक है। मैं आप सबको खुश करने की पूरी कोशिश करूँगी।'

वह और लॉर्ड लोबोरो मेरे बगल वाले अपार्टमेंट में रहते थे। मुझे नहीं पता कि उन्होंने रात कैसे बिताई, लेकिन मैं रात के अधिकांश समय जागता रहा और उनके भारी कदमों की एकरसता भरी आवाज़ सुनता रहा, जो मेरे कमरे के सबसे नज़दीक

उनके ड्रेसिंग रूम में ऊपर-नीचे चल रहे थे। एक बार मैंने उन्हें रुकते और खिड़की से कुछ फेंकते हुए सुना; और सुबह, उनके जाने के बाद, नीचे घास के मैदान में एक तेज़ धार वाला चाकू मिला; एक रेज़र भी दो टुकड़ों में टूटा हुआ था और अंगीठी की राख में धंसा हुआ था, लेकिन गलते अंगारों से थोड़ा जंग खा चुका था। अपने दुखमय जीवन को समाप्त करने का प्रलोभन इतना प्रबल था, और उससे बचने का उनका संकल्प इतना दृढ़ था।

उस निरंतर कदमों की आहट सुनते हुए मेरा हृदय उसके लिए पीड़ा से भर उठा। अब तक मैं अपने बारे में बहुत सोचती थी और उसके बारे में बहुत कम: अब मैं अपने कष्टों को भूल गई और केवल उसके बारे में सोचने लगी; उस तीव्र स्नेह के बारे में जो बुरी तरह व्यर्थ हो गया, उस अटूट विश्वास के बारे में जिसे बेरहमी से धोखा दिया गया, और—नहीं, मैं उसके द्वारा किए गए अन्याय को गिनने का प्रयास नहीं करूंगी—लेकिन मैं उसकी पत्नी और अपने पति से पहले से कहीं अधिक घृणा करने लगी, और यह घृणा मेरे लिए नहीं, बल्कि उसके लिए थी।

वे सुबह-सुबह ही निकल गए, मेरे अलावा किसी और के सोने से पहले ही, और जैसे ही मैं अपने कमरे से बाहर निकल रहा था, लॉर्ड लोबोरो गाड़ी में अपनी जगह लेने के लिए नीचे उतर रहे थे, जहाँ उनकी पत्नी पहले से ही बैठी हुई थीं; और आर्थर (या मिस्टर हंटिंगडन, जैसा कि मैं उन्हें बुलाना पसंद करता हूँ, क्योंकि दूसरा मेरे बच्चे का नाम है) ने अपने ड्रेसिंग-गाउन में ही अपने 'दोस्त' को अलविदा कहने की बेवजह की गुस्ताखी दिखाई।

'क्या, लोबोरो, तुम अभी जा रहे हो!' उसने कहा। 'अच्छा, सुप्रभात।' उसने मुस्कुराते हुए अपना हाथ बढ़ाया।

मुझे लगता है कि अगर वह क्रोध से कांपती हुई और इतनी कसकर बंधी हुई उस हड्डीनुमा मुट्ठी से सहज रूप से पीछे न हटता, जिसकी उंगलियों के जोड़ त्वचा के ऊपर से सफेद चमक रहे थे, तो दूसरा उसे गिरा देता। भयंकर घृणा से भरे चेहरे के साथ उसे देखते हुए, लॉर्ड लोबोरो ने अपने दांतों के बीच से एक घातक अपशब्द बुदबुदाया, जो वह शांत अवस्था में अपने शब्दों को चुनकर कभी नहीं कहता, और वहां से चला गया।

'मैं इसे अब ईसाई धर्म के विरुद्ध भावना कहता हूँ,' खलनायक ने कहा। 'लेकिन मैं पत्नी के लिए अपने पुराने दोस्त को कभी नहीं छोड़ूँगा। अगर आप चाहें तो मेरी पत्नी

ले सकते हैं, और मैं इसे अच्छा मानता हूँ; मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं कर सकता सिवाय मुआवज़ा देने के, है ना?’

लेकिन लोबोरो सीढ़ियों के निचले हिस्से तक पहुँच चुका था और अब हॉल पार कर रहा था; और मिस्टर हंटिंगडन, रेलिंग पर झुकते हुए, चिल्लाए, 'एनाबेला को मेरा प्यार देना! और मैं आप दोनों को सुखद यात्रा की शुभकामनाएं देता हूँ,' और हंसते हुए अपने कमरे में चले गए।

बाद में उन्होंने उसके जाने पर खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा, 'वह बेहद दबंग और सख्त मिजाज थी। अब मैं फिर से अपनी मर्जी का मालिक बन जाऊंगा और पहले से कहीं ज्यादा सहज महसूस करूंगा।'

अध्याय 39

इस कठिन समय में मेरी सबसे बड़ी चिंता मेरा बेटा था, जिसे उसके पिता और उसके दोस्त एक छोटे बच्चे में पनपने वाली हर बुराई को बढ़ावा देने और उसे हर बुरी आदत सिखाने में आनंद लेते थे—संक्षेप में, उसे 'मर्द बनाना' उनका मुख्य मनोरंजन था; और मुझे उसके बारे में अपनी चिंता और ऐसे प्रशिक्षकों के हाथों से उसे हर हाल में छुड़ाने के अपने दृढ़ संकल्प को सही ठहराने के लिए और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। मैंने पहले उसे हमेशा अपने साथ या नर्सरी में रखने की कोशिश की, और राहेल को विशेष निर्देश दिए कि जब तक ये 'सज्जन' वहाँ रहें, उसे मिठाई खाने के लिए नीचे न आने दें; लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ: उसके पिता ने तुरंत इन आदेशों को रद्द कर दिया; वह उस छोटे बच्चे को एक बूढ़ी नर्स और एक शापित मूर्ख माँ के बीच उदास होकर मरने नहीं देना चाहता था। तो वो छोटा बच्चा हर शाम अपनी नाराज़ माँ की परवाह किए बिना नीचे आता था, और पापा की तरह शराब पीना, मिस्टर हैटर्सले की तरह गालियाँ देना, और मर्दों की तरह अपनी मनमानी करना सीख गया था, और

जब माँ उसे रोकने की कोशिश करती तो वो उसे बुरी तरह डांटता था। उस प्यारे से छोटे बच्चे की भोली-भाली मासूमियत से ये सब करते देखना, और उसकी छोटी सी मासूम आवाज़ में ये सब सुनना, उनके लिए उतना ही अनोखा और मज़ेदार था जितना मेरे लिए असहनीय रूप से दुखद और पीड़ादायक; और जब वो ज़ोर-ज़ोर से खाना परोस देता तो वो खुशी से उन सबकी तरफ देखता और अपनी तीखी हंसी उनकी हंसी में मिला देता। लेकिन अगर उसकी चमकती नीली आँख मुझ पर पड़ती, तो उसकी चमक एक पल के लिए गायब हो जाती, और वो कुछ चिंता से कहता, 'माँ, तुम क्यों नहीं हँस रही हो? पापा, उसे हँसाओ - वो कभी नहीं हँसेगी।'

इसलिए मुझे इन निर्दयी मनुष्यों के बीच रुकना पड़ा, और कपड़े हटाने के तुरंत बाद उन्हें छोड़कर जाने के बजाय अपने बच्चे को उनसे दूर ले जाने का अवसर तलाशना पड़ा, जैसा कि मैं हमेशा करती थी। वह कभी जाना नहीं चाहता था, और मुझे अक्सर उसे जबरदस्ती ले जाना पड़ता था, जिसके लिए वह मुझे बहुत क्रूर और अन्यायपूर्ण समझता था; और कभी-कभी उसके पिता उसे यहीं छोड़ने पर जोर देते थे; और तब मैं उसे उसके दयालु मित्रों के पास छोड़कर अकेले में अपनी कड़वाहट और निराशा में डूबने या इस बड़ी समस्या का समाधान खोजने के लिए अपने दिमाग पर जोर डालने के लिए एकांत में चली जाती थी।

लेकिन यहाँ मुझे श्री हरग्रेव के प्रति न्याय करते हुए यह स्वीकार करना होगा कि मैंने उन्हें कभी बच्चे की शरारतों पर हँसते हुए नहीं देखा, न ही उन्हें मर्दाना उपलब्धियों की उसकी आकांक्षाओं को प्रोत्साहित करते हुए सुना। लेकिन जब उस शरारती बच्चे ने कुछ असाधारण कहा या किया, तो मैंने कभी-कभी उसके चेहरे पर एक अजीब भाव देखा जिसे मैं न तो समझ सका और न ही परिभाषित कर सका: मुँह की मांसपेशियों में हल्की सी फड़कन; आँखों में अचानक एक चमक, जब वह बच्चे और फिर मेरी ओर एक नज़र डालता था: और तब मुझे ऐसा लगता था कि उसके चेहरे पर कठोर, तीव्र, गंभीर संतुष्टि की एक झलक उभरती थी, उस बेबसी भरे क्रोध और पीड़ा को देखकर जो उसे मेरे चेहरे पर निश्चित रूप से दिखाई देती थी। लेकिन एक बार, जब आर्थर का व्यवहार बेहद खराब था, और श्री हंटिंगडन और उनके मेहमान उसे उकसाकर मेरा अपमान कर रहे थे, और मैं उसे कमरे से बाहर निकालने के लिए बेहद बेचैन थी, और अनियंत्रित क्रोध के आवेश में खुद को अपमानित करने ही वाली थी, तभी श्री हरग्रेव अचानक दृढ़ निश्चय के साथ अपनी सीट से उठे, बच्चे को उसके पिता

की गोद से उठाया, जहाँ वह आधा नशे में बैठा था, अपना सिर झुकाकर मेरी ओर हंस रहा था, और मुझे ऐसे अपशब्द कह रहा था जिनका अर्थ उसे खुद भी नहीं पता था, उसे कमरे से बाहर ले गए, और उसे हॉल में बिठाकर मेरे लिए दरवाजा खुला रखा, मेरे जाने पर गंभीरता से झुके, और मेरे पीछे दरवाजा बंद कर दिया। जब मैं अपने व्याकुल और परेशान बच्चे को लेकर जा रही थी, तब मैंने उन्हें और उनके पहले से ही आधे नशे में धुत मेजबान को तीखी बहस करते सुना।

लेकिन यह सब जारी नहीं रहना चाहिए: मेरे बच्चे को इस भ्रष्टाचार के हवाले नहीं छोड़ा जा सकता: ऐसे पिता के साथ विलासिता और समृद्धि में रहने से बेहतर है कि वह एक भगोड़ी माँ के साथ गरीबी और गुमनामी में रहे। ये मेहमान भले ही हमारे साथ ज़्यादा समय तक न रहें, लेकिन वे फिर लौटेंगे: और वह, जो सबसे ज़्यादा नुकसान पहुँचाने वाला है, अपने बच्चे का सबसे बड़ा दुश्मन, फिर भी वहीं रहेगा। मैं अपने लिए तो यह सह सकती हूँ, लेकिन अपने बेटे के लिए अब और नहीं सह सकती: दुनिया की राय और मेरे दोस्तों की भावनाएँ, कम से कम यहाँ तो, अनसुनी रहनी चाहिएं — दोनों ही मुझे मेरे कर्तव्य से विचलित नहीं कर सकतीं। लेकिन मुझे शरण कहाँ मिलेगी, और हम दोनों के लिए जीविका कैसे जुटाऊँगी? ओह, मैं अपने प्यारे बच्चे को सुबह-सुबह लेकर, कोच से M — जाऊँगी, — के बंदरगाह पर भाग जाऊँगी, अटलांटिक महासागर पार करूँगी, और न्यू इंग्लैंड में एक शांत, साधारण घर ढूँढूँगी, जहाँ मैं अपने हाथों की मेहनत से अपना और उसका भरण-पोषण करूँगी। पैलेट और ईज़ल, जो कभी मेरे प्यारे साथी थे, अब मेरे मेहनती साथी बनने वाले हैं। लेकिन क्या मैं एक कलाकार के रूप में इतना कुशल था कि एक अनजान देश में, बिना दोस्तों और बिना सिफारिश के, अपना जीवन यापन कर सकूँ? नहीं; मुझे थोड़ा इंतजार करना होगा; मुझे अपनी प्रतिभा को निखारने और अपनी क्षमताओं के नमूने के रूप में कुछ सार्थक रचना करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी, कुछ ऐसा जो मेरे बारे में सकारात्मक रूप से बताए, चाहे एक वास्तविक चित्रकार के रूप में या एक शिक्षक के रूप में। बेशक, मैं शानदार सफलता की उम्मीद नहीं कर रहा था, लेकिन निश्चित विफलता से कुछ हद तक सुरक्षा अपरिहार्य थी: मैं अपने बेटे को भूखा नहीं छोड़ सकता था। और फिर मुझे यात्रा, किराए और कुछ पैसे की ज़रूरत थी ताकि अगर मैं शुरू में असफल हो जाऊं तो हम अपने घर लौटने के दौरान अपना गुजारा कर सकें: और बहुत कम भी नहीं: क्योंकि कौन जानता है कि मुझे दूसरों की उदासीनता या

उपेक्षा, या अपनी अनुभवहीनता या उनकी पसंद के अनुरूप न होने की अक्षमता से कब तक जूझना पड़ सकता है?

तो फिर मैं क्या करूँ? क्या मैं अपने भाई से संपर्क करूँ और उसे अपनी परिस्थितियाँ और अपने इरादे बताऊँ? नहीं, नहीं: भले ही मैं उसे अपनी सारी शिकायतें बता दूँ, जो मैं करने में बहुत हिचकिचाऊँगी, वह निश्चित रूप से इस कदम को अस्वीकार कर देगा: यह उसे पागलपन जैसा लगेगा, जैसा कि मेरे चाचा और चाची या मिलिसेंट को लगेगा। नहीं; मुझे धैर्य रखना होगा और खुद ही धन इकट्ठा करना होगा। राहेल मेरी एकमात्र विश्वासपात्र होगी - मुझे लगा कि मैं उसे इस योजना के लिए मना लूँगी; और वह सबसे पहले मुझे किसी दूर शहर में एक चित्रकार खोजने में मदद करेगी; फिर, उसके माध्यम से, मैं अपने पास मौजूद उन चित्रों को, जो इस उद्देश्य के लिए उपयुक्त होंगे, और कुछ ऐसे चित्रों को, जिन्हें मैं बाद में बनाऊँगी, निजी तौर पर बेच दूँगी। इसके अलावा, मैं अपने गहनों को भी बेचने का प्रबंध करूँगी, पारिवारिक गहने नहीं, बल्कि वे कुछ गहने जो मैं घर से अपने साथ लाई थी, और वे जो मेरे चाचा ने मुझे मेरी शादी पर दिए थे। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कुछ महीनों की कड़ी मेहनत मैं आसानी से सहन कर सकती हूँ; और इस बीच मेरे बेटे को पहले से ही जितनी चोट लगी थी, उससे ज्यादा चोट नहीं लग सकती थी।

यह संकल्प लेने के बाद, मैंने इसे पूरा करने के लिए तुरंत काम शुरू कर दिया। हो सकता है कि बाद में मेरा इरादा बदल जाता, या मैं इसके फायदे और नुकसान पर तब तक विचार करता रहता जब तक कि नुकसान फायदे से अधिक न हो जाते, और मैं इस परियोजना को पूरी तरह से छोड़ देता या इसे अनिश्चित काल के लिए टाल देता, लेकिन कुछ ऐसा घटित हुआ जिसने मेरे उस दृढ़ संकल्प को और मजबूत कर दिया, जिस पर मैं अब भी कायम हूं, और मुझे अब भी लगता है कि मैंने जो संकल्प लिया था वह अच्छा था, और मैं उसे और भी बेहतर तरीके से निभाऊंगा।

लॉर्ड लोबोरो के जाने के बाद से मैंने पुस्तकालय को पूरी तरह से अपना मान लिया था, दिन के हर समय के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल। हमारे किसी भी सज्जन को साहित्यिक रुचि का ज़रा सा भी श्रेय नहीं था, सिवाय श्री हरग्रेव के; और वे भी फिलहाल अखबारों और पत्रिकाओं से ही संतुष्ट थे। और अगर किसी भी तरह से वे यहाँ आ भी जाते, तो मुझे पूरा विश्वास था कि मुझे देखते ही वे तुरंत चले जाएँगे, क्योंकि अपनी माँ और बहनों के जाने के बाद से उनका मेरे प्रति ठंडापन और दूरी कम

होने के बजाय और भी बढ़ गई थी, जो कि मैं चाहती थी। इसलिए, मैंने यहाँ अपना ईज़ल लगाया और सुबह से शाम तक, बहुत कम अंतराल के साथ, अपने कैनवास पर काम करती रही, सिवाय तब जब कोई ज़रूरी काम या छोटे आर्थर के प्रति मेरा कर्तव्य मुझे बुलाता था: क्योंकि मैं अब भी हर दिन का कुछ हिस्सा विशेष रूप से उसकी शिक्षा और मनोरंजन के लिए समर्पित करना उचित समझती थी। लेकिन, मेरी उम्मीद के विपरीत, तीसरी सुबह, जब मैं इस तरह काम कर रही थी, श्री हरग्रेव अंदर आए और मुझे देखकर तुरंत वापस नहीं गए। उन्होंने दखलंदाज़ी के लिए माफ़ी मांगी और कहा कि वे केवल एक किताब लेने आए थे; लेकिन जब उन्हें किताब मिल गई, तो उन्होंने मेरी तस्वीर पर एक नज़र डाली। कला के पारखी होने के नाते, उन्हें इस विषय के साथ-साथ एक और विषय पर भी कुछ कहना था, और मेरी ओर से ज़्यादा प्रोत्साहन न मिलने पर उन्होंने विनम्रतापूर्वक उस पर टिप्पणी की और फिर कला के बारे में विस्तार से बताने लगे। उसमें भी कोई प्रोत्साहन न मिलने पर उन्होंने बात वहीं खत्म कर दी, लेकिन गए नहीं।

कुछ देर रुकने के बाद, जब मैं शांत भाव से अपने रंगों को मिलाती और संवारती रही, तो उसने कहा, 'श्रीमती हंटिंगडन, आप हमें ज्यादा समय नहीं देतीं; और मुझे इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि आप हम सबसे तंग आ चुकी होंगी। मैं खुद अपने साथियों से बहुत शर्मिंदा हूँ, और उनकी बेतुकी बातों और कामों से इतना ऊब गया हूँ—अब जब उन्हें इंसानियत सिखाने और उन पर लगाम लगाने वाला कोई नहीं है, क्योंकि आपने हमें हमारे हाल पर छोड़ दिया है—तो मुझे लगता है कि मैं जल्द ही उनसे अलग हो जाऊँगा, शायद इसी हफ्ते; और मुझे नहीं लगता कि आपको मेरे जाने का अफसोस होगा।'

वह रुका। मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'शायद आपको इस विषय पर बस यही अफसोस होगा कि मैं अपने सभी साथियों को अपने साथ नहीं ले जा रहा हूँ। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं उनमें से एक तो हूँ, लेकिन स्वाभाविक है कि आप मुझसे छुटकारा पाकर खुश होंगे। मुझे इसका अफसोस हो सकता है, लेकिन मैं इसके लिए आपको दोष नहीं दे सकता।'

मैंने उसके अच्छे व्यवहार के लिए आभार व्यक्त करना उचित समझते हुए कहा, 'मैं तुम्हारे जाने पर प्रसन्न नहीं होऊँगा, क्योंकि तुम एक सज्जन व्यक्ति की तरह

व्यवहार कर सकते हो; लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं बाकियों को अलविदा कहने पर प्रसन्न होऊंगा, भले ही वे कितने भी असभ्य प्रतीत हों।'

'इस तरह के खुलासे के लिए कोई आपको दोषी नहीं ठहरा सकता,' उसने गंभीरता से उत्तर दिया: 'मुझे लगता है कि खुद सज्जन भी नहीं। मैं आपको बताता हूँ,' उसने अचानक दृढ़ निश्चय के साथ कहा, 'कल रात भोजन कक्ष में आपके जाने के बाद क्या हुआ था: शायद आपको बुरा न लगे, क्योंकि आप कुछ मामलों में बहुत दार्शनिक हैं,' उसने हल्के व्यंग्य के साथ जोड़ा। 'वे लॉर्ड लोबोरो और उनकी आकर्षक महिला के बारे में बात कर रहे थे, जिनके अचानक चले जाने का कारण उनके बीच किसी से छिपा नहीं है; और उनका चरित्र उन सभी को इतना अच्छी तरह से ज्ञात है कि, हालांकि वह मेरी करीबी रिश्तेदार हैं, मैं उसका बचाव करने की कोशिश नहीं कर सकता। धिक्कार है मुझे!' उसने धीरे से कहा, 'अगर मैं इसका बदला न लूँ! अगर उस दुष्ट को परिवार को बदनाम करना ही है, तो क्या उसे अपने हर नीच परिचित के सामने इसका बखान करना चाहिए? मुझे क्षमा करें, श्रीमती हंटिंगडन।' खैर, वे इन बातों पर चर्चा कर रहे थे, और उनमें से कुछ ने टिप्पणी की कि चूंकि वह अपने पति से अलग हो गई थी, इसलिए वह जब चाहे उससे दोबारा मिल सकता है।

"धन्यवाद," उसने कहा; "फिलहाल मुझे उससे काफी हो गया है: मैं उससे मिलने की जहमत नहीं उठाऊंगा, जब तक कि वह खुद मुझसे मिलने न आए।"

"तो हंटिंगडन, हमारे जाने के बाद तुम क्या करोगे?" राल्फ हैटर्सले ने कहा। "क्या तुम अपनी गलतियों को सुधारकर एक अच्छा पति, एक अच्छा पिता वगैरह बनोगे, जैसा मैं करता हूँ, जब मैं तुमसे और तुम्हारे इन सारे आवारा दोस्तों से छुटकारा पा लूँगा? मुझे लगता है अब समय आ गया है; और तुम्हारी पत्नी तुमसे पचास गुना बेहतर है, तुम्हें पता है ना—"

और उसने आपकी कुछ ऐसी प्रशंसा की, जिसे दोहराने पर न तो आप मुझे धन्यवाद देंगे और न ही उसे कहने पर; उसने बिना किसी शालीनता या विवेक के, खुलेआम उसका उच्चारण किया, ऐसे श्रोताओं के सामने जहाँ आपका नाम लेना भी अपवित्रता माना जाता था: वह स्वयं आपकी वास्तविक खूबियों को समझने या सराहने में पूरी तरह असमर्थ था। इस बीच, हंटिंगडन चुपचाप अपनी शराब पीता रहा, या मुस्कुराते हुए अपने गिलास में देखता रहा और कोई दखल या जवाब नहीं दिया, जब तक कि हैटर्सले ने चिल्लाकर नहीं कहा, "क्या तुम मुझे सुन रहे हो, यार?"

“हां, आगे बढ़ो,” उसने कहा।

“नहीं, मैंने कर लिया है,” दूसरे ने जवाब दिया: “मैं केवल यह जानना चाहता हूं कि क्या आप मेरी सलाह मानने का इरादा रखते हैं।”

“क्या सलाह?”

“अरे, तुम तो पक्के बदमाश हो! अपनी गलती सुधार लो, अपनी पत्नी से माफी मांग लो और भविष्य में अच्छे लड़के बनो,” राल्फ चिल्लाया।

“मेरी पत्नी! कैसी पत्नी? मेरी कोई पत्नी नहीं है,” हंटिंगडन ने अपने गिलास से नज़रें उठाकर मासूमियत से जवाब दिया, “या अगर है भी, तो आप सब सज्जनों, सुनिए: मैं उसे इतना महत्व देता हूँ कि आप में से जो भी उसे पसंद करे, वह उसे पा सकता है और आपका स्वागत है: आप उसे पा सकते हैं, भगवान की कसम, और मेरी शुभकामनाएँ भी!”

‘मैं—हम्म—किसी ने पूछा कि क्या उनका सचमुच वही मतलब था जो उन्होंने कहा; जिस पर उन्होंने पूरी गंभीरता से शपथ ली कि हाँ, और कोई गलती नहीं थी। श्रीमती हंटिंगडन, आप इसके बारे में क्या सोचती हैं?’ श्री हारग्रेव ने थोड़ी देर रुकने के बाद पूछा, जिस दौरान मुझे लगा कि वह मेरे आधे झुके हुए चेहरे को ध्यान से देख रहे थे।

मैंने शांत भाव से उत्तर दिया, ‘मैं कहता हूँ कि जिस चीज़ को वह इतनी आसानी से महत्व देता है, वह उसके पास अधिक समय तक नहीं रहेगी।’

'आपका यह मतलब नहीं हो सकता कि आप उस कुख्यात खलनायक के घृणित आचरण के लिए अपना दिल तोड़कर मर जाएंगे!'

'बिल्कुल नहीं: मेरा दिल इतना सूखा हुआ है कि जल्दी टूट नहीं सकता, और मैं जितना हो सके उतना लंबा जीना चाहता हूं।'

‘तो क्या तुम उसे छोड़ दोगी?’

'हाँ।'

‘कब और कैसे?’ उसने उत्सुकता से पूछा।

‘जब मैं तैयार हो जाऊं, और मैं इसे सबसे प्रभावी ढंग से कैसे प्रबंधित कर सकता हूं।’

लेकिन आपका बच्चा?

मेरा बच्चा मेरे साथ जाता है।

वह इसकी अनुमति नहीं देगा।

मैं उससे नहीं पूछूंगा।

'अरे, तो फिर आप एक गुप्त उड़ान की योजना बना रही हैं! लेकिन किसके साथ, श्रीमती हंटिंगडन?'

‘मेरे बेटे के साथ: और संभवतः, उसकी नर्स के साथ।’

‘अकेले—और असुरक्षित! लेकिन आप कहाँ जा सकते हैं? आप क्या कर सकते हैं? वह आपका पीछा करेगा और आपको वापस ले आएगा।’

मैंने इसके लिए अपनी योजनाएँ बहुत अच्छी तरह से बनाई हैं। मुझे एक बार ग्रासडेल से निकल जाने दो, और मैं खुद को सुरक्षित समझूंगा।

श्री हारग्रेव मेरी ओर एक कदम आगे बढ़े, मेरी ओर देखा और बोलने के लिए गहरी सांस ली; लेकिन उनकी वह नज़र, उनका तीव्र रंग, उनकी आंखों की वह अचानक चमक, मेरे रक्त में क्रोध का उबाल ला दिया: मैं अचानक मुड़ गया और अपना ब्रश उठाकर, चित्र के लिए आवश्यकता से अधिक ऊर्जा के साथ कैनवास पर चित्र बनाने लगा।

‘श्रीमती हंटिंगडन,’ उसने कड़वी गंभीरता से कहा, ‘आप क्रूर हैं – मेरे प्रति क्रूर – स्वयं के प्रति क्रूर।’

'श्री हरग्रेव, अपना वादा याद रखें।'

‘मुझे बोलना ही होगा: अगर मैं नहीं बोली तो मेरा दिल फट जाएगा! मैं बहुत देर तक चुप रही हूँ, और तुम्हें मेरी बात सुननी ही होगी!’ उसने साहसपूर्वक मुझे दरवाजे की ओर जाते हुए रोकते हुए कहा। ‘तुम कहती हो कि तुम्हें अपने पति से कोई वफ़ादारी नहीं है; वह खुलेआम तुमसे ऊब चुका है, और तुम्हें किसी को भी सौंपने को तैयार है; तुम उसे छोड़ने वाली हो; कोई विश्वास नहीं करेगा कि तुम अकेले जा रही हो; सारी दुनिया कहेगी, “आखिरकार उसने उसे छोड़ दिया, और इसमें आश्चर्य की क्या बात है? कुछ ही लोग उसे दोष दे सकते हैं, उससे भी कम लोग उस पर तरस खा सकते हैं; लेकिन उसके इस पलायन में उसका साथी कौन है?” इस प्रकार तुम्हारे सद्गुण (यदि तुम इसे ऐसा कहती हो) का कोई श्रेय नहीं होगा: तुम्हारे सबसे अच्छे दोस्त भी इस पर विश्वास नहीं करेंगे; क्योंकि यह भयानक है, और इस पर केवल वही लोग विश्वास कर सकते हैं जो इसके प्रभावों से इतने क्रूर कष्ट झेलते हैं कि वे इसे वास्तविकता के रूप में जानते हैं। लेकिन इस ठंडी, कठोर दुनिया में तुम अकेले क्या

कर सकती हो? तुम, एक युवा और अनुभवहीन स्त्री, कोमल परवरिश वाली, और पूरी तरह से –’

‘संक्षेप में, आप मुझे यहीं रहने की सलाह देंगे,’ मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘ठीक है, मैं इस बारे में सोचता हूँ।’

‘हर हाल में उसे छोड़ दो!’ उसने गंभीरता से कहा; ‘लेकिन अकेले नहीं! हेलेन! मुझे तुम्हारी रक्षा करने दो!’

‘कभी नहीं! जब तक मेरी बुद्धि साथ दे,’ मैंने जवाब दिया और उसका हाथ झटक कर अलग कर लिया, जिसे उसने पकड़ने और अपने हाथों के बीच दबाने की कोशिश की थी। लेकिन अब उसकी खैर नहीं थी; उसने सारी हदें पार कर दी थीं: वह पूरी तरह से उत्तेजित हो चुका था और जीत के लिए सब कुछ दांव पर लगाने को तैयार था।

‘मुझे नकारा नहीं जा सकता!’ वह उग्र स्वर में बोला; और मेरे दोनों हाथ पकड़कर, उन्हें कसकर थाम लिया, लेकिन घुटनों के बल बैठ गया और आधी विनती भरी, आधी अभिमानी दृष्टि से मेरे चेहरे की ओर देखा। ‘अब तुम्हारे पास कोई कारण नहीं है: तुम स्वर्ग के आदेशों का उल्लंघन कर रहे हो। ईश्वर ने मुझे तुम्हारा सहारा और रक्षक बनाया है—मैं इसे महसूस करता हूँ, मैं इसे उतनी ही निश्चितता से जानता हूँ जैसे स्वर्ग से कोई आवाज़ कहे, “तुम दोनों एक शरीर हो जाओगे”—और तुम मुझे ठुकरा रहे हो—’

‘मुझे छोड़ दीजिए, मिस्टर हरग्रेव!’ मैंने सख्ती से कहा। लेकिन उन्होंने अपनी पकड़ और कस ली।

‘मुझे जाने दो!’ मैंने क्रोध से कांपते हुए दोहराया।

जब वह घुटनों के बल बैठा था, तो उसका चेहरा लगभग खिड़की के सामने था। थोड़ी सी हैरानी के साथ, मैंने उसे खिड़की की ओर देखते हुए पाया; और फिर उसके चेहरे पर दुष्ट विजय की एक चमक दिखाई दी। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो एक परछाई कोने से मुड़ती हुई दिखाई दी।

‘यह ग्रिम्सबी है,’ उसने जानबूझकर कहा। ‘वह हंटिंगडन और बाकी सभी को अपनी देखी हुई बातें, अपनी इच्छानुसार बढ़ा-चढ़ाकर बताएगा। श्रीमती हंटिंगडन, उसे आपसे कोई प्रेम नहीं है—आपके स्त्रीत्व के प्रति कोई आदर नहीं, सदाचार में कोई विश्वास नहीं, उसकी छवि के प्रति कोई प्रशंसा नहीं। वह इस कहानी का ऐसा वर्णन करेगा जिससे सुनने वालों के मन में आपके चरित्र के बारे में कोई संदेह न रह जाए।

आपकी गौरवशाली प्रतिष्ठा धूमिल हो चुकी है; और न तो मैं और न ही आप कुछ कह सकें, उसे वापस नहीं ला सकते। लेकिन मुझे आपकी रक्षा करने की शक्ति दीजिए, और मुझे वह दुष्ट दिखाइए जो आपका अपमान करने का साहस करता है!'

'आज तक किसी ने भी मुझे इस तरह अपमानित करने की हिम्मत नहीं की है, जैसा तुम अभी कर रहे हो!' मैंने अंत में अपने हाथ छुड़ाते हुए और उससे पीछे हटते हुए कहा।

'मैं तुम्हारा अपमान नहीं करता,' वह चिल्लाया: 'मैं तुम्हारी पूजा करता हूँ। तुम मेरे देवदूत हो, मेरी दिव्यता हो! मैं अपनी शक्तियाँ तुम्हारे चरणों में अर्पित करता हूँ, और तुम्हें इन्हें स्वीकार करना ही होगा!' वह उतपस्त होकर खड़ा हो गया। 'मैं तुम्हारा सांत्वनादाता और रक्षक बनूँगा! और यदि तुम्हारा अंतरात्मा इसके लिए तुम्हें धिक्कारे, तो कहना कि मैंने तुम्हें पराजित किया, और तुम्हारे पास हार मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था!'

मैंने कभी किसी आदमी को इतना उत्तेजित होते नहीं देखा था। वह मेरी ओर झपट पड़ा। मैंने झट से अपना पैलेट-नाइफ उठाया और उसे उसकी ओर कर दिया। इससे वह चौंक गया: वह खड़ा रहा और हैरानी से मुझे घूरने लगा; मैं कह सकता हूँ कि मैं भी उसके जितना ही उग्र और दृढ़ दिख रहा था। मैं घंटी के पास गया और रस्सी पर हाथ रख दिया। इससे वह और भी शांत हो गया। उसने आधे अधिकारपूर्ण, आधे तिरस्कारपूर्ण अंदाज़ में हाथ हिलाकर मुझे घंटी बजाने से रोकने की कोशिश की।

'तो फिर दूर हट जाओ!' मैंने कहा; वह पीछे हट गया। 'और मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें पसंद नहीं करती,' मैंने अपनी बात को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए पूरी दृढ़ता और दृढ़ता से कहा; 'और अगर मेरा अपने पति से तलाक हो गया होता, या अगर वह मर गया होता, तो मैं तुमसे शादी नहीं करती। बस! मुझे उम्मीद है कि तुम संतुष्ट हो।'

गुस्से से उसका चेहरा पीला पड़ गया।

उसने कड़वाहट भरे लहजे में जवाब दिया, 'मैं इस बात से संतुष्ट हूं कि तुम अब तक देखी गई सबसे निर्मम, अस्वाभाविक और कृतघ्न महिला हो!'

'अकृतज्ञ, महोदय?'

'अहसान फरामोश।'

नहीं, श्रीमान हरग्रेव, मैं नहीं हूँ। आपने मेरे लिए जो भी भलाई की है, या करने की इच्छा की है, उसके लिए मैं तहे दिल से आपका धन्यवाद करता हूँ; आपने मेरे साथ

जो भी बुरा किया है, और जो भी बुरा करना चाहते थे, उसके लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको क्षमा करे और आपको बेहतर इंसान बनाए। तभी दरवाजा खुल गया और श्रीमान हंटिंगडन और हैटर्सले बाहर दिखाई दिए। हैटर्सले हॉल में अपनी बंदूक और रस्सा में व्यस्त रहे; श्रीमान अंदर आए और आग की ओर पीठ करके खड़े हो गए, श्रीमान हरग्रेव और मुझे, विशेष रूप से श्रीमान को, एक असहनीय मुस्कान के साथ देख रहे थे, जिसमें उनके बेशर्म माथे की धृष्टता और उनकी आँखों की धूर्त, द्वेषपूर्ण चमक झलक रही थी।

'तो, महोदय?' हरग्रेव ने प्रश्नवाचक स्वर में और बचाव की मुद्रा में खड़े होने के भाव से कहा।

‘जी हाँ, महोदय,’ उनके मेज़बान ने जवाब दिया।

‘वाल्टर, क्या आप हमारे साथ तीतरों का शिकार करने के लिए स्वतंत्र हैं?’ हैटर्सले ने बाहर से बीच में दखल देते हुए कहा। ‘आओ! इसके अलावा और कुछ नहीं मारा जाएगा, सिवाय एक-दो बिल्लियों के; मैं इसकी गारंटी देता हूँ।’

वाल्टर ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि खुद को संभालने के लिए खिड़की की ओर चला गया। आर्थर ने धीमी सी सीटी बजाई और अपनी निगाहों से उसका पीछा किया। हरग्रेव के गालों पर गुस्से की हल्की सी लाली उभर आई; लेकिन पल भर में वह शांत भाव से मुड़ा और लापरवाही से बोला:

मैं श्रीमती हंटिंगडन को विदाई देने और उन्हें यह बताने आया हूं कि मुझे कल जाना होगा।

‘हम्म! आपने बहुत जल्दी फैसला ले लिया। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपको इतनी जल्दी जाने की क्या ज़रूरत है?’

“कामकाज,” उसने जवाब दिया, और दूसरे की अविश्वास भरी हंसी को तिरस्कारपूर्ण चुनौती भरी नजर से खारिज कर दिया।

‘बहुत अच्छा,’ जवाब आया; और हरग्रेव चले गए। तभी श्री हंटिंगडन ने अपने कोट के किनारों को बाहों के नीचे समेटते हुए और अपना कंधा मेंटलपीस से टिकाते हुए मेरी ओर मुड़े, और लगभग साँस लेते हुए धीमी आवाज़ में मुझसे ऐसी गालियाँ बरसाईं जो कल्पना से परे थीं और ज़बान से निकल सकती थीं। मैंने उन्हें रोकने की कोशिश नहीं की; लेकिन मेरा गुस्सा भड़क उठा, और जब वे चुप हो गए, तो मैंने जवाब दिया, ‘अगर आपका आरोप सच है, श्री हंटिंगडन, तो आप मुझे दोषी ठहराने

की हिम्मत कैसे करते हैं?'

'अरे वाह!' हैटर्सले चिल्लाया और अपनी बंदूक दीवार पर तान दी; कमरे में कदम रखते हुए उसने अपने प्यारे दोस्त का हाथ पकड़ा और उसे खींचकर ले जाने की कोशिश की। 'चलो, मेरे दोस्त,' वह बुदबुदाया; 'सच हो या झूठ, तुम्हें उसे दोष देने का कोई हक नहीं है, न ही उसे; तुमने कल रात जो कहा था उसके बाद। तो चलो।'

यहां कुछ ऐसा संकेत दिया गया था जिसे मैं सहन नहीं कर सका।

'आप मुझ पर शक करने की हिम्मत कैसे करते हैं, मिस्टर हैटर्सले?' मैंने गुस्से से लगभग बौखलाते हुए कहा।

नहीं, नहीं, मुझे किसी पर शक नहीं है। सब ठीक है, सब ठीक है। तो चलो, हंटिंगडन, तुम बदमाश।

'वह इसे नकार नहीं सकती!' उस सज्जन ने गुस्से और जीत के मिले-जुले भाव से मुस्कुराते हुए कहा। 'वह इसे तब भी नकार नहीं सकती, चाहे उसकी जान ही क्यों न दांव पर लगी हो!' और कुछ और अपशब्द बड़बड़ाते हुए वह हॉल में चला गया और मेज से अपनी टोपी और बंदूक उठा ली।

मैंने कहा, 'मैं तुम्हारे सामने खुद को सही ठहराने की जहमत नहीं उठाता!' हैटर्सले की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, 'लेकिन तुम, अगर तुम्हें इस विषय पर कोई संदेह है, तो श्री हरग्रेव से पूछो।'

इस पर वे दोनों एक साथ अभद्र हंसी हंस पड़े, जिससे मेरे पूरे शरीर में उंगलियों के सिरों तक झनझनाहट सी महसूस हुई।

'वह कहाँ है? मैं उससे खुद पूछूंगा!' मैंने उनकी ओर बढ़ते हुए कहा।

हंसी के एक नए उभार को दबाते हुए, हैटर्सले ने बाहरी दरवाजे की ओर इशारा किया। वह आधा खुला हुआ था। उसका बहनोई बाहर सामने खड़ा था।

मैंने कहा, 'श्री हरग्रेव, क्या आप कृपया इधर आएंगे?'

वह मुड़ा और अत्यंत आश्चर्य से मेरी ओर देखने लगा।

'कृपया इधर आइए!' मैंने इतने दृढ़ स्वर में दोहराया कि वह विरोध नहीं कर सका, या शायद उसने विरोध करना नहीं चाहा। कुछ अनिच्छा से वह सीढ़ियाँ चढ़ा और हॉल में एक-दो कदम आगे बढ़ा।

मैंने आगे कहा, 'और उन सज्जनों को बता देना, चाहे मैंने आपकी विनतियों को स्वीकार किया हो या नहीं।'

'मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही है, श्रीमती हंटिंगडन।'

'आप मुझे समझते हैं, महोदय; और मैं आपसे, एक सज्जन व्यक्ति के रूप में आपके सम्मान की शपथ लेकर (यदि आपके पास कोई सम्मान है), सच-सच उत्तर देने का आग्रह करता हूँ। क्या मैंने समझा, या नहीं?'

'नहीं,' उसने मुंह फेरते हुए बुदबुदाया।

"जी जान, ज़ोर से बोलिए; वे आपको सुन नहीं पा रहे हैं। क्या मैंने आपकी विनती मान ली?"

'तुमने नहीं किया।'

'नहीं, मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि उसने ऐसा नहीं किया,' हैटर्सले ने कहा, 'वरना वह इतना काला नहीं दिखता।'

'मैं आपको एक सज्जन व्यक्ति की संतुष्टि देने को तैयार हूं, हंटिंगडन,' श्री हरग्रेव ने अपने मेजबान को शांत भाव से संबोधित करते हुए कहा, लेकिन उनके चेहरे पर एक कड़वा व्यंग्य था।

'दफा हो जाओ!' दूसरे ने सिर झटकते हुए अधीरता से जवाब दिया। हरग्रेव ठंडे तिरस्कार भरे भाव से पीछे हटते हुए बोला, 'अगर आप किसी मित्र को भेजना चाहें तो आप जानते हैं कि मुझे कहाँ ढूँढना है।'

इस सूचना के जवाब में केवल बुदबुदाती गालियां और अपशब्द ही प्राप्त हुए।

'अब देखो, हंटिंगडन!' हैटर्सले ने कहा। 'बिल्कुल साफ है।'

मैंने कहा, 'मुझे इस बात की परवाह नहीं कि वह क्या देखता है या क्या कल्पना करता है; लेकिन श्री हैटर्सले, जब आप मेरे नाम पर झूठे आरोप और बदनामी सुनेंगे, तो क्या आप उसका बचाव करेंगे?'

'मैं करूँगा।'

मैं तुरंत वहां से निकल गई और पुस्तकालय में जाकर खुद को बंद कर लिया। मुझे नहीं पता कि किस बात ने मुझे ऐसे आदमी से ऐसी विनती करने के लिए मजबूर किया; लेकिन डूबते हुए लोग तिनके का सहारा लेते हैं: उन्होंने मुझे अपने बीच फंसाकर हताश कर दिया था; मुझे ठीक से याद भी नहीं था कि मैंने क्या कहा। इन चापलूस साथियों के बीच और शायद उनके जरिए दुनिया में भी मेरा नाम कलंकित होने से बचाने का कोई और रास्ता नहीं था; और मेरे त्यागे हुए पति, नीच और दुष्ट ग्रिम्सबी और झूठे खलनायक हरग्रेव के सामने, यह असभ्य, क्रूर और निर्दयी बदमाश,

अपने साथी जुगनुओं के बीच अंधेरे में चमकते हुए जुगनू की तरह लग रहा था।

यह कैसा दृश्य था! क्या मैंने कभी सोचा भी था कि मुझे अपने ही घर में इस तरह के अपमान सहने पड़ेंगे—मेरी मौजूदगी में, बल्कि मेरे बारे में और मुझसे कही गई ऐसी बातें सुननी पड़ेंगी; और वो भी उन लोगों द्वारा जो खुद को सज्जन कहते हैं? और क्या मैंने कभी सोचा भी था कि मैं इसे इतनी शांति से सहन कर पाऊँगी और उनके अपमानों का इतनी दृढ़ता और साहस से जवाब दे पाऊँगी? इस तरह की कठोरता केवल कठोर अनुभव और निराशा से ही आती है।

इस तरह के विचार मेरे मन में लगातार उमड़ रहे थे, मैं कमरे में इधर-उधर टहल रही थी और मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था - ओह, मेरा दिल कितना तड़प रहा था - कि मैं अपने बच्चे को लेकर अभी, बिना एक घंटे की भी देरी किए, उन्हें छोड़कर चली जाऊं! लेकिन ऐसा संभव नहीं था; मेरे सामने काम था: कठिन काम, जो करना ही था।

'तो मुझे यह करने दो,' मैंने कहा, 'और व्यर्थ में पछतावे और अपने भाग्य तथा उसे प्रभावित करने वालों के प्रति बेकार की नाराजगी में एक पल भी बर्बाद न करूं।'

और मैंने अपनी बेचैनी पर काबू पाने के लिए भरपूर प्रयास किया और तुरंत अपना काम फिर से शुरू कर दिया, और पूरे दिन कड़ी मेहनत की।

श्री हरग्रेव अगले दिन चले गए; और उसके बाद मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। बाकी लोग दो-तीन सप्ताह और रुके रहे; लेकिन मैं उनसे यथासंभव दूर रहा, और अपना काम जारी रखा, और लगभग अटूट उत्साह के साथ आज तक करता आ रहा हूँ। मैंने जल्द ही राहेल को अपनी योजना के बारे में बता दिया, अपने सभी इरादे और उद्देश्य उसके कान में डाल दिए, और मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि उसे अपने विचारों में शामिल करने के लिए राजी करने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई। वह एक गंभीर, सतर्क महिला है, लेकिन वह अपने स्वामी से इतनी नफरत करती है और अपनी मालकिन और अपने बच्चे से इतना प्यार करती है कि कई बार आग्रह करने, कुछ हल्की आपत्तियाँ जताने और मुझे इस स्थिति में लाने पर बहुत आँसू बहाने और विलाप करने के बाद, उसने मेरे संकल्प की सराहना की और पूरी ताकत से मेरी मदद करने के लिए सहमत हो गई: केवल एक शर्त पर: कि वह मेरे साथ निर्वासन में रहे; अन्यथा, वह बिल्कुल अडिग थी, और मेरे और आर्थर के अकेले जाने को सरासर पागलपन मानती थी। बड़े ही उदार भाव से उन्होंने विनम्रतापूर्वक अपनी थोड़ी-सी

बचत से मेरी मदद करने की पेशकश की, यह उम्मीद करते हुए कि मैं उनकी इस गुस्ताखी को माफ कर दूंगा, लेकिन सच में, अगर मैं उनकी इस बचत को ऋण के रूप में स्वीकार कर लूं, तो उन्हें बहुत खुशी होगी। बेशक, मैं ऐसी बात सोच भी नहीं सकता था; लेकिन अब, ईश्वर का शुक्र है, मैंने भी थोड़ी-सी बचत कर ली है, और मेरी तैयारियां इतनी आगे बढ़ चुकी हैं कि मुझे जल्द ही मुक्ति मिलने की उम्मीद है। बस इस सर्दी के तूफानी मौसम में थोड़ी राहत मिले, और फिर, किसी सुबह, मिस्टर हंटिंगडन अकेले नाश्ते की मेज पर आएंगे, और शायद घर में अपनी पत्नी और बच्चे को ढूंढते हुए शोर मचा रहे होंगे, जब वे पश्चिमी दुनिया की ओर लगभग पचास मील दूर जा चुके होंगे, या शायद इससे भी ज्यादा: क्योंकि हम उन्हें भोर से घंटों पहले छोड़ देंगे, और यह संभव नहीं है कि उन्हें दोनों के खोने का पता तब तक चले जब तक दिन काफी ढल न जाए।

मैं इस बात से भलीभांति अवगत हूँ कि जो कदम मैं उठाने जा रही हूँ, उससे क्या-क्या बुराइयाँ हो सकती हैं और अवश्य ही होंगी; लेकिन मैं अपने संकल्प से कभी नहीं डिगती, क्योंकि मैं अपने बेटे को कभी नहीं भूलती। आज सुबह ही, जब मैं अपना रोज़ का काम कर रही थी, वह मेरे पैरों के पास बैठा चुपचाप कालीन पर बिखरे हुए कैनवास के टुकड़ों से खेल रहा था; लेकिन उसका मन कहीं और ही था, क्योंकि थोड़ी देर बाद उसने मेरी ओर उदास निगाहों से देखा और गंभीरता से पूछा, "माँ, तुम इतनी बुरी क्यों हो?"

'तुम्हें किसने बताया कि मैं दुष्ट हूँ, प्रिय?'

'रेचल।'

'नहीं, आर्थर, राहेल ने ऐसा कभी नहीं कहा, मुझे पूरा यकीन है।'

'अच्छा, तो फिर पापा ही थे,' उसने सोच-विचार करते हुए जवाब दिया। फिर कुछ देर रुककर उसने आगे कहा, 'कम से कम मैं तुम्हें बताता हूँ कि मुझे कैसे पता चला: जब मैं पापा के साथ होता हूँ, अगर मैं कहूँ कि मम्मी मुझे बुला रही हैं, या मम्मी मुझे कुछ करने से मना कर दें जो पापा मुझसे करने को कहें, तो पापा हमेशा कहते हैं, "मम्मी भाड़ में जाएँ," और राहेल कहती है कि केवल दुष्ट लोग ही नरक में जाते हैं। इसलिए, मम्मी, मुझे लगता है कि आप दुष्ट हैं: और काश आप दुष्ट न होतीं।'

"मेरे प्यारे बच्चे, मैं ऐसा नहीं हूँ। ये बुरे शब्द हैं, और दुष्ट लोग अक्सर अपने से बेहतर लोगों के बारे में ऐसे शब्द कहते हैं। इन शब्दों से किसी को नरक में नहीं भेजा

जा सकता, न ही यह साबित होता है कि वे नरक के पात्र हैं। ईश्वर हमारे विचारों और कर्मों के आधार पर हमारा न्याय करेगा, न कि दूसरों द्वारा हमारे बारे में कही गई बातों के आधार पर। और जब तुम ऐसे शब्द सुनते हो, आर्थर, तो याद रखना कि उन्हें कभी दोहराना मत: दूसरों के बारे में ऐसी बातें कहना बुरा है, न कि किसी के द्वारा तुम्हारे बारे में ऐसी बातें कहना।”

‘तो फिर पापा ही दुष्ट हैं,’ उसने अफसोस भरे स्वर में कहा।

'पापा का ऐसी बातें कहना गलत है, और अब जब तुम बेहतर जानते हो, तो उनका अनुकरण करना बहुत बड़ी गलती होगी।'

‘नकल करना क्या है?’

‘उसके जैसा करना।’

क्या उसे बेहतर पता है?

'हो सकता है कि वह ऐसा करता हो; लेकिन इससे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता।'

अगर वह ऐसा नहीं करता है, तो आपको उसे बताना चाहिए, माँ।

मैंने उसे बता दिया है।

वह नन्हा उपदेशक रुका और सोचने लगा। मैंने उसका ध्यान विषय से हटाने की व्यर्थ कोशिश की।

उसने उदास स्वर में कहा, “मुझे खेद है कि पापा दुष्ट हैं, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि वे नरक में जाएं।” और इतना कहते ही वह फूट-फूटकर रोने लगा।

मैंने उसे इस उम्मीद से दिलासा दिया कि शायद उसके पापा मरने से पहले बदल जाएं और अच्छे बन जाएं; लेकिन क्या अब उसे ऐसे माता-पिता से मुक्ति दिलाने का समय नहीं आ गया है?

अध्याय XL

10 जनवरी, 1827 — उपरोक्त लिखते समय, कल शाम मैं ड्राइंग रूम में बैठा था। श्री हंटिंगडन उपस्थित थे, लेकिन जैसा मैंने सोचा था, मेरे पीछे सोफे पर सो रहे थे। हालांकि, मुझे बिना बताए वे उठ गए थे, और किसी जिज्ञासावश, न जाने कब से मेरी ओर देख रहे थे; क्योंकि जब मैंने कलम एक तरफ रख दी थी और किताब बंद करने ही वाला था, तो उन्होंने अचानक अपना हाथ उस पर रख दिया और कहा, — ‘आपकी अनुमति से, प्रिय, मैं इसे देख लूँगा,’ और जबरदस्ती मुझसे किताब छीन ली, और मेज के पास एक कुर्सी खींचकर, शांति से बैठकर उसका अध्ययन करने लगे: जो कुछ उन्होंने पढ़ा था, उसका अर्थ समझने के लिए वे पन्ने पलटते रहे। मेरे लिए दुर्भाग्य की बात यह थी कि उस रात वे सामान्य समय की तुलना में अधिक होश में थे।

मैंने उसे चुपचाप अपना काम जारी रखने नहीं दिया: मैंने कई बार उसके हाथों से किताब छीनने की कोशिश की, लेकिन उसने उसे इतनी मजबूती से पकड़ रखा था कि मैं उसे छोड़ नहीं सका; मैंने उसके नीच और अपमानजनक व्यवहार के लिए उसे गुस्से और तिरस्कार से फटकारा, लेकिन उस पर कोई असर नहीं हुआ; और अंत में, मैंने दोनों मोमबत्तियाँ बुझा दीं, लेकिन वह मुड़कर आग के पास चला गया और अपनी इच्छा के अनुसार आग जलाकर शांति से अपनी जाँच जारी रखी। मैंने पानी का एक घड़ा लाकर उस रोशनी को भी बुझाने के बारे में गंभीरता से सोचा; लेकिन यह स्पष्ट था कि उसकी जिज्ञासा इतनी तीव्र थी कि उसे शांत करना असंभव था, और जितना अधिक मैं उसकी जाँच को विफल करने की अपनी चिंता प्रकट करता, उतना ही वह अपने काम में लगा रहता, और वैसे भी बहुत देर हो चुकी थी।

‘यह बहुत दिलचस्प लग रहा है, प्रिय,’ उसने अपना सिर उठाकर मेरी ओर मुड़ते हुए कहा, जहाँ मैं चुपचाप गुस्से और पीड़ा से अपने हाथ मल रही थी; ‘लेकिन यह काफी लंबा है; मैं इसे किसी और समय देखूंगा; और इस बीच मैं तुमसे तुम्हारी चाबियाँ माँग लूँगा, मेरी प्रिय।’

‘कौन सी चाबियां?’

'तुम्हारे कैबिनेट, डेस्क, दराज और तुम्हारे पास जो कुछ भी है, उन सबकी चाबियां,' उसने उठते हुए और अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

मैंने जवाब दिया, 'मेरे पास वे नहीं हैं।' दरअसल, उस समय मेरी डेस्क की चाबी ताले में लगी हुई थी, और बाकी चाबियां उसी से जुड़ी हुई थीं।

‘तो तुम्हें उन्हें बुलवाना होगा,’ उसने कहा; ‘और अगर वह बुढ़िया राहेल उन्हें तुरंत

नहीं सौंपती है, तो वह कल अपना सारा सामान लेकर चली जाएगी।'

मैंने चुपचाप उन पर हाथ रखते हुए और उन्हें मेज से उठाते हुए जवाब दिया, 'उसे नहीं पता कि वे कहाँ हैं।' मुझे पता है, लेकिन मैं बिना किसी कारण के उन्हें नहीं दूँगा।

'और मुझे भी पता है,' उसने अचानक मेरा बंद हाथ पकड़कर उन्हें मुझसे छीनते हुए कहा। फिर उसने एक मोमबत्ती उठाई और उसे आग में डालकर दोबारा जला दिया।

'तो फिर,' उसने व्यंग्य करते हुए कहा, 'हमें संपत्ति जब्त करनी होगी। लेकिन पहले, आइए स्टूडियो में एक नज़र डाल लें।'

चाबियाँ जेब में रखते हुए वह पुस्तकालय में चला गया। मैं उसके पीछे-पीछे गया, चाहे शरारत रोकने के धुंधले इरादे से या फिर सबसे बुरे की आशंका से, मैं ठीक से कह नहीं सकता। मेरी पेंटिंग का सामान कोने वाली मेज पर कल के इस्तेमाल के लिए रखा था, बस एक कपड़े से ढका हुआ था। उसने जल्दी ही उसे देख लिया और मोमबत्ती बुझाकर जानबूझकर उसे आग में फेंक दिया: पैलेट, रंग, ब्लैडर, पेंसिल, ब्रश, वार्निश: मैंने सब कुछ जलते हुए देखा: पैलेट-चाकू दो टुकड़ों में टूट गए, तेल और तारपीन चिमनी से फुफकारते और गरजते हुए ऊपर उड़ गए। फिर उसने घंटी बजाई।

'बेनसन, ये सब चीजें यहाँ से हटा दो,' उसने ईज़ल, कैनवास और स्ट्रेचर की ओर इशारा करते हुए कहा; 'और नौकरानी से कह दो कि वह इनसे आग जला ले: तुम्हारी मालकिन को अब इनकी ज़रूरत नहीं होगी।'

बेनसन अचंभित होकर रुक गया और मेरी तरफ देखने लगा।

मैंने कहा, 'इन्हें यहाँ से ले जाओ, बेन्सन'; और उसके मालिक ने बड़बड़ाते हुए एक गाली दी।

'और यह सब भी, महोदय?' अचंभित नौकर ने अधबनी तस्वीर की ओर इशारा करते हुए कहा।

'बस इतना ही,' स्वामी ने उत्तर दिया; और सामान हटा दिया गया।

इसके बाद श्री हंटिंगडन ऊपर चले गए। मैंने उनके पीछे जाने की कोशिश नहीं की, बल्कि आरामकुर्सी पर चुपचाप, बिना आँसू बहाए, लगभग गतिहीन होकर बैठी रही, जब तक कि वे लगभग आधे घंटे बाद वापस नहीं आए। फिर वे मेरे पास आए और मोमबत्ती मेरे चेहरे के सामने करके मेरी आँखों में इस कदर घूरने लगे कि मेरा अपमान

बर्दाश्त करना मुश्किल हो गया। मैंने झट से हाथ से मोमबत्ती ज़मीन पर पटक दी।

‘हेलो!’ वह पीछे हटते हुए बुदबुदाया; ‘यह तो घोर द्वेष से भरी शैतान है। क्या किसी इंसान ने कभी ऐसी आँखें देखी हैं? — ये अंधेरे में बिल्ली की तरह चमकती हैं। ओह, तुम तो बड़ी प्यारी हो!’ इतना कहते हुए उसने मोमबत्ती और मोमबत्तीदान उठाया। मोमबत्ती टूट चुकी थी और बुझ भी गई थी, इसलिए उसने दूसरी मोमबत्ती मंगाई।

‘बेनसन, तुम्हारी मालकिन ने मोमबत्ती तोड़ दी है; दूसरी लाओ।’

जब वह व्यक्ति जाने लगा तो मैंने कहा, 'तुमने खुद को बखूबी उजागर कर दिया।'

‘मैंने यह तो नहीं कहा कि मैंने इसे तोड़ा है, है ना?’ उसने जवाब दिया। फिर उसने मेरी चाबियाँ मेरी गोद में फेंकते हुए कहा, ‘लो! तुम्हें अपने पैसे, गहने और कुछ छोटी-मोटी चीज़ें छोड़कर कुछ भी गायब नहीं मिलेगा, जिन्हें मैंने अपने पास रखना उचित समझा, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा लालच उन्हें सोने में बदल दे। मैंने तुम्हारे पर्स में कुछ सोने के सिक्के छोड़ दिए हैं, जो मुझे उम्मीद है कि पूरे महीने चलेंगे; अगर तुम्हें और पैसे की ज़रूरत हो, तो कृपया मुझे बता देना कि तुमने उन्हें कैसे खर्च किया। मैं तुम्हें भविष्य में तुम्हारे निजी खर्चों के लिए एक छोटा मासिक भत्ता दूंगा; और तुम्हें मेरे मामलों की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है; मैं एक प्रबंधक का इंतज़ाम कर लूंगा, मेरी प्यारी— मैं तुम्हें इस लालच में नहीं डालूंगा। और जहाँ तक घर के मामलों की बात है, श्रीमती ग्रीव्स को अपने हिसाब-किताब में बहुत सावधानी बरतनी होगी; हमें एक बिल्कुल नई योजना बनानी होगी—’

‘आपने अब कौन सी बड़ी खोज की है, श्री हंटिंगडन? क्या मैंने आपको धोखा देने का प्रयास किया है?’

'ऐसा लगता है कि पैसों के मामलों में तो नहीं; लेकिन प्रलोभन से दूर रहना ही सबसे अच्छा है।'

तभी बेन्सन मोमबत्तियाँ लेकर अंदर आया, और कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया; मैं अपनी कुर्सी पर स्थिर बैठा रहा, और वह आग की ओर पीठ करके खड़ा रहा, मानो मेरी निराशा में चुपचाप विजय प्राप्त कर रहा हो।

अंत में उसने कहा, ‘तो क्या तुमने मुझे अपमानित करने की सोची थी, भागकर कलाकार बनकर और अपने हाथों की मेहनत से अपना जीवन यापन करके? और तुमने मेरे बेटे को भी मुझसे छीनने और उसे एक गंदा अमेरिकी व्यापारी या एक नीच,

भिखारी चित्रकार बनाने की सोची थी?'

'हां, ताकि वह अपने पिता की तरह एक सज्जन व्यक्ति न बन जाए।'

'अच्छा हुआ कि तुम अपना राज़ नहीं रख सके— हा हा! अच्छा हुआ कि ये औरतें सब बातें फैला रही हैं। अगर उनके पास बात करने के लिए कोई दोस्त नहीं है, तो वे अपने राज़ मछलियों को फुसफुसाकर बता देती होंगी, या रेत पर लिख देती होंगी, या कुछ और करती होंगी; और अच्छा हुआ कि आज रात मेरा पेट भरा हुआ नहीं था, अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, वरना मैं सोता रहता और सपने में भी नहीं देख पाता कि मेरी प्यारी महिला क्या कर रही थी; या मुझमें अपनी बात को एक मर्द की तरह रखने की समझ या हिम्मत नहीं होती, जैसा कि मैंने किया है।'

उसे अपनी ही तारीफों में डूबा छोड़कर, मैं अपनी पांडुलिपि लेने के लिए उठी, क्योंकि मुझे याद आया कि वह ड्राइंग रूम की मेज पर ही रह गई थी, और मैंने ठान लिया कि अगर मुमकिन हो तो उसे दोबारा उसके हाथों में देखने की शर्मिंदगी से खुद को बचाऊं। मैं यह सोच भी नहीं सकती थी कि वह मेरे गुप्त विचारों और यादों पर मजे ले; हालांकि, सच कहूं तो, उसे उसमें अपने बारे में कुछ खास अच्छा नहीं मिलेगा, सिवाय पहले वाले हिस्से के; और ओह, मैं तो उसे सब कुछ जला देना ज्यादा पसंद करूंगी बजाय इसके कि वह पढ़े कि मैंने उस समय क्या लिखा था जब मैं इतनी मूर्ख थी कि उससे प्यार करती थी!

और हाँ,' जब मैं कमरे से निकल रहा था, तो वह चिल्लाया, 'तुम उस कमीनी, धूर्त नर्स से कह दो कि एक-दो दिन के लिए मेरे रास्ते से हट जाए; मैं उसे उसकी तनख्वाह देकर कल ही निकाल देता, लेकिन मुझे पता है कि वह घर के अंदर से ज़्यादा बाहर गड़बड़ करेगी।'

और जब मैं जाने लगी, तो वह मेरी वफादार दोस्त और नौकरानी को गालियाँ देता रहा और अपशब्द बोलता रहा, जिन्हें मैं इस कागज पर दोहराकर उसे अपवित्र नहीं करना चाहती। किताब रखते ही मैं उसके पास गई और उसे बताया कि हमारा प्रोजेक्ट कैसे विफल हो गया। वह भी मेरी तरह ही दुखी और भयभीत थी - और उस रात मुझसे भी ज़्यादा, क्योंकि मैं उस झटके से स्तब्ध थी और अपने क्रोध की कड़वाहट से उत्तेजित और समर्थित थी। लेकिन सुबह, जब मैं उस आशा के बिना उठी जो इतने लंबे समय से मेरा गुप्त सहारा और सांत्वना थी, और आज पूरे दिन, जब मैं बेचैन और लक्ष्यहीन होकर भटकती रही, अपने पति से दूर रही, अपने बच्चे से भी कतराती रही,

यह जानते हुए कि मैं उसकी शिक्षिका या साथी बनने के योग्य नहीं हूँ, उसके भविष्य के लिए कोई आशा नहीं रखती, और दिल से चाहती थी कि वह कभी पैदा ही न हुआ होता, - तब मुझे अपनी विपत्ति का पूरा एहसास हुआ, और अब भी हो रहा है। मैं जानती हूँ कि दिन-ब-दिन ऐसी भावनाएँ मुझ पर लौट आती रहेंगी। मैं एक गुलाम हूँ - एक कैदी हूँ - लेकिन यह कुछ भी नहीं है; अगर सिर्फ मैं ही होती तो शिकायत नहीं करती, लेकिन मुझे अपने बेटे को बर्बादी से बचाने की मनाही है, और जो कभी मेरा एकमात्र सहारा था, वही अब मेरी निराशा का सबसे बड़ा कारण बन गया है।

क्या मुझमें ईश्वर के प्रति कोई आस्था नहीं है? मैं उनकी ओर देखने और अपने हृदय को स्वर्ग की ओर उठाने का प्रयास करता हूँ, परन्तु वह धूल से चिपक जाता है। मैं केवल यही कह सकता हूँ, 'उन्होंने मुझे चारों ओर से घेर लिया है, जिससे मैं बाहर नहीं निकल सकता: उन्होंने मेरी जंजीर भारी कर दी है। उन्होंने मुझे कड़वाहट से भर दिया है—उन्होंने मुझे नागदोन के नशे में चूर कर दिया है।' मैं यह जोड़ना भूल जाता हूँ, 'परन्तु यद्यपि वे दुःख देते हैं, तो भी वे अपनी अपार दया के अनुसार करुणा भी दिखाएंगे। क्योंकि वे जानबूझकर किसी को दुःख नहीं देते और न ही मनुष्यों को दुखी करते हैं।' मुझे इस पर विचार करना चाहिए; और यदि इस संसार में मेरे लिए केवल दुःख ही है, तो अनंत शांति के सामने सबसे लंबा दुःखमय जीवन क्या है? और मेरे नन्हे आर्थर के लिए—क्या उसका मेरे सिवा कोई मित्र नहीं है? किसने कहा था, 'स्वर्ग में विराजमान तुम्हारे पिता की इच्छा नहीं है कि इन नन्हे-मुन्नों में से कोई भी नाश हो जाए?'

अध्याय XLI

20 मार्च। — श्री हंटिंगडन से कुछ समय के लिए छुटकारा पाकर मेरा मनोबल बढ़ने लगा है। वह मुझे फरवरी की शुरुआत में छोड़कर चले गए थे; और उनके जाते ही मैंने

चैन की सांस ली और अपनी ऊर्जा को लौटते हुए महसूस किया; बचने की उम्मीद से नहीं — उन्होंने मुझे बचने का कोई मौका नहीं दिया — बल्कि मौजूदा परिस्थितियों का सर्वोत्तम उपयोग करने के दृढ़ संकल्प से। आखिरकार आर्थर मेरे पास था; और अपनी निराशा और उदासीनता से बाहर निकलकर, मैंने उसके बचपन के मन में पनपी बुराइयों को जड़ से उखाड़ने और उन बुराइयों के बीज बोने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी, जिन्हें उन्होंने निष्फल बना दिया था। ईश्वर का शुक्र है, यह बंजर या पथरीली मिट्टी नहीं है; अगर यहाँ खरपतवार तेजी से उगते हैं, तो अच्छे पौधे भी उगते हैं। उसकी समझ पहले से कहीं अधिक तीव्र है, उसका हृदय अपने पिता से कहीं अधिक स्नेह से भरा है, और जब तक मेरे प्रयासों में कोई बाधा नहीं है, तब तक उसे आज्ञाकारी बनाना और उसे अपने सच्चे मित्र से प्रेम करना और उसे पहचानना सिखाना असंभव नहीं है।

शुरू में मुझे उसे उसके पिता द्वारा सिखाई गई बुरी आदतों से छुड़ाने में बहुत कठिनाई हुई, लेकिन अब यह कठिनाई लगभग दूर हो चुकी है: अब वह शायद ही कभी अपशब्द बोलता है, और मैं उसे सभी मादक पेय पदार्थों से पूरी तरह घृणा करने में सफल हो गया हूँ, जिसे शायद उसके पिता या उसके मित्र भी दूर नहीं कर पाएंगे। इतनी कम उम्र में भी उसे शराब का बहुत शौक था, और अपने और उसके पिता दोनों को याद करते हुए, मुझे इस तरह के शौक के परिणामों का डर सताता था। लेकिन अगर मैं उसे शराब की सामान्य मात्रा में कम देता, या उसे बिल्कुल भी पीने से मना कर देता, तो इससे शराब के प्रति उसका लगाव और बढ़ जाता, और वह इसे पहले से कहीं अधिक बड़ा आनंद मानता। इसलिए मैंने उसे उतनी ही शराब दी जितनी उसके पिता उसे देते थे; वास्तव में, उतनी ही जितनी वह चाहता था - लेकिन हर गिलास में मैंने चुपके से थोड़ी मात्रा में उल्टी लाने वाली दवा मिला दी, बस इतनी कि उसे मतली और उदासी तो हो, लेकिन उल्टी न आए। इस तरह की छूट से हमेशा अप्रिय परिणाम निकलते देख, वह जल्द ही इससे ऊब गया, लेकिन जितना अधिक वह इस दैनिक दावत से कतराता, उतना ही मैं उस पर दबाव डालता, यहाँ तक कि उसकी अनिच्छा पूर्ण घृणा में बदल गई। जब वह हर तरह की शराब से पूरी तरह से विरक्त हो गया, तो मैंने उसकी अपनी ही विनती पर उसे ब्रांडी-पानी और फिर जिन-पानी चखने की अनुमति दी, क्योंकि वह छोटा शराबी इन सभी से परिचित था, और मैंने ठान लिया था कि ये सभी उसके लिए समान रूप से घृणित होने चाहिए। अब मैंने ऐसा कर दिया है;

और चूंकि वह कहता है कि इनमें से किसी का भी स्वाद, गंध या दृश्य उसे बीमार करने के लिए पर्याप्त है, इसलिए मैंने उसे इनके बारे में चिढ़ाना छोड़ दिया है, सिवाय कभी-कभार दुर्व्यवहार के मामलों में डराने के लिए। 'आर्थर, अगर तुम अच्छे बच्चे नहीं बने तो मैं तुम्हें एक गिलास शराब दूँगा,' या 'अब, आर्थर, अगर तुमने फिर से ऐसा कहा तो तुम्हें ब्रांडी-पानी मिलेगा,' किसी भी अन्य धमकी के बराबर ही कारगर है; और एक-दो बार, जब वह बीमार था, तो मैंने बेचारे बच्चे को दवा के तौर पर बिना उल्टी लाने वाली दवा के थोड़ा सा शराब-पानी पिलाया है; और मैं इस प्रथा को कुछ समय तक जारी रखने का इरादा रखता हूँ; ऐसा नहीं है कि मुझे लगता है कि इससे शारीरिक रूप से कोई वास्तविक लाभ होगा, बल्कि इसलिए कि मैं अपने सहयोग के लिए सभी शक्तियों का उपयोग करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ; मैं चाहता हूँ कि यह घृणा उसके स्वभाव में इतनी गहराई से बैठ जाए कि परलोक में कुछ भी इसे दूर न कर सके।

इसलिए, मैं खुद को तसल्ली देती हूँ कि मैं उसे इस एक बुराई से बचा लूँगी; और बाकी के लिए, अगर उसके पिता के लौटने पर मुझे यह आशंका होती है कि मेरी सारी अच्छी शिक्षाएँ बर्बाद हो जाएँगी — अगर मिस्टर हंटिंगडन फिर से बच्चे को उसकी माँ से नफरत और घृणा करना सिखाने का खेल शुरू कर दें, और उसे उसके पिता की दुष्टता का अनुकरण करने के लिए प्रेरित करें — तो भी मैं अपने बेटे को उसके चंगुल से छुड़ा लूँगी। मैंने एक और योजना बनाई है जिसका सहारा ऐसी स्थिति में लिया जा सकता है; और अगर मुझे अपने भाई की सहमति और सहायता मिल जाए, तो मुझे इसकी सफलता पर कोई संदेह नहीं होगा। वह पुराना हॉल जहाँ हम दोनों का जन्म हुआ था, और जहाँ हमारी माँ की मृत्यु हुई थी, अब आबाद नहीं है, और न ही पूरी तरह से जर्जर हो गया है, जैसा कि मेरा मानना है। अब, अगर मैं उसे एक या दो कमरे रहने लायक बनवाने और मुझे एक अजनबी के रूप में किराए पर देने के लिए मना लूँ, तो मैं वहाँ अपने बच्चे के साथ, एक छद्म नाम से रह सकती हूँ, और अपनी पसंदीदा कला से अपना गुजारा कर सकती हूँ। शुरुआत में उन्हें मुझे पैसे उधार देने चाहिए, और मैं उन्हें चुका दूँगा, और सादगीपूर्ण स्वतंत्रता और एकांत में रहूँगा, क्योंकि घर एक सुनसान जगह पर है, और आस-पड़ोस में आबादी बहुत कम है, और उन्हें खुद मेरे चित्रों की बिक्री का सौदा करना चाहिए। मैंने पूरी योजना अपने दिमाग में बना ली है: और मुझे बस फ्रेडरिक को अपने विचार से सहमत कराना है। वह जल्द ही मुझसे मिलने आ रहे हैं, और तब मैं उन्हें यह प्रस्ताव रखूँगा, पहले उन्हें अपनी परिस्थितियों

के बारे में पर्याप्त जानकारी दे दूँगा ताकि वे इस योजना को स्वीकार कर लें।

मुझे लगता है कि वह मेरी स्थिति के बारे में मुझसे कहीं अधिक जानते हैं, जितना मैंने उन्हें बताया है। यह बात उनके पत्रों में व्याप्त कोमल उदासी से स्पष्ट होती है; और इस तथ्य से भी कि वह मेरे पति का ज़िक्र बहुत कम करते हैं, और जब भी करते हैं तो एक तरह की दबी हुई कड़वाहट दिखाते हैं; साथ ही इस बात से भी कि जब मिस्टर हंटिंगडन घर पर होते हैं तो वह मुझसे मिलने कभी नहीं आते। लेकिन उन्होंने कभी भी खुलकर उनके प्रति कोई नापसंदगी या मेरे प्रति सहानुभूति व्यक्त नहीं की; उन्होंने कभी कोई सवाल नहीं पूछा, न ही कुछ ऐसा कहा जिससे मेरा विश्वास हासिल हो सके। अगर उन्होंने ऐसा किया होता, तो शायद मुझे उनसे कुछ भी छिपाना न पड़ता। शायद मेरी चुप्पी से उन्हें दुख होता है। वह एक अजीब इंसान हैं; काश हम एक-दूसरे को बेहतर जानते। मेरी शादी से पहले, वह हर साल एक महीना स्टैनिंगली में बिताते थे; लेकिन हमारे पिता की मृत्यु के बाद, मैंने उन्हें केवल एक बार देखा है, जब मिस्टर हंटिंगडन के अनुपस्थित रहने के दौरान वह कुछ दिनों के लिए आए थे। इस बार वह कई दिन रुकेंगे, और हमारे बीच बचपन के बाद से अब तक की सबसे अधिक स्पष्टवादिता और आत्मीयता होगी। मेरा दिल पहले से कहीं ज्यादा उससे जुड़ा हुआ है; और मेरी आत्मा अकेलेपन से तंग आ चुकी है।

16 अप्रैल। — वह आया और चला गया। वह दो सप्ताह से अधिक नहीं रुका। समय जल्दी बीत गया, लेकिन बहुत ही सुखद रहा, और इससे मुझे लाभ हुआ। मेरा स्वभाव ही खराब है, क्योंकि मेरी विपत्तियों ने मुझे बहुत कड़वा बना दिया है: मैं अनजाने में अपने साथी मनुष्यों, विशेषकर पुरुषों के प्रति बहुत ही अप्रिय भावनाएँ रखने लगी थी; लेकिन यह देखकर सुकून मिलता है कि उनमें से कम से कम एक तो भरोसेमंद और सम्माननीय है; और निस्संदेह ऐसे और भी होंगे, हालाँकि मैं उन्हें कभी नहीं जानती, सिवाय बेचारे लॉर्ड लोबोरो के, और वह भी अपने समय में काफी बुरे थे। लेकिन फ्रेडरिक क्या होता, अगर वह दुनिया में रहता, और बचपन से ही मेरे जैसे परिचित पुरुषों के साथ घुलता-मिलता? और आर्थर, अपने स्वाभाविक मधुर स्वभाव के बावजूद, क्या होगा, अगर मैं उसे उस दुनिया और उन साथियों से नहीं बचाती? मैंने फ्रेडरिक को अपने डर के बारे में बताया, और उसके आने के बाद वाली शाम को, जब मैंने अपने छोटे बेटे को उसके चाचा के सामने पेश किया, तो मैंने उसे अपनी बचाव योजना के बारे में बताया।

मैंने कहा, 'फ्रेडरिक, वह कुछ मामलों में बिल्कुल तुम्हारे जैसा है: कभी-कभी मुझे लगता है कि वह अपने पिता से ज्यादा तुमसे मिलता-जुलता है; और मुझे इस बात की खुशी है।'

'तुम मेरी तारीफ कर रही हो, हेलेन,' उसने बच्ची के मुलायम, लहराते बालों को सहलाते हुए जवाब दिया।

नहीं, जब मैं आपसे कहूँ कि मैं उसे उसके पिता की बजाय बेन्सन जैसा देखना पसंद करूँगा, तो आप इसे कोई प्रशंसा नहीं समझेंगे। उसने अपनी भौहें थोड़ी ऊपर उठाईं, लेकिन कुछ नहीं कहा।

मैंने कहा, 'क्या आप जानते हैं कि मिस्टर हंटिंगडन किस तरह के आदमी हैं?'

मुझे लगता है मेरे पास एक विचार है।

क्या आपको इतना स्पष्ट विचार है कि आप बिना आश्चर्य या अस्वीकृति के यह सुन सकते हैं कि मैं उस बच्चे के साथ किसी गुप्त शरणस्थल में भाग जाने का विचार कर रही हूँ, जहाँ हम शांति से रह सकें और उसे फिर कभी न देखें?

क्या सचमुच ऐसा है?

मैंने आगे कहा, 'अगर आपने नहीं सुना है, तो मैं आपको उसके बारे में कुछ और बताऊंगा'; और मैंने उसके सामान्य आचरण का संक्षिप्त विवरण दिया, और उसके बच्चे के प्रति उसके व्यवहार का अधिक विस्तृत वर्णन किया, और बच्चे के बारे में अपनी आशंकाओं और उसे उसके पिता के प्रभाव से मुक्त करने के अपने दृढ़ संकल्प को समझाया।

फ्रेडरिक मिस्टर हंटिंगडन के प्रति बेहद नाराज़ थे और मेरे लिए बहुत दुखी थे; फिर भी वे मेरी योजना को बेतुका और अव्यवहारिक मानते थे। उन्हें आर्थर के लिए मेरी चिंताएँ परिस्थितियों के अनुपातहीन लगती थीं, और उन्होंने मेरी योजना पर इतनी आपत्तियाँ उठाईं और मेरी स्थिति सुधारने के इतने नरम तरीके सुझाए कि मुझे उन्हें यह समझाने के लिए और अधिक विस्तार से बताना पड़ा कि मेरे पति पूरी तरह से सुधरने वाले नहीं थे, और चाहे मेरा कुछ भी हो जाए, वे अपने बेटे को छोड़ने के लिए राजी नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे उतने ही दृढ़ थे जितना कि मैं बच्चे को छोड़ने के लिए; और वास्तव में, इसके अलावा कोई और उपाय नहीं था, जब तक कि मैं देश छोड़कर भाग न जाऊँ, जैसा कि मैंने पहले योजना बनाई थी। इससे बचने के लिए, अंततः वे पुराने हॉल के एक हिस्से को रहने योग्य स्थिति में लाने के लिए सहमत हो

गए, ताकि जरूरत के समय उसे शरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सके। लेकिन मुझे उम्मीद थी कि मैं इसका फायदा तब तक नहीं उठाऊंगा जब तक कि परिस्थितियां इसे वास्तव में आवश्यक न बना दें, जिसके लिए मैं पूरी तरह से तैयार था: क्योंकि यद्यपि, मेरे अपने लिए, मेरी वर्तमान स्थिति की तुलना में ऐसा आश्रम स्वर्ग जैसा प्रतीत होता है, फिर भी अपने दोस्तों के लिए, मिलिसेंट और एस्थर के लिए, जो मेरी दिल और स्नेह की बहनें हैं, ग्रासडेल के गरीब किरायेदारों के लिए, और सबसे बढ़कर, मेरी चाची के लिए, यदि संभव हो तो मैं यहीं रहूंगा।

29 जुलाई — श्रीमती हरग्रेव और उनकी बेटी लंदन से लौट आई हैं। एस्थर शहर में अपने पहले सीज़न का भरपूर आनंद ले रही है; लेकिन उसका दिल अभी भी खाली है और वह अविवाहित है। उसकी माँ ने उसके लिए एक बेहतरीन वर ढूँढा था, और यहाँ तक कि उस सज्जन को भी उसके चरणों में अपना दिल और धन अर्पित करने के लिए लाया था; लेकिन एस्थर ने साहसपूर्वक उन अनमोल उपहारों को ठुकरा दिया। वह एक अच्छे परिवार और बड़ी संपत्ति का आदमी था, लेकिन उस चंचल लड़की का कहना था कि वह आदम जितना बूढ़ा, पाप जितना बदसूरत और किसी ऐसे व्यक्ति जितना घृणित है जिसका नाम नहीं लिया जा सकता।

“लेकिन सच में, मुझे बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा,” उसने कहा: “माँ अपने प्यारे प्रोजेक्ट की विफलता से बहुत निराश थीं, और मेरी ज़िद पर बहुत गुस्सा थीं, और अभी भी हैं; लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकती। और वाल्टर भी मेरी ज़िद्दीपन और बेतुकेपन से, जैसा कि वह इसे कहते हैं, इतना नाराज़ हैं कि मुझे डर है कि वह मुझे कभी माफ़ नहीं करेंगे— मैंने सोचा भी नहीं था कि वह इतने निर्दयी हो सकते हैं जितना उन्होंने हाल ही में दिखाया है। लेकिन मिलिसेंट ने मुझसे विनती की कि मैं हार न मानूँ, और मुझे यकीन है, श्रीमती हंटिंगडन, अगर आपने उस आदमी को देखा होता जिसे वे मुझ पर थोपना चाहते थे, तो आप मुझे उसे भी न लेने की सलाह देतीं।”

मैंने कहा, 'चाहे मैंने उसे देखा हो या न देखा हो, मुझे ऐसा ही करना चाहिए था; इतना ही काफी है कि तुम उसे नापसंद करते हो।'

मुझे पता था कि तुम ऐसा ही कहोगी; हालाँकि माँ ने कहा था कि मेरे इस गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार से तुम्हें बहुत हैरानी होगी। तुम सोच भी नहीं सकती कि वो मुझे कितना डांटती हैं: मैं अवज्ञाकारी और कृतघ्न हूँ; मैं उनकी इच्छाओं को नकार रही हूँ, अपने भाई के साथ अन्याय कर रही हूँ, और उनके कंधों पर बोझ बन रही हूँ। कभी-

कभी मुझे डर लगता है कि आखिरकार वो मुझ पर काबू पा ही लेंगी। मेरा दृढ़ संकल्प तो है ही, लेकिन उनका भी है, और जब वो इतनी कड़वी बातें कहती हैं, तो मुझे इतना गुस्सा आता है कि मेरा मन करता है कि मैं उनकी बात मान लूँ, और फिर दिल तोड़कर कहूँ, "लो माँ, ये सब तुम्हारी गलती है!"

मैंने कहा, 'ऐसा मत करो!' 'ऐसे मकसद से आज्ञा मानना सरासर दुष्टता होगी और निश्चित रूप से इसके लिए उचित दंड मिलेगा। दृढ़ रहो, और तुम्हारी माँ जल्द ही तुम्हारा उत्पीड़न बंद कर देगी; और यदि वह सज्जन लगातार तुम्हारी बातों को ठुकराते हुए पाएंगे, तो वे भी तुम्हें परेशान करना बंद कर देंगे।'

ओह, नहीं! माँ तो अपनी कोशिशों से थकने से पहले ही सबको थका देंगी; और जहाँ तक मिस्टर ओल्डफील्ड की बात है, उन्होंने उन्हें समझा दिया है कि मैंने उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया है, उनके प्रति किसी नापसंदगी के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि मैं अभी नासमझ और अनुभवहीन हूँ, और फिलहाल किसी भी हालत में शादी के बारे में सोच भी नहीं सकती: लेकिन उन्हें पूरा यकीन है कि अगले मौसम तक मैं समझदार हो जाऊँगी, और उम्मीद करती हैं कि मेरी बचकानी कल्पनाएँ दूर हो जाएँगी। इसलिए वह मुझे घर ले आई हैं, ताकि मुझे मेरे कर्तव्य का सही बोध करा सकें, ताकि भविष्य में फिर से वही समय न आए। दरअसल, मुझे लगता है कि जब तक मैं हार नहीं मान लेती, वह मुझे दोबारा लंदन ले जाने का खर्च नहीं उठाएँगी: वह कहती हैं कि वह मुझे मौज-मस्ती और फिजूलखर्ची के लिए शहर नहीं ले जा सकतीं, और हर अमीर आदमी बिना दौलत के मुझे ले जाने के लिए राजी नहीं होगा, चाहे मैं खुद को कितना भी आकर्षक क्यों न समझूँ।

"एस्थर, मुझे तुम पर दया आती है; लेकिन फिर भी, मैं दोहराती हूँ, दृढ़ रहो। जिस आदमी को तुम नापसंद करती हो, उससे शादी करने की बजाय तुम सीधे गुलामी में खुद को बेच देना बेहतर समझोगी। अगर तुम्हारी माँ और भाई तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव करते हैं, तो तुम उन्हें छोड़ सकती हो, लेकिन याद रखो कि तुम जीवन भर अपने पति से बंधी रहोगी।"

लेकिन मैं शादी किए बिना उन्हें नहीं छोड़ सकती, और अगर कोई मुझे देखेगा ही नहीं तो मैं शादी नहीं कर सकती। मैंने लंदन में एक-दो सज्जनों को देखा जो मुझे पसंद आ सकते थे, लेकिन वे छोटे बेटे थे, और माँ मुझे उनसे मिलने नहीं देती थी - खासकर एक से, जो मुझे लगता है कि मुझे पसंद करता था - लेकिन उसने हमारी

बेहतर जान-पहचान में हर संभव बाधा डाली। क्या यह बात परेशान करने वाली नहीं थी?

मुझे पूरा यकीन है कि आप ऐसा ही महसूस करेंगी, लेकिन हो सकता है कि अगर आप उससे शादी कर लें, तो आपको बाद में मिस्टर ओल्डफील्ड से शादी करने की तुलना में कहीं ज़्यादा पछतावा हो। जब मैं आपसे कहती हूँ कि बिना प्यार के शादी मत करो, तो मेरा मतलब सिर्फ़ प्यार के लिए शादी करने की सलाह देना नहीं है: और भी बहुत सी बातें हैं जिन पर विचार करना ज़रूरी है। अपने दिल और हाथों को अपने वश में रखो, जब तक कि उन्हें छोड़ने का कोई ठोस कारण न मिल जाए; और अगर ऐसा मौका कभी न आए, तो इस विचार से अपने मन को तसल्ली दो कि भले ही अकेले जीवन में खुशियाँ बहुत ज़्यादा न हों, लेकिन कम से कम आपके दुख इतने तो नहीं होंगे कि आप उन्हें सह न सकें। शादी से आपकी परिस्थितियाँ बेहतर हो सकती हैं, लेकिन मेरी निजी राय में, इसके विपरीत परिणाम आने की संभावना कहीं ज़्यादा है।

मिलिसेंट तो यही सोचती है; लेकिन मुझे कहने दीजिए कि मैं इससे अलग सोचती हूँ। अगर मैं खुद को बुढ़ापे में कुंवारी रहने के लिए अभिशप्त मान लेती, तो मैं अपने जीवन का महत्व ही खो देती। साल दर साल ग्रोव में रहना—माँ और वाल्टर पर निर्भर रहना, ज़मीन पर बोझ बनकर रहना (अब जब मुझे पता है कि वे इसे किस नज़र से देखते हैं) बिल्कुल असहनीय है; इससे बेहतर तो मैं बटलर के साथ भाग जाऊँगी।

मैं मानती हूँ कि तुम्हारी परिस्थितियाँ अनोखी हैं; लेकिन धैर्य रखो, प्रिय; कोई भी काम जल्दबाजी में मत करो। याद रखो कि तुम अभी उन्नीस साल की भी नहीं हुई हो, और अभी कई साल बाकी हैं जब तक कोई तुम्हें कुंवारी नहीं कह सकता: तुम्हें नहीं पता कि ईश्वर ने तुम्हारे लिए क्या तय किया है। और इस बीच, याद रखो कि तुम्हें अपनी माँ और भाई के संरक्षण और समर्थन का अधिकार है, चाहे वे इसे लेकर कितने भी अनिच्छुक क्यों न दिखें।

'आप बहुत गंभीर हैं, श्रीमती हंटिंगडन,' एस्थर ने कुछ देर रुककर कहा। 'जब मिलिसेंट ने शादी के बारे में ऐसे ही निराशाजनक विचार व्यक्त किए, तो मैंने उससे पूछा कि क्या वह खुश है: उसने कहा कि वह खुश है; लेकिन मुझे उसकी बात पर पूरी तरह से यकीन नहीं हुआ; और अब मुझे आपसे भी यही सवाल पूछना पड़ रहा है।'

मैंने हंसते हुए कहा, 'यह एक बहुत ही अभद्र प्रश्न है, एक युवा लड़की द्वारा अपने

से कई साल बड़ी विवाहित महिला से पूछा गया प्रश्न, और मैं इसका उत्तर नहीं दूंगी।'

'माफ़ कीजिए, प्रिय महोदया,' उसने हंसते हुए मेरी बाहों में कूदते हुए और मुझे चंचल स्नेह से चूमते हुए कहा; लेकिन मैंने अपनी गर्दन पर एक आंसू महसूस किया, जब उसने अपना सिर मेरे सीने पर रख दिया और उदासी और चंचलता, संकोच और दुस्साहस के अजीब मिश्रण के साथ आगे कहा— 'मैं जानती हूँ कि आप उतने खुश नहीं हैं जितना मैं चाहती हूँ, क्योंकि आप अपना आधा जीवन ग्रासडेल में अकेले बिताते हैं, जबकि श्री हंटिंगडन जहाँ और जैसे चाहें आनंद लेते हैं। मैं अपने पति से केवल मेरे साथ साझा किए गए सुखों की अपेक्षा करूंगी; और यदि उनका सबसे बड़ा सुख मेरी संगति का आनंद लेना नहीं है, तो उनके लिए यह और भी बुरा होगा, बस इतना ही।'

"अगर विवाह को लेकर तुम्हारी ऐसी ही अपेक्षाएं हैं, एस्तेर, तो तुम्हें वाकई में सावधान रहना चाहिए कि तुम किससे शादी कर रही हो — या यूं कहें कि तुम्हें इससे पूरी तरह बचना चाहिए।"

अध्याय 32

1 सितंबर। — श्री हंटिंगडन अभी तक नहीं आए हैं। शायद वे क्रिसमस तक अपने दोस्तों के बीच ही रहेंगे; और फिर, अगली बसंत में, वे फिर चले जाएंगे। अगर उनका यही इरादा रहा, तो मैं ग्रासडेल में आराम से रह पाऊंगी — यानी, मैं रह पाऊंगी, और यही काफी है; शिकार के मौसम में दोस्तों की कभी-कभार की भीड़ भी सहन की जा सकती है, अगर आर्थर मुझसे इतना जुड़ जाए, इतनी अच्छी समझ और सिद्धांतों में इतना स्थापित हो जाए कि मैं तर्क और स्नेह से उसे उनके बुरे प्रभावों से बचा सकूं। काश, यह व्यर्थ की उम्मीद होती! लेकिन फिर भी, जब तक ऐसी परीक्षा का समय नहीं आता, मैं अपने प्यारे पुराने हॉल में अपने शांत आश्रय के बारे में सोचना बंद कर

दूंगी।

श्रीमान और श्रीमती हैटर्सले दो सप्ताह से ग्रोव में ठहरे हुए हैं: और चूंकि श्रीमान हरग्रेव अभी भी अनुपस्थित हैं, और मौसम भी बहुत सुहावना था, इसलिए मुझे अपनी दो सहेलियों, मिलिसेंट और एस्थर से वहाँ या यहाँ मिले बिना एक भी दिन नहीं बीता। एक बार, जब श्रीमान हैटर्सले उन्हें छोटी हेलेन और राल्फ के साथ फैटन में बिठाकर ग्रासडेल ले गए थे, और हम सब बगीचे में आनंद ले रहे थे - तब मुझे उस सज्जन से कुछ मिनटों की बातचीत करने का अवसर मिला, जबकि महिलाएं बच्चों के साथ खेल रही थीं।

‘क्या आप अपने पति के बारे में कुछ सुनना चाहेंगी, श्रीमती हंटिंगडन?’ उसने कहा।

'नहीं, जब तक आप मुझे यह नहीं बता सकते कि वह कब घर लौटेगा।'

‘मैं नहीं कर सकता।— तुम उसे नहीं चाहते, है ना?’ उसने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा।

'नहीं।'

खैर, मुझे लगता है कि उसके बिना तुम बेहतर हो, बिल्कुल सही – मैं तो उससे पूरी तरह तंग आ चुका हूँ। मैंने उससे कहा था कि अगर उसने अपना व्यवहार नहीं सुधारा तो मैं उसे छोड़ दूँगा, और उसने नहीं माना; इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया। देखो, मैं जितना तुम मुझे समझते हो उससे कहीं बेहतर इंसान हूँ; और तो और, मैं उससे और उसके पूरे परिवार से नाता तोड़ने के बारे में गंभीरता से सोच रहा हूँ, और आज से एक ईसाई और परिवार के मुखिया की तरह पूरी शालीनता और संयम से व्यवहार करने का फैसला किया है। इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है?

'यह एक ऐसा संकल्प है जो आपको बहुत पहले ही ले लेना चाहिए था।'

‘खैर, मैं अभी तीस साल का नहीं हुआ हूँ; अभी भी बहुत देर नहीं हुई है, है ना?’

नहीं; सुधार करने में कभी देर नहीं होती, बशर्ते आपके पास सुधार की इच्छा रखने की समझ और अपने उद्देश्य को पूरा करने की शक्ति हो।

सच कहूँ तो, मैंने इसके बारे में पहले भी कई बार सोचा है; लेकिन हंटिंगडन तो वाकई बहुत ही मज़ेदार इंसान है। आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि जब वह पूरी तरह नशे में न हो, बस थोड़ा सा मदहोश हो या थोड़ा सा मदहोश हो, तो कितना खुशमिजाज और मिलनसार होता है। हम सभी को दिल ही दिल में उससे थोड़ी सी

पसंद है, हालाँकि हम उसका सम्मान नहीं कर सकते।

लेकिन क्या आपको उसके जैसा बनना चाहिए?

नहीं, मैं जैसी हूं वैसी ही रहना पसंद करूंगी, चाहे मैं कितनी भी बुरी क्यों न हूं।

'आप जिस तरह से बुरे हैं, वैसे ही बने नहीं रह सकते, वरना आप हर दिन और भी बदतर और अधिक क्रूर होते जाएंगे, और इस प्रकार उसके जैसे होते चले जाएंगे।'

मुझे उनके चेहरे पर आई हास्यास्पद, आधी क्रोधित, आधी भ्रमित सी शक्ल देखकर मुस्कुराए बिना नहीं रह सका, जब उन्होंने मुझसे इस तरह से बात की।

मैंने कहा, 'मेरी सीधी-सादी बातों पर ध्यान मत दीजिए; ये नेक इरादे से कही गई हैं। लेकिन बताइए, क्या आप चाहेंगे कि आपके बेटे मिस्टर हंटिंगडन की तरह बनें— या फिर आपकी तरह ही?'

'इसे छोड़ो! नहीं।'

'क्या आप चाहेंगे कि आपकी बेटी आपसे घृणा करे - या कम से कम, आपके लिए सम्मान का कोई अंश न रखे, और केवल वही स्नेह रखे जो घोर खेद से भरा हो?'

'अरे नहीं! मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

और अंत में, क्या आप चाहते हैं कि आपकी पत्नी आपका नाम सुनते ही धरती में धंस जाए; आपकी आवाज से घृणा करे और आपके पास आने पर कांप उठे?

'वह कभी नहीं बदलेगी; मैं कुछ भी करूं, वह मुझे हमेशा पसंद करती है।'

'असंभव, श्री हैटर्सले! आप उसकी शांत आज्ञाकारिता को स्नेह समझ रहे हैं।'

'आग और क्रोध —'

अब इस बात पर इतना गुस्सा मत करो। मेरा मतलब यह नहीं है कि वह तुमसे प्यार नहीं करती - मुझे पता है, वह करती है, और जितना तुम हकदार हो उससे कहीं ज्यादा करती है; लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि अगर तुम बेहतर व्यवहार करोगे, तो वह तुम्हें और ज्यादा प्यार करेगी, और अगर तुम बुरा व्यवहार करोगे, तो वह तुम्हें धीरे-धीरे कम करती जाएगी, यहाँ तक कि अंत में डर, घृणा और मन की कड़वाहट में सब कुछ खो जाएगा, अगर गुप्त नफरत और तिरस्कार में नहीं तो। लेकिन, प्यार की बात छोड़ो, क्या तुम उसके जीवन के तानाशाह बनना चाहते हो - उसके जीवन से सारी खुशियाँ छीनकर उसे पूरी तरह दुखी करना चाहते हो?

'बिल्कुल नहीं; और मैं ऐसा नहीं करता, और न ही मैं ऐसा करने वाला हूँ।'

आपने जितना सोचा था उससे कहीं अधिक योगदान दिया है।

'छी! वह वैसी संवेदनशील, चिंतित और परेशान प्राणी नहीं है जैसा आप सोचते हैं: वह एक छोटी, शांत, सौम्य और स्नेहशील है; कभी-कभी थोड़ी रूठी हुई हो सकती है, लेकिन स्वभाव से शांत और संयमित है, और चीजों को उनके वास्तविक रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार है।'

'सोचो कि पांच साल पहले, जब तुमने उससे शादी की थी, तब वह कैसी थी और अब वह कैसी है।'

'मुझे याद है कि तब वह एक गोल-मटोल बच्ची थी, जिसका चेहरा गुलाबी और सफेद रंग का था: अब वह एक बेचारी छोटी सी प्राणी जैसी है, जो बर्फ की माला की तरह मिटती और पिघलती जा रही है। लेकिन छोड़ो भी! – इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।'

तो फिर इसका कारण क्या है? वर्षों का तो सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि वह तो सिर्फ पच्चीस साल की है।

'यह तो उसकी अपनी नाज़ुक सेहत का मामला है, और हे भगवान! आप मुझसे क्या उम्मीद करती हैं? - और हाँ, बच्चे भी हैं जो उसे चिंता में पागल कर देते हैं।'

नहीं, श्रीमान हैटर्सले, बच्चे उसे कष्ट से अधिक आनंद देते हैं: वे अच्छे, सुसंस्कृत बच्चे हैं—'

मुझे पता है वे हैं—भगवान उनका भला करे!

तो फिर उन पर दोष क्यों मढ़ना? मैं तुम्हें बताता हूँ, असल बात क्या है: यह तुम्हारे कारण चुपचाप बेचैनी और निरंतर चिंता है, और मुझे लगता है कि इसमें उसका अपना शारीरिक भय भी मिला हुआ है। जब तुम अच्छा व्यवहार करते हो, तो वह केवल कांपते हुए प्रसन्न होती है; उसे कोई सुरक्षा नहीं है, तुम्हारे निर्णय या सिद्धांतों पर कोई भरोसा नहीं है; बल्कि वह लगातार इस क्षणिक खुशी के अंत से भयभीत रहती है; जब तुम बुरा व्यवहार करते हो, तो उसके भय और दुख के कारण इतने गहरे होते हैं कि उसके अलावा कोई और उन्हें बता नहीं सकता। बुराई को धैर्यपूर्वक सहते हुए, वह भूल जाती है कि पड़ोसियों को उनके पापों के बारे में चेतावनी देना हमारा कर्तव्य है। चूंकि तुम उसकी चुप्पी को उदासीनता समझ लोगे, तो मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें उसके एक-दो पत्र दिखाऊंगा - मुझे उम्मीद है कि यह विश्वास भंग नहीं होगा, क्योंकि तुम उसके जीवनसाथी हो।

वह मेरे पीछे-पीछे पुस्तकालय में आया। मैंने मिलिसेंट के दो पत्र ढूंढे और उसे सौंप

दिए: एक लंदन से लिखा गया था, जो उसकी अय्याशी के सबसे बुरे दौर में से एक था; दूसरा गाँव में, एक शांत और संयमित समय में लिखा गया था। पहले पत्र में दुख और पीड़ा भरी थी; उस पर आरोप नहीं लगाया गया था, बल्कि उसके अय्याश साथियों के साथ उसके संबंध पर गहरा अफसोस जताया गया था, मिस्टर ग्रिम्सबी और अन्य लोगों की निंदा की गई थी, मिस्टर हंटिंगडन के खिलाफ कड़वी बातें कही गई थीं, और बड़ी चतुराई से अपने पति के दुराचार का दोष दूसरों पर डाला गया था। दूसरा पत्र आशा और आनंद से भरा था, फिर भी इस कांपते हुए एहसास के साथ कि यह खुशी ज्यादा समय तक नहीं टिकेगी; उसकी अच्छाई की बहुत प्रशंसा की गई थी, लेकिन एक स्पष्ट, हालांकि आंशिक रूप से व्यक्त, इच्छा के साथ कि यह दिल की स्वाभाविक भावनाओं से कहीं अधिक मजबूत आधार पर टिकी हो, और रेत पर बने उस घर के पतन का आधा-अधूरा डर था, - जो पतन कुछ ही समय बाद हो गया, जैसा कि हैटर्सले को पढ़ते समय अवश्य ही महसूस हुआ होगा।

पहले पत्र की शुरुआत में ही मुझे उसे शरमाते हुए देखकर अप्रत्याशित आनंद मिला; लेकिन उसने तुरंत मेरी ओर पीठ फेर ली और खिड़की पर बैठकर पत्र पढ़ना समाप्त किया। दूसरे पत्र के समय मैंने उसे एक-दो बार हाथ उठाते और जल्दी से अपने चेहरे पर फेरते देखा। क्या वह आंसू पोंछ रहा था? जब उसने ऐसा कर लिया, तो उसने कुछ देर गला साफ किया और खिड़की से बाहर देखा, फिर अपने पसंदीदा गीत की कुछ धुनें सीटी बजाकर सुनाईं, और फिर मुड़कर मुझे पत्र वापस दिए और चुपचाप मेरा हाथ मिलाया।

'मैं एक अभिशापित बदमाश रहा हूँ, भगवान जानता है,' उसने उसे दिल से दबाते हुए कहा, 'लेकिन देखो, अगर मैंने इसकी भरपाई नहीं की तो - धिक्कार है मुझे!'

"श्री हैटर्सले, खुद को कोसना बंद कीजिए; अगर ईश्वर ने आपकी ऐसी आधी प्रार्थनाएँ भी सुन ली होतीं, तो आप बहुत पहले ही नरक में होते—और आप भविष्य के लिए अपना कर्तव्य निभाकर अतीत के पापों का प्रायश्चित नहीं कर सकते, क्योंकि आपका कर्तव्य केवल वही है जो आप अपने ईश्वर के प्रति रखते हैं, और आप इससे अधिक कुछ नहीं कर सकते: आपके अतीत के पापों का प्रायश्चित किसी और को करना होगा। यदि आप सुधरना चाहते हैं, तो ईश्वर के आशीर्वाद, उनकी दया और उनकी सहायता की प्रार्थना कीजिए; उनके श्राप की नहीं।"

'भगवान मेरी मदद करें—मुझे यकीन है कि मुझे इसकी जरूरत है। मिलिसेंट कहाँ

है?’

‘वह वहीं है, अपनी बहन के साथ आ रही है।’

वह कांच के दरवाजे से बाहर निकला और उनसे मिलने चला गया। मैं थोड़ी दूरी पर उसके पीछे-पीछे गया। उसकी पत्नी को कुछ आश्चर्य हुआ जब उसने उसे जमीन से उठाया और गर्मजोशी से चूमते हुए गले लगाया; फिर अपने दोनों हाथ उसके कंधों पर रखकर, शायद उसने उसे अपने आने वाले बड़े कामों का संकेत दिया, क्योंकि उसने अचानक उसे बाहों में भर लिया और फूट-फूटकर रोने लगी, और बोली, — ‘करो, करो, राल्फ — हम बहुत खुश होंगे! तुम कितने अच्छे हो!’

‘नहीं, मैं नहीं,’ उसने उसे घुमाते हुए और मेरी ओर धकेलते हुए कहा। ‘उसका शुक्रिया अदा करो; ये सब उसी की वजह से हुआ है।’

मिलिसेंट कृतज्ञता से भरी हुई, मेरा धन्यवाद करने के लिए दौड़ी। मैंने इस कृतज्ञता से इनकार करते हुए कहा कि मेरे थोड़े से आग्रह और प्रोत्साहन से पहले ही उसके पति में सुधार की प्रवृत्ति थी, और मैंने तो बस वही किया जो वह स्वयं कर सकती थी और उसे करना चाहिए था।

‘अरे नहीं!’ वह चिल्लाई; ‘मुझे पूरा यकीन है कि मैं अपनी किसी भी बात से उसे प्रभावित नहीं कर सकती थी। अगर मैंने कोशिश भी की होती, तो मैं उसे केवल अपने बेढंगे प्रयासों से परेशान ही करती।’

‘तुमने कभी मुझे आजमाने की कोशिश नहीं की, मिली,’ उसने कहा।

उनके विदा लेने के कुछ ही समय बाद, वे हैटर्सले के पिता से मिलने गए हैं। उसके बाद वे अपने पैतृक घर लौटेंगे। मुझे आशा है कि उनके अच्छे इरादे विफल नहीं होंगे, और बेचारी मिलिसेंट को फिर से निराशा नहीं होगी। उनके पिछले पत्र में वर्तमान सुख और भविष्य के लिए सुखद आशाओं का वर्णन था; लेकिन अभी तक उनके सद्गुणों की परीक्षा लेने का कोई विशेष प्रलोभन नहीं आया है। अब से, वह निस्संदेह कुछ कम संकोची और संकोची होंगी, और वह अधिक दयालु और विचारशील होंगे। - तो निश्चित रूप से, उनकी आशाएँ निराधार नहीं हैं; और कम से कम मेरे पास अपने विचारों को स्थिर करने के लिए एक उज्ज्वल बिंदु तो है।

अध्याय XLIII

10 अक्टूबर। — श्री हंटिंगडन लगभग तीन सप्ताह पहले लौटे। उनका रूप-रंग, उनका व्यवहार, उनकी बातचीत और उनके प्रति मेरी भावनाएँ, मैं उनका वर्णन नहीं करना चाहूँगी। हालाँकि, उनके आने के अगले दिन ही उन्होंने मुझे छोटे आर्थर के लिए एक शिक्षिका नियुक्त करने की घोषणा करके चौंका दिया। मैंने उनसे कहा कि इस समय यह बिल्कुल अनावश्यक, बल्कि हास्यास्पद है: मुझे लगता है कि मैं उसे स्वयं पढ़ाने में पूरी तरह सक्षम हूँ — कम से कम कुछ वर्षों तक तो ज़रूर: बच्चे की शिक्षा ही मेरे जीवन का एकमात्र सुख और कार्य था; और चूंकि उन्होंने मुझे बाकी सभी कामों से वंचित कर दिया था, तो वे निश्चित रूप से मुझे यह काम सौंप सकते थे।

उन्होंने कहा कि मैं बच्चों को पढ़ाने या उनके साथ रहने के लायक नहीं हूँ: मैंने उस लड़के को एक मशीन से भी बदतर बना दिया था; मैंने अपनी कठोरता से उसकी कोमल आत्मा को चूर-चूर कर दिया था; और अगर मुझे उसे और अधिक समय तक संभालना पड़ा, तो मैं उसके दिल से सारी धूप बुझा दूँगा और उसे मेरे जैसा ही उदास तपस्वी बना दूँगा। और बेचारी राहेल को भी हमेशा की तरह बुरा-भला सुनना पड़ा; वह राहेल को बर्दाश्त नहीं कर सकता, क्योंकि वह जानता है कि राहेल उसे सही ढंग से समझती है।

मैंने नर्स और गवर्नेस के रूप में अपनी योग्यताओं का शांत भाव से बचाव किया और परिवार में आने वाले इस नए सदस्य का विरोध करती रही; लेकिन उन्होंने मुझे बीच में ही रोकते हुए कहा कि इस बारे में चिंता करने का कोई फायदा नहीं है, क्योंकि उन्होंने पहले ही एक गवर्नेस नियुक्त कर ली है और वह अगले सप्ताह आ रही है; इसलिए मुझे बस उसके स्वागत की तैयारी करनी है। यह खबर मेरे लिए काफी चौंकाने वाली थी। मैंने हिम्मत करके उसका नाम और पता पूछा, यह भी पूछा कि उसे किसने सुझाया था, या उन्होंने उसे क्यों चुना।

उन्होंने कहा, “वह एक बहुत ही प्रशंसनीय और धर्मपरायण युवती हैं; आपको डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरा मानना है कि उनका नाम मायर्स है; और एक सम्मानित

वृद्ध महिला ने मुझे उनके बारे में बताया था: धार्मिक जगत में उनकी बहुत प्रतिष्ठा है। मैंने उन्हें स्वयं नहीं देखा है, इसलिए मैं उनके व्यक्तित्व, व्यवहार आदि के बारे में आपको विस्तार से नहीं बता सकता; लेकिन, यदि वृद्ध महिला की प्रशंसा सही है, तो आप पाएंगे कि उनमें अपने पद के लिए सभी वांछनीय गुण हैं: जिनमें बच्चों के प्रति अत्यधिक प्रेम भी शामिल है।”

ये सब बातें उसने गंभीरता और शांत स्वर में कहीं, लेकिन उसकी आधी झुकी हुई आँख में एक हँसता हुआ शैतान था, जो मुझे अशुभ संकेत लगा। फिर भी, मैंने अपने उस्ताद के बारे में सोचा और आगे कोई आपत्ति नहीं जताई।

जब मिस मायर्स आईं, तो मैं उनका गर्मजोशी से स्वागत करने के लिए तैयार नहीं था। उनकी शक्ल-सूरत पहली नज़र में कोई खास अच्छा प्रभाव नहीं डाल पाई, और न ही उनके तौर-तरीकों और बाद के व्यवहार ने मेरे मन में उनके प्रति पहले से बनी हुई भ्रांति को किसी भी हद तक दूर किया। उनकी योग्यताएं सीमित थीं, और उनकी बुद्धि औसत दर्जे से ऊपर नहीं थी। उनकी आवाज़ सुरीली थी, और वे बुलबुल की तरह गा सकती थीं, और पियानो पर ठीक-ठाक संगत कर सकती थीं; लेकिन यही उनकी एकमात्र खूबियां थीं। उनके चेहरे पर छल और चालाकी झलकती थी, उनकी आवाज़ में भी। वे मुझसे डरी हुई लगती थीं, और अगर मैं अचानक उनके पास जाता तो वे चौंक जातीं। उनका व्यवहार सम्मानजनक और विनम्र था, यहाँ तक कि चापलूसी जैसा भी: उन्होंने पहले तो मेरी चापलूसी करने की कोशिश की, लेकिन मैंने जल्द ही उन्हें रोक दिया। अपने छोटे विद्यार्थी के प्रति उनका स्नेह कुछ ज़्यादा ही था, और मुझे उन्हें ज़रूरत से ज़्यादा लाड़-प्यार और अनुचित प्रशंसा के बारे में समझाना पड़ा; लेकिन वे उसका दिल नहीं जीत सकीं। उसकी धार्मिकता कभी-कभार आहें भरने, छत की ओर निगाहें उठाने और कुछ धार्मिक वाक्यांश बोलने तक ही सीमित थी। उसने मुझे बताया कि वह एक पादरी की बेटी थी और बचपन से ही अनाथ थी, लेकिन सौभाग्य से उसे एक बहुत ही धार्मिक परिवार में रहने का अवसर मिला; और फिर उसने परिवार के विभिन्न सदस्यों से प्राप्त दयालुता के बारे में इतनी कृतज्ञता से बताया कि मुझे अपने कठोर विचारों और अमित्र व्यवहार के लिए खेद हुआ और कुछ समय के लिए मेरा मन बदल गया, लेकिन ज्यादा देर तक नहीं: मेरी नापसंदगी के कारण बहुत तर्कसंगत थे, मेरे संदेह बहुत ठोस थे; और मैं जानता था कि मेरा कर्तव्य है कि मैं तब तक निगरानी रखूं और जांच करूं जब तक कि मेरे संदेह या तो

संतोषजनक रूप से दूर न हो जाएं या पुष्ट न हो जाएं।

मैंने उस दयालु और धर्मनिष्ठ परिवार का नाम और पता पूछा। उन्होंने एक सामान्य नाम और एक अज्ञात और दूरदराज के निवास स्थान का उल्लेख किया, लेकिन बताया कि वे अब महाद्वीप पर हैं और उनका वर्तमान पता उन्हें नहीं पता। मैंने उन्हें मिस्टर हंटिंगडन से ज़्यादा बात करते हुए कभी नहीं देखा; लेकिन जब मैं वहाँ नहीं होती थी, तो वे अक्सर स्कूल-कक्ष में झाँककर देखते थे कि छोटा आर्थर अपने नए साथी के साथ कैसा व्यवहार कर रहा है। शाम को, वह हमारे साथ ड्राइंग-रूम में बैठती थीं और जैसा कि वे दिखावा करती थीं, आर्थर या हमें खुश करने के लिए गाती-बजाती थीं, और उनकी ज़रूरतों का बहुत ध्यान रखती थीं और उन्हें पहले से ही भाँप लेती थीं, हालाँकि वे केवल मुझसे ही बात करती थीं; वास्तव में, आर्थर शायद ही कभी बात करने की स्थिति में होता था। अगर वह ऐसी न होतीं, तो मुझे उनकी उपस्थिति से बहुत राहत मिलती, सिवाय इसके कि किसी भी सभ्य व्यक्ति को उन्हें उस हालत में देखना बहुत शर्मनाक लगता।

मैंने राहेल को अपने संदेह के बारे में नहीं बताया; लेकिन पाप और दुख की इस भूमि में आधी सदी बिताने के बाद, वह स्वयं भी संदेह करने लगी थी। उसने मुझे शुरू से ही बताया कि वह उस नई गवर्नेंस से परेशान है, और मुझे जल्द ही पता चल गया कि वह भी उसे उतनी ही बारीकी से देख रही थी जितना मैं देख रहा था; और मुझे इस बात की खुशी थी, क्योंकि मैं सच्चाई जानने के लिए तरस रहा था: ग्रासडेल का वातावरण मुझे घुटन भरा लग रहा था, और मैं केवल वाइल्डफेल हॉल के बारे में सोचकर ही जी सकता था।

अंततः, एक सुबह, वह इतनी समझदारी से मेरे कमरे में आई कि उसके बोलने से पहले ही मैंने फैसला कर लिया था। जब वह मुझे कपड़े पहना रही थी, मैंने उसे अपने इरादे और मुझे उससे क्या सहायता चाहिए, यह समझाया और बताया कि उसे मेरी कौन-सी चीजें पैक करनी हैं और कौन-सी चीजें अपने लिए छोड़नी हैं, क्योंकि उसकी लंबी और निष्ठापूर्ण सेवा के बाद इस अचानक बर्खास्तगी के लिए मेरे पास उसे मुआवज़ा देने का कोई और तरीका नहीं था: यह एक ऐसी स्थिति थी जिसका मुझे गहरा अफसोस था, लेकिन जिसे टाला नहीं जा सकता था।

मैंने कहा, ‘और तुम क्या करोगी, रेचल? क्या तुम घर जाओगी, या कोई और जगह तलाशोगी?’

‘मेरा कोई घर नहीं है, महोदया, सिवाय आपके,’ उसने उत्तर दिया; ‘और अगर मैं आपको छोड़कर चली गई तो जीवन भर कभी वापस अपने घर नहीं जा पाऊंगी।’

‘लेकिन अब मैं एक महिला की तरह जीवन यापन नहीं कर सकती,’ मैंने जवाब दिया: ‘मुझे अपनी नौकरानी और अपने बच्चे की नर्स खुद ही बनना होगा।’

‘इसका क्या मतलब है!’ उसने कुछ उत्तेजना में जवाब दिया। ‘आपको सफाई, धुलाई और खाना पकाने के लिए किसी की ज़रूरत होगी, है ना? मैं ये सब कर सकती हूँ; और तनख्वाह की चिंता मत कीजिए: मेरे पास अभी भी कुछ बचत है, और अगर आप मुझे नहीं रखेंगी तो मुझे कहीं और से अपने रहने-खाने का इंतज़ाम करना पड़ेगा, या फिर अजनबियों के बीच काम करना पड़ेगा: और मुझे इसकी आदत नहीं है: इसलिए आप अपनी मर्ज़ी से कर लीजिए, महोदया।’ बोलते समय उसकी आवाज़ काँप रही थी और उसकी आँखों में आँसू थे।

‘मुझे यह सबसे ज्यादा पसंद आएगा, रेचल, और मैं तुम्हें उतना वेतन दूंगा जितना मैं दे सकता हूँ: जितना मैं अपने किसी भी नौकर को देता हूँ: लेकिन क्या तुम नहीं देखती कि मैं तुम्हें भी अपने साथ नीचे खींच रहा हूँ जबकि तुमने इसके लायक कुछ भी नहीं किया है?’

‘ओह, बकवास!’ उसने हैरानी से कहा।

और इसके अलावा, मेरा भविष्य का जीवन जीने का तरीका अतीत से इतना अलग होगा: इतना अलग कि आप सभी अब तक इससे अभ्यस्त रहे हैं—'

'क्या आपको लगता है, महोदया, कि मैं वह सहन नहीं कर सकता जो मेरी मालकिन सहन कर सकती है? मैं इतना अभिमानी और इतना नखरेबाज़ तो बिल्कुल नहीं हूँ; और मेरे छोटे स्वामी भी, भगवान उनका भला करे!'

लेकिन मैं जवान हूँ, रेचल; मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा; और आर्थर भी जवान है: उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।'

‘और मैं भी नहीं: मैं इतनी बूढ़ी नहीं हूँ कि कठिन भोजन और मेहनत सहन न कर सकूँ, अगर यह केवल उनकी मदद और उन्हें दिलासा देने के लिए हो, क्योंकि मैंने उन्हें अपने बच्चों की तरह प्यार किया है: वैसे भी मैं इतनी बूढ़ी हो चुकी हूँ कि उन्हें मुसीबत और खतरे में छोड़कर खुद अजनबियों के बीच जाने के बारे में सोच भी नहीं सकती।’

‘तो फिर तुम नहीं जाओगी, रेचल!’ मैंने अपनी वफादार दोस्त को गले लगाते हुए कहा। ‘हम सब साथ चलेंगे, और तुम देखोगी कि नया जीवन तुम्हें कितना रास आता

है।’

‘भगवान आपका भला करे, प्यारे!’ उसने स्नेहपूर्वक मुझे गले लगाते हुए कहा। ‘बस हमें इस दुष्ट घर से छुटकारा दिला दो, और हम सब ठीक हो जाएंगे, तुम देखोगे।’

मेरा जवाब था, 'मुझे भी ऐसा ही लगता है'; और इस तरह वह मुद्दा सुलझ गया।

उस सुबह डाक से मैंने फ्रेडरिक को कुछ जल्दबाजी में लिखे पत्र भेजे, उनसे विनती की कि वे मेरे लिए आश्रय तैयार रखें, क्योंकि संभवतः मैं उस पत्र के मिलने के एक दिन के भीतर ही वहाँ पहुँच जाऊँगा। मैंने उन्हें संक्षेप में अपने इस अचानक निर्णय का कारण भी बताया। फिर मैंने विदाई के तीन पत्र लिखे: पहला एस्थर हरग्रेव को, जिसमें मैंने उन्हें बताया कि ग्रासडेल में और अधिक समय तक रहना या अपने बेटे को उसके पिता की देखरेख में छोड़ना मेरे लिए असंभव है; और चूंकि यह अत्यंत महत्वपूर्ण था कि हमारा भविष्य का पता उन्हें और उनके परिचितों को पता न चले, इसलिए मैं इसे अपने भाई के अलावा किसी को नहीं बताऊँगा, जिनके माध्यम से मैं अपने मित्रों से पत्र व्यवहार जारी रखने की आशा करता हूँ। फिर मैंने उन्हें उनका पता दिया, उनसे बार-बार पत्र लिखने का आग्रह किया, उनकी चिंताओं के संबंध में अपनी कुछ पुरानी सलाहों को दोहराया और उन्हें स्नेहपूर्ण विदाई दी।

दूसरा पत्र मिलिसेंट को लिखा गया था; लगभग उसी आशय का, लेकिन थोड़ा अधिक गोपनीय, जैसा कि हमारी लंबी घनिष्ठता और उसके अधिक अनुभव और मेरी परिस्थितियों से बेहतर परिचित होने के लिए उपयुक्त था।

तीसरा पत्र मेरी चाची को था: यह एक बहुत ही कठिन और पीड़ादायक कार्य था, इसलिए मैंने इसे अंत के लिए छोड़ दिया था; लेकिन मुझे उन्हें अपने उस असाधारण कदम का कुछ स्पष्टीकरण देना ही था: और वह भी जल्दी, क्योंकि मेरे गायब होने के एक-दो दिन के भीतर उन्हें और मेरे चाचा को इसके बारे में पता चल ही जाता, क्योंकि यह संभव था कि श्री हंटिंगडन उनसे मेरे बारे में जानने के लिए शीघ्र ही संपर्क करेंगे। अंत में, मैंने उन्हें बताया कि मुझे अपनी गलती का एहसास है: मुझे इसके परिणाम की कोई शिकायत नहीं थी, और मुझे अपने दोस्तों को इसके परिणामों से परेशान करने का खेद था; लेकिन अपने बेटे के प्रति कर्तव्य के कारण मुझे अब और चुप नहीं रहना था; यह बिल्कुल आवश्यक था कि उसे उसके पिता के भ्रष्ट प्रभाव से मुक्त किया जाए। मैं उन्हें भी अपने छिपने के स्थान के बारे में नहीं बताऊँगा, ताकि वह और मेरे चाचा सच्चाई के साथ इसके बारे में किसी भी जानकारी से इनकार कर सकें;

लेकिन मेरे भाई के नाम से मुझे भेजे गए कोई भी संदेश मुझ तक अवश्य पहुँचेंगे। मुझे आशा थी कि वह और मेरे चाचा मेरे द्वारा उठाए गए कदम को क्षमा कर देंगे, क्योंकि यदि उन्हें सब कुछ पता चल जाता, तो मुझे यकीन था कि वे मुझे दोष नहीं देते; और मुझे भरोसा था कि वे मेरी वजह से खुद को कष्ट नहीं देंगे, क्योंकि अगर मैं सुरक्षित रूप से अपने ठिकाने तक पहुँच जाऊं और उसे बिना किसी बाधा के बचा सकूं, तो मैं बहुत खुश रहूंगा, सिवाय उनके विचारों के; और गुमनामी में अपना जीवन बिताने में पूरी तरह संतुष्ट रहूंगा, अपना पूरा ध्यान अपने बच्चे के पालन-पोषण में लगाऊंगा और उसे उसके माता-पिता दोनों की गलतियों से बचने की शिक्षा दूंगा।

ये सब काम कल ही हो गए थे: मैंने हमारे प्रस्थान की तैयारियों में पूरे दो दिन लगा दिए हैं, ताकि फ्रेडरिक को कमरे तैयार करने और राहेल को सामान पैक करने के लिए ज़्यादा समय मिल सके। राहेल को सामान पैक करना है, और मेरे सिवा कोई और उसकी मदद करने वाला नहीं है। मैं सामान इकट्ठा करने में मदद कर सकती हूँ, लेकिन मुझे उन्हें बक्सों में इस तरह रखने की कला नहीं आती कि वे कम से कम जगह लें; और राहेल के साथ-साथ मेरे और आर्थर के भी काम हैं। मैं कुछ भी पीछे छोड़ने का जोखिम नहीं उठा सकती, क्योंकि मेरे पास कुछ गिनी के अलावा कोई पैसा नहीं है; और इसके अलावा, जैसा कि राहेल ने कहा, जो कुछ भी मैं पीछे छोड़ती, वह शायद मिस मायर्स की संपत्ति बन जाता, और मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं होता।

लेकिन इन दो दिनों में मुझे कितनी परेशानी हुई है! शांत और संयमित दिखने की कोशिश में, उनसे हमेशा की तरह मिलने की कोशिश में, जब उनसे मिलना ज़रूरी था, और अपने नन्हे आर्थर को घंटों तक उनके हाथों में छोड़ने के लिए खुद को मजबूर करने में! लेकिन मुझे उम्मीद है कि अब ये मुश्किलें खत्म हो गई हैं: मैंने उसे बेहतर सुरक्षा के लिए अपने बिस्तर पर लिटा दिया है, और मुझे उम्मीद है कि अब उसके मासूम होंठ उनके दूषित चुंबनों से अपवित्र नहीं होंगे, न ही उसके नन्हे कान उनके शब्दों से दूषित होंगे। लेकिन क्या हम सुरक्षित बच निकलेंगे? काश सुबह हो जाती, और हम कम से कम अपने रास्ते पर होते! आज शाम, जब मैंने राहेल की हर संभव मदद कर दी थी, और मेरे पास इंतज़ार करने, उम्मीद करने और कांपने के अलावा कुछ नहीं बचा था, तो मैं इतनी बेचैन हो गई कि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। मैं खाना खाने नीचे गई, लेकिन मैं खुद को खाने के लिए मजबूर नहीं कर पाई। श्री हंटिंगडन ने इस बात पर ध्यान दिया।

दूसरा व्यंजन हटाए जाने के बाद जब उसे अपने आसपास देखने का समय मिला, तो उसने कहा, 'अब तुम्हारा क्या काम है?'

मैंने जवाब दिया, 'मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मुझे लगता है मुझे थोड़ी देर आराम करना चाहिए; आपको मेरी ज्यादा कमी तो महसूस नहीं होगी?'

'सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि आप अपनी कुर्सी छोड़ दें, तो भी उतना ही अच्छा होगा - बल्कि थोड़ा बेहतर होगा,' जब मैं कमरे से बाहर निकला, तो उसने बुदबुदाते हुए कहा, 'क्योंकि मुझे लगता है कि कोई और इसे भर सकता है।'

'शायद कल कोई और इसे भर देगा,' मैंने मन ही मन सोचा, लेकिन कहा नहीं। 'लो! उम्मीद है मैंने तुम्हें आखिरी बार देखा है,' मैंने बुदबुदाते हुए दरवाजा बंद कर दिया।

राहेल ने मुझे तुरंत आराम करने और कल की यात्रा के लिए अपनी शक्ति जुटाने के लिए कहा, क्योंकि हमें भोर से पहले निकलना था; लेकिन मेरी वर्तमान घबराहट और उत्तेजना की स्थिति में यह बिल्कुल असंभव था। कमरे में बैठकर, घंटों और मिनटों को गिनते हुए, हर आवाज़ पर कान लगाकर और कांपते हुए, कहीं कोई हमें खोज न ले और धोखा न दे दे, यह भी उतना ही असंभव था। मैंने एक किताब उठाई और पढ़ने की कोशिश की: मेरी आँखें पन्नों पर घूमती रहीं, लेकिन मेरे विचार उनमें लिखी बातों से जुड़ नहीं पा रहे थे। क्यों न पुराने तरीके का सहारा लिया जाए और इस आखिरी घटना को अपने वृत्तांत में जोड़ दिया जाए? मैंने एक बार फिर उसके पन्ने खोले और ऊपर लिखा विवरण लिखा - पहले तो मुश्किल से, लेकिन धीरे-धीरे मेरा मन शांत और स्थिर हो गया। इस तरह कई घंटे बीत गए: समय नजदीक आ रहा है; और अब मेरी आँखें भारी लग रही हैं और मेरा शरीर थका हुआ है। मैं अपनी बात भगवान को सौंप दूँगा, फिर लेट जाऊँगा और एक-दो घंटे सो लूँगा; और फिर!

छोटा आर्थर गहरी नींद में सो रहा है। पूरा घर शांत है: कोई देख नहीं रहा होगा। सभी बक्सों को बेन्सन ने रस्सियों से बांध दिया था और शाम ढलने के बाद चुपचाप पीछे की सीढ़ियों से नीचे ले जाकर एक गाड़ी में रखकर एम (कोच-ऑफिस) भेज दिया गया। कार्डों पर श्रीमती ग्राहम का नाम लिखा था, और मैं अब से इसी नाम को अपनाऊंगी। मेरी माँ का मायके का नाम ग्राहम था, इसलिए मुझे लगता है कि इस नाम पर मेरा कुछ अधिकार है और मैं इसे अपने असली नाम के अलावा किसी भी दूसरे नाम से बेहतर मानती हूँ, जिसे मैं दोबारा अपनाने की हिम्मत नहीं करती।

अध्याय 14

24 अक्टूबर। — ईश्वर का शुक्र है, आखिरकार मैं आज़ाद और सुरक्षित हूँ। हम सुबह जल्दी उठे, जल्दी और चुपचाप कपड़े पहने, धीरे-धीरे और दबे पांव हॉल में उतरे, जहाँ बेन्सन एक मशाल लेकर तैयार खड़ा था, ताकि वह दरवाज़ा खोलकर हमारे पीछे बंद कर दे। बक्सों आदि के कारण हमें एक आदमी को अपने गुप्त काम में शामिल करना पड़ा। सभी नौकर अपने मालिक के व्यवहार से भली-भांति परिचित थे, और बेन्सन या जॉन में से कोई भी मेरी सेवा करने को तैयार होता; लेकिन चूंकि बेन्सन अधिक गंभीर और उम्रदराज था, और राहेल का करीबी भी था, इसलिए मैंने राहेल को निर्देश दिया कि वह उसे इस अवसर पर अपना सहायक और विश्वासपात्र चुने, जहाँ तक आवश्यकता हो। मैं बस यही आशा करता हूँ कि उसे इससे कोई परेशानी न हो, और काश मैं उसे उस खतरनाक सेवा के लिए पुरस्कृत कर पाता जो उसने इतनी तत्परता से की। मैंने स्मृति चिन्ह के रूप में उसके हाथ में दो गिनी रख दिए, जब वह हमारे जाने के लिए मोमबत्ती जलाए दरवाजे पर खड़ा था, उसकी साफ-सुथरी भूरी आँखों में एक आँसू था, और उसके गंभीर चेहरे पर ढेर सारी शुभकामनाएँ थीं। अफसोस! मैं इससे अधिक कुछ नहीं दे सका: मेरे पास यात्रा के संभावित खर्चों के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त धन बचा था।

पार्क से निकलते ही जब हमारे पीछे छोटा सा दरवाज़ा बंद हुआ, तो कितनी खुशी का एहसास हुआ! फिर एक पल के लिए मैं रुका, उस ठंडी, ताजगी भरी हवा का एक झोंका अंदर लिया और हिम्मत करके घर की तरफ देखा। चारों ओर अंधेरा और सन्नाटा था: खिड़कियों में कोई रोशनी नहीं थी, न ही धुएँ के गुबार ने बर्फीले आसमान में टिमटिमाते तारों को छिपाया था। उस जगह को, जहाँ मैंने इतने गुनाह और दुख झेले थे, हमेशा के लिए अलविदा कहते हुए मुझे खुशी हुई कि मैंने इसे पहले क्यों नहीं

छोड़ा, क्योंकि अब इस कदम के उचित होने पर कोई संदेह नहीं था - जिसे मैं पीछे छोड़ आया था, उसके लिए कोई पछतावा नहीं था। मेरी खुशी को खलल डालने वाली कोई चीज नहीं थी सिवाय पकड़े जाने के डर के; और हर कदम हमें उस डर से और दूर ले जा रहा था।

ग्रासडेल को हम कई मील पीछे छोड़ चुके थे, इससे पहले कि गोल लाल सूरज हमारी मुक्ति का स्वागत करने के लिए उगता; और अगर उसके आस-पास के किसी निवासी ने हमें उस समय कोच की छत पर जाते हुए देखा होता, तो मुझे नहीं लगता कि वे हमारी पहचान पर शक कर पाते। चूंकि मैं विधवा के रूप में पेश होना चाहती थी, इसलिए मैंने अपने नए घर में शोक के वस्त्र पहनकर प्रवेश करना उचित समझा: इसलिए मैंने एक सादा काला रेशमी वस्त्र और लबादा, एक काला घूंघट (जिसे मैंने यात्रा के पहले बीस-तीस मील तक अपने चेहरे पर सावधानी से रखा), और एक काली रेशमी टोपी पहनी थी, जिसे मुझे राहेल से उधार लेना पड़ा था, क्योंकि मेरे पास खुद ऐसी कोई टोपी नहीं थी। यह बेशक नवीनतम फैशन की नहीं थी; लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। आर्थर ने अपने सबसे सादे कपड़े पहने थे और एक मोटे ऊनी शॉल में लिपटा हुआ था; और राहेल ने एक पुराने भूरे रंग के लबादे और हुड में खुद को लपेटा हुआ था, जो उसे एक नौकरानी की बजाय एक साधारण, हालांकि सभ्य, बूढ़ी औरत जैसा रूप दे रहा था।

ओह, इस तरह ऊपर बैठकर, चौड़ी, धूप से जगमगाती सड़क पर सरपट दौड़ते हुए, चेहरे पर ताज़ी सुबह की हवा का आनंद लेते हुए, एक अनजान देश से घिरे हुए, हर तरफ मुस्कुराते हुए - सुबह की पीली किरणों की चमक में प्रसन्नतापूर्वक, शानदार ढंग से मुस्कुराते हुए, कितना सुखद अनुभव था! मेरी बाहों में मेरा प्यारा बच्चा, लगभग मेरे जितना ही खुश, और मेरे वफादार दोस्त मेरे बगल में: मेरे पीछे जेल और निराशा, घोड़ों के हर कदम के साथ और पीछे हटती जा रही थी; और मेरे सामने स्वतंत्रता और आशा! मैं अपनी मुक्ति के लिए ईश्वर की स्तुति करने या अपने सहयात्रियों को हंसी के किसी अप्रत्याशित विस्फोट से चकित करने से खुद को मुश्किल से रोक पा रही थी।

लेकिन सफ़र बहुत लंबा था, और इसके खत्म होने से पहले ही हम सब बुरी तरह थक चुके थे। रात काफी ढल चुकी थी जब हम एल-बहुल कस्बे पहुँचे, और अभी भी हमारी यात्रा का अंत सात मील दूर था; और आगे कोई कोच या वाहन नहीं मिल रहा

था, सिवाय एक साधारण बैलगाड़ी के, और वह भी बड़ी मुश्किल से, क्योंकि आधे कस्बे के लोग सो चुके थे। और सफ़र का वह आखिरी पड़ाव बहुत ही नीरस था, ठंड और थकान से चूर हम सब अपनी-अपनी सीटों पर बैठे थे, सहारा लेने के लिए कुछ भी नहीं था, और ऊबड़-खाबड़, पहाड़ी रास्तों पर धीरे-धीरे घिसटते और बुरी तरह हिलते-डुलते जा रहे थे। लेकिन आर्थर राहेल की गोद में सो रहा था, और हम दोनों ने मिलकर उसे ठंडी रात की हवा से काफी हद तक बचा लिया।

आखिरकार हम एक बेहद खड़ी और पथरीली गली में चढ़ने लगे, जिसके बारे में राहेल ने कहा कि अंधेरा होने के बावजूद उसे वह अच्छी तरह याद थी: वह अक्सर मुझे अपनी बाहों में लेकर वहाँ जाया करती थी, और इतने सालों बाद ऐसी परिस्थितियों में दोबारा आने की उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। झटकों और रुकावटों से आर्थर की नींद खुल गई, तो हम सब गाड़ी से उतरकर चलने लगे। हमें ज़्यादा दूर नहीं जाना था; लेकिन क्या होता अगर फ्रेडरिक को मेरा पत्र न मिला होता? या अगर उसे हमारे स्वागत के लिए कमरे तैयार करने का समय न मिला होता, और इतनी मेहनत के बाद भी हमें वे कमरे अंधेरे, नमी भरे और असुविधाजनक, भोजन, आग और फर्नीचर से रहित मिलते?

अंततः वह भयानक, अंधकारमय इमारत हमारे सामने प्रकट हुई। गली हमें पीछे के रास्ते से घुमाकर ले गई। हम सुनसान आंगन में दाखिल हुए और सांस रोककर उस खंडहर को देखने लगे। क्या चारों ओर अंधेरा और वीरानगी छाई हुई थी? नहीं; एक खिड़की से हल्की लाल रोशनी की एक झलक हमें थोड़ी राहत दे रही थी, जहां की जाली अच्छी हालत में थी। दरवाजा बंद था, लेकिन काफी देर तक खटखटाने और इंतजार करने के बाद, और ऊपर की खिड़की से आ रही एक आवाज से कुछ बातचीत के बाद, हमें एक बूढ़ी औरत ने अंदर आने दिया, जिसे हमारे आने तक घर को हवादार रखने और साफ-सुथरा रखने का काम सौंपा गया था। उसने हमें एक छोटे से आरामदायक कमरे में ले गई, जो पहले हवेली का रसोईघर हुआ करता था, जिसे फ्रेडरिक ने अब रसोई में बदल दिया था। यहाँ उसने हमारे लिए एक रोशनी का इंतजाम किया, आग को अच्छी तरह से जलाया और जल्दी ही हमारे लिए एक साधारण भोजन तैयार किया; इस बीच हमने अपना यात्रा का सामान उतारा और अपने नए घर का जल्दी से जायजा लिया। रसोई के अलावा, दो शयनकक्ष, एक अच्छे आकार का बैठक कक्ष और एक छोटा बैठक कक्ष था, जिसे मैंने अपने स्टूडियो के

लिए निर्धारित किया था। ये सभी अच्छी तरह हवादार और देखने में अच्छी स्थिति में थे, लेकिन इनमें केवल कुछ पुरानी वस्तुएं ही रखी थीं, जिनमें से अधिकांश भारी काले ओक की बनी थीं। ये वही वस्तुएं थीं जो पहले वहां थीं और जिन्हें मेरे भाई के वर्तमान निवास में पुरातन अवशेषों के रूप में रखा गया था, और अब, पूरी जल्दबाजी में, वापस लाया गया था।

बुजुर्ग महिला मेरा और आर्थर का खाना बैठक में लेकर आई और मुझे पूरी औपचारिकता के साथ बताया कि 'मालिक ने श्रीमती ग्राहम को उनका प्रणाम कहा है और उन्होंने इतने कम समय में जितना हो सका उतना कमरा तैयार कर लिया है; लेकिन वे कल उनसे मिलने और आगे के निर्देश लेने का अवसर अवश्य लेंगे।'

मुझे कठोर दिखने वाली पत्थर की सीढ़ियों पर चढ़कर अपने नन्हे आर्थर के बगल में उस उदास, पुराने ज़माने के पलंग पर लेटने की खुशी हुई। वह पल भर में सो गया; लेकिन, थकावट के बावजूद, मेरी उत्तेजित भावनाएँ और बेचैन विचार मुझे सुबह होने तक जगाए रखे; लेकिन जब नींद आई तो वह मीठी और ताजगी भरी थी, और जागना शब्दों में बयान न करने लायक आनंददायक था। नन्हे आर्थर ने अपने कोमल चुम्बनों से मुझे जगाया। वह यहाँ था, मेरी बाहों में सुरक्षित, और अपने नालायक पिता से मीलों दूर! दिन के उजाले से कमरा जगमगा रहा था, क्योंकि सूरज आसमान में ऊँचा था, हालाँकि शरद ऋतु की धुंध के कारण वह थोड़ा छिपा हुआ था।

वास्तव में, अंदर और बाहर का दृश्य अपने आप में कोई खास खुशनुमा नहीं था। बड़ा सा खाली कमरा, पुराने और उदास फर्नीचर से सजा हुआ, संकरी जालीदार खिड़कियाँ, जिनसे ऊपर धुंधला, धूसर आकाश और नीचे उजाड़ जंगल दिखाई देता था, जहाँ काली पत्थर की दीवारें और लोहे का फाटक, उगी हुई घास और खरपतवार, और अनोखे आकार के कठोर सदाबहार पेड़ ही इस बात का एकमात्र प्रमाण थे कि कभी यहाँ एक बगीचा हुआ करता था। और दूर तक फैले उजाड़ और बंजर खेत किसी और समय में मुझे काफी उदास कर सकते थे; लेकिन अब, हर एक वस्तु मेरी आशा और स्वतंत्रता की उमंग भरी भावना को प्रतिध्वनित करती प्रतीत हो रही थी: सुदूर अतीत के अनिश्चित सपने और भविष्य की उज्ज्वल आशाएँ हर मोड़ पर मेरा स्वागत करती हुई लग रही थीं। अगर मेरे वर्तमान और पुराने घरों के बीच विशाल समुद्र होता, तो मैं निश्चित रूप से अधिक सुरक्षित महसूस करता; लेकिन इस एकांत स्थान पर शायद मैं गुमनाम ही रह जाता; और फिर मेरा भाई यहाँ कभी-कभार आकर मेरे

अकेलेपन को दूर कर देता।

वह उस सुबह आया था; और तब से मेरी उससे कई बार मुलाकात हो चुकी है; लेकिन उसे अपने आने-जाने के समय और तरीके को लेकर बहुत सतर्क रहना पड़ता है; यहां तक कि उसके नौकरों या उसके सबसे करीबी दोस्तों को भी वाइल्डफेल में उसके आने-जाने की जानकारी नहीं होनी चाहिए — सिवाय उन मौकों के जब किसी मकान मालिक से किसी अजनबी किरायेदार से मिलने की उम्मीद की जा सकती है — कहीं ऐसा न हो कि मेरे खिलाफ संदेह पैदा हो जाए, चाहे वह सच्चाई का हो या किसी झूठे आरोप का।

मुझे यहां आए लगभग दो सप्ताह हो गए हैं, और एक चिंता को छोड़कर, यानी पकड़े जाने के डर को छोड़कर, मैं अपने नए घर में आराम से बस गया हूँ: फ्रेडरिक ने मुझे सभी आवश्यक फर्नीचर और पेंटिंग का सामान उपलब्ध करा दिया है; राहेल ने मेरे अधिकांश कपड़े एक दूर के शहर में बेच दिए हैं और मेरे वर्तमान स्थिति के अनुरूप मेरे लिए एक अलमारी का इंतजाम कर दिया है; मेरे पास एक पुराना पियानो है, और मेरे बैठक कक्ष में किताबों से भरी एक अच्छी-खासी अलमारी है; और मेरा दूसरा कमरा भी अब पूरी तरह से पेशेवर और व्यावसायिक रूप ले चुका है। मैं अपने भाई द्वारा मेरे लिए किए गए सभी खर्चों को चुकाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हूँ; ऐसा नहीं है कि इसकी कोई आवश्यकता है, लेकिन मुझे ऐसा करने में खुशी मिलती है: मुझे अपने श्रम, अपनी कमाई, अपने मितव्ययी भोजन और घरेलू बचत में कहीं अधिक आनंद मिलेगा, जब मुझे पता होगा कि मैं ईमानदारी से अपना खर्च चला रहा हूँ, और मेरे पास जो कुछ भी थोड़ा-बहुत है वह पूरी तरह से मेरा अपना है; और मेरी इस मूर्खता के कारण किसी को भी आर्थिक रूप से नुकसान नहीं उठाना पड़ रहा है। मैं उससे अपना आखिरी पैसा भी वसूल लूंगी, अगर मैं उसे बहुत ज्यादा नाराज किए बिना ऐसा कर सकी। मेरे पास कुछ तस्वीरें पहले से ही तैयार हैं, क्योंकि मैंने रेचल को मेरा सारा सामान पैक करने को कहा था; और उसने अपना काम बखूबी निभाया — क्योंकि बाकी तस्वीरों के साथ उसने मिस्टर हंटिंगडन का वह चित्र भी लगा दिया जो मैंने अपनी शादी के पहले साल में बनाया था। उस पल मैं दंग रह गई जब मैंने उसे डिब्बे से निकाला और उन आँखों को अपनी ओर टकटकी लगाए देखा, मानो वे अब भी मेरे भाग्य को नियंत्रित करने की अपनी शक्ति पर गर्व कर रहे हों और मेरे भागने के प्रयासों का उपहास उड़ा रहे हों।

उस चित्र को बनाते समय मेरी भावनाएँ कितनी भिन्न थीं और अब उसे देखकर कितनी भिन्न हैं! मैंने मूल चित्र के योग्य कुछ बनाने के लिए कितना अध्ययन और परिश्रम किया था! अपने परिश्रम के फल में मुझे कितना सुख और कितना असंतोष मिला था! - सुख इसलिए कि मैंने चित्र की समानता को पकड़ लिया था; असंतोष इसलिए कि मैं उसे उतना सुंदर नहीं बना पाया था। अब, मुझे उसमें कोई सुंदरता नहीं दिखती - उसके किसी भी भाव में कुछ भी मनभावन नहीं है; फिर भी यह उससे कहीं अधिक सुंदर और मनभावन है - बल्कि मैं कहूँगी कि कहीं कम घृणित है - जितना कि वह अब है: क्योंकि इन छह वर्षों ने उसके व्यक्तित्व में उतना ही बड़ा परिवर्तन ला दिया है जितना कि उसके प्रति मेरी भावनाओं में। हालाँकि, फ्रेम काफी सुंदर है; यह किसी और चित्र के लिए काम आएगा। चित्र को मैंने नष्ट नहीं किया है, जैसा कि मैंने पहले सोचा था; मैंने इसे अलग रख दिया है; मुझे नहीं लगता कि यह अतीत के स्नेह की यादों के प्रति किसी दबी हुई कोमलता से प्रेरित है, न ही मुझे मेरी पिछली मूर्खता की याद दिलाने के लिए, बल्कि मुख्य रूप से इसलिए कि मैं अपने बेटे के चेहरे और हाव-भाव की तुलना इससे कर सकूँ, जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, और इस प्रकार यह अनुमान लगा सकूँ कि वह अपने पिता से कितना मिलता-जुलता है - यदि मुझे उसे अपने साथ रखने की अनुमति मिल जाए, और मुझे उस पिता का चेहरा फिर कभी न देखना पड़े - एक ऐसा आशीर्वाद जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता।

ऐसा लगता है कि मिस्टर हंटिंगडन मेरी छुपने की जगह का पता लगाने के लिए हर संभव कोशिश कर रहे हैं। वे खुद स्टैनिंगली गए हैं, अपने मनमुताबों का बदला लेने के लिए - उन्हें उम्मीद है कि अगर वे वहां न मिलें तो उनके पीड़ितों के बारे में उन्हें पता चल जाएगा - और उन्होंने इतने झूठ बोले हैं, और इतनी बेशर्मी से, कि मेरे चाचा को उन पर लगभग पूरा यकीन हो गया है, और वे मुझे उनके पास वापस जाने और फिर से दोस्त बनने के लिए ज़ोरदार वकालत कर रहे हैं। लेकिन मेरी चाची बेहतर जानती हैं: वे बहुत शांत और सतर्क हैं, और मेरे पति और मेरे दोनों के स्वभाव से अच्छी तरह वाकिफ हैं, इसलिए मेरे पति के किसी भी झूठे दावे से वे प्रभावित नहीं होंगी। लेकिन वे मुझे वापस नहीं चाहते; वे मेरा बच्चा चाहते हैं; और मेरे दोस्तों को यह यकीन दिला रहे हैं कि अगर मैं उनसे अलग रहना पसंद करती हूं, तो वे मेरी यह इच्छा पूरी करेंगे और मुझे बिना किसी परेशानी के ऐसा करने देंगे, और यहां तक कि मुझे एक उचित भत्ता भी देंगे, बशर्ते मैं तुरंत उनके बेटे को उन्हें सौंप दूं। लेकिन भगवान मेरी मदद करें!

मैं अपने बच्चे को सोने के लिए भी नहीं बेचूंगी, चाहे इससे हम दोनों भूखे मरने से बच जाएं: बेहतर होगा कि वह मेरे साथ मर जाए बजाय इसके कि वह अपने पिता के साथ जिए।

फ्रेडरिक ने मुझे उस सज्जन से प्राप्त एक पत्र दिखाया, जो इतनी धृष्टता से भरा था कि उसे न जानने वाला कोई भी व्यक्ति आश्चर्यचकित हो जाता, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे भाई से बेहतर इसका उत्तर कोई नहीं दे सकता था। उसने मुझे अपने उत्तर का कोई विवरण नहीं दिया, सिवाय इसके कि उसने मेरे शरणस्थल के बारे में अपनी जानकारी होने की बात स्वीकार नहीं की, बल्कि यह अनुमान लगाने के लिए छोड़ दिया कि उसे इसके बारे में बिल्कुल भी पता नहीं था, यह कहते हुए कि इस विषय पर उससे या मेरे किसी अन्य रिश्तेदार से जानकारी लेना व्यर्थ था, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि मैं इतनी विकट परिस्थिति में पहुँच गया था कि मैंने अपने सबसे अच्छे मित्रों से भी अपने शरणस्थल को छिपा लिया था; लेकिन अगर उसे इसके बारे में पता होता, या कभी पता चलता, तो निश्चित रूप से श्री हंटिंगडन वह अंतिम व्यक्ति होते जिन्हें वह यह सूचना देते; और उन्हें बच्चे के लिए सौदेबाजी करने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि फ्रेडरिक को लगता था कि वह अपनी बहन के बारे में इतना जानता है कि वह कह सकता है कि वह जहाँ भी हो, या जिस भी स्थिति में हो, कोई भी बात उसे बच्चे को सौंपने के लिए राजी नहीं करेगी।

30 तारीख — हाय! मेरे भले पड़ोसी मुझे चैन से नहीं बैठने देते। किसी न किसी तरह उन्होंने मेरा पता लगा लिया है, और मुझे तीन अलग-अलग परिवारों के चक्कर झेलने पड़ रहे हैं, जो कमोबेश यह जानने पर तुले हैं कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ, कहाँ से आया हूँ, और मैंने ऐसा घर क्यों चुना है। सच कहूँ तो, मुझे उनकी संगति बिल्कुल भी नहीं चाहिए, और उनकी जिज्ञासा मुझे परेशान और चिंतित करती है: अगर मैं उनकी जिज्ञासा शांत कर दूँ, तो इससे मेरे बेटे का भविष्य खतरे में पड़ सकता है, और अगर मैं बहुत रहस्यमय बन जाऊँ तो इससे उनका शक और बढ़ेगा, अटकलें लगेंगी, और वे और भी ज़्यादा कोशिशें करेंगे — और शायद यही मेरी प्रसिद्धि को एक गाँव से दूसरे गाँव तक फैलाने का ज़रिया बन जाए, जब तक कि यह किसी ऐसे व्यक्ति के कानों तक न पहुँच जाए जो इसे ग्रासडेल मनोर के स्वामी तक पहुँचा दे।

मुझसे उम्मीद की जाएगी कि मैं उनके फोन का जवाब दूँ, लेकिन अगर पूछताछ करने पर पता चले कि उनमें से कोई आर्थर के मेरे साथ आने के लिए बहुत दूर रहता

है, तो उन्हें कुछ समय के लिए व्यर्थ ही प्रतीक्षा करनी होगी, क्योंकि मैं उसे छोड़कर नहीं जा सकती, सिवाय चर्च जाने के, और मैंने अभी तक ऐसा करने की कोशिश भी नहीं की है: क्योंकि - यह शायद मेरी नादानी हो, लेकिन मुझे उसके छीन लिए जाने का इतना निरंतर डर सताता रहता है कि जब वह मेरे पास नहीं होता तो मैं कभी चैन से नहीं रहती; और मुझे डर है कि ये मानसिक भय मेरी प्रार्थनाओं को इतना बाधित कर देंगे कि मुझे चर्च जाने से कोई लाभ नहीं मिलेगा। हालाँकि, मैं अगले रविवार को यह प्रयोग करने का इरादा रखती हूँ, और कुछ घंटों के लिए उसे राहेल की देखभाल में छोड़ने का वचन देती हूँ। यह एक कठिन कार्य होगा, लेकिन निश्चित रूप से कोई नासमझी नहीं; और पादरी ने मुझे धार्मिक नियमों की उपेक्षा करने के लिए डाँटा है। मेरे पास कोई पर्याप्त बहाना नहीं था, और मैंने वादा किया कि अगर सब ठीक रहा, तो वह मुझे अगले रविवार को मेरी सीट पर देखेंगे; क्योंकि मैं नास्तिक कहलाना नहीं चाहती। और इसके अलावा, मैं जानती हूँ कि सार्वजनिक उपासना में समय-समय पर शामिल होने से मुझे बहुत सुकून और लाभ मिलेगा, बशर्ते मुझमें इतना विश्वास और धैर्य हो कि मैं अपने विचारों को इस गंभीर अवसर के अनुरूप व्यवस्थित कर सकूँ और उन्हें अपने बिछड़े हुए बच्चे और उसके न होने की भयावह संभावना पर ध्यान केंद्रित करने से रोक सकूँ; और निश्चित रूप से ईश्वर अपनी दया से मुझे इस कठिन परीक्षा से बचाएगा: मेरे बच्चे के भले के लिए, भले ही मेरे लिए न हो, वह उसे मुझसे बिछड़ने नहीं देगा।

3 नवंबर। — मैंने अपने पड़ोसियों से कुछ और जान-पहचान बनाई है। इस इलाके और आसपास के क्षेत्र के सबसे प्रतिष्ठित सज्जन और चहेते (कम से कम उनके अपने आकलन में) एक युवा हैं...

* * * * *

यहीं पर बात खत्म हो गई। बाकी सब कुछ छिन्न-भिन्न हो गया। कितनी क्रूरता! ठीक उसी समय जब वो मेरा ज़िक्र करने वाली थी! मुझे पूरा यकीन था कि वो आपके ही विनम्र सेवक का ज़िक्र करने वाली थी, हालांकि ज़ाहिर है, अच्छे शब्दों में नहीं। ये बात मैं उसके उन कुछ शब्दों से ही नहीं, बल्कि हमारी जान-पहचान की शुरुआत में उसके हाव-भाव और व्यवहार से भी समझ गई थी। खैर! मैं उसके मेरे प्रति पूर्वाग्रह और हम महिलाओं के बारे में उसकी कठोर सोच को आसानी से माफ़ कर सकती थी,

जब मैंने देखा कि उसका अनुभव कितनी शानदार महिलाओं तक ही सीमित था।

हालांकि, मेरे प्रति सम्मान रखते हुए, उसने बहुत पहले ही अपनी गलती का एहसास कर लिया था, और शायद वह इसके ठीक विपरीत एक और गलती कर बैठी थी: क्योंकि यदि शुरुआत में मेरे प्रति उसकी राय मेरी योग्यता से कम थी, तो मुझे यकीन था कि अब मेरी योग्यता उसकी राय से भी कम थी; और यदि इस निरंतरता का पहला भाग मेरी भावनाओं को ठेस न पहुँचाने के लिए हटा दिया गया था, तो शायद दूसरा भाग मेरे अहंकार को अधिक बढ़ावा देने के डर से हटा दिया गया था। खैर, मैं यह सब देखने के लिए बहुत कुछ दे देता—धीरे-धीरे आए बदलाव का साक्षी बनने के लिए, और मेरे प्रति उसके सम्मान और मित्रता की प्रगति को देखने के लिए, और उसके मन में जो भी गर्मजोशी भरी भावनाएँ थीं, उन्हें देखने के लिए; यह देखने के लिए कि उसके मन में कितना प्रेम था, और उसके नेक संकल्पों और अथक प्रयासों के बावजूद वह प्रेम कैसे बढ़ता गया— लेकिन नहीं, मुझे इसे देखने का कोई अधिकार नहीं था: यह सब उसके अलावा किसी और की आँखों के लिए बहुत पवित्र था, और उसने इसे मुझसे छिपाकर अच्छा किया था।

अध्याय 15

अच्छा, हैलफोर्ड, इस सब के बारे में आपका क्या विचार है? और जब आप इसे पढ़ रहे थे, क्या आपने कभी कल्पना की कि इसे पढ़ते समय मेरी भावनाएँ कैसी रही होंगी? शायद नहीं; लेकिन मैं अभी उन पर विस्तार से चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ: मैं केवल इतना स्वीकार करूँगा, भले ही यह मानवीय स्वभाव, और विशेष रूप से मेरे लिए, थोड़ा अनुचित हो, कि कहानी का पहला भाग मेरे लिए दूसरे भाग से अधिक कष्टदायक था। ऐसा नहीं था कि मैं श्रीमती हंटिंगडन के साथ हुए अन्याय से पूरी तरह अनजान था या उनके कष्टों से अप्रभावित था, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा

कि उनके पति के प्रति उनकी कृपा धीरे-धीरे कम होते देखकर और अंत में उनके सारे स्नेह को पूरी तरह से समाप्त होते देखकर मुझे एक प्रकार की स्वार्थी संतुष्टि मिली। हालाँकि, उनके प्रति मेरी सहानुभूति और उनके प्रति मेरे क्रोध के बावजूद, इस पूरी कहानी का प्रभाव यह हुआ कि मेरे मन से एक असहनीय बोझ हट गया और मेरा हृदय आनंद से भर गया, मानो किसी मित्र ने मुझे किसी भयानक दुःस्वप्न से जगा दिया हो।

अब सुबह के लगभग आठ बज चुके थे, क्योंकि पढ़ते-पढ़ते मेरी मोमबत्ती बुझ गई थी। मेरे पास दूसरा विकल्प था, या तो घर में शोर मचाते हुए दूसरी मोमबत्ती जलाऊं, या फिर बिस्तर पर जाकर सुबह होने का इंतज़ार करूं। माँ की वजह से मैंने दूसरा विकल्प चुना; लेकिन मैंने कितनी खुशी से तकिया ढूंढा और उससे मुझे कितनी गहरी नींद आई, यह आप कल्पना कीजिए।

भोर होते ही मैं उठा और पांडुलिपि को खिड़की के पास ले आया, लेकिन अभी उसे पढ़ना असंभव था। मैंने आधा घंटा कपड़े पहनने में लगाया और फिर वापस पांडुलिपि के पास गया। अब थोड़ी मुश्किल से मैं पढ़ सका; और बड़ी उत्सुकता से मैंने शेष पांडुलिपि को पढ़ा। जब पांडुलिपि समाप्त हुई और उसके अचानक समाप्त होने का मेरा क्षणिक अफसोस टल गया, तो मैंने खिड़की खोली और ठंडी हवा में सिर रखकर सुबह की शुद्ध हवा के गहरे कश लिए। कितनी खूबसूरत सुबह थी! घास पर जमी ओस की मोटी परत थी, अबाबीलें मेरे चारों ओर चहचहा रही थीं, कौवे कांव-कांव कर रहे थे और दूर से गायों की रंभाने की आवाज आ रही थी; और सुबह की ठंड और गर्मी की धूप की मिठास हवा में घुल रही थी। लेकिन मैंने उस बारे में नहीं सोचा: प्रकृति के सुंदर चेहरे को निहारते हुए अनगिनत विचारों और विभिन्न भावनाओं का एक सैलाब मुझ पर उमड़ पड़ा। लेकिन जल्द ही, विचारों और भावनाओं का यह उथल-पुथल छंट गया, और उसकी जगह दो अलग-अलग भावनाएँ उभर आईं: एक ऐसी असीम खुशी कि मेरी प्रिय हेलेन वैसी ही थी जैसा मैं उसे समझना चाहता था - कि दुनिया के आरोपों और मेरी अपनी काल्पनिक धारणाओं के धुंधले कोहरे के बावजूद, उसका चरित्र उस सूरज की तरह उज्ज्वल, स्पष्ट और बेदाग था जिसे मैं देखना भी बर्दाश्त नहीं कर सकता था; और दूसरा अपने आचरण के लिए शर्म और गहरा पश्चाताप।

नाश्ते के तुरंत बाद मैं जल्दी से वाइल्डफेल हॉल की ओर चल पड़ा। कल से राहेल

के प्रति मेरी नज़र में सम्मान कई गुना बढ़ गया था। मैं उसका स्वागत एक पुराने दोस्त की तरह करने को तैयार था; लेकिन दरवाज़ा खोलते ही उसने जिस ठंडे अविश्वास भरे भाव से मुझे देखा, उससे मेरी सारी विनम्रता रुक गई। मुझे लगता है कि उस बूढ़ी कुंवारी ने खुद को अपनी मालकिन की इज़्ज़त का रखवाला बना लिया था, और निस्संदेह वह मुझमें एक और मिस्टर हरग्रेव को देख रही थी, बस फर्क इतना था कि मैं उसकी मालकिन का ज़्यादा आदर और भरोसा पाने के कारण उससे भी ज़्यादा खतरनाक था।

'श्रीमती ग्राहम के बारे में मेरे पूछने पर उन्होंने जवाब दिया, 'श्रीमान, आज मेरी पत्नी किसी से नहीं मिल सकतीं, उनकी तबीयत ठीक नहीं है।'

'लेकिन मुझे उससे मिलना ही होगा, रेचल,' मैंने कहा और दरवाजा बंद होने से रोकने के लिए अपना हाथ दरवाजे पर रख दिया।

'जी हां, महोदय, आप ऐसा नहीं कर सकते,' उसने पहले से भी अधिक कठोर भाव से अपना चेहरा समेटते हुए उत्तर दिया।

'कृपया मेरी घोषणा कर दीजिए।'

'इसका कोई फायदा नहीं है, मिस्टर मार्खम; वह बीमार है, मैं आपको बता रही हूं।'

ठीक उसी क्षण, जब मैं किले पर अचानक हमला करके बिना सूचना दिए आगे बढ़ने की अनुचित गलती करने से खुद को रोक रहा था, एक भीतरी दरवाजा खुला और छोटा आर्थर अपने चंचल साथी, कुत्ते के साथ प्रकट हुआ। उसने मेरा हाथ अपने दोनों हाथों में पकड़ लिया और मुस्कुराते हुए मुझे आगे खींच लिया।

‘मम्मा ने कहा है कि आपको अंदर आना है, मिस्टर मार्खम,’ उसने कहा, ‘और मुझे बाहर जाकर रोवर के साथ खेलना है।’

राहेल आह भरकर चली गई, और मैं बैठक में जाकर दरवाजा बंद कर लिया। वहाँ, अंगीठी के सामने, दुखों से जर्जर हो चुकी एक लंबी, सुंदर आकृति खड़ी थी। मैंने पांडुलिपि को मेज पर रख दिया और उसके चेहरे की ओर देखा। चिंतित और पीला पड़ा हुआ उसका चेहरा मेरी ओर मुड़ा हुआ था; उसकी निर्मल, गहरी आँखें मेरी आँखों में इस कदर गहराई से टिकी हुई थीं कि मानो मुझ पर जादू हो गया हो।

‘क्या तुमने इसे देख लिया है?’ उसने धीरे से कहा। जादू टूट गया।

मैंने कमरे में आगे बढ़ते हुए कहा, 'मैंने इसे पूरा पढ़ लिया है, और मैं जानना चाहता हूँ कि क्या आप मुझे माफ करेंगे - क्या आप मुझे माफ कर सकते हैं?'

उसने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उसकी आँखों में चमक थी और उसके होंठों और गालों पर हल्की लालिमा छा गई थी। जैसे ही मैं उसके पास पहुँचा, वह अचानक मुँह फेरकर खिड़की के पास चली गई। मुझे पूरा यकीन था कि वह गुस्से में नहीं थी, बल्कि अपनी भावनाओं को छिपाने या नियंत्रित करने की कोशिश कर रही थी। इसलिए मैंने हिम्मत करके उसका पीछा किया और उसके पास खड़ा हो गया, लेकिन कुछ नहीं बोला। उसने बिना सिर घुमाए मुझे अपना हाथ दिया और बड़ी मुश्किल से खुद को संभालते हुए बुदबुदाई, “क्या तुम मुझे माफ़ कर सकते हो?”

मैंने सोचा, उस कोमल हाथ को अपने होठों तक ले जाना विश्वासघात माना जा सकता है, इसलिए मैंने उसे केवल धीरे से अपने होठों के बीच दबाया और मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "मैं ऐसा मुश्किल से कर सकती हूँ। आपको मुझे यह पहले ही बता देना चाहिए था। यह अविश्वास दर्शाता है।"

‘अरे नहीं,’ उसने उत्सुकता से मेरी बात काटते हुए कहा; ‘ऐसा नहीं था। आप पर विश्वास की कमी तो नहीं थी; लेकिन अगर मैंने आपको अपने अतीत के बारे में कुछ भी बताया होता, तो मुझे अपने आचरण का बचाव करने के लिए सब कुछ बताना पड़ता; और मैं इस तरह का खुलासा करने से कतरा सकती थी, जब तक कि मजबूरी ने मुझे ऐसा करने के लिए बाध्य न कर दिया। लेकिन आप मुझे माफ कर रहे हैं? – मैंने बहुत बड़ी गलती की है, मैं जानती हूँ; लेकिन हमेशा की तरह, मैंने अपनी गलती का कड़वा फल भुगता है, – और मुझे अंत तक इसे भुगतना ही होगा।’

सचमुच, यह बात बहुत कड़वी थी, पीड़ा से भरी हुई, दृढ़ निश्चय के साथ कही गई थी। अब, मैंने उसका हाथ अपने होठों तक उठाया और बार-बार उसे प्यार से चूमा; क्योंकि आँसुओं ने मुझे कोई और प्रतिक्रिया देने से रोक दिया था। उसने बिना किसी प्रतिरोध या नाराजगी के मेरे इन तीव्र स्पर्शों को सहन किया; फिर, अचानक मुझसे मुँह मोड़कर, वह कमरे में दो-तीन बार चक्कर लगाने लगी। उसकी भौंहों के सिकुड़ने, होठों के कसकर बंद होने और हाथों को मरोड़ने से मैं समझ गया कि इस बीच उसके भीतर तर्क और भावनाओं के बीच एक भयंकर संघर्ष चुपचाप चल रहा था। अंत में वह खाली चूल्हे के सामने रुकी और मेरी ओर मुड़कर शांत स्वर में बोली—अगर इसे शांति कहा जा सकता है, जो स्पष्ट रूप से एक ज़बरदस्त प्रयास का परिणाम थी —'अब, गिल्बर्ट, तुम्हें मुझे छोड़ना होगा—अभी नहीं, बल्कि जल्द ही—और तुम्हें फिर कभी नहीं आना चाहिए।'

‘हेलेन, ऐसा दोबारा कभी नहीं होगा? ठीक उसी समय जब मैं तुमसे पहले से कहीं ज्यादा प्यार करता हूँ।’

“इसी कारण से, यदि ऐसा है, तो हमें फिर कभी नहीं मिलना चाहिए। मुझे लगा कि यह मुलाकात आवश्यक थी—कम से कम मैंने खुद को यही समझाया था—ताकि हम अतीत के लिए एक-दूसरे से क्षमा मांग सकें और क्षमा प्राप्त कर सकें; लेकिन अब दूसरी मुलाकात का कोई बहाना नहीं हो सकता। जैसे ही मेरे पास कहीं और शरण लेने के साधन होंगे, मैं इस जगह को छोड़ दूंगा; लेकिन हमारा संपर्क यहीं समाप्त होता है।”

'यहीं पर समाप्त करो!' मैंने गूंजते हुए कहा; और ऊँची, नक्काशीदार चिमनी के पास पहुँचकर, मैंने अपना हाथ उसकी भारी नक्काशी पर टिका दिया, और मौन, उदास निराशा में अपना माथा उस पर गिरा दिया।

‘तुम्हें दोबारा नहीं आना चाहिए,’ उसने बोलना जारी रखा। उसकी आवाज़ में हल्की सी कंपन थी, लेकिन मुझे लगा कि उसके पूरे हाव-भाव में जानबूझकर संयम झलक रहा था, खासकर उस भयानक बात को देखते हुए जो उसने कही थी। ‘तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं ऐसा क्यों कह रही हूँ,’ उसने फिर कहा; ‘और तुम्हें यह समझना चाहिए कि अभी अलग हो जाना ही बेहतर है: — अगर हमेशा के लिए अलविदा कहना मुश्किल है, तो तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिए।’ वह थोड़ी देर रुकी। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। ‘क्या तुम वादा करोगे कि दोबारा नहीं आओगे? — अगर तुम वादा नहीं करोगे, और अगर तुम फिर से यहाँ आए, तो तुम मुझे यहाँ से भगा दोगे, इससे पहले कि मुझे पता चले कि मुझे कोई और शरण कहाँ मिलेगी — या उसे कैसे ढूँढना है।’

‘हेलेन,’ मैंने अधीरता से उसकी ओर मुड़ते हुए कहा, ‘मैं शाश्वत वियोग के विषय पर तुम्हारी तरह शांत और निष्पक्ष होकर चर्चा नहीं कर सकता। यह मेरे लिए मात्र सुविधा का प्रश्न नहीं है; यह जीवन और मृत्यु का प्रश्न है!’

वह चुप रही। उसके पीले होंठ काँप रहे थे, और उसकी उंगलियाँ घबराहट से थरथरा रही थीं, जैसे ही उसने घबराकर उन्हें उस बालों की माला में उलझा लिया जिसमें उसकी छोटी सोने की घड़ी बंधी थी—एकमात्र कीमती वस्तु जिसे उसने अपने पास रखने की अनुमति दी थी। मैंने एक अन्यायपूर्ण और क्रूर बात कह दी थी; लेकिन मुझे इसके बाद कुछ और भी बुरा कहना ही होगा।

‘लेकिन, हेलेन!’ मैंने धीमी, कोमल आवाज़ में कहना शुरू किया, उसकी ओर

देखने की हिम्मत न करते हुए, 'वह आदमी तुम्हारा पति नहीं है: स्वर्ग की दृष्टि में उसने तुम्हारे ऊपर अपना सारा अधिकार खो दिया है—' उसने आश्चर्यजनक ऊर्जा के साथ मेरा हाथ पकड़ लिया।

'गिल्बर्ट, ऐसा मत करो!' वह इतनी कठोर आवाज में चिल्लाई कि किसी कठोर हृदय को भी भेद देती। 'भगवान के लिए, ये तर्क देने की कोशिश मत करो! कोई शैतान भी मुझे इस तरह यातना नहीं दे सकता!'

'मैं नहीं करूँगा, मैं नहीं करूँगा!' मैंने धीरे से अपना हाथ उसके हाथ पर रखते हुए कहा; मैं उसकी उग्रता से जितना भयभीत था, उतना ही अपने दुराचार से शर्मिंदा भी था।

"सच्चे दोस्त की तरह व्यवहार करने के बजाय," उसने मुझसे अलग होते हुए और खुद को पुरानी आरामकुर्सी में गिराते हुए कहा, "और पूरी ताकत से मेरी मदद करने के बजाय—या यूं कहें कि वासना के विरुद्ध सच्चाई के संघर्ष में अपना हिस्सा लेने के बजाय—तुम सारा बोझ मुझ पर डाल देते हो;—और इससे भी संतुष्ट न होकर, तुम मेरे खिलाफ लड़ने की पूरी कोशिश करते हो—जबकि तुम यह जानते हो!"—वह रुकी और अपना चेहरा अपने रूमाल में छिपा लिया।

'मुझे क्षमा कर दो, हेलेन!' मैंने विनती की। 'मैं इस विषय पर फिर कभी एक शब्द भी नहीं बोलूंगी। लेकिन क्या हम अब भी दोस्तों की तरह मिल सकते हैं?'

'यह ठीक नहीं है,' उसने उदास होकर सिर हिलाते हुए उत्तर दिया; और फिर उसने अपनी आँखें मेरी ओर उठाईं, एक हल्के से तिरस्कारपूर्ण भाव से जैसे कह रही हो, 'तुम्हें भी यह बात मुझसे बेहतर पता होनी चाहिए।'

'तो फिर हमें क्या करना चाहिए?' मैंने जोश से चिल्लाकर कहा। लेकिन तुरंत ही मैंने शांत स्वर में कहा, 'मैं आपकी हर इच्छा पूरी करूँगा; बस यह मत कहिए कि यह हमारी आखिरी मुलाकात है।'

और क्यों नहीं? क्या आपको नहीं पता कि हर बार जब हम मिलते हैं, तो अंतिम विदाई के विचार और भी दर्दनाक हो जाते हैं? क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि हर मुलाकात हमें पिछली मुलाकात से भी ज़्यादा एक-दूसरे के करीब लाती है?

यह आखिरी सवाल उसने जल्दबाजी में और धीमी आवाज़ में पूछा, और झुकी हुई आँखें और चेहरे पर आई लाली साफ दिखा रही थी कि कम से कम उसने तो इसे महसूस किया था। इस तरह की बात स्वीकार करना या फिर यह कहना कि 'अब मेरे

पास आपको जाने के लिए कहने का अधिकार है: किसी और समय स्थिति अलग हो सकती है', समझदारी भरा नहीं था, लेकिन मैं इतना नीच नहीं था कि उसकी ईमानदारी का फायदा उठाने की कोशिश करूं।

'लेकिन हम लिख तो सकते हैं,' मैंने झिझकते हुए कहा। 'आप मुझे यह सांत्वना देने से मना नहीं करेंगे?'

हम अपने भाई के जरिए एक-दूसरे के बारे में जान सकते हैं।

'तुम्हारा भाई!' पश्चाताप और शर्म की एक लहर मेरे अंदर दौड़ गई। उसे मेरे हाथों हुए उस ज़ख्म के बारे में पता नहीं था; और मुझमें उसे बताने की हिम्मत नहीं थी। 'तुम्हारा भाई हमारी मदद नहीं करेगा,' मैंने कहा: 'वह हमारे बीच के सभी संबंधों को पूरी तरह से खत्म करना चाहता है।'

'और मुझे लगता है कि वह सही ही होगा। हम दोनों के मित्र होने के नाते, वह हम दोनों का भला ही चाहेगा; और हर मित्र यही कहेगा कि एक-दूसरे को भूल जाना हमारा हित और कर्तव्य दोनों है, भले ही हमें खुद यह न लगे। लेकिन डरो मत, गिल्बर्ट,' उसने मेरी स्पष्ट बेचैनी देखकर उदास मुस्कान के साथ कहा; 'तुम्हें भूलने की संभावना बहुत कम है। लेकिन मेरा इरादा फ्रेडरिक को हमारे बीच संदेश पहुंचाने का माध्यम बनाने का नहीं था – केवल इतना कि हम दोनों उसके माध्यम से एक-दूसरे की कुशलक्षेम जान सकें; – और इससे अधिक नहीं होना चाहिए: क्योंकि तुम जवान हो, गिल्बर्ट, और तुम्हें शादी करनी चाहिए – और एक दिन तुम करोगे भी, भले ही तुम्हें अभी यह असंभव लगे: और यद्यपि मैं यह नहीं कह सकती कि मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे भूल जाओ, मैं जानती हूँ कि यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी भावी पत्नी की खुशी के लिए सही है; – और इसलिए मुझे यही चाहना चाहिए और मैं यही चाहूँगी,' उसने दृढ़ता से कहा।

'और तुम भी जवान हो, हेलेन,' मैंने साहसपूर्वक उत्तर दिया; 'और जब वह दुराचारी बदमाश अपना करियर खत्म कर लेगा, तब तुम मुझे अपना हाथ दोगी— मैं तब तक इंतजार करूंगा।'

लेकिन वह मुझे यह सहारा नहीं देना चाहती थी। किसी दूसरे की मृत्यु पर अपनी आशाएँ टिकाने की नैतिक बुराई से परे, जो यदि इस दुनिया के लिए अयोग्य था, तो कम से कम अगली दुनिया के लिए उतना ही अयोग्य था, और जिसका सुधार इस प्रकार हमारा अभिशाप और उसका सबसे बड़ा अपराध हमारा सबसे बड़ा लाभ बन

जाएगा, - उसने इसे पागलपन बताया: श्री हंटिंगडन जैसी आदतों वाले कई पुरुष परिपक्व, यद्यपि दयनीय, वृद्धावस्था तक जीवित रहे थे। 'और यदि मैं,' उसने कहा, 'उम्र में जवान हूँ, तो मैं दुःख में बूढ़ी हूँ; लेकिन अगर विपत्ति मुझे मारने में विफल रहती है, इससे पहले कि बुराई उसे नष्ट कर दे, सोचो, अगर वह केवल पचास वर्ष का हो, तो क्या तुम बीस या पंद्रह वर्ष - अस्पष्ट अनिश्चितता और संदेह में - अपनी जवानी और मर्दानगी के पूरे चरम पर - प्रतीक्षा करोगे और अंत में मुझसे जैसी मुरझाई और थकी हुई स्त्री से शादी करोगे - मुझे आज से अगले दिन तक कभी देखे बिना? - तुम नहीं करोगे,' उसने मेरी अटूट निष्ठा की गंभीर प्रतिज्ञाओं को रोकते हुए कहा, - 'या यदि तुम करोगे, तो तुम्हें नहीं करना चाहिए। मुझ पर विश्वास करो, गिल्बर्ट; इस मामले में मैं तुमसे बेहतर जानता हूँ। तुम मुझे निर्मम और पत्थर दिल समझते हो, और शायद समझते भी हो, लेकिन—

‘नहीं, हेलेन।’

‘खैर, कोई बात नहीं: अगर आप चाहें तो कर सकते हैं, लेकिन मैंने अपना एकांत पूरी तरह से आलस्य में नहीं बिताया है, और मैं आपकी तरह क्षणिक आवेग में आकर नहीं बोल रही हूँ। मैंने इन सभी बातों पर बार-बार विचार किया है; मैंने इन प्रश्नों पर स्वयं से वाद-विवाद किया है, और अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में गहराई से सोचा है; और, मेरा विश्वास कीजिए, मैं अंततः सही निष्कर्ष पर पहुँची हूँ। अब अपनी भावनाओं के बजाय मेरे शब्दों पर भरोसा कीजिए, और कुछ वर्षों में आप देखेंगे कि मैं सही थी—हालाँकि अभी तो मुझे खुद भी यह मुश्किल से ही दिखाई दे रहा है,’ उसने आह भरते हुए अपना सिर हाथ पर टिकाते हुए धीरे से कहा। ‘और अब मुझसे बहस मत कीजिए: जो कुछ आप कह सकते हैं, वह सब मेरे हृदय ने कह दिया है और मेरी बुद्धि ने उसका खंडन कर दिया है। उन विचारों का मुकाबला करना ही काफी कठिन था जब वे मेरे भीतर फुसफुसा रहे थे; आपके मुँह से वे दस गुना अधिक कष्टदायी हैं, और अगर आपको पता होता कि वे मुझे कितना दुख पहुँचाते हैं तो आप तुरंत चुप हो जाते, मुझे पता है। अगर आपको मेरी वर्तमान भावनाओं का पता होता, तो आप उन्हें अपने कष्टों की कीमत पर भी कम करने की कोशिश करते।’

मैंने कड़वे स्वर में कहा, 'मैं जा रहा हूँ—एक मिनट में, अगर इससे आपको राहत मिले—और कभी वापस नहीं आऊँगा!' 'लेकिन, अगर हम कभी मिल न सकें, और फिर कभी मिलने की उम्मीद न हो, तो क्या चिट्ठी के ज़रिए अपने विचार साझा करना

गुनाह है? क्या एक जैसी सोच वाले लोग मिल नहीं सकते, और अपने सांसारिक जीवन की परिस्थितियों और भाग्य की परवाह किए बिना, आपस में संवाद स्थापित नहीं कर सकते?'

'हो सकता है, हो सकता है!' वह क्षणिक उत्साह से चिल्लाई। 'मैंने भी यही सोचा था, गिल्बर्ट, लेकिन मैंने इसका ज़िक्र करने से हिचकिचाया, क्योंकि मुझे डर था कि तुम इस विषय पर मेरे विचार नहीं समझोगे। मुझे अब भी यही डर है—मुझे डर है कि कोई भी दयालु मित्र हमसे कहेगा कि हम दोनों बिना किसी आशा या भविष्य की संभावना के आध्यात्मिक संबंध बनाए रखने के विचार से खुद को धोखा दे रहे हैं—बिना व्यर्थ के पछतावे और नुकसानदेह आकांक्षाओं को बढ़ावा दिए, और उन विचारों को पोषित किए जिन्हें कठोरता और निर्दयता से नष्ट होने के लिए छोड़ देना चाहिए।'

'हमारे दयालु मित्रों की परवाह मत करो: यदि वे हमारे शरीर को अलग कर सकते हैं, तो यह काफी है; भगवान के नाम पर, वे हमारी आत्माओं को अलग न करें!' मैं भयभीत होकर चिल्लाया, कहीं ऐसा न हो कि वह हमें यह अंतिम सांत्वना देने से इनकार करना अपना कर्तव्य समझे।

"पर यहाँ हमारे बीच चिट्ठियों का आदान-प्रदान नहीं हो सकता," उसने कहा, "बिना किसी नए विवाद को हवा दिए; और जब मैं यहाँ से गई थी, तो मेरा इरादा था कि मेरा नया ठिकाना तुम्हारे लिए, बाकी दुनिया की तरह, अज्ञात रहे; ऐसा नहीं है कि अगर तुम मुझसे मिलने न आने का वादा करो तो मुझे तुम्हारे वचन पर शक होगा, बल्कि मुझे लगा कि अगर तुम्हें पता होगा कि तुम ऐसा नहीं कर सकते तो तुम अपने मन में अधिक शांत रहोगे, और अगर तुम मेरी स्थिति की कल्पना अपने मन में नहीं कर पाओगे तो मुझसे दूरी बनाए रखना तुम्हारे लिए कम मुश्किल होगा। लेकिन सुनो," उसने मुस्कुराते हुए मेरी अधीरता को रोकने के लिए अपनी उंगली उठाई: "छह महीने में तुम्हें फ्रेडरिक से ठीक-ठीक पता चल जाएगा कि मैं कहाँ हूँ; और अगर तुम अब भी मुझे पत्र लिखने की इच्छा रखते हो, और सोचते हो कि तुम बिना किसी भावना के, बिना किसी भावना के, एक ऐसा पत्राचार बनाए रख सकते हो जैसा कि कम से कम निराकार आत्माएँ या भावहीन मित्र रख सकते हैं, तो लिखो, और मैं तुम्हें जवाब दूंगी।"

'छह महीने!'

"हाँ, ताकि तुम्हारा वर्तमान जोश थोड़ा शांत हो जाए, और तुम्हारे दिल के मेरे प्रति

प्रेम की सच्चाई और स्थिरता को परख सकूँ। और अब, हमारे बीच बहुत बातें हो चुकी हैं। हम अभी अलग क्यों नहीं हो जाते?” एक पल के विराम के बाद, वह लगभग उन्माद में चिल्लाई, और अचानक अपनी कुर्सी से उठ खड़ी हुई, अपने हाथों को दृढ़ता से जोड़े हुए। मुझे लगा कि बिना देरी किए जाना मेरा कर्तव्य है; और मैं उसके पास गया और विदा लेने के लिए आधा हाथ बढ़ाया—उसने चुपचाप मेरा हाथ थाम लिया। लेकिन अंतिम बिछड़ने का यह विचार असहनीय था: ऐसा लग रहा था जैसे मेरा दिल खून निचोड़ रहा हो; और मेरे पैर ज़मीन पर जम गए थे।

‘क्या हम फिर कभी नहीं मिलेंगे?’ मैंने अपने मन की पीड़ा में बुदबुदाया।

‘हम स्वर्ग में मिलेंगे। चलो इसके बारे में सोचें,’ उसने हताशा भरी शांति के स्वर में कहा; लेकिन उसकी आँखें बेतहाशा चमक रही थीं और उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया था।

‘लेकिन इस रूप में नहीं,’ मैं जवाब देने से खुद को रोक नहीं सका। ‘यह सोचकर मुझे ज़रा भी तसल्ली नहीं मिलती कि अगली बार मैं तुम्हें एक निराकार आत्मा के रूप में, या एक रूपांतरित प्राणी के रूप में देखूंगा, जिसका शरीर परिपूर्ण और शानदार तो होगा, लेकिन इस रूप में नहीं! — और शायद एक हृदय, मुझसे पूरी तरह अलग हो चुका होगा।’

‘नहीं, गिल्बर्ट, स्वर्ग में ही परिपूर्ण प्रेम है!’

'मैं मानता हूँ कि यह इतना परिपूर्ण है कि यह भेदों से ऊपर उठ जाता है, और आप मेरे साथ उतनी ही गहरी सहानुभूति महसूस करेंगे जितनी कि हमारे चारों ओर मौजूद दस हजार हजार स्वर्गदूतों और असंख्य सुखी आत्माओं में से किसी एक के साथ।'

‘मैं जो भी हूँ, तुम भी वही रहोगे, इसलिए तुम्हें इस बात का पछतावा नहीं हो सकता; और वह बदलाव चाहे जो भी हो, हम जानते हैं कि वह बेहतर के लिए ही होगा।’

लेकिन अगर मुझमें इतना परिवर्तन आ जाए कि मैं पूरे दिल और आत्मा से आपकी आराधना करना और हर प्राणी से बढ़कर आपसे प्रेम करना छोड़ दूं, तो मैं स्वयं नहीं रहूंगी; और यद्यपि, यदि मैं कभी स्वर्ग प्राप्त कर भी लूं, तो मैं जानती हूं कि मैं अभी की तुलना में कहीं अधिक बेहतर और सुखी होऊंगी, फिर भी मेरा सांसारिक स्वभाव ऐसे परमानंद की आशा में प्रसन्न नहीं हो सकता, जिससे वह स्वयं और उसका मुख्य आनंद वंचित हो जाएगा।

तो क्या तुम्हारा प्रेम पूरी तरह सांसारिक है?

'नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि हम आपस में बाकी लोगों की तुलना में अधिक घनिष्ठ संबंध नहीं रख पाएंगे।'

यदि ऐसा है, तो इसका कारण यह होगा कि हम उनसे अधिक प्रेम करते हैं, न कि एक दूसरे से कम। प्रेम में वृद्धि से सुख में वृद्धि होती है, जब वह पारस्परिक और शुद्ध हो।

लेकिन क्या तुम, हेलेन, मुझे यश के सागर में खो देने की इस संभावना पर प्रसन्नता से विचार कर सकती हो?

मैं मानता हूँ कि मैं ऐसा नहीं कर सकता; लेकिन हम नहीं जानते कि ऐसा होगा ही; और मैं यह भी जानता हूँ कि सांसारिक सुखों को स्वर्ग के सुखों से बदलने पर पछतावा करना ऐसा है मानो कोई रेंगता हुआ इल्ली इस बात पर विलाप करे कि उसे एक दिन कुतरे हुए पत्ते को छोड़कर ऊपर उड़ना होगा और हवा में फड़फड़ाते हुए, अपनी इच्छा से एक फूल से दूसरे फूल पर जाना होगा, उनके प्यालों से मीठा शहद पीना होगा या उनकी धूप सेंकती पंखुड़ियों में आराम करना होगा। यदि इन छोटे जीवों को पता होता कि उनके लिए कितना बड़ा बदलाव आने वाला है, तो निस्संदेह उन्हें पछतावा होता; लेकिन क्या ऐसा सारा दुख व्यर्थ नहीं होगा? और यदि यह उदाहरण आपको प्रभावित नहीं करता, तो यहाँ एक और उदाहरण है: हम अभी बच्चे हैं; हम बच्चों की तरह महसूस करते हैं, और बच्चों की तरह समझते हैं; और जब हमें बताया जाता है कि पुरुष और महिलाएं खिलौनों से नहीं खेलते, और हमारे साथी एक दिन उन तुच्छ खेलों और गतिविधियों से ऊब जाएंगे जिनमें हम और वे अब इतनी गहराई से रुचि रखते हैं, तो हम ऐसे बदलाव के विचारों से दुखी हुए बिना नहीं रह सकते, क्योंकि हम यह कल्पना नहीं कर सकते कि जैसे-जैसे हम बड़े होंगे, हमारा अपना मन इतना विस्तृत और उन्नत हो जाएगा कि हम स्वयं उन वस्तुओं और गतिविधियों को तुच्छ समझेंगे जिन्हें हम अब इतने स्नेह से संजोते हैं, और यह कि यद्यपि हमारे साथी अब उन बचकानी गतिविधियों में हमारे साथ शामिल नहीं होंगे, वे हमारे साथ आनंद के अन्य स्रोतों से तृप्त होंगे, और अपनी आत्माओं को हमारी आत्माओं के साथ उन उच्च उद्देश्यों और महान कार्यों में मिलाएंगे जो हमारी वर्तमान समझ से परे हैं, लेकिन फिर भी उतने ही गहरे आनंदित और उतने ही सच्चे होंगे, जबकि हम और वे दोनों मूल रूप से पहले जैसे ही व्यक्ति बने रहेंगे। लेकिन, गिल्बर्ट, क्या आप वास्तव में इस विचार से

कोई सांत्वना नहीं पा सकते कि हम एक ऐसी जगह पर मिलेंगे जहाँ कोई दर्द और दुख नहीं होगा, पाप के विरुद्ध कोई संघर्ष नहीं होगा, और आत्मा का शरीर के विरुद्ध कोई संघर्ष नहीं होगा; जहां दोनों एक ही गौरवशाली सत्य को देखेंगे, और प्रकाश और अच्छाई के एक ही स्रोत से परम आनंद का अनुभव करेंगे—वह सत्ता जिसकी दोनों समान पवित्र उत्साह से पूजा करेंगे—और जहां दोनों शुद्ध और सुखी प्राणी समान दिव्य स्नेह से प्रेम करेंगे? यदि आप ऐसा नहीं कर सकते, तो मुझे कभी मत लिखना!

'हेलेन, मैं कर सकता हूँ! अगर मेरा विश्वास कभी न डगमगाए।'

'तो अब,' उसने कहा, 'जब तक हमारे भीतर यह आशा प्रबल है —'

'हम अलग हो जाएंगे,' मैं रो पड़ी। 'तुम्हें मुझे विदा करने की एक और कोशिश का दर्द नहीं सहना पड़ेगा। मैं तुरंत चली जाऊंगी; लेकिन—'

मैंने अपनी विनती शब्दों में नहीं कही: वह सहज ही समझ गई, और इस बार वह मान भी गई — या यूँ कहें कि इस मामले में न तो कोई जानबूझकर विनती की गई और न ही कोई जानबूझकर की गई सहमति थी: एक अचानक आवेग आया जिसका हम दोनों विरोध नहीं कर सके। एक पल मैं खड़ा होकर उसके चेहरे को देख रहा था, अगले ही पल मैंने उसे अपने दिल से लगा लिया, और हम एक ऐसे घनिष्ठ आलिंगन में लीन हो गए जिससे कोई शारीरिक या मानसिक शक्ति हमें अलग नहीं कर सकती थी। उसने बस फुसफुसाते हुए कहा, 'ईश्वर आपका भला करे!' और 'जाओ — जाओ!'; लेकिन बोलते हुए भी उसने मुझे इतनी मजबूती से पकड़ रखा था कि बिना ज़बरदस्ती के मैं उसकी बात नहीं मान सकता था। आखिरकार, किसी साहसी प्रयास से हम अलग हुए, और मैं घर से भाग निकला।

मुझे धुंधली सी याद है कि मैंने छोटे आर्थर को बगीचे के रास्ते पर मेरी ओर दौड़ते हुए देखा था, और उससे बचने के लिए मैं दीवार फांदकर भाग गया था - और फिर ढलान वाले खेतों में नीचे की ओर भागा, रास्ते में आने वाली पत्थर की बाड़ और झाड़ियों को पार करते हुए, जब तक कि मैं पुराने हॉल से पूरी तरह ओझल होकर पहाड़ी की तलहटी तक नहीं पहुँच गया; और फिर घंटों तक कड़वे आँसू बहाते हुए, विलाप करते हुए, और उदास विचारों में डूबा रहा, उस सुनसान घाटी में, मेरे कानों में शाश्वत संगीत गूंज रहा था, पश्चिम की हवा छायादार पेड़ों से होकर बह रही थी, और नाला अपने पथरीले तल पर कलकल और गड़गड़ाता हुआ बह रहा था; मेरी आँखें, ज्यादातर समय, मेरे पैरों के नीचे चमकदार धूप वाली घास पर बेचैनी से खेलती हुई

गहरी, धारीदार छायाओं पर टिकी रहती थीं, जहाँ कभी-कभी एक-दो मुरझाए पत्ते नाचते हुए उस आनंद में शामिल हो जाते थे; लेकिन मेरा दिल उस अंधेरे कमरे में, पहाड़ी के ऊपर कहीं दूर था, जहाँ वह अकेली और हताश होकर रो रही थी - वह जिसे मैं न तो सांत्वना दे सका और न ही फिर कभी देख सका, जब तक कि वर्षों के कष्ट ने हम दोनों को पराजित न कर दिया हो और हमारी आत्माओं को मिट्टी के उनके नश्वर निवासों से अलग न कर दिया हो।

उस दिन ज़्यादा काम नहीं हुआ, आप यकीन मानिए। खेत मज़दूरों के हवाले कर दिया गया था, और मज़दूरों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया था। लेकिन एक काम तो करना ही था; मैं फ्रेडरिक लॉरेंस पर किए गए अपने हमले को भूला नहीं था; और मुझे उससे मिलकर उस दुर्भाग्यपूर्ण कृत्य के लिए माफ़ी माँगनी थी। मैं इसे कल तक टालना चाहता था; लेकिन अगर इस बीच वह अपनी बहन से मेरी शिकायत कर दे तो? नहीं, नहीं! मुझे आज ही उससे माफ़ी माँगनी है, और उससे विनती करनी है कि अगर सच्चाई सामने आनी ही है तो वह अपने आरोप में नरमी बरते। हालाँकि, मैंने इसे शाम तक टाल दिया, जब मेरा मन थोड़ा शांत हुआ, और जब—अरे, इंसान की फितरत ही क्या है!—मेरे मन में अनिश्चित उम्मीदों के कुछ धुंधले बीज पनपने लगे; ऐसा नहीं था कि मैं उन्हें संजो कर रखना चाहता था, उस विषय पर इतनी बातें होने के बाद, लेकिन उन्हें कुछ समय के लिए वहीं रहना था, कुचले बिना, हालाँकि प्रोत्साहित किए बिना, जब तक मैं उनके बिना जीना न सीख लूँ।

वुडफोर्ड, युवा जमींदार के निवास पर पहुँचकर, मुझे उनसे मिलने में काफी कठिनाई हुई। दरवाजा खोलने वाले नौकर ने बताया कि उनके मालिक बहुत बीमार हैं और शायद उन्हें संदेह था कि वे मुझसे मिल पाएंगे या नहीं। लेकिन मैं हार मानने वाला नहीं था। मैं शांत भाव से हॉल में सूचना का इंतजार करता रहा, लेकिन मन ही मन मैंने ठान लिया था कि मैं इनकार नहीं मानूंगा। संदेश वही था जिसकी मुझे उम्मीद थी - विनम्रतापूर्वक बताया गया कि श्री लॉरेंस किसी से नहीं मिल सकते; उन्हें बुखार था और उन्हें परेशान नहीं किया जाना चाहिए।

मैंने कहा, 'मैं उन्हें ज्यादा देर तक परेशान नहीं करूंगा; लेकिन मुझे उनसे एक पल के लिए मिलना ही होगा: मुझे उनसे एक महत्वपूर्ण काम के बारे में बात करनी है।'

‘मैं उन्हें बता दूंगा, महोदय,’ उस व्यक्ति ने कहा। और मैं हॉल में आगे बढ़ा और उसके पीछे-पीछे उस कमरे के दरवाजे तक गया जहाँ उसका मालिक था—क्योंकि

ऐसा लग रहा था कि वह बिस्तर पर नहीं था। जवाब मिला कि श्री लॉरेंस आशा करते हैं कि मैं नौकर के लिए कोई संदेश या नोट छोड़ दूँ, क्योंकि इस समय वह कोई काम नहीं कर सकता।

मैंने कहा, 'वह मुझे भी देख सकता है और तुम्हें भी।' और, अचंभित नौकर को पीछे छोड़ते हुए, मैंने साहसपूर्वक दरवाजे पर दस्तक दी, अंदर गया और दरवाजा बंद कर लिया। कमरा विशाल और खूबसूरती से सजा हुआ था - एक कुंवारे व्यक्ति के लिए बहुत आरामदायक भी। पॉलिश की हुई अंगीठी में एक साफ, लाल आग जल रही थी: एक बूढ़ा ग्रेहाउंड, जो आराम और ऐशो-आराम में डूबा हुआ था, उसके सामने मोटे, मुलायम कालीन पर धूप सेंक रहा था, जिसके एक कोने पर, सोफे के बगल में, एक चुस्त-दुरुस्त युवा स्प्रिंगर बैठा था, अपने मालिक के चेहरे की ओर उदास निगाहों से देख रहा था - शायद उसके सोफे पर बैठने की अनुमति मांग रहा था, या हो सकता है, केवल उसके हाथ से दुलार या उसके होठों से एक मीठा शब्द सुनने की याचना कर रहा हो। बीमार व्यक्ति खुद भी बहुत दिलचस्प लग रहा था, अपने सुरुचिपूर्ण ड्रेसिंग गाउन में, कनपटी पर रेशमी रूमाल बांधे हुए, वह वहाँ लेटा हुआ था। उसका आमतौर पर पीला चेहरा लाल और बुखार से ग्रस्त था; उसकी आँखें आधी बंद थीं, जब तक उसे मेरी उपस्थिति का एहसास नहीं हुआ - और फिर उसने उन्हें पूरी तरह खोल दिया: एक हाथ सोफे के पीछे बेजान पड़ा था, और उसमें एक छोटी सी किताब थी, जिससे वह जाहिर तौर पर थका देने वाले घंटों को व्यर्थ ही गुजारने की कोशिश कर रहा था। हालाँकि, जैसे ही मैं कमरे में आगे बढ़ा और उसके सामने कालीन पर खड़ा हुआ, वह चौंककर गुस्से से भर उठा और उसने किताब गिरा दी। वह तकियों पर उठा और घबराहट, क्रोध और आश्चर्य के भावों से मुझे घूरने लगा।

'श्रीमान मार्खम, मुझे इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी!' उन्होंने कहा; और बोलते ही उनके गालों से खून उतर गया।

'मुझे पता है तुमने ऐसा नहीं किया,' मैंने उत्तर दिया; 'लेकिन एक मिनट चुप रहो, मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं किस लिए आया हूँ।' बिना सोचे-समझे मैं एक-दो कदम और आगे बढ़ गया। मेरे पास आने पर वह सहम गया, उसके चेहरे पर घृणा और सहज भय के भाव थे जो मेरी भावनाओं के बिल्कुल विपरीत थे। फिर भी मैं पीछे हट गया।

"अपनी कहानी संक्षिप्त रखो," उसने अपने बगल में मेज पर रखी छोटी चांदी की घंटी पर हाथ रखते हुए कहा, "वरना मुझे मदद के लिए बुलाना पड़ेगा। मैं अभी तुम्हारी

क्रूरता और तुम्हारी उपस्थिति सहन करने की स्थिति में नहीं हूँ।” और सचमुच, उसके रोमछिद्रों से नमी निकलकर उसके पीले माथे पर ओस की तरह जम गई।

इस तरह के स्वागत से मेरी इस कठिन कार्य की मुश्किलें कम होने की कोई उम्मीद नहीं थी। फिर भी, इसे किसी न किसी रूप में पूरा करना ही था; इसलिए मैंने तुरंत इसमें हाथ आजमाया और जैसे-तैसे इसे पूरा करने की कोशिश की।

‘सच तो यह है, लॉरेंस,’ मैंने कहा, ‘हाल ही में मैंने आपके प्रति ठीक से व्यवहार नहीं किया है—विशेषकर इस आखिरी मौके पर; और मैं संक्षेप में, जो कुछ हुआ है उसके लिए खेद व्यक्त करने और आपसे क्षमा मांगने आया हूँ। अगर आप मुझे क्षमा नहीं करते,’ मैंने जल्दबाजी में कहा, क्योंकि मुझे उनके चेहरे का भाव पसंद नहीं आया, ‘तो कोई बात नहीं; मैंने बस अपना कर्तव्य निभाया है—बस इतना ही।’

उसने व्यंग्य से भरी हल्की मुस्कान के साथ जवाब दिया, 'यह करना आसान है: अपने दोस्त को गाली देना और बिना किसी ठोस कारण के उसके सिर पर चोट पहुंचाना, और फिर उससे कहना कि यह कृत्य पूरी तरह से सही नहीं था, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह इसे माफ करता है या नहीं।'

‘मैं आपको बताना भूल गया था कि यह एक गलती का नतीजा था,’ – मैंने बुदबुदाया। ‘मुझे बहुत अच्छे से माफी मांगनी चाहिए थी, लेकिन आपने मुझे अपनी बातों से इतना उकसाया कि मैं पूरी तरह से परेशान हो गया। खैर, मुझे लगता है कि यह मेरी गलती है। असल बात यह है कि मुझे नहीं पता था कि आप श्रीमती ग्राहम के भाई हैं, और मैंने उनके प्रति आपके व्यवहार के बारे में कुछ ऐसी बातें देखीं और सुनीं जिनसे मेरे मन में अप्रिय संदेह पैदा हुए, जिन्हें, मुझे कहने दीजिए, आपकी थोड़ी सी ईमानदारी और विश्वास से दूर किया जा सकता था; और, अंत में, मैंने गलती से आपके और उनके बीच की बातचीत का एक हिस्सा सुन लिया जिससे मुझे लगा कि मुझे आपसे नफरत करने का पूरा अधिकार है।’

‘और आपको कैसे पता चला कि मैं उसका भाई हूँ?’ उसने कुछ घबराहट के साथ पूछा।

‘उसने मुझे खुद बताया। उसने मुझे सब कुछ बताया। उसे पता था कि मुझ पर भरोसा किया जा सकता है। लेकिन आपको इस बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, मिस्टर लॉरेंस, क्योंकि मैंने उसे आखिरी बार देखा है!’

‘आखिरी! तो क्या वह चली गई?’

नहीं; लेकिन उसने मुझे अलविदा कह दिया है, और मैंने वादा किया है कि जब तक वह उस घर में रहेगी, मैं कभी उस घर के पास नहीं जाऊँगा। बातचीत के इस मोड़ से मेरे मन में उठे कड़वे विचारों पर मैं ज़ोर से आह भर सकता था। लेकिन मैंने बस मुट्ठी भींची और कालीन पर पैर पटका। हालाँकि, मेरा साथी स्पष्ट रूप से राहत महसूस कर रहा था।

उन्होंने पूर्ण प्रशंसा भरे स्वर में कहा, “आपने सही किया है। उनका चेहरा मानो सूरज की तरह चमक उठा। और जहाँ तक गलती की बात है, मुझे हम दोनों के भले के लिए खेद है कि ऐसा हुआ। शायद आप मेरी स्पष्टवादिता की कमी को माफ कर दें, और इस अपराध को कुछ हद तक कम करने के लिए यह याद रखें कि आपने हाल ही में मेरे प्रति मित्रतापूर्ण विश्वास को कितना कम बढ़ावा दिया है।”

'हां, हां - मुझे सब याद है: मुझसे ज्यादा मुझे कोई दोषी नहीं ठहरा सकता जितना मैं खुद अपने दिल में दोषी मानता हूं; कम से कम, मेरी क्रूरता के परिणाम पर मुझसे ज्यादा ईमानदारी से कोई पछतावा नहीं कर सकता, जैसा कि आपने सही कहा है।'

‘कोई बात नहीं,’ उसने हल्की मुस्कान के साथ कहा; ‘चलो दोनों पक्षों के सभी अप्रिय शब्दों और कार्यों को भूल जाते हैं, और उन सभी बातों को भुला देते हैं जिन पर हमें पछतावा है। क्या तुम्हें मेरा हाथ थामने में कोई आपत्ति है, या तुम हाथ नहीं थामना चाहती?’ कमजोरी के कारण उसका हाथ कांप रहा था जब उसने हाथ बढ़ाया, और मेरे उसे पकड़ने और ज़ोर से दबाने से पहले ही वह नीचे गिर गया, जिसे करने की शक्ति उसमें नहीं थी।

‘लॉरेंस, तुम्हारा हाथ कितना सूखा और जल रहा है,’ मैंने कहा। ‘तुम सचमुच बीमार हो, और मेरी इन सारी बातों ने तुम्हारी हालत और खराब कर दी है।’

'अरे, ये तो कुछ भी नहीं है; बारिश से बस जुकाम हो गया है।'

‘यह मेरी गलती भी है।’

'उस बात को छोड़ो। लेकिन मुझे बताओ, क्या तुमने इस अफेयर के बारे में मेरी बहन से बात की थी?'

'सच कबूल करने की हिम्मत मुझमें नहीं थी; लेकिन जब तुम उसे बताओगे, तो क्या तुम बस इतना कहोगे कि मुझे इसका बहुत अफसोस है, और —?'

‘अरे, चिंता मत करो! मैं तुम्हारे खिलाफ कुछ नहीं कहूंगा, जब तक तुम उससे दूर रहने का अपना नेक इरादा बनाए रखोगे। तुम्हें पता है, उसे मेरी बीमारी के बारे में पता

नहीं है?'

मुझे नहीं लगता।

"मुझे इस बात की खुशी है, क्योंकि मैं इतने समय से इस डर से परेशान था कि कोई उसे बता देगा कि मैं मर रहा हूँ या बहुत बीमार हूँ, और वह या तो मुझसे कोई खबर न मिलने या मेरी कोई मदद न कर पाने के कारण दुखी होगी, या शायद मुझसे मिलने आने की मूर्खता करेगी। मुझे किसी तरह उसे इसके बारे में बताना ही होगा, अगर हो सके तो," उसने सोचते हुए आगे कहा, "वरना उसे ऐसी ही कोई कहानी सुनने को मिलेगी। बहुत से लोग उसे ऐसी खबर बताने में खुशी महसूस करेंगे, सिर्फ यह देखने के लिए कि वह इस पर कैसी प्रतिक्रिया देती है; और फिर वह एक और बदनामी का शिकार हो सकती है।"

मैंने कहा, 'काश मैंने उसे बता दिया होता। अगर मैंने वादा न किया होता, तो मैं उसे अभी बता देता।'

'बिल्कुल नहीं! मैं ऐसा सपना भी नहीं देख रही हूँ; लेकिन अगर मैं अभी एक छोटा सा पत्र लिखूँ, जिसमें तुम्हारा ज़िक्र न हो, मार्खम, बस अपनी बीमारी का हल्का-फुल्का ज़िक्र करूँ, ताकि उससे मिलने न आने का बहाना बना सकूँ और उसे किसी भी बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातों से सावधान कर सकूँ, और उसे किसी छद्म नाम से लिखूँ, तो क्या तुम कृपा करके उसे डाकघर में डाल दोगे? क्योंकि ऐसे मामले में मुझे किसी भी नौकर पर भरोसा करने की हिम्मत नहीं है।'

मैंने सहर्ष सहमति दी और तुरंत उनकी डेस्क ले आया। उनकी लिखावट को छुपाने की कोई खास ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि बेचारे को साफ-साफ लिखने में काफी दिक्कत होती थी। नोट लिखने के बाद, मैंने सोचा कि अब सोने का समय हो गया है और उनसे विदा लेते हुए पूछा कि क्या मैं उनके कष्टों को कम करने और मेरे द्वारा किए गए नुकसान की भरपाई करने के लिए कुछ भी कर सकता हूँ, चाहे वह छोटा हो या बड़ा।

'नहीं,' उसने कहा; 'तुम पहले ही बहुत कुछ कर चुकी हो; तुमने मेरे लिए इतना कुछ किया है जितना कोई कुशल चिकित्सक भी नहीं कर सकता: क्योंकि तुमने मेरे मन से दो बड़े बोझ हटा दिए हैं – मेरी बहन की चिंता और अपने गहरे अफसोस का बोझ: क्योंकि मेरा मानना है कि पीड़ा के इन दो कारणों ने ही मुझे बुखार पहुँचाने में सबसे अधिक भूमिका निभाई है; और मुझे पूरा विश्वास है कि अब मैं शीघ्र ही ठीक हो

जाऊँगा। तुम मेरे लिए एक और काम कर सकती हो, और वह यह है कि कभी-कभी आकर मुझसे मिलो – क्योंकि तुम जानती हो कि मैं यहाँ बहुत अकेला हूँ, और मैं वादा करता हूँ कि तुम्हारे आने पर फिर कभी कोई आपत्ति नहीं होगी।'

मैंने ऐसा करने का वादा किया और हाथ मिलाकर विनम्रतापूर्वक विदा ली। घर लौटते समय मैंने पत्र डाक में डाल दिया, और साथ ही साथ उसमें अपनी ओर से कुछ लिखने के प्रलोभन को बड़ी बहादुरी से रोका।

अध्याय 166

कई बार मेरा मन करता था कि मैं अपनी माँ और बहन को वाइल्डफेल हॉल की सताई हुई किरायेदार के असली चरित्र और हालात के बारे में बता दूँ। पहले तो मुझे इस बात का बहुत अफ़सोस हुआ कि मैंने उस महिला से ऐसा करने की अनुमति नहीं ली; लेकिन, सोच-विचार करने पर मुझे लगा कि अगर उन्हें पता चल गया, तो मिलवर्ड्स और विल्सन्स से यह ज़्यादा समय तक छिपा नहीं रह सकता। साथ ही, एलिज़ा मिलवर्ड के स्वभाव के बारे में मेरी समझ इतनी पक्की थी कि अगर उन्हें ज़रा भी पता चल गया, तो मुझे डर था कि वह जल्द ही मिस्टर हंटिंगडन को उनकी पत्नी के ठिकाने के बारे में बता देंगी। इसलिए मैं धैर्यपूर्वक इन थका देने वाले छह महीनों के बीतने का इंतज़ार करूँगा, और फिर, जब उस भगोड़े को कोई दूसरा घर मिल जाएगा, और मुझे उसे पत्र लिखने की अनुमति मिल जाएगी, तो मैं उससे विनती करूँगा कि मुझे इन घिनौने आरोपों से उसका नाम साफ़ करने की अनुमति दी जाए। फिलहाल, मुझे बस इतना ही कहना होगा कि मैं जानता हूँ कि ये आरोप झूठे हैं, और मैं एक दिन इसे साबित करके उन लोगों को शर्मिंदा करूँगा जिन्होंने उस पर झूठे आरोप लगाए हैं। मुझे नहीं लगता कि किसी ने मेरी बात पर विश्वास किया होगा, लेकिन जल्द ही सबने उसके खिलाफ एक शब्द भी कहने से या मेरी मौजूदगी में उसका नाम तक लेने से

बचना सीख लिया। उन्हें लगा कि मैं उस अभागी महिला के आकर्षण में इतना पागल हो गया था कि तर्क के विरुद्ध भी उसका साथ देने पर तुला हुआ था; और इस बीच मैं इस विचार से असहनीय रूप से उदास और मानवद्वेषी होता जा रहा था कि मुझसे मिलने वाला हर व्यक्ति कथित श्रीमती ग्राहम के बारे में अनुचित विचार रखता था, और अगर हिम्मत होती तो उन्हें व्यक्त भी कर देता। मेरी बेचारी माँ मेरे बारे में बहुत चिंतित थीं; लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता था—कम से कम मुझे ऐसा लगता था, हालाँकि कभी-कभी मुझे उनके प्रति अपने अनुचित व्यवहार के लिए पछतावा होता था, और मैंने सुधार करने का प्रयास किया, जिसमें कुछ हद तक सफलता भी मिली; और वास्तव में, श्री लॉरेंस को छोड़कर, मैं आमतौर पर उनके प्रति बाकी सभी की तुलना में अधिक मानवीय व्यवहार करता था। रोज़ और फर्गस आमतौर पर मेरी उपस्थिति से बचते थे; और यह अच्छा ही था, क्योंकि मैं उनके लिए और वे मेरे लिए मौजूदा परिस्थितियों में उपयुक्त संगति नहीं थे।

श्रीमती हंटिंगडन हमारी विदाई मुलाकात के दो महीने से भी अधिक समय बाद तक वाइल्डफेल हॉल से नहीं निकलीं। उस दौरान वह कभी चर्च नहीं गईं, और मैं कभी घर के पास भी नहीं गया: मुझे केवल उनके भाई के मेरे अनेक और विविध प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तरों से ही पता चला कि वह अभी भी वहीं हैं। उनकी बीमारी और स्वास्थ्य लाभ की पूरी अवधि के दौरान मैं उनसे लगातार और ध्यानपूर्वक मिलता रहा; न केवल उनके ठीक होने में मेरी रुचि और उन्हें खुश करने और अपने पूर्व 'क्रूर व्यवहार' के लिए यथासंभव प्रायश्चित करने की मेरी इच्छा के कारण, बल्कि उनके प्रति मेरे बढ़ते लगाव और उनकी संगति में मुझे मिलने वाले बढ़ते आनंद के कारण भी - आंशिक रूप से मेरे प्रति उनके बढ़ते सौहार्द के कारण, लेकिन मुख्य रूप से मेरी प्रिय हेलेन के साथ उनके रक्त और स्नेह दोनों के घनिष्ठ संबंध के कारण। मैं उसे इस बात के लिए जितना व्यक्त करना चाहती थी, उससे कहीं अधिक प्यार करती थी: और मुझे उसकी उन पतली, सफेद उंगलियों को छूने में एक गुप्त आनंद आता था, जो उसकी उंगलियों से इतनी मिलती-जुलती थीं, यह सोचकर कि वह एक स्त्री नहीं था, और उसके गोरे, पीले चेहरे के बदलते भावों को देखने और उसकी आवाज़ के उतार-चढ़ाव को समझने में, उन समानताओं को पहचानने में, जिन्हें देखकर मुझे आश्चर्य होता था कि वे पहले कभी मेरे ध्यान में क्यों नहीं आईं। वास्तव में, कभी-कभी वह अपनी बहन के बारे में मुझसे बात करने में अपनी स्पष्ट अनिच्छा से मुझे चिढ़ाता था,

हालाँकि मुझे उसकी यादों को मिटाने की उसकी इच्छा में निहित मित्रता पर कोई संदेह नहीं था।

उनकी सेहत में उतनी तेज़ी से सुधार नहीं हुआ जितना उन्होंने उम्मीद की थी; हमारे सुलह के दो सप्ताह बाद तक वे अपने टट्टू पर सवार नहीं हो पाए; और अपनी खोई हुई ताकत का उन्होंने सबसे पहले इस्तेमाल रात में वाइल्डफेल हॉल जाकर अपनी बहन से मिलने के लिए किया। यह उनके और उनकी बहन दोनों के लिए जोखिम भरा काम था, लेकिन उन्होंने अपनी बहन से उसके जाने के बारे में सलाह लेना ज़रूरी समझा, कम से कम उनकी सेहत को लेकर उसकी चिंताओं को दूर करने के लिए तो ज़रूर। और सबसे बुरा नतीजा यह हुआ कि उनकी तबीयत थोड़ी बिगड़ गई, क्योंकि मेरे अलावा पुराने हॉल में रहने वालों के अलावा किसी को भी इस मुलाकात के बारे में पता नहीं था; और मुझे लगता है कि उनका इरादा मुझे इसके बारे में बताने का नहीं था, क्योंकि जब मैं अगले दिन उनसे मिलने गया और देखा कि उनकी तबीयत उतनी अच्छी नहीं है जितनी होनी चाहिए थी, तो उन्होंने बस इतना कहा कि शाम को देर तक बाहर रहने से उन्हें सर्दी लग गई है।

'अगर तुम अपना ख्याल नहीं रखोगे तो तुम अपनी बहन से कभी मिल नहीं पाओगे,' मैंने उससे सहानुभूति जताने के बजाय, उसकी वजह से हुई इस परिस्थिति पर थोड़ा चिढ़ते हुए कहा।

'मैंने उसे पहले ही देख लिया है,' उसने धीमी आवाज़ में कहा।

'तुमने उसे देखा है!' मैंने आश्चर्य से कहा।

'हां।' और फिर उन्होंने मुझे बताया कि किन बातों ने उन्हें यह उद्यम करने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने क्या सावधानियां बरतीं।

'और वह कैसी थी?' मैंने उत्सुकता से पूछा।

संक्षिप्त लेकिन दुख भरी प्रतिक्रिया थी, 'हमेशा की तरह।'

'हमेशा की तरह—यानी, खुश रहने से बहुत दूर और मजबूत होने से बहुत दूर।'

"वह पूरी तरह से बीमार नहीं है," उसने जवाब दिया; "मुझे पूरा यकीन है कि वह कुछ समय में ठीक हो जाएगी—लेकिन इतने सारे कष्ट उसके लिए असहनीय हो गए हैं। ये बादल कितने डरावने लग रहे हैं," उसने खिड़की की ओर मुड़ते हुए कहा। "मुझे लगता है कि रात से पहले गरज के साथ बारिश होगी, और वे लोग अभी मेरा अनाज इकट्ठा कर रहे हैं। क्या आपने अपना सारा अनाज इकट्ठा कर लिया है?"

नहीं। और, लॉरेंस, क्या उसने—क्या तुम्हारी बहन ने मेरा ज़िक्र किया?

उसने पूछा कि क्या मैंने तुम्हें हाल ही में देखा है।

और उसने क्या-क्या कहा?

'मैं आपको वह सब नहीं बता सकता जो उसने कहा,' उसने हल्की मुस्कान के साथ उत्तर दिया; 'क्योंकि हमने काफी बातें कीं, हालांकि मेरा प्रवास संक्षिप्त था; लेकिन हमारी बातचीत मुख्य रूप से उसके प्रस्तावित प्रस्थान के विषय पर थी, जिसके लिए मैंने उससे अनुरोध किया कि वह तब तक स्थगित कर दे जब तक मैं उसके लिए एक नया घर खोजने में बेहतर सहायता न कर सकूँ।'

लेकिन क्या उसने मेरे बारे में और कुछ नहीं कहा?

'उसने तुम्हारे बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहा, मार्खम। अगर वह ऐसा करना चाहती भी तो मैं उसे ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता; लेकिन सौभाग्य से उसने ऐसा नहीं किया: उसने तुम्हारे बारे में बस कुछ ही सवाल पूछे और मेरे संक्षिप्त जवाबों से संतुष्ट दिखी, जिनमें उसने अपने दोस्त से ज्यादा समझदार होने का परिचय दिया; और मैं तुम्हें यह भी बता दूं कि वह इस बात से कहीं ज्यादा चिंतित थी कि तुम उसके बारे में जरूरत से ज्यादा न सोच लो, बजाय इसके कि तुम उसे भूल जाओ।'

वह सही थी।

लेकिन मुझे डर है कि उसके संबंध में आपकी चिंता बिल्कुल विपरीत है।

नहीं, ऐसा नहीं है: मैं उसकी खुशी की कामना करता हूँ; लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि वह मुझे पूरी तरह से भूल जाए। वह जानती है कि मेरे लिए उसे भूलना असंभव है; और उसका यह चाहना सही है कि मैं उसे बहुत ज्यादा याद न रखूँ। मैं यह नहीं चाहूँगा कि वह मुझे बहुत गहराई से याद करे; लेकिन मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि वह मेरे बारे में बहुत दुखी होगी, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं इसके लायक नहीं हूँ, सिवाय उसके प्रति मेरी प्रशंसा के।

'तुम दोनों में से कोई भी टूटे हुए दिल के लायक नहीं हो, न ही उन आहों, आँसुओं और दुख भरे विचारों के लायक हो जो तुम दोनों पर व्यर्थ गए हैं, और मुझे डर है कि आगे भी व्यर्थ जाएंगे; लेकिन, फिलहाल, तुम दोनों एक-दूसरे के बारे में जितना सोचते हो, मुझे डर है कि वह उससे कहीं अधिक ऊँचा विचार रखते हो; और मेरी बहन की भावनाएँ स्वाभाविक रूप से तुम्हारी भावनाओं जितनी ही तीव्र हैं, और मुझे विश्वास है कि अधिक स्थिर भी हैं; लेकिन इस मामले में उनमें इन भावनाओं से लड़ने की

समझदारी और धैर्य है; और मुझे विश्वास है कि जब तक वह अपने विचारों को पूरी तरह से दूर नहीं कर लेती, तब तक उसे चैन नहीं मिलेगा—' वह हिचकिचाया।

मैंने कहा, 'मुझसे।'

उन्होंने आगे कहा, 'और मेरी यही इच्छा है कि आप भी इसी तरह के प्रयास करें।'

'क्या उसने आपको बताया था कि उसका यही इरादा था?'

'नहीं; हमारे बीच इस प्रश्न पर चर्चा नहीं हुई: इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि उसका यही दृढ़ संकल्प था।'

'मुझे भूल जाने के लिए?'

'हां, मार्खम! क्यों नहीं?'

'ओह, ठीक है!' बस इतना ही मेरे मुंह से निकला; लेकिन मन ही मन मैंने सोचा, 'नहीं, लॉरेंस, तुम गलत हो: वह मुझे भूलने पर तुली नहीं है। मेरे जैसे किसी ऐसे व्यक्ति को भूलना गलत होगा जो उससे इतना गहरा प्रेम करता हो, जो उसकी खूबियों को पूरी तरह समझता हो और उसके हर विचार से सहमत हो, जैसा कि मैं कर सकता हूँ, और मेरे लिए भी यह गलत होगा कि मैं ईश्वर की इतनी उत्कृष्ट और दिव्य रचना, उसे भूल जाऊं, जब मैंने उसे सच्चे दिल से प्यार किया है और जाना है।' लेकिन मैंने इस विषय पर उससे और कुछ नहीं कहा। मैंने तुरंत बातचीत का एक नया विषय शुरू किया और जल्द ही अपने साथी से विदा ली, उसके प्रति सामान्य से कम सौहार्दपूर्ण भाव के साथ। शायद मुझे उससे नाराज़ होने का कोई अधिकार नहीं था, लेकिन फिर भी मैं नाराज़ था।

इसके एक सप्ताह से कुछ अधिक समय बाद ही मेरी उनसे विल्सन परिवार से मुलाकात के बाद वापसी पर मुलाकात हुई; और अब मैंने उनके प्रति सद्भावना दिखाने का निश्चय किया, भले ही इससे उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचे और शायद उस नाराजगी का जोखिम भी उठाना पड़े जो आमतौर पर अप्रिय जानकारी देने वालों या बिना मांगे सलाह देने वालों को मिलती है। मेरा विश्वास कीजिए, इसमें मेरा कोई प्रतिशोध का भाव नहीं था, न ही मिस विल्सन के प्रति कोई द्वेषपूर्ण शत्रुता थी, बल्कि केवल इस तथ्य से प्रेरित था कि मैं यह सहन नहीं कर सकता था कि ऐसी महिला श्रीमती हंटिंगडन की बहन हो, और उनके और उनके परिवार दोनों के हित में, मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि उन्हें एक ऐसी महिला के साथ विवाह के बंधन में बांधा जाए जो उनके योग्य नहीं है, और उनके शांत घर की साथी और उनके जीवन साथी

बनने के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त है। मुझे लगता है कि उन्हें भी इस संबंध में कुछ आशंकाएं थीं; लेकिन उसका अनुभवहीन होना और उस युवती का आकर्षण और उसकी कल्पनाशीलता इतनी प्रबल थी कि वह उसे लंबे समय तक विचलित नहीं कर पाई; और मेरा मानना है कि अब तक प्रेम की घोषणा न कर पाने के उसके दुविधापूर्ण रवैये का एकमात्र कारण उसके रिश्तेदार थे, और विशेष रूप से उसकी माँ, जिसे वह बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकता था। यदि वे दूर रहते, तो शायद वह इस आपत्ति को दूर कर लेता, लेकिन वुडफोर्ड से दो-तीन मील की दूरी पर यह मामला इतना गंभीर था।

'लॉरेंस, तुम विल्सन परिवार से मिलने गए थे,' मैंने उसके टट्टू के बगल में चलते हुए कहा।

'जी हां,' उसने थोड़ा चेहरा फेरते हुए उत्तर दिया: 'मैंने सोचा कि उनकी दयालुता का प्रतिफल देना उचित होगा, क्योंकि मेरी बीमारी के पूरे दौर में उन्होंने बहुत ही सावधानीपूर्वक और निरंतर पूछताछ की है।'

‘यह सब मिस विल्सन की करतूत है।’

‘और अगर ऐसा है,’ उसने स्पष्ट रूप से शर्मिंदगी के साथ जवाब दिया, ‘तो क्या यह कोई कारण है कि मुझे उचित स्वीकृति नहीं देनी चाहिए?’

'यही कारण है कि आपको वह स्वीकृति नहीं देनी चाहिए जिसकी वह तलाश कर रही है।'

‘कृपया इस विषय को यहीं समाप्त कर दें,’ उसने स्पष्ट नाराजगी जताते हुए कहा।

नहीं, लॉरेंस, आपकी अनुमति से हम इसे थोड़ी देर और जारी रखेंगे; और अब जब हम इस बारे में बात कर रहे हैं, तो मैं आपको कुछ बताता हूँ, जिस पर आप चाहें तो विश्वास कर सकते हैं या नहीं - बस कृपया याद रखें कि झूठ बोलना मेरी आदत नहीं है, और इस मामले में मेरे पास सच्चाई को तोड़-मरोड़ कर पेश करने का कोई कारण नहीं हो सकता - ’

‘अच्छा, मार्खम, अब क्या?’

'मिस विल्सन आपकी बहन से नफरत करती हैं। रिश्ते की जानकारी न होने के कारण उनका उसके प्रति कुछ हद तक द्वेष रखना स्वाभाविक हो सकता है, लेकिन कोई भी अच्छी या सौम्य महिला किसी काल्पनिक प्रतिद्वंद्वी के प्रति इतनी कड़वी, निर्मम और कपटपूर्ण दुर्भावना प्रदर्शित करने में सक्षम नहीं होगी, जैसा कि मैंने उनमें

देखा है।'

‘मार्खम!’

जी हां—और मेरा मानना है कि एलिजा मिलवर्ड और वह, अगर खुद उन निंदनीय खबरों की सूत्रधार नहीं थीं, तो जानबूझकर उन्हें बढ़ावा देने वाली और फैलाने वाली मुख्य सूत्रधार थीं। बेशक, वह इस मामले में आपका नाम घसीटना नहीं चाहती थीं, लेकिन उनकी खुशी यही थी, और आज भी है, कि वे अपनी दुर्भावना के उजागर होने का जोखिम उठाए बिना, अपनी बहन की छवि को जितना हो सके धूमिल करें!

'मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा,' मेरे साथी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, उसका चेहरा आक्रोश से लाल हो रहा था।

‘खैर, चूंकि मैं इसे साबित नहीं कर सकता, इसलिए मुझे अपनी जानकारी के अनुसार यही कहना होगा; लेकिन चूंकि अगर ऐसा होता तो आप खुशी-खुशी मिस विल्सन से शादी नहीं करते, इसलिए जब तक आप इसे अन्यथा साबित नहीं कर देते, तब तक सावधान रहना आपके लिए अच्छा होगा।’

‘मैंने तुम्हें कभी नहीं बताया, मार्खम, कि मेरा इरादा मिस विल्सन से शादी करने का था,’ उसने गर्व से कहा।

'नहीं, लेकिन चाहे आप ऐसा करें या न करें, वह आपसे शादी करने का इरादा रखती है।'

‘क्या उसने तुम्हें ऐसा बताया?’

'नहीं, लेकिन - '

‘तो फिर आपको उसके बारे में ऐसा दावा करने का कोई अधिकार नहीं है।’ उसने अपने टट्टू की चाल थोड़ी तेज कर दी, लेकिन मैंने उसके अयाल पर हाथ रख दिया, यह ठान लिया कि वह मुझे अभी छोड़कर नहीं जाएगा।

‘लॉरेंस, एक पल रुकिए, मुझे अपनी बात समझाने दीजिए; और आप इतने अधिक – मुझे नहीं पता इसे क्या कहूँ – दुर्गम मत बनिए। – मैं जानती हूँ कि आप जेन विल्सन के बारे में क्या सोचते हैं; और मुझे लगता है कि मैं जानती हूँ कि आपकी राय कितनी गलत है: आप सोचते हैं कि वह असाधारण रूप से आकर्षक, सुरुचिपूर्ण, समझदार और परिष्कृत हैं: आप इस बात से अनभिज्ञ हैं कि वह स्वार्थी, निर्मम, महत्वाकांक्षी, धूर्त और संकीर्ण सोच वाली हैं –’

‘बस करो, मार्खम—बस करो!’

नहीं; मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए: — आपको नहीं पता कि अगर आपने उससे शादी कर ली, तो आपका घर अंधकारमय और असुविधाजनक हो जाएगा; और अंत में यह जानकर आपका दिल टूट जाएगा कि आप एक ऐसे व्यक्ति के साथ जुड़ गए हैं जो आपके स्वाद, भावनाओं और विचारों को साझा करने में पूरी तरह असमर्थ है — जो संवेदनशीलता, सद्भावना और आत्मा की सच्ची महानता से पूरी तरह रहित है।

'क्या तुमने कर लिया?' मेरे साथी ने धीमी आवाज़ में पूछा।

'हां; मुझे पता है कि मेरी धृष्टता के कारण तुम मुझसे नफरत करते हो, लेकिन अगर इससे तुम्हें उस घातक गलती से बचने में मदद मिलती है तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।'

'अच्छा!' उसने कुछ हद तक सर्द मुस्कान के साथ जवाब दिया – 'मुझे खुशी है कि आपने अपनी पीड़ाओं पर काबू पा लिया है या उन्हें भुला दिया है, जिससे आप दूसरों के मामलों का इतनी गहराई से अध्ययन कर पा रहे हैं और उनके भविष्य के काल्पनिक या संभावित संकटों के बारे में अनावश्यक रूप से अपना दिमाग खपा रहे हैं।'

हम कुछ हद तक फिर से बेरुखी से अलग हुए: लेकिन फिर भी हमारी दोस्ती नहीं टूटी; और मेरी नेक नीयत से दी गई चेतावनी, हालाँकि इसे और अधिक समझदारी से दिया जा सकता था और अधिक कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया जा सकता था, वांछित प्रभाव डालने में पूरी तरह से निष्फल नहीं रही: विल्सन परिवार के यहाँ उनका आना दोबारा नहीं हुआ, और यद्यपि हमारी बाद की मुलाकातों में उन्होंने कभी भी उसका नाम मुझसे नहीं लिया, न ही मैंने उनसे, — मुझे विश्वास करने का कारण है कि उन्होंने मेरे शब्दों पर मन ही मन विचार किया, उत्सुकता से, हालाँकि गुप्त रूप से, अन्य स्रोतों से उस सुंदर महिला के बारे में जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की, चुपके से उसके बारे में मेरे द्वारा दिए गए विवरण की तुलना अपने स्वयं के अवलोकन और दूसरों से सुनी गई बातों से की, और अंततः इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि, सभी बातों पर विचार करते हुए, उनके लिए रायकोट फार्म की मिस विल्सन बने रहना वुडफोर्ड हॉल की श्रीमती लॉरेंस में परिवर्तित होने से कहीं बेहतर था। मेरा यह भी मानना है कि उन्होंने जल्द ही अपने पूर्व झुकाव पर गुप्त आश्चर्य के साथ विचार करना सीख लिया, और अपने भाग्यशाली बचाव पर खुद को बधाई दी; लेकिन उन्होंने मुझसे कभी इस

बात को स्वीकार नहीं किया, न ही मेरे द्वारा उनकी मुक्ति में निभाई गई भूमिका के लिए आभार का एक भी शब्द कहा, लेकिन यह किसी के लिए भी आश्चर्यजनक नहीं था जो उन्हें मेरी तरह जानता था।

जेन विल्सन की बात करें तो, ज़ाहिर है, अपने पूर्व प्रेमी की अचानक उपेक्षा और अंततः परित्याग से वह निराश और आहत थीं। क्या मैंने उनकी आशाओं को चकनाचूर करके कोई गलती की थी? मुझे नहीं लगता; और निश्चित रूप से उस दिन से लेकर आज तक, मेरे अंतरात्मा ने मुझे इस मामले में किसी भी बुरे इरादे का दोषी नहीं ठहराया है।

अध्याय 147

नवंबर के आरंभिक वर्षों में एक सुबह, नाश्ते के तुरंत बाद जब मैं कुछ व्यावसायिक पत्र लिख रहा था, तभी एलिज़ा मिलवर्ड मेरी बहन से मिलने आई। रोज़ में न तो मेरी तरह उस छोटी शैतान को देखने की समझ थी और न ही उतनी कड़वाहट, और उन दोनों के बीच पहले जैसी घनिष्ठता अभी भी कायम थी। हालाँकि, उसके आने के समय कमरे में मेरे और फर्गस के अलावा कोई नहीं था, मेरी माँ और बहन दोनों घर के कामों में व्यस्त होने के कारण अनुपस्थित थीं; लेकिन मैं किसी को भी, चाहे कोई भी चाहे, उसे चिढ़ाने वाला नहीं था: मैंने बस लापरवाही से अभिवादन किया और कुछ शब्द कहे, और फिर अपना लेखन कार्य जारी रखा, अपने भाई को अधिक विनम्र होने की छूट दे दी। लेकिन वह मुझे चिढ़ाना चाहती थी।

"आपको घर पर पाकर कितनी खुशी हुई, श्रीमान मार्खम!" उसने बनावटी शरारती मुस्कान के साथ कहा। "मैं आपको आजकल बहुत कम देख पाती हूँ, क्योंकि आप कभी पादरी के घर नहीं आते। पापा तो बहुत नाराज़ हैं, मैं आपको बता सकती हूँ," उसने शरारती अंदाज़ में कहा और मेरी ओर देखते हुए एक उद्दंड हंसी हंसते हुए मेज

के कोने पर, मेरे डेस्क के आधे बगल में और आधे सामने बैठ गई।

मैंने अपने पत्र से नज़रें उठाए बिना कहा, 'मुझे हाल ही में काफी काम करना पड़ा है।'

'क्या सच में! किसी ने कहा था कि आप पिछले कुछ महीनों से अपने व्यवसाय की अजीब तरह से उपेक्षा कर रहे हैं।'

'किसी ने गलत कहा, क्योंकि खासकर पिछले दो महीनों में मैं बेहद मेहनती और लगनशील रहा हूं।'

आह! खैर, मुझे लगता है कि व्यस्त रहने से ही दुखियों को सांत्वना मिलती है; और, क्षमा कीजिए, श्रीमान मार्खम, लेकिन आप बिल्कुल भी स्वस्थ नहीं लग रहे हैं, और आजकल आप काफी उदास और चिंतित रहते हैं, — मुझे तो लगभग ऐसा लगता है कि कोई गुप्त चिंता आपको परेशान कर रही है। पहले,’ उसने झिझकते हुए कहा, ‘मैं आपसे पूछने की हिम्मत कर सकती थी कि क्या बात है, और मैं आपको सांत्वना देने के लिए क्या कर सकती हूँ: अब मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सकती।’

'आप बहुत दयालु हैं, मिस एलिजा। जब मुझे लगेगा कि आप मुझे सांत्वना देने के लिए कुछ भी कर सकती हैं, तो मैं आपसे बेझिझक कहूँगी।'

कृपया बताएं! — मुझे लगता है कि मैं यह अनुमान नहीं लगा सकता कि आपको क्या परेशान कर रहा है?

‘इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, मैं आपको स्पष्ट रूप से बता देता हूँ। इस समय मुझे सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि एक युवती मेरे बगल में बैठी है और मुझे अपना पत्र पूरा करने से रोक रही है, और उसके बाद मुझे अपने दैनिक कार्यों में जाने से भी रोक रही है।’

इस अभद्र टिप्पणी का जवाब देने से पहले ही रोज़ कमरे में दाखिल हुई; और मिस एलिज़ा उसका स्वागत करने के लिए उठीं, और वे दोनों आग के पास बैठ गईं, जहाँ वह आलसी लड़का फर्गस चिमनी के कोने पर कंधा टिकाए, पैर मोड़े और हाथ अपनी पैंट की जेब में डाले खड़ा था।

“अब, रोज़, मैं तुम्हें एक खबर सुनाता हूँ— मुझे उम्मीद है कि तुमने इसे पहले नहीं सुना होगा: अच्छी हो या बुरी, या सामान्य, हर कोई सबसे पहले बताना चाहता है। यह उस अभागी श्रीमती ग्राहम के बारे में है—”

‘चुप रहो!’ फर्गस ने गंभीर स्वर में फुसफुसाते हुए कहा। ‘“हम उसका ज़िक्र कभी नहीं करते; उसका नाम कभी नहीं सुना जाता।”’ और ऊपर देखते ही मैंने पाया कि वह तिरछी नज़रों से मुझे घूर रहा था और उसकी उंगली उसके माथे की ओर इशारा कर रही थी; फिर उसने उदास होकर सिर हिलाते हुए उस युवती की ओर आँख मारी और फुसफुसाया — ‘एक सनक — लेकिन इसका ज़िक्र मत करना — ठीक है, बस इतना ही।’

‘मुझे किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का अफसोस होगा,’ उसने धीमी आवाज में जवाब दिया। ‘शायद किसी और समय।’

‘बोलिए, मिस एलिजा!’ मैंने दूसरे की मूर्खता पर ध्यान न देते हुए कहा: ‘मेरी उपस्थिति में कुछ भी कहने से आपको डरने की जरूरत नहीं है।’

‘अच्छा,’ उसने उत्तर दिया, ‘शायद आपको पहले से ही पता है कि श्रीमती ग्राहम के पति वास्तव में मरे नहीं हैं, और वह उनसे भाग गई थीं?’ मैं चौंक गई और मेरा चेहरा लाल हो गया; लेकिन मैंने अपना चेहरा पत्र पर झुका लिया और जैसे-जैसे वह बोलती रही, मैं उसे मोड़ती रही। ‘लेकिन शायद आपको यह नहीं पता कि वह अब उनके पास वापस चली गई हैं और उनके बीच पूरी तरह से सुलह हो गई है? ज़रा सोचो,’ उसने हैरान रोज़ की ओर मुड़ते हुए कहा, ‘वह आदमी कितना मूर्ख होगा!’

‘और आपको यह जानकारी किसने दी, मिस एलिजा?’ मैंने अपनी बहन के उत्साह को रोकते हुए कहा।

मुझे यह जानकारी एक बहुत ही विश्वसनीय स्रोत से मिली है।

‘मैं पूछ सकता हूँ, किससे?’

वुडफोर्ड के नौकरों में से एक से।

‘अरे! मुझे पता ही नहीं था कि आप मिस्टर लॉरेंस के परिवार के साथ इतने घनिष्ठ संबंध रखते हैं।’

'मैंने यह बात खुद उस आदमी से नहीं सुनी, बल्कि उसने यह बात हमारी नौकरानी सारा को भरोसे में बताई और सारा ने मुझे बताई।'

'विश्वास में, शायद? और आप इसे हमसे विश्वास में बता रहे हैं? लेकिन मैं आपको बता सकता हूँ कि यह तो बस एक खोखली कहानी है, और इसका आधा हिस्सा भी सच नहीं है।'

जब मैं बोल रहा था, तभी मैंने अपने पत्रों पर मुहर लगाने और उन्हें सही पते पर

भेजने का काम पूरा किया। मैंने खुद को शांत रखने की पूरी कोशिश की, लेकिन मेरा दृढ़ विश्वास था कि मेरी कहानी झूठी है। मुझे यकीन था कि जिस श्रीमती ग्राहम के बारे में कहा जा रहा था, वह निश्चित रूप से अपनी मर्जी से अपने पति के पास वापस नहीं गई थीं, न ही उन्होंने सुलह का सपना देखा था। शायद वह कहीं चली गई थीं, और उनके बारे में जानकारी न होने के कारण चुगली करने वाले नौकर ने ऐसा ही अनुमान लगाया था, और हमारी सुंदर मेहमान ने मुझे परेशान करने का मौका पाकर खुशी से इसे एक निश्चित तथ्य के रूप में बताया था। लेकिन यह संभव था - लगभग असंभव - कि किसी ने उनकी सूचना लीक कर दी हो, और उन्हें जबरदस्ती ले जाया गया हो। सबसे बुरी बात जानने के लिए दृढ़ निश्चय करके, मैंने जल्दी से अपने दो पत्र जेब में रखे, और डाक के लिए बहुत देर हो जाने के बारे में कुछ बुदबुदाया, कमरे से बाहर निकला, आंगन में भागा और जोर-जोर से अपने घोड़े को पुकारा। वहाँ कोई नहीं था, इसलिए मैंने उसे खुद ही अस्तबल से बाहर निकाला, उसकी पीठ पर काठी और उसके सिर पर लगाम बाँधी, उस पर सवार हुआ और तेज़ी से वुडफोर्ड की ओर चल पड़ा। वहाँ मुझे उसका मालिक मैदान में सोच-विचार करते हुए टहलता मिला।

जब मैंने उसका हाथ पकड़ा तो मैंने सबसे पहले यही पूछा, 'क्या तुम्हारी बहन अब इस दुनिया में नहीं है?', न कि हमेशा की तरह उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछने के बजाय।

'हां, वह चली गई है,' उसने इतनी शांति से जवाब दिया कि मेरा डर तुरंत दूर हो गया।

'शायद मुझे नहीं पता कि वह कहाँ है?' मैंने घोड़े से उतरते हुए कहा और अपना घोड़ा माली को सौंप दिया, जो आस-पास मौजूद एकमात्र नौकर था, जिसे उसके मालिक ने लॉन पर गिरी सूखी पत्तियों को इकट्ठा करने के काम से बुलाकर अस्तबल तक ले जाने के लिए कहा था।

मेरे साथी ने गंभीरता से मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बगीचे में ले जाते हुए मेरे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया, — ‘वह ग्रासडेल मनोर में है, जो — शायर में स्थित है।’

‘कहाँ?’ मैं अचानक चौंककर चिल्लाया।

‘ग्रासडेल मनोर में।’

‘कैसा हुआ?’ मैंने हांफते हुए पूछा। ‘किसने उसे धोखा दिया?’

वह अपनी मर्जी से गई थी।

'असंभव, लॉरेंस! वह इतनी पागल नहीं हो सकती!' मैंने गुस्से से उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, मानो उसे उन घृणित शब्दों को वापस लेने के लिए मजबूर कर रही हो।

"हाँ, उसने ऐसा किया," उसने पहले की तरह ही गंभीर और संयमित लहजे में कहा; "और बिना किसी कारण के नहीं," उसने धीरे से मेरा हाथ छुड़ाते हुए आगे कहा। "श्री हंटिंगडन बीमार हैं।"

'तो क्या वह उसकी देखभाल करने चली गई?'

'हाँ।'

'बेवकूफ!' मैं खुद को रोक नहीं पाया और मेरे मुंह से ये शब्द निकल पड़े। लॉरेंस ने तिरस्कार भरी नजरों से ऊपर देखा। 'तो क्या वो मर रहा है?'

'मुझे नहीं लगता, मार्खम।'

और उसके पास कितनी और नर्सें हैं? उसकी देखभाल करने के लिए और कितनी महिलाएं हैं?

'कोई नहीं; वह अकेला था, वरना वह नहीं जाती।'

अरे, धिक्कार है! यह असहनीय है!

'क्या मतलब? कि वह अकेला रहे?'

मैंने कोई जवाब देने की कोशिश नहीं की, क्योंकि मुझे यकीन नहीं था कि इस परिस्थिति ने मेरे ध्यान भटकाने में कुछ हद तक योगदान नहीं दिया था। इसलिए मैं चुपचाप पीड़ा में इधर-उधर टहलती रही, अपना हाथ माथे पर रखे हुए; फिर अचानक रुककर और अपने साथी की ओर मुड़कर, मैंने अधीरता से कहा, 'उसने यह पागलपन भरा कदम क्यों उठाया? किस शैतान ने उसे ऐसा करने के लिए उकसाया?'

'उसे केवल अपने कर्तव्यबोध ने ही प्रेरित किया।'

'बकवास!'

'मार्कहम, शुरू में तो मेरा भी मन कुछ ऐसा ही कहने का कर रहा था। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि वह मेरी सलाह पर नहीं गई थी, क्योंकि मैं उस आदमी से उतनी ही नफरत करता हूँ जितनी आप कर सकते हैं, सिवाय इसके कि उसका सुधर जाना मुझे उसकी मृत्यु से कहीं अधिक खुशी देगा; लेकिन मैंने बस उसे उसकी बीमारी के बारे में बताया (शिकार के दौरान घोड़े से गिरने का परिणाम), और उसे यह बताया कि वह अभागी महिला, मिस मायर्स, कुछ समय पहले उसे छोड़कर चली गई थी।'

‘यह गलत हुआ! अब, जब उसे उसकी उपस्थिति का लाभ मिलेगा, तो वह तरह-तरह के झूठे भाषण देगा और भविष्य के लिए झूठे, लुभावने वादे करेगा, और वह उस पर विश्वास कर लेगी, और फिर उसकी हालत पहले से दस गुना बदतर और दस गुना अधिक लाइलाज हो जाएगी।’

उन्होंने अपनी जेब से एक पत्र निकालते हुए कहा, 'फिलहाल ऐसी आशंकाओं का कोई ठोस आधार नहीं दिखता।' 'आज सुबह मुझे जो जानकारी मिली है, उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि...'

यह उसकी लिखावट थी! एक अनवरत आवेग में आकर मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया और अनायास ही मेरे होंठों से निकल गए, 'मुझे इसे देखने दो।' वह स्पष्ट रूप से मेरी बात मानने को तैयार नहीं था, लेकिन जब वह हिचकिचा रहा था, मैंने उसके हाथ से वह छीन लिया। हालांकि, एक मिनट बाद ही मैंने खुद को संभालते हुए उसे वापस करने की पेशकश की।

मैंने कहा, 'लो, इसे ले लो, अगर तुम नहीं चाहते कि मैं इसे पढ़ूं।'

‘नहीं,’ उसने उत्तर दिया, ‘यदि आप चाहें तो इसे पढ़ सकते हैं।’

मैंने इसे पढ़ा है, और आप भी पढ़ सकते हैं।

ग्रासडेल, 4 नवंबर।

प्रिय फ्रेडरिक, मुझे पता है कि आप मुझसे सुनने के लिए उत्सुक होंगे, और मैं आपको अपनी जानकारी के अनुसार सब कुछ बताऊँगी। श्री हंटिंगडन बहुत बीमार हैं, लेकिन उनकी जान को कोई खतरा नहीं है; और जब मैं आई थी तब की तुलना में अब उनकी हालत कुछ बेहतर है। मैंने घर को बुरी तरह अस्त-व्यस्त पाया: श्रीमती ग्रीव्स, बेन्सन, सभी अच्छे नौकर जा चुके थे, और उनकी जगह जो नौकर आए थे वे लापरवाह और अव्यवस्थित थे, और इससे भी बुरी बात यह है कि अगर मैं यहाँ रुकी तो मुझे उन्हें फिर से बदलना पड़ेगा। एक पेशेवर नर्स, एक गंभीर, कठोर बूढ़ी महिला को उस बेचारे बीमार की देखभाल के लिए रखा गया था। वह बहुत कष्ट सह रहे हैं, और उनमें सहनशक्ति नहीं है। हालांकि, दुर्घटना में लगी तत्काल चोटें बहुत गंभीर नहीं थीं, और जैसा कि डॉक्टर कहते हैं, संयमी स्वभाव के व्यक्ति के लिए तो मामूली ही होतीं, लेकिन उनके साथ मामला बिल्कुल अलग है। मेरे आने की रात, जब मैं पहली बार उनके कमरे में गई, तो वह एक तरह की बेहोशी की हालत में लेटे हुए थे। जब तक मैंने बात नहीं की, उन्होंने मुझे देखा तक नहीं, और फिर उन्होंने मुझे कोई और

समझ लिया।

‘क्या तुम हो, ऐलिस, फिर से आ गई?’ उसने गुनगुनाते हुए कहा। ‘तुम मुझे छोड़कर क्यों चली गई थी?’

मैंने जवाब दिया, 'मैं आर्थर हूँ - मैं हेलेन हूँ, आपकी पत्नी।'

‘मेरी पत्नी!’ वह चौंककर बोला। ‘भगवान के लिए, उसका ज़िक्र मत करो—मेरी कोई पत्नी नहीं है। उसे और तुम्हें भी! तुमने ऐसा क्यों किया?’

मैंने और कुछ नहीं कहा; लेकिन यह देखकर कि वह बिस्तर के निचले हिस्से की ओर घूर रहा था, मैं वहाँ जाकर बैठ गया और रोशनी को इस तरह से लगाया कि वह मुझ पर पूरी तरह से पड़े, क्योंकि मुझे लगा कि शायद वह मर रहा है, और मैं चाहता था कि वह मुझे पहचान ले। काफी देर तक वह चुपचाप मुझे देखता रहा, पहले खाली निगाहों से, फिर एक अजीब सी बढ़ती तीव्रता वाली स्थिर निगाहों से। अंत में उसने अचानक अपनी कोहनी के बल उठकर मुझे चौंका दिया और भयभीत फुसफुसाहट में, अपनी आँखें मुझ पर टिकाए हुए, पूछा, 'कौन है?'

'यह हेलेन हंटिंगडन हैं,' मैंने चुपचाप उठते हुए कहा और कम ध्यान आकर्षित करने वाली जगह पर चला गया।

‘मैं पागल हो रहा हूँ,’ वह चिल्लाया, ‘या कुछ और—शायद बेहोश हो रहा हूँ; लेकिन मुझे छोड़ दो, तुम जो भी हो। मैं उस सफेद चेहरे और उन आँखों को बर्दाश्त नहीं कर सकता। भगवान के लिए जाओ, और किसी ऐसे व्यक्ति को भेजो जो ऐसा न दिखता हो!’

मैं तुरंत गई और किराए पर रखी नर्स को भेज दिया; लेकिन अगली सुबह मैंने फिर से उनके कमरे में जाने का साहस किया और नर्स की जगह उनके बिस्तर के पास बैठकर कई घंटों तक उनकी देखभाल की, खुद को जितना हो सके कम दिखाया और केवल ज़रूरत पड़ने पर ही बोली, और वह भी इतनी धीमी आवाज़ में कि मेरी आवाज़ दबी हुई थी। पहले तो उन्होंने मुझे नर्स कहकर पुकारा, लेकिन जब मैंने उनके निर्देशानुसार खिड़की के पर्दे उठाने के लिए कमरे के दूसरी तरफ गई, तो उन्होंने कहा, 'नहीं, मैं नर्स नहीं हूँ; मैं एलिस हूँ। मेरे साथ रहो! वह बुढ़िया मेरी जान ले लेगी।'

मैंने कहा, 'मैं तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ।' और उसके बाद वह मुझे ऐलिस या कोई और ऐसा नाम पुकारने लगता जो मुझे लगभग उतना ही अप्रिय लगता था। मैंने कुछ देर तक इसे सहन किया, इस डर से कि कहीं विरोध उसे बहुत परेशान न कर दे;

लेकिन जब उसने पानी का गिलास माँगा और उसे उसके होठों तक ले गई, तो उसने धीरे से कहा, 'धन्यवाद, प्रिय!' मैं खुद को रोक नहीं पाई और तुरंत बोली, 'अगर तुम मुझे जानते तो ऐसा नहीं कहते,' और अपनी पहचान बताने का इरादा किया; लेकिन उसने बस कुछ अस्पष्ट सा जवाब दिया, इसलिए मैंने फिर से वही बात दोहराई। कुछ देर बाद, जब मैं उसके माथे और कनपटी पर सिरका और पानी डालकर उसके सिर की गर्मी और दर्द को कम कर रही थी, तो कुछ मिनटों तक मुझे ध्यान से देखने के बाद उसने कहा, 'मुझे कुछ अजीबोगरीब ख्याल आते हैं - मैं उनसे छुटकारा नहीं पा सकता, और वे मुझे चैन से बैठने नहीं देते; और उनमें सबसे अनोखा और जिद्दी ख्याल तुम्हारा चेहरा और आवाज है - वे बिल्कुल उसकी तरह लगते हैं।' मैं इस समय कसम खाकर कह सकता हूँ कि वह मेरे बगल में ही थी।

मैंने कहा, 'हाँ, वो है।'

'यह आरामदायक लगता है,' उसने मेरी बातों पर ध्यान दिए बिना कहा; 'और जब तुम ऐसा करते हो, तो बाकी कल्पनाएँ धुंधली पड़ जाती हैं – लेकिन यह केवल और मजबूत होती जाती है। – करते रहो – करते रहो, जब तक यह भी गायब न हो जाए। मैं इस तरह के उन्माद को बर्दाश्त नहीं कर सकता; यह मुझे मार डालेगा!'

मैंने स्पष्ट स्वर में कहा, 'यह कभी लुप्त नहीं होगा, क्योंकि यह सत्य है!'

'सच!' वह चौंकते हुए चिल्लाया, मानो किसी सांप ने उसे काट लिया हो। 'तुम्हारा मतलब यह तो नहीं है कि तुम सचमुच वही हो?'

'हाँ, मैं करता हूँ; लेकिन तुम्हें मुझसे दूर भागने की ज़रूरत नहीं है, मानो मैं तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन हूँ: मैं तुम्हारी देखभाल करने आया हूँ, और वह करने आया हूँ जो उनमें से कोई नहीं करेगा।'

'भगवान के लिए, अब मुझे यातना मत दो!' वह दयनीय घबराहट में चिल्लाया; और फिर वह मेरे खिलाफ या उस दुर्भाग्य के खिलाफ कड़वी गालियां बड़बड़ाने लगा जिसने मुझे यहाँ ला खड़ा किया था; जबकि मैंने स्पंज और बेसिन नीचे रख दिया और बिस्तर के पास अपनी जगह पर वापस बैठ गया।

उसने कहा, 'वे कहाँ हैं? क्या वे सब मुझे छोड़कर चले गए हैं—नौकर समेत?'

'अगर आपको जरूरत हो तो नौकर मौजूद हैं; लेकिन अभी लेट जाओ और आराम करो, बेहतर होगा: उनमें से कोई भी आपकी उतनी सावधानी से सेवा नहीं कर सकता या करेगा जितनी मैं करूंगा।'

‘मुझे यह बिल्कुल समझ नहीं आ रहा,’ उसने अचंभित होकर कहा। ‘क्या यह कोई सपना था जो—’ और उसने अपने हाथों से अपनी आँखें ढक लीं, मानो रहस्य सुलझाने की कोशिश कर रहा हो।

नहीं, आर्थर, यह कोई सपना नहीं था कि तुम्हारा व्यवहार ऐसा था कि मुझे तुम्हें छोड़कर जाना पड़ा; बल्कि मैंने सुना था कि तुम बीमार और अकेले हो, और मैं तुम्हारी देखभाल करने के लिए वापस आई हूँ। मुझ पर भरोसा करने में तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है: मुझे अपनी सारी ज़रूरतें बताओ, और मैं उन्हें पूरा करने की कोशिश करूँगी। तुम्हारी देखभाल करने वाला कोई और नहीं है; और मैं अब तुम्हें डांटूंगी नहीं।

‘ओह! मैं समझ गया,’ उसने कड़वी मुस्कान के साथ कहा; ‘यह ईसाई धर्मार्थ कार्यों का एक उदाहरण है, जिसके द्वारा आप अपने लिए स्वर्ग में उच्च स्थान प्राप्त करने और मेरे लिए नरक में एक गहरा गड्ढा खोदने की आशा करते हैं।’

नहीं; मैं तो आपको वह सांत्वना और सहायता देने आया हूँ जिसकी आपकी स्थिति को आवश्यकता है; और अगर मैं आपके शरीर के साथ-साथ आपकी आत्मा को भी लाभ पहुँचा सकूँ, और पश्चाताप की भावना को जगा सकूँ तो—

'ओह, हाँ; अगर आप मुझे पश्चाताप और चेहरे पर शर्मिंदगी से अभिभूत कर सकते हैं, तो यही सही समय है। आपने मेरे बेटे के साथ क्या किया है?'

'वह ठीक है, और यदि आप स्वयं को संयमित कर लें तो आप उससे कभी मिल सकते हैं, लेकिन अभी नहीं।'

'कहाँ है वह?'

वह सुरक्षित है।

क्या वह यहाँ है?

‘वह जहाँ कहीं भी हो, जब तक तुम उसे पूरी तरह से मेरी देखरेख और सुरक्षा में छोड़ने का वादा नहीं कर देते, और यह भी वादा नहीं कर देते कि भविष्य में अगर मुझे उसे फिर से कहीं ले जाना आवश्यक लगे, तो मैं उसे जब और जहाँ चाहूँ ले जाऊँगा, तब ले जाऊँगा, तब तक तुम उसे नहीं देख पाओगे। लेकिन इस बारे में हम कल बात करेंगे: अभी तुम्हें शांत रहना होगा।’

'नहीं, मुझे अभी उससे मिलने दीजिए, मैं वादा करता हूँ, अगर ऐसा होना ही है तो।'

'नहीं - '

मैं कसम खाता हूँ, जैसे स्वर्ग में ईश्वर है! अब, मुझे उसे देखने दो।

लेकिन मैं आपकी कसमों और वादों पर भरोसा नहीं कर सकता: मुझे एक लिखित समझौता चाहिए, और आपको उस पर एक गवाह की उपस्थिति में हस्ताक्षर करने होंगे: लेकिन आज नहीं - कल।

‘नहीं, आज ही; अभी,’ वह अड़ा रहा। वह इतना उत्तेजित था और अपनी इच्छा की तत्काल पूर्ति के लिए इतना बेताब था कि मुझे लगा कि उसे तुरंत मान लेना ही बेहतर होगा, क्योंकि मैंने देखा कि जब तक मैं ऐसा नहीं करूँगा, उसे चैन नहीं आएगा। लेकिन मैं अपने बेटे के हित को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहता था; और मैंने श्री हंटिंगडन से जो वादा करवाना चाहता था, उसे एक पर्ची पर स्पष्ट रूप से लिखकर, जानबूझकर उसे पढ़कर सुनाया और राहेल की उपस्थिति में उस पर हस्ताक्षर करवाए। उसने मुझसे विनती की कि मैं इस पर ज़ोर न दूँ: यह नौकर के सामने मेरे उसके वचन पर अविश्वास को उजागर करने का एक बेकार तरीका था। मैंने उससे कहा कि मुझे खेद है, लेकिन चूंकि उसने मेरा विश्वास खो दिया है, इसलिए उसे परिणाम भुगतना होगा। फिर उसने कलम पकड़ने में असमर्थता का बहाना बनाया। ‘तो हमें तब तक इंतजार करना होगा जब तक आप कलम पकड़ न सकें,’ मैंने कहा। इस पर उसने कहा कि वह कोशिश करेगा; लेकिन फिर वह लिख नहीं पा रहा था। मैंने अपनी उंगली उस जगह पर रखी जहाँ हस्ताक्षर होने थे, और उससे कहा कि अगर उसे पता हो कि कहाँ रखना है, तो वह अंधेरे में भी अपना नाम लिख सकता है। लेकिन उनमें अक्षर बनाने की शक्ति नहीं थी। मैंने कहा, 'ऐसे में तो आप बच्चे को देखने के लिए बहुत बीमार होंगे।' और मुझे अटल पाकर, उन्होंने अंततः समझौते की पुष्टि कर दी; और मैंने राहेल को लड़के को भेजने का आदेश दिया।

यह सब आपको कठोर लग सकता है, लेकिन मुझे लगा कि मुझे अपना वर्तमान लाभ नहीं खोना चाहिए, और इस व्यक्ति की भावनाओं के प्रति किसी भी गलत सहानुभूति के कारण मेरे बेटे के भविष्य के कल्याण का बलिदान नहीं किया जाना चाहिए। नन्हा आर्थर अपने पिता को भूला नहीं था, लेकिन तेरह महीनों की अनुपस्थिति, जिसके दौरान उसे उनके बारे में शायद ही कभी कुछ सुनने या उनका नाम फुसफुसाने की अनुमति मिली थी, ने उसे कुछ शर्मीला बना दिया था; और जब उसे उस अंधेरे कमरे में ले जाया गया जहाँ बीमार व्यक्ति लेटा हुआ था, जो अपने पहले के रूप से बिल्कुल बदल गया था, जिसका चेहरा लाल था और आँखें बेतहाशा

चमक रही थीं - तो वह सहज रूप से मुझसे लिपट गया, और अपने पिता को ऐसे चेहरे से देखता रहा जिस पर खुशी से कहीं अधिक भय का भाव था।

‘इधर आओ, आर्थर,’ पिता ने उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा। बच्चा गया और डरते हुए उस जलते हुए हाथ को छुआ, लेकिन जैसे ही वह चौंका, उसके पिता ने अचानक उसकी बांह पकड़ ली और उसे अपनी ओर खींच लिया।

'क्या आप मुझे जानते हैं?' श्री हंटिंगडन ने उनके चेहरे के भावों को ध्यान से देखते हुए पूछा।

'हाँ।'

'मैं कौन हूँ?'

‘पापा।’

क्या आपको मुझे देखकर खुशी हुई?

'हाँ।'

'तुम नहीं हो!' निराश अभिभावक ने अपनी पकड़ ढीली करते हुए और मेरी ओर प्रतिशोधी दृष्टि डालते हुए उत्तर दिया।

इस तरह रिहा हुआ आर्थर चुपके से मेरे पास लौटा और मेरा हाथ थाम लिया। उसके पिता ने कसम खाकर कहा कि मैंने ही बच्चे को उससे नफरत करना सिखाया है, और मुझे बुरी तरह से कोसने लगे। जैसे ही उन्होंने बोलना शुरू किया, मैंने अपने बेटे को कमरे से बाहर भेज दिया; और जब वह सांस लेने के लिए रुका, तो मैंने शांति से उसे आश्वस्त किया कि वह पूरी तरह से गलत है; मैंने कभी भी उसके बच्चे को उसके खिलाफ भड़काने की कोशिश नहीं की थी।

मैंने कहा, ‘मैं सचमुच चाहता था कि वह तुम्हें भूल जाए, और विशेष रूप से उन पाठों को भूल जाए जो तुमने उसे सिखाए थे; और इसी कारण से, और भेद खुलने के खतरे को कम करने के लिए, मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने आम तौर पर तुम्हारे बारे में बात करने की उसकी प्रवृत्ति को हतोत्साहित किया है; लेकिन मुझे लगता है कि इसके लिए कोई मुझे दोष नहीं दे सकता।’

बीमार व्यक्ति ने केवल जोर से कराहते हुए और अधीरता के आवेश में अपना सिर तकिए पर लुढ़काते हुए ही जवाब दिया।

‘मैं तो पहले से ही नरक में हूँ!’ वह चिल्लाया। ‘यह शापित प्यास मेरे दिल को राख में बदल रही है! क्या कोई नहीं आएगा—?’

इससे पहले कि वह अपना वाक्य पूरा कर पाता, मैंने मेज पर रखे किसी खट्टे, ठंडे पेय को गिलास में भरकर उसे दे दिया। उसने उसे लालच से पी लिया, लेकिन जब मैंने गिलास वापस लिया तो वह बुदबुदाया, "लगता है तुम मेरे सिर पर आग के अंगारे डाल रहे हो?"

उनकी इस बात पर ध्यान न देते हुए, मैंने उनसे पूछा कि क्या मैं उनके लिए कुछ और कर सकता हूँ।

“हाँ; मैं तुम्हें अपनी ईसाई उदारता दिखाने का एक और मौका देता हूँ,” उसने ताना मारते हुए कहा: “मेरा तकिया सीधा करो, और ये गंदे चादरें भी।” मैंने वैसा ही किया। “लो: अब मुझे उस घटिया पेय का एक और गिलास लाओ।” मैंने उसकी बात मान ली। “यह तो बहुत स्वादिष्ट है, है ना?” जब मैंने गिलास उसके होठों के पास ले गया, तो उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा; “क्या तुमने कभी ऐसे शानदार अवसर की उम्मीद नहीं की थी?”

मैंने गिलास को मेज पर रखते हुए कहा, 'अब क्या मैं आपके साथ रहूँ? या अगर मैं जाकर नर्स को बुला लाऊँ तो आप ज्यादा शांत रहेंगी?'

‘ओह, हाँ, आप तो वाकई अद्भुत रूप से सौम्य और मददगार हैं! लेकिन आपने तो मुझे इन सब बातों से पागल कर दिया है!’ उसने अधीरता से सिर हिलाते हुए जवाब दिया।

मैंने कहा, 'तो मैं अब चलता हूँ'; और मैं वहाँ से चला गया, और उस दिन फिर कभी अपनी उपस्थिति से उसे परेशान नहीं किया, सिवाय एक या दो मिनट के लिए, बस यह देखने के लिए कि वह कैसा है और उसे क्या चाहिए।

अगली सुबह डॉक्टर ने उसका खून निकालने का आदेश दिया; और उसके बाद वह अधिक शांत और स्थिर हो गया। मैंने आधा दिन अलग-अलग समय पर उसके कमरे में बिताया। मेरी उपस्थिति से वह पहले की तरह उत्तेजित या चिढ़ता हुआ प्रतीत नहीं हुआ, और उसने बिना किसी कड़वी टिप्पणी के शांतिपूर्वक मेरी सेवाएं स्वीकार कीं: वास्तव में, उसने अपनी ज़रूरतों को बताने के अलावा शायद ही कुछ बोला, और वह भी मुश्किल से। लेकिन अगले दिन, यानी जैसे-जैसे वह थकावट और सुस्ती की स्थिति से उबरता गया, उसका चिड़चिड़ा स्वभाव फिर से उभरता हुआ प्रतीत हुआ।

जब मैंने उसे आराम देने और उसकी नर्स की लापरवाही को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया, तो वह चिल्लाया, 'वाह, यह मीठा बदला!' 'और आप इसे बड़ी

शांति से ले सकते हैं, क्योंकि यह सब कर्तव्य का हिस्सा है।'

मैंने अपने मन में दबी हुई कड़वाहट के साथ कहा, 'यह मेरे लिए अच्छा है कि मैं अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ, क्योंकि यही एकमात्र सांत्वना है जो मुझे मिलती है; और ऐसा लगता है कि मेरे अंतरात्मा की संतुष्टि ही एकमात्र पुरस्कार है जिसकी मुझे तलाश करनी चाहिए!'

मेरे व्यवहार की गंभीरता देखकर वह कुछ आश्चर्यचकित सा प्रतीत हुआ।

उन्होंने पूछा, 'आप किस इनाम की उम्मीद कर रहे थे?'

अगर मैं तुम्हें बताऊँ तो तुम मुझे झूठा समझोगे; पर मेरी यही उम्मीद थी कि मैं तुम्हारा भला कर सकूँ: तुम्हारे मन को शांति दे सकूँ और तुम्हारे वर्तमान कष्टों को कम कर सकूँ; पर लगता है कि मैं दोनों में से कुछ भी नहीं कर पाऊँगा; तुम्हारी बुरी आत्मा मुझे ऐसा करने नहीं देगी। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मैंने अपनी भावनाओं और अपने पास बची थोड़ी-बहुत सांसारिक सुख-सुविधाओं का भी व्यर्थ बलिदान कर दिया है; और तुम्हारे लिए मैं जो भी थोड़ा-बहुत करता हूँ, उसे स्वार्थी द्वेष और बदले की भावना से प्रेरित समझा जाता है!

"सच कहूँ तो, सब कुछ बहुत अच्छा है," उसने मुझे मूर्खतापूर्ण आश्चर्य से देखते हुए कहा; "और बेशक मुझे इतनी उदारता और अलौकिक अच्छाई देखकर पश्चाताप और प्रशंसा के आँसू बहाने चाहिए थे; लेकिन आप देख रहे हैं कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। फिर भी, अगर आपको इसमें सचमुच कोई आनंद मिलता है, तो कृपया मेरी जितनी हो सके उतनी मदद करें; क्योंकि आप देख रहे हैं कि मैं इस समय लगभग उतना ही दुखी हूँ जितना आप मुझे देखना चाहते हैं। मैं स्वीकार करता हूँ कि आपके आने के बाद से मेरी देखभाल पहले से बेहतर हुई है, क्योंकि इन दुष्टों ने मेरी घोर उपेक्षा की है, और मेरे सभी पुराने दोस्तों ने मुझे लगभग छोड़ दिया है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा समय बहुत बुरा बीता है: कई बार तो मुझे लगा कि मैं मर जाऊँगा: क्या आपको लगता है कि कोई उम्मीद है?"

'मृत्यु की संभावना हमेशा बनी रहती है; और ऐसी संभावना को ध्यान में रखते हुए जीना हमेशा अच्छा होता है।'

'जी हां, जी हां! लेकिन क्या आपको लगता है कि इस बीमारी का अंत घातक होने की कोई संभावना है?'

मैं नहीं बता सकता; लेकिन, मान लीजिए कि ऐसा होता है, तो आप उस स्थिति

का सामना करने के लिए कैसे तैयार हैं?

'डॉक्टर ने तो मुझसे कहा था कि मुझे इसके बारे में नहीं सोचना चाहिए, क्योंकि अगर मैं उनके बताए गए उपचार और दवाइयों का पालन करूंगा तो मैं निश्चित रूप से ठीक हो जाऊंगा।'

'मुझे उम्मीद है कि आप ऐसा कर सकते हैं, आर्थर; लेकिन ऐसे मामले में न तो डॉक्टर और न ही मैं निश्चित रूप से कुछ कह सकते हैं; आंतरिक चोट है, और यह जानना मुश्किल है कि यह किस हद तक है।'

'बस अब! तुम मुझे डराकर मार डालना चाहते हो।'

नहीं; लेकिन मैं आपको झूठी सुरक्षा का भ्रम नहीं देना चाहता। यदि जीवन की अनिश्चितता का एहसास आपको गंभीर और उपयोगी विचारों की ओर प्रेरित कर सकता है, तो मैं आपको ऐसे चिंतन के लाभ से वंचित नहीं करना चाहता, चाहे आप अंततः ठीक हों या नहीं। क्या मृत्यु का विचार आपको बहुत भयभीत करता है?

'यह एकमात्र ऐसी चीज है जिसके बारे में मैं सोच भी नहीं सकता; इसलिए अगर आपके पास कोई हो तो—'

'लेकिन यह कभी न कभी तो आएगा ही,' मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'और चाहे इसमें वर्षों लग जाएं, यह निश्चित रूप से आपको उसी तरह पकड़ लेगा जैसे कि आज आ जाए, और निस्संदेह तब भी उतना ही अप्रिय होगा जितना कि अभी, जब तक कि आप—'

अरे, छोड़ो भी! अब मुझे अपने उपदेशों से परेशान मत करो, वरना तुम मुझे जान से मार देना चाहते हो। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता, मैं तुम्हें बता रहा हूँ। मुझे पहले से ही बहुत कष्ट हैं। अगर तुम्हें लगता है कि कोई खतरा है, तो मुझे उससे बचाओ; और फिर, कृतज्ञता के साथ, मैं तुम्हारी हर बात सुन लूँगा।

इसलिए मैंने उस अप्रिय विषय को छोड़ दिया। और अब, फ्रेडरिक, मुझे लगता है कि मैं अपना पत्र समाप्त कर सकती हूँ। इन विवरणों से आप मेरे रोगी की स्थिति और मेरी स्थिति और भविष्य की संभावनाओं के बारे में स्वयं निर्णय ले सकते हैं। मुझे जल्द ही आपसे खबर दें, और मैं आपको फिर से लिखकर बताऊँगी कि हम कैसे हैं; लेकिन अब जब बीमार के कमरे में मेरी उपस्थिति सहन की जाती है, और यहाँ तक कि आवश्यक भी है, तो मेरे पास अपने पति और अपने बेटे के लिए बहुत कम समय होगा, क्योंकि मुझे बाद वाले की पूरी तरह से उपेक्षा नहीं करनी चाहिए: उसे हमेशा

राहेल के साथ रखना ठीक नहीं होगा, और मैं उसे एक पल के लिए भी किसी अन्य नौकर के साथ छोड़ने या उसे अकेला छोड़ने की हिम्मत नहीं कर सकती, कहीं ऐसा न हो कि वह उनसे मिल जाए। यदि उसके पिता की हालत बिगड़ती है, तो मैं एस्तेर हरग्रेव से कुछ समय के लिए उसकी देखभाल करने के लिए कहूँगी, जब तक कि मैं कम से कम घर का पुनर्गठन न कर लूँ; लेकिन मैं उसे अपनी निगरानी में रखना ज़्यादा पसंद करती हूँ।

मैं एक अजीबोगरीब स्थिति में हूँ: मैं अपने पति के स्वास्थ्य लाभ और सुधार के लिए पूरी कोशिश कर रही हूँ, और अगर मैं सफल हो जाती हूँ, तो मैं क्या करूँगी? ज़ाहिर है, अपना कर्तव्य निभाऊँगी, लेकिन कैसे? कोई बात नहीं; मैं अभी जो काम मेरे सामने है उसे पूरा कर सकती हूँ, और ईश्वर मुझे भविष्य में जो भी करने की इच्छा होगी, उसे पूरा करने की शक्ति देगा। अलविदा, प्यारे फ्रेडरिक।

हेलेन हंटिंगडन।

'इस बारे में आपका क्या विचार है?' लॉरेंस ने कहा, जब मैंने चुपचाप पत्र को दोबारा मोड़ दिया।

मैंने जवाब दिया, ‘मुझे तो ऐसा लगता है कि वह अपने मोती सूअरों के सामने फेंक रही है। काश वे उन्हें पैरों तले रौंदकर ही संतुष्ट हो जाएं, और पलटकर उसे नोच न डालें! लेकिन मैं उसके खिलाफ और कुछ नहीं कहूंगा: मुझे लगता है कि उसने जो किया है, उसमें उसके इरादे नेक और उत्तम हैं; और अगर यह काम बुद्धिमानी भरा नहीं है, तो ईश्वर उसे इसके परिणामों से बचाए! क्या मैं यह पत्र रख सकता हूं, लॉरेंस? — देखो, उसने पूरे पत्र में मेरा कहीं ज़िक्र नहीं किया है — या दूर-दूर तक भी मेरा कोई संकेत नहीं दिया है; इसलिए, इसमें कोई अनुचितता या नुकसान नहीं हो सकता।’

तो फिर आप इसे अपने पास क्यों रखना चाहेंगे?

क्या ये अक्षर उसी के हाथों से नहीं लिखे गए थे? और क्या ये शब्द उसी के मन में नहीं आए थे, और उनमें से कई उसके होठों से नहीं बोले गए थे?

‘ठीक है,’ उसने कहा। और इसलिए मैंने इसे रख लिया; अन्यथा, हैलफोर्ड, आप कभी भी इसकी विषयवस्तु से इतने अच्छे से परिचित नहीं हो पाते।

मैंने कहा, ‘और जब आप लिखें, तो क्या आप कृपा करके उनसे पूछ लेंगी कि क्या मुझे अपनी माँ और बहन को उनकी वास्तविक कहानी और परिस्थितियों के बारे में

बताने की अनुमति मिल सकती है, बस उतना ही जितना पड़ोसियों को उनके द्वारा किए गए शर्मनाक अन्याय के प्रति जागरूक करने के लिए आवश्यक है? मुझे कोई कोमल संदेश नहीं चाहिए, बस उनसे यह पूछ लें, और उन्हें बता दें कि यह मेरे लिए उनका सबसे बड़ा उपकार होगा; और उन्हें बता दें—नहीं, इससे अधिक कुछ नहीं। आप जानती हैं कि मुझे पता है, और मैं स्वयं उन्हें लिख सकती थी, लेकिन मैं इतनी सदाचारी हूँ कि ऐसा नहीं कर रही हूँ।'

'ठीक है, मैं तुम्हारे लिए यह कर दूंगा, मार्खम।'

और जैसे ही आपको जवाब मिलेगा, आप मुझे बता देंगे?

'अगर सब ठीक रहा तो मैं खुद आकर आपको तुरंत बता दूंगा।'

अध्याय 148

इसके पाँच-छह दिन बाद श्री लॉरेंस ने हमें अपने घर आने का सम्मान दिया; और जब हम दोनों अकेले थे—जो मैंने उन्हें अपने अनाज के ढेर दिखाने के बहाने जल्द से जल्द संभव कर लिया—तो उन्होंने मुझे अपनी बहन का एक और पत्र दिखाया। यह पत्र उन्होंने मेरी उत्सुक दृष्टि के सामने सहर्ष प्रस्तुत किया; शायद उन्होंने सोचा होगा कि इससे मुझे लाभ होगा। मेरे संदेश का उत्तर पत्र में केवल यही था: —

श्री मार्खम मेरे बारे में जो भी खुलासा करना चाहें, कर सकते हैं। उन्हें पता होगा कि मैं इस विषय पर ज्यादा कुछ कहना नहीं चाहता। आशा है वे ठीक होंगे; लेकिन उनसे कह दीजिए कि वे मेरे बारे में न सोचें।

मैं आपको पत्र के शेष भाग से कुछ अंश दे सकता हूँ, क्योंकि मुझे इसे भी अपने पास रखने की अनुमति दी गई थी - शायद, सभी हानिकारक आशाओं और कल्पनाओं के लिए एक प्रतिकार के रूप में।

* * * * *

उनकी हालत में निश्चित रूप से सुधार हुआ है, लेकिन गंभीर बीमारी और सख्त दिनचर्या के कारण वे बहुत उदास हैं - यह दिनचर्या उनकी पिछली सभी आदतों के बिल्कुल विपरीत है। यह देखकर बहुत दुख होता है कि उनके बीते जीवन ने उनके कभी उत्तम स्वास्थ्य को किस प्रकार पूरी तरह से बिगाड़ दिया है और उनके संपूर्ण शरीर को दूषित कर दिया है। लेकिन डॉक्टर का कहना है कि यदि वे आवश्यक प्रतिबंधों का पालन करते रहें तो अब उन्हें खतरे से बाहर माना जा सकता है। उन्हें कुछ स्फूर्तिदायक पेय पदार्थ लेने होंगे, लेकिन उन्हें सावधानीपूर्वक पतला करके कम मात्रा में ही लेना चाहिए; और मुझे उन्हें इस बात पर कायम रखना बहुत मुश्किल लगता है। पहले तो मृत्यु के प्रति उनके अत्यधिक भय ने इस कार्य को आसान बना दिया था; लेकिन जैसे-जैसे उनकी तीव्र पीड़ा कम होती जाती है और खतरा टलता हुआ दिखाई देता है, वे उतने ही जिद्दी होते जाते हैं। अब, उनकी भूख भी वापस आने लगी है; और यहाँ भी, उनकी लंबे समय से चली आ रही भोग-विलास की आदतें उनके लिए बहुत प्रतिकूल साबित हो रही हैं। मैं यथासंभव उन पर नजर रखता हूँ और उन्हें नियंत्रित करता हूँ, और अक्सर अपनी इस कठोरता के लिए मुझे कड़ी आलोचना झेलनी पड़ती है; और कभी-कभी वह मेरी निगरानी से बचने का उपाय ढूंढ लेता है, और कभी-कभी मेरी इच्छा के विरुद्ध कार्य करता है। लेकिन अब वह मेरी उपस्थिति का इतना आदी हो चुका है कि जब मैं उसके पास नहीं होती तो वह कभी संतुष्ट नहीं होता। मुझे कभी-कभी उसके साथ थोड़ा कठोर होना पड़ता है, अन्यथा वह मुझे पूरी तरह से अपना गुलाम बना लेगा; और मैं जानती हूँ कि उसके लिए अपने सभी हितों को त्याग देना अक्षम्य कमजोरी होगी। मुझे नौकरों की देखरेख करनी है, अपने छोटे आर्थर का ध्यान रखना है, और अपने स्वास्थ्य का भी, इन सभी की पूरी तरह से उपेक्षा हो जाएगी यदि मैं उसकी अत्यधिक मांगों को पूरा करती रहूँ। मैं आमतौर पर रात में जागती नहीं हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि जिस नर्स ने यह काम अपने हाथ में लिया है, वह ऐसे कामों के लिए मुझसे बेहतर योग्य है; लेकिन फिर भी, मुझे रात में बिना किसी रुकावट के चैन की नींद बहुत कम मिलती है, और मैं कभी इस पर भरोसा नहीं कर सकती; क्योंकि मेरा मरीज मुझे उस समय बुलाने में जरा भी संकोच नहीं करता जब उसकी जरूरतों या उसकी इच्छाओं के लिए मेरी उपस्थिति आवश्यक होती है। लेकिन वह स्पष्ट रूप से मेरी नाराजगी से डरता है; और यदि कभी वह अपनी अनुचित मांगों,

चिड़चिड़ी शिकायतों और निंदाओं से मेरे धैर्य की परीक्षा लेता है, तो कभी अपनी दीनता और आत्म-हीनता से मुझे निराश कर देता है जब उसे लगता है कि वह हद से आगे बढ़ गया है। लेकिन यह सब मैं आसानी से क्षमा कर सकती हूँ; मैं जानती हूँ कि यह मुख्य रूप से उसके दुर्बल शरीर और तंत्रिका संबंधी विकारों का परिणाम है। मुझे सबसे अधिक चिढ़ उसके कभी-कभार स्नेहपूर्ण व्यवहार के प्रयासों से होती है, जिस पर न तो मैं विश्वास कर सकती हूँ और न ही उसका प्रतिफल दे सकती हूँ; ऐसा नहीं है कि मैं उससे नफरत करती हूँ: उसके कष्टों और मेरी स्वयं की अथक देखभाल ने उसे मेरे सम्मान का कुछ अधिकार दिया है - मेरे स्नेह का भी, यदि वह शांत और ईमानदार होता, और चीजों को यथास्थिति में रहने देता; लेकिन जितना अधिक वह मुझे मनाने का प्रयास करता है, उतना ही मैं उससे और भविष्य से दूर होती जाती हूँ।

‘हेलेन, जब मैं ठीक हो जाऊंगा तो तुम क्या करोगी?’ उसने आज सुबह पूछा। ‘क्या तुम फिर से भाग जाओगी?’

यह पूरी तरह से आपके अपने आचरण पर निर्भर करता है।

'ओह, मैं बहुत अच्छा व्यवहार करूंगा।'

लेकिन अगर मुझे तुम्हें छोड़कर जाना जरूरी लगा, आर्थर, तो मैं “भाग नहीं जाऊंगी”: तुम जानते हो कि तुमने मुझे वादा किया था कि मैं जब चाहूं जा सकती हूं और अपने बेटे को अपने साथ ले जा सकती हूं।

“अरे, लेकिन तुम्हारे पास कोई कारण नहीं होगा।” और फिर कई तरह के दावे सामने आए, जिन्हें मैंने काफी बेरुखी से खारिज कर दिया।

‘तो क्या तुम मुझे माफ नहीं करोगे?’ उसने कहा।

हाँ, मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है: लेकिन मैं जानती हूँ कि तुम अब मुझसे पहले की तरह प्रेम नहीं कर सकते—और अगर तुम ऐसा करो तो मुझे बहुत दुख होगा, क्योंकि मैं बदले में वैसा प्रेम देने का दिखावा नहीं कर सकती: इसलिए चलो इस विषय को यहीं समाप्त करते हैं, और फिर कभी इस पर चर्चा न करें। मैंने तुम्हारे लिए जो किया है, उससे तुम अंदाजा लगा सकते हो कि मैं आगे क्या करूँगी—यदि यह मेरे पुत्र के प्रति मेरे उच्च कर्तव्य के विपरीत न हो (उच्च कर्तव्य इसलिए क्योंकि उसने कभी अपने अधिकार नहीं खोए, और इसलिए क्योंकि मुझे आशा है कि मैं उसके लिए तुमसे कहीं अधिक भलाई कर सकती हूँ); और यदि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे प्रति दयालु रहूँ, तो मेरे स्नेह और सम्मान को शब्दों से नहीं, बल्कि कर्मों से प्राप्त किया जा

सकता है।

इस पर उसकी एकमात्र प्रतिक्रिया एक हल्की सी झुंझलाहट और लगभग न के बराबर कंधे उचकाना थी। हाय, बेचारा! उसके लिए शब्द कर्मों से कहीं अधिक सस्ते पड़ते हैं; मानो मैंने कहा हो, 'तुम्हें जो वस्तु चाहिए, वह पाउंड में मिलेगी, पेंस में नहीं।' और फिर उसने एक शिकायत भरी, आत्म-दया से भरी आह भरी, मानो उसे इस बात का गहरा अफसोस हो कि इतने सारे भक्तों का प्रिय और चहेता, अब उस कठोर, निर्मम और निर्मम स्त्री की दया पर छोड़ दिया गया है, और वह उस पर दिखाई गई दया से प्रसन्न भी हो।

मैंने कहा, 'यह तो अफसोस की बात है, है ना?' और चाहे मैंने उनके विचारों को सही समझा हो या नहीं, मेरी यह टिप्पणी उनके विचारों से मेल खाती थी, क्योंकि उन्होंने मेरी बात को गहराई से समझने पर अफसोस भरी मुस्कान के साथ जवाब दिया - 'इसका कोई उपाय नहीं है।'

* * * * *

मैंने एस्थर हार्ग्रेव को दो बार देखा है। वह एक आकर्षक महिला है, लेकिन उसकी प्रसन्नता लगभग टूट चुकी है और उसका मधुर स्वभाव लगभग बिगड़ चुका है, क्योंकि उसकी माँ उसके ठुकराए हुए प्रेमी के लिए लगातार उत्पीड़न करती रहती है - यह उत्पीड़न हिंसक तो नहीं है, लेकिन निरंतर और कष्टदायक है, मानो लगातार बूंद-बूंद गिर रही हो। ऐसा लगता है कि वह अस्वाभाविक माँ अपनी बेटी का जीवन बोझ बनाने पर तुली हुई है, अगर वह उसकी इच्छाओं के आगे नहीं झुकती है।

उसने कहा, “माँ मुझे परिवार पर बोझ और आलस्य का एहसास दिलाने के लिए हर संभव कोशिश करती है, और मुझे सबसे कृतघ्न, स्वार्थी और कर्तव्यहीन बेटी साबित करने की कोशिश करती है; और वाल्टर भी इतना कठोर, निर्मम और अभिमानी है मानो वह मुझसे घृणा करता हो। मुझे लगता है कि अगर मुझे शुरू से ही पता होता कि विरोध करने की कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी, तो मैं तुरंत हार मान लेती; लेकिन अब, अपनी हठधर्मिता के कारण, मैं डटी रहूँगी!”

मैंने उत्तर दिया, 'अच्छे संकल्प के लिए बुरा मकसद। लेकिन, मैं जानता हूँ कि वास्तव में आपके दृढ़ संकल्प के पीछे बेहतर मकसद हैं: और मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप उन्हें ध्यान में रखें।'

'मेरा यकीन मानो, मैं ऐसा ज़रूर करूँगा। मैं कभी-कभी माँ को धमकी देता हूँ कि अगर उसने मुझे और परेशान किया तो मैं भाग जाऊँगा और खुद कमाकर परिवार को बदनाम करूँगा; और इससे वह थोड़ी डर जाती है। लेकिन अगर उन्हें कोई आपत्ति नहीं है तो मैं पूरी ईमानदारी से ऐसा करूँगा।'

मैंने कहा, 'कुछ समय शांत और धैर्यवान रहो, अच्छे दिन जरूर आएंगे।'

बेचारी लड़की! काश कोई ऐसा व्यक्ति आ जाए जो उसके लायक हो और उसे अपने साथ ले जाए—क्या तुम भी ऐसा नहीं चाहते, फ्रेडरिक?

* * * * *

यदि इस पत्र को पढ़कर हेलेन और मेरे भविष्य को लेकर मेरे मन में चिंता और डर पैदा हुआ, तो एक बड़ी तसल्ली भी थी: अब मेरे हाथ में था कि मैं हेलेन के नाम पर लगे हर कलंक को मिटा सकूँ। मिलवर्ड्स और विल्सन्स अपनी आँखों से बादलों से फूटते सूरज को देखेंगे—और उसकी किरणों से उनकी आँखें चौंधिया जाएँगी;—और मेरे अपने दोस्त भी इसे देखेंगे—वे लोग जिनके संदेह मेरे मन में कड़वाहट और दर्द का कारण बने थे। इसके लिए मुझे बस बीज बोना था, और वह जल्द ही एक भव्य, शाखाओं वाला पौधा बन जाएगा: मुझे पता था कि मेरी माँ और बहन से कुछ शब्द कहना ही पूरे मोहल्ले में खबर फैलाने के लिए काफी होगा, मुझे और कुछ करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

रोज़ बहुत प्रसन्न हुई; और जैसे ही मैंने उसे वह सब कुछ बता दिया जो मुझे उचित लगा—जो कि मैंने दिखावा किया कि मुझे पता है—वह तुरंत अपनी टोपी और शॉल ओढ़कर मिलवर्ड्स और विल्सन्स को खुशखबरी देने के लिए दौड़ पड़ी—मुझे संदेह है कि यह खुशखबरी केवल खुद रोज़ और मैरी मिलवर्ड के लिए थी—वह स्थिर, समझदार लड़की, जिसकी असाधारण योग्यता को तथाकथित श्रीमती ग्राहम ने उसके साधारण बाहरी रूप के बावजूद तुरंत पहचान लिया था और उचित महत्व दिया था; और जो स्वयं उस महिला के सच्चे चरित्र और गुणों को उनमें से सबसे प्रतिभाशाली व्यक्ति से भी बेहतर ढंग से देख और सराह सकती थी।

चूंकि मुझे शायद फिर कभी उसका ज़िक्र करने का मौका न मिले, इसलिए मैं आपको यहीं बता देता हूँ कि उस समय उसकी सगाई रिचर्ड विल्सन से गुप्त रूप से हो चुकी थी—मुझे लगता है कि यह बात उन दोनों के अलावा किसी को पता नहीं थी।

वह मेधावी छात्र अब कैम्ब्रिज में था, जहाँ उसके अनुकरणीय आचरण और शिक्षा के प्रति उसकी लगन ने उसे सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया और अंततः उसे कड़ी मेहनत से अर्जित सम्मान और बेदाग प्रतिष्ठा के साथ अपने कॉलेज के करियर के अंत तक पहुँचाया। उचित समय पर वह श्री मिलवर्ड का पहला और एकमात्र सहायक पादरी बना—क्योंकि उस सज्जन के ढलते वर्षों ने अंततः उन्हें यह स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया कि उनके विशाल पल्ली के कर्तव्य उन ऊर्जाओं के लिए कुछ ज़्यादा ही थे, जिनका वे अपने युवा और कम सक्रिय साथियों पर गर्व करते थे। यही वह था जिसकी उन धैर्यवान, वफादार प्रेमियों ने वर्षों पहले निजी तौर पर योजना बनाई थी और चुपचाप प्रतीक्षा की थी; और उचित समय पर वे एक हो गए, उस छोटी सी दुनिया के आश्चर्य के बीच जिसमें वे रहते थे, जिसने उन्हें बहुत पहले ही एक ही भाग्य के लिए जन्मा घोषित कर दिया था; यह कहना असंभव है कि पीला-सा दिखने वाला, एकांतप्रिय, किताबी कीड़ा कभी पत्नी की तलाश करने का साहस जुटा पाएगा, या अगर वह ऐसा कर भी ले तो उसे पा सकेगा, और यह भी उतना ही असंभव है कि सादी दिखने वाली, सीधे-सादे व्यवहार वाली, अनाकर्षक और समझौता न करने वाली मिस मिलवर्ड को कभी पति मिल पाएगा।

वे अब भी विकारेज में ही रहते थे, महिला अपना समय अपने पिता, अपने पति और अपने गरीब पैरिशवासियों के बीच बांटती थी, और बाद में अपने बढ़ते परिवार की देखभाल भी करती थी; और अब जबकि रेवरेंड माइकल मिलवर्ड, जो उम्र और सम्मान से परिपूर्ण थे, अपने पिता के पास चले गए हैं, रेवरेंड रिचर्ड विल्सन ने लिंडेन-होप के विकारेज में उनका स्थान लिया है, जिससे वहां के निवासियों को बहुत संतुष्टि मिली है, जिन्होंने इतने लंबे समय तक उनकी और उनके उत्कृष्ट और प्रिय साथी की योग्यताओं को परखा और पूरी तरह से साबित किया था।

अगर आपको उस महिला की बहन के भविष्य के बारे में जानने में दिलचस्पी है, तो मैं आपको बस इतना ही बता सकता हूँ—जो शायद आपने कहीं और से सुना होगा—कि लगभग बारह या तेरह साल पहले उसने एक अमीर व्यापारी से शादी करके उस खुशहाल जोड़े को अपनी मौजूदगी से दूर कर दिया; और मुझे उसके इस सौदे पर तरस आता है। मुझे डर है कि वह उसे काफी असुविधाजनक जीवन दे रही है, हालाँकि, सौभाग्य से, वह इतना नासमझ है कि उसे अपनी बदकिस्मती का एहसास ही नहीं है। मेरा उससे बहुत कम वास्ता है: हम कई सालों से नहीं मिले हैं; लेकिन,

मुझे पूरा यकीन है, वह न तो अपने पुराने प्रेमी को भूली है और न ही उस महिला को, जिसके श्रेष्ठ गुणों ने पहली बार उसकी आँखें खोली थीं और उसे उसके बचकाने लगाव की मूर्खता का एहसास कराया था।

रिचर्ड विल्सन की बहन की बात करें तो, वह मिस्टर लॉरेंस को वापस पाने में पूरी तरह असमर्थ रही हैं, और न ही उन्हें कोई ऐसा धनी और सभ्य साथी मिल पाया है जो जेन विल्सन के पति के बारे में उनकी धारणाओं के अनुरूप हो। वह अभी भी अविवाहित सुख का आनंद ले रही हैं। अपनी माँ की मृत्यु के कुछ समय बाद ही उन्होंने रायकोट फार्म से अपना जीवन समेट लिया, क्योंकि उनके लिए अपने ईमानदार भाई रॉबर्ट और उनकी नेक पत्नी के असभ्य व्यवहार और असभ्य आदतों को सहन करना असंभव हो गया था, और दुनिया की नजरों में ऐसे अशिष्ट लोगों के साथ पहचाने जाने का विचार भी असहनीय हो गया था। उन्होंने काउंटी शहर में एक कमरा किराए पर लिया, जहाँ वह रहती थीं, और मुझे लगता है कि अभी भी रहती हैं, एक प्रकार की कंजूस, ठंडी, असहज शालीनता के साथ, दूसरों के लिए कुछ भी अच्छा नहीं करतीं, और खुद के लिए भी बहुत कम करती हैं; अपना दिन कल्पनाओं और गपशप में बिताती हैं; अक्सर अपने 'पादरी भाई' और 'पादरी की पत्नी बहन' का जिक्र करती हैं, लेकिन अपने किसान भाई और किसान की पत्नी बहन का कभी जिक्र नहीं करतीं। वह बिना ज्यादा खर्च किए जितना हो सके उतने लोगों से मिलना-जुलना चाहती है, लेकिन न तो वह किसी से प्यार करती है और न ही कोई उससे प्यार करता है - एक निर्मम, अभिमानी, तीक्ष्ण और कपटपूर्ण तरीके से आलोचना करने वाली बूढ़ी कुंवारी महिला।

अध्याय 69

हालांकि श्री लॉरेंस का स्वास्थ्य अब पूरी तरह से ठीक हो चुका था, फिर भी वुडफोर्ड

में मेरी मुलाक़ातें पहले की तरह ही नियमित थीं; हालांकि अक्सर पहले की तुलना में कम लंबी होती थीं। हम श्रीमती हंटिंगडन के बारे में शायद ही कभी बात करते थे; फिर भी हम उनसे मिले बिना उनका ज़िक्र किए बिना नहीं रह पाते थे, क्योंकि मैं उनसे मिलने हमेशा उनके बारे में कुछ सुनने की उम्मीद में ही जाता था, और वे भी मुझसे मिलने कभी नहीं जाते थे, क्योंकि वे मुझे अक्सर बाहर ही देख लेते थे। लेकिन मैं हमेशा दूसरी बातों से शुरू करता था, और पहले यह देखता था कि क्या वे विषय को आगे बढ़ाते हैं। अगर वे नहीं बढ़ाते, तो मैं सहजता से पूछता, 'क्या आपने हाल ही में अपनी बहन से कोई खबर सुनी है?' अगर वे 'नहीं' कहते, तो बात वहीं खत्म हो जाती: अगर वे 'हाँ' कहते, तो मैं पूछने की हिम्मत करता, 'वह कैसी हैं?' लेकिन कभी नहीं पूछता, 'उनके पति कैसे हैं?' हालांकि मैं जानने के लिए बहुत उत्सुक होता; क्योंकि मुझमें उनके ठीक होने की चिंता जताने का ढोंग नहीं था, और न ही मेरे अंदर इसके विपरीत कोई इच्छा व्यक्त करने का साहस था। क्या मुझमें ऐसी कोई इच्छा थी? - मुझे डर है कि मुझे दोषी मानना पड़ेगा; लेकिन चूंकि आपने मेरा कबूलनामा सुन लिया है, इसलिए आपको मेरा बचाव भी सुनना चाहिए - कम से कम कुछ बहाने तो जरूर, जिनके जरिए मैंने अपने दोषी अंतरात्मा को शांत करने की कोशिश की।

सबसे पहले तो, देखिए, उसके जीवन ने दूसरों को हानि पहुँचाई, और स्पष्ट रूप से स्वयं को कोई लाभ नहीं पहुँचाया; और यद्यपि मैं उसका अंत चाहता था, फिर भी यदि एक उंगली उठाने मात्र से ऐसा संभव होता, या यदि किसी आत्मा ने मेरे कान में फुसफुसाकर कहा होता कि इच्छाशक्ति का एक प्रयास ही पर्याप्त होगा, तो भी मैं उसका अंत शीघ्र नहीं करता — जब तक कि वास्तव में मेरे पास उसे कब्र के किसी अन्य शिकार से बदलने की शक्ति न होती, जिसका जीवन उसकी जाति के लिए उपयोगी हो, और जिसकी मृत्यु पर उसके मित्र शोक मनाएँ। लेकिन क्या यह कामना करने में कोई हानि थी कि उन हजारों लोगों में, जिनकी आत्माएँ निश्चित रूप से वर्ष समाप्त होने से पहले ले ली जाएँगी, यह अभागा मनुष्य भी एक हो? मुझे नहीं लगता था; और इसलिए मैंने पूरे हृदय से कामना की कि ईश्वर उसे किसी बेहतर लोक में ले जाए, या यदि ऐसा संभव न हो, तो भी उसे इस लोक से निकाल ले; क्योंकि अगर वह अब, एक चेतावनी भरी बीमारी के बाद, और उसके साथ ऐसी देवदूत जैसी साथी के होते हुए भी, बुलावा स्वीकार करने के लिए अयोग्य था, तो यह लगभग निश्चित ही था कि वह कभी भी योग्य नहीं होगा - बल्कि इसके विपरीत, स्वास्थ्य में सुधार के

साथ-साथ वासना और दुष्टता भी लौट आएगी, और जैसे-जैसे वह ठीक होने के प्रति अधिक आश्वस्त होता जाएगा, उसकी उदारता और दयालुता का आदी होता जाएगा, उसकी भावनाएँ और अधिक कठोर होती जाएँगी, उसका हृदय और अधिक पत्थर जैसा कठोर और उसके प्रेरक तर्कों के प्रति असंवेदनशील होता जाएगा - लेकिन ईश्वर ही सब जानता है। इस बीच, मैं उसके निर्णयों के परिणाम को लेकर चिंतित हुए बिना नहीं रह सकी; क्योंकि मैं जानती थी कि (स्वयं को पूरी तरह से अलग रखते हुए), हेलेन चाहे अपने पति के कल्याण में कितनी भी रुचि रखे, चाहे वह उसके भाग्य पर कितना भी शोक करे, जब तक वह जीवित रहेगा, वह दुखी रहेगी।

दो सप्ताह बीत गए, और मेरे हर सवाल का जवाब नकारात्मक ही मिला। आखिरकार एक सुखद 'हाँ' ने मुझे दूसरा सवाल पूछने पर मजबूर कर दिया। लॉरेंस मेरी बेचैनी को भांप गया और मेरे संकोच को समझ गया। पहले तो मुझे डर था कि वह मुझे असंतोषजनक जवाब देकर परेशान करेगा और या तो मुझे वह जानकारी बिल्कुल अधूरी छोड़ देगा जो मैं जानना चाहता था, या फिर मुझे सीधे सवाल पूछकर थोड़ी-थोड़ी करके जानकारी निकलवाने पर मजबूर करेगा। आप कहेंगे, 'और यही होना चाहिए था'; लेकिन वह अधिक दयालु था; और थोड़ी देर में उसने अपनी बहन का पत्र मेरे हाथ में थमा दिया। मैंने चुपचाप उसे पढ़ा और बिना कुछ कहे उसे वापस कर दिया। यह तरीका उसे इतना पसंद आया कि उसके बाद जब भी मैं उसकी बहन के बारे में पूछता, अगर कोई पत्र होता तो वह मुझे तुरंत दिखा देता - यह मुझे पत्र की विषयवस्तु बताने से कहीं ज्यादा आसान था; और मुझे इतनी शांति और समझदारी से उसकी बातें सुनने को मिलीं कि उसने उन्हें बताना कभी बंद नहीं किया।

लेकिन मैंने उन अनमोल पत्रों को अपनी आँखों से पढ़ा और तब तक उन्हें नहीं छोड़ा जब तक कि उनकी सामग्री मेरे दिमाग में अंकित न हो गई; और जब मैं घर पहुँचा, तो सबसे महत्वपूर्ण अंशों को मैंने अपनी डायरी में उस दिन की उल्लेखनीय घटनाओं के साथ दर्ज कर लिया।

इन संदेशों में से पहला संदेश श्री हंटिंगडन की बीमारी में गंभीर रूप से फिर से बिगड़ जाने की सूचना लेकर आया, जो पूरी तरह से शराब के प्रति उनके अतृप्त जुनून का परिणाम था। उनकी पत्नी ने व्यर्थ ही उनका विरोध किया, व्यर्थ ही उन्होंने उनकी शराब में पानी मिलाया: उनके तर्क और विनती एक झंझट थे, उनका हस्तक्षेप इतना असहनीय अपमान था कि अंततः, जब उन्हें पता चला कि उन्होंने चुपके से उनके लिए

लाई गई हल्की पोर्ट वाइन में पानी मिला दिया है, तो उन्होंने बोतल को खिड़की से बाहर फेंक दिया, कसम खाते हुए कहा कि वह एक बच्चे की तरह धोखा नहीं खाएंगे, और तत्काल बर्खास्तगी की धमकी देते हुए बटलर को तहखाने से सबसे तेज़ शराब की बोतल लाने का आदेश दिया, और कहा कि अगर उन्हें अपनी मर्जी से चलने दिया जाता तो वह बहुत पहले ही ठीक हो गए होते, लेकिन वह उन्हें कमजोर रखना चाहती थी ताकि वह उन्हें अपने वश में रख सके - लेकिन, भगवान की कसम, वह अब और कोई बकवास बर्दाश्त नहीं करेंगे - उन्होंने एक हाथ में गिलास और दूसरे हाथ में बोतल पकड़ी, और तब तक नहीं रुके जब तक उन्होंने पूरी शराब नहीं पी ली। इस 'लापरवाही' का तत्काल परिणाम भयावह लक्षण थे, जैसा कि उन्होंने इसे हल्के शब्दों में कहा था - ये लक्षण कम होने के बजाय और बढ़ गए थे; और यही कारण था कि उन्होंने अपने भाई को पत्र लिखने में देरी की। उनकी बीमारी के सभी पुराने लक्षण और भी अधिक उग्रता के साथ लौट आए थे: आधा ठीक हुआ बाहरी घाव फिर से फूट पड़ा था; आंतरिक सूजन हो गई थी, जो अगर जल्द ही दूर न की गई तो घातक साबित हो सकती थी। बेशक, इस विपत्ति से पीड़ित व्यक्ति का मिजाज और भी खराब हो गया था - वास्तव में, मुझे लगता है कि यह लगभग असहनीय था, हालांकि उनकी दयालु नर्स ने कोई शिकायत नहीं की; लेकिन उन्होंने कहा कि अंततः उन्हें अपने बेटे को एस्थर हरग्रेव की देखरेख में सौंपना पड़ा, क्योंकि बीमार के कमरे में उनकी उपस्थिति इतनी निरंतर आवश्यक थी कि वे स्वयं उनकी देखभाल नहीं कर सकती थीं। और यद्यपि बच्चे ने उसके साथ वहीं रहने और अपने पिता की देखभाल में उसकी मदद करने की विनती की थी, और यद्यपि उसे इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह बहुत अच्छा और शांत रहेगा, फिर भी वह उसकी कोमल और नाजुक भावनाओं को इतनी पीड़ा के दृश्य के अधीन करने या उसे अपने पिता की अधीरता का साक्षी बनने देने या दर्द या चिड़चिड़ापन के दौरों में उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भयानक भाषा को सुनने देने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी।

उसने आगे कहा, "वह अपने इस कदम पर बहुत पछतावा करता है, जिसकी वजह से उसकी हालत बिगड़ी है; लेकिन हमेशा की तरह, वह सारा दोष मुझ पर डाल देता है। वह कहता है, अगर मैंने उससे एक समझदार प्राणी की तरह बात की होती, तो ऐसा कभी नहीं होता; लेकिन बच्चे या मूर्ख की तरह बर्ताव किया जाना किसी भी इंसान के सब्र को तोड़ सकता है और उसे अपने हित की बलि देकर भी अपनी

स्वतंत्रता जताने पर मजबूर कर सकता है। वह भूल जाता है कि मैंने कितनी बार उसे पहले भी समझाया था और उसका सब्र तोड़ दिया था। वह अपने खतरे को भांपता हुआ प्रतीत होता है; लेकिन कोई भी बात उसे इसे सही ढंग से देखने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती। पिछली रात, जब मैं उसकी सेवा कर रही थी और जैसे ही मैं उसके लिए प्यास बुझाने के लिए पानी लाई, उसने अपने पुराने व्यंग्यपूर्ण कड़वे लहजे में कहा, 'हाँ, अब तुम बहुत ध्यान रखती हो! मुझे लगता है कि अब तुम मेरे लिए कुछ भी करने को तैयार हो?"'

मैंने उसके हावभाव पर थोड़ा आश्चर्यचकित होते हुए कहा, 'आप जानते हैं कि मैं आपकी मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार हूं।'

"हाँ, अब, मेरी पवित्र परी; लेकिन जब एक बार तुम्हें तुम्हारा इनाम मिल जाए, और तुम स्वर्ग में सुरक्षित पहुँच जाओ, और मैं नरक की आग में तड़प रही होऊँ, तब मुझे अपनी सेवा में एक उंगली भी उठाते हुए देखना! नहीं, तुम संतुष्ट होकर देखती रहोगी, और मेरी जीभ को ठंडा करने के लिए अपनी उंगली का सिरा पानी में तक नहीं डुबोओगी!"

"अगर ऐसा है, तो यह उस गहरी खाई के कारण होगा जिसे मैं पार नहीं कर सकता; और अगर मैं ऐसी स्थिति में संतुष्ट होकर देख भी सकता हूँ, तो यह केवल इस आश्वासन के कारण होगा कि आप अपने पापों से शुद्ध हो रहे हैं, और उस सुख का आनंद लेने के योग्य हो रहे हैं जो मुझे महसूस हो रहा है। — लेकिन क्या आप दृढ़ हैं, आर्थर, कि मैं स्वर्ग में आपसे नहीं मिलूँगा?"

'हम्फ! मुझे वहां क्या करना चाहिए, मैं जानना चाहूंगा?'

'सचमुच, मैं नहीं बता सकता; और मुझे डर है कि यह कहना लगभग निश्चित है कि वहाँ आनंद लेने से पहले आपकी रुचियों और भावनाओं में व्यापक परिवर्तन होना आवश्यक है। लेकिन क्या आप बिना किसी प्रयास के उस पीड़ादायक अवस्था में डूबना पसंद करेंगे जिसकी आप कल्पना कर रहे हैं?'

'अरे, यह सब तो एक मनगढ़ंत कहानी है,' उसने तिरस्कारपूर्वक कहा।

'क्या तुम्हें यकीन है, आर्थर? क्या तुम्हें पूरा यकीन है? क्योंकि, अगर कोई संदेह हुआ, और अगर तुम अंततः गलत साबित हुए, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी—'

उन्होंने कहा, 'यह थोड़ा अजीब होगा, बेशक; लेकिन अभी मुझे परेशान मत करो —मैं अभी मरने वाला नहीं हूँ। मैं मर नहीं सकता और मरना नहीं चाहता।' उन्होंने ज़ोर

देकर कहा, मानो अचानक उस भयानक घटना का खौफ उनके दिमाग में आ गया हो। ‘हेलेन, तुम्हें मुझे बचाना होगा!’ और उन्होंने मेरा हाथ थाम लिया, और इतनी विनती भरी उत्सुकता से मेरे चेहरे की ओर देखा कि मेरा दिल उनके लिए तड़प उठा, और मैं आँसुओं के कारण कुछ बोल नहीं पाई।

* * * * *

अगले पत्र से खबर मिली कि बीमारी तेजी से बढ़ रही है; और बेचारे पीड़ित को मृत्यु का भय शारीरिक पीड़ा से कहीं अधिक सता रहा था। उसके सभी मित्र उसका साथ नहीं छोड़ रहे थे; श्री हैटर्सले, उसकी स्थिति के बारे में सुनकर, उत्तर में स्थित अपने दूर के घर से उससे मिलने आए थे। उनकी पत्नी भी उनके साथ आई थीं, अपने प्रिय मित्र को देखने की खुशी के लिए, जिनसे वे इतने लंबे समय से विदा थीं, और साथ ही अपनी माँ और बहन से मिलने के लिए भी।

श्रीमती हंटिंगडन ने मिलिसेंट को फिर से देखकर खुशी जाहिर की और उसे इतना खुश और स्वस्थ देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। पत्र में आगे लिखा था, "वह अभी ग्रोव में है, लेकिन अक्सर मुझसे मिलने आती है। श्री हैटर्सले अपना अधिकांश समय आर्थर के बिस्तर के पास बिताते हैं। जितना मैंने सोचा था, उससे कहीं अधिक स्नेह के साथ, वे अपने दुखी मित्र के प्रति गहरी सहानुभूति रखते हैं और उसे सांत्वना देने के लिए अपनी क्षमता से कहीं अधिक तत्पर हैं। कभी-कभी वे उसके साथ मजाक और हंसी करने की कोशिश करते हैं, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं होता; कभी-कभी वे पुराने समय की बातें करके उसे खुश करने का प्रयास करते हैं, और कभी-कभी यह पीड़ित को उसके उदास विचारों से विचलित कर देता है; कभी-कभी यह उसे पहले से भी अधिक गहरे अवसाद में डुबो देता है; और तब हैटर्सले असमंजस में पड़ जाते हैं और उन्हें समझ नहीं आता कि क्या कहें, सिवाय इसके कि वे दबे स्वर में पादरी को बुलाने का सुझाव दें।" लेकिन आर्थर इसके लिए कभी राजी नहीं होगा: वह जानता है कि उसने अन्य समयों पर पादरी की नेक नियत वाली नसीहतों को उपहासपूर्वक खारिज कर दिया था, और अब वह उससे सांत्वना पाने के बारे में सोच भी नहीं सकता।

श्री हैटर्सले कभी-कभी मेरी जगह अपनी सेवाएँ देने की पेशकश करते हैं, लेकिन आर्थर मुझे जाने नहीं देते: उनकी यह अजीब ज़िद बढ़ती ही जा रही है, जैसे-जैसे उनकी ताकत कम होती जा रही है - हमेशा मुझे अपने पास रखने की चाहत। मैं शायद

ही कभी उन्हें छोड़ती हूँ, सिवाय अगले कमरे में जाने के, जहाँ मैं कभी-कभी उनके शांत होने पर एक-दो घंटे की नींद ले लेती हूँ; लेकिन तब भी दरवाज़ा थोड़ा खुला छोड़ देती हूँ, ताकि उन्हें पता रहे कि मैं पास ही हूँ। मैं अभी उनके साथ हूँ, जब मैं लिख रही हूँ, और मुझे डर है कि मेरा यह काम उन्हें परेशान कर रहा है; हालाँकि मैं अक्सर उनकी देखभाल करने के लिए उठती रहती हूँ, और श्री हैटर्सले भी उनके पास ही हैं। जैसा कि उन्होंने कहा, वह सज्जन मेरे लिए छुट्टी माँगने आए थे, ताकि मैं इस ठंडी सुबह मिलिसेंट, एस्थर और छोटे आर्थर के साथ पार्क में दौड़ लगा सकूँ, जिन्हें वे मुझसे मिलने के लिए लाए थे। हमारे बेचारे बीमार व्यक्ति को यह प्रस्ताव निर्दयी लगा, और अगर मैं मान जाती तो उन्हें और भी निर्दयी लगता। इसलिए मैंने कहा कि मैं बस एक मिनट के लिए उनसे बात करने जाऊँगी और फिर वापस आ जाऊँगी। मैंने बरामदे के ठीक बाहर उनसे बस कुछ शब्द ही कहे, ताज़ी, स्फूर्तिदायक हवा में सांस लेते हुए, और फिर, उन तीनों के थोड़े समय और रुकने और उनके साथ बगीचे में टहलने के आग्रह को ठुकराते हुए, मैं वहाँ से निकलकर अपने मरीज़ के पास लौट आया। मैं पाँच मिनट भी अनुपस्थित नहीं रहा था कि उसने मेरी लापरवाही और उपेक्षा के लिए मुझे कड़ी फटकार लगाई। उसके मित्र ने मेरा समर्थन किया।

‘नहीं, नहीं, हंटिंगडन,’ उसने कहा, ‘तुम उस पर बहुत सख्ती कर रहे हो; उसे खाना, सोना और बीच-बीच में ताजी हवा मिलनी चाहिए, वरना वो इसे बर्दाश्त नहीं कर पाएगी, मैं तुम्हें बता रहा हूँ। उसे देखो, यार! वो तो बिल्कुल दुबली-पतली हो गई है।’

‘उसके कष्टों से मुझे क्या फर्क पड़ता है?’ उस बेचारे बीमार ने कहा। ‘हेलेन, तुम्हें मेरी इन देखभाल से कोई शिकायत तो नहीं है?’

'नहीं, आर्थर, अगर मैं सचमुच उनके द्वारा तुम्हारी सेवा कर सकता, तो मैं तुम्हें बचाने के लिए अपनी जान भी दे देता, अगर ऐसा संभव होता।'

‘क्या तुम सचमुच ऐसा करोगे? नहीं!’

मैं अत्यंत सहर्ष ऐसा करूंगा।

‘अरे! ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम खुद को मरने के लिए ज्यादा योग्य समझते हो!’

कुछ देर के लिए खामोशी छा गई। वह स्पष्ट रूप से निराशावादी विचारों में डूबा हुआ था; लेकिन जब मैं कुछ ऐसा कहने की कोशिश कर रहा था जिससे उसे चिंता न हो, तभी हैटर्सले, जिसका मन भी लगभग उसी दिशा में जा रहा था, ने चुप्पी तोड़ते

हुए कहा, 'हंटिंगडन, मैं किसी पादरी को बुलवा लूँगा: अगर तुम्हें मौजूदा पादरी पसंद नहीं है, तो तुम उसके सहायक या किसी और को रख सकते हो।'

'नहीं; अगर वो मेरी मदद नहीं कर सकती, तो इनमें से कोई भी मुझे फायदा नहीं पहुंचा सकता,' जवाब मिला। और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, उसने भावुक होकर कहा, 'ओह, हेलेन, अगर मैंने तुम्हारी बात मान ली होती, तो ये नौबत कभी नहीं आती! और अगर मैंने तुम्हारी बात बहुत पहले सुन ली होती — हे भगवान! कितना कुछ अलग होता!'

'अब मेरी बात सुनो, आर्थर,' मैंने धीरे से उसका हाथ दबाते हुए कहा।

"अब बहुत देर हो चुकी है," उसने निराशा भरे स्वर में कहा। इसके बाद दर्द का एक और तीव्र दौर आया; फिर उसका मन भटकने लगा और हमें लगा कि उसकी मृत्यु निकट है: लेकिन उसे अफीम की दवा दी गई: उसकी पीड़ा कम होने लगी, वह धीरे-धीरे शांत हो गया और अंत में गहरी नींद में सो गया। तब से वह शांत है; और अब हैटर्सले उसे छोड़कर चला गया है, यह आशा जताते हुए कि कल जब वह उससे मिलने आएगा तो उसे बेहतर हालत में पाएगा।

"शायद मैं ठीक हो जाऊँ," उसने जवाब दिया; "कौन जानता है? शायद यही संकट था। तुम्हारा क्या ख्याल है, हेलेन?" उसे निराश न करते हुए, मैंने उसे यथासंभव हौसला दिया, लेकिन फिर भी उसे उस संभावना के लिए तैयार रहने की सलाह दी, जिसके बारे में मुझे डर था कि वह बहुत निश्चित है। लेकिन वह उम्मीद पर अड़ा रहा। थोड़ी देर बाद वह फिर से एक तरह की ऊंघ में चला गया, लेकिन अब वह फिर से कराह रहा है।

एक बदलाव आया। अचानक उसने मुझे अपने पास बुलाया, इतने अजीब और उत्तेजित अंदाज़ में कि मुझे लगा जैसे वो बेहोश हो गया हो, पर ऐसा नहीं था। 'हेलेन, यही तो संकट था!' उसने खुशी से कहा। 'यहाँ मुझे असहनीय दर्द हो रहा था – अब बिल्कुल चला गया है। गिरने के बाद से मैं इतना आराम से कभी नहीं रहा – बिल्कुल चला गया, भगवान की कसम!' और उसने पूरे दिल से मेरा हाथ थामकर चूमा; लेकिन जब उसने देखा कि मैं उसकी खुशी में शामिल नहीं हूँ, तो उसने झट से मेरा हाथ छुड़ा लिया और मेरी उदासीनता और बेरुखी को कोसने लगा। मैं क्या जवाब देती? उसके बगल में घुटने टेककर, मैंने उसका हाथ पकड़ा और प्यार से उसे अपने होठों से लगाया – हमारे अलग होने के बाद पहली बार – और आँसुओं से जितना बोल सकती

थी, उतना कहा कि मुझे चुप रहने का कारण ये नहीं था: बल्कि ये डर था कि दर्द का अचानक गायब होना उतना अच्छा संकेत नहीं है जितना वो समझ रहा है। मैंने तुरंत डॉक्टर को बुलवाया: अब हम बेसब्री से उनका इंतज़ार कर रहे हैं। मैं आपको बताऊँगी कि वो क्या कहते हैं। जहां पीड़ा सबसे तीव्र थी, वहां अब भी वही दर्द से मुक्ति है, वही सभी संवेदनाओं के प्रति उदासीनता है।

मेरी सबसे बुरी आशंका सच हो गई: अपमान का दौर शुरू हो गया है। डॉक्टर ने उसे बता दिया है कि अब कोई उम्मीद नहीं है। उसके दर्द को शब्दों में बयान करना असंभव है। मैं अब और कुछ नहीं लिख सकती।

* * * * *

अगली घटना अपने विषयवस्तु के लिहाज़ से और भी ज़्यादा पीड़ादायक थी। पीड़ित व्यक्ति का अंत निकट था—वह उस भयानक खाई के कगार पर घसीटा जा रहा था, जिसके बारे में सोचकर ही वह कांप उठता था, और जहाँ से प्रार्थनाओं या आँसुओं की कोई पीड़ा उसे बचा नहीं सकती थी। अब उसे कोई सांत्वना नहीं दे सकता था; हैटर्सले के सांत्वना देने के प्रयास पूरी तरह व्यर्थ थे। संसार उसके लिए कुछ भी नहीं था: जीवन और उसकी सारी रुचियाँ, उसकी छोटी-मोटी चिंताएँ और क्षणभंगुर सुख, एक क्रूर उपहास थे। अतीत की बातें करना उसे व्यर्थ के पश्चाताप से तड़पाना था; भविष्य की चर्चा करना उसकी पीड़ा को बढ़ाना था; और फिर भी चुप रहना उसे अपने ही पछतावे और आशंकाओं का शिकार छोड़ देना था। वह अक्सर कांपते हुए सूक्ष्मता से अपने नश्वर शरीर के भाग्य पर विचार करता था—वह धीमी, टुकड़ों में होने वाली विघटन प्रक्रिया जो पहले से ही उसके शरीर में प्रवेश कर रही थी: कफ़न, ताबूत, अँधेरी, एकांत कब्र, और क्षय की सभी भयावहताएँ।

उनकी दुखी पत्नी ने कहा, “अगर मैं कोशिश भी करूँ कि उनका ध्यान इन बातों से हटाऊँ— उनके विचारों को उच्च विषयों की ओर ले जाऊँ, तो भी कोई फायदा नहीं होता:— “बद से बदतर!” वे कराहते हैं। “अगर सचमुच कब्र के बाद जीवन है, और मृत्यु के बाद न्याय है, तो मैं उसका सामना कैसे करूँ?”— मैं उनकी कोई मदद नहीं कर सकती; मेरी किसी भी बात से उन्हें न तो ज्ञान मिलता है, न ही प्रेरणा मिलती है, न ही सांत्वना मिलती है; फिर भी वे मुझसे अटूट दृढ़ता से चिपके रहते हैं— एक तरह की बचकानी बेबसी के साथ, मानो मैं उन्हें उस भाग्य से बचा सकती हूँ जिससे वे डरते

हैं। वे मुझे दिन-रात अपने पास रखते हैं। अभी जब मैं लिख रही हूँ, वे मेरा बायाँ हाथ पकड़े हुए हैं; वे घंटों से ऐसे ही पकड़े हुए हैं: कभी चुपचाप, अपना पीला चेहरा मेरी ओर करके: कभी मेरी बांह को ज़ोर से पकड़ लेते हैं— उनके माथे से बड़ी-बड़ी बूँदें टपकने लगती हैं, उन विचारों से जो वे अपने सामने देखते हैं, या सोचते हैं कि वे देख रहे हैं। अगर मैं एक पल के लिए भी अपना हाथ हटा लेती हूँ तो वे परेशान हो जाते हैं।"

"मेरे साथ रहो, हेलेन," वह कहता है; "मुझे तुम्हें ऐसे थामे रहने दो: ऐसा लगता है जैसे जब तक तुम यहाँ हो, मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँच सकता। लेकिन मौत आएगी—यह अभी आ रही है—तेजी से, तेजी से!—और—काश, मैं यह मान पाता कि इसके बाद कुछ भी नहीं है!"

"आर्थर, इस पर विश्वास करने की कोशिश मत करो; अगर तुम कोशिश करोगे तो इसके बाद आनंद और गौरव मिलेगा!"

"क्या, मेरे लिए?" उसने कुछ हँसते हुए कहा। "क्या हमारा न्याय शरीर में किए गए कर्मों के अनुसार नहीं किया जाएगा? परीक्षा के जीवन का क्या लाभ, यदि मनुष्य इसे अपनी इच्छा अनुसार, ईश्वर के आदेशों के ठीक विपरीत, व्यतीत कर सकता है और फिर सर्वश्रेष्ठ लोगों के साथ स्वर्ग जा सकता है—यदि सबसे बड़ा पापी भी केवल यह कहकर सबसे पवित्र संत का पुरस्कार प्राप्त कर सकता है, "मैं पश्चाताप करता हूँ!""

लेकिन अगर तुम सच्चे मन से पश्चाताप करते हो तो...

"मैं पश्चाताप नहीं कर सकता; मुझे केवल डर लगता है।"

"क्या आपको अतीत पर केवल उसके परिणामों के लिए पछतावा है जो आपने स्वयं पर झेले हैं?"

"बिल्कुल सही — बस मुझे खेद है कि मैंने तुम्हारे साथ गलत किया, नेल, क्योंकि तुम मेरे प्रति बहुत अच्छी हो।"

"ईश्वर की अच्छाई के बारे में सोचो, और तुम्हें उन्हें नाराज करने पर दुख जरूर होगा।"

"ईश्वर क्या है? मैं उसे देख या सुन नहीं सकता। ईश्वर तो केवल एक विचार है।"

"ईश्वर अनंत ज्ञान, शक्ति, अच्छाई और प्रेम है; लेकिन यदि यह विचार आपकी मानवीय क्षमताओं के लिए बहुत विशाल है - यदि आपका मन इसकी असीम अनंतता

में खो जाता है, तो इसे उस पर केंद्रित करें जिसने हमारे स्वभाव को धारण करने की कृपा की, जो अपने महिमामय मानव शरीर में भी स्वर्ग में उठा लिया गया, जिसमें ईश्वरत्व की पूर्णता चमकती है।”

लेकिन उसने सिर्फ अपना सिर हिलाया और आह भरी। फिर, भयानक भय के एक और दौरे में, उसने मेरा हाथ और बांह कसकर पकड़ ली, और कराहते और विलाप करते हुए, उसी बेतहाशा और हताश भाव से मुझसे लिपट गया, जो मेरी आत्मा को झकझोर देने वाला था, क्योंकि मैं जानता था कि मैं उसकी मदद नहीं कर सकता। मैंने उसे शांत करने और दिलासा देने की पूरी कोशिश की।

“मृत्यु कितनी भयानक है,” वह रोते हुए बोला, “मैं इसे सहन नहीं कर सकता! तुम नहीं जानती, हेलेन— तुम कल्पना भी नहीं कर सकती कि यह क्या है, क्योंकि तुमने इसे कभी अनुभव नहीं किया है! और जब मुझे दफना दिया जाएगा, तो तुम अपने पुराने तौर-तरीकों पर लौट आओगी और पहले की तरह खुश रहोगी, और सारी दुनिया उतनी ही व्यस्त और खुशहाल चलती रहेगी मानो मैं कभी था ही नहीं; जबकि मैं—” वह फूट-फूट कर रोने लगा।

मैंने कहा, “आपको इससे परेशान होने की जरूरत नहीं है; हम सब जल्द ही आपके पीछे आ जाएंगे।”

“काश मैं तुम्हें अभी अपने साथ ले जा पाता!” उसने कहा, “तुम्हें मेरे लिए विनती करनी चाहिए।”

“कोई भी मनुष्य अपने भाई को नहीं छुड़ा सकता, न ही उसके लिए परमेश्वर से कोई समझौता कर सकता है,” मैंने उत्तर दिया: “उनकी आत्माओं को छुड़ाने में कहीं अधिक कीमत चुकानी पड़ी — हमें शैतान के बंधन से मुक्त कराने के लिए साक्षात परमेश्वर, जो स्वयं में परिपूर्ण और निष्पाप थे, के रक्त की कीमत चुकानी पड़ी: — उन्हें तुम्हारे लिए विनती करने दो।”

लेकिन मेरी बातें व्यर्थ लग रही हैं। अब वह पहले की तरह इन पवित्र सच्चाइयों का उपहास नहीं करते, लेकिन फिर भी वे इन पर भरोसा नहीं कर पाते या इन्हें समझ नहीं पाते। वे ज्यादा देर तक टिक नहीं सकते। वे बहुत कष्ट सहते हैं, और उनकी सेवा करने वाले भी। लेकिन मैं आपको और अधिक विवरण देकर परेशान नहीं करना चाहती: मुझे लगता है कि मैंने इतना कह दिया है जिससे आप आश्वस्त हो जाएंगे कि उनके पास जाना मेरा अच्छा निर्णय था।

* * * * *

बेचारी हेलेन! उसकी मुसीबतें वाकई भयानक रही होंगी! और मैं उन्हें कम करने के लिए कुछ भी नहीं कर सका—बल्कि, ऐसा लगा मानो मैंने अपनी गुप्त इच्छाओं के कारण ही उसे इन मुसीबतों में फंसाया हो; और चाहे मैं उसके पति के कष्टों को देखूं या उसके अपने, ऐसा लगता था मानो ऐसी इच्छा रखने के लिए मैं खुद पर ही फैसला सुना रहा हूं।

अगले दिन से एक दिन पहले एक और पत्र आया। वह भी बिना कुछ कहे मेरे हाथों में सौंप दिया गया, और उसमें ये बातें लिखी थीं: —

5 दिसंबर।

अंततः वह चला गया। मैं पूरी रात उसके पास बैठी रही, अपना हाथ उसके हाथ में थामे, उसके चेहरे के बदलते भावों को देखती रही और उसकी धीमी होती साँसों को सुनती रही। वह काफी देर तक चुप रहा, और मुझे लगा कि वह फिर कभी नहीं बोलेगा, तभी उसने धीमी लेकिन स्पष्ट आवाज़ में कहा, — 'मेरे लिए प्रार्थना करो, हेलेन!'

'मैं तुम्हारे लिए हर घंटे और हर मिनट प्रार्थना करता हूँ, आर्थर; लेकिन तुम्हें अपने लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए।'

उसके होंठ हिले, लेकिन कोई आवाज़ नहीं निकली; फिर उसकी नज़रें बेचैन हो गईं; और उसके मुँह से बीच-बीच में अधूरी, अस्पष्ट बातें निकल रही थीं। यह सोचकर कि वह अब बेहोश हो गया है, मैंने धीरे से अपना हाथ उसके हाथ से छुड़ा लिया, ताकि थोड़ी ताज़ी हवा ले सकूँ, क्योंकि मैं लगभग बेहोश होने ही वाली थी; लेकिन उंगलियों की एक तेज़ हरकत और धीमी आवाज़ में फुसफुसाते हुए 'मुझे मत छोड़ो!' ने मुझे तुरंत होश में ला दिया: मैंने उसका हाथ फिर से पकड़ लिया और तब तक थामे रखा जब तक वह थम नहीं गया — और फिर मैं बेहोश हो गई। यह शोक नहीं था; यह थकावट थी, जिससे मैं तब तक सफलतापूर्वक लड़ रही थी। ओह, फ्रेडरिक! उस मृत्यु-शय्या पर शारीरिक और मानसिक पीड़ा की कल्पना कोई नहीं कर सकता! मैं यह कैसे सहन कर सकती थी कि वह बेचारा कांपता हुआ मन अनंत यातना की ओर जा रहा है? यह मुझे पागल कर देता। लेकिन, ईश्वर का धन्यवाद, मुझे आशा है - न केवल इस संभावना पर एक अस्पष्ट निर्भरता से कि पश्चाताप और क्षमा अंततः उस

तक पहुँच गई होगी, बल्कि इस धन्य विश्वास से भी कि चाहे वह भटकती आत्मा कितनी भी कठिन अग्नि से गुज़रे - चाहे उसका भाग्य कुछ भी हो - वह खोई नहीं है, और ईश्वर, जो अपनी किसी भी रचना से घृणा नहीं करता, अंत में उसे आशीर्वाद देगा!

गुरुवार को उनके पार्थिव शरीर को उस अंधेरी कब्र में दफना दिया जाएगा जिससे उन्हें बेहद डर लगता था; लेकिन ताबूत को जल्द से जल्द बंद करना होगा। यदि आप अंतिम संस्कार में शामिल होना चाहते हैं, तो जल्दी आइए, क्योंकि मुझे मदद की ज़रूरत है।

हेलेन हंटिंगडन।

अध्याय L

इसे पढ़कर मुझे फ्रेडरिक लॉरेंस से अपनी खुशी और आशा छिपाने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि मुझे शर्मिंदा होने की कोई वजह नहीं थी। मुझे इस बात की खुशी थी कि उनकी बहन अंततः अपने कष्टदायक, असहनीय परिश्रम से मुक्त हो गई थीं - मुझे इस बात की आशा थी कि समय के साथ वह इससे उबर जाएंगी और कम से कम अपने शेष जीवन के लिए शांति और सुकून से विश्राम कर सकेंगी। मुझे उनके दुखी पति के लिए गहरी सहानुभूति हुई (हालाँकि मैं पूरी तरह से जानता था कि उन्होंने अपने सारे कष्ट स्वयं ही उत्पन्न किए थे और वे उन सभी के हकदार थे), और उनके अपने कष्टों के लिए गहरी सहानुभूति और उन कष्टदायक चिंताओं, उन भयानक जागरणों, एक जीवित शव के बगल में उस निरंतर और हानिकारक कारावास के परिणामों के लिए गहरी चिंता हुई - क्योंकि मुझे विश्वास था कि उन्होंने अपने द्वारा सहन किए गए कष्टों का आधा भी संकेत नहीं दिया था।

'तुम उसके पास जाओगे, लॉरेंस?' मैंने पत्र उसके हाथ में देते हुए कहा।

'हां, तुरंत।'

'बिल्कुल सही! तो मैं आपको आपके प्रस्थान की तैयारी करने के लिए छोड़ देता हूँ।'

‘मैंने यह काम आपके पत्र पढ़ने के दौरान और आपके आने से पहले ही कर दिया था; और गाड़ी अब दरवाजे के पास आ रही है।’

उनकी तत्परता की सराहना करते हुए, मैंने उन्हें सुप्रभात कहा और चली गई। विदाई के समय जब हमने एक-दूसरे का हाथ मिलाया, तो उन्होंने मुझे एक गहरी नज़र से देखा; लेकिन मेरे चेहरे पर जो भी भाव उन्होंने खोजने की कोशिश की, उन्हें वहाँ केवल अत्यंत गंभीर भाव ही दिखाई दिया—शायद उनके मन में जो कुछ चल रहा था, उसके प्रति क्षणिक आक्रोश की थोड़ी सी कठोरता भी उसमें मिली हुई थी।

क्या मैं अपने सपनों, अपने गहरे प्यार, अपनी अटूट उम्मीदों को भूल गया था? अब उन पर लौटना पाप जैसा लग रहा था, पर मैं उन्हें भूला नहीं था। हालाँकि, उन सपनों के अंधकार, उन उम्मीदों के भ्रम और उस स्नेह की व्यर्थता के गहरे एहसास के साथ, मैंने अपने घोड़े पर सवार होकर धीरे-धीरे घर की ओर यात्रा करते हुए उन बातों पर विचार किया। श्रीमती हंटिंगडन अब आज़ाद थीं; उनके बारे में सोचना अब कोई अपराध नहीं था—लेकिन क्या वह कभी मेरे बारे में सोचती थीं? अभी नहीं—ज़ाहिर है इसकी उम्मीद नहीं की जा सकती थी—लेकिन क्या वह इस सदमे के खत्म होने के बाद मेरे बारे में सोचेंगी? अपने भाई (जिन्हें वह खुद हमारा आपसी दोस्त कहती थीं) के साथ अपने पूरे पत्राचार में उन्होंने मेरा ज़िक्र सिर्फ एक बार किया था—और वह भी मजबूरी में। इससे ही यह प्रबल अनुमान लगाया जा सकता था कि वह मुझे पहले ही भूल चुकी थीं; फिर भी यह सबसे बुरी बात नहीं थी: हो सकता है कि कर्तव्य की भावना ने उन्हें चुप रखा हो: हो सकता है कि वह सिर्फ भूलने की कोशिश कर रही हों; लेकिन इसके अलावा, मुझे यह गहरा विश्वास था कि उसने जो भयानक वास्तविकताएँ देखी और महसूस की थीं, जिस व्यक्ति से वह कभी प्यार करती थी, उससे उसका मेल-मिलाप, उसकी पीड़ाएँ और मृत्यु, अंततः उसके मन से मेरे लिए उसके क्षणिक प्रेम के सभी निशान मिटा देंगी। वह इन भयावहताओं से उबरकर अपनी पूर्व स्वस्थता, शांति और प्रसन्नता को भी पुनः प्राप्त कर सकती थी - लेकिन उन भावनाओं को कभी नहीं जो अब से उसे एक क्षणिक कल्पना, एक व्यर्थ, भ्रामक सपने की तरह लगेंगी; खासकर इसलिए कि उसे मेरे अस्तित्व की याद दिलाने वाला कोई नहीं था -

मेरे अटूट प्रेम का आश्वासन देने का कोई साधन नहीं था, अब जब हम इतनी दूर थे, और मेरी शालीनता मुझे कम से कम आने वाले महीनों तक उससे मिलने या उसे पत्र लिखने से रोक रही थी। और मैं उसके भाई को अपने लिए कैसे मना सकता था? मैं उसकी शर्मीली चुप्पी की बर्फीली परत को कैसे तोड़ सकता था? शायद वह अब भी मेरे लगाव को पहले की तरह ही अस्वीकार कर दे; शायद वह मुझे अपनी बहन के लिए बहुत गरीब - बहुत नीच कुल का समझे। हाँ, एक और बाधा थी: निस्संदेह ग्रासडेल मनोर की मालकिन श्रीमती हंटिंगडन और वाइल्डफेल हॉल की किरायेदार, कलाकार श्रीमती ग्राहम के सामाजिक स्तर और आर्थिक स्थिति में बहुत बड़ा अंतर था। और अगर मैं श्रीमती हंटिंगडन को अपना हाथ देता, तो दुनिया, उनके दोस्त, और शायद वह खुद भी, इसे मेरी गुस्ताखी मान सकती थी; अगर मुझे यकीन होता कि वह मुझसे प्यार करती हैं, तो मैं यह दंड सह लेता; अन्यथा, मैं ऐसा कैसे कर सकता था? और अंत में, उनके दिवंगत पति ने अपनी हमेशा की स्वार्थपरता के चलते अपनी वसीयत इस तरह बनाई होगी कि उनके पुनर्विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया गया हो। इसलिए आप देख सकते हैं कि अगर मैं निराशा में डूबने का विकल्प चुनता, तो मेरे पास पर्याप्त कारण थे।

फिर भी, मैं श्री लॉरेंस के ग्रासडेल से लौटने का बड़ी बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी: उनकी अनुपस्थिति जितनी लंबी खिंचती गई, मेरी बेसब्री उतनी ही बढ़ती गई। वे लगभग दस-बारह दिन दूर रहे। यह बिल्कुल ठीक था कि वे अपनी बहन को सांत्वना और सहायता देने के लिए रुके रहे, लेकिन वे मुझे लिखकर बता सकते थे कि वह कैसी हैं, या कम से कम मुझे बता सकते थे कि वे कब लौटेंगे; क्योंकि उन्हें पता होगा कि मैं उनके लिए चिंता की पीड़ा से व्याकुल थी, और अपने भविष्य को लेकर अनिश्चितता में डूबी हुई थी। और जब वे लौटे, तो उन्होंने मुझे उनके बारे में बस इतना ही बताया कि उस व्यक्ति के लिए अथक परिश्रम करने के कारण वे बहुत थक गई थीं, जो उनके जीवन का अभिशाप था, और उन्हें लगभग मृत्यु के द्वार तक घसीट लाया था, और वे अभी भी उसके दुखद अंत और उससे जुड़ी परिस्थितियों से बहुत दुखी और निराश थीं; लेकिन मेरे बारे में एक शब्द भी नहीं; इस बात का कोई संकेत नहीं कि मेरा नाम कभी उनके होंठों से निकला हो, या उनकी उपस्थिति में कभी बोला गया हो। सच कहूँ तो, मैंने इस विषय पर कोई प्रश्न नहीं पूछा; मैं ऐसा करने का मन नहीं बना सका, क्योंकि मेरा मानना था कि लॉरेंस वास्तव में अपनी बहन के साथ मेरे

विवाह के विचार के खिलाफ था।

मैंने देखा कि उन्हें अपनी यात्रा के बारे में और पूछताछ की आशंका थी, और मैंने जागृत ईर्ष्या, या आत्मसम्मान में आई हलचल, या जो भी नाम मैं इसे दूं, के स्पष्ट संकेत से यह भी देखा कि वे उस संभावित पूछताछ से कतरा रहे थे, और जब उन्हें पता चला कि पूछताछ नहीं हुई तो वे आश्चर्यचकित होने के साथ-साथ प्रसन्न भी हुए। बेशक, मैं क्रोध से जल रहा था, लेकिन स्वाभिमान ने मुझे अपनी भावनाओं को दबाने और पूरे साक्षात्कार के दौरान शांत और संयमित रहने के लिए बाध्य किया। यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि अपने विवेक से मामले की समीक्षा करते हुए, मुझे कहना होगा कि ऐसे अवसर पर उनसे झगड़ा करना अत्यंत हास्यास्पद और अनुचित होता। मुझे यह भी स्वीकार करना होगा कि मैंने मन ही मन उनके साथ अन्याय किया: सच्चाई यह थी कि वे मुझे बहुत पसंद करते थे, लेकिन वे भली-भांति जानते थे कि श्रीमती हंटिंगडन और मेरे बीच का संबंध दुनिया की नज़र में एक बेमेल विवाह होगा; और दुनिया को चुनौती देना उनके स्वभाव में नहीं था। विशेषकर ऐसे मामले में, क्योंकि उसकी बहन के प्रति उसकी भयानक हंसी या दुर्भावना उसके लिए खुद से कहीं अधिक भयावह होती। यदि उसे विश्वास होता कि दोनों की या किसी एक की खुशी के लिए विवाह आवश्यक है, या यदि उसे पता होता कि मैं उससे कितना प्रेम करता हूँ, तो उसका व्यवहार अलग होता; लेकिन मुझे इतना शांत और संयमित देखकर, वह किसी भी कीमत पर मेरी इस सोच को भंग नहीं करना चाहता था; और यद्यपि वह विवाह का सक्रिय रूप से विरोध नहीं कर रहा था, फिर भी वह इसे संपन्न कराने के लिए कुछ नहीं करता, और हमारी आपसी पसंदों को बढ़ावा देने के बजाय, विवेक का मार्ग अपनाकर हमें उन पर काबू पाने में सहायता करता। 'और वह सही था,' आप कहेंगे। शायद वह सही था; खैर, मुझे उसके प्रति इतना कठोर भाव रखने का कोई अधिकार नहीं था; लेकिन उस समय मैं इस मामले को इतने संयमित ढंग से नहीं देख सकता था; और, कुछ बेतुके विषयों पर संक्षिप्त बातचीत के बाद, मैं वहाँ से चला गया, अपने स्वाभिमान को ठेस पहुँचने और मित्रता में आई चोट के दर्द के साथ-साथ इस डर से भी पीड़ित था कि मुझे सचमुच भुला दिया गया है, और इस ज्ञान से भी कि जिसे मैं प्यार करता था वह अकेली और दुखी थी, खराब स्वास्थ्य और उदास मन से पीड़ित थी, और मुझे उसे सांत्वना देने या उसकी सहायता करने की मनाही थी: यहाँ तक कि उसे अपनी सहानुभूति का आश्वासन देने की भी मनाही थी, क्योंकि श्री

लॉरेंस के माध्यम से ऐसा कोई भी संदेश भेजना अब पूरी तरह से असंभव था।

लेकिन मैं क्या करूँ? मैं इंतज़ार करूँगा और देखूँगा कि क्या वह मुझे नोटिस करेगी, जो ज़ाहिर है वह नहीं करेगी, जब तक कि वह अपने भाई को कोई विनम्र संदेश न दे दे, जो कि शायद वह न पहुँचाए, और फिर, सोचो कितना भयानक! वह सोचेगी कि मैंने संदेश न लौटाकर मुझे ठंडा और बदला हुआ बना दिया है, या शायद उसने उसे पहले ही यह संकेत दे दिया हो कि मैंने उसके बारे में सोचना बंद कर दिया है। मैं तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक हमारे बिछड़ने के बाद छह महीने पूरे न हो जाएँ (जो लगभग फरवरी के अंत तक होगा), और फिर मैं उसे एक पत्र भेजूँगा, विनम्रतापूर्वक उसे उस अवधि के अंत में पत्र लिखने की उसकी पूर्व अनुमति की याद दिलाऊँगा, और आशा करूँगा कि मैं इसका लाभ उठा सकूँ - कम से कम उसके हाल के कष्टों के लिए अपना हार्दिक शोक व्यक्त करने के लिए, उसके उदार आचरण के लिए अपनी उचित प्रशंसा व्यक्त करने के लिए, और यह आशा करने के लिए कि उसका स्वास्थ्य अब पूरी तरह से ठीक हो गया है, और उसे किसी समय एक शांतिपूर्ण, सुखी जीवन के उन सुखों का आनंद लेने की अनुमति मिलेगी, जिनसे वह इतने लंबे समय तक वंचित रही थी, लेकिन जिसके लिए उससे अधिक कोई भी वास्तव में योग्य नहीं हो सकता - अपने छोटे दोस्त आर्थर के लिए कुछ स्नेहपूर्ण स्मृति के शब्द जोड़ते हुए, इस आशा के साथ कि वह मुझे नहीं भूला होगा, और शायद बीते समय के संदर्भ में कुछ और शब्द, उसके साथ बिताए सुखद क्षणों के बारे में, और उन पलों की मेरी अविस्मरणीय स्मृति के बारे में, जो मेरे जीवन का नमक और सांत्वना थे, और यह आशा करते हुए कि उसकी हाल की परेशानियों ने मुझे उसके मन से पूरी तरह से नहीं निकाला होगा। यदि उसने इसका उत्तर नहीं दिया, तो निश्चित रूप से मैं आगे कुछ नहीं लिखूंगा; यदि उसने उत्तर दिया (जैसा कि वह निश्चित रूप से किसी न किसी रूप में देगी), तो मेरी आगे की कार्यवाही उसके उत्तर द्वारा निर्देशित होगी।

इस तरह की दयनीय अनिश्चितता की स्थिति में दस सप्ताह तक इंतजार करना बहुत लंबा समय था; लेकिन हिम्मत रखो! इसे सहना ही होगा! और इस बीच मैं लॉरेंस से कभी-कभार मिलती रहूंगी, हालांकि पहले की तरह अक्सर नहीं, और मैं उसकी बहन के बारे में अपनी आदत के अनुसार पूछताछ करती रहूंगी कि क्या उसने हाल ही में उससे कोई खबर सुनी है और वह कैसी है, लेकिन इससे ज्यादा कुछ नहीं।

मैंने ऐसा ही किया, और मुझे जो जवाब मिले, वे हमेशा मेरी पूछताछ के दायरे तक

ही सीमित थे, जो मुझे और भी परेशान कर रहे थे: वह पहले जैसी ही थी; उसने कोई शिकायत नहीं की, लेकिन उसके आखिरी पत्र के लहजे से उसके गहरे अवसाद का पता चलता था; उसने कहा कि वह बेहतर है; और अंत में, उसने कहा कि वह ठीक है, और अपने बेटे की शिक्षा, अपने दिवंगत पति की संपत्ति के प्रबंधन और उनके मामलों के संचालन में बहुत व्यस्त है। उस बदमाश ने मुझे कभी नहीं बताया कि उस संपत्ति का क्या हुआ, या श्री हंटिंगडन की मृत्यु बिना वसीयत के हुई थी या नहीं; और मैं उससे पूछने के बजाय मरना पसंद करूँगा, कहीं ऐसा न हो कि वह मेरी जानने की इच्छा को लालच समझ ले। उसने अब मुझे अपनी बहन के पत्र दिखाने की पेशकश कभी नहीं की, और मैंने भी उन्हें देखने की इच्छा का कभी संकेत नहीं दिया। हालाँकि, फरवरी नजदीक आ रहा था; दिसंबर बीत चुका था; जनवरी आखिरकार लगभग खत्म हो चुका था - कुछ और सप्ताह, और फिर, निश्चित निराशा या आशा का पुनर्जन्म इस लंबे अनिश्चितता के दर्द को समाप्त कर देगा।

लेकिन अफसोस! ठीक उसी समय उसे अपने चाचा के निधन का एक और गहरा सदमा सहना पड़ा—मैं कह सकता हूँ कि वह बुढ़ापा वैसे तो काफी नीरस था, लेकिन उसने हमेशा उसे बाकी सभी लोगों से ज़्यादा प्यार और स्नेह दिखाया था, और वह हमेशा उसे अपने माता-पिता की तरह मानती थी। जब उनका निधन हुआ तो वह उनके साथ थी, और बीमारी के अंतिम समय में उसने अपनी चाची की देखभाल में उनकी मदद की थी। उसका भाई अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए स्टैनिंगली गया, और लौटने पर उसने मुझे बताया कि वह अभी भी वहीं है, अपनी उपस्थिति से अपनी चाची को सांत्वना देने की कोशिश कर रही है, और शायद कुछ समय तक वहीं रहेगी। यह मेरे लिए बुरी खबर थी, क्योंकि जब तक वह वहाँ थी, मैं उसे पत्र नहीं लिख सकता था, क्योंकि मुझे पता नहीं था, और मैंने उससे पूछा भी नहीं। लेकिन एक के बाद एक सप्ताह बीतते गए, और हर बार जब मैंने उसके बारे में पूछा, वह स्टैनिंगली में ही थी।

‘स्टैनिंग्ले कहाँ है?’ मैंने अंत में पूछा।

‘इन-शायर,’ संक्षिप्त उत्तर था; और उसके लहजे में कुछ ऐसा ठंडापन और रूखापन था कि मैं अधिक स्पष्ट विवरण मांगने से पूरी तरह से हिचक गया।

मेरा अगला सवाल था, 'वह ग्रासडेल कब लौटेगी?'

'मुझें नहीं पता।'

‘धिक्कार है!’ मैंने बुदबुदाया।

‘क्यों, मार्खम?’ मेरे साथी ने मासूमियत भरी हैरानी के साथ पूछा। लेकिन मैंने उसे जवाब देना उचित नहीं समझा, सिवाय एक खामोश, उदास तिरस्कार भरी नज़र के, जिस पर वह मुँह फेरकर, कुछ उदास, कुछ खुशमिजाज मुस्कान के साथ कालीन को देखने लगा; लेकिन जल्दी से ऊपर देखकर, उसने दूसरे विषयों पर बात करना शुरू कर दिया, मुझे एक खुशनुमा और दोस्ताना बातचीत में शामिल करने की कोशिश की, लेकिन मैं उससे बात करने के लिए बहुत चिड़चिड़ा था, और जल्द ही वहाँ से चला गया।

देखिए, लॉरेंस और मैं किसी तरह आपस में अच्छे से नहीं रह पाए। असल में, मुझे लगता है, हम दोनों ही थोड़े ज्यादा संवेदनशील थे। हैलफोर्ड, यह बड़ी परेशानी वाली बात है, बिना किसी इरादे के भी अपमान सह लेने की यह आदत। अब मैं इस आदत का शिकार नहीं हूँ, जैसा कि आप गवाही दे सकते हैं: मैंने खुश रहना और समझदार बनना सीख लिया है, खुद के प्रति ज्यादा सहज और पड़ोसियों के प्रति ज्यादा उदार हो गया हूँ, और अब मैं लॉरेंस और आप दोनों पर हंस सकता हूँ।

कुछ हद तक संयोगवश, और कुछ हद तक मेरी जानबूझकर की गई लापरवाही के कारण (क्योंकि मैं उसे सचमुच नापसंद करने लगा था), कई सप्ताह बीत गए जब तक कि मेरी अपने दोस्त से दोबारा मुलाकात नहीं हुई। जब हमारी मुलाकात हुई, तो वह खुद मुझसे मिलने आया था। जून की शुरुआत में, एक सुहावनी सुबह, वह उस खेत में आया, जहाँ मैं अभी-अभी अपनी घास की कटाई शुरू कर रहा था।

‘मार्कहम, तुम्हें देखे हुए बहुत समय हो गया है,’ हमारे बीच शुरुआती कुछ बातचीत के बाद उसने कहा। ‘क्या तुम्हारा वुडफोर्ड दोबारा आने का कोई इरादा नहीं है?’

मैंने एक बार फोन किया था, और आप घर पर नहीं थे।

मुझे खेद था, लेकिन वह बहुत पहले की बात है; मुझे उम्मीद थी कि आप फिर से आएंगे, और अब मैं आ चुका हूं, लेकिन आप बाहर थे, जैसा कि आप आमतौर पर होते हैं, वरना मैं आपसे और अधिक बार मिलने की खुशी का अनुभव करता; लेकिन इस बार आपसे मिलने का पक्का इरादा करके, मैंने अपने टट्टू को गली में छोड़ दिया है, और बाड़ और खाई पार करके आपसे मिलने आया हूं; क्योंकि मैं कुछ समय के लिए वुडफोर्ड छोड़ने वाला हूं, और शायद एक या दो महीने तक आपसे दोबारा मिलने का सौभाग्य न मिले।

'आप कहां जा रहे हैं?'

'पहले ग्रासडेल चलते हैं,' उसने आधी मुस्कान के साथ कहा, जिसे वह अगर कर सकता तो खुशी-खुशी दबा देता।

'ग्रासडेल के लिए! क्या वह वहाँ है?'

'हाँ, लेकिन एक-दो दिन में वह श्रीमती मैक्सवेल के साथ समुद्री हवा का आनंद लेने के लिए F— जाएगी, और मैं भी उनके साथ चलूँगा।' (F— उस समय एक शांत लेकिन प्रतिष्ठित जलपान स्थल था: अब वहाँ काफी भीड़भाड़ रहती है।)

लॉरेंस को शायद उम्मीद थी कि मैं इस मौके का फायदा उठाकर उसकी बहन को कोई संदेश पहुँचा दूँगी; और मुझे लगता है कि अगर मैंने उससे पूछा होता, तो वह बिना किसी आपत्ति के संदेश पहुँचाने का ज़िम्मा उठा लेता, हालाँकि अगर मैं इस मामले को यहीं छोड़ देती, तो वह ऐसा करने की पेशकश ज़रूर नहीं करता। लेकिन मैं उससे अनुरोध करने की हिम्मत नहीं जुटा पाई, और उसके जाने के बाद ही मुझे एहसास हुआ कि मैंने कितना अच्छा मौका गंवा दिया था; और तब, सच में, मुझे अपनी मूर्खता और घमंड पर बहुत पछतावा हुआ, लेकिन अब इस गलती को सुधारना बहुत देर हो चुकी थी।

वह अगस्त के अंत तक नहीं लौटा। उसने मुझे F— से दो-तीन बार पत्र लिखे, लेकिन उसके पत्र बेहद निराशाजनक और असंतोषजनक थे। उनमें या तो सामान्य बातें थीं या ऐसी छोटी-मोटी बातें जिनकी मुझे कोई परवाह नहीं थी, या फिर ऐसी कल्पनाओं और विचारों से भरे हुए थे जो उस समय मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं थे। उसने अपनी बहन के बारे में लगभग कुछ नहीं लिखा था और अपने बारे में भी बहुत कम। फिर भी, मैं उसके लौटने का इंतज़ार करूँगा; शायद तब मुझे उससे कुछ और जानकारी मिल जाए। किसी भी हालत में, मैं उसे अभी पत्र नहीं लिखूँगा, जब तक वह उसके और उसकी चाची के साथ है, जो निस्संदेह मेरी धृष्ट आकांक्षाओं के प्रति उससे भी अधिक शत्रुतापूर्ण होंगी। जब वह अपने घर की शांति और एकांत में लौट आएगी, तब पत्र लिखने का सबसे उपयुक्त अवसर होगा।

लेकिन जब लॉरेंस आया, तो मेरी गहरी चिंता के विषय पर वह हमेशा की तरह संकोच से पेश आया। उसने मुझे बताया कि उसकी बहन को एफ में रहने से काफी लाभ हुआ था—उसका बेटा बिल्कुल ठीक था, और—अफ़सोस! कि वे दोनों श्रीमती मैक्सवेल के साथ स्टैनिंगली वापस चले गए थे, और वहाँ वे कम से कम तीन महीने

रहे। लेकिन आपको अपनी निराशा, अपनी उम्मीदों और निराशाओं, अपनी उदासी और टिमटिमाती आशा के उतार-चढ़ाव, अपने बदलते संकल्पों—कभी हार मान लेने का, कभी डटे रहने का—कभी साहसिक कदम उठाने का, कभी चीज़ों को बीतने देने और धैर्यपूर्वक अपने समय का इंतज़ार करने—से ऊबाने के बजाय, मैं इस वृत्तांत में प्रस्तुत एक-दो पात्रों के बारे में बात करने में अपना समय लगाऊँगा, जिनका ज़िक्र शायद मुझे दोबारा न करना पड़े।

श्री हंटिंगडन की मृत्यु से कुछ समय पहले लेडी लोबोरो एक अन्य प्रेमी के साथ महाद्वीप भाग गईं, जहाँ कुछ समय तक उन्होंने बेहिसाब मौज-मस्ती और अय्याशी की, फिर उनके बीच झगड़ा हुआ और वे अलग हो गए। कुछ समय तक तो उन्होंने मौज-मस्ती की, लेकिन साल बीतते गए और पैसा कम होता गया: अंततः वे कठिनाई, कर्ज, बदनामी और दुख में डूब गईं; और अंत में, जैसा कि मैंने सुना है, गरीबी, उपेक्षा और घोर दयनीय स्थिति में उनकी मृत्यु हो गई। लेकिन यह महज़ एक अफवाह हो सकती है: हो सकता है कि वह अभी भी जीवित हों, अगर मैं या उनके कोई रिश्तेदार या पुराने परिचित उन्हें कुछ बता सकें; क्योंकि उन सभी ने उन्हें कई साल पहले ही देखना बंद कर दिया है, और अगर हो सके तो वे उन्हें पूरी तरह से भूल जाना चाहेंगे। हालाँकि, उनके पति ने इस दूसरे दुराचार के बाद तुरंत तलाक मांगा और प्राप्त किया, और कुछ समय बाद ही उन्होंने दोबारा शादी कर ली। यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि लॉर्ड लोबोरो, चाहे वे कितने भी उदास और चिड़चिड़े स्वभाव के क्यों न दिखते हों, कुंवारे जीवन के लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं थे। कोई सार्वजनिक हित, कोई महत्वाकांक्षी परियोजना, या सक्रिय गतिविधियाँ, यहाँ तक कि मित्रता के बंधन भी (यदि उसके कोई मित्र होते भी), घरेलू सुख-सुविधाओं और स्नेह की कमी की भरपाई नहीं कर सकते थे। यह सच है कि उसका एक पुत्र और एक नाममात्र की पुत्री थी, लेकिन वे भी उसे अपनी माँ की याद दिलाते थे, और अभागी छोटी एनाबेला उसकी आत्मा में निरंतर कड़वाहट का स्रोत थी। उसने स्वयं को उसके साथ पिता तुल्य दयालुता का व्यवहार करने के लिए बाध्य किया था: उसने स्वयं को उससे घृणा न करने के लिए मजबूर किया था, और शायद अंततः उसके प्रति कुछ हद तक स्नेहपूर्ण भावना रखने के लिए भी, उसके भोले-भाले और भोले-भाले लगाव के बदले में; लेकिन उस निर्दोष प्राणी के प्रति अपनी आंतरिक भावनाओं के लिए आत्म-निंदा की कड़वाहट, अपने स्वभाव की बुरी प्रवृत्तियों को दबाने के लिए उसका निरंतर संघर्ष (क्योंकि उसका

स्वभाव उदार नहीं था), यद्यपि उसे जानने वालों द्वारा आंशिक रूप से अनुमान लगाया जा सकता था, केवल ईश्वर और उसके अपने हृदय को ही ज्ञात था; इसी प्रकार, युवावस्था के दुर्गुणों की ओर लौटने और अतीत की विपत्तियों को भुलाने तथा वर्तमान पीड़ा, एक उखड़े हुए हृदय, आनंदहीन, मित्रहीन जीवन और एक अस्वस्थ मन के प्रति उदासीनता की तलाश करने के प्रलोभन के साथ उसका संघर्ष भी कठोर था, क्योंकि वह स्वास्थ्य, विवेक और सद्गुण के उस कपटी शत्रु के आगे फिर से आत्मसमर्पण करने से बचना चाहता था, जिसने उसे पहले इतनी बुरी तरह गुलाम बनाकर अपमानित किया था।

उनकी दूसरी पसंद पहली से बिलकुल अलग थी। कुछ लोगों को उनकी पसंद पर आश्चर्य हुआ; कुछ ने तो उसका उपहास भी किया—लेकिन इसमें उनकी मूर्खता उनकी मूर्खता से कहीं अधिक स्पष्ट थी। वह महिला लगभग उन्हीं की उम्र की थी—अर्थात तीस से चालीस के बीच—न तो सुंदरता, न धन, न ही प्रतिभा और न ही ऐसी कोई और बात जो मैंने कभी सुनी हो, सिवाय सच्ची समझदारी, अटूट ईमानदारी, सक्रिय धार्मिकता, उदार परोपकारिता और हंसमुख स्वभाव के। हालाँकि, जैसा कि आप आसानी से कल्पना कर सकते हैं, इन गुणों ने मिलकर उन्हें बच्चों के लिए एक उत्कृष्ट माँ और उनके स्वामी के लिए एक अमूल्य पत्नी बना दिया। वे, अपने सामान्य आत्म-हीन भाव के साथ, उन्हें अपने लिए बहुत अच्छी मानते थे, और यद्यपि वे ईश्वर की कृपा पर आश्चर्यचकित थे कि उन्होंने उन्हें ऐसा उपहार दिया, और यहाँ तक कि अन्य पुरुषों के बजाय उन्हें चुनने के उनके स्वाद पर भी, उन्होंने उनके प्रति अच्छाई का प्रतिफल देने का भरसक प्रयास किया, और इस हद तक सफल रहे कि वह इंग्लैंड की सबसे खुश और प्रिय पत्नियों में से एक थीं, और मेरा मानना है कि आज भी हैं। और जो लोग दोनों भागीदारों के अच्छे स्वाद पर सवाल उठाते हैं, वे आभारी हो सकते हैं यदि उनके संबंधित चयन अंत में उन्हें आधी वास्तविक संतुष्टि प्रदान करते हैं, या उनकी पसंद का आधा स्थायी और ईमानदार स्नेह के साथ प्रतिफल देते हैं।

अगर आपको उस नीच बदमाश ग्रिम्सबी के अंजाम में ज़रा भी दिलचस्पी है, तो मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि उसकी हालत बद से बदतर होती चली गई, वह दुराचार और दुष्टता की खाई में गिरता चला गया, अपने गिरोह के सबसे बुरे सदस्यों और समाज के सबसे निचले तबके के लोगों के साथ ही मेलजोल रखता था - बाकी दुनिया के लिए यह अच्छी बात थी - और अंत में नशे में धुत होकर हुए झगड़े में

उसकी मौत हो गई, कहा जाता है कि उसके ही किसी साथी बदमाश के हाथों, जिसे उसने जुए में धोखा दिया था।

श्री हैटर्सले ने कभी भी 'उन लोगों के बीच से बाहर निकलने' और एक सच्चे इंसान और ईसाई की तरह व्यवहार करने का अपना संकल्प नहीं भुलाया था। उनके हंसमुख मित्र हंटिंगडन की अंतिम बीमारी और मृत्यु ने उन्हें उनके पुराने तौर-तरीकों की बुराई से इतना प्रभावित किया कि उन्हें इस तरह के किसी और सबक की आवश्यकता नहीं पड़ी। शहर के प्रलोभनों से दूर रहकर, उन्होंने अपना जीवन ग्रामीण इलाकों में ही बिताया, एक उत्साही, सक्रिय ग्रामीण सज्जन के सामान्य कामों में लीन रहे; उनके व्यवसाय खेती, घोड़े और मवेशी पालना थे, साथ ही थोड़ा-बहुत शिकार और निशानेबाजी भी। उनके जीवन में कभी-कभार दोस्तों की संगति (जो उनके युवावस्था के दोस्तों से भी बेहतर थे), उनकी प्रसन्नमिजाज पत्नी (जो अब बेहद खुशमिजाज और भरोसेमंद थीं) और उनके बलवान बेटों और सुंदर बेटियों के परिवार का साथ भी शामिल था। उनके पिता, जो एक बैंकर थे, की कुछ साल पहले मृत्यु हो गई और उन्होंने अपनी सारी संपत्ति उन्हें विरासत में दे दी, जिससे अब उनके पास अपनी रुचियों को पूरा करने का पूरा अवसर है, और मुझे आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि राल्फ हैटर्सले, एस्क्वायर, अपने उत्कृष्ट नस्ल के घोड़ों के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध हैं।

अध्याय 11

अब हम दिसंबर के आरंभिक समय की एक शांत, ठंडी, बादलों से घिरी दोपहर की बात करते हैं, जब बंजर खेतों और जमी हुई सड़कों पर बर्फ की पहली परत पतली सी बिखरी हुई थी, या पिछले महीने की मूसलाधार बारिश से जमी हुई कीचड़ में धंसे हुए बैलगाड़ी के पहियों के निशानों और आदमियों व घोड़ों के पदचिह्नों के गड्ढों में मोटी

परत के रूप में जमा थी। मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है, क्योंकि मैं अपने साथ मिस एलिजा मिलवर्ड जैसी असाधारण शख्सियत के साथ विकारेज से घर लौट रहा था। मैं उनके पिता से मिलने गया था, - शिष्टाचार का यह त्याग मैंने पूरी तरह से अपनी माँ को खुश करने के लिए किया था, खुद को नहीं, क्योंकि मुझे घर के पास जाना बिल्कुल पसंद नहीं था; न केवल इसलिए कि मुझे कभी इतनी मनमोहक लगने वाली एलिजा से नफरत थी, बल्कि इसलिए भी कि मैंने खुद उस बूढ़े सज्जन को श्रीमती हंटिंगडन के बारे में उनकी बुरी राय के लिए आधा भी माफ नहीं किया था; क्योंकि हालांकि अब उन्हें अपने पहले के फैसले में गलती स्वीकार करनी पड़ी थी, फिर भी वे मानते थे कि श्रीमती हंटिंगडन ने अपने पति को छोड़कर गलत किया था; यह एक पत्नी के रूप में उसके पवित्र कर्तव्यों का उल्लंघन था, और स्वयं को प्रलोभन में डालकर ईश्वर की इच्छा को चुनौती देना था; और शारीरिक दुर्व्यवहार (और वह भी मामूली नहीं) के अलावा ऐसा कदम उचित नहीं ठहराया जा सकता था - बल्कि वह भी नहीं, क्योंकि ऐसी स्थिति में उसे सुरक्षा के लिए कानूनों का सहारा लेना चाहिए था। लेकिन मैं उसके बारे में नहीं, बल्कि उसकी बेटी एलिजा के बारे में बात करने वाला था। जैसे ही मैं पादरी से विदा ले रहा था, वह टहलने के लिए तैयार होकर कमरे में दाखिल हुई।

‘मैं आपकी बहन से मिलने आई थी, श्रीमान मार्खम,’ उसने कहा; ‘और अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं आपके साथ घर तक चलूँगी। मुझे बाहर जाते समय किसी का साथ अच्छा लगता है — क्या आपको नहीं?’

'हां, जब यह स्वीकार्य हो।'

‘बिल्कुल,’ युवती ने शरारती मुस्कान के साथ जवाब दिया।

इसलिए हम साथ-साथ आगे बढ़े।

'क्या आपको लगता है कि रोज़ घर पर मिलेगी?' उसने कहा, जैसे ही हमने बगीचे का फाटक बंद किया और लिंडेन-कार की ओर अपना चेहरा किया।

'मुझे ऐसा विश्वास है।'

'मुझे उम्मीद है कि मैं ऐसा करूँगा, क्योंकि मेरे पास उसके लिए एक छोटी सी खबर है - अगर आपने मुझसे पहले ही मुझे यह खबर नहीं दे दी हो।'

'मैं?'

'जी हां: क्या आपको पता है कि मिस्टर लॉरेंस किसलिए गए हैं?' उसने मेरी

प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्सुकता से ऊपर देखा।

मैंने कहा, 'क्या वह चला गया?' और उसका चेहरा खिल उठा।

‘अरे! तो उसने तुम्हें अपनी बहन के बारे में नहीं बताया?’

‘उसका क्या हुआ?’ मैंने भयभीत होकर पूछा, कहीं उसके साथ कोई बुरी घटना न घट गई हो।

‘ओह, मिस्टर मार्खम, आप कितने शर्मिंदा हैं!’ वह चिढ़ाने वाली हंसी के साथ बोली। ‘हा हा, आप उसे अभी तक भूले नहीं हैं। लेकिन आपको जल्दी करनी चाहिए, मैं आपको बता सकती हूं, क्योंकि - हाय हाय! - उसकी शादी अगले गुरुवार को होने वाली है!’

नहीं, मिस एलिजा, यह गलत है।

‘क्या आप मुझ पर झूठ बोलने का आरोप लगा रहे हैं, महोदय?’

आपको गलत जानकारी दी गई है।

‘क्या मैं हूँ? क्या आपको मुझसे बेहतर पता है?’

'मुझे लगता है, मैं ऐसा करता हूं।'

‘तो फिर तुम इतने पीले क्यों दिख रहे हो?’ मेरी भावनाओं को देखकर मुस्कुराते हुए उसने कहा। ‘क्या तुम्हें मुझ पर गुस्सा आ रहा है कि मैंने इतना झूठ बोला? खैर, मैं तो बस वही बता रही हूँ जो मुझे बताया गया है: मैं इसकी सच्चाई की गारंटी नहीं देती; लेकिन साथ ही, मुझे समझ नहीं आता कि सारा को मुझे या उसके मुखबिर को धोखा देने का क्या कारण हो सकता है; और उसने मुझे बताया कि नौकर ने उसे यही बताया था: कि श्रीमती हंटिंगडन की शादी गुरुवार को होने वाली थी और श्री लॉरेंस शादी में गए थे। उसने मुझे उस सज्जन का नाम बताया था, लेकिन मैं भूल गई हूँ। शायद तुम मुझे याद दिलाने में मदद कर सको। क्या कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो पास में रहता हो या अक्सर आस-पड़ोस में आता-जाता हो और उससे लंबे समय से जुड़ा हो? — एक श्रीमान — ओह, हे भगवान! श्रीमान —’

मैंने कड़वी मुस्कान के साथ पूछा, 'हर्ग्रेव?'

‘तुम सही कह रहे हो,’ वह चिल्लाई; ‘वही नाम था।’

‘असंभव, मिस एलिजा!’ मैंने हैरानी से कहा, और मेरी आवाज़ सुनकर वह चौंक गईं।

“खैर, तुम्हें पता है, उन्होंने मुझे यही बताया था,” उसने शांत भाव से मेरी आँखों में

देखते हुए कहा। और फिर वह इतनी ज़ोर से और तीखी हंसी हंस पड़ी कि मैं गुस्से से बौखला गया।

'सचमुच मुझे माफ़ करना,' वह चिल्लाई। 'मुझे पता है यह बहुत असभ्य है, लेकिन हा हा हा! — क्या आपने खुद उससे शादी करने की सोची थी? अरे बाप रे, कितना अफ़सोस! — हा हा हा! हे भगवान, श्रीमान मार्खम, क्या आप बेहोश होने वाले हैं? ओह, दया करो! क्या मैं इस आदमी को बुलाऊं? यहाँ, जैकब —' लेकिन उसके होंठों पर शब्द रुकने से पहले ही, मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे, मुझे लगता है, काफी ज़ोर से दबाया, क्योंकि वह दर्द या डर की हल्की सी चीख के साथ सिकुड़ गई; लेकिन उसका हौसला कम नहीं हुआ: तुरंत संभलकर, उसने बनावटी चिंता जताते हुए कहा, 'मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ? क्या आप थोड़ा पानी — थोड़ी ब्रांडी लेंगे? मुझे लगता है कि नीचे उस पब में कुछ होगा, अगर आप मुझे जाने देंगे।'

'ये सब बकवास बंद करो!' मैंने सख्ती से कहा। वह स्तब्ध रह गई—एक पल के लिए मानो फिर से डर गई। 'तुम जानती हो कि मुझे ऐसे मजाक पसंद नहीं हैं,' मैंने आगे कहा।

'सचमुच मजाक था! मैं मजाक नहीं कर रहा था!'

'आप हंस रही थीं, और मुझे हंसी का पात्र बनना पसंद नहीं है,' मैंने पूरी कोशिश करते हुए, गरिमा और संयम बनाए रखते हुए, और केवल तर्कसंगत और समझदारी भरी बातें कहते हुए जवाब दिया। 'और चूंकि आप इतने खुशमिजाज मूड में हैं, मिस एलिजा, तो आप खुद ही अपनी अच्छी संगति हैं; इसलिए मैं आपको आपकी सैर अकेले पूरी करने के लिए छोड़ देता हूँ—क्योंकि अब मुझे याद आया, मुझे कहीं और काम है; तो शुभ संध्या।'

इतना कहकर मैं उसे छोड़कर (उसकी द्वेषपूर्ण हंसी को दबाते हुए) खेतों की ओर मुड़ गया, टीले पर चढ़ गया और पास की ही एक बाड़ में बने छेद से अंदर घुस गया। उसकी कहानी की सच्चाई—या यूं कहें कि झूठ—को तुरंत साबित करने का निश्चय करके मैं वुडफोर्ड की ओर जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ा; पहले तो घुमावदार रास्ते से घूमा, लेकिन जैसे ही मेरी उस सुंदर सताने वाली की नज़र से ओझल हुआ, मैं एक पक्षी की तरह तेज़ी से चरागाहों, परती ज़मीन, ठूंठ और गलियों को पार करते हुए, बाड़ों, नालों और बाधाओं को पार करते हुए उस युवा जमींदार के द्वार तक पहुँच गया। आज तक मैंने अपने प्रेम की पूरी तीव्रता को कभी नहीं जाना था— अपनी

आशाओं की पूरी शक्ति को, जो घोर निराशा के क्षणों में भी पूरी तरह से नहीं टूटी थीं, हमेशा इस विचार से दृढ़ता से जुड़ी रहीं कि एक दिन वह मेरी हो सकती है, या यदि ऐसा नहीं तो कम से कम मेरी कुछ यादें, हमारी मित्रता और हमारे प्रेम की कोई हल्की सी स्मृति, उसके हृदय में हमेशा के लिए बसी रहेगी। मैं दरवाजे तक गया, यह ठानकर कि अगर मुझे मालिक दिखे तो मैं उससे उसकी बहन के बारे में निडरता से पूछूंगा, अब और इंतजार नहीं करूंगा और न ही संकोच करूंगा, बल्कि झूठी कोमलता और मूर्खतापूर्ण अभिमान को पीछे छोड़ दूंगा और तुरंत अपना भाग्य जान लूंगा।

'क्या मिस्टर लॉरेंस घर पर हैं?' मैंने उत्सुकता से उस नौकर से पूछा जिसने दरवाजा खोला था।

‘नहीं, महोदय, मालिक कल चले गए थे,’ उसने बहुत सतर्क होकर उत्तर दिया।

‘कहाँ गए थे?’

‘ग्रासडेल के पास, महोदय—क्या आपको पता नहीं था, महोदय? वह बहुत पास ही है, स्वामी जी,’ उस व्यक्ति ने मूर्खतापूर्ण, बनावटी मुस्कान के साथ कहा। ‘मुझे लगता है, महोदय—’

लेकिन मैंने उसकी बात सुने बिना ही मुड़कर उसे छोड़ दिया। मैं वहाँ खड़े होकर अपनी पीड़ा को उस जैसे व्यक्ति की उद्दंड हंसी और अभद्र जिज्ञासा के सामने प्रकट नहीं करना चाहती थी।

लेकिन अब क्या किया जाए? क्या यह संभव था कि उसने मुझे उस आदमी के लिए छोड़ दिया हो? मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। मुझे तो वह छोड़ सकती थी, लेकिन खुद को उसे सौंपना नहीं! खैर, मुझे सच्चाई जाननी ही थी; जब तक संदेह, भय, ईर्ष्या और क्रोध का यह बवंडर मुझे विचलित कर रहा था, तब तक मैं रोज़मर्रा की किसी भी चिंता पर ध्यान नहीं दे सकता था। मैं एल से सुबह की बस पकड़ूंगा (शाम वाली तो पहले ही जा चुकी होगी), और ग्रासडेल के लिए उड़ान भरूंगा - मुझे शादी से पहले वहाँ पहुँचना ही होगा। और क्यों? क्योंकि मेरे मन में एक विचार आया कि शायद मैं इसे रोक सकता हूँ - कि अगर मैंने ऐसा नहीं किया, तो हम दोनों अपने जीवन के अंतिम क्षण तक इसका पछतावा करते रहेंगे। मेरे मन में यह बात आई कि किसी ने उसके सामने मेरी पोल खोली होगी: शायद उसका भाई; हाँ, इसमें कोई संदेह नहीं कि उसके भाई ने उसे यह विश्वास दिलाया होगा कि मैं झूठा और बेवफा हूँ, और उसके स्वाभाविक गुस्से का फायदा उठाकर, और शायद उसके भविष्य के बारे में उसकी

निराशा और लापरवाही का फायदा उठाकर, उसे चालाकी से, बेरहमी से, इस दूसरी शादी के लिए उकसाया होगा, ताकि उसे मुझसे बचाया जा सके। अगर ऐसा हुआ, और अगर उसे अपनी गलती का एहसास तब हुआ जब उसे सुधारने में बहुत देर हो चुकी थी — तो उसे भी मेरी तरह दुख और व्यर्थ पछतावे भरी जिंदगी जीनी पड़ेगी; और मुझे कितना अफसोस होगा यह सोचकर कि मेरी मूर्खतापूर्ण शंकाओं ने ही यह सब शुरू किया! ओह, मुझे उससे मिलना ही होगा — उसे मेरी सच्चाई जाननी ही होगी, चाहे मैं उसे चर्च के दरवाजे पर ही क्यों न बता दूं! मैं पागल या बदतमीज मूर्ख लग सकता हूं — यहां तक कि वह भी इस तरह की दखलअंदाजी से नाराज हो सकती है, या कम से कम मुझसे कह सकती है कि अब बहुत देर हो चुकी है। लेकिन अगर मैं उसे बचा सकूं, अगर वह मेरी हो जाए! — यह कितना रोमांचक विचार है!

इस आशा से प्रेरित होकर और इन आशंकाओं से घबराकर, मैं कल के प्रस्थान की तैयारी के लिए जल्दी से घर की ओर चल पड़ा। मैंने अपनी माँ को बताया कि एक अत्यावश्यक कार्य, जिसमें देरी की गुंजाइश नहीं थी, लेकिन जिसका कारण मैं उस समय बता नहीं सकता था, मुझे बुला रहा है।

मेरी गहरी चिंता और गंभीर व्याकुलता उसकी ममतामयी निगाहों से छिपी नहीं रह सकी; और मुझे किसी भयावह रहस्य के बारे में उसकी आशंकाओं को शांत करने में बहुत मशक्कत करनी पड़ी।

उस रात भारी बर्फबारी हुई, जिससे अगले दिन गाड़ियों की गति इतनी धीमी हो गई कि मैं लगभग पागल हो गया। ज़ाहिर है, मैंने पूरी रात यात्रा की, क्योंकि यह बुधवार था: कल सुबह, निस्संदेह, शादी होनी थी। लेकिन रात लंबी और अंधेरी थी: बर्फ पहियों में बुरी तरह जम गई थी और घोड़ों के खुरों में खरोंचें आ गई थीं; जानवर बेहद सुस्त थे; कोचवान हद से ज़्यादा सतर्क था; यात्री हमारी प्रगति की गति के प्रति अपनी सुस्त उदासीनता में पूरी तरह से बेपरवाह थे। कोचवानों को आगे बढ़ने के लिए मनाने में मेरी मदद करने के बजाय, वे केवल मेरी अधीरता को घूरते और मुस्कुराते रहे: एक ने तो मुझे उकसाने की भी हिम्मत की - लेकिन मैंने उसे एक ऐसी नज़र से चुप करा दिया जिसने यात्रा के बाकी समय के लिए उसे शांत कर दिया; और जब, अंतिम पड़ाव पर, मैंने लगाम अपने हाथ में लेने की कोशिश की, तो उन सभी ने एकमत से इसका विरोध किया।

जब हम एम में दाखिल हुए तो दिन का उजाला हो चुका था और हम 'रोज़ एंड

क्राउन' के सामने रुके। मैं गाड़ी से उतरा और ग्रासडेल जाने के लिए ज़ोर से एक गाड़ी माँगी। कोई गाड़ी उपलब्ध नहीं थी: कस्बे में एकमात्र गाड़ी मरम्मत के लिए गई हुई थी। 'तो फिर एक बग्घी, एक फ्लाई, एक कार, कुछ भी - बस जल्दी करो!' एक बग्घी तो थी, लेकिन एक भी घोड़ा उपलब्ध नहीं था। मैंने एक घोड़ा ढूँढ़ने के लिए कस्बे में संदेश भेजा: लेकिन वे लोग इतनी देर कर रहे थे कि मैं और इंतज़ार नहीं कर सका - मैंने सोचा कि मेरे पैर मुझे जल्दी ले जा सकते हैं; और उनसे कहा कि अगर एक घंटे के भीतर गाड़ी तैयार हो जाए तो उसे मेरे पीछे भेज दें, और मैं जितनी तेज़ी से चल सकता था, चल पड़ा। दूरी छह मील से थोड़ी ज़्यादा थी, लेकिन सड़क अनजान थी, और मुझे रास्ता पूछने के लिए बार-बार रुकना पड़ा; गाड़ीवालों और सड़क छाप लोगों को आवाज़ लगानी पड़ी, और अक्सर झोपड़ियों में झाँकना पड़ा, क्योंकि उस सर्दी की सुबह बाहर बहुत कम लोग थे; कभी-कभी आलसी लोगों को उनके बिस्तरों से जगाना पड़ता था, क्योंकि काम बहुत कम होता था, शायद खाना और आग भी कम ही मिलती थी, इसलिए वे अपनी नींद कम करने की परवाह नहीं करते थे। हालाँकि, मेरे पास उनके बारे में सोचने का समय नहीं था; थकान और हताशा से व्याकुल होकर मैं जल्दी से आगे बढ़ गया। गाड़ी मुझे पकड़ नहीं पाई: और यह अच्छा ही हुआ कि मैंने उसका इंतज़ार नहीं किया; बल्कि यह निराशाजनक था कि मैं इतनी देर तक इंतज़ार करने की मूर्खता करता रहा।

अंततः मैं ग्रासडेल के पड़ोस में पहुँच गया। मैं छोटे से ग्रामीण गिरजाघर के पास पहुँचा - लेकिन देखो! उसके सामने गाड़ियों का काफिला खड़ा था; नौकरों और घोड़ों को सजाने वाले सफेद वस्त्रों या तमाशा देखने के लिए जमा हुए गाँव के आवारा लोगों की खुशमिजाज आवाज़ों से ही मुझे पता चल गया कि अंदर शादी हो रही है। मैं उनके बीच दौड़कर गया और बेतहाशा उत्सुकता से पूछा, क्या समारोह शुरू हो चुका है? वे बस देखते और घूरते रहे। अपनी हताशा में, मैं उन्हें धक्का देकर आगे बढ़ा और गिरजाघर के गेट में प्रवेश करने ही वाला था कि खिड़की से मधुमक्खियों की तरह चिपके हुए फटेहाल बच्चों का एक समूह अचानक नीचे गिरा और बरामदे की ओर दौड़ पड़ा, अपने देहाती बोली में कुछ ऐसा चिल्लाते हुए जिसका मतलब था, 'समाप्त हो गया - वे बाहर आ रहे हैं!'

अगर एलिज़ा मिलवर्ड मुझे देख लेती तो शायद वह बहुत खुश होती। मैंने सहारे के लिए गेट के खंभे को पकड़ लिया और दरवाजे की ओर टकटकी लगाकर खड़ी रही,

अपनी आत्मा के आनंद को आखिरी बार देखने के लिए, उस घृणित इंसान को पहली बार देखने के लिए जिसने उसे मेरे दिल से छीन लिया था और मुझे यकीन था कि उसे दुख और खोखले, व्यर्थ पछतावे भरे जीवन के लिए अभिशप्त कर दिया था - भला उसके साथ उसे क्या खुशी मिल सकती थी? मैं अब अपनी उपस्थिति से उसे चौंकाना नहीं चाहती थी, लेकिन मेरे पास वहां से हटने की शक्ति नहीं थी। दूल्हा और दुल्हन बाहर आए। मैंने उन्हें नहीं देखा; मेरी निगाहें केवल उसी पर टिकी थीं। एक लंबे घूंघट ने उसके सुंदर शरीर के आधे हिस्से को ढक रखा था, लेकिन उसे छिपा नहीं पा रहा था; मैं देख सकती थी कि हालांकि उसने अपना सिर ऊंचा रखा था, उसकी आंखें जमीन पर झुकी हुई थीं, और उसका चेहरा और गर्दन लालिमा से लाल थे; लेकिन उसका हर चेहरा मुस्कान से दमक रहा था, और उसके घूंघट की धुंधली सफेदी से सुनहरे घुंघराले बालों के गुच्छे चमक रहे थे! हे भगवान! यह मेरी हेलेन नहीं थी! पहली झलक ने मुझे चौंका दिया—लेकिन मेरी आँखें थकान और निराशा से धुंधली हो गई थीं। क्या मैं उन पर भरोसा करूँ? 'हाँ—यह वह नहीं है!' यह एक कम उम्र की, दुबली-पतली, गुलाबी रंग की खूबसूरत लड़की थी—सचमुच प्यारी, लेकिन उसमें गरिमा और आत्मा की गहराई बहुत कम थी—उस अवर्णनीय आकर्षण, उस गहन आध्यात्मिक फिर भी कोमल मोह, उस दिल को लुभाने और वश में करने की अवर्णनीय शक्ति के बिना—कम से कम मेरे दिल को तो नहीं। मैंने दूल्हे की तरफ देखा—यह फ्रेडरिक लॉरेंस था! मैंने अपने माथे से टपकती ठंडी बूँदें पोंछीं और जैसे ही वह पास आया, मैं पीछे हट गई; लेकिन, उसकी नज़र मुझ पर पड़ी और उसने मुझे पहचान लिया, भले ही मेरा रूप बदल गया हो।

'क्या यह तुम हो, मार्खम?' वह चौंककर और व्याकुल होकर बोला, शायद मेरे चेहरे की विचित्रता को देखकर भी।

'जी हां, लॉरेंस; क्या आप ही हैं?' मैंने सूझबूझ जुटाकर जवाब दिया।

वह मुस्कुराया और उसका चेहरा लाल हो गया, मानो वह अपनी पहचान पर आधा गर्व और आधा शर्म महसूस कर रहा हो; और अगर उसे अपनी बांह में बैठी उस प्यारी महिला पर गर्व करने का कारण था, तो उसे इतने लंबे समय तक अपने सौभाग्य को छिपाने के लिए शर्मिंदा होने का भी उतना ही कारण था।

उन्होंने अपनी शर्मिंदगी को छिपाने की कोशिश करते हुए, सहज प्रसन्नता का भाव दिखाते हुए कहा, 'मुझे अपनी दुल्हन से आपका परिचय कराने दीजिए। एस्थर, ये हैं

श्री मार्खम; मेरे मित्र मार्खम, श्रीमती लॉरेंस, जो पहले मिस हरग्रेव थीं।'

मैंने दुल्हन को प्रणाम किया और दूल्हे का हाथ जोर से मरोड़ दिया।

'तुमने मुझे इसके बारे में क्यों नहीं बताया?' मैंने नाराज़गी जताते हुए कहा, मानो मुझे कोई गुस्सा न हो (क्योंकि सच तो यह था कि मैं अपनी इस गलती को पाकर लगभग खुशी से पागल हो रही थी, और उसके प्रति स्नेह से भरी हुई थी, साथ ही उस घोर अन्याय के लिए भी जो मुझे अपने मन में उसके साथ महसूस हो रहा था - उसने शायद मेरे साथ गलत किया हो, लेकिन इस हद तक नहीं; और चूंकि मैं पिछले चालीस घंटों से उससे बुरी तरह नफरत कर रही थी, इसलिए इस भावना की प्रतिक्रिया इतनी तीव्र थी कि मैं क्षण भर के लिए सभी गलतियों को माफ कर सकती थी - और उनके बावजूद भी उससे प्यार कर सकती थी)।

'मैंने तुम्हें बताया था,' उसने अपराधबोध और उलझन भरे भाव से कहा; 'तुम्हें मेरा पत्र मिला था?'

'क्या पत्र?'

'वही जिसने मेरी होने वाली शादी की घोषणा की थी।'

मुझे इस तरह के इरादे का जरा सा भी संकेत नहीं मिला।

'रास्ते में यह आपको जरूर मिला होगा—यह कल सुबह आप तक पहुंच जाना चाहिए था—मैं मानता हूं कि काफी देर हो गई थी। लेकिन अगर आपको कोई सूचना नहीं मिली, तो फिर आप यहां क्यों आए?'

अब मेरी बारी थी उलझन में पड़ने की; लेकिन वह युवती, जो हमारी संक्षिप्त धीमी बातचीत के दौरान अपने पैर से बर्फ को थपथपाने में व्यस्त थी, बड़े ही उपयुक्त समय पर मेरी सहायता के लिए आगे आई और अपने साथी की बांह को चुटकी काटकर फुसफुसाते हुए सुझाव दिया कि उसके दोस्त को गाड़ी में बैठने और उनके साथ चलने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए; क्योंकि इतने सारे तमाशबीनों के बीच वहाँ खड़े रहना और साथ ही उनके दोस्तों को इंतजार कराना शायद ही सुखद होता।

'और इतनी ठंड भी है!' उसने उसकी पतली पोशाक पर निराशा भरी नज़र डालते हुए कहा और तुरंत उसे गाड़ी में बिठा दिया। 'मार्कहम, क्या तुम आओगे? हम पेरिस जा रहे हैं, लेकिन हम तुम्हें यहाँ से डोवर के बीच कहीं भी छोड़ सकते हैं।'

'नहीं, धन्यवाद। अलविदा - मुझे आपको सुखद यात्रा की शुभकामना देने की आवश्यकता नहीं है; लेकिन मुझे आपसे एक बहुत ही औपचारिक माफी की उम्मीद

होगी, और वह भी काफी समय बाद, जब तक हम दोबारा नहीं मिलते।'

उन्होंने मेरा हाथ मिलाया और जल्दी से अपनी महिला के बगल में बैठ गए। यह स्पष्टीकरण या बातचीत का समय या स्थान नहीं था: हम पहले ही इतनी देर तक खड़े रह चुके थे कि गाँव के दर्शकों में हैरानी और शायद बारात के सदस्यों में नाराज़गी भी पैदा हो गई थी; हालाँकि, ज़ाहिर है, यह सब मेरे द्वारा बताए गए समय से कहीं कम समय में हो गया, या जितना समय आपको इसे पढ़ने में लगेगा उससे भी कम समय में। मैं गाड़ी के बगल में खड़ा था, और खिड़की खुली होने के कारण, मैंने अपने प्रसन्न मित्र को अपनी साथी की कमर को प्यार से अपनी बांहों में थामे देखा, जबकि वह अपना चमकता हुआ गाल उनके कंधे पर टिकाए हुए थी, मानो प्रेम और विश्वास से परिपूर्ण आनंद की साक्षात मूर्ति हो। नौकर के दरवाज़ा बंद करने और पीछे बैठने के बीच के अंतराल में, उसने अपनी मुस्कुराती हुई भूरी आँखों से उनके चेहरे को देखा और चंचल भाव से कहा, - 'मुझे डर है कि आप मुझे बहुत असंवेदनशील समझ रहे होंगे, फ्रेडरिक: मुझे पता है कि ऐसे अवसरों पर महिलाओं का रोना रिवाज़ है, लेकिन मैं अपनी जान बचाने के लिए भी एक आंसू नहीं बहा सकती।'

उसने केवल एक चुंबन से जवाब दिया और उसे अपने सीने से और भी कसकर लगा लिया।

‘लेकिन ये क्या है?’ उसने बुदबुदाते हुए कहा। ‘अरे, एस्थर, तुम अब रो रही हो!’

‘ओह, ये कुछ भी नहीं है – ये तो बस बहुत ज़्यादा खुशी है – और मेरी यही इच्छा है,’ वो सिसकते हुए बोली, ‘कि हमारी प्यारी हेलेन भी हमारी तरह खुश होती।’

‘आपकी इस इच्छा के लिए आपको आशीर्वाद!’ मैंने मन ही मन कहा, जैसे ही गाड़ी आगे बढ़ी — ‘और ईश्वर करे कि यह पूरी तरह व्यर्थ न हो!’

जब वह बोल रही थी, मुझे लगा जैसे अचानक उसके पति के चेहरे पर उदासी छा गई हो। वह क्या सोच रहा होगा? क्या वह अपनी प्यारी बहन और अपने दोस्त को ऐसी खुशी से वंचित रख सकता था, जैसी खुशी वह खुद महसूस कर रहा था? ऐसे क्षण में यह असंभव था। उसके और उसके भाग्य के बीच का अंतर कुछ समय के लिए उसके आनंद को धूमिल कर देता। शायद, वह मेरे बारे में भी सोच रहा था: शायद उसे हमारे मिलन में बाधा डालने में अपनी भूमिका का पछतावा हो, हमारी मदद न करके, भले ही उसने हमारे खिलाफ साजिश न रची हो। मैंने अब उसे इस आरोप से मुक्त कर दिया, और अपने पहले के अनुदार संदेहों पर गहरा अफसोस जताया;

लेकिन उसने फिर भी हमारे साथ अन्याय किया था - मुझे उम्मीद थी, मुझे विश्वास था कि उसने किया था। उसने हमारे प्रेम के मार्ग में बाधा डालने के लिए सचमुच बांध नहीं बनाया था, लेकिन उसने जीवन के बंजर रेगिस्तान में भटकती दो धाराओं को निष्क्रिय रूप से देखा था, उन्हें अलग करने वाली बाधाओं को हटाने से इनकार कर दिया था, और चुपके से उम्मीद कर रहा था कि दोनों एक होने से पहले रेत में खो जाएँगी। और इस बीच वह चुपचाप अपने कामों में लगा हुआ था; शायद, उनका दिल और दिमाग अपनी प्रेमिका के ख्यालों में इतना डूबा हुआ था कि उनके मन में दूसरों के लिए सोचने का समय ही नहीं बचा था। निस्संदेह, उनकी पहली मुलाकात - कम से कम पहली घनिष्ठ मुलाकात - वुडफोर्ड में तीन महीने के प्रवास के दौरान ही हुई थी, क्योंकि मुझे अब याद आया कि उन्होंने एक बार casually यह बात कह दी थी कि उनकी चाची और बहन के साथ उस समय एक युवा दोस्त रह रहा था, और इसी वजह से वे वहाँ के सभी लेन-देन के बारे में कम से कम आधे समय तक चुप रहे। अब मुझे उन कई छोटी-छोटी बातों का भी कारण समझ में आ गया, जो पहले मुझे थोड़ा उलझन में डालती थीं; इनमें से एक थी वुडफोर्ड से उनका बार-बार जाना और कमोबेश लंबे समय तक अनुपस्थित रहना, जिनका उन्होंने कभी संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं दिया और जिनके बारे में वे लौटने पर पूछे जाने से नफरत करते थे। नौकर का यह कहना बिल्कुल सही था कि उनका मालिक 'बहुत ही गंभीर' था। लेकिन मुझसे यह अजीब चुप्पी क्यों? आंशिक रूप से, उस असाधारण आदत के कारण जिसका मैंने पहले जिक्र किया है; आंशिक रूप से, शायद, मेरी भावनाओं के प्रति उनकी संवेदनशीलता के कारण, या प्रेम के संक्रामक विषय पर बात करके मेरे दर्शन को ठेस पहुँचाने के डर से।

अध्याय LII

आखिरकार देर से आने वाली बग्घी मेरे पास पहुँच ही गई। मैं उसमें बैठ गया और उसे लाने वाले आदमी से कहा कि वह गाड़ी ग्रासडेल मैनर तक चलाए— मैं अपने विचारों में इतना खोया हुआ था कि खुद गाड़ी चलाने की परवाह ही नहीं कर पा रहा था। मैं श्रीमती हंटिंगडन से मिलने जा रहा था— उनके पति की मृत्यु को एक साल से अधिक हो चुका था, इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं थी— और मेरे अचानक आने पर उनकी उदासीनता या खुशी से मैं जल्द ही जान जाता कि उनका दिल सचमुच मेरा है या नहीं। लेकिन मेरा साथी, एक बातूनी और बेबाक आदमी, मुझे मेरे निजी विचारों में डूबे रहने देने को तैयार नहीं था।

'देखो, वे जा रहे हैं!' उसने कहा, जैसे ही गाड़ियाँ हमारे सामने से गुज़र गईं। 'आज वहाँ कल की तरह ही साहसिक कारनामे देखने को मिलेंगे। — क्या आप उस परिवार के बारे में कुछ जानते हैं, महोदय? या आप इस इलाके में अजनबी हैं?'

मुझे उनके बारे में सुनी-सुनाई बातों से पता चला है।

'हम्म! वैसे भी, उनमें से सबसे अच्छा तो चला ही गया। और मुझे लगता है कि यह हंगामा शांत होने के बाद बूढ़ी मालकिन भी चली जाएगी और कहीं जाकर अपने थोड़े से भत्ते पर गुज़ारा करेगी; और छोटी वाली - कम से कम नई वाली (वह अब उतनी छोटी नहीं रही) - ग्रोव में रहने आ रही है।'

तो क्या मिस्टर हरग्रेव शादीशुदा हैं?

जी हाँ, कुछ महीने पहले की बात है। उनकी शादी पहले ही एक विधवा महिला से हो जानी चाहिए थी, लेकिन पैसों को लेकर उनके बीच मतभेद हो गया: उनके पास बहुत पैसा था और मिस्टर हरग्रेव सारा पैसा खुद ही रखना चाहते थे; लेकिन वह पैसा छोड़ने को तैयार नहीं थीं, और फिर उनके बीच झगड़ा हो गया। यह महिला उतनी अमीर या सुंदर नहीं है, लेकिन इसकी पहले शादी नहीं हुई है। लोग कहते हैं कि वह बहुत सादी दिखती हैं और उनकी उम्र चालीस या उससे ज़्यादा है, इसलिए, आप जानते हैं, अगर उन्होंने इस मौके को नहीं लपका, तो उन्हें लगा कि उन्हें इससे बेहतर कभी नहीं मिलेगा। मुझे लगता है कि उन्होंने सोचा होगा कि इतना सुंदर युवा पति उनकी सारी संपत्ति से कहीं ज़्यादा कीमती है, और वह इसे खुशी-खुशी स्वीकार कर लेंगे, लेकिन मुझे यकीन है कि उन्हें जल्द ही अपने इस सौदे पर पछतावा होगा। लोग कहते हैं कि उन्हें अभी से यह एहसास होने लगा है कि वह शादी से पहले जैसा अच्छा, उदार, प्यारा और मनमोहक सज्जन था, वैसा अब नहीं है - वह अभी से ही

लापरवाह और दबंग होने लगा है। और वो उसे पहले से कहीं ज्यादा कठोर और लापरवाह पाएगी, जितना वो सोचती भी नहीं।

मैंने कहा, 'ऐसा लगता है कि आप उनसे अच्छी तरह परिचित हैं।'

जी हां, श्रीमान; मैं उन्हें तब से जानता हूं जब वे काफी युवा थे; और वे बड़े अभिमानी और जिद्दी थे। मैं वहां कई वर्षों तक नौकरानी थी; लेकिन मैं उनके कंजूस रवैये को सहन नहीं कर सकी — मालकिन दिन-ब-दिन और भी बदतमीज होती जा रही थी, अपनी चुभने वाली हरकतों, छेड़छाड़, ताक-झांक और ईर्ष्या के साथ; इसलिए मैंने सोचा कि मैं कोई और जगह ढूंढ लूं।

मैंने उसे बीच में रोकते हुए कहा, 'क्या हम घर के पास नहीं हैं?'

'जी हां, महोदय; वह पार्क है।'

उस विशाल मैदान के बीचोंबीच स्थित उस आलीशान हवेली को देखकर मेरा हृदय धंस गया। सर्दियों के मौसम में भी वह पार्क उतना ही सुंदर लग रहा था जितना गर्मियों में लगता होगा: उसका भव्य विस्तार, लहरदार उतार-चढ़ाव, सब कुछ उस चकाचौंध भरी शुद्धता में पूरी तरह से निखर रहा था, बेदाग और निशानरहित—सिवाय हिरणों के झुंड द्वारा छोड़े गए एक लंबे, घुमावदार रास्ते के—भारी लदी शाखाओं वाले भव्य वृक्ष धुंधले, धूसर आकाश के बीच सफेद चमक रहे थे; घना, घेरा बनाने वाला जंगल; जमी हुई शांति में सोता हुआ विशाल जलक्षेत्र; और बर्फ से ढकी शाखाओं को झुकाए हुए रोते हुए राख और विलो के पेड़—ये सब मिलकर एक ऐसा दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे, जो वास्तव में मनमोहक और एक शांत मन को भाने वाला था, लेकिन मेरे लिए बिल्कुल भी उत्साहजनक नहीं था। हालांकि, एक बात तसल्ली देने वाली थी—यह सब छोटे आर्थर को विरासत में मिला था, और किसी भी परिस्थिति में, सख्ती से कहें तो, उसकी माँ का नहीं हो सकता था। लेकिन उसकी स्थिति क्या थी? अपने बातूनी साथी के सामने उसका नाम लेने की अनिच्छा को मैंने बड़ी मुश्किल से काबू में किया और उससे पूछा कि क्या उसे पता है कि उसके दिवंगत पति ने कोई वसीयत छोड़ी थी और संपत्ति का बंटवारा कैसे हुआ था। जी हाँ, उसे सब कुछ पता था; और मुझे तुरंत बताया गया कि उसके बेटे के नाबालिग होने के दौरान संपत्ति का पूरा नियंत्रण और प्रबंधन उसी को सौंपा गया था, साथ ही उसकी अपनी संपत्ति पर पूर्ण और बिना शर्त अधिकार भी (लेकिन मुझे पता था कि उसके पिता ने उसे ज्यादा कुछ नहीं दिया था), और शादी से पहले उसके लिए तय की गई थोड़ी अतिरिक्त राशि भी।

बातचीत खत्म होने से पहले ही हम पार्क के गेट पर पहुँच गए। अब बारी थी जांच की। अगर वो मुझे अंदर मिल जाए तो— पर अफसोस! वो शायद अभी भी स्टैनिंगली में ही हो: उसके भाई ने मुझे इसके विपरीत कोई सूचना नहीं दी थी। मैंने चौकीदार के कमरे में पूछा कि क्या श्रीमती हंटिंगडन घर पर हैं। नहीं, वो अपनी चाची के साथ -शायर में थीं, लेकिन क्रिसमस से पहले लौटने की उम्मीद थी। वो आमतौर पर अपना अधिकांश समय स्टैनिंगली में ही बिताती थीं, केवल कभी-कभार ही ग्रासडेल आती थीं, जब कामकाज के प्रबंधन या अपने किरायेदारों और आश्रितों के हित के लिए उनकी उपस्थिति आवश्यक होती थी।

मैंने पूछा, 'स्टैनिंग्ले किस कस्बे के पास स्थित है?' जल्द ही आवश्यक जानकारी मिल गई। 'तो अब, मेरे साथी, मुझे लगाम दो, और हम वापस एम— पर चलते हैं। मुझे "रोज़ एंड क्राउन" में नाश्ता करना है, और फिर पहली बस से स्टैनिंग्ले के लिए रवाना होना है—।'

एम पर—गाड़ी के चलने से पहले मेरे पास पर्याप्त समय था कि मैं भरपेट नाश्ता करके अपनी ऊर्जा पुनः प्राप्त कर लूँ, अपनी सुबह की नियमित स्नान-शौकत पूरी कर लूँ, अपने श्रृंगार में थोड़ा बदलाव कर लूँ, और अपनी माँ को एक छोटा सा पत्र भी भेज दूँ (मैं कितना अच्छा बेटा था), ताकि उन्हें आश्वस्त कर सकूँ कि मैं अभी भी जीवित हूँ, और समय पर न पहुँचने के लिए क्षमा माँग सकूँ। उन धीमे-धीमे चलने वाले दिनों में स्टैनिंग्ले की यात्रा लंबी थी, लेकिन मैंने रास्ते में आवश्यक जलपान से खुद को वंचित नहीं किया, यहाँ तक कि किसी सराय में रात भर आराम करने से भी नहीं, क्योंकि मैंने अपनी मालकिन और उनकी चाची के सामने थका-हारा, बेहाल और मौसम की मार झेल चुका दिखने की बजाय थोड़ी देर की देरी को बेहतर समझा, क्योंकि वे मुझे बिना उस हालत में देखकर काफी आश्चर्यचकित हो जातीं। इसलिए अगली सुबह, मैंने न केवल अपने उत्तेजित मन के अनुसार पर्याप्त नाश्ता किया, बल्कि अपने श्रृंगार पर भी सामान्य से थोड़ा अधिक समय और ध्यान दिया; और, अपने छोटे से थैले से कुछ कपड़े निकालकर, अच्छी तरह से धुले हुए कपड़े, पॉलिश किए हुए जूते और नए साफ-सुथरे दस्ताने पहनकर, मैं 'द लाइटनिंग' पर सवार हुआ और अपनी यात्रा फिर से शुरू की। अभी मुझे लगभग दो पड़ाव और तय करने थे, लेकिन मुझे बताया गया कि कोच स्टैनिंगली के आसपास से होकर गुजरता है, और हॉल के जितना संभव हो सके पास उतरने की इच्छा होने के कारण, मेरे पास हाथ

बांधकर बैठने और आने वाले समय के बारे में सोचने के अलावा कोई चारा नहीं था।

वह एक साफ, बर्फीली सुबह थी। ऊँचाई पर बैठकर, बर्फीले परिदृश्य और सुहावने धूप वाले आकाश को निहारना, शुद्ध, स्फूर्तिदायक हवा में सांस लेना और जमी हुई बर्फ पर चलने की चरमराहट अपने आप में ही आनंददायक थी; लेकिन इसमें यह विचार भी जोड़ दें कि मैं किस मंजिल की ओर तेजी से बढ़ रहा था और किससे मिलने की उम्मीद कर रहा था, तो आपको उस समय मेरी मनस्थिति का कुछ हल्का-फुल्का अंदाजा हो सकता है - हालांकि बहुत हल्का-फुल्का ही: क्योंकि मेरा दिल असीम खुशी से भर गया था और मेरा उत्साह लगभग पागलपन की हद तक पहुँच गया था, हालांकि मैंने हेलेन और मेरे बीच के निर्विवाद अंतर, हमारे बिछड़ने के बाद से उसके द्वारा झेली गई सभी कठिनाइयों, उसकी लंबी, अटूट चुप्पी और सबसे बढ़कर, उसकी शांत, सतर्क चाची के बारे में सोचकर अपने उत्साह को एक सामान्य स्थिति में रखने की पूरी कोशिश की, जिनकी सलाह को वह निस्संदेह फिर कभी नजरअंदाज नहीं करेगी। इन विचारों ने मेरे दिल को चिंता से भर दिया और संकट को जल्द से जल्द खत्म करने की बेचैनी से मेरी छाती फड़कने लगी; लेकिन वे मेरे मन में उसकी छवि को धुंधला नहीं कर सके, न ही हमारे बीच कही और महसूस की गई बातों की जीवंत याद को मिटा सके, न ही भविष्य की तीव्र उम्मीद को नष्ट कर सके: वास्तव में, मैं अब उनके भय को समझ ही नहीं पा रहा था। हालाँकि, यात्रा के अंत में, मेरे कुछ सहयात्रियों ने दयालुतापूर्वक मेरी सहायता की और मुझे नीचे झुका दिया।

उनमें से एक ने अपने छाते से दाईं ओर फैले विशाल खेतों की ओर इशारा करते हुए कहा, 'यह बहुत ही सुंदर भूमि है।' ये खेत अपनी घनी बाड़, गहरी और सुव्यवस्थित खाइयों और सुंदर लकड़ी के पेड़ों के लिए जाने जाते थे, जो कभी किनारों पर तो कभी बाड़े के बीचोंबीच उगते थे। 'अगर आप इसे गर्मियों या वसंत ऋतु में देखें तो यह बहुत ही सुंदर भूमि है।'

'जी हां,' दूसरे व्यक्ति ने जवाब दिया, जो एक रूखे स्वभाव का बुजुर्ग व्यक्ति था, जिसने ठुड्डी तक बटन वाला एक फीका ओवरकोट पहना हुआ था और जिसके घुटनों के बीच एक सूती छाता था। 'मुझे लगता है कि यह पुराने मैक्सवेल का है।'

'यह उनका था, महोदय; लेकिन अब उनकी मृत्यु हो चुकी है, जैसा कि आप जानते हैं, और उन्होंने यह सब अपनी भतीजी के नाम कर दिया है।'

'सभी?'

'इसकी हर एक एकड़ ज़मीन, और हवेली समेत सब कुछ! उसकी सांसारिक संपत्ति का हर एक कण, सिवाय एक मामूली रकम के, जो स्मृति स्वरूप उसके भतीजे को नीचे के इलाके में दी जाएगी, और उसकी पत्नी को एक वार्षिक भत्ता।'

'यह अजीब है, महोदय!'

जी हाँ, श्रीमान; और वह उनकी अपनी भतीजी भी नहीं थी। वैसे भी उनके कोई करीबी रिश्तेदार नहीं थे—सिर्फ़ एक भतीजा था जिससे उनका झगड़ा हुआ था; और उन्हें हमेशा से ही उस भतीजे से लगाव था। और फिर, कहते हैं, उनकी पत्नी ने उन्हें ऐसा करने की सलाह दी: उन्होंने ही ज़्यादातर संपत्ति खरीदी थी, और उनकी इच्छा थी कि वह संपत्ति इस महिला को मिले।

'हम्म! वो किसी के लिए बढ़िया साथी साबित होगी।'

'वो ऐसा ही करेगी। वो विधवा है, पर अभी काफी जवान है और बेहद खूबसूरत है: उसके पास अपनी संपत्ति भी है, और उसका सिर्फ एक ही बच्चा है, और वो उसके लिए एक शानदार जागीर की देखभाल कर रही है —। उसके पक्ष में बहुत कुछ होगा! मुझे डर है कि हमारे लिए कोई मौका नहीं है' — (मजाकिया अंदाज में मुझे और अपने साथी को कोहनी मारते हुए) — 'हा, हा, हा! कोई बुरा मत मानना, महोदय, उम्मीद है?' — (मुझसे)। 'अहम! मुझे लगता है कि वो किसी रईस से ही शादी करेगी। देखिए, महोदय,' उसने अपने दूसरे पड़ोसी की ओर मुड़ते हुए और अपनी छतरी से मेरी ओर इशारा करते हुए कहा, 'वो हॉल है: शानदार पार्क, आप देख रहे हैं, और वो सारे जंगल — वहाँ बहुत सारे पेड़ हैं, और बहुत सारे जानवर हैं। अरे! अब क्या?'

यह उद्गार पार्क के द्वार पर कोच के अचानक रुकने के कारण उत्पन्न हुआ था।

'स्टैनिंगली हॉल के लिए सज्जन?' कोचवान ने पुकारा और मैं उठा और अपना कालीन का थैला जमीन पर फेंक दिया, ताकि मैं भी उसके पीछे नीचे गिर जाऊं।

'क्या आप बीमार लग रहे हैं?' मेरे बातूनी पड़ोसी ने मेरी ओर घूरते हुए पूछा। मेरा मानना है कि वह चेहरा काफी सफेद था।

'नहीं। इधर आओ, कोचवान!'

'धन्यवाद, महोदय। — ठीक है!'

कोचवान ने अपनी फीस जेब में रखी और मुझे छोड़कर चला गया। मैं पार्क में पैदल नहीं चल रहा था, बल्कि उसके द्वार के सामने बाहें मोड़े इधर-उधर टहल रहा था,

आँखें ज़मीन पर गड़ाए हुए। मेरे मन में अनगिनत छवियाँ, विचार और छापें उमड़ रही थीं, और कुछ भी स्पष्ट नहीं था सिवाय इसके: मेरा प्यार व्यर्थ ही संजोया गया था - मेरी आशा हमेशा के लिए टूट गई थी; मुझे तुरंत खुद को उससे अलग करना होगा, और उसके बारे में सभी विचारों को एक जंगली, पागल सपने की याद की तरह मिटाना या दबा देना होगा। मैं खुशी-खुशी घंटों तक वहाँ रुका रहता, इस उम्मीद में कि जाने से पहले कम से कम एक बार दूर से उसकी एक झलक मिल जाए, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए - मुझे उसे खुद को देखने नहीं देना चाहिए; आखिर मुझे यहाँ लाने का कारण क्या था सिवाय उसकी मोहब्बत को फिर से जगाने की उम्मीद के, ताकि बाद में उसका हाथ पा सकूँ? और क्या मैं यह बर्दाश्त कर सकता था कि वह मुझे ऐसा करने में सक्षम समझे? — उस जान-पहचान का फायदा उठाना — या कहें कि उस प्यार का — जो अनजाने में, या यूँ कहें कि उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ उस पर थोपा गया था, जब वह एक अनजान भगोड़ा थी, अपने गुज़ारे के लिए संघर्ष कर रही थी, ज़ाहिर तौर पर बिना दौलत, परिवार या जान-पहचान के; अब उससे मिलना, जब वह अपनी सही जगह पर लौट आई है, और उसकी समृद्धि में हिस्सा माँगना, जो अगर कभी खत्म न हुई होती, तो यकीनन उसे हमेशा के लिए मुझसे अनजान ही रखती? और यह सब तब, जब हम सोलह महीने पहले अलग हो चुके थे, और उसने मुझे इस दुनिया में फिर से मिलने की उम्मीद न करने के लिए साफ़ मना कर दिया था, और उस दिन से लेकर आज तक उसने मुझे एक भी चिट्ठी या संदेश नहीं भेजा। नहीं! यह ख्याल ही असहनीय था।

और अगर उसके मन में मेरे लिए अभी भी थोड़ी सी भी भावना बची हो, तो क्या मुझे उन भावनाओं को जगाकर उसकी शांति भंग करनी चाहिए? क्या मुझे उसे कर्तव्य और इच्छा के परस्पर विरोधी संघर्षों में उलझाना चाहिए—चाहे इच्छा उसे किसी भी तरफ आकर्षित करे या कर्तव्य उसे किसी भी ओर पुकारे—क्या उसे यह अपना कर्तव्य समझना चाहिए कि वह मेरे प्रति सच्चाई और निष्ठा के रोमांटिक विचार के लिए दुनिया की उपेक्षाओं और निंदाओं, अपने प्रियजनों के दुख और नाराजगी को जोखिम में डाले, या अपने मित्रों की भावनाओं और अपनी विवेकशीलता और परिस्थितियों के अनुकूल अपने व्यक्तिगत इच्छाओं का त्याग करे? नहीं—और मैं ऐसा नहीं करूँगा! मैं तुरंत चला जाऊँगा, और उसे कभी पता भी नहीं चलेगा कि मैं उसके घर के पास आया था: क्योंकि भले ही मैं उससे विवाह करने या उसकी मित्रता प्राप्त

करने की किसी भी इच्छा से इनकार करूँ, मेरी उपस्थिति से उसकी शांति भंग नहीं होगी, और न ही मेरी वफादारी देखकर उसका हृदय आहत होगा।

'अलविदा, प्यारी हेलेन, हमेशा के लिए! हमेशा के लिए अलविदा!'

मैंने यही कहा—और फिर भी मैं वहाँ से हट नहीं सका। मैं कुछ कदम आगे बढ़ा, और फिर पीछे मुड़कर उसके आलीशान घर को आखिरी बार देखा, ताकि कम से कम उसका बाहरी रूप मेरे मन में उसी तरह अमिट छाप छोड़ दे जैसे उसकी छवि, जिसे, अफसोस! मैं फिर कभी नहीं देख पाऊंगा—फिर कुछ कदम और आगे बढ़ा; और फिर, उदासी भरे विचारों में डूबा हुआ, रुक गया और सड़क के किनारे उगे एक पुराने खुरदुरे पेड़ से पीठ टिका ली।

अध्याय LIII

इसी तरह उदास ख्यालों में डूबी खड़ी थी कि तभी सड़क के मोड़ से एक सज्जन की गाड़ी गुजरी। मैंने उसकी तरफ देखा तक नहीं; और अगर वह चुपचाप मेरे पास से गुजर जाती, तो मुझे उसके आने का एहसास भी नहीं होता; लेकिन अंदर से एक छोटी सी आवाज ने मुझे जगा दिया, 'मम्मा, मम्मा, ये रहे मिस्टर मार्खम!'

मुझे जवाब सुनाई नहीं दिया, लेकिन थोड़ी देर बाद उसी आवाज ने जवाब दिया, 'हाँ, माँ - खुद देख लो।'

मैंने अपनी आँखें ऊपर नहीं उठाईं, लेकिन मुझे लगता है कि माँ ने देखा होगा, एक सुरीली आवाज़ की तलाश में, जिसकी मधुरता ने मेरी नसों में सिहरन पैदा कर दी, और कहा, 'ओह, चाची! ये रहे मिस्टर मार्खम, आर्थर के दोस्त! रुको, रिचर्ड!'

उन कुछ शब्दों के उच्चारण में, विशेषकर उस कांपती हुई आवाज़ में, 'ओह, आंटी', दबी हुई खुशी और उत्तेजना का ऐसा भाव था कि मैं लगभग बेखबर हो गई। गाड़ी तुरंत रुक गई, और मैंने ऊपर देखा तो खुली खिड़की से एक पीली, गंभीर, बुज़ुर्ग

महिला मुझे निहार रही थी। उसने झुककर अभिवादन किया, मैंने भी, और फिर उसने अपना सिर पीछे खींच लिया, जबकि आर्थर ने नौकर को बाहर निकलने के लिए चिल्लाया; लेकिन इससे पहले कि वह नौकर अपनी चौकी से नीचे उतर पाता, गाड़ी की खिड़की से एक हाथ चुपचाप बाहर निकला। मैं उस हाथ को पहचान गई, हालाँकि एक काले दस्ताने ने उसकी कोमल सफेदी और उसके सुंदर आकार को आधा छिपा रखा था, और मैंने झट से उसे पकड़ लिया और अपने हाथ से लगा लिया - एक पल के लिए जोश से, लेकिन तुरंत संभलकर मैंने उसे छोड़ दिया, और वह तुरंत वापस खींच लिया गया।

‘क्या तुम हमसे मिलने आ रहे थे, या बस यहाँ से गुजर रहे थे?’ उसकी मालकिन की धीमी आवाज ने पूछा, जो मुझे महसूस हुआ कि घने काले घूंघट के पीछे से मेरे चेहरे को ध्यान से देख रही थी, जिसने छायादार पैनलों के साथ मिलकर उसके चेहरे को मुझसे पूरी तरह छिपा रखा था।

‘मैं—मैं तो इस जगह को देखने आया था,’ मैंने हिचकिचाते हुए कहा।

‘वह जगह,’ उसने दोहराया, लेकिन उसके लहजे में आश्चर्य से ज्यादा नाराजगी या निराशा झलक रही थी।

तो क्या तुम इसमें प्रवेश नहीं करोगे?

'यदि आप चाहें तो।'

क्या आप संदेह कर सकते हैं?

‘हां, हां! उसे अंदर आना ही होगा,’ आर्थर दूसरे दरवाजे से दौड़ते हुए चिल्लाया; और मेरा हाथ अपने दोनों हाथों में पकड़कर उसने गर्मजोशी से हिलाया।

‘क्या आपको मैं याद हूँ, महोदय?’ उसने कहा।

'जी हां, बिलकुल ठीक है, मेरे प्यारे बच्चे, भले ही तुम बदल गए हो,' मैंने अपेक्षाकृत लंबे, दुबले-पतले युवक को देखते हुए उत्तर दिया, जिसके गोरे, बुद्धिमान चेहरे पर उसकी माँ की छवि स्पष्ट रूप से अंकित थी, हालांकि उसकी नीली आंखें खुशी से चमक रही थीं और उसके सुनहरे बाल उसकी टोपी के नीचे गुच्छे की तरह लटक रहे थे।

‘क्या मैं बड़ा नहीं हुआ हूँ?’ उसने अपने पूरे कद तक खिंचते हुए कहा।

‘बढ़ गया! तीन इंच, कसम से!’

‘पिछले जन्मदिन पर मैं सात साल का था,’ उसने गर्व से जवाब दिया। ‘सात साल

बाद मैं लगभग तुम्हारी ही लंबाई का हो जाऊंगा।'

'आर्थर,' उसकी माँ ने कहा, 'उसे अंदर आने के लिए कहो। जाओ, रिचर्ड।'

उसकी आवाज़ में उदासी और थोड़ी सी शीतलता थी, पर मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इसका कारण क्या है। गाड़ी आगे बढ़ी और हमसे पहले ही द्वार के अंदर प्रवेश कर गई। मेरी छोटी साथी मुझे पार्क में ले गई और पूरे रास्ते खुशी-खुशी बातें करती रही। हॉल के दरवाजे पर पहुँचकर मैं सीढ़ियों पर रुक गई और चारों ओर देखने लगी, मानो संभव हो तो खुद को संभाल सकूँ—या कम से कम अपने नए संकल्पों और उन सिद्धांतों को याद कर सकूँ जिन पर वे आधारित थे; और जब तक आर्थर ने कुछ देर तक मेरा कोट धीरे से खींचा और अंदर आने के लिए बार-बार निमंत्रण दिया, तब जाकर मैं उसके साथ उस कमरे में जाने के लिए राजी हुई जहाँ महिलाएँ हमारा इंतजार कर रही थीं।

जब मैं अंदर दाखिल हुआ तो हेलेन ने मुझे बड़ी ही सौम्य और गंभीर निगाहों से देखा और श्रीमती मार्खम और रोज़ के बारे में विनम्रतापूर्वक पूछा। मैंने आदरपूर्वक उनके सवालों के जवाब दिए। श्रीमती मैक्सवेल ने मुझे बैठने के लिए कहा, क्योंकि उन्हें थोड़ी ठंड लग रही थी, लेकिन उन्होंने सोचा कि शायद मैं सुबह ज्यादा दूर से नहीं आया हूँ।

मैंने जवाब दिया, 'लगभग बीस मील नहीं।'

पैदल नहीं!

नहीं, महोदया, कोच से।

'ये रही राहेल, महोदय,' हम सब में एकमात्र सचमुच खुश आर्थर ने कहा, और मेरा ध्यान उस सम्मानित महिला की ओर दिलाया, जो अभी-अभी अपनी मालकिन का सामान लेने आई थी। उसने मुझे पहचान की एक लगभग दोस्ताना मुस्कान दी – एक ऐसा एहसान जिसके लिए मेरी ओर से कम से कम एक सभ्य अभिवादन तो बनता था, जो मैंने किया और मैंने सम्मानपूर्वक उसका जवाब दिया – उसे मेरे चरित्र के बारे में अपने पहले के अनुमान की गलती का एहसास हो गया था।

जब हेलेन ने अपना उदास सा बोनेट और घूंघट, भारी शीतकालीन लबादा आदि उतार दिया, तो वह इतनी सहज लग रही थी कि मैं इसे सहन नहीं कर पा रहा था। मुझे विशेष रूप से उसके सुंदर काले बालों को देखकर खुशी हुई, जो अब भी खुले और चमकदार थे।

‘माँ ने चाचा की शादी के सम्मान में अपनी विधवा टोपी उतार दी है,’ आर्थर ने मेरी आँखों के भावों को एक बच्चे की मिली-जुली सरलता और पैनी नज़र से पढ़ते हुए कहा। माँ गंभीर हो गईं और श्रीमती मैक्सवेल ने अपना सिर हिलाया। ‘और चाची मैक्सवेल तो अपनी टोपी कभी नहीं उतारेंगी,’ उस शरारती लड़के ने ज़िद की; लेकिन जब उसने देखा कि उसकी चंचलता उसकी चाची को बहुत बुरी लग रही है, तो वह चुपचाप गया और उनके गले में हाथ डालकर उनके गाल चूमे और एक बड़ी खिड़की के कोने में चला गया, जहाँ वह चुपचाप अपने कुत्ते के साथ खेलने लगा, जबकि श्रीमती मैक्सवेल गंभीरता से मुझसे मौसम, ऋतु और सड़कों जैसे रोचक विषयों पर चर्चा कर रही थीं। मुझे उनकी उपस्थिति अपने स्वाभाविक आवेगों पर लगाम लगाने में बहुत उपयोगी लगी — उन उग्र उत्तेजनाओं का एक इलाज जो अन्यथा मुझे मेरी बुद्धि और इच्छा के विरुद्ध ले जातीं; लेकिन ठीक उसी समय मुझे यह संयम लगभग असहनीय लगा, और मुझे उनकी बातों पर ध्यान देने और सामान्य शिष्टाचार से उनका उत्तर देने में बहुत कठिनाई हुई; क्योंकि मुझे इस बात का एहसास था कि हेलेन आग के पास मुझसे कुछ ही फीट की दूरी पर खड़ी थी। मैंने उसकी तरफ देखने की हिम्मत नहीं की, लेकिन मुझे लगा कि उसकी नज़र मुझ पर है, और एक जल्दबाजी भरी, चोरी-छिपे नज़र से मैंने महसूस किया कि उसका गाल थोड़ा लाल हो गया था, और उसकी उंगलियां, जब वह अपनी घड़ी की चेन से खेल रही थी, उस बेचैन, कांपती हुई हरकत से हिल रही थीं जो अत्यधिक उत्तेजना का संकेत देती है।

‘मुझे बताओ,’ उसने अपनी चाची और मेरे बीच बातचीत में आए पहले विराम का फायदा उठाते हुए कहा, और सोने की चेन पर अपनी निगाहें गड़ाए हुए, तेज और धीमी आवाज में बोली — क्योंकि अब मैंने भी एक और नजर डालने का साहस किया था — ‘मुझे बताओ कि लिंडेन-होप में तुम सब कैसे हो — मेरे जाने के बाद से क्या कुछ नहीं हुआ?’

'मैं विश्वास नहीं।'

‘कोई मरा तो नहीं? किसी की शादी तो नहीं हुई?’

'नहीं।'

या फिर शादी करने की सोच रहे हैं? - कोई पुराने रिश्ते टूटे नहीं या नए बने नहीं? कोई पुराने दोस्त भूले नहीं या उनकी जगह किसी और ने नहीं ली?

आखिरी वाक्य में उसने अपनी आवाज इतनी धीमी कर ली कि मेरे अलावा कोई

भी अंतिम शब्द नहीं सुन सका, और उसी समय उसने अपनी निगाहें मुझ पर एक हल्की सी मुस्कान के साथ घुमाईं, जो बेहद प्यारी और उदास थी, और एक शर्मीली लेकिन उत्सुक जिज्ञासा भरी नजर से देखा जिसने मेरे गालों को अवर्णनीय भावनाओं से झनझना दिया।

मैंने जवाब दिया, 'मुझे ऐसा नहीं लगता। बिल्कुल नहीं, अगर दूसरे भी मेरी तरह ही कम बदले हैं।' उसके चेहरे पर मेरे प्रति सहानुभूति की चमक दिखाई दी।

'और आपका सच में फोन करने का इरादा नहीं था?' उसने हैरानी से कहा।

मुझे दखल देने से डर लग रहा था।

'घुसपैठ करना!' उसने अधीरता से इशारा करते हुए कहा। 'क्या—' लेकिन जैसे अचानक उसे अपनी चाची की उपस्थिति याद आ गई, उसने खुद को रोका और उस महिला की ओर मुड़कर आगे कहा— 'अरे चाची, यह आदमी मेरे भाई का घनिष्ठ मित्र है, और मेरा भी कुछ महीनों के लिए करीबी परिचित था, और मेरे बेटे से उसका बहुत लगाव था—और जब वह अपने घर से कई मील दूर इस घर के पास से गुजरता है, तो घुसपैठ के डर से वह अंदर देखना भी नहीं चाहता!'

'श्री मार्खम बहुत ही ज्यादा विनम्र हैं,' श्रीमती मैक्सवेल ने टिप्पणी की।

'कुछ ज़्यादा ही औपचारिक' उसकी भतीजी ने कहा— 'ज़्यादा— खैर, कोई बात नहीं।' और मुझसे मुँह मोड़कर वह मेज़ के बगल वाली कुर्सी पर बैठ गई और एक किताब को कवर से खींचकर, बड़े जोश के साथ उसके पन्ने पलटने लगी।

मैंने कहा, 'अगर मुझे पता होता कि आप मुझे एक घनिष्ठ परिचित के रूप में याद करके सम्मानित करेंगे, तो शायद मैं आपसे मिलने आने के सुख से खुद को वंचित नहीं करता, लेकिन मुझे लगा कि आप मुझे बहुत पहले ही भूल चुके हैं।'

'तुमने दूसरों के बारे में खुद से राय बनाई,' उसने किताब से अपनी निगाहें उठाए बिना बुदबुदाया, लेकिन बोलते समय उसका चेहरा लाल हो गया और उसने जल्दबाजी में एक दर्जन पन्ने एक साथ पलट दिए।

कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया, इस दौरान आर्थर ने सोचा कि वह अपने खूबसूरत युवा सेटर कुत्ते से मेरा परिचय करा दे, और मुझे दिखाए कि वह कितना अद्भुत रूप से बड़ा और सुधरा हुआ है, और उसके पिता सांचो का हालचाल भी पूछ ले। श्रीमती मैक्सवेल फिर अपना सामान उतारने चली गईं। हेलेन ने तुरंत किताब को अपने हाथ से हटा दिया, और कुछ क्षणों तक चुपचाप अपने बेटे, उसके दोस्त और

उसके कुत्ते को देखने के बाद, उसने मुझे दिखाने के लिए अपनी आखिरी नई किताब लाने के बहाने बेटे को कमरे से बाहर भेज दिया। बच्चा तुरंत मान गया; लेकिन मैं कुत्ते को सहलाता रहा। अगर मैं चुप्पी न तोड़ता, तो शायद मालिक के लौटने तक चुप्पी बनी रहती; लेकिन आधे मिनट या उससे भी कम समय में, मेरी मेज़बान अधीर होकर उठी, और मेरे और चिमनी के कोने के बीच कालीन पर अपनी पुरानी जगह पर बैठते हुए, गंभीरता से बोली—

‘गिल्बर्ट, तुम्हें क्या हुआ है? तुम इतने बदल क्यों गए हो? मुझे पता है यह बहुत ही अविवेकी प्रश्न है,’ उसने जल्दी से कहा: ‘शायद बहुत ही असभ्य प्रश्न है – अगर तुम्हें ऐसा लगता है तो इसका उत्तर मत देना – लेकिन मुझे रहस्य और छिपाव से नफरत है।’

'मैं नहीं बदला हूँ, हेलेन - दुर्भाग्य से मैं पहले की तरह ही उत्साही और भावुक हूँ - यह मैं नहीं हूँ, परिस्थितियाँ बदल गई हैं।'

‘क्या परिस्थितियाँ? मुझे बताइए!’ चिंता की पीड़ा से उसका चेहरा पीला पड़ गया था—क्या यह इस डर से था कि मैंने जल्दबाजी में किसी और के प्रति अपनी निष्ठा की प्रतिज्ञा कर ली थी?

मैंने कहा, ‘मैं आपको तुरंत बता देता हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं यहाँ आपसे मिलने के उद्देश्य से आया था (अपनी इस धृष्टता पर कुछ आशंकाओं और इस डर के साथ कि मेरा स्वागत उतना ही कम होगा जितना मुझे उम्मीद थी), लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि यह संपत्ति आपकी है, जब तक कि यात्रा के अंतिम चरण में दो सहयात्रियों की बातचीत से मुझे आपकी विरासत के बारे में जानकारी नहीं मिली; और तब मुझे अपनी सारी उम्मीदों की मूर्खता और उन्हें एक पल भी और बनाए रखने की मूर्खता का एहसास हुआ; और यद्यपि मैं आपके द्वार पर उतरा, मैंने अंदर न जाने का निश्चय किया; मैंने कुछ मिनटों तक जगह देखी, लेकिन एम के पास लौटने का पक्का इरादा कर लिया था - बिना उसकी मालकिन को देखे।’

और अगर मैं और मेरी चाची सुबह की सैर से वापस नहीं लौट रहे होते, तो शायद मैं आपको फिर कभी देख या सुन नहीं पाता?

मैंने यथासंभव शांत भाव से उत्तर दिया, “मुझे लगा कि हम दोनों के लिए यही बेहतर होगा कि हम न मिलें।” हालांकि, मैं अपनी आवाज़ को स्थिर रखने में असमर्थ था और उसकी ओर देखने की हिम्मत भी नहीं कर रहा था, कहीं ऐसा न हो कि मेरा

धैर्य पूरी तरह टूट जाए। मैंने सोचा था कि मुलाकात से आपकी शांति भंग होगी और मैं क्रोधित हो जाऊंगा। लेकिन अब मुझे खुशी है कि मुझे आपसे एक बार फिर मिलने का मौका मिला है और यह जानकर कि आप मुझे भूली नहीं हैं, और यह विश्वास दिलाते हुए कि मैं आपको हमेशा याद रखूंगा।

एक पल का सन्नाटा छा गया। श्रीमती हंटिंगडन थोड़ा पीछे हट गईं और खिड़की के कोने में खड़ी हो गईं। क्या वह इसे इस बात का संकेत समझ रही थीं कि केवल शर्म के कारण ही मैं उनका हाथ नहीं मांग पा रहा था? और क्या वह सोच रही थीं कि मेरी भावनाओं को जरा सा भी ठेस पहुंचाकर मुझे कैसे दूर किया जाए? इससे पहले कि मैं कुछ बोलकर उनकी इस उलझन को दूर कर पाता, उन्होंने अचानक मेरी ओर मुड़कर और मुझे देखते हुए चुप्पी तोड़ दी।

'आपको पहले भी ऐसा अवसर मिल सकता था - मेरा मतलब है, मुझे अपनी सुखद यादों से अवगत कराने और खुद को मेरी यादों से अवगत कराने के मामले में, यदि आपने मुझे लिखा होता।'

मैं ऐसा कर देता, लेकिन मुझे आपका पता नहीं पता था, और आपके भाई से पूछना भी मुझे अच्छा नहीं लगा, क्योंकि मुझे लगा कि वह मेरे पत्र लिखने पर आपत्ति जताएगा; लेकिन अगर मुझे यह विश्वास होता कि आप मुझसे संपर्क की उम्मीद कर रहे हैं, या अपने दुखी मित्र के बारे में जरा भी सोच रहे हैं, तो मैं एक पल के लिए भी पीछे नहीं हटता; लेकिन आपकी चुप्पी ने स्वाभाविक रूप से मुझे यह निष्कर्ष निकालने पर मजबूर कर दिया कि मुझे भुला दिया गया है।

'तो क्या आपको मुझसे पत्र लिखने की उम्मीद थी?'

'नहीं, हेलेन—श्रीमती हंटिंगडन,' मैंने कहा, अप्रत्यक्ष आरोप पर शर्मिंदगी महसूस करते हुए, 'बिल्कुल नहीं; लेकिन अगर आपने अपने भाई के माध्यम से मुझे कोई संदेश भेजा होता, या कभी-कभार मेरे बारे में उनसे पूछा भी होता—'

'मैंने आपके बारे में अक्सर पूछा था। मैं इससे ज्यादा नहीं पूछने वाली थी,' उसने मुस्कुराते हुए आगे कहा, 'जब तक आप मेरे स्वास्थ्य के बारे में कुछ औपचारिक पूछताछ तक ही सीमित रहेंगे।'

'तुम्हारे भाई ने मुझे कभी नहीं बताया कि तुमने मेरा नाम लिया था।'

'क्या तुमने कभी उससे पूछा?'

'नहीं; क्योंकि मैंने देखा कि वह तुम्हारे बारे में पूछे जाने वाले सवालों का जवाब

नहीं देना चाहता था, और न ही मेरे इस हठी लगाव को ज़रा सा भी बढ़ावा या समर्थन देना चाहता था।' हेलेन ने कोई जवाब नहीं दिया। 'और वह बिल्कुल सही था,' मैंने कहा। लेकिन वह चुपचाप बर्फीले मैदान को देखती रही। 'ओह, मैं उसे यहाँ से भगा दूँगी,' मैंने सोचा; और तुरंत ही मैं उठी और बड़े साहस के साथ विदा लेने के लिए आगे बढ़ी — लेकिन इसके पीछे अहंकार था, वरना मैं ऐसा नहीं कर पाती।

'क्या तुम अभी जा रहे हो?' उसने मेरा बढ़ाया हुआ हाथ पकड़ते हुए कहा, और तुरंत उसे छोड़ा नहीं।

मुझे यहाँ और क्यों रुकना चाहिए?

'कम से कम आर्थर के आने तक तो इंतजार करो।'

आज्ञा का पालन करने में मुझे बहुत खुशी हुई, इसलिए मैं खड़ा हो गया और खिड़की के दूसरी तरफ झुक गया।

मेरे साथी ने कहा, 'तुमने मुझसे कहा था कि तुम नहीं बदले हो: तुम बदल गए हो - बहुत ज्यादा बदल गए हो।'

'नहीं, श्रीमती हंटिंगडन, मुझे तो बस ऐसा होना चाहिए।'

'क्या आपका मतलब यह है कि आपके मन में मेरे लिए वही सम्मान है जो पिछली बार हमारी मुलाकात के समय था?'

मैंने किया है; लेकिन अभी इसके बारे में बात करना गलत होगा।

'उस समय इसके बारे में बात करना गलत था, गिल्बर्ट; अब तो यह गलत होगा ही — वरना ऐसा करना सत्य का उल्लंघन होगा।'

मैं इतना उत्तेजित था कि कुछ बोल नहीं पा रहा था; लेकिन, जवाब का इंतज़ार किए बिना, उसने अपनी चमकती आँखें और लाल गाल फेर लिए, और खिड़की खोलकर बाहर देखने लगी, शायद अपनी उत्तेजित भावनाओं को शांत करने के लिए, या अपनी शर्मिंदगी दूर करने के लिए, या फिर बस उस खूबसूरत अधखिले क्रिसमस गुलाब को तोड़ने के लिए जो बाहर छोटे से झाड़ी पर उगा था, बर्फ से झाँक रहा था जिसने अब तक निस्संदेह उसे पाले से बचाया था, और अब धूप में पिघल रहा था। फिर भी, उसने उसे तोड़ा, और उसकी पत्तियों से चमकीला पाउडर धीरे से झाँककर, उसे अपने होठों के पास ले गई और बोली:

'यह गुलाब गर्मियों के फूलों जितना सुगंधित तो नहीं है, लेकिन इसने उन सभी कठिनाइयों का सामना किया है जिन्हें वे सहन नहीं कर सकते: सर्दियों की ठंडी बारिश

ने इसे पोषण दिया है, और इसकी हल्की धूप ने इसे गर्माहट दी है; तेज हवाओं ने इसे पीला नहीं किया, न ही इसकी डंठल तोड़ी, और न ही तेज पाले ने इसे मुरझाया है। देखो, गिल्बर्ट, यह अभी भी ताजा है और पूरी तरह खिला हुआ है, इसकी पंखुड़ियों पर अभी भी ठंडी बर्फ जमी हुई है। — क्या तुम इसे लोगे?'

मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया: मैं बोलने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी, कहीं मेरी भावनाएँ मुझ पर हावी न हो जाएँ। उसने गुलाब मेरी हथेली पर रख दिया, लेकिन मैंने मुश्किल से ही अपनी उंगलियाँ उस पर बंद कीं, क्योंकि मैं उसके शब्दों के अर्थ और इस अवसर पर मुझे क्या करना चाहिए या क्या कहना चाहिए, इस बारे में गहराई से सोच रही थी; क्या मुझे अपनी भावनाओं के आगे झुकना चाहिए या उन्हें अभी भी नियंत्रित करना चाहिए। मेरी इस झिझक को उसकी भेंट स्वीकार करने में उदासीनता —या अनिच्छा—समझकर, हेलेन ने अचानक मेरे हाथ से गुलाब छीन लिया, उसे बर्फ पर फेंक दिया, खिड़की को ज़ोर से बंद कर दिया और आग के पास चली गई।

'हेलेन, इसका क्या मतलब है?' मैं उसके व्यवहार में आए इस चौंकाने वाले बदलाव से भयभीत होकर चिल्लाई।

उसने कहा, 'तुम मेरी देन को समझ नहीं पाए—या यूं कहो कि तुमने उसका तिरस्कार किया। मुझे खेद है कि मैंने तुम्हें यह तोहफा दिया; लेकिन चूंकि मैंने ऐसी गलती कर दी, इसलिए मेरे पास इसे वापस लेने के अलावा कोई और उपाय नहीं सूझा।'

मैंने जवाब दिया, 'तुमने मुझे बुरी तरह गलत समझा,' और एक मिनट में ही मैंने खिड़की दोबारा खोली, बाहर छलांग लगाई, फूल उठाया, अंदर लाया और उसे उसके सामने पेश करते हुए उससे विनती की कि वह मुझे इसे फिर से दे दे, और मैं इसे उसके लिए हमेशा के लिए संभाल कर रखूंगा, और दुनिया में मेरे पास मौजूद किसी भी चीज से ज्यादा इसे महत्व दूंगा।

'क्या इससे तुम संतुष्ट हो जाओगे?' उसने इसे अपने हाथ में लेते हुए कहा।

मैंने उत्तर दिया, 'ऐसा ही होगा।'

'लो, फिर इसे ले लो।'

मैंने उसे बड़े उत्साह से अपने होठों से लगाया और अपनी छाती में रख लिया, श्रीमती हंटिंगडन आधे व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ देख रही थीं।

'अब तुम जा रहे हो?' उसने कहा।

'मैं ऐसा करूंगा अगर—अगर मुझे करना ही पड़े।'

उसने जोर देकर कहा, 'तुम बदल गए हो—तुम या तो बहुत घमंडी हो गए हो या बहुत उदासीन।'

‘मैं इनमें से कोई नहीं हूँ, हेलेन—मिसेज़ हंटिंगडन। अगर आप मेरा दिल देख पातीं —’

‘तुम्हें इनमें से एक होना ही होगा, — अगर दोनों नहीं तो। और श्रीमती हंटिंगडन ही क्यों? — पहले की तरह हेलेन क्यों नहीं?’

‘हेलेन, फिर – प्यारी हेलेन!’ मैंने धीरे से कहा। मैं प्यार, आशा, खुशी, अनिश्चितता और सस्पेंस के मिले-जुले भावों से व्याकुल थी।

उसने कहा, 'जो गुलाब मैंने तुम्हें दिया था, वह मेरे दिल का प्रतीक था; क्या तुम उसे मुझसे वापस ले जाओगे और मुझे यहाँ अकेला छोड़ दोगे?'

'अगर मैं तुमसे हाथ मांगूं तो क्या तुम भी मुझे अपना हाथ दोगे?'

‘क्या मैंने काफी नहीं कहा?’ उसने एक बेहद मनमोहक मुस्कान के साथ उत्तर दिया। मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे दिल से चूमना ही चाहता था, लेकिन अचानक खुद को रोक लिया और कहा, —

लेकिन क्या आपने इसके परिणामों पर विचार किया है?

'शायद ही, मुझे लगता है, वरना मैं खुद को ऐसे व्यक्ति को न सौंपती जो मुझे स्वीकार करने के लिए बहुत अभिमानी हो, या इतना उदासीन हो कि अपने स्नेह को मेरी सांसारिक संपत्ति से अधिक महत्व न दे।'

मैं कितना मूर्ख था! — मैं उसे अपनी बाहों में भरने के लिए कांप रहा था, लेकिन इतनी खुशी पर विश्वास करने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था, फिर भी मैंने खुद को रोककर कहा, —

लेकिन यदि तुम पश्चाताप करो!

‘यह तुम्हारी गलती होगी,’ उसने जवाब दिया: ‘मैं ऐसा कभी नहीं करूंगी, जब तक कि तुम मुझे बुरी तरह निराश न कर दो। अगर तुम्हें मेरे स्नेह पर इतना भरोसा नहीं है कि तुम यह मान सको, तो मुझे अकेला छोड़ दो।’

‘मेरी प्यारी परी – मेरी अपनी हेलेन,’ मैं रोते हुए बोली, अब भी मेरे हाथ में जो बचा था उसे जोश से चूमते हुए और अपना बायाँ हाथ उसके चारों ओर लपेटते हुए, ‘अगर सिर्फ मुझ पर ही भरोसा हो तो तुम्हें कभी पछतावा नहीं होगा। लेकिन क्या

तुमने अपनी चाची के बारे में सोचा है?' मैं जवाब के लिए कांप रही थी, और अपने इस नए मिले खजाने को खोने के सहज डर से उसे अपने दिल से और कसकर लगा लिया।

'मेरी चाची को अभी इसके बारे में पता नहीं चलना चाहिए,' उसने कहा। 'वह इसे एक जल्दबाजी भरा और जोखिम भरा कदम समझेगी, क्योंकि वह कल्पना भी नहीं कर सकती कि मैं तुम्हें कितनी अच्छी तरह जानती हूँ; लेकिन उसे खुद तुम्हें जानना होगा और तुम्हें पसंद करना सीखना होगा। तुम दोपहर के भोजन के बाद अब हमसे विदा लो और वसंत में फिर आना, और ज़्यादा समय तक रुकना, उनसे जान-पहचान बढ़ाना, और मुझे पता है कि तुम दोनों एक-दूसरे को पसंद करोगे।'

'और फिर तुम मेरी हो जाओगी,' मैंने कहा और उसके होठों पर एक चुंबन, फिर दूसरा, फिर तीसरा चुंबन दिया; क्योंकि मैं अब उतना ही साहसी और उतावला हो गया था जितना पहले संकोची और संयमित था।

'नहीं - एक साल बाद,' उसने धीरे से मेरे आलिंगन से खुद को अलग करते हुए उत्तर दिया, लेकिन फिर भी स्नेहपूर्वक मेरा हाथ पकड़े रही।

'एक और साल! ओह, हेलेन, मैं इतना लंबा इंतजार नहीं कर सकती थी!'

'आपकी निष्ठा कहाँ है?'

मेरा मतलब है कि मैं इतने लंबे समय तक अलग रहने की पीड़ा सहन नहीं कर सकती थी।

'यह कोई अलगाव नहीं होगा: हम हर दिन पत्र लिखेंगे: मेरी आत्मा हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी, और कभी-कभी तुम मुझे अपने शरीर से देख पाओगे। मैं इतना पाखंडी नहीं बनूंगा कि यह दिखावा करूं कि मैं खुद इतने लंबे समय तक इंतजार करना चाहता हूं, लेकिन चूंकि मेरी शादी सिर्फ मेरी खुशी के लिए है, इसलिए मुझे इसके समय के बारे में अपने दोस्तों से सलाह लेनी चाहिए।'

आपके दोस्त इसे नापसंद करेंगे।

"प्रिय गिल्बर्ट, उन्हें ज़्यादा आपत्ति नहीं होगी," उसने मेरा हाथ चूमते हुए कहा; "जब वे तुम्हें जान लेंगे, तो उन्हें आपत्ति हो ही नहीं सकती, या अगर होती भी, तो वे सच्चे दोस्त नहीं होते – मुझे उनकी नाराज़गी की परवाह नहीं है। अब तुम संतुष्ट हो?" उसने असीम कोमलता भरी मुस्कान के साथ मेरी ओर देखा।

'क्या मैं तुम्हारे प्यार के आगे कुछ और हो सकता हूँ? और तुम मुझसे प्यार करती

हो, हेलेन?' मैंने कहा, मुझे इस बात पर कोई संदेह नहीं था, लेकिन मैं चाहता था कि वह खुद इस बात को स्वीकार करे। 'अगर तुम भी मेरी तरह प्यार करते,' उसने गंभीरता से उत्तर दिया, 'तो तुम मुझे इतनी जल्दी खोने के कगार पर नहीं होते— ये झूठी कोमलता और अहंकार की दुविधाएँ तुम्हें कभी परेशान नहीं करतीं—तुम समझ जाते कि दुनियावी भेद-भाव, पद, जन्म और भाग्य की असमानताएँ, एक समान विचारों और भावनाओं की एकता और सच्चे प्रेम और सहानुभूति से भरे दिलों और आत्माओं के सामने धूल के समान हैं।'

'पर ये तो हद से ज़्यादा खुशी है,' मैंने उसे दोबारा गले लगाते हुए कहा; 'हेलेन, मैं इसके लायक नहीं हूँ – मुझे ऐसी खुशकिस्मती पर यकीन ही नहीं होता: और जितना ज़्यादा इंतज़ार करना पड़ेगा, उतना ही डर बढ़ता जाएगा कि कहीं कुछ ऐसा न हो जाए जो तुम्हें मुझसे छीन ले – और सोचो, एक साल में हज़ारों चीज़ें हो सकती हैं! – मैं हर समय बेचैनी, डर और अधीरता के बुखार में डूबा रहूँगा। और वैसे भी, सर्दी का मौसम कितना नीरस होता है।'

'मैंने भी यही सोचा था,' उसने गंभीरता से उत्तर दिया: 'मैं सर्दियों में शादी नहीं करूंगी—कम से कम दिसंबर में तो बिल्कुल नहीं,' उसने सिहरते हुए कहा—क्योंकि उसी महीने में उसका दुर्भाग्यपूर्ण विवाह हुआ था जिसने उसे उसके पूर्व पति से बांध दिया था, और उसी महीने में उसकी भयानक मृत्यु हुई थी जिसने उसे उससे मुक्त किया था— 'इसलिए मैंने अगले साल, वसंत में शादी करने को कहा था।'

'अगली वसंत ऋतु में?'

नहीं, नहीं - शायद अगले पतझड़ में।

तो फिर गर्मी का मौसम?

'अच्छा, ग्रीष्म ऋतु का अंत हो गया। अब बस! संतुष्ट हो जाओ।'

जब वह बोल रही थी तभी आर्थर कमरे में वापस आ गया - शाबाश, इतनी देर तक बाहर रहने के लिए।

'मम्मा, मुझे वो किताब उन दोनों जगहों पर नहीं मिली जहाँ आपने मुझे खोजने को कहा था' (मम्मा की मुस्कान में एक सचेत भाव था जो मानो कह रहा हो, 'नहीं बेटा, मुझे पता था कि तुम्हें वो नहीं मिलेगी'), 'लेकिन राहेल आखिरकार मेरे लिए वो किताब ले आई। देखिए, मिस्टर मार्खम, एक प्राकृतिक इतिहास की किताब, जिसमें हर तरह के पक्षी और जानवर हैं, और पढ़ने में भी उतनी ही अच्छी है जितनी कि

तस्वीरें!’

मैं बड़े प्रसन्न मन से किताब देखने बैठ गई और उस नन्हे बच्चे को अपने घुटनों के बीच बिठा लिया। अगर वह एक मिनट पहले आया होता तो शायद मैं उसका इतना सत्कार नहीं करती, लेकिन अब मैंने स्नेह से उसके घुंघराले चेहरे को सहलाया और उसके गोरे माथे को चूमा भी: वह मेरी अपनी हेलेन का बेटा था, और इसलिए मेरा ही था; और तब से मैं उसे हमेशा इसी रूप में देखती आई हूँ। वह प्यारा बच्चा अब एक सुंदर युवक बन गया है: उसने अपनी माँ की सारी उम्मीदें पूरी कर ली हैं और इस समय वह अपनी युवा पत्नी - वही हंसमुख छोटी हेलेन हैटर्सली - के साथ ग्रासडेल मैनर में रह रहा है।

मैंने अभी आधी किताब भी नहीं पढ़ी थी कि श्रीमती मैक्सवेल मुझे दूसरे कमरे में दोपहर के भोजन के लिए बुलाने आ गईं। उस महिला के ठंडे और दूरी भरे व्यवहार ने मुझे पहले तो थोड़ा असहज कर दिया; लेकिन मैंने उन्हें खुश करने की पूरी कोशिश की, और मुझे लगता है कि उस पहली छोटी मुलाकात में भी मैं पूरी तरह सफल नहीं हो पाया; क्योंकि जब मैंने उनसे हंसमुख होकर बात की, तो वे धीरे-धीरे अधिक दयालु और सौहार्दपूर्ण हो गईं, और जब मैं जाने लगा तो उन्होंने मुझे विनम्रतापूर्वक विदाई दी और जल्द ही मुझसे दोबारा मिलने की आशा जताई।

'लेकिन जब तक आप मेरी चाची का शीतकालीन उद्यान, कंज़र्वेटरी नहीं देख लेते, तब तक आपको नहीं जाना चाहिए,' हेलेन ने मुझसे विदा लेते हुए कहा, जितना संभव हो उतना दार्शनिक और आत्म-संयम बरतते हुए।

मैंने इस तरह के विश्राम का भरपूर लाभ उठाया और उसके पीछे-पीछे एक बड़े और सुंदर फूल-भराव कक्ष में चली गई, जो मौसम के हिसाब से फूलों से भरपूर था — लेकिन, ज़ाहिर है, मेरे पास उन पर ध्यान देने का समय नहीं था। हालाँकि, मेरी साथी मुझे वहाँ किसी प्रेम-प्रसंग के लिए नहीं लाई थी: —

उन्होंने कहा, “मेरी चाची को फूल बहुत पसंद हैं, और उन्हें स्टैनिंगली भी बहुत पसंद है: मैं आपको यहाँ उनकी ओर से एक निवेदन करने के लिए लाई हूँ, कि यह उनका जीवन भर का घर हो, और अगर यह हमारा भी घर न हो तो भी मैं उनसे अक्सर मिल सकूँ और उनके साथ समय बिता सकूँ; क्योंकि मुझे डर है कि मुझे खोने पर उन्हें बहुत दुख होगा; और यद्यपि वे एकांत और चिंतनशील जीवन जीती हैं, फिर भी अगर उन्हें बहुत अधिक अकेला छोड़ दिया जाए तो वे उदास हो जाती हैं।”

"बिल्कुल, मेरी प्यारी हेलेन! — तुम अपने परिवार के साथ जो चाहो करो। मैं किसी भी हालत में तुम्हारी चाची को यहाँ से जाने की कामना नहीं करूँगा; और हम चाहे यहीं रहें या कहीं और, जैसा तुम और वो तय करो, और तुम उनसे जितनी बार चाहो मिल सकती हो। मैं जानता हूँ कि तुमसे बिछड़ने से उन्हें बहुत दुख होगा, और मैं अपनी तरफ से हर संभव कोशिश करने को तैयार हूँ। मैं तुमसे प्यार करता हूँ, और उनकी खुशी मेरे लिए उतनी ही प्यारी है जितनी मेरी अपनी माँ की खुशी।"

'धन्यवाद, प्रिय! इसके बदले तुम्हें एक चुंबन मिलेगा। अलविदा। अब रुको— रुको, गिल्बर्ट— मुझे जाने दो— ये रहा आर्थर; अपनी इस पागलपन भरी हरकत से उसके नासमझ दिमाग को चकित मत करो।'

* * * * *

लेकिन अब समय आ गया है कि मैं अपनी कहानी समाप्त करूँ। आपके सिवा कोई भी कहेगा कि मैंने इसे पहले ही बहुत लंबा कर दिया है। लेकिन आपकी संतुष्टि के लिए मैं कुछ और शब्द जोड़ूँगा; क्योंकि मुझे पता है कि आपको उस बुढ़िया के प्रति सहानुभूति होगी, और आप उसकी कहानी का अंतिम भाग जानना चाहेंगे। मैं वसंत ऋतु में फिर आया, और हेलेन के निर्देशों का पालन करते हुए, मैंने उससे जान-पहचान बढ़ाने की पूरी कोशिश की। उसने मेरा बहुत ही सौहार्दपूर्ण स्वागत किया, क्योंकि उसकी भतीजी की मेरे बारे में बहुत अच्छी राय थी, इसलिए वह शायद पहले से ही मेरे चरित्र के बारे में अच्छी राय बना चुकी थी। मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया, और हम दोनों की आपस में बहुत अच्छी बनती थी। जब मैंने अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं के बारे में उसे बताया, तो उसने इसे मेरी उम्मीद से कहीं अधिक समझदारी से लिया। इस विषय पर मेरी मौजूदगी में उसकी एकमात्र टिप्पणी यह थी—

तो, श्रीमान मार्खम, मुझे लगता है कि आप मेरी भतीजी को मुझसे छीनने जा रहे हैं। खैर! मुझे आशा है कि ईश्वर आपके विवाह को सफल बनाएगा और मेरी प्यारी बेटी को अंततः खुश करेगा। अगर वह अविवाहित रहकर संतुष्ट रहती, तो मैं निश्चित रूप से अधिक संतुष्ट होती; लेकिन अगर उसे दोबारा शादी करनी ही है, तो मुझे इस समय जीवित और उपयुक्त उम्र का कोई ऐसा व्यक्ति नहीं दिखता जिसे मैं आपकी तुलना में अधिक खुशी से उसे सौंप सकूँ, या जो उसकी कीमत को समझे और उसे वास्तव में खुश रखे, जहाँ तक मैं समझ सकती हूँ।

बेशक मैं उस तारीफ से बहुत खुश था, और मुझे उम्मीद थी कि मैं उसे यह दिखा सकूंगा कि उसका सकारात्मक निर्णय गलत नहीं था।

'लेकिन मेरी आपसे एक गुजारिश है,' उसने आगे कहा। 'ऐसा लगता है कि मैं अब भी स्टैनिंगली को अपना घर मानती हूँ: मैं चाहती हूँ कि आप भी इसे अपना घर मान लें, क्योंकि हेलेन को इस जगह और मुझसे लगाव है—जैसे मुझे उससे है। ग्रासडेल से जुड़ी कुछ दर्दनाक यादें हैं, जिनसे वह आसानी से उबर नहीं सकती; और मैं यहाँ अपनी मौजूदगी या दखलंदाजी से आपको परेशान नहीं करूँगी: मैं बहुत शांत स्वभाव की हूँ, और अपने कमरे में ही रहूँगी, अपने कामों पर ध्यान दूँगी, और आपसे कभी-कभार ही मिलूँगी।'

मैंने इस पर तुरंत सहमति दे दी; और हम अपनी प्यारी चाची के साथ उनकी मृत्यु तक अत्यंत सौहार्दपूर्ण ढंग से रहे, जो दुखद घटना कुछ वर्षों बाद घटी - यह दुखद घटना उनके लिए नहीं थी (क्योंकि यह शांतिपूर्वक हुई थी, और वह अपनी यात्रा के अंत तक पहुँचकर खुश थीं), बल्कि केवल उन कुछ प्यारे दोस्तों और आभारी आश्रितों के लिए थी जिन्हें वह पीछे छोड़ गईं।

लेकिन अब अपने निजी मामलों पर लौटते हैं: मेरी शादी गर्मियों में, अगस्त की एक सुहावनी सुबह हुई। मेरी होने वाली दुल्हन के प्रति मेरी माँ के पूर्वाग्रहों को दूर करने और उन्हें लिंडन ग्रेंज छोड़कर इतनी दूर रहने के विचार के लिए राजी करने में पूरे आठ महीने लग गए, और हेलेन की सारी दया और अच्छाई भी इसमें सहायक रही। फिर भी, अंततः वह अपने बेटे के सौभाग्य से प्रसन्न हुईं और गर्व से इसका सारा श्रेय उसके अपने गुणों और प्रतिभा को दिया। मैंने फार्म फर्गस को वसीयत में दिया, और मुझे उम्मीद थी कि एक साल पहले ऐसी ही परिस्थितियों में मुझे जितनी उम्मीद होती, उससे कहीं अधिक समृद्धि होगी; क्योंकि हाल ही में उसे विकर ऑफ एल की सबसे बड़ी बेटी से प्यार हो गया था - एक ऐसी महिला जिसकी श्रेष्ठता ने उसके छिपे हुए गुणों को जगा दिया था और उसे न केवल उसका स्नेह और सम्मान पाने और उससे विवाह करने के लिए पर्याप्त धन अर्जित करने के लिए, बल्कि खुद को उसके माता-पिता के साथ-साथ उसकी नज़रों में भी उसके योग्य साबित करने के लिए असाधारण प्रयास करने के लिए प्रेरित किया था; और अंत में वह सफल रहा, जैसा कि आप पहले से ही जानते हैं। जहां तक मेरी बात है, मुझे आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि हेलेन और मैंने साथ में कितना सुखमय जीवन बिताया है, और हम एक-

दूसरे के साथ रहकर और अपने आसपास पल रहे होनहार बच्चों के साथ रहकर कितने धन्य महसूस करते हैं। अब हम आपके और रोज़ के आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं, क्योंकि आपकी वार्षिक यात्रा का समय निकट आ रहा है, जब आपको अपने धूल भरे, धुएँ से भरे, शोरगुल वाले, परिश्रम से भरे और भागदौड़ भरे शहर को छोड़कर हमारे साथ कुछ समय के लिए ताजगी भरे विश्राम और सामाजिक शांति का आनंद लेने के लिए आना होगा।

तब तक के लिए अलविदा, गिल्बर्ट मार्खम।

स्टैनिंग्ले: 10 जून, 1847।

समाप्त

कविता

ब्रोंटे पार्सनेज संग्रहालय - वेस्ट यॉर्कशायर के हॉवर्थ में स्थित उनका पूर्व निवास।

क्यूरर, एलिस और एक्टन बेल की कविताएँ

कविता संग्रह का यह संकलन 1846 में तीनों ब्रोंटे बहनों, शार्लोट, एमिली और ऐनी द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित किया गया था, जो उनकी पहली प्रकाशित रचना थी। महिला लेखकों के प्रति समकालीन पूर्वाग्रह से बचने के लिए, ब्रोंटे बहनों ने उभयलिंगी प्रथम नाम अपना लिए। तीनों ने अपने प्रथम नामों का पहला अक्षर बरकरार रखा: शार्लोट का नाम बदलकर करर बेल, ऐनी का नाम बदलकर एक्टन बेल और एमिली का नाम बदलकर एलिस बेल कर दिया गया। पुस्तक का मुद्रण लंदन के आयलॉट एंड जोन्स प्रकाशन गृह द्वारा किया गया था। पहले संस्करण को ज्यादा रुचि नहीं मिली और केवल दो प्रतियां ही बिकीं। हालांकि, बहनों ने प्रकाशन के लिए लिखना जारी

रखने का फैसला किया और अपने पहले उपन्यासों पर काम शुरू किया, जो व्यावसायिक रूप से सफल रहे। 1848 में शार्लोट के उपन्यास जेन आयर की सफलता के बाद, और एमिली और ऐनी की मृत्यु के बाद, इस पुस्तक का दूसरा संस्करण कहीं अधिक सफल रहा, जिसमें शार्लोट ने अपनी दोनों दिवंगत बहनों की पहले अप्रकाशित कविताओं को शामिल किया था। ऐसा माना जाता है कि आयलॉट एंड जोन्स के शीर्षक पृष्ठ वाली दस से भी कम प्रतियां मौजूद हैं।

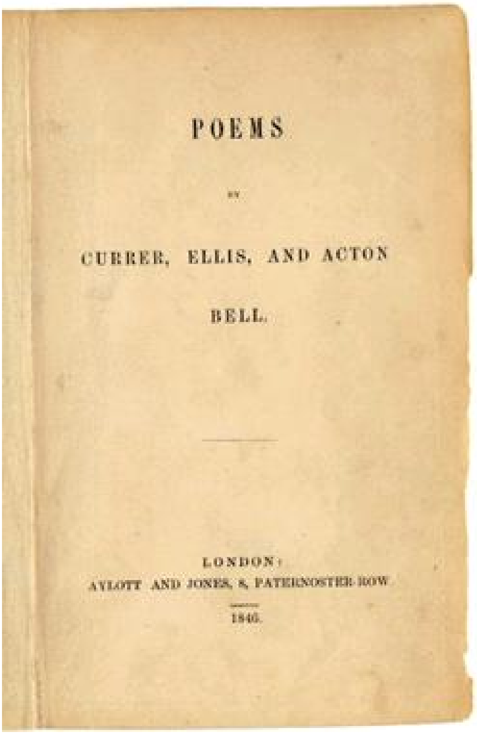

प्रथम संस्करण का शीर्षक पृष्ठ

अंतर्वस्तु

करर बेल (शार्लोट ब्रोंटे) की कविताएँ
पिलाटे की पत्नी का सपना।
स्मृति चिन्ह।
पत्नी की वसीयत।
फ्रांसेस।
गिल्बर्ट।
ज़िंदगी।
अक्षर।
खेद।
पूर्वाभास।
शिक्षक का एकालाप।
जुनून।
वरीयता।
शाम की शांति।
छंद।
विदाई।
धर्मत्याग।
सर्दियों का सामान।
मिशनरी।

एलिस बेल (एमिली ब्रोंटे) की कविताएँ
आस्था और निराशा।
सितारे।

दार्शनिक।
स्मरण।
एक मृत्यु-दृश्य।
गाना।
प्रत्याशा।
कैदी।
आशा।
एक दिवास्वप्न।
कल्पना की ओर।
वह कितनी चमकती है!
सहानुभूति।
मेरे लिए विनती करो।
आत्म-प्रश्न,
मौत।
छंदों के लिए — —
सम्मान का शहीद।
छंद।
मेरा दिलासा।
पुराना संयमी व्यक्ति।
एक्टन बेल की कविताएँ,
एक स्मृति।
वृक्षारोपण।
घर।
सब कुछ व्यर्थ है, सब कुछ व्यर्थ है।
पश्चात्ताप करने वाला।
क्रिसमस की सुबह का संगीत।
छंद।
अगर यही सब कुछ हो।
याद।

कॉपर को।
संशयवादी की प्रार्थना।
“चुने हुए लोगों” के लिए एक संदेश।
पिछले दिनों।
सांत्वना।
तेज हवा वाले दिन जंगल में रचित पंक्तियाँ।
जीवन के प्रति दृष्टिकोण।
निवेदन।
विद्यार्थी का प्रेमगीत।
कैद में रखा कबूतर।
आत्म-प्रशंसा।
उतार-चढ़ाव,

एलिस और एक्टन बेल की साहित्यिक कृतियों के चुनिंदा अंश। (एमिली और ऐनी ब्रोंटे)
करर बेल द्वारा
एलिस बेल की कविताओं के चुनिंदा अंश।
मैं।
II. ब्लूबेल।
III.
रात्रि-पवन।
प्यार और दोस्ती।
बुजुर्ग की फटकार।
झुंड से भटकने वाला।
चेतावनी और उत्तर।
अंतिम शब्द।
गिटार बजाती महिला।
वे दो बच्चे।
दूरदर्शी।

प्रोत्साहन।
छंद।

एक्टन बेल की कविताओं का चयन। (ऐनी ब्रोंटे)
निराशा।
एक प्रार्थना।
फरवरी के एक सुखद दिन की याद में।
आत्मविश्वास।
घर से लिखी गई पंक्तियाँ।
संकरा रास्ता।
घरेलू शांति।
तीन मार्गदर्शक। [प्रथम प्रकाशन: फ्रेजर पत्रिका]

करर बेल (शार्लोट ब्रोंटे) की कविताएँ

पिलाटे की पत्नी का सपना।

मैंने अपना दीपक बुझा दिया है, मैंने उसे शुरुआत में ही बुझा दिया था।
जिसके हर अंग में कंपन हुआ, मैंने उसे गिरते हुए सुना —
दुर्घटना की आवाज मेरी नींद में घुलमिल गई, मैंने उसे जाते हुए देखा।
जब मैं जागा तब भी उसकी रोशनी उस दूर की दीवार पर पड़ रही थी;
मेरे बिस्तर के ठीक सामने एक चमक दिखाई दी।

अजीब, धुंधला, और मेरे सपने के साथ भी घुलमिल रहा है।

यह डूब गया, और मैं घोर निराशा में डूब गया;
रात कितनी आगे बढ़ चुकी है और दिन कब निकलेगा?
धुंधली और उदास हवा को फूलों से रंग दें,
और इस खालीपन को गर्मजोशी और रचनात्मकता से भर दें?
काश मैं फिर से तब तक सो पाता, जब तक सब कुछ साफ और लाल न हो जाए।
पर्वतों की चोटियों पर सुबह की रोशनी फैल जाएगी!

मैं अपनी महिलाओं को फोन करता, लेकिन उनकी नींद खराब करने के लिए नहीं।
क्योंकि मेरा अपना टूटा हुआ है, इसलिए अन्याय हुआ;
उन्होंने दिनभर काम किया है, और अब उन्हें आराम की सख्त जरूरत है।
मुझे विश्वास है कि वे विस्मृति में ही परिश्रम कर रहे हैं;
मुझे धैर्य के साथ अपनी इस बेचैन प्रतीक्षा को सहन करने दो।
शुक्र है कि मेरे साथ इसके कष्टों को कोई और नहीं सहता।

फिर भी, काश! प्रकाश की एक किरण ही मन को शांत कर देती!
मेरी नसें, मेरी धड़कनें, प्रयास से कहीं अधिक;
मैं अपना पर्दा खींच लूंगा और आकाश की ओर देखूंगा:
आधी रात के सन्नाटे में ये कांपते हुए तारे फीके दिखते हैं,
जंगली, बेचैन, विचित्र, फिर भी इससे अधिक उदास नहीं हो सकता
इससे भी बढ़कर, मेरा सोफा, जिस पर एक अनाम भय मंडराता रहता है।

सब कुछ काला—एक विशाल बादल, जो पूरब से पश्चिम की ओर फैला हुआ था।
आकाश को छुपाता है, लेकिन नीचे प्रकाश है;
यरूशलेम में मशालें जल रही हैं, और डाली जा रही हैं
उस पथरीले पर्वत पर एक भयावह चमक।
मुझे वहां तैनात पुरुष और चमकते हुए भाले दिखाई दे रहे हैं;
दूर से आती एक आवाज भी मेरे कानों में गूंजती है।

कुल्हाड़ी और हथौड़े के धीमे, सधे हुए प्रहारों की गूंज सुनाई देती है।
गली-गली में, शोर नहीं, लेकिन पूरी रात
स्पष्ट रूप से सुनाई दिया — और कुछ अजीब सी प्रेत जैसी चीज़
अब ऊपर उठा हुआ है — और प्रकाश के विरुद्ध स्थिर है
उस आकाश पर प्रतिबिंबित धुंधली रोशनी वाले दीपकों में से,
यह एक स्तंभ की तरह सीधा और ऊंचा खड़ा है।

मैं सब कुछ देख रहा हूँ — मैं उस धुंधले संकेत को पहचानता हूँ —

कलवारी पर एक क्रॉस, जिसे यहूदी खड़ा करते हैं
जब रोमन जागते रहेंगे; और जब भोर की रोशनी चमकेगी
पीड़ित का न्याय करने के लिए पिलातुस उपस्थित होगा।
फैसला सुनाओ—उसे सूली पर चढ़ाने के लिए सौंप दो;
और उस क्रूस पर निष्कलंक मसीह को मरना होगा।

इसलिए, सपने सच होते हैं—क्योंकि मेरी दृष्टि इसी प्रकार चली;
मुझे यकीन है कि कोई दिव्यदर्शी मेरे साथ रहा है।
देवताओं ने मुझे अपनी योजना प्रकट करने के लिए चुना है।
किसी अन्यायपूर्ण न्यायाधीश को भाग्य के बारे में चेतावनी देने के लिए:
मैं नींद में था, मैंने सुना और देखा; जागने पर मुझे पता चला।
ईसा मसीह की आने वाली मृत्यु और पिलातुस का दुखमय जीवन।

मैं पिलातुस के लिए नहीं रोता— कौन साबित कर सकता है
उसके लिए खेद है जिसका निर्मम और क्रूर प्रभाव है
कोई प्रार्थना नरम नहीं कर सकती, कोई अपील प्रभावित नहीं कर सकती:
जो दूसरों की तरह मिट्टी को रौंदने की तरह दिलों को रौंदता है,
फिर भी लड़खड़ाते, अनिश्चित कदमों के साथ,
इससे मृतकों में प्रतिशोध की भावना जागृत हो सकती है।

उसके बगल में बैठने और उसके कारनामों को देखने के लिए मजबूर होना पड़ा;
उस चेहरे को पल-पल देखने के लिए मजबूर,
जिसकी निर्मल रेखाओं में घृणास्पद दृष्टि वाला व्यक्ति पढ़ता है
सोने, खून और सत्ता की तिहरी लालसा;
एक ऐसी आत्मा जिसे तीव्र, फिर भी दयनीय प्रेरणाएँ प्रेरित करती हैं —
रोम का गुलाम और यहूदा का अत्याचारी अभिशाप।

मैं उससे प्यार कैसे करूँ, उसके लिए शोक कैसे मनाऊँ या उस पर दया कैसे करूँ?
मैं, जिसने इतने लंबे समय तक अपने बंधे हुए हाथों को मरोड़ा है;
मैं, जिसने दु:ख के कारण आँसुओं से अपनी दृष्टि खो दी है;
क्योंकि, हालांकि मेरा जीवन उज्ज्वल और युवा था,
उसने मेरी जवानी छीन ली— उसने मेरे जीवन की सुनहरी किरण बुझा दी—
उसने मेरे दिमाग को कुचल दिया और मेरी आजादी छीन ली।

और इस घड़ी—यद्यपि मैं उसकी पत्नी हूँ—
अब उसके मन में मेरे लिए कोई स्नेह नहीं बचा है।
किसी भी अन्य पापी व्यक्ति की तुलना में;
कम, क्योंकि मैं उनके घर की निजता से वाकिफ हूं।

मैं उसे वैसे ही देखता हूं जैसा वह है—बिना किसी स्क्रीन के;
और, भगवान की कसम, मेरी आत्मा उसके चेहरे से घृणा करती है!

क्या उसने रक्त में लथपथ होकर मेरी उपस्थिति नहीं चाही?
निर्दोष, धर्मी लोगों का खून, निर्लज्जता से बहाया गया?
और क्या मैंने उसकी लाल सलामी का सामना नहीं किया?
हाँ, जब उसने पहले की तरह पूरे गलीली को डुबो दिया
घोर शोक में—गहन पीड़ा में,
वे अपनी भेंटों को ही अपने रक्तरंजित कृत्यों के साथ मिला देते हैं।

फिर वह आया—उसकी आँखों में सर्प जैसी मुस्कान थी।
उसके होठों पर कुछ झूठे, मीठे शब्द थे,
और सलेम की गलियों में वह झनझनाहट गूंज रही थी।
उसकी वधकारी, चीर-फाड़ करने वाली, अपवित्र तलवार —
और मुझे यह देखकर बहुत दुख होता है कि एक आदमी दूसरे लोगों को इतना कष्ट पहुंचा रहा है।
क्रोध से कांप उठा— मैंने इसे दिखाने से नहीं डरा।

और अब, ईर्ष्यालु यहूदी पुजारियों ने ला दिया है
यीशु— जिसे वे उपहासपूर्वक अपना राजा कहते हैं—
इस क्रूर शक्ति द्वारा अपना प्रतिशोध पूरा करवाना;
इस क्रूर सरीसृप द्वारा, निर्दोषता को डंक मारा जाता है।
काश! मैं इस नियति को टाल पाता!
और निर्दोष मुखिया को क्रूर चोट से बचाओ!

पिलेट्स के हृदय में भय का भाव सुलभ है।
अपशकुन उसकी आत्मा को झकझोर देंगे, जैसे पतझड़ का पत्ता;
क्या वह आज रात के भयावह दृश्य को सुन सकता था?
इस नेक इंसान के बंधन टूट गए, उसकी जान सुरक्षित हो गई।
जब तक वह कटु पुरोहितवाद प्रबल न हो जाए,
और उनके द्वेष के भय को भी भयभीत कर दें।

लेकिन अगर मैं सपना बताऊं तो— लेकिन मुझे थोड़ा रुकना होगा।
कैसा सपना? इससे पहले पात्र स्पष्ट थे।
मेरे दिमाग में बसा हुआ है— अचानक किसी अज्ञात कारण से।
इसने उन विचारों को धुंधला और नष्ट कर दिया है, जो अब प्रकट होते हैं।
जैसे अतीत के किसी दृश्य का धुंधला सा अवशेष हो;
भविष्य में क्या होगा, यह नहीं, बल्कि बहुत पहले से क्या हो चुका है, यह मायने रखता है।

मैंने बहुत कष्ट सहे — मैंने भविष्यवाणियां सुनीं।
पिलातुस के लिए एक भयानक विपत्ति, — लंबे समय तक चलने वाले दुख,
सुदूर, बर्बर क्षेत्रों में, जहाँ पहाड़ ठंडे हैं
बर्फ के अथाह मैदानों में एकांत का निर्माण किया,
वहाँ वह और खूंखार भेड़िये साथ-साथ शिकार की तलाश में घूमते थे।
वहाँ वह भूख से तड़पता रहा — और मुझे लगा कि वहीं उसकी मृत्यु हुई;

लेकिन भूख से नहीं, न ही बीमारी से;
मैंने उसके चारों ओर बर्फ देखी, जो खून से सनी हुई थी;
मैंने कहा कि मुझे उसके जैसे व्यक्ति के लिए आंसू नहीं आते।
और देखो! मेरे गाल नम हैं—मेरी आँखों से पानी बह रहा है;
मैं नश्वर पीड़ा और नश्वर अपराध के लिए रोता हूँ।
मैं उस निंदनीय कृत्य पर, स्वयं बहाए गए रक्त पर रोता हूँ।

मुझे इससे ज्यादा याद नहीं है, लेकिन यह विचार फैल गया था।
एक दूरस्थ दुनिया में, एक आने वाले युग में —
और फिर भी यीशु का प्रकाशित नाम चमकता रहा
अंधकार के बीच एक प्रकाश, एक स्पष्टता —
और फिर भी मुझे वह चिन्ह दिखाई दिया, जो अब मुझे दिखाई दे रहा है।
कलवरी की उस दूर की चोटी पर वह क्रॉस।

यह इब्रानी मसीह कौन है?- मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता।
उनकी वंशावली— सिद्धांत— मिशन; फिर भी कितना स्पष्ट है
क्या उनके कार्यों में ईश्वरीय अच्छाई झलकती है?
उनका जीवन पथ कितना सीधा और बेदाग है!
उस पर पड़ने वाली ईश्वरीय किरण,
मेरी नजरों में यह ओलंपियन गौरव को फीका कर देता है।

दुनिया आगे बढ़ती है; यूनानी या रोमन रीति
जिज्ञासु मन के लिए केवल ठहरना पर्याप्त नहीं है;
खोजी आत्मा को शुद्ध प्रकाश की आवश्यकता है।
इसे आगे बढ़ने और ऊपर की ओर बढ़ने के मार्ग पर मार्गदर्शन करने के लिए;
मूर्तियों से लज्जित होकर, धर्म बदल जाता है
जहां अदृश्य यहोवा की वेदी जल रही है।

हमारा विश्वास सड़ चुका है, हमारे सभी रीति-रिवाज दूषित हो चुके हैं।
हमारे मंदिर अपवित्र हो गए हैं, और मुझे लगता है कि इस आदमी की वजह से ऐसा हुआ है।
अपने नए अध्यादेश के साथ, जो इतना बुद्धिमान और सौम्य है,

जैसा कि वह कहता है, भूसे को हवा देने के लिए आ गया है।
और गेहूँ से अलग करो; परन्तु क्या उसका विश्वास
क्या कल की मृत्यु के भय से बच पाएंगे?

* * * * * * *

मुझे अधिक दृढ़ विश्वास और उच्च आशा का अनुभव होता है।
मेरी आत्मा में उदय हो—यह सूर्योदय के साथ शुरू होता है;
देखो! मंदिर की छत पर— मोरिया की ढलान पर
अंततः वह स्पष्ट और लाल किरण प्रकट होती है।
जिसकी मुझे रात में घर में बंद रहने पर बहुत कामना होती थी;
ओह, खुलते आसमान, मैं जयजयकार करता हूँ, मैं प्रकाश की वर्षा को आशीर्वाद देता हूँ!

हटो, बादल और छायाएँ! शानदार सूर्य प्रकट हो!
मानसिक अंधकार से मुक्ति पाओ! ऊपर से अंतर्दृष्टि प्राप्त करो!
आकाश में गोधूलि बेला और भोर अभी भी स्पष्ट दिन के उजाले से संघर्ष कर रहे हैं
तड़पती आत्मा अभी भी अनिश्चित आहें भर रही है।
ओह! उस सत्य को देखना— उस दिव्य सूर्य को देखना,
मेरा हृदय कितना व्याकुल है, मेरी आत्मा कितनी तड़प रही है!

आज के दिन, समय एक महान जन्म के लिए संघर्ष कर रहा है;
आज सत्य स्वर्ग से उतरकर पृथ्वी पर आया है;
रात होने से पहले मुझे और भी निश्चित रूप से पता चल जाएगा
किस मार्गदर्शक का अनुसरण करना है, किस मार्ग पर चलना है;
मैं आशा से प्रतीक्षा करता हूँ— मैं गंभीर भय से प्रतीक्षा करता हूँ।
ईश्वर की वाणी— एकमात्र— सच्चा ईश्वर— जिसे सुनना चाहिए।

स्मृति चिन्ह।

लंबे समय से बंद पड़े दराजों और अलमारियों को व्यवस्थित करना

उन अलमारियों की, जो वर्षों से बंद पड़ी हैं,
हमने अपने लिए कितना अजीब काम तय कर लिया है!
यह एकांत कमरा कितना शांत प्रतीत होता है!
प्राचीन खजानों का यह विशाल भंडार कितना विचित्र है!
बीते समय के सुख-दुखों की यादें;
ये ग्रंथ, कीमती पत्थरों से जड़े हुए,
छपाई पूरी तरह से मिट चुकी है, सोने की परत उतर चुकी है;

भारतीय पेड़ों की पत्तियों के ये पंखे —
भारतीय समुद्रों से प्राप्त ये गहरे लाल रंग के गोले —
ये छोटे-छोटे चित्र, छल्लों में जड़े हुए —
एक समय, निःसंदेह, इन्हें बहुमूल्य वस्तुएँ माना जाता था;
प्रेम और आस्था द्वारा प्रदत्त स्मृति चिन्ह,
और इसे पहनने वाले की मृत्यु तक पहना जाता था।
अब इसे कैमियो, चीनी मिट्टी के बर्तनों और सीपियों के साथ रखा गया है।
इस पुराने कोठरी के धूल भरे कमरों में।

मुझे दस लंबे वर्षों तक शायद ही कभी ऐसा लगा हो,
इन प्राचीन अवशेषों को किसी हाथ ने छुआ है;
और, प्रत्येक पर परत चढ़ाने पर, धीरे-धीरे निर्मित, ऐसा प्रतीत होता है
हरी और प्राचीन फफूंदी का बढ़ना।

इस घर में हर जगह काई जम गई है;
सब कुछ अप्रयुक्त, धुंधला और नम है;
कमरों में न तो रोशनी है, न ही गर्मी —
वर्षों से अग्नि और दीपक से वंचित।

सूर्य, कभी-कभी गर्मियों में, प्रवेश करता है
पुनर्जीवित करने वाली किरण से सजी खिड़कियाँ;
लेकिन कई सर्दियों की लंबी बारिश
दीवारों को ही सड़ने दो।

और चारों ओर बेलें लिपटी हुई हैं।
चिमनी, जाली, गैबल, धूसर रंग;
मुश्किल से एक छोटा सा लाल गुलाब खिल रहा था
हरी काई के बीच से रास्ता बना सकता है।

निडर होकर, कौआ और सारस घोंसला बनाते हैं।

जहां ऊँचा बुर्ज ऊँचाई तक उठता है,
और केवल हवाएँ ही सरसराहट करने के लिए पास आती हैं
घनी पत्तियों पर जहां उनके पालने रखे हैं,

मैं कभी-कभी सोचता हूँ, जब देर हो जाती है तब भी
मैं अनिच्छा से सीढ़ियाँ चढ़ता हूँ,
कोई ऐसी आकृति जो स्वर्ग में अच्छी होनी चाहिए,
या फिर कहीं और बीमार लोग मुझे छोड़कर चले जाएंगे।

मुझे उनके चेहरे देखने से भी डर लगता है।
तीस साल पहले परिचित था,
यहां तक कि पुरानी परिचित जगहों में भी
जो अब बहुत ठंडे और उदास दिखते हैं,

मैं खिड़की बंद करने आया हूँ, इधर।
गोधूलि बेला में, जब सूरज डूब चुका था,
और मुझे डर है कि मेरी आत्मा ही मुरझा जाएगी।
कहीं कुछ अस्पष्ट रूप से प्रदर्शित न हो जाए,

दबी हुई आकृति से बहुत अधिक समानता है,
उस स्त्री की जो कभी यहाँ की मालकिन हुआ करती थी;
कहीं ऐसा न हो कि संशयपूर्ण छाया, या कांपती हुई चांदनी,
शायद उसका वो रूप ले ले, जो कभी इतना प्रिय था।

यह कमरा उनका था; उनके समय में
मुझे वह कमरा सुखद लगा।
तब शोक या अपराध का कोई साया नहीं रहेगा।
उस पर घोर अंधकार छा गया था;

मैंने मृत्यु की छवि को बिछाते हुए नहीं देखा था।
चादर और कफ़न में लिपटा हुआ, उस दूर वाले पलंग पर।
शादी से पहले उन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ था —
अपनी जवानी में धन्य, अपने गुणों में धन्य;
उसका मन शांत था, मानो उसे धूप का सुकून मिल रहा हो।
उसकी आँखों में खुशी से भी अधिक स्पष्टता झलक रही थी।

और जब वह भव्य वस्त्रों से सजी हो,
उसके माथे के आसपास हल्के, चमकदार बाल थे।

वह दूर बैठी थी, एक तरह का दिन
जो अब इतना अंधकारमय लग रहा है, उसे रोशन कर दिया।
ये विशाल ओक की दीवारें तब भी भयावह थीं;
वह पुरानी नक्काशीदार कुर्सी उस समय पुरातन वस्तु थी;
लेकिन चारों ओर धुंध और अंधकार छा गया था।
यह उसकी ताज़गी भरी चंचलता के पूरक के रूप में काम करता था;
उसकी गर्दन और भुजाएँ, अत्यंत सुंदर रंग की थीं।
निर्मल, मुस्कुराती हुई रोशनी से भरी आंखें;
उसके मुलायम, घुंघराले और लहराते बाल,
रत्न और वस्त्र, इंद्रधनुष की तरह चमकीले।

उस दूर गहरे कोने में लेटा हुआ,
अक्सर शाम को वह लेट जाती थी
सूर्य को देखते हुए, ऐसा लग रहा था मानो वह आशीर्वाद दे रही हो।
प्रसन्न दृष्टि से भव्य आकाश को निहारते हुए।
उसे ऐसे दृश्य बहुत पसंद थे, और जब वह उन्हें निहार रही थी,
उसके चेहरे से उसके मन की मनोदशा स्पष्ट झलक रही थी;
सुंदरता या भव्यता को कभी भी ऊपर उठाया गया
उनमें गहरी कृतज्ञता का भाव है।
लेकिन सभी प्यारी चीजों में से, उसे सबसे ज्यादा प्यार था
गर्मी की रात में, बादलों से रहित चंद्रमा।
मैंने अक्सर अधीरता का प्रदर्शन किया है।
यह देखने के लिए कि उसकी खुशी कब तक बनी रहेगी
कल्पना में ही कोई विषय मिल जाएगा,
लॉन में, या जहाँ पेड़
चमक को रुक-रुक कर आने दो,
जैसे ही उनकी शाखाएँ क्षण भर के लिए अलग हुईं,
उस कोमल, सुस्त, ग्रीष्म ऋतु की हवा के लिए।
अफसोस! कि उसने कभी फेंका ही न होता
उन पवित्र, हालांकि एकांत भरे सुखों को दूर ले जाओ —
झूठी और कपटी बातों से धोखा खाकर,
उसने अपना हाथ दिया, फिर उसे अन्याय का सामना करना पड़ा;
दमन और दुर्व्यवहार का शिकार होकर वह कम उम्र में ही दुनिया से विलीन हो गई।
और धीरे-धीरे शरीर के क्षय से शोक में डूबकर उसकी मृत्यु हो गई।

उस ताबूत को खोलो—देखो कितनी रोशनी है!
वे रत्न दृष्टि के समक्ष चमक उठते हैं;
प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने अपनी चमक जरा भी नहीं खोई है।
अपनी शादी के दिन से ही उनमें चमक थी।

लेकिन देखो— उस मोती की माला पर—
समय के धुंधले दाग कितने अस्पष्ट हैं!
मैंने उसकी बेटी को इसे पहने हुए देखा है:
क्योंकि उसकी मृत्यु से पहले एक बच्चे का जन्म हुआ था;
एक बच्चा जिसे उसकी माँ ने कभी नहीं जाना,
वह अकेला और लगभग मित्रहीन होता चला गया;
क्योंकि, जब भी उसके कदम निकट आते थे,
पिता की आंखें दूसरी ओर झुकी हुई थीं;
और फिर, एक अपवित्र और जंगली जीवन
उसने उसे अपने बच्चे से अजनबी बना दिया:
बुराई में डूबा हुआ, उसे जरा भी परवाह नहीं थी।
उसने क्या किया, या उसका प्रदर्शन कैसा रहा, इस पर।
जिस प्यार से उसे वंचित रखा गया, उसने कभी उसकी तलाश नहीं की थी।
वह उपेक्षित पली-बढ़ी—उसे सिखाया नहीं गया;
उनके लिए विचारों का आंतरिक जीवन ही सर्वोपरि महत्व रखता था।
जल्द ही सब कुछ खुल गया और बिछा दिया गया।
मुझे नहीं पता कि उसकी मित्रहीनता
कभी-कभी वह अपनी आत्मा पर दबाव डालती थी,
लेकिन उसने कभी शिकायत नहीं की।
किताबों की अलमारियां उसका सबसे प्यारा खजाना थीं।
वह शायद ही कभी नापने का समय निकाल पाती थी।
वह अकेले पढ़ सकती थी।
और उसे भी गोधूलि बेला का जंगल बहुत पसंद था।
और अक्सर, अपनी माँ के मिजाज के अनुसार,
वह उस दूर पहाड़ी की ओर तेजी से भागता था।
उसकी तरह, डूबते सूरज को देखना,
या फिर सितारों को एक-एक करके जन्म लेते हुए देखें,
अंधकारमय आकाश से।
और वह रात होने तक उस पहाड़ी को नहीं छोड़ेगी।
प्रकाश से ध्रुव से ध्रुव तक कांप उठा;
फिर भी, घर लौटते समय,
उसके भटकते कदमों में बहुत देर लगी।
घने जंगल की छाया से बाहर निकलने के लिए,
जिसके बीच से उसका रहस्यमय रास्ता गुजरता था।
आप पूछते हैं कि क्या उनमें सुंदरता की गरिमा थी?
मुझे नहीं पता— लेकिन एक अधिक नेक चेहरा
मेरी आँखों ने इसे शायद ही कभी देखा हो;
एक तीव्र और उत्कृष्ट बुद्धि,
और, इससे भी बेहतर, सबसे सच्चा अर्थ

उसके बोलने के हावभाव में यह झलक रहा था।
लेकिन उसमें न तो कोई चमक थी और न ही कोई दमक।
केवल कुछ क्षणों में ही, रुक-रुक कर चमकता था
उसकी आँखों में एक जोश था,
इससे उसके गालों पर लाली सी आ गई।
लाल आसमान की हल्की सी लाली जैसी गर्माहट
और ऊर्जा से भरपूर।
उसकी बोली भी आम बोलचाल की भाषा नहीं थी।
चमकने की कोई इच्छा नहीं, न ही सिखाने का कोई लक्ष्य।
उनके शब्दों में यह प्रदर्शित हुआ:
उसने अब भी शांत भाव से शुरुआत की।
लेकिन अक्सर वाक्पटुता की शक्ति
सहायता के लिए उसके होठों तक आया;
भाषा और आवाज की अवचेतना में परिवर्तन हुआ।
और विचार, दूसरे शब्दों में, व्यवस्थित किए गए,
उसकी जोशीली आत्मा ने ऊर्जा का संचार किया
जिन्होंने सुना उनके दिलों में,
और क्षणिक शक्ति और उत्साह जागृत हुआ,
मन में अप्रयुक्त शक्ति के लिए,
फिर भी, खुशमिजाज भीड़ में या उत्सव की चकाचौंध में,
उसका स्वभाव गंभीर और एकांतप्रिय था;
ऐसा बहुत कम होता था, सिवाय मेरे अकेले होने के।
भावनाओं की वह अग्नि स्वतंत्र रूप से प्रज्वलित हुई;
उसे विस्मय और आश्चर्य की दृष्टि पसंद नहीं थी।
और न ही अतिरंजित प्रशंसा,
और अगर बहुत उत्सुक हों तो शायद ध्यान भी न दें।
जिज्ञासु निगाहों ने उसके चेहरे के भावों को गौर से देखा।
प्रकृति का अपना हरा-भरा विस्तार प्रकट हुआ
वह दुनिया और उसके सुखों को महत्व दे सकती थी;
खुली पहाड़ी ढलान पर, धूप से भरे खेत में,
जंगलों के किनारे छिपी हुई शांत जगहों में,
उसके चुने हुए आनंद बेतहाशा और नए सिरे से पनपने लगे।
फिर भी प्रकृति की भावनाएँ गहराई से निहित हैं
उस सुगठित और युवा शरीर में;
उसके हृदय में बसी और दिन से छिपी हुई,
वे अदृश्य रूप से खामोश लौ से जल उठे।
युवावस्था में मानसिक प्रकाश की पहली खोज में,
वह केवल चिंतन और सीखने के लिए जीती थी।
लेकिन जल्द ही उसका परिपक्व दिमाग

और भी कठिन कार्य के लिए वह हांफ रहा था और तरस रहा था;
और नियति ने उससे भी कठिन कार्य सौंपा,
ऐसा कार्य जिसे करने के लिए एक विशालकाय व्यक्ति की ताकत भी संघर्ष कर सकती है;
लंबे समय तक कष्ट सहना और कभी शिकायत न करना,
उन्माद में भी शांत रहो, दर्द में भी मुस्कुराओ।

भावनाओं के गुप्त युद्ध से पीला पड़ा हुआ,
साहस से भरपूर, मौन, फिर भी उच्च;
जिन घावों से खून बह रहा था, वे यह दर्शा रहे थे कि...
केवल गाल और आंख में बदलाव से;

वह चुपचाप सहन करती रही — लेकिन जब जुनून उमड़ा
उसकी आत्मा में निरंतर झाग उमड़ रहा था,
अंततः तूफान तबाही लेकर आया।
और उसे उसके घर से निर्वासित कर दिया।

और चुपचाप ही, उसने सीधे इकट्ठा किया
उसकी आत्मा में बची हुई शक्ति के अवशेष;
हालांकि वह कमजोर शरीर कांप रहा था,
अजेय मन, भयभीत होने से कतराता है, तिरस्कार करता है।

उसने समुद्र पार किया — अब वह अकेली भटक रही है
सीन, राइन या अर्नो नदियों के प्रवाह द्वारा;
मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या दूरी
उसके दुख में राहत या सांत्वना।

मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या अब से कभी भी,
ये आंखें फिर से उसकी आंखों में पढ़ लेंगी,
प्रेम का वह प्रकाश जो कभी मंद नहीं हुआ,
हालांकि लंबे समय से गुप्त पीड़ा से धुंधला पड़ा हुआ था।

वह लौटेगी, लेकिन ठंडी और बदली हुई।
उन सभी लोगों की तरह जिनकी आशाएं बहुत जल्द टूट जाती हैं;
उन सभी की तरह जिन पर हमला किया गया है, बेघर,
वे कड़वी चोटें जो दिल को झुलसा देती हैं।

अब मैं उसे लेटे हुए नहीं देख पाऊँगी।
तकिए पर शांत, जिसे मैंने सहलाया है;

आहें भरते-भरते थकी हुई वह भावना अब और नहीं रही।
शैशवावस्था के शेष समय के बारे में पता चल जाएगा।

यदि वह अब भी विद्या के मार्ग का अनुसरण करती है,
यह थकी हुई और उत्तेजित इच्छाशक्ति के साथ होगा;
वह केवल परिश्रम करेगी, उस दर्द भरे खोखलेपन में।
जीवन के उस आनंदहीन खालीपन को भरना है।

और ओह! अक्सर, पूरी तरह से थका हुआ और उदास,
उसका हाथ रुक जाएगा, उसका सिर झुक जाएगा;
वह श्रम बहुत कठिन और नीरस लगता है।
जिस पर आशा की कोई किरण न चमक सके।

इस प्रकार समय और दु:ख की फीकी छाया
वह अपने कोमल, काले बालों को भूरे रंग से रंग देगी;
फिर वो दिन आता है जिसका कोई अगला दिन नहीं होता।
और मृत्यु लंबे समय तक रहने वाली निराशा का स्थान ले लेती है।

ऐसा अनुभव, बुद्धिमत्ता और वृहद ज्ञान का प्रमाण है;
मुझे यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, मैं इसे अच्छी तरह जानता हूं।
जैसे कोई व्यक्ति कहानी पढ़ने के बाद,
उसमें घटी हर घटना कुछ न कुछ बयां कर सकती है।

उस अंगूठी को मत छुओ; वह तो उसके पिता की थी।
उस त्यागे हुए बच्चे का;
और उनके अवशेष किसी भी तरह से प्रेरणा नहीं दे सकते।
पाप से दूषित स्मृतियों को सहेज कर रखो।

मैं, जो उनकी पत्नी के मृत्युशय्या के पास बैठा था,
मैं, जिसे उसकी बेटी प्यार करती थी,
दोषी मृतकों को लगभग कोस सकते थे।
निर्दोषों को ही विपत्तियों का सामना करना पड़ा।

और स्वर्ग ने शाप दिया — उन्होंने उसे पड़ा हुआ पाया,
जब क्रोध के कारण अपराध व्यापक रूप से प्रचलित थे,
ठंड—आत्मघाती ब्लेड के साथ
उसने हताशा में अपनी मुट्ठी कस ली।

वह लंबे समय से वीरान पड़ी झोपड़ी के पास ही था,
जो लकड़ी में सड़ जाता है,
स्वयं द्वारा चलाई गई मृत्यु की कुल्हाड़ी ने उसकी जड़ पर प्रहार किया।
और उसने अपने निराशा भरे दिनों को समाप्त कर दिया।

आप उस जगह को जानते हैं, जहाँ तीन काले पेड़ हैं,
उनकी शाखाएँ ऊपर उठकर गिर गईं,
और लगातार विलाप करते हुए, जैसे समुद्र की लहरें,
फिर भी, हर गुजरती हवा में, ऐसा प्रतीत होता है,
रक्तपात का कर्म बताने के लिए।

उन्होंने उसे पागल करार दिया और उसकी हड्डियाँ दफना दीं।
जहां अधिक पवित्र राख पड़ी हो;
लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि उसकी आत्मा कराह रही है।
नरक की अनंतता में।

लेकिन, देखो! रात धरती पर छा रही है,
यह हमारे विचारों को निराशा से भर देता है;
आइए, हम सब मिलकर हर्षोल्लास को एकजुट करने का प्रयास करें।
जहां एक निर्मल और शांत चूल्हा चमकता है
किसी अधिक खुशनुमा कमरे में।

पत्नी की वसीयत।

शांत बैठो— एक शब्द— एक सांस टूट सकती है
(जैसे हल्की हवाएं सोई हुई झील को हिला देती हैं)
वह निर्मल शांति जो मेरे दुखों को शांत करती है —
मधुर, गहरा, पूर्ण विश्राम।
मुझे मत छोड़ो! हमेशा के लिए मेरे साथ रहो।
इसलिए, यह मेरे लिए जीवन से भी अधिक महत्वपूर्ण है!

हाँ, मुझे तुम्हारे पास घुटने टेकने दो।
मुझे अपना हाथ दो, ताकि मैं महसूस कर सकूँ
वह सच्चा मित्र— जिसने परीक्षा पास की—जो बहुत प्रिय था,
मेरे दिल का चुना हुआ व्यक्ति सचमुच निकट है;
और मेरी जाँच मत करो—यह दिव्य क्षण है।
यह मेरा है — पूरी तरह से मेरा है।

तुम अपने ही चूल्हे के पास बैठे हो।
लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के बाद—दूर-दूर तक घूमने के बाद;
तुम्हारी अपनी पत्नी तुम्हारी आँखों में पढ़ रही है
एक ऐसा वादा जो तूफान रहित आकाश से परे है;
आस्था और सच्चे प्रेम के लिए प्रकाश की किरणें
जो उसकी निगाहों के प्रति प्रतिक्रिया करते हुए चमकते हैं।

हाँ, वो एक आंसू तो गिर ही सकता है;
मेरी आंखें दस हजार बातें याद कर सकती हैं,
जो उनकी पलकों से बेहद तेजी से निकले,
दुःख के उन पलों में, जो अभी मुश्किल से ही बीते हैं;
तुम मुझसे प्रेम की बातें कर सकते हो।
क्योंकि, ओह! मैं सचमुच तुमसे प्यार करता हूँ!

फिर भी मुस्कुराइए—क्योंकि हम अभी खुश हैं।
तो फिर तुम्हारे माथे पर वह उदासी कहाँ से आई?
तुम क्या कहते हो? हम एक बार फिर विचार करते हैं,
जल्द ही, तुम मुख्य धारा से अलग हो जाओगे!
मुझे यह पता नहीं था— मैंने इससे आगे कुछ नहीं सोचा।
तुम्हारा कदम ब्रिटेन के तट से भटक जाएगा।

"कर्तव्य ही आदेश देता है!" यह सच है—यह न्यायसंगत है;
मैं तुम्हारे एक-एक शब्द पर पूर्ण विश्वास करता हूँ।
न तो निवेदन से, न ही हल्की सी आह से,
क्या मैं तुम्हारे उद्देश्य को बदलने का प्रयास कर सकता हूँ?
लेकिन, विलियम, मेरी गंभीर प्रतिज्ञा सुनो—
सुनो और पुष्टि करो! — मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।

"दूरी और पीड़ा," क्या तुमने यही कहा था?
"रात में खतरा, और दिन में परिश्रम?"
ओह, ये शब्द व्यर्थ और निरर्थक हैं;

मेरी बात सुनो! मैं तुम्हारे साथ समुद्र पार करूँगा।
तुम्हें ऐसे जोखिमों का सामना करना होगा और उन्हें सहने का साहस दिखाना होगा।
मैं— तुम्हारी सच्ची पत्नी— उचित रूप से हिस्सा लूंगी।

घर पर निष्क्रिय रहकर मैं उदास नहीं होऊंगी;
तुम्हारे परिश्रम, तुम्हारे खतरे मेरे होंगे;
इसे स्वीकार करें — और इसके बाद भुगतान प्राप्त करें
एक दयालु हृदय की समर्पित सहायता से:
यह स्वीकार किया जाता है— उस कोमल चुंबन के साथ,
मेरी आत्मा में असीम आनंद का संचार हुआ।

धन्यवाद, विलियम, धन्यवाद! तुम्हारे प्रेम में आनंद है।
शुद्ध, मिश्रित धातुओं से रहित;
यह कोई झूठी और अंधी भावना नहीं है।
मेरे मन को प्रेरित करता है, बांधता है, समाहित करता है;
मुझे लगता है कि तुम इसके योग्य हो।
मेरी संपूर्ण ऊर्जा के साथ प्यार किया।

आज की शाम मधुरता से बीतेगी।
हमारी निर्मल अग्नि की आनंदमयी चमक से प्रकाशित;
और बिछड़ने का भय, जो शांति को कड़वा कर देता है,
हमें चेतावनी दी गई है कि हम निकट न आएं;
क्योंकि भाग्य मेरी आत्मा के आदेश को स्वीकार करता है,
सुख हो या दुख—मैं तुम्हारे साथ हूँ!
जंगल।

लेकिन दो मील और, फिर हम आराम करेंगे!
खैर, अभी भी दिन का एक घंटा बाकी है।
और पश्चिम की चमक लंबे समय तक बनी रहती है
यह हमें हमारे कुटिल मार्ग पर प्रकाश डालेगा;
तो थोड़ी देर यहीं इस जंगल में बैठो।
तो एकांत पूर्ण है,
हम संभवतः देरी कर सकते हैं।

ये विशाल जड़ें बैठने की जगह प्रदान करती हैं,
जो थके-हारे यात्रियों के लिए बनाया गया प्रतीत होता है।
वहाँ आराम करो। हवा नरम और मीठी है।
इस एकांत वन क्षेत्र में,

और चारों ओर फूलों की खुशबू फैली हुई है।
शाम की ओस जमीन से निकलती है;
वे कितनी सुकून से फैलते हैं!

हां; मैं थका हुआ था, लेकिन मन से नहीं;
नहीं— वह तो मीठी सामग्री से भरपूर होने से भी बेहतर है।
फिलहाल मेरे पास मेरा स्वाभाविक हिस्सा है
रोमांच और कर्म का मिश्रण;
तुम्हारे साथ इस विशाल संसार में विलीन हो जाओ,
और मेरी सारी ऊर्जा एक बार बर्बाद हो गई
महत्वपूर्ण उद्देश्य की ओर उन्मुख।

फिर भी— तुम कहते हो, हमारे आसपास जासूस घूम रहे हैं,
हमारे उद्देश्यों को षड्यंत्र कहा जाता है?
शायद, अब हमारा अंग्रेजी घर नहीं रहा।
क्या यह हमारे लिए एक आश्रय स्थल हो सकता है?
हमारे आपसी रक्त को खतरा है
किसी सुनसान जंगल में शायद लालिमा छा जाए
विश्वासघात की छुरी?

तुम कहते हो कि जहाँ हम हर रात ठहरते हैं,
प्रत्येक एकाकी खेत में, या उससे भी अधिक एकाकी हॉल में
नॉर्मन पीयर के बारे में — सुबह की रोशनी से पहले
संदेह का निवारण भी उचित रूप से हो जाना चाहिए।
जैसे ही दिन निकलता है— ऐसी सतर्कता
फ्रांस की अध्यक्षता करता है और उस पर नजर रखता है।
क्या सभी नियमों में इतनी ही सख्ती लागू होती है?

मुझे डर नहीं है, विलियम; क्या तुम्हें डर है?
ताकि चाकू दो भागों में न बँट जाए,
यह शायद हमेशा आसपास ही मंडराता रहेगा:
मैं तुम्हारे साथ रहकर कांप नहीं सकता था।
और तीव्र प्रेम— तुम्हारे लिए मेरे प्रेम के समान—
क्या ढाल विश्वासघात के विरुद्ध मजबूत है?
और वह अपने वार को दूसरी तरफ मोड़ देता है।

मैंने यह निश्चय कर लिया है कि तुम सीखोगे
मुझे अपनी शक्ति पर उतना ही भरोसा है जितना मुझे तुम्हारी शक्ति पर है;

मैंने यह निश्चय कर लिया है कि हमारी आत्माएं जल उठेंगी।
समान, स्थिर और मिश्रित चमक के साथ;
मैदान का कुछ हिस्सा अब जीत लिया गया है।
हमारे जीवन एक ही धारा में बहते हैं,
ठीक इसी तरह;

और जबकि किसी भयंकर तूफान की आवाज सुनाई नहीं दे रही है,
तुम इस बात से संतुष्ट प्रतीत होते हो।
लेकिन जल्द ही एक चेतावनी भरा शब्द आता है
खतरे से सावधान रहो—अपनी चिंतित भौंहों को सीधा करो
एक शोकपूर्ण छाया मुझ पर छा जाती है,
मुझे संदेह है कि मेरी शक्तियां बनी हैं या नहीं
दुःख की बाढ़ को पार करने के लिए।

तब मेरी आत्मा आनंदित हो उठती है,
और वह बड़ी उत्सुकता से हवा को पीता है।
स्वतंत्रता का—जहां अंततः यह निवास करती है,
चार्टर्ड, साझा करने का एक सामान्य कार्य
तुम्हारे साथ, और फिर यह सतर्कता जगाता है,
और यह जानने के लिए कि किस चीज ने नुकसान पहुंचाया, पैंट पहनना जरूरी था।
यह तुमसे इसकी देखभाल की अपेक्षा करता है।

याद रखना, मैंने गहरे सागर को पार कर लिया है।
और तुम्हारे साथ डेक पर खड़े होकर तुम्हें निहारते रहे
खतरनाक रूप से उठते हुए लहरों पर,
चारों ओर घना कोहरा छाया हुआ था,
धुंधलेपन से समुद्र को आकाश समझने की प्रवृत्ति,
और पायलट की नज़र तो और भी हैरान करने वाली थी।
भूलभुलैया को पार करने का इरादा —

ब्रिटनी के खतरनाक तट पर स्थित चट्टानों में से,
और अपने बैंड को सही दिशा देने का रास्ता खोजें।
उस एक अस्पष्ट बिंदु के लिए, जो खो गया,
हमें पीड़ितों की तरह समुद्र तट पर फेंक दिया;
अन्यत्र, हर जगह गैलिक तलवार चमक रही थी।
और न ही कोई नाव खड़ी की जा सकती थी।
संरक्षित भूमि के साथ-साथ।

मुझे तब डर नहीं था - मुझे अब भी डर नहीं है;
प्रत्येक रोमांचक दृश्य की रुचि
एक नई भावना जागृत होती है, एक सुखद चमक।
प्रत्येक नस और धड़कती हुई शिरा में;
इसी प्रकार गंदे जलमार्ग वाले समुद्री सागर पर,
या फिर नॉर्मंडी के शांत जंगलों में,
मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरा पुनर्जन्म हुआ हो।

उस तूफानी सुबह बारिश बरस रही थी।
जब अंततः खाड़ी में लंगर डाला गया,
हमारा दल, सब थके हुए और निराश
किनारे पर, लहरों से घिसे हुए नाविकों की तरह, उन्होंने जाल फेंका —
आश्रय देने वाली छत की तलाश व्यर्थ रही।
और सीमित मात्रा में भोजन भी मुश्किल से ही प्राप्त हो पाता था।
सुबह का उपवास तोड़ने के लिए।

तूने अपनी रोटी का टुकड़ा मेरे साथ बाँटा।
तूने अपना लबादा मेरे चारों ओर लपेट दिया;
और, तुम्हारे पास चुपचाप बैठे हुए,
मैंने असीम शांति से रोटी खाई:
तुम्हारे हाथों से कृपापूर्वक दिया गया, वह मीठा था
महंगे भोजन या शाही दावत के रूप में
सोने की शाही थाली पर।

तेज हवा से ओले मेरे चेहरे पर पड़े।
और, उग्र रूप से उठती हुई, तेज़ हवा
उन गरजती लहरों पर तेजी से गाड़ी चलाते हुए,
हमारी टीम बहुत देर से पीछे छूट गई थी;
लेकिन, बर्फ़ीली बारिश और तूफान के बावजूद,
तुम्हारे इतने करीब होने पर मेरा दिल गर्मजोशी से धड़कता है।
और मेरा मन शांति से सो गया।

तो अब— न तो पैरों में दर्द है और न ही दमन का शिकार
अगस्त के इस पूरे दिन पैदल चलने के साथ,
इस थोड़े से विश्राम में मुझे स्वर्ग का अनुभव होता है।
रास्ते के किनारे बना यह खानाबदोशों का पड़ाव।
इंग्लैंड के जंगली फूल देखने में सुंदर होते हैं।
इंग्लैंड की गर्मियों की ओस मरहम की तरह है।

उसकी सूर्यास्त की किरण सोने जैसी थी।

लेकिन यहाँ उगने वाले सफेद वायलेट,
वे अब तक मैंने जितने भी देखे हैं, उनसे कहीं अधिक मधुर हैं।
और ओस कभी इतनी शुद्ध और साफ नहीं हुई थी।
हरे-भरे वन काई पर आसवन करें,
अब, गर्मी की वजह से,
हमारी ठंडी और ताजगी भरी शरणस्थली को सुगंधित करता है —
इनके बीच में सुगंधित नींबू रखे हैं।

वह सूर्यास्त! पेड़ों की डालियों के नीचे देखो!
झाड़ियों के उस पार— पहाड़ियों के उस पार;
यह कितनी कोमल, फिर भी गहरी और गर्म चमक बिखेरती है!
और स्वर्ग प्रचुरता से भर जाता है;
उन रंगों के साथ जिनमें अभी भी ओपल का रंग बरकरार है,
कैद की गई आग की उसकी चमक मिश्रित है,
जहां नीले आकाश में ज्वालाएं रोमांच पैदा करती हैं!

अब हम विदा लेते हैं—क्योंकि यह समय शीघ्र ही बीत जाएगा।
पतन की वह गंभीर भव्यता,
और छाया गहरी होनी चाहिए
आज रात केवल तारे ही चमकेंगे;
कोई चाँद पीला होकर देखने के लिए नियत नहीं है
उस दिन फीनिक्स में लगी भीषण आग के दौरान,
आग में एक दिन सब कुछ बर्बाद हो गया!

वहाँ—हम फिर से हाथ में हाथ डालकर आगे बढ़ते हैं
इस विविध वनक्षेत्र की भूलभुलैया,
और जल्द ही, एक सुसंस्कृत मैदान के बीच,
उपजाऊ एकांत से घिरा हुआ,
हम अपने विश्राम स्थल का पता लगाएंगे,
एक ऊंचे ऊंचे छत वाले पेड़ से चिह्नित।
एक फार्महाउस के ऊपर असभ्य वातावरण।

देहाती भोजन से जल्द ही तरोताजा होकर,
हम स्वप्नहीन आराम का एक पलंग खोजेंगे;
साहस तुम्हारे हृदय को भय से बचाएगा।
और प्रेम मुझे परम शांति प्रदान करे:

कल और भी खतरनाक परिश्रम लेकर आएगा।
और इसके संघर्ष और उथल-पुथल के माध्यम से
हम ऐसा नहीं करेंगे, जैसा ईश्वर चाहेगा।

[पिछली रचना निस्संदेह दृश्यों को संदर्भित करती है]
वाणिज्य दूतावास के अंतिम वर्ष के दौरान फ्रांस में कार्य किया।

फ्रांसेस।

वह सपनों के डर से सो नहीं पाएगी।
लेकिन, उठकर, वह अपने बेचैन बिस्तर से उठ जाती है,
और ऐसे रास्ते जहाँ कुछ धुंधली किरणें हैं
हॉल में चांदनी की किरणें पड़ रही हैं।

दुःख की प्रेरणा के आगे आज्ञाकारी,
उसके कदम, कभी तेज, कभी धीमे,
गति बदलते हुए राहत की तलाश करें
दुःख के यूमेनिडेस से।

वह बीच-बीच में अपने हाथ मलती रहती थी—
लेकिन जब तक प्रेत की तरह मंद और मौन रहे —
वह धुंधली दीवारों के सहारे सरकती हुई आगे बढ़ती है।
काले ओक की छत की कड़ियों के नीचे का माहौल भयावह था।

जालीदार मीनार की घुटन भरी हवा
एक ऐसे दिल को दबा देता है जो मुश्किल से धड़क पाता है।
और यद्यपि इतना देर रात और अकेला समय बीत चुका है,
उसके भटकते, लड़खड़ाते कदम आगे बढ़ते हैं;

और फुटपाथ पर पहले ही फैल गया
हवेली का लंबा अग्रभाग धूसर रंग का है,
उसके कदमों के निशान रात की जमी हुई बर्फ पर अंकित हो जाते हैं।

जो घास और ग्रेनाइट पर फीके पड़ गए थे।

वह धुंध भरे चाँद के बीच ज्यादा देर तक नहीं रुकी।
और टिमटिमाते तारे उसकी आँखों पर चमक रहे थे।
लेकिन बगीचे के मेहराब से जल्द ही
उसने अपना विचित्र और अंधकारमय रास्ता चुना।

कुछ देवदार के पेड़, जो टावर के समकालीन हैं,
उनकी सीधी काली शाखाएँ उसके सिर के ऊपर फैली हुई थीं;
अदृश्य, इस काले मंडप के नीचे,
उसके कपड़े सरसराए और वह तेजी से चलने लगी।

उस छायादार जगह में एक छोटा सा कोना था।
एक देहाती कुर्सी और स्टैंड की स्क्रीनिंग;
थकी हुई वह बैठ गई और लेट गई
उसकी तपती हुई भौंहें उसके जलते हुए हाथ पर टिकी हुई थीं।

एकांत और रात की ओर,
अब वह धीमी आवाज़ में कुछ शब्द कहने लगी;
और उसकी उंगलियों से सफेद रंग रिस रहा था,
उसने दुख के कुछ आंसू बहाए।

हे ईश्वर, मेरी इस विकट संकट में मेरी सहायता करो।
हे भगवान, मेरे आंतरिक दर्द में मेरी मदद करो;
जो दया की भीख नहीं मांग सकता,
जिसे शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है।

"जिसे सहना ही होगा; फिर भी कौन सह सकता है?"
घंटों तक, दिनों तक, एक निरंतर भार —
घोर निराशा का जुआ,
एक ऐसा दुख जो पूरी तरह से निराशाजनक है?

कौन दिल को हमेशा के लिए कुचल सकता है?
इसकी धड़कन को रोकें, इसके जीवन को नियंत्रित करें?
निरंतर कलात्मकता से सत्य को छिपाना,
क्या बाहरी शांति के पीछे आंतरिक संघर्ष छिपा है?

वह किसी जवाब की उम्मीद में इंतजार करती रही;
शांत और बादलों से घिरी रात में कुछ भी नहीं मिला;
कुछ ही देर में, एक गहरी, कांपती हुई आह के साथ,
उसका गंभीर विलाप फिर शुरू हो गया।

"जिनसे प्रेम नहीं किया गया — मैं उनसे प्रेम करता हूँ; जिनके लिए मैंने आंसू नहीं बहाए — मैं उनके लिए आंसू बहाता हूँ;
मैं दुःख को नियंत्रित करता हूँ — आशा को दबाता हूँ:
यह पीड़ा व्यर्थ है—स्थिर और गहरी;
व्यर्थ, सुख की इच्छाएँ और सपने।

मेरा प्यार फिर से किसी प्यार को नहीं जगाता।
मेरे आंसू जमा होते हैं, और अनसुने ही बह जाते हैं;
मेरे दुःख से किसी को पीड़ा नहीं होती।
मेरी विनम्र आशा है कि कुछ भी नष्ट नहीं होगा।

मेरे लिए तो ब्रह्मांड मूक है।
बिल्कुल बहरा, दिमागी रूप से खाली और पूरी तरह से अंधा;
मुझे जीवन को बांधना होगा, अस्तित्व का सार निकालना होगा।
एक ही मन की सीमित सीमाओं में;

"मेरा ध्यान कहीं और है। ओह! तंग कोठरी;
अंधकारमय—अदृश्य—एक जीवित मकबरा!
मुझे वहीं सोना है, वहीं जागना है और वहीं रहना है।
"पक्षाघात, दर्द और उदासी से संतुष्ट।"

वह फिर रुकी; दर्द भरी कराह।
केवल एक दबी हुई सिसकी सुनाई दी;
इसके बाद लंबी खामोशी छा गई — फिर सन्नाटा छा गया।
उसकी आवाज ने सन्नाटे भरी आधी रात को हलचल मचा दी।

क्या ऐसा ही होना चाहिए? क्या यही मेरा भाग्य है?
क्या मैं संघर्ष या प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता?
और क्या मुझे वर्षों तक इंतजार करना पड़ेगा?
क्या आप मौत की धीमी कुल्हाड़ी को नीचे आते हुए देख रहे हैं?

और जब यह गिरेगा, और जब मैं मर जाऊँगा,
इसके बाद क्या होगा? खालीपन?

खोई हुई पहचान का खालीपन?
दर्द और आनंद दोनों का मिटाना?

मैंने स्वर्ग के बारे में सुना है - मैं विश्वास करूंगा;
क्योंकि यदि यह पृथ्वी ही सब कुछ है,
सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाले ही सबसे गहरे शोक का अनुभव कर सकते हैं;
धन्य हैं वे जिन्हें दुःख सबसे शीघ्र बुलाते हैं।

"ओह! निराशा को यहीं छोड़कर जा रही हूँ,
क्या मनुष्य को उस दूर के तट पर आशा मिलेगी?
आशा, जो पृथ्वी पर कभी स्पष्ट रूप से नहीं चमकती,
और अक्सर बादलों में पूरी तरह खो जाता है।

क्या वह आशा के प्रकाश स्रोत को देखेगा?
फल प्राप्ति का वह वसंत, जहाँ संदेह समाप्त हो जाते हैं,
और जीवंत सोने की लहरों में पियो,
क्या तृप्ति, पूर्ण संतुष्टि, लंबे समय से चली आ रही इच्छा के लिए है?

क्या उसे वह आनंद मिलेगा जिसका उसने यहाँ सपना देखा था?
विश्राम, जो पृथ्वी पर थकावट थी?
ज्ञान, जो यदि जीवन पर प्रकाशमान हो जाए,
क्या इसे परोसा गया था, लेकिन क्या यह साबित करने के लिए कि इसका कोई मूल्य नहीं है?

क्या उसे वासना के मिश्रण से मुक्त प्रेम मिलेगा?
प्रेम निर्भीक, आँसू रहित, परिपूर्ण, पवित्र होता है।
सभी को समान रूप से लाभ दिया जाएगा;
कुल मिलाकर, क्या यह सब सच्चा और अचूक है?

क्या वह दंडात्मक कष्टों से मुक्त होगा?
कफ़न और कीड़े लगे ढेले से मुक्त होकर,
सब कुछ शांत और गौरवशाली है, उठो और देखो
सृष्टि का जनक — अस्तित्व का ईश्वर?

फिर, टाइम की संक्षिप्त परेशानियों पर एक नजर डालते हुए,
क्या वह उन्हें लुप्त होते हुए, उड़ते हुए देखेगा?
अनंत काल की शांति से विमुख होकर,
क्या यह निर्मल नीले आकाश को धूमिल करने वाले बादल जैसा है?

‘‘यदि ऐसा है, तो मेरे थके हुए शरीर, सहन करो;
और जब तुम्हारा दुख बहुत गहरा हो जाए,
और जब सारी परेशानियाँ जीवन की लौ को बुझा देती हैं,
उस शांत, अंतिम नींद के बारे में सोचें;

‘‘जागने के उस शानदार समय के बारे में सोचें,
जो दुःख और आंसुओं पर कभी प्रकट नहीं होगा,
लेकिन एक मुक्त आत्मा की शक्ति पर,
निश्चित, और नश्वर भय से मुक्त।

अब तुम अपने पलंग पर जाओ और सुबह तक लेटे रहो।
फिर, अपने कक्ष से, शांत भाव से नीचे उतरो,
मन न तो विचलित था, न ही पीड़ा से त्रस्त था।
लेकिन शांत, स्थिर, अंत की प्रतीक्षा में।

और जब तुम्हारी खुली आँखें देखेंगी
कक्ष की दीवार पर स्मृति चिन्ह,
जिसने तुम्हें भुला दिया है,
कड़वाहट भरे आंसू मत बहाओ।

‘‘वह आंसू जो हृदय से उमड़ता है,
जहां इसकी संक्षारक बूंद गिरती है, वहां यह जल जाता है।
और इससे प्रत्येक नस, यातना में, कांपने लगती है।
उन भावनाओं पर जिन्हें यह बहुत अच्छी तरह से याद दिलाता है:

जब प्यार किए जाने की मीठी उम्मीद
ईडन ने जीवन के मार्ग में धूप बिखेर दी:
जब हर इंद्रिय और भावना साबित हुई
सबसे उज्ज्वल दिन की उम्मीद।

‘‘जब हाथ कांपते हुए ग्रहण करने लगा
एक रोमांचकारी आलिंगन, जो इतना करीब प्रतीत हो रहा था,
और हृदय ने विश्वास करने का साहस किया
एक और हृदय ने इसे प्रिय माना।

जब शब्द, आधा प्यार, पूरी कोमलता,

प्रति घंटे सुना जाता था, जैसे प्रति घंटे बोला जाता था,
जब आनंद के लंबे, धूप भरे दिन
चांदनी रातों में ही सन्नाटा टूटता था।

जब तक, बूंद-बूंद करके, आनंद का प्याला भर न जाए
बैंगनी रोशनी से पूरी तरह भरा हुआ, जगमगा रहा था।
और फेथ, जो इसे देख रही थी, ऊँची चमक रही थी
फिर भी मैंने कभी इस तरह के अतिप्रवाह की कल्पना नहीं की थी।

"यह अचानक धड़ाम से नहीं गिरा,
यह खुली नाली की तरह नहीं बह निकला;
नहीं, अब भी चमक रहा है, और लाल रंग से जगमगा रहा है।
एक-एक बूंद करके सारा रस निकाल लिया गया।

मैंने उसे डूबते हुए देखा और उसका स्वाद चखने की कोशिश की।
मेरे उत्सुक होंठ किनारे तक पहुँच गए;
ऐसा प्रतीत होता है कि इस आंदोलन ने इसे व्यर्थ ही कर दिया;
यह पूरी तरह से अंधकारमय और बेजान हो गया।

मैंने इन्हें पी लिया है, और ये हमेशा के लिए रहेंगे।
उन्होंने मेरे जीवन और प्रेम को जहर से भर दिया है;
सदोम की झील से आने वाला सूखा कभी भी
और भी तीखा, नमकीन और कड़वा बनो।

ओह! प्यार तो बस एक पतला सा भ्रम था!
आनंद, लेकिन रेगिस्तान की बहती धारा जैसा;
और लंबे भ्रम पर पीछे मुड़कर देखने पर,
मेरी स्मृति एक खोखले सपने को पकड़ पाती है।

लेकिन भावनाओं में वह अद्भुत परिवर्तन कहाँ से आया?
मुझे कभी पता नहीं था, और मैं सीख भी नहीं सकता;
और न ही मेरे प्रेमी की आंखें जमने का कारण,
माहौल ठंडा और उदास हो गया, अभिमानी और कठोर हो गया।

और न ही इसलिए, मित्रता के स्वरूपों को भूलकर,
वह लापरवाही से चला गया, और शांत भाव से पीछे हट गया;
न तो उन्होंने शोक की बात की, न ही उन्होंने किसी के प्रति खेद व्यक्त किया।
और न ही सांत्वना भरी एक नजर डाली गई।

और न तो शब्द और न ही कोई संकेत भेजा गया,
दयालुता के कारण, विदाई के दिन से ही,
दूरदराज के क्षेत्रों की ओर मुड़ते हुए उसका मार्ग,
वह शांत और संयमित होकर चला गया।

“ओह, कड़वा, विनाशकारी, तीव्र अनुभूति,
जो कमजोर नहीं होगा, जो मर नहीं सकता।
अपने विनाश के कार्य को शीघ्रता से पूरा करो,
और मेरी पीड़ा से व्याकुल आत्मा को उड़ने दो!

“गुजरती आंधी की तरह मेरा रोना व्यर्थ है;
बिजली गिरने से घायल होने के बावजूद, मुझे जीना जारी रखना होगा;
मैं दिल से जानता हूँ कि मृत्यु जैसी कोई चीज नहीं होती।
प्रेम का, और टूटी हुई उम्मीद का, अकेलेपन का।

“अभी भी मजबूत और युवा, और जोश से भरपूर,
हालांकि मुझे चोट लगी है, फिर भी मैं लंबे समय तक हरा-भरा बढ़ता रहूंगा;
और कई भयंकर तूफान
फिर भी मेरी मुरझाई हुई शाखा पर से फूट निकल आएगी।

अब निरर्थक निष्क्रियता के प्रति विद्रोही
मेरी अप्रयुक्त शक्ति को एक कार्य की आवश्यकता है;
यात्रा, परिश्रम और पूर्ण प्रयास
क्या यही मेरी आखिरी और एकमात्र विनती है?

तो फिर, यह व्यर्थ और बंजर स्वप्न कहाँ से आया?
मृत्यु और उसके बाद आने वाले अनिश्चित जीवन के बारे में?
मुझे पास में एक चमकता हुआ प्रकाशस्तंभ दिखाई दे रहा है।
निराशा के अंधकार के सागर के ऊपर।

मेरे दुःख की चरम सीमा
यह मुझे बताता है कि मुझमें अभी भी सहज शक्ति है;
मेरे जीवन का मार्ग बहुत ही संकीर्ण रहा है।
यह प्रयास एक व्यापक दिशा में आगे बढ़ेगा।

दुनिया उस मीनार में नहीं है,

पृथ्वी उस कमरे में कैद नहीं है।
जिनके अँधेरे पैनलों के बीच, पल-पल,
मैं उदासी का गुलाम और शिकार बनकर बैठा रहा हूँ।

“एक भावना – घोर पीड़ा में बदल गई।”
यह मेरे अस्तित्व का एकमात्र उद्देश्य नहीं है;
जब अकेला और प्रेमहीन जीवन क्षीण हो जाएगा,
लेकिन साहस उस लौ को फिर से जीवित कर सकता है।

जब वह मुझे छोड़कर चला गया, तो वह भटकने लगा।
धूप वाले इलाकों की ओर, समुद्र के पार;
और मैं, दुखों का बोझ हटाकर,
मैं भी उसकी तरह स्वतंत्र और बंधनमुक्त हूँ।

“नए दृश्य, नई भाषा, कम बादलों वाला आकाश,
जीवन जीने की इच्छा एक बार फिर जागृत हो जाए;
विचित्र, विदेशी कस्बे, हलचल भरे और भीड़भाड़ वाले,
इससे मन में नए चित्र उभर सकते हैं।

“नए रूप और चेहरे, निरंतर बदलते रहते हैं,
हो सकता है कि मैं उस एक को छिपा सकूँ जो मेरे पास अभी भी है,
परिभाषित, स्थिर और कभी न मिटने वाला
दृष्टि, हृदय और मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ी।

और शायद हमारी मुलाकात हो जाए—समय ने शायद उसे बदल दिया हो;
संयोग से ही रहस्य का खुलासा हो सकता है।
वह गुप्त प्रभाव जिसने उसे अलग-थलग कर दिया;
शायद प्यार उसे फिर से मेरे पास लौटा दे।

“झूठे विचार—झूठी आशा—को तिरस्कार के साथ दूर भगाओ!”
मुझे प्यार नहीं मिलता—और न ही कभी किसी ने मुझसे प्यार किया है;
इसलिए, उन सपनों को याद न करें जो अभी-अभी लुप्त हुए हैं;
गद्दारों! मुझे फिर से गुमराह मत करो!

“तुम्हारे जैसे शब्दों का मैं विरोध करता हूँ।”
मेरी मानसिक स्थिति इतनी खराब हो गई है कि मैं बुरी तरह टूट चुका हूँ;
केवल ईश्वर पर भरोसा और आत्मनिर्भरता।
मैं सांत्वना की याचना करता हूँ—सहायता की आशा करता हूँ।

सुबह आती है—और दोपहर की महिमा से पहले
इन जंगलों पर, मेरे जन्मस्थान पर, मुस्कान छा जाएगी।
एकांत जंगल और जीर्ण-शीर्ण महल दोनों
मैं अपने पीछे कई मील की दूरी छोड़ जाऊंगा।

गिल्बर्ट।

I. बगीचा।

शहर के ऊपर चांद लटका हुआ था।
ज़मीन के एक टुकड़े के ठीक ऊपर
जहां फूलों और बाग के पेड़ों की बाड़ लगाई गई थी
चारों ओर ऊंची दीवारों के साथ:
यह गिल्बर्ट का बगीचा था - आज रात वहीं।
कुछ देर तक वह अकेले चलता रहा;
और, बैठे-बैठे किए जाने वाले परिश्रम से थककर,
मैंने सोचा कि चांदनी कहाँ चमक रही होगी।

शहर के बीचोंबीच स्थित यह बगीचा,
बेघर जंगली की तरह स्थिर पड़ा हुआ,
हालांकि कई खिड़कियों वाले हवेली के सामने
उसके चारों ओर थे; घनी तरह से ढेर लगे हुए थे;
लेकिन उनकी दीवारें मोटी हैं, और उनके भीतर रहने वाले भी।
शोर से बेपरवाह होकर जीवन व्यतीत किया;
जैसे किसी देवदूत के पंख फड़फड़ाते हों,
उनके सामने से समय के गुजरने की आवाज सुनाई दे रही थी।

कुछ मधुर पियानो की धुनें ही काफी हैं
यदि मिठास हल्की सी भी दी गई हो,
जहां महिलाएं निःसंदेह चूल्हे के पास बैठकर खुशियां मना रही थीं।
उस सर्दी में भी गीत गाते हुए।
शहर की अनेक मिश्रित ध्वनियाँ

गुलाब समुद्र की गुनगुनाहट की तरह था;
उन्होंने दिल को जगाने की बजाय शांत किया।
इसकी गति तेज हो जाती है।

गिल्बर्ट ने एकल पैदल यात्रा की गति निर्धारित की है।
एक घंटा बीत गया, फिर भी थकान नहीं हुई;
और, भले ही यह सर्दियों की रात हो
उसे न तो ठंड लग रही है और न ही उदासी।
उनके रगों में जीवन का स्वर्णिम युग दौड़ रहा है।
और इससे उसका खून तेजी से बहने लगता है।
और कल्पना का उत्साह विचारों को गर्म कर देता है।
अब उसकी छाती चमक रही है।

वे विचार बार-बार प्रारंभिक प्रेम की ओर ले जाते हैं।
या जिसे वह प्यार नाम देगा,
हालाँकि संभवतः गिल्बर्ट के गुप्त कार्यों
अन्य स्वामित्व का दावा भी हो सकता है।
ऐसे विषय उनके मन में आसानी से नहीं समाते।
वह दुनिया से मजबूती से जुड़ा हुआ है।
और वर्तमान जीवन के लिए यह बहुत अधिक है।
अतीत में खोए रहना।

लेकिन अब शाम की गहरी शांति
उसकी आत्मा में समा गया है;
वो चांदनी यादों पर पड़ती है,
और वह अपना धुंधला होता हुआ स्क्रॉल दिखाती है।
प्रत्येक पंक्ति में एक ही नाम दिखाई देता है
कोमल किरणें चमकती हैं,
और अब भी वह मुस्कुराता है और दोहराता रहता है
वह एक नाम—एलिनोर।

उनकी मुस्कान में उदासी का कोई अंश नहीं है।
उसके लहजे में जरा भी दयालुता नहीं थी;
स्वार्थी हृदय की विजय
वहाँ अकेले में वह ठंडे लहजे में बोलता है;
वह कहता है: "वह मुझसे अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करती थी;
और सचमुच यह मीठा था
इतनी सुंदर स्त्री को घुटने टेकते देखना,

मेरे चरणों में, बंधन में।

"एक प्रकार का शांत आनंद था।"
इतना गहरा प्यार पाना,
कांपती हुई उत्सुकता को निहारने के लिए
और मैं बिना हिले-डुले बैठा रहा।
और जब मेरे स्वाभिमान को ऐसा करना उचित लगा
अंततः कुछ दुर्लभ स्पर्श,
उस हाथ की गर्मी को महसूस करने के लिए
मेरी उंगलियों ने दबाने की कृपा की।

उसे छिपने की कोशिश करते देखना अच्छा लगा।
हर नजर से जो पता चलता था;
जबकि, उन्हें निरंकुश शक्ति से संपन्न किया गया था।
उसे शक्ति का प्रयोग करना उसका भाग्य है।
मैं खुद को कोई परिपूर्ण व्यक्ति नहीं मानता था।
और न ही, जैसा कि वह मानती थी, दिव्य;
मुझे पता था कि मैं शानदार हूँ — लेकिन
उसकी परावर्तित चमक से;

उसकी जवानी, उसकी स्वाभाविक ऊर्जा,
उसकी शक्तियां नवजात और ताजा थीं,
ये वे लोग थे जो ईश्वरत्व से पवित्र किए गए थे।
मेरा कामुक शरीर।
फिर भी, मैं एक देवता की तरह अवतरित हुआ।
अंततः, अपने प्रेमी से मिलने के लिए;
और, एक देवता की तरह, मैं फिर पीछे हट गया।
मेरे अपने स्वर्ग की ओर।

और वह फिर कभी आह्वान नहीं कर सकती थी
मेरी उपस्थिति उसके दायरे में;
न उसकी कोई प्रार्थना, न कोई विलाप, न उसकी कोई चीख
शायद इससे मेरे खराब कान को फायदा हो सकता है।
मैं उसकी अंधी निष्ठा को जानता था
मैं अपने कर्मों से कभी धोखा नहीं खाऊंगा,
और, अंतरात्मा में शांति और हृदय में पूर्णता के साथ।
मैं अपने शांत मार्ग पर चल पड़ा।

फिर भी, कभी-कभी मुझे एक इच्छा महसूस होती है,
स्नेहपूर्ण और चापलूसी भरा दर्द
जुनून की पीड़ा से सृजन करने के लिए
फिर से उसकी युवा छाती में।
उसकी आँखों की चमक बहुत तेज थी।
जब उनमें मेरी बंदूक से आग लग गई;
अगर मेरे पास शक्ति होती—ठीक इसी क्षण,
मैं फिर से उनकी चमक को प्रज्वलित करूँगा।

लेकिन वह कहाँ है, या वह कैसे रहती है,
मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है;
मैंने सुना है कि वह मेरी अनुपस्थिति से बहुत दुखी थी।
और वह उसे दुखी अवस्था में घर से छोड़कर चली गई।
लेकिन उस समय वे सोना इकट्ठा करने में व्यस्त थे।
चूंकि मैं अभी व्यस्त हूँ,
मैं इस खोज से पीछे नहीं हट सकता था।
टूटे हुए वादे पर रोना।

और न ही मैं जानलेवा जोखिम उठा सकता था
मैंने हमेशा प्रसिद्धि को ही सबसे अधिक महत्व दिया;
मुझे अब भी डर है कि वह कीमती प्रसिद्धि
इसमें बहुत ज्यादा समझौता किया गया है।
एक आंतरिक पीड़ा उसकी आंखों में धुंधलापन ला देती है।
वह कोई न कोई पहेली सुलझा देता था;
किसी गांठ को खोलने का कोई तरीका,
उसके मन में चिंताजनक विचार घूम रहे हैं।

वह उदास मन से एक पेड़ से टिक जाता है।
एक पत्तेदार सदाबहार पौधा,
डालियाँ, चाँदनी, अवरोध,
और उसे एक पर्दे की तरह छिपा दो
वह कांपने लगता है— पेड़ उसके कांपने से हिल जाता है।
फिर भी उसके पास से कुछ भी नहीं गुजरा;
वह बगीचे की गली में तेजी से आगे बढ़ता है।
अचानक और अस्वाभाविक जल्दबाजी में।

कांपते हाथों से उसने कुंडी उठाई।
दहलीज के पत्थर पर कदम रखते हुए;

भारी दरवाजा उसकी उंगलियों से फिसल जाता है—
दरवाजा बंद हो जाता है, और वह चला जाता है।
किस बात ने उनकी आत्मा को झकझोर दिया, स्तब्ध कर दिया, भयभीत कर दिया?
बस एक घबराहट भरा विचार, और कुछ नहीं;
यह शांत तालाब में पत्थर की तरह डूब जाएगा।
और शांति धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है।
II. बैठक कक्ष।

बैठक का वातावरण खुशनुमा है।
दीपक की कोमल रोशनी मन को शांत करती है;
चमकीले अंगारे, लाल और साफ,
एक बर्फीली रात की घोषणा करो।
मेज पर तरह-तरह की किताबें पड़ी हैं।
तीन बच्चे उनके ऊपर झुके हुए हैं,
और सभी उत्सुक और जिज्ञासु निगाहों से,
पलटते पत्ते पर ध्यान दें।

चित्र और कहानी बारी-बारी से
उनके सरल हृदय आनंदित होते हैं।
और गहरी रुचि, और संयमित आनंद,
उनके पहलुओं को उज्ज्वल करें।
माता-पिता, अपनी चूल्हे के पास बैठे हुए,
उस मनमोहक दृश्य को देखो,
और मां के चेहरे पर खुशी झलक रही है।
पिता के चेहरे पर गर्व झलक रहा था।

जैसे ही गिल्बर्ट अपनी खिलखिलाती पत्नी को देखता है,
वह अपने सुंदर बच्चों को देखता है,
उसे क्षणिक संघर्ष का कोई विचार नहीं है।
या फिर अतीत, हालांकि भयावह भय के साथ।
खुश शिशु की आवाज
वह मीठी आवाज़ में उसके कान में फुसफुसाती है,
उनकी पत्नी ने प्रसन्न और शांत आँखों से देखा,
पास में ही, विनम्रतापूर्वक मुस्कुराते हुए बैठी है।

उसकी रेशमी पोशाक पर आग की लपटें चमक रही हैं।
और अपनी अपार सुंदरता को प्रदर्शित करता है।
और यह प्रत्येक हेज़ल वृक्ष को गर्मजोशी से रंग देता है।

उसके चेहरे के चारों ओर कोमल ढंग से लिपटा हुआ।
वह सुंदरी जिसे उसने जवानी में रिझाया था,
क्या सुंदरता अभी भी बरकरार है, फीकी नहीं पड़ी है?
सदा शांत रहने वाले चेहरे का माथा
किसी भी प्रकार के अशिष्ट शोक का साया नहीं पड़ा है।

गिल्बर्ट के घर में समृद्धि,
वर्षों के अतिथि के रूप में निवास करता है;
वहाँ चाहत या कलह कभी नहीं आती,
और शायद ही कभी परिश्रम या आंसू।
इन कालीनों पर शांतिपूर्ण छाप है।
आराम के मखमली कदमों का,
और प्रचुरता से उत्पन्न सुनहरी चमक,
हर कोने में परदे पड़े हैं।

वह रेशमी स्पैनियल बहुत ही सुंदर प्रतीत होता है।
बड़ी सहजता से बताने के लिए,
जैसे ही वह अपनी प्रेमिका के चरणों के पास सपने देखता है,
तकिये की उभार में डूबा हुआ
और मुस्कानें मानो आँखों में स्वाभाविक रूप से बसी हुई हैं।
उन प्यारे बच्चों में से तीन;
उन्होंने केवल शांत आकाश को ही देखा है।
और दुख को न जानो।

हाय! वह विपत्ति अवश्य आ पड़ी।
ऐसे समय में;
वह घर को इतना शांत क्यों नहीं रख सकी?
थोड़ी देर और चूक गई?
लेकिन अब वह दरवाजे के अंदर है।
उसके कदम सहजता से आगे बढ़ते हैं;
उसकी उदास परछाई फर्श पार कर गई है।
वह गिल्बर्ट के बगल में खड़ी है।

वह अपना हाथ उसके हृदय पर रखती है।
यह पीड़ा से तड़प रहा है;
बिजली कड़कने से उसकी आग के पास वाली कुर्सी हिलने लगती है।
इससे बगीचे का पेड़ हिल गया।
उनकी पत्नी बच्चों की ओर देखती है,

वह उसके चेहरे के भावों पर ध्यान नहीं देती;
बच्चे अपनी किताबों पर झुके हुए थे,
मैंने उसका आतंक नहीं देखा है।

अपने ही घर में, अपनी ही चूल्हे के पास,
वह एकांत में बैठा है,
और प्रकाश और उल्लास के साथ चारों ओर चक्कर लगाया,
यह खौफ उसके खून में सिहरन पैदा कर देता है।
उसका दिमाग हताशा से जकड़े रहेगा
उसके चारों ओर का दृश्य;
नहीं— बदल गया, मानो किसी जादूगर के स्पर्श से।
वर्तमान संभावनाएं बहुत कम हैं।

एक अस्पष्ट कोलाहल — एक अदृश्य संघर्ष
उसके व्यर्थ संघर्ष कुचल देते हैं;
उसके और उसके बीच एक अज्ञात जीवन
और अनजाने भाव उमड़ पड़ते हैं।
वह देखता तो है, लेकिन भाषा शायद ही उसका सही चित्रण कर पाती है।
कपड़े की सुंदर बुनाई;
शब्द अक्सर मंद प्रतिध्वनि ही देते हैं।
मन में उत्पन्न होने वाले विचार।

शोरगुल, विचित्र हलचल और गहरा अंधेरा
प्रकाश और शांति दोनों को मिटा दो;
उन भयानक छायाओं में कोई आकृति नहीं दिखती।
उस हिंसक दंगे में किसी की आवाज नहीं थी।
निरंतर और शक्तिशाली, एक अद्भुत विस्फोट
उसके ऊपर और चारों ओर हवा चलती है;
एक हरापन लिए उदासी भरा माहौल, घना बादल छाया हुआ,
हर पल घनत्व बढ़ता जा रहा है।

वह कुछ नहीं जानता—और न ही स्पष्ट रूप से देख पाता है।
प्रतिरोध उसकी सांस रोक देता है,
तेज़, प्रचंड, निरंतर बहने वाली हवा
उस पर पड़ने वाले प्रहार मृत्यु के समान ठंडे होते हैं।
और अब भी उतार-चढ़ाव वाला अंधकार छाया हुआ है।
आकारहीन गति से दृष्टि का उपहास करता है:
क्या योना की मृत्यु इतनी सनसनीखेज थी?

क्या आप समुद्र की गहराइयों में समा गए हैं?

हवा में लकीरें बनाते हुए, अनाम आकृति,
तेज गति से चलने वाला, गहरी ध्वनि वाला, प्रवाहमय;
ओह! इसका स्रोत कहाँ से है, और इसका उद्देश्य क्या है?
इसके आतंक का अंत कैसे होगा?
विस्तृत, तीव्र, विशाल और शून्य
यह ब्रह्मांड को निगल जाता है;
और फिर भी अंधकारमय, विनाशकारी ज्वार
इसके बाद भीषण आंधी आती है।

यह और भी धीरे-धीरे लुढ़कता है; इसकी उग्र दौड़
अपनी गंभीर गति में डूब जाता है;
वह विस्मयकारी गर्जना, हवा का उग्र पीछा,
शांति धीरे-धीरे कम हो रही है।
और, धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए, एक आकृति
आकारहीन अराजकता में विविधता है;
तूफान के भंवर में स्थिर,
यह आंखों के सामने ठहर जाता है।

एक महिला डूब गई—गहरे पानी में डूब गई।
एक लंबी लहर पर लेटे हुए;
घूमते हुए जल की निर्मल धारा,
कांच की तरह, उसकी आकृति उसमें समाहित है।
उसका पीला पड़ा हुआ बेजान चेहरा गिल्बर्ट की ओर मुड़ गया।
ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह नींद में आराम कर रहा हो;
एक धुंधली रोशनी, जो अब पहली बार दिखाई दी,
विशेषताएं अच्छी तरह से स्पष्ट हैं।

प्रेतवाधित वातावरण से कोई प्रयास नहीं
वह भयावह दृश्य मन को मोहभंग कर सकता था,
वह मंडराती लहर, वहीं रुक गई,
लुढ़का—धड़कता रहा—पर गायब नहीं हुआ।
यदि गिल्बर्ट ने अपनी नजर ऊपर की ओर घुमाई,
उसने सागर की छाया देखी;
अगर वह नीचे देखता, तो उसे अथाह समुद्र दिखाई देते।
गर्मी के मौसम के हरे-भरे मैदान की तरह हरा-भरा।

और ठीक सामने, पीला पड़ा हुआ शव था।
हवा या लहर द्वारा ऊपर उठाया गया,
इतना करीब कि वो स्प्रे को छू सकता था।
वह अपने तकिए के चारों ओर करवटें बदल रहा था।
चेहरे की खोखली पीड़ा
एक दुष्ट को भी दुखी कर दिया था;
मृत्यु की स्थिर शांति भी उस निशान को मिटा नहीं सकी।
दुःख की गहरी लकीरों में से एक।

सब हिल गए; एक जोरदार पलटवार हुआ,
जल का विशाल भंडार बढ़ रहा है,
बोर तरंग और निष्क्रिय शव अतीत,
जबकि गिल्बर्ट अभी भी निहार रहा था।
उसके द्वीप को गर्भ धारण करने वाले गर्भ की गहराई में,
ऐसा लगा मानो सागर गरज रहा हो।
और जल्द ही, अंधकार के तीव्र प्रवाह के दायरे में,
क्या द्रष्टा और प्रेत विखंडित हो गए थे?

फिर उन्होंने एक जहाज़ के मलबे से कुछ लकड़ियाँ हटाईं।
आगे की ओर बढ़ते हुए सवारी करते समय;
फिर गंदे पानी में समुद्री शैवाल
ऊपर की ओर मुड़ा हुआ, धीरे-धीरे सरकता हुआ चला गया।
वह भयानक छाया, धीरे-धीरे,
प्रकाश की एक किरण पराजित हुई,
और फिर उग्र समुद्रों की गर्जना,
तेजी से, दूर और धुंधले ढंग से, पीछे हट गया।

और सब कुछ गायब हो गया— धुंध की तरह गायब हो गया।
जलप्रपात, लहरें, तूफान, मलबे;
गिल्बर्ट प्रेस्ट के करीबी तीन बच्चे
और उसने उसकी गर्दन को पकड़ लिया।
शुभ रात्रि! शुभ रात्रि! बड़बड़ाते पक्षियों ने कहा,
और उन्होंने अपने पिता के गाल चूमे;
अब उनके शांत बिस्तर पर जाने का समय हो गया था।
और शांतिपूर्ण विश्राम की तलाश करना।

मां अपने बच्चे के साथ जाती है
उनकी शाम की प्रार्थना सुनने के लिए;

उसे गिल्बर्ट के दृष्टिकोण के बारे में कुछ भी पता नहीं है।
और उसमें निराशा का जरा भी अंश नहीं था।
फिर भी, ईश्वर पर दया करते हुए, समय को कम कर दो।
अब उसका भाग्य पीड़ा से भरा होगा!
हालांकि, शायद उसका अपराध बहुत बड़ा रहा है:
तेरी दया भी महान है।

अंततः गिल्बर्ट अपना सिर ऊपर उठाता है।
कुछ क्षणों के लिए नीचे की ओर झुका हुआ,
और न तो कोई दुःख है और न ही कोई भय।
उसकी कोमल भौंहों पर।
क्योंकि वह अपनी भावनाओं को अच्छी तरह से संभाल सकता है।
और उनका रूप-रंग वाकई आकर्षक है;
वह अपने चेहरे के हावभाव को अपने दिल के भावों से अच्छी तरह छुपा सकता है।
मुस्कान और सहजता के साथ नीरस।

गिल्बर्ट ने अपने दिमाग से तर्क किया है —
वह कहता है कि यह सब एक सपना था;
वह अपनी अंतर्दृष्टि को अंधा करने का प्रयास करता है
सत्य की आंतरिक किरण के विरुद्ध।
उसे उस धुंधली सी चीज पर दया नहीं आई।
जब वह मांस और रक्त का बना था;
अब दया की मधुर वसंत ऋतु भी नहीं लौट सकती।
उसके नीरस मन को तरोताजा कर दो।

और अगर उस सपने ने सच कहा है,
इस प्रकार वह चिंतन करते हुए कहता है;
"अगर एलिनोर सचमुच मर चुकी है,
ऐसे संयोग से मिलने वाला झटका फायदेमंद साबित होता है:
मेरे पैरों के चारों ओर एक जाल बुना गया था।
मैं इससे आगे मुश्किल से ही जा सकता था;
इससे पहले कि शर्मिंदगी के कारण तेजी से पीछे हटना पड़ता,
अपमान ने मुझे नीचा दिखाया।

"तो उसे छुपा लो, गहरे, शांत सागर।"
उसे एक गुप्त कब्र दो!
वह चैन से सो रही है, और मैं मुक्त हूँ।
अब आतंक का गुलाम नहीं:

और अब भी पूरी दुनिया से श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।
मेरे निष्कलंक नाम का अभिवादन करेंगे,
क्योंकि लहरें टूटती हैं और तरंगें मुड़ जाती हैं
अपनी संभावित बदनामी से ऊपर।"
III. घर वापसी का स्वागत।

शहर के ऊपर चांद लटका हुआ है,
कुछ बादल बारिश के संकेत दे रहे हैं;
गिल्बर्ट, जो कुछ देर पहले यात्रा पर निकल गया था,
आज रात फिर से घर लौट रही है।
उसके सिर पर दस साल बीत चुके हैं।
प्रत्येक वर्ष उसके लिए लाभ लेकर आया है;
उनका समृद्ध जीवन सुचारू रूप से आगे बढ़ रहा है।
बिना फटे या दाग के।

शहर की घड़ियों में कुछ देर हो चुकी है।
बारह गहरी कंपनें गूंजती हैं,
जैसे ही गिलबर्ट द्वार पर दस्तक देता है,
यही उनकी यात्रा का लक्ष्य है।
सड़क एकदम शांत और सुनसान है।
बादल के पीछे चंद्रमा छिप गया;
गिलबर्ट अधीर है, वह इंतजार नहीं करेगा, —
उसकी दूसरी दस्तक की आवाज़ बहुत तेज़ होती है।

घड़ियाँ शांत हैं—कोई रोशनी नहीं है।
आस-पास की किसी भी खिड़की में,
और एक भी ग्रह चमकीला नहीं है
बादलों से घिरे आकाश से दृश्य;
हवा उमस भरी है, बारिश हो रही है।
उत्तर दिशा से भीषण हवा चल रही है;
यात्री अपने लबादे की रक्षा मुश्किल से ही कर पाता है।
क्या दरवाजा नहीं खुलेगा?

वह तीसरी बार दस्तक देता है, और आखिरी बार।
अब उन्हें उसका बुलावा सुनाई दे रहा है।
भीतर, एक पदचाप, तेजी से भागती हुई,
पास आने की आवाज सुनाई दे रही है।
बोल्ट खींचा जाता है, चेन की खड़खड़ाहट

पत्थर के फर्श पर गिर जाता है;
और गिल्बर्ट अपने दिल पर ज़ोर लगाएगा
उनकी पत्नी और बच्चे जल्द ही आ जाएंगे।

कुंडी उठाने वाला हाथ उसे पकड़े रहता है।
उसकी दृष्टि के लिए एक मोमबत्ती,
और गिलबर्ट सीढ़ी पर खड़े होकर देखता है
सफेद वस्त्र पहने एक महिला।
देखो! उसकी टपकती हुई पोशाक से पानी बह रहा है।
स्ट्रीमिंग फ्लोर पर चलता है;
हर गहरे और लटकते हुए लट से
बूंदें लगातार बरसती रहती हैं।

उसका स्वागत करने के लिए उसके सिवा कोई और नहीं है;
वह मोमबत्ती को ऊँचा उठाती है,
और, शरीर और अंगों में गतिहीन,
पास में ही ठंडा और शांत खड़ा है;
उसके वस्त्र पर रेत और समुद्री शैवाल लगे हुए हैं।
उसकी खोखली आंखें अंधी हैं;
इस तरह के ढांचे में कोई भी नाड़ी धड़क नहीं सकती।
वहां जीवन की कोई परिभाषा नहीं है।

गिल्बर्ट का रंग राख जैसा सफेद हो गया, लेकिन फिर भी
उसके होंठों से कोई चीख नहीं निकली;
उसने अपनी शक्ति और दृढ़ इच्छाशक्ति को प्रेरित किया।
उस आंकड़े को अनदेखा करने के लिए, —
लेकिन, धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए, वह सीधे उसके सामने आ गया।
यह न तो विचलित होगा और न ही डरेगा:
फिर सबसे पहले गिल्बर्ट की ताकत कम होने लगी,
उसकी कठोर दृढ़ता कांप उठी।

वह घुटनों के बल बैठ गया और प्रार्थना करने लगा।
वह आकृति वहां स्थिर खड़ी रही;
उसने मानवीय सहायता के लिए जोर से पुकार लगाई।
आस-पास कोई मानवीय सहायता मौजूद नहीं थी।
एक अजीब लहजा इस प्रकार दोहराया गया
स्वर्ग का कठोर लेकिन न्यायपूर्ण फरमान:
"तूने उसके साथ जो माप-तोल किया,

तुम्हारे लिए ही मापन किया जाएगा!

गिल्बर्ट अपने झुके हुए घुटनों से उछल पड़ा।
उस फीके प्रेत द्वारा धकेले जाने पर,
और, जैसे कोई राक्षस उसे पकड़ लेता है, वैसे ही उग्र,
वह तेजी से हॉल की सीढ़ियों से ऊपर की ओर भागा;
वह अपने कमरे में दाखिल हुआ — बिस्तर के पास
आवरण में लिपटी हुई इस्पात की वस्तुएँ और लटके हुए आग्नेयास्त्र —
उन्मादी उद्देश्य भय से प्रेरित
उसने उनमें से उन दुकानों को चुना।

उसके गले पर एक धारदार चाकू
उसने बलपूर्वक हाथ से चित्र बनाया;
घाव गहरा था—उसका अपमानित जीवन
जल्दबाजी में किए गए दाने और लालिमा।
और इस प्रकार, एक शर्मनाक मौत मर गया।
एक बुद्धिमान और व्यावहारिक व्यक्ति,
जिसने कभी स्वार्थी साँसों के अलावा कुछ नहीं लिया
जब से उनका जीवन शुरू हुआ।

ज़िंदगी।

विश्वास करो, जीवन कोई सपना नहीं है।
इतना अंधकारमय जैसा कि ऋषि कहते हैं;
अक्सर सुबह हल्की बारिश होती है
यह एक सुखद दिन का संकेत देता है।
कभी-कभी निराशा के बादल छा जाते हैं।
लेकिन ये सब क्षणभंगुर हैं;
यदि बारिश से गुलाब खिलेंगे,
इसके पतन पर शोक क्यों करें?
तेजी से, खुशी से,
जीवन के सुनहरे पल पलक झपकते ही बीत जाते हैं,
कृतज्ञतापूर्वक, प्रसन्नतापूर्वक

उड़ते हुए उनका आनंद लें!
हालांकि कभी-कभी मृत्यु बीच में आ जाती है,
और हमारे सर्वश्रेष्ठ को बुला लेता है?
भले ही दुख जीतता हुआ प्रतीत हो,
आशा पर भारी दबाव?
फिर भी आशा फिर से लचीली हो जाती है।
हालांकि वह गिर गई, फिर भी वह अजेय रही;
उसके सुनहरे पंख अब भी लहरा रहे हैं।
अभी भी हमें अच्छी तरह से संभालने की क्षमता रखता है।
साहसपूर्वक, निडरता से,
परीक्षा के दिन भालू,
शानदार ढंग से, विजयी रूप से,
क्या साहस निराशा को दूर कर सकता है!

अक्षर।

वह क्या लिख रही है? उसे अभी देखो।
उसकी उंगलियां कितनी तेजी से चलती हैं!
उसकी युवा भौंहें कितनी उत्सुकता से
वह ऊपर सोच में डूबा हुआ है!
उसके लंबे घुंघराले बाल, लटकते हुए, प्रकाश को ढक लेते हैं।
वह उन्हें जल्दी से एक तरफ रख देती है।
और न ही उस चमकीले क्रिस्टल के समूह को जानता है,
उसके जल्दबाजी भरे स्पर्श ने बंधन खोल दिया।
यह उसकी रेशमी पोशाक से नीचे खिसक जाता है,
उसके पैरों पर झरना चमक रहा है;
यह बिना निशान के गिरता है, क्योंकि वह भी कम नहीं है।
वह अपने श्रम को मधुरता से जारी रखती है।

वह सबसे सुंदर क्षण जो चमकता है,
वह उस गहरे नीले आकाश में है;
जून का सुनहरा सूरज ढल रहा है,
उसने इस पर ध्यान नहीं दिया है।

खुशनुमा लॉन और खुला हुआ गेट,
दूर जाती हुई सफेद सड़क,
उसके हल्के कदमों की आहट का इंतजार व्यर्थ ही होता रहा।
वह आज बाहर नहीं आएगी।
वहाँ कांच का एक खुला दरवाजा है
उस महिला की कुर्सी के पास ही,
वहां से, अव्यवस्थित घास की ढलानों तक,
संगमरमर की सीढ़ियों से नीचे उतरता है।

चमकीले और चटख फूलों वाले लंबे पौधे
दहलीज के आसपास उगना;
उनके पत्ते और फूल कमरे में छाया प्रदान करते हैं।
सूर्य की बढ़ती हुई चमक से।
वह एक पल के लिए भी क्यों नहीं देखती?
फूलों के गुच्छों के बीच,
और स्वर्ग में उस तेजस्वी नृत्य को देखो
शाम के सुनहरे पलों की बात कर रहे हैं?
ओह, फिर से देखो! उसकी नज़र अभी भी वहीं टिकी हुई थी।
बिना मुस्कुराए, गंभीर, स्थिर,
और उसकी कलम और उंगलियां तेजी से चलती हैं,
उसकी प्रबल इच्छाशक्ति से प्रेरित होकर।

उसकी आत्मा इस तल्लीन कार्य में लगी हुई है;
तो फिर वह किसे पत्र लिख रही है?
नहीं, उसे और भी करीब से देखो, पूछो
उसकी अपनी आँखों की गंभीर चमक;
अब वे किस ओर रुख करें, क्योंकि अब उनकी कलम
अधूरी रेखा पर लटका हुआ है?
वह आँसुओं से भरी चमक कहाँ से आई थी जो तब
क्या उनके अंधकारमय क्षेत्रों में कोई चमक थी?
गर्मी के कमरे में बहुत अंधेरा दिखता है।
जब तुम उस आकाश से मुँह मोड़ोगे,
और उस हरे-भरे पार्क के विस्तार से,
आप शायद ही कुछ समझ पाएंगे।

फिर भी, दुर्लभ चीनी मिट्टी के बर्तनों के ढेर के ऊपर,
फूलदान, सोफे और गुलदस्ते के ऊपर,
ढलानदार, मानो हवा में टिका हुआ हो।

एक तस्वीर सबकी निगाहों के सामने आ जाती है।
वह वहीं मुड़ती है; शायद आप उसे देख न पाएं।
विशिष्ट, कौन सा रूप परिभाषित करता है
रहस्य का धुंधला समूह
वह चौड़ा सुनहरा फ्रेम उसे सीमित करता है।
लेकिन फिर से देखो; छाया के अभ्यस्त
अब आपकी आंखें धुंधली सी झलक रही हैं
एक मजबूत शरीर, एक विशाल सिर,
एक दृढ़, संकल्पित चेहरा।

काले स्पेनिश बाल, धूप से झुलसा हुआ गाल
एक ऊँची, चौड़ी और सफेद भौंह,
जहां हर हल की रेखा बोलती हुई प्रतीत होती है
मन और नैतिक शक्ति का।
क्या वह उसका भगवान है? मैं नहीं कह सकता;
उसकी नज़रें एक पल के लिए मिलीं
आसन्न तस्वीर, फिर वह गिर गई
अंधेरा, धुंध और नमी।
एक पल और, उसका काम पूरा हो जाएगा।
और पत्र पर मुहर लगी हुई है;
और अब, डूबते सूरज की ओर
वह अपनी आँसू भरी आँखें घुमाती है।

उन आंसुओं को बहते हुए देखकर आश्चर्य मत करो।
क्योंकि शिलालेख द्वारा देखें
कितनी विचित्र और दूरस्थ जगह है!
उसके दिल की गहराई में यही बात जरूर होगी!
तीन समुद्र और कई मील भूमि
वह पत्र अवश्य ही आगे बढ़ जाएगा।
इसे उसके प्रिय हाथों द्वारा पढ़ा गया
यह इंग्लैंड के तट से भेजा गया है।
दूरस्थ औपनिवेशिक जंगली क्षेत्र हिरासत में रखते हैं
उसका पति, जिसे वह प्यार करती थी लेकिन सख्त स्वभाव का था;
वह, उस मुस्कुराते हुए अंग्रेजी दृश्य के बीच,
वह उसकी मनचाही वापसी के लिए रोता है।

खेद।

बहुत पहले मैंने जाने की इच्छा की थी
“वह घर जहाँ मेरा जन्म हुआ था;”
बहुत समय पहले मैं शोक करता था,
मेरा घर बहुत ही वीरान लग रहा था।
अन्य वर्षों में, इसके मौन कक्ष
वे भयावह भय से भरे हुए थे;
अब तो उनकी स्मृति भी आती है
कोमल आंसुओं से अतिभारित।

मैंने जीवन और विवाह को अच्छी तरह से जाना है।
जिन चीजों को कभी बहुत उज्ज्वल माना जाता था;
अब, यह कितनी पूरी तरह से उड़ गया है
प्रकाश की हर किरण!
जीवन के अज्ञात सागर के बीच
मुझे कोई भी सुखद द्वीप नहीं मिला;
अंततः, अपनी तमाम उग्र लहरों के संघर्ष के बावजूद,
मेरी नाव घर की ओर लौट रही है।

अलविदा, अंधकार और गहरे सागर!
अलविदा, परदेस!
खुला, निर्मल विस्तार में,
हे गौरवशाली राज्य!
फिर भी, हालांकि मैं सुरक्षित रूप से पास हो गया था
वह थका हुआ, परेशान सागर,
एक प्रिय आवाज, उफान और विस्फोट के बीच
मुझे दोबारा कॉल कर सकते हैं।

हालाँकि आत्मा की उज्ज्वल सुबह हुई
मेरे लिए स्वर्ग से भी बढ़कर,
विलियम! स्वर्ग के विश्राम से भी
मैं तुम्हारे आह्वान पर मुड़ जाऊंगा!
न तो तूफान और न ही ज्वार कभी रुकना चाहिए
मेरी आत्मा, तब उत्कर्ष पर:
मेरा सारा स्वर्ग कभी तुम्हारी गोद हुआ करता था।

काश ये फिर से मेरा होता!

पूर्वाभास।

“बहन, तुम तो सारा दिन वहीं बैठी रही हो,
थोड़ी देर के लिए चूल्हे के पास आओ;
हवा इतनी तेज़ी से बहती है,
बादल इतने गहरे रंग में जमा हो गए हैं।
वह खुली किताब बिना पढ़ी पड़ी रही।
घंटों तक आपके घुटनों पर;
तुम कभी मुस्कुराए नहीं और न ही तुमने अपना सिर घुमाया;
बहन, तुम क्या देख सकती हो?

“इधर आओ, जेन, खेत की ओर देखो;
कितनी घनी धुंध छाई हुई है!
रास्ता और झाड़ी, दोनों ही छिपे हुए हैं।
सफेद द्वार भी गायब हो गया है।
मैं कोहरे के बीच से कोई परिदृश्य नहीं देख पा रहा हूँ।
हरी-भरी घास के मैदानों वाली कोई पहाड़ी नहीं;
प्रकृति का चेहरा बिल्कुल भावहीन है।
उसका चेहरा बादलों से ढका हुआ था।

पत्तों की सरसराहट भी मुश्किल से सुनाई देती है।
अब हमारे बगीचे में सुनाई दे रहा है;
साल बीतता जा रहा है, उसके दिन छोटे होते जा रहे हैं।
उसके माथे से लटें हट जाती हैं।
बारिश हवा के आगे तेजी से बढ़ती है।
आकाश खाली और धूसर है;
ओ जेन, मन में कितना दुख भरा है!
ऐसे उदास दिन में!

“तुम बहुत ज्यादा सोचती हो, मेरी प्यारी बहन;
आप बहुत देर तक अकेले बैठे रहते हैं;

नवंबर के दिन भले ही नीरस हों, क्या फर्क पड़ता है?
वे जल्द ही चले जाएंगे।
मैंने चूल्हा साफ कर दिया है और आपकी कुर्सी रख दी है।
आओ, एम्मा, मेरे पास बैठो;
हमारे घर की आग कभी नीरस नहीं होती।
हालांकि साल का अंत देर से और सर्द मौसम में होता है,
चाहे रात कितनी भी कष्टदायक क्यों न हो।

हमारी आग की शांतिपूर्ण चमक
इससे मुझे शांति नहीं मिलती:
मेरे विचार दूर-दूर तक भटकना चाहते हैं।
तो फिर, प्रिय जेन, तुम आराम करो।
मैं एक लंबी यात्रा पर जा रहा हूँ।
और अगर, मेरे दिल के बारे में,
बहुत ही घनिष्ठ संबंध थे,
अलग होने पर यह टूट जाएगा।

"'नवंबर के दिन जल्द ही समाप्त हो जाएंगे:'"
जेन, तुमने क्या कहा?
मेरी अपनी आशंकाएं मुझे और भी बहुत कुछ बताती हैं —
मुझे तो पूर्वाभास से ही पक्का पता चल जाता है,
वे फिर कभी वापस नहीं लौटेंगे।
जल्द ही, न सूरज, न तूफान मुझे दिखाई देगा
इससे सुख या दुःख दोनों आ सकते हैं;
वे उस अनंत काल तक नहीं पहुँच पाते।
जो जल्द ही मेरा घर होगा।"

आठ महीने बीत गए, ग्रीष्म ऋतु का सूरज
शानदार आकाश में अस्त होता है;
एक शांत मैदान, चारों ओर हरा-भरा और एकांत।
इसे गुलाबी रंग मिलता है।
जेन एक छायादार सीढ़ी पर बैठी है।
अब वह वहां अकेली बैठी है;
इस दौरान उसका सिर उसके हाथ पर टिका रहता है।
और उसके माथे पर सोच की लकीरें उभर आईं।

वह एक सर्दी के दिन के बारे में सोच रही है,
कुछ ही महीने पहले,

फिर एम्मा की अर्थी को ले जाया गया
जमी हुई बर्फ के वीरान इलाकों के ऊपर।
वह सोच रही है कि वह बहती हुई बर्फ कैसी है
वसंत की पहली किरण में विलीन,
और अब उसकी बहन की यादें कैसी हैं
यह धुंधला जाता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई सपना धुंधला जाता है।

बर्फ धरती को फिर से सफेद कर देगी।
लेकिन एम्मा अब कभी नहीं आती;
वह चली गई, 'सर्दियों की बर्फ़ीली बारिश और हिमपात के बीच'
यह संसार स्वर्ग के दूर के तट के लिए है।
अब वह ब्यूला की पहाड़ियों पर विचरण करती है।
ईडन के शांत मैदान पर;
जेन अब से उसी के पास जाएगी।
वह जेन के पास कभी नहीं आएगी!

शिक्षक का एकालाप।

कमरा शांत है, केवल विचार ही हैं।
लोग इसकी मौन शांति में डूबे रहते हैं;
बोझ उतार दिया गया, लंबा काम पूरा हो गया, —
मैं वही हूं, जो होना आनंदमय है।
शांत और बेफिक्र। अब मुझे समझ आया।
पहली बार, दिन कितना सुहावना है!
शांत जल के ऊपर, स्थिर वृक्ष पर,
शांत और धूप से भरा, पंख फैलाकर अपना रास्ता बना रहा है।
अब, जब मैं उस दूर की पहाड़ी को देखता हूँ,
इतना धुंधला, इतना नीला, इतना दूर,
मेरे दिल को घर के मीठे सपनों से भर जाए,
वह घर जहाँ मुझे जाना और प्यार किया जाता है:
यह उससे परे है; वह नीला आकाश
यह मुझे पृथ्वी पर मौजूद हर चीज से अलग कर देता है;
और सुबह-शाम, मेरी तमन्नाएं उमड़ती रहती हैं।

उस ओर निरंतर अग्रसर।
मेरे सबसे खुशी के पल, हाँ! हमेशा।
मुझे यादों में संजोकर रखना अच्छा लगता है,
जीवन की पहली जवानी से पहले ही, दलदलों के बीच खो गया।
घोर चिंता में डूब गया।

कभी-कभी मुझे लगता है कि संकीर्ण हृदय
इससे मुझे दूर रहने वालों के लिए शोक होता है।
और मेरे प्यार को मुझसे बहुत दूर रखता है
आज के दोस्तों और दोस्ती से;
कभी-कभी मुझे लगता है कि यह सब बस एक सपना है।
मैं इसे बहुत ही संजोकर रखता हूँ,
मेरे सारे मीठे विचार ऐसे लगते हैं
रिक्ति में लुप्त हो जाना:
और फिर, हमारे चारों ओर की यह अजीब, खुरदरी दुनिया
ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब प्रत्यक्ष और सत्य है;
और हर दृश्य, और हर ध्वनि,
मेरी आत्मा को वश में करने के लिए एकजुट करता है
गहरे शोक में, इतना खाली और अकेला
क्या जीवन और पृथ्वी व्यर्थता से भी बदतर हैं?
मेरे हृदय में बोई गई आशाएँ,
और ऐसे सूरज और बारिश से पोषित
जैसे ही आनंद और क्षणिक दुःख दूर होते हैं,
वहाँ फसल पककर तैयार हो गई है:
हाय! मुझे लगता है कि मैंने इसे कहते हुए सुना है,
"तेरी सुनहरी बालियाँ खाली हवा के समान हैं।"

सब कुछ मिट गया; मेरा घर भी।
मुझे लगता है कि यह जल्द ही वीरान हो जाएगा;
मुझे कभी-कभी चेतावनी सुनाई देती है।
इसके द्वार पर कड़वी विदाई;
और, अगर मैं वापस आकर देखूँ
चूल्हे की आग बुझ गई, कुर्सी खाली पड़ी थी;
और इसे दुख भरी फुसफुसाहट में सुना,
वहां विदाई की बातें हो चुकी हैं।
मुझे क्या करना चाहिए और किधर जाना चाहिए?
शांति कहाँ मिलेगी? शोक करना कब बंद होगा?
यह वह धुन नहीं है जिसे मैं बजाना चाहता था।
मैं जिस धुन को गाना चाहता था;

मेरी दृढ़ इच्छाशक्ति लुप्त हो गई
और उसने एक और तार बजाया।
मैं न तो मुस्कुराना चाहता था और न ही रोना।
न तो उज्ज्वल आनंद, न ही घोर दु:ख,
लेकिन बस एक ऐसा मधुर और स्पष्ट गीत,
हालांकि शायद दुख हो, फिर भी प्रवाह हो सकता है।

एक शांत गीत, जो मुझे सुकून दे।
जब नींद आने से इनकार कर दिया;
निराशा को दूर भगाने का एक प्रयास,
जब घर की याद सताती हो।
मेरी कोशिश व्यर्थ है; मैं गा नहीं सकता;
सब कुछ इतना ठंडा और निर्जीव सा लगता है;
न कोई तीव्र पीड़ा, न कोई उमड़ता हुआ झरना
पीड़ा में बहाए गए आँसुओं का;

लेकिन एक की सारी अधीर उदासी
जो दूर के दिन की प्रतीक्षा करता है,
जब, कष्ट का कोई बड़ा कार्य पूरा हो जाए,
विश्राम से परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा।
क्योंकि जवानी बीत जाती है, और सुख उड़ जाता है।
और जीवन धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है।
और यौवन का उल्लासपूर्ण उत्साह समाप्त हो जाता है।
इस नीरस विलंब के नीचे;

और धैर्य, अपने जुए से थककर,
निराशा के आगे झुक जाना,
और स्वास्थ्य की लचीली स्प्रिंग टूट गई है।
देखभाल के तनाव के नीचे।
मेरे जीने से पहले ही जीवन समाप्त हो जाएगा;
जीवन का पहला सुनहरा दौर अब कहाँ है?
मैंने काम किया है, पढ़ाई की है, तरसी है और दुख भी सहा है।
उन सभी सुखद समयों के दौरान।

परिश्रम करना, सोचना, तरसना, शोक करना, —
क्या यही मेरा भविष्य का भाग्य है?
सुबह उदास थी, शाम भी वैसी ही होगी।
क्या वह भी वीरान है?

खैर, कम से कम ऐसा जीवन मृत्यु को तो टाल देता है।
एक स्वागत योग्य, प्रतीक्षित मित्र;
तो, हे तर्क, धैर्य, विश्वास, मेरी सहायता करो।
अंत तक कष्ट सहना!

जुनून।

कुछ लोगों को बेहद खुशी मिली है।
और भी गहरे दुख का सामना करने का साहस करके;
क्या मैं आज रात तुम्हारा प्यार पा सकता हूँ?
मैं कल मौत का जोखिम उठाने को तैयार हूँ।

क्या युद्ध-संघर्ष से लाभ हो सकता है?
तुम्हारी आँखों से एक दयालु दृष्टि,
यह मुरझाया हुआ हृदय कैसे जल उठेगा,
कोशिश करने के लिए एक रोमांचक लड़ाई!

टूटी-फूटी नींद की रातों का स्वागत है,
और नरसंहार के दिन ठंडे पड़ गए,
क्या मैं यह मान लूँ कि तुम रोओगे?
अपनी आपबीती सुनने के लिए।

मुझे बताओ, अगर घुमंतू समूहों के साथ
मैं बहुत दूर तक भटकता हूँ,
क्या तुम उन दूर देशों में जाना चाहोगे?
क्या मन कभी भटकता है?

दूर से तुरही की एक तीखी, लंबी आवाज सुनाई देती है;
मुझे जाने के लिए कहो—मुझे जाने के लिए कहो
जहां युद्ध में सिख और ब्रितानी आमने-सामने होते हैं,
भारतीय सतलुज नदी के प्रवाह पर।

सतलुज की लहरें खून से रंग गई हैं।
मुझे पता है, उस पर गहरा लाल दाग लगा हुआ है;
सिंधु नदी की सीमाएँ कब्रों से भरी पड़ी हैं।
फिर भी, मुझे जाने का आदेश दो!

हालाँकि प्रलय का स्तर और तीव्रता बहुत अधिक थी
राष्ट्रों का स्वर्ग की ओर प्रवाह,
मुझे खुशी है कि मैं मृत्यु के अभिशप्त समूह में शामिल हो गया।
यदि जनादेश दिया गया होता।

जुनून की ताकत से मेरी भुजाओं को मजबूती मिलनी चाहिए।
इसका जोश मेरे जीवन को झकझोर देता है।
जब तक मानवीय शक्ति उस भयानक आकर्षण को रोक न दे
उसे घबराहट में झुक जाना चाहिए और डूब जाना चाहिए।
जैसे पेड़ आंधी-तूफान में खड़े होते हैं।

यदि युद्ध के आवेश में आकर मैं तुम्हारा प्रेम चाहूँ,
क्या तुम मुंह मोड़ने की हिम्मत करोगे?
क्या तुम मेरी आग को कोसने की हिम्मत करते हो?
तिरस्कार और पागलपन भरे अहंकार से?

नहीं—मेरी इच्छा ही सब कुछ तय करेगी।
तेरी इच्छा, जो इतनी उच्च और स्वतंत्र है,
और प्रेम उस अभिमानी आत्मा को वश में कर लेगा।
हाँ— मेरे लिए सबसे कोमल प्रेम।

मैं तुम्हारी आँखों में अपनी जीत देखूंगा।
परिवर्तन को देखो और सिद्ध करो;
तो शायद मैं अपना नोबेल पुरस्कार छोड़ दूं।
एक बार फिर हथियारों के साथ मैदान में।

जब सारा झाग निकल जाएगा तो मैं मर जाऊंगी।
चमकीली शराब की लपटें बहुत तेज हैं;
और न ही प्याला खाली होने तक प्रतीक्षा करें
जीवन के नीरस अवशेष केवल झूठ ही होते हैं।

तब प्रेम को इस प्रकार मधुर प्रतिफल से परिपूर्ण किया गया,
आशा परिपूर्णता से भरपूर है,

मैं घोड़े पर सवार होता, तलवार निकालता,
और हमले में मारे जाओ!

वरीयता।

मैं तुम्हें तिरस्कारपूर्वक फटकार नहीं लगाता।
मैं तुम्हारे वचनों को अहंकार में नहीं तोड़ता।
लेकिन, यकीन मानो, मैं तुमसे प्यार नहीं कर सकता।
तुम राजकुमार होते और मैं गुलाम।
तो, ये हैं तुम्हारी प्रेम की शपथें?
क्या यही तुम्हारा मेरे प्रति स्नेह है?
यहां तक कि तुम्हारे स्वयं के स्वीकारोक्ति के आधार पर भी न्याय किया गया।
तुम विश्वासघात में लिप्त हो।
मुझे पराजित करने के बाद तुम मुझे छोड़ दोगे!
मैंने तुम्हें बहुत पहले इस प्रकार पढ़ा था;
इसलिए मैंने तुम्हें धोखा देने का साहस नहीं किया।
यहां तक कि मित्रता के सौम्य प्रदर्शन के बावजूद भी।
इसलिए, भावहीन शीतलता के साथ
क्या मैंने कभी तुम्हारी निगाहों को देखा है?
हालांकि, अक्सर, निडरता और साहस से भरपूर,
तूने अपनी आँखें मेरी ओर उठाईं।
वो मुस्कान क्यों? अब तुम मान रहे हो
मेरी यह सारी उदासीनता झूठी है, —
लेकिन जमे हुए से दिखने वाले मुखौटे के समान,
गुप्त रूप से जलाई जा रही आग को लोगों की नजरों से छिपाना।
हे स्वयं को धोखा देने वाले, मेरे हाथ को छू लो;
नहीं, शांत रहो, क्योंकि मैं ऐसा ही हूँ:
क्या जलन हो रही है? क्या मेरे होंठ कांप रहे हैं?
क्या मेरी आंखों में परेशानी की चमक है?
क्या तुम एक पल के रंग को नाम दे सकते हो?
मेरे माथे पर— मेरे गाल पर?
क्या तुम उनके शांत पीलेपन को रंग सकते हो?
एक चापलूसी भरी, जोशीली प्रवृत्ति के साथ?
क्या मैं संगमरमर हूँ? क्या! नहीं, औरत नहीं।

क्या कोई तुम्हारे समक्ष इतनी शांति से खड़ा रह सकता है?
कोई भी जीवित, सचेत, मानवीय वस्तु नहीं।
क्या इतनी बेरुखी से कोई तुम्हारा हाथ थाम सकता है?
हां—एक बहन ऐसा कर सकती है, एक मां:
मेरी सद्भावना बहन जैसी है:
सपने मत देखो, मैं उन्हें दबाने का प्रयास करता हूँ।
वो अग्नि जो भीतर ही भीतर तुम्हारे लिए जलती है।
क्रोध मत करो, रोष मत करो, क्रोध व्यर्थ है।
क्रोध मेरा मन नहीं बदल सकता;
लेकिन मुझे यह भावना जड़विहीन लगती है।
जो जुनून की हवा में इस प्रकार घूमता है।
क्या मैं प्यार कर सकता हूँ? ओह, गहराई से—वास्तविक रूप से—
स्नेहपूर्वक—प्यार से—लेकिन तुम्हें नहीं;
और मेरे प्रेम का उचित उत्तर मिल गया है।
समान ऊर्जा के साथ।
क्या तुम अपने प्रतिद्वंदी से मिलना चाहते हो? जल्दी करो।
उस पर्दे को धीरे से एक तरफ हटा दो,
देखो, वे घनी शाखाएँ कहाँ सुधार लाती हैं
दोपहर, शाम के धुंधलके के साथ।
उस खुले मैदान में, जहाँ पत्तियाँ आपस में मिल रही हैं
ऊपर एक हरे रंग का मेहराब बनता है।
तेरा प्रतिद्वंद्वी सोच में डूबा बैठा है।
कागजों से सजे एक स्टैंड के ऊपर —
स्थिर, उसकी उंगलियां चल रही थीं
वह अथक, निरंतर कलम;
समय और लहरें अनजाने में उड़ती चली जाती हैं,
वह वहां बैठा है—मनुष्यों में प्रथम!
विवेकशील व्यक्ति—तर्कशील व्यक्ति;
कठोर, शायद, लेकिन हमेशा न्यायप्रिय;
झूठ, अन्याय और राजद्रोह का शत्रु।
सम्मान की ढाल, और सद्गुण की जिम्मेदारी!
कार्यकर्ता, विचारक, दृढ़ रक्षक
स्वर्ग के सत्य का — मनुष्य की स्वतंत्रता;
लोहे की आत्मा — निंदा का प्रमाण,
वह चट्टान जहाँ संस्थापकों ने अत्याचार किया।
वह प्रसिद्धि की तलाश नहीं करता—लेकिन निश्चित रूप से भरपूर है।
वह उसके घर में उसकी तलाश करेगी;
यह मुझे पता है, और मैं सुरक्षित रूप से प्रतीक्षा करता हूँ।
प्रायश्चित के आने वाले समय के लिए।

उस व्यक्ति पर मेरा विश्वास है।
इसलिए, सिपाही, मुकदमा करना बंद करो;
जब तक परमेश्वर पृथ्वी और स्वर्ग में शासन करता है,
मैं उसके प्रति अब भी वफादार रहूंगा!

शाम की शांति।

मनुष्य के हृदय में छिपे हुए खजाने होते हैं।
गुप्त रखा गया, मौन रखा गया;
विचार, आशाएँ, सपने, सुख,
जिनके आकर्षण का खुलासा होने पर उनका आकर्षण भंग हो जाता था।
और कई दिन खुशी भरी उलझन में बीत सकते हैं।
और गुलाबी उल्लास में रातें बीत जाती हैं,
जबकि, प्रसिद्धि या धन के भ्रम में खोए हुए,
अतीत की यादें मिट सकती हैं।

लेकिन अकेले में चिंतन करने के कई घंटे होते हैं,
जैसे शाम की खामोशी में आ जाओ,
जब, पक्षियों की तरह कोमल भाव से अपने पंख समेटते हुए,
दिल की सबसे अच्छी भावनाएं घर लौट आती हैं।
तब हमारी आत्माओं में उदासी छा जाती है।
एक कोमल शोक जो विपत्ति नहीं है;
और वे विचार जो कभी पीड़ा भरी आहें भरवाते थे
अब बस कुछ हल्के आंसू बहने दो।

और भावनाएँ, जो कभी जुनून जितनी प्रबल थीं,
धीरे से वापस लौटना—एक धुंधला सपना;
हमारे अपने तीव्र दुःख और तीव्र भावनाएँ,
दूसरों के कष्टों की कहानी प्रतीत होती है।
ओह! जब दिल ताजा-ताजा खून से लथपथ हो,
उस समय तक कितना समय लगेगा?
जब, बीते वर्षों के धुंध के बीच से,
इसकी परेशानियां तो हैं, लेकिन कल्पनाओं में खोए रहो!

और यह चांदनी की झिलमिलाहट पर भी ध्यान केंद्रित कर सकता है।
शाम की छाया और अकेलेपन पर;
और, जैसे-जैसे आकाश धुंधला होता जाता है,
किसी अनकही और अजीब पीड़ा का अनुभव न करें —
केवल एक गहरी प्रेरणा ही दी गई है
एकांत के क्षणों और अंधेरे कमरे में,
उन गंभीर विचारों के लिए जो स्वर्ग तक पहुंचते हैं
एक बेहतर जीवन और भविष्य की तलाश में।

छंद।

यदि तुम किसी एकांत स्थान पर हो,
यदि तुम्हें एक घंटे की शांति मिल जाए,
जैसे ही शाम अपना शांत चेहरा झुकाती है
इस मधुर दिन के अंत पर;
यदि सारी पृथ्वी और सारा आकाश
अब शांत रहो,
जैसे ही उन पर गर्मी भी समाप्त हो जाती है,
एक पल रुकिए—मेरे बारे में सोचिए!

घर लौटते समय, गली में रुकना;
शाम हो रही है, सब शांत रहेगा:
एल्म के पेड़ के पास रुकें, एक पवित्र उदासी छाई हुई है।
इसकी हवा रहित शाखाएँ भर जाएँगी।
उस कोमल और सुनहरी रोशनी को देखो,
आसमान में ऊँचाई पर, बादलों से रहित;
आखिरी पक्षी की देर से उड़ान को देखो,
जैसे ही वह चुपचाप गुजर जाता है।

सुनो! हवा में एक आवाज़ सुनाई दे रही है,
एक कदम, एक आवाज, एक आह;
यदि सब कुछ शांत हो जाए, तो अपना मन एकाग्र कर लो।

बिना जांचे, स्मृति में।
अगर तुम्हारा प्रेम मेरे जैसा होता, तो कितना सौभाग्य होता!
वह गोधूलि बेला प्रतीत होती है,
जब, अतीत के अफसोस से वापस आकर,
हमारा शुरुआती सपना साकार हो गया!

अगर तुम्हारा प्यार मेरे जैसा होता, तो कितना बेतहाशा होता!
तेरी लालसा, पीड़ा तक ले जाती है,
सूर्यास्त के कोमल प्रकाश के लिए, और चांदनी के शांत प्रकाश के लिए,
उस पल को फिर से लाने के लिए!
लेकिन अक्सर, जब मैं तुम्हारी बाहों में लेटता हूँ,
मैंने तुम्हारी काली आँखों में चमक देखी है,
और उनकी परिवर्तनशील किरण को गहराई से महसूस किया।
उसने मेरे प्यार के अलावा किसी और के प्यार की बात की।

मेरा प्यार अब लगभग पीड़ा में बदल गया है।
यह बहुत ही मजबूत और सच्ची धड़कन है;
यह परमानंद होगा, यदि मैं यह मान सकूँ कि तुम
ऐसा कष्ट तो कभी किसी ने नहीं सहा।
मैं तो बस तुम्हारा क्षणभंगुर फूल था।
तुम मेरे दिव्य ईश्वर थे;
जब तक मृत्यु की जमा देने वाली शक्ति द्वारा रोका न जाए,
मेरा दिल तुम्हारे लिए जरूर धड़कता होगा।

और मेरे अंतिम क्षण भी सुखमय रहे।
अगर जीवन की अंतिम सांस
तुम्हारे होठों के कोमल स्पर्श से गुजर जाना चाहिए
मृत्यु के समय मेरा माथा ठंडा पड़ गया;
और मेरी नींद गहरी और मीठी होगी।
गिरजाघर के प्रांगण में लगे पेड़ के नीचे,
यदि कभी-कभी तुम्हारे हृदय में धड़कन हो
एक धड़कन, जो अब भी मेरे लिए सच्ची है।

विदाई।

रोने से कोई फायदा नहीं है।
यद्यपि हमें बिछड़ना ही है:
रखने जैसी भी कोई चीज़ होती है।
हृदय में एक स्मृति:

निवास करने जैसी भी कोई चीज़ होती है।
हमने स्वयं इस विचार को पोषित किया है,
और तिरस्कार और साहस के साथ बताते हुए
दुनिया अपनी सबसे बुरी हरकतें करेगी।

हम इसकी मूर्खताओं से दुखी नहीं होंगे।
हम उन्हें वैसे ही स्वीकार करेंगे जैसे वे आएंगे;
और फिर हर दिन हमें छोड़ जाएगा
घर के लिए एक जोरदार हंसी।

जब हम अपने हर दोस्त और भाई से विदा ले लेंगे,
जब हम एक-दूसरे से बहुत दूर और अलग हो जाते हैं,
हम एक दूसरे के बारे में सोचेंगे।
हमसे भी बेहतर के रूप में।

हमारे ऊपर के प्रत्येक भव्य दृश्य,
नीचे के सभी मनमोहक दृश्य,
हम उन लोगों से जुड़ेंगे जो हमसे प्यार करते हैं।
जिनसे हम मृत्यु तक सच्चा प्रेम करते हैं!

शाम को, जब हम बैठे होते हैं
आग के पास, शायद अकेले,
तब हृदय का मिलन गर्मजोशी से होगा,
जैसे को तैसा जवाब दें।

हम उन बंधनों को तोड़ सकते हैं जो हमें जकड़े हुए हैं।
जिसे निर्मम मानव हाथों ने बनाया है,
और जहाँ कोई हमें रोकने की हिम्मत नहीं करेगा
हम विचारों में फिर मिल सकते हैं।

इसलिए रोने का कोई फायदा नहीं है।
अभी भी प्रसन्न भाव बनाए रखें;
कभी संदेह न करें कि भाग्य अपना काम कर रहा है।
वर्तमान की बुराई के बदले भविष्य अच्छा!

धर्मत्याग।

मेरे विश्वास का यह अंतिम खंडन,
हे परम पूज्य पुजारी, आपने सुन लिया है;
और, यद्यपि मैं मृत्युशय्या पर हूँ,
मैं एक शब्द भी वापस नहीं कहता।
हे पुजारी, अपनी मैडोना की ओर इशारा मत करो, —
तेरा दृष्टिहीन पत्थर का संत;
वह इस जलते हुए सीने से ऐसा नहीं कर सकती।
पश्चाताप भरी एक आह भरो।

तुम कहते हो कि जब एक निष्कलंक बालक,
मैंने विधिवत घुटने टेके।
और संगमरमर में जो मुस्कुरा रहा था, उसकी ओर प्रार्थना की।
मेरे ऊपर ठंडा, निर्जीव, मूक सा भाव।
मैंने किया। लेकिन सुनो! बच्चे उछलते हैं।
जल्द ही परिपक्व युवावस्था की ओर अग्रसर;
और, प्रेम की प्रतिज्ञा और विवाह की अंगूठी के लिए,
मैंने अपने शुरुआती सच को बेच दिया।

वह तुम्हारे जैसा भूरा, गंजा सिर नहीं था।
जब मैंने कहा, तो वह मेरे ऊपर झुक गई।
"वह भूमि, ईश्वर और आस्था मेरी है।"
जिसके लिए तुम्हारे पूर्वजों ने रक्त बहाया।
मुझे तुम दिखाई नहीं दे रहे, मेरी आंखें धुंधली हैं;
लेकिन तुम्हारी बात मुझे अच्छी लगी।
"हे पुत्री, उसके बारे में सोचना बंद करो।"
जिसने तुम्हारी आत्मा को गुमराह किया।

“तुम्हारे बीच अंतरिक्ष और समय दोनों मौजूद हैं;
लीग और वर्षों को ही प्राथमिकता दें।
तुम्हें अपराध के मार्ग से मोड़ने के लिए,
चर्च की सीमा रेखा में वापस।
और अगर मुझे इसकी ज़रूरत थी, तो तुम्हें बताना चाहिए था।
कैसी-कैसी विशाल बाधाएँ खड़ी हो जाती हैं?
मुझे उस कालकोठरी से अलग करने के लिए,
जहां मेरा प्रिय वाल्टर दफन है?

और क्या मुझे तुम्हारी इस बात की ज़रूरत थी कि तुम मेरा मज़ाक उड़ाओ?
अंततः, मेरी मृत्यु का समय आ गया है।
इस पुरानी स्पिरिट पैंट की बोली लगाकर
जो बीत गया सो बीत गया, अब उसका कोई महत्व नहीं?
पुजारी—क्या मुझे उसके बारे में सोचना बंद कर देना चाहिए?
यह शब्द कितना खोखला लगता है!
क्या समय, क्या आंसू, क्या दूरी धुंधलापन ला सकती है?
मेरे स्वामी की स्मृति?

मैंने पहले भी कहा था, मैंने तुम्हें नहीं देखा था।
क्योंकि, एक घंटे पहले,
मेरी आंखों पर, भारी भरकम तरीके से,
ढक्कन पत्थर की तरह नीचे गिर गए।
लेकिन फिर भी मेरी आत्मा की आंतरिक दृष्टि
उसकी छवि की किरण को देखो
स्थिर, स्पष्ट और उज्ज्वल रूप से जलता हुआ,
किसी लाल ग्रह की चमक की तरह।

अपने अंतिम संस्कार की बात मत करो।
मेरे लिए अपनी माला मत जपो;
अनुष्ठान और प्रार्थना दोनों व्यर्थ ही व्यतीत होते हैं।
समुद्र पर ओस की बूंदों की तरह।
ऊपर स्वर्ग के बारे में एक शब्द भी मत बोलो।
नरक के खतरों से भयभीत मत हो;
मुझे बस मेरे वाल्टर का प्यार वापस दे दो।
मुझे उसकी बाहों में वापस लौटा दो!

तब स्वर्ग का आनंद प्राप्त होगा;

तब नरक सिकुड़ जाएगा,
मैंने देखा है कि रात के भयानक सपने दूर भाग जाते हैं
दिन के विजयी कदम।
प्रेम करना ही मेरा धर्म है।
इस प्रकार मेरा दृढ़ विश्वास निर्धारित है;
न तो मृत्यु हमें हिला पाएगी, न ही पुरोहितवाद हमें तोड़ पाएगा।
मेरी चट्टान जैसी दृढ़ता!

अब जाओ; क्योंकि द्वार पर प्रतीक्षा कर रहा है
एक और अजनबी मेहमान;
वह बुलाता है—मैं आता हूँ—मेरी नब्ज़ मुश्किल से धड़क रही होती है।
मेरा दिल बैठ गया।
फिर वही आवाज— कितनी दूर से आ रही है!
यह स्वर कितना नीरस लगता है!
और मुझे लगता है कि मैं भटक गया हूँ।
दुर्गम और सुनसान इलाकों में।

मैं थोड़ी देर आराम करना चाहता हूँ:
मुझे रहने की जगह कहाँ मिल सकती है?
जब तक पहाड़ियों पर भोर की किरणें न खिलें,
और क्या कोई आजमाया हुआ रास्ता दिखा सकते हैं?
"मैं आ रही हूँ! मैं आ रही हूँ!" उसने जल्दी से कहा।
"मैंने वाल्टर की आवाज सुनी!"
फिर वह उछल पड़ी — लेकिन वापस गिर पड़ी, और उसकी मृत्यु हो गई।
उसका नाम उसका नवीनतम शब्द था।

सर्दियों का सामान।

हम जीवन से एक छोटा सा हिस्सा ही लेते हैं,
और कहो कि यह होगा
परिश्रम और चिंताओं से मुक्त एक स्थान,
आंसुओं और उदासी से मुक्ति।

और शायद, मृत्यु अपने धनुष की डोरी खोल दे।
और दुःख अलग खड़ा है,
और, थोड़ी देर के लिए, हम जानते हैं
हृदय की धूप।

जीवन ग्रीष्म ऋतु की पूर्व संध्या जैसा प्रतीत होता है।
गर्मजोशी से भरपूर, कोमल और शांति से परिपूर्ण,
हमारी स्वतंत्र, बेरोक भावनाएं देती हैं
आत्मा को पूर्ण मुक्ति प्राप्त हो।

फिर, एक क्षण के लिए, यह शक्ति ले लेता है।
ऐसे विचारों को जगाना जो चौंका दें
उस पवित्र और पावन घड़ी के आसपास,
यह जीवन की सबसे दिव्य चमक है।

लेकिन समय, चाहे वह अदृश्य रूप से ही क्यों न उड़ता हो,
और धीरे-धीरे, यह ठहर नहीं पाएगा;
चाहे आसमान साफ हो या बादल छाए हों,
यह चुपचाप अपना रास्ता बनाता हुआ आगे बढ़ता है।

दुःख के कड़वे प्याले के समान,
आनंद के घूंट के समान,
इसकी प्रगति क्षण भर के लिए ही रह जाती है।
हैरान होंठों को चूमने के लिए

वह चमकदार पेय सूख गया है।
विश्राम का समय बीत गया।
और हमारे चारों ओर से आती हुई तीव्र आवाजें कहती हैं,
"हो, लंबे समय तक, जल्दी करो!"

और क्या आत्मा ने तब केवल लाभ ही प्राप्त किया है?
इस थोड़े समय के आराम से,
अत्यधिक तनाव होने पर थोड़ी देर आराम करना आवश्यक है।
शांति की एक क्षणिक झलक?

नहीं; जब तक सूर्य की किरणें हम पर कृपापूर्वक चमकती रहीं,
और हमारे पैरों के चारों ओर फूल खिल उठे, —
हमारे सामने खुशी की कई कलियाँ खिली हुई हैं

खुली पंखुड़ियाँ मीठी हैं, —

भीतर ही भीतर एक अदृश्य क्रिया चल रही थी;
शहद की तलाश करने वाली मधुमक्खी की तरह,
एक फूल से दूसरे फूल तक, बिना थके, उड़ते हुए,
एक संकाय पर श्रम किया, —

सर्दियों के भविष्य के दुख के प्रति विचारशील,
इसका अंधकार और अभाव;
आज की दूरदर्शिता, कल की जरूरतों का ज्ञान,
शांत स्मृति ने परिश्रम किया।

यह वही है जो हर क्षणिक सुख से
इससे दीर्घकालिक लाभ मिलता है;
गर्मी के मौसम में खजाना ढूंढने वाली वही होती है।
सर्दियों के भोजन के लिए।

और जब जवानी के ग्रीष्मकाल के दिन बीत जाते हैं,
और उम्र के साथ सर्दी का तनाव भी आता है।
उसके भंडार में संचित मिठाइयों की पुनःपूर्ति की गई थी।
जीवन की संध्या के क्षण आशीर्वाद से भरे होंगे।

मिशनरी।

हल चलाना, पोत चलाना, ब्रिटिश मुख्य भूमि पर हल चलाना,
मुक्त महासागर के विशाल मैदान की खोज करो;
अंग्रेजी दृश्यों और अंग्रेजी आसमानों को छोड़ दो,
अंग्रेजी संबंधों को तोड़ना, समाप्त करना;
मुझे दूरस्थ और विचित्र स्थानों पर ले चलो।
जहां परिवर्तन के बाद जीवन में तेजी से बदलाव आता है,
तीव्र क्रियाशीलता, अथक परिश्रम,
आत्मा की भूमि को हिलाएंगे, पलटेंगे, खोदेंगे;
नई जड़ें लगाएंगे, नए बीज बोएंगे।

जब तक वहां एक नया बगीचा न उग जाए,
इसमें उगी हुई खरपतवारों को साफ कर दिया गया है, —
महज मानवीय प्रेम, महज स्वार्थी लालसा,
जिसे अगर संजोकर रखा जाए तो वह मुझे अभी भी गिरफ्तार कर लेगा।
मैंने हल को पकड़ लिया है, अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है।
तो चलिए, भूलने के लिए संघर्ष करते हैं।

लेकिन इंग्लैंड के तट अभी भी नजर आ रहे हैं।
और इंग्लैंड का कोमल नीला आकाश
वे उसके संरक्षक समुद्र के ऊपर मेहराबदार संरचना में बने हैं।
मैं अब तक स्मृति से भाग नहीं सकता;
इसलिए मुझे एक बार फिर दृढ़ता से सामना करना होगा।
उस पीड़ादायक कार्य को पुनः खोजना।
घर से लगाव होने के कारण मैं घर का त्याग करता हूँ;
बदलाव से डर लगता है — मैं बदलाव करता हूँ;
आराम का अत्यधिक शौकीन होने के कारण मैं परिश्रम में डूब जाता हूँ;
शांति का प्रेमी होने के नाते, मैं उथल-पुथल की तलाश करता हूँ:
प्रकृति और प्रतिकूल नियति
मेरे दिल में एक तीव्र संघर्ष उमड़ रहा है;
और यह युद्ध लंबा और भयंकर होगा।
दोनों के बीच कर्तव्य का सामंजस्य स्थापित हो गया है।

और कौन सा बंधन मुझे अभी भी थामे हुए है?
क्या यह तलाकशुदा, परित्यक्त अतीत की ओर इशारा करता है?
मेरे हृदय की वेदी पर सुलगता हुआ पड़ा है
किसी महान बलिदान की अग्नि,
अभी आधा भी नहीं बुझा। पवित्र इस्पात
लेकिन हाल ही में मेरी कामुक इच्छा पर काबू नहीं पाया जा सका,
मेरी जीवन भर की आशा, मेरा पहला और आखिरी आनंद,
जिस चीज से मुझे बेहद प्यार था, और जिससे मैं मजबूती से जुड़ा रहा;
जिसे मैं पूरी शिद्दत से बरकरार रखना चाहता था,
मैंने अत्यंत पीड़ा के साथ जिस चीज का त्याग किया;
जब मैंने उसे देखा, कुल्हाड़ी से घायल होकर मरते हुए—
इस धरती पर मेरे लिए संजोने लायक कोई खुशी नहीं बची;
एक दुखी व्यक्ति— फिर भी अब दृढ़ता से खड़ा है
मैं पुष्टि करता हूँ कि येफ्ता ने प्रतिज्ञा की थी:
क्या मुझे पीछे हटना चाहिए, या डरना चाहिए, या भाग जाना चाहिए?
क्या मसीह ने, जब घातक वृक्ष उगा,
क्या उनके सामने, माउंट कैलवरी पर?

यह एक लंबी, कठिन लड़ाई थी, लेकिन अंत में जीत हासिल हुई।
और मैंने जो किया वह न्यायसंगत था।

फिर भी, हेलेन! मैंने तुम्हारे प्रेम से मुंह मोड़ लिया।
जब मेरा हृदय तुम्हारे हृदय के लिए सबसे अधिक तड़प रहा था;
मैंने तेरे आँसुओं का सामना किया, मैंने तेरे तिरस्कार का सामना किया —
मृत्यु की पीड़ा को सहना आसान था।
हेलेन, तुम मेरे साथ नहीं जा सकतीं।
मैं तुम्हारे लिए रुक नहीं सका—हिम्मत नहीं कर सका!
मैंने दूर से बंधनों में शिकायत सुनी
मुख्य भूभाग के उस पार से आया हुआ बर्बर व्यक्ति;
और वह जंगली आवाज़ चीख के ऊपर उठ खड़ी हुई।
वासना की पीड़ा से चूर-चूर;
और यहाँ तक कि जब, सबसे कड़वे आँसू के साथ
मैंने हमेशा आंसू बहाए हैं, मेरी आंखें धुंधली थीं।
फिर भी, आत्मा की दृष्टि स्पष्ट होने के कारण,
मैंने नरक का विशाल और भयावह साम्राज्य देखा।
भारत की प्रत्येक नदी के तट पर फैला हुआ,
एशिया के प्रत्येक क्षेत्र को कवर करते हुए।
वहाँ कमजोरों को बलवानों द्वारा रौंदा जाता है,
दुख भोगने के लिए जीना — निराशाजनक मृत्यु;
वहाँ मूर्तिपूजक पुजारी हैं, जिनका पंथ गलत है।
जबरन वसूली, वासना और क्रूरता
हमारी खोई हुई नस्ल को कुचल दो — और उसे भर दो
मानव पीड़ा का कड़वा प्याला;
और मैं—जिसके पास उपचार का सिद्धांत है,
मरियम के पुत्र का दयालु विश्वास,
क्या मुझे अपने भाई की ज़रूरत देखनी चाहिए?
और, स्वार्थवश, उसकी मदद करना?
मैं—जो अपनी माँ की गोद में था,
बचपन में मसीह के लिखित वचन को पढ़ें।
उन्हें शांति की विरासत प्राप्त हुई।
उनके पवित्र नियम को सुना गया;
मैं— जिसके हृदय में पवित्र भावना है
यीशु के प्रेम का अनुभव बचपन से ही होता आ रहा था;
उनकी शुद्ध, पूर्ण परोपकारिता के कारण,
अपराधबोध के प्रति उनकी करुणामयी कोमलता;
भटकती भेड़ों के प्रति उनकी चरवाहे जैसी देखभाल,
सभी कमजोर, दुखी, कांपती हुई चीजों के लिए,

उनकी दया असीम है, उनका प्रेम गहरा है।
मनुष्य के कष्टों के प्रति व्यथा;
मैं—बचपन से ही ऐसी विद्याओं में शिक्षित—
क्या मुझे पीछे हटने या हिचकिचाने की हिम्मत करनी चाहिए?
जब बीमारी के घाव को ठीक करने के लिए बुलाया जाए
उन दूरदराज और सुनसान इलाकों की बात कर रहे हैं?
अंधकार, मृत्यु के क्षेत्र और छायाओं में,
राष्ट्र, जनजातियाँ और साम्राज्य स्थित हैं,
लेकिन उनके लिए भी आस्था का प्रकाश
उनके उदास आकाश में दरार पड़ रही है:
और उन्हें उठाने का आदेश देना मेरा कर्तव्य है।
उनके झुके हुए सिर जलती हुई लकड़ियों के दृश्य की ओर,
और सूर्योदय की चमक को पहचानो और उसका स्वागत करो।
जो नाज़ारेथ के ईसा मसीह के आगमन की घोषणा करता है।
मुझे पता है कि यह पर्दा किस तरह नरक फैलाएगा।
उनकी भौहों और धुंधली आँखों के ऊपर,
और उठे हुए सिर को धरती की ओर कुचल दो
वह ऊपर की ओर देखेगा और आकाश की खोज करेगा;
मुझे पता है कि वह दुष्ट किस प्रकार का युद्ध छेड़ेगा।
उस क्रूस के सिपाही के विरुद्ध,
कौन उसके राक्षसी क्रोध को चुनौती देने आता है?
और उसके राज्य को लज्जा और हानि पहुंचाएगा।
हाँ, परिश्रम कठिन और भयानक है।
जो व्यक्ति विदेशी धरती पर कदम रखता है,
सुसमाचार की बेल लगाने का संकल्प लिया।
जहां अत्याचारी शासन करते हैं और गुलाम विलाप करते हैं;
धर्म के प्रकाश को फैलाने के लिए उत्सुक
जहां मानसिक रात की सबसे घनी छायाएँ
झूठे देवता और शैतानी अनुष्ठान का पर्दाफाश करो;
वह मिशनरी रक्त लापरवाह है,
घने जंगल और बीहड़ इलाके में स्थित झोपड़ी,
अशुभ हवा में छोड़कर चला गया है,
उस व्यक्ति की गहरी कराह—शहीद की प्रार्थना।
मुझे अपनी किस्मत का पता है— मैं बस इतना ही पूछता हूँ
इस गौरवशाली कार्य को पूरा करने की शक्ति;
आत्मा की इच्छा से शरीर भी संतुष्ट हो जाए।
आज के दिन के लिए नई शक्ति प्राप्त करें।
चाहे चिलचिलाती धूप हो या जानलेवा हवा
गंभीर मन पर हावी न हों;

यह भयानक या सबसे भयावह मृत्यु का कारण बन सकता है।
न तो सत्य को कुचलें, न ही आस्था को विफल करें।
भले ही मुझसे खून की ऐसी बूँदें गिरें
जैसा कि प्राचीन गेथसेमानी में हुआ था,
पीड़ा का स्वागत करो, ताकि यह दे सके
काम करने के लिए अधिक शक्ति — बचत करने के लिए अधिक कौशल।
और, ओह! अगर मेरा समय संक्षिप्त ही होना है,
यदि शत्रुतापूर्ण हाथ या घातक जलवायु
मेरी राह अधूरी छोड़ दी — फिर भी मेरी कब्र पर मंडरा रहा है,
हे प्रभु, तेरी फसल सफेद लहर की तरह चमके।
तो इस प्रकार संस्कृति की शुरुआत हो सकती है,
दूसरों को हंसिया घुसाने दो;
यदि बीज तेजी से बढ़ेगा,
मेरे रक्त से जो बोया है, उसे सींचा जाए!

क्या! मैं कभी कांपते हुए खड़ा रहा हूँ?
और क्या वे परमेश्वर को वह रक्त देने से डरते थे?
क्या! क्या कायर को जीवन से प्यार है?
क्या इसने मुझे न्यायपूर्ण संघर्ष से पीछे हटने पर मजबूर कर दिया?
मानवीय भावनाएं और मानवीय भय होते हैं।
मुझे उन अग्रदूतों से अलग कर दिया
जिसका काम सबसे पहले मार्च करना और उसका पता लगाना है
हमारी नस्ल की प्रगति के लिए क्या रास्ते हैं?
ऐसा ही हुआ है; लेकिन हे प्रभु, मुझे यह वरदान दीजिए।
अब तेरे वचन पर दृढ़ रहना है!
मुक्ति के कवच द्वारा संरक्षित,
आस्था से सुरक्षित, सत्य से घिरा हुआ,
जब मुश्किलें हावी होने लगें तब भी मुस्कुराना
और परीक्षण के दौरान आग के बीच में बिना चोट लगे खड़े रहें!
नरक के सबसे मजबूत गढ़ों को ध्वस्त करते हुए,
जब आखिरी दर्द मेरे सीने को झकझोर देता है,
जब मृत्यु शहीद का ताज प्रदान करती है,
और मुझे यीशु के विश्राम में बुलाता है।
फिर मेरे अंतिम पुरस्कार के लिए—
फिर संसार को आनंदित करने वाले शब्द के लिए—
पिता—पवित्र आत्मा—पुत्र की वाणी:
"हे ईश्वर के सेवक, तुमने बहुत अच्छा किया!"

एलिस बेल (एमिली ब्रोंटे) की कविताएँ

आस्था और निराशा।

“शीतकालीन हवा तेज और तूफानी होती है,
मेरे प्रिय बच्चे, मेरे करीब आओ;
अपनी किताबों और साथीविहीन खेल को त्याग दो;
और, जैसे-जैसे रात धुंधली होती जा रही है,
हम इसके उदासी भरे पलों को बातचीत से बिता देंगे;

“इर्ने, हमारे आश्रय कक्ष के चारों ओर
नवंबर की तेज हवाओं ने अनसुनी कर दी;
यहां एक भी हल्की सी सांस भी प्रवेश नहीं कर सकती।
मेरी बेटी के बालों को लहराने के लिए काफी है।
और मुझे आग की लपटों को देखकर खुशी हो रही है।
उसकी आंखों से निकली एक झलक, जिसमें नकली किरणें थीं;
उसके गालों को इतने कोमल स्पर्श से महसूस करना,
मेरी छाती पर सुखद शांति में,

लेकिन फिर भी, यह शांति भी

इससे मेरे मन में कड़वे और बेचैन करने वाले विचार आते हैं;
और, लाल आग की आनंदमय चमक में,
मुझे बर्फ से ढकी गहरी घाटियों की याद आती है;
मैं बंजर भूमि और धुंध भरी पहाड़ियों का सपना देखता हूँ।
जहां शाम अंधेरी और ठंडी होकर समाप्त होती है;
क्योंकि, अकेले, ठंडे पहाड़ों के बीच,
वे लोग लेटे हैं जिनसे मैंने अतीत में प्यार किया था।
और मेरा दिल असहनीय पीड़ा से तड़प रहा है।
व्यर्थ के पछतावे से थककर,
मैं उनसे फिर कभी नहीं मिलूंगा!

“पिताजी, शैशवावस्था के शुरुआती दौर में,
जब तुम समुद्र के उस पार बहुत दूर थे,
ऐसे विचार मुझ पर अत्याचार कर रहे थे!
मैं अक्सर घंटों तक बैठा रहता था।
तूफानी मौसम की लंबी रातों के दौरान,
तकिये पर पाला-पोसा गया, देखने के लिए
आकाश में धुंधला चाँद संघर्ष कर रहा है;
या फिर, ध्यान से सुनकर, उस झटके को महसूस करने की कोशिश करना।
चट्टान के साथ लहर, और लहर के साथ चट्टान;
इसलिए मैं भयभीत होकर निगरानी रखूंगा।
और, सब कुछ सुनने के लिए, कभी मत सोना।
लेकिन इस दुनिया के जीवन में बहुत कुछ भयावह है।
लेकिन, मेरे पिता, मृतकों के साथ ऐसा नहीं होता।

“ओह! हमें उनके लिए निराश नहीं होना चाहिए।”
कब्र सुनसान है, लेकिन वे वहां नहीं हैं;
उनकी धूल घास में मिल गई है।
उनकी आत्माएं ईश्वर के पास चली गईं!
तुमने मुझे यह बताया था, और फिर भी तुम आह भरते हो।
और बुदबुदाओ कि तुम्हारे दोस्तों को मरना होगा।
अरे! मेरे प्यारे पिताजी, मुझे बताइए क्यों?
क्योंकि, यदि आपके पहले के शब्द सत्य थे,
ऐसा शोक कितना व्यर्थ होगा;
जो बीज उगा, उसके लिए शोक करना उतना ही बुद्धिमानीपूर्ण है।
अपने मूल वृक्ष पर अनदेखा,
क्योंकि यह उपजाऊ मिट्टी में गिरा था,
और एक शानदार जन्म हुआ —
उसने अपनी जड़ें गहरी जमाईं और उसे ऊँचा उठाया

हवा से भरे आकाश में उसकी हरी शाखाएँ।

लेकिन मैं डरूंगा नहीं, मैं रोऊंगा नहीं।
जिनके शरीर नींद में विश्राम कर रहे हैं, —
मुझे पता है कि एक पवित्र तट है,
मेरे और मेरे अपनों के लिए अपने द्वार खोलना;
और, समय के विशाल जलमार्गों पर नज़र डालते हुए,
मुझे उस दिव्य भूमि की बहुत याद आती है।
जहां हमारा जन्म हुआ, जहां तुम और मैं
जब हमारी मृत्यु होगी, तब हम अपने प्रियजनों से मिलेंगे;
कष्ट और भ्रष्टाचार से मुक्त,
उन्हें ईश्वरत्व में पुनर्स्थापित किया गया।

“तुमने बहुत अच्छा कहा, प्यारे, भरोसेमंद बच्चे!”
और अपने पिता से भी अधिक बुद्धिमान;
और सांसारिक तूफान, भयंकर रूप से गरजते हुए,
यह तुम्हारी इच्छा को और मजबूत करेगा।
तूकी प्रबल आशा, तूफ़ान और उफान के बीच भी,
हवा और समुद्र की गर्जना के बीच,
अंततः, शाश्वत घर तक पहुँचने के लिए,
वह अटल, अपरिवर्तनीय किनारा!

सितारे।

आह! क्यों, क्योंकि चकाचौंध कर देने वाला सूरज
हमने अपनी पृथ्वी को आनंद से भर दिया।
क्या आप सब चले गए हैं?
और एक रेगिस्तानी आकाश छोड़ गया?

पूरी रात, तुम्हारी खूबसूरत आँखें
वे मेरी ओर नीचे देख रहे थे,
और, कृतज्ञता से भरे दिल से आहें भरते हुए,
मैंने उस घड़ी को दिव्य आशीर्वाद दिया।

मुझे शांति मिली और मैंने तुम्हारी किरणों का आनंद लिया।
क्योंकि वे मेरे लिए जीवन समान थे;
और मैं अपने बदलते सपनों में आनंदित होता रहा।
समुद्र पर रहने वाले पेट्रेल पक्षी की तरह।

एक विचार के बाद दूसरा विचार आया, एक तारे के बाद दूसरा तारा आया,
असीम क्षेत्रों से होकर, आगे;
जबकि एक मधुर प्रभाव, निकट और दूर दोनों ओर,
बेहद रोमांचक अनुभव रहा, और इसने हमें साबित कर दिया!

सुबह क्यों हुई?
इतना महान, इतना पवित्र, एक जादू;
और आग से शांत गालों को झुलसा दो,
आपकी शीतलता और आभा कहाँ समा गई?

खून से लाल रंग का होकर वह उठा, और तीर की तरह सीधा खड़ा हो गया।
उनकी तीव्र किरणें मेरे माथे पर पड़ीं;
प्रकृति की आत्मा आनंदित होकर उछल पड़ी।
लेकिन मेरा दिल उदास और निराश हो गया!

मेरी पलकें बंद हो गईं, फिर भी उनके पर्दे के पार।
मैंने उसे देखा, धधकते हुए, स्थिर।
और धुंध से ढकी घाटी सोने से लबालब है,
और पहाड़ी पर बिजली चमक उठी।

फिर मैंने अपना चेहरा तकिए की तरफ मोड़ लिया।
रात को वापस कॉल करने के लिए, और देखने के लिए
फिर से, आपकी गंभीर प्रकाश की दुनिया,
मेरा दिल और मैं दोनों धड़क रहे हैं!

यह ठीक नहीं था—तकिया चमक रहा था।
और छत और फर्श दोनों चमक उठे;
और जंगल में पक्षी जोर-जोर से गा रहे थे।
और तेज हवाओं ने दरवाजे को हिला दिया;

पर्दे लहराए, मक्खियाँ जाग उठीं

मेरे कमरे में लोग आपस में फुसफुसा रहे थे,
मुझे वहीं कैद रखा जाएगा, जब तक मैं उठ खड़ा न हो जाऊं।
और उन्हें घूमने-फिरने की छूट दें।

ओह, तारे, सपने और शांत रात;
हे रात और तारों, लौट आओ!
और मुझे शत्रुतापूर्ण प्रकाश से छिपा दो।
वह गर्मी नहीं देता, बल्कि जलाता है;

जो पीड़ित मनुष्यों का रक्त चूस लेता है;
ओस की जगह आंसू पीता है;
मुझे उसके अंधाधुंध शासनकाल में सोने दो।
और सिर्फ तुम्हारे साथ ही जागेंगे!

दार्शनिक।

बहुत हो गया चिंतन, दार्शनिक!
तुम बहुत लंबे समय से सपने देख रहे हो
इस अंधकारमय कक्ष में, अज्ञानता व्याप्त है।
जब गर्मियों का सूरज चमक रहा हो!
अंतरिक्ष में विचरण करने वाली आत्मा, क्या दुख भरी धुन है!
क्या तुम अपने विचारों को एक बार फिर समाप्त करते हो?

"काश वो समय आ जाए जब मैं सो सकूँ।"
बिना पहचान के।
और इस बात की कभी परवाह न करें कि बारिश कितनी तेज हो सकती है।
या फिर बर्फ मुझे ढक लेगी!
स्वर्ग का कोई वादा नहीं, ये बेकाबू इच्छाएँ
क्या वह पूरी तरह या आंशिक रूप से अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है?
न बुझने वाली आग से भरे नरक का कोई खतरा नहीं,
इस अदम्य इच्छा को वश में करो!

मैंने भी यही कहा था, और आज भी यही कहता हूं;

फिर भी, अपनी मृत्यु तक यही कहूंगा—
इस छोटे से ढांचे के भीतर तीन देवता,
वे रात-दिन युद्ध करते रहते हैं;
स्वर्ग उन सभी को समाहित नहीं कर सकता था, फिर भी
वे सब मुझमें समाहित हैं;
और यह तब तक मेरा होना चाहिए जब तक मैं इसे भूल न जाऊं।
मेरा वर्तमान अस्तित्व!
ओह, वो समय कितना प्यारा था, जब मेरी छाती में
उनका संघर्ष समाप्त हो जाएगा!
ओह, उस दिन का इंतजार है, जब मुझे आराम मिलेगा।
और फिर कभी कष्ट न सहें!

मैंने एक आत्मा को खड़े हुए देखा, पुरुष।
जहां तुम खड़े हो — एक घंटा पहले,
और उसके पैरों के चारों ओर तीन नदियाँ बहती थीं।
समान गहराई और समान प्रवाह वाला —
एक सुनहरी धारा—और वह भी रक्त के समान;
और उनमें से एक नीलम के समान प्रतीत होता था;
लेकिन, जहां वे अपनी तिहरी बाढ़ में शामिल हुए
यह स्याही जैसे गहरे समुद्र में लुढ़क गया।
उस आत्मा ने अपनी चकाचौंध भरी दृष्टि भेजी
उस सागर की अंधकारमय रात में नीचे की ओर;
फिर, अचानक तेज आग से सब कुछ जल उठा,
आनंदमय गहरा सागर विस्तृत और उज्ज्वल रूप से जगमगा रहा था।
सूर्य के समान सफेद, कहीं अधिक सुंदर
इसके विभाजित स्रोतों की तुलना में!

और उस आत्मा के लिए भी, हे द्रष्टा,
मैंने जीवन भर देखा और खोजबीन की है;
मैंने उसे स्वर्ग, नरक, पृथ्वी और वायु में खोजा।
एक अंतहीन खोज, और हमेशा गलत।
काश मैंने उसकी शानदार आँख देखी होती
एक बार उन बादलों को रोशन करो जो मुझे और भी बेकाबू कर देते हैं;
मैंने कभी भी इस कायरतापूर्ण चीख को नहीं उठाया था
सोचना बंद कर देना, और अस्तित्व समाप्त कर देना;

मैंने कभी विस्मृति को आशीर्वाद नहीं कहा था,
और न ही मौत की ओर बेताब होकर हाथ बढ़ाना,

निरर्थक विश्राम के लिए बदलने की विनती की गई
यह सजीव आत्मा, यह जीवित सांस —
ओह, मुझे मरने दो— वो शक्ति और इच्छाशक्ति
उनका क्रूर संघर्ष समाप्त हो सकता है;
और उन्होंने अच्छाई पर विजय प्राप्त की, और बुराई पर भी विजय प्राप्त की।
एकाग्रचित्त अवस्था में खो जाओ!

स्मरण।

धरती में ठंड—और तेरे ऊपर जमा हुआ गहरा बर्फ का ढेर,
बहुत दूर, एकदम अलग, उस उजाड़ कब्र में ठंड लग रही है!
क्या मैं तुम्हें प्यार करना भूल गया हूँ, मेरे एकमात्र प्यार?
अंततः समय की सर्वविभाजी लहर ने हमें अलग कर दिया?

अब, जब मैं अकेला होता हूँ, तो मेरे विचार इधर-उधर नहीं भटकते।
पहाड़ों के उस पार, उस उत्तरी तट पर,
झाड़ियों और फर्न के पत्तों की छाया में अपने पंख फैलाकर आराम करते हुए
क्या तेरा नेक हृदय सदा-सदाबहार रहेगा?

धरती में ठंड - और पंद्रह तूफानी दिसंबर,
उन भूरी पहाड़ियों से वसंत ऋतु में विलीन हो उठना:
वह आत्मा वास्तव में वफादार है जो याद रखती है।
इतने वर्षों के बदलाव और पीड़ा के बाद!

हे यौवन के प्यारे प्रेम, क्षमा कर देना, यदि मैं तुम्हें भूल जाऊं।
जबकि दुनिया की लहर मुझे अपने साथ बहा ले जा रही है;
अन्य इच्छाएं और अन्य आशाएं मुझे सता रही हैं।
आशाएं जो अंधकारमय हैं, लेकिन तुम्हारा नुकसान नहीं कर सकतीं!

बाद में किसी प्रकाश ने मेरे स्वर्ग को रोशन नहीं किया है।
मुझे कभी दूसरी सुबह देखने को नहीं मिली;
मेरे जीवन का सारा सुख तुम्हारे प्रिय जीवन से ही प्राप्त हुआ।
मेरे जीवन का सारा सुख तुम्हारे साथ कब्र में है।

लेकिन, जब सुनहरे सपनों के दिन समाप्त हो गए,
और निराशा भी इसे नष्ट करने में असमर्थ थी;
तब मुझे पता चला कि जीवन को कैसे संजोया जा सकता है।
बिना आनंद की सहायता के मजबूत और पोषित।

तब मैंने व्यर्थ के जुनून के आँसुओं को रोका —
मैंने अपनी युवा आत्मा को तुम्हारे प्रति लालसा से मुक्त कर दिया;
उसने जल्दबाजी करने की अपनी तीव्र इच्छा को दृढ़ता से नकार दिया।
मेरी कब्र से भी ज्यादा लोग उस कब्र तक जा चुके हैं।

और फिर भी, मैं इसे यूं ही निष्क्रिय नहीं होने देना चाहता।
स्मृति के आनंदमय दर्द में लिप्त होने का साहस न करें;
उस परम दिव्य पीड़ा का गहन अनुभव करने के बाद,
मैं उस खाली दुनिया में दोबारा कैसे जा सकता हूँ?

एक मृत्यु-दृश्य।

"हे भगवान! वह मर नहीं सकता।"
जब तुम इतनी सुंदर चमक रही हो!
हे सूर्य, ऐसे शानदार आकाश में,
इतनी शांति से पतन की ओर;

वह अब तुम्हें छोड़कर नहीं जा सकता।
जबकि पश्चिम से तेज हवाएं चल रही हैं,
और उसके युवा माथे के चारों ओर
तेरा प्रकाश प्रज्वलित हो रहा है!

एडवर्ड, जाग जाओ, जाग जाओ —
सुनहरी शाम चमक रही है
आर्डेन झील पर गर्म और चमकदार मौसम —
अपने सपनों से जाग जाओ!

तुम्हारे बगल में, मेरी गोद में,
मेरे प्रिय मित्र, मैं प्रार्थना करता हूँ
कि तुम अनंत सागर को पार कर सको,
क्या एक घंटे की देरी भी ठीक रहेगी?

मुझे इसकी लहरों की गर्जना सुनाई देती है—
मैं उन्हें खूब झाग उगलते हुए देख रहा हूँ;
लेकिन दूर के किनारे की कोई झलक नहीं दिखी।
मेरी थकी हुई आंखों को इससे बहुत आराम मिला है।

उनकी बातों पर विश्वास मत करो
स्वर्ग के द्वीपों से परे;
उस तूफानी लहर से पीछे हट जाओ,
अपने जन्मभूमि की ओर।

यह मृत्यु नहीं, बल्कि पीड़ा है।
जो संघर्ष तुम्हारे हृदय में उमड़ रहा है—
नहीं, हिम्मत जुटाओ, एडवर्ड, फिर से जागृत हो जाओ;
मैं तुम्हें चैन से नहीं बैठने दूंगा!

एक लंबी नज़र ने मुझे फटकारा
मैं उस पीड़ा को सहन नहीं कर सका।
पीड़ा से भरी एक खामोश निगाह ने मुझे झकझोर दिया।
अपनी व्यर्थ प्रार्थना के लिए पश्चाताप करने के लिए:

और, अचानक रुककर, हांफते हुए
ध्यान भटकने की समस्या दूर हो गई;
आगे शोक मनाने का कोई संकेत नहीं।
उस भयानक दिन ने मेरी आत्मा को झकझोर दिया।

अंततः, डूबते सूरज का सुंदर रंग फीका पड़ गया;
गोधूलि की हवा शांति में डूब गई:
गर्मी की ओस धीरे-धीरे गिर रही थी, जिससे सब कुछ भीग रहा था।
घाटी, खुला मैदान और शांत वृक्ष।

फिर उसकी आंखें थकने लगीं।

मृत्यु की नींद के बोझ तले दबा हुआ;
और उनकी आंखें अजीब तरह से उदास हो गईं।
वे रोते हुए भी उदास दिखते थे।

लेकिन वे रोए नहीं, लेकिन वे बदले भी नहीं।
न कभी स्थानांतरित हुआ, न कभी बंद हुआ;
वे अब भी परेशान थे, और अब भी इधर-उधर नहीं भटक रहे थे।
न तो भटका, न ही विश्राम किया!

इसलिए मुझे पता था कि वह मर रहा है।
वह झुका और उसने अपना सुस्त सिर उठाया;
न सांस महसूस हुई, न आहें सुनाई दीं।
इसलिए मुझे पता चल गया कि वह मर चुका है।

गाना।

पथरीली घाटियों में रहने वाली लिनेट चिड़िया,
हवा में उड़ती मूर-लार्क चिड़िया,
हीथर की कलियों के बीच मधुमक्खी
जो मेरी प्यारी महिला को छुपाते हैं:

जंगली हिरण उसकी छाती के ऊपर चर रहे हैं;
जंगली पक्षी अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं;
और वे उसकी प्रेम भरी मुस्कानों से सराबोर हो गए,
उसने अपना एकांत छोड़ दिया है!

मुझे लगता है कि जब कब्र की अंधेरी दीवार
क्या पहले उसका रूप बरकरार रहा?
उन्हें लगा कि उनके दिल कभी भी उस बात को याद नहीं कर पाएंगे।
फिर से खुशी की रोशनी।

उन्हें लगा कि शोक की लहर बह जाएगी

आने वाले वर्षों में इस पर कोई रोक नहीं लगेगी;
लेकिन अब उनका सारा दुख कहाँ चला गया?
और उनके सारे आंसू कहां गए?

खैर, उन्हें सम्मान की सांस के लिए लड़ने दो।
या फिर आनंद की छाया का पीछा करो —
मृत्युलोक में रहने वाला
बदल गया है और लापरवाह भी हो गया है।

और, यदि उनकी आँखें देखती रहें और रोएँ
जब तक दुःख का स्रोत सूख न जाए,
वह अपनी शांत नींद में ऐसा नहीं करेगी,
एक आह भर कर जवाब दो!

हे पश्चिम की हवा, इस एकांत टीले के पास बह जाओ।
और कलकल करती हुई, ग्रीष्म ऋतु की धाराएँ —
अन्य ध्वनि की कोई आवश्यकता नहीं है
मेरी प्रेमिका के सपनों को शांत करने के लिए।

प्रत्याशा।

आज भी धरती कितनी सुंदर है!
तुम्हारे लिए— कितना सुखमय है?
वास्तविक बुराई से कितना कम भरा हुआ है,
या फिर संकट के अवास्तविक प्रेत!
वसंत तुम्हें किस प्रकार गौरव दिला सकता है, फिर भी,
और ग्रीष्म ऋतु तुम्हें भुलाने में मदद करेगी
दिसंबर का उदास महीना!
तुम खजाने को इतनी मजबूती से क्यों पकड़े हुए हो?
जवानी के आनंद का, जब जवानी बीत जाती है,
और तुम अपनी जवानी के करीब हो?

जब तुम्हारे ही समकक्षों ने,

धन और उम्र में बराबर,
मैंने उनकी सुबह को आंसुओं में बदलते देखा है।
बादलों से घिरे, मुस्कानहीन दिन के लिए;
काश, वे बिना किसी परीक्षा के और कम उम्र में ही मर जाते।
इससे पहले कि उनके दिल भटकने लगें, —
निर्धन दास, प्रबल वासनाओं से वश में,
एक कमजोर और असहाय शिकार!

क्योंकि, मुझे उम्मीद थी कि जब वे आनंद ले रहे होंगे,
और पूर्ति से आशा नष्ट हो गई;
जैसे बच्चे आशा करते हैं, भरोसेमंद छाती के साथ,
मैंने आनंद की प्रतीक्षा की और विश्राम को संजोया।
एक विचारशील स्वभाव ने मुझे जल्द ही सिखा दिया,
हमें जीवन के अंत तक इसकी कामना करनी चाहिए;
सांसारिक आनंद के हर चरण
हमेशा फीका पड़ना चाहिए, और हमेशा उबाऊ होना चाहिए:

मुझे इसका पूर्वाभास था—और मैं इसका पीछा नहीं करता।
क्षणिक विश्वासघात;
लेकिन, दृढ़ कदमों और शांत चेहरे के साथ,
उस लुभावनी दौड़ से पीछे हटते हुए,
लहरों द्वारा मिटाई गई रेत पर एक नजर डाली,
शाश्वत सागरों के लिए —
वहाँ मैंने अपनी इच्छा का लंगर डाला।
अज्ञात अनंतता की गहराई में;
और कभी भी मेरी आत्मा को थकने न दें।
भविष्य की तलाश में!

"यह आशा का जादू है जो महिमा प्रदान करता है,
मेरी परिपक्व दृष्टि में, युवावस्था की तरह,
प्रकृति के सभी लाखों रहस्य,
भयभीत और सुंदर —
आशा मुझे उन दुःखों में सांत्वना देती है जिन्हें मैं जानता हूँ;
वह दूसरों के दुख से मेरा दर्द कम कर देती है।
और यह मुझे सहन करने की शक्ति देता है।
मुझे जो सहना है, वही सहना मेरे लिए स्वाभाविक है।

प्रिय सांत्वनादाता! क्या मैं साहसी नहीं बनूंगा?

क्या कब्र का अंधेरा भयभीत नहीं करता?
नहीं, मृत्यु की लहरों की गर्जना सुनकर मुस्कुराओ —
हे मेरे मार्गदर्शक, क्या तुम मुझे सहारा देते हो?
वर्तमान भाग्य जितना अधिक अन्यायपूर्ण प्रतीत होता है,
मेरी आत्मा जितनी अधिक प्रसन्न और उत्साहित होती है,
अपनी शक्ति में दृढ़ रहो, पूर्वानुमान लगाने के लिए
शानदार भाग्य!

कैदी।

एक अंश।

मैं कालकोठरियों में यूं ही भटकता रहा,
वहां बर्बाद हो रही जिंदगियों के प्रति उदासीन;
"भारी सलाखों को खींचो! खोलो, सख्त वार्डर!"
वह मुझे ना कहने की हिम्मत नहीं कर सका—कब्ज तेजी से घूम गया।

मैंने फुसफुसाते हुए कहा, "हमारे मेहमान अंधेरे में ठहरे हुए हैं," और अंदर झाँकने लगी।
वह तिजोरी, जिसकी जालीदार आंख में आसमान नीले की बजाय अधिक धूसर दिखाई देता था;
(यह वह समय था जब आनंदित वसंत ने जागृत गौरव में हंसते हुए अपनी खुशी जाहिर की;)
"अरे, काफी अंधेरे में बसा हुआ है!" मेरे उदास गाइड ने जवाब दिया।

हे ईश्वर, मेरी जवानी को क्षमा करो; मेरी लापरवाह जुबान को क्षमा करो;
मैंने उपहास उड़ाया, क्योंकि नम पत्थरों पर लगी ठंडी जंजीरें बज रही थीं:
"तीन दीवारों में कैद, तुम बहुत डरने लायक हो,
क्या हमें तुम्हें यहीं बांधकर तुम्हारी बेड़ियाँ कसनी होंगी?

कैदी ने अपना चेहरा ऊपर उठाया; वह उतना ही कोमल और सौम्य था।
संगमरमर की मूर्ति के रूप में, या सोते हुए नवजात शिशु के रूप में;
यह इतना नरम और कोमल था, इतना मीठा और सौम्य था।
दर्द वहां कोई रेखा नहीं खींच सकता था, न ही शोक की कोई छाया!

कैदी ने अपना हाथ उठाया और उसे अपने माथे पर दबाया;
उन्होंने कहा, “मुझे चोट लगी है और मैं अब पीड़ा झेल रही हूं।”
लेकिन ये तो नगण्य हैं, तुम्हारे मजबूत बोल्ट और लोहे तो और भी मजबूत हैं;
और अगर वे स्टील के बने भी होते, तो भी वे मुझे ज्यादा देर तक रोक नहीं पाते।

कठोर आवाज में जेलर हँसा: "क्या मैं तुम्हारी बात सुनूँगा?"
हे प्रिय, स्वप्नद्रष्टा, क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर लूँगा?
या, इससे भी बेहतर, क्या मैं अपने स्वामी के हृदय को आहों से पिघला दूँगी?
आह! काश सूरज की गर्मी से ये ग्रेनाइट के पत्थर जल्दी पिघल जाएं।

मेरे स्वामी की आवाज धीमी है, उनका चेहरा सौम्य और दयालु है।
लेकिन उसके पीछे छिपी आत्मा पत्थर की तरह कठोर होती है;
और मैं कठोर और असभ्य हूँ, फिर भी देखने में उतना कठोर नहीं हूँ।
"वही छिपा हुआ भूत है जो मुझमें अपना घर बनाए हुए है।"

उसके होठों पर लगभग तिरस्कार भरी मुस्कान थी।
“मेरे मित्र,” उसने कोमल स्वर में कहा, “तुमने मुझे शोक मनाते हुए नहीं सुना है;
जब तुम मेरे सगे-संबंधियों के जीवन को, मेरे खोए हुए जीवन को, पुनः स्थापित कर सकते हो,
तब मैं रो सकता हूँ और मुकदमा कर सकता हूँ, लेकिन कभी नहीं, मित्र, इससे पहले!

फिर भी, मेरे अत्याचारियों को पता चले, मैं यह सब सहने के लिए अभिशप्त नहीं हूँ।
वर्ष दर वर्ष अंधकार और घोर निराशा में बीता;
हर रात मेरे पास आशा का दूत आता है।
और अल्प जीवन के बदले शाश्वत स्वतंत्रता का प्रस्ताव देता है।

वह पश्चिमी हवाओं के साथ आता है, शाम की भटकती हवाओं के साथ,
आकाश की उस निर्मल संध्या के साथ जो सबसे घने तारों को लाती है।
हवाओं में उदासी छा जाती है, और तारों में कोमल अग्नि की चमक दिखाई देती है।
और ऐसे दृश्य उभरते हैं, और बदलते हैं, जो मुझे लालसा से मार डालते हैं।

"परिपक्वता के वर्षों में मुझे किसी चीज की इच्छा नहीं थी,"
जब जॉय भविष्य में आने वाले आंसुओं को गिनते हुए विस्मय से पागल हो गई।
जब, यदि मेरी आत्मा का आकाश गर्म चमक से भरा होता,
मुझे नहीं पता था कि वे कहाँ से आए थे, सूर्य से या आंधी-तूफान से।

लेकिन, सबसे पहले, शांति की एक खामोशी छा जाती है—एक खामोश शांति;
पीड़ा और तीव्र अधीरता का संघर्ष समाप्त होता है;
मौन संगीत मेरे हृदय को सुकून देता है— अनकही सामंजस्यता।

मैं ऐसा सपना भी नहीं देख सकता था, जब तक कि पृथ्वी मुझसे छिन न जाए।

“तब अदृश्य का उदय होता है; अनदेखा अपना सत्य प्रकट करता है;
मेरी बाहरी इंद्रियां निष्क्रिय हो गई हैं, मेरी आंतरिक आत्मा को यह अनुभूति हो रही है:
इसके पंख लगभग मुक्त हैं — इसका घर, इसका आश्रय मिल गया है।
खाई को नापते हुए, यह झुकता है और अंतिम छलांग लगाने का साहस करता है।

“ओह, यह चेक कितना भयानक है — पीड़ा कितनी तीव्र है —
जब कान सुनने लगें और आंखें देखने लगें;
जब नाड़ी की धड़कन तेज होने लगे, तो मस्तिष्क को फिर से सोचने के लिए प्रेरित होना चाहिए;
आत्मा को शरीर का अहसास हो, और शरीर को बंधन का अहसास हो।

फिर भी मैं किसी भी तरह की पीड़ा कम नहीं करना चाहूंगा, न ही किसी तरह की यातना कम करना चाहूंगा;
जितना अधिक कष्ट सहता है, उतनी ही जल्दी वह आशीर्वाद प्रदान करती है;
और नरक की आग से लिपटे हुए, या स्वर्गीय प्रकाश से जगमगाते हुए,
यदि यह केवल मृत्यु का ही संकेत है, तो यह दर्शन दिव्य है!

वह चुप हो गई, और हम बिना कुछ जवाब दिए जाने के लिए मुड़ गए।
हमारे पास अब उन कैदियों को और अधिक पीड़ा पहुंचाने की शक्ति नहीं बची थी:
उसके गाल, उसकी चमकती आंखें, यह बयां कर रही थीं कि उस आदमी ने उसे दे दिया था।
एक ऐसा वाक्य, जिसे स्वर्ग ने अस्वीकृत कर दिया और निरस्त कर दिया।

आशा।

आशा तो एक डरपोक मित्र मात्र थी;
वह जालीदार कमरे के बाहर बैठी थी।
यह देखते हुए कि मेरा भाग्य किस ओर अग्रसर होगा,
स्वार्थी हृदय वाले पुरुषों के रूप में भी।

वह अपने भय में क्रूर थी;
एक उदास दिन सलाखों के बीच से,
मैंने बाहर देखा तो वह वहीं थी।

और उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ मोड़ लिया!

जैसे कोई झूठा रक्षक, झूठी निगरानी कर रहा हो,
फिर भी, संघर्ष के बीच भी, उसने शांति का संदेश फुसफुसाया;
जब मैं रो रही होती थी, तब वह गाना गाती थी;
अगर मैं उसकी बात मान लेता, तो वह चुप हो जाती।

वह झूठी थी, और अपने रुख पर अडिग थी;
जब मेरी आखिरी खुशियाँ धरती पर बिखर गईं,
दुःख ने भी पश्चाताप करते हुए देखा।
वे दुखद अवशेष चारों ओर बिखरे पड़े थे;

आशा, जिसकी फुसफुसाहट ने ही दे दी होती
मेरे सारे असहनीय दर्द का मरहम,
उसने अपने पंख फैलाए और स्वर्ग की ओर उड़ गई।
गया और फिर कभी वापस नहीं लौटा!

एक दिवास्वप्न।

मैं धूप से भरी एक ढलान पर अकेला लेटा था
एक गर्मी की दोपहर;
यह मई का महीना था, शादियों का समय था।
अपनी युवा प्रेमिका जून के साथ।

ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी माँ का हृदय उससे अलग होने के लिए अनिच्छुक था।
दुल्हन के आकर्षण की वह रानी,
लेकिन उसके पिता ने सबसे सुंदर बच्ची पर मुस्कुरा दिया।
वह हमेशा उसे अपनी बाहों में लिए रहता था।

वृक्षों ने अपनी पंखुड़ीदार चोटियों को लहराया।
प्रसन्न पक्षियों ने मधुर गीत गाए;
और मैं, शादी के सभी मेहमानों में से,

वहाँ तो बस उदास बैठा था!

ऐसा कोई नहीं था, लेकिन वह इससे बचना चाहता था।
मेरे चेहरे पर खुशी का कोई भाव नहीं था;
वे बेहद धूसर चट्टानें, जो देख रही थीं,
पूछा गया, "आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

और मैं कोई जवाब नहीं दे सका;
सच कहूँ तो, मुझे पता नहीं था
मैं धुंधली आँख क्यों लेकर आया था?
चारों ओर फैली उमंग का अभिवादन करने के लिए।

इसलिए, एक स्वस्थ किनारे पर आराम करते हुए,
मैंने अपना दिल अपने पास रख लिया;
और हम सब मिलकर दुखद रूप से डूब गए।
एक तन्मयता में।

हमने सोचा, ‘‘जब दोबारा सर्दी आएगी,
ये चमकदार चीजें कहाँ होंगी?
सब कुछ गायब हो गया, मानो कोई व्यर्थ सपना हो।
एक अवास्तविक उपहास!

‘‘वे पक्षी जो अब इतनी खुशी से गाते हैं,
सूखे, बर्फीले रेगिस्तानों से होकर,
लुप्त हो चुकी वसंत ऋतु के बेचारे प्रेत,
भूख से त्रस्त सैनिक भाग निकलेंगे।

और हमें खुश क्यों होना चाहिए?
पत्ती मुश्किल से हरी है।
इसके पतन के प्रतीक से पहले
सतह पर तो यही दिखाई देता है!

अब, चाहे यह वास्तव में ऐसा हो या नहीं,
मुझे कभी यकीन नहीं हो सकता था;
लेकिन जैसे चिड़चिड़ेपन और दुख के आवेश में,
मैंने खुले मैदान में लेटकर खुद को आराम दिया।

हजारों-हजारों चमकती आग
ऐसा लग रहा था मानो हवा में ज्वलनशील पदार्थ मंडरा रहा हो;
हजारों-हजारों चांदी के वीणा
दूर-दूर तक गूंज उठी:

मुझे लगा, मेरी साँस ही
यह दिव्य चिंगारियों से परिपूर्ण था।
और मेरी सारी हीथर की झालर मालाओं से ढकी हुई थी
उस दिव्य प्रकाश से!

और, जब विशाल पृथ्वी गूंजती हुई घंटी बजा रही थी
उस विचित्र संगीत के लिए
नन्ही चमकीली आत्माओं ने गीत गाए,
या फिर मुझे ऐसा लगा जैसे वह गा रही हो:

"हे नश्वर! नश्वर! उन्हें मरने दो;
समय और आंसुओं को इसे नष्ट करने दो,
ताकि हम आकाश को भर दें
सर्वव्यापी आनंद के साथ!

"दुःख पीड़ित के हृदय को विचलित कर दे।"
और रात ने उसका रास्ता धुंधला कर दिया;
वे उसे अनंत विश्राम की ओर शीघ्र ले जाते हैं।
और शाश्वत दिन।

"तुम्हारे लिए संसार एक कब्र के समान है।"
एक रेगिस्तान का नंगा किनारा;
हमारे लिए, अकल्पनीय रूप से खिले हुए,
यह और भी ज्यादा चमकीला होता जा रहा है!

और क्या हम पर्दा हटाकर हमें बता सकते हैं?
तुम्हारी आँखों की एक संक्षिप्त झलक,
तुम जीवित लोगों के लिए प्रसन्न होगे,
क्योंकि वे मरने के लिए ही जीते हैं।

संगीत बंद हो गया; दोपहर का स्वप्न,
रात के सपने की तरह, पीछे हट गया;
लेकिन कल्पना, फिर भी, कभी-कभी ऐसा मान लेगी

उनकी सच्ची और प्रिय रचना।

कल्पना की ओर।

जब दिनभर की देखभाल से थक जाते हैं,
और सांसारिक परिवर्तन दर्द से दर्द की ओर होता चला जाता है,
और खोया हुआ, और निराशा के कगार पर,
तेरी मधुर वाणी मुझे बार-बार बुलाती है:
ओह, मेरे सच्चे मित्र! मैं अकेला नहीं हूँ।
जबकि वे इस तरह के लहजे में बात नहीं कर सकते!

इसके बिना दुनिया कितनी निराशाजनक है;
मेरे भीतर की दुनिया मेरे लिए दुगनी कीमती है;
तेरी दुनिया, जहाँ छल, घृणा और संदेह है,
और ठंडे संदेह का भाव कभी उत्पन्न न हो;
जहां तू, मैं और स्वतंत्रता,
निर्विवाद संप्रभुता प्राप्त हो।

महत्वपूर्ण बात यह है कि चारों ओर
खतरा, अपराधबोध और अंधकार व्याप्त हैं।
यदि हमारे हृदय की सीमा के भीतर ही
हमारे सामने एक उज्ज्वल, निर्मल आकाश है।
दस हजार मिश्रित किरणों से गर्म
क्या ऐसे सूर्यों की बात हो रही है जो शीत ऋतुओं का सामना नहीं करते?

वास्तव में, तर्क अक्सर शिकायत कर सकता है।
प्रकृति की दुखद वास्तविकता के लिए,
और दुखी हृदय को बताओ कि यह कितना व्यर्थ है
इसके प्रिय सपने हमेशा बने रहने चाहिए;
और सत्य बेरहमी से कुचल सकता है
कल्पना के फूल, अभी-अभी खिले हुए:

लेकिन तुम सदा वहाँ मौजूद हो, लाने के लिए

धुंधली दृष्टि वापस, और सांस लो
मुरझाई हुई वसंत ऋतु पर नई चमक,
और मृत्यु से अधिक सुंदर जीवन की कामना करें।
और दिव्य स्वर में फुसफुसाते हुए,
वास्तविक दुनियाओं की, जो तुम्हारी दुनिया की तरह ही उज्ज्वल हैं।

मुझे तुम्हारे काल्पनिक सुख पर भरोसा नहीं है।
फिर भी, शाम के शांत समय में,
अटूट कृतज्ञता के साथ,
मैं आपका स्वागत करता हूँ, कृपालु शक्ति;
मानवीय चिंताओं का निश्चित रूप से दिलासा देने वाला,
और आशा तब और भी मधुर हो जाती है, जब उम्मीद ही निराशा में डूब जाती है!

वह कितनी चमकती है!

वह कितनी स्पष्ट रूप से चमकती है! कितनी शांत है!
मैं उसकी रक्षक रोशनी के नीचे लेटा हूँ;
जबकि आकाश और पृथ्वी मुझे फुसफुसा रहे हैं,
कल सुबह उठना, लेकिन आज रात सपने देखना।
हाँ, फैंसी, आओ, मेरी परी प्रेमिका!
ये धड़कते हुए कनपटी धीरे से एक दूसरे को चूमते हैं;
और मेरे अकेले सोफे को ऊपर झुका दो,
और मुझे आराम दो, और मुझे आनंद दो।

दुनिया जा रही है; अंधकारमय संसार, अलविदा!
हे भयावह संसार, उस दिन तक अपने आप को छुपाए रख;
तुम हृदय को पूरी तरह वश में नहीं कर सकते।
यदि तुम विलंब करोगे, तो भी प्रतिरोध करना होगा!

मैं तुम्हारा प्रेम किसी के साथ साझा नहीं करूंगा;
तुम्हारी घृणा केवल एक मुस्कान ही जगाती है;
तेरे दुःख घाव दे सकते हैं, तेरे अन्याय तोड़ सकते हैं।
लेकिन, हे भगवान, तुम्हारे झूठ कभी धोखा नहीं दे पाएंगे!

चमकते तारों को निहारते हुए
मेरे ऊपर, उस शांत सागर में,
मुझे आशा है कि सभी दुख दूर हो जाएंगे।
सृष्टि जानती है, वह तुझमें समाहित है!

और आज रात मुझे यही सपना आएगा;
मैं शानदार गोलों के स्वर्ग के बारे में सोचूंगा
यह प्रकाश के अपने मार्ग पर आगे बढ़ रहा है
अनंत वर्षों तक अनंत आनंद में;
मैं सोचूंगा, ऊपर कोई एक दुनिया नहीं है।
जहां तक इन थकी हुई आंखों की दृष्टि जाती है,
जहां ज्ञान ने प्रेम का उपहास किया हो,
या फिर सद्गुण ने बदनामी के आगे घुटने टेक दिए;

जहां, भाग्य के प्रहारों के नीचे तड़पते हुए,
उस बुरी तरह घायल व्यक्ति को मुस्कुराने के लिए मजबूर होना पड़ा;
उसके धैर्य का मुकाबला उसकी घृणा से करने के लिए,
उसका दिल हर समय विद्रोही बना रहता था।
जहां सुख भी गलत रास्ते पर ले जाएगा,
और असहाय तर्क व्यर्थ ही चेतावनी देता है;
और सत्य कमजोर है, और छल शक्तिशाली है;
और आनंद ही दुख की ओर ले जाने वाला सबसे निश्चित मार्ग है;
और शांति, शोक की सुस्ती;
और आशा, आत्मा का एक प्रेत;
और जीवन एक श्रम है, व्यर्थ और क्षणभंगुर;
और मृत्यु, समस्त ब्रह्मांड की तानाशाह!

सहानुभूति।

आपको निराश नहीं होना चाहिए
जब रात के तारे चमक रहे होते हैं;
जब शाम अपनी शांत ओस बरसाती है,
और सूरज की रोशनी सुबह को सुनहरा बना देती है।

निराशा नहीं होनी चाहिए—भले ही आंसू बहें
नदी की तरह बह सकता है:
क्या वे वर्षों के सबसे प्रिय नहीं हैं?
क्या हमेशा के लिए आपके दिल के आसपास?

वे रोते हैं, तुम रोते हो, ऐसा ही होना चाहिए;
जब आप आहें भरते हैं तो हवाएं भी आहें भरती हैं।
और सर्दी अपना दुख बर्फ में बहा देती है।
जहां शरद ऋतु के पत्ते पड़े हैं:
फिर भी, ये पुनर्जीवित होते हैं, और अपने भाग्य से
आपका भाग्य विभाजित नहीं किया जा सकता:
फिर, आगे बढ़ते रहिए, भले ही आप उत्साहित न हों।
फिर भी, कभी दिल नहीं टूटेगा!

मेरे लिए विनती करो।

ओह, अब तुम्हारी चमकीली आँखों को जवाब देना ही होगा।
जब तर्क, तिरस्कारपूर्ण भौंहों के साथ,
मेरे तख्तापलट का मजाक उड़ाया जा रहा है!
ओह, तेरी मधुर ज़ुबान मेरे लिए विनती करेगी
और बताओ मैंने तुम्हें क्यों चुना है!

कठोर तर्क न्याय के लिए आता है,
वह अपने सभी प्रकार के अंधकार में लिपटी हुई थी:
क्या तुम, मेरे वकील, चुप रहोगे?
नहीं, हे तेजस्वी देवदूत, बोलो और कहो,
मैंने दुनिया को क्यों त्याग दिया?

मैंने इससे दूर रहने का प्रयास क्यों जारी रखा है?
वे सामान्य रास्ते जिन पर दूसरे लोग चलते हैं;
और एक अनजान राह पर यात्रा जारी रही,
धन और सत्ता दोनों के प्रति उदासीन —
गौरव की माला और आनंद के फूल का।

ये एक समय में वास्तव में दिव्य प्राणी प्रतीत होते थे;
और शायद उन्होंने मेरी प्रतिज्ञाएँ सुन ली हों।
और मैंने उनके मंदिर पर मेरी भेंटें देखीं;
लेकिन लापरवाही से दिए गए उपहारों की अक्सर सराहना नहीं की जाती।
और मेरे लोगों को उचित ही तिरस्कृत किया गया।

इसलिए, मैंने पूरे मन से शपथ ली।
अब उनकी वेदी के पत्थर की तलाश न करने के लिए;
और मैंने अपनी आत्मा को आराधना के लिए समर्पित कर दिया।
हे सर्वव्यापी, रहस्यमय सत्ता—
मेरा दास, मेरा साथी और मेरा राजा।

मैं अब भी तुम्हारा गुलाम हूँ, क्योंकि मैं अब भी तुम पर शासन करता हूँ;
मेरी परिवर्तनशील इच्छा की ओर झुक जाओ,
और तुम अपने प्रभाव को अच्छा या बुरा बना सकते हो:
एक साथी, जो दिन-रात साथ देता है।
तुम मेरी परम प्रसन्नता हो, —

मेरे प्रियतम, वो दर्द जो घाव देता है और झुलसा देता है,
और आंसुओं से आशीर्वाद निचोड़ लेता है
मुझे सांसारिक चिंताओं से मुक्त करके;
और फिर भी, एक राजा, हालांकि विवेक अच्छी तरह से
तुमने अपने अनुयायियों को विद्रोह करना सिखाया है

और क्या मैं गलत हूँ जहाँ मैं पूजा करता हूँ?
आस्था में संदेह की गुंजाइश नहीं होती, न ही आशा में निराशा की।
क्या मेरी आत्मा ही मेरी प्रार्थना पूरी कर सकती है?
हे दिव्य दृष्टियों के ईश्वर, मेरे लिए प्रार्थना कीजिए।
और बताओ मैंने तुम्हें क्यों चुना है!

आत्म-प्रश्न,

शाम बहुत जल्दी बीत जाती है।
अब आराम करने का समय हो गया है;
बीते दिन के बाद कौन से विचार रह गए?
तुम्हारे हृदय में क्या भावनाएँ हैं?

"बीता हुआ दिन? यह एक अनुभूति छोड़ जाता है।"
श्रम का कार्य मुश्किल से ही संपन्न हुआ;
भारी खर्च से थोड़ा सा लाभ —
क्या सिर्फ शोक की भावना?

समय मृत्यु के द्वार के सामने खड़ा है।
कड़ी निंदा करते हुए
और अंतरात्मा, असीम सांस के साथ,
मुझ पर घोर कलंक लगाता है:

और हालाँकि मैंने कहा है कि अंतरात्मा झूठ बोलती है
और समय ही भाग्य का फैसला सुनाए;
फिर भी, दुख और पश्चाताप के बादल मेरी आँखों को ढक लेते हैं।
और मुझे उनके सामने झुकने पर मजबूर कर देता है!

तो क्या तुम विश्राम की तलाश में प्रसन्न हो?
आर्ट को समुद्र छोड़ने में खुशी हो रही है।
और अपने सभी कष्टों को स्थिर कर लो
शांत अनंत काल में?

"तुम्हें जाते देखकर किसी को कोई अफसोस नहीं है—"
विदाई की कोई आवाज नहीं रोती;
और जहाँ तुम्हारा हृदय इतना कष्ट सह चुका है,
क्या तुम यहाँ रहना चाह सकते हो?

अफसोस! अनगिनत कड़ियां बहुत मजबूत हैं
जो हमें हमारी मिट्टी से बांधते हैं;
प्रेम की भावना लंबे समय तक बनी रहती है।
और वे मरना नहीं चाहते थे!

और विश्राम मीठा होता है, जब प्रसिद्धि से नवाजा जाता है

सैनिक के प्रतीक चिन्ह को सुशोभित करेगा;
लेकिन एक साहसी हृदय, कलंकित नाम के साथ,
आराम करने की बजाय लड़ना पसंद करूंगा।

“खैर, तुम कई वर्षों से लड़ रहे हो,
तुमने अपना पूरा जीवन संघर्ष करते हुए बिताया है।
तूने असत्य को नीचा दिखाया है, भय को कुचल दिया है;
अब करने के लिए क्या बचा है?

“यह सच है कि इस भुजा ने भरपूर संघर्ष किया है।”
उसने वो साहस दिखाया है जो कुछ ही लोग दिखा पाते हैं;
मैंने बहुत कुछ किया है और उदारतापूर्वक दिया है।
लेकिन कम ही सहन करना सीख पाया!

उस कब्र को देखो जहाँ तुम्हें सोना है
तेरा अंतिम और सबसे शक्तिशाली शत्रु;
न रोना ही सहनशीलता है।
यदि वह विश्राम कष्टदायक प्रतीत हो।

“लंबी जंग हार की ओर अग्रसर है —
हार को शांतिपूर्वक सहन करते हुए,
तुम्हारी आधी रात की नींद अभी भी मधुर हो।
और शानदार सुबह का स्वागत करो!

मौत।

मृत्यु! इसने उस समय प्रहार किया जब मैं सबसे ज्यादा भरोसेमंद था।
मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि मुझे आनंद मिलेगा —
फिर प्रहार करो, समय की मुरझाई शाखा विभाजित हो रही है
अनंत काल की नई जड़ से!

समय की शाखा पर पत्तियाँ चमकती हुई बढ़ रही थीं।

रस से भरपूर, और चांदी जैसी ओस से लबालब;
पक्षी हर रात इसके आश्रय के नीचे इकट्ठा होते थे;
रोजाना जंगली मधुमक्खियां इसके फूलों के चारों ओर उड़ती थीं।

दुःख दूर हो गया, और उसने सुनहरे फूल को तोड़ लिया;
अपराधबोध ने अपने अभिमान में आकर पेड़-पौधों को नोच डाला
लेकिन, अपने माता-पिता की स्नेहपूर्ण गोद में,
जीवन की पुनर्जीवनकारी धारा सदा बहती रही।

मैंने बिछड़ी हुई खुशियों पर जरा भी शोक नहीं किया।
खाली घोंसले और मौन गीत के लिए —
आशा मौजूद थी, और उसने मुझे हँसी के साथ मेरे दुख से बाहर निकाल दिया;
फुसफुसाते हुए, "सर्दी ज्यादा देर तक नहीं टिकेगी!"

और देखो! दस गुना अधिक आशीष प्राप्त हो रही है।
वसंत ऋतु ने सौंदर्य से भरपूर लताओं को सुशोभित कर दिया;
हवा, बारिश और तीव्र गर्मी, दुलारते हुए,
उस दूसरे मई के दिन खूब धूमधाम से मनाया गया!

यह बहुत ऊँचा उठ खड़ा हुआ - कोई भी पंखदार दुःख इसे बहा नहीं सकता था;
पाप अपनी चमक से दूर होने से डरता था;
प्रेम और उसका स्वयं का जीवन, इसे बनाए रखने की शक्ति रखता था।
सभी बुराइयों से— हर अभिशाप से, सिवाय तुम्हारे!

निर्दयी मृत्यु! नए पत्ते मुरझाकर सूख रहे हैं;
शाम की हल्की हवा शायद अभी भी ताजगी लौटा सकती है—
नहीं! सुबह की धूप मेरी पीड़ा का उपहास उड़ाती है-
मेरे लिए, समय को अब और खिलना नहीं चाहिए!

इसे काट डालो, ताकि दूसरी शाखाएँ फल-फूल सकें।
जहां वह सूखा हुआ पौधा हुआ करता था;
इस प्रकार, कम से कम, इसका सड़ता हुआ शव पोषण प्रदान करेगा।
जिससे यह उत्पन्न हुआ — शाश्वतता।

छंदों के लिए — —

खैर, कुछ लोग नफरत कर सकते हैं, और कुछ लोग उपहास कर सकते हैं।
और कुछ लोग तेरा नाम भी पूरी तरह से भूल सकते हैं;
लेकिन मेरा दुखी हृदय सदा शोक मनाता रहेगा
तेरी चकनाचूर आशाएँ, तेरी कलंकित प्रसिद्धि!
एक घंटे पहले मैंने यही सोचा था।
उस अभागे के दुख पर भी रोना;
एक शब्द ने मेरे बहते आँसुओं को रोक दिया।
और उसने मेरी बदली हुई आंख को उपहास से भर दिया।
फिर मैंने कहा, "ईश्वर इस मित्रवत धूल का भला करे।"
“जो तेरे अमृतित सिर को छुपाता है!”
तुम कितने ही व्यर्थ थे, और उतने ही कमजोर थे जितने कि व्यर्थ।
झूठ, अहंकार और पीड़ा का गुलाम —
मेरा हृदय तुम्हारे हृदय के समान नहीं है;
तेरी आत्मा मेरी आत्मा पर शक्तिहीन है।
लेकिन ये विचार भी लुप्त हो गए;
नासमझ, अपवित्र और असत्य:
क्या मैं डरपोक हिरण से घृणा करता हूँ?
क्योंकि भय से उसके अंग कांप रहे हैं?
या फिर, क्या मैं भेड़िये की मृत्यु की चीख का उपहास करूंगा?
क्योंकि उसका शरीर दुबला-पतला और बदसूरत है?
या फिर, खरगोश के बच्चे की पुकार को आनंद से सुनो,
क्योंकि यह बहादुरी से मर नहीं सकता?
नहीं! फिर उसकी स्मृति से ऊपर
दया का हृदय उतना ही कोमल हो;
कहो, “धरती, उस छाती पर धीरे से लेट जाओ,
और, हे दयालु ईश्वर, उस आत्मा को शांति प्रदान करो!

सम्मान का शहीद।

इस सर्दी की रात में चांद पूरा निकला हुआ है;
तारे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं, हालांकि उनकी संख्या कम है;

और हर खिड़की चमक रही है
जमी हुई ओस की पत्तियों के साथ।

तुम्हारी जाली से छनकर आती मीठी चाँदनी चमक रही है,
और यह आपके कमरे को दिन के उजाले की तरह रोशन कर देता है;
और वहाँ से आप सुखद सपनों में गुजरते हैं,
शांति भरे पलों की एक झलक!

जबकि मैं, बड़ी मुश्किल से बुझाने के प्रयास से
मेरे हृदय में व्याप्त पीड़ा,
शांत निवास में विचरण करो,
और आराम के बारे में सोच भी नहीं सकते।

अंधकारमय हॉल में पुरानी घड़ी
घड़ी की टिक-टिक, घंटे दर घंटे चलती रहती है;
और हर बार इसकी मापी हुई पुकार
यह प्रक्रिया धीमी और धीमी होती जा रही है:

और, ओह, वह तेज नजर वाला तारा कितना धीमा है!
ठंडे भूरे रंग का पता लगा लिया है!
क्या, अभी भी देख रहे हो! कितनी दूर!
सुबह अभी बाकी है!

मैं आपके कक्ष के दरवाजे के बाहर खड़ा हूँ;
प्रिय, क्या तुम अब भी सो रहे हो?
मेरा ठंडा दिल, मेरे हाथ के नीचे,
अब इसमें रोमांच लगभग खत्म हो चुका है।

पूरब की हवा उदास, उदास स्वर में सिसकती और आहें भरती है।
और बुर्ज की घंटी की आवाज़ दब जाती है,
जिसकी उदास धुन, साधारण सी, थम जाती है
अनसुनी, मेरी विदाई की तरह!

कल, तिरस्कार मेरे नाम को कलंकित कर देगा।
और नफरत मुझे कुचल देगी।
यह मुझे कायरतापूर्ण शर्म से भर देगा।
देशद्रोही का झूठा बयान।

झूठे दोस्त छुपकर आपका उपहास करेंगे;
सच्चे दोस्त तो मेरी मौत की कामना करेंगे;
और मैं सबसे गहरे आँसू बहाऊँगा
जो आपने कभी खोया हो।

मेरी बहिष्कृत जाति के काले कारनामे
तब सद्गुणों का प्रकाश फैलेगा;
और लोग उनकी बदनामी को क्षमा कर देंगे।
मेरे अपराधबोध के अलावा।

भला कौन इस घिनौने अपराध को क्षमा करेगा?
क्या यह घिनौने विश्वासघात का मामला है?
विद्रोह, अपने चुने हुए समय में,
स्वतंत्रता का महानायक हो;

बदला लेने से नेक तलवार भी दागदार हो सकती है।
यह हत्या करने के लिए भी उचित हो सकता है;
लेकिन, गद्दार, गद्दार, — उस शब्द से
सभी असली स्तन सिकुड़ कर छोटे हो जाते हैं!

ओह, मैं तो अपना दिल मौत को भी दे दूंगी।
अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए;
फिर भी, मैं अपने अंतर्मन के विश्वास को त्याग नहीं दूंगा।
मेरे सम्मान की कोई परवाह नहीं!

तुम्हारे अनमोल प्यार को भी नहीं बचा पाने के लिए,
क्या मैं, प्रियतम, धोखा देने का साहस कर सकता हूँ?
यदि भविष्य में यह राजद्रोह सिद्ध हो जाए,
तभी, और केवल तभी, विश्वास करो!

मुझे पता है मुझे किस रास्ते पर चलना चाहिए
मैं निडर होकर अनुसरण करता हूँ।
यह जानने की कोशिश न करें कि और भी गहरा दुख क्या है।
मेरे लिए सख्त कर्तव्य वाली दुकानें।

इसलिए शत्रु पीछा करते हैं, और ठंडे सहयोगी

सब लोग मुझ पर अविश्वास करें:
मुझे दूसरों की नजरों में झूठा होने दो,
यदि मैं अपने प्रति वफादार रहूँ।

छंद।

मैं तुम्हारे मुझे छोड़कर जाने पर नहीं रोऊँगी।
यहां कुछ भी सुंदर नहीं है;
और अंधकारमय संसार मुझे दुगुना शोक देगा।
जबकि तुम्हारा हृदय वहाँ पीड़ा से व्याकुल है।

मैं नहीं रोऊँगा, क्योंकि ग्रीष्म ऋतु की भव्यता
अंत हमेशा निराशाजनक ही होता है;
और, सबसे सुखद कहानी का अनुसरण करें —
इसका अंत एक मकबरे के साथ होता है!

और मैं इस पीड़ा से थक गया हूँ।
बढ़ती सर्दियाँ भालूओं के लिए हानिकारक होती हैं;
आत्मा को मुरझाते हुए देखकर थका हुआ हूँ
वर्षों की घोर निराशा के बीच।

तो, अगर मरते समय तुम्हारे आंसू बहें,
अगर यह मुझसे गिर जाए,
मेरी आत्मा आहें भर रही है।
तुम्हारे साथ विश्राम करने के लिए।

मेरा दिलासा।

तुमने अच्छी बातें कही हैं, लेकिन सिखाया नहीं।
एक अजीब या नया एहसास;
तुमने तो बस एक छिपे हुए विचार को जागृत कर दिया है।
बादलों से घिरी सूरज की किरण ने
खुले में चमकना।

मेरी आत्मा की गहराई में, छिपा हुआ,
वह प्रकाश मनुष्यों से छिपा हुआ है;
फिर भी चमक अनबुझी रहती है—भले ही परछाइयाँ मंडराती रहें,
इसकी कोमल किरण इसे नियंत्रित नहीं कर सकती —
उस उदास कमरे के बारे में।

क्या मैं इन अंधकारमय रास्तों में परेशान नहीं था?
इतनी देर तक अकेले चलना?
मेरे चारों ओर, अभागे लोग प्रशंसा के स्वर में बातें कर रहे हैं,
या फिर अपने निराशा भरे दिनों पर विलाप करते हुए,
और प्रत्येक उन्माद की ज़ुबान से;

दुखों का एक भाईचारा,
उनकी मुस्कान आहों जितनी उदास थी;
जिसकी दीवानगी मुझे भी रोज पागल कर देती थी।
पीड़ा में विकृत होना
मेरी आंखों के सामने का आनंद!

तो मैं स्वर्ग के शानदार सूर्य में खड़ा था,
और नरक की चकाचौंध में;
मेरी आत्मा ने मिश्रित स्वर का अनुभव किया।
देवदूत के गीत और दानव की कराह;
मेरी आत्मा ने जो सहा, वह केवल मेरी आत्मा ने सहा।
शायद भीतर ही इसका जवाब मिल जाए!

समुद्र के ऊपर बहने वाली कोमल हवा की तरह,
आंधी के झटकों से इधर-उधर धकेला गया;
एक पिघलती हुई हवा, धीरे-धीरे पिघलती हुई
किसी बर्फीले मैदान पर जमा बर्फ;
नहीं: तुम्हारे जैसी प्यारी चीज और क्या हो सकती है?
मेरे प्यारे दिलासा देने वाले?

और थोड़ी देर और बात करते हैं,
इस आक्रोशपूर्ण मनोदशा को शांत करें;
और जब क्रूर हृदय भी नम्र हो जाता है,
अन्य टोकन की तलाश न करें।
लेकिन मेरे गालों पर आंसू बहने दो
मेरी कृतज्ञता व्यक्त करें!

पुराना संयमी व्यक्ति।

मैं धन-दौलत को हल्के में लेता हूँ।
और मैं प्रेम का उपहास करता हूँ;
और प्रसिद्धि की लालसा महज एक सपना थी।
वह सुबह के साथ ही गायब हो गया:

और अगर मैं प्रार्थना करूं, तो केवल एक ही प्रार्थना
यह मेरे होंठों को मेरे लिए हिला देता है
क्या, ''उस हृदय को छोड़ दो जो अब मैं धारण करता हूँ,
और मुझे आजादी दो!

हाँ, जैसे-जैसे मेरे दिन अपने लक्ष्य के करीब पहुँच रहे हैं:
मैं बस यही विनती करता हूँ;
जीवन और मृत्यु में एक बंधनमुक्त आत्मा,
सहन करने का साहस रखते हुए।

एक्टन बेल की कविताएँ,

एक स्मृति।

हाँ, तुम चले गए! और फिर कभी नहीं।
तुम्हारी मधुर मुस्कान मुझे प्रसन्न कर देगी;
लेकिन हो सकता है मैं पुराने चर्च के दरवाजे से गुजरूं।
और अपने ऊपर बिछी ज़मीन पर चहलकदमी करो।

ठंडे, नम पत्थर पर खड़ा हो सकता है,
और सोचो कि, जमा हुआ, नीचे पड़ा है
मैंने जितने भी दिल देखे हैं, उनमें सबसे हल्का दिल इसी का है।
मैंने जितने भी दयालु लोगों को जाना है, उनमें से वह सबसे दयालु हैं।

फिर भी, यद्यपि मैं तुम्हें अब और नहीं देख सकता,
इसे देखकर अब भी सुकून मिलता है;
और यद्यपि तेरा क्षणभंगुर जीवन समाप्त हो चुका है,
यह सोचकर अच्छा लगता है कि तुम रहे हो;

किसी आत्मा के इतने दिव्य होने के विचार से परे,
एक ऐसे रूप में जो देवदूत की तरह सुंदर है,
तुम्हारे जैसे हृदय से जुड़ा हुआ,
इसने एक बार हमारे इस छोटे से संसार को आनंदित किया था।

वृक्षारोपण।

मैं इस आश्रयस्थल में विश्राम करूंगा।
और नीले आसमान को देखो
जो पेड़ों के बीच से मुझ पर मुस्कुराता है,
जो घनी संख्या में एक साथ समूह बनाकर खड़े होते हैं;

और उनके हरे और चमकदार पत्तों को देखें,
धूप में सब कुछ चमक रहा है;
और उनकी शाखाओं की सरसराहट सुनो,
हवा में इतनी धीमी फुसफुसाहट।

और जब मेरे कान उस ध्वनि को ग्रहण कर रहे थे,
मेरी पंखुड़ी वाली आत्मा उड़ जाएगी;
अकेले गुजर चुके वर्षों की समीक्षा
एक सुहावने, धूप से भरे, शरद ऋतु के दिन की तरह;

और भविष्य के दृश्यों की ओर उड़ान भरते हुए,
पहाड़ियों, जंगलों और हरी-भरी घाटियों की तरह,
सभी ग्रीष्म ऋतु की धूप का आनंद ले रहे हैं,
लेकिन अभी भी बहुत दूर है, और धुंधला दिखाई दे रहा है।

ओह, सूची! यह तो ग्रीष्म ऋतु की साँस है।
जो सरसराते पेड़ों को धीरे से हिला देती है —
लेकिन देखो! जमीन पर बर्फ पड़ी है —
मैं इस तरह के दृश्यों की कल्पना कैसे कर सकता हूँ?

यह तो बस पाला ही है जो हवा को साफ करता है।
और यही आकाश को वह सुंदर नीला रंग देता है;
वे सर्दियों की धूप में मुस्कुरा रहे हैं,
वे गहरे रंग के सदाबहार वृक्ष।

और सर्दी की ठंड मेरे दिल पर छाई हुई है —
मैं भविष्य के सुखों का सपना कैसे देख सकता हूँ?
मेरी आत्मा कैसे उड़ान भर सकती है?
क्या इस तरह की जंजीर से जकड़ा हुआ?

घर।

सूरज की रोशनी में कितना चमक रहा है!
जंगल की लताएं खेल रही हैं!
जबकि दूर के बीच के पेड़ अपनी छालों से
उसकी चांदी जैसी किरणों को प्रतिबिंबित करो।

सूर्य एक सुंदर दृश्य का अवलोकन कर रहा है।
कोमल मुस्कान वाले आकाश से;
और असंख्य वृक्षों के बीच से होकर बेतहाशा भागते हुए
सर्दी की हवा आहें भरती है:

अब यह मेरे सिर के ऊपर जोर से गरज रहा है,
और अब दूर जाकर उसकी मृत्यु हो जाती है।
लेकिन मुझे मेरी बंजर पहाड़ियाँ वापस दे दो।
जहां ठंडी हवाएं चलती हैं;

जहां बिखरे हुए, बौने पेड़ दुर्लभ हैं
इससे प्रतिध्वनित होने वाली लहर उत्पन्न हो सकती है।
लेकिन जहां बंजर भूमि का वीरान इलाका हो
यह ध्वनि भी लौटाता है।

उस खूबसूरत और विशाल बगीचे के लिए,
सदाबहार पेड़ों के झुरमुटों के साथ,
लंबी घुमावदार पगडंडियाँ, और सँवारी हुई सीमाएँ,
और बीच में मखमली घास के मैदान;

मुझे वह छोटा सा स्थान वापस लौटा दो।
चारों ओर धूसर दीवारों से घिरा हुआ,
जहां उपेक्षित गांठदार घास पड़ी है,
और खरपतवार जमीन पर कब्जा कर लेते हैं।

हालांकि इस हवेली के चारों ओर ऊँचाई है
पैरों को घूमने के लिए आमंत्रित करता है,
और यद्यपि इसके कक्ष भीतर से सुंदर हैं —

ओह, मुझे मेरा घर वापस दे दो!

सब कुछ व्यर्थ है, सब कुछ व्यर्थ है।

हम जो कुछ भी करते हैं, सुनते हैं और देखते हैं, उसमें
क्या यह बेचैन परिश्रम और व्यर्थता है?
जब तक पृथ्वी घूमती रहती है,
पुरुष समुद्र की लहरों की तरह आते-जाते रहते हैं;

और इससे पहले कि एक पीढ़ी समाप्त हो,
इसके स्थान पर दूसरा भवन उठेगा;
जो जल्द ही कब्र में समा जाएगा,
अन्य लोग सफलता की लहर की तरह एक के बाद एक सफल होते जाते हैं;

और जैसे ही वे उठते हैं, वैसे ही वे मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।
सूर्य प्रतिदिन उगता है।
और पश्चिम की ओर तेजी से बढ़ते हुए,
वह रात में डूब जाता है, लेकिन आराम करने के लिए नहीं:

पूर्वी आकाश की ओर लौटते हुए,
हमें फिर से रोशन करने के लिए, उसे उठना होगा।
और फिर भी बेचैन हवा चलती रहती है,
अब उत्तर दिशा से तेज हवा चल रही है;

अब दक्षिण से, पूर्व से, पश्चिम से,
हमेशा परिवर्तनशील, कभी स्थिर नहीं।
पहाड़ियों से बहते झरने,
निरंतर बहने वाली धाराओं को पानी की आपूर्ति करना;

प्यासी नदियाँ अपना भंडार पी जाती हैं।
और इसे किनारे तक लुढ़कने दो,
लेकिन फिर भी सागर को और अधिक की लालसा है।

हर जगह अंतहीन श्रम ही श्रम है!
ध्वनि कानों को संतुष्ट नहीं कर सकती।

प्रकाश भी लालसा से भरी आंखों को तृप्त नहीं कर सकता।
और धन-दौलत हमारी आधी जरूरतों को भी पूरा नहीं करती।
सुख तो भविष्य के कष्टों को दोगुना कर देता है।
और खुशी अपने साथ दुख लेकर आती है;

हँसी पागलपन है, और बेपरवाह उल्लास —
इस थकी-हारी धरती पर वह क्या करती है?
क्या धन या प्रसिद्धि हमारे जीवन का आधार होनी चाहिए?
मृत्यु आती है, हमारे श्रम को नष्ट कर देती है;

बिना चखे प्याले को छीन लेने के लिए,
जिसके लिए हमने कई दिन परिश्रम किया।
तो फिर बेचारे मनुष्य के लिए क्या बचता है?
जीवन के सुख-सुविधाओं का यथासंभव उपयोग करना।

स्वर्ग द्वारा प्रदत्त आशीर्वादों का आनंद लें।
उसके मित्रों की सहायता करो, उसके शत्रुओं को क्षमा करो;
ईश्वर पर भरोसा रखो और उसके नियमों का पालन करते रहो।
अच्छे और बुरे समय में भी ईमानदार और दृढ़ रहना;

ईश्वर ने जो कुछ भी दिया है, उसके लिए आभारी हूं।
उसने अपनी सबसे मजबूत आशा स्वर्ग पर टिका रखी थी;
यह जानते हुए कि सांसारिक सुख क्षणभंगुर होते हैं,
लेकिन सबसे कठिन समय में भी उम्मीद बनाए रखना।

पश्चात्ताप करने वाला।

मैं तुम्हारे साथ शोक मनाता हूँ, और फिर भी प्रसन्न होता हूँ।
कि तुम इतना शोक करो;

मैं स्वर्गदूतों के समूह के साथ अपनी आवाज़ मिलाता हूँ
पापी के दुख पर दया करने के लिए।

भले ही मित्र और रिश्तेदार मुंह मोड़ लें,
और अपने दुःख को उपहास में लो;
मैं महान उद्धारकर्ता को यह कहते हुए सुनता हूँ,
"धन्य हैं वे जो शोक करते हैं।"

अपने मार्ग पर चलते रहो, इसे विचित्र मत समझो।
सांसारिक बंधन टूट गए हैं:
मनुष्य इस अद्भुत परिवर्तन पर शोक व्यक्त कर सकता है।
लेकिन "स्वर्ग में आनंद है!"

क्रिसमस की सुबह का संगीत।

मुझे संगीत पसंद है — लेकिन मैं उस पर कभी ज़ोर नहीं डालता।
यह दिव्य आनंद की अनुभूति उत्पन्न कर सकता है,
इसलिए दुःख को शांत करो, दर्द पर विजय प्राप्त करो।
और मेरे इस चिंतनशील हृदय को जागृत कर दे।
जैसा कि हम क्रिसमस की सुबह सुनते हैं,
सर्दी की ठंडी हवाओं पर सवार होकर।

हालांकि अंधकार अब भी उसके साम्राज्य को कायम रखता है,
और सुबह होने से पहले कई घंटे बीत जाएंगे;
परेशान करने वाले सपनों से, या गहरी नींद से,
वह संगीत हमें विनम्रतापूर्वक जगाता है:
यह हमें देवदूत की आवाज में पुकारता है,
जागना, पूजा करना और आनंद मनाना;

इस शानदार सुबह का आनंदपूर्वक स्वागत करने के लिए,
जिनका स्वर्गदूतों ने बहुत पहले स्वागत किया था,
जब हमारे उद्धारक प्रभु का जन्म हुआ,
स्वर्ग के प्रकाश को धरती पर लाना;

अंधकार की शक्तियों को दूर करने के लिए,
और पृथ्वी को मृत्यु और नरक से बचाओ।

उस पवित्र धुन को सुनते हुए,
मेरी आनंदित आत्मा ऊंचाइयों पर उड़ रही है;
मुझे ऐसा लगता है कि मैं उन गानों को फिर से सुन रहा हूँ।
खुले आकाश में गूंजते हुए,
इससे दिव्य आनंद की ऐसी अनुभूति हुई,
जो लोग रात में अपने झुंडों की रखवाली करते थे।

मैं उनके साथ उनके जन्म का उत्सव मनाता हूँ।
सर्वोच्च स्वर्ग में विराजमान ईश्वर की महिमा हो।
मनुष्यों के प्रति सद्भावना और पृथ्वी पर शांति।
हमें एक उद्धारकर्ता-राजा दिया गया है;
हमारे ईश्वर अपने लोगों को लेने आए हैं।
और शैतान की शक्ति का पर्दाफाश हो गया!

पापी मनुष्यों के लिए एक निष्पाप ईश्वर।
पीड़ा सहने और रक्तपात करने के लिए नीचे उतरता है;
तब नरक को अपना साम्राज्य त्यागना ही होगा;
कीमत चुका दी गई, दुनिया मुक्त हो गई।
और अब शैतान को स्वयं स्वीकार करना होगा।
कि मसीह ने आशीर्वाद देने का अधिकार अर्जित किया है:

अब स्वर्ग से पवित्र शांति की मुस्कान प्रकट हो।
और पृथ्वी से ही दिव्य सत्य का उद्गम होगा।
कैदी के कष्टदायक बंधन टूट गए हैं,
क्योंकि हमारा उद्धारकर्ता हमारा राजा है;
और जिसने मनुष्यों के लिए अपना लहू बहाया
यह हमें फिर से ईश्वर के पास ले जाएगा।

छंद।

ओह, मत रोओ, प्रिय! हर आंसू जो बहता है
तुम्हारी उन प्यारी आँखों में,
मुझे इससे भी अधिक तीव्र पीड़ा होती है।
अगर वे मेरे द्वारा उत्पन्न हुए होते तो बेहतर होता।

और निराश मत हो! चाहे कितना भी उदास माहौल हो।
तुम्हारा भाग्य यही है;
मेरे भले के लिए दर्द से लड़ो और देखभाल करो,
और मेरे लिए जीवन को संजो कर रखो!

मुझे इस बात का डर नहीं है कि तुम्हारा प्यार असफल हो जाएगा;
मुझे पता है तुम्हारा विश्वास सच्चा है;
लेकिन, हे मेरे प्रिय! तेरी शक्ति नाजुक है।
ऐसे दुखमय जीवन के लिए।

अगर ऐसा न होता तो मैं आसानी से पता लगा सकता था
(यद्यपि तुमसे बहुत समय से दूर रहा हूँ)
जीवन के कठिन रास्तों का साहसपूर्वक सामना करें।
वे तूफान जो मुझे धमकाते हैं।

मेरे लिए चिंता मत करो— मैंने अपना मन दृढ़ कर लिया है
दुःख और संघर्ष का स्वागत करना;
मैं अपने प्यार के साथ खुशी छोड़ जाता हूँ।
मैं जिन दोस्तों से मिलता हूं, उनके प्रति सजग रहता हूं।

एक माँ की उदास, तिरस्कारपूर्ण दृष्टि,
एक पिता की भौंहें तनकर सिकुड़ी हुई थीं —
लेकिन वह भौंहें चढ़ा सकता है और वह आह भर सकती है:
मैं अपना वचन नहीं तोड़ूंगा!

मैं अपनी माँ से प्यार करता हूँ, मैं उनका आदर करता हूँ।
हे मेरे पिता, लेकिन मुझसे डरो मत—
विश्वास करो कि केवल मृत्यु ही तुम्हें अलग कर सकती है
यह निष्ठावान हृदय तुझसे ही प्राप्त हुआ है।

अगर यही सब कुछ हो।

हे भगवान! अगर यही सब कुछ है तो
जीवन मुझे यह दिखा सकता है;
अगर मेरे दर्द भरे माथे पर गिर जाए
तुझसे ओस की कोई ताजगी नहीं मिलती;

अगर इससे तेज रोशनी न हो तो
आशा का दीपक जलता रहे,
और मैं केवल आनंद का सपना ही देख सकता हूँ।
और कष्टदायक पीड़ा के साथ जागना;

यदि मित्रता का सुकून क्षीण होना ही है,
जब अन्य खुशियाँ चली जाती हैं,
और प्यार को इतनी दूर ही रहना होगा,
जब मैं भटकता रहता हूँ, —

व्यर्थ भटकते और परिश्रम करते हुए,
दूसरों की इच्छा का गुलाम,
निरंतर देखभाल और बार-बार होने वाले दर्द के साथ,
तिरस्कृत, भुला दिया गया;

बुराई और पाप को देखकर दुःख होता है,
फिर भी बुझाने में असमर्थ
भीतर से बहने वाली मौन धारा,
बाहर की ओर बहने वाली धारा का उभार

मैं जो भी अच्छाई देना चाहता हूँ,
मैं जिन भावनाओं को साझा करना चाहूंगा,
मेरे दिल में वापस धकेल दिए गए हैं,
और वहाँ वह नागदड़ में बदल गया;

अगर बादल कभी भी नजरों से ओझल रहें
सूर्य की महिमा,
और मुझे सर्दियों के प्रकोप को सहना ही होगा।

ग्रीष्म ऋतु शुरू होने से पहले;

यदि जीवन इतना चिंताओं से भरा होना ही है,
तो मुझे जल्द ही अपने पास बुला लेना;
या मुझे इतना सामर्थ्य दो कि मैं इसे सहन कर सकूँ।
मेरे दुखों का बोझ।

याद।

ग्रीष्म ऋतु का सूरज खूब चमक रहा था
हरे-भरे खेत और लहराते जंगल,
और कोमल हवाएँ बहती रहीं;
ऊपर, एकदम शुद्ध नीले रंग का आकाश था।
चारों ओर, सबसे सुंदर रंगों के चमकीले फूल,
देखने वाले की निगाहें उस पर टिक गईं।

लेकिन ये सारे आकर्षण मेरे लिए क्या मायने रखते थे?
जब स्मृति की एक मीठी साँस
क्या यह धीरे-धीरे बहता हुआ आया?
मैंने दिन के उजाले से बचने के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं।
और मेरी इच्छुक आत्मा को अपने साथ ले गया,
पृथ्वी से, वायु से और आकाश से;

कि मैं बस कल्पना कर सकता हूँ कि वहाँ
एक छोटा सा फूल—एक सुंदर प्रिमरोज़,
अभी-अभी नजर आने लगा है;
जैसे शैशवावस्था के दिनों में होता था,
मुझे ऐसा लगा जैसे कोई खिलता हुआ प्रिमरोज़ फूल हो।
एक विचित्र आनंद का स्रोत।

प्यारी यादें! हमेशा मुझ पर मुस्कुराती रहो;
प्रकृति की प्रमुख सुंदरताएँ तुझसे ही उत्पन्न होती हैं;
ओह, अब भी अपनी श्रद्धांजलि लाओ

सुनहरे क्रोकस को अभी भी चमकने दो
फूलों में सबसे दिव्य,
वसंत ऋतु की भव्यता।

अब भी शर्मीली लड़की की खुशबू में बसी हुई;
और हल्के नीले रंग के फूल के चारों ओर मंडराते रहें,
मेरे बचपन का प्यारा फूल।
नन्ही डेज़ी पर अभी भी मुस्कुराओ,
बटरकप का चमकीला प्याला भरा हुआ
अपनी सारी पूर्व शक्ति के साथ।

तुम्हारा स्वप्निल जादू सदा के लिए बना रहे
गोल पर्वत तारा और हीथर की घंटी,
और मर मत जाना
चमकती हुई बर्फ से लेकर, या बर्फ की लपटों से घिरी बर्फ तक,
और जब तेज हवाएं चलें तो फुसफुसाओ,
या फिर लहरदार जल का खेल।

तो क्या बचपन पूरी तरह से दिव्य है?
या स्मृति, तेरी ही महिमा है,
क्या इससे अतीत को एक आभा मिलती है?
सब कुछ दिव्य नहीं; इसके दुःख की पीड़ाएँ
(हालांकि, शायद उनका प्रवास संक्षिप्त हो)
जब तक ये रहते हैं, तब तक कड़वे होते हैं।

और सारी महिमा तुम्हारी ही नहीं है।
क्योंकि केवल हमारी शुरुआती खुशियों पर ही।
वह पवित्र प्रकाश फैलता है।
ऐसी किरण से, तुम्हारा कोई जादू नहीं चलेगा
यह हमारे भविष्य के सुखों को और भी चमकीला बना सकता है।
हालांकि उनका देहांत बहुत पहले हो चुका है।

कॉपर को।

हे दिव्य कवि, तेरे गीत कितने मधुर हैं!
और अक्सर, बचपन के वर्षों में,
मैंने उन्हें बार-बार पढ़ा है।
खामोश आंसुओं की बाढ़ के साथ।

मेरे दिल की गहराइयों की भाषा
मैंने हर एक रेखा का पता लगाया;
मेरे पाप, मेरे दुख, मेरी आशाएँ और मेरे भय,
वे वहाँ थे—और केवल मेरे ही थे।

मैं अपने लिए ही आह भरता था,
पीड़ा के आंसू बहने लगे;
मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि इससे भी भयानक विपत्ति क्या होगी।
कवि का हृदय भर गया था।

मुझे अंधकार की रातों का अनुभव नहीं था।
दुख के दिन;
अंधकारमय निराशा के लंबे-लंबे वर्ष,
जिसने तुम्हें कुचला और यातनाएं दीं।

लेकिन वे चले गए; अंततः पृथ्वी से चले गए।
तुम्हारी कोमल आत्मा देहांत में चली गई है।
और उसके ईश्वर की गोद में
अंततः इसे अपना घर मिल गया है।

यदि ईश्वर प्रेम है, तो ऐसा ही होना चाहिए।
और सच्ची प्रार्थनाओं का उत्तर देता है;
तब निश्चय ही तुम स्वर्ग में निवास करोगे।
और शायद मैं तुमसे वहाँ मिलूँ।

क्या वह हर अच्छाई का स्रोत है?
पवित्रता का स्रोत?
तब तुम्हारे सबसे गहरे दुख के क्षणों में,
तेरा ईश्वर अब भी तेरे साथ था।

और कैसे, जब सारी उम्मीदें खत्म हो चुकी थीं?

क्या तुम इतनी स्नेहपूर्वक लिपट सकते हो?
पवित्र कार्यों के लिए और मनुष्यों की सहायता करने के लिए?
और कितनी मधुरता से गाती हैं,

उन चीजों के बारे में जो केवल ईश्वर ही सिखा सकता है?
और वह पवित्रता कहाँ से आती है?
सभी पापी मार्गों के प्रति वह घृणा —
वह कोमल दयाभाव?

क्या ये हृदय रोग के लक्षण हैं?
दिव्य कृपा से वंचित —
अपने ईश्वर से सदा के लिए विमुख हो गया,
क्या शैतान के प्रकोप को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए?

फिर भी, यदि तुम्हारे सबसे गहरे भय सच हो जाएं,
यदि स्वर्ग इतना कठोर हो,
कि तुम्हारे जैसी आत्मा खो गई है, —
ओह! मैं कैसे प्रकट होऊं?

संशयवादी की प्रार्थना।

पृथ्वी और वायु की शाश्वत शक्ति!
अदृश्य होते हुए भी, चारों ओर दिखाई देते हैं।
दूरस्थ, लेकिन हर जगह विद्यमान,
मौन होते हुए भी, हर ध्वनि में उसकी मौजूदगी महसूस होती है;

यदि कभी तुम्हारा कान दया की ओर झुके,
जब दुखी मनुष्यों ने तुझसे प्रार्थना की,
और यदि वास्तव में तेरा पुत्र भेजा गया था,
मुझ जैसे खोए हुए पापियों को बचाने के लिए:

तो अब मेरी बात सुनो, यहाँ घुटने टेककर बैठे हुए,

मैं अपना हृदय और अपनी दृष्टि तेरे समक्ष उठाता हूँ।
और मेरी आत्मा प्रार्थना में लीन हो जाती है।
हे भगवान, मुझे विश्वास दो! मैं रोते हुए कहती हूँ।

मेरे दिल में थोड़ी सी भी चमक के बिना,
मैं यह भावपूर्ण प्रार्थना नहीं कर सका;
लेकिन, ओह! और भी तीव्र प्रकाश प्रदान करो,
और अपनी दया से इसे वहीं स्थिर कर दो।

जब तक आस्था मेरे साथ है, मैं धन्य हूं;
यह मेरी सबसे अंधेरी रात को दिन में बदल देता है;
लेकिन जब मैं इसे अपनी छाती से लगाती हूँ,
मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि यह मुझसे दूर होता जा रहा है।

फिर, ठंड और अंधेरे में, मेरी आत्मा डूब जाती है,
मेरे जीवन की रोशनी को जाते हुए देखना;
और मुझे लगता है कि नरक का हर राक्षस,
मेरे दिल के दर्द का आनंद लेता है।

अगर मेरा सारा प्यार
मेरी आशाएं, मेरी मेहनत, सब व्यर्थ हो गईं।
और यदि ऊपर कोई ईश्वर न हो,
क्या तुम मेरी प्रार्थना सुनोगे और मुझे आशीर्वाद दोगे?

यदि यह सब व्यर्थ भ्रम है,
यदि मृत्यु एक शाश्वत नींद है,
और कोई मेरी गुप्त पुकार नहीं सुन सकता,
या फिर मेरे चुपचाप बहते आँसू देखो!

हे ईश्वर, मेरी सहायता करो! क्योंकि केवल तुम ही मेरी सहायता कर सकते हो।
क्या तुम मेरी विचलित आत्मा को शांति दे सकते हो?
इसे मत त्यागो: यह तुम्हारा ही है।
कमजोर होते हुए भी, विश्वास करने की प्रबल इच्छा रखते हैं।

ओह, इन क्रूर शंकाओं को दूर भगाओ;
और मुझे यह ज्ञात करा कि तू ही ईश्वर है!
एक ऐसा विश्वास, जो दिन-रात चमकता रहता है।
यह हर सांसारिक बोझ को हल्का कर देगा।

अगर मैं यह मानता हूँ कि यीशु की मृत्यु हुई थी,
और जागकर, ऊपर शासन करने के लिए उठ खड़ा हुआ;
तो फिर निश्चय ही दुःख, पाप और अहंकार,
शांति, आशा और प्रेम के आगे झुकना ही होगा।

और वे सभी पवित्र शब्द जो उन्होंने कहे
क्या यह शक्ति और पवित्र आनंद प्रदान करेगा:
मेरे सिर पर सुरक्षा कवच,
मेरे हृदय में सुकून का एक झरना।

“चुने हुए लोगों” के लिए एक संदेश।

आप स्वयं को सुरक्षित समझकर प्रसन्न हो सकते हैं;
आप ईश्वर के इस उपहार के लिए आभारी हो सकते हैं —
वह अनचाही कृपा, जिसने तुम्हारे काले दिलों को पवित्र कर दिया,
और यह आपकी पृथ्वी पर जन्मी आत्माओं को स्वर्ग में चमकने के लिए उपयुक्त बनाता है।

लेकिन क्या आस-पास देखना और अवलोकन करना सुखद है?
हजारों लोग उस खुशी से वंचित रह गए
वे भी कम से कम उतने ही हकदार थे जितने आप।
क्या उनकी कमियां अधिक हैं और न ही उनके गुण कम?

और तुम्हें अपने ईश्वर से और अधिक प्रेम क्यों करना चाहिए?
क्योंकि उनकी मुस्कानें केवल आपको ही मिलती हैं;
क्योंकि उसने बहुतों को छोड़ देने का चुनाव किया।
और क्या केवल कुछ चुने हुए लोगों को ही स्वर्ग में ले जाया जाएगा?

और, आपके हृदय अधिक कृतज्ञ क्यों होने चाहिए?
क्योंकि क्या उद्धारकर्ता ने सबके लिए अपनी जान नहीं दी?
क्या आपका ईश्वर न्याय और प्रेम का ईश्वर है?
और क्या आपके हृदय दानशीलता से भरे हुए हैं?

बताइए, क्या आपका ह्रदय समस्त मानवजाति के लिए विशाल है?
और क्या आप कभी अपने पड़ोसी के साथ ऐसा करेंगे?
कमजोर, बलवान, प्रबुद्ध और अंधे —
जैसा आप चाहेंगे कि आपका पड़ोसी आपके साथ करे?

और जब तुम अपने साथी मनुष्यों को देखते हो,
उन्हें देखो, वे अनंत दुख भोगने के लिए अभिशप्त हैं।
फिर आप आनंद और परमानंद की बात कैसे कर सकते हैं?
ईश्वर मुझे इस तरह के क्रूर आनंद से बचाए रखे!

मुझे पता है कि कोई भी शाश्वत आनंद के योग्य नहीं है;
अयोग्य होते हुए भी दयापूर्वक कृपा प्रदान की गई:
लेकिन, कोई भी शाश्वत दुख में नहीं डूबेगा।
वे स्वर्ग के क्रोध के पात्र नहीं हैं।

और, ओह! मेरे दिल में बसता है
एक उम्मीद, जिसे मैंने लंबे समय से संजोकर रखा था;
(और यदि इसकी उत्साहवर्धक किरण चली जाए,
मेरी आत्मा कितनी अंधकारमय होगी!

क्योंकि आदम के कारण ही सब मर गए,
मसीह में ही सभी मनुष्य जीवित रहेंगे;
और सदा उसके सिंहासन के चारों ओर निवास करते रहो,
शाश्वत प्रशंसा अर्पित करनी है।

यहां तक कि दुष्टों का भी अंत में विनाश हो जाएगा।
आकाश के लिए तैयार रहें;
और जब उनका भयानक अंत बीत जाएगा,
जीवन और प्रकाश की ओर उदय हो।

मैं यह नहीं पूछता कि वह दिन कितना दूर है।
न ही पापियों के दुख के बारे में,
उनकी अशुद्धियों को दूर करने से पहले;
मेरे लिए इतना जानना ही काफी है—

जब क्रोध की गोली खाली हो जाती है,

शुद्ध की गई धातु,
वे उन चीजों से चिपके रहेंगे जिन्हें वे कभी तुच्छ समझते थे।
और उस परमेश्वर के मार्ग पर चलो जो मर गया।

पिछले दिनों।

यह सोचना अजीब लगता है कि कभी ऐसा भी समय था।
जब हर्षोल्लास सिर्फ एक नाम नहीं था,
जब हंसी सचमुच दिल को खुश कर देती थी,
और बार-बार अनायास ही मुस्कानें आने लगीं।
और केवल शोक के आँसू ही बहते रहेंगे
दूसरों के दुख के प्रति सहानुभूति दिखाना;

जब वाणी अंतर्मन के विचारों को व्यक्त करती है,
और दिल से दिल की बात खुलकर कही गई,
और गर्मी के दिन बहुत छोटे होते थे।
वहाँ मौजूद तमाम सुख-सुविधाओं के लिए;
और मौन, एकांत और विश्राम,
अब थकी हुई छाती में आपका स्वागत है —

तब सभी को कोई महत्व नहीं देता था, कोई उनसे संबंध नहीं रखता था।
और एक आत्मा ने जो सारा आनंद दिखाया,
दूसरे ने फिर से गहरी अनुभूति महसूस की;
और दोस्ती नदी की तरह बहती चली गई,
इसका मौन प्रवाह स्थिर और मजबूत है,
क्योंकि कोई भी चीज इसकी कोमल शक्ति का सामना नहीं कर सकती थी:

जब रात, शांति का पवित्र समय,
वह विदाई का समय भय का कारण था;
जब भाषण और हंसी-मजाक अचानक बंद हो जाएं,
और मौन को अपनी शक्ति पुनः प्राप्त करनी होगी;
हालांकि वह हमेशा दर्द और दुखों से मुक्त रहता है,
उसने हमें केवल शांति और सुकून दिया।

और जब शुभ सूर्योदय फिर से होगा
गुलाबी आसमान में रोशनी लेकर आया,
हम जागे, और तब हमें कोई अनिच्छा नहीं थी।
हम निर्मम परिश्रम के लिए उठे;
लेकिन आशा से भरपूर, प्रसन्न और आनंदित,
हमने लौटते हुए दिन का स्वागत किया।

सांत्वना।

हालांकि ये जंगल उजाड़ हैं और ज़मीन नम है।
गिरे हुए पत्तों की इतनी घनी परत के साथ,
और चारों ओर बहने वाली ठंडी हवा
एक बेकाबू और उदास विलाप के साथ;

मुझे पता है, एक दोस्ताना छत तो है ही।
शायद यह मुझे सर्द हवाओं से बचा ले;
वहाँ आग लगी है, जिसकी लालिमा लिए हुए चमक है।
वे मेरे बीते हुए सफ़रों के लिए मेरी सराहना करेंगे।

और इसलिए, हालांकि मैं जहां भी जाता हूं,
अजनबी लोगों की ठंडी निगाहें मेरी आंखों से टकराती हैं;
हालांकि, जब मेरा मन दुःख से भर जाता है,
अनसुनी आहें अनचाही ही बढ़ती जाती हैं;

हालांकि, लंबे समय तक सहन किया गया एकांत,
जवानी की खुशियाँ बहुत जल्दी क्षीण हो जाती हैं,
इससे मेरी जुबान से हंसी गायब हो जाती है।
और मेरे दिन के दोपहर के समय बादल छा जाते हैं;

जब दयालु विचार आते हैं कि ऐसा हो सकता था,
स्तन में रक्त का प्रवाह वापस आने से हतोत्साहित हुआ;

मुझे पता है कि वह है, हालांकि बहुत दूर है।
एक ऐसा घर जहाँ मन और आत्मा को शांति मिले।

गर्म हाथ हैं, जो मेरे हाथों में जकड़े हुए हैं,
दयालु हृदय झूठ नहीं बोलेगा;
जब हर्षोल्लास, सत्य और मित्रता की चमक दिखाई देती है
मुस्कुराते होंठों और गंभीर आँखों में।

मेरे दिल के चारों ओर जमने वाली बर्फ
काश, बर्फ पिघल जाए; और फिर मधुरता से,
जवानी के वो सुख, जो अब चले गए,
मेरी आत्मा को फिर से प्रसन्न करने आएगा।

चाहे मैं कितनी भी दूर भटक जाऊं, यह विचार हमेशा बना रहेगा।
मेरी आशा, मेरा सहारा, हर जगह;
जब तक मेरे पास ऐसा घर रहेगा,
मेरा दिल कभी निराशा नहीं जानेगा!

तेज हवा वाले दिन जंगल में रचित पंक्तियाँ।

मेरी आत्मा जागृत हो गई है, मेरा मन ऊंचाइयों पर पहुंच गया है।
और हवा के झोंकों के साथ ऊपर की ओर उड़ गया;
मेरे ऊपर और चारों ओर तेज हवा गरज रही है,
पृथ्वी और समुद्रों को आनंद से भर देना।

धूप में मुरझाई हुई लंबी घास चमक रही है।
पत्तों से रहित पेड़ अपनी शाखाओं को ऊपर की ओर लहरा रहे हैं;
उनके नीचे गिरी हुई सूखी पत्तियां खुशी से नाच रही हैं।
नीले आकाश में सफेद बादल तेजी से दौड़ रहे हैं।

काश मैं देख पाता कि समुद्र कितनी तेज़ी से लहरें मार रहा है।
इसकी लहरों का झाग फुहारों के बवंडर में बदल जाता है;

काश मैं देख पाता कि इसकी गौरवशाली लहरें कैसे टकरा रही हैं।
और आज उनकी गर्जना की भीषण आवाज सुनो!

जीवन के प्रति दृष्टिकोण।

जब मेरा दिल निराशा के अंधकार में डूब जाता है,
और जीवन मेरे लिए कोई खुशी नहीं दिखा सकता;
और मुझे एक विशाल कब्र दिखाई देती है,
जहां कुंज और महल होने चाहिए;

तुम व्यर्थ ही भयावह सपनों की बात करते हो;
तुम मुस्कुराते हुए व्यर्थ ही कहते हो,
जो मुझे इतना नीरस लगता है,
स्वस्थ मन इसे उज्ज्वल और प्रसन्न मानता है।

मैं भी मुस्कुराया हूँ और तुम्हारी तरह ही सोचा है।
लेकिन उसने पागलों की तरह मुस्कुराया और गलत समझा:
सत्य ने मुझे वर्तमान दृष्टिकोण तक पहुंचाया, —
अब मैं जाग रहा हूँ — तभी मैंने सपना देखा था।

मैंने हाल ही में सूर्यास्त के समय आकाश का नजारा देखा।
और वह मंत्रमुग्ध होकर देखता रहा।
इसके शानदार रंगों की विविधता:
सबसे पहले, चमकते सुनहरे रंग के मुलायम बादल;

ये लाली गुलाबी रंग की हो गई;
उनके नीचे हरे रंग की एक विशाल धारा चमक रही थी;
और उतना ही दिव्य, शानदार नीला
वह उनके ऊपर और बीच में मुस्कुरा रहा था।

मैं हर खूबसूरत रंग का नाम नहीं बता सकती;
मैं यह नहीं कह सकता कि वे कितने तेज चमके;

लेकिन एक-एक करके मैंने उन्हें लुप्त होते देखा;
और उनके जाने के बाद क्या बचा?

आसमान में धुंधले बादल छाए रहे, जिनका रंग गहरा था।
और जब उनका उधार लिया हुआ आकर्षण समाप्त हो गया,
नीला आकाश भी फीका पड़ गया था।
जो पहले इतनी कोमल और चमकदार मुस्कान बिखेरती थी।

इसलिए, यौवन की चमक से जगमगाते हुए,
हमारा विविधतापूर्ण जीवन सुंदर और आनंदमय प्रतीत होता है;
और यही नग्न सत्य बना रहता है।
जब वह झूठी रोशनी थमने लगती है।

तो फिर मेरी तेज दृष्टि को दोष क्यों दूं?
इससे स्पष्ट रूप से मुसीबतों का अंबार दिखाई देता है।
सुनहरी रोशनी के धुंधलेपन के बीच से
वह चापलूसी भरी झूठी बातों का जाल?

जब युवा माँ ऊपर मुस्कुराती है
वह उसकी सबसे लाडली थी,
उसका हृदय सच्चे प्रेम से दमक रहा है।
जब मौन भाव से उमड़ते आंसू बहने लगते हैं।

सपनों की दुनिया में खोई रहने वाली! उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं है।
चिंताजनक परिश्रम, पीड़ा,
चकनाचूर आशाएँ, जलता हुआ दुख,
उसकी खुशी का स्रोत उसे मिल जाएगा।

उसकी अंधी आँखें अब कुछ नहीं देख पा रही हैं
जो, देर-सवेर, उसका अंत निश्चित है;
वह पीड़ा जो उसके माथे पर छा जाएगी,
मृत्यु-शय्या, वह वीरान कब्र।

क्योंकि इस युवा जोड़े के बारे में बहुत कम जानकारी है,
आपसी प्रेम में परम धन्य,
कितनी थकावट और घोर निराशा!
जल्द ही, दर्द से कराहती छाती को जकड़ लेगी।

और भले ही प्रेम और आस्था बनी रहे,
(जीवन के सबसे बड़े आशीर्वादों में से एक,)
विपरीत परिस्थितियों और पीड़ा के बीच,
उत्साहपूर्ण चमक से हर तरफ जगमगाना;

उन्हें यह समझ नहीं आता कि मृत्यु कितनी क्रूर होती है।
चलो, उनके प्यार भरे दिलों को बिछड़ने का समय आ गया है:
अब सांस फूलने का एहसास नहीं होता।
धरती से बंधे हृदय का विक्षोभ, —

आत्मा और शरीर की पीड़ा,
इससे पहले कि वह अपनी शांति में डूब जाए।
दुखी जीवित व्यक्ति देख नहीं सकता
उनकी प्रियतमा के ठीक ऊपर स्थित कब्र;

और न ही यह कि कैसे, निराश और अकेले होकर,
फिर उसे अपना पूरा जीवन व्यतीत करना होगा;
और धीमी गति से, कमजोर रूप से परिश्रम करते हुए,
और बेहोश होकर, क्षय की अवस्था में डूब जाना।

* * * *

ओह, युवा धैर्यपूर्वक सुनें।
जबकि दुखद अनुभव अपनी कहानी सुनाता है,
लेकिन संदेह उसकी आंखों में मुस्कुराता हुआ बैठा है।
क्योंकि प्रबल आशा की जीत अवश्य होगी!

वह सुनता है कि आनंद कितनी दुर्बलता से मरता है,
अपराधबोध से नष्ट होकर, पीड़ा और कष्ट से;
वह होप की ओर मुड़ता है—और वह जवाब देती है,
"विश्वास मत करो—ऐसा नहीं है!"

"अरे, उसकी बात पर ध्यान मत दो!" अनुभव यही कहता है;
"क्योंकि उसने एक बार मुझसे फुसफुसाकर ऐसा कहा था;
उसने मुझे बताया, मेरे युवावस्था के दिनों में,
पुरुषत्व का सर्वांगीण काल कितना गौरवशाली होगा!

“जब, वसंत ऋतु के आरंभ में,
मेरे ऊपर से गुजरने वाली हवाएँ बहुत ठंडी थीं।
उसने कहा, हर आने वाला दिन कुछ नया लेकर आएगा।
एक अधिक सुंदर स्वर्ग, एक अधिक सौम्य विस्फोट।

और जब सूरज बहुत कम ही चमकता था,
आसमान में काले बादल छाए हुए थे, वह बहुत उदास और उदास दिख रहा था।
लगातार तेज बारिश हो रही थी।
और चारों ओर घना कोहरा छा गया;

उसने मुझसे कहा, ग्रीष्म ऋतु की शानदार किरण
उन सभी धुंधों को दूर भगा देगा।
और चारों ओर गौरव बिखेर दो;
सबसे मधुर संगीत से वृक्षों को भर दो,
हल्की हवा अपनी मनमोहक सुगंध से भर देती है,
और जमीन पर फूल बिखेर दो

लेकिन जब, उस झुलसा देने वाली किरण के नीचे,
मैं दिनभर थका हुआ और सुस्त पड़ा रहा।
जबकि पक्षियों ने गाने से इनकार कर दिया,
खेतों और पेड़ों से हरियाली सड़ने लगी।
और हांफती प्रकृति ने मेरे साथ शोक मनाया
वसंत ऋतु की ताजगी।

“‘थोड़ी देर रुकिए,’ उसने कहा।”
जब तक ग्रीष्म ऋतु के झुलसा देने वाले दिन बीत न जाएं;
और शरद ऋतु फिर से लौट आएगी,
अपनी खुद की सोने की दौलत के साथ,
और ग्रीष्म ऋतु की भव्यता धीरे-धीरे कम हो गई।
जिस ताजगी की आप निंदा करते हैं।

और मैंने लंबे समय तक इंतजार किया, लेकिन व्यर्थ ही:
वह ताजगी फिर कभी नहीं लौटी।
हालांकि समर का निधन हो गया,
हालांकि शरद ऋतु की धुंध ठंडी और सर्द छाई हुई थी।
और मुरझाई हुई प्रकृति अभी भी दयनीय स्थिति में थी।
और पतन की ओर अग्रसर हो गया।

“जब तक सर्द हवाएं अशुभ संकेत देने लगीं
पत्तों से रहित पेड़ों के बीच से गुज़रते हुए—और तभी मुझे पता चला
वह उम्मीद तो बस एक सपना थी।
लेकिन इस तरह, हे प्रिय युवक, उसने मुझे धोखा दिया;
और वह तुम्हारे प्रति भी उतनी ही बेवफा साबित होगी।
हालांकि उसके शब्द कितने भी मधुर क्यों न लगें।

कठोर भविष्यवक्ता! अपनी भयावह भविष्यवाणियाँ बंद करो!
तुम उस प्रचंड अग्नि को बुझा नहीं सकते।
यह युवाओं के दिलों को गर्माहट देता है।
ओह, जब तक इससे उसे खुशी मिलती रहे, तब तक उसे खुश रहने दो।
और धीरे-धीरे, धीरे-धीरे विलीन हो जाए —
सत्य की नमी से कंपकंपी!

उसे बता दो कि पृथ्वी हमारा विश्राम स्थल नहीं है;
इसके सुख खोखले हैं—अधिकतम रूप से कमजोर हैं;
और आकाश से परे इशारा करें।
लेकिन शायद आशा की किरणें हम तक यहाँ पहुँच सकें;
और आशा है कि सबसे कठिन रास्ता भी उत्साह प्रदान कर सकता है:
तो फिर इसे उड़ने का आदेश मत दो!

हालांकि आशा खुशियों का वादा कर सकती है, फिर भी
निर्दयी समय कभी भी इच्छाओं की पूर्ति नहीं करेगा;
या फिर, अगर वे आते भी हैं तो,
हम उन्हें कभी भी शुद्ध रूप में नहीं पाते हैं, —
संभवतः हानिकारक, या शीघ्र ही नष्ट हो जाने वाला।
वे या तो गायब हो जाते हैं या उदासी छा जाती है;

फिर भी आशा स्वयं एक चमक बिखेरती है
हमारे सभी परिश्रमों और कष्टों पर;
जबकि अंधकारमय आशंका देखभाल
अक्सर हजारों विपत्तियों का संकेत मिलता है,
ईश्वर की इच्छा कभी ऐसी न हो।
कांपते हुए दिल को सहना।

या फिर अगर वे आते भी हैं, तो अक्सर ऐसा प्रतीत होता है,
हमारे कष्ट हमारे भय से कहीं अधिक हल्के हैं।

और इसे कहीं अधिक साहस के साथ सहन किया गया।
तो आइए हम अपनी बर्बादी को और न बढ़ाएं।
लेकिन आधी रात के घोर अंधकार में भी
सूर्योदय की प्रतीक्षा करें।

क्योंकि रास्ता ऊबड़-खाबड़ और लंबा है,
क्या हमें चिड़िया के गीत को तुच्छ समझना चाहिए?
क्या यह घुमक्कड़ के मार्ग को आनंदित करता है?
या फिर बेपरवाह कदमों से रौंदते हुए,
मुस्कुराते हुए नन्हे फूल, चमकीले और प्यारे,
क्योंकि वे जल्दी सड़ जाते हैं?

मनमोहक दृश्यों को अनदेखा करते हुए आगे बढ़ें,
क्योंकि अगला रास्ता निराशाजनक और उदास है;
या फिर मुस्कुराते हुए आकाश का आनंद न ले पाएं,
क्योंकि शायद कोई तूफान आने वाला है?

नहीं! जब हम अपनी यात्रा पर निकल पड़ते हैं,
हम हर प्यारी चीज पर मुस्कुराएंगे;
और जैसे-जैसे वे गुजर जाते हैं,
हम स्मृति और आशा के सहारे ही टिके रहेंगे।

और यद्यपि वह भयानक नदी बहती है
हमारे सामने, जब यात्रा समाप्त हो चुकी है,
शायद तीर्थयात्री के सभी कष्टों में से एक
बेहद भयानक — पीछे मत हटो — यह आखिरी है!

हालांकि बर्फीली ठंड, अंधेरा और गहराई;
इसके परे वह पवित्र तट मुस्कुराता हुआ दिखाई देता है,
जहां कोई कष्ट नहीं सहेगा, वहां कोई रोएगा नहीं।
और आनंद सदा के लिए कायम रहेगा!

निवेदन।

ओह, मैं बहुत थका हुआ हूँ।
हालांकि अब आंसू नहीं बहते;
मेरी आंखें रोते-रोते थक गई हैं।
मेरा ह्रदय दुःख से भरा हुआ है;

मेरा जीवन बहुत अकेला है
मेरे दिन भारी बोझ के साथ बीतते हैं।
मैं पछताने से थक गया हूँ;
क्या तुम मेरे पास नहीं आओगे?

ओह, क्या तुम मेरी इच्छाओं को जानते थे?
तेरे लिए, दिन-प्रतिदिन,
मेरी आशाएँ, जो अक्सर चकनाचूर हो जाती हैं,
तुम इस प्रकार देरी नहीं करोगे!

विद्यार्थी का प्रेमगीत।

मैं अपने सोफे पर सोया था।
लेकिन मेरी आत्मा को शांति नहीं मिली।
दिन भर के परिश्रम के लिए
फिर भी मेरी थकी हुई आत्मा बोझिल है;

और मेरी स्वप्निल आँखों के सामने
फिर भी विद्वत्तापूर्ण ग्रंथ वहीं पड़े रहे,
और मैं उनके पत्तों को बंद नहीं कर सका।
और मैं मुंह नहीं मोड़ सका।

लेकिन अंततः मैंने अपनी आँखें खोल दीं।
और मुझे एक दबी हुई सी आवाज सुनाई दी;
कहने का तात्पर्य यह था कि यह रात की हवा थी।
जमीन पर बर्फ पड़ी हुई थी।

तब मुझे पता चला कि आराम है
पर्वत की गोद में स्वतंत्र रूप से;
इसलिए मैंने बुखार से ग्रस्त अपने सोफे को छोड़ दिया,
और मैं तुम्हें जगाने के लिए उड़कर आया!

मैं तुम्हें जगाने के लिए उड़कर आया हूँ।
क्योंकि, यदि तुम नहीं उठोगे,
तब मेरी आत्मा को शांति नहीं मिल सकती।
इन पवित्र चांदनी रातों से।

और इस कुदरती बर्फ की बर्बादी
मेरी दृष्टि में यह उचित नहीं होगा।
जब तक तुम मुस्कुराते हुए नहीं आओगे,
मेरे साथ वहाँ घूमने के लिए प्यार।

तो, जाग जाओ! मारिया, जाग जाओ!
क्योंकि, यदि तुम जान सको
शांत चांदनी कैसे सोती है
बर्फ के इस वीरान इलाके में,

और प्राचीन वृक्षों के उपवन,
बर्फ से ढके वस्त्रों में सजे हुए,
जब तक वे अंधकार में फैल न जाएं
दूर स्थित घाटी की छाया में;

मुझे पता है कि तुम प्रसन्न होगे
इस ताजगी भरी हवा में सांस लेना;
तुम अपनी सबसे प्यारी नींद तोड़ दोगे
इतना सुंदर दृश्य देखना।

इन बर्फीले वीरान इलाकों में, अकेले,
तुम्हें स्वतंत्र रूप से घूमने में आनंद आएगा;
और इससे तुम्हें कम प्रसन्नता नहीं होगी।
हालांकि वह आनंद मेरे साथ भी साझा किया जाए।

कैद में रखा कबूतर।

बेचारी बेचैन कबूतरी, मुझे तुझ पर दया आती है;
और जब मैं तुम्हारी विलाप भरी आवाज़ सुनता हूँ,
मैं तुम्हारी कैद पर शोक व्यक्त करता हूँ।
और अपने दुखों में मेरे दुखों को भूल जाना।

तुम्हें उड़ने के लिए तैयार देखकर,
और अपने उन बेकार पंखों को फड़फड़ाओ,
और दूर आकाश की ओर निहारें,
यह मेरे जैसे कठोर हृदय को भी पिघला देगा।

व्यर्थ—व्यर्थ! तुम उठ नहीं सकते:
तेरी जेल की छत तुझे वहीं कैद रखती है;
इसके पतले तार तुम्हारी आँखों को धोखा देते हैं।
और अपनी इच्छाओं को निराशा से बुझा दो।

ओह, तुम्हें तो स्वतंत्र रूप से घूमने के लिए बनाया गया था
धूप से जगमगाते मैदानों और छायादार उपवनों में,
और उस विशाल समुद्र के पार,
सुदूर देशों में, इच्छानुसार विचरण करने के लिए!

फिर भी, क्या तुम्हारा कोई एक ही सज्जन साथी होता?
तेरे नन्हे उदास हृदय को प्रसन्न करने के लिए,
और तुम्हारे साथ तुम्हारी बंदी अवस्था साझा करें,
तुम वहां भी खुश रह सकते हो।

हाँ, वहाँ भी, अगर, सुनकर,
एक वफादार प्रिय साथी खड़ा था,
उसकी चमकीली आँखों को निहारते हुए,
तुम अपने जन्मस्थान को भूल सकते हो

लेकिन हे बेचारी अकेली कबूतरी,
तुम्हें अनसुनी ही अपनी आनंदहीन विलाप करनी होगी;

वह हृदय जिसे प्रकृति ने प्रेम करने के लिए बनाया है
वह तड़पता होगा, उपेक्षित होगा और अकेला होगा।

आत्म-प्रशंसा।

एलेन, तुम एक बार लापरवाह थीं।
सुंदरता या आकर्षण का,
पहनावे में सरल और घरेलू,
रूप और दिखावे की परवाह न करने वाला;
तो फिर यह बदलाव कहाँ से आया? और अब क्यों?
आप अपने बालों को इतनी बार क्यों संवारती हैं?
और इसलिए अपने युवा रूप को सजाओ
इतनी अथक लगन से?

हमें बताएं, और हमारे कानों को थकाना बंद करें।
उसी परिचित धुन के साथ;
आप उन सरल धुनों को क्यों बजाएंगे?
क्या यह बार-बार होता है?
"सचमुच, प्रिय मित्रों, मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि
बचपन के वो विचार अब चले गए हैं;
हर साल अपने साथ नई भावनाएं लेकर आता है,
और साल तेजी से बीत जाते हैं:

और इन छोटी-छोटी सरल धुनों के लिए—
मुझे उन्हें बार-बार बजाना अच्छा लगता है
इतना ही— मैं अभी वादा करने की हिम्मत नहीं कर सकता।
उन्हें फिर कभी नहीं खेलना है।"
मैंने जवाब दिया—और वह काफी था;
उन्होंने उन्हें जाने के लिए मोड़ दिया;
वे मेरे गुप्त विचारों को नहीं पढ़ सके।
और न ही मेरे धड़कते दिल को देख पा रहे हैं।

मैंने कई युवा रूपों को देखा है,

जिसके परिवर्तनशील चेहरे पर
आत्मा की अंतर्मनकारी क्रियाएँ
देखने वाला व्यक्ति शायद इसका पता लगा सकता है;
बोलती आंखें, बदलते होंठ,
लाली से खिले गाल,
मुस्कुराता हुआ माथा, या उदास माथा,
उनकी अलग-अलग भावनाएं बयां करती हैं।

लेकिन शुक्र है! आप मेरी ओर देख सकते हैं।
घंटों तक, और कभी पता नहीं चलता
मेरी आत्मा के गुप्त परिवर्तन
आनंद से लेकर घोर दुःख तक।
कल रात, जब हम आग के चारों ओर बैठे थे
आनंदपूर्वक बातचीत करते हुए,
हमें बिना किसी आहट के कदमों की आहट सुनाई दी।
मेरे परिचितों में से एक!

मेरी आवाज में कोई कंपन नहीं थी।
मेरे गालों पर कोई लाली नहीं है,
मेरी आंखों में कोई चमक नहीं है,
आशा या आनंद की बात हो;
लेकिन, ओह! मेरी आत्मा भीतर ही भीतर जल रही थी।
मेरा दिल पूरी ताकत से और तेजी से धड़क रहा था!
वह पास नहीं आया—वह चला गया—
और फिर मेरी खुशी भी खत्म हो गई।

और फिर भी मेरे साथियों ने इस पर ध्यान नहीं दिया:
मेरी आवाज अभी भी वैसी ही थी;
उन्होंने मुझे मुस्कुराते हुए देखा, और मेरे चेहरे पर
दुख का कोई संकेत नहीं मिला।
उन्हें मेरे छिपे हुए विचारों का जरा भी अंदाजा नहीं था;
और उन्हें कभी पता नहीं चलेगा
मेरे हृदय की पीड़ा,
वह भयानक पीड़ा!

उतार-चढ़ाव,

भले ही सूरज मेरे आकाश से चला गया हो;
मुझे निराशा से बचाने के लिए
पवित्र चंद्रमा आकाश में उदय हुआ।
और वहाँ वह शांत भाव से चमक रहा था।

मैंने नम आंखों से उसे देखा।
धीरे-धीरे पहाड़ी पर चढ़ो,
धुंधले क्षितिज के कोहरे के बीच से
उसकी रोशनी मंद और ठंडी थी।

मुझे लगा कि ऐसी फीकी और बेजान किरणें
मेरा दिल कभी इसका बदला नहीं चुका सकता।
सूर्य की सबसे क्षणभंगुर किरणों के लिए
इससे मुझे पूरे दिन खुशी मिली:

लेकिन, जैसा कि ऊपर बताया गया है, उस धुंध के नियंत्रण से परे है।
वह उठी और पहले से कहीं अधिक चमक उठी।
मैंने अपनी आत्मा पर उसकी रोशनी का अहसास किया;
लेकिन अब— वो रोशनी चली गई है!

घने धुएं ने उसे मेरी नजरों से ओझल कर दिया।
और मैं बाईं ओर अंधेरा छा रहा था,
उस ठंडी और उदास रात में,
प्रकाश और आशा से वंचित:

जब तक, मुझे लगा, एक छोटा तारा
कांपती हुई किरण के साथ चमक उठा,
दूर से अपनी रोशनी से मुझे प्रसन्न करने के लिए—
लेकिन वह भी बीत गया।

अज्ञात, एक सांसारिक उल्कापिंड चमक उठा
घोर अंधकार के बीच से गुजरते हुए;
मैं मुस्कुराई, फिर भी कांपती रही जब मैं उसे देखती रही।

लेकिन वह भी जल्द ही गायब हो गया!

और रात और भी गहरी, उदास होती चली गई।
तब मेरी आत्मा पर;
लेकिन वह धुंधली, संघर्ष करती हुई रोशनी आखिर क्या है?
क्या यह फिर से चंद्रमा है?

हे भगवान! उस चांदी जैसी चमक को और बढ़ा दो!
और इन बादलों को विदा करो,
और उसकी कोमल दिव्य किरण को बहने दो
मेरे कमजोर दिल को फिर से जीवित करो!

एलिस और एक्टन बेल की साहित्यिक कृतियों के चुनिंदा अंश। (एमिली और ऐनी ब्रोंटे)

करर बेल द्वारा

एलिस बेल की कविताओं के चुनिंदा अंश।

अगर मैंने अपनी बहनों द्वारा छोड़े गए कागज़ात का चयन करते समय उन लोगों की संशय और इच्छाओं को ध्यान में न रखा होता जिनके विचार इन कागज़ात में निहित थे, तो इनसे एक पुस्तक संकलित करना मुश्किल नहीं होता। लेकिन यह असंभव था: किसी भी व्यावहारिक प्रेरणा से कहीं अधिक प्रबल प्रभाव ने चयन को अनिवार्य रूप से निर्देशित किया। इसलिए, मैंने इस संग्रह में से केवल कुछ छोटी-छोटी कविताएँ ही चुनी हैं। ये सभी मिलकर एक छोटा सा गुलदस्ता मात्र बन जाती हैं, और फूलों का रंग और सुगंध किसी उत्सव में उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं हैं।
यह पहले ही कहा जा चुका है कि मेरी बहनों ने बचपन और किशोरावस्था में बहुत कुछ लिखा। आमतौर पर, अपरिपक्व मन के कच्चे विचारों और अनुभवहीन हाथों के अधूरे प्रयासों को छपाई में प्रकट करना एक प्रकार का अन्याय लगता है; फिर भी मैं अपनी बहन एमिली की सोलहवीं वर्षगांठ पर लिखी तीन छोटी कविताएँ प्रस्तुत करने का साहस कर रहा हूँ, क्योंकि वे उसके चरित्र के एक पहलू को दर्शाती हैं।
उस समय उसे स्कूल भेजा गया था। उसका पिछला जीवन, एक छह महीने को छोड़कर, यॉर्कशायर और लंकाशायर की सीमा से लगे पहाड़ों के बीच बसे एक गाँव के पादरी के घर में पूर्ण एकांत में बीता था। इन पहाड़ियों का नज़ारा भव्य नहीं है—न ही रोमांटिक है, न ही मनमोहक। लंबी, नीची, घनी झाड़ियों से ढकी हुई दलदली ज़मीनें छोटी-छोटी घाटियों में सिमटी हुई हैं, जहाँ कहीं-कहीं एक छोटी सी धारा बहती है और छोटे-छोटे पेड़ों की कतारें दिखाई देती हैं। मिलें और बिखरी हुई झोपड़ियाँ इन घाटियों से रोमांस को दूर भगा देती हैं; केवल ऊँचाई पर, दलदली ज़मीनों की गहरी चोटियों के बीच ही कल्पना को सुकून मिल सकता है: और अगर उसे वहाँ सुकून मिल भी जाए, तो उसे एकांत पसंद कौवे की तरह होना पड़ेगा—न कि कोमल कबूतर की तरह। अगर उसे प्रेरणा के लिए सुंदरता चाहिए, तो उसे जन्मजात सुंदरता लानी होगी: ये दलदली ज़मीनें इतनी कठोर हैं कि इतनी कोमल सुंदरता पैदा नहीं कर सकतीं। देखने वाले की आंखें स्वयं एक "बैंगनी प्रकाश" से भर जानी चाहिए, जो अगस्त में हीथर पर खिलने वाले थोड़े समय के फूलों को या जून के दुर्लभ सूर्यास्त के प्रकाश को अमर कर दे; उसके हृदय से वह ताजगी उमड़नी चाहिए जो वसंत के उत्तरार्ध और ग्रीष्म ऋतु के आरंभ में फर्न को चमकाती है, काई को पोषित करती है और उन तारों जैसे फूलों को

संजोती है जो कुछ हफ्तों के लिए दलदली भेड़ों के चरागाह को जगमगाते हैं। जब तक वह प्रकाश और ताजगी सहज और स्व-पोषित न हो, यॉर्कशायर के दलदली क्षेत्र का नीरस दृश्य कृषि संबंधी रुचि के साथ-साथ काव्यात्मक दृष्टि से भी बंजर प्रतीत होगा: जहां जंगली प्रकृति के प्रति प्रेम प्रबल होता है, वहां उस स्थान से शायद अधिक भावुक दृढ़ता के साथ लगाव बना रहता है, क्योंकि पर्वत प्रेमी के व्यक्तित्व से ही उसका आधा आकर्षण आता है।

मेरी बहन एमिली को बंजर भूमि बहुत पसंद थी। उसके लिए, घोर अंधकारमय मैदानों में भी गुलाब से भी अधिक चमकीले फूल खिलते थे; एक उजाड़ पहाड़ी की सुनसान घाटी में भी उसका मन स्वर्ग की कल्पना कर लेता था। उसे उस वीरान एकांत में अनेक और प्रिय आनंद मिलते थे; और उनमें से सबसे कम नहीं बल्कि सबसे प्रिय था - स्वतंत्रता।

एमिली के लिए स्वतंत्रता जीवनदायिनी थी; इसके बिना वह मर जाती। अपने घर से स्कूल जाना, और अपने शांत, एकांत, लेकिन अबाधित और सरल जीवन से अनुशासित दिनचर्या में ढल जाना (भले ही यह सब दयालुता के सानिध्य में था), वह सहन नहीं कर पाई। यहाँ उसका स्वभाव उसकी सहनशीलता पर भारी पड़ गया। हर सुबह जब वह जागती, तो घर और मैदानों का दृश्य उसके मन में उमड़ आता और उसके सामने आने वाले दिन को अंधकारमय और उदास बना देता। उसके कष्ट को केवल मैं ही जानता था—मैं अच्छी तरह जानता था। इस संघर्ष में उसका स्वास्थ्य तेजी से बिगड़ने लगा: उसका पीला चेहरा, दुबला-पतला शरीर और कमजोर होती ताकत तेजी से बिगड़ने का संकेत दे रही थी। मुझे अपने दिल में यह आभास हुआ कि अगर वह घर नहीं गई तो वह मर जाएगी, और इसी दृढ़ विश्वास के साथ मैंने उसे वापस बुला लिया। वह केवल तीन महीने ही स्कूल गई थी; और उसे घर से दूर भेजने का प्रयोग दोबारा करने में कई साल लग गए। बीस वर्ष की आयु के बाद, लगन और दृढ़ता से अकेले अध्ययन करने के बाद, वह मेरे साथ महाद्वीप के एक संस्थान में गईं: वही पीड़ा और संघर्ष फिर से शुरू हुआ, जो विदेशी और रोमन कैथोलिक प्रणाली की सौम्य धार्मिक व्यवस्था के प्रति उनके ईमानदार, विधर्मी और अंग्रेज़ स्वभाव के तीव्र विरोध से और भी बढ़ गया था। एक बार फिर वह डूबती हुई प्रतीत हुईं, लेकिन इस बार उन्होंने अपने दृढ़ संकल्प के बल पर खुद को संभाला: आंतरिक पश्चाताप और शर्म के साथ उन्होंने अपनी पिछली असफलता को याद किया और इस दूसरी परीक्षा

में विजयी होने का संकल्प लिया। वह विजयी हुईं: लेकिन इस जीत की कीमत उन्हें बहुत चुकानी पड़ी। जब तक वह अपने कठिन परिश्रम से अर्जित ज्ञान को वापस उस दूरस्थ अंग्रेजी गाँव, पुराने पादरी के घर और सुनसान यॉर्कशायर की पहाड़ियों में नहीं ले आईं, तब तक उन्हें कभी सुख नहीं मिला। कुछ ही वर्षों के भीतर, उन्होंने उन पहाड़ियों पर अंतिम सांस ली, उसी घर में अंतिम सांस ली और उस गुमनाम गाँव के गिरजाघर के गलियारे के नीचे अपनी अंतिम विश्रामस्थली पाई। वह दयालु फरमान था जिसने उसे उस समय बख्श दिया जब वह एक अजनबी भूमि में परदेसी थी, और उसके मृत्युशय्या की रक्षा आत्मीय प्रेम और सौहार्दपूर्ण दृढ़ता के साथ की।

निम्नलिखित रचनाएँ संध्याकाल में, विद्यालय के कमरे में रची गईं, जब शाम के खेल के समय का अवकाश घर के विचारों को पूरी तरह से वापस ले आया।

मैं।

थोड़ी देर, थोड़ी देर,
थका देने वाला काम स्थगित कर दिया गया है।
और मैं गा सकती हूँ और मुस्कुरा सकती हूँ।
इसी तरह, जब मैं छुट्टी पर होता हूँ।

हे मेरे व्याकुल हृदय, तू कहाँ जाएगा?
अब कौन सा विचार, कौन सा दृश्य तुम्हें आकर्षित कर रहा है?
कौन सी जगह, पास या दूर,
हे मेरी थकी हुई भौंह, क्या तुम्हें विश्राम मिला है?

बंजर पहाड़ियों के बीच एक जगह है,
जहां सर्दी की गरज और मूसलाधार बारिश होती है;
लेकिन, अगर भयानक आंधी ठंड बढ़ा दे,
एक ऐसी रोशनी है जो फिर से गर्माहट देती है।

घर पुराना है, पेड़ पत्तों से रहित हैं।
ऊपर चाँदनी नहीं है, गोधूलि की गुंबद झुकी हुई है;

लेकिन आखिर ऐसी कौन सी चीज है जो इतनी महंगी है?
क्या आप घर की चूल्हे की तरह उस पल के लिए तरसते थे?

पत्थर पर बैठी मूक चिड़िया,
दीवार से टपकती हुई नम काई,
कंटीले पेड़ों की झाड़ियाँ सूख चुकी थीं, पगडंडियाँ झाड़ियों से ढकी हुई थीं।
मुझे वे सभी बहुत प्यारे लगते हैं!

फिर भी, जब मैं विचार कर रहा था, वह खाली कमरा,
पराये अग्नि की रोशनी धीरे-धीरे मंद पड़ गई;
और उस निराशाजनक अंधकार के बीच से,
मैं एक उज्ज्वल, साफ आसमान वाले दिन में पहुंचा।

एक छोटी और अकेली हरी-भरी गली
वह एक खुले मैदान की ओर खुलता था;
एक दूरस्थ, स्वप्निल, धुंधली नीली श्रृंखला
चारों ओर पहाड़ों की घेराबंदी।

एक ऐसा निर्मल आकाश, एक ऐसी शांत धरती,
कितनी मधुर, कितनी कोमल, कितनी शांत हवा है!
और, स्वप्निल आकर्षण को और भी गहरा करते हुए,
जंगली दलदली भेड़ें हर जगह चर रही हैं।

यही वो दृश्य था, मैं उसे अच्छी तरह जानता था;
मुझे घास के मैदान की ढलान का पता था,
वह, प्रत्येक लहर के ऊपर से घूमते हुए,
भटकती हुई भेड़ों के पदचिह्नों को चिह्नित किया।

क्या मैं वहाँ एक घंटा और रुक सकता था?
इससे सप्ताह भर की मेहनत का अच्छा फल मिला;
लेकिन सत्य ने कल्पना की शक्ति को पराजित कर दिया है:
संयम और भारी कार्य का दुष्प्रभाव।

मैं मंत्रमुग्ध आँखों से खड़ा था,
अत्यंत गहरे और प्रिय आनंद में डूबा हुआ,
मेरे आराम का समय पलक झपकते ही बीत गया।
और फिर से श्रम, गुलामी और चिंता का जीवन लौट आया।

II. ब्लूबेल।

ब्लूबेल सबसे प्यारा फूल है।
जो गर्मियों की हवा में लहराता है:
इसके फूलों में सबसे अधिक शक्ति होती है।
मेरी आत्मा की चिंताओं को शांत करने के लिए।

बैंगनी हीथ में एक जादू है
बेहद ही ज्यादा, दुखद रूप से महंगा;
वायलेट में एक सुगंधित महक होती है।
लेकिन सुगंध से मन प्रसन्न नहीं होगा।

पेड़ पत्तों से रहित हैं, सूरज ठंडा है।
और बहुत ही कम, बहुत ही कम देखने को मिलता है;
आकाश ने अपना स्वर्णिम क्षेत्र खो दिया है।
और धरती ने अपना हरा वस्त्र धारण कर लिया।

और बहती धारा पर जमी बर्फ
इसने अपना अंधकारमय साया डाल दिया है;
और दूर की पहाड़ियाँ और घाटियाँ दिखाई देती हैं
जमी हुई धुंध में सजे हुए।

अब ब्लूबेल मुझे मोहित नहीं कर सकती।
मैदान की रौनक फीकी पड़ गई है;
नीचे घाटी में खिले बैंगनी फूल,
इनसे कोई मीठी सुगंध नहीं आती।

लेकिन, हालांकि मैं प्यारी ब्लूबेल्ल के लिए शोक मनाता हूं,
दूर रहना ही बेहतर है;
मुझे पता है कि मेरे आंसू कितनी जल्दी उमड़ आएंगे।
आज इसे मुस्कुराते हुए देखना।

क्योंकि, ओह! जब सूरज की किरणें ठंडी पड़ जाती हैं
उस उदास आकाश में,
और उस नम और अंधेरी दीवार को सोने से मढ़ दो
क्षणिक चमक के साथ;

मैं कैसे रोऊँ, मैं कैसे तड़पूँ
फूलों के आने के समय के लिए,
और मुझे उस फीकी पड़ती चमक से दूर कर दो,
घर के खेतों के लिए शोक मनाने के लिए!

III.

हवा के बिना भी तेज आवाज गर्जना कर रही थी
शरद ऋतु के आकाश में;
पूरी तरह भीग चुके, ठंडी बारिश बरस रही थी।
सर्दी नजदीक आने की बात कही।
बिल्कुल उस उदास शाम की तरह,
क्या मेरी निर्वासित आत्मा दुखी हुई?
पहले तो दुख हुआ, लेकिन ज्यादा देर तक नहीं रहा।
मीठा— कितना कोमल मीठा!— यह आया;
एक प्राचीन गीत के बेतुके बोल,
अपरिभाषित, बिना नाम का।

“वसंत ऋतु थी, और चिड़िया गा रही थी:”
उन शब्दों ने एक जादू जगा दिया;
उन्होंने एक गहरे फव्वारे का ताला खोला, जिसका झरना फूट रहा था,
न अनुपस्थिति, न दूरी इसे शांत कर सकती है।

नवंबर के धुंध भरे महीने के अंधकार में
उन्होंने मई माह का संगीत प्रस्तुत किया;
उन्होंने बुझते हुए अंगारे को प्रज्वलित कर दिया
एक ऐसे उत्साह में जो कभी कम नहीं हो सकता था।

हे मेरे प्रिय मैदानी इलाकों, जाग उठो!
हे पश्चिम की हवा, अपनी महिमा और गौरव में!
ओह! मुझे घाटी और मैदानों से बुलाओ,
पहाड़ी जलप्रपात के किनारे-किनारे चलना!

पहली बर्फबारी के कारण इसमें उभार आ गया है;
ये चट्टानें बर्फीली और धुंध से ढकी हुई हैं।
और उदास भाव से लंबी हीथर को लहराता है,
और फर्न के पत्ते अब धूप में नहीं रहते।

पहाड़ पर कोई पीले तारे नहीं हैं
ब्लूबेल्स तो बहुत पहले ही मुरझा चुके हैं।
काई से ढके फव्वारे के किनारे से —
शीत ऋतु की ढलान के किनारे से।

लेकिन लहराते हुए अनाज के खेतों से भी अधिक सुंदर
पन्ना, वर्मील और सोने में
क्या वे ऊंचाइयां हैं जहां उत्तर की ओर से तेज हवा चल रही है?
और वे चट्टानें जहाँ मैं पहले घूमा करता था।

सुबह का समय था: तेज धूप चमक रही थी;
इसने मुझे कितनी सुखद यादें ताजा कर दीं।
वह समय जब न श्रम और न सपने
खुश और स्वतंत्र लोगों की नींद तोड़ दी!

लेकिन हम भोर के आकाश की तरह प्रसन्नतापूर्वक उठे।
वह पिघलकर एम्बर और नीले रंग में बदल रहा था।
और हमारे पैरों को तेज पंख दिए गए थे,
जैसे ही हम ओस से भीगे मैदानों से गुजरे।

दलदली भूमि के लिए! दलदली भूमि के लिए, जहाँ छोटी घास
जैसे हमारे नीचे मखमल बिछा हो!
मैदानों के लिए! मैदानों के लिए, जहाँ हर ऊँचा दर्रा है
साफ आसमान में गुलाब की धूप खिली हुई थी!

उन बंजर भूमियों के लिए, जहाँ लिनेट चिड़िया चहचहा रही थी

पुराने ग्रेनाइट पत्थर पर उसका गीत;
जहां जंगली आकाश-लार्क पक्षी भर रहा था
हर स्तन को ऐसा आनंद मिलता है जैसे वह उसका अपना हो!

कौन सी भाषा उस भावना को व्यक्त कर सकती है?
जो निर्वासन में रहते हुए दूर से उभरा,
एक सुनसान पहाड़ी की चोटी पर घुटने टेककर,
मैंने वहां भूरे रंग की झाड़ियाँ उगती देखीं?

यह बिखरा हुआ और अविकसित था, और इसने मुझे बताया
कि जल्द ही वह भी चला जाएगा:
उसने फुसफुसाते हुए कहा, "भयानक दीवारें मुझे घेर लेती हैं।"
मैं पिछली गर्मियों की धूप में खिल उठा हूँ।

लेकिन वह प्रिय संगीत नहीं, जिसकी जागृति
इससे स्विस लोगों की आत्मा नष्ट हो जाती है।
क्या कोई ऐसा जादू है जो अधिक प्रिय और हृदयविदारक है?
फिर, मेरे लिए, वह बंजर मैदान ही बचा था।

वह आत्मा जो इसकी शक्ति के आगे झुक गई,
उसे कितनी तीव्र इच्छा थी—आज़ाद होने की कितनी तीव्र लालसा थी!
अगर मैं उस घड़ी में रो सकती,
वो आंसू मेरे लिए स्वर्ग के समान थे।

वाह—वाह; ये दुख भरे पल बीत रहे हैं।
हालांकि यह कष्टों और पीड़ाओं से भरा हुआ है;
और कभी-कभी प्यार करने वाले और प्यार पाने वाले
पहाड़ों पर फिर मिलेंगे!

निम्नलिखित छोटी रचना का कोई शीर्षक नहीं है; लेकिन इसमें एकांत क्षेत्र का देवता अपने भटकते और पथभ्रष्ट भक्त को संबोधित करता प्रतीत होता है, और उस अभिमानी मन को अपने प्रभाव में वापस लाने का प्रयास करता है जिसने कभी-कभी अपने सबसे प्रिय के विरुद्ध भी विद्रोह किया था।

क्या पृथ्वी अब तुम्हें प्रेरणा नहीं देगी?
क्या तुम अब अकेले स्वप्नद्रष्टा हो?
क्योंकि जुनून तुम्हें प्रेरित नहीं कर सकता,
क्या प्रकृति झुकना बंद कर देगी?

तुम्हारा मन सदा गतिशील रहता है।
उन क्षेत्रों में जो तुम्हारे लिए अंधकारमय हैं;
इसकी निरर्थक भटकन को याद करो,
वापस आओ, और मेरे साथ रहो।

मुझे पहाड़ों की हवाओं का ज्ञान है
तुम्हें अभी भी मोहित और शांत करता रहे,
मुझे पता है मेरी धूप मुझे प्रसन्न करती है,
तेरी मनमानी इच्छा के बावजूद।

जब दिन और शाम आपस में मिल जाते हैं,
ग्रीष्म ऋतु के आकाश से डूबता हुआ,
मैंने तुम्हारी आत्मा को झुकते हुए देखा है
अत्यधिक श्रद्धा से भरी मूर्तिपूजा में।

मैंने तुम्हें हर पल देखा है;
मुझे अपनी अपार शक्ति का ज्ञान है:
मुझे अपनी जादुई शक्ति का ज्ञान है
अपने दुःखों को दूर भगाने के लिए।

बहुत कम लोगों ने मनुष्यों को अपना दिल दिया है,
धरती पर इतने बेतहाशा चीड़ के पेड़;
फिर भी बहुत कम लोग स्वर्ग की कामना करेंगे।
तुम्हारी धरती से कहीं अधिक इस धरती के समान।

तो मेरी हवाएँ तुम्हें सहलाएँ
हे मेरे साथी, मुझे अकेला छोड़ दो:
क्योंकि तुम्हारे अलावा और कोई तुम्हें आशीर्वाद नहीं दे सकता,
लौट आओ—और मेरे साथ रहो।

यहां एक बार फिर वही मन एक समान अमूर्त विचार से संवाद कर रहा है। खुली खिड़की से बहती हुई "रात्रि-पवन" एक ऐसे कान तक पहुंची जिसने उसकी फुसफुसाहट में छिपी भाषा को पहचान लिया।

रात्रि-पवन।

गर्मी की शांत आधी रात में,
बादलों से रहित चंद्रमा की रोशनी छनकर आ रही थी।
हमारी खुली बैठक की खिड़की,
और ओस से भीगे हुए गुलाब के पेड़।

मैं चुपचाप बैठकर चिंतन कर रहा था;
हल्की हवा से मेरे बाल लहरा रहे थे;
इसने मुझे बताया कि स्वर्ग कितना शानदार है।
और सोई हुई धरती सुंदर थी।

मुझे उसकी साँसों की ज़रूरत नहीं थी
मेरे मन में ऐसे विचार लाने के लिए;
लेकिन फिर भी वह धीमी आवाज़ में फुसफुसाता रहा,
जंगल कितना अंधेरा होगा!

मेरी गुनगुनाहट में घनी पत्तियाँ
सपने की तरह सरसराहट हो रही है,
और उनकी असंख्य आवाजें
सहज प्रवृत्ति आत्मा के साथ प्रतीत होती है।

मैंने कहा, "जाओ, प्यारे गायक,
तुम्हारी प्रेम भरी आवाज मधुर है:
लेकिन इसे संगीत न समझें
इसमें मेरे दिमाग तक पहुंचने की शक्ति है।

"सुगंधित फूल से खेलो,"
उस नन्हे पेड़ की लचीली शाखा,
और मेरी मानवीय भावनाओं को छोड़ दो
वे अपने-अपने मार्ग पर बहते रहेंगे।

वह यात्री मेरी बात नहीं मानता था;
उसका चुंबन और भी गर्म होता चला गया।
"ओह, आओ!" उसने बड़ी मधुरता से आह भरी;

मैं तुम्हें तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध भी जीत लूंगा।

क्या हम बचपन से दोस्त नहीं थे?
क्या मैंने तुम्हें लंबे समय से प्यार नहीं किया है?
जब तक तुम, इस पवित्र रात में,
जिसकी खामोशी मेरे गीत को जगाती है।

और जब तुम्हारा हृदय विश्राम कर रहा हो
गिरजाघर के गलियारे के पत्थर के नीचे,
मुझे शोक मनाने का समय मिलेगा।
और तुम अकेले होने के लिए।

इन छंदों में एक तेज आंधी ने तकिए पर सोई हुई को जगा दिया है: जागी हुई आत्मा उस तूफान में विलीन होने के लिए संघर्ष करती है जिससे वह बह रही है:

अरे—ये रहा! ये आज रात जागेगा
गहरी भावनाएं जिन्हें मैं मृत समझती थी;
विस्फोट में शक्तिशाली — तेजी से प्रकाश इकट्ठा करना —
हृदय की लौ लाल रंग में प्रज्वलित होती है।

अब मैं तुम्हारे बदले हुए गालों से बता सकता हूँ,
और तुम्हारी आँखों की पूर्ण दृष्टि से,
और जिन शब्दों को तुम मुश्किल से बोलते हो,
यह कितना अद्भुत और कल्पनाशील खेल है।

"हाँ—मैं कसम खा सकता हूँ कि वह शानदार हवा
इसने दुनिया को दरकिनार कर दिया है,
उसने तुम्हारी याद को तुम्हारे मन से मिटा दिया है
ज्वार से निकलने वाली झागदार घंटियों की तरह:

और अब तुम एक आत्मा हो जो बह रही है
सबमें तेरी उपस्थिति:
आंधी की गर्जना की आवाज,
इसके पतन की फुसफुसाहट:

"एक सार्वभौमिक प्रभाव,
अपने ही प्रभाव से मुक्त;
जीवन का एक सिद्धांत— गहन—
मृत्यु के कारण देहांत।

“इस प्रकार, जब वह छाती ठंडी हो जाती है,
तेरी कैद आत्मा उठ खड़ी होगी;
कालकोठरी मिट्टी के साथ घुलमिल जाती है —
आकाश का कैदी।
प्रकृति के गहरे अस्तित्व को तुम धारण करोगे।
उसकी आत्मा तुम्हारी आत्मा को समाहित कर लेगी,
उसकी सांसें तुम्हारी आहों को सोख लेती हैं।
हे नश्वर! यद्यपि जीवन की कहानी शीघ्र ही समाप्त हो जाती है;
जो एक बार जी लेता है, वह कभी नहीं मरता!

प्यार और दोस्ती।

प्रेम जंगली गुलाब की झाड़ी के समान है;
होली के वृक्ष के समान मित्रता।
जब गुलाब की लता खिलती है तो हॉली का रंग गहरा हो जाता है।
लेकिन इनमें से कौन सा सबसे अधिक निरंतर खिलेगा?

जंगली गुलाब की लता वसंत ऋतु में मीठी होती है।
इसके ग्रीष्म ऋतु के फूल हवा को सुगंधित करते हैं;
लेकिन सर्दी के दोबारा आने तक इंतजार करो,
और जंगली झाड़ी को सुंदर कौन कहेगा?

तो अब उस मूर्खतापूर्ण गुलाब की माला का उपहास करो।
और होली की चमक से खुद को सजाओ,
जब दिसंबर तुम्हारे माथे पर उदासी छा जाए,
वह फिर भी तुम्हारी माला को हरा ही छोड़ सकता है।

बुजुर्ग की फटकार।

“सुनो! जब तुम्हारे बाल, मेरे जैसे हों,
इसका रंग हल्का चांदी जैसा धूसर हो जाता है;
जब आपकी आंखों की चमक फीकी पड़ जाती है,
जीवन के बुलबुले को बहते हुए देखो:

जब तुम, नौजवान, मेरी तरह फल भोगोगे
तिरसठ वर्ष की थका देने वाली आयु का भार,
तब कठोर प्रायश्चित करना होगा।
उन घंटों के लिए जो पूरी तरह से व्यर्थ ही बर्बाद हो गए;
और वे शब्द जो अब मृत हो गए हैं
अपने कान पर, गहराई से विचार करो —
अंततः विचार-विमर्श के बाद स्वीकृति प्राप्त हुई:
लेकिन उनके सद्गुण तो बीत जाएंगे!

“कर्तव्य का पुरस्कार गौरवशाली है।”
हालांकि वह 'एक गंभीर शक्ति' हो सकती है;
सौंदर्य के सभी आकर्षण कपटी होते हैं।
कांटेदार कली और विषैला फूल!

“उल्लास तो बस एक पागलपन भरा छल है”
स्वर्णिम उपहारों से परिपूर्ण समय का;
प्रेम - एक दानव-उल्का, चालाक
अपराध की खाई में बेपरवाह कदम।

जो लोग सांसारिक सुखों का अनुसरण करते हैं,
दिव्य ज्ञान मार्गदर्शन नहीं करेगा;
ज्ञान अपना खजाना उनसे छुपा कर रखता है।
सद्गुण उन्हें बुराई की राह पर चलने का आदेश देता है!

उनके हृदय व्यर्थ ही पश्चाताप करें।
भविष्य में सहायता की तलाश करें;
अपमानित बुद्धि कभी नरम नहीं पड़ती;
भय से सद्गुण प्राप्त नहीं होता।

इस प्रकार बर्फीले रक्त वाले वृद्ध भूरे व्यक्ति ने कहा;

युवक ने उपहास उड़ाते हुए मुंह फेर लिया।
मधुर वीणा की धुन की पुकार सुनकर,
आनंद के हल्के स्पर्श से जागृत:
अगर उन्हें कभी कोई इतना सौम्य शिक्षक न मिला होता,
उस निर्दयी उपदेशक के कारण विपत्ति उत्पन्न हुई थी।

झुंड से भटकने वाला।

कितने कम हृदयों ने प्रेम किया?
हम तुम्हारे लिए शोक मना रहे हैं;
और आज रात मेरा सामान क्यों हटाया जाना चाहिए?
इतने गहरे दुख के साथ?

अक्सर ऐसा होता है कि जब उन्हें अकेला छोड़ दिया जाता है,
जहां मेरी सोच भी नहीं पहुंच सकती,
एक शब्द, एक क्षणिक स्वर वापस आता है
तुम्हारे विचित्र इतिहास से।

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं तुम्हें उठते हुए देख रहा हूँ।
एक बार फिर एक शानदार बच्चा;
तुम्हारी आँखों से सभी सद्गुण झलक रहे हैं
वे पुरुष जो हमेशा सम्मानित रहे हैं:

साहस और सत्य, एक उदार हृदय
जहां निर्मल सूर्यप्रकाश फैला हुआ था:
एक ऐसा प्राणी जिसकी उपस्थिति मात्र से ही आशीर्वाद मिलता है
जैसे किसी आनंदमय गर्मी के दिन में होता है।

हे, अपनी सुबह की पाल को खूबसूरती से फैलाओ!
और ताजा, और शुद्ध, और मुक्त,
क्या आंधी का पहला आवेग था?
जिसने तुम्हारे लिए जीवन की लहर को प्रेरित किया!

पायलट ने इतना ज्यादा भरोसा क्यों किया?
उस सागर के झाग पर सपने देखो,
और आनंद के लापरवाह मार्गदर्शन पर भरोसा रखें
क्या वह अपने जहाज को घर वापस लाना चाहता है?

क्योंकि वह भली-भांति जानता था कि किन खतरों का सामना करना पड़ सकता है।
जो धुंध छाने लगती, मंद पड़ जाती;
चारों ओर कैसी-कैसी चट्टानें, शिलाखंड और रेत बिखरी पड़ी थीं?
उसके बंदरगाह और उसके बीच।

सूर्य की चमक
मुख्य भाग की भव्यता,
वह हवा जो उसे बेतहाशा उड़ा ले जा रही थी
मेरी चेतावनी व्यर्थ नहीं जानी चाहिए थी।

किनारे से एक चिंतित दर्शक —
मैंने सफेदी की लहर को चिह्नित किया,
और तेरे भाग्य पर और भी अधिक रोया
क्योंकि— मैं बचा नहीं सका।

अब इसकी परवाह मत करो, जब सब कुछ खत्म हो चुका है:
लेकिन फिर भी मेरा दिल रहेगा
शोकग्रस्त, हालांकि मित्र और प्रेमी
हम दोनों तुम्हें भूल चुके हैं!

चेतावनी और उत्तर।

धरती में— धरती में— तुझे दफनाया जाएगा।
तुम्हारे ऊपर एक धूसर पत्थर खड़ा है;
तुम्हारे नीचे काली फफूंद फैल गई,
और काली फफूंद तुम्हें ढक लेगी।

"अच्छा—वहाँ आराम करने की जगह है।"
तेरी भविष्यवाणी शीघ्र आए;
वह समय जब मेरे सुनहरे बाल
घास की जड़ों से लिपटा हुआ होगा।"

लेकिन ठंड—ठंड ही वह विश्राम स्थल है,
आनंद और स्वतंत्रता से वंचित,
और वे सभी जिन्होंने तेरे जीवंत चेहरे से प्रेम किया
इससे सिहरन के मारे पीछे हट जाएगा।

ऐसा नहीं है। यहाँ दुनिया शांत है।
और मेरे सच्चे मित्र मुझसे बिछड़ जाते हैं:
लेकिन वहां—वे अब भी मेरे मालिक रहेंगे।
और मेरी यादों को संजो कर रखना।

तो अलविदा, वह सारा प्यार।
वह सारी गहरी सहानुभूति:
सोते रहो: स्वर्ग ऊपर हंस रहा है,
धरती को तुम्हारी कमी कभी खलती नहीं।

घास-फूस और समाधि-पत्थर का नीरस वातावरण
कुछ हद तक मानवीय संगति;
यहां सिर्फ एक ही दिल टूटता है,
लेकिन वह हृदय तुम्हारे योग्य था!

अंतिम शब्द।

मुझे नहीं पता था कि यह इतना जघन्य अपराध था।
अलविदा कहना;
लेकिन यह एकमात्र बार होगा
मैं या तो अपने होठों से या अपने हृदय से न्याय मांगूंगा।

वह जंगली पहाड़ी ढलान, सर्दियों की सुबह,
वह टेढ़ा-मेढ़ा और प्राचीन वृक्ष,
यदि वे आपके हृदय में तिरस्कार की भावना जगाते हैं,
यह मुझमें भी वही भावना जागृत करेगा।

मैं काली आंखों और भौंहों को भूल सकता हूँ।
और झूठे आकर्षण वाले होंठ,
यदि आप पवित्र प्रतिज्ञाओं को भूल जाते हैं
वे विश्वासघाती होंठ बन सकते थे।

यदि कठोर आदेश आपके प्रेम को वश में कर सकते हैं,
या फिर सबसे मजबूत दीवारें भी इसे रोक सकती हैं,
मैं ऊपर शोक नहीं करना चाहूंगा
एक ऐसी चीज जो बिल्कुल झूठी और निर्मम है।

और कुछ ऐसे हृदय हैं जो मुझसे जुड़े हुए हैं।
आजमाए हुए और मजबूत संबंधों के साथ:
और ऐसी आंखें हैं जिनकी बिजली चमकती है
इसने मुझे लंबे समय तक सुकून और आशीर्वाद दिया है:

वो आंखें मेरे जीवन का एकमात्र दिन बना देंगी।
मैं अपनी आत्मा को मुक्त कर दूंगा।
और मूर्खतापूर्ण विचारों को दूर भगाओ
हम आपकी स्मृति में शोक व्यक्त करते हैं।

गिटार बजाती महिला।

जिसने तेरे विदेशी तार को छेड़ा,
मुझे लगता है कि इस हृदय ने परवाह करना छोड़ दिया है;
तो फिर तुम ऐसी भावनाएँ क्यों उत्पन्न करते हो?
मेरे उदास मन के लिए - पुराना गिटार?

ऐसा लगता है मानो गर्म धूप
किसी गहरी घाटी में कुछ देर ठहरना चाहिए,
जब तूफान के बादल छा जाएं, या रात का अंधेरा छा जाए,
मूल गोले को लपेटकर अलग कर दिया है।

ऐसा लगता है मानो वह काँच की तरह चमकती हुई धारा हो।
क्या छवि में अभी भी उसके सुंदर विलो वृक्ष दिखाई देने चाहिए?
हालांकि वर्षों पहले लकड़हारे को स्ट्रोक आया था
उनके अप्सरा जैसे बाल धूल में मिल गए।

फिर भी, गिटार, तेरा जादुई स्वर
उसने आंसू बहाए और आह भरवाई:
हेथ ने प्राचीन जलधारा को विलाप करने को कहा,
हालांकि इसका मूल स्रोत ही शुष्क है।

वे दो बच्चे।

बारिश की बूंद भारी लटकी हुई है
भारित स्प्रे से;
नम धुंध घनी छाई हुई है
दूर-दराज के ऊंचे इलाकों में।

अंधकारमय आकाश भारी छाया हुआ है।
समुद्र की लहरें भारी हैं;
और युवा हृदय भारी धड़कन से धड़क रहा है।
उस अकेले पेड़ के नीचे।

कभी नीली लकीर नहीं होती
सुबह से ही बादल फट रहे हैं;
उसका भयावह भाग्य कभी नहीं बदला
जन्म से ही मुस्कुराता रहा है।

शिशु पर भौंहें चढ़ाते हुए,
बचपन की खुशियों की छाया में
संरक्षक देवदूत को नहीं पता
वह उदास लड़का।

दिन तेजी से बीत रहा है
इसका दुखद और उदास स्वर्णिम काल;
लड़कपन का दुख आपस में मिल रहा है
दुखद पुरुषत्व के दौर में:

सभी फूल प्रार्थना कर रहे हैं
सूरज के लिए, उनके बंद होने से पहले,
और वह प्रार्थना भी करता है—अचेतन अवस्था में—
वह सूर्यविहीन मानव उदय हुआ।

खिलना — पश्चिम की हवा
उसने कभी भी शारीरिक संबंध बनाने के लिए उकसाया नहीं है।
तुम्हारी पंखुड़ियाँ गंधहीन हैं।
तेरी ओस बर्फ की तरह ठंडी है!

आत्मा — जहाँ आत्मीय दयालुता,
शुरुआती दौर में कोई उम्मीद नहीं जगी।
तेरी सुंदरता निरर्थक है।
जैसे चट्टान पर खरपतवार उगती है।

मुरझाओ— आत्मा और खिल उठो!
तुम दोनों को व्यर्थ ही दिया गया था;
पृथ्वी किसी भी प्रकार का आशीर्वाद नहीं देती।
स्वर्ग के अभागों के लिए!

आनंद की संतान, सूर्य के समान चमकीले बालों वाली,
और नीली, गहरी, समुद्र जैसी आंखें!
हे आनंद की आत्मा! तुम यहाँ क्यों आए हो?
इन उदास आसमानों के नीचे?

तुम्हें शाश्वत वसंत ऋतु में रहना चाहिए।

जहां अनंत दिन कभी धुंधला नहीं होता;
हे देवदूत, तेरा भटकता हुआ पंख
क्या उसने तुम्हें उसके साथ रोने के लिए नीचे भेजा था?

"अरे! मैं स्वर्ग से नहीं उतरा हूँ।"
और न ही मैं आंसू बहाने आया हूँ;
लेकिन दिन सुहावना होता है, भले ही उसमें परछाइयाँ मिली हुई हों;
और, भले ही जवानी के दिन धुंधले हों, फिर भी वे मधुर होते हैं।

मैं— प्रकाश और आनंद की छवि—
मैंने उस दुखी लड़के को देखा और उस पर दया आई।
और मैंने जरूरत पड़ने पर उनके दुख में भागीदार बनने का वचन दिया।
और उसे अपनी धूप भरी खुशी दे दो।

"घनी और अंधेरी रात ढल रही है;
इसका अंत अंधकारमय और भारी हो सकता है:
दुःख के शांत होने से सभी को लाभ होता है।
और यह मेरे जैसे सभी दर्शकों के लिए बेहतर है —

"बुखार से तर तकिये के पास प्रेम से देखो,
दया के मरहम से बुखार को शांत करना
लहरों पर उछलते पक्षी की तरह सुरक्षित।
मैं अपनी आत्मा की सुनहरी शांति में सुरक्षित हूँ!

अब उसे संरक्षक देवदूत की कमी नहीं है;
उसे दुर्भाग्य से डरने की जरूरत नहीं है:
भाग्य शक्तिशाली है, लेकिन प्रेम उससे भी अधिक शक्तिशाली है;
और मेरा प्यार स्वर्गदूतों की देखभाल से भी अधिक सच्चा है।

दूरदर्शी।

घर में सन्नाटा पसरा है: सब सो रहे हैं:

बर्फ की गहरी चादरों के ऊपर से केवल एक ही व्यक्ति झांकता है,
हर बादल को देखते हुए, हर हवा के झोंके से डरते हुए
जो बेकाबू होकर बहने वाली धारा को घुमाता है और कराहते पेड़ों को झुका देता है।

चूल्हा प्रसन्नता से भरा है, चटाई का फर्श नरम है;
खिड़की के शीशे या दरवाजे से एक भी ठंडी हवा का झोंका अंदर नहीं आता;
छोटी सी दीपक सीधी जलती है, उसकी किरणें तेज और दूर तक फैलती हैं:
मैं इसे अच्छी तरह से काटता हूँ, ताकि यह घुमक्कड़ का मार्गदर्शक तारा बन सके।

हे मेरे अभिमानी महाराज, भौंहें चढ़ाइए! हे मेरी क्रोधित महिला, मुझे डांटिए!
अपने दासों को जासूसी करने के लिए लगाओ; मुझे शर्मिंदा करने की धमकी दो:
लेकिन न तो पिता को, न ही माता को, और न ही जिज्ञासु दास को पता चलेगा।
कौन सा देवदूत रात में उस जमी हुई बर्फ के वीरान इलाके की रखवाली करता है?

जिसे मैं प्यार करता हूँ, वह हवा के झोंके की तरह आएगा।
गुप्त शक्ति में सुरक्षित, छिपे हुए मानवीय जाल से बचा हुआ;
जो मुझसे प्रेम करता है, मैं अपने किसी भी शब्द से उसे कभी प्रकट नहीं करूंगा।
भले ही मुझे अपने निष्कलंक विश्वास के लिए अपना जीवन कुर्बान करना पड़े, कीमत चुकानी पड़ेगी।

तो फिर, नन्ही सी दीपक, जल उठो; सीधी और स्पष्ट रोशनी बिखेरो।
चुप रहो! मुझे लगता है, किसी पंख की सरसराहट से हवा में हलचल मच गई है:
जिसकी मैं प्रतीक्षा करता हूँ, वह इस प्रकार सदा मेरे पास आता है;
अद्भुत शक्ति! मुझे तेरी सामर्थ्य पर भरोसा है; तू मेरी दृढ़ता पर भरोसा रख।

प्रोत्साहन।

मैं रोता नहीं हूँ; मैं रोना नहीं चाहता;
हमारी मां को आंसुओं की जरूरत नहीं है:
अपनी आँखें भी पोंछ लो; उन्हें पोंछे रखना व्यर्थ है।
यह अकारण दुख वर्षों तक चलता रहा।

भले ही उसकी भौंहें बदल गई हों और ठंडी पड़ गई हों,

क्या उसकी प्यारी आंखें हमेशा के लिए बंद हो गईं?
लेकिन वह पत्थर—वह अंधकारमय फफूंद
क्या हमारे नश्वर शरीर अलग हो जाएंगे?

हालांकि उसका हाथ फिर कभी चिकना नहीं होगा
तुम्हारे वो रेशमी बाल?
और न ही भविष्य में होने वाले लंबे समय के दर्द के माध्यम से,
क्या उसका दयालु चेहरा तुम पर चमकता है?

याद रखिए, वह मरी नहीं है;
बहन, अब वह हमें देख रही है;
उसे वहीं लिटाया गया, जहाँ उसकी देवदूत आत्मा ने पलायन किया था।
'बंजर भूमि और जमी हुई बर्फ के बीच।'

और उस दिव्य प्रकाश की दुनिया से
क्या वह हमेशा झुकती नहीं रहेगी?
हमारे जीवन की इस रात में हमारा मार्गदर्शन करने के लिए,
और अंत तक हमारी रक्षा करेंगे?

तुम जानते हो कि वह ऐसा करेगी; और तुम शोक मना सकते हो।
हम नीचे रह गए हैं:
लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह कभी वापस नहीं आ सकती।
अपने सांसारिक दुखों को साझा करने के लिए।

छंद।

अक्सर फटकार सुनने के बावजूद, हमेशा लौटकर आता है
उन पहली भावनाओं के लिए जो मेरे साथ जन्म से ही मौजूद थीं,
और धन और ज्ञान की व्यस्त दौड़ को छोड़कर
उन व्यर्थ सपनों के लिए जो असंभव हैं:

आज मैं अंधकारमय क्षेत्र की खोज नहीं करूंगा;

इसकी अस्थिर विशालता नीरस होती जा रही है;
और एक के बाद एक, नई-नई कल्पनाएँ उभरती गईं,
अवास्तविक दुनिया को बहुत ही विचित्र रूप से करीब ले आओ।

मैं चलूंगा, लेकिन पुराने वीरगाथाओं के नक्शेकदम पर नहीं।
और उच्च नैतिकता के मार्ग पर नहीं,
और उन आधे-अधूरे चेहरों में नहीं,
बहुत पुराने इतिहास के धुंधले स्वरूप।

मैं वहीं चलूंगा जहां मेरा स्वभाव मुझे ले जाएगा:
मुझे किसी और गाइड को चुनना अच्छा नहीं लगता:
जहां फर्न से ढकी घाटियों में भूरे रंग के झुंड चर रहे हैं;
जहां पहाड़ों की ढलानों पर तेज हवा चलती है।

उन एकांत पहाड़ों में ऐसा क्या रहस्य छिपा है जो प्रकट करने लायक है?
जितनी महिमा और जितना दुख मैं बयान कर सकता हूँ, उससे कहीं अधिक है:
वह धरती जो एक इंसान के दिल में संवेदना जगाती है
यह स्वर्ग और नरक दोनों लोकों का केंद्र बन सकता है।

मेरी बहन एमिली द्वारा लिखे गए अंतिम शब्द निम्नलिखित हैं: —

मैं कायर आत्मा नहीं हूँ।
विश्व के तूफानी क्षेत्र में कोई भी भूकंप थमने वाला नहीं है:
मुझे स्वर्ग की महिमा चमकती हुई दिखाई देती है,
और आस्था समान रूप से चमकती है, जो मुझे भय से बचाती है।

हे मेरे हृदय में विराजमान ईश्वर,
सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी ईश्वर!
जीवन—जिसमें मुझे विश्राम मिलता है,
क्योंकि मैं—अमर जीवन—तुममें शक्ति रखता हूँ!

हजार मत व्यर्थ हैं
पुरुषों के दिलों को छू लेने वाली वो चीज़: पूरी तरह से व्यर्थ;
सूखे खरपतवारों के समान बेकार।
या फिर असीम सागर के बीच का सबसे निष्क्रिय झाग,

किसी के मन में संदेह जगाने के लिए

तेरी अनंतता को इतनी मजबूती से थामे हुए;
तो निश्चित रूप से लंगर डाला हुआ
अमरता की अटल चट्टान।

व्यापक प्रेम के साथ
तेरी आत्मा अनंत वर्षों को जीवंत करती है।
व्याप्त है और ऊपर मंडराता रहता है,
परिवर्तन, स्थायित्व, विघटन, सृजन और पालन-पोषण।

भले ही धरती और मनुष्य का अस्तित्व समाप्त हो गया हो,
और सूर्य और ब्रह्मांड का अस्तित्व समाप्त हो गया।
और तुम अकेले रह गए,
प्रत्येक अस्तित्व तुझमें विद्यमान होगा।

मृत्यु के लिए कोई जगह नहीं है।
और न ही कोई परमाणु जिसे उसकी शक्ति नष्ट कर सके:
तू ही अस्तित्व और प्राण है,
और तुम जो हो, वह कभी नष्ट नहीं हो सकता।

एक्टन बेल की कविताओं का चयन। (ऐनी ब्रोंटे)

अपनी बहन ऐनी के कागजात देखते हुए मुझे दुखद प्रमाण मिले कि धार्मिक भावनाएँ उसके लिए कुछ हद तक वैसी ही थीं जैसी कूपर के लिए थीं; मेरा मतलब है, बेशक, कहीं अधिक सौम्य रूप में। उसे उन भयावहताओं का शिकार बनाए बिना, जिन्हें छिपाया नहीं जा सकता, इसने उसके मिजाज और व्यवहार को निरंतर चिंतन में लीन

कर दिया; एक बादल का स्तंभ लगातार उसकी आँखों के सामने मंडराता रहता था; वह हमेशा एक गुप्त सिनाई पर्वत के चरणों में प्रतीक्षा करती रहती थी, अपने हृदय में एक तुरही की ध्वनि को सुनती रहती थी जो लंबे समय तक बजती और तेज होती जाती थी। कुछ लोग शायद एक दिवंगत रिश्तेदार में सच्ची, यद्यपि दुःखपूर्ण, भक्ति के इन संकेतों पर प्रसन्न होंगे: मैं स्वीकार करता हूँ, मुझे ये दुखद लगते हैं, मानो उसका पूरा निर्दोष जीवन एक अनकहे शारीरिक दर्द की शहादत में बीता हो: वास्तव में, इनका प्रभाव बहुत कष्टदायक होता, यदि इस निश्चित ज्ञान से इसका मुकाबला न किया जाता कि उसके अंतिम क्षणों में एक अति कोमल अंतरात्मा के इस अत्याचार पर विजय प्राप्त हुई; भय का यह वैभव टूट गया, और गुजर जाने से, उसके अंतिम क्षण निर्मल हो गए। उस समय ईश्वर में उसकी आस्था ने उसके मन में किसी कठोर न्यायाधीश के भय की तरह डर नहीं जगाया, बल्कि एक सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता में आशा जगाई: और यह कोई डगमगाती आशा नहीं थी, बल्कि एक दृढ़ और अटल विश्वास था, जिस पर उसने समय से अनंत काल तक के कठिन सफर में अपनी मानवीय कमजोरी का भार डाला, और जिसके बल पर वह धैर्यपूर्वक, शांति से और विजयी होकर उस सब को सहने में सक्षम हुई जो उसे सहना था।

निराशा।

मैं काम में पीछे चला गया हूँ;
काम में तेजी नहीं आई है;
मेरी आत्मा सुस्त और अंधकारमय अवस्था में है।
सीसे की तरह भारी और नीरस।

मैं अपनी डूबती हुई आत्मा को कैसे जगा सकता हूँ?
ऐसी सुस्ती से?
मैं इन लोहे की जंजीरों को कैसे तोड़ सकता हूँ?
और क्या मैं अपनी आत्मा को मुक्त कर सकता हूँ?

ऐसे भी समय आए हैं जब मैंने शोक मनाया है!
अतीत के दुख में डूबे हुए,
और मैंने अपने प्रार्थनापूर्ण हाथों को ऊपर उठाया,
आंसू तेजी से और लगातार बह रहे थे;

और मैंने अपने पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना की।
इतने जोश के साथ,
एक गहरा शोक, एक प्रबल इच्छा
अब मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है।

और मुझे प्रेम से इतना परिपूर्ण महसूस हुआ है।
तब तो उनका मनोबल इतना मजबूत था।
जैसे मेरा दिल कभी ठंडा ही न हो,
या फिर वापस लौट आएं।

और फिर भी, अफसोस! कितनी बार
मेरे पैर भटक गए हैं!
मैं कितनी बार अपने ईश्वर को भूल चुका हूँ!
कितना बड़ा पतन हुआ है!

मेरे पाप बढ़ते जा रहे हैं— मेरा प्रेम ठंडा पड़ता जा रहा है।
और मेरे भीतर की आशा मर जाती है:
अब तो आस्था भी डगमगा रही है;
ओह, मैं कैसे उठूँ?

मैं रो नहीं सकता, लेकिन मैं प्रार्थना कर सकता हूँ।
तो मुझे निराश नहीं होना चाहिए:
हे प्रभु यीशु, मुझे बचाओ, नहीं तो मैं मर जाऊंगा!
हे ईश्वर, मेरी विनम्र प्रार्थना सुनो!

एक प्रार्थना।

हे मेरे ईश्वर (हे ईश्वर, मुझे तुम्हें अपना कहने दो)
(यद्यपि मैं कमजोर, दुखी पापी हूँ)।
मेरी कांपती हुई आत्मा तुम्हारी ही हो जाना चाहती है;
मेरी कमजोर आस्था अब भी तुझ पर टिकी हुई है।

मुझे न केवल अतीत का शोक है,
भविष्य मुझे निराशा से भर देता है;
जब तक तुम सहायता करने में शीघ्रता नहीं करोगे,
तेरा याचक त्यागा हुआ है।

मैं यह नहीं कह सकता कि मेरा विश्वास मजबूत है।
मुझे यह उम्मीद करने की हिम्मत नहीं है कि मेरा प्यार महान है;
लेकिन शक्ति और प्रेम तो तुझसे ही प्राप्त होते हैं;
हे भगवान, मुझे अकेला मत छोड़ो!

मैं जानता हूँ कि मैं अपना सब कुछ तेरे ऋणी हूँ;
ओह, वह दिल ले लो जो मैं नहीं दे सकता!
हे मेरे उद्धारकर्ता, तू ही मेरी शक्ति बनो।
और मुझे अपनी महिमा के लिए जीवित रख।

फरवरी के एक सुखद दिन की याद में।

हे प्रभु, समस्त आनंद के लिए धन्य हो।
आज मेरी आत्मा को बहुत सुकून मिला!
ओह, इसकी याद मेरे साथ बनी रहे।
और कभी मृत्यु न हो!

मैं अकेला था, उन लोगों के लिए जिन्हें मैं प्यार करता था
वे मुझसे बहुत दूर थे;
सूखी घास पर सूरज की रोशनी पड़ रही थी।
हवा ताजी और बेरोक-टोक बह रही थी।

क्या यह वसंत ऋतु की शुरुआत की मुस्कान थी?
क्या इससे मेरे स्तन चमक उठे?
यह मीठा था; लेकिन न तो सूरज था और न ही हवा।
इससे मेरा मन प्रसन्न हो जाता।

क्या यह किसी प्रकार की खुशी की अनुभूति थी?
सब कुछ अस्पष्ट और अनिश्चित है?
नहीं; यह एक गहरा और प्रबल आनंद था।
मन का विस्तार करना।

क्या यह जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण था?
और इसके सभी क्षणभंगुर आनंद,
उज्ज्वल समृद्धि की आशा?
ओह, नहीं! यह वह नहीं था।

यह दिव्य सत्य की एक झलक थी।
मेरी आत्मा को दिया गया,
प्रकाश की एक किरण से प्रकाशित
वह प्रकाश सीधे स्वर्ग से आया था।

मुझे ऐसा लगा कि ऊपर कोई ईश्वर है।
जिसके द्वारा सभी वस्तुओं का निर्माण किया गया;
मैंने उनकी बुद्धि और उनकी शक्ति देखी।
उनकी सभी कृतियों को प्रदर्शित किया गया है।

लेकिन नैतिक जगत में अधिकांशतः,
मैंने उसकी महिमा को चमकते हुए देखा;
मैंने उनकी असीम बुद्धि देखी।
उनकी दया सर्वथा दिव्य है।

उनकी दिव्य कृपा के गहरे रहस्य,
अंधकार में लंबे समय से छिपा हुआ,
मेरी आत्मा के दर्शन के लिए
इन्हें सहर्ष प्रकट किया गया।

लेकिन जब मैं आश्चर्यचकित और प्रशंसित था
महामहिम,
मैं उसकी शक्ति से भयभीत नहीं हुआ:

मुझे ऐसा महसूस हुआ कि ईश्वर मेरा है;

मुझे पता था कि मेरा उद्धारकर्ता जीवित है;
मुझे मरने से डर नहीं लगता था;
मुझे पूरा यकीन है कि मैं फिर से उठ खड़ा होऊंगा
अमरता की ओर।

मैं उस दिव्य आनंद को देखने के लिए तरस रहा था।
जिसे आंख ने कभी नहीं देखा;
मूसा की तरह, मैं उनका चेहरा देखूंगा
बिना किसी पर्दे के।

आत्मविश्वास।

पाप और दुख से पीड़ित,
मेरा हृदय बोझिल है।
अनेक शक्तिशाली शत्रुओं द्वारा विरोध किया गया;
लेकिन मैं निराश नहीं होऊंगा।

इस प्रदूषित हृदय के साथ,
मैं तेरे पास आने का साहस करता हूँ।
हे पवित्र और सर्वशक्तिमान!
क्योंकि तू मुझे क्षमा कर देगा।

मुझे लगता है कि मैं कमजोर हूँ।
और हर पाप के प्रति प्रवृत्त;
लेकिन हे प्रभु, जो चाहने वालों को देते हो,
इससे मुझे आंतरिक शक्ति मिलेगी।

यह पृथ्वी जहाँ तक भी जाती रहे
उस दूर के तारों भरे आकाश से;
मैं तुझसे और भी दूर हूँ:

फिर भी तू उसे तुच्छ नहीं समझेगा।

मुझे अपने शत्रुओं से डरने की आवश्यकता नहीं है।
मैं चिंताओं के आगे नहीं झुकता;
मुझे अपने दुखों के बोझ तले दबने की जरूरत नहीं है।
क्योंकि तू प्रार्थना का उत्तर अवश्य देगा।

मेरे उद्धारकर्ता के नाम में,
मैं स्वयं को तेरे हवाले करता हूँ;
और, मैं कितना भी अयोग्य क्यों न हूँ,
मेरे ईश्वर मुझे प्यार करेंगे।

मेरी बहन ऐनी को "गवर्नेंस" नामक वर्ग के लिए तैयार किए गए जीवन के अनुभव को चखना पड़ा।
निम्नलिखित कुछ ऐसे विचार हैं जो कभी-कभी एक गवर्नेंस को सांत्वना देते हैं: —

घर से लिखी गई पंक्तियाँ।

हालांकि ये जंगल उजाड़ हैं और जमीन नम है,
गिरे हुए पत्तों के इतने घने ढेर के साथ,
और चारों ओर बहने वाली ठंडी हवा
एक बेकाबू और उदास विलाप के साथ;

मुझे एक दोस्ताना छत के बारे में पता है,
शायद यह मुझे सर्द हवाओं से बचा ले;
वहाँ एक आग है जिसकी लालिमा झलक रही है।
वे मेरे बीते हुए सफ़रों के लिए मेरी सराहना करेंगे।

और इसलिए, मैं जहाँ भी जाऊँ,
अजनबी लोगों की ठंडी निगाहें मेरी आंखों से टकराती हैं;
हालांकि, जब मेरा मन दुःख से भर जाता है,
अनसुनी आहें अनचाही ही बढ़ती जाती हैं;

हालांकि, लंबे समय तक सहन किया गया एकांत,
जवानी की खुशियाँ बहुत जल्दी क्षीण हो जाती हैं,
इससे मेरी जुबान से हंसी गायब हो जाती है।
और मेरे दिन के दोपहर के समय बादल छा जाते हैं;

जब दयालु विचार जो रास्ता बना सकते थे
निराश होकर, वापस मेरी छाती में बह जाओ,
मुझे पता है कि वह है, हालांकि बहुत दूर है।
एक ऐसा घर जहाँ मन और आत्मा को शांति मिले।

गर्म हाथ हैं, जो मेरे हाथों में जकड़े हुए हैं,
दयालु हृदय झूठ नहीं बोलेगा;
जब हर्षोल्लास, सत्य और मित्रता की चमक फैलती है
मुस्कुराते होंठों और गंभीर आँखों में।

मेरे दिल के चारों ओर जमने वाली बर्फ
काश, बर्फ पिघल जाए; और फिर मधुरता से,
जवानी के वो सुख, जो अब चले गए,
मेरी आत्मा को फिर से प्रसन्न करने आएगा।

चाहे मैं कितनी भी दूर भटक जाऊं, यह विचार हमेशा बना रहेगा।
मेरी आशा, मेरा सहारा, हर जगह;
जब तक मेरे पास ऐसा घर रहेगा,
मेरा हृदय कभी निराशा का अनुभव नहीं करेगा।

संकरा रास्ता।

उन लोगों पर विश्वास मत करो जो कहते हैं
ऊपर की ओर जाने वाला मार्ग सुगम है।
कहीं तुम रास्ते में ठोकर न खा जाओ,
और सत्य के सामने नर्म हो जाना।

यही एकमात्र सड़क है
आनंद के लोकों की ओर;
लेकिन जो उस धन्य निवास की तलाश करता है
उसे अपनी सारी शक्तियों का उपयोग करना होगा।

उज्ज्वल आशाएँ और परम आनंद
उसके मार्ग पर प्रकाश पड़ सकता है,
और वहाँ, सबसे कठोर ऊँचाइयों के बीच,
सबसे सुंदर फूल चमक रहे हैं।

उन सभी हवाओं पर सवार होकर,
धरती से ऐसी कोई सुगंध नहीं निकलती;
लेकिन जो काँटे को सहने की हिम्मत नहीं करता
गुलाब की लालसा कभी नहीं करनी चाहिए।

युद्ध के लिए तैयार हो जाओ!
अनावश्यक बोझ को फेंक दो;
रात के सबसे अंधेरे घंटों में भी जागते रहो;
सबसे गर्म दिन में भी परिश्रम करना।

अहंकार को चूर-चूर कर दो,
या फिर तुम्हें ढिलाई बरतनी ही पड़ेगी;
और विद्रोही वासना को कुचल दो,
वरना यह तुम्हें पीछे खींच लेगा।

यहां अपना सम्मान मत खोजो;
सुख और यश का त्याग करो;
दुनिया का खौफ, निडर भालू का उपहास,
और इसके सबसे घातक प्रकोप का सामना करना पड़ेगा।

परिश्रम करना और प्रेम करना,
क्षमा करने और सहन करने के लिए,
अपने हृदय को परमेश्वर की ओर उठाओ,
और अपने विवेक को शुद्ध रखो;

यही तुम्हारा निरंतर लक्ष्य हो।

तेरी आशा, तेरा परम आनंद;
कौन दोषारोपण करता है, इससे क्या फर्क पड़ता है?
या किसे तिरस्कार या उपेक्षा करनी चाहिए?

क्या फर्क पड़ता है, अगर तुम्हारा ईश्वर इसे स्वीकार करता है?
और यदि, तेरे हृदय में,
तुम उसके प्रेम का सुकून महसूस करोगे।
क्या यह उनके विश्राम का संकेत है?

घरेलू शांति।

ऐसी अंधकारमय चुप्पी क्यों छाई हुई है?
और यह सारा घर इतना उदास क्यों है?
जब न तो खतरा, न बीमारी, न दर्द,
न तो मृत्यु, न ही अभाव, यहाँ प्रवेश कर पाए हैं?

हम उतने ही हैं जितने पहले थे।
उस रात, जब सभी समलैंगिक थे
और आशा से परिपूर्ण, और चिंताओं से मुक्त;
लेकिन क्या कुछ खो गया है?

बाहर का चाँद उतना ही शुद्ध और शांत है।
वह उसी रात की तरह चमक रही है;
लेकिन अब, वह हमारे लिए कोई राहत नहीं लाती।
क्योंकि हमारे दिलों से कुछ खो गया है।

कोई ऐसी चीज जिसकी अनुपस्थिति एक खालीपन छोड़ जाती है —
हर दिल में एक निराशाजनक अभाव;
हर कोई सब कुछ नष्ट होने के आनंद का अनुभव करता है।
और बदलाव पर शोक व्यक्त करते हैं— लेकिन हर कोई अलग-अलग।

अंगीठी में आग जल रही है।

यह पहले की तरह ही लाल रंग से जलता था;
लेकिन चूल्हा अब भी वीरान है।
जब तक हर्ष, प्रेम और शांति वापस न आ जाए।

यह शांति ही थी जो हृदय से हृदय तक प्रवाहित हुई।
उनकी सूरत और मुस्कान स्वर्ग की याद दिलाती थी।
और हमें संवाद करने के लिए भाषा प्रदान की।
उन सुखद विचारों ने ही यह वरदान दिया था।

घरेलू शांति! धरती का सबसे बड़ा आनंद!
हम सब तुम्हारे मूल्यों को कब समझेंगे?
हे श्वेत देवदूत, हमारे शोकग्रस्त चूल्हे पर आ जाओ,
कृपया लौट आइए!

तीन मार्गदर्शक। [प्रथम प्रकाशन: फ्रेजर पत्रिका]

हे पृथ्वी की आत्मा! तेरा हाथ ठंडा है:
मैंने इसकी बर्फीली पकड़ को महसूस किया है;
और, सिहरन के साथ, मुझे अभी भी याद है
वह पत्थर जैसी कठोर पकड़।
तेरी आँख प्रेम और आनंद को विदा करती है:
ओह, अपनी दृष्टि मुझसे हटा लो!
यह मेरे सिकुड़ते हुए दिल पर और दबाव डालता है;
मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूंगा!

मैंने तुम्हें यह कहते सुना है: “ज्ञान मेरा है।”
मेरी पैनी निगाहों के नीचे
सभी धुंध और अंधेरा छंट जाते हैं।
प्रेत और लोककथाएं उड़ती हैं।
मेरे समक्ष सत्य अकेला खड़ा रह सकता है।
नग्न, ठोस सत्य;
और योग्यता से परिपक्व हुआ व्यक्ति इसे स्वीकार करेगा,
अगर युवा मुझे ठुकरा दें।

“मेरे कदम दृढ़ हैं, और धीमे होने के बावजूद निश्चित हैं;
मेरे कदम कभी नहीं फिसलते;
और जो मेरा अनुसरण करेगा वह जान जाएगा
मैं ही सबसे भरोसेमंद मार्गदर्शक हूं।
तेरा घमंड व्यर्थ है; परन्तु यदि वह सत्य होता
ताकि तुम सुरक्षित रूप से गाड़ी चला सको
जीवन का कठिन और टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता,
मुझे ऐसे मार्गदर्शन से डरना चाहिए।

मैं हमेशा के लिए पैदल चलना कैसे सहन कर सकता हूँ?
पृथ्वी की ओर झुकी हुई निगाहों के साथ,
कुचली हुई घास और कीचड़ भरी मिट्टी के ऊपर,
और रेत और पथरीले पत्थर;
ऐसा शानदार नज़ारा पहले कभी देखने को नहीं मिला।
पहाड़ियों, घाटियों और आकाश का;
प्रकृति के आकर्षण को मधुरता से देखना,
या ऐसा महसूस होता है कि स्वर्ग निकट है?

यदि मेरे हृदय में कोई प्रेरणा उत्पन्न हो,
दिव्य विचारों का एक सैलाब,
तुम तुरंत ही ठहराव ला दोगे
तुम्हारे उस ठंडे स्पर्श से।
अगर मैं ऊपर देखते हुए छीनने की कोशिश करता
लेकिन आकाश की एक झलक,
मेरी अचंभित निगाहें केवल एक ही चीज़ पर टिक पातीं।
तेरी निर्मम, ठंडी धूसर आँख।

यदि हवाएं पास से बह रही हों,
मैंने उत्सुकता से सुना।
और उसने इसे एक देवदूत की ज़बान समझा।
उसने मेरे कानों में आशा की एक फुसफुसाहट जगाई,
वह दिव्य संगीत डूब जाएगा
तेरी कर्कश, नीरस आवाज में;
न तो आंतरिक विचार, न दृष्टि, न ध्वनि,
काश मेरी दुखी आत्मा को आनंद मिले।

तेरे कान सुस्त हैं, तू उन्हें सुन ही नहीं पाता।

स्वर्ग की शांत, धीमी आवाज;
तुम्हारी आंखें कमजोर हैं और देख नहीं सकतीं।
ईश्वर ने जो सहायता प्रदान की है।
हर बाढ़ पर एक पुल होता है
जिसे तुम समझ नहीं सकते;
घने जंगलों के बीच से होकर गुजरने वाला एक रास्ता,
लेकिन तुम विश्वास नहीं करोगे।

बलपूर्वक अपना मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास करते हुए,
परिश्रम से थका हुआ और झाड़ियों से उखड़ा हुआ,
तूने उस वृक्ष को काट डाला जो तेरे मार्ग में बाधा डालता है।
और कंटीली झाड़ियों को चीरते हुए आगे बढ़े:
और नदी के किनारे रुककर,
हे बेचारे तर्कशील! तू ऐसा समझेगा,
इसकी लहरों में कंकड़ फेंककर,
उफनती हुई नदी को पार करने के लिए।

तुम पथरीली चट्टान के बीच से निकलने की कोशिश करोगे
तुम्हारा उबाऊ रास्ता,
रास्ते की परवाह किए बिना
जो तुम्हें पार ले जाएगा
तो तुम न केवल निर्दयी हो,
और मुझे तो कड़ाके की ठंड लग रही है।
लेकिन अविश्वासी, बहरे और अंधे:
मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूंगा!

हे अभिमान की आत्मा! तेरे पंख बलवान हैं।
तुम्हारी आंखें बिजली की तरह चमकती हैं;
परमानंदमय आनंद तुम्हारे लिए ही हैं।
और लगभग दैवीय शक्तियां।
लेकिन यह एक झूठी, विनाशकारी ज्वाला है।
उन आंखों में मुझे दिखता है;
इसलिए वे अपनी आकर्षक दृष्टि को इस ओर मोड़ लेते हैं;
मैं तुम्हारा अनुसरण नहीं करूंगा।

तुम शायद जवाब दोगे, "कायर और मूर्ख!"
आम घास के मैदान पर चलें;
जाओ, दबे पांव कदमों और आंखों से उसका पीछा करो

दूसरों द्वारा चले गए पदचिह्न।
बेहतर यही है कि प्रचलित मार्ग पर ही चलते रहें।
प्राचीन आस्था को कायम रखना;
अपनी साथी भेड़ों के साथ चरने के लिए,
और उसके दायरे में लेट जाओ।

"धरती से चिपके रहो, बेचारे रेंगते कीड़े;"
तुम्हारे लिए उड़ना संभव नहीं है
तूफान के प्रकोप के विरुद्ध,
गरजते बादलों के बीच!
उस साहसिक संघर्ष में गौरव निहित है।
अज्ञात, जिसकी तुमने कल्पना भी नहीं की थी;
जीवन में एक अवर्णनीय आनंद है
जो लोग मेरा अनुसरण करते हैं।

हाँ, मैंने तुम्हारे भक्तों को अक्सर देखा है।
तेरे मार्गदर्शन में,
शक्ति और साहस के साथ ऊंचाइयों पर चढ़ो
खड़ी पहाड़ी ढलान;
मैंने उन्हें आसमान के सामने खड़े देखा है,
और नीचे से देखते हुए,
मैंने उनकी आँखों में तेरी बिजली देखी
उनके माथे पर तेरी विजय।

ओह, तब मैंने कितनी महिमा का अनुभव किया था!
उन्हें किस तरह के परिवहन की व्यवस्था करनी होगी!
वे अपने साथी मनुष्यों से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं,
उनकी मेहनत और चिंताओं से ऊपर;
प्रकृति की सबसे शुद्ध सांस को ग्रहण करते हुए,
उनकी संपत्ति उनके चारों ओर फैली हुई थी।
नीचे फैली विशाल पृथ्वी,
ऊपर स्वर्ग की महिमा दिखाई दे रही है!

लेकिन मैंने उन्हें असहाय और निराश देखा है
एक खूनी कब्र तक,
और फिर भी तेरी निर्मम दृष्टि चमक उठी है।
तेरे बलवान हाथ ने भी नहीं बचाया;
मैंने पहाड़ की चोटी पर कुछ देखे हैं

कुछ समय के लिए तुम्हारे सहारे,
बर्फ की चट्टानों और बर्फ से ढकी पहाड़ियों के ऊपर
निडर, बेबाक और स्वतंत्र।

उनका भाव-भंगिमा साहसी और उल्लासपूर्ण था।
जब तुम उनका हौसला बढ़ा रहे थे;
लेकिन शाम हो गई, और फिर, मुझे लगता है,
उनका विश्वासघाती मार्गदर्शक जा चुका था।
हाय! तब तुम्हारे प्रिय लोगों का क्या हाल हुआ होगा?
अकेला, असहाय, थका हुआ, ठंड से कांप रहा है?
क्या कभी किसी भटकने वाले को फिर से कुछ मिला है?
उसने अतीत में जो राह छोड़ी थी?

उनकी शान कहाँ है, उनका गर्व कहाँ है?
क्या इससे पहले उनके दिल भर आए थे?
अब वह साहस कहाँ है जिसने अवहेलना की थी?
सबसे भयंकर तूफान की गर्जना?
जब रात पूरी तरह से काली हो जाएगी तो वे क्या करेंगे?
जब भयंकर तूफान आते हैं?
अब उन्हें ट्रैक तक कौन ले जाएगा?
क्या तुमने उन्हें तिरस्कार करना सिखाया?

अहंकार की भावना, इसे इसकी आवश्यकता नहीं है
मुझे तुम्हारे छल से दूर करने के लिए,
अपनी विजय और अपने सुख का त्याग करो,
आपके सम्मान और आपकी मुस्कान!
तुम जितने उज्ज्वल, साहसी और बलवान हो,
वह तीखी नजर मुझे प्रभावित नहीं करती।
और मैं तुम्हारी उपहास भरी जीभ से घृणा करता हूँ।
मैं तुम्हारा अनुसरण नहीं करूँगा!

हे आस्था की आत्मा! तू ही मेरी मार्गदर्शक बनो।
हे प्रभु, मेरा हाथ अपने हाथों में थाम लो।
और मुझे कभी तुम्हारा साथ न छोड़ने देना;
तेरे सुख तो दिव्य हैं!
हे भटके हुए, पृथ्वी तुझे अंधा कहती है, —
लेकिन तुम्हारे समान कौन दिखा सकता है?
भूली हुई बातें जो हो चुकी हैं,

और जो चीजें होने वाली हैं?

प्रकृति की दृष्टि से छिपे रहस्य,
तुम्हारे जैसा कौन यह बात कह सकता है?
या जो तेरे जैसे गुमराह लोगों के लिए
क्या ईश्वर की पवित्र इच्छा सहन कर सकती है?
अहंकार तुम्हारे दीन स्वभाव का उपहास करता है, —
लेकिन तुम्हारे जैसा कौन उठ सकता है?
इस कष्टदायक, घिनौने दृश्य के ऊपर,
पवित्र आकाश से परे?

तेरी आंखें नम्र हों और तेरी वाणी मधुर हो।
लेकिन तेरी शक्ति अद्भुत है।
दुखी आत्मा को प्रसन्न करने के लिए,
साधारण प्रकाश देने के लिए!
और फिर भी उन सभी के लिए जो तेरे मार्ग की तलाश करते हैं
यह जादुई शक्ति प्रदान की गई है, —
यहां तक कि जब उनके पदचिह्न मिट्टी को दबाते हैं,
उनकी आत्माएं स्वर्ग की ओर अग्रसर होती हैं।

उन्हें चारों ओर से खतरे और पीड़ा ने घेर रखा है।
यहां उनका हिस्सा अवश्य होना चाहिए,
लेकिन केवल वही लोग जो तुझ पर भरोसा करते हैं, जानते हैं
तुम्हें क्या सांत्वना मिलती है?
उनकी कमजोर होती शक्तियों को बनाए रखने की ताकत,
और बचाव करने का जोश, —
हे मेरे सबसे अंधकारमय क्षणों के ध्रुव तारे!
दुःख का सबसे सच्चा साथी!

दिन हमेशा हमारे मार्ग का चिन्ह नहीं होता।
रात की परछाइयाँ अक्सर भयभीत करती हैं,
लेकिन मुझे मार्ग दिखाओ, और मैं भटक नहीं सकता, —
मुझे थामे रहो, मैं नहीं गिरूंगा;
मुझे सहारा दो, मैं कभी कमजोर नहीं पड़ूंगा।
चाहे हालात कितने भी कठिन क्यों न हों
मेरी उन्नति की राह, — न विलाप, न शिकायत
इससे तुझ पर मेरा भरोसा टूट जाएगा।

हमारे जाने वाले मार्ग को संकरा करो,
और अक्सर यह एक तरफ मुड़ जाता है
उन रमणीय मैदानों से जहाँ गुलाब खिलते हैं,
और शांत जल धारा प्रवाहित होती है;
जहां फूलों से लदी हरी-भरी घास फैली हो,
और हल्की हवाएँ मधुर होती हैं।
जहां अंधेरे पहाड़ ऊपर की ओर गुस्से से घूरते हैं,
कठोर चट्टानें पैरों को कष्ट देती हैं।

दूर-दूर तक फैले रेगिस्तान उजाड़ और वीरान हैं।
और हमारे चारों ओर तेज हवाएं चलती हैं;
लेकिन यदि तेरा हाथ मुझे वहाँ ले जाए,
मुझे पता है, यही सही रास्ता है।
मुझे मुंह मोड़ने की कोई इच्छा नहीं है;
मेरा मन भयभीत नहीं होता, —
यह कैसे संभव है जबकि मैं तुम्हें यह कहते हुए सुनता हूँ,
आगे बढ़ो और जीत हासिल करो!

तूफ़ान की लहरों के ऊपर भी
मुझे तुम्हारी प्रेम भरी वाणी सुनाई देती है, —
मैंने सुना है तुम आशा और शांति की बात कर रहे हो।
और वह स्वर्ग में स्थित धन्य घर;
दर्द और मृत्यु के बीच भी मैं आनंदित हो सकता हूँ।
यदि तुम्हारी शक्ति मुझे मिल जाए, —
धरती पर तुम्हारी आवाज के समान कोई संगीत नहीं है।
तुम्हारे जैसी खुशी जीवन में कहीं नहीं!

हे आस्था की आत्मा, मैं तुम्हारे साथ चलूंगा!
अगर मैं तुम्हें कसकर पकड़ लूँ,
विल्ट मेरा मार्गदर्शन करे, मेरी रक्षा करे और मुझे शक्ति प्रदान करे।
और अंत में मुझे घर ले चलो;
तेरी सहायता से मैं सब कुछ कर सकता हूँ।
तेरी शक्ति से ही सब कुछ सहन होता है, —
मुझे सिखाओ, क्योंकि तुम न्यायप्रिय और सच्चे हो।
मुझ पर मुस्कुराओ, तुम सुंदर हो!

मैंने अपनी बहन एमिली की अंतिम स्मृति चिन्ह दे दी है; यह मेरी बहन ऐनी की अंतिम स्मृति चिन्ह है: —

मुझे उम्मीद थी कि बहादुर और मजबूत लोगों के साथ,

मुझे सौंपा गया कार्य शायद इसमें निहित हो सकता है;
व्यस्त भीड़ के बीच परिश्रम करना,
शुद्ध और उच्च उद्देश्य के साथ।

लेकिन ईश्वर ने एक और हिस्सा तय कर रखा है,
और उसने इसे अच्छी तरह से ठीक कर दिया है;
मैंने ये बात पूरे दिल से कही थी।
जब पहली बार पीड़ा का अनुभव हुआ।

हे ईश्वर, तूने हमारी प्रसन्नता छीन ली है।
हमारी अनमोल आशा दूर हो गई:
तूने हमें रात भर रोने का आदेश दिया है
और दिनभर दुख से भरा रहना।

ये थका देने वाले घंटे व्यर्थ नहीं जाएंगे।
दुख के इन दिनों में,
अंधकार की ये रातें, पीड़ा से भरी हुई,
क्या मैं केवल तेरी ओर मुड़ सकता हूँ?

गुप्त श्रम से जीविका चलाने के लिए
विनम्रतापूर्वक धैर्य से हर आघात सहना;
दर्द से उबरने की शक्ति प्राप्त करने के लिए,
और दुःख से आशा और पवित्रता प्राप्त होती है।

अत: मैं पूरे हृदय से तेरी सेवा करूँ।
मेरी लिखित नियति चाहे जो भी हो:
क्या इतनी जल्दी प्रस्थान करना उचित है?
या फिर अभी कुछ समय और इंतजार करना पड़ेगा।

यदि तू मुझे पुनः जीवित कर दे,
मुझे और अधिक विनम्र होना चाहिए;
अधिक बुद्धिमान — संघर्ष से अधिक मजबूत —
तुझ पर भरोसा करने की अधिक संभावना है।

यदि मृत्यु द्वार पर खड़ी हो,
इस प्रकार मुझे अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना चाहिए:
लेकिन, हे प्रभु! मेरा भाग्य चाहे जो भी हो,
हे प्रभु, मुझे अभी आपकी सेवा करने दीजिए!

ये पंक्तियाँ लिखने के बाद, डेस्क बंद कर दी गई, कलम को हमेशा के लिए एक तरफ रख दिया गया।

पैट्रिक ब्रोंटे की रचनाएँ

पैट्रिक ब्रोंटे, 1860

कॉटेज कविताएँ

रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे का जन्म 17 मार्च 1777 को आयरलैंड के काउंटी डाउन के रथफ्रिलैंड के ड्रमबैलीरोनी में हुआ था। वे एक आयरिश एंग्लिकन पादरी और लेखक थे, जिन्होंने अपने वयस्क जीवन का अधिकांश समय इंग्लैंड में बिताया और वे शार्लोट, एमिली और ऐनी ब्रोंटे तथा अपने इकलौते बेटे ब्रैनवेल ब्रोंटे के पिता थे। 1809 में वे श्रॉपशायर के वेलिंगटन में सहायक पादरी बने और 1810 में उन्होंने अपनी पहली कविता 'विंटर इवनिंग थॉट्स' एक स्थानीय समाचार पत्र में प्रकाशित की, जिसके बाद 1811 में नैतिक कविताओं का एक संग्रह 'कॉटेज पोएम्स' प्रकाशित हुआ। अगले वर्ष उन्हें गाइज़ली के पास स्थित एक वेस्लेयन अकादमी, वुडहाउस ग्रोव स्कूल में स्कूल परीक्षक नियुक्त किया गया।

अंतर्वस्तु

रेवरेंड जे. - - बी - - को पत्र, उनके स्वास्थ्य लाभ के लिए यात्रा के दौरान।

खुशहाल कुटीरवासी।

इंद्रधनुष।

शीत ऋतु की रातों में ध्यान।

जन्मदिन पर एक महिला को भेजी गई कविताएँ।

आयरिश केबिन।

रेवरेंड जे. गिलपिन को, उनके द्वारा प्रकाशित "पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" के बेहतर संस्करण के लिए।

द कॉटेज मेड।

मकड़ी और मक्खी।

एक युवा पादरी को पत्र।

श्रमशील गरीबों के नाम पत्र।

झोपड़ीवासी का भजन।

रेवरेंड जे. - - बी - - को पत्र, उनके स्वास्थ्य लाभ के लिए यात्रा के दौरान।

जब उत्साह से भर जाती है, तो मेरी देहाती प्रेरणा अपनी खबर बताने के लिए बेताब हो जाती है, और अपने सरल, दीन दृश्यों को अपनी सारी कला से चित्रित करने के लिए बेताब हो जाती है, और यद्यपि प्रतिभा में मंदबुद्धि होती है, फिर भी हृदय को छू सकती है।
राजाओं के महलों और दरबारों के बारे में वह बहुत कम सोचती है, कभी गाती नहीं, लेकिन किसी तालाब की कुटिया में अपने बेढंगे तारों को बेतहाशा बजाती है, गरीब मुर्गी पर अपने पंख फैलाती है और उनके भाग्य को शांत करती है।
उन्हें मुस्कुराते देखकर वह बहुत प्रसन्न होती है, और उनके दिलों को ठीक करने, उनकी चिंताओं को दूर करने, तुकबंदी वाली कहानियों से उन्हें बहलाने के लिए हर ईमानदार तरीका अपनाती है, और इस बीच उन्हें ईश्वर को सौंप देती है, और अनंत महिमा प्रदान करती है।
शायद, मेरी बेचारी उपेक्षित देवी, परेशान करने या मनोरंजन करने के अयोग्य, प्रशंसा और ज़ोरदार गाली से बचकर, अनसुनी, अनजानी, पतंगों और बर्बाद ओस को भोजन दे सकती है, जैसा कि कुछ ने किया है।
उसके इरादे नेक हैं, चाहे उनका अंत कैसा भी हो —
यहाँ एक शत्रु आता है, वहाँ एक मित्र,
ये तीर चलाते हैं और वे बचाव करते हैं,
जबकि कुछ उसका उपहास करते हैं;
लेकिन ईश्वर उसे सबसे मधुर सांत्वनाएँ प्रदान करेगा,

चाहे उसका कुछ भी हो जाए।
इस प्रकार स्वर्ग के सहारे वह आगे बढ़ती है
चापलूसों, आलोचकों, मित्रों और शत्रुओं के बीच;
सुरक्षित, क्योंकि वह जो सब कुछ जानता है
उसके उद्देश्य को स्वीकार करता है,
और दयालुता से हवा देता है, या पोषण देने वाले प्रहार करता है
उसकी बुझती लौ को।

इसलिए, जब वह अपना ईमानदार चेहरा दिखाती है, और अपनी कहानी अटपटी शालीनता से सुनाती है, आपके दोस्तों के बीच जगह पाने के लिए बेताब होती है, तो निर्दयी आलोचकों को उसका मामला छोड़ दें, और उसके अंत का स्वागत करें।

मेरा हृदय भले ही दयालु और सच्चा है, फिर भी तुम्हारे लिए तीव्र प्रेम से दमकता है; हालांकि तुम अनुपस्थित हो, फिर भी तुम नज़र आते हो, और बातें करते हो और मुस्कुराते हो, जबकि दिव्य विषय, सदा नए, हमारी चिंताओं को दूर करते हैं।

खुशियों के मौसम अक्सर लौट आते हैं, जब प्यार हमारे पिघलते दिलों में जलता था, जब हम स्वर्गीय विषयों से गुज़रते थे, स्वर्ग की ओर देखते हुए, और विश्वास इस खाली दुनिया को ठुकरा देता था, और आकाश में विचरण करता था।

या, जब उगता सूरज चमकता है, या, अस्त होते हुए दुनिया को रात में छोड़ जाता है, या, चकाचौंध करते हुए, अपनी दोपहर की रोशनी बिखेरता है, या, बादलों से घिरकर छिप जाता है, मेरी कल्पना, अपनी हवादार उड़ान में, तुम्हारे साथ निवास करती है।

जहां दूर घाटी में विचरण करते हो, जब सुखदायक सुगंध हवा को महकाती है, और कलकल करते झरने और लिनेट पक्षी राजाओं के राजा का स्वागत करते हैं, तुम्हारे साथ चिंतन करने में मैं कभी असफल नहीं होता, स्वर्गीय चीजों पर।

जहां प्रचंड जलप्रपात विस्मित करते हैं, और झाग आसपास की जमीन को हिला देते हैं, और चारों ओर एक धुंध फैला देते हैं, मैं तुम्हें निहारता हूँ! और इस बहरे कर देने वाली ध्वनि के बीच, ज्ञान के मार्गों पर विचार करता हूँ।

जहां चट्टानी पहाड़ आसमान को सहारा देते हैं, और चारों ओर मुस्कुराता हुआ परिदृश्य फैला है, जबकि तुम आँसू भरी आँखों से नीचे देखते हो, रेंगते हुए मनुष्य पर, मेरी सहानुभूतिपूर्ण कल्पना उड़ती है, दृश्य का अवलोकन करने के लिए।

पिस्गाह की चोटी से हम अनंत दिन के आनंदमय क्षेत्रों का सर्वेक्षण करते हैं, और उस

छोटे लेकिन संकरे रास्ते का जो बीच में स्थित है, जबकि आस्था एक दिव्य किरण उत्सर्जित करती है और दृश्य को आनंदित करती है।

तुम्हारे साथ मैं किनारे पर घूमता हूँ, उग्र लहरों की गर्जना सुनने के लिए, रेत से झाग बनाते हुए वे बहती हैं, निरंतर प्रवाह के साथ, और ध्यान स्वर्ग की ओर उड़ता है, और आत्मा को मोहित करता है।

जीवन के उबड़-खाबड़ सागर में हम तूफ़ान में बह रहे हैं, पागल नावों में, हमारा पाल फटा हुआ है! यही नश्वर प्राणियों का भाग्य है जहाँ पाप शरण लेते हैं: परन्तु जिसका लंगर स्वर्ग में टिका है, वही बंदरगाह तक पहुँचेगा।

यद्यपि उमड़ती लहरें अक्सर उसे पीछे धकेल देती हैं, और तूफ़ान उसे आधा बर्बाद कर देते हैं, और प्रबल भावनाएँ, खतरनाक चालों के साथ, उसके मार्ग को धीमा कर देती हैं, फिर भी मसीह, जो मार्गदर्शक है, सभी को रोक देगा, और उनकी शक्ति को शांत कर देगा।

तो हम बातें करते हैं जैसे विचारशील भटकते हुए
तट के किनारे, जहाँ तेज़ फुहार
उठते हुए कोहरे के साथ दिन को ढक लेती है,
और किनारे को गीला कर देती है,
और घनी चमकीली रोशनी खेलती है,
और गरजती है!

इस चक्करदार अवस्था से गुजरते हुए, एक धर्मनिष्ठ और विद्वान ऋषि ने शाश्वत युद्ध छेड़ने का संकल्प लिया; आवेश से भरकर; तुम कितनी बार पवित्र क्रोध से इन नरक के शैतानों को देखते हो!

देखो! वे किस उन्मादी शक्ति से मानव हृदय को वश में कर लेते हैं और उसे गुमराह कर देते हैं, उस ऊबड़-खाबड़, चौड़े, विनाशकारी मार्ग पर, उस मदमस्त भीड़ को; जब तक कि भयानक मृत्यु उन सभी को बहा न ले जाए, जिनमें शैतान भी शामिल हैं!

जैसे जब पागल बवंडर उड़ता है, और गर्जना धरती और आकाश को मिला देती है, और आँखों के सामने भयंकर भ्रम छा जाता है, वैसे ही जुनून बवंडर में उठते हैं, और सीने को चीर देते हैं!

लेकिन जब यह भयंकर तूफान कहर बरपा रहा है, और कई नावें चकनाचूर हो रही हैं, तब मैं तुम्हें लहरों के ऊपर खड़ा देखता हूँ, किसी ऊँची चट्टान की तरह, जिसका

आधार निर्मल सागर बिना किसी झटके के धोता है!
वही है जिसने उग्र समुद्र को शांत किया, वही है जो तुझमें लहरों को स्थिर रहने का आदेश देता है, और तुझे सभी खतरों से मुक्त रखता है; उसके इशारे पर ही सारे पाप, चिंता और खतरे दूर भाग जाते हैं।
और उस महान और भयानक दिन पर जब स्वर्ग और पृथ्वी नष्ट हो जाएँगे, वह प्रत्येक आत्मा को आनंद की ओर ले जाएगा, जो उसका नाम जानती है; और इस चकराई दुनिया को एक ऐसा शिकार देगा जो कभी न बुझने वाली ज्वाला का पात्र होगा।
अक्सर जब सब्त के दिन हमें विश्राम करने का आदेश दिया जाता था, और स्वर्गीय उत्साह ने आपके हृदय को प्रेरित किया, उच्च आदेश का पालन करते हुए, आपने सभी को उपदेश दिया, जबकि ईश्वर ने आपके उत्साही प्रयासों को आशीर्वाद दिया, और आपके आह्वान को स्वीकार किया।
यह विचार ही मेरी आत्मा को प्रेरित करता है, और उसकी सुप्त अग्नि को प्रज्वलित करता है; मेरी प्रेरणा हृदय से प्रेममयी इच्छाओं को महसूस करती है, और अपने पंख फैलाती है, और देवदूतों के समूह में शामिल होने का लक्ष्य रखती है, और मधुरता से गाती है।
आपकी सेहत जल्द ही सुकून भरी हो जाए, और आपका जोश हमेशा की तरह बना रहे, और बीमारी आपकी अस्थियों में दफन हो जाए, और आप कई वर्षों तक चैन की नींद सोएं! इसलिए, अनगिनत दोस्त जो ज़ोर-ज़ोर से शोक मना रहे हैं, वे अपने आँसू पोंछ लें!
तुम्हारा विलाप करता झुंड अपने प्रिय चरवाहे की आवाज़ सुनकर आनंदित होगा, और अपने हृदयों द्वारा किए गए सुखद चुनाव को लंबे समय तक आशीर्वाद देगा, और मधुर उल्लास उपवन और मैदान में गूंज उठेगा।
आपकी प्रियतम मेरे साथ जयंती मनाने के लिए शामिल होंगी, और धड़कते हुए आनंद के साथ महान शाश्वत त्रिमूर्ति की स्तुति करेंगी, और उन शुद्ध और मुक्त सुखों का स्वाद लेंगी जो कभी तृप्त नहीं होते।

खुशहाल कुटीरवासी।

मई की एक धूप भरी सुबह, जब फूलों से सजे हरे रंग में, ओस से भीगे परिदृश्य ने प्रकृति के सबसे सुंदर दृश्य से मंत्रमुग्ध कर दिया, विचारशील मनोदशा में, मैं धीरे-धीरे पहाड़ी और घाटी पर, झाड़ियों और मैदानों से होकर भटक गया।

निर्मल नीले प्रकाश से भरे बादल रहित आकाश में, लार्क पक्षियों ने सुबह के गीत गाए, जबकि मेरी चकाचौंध भरी दृष्टि में, धुंधले कणों की तरह, वे उड़ते चले गए, जब तक कि दिन के उजाले में गायब नहीं हो गए।

लिनेट पक्षी मधुरता से गा रहे थे, हर सुगंधित कांटे पर, जबकि घने जंगल से ब्लैकबर्ड सुबह का स्वागत कर रहे थे; और ओस में इधर-उधर दौड़ रहे थे, लेकिन डरा हुआ खरगोश आधा डरा हुआ था।

सुहावनी हवा ने अनगिनत ओस से भीगे रत्नों को चूमा, जो कोमल पत्तियों को सजाते थे या मजबूत तनों को सुनहरा बनाते थे, और धीरे से उस मनमोहक दृश्य पर कांपते प्रकाश की बाढ़ बहा दी।

एक सहानुभूतिपूर्ण चमक मेरी पिघलती आत्मा में दौड़ पड़ी, और शांत और मधुर आनंद मेरी सभी इंद्रियों पर छा गया; और मेरे हृदय में कृतज्ञता की बाढ़ आ गई, आनंद की लहर प्रकृति के ईश्वर की ओर बह गई।

समय अनसुना बीत गया, जब तक कि थका हुआ और दबा हुआ, फूलों से भरे किनारे पर, मैं आराम करने के लिए लेट गया; मेरे पैरों के नीचे एक कलकल करती धारा दोपहर की किरण में चमकती हुई बह रही थी।

मैंने मुड़कर देखा कि ग्रामीण इलाका कितना सुंदर था; और ठीक सामने ही मुझे हरे-भरे मैदान पर एक कुटिया दिखाई दी; गली साफ थी, दीवारें सफेद थीं, छप्पर साफ-सुथरा था, और खिड़की चमकदार थी।

साहसी मुर्गा, मखमली पंखों से सजा हुआ, कई प्रेममयी महिलाओं के साथ, भयंकर रूप से रास्ते पर इतराता हुआ चला; और रंग-बिरंगी बत्तखें लड़खड़ाती हुई दिखाई दे रही थीं, और एक नर बत्तख जिसकी गर्दन चमकदार हरे रंग की थी।

मैंने धीरे से कुंडी उठाई, और साधारण सा दरवाजा खोला; साफ-सुथरे फर्श पर एक ओक की लकड़ी का स्टूल रखा था; एक वृद्ध व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए कहा, “आपका

स्वागत है, महोदय: थोड़ी देर आराम कीजिए।”

उसके मोटे वस्त्र साफ थे, उसका व्यवहार असभ्य होते हुए भी दयालु था; उसकी चाल-ढाल, उसके शब्द और उसकी निगाहें एक संतुष्ट मन को दर्शाती थीं; यद्यपि वह नीच और गरीब था, फिर भी वह तीन गुना सुखी था, जैसा कि हमारी कहानी से तुम जल्द ही देखोगे।

लेकिन यह उम्मीद मत करो कि तुम युद्ध कला के कारनामों के बारे में सुनोगे, या यह कि हमारा साधारण किसान किसी खानदान या नाम के परिवार में पैदा हुआ था, और जल्द ही इतराएगा, जैसे किसी प्रेम कहानी में, एक शूरवीर की तरह, कवच में शान से।

मैं वास्तविक जीवन का गीत गाता हूँ; बाकी सब खोखला दिखावा है — उन लोगों के लिए जो बहुत से अवास्तविक दुखों का स्रोत पढ़ते हैं: प्रदूषण भी, उपन्यासों के माध्यम से, अक्सर मन को दोषी दागों से भर देता है।

हमारा किसान लंबे समय से कष्टों का लाचार बच्चा रहा, फिर भी कृतज्ञतापूर्वक शांत रहा, ऊँचे स्वर में स्तुतिगान करते हुए मुस्कुराता रहा, और एक मीनार की तरह अडिग खड़ा रहा, जिसे उसके प्रिय ईश्वर का सहारा प्राप्त था।

उनकी प्यारी पत्नी बहुत पहले ही मृतकों में गिनी जा चुकी थी; उनका पुत्र, एक योद्धा युवक, अपने देश के लिए लहू बहा चुका था; और अब केवल एक सुंदर बेटी ही बची थी, और वही उनकी चिंताओं को शांत करने के लिए थी।

आँसुओं से भीगे बूढ़े व्यक्ति ने उस प्यारी युवती के बारे में कहा; कि कैसे उसने अपने पिता की सहायता करने के लिए पूरी लगन से प्रयास किया, और जब वह उसकी प्रशंसा कर रहा था, तब उसने धीरे से झोपड़ी का दरवाजा खोला।

सब्जी की दुकान के साथ, उसने जल्दी से मेज बिछा दी, और मुझे भी खाने के लिए कहा; जबकि उसके चेहरे पर गुलाबी लालिमा छा गई — बूढ़ा आदमी मुस्कुराया, अपनी प्यारी बच्ची को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ।

आदरणीय भाव से उसने ईश्वर की ओर देखा, सभी के लिए एक आशीर्वाद की कामना की, और हमारे दैनिक भोजन के लिए भी; फिर विनम्रतापूर्वक विनती की कि मैं उनकी विनम्रता को क्षमा कर दूँ, और इनकार न करूँ।

मेज़पोश, हालांकि मोटा था, बर्फ़ जैसा सफ़ेद था; बर्तन, चम्मच और चाकू साफ़ और चमकदार थे; इसलिए हम बिना किसी चिंता के बैठ गए; और राजाओं के स्वादिष्ट

भोजन से ईर्ष्या नहीं की।

जब प्रकृति पुनर्जीवित हुई, और हम परिचित हो गए; तब उस भले बूढ़े ने कहा, “यहोवा के सिंहासन के चारों ओर, आओ, हम सब अपनी आवाज बुलंद करें, और अपने महान उद्धारकर्ता की स्तुति गाएँ!”

उनके सरल स्वर मधुर थे, हर पंक्ति में अनुग्रह व्याप्त था; उनके हृदय आनंद से फूले हुए थे, उनकी दृष्टि दिव्य थी: मेरे सभी इंद्रियों में आनंद छा गया, और स्वर्ग के शुद्ध आनंद ने मेरी आत्मा को अभिभूत कर दिया।

जब हमने अपने परमेश्वर की स्तुति की, और उसके सिंहासन के चारों ओर घुटने टेके, तब वृद्ध व्यक्ति ने गहरे और उत्साहपूर्ण स्वर में, हाथ ऊपर उठाकर, और आकाश की ओर देखते हुए, ज़ोर से और उत्साहपूर्वक प्रार्थना करना शुरू किया:

उन्होंने प्रार्थना की कि उनके खातिर, जिनका निर्दोष रक्त पापी बर्बाद मनुष्य के लिए बहाया गया, उस दिन हमें उस पवित्र रोटी से तृप्ति मिले, जो आत्मा को प्रसन्न करती है, और जीवनदायिनी धारा है, जहाँ सुख बहते हैं।

उसने सबके लिए और अपनी प्यारी बेटी के लिए बहुत प्रार्थना की, कि वह बीमारी से बची रहे और कई वर्षों तक एक निष्कलंक जीवन व्यतीत करे, जब वह न रहे; तब उसका अनुसरण करे और कनान के तट पर जाए।

फिर उनकी लड़खड़ाती आवाज धीमी पड़ गई, उनके आंसू तेजी से बह रहे थे, और ईश्वर की स्तुति करते हुए, उनकी तमाम कृपाओं के लिए, उन्होंने अपनी प्रार्थना समाप्त की, और दिव्य आनंद के बीच, उन्होंने उस परमानंद का स्वाद चखा जो कभी तृप्त नहीं होता।

मधुर चर्चा में हमने ढलते हुए दिन बिताए: हमने यीशु के प्रेम की बात की, और उस संकरे मार्ग की बात की जो चिंता और परिश्रम से होकर उन धाराओं तक ले जाता है जहाँ शाश्वत आनंद बहता है।

अनुग्रह की अद्भुत योजना, आराधना करते हुए, हमने सर्वेक्षण किया, स्वर्गीय कौशल का जन्म — शाश्वत प्रेम में निहित — स्पष्ट दृष्टि के लिए बहुत गहरा, और मंद दृष्टि वाले मनुष्यों से परे।

जो कुछ भी बीता, वह सब आपको बताना मेरी क्षमता से परे होगा; इसलिए इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि आनंद ने गुजरते घंटे को पंख लगा दिए, और इससे पहले कि हम जान पाते, ढलते दिन ने दुनिया को चांदी जैसे भूरे रंग में ढक दिया।

मैंने विनम्रतापूर्वक विदा ली, और अपने पीछे छोड़े गए लोगों के सुखी भाग्य को आशीर्वाद दिया, जो अपनी साधारण झोपड़ी में ठहरे हुए थे; और महल की दीवारों में रहने वाले कुछ लोगों पर दया की, जहाँ अभिमान सताता है और सुख क्षीण कर देता है।

चाँदी का चाँद अब मीनार, पेड़ और धारा पर काँपती रोशनी की बाढ़ बिखेर रहा था; टिमटिमाते तारे चमक रहे थे, न कोई धुंध का धब्बा, न कोई बादल दिखाई दे रहा था, पूरे गहरे आकाशीय हरे रंग पर।

रात सुहावनी थी, न ही हवा का कोई झोंका चल रहा था। झील शांत थी, कांच की तरह चिकनी, और पेड़ भी शांत थे; हवा में कोई आवाज़ नहीं सुनाई दे रही थी, सिवाय फिलोमेल के मधुर चहचहाते स्वर के।

मेरे विचार पंख फैलाए उड़ रहे थे, और मेरी कल्पना वापस वहीं लौट आई जहाँ संतोष का वास था, उस साफ-सुथरे साधारण झोपड़े में; वहाँ से वह चमकते आंगनों की ओर भागी, जहाँ बेचैन अभिमान मनुष्य को सताता है।

प्रसिद्धि में कुछ लोग आनंद की तलाश करते हैं, कुछ लाभ में संतोष खोजते हैं, खुशी की तलाश में कुछ लोग अपनी तीव्र भावनाओं को ढीली लगाम देते हैं, और सुखों के स्वप्नों से भरे जीवन में बहते हुए सपने देखते हैं।

ये सभी मार्ग को गलत समझते हैं, जैसा कि कई अन्य लोगों ने किया है: परमानंद का संकरा मार्ग ईश्वर के शाश्वत पुत्र के माध्यम से सीधे ले जाता है; और केवल वही व्यक्ति सुखी हो सकता है जो इस मार्ग पर चलता है।

जो इन सबसे ऊपर लंगर डाले हुए है, उसका भी सुखमय भाग्य है, यद्यपि उसे जीवन भर एक साधारण झोपड़ी में ही रहना पड़े, और जब वह इस आवरण को उतार फेंकेगा, तो वह एक उज्ज्वल अमर मुकुट धारण करेगा।

इंद्रधनुष।

बारिश थम गई है, और ऊपर का आकाश शांत और निर्मल है, सिवाय ऊपर से गिरती कुछ बूंदों के, रत्नों की तरह, हरियाली पर टिमटिमा रही हैं: और उत्तर दिशा में, काले आकाश में, इंद्रधनुष बादलों के ऊपर चमक रहा है; सूर्य अपनी महिमा में प्रकट हो रहा है, और लार्क पक्षी मधुरता से चहचहा रहे हैं।

वह भयानक उत्तरी आकाश कहता है कि ईश्वर ने अपने प्रतिशोध में एक बार क्रोधित होकर अपने द्वार खोल दिए, और हठी पापियों को डुबो दिया: वह जीवंत चमकीला दक्षिण और वह धनुष कहते हैं कि यह सारा भयानक प्रतिशोध समाप्त हो गया है; ये मुस्कुराते हुए चमकते रंग कहते हैं कि अब हम और बाढ़ में नहीं डूबेंगे।

वे मासूम दिन सदा धन्य हों, उनकी स्मृति मुझे सदा मधुर लगती है; जब अक्सर, मौन विस्मय में, मैं तुम्हें निहारता था! काले आकाश में नीचे उतरते हुए, तुम्हारे रंग हरी पहाड़ी पर चमकते थे, तुम्हें बिजली की तरह पकड़ने के लिए मैं उड़ता था, पर तुम मेरी पकड़ से बच निकलती थी।

एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी तक तुम्हारा मनमोहक दृश्य
तुम बदलते रहे — ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए,
मैं दौड़ा, जब तक कि अंत में हरियाली से,
तुम अचानक बादल में चले गए!
इस प्रकार, व्यर्थ सांसारिक प्रेत धोखा देते हैं
उन युवकों को जो बहुत उत्सुकता से पीछा करते हैं,
जब बर्बाद और बहुत दूर भटक जाते हैं,
भ्रम उनकी दृष्टि से ओझल हो जाता है।

उन शांतिपूर्ण दिनों में कोई चिंता नहीं थी, सिवाय मेरे खेल से उत्पन्न होने वाली चिंताओं के, मेरे प्यारे मेमने और खरगोश के, और उस रास्ते पर मैंने जो झोपड़ी बनाई थी। क्या मैंने कहा था कि कोई चिंता नहीं? आह! मैं गलत हूँ: बचपन भी चिंताओं से मुक्त नहीं है: दूर से मैं एक भयानक भीड़ देखता हूँ जो मुझ पर भयानक भाले लहरा रही है!

एक दिन—मुझे आज भी याद है—मैंने पास की पहाड़ी पर रहने वाले जोकर पर जो शरारतें की थीं, उनकी वजह से मेरी झोपड़ी को रौंदकर ज़मीन पर गिरा दिया गया। ऐसा दुख मुझे किसने महसूस किया होगा? ट्रॉय के राजा प्रियम को भी नहीं, जब

उसके सारे शान-शौकत वाले बुर्ज धराशायी हो गए।
और एक के बाद एक दुख मेरा भाग्य था: कुछ ही समय बाद, मेरा मेमना मारा गया; मेरा खरगोश, अपने घर से भटककर, मैदान में कुत्तों द्वारा पीछा किया गया। मेरी यादों के पन्नों पर अनगिनत विपत्तियाँ उमड़ रही हैं! तुम चाहे कितने ही तुच्छ क्यों न लगो, फिर भी एक बार मैं तुम्हारे लिए रोया था।
तो हे मूर्ख हृदय, शोक करना छोड़ दो; कोई भी अवस्था चिंता से मुक्त नहीं है: यदि तुम सच्ची खुशी पाना चाहते हो, तो आओ मेरे पीछे! और मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊंगा। परन्तु पहले, यहोवा के लिखे वचन को अपना मार्गदर्शक बनाओ; इसी से सच्चा मार्ग दिखाई देता है, जो एक गौरवशाली अंत की ओर ले जाता है।
हमारे लिए यह रास्ता कितना संकरा है! कितनी कठिन चढ़ाई हमारे सामने है! हे मूर्ख प्रेममय हृदय, तुम्हारे लिए चारों ओर चकाचौंध भरे प्रलोभन बिछे हैं। आसान ढलान वाले कितने संकरे रास्ते हमें सुखों में भटकने के लिए आमंत्रित करते हैं! जबकि शैतान, नर्कीय इरादों के साथ, हमें आज्ञा मानने का सुझाव देता है।
लेकिन झूठ के जनक पर भरोसा मत करो, वह तुम्हें व्यर्थ के सपनों से लुभाता है; उसका सुख छूते ही तुरंत मर जाता है, धारा पर नाचते बुलबुलों की तरह। जब शराब चमकती है, सोने के बर्तनों में लाल रंग की, तो उसे मत देखो; अंत में वह तुम्हारी शांति भंग कर देगी, और अंत में मृत्यु का द्वार खुल जाएगा।
लेकिन देखो! एक अस्वाभाविक रात अचानक आँखों पर छा जाती है; सूरज ने अपना सारा प्रकाश वापस ले लिया है, और आकाश पर एक काला गोला छा गया है! और सुनो! कैसी चीख हवा में गूंज उठी! अमर है वो भयानक ध्वनि! चट्टानें भयानक आँसू से फट गईं, और धरती बुरी तरह कांप उठी!
अपनी नींद से मुर्दे जाग उठे हैं, और अपने सड़े-गले क्षेत्र को छोड़कर, बेचारे दोषी मनुष्यों को कंपकंपा देते हैं, जैसे ही वे मैदान पर पीले होकर सरकते हैं! निश्चित रूप से, प्रकृति का अपना ईश्वर भी पीड़ित है, और प्रकृति पीड़ा में रो रही है; सूर्य शोक में लिपटा हुआ है, आकाश के माध्यम से दुखद समाचार सुनाने के लिए!
फिर भी निश्चय ही कुछ विजय प्राप्त हुई है, महत्वपूर्ण, नवीन और महान, क्योंकि मृत्यु ने अपने बंदियों को जंजीरों से मुक्त कर दिया है, और अपना द्वार खोल दिया है! हाँ, ऐसी महान विजय जो ईश्वर नरक, मृत्यु और पाप पर प्राप्त कर सकता है, यह क्षण हमारे क्रूस पर चढ़ाए गए राजा यीशु के रक्त से प्राप्त हुआ है।

लेकिन सारा भयानक संघर्ष समाप्त हो गया है; देखो! बादल एक के बाद एक छंटते जा रहे हैं; और स्वर्ग, पहले की तरह शांत, दिन के उजाले में खिल उठा है! और चारों ओर का सारा सुंदर परिदृश्य, रात के सागर से निकला है, उपवनों, जंगलों और गांवों से सुशोभित, विस्मित और आनंद से भर देता है!

लेकिन देखो! जहाँ वह भीड़ तितर-बितर हो जाती है, वहाँ तीन सूली दुखद दृश्य दिखाती हैं! हमारे मार्गदर्शक ने हमें गुमराह नहीं किया है; हृदय! यही वह रहस्य है जिसे तुम जानोगे — दो चोर और एक सूली पर चढ़ाया हुआ ईश्वर बुरी तरह से क्षत-विक्षत होकर लटका हुआ है! जबकि उसकी नसों से खून बह रहा है, हरे रंग को बैंगनी रंग में रंग रहा है!

देखो! लाल बाढ़ बहती जा रही है, और नीचे एक कुंड बना रही है, जिसे इमैनुएल के गीत में अशुद्धता और दुःख का स्रोत कहा गया है। उस अनमोल धारा में लीन होकर, आत्मा शीघ्र ही अपने दागों को मिटा देती है, यद्यपि वे गहरे लाल रंग से भी गहरे रंगे होते हैं, और अपने दुखों और पीड़ाओं से मुक्त हो जाती है।

यह झरना तुम्हारे लिए खुला है: जाओ, बिना पैसे या कीमत के धो लो; और तुरंत नए सिरे से बन जाओगे, पल भर में तुम्हारे सारे दुख दूर हो जाएंगे। तो हे मूर्ख हृदय, पछताना बंद करो, कोई भी अवस्था चिंता से मुक्त नहीं है; यदि तुम सच्ची खुशी पाना चाहते हो, तो वह कलवारी पर है - वहीं उसकी तलाश करो।

शीत ऋतु की रातों में ध्यान।

कठोर सर्दी आ गई है, आसमान बादलों से घिरा है, रात ठंडी है और हवा तेज़ चल रही है, बर्फ़ तेज़ी से बरस रही है, पथरीली ज़मीन पर तेज़ी से सफ़ेद होती जा रही है। उनके टूटे-फूटे घर उनके कांपते सिरों पर डगमगा रहे हैं, उनका भाग्य कठिन है: दीवारों और दरारों वाले दरवाजों से हवा बह रही है, बर्फ़ ज़मीन पर गिर रही है, जहाँ

टिमटिमाते अंगारे मुश्किल से चमक रहे हैं, और रोशनी केवल यह दिखा रही है कि क्या गहरी आह भरवा सकता है, और आँखों से आँसू निकलवा सकता है। दया की दृष्टि।

तुम वहाँ एक दयनीय जोड़े को देख सकते हो,
श्रम, दुःख और चिंता से थके हुए:
जिनके नग्न बच्चे, भूखे मन से,
ठंड से शिकायत करते हैं और भोजन के लिए रोते हैं;
जबकि आँसू माँ के गालों को भिगो देते हैं,
और आहें पिता के दुःख को बयां करती हैं;
आग या वस्त्र, बिस्तर या भोजन,
उनकी उजाड़ झोपड़ी वहन नहीं कर सकती।

क्या कोई दयालु हाथ राहत नहीं देगा, और शोक के आँसू नहीं पोंछेगा? एक छोटा सा वरदान जो दिया जा सकता है, वह आनंद जगाएगा, उनकी चिंता दूर करेगा, रात की कठोरता को कम करेगा और हर दिल को गर्म करेगा - एक उज्ज्वल उपलब्धि। हाँ, यह उससे कहीं अधिक उज्ज्वल है जो किसी राजसी वंश के इतिहास को सुशोभित करता है, जहाँ राजा एक विशाल साम्राज्य प्रदान करते हैं, लेकिन उतना ही फिर से प्राप्त करने के लिए, या यहाँ तक कि सबसे पवित्र कानूनों को भी भ्रष्ट करने के लिए, या व्यर्थ प्रशंसा की हवा को हवा देने के लिए।

उस व्यक्ति को शांति मिले जो अपना सिर झुकाकर सबसे दयनीय झोपड़ी में प्रवेश करता है: जो अपनी विनम्र मुस्कान से गरीबों की झिझक और भय को दूर करता है: जब तक कि सभी प्रोत्साहित होकर जल्द ही अपने दुखों के विभिन्न कारणों का खुलासा नहीं कर देते — मार्मिक कहानी उसका हृदय पिघला देती है: वह उदारतापूर्वक ईश्वर के दान का एक हिस्सा प्रदान करता है। ऊपर से, प्रेम भरी मुस्कानों के साथ, स्वर्ग की स्वीकृति से, दृष्टि प्रवाहित होती है, और चमकते आकाश से होकर महान अभिलेखन देवदूत उड़ता है, दया के द्वार खोलने के लिए, और सुनहरे अक्षरों में कर्म लिखने के लिए; वहाँ, यदि विश्वास के सुंदर वृक्ष का एक फल, अनंत काल तक चमकता रहे, उस परम पूजनीय के सम्मान में, जिसके पास सिर रखने की भी जगह नहीं थी, फिर भी उसने मीठी दया का द्वार खोल दिया, उन सभी निर्जन और गरीबों के लिए, जो अपराधबोध और कठोरता से व्याकुल हैं। उत्पीड़ित होकर, उन्होंने

उसके साथ होने और आराम पाने के लिए कराह की।
अब, शहर की चारदीवारी के भीतर कैद, वे रंगमंच और हॉल में उमड़ते हैं, जहाँ हावभाव, नज़र और शब्द मिलकर मन को दूषित करते हैं, वासनाओं को भड़काते हैं; जहाँ से पाप से दूषित धाराएँ बहती हैं, जो चारों ओर देश को डुबो देती हैं। आह! यदि तुम यहाँ हो, तो अपनी आँखें बंद कर लो और कान बंद कर लो; अपने पंखे का विरोध करो, नीचे झाँको मत, और शर्म से उनकी दूषित साँसों से बचो।
यहां हर लंपट अपनी कला का प्रदर्शन करता है, भोले-भाले दिलों को अपने जाल में फंसाने के लिए। वेश्या, विश्वासघाती मुस्कान के साथ, निर्दयता से अपने छल-कपट का खेल खेलती है। उसके साहसी हाव-भाव और घूरती आंखें, दखलंदाजी भरी बातें और तीखे जवाब, और निर्लज्ज मुखौटा और जिद्दी लहजा, उसके सारे स्वाभाविक सद्गुणों के त्याग को दर्शाते हैं। उसी के द्वारा नासमझ युवक को ले जाया जाता है, कंगाल, अपमानित या मारा जाता है। उसी के कारण विवाह की प्रतिज्ञाएं टूट जाती हैं, और कौमार्य भंग हो जाता है। जुए। रोग आते हैं, विनाश होता है, जहाँ कहीं भी उसकी जहरीली साँस महसूस होती है; जबकि वह, बेचारी, उस ज्वाला में मर जाती है जो उसके दूषित शरीर से होकर गुजरती है।
एक समय वह कोमल, सुंदर और दयालु थी, किसी भी तरह की बहकाने वाली योजनाओं में उसकी रुचि नहीं थी, गंदी कहानी सुनकर वह शर्म से लाल हो जाती थी, और कभी भी पहाड़ी या घाटी पर नहीं घूमती थी, बल्कि एक प्यारी घरेलू नौकरानी की तरह रहती थी, अपने बूढ़े माता-पिता की सहायता करने के लिए - और वे अक्सर उसे निहारते और मुस्कुराते थे, अपनी इस प्यारी और इकलौती संतान पर: उन्होंने सोचा कि वे उसमें धन्य हो सकते हैं, और वह उन्हें शांति से आराम करते हुए देखेगी।
दरबारी स्वभाव वाला एक प्रसन्नमिजाज युवक अक्सर इस ग्रामीण रानी से मिलने आता था: उसकी मीठी ज़ुबान और धूर्तता ने जल्द ही मारिया का कोमल हृदय जीत लिया। वृद्ध दंपति को भी वह युवक पसंद आया, और उन्होंने उसे केवल प्रेम और सत्य समझा। अंततः गाँव का भोज आ गया; मारिया उस युवक के कारण बर्बाद हो गई: युवक चला गया - उसकी प्रसिद्धि भी चली गई; और उसके साथ ही उसकी सारी शर्म भी चली गई: और अब वह उसी कला का अभ्यास करती है जिसने उसके भोले-भाले साथी को फंसा लिया था। हृदय; और बुराई, अपने बढ़ते प्रभाव से, उसे हर दिन और कठोर बनाती जा रही है। अच्छाई से विमुख और बुराई की ओर प्रवृत्त, और बहकाने

की कला में निपुण; मानो उसकी आँखें पिघल जाएँगी; ऐसा लगता है जैसे वह ऐसा प्रेम दिखा रही है जो उसने कभी महसूस नहीं किया; उठती हुई आह को आधा दबाना; यंत्रवत रोना और विलाप करना; शाश्वत सत्य की प्रतिज्ञा करना, और फिर अपनी प्रतिज्ञा तोड़ना, और फिर से प्रतिज्ञा करना; उसके मार्ग अंधकार, मृत्यु और नरक हैं; पश्चाताप, शर्म और वासनाएँ। गिर पड़ी, और क्षणिक आनंद, अंतहीन दर्द के साथ, एक उदास कतार में उसका पीछा करता है।

हे सुंदर ब्रिटेन, हे द्वीपों की रानी! न तो शत्रुतापूर्ण हथियार और न ही शत्रुतापूर्ण छल तेरे मजबूत सिंहासन को हिला सकते थे, लेकिन तेरे पापों के कारण। तेरे पाप ही तुझे अपना शाही सिर झुकाने पर मजबूर कर सकते हैं, और तुझे मृतकों के साथ लिटा सकते हैं। विशाल इंग्लैंड व्यर्थ ही भारी शक्ति से अपने शत्रुओं को कुचलता है; सुंदर स्कॉटिया व्यर्थ ही साहस और हाइलैंड के गौरव से भरी हुई अपनी तीक्ष्ण तलवार को भयानक सीटी के साथ घुमाती है और कांटेदार पौधों की तरह सिर काट देती है; दूर-दूर तक प्रसिद्ध बहादुर एरिन, युद्ध की प्रज्वलित वज्र, जीवन से भरपूर, रक्तपात करती है। वेड, अपनी बहन राज्य की सहायता करने के लिए: हमारी विजय की गर्जना व्यर्थ ही गर्जना करती है गैलिक तट के चारों ओर भयानक; सबसे गहन राजनेता व्यर्थ ही योजना बनाते हैं - यह सब एक व्यर्थ, भ्रामक सपना है, यदि हम अपने भीतर विश्वासघात से पाप को बढ़ावा देते हैं, जो एक घातक महामारी है।

जहां पाप की भरमार होती है, वहां धर्म मर जाता है, और सद्गुण अपने मूल आकाश की ओर लौट जाता है; पवित्र अंतरात्मा शर्म से छिप जाती है, और सम्मान मात्र एक खोखला नाम रह जाता है। फिर, बाढ़ की तरह, भयानक शोर के साथ, एक उदास सेना उमड़ पड़ती है। सबसे पहले रिश्वतखोरी, अपनी सुनहरी ढाल के साथ, मैदान पर सुचारू रूप से भ्रष्टाचार फैलाती है; उग्र फूट, लहराते भाले के साथ, और अराजकता पीछे-पीछे आती है: जबकि चिंता और दुःख, शोक और पीड़ा खून से लथपथ मैदान पर चीखते हुए दौड़ते हैं। मैदान।

हे प्रभु, जिनकी अदम्य शक्ति असीम संपूर्णता को भर देती है, उन बुराइयों को दूर करो जिनके हम पात्र हैं: उन पापों को दूर करो जो हमारे प्राणों को वश में करते हैं; अपनी सर्वशक्तिमान ढाल से हमारी विजय की रक्षा करो, चाहे मैदान हो या जल, उस समय को घुमाओ जब शांति ब्रिटेन के अत्यंत प्रिय द्वीप पर मुस्कुराएगी; जब सभी लोग महान शाश्वत राजा, आपकी जयजयकार करेंगे!

लेकिन सुनो! वह भयानक, तेज़ सीटी बजाती हवा! इसकी विनाशकारी लहर याद दिलाती है अशांत गहरे समुद्र के खतरों की; जहाँ, भयंकर और गरजते हुए, हवाएँ बेकाबू होकर गरजती हैं, और पहाड़ी लहर को भयानक उछाल और भयंकर घुमाव के साथ आगे बढ़ाती हैं! जबकि चक्करदार भंवर में ऊपर लटकी हुई, या समुद्र की तलहटी में गिरती हुई, बिना किसी सहारे के टूटी हुई नाव भयानक खतरों से गुज़रती है। चमकता हुआ प्रकाशस्तंभ इशारा करता है... रास्ता, और तेज़ पंप ज़ोर से खड़खड़ाहट करते हैं: यह पर्दा नहीं उठाता - सुनो! ज़ोरदार झटके के साथ वह ठोस चट्टान से टकराकर कांप उठी है, या भयंकर, निरंतर लहरों से हज़ारों टुकड़ों में टूट गई है; या अपने पागल किनारे पर उफान मारते हुए, गरजती हुई शत्रुतापूर्ण लहर को अंदर आने देती है, और वह डूब जाती है! - विजयी गर्जना हवाएँ, और उसकी जलमयी कब्र को बंद कर देती हैं!

व्यापारी की चिंता और परिश्रम व्यर्थ है, उसने अपनी आशाओं को सागर में दफना दिया है — माँ की आँसू भरी आँखें व्यर्थ ही अपनी एकमात्र शेष खुशी की तलाश करती हैं — सुंदर सुसान व्यर्थ ही किनारे पर चलती है, और उसके लिए आहें भरती है जिसे वह अब कभी नहीं देख पाएगी — क्योंकि वे सागर की गहराई में पड़े हैं, और एक जलमयी कब्र में सड़ रहे हैं।

अब, झागदार, गरजते हुए समुद्र से, मेरे ध्यान मैदान की तलाश करते हैं, जहाँ, एक तेज़, काल्पनिक उड़ान के साथ, वे रात के क्षेत्रों को खंगालते हैं, उन हवाओं की तरह स्वतंत्र जो बेतहाशा बहती हैं, पहाड़ियों और घाटियों पर चकाचौंध कर देने वाली बर्फ, या, जंगलों के माध्यम से, उनकी मस्ती, और घूमते हुए, धूल भरे रास्ते को साफ करते हैं, जब गर्मी जलती हुई चमक के साथ चमकती है, और चंचल हवाएँ हवा को छूती हैं, और महासागर की कांच जैसी छाती को हवा से नरम घुमाव दिया जाता है।

लेकिन ग्रीष्म ऋतु चली गई, और शीत ऋतु आ गई —
लोहे के राजदंड से वर्ष पर शासन करता है —
इस अंधकारमय, निर्जीव आकाश के नीचे
कितने ही यात्री बेहोश होकर मर जाते हैं!
एक, विश्वासघाती बर्फ पर उछलता हुआ,
नीचे फैले गड्ढे में डूब जाता है!
दूसरा सुन्न होकर, हांफते हुए उठान के साथ,

दम घोंटने वाली हवा में सांस लेता है!
और रेंगती हुई ठंड, अकड़ते बल के साथ,
तीसरे को, एक पीले शव को, फैला देती है!
इस प्रकार मृत्यु, अनेक भयानक रूपों में, तूफ़ान में विजयी होकर आती है: भयावह दृश्यों से दृष्टि को झकझोर देती है, और उस भयानक रात को और भी उदास बना देती है! कितना धन्य है वह मनुष्य, जिसका भाग्य ऐसे कष्टों और दुखों से मुक्त है; जो अपनी धधकती आग के पास बैठा है, गर्म वस्त्रों में लिपटा हुआ; जिसके चमकते गिलास आनंदमय शक्ति और उत्तम स्वाद वाली शराब से भरे हैं; जिसका घर, सुगठित और मजबूत, क्रोधित मृत्यु के प्रकोप का सामना करता है। आकाश!
तेज़ हवाएँ भले ही अपनी आखिरी साँसें लें,
और बर्फ़बारी अपने झोंके के साथ आती है;
और पाला अपने बर्फीले टुकड़े बिखेरता है,
लेकिन भीतर सब कुछ वसंत की तरह सौम्य है!
वह कितना धन्य है! — क्या मैंने धन्य कहा?
यहाँ तक कि दुख भी अक्सर अपना रास्ता खोज लेता है।
बार-बार उपयोग से इंद्रियाँ सुन्न हो जाती हैं,
स्वर्ग के आशीर्वादों के आपराधिक, बेतुके दुरुपयोग से,
वे उदासीन हो जाती हैं,
और जीवन दुख का एक स्वप्न मात्र रह जाता है।
आराम की गोद में पलने-बढ़ने से अक्सर कष्ट और भयंकर रोग पनपते हैं, और घबराहट भरी सनकें एक भयानक टोली बन जाती हैं, जो शारीरिक पीड़ा से कहीं अधिक पीड़ा देती हैं। अक्सर सोना और चमकीला वंश केवल शानदार दुख ही साबित होता है। जो राजा अपने सिंहासन पर बैठा है और घुटने टेकती दुनिया को अपना कहता है, उसके पास अक्सर चिंताओं का बोझ उससे कहीं अधिक होता है जो लोहे की छड़ी का सामना करता है।
कोई भी अवस्था चिंता और पीड़ा से मुक्त नहीं है जहाँ उग्र भावनाओं का बोलबाला हो, या सुख-सुविधाओं से भरी कोमल भोग-विलास हजारों कष्टों को जन्म दे; जहाँ पवित्र धर्म, स्वर्ग की कन्या, ने अपनी सहायता को ठुकरा दिया हो; उसकी अतुलनीय शक्ति इच्छा को वश में कर लेती है और विवेक को स्पष्ट करती है; वास्तविक आनंद

के किसी भी स्रोत से इनकार नहीं करती और हमें असीम आशीर्वाद प्रदान करती है; हमारा भविष्य उज्ज्वल होता है, हमारा सहारा बनता है, दिसंबर मुस्कुराते हुए मई में बदल जाता है; और हमें उस शांतिपूर्ण अवस्था में ले जाता है किनारा, अब उग्र लहरों से नहीं टकराता, जहाँ अनंत सुख रहता है, और एक शाश्वत ग्रीष्म ऋतु का राज रहता है।

एक महिला को उनके जन्मदिन पर भेजी गई कविताएँ।

आनंदमय दिन आकाश को रोशन करता है जो हर चिंता और दुख को अनंत रात की छाया में उड़ा देता है: यहाँ तक कि जमी हुई उम्र भी, सामाजिक उल्लास की आग में पिघलकर, युवा इच्छाओं को महसूस करती है, और नए आनंद का स्वाद लेती है।
विचारशील मन से आपके प्रिय माता-पिता, खुशी के आँसू के बीच मुस्कुराते हुए, आपकी उचित स्वीकृति देते हैं। जैसे ही प्रत्येक व्यक्ति आनंदमय शराब का गहरा घूंट लेता है, आपका उत्तम स्वास्थ्य और सौम्य रूप आपके लिए स्वर्ग में भेजा जाता है।
लेकिन मुझे फुसफुसाने दो, प्यारी सुंदरी, यह खुशी जल्द ही चिंता में बदल सकती है, और दुख इस दिन को घेर सकता है; बहुत जल्द तुम्हारी चमकीली नीली आँखें, और लाल रंग के मखमली होंठ, फीके पड़ सकते हैं, मुरझा सकते हैं।
जैसे कुंवारी बर्फ पर खून की बूँदें,
वैसे ही लिली गुलाब से प्रतिस्पर्धा करती है,
तुम्हारे गड्ढों वाले गालों पर;
लेकिन आह! आलसी कुंडली में लिपटा कीड़ा
जल्द ही इस सड़े हुए अवशेष पर हमला कर सकता है,
या घिनौने ढंग से उछल सकता है।
प्यार में डूबे प्रेमी मीठी-मीठी बातें लेकर आते हैं, और आहों से भरी हवा को भर देते

हैं, और प्रेम में पागल होकर बड़बड़ाते हैं: लेकिन सुनो, सुंदर कन्या! वे जो भी कहें, तुम तो बस मिट्टी का एक साँस लेता हुआ पिंड हो, जो कब्र के लिए तेजी से पक रहा है।

देखो समय कितना चोर रहा है! तुमने पूरे अठारह ग्रीष्मकाल देखे हैं, और फिर भी वे एक दिन जैसे लगते हैं? समय के शीशे में संचित पूरे वर्ष, मौन में कितनी जल्दी बीत जाते हैं, और तुम्हारा जीवन चुरा लेते हैं!

बीतते घंटे को कोई रोक नहीं सकता, न ही बीते हुए एक पल को याद कर सकता है। और इससे भी अधिक भय क्या हो सकता है कि कल तुम्हारा अपना नहीं है? तो जल्दी करो! और इससे पहले कि तुम्हारा जीवन बीत जाए, सूक्ष्म घंटों को बचा लो।

मैं जो गाता हूँ उस पर ध्यान से सुनो: समय सदा उड़ता रहता है; कोई भी उसकी उड़ान को रोक नहीं सकता; फिर, जैसे कोई तीर्थयात्री गुजरता है, समय के उड़ते रहने के साथ ही इस संकेत को घर ले जाओ, "सारी सांसारिक वस्तुएँ व्यर्थ हैं।"

यहां किसी भी बात से तुम्हारा मन प्रसन्न न हो, न ही एक पल के लिए भी तुम्हारा विश्राम भंग हो, स्वर्गीय ज्ञान में वृद्धि करो: अपना लंगर ऊपर ही स्थिर रखो, जहाँ यीशु असीम प्रेम में राज करता है, और आनंद की धाराएँ बहती हैं।

इस प्रकार तुम्हारा जीवन सुचारू रूप से बहता रहेगा, बिना आँसू बहाए, बिना आह भरे, और शुद्धतम आनंद प्रत्येक जन्मदिन को सुशोभित करेगा, जैसे-जैसे वर्ष बीतता जाएगा, जब तक यह नश्वर शरीर विलीन नहीं हो जाता, और आत्मा को मुक्त नहीं कर देता।

तब तुम कनान के तट पर उतरोगे, जहाँ समय और संयोग का कोई अस्तित्व नहीं होगा, और शाश्वत आनंद का राज होगा; वहाँ, उज्ज्वल देवदूतों के साथ मिलकर, और दिव्य प्रकाश के वस्त्रों में सजे हुए, तुम दिव्य गीत गाओगे।

आयरिश केबिन।

यदि गरीबी, विनम्र और स्वच्छ, प्रस्तुत किए जाने पर कभी प्रसन्न करती है, चाहे भूरी बंजर भूमि पर बनी झोपड़ी, या हरी-भरी, आपको कुछ आकर्षक प्रकट करती है, यदि एरिन का जंगली वीणा मेरे जैसे हाथों से छूने पर कानों को सुख देता है, तो कृपया ध्यान से पास आएं, और प्रत्येक पंक्ति पर निष्पक्षता से विचार करें।

एक दिन, जब दिसंबर की तीव्र हवा ने मधुर बहती धारा को रोक दिया, और प्रकृति मानो मृत्यु में जम गई हो, तब मैं चिंतनशील होकर पहाड़ी पर टहलने लगा: उमड़ते बादल गुस्से में थे, पहाड़ बर्फ से ढके थे, और सर्दियों ने अपना भूरा आवरण नीचे के परिदृश्य पर फैला दिया था।

घाटी में दूर-दूर तक फैले किसानों के कदमों की तेज़ खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी; झीलों, दलदलों और कीचड़ भरे इलाकों से जंगली पक्षी तेज़ हवा में उड़ते हुए ज़ोर-ज़ोर से चहचहाते और चीखते हुए सुनाई दे रहे थे, जबकि गरजती तोपों ने दिन का स्वागत किया, और खरगोश झाड़ियों में अकेले भटक रहे थे, या घायल होकर इधर-उधर भाग रहे थे।

उपवन में कोई संगीत सुनाई नहीं दे रहा था, ब्लैकबर्ड, लिनेट और थ्रश, गोल्डफिंच और मीठी गुटरगू करने वाली कबूतर, झाड़ियों में चुपचाप उदास बैठे थे: वे पत्ते जो कभी हरी छाया बुनते थे, जमीन पर ढेर में मुरझाए पड़े थे: ठंडी सर्दी उपवन, जंगल और मैदानों में चारों ओर उदासी और वीरानगी फैला रही थी।

लेकिन अब तेज़ उत्तरी हवा सीटी बजाने लगी, और झोंकों के साथ आकाश में बहने लगी; हर बाल जम कर एक कांटे की तरह खड़ा हो गया, और रात आँखों के सामने तेज़ी से घनी हो गई। बर्फ़ तेज़ी से घूमते हुए भंवरों में गिरने लगी, आपस में मिलकर तेज़ी से बहने लगी, और जल्द ही सारे भेद मिट गए, क्योंकि सफ़ेद बर्फ़ ने मैदान को ढक लिया।

एक प्रकाश, उसकी पीली किरणें हल्की सी चमक रही थीं (बर्फ के टुकड़ों ने उसकी चमक को क्षीण कर दिया था), यह पास की एक झोपड़ी से आ रही थी, कुछ लोग इसे मॉर्न की झोपड़ी कहते थे: एक साफ-सुथरी आयरिश झोपड़ी, बर्फ से सुरक्षित, अच्छी तरह से छप्पर वाली, एक अच्छा मिट्टी का फर्श, छत के बीच में एक चिमनी, एक खिड़की और एक कुंडी वाला दरवाजा।

निर्मम तूफान से बचकर, मैं उस साधारण से आश्रम में पहुँचा; इमारत छोटी और

गर्मजोशी से भरी थी, उसका फर्नीचर सादा और साफ-सुथरा था। और अब, प्रिय पाठक, उस उत्साह को महसूस कीजिए जो हर किसी के दिल में था, क्योंकि हमारे दयालु कुटीरवासियों ने अपने मेहमान का सत्कार करने और उसका स्वागत करने का भरसक प्रयास किया।

महिला फुर्ती से अपने चरखे से उठी, और उसने धूल झाड़ दी: उसकी बेटी ने चरखा छोड़कर, राख उड़ाने के लिए तेज़ी से दौड़ लगाई: चूल्हे पर बैठे बच्चे बिना किसी शिकायत या भौंहें चढ़ाए उछल पड़े, जल्दी से एक ओक की चौकी लाई गई, और मुस्कुराते हुए मुझे बैठने के लिए कहा।

जब मेरे सारे प्यारे हृदय में आनंद की कृतज्ञतापूर्ण भावनाएँ उमड़ पड़ीं, तब प्रत्येक पूर्व कार्य फिर से शुरू हो गया, और खुशहाल मितव्ययी व्यवस्था बहाल हो गई: लौ कोने तक टिमटिमा उठी, दरवाजे के पास रील फिर से खटकने लगी, औरत ने कोने में अपना पहिया घुमाया, और फर्श पर प्यारे बच्चों को छेड़ा।

खलिहान के परिश्रम से मुक्त होकर, उसकी मितव्ययी, प्रसन्न पत्नी ने पिता का स्वागत किया, और अपने कोड़े को उसके धागे से लटकाकर, उसने अपनी कुर्सी आग के पास खींच ली; फिर अपने माथे को हाथ से सहलाते हुए, मानो वह दुख को दूर भगाना चाहता हो, उसने कहा, "आइए हम ईश्वर की आज्ञा का पालन करें, और कल की चिंता कभी न करें।"

मुस्कुराते हुए उसे घुमाते हुए,
और कला से अछूती स्वतंत्रता,
और मिलनसार शिष्टाचार और शैली,
हालांकि सरल, जो मेरे दिल को छू गई,
उसने कहा (जबकि वह उत्साह से चमक रहा था),
"महोदय, हम गरीब हैं, फिर भी हम धन्य हैं:
हम सभी उस खड़ी, संकरी सड़क पर हैं
जो विश्राम के शहर की ओर जाती है।

"यह सच है, मुझे सारा दिन परिश्रम करना पड़ता है, और अक्सर रात भर ठंड सहनी पड़ती है, हालाँकि मेरे बाल सफ़ेद हो गए हैं, और मेरी दृष्टि धुंधली होती जा रही है: और कभी-कभी हमारे वस्त्र और भोजन कम होते हैं - आह! वास्तव में बहुत कम: लेकिन सब मिलकर भलाई करते हैं, इसलिए मैं अपनी पवित्र बाइबिल में पढ़ता हूँ।

“मैंने उस पुस्तक में यह भी देखा है (शायद आप मुझे वह स्थान बता सकते हैं?) कि कैसे ईश्वर गरीब पापियों पर दया दृष्टि डालते हैं और उन्हें अपनी कृपा प्रदान करते हैं—हाँ, उन्हें भरपूर कृपा प्रदान करते हैं, जो उन्हें हर तरह से सहारा देती है, भले ही मुसीबतें उन्हें पूरी तरह से घेर लें; और निश्चित रूप से यह मधुर वादा सच है!”

“हाँ, यह सच है जैसे बाहर बर्फ गिरती है, और हवाएँ तेज़ सीटी बजाती हैं, उसकी कृपा हर संदेह को दूर कर सकती है, और निराशा के काले अंधकार को दूर भगा सकती है: यह अक्सर मेरे कमजोर मन को सहारा देती है, और मेरी आँखों से नमकीन आँसू पोंछ देती है, यह मुझे बताती है कि यीशु दयालु है, और मेरे जैसे पापियों के लिए मर गया।”

“एक समय मैं धन-दौलत में डूबा रहता था, लेकिन मेरे हिस्से में सुख कभी नहीं आया, जब तक कि मसीह ने मुझ पर दया नहीं दिखाई, और अब मैं एक कुटिया में धन्य हूँ: यह अच्छी तरह से जानते हुए कि सांसारिक चीजें व्यर्थ हैं, उनकी परेशानियाँ मुझे कभी परेशान नहीं करतीं; यह विश्वास करते हुए कि मरना लाभ होगा, मैं कब्र को अपना बिस्तर मानता हूँ।”

मैं कब्र को अपना बिस्तर मानता हूँ, जहाँ मैं क्षणिक घंटों को सोकर बिताऊँगा, जब तक कि मृत आत्माएँ अपनी नींद से जागकर फिर से न उठ जाएँ, और कभी क्षय न हों: तब मैं, अपने बच्चों और पत्नी के साथ, ऊपर एक उज्ज्वल महल में रहूँगा, और अनंत जीवन से परिपूर्ण होकर, प्रेम के स्वर्ग में निवास करूँगा।

“तो हे अजनबी, जान लो, यद्यपि हम गरीब हैं, फिर भी हम प्रसन्न, संतुष्ट और धन्य हैं; यद्यपि राजकुमार हमारे द्वार से गुजरें, फिर भी राजा यीशु सदा हमारे अतिथि हैं; हम अपने प्रभु से प्राप्त होने वाले सुखों को महसूस करते हैं, उनका स्वाद लेते हैं और उन्हें देखते हैं; और निर्भीक, धनी और स्वतंत्र होकर हम उनके वचन के आनंद पर जीते हैं।”

वह रुक गया: और खुशी का एक बड़ा आंसू चमकता हुआ जमीन पर लुढ़क गया; जबकि सभी ने अपना काम छोड़कर गहरी चुप्पी में डूब गए; एक मधुर, गंभीर विराम लंबा चला - प्रत्येक हृदय आनंद से भर गया; फिर दिव्य वार्तालाप फिर से शुरू हुआ, और रात के नीरस समय को मोह लिया।

हमने उस ऊबड़-खाबड़ संकरे रास्ते की बात की जो विश्राम के राज्य की ओर ले जाता है; पिस्गाह पर हम खड़े होकर राजा को उनकी पवित्रता में सजे हुए देखने लगे —

यहाँ तक कि यीशु, क्रूस पर चढ़ाए गए राजा, जिनका लहू गहरे लाल रंग में बहता है, पाप के लाल रंग को धोकर उसे बर्फ से भी अधिक सफेद कर देता है।

लेकिन धीरे-धीरे यह बीतता जाता है, और वे खुशी-खुशी रात का खाना लाते हैं, नरम आलू और हेरिंग, और झरने से ताजा पानी। वे दबाते हैं, और मुस्कुराते हैं: हम बैठ जाते हैं; पहले प्रेम के पिता से प्रार्थना करते हैं, हमारी मेज को आशीर्वादों से सजाएँ, और हमें ऊपर से रोटी से तृप्त करें।

धनी और अहंकारी लोग उपहास कर सकते हैं, विलासिता के व्यंजनों से घृणा कर सकते हैं, गरीब झोपड़ीवासी की खुशी से नफरत कर सकते हैं और अपनी इच्छाओं की गर्मी में पिघल सकते हैं। लेकिन विलासिता के पुत्र अभागे होते हैं, प्रत्येक मदहोश इच्छा के शिकार होते हैं, और इसलिए, जहाँ उन्हें कभी आराम नहीं मिलता, वे बुझने वाली आग में डूब जाते हैं।

लेकिन गरीब झोपड़ी वाले का भाग्य ऐसा नहीं है, जो सिय्योन की ओर जाने वाले मार्ग पर चलता है, वह अपनी साफ-सुथरी छोटी सी कुटिया में धन्य है, वह ईश्वर की कृपा से समृद्ध है; विश्वास से वह हर लहर पर विजय प्राप्त करता है जो इस संकट के सागर पर उमड़ती है: विजयी होकर वह कब्र में गोता लगाता है, आनंद के सागर पर उठने के लिए।

अब रात का भोजन समाप्त हो गया है और हम प्रकाश के पिता से प्रार्थना करते हैं और आनंदपूर्वक उनकी स्तुति गाते हुए, प्रेमपूर्वक उन्हें शुभ रात्रि कहते हैं। — धरती सफेद है, आकाश बादलों से रहित नीला है, हवा तेज़ी से बह रही है, तारे मेरी दृष्टि में चमक रहे हैं, जैसे ही मैं अपने घर की ओर बढ़ता हूँ।

हे मेरी प्यारी कुटिया, तुम्हें शांति मिले! न सोचो कि मैं तुम्हारा अपमान करूँगा; जो भी मेरी कविताएँ पढ़ेगा, उसे 'केबिन ऑफ मोर्न' के बारे में पता चलेगा; और अगर मेरे पास केवल मधुर धुनें होतीं, तो भले ही तुम अपनी स्थिति में विनम्र और साधारण हो, तुम्हें तब तक मुस्कुराना चाहिए जब तक दुनिया बनी रहे, जो सुंदर आयरिश राष्ट्र का गौरव है।

मित्रता में, प्यारी एरिन, तुम दमकती हो; नाराज़ होने पर तुम तुरंत क्षमा कर देती हो; तुम्हारा साहस हर शत्रु को ज्ञात है, फिर भी शत्रु तुम्हारी उदारता पर जी सकते हैं। कुछ गलतियाँ तुम्हें स्वीकार करनी होंगी; मतभेद, उतावला उत्साह, और बेलगाम फिजूलखर्ची, जो तुम्हारी आमदनी और समृद्धि के लिए बहुत बढ़ गई है।

आह! एरिन, यदि तुम महान बनो, और सुखी, धनी और बुद्धिमान बनो, और अपने दुखों को कुचल दो, आनंदित हो जाओ, हमारे झोपड़ी वाले के पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा करो; तो त्रुटि और बुराई का नाश होगा, और सद्भाव प्रसिद्धि में आनंद जोड़ देगा, और तुम दिन से भी अधिक चमकोगी, सुंदर ब्रिटिश ताज का रत्न।

रेव. जे. गिलपिन को, उनके द्वारा "पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" के बेहतर संस्करण के लिए।

जब, आदरणीय महोदय, आपका यह उत्तम विचार, हमारे तीर्थयात्री को गंभीर रूप से सुसज्जित करने का, और उसे सौम्य भाव और चाल प्रदान करने का, पहली बार मेरे कानों तक पहुँचा, तो उसके अनिश्चित भाग्य ने मेरे मन को भय से व्याकुल कर दिया, मेरे डर को जगा दिया और मेरी नींद भंग कर दी। फिर भी, यदि इंग्लैंड ने कहा होता, “आप स्वतंत्र हैं, आप जिसे चाहें चुन सकते हैं,” प्रिय महोदय, तो मैं अपने तीर्थयात्री को शालीनता के अनुरूप वस्त्रों के लिए ले जाता।
लेकिन जब मैंने उसे बार-बार देखा, और उसके द्वारा पहने गए वस्त्रों की बारीकी से जांच की, और उसके हावभाव और चाल को देखा, और उसे पाप को कुचलते हुए, उत्साहित होते हुए देखा, और उसे बोलते हुए सुना, हालांकि वह कर्कश और सरल था, और उसने अपने शक्तिशाली सत्यों को घबराहट भरे लहजे में कहा, तो मैं आपके स्वीकृत अच्छे इरादे के लिए अपनी सहमति प्राप्त नहीं कर सका।
मुझे डर था कि कहीं ईमानदार जॉन, जब वह अपने सुसंस्कृत पुत्र को देखेगा (यदि संतों को सांसारिक रूप से जानने की परवाह हो), तो कहीं उसे बॉन्ड स्ट्रीट का कोई सुंदर व्यक्ति न समझ ले, या उस चीज़ को—जिसका कोई नाम नहीं है—जो सत्य, समझ और शर्म से रहित है, जो अपनी ठुड्डी सहलाती है और होंठ चाटती है, और उछलते हुए उपदेश मंच पर चढ़ जाती है, फिर अपना सुंदर चेहरा घुमाकर, वहाँ मौजूद हर सुंदर स्त्री को ललचाने के लिए, आधा खाली मुस्कान के साथ आराम करती है,

और अलंकार और निपुणता से निशाना साधती है। शैली, और बनावटी तुतलाहट, रंगीन रंगों में अपने मूर्खतापूर्ण स्व को चित्रित करने के लिए - अपने पुराने नैतिक सार को उतारने के लिए, और खुद का प्रचार करने के लिए, न कि अपने ईश्वर का। इस प्रकार, इच्छा, संदेह, कांपते हुए, मैंने आपकी पुस्तक खोली, आपका तीर्थयात्री पढ़ा।
जैसे ही उगता हुआ फीबस आकाश को रोशन करता है, और उसके सामने रात का अंधेरा छा जाता है, जब तक कि अंधेरा उसकी गुफा में समा नहीं जाता, और सुनहरे दिन ने दुनिया को चमका दिया है, न तो भाप, न बादल, न कोहरा दिखाई देता है, जो इस पवित्र शांति को दूषित कर दे: इसलिए, जैसे ही मैंने प्रत्येक विनम्र पंक्ति पढ़ी, प्रकाश बढ़ने लगा, मेरे बादल जैसे भय और संदेह दूर हो गए, जब तक कि चारों ओर स्वर्ग का अपना दिन चमक उठा।
और जब मैंने किताब बंद की, तो मैंने सोचा, अगर बून्यान अपना सिंहासन छोड़ दें; तो वे आपके द्वारा किए गए उस दयालु कार्य को स्वीकार करेंगे जो आपने उनके अनाथ पुत्र क्रिश्चियन के प्रति किया है: और ईडन की तरह मुस्कुराते हुए, वे अपने पवित्र बच्चे को इस प्रकार संबोधित करेंगे: —
"मेरे पुत्र, यहाँ से जाने से पहले, मैंने तुम्हारे लिए स्वर्ग का पुरस्कार प्राप्त करने और तुम्हें दूसरों को बुद्धिमान बनाना सिखाने के लिए परिश्रम और व्यय में कोई कसर नहीं छोड़ी। फिर भी, यद्यपि तुम्हारा आंतरिक गुण था, तुमने खान में हीरा रखा: तुम अपनी शुद्ध आंतरिक चमक दिखाने के लिए बाहरी पॉलिश चाहते थे। कुछ ने तुम्हारा गुण पहचाना और पुरस्कार प्राप्त कर लिया, और अब वे स्वर्ग में विराजमान हैं: जबकि अन्य मूर्खता की शराब में डूबे रहे, लेकिन मोती को कुचल दिया।" सूअर, अज्ञानता में अपनी कब्र में डूबे हुए, और वहाँ से, जहाँ जलते हुए महासागर धोते हैं। अब चमकीली पॉलिश की हुई, तुम्हारी स्वाभाविक ज्वाला, और आंतरिक मूल्य अभी भी वही हैं; एक धधकते हीरे की तरह तुम अभी भी चमकते हो, और भी चमकीले रंगों में: तो प्रसन्नता से जाओ - एक कुशल हाथ द्वारा अधिक उपयुक्त, अपने पिता के उच्च आदेश का पालन करने के लिए: ऋषि या विदूषक के लिए उपयुक्त आभूषण, या भिखारी के चिथड़े, या राजसी मुकुट।

द कॉटेज मेड।

पहाड़ की चोटी पर,
और एक साफ बहते झरने के पास,
एक साफ-सुथरी छोटी सी कुटिया में,
अपने भाग्य से संतुष्ट,
एकांत में, एक प्यारी युवती रहती है।
उसके पिता की मृत्यु हो गई है, और उसका भाई भी —
और अब वह अपनी माँ के साथ अकेली है,
चरखे पर सूत कातेगी,
और सिलाई, बुनाई और करी करेगी,
और खुशी-खुशी अपनी जीविका के लिए काम करेगी।

वह गपशप करने के लिए कभी नहीं भटकती, वह अपने घर से प्यार करती है और वहीं रहती है, सिवाय तब जब कोई पड़ोसी बीमार होकर काम करती है, तब वह दयालुता से उससे मिलने जाती है।

वह बाइबल लेकर अपने बिस्तर के पास खड़ी होती है, और जब कोई पवित्र अंश पढ़ा जाता है, तो प्रार्थना और स्तुति में वह अपनी मधुर आवाज उठाती है, उस परमेश्वर के लिए जिसने पापियों के लिए एक बार प्राण त्यागे।

वह बाइबल में भली-भांति पारंगत है, उसकी भाषा सरल और मुक्त है, जो शुद्ध आनंद प्रदान करती है, जो कभी ऊब नहीं सकती, और मृत्यु के तकिये को आराम देती है।

उपन्यासों और नाटकों में रुचि नहीं, न ही किसी ऐसी चीज़ में जो उसके मन को दूषित कर सके; प्रलोभन चाहे बरसें, मीनार की तरह अडिग, वह आग के तीरों को बुझा देती है।

वह घाटी में नम्रता से चमकने वाले लिली के समान सादे कपड़े पहनती है, और कभी नहीं जाएगी खेलने, नाचने या दिखाने के लिए — वह उन्हें शैतान के उपकरण कहती है।

आँखों में आँसू लिए वह अक्सर कहती है, “अपने नाच-गाने बंद करो! हमारी आधी महिलाओं को परेशान करने वाली बुराइयाँ शैतान के हथियारों की वजह से हैं।”

अपने दैनिक रोजगार से मुक्त होकर, ठोस आनंद की चाह में, वह अपना समय व्यर्थ नहीं जाने देगी, बल्कि अपनी बाइबिल और दिव्य ज्ञान देने वाली पुस्तकों को पढ़ेगी।

जबकि अन्य लोग जागते हैं, नाचते हैं और खेलते हैं, जीवन के बेचैन पलों को दूर भगाते हैं, और अपनी आत्माओं को बर्बाद करते हैं - आनंद में वह लोटपोट हो जाती है, स्वर्गीय आनंद का पूर्वाभास।

उसकी आत्मा उसके प्रभु द्वारा शुद्ध की गई है, वह उसके वचन की सच्चाइयों में चमकती है: प्रत्येक ईसाई गुण उसके चेहरे पर पूरी तरह से चमकता है, और उसके आकर्षण की चमक को बढ़ाता है।

एक दिन जब मैं पहाड़ से गुजर रहा था, तब वह एक निर्मल क्रिस्टल झरने के किनारे गा रही थी (और उसे पता भी नहीं था कि मैं पास हूँ); उसके सुरों ने मेरे कानों को मंत्रमुग्ध कर दिया, और वह मधुरता से गा रही थी:

“ओह! हम अपने प्यारे यीशु को कब देखेंगे? उनकी उपस्थिति हमें गरीबी से मुक्त करती है, और उनके चेहरे से उनकी कृपा की किरणें चमकती हैं, जो पाप को हमेशा के लिए दूर कर देती हैं।”

“ओह! हम अपने प्यारे यीशु को कब देखेंगे? उनकी उपस्थिति हमें दुखों से राहत देगी, जब हम स्वर्गदूतों के साथ आकाश में उड़ेंगे — तब सभी दुख हमेशा के लिए विदा हो जाएंगे!

“जल्दी आओ! जल्दी आओ, प्रभु यीशु! केवल तुम्हारी उपस्थिति ही हमें शांत कर सकती है; क्योंकि विश्वासी सदा तुम्हारी गोद में विश्राम करेंगे, जहाँ वे सदा तुम्हारी स्तुति करेंगे।”

ओह, काश तुमने इस प्यारी कन्या को देखा होता! वह ईडन के फूलों की तरह मुस्कुराई, और अपनी प्रेम भरी चमकती आँखों को आकाश की ओर उठाया, और अपने मुक्तिदाता के साथ होने की कामना की।

जब वह इस प्रकार स्वर्गिक चिंतन में खड़ी थी, और कभी-कभी अपनी बाइबिल पढ़ रही थी, तभी रास्ते से आई, एक अपंग और बूढ़ी गरीब महिला, जो पूरी तरह से भूरे बालों से ढकी हुई थी।

उसका चेहरा पीला और पतला था, उसके चिथड़ों में से उसकी धूप से झुलसी त्वचा

झाँक रही थी; दुःख से व्याकुल होकर, उसने अपनी छाती से एक शिशु को लगा रखा था, जो भूख से पीला पड़ गया था।

पहाड़ पर चढ़ने से आधी साँस फूल रही थी, वह काँपते हुए फव्वारे के पास खड़ी थी, और उसने हमारी नौकरानी से विनती की कि वह उसकी कुछ मदद करे, और उस पर और उसके शिशु पर दया करे।

हमारी युवती के पास अपनी कमाई के सिवा कुछ नहीं था —
उसका हृदय कोमल दया से तड़प रहा था;
वह घाटी में भीगी हुई लिली की तरह मुरझा गई थी,
जबकि आँसू मोती की बौछारों की तरह गिर रहे थे।

हवा में सहज और मनमोहक भाव के साथ, उन्हें ढकने के लिए, अपने ही बुने हुए नीले रंग के एप्रन से, हालांकि वह सुंदर और नया था, उसने उन्हें दिया और उन्हें अपनी कुटिया में ले गई।

हे प्रिय कन्या, तुम्हें शांति मिले: तुम्हारे तौर-तरीके और रूप दिव्य हैं; तुम धरती पर विश्राम करोगी, स्वर्ग में धन्य हो जाओगी, और सदा के लिए देवदूत की तरह चमकोगी।

सिंहासन पर विराजमान राजा से भी अधिक धन्य है वह जो तुम्हें अपना कहेगा! तुम्हारे सामने माणिक भी फीका पड़ जाता है — तराजू पर उसकी कीमत धूल के समान है। धर्म सौंदर्य को मनमोहक बनाता है, और जहाँ सौंदर्य की कमी होती है, वहाँ भी धर्म से परिष्कृत स्वभाव और मन मधुर चमक के साथ परदे के पार चमक उठेंगे।

मकड़ी और मक्खी।

सूरज चमक रहा है, सुबह सुहावनी है, हवा में मटमैले तैर रहे हैं, ओस की बूँदें चकाचौंध में टिमटिमा रही हैं, मकड़ी का करघा कलात्मक देखभाल के साथ बुना जा

रहा है, मेरे कमरे में भी।
देखो कैसे वह टेढ़ी-मेढ़ी रेखा में चलती है, और अपने रेशमी धागे को खींचती है, स्पर्श के लिए बहुत कोमल, दृष्टि के लिए बहुत बारीक, अच्छी तरह से जमती है: और अपने पॉलिश किए हुए वस्त्र को चमकाती है, किनारा धंसता है।
उसके रेशमी वस्त्र खुशी से फैले हुए हैं, और अब वह अपने लिए एक बिस्तर बुनती है, जहाँ, अपने सिर को छोड़कर सब कुछ छिपाकर, वह पतंगों या मच्छरों को देखती हुई लेटी है, उलझी हुई फैली हुई है, या भिनभिनाती मक्खियों को।
हे धूर्त! आगे बढ़ो, हिम्मत कैसे हुई अपना खूनी जाल बिछाने की! लेकिन तुम शाही दरबारों में भयानक इरादे से जाओ, और वहाँ अपने रिश्तेदारों के साथ उलझाने वाला जाल बिछाओ।
आह, मूर्ख मक्खी! क्या तुम आगे बढ़ोगी? मैं तुम्हें सूर्य की किरणों में नाचते हुए देखता हूँ: रेशमी नज़र से आकर्षित होकर, उस भयानक करघे में; या अंधाधुंध, घातक संयोग से, अपने विनाश की ओर।
आह! ऐसा मत सोचो, यह खरगोश या रैबिट की मखमली चिड़िया है जो तुम्हारी दृष्टि को लुभाती है; या चकाचौंध भरे रंग के रेशमी धागे, तुम्हारे पंखों को आराम देने के लिए, झागदार जंगली, तुम्हारे लिए घात लगाए बैठा है, छलांग लगा रहा है।
उलझा हुआ! मुक्त! — और फिर से
तुम स्पर्श करते हो! यह समाप्त हो गया — वह विलापपूर्ण स्वर,
वह शोकपूर्ण गूंज, वह व्यर्थ संघर्ष,
तुम्हारे विनाश की घोषणा करते हैं:
तुम्हें उस खूनी मांद में ले जाया गया है,
तुम्हारी खूनी कब्र!
इसलिए नासमझ युवक लापरवाही से खेलेंगे, अपने चंचल रास्ते में खतरों के साथ, या दिन दहाड़े पागलों की तरह भटकेंगे, और जुनून में बह जाएंगे, और बार-बार चेतावनी मिलने के बावजूद, मौत और नरक का शिकार बन जाएंगे!
लेकिन सुनो! लहराते हुए पत्तों वाले पेड़ धीरे-धीरे बहती हवा की घोषणा करते हैं, जबकि मेरी खिड़की से धीरे-धीरे इसकी साँसें खेलती हैं: मकड़ी का जाला, पूरी तरह से बिखरा हुआ, विचार की तरह उड़ जाता है।
इस प्रकार सांसारिक लोग टूटे हुए सहारे पर झुकते हैं, और व्यर्थ ही मकड़ी के जाले

जैसी आशाएँ बुनते हैं, और मकड़ी के धागों से नरक पर लटके रहते हैं, जबकि पाप उन्हें जकड़ लेते हैं; कष्ट प्रहार करता है - उनका आनंद भाग जाता है - और वे नीचे गिर जाते हैं!

एक युवा पादरी को पत्र।

“परमेश्वर के सामने अपने आप को प्रमाणित करने के लिए अध्ययन करो, एक ऐसा कार्यकर्ता बनो जिसे लज्जित होने की आवश्यकता न हो, सत्य के वचन को सही ढंग से बाँटो।” — 2 तीमुथियुस 2:15

मेरे प्यारे भाई, अक्सर मेरा मन करता है कि मैं तुम्हें गद्य या गीत में लिखूँ; बिना किसी कठोर निर्णय के, बल्कि हार्दिक स्नेह के साथ— सच्ची मित्रता हमारे घनिष्ठ संबंध को लंबे समय तक बांधे रखे!

आदरपूर्वक, जो मैं देता हूँ, उसे विनम्र कृतज्ञ हृदय से ग्रहण करो, और मेरी सलाह से घमंड से पीछे मत हटो, मैं तो बस उधार देता हूँ — एक मित्र कभी विषैला तीर नहीं चलाता — वह घाव तो भरता है।

आप अभी-अभी स्नातक बने हैं, और हाल ही में आपने मुकुटधारी उपाधि प्राप्त की है; मुझे विश्वास है कि आप पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में हैं, और चरवाहे की देखभाल में हैं: और भेड़ की खाल ओढ़े भेड़िये की तरह नहीं हैं, जैसा कि संख्याएँ होती हैं।

सबसे बड़ा पद जो आप धारण करते हैं, आत्माओं के प्रेम के लिए, न कि लाभ के लिए: यदि आपकी लापरवाही से कोई मारा जाए, तो शास्त्र कहते हैं, आपके लापरवाह हाथ उसके खून से सने होंगे, अंतिम दिन।

लेकिन यदि तुम पवित्र सत्यों को, कुंवारी बर्फ की तरह, मित्रों और शत्रुओं के सामने ज़ोर से घोषित करो, इन्हें सांत्वना देते हुए, दूसरों को हतोत्साहित करते हुए — तुम स्वर्ग की ओर उड़ोगे; यद्यपि हठी पापी अभी भी विरोध करते हैं, और अनुग्रहहीन मरते

हैं।

सत्य के वचन को सही ढंग से बाँटो, यीशु को उद्धार के प्रकाश में दिखाओ, सबको यह घोषित करो कि वे पूरी तरह से मर चुके हैं, जब तक अनुग्रह उन्हें बहाल न कर दे: महान उद्धारकर्ता, सबके सामने, उनके सामने स्थिर रहो।

कुछ लोगों की तरह, बात को घुमा-फिराकर कहने की हिम्मत मत करो— न ही चकाचौंध भरे मुहावरों और उपमाओं का इस्तेमाल करो, न ही भद्दी बातें करो, न ही नीचता से चापलूसी करो, न ही गिड़गिड़ाओ: बल्कि जीवन के शुद्ध जल की तरह, स्पष्ट सत्य को बहने दो।

पापी मृतकों के समान है, मेमने को ऊंचा करो, चर्च के प्रमुख को, उसकी पवित्रता को फैलाओ, ईश्वरीय उत्साह के साथ: हालांकि वह निष्पाप है, फिर भी उसने पापियों के कल्याण के लिए कैसे रक्त बहाया।

चित्र बनाओ कि कैसे परमेश्वर ने गरजते हुए अपने अग्निमय नियम का उच्चारण किया, जबकि धुआँ उठता हुआ, भयंकर आतंक में, सिनाई से टूट पड़ा, प्रचंड ज्वाला के बीच! फिर यीशु के कोमल रक्त का आह्वान करो, और उसके नाम का प्रचार करो।

प्रभु से डरना याद रखो, उसके वचन का प्रचार करने के साथ-साथ उस पर अमल भी करो, और सुसमाचार की दोधारी तलवार चलाओ, भले ही खतरे कम हों — केवल उदाहरण ही उपदेश की शक्ति प्रदान कर सकता है।

और न तो भद्दे कपड़े पहनो, न ही भड़कीले, न ही कठोरता से व्यवहार करो; न ही तुच्छ खेल खेलो; चाहे कुछ भी हो जाए, हमेशा सुनहरे मध्य मार्ग पर चलो; और कभी भी मदहोश कर देने वाले सुखों में मत भटको, भले ही मूर्ख तुम्हारा उपहास करें।

जैसे धूर्त सर्प हमेशा सिद्ध होता है, फिर भी कबूतर की तरह हानिरहित होता है, छलपूर्ण प्रेम और गहरी कल्पना से आत्माओं को जीतता रहता है।

और अपने भीतर ध्यान रखो, अपने हृदय की बार-बार परीक्षा लो, उसके पन्ने पढ़ो, आत्मज्ञान, आवश्यकता के समय, तुम्हारी आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा; जो स्वयं को जानता है, वह खतरों से मुक्त हो जाता है, चाहे वह कहीं भी हो।

इसलिए ईश्वर किए गए परिश्रम को स्वीकार करेगा, अपने आदरणीय पुत्र, और आदरणीय विधि को देखकर; और अनुग्रह के माध्यम से जीती गई अमर आत्माओं की संख्या को देखकर, वे स्वर्ग के उज्ज्वल द्वार की ओर विजयपूर्वक आगे बढ़ेंगे।

और उस अंतिम और महानतम दिन, जब स्वर्ग और पृथ्वी नष्ट हो जाएँगे, एक परिपूर्ण

दल, उज्ज्वल वेशभूषा में, तुम्हारा मुकुट बनाएगा, तुम्हारी खुशियों का व्यापक प्रदर्शन करेगा, और दुखों को डुबो देगा।
और अब विदाई, मेरे युवा मित्र —
इन पंक्तियों के लिए क्षमा करें, जो स्पष्टवादिता से लिखी गई हैं;
मुझे निःस्वार्थ सलाह दें,
उतने ही उत्साह से —
क्योंकि आप प्रार्थना करेंगे, जीवन के अंत तक,
आपका विनम्र सेवक।

श्रमशील गरीबों के नाम पत्र।

हे प्रभु, जो कठोर मिट्टी जोतते हो, या दैनिक परिश्रम से करघे चलाते हो, और जीवन के उथल-पुथल में नम्रतापूर्वक आगे बढ़ते हो, कम भोजन के लिए, ध्यान दो, और अपने दुखों को शांत करने के लिए सबसे समृद्ध लूट इकट्ठा करो।
मैं कोमल, भावुक हृदय से लिखता हूँ —
तो कृपया जो मैं कह रहा हूँ उसे पढ़ें;
यह स्वतंत्र रूप से लिखा गया है, कला से रहित,
सरल शैली में,
इसका उद्देश्य शैतान के तीर को रोकना है,
और उसकी धूर्तता को उजागर करना है।
मैं तुम्हारे पापों से बंद आँखों को खोलने के लिए लिखता हूँ, और तुम्हें महान, धनी और बुद्धिमान बनाने के लिए, और जब परीक्षाएँ उठें और दुख छा जाएँ तो तुम्हें शांति देने के लिए; मैं तुम्हें कयामत के दिन आसमान के लिए तैयार करने के लिए लिखता हूँ।

क्या हुआ, भले ही तुम एक साधारण झोपड़ी में रहते हो, और जीवन भर एक मामूली हिस्सा साझा करते हो? हजारों लोगों ने धन और प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है, फिर भी उन्हें आराम नहीं मिलता: वे निर्माण करते हैं, ध्वस्त करते हैं, और योजनाएँ बनाते हैं, और अभागे मर जाते हैं।

तुम्हारे साधारण वस्त्र और कम भोजन निःसंदेह कड़वी चिंताओं के स्रोत हैं — जो तुम्हें शर्म से लाल, कांपते हुए, नग्न अवस्था में, अभिमानी तिरस्कार के सामने लाते हैं; फिर भी घोर निराशा में बड़बड़ाओ मत, और न ही अकेले रोओ।

आप उस शानदार रईस को देखते हैं जो धन और गर्व के सारे वैभव में, अपनी बगल में लेटी महिला और एक सहायक के साथ, चमकते हुए सवारी कर रहा है।

जैसे-जैसे धन बढ़ता है, उसकी इच्छाएँ भी बढ़ती जाती हैं, उसकी वासनाएँ भड़क उठती हैं और उसकी शांति भंग करती हैं, महत्वाकांक्षा उग्र समुद्र की तरह झाग बनाती है और लगाम तोड़ देती है, अति से पीली बीमारी और असहनीय पीड़ा उत्पन्न होती है।

उसकी तुलना में तुम तीन गुना खुश हो; हालाँकि तुम्हारा भंडार छोटा है, तुम्हारी ज़रूरतें कम हैं — हर बेकाबू इच्छा को अपने परिश्रम से वश में करो, और विश्राम को मधुर बनाओ, सभी काल्पनिक बुराइयों को नज़र से दूर करो, और अपने मन को शांत करो।

आपके परिश्रम से सबसे कठोर भोजन भी मीठा स्वाद पाता है और रक्त को शुद्ध करता है, वसंत ऋतु की बाढ़ में स्वास्थ्य को प्रसन्न करता है, निरंतर उबाल लाता है, और दैनिक परिश्रम पर बेचैन विचार शायद ही कभी हावी होते हैं।

वे लोग सबसे कम आनंद लेते हैं जो गर्व से अपने स्वामित्व वाले समृद्ध उपवनों और परिचित उद्यानों का आनंद लेते हैं; गुजरने वाला अजनबी उन्हें सबसे अधिक पसंद करता है - खिलौना हाथ से निकल गया - आनंद उड़ गया, हमेशा के लिए खो गया।

फिर कृतज्ञता से हर शिकायत को शांत होने दो, और आनंद से आँसू पोंछ लो: आकाश में एक महल बनाओ - अनुग्रह में धनी बनो: इस व्यर्थ संसार से घृणा करो, और यीशु के चेहरे के लिए तरसते हुए आहें भरो।

अमीर और गरीब दोनों, जो ईश्वर की सेवा नहीं करते, बल्कि पाप में जीते हैं, अच्छाई से विमुख हैं, मसीह के प्रायश्चित करने वाले रक्त को अस्वीकार करते हैं, नरक की चट्टानों के बीच, उस अग्निमय बाढ़ में उफान मारेंगे, जो फुफकारती हुई बहती है।

लेकिन वे सभी जो ईश्वर की सही उपासना करते हैं, उनके पुत्र और उज्ज्वल स्वरूप

मसीह में, सुसमाचार के प्रकाश से प्रकाशित मन के साथ, परमानंद की ओर ले जाने वाला मार्ग पाएँगे और स्वर्गीय दिन की ओर उड़ान भरेंगे।

वहाँ धनी और गरीब, ऊँचे और नीचे, न पाप, न दर्द, न शोक जानते हैं: वहाँ मसीह एक शाश्वत चमक के साथ जीवन और प्रकाश देता है — वहाँ आनंद की धाराएँ सदा बहती हैं, और शुद्ध आनंद।

पाप से पीड़ित सभी लोगों से मसीह कहते हैं, "यहाँ आओ, और स्वर्गिक विश्राम का स्वाद चखो, मुझे अपने मित्रवत अतिथि के रूप में स्वीकार करो, अपनी चारपाइयों में; मुझमें तुम धनी और धन्य होगे, चाहे तुम्हारा भाग्य तुच्छ ही क्यों न हो।"

"देखो मेरे हाथ, मेरे पैर, मेरी पसली, सब खून की लहर से लाल हो गए हैं! तेरे लिए मैं रोया, खून बहाया और मर गया, और फिर जी उठा: और अपने पिता के बगल में सिंहासन पर बैठा, अब ज़ोर से विनती करो!

"पश्चाताप करो, और दया के द्वार में प्रवेश करो, और यद्यपि तुम अंधकारमय झोपड़ियों में रहते हो, सभी दोषी, फटेहाल, भूखे, गरीब, मैं प्रेम से देता हूँ सोने का मुकुट, और निश्चित क्षमा, प्रत्येक को।"

फिर दयालु, आमंत्रित करने वाली आवाज़ सुनो —
प्रभु में विश्वास करते हुए आनंदित हो;
तुम्हारी आत्माएँ इस सुखद चुनाव का गुणगान करेंगी
सर्वोच्च ईश्वर के लिए,
जबकि आनंदित स्वर्गदूत आकाश भर में शोर मचाते हैं।

हार्दिक विदाई! — हर एक कॉटेज मित्र, मैं यीशु के प्रेम को तुम्हारी आत्माओं और शरीरों को जीवन के कठिन मार्ग के अंत तक सौंपता हूँ; फिर (मृत्यु पर विजय प्राप्त करके) तुम अनंत दिन में आरोहण करो!

झोपड़ीवासी का भजन।

मैं।

मेरा भोजन तो बहुत कम है, और मेरी कुटिया भी साधारण है, फिर भी यीशु वहाँ निवास करते हैं और मेरे भाग्य को आशीष देते हैं। यद्यपि मैंने बहुत कम वस्त्र पहने हैं और अक्सर तूफ़ान आते रहते हैं, फिर भी वे मेरे वस्त्र, मेरी रोटी और मेरी आत्मा के लिए पेय हैं।

II.

उनकी उपस्थिति ही धन है, उनकी कृपा ही खजाना है, उनका वादा ही स्वास्थ्य और असीम आनंद है। उनका वचन ही मेरा विश्राम है, उनकी आत्मा ही मेरी मार्गदर्शक है। उनमें ही मैं धन्य हूँ, चाहे कुछ भी हो जाए।

III.

क्योंकि यीशु मेरे हैं, इसलिए सभी दुखों को अलविदा; मैं कभी विलाप नहीं करूँगा, न ही कल के बारे में सोचूँगा: सुंदर लिली, और काला कौआ, जिनकी वह देखभाल करते हैं, तो मुझे किस बात की कमी होगी?

IV.

प्रत्येक वादा निश्चित है, जो उसके वचन में चमकता है, और मुझे बताता है कि यद्यपि मैं गरीब हूँ, मैं अपने प्रभु में धनी हूँ। इसलिए! दुःख और भय! क्योंकि यीशु निकट है, मैं हर आँसू पोंछ दूँगा और हर आह को दबा दूँगा।

वी

चाहे राजकुमार हो, ड्यूक हो या लॉर्ड, मेरे शेड में कभी प्रवेश न करो, राजा यीशु मेरे भोजन को स्वादिष्ट व्यंजनों से सजाते हैं। क्योंकि वह मेरे अतिथि हैं, मैं खुशी से गाऊंगा और अपने राजा यीशु में सदा धन्य रहूंगा।

VI.

भयानक शोर के साथ, कष्ट बढ़ सकते हैं, - वे मुझे पाप से शुद्ध करते हैं, वे मुझे नरक से बचाते हैं: वे सब यीशु की छड़ी के समान हैं, प्रेम में; वे मुझे ईश्वर और ऊपर के आशीर्वाद की ओर ले जाते हैं।

सातवीं।

बीमारी और दर्द के बीच मैं अपने प्रभु की शरण लेता हूँ, मीठा आराम पाने के लिए, और उनके वचन से स्वास्थ्य पाने के लिए; घोर अभाव मुझे उनकी कृपा का पोषण

करने और उनके वस्त्र धारण करने की तीव्र इच्छा जगाता है।

आठवीं।

वे परीक्षाएँ जो क्रोधित करती हैं, उनके लहू से प्रेरित होकर, मुझे एक मुकुट पहनाओ, और मेरे भले के लिए काम करो। मैं प्रशंसा में कहूँगा, जब मैं अपने विश्राम में सिंहासन पर बैठा होऊँगा, जो कुछ घटित हुआ, वह हमेशा सर्वोत्तम था।

IX.

जो कुछ भी छिपा है, वह मेरी दृष्टि में प्रकट होगा जब मैं यहाँ से भागकर गौरवशाली प्रकाश की ओर चला जाऊँगा। यदि दंड मुझे नीचा दिखाएँ, तो मैं त्याग दूँ; यदि दया की वर्षा हो, तो कृतज्ञता चमक उठे।

एक्स।

अतः! दुःख और भय! क्योंकि यीशु निकट है, मैं अपने प्रत्येक आँसू को पोंछ लूँगा, और अपनी प्रत्येक आह को दबा दूँगा: और उसके वचन में लिपटा हुआ, अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करूँगा, और अपने प्रभु का अनुसरण करूँगा जहाँ कहीं भी वह जाए।

XI.

मेरे मित्रों! आइए हम उड़ें
हमारे राजा यीशु की ओर;
और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं,
कृपा का गीत गाएँ।
सुख और दुख में,
यदि हम वफादार साबित होते हैं,
तो हम झोपड़ियों के बदले एक महल प्राप्त करेंगे।

समाप्त।

दो उपदेश

पाठकों के लिए विज्ञापन।

मैं पाठकों से निवेदन करता हूँ कि इस उपदेश को प्रकाशन हेतु तैयार करते समय मैंने इसे परिस्थितियों के अनुरूप यथासंभव संक्षिप्त और छोटा किया है, ताकि हॉवर्थ और आसपास के इलाकों के गरीब वर्ग के लोगों के लिए होने के कारण इसे पढ़ने और खरीदने में उनका कम से कम समय और पैसा खर्च हो। मैं यह भी चाहता हूँ कि पाठक यह जानें कि मुझे यह अपना कर्तव्य लगा कि मैं उन्हें एक असाधारण घटना का सरल और व्यावहारिक विवरण, जो एक चेतावनी है और जिसे याद रखना और सुधारना चाहिए, कम कीमत पर उपलब्ध कराऊँ।

एक उपदेश, इत्यादि।

भजन संहिता 97. 4, 5.

“उसकी बिजली ने दुनिया को रोशन कर दिया; धरती ने देखा और कांप उठी। प्रभु की उपस्थिति में, समस्त पृथ्वी के प्रभु की उपस्थिति में पहाड़ मोम की तरह पिघल गए।”

खोई हुई दुनिया के उद्धारकर्ता ने अक्सर आकस्मिक परिस्थितियों से मिलने वाले सभी लाभों का उपयोग किया, जो उनके श्रोताओं को नैतिक और धार्मिक शिक्षा प्रदान करने के लिए उपयुक्त थे। असीम बुद्धिमान उद्धारकर्ता ने इसे सुस्त लोगों को जगाने, आलसी लोगों में रुचि जगाने, अज्ञानी लोगों को जानकारी देने और विश्वासियों को उनके पवित्रतम विश्वास में मजबूत करने का सर्वोत्तम तरीका चुना।

हालांकि मैं असीम दूरी पर हूं, फिर भी प्रभु के उदाहरण का अनुसरण करने का प्रयास करते हुए, मैं हाल ही में आए भूकंप और असाधारण ज्वालामुखी विस्फोट से उत्पन्न नैतिक और धार्मिक सुधार के अवसरों का लाभ उठाना चाहता हूं, जो उस चर्च

से लगभग चार मील दूर हुआ था जहां हम सब अभी एकत्रित हैं। आप सभी जानते हैं कि सितंबर माह की दूसरी तिथि को, और प्रभु के इस वर्ष 1824 में, दोपहर लगभग छह बजे, पास के दलदली इलाके के दो हिस्से भारी आंधी, बिजली और बारिश के दौरान कई गज धंस गए, और उनसे कीचड़ और पानी का एक विशाल सैलाब निकला, जिसने कई मील तक फैले मार्ग में भय, आश्चर्य और खतरे का माहौल बना दिया।

इस बाढ़ के आने से पहले, जैसा कि मुझे आस-पास रहने वाले कुछ लोगों से पता चला है, आसपास के इलाकों में काफी तेज़ कंपन हुआ था, और मैंने खुद भी, हालांकि मैं चार मील दूर था, इसका कुछ असर महसूस किया। यह बात, जो आस-पास रहने वाले कई लोगों ने नहीं देखी, कुछ स्पष्टीकरण की मांग करती है, जो मैं आपको संक्षेप में बताऊंगा। चूंकि दिन बहुत सुहावना था, मैंने अपने छोटे बच्चों को, जो अस्वस्थ थे, नौकरों के साथ खुले मैदान में टहलने के लिए भेज दिया था, और चूंकि वे मेरी उम्मीद से कुछ ज़्यादा देर तक रुके रहे, इसलिए मैं उनके लौटने का इंतज़ार करने के लिए ऊपर के कमरे में चला गया। मैदान के ऊपर आसमान तेज़ी से काला हो रहा था। मैंने दूर से गरजने की आवाज़ सुनी और बिजली की तेज़ चमक देखी। हालांकि, दस मिनट पहले तक हवा का एक झोंका भी नहीं चल रहा था; लेकिन हवा अचानक तेज़ हो गई और अपने साथ धूल और सूखी घास के बादल उड़ा ले गई; और इस समय तक, बारिश की कुछ बड़ी बूँदें स्पष्ट रूप से आने वाली भारी बारिश का संकेत दे रही थीं। मेरा छोटा परिवार एक सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया था, लेकिन मुझे इसकी जानकारी नहीं थी। इसलिए मैं आने वाले तूफान की हर गतिविधि को बड़ी उत्सुकता से देख रहा था। घर एकदम शांत था। इन परिस्थितियों में, मैंने एक गहरी, दूर से आती हुई धमाके की आवाज़ सुनी, जो गड़गड़ाहट जैसी थी, फिर भी उससे कुछ अलग थी, और मैंने उस कमरे में एक हल्का कंपन महसूस किया जिसमें मैं खड़ा था, और मेरे ठीक सामने वाली खिड़की के शीशे में भी, जिसने उस समय मेरे मन पर असाधारण प्रभाव डाला; और अब मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह ज्वालामुखी विस्फोट स्थल पर आए भूकंप का प्रभाव था। यह ईश्वर की एक गंभीर आपदा थी, जिसे मैं ईश्वर की कृपा से सुधारने का प्रयास करूंगा।

भूकंप किस प्रकार और किन कारणों से उत्पन्न होते हैं, इस पर विचार करके।

और फिर उस भूकंप के संदर्भ में कुछ विशेष अवलोकन करके, जो हमारे ध्यान का

तात्कालिक विषय है।

इससे पहले कि मैं यह बताने का प्रयास करूं कि भूकंप कैसे और किन कारणों से उत्पन्न होते हैं, मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि मेरा एकमात्र उद्देश्य अपने श्रोताओं को शिक्षित करना और उनका भला करना है, इसलिए मैं स्पष्टवादी होने का प्रयास करूंगा, और रसायनशास्त्रियों और कई विद्वानों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले सभी अनावश्यक रूप से कठिन शब्दों और वाक्यांशों से सावधानीपूर्वक परहेज करूंगा, जो शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग हर सभा में आम श्रोताओं की समझ से परे होते हैं।

जब हम भूकंप की बात करते हैं, तो हमारा तात्पर्य पृथ्वी के असाधारण रूप से बड़े पैमाने पर हिलने से होता है, जो कभी-कभी, हालांकि हमेशा नहीं, जमीन की सतह को फाड़ देता है और उसे अगल-बगल या ऊपर की ओर धकेल देता है, या उसे सामान्य से अधिक नीचे धंसा देता है। इस प्रकार, विभिन्न युगों और देशों में भूकंप, ईश्वर द्वारा अपने दोषी प्राणियों के विरुद्ध प्रतिशोध के सबसे भयानक और प्रभावी साधन रहे हैं। कभी-कभी भूकंपों द्वारा ईश्वर ने केवल जमीन को हिलाया है और निवासियों को भय से भर दिया है। कभी-कभी उन्होंने चौड़ी और भयानक दरारें पैदा की हैं, लेकिन किसी का जीवन नहीं गंवाया है। कभी-कभी उन्होंने नीचे के बाढ़ के द्वार खोल दिए हैं और स्थिर जल के कुंड उत्पन्न कर दिए हैं; या, जैसा कि हमारे सामने के मामले में है, उफान मारती हुई नदियाँ जो अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को बहा ले गई हैं। और कभी-कभी भूकंपों द्वारा उन्होंने अपने प्रतिशोध को पूरी भयावहता के साथ बरसाया है, जिससे हजारों निवासियों सहित पूरे शहर एक पल में हिल कर डूब गए हैं और मनुष्यों और घरों के खंडहरों को एक विशाल स्थिर झील से ढक दिया है।

ईश्वर कभी-कभी, किसी अन्य कारण के हस्तक्षेप के बिना, भूकंप उत्पन्न करता है, जैसा कि उसने कोरह, दाथन और अबिराम और उनके विद्रोही अनुयायियों के विनाश के समय किया था। लेकिन वह अक्सर प्राकृतिक तत्वों को अपने साधन के रूप में उपयोग करता है, हालांकि इससे उसका कार्य किसी चमत्कार से कम नहीं हो जाता।

कभी-कभी भूकंप कुछ ज्वलनशील पदार्थों, जैसे कि भूमिगत रूप से प्रज्वलित होने वाले सल्फर, के कारण उत्पन्न होते हैं, जिससे एक विस्तार होता है, जो तब तक संघर्ष करता है जब तक कि वह अपनी सामान्य सीमाओं को तोड़ नहीं देता।

भूमिगत आग कई तरीकों से उत्पन्न हो सकती है; जैसे कि वस्तुओं के घर्षण या

टकराव से, उदाहरण के लिए जब लकड़ी या लोहे पर किसी धुरी को तेजी से घुमाया जाता है तो आग लग जाती है; या चकमक पत्थर और इस्पात के तीव्र और बलपूर्वक संपर्क से; या किसी रासायनिक प्रक्रिया से, जैसे कि नवजलाए गए चूना पत्थर पर पानी डालने से; या फिर बिजली गिरने या विद्युत द्रव के किसी अन्य रूप में परिवर्तित होने से, हमारी कल्पना से भी अधिक गहराई पर आग लग सकती है।

इनमें से किसी एक कारण से, निस्संदेह, एटना, वेसुवियस और अन्य धधकते पहाड़, तरल आग उगलने से कई दिन पहले तक, अपनी नींव तक कांपते हैं, और अक्सर इससे कहीं अधिक कंपन पैदा करते हैं, जो सबसे भव्य और भयावह पैमाने पर भूकंप का प्रदर्शन करते हैं।

उपरोक्त कारणों में से कुछ के कारण, खनिकों द्वारा आमतौर पर 'फायर डैम्प्स' कहे जाने वाले पदार्थ, जो अक्सर गहरी खदानों और कुओं के तल में पाए जाते हैं, प्रज्वलित हो सकते हैं और ऐसा कंपन और फैलाव उत्पन्न कर सकते हैं जो भूकंप के समान हो। इन फायर डैम्प्स के प्रज्वलित होने पर होने वाले भयानक प्रभाव इस देश में इतने प्रसिद्ध हैं कि उन्हें उदाहरण की आवश्यकता नहीं है; कभी-कभी गहरी और विस्तृत कोयला खदानों में, जहाँ हवा का निर्बाध और निरंतर प्रवाह नहीं होता है, ऐसे विस्फोट होते हैं जो आसपास की हर चीज को झुलसा देते हैं और बिखेर देते हैं; और पल भर में अनगिनत आत्माओं को मृत्यु के घाट उतार देते हैं।

भूकंप का एक और कारण जल भी है, और यह आखिरी कारण है जिसका मैं उल्लेख करूंगा। जब कई धाराएँ अचानक भूमिगत रूप से एक ही स्थान पर आकर मिल जाती हैं, जो उनके संबंधित स्रोतों से काफी नीचे स्थित होता है, और विशेष रूप से जब इस एकत्रित जल को विद्युत द्रव या किसी अन्य कारण से उत्पन्न असाधारण ऊष्मा के कारण विस्तारित किया जाता है, जैसे कि अत्यधिक गर्म बॉयलर में पानी का अत्यधिक विस्तार, जिससे वह कांपता और फटता है, तो यह आसपास की धरती को हिलाकर फाड़ देता है, जब तक कि ऊपर से बहने वाली धाराओं द्वारा प्रेरित होकर विस्तारित तत्व को एक निकास न मिल जाए, और वह या तो एक स्थिर झील का रूप ले ले, या एक प्रचंड धारा के रूप में आगे बढ़ जाए। संभवतः, यही वह घटना थी जिस पर हम विचार कर रहे हैं; जिसे कुछ लोग दलदल या कीचड़ का फटना कह सकते हैं, लेकिन इसमें भूकंप के सभी पूर्व संकेत, लक्षण और परिणाम थे, और यह नाम इसे उचित ही दिया गया है।

पृथ्वी के इस कांपने और फटने, तथा कीचड़ और पानी के विस्फोट से पहले एक गहरी शांति छाई हुई थी, और इसके साथ ही बहुत तेज हवा, और बहुत बिजली और गरज भी हुई थी: और इससे पहले और बाद में, हवा में तीव्र विद्युत आवेश था, जैसा कि उमस भरी गर्मी, बार-बार और चमकीली बिजली और तेज गरज, तथा बादलों के स्पष्ट रूप से आपस में मिलने और उनके तांबे के रंग के, और धुंधले, नीचे की ओर छाए अंधकार से स्पष्ट था।

पूरी संभावना है कि चूंकि जमीन पहले से ही काफी हद तक धंस चुकी है और काफी दूरी तक फटी और हिलती हुई है, इसलिए उस स्थान पर सामान्य से अधिक पानी का प्रवाह होगा; जिससे समय-समय पर कम व्यापक और कम विनाशकारी पैमाने पर जमीन के अन्य धंसने और कीचड़ और पानी के अन्य विस्फोट हो सकते हैं।

इसका कारण चाहे जो भी रहा हो, वह अत्यंत शक्तिशाली रहा होगा; क्योंकि दो गड्ढे बन गए थे, जिनमें से एक कुछ स्थानों पर चार या पाँच गज से कम गहरा नहीं था और उसका घेरा छह या सात सौ गज था; और कीचड़ और पानी का एक तीव्र प्रवाह निकला, जिसकी चौड़ाई बीस से तीस गज और गहराई चार से पाँच गज तक भिन्न थी; जो छह या सात मील की दूरी तय करते हुए कई पत्थर और लकड़ी के पुलों को पूरी तरह से गिरा दिया या उनमें दरारें पैदा कर दीं - पेड़ों को उखाड़ दिया - दीवारों को ध्वस्त कर दिया - और कई अन्य भयानक प्रमाण दिए कि सर्वशक्तिमान के हाथों में, यह उनके न्याय को लागू करने का एक अजेय साधन था।

इस प्रकार भूकंपों की उत्पत्ति के बारे में बताने के बाद, हम संक्षेप में उन कारणों का उल्लेख करेंगे जिनके आधार पर ईश्वर ने विभिन्न युगों और राष्ट्रों में भूकंपों को उत्पन्न किया और उनका उपयोग किया।

ईश्वर कभी-कभी अपनी शक्ति और महिमा के प्रदर्शन के रूप में भूकंप उत्पन्न करते हैं। इसी संदर्भ में उन्होंने मूसा को दस आज्ञाएँ देते समय भूकंप का प्रयोग किया था; जब “सिनाई पर्वत पूरी तरह धुएँ से ढक गया था, क्योंकि प्रभु आग के रूप में उस पर उतरे थे; और उसका धुआँ भट्टी के धुएँ की तरह ऊपर उठा; और सारा पर्वत ज़ोर से काँप उठा।”

कभी-कभी भूकंप उचित और अंतिम दंड के साधन के रूप में उत्पन्न होते हैं; जब मनुष्य हठपूर्वक प्रभु की कृपा को ठुकरा देते हैं और उनके विरुद्ध खुले विद्रोह पर उतर आते हैं। ऐसा ही एक भूकंप था जिसने उस भयानक दरार का कारण बना जिसने

इस्राएली विद्रोहियों को जंगल में निगल लिया और उनकी शेष सेना में दहशत और भय फैला दिया।

कभी-कभी, ईश्वर भूकंपों को भयानक चेतावनी के रूप में उत्पन्न करता है ताकि पापियों को उनके गलत मार्ग से मोड़ा जा सके, और उस अंतिम और सबसे महान दिन के गंभीर अग्रदूत के रूप में, जब पृथ्वी जलकर राख हो जाएगी, आकाश एक बड़े शोर के साथ नष्ट हो जाएगा, और प्रकृति का संपूर्ण ढांचा कांप उठेगा, टूट जाएगा और बिखर जाएगा। इसी अर्थ में हमारे पाठ में भूकंपों को देखा गया है; और इसी अर्थ में हमारे प्रभु ने भी इन्हें देखा था, जब उन्होंने यरूशलेम के विनाश और अपने न्याय के लिए आने की बात कही थी; और इसी अर्थ में हमें अपने आस-पास और अपने क्षेत्र में हाल ही में आए भूकंप को भी देखना चाहिए।

तो आइए, ईश्वर की सहायता से, इस पवित्र घटना का लाभ उठाने का प्रयास करें, और इसके संबंध में कुछ विशेष अवलोकन करें, क्योंकि यह आज हमारे ध्यान का तात्कालिक विषय है।

भूकंप के अगले दिन, जब इसकी खबर हॉवर्थ और आसपास के इलाकों के निवासियों तक पहुंच गई, तो हर तरफ से तरह-तरह के लोग उस दृश्य को देखने के लिए उमड़ पड़े; और उन्होंने लघु रूप में दुनिया की एक तस्वीर पेश की - एक ऐसी तस्वीर जिसमें न केवल हॉवर्थ, कीघली और ब्रैडफोर्ड के निवासी थे, बल्कि इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन और दुनिया के चारों कोनों के लोग थे।

चूंकि मैं स्वयं भी उनमें से एक था, इसलिए मुझे सबसे अनुकूल प्रकाश में चित्र को करीब से देखने का अवसर मिला; और मैंने पाया कि यह बिल्कुल पतित मनुष्य से मिलता-जुलता है, जो हर युग और हर जलवायु में वैसा ही दिखता है, जब से ईश्वर ने हमारे पहले माता-पिता को स्वर्ग के बगीचे से निकाल दिया था।

चाहे हम धर्मग्रंथों का अध्ययन करें, या गैर-प्रेरित इतिहास का, या सबसे परिष्कृत और सभ्य देशों के निवासियों का, या सबसे दूरस्थ और बर्बर द्वीपों के निवासियों का, जहाँ मनुष्य कुछ बाहरी और मात्र आकस्मिक परिस्थितियों को छोड़कर, प्रकृति की सरल अवस्था के सबसे करीब हैं, हम पाते हैं कि उनमें इतनी सटीक समानता है कि प्रत्येक को दूसरे का जुड़वां भाई माना जा सकता है; और यह सचमुच कहा जा सकता है कि यह एक ही परिवार है, जिनकी संपूर्ण आत्मा और शरीर उनके सामान्य और पतित माता-पिता के पापों से दूषित हैं, और जिन्हें पवित्र आत्मा के ज्ञानवर्धक प्रभाव

और क्रूस पर चढ़ाए गए उद्धारकर्ता के रक्त की शुद्ध करने वाली शक्ति की समान रूप से अत्यधिक आवश्यकता है।

जैसे-जैसे मैं उस नहर के किनारे आगे बढ़ा, जिसके साथ हाल ही में विनाशकारी बाढ़ गुजरी थी, मैंने कुछ लोगों को ढह चुके पुलों और दीवारों के खंडहरों का सर्वेक्षण करते हुए, विभिन्न कस्बों द्वारा वहन किए जाने वाले भारी खर्च के बारे में दयनीय शब्दों में विलाप करते हुए सुना।

मैंने देखा कि कुछ अन्य लोग अपने घर के आस-पास की ही बातों में मग्न थे; उनके दुख उनके अपने खेतों की संकीर्ण सीमाओं तक ही सीमित थे, जो कुछ समय पहले उनकी आशा थे, लेकिन अब पूरी तरह से नष्ट हो चुके थे। लेकिन अधिकांश लोग, जैसा कि मैंने देखा, केवल व्यर्थ की जिज्ञासा से प्रेरित होकर आगे बढ़ रहे थे।

हालांकि, कहीं-कहीं मुझे एक ऐसा व्यक्ति दिखाई दिया जो गहन चिंतन में डूबा हुआ था, जिसने प्रकृति के माध्यम से प्रकृति के ईश्वर को आस्थापूर्वक देखा और हमारे पाठ की उपयुक्त भाषा में कहा - "उसकी बिजली ने दुनिया को रोशन किया, धरती ने देखा और कांप उठी। पहाड़ मोम की तरह पिघल गए, प्रभु की उपस्थिति में, समस्त पृथ्वी के प्रभु की उपस्थिति में।"

मैंने पाया कि कुछ लोग, जो मात्र वैज्ञानिक थे, इतनी गहराई तक नहीं पहुँच सके और न ही इतनी ऊँचाई तक उठ सके; वे केवल गौण कारणों को देखते थे और यहीं नीचे सिमटकर रह जाते थे। उनके सभी अवलोकन, चाहे वे कुछ मामलों में कितने ही चतुर और उपयुक्त क्यों न हों, मैंने स्पष्ट रूप से देखा कि वे आम तौर पर अपने तर्क में मूल कारण को छोड़ देते थे। उन्हें भौतिक जगत से ऊपर उठकर आध्यात्मिक क्षेत्र में जाने के लिए आस्था के पंखों की आवश्यकता थी—और इस कमी को मानवीय आविष्कार और शक्ति के चरम विस्तार से भी पूरा नहीं किया जा सकता।

जब मैं उन दो विशाल गुफाओं के पास पहुंचा, तो मुझे धर्मग्रंथों में दर्ज कुछ यादगार घटनाओं और दैनिक जीवन में घटित होने वाली कई घटनाओं की याद आ गई।

कुछ लोगों ने धंसी हुई और फटी हुई धरती को गंभीरता से देखा और भक्तिमय शब्दों में ईश्वर से अपने हृदय की प्रार्थना की। जैसे धर्मनिष्ठ नूह और उनका परिवार जलप्रलय के विनाश को देखते हुए पाप के भयावह परिणामों, ईश्वर की असीम दया और न्याय के बारे में सोचते थे; और यह भी कि इस विशेष मामले में उन्होंने न्याय

करते समय कृपापूर्वक दया का स्मरण किया था।

कई अभद्र व्यक्ति गुफाओं की तलहटी और किनारों पर भी एक-दूसरे से झगड़ते और विवाद करते रहे; वे ईश्वर की चेतावनी भरी आवाज की बिल्कुल अवहेलना कर रहे थे, जो कुछ ही समय पहले गरजते हुए उनसे बोली थी, और ऐसा प्रतीत होता था कि वह अभी भी उनके चारों ओर फैली हर खाई को आवाज और अभिव्यक्ति दे रही है।

इसी तरह, वह दुष्ट आत्मा भी थी जिसने असंतुष्ट इस्राएलियों को प्रेरित किया, जब उन्होंने बंद गड्ढे के ठीक किनारे पर विद्रोहपूर्वक बड़बड़ाया, जिसने एक दिन पहले ही विद्रोह के पाप के कारण उनकी सेना के एक हिस्से को निगल लिया था।

मैंने देखा कि घर लौटने पर कई लोग, जो अपनी नासमझ जवानी के उल्लास में डूबे हुए थे, ऐसे बातें और व्यवहार कर रहे थे मानो उन्हें स्वर्ग या नरक, मृत्यु या न्याय का कोई सपना ही न हो। और कुछ लोग, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, हालांकि कुछ समय के लिए विचारशील रहे, लेकिन एक-दो दिन बाद ही वे अपने सारे गंभीर विचार भूल गए।

दैनिक जीवन में अक्सर ऐसा ही देखने को मिलता है। जब किसी मोहल्ले में कोई भीषण विपत्ति आती है, या किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति की अचानक और अप्रत्याशित मृत्यु हो जाती है, तो कुछ ही लोग इस गंभीर घटना से स्वाभाविक रूप से प्रभावित होते हैं: अधिकांश लोग अपनी बुरी आदतों और मनोकामनाओं में लिप्त रहते हैं, हर चेतावनी को पूरी तरह से अनदेखा करते हैं, और इस बात पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते कि अंतिम दिन उन्हें इन सब का कितना भयानक हिसाब चुकाना पड़ेगा।

आइए हम ईश्वरीय कृपा के लिए पूरी लगन से प्रार्थना करें, ताकि हम अलग तरह से कार्य कर सकें और मसीह यीशु में विश्वास के मार्ग पर चल सकें। हमने अभी-अभी ईश्वर की अपार शक्ति का एक अंश देखा है: उसने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली है और उसे हमारे सिर के ऊपर लहराया है, परन्तु दया के कारण प्रहार अभी तक हम पर नहीं पड़ा है। वह पूरे हॉवर्थ को हिलाकर डुबो सकता था, ठीक वैसे ही जैसे उसने निर्जन दलदली भूमि के उन हिस्सों को हिलाकर रख दिया है जिन पर उसके प्रतिशोध के तीर गिरे हैं।

शुक्र मनाइए कि आप बच गए हैं। इस दयालु, परन्तु चेतावनीपूर्ण दिव्य ज्ञान की वाणी को तुच्छ न समझिए। इसे सुनिए और आध्यात्मिक रूप से बुद्धिमान बनिए, कहीं

ऐसा न हो कि वह दिन अचानक आप पर आ पड़े, जब परमेश्वर “आपकी विपत्ति पर हँसेगा, और आपके भय के आने पर आपका उपहास करेगा; जब आपका भय उजाड़ की तरह आएगा, और आपका विनाश बवंडर की तरह आएगा; जब आप पर संकट और पीड़ा छा जाएगी।” प्रभु धीरजवान और कोमल दया का स्वामी है; परन्तु यदि पापी उसकी दया को तुच्छ समझते रहें और उसके न्याय को अनदेखा करते रहें, तो अंततः वे उद्धार से हमेशा के लिए वंचित होकर अनंत यातनाओं में डाल दिए जाएँगे।

धन्य हैं वे, और केवल वे ही, जो पवित्र आत्मा की वाणी सुनते हैं; जो स्वयं को त्यागते हैं, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाते हैं और मसीह का अनुसरण करते हैं। उन्हें विश्वास प्राप्त होगा, जो इस संसार पर विजय दिलाता है—वे मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाले विजेताओं से भी बढ़कर होंगे—और अंतिम दिन पूर्ण सुरक्षा के साथ, वे निर्भय और विजयी भाव से ब्रह्मांड के विनाश का अवलोकन करेंगे, जब सूर्य अंधकार में बदल जाएगा, और चंद्रमा रक्त में परिवर्तित हो जाएगा—जब तारे अपनी कक्षाओं से गिर पड़ेंगे, और आकाश और पृथ्वी ज्वालाओं में विलीन होकर नष्ट हो जाएंगे।

ब्रैडफोर्ड के टी. इंकर्सले द्वारा कोलंबियन प्रेस में मुद्रित।

[यह उपदेश, जो 12 सितंबर, 1824 को दस दिन पहले हुए ज्वालामुखी विस्फोट के संदर्भ में दिया गया था, जनवरी 1825 में कॉटेज मैगज़ीन (ब्रैडफोर्ड) के पृष्ठ 9-18 में पुनः प्रकाशित हुआ था। यह और इससे पहले का "घटना" और इसके बाद श्री वेटमैन पर दिया गया उपदेश, लगभग एक दर्जन वर्ष पहले कीघली में आर. ब्राउन, पुस्तक विक्रेता, हॉवर्थ के लिए 41 पृष्ठों के एक पैम्फलेट में पुनः प्रकाशित किए गए थे।]

दिवंगत रेवरेंड विलियम वेटमैन, एम.ए. के लिए एक अंत्येष्टि उपदेश, जो 2 अक्टूबर, 1842 को रविवार को हॉवर्थ के चर्च में दिया गया था।

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे, ए. बी., वर्तमान पादरी द्वारा।

एक प्रवचन।

पौलुस के कुरिन्थियों को लिखे पहले पत्र के पंद्रहवें अध्याय में, और छप्पनवें, सत्तावनवें और अट्ठावनवें पदों में, आपको निम्नलिखित शब्द मिलेंगे: — "मृत्यु का डंक पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिसने हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय दी है। अतः मेरे प्रिय भाइयों, स्थिर रहो, अविचल रहो, सदा प्रभु के कार्य में लगे रहो, क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है।"

बीस वर्षों से अधिक समय से, जिस दौरान मैंने आप लोगों के बीच सेवा की है, यह पहला उपदेश होगा जो मैं इस मंडली के समक्ष पढ़ूंगा, और शायद यह आखिरी भी हो। इसका कारण यह है कि मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास है कि सामान्यतः, आम श्रोताओं के लिए, बिना तैयारी के दिया गया उपदेश, यद्यपि कुछ विशेष कमियों के साथ आता है, बोलचाल की भाषा में अधिक सहज होता है और अधिकांश लोगों के लिए अधिक उपयुक्त होता है। मैं शायद अभी भी अपनी इस नियमित शैली से विचलित नहीं होता, यदि कुछ लोगों ने मुझसे इस विशेष अवसर पर अपने विचार प्रकाशित करने का अनुरोध न किया होता। यह देखते हुए कि मैं ऐसा करने का इरादा रखता हूं, मैंने ईश्वर से प्रार्थना और पूर्व चिंतन के साथ, अपने विचारों को जानबूझकर लिखना उचित समझा है, लेकिन इस तरह से कि वे जो भी हों, उन्हें असाधारण ज्ञान की सहायता के बिना भी समझा जा सके। मैं यह भी चाहता था कि उपदेश मंच और प्रेस के बीच कोई विसंगति न हो, बल्कि जो कुछ अभी सुना जा सकता है, उसे बिना किसी बदलाव के फिर से पढ़ा जा सके, जो कि स्मृति पर भरोसा करने पर शायद ही संभव हो पाता।

सुसमाचार के प्रत्येक सेवक का यह कर्तव्य है कि यथासंभव वह अपने सभी ध्यानपूर्वक सुनने वालों को अपनी बात समझा सके। यद्यपि, जब वह पवित्रशास्त्रों में निहित महत्वपूर्ण सत्यों का निवेदन करता है, तो उसे पवित्रशास्त्र की शुद्ध और गरिमामय भाषा में ही ऐसा करना चाहिए, न कि उन्हें उनके स्वरूप से भिन्न भाषा में

ढालकर, बल्कि उन्हें उस वस्त्र में प्रस्तुत करना चाहिए जो परमेश्वर ने उन्हें सुशोभित किया है, जिसने आकाश को महिमा से सुशोभित किया है और यहाँ तक कि मैदान के लिली के फूलों को भी सुलैमान की सारी महिमा को फीका कर देने वाले वस्त्र पहनाए हैं।

ये विचार मुझ पर असामान्य रूप से हावी हो जाते हैं, जब मैं इस नश्वर जीवन की क्षणभंगुरता और अनिश्चितता, हमारी विशाल जिम्मेदारी, समय की गति और परिणामस्वरूप अनंत काल के निकट आने पर विचार करता हूँ; एक ऐसा अनंत काल जो हममें से प्रत्येक के लिए या तो अकथनीय सुख या अवर्णनीय दुःख का होगा।

यह पाठ स्वयं एक उपदेश है जो उस विषय से संबंधित है जिसका मैंने पहले ही संकेत दिया है, और इस पर चर्चा करते हुए मैं पहले एक सामान्य व्याख्या दूंगा; और फिर इसे वर्तमान अवसर के संदर्भ में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अधिक सीधे तौर पर लागू करूंगा।

जीवनी लेखन और अंत्येष्टि उपदेश दोनों में ही जीवित व्यक्ति के हितों और मृत व्यक्ति की प्रसिद्धि दोनों का समान रूप से ध्यान रखना चाहिए; और हर जगह, हर समय, सत्य का उचित सम्मान करना चाहिए, चाहे वह प्रसन्न करे या अप्रसन्न करे, निराश करे या संतुष्ट करे। इस नियम का पालन न करने के कारण अनेक रचनाएँ, जैसे कि मैंने उल्लेख किया है, ज्ञानवर्धन के बजाय गुमराह करने वाली होती हैं, और निश्चित रूप से हमें मनुष्यों और रीति-रिवाजों के बारे में वह धारणा नहीं देतीं जो हमें ईश्वर के अचूक और निष्पक्ष वचन के सावधानीपूर्वक अध्ययन से प्राप्त होती है।

हमारा पाठ हमें सत्य पर विश्वास करने और उसे बोलने एवं अभ्यास करने के लिए दृढ़तापूर्वक प्रेरित करता है। जो भी इसे पढ़ता है, वह इसके सिद्धांतों के चिंतन में लगभग लीन और खो जाने से बच नहीं सकता। “मृत्यु का डंक पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है।” इसकी शुरुआत इन्हीं शब्दों से होती है, और ये अत्यंत गंभीर शब्द हैं, विशेष रूप से तब जब हम यह विचार करते हैं कि मनुष्य के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय होना निर्धारित है। हममें से कोई भी इससे छूट का दावा नहीं कर सकता। हमें मरना ही है, चाहे हम चाहें या न चाहें, और हमारा न्याय होना ही है, चाहे हम पहाड़ों और पर्वतों से भी प्रार्थना करें कि वे हमें उस महान श्वेत न्याय सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर के मुख से छिपा लें। और यदि अंतिम दिन हमें व्यवस्था के अधीन पाया गया, न कि अनुग्रह के अधीन, तो हम दुखद अनुभव से यह

जान लेंगे कि “मृत्यु का डंक पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है।” पाप के द्वारा, और केवल पाप के द्वारा ही, मृत्यु संसार में आई; और न केवल पाप से मृत्यु का आगमन हुआ, बल्कि पाप ने मृत्यु को एक प्रहार, एक विषैला खंजर दे दिया, जो घातक और पीड़ादायक था, और शरीर और आत्मा दोनों को नरक में सदा के लिए नष्ट करने में सक्षम था। ईश्वर का परिपूर्ण नियम, इस विष को मिटाने या इसके डंक को नष्ट करने के बजाय, एक को और अधिक उग्र और दूसरे को और अधिक शक्तिशाली और मार्मिक बना दिया। ईश्वर का परिपूर्ण नियम, मनुष्य की अपूर्णता के कारण, जीवन के लिए अपने दिव्य विधान के बावजूद, मृत्यु की ओर ले जाने वाला पाया गया - एक न्यायप्रिय लेकिन कठोर और निर्दयी न्यायाधीश की तरह, यह नियम, अपनी निष्कलंक पवित्रता और व्यापकता में, अपराधी के विचारों, इच्छाओं, शब्दों और कार्यों, और सभी कार्यों और चूकों की जाँच करता था, एक उल्लंघन को अपने सभी आदेशों का उल्लंघन मानता था, और यह पाते हुए कि कोई भी धर्मी नहीं था, एक भी नहीं, और प्रायश्चित या क्षमा का मार्ग खोले बिना, उसने अपराधी पर भयानक दंड सुनाया, और उसे सदा के लिए नष्ट होने के लिए छोड़ दिया होता। इसलिए हम प्रेरित के साथ कह सकते हैं, “परमेश्वर का धन्यवाद हो जिसने हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय दिलाई।” हाँ, हमें अपने सभी छल-कपटों और कपटों के बाद अंततः उस सीधे द्वार और संकरे मार्ग को खोजना होगा, जो मसीह है, सत्य और जीवन। हमें एक द्वार से प्रवेश करना होगा और दूसरे मार्ग पर चलना होगा, यदि हम नरक से बचकर स्वर्ग में जाना चाहते हैं। यह बात पतित अहंकारी मनुष्य को उलझन में डाल सकती है, उसे विरक्ति और घृणा उत्पन्न कर सकती है; नास्तिक उपहास कर सकता है, निंदक हँस सकता है, दार्शनिक तिरस्कार कर सकता है, उदासीन व्यक्ति उपेक्षा कर सकता है और कुतर्कवादी नुक्ताचीनी कर सकता है; और शैतान और दुष्ट कपटी हृदय अपवित्र गठबंधन में शामिल हो सकते हैं; फिर भी परमेश्वर का पक्ष अटल रहेगा। जो शाश्वत मन की क्रियाओं का परिणाम था, जो असीम दया और प्रेम से प्रेरित था, और सर्वशक्तिमान के हाथों से पूरा हुआ, वह विजयी हुआ है, और तब तक विजयी रहेगा जब तक दुष्टों का नाश न हो जाए और स्वर्ग उद्धार पाए हुओं से भर न जाए। व्यवस्था को पूरा करने और उसे सम्माननीय बनाने के लिए, मृत्यु पर विजय प्राप्त करने और उसके डंक को दूर करने के लिए मृत्यु द्वारा संसार के पापों का प्रायश्चित करने के लिए, नरक में उतरकर नरक पर विजय से भी अधिक प्राप्त करने के लिए,

यह मसीह का कार्य था, जो अकेले ही इसे पूरा करने में सक्षम थे, जबकि आत्मा का विशेषाधिकार हमारे मन में मसीह को महिमा की आशा के रूप में स्थापित करना है। तो भला कौन अपने हृदय की परिपूर्णता में यह नहीं कहेगा, “परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिसने हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय दिलाई है;” और क्या संत पौलुस यह नहीं कहेंगे, “इसलिए मेरे प्रिय भाइयों, स्थिर रहो, अडिग रहो, प्रभु के कार्य में सदा लगे रहो, क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है?” इस पापी, भ्रष्ट संसार में, स्वर्ग की राह में हमें अक्सर कठिनाइयों और खतरों का सामना करना पड़ता है, जो कमजोर विश्वास में हमें दृढ़ता से विचलित कर सकते हैं; परन्तु यह जानते हुए कि क्या धमकी है, क्या वादा है, कौन विरोध करता है, कौन प्रोत्साहन देता है, हम किसके लिए लड़ते हैं और किसके विरुद्ध लड़ते हैं, आइए हम परमेश्वर के पूरे कवच को धारण करें और साहसपूर्वक हर इंच पर संघर्ष करें; विजय प्राप्त होने तक और अमरता का पुरस्कार प्राप्त होने तक, जोश और साहस के साथ आगे बढ़ते रहें। हमें प्रभु के कार्य में भरपूर होना चाहिए और निरंतर लगे रहना चाहिए। उनके प्रति हमारी आज्ञाकारिता कंजूसी भरी या कम मात्रा में नहीं होनी चाहिए, बल्कि पुनर्जन्म के नवीनीकरण से परिवर्तित हृदय की असीम भक्ति से उत्पन्न होनी चाहिए। तभी हमें अपने परिश्रम का फल निश्चित रूप से प्राप्त होगा - वास्तव में, ऋण का नहीं, बल्कि अनुग्रह का - उस परमेश्वर की नि:शुल्क और अयोग्य कृपा, जो मृत होकर पुनर्जीवित हुए हैं, जिनके पास नरक, मृत्यु, कब्र के कारागार और स्वर्ग के राज्य की चाबियाँ हैं। हमारे नश्वर शरीर शीघ्र ही नष्ट होकर मिट्टी में मिल जाएँगे; परन्तु उनकी शक्ति से, जिन्होंने कहा, "हो जाए," और ब्रह्मांड की रचना हुई, वे अपने वास्तविक स्वरूप में पुनर्जीवित होंगे, एक ऐसे तरीके से जो मनुष्य की समझ से परे है, और संभवतः सर्वोच्च देवदूतों की भी, जब यह नश्वर शरीर अमरता धारण करेगा और अनंत काल तक अविनाशी वैभव से जगमगाएगा।

ये वे शास्त्रोक्त सिद्धांत थे जिनका प्रचार, अभ्यास और पालन उस व्यक्ति द्वारा किया गया था, जिनके निधन पर हमें गहरा शोक है।

अपने उपदेश और व्यवहार में, वे हर पादरी की तरह न तो दूर थे, न कठोर, न डरपोक, न दखलंदाज़, न कट्टरपंथी, न संकीर्ण, न हठधर्मी। वे मिलनसार थे, लेकिन दब्बू नहीं; खुले थे, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा विश्वास करने वाले नहीं। उनका मानना था कि नरक के भय के बजाय ईश्वर के प्रेम को आज्ञापालन का मुख्य प्रेरक बनाना

बेहतर और शास्त्र के अनुसार अधिक उचित है। उन्हें समझ नहीं आता था कि सच्चे विश्वासी, जिनके पास वर्तमान जीवन के साथ-साथ आने वाले जीवन का भी वादा है, अपने लिए कृत्रिम दुख क्यों पैदा करें और आहें भरने और उदासी के वस्त्र से सुसमाचार की शांति को क्यों धूमिल करें। उद्धार के शुभ समाचार पर मनन करते हुए और उसमें आनंदित होते हुए, वे चाहते थे कि दूसरे भी उन्हीं सिद्धांतों से आनंदित हों, और यद्यपि उन्होंने सच्चे पश्चाताप और पाप के लिए हृदय से दुःख की आवश्यकता का उपदेश दिया, उनका मानना था कि धर्मांतरित व्यक्ति, इसके बंधन से मुक्त होकर, सुसमाचार की गौरवशाली स्वतंत्रता में सदा आनंदित होना चाहिए। फिर भी, उसे अपने आनंद में भय को मिलाना चाहिए, और गंभीरता से प्रार्थना करनी चाहिए, और निरंतर सतर्क रहना चाहिए, कहीं वह प्रलोभन में न पड़ जाए, क्योंकि वह भली-भांति जानता है कि हमारा शत्रु शैतान गरजते हुए शेर के रूप में या प्रकाश के दूत के रूप में घूमता रहता है।

इन प्रारंभिक टिप्पणियों के बाद, जिनमें मैंने दूसरे विषय के लिए अपने प्रस्ताव का कुछ हद तक पूर्वाभास दिया है, अब मैं उन बातों को, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, इस गंभीर अवसर के संदर्भ में लागू करने की ओर अग्रसर होऊंगा। चूंकि कई लोग इस प्रवचन को हमारे दिवंगत मित्र की स्मृति के रूप में संजो कर रखना चाहेंगे, इसलिए मैं उनके इतिहास और चरित्र के बारे में कुछ और संकेत दूंगा, जो हालांकि पूर्ण और सटीक नहीं हैं, फिर भी कुछ हद तक उन उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे जिनके लिए वे अभिप्रेत हैं। रेवरेंड विलियम वेटमैन वेस्टमोर्लैंड के मूल निवासी थे और सम्मानित माता-पिता के पुत्र थे, जिन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा में अपनी सामर्थ्य के अनुसार कोई कसर नहीं छोड़ी; उन्होंने इसे ही अपने बच्चों के लिए सर्वोत्तम, सबसे महत्वपूर्ण और स्थायी सौभाग्य माना। विद्यालय से निकलने के बाद वे डरहम विश्वविद्यालय गए और उस सुप्रसिद्ध और प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान में अपनी लगन, दृढ़ता और क्षमताओं के कारण उन्होंने ख्याति और सम्मान प्राप्त किया और समय आने पर कला स्नातक और स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। जब वे वहाँ थे, मैंने इस धर्मप्रांत के परम पूजनीय धर्माध्यक्ष से निवेदन किया कि वे मुझे एक ऐसा सहायक पादरी भेजें जो पल्लीवासियों की आवश्यकताओं और इच्छाओं के अनुरूप हो। मेरा निवेदन व्यर्थ नहीं गया। हमारे धर्मप्रांत के प्रमुख ने, धर्मग्रंथों में वर्णित अपने पादरियों के मुखिया के रूप में, एक प्रशंसनीय चुनाव किया, जिसने मेरी और संभवतः आपकी अपेक्षाओं को भी

पूरा किया। चर्च पादरी सहायता संस्था ने अपनी उदारता से आर्थिक सहायता प्रदान की, जिसके बिना सभी प्रयास विफल हो जाते। लगभग तीन वर्षों तक हमारे आदरणीय मित्र ने अपने पवित्र पद पर रहते हुए हमारे बीच परिश्रम किया, और हमारे धर्मग्रंथ में व्यक्त और निहित सिद्धांतों का निष्ठापूर्वक प्रचार किया। ऐसे कई लोग हैं जो थोड़े समय के लिए प्रसन्न कर सकते हैं, और यहाँ तक कि आश्चर्यचकित भी कर सकते हैं - लेकिन जो शीघ्र ही पतन की ओर चले जाते हैं और बदनाम हो जाते हैं। उनका चरित्र उत्कृष्ट था; जो उनकी वास्तविक योग्यता का सबसे पुख्ता प्रमाण है। यह सच है कि उन्हें कुछ विशेष लाभ प्राप्त थे। व्यक्तित्व और व्यवहार में मिलनसार और स्वभाव से हंसमुख होने के कारण, उनकी पहली मुलाकात बेहद आकर्षक थी। लेकिन जो लाभ उन्हें शुरुआत में मिला, वह बाद में नहीं खोया। उनमें वे गुण थे जिनसे उन्हें और अधिक सफलता मिली। वे प्रथम कोटि की शास्त्रीय विद्याओं से परिपूर्ण थे, और सबसे बढ़कर, उनके धार्मिक सिद्धांत सुदृढ़ और रूढ़िवादी थे। यह उनके उपदेशों में स्पष्ट था, जो धर्मग्रंथों की कुंजी के साथ, मसीह के माध्यम से सभी के लिए मुक्ति का द्वार खोलते थे - और जो कभी-कभी सामान्य समझ से परे होते थे, फिर भी हमेशा स्पष्टता, सत्यता और तर्क से परिपूर्ण होते थे, जो ध्यानपूर्वक सुनने वाले अधिकांश श्रोताओं को लाभान्वित करने के लिए उपयुक्त थे। जब मैंने उनसे कहा कि यह वांछनीय होगा कि वे धर्मग्रंथों की शुद्ध और गरिमामय सरलता से विमुख हुए बिना, अपने श्रोताओं में सबसे निम्न और सबसे निरक्षर व्यक्ति के स्तर तक उतरें, तो उन्होंने सहर्ष ऐसा करने का वादा किया - और इस संबंध में, स्पष्ट रूप से धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से सुधार हुआ। जैसा कि प्रत्येक पदधारी और उसके सहायक पादरी के साथ होना चाहिए, हम हमेशा पिता और पुत्र की तरह थे - अपनी-अपनी परिस्थितियों के अनुसार - सर्वोत्तम इरादों और अत्यंत मैत्रीपूर्ण भावना से एक-दूसरे को सलाह देते और लेते थे; एक-दूसरे को प्रतिद्वंद्वी के रूप में नहीं, बल्कि एक ही गौरवशाली उद्देश्य में सहकर्मी के रूप में देखते थे, और हमारे सामान्य प्रभु और स्वामी के मार्गदर्शन में काम करते थे।

धार्मिक सभाओं और कुटीर प्रवचनों में, जो एक पादरी का सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य होता है, वह व्यक्ति जो अब इस संसार में नहीं है, अपनी सेहत और परिस्थितियों के अनुसार हमेशा सक्रिय और लगनशील रहा। विशेष रूप से संडे स्कूल में, वह असाधारण रूप से उपयोगी था। उसमें बिना किसी कठोरता के, लगन और सख्ती से

जानकारी देने की एक अनोखी कला थी, जिससे छोटे और चंचल बच्चों के लिए भी शिक्षा एक बोझ नहीं बल्कि आनंद बन जाती थी। संडे स्कूल समिति, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने उनकी इस प्रतिभा को सराहा है और उन्हें आदर और शोक के साथ लंबे समय तक याद रखेंगे। इन बातों से मेरा तात्पर्य उन्हें निर्दोष साबित करना नहीं है; मानव स्वभाव के बारे में मेरे ऐसे कोई धर्मविरोधी विचार नहीं हैं। मैं इस संसार की कमियों और व्यर्थताओं पर लिखी अपनी पुस्तक में बुद्धिमान सुलेमान की बात दोहराना चाहूंगा, "पृथ्वी पर ऐसा कोई धर्मी मनुष्य नहीं है जो भलाई करता हो और पाप न करता हो।" लेकिन जहां कहीं भी कोई कमी रही हो, ईश्वर की कृपा से, इस निर्मम और औपचारिक संसार के कठोर लेकिन लाभकारी अनुशासन से प्राप्त ज्ञानवर्धक अनुभव द्वारा उचित समय पर उसकी पूर्ति अवश्य हो जाती।

क्योंकि वे स्वयं अनेकों के मित्र थे और किसी के शत्रु नहीं थे, इसलिए स्वाभाविक रूप से, मैं कह सकता हूँ कि उनके कोई शत्रु नहीं थे और अनेक मित्र थे। वे एक कर्तव्यनिष्ठ चर्चवासी और सच्चे प्रोटेस्टेंट थे, परन्तु अपने सभी मतभेदों के प्रति सहिष्णु थे; जहाँ वे सौहार्दपूर्वक एकता स्थापित नहीं कर सकते थे, वहाँ उन्होंने यह निश्चय किया कि अलगाव शत्रुता का आधार नहीं होना चाहिए — जन्म, शिक्षा और परिस्थितियों के स्वाभाविक प्रभावों को ध्यान में रखते हुए, और ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कि वह उन लोगों के भले के लिए सब कुछ संपन्न करे जो उससे प्रेम करते हैं। इस प्रकार, हमारे आदरणीय मित्र ने जीवन व्यतीत किया — परन्तु, यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि उनका निधन कैसे हुआ? उनकी बीमारी के दौरान, मैं सामान्यतः दिन में दो बार उनसे मिलने जाता था, उनके साथ प्रार्थना में शामिल होता था, इस मंडली से उनकी प्रार्थनाओं का अनुरोध सुनता था, जब वे उद्धारकर्ता के गुणों पर अपनी पूर्ण निर्भरता व्यक्त करते थे तो उन्हें सुनता था, उनके परिचारकों को दिए गए उनके धर्मपरायण उपदेशों को सुनता था, और उन्हें इस हलचल भरे, व्यर्थ, स्वार्थी संसार से विदा लेते हुए शांतिपूर्वक अपनी आँखें बंद करते हुए देखता था; अतः मैं सत्य ही कह सकता हूँ कि उनका अंत शांतिपूर्ण था और उनकी आशा महिमा थी। लेकिन अंततः, मैं किसी व्यक्ति के चरित्र का आकलन करने के लिए मृत्युशय्या पर होने वाली घटनाओं को एकमात्र सुरक्षित मापदंड नहीं मानता, और न ही कभी माना है। यदि हम यह जानना चाहते हैं कि कोई व्यक्ति प्रभु में मरा है या नहीं, तो हमें सबसे पहले यह पूछना चाहिए कि क्या वह प्रभु में जिया है? मुझे डर है कि कुछ लोगों ने इस मामले में

बहुत बड़ी और खतरनाक गलती की है, और यहाँ की गई गलती उतनी ही घातक होगी जितनी कि अपूरणीय। याकूब, दाऊद और शहीद स्टीफन के मृत्युकालीन दृश्यों में, हम शांत विश्वास, गंभीर श्रद्धा और गहन चिंतन देखते हैं, साथ ही अनंत काल और न्याय के निकट आने के प्रति स्पष्ट ईश्वरीय भय भी देखते हैं - और सबसे बढ़कर, हमारे पास उस अवसर पर एक पूर्ण मापदंड है, जब अलौकिक अंधकार ने दुनिया को ढक लिया था, कब्रें खुल गई थीं, मंदिर का पर्दा फट गया था, जब सूर्य ने अपना चेहरा रात में छिपा लिया था, और दुनिया के उद्धारकर्ता की मृत्यु हो गई थी। असाधारण उत्साह सही हो सकता है, लेकिन यह गलत भी हो सकता है; यह किसी मुसलमान या यहूदी में मौजूद हो सकता है, और जैसा कि मुझे अक्सर डर रहता है, यह अज्ञानता का स्वाभाविक परिणाम हो सकता है, मात्र भौतिक कारणों की उपज, जो किसी विशेष बीमारी, अनुचित आचरण, या भले इरादे वाले, लेकिन लापरवाह लोगों के और भी अनुचित कथनों से उत्पन्न हो सकता है; जबकि, मरते हुए ईसाई का पवित्र विश्वास, शांत समर्पण और गंभीर श्रद्धा, केवल पुनर्जीवित हृदय में दिव्य कृपा का प्रभाव हो सकता है, और केवल यही इस बात का पुख्ता प्रमाण दे सकता है कि अनंत ज्ञान की आत्मा ही गुरु रही है।

लेकिन इन विचारों का अंत अवश्य ही होगा। तमाम चिकित्सा कौशल, प्रार्थनाओं, मित्रों की शुभकामनाओं, रिश्तेदारों के स्नेह और नर्सों की देखभाल के बावजूद, हमारा मित्र नश्वर शरीर के मार्ग पर चल बसा है, और जिन लोगों और स्थानों ने उसे कभी जाना था, वे अब उसे नहीं जान पाएंगे। लेकिन हमें निराश होकर शोक नहीं करना चाहिए। पवित्र उद्धारकर्ता ने अपने मित्र लाजर के लिए विलाप किया था, और हमें भी अपने बिछड़े हुए मित्रों के लिए विलाप करना चाहिए। स्वाभाविक स्नेह की कमी को घोर पाप माना जाता है। लेकिन मसीही होने के नाते हमारा यह सौभाग्य है कि हम आनंदमय पुनरुत्थान की आशा रखें, इस उम्मीद में कि मृत्यु द्वारा हमसे बिछड़े हुए लोगों के साथ हम स्वर्ग में सदा के लिए फिर से मिल जाएंगे, जिन्हें हमने इस धरती पर प्रेम किया है। आइए हम अपने पाठ के शब्दों पर बार-बार विचार करें और प्रार्थना करें कि हम उन्हें याद रख सकें, सीख सकें और आत्मसात कर सकें। “मृत्यु का डंक पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है; परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिसने हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय दिलाई। अतः हे मेरे प्रिय भाइयों, स्थिर रहो, अविचल रहो, सदा प्रभु के कार्य में लगे रहो, क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु में तुम्हारा

परिश्रम व्यर्थ नहीं है।”

हमारे दिवंगत मित्र का जीवन उज्ज्वल, लेकिन अल्पकाल में ही समाप्त हो गया। छब्बीस वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। उन्होंने जीवन का चरम भी प्राप्त नहीं किया था; मित्रों की हर्षोल्लास भरी आशाओं, सभी की शुभकामनाओं और स्वयं उनकी प्रबल आशाओं के बीच, उन्हें इस संसार से अनंत काल के दरबार में बुला लिया गया, उस परमेश्वर द्वारा जिसकी आज्ञा का पालन उस क्षण सम्राटों, राजाओं, उनके सबसे तुच्छ प्रजाजनों, स्वर्गदूतों और मनुष्यों, राक्षसों और समस्त प्राणियों को करना पड़ता है। जब बुरे लोगों की मृत्यु होती है, तो संसार आनन्दित होता है और इसे सुखद मुक्ति और न्यायसंगत दंड मानता है; जब उनका जीवन समृद्धि में लंबा खिंचता है, तो कई लोग, भजनकार की तरह, तब तक व्याकुल और भ्रमित रहते हैं, जब तक कि वे उसकी ही तरह प्रभु के पवित्रस्थान में नहीं जाते और पाते हैं कि यह सब दया या न्याय के मार्ग में है। जब अच्छे लोग अपनी उपयोगिता के चरम पर रहते हुए असमय मर जाते हैं, तो अत्यंत आश्चर्य होता है, जब तक कि हम शास्त्रों में यह नहीं पढ़ते कि दया से उन्हें आने वाली बुराई से दूर ले जाया गया है। ऐसे सभी मामलों में, हमें विश्वास की आवश्यकता होती है, और वह भी दृढ़ विश्वास की। हम अक्सर अपनी चेतना से अधिक चीजों को देखने के लिए प्रेरित होते हैं, न कि विश्वास की दृष्टि से। हमारा विश्वास अक्सर आशा की गई चीजों का सार नहीं होता, न ही अनदेखी चीजों का प्रमाण होता है; और परिणामस्वरूप, यह संसार, अपने झूठे प्रकाशों के साथ, हमारी रुग्ण कल्पना में स्वर्ग की अकल्पनीय भव्यता को धूमिल कर देता है। मान-सम्मान, धन, शक्ति और प्रसिद्धि, और उन्हें भोगने के लिए लंबा जीवन, अक्सर हमारा बहुत अधिक ध्यान आकर्षित करते हैं, जबकि हम मृत्यु के आगमन, कब्र के अंधकार, अपघटन के कीड़े, सड़न की घृणित प्रक्रिया, शाश्वत अलगाव और विस्मृति से भयभीत रहते हैं। आनंदमय पुनरुत्थान, गौरवशाली अमर रूपांतरण, अकथनीय आनंद की शाश्वतता, पाप और पापियों से मुक्ति, और ईश्वर और उनके स्वर्गदूतों की उपस्थिति धुंधली दृष्टि में दिखाई देती है। यदि ये बातें न होतीं, तो भले लोग मृत्यु से भयभीत न होते। मनुष्य के विश्वास में संदेहवाद उससे कहीं अधिक है जितना वह सोचता है। अन्यथा, धर्मपरायण युवक मृत्यु से क्यों भयभीत होता है? शायद, ताकि वह सुखमय जीवन जी सके, शायद नहीं - या भला वह भला बूढ़ा व्यक्ति अपने थकाऊ जीवन को क्यों लंबा खींचना चाहता है, जब तक कि वह स्वयं पर बोझ और दूसरों पर बोझ न

बन जाए; जब तक कि वह एक ध्वस्त मीनार या झुलसे हुए बलूत के पेड़ की तरह अपने आभूषणों से रहित न हो जाए; और बिना मित्रों, बिना स्नेह, बिना सुख या लाभ प्राप्त करने या देने की क्षमता के रह जाए। क्या वह जीवन का आनंद लेने के लिए ऐसा करता है? ऐसा नहीं हो सकता। हम आसानी से समझ सकते हैं कि दुष्टों में जीवन की इच्छा और मृत्यु और न्याय का भय क्यों होता है; लेकिन, मसीह के अनुयायियों का अपनी यात्रा के अंतिम पड़ाव पर कांपना, जो उन्हें उनकी उपस्थिति और उनकी महिमा में ले जाएगा, केवल उनके विश्वास की कमजोरी और पाप के अवशेषों के कारण ही हो सकता है, जो उन्हें जंजीरों में जकड़ कर रखते हैं या उन्हें उन अकथनीय सुखों से वंचित रखते हैं जो उन्होंने उनके लिए उनके स्वर्गीय पिता के राज्य में सुरक्षित रखे हैं।

हे भाइयों, मनुष्य का हृदय कमजोर, दुष्ट और तर्क एवं निष्कर्ष में त्रुटिपूर्ण है; इसलिए हमें उस पर भरोसा नहीं करना चाहिए, बल्कि परमेश्वर की शक्ति और बुद्धि पर भरोसा करना चाहिए; हमें दृष्टि से नहीं, बल्कि विश्वास से चलना चाहिए; और मृत्यु एवं न्याय के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए; अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा महिमामय पुनरुत्थान और अनन्त उद्धार की आशा और लालसा रखनी चाहिए; जिन्हें, सर्वशक्तिमान पिता और पवित्र आत्मा के साथ, हम अब और सदा के लिए समस्त महिमा, स्तुति, शक्ति और प्रभुत्व अर्पित करते हैं। आमीन!

और थके हुए लोग विश्राम करते हैं।

जिस गोद में मेरे माथे धड़कते थे, वह किसी माँ या बेटी की नहीं, बल्कि एक पत्नी की थी। और अगर मैं अब बाहरी तौर पर उसे भूला हुआ दिखता हूँ, तो क्या मैं मन ही मन उसके बारे में तब तक नहीं सोचता जब तक नींद मेरी यादों को छीन न ले? अब मेरे गालों पर सुबह की शुभकामनाओं के साथ आने वाली वह आधी शर्म और आधी खुशी नहीं रही, न ही बीते दिनों की चिंताओं के लिए शाम को मिलने वाला सुकून, बल्कि

उन चिंताओं की ही भरमार है, जो हर नई चिंता के साथ मेरे दिल में आती हैं और आगे आने वाली नई चिंताओं की खबर लाती हैं। और अगर मेरा यह मजबूत शरीर और लोहे जैसा तंदुरुस्ती मुझे धोखा दे दे - हे भगवान! मैं क्या करूँ! मुझे शारीरिक कमजोरी के एक भी संकेत से उतना ही डर लगता है जितना किसी अपराधी को घड़ी की हर टिक-टिक से, जो उसकी मौत की घंटी बजाती है। जब यह मजबूत पैर अब झाड़ियों पर नहीं चल पाएगा, यह गर्म खून अब किसी स्त्री के स्पर्श से रोमांचित नहीं होगा, यह सक्रिय मस्तिष्क अब घनी कल्पनाओं से भरा नहीं रहेगा, यह सर्वभक्षी पेट अब अपनी तीन बोतलें या बीस गिलास नहीं संभाल पाएगा - तब अलेक्जेंडर पर्सी आखिर क्या करेगा? मैं वह स्त्री नहीं हूँ जो धैर्य से दर्द सहन कर सकूँ, इसलिए एक अपाहिज का जीवन मुझे मार डालेगा या पागल कर देगा। कल्पना कीजिए, मैं चार तकियों पर लेटी हूँ - उतनी ही नर्सों से घिरी हुई - गोली और दवा ही मेरा एकमात्र पोषण है - चिकित्सक और सर्जन ही मेरे एकमात्र मित्र हैं - एक सड़ते हुए शरीर की देखभाल करना ही इस जीवन के लिए मेरा काम है - मेरे पादरी या उनके सहायक द्वार के खंभे मुझे एक विदूषक की तरह आने वाले जीवन में छलांग लगाने के लिए घेर लेते हैं। न मैरी - न ही, न ही तुम मारिया - जो अपनी आवाज और उपस्थिति से मुझे याद दिलाती हो कि पृथ्वी का अपना 'स्वर्ग खो गया' है; न तो कोई यहेजकेल, न जकर्याह, न हबक्कूक, न ही कोई ऐसा नायक जिसका नाम उसकी दाढ़ी जितना खुरदुरा हो, जो मुझे 'स्वर्ग की पुनः प्राप्ति' में कंधे उचकाकर सहारा दे सके। खैर, जैसा कि ईमानदार निम ने कहा है, "चीजें जैसी होनी हैं वैसी ही होंगी।" तो आज के काम के लिए मैं कुछ खेल से शुरुआत करूँगा - दूसरा, झगड़ा करूँगा - तीसरा, उस उपेक्षित महिला से एक घंटे बात करके अपनी नसों में बुखार पैदा करूँगा - चौथा, थर्स्टन के शराब के तहखाने से तेजी से संपर्क करके अपने साथियों की नसों में भी बुखार पैदा करूँगा - पाँचवाँ, चिढ़ाए जाने के बाद बिज्जू की तरह खराब मिजाज में बिस्तर पर जाऊँगा और छठा, उस शारीरिक विनाश की ओर एक और कदम बढ़ाकर बिस्तर से उठूँगा जिससे मुझे इतनी घृणा है। खैर, जैसा कि निम ने फिर कहा है, "निष्कर्ष तो निकलेंगे ही" - हैलो! बॉब, बदमाश! क्या मैंने कसम नहीं खाई थी कि अगर मैंने तुम्हें आज सुबह नशे में पाया तो मैं तुम्हें तुम्हारे पिछले मालिक तक लात मार दूँगा? तुम थर्स्टन को क्यों परेशान कर रहे हो? लेकिन तुम्हें अभी मेरे जूते मिलेंगे।"

ऐसा कहते हुए और बिना किसी झिझक के, श्री पर्सी उस खाई को पार कर गए

जो उन्हें आग के चारों ओर इकट्ठा हुए शिकारियों से अलग करती थी, और अपने छोटे से बूढ़े नौकर को पकड़ लिया जो जागीरदार के सामने अत्यंत अशिष्ट आत्मविश्वास के साथ खड़ा था, जबकि श्री थर्स्टन दूल्हे को घूर रहे थे और पर्सी के आते ही उनकी घूरती नज़र दूल्हे के मालिक पर जा टिकी।

“थर्स्टन में यह बूढ़ा घोड़ा चोर कौन है?” श्री पर्सी ने बॉब को हिलाते हुए पूछा, जिससे उसका पेट खराब हो गया।

"हे महोदय - आप स्वयं अपने सेवक से पूछिए - मुझे तो इसकी कोई परवाह ही नहीं है।"

“थर्स्टन, मुझे अपना कोई भी दुर्भावनापूर्ण व्यवहार मत दिखाना, अन्यथा मैं तुम्हें लीड्स के अस्पताल भेज दूँगा जहाँ तुम्हारा इलाज किया जाएगा — अब रॉबर्ट ले डियाबल —”

“ओह, मैं बोल नहीं सकता, महाराज — आप मेरा गला घोंट देंगे।”

"पहले झूठ बोलो - अब जाओ बूढ़े मूर्ख - हेक्टर तुम दखल मत दो।"

“ठीक है स्वामी,” अपने विशालकाय युवा स्वामी की पकड़ से मुक्त हुए बूढ़े व्यक्ति ने कहा—और एक ऐसे व्यक्ति का मुखौटा पहन लिया जिसे बहुत दुख पहुँचा हो, फिर भी वह बहुत क्षमाशील हो— “ठीक है, मैं सब कुछ उतनी ही स्पष्ट रूप से बताऊँगा जितनी सीधी-सीधी और जितनी तेज़ी से दौड़ का विजेता दौड़ता है—ठीक है, मैं तुम्हारा और तुम्हारे पिता का सेवक रहा हूँ—और मैं उन्हें सबसे बड़े स्वामी के रूप में जानता था—और मैंने तुम्हें अपने घुटनों पर बिठाया था और तुम्हें पहली बार कुरकुरे का पैकेट दिया था जिसे तुमने छुआ था—और जब तुमने कुरकुरे को उठाया और कहा कि वह प्यारा है तो मैं हँसा था।”—यहाँ बूढ़े मुखिया ने अपनी कोट की कफ़ से एक आँख पोंछी, लेकिन अपने स्वामी की मुट्ठी की कसी हुई और सफ़ेद पड़ चुकी उंगलियों ने उन्हें अपनी कोमल भावनाओं को रोकने के लिए मजबूर कर दिया— “ठीक है—मैंने कभी इतना अच्छा व्यवहार नहीं किया जितना मैंने किया।” चलते-फिरते! मैं थोड़ा बहुत खाना तो बर्दाश्त कर सकता हूँ, लेकिन एक बूंद भी नहीं! — ये सज्जन कहते हैं कि मुझे आज सुबह उनकी बागान में एक महिला के साथ देखा गया था और मैं अपनी पुरानी पारिवारिक बाइबिल की कसम खाकर कह सकता हूँ कि इस थकाऊ दुनिया में जन्म लेने के बाद से मैंने कभी किसी लड़की से शादी नहीं की!

थर्स्टन खुद उस बूढ़े बदमाश के छेड़छाड़ के प्रयासों से इनकार पर हल्की सी

मुस्कान रोक नहीं पाया, लेकिन उसके चेहरे पर आई मुस्कान पल भर में गायब हो गई, इसलिए उसने गंभीर स्वर में पर्सी से पूछा।

"क्या हम तुम्हारे इस उद्दंड बूढ़े दूल्हे के लिए अपना खेल खोने जा रहे हैं?"

“अरे नहीं थर्स्टन — अभी बहुत समय है — अब बॉब, मेरी पवित्र कुंवारी — शुरू करो!”

"मायस्टर ने कहा कि उन्होंने मुझे अपनी चचेरी बहन - मिस - के साथ देखा था - मुझे नहीं पता कि वे उसे क्या कहते हैं।"

“मिस एलन बॉब — अच्छा, चलो बेटा —”

“और उसने कहा कि उसने तुम्हें उसे चूमते हुए देखा,” श्री मोंटमोरेंसी ने नाटक को देखकर अत्यधिक प्रसन्नता जताते हुए कहा।

“हेक्टर चुप रहो क्योंकि तुम्हें अपना वह सामने वाला दांत बहुत प्यारा है—” पर्सी ने काफी गंभीरता से कहा।

“नहीं, महाराज, चाहे आप पवित्र पुस्तक लें या पुराने जॉन वेस्ली के भजन या कुछ और जो आप गवाही के लिए पसंद करें कि मैं वहाँ काम करता था, आपके टोकरे भरता था और आपके कुत्तों को खिलाता था — मेरे लिए — मेरे जैसे बूढ़े व्यक्ति के लिए — महिलाओं का अनुयायी कहलाना हास्यास्पद है — नहीं — यह तर्क से परे है!”

“अब पर्सी,” श्री थर्स्टन ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “मुझे यह बकवास बंद करनी होगी—मैंने अपने ड्रेसिंग रूम की खिड़की से देखा कि तुम्हारा वह आदमी मेरे एक रिश्तेदार—मतलब मेरे घर में आई एक युवती—के पास किसी संदेश या मुलाकात के लिए जा रहा था—और बाद में मैंने एक सज्जन को देखा, जिसे मोंटमोरेंसी ने भी देखा और पुष्टि की कि वह तुम ही थे, झाड़ियों में घुसते हुए—पर्सी, ज़रा इधर आओ—मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।”

मैं विलियम को इस जगह से एक कदम भी नहीं हिलाऊंगा - मैं एक कदम चलने या गोली चलाने से पहले ही इस मामले को सुलझा लूंगा!

श्री पर्सी की भौंहें थर्स्टन की तरह लाल हो गईं, जब उन्होंने अपनी बंदूक नीचे रखी और श्री मोंटमोरेंसी की ओर मुड़कर पूछा—

“अब हेक्टर—आज का दिन या तो खेल साबित होगा या गंभीरता—आप इसे क्या बनाना चाहते हैं—मैं थर्स्टन से और आपसे भी यही पूछता हूँ और आपको बता

सकता हूँ कि मैं दोनों के लिए तैयार हूँ—”

“मज़े के लिए—मुझे कहना चाहिए था, मेरी प्यारी,” बैरिस्टर हँसते हुए बोले—“लेकिन अगर हम यहाँ ज़्यादा देर तक रुके तो इस तरह की चीज़ों की भरमार हो जाएगी—हमें मनोरंजन में बदलाव लाने के लिए गंभीरता से प्रयास करने होंगे। दो जमींदार एक शराबी नौकर के लिए सुबह के सपने को लेकर झगड़ रहे हैं! भगवान करे वे मुर्गे मारने के बजाय आपस में ही न लड़ पड़ें।”

“हेक्टर, मेरे पुराने साथी, मैं क्रिकेट बैट, बॉल या विकेट बनने के मूड में नहीं हूँ। मैं न तो मारना चाहता हूँ, न ही मारने का साधन बनना चाहता हूँ, और न ही खुद मारा जाना चाहता हूँ। लेकिन मैं – भले ही दिखने में आर्सेनिक जितना मासूम लगूँ – उतना ही खतरनाक हूँ, और इसे देखो” – यहाँ श्री पर्सी ने अपनी बोतल से बारूद का एक टुकड़ा अपनी हथेली पर गिराया – “यह ऐसा पदार्थ है जो बीस साल तक शांत रह सकता है, लेकिन अगर इसे सावधानी से रखा जाए, तो ध्यान रहे – बस एक बार ट्रिगर दबाने से ही राजा सोलोमन अपनी पूरी शान के साथ नरक में पहुँच जाएगा।”

“हाँ—यह तो बहुत ही बढ़िया पाउडर है—यह तुम्हारे स्वभाव जैसा है पर्सी—छोटा और अचानक और मेरे दोस्त थर्स्टन के चेहरे जैसा—काला और बदसूरत।”

“पर्सी, ज़रा हट जाओ—मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ,” थर्स्टन ने बातचीत में दखल देते हुए कहा, “और मैं कहता हूँ अलेक्जेंडर, तुम्हें आना ही होगा वरना मैं देख लूँगा कि आज का दिन अच्छा न गुज़रे, हालाँकि मैं तुम्हारा मेज़बान हूँ—”

मोंटमोरेंसी ने चालाकी से पर्सी के कान में फुसफुसाया कि अपने चिड़चिड़े मनोरंजनकर्ता से इस समय झगड़ा करना बहुत ही अनुचित होगा। पर्सी ने इस बात को तुरंत मान लिया और मिस्टर थर्स्टन के साथ थोड़ी दूर चला गया, लेकिन तभी मिस्टर थर्स्टन ने उसे रोककर गुस्से में कहा।

"आज सुबह आप मिस एलन से किसलिए मिले थे?"

"अगर मैंने ऐसा किया भी तो एक नींद में चलने वाले व्यक्ति के रूप में किया।"

"मोंटमोरेंसी का कहना है कि आपने ऐसा किया।"

"फिर वह झूठ बोलता है।"

मैंने स्वयं आपके सेवक को उससे मिलते हुए देखा।

"मैंने जितना किया उससे कहीं ज्यादा है।"

लेकिन वह आपका सेवक है, इसलिए वह आपसे संदेश लेकर उससे मिला होगा।

"यह मेरी जानकारी से कहीं अधिक है।"

“क्या वह आपका सेवक नहीं है?”

“नहीं—वह मेरा दूल्हा तो है, लेकिन शैतान का सेवक है।”

“पर्सी, तुम धारदार औजारों से खेल रहे हो और मैं तुमसे डरने वाला नहीं हूँ! मेरी बात ध्यान से सुनो—मैं तुमसे डरने वाला नहीं हूँ! तुम जानते हो मेरा मतलब क्या है और चाहे कुछ भी हो जाए, मैं दोहराता हूँ, मैं तुमसे डरने वाला नहीं हूँ! मैं कम बोलने वाला आदमी हूँ पर्सी, लेकिन अगर मैं कम बोलता हूँ तो बहुत सोचता हूँ और कभी-कभी कार्रवाई भी करता हूँ—मैं धमकी भरे लहजे में नहीं बोलता—मैं तुम्हें अपना मेहमान, परिचित, दोस्त और वास्तव में सब कुछ मानता हूँ—लेकिन—अगर सच सामने आ गया—तो मैंने बहुत पैसा खो दिया है और मैं परेशान नहीं होना चाहता—अगर मुझे ज़रा भी परेशानी हुई तो हंगामा होगा, इस पर यकीन मानो—तुम मिस एलन के बारे में सब जानते हो—तुम जानते हो कि वह मेरी चचेरी बहन है या नहीं—और श्री मोंटमोरेंसी कहते हैं कि तुम आज सुबह उससे मिले थे—पर्सी, यह अच्छा नहीं होगा क्योंकि मेरे खून में काला खून है, हालाँकि मैं दोहराता हूँ, किसी को धमकी नहीं दूँगा, और मैं अपनी किसी भी व्यवस्था में कोई दखलअंदाजी बर्दाश्त नहीं करूँगा!—फिर इन सबके अलावा—जिन सब बातों पर हमने चर्चा की—”

“नहीं थर्स्टन,” पर्सी ने कहा, “मैंने तो कुछ कहा ही नहीं है – मुझे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है कि तुम क्या हासिल करना चाहते हो – मैं बस इतना जानता हूँ कि हम अपने खेल में देरी कर रहे हैं, अपने दोस्तों को असुविधा पहुँचा रहे हैं और, सच कहूँ तो, खुद को मूर्ख बना रहे हैं।”

श्री थर्स्टन ने श्री पर्सी की शांत और कुछ हद तक अभिमानी आवाज़ सुनकर मानो मानसिक रूप से कुछ ऐसा बदलाव महसूस किया, जैसा बुखार से पीड़ित शरीर पर गीला कंबल लपेटने से होता है। उन्होंने अपनी बंदूक पर झुककर और कुछ अजीब तरीके से हाथ बढ़ाते हुए जवाब दिया।

“मेरा इरादा कुछ भी गलत करने का नहीं था — मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ — मैं केवल जानना चाहता था — यानी मुझे पता है कि श्री मोंटमोरेंसी एक —”

"एक बदमाश," पर्सी ने वाक्य पूरा करते हुए कहा और थर्स्टन द्वारा बढ़ाए गए हाथ को स्वीकार किए बिना ही जल्दबाजी में अपने और भी जल्दबाज़ी में चल रहे साथियों के पास वापस जाने के लिए मुड़ गया।

श्री थर्स्टन इतने मीठे भाव से पीछे-पीछे आए कि ओ'कॉनर ने कहा कि उसने पोर्टर की जगह तेजाब पी लिया है और क्वामिना ने कसम खाई कि कैमरून या कांगो नदियों से उसे इससे बुरा सौदा कभी नहीं मिला। मोंटमोरेंसी लंबे समय से रखवालों के साथ मजाक कर रहा था, जो जाहिर तौर पर उसे एक मनमोहक व्यक्ति मानते थे, और श्री रॉबर्ट किंग भी उतने ही समय से टोकरियों की देखभाल करने वाले लड़कों और घोड़ों की देखभाल करने वालों पर अपने अपमानित सद्गुण का क्रोध निकाल रहे थे। अब हालांकि - दोनों रईस बिना किसी चोट या खून से लथपथ नाक के और जाहिर तौर पर दोस्ती के बंधन में लौट आए थे, चाहे उनके दिल कितने भी अलग क्यों न हों - हालांकि एक को इस बात का एहसास हो सकता है कि वह उस पर प्रभुत्व रखता है और नीचे पुराने हॉल में इस दुनिया के नियमों से बंधे एक प्राणी को यातना देने की अपनी शक्तियों पर गर्व करता है - और दूसरा - दो दिन पहले,

"खाली हाथ, हृदय और आंखें"

अब सफेद गालों और उदास आँखों के प्रति एक अराजक समर्पण का अनुभव करते हुए, जो नियमित कर्तव्यों के निर्वाह के कारण शायद ही कभी बदलती थीं, चाहे दिल कितना भी धड़कता हो या आत्मा कितनी भी दुखी हो। अब, जुलूस को आगे बढ़ने की स्वतंत्रता महसूस हुई, और उनके सामने जंगली मैदान थे, उनके चारों ओर खेल की आशाएँ थीं - उनके बीच अच्छे स्वास्थ्य का होना - क्योंकि बूढ़ा राजा भी अविचलित था - तो वे वास्तव में खुश क्यों नहीं थे?

जिनका जीवन पुस्तकालय की चारदीवारी के भीतर सिमट जाता है, वे इस बात को बहुत कम जानते हैं कि जिन पुरुषों ने उन्हें ये खजाने दिए हैं, उनके अस्तित्व को किस चीज ने आकार दिया है, और जो घरेलू कर्तव्यों से परे कोई भावना नहीं जानते, वे उन विचारों को नहीं समझ सकते जो मजबूत लेकिन बेलगाम दिमागों में चलते हैं, जिनके पास भागने के लिए कोई घर नहीं है या जो लंबे समय से घर के विचारों से विमुख हो चुके हैं।

उन सज्जनों में से, जिन्होंने 'मूरों' के खिलाफ इस सेना का गठन किया था, उनमें से किसका वास्तव में अपना घर था? श्री मोंटमोरेंसी नहीं जानते थे - जिनकी पत्नी कोलोन कैथेड्रल की विशाल छत के नीचे मृत पड़ी थीं, कुछ वर्षों तक उनके अधीन रहने और कुछ महीनों तक उस व्यक्ति के लंबे समय से चले आ रहे और देर से आनंदित प्रेम के प्रकोप और भोग के बाद, जिसने उन्हें 'अकेले मरने के लिए छोड़

दिया' - वह आदमी - श्री पर्सी नहीं जानते थे - जो अपने शरीर में ऐसे कांटों के अलावा - ऐसे चुभन जैसे बूढ़े आदम ने ईसाइयों को दिए थे - जानते थे कि ठंडी धरती उस नन्ही महिला को गले लगा रही है जिसने कभी उनके अलावा किसी और के बारे में नहीं सोचा - न ही श्री ओ' कॉनर जानते थे, जिन्हें इस बात का गहरा दुख था कि उनका किराया, जैसे ही देय होगा, उनकी अपनी खुजली वाली उंगलियों से नहीं बल्कि श्री जेरेमिया सिम्पसन की विशाल हथेली से प्राप्त होगा - न ही उक्त सिम्पसन जानते थे, जिनकी नसें श्री क्वामिना से लिए गए कुछ अमेरिकी और स्पेनिश बंधकों के मूल्य को लेकर परेशान थीं - न ही क्वामिना जानते थे, जिनकी आत्मा अब खतरनाक मध्य मार्ग पर एक और उद्यम से इतना कमाने के लिए तरस रही थी कि वह खुद को जेरेमिया के चंगुल से मुक्त कर सके - न ही गॉर्डन जानते थे, जिन्हें लगता था कि उनका भाग्य और किस्मत एक टीटोटम के साथ घूम रही है - कि लाल और काला उनके गिरगिट जैसे भाग्य को रंग देते हैं - न ही संभवतः नौकरों, रखवालों, पहरेदारों और चालकों में से कोई भी -

"हर किसी का अपना दुख होता है, सब मनुष्य हैं, एक समान पीड़ा सहने के लिए अभिशप्त हैं, दूसरों के दर्द के प्रति संवेदनशीलता, अपने स्वयं के दर्द के प्रति असंवेदनशीलता।"

हालांकि, हवादार पहाड़ी हीथर के विशाल विस्तार में, जहां बारहवें दिन का सूरज बैंगनी फूलों से छनकर आ रहा था और जहां चौड़ी छाती वाले पक्षी ताज़ी हवा का आनंद ले रहे थे और ब्रिटेन के अनोखे पक्षी हर गोली के निशान पर अपनी जान दे रहे थे - वह अतीत के दुखों को याद करने या ओल्नी के कवि की भावनाओं में डूबने की जगह नहीं थी, और जब दोपहर के समय शिकारियों और परिचारकों के अलग-अलग समूह एक सुनसान झरने पर मिले, जिसका हीरे जैसा पानी गहरे हरे काई से होकर घुटनों तक गहरे हीथर की घाटी में, व्हिनस्टोन चट्टान के अर्धवृत्त के नीचे से फूट रहा था, तो वे सभी अपने बैगों का प्रदर्शन करने या प्रदर्शन की कमी को सही ठहराने में मग्न प्रतीत हुए। मैदान की जानकारी और अपने अधीनस्थों पर दबदबे के बल पर थर्स्टन ने अपने सभी मेहमानों की तुलना में दो या तीन अधिक बार जीत हासिल की। ओ'कॉनर और क्वामिना, जिन्होंने व्हिस्की की बोतल से एक घूंट पीने के अलावा हर चीज की परवाह किए बिना खुद को इस खेल के लिए समर्पित कर दिया था, विजेता के रूप में दूसरे स्थान पर रहे। मोंटमोरेंसी सिम्पसन और गॉर्डन पर अपनी धाक जमा

सकता था, लेकिन सभी ने पार्टी के सर्वमान्य सर्वश्रेष्ठ निशानेबाज - मिस्टर पर्सी - पर विजय प्राप्त की।

श्री ओ' कॉनर ने पर्सी के इकलौते कॉकबर्ड को पलटते हुए कहा, "वाह!" जिसका सिर निशानेबाज के गुस्से में आकर गायब हो गया था। "अच्छा सज्जनों - मुझे बोतल दीजिए - मैंने अपने जीवन में बहुत सी मुसीबतें झेली हैं, लेकिन यह तो सब पर आग लगाने वाली है! यह सोचकर ही मुझे लगता है कि डर्बीशायर और वेस्टमोर्लैंड के सबसे अच्छे निशानेबाज के आधे के मुकाबले मेरे पास दिखाने के लिए नौ जोड़ी हैं, मैं अपने सारे कर्ज चुका सकता हूँ। मैं समझ सकता हूँ कि सिम्पसन और गॉर्डन क्यों असफल हुए, क्योंकि उन्होंने अपने हाथों को ट्रिगर पर रखने के बजाय अपनी जेबों में डाल रखा था, और जहाँ तक मोंटमोरेंसी की बात है - वह किसी 'क्रिअस कोरी' मामले या मारपीट के मुकदमे में अपने अगले मुकदमे के बारे में सोच रहा है। फिर थर्स्टन जो चाहे कर सकता है, क्योंकि हमारे आस-पास के लोग जानते हैं कि जब वह चाहे तो एक इशारा भी अंधे घोड़े के लिए आँख मारने जैसा होता है - लेकिन पर्सी, आधा पक्षी - मैं कहता हूँ क्वैमिना, मुझे बोतल दीजिए - उम्मीद है कि दिन बीतने से पहले हमें और भी पर्सी जैसे पक्षी देखने को मिलेंगे।" तब तुम और मैं, क्वाशिया, अपने पुराने प्रतिशत लाभ पर थोड़ा-बहुत व्यापार कर सकते हैं।"

श्री क्वामिना ने उत्तर दिया — “ओ' कॉनर, वो पूरी तरह से आर्थर है! उसकी हम दोनों को तिरछी नज़र से देखकर मुझे यही लगता है! उसने जैकेट पहनने से पहले ही अपना शिकार कर लिया है और थर्स्टन को इसका ध्यान रखना चाहिए।”

“कौन— मैं? तुम क्या कह रहे हो?” मेज़बान गुस्से से चिल्लाया, लेकिन श्री क्वामिना स्पष्ट रूप से चकित होकर अपनी बोतल से एक और घूंट लेते हुए अपनी प्रतिक्रिया को निगल गए। इसलिए श्री थर्स्टन ने पर्सी की ओर जवाब या झगड़े के लिए रुख किया, लेकिन पर्सी ने देखा कि मोंटमोरेंसी उत्सुकता से उस बादल को देख रहा है जो एक आदमी के हाथ से भी बड़ा नहीं था और जो दूसरों के लिए तूफ़ान का संकेत देता था, लेकिन खुद पर ध्यान नहीं देता था। और चूंकि वह अपने दोस्तों या अपने मेज़बान के बदले का शिकार नहीं बनना चाहता था, इसलिए उसने माउंटेन ड्यू से भरा अपना हॉर्न फेंक दिया— अपने सिर कटे पक्षी को अपने पुराने नौकर को दे दिया और उसे टट्टू और अपनी जान को सुरक्षित डार्कवॉल वापस लाने का ध्यान रखने के लिए कहा। उसने सुप्रभात या बहाने बनाने में समय बर्बाद नहीं किया, बल्कि नाले

के पार और उस लंबी बैलगाड़ी की पटरी पर दौड़ पड़ा जो पीट के गड्ढों से अधिक सभ्य भूमि के खेतों तक का रास्ता थी।

मिस्टर पर्सी की डार्कवॉल की ओर तेज़ी से वापस जाते समय उनकी भावनाओं या मनोभावों का विश्लेषण करना मुझसे संभव नहीं है, क्योंकि मेरा मानना है कि उनके पास खुद ऐसा करने का समय ही नहीं था। लेकिन सुबह के काम के प्रति तिरस्कार, सुबह के साथियों के प्रति अरुचि और विचारों की घृणा से भरे हुए, जिसने बारहवें दिन को पूरी तरह से अंधकारमय बना दिया, वे पहली सीढ़ी से कूदे और बीस एकड़ हरे-भरे चरागाहों से होते हुए पहले पुल पर चल पड़े, जो झाड़ियों से चुराए गए थे और डार्कवॉल फार्म का अभिन्न अंग थे।

पर्सी ने इतनी जल्दी और इतनी अप्रत्याशित रूप से उस शांत हॉल में घुसपैठ करने में जरा भी देर नहीं की, जहाँ शाम तक घरेलू नींद की उम्मीद की जाती थी और शाम को ऐसे आगंतुक आते थे जो रात को दिन में बदलने के लिए तैयार रहते थे। उसने हवेली की मालकिन को अपने आने की सूचना दी और उसने नाश्ते के कमरे में उसका स्वागत किया।

“मैं इतनी जल्दी लौट आया हूँ,” उसने कहा, “क्योंकि मुझे लगा कि अब खेल-खेल में हाथ आज़माना ठीक नहीं है, और जिन लोगों पर मैं अपनी बड़ाई करने का आदी हूँ, उनके बीच मैं दूसरे नंबर पर आना पसंद नहीं करता। जैसा कि आप जानते हैं कि व्यर्थ परिश्रम से व्यर्थ विश्राम बेहतर है, मैं आपके महल में मनुष्य की प्राचीन कृतियाँ देखने के लिए लौटा हूँ, जिन्हें मैं सोफे पर बैठकर निहार सकता हूँ, जबकि प्रकृति की प्राचीन कृतियों को देखने के लिए मीलों दलदल में चलना पड़ता है। मेरे दुखी दल के लौटने से पहले मुझे कितने घंटे आराम मिलेगा?”

"थर्स्टन ने आपके दल की वापसी के लिए कोई निश्चित समय नहीं बताया, लेकिन मुझे छह बजे से पहले किसी के आने की उम्मीद नहीं थी।"

श्रीमती थर्स्टन जब बोल रही थीं और अचानक आए मेहमान से उनकी मुलाकात के शुरुआती क्षणों में, उस प्रतिष्ठान का कोई भी नौकर इतना उदासीन नहीं हो सकता था कि वह अपनी आमतौर पर शांत और मधुर स्वभाव वाली मालकिन की घबराहट को न समझ पाए। उनकी आंखें, जिनमें आमतौर पर सभी के लिए एक सौम्य दृष्टि होती थी, उनकी आवाज, जिनमें एक कोमल स्वर होता था और उनके कदम, जो इतने शांत होते थे, अब चिड़चिड़ेपन में बदल गए थे - आंखों में परेशानी और आवाज और कदमों

दोनों में हिचकिचाहट थी। लेकिन इन परिवर्तनों को आसानी से समझा जा सकता था यदि देखने वालों को इस बात का एहसास होता कि वह अपने क्रोधित पति से किए गए वादों को, जिन्हें पूरी निष्ठा से निभाने का उनका इरादा था, अनजाने में तोड़ने के जोखिम का सामना कर रही थीं, और यदि वह अपने वादे को अक्षरशः निभातीं तो सभी आतिथ्य सत्कार और शालीनता की भावनाओं के प्रति घृणा का सामना कर रही थीं। साथ ही, उनकी धीमी आवाज, जो विपरीत हवाओं के बीच फुसफुसाने की हिम्मत भी नहीं कर रही थी, एक महिला और एक शालीन के दिल को बता रही थी कि उनके घर में एक ऐसा मेहमान आश्रय लिए हुए है जिसके मन में कड़वी निंदा के उफान से कहीं अधिक आकर्षक साहस है - जिसकी भावनाएं सामान्य से कहीं अधिक व्यापक, उच्च और गहरी हैं। दूसरों को या स्वयं को बर्बाद करने के प्रयास - जिसका व्यक्तित्व भी धुंधले भावों के बजाय जीवंत दृष्टि, चिड़चिड़ेपन के बजाय कोमल लचीलापन, बैल जैसी शंका के बजाय गतिशील कल्पनाशीलता से भरी आँखें, कड़वे स्वभाव के बजाय मनमोहक मिठास से भरे होंठ देता था, कि वह वास्तव में इतने खाली या दागदार दोपहरों के बाद एक सुखद दोपहर की आशा कर सकती थी, लेकिन पड़ोसी दलदलों से उसकी संगति पर मंडराती भयंकर धमकी भरी भौंहों, आक्रोश और प्रतिशोध की गरजती छायाओं के कारण ऐसा नहीं हो पाया।

पर्सी उस खिड़की के पास बैठ गया जो दलदली भूमि की ओर खुलती थी। उसने कुछ देर तक चलते बादलों को देखा, जो कोहरे जैसी धुंध से निकलकर धूप भरी खुशी के क्षणभंगुर जीवन में सिमट गए थे, और उन दलदली भूमि को भी देखा जिनकी स्पष्ट रूपरेखाएँ खिलाड़ियों को "लड़ाई और हवा" की कहानी सुनाती थीं। उसके मन में तबाही के ऐसे दृश्य नहीं रहे जो "मुर्गों को भी रुला देते", और वह पुराने समय में लौट आया, जैसे कबूतर "उड़कर आराम करने चला गया"।

“कोई सोचेगा,” उसने अपनी मेज़बान के हावभाव में आई झिझक को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा, “कि ये उदास वीरान इलाके आनंद के गर्म वातावरण और सहानुभूति के सौम्य प्रभावों से ऊपर उठते हैं, लेकिन जब तक किसी शहर के नीरस ईंटों से बनी सड़कों, धुंध भरी हवा और गंदे फुटपाथों के बीच न हों, तब तक शायद ही कोई ऐसा प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलता है जिसके बारे में हम सचमुच कह सकें कि “यह बिल्कुल निष्कलंक है”। एक बार मैं स्कारबोरो से कुछ ही दूरी पर एक काली, गीली चट्टान के नीचे बैठा था, जहाँ सामने कुछ गज की दूरी तक रेत और तारामछली के

अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और ज्वार की लहरें मेरी खाड़ी की अंधेरी चट्टानों में घिरी हुई थीं, जो एक दूधिया आकाश के समानांतर फैले समुद्र की धूसर पृष्ठभूमि में समाप्त हो रही थीं। अब कोई पूछ सकता है कि वह आकर्षण कहाँ था जिसने मुझे आधे घंटे तक अपनी छड़ी चबाते हुए और उस जमींदार की तरह पत्थर पर बैठकर 'देखते' रहने के लिए मजबूर किया, जबकि अगर दृश्य में प्रकृति की तीन महान वस्तुएँ - स्वर्ग, पृथ्वी और महासागर - समाहित होतीं, तो वे सभी नेशनल गैलरी की दीवारों पर या किसी पत्रिका के पन्नों में बेहतर ढंग से दिखाई देतीं। युवतियों की स्क्रैपबुक, और इसके अलावा, क्या सैरगाह पर मानव जीवन की निरंतर बदलती लहरें समुद्र की नीरस लहरों की तुलना में चिंतन के लिए अधिक व्यापक अवसर प्रदान नहीं करतीं? क्या रेलवे की खुदाई चट्टानों को उन बेढंगे और बेकार ढेरों की तुलना में अधिक वैज्ञानिक और सुडौल रूप में नहीं दिखाती, जो मुझे घेरे हुए थे? क्या छोटा गोलाकार संग्रहालय भी, रेत और समुद्री शैवाल के संकरे अग्रभाग में फैले कॉर्नेलियन कंकड़, लिम्पेट के खोल या स्टारफिश की तुलना में, भूवैज्ञानिक और प्राणीवैज्ञानिक इतिहास के अधिक रोचक नमूने आसानी से दूरी पर प्रदर्शित नहीं करता? श्रीमती थर्स्टन, यह बिल्कुल सही है - लेकिन न तो विज्ञान और न ही सुरम्यता का संयोजन, या कोई अन्य ज्ञात संयोजन, किसी व्यक्ति की इच्छा से या किसी अन्य व्यक्ति की इच्छा से आंतरिक चिंतनशील आनंद की अवर्णनीय भावनाओं को उत्पन्न कर सकता है।

"मुझे लगता है कि इसके लिए 'खुशी' शब्द उपयुक्त नहीं है, महोदय।"

“आपको यह कैसे पता चला? मुझे अपनी गलती का एहसास था, लेकिन मैंने यह कल्पना नहीं की थी कि कोई महिला इसे खोज लेगी।”

“शायद वह महिला, जिसने वर्षों से प्राकृतिक सौंदर्य को केवल धूसर दीवारों, बंजर खेतों और बंजर मैदानों में ही देखा हो, उनमें छिपी दबी हुई भावनाओं या सुखद शांति को महसूस करने में निपुण हो गई हो। चैट्सवर्थ के स्वामी को यह नहीं सोचना चाहिए कि केवल वही वनस्पतियों का आनंद लेते हैं, क्योंकि उनके पास पाँच सौ फीट का कंजर्वेटरी है। हीथ के फूल, डेज़ी या फॉक्सग्लोव, अपनी “घंटियों की शांत ध्वनि” के साथ, सरकंडों से भरे खेतों और दलदली मैदानों से गुजरने वाले व्यक्ति को ऐसा रोमांचकारी आनंद दे सकते हैं, जिसकी तुलना स्वयं शोम्बर्ग से नहीं की जा सकती थी, जब उन्होंने पहली बार एस्सेक्विबो के सरकंडों के बीच विशाल विक्टोरिया फूल

को चमकते हुए देखा था।”

“आप सही कह रहे हैं—पर—पता नहीं क्यों—मुझे महिलाओं को इस तरह बोलते सुनना अच्छा नहीं लगता, क्योंकि ऐसा लगता है कि वे अपनी प्रत्यक्ष चिंताओं से बचने के लिए अस्पष्ट विचारों का सहारा लेती हैं। ऐसे संसाधन मुझ जैसे व्यक्ति के लिए ही रहने दो, क्योंकि अगर मैं यह सोचूँ कि मेरी पत्नी मेरे स्वस्थ माथे पर उगे जंगली फूलों से सुख चूसती मधुमक्खी की तरह है, तो मैं भी उतना ही उदास हो जाऊँगा जितना वह दूर खड़ा बुलशिल था! लेकिन मुझे लगता है कि हम सभी को जहाँ भी सुख मिले, उसे प्राप्त करना चाहिए और अगर वह हमारी खोज से दूर हो जाए तो हमें पछताना नहीं चाहिए। क्या हम इस दुनिया में सुख के लिए पैदा हुए हैं या आनंद जीवन की नियमित व्यस्तताओं का एक पेचीदा और विरोधाभासी अपवाद है और दुख वह मिस्र का काम है जो हमें जीवन भर के परिश्रम से बांधे रखता है?”

“महोदय, सबसे जटिल यात्रा में भी हमारे मार्गदर्शक होते हैं, और इनमें से कर्तव्य एक अत्यंत सुरक्षित मार्ग है, भले ही कभी-कभी अप्रिय लगे। आचरण की सत्यनिष्ठा इस लोक से परलोक तक का सबसे सीधा मार्ग दिखाती है, और आशा, यदि स्वस्थ हो, तो सामान्य बाधाओं को पार करने में सहायक होती है, जबकि यदि ज्वरग्रस्त हो, तो यह शराब के सामान्य उत्साह से भी अधिक हानि पहुँचा सकती है। मैं त्याग को इन दोनों से कहीं अधिक शीघ्र मित्र मानता हूँ, क्योंकि यह न तो आशा की लालसा रखता है और न ही निराशा से भयभीत होता है।”

श्री पर्सी ने श्रीमती थर्स्टन की बातों का तुरंत उत्तर नहीं दिया, बल्कि सोफे पर बैठ गए, अपना सिर हाथ पर टिकाया और कमरे के फर्नीचर को ऐसी निगाहों से देखा जिन्हें देखकर कोई सोच भी सकता था कि ये किसी नीलामीकर्ता या गद्दीकार की निगाहें हैं, बशर्ते उनकी सहज जिज्ञासा उनके होंठों की चंचल मुस्कान से मेल न खाती हो। श्रीमती थर्स्टन पहले से ही अपनी छोटी सी काम करने वाली मेज पर बैठी थीं और अपनी कढ़ाई की मशीन को ऐसे ध्यान से देख रही थीं जैसे श्री पर्सी देख रहे हों - क्योंकि जिस धैर्य से वे अपना काम कर रही थीं, वह किसी गद्दीकार की नहीं, बल्कि किसी पावर लूम बुनकर की तरह लग रहा था। फिर भी, उनकी गहरी पलकें, जो हमेशा नीचे झुकी रहती थीं, कभी-कभी नम लगती थीं; और उन्होंने एक बार भी श्री पर्सी के चेहरे की ओर नहीं देखा, जिनकी निगाहें (हालांकि उनके फुटस्टूल को देखने वाली निगाहों से कोई अंतर नहीं था) अक्सर उन्हीं पर टिकी रहती थीं। उन कुछ क्षणों

में से एक, जब विचार एक ऐसे जाल में उलझकर संघर्ष करते प्रतीत होते हैं जिसे तोड़ने की शक्ति उनमें नहीं होती, और जब कुछ मिनटों की चुप्पी मन को बीस वर्षों के अतीत में ले जाती है, तब महिला और सज्जन दोनों के चेहरों पर और अधिक अमूर्तता छा गई, तभी श्री पर्सी ने आत्मभाषण देकर चुप्पी तोड़ी।

"वे मुझे कितना मूर्ख समझेंगे कि मैं इतनी जल्दी और आधे-अधूरे मन से बारह अगस्त के इतने प्यारे खेल से लौट आया! अगर मैं पक्षियों के मांस और पंखों से भरा थैला लेकर आया होता—अगर मैं इकाइयों के बजाय दर्जनों का दावा कर पाता तो मैं हीरो होता, लेकिन अब—दोपहर में थर्स्टन के बैठक कक्ष में आराम करना, जबकि मेरे साथी दस हजार एकड़ हीथ में घूम रहे हैं—वास्तव में मेरे शिकारी होने के ताज का त्याग करने जैसा है। खैर—जब मेरे पास सोचने के लिए कुछ और नहीं होता या जब मैं सारे विचार दूर भगाना चाहता हूँ, तो मैं किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह एक कुशल निशानेबाज और एक मजबूत पैदल यात्री हो सकता हूँ, लेकिन जब मेरा मन खाली होता है तो मैं लंदन के बेल्स लाइफ के किसी भी कॉलम में दर्ज होने लायक प्रदर्शन का दावा नहीं करूँगा। मैं किसलिए लौटा हूँ? मेरा दिमाग मुझे नहीं बता सकता और मुझे आश्चर्य है कि क्या मेरा दिल मुझे इसका कारण बता सकता है।"

"शायद आपकी मनमौजी प्रवृत्ति काम आ सकती है—क्योंकि लोग आम तौर पर आपको उस अनिश्चित गुण के लिए श्रेय देते हैं।"

श्री पर्सी ने कुशन पर आधा लेटते हुए अपना चेहरा अपनी मेज़बान की ओर घुमाया और कुछ गुर्राते हुए कहा।

क्या आम लोग मुझे किसी अभिनेता या ओपेरा नर्तक की तरह समझते हैं और क्या आपको लगता है कि मैं यहाँ इसलिए लौटा क्योंकि मुझे किसी दीवार में जड़े हुए पत्थर, मैदान में बिखरे पत्थरों से ज़्यादा पसंद थे? क्या मुझे अपने मेज़बान के मेहमानों से ज़्यादा उसके नौकर पसंद थे? क्या मुझे कोई 'पुरुषों वाली हरी बीमारी' हो गई थी और मुझे पनीर से ज़्यादा चाक पसंद था? नहीं, मुझे लगता है कि आप इतने समझदार और इतने सक्षम हैं कि आप इरादों या ईश्वरीय इच्छाओं को समझ सकते हैं कि मैं इसलिए लौटा क्योंकि आपके साथ बिताए गए कुछ घंटे, इस सूर्य के परिक्रमा चक्र में उतने ही समय से एक घंटा तीन चौथाई कम लगते, जितना समय मैंने उन गतिविधियों में बिताया था जिनमें भाग लेने के लिए मैं यहाँ आया था - क्योंकि मुझे आपमें वह प्रकाश मिलेगा जो किसी थिएटर या बॉलरूम में प्रकाश की कमी को पूरा

करता है।

"धूप से जगमगाते दिन की किरणें"

आप जानते हैं कि एक अकेले विधुर के रूप में मेरी दिन की रोशनी अपनी थकी हुई आँख झपका चुकी है और सपने या कल्पनाएँ ही वर्तमान और भविष्य की रात में उन कष्टों से राहत दिला सकती हैं जिन्हें भाग्य और किस्मत ने बहुत दूर छीन लिया है। क्या मुझे घोड़े के घुटनों को जोखिम में डालकर जल्दबाजी में वापस लौटना चाहिए या अपने घुटनों को जोखिम में डालकर पैदल लौटना चाहिए ताकि श्री ओ' कॉनर या श्री क्वामिना को दोपहर के भोजन से पहले कुछ बोतलों पर चर्चा करते हुए देख सकूँ—सिम्पसन और गॉर्डन के साथ उनके द्वारा गिरवी रखी जाने वाली या हाल ही में गिरवी रखी गई संपत्तियों के मूल्य का हिसाब लगाने के लिए—हेक्टर के साथ यह जानने की कोशिश करने के लिए कि दोनों में से कौन सबसे अधिक विश्वासघाती लग सकता है या थर्स्टन के साथ यह जानने की कोशिश करने के लिए कि कौन सबसे अधिक कड़वा लग सकता है? नहीं—नहीं—मैं ऐसे लौटा जैसे अपने पुराने दिनों की परछाई में लौट रहा हूँ, जब मैं अपने शिकार के कपड़े उतारकर एक ऐसे चेहरे को पा सकता था जो एक आदमी से भी अधिक सौम्य स्वागत करता था, भले ही वह आदमी मेरा दोस्त हो—आप उलझन में और गंभीर दिख रहे हैं, लेकिन आपको ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मुझे वही बोलना है जो मैं महसूस करता हूँ और जो मैं महसूस करता हूँ उसे छिपाने की आवश्यकता नहीं है।

"जी हाँ महोदय, मैं घंटी बजाने के लिए अभी उठने ही वाली थी क्योंकि मुझे यकीन है कि आपको जलपान की आवश्यकता होगी और शायद मेरे पति की चचेरी बहन मिस एलन, जो जल्द ही अपनी सैर से लौटकर आएंगी, आपके साथ शामिल हो जाएंगी - मुझे लगता है कि उन्हें भी आपके यहाँ आने की उम्मीद नहीं थी - ठीक वैसे ही जैसे मुझे नहीं थी।"

“महोदया—मेरी बात सुनिए—क्या आपको यह अजीब नहीं लगता कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे को खाने पर बुलाए और उसके सामने प्लेटों की पूरी थाली सजा दे, लेकिन व्यंजन भूल जाए—तो क्या यह आपके लिए अजीब नहीं होगा कि आप मेरा यहाँ स्वागत करें और उस एकमात्र आनंद से मुझे वंचित कर दें जो मुझे प्रसन्न कर सकता है? मैं देख रहा हूँ कि आप सोने जा रही हैं, लेकिन इस घर में मेरा समय कम ही है, तो उस समय को असहज क्यों बनाना चाहती हैं? उन मानसिक पत्तियों को

आधी रात की ठंड से क्यों झुलसाना चाहती हैं जिन्हें उचित विकास के लिए केवल एक घंटे की सुबह की ओस और धूप की आवश्यकता होती है? चिंता को अपनी आँखों को खराब न करने दें, जैसा कि मैं देखता हूँ जब भी मैं आपको सड़क की ओर देखते हुए या दरवाजे की घंटी सुनते हुए देखता हूँ—आपके संगमरमरी गालों के साथ पहले ही बहुत कुछ हो चुका है, अब और ब्लीचिंग की आवश्यकता नहीं है, और यद्यपि मैं इस बात पर ध्यान नहीं देता कि यहाँ कौन आता है, लेकिन अगर आप इतनी देर तक उदास दिखती रहीं, तो मुझे उन अलग-अलग भावों की याद आ जाएगी जिनसे अब हमेशा के लिए बंद आँखें मेरे लौटने की प्रतीक्षा करती थीं और देखती थीं। ओह, यह सच है कि एक आत्मा जो इस दुखद जीवन के तूफानों के लिए बहुत प्यारी है—यहाँ लंबे समय तक रहने के लिए बहुत भाग्यशाली है—फिर भी शायद न जी पाए। मरना, लेकिन नींद में सो जाना—और अपने क्षय होते शरीर को भूलकर, कुछ वर्षों के विश्राम के बाद एक सुखदायक और सुंदर भौतिक मंदिर की शरण में जाग उठना। कमरे से बाहर मत जाओ—मैं तो बस अपनी उतावली भावनाओं को ऐसी उम्मीदों में लिप्त होने दे रहा था जो कभी पूरी नहीं हो सकतीं, और अगर मैं यह स्वीकार कर लूँ कि तुम्हारी स्त्रीत्वपूर्ण कोमलता ने उस हृदय को शांत कर दिया है जिसे दुःख ने बुरी तरह से उग्र बना दिया था, तो मैं तुम्हें बुरा नहीं मानूँगा।

मुझे लगता है कि मिस एलन रास्ते से आ रही हैं, इसलिए जल्द ही आपको मुझसे कहीं अधिक खुशनुमा संगति मिलेगी।

श्री पर्सी उठते हुए और कमरे में तेज़ी से टहलते हुए बोले, "मुझे प्रसन्नता नहीं चाहिए। मुझे कुछ अधिक मूल्यवान चाहिए - कुछ ऐसा जो मुझे केवल एक मज़ाक या मुस्कान तक सीमित न रखे। मैं चाहता हूँ - मिस एलन के आने से पहले ही मैं तुम्हारा हाथ चाहता हूँ, इस प्रमाण के रूप में कि मैंने तुम्हें नाराज़ नहीं किया है, या कम से कम इस स्वीकृति के रूप में कि तुम्हारे साथ किसी अपराध की निंदा के साथ-साथ अपराधी को क्षमा भी दी जा सकती है। आओ, मेरी मेज़बान होने के नाते तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में होना चाहिए - अन्यथा मेरे पास सीधे चले जाने या झगड़ों का सिलसिला शुरू करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। भगवान उन उंगलियों को आशीर्वाद दें जो एक स्पर्श से मुझे पूरे दिन का जीवन दे सकती हैं।"

श्री पर्सी ने श्रीमती थर्स्टन का हाथ थामते हुए जल्दबाजी और बड़ी गंभीरता से बात की, जब वह गुजर रही थीं। उनके ऊपर खड़े होकर, प्रेम और दुःख से भरी मिली-जुली

दृष्टि से, उन्होंने उनकी भौंहों से क्षमा और आँखों से सहानुभूति की भीख मांगी। लेकिन श्रीमती थर्स्टन के शांत स्वभाव और उनकी योजना के अनुरूप, इससे पहले कि श्रीमती थर्स्टन एक वाक्य कह पातीं या एक कदम पीछे हट पातीं, दरवाजा खुल गया और मिस लुईसा एलन अपनी सुबह की एकांत सैर से लौटकर अंदर आ गईं।

मिस एलन का चेहरा लाल हो गया था और वह बहुत तेजी से सांस ले रही थीं, लेकिन यह उनकी जल्दबाजी में वापसी के कारण हो सकता था। उन्होंने श्रीमती थर्स्टन से बात नहीं की, श्री पर्सी द्वारा अपने साथियों को छोड़कर चले जाने पर कुछ शब्दों में अपना आश्चर्य व्यक्त किया और फिर कुछ अधीरता से बोनट और मेंटल को उतार फेंका।

श्री पर्सी ने अपने चेहरे पर हंसी का भाव लिए उसकी ओर देखा और कहा कि हम दोनों में से वह खुद से ज्यादा सुबह के खेलों में हिस्सा लेने वाली लग रही थी, क्योंकि वह बिल्कुल शांत था जबकि उसके गाल जुलाई की गर्मी से दमक रहे थे। हालांकि, मिस एलन ने सिर्फ इतना कहा कि अगर वह खीरे की तरह शांत है तो वह तरबूज की तरह गर्म है। फिर वह खिड़की के पास गई और पर्सी की हंसती हुई आंखों ने देखा कि सूरज की रोशनी उसके गाल पर चमक रही थी, जो कुछ आंसुओं से भीगा हुआ था। ये आंसू सामने के खूबसूरत जंगल के प्रति संवेदनशीलता के नहीं, बल्कि एक औरत के सबसे उग्र स्वभाव - उसके चिड़चिड़ेपन - के थे। उन्होंने उस चेहरे से नज़रें हटाकर दूसरे चेहरे की ओर देखा, जो एक औरत की उतनी ही सच्ची तस्वीर पेश कर रहा था, लेकिन अब वह कढ़ाई के फ्रेम पर झुकी हुई थी। दृश्य का प्रभाव कितना अलग लग रहा था! रिचमंड हिल से दिखाई देने वाले विंडसर के पार्क और चांदी जैसी टेम्स नदी, बेन नेविस से दिखाई देने वाली विशाल घाटी से बिल्कुल अलग थे। ठीक वैसे ही जैसे किसी दूसरे के चिड़चिड़े स्वभाव पर दया दिखाने वाला मधुर धैर्य, उस विद्रोही नज़र से बिल्कुल अलग था जो हर उस अशांति का बदला लेने की भावना से पोषित और जीवित रहती थी जो उसकी इच्छा को विफल कर सकती थी।

"कितना सुखद है," उसने सोफे पर बैठते हुए और मिस एलन से बात करते हुए कहा, मानो उनसे सीधे बात न कर रहा हो। शहर के जीवन के झूठे और अस्थिर उत्साह से दूर एक आदिम क्षेत्र में एकांतवास से उत्पन्न भावनाएँ कितनी शांत होती हैं! यदि मैं अब महानगर में होता और यह सत्रावसान से पहले का समय होता, तो मुझे अपनी आत्मा को तरह-तरह के झूठे रंगों से सजाना पड़ता, ताकि मैं उन आत्माओं से

मिल सकूँ जो मेरी आत्मा से तेल की तरह पानी में नहीं घुल-मिल सकतीं। उन महिलाओं से शिष्टाचार का पाठ पढ़ाना पड़ता जिनकी मृत लाशें भी मेरी वास्तविक भावनाओं को उतना ही प्रभावित करतीं जितना उनके जीवंत आकर्षण। उन पुरुषों से मित्रता का बंधन निभाना पड़ता जिनसे संवाद करने में मुझे उंगलियों के बजाय जूतों की उंगलियों से कहीं अधिक आनंद मिलता। यहाँ मुझे प्रकृति अपने सरलतम रूप में मिलती है। पहाड़ियाँ हल का उपहास उड़ाती हैं, एक पार्क जो एलनस्टन के सर हेनरी स्टीवर्ट को ठहाका लगाता है। एक कमरा जो स्वर्ग से आने वाली सूर्य की रोशनी को प्रवेश देने में उतना ही शालीन है जितना उस दरबार ने, जिसके संरक्षण में इसे बनाया गया था, आँखों से आने वाली सूर्य की रोशनी को प्रोत्साहित करने में। हाँ, और मुझे संदेह है कि इससे भी अधिक, क्योंकि रानी बेस को भी एक सुडौल टांग दिखाई देती। उसके दरबारी बीस गज की दूरी पर हैं और श्रीमती थर्स्टन अपनी सुई को अपनी आंख से एक इंच की दूरी पर भी नहीं देख सकतीं। केवल मिस एलन की दृष्टि ही दूरबीन जैसी है क्योंकि वह आकाश में ग्रहों या तारामंडलों को बड़ी लगन से खोजती हैं, जबकि मैं केवल गर्म शरदकालीन वाष्प और एक अकेला मैकेरल बादल ही देख पाता हूँ।

"शायद," उस महिला ने खुशमिजाजी दिखाने की नाकाम कोशिश करते हुए जवाब दिया - "मेरे मन में जो संदेह है, वह उन शब्दों से कहीं अधिक ठोस संभावना प्रस्तुत कर सकता है जो अर्थ छिपाते हैं या अपना अर्थ नहीं जानते।"

"शायद बेकन का एक टुकड़ा - बल्कि दिखावटीपन का एक गिलास 'सदाबहार और सुंदर देवदूत' से कहीं अधिक सारगर्भित हो सकता है। पहला सार है, अंतिम ध्वनि - लेकिन एक रोमांचक आवाज और गहरे काले रंग की आंखों के संयोजन के साथ मिलकर यह स्मरणीयता में कम योग्य नहीं है।"

हैंडेल के गीत का ज़िक्र खिड़की पर बैठी उस नन्ही लोमड़ी जैसी लड़की को अस्थायी रूप से शांत करने में मददगार साबित हुआ, जो मानो डब्ल्यू कैथेड्रल और एक ऑर्गन वादक का सपना देख रही थी, जिसे उसकी सीट से धक्का देकर उंगलियों के स्पर्श के लिए जगह बनानी पड़ी थी। ये उंगलियां किसी जलपरी की आवाज़ और ऑर्गन की मधुर ध्वनि से प्रेरित थीं। जब उस लड़की ने चाबियों को छुआ, तो उसे जॉर्ज फ्रेडरिक हैंडेल की सुडौल और आकर्षक शख्सियत नहीं, बल्कि एक अप्सरा जैसी आकृति दिखाई दी, जिसे वह किसी भी समय शीशे में काले बालों के साथ देख

सकती थी, जैसा कि सिमंस ने लिखा है।

"जैसे आधी रात दोपहर में ही छूट जाए"

तो उसने बोल्शिल को लंबे समय तक देखने के बाद और अधिक उत्साह से अपना चेहरा मोड़ा और कमरे में प्रवेश करने के बाद पहली बार मुस्कुराई— शायद पर्सी ने गौर किया कि यह उसकी प्रशंसा के प्रति निस्वार्थ प्रेम से कहीं अधिक किसी काल्पनिक प्रतिद्वंद्वी पर क्षणिक सफलता की विजय थी, इसलिए उसने अपने चेहरे के भावों को इस तरह बदला कि मानो उनका प्रभाव श्रीमती थर्स्टन की रचनाओं में धीरे-धीरे बन रहे गुलाबों और ट्यूलिपों पर पड़ रहा हो, और फिर मिस एलन ने खामोशी से जागते हुए चिड़चिड़ाहट भरी आवाज में कहा—

“तुम धूप का आनंद ले सकते हो, लेकिन जैसे-जैसे दिन उमस भरा होता जा रहा है, मैं छांव ढूंढूंगी—मुझे नहीं लगता कि मैं दोपहर के भोजन से पहले चल पाऊंगी—प्रिय,” वह चली गई और अपने पीछे उस असुविधा को छोड़ गई जो एक ऐसे समूह से एक बहुत असंतुष्ट व्यक्ति के जाने से उत्पन्न हुई थी जिसमें कोई भी किसी को नाराज नहीं करना चाहता था—और फिर भी मुझे डर है कि इतने चमकीले ग्रह की अनुपस्थिति ने आकाश को और भी गहरा अंधकारमय रंग नहीं दिया, जो श्री पर्सी की आँखों में किसी दुर्लभ रूप से खोजे गए या अनियमित तारे से भरा हुआ प्रतीत होता था, जबकि उनकी मेज़बान की आँखों में—यदि उनके उदास गाल कुछ बता सकते थे—तो उसमें कोई प्रकाश नहीं था—सिवाय क्षय की उस भृंगता के जो बीते समय के अवशेषों को रोशन करती है या उस आधी निराशा और आधी आशा के जो वर्तमान बर्फीले सर्दियों के आकाश में एक क्षणिक ऑरोरा बोरेलिस प्रदान करती है जो आने वाले समय के ग्रीनलैंड के आकाश में युवावस्था की गर्मियों की धूप का उपहास करती है। श्रीमती थर्स्टन अपनी अतिथि के पीछे जाने की इच्छुक प्रतीत हो रही थीं, लेकिन उनकी तीखी निगाहें उन पर टिकी रहीं। वह रेशम के धागों की तलाश में अलमारियों के बीच इधर-उधर भटकती रहीं, जहाँ हर कील दरवाजे की ओर थी। अंत में, जब तक वह और अधिक दिखावा नहीं कर सकीं, तब तक वह शांतिपूर्वक अपनी सीट पर लौट आईं और मेज़बान की सौम्यता को फिर से अपना लिया।

“तो फिर,” पर्सी ने कहा, “गर्मियों में भी आंधी-तूफान आते हैं और अभी तो सिर्फ एक ही आंधी गुज़री है – मुझे शुक्रगुजार होना चाहिए; क्योंकि मेरी सुंदर शत्रुओं की आँखों को देखकर लगता है कि बिजली की एक साधारण सी चमक भी उनकी

ज्वालामुखी जैसी आग के सामने कुछ नहीं होती। आखिर क्यों पतले शरीर वाले इतने साहसी होते हैं जबकि मुझ जैसा छह फुट दो इंच का प्राणी सिर्फ एक नवजात मेमने की तरह ही मिमिया सकता है?”

श्री पर्सी के बेहद खूबसूरत होंठ, जैसे ही उन्होंने आखिरी वाक्य बोला, एक भद्दी सी मुस्कान में बदल गए और उनकी बात सुन रही महिला के कुछ हद तक फीके होंठों पर पहली बार हल्की सी मुस्कान आई। महिला ने अपने काम से नज़रें उठाए बिना जवाब दिया।

"हमारी स्त्रियों के बीच क्रोध के दौरे आपकी स्त्रियों के बीच के दौरों की तुलना में अधिक तर्कसंगत प्रतीत होते हैं - यदि हम असहनीय रूप से आहत महसूस करते हैं तो कम से कम कमरे से बाहर जा सकते हैं जबकि आप वहीं रुककर उन लोगों को गुप्त रूप से परेशान करने के लिए तत्पर प्रतीत होते हैं जिन्हें समाज के नियम खुलेआम अपमानित करने से रोकते हैं।"

“क्या आप मुझ पर उतनी ही कड़ी निंदा कर रहे हैं जितना आपके शब्दों से प्रतीत होता है? क्या आपको लगता है कि मैं एक लक्ष्यहीन और थकाऊ यात्रा से इतनी जल्दी लौट आया हूँ कि जो समय मूरगेम को मारने में लगना चाहिए था, उसे महिलाओं को परेशान करने में बिताऊँ? आज सुबह मैंने आप जैसी दो महिलाओं से बात की है और उनमें से एक को मैं निश्चित रूप से नाराज़ या नाखुश नहीं करना चाहता — दूसरी जो अब मेरे सामने बैठी है, उसे अपने मन में यह प्रश्न पूछना होगा कि क्या वह मुझे उन दर्जनों या सैकड़ों देहाती गंवारों से ज़्यादा नापसंद करती है जिन्होंने यूस्टन स्क्वायर स्टेशन छोड़ने के बाद से उसकी मधुर आवाज़ को जगाया है? — वह जानती है कि ईश्वर ने मुझे शारीरिक कुरूपता की बिजली या घृणित व्यवहार के तूफान से शापित नहीं किया है — उसे महसूस होता होगा कि मेरे जो भी बुरे जुनून और क्रोध हैं, वे उसके वन-छाया से दूर किसी जंगल में दबे हुए हैं या दंगा कर रहे हैं — कि मैं अपनी श्रेष्ठ शारीरिक शक्ति का प्रयोग केवल उसे नुकसान से बचाने के लिए करता हूँ या अपने उग्र स्वभाव का प्रयोग केवल उसकी कोमलता में स्फूर्ति भरने के लिए करता हूँ।” मैं उदासी के काले राक्षसों को भूल जाता हूँ, कुछ इसलिए कि उसका रूप उन्हें डराता है और कुछ इसलिए कि उसकी तसल्ली के लिए मेरी चिंता उन्हें शांत कर देती है। वास्तव में, मैं अभी यहाँ इसलिए हूँ क्योंकि ईश्वर की कृपा से मुझे थोड़े समय के लिए मेरी बेचैन पीड़ा के प्याले में जीवन का अमृत मिला है। एक

मीठी याद - मेरी जान - उन विचारों की जो निर्दोष ही होंगे क्योंकि वे पूरी तरह से कब्र में दफन हैं और इस कमरे में ही फिर से प्रकट होते हैं, जैसे दिसंबर की बर्फ में तुम उस शीशी को खोलते हो जिसमें जुलाई के गुलाब का सार होता है। तुम्हें उठना नहीं चाहिए, मैं एक बार फिर दोहराता हूँ - क्योंकि दोपहर का भोजन लगभग तैयार है और न तो मैं और न ही तुम - मेरा मतलब है तुम या मैं - इसे और अधिक आनंद से ग्रहण करेंगे यह जानकर कि क्रोध, अपमान, झूठी विनम्रता या पारंपरिक शिष्टाचार ने हमारी मेजों या हमारे दिलों को अलग कर दिया है। इस ओल्ड हॉल मारिया थर्स्टन को देखो - क्या यह पाखंडी है? उस दर्पण को देखो - क्या यह झूठ बोलता है? देखो वह दर्पण क्या दर्शाता है - क्या यह एक ऐसी छवि है जो केवल लंदन के फैशनेबल लोगों की भीड़ में चमकने के योग्य है या उससे भी ऊपर? क्या आप किसी मेथोडिस्ट सभा की बेंचों पर बैठी हैं? आप जानती हैं कि आप एक महिला हैं और एक पुरुष, जो इस नाम के योग्य है, न तो आपको नापसंद कर सकता है और न ही आपके प्रति उदासीन हो सकता है। आप जानती हैं कि आप एक उपेक्षित महिला हैं और मैं भी यह जानता हूँ। आप यह भी जानती हैं कि मैं आपको चोट से बचाने के लिए अपना खून बहा दूँगा और आपको सुख देने के लिए अपने सुख-सुविधाओं का त्याग कर दूँगा। और अगर आप इतना जानती हैं, मेरी प्यारी, तो आप यह भी जानती हैं कि मैं यहाँ आपके लिए इस सुहावने बारह अगस्त को एक उदास बारह अप्रैल में बदलने के लिए नहीं लौटा हूँ, बल्कि आपके साथ बातचीत में खुशी की अपनी स्वार्थी इच्छा को पूरा करने और उस कोमल हृदय को सुकून देने में अपना निस्वार्थ भाव प्रकट करने के लिए लौटा हूँ जो उस कोरसेट के भीतर धड़कता है और उस महिला के पलों को खुशनुमा बनाने के लिए लौटा हूँ जिसे अक्सर मुझे डर है कि अकेले ही गुजारने पड़ते हैं। क्या मेरे पास ज्ञान का कोई भंडार नहीं हो सकता जिससे मैं एक घंटे का निर्दोष मनोरंजन प्रदान कर सकूँ, जब उसका हृदय केवल घर के दृश्यों पर कबूतर की तरह लीन हो, मेरे भटकते पंख जीवन के सागर पर हर मौसम और जलवायु में तूफानी पीटरिल की तरह फैल गए हों। — हर दुख और सुख में।

"जी हां महोदय, मैं भली-भांति जानता हूं कि आपके मन में बहुमूल्य ज्ञान का भंडार है और यदि वह मन दूसरों को भी अपने ज्ञान का लाभ उठाने दे तो कोई भी व्यक्ति आपकी संगति में प्रसन्न महसूस कर सकता है।"

"दूसरों को भी इसमें शामिल होने दो! नहीं, सभी को नहीं, लेकिन हे प्रिय, तुम्हें

स्वयं अवश्य शामिल होना चाहिए, और खुशी-खुशी! वह कौन सा अस्पष्ट रूप से दिखाई देने वाला, लेकिन सबसे अधिक हावी होने वाला दुःस्वप्न है जो मुझे रोकता है—मुझे बोझिल कर देता है जब मैं इस दोपहर जैसे महान आनंद का सपना देखने की हिम्मत करता हूँ, जो दुनिया से अलग, तुम्हारे साथ बैठकर बिताया गया है—फिर भी दुनिया के बारे में मैंने जो कुछ भी जाना है और वास्तव में मेरे विचारों का पूरा भंडार, तुम्हारे आनंद के अधीन है, जो शांति और आराम में पलते-बढ़ते हुए मानवता के सागर का बिना उसके तूफानों से टकराए अन्वेषण कर सकता है?”

"आप लाड़-प्यार के कारण, महोदय, इस बात के आदी हो गए हैं कि जब आपके दिन निर्मल धूप में नहीं गुजरते तो आप बहुत अधीर हो जाते हैं - सुबह जागने पर कई सुखों की आशा की जा सकती है, लेकिन दिन भर में उनमें से बहुत कम ही साकार होते हैं, इसलिए मैंने अपने आप को हर सुख को वरदान के रूप में स्वीकार करने का अभ्यस्त कर लिया है - अधिकार या अपेक्षा की जाने वाली वस्तु के रूप में नहीं, और इस निरंतर विकसित भावना ने मुझे अपने कर्तव्यों का पालन करने और किसी भी कष्ट को इतनी शांति से सहन करने में सक्षम बनाया है कि मन और शरीर बिना किसी भावविभोरता के दुख का प्याला पी सकते हैं और सुख के प्याले से किसी प्रकार का नशा महसूस नहीं करते।"

तो क्या यह ईश्वर की इच्छा है और घटनाओं के न्यायसंगत निपटारे के अनुसार है कि मैं अब अपने नापसंद या असंगत साथियों के पास लौट जाऊं और तुम्हें अपनी जंजीर पकड़े हुए छोड़ दूं, और एक भारतीय भक्त की तरह यह गर्व से दिखाऊं कि तुम दस पैसे की कीलों के बिस्तर पर झपकी ले सकते हो या एक मुक्केबाज की तरह यह दिखा सकते हो कि तुम्हारे दांतों पर हथौड़े की चोट लगने के बाद भी तुम मुस्कुरा सकते हो? मुझे उत्तर दो - क्या यह उचित होगा - क्या यह तुम्हारे न्याय के विचारों के अनुरूप होगा कि दो व्यक्ति आपसी मित्रता को तोड़ने और एक दूसरे को पीड़ा पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास करें?

"नहीं महोदय— मेरा मानना है कि हमारा उद्देश्य मित्रता को बढ़ावा देना और पीड़ा को कम करना होना चाहिए।"

“स्वयं के प्रति और दूसरों के प्रति भी?”

“हाँ—मैं स्वयं को आत्महत्या करने की सलाह बिल्कुल नहीं दूँगा—लेकिन स्वयं से पहले दूसरों को, क्योंकि यदि इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपने पड़ोसी के बारे में

पहले और अपने बारे में अंत में सोचे, तो अंततः हमें सुख अवश्य प्राप्त होगा। क्या आप नहीं देखते कि सुख का एक कण त्यागने पर, हर दिशा से सौ गुना अधिक सुख प्राप्त होगा?”

“और क्या हम—या आप—स्पेनिश नायक का कवच पहनकर, अपने साथी प्राणियों की भलाई के लिए अपनी खुशी कुर्बान करने के इरादे से आगे बढ़ेंगे? नहीं, नहीं। इतना ही काफी है कि मैं अपने अलावा किसी एक प्राणी के लिए जीना चाहता हूँ, न कि करोड़ों के लिए। मैं अपने शब्दों और कर्मों से उस व्यक्ति को सांत्वना देना चाहता हूँ जिसे मैं प्यार करता हूँ, और बदले में मैं बस यही चाहता हूँ कि वह मुझे पूरी तरह से नापसंद न करे।”

श्री पर्सी अब अपने उस चिरस्थायी दौरे में पड़ गए थे, जिसमें वे अपने कमरे में बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगते थे। यह दौरा उन्हें तब आता था जब वे बहुत उत्तेजित होते थे और अपनी उन भावनाओं को छिपाने के लिए मजबूर होते थे जिन्हें जन्मजात स्वभाव और जीवन भर के निरंतर भोग-विलास ने उन्हें प्रकट करने के लिए प्रेरित किया था। वे उस सुंदर चेहरे की ओर देखने तक से कतरा रहे थे जो किसी यांत्रिक कार्य में झुका हुआ था, कहीं ऐसा न हो कि वह उनके द्वारा सोची गई भावनाओं से मेल न खाए और कहीं ऐसा न हो कि वे उस सज्जन के प्रति अपने कर्तव्य को भूल जाएं जिनके घर में वे रह रहे थे, और आवेश के एक बेकाबू प्रकोप में खुद को तीन तरह के दुखों के हवाले कर दें। एक ऐसी महिला का विनाश जिसे वे उस समय अपनी आत्मा से प्यार करते थे - उस काले, चिड़चिड़े चेहरे वाले व्यक्ति की पिस्तौल से सीने में गोली लगने का खतरा जिसके घर में वे रह रहे थे, और सबसे बुरा, प्रेम से वंचित होना - सहानुभूति से वंचित होना - अपने लिए दुख से वंचित होना और उन छह वाक्यों का जवाब न मिलना जो उनकी जुबान पर अटके हुए थे और जिन्हें बोलने से केवल उनके महत्व की चेतना ही उन्हें रोक रही थी। श्रीमती थर्स्टन की हर हरकत से उन्हें डर लगता था, कहीं ऐसा न हो कि वह कमरे से उनके जाने का संकेत दे दे। उनके सौम्य, विचारशील चेहरे पर होने वाले हर बदलाव से उन्हें ईर्ष्या होती थी, कहीं ऐसा न हो कि वह उनके प्रति अपने कठोर भावों का इज़हार कर रही हों, क्योंकि वह अभी भी अपने कर्तव्य से बंधे हुए थे। यही विचार उनके मन में इतना घर कर गया कि उन्होंने कमरे की चुप्पी को एक अचानक सवाल से तोड़ दिया।

“अब मारिया थर्स्टन—मुझे यहाँ कई दिनों या हफ्तों तक रहना होगा और इस

दौरान मुझे सेंट लॉरेंस के मैदान पर नहीं लेटना चाहिए—तो मैं आपसे एक बार और हमेशा के लिए पूछता हूँ—क्या आप—अपने पूर्ण नारीत्व वाले चरित्र को बनाए रखते हुए और मुझे अपनी मर्दाना कठोरता को उसकी स्त्रीत्वपूर्ण मिठास पर टिकाने की अनुमति देते हुए—यहाँ मेरे प्रवास को मेरे मन के लिए सहनीय बनाएँगी या आप मुझे ठुकरा देंगी और मुझे उस घिनौनी कहावत की सच्चाई से अवगत कराएँगी कि स्त्रियाँ किसी पुरुष की परवाह नहीं करतीं बल्कि अपने अहंकार की संतुष्टि के लिए जीती हैं, जिसका मंदिर उनका दर्पण है या उन सच्चे पुरुषों के दिलों का बलिदान है जो उनकी सनक के आगे फूट पड़े हैं और जो नोवा ज़ेम्ब्ला की उस देवी की वेदी पर एक रक्तहीन स्त्री को भस्म करते हुए सुगंध बिखेरेंगे, जो एक सच्चे पुरुष को पीड़ा में रखने पर गर्व करती है।"

लेकिन महोदय, आप स्वयं विवाहित हैं और शायद यह पूछकर आपकी भावनाओं में दखल देना उचित नहीं होगा कि क्या आपकी पत्नी ने कभी नोवा ज़ेम्ब्ला की देवी का रूप धारण किया था? क्या वह केवल अपनी शान-शौकत को संतुष्ट करने के साधन के रूप में आपकी परवाह करती थी - क्या उसने कभी अपने पति के प्रति ऐसा महसूस नहीं किया कि उसे पीड़ा पहुँचाना उसके लिए दुगुना दर्द होगा?

"मारिया थर्स्टन – तुम मुझे दुखी करती हो – मैंने अपने उस बेचैन और टूटे हुए जीवन का एकमात्र आकर्षण खो दिया है और मैं उस भयानक खाई को खुशी-खुशी और मासूमियत से भर दूँगा जो उस औरत की कब्र और उस लक्ष्य के बीच है जिसकी महिमा मेरे आने वाले जीवन की चिंताओं को शांत करेगी। क्या होगा अगर वह लक्ष्य तुम खुद हो? तुम मुझसे संवाद करने से क्यों कतराती हो जिसका हर एक अंग तुम्हारी छोटी उंगली को चोट से बचाने के लिए तड़प उठेगा – मेरे सिवा कौन अपने जीवन को तुम्हारे जीवन से कम महत्व देगा? मेरे सिवा कौन पुरुष के मोह-माया को छोड़कर उस चीज की पूजा करेगा जो अक्सर स्त्री का दुख होता है – कौन, भले ही तुम उसे लाड़-प्यार पाले हुए कहो, जेल की पीड़ा सहकर तुम्हें महल के सुखों का आनंद लेते हुए देखेगा।"

मारिया, तुम समझ रही हो ना मैं क्या कहना चाहता हूँ— तुम्हें पता है मैंने क्या खोया है और क्या पा सकता हूँ। बताओ— क्या तुम्हें लगता है कि जो व्यक्ति वर्षों से किसी गर्मजोशी भरे और समर्पित सीने पर अपना चिंतित और थका हुआ सिर रखकर आराम करता रहा हो— अब जब वह सीना भ्रष्टाचार से भर गया है और उसे कीड़ों से

भी ईर्ष्या होने लगी है— क्या तुम्हें लगता है कि उसे अब ऐसे आराम की ज़रूरत नहीं है और जब उसके चारों ओर बादल छा रहे हैं और समय बीतता जा रहा है, तो क्या उसे अपने दबे हुए आनंद के पुनरुत्थान की कोई इच्छा नहीं है? जब मैं डार्कवॉल छोड़कर पर्सी हॉल लौटूँगा, तो क्या मुझे एक उदास खालीपन महसूस नहीं होगा, जब रात के खाने के बाद की मेरी अकेली शामें अध्ययन कक्ष में बीतेंगी, जहाँ एक थका हुआ सिर उस नन्हे हाथ को याद करेगा जो कभी उसके बालों को सहलाता था, या उस कोमल गोद को जो उसके दर्द को कम करती थी—जहाँ मेरी नन्ही बच्ची ही बचपन का सारा स्नेह देगी, लेकिन जहाँ मैं उत्तरी बादलों और हीथर के बीच प्रेम के ध्रुव तारे को छोड़ जाऊँगा—ओह, मारिया थर्स्टन, घबराओ मत, क्योंकि मेरे जाने के बाद तुम भी मुझे याद करोगी—तुम अच्छी तरह जानती हो कि अब तुम किस स्थान पर हो—वह स्थान जिसे मैं चाहता था कि तुम भरो ताकि तुम अलेक्जेंडर पर्सी के प्रति उदासीन महसूस करो। वे घंटे जो भाग्य ने अनुमति दी होती—मेरी आग के पास बैठकर एक यादों भरे स्वर्ग में बिताए जा सकते थे, वे तुम्हारे दिल और इंद्रियों में मौजूद उपेक्षा के घंटों से बिल्कुल अलग होंगे। मुझे यकीन है कि सर्दियों की हवाएँ इन खिड़कियों पर ओले गिराने से पहले ही तुम उस दुर्भाग्य पर कुछ आँसू बहाओगी जो मारिया थर्स्टन को मैरी पर्सी का स्थान देने से इनकार करता है!

"महोदय—महोदय—आपको यह बोलना बंद करना होगा—मैं इसे सहन नहीं कर सकता और एक सज्जन व्यक्ति होने के नाते आपसे मुझे बख्शने की विनती करता हूँ।"

“क्या मुझे मारिया, आपसे विनती नहीं करनी चाहिए कि आप मुझे बख्श दें? जिसका हृदय दुख सहने के लिए तैयार है, उसे डरने की कोई बात नहीं है, परन्तु जिसका हृदय पीड़ा और सुख के बीच कोई मध्य मार्ग नहीं समझता, उसे सब कुछ भयभीत करना पड़ता है, विशेषकर तब जब अतीत वर्तमान के अप्राप्य परन्तु मोहक भविष्य में भूत की तरह प्रकट हो जाए। एक साल बाद हम कहाँ होंगे, मारिया? आज रात हम कहाँ होंगे? मैं — यदि सो भी जाऊँ तो — उन विचारों के सपने देखता रहूँगा जो

मुझे बीते हुए समय की याद दिलाओ —
जो बीत गए — और कभी वापस नहीं आएंगे”

और मुझे यकीन है कि आप यह सोचने पर मजबूर हो जाएँगी कि आपके उपेक्षित

गालों को कठोर मुकुटों और कठोर व्यवहार से मिलने वाले सुख-सुविधाओं की तुलना में कहीं बेहतर पोषण मिल सकता है - आह - आप नहीं जानतीं और जब तक आप इसे आजमा नहीं लेतीं, तब तक आप उस तड़प को नहीं जान सकतीं जो अकेले रह गए पुरुष के दिल में उस स्त्री के लिए होती है जिसके साथ वह अपना अभिन्न अंग बनना चाहता है।

"हे भगवान!" श्रीमती थर्स्टन ने गंभीर स्वर में और अचानक पीड़ा से भरे चेहरे के साथ कहा, "मुझे दुखी करने की कोशिश मत कीजिए— मेरे अपने दुख हैं और मैंने अब तक उन्हें धैर्यपूर्वक सहन किया है। मुझे जीवन के गलत मार्ग या उस सुख की याद दिलाना जिसका मिलना असंभव है, किसी के लिए भी अच्छा नहीं है।"

"तो फिर," श्री पर्सी ने उत्तर दिया, उनके भावपूर्ण चेहरे पर सर्प जैसी धूर्तता झलक रही थी, जो वास्तविक चिंता के मिश्रण से और भी खतरनाक लग रही थी — "क्या मारिया थर्स्टन सती प्रथा का पालन करना चाहती है? क्या वह उस चिता पर खुद को जलाना चाहती है जो एक ऐसे पति के लिए बनाई गई थी जिसका कभी अस्तित्व ही नहीं था? क्या उसे हमेशा के लिए एक ऐसे स्वामी से बंधे रहना होगा जिसे वह उसकी क्रूरता के अलावा मुश्किल से ही जानती है और एक मित्र की हार्दिक सहानुभूति को ठुकराना होगा?"

"महोदय, मेरे मित्र! क्या आप इस शब्द का प्रयोग करके मेरा उपहास नहीं कर रहे हैं?"

"हाँ, मैं करता हूँ। मारिया, अगर डूबता हुआ आदमी किसी तैराक या तख्ते को अपनी जान बचाने के लिए पकड़ लेता है—अगर इस जीवन में कभी शांति न पाने वाला व्यक्ति स्वर्ग की आशा से अपनी मृत्यु शैया से निराशा को दूर भगाने की कोशिश करता है। लेकिन मैं नहीं करता अगर मेरी आत्मा तुम्हें उस सिंहासन का उत्तराधिकारी चुनती है जो लंबे समय से खाली है और उस राजदंड का जिसे तुम्हारे सिवा कोई और नहीं संभाल सकता—काश मैं तुम्हें यकीन दिला पाता! तुम्हें यह जानना होगा कि मैं प्रेम की मात्र स्मृति के सहारे अपना भविष्य नहीं गुजार सकता—कि मुझ जैसे युवा को अपने लंबे जीवन में अपनी आत्मा को सहारा देने के लिए कुछ ऐसे प्रोत्साहन की आवश्यकता होगी जो धूप भरे रास्ते पर पीछे मुड़कर देखने से बेहतर हो, जबकि उसके आगे के रास्ते पर बादल और तूफान छाए हों। लेकिन मैं बहस नहीं करूँगा—तुम मुझसे प्रेम करती हो और तुम जानती हो कि तुम मुझसे प्रेम

करती हो— रुको— जवाब मत दो वरना मैं तुमसे तुरंत पूछकर तुम्हें झूठी गवाही देने पर मजबूर कर दूँगा, “क्या तुम मुझसे नफरत करती हो?” और चूंकि तुम्हारा उत्तर निश्चित रूप से "हाँ" होगा, तो तुम पूरी तरह से झूठे साबित हो जाओगे। क्या मैं आज रात तुम्हारे तकिये पर तुम्हारे विचार नहीं पढ़ सकता? और क्या तुम मेरे विचार नहीं पढ़ सकते? हाँ—हाँ—और यदि तुम और मैं पादरी की वेदी पर एक साथ घुटने टेक रहे होते, तो तुम कहने से पहले कुछ ही क्षणों का संकोच करते—चाहे एडिसन और हेडन की तरह कितनी भी धीमी आवाज़ में ही क्यों न कहो।

“देखो, मेरा चरवाहा दिव्य है! जब तक वह मेरा है, मुझे किसी चीज की कमी क्यों होगी?”

वक्ता के उस विचित्र स्वभाव का उदाहरण, जो उसे सुशोभित भी करता था और अभिशाप भी देता था, उसके अंतिम वाक्य में मिलता है। एक ऐसे विषय में लीन रहते हुए, जो उसकी हर मानसिक और व्यक्तिगत भावना को व्याकुल कर रहा था, उसने कुछ पंक्तियों की कविता और देहाती संगीत के एक सुंदर अंश का व्यंग्यात्मक उल्लेख किया। यदि उसे किसी ऑर्गन या पियानो पर बैठने के लिए मजबूर किया जाता, तो उसकी आँखें मानो देवदूत जैसी चमक उठतीं। लेकिन यहाँ—इस शांत प्राचीन कक्ष में सोफे पर लेटे हुए और उस साथी के साथ, जो चाहे कितना भी कष्ट सहे, कभी दूसरों को पीड़ा नहीं देती—उसने अपनी निगाहें सुख की खोज में भटकने दीं और उसका मन उन लोगों पर उतरा, जिन्हें उसकी शांत भावनाएँ संजोना चाहती थीं।

होटल के एक कमरे की खिड़की से सुबह की धूप अंदर आ रही थी, घुंघराले भूरे बालों वाले सिर, उदास, पीले चेहरे और कांपते होंठों पर, जो एक बेचैन तकिए पर लेटा हुआ था। उसके चेहरे की हर विशेषता बीमारी से ग्रस्त लग रही थी, सिवाय उसकी शरारती नीली आँखों के, जो - उसके मालिक को जानने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए - बीमारी के बादलों को चीरती हुई किसी नई चंचलता की किरण का संकेत दे रही थीं। उसके मालिक ने एक-दो आहें भरने के बाद घंटी बजाई और कमरे की नौकरानी प्रकट हुई।

“फैनी,” पर्सी ने कहा, “मेरा पुराना नौकर चाहे जीवित हो या मृत – नशे में हो या होश में – उसे तुरंत मेरे पास भेज दो।”

"जी हाँ, महोदय—वह पूरी रात जागते रहे, कुछ उत्तरी इलाके के कामगारों के साथ—वे बहुत शोर मचा रहे थे, महोदय।"

और, फैनी, मेरे लिए एक गिलास हॉलैंड्स लाओ जिसमें थोड़ा पानी मिला हो, और - रुको - मुझे तुमसे कुछ कहना है - मेरी जैकेट की जेब से एक सोवरिन निकालो - दस शिलिंग से मॉब कैप खरीदो, और बाकी दस शिलिंग से अपने लिए कुछ पर्चे खरीद लो जिन्हें तुम मेले के दौरान घर में बांट सको और हां, हर उस ट्रे पर एक पर्चा जरूर रखो जो वेटर मेहमानों के लिए लेकर आए, साथ ही घर के हर बिस्तर पर भी।"

“सर, एक स्टॉल में कुछ बहुत ही अच्छे गाने बज रहे हैं।”

"अरे बाप रे! मेरा मतलब है, धार्मिक पर्चे! लंदन के वेस्लेयन रिपॉजिटरी में छपे हुए पर्चे!"

फैनी ने अपने जहाज को इस तरह देखा मानो वह उसे अपने चार्ट में निर्धारित यात्रा के अलावा किसी और यात्रा के लिए नियत कर रही हो।

और, फैनी, अपने उन घुंघराले बालों को खोल लो, और अपने बालों को सामने से मांग निकालकर कंघी करो - इधर आओ, मैं तुम्हें रास्ता दिखा दूंगी।

"ओह नहीं महोदय, मैं यह खुद कर सकती हूँ" कहते हुए फैनी अपने काम पर निकल पड़ी, इस बात से काफी नाराज थी कि उसके पसंदीदा गहनों की निंदा की जा रही है, और पूरी तरह से हैरान थी कि उस अजीब से जंगली सज्जन का आज सुबह क्या मतलब था।

वह थोड़ी देर में सुबह की आवश्यक शराब लेकर लौटी, और उसके साथ बूढ़े रॉबर्ट के पितृसत्तात्मक रूप में लड़खड़ाते हुए प्रवेश किया, जो "अत्यधिक अतिशयता" से बहुत पीड़ित था और अपने चेहरे को लॉर्ड एल्डन के भाव में ढाल रहा था, जो एक सदी से चले आ रहे और मूल्य में एक बड़े आलू के समान चांसरी मुकदमे पर फैसला सुना रहा हो।

“वाह! लगता है तुम बुरी तरह नशे में हो! पूरी रात क्या कर रहे थे?”

"मेरे लिए सत्य की खोज में, मैस्टर।"

मैंने सुना था कि सत्य कुएँ की तलहटी में मिलता है, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वह कुआँ रम और पानी का होगा — लेकिन खैर — बॉब, मैंने अपनी आदतें सुधार ली हैं — मैं अब न तो गाली दूँगा, न वेश्यावृत्ति करूँगा, न शराब पीऊँगा, न जुआ खेलूँगा, न चोरी करूँगा और न ही हत्या करूँगा — अगर मैंने ऐसा किया तो धिक्कार है मुझे!”

“उस उद्धारकर्ता का धन्यवाद करो! हे स्वामी, तुम एक अद्भुत मार्ग पर हो!” और

बूढ़े संत ने अपने हाथों को जोड़कर एक आनंदमय आह भरी।

"बॉब, क्या तुम होश में हो कि मेरे लिए एक प्रार्थना कर सको? कोई भी प्रार्थना जिसमें थोड़ी सी कृपा हो, अच्छी रहेगी — रुको, फैनी, मुझे गिलास दो — और रुको बॉब — क्या तुम्हारे बारे में कभी कोई भजन-पुस्तिका नहीं है?"

"मुझे सबसे बेहतरीन किताब मिली है," रॉबर्ट ने एक पुरानी, काली, चिकनी किताब निकालते हुए जवाब दिया — "यह प्रिमिटिव मेथोडिस्टों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली चुनिंदा रचना है — जिन्हें आमतौर पर रैंटर्स कहा जाता है — पुराने जॉन वेसला इसके सामने कुछ भी नहीं हैं — यह लोगों को इतना गर्म कर देती है कि शैतान भी उन्हें संभाल नहीं सकता।"

"धिक्कार है! यही तो असली बुलबुल है! लेकिन मेरी प्यारी फैनी, मेरे लिए एक और गिलास लाओ—और फिर हम स्वर्गदूतों को चुप करा देंगे। बॉब—यह जीवन मुझे कभी रास नहीं आएगा—मुझे अपनी आत्मा को बचाना है—"

"ज़रूर—ज़रूर, महाराज"

और—अगर मैं इसे बचाऊंगा तो मुझे धिक्कार है!

"ईश्वर की जय हो — आप बहुत अच्छे रास्ते पर हैं, महाराज!"

"ठीक है तो— मुख्य स्वर को सही करो— बस इतना ही— मैं टेनर स्वर ले लूंगा —

"क्या तुम मेरे साथ स्वर्ग जाओगे, इत्यादि?"

इसके बाद हुए युगल गीत का प्रभाव बेहद हास्यास्पद था, अगर इसे ईशनिंदा न कहा जाए तो। श्री पर्सी की सुरीली आवाज़ पूरी गंभीरता के साथ एक ऐसी कर्कश ध्वनि में समा गई जो किसी पागल गधे की तरह कानों को कष्ट पहुँचाती थी, और, जैसा कि उस संप्रदाय की प्रथा है जिसकी पुस्तक से शब्द चुने गए थे, एक ऐसी धुन पर जो 'गर्म कमरबंद पर मुर्गी के नृत्य' के साथ उपयुक्त हो सकती थी।

बेचारी युवा नौकरानी 'उस भले-बुरे सज्जन' पर तरस खा रही थी, लेकिन अपनी हल्की सी हंसी को रोक नहीं पा रही थी। लेकिन दरवाजा खुलने से पहले ही एक गहरी और मर्दाना हंसी सुनाई दी, जिसके बाद हेक्टर मैथियास मिरेबो मोंटमोरेंसी, एस्क्वायर, अंदर आए - जिन्हें अपने दोस्तों के चरित्र की पूरी जानकारी थी, और अपने शयनकक्ष से मधुर आवाज सुनकर वे उठे, अपने वस्त्र पहने और तुरंत धार्मिक कार्य को पूरा करने में जुट गए।

“तो अब मेरे नायकों!” बैरिस्टर गरजते हुए बोले, “स्वर्ग की ओर सबसे तेज़ कौन उड़ेगा—स्वामी या मनुष्य? आपको एक अच्छी बेस आवाज़ चाहिए और मुझे पूरा यकीन है कि मेरे पास ऐसी ही एक है, जबकि मुझे पूरा विश्वास है कि आपकी नौकरानी के सुंदर मुख से एक मधुर ट्रेबल आवाज़ निकलती है—हम चार भाग बना लेंगे, और एनोक या एलियाह से भी तेज़ चलेंगे—मैं एक केल्विनिस्ट हूँ और मानता हूँ कि जेरी, क्वाशिया, ओ'कॉनर और गॉर्डन को आग में जलाए जाने के लिए ही चुना गया था, इसलिए मैं उन्हें अपने साथ शामिल होने के लिए नहीं बुलाऊँगा।”

“ओह, लेकिन हेक्टर, मैं कैल्विनिस्ट नहीं हूँ, मैं उतना ही पक्का वेस्लेयन हूँ जितना कोई हो सकता है—और मैं इस बात पर ज़ोर देता हूँ कि सभी को मुक्ति मिलेगी—स्वर्ग के द्वार पर धावा बोलना एक ईसाई सैनिक का कर्तव्य है—मैं एक नवजात शिशु हूँ हेक्टर—फैनी, बस मुझे गिलास दे दो—और मैं—” यहाँ वक्ता की आवाज़ शराब के अत्यधिक सेवन के कारण खाँसी के एक ज़ोरदार दौरे में डूब गई—अंततः उसने साँस लेकर पूछा—

"फैनी—क्या उनके घर में कभी कोई ऐसा कमरा नहीं है जिसमें मेले के दौरान कुछ प्रपत्र और एक मंच रखा जा सके?"

"जी सर—मास्टर के पास ऊपर एक बड़ा कमरा है, लेकिन अभी खिलाड़ी उसका इस्तेमाल कर रहे हैं।"

“खिलाड़ियों की तो ऐसी-तैसी — रुक जाओ। अगर मैंने दोबारा गाली दी तो मुझे धिक्कार है — मैं इसे किराए पर लूंगा और भगवान की कसम, इस पर एक उपदेश मंच बनाऊंगा।”

“प्रभु की जय हो,” रॉबर्ट ने कहा, जो पलंग के खंभे का सहारा ले रहा था, और “आमीन,” हेक्टर ने आह भरी, जो अब तक की सबसे मीठी तंबाकू का सेवन कर रहा था। अपनी अधिक उम्र और धार्मिक अनुभव की उन्नत अवस्था के कारण, नौकर ने अपने मालिक और वकील की बातचीत में हस्तक्षेप करते हुए उन्हें प्रार्थना करने की सलाह देना उचित समझा।

“और डरे हुए लोगों की तरह प्रार्थना मत करो,” बॉब ने कहा, “एकदम गर्जना के साथ प्रार्थना करो—तब तक प्रार्थना करो जब तक तुम्हारे पैर घोड़े की तरह उछलने न लगें—तुम्हारी चर्च की प्रार्थनाओं में गंदगी के सिवा कुछ नहीं है—मैं तो उनसे अपनी नाक भी नहीं पोंछूँगा! अगर स्वर्ग की कृपा तुम पर नहीं आएगी तो तुम्हें उसे लाना

होगा!”

मैं श्री रॉबर्ट पैट्रिक किंग की प्रार्थना का वर्णन इस प्रकार नहीं करूँगा मानो वह प्रकृति के अनुरूप हो, और जो मैंने यॉर्कशायर और लंकाशायर में अक्सर सुना है - इसे उन सभी लोगों द्वारा पूरी तरह से अधार्मिक घोषित किया जाएगा जो इस बात से भलीभांति परिचित नहीं हैं कि एक क्रूर चरित्र और उस उत्कृष्ट सेवक के समान धृष्ट पाखंड किस हद तक सबसे कुख्यात बदमाशों को 'पुनरुद्धार' और 'अनुभवों' के सभी उन्मादों से बचा सकता है।

श्री पर्सी अपने आध्यात्मिक चिकित्सक के विरामों के बीच में ही स्वर विसर्जित करते हुए लेटे रहे — ऐसे वाक्य जैसे “पवित्र मेल्कीसेदेक, नबूकदनेज़र और बाथलोम्यू हम पर कृपा दृष्टि डालें!” “बेलशज़र, येरोबोम और अबिहू, हमें बचाओ!” और जब हेक्टर ने सौम्य भाव से टिप्पणी की “मेरे शिष्य, ऐसी प्रार्थनाएँ न तो यहूदी की हैं और न ही गैर-यहूदी की — न कैथोलिक की और न प्रोटेस्टेंट की”, तो उन्होंने उत्तर दिया “खैर, मेरा मतलब है कि सब कुछ अच्छे के लिए हो — प्यारी संत बाथशेबा — प्रिय जेज़ेबेल — दिव्य हेरोडियास हम पर दया करें!” — यह सुनकर श्री किंग भय और विस्मय से एकदम स्तब्ध रह गए।

“हे प्रभु! स्वामी – क्या आप उन वेश्याओं को बुला रहे हैं? – नहीं, मुझे अपने कपड़े उतारकर काम पर जाना होगा और अपनी कमीज की आस्तीनों में ही काम करना होगा!”

“अच्छा बॉब, तो स्वर्गदूतों से प्रार्थना करना पाप नहीं है—तो—दयालु मोलोच—धन्य बेलियल—परोपकारी बेलजेबूब—”

“रुक जाओ मैस्टर — वे कभी देवदूत थे, लेकिन अब वे टूटे हुए बर्तनों या टूटे घुटनों वाले घोड़े की तरह गिर चुके हैं — तुम्हें भी देखना होगा मैस्टर; जैसा कि हम करते हैं!”

सुबह की प्रार्थना अभी आगे नहीं बढ़ी थी, और हेक्टर घुटने टेककर बैठे हुए दूल्हे के पीछे खड़े व्यक्ति को कुछ सामान्य चेतावनी देने ही वाला था कि तभी सिम्पसन क्वामिना और ओ' कॉनर अचानक अंदर आ गए।

“हे भगवान!” यिर्मयाह ने अपनी सबसे गहरी आवाज में गरजते हुए कहा, “क्या यहाँ किसी को कंपकंपी होने वाली है? हे भगवान – उठो मूर्ख!”

“यह तो बस उस घटना का व्यावहारिक हिस्सा है जो मैंने अपने उस कुख्यात

पखवाड़े के बाद झेली, जिसमें मैंने युवा फिलपॉट को मार डाला था। एक शुक्रवार को, अपने उनतीसवें गिलास के बाद, उसकी आंतों में गर्म लोहे की छड़ घुसी हुई थी और उसकी मौत हो गई। उस हफ्ते किंग्स्टन में तीन मेथोडिस्ट मिशनरियों ने मेरे लिए प्रार्थना की थी। और यह सब नई रम की वजह से हुआ था। इसके अलावा और कुछ हो ही नहीं सकता था, क्योंकि अगर वह असली पुरानी जमैका की रम होती तो वह आज भी बिल्कुल ठीक होता।"

"खैर," क़ैमिना ने कहा, "तुम ईसाई कुत्तों को अपनी सीटी की भारी कीमत चुकानी पड़ती है – भला किसी मुसलमान को इस तरह बड़बड़ाते हुए किसने सुना है? अल्लाह की जय हो – मैं तो चमड़ी से मुसलमान हूँ, और तुम्हारे काफ़िर शराब का एक घूँट भी चखने से पहले नरक में जाना पसंद करूँगी! पैगंबर का नाम धन्य हो! मुझे खुशी है कि उन्हें ब्रांडी और व्हिस्की के बारे में कुछ नहीं पता था! अगर उन्हें पता होता तो मुझे शक है कि मुझे हूरों का वह दुर्लभ परलोक मिलता!"

"क्वाशिया क्वामिना," पर्सी ने सख्ती से कहा, "अगर तुमने उस बूढ़े को नहीं भगाया तो मैं तुम्हें तुम्हारी ही तरह राख बना दूंगा! वह बैल-लड़ाई का खंभा इतने दिनों से कस्बे के द्वार पर यूं ही नहीं खड़ा है! फैनी, मेरी प्यारी – वेटर से कहो कि एक के लिए कॉफ़ी, हैम, अंडे और ब्रांडी मंगवाए – और ट्रे के पास एक बाइबल रख दे, जो नहेमायाह के दसवें अध्याय पर खुली हो – तुम चाहो तो इतिहास के पहले अध्याय पर भी पढ़ सकती हो – आज सुबह मेरी प्रार्थनाएं होंगी वरना मैं – "मैं नहेमायाह पर पहले से लेकर दसवें अध्याय तक व्याख्या करूंगा – मैं तुम्हें वचन बता दूंगा!"

शयनकक्ष में उपस्थित सभी लोग कमरे से चले गए, सिवाय धर्मनिष्ठ दूल्हे और वफादार मित्र हेक्टर के, जिसने कहा

"अब पर्सी, यह सरासर मूर्खता कब तक चलेगी? मुझे लगता है कि तुम्हारे पास करने के लिए और भी काम हैं?"

"हेक्टर, यदि तुम इस कमरे से बाहर नहीं निकले और मुझे नाश्ते के कमरे में उतरते समय घुटनों के बल लेटे हुए नहीं पाए, तो रात होने से पहले ही तुम्हें वह सब मिल जाएगा जो प्रभु के अंतिम दिन से पहले अवश्य मिलेगा!"

श्री मोंटमोरेंसी ने दरवाजा बंद करते हुए कहा कि उन्हें उम्मीद है कि प्रेम भोज में हॉलैंड्स खूब बांटे जाते होंगे। श्री पर्सी ने अपने धर्मनिष्ठ नौकर की मदद से और बीच-बीच में सिय्योन के गीतों के कुछ अंशों का पाठ करते हुए अपनी सुबह की वेशभूषा

पूरी की - जो आज सुबह किसी शिकारी जमींदार की वेशभूषा नहीं थी - बल्कि बेहद शालीन और पादरी जैसी काली वेशभूषा थी। उन्होंने सफेद टाई और करीने से बंधी टाई पहनी थी, और जैसा कि उनके नौकर ने अपने मालिक के क्रॉक कोट को ठीक करते हुए कहा - वे "आखिरकार शालीन और आकर्षक दिख रहे थे।"

जब रेवरेंड अलेक्जेंडर पर्सी अपने होटल के नाश्ते के कमरे में दाखिल हुए, तो उनके साथियों की बेकाबू हंसी ने उनका स्वागत किया, लेकिन उनकी हंसी-मजाक भी उनके दिव्य चेहरे की भावपूर्ण अभिव्यक्ति को भंग नहीं कर सकी। उन्होंने वेटर से बात की, जो उस अजनबी सज्जन के रूप परिवर्तन के कारण भ्रमित था और हेक्टर ने ही उसे सब कुछ खोने से बचाया था। उन्होंने कहा—

"क्या यहाँ सुसमाचार के कोई निवासी शिक्षक हैं?"

जी नहीं, जी हाँ, जी वहाँ पादरी श्री स्कारलेट हैं, जो घोड़ों की परख में माहिर हैं। और रेवरेंड मैथ्यू रैस्पर, बेचारे बूढ़े सज्जन, अब उनका वजन काफी बढ़ गया है और वे मुश्किल से ही चल पाते हैं, लेकिन उन्हें घोड़ों को खोना बहुत पसंद है। बूट्स आपको वहाँ ले जाएँगे, कभी भी। उनके तहखाने में भी उतनी ही बढ़िया शराब है, जितनी हमारे पास है। और डीन कहते हैं कि बिशप के मुकाबले हमारी शराब किसी से कम नहीं है, और मुझे पूरा यकीन है कि डीन एक पारखी हैं।

इस खबर को सुनकर कंपनी के सभी लोग चौकन्ने हो गए — क्वाशिया ने कसम खाकर कहा कि उसे कपड़ा इसलिए पसंद है क्योंकि वह उसके अपने रंग का है — ओ' कॉनर ने पूछा कि क्या मिस्टर रैस्पर की कभी कोई सुंदर बेटी नहीं थी, क्योंकि उनका दिल उस परिवार के प्रति सहानुभूति से भर गया था — लेकिन मिस्टर पर्सी ने सख्ती से चुप रहने का आदेश दिया और अपनी बात जारी रखी —

“वेटर, मुक्ति से संबंधित बातों पर मजाक मत करो — क्या यहाँ वेस्लेयन या प्रिमिटिव मेथोडिस्ट धर्म के क्षेत्र में प्रभु के कोई कार्यकर्ता मौजूद हैं?”

वेटर ने अपने नैपकिन पर नज़र डाली, अपना सामान समेटा और झिझकते हुए जवाब दिया।

"सर, लॉर्ड रेयनार्ड के पास कुछ माली हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वे मेथोडिस्ट नहीं हैं, क्योंकि मुख्य माली ने पिछले हफ्ते आड़ू बेचने के लिए दूसरे माली का सिर फोड़ दिया था - इसके अलावा, लॉर्ड रेयनार्ड का घर यहां से आठ मील दूर है।"

“पश्चाताप न करने वाले पापी – अपने वेस्लेयन उपदेशक को बुलाओ – और उससे

कहो कि वह अपने साथ दो कक्षा नेताओं को भी लाए।”

वेटर सिर खुजाते और गहरी आह भरते हुए कमरे से बाहर निकला, तभी मिस्टर पर्सी मेज के मुखिया के रूप में बैठ गए और उपस्थित लोगों को बताया कि उन्हें उम्मीद है कि हर कोई शाम पांच बजे तक मैदान छोड़कर होटल पहुंच जाएगा, क्योंकि मालिक के पास उनके लिए काम है। स्वयं वे बंदूक नहीं चलाएंगे क्योंकि उनका कर्तव्य आत्माओं को बचाना है।

“मैंने हमेशा यही सोचा था,” हेक्टर ने कहा, जो अपने प्यारे दोस्त के हास्य को पूरी तरह से समझता हुआ प्रतीत होता था — “मुझे हमेशा से यह लगता था कि काली कोट वाली लड़कियां लाल या हरी कोट वाली से ज्यादा आकर्षित होती हैं — अच्छा, मैं एक बना देता हूँ — और अब तुम दोनों कुत्तों, जब तुम्हारा दोपहर का भोजन तैयार हो जाए, तो देखना अगर मैं तुम्हें उतनी ही लंबी प्रार्थना न कराऊँ जितनी ओ'कॉनर का चेहरा इसका जिक्र सुनकर हो जाता है।”

“खैर,” आर्थर ने आह भरते हुए क्वामिना की ओर मुड़ते हुए कहा, “आज शराब पीकर नशे में धुत होने के अलावा कोई चारा नहीं है— मुसीबत हम पर बुरी तरह हावी हो रही है!”

"आर्थर, मैं आज शाम मेले में झगड़ा और लड़ाई करने के मूड में हूँ - इसके अलावा और कुछ भी मेरे मन का बोझ हल्का नहीं कर सकता।"

“सज्जनों,” पर्सी ने कहा, “आप ऐसा कुछ नहीं करेंगे— प्रभु को आपकी आवश्यकता है। हेक्टर, मैं आप पर भरोसा करता हूँ कि आप इस नेक कार्य को आगे बढ़ाएंगे।”

जब वेटर ने पादरी के दरवाजे पर पहुँचकर कहा कि उनके घर में ठहरे हुए प्रसिद्ध "अमीर" सज्जन उनसे मिलना चाहते हैं, तो मेरे पाठकों को आश्चर्य नहीं होगा कि उस संत पुरुष ने नाश्ते की मेज उलट दी - अपने बेरहम चाकू के नीचे कांपते हुए हैम और अंडे भूल गए, और चैपल के कर्ज - त्रैमासिक चंदे - एक दर्जन अलग-अलग निधियों में दान - और एक नए स्कूल के सपनों के बारे में गणनाओं के भंवर में खो गए, जो राष्ट्रीय स्कूल को तहस-नहस कर देगा। संस्थापक का नाम "ए. पर्सी. एस्क्वायर" - एक विशाल संगमरमर की पट्टिका पर "रेवरेंड साइमन स्लग, सुसमाचार के उपदेशक" और सभी चैपल ट्रस्टी विनम्रतापूर्वक अभिजात वर्ग के पंखों के नीचे शरण लिए हुए थे - कि ऐसी अलौकिक उन्माद की स्थिति में उन्होंने भेड़ों के बाड़े पर अपने दोनों पैर तोड़

दिए और तीन चाबुकों से शहादत पाई, इससे पहले कि वे अपने दो प्रमुख कक्षा नेताओं, श्री अपोलोस फ्लेशबोथम और टिमोथी बॉटमली को जगा पाते।

वे चुने हुए लोग कट्टर शराब-विरोधी थे और जानते थे कि मुफ्त में मिलने वाली सुख-सुविधाओं को उनके प्रिय भाई कभी मना नहीं करते थे। इसलिए वे पहले तो घबरा गए कि कहीं किसी मेहमाननवाज भाई या शायद बहन ने रात भर में स्वामी के सेवक को बहका न दिया हो। लेकिन जब रेवरेंड साइमन ने पसीना पोंछते हुए हांफते हुए कहा कि थर्स्टन आर्म्स के "अमीर" सज्जन उन्हें चाहते हैं, तो उन्हें भी एक अजीब सा उत्साह सवार हो गया और हर कोई अपनी टोपी को माथे पर पटकते हुए, लंबे और छोटे सींगों की भीड़ को इकट्ठा करते हुए आगे बढ़ गया। वे हर व्यापारी के होठों से फूट रहे खुले झूठों को रोकने के लिए नहीं रुके और जल्द ही थर्स्टन आर्म्स के बार में पहुँच गए। केवल एक बार बॉटमली ने फ्लेशबोथम से पूछा, "हमारे चैपल का कितना कर्ज है?"

“£=s= /”

“अरे बकवास!” स्लग ने कहा, “तुरंत बोलो—ये तो भगवान का काम है!”

फ्लेशबोथम और बॉटमली ऐसे सुंदर पुरुष थे जिनमें सांवलेपन और पीलेपन का वह अनूठा मेल था जिसे सीधे और सरल मार्ग को चुनने वाले लोग बड़ी लगन से संजोते हैं। भले ही उनकी गर्दन हंस जैसी न हो, फिर भी लापरवाही से बंधे उनके सफेद गले के वस्त्रों से कई इंच ऊपर उठी हुई थी, और कद-काठी के हिसाब से, और लचीलेपन को सुंदरता का एक घटक मानते हुए, उनकी दुबली-पतली काया और लचीले जोड़ उन्हें आदर्श अपोलो का रूप देते थे। उनके रेवरेंड भाई, हालांकि कद में कुछ इंच छोटे थे, लेकिन अपने शारीरिक बल से कद की कमी को पूरा कर लेते थे, और हालांकि उनका चेहरा फीके "व्हैंगबी" पनीर जैसा दिखता था, फिर भी इतना रसदार था कि कोहरे में भी पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह चमकता था।

अपनी जैसी भी स्थिति में, ईश्वर की कृपा के बच्चों को नाश्ते के कमरे में प्रवेश दिया गया, और उन्होंने सबसे पहले वह देखा जिसने उनके उपवास के कारण उनकी भूख को और बढ़ा दिया - एक बड़ी मेज जो एक शिकारी के सुबह के भोजन के अवशेषों से ढकी हुई थी - और फिर पाँच अत्यंत गैर-धार्मिक 'प्रोफेसर' "फायरबॉल" पर बैठे हुए थे, जिनमें से प्रत्येक में ब्रांडी से भरा एक गिलास था जिसमें अंडे की जर्दी डाली गई थी; लेकिन उनके आकर्षण का केंद्र उनके सामने चूल्हे के कालीन पर खड़ा

था - एक बहुत लंबा, दिव्य दिखने वाला संत, जिसकी आँखें लगभग तिरछी थीं - एक मुँह जो हर पल गंभीर भाव से शरारती हास्य में बदल जाता था, और नारंगी रंग की मूंछें जो उसके सावधानीपूर्वक साफ-सुथरे वस्त्रों के पवित्र काले रंग से बिल्कुल मेल नहीं खाती थीं।

चूंकि तीनों ने एक-एक व्यक्ति का मुंह खुला रखा हुआ था, इसलिए शारीरिक दृष्टि से देखा जाए तो वे बोल नहीं सकते थे - इसलिए श्री पर्सी ने एक ऐसी आवाज में बोलना शुरू किया जिसकी मधुर और गरिमामय ध्वनि ने उन्हें चैपल में होने वाले आगामी भाषणों के प्रभाव की सुखद उम्मीदें जगा दीं।

“मेरे ईसाई मित्रों — ईश्वर के नाम पर आपका स्वागत है — आगे आइए — क्या आपके शरीर को ताजगी की आवश्यकता है?”

"क्यों महोदय, क्यों नहीं—अर्थात, हमने उनकी क्षमताओं के प्रारंभिक प्रदर्शन से इतनी उम्मीदें लगा ली थीं कि—संक्षेप में कहें तो महोदय, हमने नाश्ते को महत्वहीन समझा।"

“प्रस्तावित उपहारों को अस्वीकार न करें — आप निःसंदेह उस ब्रांडी के डेकैंटर का उपयोग अपनी कॉफी में करेंगे, अपने पेट और अपनी अनेक बीमारियों के लिए — बैठने से पहले, मुझे अपने आदरणीय भाई मोंटमोरेंसी का परिचय कराने की अनुमति दें — जो लंबे समय से विदेशी धरती पर मेरे साथी रहे हैं — भाई ओ' कॉनर, एक उद्धार पाया हुआ पापी — अब ईश्वर की कृपा का पुत्र — यदि किसी मनुष्य में किसी बात की जड़ है तो वह यही है — ('धिक्कार है' — बेचारा ओ' कॉनर धीमी आवाज़ में गुर्राया — 'इसमें अभी तक कोई अंकुर भी नहीं निकला है') भाई क्वाशिया क्वामिना — मैं तो यह भी कह सकता हूँ — प्रिय भाई (यहाँ मूर को अनजाने में एक के बाद एक दो आग के गोले लगे।) वह सचमुच जलती हुई आग से बचाया गया एक अंगारा है।”

ओ'कॉनर ने अचानक चिल्लाकर लगभग नाटक बिगाड़ ही दिया था, "हे भगवान! उसे देखो! कहीं वो जल तो नहीं गया!" - लेकिन मिस्टर पर्सी की तीखी नज़र ने गुलामों के सरदार को चुप करा दिया।

“मेरे प्रिय सहकर्मियों, भाई ओ' कॉनर को क्षमा करें—उन्होंने धर्मपरायणता का चोला ओढ़ लिया है, लेकिन उनका पुराना स्वभाव कभी-कभी उन्हें जकड़ लेता है—फिर भी वे उत्साही हैं, मेरे प्रिय मित्रों—वे उत्साही हैं—मेरे मित्रों, अफ्रीका की

अंधकारमय भूमि का यह मूल निवासी शैतान का चुना हुआ पात्र रहा है और अनसुने पापों, क्रूरताओं, यातनाओं—सिर कलम करने—फांसी देने, जिंदा भूनने, पुरुष, स्त्री और बच्चे को जलाने—हजारों गुलामों को सौ टन के दास-वाहक में कुचलने—वास्तव में, वह सब कुछ करने के बाद जो शैतान नरक से अचानक मुक्त होने पर कर सकता था, वह एक धधकती और चमकती रोशनी बन गया है।"

यहाँ तीनों वेस्लेयन ने आनंदित भाव से एक-दूसरे को देखा—स्वर्गिक रूप से परिवर्तित ऐसे पापियों का विचार—चैपल में उनके द्वारा किए जाने वाले रोमांचकारी अनुभव, चौंकाने वाले खुलासे—लगभग अति आकर्षक लग रहे थे; लेकिन बेचारा क्वामिना अपने दोस्तों द्वारा अपने चरित्र के वर्णन को इतना कम समझ पाया कि पर्सी की तिरछी नज़र के अलावा और कुछ भी उसे वहीं पर लड़ाई के लिए अपना कोट उतारने से नहीं रोक सका।

"मेरे प्रिय भाई श्री सिम्पसन," पर्सी ने आगे कहा, "एक बैंकर हैं (यहाँ तीनों अनायास ही सम्मान देने के लिए खड़े हो गए) "लेकिन वे अपना पर्स संभाल कर रखते हैं, और मेरे भाई खुद को केवल एक प्रबंधक समझते हैं" (बेचारे जेरेमिया ने भाषण के इस भाग पर अपनी दोनों जेबें बंद कर लीं) "मेरे प्रिय भाई गॉर्डन अंत में आते हैं - वे पापियों में सबसे कम नहीं रहे हैं - नरक ने उन्हें बुरी तरह जकड़ लिया था लेकिन वे बाल-बाल बच गए - मैंने इतना बड़ा पापी कभी नहीं देखा और न ही इतना बड़ा परिवर्तन देखा है! वास्तव में मेरे सभी ईसाई मित्र जो इस कमरे में हैं और जिनका मैंने आप सभी से परिचय कराया है, वे सबसे बड़े पापी रहे हैं - मानव स्वभाव से किए जा सकने वाले हर अपराध को उन्होंने किया है - मनुष्य के हृदय में प्रवेश करने वाले हर बुरे विचार ने उनके हृदय को काला कर दिया है; वे आत्मा के सबसे गंदे घावों, कुष्ठ रोग से ग्रसित हो चुके हैं — (यहाँ ओ' कॉनर और चुप नहीं रह सका, और दहाड़ते हुए बोला, 'मेरी त्वचा भी तुम्हारी तरह ही गोरी है!') हमारे भाइयों की नाविक जैसी बेबाकी के लिए क्षमा करें; यह तो बस पुराने खमीर का थोड़ा सा अंश है — हमारे प्यारे भाइयों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसे बहुत पहले जंजीरों में लटका दिया जाना चाहिए था — लेकिन ईश्वर का धन्यवाद — वे अब जॉर्डन के झरनों में धुली हुई मेमनों की ऊन की तरह हैं!

"जितना बड़ा पापी, उतना बड़ा संत" की कहावत सुनते हुए तीनों आगंतुकों ने ठंडे भोजन से भरी प्लेटों से नज़रें ऊपर उठाईं – प्रत्येक ने गहन संतुष्टि की आह भरी, जो

आंशिक रूप से भरे हुए हृदय और आंशिक रूप से भरे हुए पेट का परिणाम थी। श्री पर्सी ने आगे कहा।

"भाइयों, ईश्वर की कृपा से मुझे सांसारिक सुखों का थोड़ा सा वरदान मिला है—ईश्वर की महिमा हो—और इस व्यर्थ सौंदर्य के पापों और मूर्खताओं के बीच, मैं अपना थोड़ा सा योगदान उस महान कार्य में लगाना चाहता हूँ— अतः मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आज शाम को मुझे एक खुला और प्रकाशयुक्त चैपल उपलब्ध कराएँ, जहाँ मेरे प्रिय पश्चात्तापी भाइयों और मैं, जो ईश्वर की कृपा से सबसे अज्ञानी शिशु से भी कम हूँ, द्वारा आपको एक संक्षिप्त धर्मोपदेश का अनुभव दिया जा सके। मैं अपने आदरणीय भाई को इस सांसारिक वस्तु का एक छोटा सा हिस्सा सौंपना चाहता हूँ, ताकि वे बिल छापने और प्रार्थना कक्ष को रोशन करने में सहायता कर सकें।"

ऐसा कहते हुए श्री पर्सी ने विनम्रतापूर्वक रेवरेंड एस. स्लग के हाथ में दस सोने के सिक्के रख दिए, जो अपनी अत्यधिक कृतज्ञता से कांप रहे थे और अपने उपकारक के जूतों को ऐसे देख रहे थे मानो उन्हें लगता हो कि उनकी जीभ को जूते पॉलिश करने से लाभ होगा।

"क्या आप मेरी कृपा करेंगे — भाई — आपका नाम क्या है?"

स्लग— स्लग— मेरे प्रिय महोदय!"

"अच्छा—आज शाम की बैठक के लिए एक छोटा सा विधेयक तैयार करके।"

श्री स्लग को ज्यादा देर नहीं लगी और उनकी कलम कागज के आधे पन्ने पर तेजी से चलने लगी, और उचित समय पर उन्होंने - श्री मोंटमोरेंसी की थोड़ी सहायता से - निम्नलिखित सटीक पर्चा तैयार किया।

"पवित्रीकरण चैपल.

आर्डमोर.

आज शाम को इतने बजे वेस्लेयन मिशनरी सोसाइटी की एक विशेष सभा आयोजित की जाएगी, जिसमें दस कुंवारी कन्याओं के तेल से जलाए गए दीपों से प्रकाश दिया जाएगा! पाप की भयावहता—मूर्तिपूजा के अधर्म—दास व्यापार की क्रूरता—को उद्धार प्राप्त कर चुके कई पापी आत्माओं के अनुभव के माध्यम से पूर्णतः प्रदर्शित किया जाएगा!

वे प्रिय भाई, जो एक बार खो गए थे और अब बहाल हो गए हैं — अर्थात्।

क्वाशिया. क्वामिना.

पहले अफ्रीका में एक गुलाम, फिर गुलामों का सरगना—उसके बाद गुलामों का मालिक, और अंत में एक समुद्री डाकू का कप्तान—

आर्थर ओ' कॉनर।

जो यह दावा करता है कि वह काले और सफेद खून से लथपथ बगलों के इतने करीब रहा है जितना कोई भी पापी नहीं रहा जिसे ईश्वर के प्रतिशोध ने नरक में धकेलने से कभी नहीं रोका।

जॉर्ज गॉर्डन

जो गंभीरतापूर्वक घोषणा करता है कि यदि वह अपना पूरा अनुभव दे दे तो इंग्लैंड के सबसे उत्तम निर्मित लॉर्ड्स हाउस की छत उड़ जाएगी।

जेरेमिया सिम्पसन ईएसक्यूआर।

वह महान बैंकर जिसका आदर्श वाक्य है, "तुम्हें मुफ्त में मिला है - मुफ्त में दो"।

हेक्टर एम.एम. मोंटमोरेंसी.

आत्माओं की फसल में एक विनम्र संग्राहक

और

अलेक्जेंडर. पर्सी. एस्क्वायर. एम.पी. पर्सी हॉल.
एलनविक हॉल. एलरिंगटन हाउस. हैंट्स. और
नॉर्थेंजरलैंड हाउस.
लंदन.

कौन इस संस्था की सहायता के लिए अपनी अमूल्य धार्मिक उपलब्धियों, अथक ऊर्जा, अद्वितीय वाक्पटुता और बेजोड़ परोपकारिता का योगदान देगा?

गैलरी में चांदी का दान सहर्ष स्वीकार किया जाएगा, और जो मित्र आगे की सीटों पर बैठना चाहते हैं, उनसे अपेक्षा की जाएगी कि वे कोषाध्यक्ष के पास कुछ राशि जमा करा दें।

साइमन स्लग।

नोट: चंदा इकट्ठा होने के बाद कक्षाओं को प्रार्थना के लिए बुलाया जाएगा, जब उम्मीद है कि सांसद ए. पर्सी, ईएसक्यूआर, उन्हें संबोधित करेंगे।

“बस इतना ही काफी है,” श्री पर्सी ने कहा, जब हेक्टर ने एक हास्यास्पद मुस्कान के साथ उन्हें अपने साथियों के पूर्व जीवन और बातचीत का चापलूसी भरा खुलासा सौंपा — “अब मेरे प्रिय मित्रों, इस पवित्र कार्य में, इसे पूरे शहर में व्यापक रूप से

वितरित किया जाए और शाम होने से पहले धर्म का पूरा कवच धारण कर लें, ताकि मैं — हाँ मैं — दाऊद, गुलेल और पत्थर से पलिश्ती — पापी पुरुष — बूढ़े आदम को मार डालूँ। सुप्रभात मेरे प्रिय भाइयों।"

इस प्रकार, एक गरिमापूर्ण भाव से, श्री पर्सी ने अपने तीनों भ्रमित लेकिन विजयी आगंतुकों को कमरे से विदा किया - और फिर ब्रांडी से भरी एक और कप कॉफी लेकर, उन्होंने हेक्टर को अपने पीछे आने का इशारा किया और दोनों या तो किसी दूसरे कमरे में चले गए, या किसी गुप्त सैर पर निकल गए।

आहों और गालियों की बौछार के बाद जो लोग पीछे रह गए, उन्होंने अपने कठोर भाग्य को स्वीकार कर लिया और कसम खाई कि - चाहे उन्हें कितना भी बुरा क्यों न कहा गया हो, वे इस मजे को पूरा करेंगे, भले ही उनका इस्तेमाल इतना घिनौना हो कि एक कछुआ भी बाघ बन जाए।

"हम क्या करें— क्योंकि मैं तो बस यही कह सकता हूँ कि मुझे सार्वजनिक रूप से बोलने की आदत नहीं है और मैं बाइबल को उतना ही जानता हूँ जितना आप कुरान को जानते हैं," श्री क़ौमीना ने अपने पुराने साथी की ओर उदास भाव से देखते हुए कहा।

"इस मामले का व्यावहारिक पहलू यह है कि मुझे डर है कि मैं सबसे पहले पूरे चैपल को ही नरक में भेज दूंगा — और फिर पर्सी तो मानो भड़क ही जाएगा!" ओ' कॉनर ने उत्तर दिया — लेकिन तभी एक मित्रवत सलाह मिलने वाली थी क्योंकि उसी क्षण वेटर एक नोट लेकर अंदर आया जो उन दोनों आँसुओं से व्याकुल सज्जनों के नाम था, और जब उसे खोला गया तो पता चला कि वह हेक्टर की लिखावट में था।

"चर्च का मुख्य कक्ष — पवित्रीकरण चैपल

खैर, मेरे प्यारे भाइयों— मैंने हमेशा तुम्हें बदमाश समझा था, पर अब तक मुझे यह नहीं पता था कि तुम मूर्ख हो— लेकिन तुम्हारी बचकानी हरकतों पर तरस खाकर मैं तुम्हारी मुश्किलों में एक और झंझट डाल देता हूँ— एक बात तो तय है— कि आज रात तुम्हें सुधार के लिए बोलना और सामने आना होगा— लेकिन तुम कैसे सफल होगे जब मैं ही सवाल करता हूँ कि क्या तुमने अपने पिता के बगीचे से चोरी करने के बाद से कभी पवित्र पन्नों को खोला भी है? अब मेरी बात ध्यान से सुनो, मेरे साथियों। अपने आप को काले वस्त्रों में लपेट लो, या जैसा कि हमारे पवित्र मित्र

कहते हैं, 'धर्म का पूरा कवच पहन लो', अपने गले में सफेद दुपट्टा डाल लो - और जब तुम्हें बुलाया जाए, तो दाएं-बाएं इस प्रकार लेट जाओ मानो पवित्र वचन के अनुसार तुम 'गाड़ी की रस्सी से बंधे' हो। अपने बचपन से लेकर अपने रूपांतरण तक स्वयं को काला करके शैतान के जूतों को चमकाने वाले दुष्ट की शक्तियों को परास्त करो। यदि तुम पृथ्वी को नरक से भी बदतर बताने के लिए शब्द ढूंढ सकते हो, तो ऐसा करो - लेकिन पवित्र द्वार में प्रवेश करने से पहले बहुत अधिक मत पी लेना - मुझे एक दर्जन गिलास की परवाह नहीं है, लेकिन यिर्मयाह को छोड़कर, जिसे उसकी स्वाभाविक कफ प्रकृति के कारण शायद एक दर्जन या उससे अधिक पीने की अनुमति दी जा सकती है।

याद रखो बच्चों, हमारे पवित्र संत आज मजाक के मूड में नहीं हैं — वे अभी मेरे बगल में एक कुर्सी पर घुटने टेककर प्रभु के लिए आधे गले से मरे मुर्गे की तरह चीख रहे हैं। वे यीशु के क्रूस पर चढ़ने के बारे में इतनी जोर से दहाड़ रहे हैं कि मैं दिल से चाहता हूँ कि उन्हें किसी मरे हुए पक्षी की तरह हाथ-पैर तक कीलों से ठोककर खलिहान के दरवाजे पर लटका दिया जाए।

प्रसव पीड़ा से जूझ रही तुम्हारी पापी स्त्री से, जो एक घन गज धन्य प्राणी को जन्म देने वाली है - इतना ही।

नोट: यदि आप हमारे पवित्र मित्रों के कोमल "पेटिट नेज़ रेट्रोसे" (नाक से नाक निकालना) को छेड़ना चाहते हैं, तो आप शरीर की पापी वासनाओं और जीवन के अभिमान के बारे में कुछ कड़े संकेत दे सकते हैं - लेकिन अफसोस, आप शास्त्रों की शब्दावली नहीं जानते, इसलिए मुझे लगता है कि मुझे यह स्वयं ही करना होगा!

रेव एच.एम.एम. मोंटमोरेंसी

कभी डैमब्लास्टारी-स्विगलुशाबू के अंगूर के बागों में एक कमजोर मजदूर और स्प्लिटमायटिम्बरारा के उमस भरे अफ्रीकी जंगलों में काम करने वाला, लेकिन अब मेथोडिस्ट कहलाने वाले लोगों के बीच एक मजदूर।

नाश्ते के कमरे में अंडे, हैम, ब्रांडी और कॉफी के साथ एकत्रित हुए उनके सेवकों को।

थर्स्टर्न्स आर्म्स।"

उन पर ईश्वर की कृपा और शांति बनी रहे।

“खैर,” ओ'कॉनर ने आह भरते हुए कहा, मानो उसके सीने से कोई बड़ा बोझ उतर

गया हो— “मैं सब समझ गया हूँ—आज शाम का व्यावहारिक पहलू वही होगा जो मैं कर सकता हूँ, और अगर मेरे झूठ उस गिरजाघर को नहीं गिरा सकते, तो जोशुआ के तुरही भी यरीहो की दीवारों को कभी नहीं गिरा पाए!”

श्री क्वामिना ने रूठते हुए जवाब दिया, "मुझे इसमें कोई मज़ा नहीं आ रहा। वह मूर्ख है और हमें भी मूर्ख बनाना चाहता है। मैं उस कटी हुई लोमड़ी को खुश करने के लिए अपनी पूंछ कटवाना नहीं चाहता। लेकिन जैसा कि आपने कहा, आर्थर, मैं यहाँ से गिनी तक झूठ बोल सकता हूँ, कांगो की तेज़ धाराओं की तरह तेज़ और गोल्ड कोस्ट के तूफ़ान की तरह ज़ोर से। आज रात शराब न पीने का वादा तो मैं नहीं कर सकता, क्योंकि मैं उससे बहुत नाराज़ हूँ।"

गॉर्डन ने केवल इतना कहा, "काश वह केवल महिलाओं के बारे में ही सोचता, क्योंकि पुरुषों के साथ व्यवहार करते समय वह कभी भी सहनीय नहीं होता," और सिम्पसन ने बुदबुदाते हुए कहा, "काश मेरे पास गिनने के लिए संग्रह होता।"

मेरे कुछ पाठक शायद सार्वजनिक पूजा स्थलों के बारे में बहुत कम जानते हों, सिवाय उन उदाहरणों के जो उन्हें हमारी राष्ट्रीय धर्म द्वारा ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित भव्य छतों और सुंदर खिड़कियों वाले भवनों में देखने को मिलते हैं। लेकिन वह शालीन पूजा-अर्चना—साधारण लेकिन भव्य अनुष्ठान— गिरजाघरों में गाए जाने वाले भजन और वे भजन जो पर्सेल, टैलिस, गिबन्स, बुल, केंट या ग्रीन की समाधियों से हमें संदेश देते हैं—उन नए ईंट या पत्थर के घनाकार भवनों में बेजोड़ हैं, जिनमें अर्धवृत्ताकार मेहराबदार खिड़कियों की दो पंक्तियाँ हैं और जिनके भीतरी भाग रंग-बिरंगी बेंचों और दीर्घाओं से बने हैं, जिन्हें चैपल कहा जाता है। शास्त्रीय वास्तुकला के इन रत्नों में महोगनी के आवरणों में जड़े महंगे ऑर्गन तो हो सकते हैं, लेकिन अफसोस! इनका संगीत किसी उन्माद में डूबे वाल्ट्ज़ जैसा है, मानो आत्माएं स्वर्ग की ओर नाच रही हों; उनके उपदेश मंच बेदाग मखमल से सजे हैं, लेकिन उन पर रखी बाइबलें तात्कालिक उद्गारों की ताल पर थपथपाई जाती हैं: 'मैं क्रोध में नहीं, बल्कि दुःख में बोल रहा हूँ'। पाठक, यद्यपि मैं कई शानदार अपवादों को इंगित कर सकता हूँ, मैंने तथाकथित 'कॉन्वेंटिकल' लोगों को इतना देखा है कि मैं इस बात से अवगत हूँ कि मैंने अभी जो संक्षिप्त रेखाचित्र खींचा है या जो अधिक विस्तृत चित्र मैं चित्रित करने जा रहा हूँ, वह उन मूर्खताओं का कोई अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण नहीं है जिनमें मनुष्य तब डूब सकता है जब वह स्वयं से अधिक पवित्र दिखना चाहता है।

आर्डमोर मेले के पहले दिन की शाम को, सैंक्टिफिकेशन चैपल के दरवाजों के आसपास जमा भीड़ के सामने हर चौकोर खिड़की से गैस की रोशनी की एक तेज़ चमक दिखाई दी। अंदर भरपूर रोशनी ने तेज़ी से भरती हुई बेंचों और दीर्घाओं पर एक पीली चमक बिखेर दी, जबकि आगामी मिशनरी सभा में विशिष्ट वक्ताओं के लिए बनाए गए हरे रंग के कपड़े से सजे मंच पर दोहरी चमक फैल गई। झुके हुए कंधों और झुकी हुई आँखों वाले पुरुष लगन से दीपों को ठीक कर रहे थे या वायलिन और वायलिनसेलो पर बेसुरी धुनें बजा रहे थे। पसीने से तर, लेकिन पुनर्जीवित आत्माओं ने कराहती हुई प्रार्थना के प्रभाव में अपने चेहरे हाथों में छिपा लिए। महिलाएं भी अत्यंत पवित्र उत्साह के साथ कार्यक्रम स्थल पर उमड़ पड़ीं, हालांकि उनके पहनावे पर एक दुखद सांसारिक ध्यान था: उनकी ऊपर उठी आँखें और उदास आहें स्वर्ग का वर्णन कर रही थीं, लेकिन उनके साटन के बोनट और सफेद रूमालों से थोड़ी सी 'मिट्टी की महक' आ रही थी।

कुछ देर के लिए चबूतरे की नंगी पट्टियों ने तेज़ी से भरते हुए भवन में बेचैनी का माहौल पैदा कर दिया, लेकिन जल्द ही उन पट्टियों पर पाँच ऐसे सुंदर पापी लोगों के जूते पड़ गए, जो मानो मेमेल की लकड़ी पर चलने वाले अब तक के सबसे बेहतरीन उदाहरण थे। रेवरेंड एच.एम.एम. मोंटमोरेंसी, रेवरेंड जे. सिम्पसन, रेवरेंड जी. गॉर्डन, रेवरेंड ए. ओ'कॉनर और रेवरेंड क्यू. क्वैमिना, सभी गंभीर काले वस्त्रों में सजे हुए, पुरुषों की गहरी आहों और महिलाओं की गहरी सहानुभूति के बीच अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए। हालाँकि चुने हुए पादरियों के चेहरे हमेशा की तरह शरारती लग रहे थे, फिर भी उनकी सीधी, सभ्य आकृति और सजी-धजी दाढ़ी ने विशेष रूप से सुंदर और पवित्र दर्शकों पर गहरा प्रभाव डाला।

श्री स्लग इन ईसाई योद्धाओं के पीछे-पीछे चले और रेव हेक्टर के कोट के बटन को परिचित अंदाज़ में पकड़े हुए कुछ शब्द फुसफुसाए, लेकिन मोंटमोरेंसी ने स्पष्ट रूप से जवाब दिया।

“मेरे प्रिय साथी सैनिक स्वयं इस लड़ाई में भाग लेना चाहते हैं—इसलिए वे भजन गाएंगे और संभवतः ऑर्गन भी बजाएंगे। आज सुबह उन्होंने घुटनों के बल बैठकर प्रतिज्ञा की कि काम में ढिलाई नहीं बरती जाएगी।”

उनके बोलने के समाप्त होने से पहले ही, शाम के शेर को गलियारे में श्रद्धापूर्वक विदा हो रही भीड़ के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए देखा गया; और, न तो दाईं ओर

और न ही बाईं ओर देखते हुए, वह अपने स्थान पर चढ़ गए, अपने दर्शकों की ओर मुख किया और कई नम आँखों के सामने गंभीर काले वस्त्रों में एक बहुत लंबा, सुडौल शरीर दिखाया, जिसका कुलीन माथा गैस की रोशनी में चमक रहा था और एक ऐसा चेहरा जिसकी देवदूत जैसी सुंदरता केवल भूरे बालों और नारंगी मूंछों से थोड़ी धूमिल थी।

आहों और कराहों की अनिवार्य हलचल के थमने तक प्रतीक्षा करने के बाद, रेवरेंड अलेक्जेंडर पर्सी ने एक स्पष्ट लेकिन शांत और मधुर स्वर में बोलना शुरू किया—

"मेरे मसीह में भाइयों और बहनों – मुझ पर ईश्वर द्वारा डाले गए कर्तव्य का इतना गहरा बोझ है कि मैं आप सभी से निवेदन करता हूँ कि आज शाम के कार्यक्रम की शुरुआत से पहले प्रार्थना और स्तुति का एक गीत प्रस्तुत करूँ। मेरे भाई स्लग, मैं स्वयं एक भजन प्रस्तुत करूँगा और उसे ऑर्गन पर संगत दूँगा, इसलिए मेरे ईसाई मित्र को संगीत कक्ष में रखे वाद्ययंत्रों का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं होगी।"

स्लग और संगीतकार उस पवित्र व्यक्ति के घमंड को देखकर बेहद अपमानित महसूस कर रहे थे, जिसने उनकी सहायता को ठुकरा दिया था। लेकिन मोंटमोरेंसी ने अपने चेहरे को रूमाल से ढक लिया ताकि वह अनियंत्रित हंसी को छिपा सके जो उसकी पसलियों को हिला रही थी, क्योंकि उसकी अनुभवी आंखों ने अपने प्रिय मित्र के दृढ़ संकल्प को देखा कि वह अपने मनमौजी और अड़ियल स्वभाव की पूरी गंभीरता के साथ इस नाटक को अंजाम देगा। श्री पर्सी, जिन्होंने, यदि उनकी मंत्रमुग्ध और प्रेरित आंखें सच कह रही थीं, तो वास्तव में उस क्षण की भावना को भांप लिया था, मंच के सामने आए - कराहों के अशांत सागर को शांत करने के लिए अपना हाथ हिलाया और आगे बढ़े -

"हम जैसे अभागे कीड़े, टोफेट से अपनी चीखें बुलंद करें, निम्नलिखित शब्दों में और "विडॉप्स थ" की धुन पर अनुकूलित।"

हमारे सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के सिंहासन के समक्ष
आइए हम विनम्रतापूर्वक घुटने टेककर प्रार्थना करें।
और अपने घोर पापों के प्रायश्चित के लिए प्रयास करो।
हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारी प्रार्थना सुने।
हे सर्वशक्तिमान प्रभु, हमारी निराशा ही हमारी गहरी निराशा हो।

पाप के प्रति हमारी चेतना को अलग करना —
कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी आँखों से हमारा बाहरी पंखा छूट जाए—
हमें अपने अपराधों को छुपाने का प्रयास करना चाहिए।
हम जानते हैं कि हम अपराध के लिए ही बने हैं।
हम अपने जीवनकाल में किए गए अपराधों के माध्यम से ही अपना व्यक्तित्व बनाते हैं,
हर समय, पूरी शिद्दत से, विश्वास करते हुए
वह कृपा हमें तूफान से बचाती है;
या फिर, बहुत समय पहले से, शिनार्स के मैदान में,
विद्रोही पुरुषों का गौरव का स्तंभ
व्यर्थ परिश्रम से आशाओं में ऊपर उठाया गया
ताकि इस प्रकार तेरी शक्ति को चुनौती दी जा सके,
इसलिए हम, अधार्मिक नैतिक संहिता द्वारा
या फिर आस्था के निरंतर बदलते सिद्धांत,
लगता है हम संकरी सड़क पर चढ़ सकते हैं।
अपनी भुजाओं से बच निकलो, और हमारी मृत्यु को धोखा दो।
लेकिन, जब हम स्वर्ग के द्वार तक पहुँच जाएँगे,
शाश्वत ताज जीतने के लिए दृढ़ संकल्पित है,
हमें लंबे समय तक दस्तक देनी होगी और ठहरकर प्रतीक्षा करनी होगी।
यहां देखने वाले स्वर्गदूतों ने हमें अंदर आने दिया!
क्या तुमने अपने पाप का पश्चाताप किया है?
तब मेरी आत्मा—मेरे ईश्वर—इसका उत्तर क्या दे सकते हैं?
“वापस जाओ— अपना मार्ग फिर से शुरू करो,
और फिर रोओ, देखो और इंतजार करो!
लेकिन अगर वापसी से इनकार कर दिया जाए
मृत्यु के भयावह द्वार से, जो पीछे से बंद था,
हमारा स्वर्ग, हमारी आशा, हमारा गौरव कहाँ उड़ गया?
वे हवा के सामने भूसे की तरह उड़ते हैं!
हे प्रभु, हमें हमारे कपटी मन का ज्ञान कराओ

भले ही वह ज्ञान निराशा लाए;
क्योंकि, इस प्रकार भटकते हुए, शापित और अंधे होकर,
हमें यह आशा करने का साहस नहीं है कि तू हमारी प्रार्थना सुनेगा!

जैसा कि मैंने पहले ही श्री पर्सी की संगीत प्रतिभा का उल्लेख किया है, अब यह कहना शायद ही उचित होगा कि भजन गाने के बाद जब वे ऑर्गन पर बैठे, तो उन्होंने तुरंत ही गंभीर संगीत को चैपल में गूंजने दिया और वह मानो स्वर्ग की ओर उठ रहा था। चाहे जो भी असहज महसूस कर रहे हों, वे उस 'अमीर धर्मान्तरित जमींदार' की प्रतिभा को देखकर चकित रह गए और यहाँ तक कि रेवरेंड एस स्लग ने भी अंतिम गहरे स्वर के थमने पर आश्चर्य से आह भरी।

श्री पर्सी एक बार फिर मंच के आगे बढ़े और उन्होंने बोलना जारी रखा, जिसे उस आत्मा को बचाने वाले व्यक्ति ने दिव्य स्वर बताया।

"मेरे भाइयों, ईश्वर ने इस संसार के वीरान रेगिस्तान में एक मार्ग खोल दिया है, और जो माँगते हैं उन्हें बहुत कुछ दिया जाता है, वैसे ही जो खोजते हैं उन्हें बहुत कुछ मिलता है। हम स्वयं कुछ भी नहीं हैं और अपने दम पर कुछ भी नहीं कर सकते, लेकिन उस तारे के मार्गदर्शन में जो अठारह सौ वर्ष से भी अधिक समय पहले बेथलहम पर चमका था और जो अब, यदि हमारी धुंधली आँखें उसे देख पातीं, तो आर्डमोर पर चमकता है, हम एक सैनिक के मार्ग पर चल सकते हैं और भोर से पहले अब तक अजेय पापी मनुष्य पर एक नई विजय प्राप्त कर सकते हैं। मैं अब आपके समक्ष एक वकील के रूप में उपस्थित हूँ—वास्तव में उस विशाल संसार का वकील हूँ जिसे अपराध के लिए ईश्वर के समक्ष लाया गया है, और यदि मैं सफलतापूर्वक उनका पक्ष नहीं लेता, तो उन्हें किसी भी मानवीय चतुराई से दी जा सकने वाली सजा से कहीं अधिक भयानक सजा दी जाएगी—मैं उस विशाल भूमि के लिए पैरवी करता हूँ जिसका जलता हुआ सूर्य उन शरीरों पर चमकता है जिनका काला रंग उनकी आत्माओं के मध्यरात्रि अंधकार की तुलना में बर्फ के समान है—मैं अपने भाइयों, अफ्रीका के लिए पैरवी करता हूँ—मैं ईश्वर के न्याय के न्यायालय में एक और भी विशाल—और भी प्राचीन—और भी अधिक सभी संबंधों से परिपूर्ण भूमि के लिए भी वकील हूँ। मानव विजयों की तुरही की ध्वनि से हमारे हृदयों को जागृत करो, मानव दुःखों के अंतिम संस्कार के विलाप से, एक ऐसी भूमि जहाँ हमारी नश्वर प्रकृति ने

अपना पालना पाया, जहाँ एक युवा संसार जलमग्न हो गया, जहाँ से एक ऐसे संसार का उदय हुआ जिसे अब वृद्ध कहा जाता है, जहाँ से एक एकांत गाँव से वह तारा उदय हुआ जो कभी अस्त नहीं हुआ और जिसकी उज्ज्वल किरण बेथलहम से यहाँ हमारी मुलाक़ात पर चमकती है, मुझे विश्वास है। मैं उस धरती के लिए प्रार्थना करता हूँ जिसने हमारे प्रथम पिता को अस्तित्व और हमारे उद्धारकर्ता को समाधि दी, मैं अपने ईसाई मित्रों से एशिया के लिए प्रार्थना करता हूँ। एक और भूमि भी है, जिसके साथ कम परिचय के कारण हमारी सहानुभूति कम है, जो आपका और मेरा ध्यान आकर्षित करती है, एक ऐसी भूमि जिसकी शक्तिशाली नदियाँ अज्ञात और अथाह धन को महासागर में बहा ले जाती हैं, लेकिन जो स्वयं में - संयुक्त राज्य अमेरिका को छोड़कर - एक उजाड़ और वीरान बंजर भूमि है, लगभग चार हज़ार मील का जल यूरोप से भी अधिक क्षेत्रफल में फैला है, जो प्रति घंटे अटलांटिक महासागर में व्यर्थ धन और स्वर्ग में शोकपूर्ण आहें भेजता है, अमेज़न नदी अपनी धारा के प्रत्येक उफान में एक उपदेश देती है, पेरूवियन हड्डियों को सफेद करने वाली हड्डियाँ। पहाड़ प्रतिशोध के लिए जोर-जोर से पुकार रहे हैं - मेरे भाइयों, मैं अमेरिका के लिए विनती करता हूँ।

एक और धरती जिसे ईश्वर ने अनुग्रहित किया है—जिस पर उन्होंने बहुत कम कृतज्ञता के साथ आशीर्वाद दिया है—एक ऐसी धरती जिसने सत्ता की बागडोर अपने हाथ में ले ली है और पृथ्वी के विकास की दिशा तय करेगी—उस धरती के लिए भी मुझे विनती करनी है—मैं उस धन के लिए विनती करता हूँ जो अभिमान में बदल गया है—सत्ता जो अत्याचार में बदल गई है—धर्म जो पाखंड में बदल गया है—सत्य जो असत्य में बदल गया है—जनसंख्या जो भ्रष्टाचार में बदल गई है—ज्ञान जो केवल अंधकार के कर्म करने के लिए प्राप्त किया गया है—मैं यूरोप के लिए विनती करता हूँ। और अब मेरे भाइयों, क्या मुझे उस द्वीप के लिए विनती नहीं करनी चाहिए जिसने मुझे जन्म दिया? उस भूमि के लिए जहाँ पृथ्वी पर मेरा सबसे प्रिय सब कुछ समाहित है—जिसकी पहाड़ियों और घाटियों में मेरा दुखी शरीर विचरण करता है; जिसकी मिट्टी के नीचे मेरा थका हुआ सिर विश्राम करता है—क्या मुझे अपने इंग्लैंड के लिए—अपनी मातृभूमि के लिए—विनती नहीं करनी चाहिए?

यहाँ पर्सी, आँखों में चमक लिए और वास्तविक, यद्यपि अस्थिर, भावनाओं के प्रभाव से लड़खड़ाती आवाज के साथ, मंच के बिल्कुल आगे बढ़ा और और भी गंभीर स्वर में बोलना जारी रखा—

“जिस शरीर को मैं कभी अपने सांसारिक मन से समस्त संसार मानता था, वह अब हे संसार! तेरे ही एक कण के समान है! मेरे जीवन का आनंद एक कीड़े के खेल के समान है! मेरी नश्वर पीठ का सहारा टूट गया है और अब चट्टानों और दलदलों से मुझे कौन बचा सकता है – हे पिता! केवल तू ही! क्योंकि तेरे हाथों में सामर्थ्य और शक्ति है, और तू ही सब पर शासन करता है!” फिर भी इंग्लैंड – मेरा देश – दूर देशों के प्रति व्यक्त की जाने वाली भावनाओं से कहीं अधिक हार्दिक भावों की मांग करता है, क्योंकि वह स्थान जिसे हम सबसे अधिक प्रेम करते हैं, हमारी बाहों को भर देता है या उनकी कब्रों के बारे में हमें सबसे अधिक सोचना चाहिए – सबसे अधिक प्रेम करना चाहिए, और सबसे अधिक पीड़ा के साथ शोक करना चाहिए – मुझे क्षमा कर दे, मेरे ईसाई भाइयों – मैं एक महत्वपूर्ण पाठ से भटक गया हूँ – “जाओ और मेरे नाम पर सुसमाचार का प्रचार करो।” हाँ, चलो उत्तर और दक्षिण से, समुद्र के सुदूर द्वीपों तक चलें—उनके वचन उन जलधाराओं की ध्वनि में घुलमिल जाएँ जो लीना, ओबी और एनीसी को उनके ठंडे साइबेरियाई सागर की ओर ले जाती हैं—यह उन विशाल चोटियों से "लोहे की घंटी" की तरह लौट आए जो नीरस तिब्बत को उपजाऊ भारत से अलग करती हैं—यह अमेरिका की नींद को उसके एंडीज पर्वतमाला की गर्जना से भी ऊँची आवाज से जगा दे—यह दुखी अफ्रीका को बता दे कि उसकी नील या नाइजर की विशाल लहरें उसकी प्यासी रेत को तब तक उपजाऊ नहीं बना सकतीं जब तक उनका जल जॉर्डन की पवित्र धारा में न मिल जाए।

उस नदी के किनारे, ईश्वर के उचित समय पर, हमारी आत्माओं को खड़ा होना पड़ेगा, इस संसार के सुखों के मिस्र और इस संसार के दु:खों के रेगिस्तान को पीछे छोड़ते हुए, जैसे इस्राएल के चालीस वर्षों का भटकना हमारे पीछे छूट गया हो — हमारे नीचे गहरी और कपटी बाढ़ होगी — हमारे सामने स्वर्ग की निर्मल ज्वाला होगी!

वह,

जब हम जॉर्डन की सीमा पर कदम रखते हैं

हमें इस बात का भय नहीं होना चाहिए कि इसका जल हमें सदोम सागर की ओर धकेल देगा, बल्कि इस बात का भय होना चाहिए कि सूर्य की रोशनी से जगमगाते तट पर सफेद पंखों वाले रक्षक देवदूत हमारा मार्गदर्शन करेंगे और हमें सदा खिलते हुए घास के मैदानों पर कदम रखने में सहायता करेंगे। यह उस व्यक्ति की हार्दिक प्रार्थना है जो लंबे समय से अंतर्मन में भटकता रहा है और अब विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करता है

कि आप और वह स्वयं एक सुखी कनान पहुँचें।

मेरे भाइयों, कृपया मुझे अभी और बोलने की अनुमति न दें; भाई मोंटमोरेंसी वक्ताओं का परिचय देंगे और बैठक के मुख्य कार्य को मुझसे कहीं अधिक कुशलता से शुरू करेंगे - मुझे लगता है कि मैं कुछ भी नहीं हूँ और मैंने कुछ भी नहीं कहा है।

ईश्वर हम सब पर दया करे!

रेवरेंड ए. पर्सी ने मंत्रमुग्ध श्रोताओं को सामान्य प्रणाम करते हुए पांच सौ सफेद रूमालों की बौछार के बीच अपनी सीट ग्रहण की। सभा में मौजूद पुरुषों ने गहरी आह भरी, लेकिन महिलाओं ने गहरी संवेदना व्यक्त की, और यदि किसी सचेत पर्यवेक्षक ने पर्सी के होंठों पर अजीब सी मुस्कान देखी होती, जब उन्होंने अपनी सीट ग्रहण करने के बाद चारों ओर देखा, तो वह तुरंत समझ जाता कि वक्ता को पता था कि उन्हें किनकी भावनाओं को संबोधित करना है और किनके प्रति उदासीनता दिखानी है।

जब कराहों, सिसकियों, आहों और चीखों का तूफान कुछ शांत हुआ, तो रेवरेंड हेक्टर एम.एम. मोंटमोरेंसी उठे और अपनी लोहार जैसी बाहों को बेन काउंट जितनी चौड़ी छाती पर मोड़े हुए, और अपनी जंगली आयरिश आँखों को कोयले की खान में काले हीरों की तरह चमकाते हुए, ला ब्लाचे के बेस जैसी आवाज़ में फूट पड़े।

"खैर, मेरे साथी योद्धाओं, भाई पर्सी ने अभी-अभी आपको सही सिद्धांतों का एक लंबा-चौड़ा उपदेश दिया है, लेकिन यह बहुत ही बारीक है, मेरे दोस्तों—यह बहुत ही बारीक है—हम बेचारे पापी लोगों को शुद्ध होने से पहले अच्छी तरह से सफाई की ज़रूरत है—एक पतला तौलिया हमारे लिए काफी नहीं है—हमारे कठोर हो चुके अंतरात्माओं पर जमा हुए पापों को साफ करने के लिए खुरदुरे घोड़े के बाल और झाड़ू ही असली उपाय हैं। अब मेरे पास लोहे से बनी दो असली घोड़े की कंघियाँ हैं, जो पनीर के कीड़ों की तरह तैयार हैं, जहाँ यीशु उन्हें बुलाएँगे वहाँ कूदने के लिए (शायद आपने कभी कीड़ों को चाकू से उछलकर आपके मुँह में जाते नहीं देखा होगा, लेकिन मैंने देखा है)। ये दोनों सबसे बड़े बदमाश रहे हैं जिन्होंने कभी कमीज़ पहनी थी, और अब वे सबसे पवित्र संत हैं जिन्होंने पंखों का एक जोड़ा पाने का आदेश दिया है—उन्हें ज़रूर पंख मिलेंगे, मेरे भाइयों—जब वे इस गुमराह दुनिया को छोड़ेंगे—वे स्वर्ग के भंडार में उनके लिए तैयार हैं—पूरे पंखों से सजे हुए, और हर पंख सोने की नोक से जड़ा हुआ। सोचो, अगर तुम नहीं बदले तो उनकी और तुम्हारी उम्मीदों में कितना फर्क होगा—पंख उनके लिए महादूत माइकल के समान - तुम्हारे लिए महादूत लूसिफ़र के

समान खुर - तो मेरे साथियों, बदल जाओ - इसे कोई मामूली बात मत बनाओ - इन दो भाइयों से बुरे शैतान कभी नहीं हुए जो अब तुम्हें संबोधित करेंगे, और अगर वे जॉर्डन नदी की सीमा पार कर चुके हैं तो तुम क्यों नहीं?

मेरे जवानों, प्रभु की शरण में आओ—महान शत्रु से लड़ो, चाहे उसके पास बिल्ली के समान ही जीवन क्यों न हों, और मैं तुम्हें मिलवाता हूँ—कैप्टन आर्थर ओ' कॉनर से —जो कभी इतना निकम्मा था कि उसे भूनने के लिए एक कोयला भी बर्बाद करना उचित नहीं था, और अब वह उतनी ही तेज़ी से स्वर्ग की ओर बढ़ रहा है जितनी तेज़ी से बालाम का गधा उसे ले जा सकता है।

इस प्रभावशाली भाषण के समापन पर बैरिस्टर ने एक चुटकी तंबाकू ली - अपने चेहरे को छिपा लिया ताकि वह अपने अंदर उमड़ रही अनियंत्रित हंसी को छुपा सके, जो मानो किसी बैरल में बीयर की तरह उबल रही थी, और ओ' कॉनर को उठने का इशारा किया।

बेहद अनिच्छा से और एक अधार्मिक गाली के साथ, लाल बालों वाले उस उग्र आँखों वाले नौसैनिक ने संकेत का पालन किया - पर्सी की तिरछी नज़र देखकर और भी तेज़ी से - वह पसीने से तर गालों के साथ एक मिनट तक अनिर्णायक खड़ा रहा और फिर मानो उसने मन बना लिया हो, उसने प्लेटफार्म की सामने वाली रेलिंग पर दोनों मुट्ठियाँ पटकीं और तुरंत "बीच में ही" दौड़ पड़ा।

मेरे मित्रों, कोई लाभ नहीं – मैं ईश्वर भक्ति में अनपढ़ हूँ, और मैं पुराने ईश्वर को अपने पिता या माता से भी अधिक अच्छी तरह जानता हूँ – मैं कभी भी धर्म परिवर्तन के योग्य नहीं था, लेकिन मुझे मुक्ति मिल गई – मेरे मित्रों, आप समझ रहे हैं ना – ईश्वर की महिमा हो! खैर, मुझे लगता है कि मुझे आपको अपने अनुभव का कुछ अंश बताना चाहिए – मैं एक धनी आयरिश परिवार से था, जो अपनी आय से प्रति वर्ष £ से अधिक खर्च नहीं करता था, लेकिन बड़ा बेटा होने के नाते मैंने निजी तौर पर संपत्ति पर कुछ कर्ज ले लिया, जिसे पुराने गवर्नर की मृत्यु के बाद चुकाना था – इस बीच ब्याज भी बढ़ता रहा। ईश्वर की महिमा हो, वह मुझे अपने लेनदारों से छुटकारा पाते और समुद्र में जाते हुए देखने के लिए जीवित रहे – काश मैंने मुक्ति पा ली होती!" (यहाँ कुछ देर तक वक्ता की आवाज़ में ज़ोरदार आहें सुनाई दीं) "खैर, यह तो कमाल है!" तो मेरे साथियों—मेरा मतलब है मेरे ईसाई भाइयों—मैं गोल्ड कोस्ट पर ऐसे काले दिल के साथ उतरा था, जो किसी भी साक्षात शैतान के शरीर से भी काला था,

जिसने कभी किसी इंसान के जिस्म को पंद्रह शिलिंग की बंदूक के बदले बेचा हो! मैंने (“रुको रुको,” मोंटमोरेंसी ने दबी आवाज़ में कहा।) खैर, छोड़ो—घड़ी में आठ बजने से पहले मैं तुम्हें जीवन के कुछ राज़ बता देता हूँ—मैंने अपनी सारी शुरुआती पूंजी गुलाम खरीदने में खर्च कर दी, और पुराने कैलाबार के राजा लड़के के रूप में—क्या तुम राजा लड़के क्वाशिया को जानते थे?”

“हाँ, मैंने किया था आर्थर! वह बूढ़ा डी— मेरा मतलब है, वह जाहिल—मुझे बम्बारा के असली नीग्रो लोगों के एक बड़े समूह से ठग लेता, सिर्फ इसलिए कि मेरी तीस बेहतरीन बर्मिंघम बंदूकों में से दो ही पहली बार में चलीं। मैंने उसे बताया कि यह मौसम की वजह से है, जिसके वे अभी अभ्यस्त नहीं हुए हैं, लेकिन वह बूढ़ा आदमी टस से मस नहीं हुआ।”

रेवरेंड ए. पर्सी की एक भयानक तिरछी नज़र ने मूर की ज़बान पर ताला लगा दिया, और रेवरेंड ए. ओ' कॉनर ने बोलना जारी रखा—

“खैर—मेरे साथियों—यानी—मेरे प्यारे भाइयों—इस राजा लड़के ने कहा कि अगर मैं उसे ‘महज़ रिश्वत’ दूँ, तो वह मुझ पर एक टन हाथी के दाँतों का भरोसा करेगा। मैं महाराज से मिलने के लिए राज़ी हो गया—अब, ध्यान रहे, ‘महज़ रिश्वत’ का मतलब है रिश्वत देना—और सबसे बढ़िया रिश्वत ब्रांडी का एक बड़ा गिलास या रम का एक बड़ा पीपा होता है—खैर, मैंने महाराज को दो बड़े लौकी भरकर इतनी बढ़िया लाल कच्ची रम दी कि किसी के भी अंदरूनी अंग जल उठें—यह देखना बहुत ही सुंदर था कि उनकी सफेद आँखें कैसे घूम रही थीं, और उनके काले पंजे उनके मोटे पेट को थपथपा रहे थे (हेक्टर, यह तो अनुप्रास अलंकार है!) जैसे-जैसे वह धीरे-धीरे अपने जहाज में समुद्री तट के सामान से भरते गए, तब तक कि उनके पास उतना माल जमा हो गया जितना किसी आदमी को बंदरगाह से निकलते समय चाहिए होता है। “हे भगवान!” वह बड़बड़ाया, “मैंने ऐसा पहले कभी नहीं किया—मैंने उल्टी की, और फिर देखो मैंने क्या किया!” खैर, बूढ़े आदमी का पेट खराब था और उसने झोपड़ी छोड़ने की कोशिश की — माफ़ कीजिएगा — मेरा मतलब महल से है — और जब उसका जहाज़ लड़खड़ाया और हवा के विपरीत दिशा में चलने लगा, तो मैंने सोचा कि उसे खींचकर ले जाना मेरा कर्तव्य है, जैसे कोई स्टीम टग किसी खस्ताहाल कोयले के जहाज़ को खींचता है। लेकिन जैसे ही मैंने उसे छुआ, उस निर्दयी, पापी ने मुझे दाहिने हाथ से ज़ोरदार धक्का दिया, जिससे मैं जॉर्डन नदी के पार जा गिरता,

अगर मेरी जैकेट की जेब में रखी बाइबिल ने मुझे न बचाया होता — जी हाँ, मेरे प्यारे भाइयों — मेरी बाइबिल ने मुझे बचाया! ईश्वर करे, यह आपको भी बचाए!

अब तक अचंभित भीड़ से फूटी खुशी की कर्कश आहों ने पर्सी को यह एहसास दिलाया कि उसके वाक्पटु सहकर्मी का एक और शब्द उसके द्वारा किए गए शानदार प्रहार को बिगाड़ देगा, इसलिए उसने जल्दबाजी में आगे बढ़कर जोर से कहा—

"मेरे ईसाई मित्रों, रात ढल रही है, मेरा दिन काफी बीत चुका है — शायद हममें से कुछ के लिए रात करीब आ गई हो — मेरा भाई ओ' कॉनर पिछले काम से थक गया है — मैं उसकी जगह लेने के लिए अपने प्यारे भाई क्वाशिया क्वामिना को पेश करता हूँ।"

तांबे के रंग के वस्त्र पहने वह सज्जन मंच के सामने की ओर ठीक उसी भाव से आगे बढ़े, जैसा कि न्यूगेट के मचान की ऊंचाई से इस थकी हुई दुनिया पर अंतिम नजर डालते समय उनका होता।

"लानत है कमीनों और भाइयों – हेक्टर, तुम पर लानत है, मेरी टांगों पर ऐसे लात मत मारो – मेरा मतलब है देवियों और सज्जनों – अब ये तो बहुत बुरा हुआ हेक्टर – अच्छा, ईसाई दोस्तों – हालाँकि मुझे सार्वजनिक रूप से बोलने की आदत नहीं है, और अगर मैं कभी भी डेक के अलावा किसी और मंच पर खड़ा हुआ तो मेरी बहुत बुरी तरह से निंदा की जाएगी, फिर भी मैं गैर-ईसाइयों को ज्ञान देने और उन्हें हमारे व्यवसाय की गतिविधियों के बारे में कुछ जानकारी देने की कोशिश करूँगा; मेरा मतलब है – क्या आपको बुरा लग रहा है – हमारा व्यवसाय क्या था एक समय – अच्छा – मैं कहाँ था – पर्सी, तुम फांसी से न सज़ा पाए बदमाश, मैं अब तुम्हारा पीछा नहीं करूँगा!"

रेवरेंड ए पर्सी की ओर गुस्से से मुड़ते हुए, चिड़चिड़े मूर ने एक गाली बुदबुदाई और अपनी सीट पर वापस बैठ गया, लेकिन शाम के प्रहसन के मुख्य अभिनेता ने अपने सहयोगी की सनक पर ध्यान दिए बिना, आगे बढ़कर दर्शकों को संबोधित किया, उनका माथा गर्मियों की शांति में हिंद महासागर जैसा लग रहा था।

मेरे प्रिय मित्रों और साथी ईसाइयों, मेरे सहकर्मियों का उत्साह उन्हें खा गया है, और मुझे बहुत डर है कि उनके अनुभवों से उत्पन्न होने वाले मार्मिक खुलासे उनकी कोमल भावनाओं के साथ-साथ आपकी भावनाओं को भी ठेस पहुँचाएँगे: इसलिए मैं इस बैठक को किसी और शाम तक स्थगित करता हूँ, और ईश्वर आप सभी को उस

जलती हुई पहाड़ी से बचाए जो ईसाई पर गिरने वाली थी - उन पत्थरों से जिन्होंने पवित्र स्टीफन की साँस छीन ली - उस लोहे की छड़ से जिसने सेंट लॉरेंस को झुलसा दिया - उस सूली पर चढ़ाने से, जिसमें सिर नीचे की ओर था और जिसने सेंट पीटर को लकवा मार दिया - पॉलीकार्प के जलने से - टर्टुलियन के उग्र अहंकार से - एथेनासियस के घमंड से - लूसियन के हँसते हुए नास्तिकता से - प्लेटो के पाखंडों से, जूडास के विश्वासघात से, वर्जिल की साहित्यिक चोरी से, होमर की पुनरावृत्तियों से।

"रुको," मोंटमोरेंसी चिल्लाया, "आखिर तुम क्या करना चाहते हो?" लेकिन पर्सी ने उसकी बात अनसुनी करते हुए अपने रास्ते पर चलना जारी रखा और निश्चित रूप से "मौत जैसी गहरी चुप्पी" के साथ उसे आश्वस्त किया।

"हाँ, एल्सीबिएड्स के कुत्ते की पूंछ के भाग्य से, प्राइन के कानों के भाग्य से, चार्ल्स प्रथम के सिर और ओलिवर क्रॉमवेल की नाक के भाग्य से, साल्मानाज़र और जैकब के झूठ से, कर्नल ब्लड और योआब की धृष्टता से, अबशालोम और युवा ढोंगी के घमंड से, मेरी पूर्वज महारानी एलिजाबेथ की निरंतर पवित्रता से, मेरी प्यारी महारानी मैरी की मृत्यु से, ब्रूटस की कठोरता से, टाइटस की दया से जिसने पचास यहूदियों को उनके शहर की दीवारों के चारों ओर सूली पर चढ़ाया, धर्म जांचकर्ताओं की परोपकारिता से - मलय समुद्री डाकुओं, गुलामों के व्यापारियों से - मैं यहाँ उपस्थित अपने दो पुनर्जीवित साथियों का उल्लेख नहीं कर रहा हूँ - हेनरी अष्टम और जॉर्ज चतुर्थ की कोमल दया से, हेनरी षष्ठम और बूढ़े एल्व्स की, प्रिंस रूपर्ट और मार्क्विस ऑफ वॉटरफोर्ड की, चेटोब्रियांड और रॉबर्ट मोंटगोमरी की - प्रिंस मार्शल ब्लुचर और बर्नार्ड बार्टन की, हे प्रभु, इन सभी आतंकों से मुझे बचाओ।" हम!"

रेवरेंड अलेक्जेंडर पर्सी ने जिस भाव से अपना भाषण समाप्त किया, उसका वर्णन सर्वेक्षण में नहीं किया जा सकता था। श्री मोंटमोरेंसी ने उनका हाथ थामा, एक भजन गाया, निराश मंडली को उत्साह से भरे नृत्य के अंतिम दौर में ले गए और सभी इस विचार से प्रभावित होकर चैपल से चले गए कि रेवरेंड ए. पर्सी एक बहुत ही विलक्षण लेकिन बहुत ही धर्मपरायण संत थे।

पर्सी बिना कुछ कहे चला गया, क्योंकि उसका मन उस छत के नीचे नहीं था जिस पर उसका शरीर टिका हुआ था। ओ'कॉनर और क्वामिना अपने माथे से बाल सहलाते हुए बैठे रहे, और श्री एच.एम.एम. मोंटमोरेंसी उस आनंद का अनुभव कर रहे थे जो किसी युद्ध के घोड़े को मरते-मरते हुए लोगों के ऊपर से सरपट दौड़ते समय होता है।

कुछ देर बाद ओ'कॉनर ने अपने चेहरे से पसीना पोंछते हुए आह भरी—

“अच्छा, क्वाशिया, अब हम क्या करें? लुसिफर की उस मनहूस डैगरेओटाइप ने अपना बैरोमीटर छाया में ° तक बढ़ा दिया है, और तुम जानती हो कि जब हमारे पास उस दिखावटी पुर्तगाली ढोंग से रस्सी खींचने के लिए मुश्किल से एक हाथ बचा था, तब हमें वह स्थिति कितनी नापसंद थी। फोर्ट एल्मिना, और वह जाल जैसा 'काबो कोर्सो' किला।”

"मैं आर्थर का किरदार निभाने के लिए जहां बैठा हूं, वहां बैठने की बजाय केप कोस्ट कैसल की तोपों की सीमा के भीतर लाल झंडा फहराना ज्यादा पसंद करूंगा।"

“अब मेरे लड़कों,” आयरिश बैनिस्टर ने एक शानदार ठहाके के साथ बीच में ही टोकते हुए कहा, “मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि ‘सूअरों को खुश करो’ तुम...”

— “सुबह तक घर मत जाओ; जब तक दिन का उजाला न हो जाए।”

क्योंकि तब सिकंदर महान, तुम्हारी लाल आँखों और पीले पड़े गालों को देखकर, तुम्हें पश्चातापी समझेगा और अपनी दया से तुम्हें क्षमा कर देगा।

“अरे वाह, यह तो बहुत अच्छा सुझाव है!” अपराधियों ने एक साथ कहा—हालांकि क्वाशिया ने कसम खाते हुए कहा कि अगर पर्सी ने कोई दया दिखाई है तो उसने सिम्पसन से भारी ब्याज पर उधार ली होगी, क्योंकि उसे यकीन था कि उसके पास खुद का एक पैसा भी नहीं है।

"तुम्हें इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि उसे दया कहाँ से मिलती है, बल्कि उसे इस बात की परवाह करनी चाहिए कि उसे उसकी प्रेमिकाएँ कहाँ से मिलती हैं, बशर्ते वे वहाँ मौजूद हों," हेक्टर ने कहा।

“और इको जवाब देती है — कहाँ?” क्वाशिया ने पूछा।

खाली चैपल में दीपक टिमटिमा रहे थे और उनके आसन्न विघटन की गंध फैल रही थी - खिड़कियों से दिखाई देने वाले तारे तेजी से उन्हें मात दे रहे थे, और यह दर्शा रहे थे कि जैसे-जैसे सांसारिक प्रकाश कम होता जाता है, स्वर्ग अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

मोंटमोरेंसी ने अपनी सेना को अभी भी भीड़ भरी सड़कों पर आगे बढ़ाया और उस रात के 'अंधेरे घंटों' के दौरान उन्होंने जो किया - "क्या यह इज़राइल के राजाओं के इतिहास की किताबों में नहीं लिखा है?!"

अगली सुबह होटल के कॉफी रूम में आने वाला पहला आगंतुक पिछली रात का

हीरो था, जो आधे जिज्ञासु और आधे गंभीर भाव से अंदर आया और घंटी बजाई जिसका जवाब फैनी ने दिया।

“फैनी—यहाँ के लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं?”

फैनी शरमा गई, खिलखिलाकर हंसी और जवाब दिया

"जी महोदय, लोग कहते हैं कि आप बहुत ही आकर्षक और सुंदर व्यक्ति हैं।"

"अरे, लेकिन यह मुद्दा नहीं है - मैं तो आत्मा के बारे में सोच रहा हूँ, फैनी! मेरी आत्मा के बारे में लोग क्या कहते हैं?"

“खैर—सचमुच—महोदय—हमें समझ नहीं आ रहा कि क्या सोचें—हम सोचते हैं कि आप एक महान सज्जन और चतुर व्यक्ति हैं—और आप अच्छा वेतन देते हैं—और लोग कहते हैं महोदय—लोग कहते हैं—”

“क्या— फैनी?”

"खैर—मुझे क्षमा करें महोदय—लोग कहते हैं कि आपने महिलाओं के साथ अक्सर दुर्व्यवहार किया है।"

“आह! मेरी बच्ची – याद रखना कि जीभ भले ही एक छोटा सा अंग हो, लेकिन बड़ी शरारत कर सकती है! मैं नवजात शिशु की तरह मासूम हूँ – मेरे लिए एक कप कॉफ़ी लाओ – चार उबले अंडे और नाश्ते में एक छोटा गिलास कॉग्निएक ला दो।”

“सर, आखिरी ऑर्डर क्या है?”

“इसका मतलब है कि जितनी ब्रांडी चाहो उतनी पियो मेरी बच्ची – मुझे लगा था कि तुम हिब्रू की चाल्डाइक बोली समझती हो – लेकिन शायद तुम वह भाषा समझती हो।” श्री पर्सी ने कहा और उस युवती के गुलाबी गाल पर एक स्पष्ट चुंबन दिया, जो घबराई हुई और हिचकिचाती हुई मुद्रा में उनके आदेशों का पालन करने के लिए कमरे से बाहर चली गई।

जैसे ही उसने दरवाजा बंद किया, उसकी नज़र खिड़की पर पड़ी, जहाँ से घरों के पार दलदली पहाड़ियों की बैंगनी चोटियाँ दिखाई दे रही थीं। देवदार के पेड़ों की एक लंबी कतार उस जगह को चिह्नित कर रही थी जहाँ उसकी भावनाएँ ठहर उठी थीं, और जल्दी से नाश्ता करने के बाद वह उसी जगह की ओर चल पड़ा।

ऊँची पहाड़ियों की हल्की, लेकिन कुछ धुंधली हवा ने कुछ समय के लिए उसके मन को पिछली रात की मूर्खताओं से दूर कर दिया। ओस से भीगी घास और अधखिड़े डेज़ी फूलों के बीच सुबह की नींद में चुपचाप लेटे मवेशी, जंजीरों में जकड़ी हुई पहाड़ी

भेड़ें, जो अभी भी बंजर ज़मीन की उपज पर संतोषपूर्वक अपना नाश्ता बना रही थीं, ये सब शांति और संतोष की बात कर रहे थे - सच्चा, हालांकि शायद बनावटी, और सृष्टि के विशाल पैमाने पर काफी विनम्र वस्तुओं द्वारा प्रदर्शित।

एक अत्यंत शक्तिशाली बुद्धि वाला प्राणी, जिसके सामने उसके मार्ग में मौजूद प्रत्येक जीवित प्राणी एक पॉलीपस की जीवन शक्ति से कुछ ही बेहतर था, आगे बढ़ता रहा, कभी-कभी अंग्रेजी दृश्यों के उन छोटे-छोटे टुकड़ों पर मुस्कुराता हुआ, जिन्हें बेविक के अलावा किसी ने भी लकड़ी या स्टील पर नहीं उकेरा है, लेकिन अक्सर अपनी मानसिक दृष्टि अतीत में दफन अपनी प्रेमिका पर या आगे, उस व्यक्ति पर केंद्रित करता रहा जिसकी कब्र बनाने का वह माध्यम बन सकता था।

कुछ ऐसे क्षण होते हैं जब हमारे विचार वर्षों के साथ-साथ मिनटों को भी समाहित कर लेते हैं और पूरी तरह से समझ लेते हैं; जब बीते हुए वर्षों को वर्तमान और आने वाले वर्षों से जोड़ने वाली लंबी कड़ी बिजली की एक तेज लकीर की तरह चमक उठती है, और मनुष्य की भावनाओं को उसके भविष्य के विनाश को देखने की लगभग एक भविष्यवाणीय शक्ति प्रदान करती है।

मिस्टर पर्सी को ऐसी ही शक्ति प्राप्त हो गई थी जब वह डार्कवॉल की ओर जाने वाले रास्ते के गेट पर झुककर उस मैरी के बारे में सोचते थे जिसे उन्होंने खो दिया था, और उस मारिया के बारे में जिससे उन्हें मिलना था।

कुछ देर तक सफेद हरे-भरे चरागाहों और तूफान से प्रभावित मैदानों पर नजर घुमाने के बाद वह हॉल में दाखिल हुआ, और वहां नाश्ते के कमरे में उसकी मुलाकात हवेली की खूबसूरत लेकिन उदास दिखने वाली मालकिन से हुई।

एलिजाबेथन शैली की खिड़कियों और केंद्र से अष्टकोणीय दिशा में फैली छत वाले उस पुराने कमरे ने उनका ध्यान आकर्षित नहीं किया, लेकिन उनका स्वागत करने वाली महिला ने किया - वह एक सधी हुई गंभीरता के साथ अंदर आईं, लेकिन उनकी आँखों में एक ऐसी चमक थी जो यह दर्शाती थी कि वह गंभीरता कभी-कभी झूठ भी बोल सकती है।

श्रीमती मारिया थर्स्टन ने दुख का काफी अनुभव किया था, और ईश्वर ने उन्हें प्रेम का भी भरपूर अनुभव कराया था। उनके सामने एक ऐसा पुरुष था जो एक स्त्री की हर भावना को जगा सकता था। अपने आप में एक ऐसा पुरुष, जिसे अगर मैं इस तरह लिखूँ तो, क्षण भर के लिए ही सही, उनकी भावनाओं को जीत सकता था और

उन्हें कभी भी पूर्ण नहीं कर सकता था। उनके मन में उनके प्रति भय के अलावा उनका कोई विचार नहीं था, और इतने साल बीत चुके थे जब उन्होंने उन्हें एक पल के लिए भी, मुझे डर है, स्वार्थी स्नेह नहीं दिया था, कि उनके वैवाहिक दिनों की याद उन्हें वैसी ही हैरानी दिलाती थी जैसी किसी को यह सोचकर होती है कि बचपन में किसी कहानी की बेतुकी बात को सच मान लिया था।

अब, और बहुत पहले से ही, वह जानती थी कि उठने पर उसे ऐसे कपड़े पहनने होंगे जिससे उसे बिना किसी धन्यवाद के और, जहाँ तक उसके विचारों का संबंध है, उद्देश्यहीन कर्तव्यों का पालन करना पड़ेगा।

तो फिर ऐसा क्या हुआ था कि उसके चेहरे पर ऐसा भाव आ गया जिसे दरवाजा बंद करने वाले नौकर ने भी देख लिया, जब मिस्टर पर्सी ने अपनी जुबान पर लगाम रखते हुए, लेकिन मन में तीव्र उत्तेजना लिए उसका अभिवादन किया? जो भी उसने महसूस किया हो, एक असामान्य घटना - रंग - उसके गालों पर छा गई जब उसने उनके अभिवादन "अच्छा महोदया..." के जवाब में कहा।

एक अदृश्य शक्ति है जो हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

अतः शिलर के दर्शन के अनुरूप मैं आर्डमोर के पशु मेले की अभद्रता से बचने के लिए इतनी जल्दी यहाँ आ गया हूँ।

“मुझे लगता है महोदय, आपने उस अभद्रता को सुधारने के लिए अपनी पूरी कोशिश की होगी, क्योंकि मैंने सुना है कि श्री थर्स्टन के अतिथि ने — केवल एक रात के लिए — मेथोडिस्ट चैपल में प्रस्तुति दी थी।”

“अरे, इसके बारे में बात मत करो! तुम मुझे नहीं जानते — जब मैं अंदर से सबसे गंभीर होता हूँ, तो बाहर से सबसे हास्यास्पद होता हूँ — कल रात की मूर्खता एक उधार का आवरण थी जिसने मुझे गुज़रते तूफ़ान से बचाया और जिसे तूफ़ान के गुज़र जाने पर लौटा दिया जाना था। यह पहला मौका नहीं है जब मैंने खुद को रंग-बिरंगे कपड़ों में सजाया है, लेकिन मैं मूर्खता की टोपी को उतनी ही आसानी से उतार सकता हूँ जितनी आसानी से उसे पहन सकता हूँ — तुम इतने उदास क्यों दिख रहे हो?”

मुझे नहीं पता था कि मेरा रूप-रंग सामान्य से बदल गया है - लेकिन मुझे यकीन है कि पिछली रात की अजीबोगरीब हरकतों के बाद आपको आज सुबह ताज़गी की ज़रूरत होगी - खासकर इसलिए क्योंकि मुझे लगता है कि आप पूरा दिन मैदानी इलाकों में बिताने वाले हैं।

“मारिया — मैडम, मेरा मतलब — नहीं, धिक्कार है, यह बात सामने आ ही जाएगी — मारिया — मेरा इरादा पूरा दिन बंजर भूमि पर बिताने का नहीं है — मैं कोई भावुक और डरपोक नहीं हूँ, और मुझे किसी शिकारी कुत्ते या लोमड़ी के पीछे-पीछे दिन बिताना उतना ही पसंद है जितना किसी हरे या लाल रंग की जैकेट पहनने वाले को, लेकिन मेरी कुछ और पसंद भी हैं, और मैं विल्टशायर के मैदानों में सबसे खूबसूरत बस्टर्ड (अगर कोई बचा हो तो) को उड़ाने के बजाय किसी प्रिय चेहरे से उदासी लाना ज़्यादा पसंद करूँगा। मुझे पता है तुम दुखी हो मारिया — हाँ, तुम मुस्कुराने का नाटक कर सकती हो और ऐसा दिखा सकती हो जैसे तुम दुखी नहीं हो — लेकिन तुम्हारा जीवन काँटों भरे रास्तों और तूफानी मौसमों से भरा रहा है। ईश्वर ने तुम्हें स्वभाव से वह सब कुछ बनाया है जो एक स्त्री हो सकती है, जहाँ तक उसकी धूप एक उजाड़ दुनिया को रोशन कर सकती है — तुम्हें किसी ऐसी शक्ति ने बनाया है जो ईश्वर से बहुत दूर है, पानी पर फेंके गए खरपतवार से बेहतर नहीं। मैं यह देख सकता हूँ और अगर मैं चाहूँ तो कुछ घंटों के लिए तुम्हें धोखा देने की कोशिश कर सकता हूँ। अपने भाग्य की कड़वी चेतना के कारण, मेरी इस इच्छा को मेरी ओर से पाप न समझें, बल्कि उसके प्रति मेरी कोमलता को समझें, जो पानी पर फेंके गए खरपतवार की बजाय मुकुट में जड़ा एक रत्न होनी चाहिए।

“महोदय—महोदय—याद रखिए कि मैं कौन हूँ—और मेरी खातिर ऐसा करने से बचें—”

मुझे याद है, मैं भली-भांति जानता हूँ कि तुम क्या हो— मैं उस भूकंपीय ज़मीन को जानता हूँ जिस पर मैं कदम रख रहा हूँ— लेकिन, मारिया, आने वाले संकट और खतरे के समय में— उन आत्म-निंदा के क्षणों में जिन्हें मैं दूसरों के सामने स्वीकार करने में बहुत ज़िद्दी हूँ— उन दृश्यों में जो मुझे अपने जीवन से व्याकुल कर देते हैं— तुम्हें— तुम्हें अब मेरा मार्गदर्शक सितारा बनना होगा। अपने गालों पर आँसू तब तक मत बहने देना जब तक मैं उन्हें चूम न लूँ— अपने चश्मे से मत खेलना और उसे ऐसे मत देखना जैसे कि वह तुमसे बात कर रहा हो, न कि अलेक्जेंडर पर्सी— याद रखना, मेरी मारिया, कि हम समय के एक बिंदु पर खड़े हैं— दुख हम दोनों के पीछे छूट चुका है— आपसी प्रेम का मरहम हमारे सामने हो सकता है— क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे प्यार करती हो, और तुम्हारे शब्दों को इनकार करने की ज़रूरत नहीं है— और अगर हमें अलग होना ही पड़े— मारिया— याद रखना, अपने सभी मानसिक तूफानों

के बीच एक क्रूर खलनायक के पास भी एक मीठा आश्रय होगा जहाँ उसका मन ठहर सकता है— एक दुर्व्यवहारित महिला पाएगी कि जब उसे कृतघ्न परिश्रम के अंत में एक एकांत कमरे में लौटना पड़ता है— तो वह, इससे पहले कि वह वह अपना सिर एक (उम्मीद है) शांतिपूर्ण तकिए पर रखती है - यह महसूस करते हुए कि एक आदमी - जिसने जीवन की सभी अच्छाइयों और बुराइयों का सामना किया है - और जो कभी अपने लिए प्रार्थना नहीं करता, वह पूरी निस्वार्थ भाव से उसके लिए प्रार्थना कर रहा है।"

मेरे कुछ पाठकों को शायद नाश्ते के कमरे में हुई बातचीत का उपरोक्त विवरण अतिरंजित या भावुक लगे, लेकिन चूंकि मैंने केवल

"कहानी को वैसे ही बताओ जैसे मुझे बताई गई थी"

और मैं मानसिक दृष्टि से स्पष्ट रूप से उस महान दिखने वाले, भावुक, अनुभवी और अत्यंत प्रतिभाशाली बदमाश को देख सकता हूँ जो सौम्य, मधुर स्वभाव वाली, लेकिन दुःख से व्याकुल महिला के ऊपर खड़ा है और उसे स्नेहपूर्वक देख रहा है, जो (अपनी भावनाओं के प्रति इस नए आकर्षण के अलावा) भविष्य के जीवन में पथरीली सड़कों पर निरंतर यात्रा के अलावा कुछ नहीं देखती थी - मैं उन्हें बता सकता हूँ कि बातचीत मूल तत्व नहीं, बल्कि आवरण थी, और लगभग प्रतिशोधी उग्रता भरी एक नज़र के बाद, एक घनिष्ठ आलिंगन ने श्री पर्सी की बाहों में उसे सौंप दिया जिसके बिना वह उस समय जीवित नहीं रह सकते थे - और जो अपनी भावनाओं के भंवर में यह नहीं जानती थी कि वह जीवित है या मृत।

कभी सफेद, कभी लाल गालों वाली वह मिस्टर पर्सी के बगल में बैठी थी, जिनका गोरा चेहरा उनकी नारंगी मूंछों की तरह ही अपरिवर्तित रहा, लेकिन उन्होंने उसके काले घुंघराले बालों को अपने सीने से लगाया और कहा...

“मारिया— तुम्हें पार्क या बागान में टहलना चाहिए— तुम बीमार लग रही हो, और टहलते समय मेरा हाथ तुम्हारे लिए अच्छा सहारा होगा— उस हाथ को थामने से मत डरो जो इस दुनिया के सभी हाथों में सबसे पहले तुम्हारी रक्षा करेगा। अब मैं तुम्हारा बोनट, घूंघट और लबादा प्रवेश कक्ष से बाहर ला रहा हूँ और मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि तुम इन्हें पहन लो— इसलिए अपनी आँखें पोंछ लो, मेरी जान, और विश्वास करो कि यह हाथ जो तुम्हारी गर्दन को थोड़ा सख्ती से पकड़े हुए है, एक शक्तिशाली रक्षक होगा अगर कोई दूसरा हाथ इसे पकड़ने की हिम्मत करे।”

श्रीमती थर्स्टन - परस्पर विरोधी भावनाओं के आवेग के आगे बेबस होकर, यंत्रवत रूप से हॉल में चली गईं और सुबह की सैर के लिए तैयार होकर लौट आईं, लेकिन उनकी मधुर और विश्वासयोग्य आँखें कभी शक्तिशाली अतीत को तो कभी भयावह भविष्य को देखती रहीं।

यह देखकर कि वह अंदर आने में हिचकिचा रही थी, पर्सी ने खिड़की खोल दी जिससे सीधे लॉन में जाया जा सकता था, और पहले उसका हाथ और फिर उसकी कमर पकड़कर, अपनी इच्छाशक्ति के बल पर उसे सुबह की सैर के दौरान अपने निर्देशों का पालन करने के लिए मजबूर कर दिया।

नाश्ते का कमरा अब खाली था, और सुबह की धूप हमेशा की तरह पुराने फर्नीचर और भद्दे चीनी मिट्टी के बर्तनों के रिवाज़ पर पड़ रही थी। श्री थर्स्टन का गंभीर चित्र मेंटलपीस पर टंगा हुआ था। उसके बगल में, हवेली की सुंदर, लेकिन मुरझाई हुई मालकिन अपने सुनहरे फ्रेम में उदास मुस्कान लिए खड़ी थी, लेकिन उस घर की किस्मत बदलने वाले व्यक्ति की छवि वहाँ नहीं थी। उसका ऊँचा माथा, नारंगी मूंछें और व्यंग्यात्मक होंठ विलियम थर्स्टन के उदास माथे, काले रंग और पूरी तरह से दुर्भावनापूर्ण चेहरे में कहीं नहीं थे।

हालांकि कमरा खाली था, फिर भी ऐसा लग रहा था मानो बीते समय की झलक दीवारों से झाँक रही हो, ठीक वैसे ही जैसे चालीस सदियाँ चेओप के पिरामिड से "सुल्तान कबीर" की वीर ममलुकों पर विजय को देख रही हों; लेकिन कमरा ज़्यादा देर तक खाली नहीं रहा, क्योंकि कुछ ही देर में हेक्टर का बलवान, आयरिश रूप अंदर आ गया। श्रीमान एच.एम.एम. मोंटमोरेंसी अपने प्रिय मित्र अलेक्जेंडर का हालचाल एक नौकर से विनम्रतापूर्वक पूछ रहे थे, तभी श्रीमती थर्स्टन और उनके मेहमान खुली खिड़की से अंदर आ गए, जो बाहर घास के मैदान से आती आहट का न्योता दे रही थी।

श्रीमती थर्स्टन के काले बाल कुछ बिखरे हुए थे और श्री पर्सी की नीली आँखें बहुत ही संदिग्ध ढंग से चमक रही थीं, इसलिए श्री मोंटमोरेंसी, जिनके हृदय में जैकब या डेविड की बेंजामिन या जोनाथन के लिए तीव्र लालसा थी, अपने उच्च कोटि के मित्र की ओर बढ़े और उत्साहपूर्वक बोले -

“ओह, मैं तुमसे प्यार करता हूँ! मुझे तुम्हारी वो तिरछी नज़र बहुत पसंद है— वो तो बहुत ही प्यारी है!”

फिर जैसे कि उन्हें पता ही न हो कि श्रीमती थर्स्टन अपार्टमेंट में प्रवेश कर चुकी हैं, श्री मोंटमोरेंसी ने मुड़कर अपनी मित्रतापूर्ण जल्दबाजी के लिए माफी मांगी और उत्सुकतापूर्वक जानना चाहा कि क्या श्रीमती थर्स्टन ठीक हैं और क्या वे उस दिन दलदली भूमि को पार करने में सक्षम हैं!

श्रीमती थर्स्टन ने आयरिश बैरिस्टर को यथासंभव संक्षिप्त उत्तर दिया और यथासंभव उनके गंभीर, खोजपूर्ण चेहरे की ओर देखे बिना ही जवाब दिया। श्री पर्सी, जो सोफे पर अपनी सुंदर मेज़बान के बगल में बेपरवाह होकर बैठे थे, ने हेक्टर की ओर ऐसी नज़र डाली, मानो सिला डे कैरक्का से कुमाना बंदरगाह तक बिजली की चमक फैल गई हो। मानव स्वभाव से अनभिज्ञ कोई अजनबी उस सज्जन की विजयी चमक भरी निगाह का अर्थ समझाने में उलझन में पड़ सकता था या श्रीमती थर्स्टन से बात करते समय अपनी आमतौर पर वाचाल जीभ पर लगाए रखे निरंतर संयम का कारण बता सकता था। वास्तव में, एक बार जब वह मोंटमोरेंसी को दिखाने के लिए मेज से स्थानीय प्राचीन वस्तुओं का एक बहुत बड़ा फोलियो उठा रही थीं, तो वह इतना संयम खो बैठे कि उन्होंने अभिमानपूर्ण और गर्मजोशी से कहा...

"रुको, प्रियतमा—मैं इसे उठा लूँगा"

और जैसे ही उसका चेहरा लाल हो गया और वह बोल नहीं पा रही थी, वह बुदबुदाया, "धिक्कार है मेरी जुबान फिसलने पर!" मोंटमोरेंसी की नसवार की डिब्बी काम में आई और यह देखा जा सकता था कि वास्तुशिल्पीय नक्काशी और राजचिह्नों की उसकी जांच उतनी ही जिज्ञासु थी जितनी डॉ. ड्रायसडस्ट या जोनाथन ओल्डबक की हो सकती थी, लेकिन आयरिश आँखें अपने कोनों से महिला के बदलते गालों को देख रही थीं, और उसके दिल की धड़कनें "यह देखकर प्रसन्न हुईं कि वह खुद को उस सोफे से अलग नहीं कर पा रही थी और उसने 'दुर्घटना' पर ध्यान दिए बिना पर्सी के हाथ को अपने हाथ पर गिरने दिया।"

निकटवर्ती दलदली भूमि पर कथित तौर पर खोजे गए एक रोमन शिविर की योजना को देखते हुए, मोंटमोरेंसी ने धीमी आवाज़ में टिप्पणी की।

“मैं हमेशा ऐसे कमांडर की प्रशंसा करता हूँ जो आपके क्रमिक दृष्टिकोण को दरकिनार करते हुए किसी किले पर अचानक हमला कर दे। टेढ़े-मेढ़े तरीके से काम करना कानून के अभ्यास के लिए तो ठीक है, लेकिन यह न तो स्वाभाविक लगता है और न ही युद्ध या प्रेम में सफल साबित होता है। सच कहूँ तो, एक मकड़ी शायद ही

मुझसे सहमत होगी, क्योंकि वह अपने शिकार को पकड़ने में बहुत सतर्क रहती है – लेकिन एक बार जब वह उसे पकड़ लेती है – तो मकड़ी की तरह फुर्तीला कौन हो सकता है?"

जब श्री पर्सी ने केवल व्यंग्यात्मक हंसी के हावभाव और इस गुर्राते हुए टिप्पणी से जवाब दिया कि एक मकड़ी एक ततैया को मार सकती है, तो श्री मोंटमोरेंसी ने आगे कहा—

"अच्छा, अब काम की बात पर आते हैं। आपको यह जानना ही होगा, चाहे इस रहस्य को उजागर करना कितना भी कष्टदायी क्यों न हो — और, मेरे इस दुखते हुए हृदय की गवाही पर विश्वास कीजिए, यह एक ऐसा दर्द है जिससे केवल जलते हुए आँसू ही मुझे राहत दे सकते हैं — एक ऐसा दर्द जिसे किसी भी परिणाम से, चाहे वह कितना भी सुखद क्यों न हो, पूरी तरह से दूर नहीं किया जा सकता — क्योंकि यह यहीं छिपा है!"

"अगर आपका मतलब कोट की अंदरूनी जेब से है तो मुझे लगता है कि यह एक अनियंत्रित काम है।"

"अरे नहीं! अब पेशेवर कारोबार को आराम करना होगा!"

"भगवान का शुक्र है! अब मार—मैडम, जब कानून सो रहा होता है, तब हम खुशी की उम्मीद कर सकते हैं।"

"ओह पर्सी

'अफसोस, मुझे लगता है कि मैं यहां कोई अभिनेता नहीं हूं!'

हमारे प्रिय सहकर्मी, उनके ध्वज के नीचे हमारे साथी सैनिक, हमारे तीर्थयात्री साथी, हमारी कुंवारी बहनें, वे जिन्होंने हमारे साथ क्रूस के नीचे लड़ाई लड़ी है और जो अंततः हमारे साथ जीत हासिल करेंगी और शहीदों का ताज पहनेंगी, वे सब - लेकिन मैं आपके सामने यह कैसे कहूँ, महोदया - वे सब ईश्वर में हैं!

श्रीमती थर्स्टन स्पष्ट रूप से बैनिस्टर के समापन भाषण को नहीं समझ पाईं और उनकी कोमल आँखों ने पर्सी के चेहरे से उस भयानक शब्द का अर्थ पूछा; लेकिन उस चेहरे पर घबराहट के बजाय आनंद का भाव था, जैसे उसके होंठ फुसफुसा रहे हों।

"आखिरकार वे घर पहुँच गए!"

"अरे मेरे दोस्त," रेलिंग वाले ने विनती करते हुए कहा, "उन पत्नियों के बारे में सोचो— रुको, उनकी शादी नहीं हुई है— तो फिर उनके बच्चों के बारे में सोचो, बेचारे

नन्हे जीव, इस दुनिया के तूफानी सागर में बहते हुए—"

हे भगवान! ये तो अंडे से निकलने के बाद से ही भटक रहे हैं!

लेकिन उनकी माताएँ—"

"क्या? बच्चों की माताएँ, या संत हेक्टर?"

"पर्सी, तुम अभी तक शैतान के चंगुल से बाहर नहीं निकले हो। क्या तुम्हें पता है कि क्वाशिया और ओ'कॉनर जेल में बंद हैं और आज सुबह उन्हें थर्स्टन के सामने और सबसे बुरी बात, सर जॉन सिंक्लेयर के सामने पेश किया जाएगा!"

वह उपनाम सुनकर श्रीमती थर्स्टन का पीला चेहरा और भी पीला पड़ गया और उन्होंने पूछा

"तो क्या मेरे चाचा स्कॉटलैंड से आ गए हैं?"

"उसने ऐसा किया है—क्योंकि उसने आने वाली बुराई को पहले ही देख लिया था, ठीक वैसे ही जैसे वह दोहरी दृष्टि वाला हाइलैंडर है!"

महिला के चेहरे के भावों में आए बदलाव को देखकर पर्सी ने भौंहें चढ़ाईं और फिर उठकर मोंटमोरेंसी की ओर मुड़ते हुए कहा कि उसे लगता है कि बेचारे लोग जमानत चाहते हैं और उसे यकीन है कि जेरी या गॉर्डन बिना कुछ शर्त रखे जमानत नहीं देंगे, इसलिए उसे लगता है कि उसे आर्डमोर जाना होगा - 'लेकिन' उसने अपने दोस्त के साथ कमरे से निकलते हुए कहा, 'मैं तुम्हारे पति - थर्स्टन के साथ वापस आऊंगा।'

श्रीमती थर्स्टन कमरे में अकेली खड़ी थीं, और जब उन्होंने गहरे हरे रंग के न्यूमार्केट कोट पहने लंबे, एथलेटिक सज्जन को अपने खतरे का संकेत देने वाले साथी के बगल में घोड़े पर सवार होकर जाते देखा, तो उन्होंने अनायास ही अपने हाथ जोड़ लिए और विस्मय से कहा।

"हे भगवान! मेरी जिंदगी बदल गई!"

आने वाली घटनाओं के पूर्वाभास उसके चारों ओर एक पत्थर के चारों ओर ज्वार की लहरों की तरह जमा हो गए, और उन लहरों की तरह उसे पूरी तरह से अपने वश में कर लिया। उस सुबह उसने जो किया था, उसका अहसास बिजली की तरह उसकी आत्मा में कौंध गया, और यद्यपि उसके मन का एक हिस्सा ईश्वर की दया के लिए प्रार्थना कर रहा था और दूसरा हिस्सा पूछ रहा था, "क्या उसने सच में कोई पाप किया है!", अंतिम हिस्से ने उसे घुटनों के बल गिरने, अपना चेहरा सोफे के तकिये में छिपाने और सिसकियों के बीच, रुक-रुक कर, अपनी अस्पष्ट प्रार्थना करने के लिए मजबूर

कर दिया।

हे ईश्वर, अगर तू मुझे क्षमा नहीं कर सकता तो मुझे क्षमा कर दे! मुझे नहीं पता कि मैंने तुझे कितना क्रोधित किया है—मुझे नहीं पता कि तुझसे प्रार्थना करने का साहस करके मैंने पाप किया है या नहीं—मैं बस इतना जानती हूँ कि मैं स्वयं को रोक नहीं सकती, मैं वहीं जा रही हूँ जहाँ मेरी हर भावना मुझे ले जा रही है, और चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे तेरे हाथों में गिरना ही होगा। अब संसार मुझे बुरा समझेगा—मेरी सहेलियाँ मुझे त्याग देंगी—मुझे जाल में फँसाया जाएगा—मेरा जीवन खतरे में होगा, एक लंबा अंधकारमय भविष्य मेरे लिए तैयार हो रहा होगा और नरक भी मेरे आने का इंतज़ार कर रहा होगा; लेकिन मैं अपने हृदय से इस आसक्ति को कैसे दूर करूँ? मैं तुझसे कैसे वादा करूँ कि मैं उसे भूल जाऊँगी जो मेरी सारी आशाओं का स्रोत रहा है और जिसे मैंने कभी प्राप्त नहीं किया? मैं निर्दयी अत्याचार के आगे चुपचाप समर्पण कैसे करूँ और प्रेम के नाम से घृणा करने का कोई भी वादा कैसे निभाऊँ?

मुझे यह दुनिया प्यारी थी—मैं इसे खुशहाल देखना चाहती थी—मैंने हर संभव कोशिश की, जिसे मैं खुश कर सकती थी—मैंने खुद को उस व्यक्ति को सौंप दिया जिसने वादे तो किए लेकिन निभाए नहीं—फिर भी मैंने अपने वादे निभाए और जब संभव हुआ तो दुख को मुस्कुराकर दूर कर दिया, या जब दुख मेरी मुस्कान पर हावी हो गया तो उसे छुपा लिया—इन सब के बावजूद मैंने खुद को निर्दोष समझा और हर रात तुझ पर भरोसा रख सकती थी। तो अब मैं क्या करूँ? मैं उससे नफरत नहीं कर सकती—मैं उसे भूल नहीं सकती—उसने मुझे उससे प्यार करना सिखाया है, फिर भी मुझे उसकी छवि को त्यागना होगा, वरना मैं अपने वादे की गद्दार और तेरी दृष्टि में पापी बनकर जीऊँगी।

हे मेरे ईश्वर, मैं उसे त्याग नहीं सकती! अगर मैं ऐसा वादा करूँ तो झूठ होगा—मैं उसकी अपनी बनना चाहती हूँ, पर जीवन भर से मैं तेरी अपनी बनना चाहती रही हूँ। मैं दोनों नहीं हो सकती, और अब मुझे अपनी कब्र में भी यही चाह रखनी होगी।

हे ईश्वर, तेरी करुणा कहाँ है, और मुझसे क्यों छीन ली गई है? क्या मैं अंतहीन पीड़ा के लिए अभिशप्त हूँ? और यदि हाँ, तो क्यों? मैं वैसा ही हूँ जैसा तूने मुझे बनाया है - मैं वैसा ही महसूस करता हूँ जैसा तूने मुझे प्रेरित किया है - मैं वैसा ही करता हूँ जैसा तू अनुमति देता है - मैं वही सहता हूँ जो तू चाहता है - मैं तेरा हूँ जिसके साथ तू जो चाहे कर सकता है - लेकिन - मैं किसी और का भी हूँ!

मुझे क्षमा करें यदि मैं आज रात उसके लिए प्रार्थना करूँ जबकि स्वयं के लिए प्रार्थना करने का साहस न करूँ। मुझे क्षमा करें यदि मेरी निगाहें प्रतिदिन दोहराए जाने वाले दुख के दृश्य से हटकर कभी-कभार आने वाले आनंद के क्षण की ओर मुड़ जाएँ। मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ, परन्तु इसकी आशा करने का साहस नहीं है, इसलिए मुझे अपने अंधकारमय भाग्य और आपकी सर्वशक्तिमान शक्ति के भरोसे ही रहना होगा!

श्रीमती थर्स्टन का सफेद माथा और काले घुंघराले बाल आसमान की ओर उठे हुए थे, उनकी आंखें नम थीं। उन्होंने अपने सफेद रूमाल से आंसू पोंछे, जिसे वह अपना समझ रही थीं, लेकिन कोने में "ए.पी." अक्षर देखकर उनकी आंखें शर्म से लाल हो गईं, और फिर वह जल्दी से कमरे से बाहर निकलकर अपने कर्तव्यों को पूरा करने की कोशिश करने लगीं।

ब्रैनवेल ब्रोंटे

ब्रैनवेल की कविता

प्रसिद्ध ब्रोंटे बहनों के भाई ब्रैनवेल एक चित्रकार और कवि थे। वे ब्रोंटे परिवार के इकलौते बेटे थे, लेकिन उनकी साहित्यिक रचनाओं को उनकी बहनों जितनी लोकप्रियता और सफलता कभी नहीं मिली। बाद में वे शराब और लाउडैनम के आदी हो गए। उनकी इस लत ने टीबी के शुरुआती लक्षणों को छुपाए रखा और उनके परिवार को तब तक उनकी गंभीर बीमारी का पता नहीं चला जब तक कि वे घर के बाहर गिर नहीं पड़े। एक स्थानीय डॉक्टर ने उन्हें बीमारी की अंतिम अवस्था में पाया। कुछ ही समय बाद उनका निधन हो गया।

ब्रैनवेल का स्वयं का व्यंग्यचित्र, जिसमें वह बिस्तर पर मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं, 1847

अंतर्वस्तु

लिडिया गिस्बोर्न
पेनमैनमावर (अंश)
सर हेनरी टुनस्टॉल (अंश)
थॉर्प ग्रीन

लिडिया गिस्बोर्न

ओउस नदी के घासीले किनारों पर - पिछली व्हिटसनटाइड के दौरान,
मैं भय और सुख के साथ अपनी आत्मा में बैठा था
मिश्रित, क्योंकि 'यह अनियंत्रित रूप से घूमता था,'
वर्तमान क्षणों में और भविष्य में व्यापक रूप से
मुझे लगा कि प्रेम को मेरे दिल को अपने पास रखना चाहिए।
वह, जिसके अपने कारागार जैसे घर को मैंने देखा:
लेकिन, जैसे ही मैंने देखा, ग्रीष्म ऋतु का सूरज ढलने लगा,

और क्या इसके पतन ने मेरी आशाओं का उपहास नहीं किया?
आसमान नीला तो था, लेकिन जल्द ही उसका रंग बदलकर धूसर हो गया।
अगले साल उस दिन मेरे चेहरे पर कोई मुस्कान नहीं होनी चाहिए।
और जैसे-जैसे वो लहरें दूर हंबर की ओर बढ़ती गईं,
वे फिसल रहे थे - इसलिए, भले ही वह घंटा मोहक हो सकता था
मेरी आशाएँ भी दुख के कहीं गहरे सागर में डूब गईं।
जॉय के अब धुंधले और दूर स्थित द्वीप के किनारों से होकर गुजरी।

पेनमैनमावर (अंश)

मैं एक ऐसे फूल को जानता था जिसकी पत्तियाँ खिलने के लिए बनी थीं
जब तक मृत्यु इसे कब्र की शोभा बढ़ाने के लिए न छीन ले,
अब, निराशाजनक दुःख के प्रकोप के नीचे पीला पड़ रहा है
कभी न खिलने वाली, फिर भी जीवित पत्तियों के साथ;
एक ऐसा फूल जिस पर मेरा मन प्रकाश बिखेरना चाहेगा।
काश, मेरे जैसे दिमाग से एक किरण भी टूट पाती:
मेरे कान लहजों को समझने में माहिर थे।
यह 'अलविदा' कहने के बजाय 'नष्ट हो जाना' कहने के समान है।
एक आँख जिसने दूर से एक कोमल आकृति देखी
पीड़ा के तूफान से पराजित, बेघर -
एक बांह - एक होंठ - जो गले लगाने के लिए कांप रहा था

मेरी परी की कोमल छाती और शोकग्रस्त चेहरा
एक ऐसा मन जो ओउस के उपजाऊ पक्ष से जुड़ा हुआ था
मेनाई नदी की लहरों पर - बिना किसी वस्तु के - इधर-उधर भटकते हुए!

सर हेनरी टुनस्टॉल (अंश)

जब उन्होंने मुझे घर लौटते देखा, तो उन्हें लगा कि...
मेरी आत्मा उनसे मिलने के लिए तड़प रही थी।
मैं हर उस लहर को आशीर्वाद देना चाहता हूँ जो मुझे यहाँ तक लेकर आई है;
उन्हें लगा कि मेरे जीवन का झरना कभी मुरझा नहीं सकता।
ताकि मैं सूखे में हरी पत्ती को सुरक्षित रख सकूँ।
युवावस्था की तरह ही हंसने और रोने में लचीला;
उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं था कि मेरी आंखों की रोशनी कितनी बार कम हो जाती है।
उन आकाशों की ओर जहाँ भारतीय सूर्य की रोशनी चमकती थी,
हो सकता है कि मैंने किसी सहयोगी बैंड को छोड़ दिया हो,
मुझे उस निर्जन भूमि से भी विदाई लेनी थी;
उन्हें नहीं लगता था कि मेरा दिमाग और दिल उम्र से अधिक बूढ़े हैं।
मेरी ताकत और भी टूट गई है और मेरी भावनाएं और भी ठंडी हो गई हैं।
वसंत ऋतु शरद ऋतु की शुष्कता में तेजी से परिवर्तित हो रही थी।
और पत्तों से रहित पेड़ सबसे खूबसूरत दृश्यों को भी नीरस बना देते हैं।
सोलह साल तक उसी ज़मीन पर यात्रा करना

जब तक कि प्रत्येक व्यक्ति अपने द्वारा छोड़े गए निशान को मिटा न दे।

थॉर्प ग्रीन

मैं आज शाम बहुत दूर बैठा हूँ।
मेरी जानकारी के अनुसार,
और आज मेरी आत्मा को कुछ भी याद नहीं दिलाता।
बहुत पहले की खुशियों की यादें।

अवांछित चिंताएँ, अनसोचे भय,
मेरे कमरे के चारों ओर उगते हैं;
मैं बीते वर्षों के सूर्यों की तलाश करता हूँ
लेकिन मेरे आसमान में बादल छाए हुए हैं।

हाँ-स्मृति, तुम्हारी आवाज़ क्यों सुनाई देती है?
पुराने दिनों की यादें ताजा करो,
जैसे तुम मुझे प्रसन्न न होने के लिए कहोगे
नए विचारों और संभावनाओं में?

मैं समय आने पर स्मृति का धन्यवाद करूंगा।
जब मेरे मन में परेशान करने वाले विचार आते हैं-
तुम अप्रैल की बारिश में सूर्य के समान हो,

धुंधले दृश्यों पर प्रकाश मुरझा जाएगा।

मृत्यु निकट आने पर मैं तुम्हारा धन्यवाद करूंगा।
जीवन की कमजोर लौ बुझ जाएगी,
क्योंकि तू मेरी साँसों को भी नया जीवन देगा।
तेरे प्यारे शब्द 'याद रखना'!

जीवनियाँ

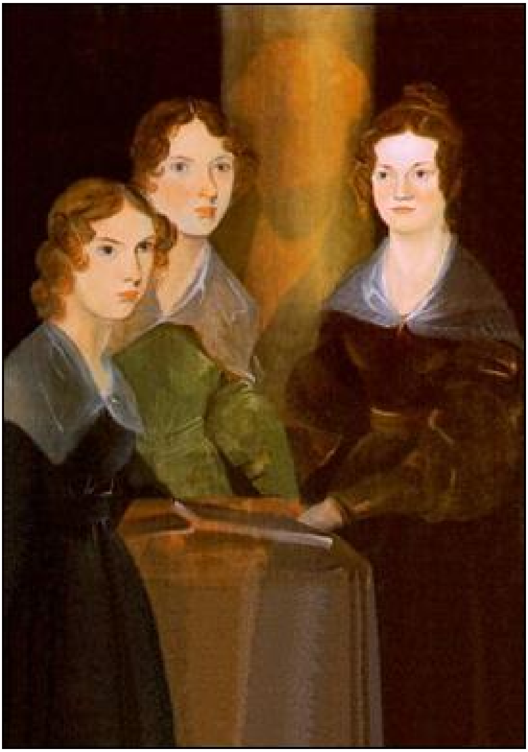

एलिजाबेथ गैस्केल द्वारा लिखित शार्लोट ब्रोंटे का जीवन

एलिजाबेथ गैस्केल द्वारा लिखित यह मरणोपरांत जीवनी पहली बार 1857 में प्रकाशित हुई थी। इसके प्रमुख स्रोतों में से एक ब्रोंटे द्वारा अपनी आजीवन मित्र एलेन नुसे को भेजे गए सैकड़ों पत्र थे, जिन्हें गैस्केल ने छानबीन करने में कई महीने बिताए। जीवनी स्पष्ट और अक्सर बहुत कुछ बताने वाली है, फिर भी गैस्केल ने समकालीन नैतिक मूल्यों के कारण और शार्लोट के अभी भी जीवित मित्रों, पिता और पति को दुखी करने के डर से, शार्लोट के विवाहित पुरुष कॉन्स्टेंटिन हेगर के प्रति प्रेम के विवरणों को दबा दिया।

एलिजाबेथ गैस्केल, प्रसिद्ध उपन्यासकार और जीवनीकार

विषय-सूची

खंड I

अध्याय 1

अध्याय II

अध्याय III

अध्याय IV

अध्याय V

अध्याय VI

अध्याय VII

अध्याय आठ

अध्याय 9

अध्याय X

अध्याय XI
अध्याय XII
अध्याय XIII
अध्याय 14

खंड II
अध्याय 1
अध्याय II
अध्याय III
अध्याय IV
अध्याय V
अध्याय VI
अध्याय VII
अध्याय आठ
अध्याय 9.
अध्याय X.
अध्याय XI.
अध्याय XII.
अध्याय XIII.
अध्याय 14.

खंड I

अध्याय 1

लीड्स और स्किप्टन रेलवे लाइन ऐरे नदी की गहरी घाटी से होकर गुजरती है; यह नदी पास की व्हार्फ नदी की तुलना में धीमी और सुस्त गति से बहती है। कीघली स्टेशन इसी रेलवे लाइन पर स्थित है, जो इसी नाम के शहर से लगभग एक चौथाई मील दूर है। पिछले बीस वर्षों में कीघली की आबादी और महत्व में काफी वृद्धि हुई है, जिसका मुख्य कारण ऊनी कपड़ों के बाजार का तेजी से विस्तार है। यह उद्योग यॉर्कशायर के इस हिस्से की मुख्य रूप से श्रमिक आबादी को रोजगार प्रदान करता है, जिसका केंद्र और महानगर ब्रैडफोर्ड है।

कीघली एक घनी आबादी वाले, पुराने जमाने के गांव से कहीं अधिक घनी आबादी वाले और समृद्ध शहर में परिवर्तित हो रहा है। किसी भी अजनबी को यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि चौड़ी होती सड़क के कोनों पर बने छज्जे वाले घर जैसे-जैसे खाली होते जाते हैं, उन्हें यातायात के लिए अधिक जगह बनाने और आधुनिक वास्तुकला शैली के लिए जगह बनाने के लिए गिरा दिया जाता है। पचास साल पहले की विचित्र और संकरी दुकानों की खिड़कियां अब बड़े शीशे और प्लेट-ग्लास में तब्दील हो रही हैं। लगभग हर घर किसी न किसी व्यावसायिक शाखा से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। शहर से जल्दी से गुजरते हुए, यह देखना मुश्किल है कि आवश्यक वकील और डॉक्टर कहां रह सकते हैं, क्योंकि पेशेवर मध्यम वर्ग के घरों का कोई नामोनिशान नहीं है, जो हमारे पुराने गिरजाघर वाले शहरों में बहुतायत में पाए जाते हैं। वास्तव में, उत्तर में स्थित कीघली जैसे नए औद्योगिक शहर और दक्षिण में स्थित किसी भी भव्य, शांत, सुरम्य गिरजाघर वाले शहर में समाज की स्थिति, सोच के तरीके, नैतिकता, शिष्टाचार और यहां तक कि राजनीति और धर्म के सभी पहलुओं पर संदर्भ के मानक एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत हैं। फिर भी, कीघली का स्वरूप भविष्य में भव्यता की उम्मीद जगाता है, भले ही वह सुरम्य न हो। यहाँ धूसर पत्थर बहुतायत में है; और इससे बने घरों की कतारें अपनी एकरूप और टिकाऊ रेखाओं के कारण एक ठोस भव्यता का आभास कराती हैं। यहाँ तक कि सबसे छोटे घरों में भी दरवाजों के फ्रेम और खिड़कियों के चौखट पत्थर के ब्लॉकों से बने हैं। यहाँ कोई रंगी हुई लकड़ी नहीं है जिसे लगातार चमकाने की आवश्यकता हो, अन्यथा वह जर्जर दिखाई देगी; और यॉर्कशायर की प्रतिष्ठित गृहिणियाँ पत्थरों को बड़ी सावधानी से साफ रखती हैं।

राहगीर को घरों के भीतर जो झलकियाँ मिलती हैं, वे जीवन यापन के साधनों की प्रचुरता और महिलाओं की मेहनती और सक्रिय आदतों को दर्शाती हैं। लेकिन लोगों की आवाज़ें कर्कश हैं, और उनके स्वर बेमेल हैं, जो उस संगीतमय रुचि का संकेत नहीं देते जो इस क्षेत्र की विशेषता है, और जिसने पहले ही संगीत जगत को एक गौरव प्रदान किया है। दुकानों के ऊपर लिखे नाम (जिनमें से अभी दिया गया नाम एक नमूना है) पड़ोसी जिले के निवासी को भी अजीब लग सकते हैं, और उनमें उस जगह की एक विशिष्ट महक और स्वाद है।

हॉवर्थ जाने वाली सड़क पर कीघली कस्बा पूरी तरह से ग्रामीण इलाके में विलीन नहीं होता, हालांकि जैसे-जैसे यात्री पश्चिम दिशा में ऊपर की ओर बढ़ते हैं, वैसे-वैसे घर कम होते जाते हैं। ऊपर धूसर रंग की गोल पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं जो मानो उसकी यात्रा को सीमित कर रही हों। पहले कुछ विला आते हैं; सड़क से इतनी दूरी पर स्थित कि यह स्पष्ट हो जाता है कि वे शायद ही किसी ऐसे व्यक्ति के हों जिसे किसी संकट या खतरे की घड़ी में अपने आरामदायक जीवन को छोड़कर तुरंत बुलाया जाए; वकील, डॉक्टर और पादरी आस-पास ही रहते हैं, और वे मुश्किल से ही उपनगरों में रहते हैं, झाड़ियों की आड़ में छिपे रहते हैं।

शहर में चटख रंगों की तलाश नहीं की जाती; जो थोड़े-बहुत रंग होते भी हैं, वो दुकानों में मिलने वाले सामान से ही दिखते हैं, न कि पेड़-पौधों या वातावरण के प्रभावों से। लेकिन ग्रामीण इलाकों में चमक और जीवंतता की उम्मीद स्वाभाविक रूप से रहती है, और इसीलिए कीघली से हॉवर्थ तक के रास्ते में हर वस्तु, चाहे पास हो या दूर, के फीके रंग को देखकर थोड़ी निराशा होती है। दूरी लगभग चार मील है; और जैसा कि मैंने कहा, विला, बड़ी-बड़ी ऊनी फैक्ट्रियां, मजदूरों के घरों की कतारें, और कहीं-कहीं पुराने जमाने के फार्महाउस और बाहरी इमारतें होने के कारण, रास्ते के किसी भी हिस्से को "ग्रामीण" कहना मुश्किल है। दो मील तक सड़क काफी समतल है, बाईं ओर दूर पहाड़ियाँ हैं, दाईं ओर घास के मैदानों से बहती एक छोटी नदी है, जो कुछ जगहों पर अपने किनारों पर बनी फैक्ट्रियों को जल शक्ति प्रदान करती है। इन सभी आवासों और व्यापारिक स्थलों से निकलने वाले धुएं के कारण हवा धुंधली और प्रकाशहीन है। घाटी (या स्थानीय भाषा में कहें तो "निचला भाग") की मिट्टी उपजाऊ है; लेकिन जैसे-जैसे सड़क ऊपर की ओर बढ़ती है, वनस्पति बंजर होती जाती है; यह पनपती नहीं, बस नाममात्र की रह जाती है; और पेड़ों के बजाय, घरों के आसपास

केवल झाड़ियाँ और छोटे-छोटे पेड़-पौधे ही दिखाई देते हैं। बाड़ों की जगह हर जगह पत्थर की मेड़ें बनी हुई हैं; और खेती योग्य भूमि के टुकड़ों पर जो फसलें हैं, वे फीकी, मुरझाई हुई सी दिखने वाली, धूसर हरी जई हैं। इस सड़क पर यात्री के ठीक सामने हॉवर्थ गाँव दिखाई देता है; वह पहुँचने से दो मील पहले ही इसे देख सकता है, क्योंकि यह एक सुंदर खड़ी पहाड़ी की ढलान पर स्थित है, जिसके पीछे मटमैले और बैंगनी रंग के दलदल फैले हुए हैं, जो चर्च से भी ऊँचे उठते और दूर तक फैले हुए हैं, जो लंबी संकरी गली के बिल्कुल शिखर पर बना है। क्षितिज के चारों ओर लहरदार पहाड़ियों की यही एक श्रृंखला दिखाई देती है; जिन गड्ढों में वे गिरते हैं, वे केवल आगे की अन्य पहाड़ियों को ही प्रकट करते हैं, जो समान रंग और आकार की हैं, और जंगली, उजाड़ मैदानों से ढकी हुई हैं - भव्य, एकांत और अकेलेपन के विचारों से जो वे सुझाते हैं, या दमनकारी, किसी नीरस और असीमित बाधा से घिरे होने की भावना से जो वे देते हैं, दर्शक की मनोदशा के अनुसार।

थोड़ी दूर तक सड़क हॉवर्थ से दूर मुड़ती हुई प्रतीत होती है, क्योंकि यह एक पहाड़ी की ढलान के चारों ओर घूमती है; लेकिन फिर यह एक नाले पर बने पुल को पार करती है, और गाँव से होकर चढ़ाई शुरू हो जाती है। सड़क पर बिछे पत्थर घोड़ों के पैरों को बेहतर पकड़ देने के लिए नुकीले लगाए गए हैं; और इस मदद के बावजूद भी, ऐसा लगता है कि घोड़े लगातार पीछे की ओर फिसलने के खतरे में हैं। पुराने पत्थर के मकान सड़क की चौड़ाई की तुलना में ऊँचे हैं, जो गाँव के शीर्ष पर अधिक समतल ज़मीन पर पहुँचने से पहले अचानक मुड़ जाती है, जिससे जगह का एक हिस्सा लगभग दीवार जैसा दिखता है। लेकिन इसे पार करने के बाद, चर्च मुख्य सड़क से थोड़ा हटकर बाईं ओर स्थित है; लगभग सौ गज आगे, चालक अपनी सावधानी छोड़ देता है, और घोड़ा अधिक आसानी से साँस ले पाता है, क्योंकि वे हॉवर्थ पार्सनेज की ओर जाने वाली शांत छोटी गली में प्रवेश करते हैं। इस गली के एक तरफ गिरजाघर का प्रांगण है, जबकि दूसरी तरफ विद्यालय भवन और उपासक का आवास (जहां पहले पादरी रहते थे) स्थित हैं।

पादरी का घर सड़क के समकोण पर स्थित है और चर्च के सामने है; इस प्रकार, वास्तव में, पादरी का घर, चर्च और घंटाघर वाला विद्यालय भवन एक अनियमित आयताकार आकृति की तीन भुजाएँ बनाते हैं, जिसकी चौथी भुजा दूर स्थित खेतों और मैदानों की ओर खुली है। इस आयताकार आकृति के भीतर एक घना कब्रिस्तान

और पादरी के घर के सामने एक छोटा सा बगीचा या आंगन है। सड़क से इसका प्रवेश द्वार एक तरफ है, इसलिए रास्ता कोने से घूमकर इस छोटे से भूखंड में जाता है। खिड़कियों के नीचे फूलों की एक संकरी क्यारी है, जिसकी पुराने समय में बहुत सावधानी से देखभाल की जाती थी, हालाँकि वहाँ केवल सबसे मजबूत पौधे ही उग सकते थे। पत्थर की दीवार के भीतर, जो आसपास के कब्रिस्तान को रोकती है, एल्डर और लिली की झाड़ियाँ हैं; शेष भूमि पर एक वर्गाकार घास का मैदान और एक बजरी का रास्ता है। घर भूरे पत्थर का बना है, दो मंजिला है, और इसकी छत भारी पत्थरों से ढकी है, ताकि हल्की छत को उड़ा ले जाने वाली हवाओं का सामना किया जा सके। ऐसा प्रतीत होता है कि इसका निर्माण लगभग सौ वर्ष पूर्व हुआ था और प्रत्येक मंजिल पर चार कमरे हैं; दाईं ओर की दो खिड़कियाँ (जब आगंतुक चर्च की ओर पीठ करके मुख्य द्वार से प्रवेश करने के लिए तैयार होता है) श्री ब्रोंटे के अध्ययन कक्ष की हैं, और बाईं ओर की दो खिड़कियाँ परिवार के बैठक कक्ष की हैं। इस स्थान की हर चीज़ अत्यंत सुव्यवस्थित और उत्कृष्ट स्वच्छता को दर्शाती है। दरवाज़े की सीढ़ियाँ बेदाग हैं; छोटी-छोटी पुरानी शैली की खिड़कियाँ शीशे की तरह चमकती हैं। इस घर के अंदर और बाहर स्वच्छता ही इसकी मूल भावना, पवित्रता है।

जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, छोटा चर्च गाँव के अधिकांश घरों से ऊपर स्थित है; और कब्रिस्तान चर्च से भी ऊपर उठता है, और सीधी खड़ी कब्रों से भरा हुआ है। यह चैपल या चर्च राज्य के उस हिस्से में किसी भी अन्य चर्च से कहीं अधिक प्राचीन होने का दावा करता है; लेकिन वर्तमान इमारत के बाहरी स्वरूप में इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता, सिवाय दो पूर्वी खिड़कियों के, जो अभी भी अपरिवर्तित हैं, और शिखर के निचले हिस्से के। अंदर, स्तंभों की बनावट से पता चलता है कि वे हेनरी सप्तम के शासनकाल से पहले बनाए गए थे। यह संभव है कि इस भूमि पर प्राचीन काल में एक "फील्ड-किर्क" या प्रार्थना कक्ष रहा हो; और यॉर्क में आर्कबिशप के रजिस्टर से यह पता चलता है कि 1317 में हॉवर्थ में एक चैपल था। निवासी तिथि के बारे में पूछताछ करने वालों को चर्च के टॉवर में एक पत्थर पर खुदे निम्नलिखित शिलालेख का हवाला देते हैं: —

"इसका निर्माण छठी शताब्दी ईस्वी में भिक्षुओं के मठ के संस्थापक, ऑटेस्टे द्वारा किया गया था।"

यानी, नॉर्थम्ब्रिया में ईसाई धर्म के प्रचार से पहले। व्हिटेकर का कहना है कि यह

गलती किसी अनपढ़ आधुनिक पत्थर तराशने वाले द्वारा हेनरी अष्टम के समय के शिलालेख की नकल करने के कारण हुई, जो पास के एक पत्थर पर खुदा हुआ था: —

“यूटेस्ट टॉड की अच्छी स्थिति के लिए प्रार्थना करें।”

“अब तो हर पुरातत्वविद जानता है कि प्रार्थना का सूत्र ‘बोनो स्टेटू’ हमेशा जीवित व्यक्ति को संदर्भित करता है। मुझे संदेह है कि इस विलक्षण ईसाई नाम को पत्थर तराशने वाले ने गलती से ऑस्टेट समझ लिया होगा, जो यूस्टैटियस का संक्षिप्त रूप है, लेकिन टोड शब्द, जिसे अरबी अंकों 600 के रूप में गलत पढ़ा गया है, पूरी तरह से सही और सुपाठ्य है। प्राचीनता के इस मूर्खतापूर्ण दावे के आधार पर, जनता को स्वतंत्रता के लिए विद्रोह करना होगा और ब्रैडफोर्ड के विकर के हॉवर्थ में एक क्यूरेट नियुक्त करने के अधिकार का विरोध करना होगा।”

मैंने यह अंश इसलिए दिया है ताकि लगभग पैंतीस साल पहले हॉवर्थ में हुई एक हलचल की काल्पनिक पृष्ठभूमि को समझाया जा सके, जिसका उल्लेख मुझे भविष्य में और अधिक विस्तार से करने का अवसर मिलेगा।

गिरजाघर का आंतरिक भाग साधारण है; यह न तो इतना पुराना है और न ही इतना आधुनिक कि ध्यान आकर्षित करे। बेंचें काले ओक की लकड़ी की हैं, जिनमें ऊंचे विभाजन हैं; और दरवाजों पर सफेद अक्षरों में उन लोगों के नाम लिखे हैं जिनके वे हैं। यहाँ न तो पीतल की पट्टियाँ हैं, न ही वेदी-कब्रें, न ही स्मारक, लेकिन प्रार्थना-पात्र के दाहिनी ओर एक भित्ति पट्टिका है, जिस पर निम्नलिखित शिलालेख है: —

यहां मारिया ब्रोंटे के अवशेष दफन हैं, जो रेव. पी. ब्रोंटे, ए.बी., हॉवर्थ के मंत्री की पत्नी थीं। उनकी आत्मा 15 सितंबर, 1821 को 39 वर्ष की आयु में उद्धारकर्ता के पास चली गई।

“तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी तुम सोचते भी नहीं, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आएगा।” मत्ती 24:44

यहां मारिया ब्रोंटे, उपर्युक्त की पुत्री; उनकी मृत्यु 6 मई, 1825 को 12 वर्ष की आयु में हुई; और उनकी बहन एलिजाबेथ ब्रोंटे, जिनकी मृत्यु 15 जून, 1825 को 11 वर्ष की आयु में हुई, के अवशेष भी यहीं दफन हैं।

“मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक तुम अपना मन न बदल लो और छोटे बच्चों के समान न हो जाओ, तब तक तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करोगे।” — मत्ती 18:3

यहां पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे के अवशेष भी दफन हैं, जिनकी मृत्यु 24 सितंबर, 1848 को 30 वर्ष की आयु में हुई थी; और एमिली जेन ब्रोंटे के अवशेष भी यहीं दफन हैं, जिनकी मृत्यु 19 दिसंबर, 1848 को 29 वर्ष की आयु में हुई थी, जो रेव. पी. ब्रोंटे, वर्तमान पादरी के पुत्र और पुत्री थे।

यह पत्थर रेवरेंड पी. ब्रोंटे, ए.बी. की सबसे छोटी बेटी ऐनी ब्रोंटे की स्मृति को समर्पित है। उनका निधन 27 वर्ष की आयु में 28 मई, 1849 को हुआ था और उन्हें स्कारबोरो के पुराने चर्च में दफनाया गया था।

इस पट्टिका के ऊपरी भाग में शिलालेख की पंक्तियों के बीच पर्याप्त जगह छोड़ी गई है; जब पहली बार ये स्मारक लिखे गए थे, तब जीवित बचे लोगों ने अपने स्नेह में, बचे हुए लोगों के लिए छोड़ी गई जगह और हाशिये की परवाह नहीं की। लेकिन जैसे-जैसे परिवार का एक सदस्य दूसरे के पीछे-पीछे मृत्यु की ओर बढ़ता है, पंक्तियाँ आपस में सट जाती हैं और अक्षर छोटे और तंग हो जाते हैं। ऐनी की मृत्यु के बाद, किसी और के लिए कोई जगह नहीं बचती।

लेकिन उस पीढ़ी का एक और सदस्य—छह अनाथ बच्चों के उस छोटे से समूह का आखिरी बच्चा—अभी भी उस राह पर चलना बाकी था, इससे पहले कि जीवित बचे, निःसंतान और विधवा पिता को शांति मिले। पहले वाले के नीचे एक और पट्टिका पर, उस दुखद सूची में निम्नलिखित विवरण जोड़ा गया है: —

पास ही में रेवरेंड आर्थर बेल निकोल्स, ए.बी., की पत्नी और रेवरेंड पी. ब्रोंटे, ए.बी., की बेटी शार्लोट के अवशेष हैं। उनका निधन 31 मार्च, 1855 को 39 वर्ष की आयु में हुआ।

यह पट्टिका, जो ऐनी ब्रोंटे की उम्र के बारे में पिछली पट्टिका में हुई त्रुटि को सुधारती है, पर रोमन अक्षरों में निम्नलिखित शिलालेख अंकित है; हालाँकि, इसके प्रारंभिक अक्षर पुरानी अंग्रेज़ी में हैं।

अध्याय II

मेरी प्रिय मित्र शार्लोट ब्रोंटे के जीवन को सही ढंग से समझने के लिए, मुझे लगता है कि अन्य लोगों की तुलना में उनके मामले में यह अधिक आवश्यक है कि पाठक को उस विशिष्ट जनसंख्या और समाज के स्वरूपों से परिचित कराया जाए जिसमें उनके प्रारंभिक वर्ष व्यतीत हुए और जिससे उन्हें और उनकी बहनों को मानव जीवन की पहली छाप मिली होगी। इसलिए, आगे बढ़ने से पहले, मैं हॉवर्थ और आसपास के क्षेत्रों के लोगों के चरित्र का कुछ परिचय देने का प्रयास करूंगा।

पड़ोसी काउंटी लैंकेस्टर का निवासी भी यॉर्कशायरवासियों के विशिष्ट दृढ़ चरित्र से प्रभावित होता है। यही बात उन्हें एक जाति के रूप में रोचक बनाती है; वहीं दूसरी ओर, व्यक्तिगत रूप से, उनकी उल्लेखनीय आत्मनिर्भरता उन्हें एक ऐसी स्वतंत्रता का भाव प्रदान करती है जो किसी अजनबी को विचलित कर सकती है। मैं यहाँ "आत्मनिर्भरता" शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में कर रहा हूँ। वेस्ट राइडिंग के मूल निवासियों के जन्मजात गुणों से युक्त, उनकी प्रबल बुद्धिमत्ता और दृढ़ इच्छाशक्ति से अवगत होकर, प्रत्येक व्यक्ति स्वयं पर निर्भर रहता है और अपने पड़ोसी से किसी प्रकार की सहायता नहीं माँगता। दूसरों की सहायता की कम आवश्यकता होने के कारण, उसे दूसरों को सहायता प्रदान करने की क्षमता पर संदेह होने लगता है; अपने प्रयासों की सामान्य सफलता के कारण, वह दूसरों पर निर्भर हो जाता है और अपनी ऊर्जा और क्षमता को अधिक महत्व देने लगता है। वह उस तीक्ष्ण बुद्धि वाले, परन्तु दूरदर्शी न होने वाले वर्ग से संबंधित है, जो सिद्ध न हुई ईमानदारी पर संदेह को बुद्धिमत्ता का संकेत मानते हैं। मनुष्य के व्यावहारिक गुणों का वे बहुत सम्मान करते हैं; लेकिन अजनबियों और अनपरीक्षित कार्यप्रणालियों में अविश्वास का भाव सद्गुणों के प्रति दृष्टिकोण में भी झलकता है; और यदि उनसे कोई तात्कालिक और ठोस परिणाम न निकले, तो उन्हें इस व्यस्त और संघर्षपूर्ण दुनिया के लिए अनुपयुक्त मानकर दरकिनार कर दिया जाता है; विशेषकर यदि वे सक्रिय की बजाय निष्क्रिय प्रकृति के हों। उनकी भावनाएँ प्रबल और गहरी होती हैं, लेकिन वे व्यापक नहीं होतीं —ऐसी भावनाएँ शायद ही कभी व्यापक होती हैं; न ही वे सतही रूप से प्रकट होती

हैं। वास्तव में, इस जंगली और कठोर आबादी में जीवन की सुख-सुविधाओं का प्रदर्शन न के बराबर होता है। उनका व्यवहार संक्षिप्त होता है; उनकी बोली और लहजा कठोर और बेबाक होता है। इसका कुछ कारण शायद पर्वतीय हवा की स्वतंत्रता और एकांत पहाड़ी जीवन हो सकता है; कुछ उनकी कठोर नॉर्स वंश से भी प्रेरित हो सकता है। उनमें चरित्र को परखने की तीव्र क्षमता और हास्यबोध की गहरी समझ होती है; उनके बीच रहने वालों को कुछ अपमानजनक, यद्यपि संभवतः सत्य, टिप्पणियों के लिए तैयार रहना चाहिए, जो संक्षिप्त रूप से व्यक्त की जाती हैं। उनकी भावनाएँ आसानी से उत्तेजित नहीं होतीं, लेकिन उनका प्रभाव लंबे समय तक बना रहता है। इसीलिए उनमें घनिष्ठ मित्रता और निष्ठापूर्ण सेवा भाव प्रबल होता है; और इस निष्ठापूर्ण सेवा भाव का सटीक उदाहरण देखने के लिए, "वुथरिंग हाइट्स" के पाठक को केवल "जोसेफ" के चरित्र का उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा।

इसी कारण से लंबे समय तक चलने वाली दुश्मनी भी पैदा होती है, जो कुछ मामलों में घृणा का रूप ले लेती है और कभी-कभी पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती रहती है। मुझे याद है कि मिस ब्रोंटे ने एक बार मुझसे कहा था कि हॉवर्थ में यह कहावत प्रचलित थी, "अपनी जेब में सात साल तक एक पत्थर रखो; उसे घुमाओ और सात साल और रखो, ताकि जब तुम्हारा दुश्मन पास आए तो वह तुम्हारे हाथ में तैयार रहे।"

वेस्ट राइडिंग के लोग पैसे के पीछे भागने वाले जासूसों की तरह होते हैं। मिस ब्रोंटे ने मेरे पति को धन की इस तीव्र लालसा को दर्शाने वाला एक रोचक किस्सा सुनाया। उनके एक परिचित, जो एक छोटे व्यापारी थे, ने स्थानीय स्तर पर कई निवेश किए थे, जिनमें उन्हें हमेशा लाभ हुआ था और इस तरह वे कुछ धनवान बन गए थे। जब वे अधेड़ उम्र पार कर चुके थे, तब उन्हें अपनी जीवन बीमा पॉलिसी करवाने का ख्याल आया; और पॉलिसी लेते ही वे एक गंभीर बीमारी से बीमार पड़ गए, जिससे कुछ ही दिनों में उनकी मृत्यु निश्चित थी। डॉक्टर ने कुछ हिचकिचाहट के साथ उन्हें उनकी निराशाजनक स्थिति के बारे में बताया। "अरे वाह!" वे तुरंत अपनी पुरानी ऊर्जा में आ उठे और बोले, "मैं बीमा कंपनी से हिसाब लूंगा! मैं हमेशा से भाग्यशाली रहा हूँ!"

ये लोग तेज और चतुर होते हैं; अच्छे उद्देश्य की पूर्ति में निष्ठावान और दृढ़ रहते हैं, जबकि बुरे उद्देश्य की पूर्ति में विफल रहते हैं। वे भावुक नहीं होते; उन्हें आसानी से दोस्त या दुश्मन नहीं बनाया जा सकता; लेकिन एक बार किसी से प्रेम या घृणा करने पर उनकी भावनाएँ बदलना कठिन होता है। वे मन और शरीर दोनों से शक्तिशाली

होते हैं, अच्छे और बुरे दोनों कार्यों में सक्षम होते हैं।

इस जिले में ऊनी कपड़े बनाने का काम एडवर्ड तृतीय के शासनकाल में शुरू हुआ था। परंपरा के अनुसार, फ्लेमिश लोगों का एक समूह यहाँ आकर वेस्ट राइडिंग में बस गया और उन्होंने यहाँ के निवासियों को ऊन का उपयोग करना सिखाया। कृषि और विनिर्माण कार्यों का जो मिश्रण वेस्ट राइडिंग में हाल तक प्रचलित रहा, वह समय बीतने के साथ काफी सुखद लगता है, क्योंकि शास्त्रीय छाप मिट चुकी है और विवरण भुला दिए गए हैं, या केवल उन लोगों द्वारा सामने लाए गए हैं जो इंग्लैंड के उन कुछ दूरस्थ हिस्सों का पता लगाते हैं जहाँ यह प्रथा अभी भी कायम है। मालकिन और उसकी दासियों द्वारा बड़े चरखे पर सूत कातने का दृश्य, जबकि मालिक अपने खेतों में हल चला रहा होता था या हरे-भरे मैदानों में अपने झुंडों की देखभाल कर रहा होता था, पीछे मुड़कर देखने पर बहुत काव्यात्मक लगता है; लेकिन जब ऐसा जीवन हमारे वर्तमान समय से जुड़ जाता है, और हम वर्तमान में जी रहे लोगों के मुख से विवरण सुनते हैं, तो उसमें कुछ असभ्यताएँ उभर कर आती हैं— देहाती असभ्यता और व्यापारी की तीक्ष्णता का मिश्रण— अनियमितता और भयंकर अराजकता—जो देहाती मासूमियत और सादगी की छवि को धूमिल कर देती हैं। फिर भी, चूंकि किसी भी काल की असाधारण और अतिरंजित विशेषताएँ ही सबसे जीवंत स्मृति छोड़ती हैं, इसलिए यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा, और मेरी राय में विश्वासघात होगा, कि समाज के ऐसे रूप और जीवन शैली उस काल के लिए सर्वोत्तम नहीं थे जब वे प्रचलित थे, भले ही उनसे उत्पन्न दुर्व्यवहार और विश्व की क्रमिक प्रगति ने यह उचित बना दिया हो कि ऐसे तौर-तरीके हमेशा के लिए लुप्त हो जाएँ, और उनमें लौटने का प्रयास करना उतना ही हास्यास्पद है जितना कि किसी व्यक्ति का अपने बचपन के कपड़े पहनना।

एल्डरमैन कॉकेन को दिया गया पेटेंट और जेम्स प्रथम द्वारा बिना रंगे ऊनी कपड़ों के निर्यात पर लगाए गए अतिरिक्त प्रतिबंधों (जिनके जवाब में हॉलैंड राज्य द्वारा अंग्रेजी रंगे कपड़ों के आयात पर रोक लगाई गई थी) ने वेस्ट राइडिंग के निर्माताओं के व्यापार को काफी नुकसान पहुंचाया। उनके स्वतंत्र स्वभाव, सत्ता के प्रति उनकी अरुचि और उनकी प्रखर विचार क्षमता ने उन्हें लाउड जैसे लोगों के धार्मिक उपदेशों और स्टुअर्टों के मनमाने शासन के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया; और जेम्स और चार्ल्स द्वारा उनके आजीविका के साधन रहे व्यापार को पहुँचाई गई हानि ने उनमें

से अधिकांश को राष्ट्रमंडल का सदस्य बना दिया। मैं आगे चलकर यॉर्कशायर और लंकाशायर को अलग करने वाली पर्वत श्रृंखला के पश्चिम और पूर्व में स्थित गांवों में आज भी मौजूद घरेलू और विदेशी राजनीति के विषयों पर व्यापक ज्ञान और गहरी भावनाओं के एक-दो उदाहरण दूंगा; इन गांवों के निवासी एक ही नस्ल के हैं और उनमें एक ही प्रकार का चरित्र है।

डनबार में क्रॉमवेल के अधीन सेवा करने वाले कई लोगों के वंशज आज भी उन्हीं जमीनों पर रहते हैं जिन पर उनके पूर्वज रहते थे; और शायद इंग्लैंड का कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं है जहाँ राष्ट्रमंडल की पारंपरिक और सुखद यादें इतनी लंबे समय तक बसी हों जितनी कि वेस्ट राइडिंग के ऊनी कपड़े बनाने वाले लोगों की आबादी में, जिनके व्यापार पर लगे प्रतिबंध संरक्षक की प्रशंसनीय व्यापारिक नीति द्वारा हटा दिए गए थे। मुझे विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि तीस साल पहले तक, "ओलिवर के दिनों में" वाक्यांश असाधारण समृद्धि के समय को दर्शाने के लिए आम प्रचलन में था। किसी जिले में प्रचलित ईसाई नामों का प्रकार उस क्षेत्र में नायक-पूजा की लहर की दिशा का एक संकेत है। राजनीति या धर्म के गंभीर उत्साही लोग अपने बच्चों को दिए जाने वाले नामों के हास्यास्पद पहलू को नहीं समझते; और कुछ ऐसे बच्चे भी हैं जो अभी शैशवावस्था में ही हॉवर्थ से कुछ ही मील दूर हैं, जिन्हें जीवन भर लामार्टिन, कोसुथ और डेम्बिंस्की के नाम से ही जाना जाएगा। और इसलिए, मैंने जो कहा है, उसकी पुष्टि इस जिले की पारंपरिक भावना से होती है, क्योंकि प्यूरिटनों के बीच प्रचलित पुराने नियम के नाम आज भी यॉर्कशायर के अधिकांश मध्यम या निम्न वर्ग के परिवारों में प्रचलित हैं, चाहे उनका धार्मिक विश्वास कुछ भी हो। ऐसे अनेक अभिलेख भी हैं जो दर्शाते हैं कि चार्ल्स द्वितीय के अत्याचारों के दिनों में निष्कासित पादरियों का स्वागत कुलीन वर्ग के साथ-साथ गरीब निवासियों द्वारा भी किस प्रकार किया गया था। ये सभी तथ्य स्वतंत्रता की उस पुरानी वंशानुगत भावना की गवाही देते हैं, जो अन्यायपूर्ण ढंग से प्रयोग की जाने वाली सत्ता का हमेशा विरोध करने के लिए तत्पर रहती थी, और जो आज भी वेस्ट राइडिंग के लोगों को विशिष्ट बनाती है।

हैलिफ़ैक्स का परगना ब्रैडफ़ोर्ड के परगने से सटा हुआ है, जिसमें हॉवर्थ का चैपलरी भी शामिल है; और दोनों परगनों की भूमि की प्रकृति काफी हद तक एक जैसी ही जंगली और पहाड़ी है। इस क्षेत्र में कोयले की प्रचुरता और कई पहाड़ी जलधाराओं के कारण यह औद्योगिक गतिविधियों के लिए अत्यंत अनुकूल है; और

इसी के अनुरूप, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, यहाँ के निवासी सदियों से कृषि के साथ-साथ कपड़ा बनाने के काम में भी लगे हुए हैं। लेकिन लंबे समय तक व्यापारिक गतिविधियों से इन दूरस्थ बस्तियों या दूर-दूर तक फैली बस्तियों में सुख-सुविधाएँ और सभ्यता नहीं आ सकीं। श्री हंटर ने अपनी पुस्तक "ओलिवर हेवुड का जीवन" में एलिजाबेथ के शासनकाल में रहने वाले जेम्स रिथर के एक संस्मरण से एक वाक्य उद्धृत किया है, जो आज भी आंशिक रूप से सत्य है:

"उनके पास दरबार से ऊपर कोई नहीं है, न ही वे शिष्टाचार का पालन करते हैं: इसका परिणाम एक कड़वा और कठोर स्वभाव है, जिससे एक अजनबी हर आवाज में अवज्ञा का स्वर और हर चेहरे पर क्रूरता का भाव देखकर चौंक जाता है।"

आज भी, कोई अजनबी शायद ही कोई सवाल पूछे और उसे कोई रूखा जवाब ही मिले, अगर मिले भी तो। कभी-कभी यह कड़वाहट और बदतमीज़ी सीधे-सीधे अपमान के बराबर होती है। फिर भी, अगर वह "विदेशी" इस सारी बदतमीज़ी को अच्छे स्वभाव से या स्वाभाविक मानकर सहन कर लेता है और उनकी छिपी हुई दयालुता और मेहमाननवाज़ी का पूरा लाभ उठाता है, तो वे वफादार और उदार होते हैं, और उन पर पूरी तरह भरोसा किया जा सकता है। इन दूरदराज के गांवों में हर वर्ग में व्याप्त रूखेपन का एक छोटा सा उदाहरण देने के लिए, मैं तीन साल पहले एडिंगहैम में मेरे और मेरे पति के साथ घटी एक छोटी सी घटना का वर्णन कर सकती हूँ।

पेनीजेंट से पेंडल हिल तक, लिंटन से लॉन्ग-एडिंगहैम तक, और क्रेवन तटों के सभी विवरण, इत्यादि।

यह उन स्थानों में से एक है जिसने फ्लॉडन फील्ड की प्रसिद्ध पुरानी लड़ाई में अपने लड़ाकों को भेजा था, और यह गांव हॉवर्थ से कुछ ही मील दूर है।

हम सड़क पर गाड़ी चला रहे थे, तभी एक बदमाश लड़का, जिसे देखकर लगता है मानो वह हमेशा मुसीबतों से घिरा रहता है, उस नाले में कूद गया जो वहीं से बहता है, ठीक उसी जगह जहाँ टूटे हुए कांच और बोतलें फेंकी जाती हैं। वह नग्न अवस्था में, लगभग खून से लथपथ, हमारे सामने एक झोपड़ी में लड़खड़ाता हुआ पहुँचा। उसकी बांह में एक और गहरा घाव लगा था, साथ ही उसकी धमनी पूरी तरह से फट गई थी, और वह खून बहने से मरने की कगार पर था। उसके एक रिश्तेदार ने उसे दिलासा देते हुए कहा कि इससे "काफी परेशानी से बचा जा सकेगा।"

जब मेरे पति ने एक पट्टी से खून के रिसाव की जांच की, जिसे वहां मौजूद एक

व्यक्ति ने उनके पैर से खोल दिया था, तो उन्होंने पूछा कि क्या किसी सर्जन को बुलाया गया है।

“योई,” जवाब मिला; “लेकिन हमें नहीं लगता कि वह आएगा।”

"क्यों नहीं?"

"वह बूढ़ा है, आप जानते हैं, और उसे अस्थमा भी है, और यह चढ़ाई वाला रास्ता है।"

मेरे पति एक लड़के को गाइड बनाकर, जितनी तेज़ी से हो सके गाड़ी चलाते हुए सर्जन के घर पहुंचे, जो लगभग तीन-चौथाई मील दूर था, और वहां उनकी मुलाकात घायल लड़के की चाची से हुई जो घर से बाहर निकल रही थीं।

“क्या वह आ रहा है?” मेरे पति ने पूछा।

"खैर, उसने यह नहीं कहा कि वह नहीं आएगा।"

लेकिन, उसे बता देना कि लड़का खून बहने से मर सकता है।

“मैंने किया।”

और उसने क्या कहा?

"क्यों, बस, 'भाड़ में जाए वो; मुझे क्या फर्क पड़ता है?'"

लेकिन अंत में उन्होंने अपने एक बेटे को भेजा, जो कि सर्जन के पेशे में प्रशिक्षित तो नहीं था, लेकिन पट्टी और प्लास्टर लगाने जैसे आवश्यक कार्य करने में सक्षम था। सर्जन के लिए यह बहाना बनाया गया कि "वह लगभग अस्सी वर्ष का था, थोड़ा कमजोर हो गया था और उसके लगभग बीस बच्चे थे।"

वहां मौजूद लोगों में सबसे उदासीन लोगों में से एक उस लड़के का भाई था जो बुरी तरह घायल हो गया था; और जब वह फर्श पर खून के तालाब में पड़ा हुआ था और चिल्ला रहा था कि उसकी बांह कितनी "दर्द" कर रही है, तब उसका भावहीन रिश्तेदार शांत भाव से अपनी काली पाइप पीता रहा और उसने सहानुभूति या दुख का एक भी शब्द नहीं कहा।

घने जंगलों के किनारे बसे वनवासी रीति-रिवाज, जो पहाड़ियों की ढलानों को घेरे हुए थे, सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक आबादी को क्रूरता की ओर धकेलते रहे। मामूली अपराधों के लिए भी पुरुषों या महिलाओं को सिर कलम करके तुरंत मौत की सजा दी जाती थी; और इस प्रकार मानव जीवन के प्रति एक दृढ़, हालांकि कुछ मामलों में सूक्ष्म, उदासीनता पैदा हो गई थी। सड़कें इतनी खराब थीं कि पिछले तीस वर्षों तक

भी एक गाँव से दूसरे गाँव का संपर्क बहुत कम था; यदि उद्योग का उत्पादन तय समय पर जिले के कपड़ा बाजार तक पहुँचाया जा सकता था, तो बस इतना ही संभव था; और दूर पहाड़ी पर स्थित एकांत घरों में, या एकांत बस्तियों के छोटे जमींदारों द्वारा, अपराध लगभग अज्ञात रूप से किए जाते थे, निश्चित रूप से बिना किसी बड़े जन आक्रोश के जो कानून के शिकंजे को ला खड़ा करे। यह याद रखना चाहिए कि उन दिनों कोई ग्रामीण पुलिस बल नहीं था; और जो कुछ गिने-चुने मजिस्ट्रेट अपने आप में रह गए थे, और आम तौर पर एक-दूसरे से संबंधित थे, उनमें से अधिकांश सनकीपन को सहन करने और अपने जैसी गलतियों को नजरअंदाज करने के लिए प्रवृत्त थे।

अधेड़ उम्र पार कर चुके पुरुष अपने यौवन के दिनों की बात करते हैं, जो उन्होंने देश के इस हिस्से में बिताए थे, जब सर्दियों के महीनों में वे घोड़ों पर सवार होकर कीचड़ में लथपथ हो जाते थे; जब घर की चारदीवारी से बाहर निकलने का एकमात्र कारण काम ही होता था, और वह काम इतनी कठिनाइयों के बीच किया जाता था कि वे खुद, ब्रैडफोर्ड बाजार तक एक तेज रफ्तार वाली प्रथम श्रेणी की गाड़ी में ले जाए जाने पर, शायद ही विश्वास कर पाते थे कि यह संभव था। उदाहरण के लिए, एक ऊनी कपड़े के निर्माता का कहना है कि पच्चीस साल पहले, उन्हें सर्दियों की एक सुबह जल्दी उठकर अपने पिता द्वारा निर्मित माल से लदी भारी गाड़ी लेकर ब्रैडफोर्ड जाना पड़ता था; यह माल रात भर में पैक किया जाता था, लेकिन सुबह इसके चारों ओर एक बड़ी भीड़ जमा हो जाती थी, लालटेनें चमकती थीं, और घोड़ों के खुरों की जांच की जाती थी, इससे पहले कि भारी भरकम गाड़ी रवाना होती। फिर किसी को घुटनों के बल इधर-उधर टटोलते हुए, और लगातार लाठी से लंबी, खड़ी, फिसलन भरी ढलान पर नीचे की ओर आवाज़ करते हुए, यह पता लगाना पड़ता था कि घोड़े कहाँ सुरक्षित रूप से चल सकते हैं, जब तक कि वे गहरी खाइयों वाली मुख्य सड़क के अपेक्षाकृत आसान रास्ते पर नहीं पहुँच जाते। लोग पहाड़ी मैदानों पर घोड़ों पर सवार होकर उन माल ढोने वाले घोड़ों के पदचिह्नों का अनुसरण करते थे जो एक कस्बे से दूसरे कस्बे तक पार्सल, सामान या माल ले जाते थे, जिनके बीच कोई राजमार्ग नहीं होता था।

लेकिन सर्दियों में, बर्फ की मोटी परत के कारण, जो लंबे समय तक ऊंचे और उजाड़ इलाकों में जमी रहती थी, इस तरह का कोई भी संचार असंभव था। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जो ब्लैकस्टोन एज के ऊपर से मेल-कोच से यात्रा करते हुए,

शिखर के पास स्थित एक छोटे से सराय में एक सप्ताह या दस दिनों तक बर्फ में फंसे रहे और क्रिसमस और नए साल का दिन वहीं बिताने के लिए मजबूर हुए। जब तक मकान मालिक और उसके परिवार के लिए रखा गया राशन अप्रत्याशित मेहमानों के आने से कम नहीं पड़ गया, तब तक उन्हें कोच में लदे टर्की, हंस और यॉर्कशायर पाई का सहारा लेना पड़ा; और ये भी खत्म होने लगे थे, तभी सौभाग्य से बर्फ पिघलने से उन्हें इस कैद से मुक्ति मिली।

पहाड़ी गाँव भले ही एकांत में बसे हों, फिर भी दुनिया से जुड़े हुए हैं, उन धूसर पैतृक घरों की तुलना में जो दलदली मैदानों की घनी घाटियों में इधर-उधर बिखरे दिखाई देते हैं। ये घर बड़े नहीं हैं, फिर भी इतने मजबूत और विशाल हैं कि उनमें रहने वालों और आसपास की जागीरों के मालिकों के लिए पर्याप्त जगह हो। ट्यूडर काल से ही यह भूमि अक्सर एक ही परिवार के पास रही है; वास्तव में, मालिक पुराने किसान वर्ग के अवशेष हैं - छोटे जमींदार - जो दो कारणों में से किसी एक के कारण एक वर्ग के रूप में तेजी से विलुप्त हो रहे हैं। या तो मालिक आलस्य और शराबखोरी की आदतों में पड़ जाता है, और अंततः अपनी संपत्ति बेचने के लिए विवश हो जाता है; या फिर, यदि वह अधिक चतुर और साहसी है, तो उसे पहाड़ की ढलान से बहने वाली छोटी नदी या उसके पैरों के नीचे मौजूद खनिजों को धन के एक नए स्रोत में बदलने का मौका मिलता है; और कम पूंजी वाले जमींदार के पुराने श्रमसाध्य जीवन को छोड़कर, वह निर्माता बन जाता है, या कोयला खोदता है, या पत्थर की खदानों में काम करता है।

आज भी इस वर्ग के कुछ लोग बचे हुए हैं—पहाड़ी इलाकों में दूर-दराज के एकांत घरों में रहने वाले—जो इस बात का पर्याप्त संकेत देते हैं कि किस प्रकार की विचित्र विलक्षणता—इच्छाशक्ति की किस अदम्य शक्ति—यहाँ तक कि अपराध करने की किस अस्वाभाविक शक्ति को उस जीवनशैली ने पोषित किया जिसमें एक व्यक्ति शायद ही कभी अपने साथियों से मिलता था, और जहाँ जनमत क्षितिज के पीछे गूंजती किसी स्पष्ट आवाज की एक दूरस्थ और अस्पष्ट प्रतिध्वनि मात्र थी।

एकांत जीवन मात्र कल्पनाओं को जन्म देता है, जो अंततः जुनून में बदल जाती हैं। और यॉर्कशायर का शक्तिशाली स्वभाव, जो "व्यस्त शहर या भीड़भाड़ वाले बाज़ार" में मिलने-जुलने के बावजूद मुश्किल से ही वश में आया था, अब दूरदराज के इलाकों में अजीबोगरीब मनमानी करने लगा है। हाल ही में मुझे एक ज़मींदार (जो पहाड़ियों के

लंकाशायर वाले हिस्से में रहता था, लेकिन उसी वंश और स्वभाव का था जैसा कि दूसरे हिस्से में रहने वाले लोग थे) के बारे में एक अनोखी कहानी सुनाई गई, जिसकी सालाना आमदनी सात-आठ सौ पाउंड बताई जाती थी, और जिसका घर प्राचीनता का प्रतीक था, मानो उसके पूर्वज लंबे समय से प्रतिष्ठित लोग रहे हों। मेरे सूचना देने वाले को वह जगह देखकर आश्चर्य हुआ, और उसने अपने साथ आए ग्रामीण को वहाँ जाकर करीब से निरीक्षण करने का प्रस्ताव दिया। जवाब मिला, "तुम ऐसा मत करना; वो तुम्हें करारा जवाब देगा। उसने पहले भी कुछ लोगों के पैरों पर गोली चलाई है और उनमें गोलियां दागी हैं, सिर्फ इसलिए कि वे उसके घर के बहुत पास गए थे।" और जब उसने और गहराई से पूछताछ की, तो उसे पता चला कि इस बंजर भूमि के जमींदार का यही निर्दयी व्यवहार था, तब उस सज्जन ने अपना इरादा छोड़ दिया। मेरा मानना है कि वह निर्दयी किसान अभी भी जीवित है।

एक अन्य जमींदार, जो अधिक प्रतिष्ठित परिवार और बड़ी संपत्ति से थे—जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी शिक्षा भी बेहतर रही होगी, हालांकि यह हमेशा सच नहीं होता—कुछ ही साल पहले हॉवर्थ से कुछ ही मील दूर अपने घर में उनका निधन हो गया। उनका सबसे बड़ा शौक और पेशा मुर्गे की लड़ाई थी। जब वे अपनी अंतिम बीमारी के कारण अपने कमरे में ही सीमित हो गए, तो उन्होंने अपने मुर्गों को वहीं बुलवाया और बिस्तर से ही खूनी लड़ाई देखी। जैसे-जैसे उनकी जानलेवा बीमारी बढ़ती गई और उनके लिए लड़ाई देखने के लिए करवट बदलना असंभव हो गया, उन्होंने अपने चारों ओर और ऊपर इस तरह से शीशे लगवाए कि वे लेटे-लेटे भी मुर्गों की लड़ाई देख सकें। और इसी तरह उनका निधन हो गया।

ये तो महज कुछ विलक्षण घटनाएं हैं, जबकि इन एकांत आवासों में घटी हिंसा और अपराध की कहानियाँ जिले के बुजुर्गों की यादों में आज भी ताजा हैं, और इनमें से कुछ घटनाएं निस्संदेह "वुथरिंग हाइट्स" और "द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल" के लेखकों को भी परिचित रही होंगी।

निम्न वर्ग के मनोरंजन की उम्मीद शायद ही धनी और उच्च शिक्षित लोगों के मनोरंजन से अधिक मानवीय होने की की जा सकती थी। जिस सज्जन ने मुझे कुछ विवरण दिए हैं, उन्हें तीस वर्ष पूर्व रोशडेल में होने वाले बैल-लड़ाई के खेल याद हैं। बैल को नदी में एक खंभे से जंजीर या रस्सी से बांध दिया जाता था। पानी की मात्रा बढ़ाने के साथ-साथ अपने कामगारों को जंगली आनंद का अवसर देने के लिए,

मालिक खेल वाले दिन अपनी मिलें बंद कर देते थे। बैल कभी-कभी अचानक घूम जाता था, जिससे वह जिस रस्सी से बंधा होता था, वह लापरवाही से उसकी सीमा में आने वालों को पानी में बहा ले जाती थी, और रोशडेल के भले लोग अपने एक-दो पड़ोसियों को डूबते हुए देखने के साथ-साथ बैल की लड़ाई और कुत्तों को नोचते-फाड़ते देखने का रोमांच भी पाते थे।

हॉवर्थ के लोग पहाड़ियों के दोनों ओर बसे अपने पड़ोसियों से कम बलवान और दृढ़ चरित्रवान नहीं थे। यह गाँव दो काउंटी के बीच, कीघली और कोल्ने के बीच पुराने रास्ते पर, दलदली भूमि में बसा हुआ है। पिछली शताब्दी के मध्य के आसपास, यह गाँव धार्मिक जगत में रेवरेंड विलियम ग्रिमशॉ के उपदेशों के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ, जो बीस वर्षों तक हॉवर्थ के क्यूरेट रहे। इससे पहले, संभवतः क्यूरेट उसी श्रेणी के थे जैसे यॉर्कशायर के एक पादरी श्री निकोल्स, जो धर्म सुधार के तुरंत बाद के दिनों में "शराब पीने और संगति करने के बहुत शौकीन" थे और अपने साथियों से कहा करते थे, "जब तक मैं धरती से तीन फीट ऊपर न पहुँच जाऊँ, तब तक मेरी बात मत सुनना," यानी उपदेश मंच पर।

श्री ग्रिमशॉ का जीवन न्यूटन द्वारा लिखा गया था, जो कूपर के मित्र थे; और इससे इस बात के कुछ रोचक विवरण मिलते हैं कि कैसे एक कठोर आबादी एक दृढ़ विश्वास और दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति के प्रभाव और मार्गदर्शन में थी। ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिक उत्साह के लिए वे किसी भी तरह से उल्लेखनीय नहीं थे, हालांकि उन्होंने नैतिक जीवन व्यतीत किया था और अपने पैरिश कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाया था, जब तक कि सितंबर 1744 के एक रविवार को, नौकरानी सुबह पांच बजे उठी और उसने अपने मालिक को प्रार्थना में लीन पाया; उसने बताया कि कुछ समय अपने कमरे में रहने के बाद, वे एक पैरिशियन के घर में धार्मिक अनुष्ठान करने गए, फिर घर आकर प्रार्थना की; वहाँ से, उपवास करते हुए, वे चर्च गए, जहाँ दूसरी प्रार्थना पढ़ते समय वे गिर पड़े, और थोड़ा संभलने पर उन्हें चर्च से बाहर ले जाना पड़ा। बाहर जाते समय, उन्होंने सभा में उपस्थित लोगों से बात की और उनसे कहा कि वे इधर-उधर न जाएँ, क्योंकि उन्हें उनसे कुछ कहना है और वे शीघ्र ही लौटेंगे। उन्हें क्लर्क के घर ले जाया गया, जहाँ वे फिर से बेहोश हो गए। उनके नौकर ने रक्त संचार बहाल करने के लिए उन्हें मालिश की; और जब उन्हें होश आया तो वे "अत्यंत आनंदित" प्रतीत हुए, और उनके पहले शब्द थे, "मुझे तीसरे स्वर्ग से एक शानदार

दर्शन हुआ है।" उन्होंने यह नहीं बताया कि उन्होंने क्या देखा था, बल्कि वे चर्च में लौट आए और दोपहर दो बजे से प्रार्थना सभा में फिर से शामिल हो गए, जो सात बजे तक चली।

इस समय से उन्होंने वेस्ली के जोश और व्हिटफील्ड के कट्टरवाद के साथ अपने पैरिशवासियों में धार्मिक जीवन को बढ़ावा देने का बीड़ा उठाया। वे रविवार को पत्थरों का इस्तेमाल करके फुटबॉल खेलते थे और दूसरे पैरिशवासियों को चुनौती देते और स्वीकार करते थे। गाँव के ठीक ऊपर स्थित मैदानों में घुड़दौड़ होती थी, जो समय-समय पर शराबखोरी और अय्याशी का अड्डा बन जाती थी। शायद ही कोई शादी बिना दौड़-भाग के होती थी, जहाँ अधनंगे धावक सभी सभ्य अजनबियों के लिए शर्मिंदगी का कारण बनते थे। अंत्येष्टि भोज की पुरानी प्रथा के कारण अक्सर शराबी मातम मनाने वालों के बीच झड़पें होती थीं। ये प्रथाएँ उन लोगों के बाहरी संकेत थे जिनसे श्री ग्रिमशॉ को निपटना पड़ता था। लेकिन, विभिन्न तरीकों से, जिनमें से कुछ सबसे व्यावहारिक थे, उन्होंने अपने पैरिश में एक बड़ा बदलाव लाया। अपने उपदेशों में कभी-कभी वेस्ली और व्हिटफील्ड उनकी सहायता करते थे, और ऐसे समय में छोटा चर्च दूर-दराज के गांवों या सुनसान पहाड़ी बस्तियों से उमड़ने वाली भीड़ के लिए बहुत छोटा पड़ जाता था; और अक्सर उन्हें खुले में इकट्ठा होना पड़ता था; वास्तव में, चर्च में श्रद्धालुओं के लिए भी पर्याप्त जगह नहीं होती थी। एक बार श्री व्हिटफील्ड हॉवर्थ में उपदेश दे रहे थे, और उन्होंने कुछ इस तरह कहा कि उन्हें उम्मीद है कि इस मंडली से ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है, क्योंकि वे इतने वर्षों से इतने धर्मनिष्ठ और ईश्वर-भक्त पादरी के मार्गदर्शन में रहे हैं; "इस पर श्री ग्रिमशॉ अपनी जगह पर खड़े हुए और ऊँची आवाज़ में बोले, 'हे महोदय! ईश्वर के लिए ऐसा मत बोलिए। मैं आपसे विनती करता हूँ कि उनकी चापलूसी न करें। मुझे डर है कि उनमें से अधिकांश खुली आँखों से नरक में जा रहे हैं।'" लेकिन अगर वे ऐसा करने के लिए बाध्य थे, तो यह श्री ग्रिमशॉ के प्रयासों की कमी के कारण नहीं था। वे निजी घरों में सप्ताह में बीस या तीस बार उपदेश देते थे। यदि उन्हें कोई प्रार्थना में अनमना दिखाई देता, तो वे रुककर उसे डांटते और तब तक आगे नहीं बढ़ते जब तक कि वे सभी को घुटनों के बल बैठे हुए न देख लेते। वे रविवार के दिन का कड़ाई से पालन करवाने में अत्यंत दृढ़ थे; और यहाँ तक कि वे अपने अनुयायियों को प्रार्थना सभाओं के बीच खेतों में टहलने की भी अनुमति नहीं देते थे। वे कभी-कभी एक बहुत लंबा भजन (परंपरा के अनुसार

119वाँ) सुनाते थे, और जब वह गाया जा रहा होता था, तो वे पाठ-पीठ छोड़कर घोड़े की चाबुक लेकर सार्वजनिक शराबखानों में जाते और चर्च में आवारागर्दी करने वालों को कोड़े मारते हुए अंदर ले आते थे। जो लोग पादरी के कोड़े से बचकर पीछे के रास्ते से निकल जाते थे, वे बड़ी चतुराई से बच निकलते थे। उनका स्वास्थ्य अच्छा था और शरीर चुस्त-दुरुस्त था, और वे पहाड़ियों पर दूर-दूर तक घोड़े की सवारी करते थे, उन लोगों को "जागृत" करते थे जिन्हें पहले धर्म की कोई समझ नहीं थी। समय बचाने के लिए, और उन परिवारों पर बोझ न डालने के लिए जिनके घरों में वे प्रार्थना सभाएँ आयोजित करते थे, वे अपना भोजन-पानी साथ रखते थे; ऐसे अवसरों पर वह दिन भर में जो भी भोजन करता था, उसमें केवल एक टुकड़ा ब्रेड और मक्खन, या सूखी ब्रेड और एक कच्चा प्याज शामिल होता था।

श्री ग्रिमशॉ को घुड़दौड़ें बिल्कुल नापसंद थीं; इनसे हॉवर्थ में बड़ी संख्या में अनैतिक लोग आकर्षित होते थे और वहां की ज्वलनशील परिस्थितियों में आग लग जाती थी, जो कभी भी बुराई का रूप ले सकती थी। कहा जाता है कि उन्होंने घुड़दौड़ बंद करवाने के लिए हर संभव प्रयास किया, यहां तक कि डराने-धमकाने का भी, लेकिन सब व्यर्थ रहा। अंततः, हताश होकर उन्होंने इतनी लगन और श्रद्धा से प्रार्थना की कि मूसलाधार बारिश हुई और ज़मीन जलमग्न हो गई, जिससे मनुष्य या पशु के लिए ज़मीन पर पैर रखना असंभव हो गया, भले ही भीड़ उस बाढ़ को सहने के लिए तैयार होती। इस प्रकार हॉवर्थ में घुड़दौड़ बंद हो गईं और आज तक दोबारा शुरू नहीं हुईं। आज भी इस नेक इंसान को सम्मान की नज़र से देखा जाता है और उनकी निष्ठापूर्ण सेवाएँ और सच्चे गुण इस क्षेत्र के लिए गर्व की बात हैं।

लेकिन उनके बाद, मुझे डर है कि लोग फिर से उन जंगली, असभ्य और मूर्तिपूजक तरीकों में लौट गए, जिनसे उन्होंने अपने दृढ़ निश्चय और दृढ़ संकल्प से उन्हें बाहर निकाला था। उन्होंने वेस्लेयन मेथोडिस्टों के लिए एक चैपल बनवाया था, और उसके कुछ ही समय बाद बैपटिस्टों ने भी अपना पूजा स्थल स्थापित कर लिया। वास्तव में, जैसा कि डॉ. व्हिटेकर कहते हैं, इस जिले के लोग "कट्टर धार्मिक" हैं; केवल पचास साल पहले, उनका धर्म उनके जीवन में इतना रचा-बसा नहीं था। उससे आधे समय पहले, नैतिक संहिता उनके नॉर्स पूर्वजों की संहिता पर आधारित प्रतीत होती थी। बदला लेना पिता से पुत्र को वंशानुगत कर्तव्य के रूप में सौंपा जाता था; और बिना होश खोए शराब पीने की प्रबल क्षमता को मर्दाना गुणों में से एक माना जाता था।

रविवार को फुटबॉल के खेल, और पड़ोसी पारिशों को चुनौती देना फिर से शुरू हो गया, जिससे उपद्रवी अजनबियों की भीड़ पबों में उमड़ पड़ी, और अधिक समझदार निवासियों को श्री ग्रिमशॉ की मजबूत भुजा और तैयार चाबुक की याद आने लगी। "अरविल" की पुरानी प्रथा पहले की तरह ही प्रचलित थी। कब्र के पास खड़े होकर कब्रिस्तान का रखवाला घोषणा करता था कि "अरविल" ब्लैक बुल में या मृतक के मित्रों द्वारा तय किए गए किसी भी सार्वजनिक स्थान पर आयोजित किया जाएगा; और शोक मनाने वाले और उनके परिचित वहाँ पहुँच जाते थे। इस प्रथा की उत्पत्ति दूर से आने वाले उन लोगों के लिए जलपान की व्यवस्था करने की आवश्यकता से हुई थी, जो किसी मित्र को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करने आते थे। ओलिवर हेवुड के जीवन में दो उद्धरण हैं, जो दर्शाते हैं कि सत्रहवीं शताब्दी में शांत गैर-अनुरूपतावादी समुदायों में "अरविल" के लिए किस प्रकार का भोजन उपलब्ध कराया जाता था; पहला (थोरेस्बी से) ओलिवर हेवुड के अंतिम संस्कार के बाद "ठंडे पॉसेट, उबले हुए आलूबुखारे, केक और पनीर" के बारे में बताता है। दूसरा, उस समय की धारणा (1673) के अनुसार, कुछ साधारण सा था, जिसमें "केवल एक टुकड़ा केक, एक घूँट शराब, गुलाब की एक पत्ती और दस्तानों की एक जोड़ी" शामिल थी।

लेकिन हॉवर्थ में होने वाले शोक समारोह अक्सर कहीं अधिक खुशनुमा होते थे। गरीबों में, शोक मनाने वालों से केवल प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक प्रकार का मसालेदार रोल लाने की अपेक्षा की जाती थी; और शराब - रम, या एले, या दोनों का मिश्रण जिसे "डॉग्स नोज़" कहा जाता था - का खर्च आम तौर पर प्रत्येक अतिथि द्वारा मेज के बीच में रखी प्लेट में कुछ पैसे रखकर वहन किया जाता था। अमीर लोग अपने दोस्तों के लिए भोज का आयोजन करते थे। श्री चार्नोक (श्री ग्रिमशॉ के बाद पद संभालने वाले) के अंतिम संस्कार में, अस्सी से अधिक लोगों को शोक समारोह में आमंत्रित किया गया था, और भोज का मूल्य 4 शिलिंग 6 पेंस प्रति व्यक्ति था, जिसका पूरा खर्च मृतक के मित्रों द्वारा वहन किया गया था। चूंकि बहुत कम लोग शराब से परहेज करते थे, इसलिए दिन समाप्त होने से पहले अक्सर "लड़ाई-झगड़े" होते थे; कभी-कभी इसमें "उछलना-झपटी", "आंखें निकालना" और काटना जैसी भयानक घटनाएं भी शामिल होती थीं।

हालांकि मैंने इस सदी के पहले चौथाई हिस्से में, और शायद कुछ वर्षों बाद भी, इन दृढ़ निश्चयी वेस्ट-राइडिंग निवासियों के असाधारण गुणों पर विस्तार से चर्चा की

है, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि इतने स्वतंत्र, दृढ़ निश्चयी और हास्यबोध से परिपूर्ण इन लोगों के रोजमर्रा के जीवन में आज भी बहुत कुछ ऐसा मिलेगा जो दक्षिण के स्थानीय तौर-तरीकों से अभ्यस्त लोगों को चौंका देगा; और बदले में, मुझे लगता है कि चतुर, बुद्धिमान और ऊर्जावान यॉर्कशायरवासी ऐसे "विदेशियों" को कम महत्व नहीं देंगे।

मैंने कहा है कि यह अत्यंत संभावना है कि जहाँ अब हॉवर्थ चर्च स्थित है, वहाँ कभी एक प्राचीन "फील्ड-किर्क" या प्रार्थना कक्ष रहा होगा। सैक्सन कानून के अनुसार, यह चर्च संरचनाओं की तीसरी या निम्नतम श्रेणी में आता था और इसे दफनाने या संस्कारों के संचालन का कोई अधिकार नहीं था। इसे ऐसा इसलिए कहा जाता था क्योंकि यह बिना बाड़ के बनाया गया था और आसपास के खेतों या दलदलों के लिए खुला था। एडगर के कानूनों के अनुसार, संस्थापक अपने दशमांश में से कटौती किए बिना, अपनी आय के शेष नौ भागों से सेवा करने वाले पुजारी का भरण-पोषण करने के लिए बाध्य था। सुधार के बाद, उन सभी चैपलों में, जो पहले फील्ड-किर्क हुआ करते थे, अपने पादरी को चुनने का अधिकार, पैरिश के विकर की स्वीकृति के अधीन, ज़मींदारों और न्यासियों में निहित था। लेकिन कुछ लापरवाही के कारण, आर्कबिशप शार्प के समय से ही हॉवर्थ के ज़मींदारों और न्यासियों ने यह अधिकार खो दिया है; और मंत्री चुनने का अधिकार ब्रैडफोर्ड के विकर के हाथों में चला गया है। एक विश्वसनीय स्रोत के अनुसार, यही स्थिति है।

श्री ब्रोंटे कहते हैं, — “इस पद के संरक्षक ब्रैडफोर्ड के विकर और कुछ न्यासी हैं। मेरे पूर्ववर्ती ने ब्रैडफोर्ड के विकर की सहमति से, लेकिन न्यासियों के विरोध में, यह पद ग्रहण किया था; जिसके परिणामस्वरूप उनका इतना विरोध हुआ कि केवल तीन सप्ताह के कार्यकाल के बाद ही उन्हें इस्तीफा देने के लिए विवश होना पड़ा।” यॉर्कशायर के एक सज्जन, जिन्होंने मेरी कृति के दूसरे संस्करण के प्रकाशन के बाद से इस विषय पर मुझे कुछ अतिरिक्त जानकारी भेजी है, लिखते हैं: —

हॉवर्थ के पद के लिए उम्मीदवारी का एकमात्र अधिकार ब्रैडफोर्ड के विकर के पास है। केवल वही उम्मीदवारी प्रस्तुत कर सकते हैं। हालांकि, वे निधियां जिनसे पादरी का वेतन मुख्य रूप से प्राप्त होता है, न्यासियों के हाथों में हैं, जिन्हें किसी ऐसे उम्मीदवार के भेजे जाने पर निधि रोकने का अधिकार है जिसे वे अस्वीकार करते हैं। श्री चार्नोक के निधन के बाद, विकर ने पहले श्री ब्रोंटे को पद की पेशकश की, और वे अपनी

अपेक्षित नियुक्ति के लिए चले गए। उन्हें बताया गया कि उनके प्रति उन्हें कोई व्यक्तिगत आपत्ति नहीं है; लेकिन विकर के उम्मीदवार के रूप में उन्हें स्वीकार नहीं किया जाएगा। इसलिए उन्होंने यह कहते हुए अपना नाम वापस ले लिया कि यदि वे पल्ली की स्वीकृति के बिना नहीं आ सकते, तो उनकी सेवा उपयोगी नहीं हो सकती। इस पर श्री रेडहेड को पेश करने का प्रयास किया गया।

जब श्री रेडहेड को अस्वीकार कर दिया गया, तो एक नई समस्या खड़ी हो गई। किसी को पहले सुलह की दिशा में कदम बढ़ाना था, लेकिन एक ऐसी भावना जागृत हो गई थी जिसे शांत नहीं किया जा सकता था, इसलिए कार्रवाई पेचीदा हो गई। मामले को किसी स्वतंत्र मध्यस्थ के पास भेजना पड़ा, और मेरे पिता ही वह सज्जन थे जिनकी ओर प्रत्येक पक्ष ने रुख किया। एक बैठक बुलाई गई, और विकर द्वारा न्यासियों को चुनाव का अधिकार सौंपने और विकर के प्रस्ताव को स्वीकार करने के साथ मामला सुलझ गया। यह चुनाव तुरंत श्री ब्रोंटे के पक्ष में गया, जिनकी तत्परता और बुद्धिमत्ता ने उनका दिल जीत लिया था।

वेस्ट राइडिंग के निवासियों के चरित्र के बारे में डॉ. स्कोर्सबी से बातचीत के दौरान, जो कुछ समय के लिए ब्रैडफोर्ड के विकर रह चुके थे, उन्होंने श्री रेडहेड को विकर पद सौंपे जाने के अवसर पर हॉवर्थ में हुई कुछ हिंसक घटनाओं का जिक्र किया और कहा कि उन घटनाओं से लोगों के चरित्र का इतना स्पष्ट संकेत मिलता है कि उन्होंने मुझे उनकी जांच करने की सलाह दी। मैंने तदनुसार ऐसा किया और घटना में शामिल लोगों और दर्शकों में से कुछ बचे हुए लोगों से मुझे विकर के नामित व्यक्ति को पद से हटाने के लिए अपनाए गए उपायों के बारे में पता चला।

इससे पहले श्री चार्नोक इस पद पर आसीन थे, जिनका उल्लेख मैंने श्री ग्रिमशॉ के बाद उत्तराधिकारी के रूप में किया है। वे लंबे समय से बीमार थे, जिसके कारण वे बिना सहायता के अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में असमर्थ थे। श्री रेडहेड उन्हें समय-समय पर सहायता प्रदान करते थे, जिससे पैरिश के लोग बहुत संतुष्ट थे और श्री चार्नोक के जीवनकाल में उनका बहुत सम्मान करते थे। लेकिन स्थिति पूरी तरह से तब बदल गई जब 1819 में श्री चार्नोक की मृत्यु के बाद, पैरिश के लोगों को लगा कि ब्रैडफोर्ड के विकर ने श्री रेडहेड को स्थायी सहायक नियुक्त करके न्यासियों को उनके अधिकारों से अन्यायपूर्वक वंचित कर दिया है।

जिस पहले रविवार को उन्होंने पूजा-पाठ करवाया, हॉवर्थ चर्च खचाखच भरा हुआ

था; अधिकांश लोग इलाके के प्रचलित लकड़ी के चप्पल पहने हुए थे। लेकिन जब श्री रेडहेड दूसरा पाठ पढ़ रहे थे, तभी अचानक, मानो अचानक, पूरी मंडली चर्च से बाहर निकलने लगी और अपने चप्पलों की खड़खड़ाहट और शोर मचाते हुए बाहर जाने लगी। अंत में, श्री रेडहेड और क्लर्क ही बचे रहे जो पूजा जारी रख रहे थे। यह तो काफी बुरा था, लेकिन अगले रविवार को स्थिति और भी बदतर हो गई। तब भी, पहले की तरह, चर्च खचाखच भरा हुआ था, लेकिन गलियारे खाली थे; न कोई रुकावट थी, न कोई बाधा। इसका कारण उसी समय स्पष्ट हो गया जब पिछले सप्ताह की तरह पूजा-पाठ के दौरान गड़बड़ी शुरू हुई थी। एक आदमी गधे पर सवार होकर चर्च में आया, उसका चेहरा उसकी पूंछ की ओर था, और उसने अपने सिर पर जितनी हो सके उतनी पुरानी टोपियाँ लाद रखी थीं। वह अपने जानवर को गलियारों में दौड़ाने लगा, और सभा में मौजूद लोगों की चीखें, रोना और हंसी ने मिस्टर रेडहेड की आवाज को पूरी तरह से दबा दिया, और मुझे लगता है कि उसे रुकने के लिए मजबूर होना पड़ा।

अब तक उन्होंने व्यक्तिगत हिंसा जैसी कोई हरकत नहीं की थी; लेकिन तीसरे रविवार को वे मिस्टर रेडहेड को देखकर बहुत चिढ़ गए होंगे, जो उनकी इच्छाशक्ति को चुनौती देते हुए ब्रैडफोर्ड के कुछ सज्जनों के साथ गाँव की गली में घोड़े पर सवार होकर आए थे। उन्होंने अपने घोड़े ब्लैक बुल में बाँधे - जो गिरजाघर के पास ही एक छोटा सा सराय था, जहाँ वे आराम करने के साथ-साथ अन्य कामों के लिए भी जाते थे - और चर्च में चले गए। लोग भी उनके पीछे-पीछे गए, साथ में एक चिमनी साफ करने वाला भी था, जिसे उन्होंने उसी सुबह चर्च से संबंधित कुछ बाहरी इमारतों की चिमनियाँ साफ करने के लिए रखा था, और बाद में उसे इतना पिलाया कि वह बुरी तरह नशे में धुत हो गया। उन्होंने उसे पढ़ने की मेज के ठीक सामने खड़ा कर दिया, जहाँ उसका काला पड़ा चेहरा मिस्टर रेडहेड की हर बात पर नशे में धुत्त होकर मूर्खतापूर्ण सहमति जता रहा था। अंत में, शायद किसी शरारती व्यक्ति के उकसावे पर, या नशे की किसी आवेग में, वह उपदेश मंच की सीढ़ियों पर चढ़ गया और मिस्टर रेडहेड को गले लगाने की कोशिश की। फिर अपवित्र मज़ाक तेज़ी से और उग्र हो गया। कुछ उग्र लोगों ने कालिख से सने चिमनी साफ करने वाले को श्री रेडहेड के खिलाफ धकेल दिया, जब वह भागने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने श्री रेडहेड और उनके उत्पीड़क दोनों को गिरजाघर के प्रांगण में पटक दिया, जहाँ कालिख से भरा

थैला खाली किया गया था। हालाँकि, अंततः श्री रेडहेड ब्लैक बुल में घुसने में कामयाब हो गए, जिसके दरवाजे तुरंत बंद कर दिए गए, फिर भी बाहर लोग उग्र रूप से जमा थे और उन्हें और उनके दोस्तों को पत्थर मारने की धमकी दे रहे थे। मेरे एक सूचनादाता एक बूढ़े व्यक्ति हैं, जो उस समय सराय के मालिक थे, और वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि उत्तेजित भीड़ का मिजाज इतना उग्र था कि श्री रेडहेड की जान को सचमुच खतरा था। हालाँकि, इस व्यक्ति ने अपने अलोकप्रिय मेहमानों के लिए भागने की योजना बनाई। ब्लैक बुल लंबी, खड़ी हॉवर्थ स्ट्रीट के ऊपरी सिरे के पास स्थित है, और नीचे, पुल के पास, कीघली जाने वाली सड़क पर एक टोल रोड है। अपने मेहमानों को पीछे के दरवाजे से चुपके से निकल जाने का निर्देश देते हुए (जिससे शायद कई बदमाश श्री ग्रिमशॉ के चाबुक से बच निकले होंगे), मकान मालिक और कुछ अस्तबल के लड़के ब्रैडफोर्ड से आए दल के घोड़ों पर सवार होकर उत्सुकता से इंतज़ार कर रही भीड़ के बीच अपने सामने के दरवाजे के सामने आगे-पीछे चक्कर लगाने लगे। घरों के बीच किसी खुले स्थान से घोड़ों पर सवार लोगों ने श्री रेडहेड और उनके दोस्तों को गली के पीछे दबे पांव आते देखा; और फिर, एड़ी मारकर वे तेजी से राजमार्ग की ओर भागे; वह अप्रिय पादरी और उसके दोस्त जल्दी से घोड़ों पर सवार हुए और लोगों को पता चलने से पहले ही काफी दूर निकल गए कि उनका शिकार भाग निकला है, और लोग दौड़कर बंद राजमार्ग के गेट पर आ गए।

कई वर्षों तक हॉवर्थ में श्री रेडहेड की यह आखिरी उपस्थिति थी। बहुत समय बाद, वे उपदेश देने आए और एक विशाल और ध्यानमग्न सभा को दिए अपने उपदेश में उन्होंने विनोदपूर्ण ढंग से उन परिस्थितियों की याद दिलाई जिनका मैंने वर्णन किया है। उन्होंने उनका हार्दिक स्वागत किया, क्योंकि उनके मन में उनसे कोई द्वेष नहीं था; हालाँकि इससे पहले वे अपने अधिकारों की रक्षा के लिए उन्हें पत्थर मारने को भी तैयार थे।

उपरोक्त विवरण, जो मैंने दो जीवित बचे लोगों से एक मित्र की उपस्थिति में सुना, जो मेरे द्वारा बताई गई बातों की सटीकता की पुष्टि कर सकता है, यॉर्कशायर के उस सज्जन के पत्र द्वारा कुछ हद तक पुष्ट किया गया है, जिनके शब्दों को मैं पहले ही उद्धृत कर चुका हूं।

मुझे इस बात पर आश्चर्य नहीं है कि आपको तथ्यों की प्रामाणिकता की पुष्टि करने में कठिनाई हो रही है। मुझे भी सुनी-सुनाई बातों और उनके स्रोत को याद करने में

यही कठिनाई होती है। गधे वाली कहानी के बारे में, मेरा मानना है कि आप सही हैं। श्री रेडहेड और उनके दामाद डॉ. रैम्सबोथम मेरे लिए अजनबी नहीं हैं। दोनों के लिए मेरे मन में विशेष स्थान है।

“मैंने आज उन दो व्यक्तियों से पूछा जो उस समय हॉवर्थ में रहते थे जिसका आपने उल्लेख किया है, एक कार्यवाहक न्यासी के पुत्र और पुत्री, जिनकी आयु साठ से सत्तर वर्ष के बीच है, और उन्होंने मुझे बताया कि गधे को लाया गया था। उनमें से एक का कहना है कि उस पर एक मंदबुद्धि व्यक्ति सवार था, जो जानवर की पूंछ की ओर मुंह करके बैठा था और उसके सिर पर कई टोपियाँ रखी हुई थीं। हालाँकि, मेरे दोनों सूचनादाता इन शिक्षाप्रद प्रार्थना सभाओं में उपस्थित नहीं थे। मेरा मानना है कि दोनों रविवार को चर्च में तब तक कोई हलचल नहीं हुई जब तक कि पूरी अधिकृत पाठ-सेवा संपन्न नहीं हो गई, और मुझे यकीन है कि सम्मानित लोगों के बीच श्री रेडहेड के प्रति किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत शत्रुता का कोई स्थान नहीं था। वे सबसे मिलनसार और नेक व्यक्तियों में से एक थे, एक ऐसे व्यक्ति जिनसे मेरा कई बंधनों और दायित्वों के कारण गहरा नाता था। मैंने आपकी पुस्तक से पहले कभी नहीं सुना था कि सफाईकर्मी उपदेश मंच की सीढ़ियों पर चढ़ा था। हालाँकि, वे अपने पद के पुरोहितीय वस्त्रों में उपस्थित थे... मैं यह भी जोड़ना चाहूँगा कि उनमें से उन दुखद रविवार की दावतों में मौजूद कई लोगों में से अधिकांश गैर-निवासी थे, और वे पल्ली के बाहरी इलाके में स्थित उन बंजर भूमि के दुर्गों से आए थे जिन्हें स्थानीय रूप से 'ओवर द स्टेयर्स' के रूप में नामित किया गया था, जो आधुनिक सभ्यता से हॉवर्थ से भी एक कदम अधिक दूर था।

"मैं आपको हॉवर्थ के चैपलरी के निवासियों के देहातीपन के एक-दो और उदाहरण प्रस्तुत कर सकता हूँ।"

“एक सर्दी के दिन, हॉवर्थ का एक डाकिया मेरे एक दोस्त के दफ्तर में पार्सल देने आया और दरवाजा खुला छोड़कर खड़ा हो गया। पार्सल पाने वाले ने कहा, ‘रॉबिन! दरवाजा बंद करो! क्या तुम्हारे देश में दरवाजे नहीं होते?’ रॉबिन ने जवाब दिया, ‘हाँ, हमारे यहाँ हैं, लेकिन हम उन्हें कभी नहीं तोड़ते।’ मैंने अक्सर देखा है कि सर्दियों में भी कितने दरवाजे खुले रहते हैं।”

“जब सही दिशा में निर्देशित किया जाता है, तो इस क्षेत्र के मूल निवासियों की अदम्य और स्वतंत्र ऊर्जा अमूल्य होती है; लेकिन दुरुपयोग करने पर खतरनाक हो

जाती है। मैं प्रलाप (डेलीरियम ट्रेमेन्स) से पीड़ित एक व्यक्ति के उग्र कार्यों और शब्दों को कभी नहीं भूलूंगा। चाहे क्रोध हो, तिरस्कार हो या भय, उसका चेहरा भयानक था। एक बार मैं एक अत्यंत सम्मानित किसान के घर गया, और मुझे गंभीर और सरल भाषा में उनके घर में आतिथ्य स्वीकार करने के लिए कहा गया। मैंने सहमति दे दी। मुझसे कहा गया, 'नहीं, महोदय, आपको रुकना होगा और कुछ चाय पीनी होगी, हाँ, हाँ।' जल्द ही एक भरपूर भोजन परोसा गया; खैर, समय जल्दी बीत गया जब मैं पहाड़ियों पर चढ़कर यह देखने गया कि 'तीस साल की उम्र में भी अच्छा प्रदर्शन करो, कम उम्र में नहीं।' मेज पर बैठते ही, एक आदरणीय महिला ने कार्यभार संभाला, और प्याले भरने के बाद, उन्होंने इस प्रकार संबोधित किया। मैंने कहा: 'नाह, माएस्टर, याह मुन लोएज़ थ'टेबल' (टेबल को ढीला करो)।' मास्टर ने कहा, 'शाह मीन्स याह मुन से ट' ग्रेसी।' मैं इशारा समझ गया और मैंने प्रार्थना की।

"एक बार मेरी एक वृद्ध और थकी-हारी महिला से बात हुई, जिसने अपनी कृपाओं का वर्णन करने के बाद, अन्य बातों के साथ-साथ, अपनी बोलने की क्षमता का भी उल्लेख करते हुए कहा, 'भगवान का शुक्र है, मैं कभी भी कमज़ोर मुँह वाली औरत नहीं रही।' मुझे इस बोली की वर्तनी में गलती महसूस हो रही है, लेकिन मुझे यह कहकर खुद को क्षमा करना होगा कि मैंने एक बार एक पत्र देखा था जिसमें मैंने अभी जिस शब्द का प्रयोग किया है (क्षमा करें) उसे 'एक्सक्वेइज़!' लिखा गया था।"

"हालाँकि, कुछ ऐसी बातें भी हैं जो हॉवर्थ की रूखेपन की धारणा को कुछ हद तक नरम कर देती हैं। कोई भी ग्रामीण क्षेत्र संगीत की समझ और ज्ञान के मामले में हॉवर्थ जितना समृद्ध नहीं रहा है, और यह उस दौर की बात है जब उन्नत शहरों के अलावा इस तरह के ज्ञान और प्रतिभा को खोजना मुश्किल था। मैं हॉवर्थ गया और वहाँ मुझे स्थानीय कलाकारों से भरा एक ऑर्केस्ट्रा मिला, जिनमें गायक और वादक दोनों शामिल थे। उन्हें हैंडल, हेडन, मोजार्ट, मार्सेलो आदि की सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ घर-घर में परिचित थीं। ज्ञान, रुचि और गायन के मामले में वे साधारण गाँव के गायन समूहों से बिल्कुल अलग थे, और कई भव्य समारोहों में एकल और गायन प्रस्तुतियों के लिए उनकी व्यापक रूप से मांग की गई थी। एक व्यक्ति अभी भी जीवित है, जिसकी पचास वर्षों से मैंने अब तक सुनी सबसे बेहतरीन टेनर आवाजों में से एक है, और साथ ही उसकी रुचि भी परिष्कृत और सुसंस्कृत है। उसे और अन्य लोगों को पलायन करने के लिए कई प्रलोभन दिए गए; लेकिन बुनाई का काम, संगति और पहाड़ों की

हवा ने उन्हें घर पर ही रहने के लिए पर्याप्त आकर्षण प्रदान किया। मुझे यह बहुत पसंद है। उनके प्रदर्शन की यादें; ये यादें साठ वर्षों से भी अधिक समय तक ताज़ा हैं। इस क्षेत्र के लोगों के बीच लगाव, दुश्मनी और आतिथ्य सत्कार प्रबल, हार्दिक और सहज हैं। हर किसी में आत्मीयता प्रमुख विशेषता है। जहाँ तक मैं जानता हूँ, ये पर्वतीय लोग हमेशा से ही कोमलता और सच्चाई के प्रति संवेदनशील रहे हैं; लेकिन संदेह या आक्रोश पैदा करने पर वे दृढ़ और प्रभावी प्रतिरोध करते हैं। वे किसी भी दबाव का डटकर सामना करते हैं।

"ब्रैडफोर्ड के विकरेज का पदभार संभालने के बाद श्री हीप की हॉवर्थ की पहली यात्रा में मैं उनके साथ गया था। यह ईस्टर का दिन था, या तो 1816 या 1817 का। उनके पूर्ववर्ती, आदरणीय जॉन क्रॉस, जिन्हें 'अंधे विकर' के नाम से जाना जाता था, विकरेज संबंधी दावों पर ध्यान नहीं दे रहे थे। एक गहन जांच-पड़ताल करनी पड़ी और उसे लागू भी किया गया, और जैसे-जैसे यह आगे बढ़ी, पैरिशवासियों की ओर से जोरदार और दृढ़ बयानबाजी की कमी नहीं रही। एक दर्शक के लिए, हालांकि वे असभ्य थे, लेकिन मनोरंजक और अर्थपूर्ण थे, जो इस बात का पूर्वाभास दे रहे थे कि एक नए पादरी के आगमन पर क्या उम्मीद की जा सकती है, और बाद में क्या हुआ, यदि वे उसे घुसपैठिया मानते।

अपनी विशिष्ट स्थानीय स्थिति और परिस्थितियों के कारण, चैपलरी के निवासी चर्च-करों के विरोध में तत्पर, गंभीर और दृढ़ रहे हैं। मुख्य चर्च से दस मील दूर होने के बावजूद, उन्हें इस अप्रिय कर का एक बड़ा हिस्सा, मेरा मानना है कि एक-पांचवां हिस्सा, वहन करना पड़ा।

इसके अलावा, उन्हें अपनी इमारत आदि का रखरखाव भी करना पड़ता था। इसलिए, उन्होंने उस हर चीज़ का ज़ोरदार विरोध किया जिसे वे उत्पीड़न और अन्याय मानते थे। सैकड़ों की संख्या में वे पहाड़ियों से ब्रैडफोर्ड में आयोजित होने वाली चर्च की सभा में शामिल होने के लिए जाते थे, और इस सेवा में उन्होंने विनम्रता और दृढ़ता दोनों का परिचय दिया। सौभाग्य से, कई वर्षों से ऐसी कोई घटना नहीं हुई है।

"इस इलाके में पिता के नाम से नाम पुकारने का चलन आम है। अगर आप किसी व्यक्ति को उसके पहले नाम और उपनाम से पुकारें, तो उसे ढूंढने में थोड़ी मुश्किल हो सकती है; लेकिन अगर आप 'जॉर्ज ओ' नेड', 'डिक ओ' बॉब' या 'टॉम ओ' जैक' के नाम से पूछें, तो आपकी परेशानी दूर हो जाएगी। कई मामलों में व्यक्ति को उसके

निवास स्थान से पहचाना जाता है। अपने शुरुआती दिनों में मुझे जोनाथन व्हिटेकर के बारे में पूछना पड़ा, जिनके पास कस्बे में एक बड़ा खेत था। मुझे इधर-उधर भटकाया गया, जब तक कि मुझे 'जोनाथन ओ' द गेट' के नाम से पूछने का ख्याल नहीं आया। तब मेरी मुश्किलें खत्म हो गईं। ऐसी परिस्थितियाँ यहाँ के मूल निवासियों के बसे हुए स्वभाव और एकांत के कारण उत्पन्न होती हैं।”

“जिन लोगों ने हॉवर्थ में ऐसी शादियाँ देखी हैं जिनमें दूल्हा-दुल्हन मजदूर वर्ग से ऊपर के होते थे, वे उस दृश्य को आसानी से नहीं भूलेंगे। आस-पास के घोड़ों पर चंदा इकट्ठा किया जाता था, और घुड़सवार पुरुषों और महिलाओं का एक आनंदमय जुलूस, चाहे अकेले हों या जोड़े में, ब्रैडफोर्ड चर्च की ओर जाता था। सराय और चर्च का आपस में स्वाभाविक संबंध प्रतीत होता था, और चूंकि उस समय संयम समिति के कार्य शुरू होने वाले थे, इसलिए संयम के हितों का हमेशा ध्यान नहीं रखा जाता था। अपने घोड़ों पर सवार होते ही वे दौड़ शुरू कर देते थे, और अक्सर कोई नशे में धुत या अकुशल घुड़सवार दौड़ से बाहर हो जाता था। इन शादी-विवाह यात्राओं के अंत में भी अक्सर दौड़ होती थी, पुल से हॉवर्थ के टोल-बार तक। आप जानते ही होंगे कि दौड़ का मैदान बिल्कुल समतल नहीं होता था।”

इस अराजक, फिर भी निर्दयी न होने वाली आबादी के बीच, श्री ब्रोंटे फरवरी 1820 में अपनी पत्नी और छह छोटे बच्चों को लेकर आए। अभी भी कुछ लोग जीवित हैं जिन्हें याद है कि सात भारी-भरकम गाड़ियाँ धीरे-धीरे लंबी पत्थर की सड़क पर चल रही थीं, जिनमें "नए पादरी" का घरेलू सामान उनके भावी निवास स्थान तक ले जाया जा रहा था।

यह सोचकर आश्चर्य होता है कि उनके नए घर का निराशाजनक स्वरूप - एक नीचा, आयताकार, पत्थर का बना पादरी का घर, जो काफी ऊंचाई पर स्थित था, लेकिन जिसके पीछे विशाल बंजर भूमि का और भी ऊंचा नजारा था - उस कोमल, नाजुक पत्नी पर कैसा प्रभाव पड़ा होगा, जिसका स्वास्थ्य उस समय भी बिगड़ रहा था।

अध्याय III

रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे आयरलैंड के काउंटी डाउन के मूल निवासी हैं। उनके पिता ह्यू ब्रोंटे कम उम्र में ही अनाथ हो गए थे। वे द्वीप के दक्षिण से उत्तर की ओर आए और लॉघब्रिकलैंड के पास अहाडेर्ग के पल्ली में बस गए। परिवार में यह मान्यता थी कि ह्यू ब्रोंटे की आर्थिक स्थिति साधारण होने के बावजूद, वे एक प्राचीन परिवार के वंशज थे। लेकिन इस बारे में न तो उन्होंने और न ही उनके वंशजों ने कभी पूछताछ की। उन्होंने कम उम्र में ही शादी कर ली और अपनी खेती की कुछ एकड़ जमीन से होने वाली आय से दस बच्चों का पालन-पोषण और शिक्षा प्रदान की। यह बड़ा परिवार शारीरिक शक्ति और सुंदरता के लिए प्रसिद्ध था। बुढ़ापे में भी, श्री ब्रोंटे एक आकर्षक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं, जिनकी लंबाई सामान्य से अधिक है, उनका सिर सुडौल है और वे सीधे खड़े रहते हैं। अपनी जवानी में वे असाधारण रूप से सुंदर रहे होंगे।

उनका जन्म 17 मार्च, 1777 को पैट्रिकमास दिवस के दिन हुआ था और उन्होंने बचपन से ही असाधारण बुद्धिमत्ता और तेज बुद्धि के लक्षण दिखाए। उनमें महत्वाकांक्षा भी भरपूर थी; और उनकी दूरदर्शिता और सूझबूझ का प्रमाण इस तथ्य में मिलता है कि यह जानते हुए कि उनके पिता उन्हें आर्थिक सहायता नहीं दे सकते और उन्हें अपने दम पर ही आगे बढ़ना होगा, उन्होंने सोलह वर्ष की कम उम्र में ही एक सार्वजनिक विद्यालय खोल लिया; और इस जीवन शैली को उन्होंने पाँच-छह वर्षों तक जारी रखा। इसके बाद वे ड्रमगूलैंड पल्ली के रेक्टर, रेवरेंड श्री टिघे के परिवार में शिक्षक बन गए। वहाँ से वे सेंट जॉन कॉलेज, कैम्ब्रिज गए, जहाँ जुलाई 1802 में उनका प्रवेश हुआ, उस समय उनकी आयु पच्चीस वर्ष थी। लगभग चार वर्षों के निवास के बाद, उन्होंने बी.ए. की उपाधि प्राप्त की और एसेक्स में एक पादरी के रूप में नियुक्त हुए, जहाँ से वे यॉर्कशायर चले गए। जिस जीवन-यात्रा का यह संक्षिप्त विवरण है, वह एक सशक्त और असाधारण व्यक्तित्व को दर्शाती है, जो दृढ़ निश्चय और स्वतंत्रता के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति करता है। यहाँ एक सोलह वर्षीय युवक अपने परिवार से अलग होकर आत्मनिर्भर बनने का निश्चय करता है; और वह भी

पारंपरिक कृषि कार्यों से नहीं, बल्कि अपनी बुद्धि के बल पर।

मैंने जो सुना है, उससे मुझे लगता है कि श्री टाइघे अपने बच्चों के शिक्षक में गहरी रुचि रखने लगे थे और शायद उन्होंने न केवल उनकी पढ़ाई में मार्गदर्शन किया, बल्कि उन्हें अंग्रेजी विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का सुझाव भी दिया और वहाँ प्रवेश पाने के तरीके के बारे में सलाह भी दी। श्री ब्रोंटे के लहजे में अब उनके आयरिश मूल का कोई अंश नहीं बचा है; उनके चेहरे की सीधी ग्रीक रेखाओं और लंबे अंडाकार आकार से उनके सेल्टिक वंश का पता कभी नहीं चल सकता था; लेकिन पच्चीस वर्ष की आयु में, अपने जीवन के एकमात्र अनुभव से बाहर निकलकर, सेंट जॉन के द्वार पर उपस्थित होना दृढ़ संकल्प और उपहास की अवहेलना का प्रमाण था।

कैम्ब्रिज में अध्ययन के दौरान, वे स्वयंसेवकों के एक दल में शामिल हो गए, जिन्हें उस समय फ्रांसीसियों द्वारा संभावित आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए पूरे देश में बुलाया जा रहा था। मैंने उन्हें हाल के वर्षों में लॉर्ड पामर्स्टन का जिक्र करते हुए सुना है, जो उस समय उनके साथ उन नकली सैन्य कर्तव्यों को निभाने में अक्सर शामिल होते थे।

अब हम उन्हें यॉर्कशायर के हार्ट्सहेड में एक पादरी के रूप में बसे हुए पाते हैं - जो उनके जन्मस्थान और उनके सभी आयरिश संबंधों से बहुत दूर है; जिनके साथ, वास्तव में, उन्होंने किसी भी प्रकार का संपर्क बनाए रखने की परवाह नहीं की, और मेरा मानना है कि कैम्ब्रिज में छात्र बनने के बाद उन्होंने कभी भी उनसे मुलाकात नहीं की।

हार्ट्सहेड हडर्सफ़ील्ड और हैलिफ़ैक्स के पूर्व में स्थित एक बहुत छोटा गाँव है; और अपनी ऊँची स्थिति से — मानो एक टीले पर बसा हो, जो एक गोलाकार घाटी से घिरा हो — यहाँ से एक शानदार दृश्य दिखाई देता है। श्री ब्रोंटे यहाँ पाँच वर्षों तक रहे; और हार्ट्सहेड के पादरी रहते हुए उन्होंने मारिया ब्रैनवेल से प्रेम निवेदन किया और उनसे विवाह किया।

वह पेनज़ेंस के व्यापारी श्री थॉमस ब्रैनवेल की तीसरी पुत्री थीं। उनकी माता का मायके का नाम कार्ने था। ब्रैनवेल परिवार अपने पिता और माता दोनों की ओर से इतना समृद्ध था कि वे पेनज़ेंस के उस समय के उच्च समाज में घुलमिल सकते थे। श्री और श्रीमती ब्रैनवेल अपने चार पुत्रियों और एक पुत्र (जो अभी बच्चे ही थे) के साथ उस आदिम सामाजिक परिवेश में रह रहे थे, जिसका वर्णन डॉ. डेवी ने अपने भाई के

जीवन में बखूबी किया है।

"उसी कस्बे में, जब जनसंख्या लगभग 2,000 व्यक्ति थी, तब केवल एक ही कालीन था, कमरों के फर्श पर समुद्र की रेत बिछी हुई थी, और एक भी चांदी का कांटा नहीं था।"

उस समय, जब हमारे औपनिवेशिक क्षेत्र बहुत सीमित थे, हमारी सेना और नौसेना छोटे पैमाने पर थीं, और बौद्धिक क्षमता की मांग अपेक्षाकृत कम थी, तो सज्जनों के छोटे बेटों को अक्सर मजबूरीवश किसी ऐसे व्यापार या यांत्रिक कला में प्रशिक्षित किया जाता था, जिससे कोई बदनामी या सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी न हो। यदि सबसे बड़े बेटे को आलसी जमींदार बनकर रहने की अनुमति नहीं दी जाती थी, तो उसे ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज भेजा जाता था, ताकि वह धर्मशास्त्र, कानून या चिकित्सा जैसे तीन उदार व्यवसायों में से किसी एक को अपना सके; दूसरे बेटे को शायद किसी सर्जन, औषध विक्रेता या वकील के पास प्रशिक्षु के रूप में भेजा जाता था; तीसरे को किसी पीतल के कारीगर या घड़ीसाज के पास; चौथे को किसी पैकर या मर्सर के पास, और इसी तरह आगे भी, यदि और भी बच्चे होते तो उन्हें प्रशिक्षु के रूप में भेजा जाता था।

अपनी प्रशिक्षण अवधि पूरी करने के बाद, युवक लगभग हमेशा अपने-अपने व्यापार या कला में निपुणता प्राप्त करने के लिए लंदन जाते थे; और देश लौटने पर, जब वे व्यवसाय में स्थापित हो जाते थे, तो वे आज के सभ्य समाज से अलग नहीं होते थे। उस समय मिलने-जुलने का तरीका आज के मुकाबले अलग था। वार्षिक उत्सवों को छोड़कर, रात्रिभोज पार्टियाँ लगभग न के बराबर होती थीं। क्रिसमस भी उस समय विशेष आनंद और सौहार्द का मौसम होता था, और चाय और रात्रिभोज सहित मनोरंजन का एक दौर आयोजित किया जाता था। इन दो अवसरों को छोड़कर, मिलना-जुलना लगभग पूरी तरह से चाय पार्टियों तक ही सीमित था, जो तीन बजे शुरू होती थीं और नौ बजे समाप्त होती थीं, और शाम का मनोरंजन आमतौर पर ताश के खेल होते थे, जैसे पोप जोन या कॉमर्स। निम्न वर्ग उस समय अत्यंत अज्ञानी था, और सभी वर्ग बहुत अंधविश्वासी थे; यहाँ तक कि चुड़ैलों में विश्वास भी कायम था, और अलौकिक और राक्षसी चीजों के प्रति लगभग असीमित अंधविश्वास था। उस समय शायद ही कोई ऐसा पल्ली था जहाँ माउंट्स बे में ऐसा कोई भूतिया घर नहीं था, या ऐसी कोई जगह नहीं थी जहाँ किसी अलौकिक डरावनी कहानी का जिक्र न हो। मुझे

याद है जब मैं छोटा था, पेनज़ेंस की सबसे अच्छी गली में एक घर था जो भूतिया माने जाने के कारण खाली पड़ा था, और जिसके पास से युवा रात में तेज़ कदमों से धड़कते दिल के साथ गुजरते थे। मध्यम और उच्च वर्गों में साहित्य के प्रति बहुत कम रुचि थी, और विज्ञान के प्रति तो और भी कम, और उनके शौक शायद ही कभी गरिमापूर्ण या बौद्धिक प्रकार के होते थे। शिकार, निशानेबाजी, कुश्ती, मुर्गा लड़ाई, जो आम तौर पर शराब पीने में समाप्त होती थी, उनके सबसे पसंदीदा शौक थे। तस्करी बड़े पैमाने पर होती थी; और शराबखोरी और निम्न नैतिक स्तर स्वाभाविक रूप से इससे जुड़े हुए थे। जहाँ तस्करी साहसी और लापरवाह लोगों के लिए धन अर्जित करने का साधन थी, वहीं शराबखोरी और अय्याशी ने कई सम्मानित परिवारों को बर्बाद कर दिया।

मैंने यह अंश इसलिए दिया है क्योंकि मुझे लगता है कि इसका मिस ब्रोंटे के जीवन से कुछ संबंध है। उनके दृढ़ निश्चय और जीवंत कल्पनाशीलता पर प्रारंभिक प्रभाव या तो नौकरों (उस साधारण घर में, जो दिन के अधिकांश समय लगभग मित्रवत साथी थे) से पड़ा होगा, जो हॉवर्थ गाँव की परंपराओं या समाचारों को सुनाते थे; या श्री ब्रोंटे से, जिनका अपने बच्चों के साथ संपर्क काफी संयमित रहा होगा और जिनका जीवन, आयरलैंड और कैम्ब्रिज दोनों जगह, विशिष्ट परिस्थितियों में बीता था; या उनकी चाची, मिस ब्रैनवेल से, जो शार्लोट के छह या सात वर्ष की आयु में, अपनी मृत बहन के परिवार की देखभाल करने के लिए पादरी के घर आई थीं। ये चाची श्रीमती ब्रोंटे से बड़ी थीं और डॉ. डेवी द्वारा वर्णित पेनज़ेंस समाज में अधिक समय तक रहीं थीं। लेकिन ब्रैनवेल परिवार में हिंसा और अनियमितता का कोई नामोनिशान नहीं था। वे मेथोडिस्ट थे और जहाँ तक मुझे पता है, उनकी सौम्य और सच्ची धार्मिकता ने उनके चरित्र को परिष्कार और पवित्रता प्रदान की। उनके वंशजों के अनुसार, श्री ब्रैनवेल, जो पिता थे, संगीत प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने और उनकी पत्नी ने अपने सभी बच्चों को वयस्क होते देखा और एक वर्ष के अंतराल में ही उनका निधन हो गया - उनका 1808 में और उनकी पत्नी का 1809 में, जब उनकी बेटी मारिया पच्चीस या छब्बीस वर्ष की थीं। मुझे नौ पत्रों की एक श्रृंखला देखने की अनुमति मिली है, जो उन्होंने 1812 में अपनी सगाई की संक्षिप्त अवधि के दौरान श्री ब्रोंटे को लिखे थे। ये पत्र कोमल भावों और नारीत्व की विनम्रता से परिपूर्ण हैं; इनमें उस गहरी धार्मिकता की झलक मिलती है जिसका मैंने पारिवारिक विशेषता के रूप में उल्लेख किया है। मैं

उनमें से एक-दो अंश प्रस्तुत करूँगा, ताकि यह दिखाया जा सके कि शार्लोट ब्रोंटे की माता किस प्रकार की व्यक्तित्व थीं: लेकिन पहले, मुझे उन परिस्थितियों का वर्णन करना होगा जिनके अंतर्गत कॉर्निश महिला की मुलाकात लॉघब्रिकलैंड के पास अहाडेर्ग के विद्वान से हुई। सन् 1812 की गर्मियों की शुरुआत में, जब वह उनतीस वर्ष की होने वाली थीं, वह अपने चाचा, रेवरेंड जॉन फेनेल से मिलने आईं, जो उस समय चर्च ऑफ इंग्लैंड के पादरी थे और लीड्स के पास रहते थे, लेकिन इससे पहले मेथोडिस्ट पादरी रह चुके थे। श्री ब्रोंटे हार्ट्सहेड के पादरी थे; और आस-पड़ोस में उनकी यह प्रतिष्ठा थी कि वे बेहद आकर्षक, आयरिश उत्साह से भरे हुए और आयरिश लोगों की तरह आसानी से प्यार में पड़ने वाले व्यक्ति थे। मिस ब्रैनवेल कद में बेहद छोटी थीं; सुंदर तो नहीं, लेकिन बेहद शालीन और हमेशा सादगीपूर्ण ढंग से सजी-धजी रहती थीं, जो उनके व्यक्तित्व के अनुरूप था, और उनके कुछ पहनावे उनकी बेटी द्वारा अपनी पसंदीदा नायिकाओं के लिए पसंद की जाने वाली पोशाक शैली की याद दिलाते थे। श्री ब्रोंटे जल्द ही उस छोटी, सौम्य महिला से मोहित हो गए, और इस बार उन्होंने जीवन भर के लिए शादी का वादा कर दिया। 26 अगस्त को लिखे अपने पहले पत्र में, वह अपनी सगाई को लेकर लगभग आश्चर्यचकित प्रतीत होती हैं, और उन्होंने अपने थोड़े से परिचय का जिक्र किया है। बाकी हिस्सों में जूलियट की याद दिलाने वाले कुछ अंश मौजूद हैं।

लेकिन यकीन मानिए, सज्जन, मैं उन लोगों से कहीं अधिक सच्चा साबित होऊंगा, जो अजीब होने में अधिक चालाक हैं।

सितंबर के सुहावने दिनों में किर्कस्टॉल एबे में पिकनिक मनाने की योजना थी, जिसमें "चाचा, चाची और चचेरी बहन जेन" (जिनमें से जेन की सगाई एक अन्य पादरी श्री मॉर्गन से हुई थी) भी शामिल थे; श्री ब्रोंटे को छोड़कर सभी अब इस दुनिया में नहीं हैं। उनकी सगाई का उनके किसी भी दोस्त ने विरोध नहीं किया। श्री और श्रीमती फेनेल ने इसे मंजूरी दे दी, और दूर पेनज़ेंस में रहने वाले उनके भाई-बहनों ने भी इसे पूरी तरह से स्वीकार कर लिया। 18 सितंबर के एक पत्र में, वह कहती हैं: —

“कुछ वर्षों से मैं पूरी तरह से अपनी मर्ज़ी की मालिक रही हूँ, किसी के नियंत्रण में नहीं रही; बल्कि इसके विपरीत, मेरी बहनें, जो मुझसे कई साल बड़ी हैं, और यहाँ तक कि मेरी प्यारी माँ भी हर महत्वपूर्ण अवसर पर मुझसे सलाह लेती थीं और मेरे विचारों

और कार्यों की उपयुक्तता पर शायद ही कभी संदेह करती थीं: शायद आप इसे बताने पर मुझे घमंडी कहेंगे, लेकिन आपको यह समझना होगा कि मैं इस पर गर्व नहीं करती। मैंने कई बार इसे एक कमी के रूप में महसूस किया है, और यद्यपि, ईश्वर का धन्यवाद, इसने मुझे कभी गलती करने के लिए प्रेरित नहीं किया, फिर भी, अनिश्चितता और संदेह की परिस्थितियों में, मैंने एक मार्गदर्शक और प्रशिक्षक की कमी को गहराई से महसूस किया है।" उसी पत्र में वह श्री ब्रोंटे को बताती हैं कि उन्होंने अपनी बहनों को अपनी सगाई के बारे में सूचित कर दिया है, और वह उनसे अपनी योजना के अनुसार जल्द ही नहीं मिल पाएंगी। उनके चाचा श्री फेनेल भी उसी डाक से उन्हें श्री ब्रोंटे की प्रशंसा में पत्र लिखते हैं।

उन दिनों पेनज़ेंस से लीड्स तक की यात्रा बहुत लंबी और बहुत खर्चीली होती थी; प्रेमियों के पास अनावश्यक यात्रा पर खर्च करने के लिए ज़्यादा पैसे नहीं थे, और चूंकि मिस ब्रैनवेल के न तो माताजी जीवित थे, इसलिए उनके चाचा के घर से शादी करना एक विवेकपूर्ण और उचित व्यवस्था प्रतीत हुई। सगाई को लंबा खींचने का भी कोई कारण नहीं था। वे अपनी जवानी पार कर चुके थे; उनकी साधारण ज़रूरतों के लिए उनके पास पर्याप्त साधन थे; हार्ट्सहेड की जागीर का वार्षिक वेतन पादरी सूची में 202 पाउंड बताया गया है, और उन्हें अपने पिता की वसीयत से एक छोटी वार्षिक पेंशन (मुझे बताया गया है कि 50 पाउंड) मिल रही थी। इसलिए, सितंबर के अंत में, प्रेमियों ने घर लेने के बारे में बात करना शुरू कर दिया, क्योंकि मेरा मानना है कि उस समय तक श्री ब्रोंटे किराए के मकान में रह रहे थे; और आगामी सर्दियों में उनकी शादी की योजना नवंबर तक सुचारू रूप से और सफलतापूर्वक चलती रही, जब एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी, जिसका उन्होंने धैर्यपूर्वक और सुंदर ढंग से वर्णन किया है: —

मुझे लगता है कि आपने मुझसे इतनी दौलत की उम्मीद नहीं की होगी, लेकिन मुझे आपको यह बताते हुए दुख हो रहा है कि मैं अब भी अपनी सोच से कहीं ज़्यादा गरीब हूँ। मैंने अपनी किताबें, कपड़े वगैरह मंगवाने का ज़िक्र किया था। शनिवार शाम को, लगभग उसी समय जब आप अपने काल्पनिक जहाज़ डूबने की कहानी लिख रहे थे, मैं एक असली जहाज़ डूबने की घटना को पढ़ और महसूस कर रहा था। तभी मुझे अपनी बहन का एक पत्र मिला जिसमें उसने बताया कि जिस जहाज़ में उसने मेरा बक्सा भेजा था, वह डेवनशायर के तट पर फँस गया है, जिसके कारण बक्सा समुद्र की तेज़ लहरों से चकनाचूर हो गया और मेरी थोड़ी-बहुत संपत्ति, कुछ ही चीज़ों को

छोड़कर, गहरे समुद्र में समा गई। अगर यह किसी और बुरी घटना की शुरुआत नहीं है, तो मैं इसे ज़्यादा गंभीरता से नहीं लूँगा, क्योंकि घर छोड़ने के बाद यह पहली विपत्ति है।

इन पत्रों में से आखिरी पत्र 5 दिसंबर का है। मिस ब्रैनवेल और उनकी चचेरी बहन अगले सप्ताह शादी का केक बनाने की तैयारी में जुटी थीं, इसलिए शादी नजदीक ही थी। वह श्री ब्रोंटे द्वारा रचित एक सुंदर भजन को कंठस्थ कर रही थीं; और लॉर्ड लिट्टेलटन की पुस्तक "एडवाइस टू अ लेडी" पढ़ रही थीं, जिस पर उन्होंने कुछ सटीक और उचित टिप्पणियां की हैं, जिससे पता चलता है कि वह पढ़ने के साथ-साथ सोचती भी थीं। और इस तरह मारिया ब्रैनवेल का जीवन धीरे-धीरे लुप्त हो जाता है; उनसे हमारा कोई सीधा संपर्क नहीं रहता; हम उनके बारे में श्रीमती ब्रोंटे के रूप में सुनते हैं, लेकिन एक बीमार महिला के रूप में, जो मृत्यु के करीब थीं; फिर भी धैर्यवान, हंसमुख और धर्मपरायण। इन पत्रों की लिखावट सुरुचिपूर्ण और सुस्पष्ट है; इनमें घरेलू कामों का जिक्र है - जैसे शादी का केक बनाना - साथ ही उन पुस्तकों का भी जिक्र है जो उन्होंने पढ़ी हैं या पढ़ रही हैं, जो उनके सुसंस्कृत मन को दर्शाती हैं। अपनी बेटी की तरह असाधारण प्रतिभा न होने के बावजूद, श्रीमती ब्रोंटे, मेरी कल्पना में, एक असाधारण व्यक्तित्व वाली, संतुलित और सुसंगत महिला रही होंगी। पत्रों की शैली सहज और सुंदर है; इसी प्रकार, उन्हीं के द्वारा लिखित एक लेख, जिसका शीर्षक है "धार्मिक मामलों में गरीबी के लाभ", जो कुछ समय बाद किसी पत्रिका में प्रकाशन के उद्देश्य से लिखा गया था, की शैली भी सहज और सुंदर है।

उनकी शादी 29 दिसंबर, 1812 को यॉर्कशायर में उनके चाचा के घर से हुई थी; उसी दिन उनकी छोटी बहन, शार्लोट ब्रैनवेल की शादी भी दूर पेनज़ेंस में हुई थी। मुझे नहीं लगता कि श्रीमती ब्रोंटे कभी कॉर्नवाल लौटी थीं, लेकिन उन्होंने अपने जीवित रिश्तेदारों के मन पर एक बहुत ही सुखद छाप छोड़ी है; वे उन्हें "अपनी प्रिय चाची" और "एक ऐसी शख्सियत" के रूप में याद करते हैं, जिनकी वे और पूरा परिवार बहुत इज्जत करता था, क्योंकि वे प्रतिभावान और बेहद मिलनसार स्वभाव की थीं; और साथ ही, "विनम्र और शांत स्वभाव की थीं, जबकि उनमें अपने पिता से विरासत में मिली असाधारण प्रतिभाएं थीं, और उनकी धार्मिकता सच्ची और सहज थी।"

श्री ब्रोंटे पांच वर्षों तक ड्यूसबरी पैरिश के हार्ट्सहेड में रहे। वहीं उनका विवाह हुआ और उनकी दो बेटियाँ, मारिया और एलिजाबेथ, पैदा हुईं। उस अवधि के बाद, उन्हें

ब्रैडफोर्ड पैरिश के थॉर्नटन का पदभार सौंपा गया। वेस्ट राइडिंग के कुछ बड़े पैरिश अपनी जनसंख्या और चर्चों की संख्या के कारण लगभग बिशप के पद के समान हैं। थॉर्नटन चर्च एक छोटा सा बिशप चैपल है, जिसमें नॉनकॉन्फॉर्मिस्ट स्मारकों की भरमार है, जैसे कि एक्सेप्टेड लिस्टर और उनके मित्र डॉ. हॉल के स्मारक। आसपास का इलाका सुनसान और जंगली है; पत्थर की दीवारों से घिरी बंजर भूमि के बड़े-बड़े हिस्से क्लेटन हाइट्स तक फैले हुए हैं। चर्च स्वयं प्राचीन और एकांत प्रतीत होता है, मानो किसी समृद्ध इंडिपेंडेंट फर्म की बड़ी पत्थर की चक्कियों और उस संप्रदाय के सदस्यों द्वारा निर्मित ठोस वर्गाकार चैपल के पीछे छूट गया हो। कुल मिलाकर, हार्ट्सहेड जितनी सुखद जगह नहीं है, जहाँ बादलों से ढके, धूप से जगमगाते मैदान का विस्तृत दृश्य दिखाई देता है, और दूर क्षितिज का निर्माण करने वाली पहाड़ियाँ एक के बाद एक उठती रहती हैं।

थॉर्नटन में, शार्लोट ब्रोंटे का जन्म 21 अप्रैल, 1816 को हुआ था। उनके तुरंत बाद पैट्रिक ब्रैनवेल, एमिली जेन और ऐनी का जन्म हुआ। अपनी इस आखिरी बेटी के जन्म के बाद, श्रीमती ब्रोंटे का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। सीमित साधनों के बीच कई छोटे बच्चों की छोटी-छोटी ज़रूरतों को पूरा करना कठिन काम है। भोजन और वस्त्र जैसी आवश्यक वस्तुएँ तो आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं, लेकिन देखभाल, स्नेह, मनोरंजन और सहानुभूति जैसी लगभग समान रूप से आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध नहीं हो पातीं। छह बच्चों में सबसे बड़ी मारिया ब्रोंटे, जब श्री ब्रोंटे 25 फरवरी, 1820 को हॉवर्थ चले गए, तब उनकी उम्र छह साल से कुछ ही अधिक रही होगी। जो लोग उन्हें उस समय जानते थे, वे उन्हें अपनी उम्र से कहीं अधिक गंभीर, विचारशील और शांत स्वभाव की बताते हैं। उनका बचपन, बचपन जैसा नहीं था; ऐसे मामले दुर्लभ हैं जिनमें महान प्रतिभाओं के धनी लोगों ने उस लापरवाह, खुशहाल समय का आनंद लिया हो। उनकी असाधारण शक्तियां उनके भीतर जागृत हो उठती हैं, और धारणा के प्राकृतिक जीवन - जिसे जर्मन लोग वस्तुनिष्ठ कहते हैं - के बजाय वे चिंतन के गहरे जीवन - व्यक्तिपरक जीवन - की शुरुआत करते हैं।

छोटी मारिया ब्रोंटे दिखने में नाज़ुक और छोटी थीं, जिससे उनकी असाधारण बुद्धि और भी अधिक प्रभावशाली लगती थी। श्री ब्रोंटे अपने अध्ययन में काफी व्यस्त रहते थे, इसलिए वे घर के कामों और पालन-पोषण के अनुभवों में अपनी माँ की साथी और सहायक रही होंगी। इसके अलावा, उन्हें स्वभाव से बच्चे पसंद नहीं थे और उन्हें

लगता था कि बच्चों का बार-बार आना उनकी पत्नी की ऊर्जा पर बोझ डालता है और घर के आराम में खलल डालता है।

हॉवर्थ पार्सनेज—जैसा कि मैंने पहले अध्याय में बताया था—एक आयताकार पत्थर का मकान है, जो उस पहाड़ी की ओर मुख किए हुए है जिस पर गाँव बसा है, और इसका मुख्य द्वार चर्च के पश्चिमी द्वार के ठीक सामने है, जो लगभग सौ गज की दूरी पर स्थित है। इस जगह का लगभग बीस गज का हिस्सा घास के बगीचे से घिरा है, जो मकान से मुश्किल से ही चौड़ा है। कब्रिस्तान मकान और बगीचे के दो तरफ स्थित है। मकान में प्रत्येक मंजिल पर चार कमरे हैं और यह दो मंजिला है। जब ब्रोंटे परिवार ने इस पर कब्जा किया, तो उन्होंने प्रवेश द्वार के बाईं ओर स्थित बड़े बैठक कक्ष को पारिवारिक बैठक कक्ष बना दिया, जबकि दाईं ओर के बैठक कक्ष को श्री ब्रोंटे ने अध्ययन कक्ष के रूप में इस्तेमाल किया। इसके पीछे रसोईघर था; इसके पीछे एक प्रकार का पत्थर का भंडार कक्ष था। ऊपरी मंजिल पर लगभग समान आकार के चार शयनकक्ष थे, साथ ही गलियारे या "लॉबी" (जैसा कि हम उत्तर में कहते हैं) के ऊपर एक छोटा सा कमरा भी था। यह सामने की ओर था, और सीढ़ियाँ प्रवेश द्वार के ठीक सामने से ऊपर जाती थीं। पूरे मकान में खिड़की के पास बैठने की पुरानी शैली की मनमोहक व्यवस्था है; और यह देखा जा सकता है कि पादरी का निवास उस समय बनाया गया था जब लकड़ी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी, जैसा कि विशाल सीढ़ी की रेलिंग, दीवारों की लकड़ी की सजावट और भारी खिड़की के फ्रेम से स्पष्ट होता है।

ऊपर की मंजिल पर स्थित यह छोटा सा अतिरिक्त कमरा बच्चों के लिए आरक्षित था। छोटा होने के बावजूद, इसे बच्चों का कमरा नहीं कहा जाता था; वास्तव में, इसमें चूल्हा जैसी कोई सुविधा भी नहीं थी; नौकरानियाँ - दो स्नेही, दयालु बहनें, जो अब परिवार के बारे में बात करते समय आँसू बहाए बिना नहीं रह सकतीं - इस कमरे को "बच्चों का अध्ययन कक्ष" कहती थीं। उस समय सबसे बड़े छात्र की उम्र शायद सात वर्ष थी।

हॉवर्थ के निवासी बहुत गरीब नहीं थे। उनमें से कई पास की ऊनी मिलों में काम करते थे; कुछ छोटे-मोटे मिल मालिक और निर्माता थे; रोजमर्रा की छोटी-मोटी जरूरतों के लिए कुछ दुकानदार भी थे; लेकिन चिकित्सा सलाह, स्टेशनरी, किताबें, कानून, कपड़े या स्वादिष्ट व्यंजनों के लिए निवासियों को कीघली जाना पड़ता था। वहां कई संडे स्कूल थे; बैपटिस्टों ने इन्हें शुरू करने में अग्रणी भूमिका निभाई थी,

वेस्लेयनों ने उनका अनुसरण किया और चर्च ऑफ इंग्लैंड ने सबसे पीछे रहकर इन्हें शुरू किया। वेस्ले के मित्र, श्री ग्रिमशॉ ने एक साधारण मेथोडिस्ट चैपल बनवाया था, लेकिन वह दलदली भूमि की ओर जाने वाली सड़क के पास स्थित था; फिर बैपटिस्टों ने एक पूजा स्थल बनवाया, जो राजमार्ग से कुछ गज पीछे होने के कारण विशिष्ट था; और मेथोडिस्टों ने बाद में सड़क से और भी दूर एक बड़ा चैपल बनवाना उचित समझा। श्री ब्रोंटे प्रत्येक संप्रदाय के साथ सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंध रखते थे। लेकिन गाँव के लोगों से यह परिवार शुरू से ही अलग-थलग रहा, जब तक कि किसी प्रत्यक्ष सेवा की आवश्यकता न हो। "वे अपने आप को बहुत अलग-थलग रखते थे," यह उन लोगों का कहना है जिन्हें श्री और श्रीमती ब्रोंटे का उनके बीच आना याद है। मेरा मानना है कि कई यॉर्कशायरवासी पैरिश के लोगों से मिलने की इस व्यवस्था का विरोध करेंगे; उनकी रूखी स्वतंत्रता इस विचार का विरोध करेगी कि किसी को भी अपने पद का दुरुपयोग करके उनकी स्थिति के बारे में पूछताछ करने, सलाह देने या उन्हें फटकार लगाने का अधिकार हो। उनमें अभी भी वह पुरानी पहाड़ी भावना बाकी है, जिसने उस कविता को जन्म दिया, जो हॉवर्थ से कुछ ही मील दूर स्थित व्हैली एबे के सेडिलिया में एक आसन के निचले हिस्से पर खुदी हुई है।

जो दूसरे के काम में दखल देता है, उसे बेहतर होगा कि वह घर जाकर अपनी हंसनी को नाल पहना दे।

मैंने हॉवर्थ के पास के एक जिले के निवासी से पूछा कि जिस चर्च में वह जाता है, वहां किस तरह का पादरी है।

उन्होंने कहा, "वह एक दुर्लभ अच्छा इंसान है: वह अपने काम से काम रखता है और कभी हमारे मामलों में दखल नहीं देता।"

श्री ब्रोंटे बीमारों और उन्हें बुलाने वाले सभी लोगों से मिलने में निष्ठावान थे, और स्कूलों में नियमित रूप से उपस्थित रहते थे; उनकी बेटी शार्लोट भी ऐसा ही करती थीं; लेकिन, स्वयं निजता को संजोने और महत्व देने के कारण, वे शायद दूसरों की निजता में दखल न देने के मामले में कुछ अधिक ही संवेदनशील थे।

हॉवर्थ में अपने पहले आगमन के बाद से, उनकी सैर गाँव की लंबी ढलान वाली सड़क की बजाय, पादरी के घर के पीछे ऊपर की ओर ढलान वाले हीथ से ढके मैदानों की ओर अधिक निर्देशित होती थी। एक भली-भांति बुजुर्ग महिला, जो श्रीमती ब्रोंटे की बीमारी - एक आंतरिक कैंसर - में उनकी देखभाल करने आई थीं, जो हॉवर्थ

पहुंचने के कुछ ही महीनों बाद उन पर हावी हो गया था, मुझे बताती हैं कि उस समय छह नन्हे बच्चे हाथ में हाथ डालकर शानदार जंगली मैदानों की ओर जाया करते थे, जिनसे बाद के दिनों में उन्हें बहुत लगाव हो गया; बड़े बच्चे नन्हे बच्चों का बड़े ध्यान से ख्याल रखते थे।

वे अपनी उम्र से कहीं अधिक गंभीर और शांत थे; शायद घर में किसी गंभीर बीमारी के कारण वे उदास थे; क्योंकि जिस समय की बात मेरे सूचनादाता कर रहे हैं, उस समय श्रीमती ब्रोंटे अपने शयनकक्ष में ही बंद थीं, जहाँ से वे कभी जीवित बाहर नहीं निकलीं। "घर में कोई बच्चा है, यह जानकर किसी को पता ही नहीं चलता था, वे इतने शांत, चुप और प्यारे बच्चे थे। मारिया (सिर्फ सात साल की मारिया!) बच्चों के अध्ययन कक्ष में अखबार लेकर बैठ जाती थी और बाहर आकर सब कुछ बता देती थी; संसद में होने वाली बहसें, और न जाने क्या-क्या। वह अपनी बहनों और भाई के लिए माँ जैसी थी। लेकिन ऐसे प्यारे बच्चे कभी नहीं थे। मैं उन्हें बेजान समझती थी, वे उन सभी बच्चों से बिल्कुल अलग थे जिन्हें मैंने कभी देखा था। वे प्यारे बच्चे थे। एमिली सबसे सुंदर थी।"

श्रीमती ब्रोंटे पहले जैसी ही धैर्यवान और हंसमुख थीं; बहुत बीमार, असहनीय पीड़ा से पीड़ित, लेकिन शायद ही कभी शिकायत करती थीं; जब उनकी तबीयत ठीक होती थी, तो वे अपनी नर्स से उन्हें बिस्तर पर उठाने का अनुरोध करती थीं ताकि वे चूल्हे की सफाई कर सकें, "क्योंकि वह इसे कॉर्नवाल के तरीके से करती थीं"; वे अपने पति से बहुत प्यार करती थीं, जो उन्हें उतना ही स्नेह देते थे और रात में बच्चों की देखभाल किसी और को नहीं करने देते थे; लेकिन, मेरे सूत्र के अनुसार, माँ अपने बच्चों से ज्यादा मिलना नहीं चाहती थीं, शायद इसलिए कि उन्हें देखकर, यह जानते हुए कि वे जल्द ही माँ के बिना रह जाएंगे, वे बहुत विचलित हो जातीं। इसलिए बच्चे चुपचाप एक साथ रहते थे, क्योंकि उनके पिता अपने अध्ययन कक्ष और अपने चर्च में या अपनी माँ के साथ व्यस्त रहते थे, और वे अकेले ही भोजन करते थे; "बच्चों के अध्ययन कक्ष" में बैठकर पढ़ते थे या धीरे-धीरे फुसफुसाते थे, या हाथ में हाथ डालकर पहाड़ी पर घूमने निकल जाते थे।

रूसो और श्री डे के शिक्षा संबंधी विचार कई वर्गों तक पहुँचे और व्यापक रूप से फैल गए। मेरा मानना है कि श्री ब्रोंटे ने बच्चों के पालन-पोषण के संबंध में अपने कुछ विचार इन्हीं दो विचारकों से प्रेरित होकर बनाए होंगे। उनका व्यवहार उतना क्रूर या

असामान्य नहीं था जितना कि मेरी एक चाची के साथ श्री डे के एक शिष्य द्वारा किया गया था। उस सज्जन और उनकी पत्नी ने उन्हें गोद ली हुई बच्ची के रूप में अपने साथ रहने के लिए ले लिया था, शायद उस समय से लगभग पच्चीस वर्ष पहले जब मैं यह लिख रहा हूँ। वे धनी और दयालु लोग थे, लेकिन उनका भोजन और वस्त्र अत्यंत सरल और सादे थे, बिल्कुल सादगीपूर्ण। एक स्वस्थ और हंसमुख बच्ची होने के नाते, उन्हें पहनावे या खाने-पीने की ज्यादा परवाह नहीं थी; लेकिन जिस व्यवहार को उन्होंने वास्तव में क्रूरता समझा, वह यह था। उनके पास एक गाड़ी थी, जिसमें उन्हें और उनके पसंदीदा कुत्ते को बारी-बारी से घुमाया जाता था; जिस कुत्ते को घर पर छोड़ने की बारी होती थी, उसे कंबल में लपेटकर उछाला जाता था - एक ऐसी क्रिया जिससे मेरी चाची विशेष रूप से डरती थीं। शायद इसी वजह से उसे कंबल ओढ़ने से इतना डर लगता था कि यह अभ्यास जारी रखा गया। सजे-धजे भूत आम हो गए थे और उसे उनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए कंबल ओढ़ने का अभ्यास उसकी हिम्मत बढ़ाने का अगला तरीका था। यह सर्वविदित है कि श्री डे ने सबरीना से शादी करने का इरादा तोड़ दिया, जिसे उन्होंने इसी उद्देश्य से प्रशिक्षित किया था, क्योंकि शादी की तय तारीख से कुछ ही हफ्तों के भीतर, घर से आने पर उसने पतली आस्तीन वाली पोशाक पहनकर लापरवाही की थी। फिर भी, श्री डे और मेरी चाची के रिश्तेदार दयालु लोग थे, बस उनमें यह सनक भरी सोच थी कि प्रशिक्षण प्रणाली द्वारा आदर्श आदिम व्यक्ति की दृढ़ता और सादगी पैदा की जा सकती है, और वे उस भयानक अलगाव को भूल गए जो उनके विद्यार्थियों को सभ्यता के भ्रष्टाचार और परिष्करण के बीच भविष्य में झेलना पड़ेगा।

श्री ब्रोंटे अपने बच्चों को हृष्ट-पुष्ट और खान-पान एवं पहनावे के सुखों के प्रति उदासीन बनाना चाहते थे। अपनी बेटियों के मामले में वे इसमें सफल भी रहे।

उनका सशक्त, जोशीला, आयरिश स्वभाव आम तौर पर दृढ़ संयम से दबा रहता था; लेकिन यह उनके दार्शनिक शांत और गरिमापूर्ण व्यवहार के बावजूद मौजूद था; हालांकि वे नाराज़ या नाखुश होने पर बोलते नहीं थे। श्रीमती ब्रोंटे, जिनका मधुर स्वभाव हमेशा सकारात्मक सोच रखता था, कहती थीं, "क्या मुझे इस बात के लिए आभारी नहीं होना चाहिए कि उन्होंने कभी मुझे गुस्से में एक शब्द भी नहीं कहा?"

श्री ब्रोंटे एक उत्साही पैदल यात्री थे, जो मीलों तक खुले मैदानों में घूमते थे, हवा और मौसम के सभी प्राकृतिक संकेतों को अपने मन में संजोते थे, और पहाड़ियों के

सबसे सुनसान इलाकों में आने-जाने वाले सभी जंगली जीवों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करते थे। उन्होंने चीलों को अपने बच्चों के लिए भोजन की तलाश में नीचे उतरते देखा था; अब उन पहाड़ी ढलानों पर कोई चील दिखाई नहीं देती।

स्थानीय या राष्ट्रीय राजनीति में उन्हें जो भी पक्ष सही लगता था, वे निडर होकर उसका साथ देते थे। लुडाइट आंदोलन के दौर में, जब कोई मजिस्ट्रेट कार्रवाई करने को तैयार नहीं था और वेस्ट राइडिंग की सारी संपत्ति खतरे में थी, तब वे कानून के कठोर हस्तक्षेप के पक्षधर थे। उस समय वे मिल मजदूरों के बीच अलोकप्रिय हो गए थे और उन्हें लगता था कि अगर वे निहत्थे लंबी और अकेली सैर पर निकलें तो उनकी जान को खतरा है; इसलिए उन्होंने हमेशा अपने साथ भरी हुई पिस्तौल रखने की आदत शुरू कर दी, जो आज तक कायम है। पिस्तौल उनकी ड्रेसिंग टेबल पर उनकी घड़ी के साथ रहती थी; सुबह घड़ी के साथ ही वे उसे पहनते थे और रात को घड़ी के साथ ही उतारते थे।

कई वर्षों बाद, हॉवर्थ में उनके निवास के दौरान, एक हड़ताल हुई; आस-पास के श्रमिकों ने अपने मालिकों से असंतुष्ट होकर काम करने से इनकार कर दिया। श्री ब्रोंटे का मानना था कि उनके साथ अन्याय और अनुचित व्यवहार किया गया है, और उन्होंने उन्हें आर्थिक तंगी से बचाने और कर्ज के बोझ से मुक्त करने के लिए अपनी पूरी शक्ति से उनकी सहायता की। हॉवर्थ और आसपास के कई प्रभावशाली निवासी मिल मालिक थे; उन्होंने ब्रोंटे का कड़ा विरोध किया, लेकिन ब्रोंटे को विश्वास था कि उनका आचरण सही है और वे उस पर अडिग रहे।

उनके विचार अक्सर निरर्थक और त्रुटिपूर्ण हो सकते थे, उनके कार्य करने के सिद्धांत विचित्र और अटपटे हो सकते थे, जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण और लगभग मानवद्वेषपूर्ण हो सकता था; लेकिन उनके किसी भी विचार को किसी सांसारिक प्रेरणा से हिलाया या बदला नहीं जा सकता था: वे अपने सिद्धांतों के अनुरूप ही कार्य करते थे; और यदि मानव जाति के प्रति उनके दृष्टिकोण में कहीं न कहीं मानवद्वेष का अंश भी था, तो उनके व्यक्तिगत संपर्क में आने वाले व्यक्तियों के प्रति उनका व्यवहार उस दृष्टिकोण से मेल नहीं खाता था। यह सच है कि उनके दृढ़ और प्रबल पूर्वाग्रह थे, और वे उन्हें बनाए रखने में हठी थे, और उनकी सोच इतनी गहरी नहीं थी कि वे यह देख सकें कि उनके लिए जो जीवन पूर्णतः संतुष्ट था, उसमें दूसरे कितने दुखी हो सकते हैं। लेकिन मैं चरित्र के विभिन्न पहलुओं को सामंजस्य

स्थापित करने, उनका कारण बताने और उन्हें एक सुसंगत और बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने का दावा नहीं करता। जिस परिवार के साथ मुझे अब काम करना है, उसकी जड़ें इतनी गहरी हैं कि मैं उन्हें भेद नहीं सकता। मैं उन्हें माप नहीं सकता, और न ही उनका न्याय करना मेरा काम है। मैंने पिता के इन विलक्षण व्यवहारों का उल्लेख इसलिए किया है क्योंकि मेरा मानना है कि उनकी बेटी के जीवन को सही ढंग से समझने के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है।

श्रीमती ब्रोंटे का निधन सितंबर 1821 में हुआ, और उन शांत बच्चों का जीवन और भी शांत और एकाकी हो गया होगा। शार्लोट ने बाद के वर्षों में अपनी माँ की यादों को संजोने की बहुत कोशिश की, और उन्हें उनकी दो-तीन तस्वीरें याद आ सकीं। एक तस्वीर तब की है जब शाम के उजाले में, वह हॉवर्थ पार्सनेज के बैठक कक्ष में अपने छोटे बेटे पैट्रिक ब्रैनवेल के साथ खेल रही थीं। लेकिन चार-पाँच साल की उम्र की यादें बहुत धुंधली होती हैं।

पाचन संबंधी किसी बीमारी के कारण, श्री ब्रोंटे को अपने आहार के प्रति बहुत सावधान रहना पड़ता था; और प्रलोभन से बचने के लिए, और संभवतः पाचन के लिए आवश्यक शांति प्राप्त करने के लिए, उन्होंने अपनी पत्नी की मृत्यु से पहले ही अकेले भोजन करना शुरू कर दिया था - एक ऐसी आदत जिसे उन्होंने हमेशा बनाए रखा। उन्हें किसी साथी की आवश्यकता नहीं थी, इसलिए उन्होंने न तो अपनी सैर में और न ही अपने दैनिक जीवन में इसकी तलाश की। उनके घरेलू घंटों की शांत नियमितता केवल चर्च के वार्डन और पैरिश के काम से आने वाले आगंतुकों द्वारा भंग होती थी; और कभी-कभी एक पड़ोसी पादरी द्वारा, जो पहाड़ियों से नीचे, दलदली भूमि को पार करके, हॉवर्थ पार्सनेज तक वापस जाने और वहाँ एक शाम बिताने के लिए आते थे। लेकिन, श्रीमती ब्रोंटे की मृत्यु उनके पति के जिले में आने के तुरंत बाद हो जाने के कारण, और साथ ही दूरी और दुर्गम देश को पार करने के कारण, इन पादरी मित्रों की पत्नियाँ अपने पतियों के साथ नहीं आती थीं; और बेटियाँ बचपन से निकलकर ऐसी लड़की बन गईं, जो एक अनोखे तरीके से, उस तरह के सभी सामाजिक संबंधों से वंचित थीं जो उनकी उम्र, लिंग और सामाजिक स्थिति के लिए स्वाभाविक होते।

लेकिन बच्चों को समाज में रहने की इच्छा नहीं थी। वे बचपन की छोटी-छोटी खुशियों के आदी नहीं थे। वे एक-दूसरे के लिए ही बने थे। मुझे नहीं लगता कि कभी कोई परिवार इतना प्यार से एक-दूसरे से जुड़ा रहा होगा। मारिया अखबार पढ़ती थी

और अपनी छोटी बहनों को खबरें देती थी, यह देखकर आश्चर्य होता था कि वे उनमें रुचि ले पाती थीं। लेकिन मुझे लगता है कि उनके पास कोई "बच्चों की किताबें" नहीं थीं, और उनके जिज्ञासु मन "अंग्रेजी साहित्य के स्वस्थ भंडार में निःसंकोच निश्चिंत होकर निश्चिंत रहते थे," जैसा कि चार्ल्स लैम्ब ने कहा है। घर के नौकर छोटी ब्रोंटे बहनों की असाधारण बुद्धिमत्ता से बहुत प्रभावित थे। इस विषय पर उनके पिता द्वारा लिखे गए एक पत्र में, जो मुझे मिला है, वे लिखते हैं: — "नौकर अक्सर कहते थे कि उन्होंने (शार्लोट जैसी) इतनी बुद्धिमान बच्ची कभी नहीं देखी," और उन्हें उसके सामने बोलते और करते समय सावधान रहना पड़ता था। फिर भी, वह और नौकर हमेशा एक-दूसरे के साथ अच्छे संबंध बनाए रखते थे।"

ये नौकरानियाँ अभी भी जीवित हैं; ब्रैडफोर्ड में रहने वाली बुजुर्ग महिलाएँ। वे शार्लोट की सच्ची और स्नेहपूर्ण यादें संजोए हुए हैं, और उनकी अटूट दयालुता के बारे में बताती हैं, "जब वह बहुत छोटी बच्ची थीं!" तब से लेकर अब तक, जब तक वह पादरी के घर से एक पुरानी, इस्तेमाल न की गई पालना को अपने एक साथी के माता-पिता के घर नहीं भिजवा देती थीं, ताकि वह उनकी छोटी बहन के लिए काम आ सके। वे शार्लोट ब्रोंटे के जीवन के शुरुआती दौर से लेकर अंतिम सप्ताहों तक, उनके दयालु और विचारशील कार्यों की एक लंबी श्रृंखला के बारे में बताती हैं; और, हालांकि उन्होंने कई साल पहले अपना काम छोड़ दिया था, इन पूर्व नौकरानियों में से एक ब्रैडफोर्ड से हॉवर्थ विशेष रूप से श्री ब्रोंटे से मिलने और उनकी अंतिम संतान की मृत्यु पर उन्हें अपनी सच्ची सहानुभूति देने गई थीं। मैं इस पुस्तक के आरंभ में लगी मिस ब्रोंटे की तस्वीर की प्रशंसात्मक विशेषता के प्रमाण के रूप में एक छोटा सा किस्सा जोड़ना चाहूँगा। एक सज्जन, जिन्होंने इस संस्मरण को तैयार करने में सहर्ष रुचि दिखाई थी, प्रकाशन के कुछ समय बाद ही इस बुजुर्ग नौकरानी के घर पहली पुस्तक लेकर गए, ताकि उन्हें वह तस्वीर दिखा सकें। मुखपृष्ठ पर एक नज़र पड़ते ही, एक मिनट में वह बोली, "ये रही वो!" (अपने पति से) "आओ, जॉन, देखो!" और उसकी बेटी भी इस समानता को देखकर उतनी ही प्रभावित हुई। शायद बहुत कम लोग ब्रोंटे बहनों को स्नेह से देखते हों, लेकिन जिन्होंने कभी उन्हें प्यार किया, उन्होंने लंबे समय तक और दिल से प्यार किया।

मैं पिता के पत्र पर लौटता हूँ। वह कहते हैं: —

“जब वे छोटे बच्चे थे, जैसे ही वे पढ़ना-लिखना सीख गए, शार्लोट और उसके

भाई-बहन अपने छोटे-छोटे नाटक गढ़कर उनका मंचन किया करते थे, जिनमें मेरी बेटी शार्लोट का हीरो, ड्यूक ऑफ वेलिंगटन, हमेशा विजयी होता था; और अक्सर उनके बीच वेलिंगटन, बोनापार्ट, हैनिबल और सीज़र की तुलनात्मक खूबियों को लेकर विवाद हो जाता था। जब बहस गरमा जाती थी और चरम पर पहुँच जाती थी, क्योंकि उनकी माँ का निधन हो चुका था, तो मुझे कभी-कभी मध्यस्थ बनकर हस्तक्षेप करना पड़ता था और अपने सर्वोत्तम विवेक के अनुसार विवाद का निपटारा करना पड़ता था। आम तौर पर, इन मामलों के प्रबंधन में, मुझे अक्सर उभरती प्रतिभा के संकेत दिखाई देते थे, जो मैंने उनकी उम्र के किसी भी बच्चे में पहले शायद ही कभी देखे थे... अब मुझे एक घटना याद आ रही है जिसका उल्लेख करना उचित होगा। जब मेरे बच्चे बहुत छोटे थे, जहाँ तक मुझे याद है, सबसे बड़ा लगभग दस साल का था और सबसे छोटा लगभग चार साल का, यह सोचकर कि वे मुझसे कहीं अधिक जानते हैं, ताकि वे कम संकोच के साथ बोलें, मैंने सोचा कि अगर उन्हें किसी तरह के आवरण में रखा जाए तो शायद मैं अपना उद्देश्य पूरा कर लूँगा; और संयोग से घर में एक मुखौटा होने के कारण, मैंने उन सभी को खड़े होकर मुखौटे की आड़ में निडरता से बोलने के लिए कहा।

"मैंने सबसे छोटी (ऐनी, बाद में एक्टन बेल) से शुरुआत की और पूछा कि उसके जैसी बच्ची सबसे ज़्यादा क्या चाहती है; उसने जवाब दिया, 'उम्र और अनुभव।' मैंने अगली (एमिली, बाद में एलिस बेल) से पूछा कि उसके भाई ब्रैनवेल के साथ सबसे अच्छा क्या करना चाहिए, जो कभी-कभी शरारती लड़का होता है; उसने जवाब दिया, 'उससे तर्क करो, और जब वह तर्क न सुने, तो उसे मारो।' मैंने ब्रैनवेल से पूछा कि पुरुष और स्त्री की बुद्धि में अंतर जानने का सबसे अच्छा तरीका क्या है; उसने जवाब दिया, 'उनके शरीर के अंतर पर विचार करके।' फिर मैंने शार्लोट से पूछा कि दुनिया की सबसे अच्छी किताब कौन सी है; उसने जवाब दिया, 'बाइबल।' और दूसरी सबसे अच्छी कौन सी है; उसने जवाब दिया, 'प्रकृति की किताब।' फिर मैंने अगली से पूछा कि एक महिला के लिए शिक्षा का सबसे अच्छा तरीका क्या है; उसने जवाब दिया, 'वह जो उसे अपने घर का अच्छे से संचालन करना सिखाए।' अंत में, मैंने सबसे बड़ी से पूछा कि समय बिताने का सबसे अच्छा तरीका क्या है; उसने जवाब दिया, 'एक सुखद अनंत काल की तैयारी में समय लगाना।' हो सकता है मैंने उनके शब्दों को ठीक-ठीक न बताया हो।" लेकिन मैंने लगभग ऐसा कर ही दिया है, क्योंकि उन्होंने

मेरी स्मृति पर गहरा और स्थायी प्रभाव छोड़ा है। हालांकि, मूल बात बिल्कुल वही थी जो मैंने बताई है।

पिता द्वारा अपने बच्चों के छिपे हुए स्वभाव को जानने के लिए अपनाए गए विचित्र और सरल तरीके, और उनके प्रश्नों और उत्तरों के लहजे और स्वरूप से ब्रोंटे बहनों की उस अनोखी शिक्षा का पता चलता है जो उनके आसपास के माहौल ने उन्हें दी थी। वे किसी और बच्चे को नहीं जानती थीं। वे केवल उन विचारों से परिचित थीं जो उन्हें बैठक में सुनी जाने वाली पादरी की बातचीत के अंशों या रसोई में होने वाली गाँव और स्थानीय रुचि के विषयों से प्रेरित होते थे। प्रत्येक बच्चे का अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व था।

वे सार्वजनिक हस्तियों, स्थानीय और विदेशी मुद्दों के साथ-साथ समाचार पत्रों में छपने वाली घरेलू राजनीति में गहरी रुचि रखते थे। मारिया ब्रोंटे की ग्यारह वर्ष की आयु में मृत्यु से बहुत पहले, उनके पिता कहा करते थे कि वे उनसे किसी भी समकालीन विषय पर उतनी ही सहजता और आनंद के साथ बातचीत कर सकते थे, जितनी किसी वयस्क व्यक्ति से।

अध्याय IV

श्रीमती ब्रोंटे की मृत्यु के लगभग एक वर्ष बाद, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, उनकी एक बड़ी बहन पेनज़ेंस से अपने बहनोई के घर की देखरेख करने और उनके बच्चों की देखभाल करने के लिए आईं। मेरा मानना है कि मिस ब्रैनवेल एक दयालु और कर्तव्यनिष्ठ महिला थीं, जिनमें अच्छे चरित्र की झलक थी, लेकिन एक ही स्थान पर लगभग पूरा जीवन बिताने वाले व्यक्ति के लिए स्वाभाविक रूप से उनके विचार

कुछ संकीर्ण थे। उनके मन में प्रबल पूर्वाग्रह थे और जल्द ही उन्हें यॉर्कशायर से अरुचि हो गई। पेनज़ेंस से, जहाँ उत्तर में हम जिन्हें ग्रीनहाउस फूल कहते हैं, वे बहुतायत में उगते हैं, और सर्दियों में भी बिना किसी आश्रय के, और जहाँ की नरम गर्म जलवायु निवासियों को, यदि वे चाहें, तो लगभग लगातार खुली हवा में रहने की अनुमति देती है, चालीस वर्ष से अधिक उम्र की एक महिला के लिए ऐसी जगह पर आकर बसना एक बड़ा बदलाव था जहाँ न तो फूल और न ही सब्जियां पनपती थीं, और जहाँ मध्यम आकार के पेड़ भी दूर-दूर तक खोजे जाते थे; जहां बंजर भूमि पर बर्फ देर तक जमी रहती थी, वीरान और सुनसान ढंग से उस घर से कुछ ही दूरी तक फैली हुई थी जो अब उसका घर बनने वाला था; और जहां अक्सर, पतझड़ या सर्दियों की रातों में, आकाश की चारों हवाएं एक साथ मिलकर गरजती हुई प्रतीत होती थीं, मानो जंगली जानवर घर में प्रवेश द्वार खोजने की कोशिश कर रहे हों। उसे छोटे से कस्बे में होने वाली खुशनुमा सामाजिक मुलाकातों की याद आती थी; उसे अपने बचपन के दोस्तों की याद आती थी, जिनमें से कुछ उसके माता-पिता के दोस्त थे, उससे पहले कि वे उसके अपने दोस्त बनें; उसे उस जगह के कई रीति-रिवाज नापसंद थे, और विशेष रूप से हॉवर्थ पार्सनेज के गलियारों और बैठक कक्षों में पत्थर के फर्श से उठने वाली ठंडी नमी से उसे डर लगता था। मुझे लगता है कि सीढ़ियाँ भी पत्थर की बनी हैं; और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, जब पत्थर की खदानें पास हों और पेड़ दूर हों। मैंने सुना है कि मिस ब्रैनवेल हमेशा ठंड लगने के डर से सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे चढ़ती-उतरती रहती थीं। इसी कारणवश, अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, उन्होंने अपना लगभग सारा समय और अधिकांश भोजन अपने शयनकक्ष में ही व्यतीत किया। बच्चे उनका आदर करते थे और उनके प्रति स्नेह रखते थे, जो सम्मान से उत्पन्न होता है; लेकिन मुझे नहीं लगता कि उन्होंने कभी उनसे खुलकर प्रेम किया। उनके जीवनकाल में किसी के लिए भी अपने पड़ोस और निवास स्थान को इस प्रकार पूरी तरह बदलना एक कठिन परीक्षा थी; और यही उनकी योग्यता को दर्शाता है।

मुझे नहीं पता कि मिस ब्रैनवेल ने अपनी भतीजियों को सिलाई और घरेलू कलाओं के अलावा कुछ और सिखाया था या नहीं, जिनमें शार्लोट बाद में इतनी निपुण हो गईं। उनके नियमित पाठों के बारे में उनके पिता को बताया जाता था; और वे हमेशा अपने लिए बहुत सारी विविध जानकारी इकट्ठा करने की आदी थीं। लेकिन इस समय से लगभग एक साल पहले, उत्तरी इंग्लैंड में पादरियों की बेटियों के लिए एक स्कूल शुरू

किया गया था। यह स्थान कोवान ब्रिज था, जो लीड्स और केंडल के बीच कोच-मार्ग पर एक छोटा सा गाँव था, और इस प्रकार हॉवर्थ से आसानी से पहुँचा जा सकता था, क्योंकि कोच प्रतिदिन चलता था, और इसका एक पड़ाव कीघली में था। प्रत्येक छात्रा का वार्षिक खर्च (1842 की रिपोर्ट में दिए गए प्रवेश नियमों के अनुसार, और मेरा मानना है कि 1823 में स्कूलों की स्थापना के बाद से इसमें वृद्धि नहीं हुई थी) इस प्रकार था:

नियम 11. वस्त्र, आवास, भोजन और शिक्षा का शुल्क 14 पाउंड प्रति वर्ष है; जिसमें से आधा शुल्क विद्यार्थियों के प्रवेश के समय अग्रिम रूप से देना होगा; साथ ही पुस्तकों आदि के उपयोग के लिए 1 पाउंड प्रवेश शुल्क भी देना होगा। शिक्षा प्रणाली में इतिहास, भूगोल, ग्लोब का उपयोग, व्याकरण, लेखन और अंकगणित, सभी प्रकार की कढ़ाई और घरेलू कार्य जैसे बढ़िया लिनेन सिलना, इस्त्री करना आदि शामिल हैं। यदि विशेष कौशल की आवश्यकता हो, तो संगीत या चित्रकला के लिए प्रत्येक के लिए 3 पाउंड प्रति वर्ष का अतिरिक्त शुल्क लिया जाएगा।

नियम 3 में अनुरोध किया गया है कि मित्र प्रत्येक विद्यार्थी के भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, उसकी इच्छित शिक्षा की दिशा बताएं।

नियम 4 में उन कपड़ों और श्रृंगार की वस्तुओं का उल्लेख है जो एक लड़की से अपने साथ लाने की अपेक्षा की जाती है; और इस प्रकार समाप्त होता है: “सभी छात्राएँ एक ही पोशाक में उपस्थित होती हैं। वे सादी भूसे की बनी कॉटेज बोनट पहनती हैं; गर्मियों में रविवार को सफेद फ्रॉक और अन्य दिनों में नैंकीन; सर्दियों में बैंगनी कपड़े की फ्रॉक और बैंगनी कपड़े के लबादे। इसलिए, एकरूपता बनाए रखने के लिए, उन्हें फ्रॉक, पेलिस, बोनट, टिपेट और फ्रिल के बदले 3 पाउंड लाने की आवश्यकता होती है; इस प्रकार प्रत्येक छात्रा द्वारा स्कूल में अपने साथ लाई जाने वाली कुल राशि —

7 लीटर. छह महीने पहले अग्रिम भुगतान। 1 लीटर. किताबों के लिए प्रवेश शुल्क। 1 लीटर. कपड़ों के लिए प्रवेश शुल्क।

आठवां नियम यह है, "सभी पत्रों और पार्सलों का निरीक्षण अधीक्षक द्वारा किया जाता है;" लेकिन यह नियम सभी युवतियों के विद्यालयों में बहुत प्रचलित है, जहाँ मुझे लगता है कि आमतौर पर यह समझा जाता है कि स्कूल की शिक्षिका इस विशेषाधिकार का प्रयोग कर सकती है, हालाँकि उसके लिए इस पर बार-बार जोर देना

निश्चित रूप से अनुचित है।

अन्य किसी भी नियम में कुछ भी उल्लेखनीय नहीं है, जिसकी एक प्रति निस्संदेह श्री ब्रोंटे के हाथों में थी जब उन्होंने अपनी बेटियों को कोवान ब्रिज स्कूल भेजने का निर्णय लिया था; और तदनुसार उन्होंने जुलाई 1824 में मारिया और एलिजाबेथ को वहां भेज दिया।

अब मैं अपने विषय के उस हिस्से पर आता हूँ जिसका विवेचन करना मेरे लिए अत्यंत कठिन है, क्योंकि इससे संबंधित साक्ष्य दोनों पक्षों से इतने विरोधाभासी हैं कि सत्य तक पहुँचना लगभग असंभव प्रतीत होता है। मिस ब्रोंटे ने मुझसे एक से अधिक बार कहा कि यदि उन्हें यह पता होता कि लोवुड को कोवान ब्रिज से इतनी आसानी से जोड़ दिया जाएगा, तो वे "जेन आयर" में लोवुड के बारे में वह नहीं लिखतीं जो उन्होंने लिखा है, हालाँकि संस्था के बारे में उनके विवरण में एक भी शब्द ऐसा नहीं था जो उस समय के सत्य से इतर न हो जब उन्हें इसकी जानकारी थी; उन्होंने यह भी कहा कि एक काल्पनिक रचना में, उन्होंने न्याय न्यायालय में अपेक्षित निष्पक्षता के साथ प्रत्येक विवरण को प्रस्तुत करना, उद्देश्यों की खोज करना और मानवीय कमियों के लिए गुंजाइश बनाना आवश्यक नहीं समझा, जैसा कि वे संस्था के अधीक्षणकर्ताओं के आचरण का निष्पक्ष विश्लेषण करते समय कर सकती थीं। मुझे विश्वास है कि वह स्वयं भी अपने द्वारा दिए गए सजीव चित्रण से जनता के मन पर पड़े अत्यधिक प्रभाव को सुधारने का अवसर पाकर प्रसन्न होतीं, यद्यपि स्वयं भी, वहाँ घटी घटनाओं के परिणामों से जीवन भर हृदय और शरीर दोनों से पीड़ित रहने के कारण, अंत तक तथ्यों में अपने गहरे विश्वास को ही तथ्य मान लेतीं—सत्य के बारे में अपनी धारणा को ही परम सत्य मान लेतीं।

इस कृति के पिछले संस्करणों के कुछ विवरणों में यह माना गया है कि काउवान ब्रिज में उनके प्रवास के संबंध में मेरी अधिकांश जानकारी शार्लोट ब्रोंटे से ही प्राप्त हुई थी। मैंने उन्हें उस स्थान के बारे में केवल एक बार ही बोलते सुना, और वह भी उनसे मेरी जान-पहचान के दूसरे दिन। उस अवसर पर एक छोटा बच्चा रात के खाने में अपनी रोटी का टुकड़ा पूरा खाने में आनाकानी कर रहा था; और वह झुककर, धीमी आवाज़ में उससे बोलीं कि उसकी उम्र में उन्हें रोटी का एक टुकड़ा मिलने पर कितनी खुशी होती; और जब हमने - हालाँकि मुझे यकीन नहीं है कि मैंने खुद कुछ कहा था - उनसे उस घटना के बारे में कुछ प्रश्न पूछे जिसका उन्होंने उल्लेख किया था, तो उन्होंने

संकोच और झिझक के साथ उत्तर दिया, स्पष्ट रूप से इस डर से कि कहीं उनकी किसी पुस्तक पर बहुत अधिक बातचीत न हो जाए। उन्होंने काउवान ब्रिज के ओटकेक (वेस्टमोर्लैंड की क्लैप-ब्रेड) के बारे में बताया कि यह यॉर्कशायर के खमीर वाले ओटकेक से अलग था, और बचपन में उन्हें यह पसंद नहीं था। वहाँ मौजूद किसी ने साउथी की "कॉमन-प्लेस बुक" में दी गई "द टेरिबल निटर्स ओ' डेंट" की सच्ची कहानी में वर्णित इसी तरह की बचकानी नापसंदगी का जिक्र किया। वह हल्की सी मुस्कुराई, लेकिन बोली कि खाने में अंतर ही सब कुछ नहीं था: खाना रसोइए की गंदी लापरवाही से खराब हो गया था, इसलिए उसे और उसकी बहनों को खाना बिल्कुल पसंद नहीं था; और उसने डॉक्टर द्वारा मांस को खराब घोषित किए जाने पर अपनी राहत और खुशी का जिक्र किया और बताया कि उसने डॉक्टर को उसे थूकते हुए देखा था। ये सभी बातें मैंने उससे सुनी हैं। वह इतनी कम जानकारी देती थी कि मुझे लगता है कि हमारे बीच श्री कारस विल्सन का नाम कभी आया ही नहीं।

मुझे अपने सूचनादाताओं की सामान्य सटीकता पर कोई संदेह नहीं है, - उन लोगों पर जिन्होंने निम्नलिखित विवरण दिए हैं और पूरी गंभीरता से दोहराए हैं, - लेकिन मिस ब्रोंटे के प्रति यह कहना उचित ही होगा कि मैंने ऊपर लगभग वह सब कुछ बता दिया है जो मैंने इस विषय पर उनसे सुना था।

किर्बी लोंसडेल के पास रहने वाले एक पादरी, रेवरेंड विलियम कैरस विल्सन, इस विद्यालय की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाने वाले व्यक्ति थे। वे एक ऊर्जावान व्यक्ति थे और अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अथक परिश्रम करते थे। उन्होंने देखा कि सीमित आय वाले पादरियों के लिए अपने बच्चों की शिक्षा का प्रबंध करना अत्यंत कठिन कार्य था; इसलिए उन्होंने एक योजना बनाई जिसके तहत प्रतिवर्ष चंदे के माध्यम से एक निश्चित राशि जुटाई जाती थी, ताकि ठोस और पर्याप्त अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने के लिए आवश्यक राशि पूरी हो सके, जिसके लिए अभिभावकों द्वारा दिया जाने वाला 14 पाउंड प्रति वर्ष का भुगतान पर्याप्त नहीं होता। वास्तव में, अभिभावकों द्वारा दी गई राशि को पूरी तरह से आवास और भोजन के खर्चों और चंदे से प्रदान की जाने वाली शिक्षा के लिए ही उपयोग किया जाता था। बारह न्यासी नियुक्त किए गए; श्री विल्सन न केवल न्यासी थे, बल्कि कोषाध्यक्ष और सचिव भी थे; वास्तव में, उन्होंने अधिकांश व्यावसायिक व्यवस्थाओं का भार स्वयं संभाला; यह जिम्मेदारी उन पर उचित रूप से पड़ी, क्योंकि वे विद्यालय से संबंधित अन्य किसी भी

व्यक्ति की तुलना में विद्यालय के सबसे निकट रहते थे। इसलिए उनकी दूरदर्शिता और विवेकशीलता का गुण कुछ हद तक कोवान ब्रिज स्कूल की सफलता या विफलता से जुड़ा हुआ था; और कई वर्षों तक इसका संचालन उनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य और रुचि का विषय रहा। लेकिन वे सुशासन के मूल तत्व से स्पष्ट रूप से अपरिचित थे—प्रत्येक विभाग के लिए पूर्णतः सक्षम व्यक्तियों का चयन करना, और फिर उन्हें परिणामों के लिए जिम्मेदार ठहराना और उनका मूल्यांकन परिणामों के आधार पर करना, बिना किसी भी प्रकार के विवरण में निरंतर हस्तक्षेप किए।

श्री विल्सन ने अपने निरंतर और अथक पर्यवेक्षण से इतना अधिक कल्याणकारी कार्य किया कि मुझे इस बात का गहरा दुख है कि वृद्धावस्था और गिरते स्वास्थ्य में, उनके द्वारा कथित रूप से किए गए उन दोषों को मिस ब्रोंटे की महान प्रतिभा के स्पर्श से इतनी शक्ति के साथ उजागर किया गया। स्कूल की सफलता में उनकी गहरी रुचि को संजोकर रखा जा सकता है। लिखते समय, मेरे सामने 1850 में सचिव पद छोड़ने के समय के उनके अंतिम शब्द हैं: वे कहते हैं, "गिरते स्वास्थ्य के कारण, उस दृष्टि का त्याग हो रहा है, जिसने हमेशा ईमानदारी और चिंता के साथ स्कूलों की देखरेख की है;" और फिर वे आगे कहते हैं, "इसलिए वे ईश्वर द्वारा उनके माध्यम से किए गए सभी कार्यों के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए पद छोड़ रहे हैं (जिन कमियों और अयोग्यताओं के लिए वे गहरा खेद व्यक्त करते हैं और खेद व्यक्त करते हैं)।"

कोवान ब्रिज लगभग छह या सात झोपड़ियों का एक समूह है, जो एक पुल के दोनों सिरों पर बसे हैं। इस पुल के ऊपर से लीड्स से केंडल जाने वाली मुख्य सड़क लेक नामक एक छोटी सी नदी को पार करती है। यह मुख्य सड़क अब लगभग बंद हो चुकी है; लेकिन पहले, जब वेस्ट राइडिंग के विनिर्माण क्षेत्रों के खरीदारों को वेस्टमोर्लैंड और कंबरलैंड के किसानों से ऊन खरीदने के लिए अक्सर उत्तर की ओर जाना पड़ता था, तब इस पर काफी आवागमन होता था; और शायद कोवान ब्रिज का छोटा सा गाँव आज की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध दिखता था। यह सुंदर स्थान पर स्थित है; ठीक उसी जगह जहाँ लेक की पहाड़ियाँ मैदान में उतरती हैं; और नदी के किनारे एल्डर के पेड़, विलो और हेज़ल की झाड़ियाँ उगती हैं। नदी का प्रवाह धूसर चट्टानों के टूटे टुकड़ों से बाधित होता है; और पानी बड़े गोल सफेद कंकड़ों के बिस्तर पर बहता है, जिन्हें बाढ़ आने पर ऊपर उठा देती है और नदी के तेज बहाव से दोनों ओर धकेल देती है, जिससे कुछ हिस्सों में वे लगभग एक दीवार का रूप ले लेते हैं।

छोटी, उथली, चमकीली और जीवंत झील के किनारे, ऊँची भूमि में पाई जाने वाली उत्तम छोटी घास के लंबे चरागाह फैले हुए हैं; हालाँकि कोवान ब्रिज एक मैदान पर स्थित है, लेकिन यह एक ऐसा मैदान है जहाँ से झील के साथ लून की घाटी तक पहुँचने से पहले कई ढलान और लंबी उतराई हैं। मुझे समझ नहीं आता कि वहाँ का स्कूल इतना अस्वस्थ कैसे हो गया, जब मैंने पिछली गर्मियों में वहाँ का दौरा किया था तो चारों ओर की हवा इतनी मीठी और अजवायन की खुशबू से महक रही थी। लेकिन आज हर कोई जानता है कि बड़ी संख्या में लोगों के लिए बनाई जाने वाली इमारत का स्थान निजी आवास की तुलना में कहीं अधिक सावधानी से चुना जाना चाहिए, क्योंकि निकट संपर्क में लोगों के जमावड़े से संक्रामक और अन्य प्रकार की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

वह मकान अभी भी मौजूद है जो कभी विद्यालय के परिसर का हिस्सा था। यह एक लंबी, धनुषाकार खिड़कियों वाली कुटिया है, जो अब दो आवासों में विभाजित है। यह झील के सामने स्थित है, जिसके बीच लगभग सत्तर गज गहरा एक खाली स्थान है, जो कभी विद्यालय का बगीचा हुआ करता था। यह मूल मकान पिकार्ड परिवार का पुराना निवास था, जिसमें वे दो पीढ़ियों से रह रहे थे। उन्होंने इसे विद्यालय के उपयोग के लिए बेच दिया और पुराने हिस्से से समकोण पर एक अतिरिक्त भवन बनाया गया। यह नया हिस्सा विशेष रूप से विद्यालय के कमरों, छात्रावासों आदि के लिए समर्पित था; और विद्यालय के कैस्टरटन स्थानांतरित होने के बाद, इसका उपयोग नदी से जुड़ी एक चक्की के लिए किया गया, जहाँ एल्डर के पेड़ों से लकड़ी की रीलें बनाई जाती थीं, जो कोवान ब्रिज के आसपास की भूमि में बहुतायत से उगते हैं। यह चक्की अब नष्ट हो चुकी है। वर्तमान कुटिया, जिस समय मैं लिख रहा हूँ, शिक्षकों के कमरों, भोजन कक्ष और रसोई तथा कुछ छोटे शयनकक्षों के लिए उपयोग में थी। इस इमारत में प्रवेश करने पर मैंने पाया कि इसका एक हिस्सा, जो मुख्य सड़क के सबसे करीब था, एक साधारण से पब में परिवर्तित था, जो उस समय किराए पर दिया जाता था। यह एक वीरान जगह की तरह जर्जर और मैला-कुचैला दिख रहा था, जिससे यह अंदाजा लगाना मुश्किल था कि साफ-सफाई के बाद, खिड़कियों के टूटे हुए शीशे बदलवाने और प्लास्टर (जो अब फटा हुआ और फीका पड़ गया था) को सफेद और ठीक करने के बाद यह कैसा दिखेगा। दूसरा हिस्सा एक झोपड़ी जैसा था, जिसकी छतें नीची थीं और फर्श सौ साल पुराने पत्थर के थे; खिड़कियाँ पूरी तरह से नहीं

खुलती थीं; और ऊपर शयनकक्षों की ओर जाने वाला रास्ता संकरा और घुमावदार था: कुल मिलाकर, घर में दुर्गंध फैली रहती थी और सीलन बनी रहती थी। लेकिन तीस साल पहले स्वच्छता के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी; और मुख्य सड़क के पास, और शैक्षिक योजना के जनक श्री विल्सन के आवास से ज्यादा दूर नहीं, एक विशाल इमारत मिलना एक बड़ी बात थी। ऐसे संस्थान की बहुत आवश्यकता थी; कम वेतन पाने वाले कई पादरियों ने इस संभावना का उत्साहपूर्वक स्वागत किया और जब स्कूल खुल कर बच्चों को दाखिला देने के लिए तैयार हुआ, तो उन्होंने उत्सुकतापूर्वक अपने बच्चों के नाम लिखवा दिए। श्री विल्सन निस्संदेह अपनी इस योजना के साकार होने की लोगों की उत्सुकता से प्रसन्न थे और उन्होंने सौ पाउंड से भी कम पूंजी के साथ स्कूल खोला। छात्रों की संख्या अलग-अलग विवरणों के अनुसार भिन्न-भिन्न है; संस्थापक के पुत्र श्री डब्ल्यू. डब्ल्यू. कैरस विल्सन के अनुसार यह संख्या सत्तर थी, जबकि उनके दामाद श्री शेफर्ड के अनुसार यह संख्या केवल सोलह थी।

श्री विल्सन को संभवतः यही लगा कि पूरी योजना की ज़िम्मेदारी उन्हीं पर है। माता-पिता द्वारा दी गई राशि भोजन और आवास के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त थी; चंदा एक नई योजना में आसानी से नहीं मिल रहा था; और सभी घरेलू व्यवस्थाओं में मितव्ययिता आवश्यक थी। उन्होंने बार-बार व्यक्तिगत निरीक्षण करके इसे लागू करने का निश्चय किया; शायद यह कुछ हद तक अनावश्यक था, और कभी-कभी छोटी-छोटी बातों में हस्तक्षेप करने का कारण भी बना, जिससे कभी-कभी मनमुटाव भी पैदा हो जाता था। फिर भी, यद्यपि घर के खर्चों में मितव्ययिता बरती गई, ऐसा प्रतीत नहीं होता कि कोई कंजूसी की गई हो। मांस, आटा, दूध आदि का अनुबंध किया गया था, और वे बहुत अच्छी गुणवत्ता के थे; और भोजन, जो मुझे हस्तलिखित रूप में दिखाया गया है, न तो खराब था और न ही अस्वास्थ्यकर; और कुल मिलाकर, उसमें विविधता की कमी भी नहीं थी। नाश्ते में दलिया; दोपहर के भोजन के लिए ओट्सकेक का एक टुकड़ा; रात के खाने में भुना हुआ और उबला हुआ गोमांस, और मटन, आलू पाई, और विभिन्न प्रकार के सादे घरेलू हलवे। शाम पांच बजे, छोटे बच्चों के लिए रोटी और दूध; और बड़े विद्यार्थियों के लिए रोटी का एक टुकड़ा (यह एकमात्र समय था जब भोजन सीमित मात्रा में दिया जाता था), जो बाद में उसी प्रकार के भोजन के लिए जागते रहते थे।

श्री विल्सन स्वयं भोजन मंगवाते थे और इस बात को लेकर चिंतित रहते थे कि वह

अच्छी गुणवत्ता का हो। लेकिन रसोइया, जिस पर उन्हें बहुत भरोसा था और जिसके खिलाफ लंबे समय तक किसी ने शिकायत करने की हिम्मत नहीं की, लापरवाह, गंदा और फिजूलखर्ची करने वाला था। कुछ बच्चों को दलिया का स्वाद अच्छा नहीं लगता और इसलिए वह अस्वास्थ्यकर होता है, भले ही उसे ठीक से बनाया गया हो; कॉवन ब्रिज स्कूल में इसे अक्सर जला हुआ ही नहीं, बल्कि उसमें अन्य पदार्थों के अप्रिय अंश भी पाए जाते थे। गोमांस, जिसे पकाने से पहले सावधानीपूर्वक नमक लगाया जाना चाहिए था, अक्सर उपेक्षा के कारण खराब हो जाता था; और जिन लड़कियों ने ब्रोंटे बहनों के साथ स्कूल में पढ़ाई की थी, उस रसोइया के शासनकाल के दौरान, जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूँ, वे मुझे बताती हैं कि घर सुबह, दोपहर और रात भर उस ओवन से निकलने वाली बासी चर्बी की दुर्गंध से भरा रहता था जिसमें उनका अधिकांश भोजन तैयार किया जाता था। पुडिंग बनाने में भी यही लापरवाही बरती जाती थी; जिन व्यंजनों का आदेश दिया गया था, उनमें से एक था पानी में उबले हुए चावल, जिन्हें गुड़ और चीनी की चटनी के साथ खाया जाता था; लेकिन यह अक्सर खाने लायक नहीं होता था, क्योंकि पानी बारिश के टब से लिया जाता था और छत पर जमी धूल से बुरी तरह दूषित हो जाता था, जहाँ से यह पुराने लकड़ी के पीपे में रिसता था, जिससे मूल बारिश के पानी में अपना स्वाद भी मिल जाता था। दूध भी अक्सर "बंगी" होता था, जो एक देहाती मुहावरे में खट्टेपन से कहीं अधिक खराब होता है, और यह संकेत देता है कि यह गर्मी के कारण नहीं बल्कि दूध के बर्तनों की सफाई की कमी के कारण होता था। शनिवार को, एक प्रकार की पाई, या आलू और मांस का मिश्रण परोसा जाता था, जो पूरे सप्ताह के बचे हुए टुकड़ों से बनाया जाता था। गंदे और अव्यवस्थित भंडारगृह से निकले मांस के टुकड़े कभी भी स्वादिष्ट नहीं हो सकते थे; और मेरा मानना है कि कोवान ब्रिज स्कूल के शुरुआती दिनों में यह भोजन किसी भी अन्य भोजन से कहीं अधिक अरुचिकर था। कल्पना कीजिए कि कम भूख वाले और ऐसे बच्चों को यह खाना कितना अरुचिकर लगता होगा, जो शायद कहीं अधिक सरल, लेकिन इतनी सावधानी से तैयार किए गए भोजन के आदी थे कि वह स्वादिष्ट और पौष्टिक दोनों लगता था। कई बार छोटी ब्रोंटे बच्चियों को भूख से बेहाल होने के बावजूद भोजन नहीं मिला। जब वे आईं तो उनकी सेहत अच्छी नहीं थी, वे खसरा और काली खांसी की जटिलताओं से अभी-अभी उबरी थीं; वास्तव में, मुझे लगता है कि वे मुश्किल से ही ठीक हुई थीं; क्योंकि जुलाई 1824 में स्कूल

अधिकारियों के बीच इस बात पर विचार-विमर्श हुआ था कि मारिया और एलिजाबेथ को प्रवेश दिया जाए या नहीं। श्री ब्रोंटे उसी वर्ष सितंबर में फिर से आए, और अपने साथ शार्लोट और एमिली को भी विद्यार्थियों के रूप में प्रवेश दिलाने के लिए लाए।

यह अजीब लगता है कि शिक्षकों ने श्री विल्सन को भोजन परोसने के तरीके के बारे में जानकारी नहीं दी; लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि रसोइया विल्सन परिवार से काफी समय से परिचित था, जबकि शिक्षकों को एक बिल्कुल अलग काम - शिक्षा - के लिए एक साथ लाया गया था। उन्हें स्पष्ट रूप से यह समझाया गया था कि यही उनका विभाग है; भोजन की खरीद और प्रबंधन की जिम्मेदारी श्री विल्सन और रसोइया की थी। शिक्षक स्वाभाविक रूप से इस विषय पर उनके सामने कोई शिकायत दर्ज कराने के इच्छुक नहीं थे।

सभी लड़कियों के लिए स्वास्थ्य संबंधी एक और समस्या आम थी। कोवान ब्रिज से टुनस्टॉल चर्च तक का रास्ता, जहाँ श्री विल्सन उपदेश देते थे और जहाँ वे सभी रविवार को जाती थीं, दो मील से अधिक लंबा है और ऊबड़-खाबड़, खुले मैदानों से होकर गुजरता है। गर्मियों में यह रास्ता ताजगी भरा और स्फूर्तिदायक होता है, लेकिन सर्दियों में कड़ाके की ठंड में बदल जाता है, खासकर ब्रोंटे जैसी नाज़ुक बच्चियों के लिए, जिनका पतला खून कमज़ोर भूख के कारण सुस्त हो जाता था और वे तैयार भोजन को स्वीकार नहीं कर पाती थीं, जिससे वे लगभग भूखी रहती थीं। चर्च में गर्मी की व्यवस्था नहीं थी, क्योंकि इसके लिए कोई साधन नहीं था। यह खेतों के बीच में स्थित है, और नम धुंध दीवारों के चारों ओर जमा हो जाती थी और खिड़कियों से अंदर आ जाती थी। लड़कियाँ अपना ठंडा भोजन अपने साथ ले जाती थीं और प्रार्थना सभाओं के बीच, प्रवेश द्वार के ऊपर बने एक कमरे में, जो पहले की गैलरी से खुलता था, उसे खाती थीं। इस दिन की व्यवस्थाएं विशेष रूप से नाजुक बच्चों के लिए कठिन थीं, खासकर उन बच्चों के लिए जो उदास थे और घर जाने के लिए तरस रहे थे, जैसा कि बेचारी मारिया ब्रोंटे रही होंगी; क्योंकि उनका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा था, और पुरानी खांसी, काली खांसी के अवशेष, अभी भी उनके साथ थे।

वह अपने सभी सहपाठियों से कहीं अधिक बुद्धिमान थी, और इसी कारण वह उनके बीच अकेली महसूस करती थी; फिर भी उसमें कुछ ऐसी कमियाँ थीं जो उसे इतना परेशान करती थीं कि वह अपने शिक्षकों की नज़रों में हमेशा अपमानित रहती थी, और उनमें से एक शिक्षिका, जिसे "जेन आयर" में "मिस स्कैचर्ड" के रूप में

चित्रित किया गया है, और जिसका असली नाम मैं बताना उचित नहीं समझूँगा, उससे घोर नाराज़ थी। यह कहना शायद ही पर्याप्त होगा कि हेलेन बर्न्स, मारिया ब्रोंटे की उतनी ही सटीक प्रतिरूप है जितनी शार्लोट की चरित्र को हूबहू प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता हो सकती थी। जिस दिन हम मिले, उस आखिरी दिन तक भी उसका हृदय उस स्त्री द्वारा अपनी कोमल, धैर्यवान, मरणासन्न बहन पर किए गए अत्याचार और क्रूरता के कारण व्यर्थ आक्रोश से धड़कता रहा। "जेन आयर" के उस भाग का एक भी शब्द शिष्य और शिक्षक के बीच के दृश्यों की हूबहू पुनरावृत्ति नहीं है। जो लोग उसी समय वहाँ के छात्र थे, वे हेलेन बर्न्स की पीड़ाओं के वर्णन की तीव्रता से जानते थे कि पुस्तक किसने लिखी होगी। इससे पहले, उन्होंने मिस टेंपल की मधुर गरिमा और परोपकारिता के वर्णन को केवल उन गुणों के लिए एक उचित श्रद्धांजलि के रूप में पहचाना था, जिन्हें जानने वाले सभी लोग सम्मान की दृष्टि से देखते थे; लेकिन जब मिस स्केचर्ड को निंदा का पात्र बनाया गया, तो उन्होंने "जेन आयर" की लेखिका में पीड़ित की एक अनजाने में प्रतिशोध लेने वाली बहन को भी पहचाना।

उनकी एक सहपाठी ने, अन्य और भी भयावह बयानों के साथ, मुझे निम्नलिखित बताया: — मारिया जिस छात्रावास में सोती थी, वह एक लंबा कमरा था, जिसके दोनों ओर संकरे छोटे-छोटे बिस्तरों की एक पंक्ति थी, जिन पर छात्राएँ सोती थीं; और इस छात्रावास के अंत में एक छोटा सा शयनकक्ष था जो इससे बाहर की ओर खुलता था, और यह मिस स्केचर्ड के उपयोग के लिए आरक्षित था। मारिया का बिस्तर इस कमरे के दरवाजे के सबसे नजदीक था। एक सुबह, जब वह इतनी गंभीर रूप से बीमार हो गई कि उसकी कमर पर एक छाला पड़ गया (जिसका घाव पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ था), जब उठने की घंटी बजी, तो बेचारी मारिया कराहते हुए बोली कि वह इतनी बीमार है, इतनी बीमार है कि वह बिस्तर पर ही रहना चाहती है; और कुछ लड़कियों ने उसे ऐसा करने के लिए उकसाया और कहा कि वे यह सब अधीक्षक मिस टेंपल को समझा देंगी। लेकिन मिस स्केचर्ड पास ही थीं, और मिस टेंपल की दयालुता हस्तक्षेप करने से पहले उनके गुस्से का सामना करना पड़ता; बीमार बच्ची ठंड से कांपते हुए कपड़े पहनने लगी, बिस्तर से उठे बिना ही उसने धीरे-धीरे अपनी पतली सफेद टांगों पर काले ऊनी मोज़े पहने (मेरी सूचना देने वाली ने मानो यह सब अपनी आँखों से देखा हो, और उसका पूरा चेहरा गुस्से से लाल हो गया था)। तभी मिस स्केचर्ड अपने कमरे से निकलीं और बीमार और डरी हुई बच्ची से एक शब्द भी पूछे बिना, उन्होंने

उसे उस तरफ से बांह से पकड़ा जहाँ छाला था, और एक ही झटके में उसे घुमाकर फर्श के बीचोंबीच ले गईं, और लगातार उसे गंदी और मैली आदतों के लिए कोसती रहीं। वहीं उन्होंने उसे छोड़ दिया। मेरी सूचना देने वाली कहती हैं, मारिया ने मुश्किल से ही कुछ बोला, सिवाय कुछ नाराज़ लड़कियों से शांत रहने की विनती करने के; लेकिन धीरे-धीरे, कांपते हुए, कई बार रुकते हुए, वह आखिरकार नीचे गई, और देर से आने के लिए उसे सज़ा मिली।

कोई भी कल्पना कर सकता है कि शार्लोट के मन में ऐसी घटना कितनी गहरी पीड़ा पहुँचाती होगी। मुझे आश्चर्य है कि मारिया और एलिजाबेथ की मृत्यु के बाद, उसने अपने पिता के उसे और एमिली को वापस कोवान ब्रिज भेजने के निर्णय का विरोध क्यों नहीं किया। लेकिन अक्सर बच्चे इस बात से अनजान होते हैं कि उनके कुछ सरल खुलासे उनके आसपास के लोगों के बारे में उनके दोस्तों की राय को कितना बदल सकते हैं। इसके अलावा, शार्लोट के प्रखर और जीवंत मन ने असाधारण रूप से कम उम्र में ही शिक्षा के अपार महत्व को समझ लिया था, क्योंकि शिक्षा उसे ऐसे साधन प्रदान करती थी जिन्हें वह शक्ति और इच्छाशक्ति से उपयोग कर सकती थी, और वह जानती होगी कि कोवान ब्रिज की शिक्षा कई मायनों में उसके पिता द्वारा उसे प्रदान की जा सकने वाली सर्वोत्तम शिक्षा थी।

मारिया ब्रोंटे की मृत्यु से पहले, 1825 की वसंत ऋतु में, वह हल्का बुखार फैल गया, जिसका जिक्र "जेन आयर" में किया गया है। श्री विल्सन इसके पहले लक्षणों को देखकर बेहद चिंतित हो गए। वे एक दयालु और ममतामयी महिला के पास गए, जिनका स्कूल से कुछ संबंध रहा था - शायद धोबिन के रूप में - और उनसे कहा कि वे आकर उन्हें बताएं कि उन्हें क्या हुआ है। वह तैयार हुईं और उनके साथ उनकी गाड़ी में सवार होकर गईं। जब वे स्कूल के कमरे में पहुंचीं, तो उन्होंने बारह से पंद्रह लड़कियों को लेटे हुए देखा; कुछ ने अपने दर्द भरे सिर मेज पर रखे थे, कुछ ने जमीन पर; सभी की आंखें भारी थीं, चेहरा लाल था, वे उदासीन और थकी हुई थीं, और उनके हर अंग में दर्द था। उन्होंने बताया कि किसी अजीब गंध से उन्हें पता चला कि वे "बुखार" से पीड़ित हैं; और उन्होंने श्री विल्सन को यह बताया और कहा कि वे अपने बच्चों को संक्रमण फैलाने के डर से वहां नहीं रुक सकतीं; लेकिन उन्होंने आधे आदेश और आधे विनती के साथ उन्हें वहीं रुककर उनकी देखभाल करने के लिए कहा। अंत में, वह अपनी गाड़ी पर सवार होकर चला गया, जबकि वह लगातार अपने घर लौटने

और घरेलू कामों में लगने की गुहार लगा रही थी, जिनके लिए उसने कोई विकल्प नहीं ढूंढा था। हालांकि, जब उसे इस तरह बेइज्जती से छोड़ दिया गया, तो उसने इस स्थिति का भरपूर फायदा उठाने का निश्चय किया; और वह एक बेहद कुशल नर्स साबित हुई: हालांकि, जैसा कि वह कहती है, वह समय उसके लिए बहुत नीरस था।

श्री विल्सन ने डॉक्टरों द्वारा बताई गई हर चीज़, सर्वोत्तम गुणवत्ता की और भरपूर मात्रा में उपलब्ध कराई; बीमारों की देखभाल किर्बी के एक बहुत ही कुशल सर्जन डॉ. बैटी ने की, जो शुरुआत से ही इस संस्थान के चिकित्सा अधीक्षक थे और बाद में श्री विल्सन के बहनोई बन गए। शार्लोट ब्रोंटे के अलावा दो अन्य गवाहों से मैंने सुना है कि डॉ. बैटी ने भोजन का एक हिस्सा थूक कर उसकी तैयारी की निंदा की थी। यह कहना उचित होगा कि उन्हें स्वयं यह घटना याद नहीं है, और न ही उन्होंने बुखार को चिंताजनक या खतरनाक बताया है। लगभग चालीस लड़कियाँ इससे पीड़ित थीं, लेकिन कोवान ब्रिज में उनमें से किसी की भी मृत्यु नहीं हुई; हालाँकि एक की मृत्यु अपने घर पर ही हुई, जो बुखार के बाद बिगड़ती सेहत के कारण मर गई। ब्रोंटे बहनों में से किसी को भी बुखार नहीं हुआ था। लेकिन जिन कारणों से टाइफस के कारण अन्य विद्यार्थियों का स्वास्थ्य प्रभावित हुआ, उन्हीं कारणों से उनके स्वास्थ्य पर भी धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, असर पड़ा। इन कारणों में सबसे प्रमुख कारण भोजन था।

इसके लिए मुख्य रूप से रसोइए का कुप्रबंधन ही जिम्मेदार था; उसे बर्खास्त कर दिया गया, और जिस महिला को उसकी इच्छा के विरुद्ध मुख्य नर्स के रूप में काम करने के लिए मजबूर किया गया था, उसे गृहस्वामी बना दिया गया; और इसके बाद से भोजन इतना बढ़िया तैयार किया जाने लगा कि कोई भी कभी भी इसकी शिकायत नहीं कर सकता था। बेशक, यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि लगभग सौ लोगों के लिए घरेलू और शैक्षिक व्यवस्थाओं वाली एक नई संस्था शुरुआत में पूरी तरह से सुचारू रूप से चलेगी।

यह सब संस्था की स्थापना के पहले दो वर्षों के दौरान हुआ, और शार्लोट ब्रोंटे के चरित्र पर इसके प्रभाव का आकलन करते समय, हमें यह याद रखना चाहिए कि वह एक संवेदनशील, विचारशील बच्ची थीं, जो गहराई से चिंतन करने में सक्षम थीं, भले ही उनका विश्लेषण सही ढंग से न हो पाता हो; और सभी नाज़ुक और बीमार बच्चों की तरह, वह विशेष रूप से पीड़ादायक प्रभावों के प्रति संवेदनशील थीं। स्वस्थ लोग

जिस पीड़ा को क्षण भर के लिए सहते हैं और फिर भूल जाते हैं, बीमार लोग उस पर अनजाने में चिंतन करते रहते हैं और उसे लंबे समय तक याद रखते हैं—शायद बिना किसी आक्रोश के, बल्कि केवल एक ऐसे कष्ट के रूप में जो उनके जीवन में अंकित हो गया हो। आठ साल की बच्ची के मन में चरित्र की जो छवियां, विचार और धारणाएं बनीं, वे पच्चीस साल बाद जोशीले शब्दों में पुन: प्रस्तुत होने वाली थीं। उन्होंने श्री विल्सन के चरित्र का केवल एक ही पहलू देखा; और उस समय उन्हें जानने वाले कई लोग मुझे इस बात का आश्वासन देते हैं कि इसे कितनी निष्ठा से चित्रित किया गया है, साथ ही वे इस बात पर खेद भी व्यक्त करते हैं कि चित्रण ने मानो उनके सभी महान और कर्तव्यपरायण गुणों को मिटा दिया है। श्री विल्सन में महान और उत्तम गुण थे, इसके प्रचुर प्रमाण मुझे प्राप्त हुए हैं। वास्तव में, पिछले कई हफ्तों से मुझे लगभग प्रतिदिन इस अध्याय के विषय पर पत्र प्राप्त हो रहे हैं; कुछ अस्पष्ट, कुछ स्पष्ट; कई पत्र श्री विल्सन के प्रति प्रेम और प्रशंसा से भरे हैं, कुछ उतने ही घृणा और आक्रोश से; और कुछ में पुख्ता तथ्य हैं। इन परस्पर विरोधी प्रमाणों पर सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद, मैंने इस अध्याय में वे परिवर्तन और अंश हटाए हैं जो मुझे आवश्यक प्रतीत हुए। यह कहना उचित होगा कि पुराने छात्रों से प्राप्त अधिकांश प्रमाण श्री विल्सन की अत्यधिक प्रशंसा करते हैं। मैंने जो पत्र पढ़े हैं, उनमें से एक पत्र ऐसा है जिसका प्रमाण अत्यंत सम्माननीय है। यह पत्र "मिस टेंपल" के पति का है। उनकी मृत्यु 1856 में हुई, लेकिन एक पादरी होने के नाते, उन्होंने श्री विल्सन के एक मित्र द्वारा इस विषय पर लिखे गए पत्र के उत्तर में इस प्रकार लिखा: — “मैंने अक्सर अपनी दिवंगत प्रिय पत्नी को कोवान ब्रिज में बिताए अपने समय के बारे में बात करते सुना है; वह हमेशा श्री कारस विल्सन, उनके विद्यार्थियों के प्रति उनके माता-पिता जैसे प्रेम और उनके प्रति विद्यार्थियों के प्रेम की प्रशंसा करती थीं; भोजन और सामान्य व्यवहार के बारे में भी उनकी प्रशंसा ही होती थी। मैंने उन्हें एक दुर्भाग्यशाली रसोइए का जिक्र करते सुना है, जो कभी-कभी दलिया खराब कर देता था, लेकिन उन्होंने कहा कि उसे जल्द ही बर्खास्त कर दिया गया था।”

ब्रोंटे बहनों के जीवन के इस दौर की जो यादें उनसे जुड़े लोगों के मन में बसी हैं, वे स्पष्ट नहीं हैं। उनके जोशीले, दृढ़ हृदय और शक्तिशाली बुद्धि को व्यवहार और अभिव्यक्ति की एक निश्चित शालीनता और नियमितता के नीचे छिपा दिया गया था, ठीक वैसे ही जैसे उनके चेहरे उनके पिता के कठोर, अपरिवर्तनीय मुखौटे के नीचे छिपे

रहते थे। मारिया नाज़ुक, अपनी उम्र के हिसाब से असाधारण रूप से बुद्धिमान और विचारशील, सौम्य और थोड़ी अव्यवस्थित थीं। उनकी इस आखिरी कमी के कारण बार-बार होने वाली बदनामी और उनके धैर्यपूर्वक सहन किए गए कष्टों के बारे में मैं पहले ही बता चुका हूँ। एलिज़ाबेथ के छोटे से जीवन के कुछ ही वर्षों में हमें उनकी जो झलक मिलती है, वह "मिस टेंपल" से प्राप्त एक पत्र में है। “दूसरी, एलिज़ाबेथ, परिवार में इकलौती ऐसी है जिसकी मुझे स्पष्ट याद है। उसके साथ एक भयानक दुर्घटना हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप मैंने उसे कुछ दिनों और रातों तक अपने शयनकक्ष में रखा था, न केवल शांति के लिए, बल्कि इसलिए भी कि मैं उस पर नज़र रख सकूँ। उसके सिर पर गंभीर चोट आई थी, लेकिन उसने सभी कष्टों को अनुकरणीय धैर्य के साथ सहन किया और इससे मेरे मन में उसके लिए बहुत सम्मान पैदा हुआ। दो छोटी बहनों (यदि दो थीं) की मुझे बहुत धुंधली यादें हैं, सिवाय इसके कि एक लाडली बच्ची, पाँच साल से कम उम्र की, स्कूल की सबकी चहेती थी।” यह आखिरी बच्ची एमिली थी। शार्लोट बहनों में सबसे बातूनी मानी जाती थी - एक “तेज-तर्रार, होशियार, छोटी बच्ची।” उसकी सबसे अच्छी दोस्त एक “मेलानी हेन” (श्री ब्रोंटे ने नाम इसी तरह लिखा है) थी, जिसके भाई ने उसकी शिक्षा का खर्च उठाया था, और जिसमें संगीत के अलावा कोई उल्लेखनीय प्रतिभा नहीं थी, जिसे उसके भाई की आर्थिक स्थिति ने उसे निखारने से रोक दिया था। वह “एक भूखी, अच्छे स्वभाव वाली, साधारण लड़की थी।” वह शार्लोट से उम्र में बड़ी थीं और बड़ी लड़कियों के किसी भी छोटे-मोटे अत्याचार या अतिक्रमण से उसकी रक्षा करने के लिए हमेशा तत्पर रहती थीं। शार्लोट उन्हें हमेशा स्नेह और कृतज्ञता के साथ याद करती थी।

मैंने शार्लोट के वर्णन में "उज्ज्वल" शब्द का प्रयोग किया है। मुझे संदेह है कि 1825 का यह वर्ष शायद आखिरी बार था जब यह शब्द उन पर लागू हो सका। उसी वर्ष की वसंत ऋतु में मारिया की हालत इतनी तेज़ी से बिगड़ी कि श्री ब्रोंटे को बुलाया गया। उन्हें पहले मारिया की बीमारी के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, और जिस हालत में उन्होंने मारिया को पाया, वह उनके लिए एक गहरा सदमा था। वे मारिया को लीड्स की गाड़ी से घर ले गए, लड़कियाँ पुल के ऊपर से, झोपड़ियों के पास से गुज़रते हुए, मारिया को देखती रहीं और फिर वह हमेशा के लिए आँखों से ओझल हो गईं। घर पहुँचने के कुछ ही दिनों बाद मारिया का निधन हो गया। शायद मारिया की मृत्यु की खबर, जो उनके धैर्यपूर्ण जीवन का एक अभिन्न अंग थी और जो लगभग

एक सप्ताह पहले ही हुई थी, अचानक उनके जीवन में आ पड़ी, जिससे कॉवन ब्रिज में रह रहे लोग एलिज़ाबेथ के लक्षणों को लेकर अधिक चिंतित हो गए, जो भी तपेदिक से पीड़ित निकलीं। एलिज़ाबेथ को संस्था के एक भरोसेमंद नौकर की देखरेख में घर भेज दिया गया; और उनका भी उसी वर्ष की गर्मियों की शुरुआत में निधन हो गया। इस प्रकार, शार्लोट को अचानक एक माँ विहीन परिवार में सबसे बड़ी बहन की ज़िम्मेदारियाँ उठानी पड़ीं। उसे याद था कि उसकी प्यारी बहन मारिया ने कितनी लगन से, अपने गंभीर और गंभीर स्वभाव में, उन सभी के लिए एक कोमल सहायक और परामर्शदाता बनने का प्रयास किया था; और अब उस पर जो कर्तव्य आ पड़े थे, वे उसे उस कोमल छोटी पीड़ित से मिली विरासत की तरह लग रहे थे, जिसकी हाल ही में मृत्यु हुई थी।

इस दुर्भाग्यपूर्ण वर्ष में ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियों के बाद शार्लोट और एमिली दोनों स्कूल लौट आईं। लेकिन अगली सर्दियों से पहले उन्हें वहां से स्थानांतरित करने की सलाह देना उचित समझा गया, क्योंकि यह स्पष्ट था कि कोवान ब्रिज स्थित घर की नमी भरी स्थिति उनके स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं थी।

अध्याय V

ऊपर बताए गए कारण से, उन छोटी लड़कियों को 1825 की शरद ऋतु में घर भेज दिया गया था, जब शार्लोट की उम्र नौ साल से थोड़ी अधिक थी।

इसी समय के आसपास, गाँव की एक बुजुर्ग महिला पादरी के घर में नौकरानी बनकर रहने आई। वह तीस वर्षों तक घर की सदस्य बनकर वहीं रहीं; और उनकी निष्ठापूर्ण सेवा की अवधि और उनके प्रति लोगों के स्नेह और सम्मान के कारण उनका उल्लेख

करना आवश्यक है। टैबी अपनी बोली, रूप-रंग और चरित्र में यॉर्कशायर की एक आदर्श महिला थीं। उनमें व्यावहारिक समझ और चतुराई कूट-कूटकर भरी थी। उनके शब्द चापलूसी से दूर थे; लेकिन जिन लोगों को वह स्नेह करती थीं, उनके लिए वह कोई कसर नहीं छोड़ती थीं। वह बच्चों पर सख्ती से नियंत्रण रखती थीं; फिर भी उन्हें छोटी-मोटी चीजें उपलब्ध कराने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता था। बदले में, वह एक विनम्र मित्र की तरह व्यवहार करना चाहती थीं; और कई वर्षों बाद, मिस ब्रोंटे ने मुझे बताया कि उन्हें टैबी को संभालना थोड़ा मुश्किल लगता था, क्योंकि टैबी परिवार के सभी मामलों की जानकारी चाहती थीं, लेकिन वह इतनी बहरी हो गई थीं कि जो कुछ भी उन्हें बताया जाता था, वह घर में या आसपास मौजूद किसी को भी पता चल जाता था। जो बातें गुप्त रखना वांछनीय हो सकती हैं, उनके प्रकाशन से बचने के लिए, मिस ब्रोंटे उन्हें एकांत मैदानों में टहलने के लिए ले जाया करती थीं; जहाँ, जब दोनों किसी ऊँचे एकांत स्थान पर हीथर के गुच्छे पर बैठी होती थीं, तो वह आराम से उस बूढ़ी औरत को वह सब कुछ बता सकती थीं जो वह सुनना चाहती थीं।

टैबी हॉवर्थ में उन दिनों में रहती थी जब खनकती घंटियों और रंग-बिरंगे ऊनी वस्त्रों से सजे घोड़े सप्ताह में एक बार कीघली से पहाड़ियों के ऊपर से कोल्ने और बर्नली तक देश का अनाज और उपज लेकर जाते थे। इतना ही नहीं, वह उन आदिम दिनों में घाटी को भी जानती थी जब चांदनी रातों में परियां नदी के किनारे आती थीं और उन्हें देखने वाले लोगों को भी जानती थी। लेकिन उस समय घाटियों में मिलें नहीं थीं; और सारा ऊन कातने का काम आसपास के खेतों में हाथ से होता था। उसने कहा, "कारखानों ने ही उन्हें भगाया था।" निस्संदेह उसके पास ग्रामीण इलाकों के बीते दिनों की कई कहानियां थीं; जीवन के पुराने तरीके, पूर्व निवासी, पतनशील कुलीन वर्ग, जो गायब हो चुके थे और जिनके स्थानों पर उन्हें कोई नहीं जानता था; पारिवारिक त्रासदी और अंधकारमय अंधविश्वास। और इन बातों को बताते समय, इस बात की जरा भी परवाह किए बिना कि कभी कुछ ऐसा हो सकता है जिसे नरम करने की आवश्यकता हो, वे पूरी तरह से सीधे-सादे और स्पष्ट विवरण दे देते थे।

मिस ब्रैनवेल नियमित समय पर बच्चों को वह सब कुछ सिखाती थीं जो वह सिखा सकती थीं, और उन्होंने अपने शयनकक्ष को ही उनका विद्यालय बना दिया था। उनके पिता को सार्वजनिक समाचारों के बारे में उन्हें बताने की आदत थी जिनमें उनकी रुचि होती थी; और उनके दृढ़ और स्वतंत्र विचारों से बच्चों को चिंतन के लिए बहुत कुछ

मिलता था; लेकिन मुझे नहीं पता कि उन्होंने उन्हें कोई प्रत्यक्ष शिक्षा दी थी या नहीं। शार्लोट की गहन विचारशील आत्मा ने अपनी शेष बहनों के प्रति अपने ऊपर आसीन कोमल दायित्व को लगभग पीड़ादायक रूप से महसूस किया होगा। वह एमिली से केवल अठारह महीने बड़ी थीं; लेकिन एमिली और ऐनी केवल सहपाठी और खेलकूद करने वाली थीं, जबकि शार्लोट दोनों के लिए माँ जैसी मित्र और संरक्षक थीं; और अपनी उम्र से परे कर्तव्यों को इस प्रेमपूर्ण ढंग से निभाने के कारण वह अपनी वास्तविक आयु से कहीं अधिक बड़ी महसूस करती थीं।

पैट्रिक ब्रैनवेल, उनके इकलौते भाई, असाधारण प्रतिभा के धनी थे और कुछ मायनों में असाधारण रूप से प्रतिभाशाली भी। श्री ब्रोंटे के मित्रों ने उन्हें अपने बेटे को स्कूल भेजने की सलाह दी; लेकिन अपनी युवावस्था के दृढ़ संकल्प और उसे इस्तेमाल करने के तरीके को याद करते हुए, उन्हें लगा कि पैट्रिक घर पर ही बेहतर रहेगा और वे स्वयं उसे अच्छी तरह पढ़ा सकते हैं, जैसा कि उन्होंने पहले भी दूसरों को पढ़ाया था। इसलिए पैट्रिक, या जैसा कि उनका परिवार उन्हें ब्रैनवेल कहता था, हॉवर्थ में ही रहे और अपने पिता के साथ दिन में कुछ घंटे कड़ी मेहनत करते रहे; लेकिन जब उनके पिता का समय अपने पैरिश के कर्तव्यों में व्यस्त हो जाता था, तो लड़का गाँव के लड़कों की संगति में आ जाता था - क्योंकि युवा युवाओं को पसंद करते हैं, और लड़के लड़कों को पसंद करते हैं।

फिर भी, वह अपनी बहनों के कई नाटकों और मनोरंजन कार्यक्रमों में शामिल रहे। ये कार्यक्रम अधिकतर एकांतप्रिय और बौद्धिक प्रकृति के थे। मुझे एक अनोखा पैकेट सौंपा गया है, जिसमें अकल्पनीय रूप से कम जगह में बहुत सारी पांडुलिपियाँ हैं; कहानियाँ, नाटक, कविताएँ, प्रेम प्रसंग, जो मुख्य रूप से शार्लोट द्वारा लिखे गए हैं, और उनकी लिखावट इतनी जटिल है कि बिना आवर्धक लेंस के इसे समझना लगभग असंभव है। संलग्न पृष्ठ की प्रतिकृति से बेहतर कोई विवरण लेखन की अत्यधिक सूक्ष्मता का अंदाजा नहीं दे सकता।

इन कागजों में उनकी रचनाओं की एक सूची है, जिसे मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ, यह एक रोचक प्रमाण है कि साहित्यिक रचना का जुनून उनमें कितनी जल्दी पैदा हो गया था:

मेरी पुस्तकों की सूची, उनके पूर्ण होने की अवधि सहित, 3 अगस्त, 1830 तक।

एक ही खंड में दो प्रेम कहानियां; अर्थात्, बारह साहसी और आयरलैंड में रोमांच,

2 अप्रैल, 1829।

सुख की खोज, एक कहानी, 1 अगस्त, 1829।

अवकाश के घंटे, एक कहानी और दो अंश, 6 जुलाई 1829।

एडवर्ड डी क्रैक के कारनामे, एक कहानी, 2 फरवरी, 1830।

अर्नेस्ट एलेम्बर्ट के कारनामे, एक कहानी, 26 मई, 1830।

इस युग के कुछ सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के जीवन की एक रोचक घटना, एक कहानी, 10 जून, 1830।

द्वीपवासियों की कहानियाँ, चार खंडों में। प्रथम खंड की विषयवस्तु: — 1. उनकी उत्पत्ति का विवरण; 2. विज़न द्वीप का वर्णन; 3. रैटन का प्रयास; 4. लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली और मार्क्विस ऑफ डौरो का साहसिक कार्य; 31 जून, 1829 को पूर्ण हुआ। द्वितीय खंड: — 1. विद्यालय विद्रोह; 2. ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के जीवन की विचित्र घटना; 3. उनके पुत्रों को कहानी; 4. मार्क्विस ऑफ डौरो और लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली द्वारा अपने नन्हे राजा और रानी को कहानी; 2 दिसंबर, 1829 को पूर्ण हुआ। तृतीय खंड: — 1. गुफा में ड्यूक ऑफ वेलिंगटन का साहसिक कार्य; 2. ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और नन्हे राजा और रानी की हॉर्स-गार्ड्स की यात्रा; 8 मई, 1830 को पूर्ण हुआ। चौथा खंड: — 1. स्ट्रैथफील्डसे की तीन बूढ़ी धोबिनें; 2. लॉर्ड सी. वेलेस्ली की अपने भाई को कहानी; 30 जुलाई, 1830 को पूर्ण हुआ।

वर्तमान युग के महान पुरुषों के चरित्र, 17 दिसंबर 1829।

यंग मेन्स मैगजीन्स, छह अंकों में, अगस्त से दिसंबर तक, बाद के महीनों में दो अंक, 12 दिसंबर, 1829 को समाप्त हुआ। विषय-सूची: — 1. एक सच्ची कहानी; 2. युद्ध के कारण; 3. एक गीत; 4. वार्तालाप; 5. एक सच्ची कहानी का भाग; 6. कावडोर की आत्मा; 7. एक शराबखाने का आंतरिक दृश्य, एक कविता; 8. कांच का शहर, एक गीत; 9. चांदी का प्याला, एक कहानी; 10. रेगिस्तान में मेज और फूलदान, एक गीत; 11. वार्तालाप; 12. महान पुल पर एक दृश्य; 13. प्राचीन ब्रितानियों का गीत; 14. मेरे शहर का एक दृश्य, एक कहानी; 15. एक अमेरिकी कहानी; 16. एक प्रतिभाशाली व्यक्ति के बगीचे को देखकर लिखी गई पंक्तियाँ; 17. कांच के शहर की गाथा; 18. स्विस कलाकार, एक कहानी; 19. इस पत्रिका के स्थानांतरण पर पंक्तियाँ। 20. उसी पर, एक अलग हाथ से; 21. परिषद में मुख्य जिन्न; 22. स्पेन में फसल; 23. स्विस कलाकार जारी; 24. बातचीत।

द पोएटेस्टर, एक नाटक, 2 खंडों में, 12 जुलाई, 1830।

एक कविता संग्रह, 17 दिसंबर, 1829 को पूर्ण हुआ। विषय-सूची: — 1. प्रकृति की सुंदरता; 2. एक छोटी कविता; 3. कनाडा के जंगल में यात्रा के दौरान चिंतन; 4. एक निर्वासित का गीत; 5. बाबेल के टॉवर के खंडहरों को देखकर; 6. 14 पंक्तियों की एक रचना; 7. एक सुहावनी ग्रीष्म संध्या पर नदी के किनारे लिखी गई पंक्तियाँ; 8. वसंत, एक गीत; 9. शरद ऋतु, एक गीत।

विविध कविताएँ, 30 मई, 1830 को पूर्ण हुईं। विषय-सूची: — 1. कब्रिस्तान; 2. लुसिवा नदी के रमणीय तट पर स्थित ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के महल का वर्णन; यह लेख एक छोटी गद्य कथा या घटना है; 3. आनंद; 4. उत्तरी इंग्लैंड के एक ऊँचे पर्वत की चोटी पर लिखी गई पंक्तियाँ; 5. शीतकाल; 6. दो अंश, अर्थात्, पहला, द विज़न; दूसरा, एक छोटी अनाम कविता; शाम की सैर, एक कविता, 23 जून, 1830।

कुल मिलाकर बाईस खंडों में।

सी. ब्रोंटे, 3 अगस्त, 1830

चूंकि प्रत्येक खंड में साठ से सौ पृष्ठ हैं, और लिथोग्राफ किए गए पृष्ठ का आकार औसत से थोड़ा छोटा है, फिर भी संपूर्ण मात्रा बहुत अधिक प्रतीत होती है, यह देखते हुए कि यह सब लगभग पंद्रह महीनों में लिखा गया था। मात्रा की बात तो हो गई; तेरह या चौदह वर्ष की लड़की के लिए इसकी गुणवत्ता मुझे असाधारण लगती है। उस समय की उनकी गद्य शैली के नमूने के रूप में, और साथ ही इन बच्चों द्वारा व्यतीत शांत घरेलू जीवन को प्रकट करने के लिए, मैं उनकी "छोटी पत्रिकाओं" में से एक, "द्वीपवासियों की कहानियाँ" के परिचय से एक अंश लेता हूँ:

31 जून, 1829।

"'आइलैंडर्स' नाटक की रचना दिसंबर 1827 में इस प्रकार हुई। एक रात, लगभग उस समय जब नवंबर की ठंडी ओलावृष्टि और तूफानी कोहरे के बाद कड़ाके की सर्दी के बर्फीले तूफान और तेज चुभने वाली रात की हवाएँ चलने लगती हैं, हम सब रसोई की गर्म जलती हुई आग के चारों ओर बैठे थे। हमने अभी-अभी टैबी के साथ मोमबत्ती जलाने की उपयुक्तता को लेकर हुए झगड़े को समाप्त किया था, जिसमें वह विजयी रही क्योंकि कोई मोमबत्ती नहीं लाई गई थी। एक लंबा सन्नाटा छा गया, जिसे अंत में ब्रैनवेल ने आलस्यपूर्ण ढंग से यह कहकर तोड़ा, 'मुझे नहीं पता कि क्या करना है।'

एमिली और ऐनी ने भी यही बात दोहराई।”

“टैबी। ‘तुम बिस्तर पर जा सकते हो।’”

ब्रैनवेल ने कहा, 'मैं वह करने के बजाय कुछ भी करना पसंद करूंगा।'

“शार्लोट। ‘टैबी, आज रात तुम इतनी उदास क्यों हो? ओह! काश हम दोनों के पास अपना-अपना एक द्वीप होता।’”

ब्रैनवेल ने कहा, 'अगर हमारे पास विकल्प होता तो मैं मैन द्वीप को चुनता।'

“शार्लोट ने कहा, ‘और मैं आइल ऑफ वाइट को चुनूंगी।’”

“एमिली। ‘मेरे लिए तो एरन द्वीप ही ठीक है।’”

“ऐनी। ‘और मेरा होगा ग्वेर्नसे।’”

“फिर हमने अपने द्वीपों के प्रमुख व्यक्तियों का चयन किया। ब्रैनवेल ने जॉन बुल, एस्टली कूपर और ली हंट को चुना; एमिली ने वाल्टर स्कॉट, मिस्टर लॉकहार्ट और जॉनी लॉकहार्ट को; ऐनी ने माइकल सैडलर, लॉर्ड बेंटिंक और सर हेनरी हैलफोर्ड को। मैंने ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और उनके दो बेटों, क्रिस्टोफर नॉर्थ एंड कंपनी और मिस्टर एबरनेथी को चुना। यहीं हमारी बातचीत घड़ी के सात बजने की भयावह आवाज़ से बाधित हुई, और हमें सोने के लिए बुलाया गया। अगले दिन हमने अपने सदस्यों की सूची में कई और लोगों को जोड़ा, जब तक कि हमें राज्य के लगभग सभी प्रमुख व्यक्ति नहीं मिल गए। इसके बाद, लंबे समय तक कुछ भी उल्लेखनीय नहीं हुआ। जून 1828 में, हमने एक काल्पनिक द्वीप पर एक स्कूल बनाया, जिसमें 1,000 बच्चे पढ़ने वाले थे। इमारत का निर्माण इस प्रकार था। द्वीप का घेरा पचास मील था, और यह किसी वास्तविक चीज़ की तुलना में जादू की रचना जैसा अधिक प्रतीत होता था,” इत्यादि।

इस अंश में दो-तीन बातें मुझे बहुत प्रभावित करती हैं; एक तो यह कि साल का समय, शाम का समय, बाहर की ठंड और अंधेरा, बर्फ से ढके सुनसान मैदानों पर बहती रात की हवाओं की आवाज़, जो धीरे-धीरे पास आती जा रही है और अंत में उस कमरे के दरवाजे को हिला देती है जहाँ वे बैठे थे—क्योंकि वह दरवाजा सीधे उस उजाड़, विशाल मैदान में खुलता था—इन सब का चित्रण उस जीवंत और सजीव रसोई की चमक और चहल-पहल से किया गया है जहाँ ये अद्भुत बच्चे इकट्ठा हैं। टैबी अपने देहाती पहनावे में घूमती है, सादगीपूर्ण, दृढ़ निश्चयी, और बड़ी तेज़ी से गलतियाँ निकालने वाली, फिर भी हम यकीन कर सकते हैं कि वह अपने बच्चों पर किसी और

को दोष नहीं लगाने देती। एक और ध्यान देने योग्य बात यह है कि वे अपने महान पुरुषों का चुनाव कितनी बुद्धिमत्ता और पक्षपात के साथ करते हैं, जो लगभग सभी उस समय के कट्टर टोरी हैं। इतना ही नहीं, वे केवल स्थानीय नायकों तक ही सीमित नहीं रहते; बच्चों को आमतौर पर रुचिकर न लगने वाली कई बातें सुनने के कारण उनकी पसंद का दायरा बढ़ गया है। आठ साल की नन्ही ऐनी, उस समय के राजनेताओं को अपने मुख्य आदर्श पुरुषों के रूप में चुनती है।

इसी समय के आसपास लिखा गया एक और कागज का टुकड़ा है, जिस पर लगभग अपठनीय लिखावट में लिखा गया है, और जो उनके विचारों के स्रोतों के बारे में कुछ जानकारी देता है।

वर्ष 1829 का इतिहास।

“एक बार पापा ने मेरी बहन मारिया को एक किताब उधार दी थी। वह भूगोल की एक पुरानी किताब थी; उसने उसके खाली पन्ने पर लिखा, ‘पापा ने मुझे यह किताब उधार दी है।’ यह किताब एक सौ बीस साल पुरानी है; इस समय यह मेरे सामने पड़ी है। जब मैं यह लिख रही हूँ, मैं हॉवर्थ स्थित पादरी के घर की रसोई में हूँ; नौकरानी टैबी नाश्ते के बर्तन धो रही है, और मेरी सबसे छोटी बहन ऐनी (मारिया मेरी सबसे बड़ी बहन थी) एक कुर्सी पर घुटनों के बल बैठी टैबी द्वारा हमारे लिए बनाए गए कुछ केक देख रही है। एमिली बैठक में कालीन साफ कर रही है। पापा और ब्रैनवेल कीघली गए हैं। चाची ऊपर अपने कमरे में हैं, और मैं रसोई में मेज के पास बैठकर यह लिख रही हूँ। कीघली यहाँ से चार मील दूर एक छोटा सा कस्बा है। पापा और ब्रैनवेल अखबार लेने गए हैं, ‘लीड्स इंटेलिजेंसर’, जो एक बहुत ही बढ़िया टोरी अखबार है, जिसके संपादक श्री वुड और मालिक श्री हेनेमैन हैं। हम दो अखबार लेते हैं और हफ्ते में तीन अखबार देखते हैं। हम ‘लीड्स इंटेलिजेंसर’ लेते हैं। 'इंटेलिजेंसर' (टोरी पार्टी का अखबार) और 'लीड्स मर्करी' (व्हिग पार्टी का अखबार), जिसका संपादन श्री बैनेस, उनके भाई, दामाद और उनके दो बेटों, एडवर्ड और टैलबोट द्वारा किया जाता था। हम 'जॉन बुल' देखते हैं; यह एक कट्टर टोरी है, बहुत हिंसक। श्री ड्राइवर ने हमें यह अखबार दिया है, साथ ही 'ब्लैकवुड्स मैगज़ीन' भी, जो सबसे सक्षम पत्रिका है। संपादक श्री क्रिस्टोफर नॉर्थ हैं, जो चौहत्तर वर्ष के एक बुजुर्ग व्यक्ति हैं; उनका जन्मदिन 1 अप्रैल को है; उनके साथ टिमोथी टिकलर, मॉर्गन ओ'डोहर्टी, मैक्रैबिन मोर्दकै, मुल्लियन, वार्नेल और जेम्स हॉग हैं, जो एक असाधारण प्रतिभा के धनी

स्कॉटिश चरवाहे हैं। हमारे नाटक प्रदर्शित हुए: 'यंग मेन' (जून 1826), 'अवर फेलोज़' (जुलाई 1827), और 'आइलैंडर्स' (दिसंबर 1827)। ये हमारे तीन महान नाटक हैं, जिन्हें गुप्त नहीं रखा गया है। एमिली और मेरे सर्वश्रेष्ठ नाटक 1 दिसंबर को प्रदर्शित हुए। 1827; बाकी मार्च 1828। सबसे अच्छे नाटक गुप्त नाटक होते हैं; वे बहुत ही बढ़िया होते हैं। हमारे सभी नाटक बहुत ही अनोखे हैं। उनकी प्रकृति को कागज पर लिखने की मुझे आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं उन्हें हमेशा याद रखूंगा। 'यंग मेन्स' नाटक की उत्पत्ति ब्रैनवेल के पास मौजूद कुछ लकड़ी के सैनिकों से हुई: 'आवर फेलोज़' 'ईसप की कहानियों' से; और 'आइलैंडर्स' कई घटित घटनाओं से। यदि संभव हुआ तो मैं अपने नाटकों की उत्पत्ति का और अधिक स्पष्ट वर्णन करूंगा। सबसे पहले, 'यंग मेन्स'। पापा ने लीड्स से ब्रैनवेल के लिए कुछ लकड़ी के सैनिक खरीदे; जब पापा घर आए तो रात हो चुकी थी और हम बिस्तर पर थे, इसलिए अगली सुबह ब्रैनवेल सैनिकों का एक बक्सा लेकर हमारे दरवाजे पर आए। एमिली और मैं बिस्तर से कूद पड़े, और मैंने एक सैनिक को झट से उठा लिया और चिल्लाकर कहा, 'यह ड्यूक ऑफ वेलिंगटन है! यही ड्यूक होगा!' जब मैंने यह कहा, तो एमिली ने भी एक सैनिक उठा लिया और कहा कि यह उसका होगा; जब ऐनी नीचे आई, तो उसने भी कहा कि एक सैनिक उसका होगा। मेरा वाला था... सबसे सुंदर, सबसे लंबा और हर तरह से सबसे परिपूर्ण। एमिली का लड़का गंभीर दिखने वाला था, और हम उसे 'ग्रेवी' कहते थे। ऐनी का लड़का एक अजीब सा छोटा सा था, बिल्कुल उसी की तरह, और हम उसे 'वेटिंग-बॉय' कहते थे। ब्रैनवेल ने अपना लड़का चुना और उसे 'बुआनापार्ट' कहा।

उपरोक्त अंश से पता चलता है कि छोटी ब्रोंटे बहनों को किस प्रकार की पठन-पाठन रुचि थी; लेकिन ज्ञान की उनकी प्यास अनेक दिशाओं में जागृत हुई होगी, क्योंकि मुझे "उन चित्रकारों की सूची मिली है जिनकी कृतियाँ मैं देखना चाहती हूँ," जिसे शार्लोट ने तेरह वर्ष की आयु में ही तैयार किया था:

"गुइडो रेनी, जूलियो रोमानो, टिटियन, राफेल, माइकल एंजेलो, कोरेगियो, एनीबल कैरासी, लियोनार्डो दा विंची, फ्रा बार्टोलोमियो, कार्लो सिगनानी, वैंडीके, रूबेन्स, बार्टोलोमियो रामेर्गी।"

यॉर्कशायर के एक दूरदराज के पादरी के घर में रहने वाली यह नन्ही लड़की, जिसने शायद अपने जीवन में कभी चित्रकला के योग्य कोई चीज नहीं देखी, महान

इतालवी और फ्लेमिश चित्रकारों के नाम और विशेषताओं का अध्ययन कर रही है, जिनकी कृतियों को वह अपने सामने आने वाले धुंधले भविष्य में कभी न कभी देखने की लालसा रखती है! एक कागज बचा हुआ है जिसमें "फ्रेंडशिप्स ऑफरिंग फॉर 1829" में उत्कीर्ण चित्रों का विस्तृत अध्ययन और आलोचनाएं हैं; यह दर्शाता है कि कैसे उसने बचपन से ही गहन अवलोकन और कारण-प्रभाव के धैर्यपूर्ण विश्लेषण की आदतें विकसित कर ली थीं, जो बाद के जीवन में उसकी प्रतिभा की सहायक साबित हुईं।

श्री ब्रोंटे ने जिस तरह से अपने बच्चों को राजनीति में अपनी गहरी रुचि के प्रति सहानुभूति जगाई, उससे उनके दिमाग को स्थानीय गपशप से सीमित या दूषित होने से बचाने में काफी मदद मिली होगी। मैं "टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स" से बचा हुआ एकमात्र व्यक्तिगत अंश ले रहा हूँ; यह दूसरे खंड की प्रस्तावना में निहित एक प्रकार की माफी है, जिसमें पहले के लेखन को जारी न रखने का कारण बताया गया है; लेखक लंबे समय से बहुत व्यस्त थे, और बाद में राजनीति में बहुत अधिक लीन हो गए थे।

“संसद का सत्र शुरू हुआ, कैथोलिक धर्म का बड़ा मुद्दा उठाया गया, ड्यूक के उपायों का खुलासा हुआ, और चारों ओर निंदा, हिंसा, गुटबाजी और अफरा-तफरी मची हुई थी। ओह, राजा के भाषण से लेकर अंत तक के वे छह महीने! कैथोलिक धर्म, ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और मिस्टर पील के अलावा किसी और विषय पर कोई लिख, सोच या बोल नहीं सकता था। मुझे वह दिन याद है जब इंटेलिजेंस एक्स्ट्राऑर्डिनरी में मिस्टर पील का भाषण छपा था, जिसमें कैथोलिकों को प्रवेश देने की शर्तें लिखी थीं! पापा ने कितनी उत्सुकता से कवर फाड़ा, और हम सब उनके चारों ओर कैसे जमा हो गए, और कितनी सांस रोककर उत्सुकता से सुनते रहे, जैसे-जैसे एक-एक करके उनका खुलासा हुआ, उनकी व्याख्या की गई, और उन पर इतनी कुशलता और अच्छे से तर्क दिए गए! और फिर जब सब कुछ सामने आ गया, तो चाची ने कहा कि उन्हें यह बहुत अच्छा लगा, और इतनी अच्छी सुरक्षा के साथ कैथोलिक कोई नुकसान नहीं कर सकते! मुझे यह भी याद है कि क्या यह हाउस ऑफ लॉर्ड्स से पास होगा, इस बारे में संदेह था, और यह भविष्यवाणी की गई थी कि यह पास नहीं होगा; और जब वह अखबार आया जो... इस प्रश्न का निर्णय करने के लिए, हम सबने बड़ी चिंता के साथ पूरी घटना सुनी: दरवाज़े खुलना; सन्नाटा; शाही

ड्यूक अपने वस्त्रों में, और महान ड्यूक हरे रंग के कमरबंद और जैकेट में; उनके उठने पर सभी कुलीन महिलाओं का उठना; उनके भाषण का पाठ - पापा का कहना था कि उनके शब्द अनमोल सोने के समान थे; और अंत में, विधेयक के पक्ष में एक के मुकाबले चार का बहुमत। लेकिन यह विषयांतर है," इत्यादि।

यह लेख उसने तेरह से चौदह वर्ष की आयु के बीच लिखा होगा।

मेरे कुछ पाठकों को यह जानना दिलचस्प लगेगा कि उस दौर में उनकी विशुद्ध कल्पनाशील लेखन शैली कैसी थी। जैसा कि हम देख चुके हैं, किसी भी वास्तविक घटना का उनका वर्णन सरल, सजीव और प्रभावशाली होता है, लेकिन जब वे अपनी सृजनशीलता का भरपूर इस्तेमाल करती हैं, तो उनकी कल्पना और भाषा दोनों ही बेलगाम हो जाती हैं, कभी-कभी तो उन्माद की हद तक पहुँच जाती हैं। इस विलक्षण और विचित्र लेखन का एक उदाहरण ही काफी होगा। यह एक "लिटिल मैगजीन्स" के संपादक को लिखा गया पत्र है।

“महोदय, — यह सर्वविदित है कि जिन्नों ने घोषणा की है कि यदि वे प्रत्येक वर्ष कुछ रहस्यमय प्रकृति के कठिन कर्तव्यों का पालन नहीं करेंगे, तो आकाश के सभी लोक जलकर राख हो जाएँगे और एक विशाल गोले में समाहित हो जाएँगे, जो अंतरिक्ष के विशाल निर्जन क्षेत्र में एकाकी वैभव के साथ विचरण करेगा, जिसमें केवल जिन्नों के चार उच्च राजकुमार ही निवास करेंगे, जब तक कि समय अनंत काल में परिणत न हो जाए; और इस दुस्साहस की तुलना केवल उनके एक अन्य दावे से की जा सकती है, अर्थात्, वे अपनी जादुई शक्ति से संसार को रेगिस्तान में, शुद्धतम जल को विषैले जल की धाराओं में और निर्मल झीलों को स्थिर जल में परिवर्तित कर सकते हैं, जिसकी विषैली वाष्प जंगल के रक्तपिपासु जानवर और चट्टान के हिंसक पक्षी को छोड़कर सभी जीवित प्राणियों को मार डालेगी। लेकिन इस उजाड़ के बीच में मुख्य जिन्नों का महल निर्जन क्षेत्र में चमकता हुआ उदय होगा, और उनकी युद्ध-घोषणा की भयानक गर्जना धरती पर फैल जाएगी। सुबह, दोपहर और रात; लेकिन वे मृतकों की हड्डियों पर अपना वार्षिक भोज मनाएंगे और हर साल विजय की खुशी मनाएंगे। मुझे लगता है, महोदय, कि इस भयावह दुष्टता पर टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए मैं जल्दी से अपने हस्ताक्षर कर रहा हूँ, इत्यादि।

“14 जुलाई, 1829।”

यह संभव है कि उपरोक्त पत्र में कोई प्रतीकात्मक या राजनीतिक संदर्भ रहा हो,

जो हमारी दृष्टि से अदृश्य हो, लेकिन उन प्रतिभाशाली बच्चों के लिए स्पष्ट हो जिनके लिए यह लिखा गया था। राजनीति स्पष्ट रूप से उनकी सर्वोच्च रुचि थी; ड्यूक ऑफ वेलिंगटन उनके लिए किसी देवता के समान थे। उनसे संबंधित हर बात वीर युग से जुड़ी थी। क्या शार्लोट को किसी वीर योद्धा या समर्पित प्रेमी की चाह होती, मार्क्विस ऑफ डौरो या लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली, वे तुरंत उनके लिए उपलब्ध हो जाते। इस समय के उनके गद्य लेखन में शायद ही कोई ऐसा उदाहरण हो जिसमें वे प्रमुख पात्र न हों, और जिसमें उनके "महान पिता" किसी बृहस्पति टोनन्स या डेउस एक्स मशीना के रूप में प्रकट न होते हों।

इस बात के एक प्रमाण के रूप में कि वेलेस्ली ने उनकी कल्पना को किस प्रकार प्रभावित किया, मैंने विभिन्न पत्रिकाओं में उनके कुछ लेखों के शीर्षक यहाँ लिख दिए हैं।

“लिफ़ी कैसल”, लॉर्ड सी. वेलेस्ली द्वारा रचित एक कहानी।

मार्क्विस ऑफ डौरो द्वारा रचित "अरगुआ नदी की ओर जाने वाली पंक्तियाँ"।

लॉर्ड सी. वेलेस्ली द्वारा रचित "एक असाधारण सपना"।

“द ग्रीन ड्वार्फ, ए टेल ऑफ द परफेक्ट टेंस”, लॉर्ड चार्ल्स अल्बर्ट फ्लोरियन वेलेस्ली द्वारा लिखित।

लॉर्ड सी. ए. एफ. वेलेस्ली द्वारा लिखित "स्ट्रेंज इवेंट्स"।

किसी एकांत गाँव या सुनसान ग्रामीण घर में जीवन कई छोटी-छोटी घटनाओं से भरा होता है जो बचपन के मन में गहराई से बैठ जाती हैं और उन पर गहन चिंतन किया जाता है। कई दिनों तक कोई और घटना घटित न हुई हो या घटित होने की संभावना न हो, जो इनमें से किसी एक घटना को किनारे कर दे, इससे पहले कि वह एक अस्पष्ट और रहस्यमय महत्व ग्रहण कर ले। इस प्रकार, एकांत जीवन जीने वाले बच्चे अक्सर विचारशील और स्वप्निल होते हैं: बाहरी दुनिया से उन पर पड़ने वाले प्रभाव— धरती और आकाश के अनूठे दृश्य— अजनबी चेहरों और आकृतियों से आकस्मिक मुलाकातें (उन एकांत स्थानों में दुर्लभ घटनाएँ)—कभी-कभी उनके द्वारा इतनी गहराई से महत्वपूर्ण बना दी जाती हैं कि वे लगभग अलौकिक प्रतीत होती हैं। इस विशेषता को मैं शार्लेट के उस समय के लेखन में बहुत स्पष्ट रूप से देखता हूँ। वास्तव में, इन परिस्थितियों में, यह कोई विशेषता नहीं है। यह सभी के लिए सामान्य रहा है, चाहे वे चाल्डियन चरवाहे हों - "एक अकेला चरवाहा जो गर्मियों के आधे दिन

तक नरम घास पर लेटा रहता है" - या एकाकी भिक्षु - या वे सभी जिनकी बाहरी धारणाओं को कल्पना में विकसित और जीवंत होने का समय मिला है, जब तक कि उन्हें वास्तविक मानवीकरण या अलौकिक दर्शन के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है, जिस पर संदेह करना ईशनिंदा होगा।

शार्लोट की इस प्रवृत्ति को संतुलित करने के लिए, उसमें स्वाभाविक रूप से प्रबल व्यावहारिक बुद्धि थी, जिसका प्रयोग उसके व्यावहारिक जीवन की आवश्यकताओं के कारण प्रतिदिन करना पड़ता था। उसके कर्तव्य केवल पाठ पढ़ना, एक निश्चित मात्रा में पढ़ना और कुछ विचार प्राप्त करना ही नहीं थे; इसके अलावा, उसे कमरे साफ करने, सीढ़ियों से ऊपर-नीचे छोटे-मोटे काम करने, खाना पकाने के सरल कार्यों में मदद करने, अपनी छोटी बहनों और भाई के साथ बारी-बारी से खेलने और मार्गदर्शन करने, चीजें बनाने और मरम्मत करने और अपनी सजग चाची से मितव्ययिता सीखने का भी काम करना पड़ता था। इस प्रकार हम देखते हैं कि जहाँ उसकी कल्पना को जीवंत प्रभाव प्राप्त होते थे, वहीं उसकी उत्कृष्ट समझ में उन कल्पनाओं के वास्तविकता बनने से पहले ही उन्हें सुधारने की पूरी क्षमता थी। कागज के एक टुकड़े पर उसने निम्नलिखित विवरण लिखा है: —

“22 जून, 1830, शाम 6 बजे।

“हॉवर्थ, ब्रैडफोर्ड के पास।

“22 जून, 1830 को निम्नलिखित विचित्र घटना घटी: — उस समय पापा बहुत बीमार थे, बिस्तर पर पड़े थे और इतने कमजोर थे कि बिना सहारे के उठ भी नहीं सकते थे। मैं और टैबी रसोई में अकेले थे, दोपहर लगभग साढ़े नौ बजे। अचानक हमने दरवाजे पर दस्तक सुनी; टैबी उठी और दरवाजा खोला। बाहर एक बूढ़ा आदमी खड़ा दिखाई दिया, जिसने उससे इस प्रकार कहा: —

“बूढ़े आदमी ने कहा, ‘क्या पादरी यहाँ रहता है?’”

“टैबी। — ‘हाँ।’”

“बूढ़ा आदमी। — ‘मैं उसे देखना चाहता हूँ।’”

“टैबी। — ‘वह बीमार है और बिस्तर पर पड़ा है।’”

“बूढ़ा आदमी। — ‘मेरे पास उसके लिए एक संदेश है।’”

“टैबी। — ‘किससे?’”

“बूढ़ा आदमी। — ‘प्रभु की ओर से।’”

"टैबी। — 'कौन?'"

"बूढ़े आदमी ने कहा— 'प्रभु चाहते हैं कि मैं कहूँ कि दूल्हा आ रहा है, और हमें उससे मिलने की तैयारी करनी चाहिए; कि रस्सियाँ खुलने वाली हैं, और सोने का कटोरा टूट जाएगा; झरने पर घड़ा टूट जाएगा।'

"यहाँ उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया और अचानक चले गए। जैसे ही टैबी ने दरवाजा बंद किया, मैंने उससे पूछा कि क्या वह उन्हें जानती है। उसका जवाब था कि उसने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था, न ही उनके जैसा कोई और। हालाँकि मुझे पूरा यकीन है कि वह कोई कट्टरपंथी उत्साही व्यक्ति थे, शायद नेक इरादे वाले, लेकिन सच्ची धार्मिकता से पूरी तरह अनभिज्ञ; फिर भी मैं उनके शब्दों को सुनकर रोने से खुद को नहीं रोक पाई, जो उन्होंने उस विशेष समय पर इतनी अप्रत्याशित रूप से कहे थे।"

हालांकि निम्नलिखित कविता की तिथि थोड़ी अनिश्चित है, फिर भी इसे यहाँ प्रस्तुत करना उचित होगा। यह 1833 से पहले लिखी गई होगी, लेकिन कितनी पहले, यह निर्धारित करने का कोई साधन नहीं है। मैं इसे उस समय की विभिन्न लघु रचनाओं में प्रदर्शित उल्लेखनीय काव्य प्रतिभा के नमूने के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ; कम से कम उन सभी रचनाओं में जिन्हें मैं पढ़ पाया हूँ।

घायल हिरण।

जंगल के उदास हृदय की सबसे गहरी छाया के बीच से गुजरते हुए, कल रात मैंने एक घायल हिरण को देखा जो अकेला और अलग पड़ा था।

घनी शाखाओं को भेदने वाला ऐसा प्रकाश (बिखरा हुआ, विरल और धुंधला प्रकाश) फर्न से होकर गुजरा जिसने उसका पलंग बनाया था और उस पर पूरी तरह केंद्रित हो गया।

उसके थके हुए अंगों में दर्द कांप रहा था, दर्द उसकी धैर्यवान आँखों में भर गया था, छायादार फर्न के बीच दर्द से कुचला हुआ, उसका शाखाओं वाला मुकुट पड़ा था।

उसके साथी कहाँ थे? उसका दोस्त कहाँ था? उसकी मृत्यु शैया से सब गायब हो गए! और वह, इस प्रकार आघातग्रस्त और अकेला, अकेले ही पीड़ा सहता और खून बहाता रहा।

क्या उसने वही महसूस किया जो एक आदमी महसूस कर सकता है, दोस्त के बिछड़ने और गहरे दुख से? क्या दर्द का तीखा तीर और शोक का चुभन उसके घायल

सीने में छटपटा रही थी?

क्या खोए हुए स्नेह की लालसा ने हर घातक तीर को चुभोया; क्या अप्रतिफलित प्रेम और विश्वासघात ने उसके हृदय को पीड़ा दी?

नहीं! मनुष्य को उसका उचित भाग्य सौंप दो!
ये वो पीड़ाएँ हैं जो उठती हैं
राज्य और अंधकार के बिस्तर के चारों ओर,
जहाँ आदम की संतान मरती है!

अध्याय VI

शायद यह मिस ब्रोंटे का व्यक्तिगत वर्णन करने का उपयुक्त समय है। 1831 में, वह लगभग पंद्रह वर्ष की एक शांत, विचारशील लड़की थीं, कद में बहुत छोटी—वह स्वयं को "बौना" कहती थीं—लेकिन उनके हाथ-पैर और सिर उनके पतले, नाजुक शरीर के अनुपात में थे, इसलिए कुरूपता का संकेत देने वाला कोई भी शब्द उन पर ठीक से लागू नहीं होता था; उनके बाल मुलायम, घने और भूरे थे, और उनकी आंखें अनोखी थीं, जिनका वर्णन करना मेरे लिए कठिन है, क्योंकि वे मुझे उनके जीवन के बाद के वर्षों में दिखाई दीं। वे बड़ी और सुडौल थीं; उनका रंग लाल-भूरा था; लेकिन अगर पुतली को ध्यान से देखा जाए, तो वह अनेक रंगों से बनी हुई प्रतीत होती थी। उनके चेहरे पर आमतौर पर शांत, ध्यान से सुनने वाली बुद्धिमत्ता का भाव होता था; लेकिन कभी-कभी, किसी विशेष अवसर पर जब किसी बात में गहरी रुचि या गंभीर आक्रोश होता था, तो एक ऐसी चमक निकलती थी, मानो कोई आध्यात्मिक दीपक प्रज्वलित हो गया हो, जो उन भावपूर्ण आंखों के पीछे सुलगता था। मैंने ऐसा किसी अन्य मनुष्य

में कभी नहीं देखा। उसके चेहरे के बाकी हिस्से सादे, बड़े और बेढंगे थे; लेकिन जब तक आप उन पर गौर न करें, तब तक आपको शायद ही इसका एहसास होता, क्योंकि उसकी आंखें और चेहरे की खूबसूरती हर शारीरिक कमी को ढक लेती थी; टेढ़ा मुंह और बड़ी नाक भुला दी जाती थी, और पूरा चेहरा सबका ध्यान खींच लेता था, और देखते ही देखते उन सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता था जिन्हें वह खुद आकर्षित करना चाहती थी। उसके हाथ और पैर मैंने अब तक जितने भी देखे थे, उनमें सबसे छोटे थे; जब उसका एक हाथ मेरे हाथ में रखा गया, तो ऐसा लगा जैसे किसी चिड़िया का कोमल स्पर्श मेरी हथेली के बीचोंबीच हो। उसकी नाजुक लंबी उंगलियों में एक अनोखी कोमलता थी, यही एक कारण था कि उसका हर हस्तशिल्प, चाहे वह किसी भी तरह का हो - लिखना, सिलाई करना, बुनाई करना - इतना सूक्ष्म और स्पष्ट दिखाई देता था। वह अपने पूरे पहनावे में बेहद साफ-सुथरी थी; लेकिन जूतों और दस्तानों की फिटिंग को लेकर वह बहुत सजग थी।

मैं अच्छी तरह कल्पना कर सकता हूँ कि वह गंभीर और शांत स्वभाव, जो मुझे उनके बारे में जानने के समय से ही उनके चेहरे को किसी पुराने वेनिस चित्र की गरिमा प्रदान करता था, बाद के वर्षों की देन नहीं थी, बल्कि उस बचपन से ही था जब उन्होंने अनाथ बच्चों की बड़ी बहन की भूमिका निभाई थी। लेकिन किशोरावस्था में कदम रख चुकी किसी लड़की के लिए, ऐसा भाव (देहाती मुहावरे में) "पुराने ज़माने का" कहा जाएगा; और 1831 में, जिस दौर के बारे में मैं अब लिख रहा हूँ, हमें उन्हें एक छोटी, गंभीर, पुराने ज़माने की लड़की के रूप में देखना चाहिए, जो व्यवहार में बहुत शांत और पहनावे में बहुत ही अनोखी थीं; क्योंकि देहाती पादरी की पत्नी और बेटियों के लिए उपयुक्त सादगीपूर्ण पहनावे के बारे में उनके पिता के विचारों के प्रभाव के अलावा, उनकी चाची, जिन पर मुख्य रूप से अपनी भतीजियों को कपड़े पहनाने का दायित्व था, आठ या नौ साल पहले पेनज़ेंस छोड़ने के बाद से कभी भी समाज में नहीं गई थीं, और उस समय के पेनज़ेंस के फैशन उनके दिल के बहुत करीब थे।

जनवरी 1831 में, शार्लोट को फिर से स्कूल भेजा गया। इस बार वह मिस डब्ल्यू के पास एक छात्रा के रूप में गईं, जो रो हेड में रहती थीं। रो हेड एक विशाल, हवादार ग्रामीण घर था, जो लीड्स से हडर्सफ़ील्ड जाने वाली सड़क के दाहिनी ओर, एक खेत में थोड़ा हटकर बना हुआ था। तहखाने से छत तक तीन पंक्तियों में पुराने ज़माने की अर्धवृत्ताकार धनुषाकार खिड़कियाँ बनी हुई थीं; और नीचे चरागाह की एक लंबी हरी

ढलान दिखाई देती थी, जो सर जॉर्ज आर्मिटेज के पार्क, किर्कलीस के रमणीय जंगलों में समाप्त होती थी। हालाँकि रो हेड और हॉवर्थ बीस मील से भी कम दूरी पर हैं, फिर भी दोनों का नज़ारा इतना अलग है मानो दोनों की जलवायु अलग-अलग हो। रो हेड के चारों ओर का कोमल, घुमावदार और लहरदार भूभाग किसी अजनबी को ऊँचाइयों पर खुशनुमा हवादारपन और नीचे चौड़ी हरी घाटियों में धूप की गर्माहट का एहसास कराता है। यह ठीक वैसा ही इलाका है जैसा भिक्षुओं को प्रिय था, और पुराने प्लांटाजेनेट काल के निशान हर जगह मिलते हैं, साथ ही आज के वेस्ट राइडिंग के औद्योगिक विकास के संकेत भी। किर्कलीस का पार्क है, जो धूप से भरे हरे-भरे मैदानों से भरा है, जिन पर सदियों पुराने यू-पेड़ों की काली छायाएँ फैली हुई हैं; एक धूसर इमारत है, जो कभी "प्रवक्ताओं का घर" हुआ करती थी; जंगल की गहराई में एक जीर्ण-शीर्ण पत्थर है, जिसके नीचे रॉबिन हुड के दफन होने की बात कही जाती है; पार्क के ठीक बाहर एक पुराना पत्थर की छत वाला घर है, जो अब सड़क किनारे एक सराय है, लेकिन जिसका नाम "तीन ननों" के नाम पर रखा गया है और उसी के अनुरूप एक चित्रयुक्त चिन्ह भी है। और इस विचित्र पुरानी सराय में पास की ऊनी कारखानों के मिल मजदूर आते-जाते रहते हैं, जो लीड्स से हडर्सफील्ड तक जाने वाली मुख्य सड़क पर फैले हुए हैं और भविष्य के गांवों के केंद्र बनते हैं। जीवन शैली, समय और ऋतुओं के ऐसे विरोधाभास वेस्ट राइडिंग से गुजरने वाली बड़ी सड़कों पर यात्री के सामने आते हैं। मेरे विचार से इंग्लैंड के किसी अन्य हिस्से में सदियों का इतना घनिष्ठ और विचित्र संपर्क नहीं होता जितना कि उस जिले में होता है जहाँ रो हेड स्थित है। मिस डब्ल्यू के घर से छह मील के दायरे में - लीड्स से आने वाली सड़क के बाईं ओर - हॉली हॉल के अवशेष स्थित हैं, जो अब लॉर्ड कार्डिगन की संपत्ति है, लेकिन पहले सैविल्स की एक शाखा से संबंधित था। इसके पास ही लेडी ऐनी का कुआँ है; परंपरा के अनुसार, लेडी ऐनी कुएँ पर बैठी थीं, तभी भेड़ियों ने उन्हें घेर लिया और खा लिया। बिर्स्टॉल और बैटली ऊनी मिलों के नील रंग में काम करने वाले मजदूर पाम संडे को इस कुएँ पर जाया करते थे, क्योंकि उस दिन कुएँ का पानी औषधीय गुणों से भरपूर होता है; और कुछ लोगों का अब भी मानना है कि उस दिन सुबह छह बजे कुएँ का पानी कई रंगों में बदल जाता है।

हॉली हॉल के अवशेषों में रहने वाले किसान की ज़मीनों के चारों ओर आज के पत्थर के मकान दिखाई देते हैं, जिनमें वे लोग रहते हैं जो ऊनी मिलों से अपनी

आजीविका और धन कमा रहे हैं। ये मिलें प्राचीन हॉलों के मालिकों को विस्थापित करते हुए उन पर अतिक्रमण कर रही हैं। ये मकान हर दिशा में दिखाई देते हैं, सुरम्य, बहु-छत वाले, राजचिह्नों की भारी पत्थर की नक्काशी से सुशोभित; ये उन पतित परिवारों के हैं जिनकी पैतृक भूमि से खेत दर खेत काट डाले गए हैं, धनी निर्माताओं के दबाव में।

यॉर्कशायर के पूर्व जमींदारों के इन पुराने मकानों के चारों ओर धुएँ का घना वातावरण छाया रहता है, और इन पर छाए प्राचीन वृक्ष भी क्षीण होकर काले पड़ गए हैं; राख से बने रास्ते इन मकानों तक जाते हैं; आसपास की ज़मीनें निर्माण के लिए बेची जा रही हैं; लेकिन फिर भी पड़ोसी, भले ही उनकी जीवनशैली बदल गई हो, याद रखते हैं कि उनके पूर्वज इन मकानों के मालिकों पर कृषि के लिए निर्भर थे; और सदियों पहले मौजूद आलीशान घरों से जुड़ी परंपराओं को संजो कर रखते हैं। उदाहरण के लिए, ओकवेल हॉल को ही लें। यह एक चरागाह में स्थित है, मुख्य सड़क से लगभग एक चौथाई मील दूर। यह बिर्स्टॉल की ऊनी मिलों में चलने वाले भाप इंजनों की गड़गड़ाहट से बस इतनी ही दूरी पर है; और यदि आप बिर्स्टॉल स्टेशन से भोजन के समय पैदल चलकर वहाँ पहुँचें, तो आपको ऊनी रंग से सने मिल-श्रमिकों की कतारें मिलेंगी, जो भूख से त्रस्त होकर मुख्य सड़क के किनारे बने राख के रास्तों पर जल्दबाजी में चलते हैं। यहां से दाईं ओर मुड़कर, आप एक पुराने चरागाह से होते हुए ऊपर चढ़ते हैं और एक छोटी सी गली में प्रवेश करते हैं, जिसे "ब्लडी लेन" कहा जाता है। यह एक ऐसी पगडंडी है, जहां पास ही स्थित एक पुराने हॉल के कुख्यात मालिक कैप्टन बैट का भूत रहता है, जो स्टुअर्ट राजवंश के समय का था। पेड़ों से घिरी "ब्लडी लेन" से आप उस खेत में पहुंचते हैं जहां ओकवेल हॉल स्थित है। आस-पड़ोस में इसे "फील्ड हेड" के नाम से जाना जाता है, जो शर्ली का निवास स्थान था। सामने का बाड़ा, आधा आंगन, आधा बगीचा; पैनलयुक्त हॉल, जिसकी गैलरी चारों ओर फैले शयनकक्षों में खुलती है; भद्दा आड़ू रंग का ड्राइंग रूम; बगीचे के दरवाजे से पीछे के हरे-भरे लॉन और छतों का उज्ज्वल दृश्य, जहां कोमल रंग के कबूतर आज भी धूप में चहचहाना और इतराना पसंद करते हैं - इन सभी का वर्णन "शर्ली" में किया गया है। उस काल्पनिक कथा का दृश्य आस-पास ही है; जिन वास्तविक घटनाओं से यह कथा प्रेरित हुई, वे ठीक आस-पास ही घटित हुई थीं।

ओकवेल हॉल के एक शयनकक्ष में खून से सना एक पदचिह्न दिखाई देता है, और

उससे जुड़ी एक कहानी बताई जाती है, साथ ही उस गली से भी, जिससे होकर घर तक पहुंचा जाता है। माना जाता था कि कैप्टन बैट बहुत दूर थे; उनका परिवार ओकवेल में था; एक सर्दी की शाम को, जब अंधेरा छाने लगा, तो वे गली से होते हुए हॉल से गुजरे और सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर अपने कमरे में चले गए, जहां वे गायब हो गए। 9 दिसंबर, 1684 की उसी दोपहर लंदन में एक द्वंद्वयुद्ध में उनकी मृत्यु हो गई थी।

हॉल के पत्थर उस प्राचीन विकारेज का हिस्सा थे, जिसे कैप्टन बैट के एक पूर्वज ने धर्म सुधार के बाद के अशांत समय में संपत्ति के लिए हथिया लिया था। हेनरी बैट ने बिना किसी संकोच के घरों और धन पर कब्जा कर लिया; और अंततः, उसने बिर्स्टॉल चर्च की बड़ी घंटी चुरा ली, जिसके लिए भूमि पर जुर्माना लगाया गया, और हॉल के मालिक को आज तक वह जुर्माना चुकाना पड़ता है।

लेकिन पिछली शताब्दी की शुरुआत में ओकवेल संपत्ति बैट्स परिवार के हाथों से निकल गई; उनके वंशजों ने इसे अपने अधीन ले लिया और अपने अस्तित्व का यह रमणीय निशान छोड़ गए। बड़े हॉल में हिरण के सींगों का एक विशाल जोड़ा लटका हुआ है, और उससे एक मुद्रित कार्ड जुड़ा हुआ है, जिसमें यह दर्ज है कि 1 सितंबर, 1763 को एक भव्य शिकार प्रतियोगिता हुई थी, जिसमें इस हिरण का वध किया गया था; और चौदह सज्जनों ने शिकार में भाग लिया था और मालिक फेयरफैक्स फियरनेली, एस्क्वायर के साथ उसी हॉल में शिकार का भोजन किया था। चौदह लोगों के नाम दिए गए हैं, जो निस्संदेह "प्राचीन काल के महान पुरुष" थे। लेकिन, उन सभी में से, अटॉर्नी-जनरल सर फ्लेचर नॉर्टन और मेजर-जनरल बिर्च ही ऐसे व्यक्ति थे जिनसे मेरा 1855 में कुछ संबंध था। ओकवेल से आगे बढ़ने पर दाएं-बाएं घर दिखाई देते हैं, जो मिस ब्रोंटे को रो हेड में रहते समय अच्छी तरह से ज्ञात थे, क्योंकि वे उनके कुछ सहपाठियों के आतिथ्यपूर्ण घर थे। तीन-चार मील तक गलियां ऊँची भूमि पर स्थित खुले मैदानों और चारागाहों की ओर जाती हैं, जो छुट्टियों में घूमने के लिए सुखद स्थान थे, और फिर सफेद द्वार रो हेड की ओर जाने वाले खेत के रास्ते में खुलता है।

भूतल पर धनुषाकार खिड़कियों वाले कमरों में से एक, जहाँ से ऊपर का मनमोहक दृश्य दिखाई देता था, ड्राइंग रूम था; दूसरा स्कूलरूम था। डाइनिंग रूम दरवाजे के एक तरफ था और सड़क की ओर खुलता था।

मिस ब्रोंटे के वहां रहने के डेढ़ वर्ष के दौरान विद्यार्थियों की संख्या सात से दस के

बीच रही; और चूंकि उन्हें अपने रहने के लिए पूरे घर की आवश्यकता नहीं थी, इसलिए तीसरी मंजिल खाली पड़ी रही, सिवाय एक महिला की धुंधली सी छवि के, जिसके रेशमी गाउन की सरसराहट कभी-कभी दूसरी सीढ़ी के नीचे बैठे श्रोताओं को सुनाई देती थी।

मिस डब्ल्यू का दयालु और ममतामयी स्वभाव, और छात्राओं की कम संख्या, इस संस्थान को एक स्कूल की बजाय एक निजी परिवार जैसा बना देती थी। इसके अलावा, वह रो हेड के ठीक आसपास के जिले की मूल निवासी थीं, जैसा कि उनकी अधिकांश छात्राएँ थीं। संभवतः शार्लोट ब्रोंटे, हॉवर्थ से आकर, सभी विद्यार्थियों में सबसे लंबी दूरी तय करके आई थीं। "ई." का घर पाँच मील दूर था; दो अन्य प्रिय मित्र ("शर्ली" की रोज़ और जेसी यॉर्क) और भी पास रहती थीं; दो या तीन हडर्सफ़ील्ड से आई थीं; एक या दो लीड्स से।

अब मैं "मैरी" से प्राप्त एक महत्वपूर्ण पत्र का उद्धरण दूंगा, जो शार्लोट ब्रोंटे की शुरुआती मित्रों में से एक थीं; यह पत्र शार्लोट ब्रोंटे की प्रिय सहयोगी होने के नाते स्पष्ट और भावपूर्ण है। इसमें 19 जनवरी, 1831 को रो हेड में उनकी पहली उपस्थिति का जिक्र है।

“मैंने उसे पहली बार एक ढकी हुई गाड़ी से निकलते देखा, बहुत पुराने ज़माने के कपड़े पहने हुए, और वह बहुत ठंडी और दुखी लग रही थी। वह मिस डब्ल्यू के स्कूल आ रही थी। जब वह कक्षा में आई, तो उसके कपड़े बदले हुए थे, लेकिन फिर भी उतने ही पुराने थे। वह एक छोटी बूढ़ी औरत जैसी लग रही थी, इतनी कमज़ोर नज़र वाली कि वह हमेशा कुछ न कुछ खोजती हुई प्रतीत होती थी, और उसे देखने के लिए अपना सिर इधर-उधर घुमाती रहती थी। वह बहुत शर्मीली और घबराई हुई थी, और उसकी बोलने का लहजा आयरिश था। जब उसे कोई किताब दी जाती, तो वह अपना सिर उस पर तब तक झुकाती जब तक उसकी नाक लगभग किताब को छू न ले, और जब उसे अपना सिर ऊपर उठाने के लिए कहा जाता, तो किताब भी उसके साथ ऊपर उठ जाती, फिर भी उसकी नाक के पास ही रहती, जिससे हँसी रोकना मुश्किल हो जाता था।”

यह पहली छाप थी जो उसने उन लोगों में से एक पर डाली, जिसकी वह आगे चलकर प्रिय और प्रिय मित्र बनी। एक अन्य लड़की को शार्लोट की पहली झलक याद है, जिस दिन वह आई थी, स्कूल के कमरे की खिड़की के पास खड़ी, बर्फीले परिदृश्य

को देख रही थी और रो रही थी, जबकि बाकी सभी खेल रहे थे। "ई." उससे छोटी थी, और उस सर्दी की सुबह अजीबोगरीब कपड़े पहने, अजीब दिखने वाली छोटी लड़की की दयनीय हालत देखकर उसका कोमल हृदय पिघल गया, क्योंकि वह "घर की याद में आँसू बहा रही थी," एक नई अनजान जगह पर, नए अनजान लोगों के बीच। किसी भी तरह की अति-प्रसंगिक दयालुता उस चंचल छोटी लड़की को हॉवर्थ से डरा देती; लेकिन "ई." (जिसकी झलक "शर्ली" की कैरोलिन हेलस्टोन में मिलती है) ने विश्वास जीतने में कामयाबी हासिल की, और उसे सहानुभूति दिखाने की अनुमति दी गई।

मैरी के पत्र से एक बार फिर उद्धृत करते हुए: —

"हम उसे बहुत अज्ञानी समझते थे, क्योंकि उसने व्याकरण बिल्कुल नहीं सीखा था और भूगोल का भी उसे बहुत कम ज्ञान था।"

उसकी आंशिक अज्ञानता का यह विवरण उसके अन्य सहपाठियों द्वारा भी पुष्ट होता है। लेकिन मिस डब्ल्यू - - असाधारण बुद्धि और कोमल सहानुभूति की धनी महिला थीं। उन्होंने शार्लोट के साथ अपने पहले व्यवहार में इसका प्रमाण दिया। छोटी बच्ची पढ़ी-लिखी तो थी, लेकिन उसका बौद्धिक आधार कमजोर था। मिस डब्ल्यू - - उसे एक तरफ ले गईं और बताया कि उन्हें डर है कि उसे कुछ समय के लिए दूसरी कक्षा में रखना पड़ेगा, जब तक कि वह व्याकरण आदि के ज्ञान में अपनी हमउम्र लड़कियों के बराबर न हो जाए; लेकिन बेचारी शार्लोट ने यह सुनकर इतना रोना शुरू कर दिया कि मिस डब्ल्यू - - का दयालु हृदय पिघल गया, और उन्होंने समझदारी से महसूस किया कि ऐसी बच्ची के लिए पहली कक्षा में रखना और उसे उन विषयों में निजी अध्ययन करने की अनुमति देना बेहतर होगा जिनमें वह कमजोर है।

वह हमें उन चीजों के बारे में जानकर हैरान कर देती थी जो हमारी समझ से बिल्कुल परे थीं। उसे कविता की वे छोटी-छोटी रचनाएँ याद थीं जिन्हें हमें कंठस्थ करना पड़ता था; वह हमें लेखकों के नाम, वे कविताएँ जिनसे वे ली गई थीं, बताती थी और कभी-कभी एक-दो पृष्ठ दोहराकर कहानी भी सुना देती थी। उसे इटैलिक (छपाई वाले अक्षर) में लिखने की आदत थी और उसने कहा कि उसने यह उनके पत्रिका में लिखकर सीखा था। वे महीने में एक बार एक पत्रिका निकालते थे और चाहते थे कि वह यथासंभव छपी हुई पत्रिका जैसी दिखे। उसने हमें उसमें से एक कहानी सुनाई। उसमें कोई नहीं लिखता था और न ही कोई उसे पढ़ता था, सिवाय उसके, उसके भाई और दो बहनों के। उसने मुझे इनमें से कुछ पत्रिकाएँ दिखाने का

वादा किया, लेकिन बाद में मुकर गई और फिर कभी नहीं मानी। हमारे खेलने के समय में, यदि संभव हो तो वह एक किताब लेकर बैठती या खड़ी रहती थी। एक बार हममें से कुछ ने उसे गेंद के खेल में हमारी टीम में शामिल होने के लिए कहा। उसने कहा कि उसने कभी नहीं खेला है और वह खेल नहीं सकती। हमने उसे कोशिश करने के लिए कहा, लेकिन जल्द ही पता चला कि वह गेंद नहीं देख पा रही थी, इसलिए हमने उसे खेल से बाहर कर दिया। वह हमारी हर बात को बड़ी सहजता से लेती थी और किसी भी बात के लिए 'ना' कहने से पहले उसे हमेशा पहले से ही दृढ़ निश्चय की ज़रूरत होती थी। वह खेल के मैदान में पेड़ों के नीचे जाकर खड़ी हो जाती और कहती कि वहाँ ज़्यादा सुहावना लगता है। वह इसे समझाने की कोशिश करती, छायाओं, आसमान की झलक आदि की ओर इशारा करती। हमें उसकी बात बहुत कम समझ आती थी। उसने बताया कि कोवान ब्रिज पर वह नाले में एक पत्थर पर खड़ी होकर पानी को बहते हुए देखती थी। मैंने उससे कहा कि उसे मछली पकड़ने जाना चाहिए था; उसने कहा कि उसे कभी मछली पकड़ने की इच्छा ही नहीं हुई। वह हर बात में शारीरिक कमज़ोरी दिखाती थी। स्कूल में वह कोई भी पशु आहार नहीं खाती थी। लगभग इसी समय मैंने उससे कहा कि वह बहुत बदसूरत है। कुछ साल बाद, मैंने उससे कहा कि मुझे लगता है कि मैंने बहुत गुस्ताखी की थी। उसने जवाब दिया, 'पॉली, तुमने मेरा बहुत भला किया है, इसलिए पछतावा मत करो।' वह पहले के मुकाबले कहीं ज़्यादा अच्छी और तेज़ी से चित्र बनाती थी और मशहूर चित्रों और चित्रकारों के बारे में बहुत कुछ जानती थी। जब भी उसे किसी चित्र या किसी भी तरह की पेंटिंग को देखने का मौका मिलता, वह उसे ध्यान से देखती थी। वह कागज पर आंखें गड़ाए, टुकड़ों-टुकड़ों में देखती रहती थी, इतनी देर तक कि हम उससे पूछते थे, 'उसे इसमें क्या दिखाई दिया?' वह हमेशा बहुत कुछ देख पाती थी और उसे बहुत अच्छे से समझाती थी। उसने कविता और चित्रकारी को कम से कम मेरे लिए बेहद दिलचस्प बना दिया; और फिर मुझे यह आदत पड़ गई, जो आज भी है, कि मैं इस तरह के सभी मामलों पर, और कई अन्य मामलों पर भी, उसकी राय को मन में दोहराता रहता हूं, और उसे फलां-फलां बातें बताने का निश्चय करता हूं, जब तक कि मुझे यह याद नहीं आ जाता कि मैं ऐसा कभी नहीं कर पाऊंगा।

इस अंतिम वाक्य की पूरी शक्ति को महसूस करने के लिए - यह दिखाने के लिए कि मिस ब्रोंटे ने उन लोगों पर कितना स्थिर और जीवंत प्रभाव डाला जो उनकी

सराहना करने के योग्य थे - मुझे यह उल्लेख करना होगा कि 18 जनवरी, 1856 को लिखे गए इस पत्र की लेखिका, जिसमें वह शार्लोट की राय का लगातार उल्लेख करने की बात करती है, ने ग्यारह वर्षों से उसे कभी नहीं देखा है, जिनमें से लगभग सभी वर्ष अजनबी दृश्यों के बीच, एक नए महाद्वीप में, विपरीत ध्रुवों पर बीते हैं।

"हम लोग बहुत उग्र राजनीतिज्ञ हुआ करते थे, जैसा कि 1832 में होना स्वाभाविक था। वह दोनों मंत्रालयों के नाम जानती थीं; एक जिसने इस्तीफा दिया था, और दूसरा जिसने बाद में सुधार विधेयक पारित किया था। वह ड्यूक ऑफ वेलिंगटन की बहुत इज्जत करती थीं, लेकिन कहती थीं कि सर रॉबर्ट पील पर भरोसा नहीं किया जा सकता; वह बाकियों की तरह सिद्धांतों पर नहीं, बल्कि स्वार्थ पर चलते थे। मैं, उग्र कट्टरपंथी दल का सदस्य होने के नाते, उनसे कहता था, 'वे एक-दूसरे पर कैसे भरोसा कर सकते हैं; वे सब बदमाश थे!' फिर वह ड्यूक ऑफ वेलिंगटन की प्रशंसा में उनके कार्यों का जिक्र करने लगतीं; जिसका मैं खंडन नहीं कर सकता था, क्योंकि मैं उनके बारे में कुछ नहीं जानता था। उन्होंने कहा कि उन्हें पांच साल की उम्र से ही राजनीति में रुचि थी। उन्हें अपने विचार अपने पिता से नहीं मिलते थे - यानी सीधे तौर पर नहीं - बल्कि उन अखबारों आदि से मिलते थे जिन्हें वह पसंद करते थे।"

इस बात की सच्चाई को दर्शाने के लिए, मैं उनके भाई को रो हेड से 17 मई, 1832 को लिखे गए एक पत्र का अंश देना चाहूँगा: — "हाल ही में मुझे लगने लगा था कि राजनीति में मेरी जो रुचि पहले थी, वह पूरी तरह से खत्म हो गई है; लेकिन हाउस ऑफ लॉर्ड्स द्वारा रिफॉर्म बिल को खारिज किए जाने और अर्ल ग्रे के निष्कासन या इस्तीफे आदि की खबर सुनकर मुझे जो अत्यधिक खुशी हुई, उससे मुझे यकीन हो गया कि राजनीति के प्रति मेरा आकर्षण अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। मुझे बहुत खुशी है कि चाची ने 'फ्रेजर मैगज़ीन' लेने की सहमति दे दी है; क्योंकि, हालांकि मैंने आपके द्वारा इसके सामान्य विषय-वस्तु के वर्णन से जाना है कि यह 'ब्लैकवुड' की तुलना में कुछ कम रोचक होगा, फिर भी यह पूरे साल किसी भी पत्रिका को न देख पाने से बेहतर होगा; और निश्चित रूप से हमारी यही स्थिति होगी, क्योंकि जिस छोटे से जंगली दलदली गाँव में हम रहते हैं, वहाँ किसी भी पुस्तकालय से इस प्रकार की कोई पत्रिका उधार लेने की कोई संभावना नहीं होगी। मुझे आशा है कि आपको भी यह सुखद अनुभव अच्छा लगेगा। मौसम हमारे प्यारे पापा के स्वास्थ्य की पूर्ण बहाली में योगदान दे सकता है; और यह चाची को उनके पैतृक स्थान की स्वास्थ्यवर्धक

जलवायु की सुखद यादें दिला सकता है," इत्यादि।

अब वापस "मैरी" के पत्र पर आते हैं।

“वह अपनी दो बड़ी बहनों, मारिया और एलिजाबेथ के बारे में बात करती थीं, जिनकी मृत्यु कोवान ब्रिज में हुई थी। मैं उन्हें प्रतिभा और दयालुता की अद्भुत मिसाल मानती थी। एक सुबह उन्होंने मुझे बताया कि वह सपना देख रही थीं; उन्हें बताया गया था कि उन्हें ड्राइंग रूम में बुलाया गया है, और वे मारिया और एलिजाबेथ थीं। मैं उत्सुक थी कि वह आगे बताएं, और जब उन्होंने कहा कि आगे कुछ नहीं है, तो मैंने कहा, 'लेकिन बताओ! पूरा बताओ! मुझे पता है तुम बता सकती हो।' उन्होंने कहा कि वह नहीं बताएंगी; उन्हें लगा कि काश उन्होंने सपना न देखा होता, क्योंकि सपना अच्छा नहीं था, वे बदल गई थीं; वे उन चीजों को भूल गई थीं जिनकी उन्हें परवाह थी। वे बहुत फैशनेबल कपड़े पहने हुए थीं, और कमरे की आलोचना करने लगीं, आदि।”

“वास्तविक जीवन में रुचि न रखने वाले अधिकांश बच्चों में पाई जाने वाली, अपने लिए रुचियां गढ़ने की यह आदत उसमें बहुत प्रबल थी। पूरा परिवार मिलकर कहानियां गढ़ता था, पात्र और घटनाएं बनाता था। मैंने उससे कहा कि कभी-कभी यह तहखाने में आलू उगाने जैसा लगता है। उसने उदास होकर कहा, 'हां! मुझे पता है हम ऐसा ही कर रहे हैं!'”

स्कूल में किसी ने कहा कि वह ‘हमेशा होशियार लोगों के बारे में बात करती रहती थी; जॉनसन, शेरिडन, वगैरह।’ उसने कहा, ‘अब तुम्हें होशियार का मतलब नहीं पता, शेरिडन होशियार हो सकता है; हाँ, शेरिडन होशियार था, – बदमाश अक्सर होते हैं; लेकिन जॉनसन में होशियारी की कोई झलक नहीं थी।’ किसी ने भी इस राय की सराहना नहीं की; उन्होंने ‘होशियारी’ के बारे में कुछ मामूली टिप्पणी की, और उसने आगे कुछ नहीं कहा।

“यह उसके जीवन का सार है। हमारे घर में भी उसे धैर्यपूर्वक सुनने का उतना ही कम मौका मिलता था, क्योंकि हम स्कूली लड़कियों की तरह तो नहीं थे, लेकिन उससे कहीं ज़्यादा असहिष्णु थे। हम व्यावहारिकता के प्रति अत्यधिक आसक्त थे और हर कविता का उपहास करते थे। न तो उसे और न ही हमें इस बात का कोई आभास था कि हमारे विचार दुनिया के सभी समझदार लोगों के विचार नहीं थे, और हम हर वाक्य पर एक-दूसरे को आश्चर्यचकित कर देते थे... शार्लोट ने स्कूल में परिस्थितियों के अनुसार ही जीवन की योजना बनाई थी। वह जानती थी कि उसे अपना भरण-

पोषण स्वयं करना होगा, और उसने अपना पेशा चुना; कम से कम एक बार तो उसे शुरू करने का निश्चय किया। आत्म-सुधार का उसका विचार स्कूल में भी उस पर हावी रहा। उसका उद्देश्य अपनी रुचियों को निखारना था। वह हमेशा कहती थी कि आवश्यकतावश हम पर थोपी गई कठोर व्यावहारिकता और उपयोगी ज्ञान काफ़ी है, और सबसे ज़रूरी चीज़ है अपने मन को कोमल और परिष्कृत करना। वह चित्रकला, मूर्तिकला, कविता, संगीत आदि से संबंधित हर जानकारी को ऐसे बटोरती थी मानो वह सोना हो।"

मैंने अन्य स्रोतों से उसके स्कूली दिनों के बारे में जो कुछ सुना है, वह इस उल्लेखनीय पत्र में दिए गए विवरणों की सत्यता की पुष्टि करता है। वह एक अथक छात्रा थी: निरंतर पढ़ती और सीखती रहती थी; पंद्रह वर्ष की लड़की के लिए शिक्षा की आवश्यकता और महत्व के प्रति उसका दृढ़ विश्वास बहुत ही असामान्य था। वह समय का एक पल भी बर्बाद नहीं करती थी और आराम और खेल के लिए आवश्यक अवकाश को भी लगभग तुच्छ समझती थी, जिसका आंशिक कारण उसकी कमज़ोर दृष्टि के कारण सभी खेलों में उसकी असहजता हो सकती है। फिर भी, इन असामाजिक आदतों के बावजूद, वह अपने सहपाठियों की चहेती थी। वह हमेशा उनकी इच्छा के अनुसार काम करने के लिए तैयार रहती थी, हालांकि जब वे उसे असहज कहते थे और उसे अपने खेलों से बाहर रखते थे तो उसे कोई खेद नहीं होता था। फिर, रात में, वह एक अद्भुत कहानीकार थी, जो बिस्तर पर लेटे हुए उन्हें इतना डरा देती थी कि वे लगभग होश खो बैठते थे। एक बार इसका असर ऐसा हुआ कि वह जोर से चीख पड़ी, और मिस डब्ल्यू - -, सीढ़ियों से ऊपर आते हुए, पाया कि शार्लोट की कहानी से उत्पन्न उत्तेजना के परिणामस्वरूप श्रोताओं में से एक को तेज दिल की धड़कन का दौरा पड़ गया था।

ज्ञान के प्रति उनकी अथक प्यास ने मिस डब्ल्यू को परीक्षा के लिए उन्हें पढ़ने के लिए लंबे से लंबे कार्य देने के लिए प्रेरित किया; और रो हेड में डेढ़ वर्ष की छात्रा रहने के दौरान, उन्हें एक अपूर्ण पाठ के लिए पहली बार खराब अंक मिले। उन्हें ब्लेयर की "लेक्चर्स ऑन बेल्स लेटर्स" का एक बड़ा हिस्सा पढ़ना था; और वह उस पर कुछ प्रश्नों के उत्तर नहीं दे सकीं; शार्लोट ब्रोंटे को खराब अंक मिले। मिस डब्ल्यू को खेद हुआ और उन्हें पछतावा हुआ कि उन्होंने शार्लोट को इतना लंबा कार्य दिया था। शार्लोट फूट-फूटकर रोईं। लेकिन उनके सहपाठी केवल दुखी ही नहीं थे, बल्कि वे

आक्रोशित थे। उन्होंने कहा कि शार्लोट ब्रोंटे को इतनी मामूली सजा देना अन्यायपूर्ण था - क्योंकि किसने उनके जैसा कर्तव्य निभाने का प्रयास किया था? - और उन्होंने अपनी भावनाओं को विभिन्न तरीकों से व्यक्त किया, जब तक कि मिस डब्ल्यू, जो वास्तव में अपनी अच्छी छात्रा की पहली गलती को माफ करने के लिए बहुत इच्छुक थीं, ने खराब अंक वापस नहीं ले लिया; और सभी लड़कियाँ अपनी निष्ठा पर लौट आईं, सिवाय "मैरी" के, जिसने आधे साल के शेष एक-दो सप्ताह के दौरान अपना अलग रास्ता अपनाया, यह मानते हुए कि मिस डब्ल्यू ने शार्लोट ब्रोंटे को इतना लंबा काम देकर स्कूल के नियमों के पालन के अपने दावे को खो दिया था।

विद्यार्थियों की संख्या इतनी कम थी कि बड़े विद्यालयों में आम तौर पर माने जाने वाले विशिष्ट समय पर कुछ विषयों की उपस्थिति अनिवार्य नहीं थी। जब लड़कियाँ अपना पाठ तैयार कर लेती थीं, तो वे मिस डब्ल्यू के पास पढ़ने आती थीं। उनमें सीखने के प्रति रुचि जगाने की अद्भुत क्षमता थी। वे अपनी पढ़ाई में लग जाती थीं, न कि केवल काम या कर्तव्य निपटाने के लिए, बल्कि ज्ञान की एक स्वस्थ इच्छा और प्यास के साथ, जिसका आनंद उन्होंने उनमें भर दिया था। स्कूल का अनिवार्य दबाव हटते ही उन्होंने पढ़ना-लिखना नहीं छोड़ा। उन्हें सोचना, विश्लेषण करना, अस्वीकार करना और सराहना करना सिखाया गया था। शार्लोट ब्रोंटे अपने लिए चुने गए दूसरे विद्यालय से खुश थीं। उनके साथियों के बाहरी जीवन में एक सशक्त स्वतंत्रता थी। वे घर के आसपास के खेतों में आनंदमय खेल खेलते थे: शनिवार की छुट्टियों में वे रहस्यमय छायादार गलियों में लंबी पैदल यात्रा करते थे, फिर ऊंचे इलाकों पर चढ़ते थे, और इस प्रकार देश के व्यापक दृश्य प्राप्त करते थे, जिसके बारे में उसके अतीत और वर्तमान इतिहास दोनों के बारे में बहुत कुछ बताया जाना बाकी था।

श्रीमती डब्ल्यू को फ्रांसीसी कला "कॉन्टर" (व्याख्या करने की कला) में महारत हासिल रही होगी, यह उनके शिष्यों की यादों से स्पष्ट होता है, जिन्होंने इन लंबी सैरों के दौरान पुरानी इमारतों, नई चक्कियों और उनके निर्माण की तारीखों से जुड़े सामाजिक परिवर्तनों के बारे में बताया था। उन्हें वे दिन याद थे जब रात में जागने वाले या पहरेदार दूर से आदेश की आवाज सुनते थे, और हजारों दुखी, हताश पुरुषों के कदमों की आहट सुनते थे जो गुप्त रूप से सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे, उस महान दिन की तैयारी में जिसे उन्होंने अपने सपनों में देखा था, जब सच्चाई ताकत से लड़ेगी और विजयी होगी: जब यॉर्कशायर, लंकाशायर और नॉटिंघमशायर के श्रमिकों द्वारा

प्रतिनिधित्व किए गए इंग्लैंड के लोग एक भयानक नारे के साथ अपनी आवाज उठाएंगे, क्योंकि उनकी सच्ची और दयनीय शिकायतों को संसद में कोई सुनवाई नहीं मिल रही थी। आजकल, बेहतरी के लिए इतनी तेजी से बदलाव हुए हैं, हम भूल जाते हैं कि महान प्रायद्वीपीय युद्ध के अंत में कई मजदूरों की स्थिति कितनी दयनीय थी। उनकी कुछ शिकायतों का हास्यास्पद स्वरूप परंपरा में आज भी कायम है; उनके कष्टों की वास्तविक तीव्रता भुला दी गई है। वे पागल और हताश थे; और कई लोगों की राय में, देश एक ऐसे कगार पर खड़ा था, जिससे वह केवल कुछ अधिकारियों के त्वरित और दृढ़ निर्णय से ही बच पाया। मिस डब्ल्यू ने उन दिनों की बात की; रहस्यमय रात्रि अभ्यासों की; सुनसान मैदानों में हजारों लोगों की; उन व्यक्तियों की दबी हुई धमकियों की, जो आवश्यकता के दबाव में इतने बेसुध थे कि विवेक का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे थे; उन प्रत्यक्ष कृत्यों की, जिनमें कार्टराइट की मिल को जलाना प्रमुख था; और ये बातें उनके श्रोताओं में से कम से कम एक के मन में गहराई से उतर गईं।

श्री कार्टराइट लिवरसेड्ज में रॉफोल्ड्स नामक कारखाने के मालिक थे, जो रो हेड से कुछ ही दूरी पर स्थित था। उन्होंने ऊनी कपड़े की छंटाई के लिए मशीनों का इस्तेमाल करने का साहस किया था, जो 1812 में एक अलोकप्रिय कदम था, जब कई अन्य परिस्थितियों ने भी मिल-श्रमिकों की स्थिति को भुखमरी और गरीबी के दबाव से असहनीय बना दिया था। श्री कार्टराइट एक बहुत ही विलक्षण व्यक्ति थे, जैसा कि मुझे बताया गया है, उनमें कुछ विदेशी रक्त था, जिसके निशान उनके लंबे कद, गहरी आंखों और रंगत, और विलक्षण, हालांकि सज्जनतापूर्ण व्यवहार में स्पष्ट रूप से दिखाई देते थे। किसी भी तरह से, उन्होंने बहुत यात्रा की थी और अच्छी फ्रेंच बोलते थे, जो उन दिनों की संकीर्ण राष्ट्रीयता को देखते हुए अपने आप में एक संदिग्ध बात थी। कुल मिलाकर, वे एक अलोकप्रिय व्यक्ति थे, यहां तक कि ऊन की छंटाई के लिए हाथों के बजाय कैंची का इस्तेमाल करने का अंतिम कदम उठाने से पहले भी। वे अपनी अलोकप्रियता और संभावित परिणामों से भलीभांति परिचित थे। उन्होंने अपनी मिल को हमले के लिए तैयार कर लिया था। उसने उसमें अपना ठिकाना बनाया; और रात में दरवाजों को मज़बूती से बंद कर दिया जाता था। सीढ़ियों के हर पायदान पर नुकीले कांटों वाला रोलर लगाया गया था, ताकि अगर दंगाई दरवाज़े तोड़ने में कामयाब हो भी जाएं तो उन्हें ऊपर चढ़ने से रोका जा सके।

शनिवार, 11 अप्रैल, 1812 की रात को हमला हुआ। सैकड़ों भूखे कपड़ा कारीगर

किर्कलीस के पास उसी मैदान में इकट्ठा हुए, जो उस घर से ढलान पर था जिसमें बाद में मिस डब्ल्यू रहने लगीं। उनके नेताओं ने उन्हें पिस्तौल, कुल्हाड़ी और लाठियों से लैस कर दिया था, जिनमें से कई हथियार रात में देश भर में घूमने वाले गिरोहों ने उन एकांत घरों के निवासियों से छीन लिए थे, जिन्होंने आत्मरक्षा के लिए ये साधन जुटा रखे थे। चुपचाप, उदास भीड़ उस बसंत की रात में रॉफोल्ड्स की ओर बढ़ी और जोर से चिल्लाकर श्री कार्टराइट को जगाया कि लंबे समय से प्रतीक्षित हमला आ गया है। यह सच है कि वह चारदीवारी के भीतर थे; लेकिन सैकड़ों लोगों के प्रकोप के सामने उनकी सहायता के लिए केवल उनके अपने चार मजदूर और पांच सैनिक ही थे। हालांकि, इन दस आदमियों ने इतनी जोरदार और सटीक गोलीबारी जारी रखी कि उन्होंने बाहर जमा भीड़ के दरवाजे तोड़ने और चक्की में जबरदस्ती घुसने के सभी हताश प्रयासों को विफल कर दिया; और बीस मिनट के संघर्ष के बाद, जिसमें दो हमलावर मारे गए और कई घायल हुए, वे अफरा-तफरी में पीछे हट गए, जिससे श्री कार्टराइट मैदान के स्वामी बन गए, लेकिन खतरा टल जाने के बाद इतने चक्कर और थकावट से चूर होकर वे अपनी सुरक्षा व्यवस्था को भूल गए और अपनी सीढ़ियों पर चढ़ने की कोशिश में नुकीले रोलर से उनके पैर में गंभीर चोट लग गई। उनका घर कारखाने के पास ही था। कुछ दंगाइयों ने कसम खाई कि अगर उन्होंने आत्मसमर्पण नहीं किया, तो वे इसे छोड़कर उनके घर जाएंगे और उनकी पत्नी और बच्चों की हत्या कर देंगे। यह एक भयानक धमकी थी, क्योंकि उन्हें अपने परिवार को केवल एक या दो सैनिकों के भरोसे छोड़कर जाना पड़ा था। श्रीमती कार्टराइट जानती थीं कि उन्होंने क्या धमकी दी थी; और उस भयानक रात को, जैसे उसे लगा कि कोई उसके पास आ रहा है, उसने अपने दो नवजात बच्चों को झट से उठाया और उन्हें एक टोकरी में रखकर यॉर्कशायर के पुराने घरों में आम तौर पर पाई जाने वाली बड़ी चिमनी में छिपा दिया। उन दो बच्चों में से एक, जो इस तरह छिपाकर ले जाई गई थी, जब वह बड़ी होकर एक महिला बनी, तो गर्व से अपने पिता की चक्की की दीवारों पर बंदूक की गोलियों के निशान और बारूद के धब्बे दिखाती थी। उसके पिता ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने "लुडाइट्स" की प्रगति का विरोध किया था, जो उस समय तक इतने अधिक हो गए थे कि लगभग एक विद्रोही सेना का रूप धारण कर चुके थे। श्री कार्टराइट के इस आचरण की आस-पास के चक्की मालिकों ने इतनी प्रशंसा की कि उन्होंने उनके लाभ के लिए चंदा इकट्ठा किया, जो अंत में 3,000 पाउंड तक पहुँच गया।

रॉफोल्ड्स पर हुए इस हमले के ठीक दो सप्ताह बाद, एक अन्य निर्माता, जो उस घृणित मशीनरी का उपयोग करता था, को दिन दहाड़े गोली मार दी गई, जब वह क्रॉसलैंड मूर से गुजर रहा था, जिसके किनारे एक छोटा सा बागान था जिसमें हत्यारे छिपे हुए थे। "शर्ली" के पाठक इन परिस्थितियों को पहचान लेंगे, जो मिस ब्रोंटे को घटना घटने के वर्षों बाद बताई गई थीं, लेकिन ठीक उसी स्थान पर जहां वे घटी थीं, और उन लोगों द्वारा बताई गई थीं जिन्हें जीवन और संपत्ति के लिए असुरक्षा के उन भयानक दिनों की याद थी, और दूसरी ओर भयंकर भुखमरी और घोर निराशा का दौर था।

श्री ब्रोंटे स्वयं 1812 में इन्हीं लोगों के बीच रह रहे थे, क्योंकि उस समय वे रॉफोल्ड्स से तीन मील से भी कम दूरी पर स्थित हार्ट्सहेड में पादरी थे; और जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, इन्हीं खतरनाक समयों में उन्होंने अपने साथ हमेशा भरी हुई पिस्तौल रखने की आदत शुरू की थी। न केवल उनकी टोरी विचारधारा, बल्कि कानून के प्रति उनका प्रेम और सम्मान, उन्हें आसपास के मजिस्ट्रेटों की कायरता से घृणा करने पर मजबूर करता था, जो लुडाइट्स के भय में संपत्ति के विनाश को रोकने के लिए हस्तक्षेप करने से इनकार कर रहे थे। जिले के पादरी निस्संदेह सबसे बहादुर लोग थे।

हील्ड्स हॉल के एक श्री रोबर्सन थे, जो श्री ब्रोंटे के मित्र थे और जिन्होंने जनता के मन पर गहरी छाप छोड़ी है। वे रो हेड से दो मील से भी कम दूरी पर स्थित हेकमोंडविक नामक एक बड़े, बिखरे हुए और गंदे गाँव के पास रहते थे। यह गाँव मुख्य रूप से कंबल बुनने वालों का था, जो अपनी झोपड़ियों में काम करते थे। हील्ड्स हॉल गाँव का सबसे बड़ा घर है, जिसके वे पादरी थे। उन्होंने अपने खर्च पर लिवरसेड्ज में, अपने घर के सामने वाली पहाड़ी पर एक सुंदर गिरजाघर बनवाया। यह वेस्ट राइडिंग में बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने का पहला प्रयास था। उन्होंने अपने धार्मिक और राजनीतिक विचारों के लिए कई व्यक्तिगत बलिदान दिए, जो कि पुराने जमाने के सच्चे टोरी विचारधारा के अनुरूप थे। वे हर उस चीज़ से नफरत करते थे जिसमें अराजकता की प्रवृत्ति दिखाई देती थी। वे चर्च और राजा के प्रति पूर्णतः निष्ठावान थे और जो कुछ भी उन्हें सही और सत्य लगता था, उसके लिए वे गर्व से अपनी जान दे देते। लेकिन वह एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे और इसी दृढ़ निश्चय से उन्होंने विरोधियों को कुचल डाला, यहाँ तक कि परंपरा के अनुसार उनमें कुछ हद तक

भयावह शैतानी प्रवृत्ति भी झलकती है। वे कार्टराइट के घनिष्ठ मित्र थे और उनकी चक्की पर संभावित हमले से भलीभांति परिचित थे; इसलिए, कहा जाता है कि उन्होंने स्वयं को और अपने परिवार को हथियारबंद कर लिया था और सहायता की आवश्यकता होने पर बचाव के लिए तैयार थे। इतना तो संभव है। श्री रोबर्सन में भरपूर युद्धप्रिय भावना थी, यद्यपि वे शांतिप्रिय व्यक्ति थे।

लेकिन, उनके अलोकप्रिय पक्ष लेने के कारण, उनके चरित्र की अतिशयोक्तियाँ लोगों के मन में सत्य के रूप में बनी रहीं; और एक मनगढ़ंत कहानी प्रचलित है कि जब वे अगली सुबह अपने मित्र कार्टराइट को उनकी सफल रक्षा पर बधाई देने आए, तो उन्होंने चक्की के प्रांगण में घायल पड़े लुडाइटों को पानी पिलाने से किसी को मना कर दिया। इसके अलावा, इस कठोर, निडर पादरी ने पड़ोस की रक्षा के लिए भेजे गए सैनिकों को अपने घर में ठहराया; और इससे कामगार बहुत नाराज़ हुए, जिन्हें लाल कोट वाले सैनिकों से डराया जाना था। यद्यपि वे मजिस्ट्रेट नहीं थे, फिर भी उन्होंने उस हत्या में शामिल लुडाइटों का पता लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी जिसका मैंने उल्लेख किया है; और अपनी तीव्र, अडिग ऊर्जा में वे इतने सफल रहे कि माना जाता है कि उन्हें अलौकिक सहायता प्राप्त हुई थी। और कई वर्षों बाद, सर्दियों की धुंधली शामों में हील्ड्स हॉल के आसपास के खेतों में चुपके से आने वाले ग्रामीण लोगों ने खिड़कियों से बताया कि उन्होंने पादरी रोबर्सन को एक अजीब लाल रोशनी में नाचते हुए देखा, जिसके चारों ओर काले राक्षस घूम रहे थे। वह एक बड़ा लड़कों का स्कूल चलाते थे; और उन्होंने अपने छात्रों के बीच सम्मान और भय दोनों पैदा कर दिए थे। उन्होंने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति में एक प्रकार का कठोर हास्य भी जोड़ दिया था; और इसी गुण ने उन्हें अवज्ञाकारी छात्रों के लिए अजीबोगरीब और अनोखे दंडों के विचार दिए: उदाहरण के लिए, वह उन्हें कक्षा के एक कोने में एक पैर पर खड़ा कर देते थे, और प्रत्येक हाथ में एक भारी किताब पकड़ा देते थे; और एक बार, जब एक लड़का घर से भाग गया था, तो वह घोड़े पर सवार होकर उसके पीछे गए, उसे उसके माता-पिता से वापस ले आए, और उसे अपनी काठी के रकाब से रस्सी से बांधकर, हील्ड्स हॉल पहुँचने से पहले कई मील तक अपने घोड़े के साथ दौड़ाया।

उनके चरित्र का एक और उदाहरण दिया जा सकता है। उन्हें पता चला कि उनकी नौकरानी बेट्टी का "एक प्रेमी" है; और रिचर्ड के रसोई में मिलने का इंतज़ार करते हुए, उन्होंने उसे भोजन कक्ष में बुलाया, जहाँ सभी छात्र एकत्रित थे। फिर उन्होंने रिचर्ड से

पूछा कि क्या वह बेट्टी के पीछे आया था; और जब रिचर्ड ने सच कबूल कर लिया, तो श्री रोबर्सन ने आदेश दिया, "लड़कों, इसे पंप के पास ले चलो!" बेचारे प्रेमी को आंगन में घसीटा गया, और उस पर पंप चला दिया गया; और हर बार पानी से भीगने के बीच, उससे पूछा जाता था, "क्या तुम वादा करोगे कि बेट्टी के पीछे दोबारा नहीं आओगे?" रिचर्ड ने काफी देर तक बहादुरी से हार मानने से इनकार कर दिया; फिर आदेश आया, "लड़कों, फिर से पंप चलाओ!" लेकिन, अंत में, बेचारा भीगा हुआ "प्रेमी" हार मानने और अपनी बेट्टी को त्यागने के लिए मजबूर हो गया।

श्री रोबर्सन के यॉर्कशायर चरित्र का वर्णन अधूरा रहेगा यदि मैं घोड़ों के प्रति उनके प्रेम का उल्लेख न करूँ। वे बहुत वृद्धावस्था तक जीवित रहे, उनका निधन 1830 के बजाय 1840 के आसपास हुआ; और अस्सी वर्ष की आयु के बाद भी, उन्हें जिद्दी घोड़ों को वश में करने में बहुत आनंद आता था; यदि आवश्यक हो, तो वे उन्हें काबू में लाने के लिए आधे घंटे या उससे अधिक समय तक उनकी पीठ पर बिना हिले-डुले बैठे रहते थे। एक प्रचलित कहानी यह है कि एक बार क्रोध में आकर उन्होंने अपनी पत्नी के प्रिय घोड़े को गोली मार दी और उसे एक खदान के पास दफना दिया, जहाँ कुछ वर्षों बाद चमत्कारिक रूप से जमीन फट गई और कंकाल दिखाई दिया; लेकिन वास्तविकता यह है कि यह एक बेचारे बूढ़े घोड़े को पीड़ा से मुक्ति दिलाने का मानवीय कार्य था; और उसे दर्द से बचाने के लिए, उन्होंने उसे अपने हाथों से गोली मारी और उसे वहाँ दफना दिया जहाँ बाद में कोयले की खान के काम से जमीन धंसने पर हड्डियाँ दिखाई दीं। पारंपरिक धारणाएँ उस द्वेष को दर्शाती हैं जिसके साथ एक वर्ग के लोग उनकी स्मृति को देखते हैं। दूसरी ओर, आस-पास के पादरी, जो उन्हें वृद्धावस्था में अपने घर वाली पहाड़ी से नीचे अपने मजबूत सफेद घोड़े पर सवार होकर जाते हुए याद करते हैं—उनका गर्व और गरिमापूर्ण आभास, झुकी हुई टोपी जो उनकी तीक्ष्ण आँखों को ढकती थी—रविवार को अपने कर्तव्य के लिए ऐसे जाते हुए जैसे कोई वफादार सिपाही कर्तव्य निभाते हुए शहीद हो जाता है—जो उनकी अंतरात्मा के प्रति निष्ठा, कर्तव्य के प्रति बलिदान और धर्म के प्रति उनके दृढ़ संकल्प की सराहना करते हैं—उनकी स्मृति का आदर किया जाता है। उनकी अत्यधिक वृद्धावस्था में, एक धार्मिक सभा आयोजित की गई, जिसमें उनके साथी पादरियों ने सहर्ष उन्हें अपने गहरे सम्मान और आदर का प्रतीक भेंट करने के लिए चंदा दिया।

यह यॉर्कशायर के स्थापित चर्च के पादरियों द्वारा अक्सर प्रदर्शित किए जाने वाले

दृढ़ चरित्र का एक उदाहरण है। श्री रोबर्सन, शार्लोट ब्रोंटे के पिता के मित्र थे; जब वह रो हेड में स्कूल में पढ़ रही थीं, तब वे वहाँ से कुछ ही मील की दूरी पर रहते थे; और उन लेन-देन में उनकी गहरी भूमिका थी, जिनकी यादें अभी ताज़ा ही थीं जब शार्लोट ने उनके बारे में और उनमें श्री रोबर्सन की भूमिका के बारे में सुना।

अब मैं रो हेड के ठीक आसपास रहने वाली असंतुष्ट आबादी के चरित्र के बारे में कुछ कहना चाहूंगा; क्योंकि "टोरी और पादरी की बेटी," "पांच साल की उम्र से ही राजनीति में रुचि रखती थी," और असंतुष्ट और कट्टरपंथी लड़कियों के साथ अक्सर चर्चा करती थी, इसलिए उसने उन लोगों की स्थिति से यथासंभव परिचित होने का प्रयास किया होगा जिनसे वह विचारों में भिन्न थी।

अधिकांश आबादी असंतुष्टों की थी, जिनमें मुख्य रूप से स्वतंत्र संप्रदाय के लोग शामिल थे। हेकमोंडविक गाँव में, जिसके एक छोर पर रो हेड स्थित है, उस संप्रदाय के दो बड़े चैपल थे, और एक मेथोडिस्टों का था। ये सभी चैपल रविवार को दो या तीन बार पूरी तरह से भरे रहते थे, इसके अलावा सप्ताह के दिनों में भी यहाँ विभिन्न प्रार्थना सभाएँ होती थीं, जिनमें सभी उपस्थित रहते थे। निवासी नियमित रूप से चर्च जाते थे, अपने उपदेशों के सिद्धांतों के प्रति बहुत आलोचनात्मक थे, अपने पादरियों के प्रति निरंकुश थे और राजनीति में उग्र कट्टरपंथी थे। एक मित्र, जो शार्लोट ब्रोंटे के स्कूल के समय उस स्थान से अच्छी तरह परिचित था, ने उस समय उनके बीच घटी कुछ घटनाओं का वर्णन किया है:

हेकमंडविक के लोअर चैपल में घटी एक घटना से आपको उस समय के लोगों के बारे में कुछ जानकारी मिल जाएगी। जब नवविवाहित जोड़ा चैपल में आता था, तो अंतिम प्रार्थना के ठीक बाद और जब लोग चैपल से बाहर निकल रहे होते थे, तब विवाह गीत गाने की प्रथा थी। इस समारोह में भाग लेने वाले गायकों को पैसे मिलने की उम्मीद रहती थी और वे अक्सर अगली रात शराब पीते हुए बिताते थे; कम से कम, उस स्थान के पादरी का तो यही कहना था; और उन्होंने इस प्रथा को समाप्त करने का निश्चय किया। इसमें चैपल और मंडली के कई सदस्यों ने उनका समर्थन किया; लेकिन लोकतांत्रिक भावना इतनी प्रबल थी कि उन्हें सबसे हिंसक विरोध का सामना करना पड़ा और जब वे सड़क पर जाते थे तो अक्सर उनका अपमान किया जाता था। एक दुल्हन के पहली बार आने की उम्मीद थी, और पादरी ने गायकों से कहा कि वे राष्ट्रगान न गाएं। जब उन्होंने कहा कि वे गाएंगे, तो उन्होंने उस बड़ी बेंच

को ताला लगा दिया जिस पर वे आमतौर पर बैठते थे; उन्होंने उसे तोड़ दिया: मंच से उन्होंने मंडली से कहा कि भजन गाने के बजाय, वे एक अध्याय पढ़ेंगे; उनके पहला शब्द बोलते ही, तभी... गायकों का एक समूह था, जिसका नेतृत्व एक लंबा, उग्र दिखने वाला बुनकर कर रहा था। उसने एक भजन गाया और सभी ने पूरी ताकत से उसे गाया, जिसमें चैपल में मौजूद उनके दोस्तों ने भी उनका साथ दिया। जो लोग गायकों के इस व्यवहार से असहमत थे और पादरी का पक्ष ले रहे थे, वे भजन समाप्त होने तक बैठे रहे। फिर पादरी ने दोबारा भजन पढ़ा और उपदेश दिया। वह प्रार्थना के साथ अपना कार्यक्रम समाप्त करने ही वाले थे कि गायक उठ खड़े हुए और एक और भजन जोर-जोर से गाने लगे। ये शर्मनाक दृश्य कई हफ्तों तक जारी रहे और माहौल इतना उग्र हो गया कि चैपल के प्रांगण से गुजरते समय दोनों गुट आपस में मारपीट करने से खुद को मुश्किल से रोक पाते थे। अंत में पादरी ने वह स्थान छोड़ दिया और उसके साथ ही मंडली के कई सबसे संयमी और सम्मानित सदस्य भी चले गए, और गायक विजयी रहे।

"मेरा मानना है कि इसी समय के आसपास हेकमंडविक स्थित अपर चैपल में एक पादरी के चुनाव को लेकर इतना हिंसक विवाद हुआ था कि चर्च की बैठक में दंगा अधिनियम को पढ़ना पड़ा था।"

निश्चित रूप से, वे तथाकथित ईसाई जिन्होंने दस या बारह साल पहले हॉवर्थ में मिस्टर रेडहेड को जबरन बेदखल कर दिया था, हेकमोंडविक के तथाकथित ईसाइयों के साथ एक बहुत ही गैर-ईसाई भाईचारा रखते थे; हालांकि एक समूह को चर्च ऑफ इंग्लैंड के सदस्य और दूसरे को डिसेंटर्स कहा जा सकता है।

जिस पत्र से मैंने उपरोक्त अंश लिया है, वह पूरी तरह से उस स्थान के आस-पास के क्षेत्र से संबंधित है जहां शार्लोट ब्रोंटे ने अपने स्कूली दिन बिताए थे, और उस समय की परिस्थितियों का वर्णन करता है। लेखक कहते हैं, "कृषि क्षेत्रों में निम्न वर्ग के लोगों के सम्मानजनक व्यवहार का आदी होने के कारण, हेकमंडविक और गोमरसाल के श्रमिक वर्ग द्वारा अपने से उच्च वर्ग के लोगों के प्रति दिखाई गई अत्यधिक स्वतंत्रता को देखकर मैं पहले तो बहुत अचंभित और कुछ हद तक भयभीत हुआ। 'लड़की' शब्द का प्रयोग किसी भी युवती के लिए उतनी ही आसानी से किया जाता था, जितना लंकाशायर में 'वेंच' शब्द का। ग्रामीणों की अत्यंत अव्यवस्थित वेशभूषा ने मुझे काफी चौंका दिया, हालाँकि मुझे गृहणियों के साथ न्याय करते हुए यह कहना

होगा कि झोपड़ियाँ स्वयं गंदी नहीं थीं और उनमें एक सादगीपूर्ण समृद्धि का आभास था (व्यापार में मंदी के समय को छोड़कर), जो मैंने कृषि क्षेत्रों में देखने की आदत नहीं थी। घर के दरवाजे के एक तरफ कोयले का ढेर, दूसरी तरफ शराब बनाने के बर्तन, और चलते समय माल्ट और हॉप्स की लगातार आने वाली सुगंध इस बात का प्रमाण थी कि लगभग हर घर में आग और 'घर की बनी शराब' मौजूद थी। यॉर्कशायर के प्रमुख गुणों में से एक, आतिथ्य सत्कार में भी कोई कमी नहीं थी।" आगंतुक को बिना किसी शुल्क के ओटकेक, पनीर और बीयर परोसी गई।

"हेकमंडविक में एक वार्षिक उत्सव होता था, जो आधा धार्मिक और आधा सामाजिक होता था, जिसे 'व्याख्यान' कहा जाता था। मुझे लगता है कि यह नॉनकॉन्फॉर्मिस्टों के समय से चला आ रहा था। सप्ताह के किसी दिन शाम को लोअर चैपल में कोई अजनबी उपदेश देता था, और अगले दिन अपर चैपल में लगातार दो उपदेश दिए जाते थे। बेशक, प्रार्थना सभा बहुत लंबी होती थी, और चूंकि यह जून का महीना था और मौसम अक्सर गर्म रहता था, इसलिए मुझे और मेरे साथियों को सुबह बिताने का यह कोई सुखद तरीका नहीं लगता था। बाकी का दिन सामाजिक मेलजोल में बीतता था; बड़ी संख्या में अजनबी वहाँ आते थे; खिलौनों और जिंजरब्रेड की बिक्री के लिए स्टॉल लगाए जाते थे (एक तरह का 'पवित्र मेला'); और कॉटेज में थोड़ा अतिरिक्त पेंट और सफेदी होने से वे बिल्कुल उत्सव जैसे दिखने लगते थे।

"गोमरसाल गाँव" (जहाँ शार्लोट ब्रोंटे की सहेली "मैरी" अपने परिवार के साथ रहती थी), "जो हेकमंडविक से कहीं अधिक सुंदर जगह थी, उसमें एक विचित्र सी दिखने वाली कुटिया थी, जो खुरदुरे, बिना तराशे पत्थरों से बनी थी, जिनमें से कई पत्थर काफी उभरे हुए थे, जिन पर भद्दे सिर और मुस्कुराते चेहरे उकेरे गए थे; और दरवाजे के ऊपर एक पत्थर पर बड़े अक्षरों में खुदा हुआ था, 'द्वेष कक्ष'। इसे गाँव के एक व्यक्ति ने अपने शत्रु के घर के सामने बनवाया था, जिसने अभी-अभी अपने लिए एक अच्छा घर बनाया था, जहाँ से घाटी का सुंदर दृश्य दिखाई देता था, जिसे इस भद्दी इमारत ने पूरी तरह से ढक दिया था।"

निडर - क्योंकि ये लोग उन सभी के लिए काफी परिचित थे - ऐसी आबादी के बीच, सौम्य मिस डब्ल्यू की आठ-नौ छात्राएँ रहती और घूमती थीं। वह स्वयं इसी कठोर, बलवान और उग्र समूह में पली-बढ़ी थीं और उनके उग्र व्यवहार और अवज्ञाकारी स्वभाव के नीचे छिपी अच्छाई और वफादारी की गहराई को जानती थीं।

लड़कियाँ अपने आस-पास की छोटी सी दुनिया के बारे में ऐसे बातें करती थीं मानो वही एकमात्र दुनिया हो; और बड़ों की तरह - शायद उनसे भी श्रेष्ठ लोगों की तरह - उनके अपने विचार, उनकी पार्टियाँ और उनकी तीखी बहसें होती थीं। और उन्हीं के बीच, सभी की प्रिय और सम्मानित, कभी-कभी कुछ लोगों द्वारा हँसी का पात्र, लेकिन हमेशा उनके सामने - डेढ़ साल तक, एक साधारण, कमज़ोर नज़र वाली, अजीब कपड़े पहनने वाली, अध्ययनशील छोटी लड़की रही, जिसे वे शार्लोट ब्रोंटे कहते थे।

अध्याय VII

मिस ब्रोंटे ने 1832 में रो हेड स्कूल छोड़ा, जहाँ उन्होंने अपने शिक्षक और सहपाठियों दोनों का स्नेह प्राप्त किया था और वहाँ उन्होंने दो ऐसी गहरी मित्रताएँ बनाईं जो उनके जीवन भर चलीं; एक "मैरी" के साथ, जिन्होंने अपने पत्र नहीं रखे हैं; दूसरी "ई." के साथ, जिन्होंने कृपापूर्वक मुझे मिस ब्रोंटे के साथ अपने पत्राचार का एक बड़ा हिस्सा सौंपा है। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्हें पता था कि मिस्टर ब्रोंटे अपनी बेटी की जीवनी लिखवाना चाहते थे, और अपने पति के अनुरोध का पालन करते हुए कि मुझे इन पत्रों का उपयोग करने की अनुमति दी जाए, जिनके बिना ऐसा कार्य बहुत अपूर्ण रूप से ही पूरा किया जा सकता था। हालाँकि, इस मित्र को किसी भी दोष या गलतफहमी से बचाने के लिए, यह कहना उचित होगा कि मुझे यह विशेषाधिकार देने से पहले, उन्होंने उनमें उल्लिखित व्यक्तियों और स्थानों के नामों को अत्यंत सावधानीपूर्वक और पूरी तरह से मिटा दिया था। और यह भी कि मैंने उनसे जो जानकारी प्राप्त की है, वह केवल मिस ब्रोंटे और उनकी बहनों से संबंधित है, न कि

किसी अन्य व्यक्ति से जिसका उल्लेख करना मुझे उनके संबंध में आवश्यक लगे।

इस पत्र-व्यवहार के पूर्वार्ध को पढ़ने पर मुझे एक बार फिर शार्लेट में आशा की कमी का अहसास हुआ, जो उनके व्यक्तित्व का एक प्रमुख लक्षण था। जिस उम्र में आम तौर पर लड़कियाँ अपने या अपनी सहेलियों के मन में उठने वाली भावनाओं की अनंतता की आशा करती हैं और इसलिए भविष्य में प्रेम संबंधों से जुड़ी किसी भी प्रतिबद्धता को पूरा करने में कोई बाधा नहीं देखतीं, उस उम्र में वह इस बात से हैरान होती हैं कि "ई." अपना पत्र लिखने का वादा निभाती हैं। परलोक में मुझे इस बात का गहरा अहसास हुआ कि मिस ब्रोंटे ने कभी भी आशा के साथ भविष्य की ओर देखने की हिम्मत नहीं की; उन्हें भविष्य पर कोई भरोसा नहीं था; और जब मैंने उनके दुख भरे वर्षों के बारे में सुना, तो मुझे लगा कि शायद इसी दुःख के दबाव ने उनकी सारी आशा को कुचल दिया था। लेकिन पत्रों से ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक तरह से जन्मजात था; या शायद अपनी दो बड़ी बहनों को खोने का गहरा दुख और शारीरिक कमजोरी की स्थायी स्थिति ने उनकी निराशा को जन्म दिया था। यदि ईश्वर पर उसका विश्वास कमज़ोर होता, तो जीवन के अनेक पड़ावों पर वह असीम चिंता में डूब जाती। लेकिन जैसा कि हम आगे देखेंगे, उसने अपने जीवन को ईश्वर के हाथों में सौंपने का एक बड़ा और सफल प्रयास किया।

घर लौटने के बाद, उसने अपनी बहनों को पढ़ाने में अपना समय व्यतीत किया, जिन पर उसे पहले श्रेष्ठ लाभ प्राप्त थे। 21 जुलाई, 1832 को उसने पादरी के निवास में अपने जीवन के बारे में इस प्रकार लिखा: —

“एक दिन का हिसाब पूरे दिन का हिसाब होता है। सुबह नौ बजे से साढ़े बारह बजे तक मैं अपनी बहनों को पढ़ाती हूँ और चित्र बनाती हूँ; फिर हम दोपहर के भोजन तक टहलते हैं। दोपहर के भोजन के बाद मैं चाय के समय तक सिलाई करती हूँ, और चाय के बाद मैं या तो लिखती हूँ, पढ़ती हूँ, या थोड़ा बहुत कलात्मक काम करती हूँ, या चित्र बनाती हूँ, जैसा मेरा मन करता है। इस तरह, एक सुखद, हालांकि कुछ हद तक नीरस, क्रम में मेरा जीवन बीतता है। घर लौटने के बाद से मैं केवल दो बार चाय पर बाहर गई हूँ। आज दोपहर हमारे घर मेहमान आने वाले हैं, और अगले मंगलवार को हमारे संडे स्कूल की सभी महिला शिक्षिकाएँ चाय पर आएंगी।”

मैं यहां उस पत्र से एक उद्धरण प्रस्तुत करना चाहूंगा जो मुझे इस संस्मरण के पिछले संस्करणों के प्रकाशन के बाद से "मैरी" से प्राप्त हुआ है।

स्कूल छोड़ने के कुछ समय बाद ही उसने स्वीकार किया कि उसने कोबेट की कुछ रचनाएँ पढ़ी थीं। उसने कहा, 'उसे कोबेट पसंद नहीं था; लेकिन जो भी उसके जाल में आता, वह उसे भाता था।' उस समय उसने मुझे लिखा कि पढ़ना और चित्रकारी ही उसके एकमात्र मनोरंजन थे, और उसकी ज़रूरतों के अनुपात में उसके पास किताबों की संख्या बहुत कम थी। उसने अपनी चाची के बारे में कभी बात नहीं की। जब मैंने मिस ब्रैनवेल को देखा, तो वह बहुत ही सलीकेदार थीं, और बहुत अजीब लग रही थीं, क्योंकि उनके कपड़े, आदि, बिल्कुल पुराने ज़माने के थे। एक बार उन्होंने हममें से एक को 'थूकना' या 'थूकना' शब्द का इस्तेमाल करने पर टोका था। उन्होंने ब्रैनवेल को बहुत पसंद किया। वह अपनी भतीजियों से सिलाई करवाती थीं, चाहे जानबूझकर हो या अनजाने में, और जहाँ तक संभव हो, किसी भी अन्य संस्कृति को हतोत्साहित करती थीं। वह लड़कियों से दान के लिए कपड़े सिलवाती रहती थीं, और मुझसे कहती थीं कि यह प्राप्तकर्ताओं के भले के लिए नहीं, बल्कि सिलने वालों के भले के लिए था। उन्होंने कहा, 'उनके लिए ऐसा करना उचित था।' जहाँ तक मुझे पता है, शार्लोट कभी भी 'अत्यधिक उत्तेजित' नहीं हुई। जब वह स्वस्थ होती थीं, तो वह बेहतर बात करती थीं, और वास्तव में जब वह बीमार होती थीं, तो उनकी बातचीत और भी अच्छी होती थी। जब वह उदास होती थी तो कभी बोलती ही नहीं थी। उसे अपने दिल की बात कहने के लिए हमेशा अच्छे मूड की ज़रूरत होती थी, क्योंकि उस समय उसमें हिम्मत नहीं होती थी। ऐसे समय में वह कभी भी कोई स्पष्ट राय नहीं देती थी...

"शार्लेट कहती थी कि वह किसी भी ऐसे व्यक्ति के साथ घुलमिल सकती है जिसके सिर पर एक उभार हो (अर्थात कर्तव्यनिष्ठा)। मैंने पाया कि मैं उससे शायद ही कभी असहमत होती थी, सिवाय इसके कि वह मूर्ख लोगों के प्रति बहुत अधिक सहनशील थी, अगर उनमें थोड़ी सी भी दयालुता हो।"

लगभग इसी समय श्री ब्रोंटे ने अपने बच्चों के लिए चित्रकारी का एक शिक्षक नियुक्त किया, जो प्रतिभावान तो थे, लेकिन सिद्धांतों के मामले में बहुत ही असत्य थे। हालाँकि वे कभी भी निपुणता प्राप्त नहीं कर पाए, फिर भी उन्होंने इस कला को सीखने में बहुत रुचि दिखाई; स्पष्टतः, अपनी प्रबल कल्पनाओं को दृश्य रूप में व्यक्त करने की सहज इच्छा से प्रेरित होकर। शार्लेट ने मुझे बताया कि उनके जीवन के इस दौर में, चित्रकारी करना और अपनी बहनों के साथ बाहर घूमना, उनके दिन के दो

सबसे बड़े सुख और विश्राम के साधन थे।

तीनों लड़कियाँ बैंगनी-काले रंग के दलदली मैदानों की ओर ऊपर की ओर जाया करती थीं, जिनकी समतल सतह पर जगह-जगह पत्थर की खदानें थीं; और अगर उनमें पर्याप्त शक्ति और समय होता, तो वे एक झरने तक पहुँच जातीं, जहाँ से छोटी नदी कुछ चट्टानों के ऊपर से नीचे तल में गिरती थी। वे गाँव से होकर नीचे की ओर बहुत कम जाती थीं। वे परिचित चेहरों से भी मिलने से कतराती थीं, और सबसे गरीब लोगों के घर में बिना बुलाए प्रवेश करने से भी बचती थीं। वे रविवार स्कूल में नियमित शिक्षिकाएँ थीं, यह आदत शार्लोट ने अकेले रह जाने के बाद भी पूरी निष्ठा से निभाई; लेकिन उन्होंने कभी भी स्वेच्छा से अपने बच्चों को नहीं छोड़ा, और हमेशा दलदली मैदानों के एकांत और स्वतंत्रता को ही पसंद किया।

* * * * *

इस साल सितंबर में, शार्लोट अपनी सहेली "ई" से मिलने पहली बार गई। यह मुलाकात रो हेड के पड़ोस में हुई, जहाँ उसकी अपने कई पुराने सहपाठियों से सुखद मुलाकात हुई। इस मुलाकात के बाद, ऐसा लगता है कि उसने और उसकी सहेली ने फ्रेंच में पत्र व्यवहार करने का फैसला किया, ताकि भाषा में सुधार हो सके। लेकिन यह सुधार बहुत अधिक नहीं हो सकता था, क्योंकि यह केवल शब्दकोश के शब्दों से अधिक परिचित होने तक ही सीमित था, और उन्हें यह समझाने वाला कोई नहीं था कि अंग्रेजी मुहावरों का शाब्दिक अनुवाद फ्रेंच रचना नहीं कहलाता; फिर भी उनका प्रयास सराहनीय था, और यह स्वयं दर्शाता है कि वे दोनों मिस डब्ल्यू- के मार्गदर्शन में शुरू की गई शिक्षा को जारी रखने के लिए कितनी उत्सुक थीं। मैं एक अंश प्रस्तुत करूँगा जो, भाषा के बारे में चाहे जो भी राय हो, पर्याप्त रूप से सजीव है, और हमें एक खुशहाल छोटे परिवार का चित्र प्रस्तुत करता है; सबसे बड़ी बहन दो सप्ताह की अनुपस्थिति के बाद दो छोटी बहनों के पास घर लौटती है।

मैं बिना किसी दुर्घटना या दुर्भाग्य के पूरी तरह सुरक्षित हॉवर्थ पहुँच गई। गाड़ी आते ही मेरी छोटी बहनें मुझसे मिलने घर से दौड़ पड़ीं और उन्होंने मुझे इतनी उत्सुकता और खुशी से गले लगाया मानो मैं एक साल से भी ज़्यादा समय से दूर थी। मेरे पापा, मेरी आंटी और वो सज्जन जिनके बारे में मेरे भाई ने बात की थी, सब ड्राइंग रूम में इकट्ठा थे और थोड़ी देर में मैं भी वहाँ चली गई। अक्सर ऐसा ही होता है कि

जब एक सुख खो जाता है, तो दूसरा उसकी जगह लेने के लिए तैयार रहता है। इस तरह मैं अभी-अभी अपने बहुत प्यारे दोस्तों को छोड़कर आई थी, लेकिन कुछ ही पल पहले मैं अपने उन रिश्तेदारों के पास लौटी जो उस समय भी उतने ही प्यारे और दयालु थे। हालाँकि आप मुझे खो रहे थे (क्या मैं मान सकती हूँ कि मेरा जाना आपके लिए दुखदायी था?), फिर भी आप अपने भाई और बहन के आने का इंतज़ार कर रहे थे। मैंने अपनी बहनों को वो सेब दिए जो आपने इतनी दयालुता से भेजे थे; वे कहती हैं कि उन्हें पूरा यकीन है कि मिस ई. "बहुत दयालु और अच्छी हैं; दोनों आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं; मुझे उम्मीद है कि कुछ महीनों में उन्हें यह खुशी मिलेगी।"

लेकिन दोस्तों के मिलने में अभी कुछ समय था, और इस बीच उन्होंने महीने में एक बार पत्र व्यवहार करने का समझौता किया। हॉवर्थ के पत्रों में दर्ज करने लायक कोई खास घटनाएँ नहीं थीं। शांत दिन, घर के कामों में व्यस्तता और महिलाओं के घरेलू कामकाज, लिखने के लिए कुछ खास नहीं देते थे; और शार्लोट स्वाभाविक रूप से किताबों की आलोचना करने के लिए प्रेरित होती थीं।

इनमें से कई अलग-अलग दयनीय स्थिति में थीं, और उनकी स्थिति के अनुसार उन्हें अलग-अलग स्थानों पर रखा गया था। अच्छी तरह से जिल्दबंद पुस्तकें श्री ब्रोंटे के अध्ययन कक्ष में रखी थीं; हालांकि उनके लिए किताबें खरीदना एक आवश्यक विलासिता थी, लेकिन अक्सर पुरानी किताब की जिल्द बंधवाने या नई किताब खरीदने के बीच चुनाव करना पड़ता था, इसलिए परिवार के सभी सदस्यों द्वारा बड़े चाव से पढ़ी गई परिचित पुस्तक कभी-कभी ऐसी स्थिति में होती थी कि शयनकक्ष की अलमारी ही उसके लिए उपयुक्त स्थान मानी जाती थी। घर भर में कई ठोस प्रकार की मानक पुस्तकें पाई जाती थीं। सर वाल्टर स्कॉट की रचनाएँ, वर्ड्सवर्थ और साउथी की कविताएँ हल्की-फुल्की साहित्यिक रचनाओं में शामिल थीं; वहीं, ब्रैनवेल परिवार की ओर से आई कुछ पुस्तकों का नाम लिया जा सकता है, जिनमें से कुछ अपने विशिष्ट चरित्र वाली हैं - गंभीर, उग्र और कभी-कभी कट्टरपंथी - - ये पुस्तकें संत जॉन वेस्ली के कॉर्निश अनुयायियों से आई थीं और कैरोलिन हेलस्टोन को "शर्ली" में जिन कृतियों तक पहुंच प्राप्त थी, उनके विवरण में इनका उल्लेख किया गया है: - "कुछ आदरणीय लेडीज़ मैगज़ीन, जिन्होंने कभी अपनी मालकिन के साथ यात्रा की थी और एक तूफान का सामना किया था" - (संभवतः श्रीमती ब्रोंटे की संपत्ति के अवशेषों का हिस्सा, जो कॉर्नवाल के तट पर दुर्घटनाग्रस्त हुए जहाज में थे) - "और

जिनके पन्ने खारे पानी से सने हुए थे; कुछ पागल मेथोडिस्ट मैगज़ीन जो चमत्कारों और प्रेतों, अलौकिक चेतावनियों, अशुभ सपनों और उन्मादी कट्टरता से भरी हुई थीं; और श्रीमती एलिजाबेथ रोवे के मृतकों से जीवितों को लिखे गए उतने ही पागल पत्र।"

श्री ब्रोंटे ने अपनी बेटियों में पढ़ने की रुचि को प्रोत्साहित किया; और हालांकि मिस ब्रैनवेल ने घर के कामों की विविधता के कारण इसे उचित सीमा में रखा, जिनमें वह उनसे न केवल भाग लेने की, बल्कि निपुण होने की भी अपेक्षा करती थीं, जिससे वे नियमित रूप से हर दिन का एक अच्छा हिस्सा बिता सकें, फिर भी उन्हें कीघली के पुस्तकालय से किताबें लाने की अनुमति थी; और उन चार मील लंबे रास्तों पर उन्होंने कई सुखद सैर की होंगी, जिनमें वे कोई नई किताब लिए घर लौटते समय झाँकती रहती थीं। ऐसा नहीं था कि किताबें आम तौर पर नई कही जाने वाली होती थीं; 1833 की शुरुआत में, दोनों सहेलियाँ लगभग एक साथ "केनिलवर्थ" नामक स्थान पर पहुँचीं, और शार्लोट इसके बारे में इस प्रकार लिखती हैं: —

मुझे खुशी है कि आपको 'केनिलवर्थ' पसंद आया; यह निश्चित रूप से एक उपन्यास से अधिक प्रेम कहानी जैसा है: मेरी राय में, यह महान सर वाल्टर की कलम से निकली सबसे दिलचस्प रचनाओं में से एक है। वार्नी निश्चित रूप से पूर्ण दुष्टता का साक्षात रूप है; और उसके अंधकारमय और अत्यंत धूर्त मन के चित्रण में, स्कॉट मानव स्वभाव के अद्भुत ज्ञान के साथ-साथ उसकी धारणाओं को मूर्त रूप देने की आश्चर्यजनक कुशलता का प्रदर्शन करते हैं, जिससे अन्य लोग भी उस ज्ञान में भागीदार बन सकें।

हालांकि यह अंश सामान्य प्रतीत हो सकता है, लेकिन यह दो-तीन कारणों से उल्लेखनीय है: पहला, कथानक या कहानी पर चर्चा करने के बजाय, वह वार्नी के चरित्र का विश्लेषण करती है; और दूसरा, अपनी युवावस्था और एकांत स्थिति के कारण दुनिया के बारे में कुछ भी न जानने के बावजूद, वह "मानव स्वभाव" पर अविश्वास सुनने की इतनी आदी हो चुकी है कि वह गहन और धूर्त खलनायकी की धारणा को बिना किसी आश्चर्य के स्वीकार कर लेती है।

"ई." को लिखे उनके पत्र लिखने का जो औपचारिक और निर्धारित तरीका था, वह उनकी व्यक्तिगत जान-पहचान बढ़ने और एक-दूसरे के घर से परिचित होने के साथ-साथ कम होता गया; जिससे लोगों और स्थानों से संबंधित छोटी-छोटी बातों में भी रुचि और महत्व आ गया। 1833 की गर्मियों में, उन्होंने अपनी सहेली को अपने

घर आने का निमंत्रण देने के लिए पत्र लिखा। "मौसी को लगा कि इसे गर्मियों के मध्य तक टाल देना बेहतर होगा, क्योंकि हमारे पहाड़ों में सर्दियाँ और यहाँ तक कि बसंत के मौसम भी बहुत ठंडे और उजाड़ होते हैं।"

स्कूल की सहेली की बहनों को देखकर आगंतुक पर पहली छाप यही पड़ी कि एमिली लंबी, पतली भुजाओं वाली लड़की थी, जो अपनी बड़ी बहन से अधिक विकसित थी; और स्वभाव से बेहद शांत थी। मैं शांत रहने और शर्म में अंतर करती हूँ, क्योंकि मेरा मानना है कि शर्म अगर जानती कि कैसे खुश रहना है तो खुशी देती है; जबकि शांत रहने को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह खुश करती है या नहीं। ऐनी, अपनी बड़ी बहन की तरह, शर्मीली थी; एमिली शांत स्वभाव की थी।

ब्रैनवेल काफी सुंदर लड़का था, जिसके बाल भूरे रंग के थे, जैसा कि मिस ब्रोंटे ने एक अप्रिय रंग के लिए कहा था। सभी बहुत बुद्धिमान, मौलिक और उन सभी लोगों या परिवारों से बिल्कुल अलग थे जिन्हें "ई." ने पहले कभी देखा था। लेकिन, कुल मिलाकर, सभी के लिए यह एक सुखद यात्रा थी। घर लौटने के तुरंत बाद शार्लोट ने "ई." को लिखते हुए कहा - "अगर मैं आपको बताऊं कि आपने यहां सभी पर कितना प्रभाव डाला है, तो आप मुझ पर चापलूसी का आरोप लगाएंगी। पापा और आंटी लगातार आपको मेरे लिए एक उदाहरण के रूप में पेश कर रहे हैं ताकि मैं अपने कार्यों और व्यवहार को आपके अनुसार ढाल सकूं। एमिली और ऐनी कहती हैं कि 'उन्होंने आपके जैसा किसी को इतना पसंद नहीं किया।' और टैबी, जिसे आपने पूरी तरह से मोहित कर लिया है, आपके बारे में इतनी बकवास करती है कि मैं उसे दोहराना भी नहीं चाहती। अब इतना अंधेरा हो गया है कि, रो हेड की युवतियों द्वारा मुझे दी गई रात में देखने की विलक्षण क्षमता के बावजूद, मैं अब और कुछ नहीं लिख सकती।"

पादरी के घर आए किसी भी आगंतुक के लिए टैबी की सिफारिश मिलना बहुत बड़ी बात होती थी। उनमें यॉर्कशायर की तरह लोगों को परखने की गहरी समझ थी, और वह हर किसी को पसंद नहीं करती थीं।

हॉवर्थ का निर्माण स्वच्छता की सभी शर्तों की घोर अनदेखी करते हुए किया गया था: विशाल पुराना कब्रिस्तान सभी घरों के ऊपर स्थित है, और यह सोचना भयावह है कि नीचे लगे पंपों के पानी के स्रोत भी किस प्रकार दूषित हो रहे होंगे। लेकिन 1833-34 की यह सर्दी विशेष रूप से गीली और बरसाती थी, और गाँव में असामान्य रूप से अधिक मौतें हुईं। पादरी के घर में रहने वाले परिवार के लिए वह एक उदास

मौसम था: दलदली भूमि की दलदली अवस्था के कारण उनकी सामान्य सैर बाधित हो गई थी - अंतिम संस्कार और शवों की घंटियाँ बार-बार बजती थीं, और उनकी शोकपूर्ण ध्वनि से पूरा वातावरण भर जाता था - और जब घंटियाँ शांत होती थीं, तो पास के एक शेड में राजमिस्त्री द्वारा कब्र के पत्थरों को तराशने की "चिप-चिप" की आवाज़ सुनाई देती थी। कई लोगों के लिए, मानो कब्रिस्तान में रहना, और मृतकों के अंतिम संस्कार से जुड़ी सभी दैनिक घटनाओं और दृश्यों को देखना, उदासीनता का कारण बन सकता था। लेकिन शार्लोट ब्रोंटे के साथ ऐसा नहीं था। उनकी एक सहेली कहती हैं: “मैंने उन्हें हार्ट्सहेड चर्च में तब पीला पड़ते और बेहोश होते देखा है, जब किसी ने गलती से कह दिया कि हम कब्रों पर चल रहे हैं। शार्लोट को मौत से बहुत डर लगता था। सिर्फ़ लाशों या मरते हुए लोगों से ही नहीं। वह इसे किसी भयानक चीज़ की तरह डरती थीं। उन्हें लगता था कि हम नहीं जानते कि ‘मृत्यु का क्षण’ वास्तव में कितना लंबा या कितना भयानक हो सकता है। यह एक ऐसा डर था जो सिर्फ़ बीमारों के डर से बेखबर लोगों में ही पैदा हो सकता है। उन्होंने मुझे बहुत पहले बताया था कि किसी भी विपत्ति से पहले अक्सर उन्हें एक सपना आता था, जो उन्हें बार-बार आता था और जिसे वह ‘जेन आयर’ के उपन्यास में बताती हैं, जिसमें वह एक रोते हुए छोटे बच्चे को गोद में लिए घूमती हैं और उसे चुप नहीं करा पातीं। वह खुद को उस छोटे बच्चे के लिए बेहद दयनीय महसूस करती थीं, जो बीमार बच्चों की तरह बेजान पड़ा रहता था, जब वह उसे लेकर किसी सुनसान जगह पर घूमती थीं, जैसे कि हॉवर्थ चर्च के गलियारे में। जिन विपत्तियों का उन्होंने ज़िक्र किया, वे हमेशा उन्हीं के साथ नहीं होती थीं। उन्हें लगता था कि अपशकुनों के प्रति ऐसी संवेदनशीलता हैजा जैसी होती है, जो संवेदनशील लोगों में होती है, – कुछ को ज़्यादा, कुछ को कम।”

लगभग 1834 की शुरुआत में, "ई." पहली बार लंदन गई। अपनी सहेली के इस दौरे के विचार ने शार्लट को अजीब तरह से झकझोर दिया। ऐसा लगता है कि उसने इसके संभावित परिणामों के बारे में अपने विचार "ब्रिटिश एस्सेइस्ट्स", "द रैम्बलर", "द मिरर" या "द लाउंजर" में छपे कुछ लेखों से बनाए थे, जो शायद पादरी के घर की किताबों की अलमारी में रखी अंग्रेजी क्लासिक्स में शामिल थे; क्योंकि वह स्पष्ट रूप से सोचती थी कि "महान महानगर" की यात्रा का सामान्य प्रभाव स्वभाव में पूरी तरह से नकारात्मक परिवर्तन आना होता है, और यह देखकर उसे खुशी हुई कि "ई." अभी भी वही "ई." है। और, जैसे ही उसकी सहेली की स्थिरता पर उसका विश्वास बहाल

हुआ, उस विशाल और प्रसिद्ध शहर में देखने लायक अद्भुत चीजों के विचार ने उसकी कल्पना को गहराई से झकझोर दिया।

हॉवर्थ, 20 फरवरी, 1834।

आपके पत्र ने मुझे सचमुच बहुत खुशी दी, साथ ही आश्चर्य भी हुआ। मैरी ने मुझे पहले ही आपके लंदन जाने की सूचना दे दी थी, और मैंने उस महान शहर की भव्यता और नवीनता के बीच आपसे किसी भी तरह के संदेश की उम्मीद नहीं की थी, जिसे यूरोप का व्यापारिक महानगर कहा जाता है। मानवीय स्वभाव को देखते हुए, मैंने सोचा था कि एक छोटी सी देहाती लड़की, जो पहली बार इतनी जिज्ञासा जगाने और ध्यान भटकाने वाली स्थिति में है, कम से कम कुछ समय के लिए दूर और परिचित वस्तुओं को भूल जाएगी और अपने सामने प्रस्तुत दृश्यों के आकर्षण में पूरी तरह खो जाएगी। हालाँकि, आपके दयालु, रोचक और अत्यंत स्वागत योग्य पत्र ने मुझे दिखाया कि मेरी ये धारणाएँ गलत और अनुचित दोनों थीं। लंदन और उसके चमत्कारों के बारे में बात करते समय आपने जिस बेपरवाही का लहजा अपनाया, उससे मुझे बहुत हंसी आई। क्या सेंट पॉल और वेस्टमिंस्टर एब्बे को निहारते समय आप विस्मय में नहीं थीं? क्या आपके मन में कोई तीव्र और क्या आपने सेंट जेम्स चर्च में उस महल को देखकर गहरी दिलचस्पी दिखाई, जहाँ इंग्लैंड के कई राजाओं ने अपने दरबार लगाए हैं, और दीवारों पर उनकी प्रतिमाओं को देखकर? आपको देहाती दिखने से ज़्यादा डरने की ज़रूरत नहीं है; लंदन की भव्यता ने दुनिया, उसके अजूबों और सुंदरताओं से परिचित अनुभवी यात्रियों को भी आश्चर्यचकित कर दिया है। क्या आपने उन महान हस्तियों को देखा है जिन्हें संसद का सत्र इस समय लंदन में रोके हुए है - ड्यूक ऑफ वेलिंगटन, सर रॉबर्ट पील, अर्ल ग्रे, मिस्टर स्टेनली, मिस्टर ओ'कोनेल? अगर मैं आपकी जगह होता, तो शहर में रहते हुए पढ़ने में ज़्यादा समय नहीं बिताता। अवलोकन के लिए अपनी आँखों का इस्तेमाल करें, और कम से कम कुछ समय के लिए लेखकों द्वारा दिए गए चश्मे को एक तरफ रख दें।

अंत में वह लिखती हैं: —

"क्या आप कृपया मुझे राजा के सैन्य बैंड में कलाकारों की संख्या बता सकते हैं?"

और कुछ इसी तरह की शैली में वह लिखती हैं

“19 जून।

“मेरी प्यारी ई.,

अब मैं आपको सही और सचमुच ऐसा कह सकता हूँ। आप लंदन से लौट आए हैं या लौट रहे हैं— उस महान शहर से जो मेरे लिए बेबीलोन, नीनवे या प्राचीन रोम जितना ही रहस्यमय है। आप इस दुनिया (जैसा कि इसे कहा जाता है) से विदा ले रहे हैं, और अपने साथ—यदि आपके पत्र मुझे सही अनुमान लगाने में सक्षम बनाते हैं—एक ऐसा सरल, स्वाभाविक और सच्चा हृदय ला रहे हैं, जैसा कि आप वहाँ ले गए थे। मैं दूसरों के दावों पर विश्वास करने में धीमा हूँ, बहुत धीमा; मैं अपने स्वयं के भाव जानता हूँ, मैं अपने मन को पढ़ सकता हूँ, लेकिन बाकी पुरुषों और महिलाओं के मन मेरे लिए बंद किताबों, चित्रलिपि के ग्रंथों के समान हैं, जिन्हें मैं आसानी से न तो खोल सकता हूँ और न ही समझ सकता हूँ। फिर भी समय, सावधानीपूर्वक अध्ययन, लंबा परिचय अधिकांश कठिनाइयों को दूर कर देते हैं; और, आपके मामले में, मुझे लगता है कि वे उस छिपी हुई भाषा को प्रकाश में लाने और समझने में सफल रहे हैं, जिसके मोड़, घुमाव, असंगतताएँ और अस्पष्टताएँ अक्सर मानव स्वभाव के ईमानदार पर्यवेक्षक के शोध को विफल कर देती हैं... मेरे जैसे एक साधारण व्यक्ति के प्रति आपकी जागरूकता के लिए मैं वास्तव में आभारी हूँ, और मुझे आशा है कि यह प्रसन्नता पूरी तरह स्वार्थपूर्ण नहीं है; मुझे विश्वास है कि यह आंशिक रूप से इस बात से प्रेरित है कि मेरी सहेली का चरित्र मुझसे कहीं अधिक उच्च और दृढ़ है, जितना कि मैं कभी पूरी तरह से जानती थी। बहुत कम लड़कियाँ ऐसा कर पातीं जैसा आपने किया है - लंदन की चकाचौंध, चमक और चकाचौंध को इतने अपरिवर्तित स्वभाव और निर्मल हृदय के साथ देख पातीं। मुझे आपके पत्रों में कोई बनावटीपन, कोई तुच्छता, सादे लोगों और चीजों के प्रति कोई तुच्छ तिरस्कार और दिखावटी प्रशंसा नहीं दिखती।

आजकल सस्ते रेल यात्राओं के इस दौर में, लंदन की एक छोटी सी यात्रा का चरित्र पर कोई खास प्रभाव पड़ने की बात पर शायद हमें हंसी आए, चाहे बुद्धि पर इसका कितना भी असर क्यों न हो। लेकिन उसका लंदन—उसका महान काल्पनिक शहर—एक सदी पहले का वह "कस्बा" था, जहाँ चंचल बेटियाँ अपने अनिच्छुक पिताओं को घसीटकर ले जाती थीं, या नासमझ दोस्तों के साथ जाती थीं, जिससे उनके सारे अच्छे गुण नष्ट हो जाते थे, और कभी-कभी तो उनकी सारी दौलत भी बर्बाद हो जाती थी; उसके लिए वह "पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" का वैनिटी फेयर था।

लेकिन उस न्यायसंगत और प्रशंसनीय समझ को देखें जिसके साथ वह एक ऐसे

विषय का समाधान कर सकती है जिसके सभी पहलुओं को वह नजरअंदाज कर सकती है।

हॉवर्थ, 4 जुलाई, 1834।

अपने आखिरी पत्र में तुमने मुझसे अपनी कमियों के बारे में बताने को कहा है। सच में, तुम इतने मूर्ख कैसे हो सकते हो! मैं तुम्हारी कमियों के बारे में नहीं बताऊँगा, क्योंकि मुझे पता ही नहीं। भला वो कैसा प्राणी होगा जो अपने प्रिय मित्र से स्नेहपूर्ण और दयालु पत्र पाकर जवाब में अपनी कमियों की सूची लिख डाले! ज़रा सोचो, मैं ऐसा करूँ, और फिर विचार करो कि तुम मुझे क्या-क्या कहोगे। अभिमानी, हठधर्मी, पाखंडी, छोटा ढोंगी, मुझे लगता है कि ये सबसे हल्के शब्द होंगे। अरे, बच्चे! जब तुम मुझसे इतनी दूर हो, तो मेरे पास तुम्हारी कमियों पर विचार करने का न समय है और न ही इच्छा, और वैसे भी, तुम्हारे दयालु पत्र, उपहार आदि लगातार तुम्हारी अच्छाई को उजागर कर रहे हैं। फिर, तुम्हारे आस-पास हमेशा समझदार रिश्तेदार रहते हैं, जो इस अप्रिय काम को कहीं बेहतर ढंग से कर सकते हैं। मुझे कोई संदेह नहीं है कि उनकी सलाह तुम्हारे लिए पूरी तरह से उपयोगी है; तो फिर मैं अपनी सलाह क्यों दूँ? अगर तुम उनकी बात नहीं सुनोगे, तो चाहे मैं कुछ भी कहूँ, वह व्यर्थ होगा। मृतकों में से एक तुम्हें उपदेश देने आया है। अगर तुम मुझसे प्यार करते हो, तो अब और बकवास मत करो। श्रीमान - - शादी करने वाले हैं, है ना? खैर, उनकी होने वाली पत्नी मुझे जितनी मैंने देखी और तुम्हारे वर्णन से समझी, उतनी ही चतुर और मिलनसार महिला लगीं। अब इस तारीफ में मुझे उनकी कमियों की सूची भी जोड़नी पड़ेगी? तुम कहते हो कि तुम - - छोड़ने की सोच रहे हो। मुझे इसका अफसोस है। - - एक सुखद जगह है, इंग्लैंड के पुराने पारिवारिक हॉलों में से एक, लॉन और जंगल से घिरा हुआ, बीते समय की याद दिलाता है और (कम से कम मुझे तो) सुखद भावनाएँ जगाता है। एम. को लगा था कि तुम कम लंबे हो गए हो, है ना? मैं बिल्कुल भी लंबा नहीं हुआ हूँ, बल्कि पहले की तरह ही छोटा और मोटा हूँ। तुमने मुझसे पढ़ने के लिए कुछ किताबें सुझाने को कहा है। मैं कम से कम शब्दों में ऐसा करूँगा। अगर तुम्हें कविता पसंद है, तो अच्छी कविताएँ पढ़ो; मिल्टन, शेक्सपियर, थॉमसन, गोल्डस्मिथ, पोप (अगर तुम चाहो, हालाँकि मैं उनकी प्रशंसा नहीं करता)। स्कॉट, बायरन, कैंपबेल, वर्ड्सवर्थ और साउथी। शेक्सपियर और बायरन के नामों से चौंकिए मत। ये दोनों महान व्यक्ति थे और उनकी रचनाएँ उन्हीं की तरह हैं। आप अच्छी रचनाओं को

चुनना और बुरी रचनाओं से बचना सीख जाएँगे; सबसे उत्तम अंश हमेशा शुद्ध होते हैं, जबकि बुरे अंश हमेशा घृणित होते हैं; आप उन्हें दोबारा पढ़ना नहीं चाहेंगे। शेक्सपियर की हास्य रचनाओं और बायरन के डॉन जुआन (शायद केन) को छोड़ दें, हालाँकि बायरन की रचना एक शानदार कविता है, और बाकी रचनाओं को निडर होकर पढ़ें; वास्तव में, वह व्यक्ति भ्रष्ट ही होगा जो हेनरी अष्टम, रिचर्ड तृतीय, मैकबेथ, हैमलेट और जूलियस सीज़र से बुराई ग्रहण कर सकता है। स्कॉट की मधुर, बेबाक और रोमांटिक कविता आपको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकती। न ही वर्ड्सवर्थ, कैंपबेल या साउथी की रचनाएँ - कम से कम उनका अधिकांश भाग; कुछ अंश निश्चित रूप से आपत्तिजनक हैं। इतिहास के लिए, यदि संभव हो तो ह्यूम, रोलिन और यूनिवर्सल हिस्ट्री पढ़ें; मैंने तो कभी नहीं पढ़ी। अगर आप साहित्य पढ़ना चाहते हैं, तो स्कॉट को ही पढ़ें; उनके बाद के सभी उपन्यास बेकार हैं। जीवनी के लिए, जॉनसन की 'लाइव्स ऑफ द पोएट्स', बॉसवेल की 'लाइफ ऑफ जॉनसन', साउथी की 'लाइफ ऑफ नेल्सन', लॉकहार्ट की 'लाइफ ऑफ बर्न्स', मूर की 'लाइफ ऑफ शेरिडन', मूर की 'लाइफ ऑफ बायरन' और वोल्फ की 'रिमेन्स' पढ़ें। प्राकृतिक इतिहास के लिए, बेविक और ऑडबोन और गोल्डस्मिथ और व्हाइट की 'सेलबोर्न का इतिहास' पढ़ें। धर्मशास्त्र के लिए, आपका भाई आपको सलाह देगा। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि मानक लेखकों को ही पढ़ें और नई-नई चीजों से दूर रहें।

इस सूची से पता चलता है कि उनके पास पढ़ने के लिए पुस्तकों का अच्छा-खासा संग्रह रहा होगा। यह स्पष्ट है कि इन दोनों पत्र-व्यवहारियों की अंतरात्मा कट्टर धार्मिक लोगों के बीच चर्चा किए जाने वाले कई प्रश्नों के प्रति सजग थी। शेक्सपियर की नैतिकता को लेकर शार्लोट की राय को संवेदनशील "ई." के सामने पुष्ट करना आवश्यक था; और कुछ समय बाद, उन्होंने पूछा कि क्या लड़के-लड़कियों के समूह में एक-दो घंटे तक नृत्य करना आपत्तिजनक है। शार्लेट जवाब देती है, “मैं श्रीमान — - या आपकी उत्कृष्ट बहन से असहमत होने में संकोच करूंगी, लेकिन वास्तव में मुझे मामला कुछ इस प्रकार लगता है। यह सर्वमान्य है कि नृत्य का पाप केवल ‘टांगें हिलाने’ (जैसा कि स्कॉटिश लोग कहते हैं) में नहीं है, बल्कि इसके साथ होने वाले परिणामों में है; अर्थात्, फिजूलखर्ची और समय की बर्बादी; जब इसका उपयोग केवल, जैसा कि आपके द्वारा बताए गए मामले में है, युवाओं के बीच एक घंटे के मनोरंजन के लिए किया जाता है (जिन्हें निश्चित रूप से ईश्वर के आदेशों का उल्लंघन

किए बिना थोड़ी मौज-मस्ती करने की अनुमति दी जा सकती है), तो ये परिणाम नहीं हो सकते। इसलिए (मेरे तर्क के अनुसार), ऐसे समय में मनोरंजन पूरी तरह से निर्दोष है।”

हालाँकि हॉवर्थ और ब्रैडफोर्ड के बीच की दूरी मात्र सत्रह मील थी, फिर भी बिना किसी वाहन या गाड़ी को किराए पर लिए सीधे एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना मुश्किल था। इसलिए शार्लोट के आने के लिए पहले से काफी तैयारी करनी पड़ती थी। हॉवर्थ की गाड़ी हमेशा उपलब्ध नहीं होती थी; और श्री ब्रोंटे अक्सर ब्रैडफोर्ड या अन्य स्थानों पर मिलने की किसी भी व्यवस्था में शामिल होने से कतराते थे, जिससे दूसरों को असुविधा हो सकती थी। पूरे परिवार में वह संवेदनशील स्वाभिमान भरपूर था जिसके कारण वे किसी भी मेहमान पर कोई दायित्व डालने से डरते थे और किसी भी मुलाकात के दौरान "अधिकार से अधिक समय तक रुकने" से घबराते थे। मुझे यकीन नहीं है कि श्री ब्रोंटे दूसरों पर अविश्वास को मानव स्वभाव के उस ज्ञान का हिस्सा नहीं मानते थे जिस पर वे गर्व करते थे। इस संबंध में उनके उपदेश, शार्लोट की निराशा के साथ मिलकर, उसे हमेशा अत्यधिक प्रेम करने से डराते थे; अपने प्रियजनों को ऊबाने से डरते थे; और इस प्रकार वह अक्सर अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने की कोशिश करती थी, और अपने सच्चे मित्रों के लिए हमेशा सुखद उपस्थिति के प्रति हमेशा सतर्क रहती थी। इस व्यवहारिक शैली के अनुसार, जब उसे एक महीने के लिए आमंत्रित किया गया, तो वह "ई." के परिवार के बीच केवल दो सप्ताह ही रही, जिनके प्रति हर मुलाकात से उसका स्नेह और भी बढ़ता गया, और जिन्होंने उसका उसी प्रकार की शांत प्रसन्नता के साथ स्वागत किया जैसे वे किसी बहन का स्वागत करते।

राजनीति में उनकी बचकानी दिलचस्पी अब भी बरकरार थी। मार्च 1835 में उन्होंने लिखा: “राजनीति जिस दिशा में जा रही है, उसके बारे में आपका क्या विचार है? मैं यह इसलिए पूछ रही हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि अब आप इस मामले में गहरी रुचि ले रहे हैं; पहले आपको इसकी ज़्यादा परवाह नहीं थी। आप देख रहे हैं, बी. विजयी हो रहा है। धिक्कार है! मैं तो उससे सख्त नफरत करती हूँ, और अगर किसी से मुझे घोर घृणा है, तो वह यही आदमी है। लेकिन विपक्ष बँटा हुआ है, कुछ कट्टर समर्थक हैं, कुछ उदासीन; और ड्यूक (सर्वोत्तम ड्यूक) और सर रॉबर्ट पील में असुरक्षा के कोई लक्षण नहीं दिखते, हालाँकि वे दो बार हार चुके हैं; इसलिए ‘हिम्मत रखो, मेरे दोस्त,’ जैसा कि पुराने शूरवीर युद्ध में जाने से पहले कहा करते थे।”

सन् 1835 की गर्मियों के मध्य में, पादरी के घर में एक बड़ी पारिवारिक योजना पर विचार-विमर्श हुआ। सवाल यह था कि ब्रैनवेल को किस व्यापार या पेशे में प्रशिक्षित किया जाए? वह लगभग अठारह वर्ष का हो चुका था; निर्णय लेने का समय आ गया था। वह निस्संदेह बहुत बुद्धिमान था; शायद शुरुआत में, इस विलक्षण परिवार का सबसे प्रतिभाशाली सदस्य। बहनें अपनी या एक-दूसरे की प्रतिभा को मुश्किल से पहचान पाती थीं, लेकिन वे उसकी प्रतिभा को भली-भांति जानती थीं। पिता, नैतिक आचरण में कई कमियों से अनभिज्ञ, अपने बेटे की महान प्रतिभाओं पर गर्व करते थे; क्योंकि ब्रैनवेल अपनी प्रतिभाओं को दूसरों के मनोरंजन के लिए सहजता और स्वेच्छा से प्रदर्शित करता था। लोगों की प्रशंसा उसे बहुत भाती थी। और इसी कारण यॉर्कशायर के लोगों में बौद्धिक प्रतिभा के प्रति विशेष रुचि होने के कारण, वह "अरविल" (पारविल) और गाँव के सभी बड़े समारोहों में उपस्थित रहने लगा। साथ ही, उसे यह अवांछनीय प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो गई कि ब्लैक बुल के मालिक द्वारा किसी भी ऐसे यात्री को उसकी संगति की सिफारिश की जाती थी जो शराब के नशे में अकेला या उदास महसूस कर रहा हो। “क्या आपको अपनी बोतल उठाने में किसी की मदद चाहिए, महोदय? अगर हाँ, तो मैं पैट्रिक को बुलवा देता हूँ” (गाँव वाले उसे उसकी मृत्यु तक इसी नाम से पुकारते थे, हालाँकि अपने परिवार में वह हमेशा “ब्रैनवेल” ही कहलाता था)। और जब तक संदेशवाहक गया, मकान मालिक ने अपने मेहमान का मनोरंजन लड़के की अद्भुत प्रतिभाओं के बारे में बताकर किया, जिसकी असाधारण बुद्धिमत्ता और बातचीत करने की अद्भुत क्षमता गाँव का गौरव थी। श्री ब्रोंटे पिछले कुछ वर्षों से लगातार बीमार रहते थे, जिसके कारण न केवल उनके लिए भोजन अकेले करना आवश्यक हो गया था (अस्वास्थ्यकर भोजन के प्रलोभनों से बचने के लिए), बल्कि भोजन के तुरंत बाद का समय पूरी तरह शांत बिताना भी वांछनीय हो गया था। और इस आवश्यकता के साथ-साथ अपने स्थानीय कर्तव्यों के प्रति उचित ध्यान देने के कारण, वे आंशिक रूप से इस बात से अनभिज्ञ थे कि उनका बेटा स्कूल के समय के बाद क्या करता था। उनका अपना बचपन भी उन्हीं लोगों के बीच बीता था, जिनके सानिध्य में ब्रैनवेल अब था; लेकिन उनमें दृढ़ इच्छाशक्ति, एक गंभीर और दृढ़ महत्वाकांक्षा और उद्देश्य की ऐसी दृढ़ता थी जिसकी उनके कमजोर बेटे को कमी महसूस होती थी।

यह बात अनोखी है कि पूरे परिवार में चित्रकारी के प्रति कितनी प्रबल ललक थी।

श्री ब्रोंटे ने उन्हें अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए बहुत प्रयास किए थे; लड़कियाँ स्वयं चित्रकारी से जुड़ी हर चीज़ से प्रेम करती थीं—महान चित्रों के सभी विवरण या नक्काशी; और अच्छे चित्र न मिलने पर, वे अपने सामने आने वाले किसी भी मुद्रित चित्र या रेखाचित्र को लेकर उसका विश्लेषण करतीं और यह पता लगातीं कि उसकी रचना में कितना चिंतन लगा है, वह क्या विचार व्यक्त करना चाहता है और वास्तव में क्या व्यक्त करता है। इसी भावना से प्रेरित होकर, वे अपनी कल्पनाओं को साकार करने का प्रयास करती रहीं; उनमें रचना की क्षमता की कमी थी, कल्पना की नहीं। एक समय शार्लोट ने कलाकार बनकर जीविका कमाने का विचार किया और पूर्व-राफेल शैली की सूक्ष्मता से चित्र बनाने में अपनी आँखें थका दीं, लेकिन पूर्व-राफेल शैली की सटीकता से नहीं, क्योंकि वह प्रकृति से नहीं बल्कि कल्पना से चित्र बनाती थी।

लेकिन उन सभी का मानना था कि ब्रैनवेल की चित्रकारी प्रतिभा पर कोई संदेह नहीं हो सकता। मैंने उनकी एक तेल चित्रकला देखी है, जो मुझे नहीं पता कब बनी थी, लेकिन शायद इसी समय के आसपास। यह उनकी बहनों का चित्र था, जीवन-आकार का, तीन-चौथाई लंबाई का; चित्र बनाने में यह संकेतों से बहुत बेहतर नहीं था; लेकिन मुझे लगता है कि चित्र बहुत ही अद्भुत थे। बाकी दो बहनों के चित्रण की सटीकता का अंदाजा मैं केवल इस बात से लगा सकता था कि शार्लोट, कैनवास के बड़े फ्रेम को पकड़े हुए, और उसके ठीक पीछे खड़ी थी, अपनी छवि से कितनी मिलती-जुलती थी, हालांकि चित्र लिए हुए दस साल से अधिक समय बीत चुका होगा। चित्र लगभग बीच में एक बड़े खंभे से विभाजित था। खंभे के उस तरफ, जहाँ सूर्य की रोशनी पड़ रही थी, शार्लोट उस समय की महिलाओं की पोशाक में खड़ी थी, जिसमें गिगॉट आस्तीन और बड़े कॉलर थे। गहरी छाया वाले हिस्से में एमिली थी, जिसके कंधे पर ऐनी का कोमल चेहरा टिका हुआ था। एमिली का चेहरा मुझे शक्ति से भरपूर लगा; शार्लोट के चेहरे पर चिंता और ऐनी के चेहरे पर कोमलता झलकती थी। दोनों छोटी बच्चियाँ अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुई थीं, हालाँकि एमिली शार्लोट से लंबी थी; उनके बाल छोटे थे और उन्होंने लड़कियों जैसे कपड़े पहने थे। मुझे याद है, मैं उन दोनों उदास, गंभीर और छायादार चेहरों को देख रही थी और सोच रही थी कि क्या मैं उस रहस्यमय भाव को पहचान सकती हूँ जो कहा जाता है कि शीघ्र मृत्यु का संकेत देता है। मुझे एक प्यारी सी अंधविश्वासी उम्मीद थी कि स्तंभ उनके

भाग्य को ऐनी के भाग्य से अलग करता है, जो कैनवास पर अलग खड़ी थी, जैसे जीवन में वह जीवित थी। मुझे यह देखकर अच्छा लगता था कि स्तंभ का चमकीला भाग उसकी ओर था - कि चित्र में प्रकाश उस पर पड़ रहा था: मैं शायद उसके चेहरे में - बल्कि उसके जीवंत चेहरे में - उसकी जवानी में मृत्यु का संकेत ढूंढ सकती थी। वे अच्छी तरह से चित्रित थीं, चाहे उन्हें कितनी भी खराब तरीके से बनाया गया हो। इससे मुझे लगता है कि उसके परिवार ने सही भविष्यवाणी की थी कि अगर ब्रैनवेल को अवसर मिलता, और, अफसोस! उसमें नैतिक गुण होते, तो वह एक महान चित्रकार बन सकता था।

उन्हें इस मुकाम तक पहुंचाने का सबसे अच्छा तरीका यही लग रहा था कि उन्हें रॉयल एकेडमी में छात्र के रूप में भेजा जाए। मैं कह सकता हूँ कि वे इस रास्ते पर चलने के लिए बहुत उत्सुक थे, मुख्यतः इसलिए क्योंकि यह उन्हें उस रहस्यमय लंदन तक ले जाता — उस महान बेबीलोन तक — जिसने इस एकांतप्रिय परिवार के सभी युवा सदस्यों की कल्पनाओं को भर दिया था और उनके मन में बसा हुआ था। ब्रैनवेल के लिए यह महज़ एक जीवंत कल्पना नहीं थी, बल्कि एक अमिट वास्तविकता थी। नक्शों का अध्ययन करके वे लंदन से इतनी अच्छी तरह परिचित हो गए थे, यहाँ तक कि उसकी गलियों से भी, मानो वे वहीं रहते हों। बेचारा भटका हुआ इंसान! लंदन को देखने और जानने की यह लालसा, और प्रसिद्धि पाने की वह प्रबल इच्छा, कभी शांत नहीं हो सकी। उनका जीवन छोटा और अंधकारमय था। लेकिन 1835 में, उनके सभी रिश्तेदार इस बात पर विचार कर रहे थे कि वे उनके विचारों को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं, और उन्हें उस शिखर तक कैसे पहुँचा सकते हैं जहाँ वे पहुँचना चाहते थे। उनकी योजनाएँ क्या थीं, यह शार्लोट ही समझाएँगी। ये पहली बहनें नहीं हैं जिन्होंने अपने भाई की अतृप्त इच्छा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है। ईश्वर करे कि वे आखिरी हों जिन्हें इतना दुखद परिणाम भुगतना पड़ा हो!

हॉवर्थ, 6 जुलाई, 1835।

“मुझे उम्मीद थी कि इस गर्मी में हॉवर्थ में आपसे मिलने का मुझे बेहद सौभाग्य मिलेगा, लेकिन मानवीय परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं और मानवीय संकल्पों को घटनाओं के अनुसार झुकना ही पड़ता है। हम सब अलग होने वाले हैं, बिखरने वाले हैं, जुदा होने वाले हैं। एमिली स्कूल जा रही है, ब्रैनवेल लंदन जा रहा है और मैं गवर्नेंस बनने जा रही हूँ। यह आखिरी फैसला मैंने खुद लिया है, यह जानते हुए कि मुझे कभी

न कभी यह कदम उठाना ही पड़ेगा, स्कॉटिश कहावत के अनुसार, ‘जो जल्दी हो सो जल्दी’; और यह भी जानते हुए कि अगर ब्रैनवेल को रॉयल एकेडमी में और एमिली को रो हेड में दाखिला मिल जाता है, तो पापा को अपनी सीमित आमदनी में ही काफी कुछ करना पड़ेगा। आप पूछेंगे, मैं कहाँ रहूँगी? आपसे चार मील के भीतर, एक ऐसी जगह पर जिससे हम दोनों अनजान नहीं हैं, जो कि ऊपर बताए गए रो हेड के अलावा और कोई नहीं है। जी हाँ! मैं उसी स्कूल में पढ़ाने जा रही हूँ जहाँ मैंने खुद पढ़ाई की थी। मिस डब्ल्यू ने मुझे यह प्रस्ताव दिया था और मैंने इसे निजी गवर्नेंस के एक-दो प्रस्तावों से बेहतर समझा, जो मुझे पहले मिले थे। मैं दुखी हूँ—बहुत दुखी हूँ। घर छोड़ने के ख्याल से ही मन उदास हो जाता है; लेकिन कर्तव्य और मजबूरी, ये दोनों ही कठोर स्वामिनी हैं, जिनकी अवज्ञा नहीं की जा सकती। क्या मैंने कभी नहीं कहा था कि तुम्हें अपनी स्वतंत्रता के लिए आभारी होना चाहिए? मैंने उस समय जो कहा था, उसे महसूस किया था, और अब मैं उसे दुगनी गंभीरता से दोहरा रही हूँ; अगर कोई चीज़ मुझे खुश कर सकती है, तो वह है तुम्हारे इतने करीब होने का विचार। यकीनन, तुम और पॉली मुझसे मिलने आओगे; इस पर शक करना मेरी गलती होगी; तुम अब तक कभी निर्दयी नहीं रही हो। एमिली और मैं इस महीने की 27 तारीख को घर छोड़ रहे हैं; साथ रहने का विचार हम दोनों को कुछ हद तक सुकून देता है, और सच कहूँ तो, चूंकि मुझे नौकरी करनी है, 'मेरी किस्मत अच्छी चल रही है।' मैं मिस डब्ल्यू से प्यार और सम्मान करती हूँ।

अध्याय आठ

29 जुलाई, 1835 को, शार्लट, जो अब उन्नीस वर्ष से कुछ अधिक उम्र की थीं, मिस

डब्ल्यू के यहाँ शिक्षिका के रूप में गईं। एमिली एक छात्रा के रूप में उनके साथ गई; लेकिन वह घर की याद से इतनी बीमार हो गईं कि किसी भी चीज़ में मन नहीं लगा पाईं और रो हेड में केवल तीन महीने बिताने के बाद, पादरी के घर और अपने प्रिय मैदानों में लौट आईं।

मिस ब्रोंटे ने एमिली के स्कूल में न रह पाने और मिस डब्ल्यू के स्कूल में उनकी जगह उनकी छोटी बहन के दाखिले के निम्नलिखित कारण बताए हैं:

मेरी बहन एमिली को बंजर भूमि से बहुत प्यार था। उसके लिए, घोर निर्मल बंजर भूमि में भी गुलाब से भी अधिक चमकीले फूल खिलते थे; एक सुनसान पहाड़ी की घाटी में भी, उसका मन स्वर्ग की कल्पना कर लेता था। उसे उस वीरान एकांत में अनेक प्रिय सुख मिलते थे; और उनमें से सबसे प्रिय था - स्वतंत्रता। स्वतंत्रता एमिली की साँस थी; इसके बिना वह मर जाती। अपने घर से स्कूल जाना, और अपने शांत, एकांत, लेकिन अबाधित और बनावटी जीवन से अनुशासित दिनचर्या में आना (भले ही यह सब दयालुता के सानिध्य में था), वह सहन नहीं कर पाई। यहाँ उसका स्वभाव उसकी सहनशक्ति पर भारी पड़ गया। हर सुबह, जब वह जागती, तो घर और बंजर भूमि का दृश्य उसके मन में उमड़ आता, और उसके सामने आने वाले दिन को अंधकारमय और उदास बना देता। मेरे सिवा कोई नहीं जानता था कि उसे क्या तकलीफ थी। मैं अच्छी तरह जानता था। इस संघर्ष में उसका स्वास्थ्य जल्दी ही बिगड़ गया: उसका पीला चेहरा, दुबला-पतला शरीर और कमजोर होता शरीर। उसकी सेहत तेज़ी से बिगड़ने लगी थी। मुझे दिल से महसूस हो रहा था कि अगर वह घर नहीं गई तो मर जाएगी, और इसी दृढ़ विश्वास के साथ मैंने उसे वापस बुला लिया। वह स्कूल में सिर्फ़ तीन महीने ही रही थी; और उसे घर से भेजने का प्रयोग दोबारा करने में कई साल लग गए।

हॉवर्थ से अनुपस्थित रहने पर एमिली को होने वाली यह शारीरिक पीड़ा, जो कई बार इसी तरह की परिस्थितियों में दोहराई गई थी, अंततः इतनी आम हो गई कि घर छोड़ने के लिए चाहे जो भी बाध्य हो, बहनों ने तय किया कि एमिली को वहीं रहना चाहिए, जहाँ वह अकेले ही स्वस्थ रह सकती थी। अपने जीवन में वह दो बार फिर घर से दूर गई; एक बार छह महीने के लिए हैलिफ़ैक्स के एक स्कूल में शिक्षिका के रूप में और बाद में शार्लोट के साथ दस महीने के लिए ब्रुसेल्स गई। घर पर रहते हुए, वह खाना पकाने का अधिकांश काम स्वयं संभालती थी और घर के सारे कपड़े इस्त्री

करती थी; और जब टैबी बूढ़ी और कमज़ोर हो गई, तो एमिली ही परिवार के लिए सारी रोटी बनाती थी; और रसोई के दरवाजे से गुजरने वाला कोई भी व्यक्ति उसे आटा गूंथते समय अपने सामने रखी खुली किताब से जर्मन पढ़ते हुए देख सकता था; लेकिन कोई भी पढ़ाई, चाहे कितनी भी दिलचस्प क्यों न हो, रोटी की अच्छाई में बाधा नहीं डालती थी, जो हमेशा हल्की और बेहतरीन होती थी। वास्तव में, उस रसोई में किताबें एक आम दृश्य थीं; लड़कियों को उनके पिता द्वारा सैद्धांतिक रूप से और उनकी चाची द्वारा व्यावहारिक रूप से यह सिखाया गया था कि घर के सभी कामों में सक्रिय रूप से भाग लेना, उनकी स्थिति में, एक महिला का सरल कर्तव्य था; लेकिन समय का सावधानीपूर्वक उपयोग करते हुए, वे केक देखते समय पढ़ने के लिए कई बार पांच मिनट का समय निकाल लेती थीं, और दो प्रकार के कामों को एक साथ संभालने में राजा अल्फ्रेड से भी बेहतर थीं।

मिस डब्ल्यू के यहाँ शार्लोट का जीवन बहुत सुखमय था, जब तक कि उनका स्वास्थ्य खराब नहीं हो गया। वह पूर्व स्कूल शिक्षिका से बहुत प्यार और सम्मान करती थीं, जिनके साथ अब उनकी सहेली और दोस्त दोनों का रिश्ता बन गया था। लड़कियाँ उनके लिए बिल्कुल अजनबी नहीं थीं, क्योंकि उनमें से कुछ तो उनकी बचपन की सहेलियों की छोटी बहनें थीं। हालाँकि दिन के काम थकाऊ और नीरस हो सकते थे, शाम को हमेशा दो-तीन सुखद घंटे होते थे, जिनका वे बेसब्री से इंतज़ार करती थीं। ये घंटे शार्लोट और मिस डब्ल्यू के साथ बैठकर—कभी-कभी देर रात तक—शांत और सुखद बातचीत करते थे, या कभी-कभी मौन के क्षण भी उन्हें उतने ही सुखद लगते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि दोनों को लगता था कि जैसे ही उनके मन में कोई विचार या बात आती, कोई समझदार साथी सहानुभूति जताने के लिए तैयार रहता था, और फिर भी उन्हें "बातचीत करने" के लिए मजबूर नहीं होना पड़ता था।

मिस डब्ल्यू हमेशा मिस ब्रोंटे को हर संभव मनोरंजन का अवसर देने के लिए उत्सुक रहती थीं; लेकिन अक्सर उन्हें आने वाले निमंत्रणों को स्वीकार करने के लिए मनाना मुश्किल होता था, जिनमें उन्हें शनिवार और रविवार "ई." और "मैरी" के साथ उनके घरों में बिताने के लिए कहा जाता था, जो पैदल दूरी के भीतर ही स्थित थे। मिस ब्रोंटे अक्सर यह मानती थीं कि छुट्टी लेना कर्तव्य का उल्लंघन है और अपने अत्यधिक तपस्वी स्वभाव से आवश्यक बदलाव लाने से इनकार करती थीं, जो उनके शरीर या मन के स्वस्थ संतुलन में कमी का संकेत था। वास्तव में, "मैरी" के पत्र के

एक अंश से यह स्पष्ट होता है, जो इस समय से संबंधित है और जिसके कुछ अंश मैंने पहले भी दिए हैं।

“तीन साल बाद—” (वह समय जब वे साथ-साथ स्कूल में पढ़ते थे)—“मैंने सुना कि वह मिस डब्ल्यू— के यहाँ शिक्षिका बनकर गई हैं। मैं उनसे मिलने गई और पूछा कि इतने कम पैसों में इतना कुछ कैसे कर सकती हैं, जबकि वह बिना पैसों के भी रह सकती हैं। उन्होंने माना कि अपने और ऐनी के कपड़े खरीदने के बाद कुछ भी नहीं बचता, हालाँकि उन्हें कुछ बचाने की उम्मीद थी। उन्होंने स्वीकार किया कि यह कोई शानदार स्थिति नहीं थी, लेकिन वह क्या कर सकती थीं? मेरे पास कोई जवाब नहीं था। कर्तव्य की भावना के अलावा उनमें कोई रुचि या आनंद नहीं था, और जब भी उन्हें समय मिलता, वह अकेले बैठकर ‘मुलाकात’ करती थीं। उन्होंने मुझे बाद में बताया कि एक शाम वह ड्रेसिंग रूम में तब तक बैठी रहीं जब तक कि अंधेरा नहीं हो गया, और फिर अचानक सब कुछ देखकर वह एकदम डर गईं।” निस्संदेह उन्हें यह घटना अच्छी तरह याद रही होगी जब उन्होंने जेन आयर पर इसी तरह के भय के प्रभाव का वर्णन किया। कहानी में वह कहती हैं, “मैं सफेद पलंग और धुंधली दीवारों को देखती बैठी थी—कभी-कभी मंत्रमुग्ध होकर चमकते दर्पण की ओर देखती—मुझे कब्रों में तड़पते मृतकों के बारे में सुनी हुई बातें याद आने लगीं... मैंने दृढ़ रहने का प्रयास किया; अपने बालों को आँखों से झटकते हुए, मैंने अपना सिर उठाया और अंधेरे कमरे में साहसपूर्वक देखने की कोशिश की; उसी क्षण, चाँद की एक किरण पर्दे के किसी छेद से अंदर आई। नहीं! चाँदनी स्थिर थी, और इसने हलचल मचा दी... हालाँकि मेरा मन भय के लिए तैयार था, मेरी नसें घबराहट से काँप रही थीं, मैंने सोचा कि तेज़ी से आती किरण किसी दूसरी दुनिया से आने वाले किसी दर्शन का संकेत है। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा, मेरा सिर गर्म हो गया; मेरे कानों में एक आवाज़ गूँजी जिसे मैंने पंखों की सरसराहट समझा; कुछ मेरे पास ही प्रतीत हुआ।”

मैरी आगे कहती हैं, "उस समय से, उसकी कल्पनाएँ निराशाजनक या भयावह हो गईं; वह इसे रोक नहीं सकती थी, न ही सोचने से खुद को रोक सकती थी। वह उस उदासी को भूल नहीं सकती थी, रात को सो नहीं सकती थी, न ही दिन में ध्यान दे सकती थी।"

“उसने मुझे बताया कि एक रात, अकेले बैठे हुए, लगभग इसी समय, उसने एक आवाज को ये पंक्तियाँ दोहराते हुए सुना:

"'आओ हे उच्च और पवित्र भावना, पर्वत पर चमको, लहरों पर विचरण करो, गुंबद और आवरण पर प्रकाश की तरह जगमगाओ।'

"आठ-दस और पंक्तियाँ थीं जो मुझे याद नहीं हैं। वह ज़ोर देकर कहती थी कि उसने उन्हें नहीं लिखा, बल्कि किसी आवाज़ को उन्हें दोहराते हुए सुना था। हो सकता है कि उसने उन्हें पढ़ा हो और अनजाने में उसे याद आ गया हो। वे बहनों द्वारा प्रकाशित कविताओं के संग्रह में नहीं हैं। उसने यशायाह की एक आयत दोहराई, जिसके बारे में उसने कहा कि उसी से उसे प्रेरणा मिली थी, और जिसे मैं भूल गया हूँ। चाहे वे पंक्तियाँ याद की गई हों या गढ़ी गई हों, यह कहानी एक जगह बैठे रहने और नीरस एकांत में सोचने की ऐसी आदतों को दर्शाती है जो किसी कमज़ोर दिमाग को भी हिला सकती थीं।"

बेशक, इस तरह वर्णित स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे बिगड़ी, और इसे 1836 में उनकी स्थिति का सटीक चित्रण नहीं माना जाना चाहिए। फिर भी, उनके कुछ भावों में निराशा झलकती है, जो दुखद रूप से कूपर के कुछ पत्रों की याद दिलाती है। और यह उल्लेखनीय है कि उनकी कविताओं ने उन्हें कितना प्रभावित किया। मुझे लगता है कि उनके शब्द, उनकी कविताएँ, किसी भी अन्य कवि की तुलना में उन्हें अधिक बार याद आती थीं।

मैरी कहती हैं: "कॉपर की कविता, 'द कास्टअवे', उन सभी को ज्ञात थी, और वे सभी कभी-कभी इसकी सराहना करते थे, या लगभग इसे अपना लेते थे। शार्लोट ने मुझे एक बार बताया था कि ब्रैनवेल ने भी ऐसा ही किया था; और यद्यपि उसका अवसाद उसकी गलतियों का परिणाम था, फिर भी वह शार्लोट के अवसाद से किसी भी अन्य मायने में भिन्न नहीं था। दोनों मानसिक नहीं बल्कि शारीरिक बीमारियाँ थीं। वह इस बात से भलीभांति परिचित थी, और पूछती थी कि इससे क्या सुधार होता है, क्योंकि भावना तो वही रहती थी, और कारण जानने से भी दूर नहीं होती थी। उसमें धार्मिक सहिष्णुता उस व्यक्ति से कहीं अधिक थी जिसने कभी प्रश्न नहीं उठाया था, और धर्म की अनुशंसा करने का उसका तरीका हमेशा सांत्वना देने वाला होता था, न कि किसी कर्तव्य को सख्ती से थोपने वाला। एक बार मैंने उल्लेख किया कि किसी ने मुझसे पूछा था कि मैं किस धर्म का पालन करता हूँ (मुझे अपने पक्ष में करने के इरादे से), और मैंने कहा था कि यह ईश्वर और मेरे बीच की बात है; - एमिली (जो चूल्हे के पास की चटाई पर लेटी हुई थी) ने कहा, 'बिल्कुल सही।' धार्मिक विषयों पर मैंने

एमिली को बस यही कहते सुना था। शार्लोट सहनीय स्थिति में धार्मिक अवसाद से मुक्त थी। स्वास्थ्य में सुधार होने पर, उनका अवसाद फिर लौट आया। आपने शायद ऐसे उदाहरण देखे होंगे। वे अपनी कठिनाइयों से उबर नहीं पाते; वे उन्हें भूल जाते हैं, जब उनका पेट (या जो भी अंग है जो निष्क्रिय लोगों को इतना कष्ट देता है) उन्हें भूलने देता है। मैंने उन्हें सोसिनियनवाद, केल्विनवाद और चर्च ऑफ इंग्लैंडवाद के विपरीत कई अन्य 'वादों' की निंदा करते सुना है। मैं ऐसे विषयों के बारे में उनकी जानकारी पर आश्चर्य करता था।

"10 मई, 1836।"

"तुमने छाते के साथ जो पत्र भेजा था, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ; उसमें तुमने मेरी चिंताओं में इतनी रुचि दिखाई, जिसकी किसी भी इंसान से उम्मीद करने का मुझे कोई हक नहीं है। मैं ढोंगी नहीं बनूंगी; मैं तुम्हारे दयालु, सौम्य और दोस्ताना सवालों का जवाब वैसे नहीं दूंगी जैसे तुम चाहती हो। यह सोचकर खुद को धोखा मत दो कि मुझमें थोड़ी भी अच्छाई है। मेरी जान, अगर मैं तुम्हारी तरह होती, तो मेरा मुख सिय्योन की ओर होता, भले ही पूर्वाग्रह और गलतफहमियां कभी-कभी मेरे सामने के उस शानदार दृश्य पर धुंध डाल दें – लेकिन मैं तुम्हारी तरह नहीं हूं। अगर तुम मेरे विचारों, मेरे सपनों और उस उग्र कल्पना को जान पातीं जो कभी-कभी मुझे खा जाती है और मुझे समाज को, जैसा वह है, बेहद नीरस महसूस कराती है, तो तुम मुझ पर तरस खातीं और शायद मुझसे नफरत भी करतीं। लेकिन मैं बाइबल के खजानों को जानती हूं; मैं उनसे प्रेम करती हूं और उनकी पूजा करती हूं। मैं जीवन के स्रोत को उसकी पूरी स्पष्टता और चमक में देख सकती हूं; लेकिन जब मैं उसके शुद्ध जल को पीने के लिए झुकती हूं, तो वह मेरे होठों से ऐसे बह निकलता है मानो मैं... टैंटलस।

"आप बहुत ही दयालु हैं और बार-बार निमंत्रण भेजती हैं। आप मुझे उलझन में डाल देती हैं। मुझे समझ नहीं आता कि मना कैसे करूँ, और स्वीकार करना तो और भी शर्मनाक है। खैर, मैं इस हफ्ते नहीं आ सकती, क्योंकि हम रिपीटीशन्स के सबसे व्यस्त दौर में हैं। जब आपका पत्र आया, तब मैं पांचवां मुश्किल हिस्सा सुन रही थी। लेकिन मिस वूलर कहती हैं कि मुझे अगले शुक्रवार को मैरी के पास जाना ही होगा, जैसा कि उन्होंने व्हिट-संडे को मुझसे वादा किया था; और रविवार सुबह अगर सुविधा हो तो मैं चर्च में आपसे मिलूंगी और सोमवार तक रुकूंगी। ये तो बहुत ही आसान प्रस्ताव है! मिस वूलर ने मुझे ऐसा करने पर मजबूर कर दिया है। उनका कहना है कि

उनकी छवि दांव पर लगी है।”

प्यारी, दयालु मिस डब्ल्यू! शार्लोट को अपने घर में चाहे कितने भी नीरस और कठिन कर्तव्य निभाने पड़ते हों, हमेशा एक मिलनसार और विचारशील मित्र उसकी देखभाल करती रहती थी और उसे हर छोटे-मोटे मनोरंजक अवसर का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करती थी। और 1836 की उन ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में, उसकी दोस्त ई. हॉवर्थ में उसके साथ रहने आई, जिससे एक खुशनुमा पल तो मिल ही गया।

यहां पत्रों की एक श्रृंखला दी गई है, जिन पर कोई तारीख नहीं है, लेकिन वे इस वर्ष के उत्तरार्ध से संबंधित हैं; और एक बार फिर हम सौम्य और उदास कूपर के बारे में सोचते हैं।

“मेरी प्यारी ई.,

आपका पत्र पढ़कर मैं इस समय उत्साह से कांप रहा हूँ; ऐसा स्नेह मुझे पहले कभी नहीं मिला – यह एक गर्मजोशी भरे, कोमल और उदार हृदय का असीम प्रेम है... इस दयालुता के लिए मैं आपका तहे दिल से धन्यवाद करता हूँ। अब मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देने से नहीं हिचकूँगा। मैं वास्तव में जैसा हूँ उससे बेहतर बनना चाहता हूँ। मैं कभी-कभी पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे ऐसा बना दिया जाए। मेरे मन में अंतरात्मा की पीड़ा है, पश्चाताप के भाव हैं, पवित्र और अवर्णनीय चीजों की झलकियाँ हैं, जिनसे मैं पहले कभी परिचित नहीं था; यह सब भले ही मिट जाए और मैं घोर अंधकार में डूब जाऊँ, लेकिन मैं दयालु उद्धारकर्ता से प्रार्थना करता हूँ कि यदि यह सुसमाचार का भोर है, तो यह पूर्ण दिन में तब्दील हो जाए। मुझे गलत न समझें – यह न सोचें कि मैं अच्छा हूँ; मैं केवल अच्छा बनना चाहता हूँ। मुझे केवल अपनी पिछली लापरवाही और जल्दबाजी से नफरत है। ओह! मैं पहले से बेहतर नहीं हूँ। मैं उस भयानक, निराशाजनक अनिश्चितता की स्थिति में हूँ कि इस समय मैं बूढ़ा होना भी स्वीकार कर लूँगा। मेरे बाल सफेद हो गए हैं, मैंने अपने सारे जवानी के दिन मौज-मस्ती में बिता दिए हैं, और अब मैं मृत्यु के कगार पर हूँ, काश इससे मुझे ईश्वर से मेल-मिलाप और उनके पुत्र के गुणों से मुक्ति की उम्मीद मिल पाती। मैं इन मामलों के प्रति कभी लापरवाह नहीं रही, लेकिन हमेशा से ही मेरा नज़रिया धुंधला और अरुचिकर रहा है; और अब, अगर संभव हो तो, बादल और भी गहरे होते जा रहे हैं, और मेरे मन पर और भी अधिक निराशा छाई हुई है। तुमने मुझे हिम्मत दी, मेरी प्रियतमा; एक पल के लिए, एक कण के लिए, मुझे लगा कि मैं तुम्हें अपनी

आध्यात्मिक बहन कह सकती हूँ; लेकिन वह उत्साह बीत चुका है, और अब मैं पहले की तरह ही दुखी और निराश हूँ। आज रात मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करूँगी। सर्वशक्तिमान ईश्वर मेरी प्रार्थना दयापूर्वक सुनें! और मैं विनम्रतापूर्वक आशा करती हूँ कि वे सुनेंगे, क्योंकि तुम अपनी पवित्र प्रार्थनाओं से मेरी अशुद्ध प्रार्थनाओं को शक्ति दोगी। मेरे चारों ओर हलचल और अफरा-तफरी है, महिलाएं अपने गणित और पाठों के साथ दबाव डाल रही हैं... अगर तुम मुझसे प्यार करते हो, तो शुक्रवार को ज़रूर आना: मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगी और अगर तुमने मुझे निराश किया तो मैं रोऊँगी। काश तुम उस आनंद की अनुभूति कर पाते जो मुझे हुई थी, जब मैं भोजन कक्ष की खिड़की पर खड़ी थी और मैंने देखा कि वह तेज़ी से गुज़रते हुए तुम्हारा छोटा सा पैकेट दीवार के ऊपर फेंक रहा है।

हडर्सफ़ील्ड में बाज़ार का दिन रो हेड में होने वाले आयोजनों का सबसे खास समय होता था। उस समय लड़कियाँ घर के कोने से दौड़ती हुई, पेड़ों की टहनियों के बीच से झाँकती हुई और एक छायादार गली में देखती हुई बाज़ार जाते हुए अपने पिता या भाई की एक झलक पा सकती थीं; शायद हाथ हिलाकर अभिवादन कर सकती थीं; या शार्लोट ब्रोंटे की तरह खिड़की से देख सकती थीं कि एक सफेद पैकेट किसी तेज़ और मज़बूत हाथ के इशारे से हवा में उछाला जा रहा है, जबकि यात्री का बाकी शरीर दिखाई नहीं देता था।

दिनभर की मेहनत से थका हुआ... मैं अपनी प्यारी ई के लिए कुछ पंक्तियाँ लिखने बैठा हूँ। अगर मैं कुछ बेतुकी बातें कहूँ तो मुझे माफ़ कर देना, क्योंकि मेरा मन थका हुआ और निराश है। आज शाम तूफ़ानी है, और हवा लगातार कराह रही है, जिससे मुझे बहुत उदासी महसूस हो रही है। ऐसे समय में—ऐसे मूड में—मेरी प्रकृति है कि मैं किसी शांत और सुकून भरे विचार में सुकून ढूंढूँ, और अब मैंने तुम्हारी छवि को अपने मन में बसा लिया है ताकि मुझे आराम मिले। तुम वहाँ बैठी हो, सीधी और स्थिर, अपने काले वस्त्र, सफ़ेद दुपट्टे और संगमरमर जैसे पीले चेहरे के साथ—बिल्कुल वास्तविकता की तरह। काश तुम मुझसे बात करती। अगर हम अलग हो जाएँ—अगर हमारी किस्मत में बहुत दूर रहना लिखा हो, और फिर कभी एक-दूसरे को न देख पाना लिखा हो—बुढ़ापे में, मैं अपने जवानी के दिनों की यादों को कैसे ताज़ा करूँगा, और अपने बचपन के दोस्त की यादों में खोकर मुझे कितना उदास सुख मिलेगा!... मुझमें कुछ ऐसे गुण हैं जो मुझे बहुत दुखदायी, कुछ ऐसी भावनाएँ जिनमें

आप भाग नहीं ले सकते—ऐसी भावनाएँ जिन्हें दुनिया में बहुत कम, बल्कि नगण्य लोग ही समझ सकते हैं। मुझे अपनी इन विलक्षणताओं पर गर्व नहीं है। मैं इन्हें यथासंभव छिपाने और दबाने का प्रयास करता हूँ; लेकिन कभी-कभी ये फूट पड़ती हैं, और फिर जो लोग इस विस्फोट को देखते हैं वे मुझे तिरस्कार करते हैं, और मैं कई दिनों तक खुद से नफरत करता रहता हूँ... मुझे अभी-अभी आपका पत्र और उसके साथ भेजा गया संदेश मिला है। मैं नहीं बता सकता कि आपको और आपकी बहनों को मुझ जैसे व्यक्ति पर अपनी दया दिखाने के लिए क्या प्रेरित किया। मैं उनका आभारी हूँ, और मुझे आशा है कि आप उन्हें यह बताएँगी। मैं आपका भी आभारी हूँ, आपके उपहार से अधिक आपके पत्र के लिए। पहले ने मुझे खुशी दी, आखिरी ने कुछ हद तक पीड़ा पहुँचाई।

* * * * *

तंत्रिका संबंधी विकार, जिसके बारे में कहा जाता है कि मिस डब्ल्यू के यहाँ रहने के दौरान उसने उसे परेशान किया था, ऐसा लगता है कि इसी समय के आसपास उसे और अधिक परेशान करने लगा था; कम से कम, वह स्वयं अपनी चिड़चिड़ी स्थिति के बारे में बात करती है, जो निश्चित रूप से केवल एक अस्थायी बीमारी थी।

“हाल ही में आप मेरे प्रति बहुत दयालु रहे हैं, और आपने मुझे उन सभी छोटी-छोटी बातों से बख्श दिया है जिन पर मेरी बेहद संवेदनशील और अप्रिय स्वभाव के कारण पहले मुझे ऐसा लगता था मानो किसी ने मुझे गर्म लोहे से छू लिया हो; ऐसी बातें जिनकी किसी और को परवाह नहीं होती, मेरे मन में जहर की तरह चुभती हैं। मैं जानता हूँ कि ये भावनाएँ बेतुकी हैं, इसलिए मैं इन्हें छिपाने की कोशिश करता हूँ, लेकिन छिपाने से ये और भी गहरी चुभन पैदा करती हैं।”

इस मानसिक स्थिति की तुलना उस सौम्य स्वीकृति से करें जिसके साथ उसने केवल तीन साल पहले अपने सहपाठियों द्वारा बेकार समझे जाने या उसकी कुरूपता के बारे में कहे जाने को स्वीकार कर लिया था।

जब से मैंने तुम्हें देखा है, मेरा जीवन पहले की तरह ही नीरस और बिना किसी रुकावट के बीत रहा है; सुबह से शाम तक बस पढ़ाना, पढ़ाना, पढ़ाना। मेरे जीवन में सबसे बड़ा बदलाव तुम्हारे पत्र या किसी नई मनमोहक किताब से ही आता है। 'ओबरलिन का जीवन' और 'ली रिचमंड का घरेलू चित्रण' इसी श्रेणी की आखिरी

किताब हैं। बाद वाली किताब ने मेरा ध्यान बहुत आकर्षित किया और मुझे अनोखे ढंग से मोहित कर लिया। इसे बिना देर किए मांगो, उधार लो या चुरा लो; और 'विल्बरफोर्स का संस्मरण' पढ़ो—एक संक्षिप्त, घटनाहीन जीवन का वह छोटा सा वृत्तांत; मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा; यह सुंदर है, न तो इसकी भाषा के कारण, न ही इसमें वर्णित घटनाओं के कारण, बल्कि एक युवा, प्रतिभाशाली, सच्चे ईसाई के सरल वर्णन के कारण।

* * * * *

लगभग इसी समय मिस डब्ल्यू ने अपना स्कूल रो हेड के रमणीय, खुले और हवादार स्थान से हटाकर दो-तीन मील दूर स्थित ड्यूसबरी मूर में स्थानांतरित कर दिया। उनका नया निवास स्थान निचले इलाके में था, और हॉवर्थ के जंगली पहाड़ी गाँव में पली-बढ़ी होने के कारण वहाँ की हवा उतनी ताजगी भरी नहीं थी। एमिली हैलिफ़ैक्स के एक स्कूल में शिक्षिका के रूप में गई थीं, जहाँ लगभग चालीस विद्यार्थी थे।

"उसके जाने के बाद से मुझे उससे केवल एक पत्र मिला है," शार्लोट ने 2 अक्टूबर, 1836 को लिखा: "उसमें उसके कर्तव्यों का भयावह वर्णन है; सुबह छह बजे से रात ग्यारह बजे तक कड़ी मेहनत, जिसके बीच में केवल आधा घंटा व्यायाम मिलता है। यह गुलामी है। मुझे डर है कि वह इसे कभी सहन नहीं कर पाएगी।"

* * * * *

क्रिसमस की छुट्टियों में जब बहनें घर पर मिलीं, तो उन्होंने अपने जीवन और रोजगार व आय की संभावनाओं पर चर्चा की। उन्हें लगा कि अपने पिता के भरण-पोषण के बोझ को कम करना उनका कर्तव्य है, यदि पूरी तरह से नहीं, या तीनों का नहीं, तो कम से कम एक या दो का; और स्वाभाविक रूप से, बड़ी बहनों पर यह ज़िम्मेदारी आ गई कि वे कोई ऐसा काम ढूंढें जिससे वे ऐसा कर सकें। वे जानती थीं कि उन्हें कभी भी बहुत अधिक धन विरासत में मिलने की संभावना नहीं थी। श्री ब्रोंटे को मामूली वेतन मिलता था, और वे दानशील और उदार थे। उनकी चाची को 50 पाउंड की वार्षिक पेंशन मिलती थी, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद वह दूसरों को मिल

जाती, और उनकी भतीजियों का उस पर कोई अधिकार नहीं था, और वे दुनिया में उनकी बचत पर निर्भर रहने वाली अंतिम व्यक्ति थीं। वे क्या कर सकती थीं? शार्लोट और एमिली अध्यापन का प्रयास कर रही थीं, और ऐसा लग रहा था कि उन्हें इसमें कोई खास सफलता नहीं मिल रही थी। यह सच है कि शार्लोट को अपने नियोक्ता के रूप में एक मित्र का साथ मिलने और उन लोगों से घिरे रहने का सौभाग्य प्राप्त था जो उन्हें जानते और प्यार करते थे; लेकिन उनका वेतन इतना कम था कि वे उसमें से बचत नहीं कर पाती थीं; और उसकी शिक्षा उसे बेहतर जीवन का हकदार नहीं बना पाई। जीवन की गतिहीन और नीरस प्रकृति भी उसके स्वास्थ्य और मनोबल पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही थी, हालाँकि, मजबूरी को अपनी गुलाम मानकर वह शायद ही इस बात को स्वयं स्वीकार करना चाहती थी। लेकिन एमिली—वह स्वतंत्र, बेबाक, अदम्य आत्मा, जो अपने घर के चारों ओर फैले विशाल मैदानों के अलावा कभी खुश या स्वस्थ नहीं रहती थी—अजनबियों से घृणा करने वाली, उनके बीच रहने के लिए अभिशप्त, और न केवल जीने के लिए बल्कि उनकी सेवा में गुलामी करने के लिए—जो शार्लट अपने लिए धैर्यपूर्वक सहन कर सकती थी, वह अपनी बहन के लिए सहन नहीं कर सकती थी। और फिर क्या किया जाए? उसने कभी आशा की थी कि वह स्वयं एक कलाकार बनेगी और इस प्रकार अपनी आजीविका कमाएगी; लेकिन इस उद्देश्य से उसने जो सूक्ष्म और व्यर्थ परिश्रम अपने ऊपर थोपा था, उससे उसकी आँखें कमजोर हो गई थीं।

इन लड़कियों के बीच रात नौ बजे तक सिलाई करने का रिवाज था। उस समय, मिस ब्रैनवेल आमतौर पर सोने चली जाती थीं, और उनकी भतीजियों के दिन भर के काम पूरे हो चुके होते थे। वे अपना काम समेटकर कमरे में इधर-उधर, ऊपर-नीचे चक्कर लगाने लगती थीं—अक्सर मोमबत्तियाँ बुझाकर, मितव्ययिता के लिए—उनकी आकृतियाँ लगातार आग की रोशनी में और फिर छाया में झाँकती रहती थीं। इस समय वे बीते समय की चिंताओं और परेशानियों पर चर्चा करती थीं; वे भविष्य की योजनाएँ बनाती थीं और अपनी योजनाओं के बारे में एक-दूसरे से सलाह लेती थीं। बाद के वर्षों में यह उनके उपन्यासों की कहानियों पर चर्चा करने का समय बन गया। और फिर, उससे भी बाद में, यह आखिरी जीवित बहन के लिए पुरानी आदत के अनुसार, अकेले उस सुनसान कमरे में चक्कर लगाने और "बीते दिनों" के बारे में उदास होकर सोचने का समय बन गया। लेकिन 1836 की यह क्रिसमस आशाओं

और साहसिक आकांक्षाओं से रहित नहीं थी। उन्होंने बहुत पहले अपनी लघु पत्रिका में कहानी लेखन में हाथ आजमाया था; वे सभी हमेशा से ही अच्छी स्थिति में थीं। उन्होंने कविता लिखने का भी प्रयास किया था; और उन्हें थोड़ा-बहुत विश्वास था कि उन्हें इसमें ठीक-ठाक सफलता मिली है। लेकिन वे जानती थीं कि वे खुद को धोखा दे सकती हैं, और बहनों द्वारा एक-दूसरे की रचनाओं का मूल्यांकन शायद इतना पक्षपातपूर्ण हो कि उस पर भरोसा न किया जा सके। इसलिए सबसे बड़ी होने के नाते शार्लोट ने साउथी को पत्र लिखने का फैसला किया। मेरा मानना है (एक पत्र में दिए गए उल्लेख के आधार पर जिसका जिक्र आगे किया जाएगा), कि उन्होंने कोलरिज से भी सलाह ली थी; लेकिन मुझे उस पत्राचार का कोई अंश नहीं मिला है।

29 दिसंबर को, साउथी को उनका पत्र भेजा गया; और एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो कवि लॉरिट को पत्र लिखने और अपनी कविताओं पर उनकी राय पूछने के स्तर तक पहुँच चुका है, उस उत्साह से प्रेरित होकर, जो कि स्वाभाविक ही था, उन्होंने कुछ अलंकारिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया, जिससे संभवतः साउथी को यह आभास हुआ कि वह एक रोमांटिक युवती हैं, जो जीवन की वास्तविकताओं से अनभिज्ञ हैं।

यह संभवतः हॉवर्थ के छोटे से डाकघर से होकर गुजरने वाले उन साहसिक पत्रों में से पहला पत्र था। छुट्टियों की सुबहें बीतती गईं, और कोई जवाब नहीं आया; बहनों को घर छोड़ना पड़ा, और एमिली को अपने अरुचिकर कर्तव्यों पर लौटना पड़ा, यह जाने बिना कि शार्लोट का पत्र अपने गंतव्य तक पहुंचा भी था या नहीं।

हालाँकि, देरी से निराश न होकर, ब्रैनवेल ने इसी तरह का प्रयास करने का निश्चय किया और वर्ड्सवर्थ को निम्नलिखित पत्र लिखा। यह पत्र कवि ने 1850 में श्री क्विलिनन को दिया था, जब ब्रोंटे का नाम प्रसिद्ध हो चुका था। मेरे पास यह जानने का कोई साधन नहीं है कि श्री वर्ड्सवर्थ ने क्या उत्तर दिया था; लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने इस पत्र को उल्लेखनीय माना होगा, क्योंकि यह सुरक्षित रखा गया है और जब करर बेल का असली नाम सार्वजनिक हुआ तो उन्हें यह पत्र याद आया।

"हॉवर्थ, ब्रैडफोर्ड के पास,

"यॉर्कशायर, 19 जनवरी, 1837.

"महोदय, मैं आपसे अत्यंत विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि आप मेरे द्वारा भेजे गए पत्र को पढ़ें और उस पर अपना निर्णय दें, क्योंकि जन्म से लेकर अपने उन्नीसवें वर्ष तक, मैं एकांत पहाड़ियों में रहा हूँ, जहाँ मुझे न तो यह पता था कि मैं कौन हूँ और

न ही मैं क्या कर सकता हूँ। मैं उसी कारण से पढ़ता था जिस कारण से खाता या पीता था; क्योंकि यह प्रकृति की एक वास्तविक आवश्यकता थी। मैं उसी सिद्धांत पर लिखता था जिस सिद्धांत पर मैं बोलता था—मन की प्रेरणा और भावनाओं से; और मैं इसे रोक नहीं सकता था, क्योंकि जो आता था, वह निकल जाता था और वहीं समाप्त हो जाता था। जहाँ तक आत्म-अभिमान की बात है, वह चापलूसी से पोषित नहीं हो सकता, क्योंकि आज तक दुनिया में आधे दर्जन लोग भी नहीं जानते कि मैंने कभी एक पंक्ति भी लिखी है।”

लेकिन अब एक बदलाव आ चुका है, महोदय: मैं उस उम्र में पहुँच गया हूँ जहाँ मुझे अपने लिए कुछ करना होगा: मेरे पास जो क्षमताएँ हैं, उनका उपयोग किसी निश्चित उद्देश्य के लिए किया जाना चाहिए, और क्योंकि मैं स्वयं उन्हें नहीं जानता, इसलिए मुझे दूसरों से पूछना होगा कि उनका क्या महत्व है। फिर भी, यहाँ कोई ऐसा नहीं है जो मुझे बता सके; और अगर वे बेकार भी हैं, तो अब से समय इतना कीमती होगा कि उसे उन पर बर्बाद नहीं किया जा सकता।

"मुझे क्षमा करें, महोदय, कि मैंने उस व्यक्ति के समक्ष आने का साहस किया है जिनकी रचनाएँ मुझे हमारे साहित्य में सबसे प्रिय हैं और जो मेरे लिए एक दिव्य विद्वान रहे हैं, और जिनके समक्ष मैंने अपनी एक रचना रखी है और उनसे उसकी विषयवस्तु पर निर्णय माँग रहा हूँ। मुझे ऐसे व्यक्ति के समक्ष आना ही होगा जिनके निर्णय को कोई चुनौती नहीं दे सकता; और ऐसे ही व्यक्ति वे हैं जिन्होंने कविता के सिद्धांत और व्यवहार दोनों को इस प्रकार विकसित किया है कि आने वाले हज़ार वर्षों तक उनकी स्मृति में स्थान रहेगा।"

“महोदय, मेरा उद्देश्य खुली दुनिया में आगे बढ़ना है, और इसके लिए मैं केवल कविता पर ही निर्भर नहीं हूँ— कविता भले ही नाव को रवाना कर दे, पर उसे आगे नहीं ले जा सकती; व्यावहारिक और वैज्ञानिक गद्य, जीवन में साहसिक और सशक्त प्रयास, मुझे दुनिया की नज़रों में और अधिक पहचान दिलाएँगे; और फिर कविता उस नाम को गौरव से भर देगी; लेकिन इन सब की शुरुआत साधनों के बिना नहीं हो सकती, और क्योंकि मेरे पास ये साधन नहीं हैं, इसलिए मुझे हर संभव प्रयास करके इन्हें प्राप्त करना होगा। निःसंदेह, आज के समय में, जब एक भी कवि लिखने में सक्षम नहीं है, तो अगर कोई बेहतर व्यक्ति आगे आए तो यह क्षेत्र खुला होना चाहिए।”

मैं आपको जो भेज रहा हूँ वह एक बहुत लंबे विषय की प्रस्तावना है, जिसमें मैंने तीव्र कल्पना और तीक्ष्ण भावनाओं के साथ संघर्ष करती प्रबल भावनाओं और कमजोर सिद्धांतों को विकसित करने का प्रयास किया है, जब तक कि युवावस्था वृद्धावस्था की ओर बढ़ती है, तब तक बुरे कर्म और क्षणिक सुख मानसिक पीड़ा और शारीरिक विनाश में परिणत हो जाते हैं। अब, इसे पूरा भेजना आपके धैर्य का मज़ाक उड़ाना होगा; जो आप देख रहे हैं, वह एक कल्पनाशील बच्चे के वर्णन से अधिक होने का दावा भी नहीं करता। लेकिन इसे पढ़िए, महोदय; और, जैसे आप घोर अंधकार में किसी को प्रकाश देते हैं - जैसे आप अपनी दयालुता को महत्व देते हैं - मुझे एक शब्द में उत्तर दीजिए, यह बताते हुए कि मुझे आगे लिखना चाहिए या नहीं। अनुचित उत्साह के लिए क्षमा करें, क्योंकि इस मामले में मेरी भावनाएँ ठंडी नहीं हो सकतीं; और विश्वास कीजिए, महोदय, अत्यंत सम्मान के साथ।

"आपका अत्यंत विनम्र सेवक, पी. बी. ब्रोंटे"

साथ में संलग्न कविता मुझे पत्र के कुछ हिस्सों के बराबर नहीं लगती; लेकिन, चूंकि हर कोई खुद ही फैसला करना पसंद करता है, इसलिए मैं शुरुआती छह छंदों की नकल कर रहा हूं - जो पूरे का लगभग एक तिहाई है, और निश्चित रूप से सबसे खराब नहीं है।

तो जहाँ वह उज्ज्वल महिमा में राज करता है, उन तारों भरे रात्रि आकाश के ऊपर, उसके प्रकाशमय स्वर्ग के बीच, ओह, मैं क्यों न हो सकूँ?

अक्सर जब क्रिसमस की सुबह जागता हूँ, नींदहीन गोधूलि में अकेला पड़ा रहता हूँ, अजीब विचार मेरे मन में आते हैं, कैसे वह मेरे लिए मर गया।

और अक्सर अपने कमरे में लेटे हुए, मैं रोते हुए जाग उठता हूँ, उन सपनों से, जहाँ मैंने उसे शापित वृक्ष पर मरते हुए देखा।

और अक्सर मेरी माँ कहती थी, जब मैं उनकी गोद में अपना सिर रखता था, तब उन्हें उस समय का डर था जब मैं नहीं बना था, बल्कि अनंत काल का।

इसलिए "मैं अपना अधिकार स्पष्ट रूप से पढ़ सकता हूँ, आकाश में महलों के लिए, और मुझे डर को अलविदा कहने दो, और अपनी रोती हुई आँखों को पोंछने दो।"

मैं इस संगमरमर के पत्थर पर लेट जाऊँगा, और दुनिया को एक तरफ रख दूँगा, ताकि उसके काले सिंहासन पर, महिमा में सवार चंद्रमा को देख सकूँ।

शार्लोट के ड्यूसबरी मूर लौटने के कुछ ही समय बाद, उसे यह सुनकर दुख हुआ कि उसकी दोस्त "ई." काफी लंबे समय के लिए पड़ोस छोड़कर जाने वाली है।

20 फरवरी।

“तुम्हारे बिना मैं क्या करूँगी? हम कब तक अलग रहेंगे? हमें एक-दूसरे का साथ क्यों नहीं मिल रहा? यह एक समझ से परे दुर्भाग्य है। मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए तरसती हूँ, क्योंकि ऐसा लगता है कि तुम्हारे साथ बिताए दो-तीन दिन या सप्ताह उन भावनाओं को और भी मजबूत कर देंगे जिन्हें मैंने हाल ही में संजोना शुरू किया है। तुमने ही सबसे पहले मुझे वह रास्ता दिखाया जिस पर मैं बड़ी कमजोरी से चलने की कोशिश कर रही हूँ, और अब मैं तुम्हें अपने साथ नहीं रख सकती, मुझे दुखी होकर अकेले ही आगे बढ़ना होगा। हमें क्यों अलग किया जा रहा है? निश्चित रूप से, ऐसा इसलिए है क्योंकि हम एक-दूसरे से बहुत अधिक प्रेम करने के खतरे में हैं—सृष्टिकर्ता को भूलकर सृष्टि की पूजा करने के खतरे में हैं। पहले तो मैं ‘तेरी इच्छा पूरी हो!’ नहीं कह सकी। मुझे विद्रोह का भाव आया, लेकिन मैं जानती थी कि ऐसा महसूस करना गलत था। आज सुबह एक पल के लिए अकेले रहने पर, मैंने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की कि मुझे ईश्वर की इच्छा के हर आदेश को स्वीकार करने की शक्ति मिले, भले ही वह वर्तमान निराशा से कहीं अधिक कठोर तरीके से दिया जाए; तब से मैं पहले से अधिक शांत और विनम्र महसूस कर रहा हूँ, और परिणामस्वरूप अधिक खुश हूँ। पिछले रविवार को मैंने उदास मन से बाइबल उठाई: मैंने पढ़ना शुरू किया - एक ऐसी अनुभूति मुझ पर छा गई जो मैंने कई वर्षों से नहीं की थी - एक मधुर, शांत अनुभूति, वैसी ही जैसी मुझे याद है, जब मैं छोटा बच्चा था और गर्मियों में रविवार की शामों को खुली खिड़की के पास खड़ा होकर एक फ्रांसीसी रईस का जीवन पढ़ता था, जिसने प्रारंभिक शहीदों के दिनों के बाद से ज्ञात पवित्रता की तुलना में कहीं अधिक शुद्ध और उच्चतर पवित्रता प्राप्त की थी।

"ई." का निवास स्थान ड्यूसबरी मूर से उतनी ही पैदल दूरी पर था जितनी रो हेड से; और शनिवार की दोपहर को "मैरी" और वह दोनों शार्लोट से मिलने जाया करती थीं, और अक्सर उसे अपने साथ वापस आने और सोमवार सुबह तक उनमें से किसी एक के घर मेहमान बनने के लिए मनाने की कोशिश करती थीं; लेकिन ऐसा अपेक्षाकृत कम ही होता था। मैरी कहती हैं: — “जब वह मिस डब्ल्यू के यहाँ रहती थीं, तब वह दो-तीन बार हमसे मिलने आई थीं। हम राजनीति और धर्म पर बहस करते

थे। एक टोरी और पादरी की बेटी होने के नाते, वह हमारे घर में उग्र असहमति और कट्टरपंथ के माहौल में हमेशा अकेली ही रहती थीं। वह निरंकुश अभिजात वर्ग, लालची पादरी वर्ग आदि पर मेरे द्वारा स्कूल में दिए गए सभी भाषणों को बार-बार सुनती थीं, जो मैं उन्हें अधिकारपूर्वक सुनाती थी। उनमें अपना बचाव करने की शक्ति नहीं थी; कभी-कभी वह अपनी बातों में थोड़ी सच्चाई मानती थीं, लेकिन आमतौर पर चुप रहती थीं। उनके कमजोर स्वास्थ्य ने उन्हें विनम्र स्वभाव का बना दिया था, क्योंकि वह संघर्ष के लिए अपनी पूरी ताकत जुटाए बिना किसी का विरोध नहीं कर सकती थीं। इस प्रकार वह मुझे बेहद दबंग तरीके से सलाह और संरक्षण देने देती थीं, कभी-कभी मेरी बातों में जो भी समझदारी की बात होती थी, उसे चुन लेती थीं, लेकिन कभी किसी को भी अपने विचार और कार्य की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप नहीं करने देती थीं। हालाँकि उनकी चुप्पी से कभी-कभी ऐसा लगता था कि वह सहमत हैं जबकि वह नहीं होती थीं, लेकिन उन्होंने कभी चापलूसी भरी राय नहीं दी, और इसलिए उनके शब्द सोने के समान थे, चाहे प्रशंसा हो या निंदा।"

मैरी के पिता असाधारण बुद्धि के धनी थे, लेकिन उनके पूर्वाग्रह प्रबल, बल्कि उग्र थे, और वे गणतंत्रवाद और असहमति के पक्षधर थे। यॉर्कशायर के अलावा कोई और काउंटी ऐसा व्यक्ति पैदा नहीं कर सकती थी। उनके भाई फ्रांस में बंदी रह चुके थे और बाद में स्वेच्छा से वहीं रहने लगे थे। श्री टी. स्वयं भी व्यापार के सिलसिले में और महाद्वीप की महान चित्रकला दीर्घाओं को देखने के लिए अक्सर विदेश यात्रा करते थे। मुझे बताया गया है कि आवश्यकता पड़ने पर वे फ्रेंच भाषा में निपुण थे; लेकिन आमतौर पर वे यॉर्कशायर की बोली में बात करना पसंद करते थे। वे उन चित्रों की शानदार नक्काशी खरीदते थे जिनकी वे विशेष रूप से प्रशंसा करते थे, और उनका घर कलाकृतियों और पुस्तकों से भरा रहता था; लेकिन वे किसी भी अजनबी या नवागंतुक के सामने अपना कठोर पक्ष दिखाना पसंद करते थे; वे खुलकर बोलते, चर्च और राज्य पर अपने विचारों को सबसे चौंकाने वाले रूप में प्रकट करते, और धीरे-धीरे, यदि उन्हें लगता कि उनका श्रोता इस झटके को सहन कर सकता है, तो वे अनायास ही अपना दयालु हृदय, अपनी सच्ची रुचि और वास्तविक परिष्कार प्रदर्शित कर देते। उनके चार बेटों और दो बेटियों के परिवार का पालन-पोषण गणतंत्रवादी सिद्धांतों पर हुआ; विचारों और कार्यों की स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया गया; किसी भी प्रकार के दिखावे को बर्दाश्त नहीं किया गया। वे अब दूर-दूर तक बिखरे हुए हैं: छोटी बेटी मार्था

ब्रुसेल्स के प्रोटेस्टेंट कब्रिस्तान में सो रही है; मैरी न्यूजीलैंड में है; श्री टी. का निधन हो चुका है। इस प्रकार जीवन और मृत्यु ने "हिंसक कट्टरपंथियों और असंतुषों" के उस समूह को बिखेर दिया, जिसमें बीस साल पहले उस छोटी, शांत, दृढ़ निश्चयी पादरी की बेटी का स्वागत किया गया था, और जिसने उसे सच्चा प्यार और सम्मान दिया था।

जनवरी और फरवरी 1837 बीत चुके थे, और साउथी की ओर से कोई जवाब नहीं आया था। शायद उन्होंने उम्मीद और आशा लगभग खो ही दी थी, जब अंततः मार्च की शुरुआत में उन्हें श्री सी. सी. साउथी द्वारा अपने पिता के जीवन पर लिखी गई पुस्तक के खंड IV, पृष्ठ 327 में प्रकाशित पत्र प्राप्त हुआ।

घर से लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के कारण, जिसके दौरान उनके पत्र जमा हो गए थे, और इसी वजह से "यह पत्र ढेरों पत्रों के ढेर में सबसे आखिर तक अनुत्तरित रहा, इसका कारण पत्र की विषयवस्तु के प्रति अनादर या उदासीनता नहीं थी, बल्कि वास्तव में इसका उत्तर देना आसान काम नहीं है, और न ही यौवन के उमंग और उदार इच्छाओं पर पानी फेरना सुखद है," यह कहते हुए वे आगे लिखते हैं: "तुम कौन हो, यह मैं केवल तुम्हारे पत्र से ही समझ सकता हूँ, जो ईमानदारी से लिखा हुआ प्रतीत होता है, हालाँकि मुझे संदेह है कि तुमने किसी फर्जी हस्ताक्षर का प्रयोग किया है। जो भी हो, पत्र और कविताएँ एक ही छाप छोड़ती हैं, और मैं उनके द्वारा दर्शाई गई मनस्थिति को अच्छी तरह समझ सकता हूँ।"

* * * * *

"आपने अपनी प्रतिभाओं के उपयोग के बारे में मुझसे सलाह नहीं मांगी है, बल्कि उनके बारे में मेरी राय पूछी है, हालांकि राय का महत्व कम और सलाह का महत्व अधिक हो सकता है। आपमें स्पष्ट रूप से, और वह भी पर्याप्त मात्रा में, वह प्रतिभा है जिसे वर्ड्सवर्थ 'कविता की क्षमता' कहते हैं। मैं इसे कमतर नहीं आंक रहा हूँ जब मैं कहता हूँ कि आजकल यह दुर्लभ नहीं है। आजकल हर साल कई कविता संग्रह प्रकाशित होते हैं, लेकिन उन पर किसी का ध्यान नहीं जाता, जबकि अगर उनमें से कोई भी संग्रह पचास साल पहले प्रकाशित हुआ होता, तो उसके लेखक को बहुत प्रसिद्धि मिलती। इसलिए, जो भी इस क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने की महत्वाकांक्षा रखता है, उसे निराशा के लिए तैयार रहना चाहिए।"

लेकिन अगर आप अपनी खुशी को महत्व देते हैं, तो आपको इस प्रतिभा को

प्रसिद्धि पाने के उद्देश्य से विकसित नहीं करना चाहिए। मैंने साहित्य को अपना पेशा बनाया है, अपना जीवन इसे समर्पित किया है और इस जानबूझकर किए गए चुनाव पर मुझे कभी पछतावा नहीं हुआ। फिर भी, मैं खुद को कर्तव्यबद्ध मानता हूँ कि हर उस युवक को, जो प्रोत्साहन और सलाह के लिए मेरे पास आता है, इस जोखिम भरे रास्ते को अपनाने से आगाह करूँ। आप कहेंगे कि एक महिला को ऐसी चेतावनी की कोई आवश्यकता नहीं है; उसके लिए इसमें कोई खतरा नहीं हो सकता। एक हद तक यह सच है; लेकिन एक खतरा है जिसके बारे में मैं पूरी विनम्रता और गंभीरता से आपको आगाह करना चाहता हूँ। जिन दिवास्वप्नों में आप अक्सर खोए रहते हैं, उनसे आपका मन असंतुलित हो सकता है; और जिस अनुपात में दुनिया के सभी सामान्य उपयोग आपको नीरस और निरर्थक लगने लगेंगे, आप उनके लिए अयोग्य हो जाएँगे, और किसी अन्य चीज के लिए योग्य नहीं बन पाएँगे। साहित्य एक महिला के जीवन का मुख्य उद्देश्य नहीं हो सकता, और न ही होना चाहिए। वह अपने उचित कर्तव्यों में जितनी अधिक व्यस्त रहेगी, उसके पास साहित्य के लिए उतना ही कम समय होगा, यहाँ तक कि एक महिला के रूप में भी। उपलब्धि और मनोरंजन। आपको अभी तक उन कर्तव्यों के लिए नहीं बुलाया गया है, और जब बुलाया जाएगा तो आप प्रसिद्धि के लिए कम उत्सुक होंगे। आप कल्पना में रोमांच की तलाश नहीं करेंगे, क्योंकि इस जीवन के उतार-चढ़ाव और चिंताएँ, जिनसे आपको मुक्ति की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, चाहे आपकी स्थिति कैसी भी हो, आपके लिए बहुत अधिक रोमांच लेकर आएंगी।

लेकिन यह न समझें कि मैं आपके अंदर मौजूद प्रतिभा को कम आंक रहा हूँ; न ही मैं आपको इसका उपयोग करने से हतोत्साहित कर रहा हूँ। मैं तो बस आपसे आग्रह करता हूँ कि आप इसके बारे में इस प्रकार सोचें और इसका इस प्रकार उपयोग करें कि यह आपके अपने स्थायी कल्याण के लिए सहायक हो। कविता को उसके अपने लिए ही लिखें; न तो प्रतिस्पर्धा की भावना से और न ही प्रसिद्धि पाने की इच्छा से; आप जितना कम इसके लिए प्रयास करेंगे, उतनी ही अधिक संभावना होगी कि आप इसके योग्य बनेंगे और अंततः इसे प्राप्त करेंगे। इस प्रकार लिखी गई कविता हृदय और आत्मा दोनों के लिए लाभकारी होती है; यह धर्म के बाद मन को शांत करने और उसे उन्नत करने का सबसे विश्वसनीय साधन बन सकती है। आप इसमें अपने सर्वोत्तम विचारों और अपनी सबसे बुद्धिमान भावनाओं को समाहित कर सकते हैं, और

ऐसा करके उन्हें अनुशासित और मजबूत कर सकते हैं।

“अलविदा, महोदया। मैं आपको इस लहजे में इसलिए नहीं लिख रहा हूँ कि मैं भूल गया हूँ कि मैं भी कभी जवान था; बल्कि इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि मुझे वह याद है। आपको मेरी ईमानदारी और मेरी सद्भावना पर कोई संदेह नहीं होगा; और चाहे यहाँ कही गई बातें आपके वर्तमान विचारों और स्वभाव से कितनी भी मेल न खाएँ, जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती जाएगी, यह आपको और अधिक तर्कसंगत लगने लगेगा। यद्यपि मैं एक अप्रिय सलाहकार ही हूँ, फिर भी आप मुझे यह पत्र लिखने की अनुमति देंगी, आपकी इस और परलोक की खुशियों के लिए शुभकामनाओं के साथ, आपका सच्चा मित्र।”

“रॉबर्ट साउथी।”

* * * * *

मैं मिस ब्रोंटे के साथ थी जब उन्हें श्री कत्बर्ट साउथी का पत्र मिला, जिसमें उन्होंने अपने पिता के जीवन परिचय में उपरोक्त पत्र को शामिल करने की अनुमति मांगी थी। उन्होंने मुझसे कहा, "श्री साउथी का पत्र दयालु और सराहनीय था; थोड़ा कठोर था, लेकिन उससे मुझे अच्छा लगा।"

आंशिक रूप से इसलिए कि मुझे यह बहुत प्रशंसनीय लगता है, और आंशिक रूप से इसलिए कि यह उनके चरित्र को उजागर करता है, जैसा कि निम्नलिखित उत्तर में दिखाया गया है, इसलिए मैंने इसमें से उपरोक्त अंशों को शामिल करने की स्वतंत्रता ली है।

“महोदय, 16 मार्च।”

“जब तक मैं आपके पत्र का उत्तर नहीं दे देता, मुझे चैन नहीं आएगा, भले ही दोबारा पत्र लिखकर मैं थोड़ा दखलंदाजी करने वाला लगूँ; लेकिन आपने जो दयालु और बुद्धिमानीपूर्ण सलाह दी है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। मुझे ऐसे उत्तर की आशा भी नहीं थी; इतना विचारशील लहजा, इतनी महान भावना। मुझे अपनी भावनाओं को दबाना होगा, वरना आप मुझे बेवजह उत्साहित समझेंगे।”

“आपका पत्र पढ़ते ही मुझे शर्म और अफसोस हुआ कि मैंने कभी अपनी भद्दी कविता से आपको परेशान करने की हिम्मत की थी; उन पन्नों के बारे में सोचकर मेरा चेहरा दर्द से लाल हो गया, जिन पर मैंने वो लिखा था जिससे मुझे कभी बहुत आनंद

मिलता था, लेकिन अब वो सिर्फ निराशा का कारण था; लेकिन थोड़ा सोचने और उसे बार-बार पढ़ने के बाद, स्थिति स्पष्ट लगने लगी। आप मुझे लिखने से मना नहीं करते; आप यह नहीं कहते कि मैं जो लिखता हूँ उसमें कोई गुण नहीं है। आप बस मुझे काल्पनिक सुखों के लिए वास्तविक कर्तव्यों की उपेक्षा करने की मूर्खता के प्रति आगाह करते हैं; प्रसिद्धि की लालसा में लिखने के प्रति; प्रतिस्पर्धा के स्वार्थी उत्साह के लिए लिखने के प्रति। आप मुझे कविता लिखने की अनुमति देते हैं, बशर्ते मैं उस एकमात्र, गहन, उत्कृष्ट संतुष्टि की तलाश में अपने सभी कर्तव्यों को पूरा करूँ। मुझे खेद है, महोदय, आप मुझे बहुत मूर्ख समझते हैं। मैं जानता हूँ कि मैंने आपको जो पहला पत्र लिखा था, वह शुरू से अंत तक पूरी तरह से निरर्थक था; लेकिन मैं पूरी तरह से खाली सपने देखने वाला प्राणी नहीं हूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि यह दर्शाता है। मेरे पिता एक पादरी हैं जिनकी आमदनी सीमित है, फिर भी पर्याप्त है, और मैं उनकी सबसे बड़ी संतान हूँ। उन्होंने मेरी शिक्षा पर उतना ही खर्च किया जितना वे बाकी बच्चों के साथ न्यायसंगत रूप से वहन कर सकते थे। इसलिए, जब मैंने स्कूल छोड़ा, तो मैंने एक गवर्नेंस बनना अपना कर्तव्य समझा। इस भूमिका में मुझे दिन भर अपने विचारों को व्यस्त रखने के लिए पर्याप्त सामग्री मिलती है, और मेरे दिमाग और हाथ भी, कल्पना के किसी भी सपने के लिए एक पल का भी समय नहीं मिलता। मैं स्वीकार करती हूँ कि शाम को मैं सोचती हूँ, लेकिन मैं अपने विचारों से किसी और को परेशान नहीं करती। मैं जानबूझकर किसी भी प्रकार की व्यस्तता या सनक का प्रदर्शन करने से बचती हूँ, जिससे मेरे आस-पास रहने वाले लोग मेरे कामों की प्रकृति पर संदेह कर सकते हैं। अपने पिता की सलाह का पालन करते हुए - जिन्होंने बचपन से ही मुझे आपके पत्र के समान ही बुद्धिमान और मैत्रीपूर्ण लहजे में सलाह दी है - मैंने न केवल एक महिला के सभी कर्तव्यों का ध्यानपूर्वक पालन करने का प्रयास किया है, बल्कि उनमें गहरी रुचि भी ली है। मैं हमेशा सफल नहीं होती, क्योंकि कभी-कभी जब मैं पढ़ा रही होती हूँ या सिलाई कर रही होती हूँ तो मेरा मन पढ़ने या लिखने का करता है; लेकिन मैं कोशिश करती हूँ कि... मैंने स्वयं को संयमित रखा; और मेरे पिता की स्वीकृति ने मुझे उस त्याग के लिए भरपूर प्रतिफल दिया। एक बार फिर, मैं हार्दिक कृतज्ञता के साथ आपका धन्यवाद करती हूँ। मुझे विश्वास है कि अब मुझे कभी भी अपना नाम छपे हुए देखने की लालसा नहीं होगी: यदि ऐसी इच्छा उत्पन्न भी हुई, तो मैं साउथी का पत्र देखूँगी और उसे दबा दूँगी। मेरे लिए यही सम्मान की बात है कि मैंने

उन्हें पत्र लिखा और उत्तर प्राप्त किया। वह पत्र पवित्र है; उसे पापा और मेरे भाई-बहनों के अलावा कोई नहीं देखेगा। एक बार फिर, मैं आपका धन्यवाद करती हूँ। मुझे लगता है कि यह घटना फिर कभी नहीं दोहराई जाएगी; यदि मैं बुढ़ापे तक जीवित रही, तो तीस साल बाद भी मुझे यह एक सुखद सपने की तरह याद रहेगी। जिस हस्ताक्षर को आपने नकली समझा था, वह मेरा असली नाम है। इसलिए, मुझे एक बार फिर अपने हस्ताक्षर स्वयं करने होंगे।

“सी. ब्रोंटे.

पी.एस. — महोदय, मुझे दोबारा लिखने के लिए क्षमा करें; मैं लिखने से खुद को रोक नहीं सका, आंशिक रूप से आपकी दयालुता के लिए आभार व्यक्त करने के लिए, और आंशिक रूप से आपको यह बताने के लिए कि आपकी सलाह व्यर्थ नहीं जाएगी; चाहे शुरुआत में इसे कितनी भी अनिच्छा और दुख के साथ क्यों न माना जाए।

“सी. बी.”

मैं साउथी के जवाब को शामिल करने की संतुष्टि से खुद को वंचित नहीं कर सकता: —

केसविक, 22 मार्च, 1837।

"प्रिय मैडम,

“आपके पत्र ने मुझे बहुत प्रसन्न किया है, और अगर मैं आपको यह न बताऊं तो मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊंगा। आपने मेरी सलाह को उतनी ही समझदारी और विनम्रता से स्वीकार किया है जितनी विनम्रता से वह दी गई थी। अब मैं आपसे निवेदन करता हूं कि जब मैं यहां रह रहा हूं, तब यदि आप कभी इन झीलों के पास आएं, तो कृपया मुझे मिलने दें। इससे आप मेरे बारे में और भी अधिक सद्भावना से सोचेंगे, क्योंकि आप यह जान पाएंगे कि वर्षों और अनुभव से विकसित हुई मेरी मनोदशा में न तो कठोरता है और न ही उदासी।”

ईश्वर की कृपा से, हमारे लिए आत्म-नियंत्रण की वह अवस्था प्राप्त करना संभव है, जो हमारी अपनी खुशी के लिए आवश्यक है और हमारे आसपास के लोगों की खुशी में भी बहुत योगदान देती है। अति-उत्तेजना से सावधान रहें और मन को शांत रखने का प्रयास करें (यहाँ तक कि आपके स्वास्थ्य के लिए भी यह सबसे अच्छी सलाह है): इससे आपका नैतिक और आध्यात्मिक विकास आपकी बौद्धिक क्षमताओं

के विकास के साथ-साथ चलता रहेगा।

और अब, महोदया, ईश्वर आपका भला करे!

अलविदा, और मुझे अपना सच्चा मित्र समझना।

"रॉबर्ट साउथी।"

उस दूसरे पत्र के बारे में भी उन्होंने बताया और कहा कि उसमें कवि से मिलने का निमंत्रण था, अगर वह कभी झीलों के किनारे आतीं। उन्होंने कहा, "लेकिन मेरे पास खर्च करने के लिए पैसे नहीं थे, और न ही भविष्य में इतनी कमाई की कोई उम्मीद थी कि मुझे इतना बड़ा सुख प्राप्त करने का मौका मिले, इसलिए मैंने इसके बारे में सोचना ही छोड़ दिया।" जिस समय हम इस विषय पर बातचीत कर रहे थे, हम झीलों के किनारे ही थे। लेकिन साउथी की मृत्यु हो चुकी थी।

इस "कठोर" पत्र ने उन्हें कुछ समय के लिए साहित्यिक गतिविधियों से जुड़े सभी विचारों को त्यागने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने अपनी पूरी ऊर्जा अपने कर्तव्यों के निर्वहन में लगा दी; लेकिन उनका काम उनकी बुद्धि की अपार शक्ति के लिए पर्याप्त पोषण नहीं था, और वह निरंतर "देते रहो, देते रहो" की पुकार लगाती रही, जबकि ड्यूसबरी मूर की अपेक्षाकृत कम ताज़ी हवा उनके स्वास्थ्य और मनोबल पर लगातार प्रतिकूल प्रभाव डालती रही। 27 अगस्त, 1837 को उन्होंने लिखा: —

मैं फिर से ड्यूसबरी में हूँ, अपने पुराने काम में लगी हूँ— पढ़ाना, पढ़ाना, पढ़ाना... तुम घर कब आओगे? जल्दी करो! तुम बाथ में काफी समय बिता चुके हो; मुझे यकीन है कि अब तक तुममें काफी निखार आ गया होगा; अगर पॉलिश की मोटी परत चढ़ाई गई, तो मुझे डर है कि अंदर की असली लकड़ी पूरी तरह छिप जाएगी, और तुम्हारे यॉर्कशायर के दोस्त इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे। आओ, आओ। मैं तुम्हारी गैरमौजूदगी से सचमुच थक गई हूँ। एक के बाद एक शनिवार आता है, और मुझे इस बात की कोई उम्मीद नहीं रहती कि तुम दरवाजे पर दस्तक दोगे और फिर मुझे बताया जाएगा कि 'मिस ई. आ गई हैं।' ओह! मेरे इस नीरस जीवन में, यह एक सुखद घटना थी। काश यह फिर से हो पाता; लेकिन इस लंबे अलगाव की अकड़—इस अलगाव—को दूर होने में दो-तीन मुलाकातें लगेंगी।

इसी समय वह एक काम का थैला लौटाना भूल गई जो उसने एक संदेशवाहक के माध्यम से उधार लिया था, और अपनी गलती सुधारते हुए वह कहती है: — "स्मृति की ये कमियाँ मुझे स्पष्ट रूप से चेतावनी देती हैं कि मैं अपनी जवानी के दिनों को पार

कर रही हूँ।" 21 वर्ष की आयु! और निराशा का वही स्वर निम्नलिखित पत्र में भी झलकता है: —

"मेरी दिली तमन्ना है कि मैं क्रिसमस से पहले आपके पास आ सकूँ, पर यह नामुमकिन है; तीन हफ्ते और बीतने होंगे, तब जाकर मैं अपने प्रिय शांत घर की छत के नीचे अपने सांत्वनादाता को फिर से पा सकूँगी। अगर मैं हमेशा आपके साथ रह सकूँ, और रोज़ आपके साथ बाइबल पढ़ सकूँ—अगर आपके और मेरे होंठ एक ही समय में दया के एक ही पवित्र स्रोत से एक ही घूँट पी सकें—तो मुझे उम्मीद है, मुझे विश्वास है, कि मैं एक दिन बेहतर हो जाऊँगी, अपने बुरे, भटकते विचारों, अपने भ्रष्ट हृदय से कहीं बेहतर, जो आत्मा के लिए ठंडा और शरीर के लिए गर्म है, और जो मुझे अभी होने की अनुमति नहीं देता। मैं अक्सर उस सुखद जीवन की कल्पना करती हूँ जो हम साथ बिता सकते हैं, एक-दूसरे को आत्म-त्याग की उस शक्ति, उस पवित्र और प्रज्वलित भक्ति में मजबूत करते हुए, जिसे ईश्वर के पहले संतों ने अक्सर प्राप्त किया था। मेरी आँखें आँसुओं से भर आती हैं जब मैं भविष्य की आशाओं से रोशन ऐसी अवस्था के आनंद की तुलना उस उदासी भरी अवस्था से करती हूँ जिसमें मैं अभी जी रही हूँ, इस अनिश्चितता के साथ कि क्या मैंने कभी सच्चा पश्चाताप किया था, विचारों और कर्मों में भटकती हुई, पवित्रता की लालसा करती हुई, जिसे मैं कभी, कभी प्राप्त नहीं कर पाऊँगी।" कभी-कभी मेरा हृदय इस दृढ़ विश्वास से ग्रस्त हो जाता है कि भयानक केल्विनवादी सिद्धांत सत्य हैं—संक्षेप में, आध्यात्मिक मृत्यु के अंधकार में डूब जाता है। यदि उद्धार के लिए मसीही पूर्णता आवश्यक है, तो मैं कभी उद्धार नहीं पा सकूंगा; मेरा हृदय पापी विचारों का गढ़ है, और जब मैं कोई कार्य करने का निर्णय लेता हूँ तो अपने उद्धारकर्ता से मार्गदर्शन लेना भूल जाता हूँ। मुझे प्रार्थना करना नहीं आता; मैं अपने जीवन को भलाई के महान उद्देश्य के लिए समर्पित नहीं कर सकता; मैं निरंतर अपनी ही सुख-सुविधाओं की खोज में लगा रहता हूँ, अपनी ही इच्छाओं की पूर्ति में लगा रहता हूँ। मैं ईश्वर को भूल जाता हूँ, और क्या ईश्वर मुझे नहीं भूलेगा? और, इस बीच, मैं यहोवा की महानता को जानता हूँ; मैं उसके वचन की पूर्णता को स्वीकार करता हूँ; मैं मसीही आस्था की पवित्रता की आराधना करता हूँ; मेरा सिद्धांत सही है, मेरा व्यवहार घोर गलत है।

क्रिसमस की छुट्टियाँ आईं और वह और ऐनी पादरी के घर लौट आईं, उस खुशहाल घरेलू माहौल में जहाँ उनका स्वभाव निखरता था; बाकी लोगों के बीच वे लगभग

सिकुड़ जाती थीं। वास्तव में, बहनों के बीच शायद ही कोई एक-दो अजनबी होते थे जिनके आने से ऐसा ही असर होता था। एमिली और ऐनी जुड़वाँ बहनों की तरह अपने जीवन और रुचियों में बंधी हुई थीं। एमिली अपने संकोच के कारण और ऐनी अपने संकोच के कारण, परिवार के बाहर किसी भी तरह की दोस्ती और घनिष्ठता से दूर रहती थीं। एमिली पर किसी का प्रभाव नहीं पड़ता था; वह कभी भी जनमत के संपर्क में नहीं आती थीं, और जो सही और उचित होता था, उसका उनका अपना निर्णय उनके आचरण और व्यवहार का नियम होता था, जिसमें वह किसी को दखल देने की अनुमति नहीं देती थीं। उनका प्यार ऐनी पर उंडेल दिया जाता था, जैसे शार्लोट का उन पर। लेकिन तीनों के बीच का स्नेह जीवन और मृत्यु से भी अधिक मजबूत था।

जब भी ई. उनसे मिलने आती, शार्लोट उनका गर्मजोशी से स्वागत करतीं, एमिली उन्हें खुले दिल से स्वीकार करतीं और ऐनी उनका स्नेहपूर्वक अभिनंदन करतीं; और इस क्रिसमस पर उन्होंने आने का वादा किया था, लेकिन एक छोटी सी घरेलू दुर्घटना के कारण उनका आना स्थगित करना पड़ा, जिसका विवरण निम्नलिखित पत्र में दिया गया है:

29 दिसंबर, 1837।

मुझे यकीन है कि आपने मुझे वादा किया हुआ पत्र बहुत पहले न भेजने के लिए बहुत बड़ी लापरवाही समझा होगा; लेकिन मेरे घर लौटने के कुछ दिनों बाद हमारी प्यारी बिल्ली टैबी के साथ हुई एक दुर्घटना के कारण मुझे बहुत दुख हुआ है। वह किसी काम से गाँव गई थी, जब ढलान वाली सड़क से उतरते समय उसका पैर बर्फ पर फिसल गया और वह गिर गई; अंधेरा था, इसलिए किसी ने उसकी दुर्घटना नहीं देखी, कुछ देर बाद उसकी कराह सुनकर एक राहगीर की नज़र उस पर पड़ी। उसे उठाया गया और पास के दवाखाने में ले जाया गया; और जाँच के बाद पता चला कि उसका एक पैर पूरी तरह से टूट गया था और अपनी जगह से हट गया था। दुर्भाग्य से, अगले दिन सुबह छह बजे तक उसका फ्रैक्चर ठीक नहीं हो सका, क्योंकि उस समय से पहले कोई सर्जन उपलब्ध नहीं था, और अब वह हमारे घर में बहुत ही नाजुक और खतरनाक हालत में है। ज़ाहिर है, हम सभी इस घटना से बहुत दुखी हैं, क्योंकि वह हमारे परिवार के सदस्य जैसी थी। इस घटना के बाद से हमें लगभग कोई मदद नहीं मिली है - कभी-कभार कोई न कोई मदद करने आ जाता है। घर के सारे काम करने के लिए हम तैयार हैं, लेकिन अभी तक हमें कोई नियमित नौकर नहीं मिल पाया है;

इसलिए घर का सारा काम, साथ ही टैबी की देखभाल की अतिरिक्त ज़िम्मेदारी भी, हम पर ही आ गई है। इन परिस्थितियों में, मैं आपके यहाँ आने के लिए ज़ोर नहीं दे सकती, कम से कम तब तक जब तक टैबी के खतरे से बाहर होने की घोषणा न हो जाए; यह मेरे लिए बहुत स्वार्थपूर्ण होगा। चाची चाहती थीं कि मैं आपको यह जानकारी पहले ही दे दूं, लेकिन पापा और बाकी सब चिंतित थे कि मैं तब तक इंतज़ार करूं जब तक कि मामला ज़्यादा स्थिर न हो जाए, और मैं खुद भी इसे हर दिन टालती रही, क्योंकि मुझे इतने लंबे समय से जिस खुशी का इंतज़ार था, उसे छोड़ने में बहुत दुख हो रहा था। हालांकि, मुझे याद है कि आपने मुझे जो बताया था, यानी कि आपने इस मामले को हमारे ऊपर के किसी उच्च अधिकारी के हवाले कर दिया था, और आपने उस फैसले को, चाहे वह कुछ भी हो, स्वीकार करने का निश्चय कर लिया था, इसलिए मैं भी चुप रहना अपना कर्तव्य समझती हूं; शायद यही सब अच्छे के लिए है। मुझे डर है कि अगर आप इस भीषण मौसम में यहाँ होते, तो आपका आना आपके लिए किसी काम का नहीं होता, क्योंकि मैदान बर्फ से ढके हुए हैं, और आप कभी भी यहाँ नहीं आ पाते। बाहर निकल पाना संभव नहीं था। इस निराशा के बाद, मैं फिर कभी किसी सुख के आनंद की निश्चितता से कल्पना भी नहीं कर सकती; ऐसा लगता है मानो कोई नियति तुम्हारे और मेरे बीच खड़ी हो। मैं तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं हूँ, और तुम्हें अत्यधिक घनिष्ठ संगति के दुष्परिणामों से बचाना होगा। मैं अब भी तुमसे मिलने का आग्रह करती हूँ—मैं विनती करती हूँ और ज़ोर देती हूँ—लेकिन यह विचार मन में आता है कि अगर तुम्हारे घर में रहते हुए टैबी की मृत्यु हो गई, तो मैं खुद को कभी क्षमा नहीं कर पाऊँगी। नहीं! ऐसा नहीं होना चाहिए, और इस बात का एहसास मुझे हज़ार तरह से अत्यंत पीड़ा और निराशा पहुँचाता है, और मैं अकेली नहीं हूँ जो निराश है। घर में सभी लोग तुम्हारे आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। पापा कहते हैं कि उन्हें तुम्हारे साथ मेरी दोस्ती बहुत पसंद है, और वे चाहते हैं कि यह दोस्ती जीवन भर बनी रहे।

ब्रोंटे परिवार की एक अच्छी पड़ोसी—एक चतुर और बुद्धिमान यॉर्कशायर महिला, जो हॉवर्थ में एक दवा की दुकान चलाती है, और अपने पेशे, अनुभव और उत्कृष्ट समझ के बल पर गाँव की डॉक्टर और नर्स का पद संभालती है, और इस नाते आस-पास के घरों में कई मुश्किलों, बीमारियों और मृत्यु के समय में मददगार रही है—ने मुझे टैबी के टूटे हुए पैर से जुड़ी एक छोटी सी घटना सुनाई। श्री ब्रोंटे सचमुच उदार

और सभी योग्य लोगों का सम्मान करते हैं। टैबी उनके साथ दस या बारह साल से रह रही थी, और जैसा कि शार्लोट ने कहा था, वह "परिवार का एक हिस्सा" थी। लेकिन दूसरी ओर, दुर्घटना के समय वह साठ से अधिक सत्तर के करीब थी, इसलिए वह किसी भी सक्रिय सेवा के लिए उम्रदराज हो चुकी थी; उसकी एक बहन गाँव में रहती थी; और कई वर्षों की सेवा के दौरान उसने जो बचत की थी, वह उसके सामाजिक स्तर के लिए पर्याप्त थी। या यदि बीमारी के इस समय में उसे अपनी स्थिति के अनुसार आवश्यक किसी भी आराम की कमी महसूस होती, तो पादरी का घर उसकी पूर्ति कर सकता था। समझदार, बल्कि चिंतित चाची मिस ब्रैनवेल ने ऐसा ही सोचा; वे मिस्टर ब्रोंटे के सीमित धन और अपनी भतीजियों के अनिश्चित भविष्य को ध्यान में रख रही थीं; जो टैबी की देखभाल में व्यस्त रहने के कारण छुट्टियों का आनंद भी नहीं ले पा रही थीं।

जैसे ही बूढ़ी नौकरानी की जान को तत्काल खतरा टल गया, मिस ब्रैनवेल ने श्री ब्रोंटे के सामने अपने विचार रखे। पहले तो उन्होंने उनकी सलाह सुनने से इनकार कर दिया; यह उनके उदार स्वभाव के विपरीत था। लेकिन मिस ब्रैनवेल ने हार नहीं मानी; उन्होंने आर्थिक कारणों का हवाला दिया; अपनी बेटियों के प्रति उनके प्रेम का जिक्र किया। आखिरकार वे मान गए। टैबी को उसकी बहन के घर भेज दिया गया, जहाँ उसकी देखभाल की जाएगी और जब उसके अपने संसाधन कम पड़ जाएँगे तो श्री ब्रोंटे उसकी सहायता के लिए आएँगे। यह निर्णय लड़कियों को बता दिया गया। उस सर्दी की दोपहर, हॉवर्थ के छोटे से पादरी निवास परिसर में एक शांत, लेकिन दृढ़ विद्रोह के लक्षण दिखाई दिए। उन्होंने एकमत होकर कड़ा विरोध जताया। टैबी ने बचपन में उनकी देखभाल की थी; बुढ़ापे में उसकी देखभाल केवल उन्हें ही करनी चाहिए। चाय के समय वे उदास और चुप रहीं, और तीनों में से किसी ने भी भोजन को छुआ तक नहीं। नाश्ते के समय भी ऐसा ही हुआ; उन्होंने इस विषय पर ज्यादा बात नहीं की, लेकिन उनके द्वारा कहे गए हर शब्द में गहराई थी। उन्होंने संकल्प रद्द होने तक खाना-पीना बंद कर दिया, और टैबी को एक असहाय बीमार के रूप में पूरी तरह से उन पर निर्भर रहने दिया गया। यहीं पर कर्तव्य को सुख से अधिक महत्व देने की प्रबल भावना प्रकट होती है, जो शार्लोट के चरित्र की नींव थी; क्योंकि हमने देखा है कि वह अपनी सहेली की संगति के लिए कितनी तरसती थी; लेकिन यह संगति उसे केवल उस चीज़ से विमुख होकर ही प्राप्त हो सकती थी जिसे वह सही मानती थी,

और उसने ऐसा कभी नहीं किया, चाहे इसके लिए कितना भी त्याग करना पड़े।

इस क्रिसमस पर उनके मन में एक और बोझ था। मैंने कहा था कि ड्यूसबरी मूर की हवा उन्हें रास नहीं आ रही थी, हालांकि उन्हें खुद इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि वहां रहने से उनके स्वास्थ्य पर कितना असर पड़ रहा था। लेकिन ऐनी छुट्टियों से ठीक पहले बीमार पड़ने लगी थी, और शार्लोट अपनी छोटी बहनों की देखभाल किसी जंगली जानवर की तरह कर रही थीं, जो अपने बच्चों पर खतरा मंडराते ही अपना स्वभाव बदल लेता है। ऐनी को हल्की खांसी थी, कमर में दर्द था और सांस लेने में तकलीफ थी। मिस डब्ल्यू ने इसे मामूली सर्दी-जुकाम ही समझा; लेकिन शार्लोट को टीबी के हर लक्षण को दिल में चुभन की तरह महसूस हो रहा था, मारिया और एलिजाबेथ को याद करते हुए, जिनके घर उन्हें कभी जानते थे और अब कभी नहीं जान पाएंगे।

अपनी छोटी बहन के लिए चिंतित होकर, शार्लोट ने ऐनी के स्वास्थ्य के प्रति मिस डब्ल्यू - - की कथित उदासीनता के लिए उन्हें फटकारा। मिस डब्ल्यू - - को ये फटकारें बहुत बुरी लगीं और उन्होंने श्री ब्रोंटे को इसके बारे में लिखा। उन्होंने तुरंत अत्यंत विनम्रता से उत्तर दिया और आशंका व्यक्त की कि अपनी बहन के संबंध में शार्लोट की आशंकाओं और चिंताओं ने ही उन्हें अत्यधिक उत्तेजित होकर चिंता व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया था। मिस डब्ल्यू - - की दयालुता के कारण, ऐनी अपने दोस्तों की अपेक्षा एक वर्ष अधिक स्कूल में रही। छमाही के अंत में, मिस डब्ल्यू - - ने एक-दूसरे के शब्दों का स्पष्टीकरण करने का अवसर तलाशा और इसका परिणाम यह सिद्ध हुआ कि "वफादार दोस्तों के बीच मनमुटाव, प्रेम का ही परिणाम होता है।" और इस प्रकार शार्लोट का दयालु और नेक मिस डब्ल्यू - - के साथ पहला, अंतिम और एकमात्र मतभेद समाप्त हुआ।

फिर भी ऐनी की कोमलता को देखकर उसके दिल को गहरा सदमा लगा था; और इन सभी छुट्टियों में वह उस पर तरस, स्नेहपूर्ण चिंता और भय की भावना के साथ नजर रखती रही, जो अचानक भय की पीड़ा से भरी होती है।

एमिली ने छह महीने की कठिन परीक्षा के बाद हैलिफ़ैक्स स्कूल में अपनी नौकरी छोड़ दी थी, क्योंकि उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं हो पा रहा था। उसे घर की ताज़ी हवा और आज़ाद जीवन से ही आराम मिल सकता था। टैबी की बीमारी ने परिवार के संसाधनों पर भारी असर डाला था। मुझे संदेह है कि ब्रैनवेल उस समय अपना गुज़ारा

कर पा रहा था। किसी अज्ञात कारण से उसने रॉयल अकादमी में पेंटिंग का छात्र बनने का विचार छोड़ दिया था, और उसके भविष्य के संकेत अनिश्चित थे और अभी तय नहीं हुए थे। इसलिए शार्लोट को चुपचाप फिर से अध्यापन का बोझ उठाना पड़ा और अपने पुराने नीरस जीवन में लौटना पड़ा।

साहस से भरी, कर्तव्य निभाते हुए मरने को तैयार! वह अपने काम पर लौट गई और कोई शिकायत नहीं की, इस उम्मीद में कि वह उस कमजोरी को काबू कर लेगी जो उस पर हावी हो रही थी। इसी समय, वह किसी भी अचानक शोर से बीमार और कांपने लगती थी, और चौंकने पर अपनी चीखों को मुश्किल से रोक पाती थी। यह उस व्यक्ति में शारीरिक कमजोरी की भयावह स्थिति को दर्शाता था जो आम तौर पर इतनी आत्म-नियंत्रित रहती थी; और चिकित्सक, जिससे अंततः मिस डब्ल्यू - - की विनती पर परामर्श करने के लिए वह गई, ने उसे पादरी के घर लौटने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि उसने बहुत ही गतिहीन जीवन व्यतीत किया था; और उसके घर के चारों ओर बहने वाली कोमल गर्मी की हवा, उसके प्रियजनों की मधुर संगति, अपने परिवार में जीवन की मुक्ति और स्वतंत्रता, ये सब उसकी बुद्धि या जीवन को बचाने के लिए आवश्यक थे। इसलिए, जैसा कि उससे ऊपर किसी ने उसे कुछ समय के लिए आराम करने की अनुमति दी थी, वह हॉवर्थ लौट आई; और पूर्ण शांति के एक दौर के बाद, उसके पिता ने उसके लिए उसकी दो सहेलियों, मैरी और मार्था टी. की जीवंत संगति की तलाश की। उस समय अनुपस्थित ई. को लिखे गए निम्नलिखित पत्र के अंत में, मुझे लगता है, युवाओं के एक हंसमुख समूह की एक सुंदर झलक मिलती है; और पत्रों में विचारों या भावनाओं से अलग, कार्यों के सभी विवरणों की तरह, यह उस जीवंतता के अनुपात में उदासी लाता है जो कभी थी, और अब पूरी तरह से मिट गई है।

हॉवर्थ, 9 जून, 1838।

“बुधवार को मुझे आपके संदेशों का पैकेट मिला; इसे मैरी और मार्था मेरे लिए लाई थीं, जो कुछ दिनों से हॉवर्थ में ठहरी हुई थीं; वे आज विदा हो रही हैं। आपको इस पत्र की तारीख देखकर आश्चर्य होगा। आप जानते हैं कि मुझे ड्यूसबरी मूर में होना चाहिए था; लेकिन मैं वहाँ तब तक रुका रहा जब तक मैं रुक सकता था, और अंत में मैं और अधिक रुकने में असमर्थ और साहसी हो गया। मेरा स्वास्थ्य और मनोबल पूरी तरह से टूट चुका था, और जिस चिकित्सक से मैंने परामर्श लिया, उन्होंने मुझे सलाह दी कि

चूंकि मुझे अपने जीवन की परवाह है, इसलिए मैं घर चला जाऊं। इसलिए मैं घर चला गया, और इस बदलाव ने मुझे एक साथ तरोताजा और शांत कर दिया है; और अब, मुझे उम्मीद है, मैं फिर से पहले जैसा बनने की राह पर हूँ।”

“आप जैसे शांत और स्थिर मन वाले व्यक्ति उस टूटे हुए दिल वाले व्यक्ति की भावनाओं को समझ ही नहीं सकते, जो अब आपको पत्र लिख रहा है। कई हफ्तों तक असहनीय मानसिक और शारीरिक पीड़ा झेलने के बाद, अब जाकर उसे कुछ-कुछ शांति का अनुभव होने लगा है। मैरी की तबीयत बिल्कुल ठीक नहीं है। उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही है, सीने में दर्द है और बार-बार बुखार आ रहा है। मैं आपको बता नहीं सकता कि इन लक्षणों से मुझे कितनी पीड़ा हो रही है; ये मुझे मेरी दो बहनों की याद दिलाते हैं, जिन्हें कोई दवा बचा नहीं सकी। मार्था अब बिल्कुल ठीक है; वह यहाँ रहने के दौरान लगातार खुशमिजाज रही है, और इसी वजह से वह बहुत ही आकर्षक रही है...”

“वे मेरे बारे में इतना शोर मचा रहे हैं कि मैं अब और लिख नहीं सकती। मैरी पियानो बजा रही है; मार्था अपनी छोटी सी जीभ से जितनी तेज़ी से चल सकती है उतनी तेज़ी से बकबक कर रही है; और ब्रैनवेल उसके सामने खड़ा होकर उसकी जीवंतता पर हंस रहा है।”

घर पर इस शांत और सुखद समय में शार्लोट काफी मजबूत हो गईं। वह कभी-कभार अपनी दो घनिष्ठ मित्रों से मिलने जाती थीं, और वे भी बदले में हॉवर्थ आती थीं। मुझे लगता है कि उनके किसी घर में ही उनकी मुलाकात उस व्यक्ति से हुई होगी जिसका जिक्र निम्नलिखित पत्र में है - कोई ऐसा व्यक्ति जो "जेन आयर" के अंतिम खंड में "सेंट जॉन" नामक पात्र से थोड़ा मिलता-जुलता था, और उसी की तरह धार्मिक दीक्षा प्राप्त कर चुका था।

“12 मार्च, 1839।”

...मुझे उनके प्रति एक सौम्य आकर्षण था, क्योंकि वे एक मिलनसार और सौम्य स्वभाव के व्यक्ति हैं। फिर भी, मेरे मन में वह तीव्र लगाव नहीं था, और न ही हो सकता था, जो मुझे उनके लिए मरने को तैयार कर दे; और अगर कभी मेरी शादी हुई, तो मैं अपने पति को उसी श्रद्धा भाव से देखूंगी। दस में से एक संभावना है कि मुझे फिर कभी ऐसा मौका न मिले; लेकिन कोई बात नहीं। इसके अलावा, मुझे पता था कि वे मेरे बारे में इतना कम जानते हैं कि उन्हें शायद ही पता हो कि वे किसे लिख रहे

हैं। अरे! मुझे मेरे स्वाभाविक घरेलू रूप में देखकर वे चौंक जाएंगे; वे सोचेंगे कि मैं सचमुच एक बेबाक, रोमांटिक उत्साही हूं। मैं अपने पति के सामने सारा दिन गंभीर चेहरा बनाकर नहीं बैठ सकती थी। मैं हंसती, व्यंग्य करती और जो भी मेरे मन में आता, कह देती। और अगर वे एक समझदार व्यक्ति होते, और मुझसे प्यार करते, तो उनकी छोटी से छोटी इच्छा के सामने पूरी दुनिया हवा के समान हल्की होती।

इसलिए, शादी का उनका पहला प्रस्ताव चुपचाप ठुकरा दिया गया और एक तरफ रख दिया गया। शादी उनके जीवन की योजनाओं में शामिल नहीं थी, बल्कि अच्छा, सार्थक और लगन से किया जाने वाला काम था; हालाँकि, यह सवाल अभी तक तय नहीं हुआ था कि उन्हें अपनी क्षमताओं का उपयोग किस दिशा में करना चाहिए। साहित्य में उनकी रुचि कम हो गई थी; विचारों को व्यक्त करने के लिए वे जिस तरह की बारीक चित्रकारी का अभ्यास करती थीं, उसमें उनकी आँखें कमजोर पड़ गई थीं; उस समय उन्हें, जैसा कि अधिकांश महिलाओं को हमेशा लगता है, शिक्षण ही स्वतंत्र आजीविका कमाने का एकमात्र तरीका प्रतीत होता था। लेकिन न तो उन्हें और न ही उनकी बहनों को बच्चों से स्वाभाविक रूप से लगाव था। बचपन के चित्रलिपि उनके लिए एक अनजान भाषा थी, क्योंकि वे अपने से छोटे बच्चों के साथ ज्यादा समय नहीं बिताती थीं। मुझे यह भी लगता है कि उनमें जानकारी देने की वह कुशलता नहीं थी, जो जानकारी प्राप्त करने की क्षमता से एक अलग गुण प्रतीत होता है; एक प्रकार की सहानुभूतिपूर्ण कुशलता, जो सहज रूप से बच्चे के मन में समझने में आने वाली कठिनाइयों को भांप लेती है, और जो इतनी अस्पष्ट और अपरिष्कृत होती हैं कि अभिव्यक्ति की अविकसित क्षमता वाला बच्चा उन्हें शब्दों में समझा नहीं पाता। परिणामस्वरूप, तीनों ब्रोंटे बहनों के लिए बहुत छोटे बच्चों को पढ़ाना किसी भी तरह से "आनंददायक कार्य" नहीं था। बड़ी लड़कियों, जो युवावस्था के करीब थीं, के साथ वे बेहतर कर सकती थीं, खासकर अगर उनमें सुधार की कोई इच्छा होती। लेकिन गांव के पादरी की बेटियों को जो शिक्षा मिली थी, वह उन्हें उन्नत विद्यार्थियों की जिम्मेदारी लेने के लिए अभी तक योग्य नहीं बनाती थी। वे फ्रेंच का बहुत कम ज्ञान रखती थीं और संगीत में निपुण नहीं थीं; मुझे संदेह है कि शार्लोट बिल्कुल भी वादन कर सकती थी। लेकिन वे सभी फिर से स्वस्थ हो गई थीं, और किसी भी हालत में, शार्लोट और ऐनी को अपना योगदान देना ही था। घर पर एक बेटी की आवश्यकता थी, जो श्री ब्रोंटे और मिस ब्रैनवेल के साथ रहे; चार सदस्यों वाले परिवार में युवा और

सक्रिय सदस्य बनने के लिए, जिनमें से तीन - पिता, चाची और वफादार टैबी - अधेड़ उम्र पार कर चुके थे। और एमिली, जो हॉवर्थ से दूर रहने पर अपनी बहनों से कहीं अधिक दुखी और उदास रहती थी, उसे ही वहीं रहने के लिए नियुक्त किया गया। ऐनी को सबसे पहले एक समस्या का सामना करना पड़ा।

“15 अप्रैल, 1839।”

“जिस सप्ताह आपने अनुरोध किया था, उस सप्ताह मैं आपको पत्र नहीं लिख सकी, क्योंकि उस समय हम ऐनी के जाने की तैयारियों में बहुत व्यस्त थे। बेचारी! वह पिछले सोमवार को हमें छोड़कर चली गई; उसके साथ कोई नहीं गया; यह उसकी अपनी इच्छा थी कि उसे अकेले जाने दिया जाए, क्योंकि उसे लगता था कि अगर उसे पूरी तरह से अपने दम पर छोड़ दिया जाए तो वह बेहतर ढंग से संभाल सकती है और अधिक साहस जुटा सकती है। उसके जाने के बाद से हमें उसका एक पत्र मिला है। वह बहुत संतुष्ट है और कहती है कि श्रीमती — - अत्यंत दयालु हैं; केवल दो बड़े बच्चे ही उनकी देखभाल में हैं, बाकी सभी को नर्सरी में रखा गया है, जिससे और उसके बच्चों से उसका कोई लेना-देना नहीं है... मुझे उम्मीद है कि वह ठीक रहेंगी। आप यह जानकर आश्चर्यचकित होंगे कि वह कितना समझदारी भरा और चतुर पत्र लिखती है; मुझे केवल बोलने वाले हिस्से से डर लगता है। लेकिन मुझे गंभीरता से आशंका है कि श्रीमती — - कभी-कभी यह निष्कर्ष निकालेंगी कि उन्हें बोलने में कोई स्वाभाविक समस्या है। जहाँ तक मेरी बात है, मैं अभी तक 'नौकरी की तलाश में' हूँ, जैसे कोई बेमेल नौकरानी। वैसे, मुझे हाल ही में पता चला है कि सफाई करने में मुझमें काफी प्रतिभा है।” चूल्हे साफ करना, कमरों की धूल झाड़ना, बिस्तर लगाना, इत्यादि; तो, अगर बाकी सब काम न मिलें, तो मैं ये काम कर सकती हूँ, बशर्ते कोई मुझे थोड़े से काम के लिए अच्छी मजदूरी दे। मैं रसोइया नहीं बनूँगी; मुझे आराम देना पसंद नहीं है। मैं न तो बच्चों की देखभाल करने वाली बनूँगी, न ही किसी महिला की सहेली, न ही कोई कपड़ा बनाने वाली, न ही टोपी बनाने वाली, न ही कोई छोटा-मोटा काम करने वाली। मैं घर की नौकरानी के अलावा कुछ नहीं बनूँगी... जी. के यहाँ आने के बारे में, मुझे अभी तक कोई निमंत्रण नहीं मिला है; लेकिन अगर मुझे बुलाया जाए, तो मना करना मेरे लिए बहुत बड़ी आत्म-त्याग की बात होगी, फिर भी मैंने लगभग जाने का मन बना लिया है, हालाँकि टी. परिवार का साथ मेरे लिए सबसे सुखद अनुभवों में से एक है। अलविदा, मेरी प्यारी ई., इत्यादि।

“पुनश्च: ‘डार्लिंग’ शब्द हटा दीजिए; यह सरासर झूठ है। विरोध करने का क्या फायदा? हम एक-दूसरे को काफी समय से जानते हैं और पसंद करते हैं; इतना ही काफी है।”

यह लिखे जाने के कुछ ही सप्ताह बाद, शार्लोट भी एक गवर्नेंस के रूप में काम करने लगीं। मैं जानबूझकर किसी भी जीवित व्यक्ति का नाम नहीं लूंगा, जिनके बारे में मुझे अप्रिय सत्य बताने पड़ सकते हैं, या मिस ब्रोंटे के पत्रों से कठोर टिप्पणियाँ उद्धृत करनी पड़ सकती हैं; लेकिन यह आवश्यक है कि उनके जीवन के विभिन्न चरणों में उन्हें जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उन्हें निष्पक्ष और स्पष्ट रूप से बताया जाए, इससे पहले कि "जिसका उन्होंने विरोध किया" उसकी शक्ति को समझा जा सके। एक बार मैं उनसे "एग्नेस ग्रे" उपन्यास के बारे में बात कर रहा था - जिसमें उनकी बहन ऐनी ने गवर्नेंस के रूप में अपने अनुभव का लगभग सटीक वर्णन किया है - और विशेष रूप से माता-पिता पक्षियों की उपस्थिति में छोटे चूजों पर पत्थर फेंकने की घटना का जिक्र कर रहा था। उन्होंने कहा कि गवर्नेंस की भूमिका में रह चुके लोगों के अलावा कोई भी "सम्मानजनक" मानवीय स्वभाव के काले पक्ष को नहीं समझ सकता; अपराध करने का कोई बड़ा प्रलोभन न होने के बावजूद, वह प्रतिदिन स्वार्थ और चिड़चिड़ेपन के आगे झुकता रहता है, यहाँ तक कि आश्रितों के प्रति उसका व्यवहार कभी-कभी अत्याचार की हद तक पहुँच जाता है, जिसका शिकार होना अत्याचारी होने से कहीं बेहतर होता है। ऐसे मामलों में हम केवल यही उम्मीद कर सकते हैं कि नियोक्ता स्वभाव से क्रूर होने के बजाय, समझ की कमी और सहानुभूति के अभाव के कारण गलती करते हैं। इसी तरह की कई घटनाओं में से, जो मुझे अच्छी तरह याद हैं, उसने मुझे एक घटना बताई जो उसके साथ घटी थी। उसके माता-पिता के एक दिन के भ्रमण पर जाने के दौरान, उसे तीन या चार साल के एक छोटे लड़के की देखभाल का जिम्मा सौंपा गया था, और उसे विशेष रूप से अस्तबल के आंगन से दूर रखने का निर्देश दिया गया था। उसका बड़ा भाई, जो आठ या नौ साल का था और मिस ब्रोंटे का छात्र नहीं था, उस छोटे लड़के को उस वर्जित स्थान पर ले गया। वह उसके पीछे गई और उसे वापस लाने की कोशिश की; लेकिन, अपने भाई के उकसाने पर, उसने उस पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया, और उनमें से एक पत्थर उसके कनपटी पर इतनी जोर से लगा कि लड़के डरकर पीछे हट गए। अगले दिन, पूरे परिवार की बैठक में, माँ ने मिस ब्रोंटे से पूछा कि उनके माथे पर निशान कैसे आया।

उन्होंने बस इतना कहा, "एक दुर्घटना, महोदया," और आगे कोई पूछताछ नहीं की गई; लेकिन बच्चे (भाई और बहन दोनों) मौजूद थे, और उन्होंने "चुगली न करने" के लिए उनका सम्मान किया। उस समय से, उनके अलग-अलग स्वभाव के अनुसार, उनका सभी पर कमोबेश प्रभाव पड़ने लगा; और जैसे-जैसे वे अनजाने में उनका स्नेह प्राप्त करती गईं, उनमें उनकी रुचि बढ़ती गई। लेकिन एक दिन, बच्चों के भोजन के समय, अस्तबल के आंगन में रहने वाले उस छोटे शरारती बच्चे ने, थोड़ी भावुकता दिखाते हुए, अपना हाथ उनके हाथ में रखते हुए कहा, "मैं आपसे प्यार करता हूँ, मिस ब्रोंटे।" इस पर, माँ ने सभी बच्चों के सामने कहा, "मेरी प्यारी, गवर्नेंस से प्यार करो!"

“जिस परिवार में उन्होंने सबसे पहले प्रवेश किया, मेरा मानना है कि वह यॉर्कशायर के एक धनी निर्माता का परिवार था। उस समय के उनके पत्राचार के निम्नलिखित अंश यह दर्शाते हैं कि उनके नए जीवन शैली के बंधन ने उन पर कितना कष्टदायक प्रभाव डाला। पहला अंश एमिली को लिखे एक पत्र से है, जिसकी शुरुआत उन कोमल भावों से होती है जिनमें उन्होंने ‘दिखावे’ के बावजूद स्वयं को लीन कर लिया था। ‘मेरी प्यारी’, ‘मेरी सुंदर’, ये उनके अपनी प्रिय बहन को संबोधित करने के शब्द हैं।”

“8 जून, 1839।”

मैंने अपनी नई स्थिति से खुश रहने की बहुत कोशिश की है। जैसा कि मैंने कहा है, देश, घर और ज़मीन सब कुछ बहुत सुंदर है; लेकिन, अफसोस! चारों ओर इतनी सुंदरता देखकर भी, मनमोहक जंगल, सफेद रास्ते, हरी-भरी घास और नीला धूप से जगमगाता आसमान, एक पल भी खाली या सोचने का समय न मिलना कितना दुखद है! बच्चे हर समय मेरे साथ रहते हैं। उन्हें सुधारने की बात तो मैंने जल्दी ही समझ ली कि यह नामुमकिन है; उन्हें अपनी मनमर्जी करनी है। माँ से शिकायत करने पर मुझे सिर्फ़ गुस्से भरी निगाहों का सामना करना पड़ता है, और बच्चों को बचाने के लिए बेबुनियाद, पक्षपातपूर्ण बहाने बनाए जाते हैं। मैंने एक बार यह तरीका आजमाया था, और उसमें इतनी सफलता मिली कि अब दोबारा कोशिश नहीं करूँगी। मैंने अपने पिछले पत्र में कहा था कि श्रीमती - - मुझे नहीं जानतीं। अब मुझे लगने लगा है कि उनका मुझे जानने का कोई इरादा ही नहीं है; उन्हें मेरी कोई परवाह नहीं है, सिवाय इसके कि मुझसे ज़्यादा से ज़्यादा काम कैसे करवाया जाए; और इसी मकसद से वह मुझे कढ़ाई के ढेरों कामों में उलझा देती हैं; सिलाई के लिए गज भर कैम्ब्रिक कपड़ा,

मलमल। रात के लिए टोपी बनानी है, और सबसे बढ़कर, गुड़ियों को सजाना है। मुझे नहीं लगता कि वह मुझे ज़रा भी पसंद करती है, क्योंकि मैं इस बिल्कुल नए माहौल में शर्माने से खुद को रोक नहीं पाती, जहाँ मैं अब तक अजनबी और लगातार बदलते चेहरों से घिरी रही हूँ... मैं पहले सोचती थी कि मुझे बड़े लोगों की चहल-पहल में रहना अच्छा लगेगा; लेकिन अब मेरा इससे मन भर गया है - देखना और सुनना उबाऊ काम है। मैं पहले से कहीं ज़्यादा स्पष्ट रूप से समझती हूँ कि एक निजी गवर्नेंस का कोई अस्तित्व नहीं होता, उसे एक जीवित, समझदार प्राणी नहीं माना जाता, सिवाय उन थकाऊ कर्तव्यों से जुड़े होने के जो उसे निभाने पड़ते हैं... यहाँ बिताई गई सबसे सुखद दोपहरों में से एक - वास्तव में, एकमात्र सुखद दोपहर - वह थी जब श्रीमान - अपने बच्चों के साथ बाहर गए, और मुझे उनके थोड़ा पीछे चलने का आदेश दिया गया था। जब वह अपने खेतों में अपने शानदार न्यूफ़ाउंडलैंड कुत्ते के साथ टहल रहे थे, तो वह बिल्कुल एक स्पष्टवादी, धनी, रूढ़िवादी सज्जन की तरह दिख रहे थे। उन्होंने लोगों से खुलकर और बिना किसी बनावट के बात की। उनसे मुलाकात हुई, और हालांकि वह अपने बच्चों को बहुत लाड़-प्यार करते थे और उन्हें खुद को जरूरत से ज्यादा चिढ़ाने की इजाजत देते थे, लेकिन वह उन्हें दूसरों का घोर अपमान करने की अनुमति नहीं देते थे।

(एक मित्र को पेंसिल से लिखा गया पत्र।)

जुलाई, 1839।

“मुझे ड्राइंग रूम में जाए बिना स्याही नहीं मिल सकती, जहाँ मैं जाना नहीं चाहती... अगर मैं रोज़ आपके पत्र की प्रतीक्षा न कर रही होती और आपके न लिखने पर आश्चर्यचकित और दुखी न होती, तो मैं आपको बहुत पहले ही लिख देती और उस बिल्कुल नए परिदृश्य का हर विवरण बता देती जिसमें मुझे हाल ही में डाल दिया गया है; क्योंकि आपको याद होगा कि आपकी बारी थी। मुझे अपने दुखों से आपको बहुत परेशान नहीं करना चाहिए, जिनके बारे में, मुझे डर है, आपने बढ़ा-चढ़ाकर सुना होगा। अगर आप मेरे पास होते, तो शायद मैं आपको सब कुछ बताने, आत्ममुग्ध होने और एक निजी गवर्नेंस के रूप में अपने पहले पद पर रहते हुए आने वाली कठिनाइयों और संघर्षों की लंबी कहानी सुनाने के लिए प्रेरित हो जाती। फिलहाल, मैं आपसे केवल मुझ जैसी एक संकोची और दुखी महिला की दुर्दशा की कल्पना करने के लिए कहूँगी, जिसे अचानक एक बड़े परिवार के बीच में डाल दिया गया, ऐसे समय में जब वे विशेष

रूप से खुश थे - जब घर मेहमानों से भरा हुआ था - सभी अजनबी - ऐसे लोग जिनके चेहरे मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। इस स्थिति में मुझे लाड़-प्यार से पाले गए बच्चों की देखभाल का जिम्मा सौंपा गया, बिगड़े हुए, उद्दंड बच्चे, जिनकी निरंतर देखभाल और शिक्षा की मुझसे अपेक्षा की जाती थी। मैंने जल्द ही महसूस किया कि मेरी ऊर्जा पर लगातार दबाव के कारण वह पूरी तरह से थक चुकी थी; कई बार मैं उदास महसूस करती थी—और शायद दिखती भी थी। मुझे आश्चर्य हुआ जब श्रीमती— ने इस विषय पर मुझे फटकारा—उनकी व्यवहार और भाषा इतनी कठोर थी कि विश्वास करना मुश्किल था; मैं मूर्ख की तरह फूट-फूट कर रोई। मैं कुछ नहीं कर सकती थी; मेरा मनोबल पहले तो पूरी तरह से टूट गया था। मुझे लगा कि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया था—उन्हें खुश करने के लिए हर संभव कोशिश की थी; और केवल इसलिए कि मैं शर्मीली और कभी-कभी उदास थी, मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जाना बहुत बुरा था। पहले तो मेरा मन सब कुछ छोड़कर घर लौटने का था। लेकिन, थोड़ा सोचने के बाद, मैंने अपनी बची हुई ऊर्जा को इकट्ठा करने और इस तूफान का सामना करने का निश्चय किया। मैंने खुद से कहा, 'मैंने आज तक कोई भी जगह बिना दोस्त बनाए नहीं छोड़ी है; विपत्ति एक अच्छा शिक्षक है; गरीब मेहनत करने के लिए पैदा होते हैं, और आश्रित सहने के लिए।' मैंने संकल्प लिया। धैर्य रखना, अपनी भावनाओं पर काबू रखना और जो भी हो उसे स्वीकार करना; मैंने सोचा कि यह कठिन परीक्षा कुछ हफ़्तों तक नहीं चलेगी और मुझे विश्वास था कि इससे मुझे लाभ होगा। मुझे विलो और ओक की कहानी याद आई; मैं चुपचाप झुक गया और अब, मुझे विश्वास है, तूफान मेरे ऊपर से गुजर रहा है। श्रीमती - - को आम तौर पर एक मिलनसार महिला माना जाता है; मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आम समाज में वह ऐसी ही हैं। अब वह पहले की तुलना में मेरे साथ कुछ अधिक शालीनता से पेश आती हैं और बच्चे भी थोड़े अधिक शांत हैं; लेकिन वह मेरे चरित्र को नहीं जानतीं और न ही जानना चाहती हैं। जब से मैं आया हूँ, मैंने उनसे पाँच मिनट भी बात नहीं की है, सिवाय तब जब वह मुझे डांट रही थीं। मुझे किसी से दया पाने की इच्छा नहीं है, सिवाय आपके; अगर मैं आपसे बात कर रहा होता तो मैं आपको बहुत कुछ बता सकता था।

(एमिली से, लगभग इसी समय।)

मेरी प्यारी जान, तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे इतनी खुशी हुई कि शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता: घर से खबर मिलना सचमुच बहुत अच्छा लगता है; यह ऐसी खुशी

है जिसे सोने से पहले बचाकर रखना चाहिए, जब थोड़ा सुकून और आराम मिले और इसे अच्छे से महसूस किया जा सके। जब भी समय मिले, लिखना। काश मैं घर पर होता। काश मैं किसी चक्की में काम कर पाता। काश मुझे थोड़ी मानसिक आजादी मिलती। काश ये बंधन का बोझ उतर जाता। लेकिन छुट्टियां तो आएंगी ही। हिम्मत रखो।

इस असहयोगी परिवार में उनका अस्थायी जुड़ाव इसी वर्ष जुलाई में समाप्त हो गया; इससे पहले उनके मनोबल और शक्ति पर लगातार पड़ रहे दबाव ने उनके स्वास्थ्य को फिर से प्रभावित कर दिया था; लेकिन जब धड़कन तेज होने और सांस फूलने के रूप में यह कमजोरी स्पष्ट हुई, तो इसे दिखावा समझा गया - एक काल्पनिक बीमारी का चरण, जिसे डांट-फटकार से दूर किया जा सकता था। उनका पालन-पोषण भावुकतापूर्ण आत्म-भोग के बजाय संयमी धैर्य के विद्यालय में हुआ था, और वे चुपचाप कई दर्द सह सकती थीं और कई आशाओं को त्याग सकती थीं।

घर आए हुए उसे लगभग एक हफ़्ता हो गया था कि उसकी सहेली ने उसे अपने साथ एक छोटी-सी सैर पर चलने का प्रस्ताव दिया, जिसका एकमात्र उद्देश्य आनंद था। पहले तो उसे यह विचार बहुत अच्छा लगा; लेकिन उसकी उम्मीद थम सी गई, कम होती गई और लगभग खत्म ही हो गई, फिर कई देरी के बाद आखिरकार वह साकार हुई। अंत में जब वह साकार हुई, तो यह उसके छोटे से जीवन में आँखों के सामने नाचते हुए ऐसे कई सुखद पलों का एक बेहतरीन उदाहरण थी, जिनमें सुख के बजाय कठोर वास्तविकताएँ ही मुख्य भूमिका निभाती थीं।

26 जुलाई, 1839।

आपके प्रस्ताव ने तो मुझे लगभग पागल ही कर दिया है—अगर आपको यह शालीन मुहावरा समझ नहीं आया, तो जब मैं आपसे मिलूँ, तो मुझसे पूछ लेना। सच तो यह है कि आपके साथ कहीं भी सैर पर जाना—चाहे क्लीथोर्प हो या कनाडा—सिर्फ़ हम दोनों के लिए, मुझे बेहद आनंददायक लगेगा। मैं सचमुच जाना चाहती हूँ; लेकिन मुझे एक हफ़्ते से ज़्यादा की छुट्टी नहीं मिल सकती, और मुझे डर है कि यह आपको रास नहीं आएगा—तो क्या मुझे इसे पूरी तरह से छोड़ देना चाहिए? मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं ऐसा नहीं कर सकती; मुझे पहले कभी ऐसा आनंद लेने का मौका नहीं मिला; मैं आपसे मिलना चाहती हूँ, आपसे बात करना चाहती हूँ, और आपके साथ रहना चाहती हूँ। आप कब जाना चाहती हैं? क्या मैं आपसे लीड्स में मिल

सकती हूँ? हॉवर्थ से बी तक छोटी गाड़ी से जाना मेरे लिए बहुत महंगा पड़ेगा, और मेरे पास पैसे भी बहुत कम हैं। ओह! लगता है अमीर लोगों के पास कई ऐसे सुख-सुविधाएँ हैं जिनसे हम वंचित हैं! खैर, कोई शिकायत नहीं।

"बताइए आप कब जा रहे हैं, और मैं अपने जवाब में निश्चित रूप से बता पाऊंगा कि मैं आपके साथ जा सकता हूं या नहीं। मुझे जाना ही होगा - मैं जाऊंगा - मैंने ठान लिया है - मैं हठपूर्वक सभी विरोधों का सामना करूंगा।"

नोट: ऊपर लिखी बातों के बाद मुझे पता चला कि चाची और पापा ने दो सप्ताह के लिए लिवरपूल जाने का फैसला किया है और हम सबको भी अपने साथ ले जा रहे हैं। हालांकि, शर्त यह है कि मुझे क्लीथोर्प वाली योजना छोड़नी होगी। मैं अनिच्छा से मान गया।

मुझे लगता है कि इसी समय के आसपास, श्री ब्रोंटे को, या तो बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण या पैरिश की बढ़ती आबादी के कारण, एक सहायक पादरी की सहायता लेना आवश्यक लगा होगा। कम से कम, इस गर्मी में लिखे गए एक पत्र में मुझे सहायक पादरियों की श्रृंखला में से पहले पादरी का उल्लेख मिलता है, जो इसके बाद हॉवर्थ पार्सनेज के आसपास आते-जाते रहे और वहाँ रहने वाली एक महिला के मन पर ऐसा प्रभाव डाला जिसे उसने दुनिया के सामने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। हॉवर्थ के सहायक पादरी अपने पादरी मित्रों और पड़ोसियों को वहाँ लाते थे, और कुछ समय के लिए पार्सनेज में चाय के समय के आसपास उनके आने-जाने से वहाँ के शांत जीवन में कभी सुखद, कभी अप्रिय बदलाव आता था। निम्नलिखित पत्र के अंत में दर्ज छोटा सा रोमांच अधिकांश महिलाओं के जीवन में असामान्य है, और इस मामले में यह शार्लोट के असाधारण आकर्षण का प्रमाण है - हालाँकि दिखने में यह बहुत सरल था - जब वह घर की खुशी और स्वतंत्रता में खुद को पूरी तरह से समर्पित कर देती थी।

4 अगस्त, 1839।

लिवरपूल की यात्रा अभी भी सिर्फ़ बातों तक ही सीमित है, एक तरह से हवाई महल जैसी; लेकिन सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि यह कभी हकीकत में बदल पाएगी या नहीं, यह कहना मुश्किल है। चाची - कई अन्य बुज़ुर्गों की तरह - ऐसी बातें करना तो पसंद करती हैं, लेकिन जब उन्हें अमल में लाने की बात आती है, तो वह पीछे हट जाती हैं। ऐसे में, मुझे लगता है कि हम दोनों को अपनी पहली योजना पर ही टिके रहना चाहिए, यानी दूसरों से अलग होकर कहीं अकेले जाना। मुझे आपके साथ एक

हफ़्ते - ज़्यादा से ज़्यादा दो हफ़्ते - तक जाने की इजाज़त मिली है, इससे ज़्यादा नहीं। आप कहाँ जाना चाहती हैं? एम. की बातों से मुझे लगता है कि बर्लिंगटन भी उतना ही अच्छा स्थान होगा। आप कब रवाना होंगी? इन सभी चीज़ों का इंतज़ाम अपनी सुविधा के अनुसार कर लीजिए; मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। समुद्र को देखने का - उसके पास होने का - सूर्योदय, सूर्यास्त, चांदनी और दोपहर में उसके बदलते स्वरूप को देखने का - शांत मौसम में, शायद तूफ़ान में भी - विचार मेरे मन को भर देता है और मुझे संतुष्ट कर देता है। मुझे किसी भी बात से कोई शिकायत नहीं होगी। और फिर मुझे ऐसे लोगों के साथ नहीं जाना है जिनके साथ मैं... हम दोनों में कुछ भी समान नहीं है—जो कि झंझट और उबाऊ होंगे: लेकिन तुम्हारे साथ, जिसे मैं पसंद करता हूं और जानता हूं, और जो मुझे जानता है।

मुझे आपको एक अजीब घटना बतानी है: ज़ोरदार हंसी के लिए तैयार हो जाइए! कुछ दिन पहले, श्रीमान - -, एक पादरी, हमारे साथ दिन बिताने आए, अपने साथ अपने सहायक को भी लाए। श्रीमान बी. नाम के ये सज्जन, डबलिन विश्वविद्यालय से अभी-अभी स्नातक हुए एक युवा आयरिश पादरी हैं। हममें से किसी ने उन्हें पहली बार देखा था, लेकिन अपने देशवासियों की तरह, वे जल्द ही सहज हो गए। उनकी बातचीत में उनका व्यक्तित्व तुरंत झलक गया; हास्यपूर्ण, जीवंत, उत्साही, चतुर भी; लेकिन एक अंग्रेज की गरिमा और विवेक की कमी थी। आप जानते हैं, घर पर मैं सहजता से बात करता हूँ, और कभी शर्माता नहीं हूँ - उस दयनीय शर्मिंदगी से कभी बोझिल या दबा हुआ नहीं होता जो मुझे अन्य जगहों पर सताती और विवश करती है। इसलिए मैंने इस आयरिश व्यक्ति से बातचीत की, और उनके चुटकुलों पर हँसा; और, यद्यपि मैंने उनके चरित्र में कुछ कमियाँ देखीं, लेकिन उनकी मौलिकता से मिलने वाले मनोरंजन के कारण उन्हें माफ कर दिया। वास्तव में, मैं थोड़ा शांत हो गया, और बातचीत के अंतिम भाग में थोड़ा धीमा पड़ गया। शाम को, क्योंकि उसने अपनी बातचीत में आयरिश चापलूसी का पुट डालना शुरू कर दिया था, जो मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आया। खैर, वे चले गए, और उनके बारे में फिर कभी नहीं सोचा गया। कुछ दिनों बाद, मुझे एक पत्र मिला, जिसका पता मुझे समझ नहीं आया, क्योंकि वह ऐसी लिखावट में था जिसे मैं देखने की आदी नहीं थी। ज़ाहिर है, यह न तो आपसे था और न ही मैरी से, जो मेरे एकमात्र पत्र-व्यवहार करने वाले थे। जब मैंने उसे खोला और पढ़ा, तो पता चला कि यह प्रेम की घोषणा और विवाह का प्रस्ताव था, जो उस

बुद्धिमान युवा आयरिश व्यक्ति की जोशीली भाषा में व्यक्त किया गया था! मुझे उम्मीद है कि आप दिल खोलकर हंस रहे होंगे। यह मेरी किसी रोमांचक कहानी जैसा तो नहीं है, है ना? यह मार्था की कहानी से ज़्यादा मिलता-जुलता है। मैं निश्चित रूप से कुंवारी ही रहूंगी। कोई बात नहीं। मैंने बारह साल की उम्र से ही इस भाग्य को स्वीकार कर लिया था।

“वाह! मैंने सोचा, मैंने पहली नजर के प्यार के बारे में तो सुना है, लेकिन यह तो सबसे बढ़कर है! मैं आपको यह अनुमान लगाने के लिए छोड़ता हूँ कि मेरा जवाब क्या होगा, मुझे पूरा विश्वास है कि आप गलत अनुमान लगाकर मेरे साथ अन्याय नहीं करेंगे।”

14 अगस्त को भी वह हॉवर्थ से लिखती है: —

मैंने अपना सामान पैक कर लिया है और अपनी आने वाली यात्रा के लिए सब कुछ तैयार कर लिया है, लेकिन सब व्यर्थ गया। दुर्भाग्य से, मुझे इस सप्ताह या अगले सप्ताह कोई वाहन नहीं मिल रहा है। हॉवर्थ में किराए पर मिलने वाली एकमात्र गाड़ी हैरोगेट में है, और जहाँ तक मुझे पता है, वह भी वहीं रहेगी। पापा मेरे कोच से जाने और बी तक पैदल जाने के सख्त खिलाफ हैं, हालाँकि मुझे पूरा यकीन है कि मैं पैदल जा सकती हूँ। आंटी मौसम, सड़कों और आसमान की हर हवा के खिलाफ बड़बड़ा रही हैं, इसलिए मैं दुविधा में हूँ, और इससे भी बुरी बात यह है कि आप भी दुविधा में हैं। आपका पिछला पत्र (जो कि इतनी अस्पष्ट लिखावट में था कि पहली बार जल्दी में पढ़ने पर मैं मुश्किल से दो शब्द समझ पाई थी) दूसरी या तीसरी बार पढ़ने पर मुझे पता चला कि आपने संकेत दिया है कि अगर मैं यह यात्रा गुरुवार तक टाल दूँगी तो बहुत देर हो जाएगी। मुझे खेद है कि मैंने आपको इतनी असुविधा पहुँचाई; लेकिन मुझे अब शुक्रवार या शनिवार की बात करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मुझे लगता है कि मेरे जाने की संभावना बहुत कम है। घर के बड़े-बुजुर्गों ने कभी भी मैंने सहर्ष इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया; और अब जब हर कदम पर बाधाएँ खड़ी होती दिख रही हैं, तो विरोध और भी स्पष्ट होता जा रहा है। पापा सचमुच मुझे खुश करने को तैयार हैं, लेकिन उनकी यही दयालुता मुझे इस बात पर संदेह करने पर मजबूर कर रही है कि क्या मुझे इसका लाभ उठाना चाहिए; इसलिए, हालाँकि मैं चाची की नाराज़गी का सामना कर सकती थी, मैं पापा की कृपा मान लेती हूँ। उन्होंने ऐसा कहा नहीं, लेकिन मैं जानती हूँ कि वे चाहते हैं कि मैं घर पर ही रहूँ; और चाची का इरादा भी

अच्छा ही था, मुझे लगता है, लेकिन मुझे इस बात का गुस्सा है कि उन्होंने अपनी स्पष्ट असहमति तब तक नहीं ज़ाहिर की जब तक कि आप और मेरे बीच सब कुछ सुलझ नहीं गया। अब मुझ पर भरोसा मत कीजिए; मुझे अपनी गणनाओं से बाहर रखिए: शायद मुझे शुरू में ही इतनी समझदारी दिखानी चाहिए थी कि मैं इस तरह के सुख की संभावना को नज़रअंदाज़ कर देती, ताकि मैं इसकी आशा से वंचित रह जाती। आप मुझे निराश करने के लिए जितना चाहें उतना नाराज़ हो सकते हैं। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था, और मुझे बस एक ही बात कहनी है - अगर आप तुरंत समुद्र तट पर नहीं जाते हैं, तो क्या आप हॉवर्थ में हमसे मिलने आएँगे? यह निमंत्रण केवल मेरा नहीं है। लेकिन पापा और आंटी के।

हालांकि, थोड़ा और धैर्य, थोड़ा और इंतज़ार, और आखिरकार उसे वह आनंद मिल गया जिसकी उसे बहुत चाह थी। वह और उसकी सहेली सितंबर के आखिरी महीनों में दो सप्ताह के लिए ईस्टन गए। यहीं पर उसे समुद्र का पहला अनुभव हुआ।

24 अक्टूबर।

"ई., क्या तुम अब तक समुद्र को भूल चुकी हो? क्या वह तुम्हारे मन में धुंधला सा हो गया है? या क्या तुम उसे अब भी देख सकती हो, गहरा नीला, हरा और झागदार सफेद, और जब हवा तेज़ चलती है तो उसकी गर्जना सुन सकती हो, या जब शांत होती है तो उसकी धीमी आवाज़ सुन सकती हो? ... मैं ठीक-ठाक हूँ और काफी मोटी भी। मैं अक्सर ईस्टन, आदरणीय श्री एच., और उनकी दयालु पत्नी, और एच-वुड और बॉयन्टन की हमारी सुखद सैर, हमारी खुशनुमा शामें, छोटे हैन्चियन के साथ हमारी मस्ती, आदि के बारे में सोचती हूँ। अगर हम दोनों जीवित रहे, तो हमारे जीवन का यह दौर लंबे समय तक सुखद यादों का विषय रहेगा। क्या तुमने श्री एच. को लिखे अपने पत्र में मेरे चश्मे का ज़िक्र किया था? मुझे उनके बिना बहुत असुविधा हो रही है। उनके बिना मैं न तो आराम से पढ़ सकती हूँ, न लिख सकती हूँ और न ही चित्र बना सकती हूँ। मुझे उम्मीद है कि मैडम उन्हें देने से इनकार नहीं करेंगी... इस संक्षिप्तता के लिए क्षमा करें।" मैं यह पत्र इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि मैं दिन भर चित्र बनाता रहा हूँ और मेरी आँखें इतनी थक गई हैं कि लिखना मेरे लिए काफी मुश्किल हो गया है।

लेकिन, जैसे ही इस सुख की ज्वलंत स्मृति धुंधली पड़ गई, एक ऐसी दुर्घटना घटित हुई जिसने जीवन के वास्तविक कर्तव्यों के बोझ को कुछ समय के लिए काफी

भारी बना दिया।

21 दिसंबर, 1839

“हम इस समय और पिछले महीने से काफी व्यस्त हैं, क्योंकि इतने समय से हमारे पास नौकरानी नहीं है, सिवाय एक छोटी लड़की के जो छोटे-मोटे काम करती है। बेचारी टैबी इतनी लंगड़ी हो गई थी कि आखिरकार उसे हमें छोड़कर जाना पड़ा। वह अपनी बहन के साथ अपने छोटे से घर में रह रही है, जिसे उसने एक-दो साल पहले अपनी बचत से खरीदा था। वह बहुत आराम से है और उसे किसी चीज की कमी नहीं है; क्योंकि वह पास ही रहती है, हम उससे अक्सर मिलते रहते हैं। इस बीच, जैसा कि आप समझ सकते हैं, एमिली और मैं काफी व्यस्त हैं: मैं इस्त्री का काम संभालती हूँ और कमरों को साफ रखती हूँ; एमिली बेकिंग करती है और रसोई का काम देखती है। हम इतने अजीब लोग हैं कि हम अपने बीच किसी नए व्यक्ति को रखने के बजाय इस तरह से काम करना पसंद करते हैं। इसके अलावा, हमें टैबी के लौटने की पूरी उम्मीद है और उसकी अनुपस्थिति में उसकी जगह कोई अजनबी नहीं आएगा। मैंने पहली बार इस्त्री करने की कोशिश में कपड़े जला दिए थे, जिससे चाची बहुत नाराज हो गई थीं; लेकिन अब मैं बेहतर करती हूँ। इंसानी भावनाएँ अजीब चीजें होती हैं; मुझे कपड़ों पर पॉलिश करना ज्यादा अच्छा लगता है। घर पर चूल्हे बनाना, बिस्तर ठीक करना और फर्श साफ करना, ये सब काम मैं कहीं और की किसी सभ्य महिला की तरह रहने से कहीं ज्यादा बेहतर तरीके से कर सकती हूँ। मुझे यहूदी समुदाय को दी जाने वाली अपनी चंदा राशि बंद करनी पड़ेगी, क्योंकि मेरे पास इसे जारी रखने के लिए पैसे नहीं हैं। मुझे यह बात आपको पहले ही बता देनी चाहिए थी, लेकिन मैं पूरी तरह भूल गई थी कि मैं चंदा देती हूँ। मेरा इरादा है कि जब मुझे कोई और नौकरी मिल जाए, तो मैं उसे करने की पूरी कोशिश करूँगी, हालाँकि मुझे गवर्नेस बनने का ख्याल भी बिल्कुल पसंद नहीं है। लेकिन मुझे यह करना ही होगा; इसलिए, मैं तहे दिल से चाहती हूँ कि मुझे किसी ऐसे परिवार के बारे में पता चले जहाँ गवर्नेस जैसी किसी चीज की जरूरत हो।

अध्याय 9

सन् 1840 में ऐनी को छोड़कर ब्रोंटे परिवार के सभी सदस्य घर पर ही रह रहे थे। जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, अज्ञात कारणों से ब्रैनवेल को रॉयल अकादमी में पढ़ने के लिए भेजने की योजना छोड़ दी गई थी; संभवतः पूछताछ करने पर पता चला कि ऐसे जीवन का खर्च उनके पिता की सीमित आर्थिक स्थिति से कहीं अधिक था, यहाँ तक कि मिस डब्ल्यू के यहाँ शार्लोट द्वारा ऐनी के भोजन और शिक्षा का खर्च वहन करने में दी गई सहायता के बावजूद भी। मैंने जो सुना है, उससे मुझे लगता है कि योजना विफल होने पर ब्रैनवेल को बहुत निराशा हुई होगी। उनकी प्रतिभा निस्संदेह बहुत ही शानदार थी, और वे इस बात से भली-भांति परिचित थे, और लेखन या चित्रकला में अपनी प्रतिभा का उपयोग करके नाम कमाना चाहते थे। साथ ही, संभवतः उन्हें सुख-सुविधाओं के प्रति अपने प्रबल प्रेम और अनियमित आदतों को प्रसिद्धि के मार्ग में एक बड़ी बाधा के रूप में देखना पड़ता। लेकिन उनके चरित्र की ये खामियाँ उनके लंदन के जीवन के प्रति लालसा का एक अतिरिक्त कारण थीं, जहाँ उन्हें लगता था कि वे अपनी पहले से ही तेज बुद्धि को हर तरह की प्रेरणा दे सकते हैं, और साथ ही उन्हें वह स्वतंत्रता भी मिलेगी जो केवल भीड़भाड़ वाले शहरों में ही मिलती है। इस प्रकार उनका पूरा स्वभाव महानगर की ओर आकर्षित था; और मुझे बताई गई एक कहानी के अनुसार, उन्होंने लंदन के नक्शे को ध्यान से देखने में कई घंटे बिताए होंगे। लंदन के एक व्यापारिक प्रतिष्ठान के लिए कोई यात्री एक रात के लिए हॉवर्थ आया; और उस जगह की दुर्भाग्यपूर्ण प्रथा के अनुसार, प्रतिभाशाली "पैट्रिक" को सराय में बुलाया गया, ताकि वे अपनी बौद्धिक बातचीत और हाजिरजवाबी से शाम को मनोरंजक बना सकें। उन्होंने लंदन के बारे में बात करना शुरू किया; वहाँ की आदतों और जीवन शैली के बारे में; मनोरंजन स्थलों के बारे में; और ब्रैनवेल ने उस लंदनवासी को संकरी गलियों या पीछे की सड़कों से होकर एक-दो शॉर्टकट बताए; और शाम ढलने के ठीक बाद ही यात्री को अपने साथी के स्वेच्छा से किए गए कबूलनामे से पता चला कि उसने कभी लंदन में कदम रखा ही नहीं था।

उस समय ऐसा लग रहा था मानो उस युवक का भाग्य उसके अपने हाथों में हो। वह असाधारण प्रतिभाओं के साथ-साथ नेक इरादों से भी परिपूर्ण था; यह सच है कि वह प्रबल पारिवारिक स्नेह के अलावा किसी उच्च प्रेरणा से प्रलोभनों का विरोध करने का आदी नहीं था, लेकिन अपने आसपास के सभी लोगों के प्रति उसका इतना गहरा लगाव था कि वे यह मानकर प्रसन्न होते थे कि कुछ समय बाद वह सुधर जाएगा और वे उसकी प्रतिभाओं के उपयोग पर गर्व और प्रसन्नता महसूस करेंगे। उसकी चाची ने उसे विशेष रूप से अपना प्रिय बना लिया था। लड़कियों से भरे परिवार में इकलौते लड़के के जीवन में हमेशा कुछ विशेष चुनौतियाँ होती हैं। उससे जीवन में एक भूमिका निभाने की अपेक्षा की जाती है; उसे कुछ करना होता है, जबकि लड़कियाँ केवल मौजूद रहती हैं; और कुछ मामलों में उनके द्वारा उसके सामने झुकने की आवश्यकता को अक्सर इस रूप में अतिरंजित कर दिया जाता है कि उन्हें हर बात में उसके सामने झुकना पड़ता है, जिससे वह पूरी तरह स्वार्थी हो जाता है। जिस परिवार के बारे में मैं लिख रहा हूँ, उसमें बाकी लोग लगभग संयमी थे, जबकि ब्रैनवेल को आत्म-भोग में पलने-बढ़ने की छूट दी गई थी; लेकिन, युवावस्था में लोगों को आकर्षित करने और उनसे जुड़ने की उनकी क्षमता इतनी प्रबल थी कि जो भी उनके संपर्क में आता, वह उनसे इतना मोहित हो जाता कि उनकी हर इच्छा पूरी करने के लिए तरसता। बेशक, वह अपने पिता और बहनों के सामने अपने सुखों के बारे में कुछ भी प्रकट न करने के लिए काफी सतर्क थे; लेकिन उनके विचारों और बातचीत का लहजा धीरे-धीरे कठोर होता गया, और कुछ समय के लिए उनकी बहनों ने खुद को यह समझाने की कोशिश की कि ऐसी कठोरता मर्दानगी का हिस्सा है, और प्रेम के कारण इस तथ्य को अनदेखा कर दिया कि ब्रैनवेल अन्य युवकों से कहीं अधिक कठोर था। हालांकि वे जानती थीं कि वह कुछ गलतियाँ कर बैठा है, जिनकी सटीक प्रकृति जानने से वे बचती रहीं, फिर भी वह उनकी आशा और प्रियतम था; उनका गौरव, जो एक दिन ब्रोंटे परिवार को महान गौरव दिलाएगा।

वह और उनकी बहन शार्लोट दोनों दुबले-पतले और छोटे कद के थे, जबकि बाकी दोनों लंबे और मजबूत कद के थे। मैंने ब्रैनवेल का चेहरा देखा है; यह आम तौर पर बहुत सुंदर माना जाता है; माथा चौड़ा, आंखें सही जगह पर धंसी हुई और चेहरे की अभिव्यक्ति सौम्य और बौद्धिक है; नाक भी अच्छी है; लेकिन मुंह के आसपास कुछ झुर्रियां हैं, और होंठ, हालांकि सुंदर आकार के हैं, ढीले और मोटे हैं, जो आत्म-भोग

का संकेत देते हैं, जबकि थोड़ा पीछे हटी हुई ठोड़ी इच्छाशक्ति की कमजोरी का आभास कराती है। उनके बाल और रंग सांवले थे। उनमें आयरिश रक्त की पर्याप्त मात्रा थी जिससे उनका व्यवहार स्पष्ट और सौम्य था, जिसमें एक प्रकार की स्वाभाविक शिष्टता झलकती थी। उनकी एक पांडुलिपि के एक अंश में, जिसे मैंने पढ़ा है, अभिव्यक्ति की सटीकता और सुंदरता बहुत ही प्रभावशाली है। यह एक कहानी की शुरुआत है, और इसमें पात्रों का चित्रण विशिष्ट चित्रकारी की तरह किया गया है, एकदम शुद्ध और सरल भाषा में, जो एडिसन के "स्पेक्टेटर" में लिखे गए कई लेखों की विशेषता है। यह अंश इतना छोटा है कि इससे यह आंकलन करना मुश्किल है कि उनमें नाटकीय प्रतिभा कितनी थी, क्योंकि कहानी के पात्रों के बीच संवाद नहीं दिखाया गया है। लेकिन कुल मिलाकर शैली की सुंदरता और संयम ऐसा है जिसकी इस उग्र और दुर्भाग्यशाली युवक से अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। उनके हृदय में साहित्यिक प्रसिद्धि की ऐसी प्रबल इच्छा थी, जो उनकी बहनों में कभी-कभार ही झलकती थी। उन्होंने अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए कई प्रयास किए। उन्होंने वर्ड्सवर्थ और कोलरिज को कविताएँ लिखकर भेजीं, जिन्होंने उनकी प्रशंसा की और वे अक्सर लीड्स मर्करी में कविताएँ लिखते थे। 1840 में, वे घर पर रह रहे थे, विभिन्न प्रकार की रचनाएँ लिखने में व्यस्त थे और किसी ऐसे काम की प्रतीक्षा कर रहे थे जिसके लिए उन्हें किसी महंगे प्रारंभिक प्रशिक्षण की आवश्यकता न हो; प्रतीक्षा में वे अधीर नहीं थे; क्योंकि उन्हें ब्लैक बुल में एक प्रकार का समाज (शायद जिसे वे "जीवन" कहते थे) मिलता था; और घर पर वे अभी भी सबके प्रिय थे।

मिस ब्रैनवेल अपने आस-पास पनप रही प्रतिभाओं के बारे में अनजान थीं। वह अपनी भतीजियों की विश्वासपात्र नहीं थीं—शायद उनसे इतनी उम्र की कोई और हो भी नहीं सकती थी; लेकिन उनके पिता, जिनसे उन्हें साहसिक स्वभाव का काफी हिस्सा मिला था, उन बहुत सी बातों से चुपचाप वाकिफ थे जिन पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। अपने भतीजे के बाद, शांत और गंभीर स्वभाव वाली ऐनी उनकी सबसे प्रिय थीं। बचपन से ही उन्होंने ऐनी की देखभाल की जिम्मेदारी संभाली थी; वह हमेशा धैर्यवान और आज्ञाकारी थीं, और कभी-कभार होने वाले अत्याचारों को भी चुपचाप सह लेती थीं, भले ही उन्हें वह कितना भी तीव्र क्यों न लगे। उनकी दो बड़ी बहनें ऐसी नहीं थीं; वे किसी भी अन्याय से आहत होने पर अपनी राय खुलकर व्यक्त करती थीं। ऐसे समय में, एमिली भी शार्लोट की तरह ही दृढ़ता से अपनी बात रखती थीं,

हालांकि शायद कम बार। लेकिन, सामान्य तौर पर, भले ही मिस ब्रैनवेल कभी-कभी तर्कहीन हो जाती थीं, फिर भी वह और उनकी भतीजियां सुचारू रूप से अपना जीवन व्यतीत करती रहीं; और भले ही वे कभी-कभार छोटे-मोटे अत्याचारों से परेशान हो जाती थीं, फिर भी वह उन्हें सच्चे सम्मान और स्नेह से प्रेरित करती रहीं। इसके अलावा, वे उन अनेक आदतों के लिए भी उनके प्रति कृतज्ञ थे जो उन्होंने उनमें डाली थीं और जो समय के साथ उनकी सहज प्रकृति बन गई थीं: हर चीज़ में व्यवस्था, विधि, स्वच्छता; सभी प्रकार के घरेलू कार्यों का पूर्ण ज्ञान; समय की पाबंदी और समय-स्थान के नियमों का पालन, जिसका महत्व, जैसा कि मैंने शार्लोट को कहते सुना है, उनके अलावा कोई और नहीं बता सकता; उनके आवेगी स्वभाव को देखते हुए, बाहरी नियमों का पूर्णतः पालन करना सीखना उनके लिए एक तरह का सुकून था। हॉवर्थ के लोगों ने मुझे बताया है कि वे दिन के समय के अनुसार - बल्कि मिनट-दर-मिनट - बता सकते थे कि पादरी के घर में रहने वाले लोग क्या कर रहे हैं। कुछ समय पर लड़कियाँ अपनी चाची के शयनकक्ष में सिलाई करती थीं - वह कमरा जो पहले, जब तक वे अपनी पढ़ाई में उनसे आगे नहीं निकल गई थीं, उनके लिए स्कूल का काम करता था; कुछ (सुबह के) समय पर वे भोजन करती थीं; छह से आठ बजे तक, मिस ब्रैनवेल श्री ब्रोंटे को पढ़कर सुनाती थीं; ठीक आठ बजे, घरवाले उनके अध्ययन कक्ष में शाम की प्रार्थना के लिए एकत्रित होते थे; और नौ बजे तक वह, चाची और टैबी, तीनों बिस्तर पर जा चुके थे, और लड़कियां बैठक में (बेचैन जंगली जानवरों की तरह) इधर-उधर टहल रही थीं, योजनाओं और परियोजनाओं पर बातें कर रही थीं, और अपने भविष्य के जीवन के बारे में सोच रही थीं।

जिस समय मैं यह लिख रहा हूँ, उस समय उनका सबसे पसंदीदा विचार एक स्कूल खोलने का था। उनका मानना था कि थोड़ी सी जुगाड़ और एक छोटे से अतिरिक्त भवन के निर्माण से पादरी के घर में चार-छह विद्यार्थियों को समायोजित किया जा सकता है। चूंकि शिक्षण ही उनके लिए एकमात्र संभव पेशा प्रतीत होता था, और ऐसा लगता था कि एमिली कम से कम घर से दूर नहीं रह सकती थी, जबकि अन्य भी इसी कारण से काफी परेशान थे, इसलिए स्कूल खोलने की यह योजना उन्हें सबसे उपयुक्त लगी। लेकिन इसमें कुछ खर्च शामिल था; और उनकी चाची इसके लिए अनिच्छुक थीं। फिर भी, मिस ब्रैनवेल के अलावा, जिनके पास आवश्यक धनराशि के लिए ऋण लेने का कोई विकल्प नहीं था, जिन्होंने अपनी बचत से एक

छोटा सा भंडार बनाया था, जिसे वे अंततः अपने भतीजे और भतीजियों के लिए रखना चाहती थीं, लेकिन जिसे वे जोखिम में नहीं डालना चाहती थीं, उनके पास कोई और विकल्प नहीं था। फिर भी, स्कूल खोलने की यह योजना सर्वोपरि बनी रही; और 1839-40 की इस सर्दी की शामों में, घर में आवश्यक बदलाव और अपनी चाची को अपनी योजना की बुद्धिमत्ता के बारे में समझाने का सबसे अच्छा तरीका ही उनकी बातचीत का मुख्य विषय था।

अंधकारमय और उदास मौसम के महीनों के दौरान, यह चिंता उनके मन पर भारी पड़ी रही। उनके मित्रों के बीच भी बाहरी घटनाएँ सुखद नहीं थीं। जनवरी 1840 में, शार्लोट को एक युवती की मृत्यु की खबर मिली, जो उनकी छात्रा और ऐनी की सहपाठी थी, जब दोनों बहनें रो हेड में साथ थीं; और ऐनी से उनका गहरा लगाव था, जिसने बदले में उन्हें बहुत स्नेह दिया था। उस युवती की मृत्यु की खबर मिलना एक दुखद दिन था। शार्लोट ने 12 जनवरी 1840 को इस प्रकार लिखा: —

आज सुबह मुझे आपका पत्र मिला, जो अत्यंत दुखदायी था। ऐसा लगता है कि ऐनी सी. का निधन हो गया है; जब मैंने उसे आखिरी बार देखा था, तब वह एक युवा, सुंदर और खुशमिजाज लड़की थी; और अब 'जीवन का उतार-चढ़ाव भरा दौर' उसके साथ समाप्त हो गया है, और वह 'शांति से सो रही है।' मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगी। यह एक दुखद विचार है; क्योंकि वह एक दयालु और स्नेहशील स्वभाव की थी, और मैं उसकी बहुत परवाह करती थी। अब मैं इस दुनिया में जहाँ भी उसे ढूँढूँ, वह नहीं मिलती, ठीक वैसे ही जैसे कोई फूल या पत्ता जो बीस साल पहले मुरझा गया हो। इस तरह का शोक उन लोगों की भावनाओं की झलक देता है जिन्होंने अपने चारों ओर एक के बाद एक मित्र को खोया है, और अब अकेले ही अपने जीवन का अंतिम पड़ाव पार कर रहे हैं। लेकिन आँसू व्यर्थ हैं, और मैं पश्चाताप न करने का प्रयास करती हूँ।

इस सर्दी के मौसम में, शार्लोट ने अपने खाली समय का सदुपयोग एक कहानी लिखने में किया। पांडुलिपि के कुछ अंश अभी भी बचे हैं, लेकिन लिखावट इतनी छोटी है कि उन्हें पढ़ने में आँखों को बहुत कष्ट होता है; और इसे पढ़ने की इच्छा और भी कम होती है, क्योंकि स्वयं उन्होंने "प्रोफेसर" की प्रस्तावना में इसकी निंदा करते हुए कहा था कि इस कहानी में उन्होंने "सजावटी और अनावश्यक रचना" के प्रति अपने उस अरुचि को त्याग दिया है जो कभी उनके मन में रही होगी। जैसा कि उन्होंने

स्वयं स्वीकार किया है, इसकी शुरुआत रिचर्डसन के सात या आठ खंडों वाले उपन्यासों के समान थी। मुझे ये कुछ विवरण एक पत्र की प्रति से प्राप्त हुए हैं, जो स्पष्ट रूप से वर्ड्सवर्थ के एक पत्र के उत्तर में लिखा गया था, जिन्हें उन्होंने 1840 की गर्मियों में कहानी की शुरुआत भेजी थी।

लेखक आम तौर पर अपनी रचनाओं के प्रति बहुत दृढ़ निश्चयी होते हैं, लेकिन मैं इससे इतना जुड़ा हुआ नहीं हूँ कि इसे बिना किसी खास कष्ट के छोड़ सकूँ। निस्संदेह, अगर मैं इसे जारी रखता, तो मैं इसे रिचर्डसन की तरह ही गंभीरता से लेता... मेरे दिमाग में आधा दर्जन खंडों के लिए सामग्री थी... बेशक, मुझे इस आकर्षक योजना को छोड़ने का बहुत अफसोस है। अपने दिमाग से एक दुनिया बनाना और उसमें ऐसे पात्रों को बसाना, जो कई मेल्कीसेडेक हों और जिनका कोई पिता-माता न हो, केवल आपकी अपनी कल्पना हो, बहुत ही ज्ञानवर्धक और लाभदायक है... मुझे खेद है कि मैं पचास या साठ साल पहले अस्तित्व में नहीं था, जब 'लेडीज़ मैगज़ीन' एक हरे-भरे पेड़ की तरह फल-फूल रही थी। उस स्थिति में, मुझे कोई संदेह नहीं है, साहित्यिक प्रसिद्धि के लिए मेरी आकांक्षाओं को उचित प्रोत्साहन मिलता, और मुझे श्री पर्सी और वेस्ट को सर्वश्रेष्ठ समाज से परिचित कराने और उनके सभी कथनों और कार्यों को दर्ज करने का आनंद मिलता। दो स्तंभों वाले, घनी छपाई वाले पन्ने... मुझे याद है, जब मैं बच्ची थी, तो कुछ पुरानी किताबें हाथ लगती थीं और मैं उन्हें छुप-छुपकर बड़े आनंद से पढ़ती थी। आपने उन दिनों की धैर्यवान लेखिकाओं का सही वर्णन किया है। मेरी चाची भी उनमें से एक थीं; और आज भी वह 'लेडीज़ मैगज़ीन' की कहानियों को आधुनिक साहित्य की किसी भी घटिया रचना से कहीं बेहतर मानती हैं। मैं भी ऐसा ही मानती हूँ; क्योंकि मैंने उन्हें बचपन में पढ़ा था, और बचपन में प्रशंसा करने की क्षमता बहुत प्रबल होती है, लेकिन आलोचना करने की क्षमता बहुत कमज़ोर होती है... मुझे खुशी है कि आप यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि मैं किसी वकील की क्लर्क हूँ या उपन्यास पढ़ने वाली दर्जी। मैं इस खोज में आपकी बिल्कुल भी मदद नहीं करूँगी; और जहाँ तक मेरी लिखावट या मेरी शैली और कल्पना में मौजूद स्त्रीत्वपूर्ण स्पर्श की बात है, तो आप उससे कोई निष्कर्ष न निकालें - मैं किसी सहायक की मदद ले सकती हूँ। सच में, महोदय, आपके दयालु और स्पष्ट पत्र के लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ। मुझे लगभग आश्चर्य है कि आपने लघु उपन्यास को पढ़ने और उस पर ध्यान देने की जहमत उठाई। एक गुमनाम लेखक का, जिसमें यह बताने की भी

तमीज़ नहीं थी कि वह पुरुष है या महिला, या उसके 'सी.टी.' का मतलब चार्ल्स टिम्म्स है या शार्लोट टॉमकिंस।"

जिस पत्र से ये अंश लिए गए हैं, उसमें दो-तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं। पहली बात तो यह है कि उन्होंने अपने पहले पत्र पर जिन अक्षरों से हस्ताक्षर किए थे, वे स्पष्ट रूप से उसी पत्र के शुरुआती अक्षरों से लिखे गए थे, जिसका जिक्र वह कर रही हैं। लगभग इसी समय, अपने परिचित पत्र-व्यवहारियों को वह कभी-कभी खुद को "चार्ल्स थंडर" कहती थीं, अपने पहले नाम और अपने ग्रीक उपनाम के अर्थ को मिलाकर एक तरह का छद्म नाम बना लेती थीं। दूसरी बात, इसमें बनावटी चतुराई का पुट है, जो उस सरल, स्त्रीत्वपूर्ण और गरिमामय पत्र से बिल्कुल अलग है जो उन्होंने लगभग समान परिस्थितियों में तीन साल पहले साउथी को लिखा था। मेरा मानना है कि इस अंतर के दो कारण हैं। साउथी ने उनके पहले पत्र के उत्तर में, उनके स्वभाव के उच्चतर पहलुओं को छूते हुए उनसे यह विचार करने को कहा था कि क्या साहित्य एक महिला के लिए सबसे अच्छा मार्ग है या नहीं। लेकिन जिसे उन्होंने यह पत्र संबोधित किया था, वह स्पष्ट रूप से केवल साहित्यिक आलोचनाओं तक ही सीमित था, इसके अलावा, उनके पत्र-व्यवहार करने वाले व्यक्ति की इस उलझन से उन्हें हास्य का अनुभव हुआ कि वह किसी पुरुष को संबोधित कर रहे हैं या किसी महिला को। वह पुरुष होने की धारणा को बढ़ावा देना चाहती थीं; और, परिणामस्वरूप, संभवतः, उसने अपने भाई की बातचीत की शैली में मौजूद उस चंचलता को अपना लिया होगा, जिससे उसने युवावस्था के बारे में अपनी धारणाएँ प्राप्त की होंगी, जो परिष्कार के मामले में, उन अन्य नमूनों से सुधरने की संभावना नहीं थी जिन्हें उसने देखा था, जैसे कि पादरी जिन्हें उसने बाद में "शर्ली" में चित्रित किया था।

ये पादरी अपने-अपने धर्म के प्रति प्रबल आस्था रखते थे। स्वभाव से ही युद्धप्रिय होने के कारण, पादरी होने के नाते उन्हें अपनी युद्धप्रिय प्रवृत्ति को खुलकर प्रकट करने का पर्याप्त अवसर मिला, जो उनके पेशेवर चरित्र के लिए अच्छा ही था। श्री ब्रोंटे, चर्च और राज्य के प्रति अपने हार्दिक सम्मान के बावजूद, मानसिक स्वतंत्रता का बहुत आदर करते थे; और यद्यपि वे अपने विचारों को छिपाने वाले अंतिम व्यक्ति थे, फिर भी वे अपने से असहमत लोगों के साथ पूर्ण सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखते थे। लेकिन पादरियों का ऐसा नहीं था। असहमति को फूट माना जाता था, और फूट की बाइबिल में निंदा की गई है। पगड़ीधारी सारसेनों की अनुपस्थिति में, उन्होंने वस्त्रधारी

मेथोडिस्टों के विरुद्ध धर्मयुद्ध छेड़ दिया; और इसका परिणाम यह हुआ कि मेथोडिस्टों और बैपटिस्टों ने चर्च का कर देने से इनकार कर दिया। श्रीमती ब्रोंटे उस समय की स्थिति का वर्णन इस प्रकार करती हैं: —

"जब से आप यहाँ आए हैं, लिटिल हॉवर्थ में चर्च के करों को लेकर काफी हलचल मची हुई है। स्कूल के कमरे में हमारी एक जोरदार बैठक हुई। पापा ने अध्यक्षता की, और श्री सी. और श्री डब्ल्यू. ने उनके समर्थकों के रूप में, एक-एक पक्ष का साथ दिया। ज़बरदस्त विरोध हुआ, जिससे श्री सी. का आयरिश खून खौल उठा, और अगर पापा ने उन्हें शांत न किया होता, कुछ समझाकर और कुछ मजबूर करके, तो वे असंतुष्टों को उनकी औकात दिखा देते—यह एक स्कॉटिश कहावत है, जिसका अर्थ मैं आपको बाद में समझाऊँगा। उन्होंने और श्री डब्ल्यू. दोनों ने उस समय अपना गुस्सा दबा लिया, लेकिन यह आगे चलकर दुगनी ताकत से फूट पड़ा। पिछले रविवार को असहमति और उसके परिणामों पर दो प्रवचन हुए—एक दोपहर में श्री डब्ल्यू. ने और एक शाम को श्री सी. ने। सभी असंतुष्टों को आने और सुनने के लिए आमंत्रित किया गया था, और वे वास्तव में अपने चैपल बंद करके एक साथ आए; बेशक चर्च भीड़ बहुत थी। श्री डब्ल्यू ने एक शानदार, प्रभावशाली, उच्च-चर्च, प्रेरितिक उत्तराधिकार का प्रवचन दिया, जिसमें उन्होंने असंतुष्टों पर निडरता और दृढ़ता से प्रहार किया। मुझे लगा कि उन्हें अभी के लिए काफी मिल गया है, लेकिन शाम को उनके गले में जो खुराक डाली गई, उसके सामने वह कुछ भी नहीं था। श्री सी ने पिछले रविवार शाम को हॉवर्थ के मंच से जो भाषण दिया, उससे अधिक तीक्ष्ण, चतुर, साहसी और हृदयस्पर्शी भाषण मैंने कभी नहीं सुना। उन्होंने बड़बड़ाया नहीं; उन्होंने पाखंड नहीं किया; उन्होंने शिकायत नहीं की; उन्होंने हँसी नहीं उड़ाई; वे बस खड़े हुए और उस व्यक्ति के साहस के साथ बोले जो अपनी कही हुई बातों की सच्चाई से प्रभावित था, जिसे अपने शत्रुओं का कोई भय नहीं था और परिणामों का कोई डर नहीं था। उनका प्रवचन एक घंटे तक चला, फिर भी मुझे उसके समाप्त होने पर दुख हुआ। मैं यह नहीं कहता कि मैं उनसे या श्री डब्ल्यू से, उनके सभी या आधे विचारों से सहमत हूँ। मैं उन्हें कट्टरपंथी, असहिष्णु और सामान्य ज्ञान के आधार पर यह पूरी तरह से अनुचित है। मेरा अंतरात्मा मुझे न तो पुसेयवादी और न ही हुकवादी बनने देता है; लेकिन अगर मैं एक डिसेंटर होता, तो मैं अपने धर्म और उसके शिक्षकों पर उनके कठोर, कड़वे हमले के लिए दोनों सज्जनों को लात मारने या कोड़े मारने का पहला मौका ज़रूर तलाशता।

लेकिन इन सबके बावजूद, मैं उस महान ईमानदारी की प्रशंसा करता हूँ जिसने इतने शक्तिशाली विरोधी के खिलाफ इतने निडर विरोध को प्रेरित किया।

"पुनश्च: श्री डब्ल्यू ने कीघली मैकेनिक्स संस्थान में एक और व्याख्यान दिया है, और पापा ने भी एक व्याख्यान दिया है; दोनों की अखबारों में बहुत प्रशंसा की गई है, और यह आश्चर्य की बात है कि दलदलों और पहाड़ों के बीच बसे हॉवर्थ गांव से, जिसे कुछ समय पहले तक अर्ध-बर्बर अवस्था में माना जाता था, इस तरह की बौद्धिक प्रतिभा का प्रदर्शन हो रहा है। अखबार के शब्द यही हैं।"

बाह्य रूप से घटनाहीन प्रतीत होने वाले इस वर्ष का विवरण पूरा करने के लिए, मैं मुझे सौंपे गए पत्रों से कुछ और अंश जोड़ सकता हूँ।

"15 मई, 1840।"

"किसी ऐसे पुरुष से विवाह करने के लिए अत्यधिक प्रेरित न हों जिसका आप कभी सम्मान न कर सकें—मैं प्रेम की बात नहीं कर रही; क्योंकि मेरा मानना है कि यदि आप विवाह से पहले किसी व्यक्ति का सम्मान कर सकते हैं, तो विवाह के बाद कम से कम मध्यम प्रेम तो अवश्य आ जाएगा; और तीव्र जुनून की बात करें तो, मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह कोई वांछनीय भावना नहीं है। पहली बात तो यह है कि इसका प्रतिफल शायद ही कभी मिलता है; और दूसरी बात, यदि मिल भी जाए, तो वह भावना केवल अस्थायी होगी: यह हनीमून तक ही रहेगी, और फिर शायद घृणा या उदासीनता में बदल जाएगी, जो शायद घृणा से भी बदतर हो सकती है। निश्चित रूप से पुरुष के मामले में यही होगा; और स्त्री के मामले में—ईश्वर ही उसकी मदद करे, यदि उसे अकेले ही जुनून से प्रेम करने के लिए छोड़ दिया जाए।"

मुझे लगभग पूरा यकीन है कि मैं कभी शादी नहीं करूँगी। मेरा तर्क यही कहता है, और मैं भावनाओं की इतनी गुलाम भी नहीं हूँ कि कभी-कभी मुझे उसकी आवाज़ सुनाई न दे।

2 जून, 1840।

"एम. अभी तक हॉवर्थ नहीं आई हैं; लेकिन वह इस शर्त पर आ रही हैं कि मैं पहले वहाँ जाकर कुछ दिन रुकूँ। अगर सब ठीक रहा, तो मैं अगले बुधवार को जाऊँगा। मैं शुक्रवार या शनिवार तक जी--- में रुक सकता हूँ, और अगले सप्ताह के शुरुआती दिनों में आपके साथ रहूँगा, अगर आप मुझे स्वीकार करें— यह आखिरी वाक्य तो बेतुका है, क्योंकि जैसे मुझे आपसे मिलकर खुशी होगी, वैसे ही मुझे पता है

कि आपको भी मुझसे मिलकर खुशी होगी। इस व्यवस्था में ज़्यादा समय नहीं मिलेगा, लेकिन सभी परिस्थितियों को देखते हुए यही एकमात्र व्यावहारिक व्यवस्था है जो मैं कर सकता हूँ। मुझे दो-तीन दिन से ज़्यादा रुकने के लिए ज़ोर न दें, क्योंकि मुझे मना करना पड़ेगा। मेरा इरादा कीघली तक पैदल जाने का है, वहाँ से बी--- तक कोच लेने का, फिर किसी से अपना बक्सा उठवाने का, और बाकी का रास्ता जी-- तक पैदल चलने का। अगर मैं ऐसा कर पाया, तो मुझे लगता है कि मैं बहुत अच्छे से कर लूँगा। मैं लगभग पाँच बजे तक बी--- पहुँच जाऊँगा, और फिर शाम की ठंडक में पैदल चल सकूँगा। मैंने पूरी व्यवस्था बता दी है।” मुझे आप दोनों से मिलने की बहुत तीव्र इच्छा है। अलविदा।

सी. बी.

सी. बी.

सी. बी.

सी. बी.

"यदि आपके पास कोई बेहतर योजना है तो मैं उस पर विचार करने के लिए तैयार हूं, बशर्ते आपकी योजना व्यावहारिक हो।"

20 अगस्त, 1840।

“क्या आपने हाल ही में मिस एच. को देखा है? काश वे, या कोई और, मुझे नौकरी दिलवा देते। मैंने अनगिनत विज्ञापनों के जवाब दिए हैं, लेकिन मेरे आवेदनों को कोई सफलता नहीं मिली है।”

मुझे जी से फ्रेंच किताबों का एक और बंडल मिला है, जिसमें चालीस से अधिक खंड हैं। मैंने लगभग आधी पढ़ ली हैं। बाकी किताबों की तरह ही ये भी चतुर, शरारती, कुतर्कपूर्ण और अनैतिक हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि इनसे फ्रांस और पेरिस का पूरा अंदाजा लग जाता है, और ये फ्रेंच बातचीत का सबसे अच्छा विकल्प हैं जो मुझे अब तक मिला है।

“मुझे आपसे और कुछ नहीं कहना, क्योंकि मेरा मूड कुछ अजीब सा है। कृपया मुझे इस पत्र के लिए क्षमा करें, यह आपके पत्र जितना लंबा नहीं है। मैंने आपको जल्दी इसलिए लिखा है ताकि आप डाकिया का इंतज़ार व्यर्थ न करें। इस लिखावट को सुलेख की एक अनोखी कृति के रूप में संभाल कर रखें—मुझे लगता है यह बेहद खूबसूरत है—चमकीले काले धब्बे और बिल्कुल अपठनीय अक्षर। ‘कैलिबन’।”

"'हवा जहाँ चाहे वहाँ बहती है। तुम उसकी आवाज़ सुनते हो, पर यह नहीं बता सकते कि वह कहाँ से आती है और कहाँ जाती है।' मेरा मानना है कि यह बाइबल का वचन है, हालाँकि किस अध्याय या पुस्तक में है, या यह सही उद्धृत है या नहीं, यह मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता। फिर भी, मुझे ई. नाम की एक युवती को पत्र लिखना चाहिए, जिससे मेरी जान-पहचान कभी 'जीवन के शुरुआती दिनों में, जब मेरा मन जवान था' हुई थी। इस युवती ने मुझसे कुछ समय पहले पत्र लिखने की इच्छा जताई थी, हालाँकि मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं था— मैं इसे दिन-ब-दिन टालता रहा, यहाँ तक कि अंत में, इस डर से कि वह 'अपने देवताओं की कसम खाकर मुझे कोसेंगी', मुझे मजबूर होकर बैठना पड़ा और कुछ पंक्तियाँ लिखनी पड़ीं, जिसे वह चाहे पत्र कहे या न कहे। अब अगर युवती इस रचना में कोई अर्थपूर्ण बात की उम्मीद करती है, तो वह बुरी तरह निराश होगी। मैं उसके लिए सालमगंडी का व्यंजन बनाऊँगा — मैं एक हैश पकाऊँगा— एक स्टू बनाऊँगा— एक आमलेट बनाऊँगा। फ्रांसीसी शैली का सूफ़्ले बनाइए और उसे मेरी शुभकामनाओं सहित भेज दीजिए। हालाँकि, मुझे लगता है कि यहूदिया की पहाड़ियों में हवा बहुत तेज़ चलती है, लेकिन ब्रिटिश पैरिश के निचले मैदानी इलाकों में इसका कोई नामोनिशान नहीं है। इस हवा ने मेरे ज्ञान भंडार पर वही प्रभाव डाला है जो किसी अन्य दो पैरों वाले प्राणी पर उस्कबाघ की लहर का होता है। मुझे सब कुछ गुलाबी दिखाई दे रहा है और अगर मुझे नाचना आता तो मेरा बहुत मन करता। मुझे लगता है कि मैं सूअर या गधे जैसा हो गया हूँ - ये दोनों ही जानवर तेज़ हवा से बहुत प्रभावित होते हैं। हवा किस दिशा से बह रही है, यह मैं नहीं बता सकता, क्योंकि मैं जीवन भर कभी नहीं जान पाया; लेकिन मैं यह जानना चाहता हूँ कि ब्रिडलिंगटन खाड़ी का बड़ा शराब बनाने का टब कैसे काम करता है और इस समय लहरों पर किस तरह का खमीर वाला झाग उठ रहा है।

ऐसा लगता है कि श्रीमती बी. नाम की एक महिला को एक शिक्षक की आवश्यकता है। काश वह मुझे अपना शिक्षक बना लेतीं; और मैंने मिस डब्ल्यू. को यह बात बताने के लिए पत्र भी लिखा है। सचमुच, यहाँ घर पर रहना, अपनी मनमर्जी से कुछ भी करने की पूरी आज़ादी होना कितना सुखद है। लेकिन मुझे टिड्डों और चींटियों के बारे में एक पुरानी घिसी-पिटी कहानी याद आ रही है, जिसे ईसप नाम के एक घिसे-पिटे बूढ़े धूर्त ने लिखा था; टिड्डे पूरी गर्मी गाते रहे और पूरी सर्दी भूखे मरते रहे।

"मेरा एक दूर का रिश्तेदार, पैट्रिक ब्रैनवेल, लीड्स और मैनचेस्टर रेलमार्ग पर

क्लर्क के रूप में अपनी किस्मत आज़माने निकल पड़ा है। वह एक जंगली, घुमक्कड़, साहसिक, रोमांटिक और वीर योद्धा जैसी भूमिका में है। लीड्स और मैनचेस्टर - वे कहाँ हैं? जंगल में बसे शहर, जैसे तदमोर, उर्फ पल्मायरा - क्या वे नहीं हैं?”

श्री डब्ल्यू के बारे में एक छोटी सी बात मुझे हाल ही में पता चली है, जिससे उनके चरित्र के अच्छे पहलू की झलक मिलती है। पिछली शनिवार रात वह पापा के साथ बैठक में एक घंटा बैठे थे; और जब वह जाने लगे, तो मैंने पापा को उनसे कहते सुना, 'क्या हुआ? तुम आज रात बहुत उदास लग रहे हो।' 'ओह, मुझे नहीं पता। मैं एक गरीब बच्ची को देखने गया था, जो, मुझे अफसोस है, मर रही है।' 'सच में; उसका नाम क्या है?' 'सुसान ब्लैंड, अधीक्षक जॉन ब्लैंड की बेटी।' सुसान ब्लैंड मेरी संडे स्कूल की सबसे बड़ी और सबसे अच्छी छात्रा है; और जब मैंने यह सुना, तो मैंने सोचा कि मैं जितनी जल्दी हो सके उससे मिलने जाऊँगा। मैं सोमवार दोपहर को गया, और उसे उस 'नदी' की ओर जाते हुए पाया जहाँ से कोई यात्री वापस नहीं लौटता। उसके साथ कुछ देर बैठने के बाद, मैंने उसकी माँ से पूछा कि क्या उन्हें लगता है कि थोड़ी सी पोर्ट वाइन उसे ठीक कर देगी। उन्होंने जवाब दिया कि डॉक्टर ने इसकी सलाह दी है, और जब श्री... डब्ल्यू. आखिरी बार जब वहाँ थे, तो वे उनके लिए शराब की एक बोतल और मुरब्बों का एक जार लाए थे। उन्होंने आगे कहा कि वे हमेशा गरीबों के प्रति दयालु रहते थे और उनमें अपार सहानुभूति और करुणा झलकती थी। बेशक, उनके चरित्र में कुछ कमियाँ हैं, लेकिन उनमें अच्छे गुण भी हैं... ईश्वर उन्हें आशीर्वाद दे! मुझे आश्चर्य होता है कि उनके जैसे गुणों वाले किसी व्यक्ति में ये दोष न हों। मैं उनके कई गलत कामों और कमजोरियों को जानती हूँ; फिर भी, जहाँ मैं हूँ, वहाँ उन्हें हमेशा बचाव करने वाला ही मिलेगा, न कि आरोप लगाने वाला। बेशक, मेरी राय उनके चरित्र को तय करने में बहुत कम भूमिका निभाएगी; तो क्या हुआ? लोगों को अपनी क्षमता के अनुसार सही काम करना चाहिए। इन सब बातों से यह न समझें कि श्री डब्ल्यू. और मेरे बीच बहुत सौहार्दपूर्ण संबंध हैं; ऐसा बिल्कुल नहीं है। हम एक-दूसरे से दूर, ठंडे और संकोची हैं। हम बहुत कम बोलते हैं; और जब बोलते भी हैं, तो केवल मामूली और सामान्य बातें ही करते हैं।

इस पत्र में जिस श्रीमती बी. का जिक्र किया गया है, जिन्हें एक गवर्नेंस की जरूरत थी, उन्होंने मिस ब्रोंटे के साथ पत्राचार शुरू किया और उनसे प्राप्त पत्रों से अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने पत्रों की शैली और स्पष्टवादिता की सराहना की, जिनमें

शार्लोट ने उन्हें स्पष्ट किया था कि यदि उन्हें कोई दिखावटी, सुरुचिपूर्ण या फैशनेबल व्यक्ति चाहिए, तो उनकी पत्र-व्यवहार करने वाली महिला इस पद के लिए उपयुक्त नहीं थी। लेकिन श्रीमती बी. चाहती थीं कि उनकी गवर्नेंस संगीत और गायन का प्रशिक्षण दे, जिसके लिए शार्लोट योग्य नहीं थीं; और इसी कारण बातचीत विफल हो गई। लेकिन मिस ब्रोंटे निराशा के बाद हताश होने वाली नहीं थीं। यद्यपि उन्हें निजी गवर्नेंस का जीवन नापसंद था, फिर भी अपने पिता के भरण-पोषण के बोझ को कम करना उनका कर्तव्य था, और यही उनके लिए एकमात्र रास्ता था। इसलिए उन्होंने नए जोश के साथ विज्ञापन और पूछताछ शुरू कर दी।

इसी बीच एक छोटी सी घटना घटी, जिसका वर्णन उनके एक पत्र में किया गया है, जिसे मैं यहाँ प्रस्तुत करूँगा, क्योंकि यह पुरुषों के एक विशेष वर्ग के प्रति उनकी सहज अरुचि को दर्शाता है, जिनके दुर्गुणों को कुछ लोगों का मानना है कि वह उदारतापूर्वक देखती थीं। यह अंश उस दयनीय जोड़े के बारे में वह सब कुछ बताता है जो मेरे उद्देश्य के लिए आवश्यक है।

"आपको श्रीमान और श्रीमती — - याद हैं? श्रीमती — - कुछ दिन पहले यहाँ आई थीं, अपने पति की शराबखोरी, फिजूलखर्ची और अय्याशी की एक बेहद दुख भरी कहानी सुनाते हुए। उन्होंने पापा से सलाह माँगी; उन्होंने जो कुछ कहा, वह उनके सामने बर्बादी के सिवा कुछ नहीं था। उन पर इतना कर्ज था जिसे वे कभी चुका नहीं सकते थे। उन्हें उम्मीद थी कि श्रीमान — - को तुरंत पादरी पद से बर्खास्त कर दिया जाएगा; उन्हें अपने कड़वे अनुभव से पता था कि उनकी बुराइयाँ पूरी तरह से निराशाजनक थीं। वह उनके और उनके बच्चे के साथ क्रूरता से पेश आते थे; और भी बहुत कुछ ऐसा ही करते थे। पापा ने उन्हें सलाह दी कि अगर उनके पास घर हो तो उन्हें हमेशा के लिए छोड़ दें और घर वापस चली जाएँ। उन्होंने कहा कि उन्होंने यही करने का निश्चय कर लिया था; और जैसे ही श्रीमान बी. उन्हें बर्खास्त करेंगे, वह तुरंत उन्हें छोड़ देंगी। उन्होंने उनके प्रति घोर घृणा और तिरस्कार व्यक्त किया, और किसी भी तरह से उनके प्रति सम्मान का कोई भाव नहीं दिखाया। मुझे इस बात पर आश्चर्य नहीं है, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने कभी ऐसे आदमी से शादी क्यों की, जिसके प्रति उनकी भावनाएँ हमेशा से लगभग वैसी ही रही होंगी जैसी अब हैं। मुझे नैतिक रूप से यकीन है कि नहीं एक सभ्य महिला श्रीमान जैसे व्यक्ति के प्रति घृणा के अलावा और कुछ भी महसूस नहीं कर सकती। उनके चरित्र को जानने या संदेह करने

से पहले ही, और उनकी बहुमुखी प्रतिभाओं पर आश्चर्यचकित होते हुए भी, मुझे एक अनियंत्रित स्तर तक घृणा महसूस हुई। मुझे उनसे बात करना, उन्हें देखना भी नापसंद था; हालाँकि मुझे यकीन नहीं था कि इस नापसंदगी का कोई ठोस कारण है, और केवल सहज प्रवृत्ति पर भरोसा करना मुझे बेतुका लगा, इसलिए मैंने इस भावना को यथासंभव छिपाया और दबाया; और हर मौके पर उनके साथ यथासंभव विनम्रता से पेश आई। मैरी की भी ऐसी ही भावना देखकर मैं पहली ही नज़र में दंग रह गई; जब हम उनसे विदा हुए तो उसने कहा, 'वह एक घिनौना आदमी है, शार्लोट!' मैंने सोचा, 'वह सचमुच घिनौना है।'

अध्याय X

मार्च 1841 की शुरुआत में, मिस ब्रोंटे को गवर्नेंस के रूप में अपनी दूसरी और आखिरी नौकरी मिली। इस बार उन्होंने खुद को भाग्यशाली समझा कि उन्हें एक दयालु और मित्रवत परिवार का हिस्सा बनने का मौका मिला। परिवार की मुखिया को वह विशेष रूप से एक मूल्यवान मित्र मानती थीं, जिनकी सलाह ने उनके जीवन के एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम में उनका मार्गदर्शन किया। लेकिन चूंकि उनके पास निश्चित ज्ञान कम था, इसलिए उन्हें अपने खाली समय को सिलाई-कढ़ाई में लगाकर उसे पूरा करना पड़ता था; और कुल मिलाकर उनकी स्थिति एक "बोन" या नर्सरी गवर्नेंस की थी, जिस पर लगातार और कभी न खत्म होने वाली मांगें टिकी रहती थीं। अनिश्चित, फिर भी निरंतर रोजगार का यह विवरण, जो दिन के हर समय दूसरे व्यक्ति की इच्छा के अधीन था, उनके लिए विशेष रूप से कठिन था, जिनका घरेलू जीवन भरपूर फुर्सत से भरा रहा था। वह कभी भी खाली नहीं बैठीं, लेकिन अधिकांश लोगों

के दिन को बनाने वाली छोटी-मोटी बातचीत, योजनाओं, कर्तव्यों, सुख-सुविधाओं आदि की भीड़ से उनका घरेलू जीवन लगभग खाली था। इससे उन्हें भावनाओं और कल्पनाओं के लंबे और गहन इतिहास को समझने का अवसर मिला, जिसके लिए दूसरों के पास, भले ही यह अजीब लगे, शायद ही कभी समय होता है। इसी कारण यह अपरिहार्य हो गया कि बाद में, उनके बहुत छोटे से करियर में, उनकी भावनाओं की तीव्रता ने उनके शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया। "किस करने" की आदत, जो उनके विकास के साथ बढ़ी और उनकी ताकत के साथ मजबूत हुई, उनके स्वभाव का हिस्सा बन गई थी। फिर भी, उनकी सबसे मजबूत और विशिष्ट क्षमताओं का उपयोग करना अब असंभव था। वह (जैसा कि वह मिस डब्ल्यू के यहाँ थीं) दिन भर के कामों के बीच यह महसूस नहीं कर सकती थीं कि शाम होने पर वह खुद को अधिक अनुकूल तरीकों से व्यस्त रख सकेंगी। निस्संदेह, जो भी गवर्नेंस का करियर अपनाता है, उसे बहुत कुछ छोड़ना पड़ता है; निस्संदेह, यह हमेशा त्याग का जीवन होता है; लेकिन शार्लोट ब्रोंटे के लिए यह अपनी सभी क्षमताओं को उस दिशा में मोड़ने का निरंतर प्रयास था जिसके लिए उनका पूरा पिछला जीवन उन्हें अनुपयुक्त बना चुका था। इसके अलावा, छोटी ब्रोंटे बहनों का पालन-पोषण माँ के बिना हुआ था; बचपन की उमंग और चंचलता से अनभिज्ञ होने के कारण—स्वयं कभी स्नेह या प्यार का अनुभव न करने के कारण—वे शैशवावस्था के मूल स्वभाव से ही अनजान थीं, और न ही उसकी मनमोहक विशेषताओं को पहचानना जानती थीं। उनके लिए बच्चे मानवता की एक अपूरणीय आवश्यकता थे; उनका उनसे कभी किसी और रूप में संपर्क नहीं हुआ था। वर्षों बाद, जब मिस ब्रोंटे हमारे साथ रहने आईं, तो उन्होंने हमारी छोटी बच्चियों को निरंतर देखा; और मैं उन्हें यह समझाने में असमर्थ रही कि वे केवल अच्छे संस्कार वाले बच्चों के औसत नमूने मात्र थीं। दूसरों के प्रति उनकी सहानुभूति, जानवरों के प्रति उनकी दया या उनके निस्वार्थ भाव को देखकर वे आश्चर्यचकित और भावुक हो जाती थीं: और जब भी उनकी असाधारण उत्कृष्टता के मुद्दे पर हमारी राय अलग होती, तो वे लगातार यही कहतीं कि वे सही हैं और मैं गलत। निम्नलिखित पत्रों को पढ़ते समय इन सभी बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है। और यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए - उन लोगों द्वारा जो उनके बाद जीवित रहते हुए, उनके जीवन को अपने अवलोकन के स्थान से देखते हैं - कि किसी भी अरुचि या पीड़ा ने उन्हें कभी भी किसी ऐसे कार्य से पीछे हटने के लिए प्रेरित नहीं किया जिसे वह अपना

कर्तव्य मानती थीं।

3 मार्च, 1841।

मैंने कुछ समय पहले कहा था कि मैं नौकरी पाना चाहता हूँ, और जब मैंने ऐसा कहा था तब मेरा इरादा पक्का था। मुझे लगा कि चाहे कितनी भी बार निराशा हाथ लगे, मैं अपने प्रयास नहीं छोड़ूंगा। दो-तीन बार बुरी तरह असफल होने के बाद, पत्राचार और साक्षात्कार के रूप में बहुत सारी परेशानियों के बाद, आखिरकार मुझे सफलता मिल गई है, और मैं अपनी नई जगह पर अच्छी तरह से स्थापित हो गया हूँ।

* * * * *

"घर बहुत बड़ा नहीं है, लेकिन बेहद आरामदायक और सुव्यवस्थित है; ज़मीन सुंदर और विस्तृत है। इस जगह को लेते समय मैंने वेतन में बहुत बड़ा त्याग किया है, आराम की उम्मीद में — इस शब्द से मेरा तात्पर्य अच्छे खान-पान, गर्म आग या नरम बिस्तर से नहीं है, बल्कि हंसमुख चेहरों और ऐसे लोगों की संगति से है जिनके मन और हृदय किसी सीसे की खान या संगमरमर की खदान से नहीं निकले हों। मेरा वेतन वास्तव में 16 पाउंड प्रति वर्ष से अधिक नहीं है, हालांकि नाममात्र 20 पाउंड है, लेकिन कपड़े धोने का खर्च इसमें से काट लिया जाएगा। मेरे दो विद्यार्थी हैं, एक आठ साल की लड़की और एक छह साल का लड़का। जहाँ तक मेरे मालिकों की बात है, आप मुझसे उनके चरित्र के बारे में ज्यादा कुछ कहने की उम्मीद नहीं करेंगे, क्योंकि मैं आपको बता रही हूँ कि मैं यहाँ कल ही आई हूँ। मुझमें किसी व्यक्ति के स्वभाव को पहली नज़र में बताने की क्षमता नहीं है। किसी के चरित्र पर टिप्पणी करने से पहले, मुझे उसे विभिन्न दृष्टिकोणों से देखना होगा। इसलिए मैं बस इतना ही कह सकती हूँ कि श्रीमान और श्रीमती — मुझे तो ये लोग अच्छे स्वभाव के लगते हैं। अभी तक मुझे इनके प्रति किसी तरह की संवेदनहीनता या शिष्टाचार की कमी की शिकायत नहीं हुई है। मेरे विद्यार्थी थोड़े चंचल और अनियंत्रित हैं, लेकिन स्वभाव से अच्छे हैं। काश अगली बार जब मैं आपको लिखूँ तो मैं यही कह सकूँ। मेरी दिली इच्छा और प्रयास है कि मैं उन्हें प्रसन्न रखूँ। अगर मुझे यह महसूस हो कि मैं उन्हें संतुष्टि दे रही हूँ, और साथ ही मैं स्वस्थ भी रहूँ, तो मुझे उम्मीद है कि मैं कुछ हद तक खुश रहूँगी। लेकिन मेरे सिवा कोई नहीं बता सकता कि एक गवर्नेस का काम मेरे लिए कितना कठिन है - क्योंकि मेरे सिवा कोई नहीं जानता कि मेरा पूरा मन और स्वभाव इस काम के प्रति

कितना अरुचिपूर्ण है। ऐसा मत सोचिए कि मैं इसके लिए खुद को दोषी नहीं मानती, या इस भावना को दूर करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ती। मेरी कुछ सबसे बड़ी कठिनाइयाँ उन चीजों में हैं जो आपको अपेक्षाकृत मामूली लगेंगी। मुझे बच्चों की अभद्र और बेरुखी भरी हरकतों को रोकना बहुत मुश्किल लगता है। मुझे नौकरों या मालकिन से अपनी कोई भी इच्छा माँगना बहुत कठिन लगता है, चाहे वह कितनी भी हो। मेरे लिए सबसे बड़ी असुविधा सहना भी कम कष्टदायी है। इसे हटवाने के लिए रसोई में जाना पड़ा। मैं मूर्ख हूँ। भगवान ही जानता है कि मैं कुछ नहीं कर सकता!

"क्या आप मुझे बता सकती हैं कि क्या गवर्नेंस के लिए अपनी सहेलियों को मिलने के लिए बुलाना अनुचित माना जाता है? मेरा मतलब वहाँ रुकने का नहीं है, बस एक-दो घंटे के लिए। अगर यह घोर राजद्रोह नहीं है, तो मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि किसी न किसी तरह मुझे आपसे मिलने का मौका दें। फिर भी मुझे लगता है कि मैं एक बहुत ही मूर्खतापूर्ण और लगभग असंभव माँग कर रही हूँ; जबकि यह जगह B से केवल चार मील दूर है!"

* * * * *

21 मार्च।

आपके हार्दिक पत्र का संक्षिप्त उत्तर देने के लिए क्षमा करें; क्योंकि मेरा समय पूरी तरह से व्यस्त है। श्रीमती — - मुझसे बहुत सिलाई की उम्मीद कर रही थीं। बच्चों की वजह से, जिन्हें बहुत ध्यान देने की आवश्यकता होती है, मैं दिन में ज्यादा सिलाई नहीं कर सकती। इसलिए मुझे शाम का समय ही इस काम के लिए देना पड़ता है। मुझे अक्सर पत्र लिखें; लंबे पत्र। इससे हम दोनों को लाभ होगा। यह जगह — - से कहीं बेहतर है, लेकिन भगवान जानता है, मेरे पास इतना काम है कि मैं अपना मन बहला नहीं सकती। आपकी बातों से मुझे थोड़ी तसल्ली मिली है। काश मैं हमेशा आपकी सलाह मान पाती। मुझे घर की बहुत याद आती है। मुझे श्री — - बहुत पसंद हैं। बच्चों को बहुत लाड़-प्यार मिलता है, और इसलिए कभी-कभी उन्हें संभालना मुश्किल हो जाता है। मुझसे मिलने जरूर आइए; अगर यह शिष्टाचार का उल्लंघन हो, तो कोई बात नहीं। अगर आप सिर्फ एक घंटा भी रुक सकती हैं, तो जरूर आइए। मेरे आपको छोड़ने के बारे में और बात मत कीजिए; मेरी जान, मैं ऐसा नहीं कर सकती। मुझे लगता है कि इस थका देने वाली दुनिया में सहानुभूति के बिना आगे बढ़ना मेरे

स्वभाव में नहीं है। और किसी न किसी तरफ से लगाव होना स्वाभाविक है; और यह बहुत कम ही देखने को मिलता है। एक बार हासिल हो जाने पर इसे यूं ही गंवाना बहुत बड़ी गलती होगी।

मिस ब्रोंटे को अपने नए घर में आए अभी कुछ ही सप्ताह हुए थे कि उन्हें अपने मालिकों के उदार आतिथ्य सत्कार का प्रमाण मिल गया। श्रीमान - - ने उनके पिता को पत्र लिखकर उन्हें अपनी बेटी के नए घर से परिचित होने के लिए एक सप्ताह उनके साथ बिताने का आग्रह किया; और श्रीमती - - ने तब गहरा खेद व्यक्त किया जब मिस ब्रोंटे की एक सहेली घर के बाहर पत्र या पार्सल छोड़ने आई, लेकिन अंदर नहीं आई। इस प्रकार उन्हें पता चला कि उनके सभी मित्र निःसंकोच उनसे मिलने आ सकते हैं, और उनके पिता का विशेष रूप से गर्मजोशी से स्वागत किया जाएगा। उन्होंने इस दयालुता के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपनी सहेली को पत्र लिखकर उनसे मिलने आने का आग्रह किया; और उनकी सहेली ने ऐसा ही किया।

जून, 1841।

“मुझे यकीन है कि आप शायद ही सोच पाएंगे कि मुझे एक नोट लिखने के लिए पंद्रह मिनट का समय भी नहीं मिल पाता; लेकिन यही सच है; और जब कोई नोट लिखा जाता है, तो उसे डाकघर तक एक मील ले जाना पड़ता है, जिसमें लगभग एक घंटा लग जाता है, जो दिन का काफी बड़ा हिस्सा होता है। श्रीमान और श्रीमती — - एक सप्ताह से बाहर हैं। मुझे आज सुबह उनसे खबर मिली। उनके लौटने का कोई निश्चित समय नहीं है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि इसमें ज्यादा देरी नहीं होगी, वरना मैं इस छुट्टी में ऐनी से मिलने का मौका चूक जाऊंगी। मुझे पता चला है कि वह पिछले बुधवार को घर आई थी, और उसे केवल तीन सप्ताह की छुट्टी मिलेगी, क्योंकि जिस परिवार के साथ वह है, वे स्कारबोरो जा रहे हैं। मैं उससे मिलना चाहती हूं, ताकि मैं खुद उसकी सेहत का जायजा ले सकूं। मैं किसी और की रिपोर्ट पर भरोसा नहीं कर सकती, क्योंकि किसी की भी जांच-पड़ताल उतनी बारीकी से नहीं होती। मैं चाहती थी कि आप भी उससे मिलें। नौकरों और बच्चों के साथ मेरा अब तक का व्यवहार बहुत अच्छा रहा है; फिर भी यह नीरस और एकाकी काम है। आप भी मेरी तरह समझ सकते हैं कि अकेले रहने का एहसास कैसा होता है।” बिना किसी साथी के।"

यह लिखने के कुछ ही समय बाद, श्रीमान और श्रीमती — - वापस आ गए, जिससे शार्लोट को ऐनी की देखभाल करने का समय मिल गया। ऐनी की सेहत, जैसा

कि उसने अपनी गहरी चिंता के साथ पाया, बहुत खराब थी। वह अपनी इस छोटी बहन, जो उन सबमें सबसे छोटी थी, की देखभाल और परवरिश के लिए क्या कर सकती थी? उसकी चिंता ने एक बार फिर स्कूल चलाने का विचार जगा दिया। अगर इस तरह वे तीनों एक साथ रह सकें और अपना गुजारा कर सकें, तो शायद सब ठीक हो जाए। उन्हें अपना कुछ समय मिल जाएगा, जिसमें वे अपने साहित्यिक करियर को फिर से शुरू करने की कोशिश कर सकेंगी, जो तमाम मुश्किलों के बावजूद कभी भी अंतिम लक्ष्य के रूप में नहीं छोड़ा गया था; लेकिन शार्लोट के लिए सबसे मजबूत प्रेरणा यह विश्वास था कि ऐनी की सेहत इतनी नाजुक थी कि उसे ऐसी देखभाल की जरूरत थी जो उसकी बहन के अलावा कोई और नहीं दे सकता था। इस प्रकार उसने उन ग्रीष्मकालीन अवकाशों के दौरान लिखा।

हॉवर्थ, 18 जुलाई, 1841।

"जिस गुरुवार को आपने आने का वादा किया था, उस दिन हम आपका लंबे समय से बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। खिड़की से देखते-देखते मेरी आँखें थक गईं, कभी हाथ में चश्मा तो कभी नाक पर चश्मा। खैर, इसमें आपकी कोई गलती नहीं है... और जहाँ तक निराशा की बात है, तो जीवन में कभी न कभी तो हर किसी को निराशा का सामना करना ही पड़ता है। लेकिन जो सौ बातें मुझे आपसे कहनी थीं, वे अब भुला दी जाएँगी और कभी कही ही नहीं जाएँगी। इस घर में एक परियोजना पनप रही है, जिसके बारे में एमिली और मैं दोनों ही आपसे चर्चा करना चाहते थे। यह परियोजना अभी शुरुआती अवस्था में है, बस अपने खोल से झाँक रही है; और क्या यह कभी एक सफल और पूर्ण विकसित मुर्गी बनकर उभरेगी, या फिर चहचहाने से पहले ही मुरझाकर मर जाएगी, यह उन बातों में से एक है जिनका भविष्यवाणियाँ धुंधली सी ही बताती हैं। अब, इस सब प्रतीकात्मक रहस्य से भ्रमित मत होइए। मैं एक साधारण और रोज़मर्रा की घटना की बात कर रहा हूँ, हालाँकि, डेल्फ़िक शैली में, मैं जानकारी को अंडों, मुर्गियों आदि से संबंधित अलंकारिक भाषा में लपेट रहा हूँ।" इत्यादि। मुद्दे पर आते हैं: पापा और आंटी कभी-कभी हम तीनों (यानी एमिली, ऐनी और मैं) के स्कूल शुरू करने की बात करते हैं! आप जानते हैं, मैंने कई बार कहा है कि मैं ऐसा चाहती हूँ; लेकिन मुझे कभी समझ नहीं आया कि इस तरह के निवेश के लिए पूंजी कहाँ से आएगी। मुझे अच्छी तरह पता था कि आंटी के पास पैसा है, लेकिन मुझे हमेशा लगता था कि वह इस काम के लिए कर्ज देने वाली आखिरी व्यक्ति होंगी।

हालांकि, उन्होंने कर्ज देने की पेशकश की है, या यूँ कहें कि संकेत दिया है कि अगर छात्र मिल जाएँ, कोई उपयुक्त जगह मिल जाए, आदि तो वह शायद कर्ज देंगी। यह बहुत अच्छा लगता है, लेकिन फिर भी कुछ बातें हैं जिन पर विचार करने से यह योजना थोड़ी धूमिल हो जाती है। मुझे नहीं लगता कि आंटी इस काम में 150 पाउंड से ज्यादा लगाएंगी; और क्या सिर्फ इतनी पूंजी से एक अच्छा (दिखावटी नहीं) स्कूल खोलना और घर का खर्च चलाना संभव होगा? अगर आपको लगता है कि आपकी बहन इसका जवाब दे सकती है, तो उससे यह सवाल पूछें; अगर नहीं, तो कुछ न कहें। इस विषय पर कुछ कहना चाहूँगा। कर्ज़ लेने की बात करें तो, यह एक ऐसी बात है जिसे हम एक पल के लिए भी स्वीकार नहीं कर सकते। हमें इस बात की परवाह नहीं है कि हमारी शुरुआत कितनी मामूली या कितनी साधारण हो, बस यह ठोस आधार पर होनी चाहिए और इसकी नींव मज़बूत होनी चाहिए। स्कूल खोलने के लिए सभी संभावित और असंभव स्थानों के बारे में सोचते हुए, मैंने बर्लिंगटन, या बल्कि बर्लिंगटन के आसपास के इलाके के बारे में सोचा है। क्या आपको याद है कि वहाँ मिस - - के स्कूल के अलावा कोई और स्कूल था? यह बेशक एक बिल्कुल कच्चा और बेतरतीब विचार है। इसके अव्यवहारिक होने के सौ कारण हैं। वहाँ हमारा कोई संबंध या जान-पहचान नहीं है; यह घर से बहुत दूर है, इत्यादि। फिर भी, मुझे लगता है कि ईस्ट राइडिंग में वेस्ट राइडिंग की तुलना में कम लोग हैं। किसी भी स्थान का निर्णय लेने से पहले बहुत पूछताछ और विचार-विमर्श आवश्यक होगा; और मुझे डर है कि किसी भी योजना को लागू करने में काफी समय लग जाएगा... कृपया जितनी जल्दी हो सके लिखें। मैं अपनी वर्तमान स्थिति तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक कि मेरी भविष्य की संभावनाएं अधिक स्थिर और निश्चित न हो जाएं।

दो सप्ताह बाद, हम देखते हैं कि वह बीज बोया जा चुका है जो आगे चलकर एक ऐसी योजना में तब्दील होगा जो उसके भविष्य के जीवन को भौतिक रूप से प्रभावित करेगी।

7 अगस्त, 1841।

"यह शनिवार की शाम है; मैंने बच्चों को सुला दिया है; अब मैं बैठकर आपके पत्र का उत्तर देने जा रही हूँ। मैं फिर से अकेली हूँ — गृहणी और देखभाल करने वाली — क्योंकि श्रीमान और श्रीमती — — — में ठहरे हुए हैं। सच कहूँ तो, हालाँकि उनके जाने के बाद मैं अकेली हूँ, फिर भी यह मेरे समय का सबसे सुखद हिस्सा है। बच्चे

अच्छे से संभाले हुए हैं, नौकर-चाकर बहुत चौकस और मेरा ध्यान रखते हैं, और मालिक-मालकिन की कभी-कभार अनुपस्थिति मुझे हमेशा खुशमिजाज और बातूनी दिखने के कर्तव्य से मुक्त कर देती है। ऐसा लगता है कि मार्था — — बड़े लाभों का आनंद ले रही हैं; मैरी भी, क्योंकि आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वह अपने भाई के साथ तुरंत महाद्वीप लौट रही हैं; हालाँकि, वहाँ रहने के लिए नहीं, बल्कि एक महीने के भ्रमण और मनोरंजन के लिए। मुझे मैरी का एक लंबा पत्र मिला है, और एक पैकेट जिसमें एक बहुत ही सुंदर काला रेशमी स्कार्फ और ब्रुसेल्स से खरीदे गए सुंदर चमड़े के दस्तानों की एक जोड़ी उपहार में थी। बेशक, मैं एक तरह से उपहार से खुश थी — खुश थी कि वे मुझे ये उपहार देंगे। मुझे यूरोप की सबसे शानदार राजधानियों में से एक के रोमांच के बीच इतनी दूर सोचो; फिर भी इसे स्वीकार करना कष्टदायक लगा। मुझे लगता है कि मैरी और मार्था के पास अपने खर्चों के लिए पर्याप्त जेब खर्च से ज़्यादा पैसे नहीं होंगे। काश उन्होंने अपना स्नेह किसी कम खर्चीले उपहार से दिखाया होता। मैरी के पत्रों में उन चित्रों और गिरजाघरों का ज़िक्र था जो उसने देखे थे - सबसे सुंदर चित्र, सबसे पूजनीय गिरजाघर। मुझे मुश्किल से पता है कि उसका पत्र पढ़ते समय मेरे गले में क्या उमड़ आया: संयम और निरंतर काम के लिए ऐसी तीव्र बेचैनी; पंखों की ऐसी प्रबल इच्छा - ऐसे पंख जो धन से मिल सकते हैं; देखने, जानने, सीखने की ऐसी तीव्र प्यास; कुछ आंतरिक क्षण भर के लिए शारीरिक रूप से फैल गया। मैं अप्रयुक्त क्षमताओं के प्रति सचेत होकर व्याकुल हो गया, - फिर सब कुछ ढह गया, और मैं निराश हो गया। मेरे प्रिय, मैं यह स्वीकारोक्ति तुम्हारे अलावा किसी और से नहीं करूँगा; और तुमसे, मौखिक रूप से नहीं बल्कि पत्र में। ये विद्रोही और बेतुके भाव केवल क्षणिक थे; मैं मैंने उन्हें पाँच मिनट में शांत कर दिया। मुझे उम्मीद है कि वे दोबारा नहीं उभरेंगे, क्योंकि वे बहुत कष्टदायक थे। जिस परियोजना का मैंने आपसे ज़िक्र किया था, उसके बारे में अभी तक कोई और कदम नहीं उठाया गया है, और शायद अभी नहीं उठाया जाएगा; लेकिन एमिली, ऐनी और मैं इसे ध्यान में रखते हैं। यह हमारा ध्रुव तारा है, और हम निराशा की हर परिस्थिति में इसकी ओर देखते हैं। मुझे शक होने लगा है कि मैं जिस लहजे में लिख रही हूँ, उससे आपको लगेगा कि मैं दुखी हूँ। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है; इसके विपरीत, मैं जानती हूँ कि एक गवर्नेंस के रूप में मेरा पद अनुकूल है। जो बात मुझे कभी-कभी परेशान करती है और सताती है, वह यह विश्वास है कि मुझमें अपने पेशे के लिए स्वाभाविक

प्रतिभा नहीं है। अगर केवल पढ़ाना ही आवश्यक होता, तो यह सहज और आसान होता; लेकिन दूसरों के घरों में रहना - अपने वास्तविक चरित्र से अलगाव - एक ठंडा, कठोर, उदासीन बाहरी रूप अपनाना, यही कष्टदायक है... आप अभी हमारी स्कूल परियोजना का ज़िक्र नहीं करेंगी। जो परियोजना शुरू ही नहीं हुई है, वह हमेशा अनिश्चित होती है। मुझे अक्सर लिखना, मेरी प्यारी नेल; तुम जानती हो कि तुम पत्रों का बहुत महत्व है। आपका 'प्यारा बच्चा' (जैसा आप मुझे पुकारना चाहें),

सी. बी.

नोट: मैं स्वस्थ हूँ; ऐसा मत सोचो कि मैं अस्वस्थ हूँ, लेकिन मेरे दिल में एक दर्द है (हालाँकि मैंने इसका ज़िक्र न करने का निश्चय किया था, फिर भी मुझे इसका ज़िक्र करना ही होगा)। यह ऐनी के बारे में है; उसे बहुत कुछ सहना पड़ा है: मुझसे कहीं ज़्यादा। जब भी मैं उसके बारे में सोचती हूँ, तो वह मुझे एक पीड़ित, सताई हुई अजनबी की तरह लगती है। मैं जानती हूँ कि जब उसकी भावनाएँ आहत होती हैं, तो उसके स्वभाव में छिपी संवेदनशीलता क्या होती है। काश मैं उसके साथ होती, उसे थोड़ा दिलासा दे पाती। वह मुझसे भी ज़्यादा अकेली है—दोस्त बनाने की कला उसमें मुझसे भी कम है। 'इस विषय को छोड़ो।'

वह अपने लिए बहुत कुछ सह सकती थी; लेकिन दूसरों के दुखों को, विशेषकर अपनी बहनों के दुखों को, वह धैर्यपूर्वक सहन नहीं कर सकती थी; और फिर, दोनों बहनों में से सबसे छोटी, कोमल और नन्ही बहन को अकेले दुख सहते देखना उसके लिए असहनीय था। कुछ तो करना ही था। चाहे वांछित लक्ष्य कितना भी दूर क्यों न हो; वह सारा समय व्यर्थ था जो वह उस दिशा में प्रगति न कर रही हो, चाहे वह कितनी भी धीमी क्यों न हो। एक स्कूल होना, उसके लिए दैनिक अवकाश का कुछ हिस्सा पाने जैसा था, जिस पर केवल उसके अपने कर्तव्यबोध का ही नियंत्रण हो; यह तीनों बहनों के लिए, जो एक-दूसरे से अत्यंत प्रेम करती थीं, एक छत के नीचे साथ रहने और अपनी आजीविका स्वयं कमाने का अवसर था; और सबसे बढ़कर, यह उन दो बहनों की देखभाल करने का अधिकार था जिनका जीवन और सुख शार्लोट के लिए हमेशा उसके अपने जीवन और सुख से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। लेकिन किसी भी कांपती हुई अधीरता को उसे जल्दबाजी में कोई नासमझी भरा कदम उठाने के लिए प्रेरित नहीं करना चाहिए था। उसने हर संभव दिशा में पता लगाया कि एक नए स्कूल के सफल होने की क्या संभावनाएं हैं। कुल मिलाकर, ऐसा प्रतीत हुआ कि

बहनों द्वारा स्थापित किए जाने वाले स्कूल जैसे संस्थान, उन संस्थानों की संख्या से कहीं अधिक थे जिन्हें चलाया जा सकता था। अब क्या किया जाए? उन्हें कुछ बेहतर सुविधाएं प्रदान करनी होंगी। लेकिन कैसे? वे स्वयं विचार, क्षमता और ज्ञान से परिपूर्ण थीं; परन्तु ये योग्यताएं किसी परिचय पत्र में शामिल करने योग्य नहीं थीं। उन्हें फ्रेंच का कुछ ज्ञान था; धाराप्रवाह पढ़ने के लिए पर्याप्त, लेकिन मूल निवासियों या पेशेवर शिक्षकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए पर्याप्त नहीं। एमिली और ऐनी को संगीत का कुछ ज्ञान था; परन्तु यहाँ भी यह संदेहजनक था कि बिना अधिक प्रशिक्षण के वे संगीत सिखाने का काम कर सकेंगी या नहीं।

लगभग इसी समय, मिस डब्ल्यू - - ड्यूसबरी मूर स्थित अपने स्कूल को छोड़ने के बारे में सोच रही थीं; और उन्होंने इसे अपने पुराने विद्यार्थियों, ब्रोंटे बहनों को सौंपने की पेशकश की। उनकी एक बहन शार्लोट के समय से ही स्कूल का सक्रिय प्रबंधन संभाल रही थीं; लेकिन विद्यार्थियों की संख्या कम हो गई थी; और अगर ब्रोंटे बहनें इसे संभालतीं, तो उन्हें इसे पहले जैसी समृद्धि की स्थिति में वापस लाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती। इसके लिए उन्हें कुछ ऐसे लाभों की आवश्यकता होती जो उनके पास इस समय नहीं थे, लेकिन शार्लोट को उनकी झलक मिल गई थी। उन्होंने इस सुराग का पीछा करने और सफल परिणाम प्राप्त होने तक चैन से न बैठने का निश्चय किया। एक दबी हुई उत्सुकता की बनावटी शांति के साथ, जो अगले पत्र के हर शब्द में इच्छा की चमक बिखेरती है, उन्होंने अपनी चाची को इस प्रकार लिखा।

“प्यारी चाची,

29 सितंबर, 1841।

“मैंने मिस डब्ल्यू — - को पत्र लिखकर उनके प्रस्ताव को स्वीकार करने की इच्छा व्यक्त की थी, लेकिन तब से मुझे उनसे कोई खबर नहीं मिली है। इस लंबे मौन का कारण समझ में नहीं आ रहा है, शायद सौदे को अंतिम रूप देने में कोई अप्रत्याशित बाधा आ गई हो। इस बीच, श्रीमान और श्रीमती — - (उनके विद्यार्थियों के माता-पिता) और अन्य लोगों ने एक योजना का सुझाव दिया है और उसे मंजूरी दे दी है, जिसे मैं अब आपको बताना चाहती हूँ। मेरे मित्र मुझे सलाह देते हैं कि यदि मैं स्थायी सफलता प्राप्त करना चाहती हूँ, तो स्कूल शुरू करने में छह महीने की देरी करूँ और किसी भी तरह से, चाहे जैसे भी हो, महाद्वीप के किसी स्कूल में इस बीच का समय बिताऊँ। उनका कहना है कि इंग्लैंड में स्कूल इतने अधिक हैं और प्रतिस्पर्धा इतनी

कड़ी है कि श्रेष्ठता प्राप्त करने की दिशा में ऐसा कोई कदम उठाए बिना, हमें शायद बहुत संघर्ष करना पड़ेगा और अंत में असफल भी हो सकते हैं। वे यह भी कहते हैं कि 100 पाउंड का ऋण, जो आपने हमें देने की कृपा की है, शायद अभी पूरी तरह से आवश्यक नहीं होगा, क्योंकि मिस डब्ल्यू — - हमें फर्नीचर उधार देंगी; और यदि यह सट्टा अच्छा और सफल होना है, तो कम से कम आधी राशि उसी तरह से लगाई जानी चाहिए जैसा मैंने बताया है, जिससे ब्याज और मूलधन दोनों की शीघ्र चुकौती सुनिश्चित हो सके।

मैं फ्रांस या पेरिस नहीं जाऊँगा। मैं बेल्जियम के ब्रुसेल्स जाऊँगा। वहाँ की यात्रा का खर्च, सबसे महंगे यात्रा शुल्क पर भी, 5 पाउंड होगा; वहाँ रहना इंग्लैंड की तुलना में लगभग आधा ही महंगा है, और शिक्षा की सुविधाएँ यूरोप के किसी भी अन्य स्थान के बराबर या उससे बेहतर हैं। आधे साल में, मैं फ्रेंच भाषा में पूरी तरह से पारंगत हो सकता हूँ। मैं इतालवी में बहुत सुधार कर सकता हूँ, और जर्मन का भी थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त कर सकता हूँ, बशर्ते मेरा स्वास्थ्य अभी की तरह अच्छा बना रहे। मैरी अभी ब्रुसेल्स में एक बेहतरीन होटल में रह रही है। मैं कोक्लेबर्ग महल में जाने के बारे में नहीं सोचूँगा, जहाँ वह रहती है, क्योंकि वहाँ के नियम और शर्तें बहुत महंगी हैं; लेकिन अगर मैं उसे पत्र लिखूँ, तो वह, ब्रिटिश पादरी की पत्नी श्रीमती जेनकिंस की सहायता से, मेरे लिए एक सस्ता, अच्छा आवास और सम्मानजनक सुरक्षा की व्यवस्था कर सकती है। मुझे उससे अक्सर मिलने का अवसर मिलेगा; वह मुझे शहर से परिचित कराएगी; और, उसके चचेरे भाइयों की सहायता से, शायद मुझे कहीं अधिक अच्छे संबंध मिल जाएँगे। अब तक मैंने जितने भी लोगों को जाना है, उनमें से यह सबसे अधिक परिष्कृत, कुशल और सुसंस्कृत है।

"ये वो फायदे हैं जो स्कूल शुरू होने पर वाकई काम आएंगे; और अगर एमिली भी मेरे साथ इन फायदों का लाभ उठा सके, तो हम भविष्य में ऐसी जगह बना पाएंगे जो आज हमारे लिए मुमकिन नहीं है। मैं ऐनी की जगह एमिली का नाम ले रही हूँ, क्योंकि अगर हमारा स्कूल चल पड़ा तो ऐनी भी भविष्य में कभी ये फायदा उठा सकती है। मुझे पूरा यकीन है कि लिखते समय आप मेरी बात को सही समझ रहे होंगे। आप हमेशा अपने पैसे का सही इस्तेमाल करना पसंद करते हैं। आपको फालतू की खरीदारी पसंद नहीं है; जब आप किसी पर एहसान करते हैं, तो बड़े ही सलीके से करते हैं; और यकीन मानिए, इस तरह खर्च किए गए 50 या 100 पाउंड का सही

इस्तेमाल होगा। बेशक, इस विषय पर आपसे बेहतर दोस्त मुझे दुनिया में कोई और नहीं पता। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हमें ये फायदा मिल जाए, तो हमारी जिंदगी बदल जाएगी। पापा शायद इसे एक बेतुकी और महत्वाकांक्षी योजना समझेंगे; लेकिन महत्वाकांक्षा के बिना दुनिया में तरक्की कौन कर सकता है? जब वो कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी जाने के लिए आयरलैंड छोड़कर गए थे, तब वो भी मेरी ही तरह महत्वाकांक्षी थे।" मैं चाहती हूँ कि हम सब मिलकर आगे बढ़ें। मुझे पता है कि हम सबमें प्रतिभाएँ हैं, और मैं चाहती हूँ कि उनका सदुपयोग हो। आंटी, मैं आपकी मदद की उम्मीद करती हूँ। मुझे विश्वास है कि आप मना नहीं करेंगी। मुझे पता है, अगर आप मान जाएँगी, तो अगर कभी आपको अपनी इस दयालुता पर पछतावा हो, तो इसमें मेरी कोई गलती नहीं होगी।

यह पत्र उस घर से लिखा गया था जहाँ वह गवर्नेस के रूप में रह रही थी। जवाब आने में कुछ समय लगा। हॉवर्थ पार्सनेज में पिता और चाची के बीच काफी बातचीत हुई। अंततः सहमति मिल गई। तब, और तभी, उसने अपनी योजना एक घनिष्ठ मित्र को बताई। वह किसी भी परियोजना के बारे में तब तक ज्यादा बात नहीं करती थी जब तक वह अनिश्चित न हो—अपने काम के बारे में, किसी भी दिशा में, तब तक बात नहीं करती थी जब तक उसका परिणाम अनिश्चित न हो।

2 नवंबर, 1841।

"अब चलिए बहस शुरू करते हैं। सबसे पहले, मुझे यह विचार करना होगा कि मैं रक्षात्मक रुख अपनाऊँ या आक्रामक। मुझे लगता है, रक्षात्मक। आप कहती हैं, और मैं स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ, कि मेरी ओर से विश्वास की कमी से आपकी भावनाएँ आहत हुई हैं। आपने मिस डब्ल्यू - - के प्रस्तावों के बारे में दूसरों से मुझसे पहले ही सुन लिया था। यह सच है। मैं अपने भविष्य की संभावनाओं के लिए महत्वपूर्ण योजनाओं पर विचार कर रहा था। मैंने इस विषय पर आपसे कभी कोई पत्र नहीं लिखा। यह भी सच है। एक करीबी, प्रिय, लंबे समय से परिचित और हमेशा साथ देने वाले मित्र के प्रति यह व्यवहार अजीब लगता है। बिलकुल सच। मैं इस व्यवहार के लिए आपको कोई बहाना नहीं दे सकता; बहाना शब्द का अर्थ है गलती स्वीकार करना, और मुझे नहीं लगता कि मैंने कोई गलती की है। सीधी बात यह है कि मैं अपने भविष्य को लेकर न तो निश्चित था और न ही अब हूँ। इसके विपरीत, मैं बहुत अनिश्चित रहा हूँ, विरोधाभासी योजनाओं और प्रस्तावों से उलझन में रहा हूँ। जैसा कि

मैंने आपको कई बार बताया है, मेरा समय पूरी तरह से व्यस्त है; फिर भी मुझे कई पत्र लिखने थे, जिन्हें लिखना बिल्कुल आवश्यक था। मुझे पता था कि उस समय आपको पत्र लिखकर यह बताना व्यर्थ होगा कि मैं दुविधा और अनिश्चितता में थी—यह उम्मीद कर रही थी, वह डर रही थी, चिंतित थी, और जो असंभव लग रहा था उसे करने के लिए बेताब थी। उस व्यस्त अंतराल में जब मैंने आपके बारे में सोचा, तो मैंने यही तय किया कि जब मेरा रास्ता साफ हो जाएगा और मेरा लक्ष्य पूरा हो जाएगा, तब आपको सब पता चल जाएगा। अगर संभव होता, तो मैं हमेशा चुपचाप और गुमनाम रहकर काम करती, और अपने प्रयासों को उनके परिणामों से ही प्रकट होने देती। मिस डब्ल्यू ने बड़ी दयालुता से प्रस्ताव दिया कि मैं ड्यूसबरी मूर आऊं और उस स्कूल को पुनर्जीवित करने का प्रयास करूं जिसे उनकी बहन ने छोड़ दिया था। उन्होंने मुझे अपने फर्नीचर का उपयोग करने की पेशकश की। पहले तो मैंने प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया और सफलता प्राप्त करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करने को तैयार हो गई; लेकिन मेरे दिल में एक आग भड़क उठी, जिसे मैं बुझा नहीं सकी। मैं अपनी उपलब्धियों को बढ़ाना चाहती थी—जो मैं हूं उससे बेहतर बनना चाहती थी; मैंने अपने पिछले पत्रों में से एक में आपको अपनी भावनाओं की एक झलक दिखाई थी—सिर्फ एक झलक; मैरी ने आग में घी डाला—मुझे प्रोत्साहित किया, और अपने सशक्त, ऊर्जावान शब्दों में, इससे मेरा हौसला बढ़ा। मैं ब्रुसेल्स जाने के लिए बेताब थी; लेकिन मैं वहाँ कैसे पहुँच सकती थी? मैं चाहती थी कि मेरी बहनों में से कम से कम एक मेरे साथ इस अवसर का लाभ उठाए। मैंने एमिली को चुना। मुझे पता था कि वह इस पुरस्कार की हकदार थी। बात कैसे सुलझ सकती थी? अत्यधिक उत्साह में, मैंने घर एक पत्र लिखा, जो सफल रहा। मैंने चाची से मदद की गुहार लगाई, जिसका जवाब सहमति से मिला। अभी सब कुछ तय नहीं हुआ है; फिर भी इतना कहना काफी है कि हमें आधे साल के लिए जाने का मौका मिल सकता है। ड्यूसबरी मूर का अधिकार छोड़ दिया गया है। शायद, यह सौभाग्य की बात है। मन ही मन, मुझे लगता है कि इस पर पछताने का कोई कारण नहीं है। भविष्य के लिए मेरी योजनाएँ इसी इरादे से बंधी हैं: अगर मैं एक बार ब्रुसेल्स पहुँच जाती हूँ, और अगर मेरा स्वास्थ्य ठीक रहता है, तो मैं अपने रास्ते में आने वाले हर अवसर का भरपूर लाभ उठाने की पूरी कोशिश करूँगी। जब आधा साल बीत जाएगा, तो मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूँगी।

* * * * *

"विश्वास करो, भले ही मेरा जन्म अप्रैल में हुआ हो, जो बादलों और धूप का महीना है, मैं परिवर्तनशील नहीं हूँ। मेरे मिजाज अस्थिर हैं, कभी मैं उग्रता से बोलता हूँ, और कभी बिल्कुल चुप रहता हूँ; लेकिन मैं तुम्हारे प्रति अटूट श्रद्धा रखता हूँ, और यदि तुम बादल और बारिश को गुजरने दोगे, तो निश्चिंत रहो कि सूर्य हमेशा पीछे, छिपा हुआ, लेकिन फिर भी विद्यमान रहेगा।"

क्रिसमस के समय, अपने नियोक्ताओं से अलग होने के बाद, जिसने उन्हें काफी प्रभावित किया, उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी। इस परिवार को छोड़ने के बाद उन्होंने कहा, "उन्होंने मुझसे बहुत उम्मीदें रखीं; मैं इसके लायक नहीं थी।"

* * * * *

चारों बच्चे इस दिसंबर में अपने पिता के घर पर मिलने की उम्मीद कर रहे थे। ब्रैनवेल को लीड्स और मैनचेस्टर रेलवे में क्लर्क के पद से कुछ समय की छुट्टी मिलने की उम्मीद थी, जहाँ वे पाँच महीने से कार्यरत थे। ऐनी क्रिसमस से पहले पहुँच गई। उसने अपनी कठिन परिस्थितियों में इतना अच्छा काम किया था कि उसके मालिकों ने उसे वापस लौटने के लिए ज़ोर दिया, हालाँकि उसने उन्हें छोड़ने का फैसला कर लिया था; आंशिक रूप से उसके साथ हुए कठोर व्यवहार के कारण, और आंशिक रूप से इसलिए कि बेल्जियम में अपनी बहनों की अनुपस्थिति के दौरान घर पर रहना उचित लग रहा था, जब पादरी के घर में रहने वाले तीन अन्य सदस्यों की उम्र को ध्यान में रखा गया।

कुछ पत्राचार और घर पर योजनाओं पर काफी चर्चा के बाद, ब्रुसेल्स से प्राप्त पत्रों के कारण, जिनमें वहाँ के स्कूलों के बारे में निराशाजनक जानकारी दी गई थी, यह बेहतर लगा कि शार्लोट और एमिली उत्तरी फ्रांस के लिले स्थित एक संस्थान में जाएँ, जिसकी बैपटिस्ट नोएल और अन्य पादरियों ने अत्यधिक अनुशंसा की थी। वास्तव में, जनवरी के अंत में, यह तय किया गया कि वे तीन सप्ताह में लंदन में आई एक फ्रांसीसी महिला के साथ उस स्थान के लिए रवाना होंगी। भोजन और केवल फ्रेंच भाषा के लिए प्रत्येक छात्रा का शुल्क 50 पाउंड था, लेकिन इस राशि में एक अलग कमरा दिया जाना था; इस सुविधा के बिना, शुल्क कम था। शार्लोट लिखती हैं: —

“20 जनवरी, 1842।”

“मैं चाची की इस कृपा को समझती हूँ कि उन्होंने अलग कमरे के लिए अतिरिक्त राशि देने की सहमति दी। यह हमारे लिए कई मायनों में एक बड़ा सौभाग्य होगा। मुझे ब्रसेल्स से लिले जाने का कई कारणों से अफसोस है, मुख्यतः इसलिए कि मैं मार्था से नहीं मिल पाऊँगी। मैरी ने मुझे जानकारी देने में अथक परिश्रम किया है। उन्होंने इसके लिए कोई कसर नहीं छोड़ी, बल्कि लगभग कोई खर्चा नहीं किया। मैरी का मूल्य माणिक से भी अधिक है। वास्तव में, मेरे दो मित्र हैं - आप और वह - जो दृढ़ और सच्चे हैं, जिनके विश्वास और निष्ठा में मेरा उतना ही दृढ़ विश्वास है जितना बाइबल में। मैंने आप दोनों को परेशान किया है - विशेष रूप से आपको; लेकिन आप हमेशा मुझे चिमटे से मारती हैं और मेरे सिर पर आग के अंगारे डाल देती हैं। मुझे हाल ही में ब्रसेल्स, लिले और लंदन को पत्र लिखने थे। मुझे बहुत सारी कमीज़ें, नाइटगाउन, रूमाल और जेबें बनानी हैं; साथ ही कपड़े भी मरम्मत करने हैं। घर आने के बाद से मैं हर हफ्ते ब्रैनवेल से मिलने की उम्मीद करती रही हूँ, लेकिन वह अभी तक आ नहीं पाया है। हम पूरी उम्मीद करते हैं लेकिन उनसे अगले शनिवार को मुलाकात हो पाएगी। इन हालातों में मैं उनसे मिलने कैसे जा सकता हूँ? आप आग के पास बैठकर बातें करने की बातें करके मुझे बेचैन कर रहे हैं। यकीन मानिए, आने वाले कई महीनों तक हमारी ऐसी कोई मुलाकात नहीं होगी। मेरे चेहरे पर बुढ़ापे के निशान साफ दिख रहे हैं; और जब आप मुझे अगली बार देखेंगे तो मैं टोपी और चश्मा पहने हुए ज़रूर मिलूंगा।

अध्याय XI

मुझे उन सभी परिस्थितियों की जानकारी नहीं है जिनके कारण लिले जाने की योजना

को छोड़ना पड़ा। शार्लोट को शुरू से ही ब्रसेल्स बहुत आकर्षित करता था; और किसी अन्य स्थान की तुलना में वहाँ जाने का विचार केवल वहाँ के स्कूलों की घटिया गुणवत्ता की जानकारी मिलने के कारण ही छोड़ा गया था। उनके एक पत्र में ब्रिटिश दूतावास के पादरी की पत्नी श्रीमती जेनकिंस का उल्लेख है। उनके भाई - जो हॉवर्थ से कुछ ही मील दूर रहने वाले एक पादरी थे और श्री ब्रोंटे के परिचित थे - के अनुरोध पर, उन्होंने बहुत खोजबीन की, और अंततः, अपनी खोज में कुछ निराशा के बाद, एक ऐसे स्कूल के बारे में सुना जो हर तरह से वांछनीय प्रतीत होता था। एक अंग्रेज महिला थीं जो लंबे समय से ऑरलियन्स परिवार में उनके भाग्य के विभिन्न उतार-चढ़ावों के बीच रहती थीं, और जब राजकुमारी लुईस का विवाह राजा लियोपोल्ड से हुआ, तो वह एक पाठक के रूप में उनके साथ ब्रसेल्स गईं। इस महिला की पोती मैडम हेगर के पेंशननेट में शिक्षा प्राप्त कर रही थी; दादी को दी गई शिक्षा से इतनी संतुष्टि हुई कि उन्होंने श्रीमती जर्किन्स की बहुत प्रशंसा करते हुए उस संस्थान का नाम लिया; और परिणामस्वरूप, यह तय किया गया कि यदि शर्तें अनुकूल हों, तो मिस ब्रोंटे और एमिली को वहाँ भेजा जाए। एम. हेगर मुझे बताते हैं कि शार्लोट के एक पत्र की प्राप्ति पर, जिसमें उन्होंने आमतौर पर "अतिरिक्त" कहे जाने वाले खर्चों की संभावित राशि के बारे में विशेष रूप से पूछताछ की थी, वे और उनकी पत्नी पत्र के सरल और गंभीर लहजे से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने एक-दूसरे से कहा: — "ये एक मध्यमवर्गीय अंग्रेज पादरी की बेटियाँ हैं, जो दूसरों को शिक्षा देने के उद्देश्य से सीखने के लिए उत्सुक हैं, और जिनके लिए अतिरिक्त खर्च का जोखिम बहुत मायने रखता है। आइए एक निश्चित राशि तय करें, जिसमें सभी खर्च शामिल हों।"

ऐसा ही किया गया; समझौता संपन्न हुआ, और ब्रोंटे परिवार ने कोवान ब्रिज में अपने दुखद और यादगार निवास को छोड़कर, पहली बार अपने गृह जिले को छोड़ने की तैयारी की। श्री ब्रोंटे ने अपनी बेटियों के साथ जाने का निश्चय किया। मैरी और उनके भाई, जिन्हें विदेश यात्रा का अनुभव था, भी उनके साथ थे। शार्लोट ने लंदन को पहली बार उन एक-दो दिनों में देखा जब वे वहाँ रुके थे; और उनके बाद के एक पत्र में दिए गए विवरण से, मुझे लगता है कि वे सभी पैटरनोस्टर रो स्थित चैप्टर कॉफी हाउस में ठहरे थे - एक विचित्र, पुराने ज़माने का सराय, जिसके बारे में मैं आगे विस्तार से बताऊंगा।

इस प्रकार मैरी द्वारा उनकी यात्रा का विवरण दिया गया है।

लंदन से गुज़रते हुए, उन्हें लगता था कि हमारा काम यही होना चाहिए कि हम जितनी भी तस्वीरें और मूर्तियाँ देख सकें, देखें। वह कलाकारों को जानती थीं और उनकी अन्य कृतियों के बारे में भी जानती थीं। मुझे याद नहीं कि हमने सेंट पॉल के अलावा और क्या देखा। एमिली भी इन आदतों में उन्हीं की तरह थी, लेकिन निश्चित रूप से उनकी राय कभी नहीं मानती थी, बल्कि हमेशा अपनी राय देती थी... मुझे नहीं पता कि शार्लोट को ब्रसेल्स कैसा लगा। हम अंधेरे में पहुँचे और अगली सुबह अपने-अपने स्कूलों को देखने चले गए। ज़ाहिर है, हम बहुत व्यस्त थे और हमारी उम्मीदें धूमिल लग रही थीं। शार्लोट को ब्रसेल्स के आसपास का इलाका बहुत पसंद था। 'हर पहाड़ी की चोटी पर कुछ न कुछ देखने को मिलता है।' वह कभी-कभार छुट्टियों में लंबी, अकेली सैर पर निकल जाती थीं।

श्री ब्रोंटे अपनी बेटियों को ब्रुसेल्स के रू डी'इसाबेल ले गए; श्री जेनकिंस के यहाँ एक रात रुके; और सीधे अपने देहाती यॉर्कशायर गाँव लौट आए।

बेल्जियम की राजधानी उन दो युवतियों के लिए कितनी अलग रही होगी जो इस तरह पीछे छूट गई थीं! अपने प्यारे घर और उससे परे के रमणीय मैदानों से दूर, हर अजनबी और अपरिचित संपर्क से वे बेहद पीड़ा झेल रही थीं, लेकिन उनकी अदम्य इच्छाशक्ति ही उनका सबसे बड़ा सहारा थी। एमिली के बारे में शार्लोट के अपने शब्द इस प्रकार हैं:

बीस वर्ष की आयु के बाद, इस बीच लगन और दृढ़ता से अकेले अध्ययन करने के बाद, वह मेरे साथ महाद्वीप के एक संस्थान में गईं। वही पीड़ा और संघर्ष फिर से शुरू हुआ, जो विदेशी और रोमन कैथोलिक प्रणाली की सौम्य धार्मिकता के प्रति उनके सीधे-सादे विधर्मी और अंग्रेज़ स्वभाव के तीव्र विरोध से और भी बढ़ गया था। एक बार फिर वह डूबती हुई प्रतीत हुईं, लेकिन इस बार उन्होंने केवल दृढ़ संकल्प के बल पर खुद को संभाला: आंतरिक पश्चाताप और शर्म के साथ उन्होंने अपनी पिछली असफलता को याद किया और जीतने का संकल्प लिया, लेकिन यह जीत उन्हें बहुत महंगी पड़ी। जब तक वह अपने कठिन परिश्रम से अर्जित ज्ञान को वापस उस दूरस्थ अंग्रेजी गाँव, पुराने पादरी के घर और सुनसान यॉर्कशायर की पहाड़ियों में नहीं ले आईं, तब तक उन्हें कभी खुशी नहीं मिली।

वे सीखना चाहते थे। वे सीखने के लिए आते थे। वे सीखते थे। जब उन्हें अपने साथियों के साथ बातचीत में कोई स्पष्ट उद्देश्य पूरा करना होता था, तो वे खुद को भूल

जाते थे; बाकी समय वे बेहद शर्मीले रहते थे। श्रीमती जेनकिंस ने मुझे बताया कि वह उन्हें रविवार और छुट्टियों में अपने साथ रहने के लिए कहती थीं, जब तक कि उन्हें यह एहसास नहीं हुआ कि ऐसी मुलाकातों से उन्हें खुशी से ज्यादा तकलीफ होती है। एमिली शायद ही कभी एक शब्द से ज्यादा बोलती थी। शार्लोट कभी-कभी कुछ विषयों पर इतनी उत्साहित हो जाती थी कि वह धाराप्रवाह और अच्छे से बोल पाती थी; लेकिन बोलने से पहले, उसकी आदत थी कि वह धीरे-धीरे अपनी कुर्सी पर घूम जाती थी, जिससे उसका चेहरा लगभग सामने वाले व्यक्ति से छिप जाता था।

फिर भी ब्रुसेल्स में ऐसी बहुत सी चीज़ें थीं जो उसकी प्रबल कल्पना को झकझोर देती थीं। अंततः वह उस भव्य प्राचीन संसार की झलक देख पा रही थी जिसका उसने सपना देखा था। जैसे-जैसे रंगीन भीड़ उसके पास से गुज़रती गई, वैसे ही सदियों से रंगीन भीड़ अलग-अलग वेशभूषा में उन सड़कों पर चलती रही थी। हर जगह एक ऐतिहासिक कहानी बयां करती थी, जो उन शानदार युगों तक फैली हुई थी जब जन और जनिका, आदिवासी दानव और दानवनी, चालीस फीट ऊँची दीवार के ऊपर से, जो अब रुए विला हर्मोसा है, उन नए बसने वालों को देख रहे थे जो उन्हें उस देश से बेदखल करने वाले थे जहाँ वे प्रलय के बाद से रह रहे थे। सेंट गुडुल का भव्य और गंभीर गिरजाघर, धार्मिक चित्र, रोमन कैथोलिक चर्च के आकर्षक रूप और समारोह - इन सबने हॉवर्थ चर्च की खाली दीवारों और सरल पूजा से निकली लड़कियों पर गहरी छाप छोड़ी। और फिर वे इस छाप के प्रति संवेदनशील होने पर खुद से नाराज़ हुईं, और उनके दृढ़ प्रोटेस्टेंट हृदय ने उस झूठे दुएसा के खिलाफ मोर्चा खोल दिया जिसने उन्हें इस तरह धोखा दिया था।

जिस इमारत में वे छात्र के रूप में मैडम हेगर के पेंशननेट में रहते थे, उस इमारत में भी भव्य यादों का अपना एक रहस्यमय सिलसिला बसा हुआ था, जो प्राचीन कमरों और बगीचों की छायादार गलियों से होकर, एक धुंधली सी कतार में, हमेशा के लिए गुजरता रहता था। आज रू रॉयल की भव्यता से, अगर आप जनरल बेलियार्ड की मूर्ति के पास से मुड़ें, तो आपको पत्थर की चौड़ी सीढ़ियों की चार सीढ़ियाँ उतरकर रू डी'इसाबेल दिखाई देगी। उस सड़क पर बने घरों की चिमनियाँ आपके पैरों के नीचे होंगी। सबसे निचली सीढ़ी के ठीक सामने, एक विशाल पुराना मकान है, जिसके पीछे और दाईं ओर एक बड़ा चारदीवारी वाला बगीचा है। इस बगीचे के सामने, मकान की ही तरफ, पेड़ों की बड़ी-बड़ी डालियाँ उनकी छोटी छतों पर फैली हुई हैं, और छोटे,

सुंदर, पुराने ज़माने के कॉटेज की एक कतार है, जो आकार और एकरूपता में इंग्लैंड के ग्रामीण कस्बों में अक्सर देखे जाने वाले अनाथालयों से मिलती-जुलती हैं। रू डी'इसाबेल सड़क को देखकर ऐसा लगता है मानो पिछले तीन शताब्दियों से इस पर निर्माणकर्ताओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ा हो; फिर भी, रू रॉयल में बने भव्य आधुनिक होटलों की पिछली खिड़कियों से कोई भी इसमें पत्थर फेंक सकता है, जो नवीनतम पेरिसियन फैशन में निर्मित और सुसज्जित हैं।

तेरहवीं शताब्दी में, रुए डी'इसाबेल को फॉसे-ऑक्स-चिएन्स कहा जाता था; और ड्यूक के शिकारी कुत्तों के लिए केनेल उस स्थान पर स्थित थे जहाँ अब मैडम हेगर का पेंशननेट है। केनेल के स्थान पर एक अस्पताल (शब्द के प्राचीन व्यापक अर्थ में) बनाया गया। बेघर और गरीब, संभवतः कुष्ठ रोगियों को, एक धार्मिक संस्था के सदस्यों द्वारा इस सुरक्षित स्थान पर स्थित एक इमारत में रखा जाता था; और जो कभी रक्षा के लिए एक खाई हुआ करती थी, उसे सौ से अधिक वर्षों तक जड़ी-बूटी के बगीचों और फलों के बागों से भर दिया गया था। फिर धनुष-बाण चलाने वालों का कुलीन संघ आया - वह समूह जिसके सदस्यों को संघ में शामिल होने से पहले कई पीढ़ियों तक अपने कुलीन वंश को बेदाग साबित करना आवश्यक था; प्रवेश मिलने पर, उन्हें एक गंभीर शपथ लेनी होती थी कि वे अपने खाली समय का कोई भी हिस्सा किसी अन्य मनोरंजन या व्यायाम में नहीं लगाएंगे, बल्कि उसे धनुष-बाण से निशानेबाजी की उत्कृष्ट कला के अभ्यास में समर्पित करेंगे। वर्ष में एक बार किसी संत के संरक्षण में एक भव्य प्रतियोगिता आयोजित की जाती थी, जिसके गिरजाघर के शिखर पर एक पक्षी या पक्षी की आकृति स्थापित होती थी, जिसे विजेता को मारना होता था। प्रतियोगिता में विजेता अगले वर्ष के लिए धनुष-बाण का राजा (रोई डेस अर्बालेट्रियर्स) बनता था और उसे तदनुसार एक रत्नजड़ित पदक प्राप्त होता था, जिसे वह बारह महीने तक धारण करने का हकदार होता था; जिसके बाद वह इसे संघ को लौटा देता था, ताकि पुनः प्रतियोगिता हो सके। जिस वर्ष राजा का पदभार ग्रहण करने वाले व्यक्ति की मृत्यु हो जाती थी, उसके परिवार को वह पदक संघ के संरक्षक संत के गिरजाघर में प्रस्तुत करना होता था और इसी प्रकार का एक अन्य पुरस्कार भी देना होता था, जिसके लिए पुनः प्रतियोगिता हो सके। मध्य युग के ये वीर धनुषधारी योद्धा सत्ताधारियों के लिए एक प्रकार के सशस्त्र रक्षक दल के रूप में कार्य करते थे और फ्लेमिश शहरों के अनेक गृहयुद्धों में लगभग हमेशा लोकतांत्रिक पक्ष के बजाय

अभिजात वर्ग का पक्ष लेते थे। इसी कारण उन्हें अधिकारियों का संरक्षण प्राप्त था और उन्हें अभ्यास के लिए अनुकूल और सुरक्षित स्थान आसानी से मिल जाते थे। इस प्रकार उन्होंने पुरानी खाई पर कब्जा कर लिया और प्राचीर के नीचे स्थित शांत और धूप से भरे अस्पताल के विशाल बगीचे पर अधिकार कर लिया।

लेकिन, सोलहवीं शताब्दी में, "अरबलेट्रियर्स डू ग्रैंड सेरमेंट" के व्यायाम मैदान से होकर एक सड़क का निर्माण करना आवश्यक हो गया, और बहुत विलंब के बाद, प्रिय इन्फेंटा इसाबेला के आग्रह पर कंपनी को आवश्यक भूमि का टुकड़ा छोड़ने के लिए राजी किया गया। इसके प्रतिफल के रूप में, इसाबेला - जो स्वयं गिल्ड की सदस्य थीं, और यहाँ तक कि उन्होंने पक्षी का शिकार भी किया था, और 1615 में रानी थीं - ने अरबलेट्रियर्स को कई उपहार दिए; और बदले में, कृतज्ञ शहर, जो लंबे समय से सेंट गुडुल तक एक नज़दीकी सड़क चाहता था, लेकिन कुलीन तीरंदाजों द्वारा निराश था, ने सड़क का नाम उनके नाम पर रखा। अरबलेट्रियर्स को एक प्रकार के मुआवजे के रूप में, उन्होंने नई रू डी'इसाबेल में उनके आवास के लिए एक "विशाल हवेली" का निर्माण करवाया। यह हवेली उनके व्यायाम मैदान के सामने स्थित थी और वर्गाकार थी। दीवारों के एक दूरस्थ हिस्से पर, अभी भी पढ़ा जा सकता है -

फिलिप III. हिस्पैनिक राजा. इसाबेला-क्लारा-यूजेनिया हिस्पैनिक शिशु। मैग्ने गुलडे रानी गुलडे भाई तैनात।

उस हवेली में ग्रैंड सेरमेंट डेस अर्बालेट्रियर्स के सभी भव्य भोज आयोजित किए जाते थे। मास्टर-आर्चर वहाँ स्थायी रूप से रहते थे, ताकि वे गिल्ड को अपनी सेवाएँ देने के लिए हमेशा तत्पर रहें। बड़े हॉल का उपयोग दरबारी नृत्य-प्रदर्शनों और उत्सवों के लिए भी किया जाता था, जब तीरंदाजों को प्रवेश नहीं दिया जाता था। इन्फेंटा ने अपनी नई गली में अन्य छोटे घर बनवाए, जो उनके "गार्डे नोबल" और "गार्डे बुर्जुआ" के निवास के रूप में काम करते थे; प्रत्येक के लिए एक छोटा आवास, जिनमें से कुछ आज भी मौजूद हैं, जो हमें अंग्रेजी भिक्षागृहों की याद दिलाते हैं। चौकोर आकार की "बड़ी हवेली"; विशाल हॉल - जिसका उपयोग कभी आर्चड्यूकल नृत्य-प्रदर्शनों के लिए किया जाता था, जहाँ गंभीर और संजीदा स्पेनिश लोग ब्राबेंट और फ़्लैंडर्स के गोरे कुलीनों के साथ घुलते-मिलते थे - अब बेल्जियम की लड़कियों के लिए एक स्कूल है; क्रॉस-बो पुरुषों का तीरंदाजी मैदान - ये सभी आज भी मौजूद हैं - मैडम हेगर का पेंशननेट।

इस महिला को उनके पति ने शिक्षा देने में सहयोग दिया — एक दयालु, बुद्धिमान, नेक और धार्मिक व्यक्ति — जिनसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। उन्होंने अपनी पत्नी और स्वयं की यादों के आधार पर मुझे ब्रसेल्स में रहने के दौरान दोनों मिस ब्रोंटे बहनों के बारे में कुछ रोचक विवरण दिए हैं। स्कूल में फ्रेंच भाषा और साहित्य पढ़ाने के कारण उन्हें उन्हें करीब से देखने का बेहतर अवसर मिला। ब्रसेल्स में रहने वाली एक फ्रांसीसी महिला द्वारा मुझे लिखे गए एक पत्र का संक्षिप्त अंश, जो इस मामले में अच्छी तरह से जानकार हैं, उनके प्रति उनके सम्मान को दर्शाता है।

मैं श्री हेगर को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता, लेकिन मुझे पता है कि उनके जैसा नेक और प्रशंसनीय व्यक्तित्व बहुत कम लोगों में है। वे सेंट विंसेंट डी पॉल सोसाइटी के सबसे उत्साही सदस्यों में से एक हैं, जिसका जिक्र मैंने आपको पहले ही किया है, और वे न केवल गरीबों और बीमारों की सेवा करते हैं, बल्कि अपनी शामें भी उन्हें समर्पित करते हैं। अपने पद के कर्तव्यों में पूरी तरह से व्यस्त रहने के बाद, वे गरीबों और श्रमिकों को इकट्ठा करते हैं, उन्हें मुफ्त शिक्षा देते हैं, और यहां तक कि उन्हें शिक्षा देते समय उनका मनोरंजन करने का भी कोई न कोई तरीका ढूंढ लेते हैं। उनकी यह निष्ठा ही यह बताने के लिए काफी है कि श्री हेगर गहरे और खुले तौर पर धार्मिक हैं। उनका व्यवहार स्पष्ट और आकर्षक है; जो भी उनके पास आता है, वे उनसे प्रेम करते हैं, विशेषकर बच्चे। वे वाक्पटु हैं और उनमें व्यावहारिक ज्ञान और हृदय की अपार वाक्पटुता है। वे लेखक नहीं हैं। उत्साह और विवेक से भरे इस व्यक्ति ने एथेनी में अपने उच्च और आकर्षक पदों, अध्ययन प्रमुख के पद से अभी-अभी इस्तीफा दिया है, क्योंकि वे उस अच्छे कार्य को पूरा नहीं कर पा रहे थे जिसके लिए उन्हें प्रतिबद्ध होना चाहिए था। मेरी यही उम्मीद थी कि पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा को शामिल किया जाए। मैंने एक बार मैडम हेगर को देखा था, जिनका व्यवहार कुछ हद तक ठंडा और कठोर था, और जिनसे देखकर ऐसा बिल्कुल नहीं लगता था कि वे सबकी पसंदीदा हैं। हालांकि, मेरा मानना है कि उनके छात्र उन्हें प्यार करते हैं और उनकी सराहना करते हैं।

जब शार्लोट और एमिली ब्रोंटे ने फरवरी 1842 में पेंशननेट में प्रवेश लिया, तब वहां अस्सी से सौ छात्र थे।

एम. हेगर के अनुसार, उन्हें फ्रेंच का ज़रा भी ज्ञान नहीं था। मुझे लगता है कि बातचीत के लिहाज़ से उन्हें उतना ही (या उससे भी कम) ज्ञान था जितना किसी भी

अंग्रेज़ लड़की को होता है, जो कभी विदेश नहीं गई हो और जिसने मुहावरे और उच्चारण किसी अंग्रेज़ महिला से ही सीखे हों। दोनों बहनें आपस में चिपकी रहीं और बेल्जियम की खुशमिजाज़, चंचल और दोस्त बना चुकी लड़कियों के झुंड से अलग रहीं। बेल्जियम की लड़कियाँ भी नई अंग्रेज़ छात्राओं को जंगली और डरी हुई समझती थीं, जिनके पहनावे को लेकर अजीबोगरीब, अटपटे और संकीर्ण विचार थे। एमिली को उस समय के फैशन, यानी कि भद्दा और बेतुका लगने वाला, गिगॉट स्लीव्स का शौक हो गया था और फैशन के चलन से बाहर होने के बाद भी वह उसे पहनती रही। उसकी पेटीकोट में भी कोई घुमाव या लहर नहीं थी, बल्कि वह सीधी और लंबी लटकती हुई, उसके दुबले-पतले शरीर से चिपकी रहती थी। दोनों बहनें ज़रूरत के अलावा किसी से बात नहीं करती थीं। वे गंभीर विचारों और निर्वासन की तीव्र तड़प में इतनी डूबी हुई थीं कि वे बेफिक्र बातचीत या मौज-मस्ती के लिए तैयार नहीं थीं। एम. हेगर, जिन्होंने रुए डी'इसाबेल में उनके शुरुआती कुछ हफ्तों के दौरान केवल अवलोकन किया था, ने महसूस किया कि उनके असामान्य चरित्र और असाधारण प्रतिभाओं को देखते हुए, अंग्रेजी लड़कियों को फ्रेंच पढ़ाने के उनके सामान्य तरीके से अलग तरीका अपनाना होगा। ऐसा लगता है कि उन्होंने एमिली की प्रतिभा को शार्लोट से भी कहीं अधिक महत्व दिया; और उनकी सापेक्ष क्षमताओं के बारे में एमिली का आकलन भी ऐसा ही था। एम. हेगर के अनुसार, एमिली में तर्क की तीव्र समझ और तर्क-वितर्क करने की क्षमता थी, जो एक पुरुष में असामान्य और वास्तव में एक महिला में दुर्लभ थी। इस प्रतिभा को कम करने वाली बात थी उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति, जिसके कारण वह अपनी इच्छाओं या अपने विवेक के मामले में किसी भी तर्क को नहीं समझ पाती थी। एम. हेगर ने उसके बारे में कहा, "उसे एक पुरुष होना चाहिए था - एक महान नाविक।" “उनकी प्रबल बुद्धि पुराने ज्ञान से खोज के नए क्षेत्र खोज लेती; और उनकी दृढ़ निश्चयी इच्छाशक्ति कभी विरोध या कठिनाई से विचलित नहीं होती; जीवन के सिवा कभी हार नहीं मानती।” इसके अलावा, उनकी कल्पना शक्ति इतनी प्रबल थी कि यदि उन्होंने इतिहास लिखा होता, तो दृश्यों और पात्रों का उनका चित्रण इतना सजीव, इतना सशक्त और तर्कपूर्ण होता कि पाठक पर उसका प्रभाव स्पष्ट हो जाता, चाहे उसकी पूर्व राय कुछ भी हो या सत्य के प्रति उसकी धारणा कितनी भी उदासीन क्यों न हो। लेकिन शार्लोट की तुलना में, जो हमेशा निस्वार्थ थीं (यह एम. हेगर का कथन है), वे अहंकारी और सख्त प्रतीत होती थीं; और अपनी छोटी बहन को संतुष्ट

रखने की चाह में उन्होंने उसे अनजाने में अपने ऊपर एक प्रकार का अत्याचार करने दिया।

अपनी पत्नी से परामर्श करने के बाद, एम. हेगर ने उन्हें बताया कि वे व्याकरण, शब्दावली आदि की पुरानी पद्धति को त्यागकर एक नई योजना पर आगे बढ़ना चाहते हैं - कुछ वैसी ही जैसी उन्होंने अपने फ्रांसीसी और बेल्जियम के विद्यार्थियों में से बड़े के साथ कभी-कभी अपनाई थी। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि वे उन्हें कुछ सबसे प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखकों की उत्कृष्ट रचनाएँ पढ़कर सुनाएँगे (जैसे कैसिमिर डे ला विग्ने की "जोन ऑफ आर्क की मृत्यु" पर लिखी कविता, बॉसुएट की रचनाओं के अंश, "बिब्लियोथेक चॉइसी डेस पेरेस डे ल'एग्लिस" में रोमन ईसाइयों को लिखे सेंट इग्नेशियस के महान पत्र का प्रशंसनीय अनुवाद, आदि), और इस प्रकार संपूर्ण रचना के प्रभाव को उनके मन में बिठाने के बाद, वे उनके साथ उसके भागों का विश्लेषण करेंगे, यह बताते हुए कि कौन सा लेखक किस बात में उत्कृष्ट है और कहाँ कमियाँ हैं। उनका मानना था कि उन्हें ऐसे विद्यार्थियों से निपटना है जो बौद्धिक, परिष्कृत, शिष्ट या कुलीन शैली के प्रति सहज सहानुभूति के कारण उस शैली की प्रतिध्वनि को पकड़ सकते हैं और इस प्रकार अपने विचारों को कुछ हद तक उसी तरह से पुन: प्रस्तुत कर सकते हैं।

अपनी योजना समझाने के बाद, उन्होंने उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा की। एमिली ने पहले बात की और कहा कि उन्हें इससे कोई लाभ नहीं दिखता; और इसे अपनाने से वे अपने विचारों और अभिव्यक्ति की मौलिकता खो देंगे। वह इस विषय पर बहस करना चाहती थीं, लेकिन श्री हेगर के पास समय नहीं था। फिर शार्लोट ने बात की; उन्हें भी योजना की सफलता पर संदेह था; लेकिन वह श्री हेगर की सलाह मानेंगी, क्योंकि शिष्या होने के नाते उन्हें उनकी आज्ञा माननी ही थी। परिणामों पर चर्चा करने से पहले, उनके एक पत्र का अंश देना उचित होगा, जो उनके नए जीवन के बारे में उनके शुरुआती विचारों को दर्शाता है।

ब्रुसेल्स, 1842 (मई?)

“एक-दो हफ्ते पहले मैं छब्बीस साल की हो गई थी; और जीवन के इस परिपक्व पड़ाव पर मैं एक स्कूली छात्रा हूँ, और कुल मिलाकर इस भूमिका में बहुत खुश हूँ। पहले तो अधिकार का प्रयोग करने के बजाय उसके अधीन रहना, आदेश देने के बजाय उनका पालन करना बहुत अजीब लगा; लेकिन मुझे यह स्थिति पसंद है। मैं

उसी उत्सुकता से इस ओर लौटी जैसे कोई गाय, जिसे लंबे समय तक सूखी घास पर रखा गया हो, ताजी घास पर लौटती है। मेरी उपमा पर मत हँसो। मेरे लिए अधीन रहना स्वाभाविक है, और आदेश देना बिल्कुल अस्वाभाविक।”

“यह एक बड़ा विद्यालय है, जिसमें लगभग चालीस बाहरी छात्र (डे स्कॉलर) और बारह बोर्डिंग छात्र (बोर्डिंग स्कॉलर) हैं। प्रधानाध्यापिका मैडम हेगर, मिस - - की ही तरह की सोच, सुसंस्कृति और बौद्धिक क्षमता वाली महिला हैं। मुझे लगता है कि उनकी कठोरता थोड़ी कम हो गई है, क्योंकि उन्हें निराशा का सामना नहीं करना पड़ा है और परिणामस्वरूप उनका रवैया कड़वा नहीं हुआ है। संक्षेप में, वह कुंवारी नहीं बल्कि विवाहित महिला हैं। विद्यालय में तीन शिक्षिकाएँ हैं - मैडमोजेल ब्लैंच, मैडमोजेल सोफी और मैडमोजेल मैरी। पहली दो शिक्षिकाओं का कोई विशेष चरित्र नहीं है। एक अविवाहित हैं और दूसरी भी अविवाहित ही रहेंगी। मैडमोजेल मैरी प्रतिभाशाली और मौलिक हैं, लेकिन उनके व्यवहार अप्रिय और मनमानी भरे हैं, जिसके कारण मेरे और एमिली को छोड़कर पूरा विद्यालय उनका कट्टर शत्रु बन गया है। फ्रेंच, ड्राइंग, संगीत, गायन, लेखन, अंकगणित और जर्मन जैसे विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए कम से कम सात शिक्षक उपस्थित रहते हैं। हमारे अलावा, विद्यालय में सभी कैथोलिक हैं। मैं एक लड़की हूँ, और मैडम के बच्चों की देखभाल करने वाली एक अंग्रेज़ महिला, जिसका पद किसी महिला की नौकरानी और बच्चों की देखभाल करने वाली महिला के बीच का है। देश और धर्म का अंतर हम सबको बाकी सबसे अलग करता है। हम इतनी भीड़ में बिल्कुल अलग-थलग हैं। फिर भी मुझे लगता है कि मैं कभी दुखी नहीं होती; मेरा वर्तमान जीवन इतना सुखद है, मेरी प्रकृति के अनुकूल है, एक देखभाल करने वाली महिला के जीवन की तुलना में। मेरा समय हमेशा व्यस्त रहता है, इसलिए बहुत जल्दी बीत जाता है। अब तक एमिली और मैं दोनों स्वस्थ रहे हैं, इसलिए हम अच्छा काम कर पाए हैं। एक व्यक्ति ऐसा है जिससे मैंने अभी तक बात नहीं की है - एम. हेगर, मैडम के पति। वे वाक्पटुता के प्रोफेसर हैं, बुद्धि में तो बहुत शक्तिशाली हैं, लेकिन स्वभाव से बहुत क्रोधी और चिड़चिड़े हैं। वे इस समय मुझसे बहुत नाराज़ हैं, क्योंकि मैंने एक अनुवाद लिखा है जिसे उन्होंने 'कम सही' कहकर खारिज कर दिया है। उन्होंने मुझे बताया नहीं, बल्कि मेरी किताब के हाशिये पर यह शब्द लिख दिया और संक्षिप्त, कठोर शब्दों में पूछा। उन्होंने मुझसे पूछा, "ऐसा कैसे हुआ कि मेरी रचनाएँ हमेशा मेरे अनुवादों से बेहतर होती थीं?" और

साथ ही कहा कि यह बात उन्हें समझ से परे लगती है। दरअसल, कुछ हफ़्ते पहले, उन्होंने बड़े ही गुस्से में आकर मुझे सबसे कठिन अंग्रेज़ी रचनाओं का फ्रेंच में अनुवाद करते समय न तो शब्दकोश और न ही व्याकरण का इस्तेमाल करने से मना कर दिया था। इससे काम काफी मुश्किल हो जाता है, और मुझे बार-बार अंग्रेज़ी शब्द डालने पड़ते हैं, जिन्हें देखकर उनकी आँखें फटी रह जाती हैं। एमिली और उनके बीच बिल्कुल भी बनती नहीं है। एमिली बहुत मेहनती है, और उसे मुझसे कहीं ज़्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ा है। दरअसल, जो लोग फ्रेंच भाषा सीखने के लिए किसी स्कूल में आते हैं, उन्हें पहले से ही फ्रेंच भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, नहीं तो उनका बहुत समय बर्बाद हो जाएगा, क्योंकि पाठ्यक्रम मूल निवासियों के लिए बनाया गया है, विदेशियों के लिए नहीं; और इन बड़े संस्थानों में वे एक-दो अजनबियों के लिए अपना सामान्य पाठ्यक्रम नहीं बदलते। एम. हेगर ने हमें जो कुछ निजी पाठ दिए हैं, उन्हें शायद एक बहुत बड़ा उपकार; और मैं समझ सकता हूँ कि उन्होंने स्कूल में पहले ही बहुत द्वेष और ईर्ष्या पैदा कर दी है।

“आप इस पत्र को संक्षिप्त और नीरस कहकर इसकी आलोचना करेंगे, और ऐसी सौ बातें हैं जो मैं आपको बताना चाहता हूँ, लेकिन मेरे पास समय नहीं है। ब्रसेल्स एक खूबसूरत शहर है। बेल्जियमवासी अंग्रेजों से नफरत करते हैं। उनकी बाहरी नैतिकता हमारी तुलना में कहीं अधिक कठोर है। गले में रूमाल बांधे बिना कमरबंद बांधना घोर असभ्यता माना जाता है।”

इस पत्र में जिस अंश में एम. हेगर को शब्दकोश या व्याकरण के प्रयोग पर रोक लगाते हुए दर्शाया गया है, मेरा मानना है कि वह उस समय की बात कर रहा है जिसका मैंने उल्लेख किया है, जब उन्होंने फ्रांसीसी भाषा सिखाने की एक नई विधि अपनाने का निश्चय किया था। इस विधि के अनुसार, विद्यार्थियों को भाषा की भावना और लय को उसके व्याकरणिक नियमों के अत्यधिक सावधानीपूर्वक और चिंतित अध्ययन के बजाय, उसके उत्कृष्ट स्वरों के प्रभाव से, अपने कानों और हृदय से ग्रहण करना था। यह मुझे उनके शिक्षक का एक साहसिक प्रयोग प्रतीत होता है; लेकिन निस्संदेह, वे अपने क्षेत्र में निपुण थे; और यह प्रयोग सफल रहा, यह शार्लोट के कुछ शोध पत्रों की रचना से स्पष्ट है, जो लगभग इसी समय लिखे गए थे। इस बौद्धिक विकास के दौर को दर्शाने के लिए, मैं एम. हेगर के साथ हुई उस बातचीत का उल्लेख करना चाहता हूँ जिसमें उन्होंने अपने विद्यार्थियों की लेखन शैली को आकार देने के

तरीके पर चर्चा की थी, और उनकी सफलता का प्रमाण देने के लिए, मैं शार्लोट के एक शोध पत्र की प्रतिलिपि और उस पर उनकी टिप्पणियों को प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

उन्होंने मुझे बताया कि इस गर्मी में एक दिन (जब ब्रोंटे लगभग चार महीने तक उनसे निर्देश प्राप्त कर रहे थे) उन्होंने उन्हें विक्टर ह्यूगो का मिराब्यू का प्रसिद्ध चित्र पढ़ा, "माईस, डान्स मा लेकॉन जे मी बॉर्नैस ए सी क्वि कंसर्न मिराब्यू वक्ता। C'est après l'analyse de ce morceau, considéré surtout dupoint de vue du fond, de la डिस्पोजल डी सीई क्वॉन पौरेट एपेलर ला चारपेंट क्वॉन्ट एटे फेट्स लेस ड्यूक्स पोर्ट्रेट्स क्यू जे वौस डोने।' उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने उन्हें विक्टर ह्यूगो की शैली में अतिशयोक्ति के रूप में दोष बताया था, और साथ ही, उन्होंने उन्हें अभिव्यक्ति की "बारीकियों" की अत्यधिक सुंदरता का ध्यान दिलाया था। फिर उन्हें समान प्रकार के चित्र का विषय चुनने के लिए बर्खास्त कर दिया गया। यह चयन एम. हेगर हमेशा उन्हें ही करने देते थे; क्योंकि उन्होंने कहा था, “किसी विषय पर लिखने से पहले उसके बारे में विचार और भावनाएँ होना आवश्यक है। मैं यह नहीं बता सकता कि आपके मन में किस विषय को लेकर विचार और भावनाएँ उमड़ रही हैं। यह मैं आप पर छोड़ता हूँ।” हाशिये पर लिखी टिप्पणियाँ, यह कहने की शायद ही आवश्यकता है, एम. हेगर की हैं; इटैलिक में लिखे शब्द शार्लेट के हैं, जिनके स्थान पर उन्होंने अभिव्यक्ति का एक बेहतर रूप प्रयोग किया है, जो कोष्ठकों में दिया गया है।

नकल।

31 जुलाई, 1842।

पीटर द हरमिट का चित्र। शार्लोट ब्रोंटे

समय-समय पर, पृथ्वी पर ऐसे पुरुष प्रकट होते हैं जो महान नैतिक या राजनीतिक परिवर्तनों के साधन बनने के लिए नियत होते हैं। कभी-कभी यह कोई विजेता होता है, जैसे सिकंदर या अत्तिला, जो तूफान की तरह आता है और नैतिक वातावरण को शुद्ध करता है, जैसे तूफान भौतिक वातावरण को शुद्ध करता है; कभी-कभी यह कोई क्रांतिकारी होता है, जैसे क्रॉमवेल या रोबेस्पियर, जो एक राजा को पूरे राजवंश के दोषों और दुर्गुणों का प्रायश्चित करवाता है; कभी-कभी यह मुहम्मद या पीटर द हर्मिट जैसे धार्मिक उत्साही होते हैं, जो केवल अपने विचारों के बल पर पूरे राष्ट्रों को झकझोर देते हैं, उन्हें जड़ से उखाड़ देते हैं और नए क्षेत्रों में बसा देते हैं, एशिया को

यूरोप के निवासियों से आबाद करते हैं। पीटर द हर्मिट फ्रांस के पिकार्डी के एक सज्जन थे, तो फिर उन्होंने अपना जीवन अपने समकालीन अन्य सज्जनों की तरह क्यों नहीं बिताया, जिन्होंने सलादीन या उसके सारसेनों की चिंता किए बिना मेज पर, शिकार पर, अपने बिस्तर पर अपना समय बिताया? क्या ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि कुछ स्वभावों में एक अदम्य उत्साह [गतिविधि का केंद्र] होता है जो उन्हें निष्क्रिय नहीं रहने देता, जो उन्हें शक्तिशाली क्षमताओं का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करता है, जो सोते समय भी, सैमसन की तरह, उन्हें बांधे रखने वाली गांठों को तोड़ने के लिए तैयार रहती हैं?

आपने पियरे के बारे में बात करना शुरू किया: आप मुद्दे पर आ गए: मुद्दे पर आओ।

"पियरे ने सेना में भर्ती होने का पेशा अपनाया; यदि उसका उत्साह उस प्रकार का होता [यदि उसमें केवल वह सामान्य उत्साह होता] जो अच्छे स्वास्थ्य से आता है, तो वह एक बहादुर सैनिक होता, और कुछ नहीं; लेकिन उसका उत्साह आत्मा का था, उसकी लौ शुद्ध थी और वह स्वर्ग की ओर उठती थी।"

निःसंदेह, पतरस का बचपन उग्र भावनाओं से भरा था; शक्तिशाली स्वभाव वाले लोग हर चीज़ में अतिवादी होते हैं, वे अच्छे या बुरे में कभी तटस्थता नहीं जानते; इसलिए पतरस ने पहले क्षणिक यश और भ्रामक सुखों की लालसा की, लेकिन जल्द ही उसे पता चल गया कि वह जिस चीज़ का पीछा कर रहा था वह केवल एक भ्रम था जिसे वह कभी प्राप्त नहीं कर सकता था; {भ्रम कहना व्यर्थ है} इसलिए उसने अपने कदम पीछे हटाए, उसने जीवन की यात्रा नए सिरे से शुरू की, लेकिन इस बार उसने विनाश की ओर ले जाने वाले चौड़े रास्ते को छोड़कर जीवन की ओर ले जाने वाले संकरे रास्ते को चुना; क्योंकि यात्रा लंबी और कठिन थी, उसने सैनिक का हेलमेट और हथियार त्याग दिए और एक भिक्षु का साधारण वस्त्र धारण कर लिया। सैन्य जीवन के बाद उसने मठवासी जीवन को अपनाया, क्योंकि अतिवाद मिलते हैं, और सच्चे व्यक्ति में पश्चाताप की सच्चाई अनिवार्य रूप से तपस्या की कठोरता लाती है। [इस प्रकार पतरस एक भिक्षु बन गया!]

लेकिन पीटर के भीतर एक ऐसा सिद्धांत था जो उन्हें लंबे समय तक निष्क्रिय रहने से रोकता था; उनके विचार, चाहे किसी भी विषय पर हों, सीमित नहीं हो सकते थे। उनके लिए इतना ही काफी नहीं था कि वे स्वयं धार्मिक थे, कि वे स्वयं ईसाई धर्म की

वास्तविकता के प्रति आश्वस्त थे; उन्हें पूरे यूरोप, पूरे एशिया की आवश्यकता थी कि वे उनके विश्वास को साझा करें और क्रूस में आस्था का इज़हार करें। प्रतिभा से उत्पन्न तीव्र भक्ति, एकांत से पोषित, ने उनके भीतर एक प्रकार की प्रेरणा को जन्म दिया, और जब वे अपनी कोठरी से बाहर निकले और दुनिया में फिर से प्रकट हुए, तो मूसा की तरह, उनके माथे पर दैवीयता की छाप थी, और सभी ने उनमें क्रूस के सच्चे प्रेरित को पहचाना।

"मुहम्मद ने पूर्व के सुस्त राष्ट्रों को उस तरह से जागृत नहीं किया था जिस तरह पीटर ने पश्चिम के कठोर लोगों को जागृत किया था; उनकी वाक्पटुता में लगभग चमत्कारिक शक्ति रही होगी, जो राजाओं को अपने राज्य बेचने के लिए राजी कर सकती थी ताकि वे पीटर को काफिरों के खिलाफ़ छेड़ने वाले पवित्र युद्ध में सहायता के लिए हथियार और सैनिक प्राप्त कर सकें। पीटर (सन्यासी) की शक्ति किसी भी प्रकार से शारीरिक नहीं थी, क्योंकि प्रकृति, या यों कहें कि ईश्वर, अपने उपहारों के वितरण में निष्पक्ष है; वह अपने एक बच्चे को अनुग्रह, सौंदर्य और शारीरिक पूर्णता प्रदान करता है, और दूसरे को बुद्धि और नैतिक महानता। इसलिए, पीटर कद में छोटे और अनाकर्षक चेहरे वाले व्यक्ति थे; लेकिन उनमें वह साहस, वह दृढ़ता, वह उत्साह और वह ऊर्जा थी जो सभी विरोधों को कुचल देती है, और जो एक व्यक्ति की इच्छा को पूरे राष्ट्र का कानून बना देती है। इस व्यक्ति ने अपने समय के चरित्रों और विचारों पर जो प्रभाव डाला, उसका सही अंदाजा लगाने के लिए, उनकी कल्पना धर्मयुद्ध सेना के बीच में की जानी चाहिए। पैगंबर और योद्धा की दोहरी भूमिका; साधारण धूसर वस्त्र पहने वह निर्धन साधु राजा से भी अधिक शक्तिशाली है; वह लालची भीड़ से घिरा हुआ है, एक ऐसी भीड़ जो केवल उसे देखती है, जबकि वह केवल आकाश को देखता है; उसकी उठी हुई आँखें मानो कह रही हों, 'मैं ईश्वर और स्वर्गदूतों को देखता हूँ, और मैंने पृथ्वी को देखना छोड़ दिया है!'

उस क्षण, वह सादा धूसर वस्त्र उसके लिए एलियाह के वस्त्र के समान था; उसने उसे प्रेरणा से भर लिया; उसने [पेत्रुस] भविष्य देख लिया; उसने यरूशलेम को मुक्त होते देखा; उसने पवित्र समाधि को स्वतंत्र देखा; उसने मंदिर से चांदी का अर्धचंद्र उधेड़ते हुए और उसके स्थान पर ओरिफ्लेम और लाल क्रॉस स्थापित होते देखा; पेत्रुस ने न केवल इन चमत्कारों को देखा, बल्कि उसने उन्हें अपने आस-पास के सभी लोगों को भी दिखाया; उसने थकान और अभाव से क्षीण हो चुके सभी लोगों में आशा और

साहस का संचार किया। युद्ध कल तक नहीं लड़ा जाना था, लेकिन जीत आज शाम ही तय हो गई थी। पेत्रुस ने वादा किया था; और क्रूसेडरों ने उसके वचन पर भरोसा किया, जैसे इस्राएलियों ने मूसा और यहोशू के वचन पर भरोसा किया था।

इस चित्र के पूरक के रूप में, एमिली ने हेस्टिंग्स की लड़ाई की पूर्व संध्या पर हेरोल्ड का चित्र बनाना चुना। मुझे लगता है कि उनकी कलात्मकता शक्ति और कल्पनाशीलता में शार्लोट से श्रेष्ठ है, और भाषा में पूर्णतः उनके बराबर है; और यह बात, दोनों ही मामलों में, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि फरवरी में ब्रुसेल्स पहुँचने पर उन्हें फ्रेंच का व्यावहारिक ज्ञान कितना कम था, और उन्होंने बिना किसी शब्दकोश या व्याकरण की सहायता के लिखा, असाधारण और उल्लेखनीय है। हम एक वर्ष बाद शैली की सहजता और सुंदरता में शार्लोट द्वारा की गई प्रगति को देखेंगे।

अपने लेखन में, उन्होंने अक्सर पुराने नियम के पात्रों और दृश्यों को चुना, जिससे उनकी सभी रचनाओं में उनकी गहरी समझ झलकती है। इसकी चित्रमयता और रंग (यदि मैं इसे इस प्रकार व्यक्त करूँ), इसकी भव्यता और व्यापक वर्णन ने उन्हें गहराई से प्रभावित किया। एम. हेगर के शब्दों में, "वह बाइबिल से पोषित थीं।" डे ला विग्ने की जोन ऑफ आर्क पर लिखी कविता पढ़ने के बाद, उन्होंने "माउंट नेबो पर मूसा का दर्शन और मृत्यु" विषय पर लिखने का निर्णय लिया; और इस रचना को पढ़ते हुए, मैं एम. हेगर की एक-दो टिप्पणियों से बहुत प्रभावित हुआ। मूसा द्वारा इस्राएलियों से विदा लेने की परिस्थितियों का शांत और सरल ढंग से वर्णन करने के बाद, उनकी कल्पना शक्ति जागृत होती है, और वे एक उदात्त शैली में, चुने हुए लोगों के गौरवशाली भविष्य का चित्रण करती हैं, जैसे कि प्रतिज्ञा की भूमि पर दृष्टि डालते हुए, वे भविष्यसूचक दृष्टि से उनकी समृद्धि को देखते हैं। लेकिन, इस शानदार वर्णन के मध्य तक पहुँचने से पहले ही, वह कुछ क्षण के लिए रुककर पुराने नियम के चमत्कारिक वृत्तांतों पर उठे संदेहों पर चर्चा करती हैं। एम. हेगर टिप्पणी करती हैं, “लिखते समय, अपने तर्क को पहले शांत, सरल भाषा में रखें; लेकिन जब आप अपनी कल्पना की लगाम कस लें, तो उसे तर्क के दायरे में न लाएँ।” फिर, मूसा के दर्शन में, वह युवतियों को शाम के समय अपने झुंडों को कुओं की ओर ले जाते हुए देखते हैं, और उन्हें फूलों की माला पहने हुए वर्णित किया गया है। यहाँ लेखक को यथार्थता बनाए रखने की आवश्यकता याद आती है: मूसा अपनी ऊँचाई से पहाड़ और मैदान, युवतियों के समूह और पशुओं के झुंड देख सकते थे, लेकिन वे शायद ही उनके

पहनावे या सिर के आभूषणों का विवरण देख पाते।

जब उन्होंने और प्रगति कर ली, तो एम. हेगर ने एक अधिक उन्नत योजना, संश्लेषणात्मक शिक्षण को अपनाया। वे उन्हें एक ही व्यक्ति या घटना के विभिन्न विवरण पढ़कर सुनाते और उनमें मौजूद समानताओं और असहमति के बिंदुओं पर ध्यान दिलाते। जहाँ भिन्नताएँ होतीं, वहाँ वे उन्हें प्रत्येक लेखक के चरित्र और स्थिति का गहन अध्ययन करने और यह समझने के लिए प्रेरित करते कि वे सत्य की उनकी अवधारणा को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं, ताकि वे उस भिन्नता के मूल कारण का पता लगा सकें। उदाहरण के लिए, क्रॉमवेल को लें। वे उन्हें "ओरैसन फ्यूनब्रे डे ला रीन डी'इंग्लैंड" में बोसुएट द्वारा वर्णित क्रॉमवेल का विवरण पढ़कर सुनाते और दिखाते कि इसमें उन्हें पूरी तरह से धार्मिक दृष्टिकोण से देखा गया है, मानो वे ईश्वर के हाथों का एक साधन हों, जो उनके कार्य के लिए पूर्वनियोजित हों। फिर वे उन्हें गुइज़ोट को पढ़ने के लिए कहते और यह देखने के लिए कहते कि इस दृष्टिकोण से क्रॉमवेल को पूर्णतः स्वतंत्र इच्छाशक्ति प्राप्त थी, लेकिन वे केवल व्यावहारिकता के उद्देश्य से प्रेरित थे; जबकि कार्लाइल उन्हें ईश्वर की इच्छा पूरी करने की प्रबल और कर्तव्यनिष्ठ इच्छा से संचालित चरित्र मानते थे। फिर वह उनसे यह याद रखने की अपेक्षा करेगा कि राजशाही समर्थक और राष्ट्रमंडल समर्थक, दोनों ही महान संरक्षक के बारे में अलग-अलग राय रखते थे। और इन परस्पर विरोधी विचारों में से, वह उनसे सत्य के तत्वों को छानकर एकत्रित करने और उन्हें एक पूर्ण रूप में संयोजित करने का प्रयास करने की अपेक्षा करेगा।

इस तरह के अभ्यास से शार्लोट को बहुत आनंद मिलता था। इससे उसकी असाधारण विश्लेषणात्मक क्षमता का उपयोग होता था और वह बहुत जल्द इसमें निपुण हो गई।

जहां भी ब्रोंटे बहनों के लिए राष्ट्रीयता दिखाना संभव था, उन्होंने ऐसा ही दृढ़ता से किया, उसी अटूट लगाव के साथ जिसने उन्हें हॉवर्थ छोड़ने पर हर बार कष्ट सहने पर मजबूर किया। धर्म के अलावा अन्य बातों में भी वे कट्टर प्रोटेस्टेंट थीं, लेकिन विशेष रूप से धर्म के मामले में। सेंट इग्नेशियस के पूर्व उल्लेखित पत्र से शार्लोट प्रभावित हुईं, और उन्होंने अंग्रेजी चर्च के उन मिशनरियों के प्रति भी उतनी ही गहरी निष्ठा और समर्पण का दावा किया, जिन्हें विषैले अफ्रीकी तट पर परिश्रम करने और मरने के लिए भेजा गया था, और उन्होंने उसी की नकल करते हुए "Lettre d’un

Missionnaire, Sierra Léone, Afrique" लिखा।

उनकी भावनाओं का कुछ अंश निम्नलिखित पत्र में भी झलकता है:

ब्रुसेल्स, 1842।

मुझे संदेह है कि मैं सितंबर में घर लौट पाऊँगी या नहीं। मैडम हेगर ने मुझे और एमिली को अगले छह महीने तक यहाँ रहने का प्रस्ताव दिया है। उन्होंने अपने अंग्रेज़ी शिक्षक को बर्खास्त करने और मुझे अंग्रेज़ी शिक्षक के रूप में नियुक्त करने की पेशकश की है; साथ ही एमिली को कुछ विद्यार्थियों को संगीत सिखाने के लिए प्रतिदिन कुछ समय देने की भी बात कही है। इन सेवाओं के बदले हमें फ्रेंच और जर्मन की पढ़ाई जारी रखने और भोजन आदि की सुविधा बिना किसी शुल्क के मिलेगी; हालाँकि, कोई वेतन नहीं दिया जाएगा। यह प्रस्ताव दयालुतापूर्ण है, और ब्रुसेल्स जैसे एक बड़े स्वार्थी शहर और लगभग नब्बे विद्यार्थियों (बोर्डिंग और डे-स्कूल दोनों सहित) वाले एक बड़े स्वार्थी स्कूल में, यह एक ऐसे स्वार्थ को दर्शाता है जिसके बदले में कृतज्ञता की अपेक्षा की जाती है। मैं इसे स्वीकार करने के लिए इच्छुक हूँ। आपका क्या विचार है? मैं यह नहीं नकारती कि मुझे कभी-कभी इंग्लैंड में रहने की इच्छा होती है, या मुझे कभी-कभी घर की याद सताती है; लेकिन कुल मिलाकर, मैंने अब तक बहुत साहस दिखाया है; और मैं ब्रुसेल्स में खुश रही हूँ, क्योंकि मैं हमेशा अपनी पसंद के कामों में पूरी तरह से व्यस्त रही हूँ। एमिली फ्रेंच और जर्मन में तेजी से प्रगति कर रही है। संगीत और चित्रकला। महाशय और श्रीमती हेगर उसकी विलक्षणताओं के भीतर छिपे उसके चरित्र के मूल्यवान पहलुओं को पहचानने लगते हैं।

“यदि बेल्जियमवासियों के राष्ट्रीय चरित्र का आकलन इस विद्यालय की अधिकांश छात्राओं के चरित्र से किया जाए, तो उनका चरित्र अत्यंत निर्मम, स्वार्थी, पशुवत और हीन है। वे बहुत विद्रोही हैं और शिक्षकों के लिए उन्हें संभालना मुश्किल है; और उनके सिद्धांत जड़ से सड़े हुए हैं। हम उनसे दूर रहते हैं, जो करना मुश्किल नहीं है, क्योंकि हम पर प्रोटेस्टेंटवाद और एंग्लिकनवाद का कलंक लगा हुआ है। लोग इस खतरे की बात करते हैं कि प्रोटेस्टेंट कैथोलिक देशों में जाकर बसने से खुद को खतरे में डाल लेते हैं, और इस तरह अपना धर्म बदलने का जोखिम उठाते हैं। मेरी सलाह उन सभी प्रोटेस्टेंटों को है जो कैथोलिक बनने जैसे किसी भी मूर्खतापूर्ण काम के लिए प्रलोभित हैं, कि वे समुद्र पार करके महाद्वीप पर जाएँ; कुछ समय तक नियमित रूप से चर्च में प्रार्थना सभा में भाग लें; वहाँ के दिखावे को ध्यान से देखें; साथ ही सभी पुजारियों के

मूर्खतापूर्ण, लालची स्वरूप को भी देखें; और फिर, यदि वे अभी भी पोपवाद को एक कमजोर, बचकाना पाखंड के अलावा किसी और रूप में देखने को तैयार हैं, तो वे तुरंत कैथोलिक बन जाएँ।" बस इतना ही। मैं मेथोडिज़्म, क्वेकरीज़्म और हाई व लो चर्चिज़्म की अतिवादी विचारधाराओं को मूर्खतापूर्ण मानता हूँ, लेकिन रोमन कैथोलिक धर्म इन सबसे कहीं बेहतर है। साथ ही, मैं आपको यह भी बताना चाहता हूँ कि कुछ कैथोलिक ऐसे भी हैं जो बाइबिल को एक गुप्त पुस्तक मानने वाले किसी भी ईसाई के समान अच्छे हैं, और कई प्रोटेस्टेंटों से कहीं बेहतर हैं।

जब ब्रोंटे बहनें पहली बार ब्रुसेल्स गईं, तो उनका इरादा वहाँ छह महीने या सितंबर में शुरू होने वाली छुट्टियों तक रहने का था। उस समय स्कूल के कार्य छह सप्ताह या दो महीने के लिए स्थगित कर दिए जाते थे, और यह उनके लौटने के लिए एक उपयुक्त समय प्रतीत होता था। लेकिन उपरोक्त पत्र में उल्लिखित प्रस्ताव ने उनकी योजनाओं को बदल दिया। इसके अलावा, वे इस बात से प्रसन्न थीं कि वे उस ज्ञान में प्रगति कर रही थीं जिसे प्राप्त करने के लिए वे लंबे समय से तरस रही थीं। वे उन दोस्तों के साथ रहकर भी प्रसन्न थीं जिनकी संगति वर्षों से उन्हें भाती रही थी, और इन दोस्तों के साथ कभी-कभार होने वाली मुलाकातों में, उन्हें एक विदेशी देश में रहने वाले लोगों के लिए - और विशेष रूप से ब्रोंटे बहनों के लिए - अपने-अपने घरों से प्राप्त खबरों पर चर्चा करने का अवर्णनीय सुकून मिलता था - अतीत की बातें करना या भविष्य की योजना बनाना। "मैरी" और उनकी बहन, हंसमुख, नाचने-गाने वाली मार्था, ब्रुसेल्स की सीमा के ठीक बाहर एक हॉस्टल में किराए पर रहती थीं। इन दोस्तों के चचेरे भाई-बहन भी उसी शहर में रहते थे; उनके घर में शार्लोट और एमिली का हमेशा स्वागत होता था, हालाँकि उनकी अत्यधिक शर्म ने उनके अनमोल गुणों को लोगों के सामने आने से रोक रखा था और आमतौर पर उन्हें चुप रहने पर मजबूर कर दिया था। उन्होंने कई महीनों तक इस परिवार के साथ अपनी साप्ताहिक छुट्टियाँ बिताईं; लेकिन समय बीतने के साथ-साथ एमिली भी दोस्ती के प्रस्तावों के प्रति उतनी ही उदासीन थीं जितनी शुरुआत में थीं; जबकि शार्लोट शारीरिक रूप से इतनी कमजोर थीं (जैसा कि "मैरी" ने कहा है) कि वे किसी भी मतभेद या विरोध को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त रूप से अपनी शक्ति जुटा नहीं पाती थीं, और परिणामस्वरूप उनका व्यवहार सहमतिपूर्ण और विनम्र था, जो उनकी असाधारण प्रतिभा और दृढ़ चरित्र के बारे में उनके ज्ञान से बिल्कुल विपरीत था। इस घर में, टी परिवार और ब्रोंटे परिवार

अक्सर एक-दूसरे से मिलने की उम्मीद कर सकते थे। एक और अंग्रेज़ परिवार था जहाँ शार्लोट जल्द ही एक स्वागत योग्य अतिथि बन गईं, और जहाँ, मुझे लगता है, उन्होंने श्रीमती जेनकिंस के घर या उन दोस्तों की तुलना में अधिक सहज महसूस किया जिनका मैंने पहले उल्लेख किया है।

एक अंग्रेज चिकित्सक, जिनके परिवार में कई बेटियाँ थीं, उनकी शिक्षा के लिए ब्रुसेल्स में रहने चले गए। उन्होंने जुलाई 1842 में, 15 अगस्त को शुरू होने वाली छुट्टियों से ठीक एक महीने पहले, उन्हें मैडम हेगर के स्कूल में दाखिला दिलाया। अपने समय का सदुपयोग करने और भाषा से परिचित होने के लिए, ये अंग्रेज बहनें छुट्टियों के दौरान प्रतिदिन रू डी'इसाबेल स्थित पेंशननेट (छात्र आवास) जाती थीं। मिस ब्रोंटे बहनों के अलावा छह या आठ अन्य छात्राएँ भी वहाँ थीं। वे पूरे समय वहीं रहीं, यहाँ तक कि उन्हें अपने नीरस जीवन में कभी भी वह विराम नहीं मिला जो कभी-कभार किसी मित्र के साथ एक दिन बिताने से मिल सकता था; बल्कि वे अपनी पढ़ाई में अथक परिश्रम से लगी रहीं। स्कूल में उनकी स्थिति, इन नई छात्राओं को, एक ऐसे छात्र की तरह लगी जिसे अक्सर पार्लर-बोर्डिंग स्कूल कहा जाता है। उन्होंने अपने विभिन्न शिक्षकों के लिए फ्रेंच, ड्राइंग, जर्मन और साहित्य की तैयारी की; और इन कामों के साथ-साथ एमिली ने संगीत को भी अपना लिया, जिसमें वह कुछ हद तक निपुण थी; इतनी निपुण कि वह मेरे सूचनादाता की तीन छोटी बहनों को संगीत सिखाने के योग्य थी।

स्कूल को तीन कक्षाओं में विभाजित किया गया था। पहली कक्षा में पंद्रह से बीस विद्यार्थी थे; दूसरी कक्षा में लगभग साठ विद्यार्थी थे—ब्रोंटे बहनों और एक अन्य को छोड़कर सभी विदेशी थे; तीसरी कक्षा में बीस से तीस विद्यार्थी थे। पहली और दूसरी कक्षा एक लंबे कमरे में थी, जो लकड़ी के विभाजन से विभाजित था; प्रत्येक भाग में चार लंबी डेस्क की कतारें थीं; और अंत में मुख्य शिक्षक के लिए मंच था। सबसे शांत कोने में, अंतिम पंक्ति में, शार्लोट और एमिली अगल-बगल बैठी थीं, अपनी पढ़ाई में इतनी मग्न थीं कि उन्हें अपने आसपास के किसी भी शोर या हलचल का एहसास नहीं होता था। स्कूल का समय सुबह नौ से बारह बजे तक (दोपहर के भोजन का समय) था, जब बोर्डिंग और हाफ-बोर्डिंग में रहने वाली छात्राएं—लगभग बत्तीस लड़कियां—भोजन कक्ष (दो लंबी मेजों वाला एक कमरा, जिसके ऊपर एक तेल का दीपक लटका हुआ था) में रोटी और फल खाने जाती थीं; सुबह की छात्राएँ, जो अपने साथ

जलपान लेकर आई थीं, बगीचे में खाने के लिए चली गईं। एक से दो बजे तक, प्रत्येक कमरे में एक छात्रा द्वारा कुछ हल्की-फुल्की साहित्यिक रचनाएँ पढ़कर सुनाने का कार्यक्रम था; दो से चार बजे तक, फिर से पाठ होते थे। चार बजे, छात्राएँ चली गईं; और शेष लड़कियाँ भोजन कक्ष में भोजन करने लगीं, जिसकी अध्यक्षता एम. और मैडम हेगर ने की। पाँच से छह बजे तक मनोरंजन का समय था, छह से सात बजे तक, पाठों की तैयारी होती थी; और उसके बाद, शार्लोट के लिए दुःस्वप्न माने जाने वाला व्याख्यान होता था। कभी-कभार, एम. हेगर स्वयं आते और एक अलग और अधिक रोचक प्रकार की पुस्तक पढ़ाते। आठ बजे, पानी और पिस्टोलेट्स (स्वादिष्ट छोटे ब्रसेल्स रोल) का हल्का भोजन होता था, जिसके तुरंत बाद प्रार्थना होती थी, और फिर सोने चले जाते थे।

मुख्य शयनकक्ष लंबी कक्षा या स्कूल के कमरे के ऊपर था। कमरे के दोनों ओर छह या आठ संकरे बिस्तर थे, प्रत्येक पर सफेद पर्दा लगा हुआ था; प्रत्येक के नीचे एक लंबी दराज अलमारी का काम करती थी, और प्रत्येक के बीच में सुराही, बेसिन और दर्पण रखने के लिए स्टैंड था। दोनों मिस ब्रोंटे के बिस्तर कमरे के बिल्कुल आखिरी छोर पर थे, लगभग इतने एकांत और एकांत में जैसे कि वे एक अलग कमरे में हों।

मनोरंजन के समय, जो हमेशा बगीचे में ही बीतता था, वे दोनों हमेशा साथ-साथ टहलती थीं और आमतौर पर गहरी चुप्पी साधे रहती थीं; एमिली, जो लंबाई में काफी बड़ी थी, अपनी बहन पर झुकी रहती थी। शार्लेट हमेशा बोलने पर जवाब देती थी और दोनों से की गई किसी भी टिप्पणी का उत्तर देने में पहल करती थी; एमिली शायद ही कभी किसी से बात करती थी। शार्लेट का शांत, सौम्य स्वभाव कभी नहीं बदला। उसे कभी भी एक पल के लिए भी क्रोधित नहीं देखा गया; और कभी-कभी, जब उसने स्वयं अंग्रेजी शिक्षिका का पद संभाला था और उसके विद्यार्थियों की बदतमीजी या लापरवाही उसे बहुत परेशान करती थी, तो उसके चेहरे का हल्का सा लाल होना, आँखों में क्षणिक चमक आना और व्यवहार में अधिक दृढ़ता आना ही उसके द्वारा दिखाई देने वाले झुंझलाहट के एकमात्र बाहरी संकेत थे। लेकिन अंततः, उसकी यह गरिमापूर्ण सहनशीलता अन्य शिक्षिकाओं के वाक्पटुतापूर्ण भाषणों की तुलना में उसके विद्यार्थियों को कहीं अधिक शांत कर देती थी। मेरे मुखबिर ने आगे कहा: —
"इस व्यवहार का प्रभाव अद्वितीय था। मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव से कह सकता हूँ।

उस समय मैं बहुत उत्साही और उतावला था, फ्रांसीसी शिक्षिकाओं का सम्मान नहीं करता था; फिर भी, मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ कि उनके एक शब्द पर ही मैं पूरी तरह आज्ञाकारी हो जाता था; इतना कि अंततः एम. और मैडम हेगर अपनी सभी इच्छाएँ उन्हीं के माध्यम से मुझसे पूरी करवाते थे; शायद अन्य छात्र उन्हें उतना प्यार नहीं करते थे जितना मैं करता था, क्योंकि वह बहुत शांत और मौन थीं; लेकिन सभी उनका सम्मान करते थे।"

शार्लेट के अंग्रेजी शिक्षिका के रूप में व्यवहार का वर्णन करने वाले भाग को छोड़कर (हालांकि उन्होंने यह पद कुछ महीनों बाद ग्रहण किया था) दोनों ब्रोंटे बहनों के स्कूली जीवन का यह पूरा वर्णन अक्टूबर 1842 में नए शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ से संबंधित है; और मैंने जो अंश दिए हैं, वे सोलह वर्षीय एक बुद्धिमान अंग्रेजी लड़की पर विदेशी विद्यालय के जीवन और उसमें दोनों मिस ब्रोंटे बहनों की स्थिति की पहली छाप को दर्शाते हैं। मैं इस समय से संबंधित "मैरी" के पत्र से एक उद्धरण दूंगा।

ब्रसेल्स में बिताए उनके शुरुआती दिन काफी रोचक थे। उन्होंने नए लोगों और किरदारों के बारे में, और विद्यार्थियों और शिक्षकों के विदेशी तौर-तरीकों के बारे में बात की। वह शिक्षकों की आशाओं और संभावनाओं को जानती थीं, और एक ऐसी शिक्षिका का ज़िक्र किया जो शादी करने के लिए बहुत उत्सुक थीं, 'वह बहुत बूढ़ी हो रही थीं।' वह अपने पिता या भाई (मुझे याद नहीं कि कौन) को अलग-अलग अविवाहित पुरुषों को पत्र भिजवाती थीं, जिन्हें वह सोचती थीं कि शायद वे उनकी मदद करने के लिए राज़ी हो जाएँ। वह कहती थीं कि अगर उनकी वर्तमान नौकरी नहीं चली तो उनके पास चैरिटी सिस्टर बनने के अलावा कोई चारा नहीं है और उन्हें यह विचार बिल्कुल पसंद नहीं है। शार्लोट स्वाभाविक रूप से अपनी जैसी स्थिति वाले लोगों को उत्सुकता से देखती थीं। यह महिला उन्हें लगभग डरा ही देती थी। 'वह कहती हैं कि उनके पास सहारा लेने के लिए कुछ नहीं है, और शालीनता के विचार पर हँसती हैं, - और वह मुझसे केवल दस साल बड़ी हैं!' मुझे तब तक संबंध समझ नहीं आया जब तक उन्होंने यह नहीं कहा, 'खैर, पॉली, मुझे चैरिटी सिस्टर बनना बिल्कुल पसंद नहीं होगा; मुझे लगता है कि यह कुछ लोगों को चौंका देगा, लेकिन मैं बनूँगी।' मुझे लगा कि एक नर्स के रूप में उनमें उतनी ही भावनाएँ होंगी जितनी कि ज़्यादातर लोगों में होती हैं, और कुछ से ज़्यादा भी। उन्होंने कहा कि वह नहीं जानतीं कि लोग कैसे होते हैं। वह दुख के निरंतर दबाव को सहन कर सकती थी, और कभी भी उससे

उबर नहीं सकती थी, सिवाय उसके एक नए रूप में। अपने स्वाभाविक भावों को बनाए रखना असंभव था। मैंने उसे किसी से भी शादी के लिए भीख मांगने या दान-पुण्य की बहन बनकर अपने स्वाभाविक भावों को खोने से बेहतर भविष्य का वादा किया। उसने कहा, 'मेरी जवानी मुझे छोड़ रही है; मैं इससे बेहतर कभी नहीं कर सकती, और मैंने अभी तक कुछ भी नहीं किया है।' ऐसे समय में वह सोचती थी कि अधिकांश मनुष्य सांसारिक हितों के दबाव से एक-एक करके अपनी क्षमता और भावना खोते चले जाते हैं, 'जब तक कि वे पूरी तरह से मर न जाएं।' मुझे आशा है कि मरते ही मुझे मेरी कब्र में दफना दिया जाएगा; मैं इस तरह घूमना नहीं चाहती।' इस पर हम हमेशा असहमत होते थे। मैं सोचता था कि जिस स्वभाव के पतन से वह डरती थी, वह गरीबी का परिणाम था, और उसे पैसा कमाने पर ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी वह इसे स्वीकार करती थी, लेकिन पैसा कमाने का कोई साधन नहीं ढूंढ पाती थी। कभी-कभी वह इस विषय पर अपने विचारों को केंद्रित करने से डरती थी, यह कहते हुए कि इससे सबसे बुरा लकवा हो जाता है। वास्तव में, उसकी स्थिति में, निरंतर निरंतर तल्लीनता के अलावा और कुछ भी संभव नहीं था। छोटे-मोटे पैसों के मामलों के लिए किसी तरह से प्रावधान जुटाया जा सकता था।

"शार्लोट के लिए कलाकार और लेखक बेशक बहुत सम्माननीय थे, और उनकी रचनाओं के बाद सबसे अच्छी चीज उनकी संगति ही होती। वह कभी पैसे और धन कमाने की लालसा की निंदा करती, तो कभी यूरोप के सभी बड़े शहरों की यात्रा करने, सभी दर्शनीय स्थलों को देखने और सभी मशहूर हस्तियों से मिलने की इच्छा व्यक्त करती। साहित्यिक प्रसिद्धि के बारे में उसकी यही धारणा थी - बुद्धिमान लोगों के समाज में प्रवेश का एक जरिया... जब वह ब्रसेल्स के लोगों और तौर-तरीकों से परिचित हो गई, तो उसका जीवन नीरस हो गया, और वह उसी निराशाजनक स्थिति में आ गई, जैसी मिस डब्ल्यू के यहाँ थी, हालांकि कुछ हद तक कम। मैंने उसे पत्र लिखकर घर या कहीं और जाने का आग्रह किया; उसे जो चाहिए था (फ्रांसीसी भाषा) वह मिल गया था, और कम से कम एक नई जगह में कुछ नयापन तो था, भले ही कोई सुधार न हो। अगर वह और गहरे अवसाद में डूब गई, तो जल्द ही उसमें जाने की ऊर्जा नहीं बचेगी, और वह घर से इतनी दूर थी कि उसके दोस्तों को उसकी हालत के बारे में पता नहीं चलेगा और वे उसे वापस नहीं बुला पाएंगे, जैसा कि उन्होंने मिस डब्ल्यू के यहाँ से किया था। उसने लिखा कि मैंने उसकी बहुत बड़ी मदद की है, और

उसे मेरी सलाह जरूर माननी चाहिए।" और वह मेरी बहुत आभारी थीं। मैं अक्सर इस पत्र को देखकर सोचता हूँ। हालाँकि वह धैर्यपूर्वक सलाह सुनती थीं, लेकिन वह हमेशा चुपचाप उसे एक तरफ रख देती थीं और अपनी मर्जी से काम करती थीं। बाद में उन्होंने कई बार मेरे द्वारा किए गए 'उपकार' का जिक्र किया। मेरी परिस्थितियों के बारे में कुछ बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई बातें सुनकर उन्होंने मुझे न्यूजीलैंड 10 पाउंड भेजे और कहा कि उन्हें उम्मीद है कि यह समय पर पहुँच जाएगा; यह एक कर्ज था जो उन्होंने 'मेरे द्वारा किए गए कार्य' के लिए मुझे दिया था। मुझे लगता है कि 10 पाउंड उनकी आय का एक चौथाई हिस्सा था। 'उपकार' का जिक्र माफी के तौर पर किया गया था, लेकिन असली मकसद दयालुता था।

नियमित कर्तव्यों और रोजगारों से भरे इस जीवन में पहला बड़ा झटका दुखद रूप से आया। मार्था—सुंदर, आकर्षक, चंचल और चालाक मार्था—कोएकेलबर्ग महल में अचानक बीमार पड़ गई। उसकी बहन ने बड़े प्यार से उसकी देखभाल की; लेकिन सब व्यर्थ था; कुछ ही दिनों में उसकी मृत्यु हो गई। इस घटना का शार्लोट का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

"मार्था टी. की बीमारी के बारे में मुझे उनकी मृत्यु से एक दिन पहले तक पता नहीं था। अगली सुबह मैं तुरंत कोएकेलबर्ग के लिए रवाना हुई — मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि उनकी हालत बहुत गंभीर है — और मुझे बताया गया कि सब कुछ खत्म हो चुका है। उनकी मृत्यु रात में ही हो गई थी। मैरी को ब्रुसेल्स ले जाया गया। तब से मैं मैरी से अक्सर मिलती रही हूँ। वह इस घटना से बिल्कुल भी दुखी नहीं हैं; लेकिन जब मार्था बीमार थीं, तो वह उनके लिए माँ से भी बढ़कर थीं — बहन से भी बढ़कर: उनकी देखभाल करती, उन्हें प्यार से पालती-पोसती, उनका स्नेह करती रहीं। अब वह शांत और गंभीर दिखती हैं; उनमें कोई उग्र भावना का विस्फोट नहीं होता; न ही वे अपने दुख को बढ़ा-चढ़ाकर बताती हैं। मैंने मार्था की कब्र देखी है — वह जगह जहाँ उनकी अस्थियाँ एक विदेशी देश में दफन हैं।"

जिसने भी "शर्ली" पढ़ी है, उसे दुख भरी यादों की कुछ पंक्तियाँ - शायद आधा पृष्ठ - याद नहीं होंगी?

उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं है कि नन्ही जेसी कम उम्र में ही मर जाएगी। वह इतनी हंसमुख, बातूनी और चंचल है - आज भी उतनी ही अनोखी; उकसाने पर भावुक हो

जाती है, लेकिन दुलार करने पर बेहद स्नेहशील; कभी कोमल तो कभी चंचल; सख्त होते हुए भी उदार; निडर... फिर भी मदद करने वाले किसी पर भी निर्भर। जेसी, अपने छोटे से प्यारे चेहरे, आकर्षक बातों और मनमोहक स्वभाव के साथ, लाड़ली बनने के लिए ही बनी है।

* * * * *

"क्या आप इस जगह को जानते हैं? नहीं, आपने इसे कभी नहीं देखा; लेकिन आप इन पेड़ों, इन पत्तियों की प्रकृति को पहचानते हैं— सरू, विलो, यू। इस तरह के पत्थर के क्रॉस आपके लिए अपरिचित नहीं हैं, न ही ये सदाबहार फूलों की धुंधली मालाएँ। यही वह जगह है: हरी घास और एक धूसर संगमरमर का समाधि-पत्थर— जेसी नीचे सो रही है। उसने अप्रैल का दिन जिया; वह बहुत प्रिय थी, बहुत प्रेम करने वाली थी। अपने छोटे से जीवन में वह अक्सर आँसू बहाती थी—उसने बहुत दुख झेले; वह बीच-बीच में मुस्कुराती रहती थी, जो भी उसे देखता उसे प्रसन्न कर देती थी। रोज़ की रक्षक बाहों में उसकी मृत्यु शांत और सुखद थी, क्योंकि रोज़ कई कठिनाइयों में उसका सहारा और रक्षक रही थी; मरती हुई और उसे देखती हुई अंग्रेज़ लड़कियाँ उस समय एक परदेस में अकेली थीं, और उस देश की मिट्टी ने जेसी को कब्र दी।"

* * * * *

"लेकिन, जेसी, मैं अब तुम्हारे बारे में और नहीं लिखूंगा। यह पतझड़ की शाम है, नम और तूफानी। आसमान में बस एक ही बादल है; लेकिन वह इसे एक छोर से दूसरे छोर तक ढके हुए है। हवा थम नहीं रही; वह धुंध और कोहरे से रंगहीन, उदास पहाड़ियों पर सिसकती हुई तेज़ी से बह रही है। उस गिरजाघर के टावर पर दिन भर बारिश होती रही है" (हॉवर्थ): "यह अपने कब्रिस्तान के पथरीले घेरे से अंधेरा सा उठता है: बिच्छू-बूटी, लंबी घास और कब्रें सब भीगी हुई हैं। यह शाम मुझे कुछ साल पहले की एक और शाम की याद दिलाती है: एक तूफानी, बरसाती पतझड़ की शाम — जब कुछ लोग, जिन्होंने उस दिन एक विधर्मी कब्रिस्तान में बनी नई कब्र की तीर्थयात्रा की थी, एक अनजान घर के चूल्हे पर लकड़ी की आग के पास बैठे थे। वे खुश और मिलनसार थे, लेकिन वे सभी जानते थे कि उनके समूह में एक ऐसा

खालीपन आ गया है, जो कभी भरा नहीं जा सकेगा। वे जानते थे कि उन्होंने कुछ ऐसा खो दिया है जिसकी कमी उनके जीवन भर पूरी तरह से पूरी नहीं हो सकती; और वे जानते थे कि भारी बारिश उनकी कब्र को ढकने वाली गीली मिट्टी में समा रही थी। खोई हुई प्रियतमा; और उदास, आहें भरती आंधी उसके दफन सिर पर मातम मना रही थी। आग ने उन्हें गर्माहट दी; जीवन और मित्रता ने उन्हें अभी भी आशीर्वाद दिया था: लेकिन जेसी ठंडी, ताबूत में, अकेली पड़ी थी — केवल मिट्टी ही उसे तूफान से बचा रही थी।

शार्लोट की दो बहनों के निधन के बाद, उनके करीबी दोस्तों के छोटे से समूह में यह पहली मृत्यु थी। वह अभी भी "मैरी" के प्रति गहरी सहानुभूति में डूबी हुई थीं, तभी घर से खबर आई कि उनकी चाची, मिस ब्रैनवेल, बीमार हैं - बहुत बीमार हैं। एमिली और शार्लोट ने तुरंत घर लौटने का फैसला किया और जल्दी से इंग्लैंड के लिए अपना सामान पैक किया। उन्हें संदेह था कि वे कभी ब्रसेल्स लौट पाएंगी या नहीं, क्योंकि उन्होंने एम. और मैडम हेगर के साथ अपने सभी रिश्तेदारों और पेंशननेट को बेघर और अनिश्चित भविष्य के लिए छोड़ दिया था। उनके प्रस्थान से पहले ही, बीमारी की पहली खबर मिलने के अगले दिन सुबह - जब वे निकलने ही वाली थीं - एक दूसरा पत्र आया, जिसमें उनकी चाची की मृत्यु की सूचना दी गई थी। इससे उनकी यात्रा में तेजी नहीं आई, क्योंकि शीघ्रता के लिए सभी व्यवस्थाएं कर ली गई थीं। वे एंटवर्प से रवाना हुईं; उन्होंने दिन-रात यात्रा की और मंगलवार की सुबह घर पहुंचीं। अंतिम संस्कार और बाकी सब कुछ समाप्त हो गया था, और श्री ब्रोंटे और ऐनी एक साथ बैठे थे, उस शख्स के जाने के गम में डूबे हुए थे जिसने लगभग बीस वर्षों तक उनके घर की ज़िम्मेदारी बखूबी निभाई थी और कई लोगों का आदर और सम्मान अर्जित किया था, जिन्हें यह पता ही नहीं था कि वे उसे कितना याद करेंगे। अपनी मितव्ययिता और त्याग से अर्जित की गई उनकी छोटी सी संपत्ति उनकी भतीजियों को विरासत में मिली थी। उनके प्रिय ब्रैनवेल को भी अपना हिस्सा मिलना था; लेकिन उसके फिजूलखर्ची ने उस भली-भांति महिला को दुखी कर दिया था, और वसीयत में उसका नाम नहीं लिखा गया था।

शुरुआती सदमे के बाद, तीनों बहनें अपने जीवन के सबसे लंबे अलगाव के बाद फिर से मिलने की खुशी का पूरा आनंद लेने लगीं। उन्हें बीते दिनों की बहुत सी बातें बतानी थीं और भविष्य के लिए बहुत कुछ तय करना था। ऐनी कुछ समय के लिए

एक ऐसे पद पर थीं, जहाँ उन्हें क्रिसमस की छुट्टियों के अंत में लौटना था। लगभग एक साल तक वे तीनों फिर से अलग रहने वाली थीं; और उसके बाद, एक साथ रहने और एक स्कूल खोलने का उनका सुखद सपना साकार होने वाला था। बेशक, वे अब बर्लिंगटन या किसी अन्य ऐसी जगह पर बसने के बारे में नहीं सोच रही थीं जो उन्हें उनके पिता से दूर ले जाए; लेकिन उनके पास जो थोड़ी-बहुत धनराशि थी, उससे वे हॉवर्थ स्थित पादरी के घर में कुछ बदलाव कर सकती थीं ताकि वह विद्यार्थियों के प्रवेश के लिए उपयुक्त हो जाए। ऐनी की इस बीच की योजनाएँ तय थीं। एमिली ने तुरंत घर पर रहने वाली बेटी बनने का फैसला कर लिया। शार्लोट के बारे में काफी विचार-विमर्श और चर्चा हुई।

ब्रसेल्स से अचानक प्रस्थान करने की हड़बड़ी में भी, एम. हेगर ने श्री ब्रोंटे को उनके हाल ही में हुए इस दुखद निधन पर सहानुभूति पत्र लिखने का समय निकाल लिया था; यह पत्र, पिता के प्रति सम्मान की आड़ में, बेटियों के चरित्र की इतनी सुंदर प्रशंसा से भरा था कि मैं इसे कॉपी करने के लिए प्रेरित हो जाता, भले ही इसमें शार्लोट के संबंध में एक प्रस्ताव भी शामिल न होता, जो उनके जीवन के वृत्तांत में स्थान पाने का हकदार है।

"रेवरेंड श्री ब्रोंटे, इवेंजेलिकल पादरी, इत्यादि को।"

शनिवार, 5 ओब्रे।

"महोदय,

एक बहुत दुखद घटना के कारण आपकी बेटियों को अचानक इंग्लैंड लौटना पड़ा है। यह प्रस्थान, जिससे हमें बहुत दुख हुआ है, फिर भी मुझे पूर्ण स्वीकृति है। यह स्वाभाविक ही है कि वे आपको सांत्वना देने के लिए आपके साथ रहें, ताकि आप समझ सकें कि ईश्वर ने आपको क्या दिया है और क्या देना बाकी है। मुझे आशा है कि आप मुझे क्षमा करेंगे, महोदय, इस अवसर का लाभ उठाकर अपना सम्मान व्यक्त करने के लिए। मुझे आपको व्यक्तिगत रूप से जानने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है, फिर भी मैं आपके प्रति हार्दिक आदर रखता हूँ, क्योंकि किसी पिता को उसके बच्चों से आंकना अक्सर गलत होता है, और इस संदर्भ में, आपकी बेटियों में हमने जो शिक्षा और भावनाएँ पाई हैं, उनसे हमें आपके गुणों और चरित्र के प्रति बहुत उच्च सम्मान प्राप्त हुआ है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आपकी छात्राओं ने शिक्षा के सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है, और यह प्रगति पूरी तरह से उनके परिश्रम

और लगन के कारण है; ऐसे विद्यार्थियों के साथ हमारा बहुत कम काम था; उनकी प्रगति में हमारा नहीं, बल्कि आपका योगदान है; हमें उन्हें समय और शिक्षा का महत्व सिखाने की आवश्यकता नहीं थी, उन्होंने स्वयं ही यह सीख ली थी। उन्होंने ये सब अपने पिता के घर में सीखा, और हमारी ओर से केवल इतना ही सौभाग्य रहा कि हमने उनके प्रयासों का मार्गदर्शन किया और आपकी बेटियों को आपके उदाहरण और शिक्षाओं से मिली सराहनीय गतिविधियों के लिए उचित प्रोत्साहन प्रदान किया। आशा है कि आपके बच्चों की यह प्रशंसा, जो हम उन्हें दे रहे हैं, आपको इस विपत्ति में कुछ सांत्वना प्रदान करेगी; यही हमारी आपको पत्र लिखने की प्रेरणा है, और यह सुश्री शार्लोट और एमिली के प्रयासों के लिए एक मधुर और सुंदर पुरस्कार होगा।

"अपने दो प्रिय विद्यार्थियों को खोने के दुख में हम आपसे यह छिपा नहीं सकते कि हम शोक और चिंता दोनों महसूस कर रहे हैं; हम व्याकुल हैं क्योंकि इस अचानक बिछड़ने से उनके प्रति हमारा लगभग पितृवत स्नेह चकनाचूर हो गया है, और हमारा दुःख इस बात से और भी बढ़ गया है कि बहुत सारा काम रुक गया है, बहुत सी अच्छी तरह से शुरू की गई चीजें, जिन्हें पूरा होने में बस थोड़ा और समय चाहिए था। एक साल में, आपकी दोनों युवतियाँ भविष्य की चुनौतियों के लिए पूरी तरह से तैयार हो जातीं; उनमें से प्रत्येक शिक्षा और अध्यापन कौशल प्राप्त कर लेती; मिस एमिली पियानो सीखने वाली थीं; बेल्जियम में हमारे सबसे अच्छे शिक्षक से शिक्षा प्राप्त करने वाली थीं, और उनके अपने छोटे विद्यार्थी भी थे; इस प्रकार वह अपनी अज्ञानता और उससे भी अधिक कष्टदायक झिझक दोनों को खो रही थीं; मिस शार्लोट फ्रेंच पढ़ाना शुरू कर रही थीं, और अध्यापन के लिए आवश्यक उस आत्मविश्वास को प्राप्त कर रही थीं; बस एक और साल..." इसके अलावा, काम पूरा हो चुका था, और बहुत अच्छे से पूरा हुआ था। फिर, अगर आपको ठीक लगता, तो हम आपकी बेटियों को, या कम से कम उनमें से एक को, एक ऐसा पद दे सकते थे जो उन्हें पसंद आता और जिससे उन्हें वह प्यारी आज़ादी मिलती जो एक युवती के लिए पाना बहुत मुश्किल होता है। यकीन मानिए, महोदय, यह हमारे लिए निजी स्वार्थ का मामला नहीं है; यह स्नेह का मामला है। अगर हम आपके बच्चों के बारे में बात करें, उनके भविष्य की चिंता करें, मानो वे हमारे परिवार का हिस्सा हों, तो आप हमें क्षमा करेंगे। उनके गुण, उनकी सद्भावना, उनका असीम उत्साह ही एकमात्र कारण हैं जो हमें यह कदम उठाने के लिए प्रेरित करते हैं। हम जानते हैं, महोदय, कि आप अपनी दोनों बेटियों की पढ़ाई

में पूरी तरह रुकावट के उनके भविष्य पर पड़ने वाले परिणामों का हमसे कहीं अधिक समझदारी और बुद्धिमत्ता से आकलन करेंगे। आप तय करेंगे कि क्या करना है, और अगर आप हमारी स्पष्टवादिता को क्षमा करेंगे, तो कृपया इस बात पर विचार करें कि... यह कार्य करना एक अत्यंत निस्वार्थ स्नेह है और आपके प्रिय बच्चों के लिए उपयोगी न रह पाने से हमें बहुत दुख होगा।

"महोदय, कृपया मेरी ओर से हार्दिक सम्मान की इस अभिव्यक्ति को स्वीकार करें।"

“सी. हेगर।”

इस पत्र में सच्चाई के साथ-साथ दयालुता भी झलक रही थी - यह इतना स्पष्ट था कि शिक्षा का दूसरा वर्ष पहले वर्ष की तुलना में कहीं अधिक मूल्यवान होगा, कि शार्लोट को ब्रुसेल्स लौटने का निर्णय लेने से पहले कोई लंबा संकोच नहीं किया गया।

इस बीच, उन्होंने क्रिसमस का भरपूर आनंद उठाया। ब्रैनवेल उनके साथ था; यह इस समय हमेशा एक सुखद अनुभव होता था; चाहे उसकी कितनी भी कमियाँ या बुराइयाँ क्यों न हों, उसकी बहनें उसे अपने परिवार की आशा मानती थीं, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि वह एक दिन उनके परिवार का गौरव बनेगा। वे उसकी कमियों की गंभीरता को अनसुना कर रही थीं, जिनके बारे में उन्हें कभी-कभार बताया जाता था, यह सोचकर कि ऐसी कमियाँ हर मजबूत चरित्र वाले व्यक्ति में आम होती हैं; क्योंकि, जब तक कड़वे अनुभव ने उन्हें सही सबक नहीं सिखाया, वे हमेशा की तरह तीव्र भावनाओं को मजबूत चरित्र से जोड़कर देखने की गलती करती रहीं।

शार्लोट की सहेली उससे मिलने आई और उसने भी उससे मुलाकात की। ब्रसेल्स में उसका जीवन किसी सपने जैसा लग रहा होगा, क्योंकि इतने कम समय में ही वह पूरी तरह से पुराने पारिवारिक रीति-रिवाजों में ढल गई थी; उसे अपने आंटी के जीवनकाल की तुलना में कहीं अधिक घरेलू स्वतंत्रता प्राप्त हो गई थी। सर्दी का मौसम होने के बावजूद, बहनें बर्फ से ढके मैदानों में अपनी आदत के अनुसार सैर पर निकलती थीं; या अक्सर कीघली जाने वाली लंबी सड़क पर जाती थीं, ताकि वे किताबें ले सकें जो इंग्लैंड से उनकी अनुपस्थिति के दौरान वहाँ के पुस्तकालय में जोड़ी गई थीं।

अध्याय XII

जनवरी के अंत में, शार्लोट के ब्रुसेल्स लौटने का समय आ गया। उनकी यात्रा काफी दुर्भाग्यपूर्ण रही। उन्हें अकेले ही जाना पड़ा; लीड्स से लंदन जाने वाली ट्रेन, जिसे दोपहर के शुरुआती समय में यूस्टन स्क्वायर पहुंचना चाहिए था, इतनी देर से पहुंची कि वह रात दस बजे तक नहीं पहुंच पाई। उनका इरादा चैप्टर कॉफी हाउस जाने का था, जहां वह पहले भी ठहर चुकी थीं और जो स्टीमबोटों के ठहराव स्थल के पास ही था; लेकिन यॉर्कशायर के रीति-रिवाजों के अनुसार इतने देर से और अनुचित समय पर पहुंचने के विचार से वह शायद डर गईं; इसलिए स्टेशन पर एक टैक्सी लेकर वह सीधे लंदन ब्रिज घाट गईं और एक नाविक से उन्हें ओस्टेंड पैकेट तक नाव से ले जाने का अनुरोध किया, जिसे अगली सुबह रवाना होना था। उसने मुझे लगभग उसी तरह से वर्णन किया, जैसा उसने बाद में "विलेट" में किया है, अपनी तन्हाई और फिर भी उस स्थिति के रोमांच में अपने अजीब से आनंद का, जब उस सर्दी की रात के सन्नाटे में वह तेज़ी से अंधेरी नदी पार करके काले जहाज़ के किनारे पहुँची, और पहले तो उसे डेक पर जाने की अनुमति नहीं दी गई। उन्होंने कुछ अनादर भाव से कहा, "कोई भी यात्री जहाज़ पर सो नहीं सकता।" उसने लंदन की रोशनी और मंद आवाज़ों की ओर देखा - वह "महान हृदय" जिसमें उसका कोई स्थान नहीं था - और हिलती हुई नाव में खड़ी होकर उसने जहाज़ पर मौजूद किसी अधिकारी से बात करने का अनुरोध किया। वह आया, और उसकी इच्छा और उसके कारण के उसके शांत और सरल कथन ने उन लोगों के तिरस्कारपूर्ण अविश्वास की भावना को शांत कर दिया जिन्होंने पहले उसका अनुरोध सुना था; और अधिकारी को इतना प्रभावित किया कि उसने उसे जहाज़ पर आने और एक बर्थ लेने की अनुमति दे दी। अगली सुबह वह रवाना हुई; और रविवार शाम सात बजे वह एक बार फिर रू डी'इसाबेल पहुँची; शुक्रवार की सुबह

तड़के ही हॉवर्थ से निकलने के बाद।

उनकी सालाना तनख्वाह 16 पाउंड थी; जिसमें से उन्हें जर्मन भाषा की पढ़ाई के लिए पैसे देने पड़ते थे, जिसके लिए उनसे उतना ही शुल्क लिया जाता था (संभवतः समय के हिसाब से शुल्क लिया जाता था) जितना एमिली के उनके साथ पढ़ने और खर्च बाँटने के समय लिया जाता था, यानी दस फ्रैंक प्रति माह। मिस ब्रोंटे की अपनी इच्छा से, उन्होंने मैडम या एम. हेगर की देखरेख के बिना, कक्षा में ही अंग्रेजी की कक्षाएं लीं। उन्होंने उद्दंड बेल्जियम की लड़कियों में अनुशासन बनाए रखने के लिए उपस्थित रहने की पेशकश की; लेकिन उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया, यह कहते हुए कि वह किसी पुलिस वाले की उपस्थिति में आज्ञापालन के लिए बाध्य होने के बजाय अपने व्यवहार और चरित्र से अनुशासन लागू करना पसंद करेंगी। उन्होंने एक नए स्कूलरूम का संचालन किया, जो घर से सटे खेल के मैदान में बनाया गया था। उस प्रथम श्रेणी में वह हर समय निगरानी रखती थीं; और एम. हेगर के आदेशानुसार उन्हें मैडमोजेल शार्लोट कहा जाने लगा। उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी, मुख्य रूप से जर्मन और साहित्य पर ध्यान केंद्रित किया; और हर रविवार वह अकेले ही जर्मन और अंग्रेजी चैपलों में जाती थी। उसकी सैर भी एकांत में ही होती थी, और मुख्यतः वह सुरक्षित बाड़े में टहलती थी, जहाँ उसे किसी की दखलंदाजी का डर नहीं रहता था। उसके स्वभाव के कारण यह एकांत एक खतरनाक विलासिता थी; क्योंकि वह मानसिक रूप से अस्वस्थ और तीव्र पीड़ा का शिकार हो सकती थी।

6 मार्च, 1843 को उन्होंने इस प्रकार लिखा: —

“मैं अब तक अच्छी तरह से व्यवस्थित हो चुकी हूँ। मुझ पर काम का बहुत ज़्यादा बोझ नहीं है; अंग्रेज़ी पढ़ाने के अलावा, मेरे पास जर्मन भाषा में सुधार करने का भी समय है। मुझे खुद को खुशहाल समझना चाहिए और अपनी अच्छी किस्मत के लिए आभारी होना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि मैं आभारी हूँ; और अगर मैं हमेशा अपना मनोबल बनाए रखूँ और कभी अकेलापन महसूस न करूँ, न ही किसी साथी या दोस्ती की चाह रखूँ, तो मैं बहुत अच्छी स्थिति में रहूँगी। जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, श्रीमान और श्रीमती हेगर ही घर में वे दो व्यक्ति हैं जिनके लिए मेरे मन में वास्तव में आदर और सम्मान है, और ज़ाहिर है, मैं हमेशा उनके साथ नहीं रह सकती, न ही अक्सर। जब मैं पहली बार लौटी थी, तो उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं उनके बैठक कक्ष को अपना बैठक कक्ष समझूँ और जब भी मैं कक्षा में व्यस्त न होऊँ, वहाँ जाऊँ।

लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती। दिन के समय यह एक सार्वजनिक कमरा होता है, जहाँ संगीत शिक्षक और शिक्षिकाएँ लगातार आते-जाते रहते हैं; और शाम को, मैं श्रीमान और श्रीमती हेगर के जीवन में दखल नहीं दूँगी, और न ही मुझे ऐसा करना चाहिए।" और उनके बच्चे। इस प्रकार, स्कूल के समय के बाद मैं काफी हद तक अकेला रहता हूँ; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं अब नियमित रूप से एम. हेगर और उनके बहनोई को अंग्रेजी पढ़ाता हूँ। वे आश्चर्यजनक गति से सीख रहे हैं; विशेष रूप से पहला। वह पहले से ही काफी अच्छी अंग्रेजी बोलने लगा है। यदि आप देख और सुन पाते कि मैं उन्हें अंग्रेजों की तरह उच्चारण सिखाने के लिए कितनी मेहनत करता हूँ, और उनकी नकल करने की व्यर्थ कोशिशें, तो आप हमेशा के लिए हंसते रहते।

"कार्निवल अभी-अभी समाप्त हुआ है, और हम उपवास के उदासी और संयम के दौर में प्रवेश कर चुके हैं। उपवास के पहले दिन हमने नाश्ते में बिना दूध की कॉफ़ी पी; दोपहर के भोजन में सिरका और सब्ज़ियाँ, साथ में थोड़ी सी नमकीन मछली; और रात के खाने में रोटी। कार्निवल मुखौटे और तमाशों के सिवा कुछ नहीं था। एम. हेगर मुझे और एक छात्र को मुखौटे देखने के लिए शहर ले गए। विशाल भीड़ और आम उल्लास को देखकर उत्साह का अनुभव हुआ, लेकिन मुखौटे कुछ भी नहीं थे। मैं डी. के यहाँ दो बार जा चुका हूँ" (वे "मैरी" के चचेरे भाई-बहन हैं जिनका मैंने पहले उल्लेख किया है)। "जब वह ब्रुसेल्स छोड़कर चली जाएगी, तो मेरे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं होगी। मुझे मैरी से दो पत्र मिले हैं। वह मुझे अपनी बीमारी के बारे में नहीं बताती, न ही कोई शिकायत करती है; लेकिन उसके पत्र किसी ऐसे व्यक्ति के पत्रों की तरह नहीं हैं जो बहुत खुश हो। उसके पास कोई ऐसा नहीं है जो उसके प्रति उतना अच्छा व्यवहार करे जितना श्री हेगर मेरे प्रति करते हैं; उसे किताबें उधार दे; कभी-कभी उससे बातचीत करे, इत्यादि।"

"अलविदा। जब मैं ऐसा कहता हूँ, तो मुझे लगता है कि आप शायद ही मुझे सुन पाएँगे; बीच में उठती और गरजती लहरें मेरी आवाज़ को दबा देंगी।"

इस पत्र के लहजे से यह आसानी से समझा जा सकता है कि 1843 का ब्रुसेल्स 1842 के ब्रुसेल्स से बिल्कुल अलग था। तब एमिली दिन-रात उसका सहारा और साथी थी। उसे हर हफ्ते डी. परिवार से मिलने का मौका मिलता था; और उसे अक्सर मैरी और मार्था से मिलने की खुशी मिलती थी। अब एमिली हॉवर्थ में बहुत दूर थी—

जहाँ वह या कोई और प्रियजन मर सकता था, इससे पहले कि शार्लोट अपनी पूरी कोशिश से उन तक पहुँच पाती, जैसा कि उसकी चाची के मामले में उसके अनुभव ने उसे सिखाया था। डी. परिवार ब्रुसेल्स छोड़ रहा था; इसलिए, अब से, उसकी साप्ताहिक छुट्टियाँ रू डी इसाबेल में ही बीतेंगी, या कम से कम वह ऐसा सोचती थी। मैरी अपने स्वतंत्र मार्ग पर चली गई थी; मार्था अकेली रह गई थी—पोर्ट डी लूवेन के पार कब्रिस्तान में हमेशा के लिए शांत और स्थिर। शार्लोट के लौटने के बाद पहले कुछ हफ्तों तक मौसम भी बहुत ठंडा था; और उसका कमजोर शरीर हमेशा खराब मौसम के प्रति बहुत संवेदनशील रहता था। शारीरिक दर्द, चाहे कितना भी तीव्र क्यों न हो, वह हमेशा सहन कर लेती थी; लेकिन अक्सर अस्वस्थता उसे कहीं अधिक भयावह रूप में घेर लेती थी। जब वह बीमार होती थी, तो उसकी मनोदशा बेहद दयनीय होती थी। वह जानती थी कि यह स्वाभाविक है और इसके बारे में तर्क भी कर सकती थी; लेकिन जब तक शारीरिक पीड़ा बनी रहती थी, तब तक कोई भी तर्क उसे मानसिक पीड़ा सहने से नहीं रोक पाता था।

"विलेट" के प्रकाशन के बाद से हेगर परिवार को पता चला है कि उनके विद्यालय में अंग्रेजी शिक्षिका के रूप में अपने करियर की शुरुआत में, उनके विद्यार्थियों का व्यवहार अक्सर बेहद उद्दंड और विद्रोही होता था। लेकिन उस समय उन्हें इस बात का पता नहीं था, क्योंकि उन्होंने उनकी उपस्थिति को नजरअंदाज कर दिया था और कभी कोई शिकायत नहीं की थी। फिर भी, उस समय यह उनके लिए एक निराशाजनक विचार रहा होगा कि उनके हंसमुख, स्वस्थ और बुद्धिहीन विद्यार्थी उन पर अपना प्रभाव डालने की उनकी क्षमता के आगे कुछ भी नहीं थे; और यद्यपि उनके स्वयं के बयान से, उनके धैर्य, दृढ़ता और संकल्प का अंततः उचित फल मिला, फिर भी इतने कमजोर स्वास्थ्य और मनोबल वाली महिला के लिए, अपने विद्यार्थियों के साथ होने वाले ऐसे संघर्षों के बाद की प्रतिक्रिया बहुत दुखद और पीड़ादायक रही होगी।

इस प्रकार वह अपनी मित्र ई. को लिखती है: —

अप्रैल, 1843।

“क्या आपके ब्रुसेल्स आने की कोई बात चल रही है? फरवरी और मार्च के अधिकांश भाग में जो भीषण ठंड पड़ी, उस दौरान मुझे इस बात का ज़रा भी अफ़सोस नहीं हुआ कि आप मेरे साथ नहीं आए। अगर मैंने आपको मेरी तरह कांपते देखा होता, अगर मैंने आपके हाथों और पैरों को मेरी तरह लाल और सूजा हुआ देखा

होता, तो मेरी बेचैनी दुगनी हो जाती। मैं इस तरह की स्थिति में ठीक-ठाक रह सकता हूँ; इससे मुझे कोई परेशानी नहीं होती; बस मैं सुन्न और चुप हो जाता हूँ; लेकिन अगर आपको बेल्जियम में सर्दी बितानी पड़े, तो आप बीमार पड़ जाएँगे। हालाँकि, अब मौसम सुहावना हो रहा है, और मेरी इच्छा है कि आप यहाँ होते। फिर भी मैंने आपको आने के लिए कभी ज़ोर नहीं दिया, और न ही कभी ज़ोर दूँगा। यहाँ अभाव और अपमान सहने पड़ते हैं; जीवन में एकरसता और एकरूपता दोनों हैं; और सबसे बढ़कर, भीड़ के बीच अकेलेपन का निरंतर एहसास होता है। प्रोटेस्टेंट, विदेशी, एक एकाकी प्राणी होता है, चाहे वह शिक्षक हो या छात्र। मैं यह अपनी किस्मत की शिकायत के तौर पर नहीं कह रहा हूँ; क्योंकि हालाँकि मैं मैं स्वीकार करती हूँ कि मेरी वर्तमान स्थिति में कुछ कमियाँ हैं, भला ऐसी कौन सी स्थिति है जिसमें कमियाँ न हों? और जब भी मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ कि मैं क्या हूँ और क्या थी — उदाहरण के लिए, यहाँ मेरी स्थिति और श्रीमती — के यहाँ मेरी स्थिति — तो मैं आभारी होती हूँ। आपके पिछले पत्र में एक टिप्पणी थी जिसने मुझे क्षण भर के लिए क्रोधित कर दिया। पहले तो मैंने सोचा कि इसका उत्तर देना मूर्खता होगी और मैंने इसे छोड़ दिया। बाद में, मैंने एक बार में ही इसका उत्तर देने का निश्चय किया। ऐसा लगता है, 'तीन-चार लोगों का मानना है कि मैडमोजेल ब्रोंटे का भावी पति महाद्वीप पर है।' ये लोग मुझसे कहीं अधिक बुद्धिमान हैं। वे विश्वास नहीं कर सकते कि मैं केवल मैडम हेगर्स के यहाँ शिक्षक के रूप में लौटने के लिए समुद्र पार कर गई। मेरे पास अपने गुरु और स्वामिनी के प्रति सम्मान, उनकी दयालुता के लिए कृतज्ञता आदि से कहीं अधिक शक्तिशाली कारण होना चाहिए, जिसने मुझे इंग्लैंड में 50 पाउंड का वेतन ठुकराकर बेल्जियम में 16 पाउंड का वेतन स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। वास्तव में, मेरे पास किसी न किसी तरह, कहीं न कहीं, पति पाने की एक धुंधली सी उम्मीद। अगर इन दयालु लोगों को मेरे एकांत जीवन के बारे में पता होता, — कि मैं श्री हेगर के अलावा किसी और पुरुष से कभी बात नहीं करती, और उनसे भी बहुत कम, — तो शायद वे यह मानना छोड़ देते कि ऐसी किसी काल्पनिक और निराधार धारणा ने मेरे कार्यों को प्रभावित किया है। क्या मैंने खुद को इस तरह के मूर्खतापूर्ण आरोप से मुक्त करने के लिए पर्याप्त कह दिया है? यह कहना गलत नहीं होगा कि शादी करना या शादी की इच्छा रखना अपराध है; बल्कि यह मूर्खता है, जिसे मैं घोर तिरस्कार के साथ अस्वीकार करती हूँ, कि जिन महिलाओं के पास न तो धन है और न ही सुंदरता,

वे शादी को अपनी इच्छाओं और आशाओं का मुख्य लक्ष्य और अपने सभी कार्यों का उद्देश्य बना लें; वे खुद को यह समझाने में असमर्थ हों कि वे आकर्षक नहीं हैं, और उनके लिए चुप रहना और शादी के अलावा अन्य चीजों के बारे में सोचना बेहतर है।

निम्नलिखित अंश, उनकी बहन एमिली के साथ उनके पत्राचार के उन कुछ पत्रों में से एक है जो आज तक सुरक्षित हैं:

29 मई, 1843

मैं यहाँ रोज़ाना रॉबिन्सन क्रूसो की तरह गुज़ारा कर रहा हूँ, बहुत अकेला, लेकिन इसका कोई महत्व नहीं है। बाकी मामलों में मुझे कोई खास शिकायत नहीं है, और न ही यह शिकायत का कारण है। आशा है आप ठीक होंगे। खुले मैदानों में अक्सर सैर पर निकलें। टैबी को मेरा प्यार। आशा है वह स्वस्थ रहेगी।

और इसी समय उसने अपने पिता को पत्र लिखा,

2 जून, 1818,

घर से खबर सुनकर बहुत खुशी हुई। कोई खबर न मिलने से मैं उदास होने लगी थी और मुझे डर सता रहा था कि कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है। आपने अपनी सेहत के बारे में कुछ नहीं बताया, लेकिन उम्मीद है आप और एमिली दोनों ठीक होंगे। मुझे डर है कि अब हन्ना (एक नौकरानी जो टैबी की मदद करती थी) के जाने के बाद एमिली को काफी मेहनत करनी पड़ेगी। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आप अभी भी टैबी (लगभग सत्तर वर्ष से अधिक उम्र की) को अपने पास रखते हैं। यह उसके प्रति बहुत बड़ा परोपकार है और मुझे नहीं लगता कि इसका फल आपको ज़रूर मिलेगा, क्योंकि वह बहुत वफादार है और जब भी जरूरत होगी, अपनी पूरी क्षमता से आपकी सेवा करेगी; इसके अलावा, वह एमिली का साथ भी देगी, जो उसके बिना बहुत अकेली महसूस करेगी।

मैंने एक लिखित दस्तावेज दिया था, जो एम. हेगर के मार्गदर्शन में चार महीने बिताने के बाद लिखा गया था। अब मैं एक और दस्तावेज की प्रतिलिपि प्रस्तुत करूँगा, जो लगभग एक वर्ष बाद लिखा गया था, और जिसके दौरान हुई प्रगति मुझे अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीत होती है।

31 मई, 1843।

नेपोलियन की मृत्यु पर।

नेपोलियन का जन्म कोर्सिका में हुआ और उनकी मृत्यु सेंट हेलेना में हुई। इन दोनों

द्वीपों के बीच एक विशाल, धधकते रेगिस्तान और असीम सागर के सिवा कुछ नहीं था। उनका जन्म एक साधारण सज्जन के पुत्र के रूप में हुआ और उनकी मृत्यु एक सम्राट के रूप में हुई, लेकिन बिना ताज के और जंजीरों में जकड़े हुए। उनके पालने और उनकी कब्र के बीच क्या है? एक सैनिक का जीवन, जो सत्ता, युद्धक्षेत्र, रक्त सागर, सिंहासन, फिर और रक्तपात और जंजीरों तक पहुंचा। उनका जीवन इंद्रधनुष के समान है; इसके दो छोर पृथ्वी को स्पर्श करते हैं, इसका चमकीला शिखर आकाश को छूता है। पालने में नेपोलियन के ऊपर एक माँ की रोशनी थी; अपने पिता के घर में उनके भाई-बहन थे; बाद में, अपने महल में उनकी एक पत्नी थी जो उनसे प्रेम करती थी। लेकिन अपनी मृत्युशय्या पर नेपोलियन अकेले हैं; न माँ, न भाई, न बहन, न पत्नी, न बच्चे! दूसरों ने उनके कारनामों का वर्णन किया है और आगे भी करेंगे; मैं, उनके अंतिम क्षणों की इस परित्याग पर विचार करने के लिए थम जाता हूँ!

"वह रहा, निर्वासित और बंदी, एक चट्टान से जंजीरों में जकड़ा हुआ। एक नया प्रोमेथियस, वह अपने अहंकार का दंड भुगत रहा है! प्रोमेथियस ईश्वर और सृष्टिकर्ता बनना चाहता था; उसने अपने द्वारा निर्मित शरीर को सजीव करने के लिए स्वर्ग से अग्नि चुराई थी। और बोनापार्ट, एक मनुष्य नहीं, बल्कि एक साम्राज्य बनाना चाहता था, और अपने विशाल कार्य को अस्तित्व, एक आत्मा देने के लिए, उसने पूरे राष्ट्रों से जीवन छीनने में संकोच नहीं किया। प्रोमेथियस के अधर्म से क्रोधित बृहस्पति ने उसे जीवित ही काकेशस पर्वत की चोटी पर जंजीरों में जकड़ दिया। इस प्रकार, बोनापार्ट की लालची महत्वाकांक्षा को दंडित करने के लिए, ईश्वर ने उसे मृत्यु तक अटलांटिक महासागर की एक एकांत चट्टान से जंजीरों में जकड़ कर रखा। शायद वहाँ भी, उसने उस कथा के अतृप्त गिद्ध को अपनी ओर आकर्षित होते हुए महसूस किया होगा, शायद उसने भी हृदय की उस प्यास को सहा होगा।" आत्मा की यह भूख, जो अपने परिवार और अपने वतन से दूर निर्वासित को सताती है। लेकिन क्या इस तरह बोलना नेपोलियन पर एक ऐसी मानवीय कमजोरी थोपना नहीं है जो उसने कभी महसूस ही नहीं की? उसने कब खुद को स्नेह के बंधन में बंधने दिया? निस्संदेह, अन्य विजेताओं ने भी अपने गौरव के मार्ग में हिचकिचाहट दिखाई होगी, प्रेम या मित्रता की बाधा से रुके होंगे, किसी स्त्री के हाथ ने उन्हें रोका होगा, किसी मित्र की आवाज ने उन्हें वापस बुलाया होगा—लेकिन नेपोलियन ने कभी नहीं! उसे यूलिसिस की तरह जहाज के मस्तूल से खुद को बांधने या अपने कानों में मोम लगाने की कोई आवश्यकता नहीं

थी; वह सायरन के गीत से नहीं डरता था—वह उसका तिरस्कार करता था; उसने अपने भव्य मंसूबों को पूरा करने के लिए खुद को संगमरमर और लोहे का बना लिया था। नेपोलियन खुद को एक इंसान नहीं, बल्कि एक राष्ट्र का प्रतीक मानता था। उसने प्रेम नहीं किया; उसने अपने मित्रों और प्रियजनों को केवल ऐसे उपकरण माना जिनसे वह तब तक चिपका रहा जब तक वे उपयोगी थे, और जिन्हें उसने उनके अनुपयोगी हो जाने पर त्याग दिया। इसलिए, किसी को भी दया भाव से उस कोर्सिकन की कब्र के पास नहीं जाना चाहिए, न ही उसके अवशेषों को ढकने वाले पत्थर को आंसुओं से अपवित्र करना चाहिए; उसकी आत्मा इन सब का खंडन करेगी। मुझे पता है, ऐसा कहा गया है कि जिस हाथ ने उसे उसकी पत्नी और बच्चे से अलग किया, वह क्रूर था। नहीं, वह हाथ, उसकी अपनी तरह, न तो जुनून से कांपता था और न ही डर से; वह एक ठंडे, दृढ़ निश्चयी व्यक्ति का हाथ था जो बोनापार्ट को समझ चुका था; और यही वह व्यक्ति था, जिसे न तो हार अपमानित कर सकी और न ही जीत घमंड दिला सकी, उसने कहा: "मैरी-लुईस नेपोलियन की पत्नी नहीं है; वह फ्रांस है, जिससे नेपोलियन ने विवाह किया; वह फ्रांस है, जिससे वह प्रेम करता है; उनका मिलन यूरोप के पतन का कारण है; यही वह तलाक है जो मैं चाहता हूँ; यही वह मिलन है जिसे तोड़ना होगा।"

डरपोक और देशद्रोहियों की आवाज़ों ने इस फैसले का विरोध किया। 'यह जीत के अधिकार का दुरुपयोग है! यह पराजितों को पैरों तले रौंदना है! इंग्लैंड दया दिखाए, अपने निहत्थे दुश्मन का मेहमान बनकर स्वागत करे।' शायद इंग्लैंड इस सलाह पर ध्यान दे सकता था, क्योंकि हर जगह और हर समय कमज़ोर और डरपोक आत्माएँ होती हैं जो चापलूसी से बहक जाती हैं या निंदा से डर जाती हैं। लेकिन ईश्वर की कृपा से एक ऐसा व्यक्ति प्रकट हुआ जिसने कभी डर का नाम तक नहीं लिया था; जो अपने देश को अपनी प्रसिद्धि से भी अधिक प्रेम करता था; धमकियों से अप्रभावित, प्रशंसा से अप्रभावित, वह राष्ट्र की परिषद के समक्ष उपस्थित हुआ, और अपना शांत सिर ऊँचा करके उसने साहसपूर्वक कहा: 'देशद्रोह को चुप कराओ! क्योंकि बोनापार्ट के साथ समझौता करने की सलाह देना ही देशद्रोह है। मैं जानता हूँ कि ये युद्ध क्या हैं, जिनसे यूरोप आज भी खून बहा रहा है, जैसे कसाई के चाकू के नीचे कोई शिकार। हमें नेपोलियन बोनापार्ट का खात्मा करना होगा। आप ऐसे कठोर शब्द से गलत तरीके से डर रहे हैं! मेरे पास उदारता, कहते हैं? ठीक है! मुझे क्या फर्क पड़ता है कि वे मेरे

बारे में क्या कहते हैं? मैं यहाँ उदार नायक के रूप में प्रतिष्ठा बनाने नहीं आया हूँ, बल्कि एक मरते हुए यूरोप को ठीक करने आया हूँ, अगर इलाज संभव हो, जो संसाधनों और खून से खाली हो चुका है, एक ऐसा यूरोप जिसके सच्चे हितों की आप उपेक्षा करते हैं, क्योंकि आप दया की व्यर्थ प्रतिष्ठा में डूबे हुए हैं। आप कमजोर हैं! तो फिर! मैं आपकी मदद करने आया हूँ। बोनापार्ट को सेंट हेलेना भेजो! संकोच न करो, किसी और जगह की तलाश मत करो; यही एकमात्र उपयुक्त जगह है। मैं तुमसे कहता हूँ, मैंने तुम्हारे लिए इस पर अच्छी तरह विचार किया है; उसे वहीं होना चाहिए और कहीं नहीं। जहाँ तक नेपोलियन की बात है, एक व्यक्ति, एक सैनिक के रूप में, मुझे उससे कोई शिकायत नहीं है; वह एक शाही शेर है, जिसके सामने तुम गीदड़ों के समान हो। लेकिन सम्राट नेपोलियन, वह बिल्कुल अलग बात है, मैं उसे यूरोप की धरती से उखाड़ फेंकूँगा।' और जो इस तरह बोलता था, वह हमेशा अपना वादा निभाना जानता था, यह वादा भी बाकी सभी वादों की तरह ही था। मैंने कहा है, और मैं दोहराता हूँ, यह आदमी प्रतिभा में नेपोलियन के बराबर है; चरित्र, ईमानदारी और अपने विचारों और उद्देश्यों की महानता के मामले में, वह बिल्कुल अलग तरह के व्यक्ति हैं। नेपोलियन बोनापार्ट प्रसिद्धि और यश के भूखे थे; आर्थर वेलेस्ली को इनमें से किसी की परवाह नहीं थी; नेपोलियन की नज़र में जनमत और लोकप्रियता का कोई महत्व नहीं था; वेलिंगटन के लिए जनमत एक अफवाह है, एक तुच्छ बात जिसे उनकी अटल इच्छाशक्ति साबुन के बुलबुले की तरह गायब कर देती है। नेपोलियन जनता की चापलूसी करते थे; वेलिंगटन ने उन्हें बेरुखी से नकार दिया; एक प्रशंसा चाहता था, दूसरा केवल अपनी अंतरात्मा की आवाज की परवाह करता था; जब अंतरात्मा उसे स्वीकार करती थी, तो बस इतना ही काफी था; कोई भी अन्य प्रशंसा उन्हें व्याकुल कर देती थी। इस प्रकार, बोनापार्ट की पूजा करने वाली यह जनता वेलिंगटन के अहंकार से चिढ़ गई और विद्रोह करने लगी: कभी-कभी वह अपना क्रोध और घृणा जंगली जानवरों की तरह गुर्राकर, दहाड़कर दिखाते थे; और फिर, एक रोमन सीनेटर की तरह, आधुनिक कोरियोलानुस की तरह उग्र दंगे का जायजा लेते थे; वह अपनी घबराहट भरी बाहों को अपनी चौड़ी छाती पर बांध लेते थे, और अकेले, अपनी दहलीज पर खड़े होकर, प्रतीक्षा करते थे, वह इस जनमानस के गुस्से का सामना करते थे। एक ऐसा तूफ़ान जिसकी लहरें उससे कुछ ही कदम दूर आकर थम गईं: और जब भीड़, अपने विद्रोह पर शर्मिंदा होकर, स्वामी के पैर चाटने आई, तो उस

अभिमानी कुलीन ने आज की श्रद्धा को कल की घृणा के समान ही तिरस्कार किया, और लंदन की सड़कों पर, और एप्सली स्थित अपने राजमहल के सामने, उसने उत्साही लोगों की असुविधाजनक उत्सुकता को ठंडे तिरस्कार से ठुकरा दिया। हालाँकि, इस अभिमान ने उसमें मौजूद दुर्लभ विनम्रता को नहीं रोका; उसने हर जगह प्रशंसा से परहेज किया; स्तुतिगान से दूर रहा; उसने कभी अपने कारनामों के बारे में बात नहीं की, और वह कभी किसी को अपनी उपस्थिति में उनके बारे में बात करने नहीं देता। उसका चरित्र किसी भी अन्य नायक, चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक, के बराबर है और वास्तव में उससे कहीं बढ़कर है। नेपोलियन की महिमा रातोंरात बढ़ी, जैसे योना की बेल, और एक ही दिन में मुरझा गई; वेलिंगटन की महिमा शैनन नदी के किनारे स्थित उसके पिता के महल को छाया देने वाले प्राचीन बलूत के पेड़ों के समान है; बलूत का पेड़ धीरे-धीरे बढ़ता है; उसे अपनी टेढ़ी-मेढ़ी शाखाओं को आकाश की ओर धकेलने और नीचे उतरने में समय लगता है। धरती में गहराई तक समाई हुई वो जड़ें, जो इसकी मजबूत नींव से जुड़ी हुई हैं; लेकिन फिर भी, वो प्राचीन वृक्ष, जिस चट्टान पर खड़ा है, उसी की तरह अडिग, समय की मार और हवाओं व तूफानों की ताकत का डटकर सामना करता है। शायद इंग्लैंड को अपने इस नायक के महत्व को समझने में एक सदी लग जाए। एक सदी में, पूरा यूरोप जान जाएगा कि वेलिंगटन कितना कृतज्ञता का पात्र है।

"एक अजनबी देश में" यह लेख लिखते समय, मिस ब्रोंटे ने हॉवर्थ पार्सनेज की रसोई में वेलिंगटन और बोनापार्ट के गुणों को लेकर होने वाले बचपन के झगड़ों के बारे में कितनी बार सोचा होगा! हालाँकि उनके लेख का शीर्षक "नेपोलियन की मृत्यु पर" है, फिर भी उन्होंने एक अंग्रेज नायक की प्रशंसा करना अधिक सम्मान की बात समझा, बजाय किसी विदेशी के चरित्र पर चर्चा करने के, क्योंकि वे उन लोगों के बीच थीं जिन्हें न तो इंग्लैंड की परवाह थी और न ही वेलिंगटन की। अब उन्हें लग रहा था कि उन्होंने फ्रेंच भाषा में दक्षता प्राप्त करने की दिशा में काफी प्रगति कर ली है, जो ब्रुसेल्स आने का उनका मुख्य उद्देश्य था। लेकिन उत्साही शिक्षार्थी के लिए "एक के बाद एक पहाड़ खड़े होते हैं।" एक कठिनाई दूर होते ही कोई दूसरी वांछित उपलब्धि सामने आ जाती है, और उसके लिए परिश्रम करना पड़ता है। अब जर्मन भाषा का ज्ञान उनका लक्ष्य बन गया; और उन्होंने इसे प्राप्त करने तक ब्रुसेल्स में रहने का निश्चय किया। घर जाने की तीव्र इच्छा उन पर हावी हो गई; लेकिन उनके प्रबल आत्म-

संयम ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। उनके भीतर एक गहरा आंतरिक संघर्ष चल रहा था; अपनी इच्छाशक्ति पर काबू पाने के संघर्ष में उसका हृदय का हर कण कांप रहा था; और जब उसने स्वयं पर विजय प्राप्त कर ली, तो वह सिंहासन पर विराजमान एक शांत और सर्वोच्च विजेता की तरह नहीं, बल्कि हांफती, घायल और पीड़ित एक पीड़ित की तरह रह गई। उसकी नसें और मनोबल टूट गए। उसका स्वास्थ्य बुरी तरह बिगड़ गया।

ब्रुसेल्स, 1 अगस्त, 1843।

अगर मैं इस पत्र में शिकायत करूँ, तो मुझ पर दया कीजिएगा और मुझे दोष नहीं दूंगा, क्योंकि मैं आपको पहले ही बता दूं, मैं उदास हूँ, और इस समय मुझे धरती और आकाश दोनों ही नीरस और खाली लग रहे हैं। कुछ ही दिनों में हमारी छुट्टियाँ शुरू हो जाएँगी; हर कोई इस बात से खुश और उत्साहित है, क्योंकि सभी को घर जाना है। मुझे पता है कि मुझे छुट्टियों के पाँच हफ़्तों तक यहीं रहना है, और उस दौरान मैं बहुत अकेला रहूँगा, और परिणामस्वरूप उदास हो जाऊँगा, और दिन-रात मुझे थकाऊ लगेंगे। यह मेरे जीवन में पहली बार है कि मुझे छुट्टियों से इतना डर लग रहा है। हाय! मैं मुश्किल से लिख पा रहा हूँ, मेरे दिल पर इतना भारी बोझ है; और मैं घर जाना चाहता हूँ। क्या यह बचकाना नहीं है? मुझे क्षमा कीजिएगा, क्योंकि मैं कुछ नहीं कर सकता। हालाँकि, मैं इतना मजबूत नहीं हूँ कि खुशी से सब कुछ सह सकूँ, फिर भी मैं सह सकता हूँ; और मैं कुछ और महीनों तक यहीं रहूँगा, जब तक कि मैं जर्मन भाषा सीख न लूँ; और फिर मुझे उम्मीद है कि मैं आप सभी के चेहरे फिर से देख पाऊँगा। काश छुट्टियाँ अच्छी होतीं। बस! समय बहुत धीरे-धीरे बीत जाएगा। कृपया मुझे एक लंबा-लंबा पत्र लिखें; उसमें छोटी से छोटी बात का भी ज़िक्र करें; कुछ भी उबाऊ नहीं लगेगा। यह न सोचें कि लोग मेरे साथ बुरा बर्ताव कर रहे हैं, इसलिए मैं बेल्जियम छोड़ना चाहती हूँ; ऐसा कुछ भी नहीं है। सभी लोग बहुत ही विनम्र हैं, लेकिन घर की याद सताती रहती है। मैं इसे दूर नहीं कर पा रही हूँ। यकीन मानिए, बहुत ही खुशी से, उत्साह से, उल्लास से, आपकी।

“सी.बी.”

इस पत्र के कुछ ही समय बाद, भव्य छुट्टियाँ शुरू हो गईं, जब उन्हें एक विशाल, सुनसान पेंशन में केवल एक शिक्षिका के साथ छोड़ दिया गया। यह शिक्षिका, एक फ्रांसीसी महिला, हमेशा से ही उनके लिए अनुपयुक्त रही थी; लेकिन, एक-दूसरे के

साथ अकेले रह जाने पर, शार्लोट ने जल्द ही पाया कि उनकी साथी, उनकी कल्पना से कहीं अधिक व्यभिचारी और एक प्रकार की ठंडी, व्यवस्थित कामुकता में डूबी हुई थी; और उनका पूरा स्वभाव इस महिला की संगति से विमुख हो गया। मिस ब्रोंटे को हल्का मानसिक बुखार सता रहा था। वह पहले कभी अच्छी नींद नहीं सोती थीं, लेकिन अब उन्हें बिल्कुल भी नींद नहीं आती थी। दिन भर जो कुछ भी उन्हें अप्रिय या अप्रिय लगता था, वह दिन बीतने पर उनकी अव्यवस्थित कल्पना में अतिरंजित स्पष्टता के साथ प्रस्तुत होता था। घर से आने वाली खबरों में, विशेष रूप से ब्रैनवेल के संबंध में, चिंता और बेचैनी के कारण थे। आधी रात के सन्नाटे में, सुनसान पड़े उस विशाल और शांत घर के कोने में जागते हुए, उन लोगों के बारे में हर डर, जिनसे वह प्यार करती थी और जो उससे बहुत दूर दूसरे देश में थे, एक भयानक वास्तविकता बन गया, जो उसे जकड़ रहा था और उसके दिल की धड़कन को रोक रहा था। वे रातें उदासी, निराशा और बेचैनी से भरी थीं; आने वाले वर्षों में ऐसी ही कई रातों की पूर्वसूचना।

दिन के समय, अपने साथी से घृणा और बुखार की कमज़ोर बेचैनी से विवश होकर, वह खुद को इतनी थकावट में लाने की कोशिश करती कि उसे नींद आ जाए। इसलिए वह बाहर जाती और थके हुए कदमों से बुलेवार्ड और गलियों में घूमती, कभी-कभी घंटों तक; लड़खड़ाती और बीच-बीच में उन कई बेंचों पर आराम करती जो खुशहाल समूहों या उसके जैसे अकेले घूमने वालों के लिए आराम करने के लिए रखी गई थीं। फिर उठ खड़ी होती - पेंशननेट को छोड़कर कहीं भी - उस कब्रिस्तान की ओर जहाँ मार्था लेटी थी - उससे आगे, उन पहाड़ियों की ओर जहाँ क्षितिज तक खेतों के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता था। शाम ढलते ही वह अपने कदमों के निशान पर लौट आती - भोजन की कमी से बीमार, लेकिन भूखी नहीं; लंबे समय तक व्यायाम से थकी हुई - फिर भी बेचैन, और नींद न आने की एक और थका देने वाली, डरावनी रात के लिए अभिशप्त। वह रू डी'इसाबेल के आसपास की गलियों में घूमती, फिर भी उससे और उसके निवासी से तब तक बचती जब तक वह बाहर रहने की हिम्मत नहीं कर सकती थी। अंततः, उसे कुछ दिनों तक बिस्तर पर आराम करने के लिए विवश होना पड़ा, और इस अनिवार्य विश्राम से उसे लाभ हुआ। वह कमजोर थी, लेकिन स्कूल के दोबारा खुलने और उसके व्यावहारिक कर्तव्यों के पुनः आरंभ होने पर वह पहले की तुलना में कम उदास थी।

वह इस प्रकार लिखती है: —

13 अक्टूबर, 1843

“मैरी की हालत अच्छी है, और वह इसकी हकदार भी है। मुझे अक्सर उससे पत्र मिलते रहते हैं। उसके और आपके पत्र मेरे कुछ गिने-चुने सुखों में से एक हैं। वह मुझे ब्रसेल्स छोड़कर उसके पास जाने के लिए बहुत आग्रह करती है; लेकिन, फिलहाल, चाहे ऐसा कदम उठाने का कितना भी मन करे, मुझे ऐसा करना उचित नहीं लगता। एक निश्चितता को पूरी तरह अनिश्चितता की ओर छोड़ना अत्यंत नासमझी होगी। इसके बावजूद, ब्रसेल्स अब मेरे लिए सचमुच वीरान है। जब से डॉक्टर चले गए हैं, मेरा कोई दोस्त नहीं रहा। वास्तव में, डॉक्टर के परिवार में मेरे कुछ बहुत अच्छे परिचित थे, लेकिन वे भी अब नहीं रहे। वे अगस्त के उत्तरार्ध में चले गए, और मैं पूरी तरह से अकेला हूँ। मैं बेल्जियमवासियों पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं कर सकता। इतनी भीड़ के बीच इतना अकेला होना एक अजीब स्थिति है। कभी-कभी अकेलापन मुझे हद से ज्यादा परेशान कर देता है। हाल ही में एक दिन, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं इसे और सहन नहीं कर सकता, और मैं मैडम हेगर के पास गया और उन्हें इस्तीफा दे दिया। अगर यह इस बात पर निर्भर करता कि... अगर मैं वहाँ होती, तो मुझे जल्द ही आज़ादी मिल जाती; लेकिन एम. हेगर को जब इस उथल-पुथल के बारे में पता चला, तो उन्होंने अगले ही दिन मुझे बुलवाया और ज़ोर देकर अपना फैसला सुनाया कि मैं नहीं जा सकती। उस समय, मैं अपनी बात पर अड़ी नहीं रह सकती थी, वरना वे नाराज़ हो जाते; इसलिए मैंने कुछ और समय रुकने का वादा किया। कितना समय, यह मुझे नहीं पता। मैं इंग्लैंड वापस जाकर कुछ न करना नहीं चाहती। अब मैं इसके लिए बहुत बूढ़ी हो चुकी हूँ; लेकिन अगर मुझे स्कूल शुरू करने का कोई अच्छा मौका मिले, तो मुझे लगता है मैं उसे ज़रूर अपना लूँगी। यहाँ अभी तक आग नहीं जल रही है, और मुझे बहुत ठंड लगती है; बाकी सब ठीक है। श्रीमान - - यह पत्र इंग्लैंड ले जाएँगे। वे देखने में अच्छे और व्यवहार में अच्छे नौजवान हैं, देखने में कमज़ोर लगते हैं; मेरा मतलब उनकी शारीरिक रीढ़ से नहीं है, जो कि ठीक है, बल्कि उनके चरित्र से है।

मैं यहाँ किसी तरह गुज़ारा कर रही हूँ; लेकिन अब जब मैरी डी. ब्रुसेल्स छोड़कर चली गई है, तो मेरे पास बात करने के लिए कोई नहीं है, क्योंकि मैं बेल्जियमवासियों को कुछ भी नहीं समझती। कभी-कभी मैं खुद से पूछती हूँ कि मैं यहाँ कब तक रहूँगी;

लेकिन अभी तक मैंने सिर्फ सवाल पूछा है; जवाब नहीं दिया है। हालाँकि, जब मैं अपनी ज़रूरत के हिसाब से जर्मन सीख लूँगी, तो मैं अपना सामान समेटकर यहाँ से चली जाऊँगी। घर की याद मुझे बार-बार सताती है। आज मौसम बहुत गर्म है, और मुझे ज़ुकाम और सिरदर्द है। मेरे पास आपको बताने के लिए कुछ नहीं है। इस जगह पर एक दिन दूसरे दिन जैसा ही होता है। मुझे पता है कि आप, जो गाँव में रहते हैं, शायद ही विश्वास कर पाएँ कि ब्रुसेल्स जैसी शानदार राजधानी के बीचोंबीच जीवन नीरस हो सकता है; लेकिन ऐसा ही है। मुझे यह सबसे ज़्यादा छुट्टियों में महसूस होता है, जब सभी लड़कियाँ और शिक्षक घूमने जाते हैं, और कभी-कभी ऐसा होता है कि मैं कई घंटों तक बिल्कुल अकेली रह जाती हूँ, मेरे सामने चार बड़े सुनसान स्कूल के कमरे होते हैं। मैं पढ़ने की कोशिश करती हूँ, लिखने की कोशिश करती हूँ; लेकिन व्यर्थ। मैं फिर एक कमरे से दूसरे कमरे में भटकती रहती हूँ, लेकिन पूरे घर की खामोशी और अकेलापन मन को सीसे की तरह भारी कर देता है। आपको शायद ही यकीन होगा कि मैडम हेगर (जैसा कि मैंने उन्हें अच्छी और दयालु बताया है) ऐसे मौकों पर कभी मेरे पास नहीं आतीं। मैं मानती हूँ, जब पहली बार मुझे इस तरह अकेला छोड़ा गया तो मैं हैरान रह गई थी; जब बाकी सब लोग अपने दोस्तों के साथ उत्सव का आनंद ले रहे थे, और उन्हें पता था कि मैं बिल्कुल अकेली हूँ, और उन्होंने मेरी तरफ जरा भी ध्यान नहीं दिया। फिर भी, मुझे पता चला है कि वह सबकी बहुत तारीफ करती हैं, और कहती हैं कि मैं कितने बेहतरीन पाठ पढ़ाती हूँ। वह मेरे प्रति उतनी ठंडी नहीं हैं जितनी कि दूसरे शिक्षकों के प्रति; लेकिन वे उन पर मुझसे कम निर्भर हैं। ब्रुसेल्स में उनके रिश्तेदार और परिचित हैं। आपको वह पत्र याद है जो उन्होंने मुझे लिखा था, जब मैं इंग्लैंड में थी? वह कितना दयालु और स्नेहपूर्ण था? क्या यह अजीब नहीं है? इस बीच, मैं जो शिकायतें कर रही हूँ, वे एक तरह की राहत हैं जो मैं खुद को देती हूँ। बाकी सभी मामलों में मैं अपनी स्थिति से पूरी तरह संतुष्ट हूँ, और आप मेरे बारे में पूछने वाले लोगों से ऐसा कह सकते हैं (यदि (हर कोई करता है)। प्रिय, जब भी समय मिले मुझे पत्र लिखना। जब तुम मुझे पत्र भेजते हो तो तुम एक नेक काम करते हो, क्योंकि तुम एक बहुत ही उदास हृदय को सांत्वना देते हो।

ब्रसेल्स में अपने निवास के दूसरे वर्ष में मैडम हेगर और मिस ब्रोंटे के बीच मौन अलगाव का एक कारण यह था कि रोमन कैथोलिक धर्म के बारे में जानकारी और इसके अनुयायियों पर इसके प्रभावों के कारण अंग्रेज प्रोटेस्टेंट मैडम हेगर की रोमन

कैथोलिक धर्म के प्रति अरुचि बढ़ती गई। जब भी शार्लोट ब्रोंटे से राय व्यक्त करने का अवसर आया, तो उन्होंने अटल सत्य का प्रयोग किया। दूसरी ओर, मैडम हेगर केवल रोमन कैथोलिक ही नहीं थीं, बल्कि एक समर्पित भक्त थीं। उनका स्वभाव भावुक या आवेगपूर्ण नहीं था, वे स्वाभाविक रूप से अपनी भावनाओं के बजाय अपनी अंतरात्मा से निर्देशित होती थीं; और उनकी अंतरात्मा उनके धार्मिक मार्गदर्शकों के हाथों में थी। वे अपने चर्च पर किसी भी तरह के अपमान को पवित्र सत्य के विरुद्ध ईशनिंदा मानती थीं; और यद्यपि वे अपने विचारों और भावनाओं को खुलकर व्यक्त नहीं करती थीं, फिर भी उनके व्यवहार में बढ़ती शीतलता यह दर्शाती थी कि उनके सबसे प्रिय विचारों को कितना ठेस पहुंची थी। इस प्रकार, यद्यपि मैडम हेगर के व्यवहार में आए परिवर्तन का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया, फिर भी इसे एक बड़ा कारण माना जा सकता है कि इसी समय शार्लोट को उनके बीच एक मौन अलगाव का गहरा अहसास हुआ; एक ऐसा अलगाव जिसके बारे में शायद मैडम हेगर को शायद ही पता था। मैंने पहले घर से मिली उस सूचना का उल्लेख किया है, जिसने ब्रैनवेल के संबंध में शार्लोट को अत्यधिक भयभीत कर दिया था, जिसके बारे में मैं तब और विस्तार से बात करूँगा जब उसकी सबसे बुरी आशंकाओं का साकार होना उसके और उसकी बहनों के दैनिक जीवन को प्रभावित करने लगा। मैं इस विषय का उल्लेख यहाँ फिर से इसलिए कर रहा हूँ ताकि पाठक उन गहरी, निजी चिंताओं को याद रख सकें जिन्हें उसे अपने दिल में दबाना पड़ा था; और जिनका दर्द केवल वर्तमान कर्तव्य के लगन से निर्वाह के तहत ही कुछ समय के लिए कम हो सका था। इसी समय एक और धुंधला दुख भी महसूस किया गया। उसके पिता की दृष्टि कमजोर होने लगी थी; यह संभव था कि वे जल्द ही अंधे हो जाएँ; उनके कर्तव्यों का अधिक भार एक सहायक पादरी पर आ जाएगा, और श्री ब्रोंटे, जो हमेशा उदार थे, को इस सहायता के लिए पहले की तुलना में अधिक दर पर भुगतान करना होगा।

उसने एमिली को इस प्रकार लिखा: —

1 दिसंबर, 1843।

“यह रविवार की सुबह है। वे लोग अपने पूजा-पाठ वाले भोज में हैं, और मैं यहाँ, यानी भोजन कक्ष में हूँ। काश मैं घर के भोजन कक्ष में, या रसोई में, या पीछे वाली रसोई में होती। काश मैं खाना काट रही होती, क्लर्क और कुछ रजिस्टर वाले दूसरे टेबल पर बैठे होते, और तुम पास खड़ी होकर देख रही होती कि मैं पर्याप्त आटा डाल

रही हूँ, ज़्यादा काली मिर्च नहीं, और सबसे बढ़कर, मटन की टांग के सबसे अच्छे टुकड़े टाइगर और कीपर के लिए बचा रही हूँ। टाइगर तो थाली और चाकू के आसपास उछल-कूद कर रहा होता, और कीपर रसोई के फर्श पर जलती हुई आग की तरह खड़ा होता। और इस दृश्य को पूरा करने के लिए, टैबी आग को हवा दे रही होती, ताकि आलू एक तरह के चिपचिपे पेस्ट में बदल जाएँ! इस समय ये यादें मुझे कितनी प्यारी लग रही हैं! फिर भी अभी घर जाने का मेरा कोई इरादा नहीं है। मेरे पास ऐसा करने का कोई ठोस बहाना नहीं है; यह सच है कि यह जगह मुझे उदास लगती है, लेकिन जब तक मेरे पास घर पहुँचने का कोई निश्चित नज़ारा न हो, मैं घर नहीं जा सकती; और यह नज़ारा यह कोई समस्या नहीं होनी चाहिए; यह तो कड़ाही से निकलकर आग में कूदने जैसा होगा। तुम खुद को आलसी कहते हो! बेतुका, बेतुका! ... पापा कैसे हैं? तुम कैसे हो? और टैबी? तुम महारानी विक्टोरिया की ब्रुसेल्स यात्रा के बारे में पूछते हो। मैंने उन्हें एक पल के लिए रू रॉयल से छह घोड़ों वाली गाड़ी में सैनिकों से घिरी हुई देखा। वह बहुत हंस रही थीं और बातें कर रही थीं। वह थोड़ी मोटी, जीवंत महिला लग रही थीं, बहुत सादे कपड़े पहने हुए, उनमें कोई गरिमा या दिखावा नहीं था। बेल्जियम के लोग उन्हें कुल मिलाकर बहुत पसंद करते थे। उन्होंने कहा कि उन्होंने राजा लियोपोल्ड के गंभीर दरबार में रौनक ला दी, जो आमतौर पर किसी गुप्त सभा की तरह उदास रहता है। मुझे जल्द ही फिर से लिखना। मुझे बताना कि क्या पापा सच में चाहते हैं कि मैं घर आ जाऊं, और क्या तुम भी ऐसा ही चाहते हो। मुझे लगता है कि मैं वहां किसी काम का नहीं रहूंगा - एक तरह से बोझ बन जाऊंगा। मैं दिल से प्रार्थना करता हूं कि हॉवर्थ में सब कुछ ठीक रहे; खासकर हमारे आधे-अधूरे बसे हुए धूसर घर में। भगवान दीवारों को आशीर्वाद दें। आप दोनों, पापा और टैबी, सुरक्षा, स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि के हकदार हों! आमीन।

"सी. बी."

इस वर्ष (1843) के अंत तक, उल्लिखित चिंताओं के साथ-साथ कई अन्य कारणों ने भी मिलकर उन्हें यह महसूस कराया कि घर पर उनकी उपस्थिति अत्यंत आवश्यक है, जबकि ब्रुसेल्स में दूसरी बार आने के उनके सभी लक्ष्य पूरे हो चुके थे; और इसके अलावा, मैडम हेगर अब उनके प्रति पहले जैसी स्नेहपूर्ण भावना नहीं रखती थीं। इन परिस्थितियों के कारण, जो उनके संवेदनशील मन पर गहरा प्रभाव डाल रही थीं, उन्होंने अचानक उस महिला को इंग्लैंड लौटने की अपनी तत्काल इच्छा

की घोषणा कर दी। एम. और मैडम हेगर दोनों इस बात से सहमत थीं कि यह उनके लिए सर्वोत्तम होगा, जब उन्हें केवल उस बात का पता चला जो वह उन्हें बता सकती थीं - अर्थात्, श्री ब्रोंटे की बढ़ती हुई दृष्टिहीनता। लेकिन जैसे-जैसे उन लोगों और स्थानों से बिछड़ने का अपरिहार्य क्षण निकट आता गया, जिनके बीच उन्होंने इतने सुखद क्षण बिताए थे, उनका मनोबल टूट गया; उन्हें स्वाभाविक पूर्वाभास हुआ कि वह उन सभी को अंतिम बार देख रही हैं, और उनके मित्रों द्वारा यह याद दिलाने पर कि ब्रुसेल्स और हॉवर्थ बहुत दूर नहीं हैं, उन्हें केवल एक प्रकार का सांत्वना मिली। एक जगह से दूसरी जगह जाना उतना मुश्किल या अव्यवहारिक नहीं था जितना उसके आँसुओं से लगता था; बल्कि, ऐसी चर्चा थी कि अगर वह स्कूल शुरू करने की अपनी योजना को पूरा करती, तो मैडम हेगर की एक बेटी को उसके पास विद्यार्थी के रूप में भेजा जाता। इस योजना में उसकी सफलता को आसान बनाने के लिए, अगर वह कभी इसमें शामिल होती, तो एम. हेगर ने उसे एक तरह का डिप्लोमा दिया, जिस पर ब्रुसेल्स के शाही मठ की मुहर लगी थी और जिस पर तारीख लिखी थी। यह प्रमाणित करता था कि वह फ्रेंच भाषा पढ़ाने में पूरी तरह सक्षम थी, क्योंकि उसने इसके व्याकरण और रचना का अच्छी तरह अध्ययन किया था, और इसके अलावा, उसने शिक्षण की सर्वोत्तम विधियों का अध्ययन और अभ्यास करके खुद को शिक्षण के लिए तैयार किया था। यह प्रमाण पत्र 29 दिसंबर 1843 का है, और 2 जनवरी 1844 को वह हॉवर्थ पहुँची।

महीने की 23 तारीख को वह इस प्रकार लिखती है: —

घर लौटने के बाद हर कोई मुझसे पूछता है कि मैं क्या करने जा रही हूँ; और ऐसा लगता है कि हर कोई उम्मीद कर रहा है कि मैं तुरंत स्कूल शुरू कर दूँगी। सच तो यह है कि मैं यही करना चाहती हूँ। मेरी सबसे बड़ी इच्छा यही है। मेरे पास इस काम के लिए पर्याप्त धन है, और मुझे उम्मीद है कि अब मेरे पास सफलता की अच्छी संभावना के लिए पर्याप्त योग्यता भी है; फिर भी मैं अभी तक जीवन में कदम रखने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही हूँ— उस लक्ष्य को छूने की हिम्मत नहीं कर पा रही हूँ जो अब मेरी पहुँच में लगता है, और जिसे पाने के लिए मैं इतने लंबे समय से प्रयास कर रही हूँ। आप मुझसे पूछेंगे क्यों? यह पापा के कारण है; जैसा कि आप जानते हैं, वे अब बूढ़े हो रहे हैं, और मुझे यह बताते हुए बहुत दुख हो रहा है कि उनकी दृष्टि कमजोर हो रही है। मुझे कुछ महीनों से लग रहा है कि मुझे उनसे दूर नहीं रहना

चाहिए; और अब मुझे लगता है कि अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए उन्हें (कम से कम, जब तक ब्रैनवेल और ऐनी अनुपस्थित हैं) छोड़ना बहुत स्वार्थपूर्ण होगा। ईश्वर की कृपा से, मैं इस मामले में खुद को संयमित रखने की कोशिश करूँगी और प्रतीक्षा करूँगी।

ब्रसेल्स छोड़ने से पहले मैंने बहुत कष्ट सहा। मुझे लगता है, चाहे मैं कितनी भी लंबी ज़िंदगी जी लूँ, मैं एम. हेगर से बिछड़ने का दर्द कभी नहीं भूल पाऊँगी। उनके जाने का दुख मुझे बहुत सता रहा था, जो मेरे सच्चे, दयालु और निस्वार्थ मित्र रहे हैं। विदाई के समय उन्होंने मुझे एक तरह का डिप्लोमा दिया, जो एक शिक्षक के रूप में मेरी योग्यताओं को प्रमाणित करता था, और उस पर रॉयल एथेनी की मुहर लगी थी, जहाँ वे प्रोफेसर थे। जब मेरे बेल्जियम के छात्रों को पता चला कि मैं जा रही हूँ, तो उनके दुख की मात्रा देखकर मैं हैरान रह गई। मुझे नहीं लगता था कि यह उनके शांत स्वभाव में था... मुझे नहीं पता कि आप भी मेरी तरह महसूस करते हैं या नहीं, लेकिन अब कई बार मुझे ऐसा लगता है जैसे कुछ मित्रता और स्नेह को छोड़कर मेरे सारे विचार और भावनाएँ बदल गई हैं; मेरे अंदर जो उत्साह हुआ करता था, वह अब शांत और टूट गया है। मेरे भ्रम कम हो गए हैं; अब मैं सक्रिय प्रयास चाहती हूँ - जीवन में कुछ करने की इच्छा। हॉवर्थ एक सुनसान, शांत जगह लगती है, जैसे कहीं दबी हुई हो। दुनिया से अलग-थलग। मैं अब खुद को जवान नहीं समझता—दरअसल, मैं जल्द ही अट्ठाईस साल का हो जाऊंगा; और ऐसा लगता है जैसे मुझे भी दूसरों की तरह काम करना चाहिए और दुनिया की कठोर वास्तविकताओं का सामना करना चाहिए। हालांकि, फिलहाल इस भावना को नियंत्रित करना मेरा कर्तव्य है, और मैं ऐसा करने का प्रयास करूंगा।

बेशक, अनुपस्थित बहन और भाई ने उसके घर लौटने पर उसका स्वागत करने के लिए छुट्टी ले ली, और कुछ हफ्तों में उसे बी में अपनी दोस्त से मिलने जाने की छूट मिल गई। लेकिन वह बिल्कुल भी स्वस्थ या मजबूत नहीं थी, और चौदह मील की छोटी यात्रा ने उसे बहुत थका दिया था।

हॉवर्थ लौटने के कुछ ही समय बाद, जिस घर में वह ठहरी थी, उसके एक सदस्य को लिखे पत्र में उसने यह लिखा: “हमारी बेचारी छोटी बिल्ली दो दिन से बीमार थी और अब मर गई है। किसी जानवर को भी बेजान पड़ा देखना बहुत दुखद है। एमिली को बहुत दुख है।” ये कुछ शब्द दोनों बहनों के चरित्र के कुछ पहलुओं को दर्शाते हैं,

जिन पर मुझे थोड़ा विस्तार से चर्चा करनी होगी। शार्लोट सभी मूक प्राणियों के प्रति सामान्य से कहीं अधिक कोमल थी, और वे प्राणी, अपनी उस सहज प्रवृत्ति के कारण, जो अक्सर देखी जाती है, हमेशा उसकी ओर आकर्षित होते थे। अपनी व्यक्तिगत कमियों के प्रति गहरी और अतिरंजित जागरूकता—आशा का जन्मजात अभाव, जिसके कारण वह मानवीय स्नेह पर भरोसा करने में धीमी थी, और परिणामस्वरूप, स्नेह के किसी भी प्रकटीकरण पर प्रतिक्रिया देने में भी धीमी थी—ने उसके व्यवहार को पुरुषों, महिलाओं और यहाँ तक कि बच्चों के प्रति भी शर्मीला और संयमित बना दिया था। स्नेह जगाने की अपनी क्षमता के प्रति उसके इस कांपते अविश्वास की झलक हमें उसके बेल्जियम के छात्रों द्वारा उसके जाने पर व्यक्त की गई कृतज्ञतापूर्ण हैरानी में भी मिलती है। लेकिन न केवल उसके कार्य दयालु थे, बल्कि उसके शब्द और लहजा भी जानवरों के प्रति अत्यंत कोमल और स्नेहपूर्ण थे; और वह किसी भी बेचारे जानवर के प्रति दूसरों की ओर से जरा सी भी लापरवाही या स्नेह की कमी को तुरंत पहचान लेती थी। "शर्ली" के पाठक शायद याद रखें कि यह उन परीक्षणों में से एक है जो नायिका अपने प्रेमी पर लागू करती है।

"क्या आप जानते हैं कि मैं किन ज्योतिषियों से सलाह लूँगी?" . . . "वह छोटा आयरिश भिखारी जो नंगे पैर मेरे दरवाजे पर आता है; वह चूहा जो मेरी दीवार की दरार से चुपके से निकलता है; वह चिड़िया जो पाले और बर्फ में मेरी खिड़की पर एक टुकड़ा चुगती है; वह कुत्ता जो मेरा हाथ चाटता है और मेरे घुटने के पास बैठता है। मैं किसी ऐसे व्यक्ति को जानती हूँ जिसके घुटने पर काली बिल्ली चढ़ना पसंद करती है, जिसके कंधे और गाल से लगकर वह गुर्राना पसंद करती है। बूढ़ा कुत्ता हमेशा अपने पिंजरे से बाहर आता है और अपनी पूंछ हिलाता है, और जब कोई पास से गुजरता है तो प्यार से म्याऊँ करता है।" ["किसी" और "वह" के स्थान पर "शार्लोट ब्रोंटे" और "वह" पढ़ें।] "वह चुपचाप बिल्ली को सहलाता है, और जब तक संभव होता है उसे बैठने देता है; और जब उसे उठकर उसे परेशान करना पड़ता है, तो वह उसे धीरे से नीचे रखता है, और कभी भी उसे ज़ोर से नहीं फेंकता: वह हमेशा कुत्ते को सीटी बजाता है, और उसे प्यार से सहलाता है।"

शार्लोट में जो भावना स्नेह जैसी थी, वही एमिली में एक जुनून थी। किसी ने उसके बारे में मुझसे बात करते हुए, बड़ी सहजता और दृढ़ता से कहा, "उसने कभी किसी इंसान के प्रति कोई स्नेह नहीं दिखाया; उसका सारा प्यार जानवरों के लिए ही

था।" जानवरों की बेबसी ही शार्लोट के दिल में जगह बनाने का ज़रिया थी; जानवरों का उग्र, जंगली और अड़ियल स्वभाव ही अक्सर एमिली को उसकी ओर आकर्षित करता था। अपनी दिवंगत बहन के बारे में बात करते हुए, शार्लोट ने मुझे बताया कि शर्ली के चरित्र में कई गुण उससे लिए गए थे; जैसे कालीन पर बैठकर अपने खुरदुरे बुलडॉग की गर्दन पर हाथ रखकर पढ़ने का उसका तरीका; एक अजनबी कुत्ते को पुकारते हुए, जो सिर झुकाए और जीभ बाहर लटकाए दौड़ रहा था, उसे दयापूर्वक पानी पिलाने का उसका आह्वान, कुत्ते का उस पर गुस्से से झपटना, उसका दृढ़ निश्चय और सूझबूझ से रसोई में जाना, और टैबी के लाल-गर्म इतालवी इस्त्री में से एक उठाकर काटे हुए स्थान को जलाना, और किसी को कुछ न बताना, जब तक कि खतरा लगभग टल न गया हो, क्योंकि उसे डर था कि कहीं उनके कमजोर मन पर कोई भयानक घटना न छा जाए। यह सब, जिसे "शर्ली" में एक सुनियोजित काल्पनिक कथा के रूप में देखा गया था, शार्लोट ने नम आँखों से लिखा था; यह एमिली द्वारा किए गए कृत्य का अक्षरशः सत्य विवरण था। वही भूरा बुलडॉग (अपनी "दबी हुई सीटी" के साथ), जिसे "शर्ली" में "टार्टर" कहा जाता था, हॉवर्थ पार्सनेज में "कीपर" था; एमिली को उपहार में दिया गया। उपहार के साथ एक चेतावनी भी आई। कीपर अपने स्वभाव की गहराई तक वफादार था जब तक वह दोस्तों के साथ था; लेकिन जो भी उसे लाठी या चाबुक से मारता, वह उस क्रूर जानवर के निर्मम स्वभाव को भड़का देता, जो तुरंत उसकी गर्दन पर झपट पड़ता और उसे तब तक थामे रखता जब तक कि दोनों में से कोई एक मौत के कगार पर न पहुँच जाए। कीपर की घरेलू गलती यह थी कि उसे चुपके से ऊपर जाना और अपने चौकोर, भूरे रंग के अंगों को कोमल सफेद चादरों से ढके आरामदायक पलंगों पर फैलाना बहुत पसंद था। लेकिन पादरी के घर की साफ-सफाई एकदम सही थी; और कीपर की यह आदत इतनी आपत्तिजनक थी कि टैबी की चेतावनियों के जवाब में एमिली ने कहा कि अगर वह फिर से ऐसा करते हुए पाया गया, तो वह खुद, चेतावनी और उसके सर्वविदित क्रूर स्वभाव की अवहेलना करते हुए, उसे इतनी बुरी तरह पीटेगी कि वह फिर कभी अपराध न करे। शरद ऋतु की एक शाम के धुंधलके में, टैबी आधे विजयी, आधे कांपते हुए, लेकिन बड़े क्रोध में एमिली को यह बताने आई कि कीपर सबसे अच्छे पलंग पर ऊंघते हुए लेटा हुआ है। शार्लोट ने एमिली का पीला पड़ता चेहरा और कसता हुआ मुंह देखा, लेकिन बोलने की हिम्मत नहीं की; जब एमिली की आंखें

उसके चेहरे की पीलापन से इस तरह चमक रही थीं और उसके होंठ पत्थर की तरह सिकुड़े हुए थे, तब किसी की भी हिम्मत नहीं होती थी। वह ऊपर चली गई, और टैबी और शार्लोट नीचे अंधेरे गलियारे में खड़ी रहीं, जो आने वाली रात की गहरी छायाओं से भरा था। एमिली नीचे आई, अपने पीछे अनिच्छुक रखवाले को घसीटते हुए, जिसके पिछले पैर प्रतिरोध की भारी मुद्रा में जमे हुए थे, उसकी गर्दन की पट्टियाँ पकड़ी हुई थीं, लेकिन वह लगातार धीमी और क्रूर गुर्राहट कर रहा था। पहरेदार बोलना चाहते थे, लेकिन एमिली का ध्यान भटकने और उसे एक पल के लिए भी उस क्रोधित जानवर से अपना सिर हटाने के डर से वे बोलने की हिम्मत नहीं कर पाए। उसने उसे छोड़ दिया, सीढ़ियों के नीचे एक अंधेरे कोने में खड़ा कर दिया; लाठी या डंडा लाने का समय ही नहीं था, क्योंकि उसके गले पर जकड़न का डर था—उसकी नंगी मुट्ठी उसकी लाल, क्रूर आँखों पर लगी, इससे पहले कि वह उछल पाता, और, उस इलाके की भाषा में, उसने उसे तब तक "सज़ा" दी जब तक उसकी आँखें सूज नहीं गईं, और आधा अंधा, सुन्न पड़ा हुआ जानवर अपने परिचित मांद में ले जाया गया, जहाँ स्वयं एमिली ने उसके सूजे हुए सिर की मालिश और देखभाल की। उस उदार कुत्ते को एमिली से कोई शिकायत नहीं थी; वह उसे हमेशा प्यार करता रहा; वह उसके अंतिम संस्कार में शोक मनाने वालों में सबसे आगे चला; वह कई रातों तक उसके खाली कमरे के दरवाजे पर कराहता रहा, और उसकी मृत्यु के बाद, एक तरह से, कुत्ते की तरह कभी खुश नहीं हुआ। उसकी जीवित बहन ने भी उसके लिए शोक मनाया। आइए, किसी तरह, आधे रेड इंडियन विश्वास के साथ, यह आशा करें कि वह अब एमिली के साथ है; और, जब वह आराम करता है, तो सपनों के किसी नरम सफेद बिस्तर पर सोता है, जब वह परछाइयों की दुनिया में जागता है तो उसे कोई सज़ा नहीं मिलती।

अब हम इन शब्दों की गंभीरता को समझ सकते हैं, "हमारी बेचारी छोटी बिल्ली मर गई। एमिली को बहुत दुख है।"

अध्याय XIII

वसंत ऋतु में बंजर भूमि उनके लिए एक बड़ा सहारा थी; एमिली और शार्लोट लगातार वहाँ घूमने निकलती थीं, "जिससे हमारे जूते तो बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए, लेकिन मुझे उम्मीद है कि इससे हमारे स्वास्थ्य को लाभ हुआ।" इन सैरों के दौरान स्कूल चलाने की पुरानी योजना पर अक्सर चर्चा होती थी; लेकिन घर के अंदर वे अनुपस्थित ब्रैनवेल के लिए कमीज़ें बनाने में पूरी लगन से जुट जाती थीं और चुपचाप अपने बीते और आने वाले जीवन पर विचार करती थीं। अंततः वे एक निर्णय पर पहुँचीं।

"मैंने गंभीरता से एक स्कूल चलाने का उद्यम शुरू किया है — या यूँ कहें कि सीमित संख्या में विद्यार्थियों को घर पर पढ़ाने का। यानी, मैंने विद्यार्थियों की तलाश में पूरी लगन से जुट गई हूँ। मैंने श्रीमती — — (वह महिला जिनके साथ मैं ब्रुसेल्स जाने से ठीक पहले गवर्नेंस के रूप में रहती थी) को पत्र लिखा, "उनकी बेटी के लिए नहीं पूछा — मैं ऐसा नहीं कर सकती — बल्कि उन्हें अपने इरादे से अवगत कराया। मुझे श्री — — से उत्तर मिला, जिसमें उन्होंने, मेरे विचार से, इस बात का गहरा खेद व्यक्त किया कि मैंने उन्हें एक महीने पहले सूचित नहीं किया, जिसके बाद उन्होंने कहा कि वे खुशी-खुशी अपनी बेटी और कर्नल एस. की बेटी को मुझे भेज देते, लेकिन अब दोनों मिस सी. को सौंप दी गई हैं। मैं इस उत्तर से कुछ हद तक निराश और कुछ हद तक प्रसन्न हुई; वास्तव में, मुझे इस आश्वासन से काफी प्रोत्साहन मिला कि अगर मैंने थोड़ा पहले आवेदन किया होता तो वे निश्चित रूप से अपनी बेटी को मुझे भेज देते। मैं मानती हूँ कि मुझे आशंका थी कि कोई भी हॉवर्थ में शिक्षा के लिए अपने बच्चे को भेजने को तैयार नहीं होगा। ये आशंकाएँ अब कुछ हद तक दूर हो गई हैं। मैंने श्रीमती को भी पत्र लिखा है।" मैंने एम. हेगर द्वारा ब्रुसेल्स छोड़ने से पहले मुझे दी गई डिप्लोमा संलग्न की है। मुझे अभी तक उनका जवाब नहीं मिला है, लेकिन मैं बेसब्री से उसका इंतजार कर रही हूँ। मुझे उम्मीद नहीं है कि वह अपने बच्चों में से किसी को मेरे पास भेजेंगी, लेकिन अगर वह भेजती हैं, तो मुझे पूरा विश्वास है कि वह मुझे अन्य विद्यार्थियों की सिफारिश कर सकती हैं। दुर्भाग्य से, वह हमें बहुत कम जानती हैं। जैसे ही मुझे कम से कम एक विद्यार्थी के मिलने की पुष्टि हो जाएगी, मैं सत्र के कार्ड छपवा

लूंगी और घर में आवश्यक मरम्मत का काम शुरू कर दूंगी। मैं चाहती हूँ कि यह सब सर्दियों से पहले पूरा हो जाए। मैं बोर्डिंग और अंग्रेजी शिक्षा का शुल्क 25 पाउंड प्रति वर्ष तय करने की सोच रही हूँ।

फिर, उसी वर्ष 24 जुलाई को, वह लिखती हैं: —

मैं अपने छोटे से काम को यथासंभव सुचारू रूप से आगे बढ़ा रहा हूँ। मैंने उन सभी मित्रों को पत्र लिखा है जिन पर मेरा थोड़ा सा भी अधिकार है, और कुछ ऐसे मित्रों को भी जिन पर मेरा कोई अधिकार नहीं है; उदाहरण के लिए, श्रीमती बी.। उनसे भी मैंने हिम्मत करके बात की। वे अत्यंत विनम्र थीं; उन्होंने खेद व्यक्त किया कि उनके बच्चे पहले से ही लिवरपूल के स्कूल में पढ़ रहे हैं; उन्होंने मेरे इस प्रयास को अत्यंत सराहनीय माना, लेकिन उन्हें आशंका थी कि स्थान की वजह से इसे सफल बनाने में मुझे कुछ कठिनाई हो सकती है। लगभग सभी से मुझे यही उत्तर मिलता है। मैं उन्हें बताता हूँ कि एकांत स्थान कुछ मायनों में एक लाभ है; कि यदि यह किसी बड़े शहर के बीच में होता तो मैं इतने कम शुल्क पर विद्यार्थियों को नहीं पढ़ा पाता (श्रीमती बी. ने टिप्पणी की कि उन्हें शुल्क बहुत कम लगे), लेकिन जैसा कि है, क्योंकि हमें मकान का किराया नहीं देना पड़ता, हम महंगे शिक्षण संस्थानों में मिलने वाली शिक्षा की सभी सुविधाओं को उनकी आधी कीमत से कुछ अधिक में प्रदान कर सकते हैं; और चूंकि हमारे विद्यार्थियों की संख्या सीमित है, इसलिए हम प्रत्येक विद्यार्थी को अपना पर्याप्त समय और परिश्रम दे सकते हैं। बहुत सुंदर पत्र के लिए धन्यवाद। आपने मुझे जो छोटा सा पर्स भेजा है, उसके बदले में मैं आपको शर्तों के छह कार्ड भेज रहा हूँ। आप इनका उपयोग अपने विवेक के अनुसार करें। आप देखेंगे कि मैंने राशि 35 पाउंड तय की है, जो मुझे लाभ और हानि को ध्यान में रखते हुए उचित मध्य बिंदु लगता है।

यह जुलाई में लिखा गया था; अगस्त, सितंबर और अक्टूबर बीत गए, और विद्यार्थियों के बारे में कोई खबर नहीं मिली। दिन-प्रतिदिन बहनों को डाक आने की थोड़ी सी उम्मीद बनी रहती थी। लेकिन हॉवर्थ गाँव सुनसान और वीरान था, और ब्रोंटे बहनों को उनके संपर्कों की कमी के कारण बहुत कम लोग जानते थे। शार्लोट इस विषय पर, सर्दियों के शुरुआती महीनों में, कुछ इस तरह लिखती हैं—

“मैं, एमिली और ऐनी, आपके द्वारा हमारे लिए किए गए प्रयासों के लिए वास्तव में आभारी हैं; और यदि आप सफल नहीं हुए हैं, तो आप भी हमारी ही तरह हैं। हर कोई हमारा भला चाहता है; लेकिन कोई विद्यार्थी उपलब्ध नहीं हैं। हालांकि, फिलहाल

हमारा इस विषय पर निराश होने का कोई इरादा नहीं है, और न ही हार से दुखी होने का। परिणाम चाहे जो भी हो, यह प्रयास लाभकारी ही होगा, क्योंकि इससे हमें अनुभव और इस दुनिया का अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त होता है। मैं आपको दो और परिपत्र भेज रही हूँ।"

एक महीने बाद, वह कहती है: —

"हमने अभी तक अपने घर में कोई बदलाव नहीं किया है। ऐसा करना मूर्खता होगी, क्योंकि हमें छात्र मिलने की संभावना बहुत कम है। मुझे डर है कि आप हमारे लिए बेवजह परेशानी मोल ले रहे हैं। यकीन मानिए, अगर आप किसी माँ को अपने बच्चे को हॉवर्थ लाने के लिए मना लें, तो उस जगह का नजारा ही उसे डरा देगा और वह शायद अपनी प्यारी बच्ची को तुरंत वापस ले जाएगी। हमें खुशी है कि हमने कोशिश की और हम असफल होने से निराश नहीं होंगे।"

शायद हर बहन के दिल में दबी हुई राहत की भावना पनप रही थी, जिसे उन्होंने कभी ज़ाहिर नहीं किया था, कि उनकी योजना सफल नहीं हुई। जी हाँ! एक हल्की सी राहत कि उनका प्यारा प्रोजेक्ट आज़माया गया और नाकाम रहा। क्योंकि वह घर, जिसे उनके भाई के लिए कभी-कभार रहने की जगह माना जाता था, अजनबियों के बच्चों के लिए शायद ही उपयुक्त निवास हो सकता था। वे शायद चुपचाप यह जान चुकी थीं कि उसकी आदतें ऐसी थीं कि कभी-कभी उसका साथ बेहद अप्रिय लगता था। संभवतः, इस समय तक उन्होंने उस पश्चाताप और मानसिक पीड़ा के कारण के बारे में परेशान करने वाली अफवाहें भी सुनी होंगी, जो कभी-कभी उसे बेचैन और असामान्य रूप से खुशमिजाज बना देती थी, और कभी-कभी उसे मूडी और चिड़चिड़ा बना देती थी।

जनवरी 1845 में, शार्लोट लिखती हैं: — "ब्रैनवेल इस बार गर्मियों की तुलना में ज़्यादा शांत और कम चिड़चिड़ा रहा है। ऐनी हमेशा की तरह अच्छी, सौम्य और धैर्यवान है।" उसके रिश्तेदारों को जो गहरा दुख पहुँचाना था, वह अब स्पष्ट रूप ले चुका था और शार्लोट के स्वास्थ्य और मनोबल पर भारी पड़ रहा था। इस साल की शुरुआत में, वह अपनी प्रिय मित्र "मैरी" को अलविदा कहने के लिए इंग्लैंड गई थीं, जो इंग्लैंड छोड़कर ऑस्ट्रेलिया जा रही थीं।

जैसा कि मैंने पहले बताया है, ब्रैनवेल को एक निजी शिक्षक की नौकरी मिल गई थी। ऐनी भी उसी परिवार में गवर्नेस के रूप में कार्यरत थी, और इस प्रकार वह इस

दौरान अपने भाई के चरित्र में आई गिरावट की एक दयनीय गवाह थी। इस गिरावट के कारणों के बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता; लेकिन इसके परिणाम ये थे। वह अनिच्छा से छुट्टियों में घर जाता था, वहाँ यथासंभव कम समय तक रहता था, और अपने असाधारण व्यवहार से सभी को व्याकुल और दुखी करता था - कभी अत्यंत प्रसन्न, तो कभी घोर अवसाद में - खुद पर घोर अपराध और विश्वासघात का आरोप लगाता था, बिना यह बताए कि वे क्या थे; और कुल मिलाकर उसका स्वभाव पागलपन की हद तक चिड़चिड़ा था।

शार्लेट और एमिली उसके रहस्यमय व्यवहार से बहुत परेशान थीं। वह अपनी स्थिति से अत्यधिक संतुष्ट था; वह पहले किसी भी नौकरी की तुलना में इस पद पर अधिक समय तक बना हुआ था; इसलिए कुछ समय तक वे यह अनुमान नहीं लगा पाईं कि ऐसी कोई बात थी जो उसे इतना जिद्दी, बेचैन और उदासी से भरा बना रही थी। लेकिन उससे जुड़ी किसी गड़बड़ी का आभास उन्हें अंदर ही अंदर परेशान कर रहा था। उन्होंने उसके भविष्य के करियर से सारी उम्मीदें खोनी शुरू कर दीं। वह अब परिवार का गौरव नहीं रहा था; एक अस्पष्ट भय, जो आंशिक रूप से उसके अपने आचरण और आंशिक रूप से ऐनी के घर भेजे गए पत्रों में व्यक्त किए गए संदेह के कारण था, उनके मन में घर कर रहा था कि कहीं वह उनके लिए एक बड़ी शर्मिंदगी का कारण न बन जाए। लेकिन, मेरा मानना है कि उन्होंने अपने डर को व्यक्त करने का कोई प्रयास नहीं किया और आपस में उसके बारे में कम से कम बात की। वे सोचने, शोक करने और आश्चर्य करने से खुद को रोक नहीं पाईं।

20 फरवरी, 1845।

मैंने एच. में एक हफ़्ता बिताया, जो बहुत सुखद नहीं था; सिरदर्द, कमज़ोरी और उदासी ने मुझे एक बुरा साथी बना दिया, घर के बाकी सभी लोगों की जीवंत और बातूनी खुशी पर एक बोझ जैसा। वहाँ रहते हुए मुझे एक घंटे के लिए भी तरोताज़ा होने का सौभाग्य नहीं मिला। मुझे यकीन है कि मैरी को छोड़कर शायद सभी लोग मेरे जाने पर बहुत खुश हुए होंगे। मुझे अब एहसास होने लगा है कि आजकल मुझमें इतनी कम ऊर्जा बची है कि मैं बहुत शांत लोगों के अलावा किसी और के लिए उपयुक्त साथी नहीं हूँ। क्या यह उम्र है, या कुछ और, जो मुझे ऐसा बदल रहा है?

अफसोस! उसे यह सवाल पूछने की शायद ही ज़रूरत थी। वह "उदासीन", "एक बुरी साथी" और हंसमुख व खुशमिजाज लोगों की खुशी पर "एक दुखद बोझ" होने के

अलावा और क्या हो सकती थी! अपनी आजीविका कमाने की उसकी नेक योजना धराशायी हो गई थी, चूर-चूर हो गई थी; उसकी तमाम तैयारियों के बाद भी, एक भी विद्यार्थी ने दाखिला नहीं लिया था; और कई वर्षों की इस इच्छा के पूरा न होने पर दुखी होने के बजाय, उसके पास खुश होने का कारण था। उसके बेचारे पिता, जो लगभग दृष्टिहीन थे, अपनी अंधापन और लाचारी में उसकी देखभाल पर निर्भर थे; लेकिन यह एक पवित्र और धार्मिक कर्तव्य था, जिसे निभाने में उसे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। परिवार की सबसे उज्ज्वल आशा रहे ब्रैनवेल पर गहरा अंधकार छा गया था, और उसके मनमौजी व्यवहार के रहस्य में भी। किसी न किसी तरह, उसे शर्म से बचने के लिए अपने घर को ही अपना ठिकाना बनाना पड़ेगा; उसकी बहनों को यही आशंका थी। तो फिर वह खुश कैसे हो सकती थी, जब वह अपनी प्यारी और नेक "मैरी" को इतने लंबे समय और दूरी के लिए खो रही थी कि उसका दिल शायद यही भविष्यवाणी कर रहा था कि यह हमेशा के लिए है? बहुत पहले, उसने मैरी टी. के बारे में लिखा था कि वह "नेक, स्नेही, उदार, समर्पित और गहरी भावनाओं से परिपूर्ण थी। भगवान उसे आशीर्वाद दें! मुझे इस दुनिया में इससे अधिक नेक चरित्र देखने की आशा नहीं है। वह जिसे प्यार करती थी उसके लिए खुशी-खुशी अपनी जान दे देती। उसकी बुद्धि और उपलब्धियां उच्चतम स्तर की थीं।" और यही वह दोस्त थी जिसे वह खोने वाली थी! उनकी आखिरी मुलाकात का उस दोस्त का वृत्तांत सुनिए: —

"जब मैंने आखिरी बार शार्लेट को देखा (जनवरी 1845), तो उसने मुझे बताया कि उसने घर पर ही रहने का पक्का फैसला कर लिया है। उसने माना कि उसे घर पर रहना पसंद नहीं था। उसकी सेहत खराब थी। उसने कहा कि उसे शुरुआत में कोई भी बदलाव अच्छा लगता है, जैसे उसे शुरुआत में ब्रसेल्स अच्छा लगा था, और उसे लगता था कि कुछ लोगों के लिए अधिक विविधतापूर्ण और मानवीय जुड़ाव वाला जीवन जीने की संभावना जरूर होती है, लेकिन उसे अपने लिए ऐसी कोई संभावना नहीं दिखती। मैंने उसे बहुत प्यार से समझाया कि उसे घर पर नहीं रहना चाहिए; कि अगले पांच साल घर पर अकेले और कमजोर सेहत में बिताना उसे बर्बाद कर देगा; कि वह कभी ठीक नहीं हो पाएगी। जब मैंने कहा, 'सोचो पांच साल बाद तुम कैसी हो जाओगी!' तो उसके चेहरे पर इतनी उदासी छा गई कि मैं रुक गया और बोला, 'रो मत, शार्लेट!' वह रोई नहीं, बल्कि कमरे में इधर-उधर घूमती रही और थोड़ी देर बाद बोली, 'लेकिन मैं यहीं रहना चाहती हूँ, पॉली।'"

मैरी से अलग होने के कुछ सप्ताह बाद, वह हॉवर्थ में बिताए अपने दिनों का यह विवरण देती है।

24 मार्च, 1845।

मैं आपको बता ही नहीं सकती कि हॉवर्थ में समय कैसे बीतता है। यहाँ समय के बीतने का कोई संकेत नहीं है। एक दिन दूसरे दिन जैसा ही होता है; और सभी दिन नीरस और बेजान लगते हैं। रविवार, बेकिंग का दिन और शनिवार ही ऐसे दिन हैं जिनकी कुछ अलग पहचान है। इस बीच, जीवन बीतता जा रहा है। मैं जल्द ही तीस साल की हो जाऊंगी; और मैंने अभी तक कुछ भी नहीं किया है। कभी-कभी मैं अपने आगे और पीछे के भविष्य को देखकर उदास हो जाती हूँ। फिर भी पछताना गलत और मूर्खतापूर्ण है। निस्संदेह, मेरा कर्तव्य मुझे फिलहाल घर पर रहने के लिए कहता है। एक समय था जब हॉवर्थ मुझे बहुत सुखद लगता था; अब ऐसा नहीं है। मुझे ऐसा लगता है जैसे हम सब यहीं दफन हो गए हों। मैं यात्रा करना चाहती हूँ; काम करना चाहती हूँ; एक सक्रिय जीवन जीना चाहती हूँ। प्रिय, मेरी व्यर्थ इच्छाओं से आपको परेशान करने के लिए मुझे क्षमा करें। मैं बाकी बातें छोड़ दूंगी और आपको परेशान नहीं करूंगी। आपको मुझे पत्र लिखना चाहिए। अगर आपको पता होता कि आपके पत्र कितने सुखद होते हैं, तो आप अक्सर लिखते। आपके पत्र और फ्रांसीसी अखबार ही एकमात्र संदेशवाहक हैं जो मुझ तक पहुँचते हैं। मुझे हमारे मैदानी इलाकों से परे बाहरी दुनिया से संदेशवाहक मिले हैं; और वे बहुत ही स्वागत योग्य हैं।"

उसके दैनिक कार्यों में से एक अपने पिता को पढ़कर सुनाना था, और इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए उसे थोड़ी सी विनम्रता और कूटनीति का सहारा लेना पड़ता था; क्योंकि कई बार जब किसी और को वह काम करने का प्रस्ताव दिया जाता था जो वह इतने लंबे समय से स्वयं करता आ रहा था, तो उसे अपने भीतर के अभाव की याद आ जाती थी, जो उसके लिए अत्यंत कष्टदायी साबित होता था। और, वह स्वयं भी मन ही मन इसी प्रकार के नुकसान से भयभीत थी। लंबे समय से चली आ रही खराब सेहत, जिगर की गड़बड़ी, युवावस्था में रेखाचित्र बनाने और लिखने में उसकी लगन, रातों की नींद न आना, ब्रैनवेल के रहस्यमय और कष्टदायक व्यवहार पर बहाए गए उसके अनेक कड़वे, मौन आँसू—इन सभी कारणों का उसकी आँखों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा था; और इसी समय वह एम. हेगर को इस प्रकार लिखती है:

“आलस्य, निष्क्रियता और बौद्धिक सुस्ती से बढ़कर मुझे किसी चीज़ का डर नहीं

है। जब शरीर आलसी होता है, तो मन बुरी तरह पीड़ित होता है; अगर मैं लिख पाता तो मुझे इस सुस्ती का अनुभव ही न होता। पहले मैं दिन, सप्ताह, पूरे महीने लिखता था, और कुछ हद तक व्यर्थ भी नहीं जाता था, क्योंकि साउथी और कोलरिज, हमारे दो सर्वश्रेष्ठ लेखक, जिन्हें मैंने कुछ पांडुलिपियाँ भेजी थीं, ने कृपा करके अपनी स्वीकृति व्यक्त की थी; लेकिन अब मेरी दृष्टि बहुत कमजोर हो गई है; अगर मैं बहुत लिखता तो अंधा हो जाता। दृष्टि की यह कमजोरी मेरे लिए एक भयानक हानि है; अन्यथा, क्या आप जानते हैं कि मैं क्या करता, महोदय? मैं एक पुस्तक लिखता और उसे अपने साहित्य गुरु को समर्पित करता, एकमात्र गुरु जो मुझे कभी मिले—आपको, महोदय! मैंने आपको अक्सर फ्रेंच में बताया है कि मैं आपका कितना सम्मान करता हूँ, आपकी दया और सलाह के लिए मैं कितना ऋणी हूँ। मैं इसे एक बार अंग्रेजी में कहना चाहता हूँ। ऐसा संभव नहीं है; इस बारे में सोचना भी नहीं चाहिए। साहित्यिक करियर मेरे लिए बंद हो गया है... मुझे बताना न भूलें कि आप कैसे हैं, मैडम और बच्चे कैसे हैं। मुझे आपके पत्र सुनने की प्रतीक्षा है।" आपसे शीघ्र ही उत्तर की कामना करता हूँ; यह विचार मुझे प्रसन्न करता है, क्योंकि आपकी दयालुता की स्मृति मेरे मन से कभी नहीं मिटेगी, और जब तक वह स्मृति बनी रहेगी, तब तक आपके प्रति मेरे मन में उत्पन्न सम्मान भी बना रहेगा। आपका सादर, महोदय," इत्यादि।

संभवतः, उनकी बहनों और सबसे करीबी दोस्तों को भी उस समय उनके मन में व्याप्त अंधापन के भय का पता नहीं था। उनकी बची-खुची दृष्टि उन्होंने अपने पिता के लिए सुरक्षित रखी थी। वे साधारण सिलाई का काम बहुत कम करती थीं; लेखन का काम भी उतना ही करती थीं जितना टाला जा सकता था, और मुख्यतः बुनाई में ही अपना समय व्यतीत करती थीं।

2 अप्रैल, 1845।

"मुझे स्पष्ट रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि इस संसार में शुद्ध सुख का एक घूंट भी मिलना असंभव है। — की बीमारी — के विवाह के साथ आती है। मैरी टी. खुद को स्वतंत्र पाती है, और उस साहसिक और परिश्रमपूर्ण मार्ग पर चल पड़ती है जिस पर वह इतने लंबे समय से प्रवेश पाने की कोशिश कर रही थी। बीमारी, कठिनाई, खतरा उसके सहयात्री हैं— उसके अविभाज्य साथी हैं। हो सकता है कि वह इन दक्षिण-पश्चिम-उत्तर-पश्चिम तूफानों की पहुँच से पहले ही निकल गई हो, या हो सकता है कि

उन्होंने अपना प्रकोप ज़मीन पर ही समाप्त कर दिया हो और समुद्र को ज़्यादा प्रभावित न किया हो। यदि ऐसा नहीं है, तो वह बुरी तरह से धक्के खा रही होगी, जबकि हम अपने बिस्तरों में सो रहे थे, या जागते हुए उसके बारे में सोच रहे थे। फिर भी, ये वास्तविक, भौतिक खतरे, एक बार बीत जाने पर, मन में कठिनाई से संघर्ष करने और उस पर विजय पाने की संतुष्टि छोड़ जाते हैं। शक्ति, साहस और अनुभव इनके अपरिवर्तनीय परिणाम हैं; जबकि, मुझे संदेह है कि विशुद्ध रूप से मानसिक पीड़ा का कोई अच्छा परिणाम होता है, सिवाय इसके कि यह हमें शारीरिक पीड़ा के प्रति तुलनात्मक रूप से कम संवेदनशील बना दे..." दस साल पहले, मैं आपके उस किस्से पर हँसता जिसमें आपने अविवाहित डॉक्टर को विवाहित समझ लेने की गलती बताई थी। मैं निश्चित रूप से आपको ज़रूरत से ज़्यादा संशयवादी समझता और सोचता कि आप एक भले इंसान के साथ विनम्र व्यवहार करने पर क्यों पछता रही हैं, सिर्फ इसलिए कि वह अविवाहित था, विवाहित नहीं। लेकिन अब, मैं समझ सकता हूँ कि आपका संशय व्यावहारिक है। मैं जानता हूँ कि अगर औरतें पति की तलाश करने वाली होने के कलंक से बचना चाहती हैं, तो उन्हें संगमरमर या मिट्टी की तरह व्यवहार करना और दिखना चाहिए - ठंडी, भावहीन, बेजान; क्योंकि भावना, खुशी, दुख, मित्रता, घृणा, प्रशंसा, नफरत, हर तरह की भावना को दुनिया पति पाने की कोशिश के रूप में देखती है। कोई बात नहीं! आखिर नेक इरादे वाली औरतों के पास अपना विवेक होता है जो उन्हें तसल्ली देता है। इसलिए, अपने आप को वैसे ही दिखाने से ज़्यादा मत डरो जैसे तुम हो, स्नेही और दयालु; अपनी उत्कृष्ट भावनाओं और संवेदनाओं को बहुत सख्ती से मत दबाओ, सिर्फ इसलिए कि तुम्हें डर है कि कोई नासमझ यह सोचेगा कि तुम उन्हें बाहर आने दे रही हो। उसे मोहित करो; अपने आप को आधे-अधूरे जीवन तक सीमित मत रखो, क्योंकि अगर तुमने बहुत ज्यादा उत्साह दिखाया तो कोई व्यावहारिक व्यक्ति यह सोच सकता है कि तुम अपना जीवन उसकी मूर्खता के लिए समर्पित करने का इरादा रखती हो। फिर भी, एक शांत, शालीन और संतुलित व्यवहार एक स्त्री के लिए अनमोल खजाना है, और यह तुममें है। जल्द ही फिर से लिखना, क्योंकि मैं बहुत गुस्से में हूँ और मुझे प्यार से सहलाने की ज़रूरत है।

"13 जून, 1845।"

"श्रीमती — - की बात करें, जिनके बारे में आप कहते हैं कि वे मेरे जैसी हैं, तो मुझे उनके प्रति ज़रा भी आकर्षण महसूस नहीं होता। मैं कभी भी उन लोगों के प्रति

आकर्षित नहीं होती जिन्हें मेरे जैसा कहा जाता है, क्योंकि मुझे हमेशा से यही लगता है कि वे मेरे चरित्र के केवल अप्रिय, बाहरी, पहली मुलाकात वाले हिस्से में ही मेरे जैसे हैं; उन बिंदुओं में जो आम लोगों को स्पष्ट होते हैं, और जो मुझे पता है कि सुखद नहीं होते। आप कहते हैं कि वह 'चतुर' हैं — 'एक चतुर व्यक्ति'। मुझे यह शब्द कितना नापसंद है! इसका मतलब तो एक चालाक, बेहद बदसूरत, दखलंदाजी करने वाली, बातूनी औरत है... मुझे पापा को एक दिन के लिए भी छोड़ने में हिचकिचाहट होती है। उनकी दृष्टि हर हफ्ते कम होती जा रही है; और क्या इसमें आश्चर्य की बात है कि जब वे अपनी सबसे कीमती क्षमता को खोते हुए देखते हैं, तो कभी-कभी उनका मनोबल गिर जाता है? यह महसूस करना कितना कठिन है कि उनके थोड़े-बहुत सुख भी जल्द ही चले जाएंगे। उन्हें अब पढ़ने या लिखने में सबसे ज्यादा कठिनाई होती है; और फिर वे उस निर्भरता की स्थिति से डरते हैं जिसमें अंधापन उन्हें अनिवार्य रूप से धकेल देगा। उन्हें डर है कि वे कुछ भी नहीं होंगे मैं उसके चर्च में जाता हूँ। मैं उसे खुश करने की कोशिश करता हूँ; कभी-कभी मैं अस्थायी रूप से सफल भी हो जाता हूँ, लेकिन कोई भी सांत्वना उसकी दृष्टि वापस नहीं ला सकती, न ही उसकी दृष्टि की कमी को पूरा कर सकती है। फिर भी वह कभी चिड़चिड़ा नहीं होता; कभी अधीर नहीं होता; केवल चिंतित और उदास रहता है।

ऊपर बताए गए कारण से, शार्लेट ने उस एकमात्र घर में आने का निमंत्रण ठुकरा दिया, जहाँ उसे अब आने के लिए कहा जा रहा था। इस पत्र के जवाब में, उसने अपने पत्र-व्यवहारकर्ता के उत्तर में कहा: —

"आपको लगा कि मैंने आपको ठंडेपन से मना कर दिया, है ना? यह एक अजीब तरह का ठंडापन था, जब मैं 'हाँ' कहने के लिए बेताब था, और मुझे 'ना' कहना पड़ा। हालाँकि, अब हालात थोड़े बदल गए हैं। ऐनी घर आ गई है, और उसकी मौजूदगी से मुझे निश्चित रूप से अधिक आज़ादी महसूस हो रही है। तो, अगर सब ठीक रहा, तो मैं आपसे मिलने आऊँगा। मुझे बस इतना बता दीजिए कि मुझे कब आना है। सप्ताह और दिन बता दीजिए। यदि संभव हो, तो कृपया निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर भी दें। लीड्स से शेफ़ील्ड कितनी दूर है? क्या आप मुझे यात्रा खर्च का कुछ अंदाज़ा दे सकते हैं? बेशक, जब मैं आऊँगा, तो आप मुझे शांति से अपनी संगति का आनंद लेने देंगे, और मुझे बेवजह बाहर नहीं ले जाएँगे। मुझे आपके सहायक पादरी से मिलने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं है। मुझे लगता है कि वह भी उन सभी सहायक पादरियों की

तरह ही होगा जिन्हें मैंने देखा है; और वे मुझे स्वार्थी, घमंडी और खोखले लगते हैं। इस समय, हॉवर्थ पैरिश में हमारे पास कम से कम तीन सहायक पादरी हैं - और उनमें से कोई भी दूसरे को सुधारने वाला नहीं है। कुछ दिन पहले, वे तीनों, श्रीमान के साथ... एस. अचानक चाय के लिए आ गए, या यूँ कहें कि झटपट आ गए। सोमवार का दिन था (बेकिंग का दिन), और मैं गर्मी और थकान से परेशान थी; फिर भी, अगर वे शांत और शालीनता से पेश आते, तो मैं उन्हें शांति से चाय परोस देती; लेकिन वे अपनी बड़ाई करने लगे और असंतुष्टों को इस तरह कोसने लगे कि मेरा गुस्सा बेकाबू हो गया, और मैंने कुछ वाक्य तेज़ी से और तीखे स्वर में कह दिए, जिससे वे सब चुप हो गए। पापा भी बहुत भयभीत हुए, लेकिन मुझे इसका कोई अफसोस नहीं है।

अपनी सहेली से संक्षिप्त मुलाकात के बाद लौटते समय, वह रेलगाड़ी के डिब्बे में एक सज्जन के साथ यात्रा कर रही थी, जिनके चेहरे और हाव-भाव से पल भर में पता चल गया कि वे फ्रांसीसी हैं। उसने उनसे पूछने का साहस किया कि क्या ऐसा नहीं है; और जब उन्होंने यह स्वीकार किया, तो उसने आगे पूछा कि क्या उन्होंने जर्मनी में काफी समय बिताया है, और उन्हें जवाब मिला कि हाँ; उसकी तेज बुद्धि ने गले से निकलने वाले भारी उच्चारण को पकड़ लिया, जिसके बारे में फ्रांसीसी कहते हैं कि वे अपने देशवासियों के नाती-पोतों में भी पहचान सकते हैं जो राइन नदी के पार कुछ समय तक रहे हों। शार्लोट ने अपनी फ्रांसीसी भाषा की कुशलता को उसी आदत से बरकरार रखा था, जिसके चलते वह एम. हेगर से इस प्रकार बात करती है:

मुझे फ्रेंच भूल जाने का बहुत डर है – मैं हर दिन आधा पृष्ठ फ्रेंच याद करती हूँ, और मुझे यह पाठ सीखने में बहुत आनंद आता है। कृपया मैडम को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ दें; मुझे डर है कि मारिया-लुईस और क्लेयर मुझे भूल चुकी होंगी; लेकिन मैं आपसे एक दिन फिर मिलूंगी; जैसे ही मेरे पास ब्रुसेल्स जाने के लिए पर्याप्त पैसे आ जाएँगे, मैं वहाँ आ जाऊंगी।

और इस तरह, अपनी सहेली से मिलने के इस दुर्लभ सुख के बाद, हॉवर्थ लौटते समय फ्रांसीसी सज्जन के साथ हुई बातचीत ने उन्हें सुखद रूप से तृप्त कर दिया; और वे तरोताज़ा और प्रसन्न होकर घर पहुँचीं। वहाँ उन्हें क्या मिलेगा?

जब वह पादरी के घर पहुँची तो दस बज रहे थे। ब्रैनवेल वहाँ अप्रत्याशित रूप से बहुत बीमार थे। वे एक-दो दिन पहले छुट्टी मनाने के लिए घर आए थे; असल में, मुझे लगता है, क्योंकि कोई ऐसी बात पता चली थी जिसके कारण उनका घर से बाहर

रहना बेहद ज़रूरी था। शार्लोट के लौटने वाले दिन, उन्हें श्रीमान - - का एक पत्र मिला था, जिसमें उन्हें कड़े शब्दों में बर्खास्त कर दिया गया था, यह बताया गया था कि उनके कारनामों का पता चल गया है, उन्हें बेहद बुरा बताया गया था, और उन्हें चेतावनी दी गई थी कि अगर उन्हें बेनकाब किया गया तो वे परिवार के हर सदस्य से तुरंत और हमेशा के लिए सभी संपर्क तोड़ दें।

ब्रैनवेल के पापों का स्वरूप और गहराई चाहे जो भी रही हो, चाहे उसका प्रलोभन कुछ भी रहा हो, चाहे उसका अपराध कुछ भी हो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसके आचरण ने उसके बेचारे पिता और उसकी निर्दोष बहनों को कितना कष्ट पहुंचाया। उनकी लंबे समय से संजोई और पूरी करने के लिए की गई कठिन परिश्रम की आशाएं और योजनाएं बेरहमी से चकनाचूर हो गईं; इसके बाद से उनके दिन कड़वे हो गए और उसके पश्चाताप के प्रकोप ने उनकी रातों की स्वाभाविक शांति भंग कर दी। आइए, शार्लोट के अपने मार्मिक शब्दों में उसकी बेचारी बहनों को हुए कष्टों को पढ़ें:

“ब्रानवेल के साथ हमारा बहुत दुखद अनुभव रहा है। वह अपने मानसिक कष्ट को भुलाने या भुलाने के अलावा और कुछ नहीं सोचता था। घर में किसी को चैन नहीं मिल पा रहा था; और अंत में, हमें उसे एक सप्ताह के लिए घर से बाहर भेजना पड़ा, साथ में किसी को उसकी देखभाल के लिए भेजना पड़ा। उसने आज सुबह मुझे पत्र लिखा है, जिसमें उसने पश्चाताप व्यक्त किया है... लेकिन जब तक वह घर पर रहेगा, मुझे घर में शांति की कोई उम्मीद नहीं है। मुझे डर है कि हम सभी को दुख और बेचैनी के दौर के लिए तैयार रहना होगा। जब मैं आपसे विदा ले रही थी, तब मुझे यह गहरा अहसास हुआ था कि मैं फिर से दुख की ओर लौट रही हूँ।”

अगस्त, 1845।

"घर पर हालात लगभग पहले जैसे ही हैं; ब्रैनवेल के मामले में स्थिति बहुत अच्छी नहीं है, हालांकि पिछले एक-दो दिनों से उनका स्वास्थ्य और परिणामस्वरूप उनका मिजाज कुछ बेहतर रहा है, क्योंकि अब उन्हें शराब से परहेज करने के लिए मजबूर किया गया है।"

18 अगस्त, 1845।

मैंने लिखने में देरी की है, क्योंकि मेरे पास बताने के लिए कोई अच्छी खबर नहीं है। ब्रैनवेल के बारे में मेरी उम्मीदें सचमुच बहुत कम हो गई हैं। कभी-कभी मुझे डर लगता है कि वह कभी भी कुछ करने लायक नहीं रह पाएगा। हाल ही में उसके

भविष्य और भावनाओं को जो ठेस पहुंची है, उसने उसे पूरी तरह से लापरवाह बना दिया है। केवल साधनों की घोर कमी ही उसे रोके हुए है। वास्तव में, हमें अंत तक आशा रखनी चाहिए; और मैं ऐसा करने की कोशिश भी करता हूं, लेकिन कभी-कभी उसके मामले में आशा रखना भ्रामक लगता है।

4 नवंबर, 1845।

"मुझे उम्मीद थी कि मैं आपको हॉवर्थ आने के लिए कह सकूँगी। ऐसा लग रहा था मानो ब्रैनवेल को नौकरी मिल जाएगी, और मैं उनके प्रयासों के परिणाम का इंतज़ार कर रही थी ताकि कह सकूँ, प्रिय — -, आइए और हमसे मिलिए। लेकिन वह पद (रेलवे समिति में सचिव का पद) किसी और को दे दिया गया है। ब्रैनवेल अभी भी घर पर हैं; और जब तक वह यहाँ हैं, आप नहीं आ सकतीं। जैसे-जैसे मैं उनसे मिलती हूँ, मेरा यह संकल्प और भी पक्का होता जाता है। काश मैं उनके पक्ष में आपसे एक शब्द कह पाती, लेकिन मैं नहीं कह सकती। मैं चुप रहूँगी। लीड्स के बारे में आपके अच्छे सुझाव के लिए हम सब आपके आभारी हैं; लेकिन मुझे लगता है कि हमारी स्कूल योजनाएँ फिलहाल स्थगित हैं।"

31 दिसंबर, 1845।

"आपने ठीक ही कहा है कि व्यभिचार से होने वाले कष्टों से बढ़कर कोई कष्ट नहीं होता; अफसोस! मैं इस बात की सच्चाई को प्रतिदिन सिद्ध होते देखता हूँ। और उन्हें अपने अभागे भाई की सेवा में उतना ही थका देने वाला और बोझिल जीवन बिताना पड़ता है। यह वास्तव में दुखद है कि जिन लोगों ने पाप नहीं किया है, उन्हें इतना कष्ट सहना पड़ता है।"

दरअसल, उनके जीवन के अंतिम दिन क्रूर, शर्मनाक पीड़ाओं से त्रस्त थे, - कम से कम दो बहनों की असमय मृत्यु हो गई, - उनके सांसारिक जीवन की सभी महान संभावनाएं अचानक समाप्त हो गईं, - यह सब मध्य ग्रीष्म ऋतु 1845 से शुरू हुआ माना जा सकता है।

ब्रैनवेल के जीवन के अंतिम तीन वर्षों में, वह अपनी अंतरात्मा को शांत करने के लिए नियमित रूप से अफीम का सेवन करते थे; इसके अलावा, जब भी उन्हें मौका मिलता, वे शराब भी पीते थे। पाठक शायद कहेंगे कि मैंने उनकी इस असंयम की प्रवृत्ति का उल्लेख बहुत पहले किया है। यह सच है; लेकिन जहाँ तक मुझे पता है, यह आदत उन्हें शिक्षक पद से बर्खास्त किए जाने के बाद ही बनी। वे अफीम का सेवन

इसलिए करते थे क्योंकि यह उन्हें शराब की तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से कुछ समय के लिए सब कुछ भुला देती थी; और इसके अलावा, यह अधिक आसानी से उपलब्ध थी। इसे प्राप्त करने में उन्होंने अफीम पीने वाले की सारी चालाकी दिखाई। वह परिवार के चर्च जाने के दौरान चुपके से निकल जाते थे - जहाँ जाने के लिए उन्होंने खुद को बहुत बीमार बताया था - और गाँव के दवा विक्रेता से किसी तरह अफीम का एक टुकड़ा ले लेते थे; या हो सकता है कि मालवाहक ने बिना शक के दूर से उनके लिए एक पैकेट में अफीम ला दी हो। अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले उन्हें भयानक प्रलाप के दौरे पड़ते थे; वह अपने पिता के कमरे में सोता था, और कभी-कभी कहता था कि सुबह होने से पहले या तो वह या उसके पिता मर जाएँगे। डर से कांपती बहनें अपने पिता से विनती करतीं कि वे खुद को इस खतरे में न डालें; लेकिन श्री ब्रोंटे डरपोक नहीं थे, और शायद उन्हें लगा कि डर दिखाने के बजाय उस पर भरोसा दिखाकर वे अपने बेटे को कुछ संयम बरतने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। बहनें अक्सर आधी रात को पिस्तौल की आवाज सुनने के लिए तरसती रहती थीं, जब तक कि उनकी चौकस निगाहें और कान लगातार तनाव से थककर सुस्त न हो जाते। सुबह युवा ब्रोंटे बाहर टहलते हुए, शराबी की तरह बेकाबू होकर कहता, "बेचारे बूढ़े आदमी और मैंने बहुत भयानक रात बिताई; उसने अपनी पूरी कोशिश की - बेचारा बूढ़ा आदमी! लेकिन मेरा तो काम तमाम हो गया।"

अध्याय 14

1845 की उस दुखद शरद ऋतु के दौरान, एक नई रुचि जागृत हुई; वास्तव में, यह बहुत धुंधली थी और अक्सर उनके भाई के संबंध में तीव्र पीड़ा और निरंतर चिंता के

दबाव में भुला दी गई थी। अपनी बहनों की जीवनी संबंधी टिप्पणी में, जिसे शार्लोट ने 1850 में प्रकाशित "वुथरिंग हाइट्स" और "एग्नेस ग्रे" के संस्करण के आरंभ में जोड़ा था - एक ऐसा लेखन जो, जहाँ तक मुझे पता है, अपनी करुणा और शक्ति में अद्वितीय है - वह कहती हैं:

सन् 1845 की शरद ऋतु में एक दिन, संयोगवश मेरी नज़र मेरी बहन एमिली की लिखावट में लिखी एक कविता की पांडुलिपि पर पड़ी। ज़ाहिर है, मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि मैं जानती थी कि वह कविता लिख सकती थी और लिखती भी थी। मैंने उसे पढ़ा, और आश्चर्य से कहीं बढ़कर एक गहरी अनुभूति हुई - यह विश्वास कि ये सामान्य रचनाएँ नहीं थीं, न ही वैसी कविताएँ थीं जैसी आम तौर पर महिलाएँ लिखती हैं। मुझे वे संक्षिप्त और सारगर्भित, सशक्त और वास्तविक लगीं। मेरे कानों को उनमें एक विशेष प्रकार का संगीत सुनाई दिया, जो बेकाबू, उदास और उत्थानकारी था। मेरी बहन एमिली भाव-भंगिमाओं को ज़ाहिर करने वाली नहीं थी, न ही ऐसी थी जिसके मन और भावनाओं में उसके सबसे करीबी और प्रिय लोग भी बिना किसी डर के दखल दे सकें। उसे अपनी खोज के बारे में समझाने में घंटों लग गए, और उसे यह विश्वास दिलाने में कई दिन लग गए कि ऐसी कविताएँ प्रकाशन के योग्य हैं... इसी बीच, मेरी छोटी बहन ने चुपचाप अपनी कुछ रचनाएँ मुझे दीं, और इशारा किया कि चूंकि एमिली की रचनाओं ने मुझे आनंद दिया है, तो शायद मैं उसकी रचनाएँ भी देख लूँ। मैं पक्षपातपूर्ण निर्णय लेने से खुद को रोक नहीं पाई, फिर भी मुझे लगा कि इन छंदों में भी एक मधुर, सच्ची करुणा झलकती है। हमने बचपन से ही लेखक बनने का सपना देखा था। हमने अपनी कुछ चुनिंदा कविताओं का संकलन करवाने और संभव हो तो उन्हें छपवाने का फैसला किया। व्यक्तिगत प्रचार से बचने के लिए, हमने अपने नाम कुरेर, एलिस और एक्टन बेल के नाम से छुपा लिए; यह अस्पष्ट चुनाव इसलिए किया गया था क्योंकि हम ईसाई नाम, जो पूरी तरह से पुरुषवाचक थे, अपनाने से हिचकिचा रहे थे, जबकि हम खुद को महिला घोषित नहीं करना चाहते थे, क्योंकि - उस समय हमें यह संदेह नहीं था कि हमारी लेखन और चिंतन शैली 'स्त्री' नहीं है, फिर भी हमें यह अस्पष्ट धारणा थी कि महिला लेखिकाओं को पूर्वाग्रह की दृष्टि से देखा जाता है; हमने देखा कि आलोचक कभी-कभी आलोचना के लिए व्यक्तित्व का हथियार इस्तेमाल करते हैं और इनाम के तौर पर चापलूसी करते हैं, जो सच्ची प्रशंसा नहीं होती। हमारी छोटी सी किताब को प्रकाशित करवाना बहुत मेहनत का काम था।

जैसा कि उम्मीद थी, न तो हमारी और न ही हमारी कविताओं की कोई मांग थी; लेकिन इसके लिए हम पहले से ही तैयार थे। शुरुआत में, हालांकि हम खुद अनुभवहीन थे, हमने दूसरों के अनुभव पढ़े थे। सबसे बड़ी समस्या यह थी कि जिन प्रकाशकों से हमने संपर्क किया, उनसे किसी भी प्रकार का उत्तर प्राप्त करना कठिन था। इस बाधा से बहुत परेशान होकर, मैंने एडिनबर्ग के मेसर्स चैंबर्स से सलाह लेने का साहस किया; हो सकता है कि वे इस बात को भूल गए हों, लेकिन मैं नहीं भूला हूँ, क्योंकि उनसे मुझे एक संक्षिप्त और व्यावहारिक, लेकिन विनम्र और समझदारी भरा उत्तर मिला, जिस पर हमने अमल किया और अंततः आगे बढ़े।

मैंने श्री रॉबर्ट चैंबर्स से पूछताछ की और पाया, जैसा कि मिस ब्रोंटे ने अनुमान लगाया था, कि वे उस आवेदन को पूरी तरह से भूल गए थे जो उनसे और उनके भाई से सलाह के लिए किया गया था; और न ही उनके पास पत्राचार की कोई प्रति या ज्ञापन था।

हॉवर्थ में एक बुद्धिमान व्यक्ति रहता है, जिसने मुझे इस अवधि के दौरान बहनों से संबंधित कुछ रोचक जानकारी दी है। वह कहता है: —

मैं मिस ब्रोंटे को लंबे समय से जानती हूँ; दरअसल, जब से वे 1819 में हॉवर्थ आए थे, तब से। लेकिन परिवार से मेरी ज़्यादा जान-पहचान 1843 तक नहीं थी, जब मैंने स्टेशनरी का थोड़ा-बहुत काम शुरू किया। मेरे शुरू करने से पहले कीघली से ज़्यादा नज़दीक इस तरह की कोई चीज़ नहीं मिलती थी। वे बहुत सारा कागज़ खरीदते थे, और मैं सोचती थी कि वे इतने कागज़ का क्या करते होंगे। कभी-कभी मुझे लगता था कि वे पत्रिकाओं में योगदान देते होंगे। जब मेरे पास कागज़ खत्म हो जाता था, तो मुझे हमेशा उनके आने का डर सताता था; अगर मेरे पास कागज़ नहीं होता था, तो वे बहुत परेशान हो जाते थे। मैं कई बार आधा रीम कागज़ लेने के लिए हैलिफ़ैक्स (दस मील की दूरी) तक पैदल गई हूँ, इस डर से कि उनके आने पर मेरे पास कागज़ न हो। पैसे की कमी के कारण मैं एक बार में ज़्यादा नहीं खरीद सकती थी। मेरे पास हमेशा पैसों की कमी रहती थी। मुझे बहुत अच्छा लगता था जब वे आते थे और मेरे पास उनके लिए कुछ होता था; वे बाकी लोगों से बहुत अलग थे; बहुत ही सौम्य, दयालु और बहुत ही शांत। वे ज़्यादा बात नहीं करते थे। शार्लोट कभी-कभी बैठकर मुझसे पूछती रहती थी कि हमारी परिस्थितियों को उन्होंने कितनी दयालुता और सहानुभूति से समझा! ... यद्यपि मैं एक गरीब मजदूर हूँ (जिसे मैंने कभी अपमान नहीं समझा),

फिर भी मैं उनसे बड़ी सहजता से बात कर सकता था। मुझे हमेशा उनके साथ घर जैसा महसूस होता था। हालाँकि मैंने कभी स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं की, लेकिन उनकी संगति में मुझे कभी इसकी कमी महसूस नहीं हुई।

अंततः उन्होंने "कुरर, एलिस और एक्टन बेल की कविताओं" के प्रकाशन के लिए जिस प्रकाशक के पास आवेदन किया, वह सफल रहा, वे थे मेसर्स आयलॉट एंड जोन्स, पैटरनोस्टर रो। श्री आयलॉट ने कृपा करके इस विषय पर उनके द्वारा लिखे गए पत्र मुझे उपलब्ध कराए हैं। पहला पत्र 28 जनवरी, 1846 का है, और इसमें उन्होंने पूछा है कि क्या वे कविताओं का एक ऑक्टेवो खंड प्रकाशित करेंगे; यदि नहीं, तो अपने जोखिम पर, लेखक के खर्च पर। इस पर "सी. ब्रोंटे" के हस्ताक्षर हैं। उन्होंने शायद शीघ्र ही उत्तर दिया होगा, क्योंकि 31 जनवरी को उन्होंने फिर से लिखा: —

“सज्जनों,

"चूंकि आप मेरे द्वारा आपसे किए गए अनुरोध के अनुसार इस कृति के प्रकाशन का दायित्व लेने के लिए सहमत हैं, इसलिए मैं आपसे कागज और छपाई की लागत जल्द से जल्द जानना चाहूंगा। इसके बाद मैं पांडुलिपि के साथ आवश्यक राशि भेज दूंगा। मैं चाहता हूं कि इसे एक ऑक्टेवो वॉल्यूम में, उसी गुणवत्ता के कागज और आकार के फ़ॉन्ट में छापा जाए, जैसा कि वर्ड्सवर्थ के मॉक्सन के अंतिम संस्करण में था। मेरे अनुमान से कविताएँ 200 से 250 पृष्ठों में होंगी। ये किसी पादरी की रचना नहीं हैं, न ही ये पूरी तरह से धार्मिक प्रकृति की हैं; लेकिन मुझे लगता है कि ये बातें अप्रासंगिक होंगी। प्रकाशन के खर्च की सटीक गणना करने के लिए शायद आपको पांडुलिपि देखनी पड़े; यदि ऐसा होता है, तो मैं इसे तुरंत भेज दूंगा। हालांकि, मैं पहले संभावित लागत का कुछ अनुमान लगाना चाहूंगा; और यदि आप मेरी बातों के आधार पर इस विषय पर एक मोटा अनुमान लगा सकते हैं, तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।"

अपने अगले पत्र में, जो 6 फरवरी को लिखा गया था, उन्होंने लिखा: —

"आप देखेंगे कि ये कविताएँ तीन व्यक्तियों, यानी रिश्तेदारों की रचनाएँ हैं - उनकी अलग-अलग रचनाओं को उनके संबंधित हस्ताक्षरों द्वारा पहचाना जा सकता है।"

वह 15 फरवरी को फिर लिखती है; और 16 तारीख को वह कहती है: —

“यह पांडुलिपि मेरी अपेक्षा से निश्चित रूप से पतली होगी। मैं किसी अन्य मॉडल का नाम नहीं बता सकता जिससे यह हूबहू मिलती-जुलती हो, फिर भी मुझे लगता है

कि दो-दशांश वाला प्रारूप और थोड़े छोटे, लेकिन फिर भी स्पष्ट अक्षर बेहतर होंगे। मेरी एकमात्र शर्त स्पष्ट अक्षर, बहुत छोटे न हों और कागज की गुणवत्ता है।”

21 फरवरी को वह कविताओं के लिए "लॉन्ग प्राइमर टाइप" का चयन करती है, और कुछ दिनों में 31 पाउंड 10 शिलिंग का भुगतान करेगी।

इन टिप्पणियों में दी गई जानकारी भले ही सूक्ष्म हो, लेकिन वह महत्वहीन नहीं है, क्योंकि इससे उनके चरित्र की गहरी झलक मिलती है। यदि पुस्तक का प्रकाशन अपने जोखिम पर होना था, तो यह आवश्यक था कि बातचीत का संचालन करने वाली बहन विभिन्न प्रकार के टाइप और विभिन्न आकारों की पुस्तकों से भलीभांति परिचित हो जाए। तदनुसार, उन्होंने एक छोटी सी पुस्तक खरीदी, जिससे वे मुद्रण की तैयारी के विषय में यथासंभव ज्ञान प्राप्त कर सकें। उन्हें कोई अधूरा ज्ञान नहीं था - वे उन निर्णयों के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं थीं जो वे स्वयं ले सकती थीं; फिर भी, श्रीमान आयलॉट और जोन्स की पूर्ण ईमानदारी पर उनका भरोसा जायज था। उद्यम शुरू करने से पहले जोखिम का आकलन करने में बरती गई सावधानी और आवश्यक धनराशि का शीघ्र भुगतान, यहाँ तक कि ऋण का रूप लेने से पहले ही, उनके आत्मनिर्भर और स्वतंत्र स्वभाव के लक्षण थे। वे आत्म-संयमित भी थीं। कविताओं के संग्रह की तैयारी और प्रकाशन की पूरी प्रक्रिया के दौरान, घर के सदस्यों के अलावा किसी को भी इस बारे में एक शब्द भी नहीं लिखा गया कि क्या हो रहा है।

मुझे कुछ पत्र मिले हैं जो उन्होंने अपनी पुरानी स्कूल शिक्षिका, मिस डब्ल्यू- को संबोधित किए थे। ये पत्र कुछ समय पहले के हैं। मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि जहाँ शार्लेट ब्रोंटे के अपने शब्द इस्तेमाल किए जा सकते हैं, वहाँ किसी और के शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। इसी दृढ़ विश्वास के साथ मैं इस श्रृंखला से उनके दिनांकों के अनुसार अंश निकालूँगा।

30 जनवरी, 1846।

मेरी प्यारी मिस डब्ल्यू — -,

“मैंने अभी तक — - का दौरा नहीं किया है; वास्तव में, मुझे वहाँ गए एक साल से ज़्यादा हो गया है, लेकिन मुझे ई. से अक्सर खबर मिलती रहती है, और उसने मुझे बताया कि आप वॉर्सेस्टरशायर चले गए हैं; हालाँकि, वह मुझे आपका सटीक पता नहीं दे पाई। अगर मुझे पता होता, तो मैं आपको बहुत पहले ही लिख देती। मुझे लगा था कि रेलवे संकट के बारे में सुनकर आप यह जानकर हैरान होंगे कि हम कैसे हैं;

और आप निश्चिंत रहें कि मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि हमारी छोटी सी पूंजी अभी तक कम नहीं हुई है। यॉर्क और मिडलैंड, जैसा कि आपने कहा, एक बहुत अच्छी लाइन है, फिर भी, मैं आपसे स्वीकार करती हूँ कि मैं अपने लिए समय रहते समझदारी से काम लेना चाहती हूँ। मुझे नहीं लगता कि सबसे अच्छी लाइनें भी कई वर्षों तक अपने मौजूदा प्रीमियम पर बनी रहेंगी; और मैं बहुत चिंतित हूँ कि हम अपने शेयर समय रहते बेच दें और उससे प्राप्त राशि को किसी सुरक्षित निवेश में लगा दें, भले ही फिलहाल कम लाभदायक हो। हालाँकि, मैं अपनी बहनों को इस मामले को ठीक मेरे नज़रिए से देखने के लिए राजी नहीं कर पा रही हूँ। मेरा दृष्टिकोण अलग है; और मुझे ऐसा लगता है कि एमिली की राय के सीधे विरोध में कार्य करके उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाने की बजाय नुकसान का जोखिम उठाना बेहतर होगा। जब मैं ब्रुसेल्स में था और दूरी के कारण अपने हितों की देखभाल करने में असमर्थ था, तब उसने मेरे लिए बहुत ही सुंदर और सक्षम ढंग से कार्यभार संभाला था; इसलिए, मैं उसे ही कार्यभार संभालने दूँगा और परिणाम भुगतूँगा। वह निस्वार्थ और ऊर्जावान है; और यदि वह उतनी आज्ञाकारी या समझाने के लिए तैयार नहीं है जितनी मैं चाहता हूँ, तो मुझे याद रखना चाहिए कि पूर्णता मनुष्य के भाग्य में नहीं है; और जब तक हम अपने प्रियजनों और जिनसे हमारा गहरा संबंध है, उनके प्रति अटूट सम्मान रखते हैं, तब तक यह कोई बड़ी बात नहीं है कि वे कभी-कभी हमें अपने अनुचित और हठी विचारों से परेशान करें।

“मेरी प्यारी मिस डब्ल्यू— आप मेरी ही तरह बहनों के आपसी स्नेह का महत्व जानती हैं; मेरा मानना है कि जब वे लगभग बराबर उम्र की हों और शिक्षा, रुचि और भावनाएँ एक जैसी हों, तो इस दुनिया में इसकी कोई तुलना नहीं है। आपने ब्रैनवेल के बारे में पूछा; वह कभी नौकरी ढूंढने के बारे में नहीं सोचता, और मुझे डर लगने लगा है कि उसने खुद को जीवन में किसी भी सम्मानजनक पद को प्राप्त करने में असमर्थ बना लिया है; इसके अलावा, अगर उसके पास पैसा होता भी, तो वह उसे केवल अपने ही नुकसान के लिए इस्तेमाल करता; मुझे डर है कि उसमें आत्मनिर्भरता की क्षमता लगभग नष्ट हो चुकी है। आपने मुझसे पूछा कि क्या मैं नहीं सोचती कि पुरुष विचित्र प्राणी हैं? हाँ, बिल्कुल। मैंने अक्सर ऐसा सोचा है; और मुझे यह भी लगता है कि उनके पालन-पोषण का तरीका विचित्र है: उन्हें प्रलोभनों से पर्याप्त रूप से बचाया नहीं जाता। लड़कियों की रक्षा ऐसे की जाती है मानो वे बहुत ही नाजुक या नासमझ

हों, जबकि लड़कों को दुनिया में ऐसे छोड़ दिया जाता है मानो वे सभी प्राणियों में सबसे बुद्धिमान और सबसे कम गुमराह होने वाले हों। मुझे खुशी है कि आपको ब्रूम्सग्रोव पसंद है।” हालांकि, मैं दावे से कह सकती हूँ कि श्रीमती एम. के साथ ऐसी कोई जगह नहीं होगी जहाँ आप जाना पसंद न करें। जब भी मैं आपके आनंद के बारे में सुनती हूँ, मुझे एक विशेष संतुष्टि मिलती है, क्योंकि यह साबित करता है कि इस दुनिया में भी वास्तव में न्याय होता है। आपने कड़ी मेहनत की; आपने अपनी जवानी और जीवन के सुनहरे दिनों में लगभग सभी सुख-सुविधाओं और आराम को त्याग दिया; अब आप स्वतंत्र हैं, और मुझे आशा है कि आपके पास अभी भी कई साल हैं जिनमें आप इस स्वतंत्रता का आनंद ले सकती हैं। इसके अलावा, मेरे प्रसन्न होने का एक और स्वार्थी कारण भी है; ऐसा लगता है कि 'एक अकेली महिला' भी उतनी ही खुश हो सकती है जितनी कि प्रिय पत्नियाँ और गर्वित माताएँ। मुझे इस बात की खुशी है। मैं आजकल अविवाहित और कभी शादी न करने वाली महिलाओं के अस्तित्व पर बहुत विचार करती हूँ; और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच चुकी हूँ कि इस धरती पर अविवाहित महिला से बढ़कर कोई सम्माननीय चरित्र नहीं है, जो पति या भाई के सहारे के बिना चुपचाप, दृढ़ता से अपना जीवन व्यतीत करती है; और जो उस उम्र तक पहुँच चुकी है पैंतालीस या उससे अधिक आयु की महिला, अपने सुव्यवस्थित मन, साधारण सुखों का आनंद लेने की प्रवृत्ति, अपरिहार्य पीड़ाओं को सहन करने का धैर्य, दूसरों के कष्टों के प्रति सहानुभूति और अपनी क्षमता के अनुसार जरूरतमंदों की मदद करने की तत्परता को बरकरार रखती है।

जब मेसर्स आयलॉट एंड कंपनी के साथ बातचीत चल रही थी, उसी दौरान शार्लोट अपनी पुरानी स्कूल-मित्र से मिलने गई, जिसके साथ उसकी गहरी आत्मीयता थी; लेकिन न तो तब और न ही बाद में उसने कभी उससे कविताओं के प्रकाशन के बारे में बात की; फिर भी, इस युवती को संदेह था कि बहनें पत्रिकाओं के लिए लिखती थीं; और उसका यह विचार तब और पुख्ता हो गया जब हॉवर्थ की अपनी एक यात्रा के दौरान उसने ऐनी को "चैम्बर्स जर्नल" की कई प्रतियां लिए हुए देखा, और पढ़ते समय उसके शांत चेहरे पर खुशी की एक हल्की सी मुस्कान फैल गई।

“क्या बात है?” दोस्त ने पूछा। “तुम क्यों मुस्कुरा रहे हो?”

"सिर्फ इसलिए कि मैंने देखा कि उन्होंने मेरी एक कविता शामिल की है," यह शांत जवाब था; और इस विषय पर एक शब्द भी नहीं कहा गया।

इस मित्र को शार्लोट ने निम्नलिखित पत्र लिखे: —

“3 मार्च, 1846।”

“कल मैं दो बजे के कुछ देर बाद घर पहुँच गई, सब ठीक था; मैंने पापा को बिल्कुल स्वस्थ पाया; उनकी नज़र पहले जैसी ही थी। एमिली और ऐनी मुझसे मिलने कीघली जा रही थीं; दुर्भाग्य से, मैं पुराने रास्ते से लौट आई थी, जबकि वे नए रास्ते से जा रही थीं, और हम एक-दूसरे से नहीं मिल पाए। वे साढ़े चार बजे तक घर नहीं पहुँचीं और दोपहर में हुई तेज़ बारिश में भीग गईं। मुझे यह बताते हुए दुख हो रहा है कि ऐनी को थोड़ी सर्दी लग गई है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि वह जल्द ही ठीक हो जाएगी। पापा को मिस्टर सी. की राय और श्रीमती ई. के अनुभव के बारे में सुनकर बहुत तसल्ली हुई; लेकिन मैं समझ गई कि उन्हें ऑपरेशन को कुछ महीनों के लिए टालने का विचार बहुत अच्छा लगा। घर पहुँचने के लगभग एक घंटे बाद मैं ब्रैनवेल के कमरे में उनसे बात करने गई: उनसे बात करना बहुत मुश्किल था। मैं यह परेशानी खुद ही टाल सकती थी, क्योंकि उन्होंने मेरी तरफ ध्यान ही नहीं दिया और कोई जवाब नहीं दिया; वे एकदम सन्न रह गए थे। मेरी आशंकाएँ व्यर्थ नहीं थीं। मैंने सुना है कि मेरे जाने के दौरान उन्हें एक सोवरिन (सोना) मिला है। एक ज़रूरी कर्ज़ चुकाने के बहाने वह भाग गया; उसने तुरंत जाकर एक पब में कर्ज़ बदलवाया और उम्मीद के मुताबिक़ उसका इस्तेमाल किया। - उसने अपनी बात यह कहकर समाप्त की कि वह एक 'निराश व्यक्ति' है; यह बिलकुल सच है। उसकी वर्तमान हालत में जिस कमरे में वह है, वहाँ रहना लगभग नामुमकिन है। भविष्य में क्या होगा, यह मैं नहीं जानती।

31 मार्च, 1846।

“हमारी बेचारी बूढ़ी नौकरानी टैबी को दो हफ्ते पहले दौरा पड़ा था, लेकिन अब वह लगभग ठीक हो गई है। मार्था” (वह लड़की जो बेचारी बूढ़ी टैबी की मदद के लिए रखी गई थी, और जो अभी भी पादरी के घर में वफादार नौकरानी है,) “घुटने में सूजन के कारण बीमार है और उसे घर जाना पड़ा है। मुझे डर है कि उसे फिर से काम करने लायक होने में लंबा समय लगेगा। मुझे आपके द्वारा भेजा गया ‘रिकॉर्ड’ का अंक मिल गया है… मैंने डी’ऑबिने का पत्र पढ़ा। यह चतुर है, और कैथोलिक धर्म के बारे में उन्होंने जो कहा है वह बहुत अच्छा है। इवेंजेलिकल एलायंस वाला हिस्सा बहुत व्यावहारिक नहीं है, फिर भी निश्चित रूप से ईसाइयों के बीच एकता का प्रचार करना, आपसी असहिष्णुता और नफरत फैलाने की तुलना में सुसमाचार की भावना के

अधिक अनुरूप है। मुझे बहुत खुशी है कि मैं उस समय गया था, क्योंकि बदले हुए मौसम ने तब से मेरे स्वास्थ्य और ताकत में कुछ बदलाव किया है। आप कैसे हैं? मुझे हल्की दक्षिण और पश्चिम हवाओं की बहुत याद आती है। मैं शुक्रगुजार हूं कि पापा की तबीयत ठीक है, हालांकि ब्रैनवेल के बुरे व्यवहार से उन्हें अक्सर बहुत दुख होता है। वहाँ – कोई बदलाव नहीं है। लेकिन बदतर के लिए।"

इस बीच, कविताओं के संग्रह की छपाई सुचारू रूप से चल रही थी। कुछ विचार-विमर्श के बाद, बहनों ने स्वयं प्रूफ़ को ठीक करने का निर्णय लिया। 28 मार्च तक प्रकाशकों ने अपने संवाददाता को सी. ब्रोंटे, एस्क्वायर के रूप में संबोधित किया था; लेकिन इस समय कुछ "छोटी सी गलती" हो गई, और उन्होंने मेसर्स आयलॉट एंड कंपनी से अनुरोध किया कि भविष्य में वे उनके वास्तविक पते, "मिस ब्रोंटे," आदि पर पत्र लिखें। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट रूप से यह संकेत दिया था कि वह स्वयं के लिए नहीं, बल्कि वास्तविक लेखकों के प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रही थीं, क्योंकि 6 अप्रैल के एक पत्र में, उन्होंने "सी., ई., और ए. बेल" की ओर से एक प्रस्ताव रखा था, जिसका सार यह था कि वे तीन अलग-अलग और असंबद्ध कहानियों से युक्त एक उपन्यास प्रकाशित करने की तैयारी कर रहे हैं, जिसे सामान्य उपन्यास के आकार के तीन खंडों के रूप में एक साथ या अलग-अलग खंडों के रूप में, जैसा उचित समझा जाए, प्रकाशित किया जा सकता है। इसके अलावा, वह कहती हैं कि उनका इरादा इन कहानियों को स्वयं प्रकाशित करने का नहीं है; बल्कि लेखकों ने उन्हें निर्देश दिया है कि वे मेसर्स आयलॉट एंड कंपनी से पूछें कि क्या वे पांडुलिपि का विधिवत निरीक्षण करने के बाद, यह सुनिश्चित करने के बाद कि इसकी विषयवस्तु सफलता की गारंटी देती है, इस कार्य को करने के लिए तैयार होंगे। इस पूछताछ पत्र का प्रकाशकों ने शीघ्र ही उत्तर दिया, और उनके उत्तर का सार शार्लेट के 11 अप्रैल के पत्र से समझा जा सकता है।

सी., ई. और ए. बेल की ओर से, आपके परामर्श के लिए मैं आपका हार्दिक धन्यवाद करता/करती हूँ। मैं इस परामर्श का लाभ उठाकर दो-तीन बिंदुओं पर जानकारी प्राप्त करना चाहता/चाहती हूँ। यह स्पष्ट है कि अज्ञात लेखकों को अपनी रचनाओं को जनता के सामने लाने से पहले कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। क्या आप मुझे इन कठिनाइयों से निपटने के सर्वोत्तम तरीकों के बारे में कुछ सुझाव दे सकते हैं? उदाहरण के लिए, वर्तमान मामले में, जहाँ एक कथा साहित्य का

प्रश्न है, प्रकाशक पांडुलिपि को किस रूप में स्वीकार करने की सबसे अधिक संभावना रखते हैं? क्या इसे तीन खंडों के संग्रह के रूप में, या कहानियों के संग्रह के रूप में, या किसी पत्रिका में योगदान के रूप में प्रस्तुत किया जाए?

"इस प्रकार के प्रस्ताव को कौन से प्रकाशक सबसे अधिक सहर्ष स्वीकार करेंगे?"

"क्या इस विषय पर किसी प्रकाशक को पत्र लिखना पर्याप्त होगा, या व्यक्तिगत साक्षात्कार का सहारा लेना आवश्यक होगा?"

"इन तीनों बिंदुओं पर, या किसी अन्य बिंदु पर जिसे आपके अनुभव से महत्वपूर्ण माना जा सकता है, आपकी राय और सलाह हमारे लिए एक उपकार के रूप में मानी जाएगी।"

इस पूरे पत्राचार से स्पष्ट है कि अपने पहले साहित्यिक प्रयास में जिन प्रकाशकों के साथ उन्हें काम करना पड़ा, उनकी सत्यनिष्ठा और ईमानदारी उनके मन पर गहरा प्रभाव छोड़ गई थी, और परिणामस्वरूप उन्होंने उनके सुझावों पर भरोसा किया। कविताओं की प्रगति अनावश्यक रूप से लंबी या खिंची हुई नहीं थी। 20 अप्रैल को उन्होंने लिखा कि उन्हें तीन प्रतियां भेजी जाएं और मेसर्स आयलॉट उन्हें उन समीक्षकों के बारे में सलाह दें जिन्हें प्रतियां भेजी जानी चाहिए।

मैं अगला पत्र इन लड़कियों के विचारों को दर्शाने के लिए प्रस्तुत करता हूं कि किन आवधिक समीक्षाओं या सूचनाओं ने जनमत को प्रभावित किया।

"कविताओं को कपड़े में अच्छे से बांधकर प्रस्तुत करें। कृपया यथाशीघ्र निम्नलिखित पत्रिकाओं को प्रतियां और विज्ञापन भेजें।"

"'कोलबर्न की नई मासिक पत्रिका।'"

"'बेंटली की पत्रिका।'"

"'हुड्स मैगज़ीन'।"

"'जेरोल्ड्स शिलिंग मैगज़ीन'।"

"'ब्लैकवुड्स मैगज़ीन'"

"'द एडिनबर्ग रिव्यू'"

"'टैट की एडिनबर्ग पत्रिका।'"

"'डबलिन विश्वविद्यालय पत्रिका।'"

साथ ही 'डेली न्यूज' और 'ब्रिटानिया' अखबारों को भी।

"यदि आप अन्य किसी पत्रिका को भी अपनी रचनाओं की प्रतियां भेजा करते रहे

हैं, तो उन्हें भी प्रतियां भेज दी जाएं। मुझे लगता है कि मैंने जिन पत्रिकाओं का उल्लेख किया है, वे विज्ञापन के लिए पर्याप्त होंगी।”

इस अनुरोध के अनुपालन में, मेसर्स आयलॉट ने सुझाव दिया कि कृति की प्रतियां और विज्ञापन "एथेनियम", "लिटरेरी गजट", "क्रिटिक" और "टाइम्स" को भेजे जाएं; लेकिन अपने उत्तर में मिस ब्रोंटे ने कहा कि उन्हें लगता है कि फिलहाल उनके द्वारा पहले उल्लेखित पत्रिकाएं ही विज्ञापन के लिए पर्याप्त होंगी, क्योंकि लेखक विज्ञापन पर दो पाउंड से अधिक खर्च नहीं करना चाहते, क्योंकि उनका मानना है कि किसी कृति की सफलता विज्ञापनों की संख्या से अधिक पत्रिकाओं में मिलने वाली सूचना पर निर्भर करती है। यदि कविताओं के बारे में कोई सूचना प्रकाशित होती है, चाहे वह अनुकूल हो या प्रतिकूल, तो मेसर्स आयलॉट एंड कंपनी से अनुरोध है कि वे उन्हें उन पत्रिकाओं के नाम और संख्या भेजें जिनमें ऐसी सूचनाएं प्रकाशित हुई हैं; अन्यथा, चूंकि उन्हें नियमित रूप से पत्रिकाएं देखने का अवसर नहीं मिलता है, इसलिए वे समीक्षा पढ़ने से वंचित रह सकती हैं। “यदि कविताओं की सराहना की जाती है, तो मेरा इरादा विज्ञापनों के लिए अतिरिक्त राशि आवंटित करने का है। दूसरी ओर, यदि वे अनदेखी रह जाती हैं या उनकी निंदा की जाती है, तो मुझे लगता है कि विज्ञापन करना बिल्कुल व्यर्थ होगा, क्योंकि न तो कृति के शीर्षक में और न ही लेखकों के नामों में ऐसा कुछ है जो किसी एक व्यक्ति का ध्यान आकर्षित कर सके।”

मुझे लगता है कि कविताओं का वह छोटा सा संग्रह मई 1846 के अंत के आसपास प्रकाशित हुआ था। यह चुपके से सामने आया; कुछ सप्ताह बीत गए, और शोर मचाती जनता को पता ही नहीं चला कि तीन और आवाज़ें अपनी बात कह रही हैं। और इस बीच, चिंतित बहनों के साथ जीवन का चक्र नीरस रूप से दिन-प्रतिदिन चलता रहा, जो अपने दिलों में व्याप्त जीवन की चिंता में अपनी रचनाकारिता की भावना को भूल चुकी होंगी। 17 जून को शार्लोट लिखती हैं: —

"ब्रैनवेल का कहना है कि वह अपने लिए कुछ भी कर नहीं सकता और न ही करेगा; उसे अच्छे पदों की पेशकश की गई है, जिनके लिए वह दो सप्ताह के काम से खुद को योग्य साबित कर सकता था, लेकिन वह शराब पीने और हम सभी को दुखी करने के अलावा कुछ नहीं करेगा।"

4 जुलाई के “एथेनियम” में, “दस लाख लोगों के लिए कविता” शीर्षक के अंतर्गत, सी., ई. और ए. बेल की कविताओं की एक संक्षिप्त समीक्षा प्रकाशित हुई।

समीक्षक ने तीनों “भाइयों” में एलिस को सर्वोच्च स्थान दिया; उन्होंने एलिस को “एक उत्कृष्ट, विलक्षण प्रतिभा” बताया और “एक ऐसी स्पष्ट उड़ान क्षमता” की बात की जो उन ऊंचाइयों तक पहुँच सकती है जहाँ तक यहाँ पहुँचने का प्रयास भी नहीं किया गया है। फिर, कुछ हद तक गहनता से, समीक्षक ने कहा कि एलिस की कविताएँ “उनकी इन संग्रहों में निहित योगदान से कहीं अधिक मौलिकता का आभास देती हैं।” करर को एलिस और एक्टन के बीच में रखा गया है। लेकिन इतने समय बाद इस समीक्षा में ऐसा कुछ खास नहीं बचा है जिसे सहेज कर रखा जा सके। फिर भी, हम कल्पना कर सकते हैं कि हॉवर्थ पार्सनेज में इसे कितनी रुचि से पढ़ा गया होगा, और बहनों ने अपने विचारों के कारणों या अपनी प्रतिभाओं के भविष्य के मार्गदर्शन के लिए संकेत खोजने का कितना प्रयास किया होगा।

मैं शार्लेट के 10 जुलाई, 1846 के निम्नलिखित पत्र पर विशेष ध्यान दिलाना चाहता हूँ। यह पत्र किसे लिखा गया था, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; लेकिन इसमें निहित कर्तव्य की स्वस्थ भावना - उस कर्तव्य की सर्वोच्चता की भावना जिसे ईश्वर ने हमें परिवारों में रखकर हमारे लिए निर्धारित किया है - इन दिनों विशेष ध्यान देने योग्य प्रतीत होती है।

“मैं देख रहा हूँ कि आप एक दुविधा में हैं, और यह एक अनोखी और कठिन दुविधा है। आपके सामने दो रास्ते हैं; आप ईमानदारी से सही रास्ता चुनना चाहते हैं, भले ही वह कितना भी कठिन, संकरा और पथरीला क्यों न हो; लेकिन आप नहीं जानते कि सही रास्ता कौन सा है; आप तय नहीं कर पा रहे हैं कि कर्तव्य और धर्म आपको इस ठंडी और बेसहारा दुनिया में जाने और वहाँ नौकरानी का काम करके जीविका कमाने का आदेश देते हैं, या वे आपको अपनी बूढ़ी माँ के साथ रहने के लिए कहते हैं, फिलहाल अपनी स्वतंत्रता की हर संभावना को त्यागकर, और रोज़मर्रा की असुविधाओं, कभी-कभी अभावों को भी सहन करते हुए। मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ कि आपके लिए इस मामले में खुद फैसला करना लगभग असंभव है, इसलिए मैं आपके लिए फैसला करूँगा। कम से कम, मैं आपको इस विषय पर अपनी दृढ़ धारणा बताऊँगा; मैं आपको स्पष्ट रूप से दिखाऊँगा कि यह प्रश्न मुझे कैसे प्रभावित करता है। सही रास्ता वह है जिसमें स्वार्थ का सबसे बड़ा त्याग करना पड़ता है—जिसका अर्थ है दूसरों का सबसे बड़ा भला; और मेरा मानना है कि इस रास्ते पर निरंतर चलने से आपको सफलता मिलेगी।” समय समृद्धि और सुख की ओर ले जाता

है, भले ही शुरुआत में यह बिल्कुल विपरीत दिशा में जाता प्रतीत हो। आपकी माँ वृद्ध और दुर्बल हैं; वृद्ध और दुर्बल लोगों के पास सुख के स्रोत बहुत कम होते हैं—लगभग उतने भी नहीं जितने कि अपेक्षाकृत युवा और स्वस्थ लोगों के पास हो सकते हैं; उन्हें इनमें से एक से वंचित करना क्रूरता है। यदि आपके साथ रहने पर आपकी माँ अधिक शांत रहती हैं, तो उनके साथ रहें। यदि आपके जाने पर उन्हें दुख होगा, तो भी उनके साथ रहें। जहाँ तक संकीर्ण सोच वाले मनुष्य की दृष्टि से देखा जा सकता है, घर पर रहना आपके लिए लाभदायक नहीं होगा, और न ही घर पर रहकर अपनी माँ को सांत्वना देने के लिए आपकी प्रशंसा की जाएगी; फिर भी, संभवतः, आपका अंतरात्मा इसे स्वीकार करेगा, और यदि ऐसा है, तो उनके साथ रहें। मैं आपको वही करने की सलाह देता हूँ जो मैं स्वयं करने का प्रयास कर रहा हूँ।

इस पत्र का शेष भाग पाठक के लिए केवल इसलिए रोचक है क्योंकि इसमें इस अफवाह का स्पष्ट खंडन किया गया है कि लेखिका की सगाई उसके पिता के सहायक पादरी से हुई थी—वही सज्जन जिनसे आठ वर्ष बाद उसकी शादी हुई; और जिन्होंने संभवतः, भले ही वह इस तथ्य से अनभिज्ञ थी, उसी कोमल और निष्ठापूर्ण भावना से उसकी सेवा करना शुरू कर दिया था, जिस भावना से याकूब ने राहेल की सेवा की थी। हो सकता है कि दूसरों ने इस बात पर ध्यान दिया हो, हालांकि उसने नहीं दिया।

श्री एयलॉट के साथ "मेसर्स बेल की ओर से" किए गए उनके पत्राचार के कुछ और नोट्स बचे हैं। 15 जुलाई को उन्होंने लिखा, "मुझे लगता है, जैसा कि आपने नहीं लिखा है, अभी तक कोई और सूचना प्रकाशित नहीं हुई है, और न ही काम की मांग बढ़ी है। क्या आप मुझे एक पंक्ति लिखकर बता सकते हैं कि अब तक कितनी प्रतियां बिकी हैं?"

लेकिन मुझे डर है कि बहुत कम लोग ही ऐसा कर पाएंगे; क्योंकि तीन दिन बाद उसने निम्नलिखित लिखा: —

“बेल परिवार चाहता है कि मैं विज्ञापनों के संबंध में आपके सुझाव के लिए आपको धन्यवाद दूं। वे आपसे सहमत हैं कि चूंकि मौसम अनुकूल नहीं है, इसलिए विज्ञापन को स्थगित करना बेहतर होगा। बेची गई प्रतियों की संख्या के बारे में जानकारी देने के लिए वे आपके आभारी हैं।”

23 जुलाई को उन्होंने श्रीमान आयलॉट को पत्र लिखा: —

“श्रीमान बेल आपसे निवेदन करते हैं कि संलग्न पत्र को लंदन में डाक से भेज दें।

यह आपके द्वारा भेजे गए पत्र का उत्तर है, जिसमें उनके हस्ताक्षर के लिए एक ऐसे व्यक्ति का अनुरोध था जिसने उनकी कविताएँ पढ़ी और उनकी प्रशंसा की थी। मुझे लगता है कि मैंने पहले भी बताया था कि श्रीमान बेल फिलहाल गुमनाम रहना चाहते हैं, इसलिए वे पत्र को सीधे भेजने के बजाय लंदन में डाक से भेजना पसंद करते हैं, ताकि डाक टिकट आदि से उनके निवास स्थान या पहचान का कोई सुराग न मिले।”

एक बार फिर, सितंबर में, वह लिखती हैं, "चूंकि किसी भी पत्रिका से इस काम पर कोई और ध्यान नहीं दिया गया है, इसलिए मैं मानती हूं कि इसकी मांग में बहुत अधिक वृद्धि नहीं हुई है।"

अपनी बहनों की जीवनी संबंधी टिप्पणी में, वह इस प्रकाशन में निहित मामूली उम्मीदों की विफलता के बारे में इस प्रकार बात करती हैं: "पुस्तक छपी; यह शायद ही किसी को ज्ञात है, और इसमें जो कुछ भी ज्ञात होने योग्य है वह एलिस बेल की कविताएँ हैं।"

"इन कविताओं के महत्व के बारे में मेरा जो दृढ़ विश्वास था, और अभी भी है, उसे वास्तव में बहुत अधिक अनुकूल आलोचनाओं से पुष्टि नहीं मिली है; लेकिन फिर भी मुझे इसे बनाए रखना होगा।"

खंड II

अध्याय 1

सन् 1846 की उस गर्मी में, जब उनकी साहित्यिक उम्मीदें धूमिल हो रही थीं, एक

अलग तरह की चिंता बढ़ती जा रही थी। उनके पिता की दृष्टि मोतियाबिंद के कारण गंभीर रूप से कमजोर हो गई थी। वे लगभग अंधे हो चुके थे। वे टटोलकर रास्ता ढूंढ सकते थे और तेज रोशनी में अपने परिचितों की आकृतियाँ पहचान सकते थे; लेकिन वे अब पढ़ नहीं सकते थे; और इस प्रकार ज्ञान और सूचना की उनकी तीव्र प्यास बुरी तरह से अवरुद्ध हो गई थी। उन्होंने उपदेश देना जारी रखा। मैंने सुना है कि उन्हें मंच पर ले जाया जाता था, और उनके उपदेश उतने प्रभावशाली कभी नहीं होते थे जितने कि जब वे वहाँ खड़े होते थे, एक बूढ़े, दृष्टिहीन व्यक्ति, उनकी अंधी आँखें सीधे उनके सामने देखती रहती थीं, और उनके होठों से निकले शब्दों में उनके सुनहरे दिनों की सारी ऊर्जा और शक्ति होती थी। एक और तथ्य मुझे बताया गया है, जो समय के प्रति उनकी सटीक समझ को दर्शाता है। उनके उपदेश हमेशा ठीक आधे घंटे के होते थे। घड़ी ठीक उनके सामने होती थी, और उनके शब्दों का प्रवाह सहज होता था, इसलिए जब तक वे देख सकते थे, यह उनके लिए कोई मुश्किल बात नहीं थी। लेकिन जब वह अंधा था तब भी ऐसा ही होता था; जैसे ही मिनट की सुई तीस मिनट पूरे होने का संकेत देती थी, वह अपना उपदेश समाप्त कर देता था।

अपने गहरे दुख में भी वे हमेशा धैर्यवान रहे। इससे भी कहीं अधिक विकट समयों में उन्होंने अपने दुःख को चुपचाप सहन किया। लेकिन इस अंधत्व के कारण उनकी कई रुचियाँ दब गईं, जिससे वे अंतर्मुखी हो गए और अपने इकलौते बेटे से संबंधित पीड़ादायक और कष्टदायक बातों पर बहुत चिंतन करते रहे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उनका मनोबल टूट गया और वे उदास हो गए। इस शरद ऋतु से कुछ समय पहले, उनकी बेटियाँ अपने पिता की आयु के व्यक्ति पर मोतियाबिंद के ऑपरेशन की संभावित सफलता के बारे में हर संभव जानकारी एकत्र कर रही थीं। जुलाई के अंत में, एमिली और शार्लोट एक नेत्र चिकित्सक की तलाश में मैनचेस्टर गईं; और वहाँ उन्होंने स्वर्गीय श्री विल्सन की नेत्र विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्धि के बारे में सुना। वे तुरंत उनके पास गईं, लेकिन वे केवल विवरण से यह नहीं बता सके कि आँखें ऑपरेशन के लिए तैयार हैं या नहीं। इसलिए श्री ब्रोंटे के लिए उनसे मिलना आवश्यक हो गया; और अगस्त के अंत में, शार्लोट अपने पिता को उनके पास ले गईं। उन्होंने तुरंत ऑपरेशन करने का निश्चय किया और उन्हें अपने एक पुराने नौकर द्वारा उपलब्ध कराए गए आरामदायक आवास में रहने की सलाह दी। ये आवास कस्बे के बाहरी इलाके में स्थित कई ऐसी ही गलियों में से एक में थे, जहाँ छोटे-छोटे, एक जैसे दिखने वाले घर

थे। वहीं से 21 अगस्त, 1846 को निम्नलिखित पत्र लिखा गया: —

मैं आपको बस एक छोटी सी चिट्ठी लिख रही हूँ ताकि आपको पता चल जाए कि मैं कहाँ हूँ, और आप मुझे यहाँ चिट्ठी लिख सकें। मुझे लगता है कि आपकी चिट्ठी से इस बड़े शहर में मुझे जो अजनबीपन महसूस हो रहा है, वह दूर हो जाएगा। पापा और मैं बुधवार को यहाँ आए थे; उसी दिन हमने नेत्र विशेषज्ञ श्री विल्सन को देखा; उन्होंने पापा की आँखों को ऑपरेशन के लिए पूरी तरह तैयार बताया और अगले सोमवार को ऑपरेशन तय किया है। उस दिन हमारे बारे में सोचिएगा! हम कल अपने कमरे में पहुँच गए। मुझे लगता है कि हम आराम से रहेंगे; कम से कम हमारे कमरे तो बहुत अच्छे हैं, लेकिन घर की मालकिन नहीं हैं (वह बहुत बीमार हैं और गाँव गई हुई हैं), और मुझे खाने-पीने का इंतजाम करने में थोड़ी परेशानी हो रही है; हम खुद ही खाना बना रहे हैं। मैं खुद को बहुत अज्ञानी पा रही हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा कि खाने में क्या मंगवाऊँ। अपने लिए तो मैं इंतजाम कर सकती हूँ, पापा का खाना बहुत ही सादा है; लेकिन एक-दो दिन में एक नर्स आने वाली है, और मुझे डर है कि उसके लिए खाना पर्याप्त न हो। पापा को किसी चीज की जरूरत नहीं है, आप जानते ही हैं। लेकिन सादा गोमांस और भेड़ का मांस, चाय और रोटी-मक्खन; लेकिन एक नर्स शायद इससे कहीं बेहतर जीवनयापन की उम्मीद कर सकती है; अगर हो सके तो मुझे कुछ सुझाव दीजिए। श्रीमान विल्सन कहते हैं कि हमें कम से कम एक महीने यहाँ रुकना होगा। मुझे आश्चर्य है कि एमिली और ऐनी ब्रैनवेल के साथ घर पर कैसे रहेंगी। उन्हें भी अपनी परेशानियाँ होंगी। काश आप यहाँ होते! दुनिया में अनुभव प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को धीरे-धीरे आगे बढ़ना पड़ता है; लेकिन सीखना बहुत अरुचिकर है। इस मामले में एक सुखद बात यह है कि श्रीमान विल्सन इस मामले के बारे में बहुत सकारात्मक सोचते हैं।

26 अगस्त, 1846।

ऑपरेशन हो गया है; यह कल हुआ था। श्री विल्सन ने ऑपरेशन किया; दो अन्य सर्जनों ने सहायता की। श्री विल्सन का कहना है कि वे इसे पूरी तरह सफल मानते हैं; लेकिन पापा को अभी कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। ऑपरेशन ठीक पंद्रह मिनट तक चला; यह श्री सी. द्वारा वर्णित साधारण मोतियाबिंद निकालने का ऑपरेशन नहीं था, बल्कि मोतियाबिंद निकालने का अधिक जटिल ऑपरेशन था। श्री विल्सन मोतियाबिंद निकालने के ऑपरेशन के सख्त खिलाफ हैं। पापा ने असाधारण धैर्य और दृढ़ता

दिखाई; सर्जन आश्चर्यचकित लग रहे थे। मैं पूरे समय कमरे में मौजूद थी; क्योंकि उनकी यही इच्छा थी कि मैं वहाँ रहूँ; बेशक, ऑपरेशन पूरा होने तक मैंने न तो कुछ बोला और न ही हिली-डुली, और फिर मुझे लगा कि पापा या सर्जनों से जितना कम बोलूँ, उतना ही अच्छा है। पापा अब एक अंधेरे कमरे में अपने बिस्तर पर हैं, और उन्हें चार दिनों तक हिलाया नहीं जाना है; उन्हें जितना हो सके कम बोलना है और उनसे कम बात की जानी है। आपके पत्र और आपकी दयालु सलाह के लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ, जिससे मुझे बहुत संतुष्टि मिली, क्योंकि मैंने पाया कि मैंने अधिकांश चीजों को उसी के अनुसार व्यवस्थित किया था, और चूंकि आपका सिद्धांत मेरे व्यवहार से मेल खाता है, इसलिए मैं मुझे पूरा यकीन है कि बाद वाला कथन सही है। मुझे उम्मीद है कि श्री विल्सन जल्द ही मुझे नर्स की ज़रूरत से मुक्ति दे देंगे; वह ठीक तो है, लेकिन कुछ ज़्यादा ही चापलूसी करती है; और मुझे लगता है कि उस पर ज़्यादा भरोसा नहीं किया जा सकता; फिर भी कुछ मामलों में मुझे उस पर भरोसा करना पड़ा।

"तुम्हारे द्वारा बताए गए — — के प्रेम प्रसंगों से मुझे बहुत आनंद आया; और साथ ही कुछ दुख भी हुआ। मुझे लगता है प्रकृति ने उसे कुछ बेहतर काम के लिए बनाया था, न कि अपना समय कुछ गरीब, अकेली कुंवारी लड़कियों को दुखी करने में बर्बाद करने के लिए। दुर्भाग्य से, लड़कियां उसकी और उसके जैसे लोगों की देखभाल करने के लिए मजबूर हैं, क्योंकि जब तक उनका दिमाग ज्यादातर खाली रहता है, उनकी भावनाएं अभी भी ताज़ा और जीवंत होती हैं; और इसके विपरीत, वह सुख का भरपूर आनंद ले चुका है, और दूसरों को कष्ट देकर बिना किसी दंड के अपना मनोरंजन कर सकता है। यह एक अन्यायपूर्ण स्थिति है; यह बराबरी का मुकाबला नहीं है। काश, मुझमें इतनी शक्ति होती कि मैं सताए गए लोगों की आत्माओं में थोड़ा सा गर्व का शांत बल भर सकूँ — श्रेष्ठता की चेतना (क्योंकि वे उससे श्रेष्ठ हैं क्योंकि वे अधिक पवित्र हैं) — वर्तमान को सहने और अंत की प्रतीक्षा करने के दृढ़ संकल्प का सुदृढ़ीकरण कर सकूँ। यदि — — की सभी कुंवारी आबादी इन भावनाओं को ग्रहण कर ले और बनाए रखे, तो उसे उनके सामने लगातार अपना मुकुट छिपाना पड़ेगा। शायद, सौभाग्यवश, उनकी भावनाएँ उतनी तीव्र नहीं हैं जितना कोई सोच सकता है, और इसलिए सज्जन के तीर उतने गहरे घाव नहीं पहुँचाते जितना वह चाहते होंगे। आशा है ऐसा ही हो।

कुछ दिनों बाद, वह लिखती हैं: "पापा अभी भी अंधेरे कमरे में बिस्तर पर लेटे हैं, उनकी आँखों पर पट्टी बंधी है। कोई सूजन नहीं हुई, लेकिन फिर भी ऐसा लगता है कि ऑपरेशन के अच्छे परिणाम के लिए अत्यधिक सावधानी, पूर्ण शांति और प्रकाश से पूरी तरह परहेज आवश्यक है। वह बहुत धैर्यवान हैं, लेकिन स्वाभाविक रूप से उदास और थके हुए हैं। उन्हें कल पहली बार अपनी दृष्टि जांचने की अनुमति दी गई थी। उन्हें धुंधला दिखाई दे रहा था। श्री विल्सन पूरी तरह संतुष्ट दिखे और उन्होंने कहा कि सब ठीक है। मैनचेस्टर आने के बाद से मुझे दांत दर्द के कारण रातों को नींद नहीं आती।"

इस पूरे समय, घरेलू चिंताओं से घिरे होने के बावजूद—अपनी कविताओं की असफलता के बावजूद—तीनों बहनें एक और साहित्यिक प्रयास में लगी हुई थीं, जिसका ज़िक्र शार्लोट ने श्रीमान आयलॉट को लिखे अपने एक पत्र में किया था। तीनों ने एक-एक गद्य कहानी लिखी थी, इस उम्मीद में कि तीनों एक साथ प्रकाशित हो सकें। "वुथरिंग हाइट्स" और "एग्नेस ग्रे" प्रकाशित हो चुकी हैं। तीसरी कहानी—शार्लोट की रचना—अभी पांडुलिपि के रूप में है, लेकिन इस संस्मरण के प्रकाशन के तुरंत बाद प्रकाशित हो जाएगी। कथानक अपने आप में कोई खास दिलचस्प नहीं है; लेकिन यह एक घटिया किस्म की दिलचस्प कहानी है जो पात्रों के नाटकीय विकास के बजाय चौंकाने वाली घटनाओं पर निर्भर करती है; और शार्लोट ब्रोंटे "द प्रोफेसर" में दिए गए एक-दो रेखाचित्रों से कभी आगे नहीं निकल पाईं, न ही नारीत्व की सुंदरता में वहाँ वर्णित किसी महिला पात्र से आगे निकल पाईं। जब उन्होंने यह कहानी लिखी, तब तक उनकी रुचि और विवेक उनके बचपन के अतिरंजित आदर्शवाद के विरुद्ध विद्रोह कर चुके थे, और वे वास्तविकता की चरम सीमा तक पहुँच गईं, पात्रों को ठीक वैसे ही चित्रित किया जैसे वे उन्हें वास्तविक जीवन में दिखाई दिए थे: यदि वे वहाँ कठोर से भी अधिक कठोर थे, - जैसा कि कुछ ऐसे लोगों के साथ हुआ जिनसे वे वास्तविक जीवन में मिली थीं, - तो उन्होंने उन्हें हूबहू लिख डाला; यदि उनके द्वारा देखे गए जीवन का दृश्य अधिकांशतः सुखद या सुरम्य होने के बजाय जंगली और विचित्र था, तो उन्होंने उसका रेखा-दर-रेखा वर्णन किया। एक-दो दृश्यों और पात्रों की सुंदरता, जो पूर्ण वास्तविकता के बजाय उनकी अपनी कल्पना से प्रेरित हैं, अन्य दृश्यों और पात्रों की गहरी छायाओं और टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं से अलग हटकर उत्कृष्ट रूप से उभरती हैं, जो रेम्ब्रांट के कुछ चित्रों की याद दिलाती हैं।

तीनों कहानियों ने एक साथ अपनी किस्मत आजमाने की व्यर्थ कोशिश की,

अंततः उन्हें अलग-अलग प्रकाशित किया गया, और कई महीनों तक लगातार असफलता ही हाथ लगी। मैंने इसका उल्लेख यहाँ इसलिए किया है, क्योंकि मैनचेस्टर की अपनी चिंताजनक यात्रा से जुड़ी निराशाजनक परिस्थितियों के बीच, शार्लोट ने मुझे बताया कि उनकी कहानी उनके पास वापस आ गई, जिसे किसी प्रकाशक ने उनके पिता के ऑपरेशन वाले दिन ही अस्वीकार कर दिया था। लेकिन उनके भीतर रॉबर्ट ब्रूस जैसा साहस था, और बार-बार की असफलता ने उन्हें उतना ही हतोत्साहित किया जितना रॉबर्ट ब्रूस ने। न केवल "द प्रोफेसर" ने लंदन के प्रकाशकों के बीच अपनी किस्मत आजमाने के लिए फिर से प्रयास किया, बल्कि चिंता और निराशाजनक बेचैनी के इस दौर में, उन नीरस, थकी हुई, एकसमान सड़कों पर, जहाँ उनके दयालु डॉक्टर के अलावा सभी चेहरे उनके लिए अजनबी और धूप से अछूते थे, वहीं और उसी क्षण, उस साहसी लेखिका ने "जेन आयर" की रचना शुरू की। पढ़िए, वह स्वयं क्या कहती हैं: - "कुरर बेल की पुस्तक को कहीं भी स्वीकृति नहीं मिली, न ही उसकी योग्यता को कोई मान्यता मिली, जिससे उनके दिल में निराशा की ठंडक सी छाने लगी।" और याद रखिए, यह किसी ऐसे व्यक्ति का दिल नहीं होता जो एक उम्मीद के टूटने पर बचे हुए अनेक निश्चित आशीर्वादों की ओर दुगने स्नेह से मुड़ जाए। उसके घर के बारे में सोचिए, और उस पर छाए पश्चाताप के काले साये के बारे में, जब तक कि उसका दिमाग चकरा न गया हो, और उसकी प्रतिभा और उसका जीवन छिन न गया हो; — उसके पिता की नाजुक दृष्टि के बारे में सोचिए; — उसकी बहन के नाज़ुक स्वास्थ्य और उसकी देखभाल पर उसकी निर्भरता के बारे में सोचिए; — और फिर उस अटूट साहस की सराहना कीजिए, जिसके द्वारा "जेन आयर" पर काम किया जा सका, उस पूरे समय में "जब तक कि एक खंड की यह कहानी लंदन में अपनी थका देने वाली यात्रा जारी रखे रही।"

मुझे लगता है कि मैंने पहले भी बताया है कि उनके कुछ जीवित मित्र मानते हैं कि मिस वूलर के स्कूल में पढ़ते समय उन्होंने जो एक घटना सुनी थी, वही जेन आयर की कहानी का मूल थी। लेकिन इसके बारे में अनुमान के सिवा कुछ भी पता नहीं चल सकता। जिनसे उन्होंने अपनी रचनाओं के बारे में बात की थी, वे अब जीवित नहीं हैं और मौन हैं; और पाठक ने शायद ध्यान दिया होगा कि जिन पत्रों का मैंने उल्लेख किया है, उनमें उनकी कविताओं के प्रकाशन का कोई ज़िक्र नहीं है, न ही बहनों द्वारा कोई कहानियाँ प्रकाशित करने के इरादे का कोई संकेत है। हालाँकि, मुझे मिस ब्रोंटे

द्वारा मुझे उनकी रचना शैली आदि के बारे में पूछे गए मेरे प्रश्नों के उत्तर में दी गई कई छोटी-छोटी बातें याद हैं। उन्होंने कहा कि वह हर दिन नहीं लिख पाती थीं। कभी-कभी तो हफ़्ते या महीने भी बीत जाते थे, जब उन्हें लगता था कि कहानी के पहले से लिखे हुए हिस्से में कुछ जोड़ना बाकी है। फिर, किसी सुबह, वह जागतीं और उनकी कहानी की प्रगति स्पष्ट रूप से उनके सामने होती। जब ऐसा होता था, तो उसका सारा ध्यान अपने घरेलू और पारिवारिक कर्तव्यों को निभाने पर ही केंद्रित रहता था, ताकि उसे बैठकर घटनाओं और उनसे उत्पन्न विचारों को लिखने का समय मिल सके, जो वास्तव में उस समय उसके मन में उसके वास्तविक जीवन से भी अधिक व्याप्त थे। फिर भी, इस "व्यस्तता" (मानो) के बावजूद, उसके दैनिक और घरेलू साथियों में से जो जीवित हैं, वे स्पष्ट रूप से गवाही देते हैं कि उसने कभी भी किसी कर्तव्य की मांग को, या किसी दूसरे की मदद की गुहार को, एक पल के लिए भी अनदेखा नहीं किया। अब लगभग अस्सी वर्ष की हो चुकी टैबी को एक नौकरानी की सहायता देना आवश्यक हो गया था। टैबी बड़ी अनिच्छा से अपना कोई भी काम छोड़ती थी, और उसे यह याद दिलाना असहनीय लगता था, चाहे कितनी भी कोमलता से क्यों न कहा जाए, कि उम्र के कारण उसकी इंद्रियों की तीक्ष्णता कम हो गई है। दूसरी नौकरानी उसके उस काम में दखल नहीं दे सकती थी जिसे वह अपना एकमात्र काम मानती थी। अन्य बातों के अलावा, उसने रात के खाने के लिए आलू छीलने का अधिकार अपने पास सुरक्षित रखा था; लेकिन जैसे-जैसे उसकी नज़र कमज़ोर होती जा रही थी, वह अक्सर आलू में उन काले धब्बों को छोड़ देती थी, जिन्हें हम उत्तर में आलू की "आँखें" कहते हैं। मिस ब्रोंटे इतनी सलीकेदार गृहणी थीं कि वे इसे बर्दाश्त नहीं कर पाती थीं; फिर भी वे उस वफ़ादार बूढ़ी नौकरानी को आलू दोबारा देखने के लिए कहकर उसे नाराज़ नहीं करना चाहती थीं, और इस तरह टैबी को यह याद दिलाना नहीं चाहती थीं कि उसका काम पहले जैसा असरदार नहीं रहा। इसलिए वे चुपके से रसोई में जातीं और टैबी को बिना पता चले चुपचाप सब्ज़ियों का कटोरा उठा लेतीं, और अपने लेखन में पूरी तरह डूबी हुई, ध्यान से आलू में से उन धब्बों को काट कर चुपचाप वापस उनकी जगह पर रख देतीं। यह छोटी सी क्रिया दर्शाती है कि कैसे वह अपने कर्तव्यों को कितनी व्यवस्थित और पूर्णता से निभाती थीं, यहाँ तक कि उन समयों में भी जब उन पर "पागलपन" हावी होता था।

उनके लेखन का अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति ने—चाहे वह लिखित रूप

में हो या पत्रों में; उनके भाषण सुनने के दुर्लभ सौभाग्य का आनंद लेने वाले किसी भी व्यक्ति ने शब्दों के चयन में उनकी विलक्षण कुशलता को अवश्य ही देखा होगा। स्वयं वे अपनी पुस्तकें लिखते समय इस बात का विशेष ध्यान रखती थीं। शब्दों का एक समूह उनके विचारों का सच्चा दर्पण था; कोई अन्य समूह, चाहे वह अर्थ में कितना भी समान क्यों न प्रतीत हो, उनके लिए उपयुक्त नहीं था। अभिव्यक्ति की सरल, पवित्र सच्चाई के प्रति उनका वह दृढ़ व्यावहारिक सम्मान था, जिसे श्री ट्रेंच ने एक ऐसे कर्तव्य के रूप में रेखांकित किया है जिसकी अक्सर उपेक्षा की जाती है। वे धैर्यपूर्वक सही शब्द की खोज में लगी रहती थीं, जब तक कि वह उन्हें स्वयं न मिल जाए। वह शब्द स्थानीय हो सकता था, वह लैटिन से लिया गया हो सकता था; बशर्ते वह उनके विचार को सटीक रूप से व्यक्त करे, उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि वह कहाँ से आया है; लेकिन इस सावधानी से उनकी शैली मोज़ेक के एक टुकड़े की तरह परिपूर्ण हो जाती है। प्रत्येक घटक, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, सही जगह पर रखा गया है। वे तब तक कोई वाक्य नहीं लिखती थीं जब तक कि वे स्पष्ट रूप से यह न समझ लें कि वे क्या कहना चाहती हैं, शब्दों का सावधानीपूर्वक चयन न कर लें और उन्हें सही क्रम में व्यवस्थित न कर लें। इसलिए मैंने जो कागज़ के टुकड़े देखे हैं जिन पर उसने पेंसिल से लिखा है, उनमें कभी-कभार कोई वाक्य कटा हुआ मिलता है, लेकिन शायद ही कभी कोई शब्द या भाव कटा हो। वह इन कागज़ के टुकड़ों पर बहुत बारीक लिखावट में लिखती थी, हर टुकड़े को किताबों की बाइंडिंग में इस्तेमाल होने वाले तख्ते पर रखकर, जिसे वह डेस्क का काम करती थी। उसकी कमज़ोर नज़र के लिए यह तरीका ज़रूरी था; और इसके अलावा, इससे उसे शाम के समय आग के पास बैठकर पेंसिल और कागज़ का इस्तेमाल करने में आसानी होती थी, या अगर (जैसा कि अक्सर होता था) वह रात में कई घंटों तक जागती रहती थी। उसकी तैयार पांडुलिपियाँ इन्हीं पेंसिल से लिखे टुकड़ों से साफ, सुपाठ्य और बारीक लिखावट में कॉपी की जाती थीं, जो लगभग छपे हुए कागज़ की तरह ही आसानी से पढ़ी जा सकती थीं।

बहनों ने अपनी चाची के जीवनकाल में शुरू हुई पुरानी आदत को बरकरार रखा था, जिसके अनुसार वे रात नौ बजे अपना काम समेटकर बैठक में इधर-उधर टहलते हुए पढ़ाई शुरू कर देती थीं। इस समय वे अपनी लिखी कहानियों पर चर्चा करतीं और उनके कथानक का वर्णन करतीं। सप्ताह में एक या दो बार, वे एक-दूसरे को अपनी

लिखी हुई रचनाएँ पढ़कर सुनातीं और उनकी प्रतिक्रियाएँ सुनतीं। शार्लेट ने मुझे बताया कि उनकी टिप्पणियों का उन पर अपने काम में बदलाव लाने पर बहुत कम ही असर पड़ता था, क्योंकि उन्हें हमेशा यही लगता था कि उन्होंने वास्तविकता का वर्णन किया है; लेकिन ये पठन-पाठन सभी के लिए बेहद रुचिकर और उत्साहवर्धक होता था, जो उन्हें रोज़मर्रा की चिंताओं के बोझ से मुक्त करके एक स्वतंत्र स्थान पर ले जाता था। ऐसे ही एक अवसर पर शार्लेट ने प्रचलित परंपरा के विरुद्ध जाकर अपनी नायिका को सादी, छोटी और अनाकर्षक बनाने का निश्चय किया।

क्यूरर बेल की मृत्यु पर लिखे गए सुंदर शोक संदेश लेख की लेखिका ने संभवतः स्वयं से ही वह सब सीखा होगा जो वहाँ जेन आयर के बारे में लिखा गया है, और जिसे मैं उद्धृत करने की स्वतंत्रता लूंगा।

"एक बार उसने अपनी बहनों से कहा कि वे अपनी नायिकाओं को स्वाभाविक रूप से सुंदर बनाकर गलत कर रही हैं—यहाँ तक कि नैतिक रूप से भी गलत कर रही हैं। उन्होंने जवाब दिया कि किसी और आधार पर नायिका को रोचक बनाना असंभव है। उसका उत्तर था, 'मैं तुम्हें साबित कर दूँगी कि तुम गलत हो; मैं तुम्हें अपने जैसी ही सादी और छोटी नायिका दिखाऊँगी, जो तुम्हारी किसी भी नायिका जितनी ही रोचक होगी।' इस प्रकार 'जेन आयर' का जन्म हुआ," उसने किस्सा सुनाते हुए कहा: 'लेकिन वह मुझसे ज़्यादा कुछ नहीं है।' जैसे-जैसे काम आगे बढ़ता गया, लेखिका की रुचि गहरी होती गई। जब वह 'थॉर्नफील्ड' पर पहुँची तो वह रुक नहीं सकी। अत्यधिक कमज़ोर दृष्टि होने के कारण, उसने अपनी आँखों के पास रखी छोटी-छोटी चौकोर कागज़ की किताबों में लिखा और (पहली प्रति) पेंसिल से लिखी। वह लगातार तीन सप्ताह तक लिखती रही; इस दौरान वह अपनी नायिका को थॉर्नफील्ड से दूर ले जा चुकी थी और खुद बुखार से पीड़ित थी, जिसके कारण उसे रुकना पड़ा।"

मेरा मानना है कि इस अद्भुत पुस्तक की कल्पना और रचना के संबंध में अब इतना ही बताया जा सकता है, हालांकि, यह पुस्तक उस समय अपने शुरुआती चरण में ही थी जब मिस ब्रोंटे अपने पिता के साथ मैनचेस्टर की चिंताजनक यात्रा के बाद हॉवर्थ लौटी थीं।

वे सितंबर के अंत में घर पहुँचे। श्री ब्रोंटे की सेहत में दिन-प्रतिदिन सुधार हो रहा था, लेकिन उन्हें अभी भी अपनी दृष्टि का अधिक उपयोग करने की मनाही थी। शार्लोट की अनुपस्थिति में परिस्थितियाँ उसकी आशा से कहीं अधिक सहज थीं, और वह

अपनी अनुपस्थिति के दौरान सुनिश्चित हुई भलाई और बची हुई बुराई के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है।

इसके कुछ समय बाद ही, मिस ब्रोंटे द्वारा हॉवर्थ से दूर किसी स्थान पर एक स्कूल खोलने का एक प्रस्ताव फिर से उठाया गया, जिसके बारे में मुझे स्पष्ट जानकारी नहीं मिल पाई है। इस पर उन्होंने एक विशिष्ट प्रतिक्रिया दी, जिसका एक अंश इस प्रकार है: —

"घर छोड़ दो! — मुझे न तो नौकरी मिलेगी और न ही रोज़गार, शायद मेरी जवानी भी ढल चुकी होगी, मेरी बुद्धि क्षीण हो चुकी होगी और जो थोड़ा-बहुत ज्ञान है वो काफी हद तक भुला दिया गया होगा। ये विचार कभी-कभी मुझे बहुत चुभते हैं; लेकिन जब भी मैं अपने अंतरात्मा से पूछता हूँ, वो कहती है कि घर पर रहना सही है, और जब भी मैं घर से निकलने की तीव्र इच्छा के आगे झुकता हूँ, तो वो मुझे बुरी तरह फटकारती है। अगर मैं इन चेतावनियों को अनसुना कर दूँ तो सफलता की उम्मीद करना मुश्किल है। आपसे जल्द ही फिर बात करना चाहूँगा। सीधे मुद्दे पर आओ और उससे साफ-साफ, अस्पष्ट नहीं, यह पूछो कि वह वास्तव में कितने विद्यार्थी दिला सकता है; लोग अक्सर सोचते हैं कि वे इस तरह से बड़े-बड़े काम कर सकते हैं, जब तक कि वे कोशिश नहीं करते; लेकिन विद्यार्थी पाना किसी और तरह का सामान पाने से बिल्कुल अलग है।"

इस बातचीत का स्वरूप और दायरा चाहे जो भी हो, अंततः शार्लोट ने अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनी, जिसने उसे घर पर ही रहने का आदेश दिया। उसकी उपस्थिति से संकट में पड़े लोगों को सांत्वना या दिलासा मिल सकता था, या उस व्यक्ति पर थोड़ा सा भी प्रभाव पड़ सकता था जो इस संकट का कारण था। अगला अंश हमें उस घर की चिंताओं की एक झलक देता है। यह 15 दिसंबर की तारीख वाले एक पत्र का अंश है।

आशा है आप ठंड से जम नहीं गए होंगे; यहाँ कड़ाके की ठंड पड़ रही है। मुझे उत्तरी ध्रुव जैसे दिनों की ऐसी लगातार श्रृंखला याद नहीं है। इंग्लैंड सचमुच आर्कटिक क्षेत्र में खिसक गया लगता है; आकाश बर्फ जैसा दिखता है; धरती जमी हुई है; हवा दोधारी तलवार की तरह तेज़ है। मौसम के कारण हम सभी को ज़ुकाम और खांसी हो गई है। बेचारी ऐनी अस्थमा से बहुत परेशान रही, लेकिन अब, हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि वह काफी बेहतर है। पिछले हफ्ते दो रातें ऐसी थीं जब उसकी खांसी

और सांस लेने में तकलीफ सुनना और देखना सचमुच कष्टदायक था, और उसे सहना भी बहुत कष्टदायक रहा होगा; उसने इसे सहा, जैसे वह हर कष्ट सहती है, बिना किसी शिकायत के, बस कभी-कभी थक जाने पर आह भरती थी। उसमें सहनशक्ति का असाधारण साहस है। मैं उसकी प्रशंसा करती हूँ, लेकिन मैं निश्चित रूप से उसकी नकल नहीं कर सकती। "आप कहते हैं कि मुझे 'बहुत कुछ बताना है'। आप मुझसे क्या सुनना चाहते हैं? हॉवर्थ में कुछ नहीं होता; कम से कम सुखद तो बिल्कुल नहीं। लगभग एक सप्ताह पहले एक छोटी सी घटना घटी, जिसने हमें बुरी तरह झकझोर दिया; लेकिन अगर इसे सुनकर आपको उतना ही आनंद नहीं मिलता जितना हमें देखकर मिला, तो आप शायद ही मुझे इसका जिक्र करने के लिए धन्यवाद देंगे। बात बस इतनी थी कि शेरिफ का एक अधिकारी बी. से मिलने आया और उसे या तो अपना कर्ज चुकाने या यॉर्क की यात्रा करने के लिए कहा। ज़ाहिर है, उसे अपना कर्ज चुकाना ही था। इस तरह बार-बार पैसा खोना अच्छा नहीं लगता; लेकिन ऐसे विषयों पर चर्चा करने का क्या फायदा? इससे उसकी हालत में कोई सुधार नहीं होगा।"

28 दिसंबर।

"मुझे ऐसा लग रहा है मानो अब बैठकर आपको पत्र लिखना एक तरह का मज़ाक हो, क्योंकि मेरे पास सुनने लायक कुछ कहने को नहीं है; और सच कहूँ तो, अगर दो कारण न होते तो मैं इसे कम से कम दो सप्ताह के लिए टाल देता। पहला कारण यह है कि मुझे आपका एक और पत्र चाहिए, क्योंकि आपके पत्र रोचक होते हैं, उनमें कुछ न कुछ होता है; अनुभव और अवलोकन के परिणाम होते हैं; उन्हें पाकर आनंद आता है और उन्हें बड़े चाव से पढ़ा जाता है; और ये पत्र मुझे तभी मिलेंगे जब मैं उनका उत्तर दूँगा। काश पत्राचार इस तरह से व्यवस्थित हो पाता कि सारा पत्राचार एक ही तरफ से हो। दूसरा कारण आपके पिछले पत्र में की गई एक टिप्पणी से जुड़ा है, जिसमें आपने कहा था कि आप अकेलापन महसूस कर रहे थे, कुछ वैसा ही जैसा मैं ब्रसेल्स में था, और इसलिए आपको पुराने परिचितों से सुनने की विशेष इच्छा थी। मैं इसे समझ सकता हूँ और इससे सहानुभूति रखता हूँ। मुझे याद है कि जब मैं ऊपर बताए गए स्थान पर था, तो आपका छोटा सा पत्र भी मेरे लिए एक उपहार था; इसलिए मैं लिख रहा हूँ। मेरा एक तीसरा कारण भी है: मुझे यह डर सताता रहता है कि कहीं आप यह न सोच लें कि मैं आपको भूल गया हूँ — कि मेरी दूरी से मेरा स्नेह ठंडा पड़ गया है। आपका स्वभाव भूलना मेरे स्वभाव में नहीं है; हालांकि, मैं कह सकता हूँ कि

अगर हम लगातार साथ रहते तो मैं कभी-कभी आग उगल देता और भड़क उठता; और तुम भी नाराज़ हो जाते, फिर हम सुलह कर लेते और पहले की तरह आगे बढ़ जाते। क्या तुम कभी अपने स्वभाव से असंतुष्ट होते हो जब तुम लंबे समय तक एक ही जगह, एक ही दृश्य में, एक ही तरह की नीरस झुंझलाहट से घिरे रहते हो? मैं होता हूँ: मैं अभी उसी दयनीय मनोदशा में हूँ; मुझे लगता है कि मेरा मिजाज बहुत जल्दी बिगड़ जाता है, बहुत जल्दी गुस्सा हो जाता है, बहुत जल्दी भड़क उठता है और उग्र हो जाता है। मैं श्रीमती — — के स्वभाव में वर्णित एकसमान शांति के लिए तरसता हूँ; या कम से कम, मैं उनके आत्म-नियंत्रण और छिपाव की शक्ति पाना चाहता हूँ; लेकिन मैं उनकी बनावटी आदतों और विचारों को उनकी शांति के साथ नहीं अपनाना चाहता। आखिरकार, मैं जैसा हूँ वैसा ही रहना पसंद करूँगा। . . तुम किसी भी रूढ़िवादिता के सिद्धांत से परेशान न होकर सही करते हो। सभी नए तरीकों को अपने लिए नए अनुभव के प्रकाश में देखो: अगर तुम्हें कोई अच्छा तरीका दिखे तो उसे अपना लो। "मैं यह नहीं मानता कि हमें दुनिया में जो कुछ भी देखते हैं, उसे सिर्फ इसलिए तुच्छ समझना चाहिए क्योंकि वह हमारी आदत के विपरीत है। इसके विपरीत, मुझे लगता है कि जिन रीति-रिवाजों को हम बेतुका समझते हैं, उनके पीछे अक्सर ठोस कारण होते हैं; और अगर मुझे कभी फिर से अजनबियों के बीच होना पड़े, तो मैं निंदा करने से पहले उनकी जांच-पड़ताल करने के लिए उत्सुक रहूंगा। अंधाधुंध व्यंग्य और दोषारोपण करना सरासर मूर्खता है, बस इतना ही। ऐनी अब काफी बेहतर है, लेकिन पापा पिछले लगभग दो हफ्तों से फ्लू से पीड़ित हैं; उन्हें कभी-कभी बहुत कष्टदायक खांसी होती है, और उनका मनोबल काफी गिरा हुआ है।"

इस प्रकार वर्ष 1846 का अंत हुआ।

अध्याय II

अगला साल कड़ाके की ठंड और उदासी भरे मौसम के साथ शुरू हुआ, जिसने पहले से ही चिंता और परेशानी से जूझ रहे उनके स्वास्थ्य पर और भी बुरा असर डाला। मिस ब्रोंटे ने खुद को भूख से पूरी तरह बेहाल और इस खराब मौसम के कारण "सूखी, बूढ़ी, थकी हुई और मुरझाई हुई" बताया है। ठंड से उन्हें दांतों में तेज दर्द होने लगा; दांत दर्द के कारण उन्हें लगातार कई रातों तक बेचैनी और तकलीफ झेलनी पड़ी; और लंबे समय तक जागते रहने से उनकी नसों पर गहरा असर पड़ा, जिससे उनके दमनकारी जीवन की सारी परेशानियां और भी ज्यादा संवेदनशील हो गईं। फिर भी उन्होंने अपनी खराब सेहत का दोष किसी अशांत मन पर नहीं डाला; उन्होंने उस समय कहा, "आखिरकार, मेरे पास शुक्रगुजार होने के लिए बहुत सी चीजें हैं।" लेकिन उनकी चिट्ठियों के निम्नलिखित अंशों से वास्तविक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है।

“1 मार्च।”

भले ही यह थोड़ा ज़्यादा अपेक्षापूर्ण लगे, मैं यह कहने से खुद को रोक नहीं पा रहा हूँ कि मुझे हर बार आपके पिछले पत्र जितना लंबा पत्र चाहिए। छोटे पत्र किसी स्वादिष्ट चीज़ का बहुत छोटा टुकड़ा खाने जैसा एहसास देते हैं—वे भूख को बेचैन कर देते हैं और उसे संतुष्ट नहीं करते—एक पत्र ज़्यादा संतुष्टि देता है; और फिर भी, मुझे पत्र पाकर बहुत खुशी होती है; इसलिए जब आपके पास समय और सामग्री की कमी हो, तो यह न सोचें कि कुछ पंक्तियाँ लिखना बेकार है; निश्चिंत रहें, कुछ पंक्तियाँ भी स्वीकार्य हैं; और हालाँकि मुझे लंबे पत्र पसंद हैं, मैं आपसे उन्हें लिखने का कोई आग्रह नहीं करूँगा। . . . मैं वास्तव में चाहूँगा कि आप मेरे फिर से बी—— जाने से पहले हॉवर्थ आएँ। और यह इच्छा स्वाभाविक और उचित है। मित्रता को सही क्रम में रखने के लिए, अच्छे व्यवहार का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है, अन्यथा एक बेचैनी और चिंता की भावना घर कर जाती है और आपसी आराम को नष्ट कर देती है। गर्मियों में और अच्छे मौसम में, आपकी यहाँ की यात्रा की व्यवस्था पिछले साल की तुलना में कहीं बेहतर हो सकती है। सर्दी का मौसम है। हम ज़्यादा बाहर जा सकते हैं, घर और अपने कमरे से ज़्यादा आज़ाद हो सकते हैं। ब्रैनवेल का व्यवहार आजकल बहुत खराब चल रहा है। उसके व्यवहार की अतिशयता और उसके इशारों से (क्योंकि वह कभी खुलकर नहीं बोलता) मुझे लगता है कि जल्द ही हमें उसके नए कर्ज़ों की

खबर सुनने को मिलेगी। मेरी सेहत बेहतर है: मेरी कमज़ोरी का कारण मैं ठंडे मौसम को मानता हूँ, न कि किसी बेचैन मन को।

24 मार्च, 1847।

“अगर सब ठीक रहा तो अगली मुलाकात हॉवर्थ में ही होगी। मुझे आपसे इस बात का मलाल है कि आपने मिस एम को मेरी बीमारी के बारे में कुछ बढ़ा-चढ़ाकर बताया और उन्हें घर छोड़ने के लिए इतना ज़ोर दिया जैसे कि यह उनका फर्ज़ हो। अगली बार जब मुझे लगेगा कि मैं बहुत बूढ़ी और बदसूरत दिख रही हूँ, तो मैं आपको ये बात नहीं बताऊँगी; मानो लोगों को ये सौभाग्य प्राप्त ही न हो, वरना उन्हें लगेगा कि वे अपनी आखिरी साँसें ले रहे हैं! अगले जन्मदिन पर मैं इकत्तीस साल की हो जाऊँगी। मेरी जवानी एक सपने की तरह गुज़र गई; और मैंने उसका ज़रा भी फ़ायदा नहीं उठाया। पिछले तीस सालों में मैंने क्या किया? कुछ खास नहीं।”

वह शांत, उदास वर्ष धीरे-धीरे बीतता चला गया। बहनें अपने उस भाई के जीवन में प्रतिभाओं के दुरुपयोग और क्षमताओं के गलत इस्तेमाल के भयानक परिणामों पर लंबे समय से विचार कर रही थीं, जो कभी उनका प्रिय और गौरवशाली साथी था। उन्हें अपने बूढ़े पिता को दिलासा देना था, जिनके हृदय में सभी कष्ट उनकी मौन सहनशीलता के कारण और भी गहरे उतर जाते थे। उन्हें उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना था, जिसकी स्थिति चाहे जैसी भी हो, वे शायद ही कभी शिकायत करते थे। उन्हें यथासंभव उनकी बची हुई दृष्टि को बचाना था। उन्हें अपने संयमी स्वभाव के विपरीत आवश्यकताओं और खर्चों को पूरा करने के लिए घर को और भी अधिक सावधानी से चलाना था। यद्यपि वे अपने साथियों से अधिक संपर्क से बचती थीं, फिर भी जिनसे भी वे मिलतीं, उनके लिए उनके पास भले ही कम ही सही, दयालु शब्द होते थे; और जब दयालु कार्यों की आवश्यकता होती थी, तो यदि पादरी के घर में रहने वाली बहनें उन्हें कर सकती थीं, तो वे उन्हें करने से पीछे नहीं हटती थीं। वे नियमित रूप से पैरिश स्कूलों का दौरा करती थीं; और अक्सर, घर से बाहर शार्लोट की दुर्लभ और संक्षिप्त छुट्टियां, संडे स्कूल में अपनी जगह पर रहने की आवश्यकता की भावना के कारण छोटी हो जाती थीं।

इस तरह के जीवन के अंतरालों में, "जेन आयर" की रचना प्रगति कर रही थी। "द प्रोफेसर" प्रकाशकों के बीच धीरे-धीरे और बोझिल ढंग से आगे बढ़ रहा था। "वुथरिंग हाइट्स" और "एग्नेस ग्रे" को एक अन्य प्रकाशक ने स्वीकार कर लिया था, "ऐसी

शर्तों पर जो दोनों लेखकों के लिए कुछ हद तक नुकसानदायक थीं;" इस सौदे का विस्तृत उल्लेख आगे किया जाएगा। यह रचना शुरुआती गर्मियों के सभी महीनों के दौरान उनके हाथों में पड़ी रही, छपाई के लिए उनकी स्वीकृति का इंतजार करती रही।

गर्मी के इन महीनों में बहनों के लिए बाहरी आशा की किरण यही थी कि शार्लोट के कई पत्रों में जिसे संबोधित मित्र हैं, और जो उनकी पसंदीदा साथी थीं, जब भी परिस्थितियाँ उन्हें साथ रहने की अनुमति देती थीं, साथ ही एमिली और ऐनी की भी प्रिय थीं, वे हॉवर्थ में उनसे मिलने आ सकेंगी। शार्लोट लिखती हैं कि मई में मौसम सुहाना हो गया था, और वे अपने मेहमान का अच्छे से स्वागत करने की उम्मीद कर रही थीं। उनके भाई की हालत ठीक-ठाक थी, क्योंकि वसंत ऋतु में उन्हें जो अच्छी-खासी रकम मिली थी, वह खत्म हो चुकी थी, और इसलिए वे गरीबी के बंधन में थे। लेकिन शार्लोट अपने मित्र को आगाह करती हैं कि उन्हें उनके चेहरे में बदलाव देखने को मिल सकता है, और वे मानसिक रूप से टूटे हुए हैं; और अपने निमंत्रण पत्र को यह कहकर समाप्त करती हैं, "मैं अच्छे मौसम के लिए प्रार्थना करती हूँ, ताकि आपके ठहरने के दौरान हम बाहर जा सकें।"

अंततः दिन तय हो गया।

शुक्रवार का दिन हमारे लिए बहुत अच्छा रहेगा। मुझे पूरा भरोसा है कि अब आपके आने में कोई बाधा नहीं आएगी। उस दिन मौसम को लेकर मैं चिंतित रहूंगी; अगर बारिश हुई तो मैं रो दूंगी। मुझसे मिलने की उम्मीद मत रखना; भला इसका क्या फायदा? मुझे न तो मिलना पसंद है और न ही किसी से मिलना। हां, अगर आपके पास मेरे लिए कोई बक्सा या टोकरी हो तो बात अलग है; तब शायद कुछ समझ में आए। काले, नीले, गुलाबी, सफेद या लाल रंग के कपड़े पहनना, जैसा आपको पसंद हो। चाहे आप फटे-पुराने कपड़े पहनें या अच्छे कपड़े, रंग या हालत से कोई फर्क नहीं पड़ता; बस कपड़ों में E—— हो तो सब ठीक रहेगा।

लेकिन यहीं से निराशाओं की एक श्रृंखला की शुरुआत हुई। यह महसूस किया जा सकता है कि निम्नलिखित शब्दों को कहना कितना कष्टदायक रहा होगा।

20 मई।

“कल के आपके पत्र ने सचमुच मुझे निराशा की एक कड़वी ठंडक दी। मैं आपको दोष नहीं दे सकता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह आपकी गलती नहीं थी। मैं पूरी तरह से — — को निंदा से मुक्त नहीं करता। . . . यह कड़वा है, लेकिन मैं कड़वा महसूस

करता हूँ। जहाँ तक बी — — जाने की बात है, मैं उस जगह के पास तब तक नहीं जाऊँगा जब तक आप हॉवर्थ नहीं जा लेते। सभी को मेरा प्रणाम, साथ में बहुत सारा कड़वा और कड़वापन भी, जिससे आप और आपकी माँ ही अछूते हैं। — सी. बी.”

“अगर आपको उचित लगे तो आप बेझिझक मुझे बता सकते हैं कि मैं क्या सोचता हूँ। हालांकि यह सच है कि मैं शायद थोड़ा अन्याय कर रहा हूँ, क्योंकि मैं बहुत नाराज़ हूँ। मुझे लगा था कि इस बार मैंने आपकी यात्रा को आपके लिए काफी आरामदायक बना दिया था। अगली बार शायद मुझे ऐसा करना मुश्किल लगे।”

मुझे इस समय के आसपास लिखे गए एक पत्र का एक वाक्य अवश्य देना चाहिए, क्योंकि यह लेखक की स्पष्ट और सशक्त भावना को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

“मुझे उसकी इस बात पर हंसी आई कि शादी के बाद उसका पति कम से कम अपनी मर्जी तो रखेगा, चाहे वो कितना भी अत्याचारी क्यों न हो। उससे कहो, जब वो दोबारा ऐसी इच्छा रखे, तो उसे ये शर्त रखनी चाहिए कि अगर उसके पति में दृढ़ इच्छाशक्ति है, तो उसमें मजबूत समझ, दयालु हृदय और न्याय की सही समझ भी होनी चाहिए; क्योंकि कमजोर दिमाग और दृढ़ इच्छाशक्ति वाला व्यक्ति तो बस एक अड़ियल जानवर होता है; तुम उसे काबू में नहीं रख सकती; तुम उसे कभी सही राह पर नहीं ले जा सकती। किसी भी हालत में अत्याचारी एक अभिशाप होता है।”

इस बीच, "द प्रोफेसर" को कई प्रकाशकों से अस्वीकृति मिली; मेरा मानना है कि कुछ प्रकाशकों ने अज्ञात लेखक को लिखे पत्र में शिष्टाचार का पालन नहीं किया और किसी ने भी अस्वीकृति का कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया। शिष्टाचार तो हमेशा उचित होता है; लेकिन शायद ही यह उम्मीद की जा सकती है कि एक बड़े प्रकाशन गृह में व्यस्तता के बीच, उन्हें किसी विशेष कृति को अस्वीकार करने का कारण बताने का समय मिले। फिर भी, हालांकि एक कदम आश्चर्यजनक नहीं है, लेकिन इसके विपरीत कदम दुखी और निराश मन पर ओस की तरह पड़ सकता है; और मैं "कुरर बेल" द्वारा दिए गए उस विवरण से पूरी तरह सहमत हूँ, जिसमें उन्होंने स्मिथ और एल्डर के "द प्रोफेसर" की अस्वीकृति से संबंधित पत्र को पढ़कर उत्पन्न भावनाओं का वर्णन किया है।

“एक हताश उम्मीद के तौर पर, हमने एक और प्रकाशन गृह से संपर्क किया। जल्द ही, अनुभव के अनुमान से कहीं कम समय में, एक पत्र आया, जिसे उन्होंने इस निराशाजनक आशंका के साथ खोला कि उसमें दो कठोर, हताश करने वाली पंक्तियाँ

होंगी, जिनमें लिखा होगा कि “श्रीमान स्मिथ और एल्डर पांडुलिपि प्रकाशित करने के इच्छुक नहीं हैं,” लेकिन इसके बजाय, उन्होंने लिफाफे से दो पन्नों का एक पत्र निकाला। उन्होंने कांपते हुए उसे पढ़ा। वास्तव में, व्यावसायिक कारणों से उस कहानी को प्रकाशित करने से इनकार कर दिया गया था, लेकिन उसमें कहानी के गुण-दोषों पर इतनी विनम्रता, इतने विचारशीलता, इतने तर्कसंगत भाव और इतनी प्रबुद्ध विवेकशीलता से चर्चा की गई थी कि इस इनकार ने ही लेखक को एक भद्दे ढंग से व्यक्त की गई स्वीकृति से कहीं अधिक प्रसन्न किया। साथ ही यह भी लिखा था कि तीन खंडों में प्रकाशित कृति पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।”

श्री स्मिथ ने मुझे इस पांडुलिपि के प्राप्त होने से जुड़ी एक छोटी सी घटना बताई है, जो मुझे असाधारण लगती है। यह (नीचे दिए गए नोट के साथ) भूरे कागज के एक पार्सल में 65 कॉर्नहिल पर पहुंची। मेसर्स स्मिथ एंड कंपनी के पते के अलावा, उस पर अन्य प्रकाशकों के पते भी थे, जिन्हें यह कहानी भेजी गई थी। ये पते मिटाए नहीं गए थे, बल्कि उन पर एक निशान लगा दिया गया था, जिससे मेसर्स स्मिथ को तुरंत उन कुछ प्रकाशन गृहों के नाम पता चल गए, जिन्हें यह पार्सल असफल रूप से भेजा गया था।

श्रीमान स्मिथ और श्रीमान एल्डर को।

15 जुलाई, 1847।

महोदयगण, मैं आपके विचारार्थ यह पांडुलिपि प्रस्तुत करना चाहता/चाहती हूँ। मुझे यह जानकर प्रसन्नता होगी कि क्या यह आपको स्वीकार्य है, और मैं इसे यथाशीघ्र प्रकाशित करने का वचन देता/देती हूँ। पता: श्री कुरेर बेल, पत्र के माध्यम से श्रीमती ब्रोंटे, हॉवर्थ, ब्रैडफोर्ड, यॉर्कशायर।

कुछ समय बीतने के बाद जवाब मिला।

हालांकि यह कुछ पहले के समय की बात है, लेकिन यहाँ एक छोटी सी घटना का उल्लेख करना उचित होगा, जो मिस ब्रोंटे की दुनियादारी की अनभिज्ञता और दूसरों की राय को आसानी से स्वीकार करने की प्रवृत्ति को दर्शाती है। उन्होंने अपनी एक पांडुलिपि के बारे में एक प्रकाशक को पत्र लिखा था, जिसे उन्होंने उन्हें भेजा था। कोई जवाब न मिलने पर उन्होंने अपने भाई से इस लंबे समय तक चुप्पी का कारण पूछा। उनके भाई ने तुरंत बताया कि उन्होंने पत्र में डाक टिकट नहीं लगाया था। इसके बाद उन्होंने अपनी पिछली चूक को सुधारने और उसके लिए माफी मांगने के लिए दोबारा

पत्र लिखा।

श्रीमान स्मिथ और श्रीमान एल्डर को।

2 अगस्त, 1847।

महोदयगण, लगभग तीन सप्ताह पहले मैंने आपके विचारार्थ करर बेल की एक कहानी "द प्रोफेसर" की पांडुलिपि भेजी थी। मुझे यह जानकर प्रसन्नता होगी कि क्या वह आप तक सुरक्षित पहुँच गई है, और साथ ही, यथाशीघ्र, यह भी जानना चाहूँगा कि क्या आप इसे प्रकाशित करने का दायित्व ग्रहण कर सकते हैं। महोदयगण, आपका सादर।

“कुरर बेल।”

मैं आपके उत्तर के लिए एक पत्र संलग्न कर रहा हूँ।

इस बार उनके पत्र का तुरंत जवाब मिला; क्योंकि चार दिन बाद, उन्होंने लिखा (उस पत्र के जवाब में जिसे उन्होंने बाद में "वुथरिंग हाइट्स" के दूसरे संस्करण की प्रस्तावना में इस प्रकार वर्णित किया कि उसमें अस्वीकृति इतनी सूक्ष्म, तर्कसंगत और विनम्र थी कि वह कुछ स्वीकृतियों से भी अधिक उत्साहजनक थी)।

कहानी में विविधता की कमी को लेकर आपकी आपत्ति निराधार नहीं है, यह मैं जानता हूँ; फिर भी मुझे लगता है कि अगर इसके प्रकाशन के तुरंत बाद उसी लेखक की एक और रचना प्रकाशित हो, जो अधिक आकर्षक और रोमांचक हो, तो इसे बिना किसी गंभीर जोखिम के प्रकाशित किया जा सकता है। पहली रचना एक परिचय के रूप में काम करेगी और जनता को लेखक से परिचित कराएगी, जिससे दूसरी रचना की सफलता की संभावना बढ़ जाएगी। मेरी दूसरी कहानी तीन खंडों में लिखी जा रही है और लगभग पूरी हो चुकी है, जिसे मैंने "द प्रोफेसर" की तुलना में अधिक जीवंत बनाने का प्रयास किया है। मुझे उम्मीद है कि लगभग एक महीने में यह पूरी हो जाएगी, ताकि अगर "द प्रोफेसर" के लिए कोई प्रकाशक मिल जाए, तो दूसरी कहानी को उचित समय पर प्रकाशित किया जा सके; और इस तरह जनता की रुचि (यदि कोई रुचि जागृत होती है) कम न हो। क्या आप कृपया इस योजना पर अपनी राय देंगे?

तीनों बहनों के मन में जब अनिश्चितता का भाव छाया हुआ था, तभी उनकी बहुप्रतीक्षित सहेली अपने वादे के मुताबिक मिलने आ गईं। वह उस वर्ष अगस्त के सुहावने महीने की शुरुआत में उनके साथ थीं। वे दिन का अधिकांश समय खुले मैदानों

में सुनहरी धूप का आनंद लेते हुए बिता रही थीं, जिससे फसल की असाधारण रूप से भरपूर पैदावार हो रही थी। कुछ समय बाद, शार्लट ने सभी गिरजाघरों में धन्यवाद प्रार्थना सभा आयोजित करने की हार्दिक इच्छा व्यक्त की। अगस्त का महीना हॉवर्थ के आसपास के क्षेत्र के लिए गौरव का मौसम था। यहां तक कि उस गांव और कीघली के बीच की घाटी में छाए धुएं ने भी ऊपर खुले मैदानों के चमकीले रंगों से सुंदरता छीन ली थी। हीथर के खिले हुए गहरे बैंगनी रंग, गर्मियों की शामों की उमस भरी धूप में चारों ओर फैलती सुनहरी रोशनी के साथ एक सामंजस्यपूर्ण विरोधाभास पैदा कर रहे थे। और ऊपर, खुले मैदानों में, मनुष्य के सभी आवासों से दूर, जिस शाही भूमि पर वे खड़े थे, वह नीलम रंग की पहाड़ियों के लंबे उभारों में विस्तारित होती हुई, हवा में घुलती हुई रंगों में विलीन हो जाती; और हीथर की ताज़ी और सुगंधित खुशबू, और "असंख्य मधुमक्खियों की भनभनाहट," उस आनंद को एक मार्मिकता प्रदान करती जिसके साथ उन्होंने अपने मित्र का जंगली और खुले पहाड़ों पर स्थित अपने असली घर में स्वागत किया।

वहां भी वे नीचे वाले घर में मौजूद साये से बच सकते थे।

इस पूरे समय के दौरान—इन सभी गोपनीय बातचीत के समय—लंदन में लिखी गई तीन कहानियों के बारे में उनके दोस्त को एक शब्द भी नहीं बताया गया; दो कहानियाँ स्वीकार हो चुकी थीं और छपने के लिए तैयार थीं—एक कहानी प्रकाशक के फैसले के अधर में लटकी हुई थी; न ही उन्हें उस दूसरी कहानी के बारे में पता चला जो "लगभग पूरी हो चुकी थी" और जिसकी पांडुलिपि नीचे स्थित पुराने धूसर पादरी के घर में पड़ी थी। उन्हें शायद यह संदेह था कि उन सभी कहानियों को उन्होंने किसी समय प्रकाशित करने के इरादे से लिखा था; लेकिन वे जानती थीं कि वे अपनी बातचीत में कितनी गोपनीयता बरतते थे; और न ही उन्हें, और न ही किसी और को, उनकी इस चुप्पी पर आश्चर्य हो सकता है, यह याद करके कि कैसे एक के बाद एक योजनाएँ पूरी होने के ठीक बाद विफल हो गईं।

श्री ब्रोंटे को भी कुछ चल रहा होने का आभास था; लेकिन, उनसे कभी बात न होने के कारण, उन्होंने इस विषय पर कुछ नहीं कहा, और परिणामस्वरूप उनके विचार अस्पष्ट और अनिश्चित थे, केवल इतने ही सटीक थे कि बाद में जब उन्होंने "जेन आयर" की सफलता के बारे में सुना तो वे वास्तव में स्तब्ध न रह गए; जिसकी प्रगति पर अब हमें लौटना होगा।

श्रीमान स्मिथ और श्रीमान एल्डर को।

24 अगस्त।

मैं अब आपको रेल द्वारा करर बेल द्वारा लिखित तीन खंडों के उपन्यास 'जेन आयर' की पांडुलिपि भेज रहा हूँ। मुझे पता चला है कि मैं पार्सल का किराया अग्रिम भुगतान नहीं कर सकता, क्योंकि जिस छोटे से स्टेशन पर इसे छोड़ा गया है, वहाँ इसके लिए नकद भुगतान स्वीकार नहीं किया जाता है। यदि पांडुलिपि की प्राप्ति की पुष्टि करते समय आप कृपया डिलीवरी शुल्क का उल्लेख कर दें, तो मैं उसे तुरंत डाक टिकटों के साथ भेज दूँगा। भविष्य में श्री करर बेल को संबोधित करना और साथ में मिस ब्रोंटे, हॉवर्थ, ब्रैडफोर्ड, यॉर्कशायर को भेजना बेहतर होगा, क्योंकि इस समय अन्य पते पर भेजे गए पत्रों के मुझ तक न पहुँचने का खतरा है। परेशानी से बचने के लिए, मैं एक लिफाफा संलग्न कर रहा हूँ।

"जेन आयर" को स्वीकार कर लिया गया और 16 अक्टूबर तक इसे छाप कर प्रकाशित कर दिया गया।

जब यह लेख छपने के लिए भेजा जा रहा था, तब मिस ब्रोंटे अपनी सहेली से मिलने के लिए बी—— गईं। प्रूफ उन्हें वहीं भेजे गए, और वह कभी-कभी अपनी सहेली के साथ एक ही मेज पर बैठकर उनमें सुधार करती थीं; लेकिन उन्होंने इस विषय पर एक शब्द भी नहीं कहा।

पादरी के आवास पर लौटते ही उन्होंने तुरंत लिखा:

"सितम्बर।

"कीघली से घर तक का मेरा सफर बहुत बारिश और तेज हवाओं वाला था; लेकिन घर पहुंचते ही मेरी सारी थकान गायब हो गई और सब ठीक पाया। भगवान का शुक्र है।"

“आज सुबह मेरे बक्से सुरक्षित पहुँच गए। मैंने उपहार बाँट दिए हैं। पापा ने कहा है कि मैं तुम्हें उनके प्रति बहुत स्नेह दिखाऊँ। स्क्रीन बहुत काम आएगी, और इसके लिए उन्होंने तुम्हारा धन्यवाद किया है। टैबी अपनी टोपी पाकर बहुत खुश हुई। उसने कहा, ‘उसने कभी सोचा भी नहीं था कि मिस उसे कुछ भेजेंगी, और उसे पूरा यकीन है कि वह इसके लिए उनका जितना भी धन्यवाद करे कम है।’ मुझे अपने ट्रंक में एक जार देखकर बहुत गुस्सा आया। पहले तो मुझे लगा कि वह खाली होगा, लेकिन जब मैंने उसे भारी और भरा हुआ पाया, तो मेरा मन किया कि उसे वापस बी—— तक फेंक

दूँ। हालाँकि, उस पर लिखे A. B. ने मेरा गुस्सा शांत कर दिया। इसे भेजना तुम्हारा एक साथ दयालुता और दुष्टता दोनों थी। तुम्हें पहले प्यार से चूमा जाना चाहिए, और फिर उतनी ही प्यार से कोड़े मारे जाने चाहिए। एमिली अभी उसी बेडरूम के फर्श पर बैठी है जहाँ मैं लिख रही हूँ, अपने सेबों को देख रही है। जब मैंने उसे तुम्हारा उपहार के रूप में कॉलर दिया, तो वह मुस्कुराई, उसके चेहरे पर एक साथ प्रसन्नता और थोड़ी हैरानी के भाव थे। सभी अपना प्यार भेज रहे हैं।" — तुम्हारा, क्रोध और प्रेम के मिश्रण से भरा हुआ।

जब "जेन आयर" की पांडुलिपि उस अद्भुत उपन्यास के भावी प्रकाशकों को मिली, तो उसे सबसे पहले पढ़ने का काम फर्म से जुड़े एक सज्जन को सौंपा गया। कहानी के चरित्र ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने अपने विचार श्री स्मिथ को बड़े ही प्रभावशाली शब्दों में बताए। श्री स्मिथ को उनकी इस प्रशंसा पर बहुत हंसी आई। उन्होंने हंसते हुए कहा, "आप इतने मुग्ध हो गए हैं कि मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा।" लेकिन जब एक दूसरे पाठक, एक शांत स्वभाव के स्कॉटिश व्यक्ति, जो ज्यादा भावुक नहीं होते थे, ने पांडुलिपि को शाम को घर ले जाकर पढ़ा और उसमें इतनी गहरी रुचि ली कि उसे पूरा पढ़ने के लिए आधी रात तक जागते रहे, तो श्री स्मिथ की जिज्ञासा इतनी बढ़ गई कि उन्होंने स्वयं उसे पढ़ने का फैसला किया; और हालांकि उसकी बहुत प्रशंसा की गई थी, उन्होंने पाया कि वह अतिशयोक्ति नहीं थी।

प्रकाशन के बाद, इसकी प्रतियाँ कुछ निजी साहित्यिक मित्रों को भेंट की गईं। उनकी सूझबूझ का सही अनुमान लगाया गया था। वे साहित्य जगत में काफी प्रतिष्ठित थे; और सभी ने पुस्तक के लिए धन्यवाद के साथ-साथ उसकी अत्यधिक प्रशंसा भी की। उनमें वह महान कथाकार भी शामिल थे जिनके प्रति मिस ब्रोंटे को गहरी श्रद्धा थी; उन्होंने तुरंत इसकी सराहना की और प्रकाशकों को एक विशेष पत्र लिखकर इसकी असाधारण खूबियों को स्वीकार किया।

समीक्षाएँ या तो धीमी थीं या अधिक सतर्क। एथेनियम और स्पेक्टेटर ने संक्षिप्त समीक्षाएँ प्रकाशित कीं, जिनमें लेखक की प्रतिभा की सीमित स्वीकृति थी। लिटरेरी गजट इस बात को लेकर अनिश्चित था कि किसी अज्ञात लेखक की प्रशंसा करना सुरक्षित है या नहीं। डेली न्यूज़ ने "उपन्यासों की समीक्षा न करने" के नियम के आधार पर भेजी गई प्रति को स्वीकार करने से इनकार कर दिया; लेकिन कुछ समय बाद, उसी अख़बार में बैचलर ऑफ़ द अल्बानी की एक समीक्षा प्रकाशित हुई; और मेसर्स

स्मिथ एंड एल्डर ने संपादक को "जेन आयर" की एक प्रति समीक्षा के अनुरोध के साथ फिर से भेजी। इस बार कृति स्वीकार कर ली गई; लेकिन मुझे नहीं पता कि उस पर लेख किस प्रकार का था।

पेशेवर आलोचकों की राय के मामले में, 'द एग्जामिनर' ने आगे बढ़कर मदद की। उस अखबार में प्रकाशित साहित्यिक लेख हमेशा ही अपनी सौहार्दपूर्ण और उदार प्रशंसा के लिए जाने जाते थे, और 'जेन आयर' की समीक्षा भी इसका अपवाद नहीं थी; यह हार्दिक, फिर भी सूक्ष्म और विवेकपूर्ण प्रशंसा से भरपूर थी। इसके अलावा, आम तौर पर प्रेस ने उपन्यास की बिक्री बढ़ाने के लिए कुछ खास प्रयास नहीं किए; पुस्तकालयाध्यक्षों के बीच इसकी मांग 'द एग्जामिनर' में समीक्षा प्रकाशित होने से पहले ही शुरू हो गई थी; कहानी के आकर्षण ने पेशेवर आलोचना के बिना ही जनता को इसके गुणों से अवगत करा दिया; और दिसंबर की शुरुआत में ही प्रतियों की मांग बढ़ने लगी।

मैं मिस ब्रोंटे द्वारा अपने प्रकाशकों को लिखे गए दो-तीन पत्रों को शामिल करूँगा, ताकि यह दिखाया जा सके कि सफलता के विचार को उन्होंने कितनी संकोचपूर्वक स्वीकार किया, जबकि वे व्यक्तिगत रूप से संबंधित किसी भी विषय पर आशावादी दृष्टिकोण अपनाने की आदी नहीं थीं। ये पत्र किन परिस्थितियों में लिखे गए थे, यह बात स्वयं स्पष्ट हो जाएगी।

19 अक्टूबर, 1847।

“महोदय, ‘जेन आयर’ की छह प्रतियाँ आज सुबह मुझे प्राप्त हो गईं। आपने इस कृति को अच्छे कागज, स्पष्ट अक्षरों और आकर्षक आवरण से मिलने वाला हर लाभ प्रदान किया है; यदि इसमें कोई कमी रह जाती है, तो दोष लेखक का होगा, आप इससे मुक्त हैं।”

अब मैं प्रेस और जनता के फैसले का इंतजार कर रहा हूँ। — महोदय, आपका सादर,

सी. बेल।"

मेसर्स स्मिथ, एल्डर, एंड कंपनी

26 अक्टूबर, 1847।

“महोदय, मुझे समाचार पत्र मिल गए हैं। उनमें ‘जेन आयर’ की उतनी ही प्रशंसा की गई है जितनी मुझे उम्मीद थी। लिटरेरी गजट में छपी समीक्षा कुछ नीरस लहजे में

लिखी गई लगती है, और एथेनियम की अपनी एक शैली है, जिसका मैं सम्मान तो करता हूँ, पर मुझे वह बिल्कुल पसंद नहीं है; फिर भी, जब हम यह सोचते हैं कि इतने प्रतिष्ठित पत्रिकाओं को अपनी गरिमा बनाए रखनी होती है, जो किसी गुमनाम लेखक की रचनाओं को अत्यधिक प्रशंसा देने से धूमिल हो सकती है, तो मुझे लगता है कि संतुष्ट होने का पूरा कारण है।"

"इस बीच, अच्छी बिक्री से उच्च आलोचकों के अहंकार को प्रभावी ढंग से कम किया जा सकेगा। — महोदय, आपका सादर,

"सी. बेल।"

मेसर्स स्मिथ, एल्डर, एंड कंपनी

"13 नवंबर, 1847।"

महोदयगण, मुझे आपका 11 तारीख का पत्र प्राप्त हुआ, और उसमें दी गई जानकारी के लिए धन्यवाद। पीपुल्स जर्नल का नोटिस भी मुझे समय पर मिल गया, और आज सुबह मुझे स्पेक्टेटर अखबार मिला। स्पेक्टेटर में छपी समीक्षा पुस्तक के बारे में वही दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जो स्वाभाविक रूप से एक विशेष वर्ग के लोगों का होगा; मुझे उम्मीद है कि इसी तरह की अन्य समीक्षाएँ भी प्रकाशित होंगी। निंदा का मार्ग प्रशस्त हो गया है, और संभवतः उसी का अनुसरण किया जाएगा। भविष्य की अधिकांश समीक्षाओं में संभवतः स्पेक्टेटर की झलक मिलेगी। मुझे डर है कि इस तरह की राय से पुस्तक की मांग में कोई सुधार नहीं होगा - लेकिन समय ही बताएगा। यदि "जेन आयर" में कोई ठोस गुण है, तो यह प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम होगी। महोदयगण, आपका सादर,

"सी. बेल।"

मेसर्स स्मिथ, एल्डर, एंड कंपनी

30 नवंबर, 1847।

"महोदय, मुझे इकोनॉमिस्ट तो मिल गया है, लेकिन एग्जामिनर नहीं; किसी कारणवश वह अखबार मुझसे छूट गया है, जैसा कि पहले स्पेक्टेटर के साथ हुआ था; हालांकि, आपके पत्र से यह जानकर मुझे खुशी हुई कि उसमें "जेन आयर" की समीक्षा अनुकूल थी, और यह भी कि कृति की संभावनाएं बेहतर होती दिख रही हैं।"

"वुथरिंग हाइट्स" के संबंध में दी गई जानकारी के लिए मैं आपका आभारी हूँ।" महोदय, आपका सादर,

“सी. बेल।”

श्रीमान स्मिथ, एल्डर और कंपनी को।

1 दिसंबर, 1847।

“महोदय महोदय, — मुझे आज 'द एग्जामिनर' अखबार मिला; पता गलत होने के कारण यह गलत पते पर पहुँच गया था, क्योंकि पता कुरेर बेल के नाम, मिस ब्रोंटे के पते पर लिखा था। कृपया सूचित करें कि भविष्य में कुरेर बेल का नाम पत्रों के बाहर न लिखना बेहतर होगा; यदि पत्र केवल मिस ब्रोंटे के नाम पर भेजे जाएँ तो उनके सुरक्षित रूप से पहुँचने की संभावना अधिक होगी। कुरेर बेल इस क्षेत्र में जाने-माने व्यक्ति नहीं हैं, और मैं नहीं चाहता कि वे जाने-माने बनें। 'द एग्जामिनर' में छपी सूचना से मुझे बहुत प्रसन्नता हुई; ऐसा प्रतीत होता है कि यह किसी सक्षम व्यक्ति की कलम से लिखी गई है जिसने अपने विषय को भली-भांति समझा है; निश्चित रूप से, ऐसे स्रोत से प्रशंसा एक लेखक के लिए उत्साहवर्धक होती है, और मुझे विश्वास है कि यह कृति के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। — महोदय, आपका सादर,

सी. बेल.

मुझे प्रांतीय समाचार पत्रों से सात अन्य सूचनाएं भी एक लिफाफे में मिलीं। जेन आयर पर आई इन सभी आलोचनाओं को समय पर भेजने के लिए मैं आपका तहे दिल से धन्यवाद करता हूं।

श्रीमान स्मिथ, एल्डर और कंपनी को।

10 दिसंबर, 1847।

महोदय, आपके पत्र की प्राप्ति स्वीकार करता हूँ, जिसमें बैंक का डाक बिल भी संलग्न है, जिसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। आपके दयालु और ईमानदार आचरण के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के बाद, अब मैं केवल यही कह सकता हूँ कि मुझे आशा है कि आप भी मुझसे उतने ही संतुष्ट रहेंगे जितने मैं आपसे हूँ। यदि भविष्य में मेरे द्वारा किए गए किसी भी प्रयास का परिणाम आपके लिए सुखद और लाभकारी सिद्ध होता है, तो मैं अत्यंत प्रसन्न होऊंगा; और यह मेरे लिए अत्यंत खेद का विषय होगा यदि मुझे कभी यह एहसास हो कि आपको मेरे प्रकाशक होने पर पछतावा हुआ है।

"आप लोगों को मुझसे बहुत कम पत्र लिखने के लिए क्षमा मांगने की आवश्यकता नहीं है; बेशक, मुझे हमेशा आपसे सुनकर खुशी होती है, लेकिन मुझे श्री विलियम्स से

भी सुनकर वास्तव में खुशी होती है; वह मेरे पहले अनुकूल आलोचक थे; उन्होंने ही मुझे एक लेखक के रूप में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित किया था, इसलिए मैं स्वाभाविक रूप से उनका सम्मान करता हूं और उनके प्रति कृतज्ञ महसूस करता हूं।"

मेरे पत्र की अनौपचारिकता के लिए क्षमा करें, और विश्वास करें, सज्जनों, आपका सादर,

करर बेल।"

इस उपन्यास की अद्भुत सफलता की पहली खबर तीनों बहनों के दिल तक कैसे पहुंची और उन्हें किस तरह प्रभावित किया, इसका बहुत कम ही रिकॉर्ड बचा है। एक बार मैंने शार्लेट से पूछा—हम लोवुड स्कूल के वर्णन के बारे में बात कर रहे थे, और वह कह रही थीं कि अगर उन्हें पता होता कि यह उपन्यास कितनी जल्दी कॉवन ब्रिज से जुड़ जाएगा, तो क्या उन्हें इसे लिखना चाहिए था—कि उपन्यास की लोकप्रियता ने उन्हें आश्चर्यचकित किया था या नहीं। वह थोड़ा हिचकिचाईं, और फिर बोलीं: “मुझे विश्वास था कि जिस बात ने मुझे लिखते समय इतनी गहराई से प्रभावित किया था, वह इसे पढ़ने वाले हर व्यक्ति पर गहरा प्रभाव डालेगी। मुझे इस बात पर आश्चर्य नहीं हुआ कि 'जेन आयर' पढ़ने वाले लोग इसमें गहरी रुचि रखते थे; लेकिन मुझे शायद ही उम्मीद थी कि किसी अनजान लेखक की किताब को इतने पाठक मिल जाएंगे।”

दोनों बहनों ने अपने साहित्यिक कार्यों की जानकारी अपने पिता से छिपाकर रखी थी, क्योंकि उन्हें डर था कि उनकी चिंताओं और निराशा को देखकर उनकी अपनी चिंताएँ और बढ़ जाएँगी। पिता अपने बच्चों के जीवन में घटने वाली हर बात में गहरी रुचि रखते थे और युवावस्था में उनका झुकाव भी साहित्य की ओर ही था। यह सच था कि वे अपने भावों को शब्दों में अधिक व्यक्त नहीं करते थे; वे सोचते थे कि वे निराशा को मनुष्य का भाग्य मानकर उसके लिए तैयार हैं और धैर्य से उसका सामना कर सकते हैं; लेकिन जो लोग एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, उनके लिए शब्द भावनाओं को व्यक्त करने में असमर्थ और धीमे होते हैं, और उनकी बेटियाँ जानती थीं कि वे अपने लिए असफलता से कहीं अधिक उनके लिए असफलता सहन कर पाते। इसलिए उन्होंने उन्हें अपने कार्यों के बारे में नहीं बताया। अब वे कहते हैं कि उन्हें शुरू से ही इस बात का संदेह था, लेकिन उनका संदेह स्पष्ट रूप नहीं ले सका, क्योंकि उन्हें केवल इतना ही यकीन था कि उनकी बेटियाँ लगातार लिख रही थीं - पत्र नहीं लिख रही थीं। हमने देखा है कि उनके प्रकाशकों के संदेश "छिपे हुए रूप में मिस ब्रोंटे को"

प्राप्त होते थे। शार्लेट ने मुझे बताया कि एक बार उन्होंने डाकिया को श्री ब्रोंटे से मिलते हुए सुना, जब वे घर से निकल रहे थे, और डाकिया ने पादरी से पूछा कि कुरेर बेल नाम का कोई व्यक्ति कहाँ रहता है, जिस पर श्री ब्रोंटे ने उत्तर दिया कि इस इलाके में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है। संभवतः यही वह घटना थी जिसका जिक्र मिस ब्रोंटे ने श्री आयलॉट के साथ अपने पत्राचार की शुरुआत में किया है।

अब, जब "जेन आयर" की मांग ने उसकी सफलता सुनिश्चित कर दी थी, तो उसकी बहनों ने शार्लोट से अपने पिता को इसके प्रकाशन के बारे में बताने का आग्रह किया। तदनुसार, वह एक दोपहर उनके जल्दी भोजन के बाद उनके अध्ययन कक्ष में गई, अपने साथ पुस्तक की एक प्रति और एक-दो समीक्षाएँ लेकर गई, जिनमें उसने पुस्तक की आलोचना करते हुए एक टिप्पणी भी शामिल की थी।

उसने मुझे बताया कि उसके और उसके बीच कुछ इस तरह की बातचीत हुई थी। (मैंने उसके शब्द सुनने के अगले दिन लिख लिए थे; और मुझे पूरा यकीन है कि वे बिल्कुल सही हैं।)

“पापा, मैं एक किताब लिख रहा हूँ।”

“क्या तुमने ऐसा किया है, मेरी प्रिय?”

"हां, और मैं चाहता हूं कि आप इसे पढ़ें।"

मुझे डर है कि इससे मेरी आंखों पर बहुत ज्यादा जोर पड़ेगा।

लेकिन यह हस्तलिखित नहीं है: यह मुद्रित है।

“मेरी प्यारी! तुमने खर्च के बारे में सोचा ही नहीं! यह लगभग निश्चित रूप से घाटे का सौदा होगा, क्योंकि तुम किताब बेच पाओगी कैसे? तुम्हें कोई नहीं जानता, तुम्हारा नाम भी कोई नहीं जानता।”

"लेकिन पापा, मुझे नहीं लगता कि इससे कोई नुकसान होगा; आपको भी नहीं होगा, अगर आप मुझे एक-दो समीक्षाएँ पढ़कर सुनाने दें और इसके बारे में और अधिक बता दें।"

तो वह बैठ गई और अपने पिता को कुछ समीक्षाएँ पढ़कर सुनाईं; फिर, उन्हें "जेन आयर" की वह प्रति देकर, जो उसने उनके लिए रखी थी, वह उन्हें पढ़ने के लिए छोड़कर चली गई। जब वह चाय पीने आए, तो उन्होंने कहा, "बेटियों, क्या तुम्हें पता है कि शार्लेट एक किताब लिख रही है, और वह उम्मीद से कहीं बेहतर है?"

लेकिन जहाँ एक ओर हॉवर्थ पार्सनेज के शांत निवासियों के लिए, जो अपने

नियमित घरेलू जीवन में व्यस्त थे—उनके भाई की चिंता ही उनके जीवन में एकमात्र विविधता थी—लेखक करर बेल का अस्तित्व किसी सपने जैसा था—वहीं दूसरी ओर, इंग्लैंड का पूरा पाठक जगत इस अज्ञात लेखक को खोजने के लिए उत्सुक था। यहाँ तक कि "जेन आयर" के प्रकाशक भी इस बात से अनभिज्ञ थे कि करर बेल एक वास्तविक नाम था या काल्पनिक—यह किसी पुरुष का नाम था या किसी महिला का। हर कस्बे में लोगों ने अपने मित्रों और परिचितों की सूची खोजी, और निराशा ही हाथ लगी। उनके किसी भी परिचित में लेखक बनने की प्रतिभा नहीं थी। पुस्तक में वर्णित हर छोटी घटना को लिंग से जुड़े विवादास्पद प्रश्न का उत्तर देने के लिए अलग-अलग तरीकों से देखा गया। सब व्यर्थ। लोग अपनी जिज्ञासा शांत करने के प्रयासों को छोड़कर, बस बैठकर पुस्तक की प्रशंसा करने में संतुष्ट थे।

मैं उस पुस्तक का विश्लेषण नहीं लिखने जा रहा हूँ जिससे इस जीवनी को पढ़ने वाला हर व्यक्ति निश्चित रूप से परिचित होगा; और न ही उस कृति की आलोचना करने जा रहा हूँ जिसे जनमत की विशाल लहर ने उस गुमनामी से बाहर निकाल दिया है जिसमें वह पहली बार प्रकाशित हुई थी, और उसे प्रसिद्धि की शाश्वत पहाड़ियों पर ऊँचा और सुरक्षित स्थान दे दिया है।

मेरे सामने अखबारों और पत्रिकाओं से लिए गए अंशों का एक पैकेट पड़ा है, जो श्री ब्रोंटे ने मुझे भेजा है। इन्हें देखना बहुत मार्मिक है, और यह देखकर कि किसी भी छोटे से प्रांतीय अखबार में शायद ही कोई ऐसा लेख छपा हो, चाहे वह कितना ही संक्षिप्त और भद्दा क्यों न हो, जिसे उस दुखी पिता ने काटकर और तारीख के साथ सावधानीपूर्वक चिह्नित न किया हो, जो इन्हें पहली बार पढ़कर बहुत गर्व महसूस कर रहा था, लेकिन अब बिल्कुल उदास है। क्योंकि हर कोई इस महान, अज्ञात प्रतिभा की प्रशंसा कर रहा है, जो अचानक हमारे बीच प्रकट हुई। लेखक को लेकर अटकलें जंगल की आग की तरह फैल गईं। लंदन के लोग, पुराने एथेंसवासियों की तरह ही सभ्य और परिष्कृत थे, और उन्हीं की तरह "अपना समय किसी नई बात को बताने या सुनने में ही व्यतीत करते थे।" वे यह देखकर आश्चर्यचकित और प्रसन्न हुए कि एक नए लेखक के उदय से उन्हें एक नई अनुभूति, एक नया आनंद प्राप्त होगा। यह लेखक उत्तर में अभी भी मौजूद सशक्त, आत्मनिर्भर, जीवंत और अनूठे चरित्रों का सटीक और विशाल शक्ति के साथ चित्रण करने में सक्षम था, जो अंततः विलुप्त प्रजाति नहीं थे, बल्कि अस्तित्व में थे। उन्हें लगा कि चित्रण की विशिष्ट शक्ति में कुछ

अतिशयोक्ति मिली हुई है। जो लोग उस स्थान के निकट थे, जहाँ कहानी का दृश्य प्रस्तुत किया गया था, वे लेखन की सत्यता और सटीकता से आश्वस्त थे कि लेखक कोई दक्षिणी नहीं था; क्योंकि यद्यपि "उत्तर अंधकारमय, ठंडा और ऊबड़-खाबड़ है," स्कैंडिनेवियाई जातियों की पुरानी शक्ति अभी भी वहाँ विद्यमान है, और "जेन आयर" में चित्रित प्रत्येक चरित्र में चमकती है। इससे आगे, जिज्ञासा, चाहे सम्मानजनक हो या अपमानजनक, दोनों ही दोषी थी।

जब अगले वर्ष जनवरी में श्री थैकरे को समर्पित दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ, तो लोग एक-दूसरे को देखकर फिर से आश्चर्यचकित हो गए। लेकिन करर बेल विलियम मेकपीस थैकरे के बारे में एक व्यक्ति के रूप में—उनके जीवन, आयु, भाग्य या परिस्थितियों के बारे में—उतना ही जानती थीं जितना कि श्री माइकल एंजेलो टिटमार्श के बारे में। एक ने वैनिटी फेयर के शीर्षक पृष्ठ पर लेखक के रूप में अपना नाम अंकित किया था, दूसरे ने नहीं। वह एक ऐसे लेखक के प्रति अपनी गहरी प्रशंसा व्यक्त करने के अवसर के लिए आभारी थीं, जिन्हें, जैसा कि वह कहती हैं, वह "अपने समय का सामाजिक पुनरुत्थानकर्ता—उस कर्मठ दल का स्वामी मानती थीं जो विकृत अवस्था को सुधारकर सही राह पर लाना चाहता था... उनकी बुद्धि तेज है, उनका हास्य आकर्षक है, लेकिन दोनों का उनकी गंभीर प्रतिभा से वही संबंध है, जो ग्रीष्म ऋतु के बादल के किनारे पर चमकती हुई बिजली का उसके गर्भ में छिपी हुई घातक चिंगारी से होता है।"

पूरी गर्मी ऐनी ब्रोंटे सामान्य से अधिक नाजुक थीं, और घर की भारी चिंता ने उनके संवेदनशील मन को बुरी तरह प्रभावित किया था। लेकिन अब जब "जेन आयर" की सफलता के इतने संकेत मिल रहे थे, तो शार्लोट ने अपनी प्यारी छोटी बहन, घर की "छोटी बच्ची" के लिए भविष्य के सुख-सुविधाओं की योजनाएँ बनाना शुरू कर दिया - शायद चिंता से मुक्ति, कहना अधिक उचित होगा। लेकिन, हालांकि ऐनी शार्लोट की सफलता से कुछ समय के लिए खुश हुईं, सच्चाई यह थी कि न तो उनका मनोबल और न ही शारीरिक शक्ति उन्हें अधिक सक्रिय परिश्रम करने के लिए प्रेरित कर सकती थी, और उन्होंने बहुत ही सुस्त जीवन व्यतीत किया, लगातार अपनी किताब, काम या डेस्क पर झुकी रहती थीं। उनकी बहन लिखती हैं, "उन्हें टहलने के लिए मनाना या बातचीत के लिए राजी करना हमारे लिए बहुत मुश्किल है। मैं इस विश्वास के साथ अगली गर्मियों का इंतजार कर रही हूँ कि यदि संभव हो तो वह कम से कम

कुछ समय के लिए समुद्र तट पर अवश्य जाएँगी।" इसी पत्र में एक वाक्य है, जो बताता है कि घर, अपनी वर्तमान भयानक कमियों के बावजूद, उसके दिल में कितना प्रिय था; लेकिन इसमें दूसरों के मामलों का इतना अधिक उल्लेख है कि इसे उद्धृत करना उचित नहीं है।

किसी भी सफल उपन्यास के लेखक को अज्ञात पाठकों से प्रशंसा भरे पत्रों का अंबार लग जाता है—कभी-कभी ये प्रशंसा इतनी अतिरंजित और अंधाधुंध होती है कि प्राप्तकर्ता को डॉ. जॉनसन के उस प्रसिद्ध भाषण की याद आ जाती है जो उन्होंने अभिमानपूर्ण और अनुचित प्रशंसा करने वाले को संबोधित करते हुए दिया था—कभी-कभी ये मात्र कुछ शब्द होते हैं, जिनमें हृदय को "तुरही की ध्वनि की तरह" झकझोर देने की शक्ति होती है, और उनसे उत्पन्न उच्च विनम्रता भविष्य के सभी प्रयासों को ऐसी प्रशंसा के योग्य बनाने के दृढ़ संकल्प को प्रेरित करती है; और कभी-कभी इनमें गुण-दोषों का सच्चा मूल्यांकन होता है, साथ ही उनके स्रोतों का भी, जो एक अनुभवहीन लेखक के लिए आवश्यक आलोचना और सहायता का स्रोत होता है। करर बेल को इन सभी प्रकार के पत्रों का भरपूर लाभ मिला; और उनके स्नेहपूर्ण हृदय, सच्ची समझ और अपने लक्ष्य के प्रति उच्च मानदंड ने प्रत्येक पत्र को उसका उचित मूल्य प्रदान किया। उनके अन्य पत्रों में से, श्री जी. एच. लेवेस को लिखे कुछ पत्र उन्होंने कृपापूर्वक मेरी सेवा में उपलब्ध कराए हैं; और जैसा कि मैं जानता हूँ, मिस ब्रोंटे उनके प्रोत्साहन और सलाह भरे पत्रों को बहुत महत्व देती थीं, इसलिए मैं उनके उत्तरों के अंश, उनकी तिथियों के अनुसार, प्रस्तुत करूँगा, क्योंकि इनसे पता चलेगा कि वे किस प्रकार की आलोचना को महत्व देती थीं। साथ ही, क्रोध से लेकर सहमति और सामंजस्य तक, उनके उत्तरों में उनका ऐसा चरित्र झलकता है जो किसी भी प्रकार की आत्म-प्रशंसा से मुक्त था, उनकी स्पष्ट विनम्रता को दर्शाता है कि उन्होंने वास्तव में क्या अच्छा किया और क्या असफल रहीं। वे मित्रवत रुचि के लिए आभारी थीं और केवल तभी आहत और चिड़चिड़ी होती थीं जब लेखन में लिंगभेद का मुद्दा, जैसा कि उन्हें लगता था, अनुचित या अन्यायपूर्ण तरीके से उठाया जाता था। बाकी के लिए, पत्र स्वयं ही सब कुछ कह देते हैं, जो सुनने की कला जानते हैं, वे मेरे सीमित और कमजोर शब्दों में उनके अर्थ की व्याख्या करने से कहीं बेहतर हैं। श्री लेवेस ने मुझे अपने उस पत्र की निम्नलिखित व्याख्या विनम्रतापूर्वक भेजी है, जिसका उत्तर मिस ब्रोंटे ने दिया है।

“जब ‘जेन आयर’ पहली बार प्रकाशित हुई, तो प्रकाशकों ने मुझे विनम्रतापूर्वक एक प्रति भेजी। इसे पढ़ने के बाद मुझे इतना उत्साह हुआ कि मैं श्री पार्कर के पास गया और उनसे फ्रेज़र पत्रिका के लिए इसकी समीक्षा लिखने का प्रस्ताव रखा। वे एक अज्ञात उपन्यास को इतनी अहमियत देने के लिए राज़ी नहीं हुए—क्योंकि उस समय तक अखबारों ने अपनी पहचान नहीं बनाई थी—लेकिन उन्होंने सोचा कि यह ‘हाल के उपन्यास: अंग्रेज़ी और फ्रेंच’ पर एक समीक्षा के लिए उपयुक्त हो सकता है —जो फ्रेज़र पत्रिका के दिसंबर 1847 अंक में प्रकाशित हुआ था। इसी बीच मैंने मिस ब्रोंटे को पत्र लिखकर बताया कि उनकी पुस्तक ने मुझे कितना आनंदित किया; और उनके जवाब से ऐसा लगता है कि मैंने उन्हें उपदेश दे दिया था।”

जी. एच. लेवेस, एस्क्वायर को।

“6 नवंबर, 1847।”

“प्रिय महोदय, — आपका पत्र मुझे कल प्राप्त हुआ; मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूँ कि मैं उस इरादे की पूरी तरह सराहना करता हूँ जिसके साथ इसे लिखा गया था, और मैं इसकी उत्साहवर्धक प्रशंसा और बहुमूल्य सलाह दोनों के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

“आप मुझे नाटकीयता से सावधान रहने की चेतावनी देते हैं और वास्तविकता से जुड़े रहने का आग्रह करते हैं। जब मैंने पहली बार लिखना शुरू किया, तो आपके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों की सत्यता से मैं इतना प्रभावित हुआ कि मैंने प्रकृति और सत्य को अपना एकमात्र मार्गदर्शक बनाने और उनके पदचिन्हों पर चलने का निश्चय किया; मैंने कल्पना को संयमित किया, रोमांस से परहेज किया, उत्तेजना को दबाया; अत्यधिक चटक रंगों से भी परहेज किया और कुछ ऐसा रचने का प्रयास किया जो कोमल, गंभीर और सच्चा हो।”

“मेरी रचना (एक खंड में एक कहानी) पूरी हो जाने पर, मैंने इसे एक प्रकाशक को दिया। उन्होंने कहा कि यह मौलिक है, प्रकृति के प्रति निष्ठावान है, लेकिन उन्हें इसे स्वीकार करना उचित नहीं लगा; ऐसी रचना बिकेगी नहीं। मैंने लगातार छह प्रकाशकों से संपर्क किया; उन सभी ने मुझसे कहा कि इसमें 'चौंकाने वाली घटनाओं' और 'रोमांचकारी उत्तेजना' की कमी है, यह पुस्तकालयों के लिए उपयुक्त नहीं होगी, और चूंकि कथा साहित्य की सफलता मुख्य रूप से उन्हीं पुस्तकालयों पर निर्भर करती है, इसलिए वे ऐसी रचना को प्रकाशित करने का दायित्व नहीं ले सकते जिसे वहां

अनदेखा कर दिया जाएगा।"

"'जेन आयर' का भी शुरू में इन्हीं कारणों से विरोध हुआ था, लेकिन अंततः उसे स्वीकार कर लिया गया।"

मैं आपसे यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि निंदा से बचने की गुहार लगाऊँ, बल्कि इसलिए कह रहा हूँ ताकि आपका ध्यान कुछ साहित्यिक बुराइयों की जड़ की ओर दिलाया जा सके। यदि आप फ्रेज़र में प्रकाशित होने वाले अपने आगामी लेख में, पुस्तकालयों का समर्थन करने वाले लोगों को कुछ ज्ञानवर्धक बातें बताएँ, तो आप अपनी शक्तियों का सदुपयोग कर सकते हैं।

"आप मुझे यह भी सलाह देते हैं कि मैं अनुभव के क्षेत्र से दूर न भटकूं, क्योंकि कल्पना के क्षेत्र में प्रवेश करते ही मैं कमजोर पड़ जाता हूं; और आप कहते हैं, 'वास्तविक अनुभव हमेशा दिलचस्प होता है, और सभी मनुष्यों के लिए।'"

"मुझे लगता है कि यह भी सच है; लेकिन, महोदय, क्या प्रत्येक व्यक्ति का वास्तविक अनुभव बहुत सीमित नहीं होता? और, यदि कोई लेखक केवल या मुख्य रूप से उसी पर ध्यान केंद्रित करता है, तो क्या वह स्वयं को दोहराने और अहंकारी बनने के खतरे में नहीं पड़ जाता? फिर, कल्पना एक शक्तिशाली, बेचैन शक्ति है, जिसे सुना और प्रयोग किया जाना चाहिए: क्या हम उसकी पुकार के प्रति पूरी तरह बहरे और उसके संघर्षों के प्रति असंवेदनशील बने रहेंगे? जब वह हमें जीवंत चित्र दिखाती है, तो क्या हम उन्हें कभी नहीं देखेंगे और उन्हें पुन: प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं करेंगे? और जब वह वाक्पटु होती है, और हमारे कान में तेजी से और आग्रहपूर्वक बोलती है, तो क्या हम उसके निर्देशानुसार नहीं लिखेंगे?"

मैं इन बिंदुओं पर आपके विचारों के लिए फ्रेजर के अगले अंक को उत्सुकतापूर्वक खोजूंगा। — विश्वास कीजिए, महोदय, आपका आभारी।

"सी. बेल।"

एक लेखिका के रूप में प्रशंसा पाकर प्रसन्न होने के बावजूद, वह उस व्यक्ति को लेकर सतर्क थीं जिससे उन्हें यह प्रशंसा मिली थी; क्योंकि प्रशंसा का बहुत कुछ मूल्य प्रशंसा करने वाले की ईमानदारी और योग्यता पर निर्भर करता था। इसलिए, उन्होंने श्री विलियम्स (जो उनके प्रकाशकों की कंपनी से जुड़े एक सज्जन थे) से यह जानने के लिए संपर्क किया कि श्री लेवेस कौन थे और कैसे व्यक्ति थे। उनके भावी आलोचक के चरित्र के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करने के बाद और उनकी

आलोचना की प्रतीक्षा करते हुए, उनका उत्तर अवश्य पढ़ा जाना चाहिए। उनके उल्लेख के अलावा, इसमें "बेल भाइयों की पहचान" को लेकर उत्पन्न हुई उलझन के कुछ मनोरंजक संकेत और उनकी बहन के प्रति एक अन्य प्रकाशक के व्यवहार का कुछ उल्लेख भी है, जिसका मैं वर्णन करने से परहेज कर रहा हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि ऐसे लोगों के बारे में सच बोलना मानहानि माना जाता है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, एस्क्वायर को।

“10 नवंबर, 1847।”

“प्रिय महोदय, मुझे ब्रिटानिया और सन तो प्राप्त हुए हैं, लेकिन स्पेक्टेटर नहीं मिला, जिसका मुझे काफी अफसोस है, क्योंकि आलोचना, हालांकि सुखद नहीं होती, अक्सर स्वास्थ्यवर्धक होती है।”

श्री लेवेस के बारे में आपकी जानकारी के लिए धन्यवाद। यह जानकर खुशी हुई कि वे एक चतुर और ईमानदार व्यक्ति हैं: ऐसे में, मैं उनके फैसले का धैर्यपूर्वक इंतजार कर सकता हूँ; भले ही वह मेरे खिलाफ जाए, मैं शिकायत नहीं करूँगा; योग्यता और ईमानदारी को निंदा करने का अधिकार है, जहाँ उन्हें लगता है कि निंदा उचित है। हालाँकि, आपकी बातों से मुझे उम्मीद है कि कम से कम मुझे कुछ हद तक मंजूरी मिल जाएगी।

"बेल बंधुओं की पहचान के संबंध में विभिन्न अटकलों का आपका विवरण मुझे बहुत मनोरंजक लगा: यदि यह पहेली सुलझ जाती, तो शायद इसे सुलझाने का प्रयास व्यर्थ ही साबित होता; लेकिन मैं इसे यहीं छोड़ देता हूँ; चुप रहना हमारे लिए उचित है, और निश्चित रूप से इससे किसी और को कोई हानि नहीं होती।"

डबलिन पत्रिका में कविताओं की उस छोटी सी किताब पर नज़र डालने वाले समीक्षक ने अनुमान लगाया कि तथाकथित तीन पात्र वास्तव में एक ही व्यक्ति थे, जो अत्यधिक आत्मसम्मान से ग्रस्त थे और परिणामस्वरूप अपने गुणों के बारे में कुछ अधिक ही गंभीर धारणा रखते थे। उन्हें लगा कि ये गुण एक व्यक्ति में समाहित नहीं हो सकते, इसलिए उन्होंने स्वयं को तीन भागों में विभाजित कर लिया, शायद आश्चर्यचकित होने वाली जनता की भावनाओं का ध्यान रखते हुए! समीक्षक का यह विचार बहुत ही अनोखा और प्रभावशाली था, लेकिन सटीक नहीं। हम तीन हैं।

एलिस और एक्टन की गद्य रचना जल्द ही प्रकाशित होगी: वास्तव में, यह बहुत पहले ही प्रकाशित हो जानी चाहिए थी; क्योंकि पिछले अगस्त की शुरुआत में ही

इसके पहले प्रूफ-शीट छप चुके थे, इससे पहले कि करर बेल ने "जेन आयर" की पांडुलिपि आपके हाथों में सौंपी हो। हालाँकि, श्रीमान — — का व्यवसाय करने का तरीका स्मिथ और एल्डर जैसा नहीं है; — — स्ट्रीट पर एक अलग ही भावना हावी है, जो 65, कॉर्नहिल के संचालन से भिन्न है। . . . मेरे रिश्तेदारों को अत्यधिक विलंब और टालमटोल का सामना करना पड़ा है, जबकि मुझे एक ऐसे प्रबंधन के लाभों को स्वीकार करना होगा जो व्यावसायिक और सज्जन, ऊर्जावान और विचारशील दोनों है।

मैं जानना चाहता हूँ कि क्या श्रीमान — — अक्सर मेरे रिश्तेदारों के साथ ऐसा ही व्यवहार करते हैं, या यह उनकी इस हरकत का एक अपवाद है। क्या आप जानते हैं, और क्या आप मुझे उनके बारे में कुछ बता सकते हैं? कृपया मुझे सीधे मुद्दे पर आने के लिए क्षमा करें, क्योंकि मैं कुछ जानना चाहता हूँ: यदि मेरे प्रश्न अनावश्यक लगें, तो आप निश्चित रूप से उनका उत्तर देने से मना कर सकते हैं। — आपका सादर,

सी. बेल।"

जी. एच. लेवेस, एस्क्वायर को।

22 नवंबर, 1847।

"प्रिय महोदय, मैंने अब 'रैनथोर्प' पढ़ लिया है। मुझे यह एक-दो दिन पहले तक नहीं मिल पाया था; लेकिन आखिरकार मुझे यह मिल गया और मैंने इसे पढ़ लिया; और 'रैनथोर्प' को पढ़कर मैंने एक नई किताब पढ़ी है, – यह किसी अन्य पुस्तक का पुनर्मुद्रण नहीं है – किसी अन्य पुस्तक का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि एक बिल्कुल नई किताब है।"

मुझे पता ही नहीं था कि अब ऐसी किताबें भी लिखी जाती हैं। यह लोकप्रिय काल्पनिक रचनाओं से बिलकुल अलग है: यह मन को नए ज्ञान से भर देती है। आपका अनुभव और आपकी मान्यताएँ पाठक की बन जाती हैं; और कम से कम एक लेखक के लिए, इनका एक अनूठा महत्व और रुचि होती है। 'रैनथोर्प' पढ़ने से पहले मेरे जो विचार थे, उनसे अलग विचारों के साथ मैं अब 'जेन आयर' पर आपकी आलोचना का इंतजार कर रहा हूँ।

"आप मेरे लिए अजनबी थे। मैं आपका विशेष सम्मान नहीं करता था। मुझे नहीं लगता था कि आपकी प्रशंसा या निंदा का कोई विशेष महत्व होगा। मुझे निंदा करने या अनुमोदन करने के आपके अधिकार के बारे में बहुत कम जानकारी थी। अब मुझे

इन बातों की जानकारी है।”

“आप कठोर होंगे; आपके पिछले पत्र से मुझे यही समझ आया। खैर! मैं आपकी कठोरता से कुछ अच्छा निकालने की कोशिश करूंगा: और वैसे भी, हालांकि अब मुझे पूरा विश्वास है कि आप एक न्यायप्रिय, विवेकशील व्यक्ति हैं, फिर भी, नश्वर होने के नाते, आप भी गलती कर सकते हैं; और यदि आपकी आलोचना का कोई भी हिस्सा मुझे बहुत बुरी तरह से आहत करता है - मुझे असहनीय पीड़ा देता है - तो मैं फिलहाल उस पर विश्वास नहीं करूंगा और उसे तब तक के लिए टाल दूंगा, जब तक मैं उसे बिना पीड़ा के सहन करने में सक्षम न हो जाऊं। - प्रिय महोदय, आपका अत्यंत आदरपूर्वक।”

सी. बेल।"

दिसंबर 1847 में, "वुथरिंग हाइट्स" और "एग्नेस ग्रे" कहानियाँ प्रकाशित हुईं। इनमें से पहली कहानी में दुष्ट और असाधारण पात्रों के जिस सशक्त चित्रण का वर्णन है, उससे कई पाठक दंग रह गए। वहीं, कुछ अन्य पाठकों ने क्रूर और खूंखार अपराधियों पर भी दिखाई गई अद्भुत प्रतिभा को आकर्षित किया है। इस कहानी के बारे में मिस ब्रोंटे खुद कहती हैं, “मानव चरित्र के चित्रण की बात हो तो मामला अलग है। मैं यह स्वीकार करती हूँ कि उन्हें अपने बीच रहने वाले किसानों के बारे में उतना ही व्यावहारिक ज्ञान था जितना किसी नन को अपने मठ के द्वार से गुजरने वाले ग्रामीण लोगों के बारे में होता है। मेरी बहन का स्वभाव मिलनसार नहीं था: परिस्थितियों ने उनके एकांतवास की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया; चर्च जाने या पहाड़ियों पर टहलने के अलावा, वह शायद ही कभी घर की दहलीज पार करती थीं। हालाँकि उनके आसपास के लोगों के प्रति उनके मन में स्नेह था, फिर भी उन्होंने कभी उनसे संपर्क नहीं किया, और कुछ ही अपवादों को छोड़कर, कभी किया भी नहीं। फिर भी वह उन्हें जानती थीं, उनके तौर-तरीके, उनकी भाषा और उनके पारिवारिक इतिहास को जानती थीं; वह उनकी बातें रुचि से सुन सकती थीं और उनके बारे में विस्तार से, सटीक और सजीव रूप से बता सकती थीं; लेकिन उनसे उनका शायद ही कभी कोई संवाद होता था। इसलिए, उनके मन में उनके बारे में जो कुछ भी वास्तविक जानकारी थी, वह केवल उन दुखद और भयानक लक्षणों तक ही सीमित थी, जिन्हें हर किसी के गुप्त इतिहास को सुनकर भी नहीं समझा जा सकता था। उस असभ्य परिवेश की छाप कभी-कभी स्मृति पर पड़ ही जाती है। उसकी कल्पना, जो प्रकाशमान से अधिक गंभीर और

चंचल से अधिक शक्तिशाली थी, ने ऐसे ही गुणों में वह सामग्री पाई जिससे उसने हीथक्लिफ, अर्नशॉ और कैथरीन जैसे पात्रों की रचना की। इन पात्रों को गढ़ने के बाद, उसे पता ही नहीं चला कि उसने क्या किया है। यदि पांडुलिपि में लिखी उसकी रचना को पढ़ने वाला श्रोता इतने निर्दयी और निर्दयी स्वभावों, इतनी खोई हुई और पतित आत्माओं के कठोर प्रभाव से कांप उठता; यदि यह शिकायत की जाती कि कुछ सजीव और भयावह दृश्यों को मात्र सुनने मात्र से रात की नींद उड़ जाती है और दिन में मानसिक शांति भंग हो जाती है, तो एलिस बेल यह सोचकर हैरान हो जाती कि इसका क्या अर्थ है और शिकायतकर्ता पर बनावटीपन का संदेह करती। यदि वह जीवित रहती, तो उसका मन स्वयं एक मजबूत वृक्ष की तरह विकसित हो जाता—अधिक ऊँचा, अधिक सीधा, अधिक विस्तृत—और उसके परिपक्व फल अधिक मधुरता और अधिक चमक के साथ खिल उठते; लेकिन उस मन पर केवल समय और अनुभव का ही प्रभाव था; वह अन्य बुद्धि के प्रभाव के अधीन नहीं थी।

चाहे यह उचित हो या अनुचित, दोनों छोटी मिस ब्रोंटे बहनों की रचनाएँ प्रकाशन के समय उतनी सराही नहीं गईं। “आलोचकों ने उनके साथ न्याय नहीं किया। ‘वुथरिंग हाइट्स’ में प्रकट हुई अपरिपक्व, लेकिन वास्तविक प्रतिभा को शायद ही पहचाना गया; इसके महत्व और स्वरूप को गलत समझा गया; इसके लेखक की पहचान को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया: यह कहा गया कि यह उसी कलम का एक प्रारंभिक और कमज़ोर प्रयास था जिसने ‘जेन आयर’ की रचना की थी।” ... “अन्यायपूर्ण और गंभीर त्रुटि! पहले तो हम इस पर हँसे, लेकिन अब मुझे इस पर गहरा अफसोस है।”

इसके बाद शार्लोट ब्रोंटे का जीवन दो समानांतर धाराओं में विभाजित हो जाता है - एक ओर करर बेल, लेखिका के रूप में उनका जीवन; दूसरी ओर शार्लोट ब्रोंटे, स्त्री के रूप में उनका जीवन। प्रत्येक चरित्र के लिए अलग-अलग कर्तव्य थे - एक-दूसरे के विरोधी नहीं; असंभव नहीं, लेकिन सामंजस्य स्थापित करना कठिन। जब कोई पुरुष लेखक बनता है, तो उसके लिए यह शायद केवल रोजगार में बदलाव होता है। वह उस समय का एक हिस्सा लेता है जो अब तक किसी अन्य अध्ययन या कार्य में लगा रहता था; वह विधि या चिकित्सा पेशे का कुछ हिस्सा छोड़ देता है, जिसमें उसने अब तक दूसरों की सेवा करने का प्रयास किया है, या उस व्यापार या व्यवसाय का कुछ हिस्सा छोड़ देता है जिससे वह जीविका कमाने के लिए संघर्ष कर रहा था; और कोई

दूसरा व्यापारी, वकील या डॉक्टर उसकी खाली जगह ले लेता है, और शायद उतना ही अच्छा काम करता है जितना कि वह। लेकिन बेटी, पत्नी या माँ के शांत, नियमित कर्तव्यों को कोई और उतनी अच्छी तरह से नहीं निभा सकता जितना कि वह जिसे ईश्वर ने उस विशेष स्थान को भरने के लिए नियुक्त किया है: जीवन में एक महिला का मुख्य कार्य शायद ही उसकी अपनी पसंद पर छोड़ा जाता है; और न ही वह अपनी असाधारण प्रतिभाओं के उपयोग के कारण एक व्यक्ति के रूप में अपने ऊपर आने वाली घरेलू जिम्मेदारियों से पीछे हट सकती है। फिर भी, उसे अपनी प्रतिभाओं के कारण उत्पन्न अतिरिक्त जिम्मेदारी से पीछे नहीं हटना चाहिए। उसे अपनी प्रतिभा को छुपाना नहीं चाहिए; यह दूसरों के उपयोग और सेवा के लिए है। उसे विनम्र और निष्ठावान भाव से उस कार्य को करने के लिए परिश्रम करना चाहिए जो असंभव नहीं है, अन्यथा ईश्वर ने उसे यह कार्य करने के लिए नियुक्त नहीं किया होता।

मैंने उन बातों को शब्दों में व्यक्त किया है जिन्हें शार्लोट ब्रोंटे ने अपने कार्यों में उतारा था।

वर्ष 1848 की शुरुआत घरेलू संकट से भरी दुखद परिस्थितियों से हुई। यह आवश्यक है, चाहे कितना भी कष्टदायी क्यों न हो, कि पाठक को उस समय पिता और बहनों के हृदयों में व्याप्त पीड़ा की निरंतर याद दिलाई जाए। यह उचित ही है कि वे नासमझ आलोचक, जिन्होंने ब्रोंटे बहनों की कहानियों में जीवन के दुखद और निराशाजनक चित्रण की आलोचना की, यह जान लें कि उनके द्वारा सहे गए लंबे कष्टों की जीवंत स्मृति से प्रेरित होकर ही उन्होंने ये शब्द कहे थे। यह भी उचित ही है कि वे लोग जिन्होंने अश्लीलता के चित्रण पर आपत्ति जताई और घृणा से उसका विरोध किया, मानो ऐसी धारणाएँ लेखकों की देन हों, यह जान लें कि उन्होंने जो कुछ देखा, उसे कल्पना से नहीं, आंतरिक विचारों से नहीं, बल्कि कठोर, क्रूर तथ्यों से, जो बाहरी जीवन ने कई महीनों और वर्षों तक उनकी इंद्रियों पर थोपे थे, अपने अंतरात्मा की कठोर पुकार का पालन करते हुए लिखा। वे गलत हो सकते हैं। वे लेखन में गलती कर सकते हैं, क्योंकि उनकी भावनाएँ इतनी प्रबल थीं कि वे जीवन के बारे में जो लिखा, उसके अलावा कुछ और लिख ही नहीं सकते थे। यह संभव है कि केवल अच्छे और सुखद लोगों का वर्णन करना और उन्हें केवल अच्छे और सुखद कार्य करते हुए दिखाना बेहतर होता (ऐसे में वे शायद ही कभी लिख पाते): मैं बस इतना कहना चाहती हूँ कि मुझे विश्वास है कि इतनी अद्भुत प्रतिभाओं से संपन्न महिलाओं ने कभी

भी इतनी जिम्मेदारी की भावना के साथ उनका उपयोग नहीं किया। जहाँ तक गलतियों की बात है, अब लेखिकाओं के रूप में और महिलाओं के रूप में भी, ईश्वर के न्याय-सिंहासन के समक्ष खड़े हो जाओ।

"11 जनवरी, 1848।"

"हाल ही में घर पर हमारा जीवन कुछ खास सुकून भरा नहीं रहा है। ब्रैनवेल ने किसी तरह पुराने मोहल्ले से और पैसे निकाल लिए हैं और हमारी जिंदगी को दुखमय बना दिया है। ... पापा दिन-रात परेशान रहते हैं; हमें चैन नहीं मिलता, वो हमेशा बीमार रहते हैं; दो-तीन बार दौरे पड़ने से गिर भी चुके हैं; अंत में क्या होगा, भगवान ही जानते हैं। लेकिन ऐसा कौन है जिसके जीवन में कोई कमी, कोई मुसीबत, कोई राज़ न हो? बस यही करना बाकी है और भगवान की दी हुई हर मुसीबत को धैर्य से सहना है।"

मुझे लगता है कि उन्होंने पिछले साल दिसंबर में प्रकाशित "हाल के उपन्यासों" पर श्री लेवेस की समीक्षा पढ़ी होगी, लेकिन मुझे 12 जनवरी, 1848 को उनके द्वारा लिखे गए पत्र तक इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

"प्रिय महोदय, आपकी उदार समीक्षा के लिए मैं आपका तहे दिल से धन्यवाद करती हूँ; और मैं दोहरी संतुष्टि के साथ अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, क्योंकि अब मुझे पूरा विश्वास है कि यह प्रशंसा न तो अनावश्यक है और न ही दखलअंदाजी। आपने 'जेन आयर' पर कठोर टिप्पणी नहीं की; आप बहुत उदार थे। मुझे खुशी है कि आपने निजी तौर पर मेरी कमियों को स्पष्ट रूप से बताया, क्योंकि सार्वजनिक समीक्षा में आपने उनका इतना हल्का उल्लेख किया है कि शायद मैं उन्हें बिना ज्यादा सोचे-समझे अनदेखा कर देती।"

"मैं नए कार्यों को शुरू करने में सावधानी बरतने के बारे में आपकी चेतावनी का पालन करने का इरादा रखता हूँ; मेरे पास सामग्री का भंडार प्रचुर नहीं है, बल्कि बहुत कम है; और इसके अलावा, न तो मेरा अनुभव, न ही मेरी योग्यताएँ और न ही मेरी क्षमताएँ इतनी विविध हैं कि मैं नियमित लेखक बन सकूँ। मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूँ, क्योंकि फ्रेज़र में आपके लेख ने मेरे मन में एक असहज धारणा उत्पन्न कर दी है कि आप 'जेन आयर' के लेखक के बारे में उनकी योग्यता से कहीं अधिक अच्छा सोचते हैं; और मैं चाहूँगा कि आप मेरे बारे में चापलूसी भरी राय के बजाय सही राय रखें, भले ही मैं आपसे कभी न मिलूँ।"

"अगर मैं कभी कोई और किताब लिखूँ, तो मुझे लगता है कि उसमें 'मेलोड्रामा' जैसा कुछ नहीं होगा; मुझे ऐसा लगता है, लेकिन मैं निश्चित नहीं हूँ। मुझे यह भी लगता है कि मैं मिस ऑस्टेन की 'कोमल आँखों' से झलकने वाली सलाह का पालन करने का प्रयास करूँगा, 'अधिक संक्षिप्त और अधिक संयमित होने की'; लेकिन मैं इस बारे में भी निश्चित नहीं हूँ। जब लेखक सबसे अच्छा लिखते हैं, या कम से कम जब वे सबसे धाराप्रवाह लिखते हैं, तो उनमें एक प्रभाव जागृत होता प्रतीत होता है, जो उनका स्वामी बन जाता है—जो अपनी ही राह पर चलता है—अपने अलावा सभी आदेशों को दरकिनार कर देता है, कुछ शब्दों को निर्देशित करता है, और उनके प्रयोग पर जोर देता है, चाहे वे उग्र हों या संयमित; पात्रों को नया रूप देता है, घटनाओं को अप्रत्याशित मोड़ देता है, सावधानीपूर्वक विकसित पुराने विचारों को नकारता है, और अचानक नए विचारों का सृजन और उन्हें अपना लेता है।"

क्या ऐसा नहीं है? और क्या हमें इस प्रभाव का प्रतिकार करने का प्रयास करना चाहिए? क्या हम वास्तव में इसका प्रतिकार कर सकते हैं?

"मुझे खुशी है कि आपकी एक और रचना जल्द ही प्रकाशित होने वाली है; मुझे यह देखने की बहुत उत्सुकता होगी कि क्या आप अपने सिद्धांतों के अनुरूप लिखेंगे और अपने सिद्धांतों को विकसित करेंगे। आपने 'रैनथोर्प' में ऐसा पूरी तरह से नहीं किया—कम से कम उत्तरार्ध में तो नहीं; लेकिन मुझे लगता है कि पहला भाग लगभग त्रुटिहीन था; उसमें सार, सत्य और सार्थकता थी, जिसने पुस्तक को उत्कृष्ट मूल्य प्रदान किया; लेकिन ऐसा लिखने के लिए बहुत कुछ देखा और जाना होना चाहिए, और मैंने बहुत कम देखा और जाना है।"

"आपको मिस ऑस्टेन इतनी पसंद क्यों हैं? मैं इस बात को लेकर असमंजस में हूँ। आपको ऐसा कहने के लिए किसने प्रेरित किया कि आप वेवरली के उपन्यासों में से किसी के बजाय 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' या 'टॉम जोन्स' लिखना पसंद करतीं?"

"मैंने आपकी वह पंक्ति पढ़ने से पहले 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' नहीं देखी थी, और फिर मैंने वह किताब ले ली। और मुझे क्या मिला? एक साधारण चेहरे का सटीक, डैगरेओटाइप किया हुआ चित्र; करीने से बाड़ लगाया हुआ, सुव्यवस्थित बगीचा, साफ-सुथरी क्यारियों और नाजुक फूलों से सजा हुआ; लेकिन एक उज्ज्वल, जीवंत चेहरे की झलक नहीं, न खुला मैदान, न ताजी हवा, न नीली पहाड़ी, न कोई सुंदर झरना। मुझे शायद ही उनके घर में रहने का मन करे, उन महिलाओं और पुरुषों के

साथ, उनके सुंदर लेकिन तंग घरों में। ये टिप्पणियाँ शायद आपको परेशान करेंगी, लेकिन मैं यह जोखिम उठा रहा हूँ।”

अब मैं जॉर्ज सैंड की प्रशंसा को समझ सकती हूँ; क्योंकि हालाँकि मैंने उनकी कोई भी ऐसी रचना नहीं देखी जिसकी मैं पूरी तरह से प्रशंसा करूँ (यहाँ तक कि 'कॉन्सुएलो', जो सबसे अच्छी है, या जो मैंने पढ़ी है, वह भी मुझे अद्भुत उत्कृष्टता के साथ विचित्र अतिशयोक्ति का संयोजन लगती है), फिर भी उनके पास एक ऐसी बौद्धिक समझ है, जिसे मैं पूरी तरह से समझ तो नहीं सकती, लेकिन मैं उसका बहुत सम्मान करती हूँ; वह बुद्धिमान और गहन हैं; - मिस ऑस्टेन केवल चतुर और observant हैं।

क्या मैं गलत हूँ—या आपने जल्दबाजी में कुछ कह दिया? अगर आपके पास समय हो, तो मुझे इस विषय पर और अधिक जानने में खुशी होगी; अगर नहीं, या अगर आपको लगता है कि ये प्रश्न तुच्छ हैं, तो उत्तर देने की जहमत न उठाएँ। आपका सादर,

सी. बेल।"

जी. एच. लेवेस, एस्क्वायर को।

18 जनवरी, 1848।

“प्रिय महोदय, मुझे एक और पत्र लिखना होगा, हालाँकि मेरा इरादा आपको इतनी जल्दी दोबारा परेशान करने का नहीं था। मुझे आपसे सहमत भी होना है और असहमत भी होना है।”

“आपने ‘प्रभाव’ के विषय पर मेरी असभ्य टिप्पणियों को सुधारा; ठीक है, मैं उस प्रभाव के परिणामों की आपकी परिभाषा को स्वीकार करता हूँ; मैं इसके नियमन के लिए आपके नियमों की बुद्धिमत्ता को पहचानता हूँ। . . .”

“आपके पत्र में आगे एक अजीबोगरीब उपदेश है! आप कहते हैं कि मुझे इस तथ्य से परिचित होना चाहिए कि ‘मिस ऑस्टेन एक कवयित्री नहीं हैं, उनमें कोई ‘भावुकता’ नहीं है (आप तिरस्कारपूर्वक इस शब्द को इनवर्टेड कॉमा में रखते हैं), कोई वाक्पटुता नहीं है, कविता का कोई मोहक उत्साह नहीं है,’ — और फिर आप आगे कहते हैं, मुझे ‘उन्हें महानतम कलाकारों में से एक, मानवीय चरित्र के महानतम चित्रकारों में से एक, और किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधनों की सबसे सूक्ष्म समझ रखने वाली लेखिकाओं में से एक के रूप में स्वीकार करना सीखना

चाहिए।'

मैं केवल अंतिम बिंदु को ही स्वीकार करूंगा।

“क्या कविता के बिना कोई महान कलाकार हो सकता है?”

“जिसे मैं महान कलाकार कहता हूँ—जिसके आगे मैं झुकता हूँ—वह दैवीय वरदान से रहित नहीं हो सकता। परन्तु मुझे यकीन है कि कविता से आपका अर्थ मेरे अर्थ से भिन्न है, जैसे 'भाव' से होता है। मेरी समझ में कविता ही है जो उस मर्दाना जॉर्ज सैंड को ऊँचा उठाती है और किसी खुरदरी चीज़ को दिव्य बना देती है। मेरी समझ में 'भाव'—छिपी हुई, पर सच्ची भावना—वह है जो उस दुर्जेय थैकरे से विष निकालती है और संक्षारक विष को शुद्ध करने वाले अमृत में बदल देती है।”

“अगर थैकरे के विशाल हृदय में अपने समुदाय के लिए गहरी भावना न होती, तो वे उन्हें नष्ट करने में प्रसन्न होते; लेकिन मेरा मानना है कि वे केवल सुधार करना चाहते हैं। जैसा कि आप कहते हैं, मिस ऑस्टेन ‘भावुकता’ और कविता से रहित हैं, शायद वे समझदार और वास्तविक हैं (सच्चाई से भी अधिक वास्तविक), लेकिन वे महान नहीं हो सकतीं।”

मैं आपके क्रोध के आगे झुकता हूँ, जिसे मैंने अब भड़काया है (क्या मैंने आपकी प्रियतमा की पूर्णता पर सवाल नहीं उठाया है?); यह तूफान भले ही गुजर जाए। फिर भी, जब भी मुझे समय मिलेगा (मुझे नहीं पता कि कब, क्योंकि मेरे पास किसी पुस्तकालय तक पहुँच नहीं है), मैं आपकी सलाह के अनुसार मिस ऑस्टेन की सभी रचनाओं का लगन से अध्ययन करूँगा। . . . कृपया मुझे क्षमा करें कि मैं हमेशा आपकी तरह नहीं सोच पाता, और फिर भी मुझ पर विश्वास करें, आपका आभारी।

सी. बेल।"

श्री विलियम्स को लिखे पत्र से निम्नलिखित अंश को शामिल करने से पहले मैं थोड़ा हिचकिचाया, लेकिन यह अंश उनके व्यक्तित्व की विशिष्ट विशेषताओं को दर्शाता है; और इसमें निहित आलोचना (चाहे हम इससे सहमत हों या नहीं) इतनी रोचक है कि मैंने इसे शामिल करने का निर्णय लिया है, भले ही इससे पत्रों का कालानुक्रमिक क्रम बिगड़ जाए, ताकि इस पत्राचार के उस हिस्से को पूरा किया जा सके जो उनके चरित्र के विशुद्ध बौद्धिक पक्ष को दर्शाता है और बहुत मूल्यवान है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, बी.एस.क्यू. को।

26 अप्रैल, 1848।

“मेरे प्रिय महोदय, मैंने अभी ‘रोज़, ब्लैंच और वायलेट’ पढ़ी है, और मैं यथासंभव आपको इसके बारे में अपने विचार बताऊँगी। क्या यह ‘रैनथोर्प’ से बेहतर है, यह मैं नहीं जानती, क्योंकि मुझे ‘रैनथोर्प’ बहुत पसंद आई थी; लेकिन फिर भी, इसमें अच्छी बातें अधिक हैं। मुझे इसमें वही शक्ति दिखाई देती है, लेकिन अधिक विकसित रूप में।”

“लेखक का व्यक्तित्व हर पृष्ठ पर झलकता है, जो इस पुस्तक को रोचक बनाता है—किसी भी कहानी से कहीं अधिक रोचक; लेकिन लेखक के स्वयं के शब्द ही उसके पात्रों के मुख से कहलवाए गए शब्दों से कहीं अधिक आकर्षक हैं। मेरी राय में, जी. एच. लेवेस इस पुस्तक का सबसे मौलिक पात्र है। . . . उपदेशात्मक अंश मुझे सर्वश्रेष्ठ लगते हैं—कहीं अधिक सर्वश्रेष्ठ; उनमें दिए गए कुछ विचार अत्यंत तीक्ष्ण और गहन हैं, और उन्हें पाठक के समक्ष स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। वे एक न्यायप्रिय विचारक हैं; वे एक दूरदर्शी पर्यवेक्षक हैं; उनके सिद्धांत में ज्ञान है, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनके व्यवहार में ऊर्जा है। लेकिन फिर भी, पढ़ते समय आप अक्सर उनसे क्यों चिढ़ जाते हैं? वे सिखाते समय अपने श्रोता को ऐसा कैसे महसूस करा देते हैं मानो उनका काम प्रतिपादित सिद्धांतों को चुपचाप ग्रहण करना नहीं, बल्कि उनका खंडन करना हो? आप स्वीकार करते हैं कि वे आपको शुद्ध सत्य के रत्न प्रदान करते हैं; फिर भी आप उनमें लगातार त्रुटियाँ क्यों खोजते रहते हैं?”

“श्री लेवेस, मुझे लगता है, अपनी प्रतिभा और ईमानदारी के बावजूद, व्यवहार में कुछ कमियाँ जरूर रखते होंगे; उनमें कुछ हद तक हठधर्मिता होगी; कभी-कभी उनमें थोड़ा अधिक आत्मविश्वास भी झलकता होगा। यह सब आपको किताब पढ़ते समय लगता है; लेकिन जब आप किताब बंद करके रख देते हैं और कुछ मिनट बैठकर अपने विचारों को इकट्ठा करते हैं और अपनी धारणाओं को आत्मसात करते हैं, तो आपके मन में सबसे प्रबल भावना एक ऐसे उत्कृष्ट बुद्धि और सच्चे हृदय वाले, उच्च क्षमताओं और दृढ़ सिद्धांतों वाले व्यक्ति से पूर्ण परिचय प्राप्त करने की खुशी की होती है। मुझे आशा है कि वे जल्द ही एक और किताब प्रकाशित करेंगे। उनके भावनात्मक दृश्य कुछ हद तक एकसमान रूप से उग्र हैं: क्या अधिक संयमित शैली से अधिक प्रभावशाली परिणाम नहीं मिलते? कभी-कभी श्री लेवेस फ्रांसीसी कलम का प्रयोग करते हैं, इस मामले में वे श्री थैकरे से भिन्न हैं, जो हमेशा अंग्रेजी कलम का प्रयोग करते हैं। हालांकि, फ्रांसीसी कलम श्री लेवेस को ज्यादा गुमराह नहीं करती; वे इसे

ब्रिटिश शैली में चलाते हैं। उनकी उत्कृष्ट लेखन शैली के लिए उन्हें हार्दिक बधाई। किताब!

“वह लंदन के साहित्यिक समाज, और विशेषकर उसके महिला वर्ग का कोई आकर्षक चित्रण प्रस्तुत नहीं करते; लेकिन मुझे लगता है कि सभी गुट, चाहे वे साहित्यिक हों, वैज्ञानिक हों, राजनीतिक हों या धार्मिक हों, सत्य को बनावटीपन में बदलने की प्रवृत्ति रखते हैं। जब लोग किसी गुट से जुड़ते हैं, तो मुझे लगता है कि वे कुछ हद तक उसी गुट के लिए लिखते, बोलते, सोचते और जीते हैं; यह एक कष्टदायक और संकुचित करने वाली मजबूरी है। मुझे उम्मीद है कि प्रेस और जनता इस पुस्तक को वह स्वागत देंगे जिसकी यह हकदार है, और वह स्वागत बहुत ही सौहार्दपूर्ण होगा, जो बुलवर या डी'इजराइली की रचनाओं से कहीं अधिक होगा।”

आइए करर बेल से शार्लेट ब्रोंटे की ओर लौटें। हॉवर्थ में सर्दियाँ बीमारी का मौसम थीं। गाँव वालों में इन्फ्लूएंजा फैला हुआ था, और जहाँ पादरी की बेटियों की उपस्थिति की वास्तव में आवश्यकता थी, वे हमेशा मौजूद रहती थीं, हालाँकि वे केवल सामाजिक मुलाकातों के लिए चर्च आने से कतराती थीं। वे स्वयं भी इस महामारी से पीड़ित थीं; ऐनी तो बुरी तरह प्रभावित हुई थी, क्योंकि उसे खांसी और बुखार था, जिससे उसकी बड़ी बहनें उसके बारे में बहुत चिंतित थीं।

इसमें कोई शक नहीं कि भीड़भाड़ वाले कब्रिस्तान के पास होने से पादरी का घर अस्वच्छ हो गया था और वहाँ रहने वालों में कई बीमारियाँ फैल गईं। श्री ब्रोंटे ने हॉवर्थ की अस्वच्छ स्थिति को स्वास्थ्य बोर्ड के सामने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से पेश किया; और उनके अधिकारियों के आवश्यक निरीक्षण के बाद, उन्हें यह सिफारिश मिली कि कब्रिस्तान में भविष्य में किसी भी तरह के दफ़नाने पर रोक लगा दी जाए, पहाड़ी पर एक नया कब्रिस्तान खोला जाए, और हर घर में पानी की आपूर्ति की व्यवस्था की जाए, ताकि थकी-हारी गृहिणियों को सैकड़ों गज दूर से एक खड़ी सड़क पर बाल्टी भर पानी न लाना पड़े। लेकिन करदाताओं ने उनकी बात नहीं मानी; क्योंकि कई मामलों में, संख्या गुणवत्ता पर भारी पड़ जाती है, और संख्या बुद्धि पर। इस तरह हम देखते हैं कि हॉवर्थ में बीमारियाँ अक्सर टाइफाइड का रूप ले लेती थीं, और तरह-तरह के बुखार वहाँ बार-बार आते रहते थे।

फरवरी 1848 में, लुई फिलिप को गद्दी से हटा दिया गया। उस समय घटी घटनाओं के त्वरित क्रम ने मिस ब्रोंटे को इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करने के

लिए प्रेरित किया, जो उन्होंने मिस वूलर को संबोधित एक पत्र में लिखे थे, जिसकी तिथि 31 मार्च थी।

मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं चाहता था कि काश मेरा भाग्य बीते युद्ध के अशांत समय में होता, और उसकी रोमांचक घटनाओं में मुझे एक तरह का उत्तेजक आकर्षण दिखाई देता था, जिसके बारे में सोचकर मेरी धड़कनें तेज हो जाती थीं। मुझे याद है, शायद थोड़ा अधीर होकर, कि आप उन विषयों पर मेरी भावनाओं से पूरी तरह सहमत नहीं थे; कि आपने मेरी आकांक्षाओं और अटकलों को बहुत शांति से सुना, और आपको बिल्कुल भी ऐसा नहीं लगा कि धधकती तलवारें स्वर्ग में कोई सुखद चीज़ हो सकती हैं। अब मैं जवानी से आगे निकल चुका हूँ; और, हालाँकि मैं यह कहने की हिम्मत नहीं करता कि मैं उसके सभी भ्रमों से बाहर निकल चुका हूँ — कि जीवन से रोमांस पूरी तरह से गायब हो गया है — सच्चाई से पर्दा हट गया है, और मैं दोनों को नग्न वास्तविकता में देखता हूँ — फिर भी, निश्चित रूप से, कई चीजें वैसी नहीं हैं जैसी दस साल पहले थीं: और, बाकी सब के अलावा, युद्ध की शान-शौकत ने मेरी आँखों में अपनी काल्पनिक चमक पूरी तरह खो दी है। मुझे अब भी कोई संदेह नहीं है कि नैतिक भूकंपों का झटका राष्ट्रों और व्यक्तियों दोनों में जीवन की एक जीवंत भावना को जगाता है; कि व्यापक राष्ट्रीय स्तर पर खतरों का डर, लोगों के दिमाग को क्षण भर के लिए विचलित कर देता है। छोटे-मोटे निजी खतरों पर चिंता जताते हुए, वे कुछ समय के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपना लेते हैं; लेकिन मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उथल-पुथल भरी क्रांतियाँ दुनिया को उसकी सारी अच्छाइयों में वापस धकेल देती हैं, सभ्यता को रोकती हैं, समाज के सबसे निचले तबके को सामने लाती हैं; संक्षेप में, मुझे लगता है कि विद्रोह और युद्ध राष्ट्रों के लिए गंभीर रोग हैं, और उनकी प्रवृत्ति हिंसा के माध्यम से उन देशों की जीवन शक्ति को समाप्त करने की है जहाँ वे घटित होते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इंग्लैंड उन ऐंठन, ऐंठन और उन्माद के दौरों से बच जाए जो इस समय महाद्वीप को विकृत कर रहे हैं और आयरलैंड को धमकी दे रहे हैं। मुझे फ्रांसीसियों और आयरिश लोगों से कोई सहानुभूति नहीं है। जर्मनों और इटालियंस के साथ मेरा मामला अलग है; उतना ही अलग जितना स्वतंत्रता का प्रेम व्यभिचार की लालसा से अलग है।

उसका जन्मदिन आ गया। उसने उस सहेली को पत्र लिखा जिसका जन्मदिन उसके जन्मदिन से एक सप्ताह बाद था; हमेशा की तरह पत्र लिखा; लेकिन, उसके

द्वारा किए गए कार्यों को ध्यान में रखते हुए, हम उसके विचारों और एक या दो साल पहले के विचारों में अंतर देख सकते हैं, जब उसने कहा था "मैंने कुछ नहीं किया।" उसके मन में "कुछ किया है" का एक मामूली एहसास अवश्य रहा होगा, जैसा कि उसने इस वर्ष लिखा: —

“अब मैं बत्तीस साल का हो गया हूँ। जवानी चली गई – पूरी तरह से चली गई – और कभी वापस नहीं आएगी: इसमें कुछ नहीं किया जा सकता। . . . मुझे लगता है कि दुख कभी न कभी हर किसी के जीवन में आना ही है, और जो लोग जवानी में इसका स्वाद मुश्किल से चखते हैं, उन्हें अक्सर जीवन के बाद के चरणों में अधिक कड़वा और भरा हुआ प्याला पीना पड़ता है; जबकि, जो लोग जीवन के अंतिम क्षणों को जल्दी ही खत्म कर देते हैं, जो शराब से पहले तलछट पी लेते हैं, वे अधिक सुखद जीवन की उम्मीद कर सकते हैं।”

“जेन आयर” की रचनाकारिता ब्रोंटे परिवार में अब तक एक गहरा रहस्य थी; यहाँ तक कि मेरी यह सहेली, जो लगभग बहन जैसी थी, भी इसके बारे में बाकी दुनिया से ज़्यादा नहीं जानती थी। यह सच है कि वह अपने पिछले व्यवहार और इस संदिग्ध तथ्य के आधार पर अनुमान लगा सकती थी कि किसी साहित्यिक परियोजना पर काम चल रहा था; लेकिन उसे कुछ भी पता नहीं था, और उसने समझदारी से कुछ नहीं कहा, जब तक कि उसे दूसरों से यह खबर नहीं मिली कि शार्लोट ब्रोंटे एक लेखिका हैं - उन्होंने एक उपन्यास प्रकाशित किया है! तब उसने उन्हें पत्र लिखा; और उसे निम्नलिखित दो पत्र प्राप्त हुए; जो अब मुझे लगता है कि अपनी तीव्र प्रतिक्रिया और जानबूझकर इनकार करने की बेचैनी से इस खबर की सत्यता की पुष्टि करते हैं।

28 अप्रैल, 1848।

“एक और पत्र लिखो, और अपने उस आखिरी पत्र का स्पष्ट अर्थ समझाओ। अगर तुम्हारा इशारा मेरी तरफ है, जैसा कि मुझे लगता है, तो यह समझ लो कि मैंने किसी को भी अपने बारे में गपशप करने का अधिकार नहीं दिया है, और न ही मुझे किसी भी तरफ से आने वाली बेबुनियाद अटकलों के आधार पर आंका जाना चाहिए। मुझे बताओ कि तुमने क्या सुना और किससे सुना।”

3 मई, 1848।

“एक खास मामले के बारे में मैं आपसे बस इतना ही कह सकता हूँ: अगर कोई रिपोर्ट है भी, और अगर वह महिला, जो कुछ हैरान-परेशान लग रही थी, ने जो कुछ

उसे बताया गया था, वह सपना नहीं देखा था, तो वह किसी बेतुकी गलतफहमी से उपजी होगी। मैंने किसी को भी यह अधिकार नहीं दिया है कि वह यह दावा करे या दूर से भी इशारा करे कि मैं 'प्रकाशित' कर रहा था — (बकवास!) जिसने भी यह कहा है — अगर किसी ने कहा भी है, जिस पर मुझे संदेह है — वह मेरा दोस्त नहीं है। भले ही बीस किताबें मेरे नाम से जोड़ी जाएँ, मैं उनमें से किसी का भी मालिक नहीं हूँ। मैं इस विचार को पूरी तरह खारिज करता हूँ। जो कोई भी, मेरे स्पष्ट रूप से इस आरोप को खारिज करने के बाद, इसे मुझ पर थोपता है, वह एक निर्दयी और असभ्य काम करेगा। घोर गुमनामी आम बदनामी से कहीं बेहतर है; और वह बदनामी न तो मैं चाहता हूँ और न ही हासिल करूँगा। अगर कोई भी आपको इस विषय पर परेशान करने की हिम्मत करे, — आपसे पूछे कि मिस ब्रोंटे का 'उपन्यास' क्या है, तो आप अपनी उस विशिष्ट दृढ़ता के साथ कह सकती हैं, जिसमें आप माहिर हैं, कि मिस ब्रोंटे ने आपको यह कहने का अधिकार दिया है कि वह इस तरह के हर आरोप को खारिज करती हैं और अस्वीकार करती हैं। आप चाहें तो यह भी जोड़ सकती हैं कि अगर किसी को उनका भरोसा है, तो आपको लगता है कि आपको है, और उन्होंने इस विषय पर आपसे कोई बेतुकी बात नहीं कही है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि यह अफवाह कहाँ से आई है; और मुझे डर है कि इसका स्रोत मैत्रीपूर्ण नहीं है। हालांकि, मैं निश्चित नहीं हूँ, और अगर मुझे निश्चितता मिल जाए तो मुझे बहुत खुशी होगी। अगर आपको कुछ और पता चले, तो कृपया मुझे बताएं। 'सिमियन का जीवन' प्रकाशित करने का आपका प्रस्ताव बहुत ही सराहनीय है, और मैं इसके लिए आपका धन्यवाद करती हूँ। मुझे यकीन है कि पापा इस कृति को देखना चाहेंगे, क्योंकि वे मिस्टर सिमियन को जानते थे। चाहे आप हँसें या डांटें, प्रकाशन के विचार को छोड़ दें; और मेरा विश्वास करें, चाहे कितनी भी परिस्थितियाँ हों, चाहे बदनामी हो या अनदेखी, — आपका विश्वासपात्र,

सी. ब्रोंटे।"

मुझे बताया गया है कि मिस ब्रोंटे अपने रहस्य को इतना गुप्त रखने के लिए इसलिए उत्सुक थीं क्योंकि उन्होंने अपनी बहनों को वचन दिया था कि यह रहस्य उनके माध्यम से प्रकट नहीं होना चाहिए।

छद्म नामों से प्रकाशित बहनों के उपन्यासों से जुड़ी दुविधाएँ बढ़ती जा रही थीं। कई आलोचक यह मानने पर अड़े थे कि तीनों बेल बहनों के नाम से प्रकाशित सभी

उपन्यास एक ही लेखक की रचनाएँ हैं, लेकिन उनके विकास और परिपक्वता के अलग-अलग चरणों में लिखे गए हैं। निस्संदेह, इस संदेह ने पुस्तकों की स्वीकार्यता को प्रभावित किया। ऐनी ब्रोंटे की कहानी "एग्नेस ग्रे" पूरी होने के बाद से ही वे दूसरी कहानी "द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल" पर काम कर रही थीं। यह कहानी बहुत कम जानी जाती है; इसका विषय - एक ऐसे चरित्र का पतन, जिसकी अय्याशी और बर्बादी की जड़ें शराबखोरी की उन आदतों में थीं, जो इतनी मामूली थीं कि उन्हें केवल "अच्छी संगति" ही माना जाता था - उस व्यक्ति के लिए अत्यंत अटपटा था जो शांतिपूर्ण और धार्मिक विचारों के अलावा हर चीज से दूर रहना चाहती थी। उनकी बहन उस कोमल "छोटी बच्ची" के बारे में कहती हैं, "अपने जीवन में उन्हें प्रतिभाओं के दुरुपयोग और क्षमताओं के गलत इस्तेमाल के भयानक परिणामों पर लंबे समय तक गहन चिंतन करना पड़ा था। उनका स्वभाव संवेदनशील, शांत और उदास था। जो कुछ उन्होंने देखा, वह उनके मन पर गहरा प्रभाव छोड़ गया; इससे उन्हें हानि हुई। वह इस पर इतना विचार करती रहीं कि उन्हें लगा कि दूसरों को चेतावनी देने के लिए हर विवरण (काल्पनिक पात्रों, घटनाओं और स्थितियों के साथ) को चित्रित करना उनका कर्तव्य है। उन्हें अपना काम नापसंद था, फिर भी वह उसे करती रहीं। जब उनसे इस विषय पर तर्क किया जाता, तो वह ऐसे तर्कों को आत्म-भोग का प्रलोभन मानती थीं। उन्हें ईमानदार रहना था; उन्हें बातों को घुमा-फिराकर नहीं कहना था, न ही नरम करना था और न ही छिपाना था। इस नेक इरादे वाले संकल्प के कारण उन्हें गलतफहमी हुई और कुछ आलोचना भी झेलनी पड़ी, क्योंकि उनकी आदत थी कि वे हर अप्रिय बात को धैर्यपूर्वक सहन करती थीं। वह एक बहुत ही सच्ची और व्यावहारिक ईसाई थीं, लेकिन धार्मिक उदासी की झलक ने उनके चेहरे पर एक दुखद छाया डाल दी थी।" संक्षिप्त, दोषरहित जीवन।"

इस वर्ष जून में, 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल' लगभग पूरा होने के करीब था और इसे उस व्यक्ति को प्रस्तुत किया जा सकता था जिसने पहले एलिस और एक्टन बेल के लिए प्रकाशन किया था।

उनके काम करने के तरीके के कारण मिस ब्रोंटे और उन्हें काफी असुविधा हुई। न्यूज़ीलैंड में रहने वाली उनकी एक दोस्त को लिखे पत्र में उन्होंने घटनाक्रम का विस्तृत वर्णन किया है: जुलाई की शुरुआत में एक सुबह, पार्सनेज में स्मिथ और एल्डर की ओर से एक संदेश मिला, जिसने वहाँ के शांत निवासियों को काफी परेशान

कर दिया। हालाँकि यह मामला केवल उनकी साहित्यिक प्रतिष्ठा से संबंधित था, लेकिन उन्हें लगा कि इसका असर उनके चरित्र पर भी पड़ेगा। "जेन आयर" अमेरिका में बहुत लोकप्रिय हुई थी, और वहाँ के एक प्रकाशक ने "कुरर बेल" की अगली कृति के शुरुआती पन्नों के लिए ऊंची बोली लगाई थी। स्मिथ और एल्डर ने उन्हें ये पन्ने देने का वादा किया था। इसलिए, उन्हें यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ और वे बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं हुए कि एक अन्य अमेरिकी प्रकाशन गृह के साथ भी ऐसा ही समझौता हो चुका है, और नई कहानी बहुत जल्द प्रकाशित होने वाली है। जांच करने पर पता चला कि यह गलती एक्टन और एलिस बेल के प्रकाशक द्वारा इस अमेरिकी प्रकाशन गृह को यह आश्वासन देने के कारण हुई थी कि उनके सर्वोत्तम विश्वास के अनुसार, "जेन आयर", "वुथरिंग हाइट्स" और "द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल" (जिसे उन्होंने अन्य दो से बेहतर बताया था) सभी एक ही लेखक द्वारा लिखी गई थीं।

हालाँकि श्री स्मिथ और एल्डर ने अपने पत्र में स्पष्ट रूप से कहा था कि वे इस तरह के "विश्वास" में भागीदार नहीं हैं, फिर भी बहनें तब तक बेचैन रहीं जब तक उन्होंने इसकी पूर्ण निराधारता साबित नहीं कर दी और अपना रुख स्पष्ट नहीं कर लिया। उन्होंने तुरंत निर्णय लिया कि शार्लोट और ऐनी को उसी दिन लंदन के लिए रवाना होना चाहिए, ताकि वे श्री स्मिथ और एल्डर को अपनी अलग पहचान साबित कर सकें और उस भोले-भाले प्रकाशक से उस "विश्वास" का कारण पूछ सकें जो उन्हें कई बार दिए गए आश्वासन के बिल्कुल विपरीत था। यह निर्णय लेने के बाद, उन्होंने पूरी तत्परता से अपनी तैयारियाँ शुरू कर दीं। उस दिन घर के कई काम करने थे; लेकिन वे सभी पूरे हो गए। दोनों बहनों ने एक-एक जोड़ी कपड़े एक छोटे से डिब्बे में पैक किए, जिन्हें उन्होंने एक उपयुक्त गाड़ी से कीघली भेज दिया; और सुबह की चाय के बाद वे वहाँ पैदल ही निकल पड़ीं - निस्संदेह कुछ उत्साह में; क्योंकि लंदन जाने के कारण से अलग, ऐनी की वहाँ पहली यात्रा थी। उस गर्मी की शाम को स्टेशन जाते समय रास्ते में उन्हें एक भयंकर तूफान का सामना करना पड़ा; लेकिन उनके पास आश्रय लेने का समय नहीं था। वे बड़ी मुश्किल से कीघली में ट्रेन पकड़ पाए, लीड्स पहुंचे और फिर रात की ट्रेन से लंदन के लिए रवाना हो गए।

शनिवार की सुबह लगभग आठ बजे, वे पैटरनोस्टर रो स्थित चैप्टर कॉफ़ी हाउस पहुँचे - एक अनजान जगह, लेकिन उन्हें यह भी नहीं पता था कि और कहाँ जाना है। उन्होंने नहाकर तरोताज़ा महसूस किया और नाश्ता किया। फिर वे कुछ मिनटों के लिए

चुपचाप बैठ गए, यह सोचने के लिए कि आगे क्या करना चाहिए।

एक दिन पहले जब वे हॉवर्थ पार्सनेज की शांति में अपनी परियोजना पर चर्चा कर रहे थे और लंदन जाने के अपने कार्य को पूरा करने की योजना बना रहे थे, तो उन्होंने तय किया था कि यदि आवश्यक हुआ तो वे अपने सराय से कॉर्नहिल तक टैक्सी ले लेंगे; लेकिन शनिवार की सुबह जब वे बैठकर अपनी स्थिति पर विचार कर रहे थे, तो उस भीड़भाड़ और "अजीब सी आंतरिक उत्तेजना" के कारण वे वाहन किराए पर लेने की संभावना को भी पूरी तरह से भूल गए; और जब वे निकले, तो भीड़ भरी सड़कों और अवरुद्ध चौराहों को देखकर वे इतने निराश हो गए कि आगे बढ़ने की उम्मीद छोड़ कर बार-बार रुकते रहे और आधा मील की दूरी तय करने में उन्हें लगभग एक घंटा लग गया। न तो श्री स्मिथ और न ही श्री विलियम्स को उनके आने की जानकारी थी; वे "जेन आयर" के प्रकाशकों के लिए पूरी तरह से अज्ञात थे, जिन्हें वास्तव में यह भी पता नहीं था कि "बेल्स" पुरुष हैं या महिलाएँ, लेकिन उन्होंने हमेशा उन्हें पुरुषों के रूप में ही पत्र लिखे थे।

श्री स्मिथ के घर पहुँचकर शार्लोट ने उनका पत्र उनके हाथों में थमा दिया; वही पत्र जिसने चौबीस घंटे पहले हॉवर्थ पार्सनेज में इतना हंगामा मचा दिया था। "यह तुम्हें कहाँ से मिला?" उन्होंने पूछा, मानो उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि काले वस्त्र पहने, दुबली-पतली और छोटी कद-काठी की, प्रसन्न लेकिन उत्तेजित दिख रही ये दो युवतियाँ वही कुरेर और एक्टन बेल हो सकती हैं, जिनकी खोज में लोग इतने उत्सुकता से व्यर्थ ही लगे थे। इसके बाद स्पष्टीकरण दिया गया और श्री स्मिथ ने लंदन में उनके प्रवास के दौरान उनके मनोरंजन और आनंद के लिए योजनाएँ बनाना शुरू कर दिया। उन्होंने उन्हें अपने घर पर कुछ साहित्यिक मित्रों से मिलने के लिए कहा; और यह शार्लोट के लिए एक बड़ा प्रलोभन था, क्योंकि उनमें से एक-दो लेखक ऐसे थे जिनसे वह विशेष रूप से मिलना चाहती थी; लेकिन गुमनाम रहने के अपने दृढ़ संकल्प ने उसे इसे दृढ़ता से टालने के लिए प्रेरित किया।

दोनों बहनें श्री स्मिथ के घर में ठहरने के निमंत्रण को लगातार अस्वीकार करती रहीं। उन्होंने अपने कमरे से बाहर निकलने से इनकार कर दिया और कहा कि वे लंबे समय तक रहने के लिए तैयार नहीं हैं।

जब वे अपने सराय में वापस लौटीं, तो बेचारी शार्लोट को साक्षात्कार के उत्साह का खामियाजा भुगतना पड़ा, जिसने पिछले चौबीस घंटों की भागदौड़ और बेचैनी को

और बढ़ा दिया था। उसे असहनीय सिरदर्द और बीमारी हो गई। शाम होते-होते, जब उसे श्री स्मिथ के परिवार की कुछ महिलाओं के आने की उम्मीद हुई, तो उसने खुद को तैयार करने के लिए सैल-वोलेटाइल की एक तेज़ खुराक ली, जिससे उसे थोड़ी ताजगी तो मिली, लेकिन फिर भी, जैसा कि वह कहती है, जब उनके मेहमानों के आने की घोषणा हुई, तो उसकी शारीरिक हालत बहुत खराब थी। वे सभी शाम के परिधानों में सजी हुई थीं। बहनों को यह पता नहीं था कि ओपेरा जाने का फैसला हो चुका है, इसलिए वे तैयार नहीं थीं। इसके अलावा, उनके पास न तो कोई सुंदर और सुरुचिपूर्ण पोशाक थी, न ही दुनिया में कहीं और। लेकिन मिस ब्रोंटे ने इस कृपा को स्वीकार करने में कोई आपत्ति न उठाने का निश्चय किया। इसलिए, सिरदर्द और थकान के बावजूद, उन्होंने जल्दी से अपने सादे, उच्च गुणवत्ता वाले देहाती वस्त्र पहन लिए।

लंदन की इस यात्रा के बारे में अपनी सहेली को दिए गए विवरण में, शार्लोट कहती हैं, जिसमें वह अपने दल के ओपेरा हाउस में प्रवेश का वर्णन करती हैं:

“जब हम उस बॉक्स-डोर के पास खड़े थे जो अभी तक खुला नहीं था, तो वहाँ के सज्जन और भद्रजनों ने हमें एक हल्की, शालीन और थोड़ी घमंडी नज़र से देखा, जो उस परिस्थिति के लिए बिल्कुल उचित थी। सिरदर्द, मतली और थोड़ी मसखरी के बावजूद मैं सुखद रूप से उत्साहित थी; और मैंने देखा कि ऐनी शांत और सौम्य थी, जैसा कि वह हमेशा रहती है। प्रस्तुति रॉसिनी के ‘बार्बर ऑफ सेविले’ की थी—बहुत ही शानदार, हालाँकि मुझे लगता है कि इससे बेहतर चीज़ें भी हो सकती थीं। हम एक बजे के बाद घर पहुँचे। पिछली रात हम सोए ही नहीं थे; चौबीसों घंटे लगातार उत्तेजना में थे; आप कल्पना कर सकते हैं कि हम कितने थके हुए थे। अगले दिन, रविवार को, श्री विलियम्स हमें चर्च ले जाने के लिए सुबह जल्दी आ गए; और दोपहर में श्री स्मिथ और उनकी माँ हमें एक गाड़ी में लेने आए और हमें अपने घर भोजन के लिए ले गए।

"सोमवार को हम रॉयल एकेडमी की प्रदर्शनी और नेशनल गैलरी देखने गए, फिर से मिस्टर स्मिथ के घर पर भोजन किया, और फिर मिस्टर विलियम्स के घर पर चाय पीने के लिए वापस आ गए।"

मंगलवार की सुबह, हम श्री स्मिथ द्वारा दी गई किताबों से लदे हुए लंदन से निकले और सुरक्षित घर पहुँच गए। मेरी हालत जितनी खराब दिख रही थी, उससे कहीं ज़्यादा थकी-हारी थी, यह कल्पना करना मुश्किल है। जाते समय मैं दुबली थी, लेकिन लौटते

समय तो और भी दुबली हो गई थी। मेरा चेहरा पीला और बूढ़ा लग रहा था, उस पर अजीब सी गहरी झुर्रियाँ पड़ गई थीं - मेरी आँखें अजीब सी घूरती हुई थीं। मैं कमज़ोर थी, फिर भी बेचैन थी। हालाँकि, कुछ देर बाद उत्तेजना के ये बुरे प्रभाव दूर हो गए और मैं फिर से सामान्य हो गई।

लंदन की अपनी इस यात्रा के दौरान जिन लोगों से मिस ब्रोंटे का पहली बार परिचय हुआ, उन पर उनकी छाप एक ऐसी शख्सियत की थी, जिनके निर्णय स्पष्ट और विवेकपूर्ण थे; और यद्यपि वे संयमी थीं, फिर भी अनजाने में ही उनमें दूसरों को बातचीत में शामिल करने की क्षमता थी। वे बिना कारण बताए कभी कोई राय व्यक्त नहीं करती थीं; वे बिना किसी निश्चित उद्देश्य के कभी कोई प्रश्न नहीं पूछती थीं; फिर भी लोग उनसे बात करने में सहज महसूस करते थे। उनके साथ हर बातचीत सच्ची और प्रेरणादायक होती थी; और जब वे पुस्तकों, कार्यों या कलाकृतियों की प्रशंसा या आलोचना करती थीं, तो उनकी वाक्पटुता वास्तव में प्रभावशाली होती थी। वे अपने हर कथन और कार्य में पूर्ण निश्चयी थीं; फिर भी किसी विषय पर चर्चा करते समय या किसी विरोधी से बहस करते समय इतनी स्पष्ट और निष्पक्ष होती थीं कि आक्रोश पैदा करने के बजाय, वे अपने श्रोताओं को सत्य और न्याय के प्रति अपने दृढ़ संकल्प से आश्वस्त कर देती थीं।

उनकी कार्यवाही का एक महत्वपूर्ण हिस्सा वह स्थान था जिसे बहनों ने रहने के लिए चुना था।

कई वर्षों तक पैटरनोस्टर रो प्रकाशकों के लिए एक पवित्र स्थान रहा है। यह सेंट पॉल चर्च की छाया में स्थित एक संकरी, पत्थर की पक्की सड़क है; इसके दोनों सिरों पर खंभे लगे हैं ताकि गाड़ियों का आवागमन रोका जा सके और इस प्रकार "पंक्ति के संस्थापकों" के विचार-विमर्श के लिए एक गंभीर शांति बनी रहे। दोनों ओर के फीके गोदामों में फिलहाल ज्यादातर थोक स्टेशनरी की दुकानें हैं; यदि वे प्रकाशकों की दुकानें हैं, तो अंधेरी और संकरी सड़क के सामने उनका कोई आकर्षक दृश्य नहीं दिखता। बीच में, बाईं ओर, चैप्टर कॉफी हाउस है। मैंने पिछले जून में इसका दौरा किया था। तब यह खाली था। यह लगभग दो सौ साल पुराने एक मकान जैसा दिखता था, जैसा कि कभी-कभी प्राचीन ग्रामीण कस्बों में देखने को मिलता है; छोटे कमरों की छतें नीची थीं और उन पर भारी बीम लगे हुए थे; दीवारें छाती की ऊंचाई तक लकड़ी की बनी थीं; सीढ़ी उथली, चौड़ी और अंधेरी थी, जो घर के बीचोंबीच काफी

जगह घेरती थी। यह चैप्टर कॉफ़ी हाउस था, जो एक सदी पहले सभी पुस्तक विक्रेताओं और प्रकाशकों का अड्डा हुआ करता था; और जहाँ साहित्यकार, आलोचक और यहाँ तक कि बुद्धिजीवी भी विचारों या रोज़गार की तलाश में जाया करते थे। यही वह जगह थी जिसके बारे में चैटरटन ने उन भ्रामक पत्रों में लिखा था जो उन्होंने लंदन में भूख से पीड़ित रहते हुए ब्रिस्टल में अपनी माँ को भेजे थे। “मैं चैप्टर कॉफ़ी हाउस से भली-भांति परिचित हूँ और वहाँ के सभी प्रतिभाशाली लोगों को जानता हूँ।” यहीं उन्हें रोज़गार के अवसरों की जानकारी मिलती थी; यहीं उनके पत्र छोड़े जाते थे।

कई वर्षों बाद, यह लंदन में कुछ दिनों के लिए आए विश्वविद्यालय के छात्रों और ग्रामीण पादरियों का पसंदीदा अड्डा बन गया। निजी मित्र न होने और समाज में पहुँच न होने के कारण, वे कॉफ़ी रूम में होने वाली बातचीत से साहित्य जगत की खबरों से अवगत होने में प्रसन्न होते थे। कैम्ब्रिज में निवास और एसेक्स में पादरी के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, श्री ब्रोंटे ने शहर की अपनी कुछ संक्षिप्त यात्राओं में इसी घर में ठहरे थे; जब वे अपनी बेटियों को ब्रुसेल्स ले जा रहे थे, तब वे उन्हें यहाँ लाए थे; और अब वे यहाँ इसलिए आए थे क्योंकि उन्हें कहीं और जाने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। यह एक ऐसा स्थान था जहाँ केवल पुरुष ही आते-जाते थे; मेरा मानना है कि घर में केवल एक ही महिला नौकरानी थी। वहाँ बहुत कम लोग सोते थे; व्यापार से संबंधित कुछ नियमित बैठकें यहाँ होती थीं, जैसा कि एक सदी से अधिक समय से होता आ रहा था; और कभी-कभी ग्रामीण पुस्तक विक्रेता, और कभी-कभार कोई पादरी भी, यहाँ आते थे; लेकिन अपने विशुद्ध रूप से व्यावसायिक और पुरुष प्रधान स्वरूप के कारण, मिस ब्रोंटे परिवार के लिए यह एक अजीब और सुनसान जगह थी। वेटर का काम कर रहे उस बूढ़े, सफ़ेद बालों वाले बुजुर्ग व्यक्ति को उन दोनों महिलाओं की सादगी और शांत स्वभाव ने पहली ही नज़र में मोहित कर लिया था। उन्होंने ऊपर के उस लंबे, छोटे, अंधेरे कमरे में, जहाँ व्यापारियों की बैठकें होती थीं, उन्हें सहज और घर जैसा महसूस कराने की कोशिश की। ऊँची और संकरी खिड़कियाँ सुनसान सड़क की ओर खुलती थीं; सबसे दूर वाली खिड़की की सीट पर बैठी दोनों बहनें (जैसा कि श्री स्मिथ ने मुझे बताया कि जब वे उन्हें उस शनिवार शाम को ओपेरा ले जाने आए थे, तो उन्होंने उन्हें वहीं पाया था) सामने के उन भयानक, अंधेरे घरों में कोई हलचल या बदलाव नहीं देख पा रही थीं, जो इतने पास और करीब थे, हालाँकि उनके बीच पूरी सड़क फैली हुई थी। लंदन का ज़बरदस्त शोर उनके चारों ओर गूंज रहा

था, मानो किसी अनदेखे सागर की आवाज़ हो, फिर भी उस सुनसान सड़क पर नीचे फुटपाथ पर हर कदम की आहट साफ़ सुनाई दे रही थी। जैसा भी हुआ, उन्होंने मिस्टर स्मिथ और उनकी माँ द्वारा दिए गए निमंत्रण को स्वीकार करने के बजाय चैप्टर कॉफ़ी हाउस में ही रहना बेहतर समझा, और बाद के वर्षों में, शार्लोट कहती हैं: —

"उन दिनों के बाद से मैंने वेस्ट एंड, पार्क, सुंदर चौक देखे हैं; लेकिन मुझे सिटी कहीं ज़्यादा पसंद है। सिटी कहीं ज़्यादा जीवंत लगती है; उसका कारोबार, उसकी भागदौड़, उसका शोर, ये सब बहुत ही गंभीर दृश्य और ध्वनियाँ हैं। सिटी अपनी आजीविका चला रही है – वेस्ट एंड तो बस मौज-मस्ती कर रहा है। वेस्ट एंड में आपको मनोरंजन मिल सकता है; लेकिन सिटी में आप गहराई से रोमांचित हो जाते हैं।" (विलेट, खंड 1, पृष्ठ 89)

उनकी इच्छा रविवार की सुबह डॉ. क्रोली का प्रवचन सुनने की थी, और श्री विलियम्स उन्हें सेंट स्टीफंस, वालब्रुक ले गए; लेकिन उन्हें निराशा हाथ लगी, क्योंकि डॉ. क्रोली ने प्रवचन नहीं दिया। श्री विलियम्स उन्हें (जैसा कि मिस ब्रोंटे ने उल्लेख किया है) अपने घर चाय पिलाने भी ले गए। रास्ते में उन्हें केंसिंग्टन गार्डन्स से होकर गुजरना पड़ा, और मिस ब्रोंटे वहां के दृश्य की सुंदरता, घास की ताजी हरियाली और घने पत्तों के कोमल आवरण से बहुत प्रभावित हुईं। दक्षिण और उत्तर के परिदृश्य के भिन्न स्वरूप पर टिप्पणी करते हुए, उन्होंने लंदन में जिन लोगों से बातचीत की, उनकी आवाज़ की कोमलता और विविधता का जिक्र किया, जिसने दोनों बहनों पर गहरा प्रभाव डाला। इस पूरे समय में जो भी लोग "मिस ब्राउन" (एक और छद्म नाम, जो B से शुरू होता है) के संपर्क में आए, वे उन्हें केवल शर्मीली और शांत स्वभाव की, कम बोलने वाली देहाती महिला ही मानते थे। श्री विलियम्स ने मुझे बताया कि जिस रात वे पार्टी के साथ ओपेरा गए थे, उस रात जब शार्लोट भव्य प्रवेश द्वार से पहली पंक्ति के बॉक्स के लॉबी तक जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ रही थीं, तो वे उस वेस्टिब्यूल और सैलून की शानदार सजावट के वास्तुशिल्प प्रभाव से इतनी प्रभावित हुईं कि अनजाने में ही उन्होंने उनका हाथ हल्के से दबा दिया और फुसफुसाते हुए कहा, "आप जानते हैं कि मुझे इस तरह की चीजों की आदत नहीं है।" वास्तव में, यह उस स्थिति से बिलकुल अलग था जो वे पिछली रात एक-दो घंटे पहले देख रहे थे और कर रहे थे, जब वे धड़कते दिलों और उमंग भरे साहस के साथ हॉवर्थ और कीघली के बीच की सड़क पर चल रहे थे, और अपने सिर के ऊपर गरजते तूफान के बारे में

शायद ही सोच रहे थे, क्योंकि उनके दिमाग में यही चल रहा था कि वे सीधे लंदन जाएंगे और साबित करेंगे कि वे वास्तव में दो लोग हैं, न कि एक धोखेबाज। इस यात्रा की थकान और उत्साह के बाद उनका हॉवर्थ लौटना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि वे पूरी तरह से थके-हारे और बेहाल थे।

इस समय शार्लोट के जीवन के बारे में मुझे जो अगली जानकारी मिलती है, वह आनंद के किसी भी संकेत से बिल्कुल अलग है।

28 जुलाई।

“ब्रैनवेल का व्यवहार पहले जैसा ही है। उसका स्वास्थ्य काफी कमजोर लग रहा है। पापा, और कभी-कभी हम सभी, उसके साथ उदास रातें बिताते हैं। वह दिन भर सोता रहता है, और परिणामस्वरूप रात को जागता रहता है। लेकिन क्या हर घर में ऐसी कोई परेशानी नहीं होती?”

जब उनके सबसे करीबी दोस्त भी उनकी रचना "जेन आयर" की रचनाकार होने से अनभिज्ञ थे, तभी उन्हें उनमें से एक का पत्र मिला, जिसमें कैस्टरटन स्कूल के बारे में पूछताछ की गई थी। 28 अगस्त, 1848 को लिखे गए उनके उत्तर को प्रस्तुत करना उचित होगा।

चूंकि आप घर से दूर रहते हुए मुझसे संपर्क करना चाहते हैं, इसलिए मैं बिना किसी देरी के लिख रहा हूँ। अक्सर ऐसा होता है कि जब हम किसी मित्र के पत्र का उत्तर देने में पहले तो देर कर देते हैं, तो कुछ ऐसी बाधाएँ आ जाती हैं जिनसे जवाब देने में बहुत देर हो जाती है। अपने पिछले पत्र में, मैं आपके एक प्रश्न का उत्तर देना भूल गया था, और बाद में मुझे इस चूक का खेद हुआ। इसलिए, मैं सीधे उसी का उत्तर देना शुरू करूँगा, हालाँकि मुझे डर है कि जो जानकारी मैं दे पाऊँगा वह थोड़ी देर से आएगी। आपने कहा था कि श्रीमती — — — को स्कूल भेजने के बारे में सोच रही थीं, और जानना चाहती थीं कि कैस्टरटन स्थित क्लेर्जी डॉटर्स स्कूल इसके लिए उपयुक्त है या नहीं। उस संस्था के बारे में मेरा व्यक्तिगत ज्ञान बहुत पुराना है, क्योंकि यह बीस साल पहले के अनुभव पर आधारित है। उस समय वह संस्था अपने शुरुआती दौर में थी, और वह भी एक दुखद और कमजोर शुरुआती दौर। टाइफस बुखार समय-समय पर स्कूल में तबाही मचाता था; और खराब हवा, पानी, खराब और अपर्याप्त आहार से उत्पन्न होने वाली हर तरह की टीबी और स्क्रॉफ़ुला जैसी बीमारियाँ दुर्भाग्यपूर्ण विद्यार्थियों को अपनी चपेट में ले लेती थीं। तब यह श्रीमती — — के

बच्चों के लिए उपयुक्त जगह नहीं थी; लेकिन मुझे पता चला है कि तब से इसमें बहुत सुधार हुआ है। स्कूल को काउन ब्रिज (एक ऐसी जगह जो जितनी सुंदर थी उतनी ही अस्वस्थ भी थी — नीची, नम, लकड़ी और पानी से भरपूर) से कैस्टरटन में स्थानांतरित कर दिया गया है। मुझे लगता है कि आवास, आहार, अनुशासन, शिक्षण प्रणाली — सब कुछ पूरी तरह से बदल गया है और बहुत बेहतर हो गया है। मुझे बताया गया कि जो छात्राएँ अच्छा व्यवहार करती थीं और अपनी शिक्षा पूरी होने तक स्कूल में रहती थीं, उन्हें अगर वे गवर्नेंस बनना चाहती थीं तो गवर्नेंस के पद उपलब्ध कराए जाते थे और चयन में बहुत सावधानी बरती जाती थी। यह भी बताया गया कि कैस्टरटन छोड़ने पर उन्हें एक उत्कृष्ट वस्त्र भी दिए जाते थे। . . . हॉवर्थ का सबसे पुराना परिवार हाल ही में थम गया और उन्होंने उस पड़ोस को छोड़ दिया जहाँ उनके पूर्वज तेरह पीढ़ियों से रहते थे। . . . मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि पापा अपनी उम्र के हिसाब से बहुत अच्छे स्वास्थ्य में हैं; मुझे लगता है कि उनकी दृष्टि भी पहले से बेहतर हो रही है। मेरी हालत बिगड़ती जा रही है। मेरी बहनें भी काफी अच्छी हैं।

लेकिन उस बदकिस्मत परिवार पर काले बादल छाए हुए थे, और हर घंटे अंधेरा और गहराता जा रहा था।

9 अक्टूबर को वह इस प्रकार लिखती हैं: —

"पिछले तीन सप्ताह हमारे साधारण से घर में अंधकारमय रहे हैं। ब्रैनवेल का स्वास्थ्य पूरी गर्मी भर बिगड़ता रहा; फिर भी, न तो डॉक्टरों को और न ही उन्हें खुद लगा कि उनका अंत इतना निकट है जितना वास्तव में था। वे केवल एक दिन को छोड़कर पूरी तरह बिस्तर पर ही रहे, और अपनी मृत्यु से दो दिन पहले गाँव में थे। 24 सितंबर, रविवार की सुबह बीस मिनट के संघर्ष के बाद उनका निधन हो गया। अंतिम पीड़ा आने तक वे पूरी तरह होश में थे। दो दिन पहले उनके मन में वह विशेष परिवर्तन आया था जो अक्सर मृत्यु से पहले होता है; बेहतर भावनाओं की शांति ने उन्हें भर दिया; स्वाभाविक स्नेह की वापसी ने उनके अंतिम क्षणों को चिह्नित किया। अब वे ईश्वर की शरण में हैं; और सर्वशक्तिमान ईश्वर सर्वदयालु भी हैं। यह गहरा विश्वास कि अंततः उन्हें विश्राम मिल गया है - अपने संक्षिप्त, गलतियों से भरे, कष्टदायक, बुखार से ग्रस्त जीवन के बाद उन्हें शांति मिली है - अब मेरे मन को शांत करता है। अंतिम विदाई, उनके पीले पड़े शव का दृश्य, मुझे कल्पना से परे तीव्र पीड़ा दे गया। अंतिम

क्षण आने तक, हम कभी नहीं जान सकते कि हम कितना क्षमा कर सकते हैं, कितना दया कर सकते हैं, कितना पछतावा कर सकते हैं। करीबी रिश्तेदार। उसकी सारी बुराइयाँ न तो थीं और न ही अब हैं। हमें केवल उसके दुख याद हैं। पापा पहले तो बहुत परेशान हुए, लेकिन कुल मिलाकर उन्होंने इस स्थिति को अच्छे से सहन कर लिया। एमिली और ऐनी लगभग ठीक हैं, हालाँकि ऐनी हमेशा से ही नाज़ुक रहती है, और एमिली को इस समय सर्दी-खाँसी है। संकट के समय मेरा कमजोर पड़ना मेरी नियति थी, जबकि मुझे अपनी ताकत जुटा लेनी चाहिए थी। रविवार को सबसे पहले सिरदर्द और मतली शुरू हुई; मेरी भूख ही नहीं लौटी। फिर मुझे पेट में दर्द होने लगा। मैं एकदम से बहुत कमजोर हो गई। एक निवाला भी खाना नामुमकिन था। अंत में, पित्त ज्वर हो गया। मैं एक हफ्ते तक बिस्तर पर पड़ी रही, - एक बहुत ही नीरस हफ्ता। लेकिन, भगवान का शुक्र है! अब स्वास्थ्य सुधरता हुआ लग रहा है। मैं पूरे दिन बैठ सकती हूँ और संतुलित आहार ले सकती हूँ। डॉक्टर ने पहले कहा था कि मुझे ठीक होने में बहुत समय लगेगा, लेकिन मैं उनकी उम्मीद से कहीं ज्यादा तेजी से ठीक हो रही हूँ। मैं सचमुच बहुत बेहतर हूँ।

मैंने ब्रैनवेल की अंतिम बीमारी के दौरान उनकी देखभाल करने वाले एक व्यक्ति से सुना है कि उन्होंने खड़े होकर मरने का निश्चय किया था। उन्होंने बार-बार कहा था कि जब तक जीवन है, तब तक इच्छाशक्ति है कि वह जो चाहे कर सकती है; और जब अंतिम पीड़ा आई, तो उन्होंने ऊपर बताई गई स्थिति में बैठने पर जोर दिया। मैंने पहले भी कहा है कि जब उन पर जानलेवा हमला हुआ, तो उनकी जेबें उस महिला के पुराने पत्रों से भरी हुई मिलीं, जिनसे उन्हें गहरा लगाव था। वे मर गए! वह अभी भी जीवित है, - मई मेले में। मुझे लगता है कि यूमेनिडेस का अस्तित्व उसी समय समाप्त हो गया जब यह विलाप सुनाई दिया, "महान पैन मर गया।" मुझे लगता है कि हम उन्हें उन भयानक सिस्टर्स से बेहतर बचा सकते थे जो मृत अंतरात्मा को जीवनदान देती हैं।

मैं उससे हमेशा के लिए मुंह मोड़ लेता हूँ। आइए एक बार फिर हॉवर्थ स्थित पादरी आवास पर नज़र डालें।

29 अक्टूबर, 1848।

मुझे लगता है कि मैं अपनी पिछली बीमारी के असर से लगभग उबर चुकी हूँ और लगभग पहले जैसी सेहत में लौट आई हूँ। कभी-कभी मेरी इच्छा होती है कि काश मेरी सेहत थोड़ी और बेहतर होती, लेकिन हमें जो कुछ भी मिला है उसी से संतुष्ट

रहना चाहिए और जो हमारी पहुँच से बाहर है उसके लिए तरसना नहीं चाहिए। इस समय मैं अपनी बहन के बारे में खुद से ज़्यादा चिंतित हूँ। एमिली की सर्दी और खांसी बहुत ज़िद्दी हैं। मुझे डर है कि उसके सीने में दर्द है और जब वह ज़रा भी तेज़ी से चलती है तो कभी-कभी उसकी सांस फूलने लगती है। वह बहुत दुबली-पतली और पीली दिख रही है। उसका शांत स्वभाव मुझे बहुत बेचैन कर देता है। उससे सवाल करना बेकार है; कोई जवाब नहीं मिलता। दवाइयाँ सुझाना तो और भी बेकार है; उन्हें कभी अपनाया नहीं जाता। मैं ऐनी की नाज़ुक सेहत को भी नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती। मुझे लगता है कि हाल की दुखद घटना ने मुझे सामान्य से ज़्यादा चिंतित कर दिया है। मैं कभी-कभी बहुत उदास महसूस करती हूँ। मैं सब कुछ ईश्वर के हाथों में छोड़ने की कोशिश करती हूँ; उनकी अच्छाई पर भरोसा करती हूँ; लेकिन कुछ परिस्थितियों में विश्वास और समर्पण का अभ्यास करना मुश्किल होता है। मौसम भी... हाल ही में बीमारों के लिए मौसम बहुत प्रतिकूल रहा है; तापमान में अचानक बदलाव और ठंडी, चुभने वाली हवाएँ यहाँ अक्सर चलती रही हैं। यदि मौसम स्थिर हो जाए, तो शायद सामान्य स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़े और ये परेशान करने वाली सर्दी-खांसी दूर हो जाएँ। पापा पूरी तरह से बच तो नहीं पाए हैं, लेकिन अब तक हम सब से बेहतर स्थिति में हैं। इस सर्दी में मेरे — — जाने का ज़िक्र मत करना। मैं किसी भी हालत में घर नहीं छोड़ सकता और न ही छोड़ना चाहता हूँ। मिस — — कुछ वर्षों से अस्वस्थ हैं। ये बातें हमें यह एहसास दिलाती हैं, साथ ही यह बताती भी हैं, कि यह दुनिया हमारा स्थायी निवास नहीं है। हमें मानवीय रिश्तों को बहुत मज़बूती से नहीं जोड़ना चाहिए, न ही मानवीय स्नेह को बहुत ज़्यादा लगाव से थामना चाहिए। एक दिन वे हमें छोड़ देंगे, या हमें उन्हें छोड़ना पड़ेगा। ईश्वर उन सभी को स्वास्थ्य और शक्ति प्रदान करें जिन्हें इसकी आवश्यकता है!

अब मैं उनकी बहनों की जीवनी संबंधी समीक्षा में उनके अपने मार्मिक शब्दों के साथ आगे बढ़ती हूँ।

लेकिन एक बड़ा बदलाव आने वाला था। विपत्ति उस रूप में आई जिसका पूर्वाभास ही भय पैदा करता है; अतीत में हुए दुख को याद करना भी। दिन की भीषण गर्मी और बोझ में भी मजदूर अपना काम अधूरा छोड़ गए। सबसे पहले मेरी बहन एमिली की हालत बिगड़ी। ... अपने पूरे जीवन में उसने कभी भी अपने सामने रखे किसी काम में देर नहीं लगाई थी, और अब भी नहीं लगाई। वह तेजी से कमजोर होती

गई। उसने हमें छोड़कर जाने की जल्दी की। ... दिन-प्रतिदिन, जब मैं देखता कि वह कितनी दृढ़ता से पीड़ा का सामना कर रही है, तो मैं उसे आश्चर्य और प्रेम की पीड़ा से देखता था: मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था; लेकिन, वास्तव में, मैंने किसी भी मामले में उसकी बराबरी कभी नहीं देखी। एक पुरुष से भी अधिक मजबूत, एक बच्चे से भी अधिक सरल, उसका स्वभाव अद्वितीय था। सबसे भयानक बात यह थी कि दूसरों के प्रति दया से भरी होने के बावजूद, उसे खुद पर जरा भी दया नहीं थी; आत्मा शरीर के प्रति निर्दयी थी; कांपते हाथों, कमजोर अंगों, मुरझाती आंखों से वही सेवा ली जा रही थी जो उन्होंने स्वस्थ रहते हुए दी थी। यह सब चुपचाप देखते रहना और हिम्मत न कर पाना बहुत कठिन था। विरोध करना एक ऐसा दर्द था जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

दरअसल, ब्रैनवेल की मृत्यु के बाद वाले रविवार के बाद एमिली कभी घर से बाहर नहीं निकली। उसने कोई शिकायत नहीं की; वह पूछताछ बर्दाश्त नहीं करती थी; उसने सहानुभूति और मदद को ठुकरा दिया। कई बार शार्लोट और ऐनी ने अपनी सिलाई या लेखन कार्य छोड़कर, अपनी बहन के लड़खड़ाते कदमों, भारी साँसों और बार-बार रुकने की आवाज़ें सुनीं, जिनसे वह छोटी सी सीढ़ी चढ़ती थी; फिर भी वे उस बात को कहने की हिम्मत नहीं कर पाईं जो वे देख रही थीं, और उनका दुख एमिली के दुख से भी कहीं गहरा था। वे उसे शब्दों में बयां करने की हिम्मत नहीं कर पाईं, और न ही किसी के हाथ या बांह के स्पर्श से। वे चुपचाप बैठी रहीं।

23 नवंबर, 1848।

मैंने अपने पिछले पत्र में आपको बताया था कि एमिली बीमार है। उसकी हालत में अभी तक सुधार नहीं हुआ है। वह बहुत बीमार है। मुझे लगता है, अगर आप उसे देखें, तो आपको भी यही लगेगा कि अब कोई उम्मीद नहीं है। मैंने इतनी कमजोर, मुरझाई हुई और पीली पड़ी हुई हालत पहले कभी नहीं देखी। उसकी खांसी अभी भी गहरी और कसैली है; थोड़ी सी भी मेहनत करने पर उसकी सांसें तेज हो जाती हैं; और इन लक्षणों के साथ-साथ सीने और बगल में दर्द भी होता है। उसकी नाड़ी, जब उसने सिर्फ एक बार जांच करवाई, तो 115 प्रति मिनट पाई गई। इस हालत में वह डॉक्टर को दिखाने से साफ इनकार कर रही है; वह अपनी स्थिति के बारे में कुछ नहीं बता रही है, वह अपनी भावनाओं का जिक्र भी नहीं होने देती। हमारी स्थिति, और पिछले कुछ हफ्तों से, बेहद दर्दनाक है। भगवान ही जानता है कि इसका अंत कैसे होगा। कई

बार, मुझे हिम्मत करके उसकी मृत्यु की भयानक घटना को संभव, बल्कि लगभग निश्चित मानना पड़ा है। लेकिन प्रकृति ऐसे विचारों से दूर भागती है। मुझे लगता है कि एमिली ही दुनिया में मेरे दिल के सबसे करीब है।

जब डॉक्टर को बुलाया गया और वह घर में ही मौजूद था, तब भी एमिली ने उससे मिलने से इनकार कर दिया। उसकी बहनें केवल अपने लक्षणों के बारे में ही बता सकीं; और डॉक्टर द्वारा भेजी गई दवाइयाँ भी उसने लेने से मना कर दिया, यह कहते हुए कि वह बीमार नहीं है।

10 दिसंबर, 1848।

“मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं आपसे उस विषय पर क्या कहूँ जो इस दुनिया में सबसे ज़्यादा मेरी दिलचस्पी जगा रहा है, क्योंकि सच कहूँ तो मुझे खुद भी समझ नहीं आ रहा कि मैं क्या सोचूँ। आशा और भय हर दिन बदलते रहते हैं। उसके पेट और छाती का दर्द कम हो गया है; लेकिन खांसी, सांस फूलना और अत्यधिक कमज़ोरी अभी भी बनी हुई है। इस विषय पर अनिश्चितता की इतनी पीड़ा मैंने सहन की है कि अंततः मैं इसे और सहन नहीं कर सका; और चूंकि वह डॉक्टर को दिखाने से पूरी तरह कतराती है, - जैसा कि वह कहती है कि 'कोई भी ज़हर का इलाज करने वाला डॉक्टर' उसके पास नहीं आएगा, - मैंने उसकी जानकारी के बिना, लंदन के एक जाने-माने चिकित्सक को पत्र लिखा है, जिसमें मैंने उसके मामले और लक्षणों का जितना हो सके उतना विस्तृत विवरण दिया है और राय मांगी है। मुझे एक-दो दिन में जवाब मिलने की उम्मीद है। मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि मेरा स्वास्थ्य इस समय बहुत अच्छा है। यह अच्छा ही है; क्योंकि ऐनी, उपयोगी होने की पूरी इच्छा रखने के बावजूद, वास्तव में इतनी नाज़ुक है कि वह ज़्यादा कुछ कर या सह नहीं सकती। उसे भी इस समय अक्सर पेट में दर्द रहता है।” पापा वह भी काफी ठीक है, हालांकि एमिली की हालत उसे बहुत चिंतित कर देती है।

“वे — — (ऐनी ब्रोंटे की पूर्व छात्राएँ) लगभग एक सप्ताह पहले यहाँ आई थीं। वे आकर्षक और स्टाइलिश दिखती हैं। ऐनी को देखकर वे बहुत खुश लग रही थीं: जब मैं कमरे में गई, तो वे दो बच्चों की तरह उनसे चिपकी हुई थीं — इस बीच, ऐनी एकदम शांत और उदासीन दिख रही थीं। . . . मैंने और एच ने यहाँ आने का मन बना लिया था। मुझे लगता है कि उस मौके पर शायद किसी को बुरा लगा होगा, — कारण क्या था, मुझे नहीं पता; और अगर ऐसा है, तो यह नाराजगी पूरी तरह से काल्पनिक

आधार पर ही होगी, — और वैसे भी, मेरे पास सोचने के लिए और भी चीजें हैं, इसलिए मेरा मन इस विषय पर कम ही जाता है। अगर एमिली ठीक होती, तो मुझे ऐसा लगता है कि मुझे इस बात की परवाह नहीं होती कि किसने मेरी उपेक्षा की, मुझे गलत समझा या मेरा अपमान किया। मैं यह भी चाहती हूँ कि तुम भी उनमें से न हो। केकड़े का पनीर सुरक्षित पहुँच गया है। एमिली ने अभी मुझे याद दिलाया है कि मैं इसके लिए तुम्हें धन्यवाद दूँ: यह बहुत अच्छा लग रहा है। काश वह इसे खाने के लिए ठीक होती।”

लेकिन एमिली की हालत तेज़ी से बिगड़ती जा रही थी। मुझे मिस ब्रोंटे की वह सिहरन याद है जब उन्होंने उस दर्द को याद किया जो उन्हें तब हुआ था जब उन्होंने दलदली भूमि की छोटी-छोटी खोखली जगहों और आश्रयस्थलों में हीथर की एक मुरझाई हुई टहनी की तलाश की थी - चाहे वह कितनी भी मुरझाई हुई क्यों न हो - ताकि उसे एमिली को दे सकें, लेकिन उन्होंने देखा कि धुंधली और उदासीन आँखों ने उस फूल को पहचाना ही नहीं। फिर भी, अंत तक एमिली अपनी स्वतंत्रता की आदतों पर अडिग रही। वह किसी को भी अपनी मदद करने नहीं देती थी। ऐसा करने का कोई भी प्रयास उसके पुराने कठोर स्वभाव को जगा देता था। दिसंबर के एक मंगलवार की सुबह, वह उठी और हमेशा की तरह कपड़े पहने, कई बार रुकी, लेकिन सब कुछ खुद ही किया, और यहाँ तक कि सिलाई का काम भी करने की कोशिश की: नौकर देख रहे थे, और जानते थे कि उसकी कांपती, घरघराती साँसें और आँखों का धुंधलापन क्या संकेत दे रहा था; लेकिन वह अपने काम में लगी रही; और शार्लोट और ऐनी, असहनीय भय से भरी होने के बावजूद, आशा की एक हल्की सी किरण बाकी थी। उस सुबह शार्लोट ने संभवतः अपनी मरणासन्न बहन की उपस्थिति में ही इस प्रकार लिखा:

"मंगलवार।

“अगर मुझमें आशा की एक भी किरण होती, तो मैं आपको पहले ही लिख देता; पर ऐसा नहीं है। वह दिन-प्रतिदिन कमजोर होती जा रही है। चिकित्सक की राय इतनी अस्पष्ट थी कि उसका कोई फायदा नहीं हुआ। उन्होंने कुछ दवा भेजी, जिसे उन्होंने नहीं लिया। मैंने कभी इतने अंधकारमय क्षण नहीं देखे। मैं हम सभी के लिए ईश्वर से समर्थन की प्रार्थना करता हूँ। अब तक उन्होंने हमें यह प्रदान किया है।”

सुबह ढलते-ढलते दोपहर हो गई। एमिली की हालत और बिगड़ गई: वह केवल

हांफते हुए फुसफुसा सकती थी। अब, जब बहुत देर हो चुकी थी, उसने शार्लोट से कहा, "अगर आप डॉक्टर को बुला लें, तो मैं अभी उनसे मिल लूंगी।" लगभग दो बजे उसकी मृत्यु हो गई।

21 दिसंबर, 1848।

“एमिली को अब कोई दर्द या कमजोरी नहीं है। इस दुनिया में उसे अब कभी कोई कष्ट नहीं सहना पड़ेगा। एक कठिन और संक्षिप्त संघर्ष के बाद वह इस दुनिया से चली गई। मंगलवार को, जिस दिन मैंने आपको पत्र लिखा था, उसी दिन उसकी मृत्यु हो गई। मुझे लगा था कि शायद वह कुछ हफ्तों तक हमारे साथ रहेगी; और कुछ ही घंटों बाद, वह अनंत काल में चली गई। हाँ; अब एमिली न तो समय में है और न ही पृथ्वी पर। कल हमने उसके निर्जीव, कमजोर, नश्वर शरीर को चुपचाप चर्च के फर्श के नीचे दफना दिया। हम इस समय बहुत शांत हैं। हम शांत क्यों न हों? उसे कष्ट सहते देखने का दुख समाप्त हो गया है; मृत्यु की पीड़ा का दृश्य बीत चुका है; अंतिम संस्कार का दिन बीत गया है। हम महसूस करते हैं कि उसे शांति मिल गई है। अब कड़ाके की ठंड और तेज हवा से कांपने की कोई जरूरत नहीं है। एमिली को उनका एहसास नहीं होता। वह आशा के समय में मरी। हमने उसे जीवन के सबसे सुनहरे समय में जाते देखा। लेकिन यह ईश्वर की इच्छा है, और जिस स्थान पर वह गई है, वह उस स्थान से बेहतर है जिसे उसने छोड़ा है।”

“ईश्वर ने मुझे ऐसे कष्टों से उबारा है, जिनकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। अब मैं ऐनी को देखती हूँ और कामना करती हूँ कि वह स्वस्थ और स्वस्थ हो; लेकिन वह न तो स्वस्थ है और न ही पापा। क्या आप कुछ दिनों के लिए हमारे पास आ सकते हैं? मैं आपसे ज़्यादा दिन रुकने के लिए नहीं कहूँगी। मुझे लिखकर बताएँ कि क्या आप अगले सप्ताह आ सकते हैं और किस ट्रेन से। मैं आपके लिए कीघली तक एक घोड़ागाड़ी भेजने की कोशिश करूँगी। मुझे उम्मीद है कि आप हमें शांत पाएँगे। आने की कोशिश करें। मुझे कभी किसी मित्र की उपस्थिति के सहारे की इतनी ज़रूरत नहीं पड़ी। बेशक, आपके लिए इस यात्रा में कोई आनंद नहीं होगा, सिवाय उस आनंद के जो आपका दयालु हृदय आपको दूसरों की भलाई करने में खोजना सिखाएगा।”

जब वृद्ध, शोकग्रस्त पिता और उनके दो जीवित बच्चे ताबूत के पीछे-पीछे कब्र तक गए, तो उनके साथ एमिली का वफादार और बहादुर बुलडॉग, कीपर भी शामिल हो गया। वह शोक मनाने वालों के साथ-साथ चर्च तक गया और अंतिम संस्कार की

प्रार्थना के दौरान चुपचाप वहीं बैठा रहा। घर लौटने पर वह एमिली के कमरे के दरवाजे पर लेट गया और कई दिनों तक दयनीय स्वर में रोता रहा। इसके बाद से ऐनी ब्रोंटे की सेहत तेजी से बिगड़ने लगी और वह और भी बीमार हो गईं; और इस तरह वर्ष 1848 का अंत हुआ।

अध्याय III

दिसंबर 1848 के क्वार्टरली रिव्यू में "वैनिटी फेयर" और "जेन आयर" पर एक लेख प्रकाशित हुआ था। कुछ सप्ताह बाद, मिस ब्रोंटे ने अपने प्रकाशकों को पत्र लिखकर पूछा कि इसे उन्हें क्यों नहीं भेजा गया; और यह अनुमान लगाते हुए कि यह प्रतिकूल था, उन्होंने अपना पिछला अनुरोध दोहराया कि प्रशंसात्मक समीक्षाओं के साथ जो भी हो, उपन्यास की सभी प्रतिकूल समीक्षाएँ उन्हें बिना किसी चूक के भेजी जाएँ। तदनुसार क्वार्टरली रिव्यू उन्हें भेज दिया गया। मुझे नहीं लगता कि मिस ब्रोंटे ने लेख पर इससे अधिक ध्यान दिया, सिवाय इसके कि उन्होंने "शर्ली" में एक कठोर और अशिष्ट महिला के मुख से कुछ वाक्य निकलवाए, जहाँ वे इतने सटीक बैठते हैं कि कुछ ही लोगों ने उन्हें उद्धरण के रूप में पहचाना है। जिस समय लेख पढ़ा गया वह मिस ब्रोंटे के लिए अच्छा समय था; मृत्यु की भव्य गंभीरता ने उन्हें सभी छोटी-मोटी परेशानियों से बेखबर कर दिया था। अन्यथा, वे उन आलोचनाओं को कहीं अधिक गंभीरता से महसूस कर सकती थीं, जो कठोर होने का प्रयास करते हुए, पूर्वसर्गों के दुरुपयोग के कारण तर्क में विफल रहीं; और "जेन आयर" के लेखकत्व को लेकर लगाए गए अनुमानों से मुझे बहुत ठेस पहुंची है, जो तीखे होने के इरादे से लगाए गए थे, लेकिन महज़ हल्के-फुल्के थे। लेकिन जब किसी गुमनाम लेखक द्वारा किसी

लेखक के खिलाफ हल्के-फुल्केपन का आरोप लगाया जाता है, तो वह अधिक गंभीर हो जाता है। तब हम इसे कायरतापूर्ण धृष्टता कहते हैं।

किसी भी पुस्तक की खूबियों और खामियों के बारे में अपना निष्कर्ष निकालने का अधिकार सभी को है। मैं समीक्षक द्वारा "जेन आयर" पर दिए गए निर्णय से असहमत नहीं हूँ। इसके विषयवस्तु को लेकर उस समय भी राय अलग-अलग थीं, और आज भी हैं। जब मैं यह लिख रहा हूँ, मुझे अमेरिका के एक पादरी का पत्र मिला है जिसमें उन्होंने लिखा है: "हमारे पवित्रतम संग्रह में एक विशेष, सुशोभित शेल्फ है, जिसे हम विशेष सम्मान देते हैं, उन उपन्यासों के लिए जिनका हमारे चरित्र पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उनमें सबसे ऊपर 'जेन आयर' है।"

मैं इससे बिल्कुल विपरीत राय के अस्तित्व से भी इनकार नहीं करता। इसलिए (चूंकि मैं समीक्षक की लेखन शैली पर ध्यान नहीं देता) मैं कृति की खूबियों से संबंधित उनकी आलोचनाओं को एक तरफ रख देता हूँ। लेकिन जब—नेक और महान साउथी की शिष्ट भावना को भूलकर, जिन्होंने कहा था: “अनाम कृतियों की समीक्षा करते समय, जब मैं लेखकों को जानता हूँ, तो मैंने कभी उनका ज़िक्र नहीं किया, यह मानकर कि उनके पास प्रचार से बचने के पर्याप्त कारण थे”—क्वार्टरली का समीक्षक इस बात पर अटकलें लगाने लगता है कि कुरेर बेल वास्तव में कौन है, और पुस्तक से ही लेखक के बारे में निर्णय लेने का दिखावा करता है, तो मैं इस तरह की ईसाई दयाहीनता का पूरे दिल से विरोध करता हूँ। यहाँ तक कि एक “शानदार लेख” लिखने की इच्छा भी, जिसकी लंदन में चर्चा होगी, जहाँ समीक्षा की चतुराई की प्रशंसा होने पर अनाम होने का हल्का सा मुखौटा आसानी से हटाया जा सकता है—यह प्रलोभन भी इस निर्णय की क्रूरता को उचित नहीं ठहरा सकता। वह कौन है जो किसी अनजान स्त्री के बारे में कहे: “वह अवश्य ही किसी पर्याप्त कारण से अपने स्त्री-पुरुषों के साथ लंबे समय से विमुख रही होगी”? क्या वह ऐसा व्यक्ति है जिसने एक उतावला, संघर्षपूर्ण और एकाकी जीवन व्यतीत किया है, जहाँ उसने केवल सीधे-सादे और स्पष्टवादी उत्तरी लोगों को ही देखा है, जो शिष्टतापूर्ण भाषा में बुराई का जिक्र टालने में माहिर नहीं हैं? क्या उसने अपने इकलौते भाई की गलतियों के लिए बहाने खोजने के लिए वर्षों तक आँसुओं में संघर्ष किया है; और एक गरीब, भटके हुए, दुराचारी व्यक्ति के साथ दैनिक संपर्क के कारण, उन बुराइयों से कुछ हद तक परिचित होने के लिए विवश हुआ है जिनसे उसकी आत्मा घृणा करती है? क्या उसने, कठिनाइयों के बीच,

अपने घर में भय के साथ लगातार घूमते हुए, चूल्हे को जीवन और प्रेम से पूरी तरह खाली करते हुए, फिर भी यह कहने की शक्ति के लिए कड़ी मेहनत की है, “यह प्रभु की इच्छा है! उन्हें जो उचित लगे, वही करने दें” — और कभी-कभी व्यर्थ ही प्रयास किया है, जब तक कि दयालु प्रकाश वापस नहीं आ गया? यदि इन सभी अंधकारमय जलमार्गों से तिरस्कारपूर्ण समीक्षक निर्मल, शुद्ध और बेदाग होकर गुजर गया हो, और उसकी आत्मा ने अपने सभी कष्टों में कभी "लामा सबाखथानी" का नारा न लगाया हो, तब भी उसे फरीसी की तरह न्याय करने के बजाय कर वसूलने वाले की तरह प्रार्थना करनी चाहिए।

“10 जनवरी, 1849।”

“कल ऐनी का दिन काफी सहनीय रहा, और पिछली रात भी काफी शांत गुज़री, हालाँकि उसे ज़्यादा नींद नहीं आई। श्री व्हीलहाउस ने छाले पर दोबारा पट्टी लगाने का आदेश दिया। उसने बिना किसी तकलीफ के इसे सहन कर लिया। मैंने अभी-अभी पट्टी लगाई है, और वह उठकर नीचे आ गई है। वह कुछ पीली और बीमार लग रही है। उसे कॉड-लिवर ऑयल की एक खुराक दी गई है; इसकी गंध और स्वाद ट्रेन के तेल जैसा है। मैं उम्मीद करने की कोशिश कर रही हूँ, लेकिन दिन हवादार, बादलों से घिरा और तूफ़ानी है। मेरा मनोबल बीच-बीच में बहुत गिर जाता है; तब मैं वहाँ देखती हूँ जहाँ आपने मुझे देखने की सलाह दी थी, सांसारिक तूफ़ानों और दुखों से परे। मुझे कुछ हद तक शक्ति मिलती है, भले ही सांत्वना न मिले। भविष्य के बारे में सोचना ठीक नहीं है। मुझे हर पल यही महसूस होता है। रात में, मैं जागती हूँ और सुबह का इंतज़ार करती हूँ; तब मेरा दिल दुख से भर जाता है। पापा की हालत भी कुछ ऐसी ही है; जब वे नाश्ते के लिए नीचे आए तो बहुत कमज़ोर लग रहे थे। . . . प्रिय ई——, आपकी दोस्ती मेरे लिए कुछ हद तक सुकून है। मैं इसके लिए आभारी हूँ। मुझे इस समय के अंधेरे में कुछ ही रोशनी दिखाई दे रही है।” लेकिन उनमें से एक है मेरे प्रति समर्पित दयालु हृदय की स्थिरता, जो मुझे सबसे अधिक उत्साह और शांति प्रदान करती है।

15 जनवरी, 1849।

मैं यह तो कह ही नहीं सकती कि ऐनी की हालत बिगड़ी है, न ही यह कि उसमें कोई सुधार हुआ है। दिनभर में उसकी हालत बदलती रहती है, फिर भी हर दिन लगभग एक जैसा ही बीतता है। सुबह का समय आमतौर पर सबसे अच्छा होता है;

दोपहर और शाम को सबसे ज़्यादा बुखार रहता है। उसकी खांसी सबसे ज़्यादा रात में परेशान करती है, लेकिन यह शायद ही कभी तेज़ होती है। उसके हाथ का दर्द अब भी उसे सताता है। वह नियमित रूप से कॉड-लिवर ऑयल और आयरन कार्बोनेट लेती है; उसे दोनों से मतली होती है, लेकिन खासकर तेल से। उसकी भूख बहुत कम हो गई है। चिंता न करें कि मैं उसकी देखभाल में ढिलाई बरतूँगी। वह इतनी अनमोल है कि मैं उसे अपनी पूरी शक्ति से प्यार और देखभाल देना चाहती हूँ। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पापा पिछले एक-दो दिनों से काफी बेहतर हैं।

आपके मेरे बारे में पूछे गए सवालों के जवाब में मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि अगर मैं इसी तरह चलता रहा तो मैं बहुत अच्छा रहूँगा। मेरे सीने और पीठ का दर्द अभी तक पूरी तरह ठीक नहीं हुआ है। मौसम बदलने पर ये दर्द अजीब तरह से फिर लौट आता है; और कभी-कभी इसके साथ थोड़ी सी खराश और गले में खराश भी हो जाती है, लेकिन मैं तारकोल की पट्टी और चोकर की चाय से इसका लगातार मुकाबला करता रहता हूँ। मुझे लगता है कि इस समय अपनी सेहत का ध्यान न रखना बेवकूफी और वाकई गलत होगा; अभी बीमार होना ठीक नहीं है।

मैं आगे या पीछे देखने से बचती हूँ, और ऊपर की ओर देखने की कोशिश करती हूँ। यह पछताने, डरने या रोने का समय नहीं है। मुझे जो मिला है और जो करना चाहिए, वह स्पष्ट रूप से मेरे लिए निर्धारित है; मैं जो चाहती हूँ और जिसके लिए प्रार्थना करती हूँ, वह है इसे पूरा करने की शक्ति। दिन धीमी, अंधेरी चाल से गुज़रते हैं; रातें परीक्षा होती हैं; बेचैन नींद से अचानक जागना, यह एहसास होना कि एक अपनी कब्र में लेटी है, और दूसरी मेरे पास नहीं, बल्कि एक अलग और बीमार बिस्तर पर है। फिर भी, ईश्वर सब पर शासन करता है।

22 जनवरी, 1849।

"पिछले सप्ताह कुछ हल्के दिनों के दौरान ऐनी की तबीयत थोड़ी बेहतर लग रही थी, लेकिन आज वह फिर से बहुत पीली और सुस्त दिख रही है। वह कॉड-लिवर ऑयल का सेवन तो कर रही है, लेकिन फिर भी उसे इससे बहुत मतली हो रही है।"

“वह अपने जूतों के तलवों के लिए आपकी बहुत आभारी हैं और उन्हें बेहद आरामदायक पाती हैं। मैं आपको श्रीमती — — के पास जैसा रेस्पिरेटर था, वैसा ही उनके लिए बनवाने का आदेश दे रहा हूँ। अगर आपको बेहतर लगे तो उन्हें ज़्यादा कीमत देने में कोई आपत्ति नहीं होगी। अगर आपको कोई परेशानी न हो, तो आप मेरे

लिए भी एक जोड़ी तलवे बनवा दीजिए; आप उन्हें और रेस्पिरेटर को बॉक्स के साथ भेज सकते हैं। आपको सभी की कीमत लिख देनी है, और हम आपको डाकघर के आदेश से भुगतान कर देंगे। "वुथरिंग हाइट्स" आपको दे दिया गया है। मैंने — — को न तो कोई पत्र भेजा है और न ही कोई पार्सल। मेरे पास लिखने के लिए केवल निराशाजनक खबरें थीं, इसलिए मैंने बेहतर समझा कि दूसरे लोग उन्हें बताएँ। मैंने — — को भी नहीं लिखा है। मैं तभी लिख सकता हूँ जब बहुत ज़रूरी हो।"

11 फरवरी, 1849।

आज हमें डिब्बा और उसमें रखी सारी चीज़ें बिल्कुल सुरक्षित मिल गईं। पेन वाइपर बहुत सुंदर हैं, और हम इसके लिए आपके बहुत आभारी हैं। मुझे उम्मीद है कि अगर ऐनी कभी ठीक होकर बाहर जाने लायक हो जाए तो रेस्पिरेटर उसके काम आएगा। उसकी हालत अभी भी वैसी ही है - मुझे उम्मीद है कि ज़्यादा खराब नहीं हुई होगी, हालांकि वह बहुत दुबली हो रही है। मुझे डर है कि उसे बेहतर समझना सिर्फ़ मेरा भ्रम होगा। बदलते मौसम का उस पर क्या असर होगा, यह मैं नहीं जानती; शायद सच में गर्म मौसम की वापसी से उसके शरीर को कुछ अच्छा महसूस हो। ठंडी हवा या पाले के ख्याल से ही मैं कांप जाती हूँ। काश मार्च जल्दी खत्म हो जाए! उसका मन आमतौर पर शांत लगता है, और अब तक उसकी तकलीफें एमिली जैसी बिल्कुल नहीं हैं। आगे क्या होगा, यह ख्याल मेरे मन में बार-बार आता है; लेकिन यह एक उदास, निराशाजनक मेहमान है।

"16 मार्च, 1849।"

"पिछला सप्ताह हमारे लिए कुछ कठिन रहा; ठंड तो नहीं थी, लेकिन तापमान में उतार-चढ़ाव होते रहे, जिसका असर ऐनी पर बुरा पड़ा। मुझे उम्मीद है कि उसकी हालत गंभीर रूप से खराब नहीं हुई है, लेकिन उसकी खांसी कभी-कभी बहुत तेज और दर्दनाक होती है, और उसकी ताकत में सुधार होने के बजाय कमी आई है। काश मार्च का महीना जल्दी बीत जाता। आपका यह अनुमान सही है कि मैं कुछ उदास हूँ; कभी-कभी मैं सचमुच उदास हो जाती हूँ। जब मुश्किल अपने चरम पर थी, तब इसे सहना अब से कहीं ज्यादा आसान था। एमिली के जाने का दुख समय बीतने के साथ कम नहीं होता; यह अक्सर सबसे ज्यादा तीव्र रूप से प्रकट होता है। यह अपने साथ एक अवर्णनीय दुःख भी लाता है; और फिर भविष्य अंधकारमय लगता है। फिर भी मैं भली-भांति जानती हूँ कि न तो शिकायत करना ठीक है और न ही निराश होना, और

मैं दोनों में से कुछ भी नहीं करना चाहती। मुझे आशा और विश्वास है कि बोझ के अनुपात में शक्ति अभी भी मिलेगी; लेकिन मेरी स्थिति का दर्द आदत से कम होने वाला नहीं है। इसका अकेलापन और अलगाव दमनकारी परिस्थितियाँ हैं, फिर भी मैं नहीं चाहती कि कोई दोस्त मेरे साथ रहे; मैं किसी के बिना नहीं रह सकती।" तुम भी नहीं—घर के इस दुख को बाँटने के लिए; यह मुझे असहनीय पीड़ा देगा। इस बीच, न्याय में अभी भी दया मिली हुई है। ऐनी की पीड़ाएँ अभी भी हल्की हैं। अकेले रहने पर मेरा स्वभाव है कि मैं दृढ़ता से संघर्ष करती रहती हूँ, और मुझे विश्वास है कि ईश्वर मेरी मदद करेगा।

ऐनी जीवन भर नाज़ुक रही थी; शायद इसी वजह से उन्हें उन घातक शुरुआती लक्षणों की असलियत का उतना अंदाजा नहीं था जितना कि अन्यथा होता। फिर भी, उन्होंने तुरंत ही तुरंत सलाह लेने का फैसला किया। स्टेथोस्कोप से उनकी जांच की गई और यह भयानक तथ्य सामने आया कि उनके फेफड़े प्रभावित थे और तपेदिक की बीमारी काफी बढ़ चुकी थी। उपचार की एक विधि बताई गई, जिसे बाद में डॉ. फोर्ब्स की राय से पुष्टि मिली।

कुछ समय के लिए उन्हें उम्मीद थी कि बीमारी पर काबू पा लिया गया है। शार्लोट - जो स्वयं एक ऐसी बीमारी से पीड़ित थी जिसने उसके मनोबल को बुरी तरह तोड़ दिया था - अपनी सबसे छोटी, आखिरी बहन की हमेशा सतर्क देखभाल कर रही थी। एक राहत की बात यह थी कि ऐनी अत्यंत धैर्यवान और सौम्य रोगी थी। फिर भी, असहनीय पीड़ा के कई घंटे, दिन, सप्ताह बीतने थे; जिसके दबाव में शार्लोट केवल प्रार्थना कर सकती थी और उसने पूरी लगन से प्रार्थना की। इस प्रकार वह 24 मार्च को लिखती है;

"ऐनी की सेहत धीरे-धीरे बिगड़ रही है और उतार-चढ़ाव आ रहे हैं; लेकिन इसकी प्रकृति संदेह से परे है। . . . मन से वह शांत हैं: मेरा मानना है कि हृदय से वह एक सच्ची ईसाई हैं। . . . ईश्वर उन्हें और हम सभी को इस कठिन बीमारी की परीक्षा में सहारा दें और अंतिम क्षण में उनकी सहायता करें जब आत्मा और शरीर को अलग करने का संघर्ष करना होगा! हमने एमिली को अपने बीच से बिछड़ते देखा जब हमारा दिल उससे बहुत लगाव से जुड़ा हुआ था। . . . उसे दफनाए जाने के तुरंत बाद ऐनी की सेहत बिगड़ गई। . . . ये सब बातें असहनीय होतीं, अगर केवल तर्क को, धर्म के सहारे के बिना, इन सब का बोझ उठाना पड़ता। मुझे अपने पिता और खुद को अब

तक मिली शक्ति के लिए अत्यंत आभारी होने का कारण है। मेरा मानना है कि ईश्वर बुढ़ापे पर विशेष रूप से दयालु होते हैं; और जहाँ तक मेरी बात है, जो परीक्षाएँ पहले से ही मुझे असहनीय लगती थीं, जब वे वास्तव में आईं तो मैंने उन्हें बिना टूटे सहन किया। फिर भी मुझे स्वीकार करना होगा कि, इस दौरान जो समय बीता है एमिली की मृत्यु के बाद बीते समय में, एकांत, गहरे, निष्क्रिय दुख के क्षण आए हैं, जो हमारे जाने के तुरंत बाद के दुखों से कहीं अधिक कठिन थे। शोक का संकट एक तीव्र पीड़ा लेकर आता है जो प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है; उदासी का भाव कभी-कभी पंगु बना देता है। मैंने सीखा है कि हमें अपनी शक्ति में सांत्वना नहीं ढूंढनी चाहिए; हमें इसे ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता में खोजना चाहिए। धैर्य अच्छा है; लेकिन धैर्य को भी हमारे सामने डगमगाना चाहिए ताकि हमें पता चले कि हम कितने कमजोर हैं!

ऐनी की इस बीमारी के दौरान, शार्लोट को उससे उसकी हालत के बारे में बात करने का सुकून मिलता था; यह सुकून एमिली द्वारा सभी सहानुभूति को ठुकराए जाने की याद के विपरीत होने के कारण और भी अधिक बढ़ जाता था। यदि ऐनी के हित में कोई प्रस्ताव रखा जाता, तो शार्लोट उससे इस बारे में बात कर सकती थी, और देखभाल करने वाली और मरणासन्न बहनें इसकी उपयुक्तता के बारे में आपस में सलाह-मशविरा कर सकती थीं। मैंने ऐनी का केवल एक पत्र देखा है; ऐसा लगता है कि यही एकमात्र अवसर है जब हम इस कोमल, धैर्यवान लड़की के साथ सीधे व्यक्तिगत संपर्क में आते हैं। आवश्यक प्रारंभिक स्पष्टीकरण देने के लिए, मुझे यह बताना होगा कि दोस्तों के उस परिवार ने, जिससे ई. — — संबंधित थी, प्रस्ताव दिया कि ऐनी उनके पास आए; ताकि यह देखा जा सके कि वातावरण और आहार में बदलाव और दयालु लोगों की संगति उसके स्वास्थ्य को बहाल करने में क्या कर सकती है। इस प्रस्ताव के उत्तर में, शार्लोट लिखती हैं: —

24 मार्च।

"मैंने ऐनी को लिखा आपका प्यारा सा पत्र पढ़ा, और वह चाहती है कि मैं आपके मैत्रीपूर्ण प्रस्ताव के लिए आपको दिल से धन्यवाद दूं। बेशक, वह समझती है कि किसी बीमार व्यक्ति को — — के निवासियों के बीच ठहराकर इसका फायदा उठाना ठीक नहीं होगा; लेकिन वह संकेत देती है कि एक और तरीका है जिससे आप उसकी मदद कर सकते हैं, शायद इससे आपको और उसे दोनों को कुछ लाभ हो। अगर एक-दो महीने बाद, यह उचित समझा जाए कि वह समुद्र तट या किसी अंतर्देशीय जल-

स्थान पर जाए — और अगर पापा जाने के इच्छुक न हों, और मुझे घर पर ही रहना पड़े — तो वह पूछती है, क्या आप उसके साथ जा सकते हैं? बेशक, मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि अगर ऐसा कोई इंतज़ाम हो जाता है, तो आपको कोई खर्च नहीं उठाना पड़ेगा। प्रिय ई., यह ऐनी का प्रस्ताव है; मैं उसकी इच्छा पूरी करने के लिए यह प्रस्ताव रख रहा हूं; लेकिन अपनी ओर से, मुझे यह कहना होगा कि मुझे लगता है कि आपके इसे स्वीकार करने पर उसे गंभीर आपत्तियां होंगी — ऐसी आपत्तियां जिनका मैं ऐनी को नाम नहीं बता सकता। उसकी हालत बदलती रहती है; मौसम बदलने के साथ कभी उसकी हालत बिगड़ती है, कभी बेहतर होती है; लेकिन कुल मिलाकर, मुझे डर है कि उसकी हालत बिगड़ती जा रही है।” हिम्मत रखो। पापा कहते हैं कि उसकी हालत बहुत नाज़ुक है; हो सकता है उसे कुछ समय के लिए बख्श दिया जाए, या अचानक कोई बदलाव आ जाए और हमें पता भी न चले। अगर ऐसा कोई बदलाव तब हो जब वह घर से दूर हो और तुम्हारे साथ अकेली हो, तो यह बहुत भयानक होगा। यह सोचकर ही मैं असहनीय रूप से परेशान हो जाती हूँ, और जब भी वह यात्रा की बात करती है तो मैं कांप जाती हूँ। संक्षेप में, मैं चाहती हूँ कि हमें कुछ समय मिल जाए और हम देख लें कि वह कैसी रहती है। अगर वह घर छोड़ती है तो निश्चित रूप से मई के अनिश्चित महीने में नहीं, जो कमज़ोरों के लिए बहुत कष्टदायक माना जाता है। जून ज़्यादा सुरक्षित महीना होगा। अगर हम जून तक पहुँच जाएँ, तो मुझे उम्मीद है कि वह गर्मियों का मौसम सुरक्षित बिता लेगी। इस पत्र का ऐसा उत्तर लिखो जो मैं ऐनी को दिखा सकूँ। तुम मुझे कोई भी अतिरिक्त टिप्पणी एक अलग कागज़ पर लिख सकते हो। अपने आप को केवल हमारे दुखद मामलों पर चर्चा करने तक सीमित मत समझो। मुझे उन सभी बातों में दिलचस्पी है जिनमें तुम्हारी दिलचस्पी है।

ऐनी ब्रोंटे से

5 अप्रैल, 1849।

मेरी प्रिय मिस — — , — आपके स्नेहपूर्ण पत्र और मेरी इच्छा के अनुसार मेरी बात मानने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। हालाँकि, मैं समझता हूँ कि आपके मित्र वर्तमान परिस्थितियों में आपको मेरे साथ आने की ज़िम्मेदारी लेने के इच्छुक नहीं हैं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई बड़ी ज़िम्मेदारी होगी। मैं जानता हूँ, और सभी जानते हैं, कि आप यथासंभव दयालु और मददगार होंगी, और मुझे आशा है कि मैं आपको ज़्यादा परेशान नहीं करूँगा। मैं एक साथी के रूप में आपका साथ चाहता हूँ,

न कि एक नर्स के रूप में; अन्यथा मैं आपसे ऐसा करने का आग्रह नहीं करता। —— के लिए आपके बार-बार दिए गए निमंत्रण के लिए, कृपया अपनी माँ और बहनों को मेरा हार्दिक धन्यवाद दें, लेकिन उन्हें बताएँ कि मैं इस समय उनके साथ रहने के बारे में सोच भी नहीं सकता। यह उनकी बहुत बड़ी मेहरबानी है कि वे मेरी परेशानी को इतनी आसानी से ले रही हैं, लेकिन फिर भी एक मूक, बीमार अजनबी के साथ रहने से कुछ न कुछ आनंद तो ज़रूर मिलेगा, और निश्चित रूप से कोई आनंद नहीं मिलेगा। हालाँकि, मुझे आशा है कि शार्लेट किसी न किसी तरह से मेरे साथ आने का प्रबंध कर लेंगी। वह निश्चित रूप से बहुत नाज़ुक हैं और अपनी सेहत सुधारने के लिए उन्हें वातावरण और माहौल में बदलाव की सख्त ज़रूरत है। और फिर मई के अंत से पहले आपका मेरे साथ जाना लगभग नामुमकिन है, जब तक कि आपके मेहमान निराश न हों; लेकिन अगर मौसम पहले जाने की इजाज़त दे तो मैं तब तक इंतज़ार नहीं करना चाहूँगी। आप कहती हैं कि मई एक मुश्किल महीना है, और दूसरे भी यही कहते हैं। मैं मानती हूँ कि इसका पहला भाग अक्सर काफ़ी ठंडा होता है, लेकिन मेरे अनुभव के अनुसार, दूसरे भाग में कुछ अच्छे गर्म दिन ज़रूर होते हैं, जब लेबर्नम और लिली खिलते हैं; जबकि जून अक्सर ठंडा होता है और जुलाई आमतौर पर गीला होता है। लेकिन देरी को लेकर मेरी बेचैनी का इससे भी ज़्यादा गंभीर कारण है। डॉक्टर कहते हैं कि टीबी के मामलों में, अगर समय पर इलाज किया जाए तो वातावरण में बदलाव या बेहतर जलवायु में जाना शायद ही कभी असफल होता है; लेकिन इतनी निराशाओं का कारण यह है कि इसे आमतौर पर तब तक टाला जाता है जब तक बहुत देर हो चुकी होती है। अब मैं यह गलती नहीं करूँगी; और सच कहूँ तो, हालाँकि मुझे अब पहले से बहुत कम दर्द और बुखार है, जब आप मेरे साथ थीं। हम सब देखते हुए, मैं काफी कमजोर और दुबली हो गई हूँ। मेरी खांसी अभी भी मुझे बहुत परेशान करती है, खासकर रात में, और सबसे बुरी बात यह है कि सीढ़ियाँ चढ़ने या थोड़ी सी भी मेहनत करने पर मेरी सांस फूलने लगती है। इन परिस्थितियों में, मुझे लगता है कि अब समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है। मुझे मृत्यु से कोई भय नहीं है: अगर मुझे लगता कि यह अपरिहार्य है, तो मैं चुपचाप इस बात को स्वीकार कर लेती, इस उम्मीद में कि आप, प्रिय मिस — — , शार्लोट को अपना जितना हो सके उतना समय देंगी और मेरी जगह उसकी बहन बनेंगी। लेकिन मैं चाहती हूँ कि ईश्वर मुझे इस दुनिया से जाने से पहले कुछ अच्छा काम करने की कृपा करें, न केवल पापा और शार्लोट के लिए,

बल्कि इसलिए भी कि मैं इस दुनिया को छोड़ने से पहले कुछ अच्छा करना चाहती हूँ। मेरे मन में भविष्य के लिए कई योजनाएँ हैं — भले ही वे छोटी और सीमित हों — लेकिन फिर भी मैं नहीं चाहती कि वे सब व्यर्थ हो जाएँ और मेरा जीवन इतना कम उद्देश्यपूर्ण हो। लेकिन ईश्वर की इच्छा पूरी हो। अपनी माँ और बहनों को मेरा आदरपूर्वक स्मरण करना, और विश्वास कीजिए, प्रिय मिस — — , आपकी हार्दिक शुभकामनाएँ। स्नेहपूर्वक,

"ऐनी ब्रोंटे।"

लगभग इसी समय ऐनी ने अपनी अंतिम कविताएँ रची होंगी, इससे पहले कि "मेज बंद कर दी जाए और कलम को हमेशा के लिए एक तरफ रख दिया जाए।"

मैं।

"मुझे आशा थी कि बहादुर और बलवान लोगों के साथ मेरा निर्धारित कार्य होगा; व्यस्त भीड़ के बीच परिश्रम करना, शुद्ध और उच्च उद्देश्य के साथ।"

II.

लेकिन ईश्वर ने एक और हिस्सा तय कर दिया है, और उसने इसे अच्छी तरह से तय किया है: मैंने अपने दुखी हृदय से ऐसा कहा था, जब पहली बार पीड़ा आई थी।

III.

हे ईश्वर, तूने हमारी खुशी, हमारी अनमोल आशा छीन ली है; तूने हमें अब रात भर रोने और दिन भर शोक करने का आदेश दिया है।

IV.

"ये थका देने वाले घंटे व्यर्थ नहीं जाएंगे, ये दुख के दिन, ये अंधकारमय, पीड़ा से भरी रातें, क्या मैं केवल तेरी ओर मुड़ सकता हूँ?"

IV.

"गुप्त परिश्रम से सहन करने के लिए, हर आघात को विनम्रतापूर्वक सहन करने के लिए; दर्द से धैर्य प्राप्त करने के लिए, और दुख से आशा और पवित्रता प्राप्त करने के लिए।"

VI.

"इस प्रकार मैं अपने हृदय से तेरी सेवा करूँ, चाहे मेरा भाग्य कुछ भी लिखा हो; चाहे मुझे इतनी जल्दी प्रस्थान करना पड़े, या फिर कुछ समय प्रतीक्षा करनी पड़े।"

सातवीं।

“यदि तू मुझे जीवन में वापस ले आए, तो मैं और अधिक विनम्र हो जाऊँगा; और अधिक बुद्धिमान हो जाऊँगा - संघर्ष के लिए और अधिक मजबूत हो जाऊँगा, और तुझ पर भरोसा करने के लिए और अधिक तैयार हो जाऊँगा।”

आठवीं।

“यदि मृत्यु द्वार पर खड़ी हो, तो भी मैं अपनी प्रतिज्ञा का पालन करूंगा; परन्तु हे प्रभु, मेरा भाग्य चाहे जो भी हो, हे प्रभु, मुझे अभी तेरी सेवा करने दे!”

मैं इस पूरे भयावह समय के दौरान शार्लोट के विचारों और भावनाओं के सर्वोत्तम रिकॉर्ड के रूप में उनके स्वयं के शब्दों को ही स्वीकार करता हूं।

12 अप्रैल।

मैंने ऐनी का पत्र पढ़ा; जैसा कि आपने कहा, वह वाकई मार्मिक था। अगर इस दुनिया के बाद कोई उम्मीद न होती, कोई अनंत जीवन न होता, कोई आने वाला जीवन न होता, तो एमिली का भाग्य, और जो ऐनी को खतरे में डाल रहा है, वह दिल दहला देने वाला होता। मैं एमिली की मृत्यु का दिन नहीं भूल सकती; वह मेरे मन में पहले से कहीं अधिक स्थिर, अधिक अंधकारमय और बार-बार आने वाला विचार बन गया है। वह बहुत भयानक था। उसे एक खुशहाल जीवन से अलग कर दिया गया, वह होश में थी, हांफ रही थी, अनिच्छुक थी, फिर भी दृढ़ थी। लेकिन इन बातों पर ज्यादा सोचना ठीक नहीं है।

मुझे खुशी है कि आपके दोस्त ऐनी के साथ आपके जाने का विरोध कर रहे हैं: यह बिल्कुल भी ठीक नहीं होगा। सच कहूँ तो, भले ही आपकी माँ और बहनें मान जातीं, मैं तो कभी मान ही नहीं सकती थी। ऐसा नहीं है कि उसकी देखभाल में कोई बहुत मेहनत लगेगी; उसे थोड़ी सी ही देखभाल की ज़रूरत है और वह इसे स्वीकार भी कर लेगी; लेकिन इसमें खतरा और मानसिक चिंता होगी, जो आपके लिए असहनीय होगी। अगर एक महीने या छह हफ्ते बाद भी वह अभी की तरह ही बदलाव चाहती है, तो मैं खुद उसके साथ जाऊँगी। यह निश्चित रूप से मेरा सर्वोपरि कर्तव्य होगा; बाकी सभी काम इसके आगे गौण हो जाएँगे। मैंने श्री टी—— से सलाह ली है: उन्हें कोई आपत्ति नहीं है और वे स्कारबोरो की सलाह देते हैं, जो ऐनी की अपनी पसंद थी। मुझे उम्मीद है कि व्यवस्था इस तरह हो जाएगी कि आप कम से कम कुछ समय के लिए हमारे साथ रह सकें। चाहे मैं लॉजिंग में रहूँ या न रहूँ, मैं भोजन की व्यवस्था चाहती हूँ। मुझे लगता है कि खुद का इंतज़ाम करना एक असहनीय झंझट है। मुझे अलमारी में

खाने-पीने का सामान रखना पसंद नहीं है। तालाबंदी, लूटपाट, और ये सब। यह एक छोटी-मोटी, परेशान करने वाली बात है।

ऐनी की बीमारी की प्रगति एमिली की तुलना में धीमी थी; और वह इतनी निस्वार्थ थी कि उसने उन उपायों को अपनाने से इनकार नहीं किया, जिनसे, यदि उसे स्वयं लाभ की बहुत कम उम्मीद थी, तो उसके मित्र भविष्य में एक दुखद संतोष प्राप्त कर सकते थे।

मुझे लगने लगा था कि वह ठीक हो रही है। लेकिन ठंड बढ़ने से उसकी हालत बिगड़ गई है; आजकल उसकी तकलीफ और बढ़ गई है। फिर भी उसकी बीमारी में वे भयानक और तेज़ी से बढ़ने वाले लक्षण नहीं हैं जो एमिली के मामले में थे। अगर वह वसंत ऋतु से उबर जाए, तो मुझे उम्मीद है कि गर्मी उसके लिए काफी फायदेमंद साबित होगी, और फिर सर्दियों के लिए किसी गर्म जगह पर जल्दी ले जाने से कम से कम उसकी उम्र बढ़ सकती है। अगर हम एक और साल जी सकें, तो मैं शुक्रगुजार हो जाऊंगी; लेकिन क्या हम स्वस्थ लोगों के लिए ऐसा कर सकते हैं? कुछ दिन पहले मैंने डॉक्टर फोर्ब्स की राय जानने के लिए लिखा था... उन्होंने हमें ठीक होने की अत्यधिक आशा न रखने की चेतावनी दी। वे कॉड-लिवर ऑयल को एक विशेष रूप से कारगर दवा मानते हैं। उन्होंने भी फिलहाल निवास स्थान बदलने का विरोध किया। यह सोचकर थोड़ी तसल्ली मिलती है कि हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं। एमिली की बीमारी के दौरान जैसी जबरन और पूरी तरह से उपेक्षा का दर्द अब महसूस नहीं होता। हम फिर कभी ऐसा दर्द सहने के लिए मजबूर न हों। यह बहुत भयानक था। मैंने अब तक इससे कहीं कम अप्रिय अनुभव किया है। हाल ही में मेरे सीने में दर्द हो रहा था, और गले में खराश और भारीपन भी काफी कम हो गया था। मैंने गर्म सिरके का लेप लगाकर देखा, जिससे मुझे आराम मिला।

1 मई।

"मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि जब हम स्कारबोरो जाएंगे, तो आप हमारे साथ जा सकेंगी, लेकिन यात्रा और उसके परिणाम अभी भी मेरे लिए बहुत चिंता का विषय हैं। अगर हो सके तो मुझे इसे दो-तीन हफ्ते और टालना होगा; शायद तब तक सुहावने मौसम से ऐनी को थोड़ी ताकत मिल जाए, शायद कुछ और हो; मैं कुछ कह नहीं सकती। अच्छे मौसम से उसे अभी तक कोई फायदा नहीं हुआ है। पिछले कुछ दिनों से वह कभी-कभी इतनी कमजोर हो जाती है और उसके पेट में इतना दर्द होता है कि

मुझे समझ नहीं आता कि क्या सोचूं। ... हो सकता है वह ठीक हो जाए और काफी बेहतर हो जाए, लेकिन घर से दूर ले जाने से पहले उसमें कुछ सुधार होना जरूरी है। फिर भी देरी करना कष्टदायक है; क्योंकि, जैसा कि हमेशा होता है, मुझे लगता है, उसकी परिस्थितियों में, वह खुद इस देरी की आवश्यकता को पूरी तरह से नहीं समझ पा रही है। मुझे लगता है कि वह सोच रही है कि मैं यात्रा के बारे में ज्यादा बात क्यों नहीं करती: यह सोचकर मुझे दुख होता है कि मेरी इस देरी से उसे ठेस भी पहुंच सकती है। वह बहुत दुबली-पतली हो गई है, — तुम्हारे साथ रहने के समय से भी कहीं ज़्यादा; उसकी बाहें तो किसी नन्हे बच्चे की बाहों से भी पतली हैं। ज़रा सी भी मेहनत करने पर उसकी सांस फूल जाती है। वह रोज़ थोड़ा-थोड़ा बाहर जाती है, लेकिन हम चलने के बजाय रेंगते हैं। . . . पापा की हालत ठीक-ठाक है; — मुझे उम्मीद है कि मैं भी हिम्मत जुटा पाऊँगी। अब तक तो मुझे ईश्वर का शुक्रगुज़ार होने का कारण है।

मई का महीना आ गया था, और अपने साथ सुहावना मौसम लेकर आया था जिसकी सब बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे थे; लेकिन इस बदलाव से ऐनी की तबीयत और खराब हो गई। कुछ देर बाद ठंड बढ़ गई, और वह थोड़ी संभली, और बेचारी शार्लोट को उम्मीद होने लगी कि अगर मई का महीना बीत जाए, तो शायद वह लंबे समय तक जीवित रह पाएगी। मिस ब्रोंटे ने स्कारबोरो में रहने के लिए जगह बुक करने के लिए पत्र लिखा, - वह जगह जहाँ ऐनी पहले उस परिवार के साथ जाया करती थी, जिसकी वह गवर्नेंस करती थी। उन्होंने शहर के सबसे अच्छे स्थानों में से एक में एक बड़ा बैठक कक्ष और एक हवादार डबल बेड वाला कमरा (दोनों से समुद्र का नज़ारा दिखता था) लिया। जीवन के सामने पैसा कुछ भी नहीं था; इसके अलावा, ऐनी को उसकी धर्ममाता से एक छोटी सी विरासत मिली थी, और उन्हें लगा कि वह इसका बेहतर उपयोग जीवन को लंबा करने के लिए कर सकती है, भले ही स्वास्थ्य ठीक न हो पाए। 16 मई को, शार्लोट लिखती है:

मैं भारी मन से तैयारी कर रही हूँ; और दिल से चाहती हूँ कि यात्रा की थकान जल्द से जल्द दूर हो जाए। शायद मैं इसे उम्मीद से बेहतर सहन कर पाऊँ; क्योंकि क्षणिक उत्तेजना अक्सर बहुत कुछ कर देती है; लेकिन जब मैं दिन-प्रतिदिन बढ़ती कमजोरी देखती हूँ, तो समझ नहीं आता कि क्या सोचूँ। मुझे डर है कि ऐनी को देखकर आपको झटका लगेगा; लेकिन प्रिय ई——, सावधान रहना, अपनी भावनाओं

को ज़ाहिर मत करना; वास्तव में, मुझे तुम्हारे संयम और दयालुता दोनों पर भरोसा है। काश, स्कारबोरो जाने के मेरे फैसले को मैं और अधिक सही ठहरा पाती। तुमने पूछा कि मैंने पापा को छोड़ने का क्या इंतज़ाम किया है। मैं कोई खास इंतज़ाम नहीं कर सकी। वो चाहते हैं कि मैं ऐनी के साथ जाऊँ, और मिस्टर एन—— के आने या इस तरह की किसी भी बात को सुनना नहीं चाहते; इसलिए मैं वही कर रही हूँ जो मुझे लगता है कि सबसे अच्छा है, और परिणाम ईश्वर पर छोड़ रही हूँ।

उन्होंने यॉर्क में आराम करने और एक रात बिताने की योजना बनाई; और ऐनी की इच्छा पर, वहाँ कुछ खरीदारी करने का भी प्रबंध किया। शार्लोट अपनी सहेली को लिखे पत्र का अंत इस वाक्य से करती है, जिसमें वह उसे यह सब बताती है—

23 मई।

"काश, टोपी वगैरह खरीदने की बातें करना हमारे लिए इतना नीरस और मज़ाकिया न लगता। कल ऐनी बहुत बीमार थी। उसे पूरे दिन सांस लेने में तकलीफ हो रही थी, यहाँ तक कि बिल्कुल शांत बैठे रहने पर भी। आज वो थोड़ी बेहतर लग रही है। मैं उस पल का बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ जब उसे समुद्र की ताज़ी हवा में रखा जाएगा। क्या इससे उसे फायदा होगा? मैं कह नहीं सकती; मैं बस यही कामना कर सकती हूँ। ओह! अगर ईश्वर ऐनी को शक्ति और जीवनदान दे, तो हम दोनों कितने खुश रहेंगे: ईश्वर की इच्छा पूरी हो!"

दोनों बहनें गुरुवार, 24 मई को हॉवर्थ से रवाना हुईं। उन्हें एक दिन पहले ही निकलना था और उन्होंने अपनी सहेली से लीड्स स्टेशन पर मिलने का समय तय किया था ताकि वे सब एक साथ जा सकें। लेकिन बुधवार की सुबह ऐनी इतनी बीमार थीं कि बहनों का निकलना असंभव हो गया; फिर भी उनके पास अपनी सहेली को इसकी सूचना देने का कोई साधन नहीं था, और इसलिए वह तय समय पर लीड्स स्टेशन पहुँचीं। वहाँ वह कई घंटों तक इंतज़ार करती रहीं। उस समय उन्हें यह बात अजीब लगी - और अब तो उन्हें यह अशुभ सा लगता है - कि जिस लाइन पर वह अपनी सहेलियों का इंतज़ार कर रही थीं, उस पर दो अलग-अलग बार दो बार ताबूत लाए गए और उन्हें शव वाहनों में रखा गया, जो मृतकों का इंतज़ार कर रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे वह चार दिनों में एक बार किसी के शव के आने का इंतज़ार कर रही थीं।

अगले दिन वह और इंतज़ार नहीं कर सकीं और हॉवर्थ के लिए निकल पड़ीं। वहाँ पहुँचकर उन्होंने उस कमज़ोर, बेहोश हो रही महिला को उस गाड़ी में बिठाया जो उन्हें

कीघली ले जाने के लिए द्वार पर खड़ी थी। पादरी के घर के द्वार पर खड़ी नौकरानी ने उनके चेहरे पर मृत्यु के भाव देखे और इसके बारे में बात की। शार्लोट ने भी इसे देखा, पर कुछ नहीं कहा - क्योंकि ऐसा करना भय को बहुत स्पष्ट रूप देना होता; और अगर इस प्रियतम को स्कारबोरो जाने की तीव्र इच्छा थी, तो उसे जाना ही चाहिए, चाहे शार्लोट का दिल आने वाले भय से कितना भी भयभीत क्यों न हो। उनके साथ यात्रा करने वाली महिला, शार्लोट की बीस साल से अधिक पुरानी प्रिय मित्र, ने कृपा करके मुझे यात्रा और अंत का निम्नलिखित विवरण लिखकर दिया है।

“वह 24 मई, 1849 को अपने घर से निकलीं और 28 मई को उनका निधन हो गया। उनका जीवन शांत, सौम्य और आध्यात्मिक था: यही उनका अंत था। यात्रा की कठिनाइयों और थकानों के बावजूद, उन्होंने एक शहीद के समान धार्मिक साहस और धैर्य का परिचय दिया। निर्भरता और बेबसी उनके लिए असहनीय पीड़ा से कहीं अधिक कष्टदायी थी।”

"हमारी यात्रा का पहला चरण यॉर्क था; और यहाँ वह प्यारी बीमार महिला इतनी तरोताज़ा, इतनी प्रसन्न और इतनी खुश थी कि हमें सांत्वना मिली और हमें विश्वास हो गया कि कम से कम अस्थायी सुधार उस बदलाव से प्राप्त होगा जिसकी वह इतनी लंबे समय से कामना कर रही थी और जिसके लिए उसके दोस्त इतने भयभीत थे।"

“उनकी इच्छा पर हम मिनस्टर गए, और उनके लिए यह एक अत्यंत सुखद अनुभव था; न केवल इसकी भव्यता और प्रभावशाली आकार के कारण, बल्कि इसलिए भी कि इसने उनके संवेदनशील स्वभाव में सर्वशक्तिमानता का एक जीवंत और प्रबल अहसास जगाया। इमारत को निहारते हुए उन्होंने कहा, ‘यदि सीमित शक्ति यह कर सकती है, तो वह क्या है...?’ और यहीं पर भावना ने उनके भाषण को रोक दिया, और वे एक कम रोमांचक दृश्य की ओर चल पड़ीं।”

“उनका शरीर बहुत कमजोर था, लेकिन हर कृपा के लिए उनकी कृतज्ञता उससे भी कहीं अधिक थी। अपने शयनकक्ष तक चलने जैसी मेहनत के बाद भी, वे हाथ जोड़कर और आँखें उठाकर मौन धन्यवाद देती थीं, और ऐसा करने के साथ-साथ वे अपनी नियमित प्रार्थना भी करती थीं, जो वे घुटने टेककर करती थीं, इससे पहले कि वे अपने पलंग पर आराम करें।”

"25 तारीख को हम स्कारबोरो पहुंचे; यात्रा के दौरान हमारे प्यारे बीमार व्यक्ति ने हमारा ध्यान हर उस दृश्य की ओर आकर्षित किया जो ध्यान देने योग्य था।"

"26 तारीख को वह एक घंटे तक रेत पर गाड़ी चलाती रही; और कहीं ऐसा न हो कि उसका चालक बेचारे गधे को उसकी कोमल हृदय के लिए अनुचित गति से दौड़ाए, इसलिए उसने लगाम पकड़ ली और खुद गाड़ी चलाने लगी। जब उसकी सहेली उसके पास आई, तो उसने गधे के मालिक लड़के को समझाया कि वह बेचारे जानवर के साथ अच्छा व्यवहार करे। उसे मूक प्राणियों से बहुत लगाव था और वह उनके लिए अपना आराम भी त्याग देती थी।"

"रविवार, 27 तारीख को, वह चर्च जाना चाहती थी और अपने साथी मनुष्यों के बीच एक बार फिर अपने ईश्वर की आराधना करने के विचार से उसकी आँखें चमक उठीं। हमने उसे ऐसा करने से रोकने को ही उचित समझा, हालाँकि यह स्पष्ट था कि उसका हृदय सार्वजनिक रूप से भक्ति और स्तुति के इस कार्य में शामिल होने के लिए तड़प रहा था।"

दोपहर में वह थोड़ी देर चली और समुद्र तट के पास एक सुरक्षित और आरामदायक जगह पर पहुँचकर उसने हमसे विनती की कि हम उसे अकेला छोड़ दें और आस-पास के विभिन्न दृश्यों का आनंद लें, जो हमारे लिए नए थे लेकिन उसके लिए परिचित थे। उसे वह जगह बहुत पसंद थी और वह चाहती थी कि हम भी उसकी पसंद को समझें।

शाम ढलते ही हमने अब तक का सबसे शानदार सूर्यास्त देखा। चट्टान पर बना किला ढलते सूरज की किरणों से जगमगा रहा था और शान से खड़ा था। दूर के जहाज चमकीले सोने की तरह चमक रहे थे; किनारे के पास छोटी नावें घटते ज्वार पर हिल रही थीं, मानो यात्रियों को बुला रही हों। नज़ारा शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता था। ऐनी अपनी आरामकुर्सी में बैठी खिड़की के पास हमारे साथ इस दृश्य का आनंद लेने के लिए खिंची चली गई। उसका चेहरा भी उस शानदार दृश्य की तरह ही चमक उठा। उसने ज़्यादा कुछ नहीं कहा, क्योंकि यह स्पष्ट था कि उसके विचार सामने के उस भव्य दृश्य से प्रेरित होकर अनंत महिमा की ओर बढ़ रहे थे। उसने फिर से सार्वजनिक पूजा के बारे में सोचा और हमसे कहा कि हम उसे छोड़कर ईश्वर के घर में एकत्रित लोगों के साथ शामिल हो जाएँ। हमने विनम्रता से मना कर दिया और उसे समझाया कि उसके साथ रहना हमारा कर्तव्य और सुख है, क्योंकि वह अब इतनी प्यारी और इतनी कमज़ोर हो गई थी। आग के पास अपनी जगह पर लौटकर उसने अपनी बहन से घर लौटने की उपयुक्तता के बारे में बात की। वह अपने लिए ऐसा नहीं

चाहती थी, उसने कहा कि उसे डर है कि अगर उसकी मृत्यु हो गई तो दूसरों को और अधिक कष्ट सहना पड़ेगा। यह घटना वहीं घटी जहाँ वह थी। शायद उसने सोचा होगा कि उसके बेजान शरीर को लंबी यात्रा पर ले जाना उसकी बहन के लिए असहनीय होगा - शोक संतप्त पिता के लिए भी असहनीय होगा, अगर नौ महीनों के छोटे से अंतराल में परिवार के मकबरे में एक और, और फिर तीसरी सदस्य को ले जाया जाता।

रात बिना किसी बीमारी के गुज़री। वह सुबह सात बजे उठीं और अपनी इच्छा के अनुसार उन्होंने अपना ज़्यादातर श्रृंगार स्वयं किया। उनकी बहन हमेशा ऐसी बातों पर मान जाती थीं, क्योंकि उनका मानना था कि जब तक कोई अपनी असमर्थता स्वीकार न करे, तब तक उस पर ज़ोर न देना ही सबसे सच्ची दयालुता है। सुबह लगभग 11 बजे तक कुछ भी चिंताजनक नहीं हुआ। फिर उन्होंने अपने अंदर कुछ बदलाव महसूस करने की बात कही। उन्हें लगा कि अब उनके पास जीने के लिए ज़्यादा समय नहीं बचा है। अगर हम तुरंत प्रस्थान की तैयारी करें, तो क्या वह जीवित घर पहुँच पाएंगी? एक चिकित्सक को बुलाया गया। उन्होंने चिकित्सक से पूर्ण शांति से बात की। उन्होंने उनसे पूछा कि उनके अनुसार वह कितने दिन जीवित रह सकती हैं; सच बोलने से न डरें, क्योंकि उन्हें मरने से डर नहीं लगता था। चिकित्सक ने अनिच्छा से स्वीकार किया कि मृत्यु का दूत आ चुका है और जीवन तेज़ी से समाप्त हो रहा है। उन्होंने उनकी सच्चाई के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और चिकित्सक ने जल्द ही फिर आने का वादा करके प्रस्थान किया। वह अभी भी अपनी आरामकुर्सी पर बैठी थीं, इतनी शांत और आत्मविश्वास से भरी हुई लग रही थीं कि अभी तक शोक का कोई आसार नहीं था, हालाँकि सभी जानते थे कि बिछड़ना निकट है। उन्होंने अपने हाथ जोड़े और श्रद्धापूर्वक आशीर्वाद मांगा। ऊपर से, पहले अपनी बहन पर, फिर अपनी सहेली पर, जिससे उसने कहा, 'मेरी जगह बहन बनो। शार्लेट को जितना हो सके उतना समय दो।' फिर उसने हर किसी को उसकी दया और ध्यान के लिए धन्यवाद दिया।

कुछ ही देर में मृत्यु के निकट आने की बेचैनी प्रकट हुई, और उसे सोफे पर लिटाया गया; जब उससे पूछा गया कि क्या उसे आराम मिल रहा है, तो उसने कृतज्ञतापूर्वक अपने प्रश्नकर्ता की ओर देखा और कहा, 'मुझे आराम आप नहीं दे सकते, लेकिन जल्द ही सब ठीक हो जाएगा, हमारे उद्धारकर्ता के गुणों से।' इसके कुछ ही क्षण बाद, यह देखकर कि उसकी बहन अपने दुःख को मुश्किल से रोक पा

रही है, उसने कहा, 'हिम्मत रखो, शार्लोट; हिम्मत रखो।' उसका विश्वास कभी नहीं डिगा, और उसकी आँखें लगभग दो बजे तक धुंधली नहीं हुईं, जब वह शांति से और बिना आह भरे सांसारिक जीवन से शाश्वत जीवन में विलीन हो गई। उसके अंतिम घंटे और क्षण इतने शांत और इतने पवित्र थे। सहायता या भय का कोई विचार नहीं था। डॉक्टर दो-तीन बार आया और चला गया। घर की मालकिन जानती थी कि मृत्यु निकट है, फिर भी घर में मरणासन्न व्यक्ति की उपस्थिति और उसके निकट शोक संतप्त लोगों के दुःख से इतनी कम हलचल थी कि जब जीवित बहन मृत बहन की आँखें बंद कर रही थी, तब आधे खुले दरवाजे से भोजन तैयार होने की घोषणा की गई। अब वह और इंतजार नहीं कर सकती थी। बहन के गहरे दुख को महसूस करते हुए, उसने अंत में ज़ोर देकर कहा, 'हिम्मत रखो,' और यह दुख थोड़े समय के लिए ही सही, लेकिन पीड़ादायक रूप से फूट पड़ा। हालाँकि, शार्लोट का स्नेह एक अलग दिशा में भी जा रहा था, और वह विचारों, चिंता और कोमलता में बदल गया। शोक तो था, लेकिन अकेलापन नहीं था; सहानुभूति मौजूद थी, और उसे स्वीकार किया गया। शांति से, प्रिय अवशेषों को उनके अंतिम विश्राम स्थल तक ले जाने का विचार आया। हालाँकि, यह दुखद कार्य कभी पूरा नहीं हुआ; क्योंकि दुखी बहन ने फूल को उसी स्थान पर रखने का निर्णय लिया जहाँ वह गिरा था। उसे विश्वास था कि ऐसा करना दिवंगत आत्मा की इच्छा के अनुरूप होगा। उसे किसी विशेष स्थान की प्राथमिकता नहीं थी। उसने कब्र के बारे में नहीं सोचा, क्योंकि वह तो केवल शरीर का गंतव्य है, बल्कि उसके परे की हर चीज़ के बारे में सोचा।

उनके अवशेष विश्राम कर रहे हैं।

“जहां दक्षिणी सूरज अब प्यारी सी घास को गर्म करता है, जहां समुद्र की लहरें लावा की तरह बहती हैं और खड़ी और घास से ढकी चट्टान से टकराती हैं।”

ऐनी की मृत्यु सोमवार को हुई। मंगलवार को शार्लोट ने अपने पिता को पत्र लिखा; लेकिन यह जानते हुए कि हॉवर्थ में चर्च के किसी वार्षिक समारोह में उनकी उपस्थिति आवश्यक थी, उन्होंने उन्हें सूचित किया कि उन्होंने अंतिम संस्कार की सभी आवश्यक व्यवस्था कर ली है और अंत्येष्टि इतनी जल्दी होगी कि वे समय पर नहीं पहुँच पाएंगे। ऐनी की मृत्यु के दिन उनका इलाज करने वाले सर्जन ने उपस्थित होने की पेशकश की, लेकिन ऐनी ने विनम्रतापूर्वक इसे अस्वीकार कर दिया।

श्री ब्रोंटे ने शार्लोट को समुद्र तट पर कुछ और समय रुकने के लिए प्रोत्साहित

करने हेतु पत्र लिखा। उनका स्वास्थ्य और मनोबल बुरी तरह प्रभावित था; और यद्यपि वे स्वाभाविक रूप से अपनी इकलौती संतान से मिलने के लिए तरस रहे थे, फिर भी उन्होंने शार्लोट को अपनी सहेली के साथ कुछ और सप्ताह के लिए दूसरे स्थान पर जाने के लिए मनाना उचित समझा, हालाँकि इससे भी उनके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं आया। जून के अंत में दोनों सहेलियाँ अपने-अपने घर लौट आईं, और (ऐसा प्रतीत होता है) अचानक ही एक-दूसरे से विदा हो गईं, जब उनके रास्ते अलग हो गए।

जुलाई, 1849।

अगर मुझे तुम्हारा पत्र न मिला होता, तो मैं आज तुम्हें एक पत्र लिखने का इरादा रखता। हम सचमुच अचानक अलग हो गए; यह सोचकर मेरा दिल दुख गया कि बिना एक शब्द कहे ही हम बिछड़ गए; और शायद यही बेहतर था। मैं यहाँ आठ बजे से कुछ पहले पहुँच गया। सब कुछ साफ-सुथरा और चमकदार था, मेरा इंतज़ार कर रहा था। पापा और नौकर ठीक थे; और सभी ने मेरा ऐसे स्नेह से स्वागत किया जिससे मुझे सांत्वना मिलनी चाहिए थी। कुत्ते अजीब सी खुशी में डूबे हुए लग रहे थे। मुझे यकीन है कि वे मुझे दूसरों का संदेशवाहक समझ रहे थे। उन मूक प्राणियों को लगा कि मेरे लौटने से, जो इतने लंबे समय से अनुपस्थित थे, वे भी जल्द ही आ जाएँगे।

मैंने पापा को जल्दी से छोड़ दिया और भोजन कक्ष में चली गई: मैंने दरवाजा बंद कर लिया— मैंने घर वापस आने की खुशी जताने की कोशिश की। मैं हमेशा पहले खुश रहती थी—सिर्फ एक बार को छोड़कर— तब भी मैं प्रसन्न थी। लेकिन इस बार खुशी का कोई एहसास नहीं था। मुझे लगा कि घर में सन्नाटा पसरा है— सारे कमरे खाली हैं। मुझे याद आया कि उन तीनों को कहाँ रखा गया था— उन तंग, अंधेरे कमरों में— जहाँ वे फिर कभी धरती पर नहीं लौटेंगे। इस तरह उदासी और कड़वाहट ने मुझे घेर लिया। वह पीड़ा जो सहनी ही थी, जिसे टाला नहीं जा सकता था, शुरू हो गई। मैंने उसे सहन किया, एक उदास शाम और रात गुजारी, और एक शोकपूर्ण सुबह; आज मैं बेहतर महसूस कर रही हूँ।

“मुझे नहीं पता कि जीवन कैसे गुजरेगा, लेकिन मुझे उस परमेश्वर पर पूरा भरोसा है जिसने अब तक मेरा साथ दिया है। एकांत में भी सुख मिल सकता है, और यह मेरी कल्पना से परे सहनीय हो सकता है। असली परीक्षा तब होती है जब शाम ढलती है और रात होने लगती है। उस समय हम सब भोजन कक्ष में इकट्ठा होते थे—हम बातें करते थे। अब मैं अकेला बैठा रहता हूँ—मुझे चुप रहना ही पड़ता है। मैं उनके अंतिम

दिनों के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकता, उनके कष्टों को याद करता हूँ, उन्होंने क्या कहा और क्या किया, और मृत्यु के कष्ट में वे कैसे दिखते थे। शायद समय के साथ यह सब कम कष्टदायी हो जाएगा।”

“प्रिय ई——, आपके प्रति दिखाई गई दयालुता के लिए मैं आपको एक बार फिर धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिसे मैं कभी नहीं भूलूँगा। आपका घर देखकर आपको कैसा लगा? पापा को लगा कि मैं थोड़ा स्वस्थ हो गया हूँ; उन्होंने कहा कि मेरी आँखें अब उतनी धँसी हुई नहीं हैं।”

14 जुलाई, 1849।

मुझे अपने बारे में बताना ज़्यादा पसंद नहीं है। मुझे अपने विचारों से बाहर निकलकर कुछ खुशनुमा बातें करना ज़्यादा अच्छा लगता है। मेरी सर्दी, चाहे ईस्टन में लगी हो या कहीं और, अभी तक ठीक नहीं हुई है। पहले सिर में दर्द हुआ, फिर गला खराब हुआ, फिर सीने में दर्द हुआ और खांसी भी थी, लेकिन मामूली खांसी, जो अभी भी कभी-कभी होती है। कंधों के बीच का दर्द भी मुझे बहुत परेशान कर रहा था। इसके बारे में कुछ मत कहो, क्योंकि मैं मानती हूँ कि मैं बहुत जल्दी घबरा जाती हूँ। यह घबराहट एक भयानक भ्रम है। मैं पापा को अपनी कोई बीमारी बताने की हिम्मत नहीं करती; उनकी चिंता मुझे असहनीय रूप से परेशान करती है।

“मेरा जीवन वैसा ही है जैसा मैंने सोचा था। कभी-कभी जब मैं सुबह उठता हूँ और जानता हूँ कि एकांत, स्मृति और तड़प दिन भर मेरे एकमात्र साथी होंगे—कि रात को मैं उनके साथ सोऊँगा, कि वे मुझे लंबे समय तक नींद से वंचित रखेंगे—कि अगली सुबह मैं फिर से उनके साथ जागूँगा—कभी-कभी, नेल, मेरा दिल भारी हो जाता है। लेकिन मैं अभी तक टूटा नहीं हूँ; न ही मेरी लचीलता, न ही आशा, न ही प्रयास पूरी तरह से खत्म हुआ है। मुझमें जीवन की लड़ाई लड़ने की कुछ शक्ति है। मैं जानता हूँ और स्वीकार कर सकता हूँ कि मुझे बहुत से सुख-सुविधाएँ और कृपाएँ प्राप्त हैं। फिर भी मैं आगे बढ़ सकता हूँ। लेकिन मैं आशा और प्रार्थना करता हूँ कि न तो तुम और न ही मेरा कोई प्रियजन कभी मेरी जैसी स्थिति में हो। एक सुनसान कमरे में बैठना—एक शांत घर में घड़ी की टिक-टिक की तेज़ आवाज़—और मन के सामने पिछले वर्ष का लेखा-जोखा, उसके आघात, कष्ट और हानियों के साथ—एक कठिन परीक्षा है।”

मैं आपको निःसंकोच लिख रहा हूँ क्योंकि मुझे विश्वास है कि आप मेरी बात को संयम से सुनेंगे—कि आप घबराएंगे नहीं या मुझे किसी भी तरह से मेरी वर्तमान

स्थिति से बदतर नहीं समझेंगे।

अध्याय IV

“जेन आयर” के प्रकाशन के तुरंत बाद “शर्ली” की कहानी शुरू हुई थी। यदि पाठक मिस ब्रोंटे के रो हेड स्थित स्कूली दिनों के मेरे द्वारा दिए गए विवरण को पढ़ेंगे, तो उन्हें पता चलेगा कि उस घर के आसपास का हर इलाका लुडाइट दंगों से जुड़ा हुआ था, और उन्हें यह भी पता चलेगा कि उस समय की कहानियां और किस्से आसपास के गांवों के निवासियों के बीच कितने प्रचलित थे; मिस वूलर स्वयं और उनके अधिकांश सहपाठियों के बड़े रिश्तेदार उन भयावह दंगों में शामिल लोगों को जानते होंगे। शार्लोट ने बचपन में वहां जो कुछ सुना था, वह उनके मन में तब आया जब एक महिला के रूप में उन्होंने अपनी अगली रचना के लिए विषय की तलाश की; और उन्होंने उन महत्वपूर्ण समयों की भावना को समझने के लिए 1812, 1813 और 1814 के मर्करी परिवार की फाइल के लिए लीड्स से पत्र मंगवाया। वह उन चीजों के बारे में लिखना चाहती थीं जिन्हें उन्होंने जाना और देखा था; और उनमें से एक वेस्ट यॉर्कशायर का चरित्र था, जिसके लिए लुडाइटों के बीच बुनी गई कोई भी कहानी पूरी तरह से उपयुक्त थी। “शर्ली” में उन्होंने अपने अधिकांश पात्रों के विचार वास्तविक जीवन से लिए, यद्यपि घटनाएँ और परिस्थितियाँ निश्चित रूप से काल्पनिक थीं। उनका मानना था कि यदि ये परिस्थितियाँ पूरी तरह से काल्पनिक हों, तो वे वास्तविक जीवन से बिना किसी को पता चले प्रेरणा ले सकती हैं, लेकिन इसमें वे गलत थीं; उनके अध्ययन बहुत सटीक थे। इससे कभी-कभी उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लोग स्वयं को पहचान लेते थे, या अन्य लोग उन्हें पहचान लेते थे, उनके व्यक्तिगत

रूप-रंग, कार्यशैली और विचार-पद्धति के सजीव वर्णन में; यद्यपि उन्हें नई स्थितियों में रखा गया था, और ऐसे दृश्यों में चित्रित किया गया था जो उनके वास्तविक जीवन से बिल्कुल भिन्न थे। मिस ब्रोंटे किसी परिचित व्यक्ति के चरित्र की शक्ति या विशिष्टता से प्रभावित हुईं; उन्होंने उसका अध्ययन किया, और सूक्ष्म शक्ति से उसका विश्लेषण किया; और उसके मूल को खोजकर, उन्होंने उस मूल को एक काल्पनिक चरित्र का केंद्रक बनाया, और उस पर काम किया; इस प्रकार विश्लेषण की प्रक्रिया को उलट दिया, और अनजाने में उसी बाहरी विकास को पुन: उत्पन्न किया। “तीन पादरी” वास्तविक जीवित व्यक्ति थे, जो हॉवर्थ और आसपास के जिले में रहते थे; और उनकी समझ इतनी मंदबुद्धि थी कि, अपनी आदतों और तौर-तरीकों को लिखे जाने पर शुरुआती गुस्से के शांत होने के बाद, वे एक-दूसरे को उन्हीं नामों से पुकारने के मज़ाक का आनंद लेने लगे जो उन्होंने उन्हें दिए थे। "श्रीमती प्रायर" नाम उन कई लोगों के बीच जाना-पहचाना था जो मूल लेखिका को बहुत पसंद करते थे। मुझे बताया गया है कि यॉर्क परिवार के सभी सदस्य लगभग डैगरेओटाइप की तरह थे। दरअसल, मिस ब्रोंटे ने मुझे बताया कि प्रकाशन से पहले, उन्होंने उपन्यास के उन हिस्सों को, जिनमें इन उल्लेखनीय पात्रों का परिचय दिया गया है, उनके एक बेटे को भेजा था; और इसे पढ़ने के बाद उसकी प्रतिक्रिया बस इतनी थी कि "उन्होंने उन्हें पर्याप्त रूप से सशक्त नहीं बनाया है।" मुझे लगता है कि उन्हीं बहुआयामी बेटों से उन्होंने अपने पहले दो उपन्यासों के नायकों के चरित्रों में सच्चाई का सार निकाला था। वास्तव में, अपने भाई के अलावा, वे लगभग एकमात्र ऐसे युवा थे जिन्हें वह घनिष्ठ रूप से जानती थीं। ब्रोंटे परिवार और उनके बीच गहरी दोस्ती और उससे भी अधिक विश्वास था, हालांकि उनका संपर्क अक्सर टूटा-फूटा और अनियमित रहता था। दोनों ओर से इससे अधिक गर्मजोशी भरा रिश्ता कभी नहीं रहा।

शर्ली का चरित्र स्वयं एमिली का शार्लेट द्वारा किया गया चित्रण है। मैं इसका उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि एक अजनबी होने के नाते, मैं उसके बारे में जितना कुछ जान पाया हूँ, उससे न तो मुझे और न ही मेरे पाठकों को उसके बारे में कोई सुखद धारणा बनी है। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि हम उसके बारे में कितना कम जानते हैं, उस बहन की तुलना में, जिसने अपने अधिक घनिष्ठ ज्ञान के आधार पर कहा है कि वह "वास्तव में अच्छी और महान थी," और जिसने शर्ली कील्डर में उसके चरित्र को इस प्रकार चित्रित करने का प्रयास किया है कि एमिली

ब्रोंटे स्वस्थ और समृद्ध होने पर कैसी होती।

मिस ब्रोंटे ने "शर्ली" उपन्यास पर बहुत मेहनत की। उन्हें लगा कि उनकी प्रसिद्धि ने उन पर दोहरी ज़िम्मेदारी डाल दी है। उन्होंने अपने उपन्यास को वास्तविक जीवन की एक झलक जैसा बनाने की कोशिश की, उन्हें पूरा विश्वास था कि अगर वे अपने व्यक्तिगत अनुभव और अवलोकन को सच्चाई से प्रस्तुत करेंगी, तो अंततः इसका अच्छा परिणाम निकलेगा। उन्होंने "जेन आयर" पर प्रकाशित विभिन्न समीक्षाओं और आलोचनाओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया, ताकि उनसे कुछ उपयोगी सलाह और मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें।

लेखन के ठीक बीचोंबीच मृत्यु का साया आ पड़ा। अपनी कहानी का दूसरा खंड लगभग पूरा कर चुकी थीं कि ब्रैनवेल की मृत्यु हो गई, उनके बाद एमिली, उनके बाद ऐनी; तीन बहनें जीवित और प्रेममय थीं, तब कलम को थमा दिया गया था, लेकिन जब केवल एक ही बची थी, तब उसे फिर से उठा लिया गया। इसके बाद लिखे गए अपने पहले अध्याय का नाम उन्होंने बिल्कुल सही रखा था, "मृत्यु की छाया की घाटी।"

इस अध्याय के अंत और अगले अध्याय के प्रारंभ में आने वाले उन मार्मिक शब्दों को पढ़कर मुझे कुछ हद तक यह एहसास हुआ कि "शर्ली" के अज्ञात लेखक को कितना कष्ट सहना पड़ा होगा:

"भोर होने तक, वह पूरी लगन से भगवान से प्रार्थना करती रही।"

“जो लोग इस तरह के दिव्य संघर्ष का साहस करते हैं, वे हमेशा विजयी नहीं होते। रात-रात भर पीड़ा का पसीना माथे पर काला पड़ सकता है; याचक उस मौन वाणी से दया की भीख मांग सकता है जो आत्मा अदृश्य से अपील करते समय निकालती है। ‘मेरे प्रियतम को बख्श दो,’ वह विनती कर सकता है। ‘मेरे जीवन के जीवन को ठीक कर दो। मुझसे उस गहरे स्नेह को मत छीन लो जो मेरे पूरे स्वभाव से जुड़ा हुआ है। हे स्वर्ग के ईश्वर – झुक जाओ – सुनो – दयालु बनो!’ और इस पुकार और संघर्ष के बाद, सूर्य उदय हो सकता है और उसे पराजित देख सकता है। वह भोर, जो कभी हल्की हवाओं की फुसफुसाहट और चिड़ियों के गीत से उसका स्वागत करती थी, अपने पहले स्वर में उन प्यारे होठों से कह सकती है, जिनका रंग और गर्मी अब गायब हो चुकी है, – ‘ओह! मेरी रात कष्टदायक गुज़री। आज सुबह मेरी हालत और भी खराब है। मैंने उठने की कोशिश की। मैं उठ नहीं पा रहा। मुझे ऐसे सपने आ रहे हैं

जिनकी मुझे आदत नहीं है।’

“तब देखने वाला रोगी के तकिये के पास जाता है, और परिचित चेहरे की एक नई और विचित्र आकृति देखता है, तुरंत महसूस करता है कि असहनीय क्षण निकट आ रहा है, जानता है कि यह ईश्वर की इच्छा है कि उसकी मूर्ति टूट जाए, और अपना सिर झुकाता है, और अपनी आत्मा को उस सजा के आगे झुका देता है जिसे वह टाल नहीं सकता, और जिसे वह मुश्किल से सहन कर सकता है। . . .”

“उसके जागने से पहले कोई दयनीय, अचेतन विलाप की आवाज़ नहीं आई—जो हमारी शक्ति को इतना नष्ट कर देती है कि, भले ही हमने दृढ़ रहने की शपथ ली हो, अनियंत्रित आँसुओं का सैलाब उस शपथ को बहा ले जाता है—न ही उसके बाद कोई बहरी उदासीनता का क्षण आया। बोले गए पहले शब्द ऐसे व्यक्ति के नहीं थे जो इस दुनिया से विमुख हो रहा हो, और जिसे कभी-कभी जीवितों से परे लोकों में भटकने की अनुमति मिल चुकी हो।”

वह अपना काम लगातार करती रही। लेकिन शामों को बैठक में इधर-उधर टहलते हुए, बिना किसी के सुने, अपनी कहानी की प्रगति को सुनना—कोई दोष निकालना हो या सहानुभूति जताना—लिखना नीरस था, ठीक वैसे ही जैसे बीते दिनों में होता था। तीन बहनें ऐसा करती थीं—फिर दो, एक बहन ने टहलना छोड़ दिया—और अब एक अकेली रह गई थी, जो गूंजते कदमों की आहट सुनती थी, जो कभी नहीं आती थी—और खिड़कियों पर हवा की सिसकने की आवाज़ सुनती थी, जो लगभग स्पष्ट थी।

लेकिन वह अपनी बीमारी की भावनाओं से जूझते हुए लिखती रहीं; "लगातार हल्की सर्दी-जुकाम की अनुभूति होती है; गले और छाती में हल्का दर्द होता है, जिससे मैं चाहे जो भी कर लूं," वह लिखती हैं, "मैं छुटकारा नहीं पा सकती।"

अगस्त में चिंता का एक नया कारण सामने आया, जो सुखद तो था लेकिन अस्थायी था।

23 अगस्त, 1849।

“पापा की तबीयत पिछले कुछ दिनों से बिल्कुल ठीक नहीं थी। उन्हें फिर से ब्रोंकाइटिस हो गया था। मैं कुछ दिनों से उनके बारे में बहुत चिंतित थी—इतनी बुरी कि मैं आपको बता भी नहीं सकती। जो कुछ हुआ है उसके बाद, बीमारी का कोई भी संकेत देखकर डर लगता है; और जब भी पापा को कुछ होता है, मुझे बहुत दुख होता

है कि वे मेरे आखिरी—इतने प्यारे रिश्तेदार हैं जो इस दुनिया में मेरे पास हैं। कल और आज वे काफी बेहतर लग रहे हैं, जिसके लिए मैं सचमुच आभारी हूँ। . . .”

“श्रीमान — — के बारे में आपने जो कहा, उससे तो मुझे लगता है कि मैं उन्हें बहुत पसंद करूँगी। — — को उनके पहनावे को लेकर परेशान करने के लिए हिलाने की ज़रूरत है। इससे क्या फर्क पड़ता है कि उनके पति फॉर्मल कोट में खाना खाते हैं या साधारण कोट में, बशर्ते कि उनके अंदर सलीके, ईमानदारी और साफ कमीज़ हो?”

“10 सितंबर, 1849।”

“मेरा काम आखिरकार पूरा हो गया है और इसे इसके गंतव्य तक भेज दिया गया है। अब आपको मुझे बताना होगा कि आपके यहाँ आने का कब समय है। मुझे डर है कि अब व्यवस्था करना मुश्किल होगा, क्योंकि शादी का दिन बहुत नज़दीक है। ध्यान रहे, अगर आप खुद या किसी और को हॉवर्थ आने की असुविधा में डालते हैं, तो मेरी सारी खुशी खराब हो जाएगी। लेकिन जब भी सुविधाजनक होगा, मुझे आपसे मिलकर बहुत खुशी होगी। ... पापा, मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि उनकी तबीयत में सुधार है, हालांकि वे अभी भी पूरी तरह स्वस्थ नहीं हैं। उन्हें अक्सर मतली महसूस होती है। मेरी सर्दी-जुकाम अब पहले से काफी कम परेशान करती है, कभी-कभी तो मैं इससे पूरी तरह मुक्त हो जाती हूँ। कुछ दिन पहले, मुझे पित्त की गंभीर समस्या हुई थी, जो लिखने के लिए बहुत पास बैठने का परिणाम थी; लेकिन अब यह ठीक हो गई है। समुद्र तट से लौटने के बाद यह पहली बार है जब मुझे यह समस्या हुई है। इससे पहले मुझे हर महीने यह समस्या होती थी।”

“13 सितंबर, 1849।”

“अगर कर्तव्य और दूसरों की भलाई के लिए आपको घर पर रहना पड़े, तो मैं शिकायत नहीं कर सकती, फिर भी मुझे बहुत अफ़सोस है कि हालात अभी हमारी मुलाक़ात मुमकिन नहीं कर रहे। अगर पापा की सेहत अच्छी होती, तो मैं बिना किसी हिचकिचाहट के आ जाती; लेकिन उनकी सेहत और मनोबल दोनों ही अनिश्चित हैं, इसलिए मैं अभी उन्हें छोड़कर जाने के लिए खुद को मना नहीं सकती। उम्मीद है कि जब हम मिलेंगे, तो देरी के बावजूद हमारी मुलाक़ात और भी सुखद होगी। प्रिय ई ——, आपके कंधों पर वाकई एक भारी बोझ है, लेकिन ऐसे बोझ, अगर सही ढंग से उठाए जाएं, तो चरित्र को लाभ पहुंचाते हैं; बस हमें इस बात का पूरा ध्यान रखना

होगा कि हम अपनी ताकत पर घमंड न करें, कहीं ऐसा न हो कि हम इस परीक्षा को पार कर लें। दरअसल, यह घमंड घोर कमजोरी की निशानी होगी। अगर हमारे पास ताकत है, तो वह निश्चित रूप से कभी हमारे भीतर नहीं होती; वह हमें दी जाती है।"

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, एस्क्वायर को।

21 सितंबर, 1849।

"मेरे प्रिय महोदय, — मेरा रहस्य सुरक्षित रखने के लिए मैं आपका आभारी हूँ, क्योंकि मैं पहले की तरह ही (और इससे अधिक चिंतित तो हो ही नहीं सकता) चुप रहना चाहता हूँ। आपने हाल ही में अपने एक पत्र में मुझसे पूछा था कि क्या मुझे लगता है कि यॉर्कशायर में मेरी पहचान उजागर नहीं होगी। मैं इतना कम जाना-पहचाना हूँ कि मुझे लगता है कि मैं बच जाऊँगा। इसके अलावा, यह पुस्तक वास्तविकता पर उतनी आधारित नहीं है जितना शायद प्रतीत होता है। आपके लिए यह समझाना कठिन होगा कि मुझे जीवन का कितना कम वास्तविक अनुभव है, मैं कितने कम लोगों को जानता हूँ और कितने कम लोग मुझे जानते हैं।"

"किरदारों को किस तरह गढ़ा गया है, इसका एक उदाहरण मिस्टर हेलस्टोन का ही ले लीजिए। अगर इस किरदार का कोई मूल था, तो वह एक पादरी थे जिनकी कुछ साल पहले अस्सी साल की उम्र में मृत्यु हो गई थी। मैंने उन्हें सिर्फ एक बार देखा था - एक चर्च के अभिषेक समारोह में - जब मैं दस साल का बच्चा था। तब मैं उनकी शक्ल-सूरत और उनके सख्त, योद्धा जैसे हाव-भाव से बहुत प्रभावित हुआ था। बाद में, मैंने उनके बारे में उस इलाके में सुना जहाँ वे रहते थे: कुछ लोग उनका ज़िक्र उत्साह से करते हैं - तो कुछ घृणा से। मैंने कई किस्से सुने, सबूतों की तुलना की और एक निष्कर्ष निकाला। मिस्टर हॉल का मूल मैंने देखा है; वे मुझे थोड़ा-बहुत जानते हैं; लेकिन वे यह सोचने में उतने ही सहज होंगे कि मैंने उन्हें करीब से देखा है या उन्हें एक काल्पनिक किरदार समझा है - वे मुझ पर एक उपन्यास लिखने का शक करने में उतने ही सहज होंगे जितना कि अपने कुत्ते प्रिंस पर। मार्गरेट हॉल ने क्वार्टरली के हवाले से "जेन आयर" को एक 'बुरी किताब' कहा था; यह बात, उनके मुँह से सुनकर, मैं यहाँ स्वीकार करता हूँ, मेरे दिल को छू गई। इसने एक नया मोड़ ला दिया। मेरी नज़रें उस नुकसान पर टिक गईं जो त्रैमासिक पत्रिका ने पहुंचाया था। अगर मार्गरेट को ऐसा करने के लिए कहा न गया होता, तो वह इसे 'दुष्टतापूर्ण' नहीं कहती।

चाहे कुछ भी हो, चाहे ज्ञात हो या अज्ञात, गलत समझा गया हो या इसके विपरीत,

मैंने तय कर लिया है कि मैं इसके अलावा कुछ और नहीं लिखूंगा। मैं अपनी क्षमता के अनुसार ही लिखूंगा। वे दो इंसान जो मुझे समझते थे और जिन्हें मैं समझता था, अब इस दुनिया में नहीं हैं: कुछ ऐसे हैं जो अब भी मुझसे प्यार करते हैं और जिनसे मैं प्यार करता हूं, बिना यह उम्मीद किए या उम्मीद करने का अधिकार रखे कि वे मुझे पूरी तरह समझेंगे। मैं संतुष्ट हूं; लेकिन लेखन के मामले में मुझे अपनी राह खुद बनानी है। इस दुनिया में जो कुछ भी हमारे सबसे करीब और प्यारा होता है, उसे खोने का असर हमारे चरित्र पर पड़ता है; हम अपने पास बची हुई चीजों को ढूंढते हैं जो हमें सहारा दे सकें, और जब वे मिल जाती हैं, तो हम उन्हें नए सिरे से मजबूती से थाम लेते हैं। तीन महीने पहले जब मैं डूब रहा था, तब कल्पना शक्ति ने मुझे सहारा दिया; तब से इसके सक्रिय अभ्यास ने मुझे संभाले रखा है; इसके परिणाम अब मुझे खुश करते हैं, क्योंकि मुझे लगता है कि इसने मुझे दूसरों को खुशी देने में सक्षम बनाया है। मैं ईश्वर का आभारी हूं, जिसने मुझे यह शक्ति दी; और इस उपहार की रक्षा करना और इससे लाभ उठाना मेरे धर्म का एक हिस्सा है। — आपका सादर,

"शार्लोट ब्रोंटे।"

जिस समय यह पत्र लिखा गया था, उस समय टैबी और उसकी सहायता के लिए रखी गई युवा नौकरानी दोनों बीमार होकर बिस्तर पर थीं; और कभी-कभार मिलने वाली सहायता को छोड़कर, मिस ब्रोंटे को दोनों बीमारों की देखभाल करने के साथ-साथ घर के सभी काम भी करने पड़ते थे।

छोटी नौकरानी की गंभीर बीमारी चरम पर थी, तभी टैबी की चीख सुनकर मिस ब्रोंटे रसोई में आईं और उन्होंने देखा कि अस्सी साल की बेचारी बूढ़ी औरत फर्श पर पड़ी है, उसका सिर चूल्हे के नीचे है; वह उठने की कोशिश में कुर्सी से गिर गई थी। जब मैं दो साल बाद उससे मिली, तो उसने मुझे बताया कि उस समय शार्लोट ने उसकी कितनी कोमल देखभाल की थी; और अपनी बात खत्म करते हुए उसने कहा, "उसकी अपनी माँ भी उससे ज़्यादा उसकी परवाह नहीं कर सकती थी और न ही मिस ब्रोंटे ने," और फिर बोली, "अरे! वह तो बहुत अच्छी है - सच में!"

लेकिन एक दिन ऐसा आया जब मेरी सारी नसें टूट गईं—जैसा कि वह कहती हैं, "मैं दस मिनट तक पूरी तरह से टूट गई; पागलों की तरह बैठकर रोती रही। टैबी न खड़ी हो पा रही थी, न चल पा रही थी। पापा ने अभी-अभी बताया था कि मार्था को बहुत बड़ा खतरा है। मैं खुद सिरदर्द और बीमारी से परेशान थी। उस दिन मुझे समझ

नहीं आ रहा था कि क्या करूं या किससे मदद मांगूं। भगवान का शुक्र है! मार्था अब स्वस्थ हो रही है: मुझे उम्मीद है कि टैबी भी जल्द ही ठीक हो जाएगी। पापा भी काफी हद तक ठीक हैं। मुझे इस बात की तसल्ली है कि मेरे प्रकाशकों को मेरा भेजा हुआ काम बहुत पसंद आया। इससे मुझे हिम्मत मिलती है। लेकिन जीवन एक संघर्ष है। ईश्वर करे हम सब इसे अच्छे से लड़ सकें!"

जिस दयालु मित्र को उसने इस प्रकार पत्र लिखा था, उसने देखा कि करों से दबी इस दबी हुई व्यवस्था को कितनी मजबूती की आवश्यकता है, और तदनुसार उसने उसे एक शॉवर-बाथ भेजा - एक ऐसी चीज जिसकी वह लंबे समय से कामना कर रही थी। इसकी प्राप्ति की पुष्टि उसने इस प्रकार की: —

"28 सितंबर, 1849। "...मार्था अब लगभग ठीक है, और टैबी काफी बेहतर है। कल 'नेल्सन, लीड्स' से एक बहुत बड़ा पैकेज आया। तुम्हें अच्छी तरह से डांट पड़नी चाहिए। तुम्हारी सारी परेशानियों का यही नतीजा है। ...जब भी तुम हॉवर्थ आओगी, तुम्हें अपने ही शावर-बाथ में अच्छी तरह से भीगना पड़ेगा। मैंने अभी तक उस घटिया पैकेज को खोला नहीं है। — "तुम्हारा, जैसा तुम हकदार हो, सी. बी."

उस पर एक और तरह की विपत्ति मंडरा रही थी। उसके पास रेलवे के कुछ शेयर थे, जिन्हें उसने 1846 में ही मिस वूलर को बेचने की इच्छा जताई थी, लेकिन उसने उन्हें अपने पास रखा था क्योंकि वह अपनी बहनों को इस मामले को अपने नज़रिए से देखने के लिए राजी नहीं कर पाई थी, और इसलिए एमिली की भावनाओं को ठेस पहुँचाने के बजाय नुकसान का जोखिम उठाना बेहतर समझा। इन्हीं शेयरों के मूल्य में गिरावट अब शार्लोट के निर्णय की सत्यता को प्रमाणित कर रही थी। ये शेयर यॉर्क एंड नॉर्थ-मिडलैंड कंपनी के थे, जो श्री हडसन की पसंदीदा कंपनियों में से एक थी और उनकी विशिष्ट प्रबंधन प्रणाली का पूरा लाभ उठा रही थी। उसने इस विषय पर जानकारी के लिए अपने मित्र और प्रकाशक, श्री स्मिथ से संपर्क किया; और निम्नलिखित पत्र उनके उत्तर के जवाब में है: —

4 अक्टूबर, 1849।

"मेरे प्रिय महोदय, — मैं आपका धन्यवाद तो नहीं करूँगी, लेकिन आपके पत्र की प्राप्ति स्वीकार करती हूँ। स्थिति वाकई बहुत खराब है; मेरी सोच से भी बदतर, और मेरे पिता को तो इसका बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है। वास्तव में, मेरे पास जो थोड़ी सी रेलवे संपत्ति थी, मूल कीमतों के हिसाब से, मेरे विचारों और आदतों के अनुसार, वह

पहले से ही मेरे लिए पर्याप्त नहीं थी। अब, उसके किसी भी हिस्से पर भरोसे के साथ निर्भर रहना मुश्किल है। मुझे धीरे-धीरे अपने पिता को इस मामले की जानकारी देनी होगी; और इस बीच, धैर्यपूर्वक इंतजार करना होगा कि आगे क्या होता है। . . . चाहे मामला चाहे जैसे भी समाप्त हो, मुझे असंतुष्ट होने के बजाय शायद ही आभारी होना चाहिए। जब मैं अपनी स्थिति को हजारों अन्य लोगों की स्थिति से तुलना करती हूँ, तो मुझे शिकायत करने की कोई गुंजाइश नहीं दिखती। बहुत से लोग, इस नई अजीब रेलवे प्रणाली के कारण लगभग अपनी रोजी-रोटी से वंचित हो गए हैं। इसलिए, जिन्होंने केवल भविष्य के लिए जमा की गई बचत खोई है, उन्हें शिकायत करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। यह सोचकर कि 'शर्ली' ने कॉर्नहिल में आनंद दिया है, मुझे बहुत सुकून मिलता है। निस्संदेह, हालांकि, मेरी तरह आप भी गंभीर परिस्थितियों के लिए तैयार हैं; लेकिन मुझे पूरी उम्मीद है कि जहाज की बनावट इतनी मजबूत है कि वह एक-दो तूफानों का सामना कर सकता है और अंत में आपके लिए एक सफल यात्रा सुनिश्चित कर सकता है।"

इस साल अक्टूबर के अंत में, वह अपनी सहेली से मिलने गई; लेकिन छुट्टी का जो आनंद उसने अपना काम पूरा होने पर लेने का लंबे समय से वादा किया था, वह लगातार खराब स्वास्थ्य के कारण फीका पड़ गया; हवा में बदलाव या धुंध भरे मौसम के कारण सीने में लगातार जलन हो रही थी। इसके अलावा, वह इस बात को लेकर चिंतित थी कि उसकी दूसरी रचना जनता पर क्या प्रभाव डालेगी। जाहिर है, एक लेखक अपनी बड़ी सफलता के बाद प्रकाशित पुस्तक पर आने वाली राय से पहले की तुलना में कहीं अधिक प्रभावित होता है। प्रसिद्धि का चाहे जो भी मूल्य हो, वह उसके पास है और वह इसे कम या खोना नहीं चाहता।

"शर्ली" का प्रकाशन 26 अक्टूबर को हुआ था।

जब यह प्रकाशित हुआ, लेकिन इसे पढ़ने से पहले ही, श्री लेवेस ने उन्हें पत्र लिखकर बताया कि वे एडिनबर्ग में इसकी समीक्षा करने का इरादा रखते हैं। उनके साथ उनका पत्राचार कुछ समय के लिए बंद हो गया था: तब से बहुत कुछ घटित हो चुका था।

जी. एच. लेवेस, एस्क्वायर को।

"1 नवंबर, 1849।"

"मेरे प्रिय महोदय, — आपने मुझे पत्र लिखे लगभग डेढ़ वर्ष हो गया है; लेकिन

ऐसा लगता है जैसे समय और भी लंबा बीत गया हो, क्योंकि तब से जीवन की यात्रा में मुझे कई काले पड़ाव पार करने पड़े हैं। तब से ऐसे भी समय आए हैं जब मैंने साहित्य, आलोचकों और प्रसिद्धि की परवाह करना छोड़ दिया है; जब 'जेन आयर' के पहले प्रकाशन के समय मेरे विचारों में जो कुछ भी प्रमुख था, वह सब मुझसे ओझल हो गया है; लेकिन अब मैं चाहती हूँ कि ये सब बातें यथासंभव जीवंत रूप से वापस आ जाएँ: इसलिए, आपका पत्र पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। काश आप मुझे स्त्री न समझते। काश सभी समीक्षक 'कुरर बेल' को पुरुष मानते; वे उनके प्रति अधिक न्यायसंगत होते। मुझे पता है, आप मुझे उस मानदंड से आंकते रहेंगे जो आपको मेरे स्त्रीत्व के लिए उचित लगता है; जहाँ मैं आपकी नज़र में सुंदर नहीं हूँगी, वहाँ आप मेरी निंदा करेंगे। उस पहले अध्याय के विरुद्ध सभी मुख खुलेंगे; और वह पहला अध्याय बाइबिल की तरह सत्य है, और उसमें कोई अपवाद नहीं है। चाहे कुछ भी हो जाए, लिखते समय मैं हमेशा अपने बारे में और साहित्य में जो कुछ भी सुंदर और आकर्षक है, उसके बारे में नहीं सोच सकती। नारीत्व; मैंने कभी भी इन शर्तों पर या ऐसे विचारों के साथ कलम नहीं उठाई थी: और यदि केवल इन्हीं शर्तों पर मेरा लेखन सहन किया जाएगा, तो मैं जनता से विदा हो जाऊंगी और उसे फिर कभी परेशान नहीं करूंगी। मैं गुमनामी से आई थी, गुमनामी में आसानी से लौट सकती हूं। दूर खड़े होकर, मैं अब देख रही हूं कि 'शर्ली' का क्या होगा। मेरी उम्मीदें बहुत कम हैं, और मेरी आशंकाएं कुछ हद तक उदास और कड़वी हैं; फिर भी, मैं आपसे विनम्रतापूर्वक निवेदन करती हूं कि आप ईमानदारी से अपने विचार व्यक्त करें; चापलूसी व्यर्थता से भी बदतर होगी; चापलूसी में कोई सांत्वना नहीं है। निंदा की बात करें तो, विचार करने पर मुझे समझ नहीं आता कि मुझे इससे इतना डर क्यों लगना चाहिए; इससे पीड़ित होने वाला केवल मैं ही हूं, और इस जीवन में सुख और दुख दोनों ही शीघ्र ही बीत जाते हैं। आपके स्कॉटिश अभियान में आपको सभी सफलता की शुभकामनाएं, - प्रिय महोदय, आपकी सच्ची,

सी. बेल।"

जैसा कि हम देख चुके हैं, मिस ब्रोंटे "शर्ली" में अपनी पहचान गुप्त रखने के लिए हमेशा की तरह उत्सुक थीं। उन्हें तो यह भी लगता था कि इसमें "जेन आयर" की तुलना में किसी महिला के लेखन के निशान बहुत कम हैं; और इसलिए, जब शुरुआती समीक्षाएँ प्रकाशित हुईं और यह दावा किया गया कि रहस्यमयी लेखिका

एक महिला ही होनी चाहिए, तो उन्हें बहुत निराशा हुई। उन्हें विशेष रूप से यह बात नापसंद थी कि किसी महिला द्वारा लिखे गए उपन्यास को आंकने का मानदंड कम हो जाता है; और उनकी स्त्रीत्व की झूठी प्रशंसा उन्हें वास्तविक निंदा से कहीं अधिक आहत करती थी।

लेकिन इतने बड़े चाव से छुपाए गए इस रहस्य का अंततः खुलासा होने लगा। "शर्ली" के प्रकाशन से यह धारणा और पुख्ता हो गई कि लेखिका उसी जिले की निवासी थीं जहाँ कहानी आधारित थी। हॉवर्थ के एक चतुर व्यक्ति, जो आर्थिक रूप से कुछ हद तक सफल हो गए थे और लिवरपूल में बस गए थे, ने उपन्यास पढ़ा और उसमें उल्लिखित कुछ स्थानों के नामों से प्रभावित हुए, और उस बोली को भी पहचान लिया जिसमें इसके कुछ अंश लिखे गए थे। उन्हें यकीन हो गया कि यह हॉवर्थ के ही किसी व्यक्ति की रचना है। लेकिन वे यह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि उस गाँव में मिस ब्रोंटे के अलावा और कौन ऐसी रचना लिख सकता है। अपने अनुमान पर गर्व करते हुए, उन्होंने लिवरपूल के एक अखबार में इस संदेह (जो लगभग निश्चित था) का खुलासा कर दिया; इस प्रकार रहस्य की तह धीरे-धीरे खुलने लगी; और 1849 के अंत में मिस ब्रोंटे की लंदन यात्रा ने इसे स्पष्ट कर दिया। उनके अपने प्रकाशकों के साथ हमेशा से ही बहुत अच्छे संबंध रहे थे; और उनकी दयालुता ने उन थका देने वाले, एकाकी पलों को कुछ हद तक सुहावना बना दिया था, जो हाल ही में अक्सर आते थे, क्योंकि वे उसके पढ़ने के लिए ऐसी पुस्तकों के बक्से भेजते थे जो कीघली के पुस्तकालय से मिलने वाली पुस्तकों की तुलना में उसकी रुचियों के कहीं अधिक अनुकूल थीं। वह अक्सर कॉर्नहिल को लिखे अपने पत्रों में निम्नलिखित वाक्य लिखती है: —

आपने जो किताबें भेजीं, उनमें मुझे वाकई बहुत दिलचस्पी थी – 'एकरमैन की गोएथे के साथ बातचीत', 'अनुमान ही सत्य है', 'परिषद में मित्र', और अंग्रेजी सामाजिक जीवन पर लिखी छोटी सी रचना तो मुझे विशेष रूप से पसंद आई, और आख़िरी वाली तो और भी अच्छी थी। कभी-कभी हम किताबों को पात्रों की तरह ही पसंद करने लगते हैं, किसी प्रतिभाशाली बुद्धि या विलक्षणता के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि उनमें कुछ अच्छा, सूक्ष्म और वास्तविक होता है। मुझे लगा कि वह छोटी सी किताब किसी महिला की रचना है, एक मिलनसार और समझदार महिला की, और मुझे वह पसंद आई। अभी मेरे लिए और कोई रचना चुनने की ज़रूरत नहीं है;

मेरी पढ़ने की क्षमता अभी काफी बची है।

"मैं 'एथेनियम' के संबंध में आपके प्रस्ताव को स्वीकार करता हूँ; यह एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसे मैं देखना चाहूँगा, बशर्ते आप इसे बिना किसी परेशानी के भेज सकें। इसे समय पर वापस कर दिया जाएगा।"

अपनी सहेली को लिखे एक पत्र में वह उस बीमारी की अनुभूति के बारे में शिकायत करती है जिससे वह शायद ही कभी या कभी भी मुक्त नहीं हो पाती थी।

"16 नवंबर, 1849।"

आपको यह नहीं मानना चाहिए कि 'शर्ली' के किसी भी पात्र को हूबहू चित्रित किया गया है। इस शैली में लिखना न तो कला के नियमों के अनुरूप है और न ही मेरी भावनाओं के। हम वास्तविकता को केवल संकेत देने देते हैं, उसे थोपने नहीं देते। नायिकाएँ और नायक दोनों ही अमूर्त हैं। मैंने जिन गुणों को देखा है, पसंद किया है और सराहा है, उन्हें यहाँ-वहाँ सजावटी रत्नों की तरह रखा गया है, ताकि वे उस चित्र में संरक्षित रहें। चूंकि आप कहते हैं कि आप नायिकाओं को छोड़कर बाकी सभी के मूल रूप को पहचान सकते हैं, तो कृपया बताइए कि आपके अनुसार दोनों मूर किसका प्रतिनिधित्व करते हैं? मैं आपको दो समीक्षाएँ भेज रहा हूँ; एक 'एग्जामिनर' में अल्बानी फॉनब्लैंक द्वारा लिखी गई है, जिन्हें आज का सबसे प्रतिभाशाली राजनीतिक लेखक कहा जाता है, एक ऐसा व्यक्ति जिसका कथन लंदन में बहुत महत्व रखता है। दूसरी 'स्टैंडर्ड ऑफ फ्रीडम' में विलियम हॉविट द्वारा लिखी गई है, जो एक क्वेकर हैं! ... अगर सिरदर्द और अपच न होता तो मैं काफी ठीक होता। हाल ही में मेरी छाती में आराम मिला है।

लंबे समय से चली आ रही सुस्ती, सिरदर्द और बीमारी की इस स्थिति के कारण, जिसमें थोड़ी सी भी ठंड लगने पर आवाज बैठ जाना और सीने में दर्द होना बढ़ जाता था, उसने अपने पिता और स्वयं दोनों के भले के लिए समय रहते इस बीमारी से निपटने का निश्चय किया और लंदन जाकर किसी चिकित्सक से परामर्श लेने का फैसला किया। उसका कहीं जाने का कोई इरादा नहीं था; लेकिन उसके प्रकाशकों के आग्रह के कारण, यह तय हुआ कि वह श्री स्मिथ के यहाँ अतिथि के रूप में ठहरेगी। जाने से पहले, उसने "शर्ली" के बारे में दो विशिष्ट पत्र लिखे, जिनमें से कुछ अंश मैं यहाँ प्रस्तुत करूँगा।

"'शर्ली' अपना रास्ता बना रही है। समीक्षाएँ तेज़ी से आ रही हैं। . . . अब तक की

सबसे अच्छी समीक्षा रेव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस में प्रकाशित हुई है, जो एक प्रकार की यूरोपीय विश्वव्यापी पत्रिका है, जिसका मुख्यालय पेरिस में है। तुलनात्मक रूप से बहुत कम समीक्षक, यहाँ तक कि अपनी प्रशंसा में भी, लेखक के अर्थ की सही समझ प्रदर्शित करते हैं। यूजीन फोरकार्ड, वह समीक्षक, करर बेल के हर मोड़ का अनुसरण करते हैं, हर बिंदु को समझते हैं, हर सूक्ष्म अंतर को पहचानते हैं, स्वयं को विषय का उस्ताद और उद्देश्य का स्वामी साबित करते हैं। अगर मैं उस व्यक्ति से मिलूँ तो मैं उससे हाथ मिलाऊँगा। मैं कहूँगा, 'आप मुझे जानते हैं, महोदय; आपसे मिलना मेरे लिए सम्मान की बात होगी।' मैं लंदन के अधिकांश आलोचकों के बारे में ऐसा नहीं कह सकता। शायद मैं ग्रेट ब्रिटेन के लाखों लोगों में से पाँच सौ पुरुषों और महिलाओं के बारे में भी ऐसा नहीं कह सकता। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं पहले अपनी अंतरात्मा को संतुष्ट करता हूँ; और ऐसा करने के बाद, अगर मैं फोरकार्ड को और अधिक संतुष्ट और प्रसन्न कर सकूँ, तो... फॉनब्लैंक और थैकरे, मेरी महत्वाकांक्षा को उसका हिस्सा मिल गया है, वह तृप्त है; वह फिलहाल संतुष्ट होकर आराम कर रही है; मेरी क्षमताओं ने एक दिन का काम पूरा कर लिया है और एक दिन की मजदूरी कमा ली है। मैं कोई शिक्षक नहीं हूँ; मुझे उस नजरिए से देखना मुझे गलत समझना है। पढ़ाना मेरा पेशा नहीं है। मैं क्या हूँ, यह कहना व्यर्थ है। जिन लोगों से इसका संबंध है, वे इसे महसूस करते हैं और जान लेते हैं। बाकी सभी के लिए मैं केवल एक गुमनाम, स्थिर और एकांतप्रिय व्यक्ति बनना चाहता हूँ। प्रिय ई——, मैं आपका सच्चा मित्र बनना चाहता हूँ। मुझे अपना स्नेह दें; मैं प्रशंसा से मुक्त हूँ।

26 नवंबर।

समीक्षाओं को कमतर आंकना आपकी आदत है, और यह आपके उस स्वभाव का हिस्सा है जो आपको अपने किसी भी परिधान, सजावट आदि की बिना शर्त प्रशंसा करने की अनुमति नहीं देता। जान लीजिए कि समीक्षाएँ शानदार हैं; और अगर मैं उनसे असंतुष्ट होती, तो मैं अहंकारी बंदर होती। किसी भी जीवित लेखक के बारे में, निस्वार्थ भाव से, इससे अधिक प्रशंसा कभी नहीं कही जाती। अगर सब ठीक रहा, तो मैं इस सप्ताह लंदन जा रही हूँ; शायद बुधवार को। दर्जी ने मेरे छोटे-मोटे काम अच्छे से कर दिए हैं, लेकिन काश आप भी उन्हें देख लेतीं और अपनी राय दे देतीं। मैंने कपड़ों को बिल्कुल सादा बनाने पर जोर दिया था।

नवंबर के अंत में वह "बड़े बेबीलोन" (शहर) गई और वहाँ पहुँचते ही उसे एक

अजीब सी हलचल महसूस हुई; क्योंकि जो बदलाव, दृश्य और उत्तेजनाएँ दूसरों के लिए मामूली होतीं, वे उसके लिए बहुत मायने रखती थीं। अजनबियों के साथ हमेशा की तरह, जिस परिवार में उसे जगह मिली थी, उससे वह पहले थोड़ी डरी हुई थी, उसे लगा कि वहाँ की महिलाएँ उसे सम्मान और चिंता दोनों भावों से देख रही हैं; लेकिन कुछ ही दिनों में, अगर यह भावना कभी थी भी, तो उसके सरल, शर्मीले और शांत स्वभाव, उसके शालीन व्यक्तिगत और घरेलू तौर-तरीकों ने इसे पूरी तरह से दूर कर दिया, और वह कहती है कि उसे लगता है कि वे उसे पसंद करने लगी हैं, और वह भी उन्हें बहुत पसंद करती है, क्योंकि "दयालुता दिल जीतने की एक शक्तिशाली कला है।" उसने यह शर्त रखी थी कि उससे बहुत से लोगों से मिलने की उम्मीद न की जाए। उसके एकांत जीवन के कारण, उसे किसी भी नए चेहरे से मिलने में घबराहट होती थी, जो जीवन भर बनी रही। फिर भी, वह उन लोगों में से कुछ के व्यक्तिगत रूप और तौर-तरीकों के बारे में जानने के लिए उत्सुक थी, जिनके लेखन या पत्रों ने उसे आकर्षित किया था। तदनुसार श्री ठाकरे को उनसे मिलने का निमंत्रण दिया गया, लेकिन संयोगवश वह सुबह का अधिकांश समय बाहर बिताने के कारण अपने मित्र के घर दोपहर के भोजन के समय उपस्थित नहीं हो सकीं। यॉर्कशायर के एक पादरी के घर के नियमित और नियमित समय पर उठने की आदी होने के कारण उन्हें इससे तीव्र और निराशाजनक सिरदर्द हो गया; इसके अलावा, "वैनिटी फेयर" के लेखक से मिलने, उन्हें सुनने और उनके बगल में बैठने की उत्तेजना, जिनके प्रति वह इतनी श्रद्धा रखती थीं, उनके नाजुक तंत्रिका तंत्र पर भारी पड़ गई। वह इस रात्रिभोज के बारे में इस प्रकार लिखती हैं: —

10 दिसंबर, 1849।

“खुश रहने की बात करें तो, मैं उत्तेजना भरे माहौल में रहती हूँ; लेकिन कभी-कभी मुझे तीव्र पीड़ा होती है, मेरा मतलब मानसिक पीड़ा से है। जिस समय श्री थैकरे आए, मैं भूख से बुरी तरह कमजोर थी, क्योंकि मैंने नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया था, और शाम के सात बज रहे थे। उस शाम उत्तेजना और थकावट ने मुझे बुरी तरह थका दिया था। उन्होंने मेरे बारे में क्या सोचा, यह मैं नहीं बता सकती।”

उन्होंने मुझे बताया कि श्री थैकरे से पहली बार मिलने पर उन्हें यह तय करना कितना मुश्किल लगा कि वे मज़ाक कर रहे हैं या गंभीरता से, और उन्हें लगा कि उन्होंने ड्राइंग रूम में आने पर उनके एक सवाल को पूरी तरह से गलत समझा था।

उन्होंने उनसे पूछा था कि "क्या उन्हें उनके सिगार का रहस्य पता चला है?" जिस पर उन्होंने शाब्दिक उत्तर दिया, और एक मिनट बाद कई चेहरों पर मुस्कान देखकर उन्हें समझ आ गया कि वे "जेन आयर" के एक अंश का जिक्र कर रहे थे। उनके मेज़बानों को उन्हें लंदन के दर्शनीय स्थल दिखाने में बहुत आनंद आया। इन सुखद भ्रमणों के लिए निर्धारित दिनों में से एक दिन, टाइम्स में "शर्ली" की एक कड़ी समीक्षा प्रकाशित हुई। उन्होंने सुना था कि उनकी किताब पर अखबार में टिप्पणी की जाएगी, और उन्होंने अनुमान लगाया कि उस खास सुबह उनके मेज़बानों द्वारा उनकी किताब को इतनी सावधानी से कहीं रख देने के पीछे कोई खास कारण था। उन्होंने उन्हें बताया कि उन्हें पता है कि उन्हें अखबार क्यों नहीं मिला। श्रीमती स्मिथ ने तुरंत मान लिया कि उनका अनुमान सही था, और कहा कि वे चाहते थे कि वह अखबार पढ़ने से पहले दिन के कार्यक्रम में चली जाएं। लेकिन उन्होंने चुपचाप अखबार लेने की अपनी विनती जारी रखी। श्रीमती स्मिथ ने अपना काम लिया और उस चेहरे को न देखने की कोशिश की जिसे दूसरी महिला बड़े पन्नों के बीच छिपाने की कोशिश कर रही थी; लेकिन वह अपनी आँखों से बहते आँसुओं को गोद में गिरते हुए देखने से खुद को रोक नहीं पाईं। मिस ब्रोंटे ने सबसे पहले यही कहा कि उन्हें डर है कि इतनी कड़ी आलोचना से किताब की बिक्री रुक जाएगी और उनके प्रकाशकों पर बुरा असर पड़ेगा। आहत होने के बावजूद, उनका पहला विचार दूसरों के लिए था। बाद में (मुझे लगता है उसी दोपहर) श्री थैकरे आए; उन्हें शक था (उन्होंने कहा) कि वह यह देखने आए थे कि "शर्ली" पर हुए हमले को उन्होंने कैसे सहन किया; लेकिन उन्होंने खुद को संभाल लिया था और उनसे बहुत शांति से बातचीत की: उन्हें केवल उनके सीधे सवाल के जवाब से पता चला कि उन्होंने टाइम्स का लेख पढ़ लिया था। उन्होंने स्वयं को "जेन आयर" की लेखिका के रूप में मान्यता देने पर सहमति जताई, क्योंकि उन्हें लगा कि छद्म नाम छोड़ने से कुछ लाभ होंगे। इसका एक परिणाम मिस मार्टिन्यू से परिचय था। उन्होंने उन्हें हाल ही में प्रकाशित उपन्यास भेजा था, साथ में एक अनोखा नोट भी था, जिसमें करर बेल ने मिस मार्टिन्यू को "शर्ली" की एक प्रति भेंट की थी, उनके कार्यों से प्राप्त संतुष्टि के प्रति आभार व्यक्त करते हुए। "डीयरब्रुक" से उन्हें एक नया और गहरा आनंद मिला था, और एक वास्तविक लाभ का अनुभव हुआ था। उनके मन में "डीयरब्रुक" आदि।

मिस मार्टिन्यू ने इस नोट और "शर्ली" की प्रति को स्वीकार करते हुए, अपने पत्र

पर श्री स्मिथ के निवास के पड़ोस में स्थित एक मित्र के घर से दिनांक अंकित किया; और जब एक या दो सप्ताह बाद, मिस ब्रोंटे को पता चला कि वह अपनी पत्र-व्यवहार करने वाली के कितनी करीब हैं, तो उन्होंने करर बेल के नाम से पत्र लिखकर उनसे मिलने का प्रस्ताव रखा। एक रविवार की दोपहर छह बजे (10 दिसंबर) का समय निर्धारित किया गया था। मिस मार्टिन्यू के दोस्तों ने अज्ञात करर बेल को अपनी चाय पर आमंत्रित किया था; उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि यह नाम पुरुष का है या स्त्री का; और उन्होंने लिंग, आयु और रूप-रंग के बारे में कई अनुमान लगाए थे। मिस मार्टिन्यू ने वास्तव में अपने निजी विचार को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया था, जब उन्होंने ऊपर उल्लिखित कथित रूप से पुरुष के नाम से लिखे गए पत्र का उत्तर "प्रिय महोदया" से शुरू किया था; लेकिन उन्होंने इसे "करर बेल, एस्क्वायर" को संबोधित किया था। हर घंटी बजने पर सभी की निगाहें दरवाजे की ओर मुड़ जाती थीं। कोई अजनबी (मुझे लगता है कि एक सज्जन) अंदर आया; एक पल के लिए उन्हें लगा कि वह करर बेल हैं, और वास्तव में एक एस्क्वायर हैं; वह कुछ देर रुके और फिर चले गए। दूसरी घंटी बजी; "मिस ब्रोंटे के आने की सूचना मिली; और एक युवा दिखने वाली महिला अंदर आई, कद में लगभग बच्ची जैसी, गहरे शोक वस्त्र में, बिल्कुल क्वेकर की तरह साफ-सुथरी, उसके सुंदर बाल चिकने और भूरे थे, उसकी सुंदर आँखें अर्थपूर्ण चमक रही थीं और उसका समझदार चेहरा आत्म-संयम का संकेत दे रहा था।" वह आई, - चार-पाँच लोगों को इकट्ठा देखकर एक पल के लिए झिझकी, - फिर सहज पहचान के साथ सीधे मिस मार्टिन्यू के पास गई, और अच्छे भाव और सभ्य परवरिश के सहज बंधन से, वह जल्द ही चाय की मेज के चारों ओर बैठे परिवार के सदस्य की तरह हो गई; और जाने से पहले, उसने सरल, मार्मिक तरीके से उन्हें अपने दुख और अकेलेपन के बारे में बताया, और इस तरह मिस मार्टिन्यू के साथ उसकी घनिष्ठता की नींव पड़ी।

इस विषय पर कुछ चर्चा के बाद, और इस शर्त के साथ कि उनका किसी से विशेष परिचय न कराया जाए, श्री स्मिथ ने कुछ सज्जनों को शहर छोड़ने से एक शाम पहले उन्हें रात्रिभोज पर मिलने के लिए आमंत्रित किया। उनके मेज़बान के अनुसार, उनकी स्वाभाविक जगह मेज़ के निचले पायदान पर होती; और उनके आस-पास बैठने वाले लोगों की जगहें भी उसी के अनुसार तय की गई थीं; लेकिन भोजन कक्ष में प्रवेश करते ही, वह तुरंत आगे बढ़कर घर की मालकिन के बगल में बैठ गईं, ताकि अपने जैसी किसी महिला के पास सुरक्षित महसूस कर सकें। यह छोटी सी हरकत उसी

स्त्रीत्वपूर्ण सुरक्षा की चाहत से उपजी थी, जो हर उस अवसर पर होती है जब अपनी स्वतंत्रता का दावा करने में कोई नैतिक कर्तव्य शामिल नहीं होता, और इसी वजह से उन्होंने लगभग इसी समय निम्नलिखित लिखा था: “श्रीमती — — अजनबियों से घिरी होने पर मुझे बहुत ध्यान से देखती हैं। वह कभी भी अपनी नज़र मुझसे नहीं हटातीं। मुझे यह निगरानी अच्छी लगती है; ऐसा लगता है जैसे वह मेरी रक्षा कर रही हों।”

इस विशेष रात्रिभोज के संदर्भ में उन्होंने ब्रुसेल्स की अपनी पुरानी सहपाठी को पत्र लिखा, जिनसे उनकी लंदन यात्रा के दौरान मित्रता फिर से जागृत हुई थी:

“आपसे विदा लेने के बाद की शाम मेरी उम्मीद से बेहतर गुज़री। मेरे भरपेट दोपहर के भोजन और ताज़गी देने वाली कॉफ़ी की बदौलत मैं आठ बजे के खाने का इंतज़ार पूरी सहजता से कर सका और उसकी लंबी अवधि को भी साहसपूर्वक सहन कर पाया, और बातचीत करने के लिए मैं इतना थका हुआ भी नहीं था; और मुझे इस बात की खुशी थी, क्योंकि अन्यथा मुझे पता है कि मेरे मेज़बान और मेज़बानी करने वाली महिला बहुत निराश होते। श्री स्मिथ के अलावा खाने पर केवल सात सज्जन थे, लेकिन इनमें से पाँच आलोचक थे - साहित्य जगत में इतने खौफनाक लोग, जितना आप सोच भी नहीं सकते। मुझे यह एहसास नहीं हुआ कि उनकी उपस्थिति और बातचीत ने मुझे कितना उत्तेजित किया था, जब तक कि वे चले नहीं गए और उसका असर शुरू नहीं हो गया। जब मैं रात को सोने के लिए लेटा, तो मुझे नींद आने लगी - लेकिन कोशिश बेकार गई। मेरी आँखें बंद नहीं हो रही थीं। रात बीत गई; सुबह हो गई, और मैं एक पल भी सोए बिना उठ गया। जब मैं डर्बी पहुँचा तो मैं इतना थका हुआ था कि मुझे वहाँ फिर से पूरी रात रुकना पड़ा।”

17 दिसंबर।

“मैं एक बार फिर हॉवर्थ में हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी रोमांचक भंवर से बाहर निकली हूँ। हालाँकि समाज और बदलाव के आदी किसी व्यक्ति को यह जल्दबाजी और उत्तेजना शायद उतनी महसूस न होती, लेकिन मेरे लिए ये बहुत स्पष्ट थीं। मेरी शक्ति और उत्साह अक्सर इन प्रयासों की मांग के आगे अपर्याप्त साबित होते थे। मैं यथासंभव सहन करती थी, क्योंकि जब मैं थक जाती थी, तो मैं देख सकती थी कि श्री स्मिथ परेशान हो जाते थे; उन्हें हमेशा लगता था कि मुझे परेशान करने के लिए कुछ कहा या किया गया है - जो कभी नहीं हुआ, क्योंकि मुझे

विरोधियों से भी पूर्ण शिष्टाचार मिला - ऐसे लोग जिन्होंने मुझे नीचा दिखाने की पूरी कोशिश की थी। मैंने उन्हें बार-बार समझाया कि मेरी कभी-कभार की चुप्पी केवल बोलने की शक्ति की विफलता थी, इच्छा की नहीं। . . .”

“ठाकरे एक विख्यात विद्वान हैं। उनकी उपस्थिति और क्षमताएं बौद्धिक रूप से मन को गहराई से प्रभावित करती हैं; मैं उन्हें एक इंसान के रूप में नहीं देखता और न ही जानता हूँ। बाकी सभी उनके अधीन हैं। मैं कुछ का आदर करता हूँ, और मुझे विश्वास है कि सभी के प्रति शिष्टाचार रखता हूँ। बेशक, मैं नहीं जानता कि वे मेरे बारे में क्या सोचते थे, लेकिन मेरा मानना है कि उनमें से अधिकांश मुझसे एक अधिक विशिष्ट, विलक्षण और प्रभावशाली छवि की अपेक्षा रखते थे। मेरा मानना है कि वे प्रशंसा करने के लिए और आलोचना करने के लिए अधिक उत्सुक थे। मैं ठाकरे को छोड़कर बाकी सभी के साथ सहज महसूस करता था; उनके साथ मैं पूरी तरह से मूर्ख था।”

वह अपने शांत घर और अपने शोर-रहित दैनिक कर्तव्यों में लौट आई। उसके पिता में वीर-पूजा की भावना इतनी प्रबल थी कि वे उसके द्वारा सुनी-सुनाई बातों और देखे-देखे व्यक्तियों के वृत्तांतों को सुनकर अत्यंत आनंदित होते थे। लंदन की अपनी एक यात्रा के दौरान, उन्होंने उससे यदि संभव हो तो प्रिंस अल्बर्ट के शस्त्रागार को देखने का आग्रह किया था। मुझे नहीं पता कि वह ऐसा कर पाई या नहीं; लेकिन वह एक-दो बड़े राष्ट्रीय शस्त्रागारों में गई ताकि वह अपने पिता को कठोर इस्पात के कवच और चमकीली तलवारों का वर्णन कर सके, जिनकी कल्पना ऐसी चीजों से अत्यंत प्रभावित हुई; और अक्सर बाद में, जब उनका उत्साह कम हो जाता और बुढ़ापे की सुस्ती कुछ समय के लिए उनके अदम्य स्वभाव पर हावी हो जाती, तो वह फिर से उसी जोशीले अंदाज में लंदन में देखे गए विचित्र हथियारों की सेनाओं के बारे में बात करने लगती, जब तक कि वे फिर से उस विषय में रुचि नहीं लेने लगते और अपने पहले के तेज, योद्धा और बुद्धिमान रूप में वापस नहीं आ जाते।

अध्याय V

हॉवर्थ में उनका जीवन इतना नीरस था कि डाकिया का आना ही उनके दिन की सबसे महत्वपूर्ण घटना होती थी। फिर भी, उन्हें इस बात का डर सताता था कि कहीं उनका सारा ध्यान इसी एक पल पर केंद्रित न हो जाए और बाकी के छोटे-मोटे कामों और उम्मीदों में उनकी रुचि कम न हो जाए। इसलिए उन्होंने जानबूझकर बार-बार पत्र लिखने के सुख से खुद को वंचित रखा, क्योंकि जब उन्हें पत्र मिलते थे तो उनके उत्तर उनके बाकी जीवन का आनंद छीन लेते थे; या फिर जब उत्तर नहीं आते थे तो निराशा से घर के कामों के लिए उनकी ऊर्जा कम हो जाती थी।

उत्तर में इस वर्ष की सर्दी कठोर और ठंडी थी; हालाँकि, इससे मिस ब्रोंटे के स्वास्थ्य पर सामान्य से कम असर पड़ा, शायद इसलिए कि लंदन में हुए बदलाव और चिकित्सा सलाह से उन्हें लाभ हुआ था; शायद इसलिए भी कि उनकी एक सहेली उनसे मिलने आई थी और उसने शारीरिक लक्षणों पर ध्यान देने के लिए उन्हें प्रेरित किया, जिन्हें मिस ब्रोंटे अक्सर नज़रअंदाज़ कर देती थीं, क्योंकि उन्हें अपनी स्थिति को लेकर घबराहट होने और अपने पिता को संक्रमित करने का डर था। लेकिन अपनी बहन एमिली की पुण्यतिथि नजदीक आने पर वे काफी उदास हो गईं; इससे जुड़ी सभी यादें दर्दनाक थीं, फिर भी ऐसी कोई बाहरी घटना नहीं थी जो उनका ध्यान भटका सके और उन यादों के गहरे प्रभाव को कम कर सके। इस समय, और कई अन्य समयों की तरह, मैंने उनके पत्रों में कॉर्नहिल से भेजी गई पुस्तकों से मिलने वाले सुकून का जिक्र पाया है।

मैं कभी-कभी सोचता हूँ, इनके बिना मैं क्या कर सकता हूँ? मैं इनके पास दोस्तों की तरह जाता हूँ; ये कई घंटों को छोटा और खुशनुमा बना देते हैं, जो इनके बिना बहुत लंबे और नीरस होते। यहाँ तक कि जब मेरी थकी हुई नज़र मुझे पढ़ना जारी रखने की अनुमति नहीं देती, तब भी इन्हें शेल्फ या टेबल पर देखना सुखद होता है। मैं अब भी बहुत समृद्ध हूँ, क्योंकि मेरा भंडार अभी खत्म नहीं हुआ है। कुछ अन्य मित्रों ने भी हाल ही में मुझे किताबें भेजी हैं। हैरियट मार्टिन्यू की 'ईस्टर्न लाइफ' को पढ़कर मुझे बहुत आनंद मिला; और न्यूमैन की 'आत्मा पर' रचना में मुझे अध्ययन का एक

गहरा और रोचक विषय मिला है। क्या आपने यह रचना पढ़ी है? यह साहसिक है, - हो सकता है इसमें कुछ गलतियाँ हों, - लेकिन यह शुद्ध और उदात्त है। फ्रूड की 'नेमेसिस ऑफ फेथ' मुझे पसंद नहीं आई; मुझे यह निराशावादी लगी; फिर भी इसके पन्नों में भी सत्य के अंश मिलते हैं।

इस समय तक, "एयरडेल, व्हार्फेडेल, काल्डरडेल और रिबल्सडेल" सभी कुरेर बेल के निवास स्थान से परिचित हो चुके थे। वह स्वयं की तुलना शुतुरमुर्ग से करती थी जो अपना सिर रेत में छिपा लेता है; और कहती थी कि वह आज भी अपना सिर हॉवर्थ के दलदली मैदानों में छिपाती है; लेकिन "यह छिपाव मात्र आत्म-भ्रम है।" वास्तव में ऐसा ही था। वेस्ट राइडिंग में दूर-दूर तक यह खबर फैल चुकी थी कि कुरेर बेल हॉवर्थ के आदरणीय पादरी की पुत्री हैं; गाँव में भी उत्साह का माहौल छा गया था।

श्रीमान — — ने 'जेन आयर' पढ़ना समाप्त कर लिया है और अब वे 'दूसरी किताब' के लिए गुहार लगा रहे हैं; उन्हें वह अगले सप्ताह मिल जाएगी। . . . श्रीमान आर — — ने 'शर्ली' पढ़ना समाप्त कर लिया है; वे इससे बहुत प्रसन्न हैं। जॉन — — की पत्नी को लगा कि उनका दिमाग खराब हो गया है, क्योंकि उन्होंने उन्हें अकेले बैठे हुए ज़ोर-ज़ोर से हंसते हुए, ताली बजाते और ज़मीन पर पैर पटकते हुए सुना था। वे पादरी से संबंधित सभी दृश्य पापा को ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर सुनाते थे। . . . "कल मार्था हांफती-कांपती, बहुत उत्तेजित होकर आई। 'मैंने ऐसी खबर सुनी है!' उसने कहना शुरू किया। 'किस बारे में?' 'कृपया महोदया, आपने दो किताबें लिखी हैं – अब तक की सबसे शानदार किताबें। मेरे पिताजी ने हैलिफ़ैक्स में इसके बारे में सुना है, और श्री जी — — टी — — और श्री जी — — और श्री एम — — ने ब्रैडफ़ोर्ड में; और वे मैकेनिक्स इंस्टीट्यूट में एक बैठक करने जा रहे हैं, और उन्हें प्रकाशित करवाने के बारे में फैसला करेंगे।' 'चुप रहो, मार्था, और चली जाओ।' मुझे पसीना आ गया। "जेन आयर" को जे — — बी — —, श्रीमती टी — — और बी — — पढ़ेंगे। भगवान मेरी मदद करें, मेरी रक्षा करें और मुझे बचाएँ!" . . . "हॉवर्थ के लोग शर्ली के बारे में बड़ी बेवकूफी कर रहे हैं; उन्होंने इसे बहुत उत्साह से लिया है। जब उन्हें मैकेनिक्स इंस्टीट्यूट में किताबें मिलीं, तो सभी सदस्य उन्हें चाहते थे। उन्होंने तीनों किताबों के लिए लॉटरी निकाली, और जिसे भी किताब मिली, उसे केवल दो दिन रखने की अनुमति थी, और इससे अधिक समय तक रखने पर प्रतिदिन एक शिलिंग का जुर्माना देना पड़ता था। वे क्या कहते हैं, यह बताना सरासर बकवास और

घमंड होगा।”

इन अंशों का लहजा यॉर्कशायर और लंकाशायर के लोगों की भावना से पूरी तरह मेल खाता है, जो यथासंभव अपनी खुशी को हंसी-मजाक के पीछे छिपाने की कोशिश करते हैं, मानो मानो खुद का ही मजाक उड़ा रहे हों। मिस ब्रोंटे अपने कोमल हृदय में इस बात से बेहद भावुक हो गईं कि बचपन से उन्हें जानने वाले लोग उनकी सफलता पर कितना गर्व और प्रसन्नता व्यक्त कर रहे थे। यह खबर चारों ओर फैल चुकी थी; अजनबी लोग "बर्नली के पार से" उन्हें देखने आते थे, जब वह चुपचाप और सहजता से चर्च में जाती थीं और चर्च के चौकीदार को उन्हें पहचानने में मदद करने के लिए कई बार आधा क्राउन मिलता था।

लेकिन इस हार्दिक और स्नेहपूर्ण प्रशंसा की कुछ कमियाँ भी थीं, जो प्रसिद्धि से कहीं अधिक मूल्यवान थी। एडिनबर्ग रिव्यू के जनवरी अंक में शर्ली पर एक लेख छपा था, जिसके लेखक उनके संवाददाता श्री लेवेस थे। मैंने पहले भी कहा है कि मिस ब्रोंटे एक लेखिका के रूप में आलोचना किए जाने के लिए विशेष रूप से उत्सुक थीं, न कि एक महिला के रूप में उनके लिंग से संबंधित। चाहे यह सही हो या गलत, इस मामले में उनकी भावना प्रबल थी। अब शर्ली की इस समीक्षा में, पहले दो पृष्ठों का शीर्षक इस प्रकार था: "लिंगों की मानसिक समानता?" "महिला साहित्य," और पूरे लेख में लेखिका के लिंग का उल्लेख बार-बार किया गया है।

समीक्षा प्रकाशित होने के कुछ दिनों बाद, श्री लेवेस को निम्नलिखित नोट प्राप्त हुआ, जो कि कुछ हद तक ऐनी काउंटेस ऑफ पेम्ब्रोक, डोरसेट और मोंटगोमरी की शैली में था।

जी. एच. लेवेस, एस्क्वायर को।

मैं अपने शत्रुओं से तो सावधान रह सकता हूँ, लेकिन भगवान मुझे मेरे मित्रों से बचाए!

करर बेल।"

श्री लेवेस ने मुझे उनके द्वारा लिखे गए पत्रों पर कुछ व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ भेजी हैं, जिनमें वे कहते हैं: —

"यह देखकर कि वह गुस्से में आकर तर्कहीन व्यवहार कर रही थी, मैंने उसे एक समीक्षा की कठोरता या स्पष्टता पर आपत्ति जताने के लिए फटकार लगाने के लिए लिखा, जो निश्चित रूप से सच्ची प्रशंसा और सच्ची दोस्ती से प्रेरित थी; यहां तक कि

उस पर आपत्ति जताने के बावजूद भी मित्र की आवाज सुनी जा सकती थी।"

निम्नलिखित पत्र उनका उत्तर है: —

जी. एच. लेवेस, एस्क्वायर को।

19 जनवरी, 1850।

“मेरे प्रिय महोदय, मैं आपको बताती हूँ कि एडिनबर्ग पत्रिका में छपी उस समीक्षा से मुझे इतना दुख क्यों हुआ; इसलिए नहीं कि उसकी आलोचना तीखी थी या उसमें दोषारोपण कभी-कभी कठोर था; इसलिए भी नहीं कि उसकी प्रशंसा कम थी (क्योंकि वास्तव में, मुझे लगता है कि आपने मेरी उतनी ही प्रशंसा की है जितनी मैं हकदार हूँ), बल्कि इसलिए कि जब मैंने पूरी ईमानदारी से कहा था कि मैं चाहती हूँ कि आलोचक मुझे एक लेखिका के रूप में आंकें, न कि एक महिला के रूप में, तो आपने लिंग के मुद्दे को इतनी बेरहमी से उठाया - मुझे तो ऐसा लगा जैसे यह बहुत क्रूरतापूर्ण था। मुझे विश्वास है कि आपका इरादा कोई नुकसान पहुँचाने का नहीं था, और शायद अब आप यह नहीं समझ पाएँगे कि मैं उस बात पर इतनी दुखी क्यों हुई जिसे आप शायद एक मामूली बात समझेंगे; लेकिन मैं दुखी थी, और क्रोधित भी थी।”

"एक-दो ऐसे अंश थे जिन्हें लिखने में आपने सरासर गलती की।"

“हालाँकि, मैं इसके लिए आपसे कोई द्वेष नहीं रखूँगा; मैं आपका स्वभाव जानता हूँ: यह बुरा या निर्दयी नहीं है, हालाँकि आप अक्सर कुछ भावनाओं को बुरी तरह से आहत कर देते हैं, जिनके प्रति आप सहानुभूति नहीं रख सकते। मुझे लगता है कि आप उत्साही और अडिग दोनों हैं, साथ ही साथ बुद्धिमान और लापरवाह भी; आप बहुत कुछ जानते हैं और बहुत कुछ खोजते हैं, लेकिन आप सब कुछ बताने की इतनी जल्दी में रहते हैं कि आप कभी यह सोचने का समय नहीं देते कि आपकी बेपरवाह वाक्पटुता दूसरों को कैसे प्रभावित कर सकती है; और तो और, अगर आपको पता भी चल जाए कि यह उन्हें कैसे प्रभावित करती है, तो आपको इसकी परवाह भी नहीं होगी।”

“फिर भी, मैं आपसे हाथ मिलाता हूँ: आपके विचार बहुत अच्छे हैं; आप उदार हो सकते हैं। मुझे अब भी गुस्सा आ रहा है, और मुझे लगता है कि गुस्सा आना उचित है; लेकिन यह गुस्सा किसी अनुचित खेल के लिए नहीं बल्कि किसी अनुचित खेल के लिए होता है। — मैं आपका हूँ, कुछ सम्मान के साथ, और अधिक निराशा के साथ।”

करर बेल।"

जैसा कि श्री लेवेस कहते हैं, "इस पत्र का लहजा लापरवाह है।" लेकिन मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे मिस ब्रोंटे के मन के एक पहलू को प्रकाशित करने की अनुमति दी। उस समय उनका स्वास्थ्य भी खराब था। “मुझे नहीं पता कि हाल ही में मुझ पर किस प्रकार का भारीपन छा गया है” (वह अपने हृदय की उदासी से भरे दयनीय शब्दों में लिखती है), “इसने मेरी इंद्रियों को सुस्त कर दिया है, आराम को थकावट भरा बना दिया है, और काम को बोझिल। कभी-कभी, घर की खामोशी, कमरे का एकांत, मुझ पर इतना भारी बोझ डालता है कि मुझे सहना मुश्किल लगता है, और यादें उतनी ही सजग, मार्मिक और स्पष्ट होती हैं, जितनी अन्य भावनाएँ सुस्त होती हैं। मैं इस स्थिति का कुछ श्रेय मौसम को देती हूँ। तूफानों और तेज हवाओं में पारा हमेशा नीचे गिर जाता है, और इससे पहले भी मुझे वातावरण में आने वाली अशांति का आगाह शारीरिक कमजोरी और गहरे, भारी मानसिक दुख के रूप में मिलता रहा है, जिसे कुछ लोग पूर्वाभास कहते हैं, - वास्तव में यह पूर्वाभास ही है, लेकिन बिल्कुल भी अलौकिक नहीं। . . . मुझे डाक के समय तक उम्मीद की उत्तेजना महसूस होती रहती है, और जब दिन-ब-दिन कुछ नहीं होता, तो मैं उदास हो जाती हूँ। यह एक मूर्खतापूर्ण बात है, यह शर्मनाक और अर्थहीन स्थिति है। मैं अपनी ही निर्भरता और मूर्खता पर बहुत दुखी हूँ; लेकिन अकेले रहना और छोटी-मोटी परेशानियों और निराशाओं पर किसी से बात न कर पाना और उन्हें हँसकर भुला देना मन के लिए बहुत बुरा है। अगर मैं लिख पाता, तो शायद बेहतर होता, लेकिन मैं एक पंक्ति भी नहीं लिख सकता। फिर भी (ईश्वर की कृपा से), मैं इस मूर्खता से लड़ूँगा।

मुझे कुछ दिन पहले — — की ओर से एक मूर्खतापूर्ण पत्र मिला। उसमें कुछ बातें मुझे चुभ गईं, विशेष रूप से यह अनावश्यक रूप से गंभीर आश्वासन कि लेखन के क्षेत्र में मैंने जो कुछ भी किया है, उसके बावजूद मैं अब भी उनके सम्मान में एक स्थान रखता हूँ। मेरा उत्तर तुरंत ही दृढ़ और गरिमापूर्ण था। मैंने कहा कि मुझे इस विषय पर कोई संदेह नहीं था; कि मैंने न तो उनके साथ और न ही स्वयं के साथ अन्याय किया यह मानकर कि मैंने जो लिखा है उसमें ऐसा कुछ है जिससे मेरा सम्मान उचित रूप से छिन जाए। . . .

कुछ दिन पहले एक छोटी सी घटना घटी जिसने मुझे अजीब तरह से झकझोर दिया। पापा ने मेरे हाथों में चिट्ठियों और कागजों का एक छोटा सा पैकेट थमा दिया

और कहा कि ये मम्मी की हैं और मैं इन्हें पढ़ सकती हूँ। मैंने उन्हें पढ़ा, उस समय मेरी मनःस्थिति ऐसी थी जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती। कागज समय के साथ पीले पड़ गए थे, ये सब मेरे जन्म से पहले लिखे गए थे। अब पहली बार उस दिमाग के अभिलेखों को पढ़ना अजीब लग रहा था जिससे मेरा अपना दिमाग निकला था; और सबसे अजीब, और साथ ही दुखद और सुखद, यह जानकर कि वह दिमाग वास्तव में उत्तम, पवित्र और उच्च कोटि का था। ये चिट्ठियाँ पापा को उनकी शादी से पहले लिखी गई थीं। उनमें एक सत्यनिष्ठा, एक परिष्कार, एक दृढ़ता, एक विनम्रता, एक समझदारी, एक कोमलता है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। काश वह जीवित होतीं और मैं उन्हें जान पाती। ... पूरे फरवरी महीने में मेरा समय बहुत कठिन रहा है। मैं कुछ बेहद दुखद यादों से बच नहीं पाई और न ही उनसे उबर पाई - उनके आखिरी दिन, उनकी पीड़ाएँ, उनके याद किए गए शब्द - जो मेरे लिए सबसे दुखद हैं। फेथ ने मुझे भरोसा दिलाया है कि वे अब खुश हैं। शाम और सोने के समय, ऐसे विचार मुझे परेशान करते थे, जिससे मन में एक थका देने वाला दर्द पैदा होता था।

पाठक को शायद वह विचित्र भविष्यसूचक दर्शन याद होगा, जिसके तहत उन्होंने जनवरी 1840 में अपनी एक शिष्या की मृत्यु के अवसर पर कुछ शब्द लिखवाए थे:

“इस दुनिया में मैं जहाँ कहीं भी उसे ढूँढता हूँ, वह नहीं मिलती; बीस साल पहले मुरझाए हुए फूल या पत्ते की तरह। इस तरह का शोक हमें उन लोगों की भावनाओं की झलक देता है, जिन्होंने अपने चारों ओर एक के बाद एक मित्र को खोते हुए देखा है, और अब अकेले ही अपनी जीवन यात्रा समाप्त करने के लिए रह गए हैं।”

यहां तक कि स्वाभाविक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों में भी, और बिना किसी

दुःख में भी खुशियों भरे पलों को याद करते हुए—

धीरे-धीरे कम होते हुए भी निरंतर पीड़ा सहते हुए, एकांत में रहने से तंत्रिकाएं और भूख कमजोर पड़ जाती हैं। मिस ब्रोंटे के साथ तो यह स्थिति और भी बदतर रही होगी, जो शारीरिक रूप से नाजुक और दुर्बल थीं, जिन्होंने बचपन में बहुत चिंता और दुख झेला था, और अब उन्हें अकेले ही जीवन का सामना करना पड़ रहा था। श्री ब्रोंटे की अधिक उम्र और घर में अकेले रहने की आदत के कारण, उनकी बेटी दिन का अधिकांश समय अकेले ही बिताती थीं। अपनी गंभीर बीमारी के दौरों के बाद से, वे अकेले ही भोजन करते थे; उनके लिए सबसे उपयुक्त आहार का विशेष ध्यान रखते हुए, उनका भोजन का एक हिस्सा वे स्वयं उनके कमरे में ले जाती थीं। भोजन के बाद

वे उन्हें लगभग एक घंटे तक पढ़कर सुनाती थीं, क्योंकि उनकी दृष्टि इतनी कमजोर थी कि वे लंबे समय तक अकेले नहीं पढ़ सकते थे। वे दिन का अधिकांश समय अपने पैरिशवासियों के बीच बाहर बिताते थे; अक्सर अपनी शारीरिक शक्ति से अधिक समय तक। फिर भी उन्हें हमेशा अकेले जाना पसंद था, और इसलिए उनकी स्नेहपूर्ण देखभाल भी उनके इलाज के लिए दूर-दराज के गांवों तक लंबी पैदल यात्राओं पर कोई रोक नहीं लगा सकी। वे कभी-कभी पूरी तरह थके हुए लौटते थे; और बिस्तर पर जाने के लिए मजबूर हो जाते थे, यह सोचते हुए कि उनकी सारी शारीरिक शक्ति कहाँ चली गई। उनकी इच्छाशक्ति पहले जैसी ही थी। जो भी करने का वे निश्चय करते, उसे पूरा करते, चाहे कितनी भी थकान क्यों न हो; लेकिन उनकी बेटी उन्हें अपने और अपने स्वास्थ्य के प्रति इतना लापरवाह देखकर और भी चिंतित हो जाती थी। पादरी के घर में रात को सोने का समय हमेशा जल्दी होता था; अब परिवार की प्रार्थना रात आठ बजे होती थी; जिसके तुरंत बाद श्री ब्रोंटे और बूढ़ी टैबी बिस्तर पर चले जाते थे, और मार्था भी कुछ ही देर में उनके पीछे-पीछे सो जाती थी। लेकिन अगर शार्लोट चली जाती तो सो नहीं पाती, — अपने अकेले पलंग पर आराम नहीं कर पाती। वह देर रात तक जागती रही, — यह बहुत लुभावना था — अकेली रात को किसी काम में बिताने की कोशिश करती रही, जब तक कि उसकी कमजोर आँखें पढ़ने या सिलाई करने में असमर्थ नहीं हो गईं, और वह केवल अकेले में उन मृतकों के लिए रोती रही जो अब जीवित नहीं थे। धरती पर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि वे घंटे उसके लिए कैसे थे। उत्तर के सभी भयानक अंधविश्वास उसके बचपन में नौकरों द्वारा उसके मन में बिठा दिए गए थे, जो उन पर विश्वास करते थे। वे अब उसके मन में फिर से उभर आए — मृतकों की आत्माओं से डरने के बजाय, अपनी बहनों की आत्माओं से एक बार फिर आमने-सामने होने की इतनी तीव्र लालसा के साथ, जितनी उसके अलावा कोई और महसूस नहीं कर सकता था। ऐसा लगता था मानो उसकी तीव्र लालसा ने ही उन्हें प्रकट होने के लिए विवश कर दिया हो। तूफानी रातों में, चीखें, सिसकियाँ और विलाप घर में गूंजते प्रतीत होते थे, मानो कोई प्रिय आत्मा उस तक पहुँचने के लिए बेताब हो। एक बार उनसे बातचीत करते हुए किसी ने मेरी उपस्थिति में "जेन आयर" के उस हिस्से पर आपत्ति जताई, जिसमें जेन अपने जीवन के एक बड़े संकट के समय रोचेस्टर की आवाज़ सुनती है, जो उस समय कई मील दूर था। मुझे नहीं पता कि मिस ब्रोंटे को कौन सी घटना याद आ रही थी जब उन्होंने धीमी आवाज़ में,

गहरी साँस लेते हुए जवाब दिया, "लेकिन यह सच है; यह सचमुच हुआ था।"

जो पाठक उस समय के उसके जीवन की धुंधली सी भी कल्पना कर सकता है, - एकांत के दिन, - जागते हुए, चौकस रातें, - वह कल्पना कर सकता है कि उसकी नसें कितनी संवेदनशील थीं, और ऐसी स्थिति उसके स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करती होगी।

उसके लिए यह कोई बुरी बात नहीं थी कि इसी समय के आसपास कई लोग हॉवर्थ जाने लगे, "शर्ली" में वर्णित दृश्यों को देखने के लिए उत्सुक थे, यदि लेखक के प्रति उनकी सहानुभूति, जिसे केवल जिज्ञासा कहना उचित नहीं होगा, उन्हें यह जानने की इच्छा न जगाती कि क्या वे किसी तरह से उस व्यक्ति की सेवा या हौसला बढ़ा सकते हैं जिसने इतना गहरा दुख सहा था।

इस समूह में सर जेम्स और लेडी के शटलवर्थ भी शामिल थे। उनका घर हॉवर्थ के ऊपर स्थित दलदली भूमि की चोटी पर बना था, जो सीधी रेखा में लगभग बारह मील की दूरी पर था, हालांकि सड़क मार्ग से यह दूरी कहीं अधिक थी। लेकिन, उस निर्जन क्षेत्र में प्रचलित धारणा के अनुसार, यदि वे चाहें तो वे पड़ोसी थे। तदनुसार, मार्च की शुरुआत में एक सुबह सर जेम्स और उनकी पत्नी मिस ब्रोंटे और उनके पिता से मिलने आए। विदा लेने से पहले, उन्होंने मिस ब्रोंटे से आग्रह किया कि वे पूर्वी लंकाशायर की सीमा पर स्थित उनके निवास स्थान गॉथोर्प हॉल में उनसे मिलने आएं। कुछ हिचकिचाहट के बाद, और उनके पिता के आग्रह पर, जो उन्हें किसी भी प्रकार के परिवर्तन और सामाजिक परिवेश में ले जाने के लिए अत्यंत उत्सुक थे, मिस ब्रोंटे जाने के लिए राजी हो गईं। कुल मिलाकर, अपनी शर्म और अजनबियों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार को स्वीकार करने में हमेशा होने वाली कठिनाई के बावजूद, उन्होंने अपनी यात्रा का भरपूर आनंद लिया, क्योंकि उन्हें लगता था कि वे उनकी दयालुता का प्रतिफल देने में सक्षम नहीं हैं।

उन्हें पुरानी पहाड़ियों और जंगलों के बीच स्थित पुराने खंडहरों और महलों की शांत सैर में बहुत आनंद आता था; पुराने ओक की लकड़ी से बने ड्राइंग रूम में पुरानी चिमनी के पास की गई बातचीत, जो उन्हें तो भाती थी, लेकिन मुझे ज़्यादा परेशान या थकाती नहीं थी। घर भी मुझे बहुत पसंद आया; लगभग तीन सदी पुराना, धूसर, भव्य और सुंदर। कुल मिलाकर, अब जब यात्रा समाप्त हो गई है, तो मुझे इस पर आने का कोई अफ़सोस नहीं है। सबसे बुरी बात यह है कि अब मेरे सिर पर लंदन में उनके यहाँ

आने के निमंत्रण का खतरा मंडरा रहा है। यह, जो कुछ लोगों के लिए बहुत आनंददायक होता, मेरे लिए घोर भय का कारण है। मुझे व्यापक अवलोकन से मिलने वाले लाभों की बहुत कद्र है; लेकिन मानसिक कष्ट और शारीरिक थकावट के रूप में जो कीमत मुझे चुकानी पड़ेगी, उसके बारे में सोचकर ही मैं कांप जाती हूँ।

जिस दिन उन्होंने उपरोक्त पत्र लिखा, उसी दिन उन्होंने श्री स्मिथ को निम्नलिखित पत्र भेजा।

"16 मार्च, 1850।"

श्री एच. — — का पत्र मैंने ध्यानपूर्वक पढ़कर लौटा दिया। मैंने कला के विषय में उनकी कही हर बात को समझने का भरसक प्रयास किया; परन्तु सच कहूँ तो, मेरे प्रयास पूर्णतः सफल नहीं हुए। आलोचकों के बीच इस विषय पर एक विशेष शब्दावली का प्रयोग होता है, जिसे समझना मेरे लिए शारीरिक और नैतिक दोनों ही दृष्टि से असंभव है। परन्तु एक बात मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, और वह यह है कि श्री कुरेर बेल को सुधार की आवश्यकता है, और उन्हें इसके लिए प्रयास करना चाहिए; और (डी. वी.) वे ईमानदारी से ऐसा करने का इरादा रखते हैं — यद्यपि वे समय लेकर प्रकृति और सत्य को अपना मार्गदर्शक मानेंगे। यदि ये बातें आलोचकों द्वारा कला कही जाने वाली चीज़ की ओर ले जाती हैं, तो यह बहुत अच्छी बात है; परन्तु यदि नहीं, तो उस महान लक्ष्य को प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं है। रहस्य यह है कि जहाँ दक्षिण के लोग उत्तरी जीवन और रीति-रिवाजों के मेरे चित्रण पर आपत्ति जताते हैं, वहीं यॉर्कशायर और लंकाशायर के लोग इसे स्वीकार करते हैं। वे कहते हैं कि यह खुरदरी प्रकृति और अत्यधिक कृत्रिम संस्कृति का विरोधाभास ही है जो उनकी प्रमुख विशेषताओं में से एक है। ऐसा ही, या कुछ इसी तरह का, अवलोकन मुझे भी किया गया है। हाल ही में, जब मैं घर से दूर था, तब मेरी मुलाकात पूर्वी लंकाशायर के कुछ प्राचीन परिवारों के सदस्यों से हुई, जिनके आलीशान घर दोनों काउंटियों के बीच पहाड़ी सीमावर्ती इलाके में स्थित हैं। सवाल उठता है कि क्या लंदन के आलोचक या उत्तरी लंकाशायर के पुराने जमींदार, इस मामले को सबसे अच्छी तरह समझते हैं?

"पुस्तकों के संबंध में आप जो भी वादा चाहेंगे, मैं सहर्ष दूंगा, बशर्ते मुझे जेसुइट सिद्धांत के अनुसार मानसिक आरक्षण की अनुमति दी जाए, जिससे मुझे भूलने और जब भी विस्मृति उचित लगे, वादा करने की छूट मिल सके। पेंडेनिस के अंतिम दो-तीन

अंक शायद आम तौर पर उतने रोमांचक न लगें, फिर भी मुझे वे पसंद हैं। हालांकि कहानी थोड़ी धीमी है, (मेरे लिए) रुचि कम नहीं होती। कहीं-कहीं ऐसा लगता है कि कलम एक थके हुए हाथ से चलाई गई है, कि लेखक का मन हाल की बीमारी या किसी अन्य कारण से थोड़ा व्याकुल और उदास रहा है; लेकिन थैकरे थके होने पर भी अन्य लेखकों की तुलना में कहीं अधिक महान साबित होते हैं, जबकि वे तरोताजा होते हैं। जनता को निश्चित रूप से उनकी थकान के प्रति कोई सहानुभूति नहीं होगी और प्रेरणा की कमी को भी नजरअंदाज नहीं किया जाएगा; लेकिन कुछ सच्चे पाठक, इस बात से दुखी होते हुए कि ऐसे व्यक्ति को तब लिखना पड़ता है जब उसका मन नहीं होता, इस बात पर आश्चर्य करेंगे कि ऐसी परिस्थितियों में भी वह इतना अच्छा कैसे लिख सकता है। मुझे पूरा विश्वास है कि पुस्तकों का संग्रह उचित समय पर आएगा। रेलवे अधिकारियों की इसे आगे भेजने की सहृदयता, — या यों कहें कि हॉवर्थ के वाहकों के बार-बार किए गए विनम्र निवेदनों के आगे इसे सौंप देना; — जब तक मैं पूरी उचित धैर्य और समर्पण के साथ प्रतीक्षा करती हूँ, पंच द्वारा अपने 'असुरक्षित महिला' लेख में 'इंग्लैंड की महिलाओं' के लिए प्रस्तुत सक्रिय आत्म-सहायता के उस आदर्श को विनम्रतापूर्वक देखती हूँ।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, प्रकाशकों द्वारा दी गई पुस्तकें उनके लिए बहुत सुकून और आनंद का स्रोत थीं। कॉर्नहिल पार्सल खोलने में उन्हें बहुत दिलचस्पी थी। लेकिन साथ ही कुछ दर्द भी था; क्योंकि जैसे ही उन्होंने डोरियाँ खोलीं और एक-एक करके पुस्तकें निकालीं, उन्हें उन लोगों की याद आ गई जो कभी ऐसे ही मौकों पर इतनी उत्सुकता से उन्हें देखते थे। "मुझे जानी-पहचानी आवाज़ें याद आ रही हैं, जो हँसी-मज़ाक और सुखद टिप्पणियाँ करती थीं; कमरा एकदम शांत और खाली सा लगता है; लेकिन फिर भी यह सोचकर तसल्ली मिलती है कि पापा को कुछ पुस्तकें पसंद आएंगी। बिना बाँटे मिली खुशी को खुशी कहना मुश्किल है; उसका कोई स्वाद नहीं होता।" वे भेजी गई पुस्तकों के प्रकार पर टिप्पणी करती हैं।

मुझे आश्चर्य होता है कि आप इतनी अच्छी तरह से चुनाव कैसे कर लेते हैं; मैं किसी भी कीमत पर चुनाव में दखल नहीं देना चाहता। मुझे यकीन है कि मैं अपने लिए जो भी चुनाव करूंगा, वह दूसरों द्वारा मेरे लिए इतनी दयालुता और विवेक से किए गए चुनाव से कम संतोषजनक होगा; इसके अलावा, अगर मुझे सब कुछ पता होता, तो यह अपेक्षाकृत नीरस होता। मैं तो यह सब जानना ही नहीं चाहता।

“खास तौर पर सराही जाने वाली रचनाओं में ‘साउथी का जीवन’, ‘फ्रांस की महिलाएं’, हैज़लिट के ‘निबंध’, एमर्सन के ‘प्रतिनिधि पुरुष’ शामिल हैं; लेकिन जब सभी रचनाएँ अच्छी हैं तो किसी एक का विशेष उल्लेख करना उचित नहीं लगता। . . . मैंने स्कॉट की ‘महिला शिक्षा पर सुझाव’ नामक एक और छोटी सी किताब उठाई; उसे भी मैंने पढ़ा और मुझे बहुत आनंद आया। यह बहुत अच्छी है; इसमें उचित विचार हैं और इसे स्पष्ट और सुंदर ढंग से व्यक्त किया गया है। इस पीढ़ी की लड़कियों को बहुत लाभ हैं; मुझे लगता है कि उन्हें ज्ञान प्राप्त करने और अपने मन को विकसित करने में बहुत प्रोत्साहन मिलता है; इन दिनों महिलाएं विचारशील और पढ़ी-लिखी हो सकती हैं, बिना उन्हें सार्वभौमिक रूप से ‘नीच’ या ‘विद्वान’ के रूप में कलंकित किए जाने के। पुरुष उनके बुद्धिमान बनने के प्रयासों में उनका उपहास करने या उन्हें रोकने के बजाय उनका समर्थन और सहायता करने लगे हैं। मुझे कहना होगा कि, जहाँ तक मेरा सवाल है, जब भी मुझे किसी वास्तव में बुद्धिमान व्यक्ति के साथ बातचीत करने का सौभाग्य मिला है, तो मेरी भावना यह रही है कि मुझे जो थोड़ा-बहुत ज्ञान था, उसे फिजूलखर्ची और धृष्टता समझा जाता था, लेकिन असल में मुझे इतना ज्ञान नहीं था कि उचित अपेक्षा पूरी हो सके। मुझे हमेशा यह समझाना पड़ता है, 'मुझमें बड़ी उपलब्धियों की उम्मीद मत करो: जो तुम्हें पढ़ने और अध्ययन का परिणाम लगता है, वह मुख्यतः सहज और अंतर्ज्ञान पर आधारित है।' ...कुछ (यहाँ तक कि चतुर) लोगों की शिक्षाओं के विरुद्ध सहज रूप से विद्रोह होता है। उनके पास उपलब्धियाँ हो सकती हैं, वे जीवन और संसार के विविध ज्ञान का दावा कर सकते हैं; लेकिन यदि वे सूक्ष्म बोध, भावनाओं के अधिक कोमल पहलुओं से वंचित और अक्षम हों, तो बाकी का क्या लाभ? मेरा विश्वास करो, यद्यपि विचारणीय संकेत साधारण स्रोतों से, कम सुसंस्कृत, लेकिन स्वाभाविक रूप से अच्छे और कोमल मन से, दयालु, संवेदनशील और ईर्ष्यारहित हृदय से आ सकते हैं, वहीं आडंबरपूर्ण और प्रभावशाली ढंग से दिए गए विद्वतापूर्ण कथन पूरी तरह से खोखले, मूर्खतापूर्ण और तिरस्कारपूर्ण हो सकते हैं। आज तक किसी ने भी 'ग्रीक भाषा की सहायता से पारनासस पर चढ़ाई नहीं की' या दूसरों को चढ़ाई करना नहीं सिखाया। ...मैं आपके अवलोकन के लिए संलग्न कर रहा हूँ। कागज का एक टुकड़ा जो लेखक की जानकारी के बिना मेरे हाथ लगा। वह इस गाँव का एक गरीब मेहनतकश आदमी है— एक विचारशील, पढ़ाकू, भावुक व्यक्ति, जिसका दिमाग उसके शरीर के लिए बहुत तेज़ है और उसे थका देता है। मैंने अपने

जीवन में उससे तीन बार से ज़्यादा बात नहीं की है, क्योंकि वह एक डिसेंटर है और शायद ही कभी मेरे रास्ते में आया हो। यह दस्तावेज़ "जेन आयर" पढ़ने के बाद उसकी भावनाओं का एक प्रकार का रिकॉर्ड है; यह सरल और गंभीर है; सच्चा और उदार है। आपको इसे मुझे लौटा देना चाहिए, क्योंकि मैं इसे उच्च स्रोतों से प्राप्त प्रमाणों से अधिक महत्व देता हूँ। उसने कहा, 'अगर मिस ब्रोंटे को पता चलता कि उसने इसे लिखा है, तो वह उसका तिरस्कार करतीं;' लेकिन वास्तव में, मिस ब्रोंटे उसका तिरस्कार नहीं करतीं; वह केवल इस बात से दुखी हैं कि जिस दिमाग से यह झलकता है, उसे गरीबी के भारी बोझ— अनिश्चित स्वास्थ्य की कठिनाइयों और एक बड़े परिवार की ज़रूरतों—के कारण कुचला जा रहा है।

"जैसा कि आपने कहा, टाइम्स की आलोचना की कटुता कुछ हद तक उसके लिए ही प्रतिकार साबित हुई है; अधिक प्रभावी होने के लिए, उसे अधिक निष्पक्ष होना चाहिए था। मुझे लगता है कि उत्तर में इसका कोई खास महत्व नहीं रहा है; शायद इसलिए कि अगर कोई आपत्तिजनक टिप्पणी की भी जाती है, तो वह मुझ तक नहीं पहुंचती; लेकिन निश्चित रूप से, हालांकि मैंने शर्ली की निंदा में बहुत कम सुना है, कई बार तो मुझे उनकी प्रशंसा के उत्साहपूर्ण प्रदर्शनों से गहरा आघात पहुंचा है। मुझे इन मामलों पर अधिक चर्चा करना उचित नहीं लगता; लेकिन एक बार मुझे यह कहना ही होगा कि यॉर्कशायर के कई लोगों ने इस मामले में जो गर्व और गर्व दिखाया है, वह मेरे मन में कृतज्ञता जगाने वाला है—विशेष रूप से इसलिए क्योंकि इसने मेरे पिता को उनके बुढ़ापे में नई खुशी दी है। बेचारे पादरी भी कोई नाराजगी नहीं दिखाते; हर कोई अपने साथियों की प्रशंसा करके अपने घावों को भरता है। श्री डोने पहले थोड़ा परेशान थे; एक-दो सप्ताह तक वे बेचैन रहे, लेकिन अब वे शांत हैं।" कल ही मुझे उन्हें आराम से चाय पिलाने और उन्हें नए सिरे से संतुष्टि के साथ चाय की चुस्की लेते देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यह एक विचित्र तथ्य है कि जब से उन्होंने 'शर्ली' पढ़ी है, वे पहले से कहीं अधिक बार घर आने लगे हैं और असाधारण रूप से विनम्र और खुश करने के लिए तत्पर रहते हैं। कुछ लोगों का स्वभाव सचमुच एक पहेली है। मुझे पूरी उम्मीद थी कि उनके साथ कम से कम एक अच्छा पल तो जरूर आएगा; लेकिन अभी तक ऐसा कुछ नहीं हुआ है।

अध्याय VI

इस वसंत ऋतु के शुरुआती महीनों में हॉवर्थ की तबीयत बेहद खराब थी। मौसम नम था, हल्का बुखार बना हुआ था, और पार्सनेज में रहने वाले लोग और उनके पड़ोसी भी इससे पीड़ित थे। शार्लोट कहती हैं, "मुझे बार-बार प्यास लग रही थी और भूख कम लग रही थी; पापा और यहां तक कि मार्था भी परेशान थे।" इस खराब स्वास्थ्य के कारण उनका मनोबल भी गिर गया, और सर जेम्स और लेडी के शटलवर्थ के साथ लंदन की प्रस्तावित यात्रा को लेकर उनका डर बढ़ता ही जा रहा था। “मैं जानती हूँ कि इसका क्या असर होगा और कितना दर्द होगा, मैं कितनी दुखी महसूस करूँगी और कितनी दुबली-पतली और कमजोर हो जाऊँगी; लेकिन जो कष्ट से भागता है, वह कभी जीत नहीं पाता। अगर मुझे सुधार करना है, तो मुझे संघर्ष करना होगा और सहन करना होगा। ... सर जेम्स एक चिकित्सक रहे हैं, और वे मुझे एक चिकित्सक की नज़र से देखते हैं: उन्होंने तुरंत समझ लिया कि मैं ज़्यादा थकान सहन नहीं कर सकती, न ही बहुत से अजनबियों की मौजूदगी बर्दाश्त कर सकती हूँ। मुझे लगता है कि वे कुछ हद तक समझ सकते हैं कि मेरी ऊर्जा कितनी जल्दी कम हो जाती है; लेकिन कोई भी - यहाँ तक कि सबसे कुशल चिकित्सक भी - इन चीजों के बाहरी पहलू से ज़्यादा नहीं समझ सकता: दिल अपनी कड़वाहट जानता है, शरीर अपनी दरिद्रता, और मन अपने संघर्ष। पापा मेरे जाने के लिए उत्सुक और बेचैन हैं; मना करने का विचार उन्हें बहुत दुख पहुँचाता है।”

लेकिन परिवार में बीमारी के लक्षण बढ़ते गए; संभवतः ये लक्षण कब्रिस्तान के निकट होने के कारण और भी बढ़ गए थे, जो "बारिश से काले पड़े कब्र के पत्थरों से बना था।" 29 अप्रैल को वह लिखती हैं: —

“हॉवर्थ में हमारा यह सप्ताह बहुत खराब बीता। पापा की तबीयत अभी भी ठीक

नहीं है; सुबह के समय उन्हें अक्सर बहुत तकलीफ होती है, यह लक्षण मैंने पहले भी उनके ब्रोंकाइटिस के गंभीर दौरों में देखा था; अगर उनकी तबीयत में काफी सुधार नहीं हुआ, तो मैं उन्हें छोड़कर लंदन जाने के बारे में कभी नहीं सोचूंगी। मार्था को भी तुम्हारी तरह उल्टी और बुखार हो गया है। मुझे भी जुकाम है और गले में खराश भी है; संक्षेप में, बूढ़ी टैबी को छोड़कर बाकी सब बीमार हैं। जब — — यहाँ थे, तो उन्हें अचानक सिरदर्द हुआ, और उनके जाने के बाद वाली रात मुझे भी कुछ ऐसा ही हुआ, बहुत तेज, लगभग तीन घंटे तक।"

दो सप्ताह बाद वह लिखती है: —

मुझे पापा की तबीयत इतनी ठीक नहीं लगी कि उन्हें अकेला छोड़ा जा सके, इसलिए मैंने सर जेम्स और लेडी के शटलवर्थ से विनती की कि वे मुझे छोड़कर लंदन लौट जाएँ। यह तय हुआ कि हम रास्ते में उनके कई दोस्तों और रिश्तेदारों के घरों में रुकेंगे; यात्रा में एक हफ़्ता या उससे ज़्यादा समय लग जाता। मैं यह नहीं कह सकती कि मुझे इस अनुभव से वंचित रहने का अफ़सोस है; मैं तो जलते हुए हल के फालों पर चलना भी ज़्यादा पसंद करती; लेकिन मुझे एक शानदार अवसर के न मिलने का अफ़सोस ज़रूर है। अगले बुधवार को रॉयल लिटरेरी फंड सोसाइटी का वर्षगांठ भोज है, जो फ्रीमेसन्स हॉल में आयोजित किया जा रहा है। सचिव ऑक्टेवियन ब्लूविट ने मुझे महिलाओं की गैलरी का टिकट दिया था। मैं नीचे हॉल में एकत्रित सभी महान साहित्यकारों और कलाकारों को देख पाती और उनके भाषण सुन पाती; थैकरे और डिकेंस तो हमेशा वहाँ मौजूद रहते हैं। अब यह संभव नहीं है। मुझे नहीं लगता कि पूरा लंदन मुझे इतना रोचक दृश्य दोबारा दिखा पाएगा।

हालांकि, कुछ ही समय बाद, उनके लिए व्यापारिक कार्य से लंदन जाना आवश्यक हो गया; और चूंकि सर जेम्स के शटलवर्थ अस्वस्थता के कारण देश में ही रुके हुए थे, इसलिए उन्होंने श्रीमती स्मिथ के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया और अपने मामलों को निपटाने के लिए उनके घर पर शांतिपूर्वक रहने लगीं।

पहली योजना के त्याग और दूसरी योजना के अपनाने के बीच के अंतराल में, उन्होंने अपने साहित्यिक मित्रों में से एक बहुत सम्मानित व्यक्ति को निम्नलिखित पत्र लिखा: —

22 मई।

"मैंने सोचा था कि इस बार मैं लीडर और एथेनियम खुद लेकर आऊँगा, और उन्हें

डाक से नहीं भेजना पड़ेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ; लंदन की मेरी यात्रा फिर से स्थगित हो गई है, और इस बार अनिश्चित काल के लिए। सर जेम्स के शटलवर्थ की खराब सेहत इसका कारण है - एक ऐसा कारण, जिससे मुझे डर है कि जल्द ही राहत मिलने की संभावना नहीं है। . . . तो एक बार फिर, मैं हॉवर्थ पार्सनेज की शांति में बस गया हूँ, मेरे साथ किताबें हैं और कभी-कभार आने वाले मेहमानों के लिए एक पत्र; एक शांत समाज, लेकिन न तो झगड़ालू, न ही अशिष्ट, और न ही अवगुणकारी।"

"मैंने खुद से वादा किया था कि मैं आपसे लीडर के बारे में कुछ सवाल पूछूंगा, जो अपने आप में वाकई एक दिलचस्प अखबार है। मैं आपसे कुछ लेखकों के असली नाम और लेवेस की 'अप्रेंटिसशिप ऑफ लाइफ' के अलावा और भी बहुत कुछ जानना चाहता था। मुझे हमेशा लगता है कि 'साहित्य' शीर्षक वाला लेख उन्हीं का है। 'ओपन काउंसिल' विभाग में कुछ लेख अजीबोगरीब हैं; लेकिन मुझे लगता है कि उन्हें स्वीकार करना बिल्कुल सही और उचित है। क्या अखबार की प्रणाली बिल्कुल नई नहीं है? मुझे याद नहीं कि मैंने इससे पहले कभी ऐसा कुछ देखा हो।"

मुझे आज सुबह आपका पत्र मिला; साथ में भेजे गए नोट के लिए धन्यवाद। मई की धूप में आपके मन में जागृत स्वतंत्रता और विश्राम की जो लालसा है, वह मुझे सहानुभूति से भर देती है। मुझे डर है कि गर्म वसंत या गर्मी के दिनों में कॉर्नहिल अपने निवासियों के लिए किसी जेल से कम नहीं है। यह सोचकर दुख होता है कि आप सभी ऐसे सुहावने मौसम में अपने डेस्क पर काम कर रहे हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मैं खुले मैदानों में घूमने के लिए स्वतंत्र हूँ; लेकिन जब मैं वहाँ अकेला जाता हूँ, तो हर चीज़ मुझे उन दिनों की याद दिलाती है जब मेरे साथ दूसरे लोग होते थे, और तब खुले मैदान एक वीरान, निर्जीव, एकांत और उदास लगते हैं। मेरी बहन एमिली को उनसे विशेष लगाव था, और वहाँ हीथर की कोई छोटी पहाड़ी, फर्न की कोई शाखा, बिलबेरी का कोई छोटा पत्ता, कोई फड़फड़ाता लार्क या लिनेट नहीं है, जो मुझे उसकी याद न दिलाए। दूर के दृश्य ऐनी को बहुत पसंद थे, और जब मैं चारों ओर देखता हूँ, तो वह नीले रंग, हल्की धुंध, क्षितिज की लहरों और छायाओं में दिखाई देती है। पहाड़ी क्षेत्र की खामोशी में, उनकी कविताएँ पंक्तियों और छंदों के रूप में मेरे मन में उतरती हैं: एक समय था जब मुझे वे बहुत प्रिय थीं; अब उन्हें पढ़ने की हिम्मत नहीं होती, और अक्सर मेरा मन करता है कि काश मैं विस्मृति का एक घूंट पी पाता, और बहुत कुछ भूल जाता जो जब तक मेरा मन है, मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। बहुत से लोग अपने

दिवंगत रिश्तेदारों को एक प्रकार की उदासी भरी संतुष्टि के साथ याद करते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने न तो उन्हें लंबी बीमारी से जूझते देखा है, न ही उनके अंतिम क्षणों को देखा है: ये वही यादें हैं जो रात में आपके बिस्तर के पास रहती हैं, और सुबह आपके तकिए पर उठती हैं। लेकिन अंत में, महान आशा मौजूद है। शाश्वत जीवन अब उनका है।

इस दौरान उन्हें कई पत्र लिखने पड़े, उन लेखकों को जिन्होंने उन्हें अपनी पुस्तकें भेजीं, और उन अजनबियों को जिन्होंने उनकी रचनाओं की प्रशंसा की। निम्नलिखित पत्र बाद वाले वर्ग के एक पत्र के उत्तर में था, और कैम्ब्रिज के एक युवक को संबोधित था: —

23 मई, 1850।

"वास्तव में, 'भावना की वास्तविकता, आत्मा की एक वास्तविक, अप्रभावित प्रेरणा' के लिए माफी मांगना अनावश्यक है, जिसने आपको वह पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया जिसे मैं अब संक्षेप में स्वीकार करता हूं।"

“निःसंदेह, मेरे लिए यह बहुत मायने रखता है कि मेरी रचनाएँ संवेदनशील हृदय और परिष्कृत बुद्धि को भाएँ; निःसंदेह, मेरे लिए यह बहुत बड़ी बात है कि मेरी रचनाएँ (जैसी भी हों) किसी मित्रवत हाथ या उदार मन से आश्रय, सराहना और स्नेह पाएँ। आप जेन, कैरोलीन और शर्ली को अपनी बहनें मान सकते हैं, और मुझे विश्वास है कि वे अपने दत्तक भाई से अकेलेपन में अक्सर बातें करेंगी और उसके दुख में उसे सांत्वना देंगी। यदि वे किसी विचारशील, सहानुभूतिपूर्ण मन में सहजता से समाहित नहीं हो पातीं और उसके अंधकार में एक सुखद, घरेलू चमक नहीं बिखेर पातीं, तो यह उनकी गलती है; उस स्थिति में वे उतनी प्यारी, उतनी दयालु, उतनी वास्तविक नहीं रह जातीं जितनी उन्हें होनी चाहिए। यदि वे ऐसा कर पाती हैं और मानव हृदयों में घरेलू वेदी पा लेती हैं, तो वे अपनी रचना के सर्वोत्तम उद्देश्य को पूरा करेंगी, वहाँ एक सौम्य लौ को बनाए रखेंगी, जो गर्माहट तो देगी लेकिन झुलसाएगी नहीं, प्रकाश देगी लेकिन चकाचौंध नहीं करेगी।”

“क्या फर्क पड़ता है कि ऐसे प्राणियों में आपको जो आनंद मिलता है, उसका कुछ हिस्सा उनकी किसी जादुई रचना के बजाय आपकी युवावस्था की कविता से प्रेरित है? क्या फर्क पड़ता है कि शायद दस साल बाद आप अपनी वर्तमान यादों को याद करके मुस्कुराएंगे और ‘कुरर बेल’ और उनकी रचनाओं को एक नए नजरिए से देखेंगे? मेरे

लिए यह बात आपके वर्तमान भावों के महत्व को कम नहीं करती। युवावस्था में रोमांस होता है और परिपक्वता में ज्ञान, जैसे सुबह और बसंत में ताजगी, दोपहर और गर्मी में शक्ति, रात और सर्दी में शांति। हर गुण अपने-अपने मौसम में अच्छा होता है। आपके पत्र से मुझे खुशी मिली और इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।”

“कुरर बेल।”

मिस ब्रोंटे जून की शुरुआत में शहर गईं और उन्होंने वहां अपने प्रवास का खूब आनंद लिया; उन्होंने जाने से पहले किए गए समझौते के अनुसार बहुत कम लोगों से मुलाकात की; और अपनी यात्रा को दो सप्ताह तक सीमित रखा, क्योंकि उन्हें जरा सी भी उत्तेजना से अपने संवेदनशील शरीर पर होने वाले बुखार और थकावट के अपरिहार्य परिणामों का डर था।

12 जून।

"पिछली बार जब मैंने आपको पत्र लिखा था, तब से मुझे अपने लिए बहुत कम समय मिला है, सिवाय उन पलों के जो आराम के लिए बिल्कुल आवश्यक थे। फिर भी, कुल मिलाकर, मैं अब तक बहुत अच्छा रहा हूँ, पिछली बार की तुलना में थकान से बहुत कम परेशान हूँ।"

“निश्चित रूप से मैं आपको पत्र में अपने समय के विस्तृत विवरण नहीं दे सकता। मैं केवल तीन मुख्य घटनाओं का उल्लेख कर सकता हूँ: चैपल रॉयल में ड्यूक ऑफ वेलिंगटन से मिलना (वे सचमुच एक महान बुजुर्ग हैं), हाउस ऑफ कॉमन्स का दौरा (जिसके बारे में मैं आपसे मिलने पर आपको विस्तार से बताना चाहता हूँ), और अंत में, श्री थैकरे से मुलाकात। वे सुबह आए और दो घंटे से अधिक समय तक बैठे रहे। पूरे समय केवल श्री स्मिथ ही कमरे में मौजूद थे। उन्होंने बाद में इसे एक 'अजीब दृश्य' बताया, और मुझे लगता है कि यह वास्तव में अजीब था। वे एक महान विद्वान मेरे सामने बैठे थे; मुझे उनकी कुछ कमियों (साहित्यिक रूप से) के बारे में उनसे बात करने की प्रेरणा मिली; एक-एक करके उनकी कमियाँ मेरे दिमाग में आईं, और मैंने एक-एक करके उन्हें उजागर किया और उनका स्पष्टीकरण या बचाव चाहा। उन्होंने एक कट्टर तुर्क और विधर्मी की तरह अपना बचाव किया; कहने का तात्पर्य यह है कि उनके बहाने अक्सर अपराध से भी बदतर थे। मामला सौहार्दपूर्ण ढंग से समाप्त हुआ; यदि सब ठीक रहा, तो मुझे उनके यहाँ भोजन करना है। आज शाम घर पर।

“मैंने लेवेस को भी देखा है... मैं उसके प्रति आधे उदास, आधे कोमल भाव के

अलावा कुछ और महसूस नहीं कर सकती थी—यह आखिरी शब्द थोड़ा अजीब है, लेकिन मैं इसका इस्तेमाल इसलिए कर रही हूँ क्योंकि लेवेस के चेहरे का भाव मुझे लगभग रुला देता है; वह एमिली से इतनी अद्भुत रूप से मिलता-जुलता है—उसकी आँखें, उसके चेहरे की बनावट, उसकी नाक, उसका थोड़ा उभरा हुआ मुँह, उसका माथा, यहाँ तक कि कभी-कभी उसका भाव भी: लेवेस चाहे कुछ भी कहे, मुझे विश्वास है कि मैं उससे नफरत नहीं कर सकती। एक और समानता भी मैंने देखी है, जिसने मुझे बहुत दुखी किया। आपको याद होगा मैंने मिस के. के बारे में बताया था, एक युवा लेखिका, जो लेखन करके अपनी माँ का सहारा बनती थी? यह सुनकर कि वह मुझसे मिलने के लिए तरस रही है, मैं कल उससे मिलने गई... वह मुझसे आधे खुलेपन से, आधे काँपते हुए मिली; हम साथ बैठ गए, और जब मैंने उससे पाँच मिनट बात की, तो उसका चेहरा अब अजनबी नहीं, बल्कि उदास रूप से परिचित लग रहा था;—वह हर तरह से मार्था थी। मैं उससे फिर मिलने का समय निकालने की कोशिश करूँगी... मैं यहाँ कम से कम एक सप्ताह से अधिक नहीं रुकना चाहता; लेकिन उस समय के बाद मैं घर नहीं जा सकता, क्योंकि हॉवर्थ स्थित घर की छत अभी-अभी हटाई गई है; मरम्मत आवश्यक हो गई है।

वह जल्द ही अपने पत्र के बाद उस मित्र के पास पहुँच गई जिसे वह लिखा गया था; लेकिन उसकी यात्रा बहुत संक्षिप्त थी, क्योंकि लंदन छोड़ने से पहले बनाई गई योजना के अनुसार, वह एडिनबर्ग चली गई ताकि उन मित्रों से मिल सके जिनके साथ वह शहर में ठहरी हुई थी। वह स्कॉटलैंड में केवल कुछ ही दिन रही, और वे दिन मुख्य रूप से एडिनबर्ग में ही बीते, जिससे वह बेहद खुश थी और लंदन को उसकी तुलना में "उदास जगह" कहती थी।

कुछ सप्ताह बाद उन्होंने लिखा, “स्कॉटलैंड में मेरा प्रवास संक्षिप्त था, और मैंने मुख्य रूप से एडिनबर्ग और उसके आसपास के इलाकों, एबॉट्सफोर्ड और मेलरोज़ में ही सब कुछ देखा, क्योंकि मुझे ग्लासगो से ओबन और फिर हाइलैंड्स के एक हिस्से से होकर जाने की अपनी मूल योजना छोड़नी पड़ी थी; लेकिन यद्यपि समय कम था और मैंने सीमित चीज़ें ही देखीं, फिर भी मुझे वहां के माहौल, संगति और परिस्थितियों का ऐसा आकर्षण मिला कि मुझे लगता है कि उस थोड़े से समय में प्राप्त आनंद लंदन में एक महीने के प्रवास के दौरान मिले आनंद के बराबर था और उससे कहीं अधिक उत्कृष्ट था। लंदन की तुलना में एडिनबर्ग इतिहास के एक जीवंत पृष्ठ की तरह

है, जबकि राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर कोई बड़ा नीरस ग्रंथ हो; और मेलरोज़ और एबॉट्सफोर्ड की बात करें तो, उनके नाम में ही संगीत और जादू है।"

और फिर, एक अलग संवाददाता को लिखे पत्र में, वह कहती हैं: —

घर पहुँचते ही मैं आपको पत्र नहीं लिखूंगा, क्योंकि इस पुराने घर में हर वापसी अपने साथ भावनाओं का एक ऐसा दौर लेकर आती है जिसे पत्र लिखने से पहले शांतिपूर्वक गुजारना बेहतर होता है। बदलाव और आनंद के वे छह सप्ताह बीत चुके हैं, लेकिन वे खोए नहीं हैं; स्मृति ने हर पल की एक झलक संजो ली है, और विशेष रूप से स्कॉटलैंड में बिताए दो दिनों की एक स्पष्ट तस्वीर। वे दो दिन बहुत ही सुखद थे। मुझे स्कॉटलैंड का विचार हमेशा से पसंद था, लेकिन अब, वास्तविकता में, यह मुझे कहीं अधिक पसंद है; इसने मुझे कुछ ऐसे सुखद पल दिए जो लगभग मेरे जीवन के किसी भी पल से कम नहीं थे। हालांकि, यह मत सोचिए कि मैं आपको वर्णन से ऊबा दूंगा; आपको अब तक सभी चीजों का एक संक्षिप्त और सुखद विवरण मिल चुका होगा, जिसमें मेरा कुछ भी जोड़ना अनावश्यक होगा। मेरा वर्तमान प्रयास अपने विचारों को वापस लाने, उनके पंख काटने, उन्हें सही अनुशासन में ढालने और उन्हें किसी उपयोगी कार्य में लगाने की ओर निर्देशित है: वे आलसी हैं, और बार-बार ट्रेन से लंदन चले जाते हैं, या सीमा पार कर जाते हैं - विशेष रूप से वे ऐसा करने के लिए प्रवृत्त हैं। उस आखिरी यात्रा को अंजाम देने के लिए; और वास्तव में, जिसने एक बार एडिनबर्ग को उसके लेटे हुए चट्टानी शेर के साथ देखा है, उसे जागते या सोते हुए सपनों में फिर से देखने से खुद को कैसे रोका जा सकता है? मेरे प्रिय महोदय, क्या आप यह नहीं सोचेंगे कि मैं ईशनिंदा कर रहा हूँ, जब मैं आपसे कहता हूँ कि आपका महान लंदन, 'मेरा अपना रोमांटिक शहर' डन-एडिन की तुलना में, गद्य की तुलना में कविता जैसा है, या एक गर्जनापूर्ण, विस्तृत, भारी महाकाव्य की तुलना में एक संक्षिप्त, उज्ज्वल, स्पष्ट और बिजली की चमक की तरह जीवंत गीत जैसा है। आपके पास स्कॉट के स्मारक जैसा कुछ भी नहीं है, या यदि आपके पास वह और वास्तुकला की सभी महिमाएँ एक साथ एकत्रित हों, तो भी आपके पास आर्थर सीट जैसा कुछ नहीं है, और सबसे बढ़कर, आपके पास स्कॉटिश राष्ट्रीय चरित्र नहीं है; और अंततः यही महान चरित्र है जो इस भूमि को इसका सच्चा आकर्षण, इसकी सच्ची महानता प्रदान करता है।

स्कॉटलैंड से लौटने पर, उसने फिर से कुछ दिन अपने दोस्तों के साथ बिताए, और

फिर हॉवर्थ के लिए रवाना हो गई।

15 जुलाई।

मैं बिल्कुल ठीक-ठाक घर पहुँच गया, और मुझे बहुत खुशी हुई कि किसी भी बड़ी बाधा ने मेरी वापसी में एक दिन की भी देरी नहीं की। ब्रिजहाउस पहाड़ी की तलहटी में ही मेरी मुलाकात जॉन से हुई, हाथ में लाठी लिए हुए; सौभाग्य से उसने मुझे टैक्सी में देख लिया, रुका और मुझे बताया कि वह श्री ब्रोंटे के आदेश पर बी — — जा रहा है, मुझसे मिलने के लिए, क्योंकि मिस — — का पत्र मिलने के बाद से वह बहुत दुखी था। वहाँ पहुँचने पर मैंने पाया कि पापा बहुत घबराए हुए और चिंतित थे, और मार्था और टैबी भी साफ तौर पर उनका साथ दे रही थीं। . . . घर बहुत साफ-सुथरा लग रहा है, और मुझे लगता है कि उसमें नमी नहीं है; हालाँकि, अभी भी बहुत सारा काम बाकी है, घर को व्यवस्थित करना है, — इतना कि मैं आने वाले कुछ समय तक अप्रिय रूप से व्यस्त रहूँगा। पापा को ठीक-ठाक पाकर मैं सचमुच शुक्रगुजार था, लेकिन मुझे डर है कि उनमें सर्दी के लक्षण दिखने शुरू हो रहे हैं: मेरी सर्दी में सुधार जारी है। . . . मेरे पहुँचने पर मुझे एक अखबार में एक लेख मिला, जिसे पढ़कर मुझे हंसी आ गई; यह अखबार तब छपा था जब मैं लंदन में था। मैं इसे आपको हंसाने के लिए भेज रहा हूँ; इसमें दावा किया गया है कि इसे एक ऐसे लेखक ने लिखा है जो लेखिकाओं से ईर्ष्या करता है। मैं नहीं जानता कि वह कौन है, लेकिन वह उन लोगों में से एक होगा जिनसे मैं मिला था। . . . "बदसूरत आदमी," जो खुद को "रोचेस्टर जैसा शान" दिखाते हैं, उन पर कटाक्ष बुरा नहीं है; जिन लोगों का जिक्र किया गया है उनमें से कुछ को यह पसंद नहीं आएगा।

जब मिस ब्रोंटे लंदन में रह रही थीं, तब उन्हें रिचमंड द्वारा अपना चित्र बनवाने के लिए राजी किया गया। यह एक क्रेयॉन ड्राइंग है; मेरे विचार में यह एक प्रशंसनीय प्रतिकृति है, हालांकि इस विषय पर कुछ मतभेद अवश्य हैं; और, हमेशा की तरह, मूल चित्र से सबसे अच्छी तरह परिचित लोग इसकी समानता से सबसे कम संतुष्ट थे। श्री ब्रोंटे का मानना था कि यह चित्र शार्लोट से अधिक उम्र का दिखता है, और उनके चेहरे की बनावट में कोई बदलाव नहीं किया गया है; लेकिन उन्होंने स्वीकार किया कि भाव अद्भुत रूप से सुंदर और सजीव है। उन्होंने चित्र के दाता को पहुंचने का निम्नलिखित मनोरंजक विवरण भेजा: —

1 अगस्त।

"मेरे लिए छोटा डिब्बा पापा के बड़े डिब्बे के साथ ही आया। जब आपने मुझे पहली बार बताया कि आपने ड्यूक की तस्वीर फ्रेम करवाकर मुझे दी है, तो मुझे आप पर थोड़ा गुस्सा आया कि आपने इतना अनावश्यक काम क्यों किया, लेकिन अब, जब मैं इसे फिर से देखती हूँ, तो मैं मानती हूँ कि ऐसा करने में आप सचमुच बहुत ही कुशल थीं। यह बिल्कुल उनकी छवि है, और जैसा कि पापा ने इसे देखकर कहा था, यह आम चित्रों से बिल्कुल अलग है; न केवल भाव, बल्कि सिर का आकार भी अलग है, और कहीं अधिक भव्य है। मैं इसे एक अनमोल खजाना मानती हूँ। ऐसा लगता है कि मेरे लिए पार्सल छोड़ने वाली महिला श्रीमती गोर थीं। पार्सल में उनकी एक कृति, 'द हैमिल्टन्स', और एक बहुत ही विनम्र और दोस्ताना नोट था, जिसमें मुझे 'प्रिय जेन' कहकर संबोधित किया गया था। पापा इस चित्र से बहुत खुश लगते हैं, और इसे देखने वाले कुछ अन्य लोग भी खुश हैं, सिवाय एक उल्लेखनीय अपवाद के; यानी, हमारा पुराना नौकर, जो दृढ़ता से कहता है कि यह उनके जैसा नहीं है - यह बहुत ज्यादा अलग है। बूढ़ा सा दिखता है; लेकिन चूंकि वह उतनी ही दृढ़ता से कहती है कि ड्यूक ऑफ वेलिंगटन की तस्वीर 'मालिक' (अर्थात पापा) का चित्र है, इसलिए मुझे डर है कि उसकी राय को ज्यादा महत्व नहीं दिया जा सकता: निस्संदेह वह मेरे बचपन की यादों को वर्तमान धारणाओं के साथ मिला रही है। आपकी माँ और बहनों को हमेशा मेरी बहुत याद रहे, यही मेरा अनुरोध है, आपका अत्यंत कृतघ्न (इच्छा अनुसार)।

"सी. ब्रोंटे।"

यह आसानी से समझा जा सकता है कि श्री ब्रोंटे और उनकी बेटी की तरह साथ रहने वाले दो लोग, जो लगभग पूरी तरह से एक-दूसरे पर निर्भर थे और एक-दूसरे से गहरा प्यार करते थे (हालांकि खुलकर नहीं), परिवार के इन दो अंतिम सदस्यों के बीच एक-दूसरे के स्वास्थ्य को लेकर गहरी चिंता के क्षण जरूर आते होंगे। मैंने उनके जितने भी पत्र पढ़े हैं, उनमें से एक भी ऐसा नहीं है जिसमें उनके पिता की इस स्थिति का जिक्र न हो। या तो वह सरल भाव से ईश्वर का धन्यवाद करती हैं कि वे स्वस्थ हैं, या फिर बुढ़ापे की कुछ कमजोरियों ने उन्हें घेर लिया है, जिसका जिक्र वह करती हैं, और फिर उससे ऐसे मुंह फेर लेती हैं जैसे किसी ऐसे घाव से मुंह फेर लेती हैं जिसे छूना असहनीय हो। बदले में, वह अपने इकलौते बच्चे की हर बीमारी पर ध्यान देता था, उसे बढ़ा-चढ़ाकर बताता था, और कभी-कभी खुद को चिंता की दयनीय स्थिति में

डाल लेता था, जैसा कि उस मामले में हुआ जिसका वह जिक्र करती है, जब उसकी सहेली ने उसे एक पत्र में बताया कि उसकी बेटी को ज़ुकाम हो गया है, तो उसे तब तक चैन नहीं आया जब तक उसने एक दूत को "हाथ में लाठी लेकर" चौदह मील की दूरी तय करने और अपनी आँखों से उसकी वास्तविक स्थिति देखने और वापस आकर रिपोर्ट करने के लिए नहीं भेजा।

उन्हें स्पष्ट रूप से ऐसा महसूस होता था कि उनके पिता और मित्र की ओर से दिखाई देने वाली यह स्वाभाविक चिंता, जब भी वह बीमार होती थीं, तो उनके स्वयं के मानसिक अवसाद को बढ़ा देती थी; और निम्नलिखित पत्र में वह अपनी प्रबल इच्छा व्यक्त करती हैं कि उनके स्वास्थ्य के विषय का यथासंभव कम उल्लेख किया जाए।

7 अगस्त।

मुझे सचमुच खेद है कि मैंने वे शब्द अपने मुँह से निकलने दिए जिनका आप जिक्र कर रहे हैं, क्योंकि उनका आप पर बुरा असर पड़ा है; लेकिन कृपया अपने मन से चिंता की हर छाया को दूर भगाने की कोशिश करें, और यदि यह संयम आपको बहुत अप्रिय न लगे, तो कृपया मुझे आपसे विनम्र निवेदन करने दें कि आप इस विषय पर मुझसे फिर कभी बात न करें। दूसरों की स्पष्ट और अत्यंत कष्टदायक चिंता ने मेरे मन में ऐसे विचार और अपेक्षाएँ बैठा दी हैं जो जहाँ भी जड़ पकड़ती हैं, नासूर बन जाती हैं; जिनके विरुद्ध धर्म या दर्शन का हर प्रयास कभी-कभी पूरी तरह विफल हो जाता है; और जिनके अधीन होना एक क्रूर और भयानक नियति है - वास्तव में, उस व्यक्ति की नियति जिसका जीवन घोड़े के बालों से लटकी तलवार के नीचे समाप्त हुआ। मुझे इस विषय पर पापा से विचार करने का अनुरोध करना पड़ा है। मेरा तंत्रिका तंत्र जल्दी ही उत्तेजित हो जाता है। मैं इसे तर्कसंगत शक्ति और शांति में रखना चाहता हूँ; लेकिन ऐसा करने के लिए मुझे उस दयालु इरादे वाली, लेकिन बहुत कष्टदायक आशंका की अभिव्यक्ति का दृढ़ता से विरोध करना होगा, जिसके साकार होने या विफल होने के लिए मैं बिल्कुल भी जिम्मेदार नहीं हूँ। फिलहाल, मैं काफी ठीक हूँ। ईश्वर का धन्यवाद! मुझे उम्मीद है कि पापा की हालत पहले से बेहतर है, लेकिन वे कमजोरी की शिकायत करते हैं।

अध्याय VII

उसके पिता हमेशा उसके लिए हर संभव बदलाव लाने के लिए उत्सुक रहते थे, क्योंकि वे देखते थे कि इससे उसे कितना लाभ होगा, भले ही वह अपना घर और उन्हें छोड़ने के लिए पहले अनिच्छुक रही हो। इस अगस्त में उसे बोनेस के पड़ोस में एक सप्ताह के लिए जाने का निमंत्रण मिला, जहाँ सर जेम्स के शटलवर्थ ने एक घर लिया था; लेकिन वह कहती है, "मैंने अनिच्छा से जाने की सहमति दी, मुख्यतः पापा को खुश करने के लिए, जिन्हें मेरे इनकार से बहुत गुस्सा आता; लेकिन मुझे उन्हें छोड़ना अच्छा नहीं लगता। मुझे उम्मीद है कि उनकी हालत में कोई सुधार हुआ होगा, लेकिन उनकी कमजोरी अभी भी बनी हुई है। बुराई की आशंका करना और हमेशा आशंकित मन से आगे देखना ठीक नहीं है; लेकिन मुझे लगता है कि दुख एक दोधारी तलवार है, यह दोनों तरफ से काटता है; एक हानि की स्मृति दूसरी हानि की आशंका पैदा करती है।"

लेडी के शटलवर्थ ने मुझे वहाँ मिलने के लिए सादर आमंत्रित किया था, और इसी दौरान ब्रायरी में मेरी पहली मुलाकात मिस ब्रोंटे से हुई। अगर मैं उस पत्र का कुछ अंश लिखूँ, जो मैंने इसके तुरंत बाद एक ऐसे मित्र को लिखा था, जिसे उनकी रचनाओं में गहरी रुचि थी, तो शायद मैं अपनी पहली छाप को अधिक सटीक और स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाऊँगी, बजाय इसके कि मैं उस समय कही गई बातों को एक लंबे विवरण में बदल दूँ।

विंडरमेयर स्टेशन पहुँचते ही अंधेरा हो चुका था; फिर समतल सड़क से लोवुड तक गाड़ी चलाई; उसके बाद एक सुंदर घर पर रुके, और फिर एक सुंदर ड्राइंग रूम में पहुँचे, जहाँ सर जेम्स और लेडी के शटलवर्थ और एक छोटी सी महिला काले रेशमी गाउन में थीं, जिन्हें मैं कमरे की चकाचौंध के कारण पहले देख नहीं पाई; वह मेरे पास

आईं और तुरंत मुझसे हाथ मिलाया। मैं अपना बोनट वगैरह उतारने के लिए ऊपर गई; फिर चाय पीने के लिए नीचे आई; वह छोटी महिला काम में व्यस्त थीं और मुश्किल से ही कुछ बोलीं, लेकिन मुझे उन्हें अच्छे से देखने का समय मिल गया। वह (जैसा कि वह खुद को कहती हैं) अविकसित, पतली और मुझसे आधे सिर से भी ज़्यादा छोटी हैं; उनके बाल हल्के भूरे रंग के हैं, बहुत गहरे नहीं; उनकी आँखें (बहुत सुंदर और भावपूर्ण, सीधी और खुली हुई) उनके बालों के रंग की हैं; उनका मुँह बड़ा है; उनका माथा चौकोर, चौड़ा और थोड़ा झुका हुआ है। उनकी आवाज़ बहुत मधुर है; अपने भावों को चुनने में थोड़ी झिझकती हैं, लेकिन जब चुनती हैं तो वे सहजता से प्रशंसनीय और अवसर के लिए बिल्कुल उपयुक्त लगते हैं; अतिशयोक्तिपूर्ण, लेकिन एकदम सरल... नाश्ते के बाद, हम चारों झील पर गए, और मिस ब्रोंटे ने श्री न्यूमैन की 'सोल' और 'मॉडर्न पेंटर्स' तथा 'सेवन लैंप्स' के विचार को पसंद करने में मुझसे सहमति जताई; और उन्होंने मुझे फादर न्यूमैन के ऑरेटरी में दिए गए व्याख्यानों के बारे में बहुत ही शांत, संक्षिप्त और सजीव ढंग से बताया... वह अपने तौर-तरीकों में मिस - - से कहीं अधिक मिलती-जुलती हैं - अगर आप कल्पना कर सकते हैं कि मिस - - ने इतना दुख सहा है कि उनमें से खुशी की हर चिंगारी निकल गई है, और अत्यधिक गहन एकांत की आदत के कारण वे शर्मीली और मौन हो गई हैं। मिस ब्रोंटे जैसा जीवन मैंने पहले कभी नहीं सुना था। - - ने मुझे अपने घर का वर्णन इस प्रकार किया कि वह एक उजाड़ मैदान के उत्तरी किनारे पर बसे भूरे पत्थर के घरों वाले एक गाँव में है, जहाँ से उजाड़ मैदानों का विस्तृत दृश्य दिखाई देता है, इत्यादि।

"हम सिर्फ तीन दिन साथ रहे; जिसका अधिकांश समय हमने मिस ब्रोंटे को वेस्टमोर्लैंड के नज़ारे दिखाने के लिए गाड़ी में घूमते हुए बिताया, क्योंकि वह पहले कभी वहाँ नहीं गई थीं। हम दोनों को फॉक्स हाउ में शांति से चाय पीने का निमंत्रण मिला था; और तब मैंने देखा कि अजनबियों के बीच जाने की कोशिश में उनकी नसें कितनी तनावग्रस्त थीं। हमें पहले से पता था कि समूह में बारह से अधिक लोग नहीं होंगे; लेकिन शाम की आशंका से उन्हें पूरे दिन तेज सिरदर्द रहा।"

ब्रियरली क्लोज़, लोवुड से काफी ऊपर स्थित था, और ज़ाहिर तौर पर वहाँ से एक विस्तृत दृश्य और क्षितिज दिखाई देता था। मैं मिस ब्रोंटे के बादलों के आकार और आकाश के संकेतों के सावधानीपूर्वक अवलोकन से बहुत प्रभावित हुआ, जिनसे वह मानो किसी किताब से आने वाले मौसम का पूर्वानुमान पढ़ लेती थीं। मैंने उनसे कहा

कि मुझे लगता है कि उनके घर से भी ऐसा ही नज़ारा दिखता होगा। उन्होंने कहा कि मैं सही कह रहा हूँ, लेकिन हॉवर्थ से दिखने वाला नज़ारा बिल्कुल अलग था; मुझे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि एकांत में रहने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए आकाश कितना गहरा साथी बन जाता है, धरती पर किसी भी निर्जीव वस्तु से ज़्यादा, यहाँ तक कि दलदली भूमि से भी ज़्यादा।

निम्नलिखित अंश इस यात्रा के संबंध में उनके कुछ विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं:

आपने कहा था कि मुझे वेस्टमोलैंड में एक सप्ताह से अधिक रुकना चाहिए; अब तक तो आपको मुझे बेहतर जान लेना चाहिए था। क्या यह मेरी आदत है कि मैं किसी जगह पर तय समय से बहुत देर तक रुकी रहती हूँ? मैं घर आ गई हूँ, और मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि पापा की हालत, कम से कम, वैसी ही है जैसी मैंने उन्हें छोड़कर गई थी, फिर भी काश वे और स्वस्थ होते। मेरी यात्रा बहुत अच्छी रही; मुझे खुशी है कि मैं गई। नज़ारा तो वाकई शानदार है; अगर मैं उन पहाड़ियों में अकेले घूम पाती, तो मैं उनकी सारी सुंदरता का आनंद ले पाती; यहाँ तक कि किसी के साथ गाड़ी में भी, यह बहुत अच्छा था। सर जेम्स हमेशा की तरह दयालु और मिलनसार थे: उनका स्वास्थ्य काफी बेहतर है। ... मिस मार्टिन्यू घर से बाहर थीं; वह हमेशा लेक सीज़न के दौरान एम्बल्ससाइड स्थित अपना घर छोड़ देती हैं, ताकि आगंतुकों की भीड़ से बच सकें, जिसका उन्हें अन्यथा सामना करना पड़ता।

"काश मैं चुपके से गाड़ी से उतरकर अकेले ही उन भव्य पहाड़ियों और सुंदर घाटियों में चला जाता, तो मैं इस शानदार दृश्य की पूरी शक्ति का आनंद ले पाता। लेकिन साथ में ऐसा संभव नहीं है। कभी-कभी, जब — — मुझे कलाकार वर्ग की कमियों के बारे में चेतावनी दे रहे थे, उसी दौरान उनके श्रोता के मन में कलात्मक प्रवृत्ति जागृत हो रही थी।"

मैं आपको बताना भूल गया था कि वेस्टमोलैंड जाने से लगभग एक सप्ताह पहले मुझे हार्डन ग्रेंज से निमंत्रण मिला था; जिसे मैंने निश्चित रूप से अस्वीकार कर दिया था। दो-तीन दिन बाद, एक बड़ा समूह यहाँ आया, जिसमें श्रीमती एफ — — और कई अन्य महिलाएं और दो सज्जन शामिल थे; एक लंबा और गरिमामय, काले बालों और मूंछों वाला, जो लॉर्ड जॉन मैनर्स निकले, — दूसरे उतने प्रतिष्ठित नहीं दिखने वाले, शर्मीले और थोड़े विचित्र, जो लॉर्ड स्ट्रैंगफोर्ड के पुत्र श्री स्माइथ थे। मैंने श्रीमती

एफ. को व्यवहार और रूप-रंग में एक सच्ची महिला पाया, बहुत ही सौम्य और विनम्र। लॉर्ड जॉन मैनर्स पापा के लिए दो तीतर लाए थे, जो एक उत्तम उपहार था: पापा एक-दो दिन पहले से ही कुछ तीतर खाने की इच्छा कर रहे थे।

इन अंशों के साथ मुझे एक और अंश जोड़ना होगा जो इसी समय से संबंधित एक पत्र से लिया गया है। यह पत्र मिस वूलर को संबोधित है, जो उनकी बचपन और जवानी दोनों की प्रिय मित्र थीं और जिन्होंने उन्हें अपने कॉटेज में दो सप्ताह बिताने के लिए आमंत्रित किया था।

हॉवर्थ, 27 सितंबर, 1850।

“जब मैं आपको बताऊँ कि मैं इस मौसम में पहले ही झीलों का दौरा कर चुका हूँ, और मुझे लौटे हुए मुश्किल से एक महीना ही हुआ है, तो आप समझ जाएँगे कि आपका निमंत्रण स्वीकार करना अब मेरे बस में नहीं है। काश मैं आपके पास आ पाता। मेरा भ्रमण हो चुका है, और अब वह समाप्त हो गया है। सर जेम्स के शटलवर्थ विंडरमेयर के पास 'ब्रीयरी' नामक एक घर में रह रहे हैं, और मैं इस अगस्त में कुछ समय के लिए वहीं रुका था। उन्होंने बड़ी कृपा से मुझे आस-पास का इलाका दिखाया, जैसा कि गाड़ी से देखा जा सकता है, और मैंने पाया कि झील क्षेत्र एक शानदार क्षेत्र है, जिसकी झलक मैंने जागते या सोते हुए केवल सपनों में ही देखी थी। मुझे निश्चित रूप से लगता है कि गाड़ी में बैठकर सुंदर दृश्यों की खोज करना मुझे रास नहीं आता। एक वैगन, एक स्प्रिंग-कार्ट, यहाँ तक कि एक पोस्ट-चेज़ भी चल सकती है; लेकिन गाड़ी सब कुछ उलट-पुलट कर देती है। मैं चुपके से निकल जाना चाहता था, और पहाड़ियों और घाटियों के बीच अकेले भाग जाना चाहता था। अनियमित और मेरी आवारा प्रवृत्ति मुझे सताती रहती थी, और मुझे इन्हें नियंत्रित करने या बल्कि दबाने के लिए मजबूर होना पड़ता था, क्योंकि मुझे किसी भी हद तक उत्साही होने से डर लगता था, और इस तरह 'शेरनी' - यानी लेखिका - की ओर ध्यान आकर्षित करने का डर था।

“आप कहते हैं कि आपको संदेह है कि इस समय तक मैंने जान-पहचान का एक बड़ा दायरा बना लिया होगा। नहीं: मैं ऐसा नहीं कह सकता। मुझे संदेह है कि मेरे पास ऐसा करने की इच्छा या क्षमता है भी या नहीं। मैं कुछ दोस्त बनाना चाहता हूँ, और इन कुछ दोस्तों को मैं अच्छी तरह जानना चाहता हूँ; यदि ऐसा ज्ञान समानुपातिक सम्मान दिलाता है, तो मैं अपनी भावनाओं को केंद्रित करने से खुद को रोक नहीं

पाऊँगा; मुझे लगता है कि फिजूलखर्ची, मानहानि का पर्यायवाची है। हालाँकि, अभी तक मेरी परीक्षा नहीं हुई है। वसंत ऋतु में लंदन में बिताए एक महीने के दौरान, मैं बहुत शांत रहा, क्योंकि मुझे अपनी आँखों के सामने महिमामंडित होने का डर था। मैं केवल एक बार डिनर के लिए बाहर गया; और एक बार शाम की पार्टी में उपस्थित हुआ; और मैंने केवल सर जेम्स के शटलवर्थ और अपने प्रकाशक के यहाँ ही मुलाकात की है। मैं इस व्यवस्था को छोड़ना नहीं चाहूँगा; जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, अंधाधुंध मुलाकातें केवल समय की बर्बादी और चरित्र के पतन की ओर ले जाती हैं। इसके अलावा, पापा को बार-बार छोड़ना गलत होगा; वे अब पचहत्तर वर्ष के हो चुके हैं, उनकी शारीरिक कमजोरियाँ बुढ़ापा उन पर हावी होने लगा है; गर्मियों के दौरान वे पुरानी ब्रोंकाइटिस से काफी परेशान रहे, लेकिन मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि अब उनकी हालत कुछ बेहतर है। मुझे लगता है कि मेरे अपने स्वास्थ्य को भी बदलाव और व्यायाम से लाभ हुआ है।

"डी में कोई व्यक्ति यह दावा करता है कि उसके पास यह कहने का अधिकार है कि 'जब मिस ब्रोंटे लंदन में थीं, तो वे रविवार को चर्च नहीं जाती थीं और सप्ताह के दिनों में बॉल्स, थिएटर और ओपेरा में घूमती रहती थीं।' दूसरी ओर, लंदन के कुछ लोग मेरे एकांतवास को आश्चर्य का विषय बना देते हैं और इसके लिए बीस मनगढ़ंत कहानियां गढ़ देते हैं। पहले मैं इन बातों को दिलचस्पी और कुछ हद तक विश्वास के साथ सुनता था; लेकिन अब मैं बहरा और संशयवादी हो गया हूँ: अनुभव ने मुझे सिखाया है कि उनकी कहानियां कितनी आधारहीन हो सकती हैं।"

अब मुझे मिस ब्रोंटे से प्राप्त होने वाले पहले पत्र से कुछ अंश उद्धृत करने होंगे। यह पत्र 27 अगस्त का है।

"पापा और मैंने अभी-अभी चाय पी है; वो अपने कमरे में चुपचाप बैठे हैं, और मैं अपने कमरे में; बगीचे और गिरजाघर के प्रांगण में तेज़ बारिश हो रही है: और मैदान घने कोहरे में छिपे हुए हैं। हालाँकि मैं अकेली हूँ, पर दुखी नहीं हूँ; मेरे पास हज़ार चीज़ें हैं जिनके लिए मैं आभारी हूँ, और उनमें से एक यह भी है कि आज सुबह मुझे आपका पत्र मिला, और आज शाम मुझे उसका उत्तर देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।"

"मुझे 'सिडनी टेलर का जीवन' नहीं पता; जब भी मौका मिलेगा, मैं इसे प्राप्त कर लूंगी। आपने जिस छोटी सी फ्रांसीसी किताब का जिक्र किया है, उसे भी जल्द से जल्द प्राप्त की जाने वाली किताबों की सूची में शामिल कर लूंगी। यह एक ऐसे विषय

पर है जो सभी महिलाओं के लिए रुचिकर है — शायद, विशेष रूप से अविवाहित महिलाओं के लिए; हालांकि, वास्तव में, आप जैसी माताएं भी अपनी बेटियों के लिए इसका अध्ययन करती हैं। वेस्टमिंस्टर रिव्यू एक ऐसी पत्रिका नहीं है जिसे मैं नियमित रूप से पढ़ती हूं, लेकिन कुछ समय पहले मुझे इसका एक अंक मिला — मुझे लगता है कि पिछले जनवरी का — जिसमें 'महिलाओं का मिशन' शीर्षक से एक लेख था (यह वाक्यांश घिसा-पिटा है), जिसमें बहुत सी ऐसी बातें थीं जो मुझे न्यायसंगत और तर्कसंगत लगीं। पुरुष अब महिलाओं की स्थिति को पहले की तुलना में अलग नजरिए से देखने लगे हैं; और कुछ पुरुष, जिनकी सहानुभूति कोमल है और न्याय की भावना प्रबल है, इस बारे में इतनी स्पष्टता से सोचते और बोलते हैं कि मैं उनकी प्रशंसा करती हूं। हालांकि, वे कहते हैं — और कुछ हद तक सही भी — कि हमारी स्थिति में सुधार हम पर ही निर्भर करता है। निश्चित रूप से कुछ बुराइयां ऐसी हैं जिन पर हमारे अपने प्रयास ही सबसे बेहतर ढंग से असर डाल सकते हैं; लेकिन निश्चित रूप से अन्य बुराइयाँ भी हैं - जो सामाजिक व्यवस्था की नींव में गहराई से निहित हैं - जिन्हें हमारे किसी भी प्रयास से छुआ नहीं जा सकता: जिनके बारे में हम शिकायत नहीं कर सकते; जिनके बारे में बार-बार सोचना उचित नहीं है।

मैंने टेनीसन की 'इन मेमोरियम' पढ़ी है, या यूँ कहूँ कि उसका कुछ हिस्सा; लगभग आधा पढ़ने के बाद मैंने किताब बंद कर दी। यह सुंदर है; यह शोकपूर्ण है; यह नीरस है। इसमें व्यक्त की गई कई भावनाएँ, अपने शब्दों में, सत्य की छाप छोड़ती हैं; फिर भी, अगर आर्थर हैलम अल्फ्रेड टेनीसन के कुछ करीब होते, उनके मित्र के बजाय उनके भाई होते, तो मुझे शोक के इस लयबद्ध, सधे हुए और मुद्रित स्मारक पर संदेह होता। वर्षों के बीतने से क्या परिवर्तन आएगा, यह मैं नहीं जानता; लेकिन मुझे लगता है कि ताजा गहरा शोक, जब तक कविता में व्यक्त नहीं होता, तब तक वह भावपूर्ण नहीं होता।

मैंने आपसे वर्ड्सवर्थ की 'प्रेल्यूड' भेजने का वादा किया था, और इसलिए मैं इसे डाक से भेज रहा हूँ; दूसरी छोटी सी किताब एक-दो दिन में भेज दी जाएगी। जब भी आपको मुझे लिखने का समय मिले, मुझे आपसे सुनकर खुशी होगी, लेकिन आप किसी भी हालत में ऐसा न करें, सिवाय तब जब आपका मन करे और आपके पास फुर्सत हो। अगर आपने पत्र लिखना अपना कर्तव्य समझा हो, तो मैं कभी भी आपका धन्यवाद नहीं करूँगा।

ब्रिएरी में हमारी मुलाकात के कुछ ही समय बाद, उन्होंने मुझे करर, एलिस और एक्टन बेल की कविताओं का संग्रह भेजा; और पार्सल के साथ भेजे गए नोट में उन्होंने उनका उल्लेख इस प्रकार किया: —

"कविता की यह छोटी सी किताब एक जल्दबाजी में किए गए वादे को पूरा करने के लिए भेजी गई थी; और वह वादा आपको चार शिलिंग एक नासमझी भरी खरीदारी में बर्बाद करने से रोकने के लिए किया गया था। मुझे अपनी रचनाएँ पसंद नहीं हैं, और न ही मैं चाहता हूँ कि कोई उन्हें पढ़े: एलिस बेल की रचनाएँ मुझे अच्छी और सशक्त लगती हैं, और एक्टन की रचनाओं में सच्चाई और सरलता का गुण है। मेरी रचनाएँ मुख्य रूप से बचकानी हैं; एक ऐसे मन की बेचैन उमंग जो शांत नहीं होना चाहता। उन दिनों, समुद्र अक्सर 'उछलता और तूफानी' होता था, और समुद्री घास, रेत, कंकड़ - सब कुछ उस उथल-पुथल में ऊपर आ जाता था। यह उपमा विषय के लिए कुछ अधिक ही आडंबरपूर्ण है, लेकिन आप इसे क्षमा कर देंगे।"

इसी समय के आसपास, 5 सितंबर को एक साहित्यिक मित्र को एक और रोचक पत्र संबोधित किया गया था: —

"एथेनियम का पुन: प्रकाशन अत्यंत प्रशंसनीय है, न केवल इसलिए कि यह अपने आप में एक महत्व रखता है, हालांकि मैं इसे पढ़ने के अवसर को एक सौभाग्य मानता हूँ, बल्कि इसलिए भी कि मित्रों की याद के साप्ताहिक प्रतीक के रूप में यह मन को प्रसन्न और आनंदित करता है। मुझे केवल इस बात का भय है कि इसका नियमित प्रसारण आपके लिए एक बोझ बन सकता है; यदि ऐसा है, तो इसे तुरंत बंद कर दें।"

स्कॉटलैंड की अपनी यात्रा का मैंने सचमुच आनंद लिया, फिर भी मैंने देश का बहुत कम हिस्सा देखा; इसकी भव्यता या सुंदर प्राकृतिक दृश्यों का कुछ भी नहीं; लेकिन एडिनबर्ग, मेलरोज़, एबॉट्सफ़ोर्ड - ये तीनों ही मेरे मन में इतनी गहरी रुचि और प्रशंसा की भावनाएँ जगाने के लिए पर्याप्त थे कि न तो उस समय मुझे कोई अफ़सोस हुआ और न ही बाद में कभी हुआ कि मुझे इस आनंद को और अधिक विस्तार से व्यक्त करने का अवसर नहीं मिला। वहाँ इतना स्थान और विविधता थी कि मैं बहुत खुश रह सका, और कहावत है कि 'पर्याप्त' भी दावत के बराबर होता है। रानी का अपने पति और बच्चों के साथ आर्थर सीट पर चढ़ना बिल्कुल सही था। मैं उस पल को कभी नहीं भूलूँगा जब शिखर पर पहुँचकर हम सब बैठ गए और शहर को देखा - समुद्र, लीथ और पेंटलैंड पहाड़ियों की ओर। निस्संदेह आपको स्कॉटलैंड का मूल

निवासी होने पर गर्व है - अपने देश, उसकी राजधानी, उसके बच्चों और उसके साहित्य पर गर्व है। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है।

पैलेडियम में छपा लेख उन प्रशंसाओं में से एक है जिन्हें पढ़कर लेखक रोमांचित हो उठता है। वह अपने काम की इतनी बारीकी से, पूरी तरह से और दिल से सराहना पाकर खुश होता है, और साथ ही उस सराहना से उत्पन्न होने वाली ज़िम्मेदारी से कांप भी उठता है। मुझे इंतज़ार करने और देखने की सलाह दी गई है - डी. वी. मैं ऐसा ही करूँगा; फिर भी, हाथ बंधे होने और ध्यान और चिंतनशील शक्तियों के मौन और अदृश्य कार्य में लगे रहने के साथ इंतज़ार करना, यंत्रवत काम करने से कहीं अधिक कठिन है।

'वुथरिंग हाइट्स' पर की गई टिप्पणियों के बारे में मुझे कैसा लगा, यह बताने की आवश्यकता नहीं है; उन्होंने मुझे बेहद दुखी और साथ ही बेहद आभारी महसूस कराया; वे सच हैं, विवेकपूर्ण हैं, और उनमें देर से मिला न्याय तो है, लेकिन बहुत देर हो चुकी है—अफ़सोस! एक अर्थ में, बहुत देर हो चुकी है। हालाँकि, इस बारे में और समय से पहले बुझ गए प्रकाश के दुख के बारे में ज़्यादा बात करना उचित नहीं है। इस लेख के लेखक चाहे जो भी हों, मैं उनका ऋणी रहूँगा।

फिर भी, आप देखिए, यहाँ भी शर्ली की तुलना "जेन आयर" से की गई है; और फिर भी मैंने शर्ली पर बहुत मेहनत की। मैंने जल्दबाजी नहीं की; मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ करने का प्रयास किया, और मेरा अपना अनुभव यह था कि यह पहले वाले काम से कमतर नहीं था; वास्तव में, मैंने इस पर अधिक समय, विचार और चिंता लगाई थी: लेकिन इसका बड़ा हिस्सा आसन्न विपत्ति की छाया में लिखा गया था; और अंतिम खंड, मैं इनकार नहीं कर सकता, असहनीय मानसिक पीड़ाओं से लड़ने के लिए उत्सुक, बेचैन प्रयास में रचा गया था।

"आपने कॉर्नहिल पार्सल में से एक में सैमुअल ब्राउन द्वारा लिखित त्रासदी 'गैलीलियो गैलीली' भेजी थी; मुझे याद है, उसमें बहुत ही सुंदर अंश थे। जब भी आप कोई और किताबें भेजें (लेकिन ऐसा तब तक नहीं होना चाहिए जब तक मैं अभी मेरे पास मौजूद किताबें वापस न कर दूं), तो मुझे खुशी होगी यदि आप उनमें 'डॉ. अर्नोल्ड का जीवन' भी शामिल कर दें। क्या आप 'सिडनी टेलर का जीवन' भी जानते हैं? मैं तो इस नाम से भी परिचित नहीं हूँ, लेकिन मुझे इसे पढ़ने की सलाह दी गई है। बेशक, जब मैं किसी किताब का नाम लेता हूँ, तो यह हमेशा समझा जाता है कि उसे

भेजना मेरे लिए सुविधाजनक होगा।”

अध्याय आठ

इस समय के आसपास, दोनों बहनों की रचनाओं "वुथरिंग हाइट्स" और "एग्नेस ग्रे" को पुनः प्रकाशित करना वांछनीय समझा गया, और शार्लोट ने उन्हें संपादित करने का कार्यभार संभाला।

उन्होंने 29 सितंबर, 1850 को श्री विलियम्स को लिखा, “मेरा इरादा ‘वुथरिंग हाइट्स’ पर कुछ पंक्तियाँ लिखने का है, हालाँकि मैं उन्हें कहानी से पहले एक संक्षिप्त प्रस्तावना के रूप में अलग रखना चाहती हूँ। मैं अपनी बहन की मृत्यु के बाद पहली बार इस पुस्तक को खोलकर इसे फिर से पढ़ने के लिए स्वयं को विवश कर रही हूँ। इसकी शक्ति मुझे नए सिरे से प्रशंसा से भर देती है; फिर भी मैं घुटन महसूस कर रही हूँ: पाठक को शायद ही कभी शुद्ध आनंद का अनुभव करने का अवसर मिलता है; सूर्य की हर किरण काले बादलों की काली पट्टियों से छनकर आती है; हर पृष्ठ एक प्रकार की नैतिक ऊर्जा से भरा हुआ है; और लेखिका इन सब बातों से अनभिज्ञ थीं - कोई भी चीज़ उन्हें इसका एहसास नहीं करा सकी।”

और इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि शायद मैं अपनी शैली की खामियों और विशिष्टताओं को समझने में बहुत असमर्थ हूं।

"यदि आपको प्रूफरीडिंग भेजने में कोई असुविधा न हो, तो मैं इसे संशोधित करना चाहूंगा। मुझे लगता है कि पुराने नौकर जोसेफ के भाषणों की वर्तनी में संशोधन करना उचित होगा; क्योंकि हालांकि, वर्तमान स्थिति में यह यॉर्कशायर की बोली को यॉर्कशायर के लोगों के लिए बिल्कुल सटीक रूप से प्रस्तुत करता है, फिर भी, मुझे

यकीन है कि दक्षिणी लोगों को यह समझ में नहीं आएगा; और इस प्रकार पुस्तक के सबसे जीवंत पात्रों में से एक उनके लिए व्यर्थ हो जाएगा।"

मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि मेरे पास मेरी दोनों बहनों का कोई चित्र नहीं है।

अपनी प्रिय मित्र को, मानो वह किसी ऐसी व्यक्ति को लिख रही हो जिसने उसकी बहनों को जाना और प्यार किया हो, वह अपने कार्य की पीड़ादायकता का और भी अधिक विस्तार से वर्णन करती है।

"कोई दिक्कत नहीं है, और मैं आपकी इच्छा के अनुसार आपको यह पत्र लिख रही हूँ, बस यह बताने के लिए कि मैं इस समय व्यस्त हूँ। श्री स्मिथ एमिली और एनी की कुछ रचनाओं को, उनके छोड़े गए कागज़ात से कुछ छोटे-मोटे अंश जोड़कर, पुनः प्रकाशित करना चाहते हैं; और मैं उन्हें संशोधित करने, प्रतिलिपि बनाने, प्रस्तावना, सूचना आदि तैयार करने में व्यस्त हूँ। समय सीमित होने के कारण मुझे तेज़ी से काम करना पड़ रहा है। पहले तो यह काम मुझे बेहद कष्टदायक और निराशाजनक लगा; लेकिन इसे एक पवित्र कर्तव्य मानते हुए, मैंने इसे जारी रखा, और अब मैं इसे बेहतर ढंग से सहन कर सकती हूँ। हालाँकि, यह ऐसा काम है जिसे मैं शाम को नहीं कर सकती, क्योंकि अगर मैं ऐसा करूँगी, तो मुझे रात को नींद नहीं आएगी। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पापा का स्वास्थ्य बेहतर है, और मुझे लगता है कि मेरा भी; मुझे उम्मीद है कि आपका भी स्वास्थ्य अच्छा होगा।"

मुझे अभी-अभी मिस मार्टिन्यू का एक स्नेहपूर्ण पत्र मिला है। वह एम्बल्ससाइड लौट आई हैं और उन्हें झीलों की मेरी यात्रा के बारे में पता चला था। उन्होंने घर पर न होने के लिए खेद व्यक्त किया है, इत्यादि।

मैं अपने आप पर क्रोधित और आश्चर्यचकित दोनों हूँ कि मैं बेहतर मनोदशा में क्यों नहीं हूँ; मैं अपने अकेलेपन और अलगाव को क्यों नहीं अपना पाया, या कम से कम स्वीकार क्यों नहीं कर पाया। लेकिन मेरे पिछले काम का असर कुछ दिनों तक रहा, और वास्तव में अभी भी है, जो बहुत कष्टदायक है। कागज़ात पढ़ने और पुरानी यादों को ताज़ा करने से शोक का दर्द फिर से लौट आया, और मन लगभग असहनीय रूप से उदास हो गया। एक-दो रातें तो मुझे समझ ही नहीं आया कि सुबह तक कैसे गुजारूँ; और जब सुबह हुई, तब भी मैं असहनीय पीड़ा से घिरा हुआ था। मैं आपको ये सब इसलिए बता रहा हूँ, क्योंकि मुझे थोड़ी राहत पाना बेहद ज़रूरी है। आप मुझे

क्षमा करेंगे, और खुद को परेशान न करें, या यह न सोचें कि मेरी हालत जितनी है उससे कहीं ज़्यादा खराब है। यह एक मानसिक बीमारी है, और मुझे विश्वास और आशा है कि अब बेहतर है। मुझे ऐसा इसलिए लगता है, क्योंकि मैं इसके बारे में बात कर सकता हूँ, जो मैं शोक की चरम अवस्था में कभी नहीं कर पाता।

"मैंने सोचा था कि घर पर अकेले रहने के दौरान लेखन में रुचि और व्यस्तता ढूंढूँगी, लेकिन अब तक मेरे प्रयास व्यर्थ रहे हैं; हर तरह की प्रेरणा की कमी इतनी गहरी है। मुझे यकीन है कि आप मुझे घर से बाहर जाने की सलाह देंगे; लेकिन इससे कोई फायदा नहीं होगा, भले ही मैं पापा को फिर से शांति से छोड़ सकूँ (भगवान का शुक्र है! वे अब बेहतर हैं)। लंदन, स्कॉटलैंड आदि से लौटने के बाद मेरा समय कितना कठिन बीता, इसका वर्णन मैं नहीं कर सकती। एक ऐसी प्रतिक्रिया हुई जिसने मुझे पूरी तरह से तोड़ दिया; जानलेवा सन्नाटा, अकेलापन, वीरानगी भयानक थी; साथ की चाहत, राहत की निराशा, ये वो चीजें थीं जिन्हें मैं फिर कभी महसूस नहीं करना चाहूँगी।"

प्रिय — —, जब मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ, तो मेरे मन में करुणा और कोमलता का ऐसा भाव आता है जो मुझे शायद ही प्रसन्न कर पाता है। मुझे डर है कि मानसिक रूप से तुम भी बहुत अकेले और खाली हो। लगता है कि फिलहाल यही हमारी नियति है। ईश्वर अपनी दया से हमें इसे सहने की शक्ति दे!

अपने एक पत्र में उल्लेखित लंदन की अपनी अंतिम यात्रा के दौरान, उन्होंने अपने पत्र-व्यवहारकर्ता श्री लेवेस से मुलाकात की थी। उस सज्जन ने कहा: —

"कुछ महीनों बाद" (एडिनबर्ग में "शर्ली" की समीक्षा प्रकाशित होने के बाद), "कुरर बेल लंदन आईं और मुझे आपके घर पर उनसे मिलने का निमंत्रण मिला। आपको याद होगा, उन्होंने आपसे कहा था कि आप मुझे उन्हें न दिखाएँ, बल्कि उन्हें खुद मुझे पहचानने दें। कमरे में आते ही उन्होंने मुझे लगभग तुरंत पहचान लिया। आपने भी मुझे उसी तरह परखा; मैं उतना समझदार नहीं था। फिर भी, मैं शाम के अधिकांश समय उनके बगल में बैठा रहा और उनकी बातों में मुझे बहुत रुचि थी। विदा होते समय हमने हाथ मिलाया और उन्होंने कहा, 'अब हम दोस्त हैं, है ना?' 'तो क्या हम हमेशा से दोस्त नहीं थे?' मैंने पूछा। 'नहीं! हमेशा से नहीं,' उन्होंने अर्थपूर्ण ढंग से कहा; और यही एकमात्र संकेत था जो उन्होंने उस आपत्तिजनक लेख की ओर दिया। मैंने उन्हें बाल्ज़ाक और जॉर्ज सैंड के कुछ उपन्यास अपने साथ गाँव ले जाने के लिए

दिए; और जब वे वापस आए तो निम्नलिखित पत्र लिखा गया:” —

मुझे यकीन है कि आपने मुझे उन किताबों को लौटाने में बहुत देरी करते हुए समझा होगा जो आपने मुझे इतनी कृपा करके उधार दी थीं। दरअसल, मुझे कुछ और किताबें भेजनी थीं, इसलिए मैंने आपकी किताबें अपने पास रख लीं ताकि उन्हें उसी पार्सल में भेज सकूं।

कुछ घंटों के सुखद पठन के लिए धन्यवाद स्वीकार करें। बाल्ज़ाक मेरे लिए बिल्कुल नए लेखक थे; और 'मोडेस्ट मिग्नन' और 'इल्यूजन्स परड्यूज़' के माध्यम से उनसे अच्छी तरह परिचित होने पर, आप निसंदेह मेरी रुचि जागृत हुई। पहले तो मुझे लगा कि वे अत्यधिक सूक्ष्म और उबाऊ होंगे; उनके लंबे विवरण और महत्वहीन घटनाओं के धीमे खुलासे से मन ऊबने लगा, जैसे-जैसे वे अपने पात्रों को मंच पर लाते गए; लेकिन धीरे-धीरे मैं उनकी कला के रहस्य में प्रवेश करने लगा और उनकी शक्ति को जानकर प्रसन्न हुआ: क्या यह प्रेरणा के विश्लेषण में नहीं है; और मन की सबसे अस्पष्ट और गुप्त प्रक्रियाओं की सूक्ष्म समझ में नहीं है? फिर भी, हम बाल्ज़ाक की कितनी भी प्रशंसा करें, मुझे लगता है कि हम उन्हें पसंद नहीं करते; बल्कि हम उनके प्रति एक ऐसे अप्रिय परिचित की तरह महसूस करते हैं जो हमेशा हमारी कमियों को उजागर करता है और जो शायद ही कभी हमारे अच्छे गुणों को सामने लाता है।

"सच कहूं तो, मुझे जॉर्ज सैंड ज्यादा पसंद है।"

“भले ही जॉर्ज सैंड एक सनकी, कट्टर और अव्यावहारिक उत्साही हैं—भले ही जीवन के बारे में उनके कई विचार सच्चाई से बहुत दूर हैं—भले ही वे अक्सर अपनी भावनाओं से गुमराह हो जाती हैं—फिर भी उनका स्वभाव एम. डी बाल्ज़ाक से कहीं बेहतर है; उनका दिमाग उनसे कहीं बड़ा है, उनका दिल उनसे कहीं अधिक दयालु है। ‘लेट्रेस डी अन वॉयजर’ लेखिका के आत्म-सम्मान से परिपूर्ण हैं; और इस कृति को पढ़ते समय मुझे इतना प्रबल अहसास हुआ जितना पहले कभी नहीं हुआ कि उनकी अधिकांश कमियाँ उनके अच्छे गुणों की अधिकता से ही उत्पन्न होती हैं: यही अधिकता उन्हें अक्सर कठिनाइयों में डालती है, और यही उनके चिरस्थायी पछतावे का कारण बनती है।”

लेकिन मेरा मानना है कि उनका दिमाग उस स्तर का है जो विकट अनुभवों से मिलता है, बिना कमजोर हुए या बहुत ज्यादा निराश किए; और ऐसे में, जितना लंबा जीवन वह जिएंगी, उतना ही बेहतर होती जाएंगी। उनकी सभी रचनाओं में एक

आशाजनक बात यह है कि उनमें बनावटी फ्रांसीसी भावुकता की कमी है; काश मैं कह पाता कि यह पूरी तरह से अनुपस्थित है; लेकिन यह खरपतवार कहीं-कहीं पनपती है, यहां तक कि उनके 'पत्रों' में भी।

मुझे मिस ब्रोंटे द्वारा बाल्ज़ाक के कुछ उपन्यासों के बारे में मुझसे बात करते समय व्यक्त की गई घृणा की वह अच्छी अभिव्यक्ति याद है: "वे मेरे मुंह में बहुत बुरा स्वाद छोड़ जाते हैं।"

पाठक ध्यान देंगे कि जिन पत्रों का मैं अब उद्धरण दे रहा हूँ, उनमें से अधिकांश आलोचनात्मक और साहित्यिक विषयों पर केंद्रित हैं। वास्तव में, यही उस समय उनकी प्रमुख रुचियाँ थीं; अपनी बहन की रचनाओं का पुनरावलोकन करना और उनका एक संक्षिप्त संस्मरण लिखना, 1850 की नीरस शरद ऋतु के दौरान उनका हर दिन का कष्टदायक कार्य था। अपनी दुखद यादों की जीवंतता से थककर, वे मैदानी इलाकों में लंबी सैर करके राहत पाने की कोशिश करती थीं। उनकी एक मित्र, जिन्होंने मुझे डेली न्यूज़ में "कुरर बेल की मृत्यु" पर प्रकाशित मार्मिक लेख के बारे में लिखा था, एक किस्सा सुनाती हैं जो यहाँ उपयुक्त हो सकता है।

"यह कहना गलत है कि वह इतनी कमजोर थी कि हवा के लाभ के लिए पहाड़ियों पर नहीं घूम सकती थी। मुझे नहीं लगता कि इस इलाके में कोई भी, खासकर कोई भी महिला, मौसम ठीक होने पर उतना अधिक खुले मैदानों में जाती थी जितना वह जाती थी। वास्तव में, वह ऐसा करने की इतनी आदी थी कि जो लोग मैदान के किनारे पर काफी दूर रहते थे, वे भी उसे अच्छी तरह जानते थे। मुझे याद है एक बार एक बूढ़ी औरत ने उसे थोड़ी दूरी से देखा और पुकार कर कहा, 'अरे! मिस ब्रोंटे! क्या आपने मेरे बछड़े को देखा है?' मिस ब्रोंटे ने कहा कि वह नहीं बता सकतीं, क्योंकि वह उसे नहीं जानती थीं। 'अच्छा!' उसने कहा, 'आप जानती हैं, वह अभी उठ रहा है, एक गाय और एक बछड़े के बीच - जिसे हम स्टर्क कहते हैं, आप जानती हैं, मिस ब्रोंटे; अगर आप उसे वापस जाते समय देखें तो क्या आप उसे इस तरफ मोड़ देंगी, मिस ब्रोंटे; नहीं!' जी हां, मिस ब्रोंटे।

लगभग इसी समय कुछ पड़ोसी उनसे मिलने आए थे, जिनसे उनका परिचय एक आपसी मित्र के माध्यम से हुआ था। इस मुलाकात का वर्णन एक पत्र में किया गया है, जिसके कुछ अंश मुझे यहाँ देने की अनुमति है। ये अंश उनके घर के आसपास के ग्रामीण परिवेश और अन्य परिस्थितियों से अजनबियों पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाते

हैं। हालांकि मौसम बूंदा-बांदी वाला था, हमने हॉवर्थ की अपनी लंबे समय से तय यात्रा पर जाने का निश्चय किया; इसलिए हमने भैंस की खाल से बनी गाड़ी में अपना सामान पैक किया, उसे गाड़ी में रखा और लगभग ग्यारह बजे चल पड़े। बारिश रुक गई और दिन का मौसम नज़ारे के लिए बिल्कुल अनुकूल था — जंगली और सर्द — दलदली भूमि पर बादलों के बड़े-बड़े समूह छाए हुए थे, और कहीं-कहीं सूरज की एक किरण चुपके से छनकर आ रही थी, और किसी ऊंचे सुनसान गांव पर एक धुंधली जादुई रोशनी बिखेर रही थी; या किसी गहरी घाटी में उतरकर ऊंची चिमनी को रोशन कर रही थी, या नीचे स्थित चक्की की खिड़कियों और गीली छत पर चमक रही थी। जैसे-जैसे हम हॉवर्थ के पास पहुंचते गए, इलाका और भी जंगली होता गया; आखिरी चार मील तक हम एक विशाल दलदली भूमि पर चढ़ रहे थे, जिसके बिल्कुल ऊपर हॉवर्थ का उदास, काला दिखने वाला गांव स्थित है। गांव की गली खुद मेरी देखी हुई सबसे खड़ी पहाड़ियों में से एक है, और पत्थर इतने भयानक रूप से हिल रहे थे कि अगर मुझे मौका मिलता तो मैं गाड़ी से उतरकर डब्ल्यू के साथ पैदल चल लेता। संभव तो था, लेकिन एक बार चढ़ाई शुरू हो जाने के बाद रुकना नामुमकिन था। सबसे ऊपर वह सराय थी जहाँ हम ठहरे, चर्च के पास ही; और हमें बताया गया कि पादरी का घर कब्रिस्तान के सबसे ऊपर था। तो हम उसी रास्ते से आगे बढ़े, - एक सुनसान, वीरान जगह, सचमुच बारिश से काली पड़ी कब्रों से पक्की, और सब ढलान पर, क्योंकि हॉवर्थ में सबसे ऊँची जगह पर उससे भी ऊँची जगह है, और श्री ब्रोंटे का घर चर्च से काफी ऊपर है। हमारे सामने वह घर था, एक छोटा सा आयताकार पत्थर का घर, जिसके चारों ओर ठंडी हवा से बचने के लिए एक भी पेड़ नहीं था; लेकिन कब्रिस्तान से उस तक कैसे पहुँचें, यह हम देख नहीं पा रहे थे! कब्रिस्तान में एक बूढ़ा आदमी था, कब्रों पर किसी भूत की तरह मंडरा रहा था, उसके चेहरे पर एक अजीब सी उदासी छाई हुई थी। मुझे लगा कि वह मुश्किल से ही इंसान लग रहा था; फिर भी, वह इतना इंसान था कि उसने हमें रास्ता बता दिया; और थोड़ी देर में हम खुद को उस छोटे से खाली कमरे में पाए। तभी दरवाजा खुला, और एक बूढ़ा मास्टिफ़ कुत्ता आया, उसके पीछे एक बुजुर्ग सज्जन थे जो मिस ब्रोंटे जैसे दिखते थे। उन्होंने हमसे हाथ मिलाया और फिर अपनी बेटी को बुलाने चले गए। काफी देर तक हम उस बूढ़े कुत्ते को मनाते रहे और कमरे की इकलौती शोभा, रिचमंड द्वारा बनाई गई मिस ब्रोंटे की तस्वीर को देखते रहे, जो खाली दीवारों पर अजीब सी लग रही थी। हमने छोटी-छोटी अलमारियों

पर रखी किताबों को भी देखा, जिनमें से अधिकतर स्पष्ट रूप से मिस ब्रोंटे की प्रसिद्धि के बाद लेखकों द्वारा उपहार स्वरूप दी गई थीं। थोड़ी देर बाद वह अंदर आईं और हमारा बहुत ही प्यार से स्वागत किया। वह मुझे ऊपर ले गईं ताकि मैं अपनी टोपी उतार सकूँ और खुद मेरे लिए पानी और तौलिए लाईं। बिना कालीन वाली पत्थर की सीढ़ियाँ और फर्श, लकड़ी के सहारे टिकी पुरानी दराजें, सब कुछ बहुत साफ-सुथरा था। जब हम फिर से बैठक में गए, तो हम बड़े आराम से बातें करने लगे, तभी दरवाजा खुला और मिस्टर ब्रोंटे ने अंदर देखा; अपनी बेटी को वहाँ देखकर, मुझे लगता है कि उन्होंने सोचा कि सब ठीक है, और वह गलियारे के दूसरी तरफ अपने अध्ययन कक्ष में चले गए; थोड़ी देर बाद वापस आकर W — — एक देहाती अखबार। हमारे जाने तक यह उनकी आखिरी उपस्थिति थी। मिस ब्रोंटे ने मिस मार्टिन्यू के बारे में बड़ी गर्मजोशी से बात की और बताया कि उन्हें उनसे कितना लाभ हुआ था। खैर! हमने कई विषयों पर बात की; लोगों के स्वभाव के बारे में, उनके अकेलेपन के बारे में, आदि, जब तक कि वह कमरे से बाहर नहीं चली गईं, मुझे लगता है कि वह रात के खाने में मदद करने के लिए गई थीं, क्योंकि वह काफी देर तक वापस नहीं आईं। बूढ़ा कुत्ता गायब हो गया था; एक मोटा घुंघराले बालों वाला कुत्ता कुछ देर तक हमारे साथ रहा, लेकिन अंत में बाहर जाने की इच्छा जताई, इसलिए हम अकेले रह गए। आखिरकार वह वापस आईं, उनके पीछे नौकरानी और खाना भी था, जिससे हम सभी को थोड़ी राहत मिली; और हमने कुछ बहुत ही सुखद बातचीत की, जिसके बीच समय हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक तेजी से बीत गया, क्योंकि अंत में हमें पता चला कि साढ़े तीन बज चुके थे, और हमें चौदह या पंद्रह मील का सफर तय करना था। इसलिए हम जल्दी से निकल पड़े, उनसे वसंत में हमसे मिलने आने का वादा लेकर; और बूढ़े सज्जन के अपने अध्ययन कक्ष से एक बार फिर अलविदा कहने के बाद, हम सराय लौट आए और अपने रास्ते पर तेजी से आगे बढ़े। घर की ओर।

"मिस ब्रोंटे ने मुझे अपनी 'जेन आयर' की याद दिला दी। वह पहले से भी छोटी लग रही थीं, और इतनी खामोशी और बिना आवाज किए इधर-उधर घूम रही थीं, जैसे कोई छोटी चिड़िया, जैसा कि रोचेस्टर ने उन्हें कहा था, बस फर्क इतना था कि सभी चिड़िया खुशमिजाज होती हैं, और उस घर में बनने के बाद से खुशी कभी आई ही नहीं होगी; फिर भी, शायद, जब उस बूढ़े आदमी ने शादी की, अपनी दुल्हन को घर लाया, और घर में बच्चों की आवाजें और कदमों की आहट सुनाई दी, तो उस सुनसान, भीड़

भरे कब्रिस्तान और कड़ाके की ठंड भी खुशी और उम्मीद को बुझा नहीं सकी। अब उस नन्ही सी बच्ची को ऐसी जगह में दफन देखना, और फिर भी एक आत्मा की तरह इधर-उधर घूमते देखना, दिल को छू लेने वाला है, खासकर जब आप सोचते हैं कि उस पतले, शांत शरीर में एक मजबूत, जोशीली जिंदगी की शक्ति समाई हुई है, जिसे कोई भी जमा या बुझा नहीं सका है।"

पिछले पत्रों में से एक में, मिस ब्रोंटे ने पैलेडियम में प्रकाशित एक लेख का जिक्र किया था, जिसमें उनकी बहन एमिली की कहानी "वुथरिंग हाइट्स" को उचित सम्मान दिया गया था। उनकी अपनी रचनाओं की प्रशंसा हुई थी, और वह भी विवेकपूर्ण प्रशंसा, जिसके लिए वह आभारी थीं। लेकिन उनका हृदय उस लेखक के प्रति स्नेह से भर गया था जिसने दिवंगत को न्याय दिलाया था। उन्होंने उत्सुकता से लेखक का नाम खोजा; और जब उन्हें पता चला कि वह श्री सिडनी डोबेल हैं, तो वे तुरंत उनके प्रिय मित्रों में से एक बन गए।

"वे विलक्षण लोग जिन्हें मृत्यु ने प्रिय बना दिया था।"

वह उनकी लिखी हर बात को रुचि से पढ़ती थी; और जल्द ही हमें पता चलेगा कि वे एक-दूसरे को पत्र लिखते थे।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, एस्क्वायर को।

25 अक्टूबर।

"किताबों का डिब्बा कल रात आया, और हमेशा की तरह, मुझे केवल कृतज्ञतापूर्वक चुने गए संग्रह की प्रशंसा करनी है: 'जेफरी के निबंध', 'डॉ. अर्नोल्ड का जीवन', 'द रोमन', 'एल्टन लोच', ये सभी वांछित और स्वागत योग्य हैं।"

"आप कहते हैं कि मैं कोई किताबें नहीं रखता; मुझे क्षमा करें—मुझे अपने लालच पर शर्म आती है। मैंने 'मैकाले का इतिहास', वर्ड्सवर्थ की 'प्रेल्यूड' और टेलर की 'फिलिप वैन आर्टेवेल्डे' रखी हैं। मैं अपने अंतरात्मा को यह कहकर तसल्ली देता हूँ कि ये दोनों—कविताएँ होने के कारण—महत्वपूर्ण नहीं हैं। यह मेरे लिए एक सुविधाजनक सिद्धांत है। मैं रोमन काल के संदर्भ में इस पर अमल करने का विचार कर रहा हूँ, इसलिए मुझे विश्वास है कि कॉर्नहिल में कोई भी इसकी वैधता पर विवाद नहीं करेगा या 'कविता' के महत्व को स्वीकार नहीं करेगा, सिवाय संदूक बनाने वालों के।"

"मेरे पास पहले से ही 'मैकाले के निबंध', 'सिडनी स्मिथ के नैतिक दर्शन पर

व्याख्यान' और 'नॉक्स ऑन रेस' मौजूद हैं। पिकरिंग की इसी विषय पर लिखी रचना मैंने नहीं देखी है; न ही ली हंट की आत्मकथा के सभी खंड। हालांकि, अब मेरे पास लंबे समय तक पढ़ने के लिए पर्याप्त सामग्री है। मुझे हैज़लिट के निबंध बहुत पसंद आए।"

"जैसा कि आपने कहा, शरद ऋतु बहुत ही सुहावनी रही है। मैंने, एकांत ने और स्मृतियों ने अक्सर खुले मैदानों में इसकी धूप का भरपूर आनंद उठाया है।"

"'वुथरिंग हाइट्स' के प्रूफ शीट न मिलने से मुझे थोड़ी निराशा हुई थी; संशोधन पूरा करने की तीव्र बेचैनी मुझे अक्सर सताती रहती है। कागज़ात आदि की जाँच-पड़ताल करना शांत मन से और बिना मन बदले नहीं किया जा सकता था; इससे कई कोमल यादें और गहरे अफसोस उमड़ आए। इस बीच, कॉर्नहिल की पुस्तकें अब भी, पहले की तरह, मेरी सबसे अच्छी दवा हैं, जो मुझे वह सुकून देती हैं जो किसी आम पुस्तकालय से प्राप्त उन्हीं पुस्तकों से नहीं मिल सकता।"

मैंने 'रोमन' का अधिकांश भाग पढ़ लिया है; इसमें ऐसे अंश हैं जिनमें एक ऐसी प्रज्वलित शक्ति है जो केवल सच्ची कविता में ही पाई जा सकती है; इसमें वास्तविक भव्यता के चित्र हैं; इसमें ऐसी पंक्तियाँ हैं जो तुरंत स्मृति में अंकित हो जाती हैं। क्या यह सच हो सकता है कि आकाश में एक नया ग्रह उदय हुआ है, जहाँ से सभी तारे तेजी से फीके पड़ते प्रतीत होते हैं? मेरा मानना है कि यह सच है; क्योंकि यह सिडनी या डोबेल अपनी अनूठी आवाज़ में बोलते हैं, जो किसी से उधार नहीं ली गई है, जिसकी नकल नहीं की गई है। रोमन के कुछ अंशों में आपको कभी-कभी टेनीसन और कभी-कभी बायरन की झलक मिलती है; लेकिन फिर आपको एक नया स्वर मिलता है, - एक संक्षिप्त गीत में यह सबसे स्पष्ट है, जो संगीतकारों की एक सभा में गाया गया था, एक मृत भाई के लिए शोकगीत जैसा; - जिसने न केवल कानों और मस्तिष्क को मोहित किया, बल्कि हृदय को भी शांति प्रदान की।

डॉ. अर्नोल्ड की जीवनी पढ़ने के बाद उनके विचारों को व्यक्त करने वाला निम्नलिखित अंश रुचिपूर्वक पढ़ा जाएगा:

6 नवंबर।

मैंने अभी-अभी 'डॉ. अर्नोल्ड का जीवन' पढ़ना समाप्त किया है; लेकिन अब जब मैं आपके अनुरोध के अनुसार, इस पर अपने विचार व्यक्त करना चाहता हूँ, तो मुझे यह कार्य आसान नहीं लगता; उचित शब्द अपर्याप्त प्रतीत होते हैं। यह ऐसा चरित्र

नहीं है जिसे कुछ प्रशंसात्मक शब्दों से ही समाप्त कर दिया जाए; यह एकतरफा चरित्र नहीं है; केवल प्रशंसा करना अनुपयुक्त होगा। डॉ. अर्नोल्ड (मुझे ऐसा लगता है) पूरी तरह से संत नहीं थे; उनकी महानता एक नश्वर सांचे में ढली थी; वे थोड़े कठोर, लगभग थोड़े सख्त थे; वे उग्र और कुछ हद तक विरोधी थे। स्वयं सबसे अथक कार्यकर्ताओं में से एक होने के बावजूद, मुझे नहीं पता कि क्या वे ऐसे स्वभाव को समझ सकते थे, या उसके लिए गुंजाइश रख सकते थे, जिसे अधिक आराम की आवश्यकता होती; फिर भी बीस हजार में से एक व्यक्ति को भी उनकी जैसी विशाल श्रम क्षमता नहीं मिलती; इसी कारण वे मुझे महानतम कर्मठ व्यक्ति प्रतीत होते हैं। इस मामले में वे शायद सख्त रहे होंगे; और यह मानते हुए कि वे ऐसे थे, और थोड़े उतावले, कठोर और दृढ़ थे, तो यही उनकी एकमात्र कमियाँ थीं (यदि, वास्तव में, इसे एक दोष कहा जा सकता है जो किसी भी रूप में व्यक्ति के स्वयं के चरित्र को नीचा नहीं करता; बल्कि केवल उसके पड़ोसियों की कमजोर प्रकृति को दबाने और उन पर अत्यधिक दबाव डालने की प्रवृत्ति रखता है। इसके बाद आते हैं उसके अच्छे गुण। इनके बारे में कोई संदेह नहीं है। न्याय, दृढ़ता, स्वतंत्रता, लगन, ईमानदारी और शुद्धता उससे अधिक परिपूर्ण और शुद्ध कहाँ मिल सकती है?

लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती, और मुझे इस बात की खुशी है। उच्च बुद्धि और निष्कलंक सत्यनिष्ठा के अलावा, उनके पत्र और उनका जीवन उनके सच्चे स्नेह की गवाही देते हैं। इसके बिना, चाहे हम उनकी कितनी भी प्रशंसा करें, हम उनसे प्रेम नहीं कर सकते; लेकिन इसके साथ, मुझे लगता है कि हम उनसे बहुत प्रेम करते हैं। ऐसे सौ पुरुष - पचास - नहीं, ऐसे दस या पाँच धर्मनिष्ठ पुरुष किसी भी देश को बचा सकते हैं; किसी भी उद्देश्य की विजय में उनका पक्ष रख सकते हैं।

“मैं उनके लगभग अटूट जीवन की खुशी से भी बहुत प्रभावित हुआ; यह खुशी मुख्य रूप से, निस्संदेह, उस स्वास्थ्य और शक्ति के सही उपयोग से मिली थी जो ईश्वर ने उन्हें दी थी, लेकिन आंशिक रूप से उन गहरे और कड़वे दुखों से उनकी असाधारण मुक्ति के कारण भी थी जिन्हें अधिकांश मनुष्यों को सहना पड़ता है। उनकी पत्नी वैसी ही थीं जैसी वे चाहते थे; उनके बच्चे स्वस्थ और होनहार थे; उनका अपना स्वास्थ्य उत्तम था; उनके सभी कार्य सफल रहे; मृत्यु भी उनके लिए दयालु रही, क्योंकि उनके अंतिम क्षणों का दर्द चाहे कितना भी तीव्र क्यों न हो, वह क्षणिक ही था। ऐसा लगता है मानो ईश्वर का आशीर्वाद उनके साथ जन्म से मृत्यु तक रहा हो।

यह जानकर कृतज्ञता का भाव आता है कि किसी भी व्यक्ति को ऐसा जीवन जीने का अवसर मिला है।”

“पिछली अगस्त में जब मैं वेस्टमोर्लैंड में था, तो मैंने फॉक्स हाउ में एक शाम बिताई, जहाँ श्रीमती अर्नोल्ड और उनकी बेटियाँ अभी भी रहती हैं। जब मैं वहाँ के लिए गाड़ी चलाकर गया तो शाम ढल रही थी, और वहाँ पहुँचते-पहुँचते लगभग अंधेरा हो गया था; फिर भी मुझे वह जगह बेहद खूबसूरत लगी। घर फूलों और लताओं से आधा ढका हुआ घोंसले जैसा लग रहा था: और, भले ही शाम ढल रही थी, मैं महसूस कर सकता था कि घाटी और आसपास की पहाड़ियाँ कल्पना से परे खूबसूरत थीं।”

यदि मैं वही बात दोहराऊँ जो मैं पहले कह चुका हूँ, तो केवल अपने पाठकों को उस समय उनके जीवन की नीरसता से अवगत कराने के लिए। साल का वह अंधकारमय, उदास मौसम लंबी शामों को वापस ले आया, जिसने उन्हें बहुत परेशान किया: खासकर इसलिए क्योंकि उनकी कमजोर दृष्टि के कारण वे मोमबत्ती की रोशनी में बुनाई के अलावा कोई और काम करने में असमर्थ थीं। अपने पिता के साथ-साथ अपने लिए भी, उन्होंने मन की उदासी को दूर करने के लिए कुछ प्रयास करना आवश्यक समझा। इसलिए उन्होंने एम्बल्ससाइड में मिस मार्टिन्यू के साथ एक सप्ताह या दस दिन बिताने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। उन्होंने वेस्टमोर्लैंड जाते समय मैनचेस्टर आकर मुझसे मिलने का भी प्रस्ताव रखा। लेकिन, दुर्भाग्य से, मैं घर से बाहर था और उनका स्वागत करने में असमर्थ था। दक्षिण इंग्लैंड में जिन मित्रों के साथ मैं रह रहा था (जब उन्होंने मुझे उनके मैत्रीपूर्ण प्रस्ताव को स्वीकार न कर पाने का खेद व्यक्त करते हुए सुना और उनकी खराब सेहत और मनोदशा से अवगत थे, जिसके कारण उनके लिए कुछ बदलाव आवश्यक था), तो उन्होंने पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया कि वे उनके घर आकर मेरे साथ एक या दो सप्ताह बिताएँ। उन्होंने दिनांकित एक पत्र में मुझे इस निमंत्रण की पुष्टि की —

13 दिसंबर, 1850।

मेरी प्रिय श्रीमती गैस्केल, मिस — — की और आपकी दयालुता ऐसी है कि मैं अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए शब्दों का चयन नहीं कर पा रही हूँ। लेकिन मैं यह अच्छी तरह जानती हूँ कि यदि मुझे आपके साथ एक या दो सप्ताह के लिए दक्षिण के ऐसे शांत घर में और आपके द्वारा वर्णित दयालु लोगों के साथ रहने का अवसर मिले, तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। यह प्रस्ताव मुझे अत्यंत पसंद आया; यह

सबसे सुखद, सौम्य और मधुर प्रलोभन है; लेकिन, यह कितना भी आकर्षक क्यों न हो, इसके आग्रह को तर्क के बिना स्वीकार नहीं किया जा सकता, इसलिए मैं फिलहाल चुप रहना चाहती हूँ और मिस मार्टिन्यू के यहाँ जाकर घर लौटने तक इंतजार करना चाहती हूँ, ताकि मैं अच्छी तरह विचार कर सकूँ कि यह योजना उचित और सुखद है या नहीं।

"फिलहाल, इस विचार मात्र से ही मुझे अच्छा लगता है।"

10 दिसंबर को “वुथरिंग हाइट्स” का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। उन्होंने इसकी एक प्रति श्री डोबेल को निम्नलिखित पत्र के साथ भेजी: —

श्री डोबेल को।

यॉर्कशायर के कीघली के पास स्थित हॉवर्थ

8 दिसंबर, 1850।

मैं यह छोटी सी किताब ‘पैलेडियम’ में अपने आलोचक को भेंट करता हूँ, और उन्हें यह समझना चाहिए कि इसके साथ मेरी हार्दिक कृतज्ञता भी है; यह कृतज्ञता इसलिए नहीं कि उन्होंने मेरे बारे में कुछ कहा है, बल्कि इसलिए है कि उन्होंने मेरे प्रिय व्यक्ति के साथ न्याय किया है—शायद मुझसे भी अधिक प्रिय; और शायद उनके लिए कहे गए एक दयालु शब्द ने मेरे ऊपर बरसाई गई प्रशंसाओं से कहीं अधिक गहरी, कोमल कृतज्ञता की भावना जगाई है। जैसा कि आप जीवनी संबंधी विवरण पढ़ने पर समझेंगे, मेरी बहन स्वयं आपको धन्यवाद नहीं दे सकती; वह आपके और मेरे दायरे से बाहर जा चुकी है, और मानवीय निंदा और प्रशंसा अब उसके लिए कुछ भी मायने नहीं रखती। लेकिन मेरे लिए, उनकी खातिर, ये सब अब भी मायने रखते हैं; यह जानकर मुझे कई दिनों तक जीवनदान मिला कि उनकी मृत्यु के बावजूद, उनकी प्रतिभा को अंततः उचित सराहना मिली।

“प्रस्तावना पढ़ने के बाद, क्या ‘वुथरिंग हाइट्स’, ‘वाइल्डफेल हॉल’ आदि की रचना के संबंध में आपके मन में कोई संदेह शेष है? आपके अविश्वास ने मेरे साथ कुछ अन्याय किया है; इसने चरित्र के बारे में एक ऐसी सामान्य धारणा को साबित कर दिया है जिसे मैं अपना कहना पसंद नहीं करूंगी; लेकिन जब हम किसी लेखक का मूल्यांकन केवल उसकी रचनाओं के आधार पर करते हैं तो ये गलत धारणाएँ स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती हैं। निष्पक्षता से कहूँ तो, मुझे इस प्रशंसात्मक चित्रण के अतिशयोक्तिपूर्ण पक्ष से भी खुद को अलग करना होगा। मैं कोई ‘युवा पेंटेसिलिया

मेडिस इन मिलिबस' नहीं हूँ, बल्कि एक साधारण ग्रामीण पादरी की बेटी हूँ।"

मैं एक बार फिर पूरे दिल से आपका धन्यवाद करता हूं।

"सी. ब्रोंटे।"

अध्याय 9.

अपनी बहनों की किताब के पुनर्प्रकाशन के तुरंत बाद वह मिस मार्टिन्यू के पास गईं। प्रिय ई——, मैं अब तुम्हें लिख सकती हूँ, क्योंकि मैं घर से दूर हूँ और कम से कम अस्थायी रूप से, वातावरण और परिवेश में बदलाव से उस अवसाद के भारी बोझ से राहत महसूस कर रही हूँ, जिसने, मैं स्वीकार करती हूँ, लगभग तीन महीनों से मुझे अंदर ही अंदर जकड़ रखा था। मैं पिछली शरद ऋतु को कभी नहीं भूलूँगी! कुछ दिन और रातें बहुत कठिन थीं; लेकिन अब, जब मैंने तुम्हें यह बता दिया है, तो मुझे इस विषय पर और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। एकांत के प्रति मेरी घृणा चरम पर पहुँच गई थी; मेरी बहनों की यादें असहनीय रूप से व्याकुल थीं। अब मैं बेहतर हूँ। मैं एक सप्ताह के लिए मिस मार्टिन्यू के घर पर हूँ। उनका घर अंदर और बाहर दोनों तरफ से बहुत ही सुखद है; हर जगह अद्भुत स्वच्छता और आराम से सजाया गया है। उनके मेहमानों को पूरी स्वतंत्रता मिलती है; जो वह अपने लिए चाहती हैं, वही वह दूसरों को भी देती हैं। मैं अपने समय पर उठती हूँ, अकेले नाश्ता करती हूँ (वह पाँच बजे उठती हैं, ठंडे पानी से नहाती हैं, तारों भरी रात में टहलती हैं और सात बजे तक नाश्ता खत्म करके अपने काम पर पहुँच जाती हैं)। मैं सुबह ड्राइंग रूम में बिताती हूँ—वह अपने अध्ययन कक्ष में। दो बजे हम मिलते हैं— हम पाँच बजे तक, यानी उनके दोपहर के भोजन के समय तक, साथ काम करते हैं, बातें करते हैं और टहलते हैं। हम

शाम साथ बिताते हैं, जब वह धाराप्रवाह और भरपूर बातें करती हैं, और पूरी ईमानदारी से बोलती हैं। मैं दस बजे के कुछ देर बाद अपने कमरे में चला जाता हूँ, और वह बारह बजे तक चिट्ठियाँ लिखती रहती हैं। वह शक्ति और उत्साह में अदम्य और श्रम करने की क्षमता में अथक प्रतीत होती हैं। वह एक महान और अच्छी महिला हैं; बेशक उनमें कुछ विलक्षणताएँ हैं, लेकिन अभी तक मुझे उनमें से कोई भी ऐसी नहीं दिखी जिससे मुझे चिढ़ हो। वह कठोर और दयालु, अचानक बोलने वाली और स्नेही, उदार और निरंकुश हैं। मेरा मानना है कि उन्हें अपने निरंकुश स्वभाव का ज़रा भी एहसास नहीं है। जब मैं उन्हें इसके बारे में बताता हूँ, तो वह इस आरोप का ज़ोरदार खंडन करती हैं; तब मैं उन पर हँसता हूँ। मेरा मानना है कि वह लगभग एम्बलसाइड पर राज करती हैं। कुछ संभ्रांत लोग उन्हें नापसंद करते हैं, लेकिन निम्न वर्ग के लोग उनका बहुत सम्मान करते हैं। . . . मैंने सोचा कि घर जाने से पहले मैं आपके साथ दो-तीन दिन बिताना चाहूँगा, इसलिए, अगर आपको कोई असुविधा न हो, तो मैं आऊँगा (डी. (V.) सोमवार को आइए और गुरुवार तक रुकिए। . . . मुझे यहाँ आकर बहुत आनंद आया। मैंने बहुत से लोगों से मुलाकात की, और सभी बेहद दयालु थे; डॉ. अर्नोल्ड का परिवार तो विशेष रूप से दयालु था। मिस मार्टिन्यू मुझे बेहद पसंद आईं।

मिस ब्रोंटे ने अपनी सहेली से मिलने का जो प्रस्ताव यहाँ दिया गया है, वह किया, लेकिन वे केवल दो-तीन दिन ही वहाँ रहीं। फिर वे घर लौट आईं और तुरंत ही अपने पुराने दुश्मन, सिरदर्द से पीड़ित होने लगीं, जो उन्हें लगातार परेशान करता रहता था। यह स्थिति उनके लिए और भी कष्टदायक थी, क्योंकि उन्हें घर के कामों में सक्रिय रूप से हिस्सा लेना पड़ता था - एक नौकरानी बीमार बिस्तर पर थी और दूसरी, टैबी, अस्सी वर्ष से अधिक उम्र की थी।

एम्बल्ससाइड की इस यात्रा से मिस ब्रोंटे को बहुत लाभ हुआ और उन्हें सुखद यादों का भंडार और नए विषय मिले, जिन पर वे अपने एकांत जीवन में विचार कर सकती थीं। उनके पत्रों में मिस मार्टिन्यू के चरित्र और दयालुता के कई उल्लेख हैं।

“वह निःसंदेह बौद्धिक और शारीरिक दोनों ही अद्भुत गुणों से संपन्न महिला हैं; और यद्यपि मैं उनके कुछ विचारों से सहमत नहीं हूँ और कुछ मामलों में उन्हें त्रुटिपूर्ण मानता हूँ, फिर भी मैं उनका हार्दिक सम्मान करता हूँ। जिस प्रकार से वह उच्चतम मानसिक संस्कृति को नारीत्व के कर्तव्यों के पूर्ण निर्वहन के साथ जोड़ती हैं, वह मुझे

प्रशंसा से भर देता है; जबकि उनकी स्नेहपूर्ण दयालुता ने मुझे कृतज्ञता का पात्र बना दिया है।” “मुझे लगता है कि उनके अच्छे और नेक गुण उनकी कमियों से कहीं अधिक हैं। मेरी आदत है कि मैं व्यक्ति को उसकी प्रतिष्ठा से अलग, व्यवहार को सिद्धांत से स्वतंत्र, और स्वाभाविक स्वभाव को अर्जित विचारों से अलग देखता हूँ। हैरियट मार्टिन्यू का व्यक्तित्व, व्यवहार और चरित्र मुझे सच्चे स्नेह और सम्मान से प्रेरित करते हैं।” आप मुझसे पूछते हैं कि क्या मिस मार्टिन्यू ने मुझे सम्मोहन का अनुयायी बना दिया? शायद नहीं; फिर भी मैंने इसकी प्रभावकारिता के चमत्कारों के बारे में सुना था, और मुझे बताई गई हर बात पर अविश्वास करना मुश्किल था। मैंने स्वयं भी एक प्रयोग किया; और यद्यपि परिणाम पूरी तरह स्पष्ट नहीं था, यह अनुमान लगाया गया था कि समय के साथ मैं एक उत्कृष्ट विषय साबित होऊंगा। मुझे विश्वास है कि मिस मार्टिन्यू की आगामी कृति में सम्मोहन के प्रश्न पर बिना किसी संकोच के चर्चा की जाएगी; और मुझे इस बात का दुखद पूर्वाभास है कि अन्य विषयों को, जो अटकलों के लिए कम वैध आधार प्रदान करते हैं, किस तरह से निपटाया जाएगा।

आपके पिछले पत्र में डॉ. अर्नोल्ड के प्रति इतनी सच्ची और विवेकपूर्ण प्रशंसा झलकती है कि शायद आपको यह जानकर थोड़ी खुशी होगी कि मिस मार्टिन्यू के यहाँ अपनी हालिया यात्रा के दौरान, मैंने फॉक्स हाउ और उसके निवासियों को और अधिक करीब से देखा, और अपने समय के सबसे महान और श्रेष्ठ व्यक्तियों में से एक की विधवा और बच्चों में प्रतिदिन अत्यंत प्रशंसनीय और मनमोहक गुणों की प्रशंसा की। मेरी दयालु मेज़बान के बारे में मैं शब्दों में अतिशयोक्ति नहीं कर सकता। उनके सभी दार्शनिक, राजनीतिक या धार्मिक विचारों से सहमत हुए बिना, उनके सिद्धांतों को अपनाए बिना भी, मैं उनमें एक योग्यता और महानता, और उनके व्यवहार में एक निरंतरता, परोपकारिता और दृढ़ता पाता हूँ, जो सच्ची श्रद्धा और स्नेह को जीत लेती है। उनका मूल्यांकन केवल उनके लेखन से नहीं, बल्कि उनके स्वयं के कार्यों और जीवन से किया जाना चाहिए, जिससे अधिक अनुकरणीय या महान कुछ भी नहीं हो सकता। वह मुझे एम्बल्ससाइड की परोपकारी प्रतीत होती हैं, फिर भी अपने सक्रिय और उनकी परोपकारिता अथक है। उनके घर का संचालन प्रशंसनीय है: इतिहास लेखन से लेकर महिलाओं के सबसे शांत काम तक, वे जो भी करती हैं, उसे कुशलता से करती हैं। उनके शासन में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उपेक्षा बर्दाश्त नहीं की जाती, फिर भी वे न तो अत्यधिक सख्त हैं और न ही अत्यधिक अपेक्षाशील:

उनके नौकर और उनके गरीब पड़ोसी उनसे प्रेम और सम्मान दोनों रखते हैं।

"लेकिन मुझे इस गलती में नहीं पड़ना चाहिए कि मैं उसके बारे में ज़रूरत से ज़्यादा बात करूँ, सिर्फ़ इसलिए कि मैं उसकी बौद्धिक क्षमता और नैतिक गुणों को देखकर बहुत प्रभावित हूँ। उसमें कमियाँ हैं; लेकिन उसकी खूबियों के सामने वे मुझे बहुत मामूली लगती हैं।"

श्री ए — — के बारे में आपका विवरण मिस एम — — के विवरण से बिल्कुल मेल खाता है। उन्होंने भी कहा था कि उनकी बाहरी विशेषताएँ मौलिकता और शक्ति के बजाय शांत और सौम्य स्वभाव थीं। उन्होंने उन्हें प्राचीन यूनानी ऋषि और आधुनिक यूरोपीय वैज्ञानिक का मिश्रण बताया था। शायद यह मेरी मात्र विकृति थी कि मैंने यह सोचा कि उनके संगमरमर जैसे बाहरी रूप के नीचे सुस्त नसें और ठंडा, धीमी गति से धड़कता दिल छिपा है। लेकिन वे एक भौतिकवादी हैं: वे शांतिपूर्वक अमरता की हमारी आशा को नकारते हैं, और चुपचाप मनुष्य के भविष्य से स्वर्ग और आने वाले जीवन को मिटा देते हैं। इसीलिए उनके प्रति मेरे मन में कड़वाहट का भाव है।

"श्री ठाकरे के बारे में आपने जो कुछ भी कहा है, वह अत्यंत सजीव और उनके व्यक्तित्व का सटीक वर्णन है। उन्हें देखकर मेरे मन में दुख और क्रोध दोनों उत्पन्न होते हैं। उन्हें इतना कष्टदायी जीवन क्यों जीना चाहिए? उनकी व्यंग्यात्मक ज़ुबान उनके अच्छे समय की अच्छी भावनाओं को इतनी कुटिलता से क्यों नकार देती है?"

कुछ समय से, जब भी उनका स्वास्थ्य और मनोदशा ठीक होती थी, वे विलेट के लेखन में लगी रहती थीं; लेकिन वे अक्सर लिखने में असमर्थ रहती थीं, और अपनी इस असमर्थता से दुखी और क्रोधित दोनों थीं। फरवरी में, उन्होंने श्री स्मिथ को इस प्रकार लिखा: —

लंदन जाने के बारे में आपकी बातें कुछ अच्छी हैं; लेकिन ये शब्द स्वप्निल हैं, और सौभाग्य से मुझे इन्हें सुनने या इनका उत्तर देने की कोई बाध्यता नहीं है। लंदन और गर्मी अभी कई महीने दूर हैं: हमारे मैदान अभी बर्फ से ढके हुए हैं, और छोटी लाल छाती वाली चिड़ियाएँ हर सुबह खिड़की पर दानों के लिए आती हैं। तीन-चार महीने पहले से कोई योजना नहीं बनाई जा सकती। इसके अलावा, मैं लंदन जाने के योग्य नहीं हूँ; कोई भी बदलाव या ऐसे अवसर का हकदार कम नहीं होता। मैं मन ही मन सोचता हूँ, इसके विपरीत, मुझे जेल में डाल देना चाहिए, और मुझे अकेले कारावास में रोटी-पानी पर रखा जाना चाहिए - कॉर्नहिल से एक पत्र भी नहीं - जब तक मैं एक

किताब न लिख लूँ। बारह महीने तक इस तरह के व्यवहार से निश्चित रूप से दो में से एक बात होगी; या तो मैं उस समय के अंत में अपने हाथ में तीन खंडों की पांडुलिपि लेकर बाहर आऊँगा, या फिर मेरी बौद्धिक स्थिति ऐसी हो जाएगी कि मुझे उसके बाद साहित्यिक प्रयासों और अपेक्षाओं से हमेशा के लिए मुक्ति मिल जाएगी।

इसी बीच, मिस मार्टिन्यू के "पत्रों" आदि के प्रकाशन से वह विचलित और व्यथित हो गईं; ये पत्र उनके हृदय पर एक विशेष बल और भारीपन के साथ आ गिरे, जो स्नेहपूर्ण और गंभीर विश्वास के साथ भविष्य के जीवन की ओर देख रहा था, जहाँ उन लोगों से मुलाकात होगी जिन्हें "प्यार किया गया था और कुछ समय के लिए खो दिया गया था।"

11 फरवरी, 1851।

“मेरे प्रिय महोदय, क्या आपने मिस मार्टिन्यू और श्री एटकिंसन की नई कृति, ‘मनुष्य की प्रकृति और विकास पर पत्र’ पढ़ी है? यदि नहीं, तो इसे पढ़ना आपके लिए लाभदायक होगा।”

इस पुस्तक ने मुझ पर जो प्रभाव डाला है, उसके बारे में मैं अभी ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा। यह नास्तिकता और भौतिकवाद की पहली ऐसी व्याख्या है जो मैंने पढ़ी है; ईश्वर के अस्तित्व या भविष्य के जीवन में अविश्वास की पहली स्पष्ट घोषणा जो मैंने देखी है। ऐसी व्याख्या और घोषणा का मूल्यांकन करते समय, कोई भी उस सहज भय को पूरी तरह से दरकिनार करना चाहेगा जो वे जगाते हैं, और निष्पक्ष और संयमित मन से उनका विचार करेगा। मुझे ऐसा करना कठिन लगता है। सबसे अजीब बात यह है कि हमें इस निराशाजनक खालीपन पर खुशी मनाने के लिए कहा जाता है—इस कड़वे शोक को एक बड़े लाभ के रूप में स्वीकार करने के लिए—इस अकथनीय उजाड़ को सुखद स्वतंत्रता की स्थिति के रूप में स्वागत करने के लिए। अगर कोई चाहे तो कौन ऐसा कर सकता है? अगर कोई कर सकता है तो कौन ऐसा करेगा?

मैं सचमुच सत्य को खोजना और जानना चाहता हूँ; लेकिन यदि यही सत्य है, तो बेहतर है कि वह रहस्यों से खुद को सुरक्षित रखे और परदे से ढकी रहे। यदि यही सत्य है, तो जो भी पुरुष या स्त्री इसे देखेगा, वह अपने जन्म के दिन को कोसने के अलावा कुछ नहीं करेगा। मैंने कहा था कि मैं अपने विचारों पर ध्यान नहीं दूंगा; बल्कि मैं किसी और के विचार सुनना चाहता हूँ, किसी ऐसे व्यक्ति के विचार जिसकी

भावनाएँ उसके निर्णय को प्रभावित न करें। इसलिए, इस पुस्तक को निष्पक्ष भाव से पढ़ें और खुलकर अपने विचार व्यक्त करें। मेरा मतलब है, यदि आपके पास समय हो, अन्यथा नहीं।

फिर भी, आलोचकों द्वारा इस कृति के बारे में व्यक्त किए गए तिरस्कारपूर्ण लहजे को वह सहन नहीं कर सकीं; मेरे साथ उनके परिचय के दौरान लगभग किसी भी अन्य परिस्थिति की तुलना में इस बात ने उन्हें कहीं अधिक क्रोधित किया। यद्यपि उन्हें पुस्तक के प्रकाशन का बहुत अफसोस था, फिर भी वह यह नहीं समझ पा रही थीं कि इससे किसी को भी उस कार्य पर उपहास करने का अधिकार मिल गया है, जो निश्चित रूप से किसी सांसारिक मकसद से प्रेरित नहीं था, और जो उस व्यक्ति के आचरण में मात्र एक त्रुटि थी - जिसकी गंभीरता को उन्होंने स्वयं स्वीकार किया - जिसने अपने पूरे जीवन गहन चिंतन और नेक शब्दों के माध्यम से अपने समुदाय की सेवा करने का प्रयास किया था।

"मिस मार्टिन्यू और उनकी पुस्तक पर आपकी टिप्पणियाँ मुझे बहुत पसंद आईं, उनके लहजे और भाव दोनों से। मैंने उनकी भलाई के लिए एक-दो वाक्य लिख भी लिए हैं, क्योंकि मुझे पता है कि इससे उन्हें प्रसन्नता होगी; उन्हें सहानुभूति और प्रशंसा पसंद है (जैसे कि हर उस व्यक्ति को जो इसके योग्य है); और आलोचकों द्वारा उनके काम के बारे में व्यक्त किए गए कठोर, तिरस्कारपूर्ण लहजे के प्रति आपकी नापसंदगी से मैं पूरी तरह सहमत हूँ।"

इससे पहले कि मैं लेखक के साहित्यिक विचारों से महिला के घरेलू हितों की ओर लौटूं, मुझे यह अवश्य लिखना चाहिए कि उसने "द स्टोन्स ऑफ वेनिस" के बारे में क्या महसूस किया और क्या सोचा।

"'द स्टोन्स ऑफ वेनिस' अत्यंत भव्यता से स्थापित और तराशी हुई प्रतीत होती है। विशाल संगमरमर की खदान कितनी शानदार ढंग से प्रकट होती है! श्री रस्किन मुझे इस युग के कुछ गिने-चुने सच्चे लेखकों में से एक लगते हैं, जो पुस्तक-निर्माताओं से भिन्न हैं। उनकी गंभीरता कुछ अंशों में मुझे आनंदित भी करती है; क्योंकि यह सोचकर हंसी आती है कि उपयोगितावादी कला के प्रति उनके गहरे, गंभीर (और जैसा कि वे सोचेंगे) कट्टर सम्मान पर कितना क्रोधित और परेशान होंगे। वह शुद्ध और गंभीर मन जिसका आपने उनमें उल्लेख किया है, उनकी हर पंक्ति में झलकता है। वे अमूर्त और आदर्श के एक समर्पित पुजारी की तरह लिखते हैं।"

मैं अपने साथ 'द स्टोन्स ऑफ वेनिस' लाऊंगा; संगमरमर और ग्रेनाइट की सभी नींवें, साथ ही वह विशाल खदान जहाँ से उन्हें तराशा गया था; और इसके अलावा, कुछ चुनिंदा लेख और कथन - जो जॉन रस्किन, एस्क्वायर की निजी संपत्ति हैं।

जैसे-जैसे वसंत का मौसम करीब आता गया, उदासी की वह लहर फिर से उसे जकड़ने लगी और "दिन-रात के बुरे सपने" की तरह उसे कुचलने लगी। उसे डर लगने लगा कि कहीं वह शरद ऋतु की तरह फिर से उदास न हो जाए; और इससे बचने के लिए, उसने अपनी पुरानी दोस्त और सहपाठी को मार्च में कुछ हफ्तों के लिए अपने साथ रहने के लिए राजी कर लिया। उसे इस संगति से बहुत लाभ हुआ - एक तो सुखद संगति से और दूसरा उसकी मेहमाननवाज़ी और आराम का ख्याल रखने की ज़रूरत से पैदा हुए आत्म-संयम से। इस अवसर पर, मिस ब्रोंटे ने कहा, "घर से भागने की आदत डालना ठीक नहीं है, और इस तरह अस्थायी रूप से किसी उत्पीड़न से बचना चाहिए, बजाय इसके कि उसका सामना किया जाए, उससे संघर्ष किया जाए और उस पर विजय प्राप्त की जाए या उसके द्वारा पराजित हो जाया जाए।"

अब मैं उनके एक पत्र का अंश उद्धृत करूँगा, जिसे जानबूझकर समय के संदर्भ में अलग रखा गया है। मैं इसे इसलिए उद्धृत कर रहा हूँ क्योंकि यह उनके द्वारा प्राप्त विवाह के तीसरे प्रस्ताव से संबंधित है, और क्योंकि मुझे लगता है कि उनके उपन्यासों में प्रेम की भावनाओं को जिस असाधारण शक्ति से उन्होंने चित्रित किया है, उससे कुछ लोग यह अनुमान लगा लेते हैं कि वे स्वयं भी प्रेम के प्रति आसानी से आकर्षित हो जाती थीं।

क्या मैं कभी उसके लिए पर्याप्त स्नेह रख पाऊँगी, उसे पति के रूप में स्वीकार कर पाऊँगी? मित्रता, कृतज्ञता, सम्मान - ये सब मेरे मन में हैं; पर जब भी वह मेरे पास आता, और उसकी निगाहें मुझ पर टिकी होतीं, मेरी नसें जम जातीं। अब जब वह दूर है, तो मैं उसके प्रति कहीं अधिक कोमल महसूस करती हूँ; बस उसके पास आने पर ही मैं कठोर हो जाती हूँ, आशंका और क्रोध के एक अजीब मिश्रण से जकड़ जाती हूँ, जिसे केवल उसके चले जाने और उसके व्यवहार में पूर्ण बदलाव के कारण ही शांत किया जा सकता है। मैं घमंडी नहीं बनना चाहती थी, न ही मेरा ऐसा कोई इरादा था, लेकिन मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह बिल्कुल सच है कि हम सब पर एक सर्वशक्तिमान का शासन है; कि उसके हाथों में हमारी इच्छाशक्ति कुम्हार के हाथों में मिट्टी के समान है।

मैंने अब तक उसे मिले सभी विवाह प्रस्तावों का उल्लेख कर दिया है, जब तक कि उसने अंततः वह प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर लिया। इस पत्र में जिस सज्जन का जिक्र है, वह उसके प्रति इतना आदर रखते थे कि जीवन भर उसके मित्र बने रहे; यह उनके और उसके दोनों के लिए गर्व की बात है।

उनकी सहेली ई—— के जाने से पहले, श्री ब्रोंटे को सर्दी लग गई और कुछ हफ्तों तक उनकी तबीयत काफी खराब रही, उन्हें ब्रोंकाइटिस हो गया था। उनका मनोबल भी काफी गिर गया था; और उनकी बेटी ने उन्हें खुश करने के लिए हर संभव प्रयास किया।

जब उनकी सेहत में सुधार हुआ और वे पहले जैसी तंदुरुस्ती पा गए, तो उन्होंने कुछ समय पहले मिले लंदन के निमंत्रण को स्वीकार करने का निश्चय किया। जैसा कि सभी को याद है, यह वर्ष 1851, महान प्रदर्शनी का समय था; लेकिन उस आकर्षण के बावजूद, उनका इरादा वहाँ लंबे समय तक रुकने का नहीं था; और हमेशा की तरह, उन्होंने अपने दोस्तों के साथ, उनके द्वारा दी गई मेहमाननवाज़ी को स्वीकार करने से पहले, यह समझौता किया कि उनके घर में उनका प्रवास हमेशा की तरह शांत रहेगा, क्योंकि किसी और तरह से रहना उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से रास नहीं आता था। बातचीत में किसी बात पर उत्तेजित होने के अलावा वे कभी उत्तेजित नहीं दिखती थीं; लेकिन वे अक्सर छोटी-छोटी बातों पर भी उत्तेजित हो जाती थीं, और इसके बाद उनकी प्रतिक्रिया से थकावट होना तय था। ऐसी परिस्थितियों में, वे हमेशा बहुत दुबली-पतली और कमजोर हो जाती थीं; फिर भी उनका कहना था कि यह बदलाव हमेशा उनके लिए अच्छा ही साबित होता था।

उस खुशनुमा मौसम के उल्लासपूर्ण समय में, इस यात्रा के लिए उनके पहनावे की तैयारी पूरी तरह से उनके नारीवादी स्वाद के अनुरूप थी; वे शालीन, सुंदर और साफ-सुथरे परिधानों के प्रति अपने प्रेम को संतुष्ट करने के लिए चुपचाप उत्सुक थीं, और अपने पहनावे के अनुरूप होने की परवाह किए बिना, अपने समग्र रूप और अपनी आर्थिक स्थिति दोनों के साथ हर चयन में सामंजस्य का ध्यान रखती थीं।

वैसे, मैं आपसे पूछना चाहती थी कि जब आप लीड्स जाएँगी तो मेरे लिए एक छोटा सा काम कर दें, लेकिन मुझे डर है कि आप काम में बहुत व्यस्त होंगी। बात बस इतनी सी है: अगर आप किसी ऐसी दुकान में हों जहाँ काले और सफेद रंग के लेस वाले चोगे बिकते हों, तो मैं उनसे उनकी कीमत पूछ लूँ। मुझे लगता है कि वे शायद ही

हॉवर्थ में कुछ चोगे देखने के लिए भेजना चाहेंगे; दरअसल, अगर उनकी कीमत बहुत ज्यादा होगी तो भेजना बेकार होगा, लेकिन अगर उनकी कीमत वाजिब हो और वे भेज दें तो मैं उन्हें देखना चाहूँगी; और साथ ही कुछ छोटे साइज की कमीजें भी (महिलाओं के पूरे साइज की कमीजें मुझे फिट नहीं आतीं), जो रोज़मर्रा के लिए साधारण हों और खास मौकों के लिए अच्छी क्वालिटी की हों। ऐसा लगता है कि जब मैं संपन्न हो गई थी तब भी मुझे चैन नहीं मिला। मैंने आपको बताया था कि मैंने काले लेस का एक लबादा लिया था, लेकिन जब मैंने उसे काले साटन के कपड़े के साथ पहनकर देखा, जिसके साथ मैं उसे पहनना चाहती थी, तो मुझे लगा कि उसका असर बिल्कुल भी अच्छा नहीं था; लेस की सुंदरता गायब हो गई थी और वह कुछ भूरा और जंग लगा हुआ सा लग रहा था; मैंने श्रीमान — — को पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया कि वे इसे उसी कीमत के सफेद लबादे से बदल दें; वे अत्यंत विनम्र थे और उन्होंने लंदन से एक लबादा मंगवाया, जो मुझे आज सुबह मिल गया है। कीमत कम है, केवल 1 पाउंड 14 शिलिंग; यह सुंदर, साफ-सुथरा और हल्का है, काले रंग पर अच्छा लगता है; और इस मामले पर विचार करने के बाद, मैं इस दार्शनिक निष्कर्ष पर पहुंची कि मेरे जैसे साधन संपन्न व्यक्ति के लिए सस्ती चीज पहनना कोई शर्म की बात नहीं है; इसलिए मुझे लगता है कि मैं इसे ले लूंगी, और अगर आप इसे कभी देखें और इसे 'घटिया' कहें तो और भी बुरा होगा।

क्या आपको पता है कि मैं पिछले बुधवार को ठीक उसी दिन लीड्स में थी, जिस दिन आप थीं? मैंने सोचा था कि आपको बता दूँ कि मैं कहाँ जा रही हूँ, और टोपी वगैरह खरीदने में आपकी मदद और साथ लूँ, लेकिन फिर मुझे लगा कि यह तो बस आपका स्वार्थपूर्ण इस्तेमाल होगा, इसलिए मैंने अकेले ही इस मामले को सुलझाने का फैसला किया। मैं हर्स्ट एंड हॉल की दुकान पर टोपी लेने गई, और वहाँ सभी शानदार चीज़ों के बीच एक टोपी ली जो देखने में गंभीर और शांत लग रही थी; लेकिन अब गुलाबी अस्तर के साथ वह बहुत ज़्यादा भड़कीली लग रही है। मैंने कुछ सुंदर हल्के मीठे रंगों के रेशम देखे, लेकिन पाँच शिलिंग प्रति गज की दर से खरीदने की हिम्मत और पैसे नहीं थे, इसलिए मैंने आखिर में तीन शिलिंग में काला रेशम खरीदा। मुझे इसका थोड़ा अफसोस है, क्योंकि पापा कहते हैं कि अगर उन्हें पता होता तो वे मुझे एक सॉवरेन उधार दे देते। मुझे लगता है, अगर आप वहाँ होतीं, तो आप मुझे कर्ज में डूबने पर मजबूर कर देतीं। ... मैं लंदन जाने से पहले बी—— नहीं आ सकती, जैसे

मैं उड़ नहीं सकती। मेरे पास बहुत सारा सिलाई का काम है। मेरे जाने से पहले घर के काम-काज भी निपटा लें, क्योंकि मेरी अनुपस्थिति में सफाई आदि का काम वे ही करेंगे। इसके अलावा, मुझे बहुत तेज सिरदर्द हो रहा है, उम्मीद है हवा चलने से ठीक हो जाएगा; लेकिन इस बीच, पेट से शुरू होने के कारण, मैं बहुत दुबली-पतली और पीली पड़ गई हूँ; न तो आप और न ही कोई और मुझे मोटा कर पाएगा या मेरी हालत ठीक कर पाएगा; किस्मत में कुछ और ही लिखा है। कोई बात नहीं। अपने गुस्से को शांत रखें; फिर भी मुझे आपको देखकर खुशी हुई। ऐसा उत्साह सेहतमंद लगता है। जल्दी में अलविदा।

"तुम्हारी बेचारी माँ, टैबी, मार्था और पापा जैसी ही हैं; ये सब सोचती हैं कि मैं किसी रहस्यमयी प्रक्रिया से लंदन में शादी कर लूँगी या शादी के बंधन में बंध जाऊँगी। मन ही मन मैं कितना मुस्कुराती हूँ! ये विचार कितना बेबुनियाद और असंभव है! पापा ने कल मुझसे गंभीरता से कहा था कि अगर मैंने शादी कर ली और उन्हें छोड़ दिया तो उन्हें घर-गृहस्थी छोड़ देनी चाहिए और किराए के मकान में रहने चले जाना चाहिए!"

मैं निम्नलिखित अंश को इसलिए प्रतिलिपि में लिख रहा हूँ ताकि ग्रीष्म ऋतु के अंत में हीथ से ढके दलदली मैदानों की उपस्थिति का वर्णन करने वाले कुछ शब्द मिल सकें।

सिडनी डोबेल, एस्क्वायर को।

24 मई, 1851।

"मेरे प्रिय महोदय, मैं श्रीमती डोबेल को ऑटोग्राफ भेजने में जल्दी कर रहा हूँ। 'एल्बम' शब्द ने मुझे डरा दिया था। मुझे लगा कि वह चाहती हैं कि मैं इसके लिए विशेष रूप से एक सॉनेट लिखूँ, जो मैं नहीं कर सकता था।"

"स्विट्जरलैंड की यात्रा के संबंध में आपका प्रस्ताव अत्यंत दयालु है; यह मुझे एक प्रबल प्रलोभन की तरह आकर्षित करता है, लेकिन असंभव की कठोर वास्तविकता मुझे रोक रही है। नहीं! मैं इस गर्मी में स्विट्जरलैंड नहीं जा सकता।"

"'इलेक्ट्कि' के संपादक ने उस सबसे प्रभावशाली और चित्रात्मक अंश को क्यों मिटा दिया? वह उसकी सुंदरता से अनभिज्ञ तो नहीं हो सकता था; शायद उसने उसे अपवित्र समझा हो। बेचारा!"

"आप जिस बाग-बगीचों वाले क्षेत्र का वर्णन कर रहे हैं, उसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं है। मैंने ऐसा क्षेत्र कभी नहीं देखा। हमारी पहाड़ियाँ तो गर्मियों के आगमन

का संकेत केवल छोटे-छोटे खोखले स्थानों में उगने वाली नई फर्न और काई से हरी-भरी होकर देती हैं। उनका खिलना शरद ऋतु के लिए आरक्षित होता है; तब वे एक प्रकार की गहरी चमक से जगमगाती हैं, जो निस्संदेह बगीचे के फूलों की लाली से भिन्न होती है। अगले महीने के अंत में, मैं लंदन जाने की उम्मीद कर रहा हूँ, एक संक्षिप्त और शांतिपूर्ण मुलाकात के लिए। मुझे डर है कि जब मैं वहाँ रहूँगा, तब संयोगवश आप वहाँ नहीं होंगी; अन्यथा, यदि आप मुझसे मिलने आतीं तो मुझे कितनी खुशी होती। श्रीमती डोबेल को सादर प्रणाम, — विश्वास करें, आपका सच्चा,

सी. ब्रोंटे।"

उनका अगला पत्र लंदन से लिखा गया है।

2 जून।

"मैं बुधवार को यहाँ आ गया, मुझे उम्मीद से एक दिन पहले ही बुला लिया गया था, ताकि मैं थैकरे के दूसरे व्याख्यान में समय पर पहुँच सकूँ, जो गुरुवार दोपहर को दिया गया था। जैसा कि आप समझ सकते हैं, यह मेरे लिए एक शानदार अवसर था, और मुझे इसे न चूकने की बहुत खुशी हुई। यह व्याख्यान विलिस के कमरों में दिया गया था, जहाँ अल्मैक्स बॉल आयोजित होते हैं - एक भव्य, चित्रित और सोने से सजा हुआ हॉल जिसमें बेंचों के लिए लंबे सोफे लगे थे। कहा जाता था कि श्रोता लंदन के समाज के उच्च वर्ग के लोग थे, और ऐसा ही लग रहा था। मुझे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी कि महान व्याख्याता मुझे पहचानेंगे या इन परिस्थितियों में मुझ पर ध्यान देंगे, जबकि उनके सामने प्रशंसा करने वाली डचेस और काउंटेस कतारों में बैठी थीं; लेकिन जैसे ही मैं अंदर आया, उन्होंने मुझसे मुलाकात की - हाथ मिलाया - मुझे अपनी माँ के पास ले गए, जिनसे मैं पहले कभी नहीं मिला था, और मेरा परिचय कराया। वह एक सुंदर, आकर्षक, युवा दिखने वाली बुजुर्ग महिला हैं; बहुत ही दयालु थीं, और अगले दिन अपनी एक पोती के साथ मिलने आईं।"

"थैकरे ने भी अलग से फोन किया। मेरी उनसे काफी देर तक बातचीत हुई, और मुझे लगता है कि अब वे मुझे पहले से थोड़ा बेहतर जानते हैं: लेकिन इस बारे में मैं अभी पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो सकता; वे एक महान और विलक्षण व्यक्ति हैं। उनके व्याख्यानों के लिए काफी दीवानगी है। वे एक प्रकार के निबंध होते हैं, जिनमें उनकी अपनी अनूठी मौलिकता और शक्ति झलकती है, और जिन्हें वे एक परिष्कृत शैली और सहजता से प्रस्तुत करते हैं, जिसे महसूस किया जा सकता है, लेकिन शब्दों

में बयान नहीं किया जा सकता। व्याख्यान शुरू होने से ठीक पहले, कोई मेरे पीछे आया, झुककर बोला, 'यॉर्कशायर का निवासी होने के नाते, मुझे अपना परिचय देने की अनुमति दें।' मैं मुड़ा - एक अजीब सा, बदसूरत सा चेहरा देखा, जिसने मुझे आधे मिनट के लिए स्तब्ध कर दिया, और फिर मैंने कहा, 'आप लॉर्ड कार्लिसल हैं।' उन्होंने सिर हिलाया और मुस्कुराए; उन्होंने कुछ मिनट तक बहुत ही सुखद और विनम्रता से बात की।

उसके बाद एक और आदमी आया जिसने वही बहाना बनाया कि वह यॉर्कशायर का रहने वाला है, और पता चला कि वह श्री मोनकटन मिल्नेस थे। फिर डॉ. फोर्ब्स आए, जिनसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। शुक्रवार को मैं क्रिस्टल पैलेस गया; यह एक अद्भुत, रोमांचक और विस्मयकारी दृश्य है - एक शानदार महल और एक विशाल बाज़ार का मिश्रण, लेकिन यह मुझे कुछ खास पसंद नहीं आया; मुझे उनका व्याख्यान ज़्यादा अच्छा लगा। शनिवार को मैंने समरसेट हाउस में प्रदर्शनी देखी; लगभग आधा दर्जन चित्र अच्छे और दिलचस्प थे, बाकी का कोई खास महत्व नहीं था। रविवार - कल - एक यादगार दिन था; दिन भर मैं बहुत खुश रहा, बिना थके या ज़्यादा उत्साहित हुए। दोपहर में मैं महान प्रोटेस्टेंट फ्रांसीसी उपदेशक डी'ऑबिग्ने का प्रवचन सुनने गया; यह सुखद था - आधा मीठा, आधा उदास - और फ्रांसीसी भाषा को एक बार फिर सुनना अजीब तरह से प्रेरणादायक था। स्वास्थ्य के लिहाज़ से, मैं अब तक काफी ठीक हूँ, यह देखते हुए कि मैं यहाँ बिल्कुल भी स्वस्थ नहीं आया था।

वह महिला, जो मिस ब्रोंटे के साथ थैकरे के व्याख्यान में गई थीं, बताती हैं कि अपनी-अपनी जगह पर बैठने के कुछ ही समय बाद, उन्होंने देखा कि थैकरे अपने कई मित्रों को उनकी सहेली की ओर इशारा कर रहे थे, लेकिन उन्हें उम्मीद थी कि मिस ब्रोंटे को इसका पता नहीं चलेगा। हालांकि, कुछ समय बाद, जब कई लोगों ने मुड़कर देखा और "जेन आयर" की लेखिका को देखने के लिए कई गिलास उठाए, तो मिस ब्रोंटे ने कहा, "मुझे लगता है कि श्री थैकरे मेरे साथ कोई चाल चल रहे हैं;" लेकिन वह जल्द ही व्याख्यान में इतनी मग्न हो गईं कि उन्हें अपने ऊपर दिए जा रहे ध्यान का एहसास ही नहीं हुआ, सिवाय तब जब लॉर्ड कार्लिस्ले और श्री मोनक्टन मिल्नेस ने सीधे तौर पर उन पर ध्यान दिया। व्याख्यान समाप्त होने पर, श्री थैकरे मंच से नीचे उतरे और उनकी ओर बढ़ते हुए उनसे उनकी राय पूछी। उन्होंने कुछ दिनों बाद मुझसे इस बारे में बात की, और लगभग वही टिप्पणियाँ जोड़ीं जो मैंने बाद में 'विलेट' में

पढ़ीं, जहाँ एम. पॉल इमैनुएल द्वारा इसी तरह की घटना का वर्णन है।

"जब हमारा दल हॉल से निकला, तो वह प्रवेश द्वार पर खड़ा था; उसने मुझे देखा और पहचान लिया, और अपनी टोपी उठाई; जाते हुए उसने हाथ बढ़ाया और पूछा, 'क्या कहते हो?' — यह सवाल उसके स्वभाव का ही था, और उसकी जीत के इस पल में भी मुझे उसकी उस जिज्ञासु बेचैनी, उस आत्म-नियंत्रण की कमी की याद दिला रहा था, जिसे मैं वांछनीय मानता था, और जो उसकी कमियों में से एक थी। उसे उस समय यह पूछने की परवाह नहीं करनी चाहिए थी कि मैं क्या सोचता हूँ, या कोई और क्या सोचता है; लेकिन उसे परवाह थी, और वह इतना सहज था कि छिपा नहीं सका, इतना आवेगी था कि अपनी इच्छा को दबा नहीं सका। खैर! अगर मैं उसकी अति-उत्साह की निंदा करूँ, तो मुझे उसकी भोलापन पसंद आया। मैं उसकी प्रशंसा करना चाहता था; मेरे दिल में प्रशंसा की कोई कमी नहीं थी; लेकिन अफसोस, मेरे होठों पर शब्द नहीं थे। सही समय पर किसके पास शब्द होते हैं? मैंने कुछ अटपटे भाव व्यक्त किए; लेकिन वास्तव में मुझे खुशी हुई जब अन्य लोगों ने भरपूर बधाई देकर मेरी कमी को पूरा कर दिया।"

जब वे कमरे से निकलने की तैयारी कर रही थीं, तो उनकी सहेली ने बड़े संकट से देखा कि कई दर्शक गलियारे के दोनों ओर दो कतारों में खड़े हो रहे थे, जिस गलियारे से होकर उन्हें दरवाजे तक पहुँचना था। यह जानते हुए कि किसी भी देरी से स्थिति और भी कठिन हो जाएगी, उनकी सहेली ने मिस ब्रोंटे का हाथ थाम लिया और वे उत्सुक और प्रशंसा से भरे चेहरों की कतार से आगे बढ़ गईं। समाज के उच्च वर्ग के बीच से गुजरते समय, मिस ब्रोंटे का हाथ इतनी बुरी तरह कांप रहा था कि उनकी सहेली को डर था कि कहीं वह बेहोश न हो जाएं और आगे न बढ़ पाएं; और उन्होंने सहानुभूति जताने या स्पर्श या शब्दों से उन्हें हिम्मत देने की हिम्मत नहीं की, कहीं ऐसा न हो कि इससे वही संकट आ जाए जिसका उन्हें डर था।

निःसंदेह, जिज्ञासा का ऐसा विचारहीन प्रदर्शन सच्ची शिष्टता पर धब्बा है! लंदन की उनकी इस सबसे लंबी यात्रा का शेष विवरण उन्हीं के शब्दों में दिया जाएगा।

आज सुबह जब मैं आपको पत्र लिखने बैठी हूँ, तो मेरी हालत बेहद उदास है; कल और परसों से मेरा सिरदर्द लगातार बढ़ता जा रहा था, जो अंत में बहुत तेज और असहनीय हो गया, और मुझे बहुत उल्टी भी हुई। आज सुबह मैं बहुत कमजोर और सुस्त महसूस कर रही हूँ। मुझे उम्मीद थी कि हॉवर्थ में मैं अपने सिरदर्द को पीछे छोड़

आऊँगी; लेकिन लगता है मैं उन्हें अपने साथ ही लेकर आई हूँ, और जब से मैं आई हूँ, वे मेरे रास्ते में बाधा बने हुए हैं। ... पिछली बार पत्र लिखने के बाद से मैंने कई ऐसी चीजें देखी हैं जिनका वर्णन करना उचित है; उनमें से एक महान फ्रांसीसी अभिनेत्री राहेल भी हैं। लेकिन आज मेरे पास लिखने के लिए कोई ठोस विषय नहीं है। मैं बस आपको दिल से अलविदा कह सकती हूँ।

"मैं यह दावा नहीं कर सकता कि इस बार लंदन मेरे लिए अनुकूल रहा; लगातार सिरदर्द, बीमारी और उदासी ने कई सुखद पलों को बर्बाद कर दिया है। कभी-कभी मुझे यह बहुत कठिन लगा है और भाग्य पर गुस्सा करने का मन हुआ है, जो मुझे साल के ग्यारह महीने अपेक्षाकृत मौन और एकांत में रहने के लिए मजबूर करता है, और बारहवें महीने में, सामाजिक आनंद प्रदान करते हुए, उस ऊर्जा और प्रसन्नता को छीन लेता है जो इसका लाभ उठाने के लिए आवश्यक है। लेकिन परिस्थितियाँ हमारे लिए निर्धारित हैं, और हमें उन्हें स्वीकार करना ही होगा।"

आपके पत्र का उत्तर कल ही दे दिया जाता, लेकिन मैं डाक के समय से पहले ही निकल गया था और पूरे दिन बाहर ही रहा। लोग बहुत दयालु हैं, और शायद बाद में मुझे जो कुछ मैंने देखा है, उस पर गर्व हो, लेकिन उस समय अक्सर थोड़ा कष्ट होता है। गुरुवार को, मार्क्विस ऑफ वेस्टमिंस्टर ने मुझे एक बड़ी पार्टी में आमंत्रित किया, जिसमें मुझे श्रीमती डी — — के साथ जाना था, जो एक सुंदर और, मुझे लगता है, दयालु महिला भी थीं; लेकिन मैंने दृढ़ता से मना कर दिया। शुक्रवार को मैंने — — के यहाँ भोजन किया और श्रीमती डी — — और श्री मोनकटन मिल्नेस से मिला। शनिवार को मैं राहेल को सुनने और देखने गया; एक अद्भुत दृश्य — भयानक, मानो धरती आपके पैरों के नीचे से फट गई हो और नरक की एक झलक दिखाई दे रही हो। मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा। उसने मुझे हड्डियों तक कंपा दिया; उसमें किसी शैतान ने साक्षात घर बना लिया है। वह एक औरत नहीं है; वह एक साँप है; वह — — है। रविवार को मैं स्पेनिश राजदूत के चैपल गया, जहाँ कार्डिनल वाइजमैन, अपने आर्कबिशप के वस्त्र और मुकुट पहने हुए, एक पुष्टिकरण समारोह आयोजित किया गया। पूरा दृश्य नाटकीय और अधार्मिक था। कल (सोमवार) मुझे सुबह दस बजे श्री रोजर्स, जो एक प्रतिष्ठित कवि हैं, के साथ नाश्ते के लिए बुलाया गया। श्रीमती डी —— और लॉर्ड ग्लेनेल भी वहाँ थे; उनके अलावा कोई और नहीं था। यह निश्चित रूप से एक बहुत ही शांत, परिष्कृत और बौद्धिक अनुभव साबित हुआ। नाश्ते के बाद, सर

डेविड ब्रूस्टर हमें क्रिस्टल पैलेस ले जाने आए। मुझे इसका डर था, क्योंकि सर डेविड विज्ञान के गहन जानकार हैं, और मुझे डर था कि उनके द्वारा तंत्र-यंत्र आदि की व्याख्या को समझना असंभव होगा; वास्तव में, मुझे मुश्किल से ही पता था कि उनसे प्रश्न कैसे पूछूँ। मुझे बिना किसी प्रश्न के सारी परेशानी से बचा लिया गया, उन्होंने अत्यंत विनम्र और सरल तरीके से जानकारी दी। प्रदर्शनी में दो घंटे बिताने के बाद, जहाँ, जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, मैं बहुत थक गया था, हमें लॉर्ड वेस्टमिंस्टर के यहाँ जाना पड़ा, और उनकी शानदार गैलरी में चित्रों के संग्रह को देखने में दो घंटे और बिताने पड़े।

वह एक अन्य मित्र को लिखती है: —

मैंने शायद आपको बताया होगा कि मैंने इस गर्मी में एक महीना लंदन में बिताया है। जब आप आएँगे, तो आप इस विषय पर जो चाहें प्रश्न पूछ सकते हैं, और मैं अपनी हकलाने की क्षमता के अनुसार उनका उत्तर देने का प्रयास करूँगा। 'क्रिस्टल पैलेस' के विषय पर मुझसे ज़्यादा सवाल न करें। मैं वहाँ पाँच बार गया, और निश्चित रूप से कुछ रोचक चीज़ें देखीं, और वहाँ का नज़ारा काफ़ी आकर्षक और विस्मयकारी है; लेकिन मैं कभी भी उस विषय पर भावुक नहीं हो पाया, और हर बार वहाँ जाना मेरी अपनी मर्ज़ी से नहीं, बल्कि ज़बरदस्ती किया गया था। वह एक अत्यधिक भीड़भाड़ वाला स्थान है; और अंततः, उसके चमत्कार केवल आँखों को ही आकर्षित करते हैं, और शायद ही कभी दिल या दिमाग को छूते हैं। मैं इस अंतिम कथन का अपवाद उन लोगों के पक्ष में मानता हूँ जिनके पास वैज्ञानिक ज्ञान का व्यापक भंडार है। एक बार मैं सर डेविड ब्रूस्टर के साथ गया था, और मैंने पाया कि वे वस्तुओं को मेरी नज़र से अलग नज़रिए से देखते हैं।

मिस ब्रोंटे मैनचेस्टर होते हुए लंदन से लौटीं और जून के अंत में दो दिनों के लिए हमसे मिलने आईं। मौसम इतना भीषण गर्म था और वे स्वयं लंदन में घूमने-फिरने से इतनी थकी हुई थीं कि हमने खिड़कियाँ खोलकर घर के अंदर बैठकर बातें करने के अलावा कुछ नहीं किया। उन्होंने टैबी के लिए एक उपहार लाने का पूरा प्रयास किया। यह एक शॉल या कहें तो एक बड़ा रुमाल था, जिसे वह पुराने जमाने के देहाती तरीके से अपने गले और कंधों पर पिन कर सकती थीं। मिस ब्रोंटे ने बड़ी मेहनत से ऐसा शॉल ढूंढा जो उन्हें लगा कि उस बुढ़िया को पसंद आएगा। घर पहुँचने पर उन्होंने लंदन में अपने साथ रह रही सहेली को निम्नलिखित पत्र लिखा: —

हॉवर्थ, 1 जुलाई, 1851।

मेरी प्रिय श्रीमती स्मिथ, — मैं एक बार फिर घर पर हूँ, जहाँ मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि मेरे पिताजी बिल्कुल स्वस्थ हैं। मैनचेस्टर की यात्रा थोड़ी गर्म और धूल भरी थी, लेकिन कुल मिलाकर सुखद रही। जब मैं गाड़ी में चढ़ा, तो उसमें बैठे दो हट्टे-कट्टे सज्जन रग्बी में उतर गए, और बाकी रास्ते में दो अन्य महिलाओं और मैं अकेले ही गाड़ी में रहे। श्रीमती गैस्केल से मिलना यात्रा में एक सुखद विराम था। हॉवर्थ पार्सनेज इससे बिल्कुल अलग है, फिर भी इस सुहावने गर्मी के मौसम में हॉवर्थ पार्सनेज भी उदास नहीं लग रहा है; यह कुछ हद तक शांत है, लेकिन खिड़कियाँ खुली होने पर मैं बगीचे के कुछ काँटेदार पेड़ों पर एक-दो पक्षियों को गाते हुए सुन सकता हूँ। मेरे पिताजी और नौकरों को लगता है कि मैं घर पर रहने के समय से बेहतर दिख रहा हूँ, और निश्चित रूप से मैं भी इस बदलाव से बेहतर महसूस कर रहा हूँ। आप अपने बेटे से इतनी मिलती-जुलती हैं कि मेरे लिए अपनी यात्रा के दौरान आपकी दयालुता के बारे में ज्यादा कुछ कहना उचित नहीं होगा। हालाँकि, (कैप्टन कटल की तरह) इन बातों का उल्लेख किए बिना रहा नहीं जा सकता। पापा कहते हैं कि मुझे उनकी ओर से आपको धन्यवाद देना है, और आपको उनकी ओर से भेंट करना है। मैं आदरपूर्वक ऐसा ही करता हूँ। आपके सभी परिचितों को हार्दिक शुभकामनाओं सहित, आपका हार्दिक धन्यवाद।

सी. ब्रोंटे।"

8 जुलाई, 1851।

मेरे प्रिय महोदय, — मुझे लगता है कि थैकरे का अंतिम व्याख्यान उनका सर्वश्रेष्ठ व्याख्यान रहा होगा। स्टर्न के बारे में उन्होंने जो कहा वह सत्य है। साहित्यकारों और उनके सामाजिक दायित्वों एवं व्यक्तिगत कर्तव्यों पर उनकी टिप्पणियाँ भी मुझे सत्य और मानसिक एवं नैतिक शक्ति से परिपूर्ण प्रतीत होती हैं। . . . लिटरेरी गजट की रिपोर्ट से ऐसा लगता है कि अंतर्राष्ट्रीय कॉपीराइट सम्मेलन का परिणाम निष्फल रहा। मुझे नहीं लगता कि सर ई. बुलवर और अन्य लोगों ने कुछ किया; और न ही मुझे यह समझ आता है कि वे क्या कर सकते थे। वर्तमान पायरेसी प्रणाली से अमेरिकी राष्ट्रीय साहित्य को हो रहे नुकसान के बारे में दिया गया तर्क अच्छा और ठोस है, लेकिन मुझे डर है कि प्रकाशक — ईमानदार लोग — अभी तक इस तर्क को उचित महत्व देने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं हैं। मुझे लगता है कि पायरेसी में

दमनकारी प्रतिस्पर्धा से स्वयं को हुए नुकसान का जिक्र उन्हें अधिक प्रभावित करेगा; लेकिन, मेरा मानना है कि सभी स्थापित बातें, चाहे वे अच्छी हों या बुरी, बदलना मुश्किल है। 'फ्रेनोलॉजिकल कैरेक्टर' के बारे में मुझे एक शब्द भी नहीं कहना चाहिए। आपने स्वयं ही इसे देखने का सबसे सुरक्षित दृष्टिकोण खोज लिया है: मैं यह नहीं कहूँगा कि 'और ऊपर देखो!' मुझे लगता है कि आप इस मामले को उसी तरह देख रहे हैं जैसे हम सभी को अपने से संबंधित चीजों को देखना चाहिए। यदि मुझे सलाह का एक शब्द फुसफुसाने का अधिकार होता, तो वह केवल इतना होता: आप वर्तमान में जैसे भी हों, अपने दृढ़ संकल्प से यह निश्चय करें कि आप कभी भी इससे नीचे नहीं गिरेंगे। गिरने की किसी भी आशंका से सावधान रहें। बल्कि उस मानक से ऊपर देखने और उससे आगे बढ़ने का निश्चय करें। हर कोई कुछ सामाजिक गुणों की सराहना करता है और अपने पड़ोसी को उन गुणों के लिए पसंद करता है; लेकिन शायद ही कोई अपने मित्र की बौद्धिक क्षमता पर ध्यान देता है या इस बात की परवाह करता है कि यदि विकास के लिए सुविधाएँ और अवसर उपलब्ध हों तो यह क्षमता कितनी बढ़ सकती है। मुझे लगता है कि भले ही कठोर परिस्थितियों और कठोर भाग्य के कारण ऐसा अवसर और सुविधाएँ न मिलें, फिर भी यह जानना और दृढ़ता से याद रखना आपके लिए अच्छा होगा कि आपमें ऐसी क्षमता है। जब दूसरे लोग आपको ऐसे ज्ञान से अभिभूत कर दें, जिसे अर्जित करने का अवसर या प्रयास आपको नहीं मिला हो - तो इस विचार से गर्व नहीं, बल्कि प्रोत्साहन प्राप्त करें। यदि कभी कोई नई पुस्तकें लिखी ही न गई होतीं, तो इनमें से कुछ मस्तिष्क कोरे पन्नों की तरह ही रह जाते: वे केवल एक छाप ग्रहण करते हैं; वे मस्तिष्क में विचारों का कोई अभिलेख या हृदय में संवेदना की कोई सहज प्रवृत्ति लेकर पैदा नहीं हुए थे। यदि मैंने कभी कोई मुद्रित पुस्तक न देखी होती, तो प्रकृति मेरी धारणाओं को एक निरंतर कथा का एक परिवर्तनशील चित्र प्रस्तुत करती, जो स्वयं के सिवा किसी अन्य शिक्षक के बिना, मुझे सरल, लेकिन वास्तविक ज्ञान प्रदान करती।

"आपका आखिरी पत्र मिलने से पहले ही मैंने आपको यह बताने का मन बना लिया था कि मैं अगले तीन महीनों तक कोई पत्र नहीं सुनूँगी (बाद में इस परहेज़ को छह महीने तक बढ़ाने का इरादा था, क्योंकि मैं इस छूट पर निर्भर होने से डरती हूँ: आप शायद यह नहीं समझ पा रहे होंगे, क्योंकि आप मेरी ज़िंदगी नहीं जीते)। अब मैं पत्र की उम्मीद भी नहीं करूँगी; लेकिन चूंकि आपने कहा है कि आप कभी-कभी

लिखना चाहेंगे, तो मैं 'कभी मत लिखो' नहीं कह सकती, क्योंकि ऐसा करने से मेरी सच्ची इच्छाओं पर झूठ थोपा जाएगा, जिन्हें वे अस्वीकार करते हैं, और उनके साथ एक ऐसा अत्याचार होगा, जिसे वे बिल्कुल भी सहन नहीं करते। मैं बस इतना कह सकती हूँ कि जब भी आपको लिखने का मन करे, चाहे गंभीरता से या थोड़े मनोरंजन के लिए, आपके पत्र, अगर मुझ तक पहुँचते हैं, तो वहीं पहुँचेंगे जहाँ उनका स्वागत होगा। बताइए— मैं अच्छे मन को बनाए रखने की पूरी कोशिश करूँगी, उतनी ही लगन से जितनी लगन से वह अपने गेरेनियम के फूलों की देखभाल करती है।”

अध्याय X.

घर लौटने के कुछ ही समय बाद, उनकी एक सहेली उनसे मिलने आई। हॉवर्थ में रहते हुए, मिस ब्रोंटे ने वह पत्र लिखा, जिसका निम्नलिखित अंश लिया गया है। मित्रता के विषय पर उसमें प्रदर्शित दृढ़ भावना और उचित विवेक, उन सभी लोगों के अटूट स्नेह का पर्याप्त प्रमाण है जो कभी उनके मित्र बने थे।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, एस्क्वायर को।

21 जुलाई, 1851।

“...मैं यह सोचने से खुद को रोक नहीं सका कि क्या कॉर्नहिल मेरे लिए कभी बदलेगा, जैसे ऑक्सफोर्ड आपके लिए बदल गया है। अब इससे जुड़ी मेरी कुछ सुखद यादें हैं - क्या ये यादें कभी अपना स्वरूप बदलेंगी?”

“शायद वे ऐसा कर सकते हैं—हालांकि मुझे इसके विपरीत विश्वास है, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं अपने पूर्वाग्रहों को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताता; मुझे लगता है कि मैं अच्छाइयों के साथ-साथ कमियों को भी स्वीकार करता हूँ—सुंदरता के साथ-साथ

खामियों को भी। और, इसके अलावा, मित्रता के मामले में, मैंने देखा है कि यहाँ निराशा मुख्य रूप से, अपने मित्रों को बहुत अधिक पसंद करने या उनके बारे में बहुत अधिक सोचने से नहीं, बल्कि उनके द्वारा हमारे प्रति पसंद और राय का अत्यधिक अनुमान लगाने से उत्पन्न होती है; और यदि हम इस दिशा में त्रुटि से बचने के लिए पर्याप्त सावधानी बरतें, और जितना स्नेह हमें मिलता है उससे अधिक स्नेह देने में संतुष्ट और प्रसन्न रह सकें—परिस्थितियों की उचित तुलना कर सकें, और उनसे निष्कर्ष निकालने में अत्यंत सटीक हों, और कभी भी आत्म-प्रेम को अपनी आँखों पर हावी न होने दें—तो मुझे लगता है कि हम जीवन में स्थिरता और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ सकते हैं, भावनाओं के उथल-पुथल से उत्पन्न होने वाली उस मानवद्वेष से अप्रभावित रहते हुए। यह सब थोड़ा दार्शनिक लगता है, लेकिन अगर आप इस पर विचार करें तो यह तर्कसंगत है। इसका सार यह है कि यदि हम एक मजबूत नींव पर निर्माण करना चाहते हैं मित्रता में, हमें अपने मित्रों से प्रेम करने के बजाय उनके स्वार्थ के लिए प्रेम करना चाहिए; हमें उनके स्वयं के प्रति सत्य को उतना ही गहराई से समझना चाहिए जितना कि उनके हमारे प्रति सत्य को। बाद वाले मामले में, आत्म-प्रेम को ठेस पहुँचने पर हर चोट उदासीनता का कारण बनेगी; पहले वाले मामले में, मित्र के चरित्र और स्वभाव में कोई दुखद परिवर्तन—उसके अपने बेहतर स्वरूप के प्रति निष्ठा में कोई भयानक दरार—ही हृदय को विमुख कर सकती है।

"तुम्हारी बूढ़ी चचेरी बहन की तुम्हारे माता-पिता के बारे में गपशप तुम्हें कितनी दिलचस्प लगी होगी; और यह जानकर कितना अच्छा लगा होगा कि उन यादों में केवल सुखद तथ्य और विशेषताएं ही थीं! उस छोटे से जीर्ण-शीर्ण गाँव में, जो चूने की पहाड़ियों के बीच बसा है, जीवन वास्तव में धीमा ही होगा। आख़िरकार, भीड़-भाड़ वाले समुदाय में काम करते-करते थक जाना, निष्क्रियता में एकांत में मर जाने से बेहतर है। जब भी तुम काम और भागदौड़ से थक जाओ, इस बात को याद रखना।"

मुझे कुछ समय बाद उससे एक पत्र मिला; और यद्यपि उसमें मेरे द्वारा उसे लिखे गए शब्दों का उल्लेख है, फिर भी उसके उत्तर में जो कुछ भी व्यक्त हुआ वह इतना विशिष्ट है कि मैं उसके कुछ अंशों को उद्धृत किए बिना उसे छोड़ नहीं सकता:

हॉवर्थ, 6 अगस्त, 1851।

"मेरी प्रिय श्रीमती गैस्केल, - जब मुझे आखिरकार आपका पत्र मिला, तो मैं उससे इतना प्रसन्न हुआ कि अब देरी के बारे में शिकायत करने का मेरा मन नहीं है।"

लगभग दो सप्ताह पहले, मुझे मिस मार्टिन्यू का एक पत्र मिला; वह भी एक लंबा पत्र था, जिसमें ठीक उन्हीं विषयों पर चर्चा की गई थी जिन पर आपके पत्र में थी, अर्थात् प्रदर्शनी और थैकरे का अंतिम व्याख्यान। दोनों पत्रों को साथ-साथ रखकर, मन के दो पहलुओं का अध्ययन करना, एक ही दृश्य को दो माध्यमों से बारी-बारी से देखना, मानसिक रूप से रोचक था। अंतर अत्यंत स्पष्ट था; और यह अंतर इसलिए भी अधिक स्पष्ट था क्योंकि यह अच्छाई और बुराई का सीधा विरोधाभास नहीं था, बल्कि अच्छाई के विभिन्न प्रकारों का सूक्ष्म विरोध, सूक्ष्म विविधता थी। एक प्रकार की अच्छाई (मेरे विचार से) किसी अचूक औषधि के समान थी - स्वाद में शायद कठोर, लेकिन स्फूर्तिदायक; दूसरे प्रकार की अच्छाई हमारे दैनिक भोजन की पौष्टिक प्रभावकारिता के समान प्रतीत होती थी। यह कड़वी नहीं है; यह अत्यधिक मीठी भी नहीं है: यह स्वाद को लुभाए बिना प्रसन्न करती है; यह शक्ति को बल दिए बिना पोषण प्रदान करती है।

मैं आपकी कही हर बात से पूरी तरह सहमत हूँ। विविधता के लिए, काश विचारों की यह एकरूपता थोड़ी कम पूर्ण होती।

“सबसे पहले ट्रैफ़लगर स्क्वायर की बात करते हैं। इस मामले में मेरी राय आपसे और मेटा से पूरी तरह मिलती है। मैंने हमेशा इसे एक शानदार जगह (और देखने में भी खूबसूरत) माना है। उन सीढ़ियों के शिखर से दिखने वाला नज़ारा मुझे हमेशा से ही भव्य और प्रभावशाली लगा है। नेल्सन स्तंभ, जिसमें फव्वारे भी शामिल हैं, मुझे कुछ और लग सकता है। क्रिस्टल पैलेस के बारे में भी मेरी राय बिल्कुल आपसे मिलती-जुलती है।”

“तो मुझे पूरा यकीन है कि आप थैकरे के व्याख्यान के बारे में सही कह रहे हैं। आपने घृणित तुलनाओं को दरकिनार करके और ‘कुछ नया नहीं’ जैसी घिसी-पिटी बातों पर नाराज़गी जताकर अच्छा किया है – यह एक ऐसी शब्दावली है जो इसे आदतन इस्तेमाल करने वालों में सराहना की एक खुरदरी और कमज़ोर क्षमता को ही दर्शाती है; मौलिकता और नवीनता के सापेक्ष मूल्य को समझने में असमर्थता; उस परिष्कृत समझ का अभाव जो किसी नए विषय की प्रेरणा के बिना भी, प्रस्तुति की ताजगी से पर्याप्त आनंद प्राप्त कर सकती है। ऐसे आलोचकों के लिए, गर्मी की सुबह का सुनहरा समय भी आनंद नहीं लाएगा; अपने रसोइए पर एक नया और चटपटा नाश्ता न बनाने के लिए कोसने में व्यस्त, वे सूर्योदय, ओस और हवा जैसे प्रभावों के

प्रति असंवेदनशील रहेंगे: इसमें 'कुछ नया नहीं' होगा।"

क्या श्रीमान — — के पारिवारिक अनुभव ने कैथोलिकों के प्रति आपकी भावनाओं को प्रभावित किया है? मैं मानता हूँ, इस बदलाव के लिए मुझे कोई खेद नहीं है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि रोमन कैथोलिकों में अच्छे लोग — बहुत अच्छे लोग — हैं, लेकिन यह व्यवस्था ऐसी नहीं है जो आपकी जैसी सहानुभूति रखे। नेपल्स में पोपवाद को अपना असली चेहरा दिखाते हुए देखिए!

मैंने 'सेंट्स ट्रेजेडी' पढ़ी है। 'कलाकृति' के रूप में यह मुझे 'एल्टन लॉक' या 'यीस्ट' दोनों से कहीं श्रेष्ठ लगती है। इसमें खामियाँ, अपरिष्कृतियाँ और असमानताएँ हो सकती हैं, फिर भी इसमें ऐसे अंश हैं जहाँ मानवीय स्वभाव के कुछ गहरे तार एक ऐसे हाथ से छेड़े गए हैं जो लड़खड़ाते हुए भी सशक्त है। हम देखते हैं (मुझे लगता है) कि एलिजाबेथ का दिमाग पूरी तरह से स्वस्थ नहीं था, और न ही कभी था। उस समय से जब वह, जिसे वह स्वयं अपनी विनम्रता के अतिशयोक्ति में 'एक मूर्ख लड़की' कहती है, उस क्षण तक जब वह अपनी मृत्यु शैया पर विपत्तियों में कराह रही थी, उसके पूरे जीवन में एक हल्का सा पागलपन छाया रहा। यह अच्छा है: यह सच है। एक स्वस्थ दिमाग, एक स्वस्थ बुद्धि, पुरोहितों की शक्ति को ध्वस्त कर देती; अपने स्वाभाविक स्नेह को उसकी पकड़ से उसी तरह बचा लेती जैसे एक शेरनी अपने बच्चों की रक्षा करती है; अपने पति और बच्चों के प्रति उतनी ही वफादार होती जितनी आपकी वफादार छोटी मैगी अपने फ्रैंक के प्रति थी। केवल एक कमजोर दिमाग ही ऐसा कर सकता है। किसी घातक दोष के कारण, इस बेचारे संत की तरह, उन पर भी प्रभाव पड़ सकता था। लेकिन कितना दुख, कितना संघर्ष! मैं किताबों को पढ़कर शायद ही कभी रोता हूँ; लेकिन यहाँ, पढ़ते समय मेरी आँखों से आँसू बह निकले। जब एलिज़ाबेथ ने अपना चेहरा दीवार की ओर किया—मैं रुक गया—और आगे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी।

इस त्रासदी में गहरे सत्यों को छुआ गया है—छूया तो गया है, लेकिन पूरी तरह से उजागर नहीं किया गया है; ऐसे सत्य जो एक विचित्र करुणा जगाते हैं—क्रोध से भरी और पीड़ा से कड़वी सहानुभूति। यह किसी कवि का सपना नहीं है: हम जानते हैं कि ऐसी घटनाएँ घटी हैं; कि मन को इस प्रकार वश में किया गया है और जीवन को इस प्रकार नष्ट किया गया है।

श्री गैस्केल को मेरा प्रणाम कहना, और यद्यपि मैंने मैरिएन को नहीं देखा है, फिर

भी मैं निवेदन करता हूँ कि उसे भी मैं बाकी सभी को भेजे गए अपने प्रेम में शामिल करूँ। क्या तुम उस प्यारी, लेकिन थोड़ी खतरनाक सी बच्ची, जूलिया को एक छोटा सा चुंबन दे सकती हो? उसने चुपके से मेरे दिल का एक छोटा सा हिस्सा जीत लिया है, जो उसे देखने के बाद से ही खोया हुआ था। — विश्वास करो, तुम्हारा सच्चा और स्नेहपूर्ण।

सी. ब्रोंटे।"

इस पत्र के अंत में उन्होंने मेरी सबसे छोटी बेटी का ज़िक्र किया है, जिसके साथ उनका गहरा आपसी आकर्षण था। बच्ची अपना छोटा सा हाथ मिस ब्रोंटे के थोड़े से बड़े हाथ में चुपके से डाल देती थी, और दोनों को इस अनजाने स्पर्श में आनंद आता था। लेकिन एक बार जब मैंने जूलिया से कहा कि वह उसे घर के किसी कमरे में ले जाए और रास्ता दिखाए, तो मिस ब्रोंटे थोड़ा पीछे हट गईं: "उसे मेरे लिए कुछ भी करने के लिए मत कहो," उन्होंने कहा; "अब तक तो उसका बिना किसी स्वार्थ के ये छोटी-छोटी दयालुता दिखाना बहुत सुखद रहा है।"

बच्चों के प्रति उनकी भावनाओं को दर्शाने के लिए, मैं उनके द्वारा मुझे लिखे गए एक अन्य पत्र में कही गई बातों को यहाँ दे सकता हूँ।

"जब भी मैं फ्लोरेंस और जूलिया को फिर से देखूंगा, तो मुझे एक ऐसे प्रेमी की तरह महसूस होगा जो थोड़ा झिझकता है, लेकिन साथ ही साथ दूर से उस सुंदर स्त्री को देखता है, जिसके प्रति अपने अनाड़ी भय के कारण वह पास जाने की हिम्मत नहीं करता। यही वह सबसे स्पष्ट वर्णन है जो मैं उन बच्चों के प्रति अपनी भावना को व्यक्त कर सकता हूँ जिन्हें मैं पसंद करता हूँ, लेकिन जिनसे मैं अजनबी हूँ; और किन बच्चों से मैं अजनबी नहीं हूँ? वे मुझे नन्हे अजूबे लगते हैं; उनकी बातें, उनका व्यवहार, सब कुछ आधा-प्रशंसा और आधा-अचंभित चिंतन का विषय है।"

निम्नलिखित पत्र मुझे उससे 20 सितंबर, 1851 को प्राप्त एक लंबे पत्र का अंश है:

"...जेम्स मार्टिन्यू के उपदेशों के वे वाक्य कितने सुंदर हैं; उनमें से कुछ तो अत्यंत शुद्ध और सच्चे रत्न हैं; गहन विचार हैं, जिन्हें खूबसूरती से व्यक्त किया गया है। मैं उनकी बहन की पुस्तक की समीक्षा देखना चाहूँगा। जिन लेखों के बारे में आप मुझसे पूछ रहे हैं, उनमें से मैंने कोई नहीं देखा, सिवाय 'वेस्टमिंस्टर' में महिलाओं की मुक्ति पर प्रकाशित उस उल्लेखनीय लेख के। लेकिन आप और मैं कुछ बिंदुओं पर इतने एक

जैसे क्यों सोचते हैं (शायद मुझे कहना चाहिए कि महसूस करते हैं) कि हमारे बीच कोई चर्चा ही नहीं हो सकती? इस लेख पर आपके शब्द मेरे विचारों को व्यक्त करते हैं। यह अच्छी तरह से तर्कपूर्ण है, स्पष्ट और तार्किक है, लेकिन इसमें बहुत कुछ छूट गया है; परिणामस्वरूप आत्मा के हर सूक्ष्म तार पर गहरा आघात होता है। यह कमी क्या है? मुझे लगता है कि मैं जानता हूँ; और जानते हुए, मैं कहने का साहस करूँगा। मुझे लगता है कि लेखक यह भूल गया है कि आत्म-बलिदान प्रेम और निस्वार्थ भक्ति जैसी भी कोई चीज होती है। जब मैंने पहली बार लेख पढ़ा, तो मुझे लगा कि यह किसी शक्तिशाली विचारक का काम है, एक ऐसी स्पष्ट बुद्धि वाली महिला, जिसका हृदय कठोर और ईर्ष्यालु था, मांसपेशियां लोहे की और नसें लचीली चमड़े की; एक ऐसी महिला जो सत्ता की लालसा रखती थी और जिसने कभी स्नेह का अनुभव नहीं किया था। कई महिलाओं के लिए स्नेह मीठा होता है, और जीती हुई सत्ता उदासीन होती है—हालांकि हम सभी प्रभाव प्राप्त करना पसंद करते हैं। मेरा मानना है कि जे. एस. मिल इसे एक कठोर, नीरस और निराशाजनक दुनिया बना देंगे; फिर भी वे अपने लेख के एक बड़े हिस्से में प्रशंसनीय तर्क प्रस्तुत करते हैं—विशेषकर जब वे कहते हैं कि यदि पुरुषों के रोजगार के लिए महिलाओं में स्वाभाविक अयोग्यता है, तो इस विषय पर कानून बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है; सभी करियर खुले रहने दें; उन्हें प्रयास करने दें; जो सफल होने के योग्य हैं वे सफल होंगे, या कम से कम उन्हें एक अच्छा मौका मिलेगा—अयोग्य अपनी सही जगह पर वापस आ जाएंगे। वे मातृत्व के प्रश्न का भी बहुत ही सलीके से समाधान करते हैं। संक्षेप में, मैं कह सकता हूँ कि जे. एस. मिल का दिमाग बहुत अच्छा है, लेकिन मुझे उनके हृदय पर संदेह होता है। आप सही हैं जब आप कहते हैं कि मानव स्वभाव में एक बड़ा अंतर है जिस पर तर्कशास्त्रियों का कोई नियंत्रण नहीं है। प्रभुत्व; मुझे इस बात की खुशी है कि ऐसा ही है।

यॉर्कशायर में "बेंड" का अर्थ है मजबूत बैल का चमड़ा।

“मैं इस डाक से रस्किन की ‘स्टोन्स ऑफ वेनिस’ भेज रहा हूँ, और मुझे आशा है कि आपको और मेटा को इसमें कुछ अंश पसंद आएंगे। कुछ भाग नीरस और तकनीकी होते अगर हर पृष्ठ पर व्याप्त विशिष्ट व्यक्तित्व न होता। काश मैरिएन व्याख्यान में मुझसे बात करने आती; मुझे बहुत खुशी होती। उस नन्ही चंचल जूलिया के बारे में आपकी बातें मुझे बहुत मजेदार लगीं। मुझे लगता है कि आपको नहीं पता

कि उसमें अपनी माँ का स्वभाव (संशोधित रूप में) काफी हद तक है; लेकिन मुझे लगता है कि बड़े होने पर आपको यह बात पता चल जाएगी।”

“क्या यह बहुत बड़ी गलती नहीं होगी, यदि श्री थैकरे मैनचेस्टर में ऐसे हालातों और परिस्थितियों में अपने व्याख्यान दें जिससे आप और श्री गैस्केल जैसे लोग उनके श्रोताओं की श्रेणी से बाहर हो जाएँ? मुझे उनकी लंदन योजना बहुत संकीर्ण लगी। चार्ल्स डिकेंस अपने कार्यक्षेत्र को इस तरह सीमित नहीं करते।”

आपने मुझे अपने बारे में लिखने को कहा है। इस अनमोल विषय पर मैं क्या कहूँ? मेरा स्वास्थ्य ठीक है। मेरा मन हमेशा एक जैसा नहीं रहता। मुझे कुछ खास परेशान नहीं करता। मैं इस दुनिया में बहुत कम उम्मीदें रखती हूँ और आभारी हूँ कि मैं निराश नहीं होती और ज्यादा कष्ट नहीं सहती। हमारी पुरानी नौकरानी का हालचाल पूछने के लिए धन्यवाद; वह ठीक है; उसे छोटा शॉल आदि बहुत पसंद आया। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पापा भी ठीक हैं; मेरी और उनकी ओर से आपको और श्री गैस्केल को हार्दिक शुभकामनाएँ। आपका सच्चा और स्नेहपूर्ण सेवक।

सी. ब्रोंटे।"

शरद ऋतु पूरी तरह आगे बढ़ने से पहले ही, उनके एकांत जीवन और हॉवर्थ पार्सनेज के अस्वस्थ वातावरण के सामान्य प्रभाव सिरदर्द और बेचैन, हड़बड़ी भरी, नींद न आने वाली रातों के रूप में प्रकट होने लगे। उन्होंने अपने पत्रों में इसका विस्तार से वर्णन नहीं किया है; लेकिन उनके लहजे में प्रसन्नता का अभाव है, और कभी-कभी उनके मुंह से निकले वाक्य इतने गहरे अर्थ व्यक्त करते हैं कि उन्हें शब्दों में बयां करना मुश्किल है। पार्सनेज परिवार में हर तरफ बीमारी फैली हुई थी - हमेशा की तरह फ्लू और हल्का बुखार; वह स्वयं परिवार में सबसे स्वस्थ दिखाई देती थीं, और कुछ समय के लिए घर के सारे काम-काज उन्हीं के कंधों पर आ गए थे।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, एस्क्वायर को।

26 सितंबर।

आपका पत्र पढ़ते हुए, जिसमें एक बेहद मार्मिक दृश्य का सजीव वर्णन किया गया है, मैंने उसे नीचे रखा और एक सच्चाई, जो सुनने में सामान्य सी लगती है, फिर भी अत्यंत प्रभावशाली है, उसे मैंने नए सिरे से महसूस किया; वह यह है कि हमें स्वयं से बाहर निकलकर दूसरों के कष्टों, अभावों, प्रयासों और कठिनाइयों को करीब से देखना चाहिए। यदि हम स्वयं पूर्ण संतुष्टि में जी रहे हैं, तो यह याद रखना अच्छा है कि हमारे

हजारों साथी प्राणी हमसे अलग परिस्थितियों से गुजर रहे हैं; सुप्त सहानुभूति को जगाना और सुस्त स्वार्थ को झकझोरना अच्छा है। दूसरी ओर, यदि हम उस विशेष दुःख, उस व्यक्तिगत परीक्षा, उस विशेष कड़वाहट से जूझ रहे हैं, जिससे ईश्वर ने हमारे जीवन को भर दिया है, तो यह जानना बहुत अच्छा है कि हमारी निराशा अकेली नहीं है; यह विलाप भरे शब्दों और विचारों को शांत करता है, और हमारी कमजोर होती शक्ति को जगाता है, यह स्पष्ट रूप से हमारे सामने प्रस्तुत करता है कि दुनिया में अनगिनत कष्ट हैं, जिनमें से प्रत्येक शायद हमारे व्यक्तिगत कष्ट के बराबर है - कुछ उससे भी बढ़कर हैं। वह दर्द जिसके प्रति हम अक्सर केवल शोक में लीन रहते हैं।

"उन सभी भीड़भाड़ वाले प्रवासियों की अपनी-अपनी परेशानियाँ थीं, – निर्वासन के उनके दुर्भाग्यपूर्ण कारण थे; आप, दर्शक, आपकी 'इच्छाएँ और पछतावे' थे, – आपकी चिंताएँ, जो आपके घर के सुख और घरेलू आनंद को धूमिल कर रही थीं; और इस समानता को आगे बढ़ाया जा सकता है, और तब भी यह सच रहेगा, – वही रहेगा; हर किसी के लिए एक काँटा; सभी के लिए कोई न कोई बोझ, कोई न कोई संघर्ष।"

"सार्वजनिक संस्थानों में बदलाव, राष्ट्रीय आदतों में परिवर्तन से इस स्थिति में कितना सुधार हो सकता है, इस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए; लेकिन यह एक ऐसी समस्या है जिसका समाधान आसानी से नहीं हो सकता। जैसा कि आपने बताया, बुराइयाँ गंभीर, वास्तविक और स्पष्ट हैं; उपाय अस्पष्ट और अनिश्चित है; फिर भी अत्यधिक प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों के लिए, प्रवास ही अच्छा विकल्प है; एक नए देश में नया जीवन आशा की एक नई किरण जगाता है; कम आबादी वाला व्यापक क्षेत्र प्रयासों के लिए एक नया मार्ग खोलता है। लेकिन मेरा हमेशा से मानना है कि ऐसे कदम के लिए शारीरिक परिश्रम और सहनशक्ति की बहुत आवश्यकता होती है। ... मुझे यह जानकर सचमुच खुशी हुई कि एक मौलिक लेखक आपके संपर्क में आया है। मौलिकता साहित्य में अनमोल रत्न है, - एक लेखक की पहचान का सबसे दुर्लभ और बहुमूल्य आधार। क्या आने वाले सत्र के लिए आपकी प्रकाशन संभावनाएं पर्याप्त रूप से समृद्ध और संतोषजनक नहीं हैं? आप 'कुरर बेल' के बारे में पूछताछ कर रहे हैं। मुझे लगता है कि आपके प्रकाशनों में उनका नाम न होना घोषणाओं की सूची में कोई भी स्थान खाली नहीं रहेगा, और कम से कम वह इस चिंता से बच सकेगा कि जब निश्चित रूप से उसका उपस्थित होना उसके भाग्य में

नहीं है, तब भी उसे बुलाया जा रहा है।

"शायद करर बेल को इन मामलों को लेकर कोई निजी शिकायत हो; लेकिन अगर ऐसा है, तो वह इसे अपने तक ही सीमित रखेंगे। यह एक ऐसा मामला है जिस पर शब्दों को व्यर्थ करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि शब्दों से कोई बदलाव नहीं आ सकता: यह उनके और उनकी स्थिति, उनकी क्षमताओं और उनके भाग्य के बीच का मामला है।"

मेरे पति और मैं चाहते थे कि सर्दी पूरी तरह शुरू होने से पहले वह हमसे मिलने आ जाए; और उसने हमारा निमंत्रण अस्वीकार करते हुए इस प्रकार लिखा:

6 नवंबर।

“अगर कोई मुझे घर से बाहर जाने के लिए उकसा सकता, तो वो तुम होते; लेकिन अभी, मुझे घर से बाहर नहीं जाना चाहिए, मैं नहीं जाऊँगी। मैं इस समय तीन सप्ताह पहले की तुलना में बहुत बेहतर महसूस कर रही हूँ। शरद ऋतु या वसंत ऋतु के विषुव के आसपास का एक या छह सप्ताह का समय वर्ष का वो समय होता है, जो मैंने देखा है, मुझे अजीब तरह से थका देता है। कभी तनाव मेरे मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है, कभी शारीरिक स्वास्थ्य पर; मुझे नसों में दर्द के कारण सिरदर्द होता है, या मैं गहरे अवसाद से चूर हो जाती हूँ (हालाँकि, ऐसा अवसाद मैं अपने तक ही रख सकती हूँ)। मुझे लगता है और उम्मीद है कि वो थका देने वाला समय इस साल के लिए बीत चुका है। मेरे बेचारे भाई की मृत्यु की बरसी थी, और मेरी बहन के बिगड़ते स्वास्थ्य की भी: मुझे और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है।”

“जब भी मुझे इस तरह की लड़ाई लड़नी होती है, तो घर से भाग जाना ठीक नहीं होगा, बल्कि ‘अजीब’ चीजें मेरा पीछा करती रहेंगी। इसे भुला पाना तो नामुमकिन है। मैंने श्रीमती — — के पास जाने से मना कर दिया था, मिस मार्टिन्यू के पास जाने से मना कर दिया था, और अब मैं आपके पास जाने से भी मना कर रही हूँ। लेकिन सुनिए, ऐसा मत सोचिए कि मैं आपकी दयालुता को ठुकरा रही हूँ; या यह आपके मनचाहे परिणाम देने में विफल हो रही है। इसके विपरीत, आपके पत्र में व्यक्त भावना — आपके निमंत्रण से सिद्ध होती है — सीधे मेरे दिल तक पहुँचती है जहाँ आप चाहती हैं, और उसी तरह घाव भरती है जैसे आप चाहती हैं।”

“फ्रेडरिका ब्रेमर का आपका वर्णन बिल्कुल वैसा ही है जैसा मैंने कहीं पढ़ा था, पता नहीं किस किताब में। फ्रेडरिका की उस खास उपलब्धि का जिक्र पढ़कर मुझे

हंसी आ गई, जिसे आपने इतनी सरलता से बताया है कि मेरी समझ में फ्रांसीसी लोग उसे 'अतुलनीय' कहेंगे। ऐसा विदेशी कहाँ मिलता है जिसमें इस तरह की कोई छोटी-मोटी कमी न हो? यह तो अफसोस की बात है।"

इस दौरान मिस वूलर के आने से मिस ब्रोंटे को काफी लाभ हुआ। वह अपनी मेहमान की संगति को अपने पिता और स्वयं दोनों के लिए "अच्छी शराब की तरह" सुखद बताती हैं। लेकिन मिस वूलर उनके साथ ज्यादा समय तक नहीं रह सकीं; और फिर से उनके जीवन की नीरसता पूरी ताकत से उन पर लौट आई; उनके दिनों और हफ्तों की एकमात्र घटना कभी-कभार आने वाले पत्रों से होने वाले छोटे-मोटे बदलाव ही थे। यह याद रखना जरूरी है कि उनका स्वास्थ्य अक्सर ऐसा रहता था कि वे खराब मौसम या सर्दी के मौसम में घर से बाहर नहीं निकल पाती थीं। थोड़ी सी भी ठंड लगने पर उन्हें गले में खराश, सीने में असहनीय दर्द और सांस लेने में तकलीफ हो जाती थी।

अपने दिवंगत आगंतुक के पत्र ने उन्हें बहुत प्रभावित और प्रसन्न किया; यह पत्र केवल उनके प्रति दिखाई गई देखभाल और दयालुता के लिए कृतज्ञता व्यक्त करता था, लेकिन अंत में यह कहता था कि उन्होंने कई वर्षों में इतना आनंद नहीं लिया था जितना हॉवर्थ में बिताए दस दिनों में लिया। इस छोटे से वाक्य ने मिस ब्रोंटे के मन में एक सुखद और सौम्य आनंद की अनुभूति जगा दी; और वह कहती हैं, "इससे मुझे बहुत अच्छा लगा।"

मुझे इसी समय के आसपास एक दूर के मित्र को लिखे गए पत्र में लंदन यात्रा का उनका पूर्वव्यापी वर्णन मिलता है। यह इतना विस्तृत है कि इसे केवल उनके पहले कहे गए कथनों की पुनरावृत्ति नहीं माना जा सकता; और इसके अलावा, यह दर्शाता है कि उन्होंने जो कुछ देखा और सुना, उसके बारे में उनकी पहली धारणाएँ सतही और क्षणिक नहीं थीं, बल्कि समय और चिंतन की कसौटी पर खरी उतरीं।

जैसा कि आपने सुना होगा, मैंने पिछली गर्मियों में कुछ सप्ताह शहर में बिताए थे; और वहाँ मैंने जो कुछ सुना और देखा, उससे मुझे बहुत रुचि हुई। अब मेरी स्मृति में मुख्य रूप से श्री थैकरे के व्याख्यान, मैडमोजेल राहेल का अभिनय, डी'ऑबिग्ने, मेलविल और मौरिस के उपदेश और क्रिस्टल पैलेस बसे हुए हैं।

आपने अखबारों में श्री ठाकरे के व्याख्यानों का जिक्र और उन पर हुई टिप्पणियां देखी होंगी; वे बहुत रोचक थे। मैं हमेशा व्यक्त किए गए विचारों या उठाए गए मतों से

सहमत नहीं हो पाता था; लेकिन मैं व्याख्याता की सहजता, सौम्य हास्य, रुचि, प्रतिभा, सादगी और मौलिकता की प्रशंसा करता था।

"राहेल के अभिनय ने मुझे विस्मित कर दिया, मेरी रुचि को बांधे रखा और मुझे भय से रोमांचित कर दिया। जिस जबरदस्त शक्ति के साथ वह सबसे बुरी भावनाओं को उनके सबसे प्रबल रूप में व्यक्त करती है, वह स्पेन के सांड युद्धों और प्राचीन रोम के ग्लेडिएटरों के मुकाबलों जितना ही रोमांचक प्रदर्शन है, और (मुझे ऐसा लगा) इन जन-हिंसा को भड़काने वाले विषैले तत्वों से जरा भी अधिक नैतिक नहीं है। वह जो दिखाती है वह शायद ही मानवीय स्वभाव है; यह कुछ अधिक जंगली और बुरा है; एक शैतान की भावनाएँ और क्रोध। निस्संदेह उनमें प्रतिभा का महान उपहार है; लेकिन, मुझे डर है कि वह इसका सदुपयोग करने के बजाय इसका दुरुपयोग करती हैं।"

"तीनों उपदेशकों से मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मेलविल मुझे सबसे अधिक वाक्पटु और मौरिस सबसे अधिक गंभीर लगे; यदि मुझे चुनने का अवसर मिले, तो मैं मौरिस के प्रवचनों में ही जाना पसंद करूंगा।"

क्रिस्टल पैलेस के बारे में मुझे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। आपने इसके बारे में पहले ही बहुत कुछ सुना होगा। पहली बार देखने पर मुझे बस एक अस्पष्ट सी हैरानी और प्रशंसा हुई; लेकिन एक दिन आपके एक प्रतिष्ठित देशवासी, सर डेविड ब्रूस्टर के साथ इसका अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, और उनके दोस्ताना स्कॉटिश लहजे में कई ऐसी बातों की स्पष्ट व्याख्या सुनने को मिली जो मेरे लिए पहले एक बंद किताब की तरह थीं, तब मुझे इसे थोड़ा बेहतर समझ में आने लगा, या कम से कम इसका एक छोटा सा हिस्सा: इसके अंतिम परिणाम उम्मीदों पर खरे उतरेंगे या नहीं, यह मैं नहीं जानता।

अंततः, तर्क और इच्छाशक्ति के सभी प्रयासों के बावजूद, उनकी बढ़ती अस्वस्थता ने उन्हें पराजित कर दिया। उन्होंने लेखन के माध्यम से दमनकारी यादों को भुलाने का प्रयास किया। उनके प्रकाशक उनसे एक नई पुस्तक लिखने के लिए आग्रह कर रहे थे। "विलेट" लिखना शुरू किया गया, लेकिन उसमें आगे बढ़ने की शक्ति नहीं थी।

"बिल्कुल भी संभावना नहीं है," (वह कहती हैं) "कि मेरी किताब आपके बताए समय तक तैयार हो पाएगी। अगर मेरा स्वास्थ्य ठीक रहा, तो मैं इसे जितनी जल्दी हो सके, पूरा करने की पूरी कोशिश करूंगी, भले ही यह पूरी तरह से तैयार न हो, लेकिन

जितना अच्छा हो सके, उतना अच्छा करूंगी। एक रत्ती भी जल्दी नहीं। जब मेरा मन नहीं करता (अभी तो कर ही कर कर रखा है, बिना यह बताए कि कब वापस आएगा), तो मैं पांडुलिपि को एक तरफ रख देती हूं और उसके वापस आने का इंतजार करती हूं। भगवान जानता है, कभी-कभी मुझे बहुत लंबा इंतजार करना पड़ता है—मुझे तो बहुत लंबा लगता है। इस बीच, अगर मैं आपसे एक निवेदन कर सकती हूं, तो वह यह है। कृपया मेरी किताब के बारे में तब तक कुछ न कहें जब तक वह लिखी न जाए और आपके हाथों में न आ जाए। हो सकता है आपको पसंद न आए। मैं खुद भी इससे पूरी तरह संतुष्ट नहीं हूं, और आपको यह बताने की जरूरत नहीं है कि लेखक हमेशा अपने काम के प्रति बहुत उदार होते हैं, यहां तक कि अंधे होकर भी पक्षपात करते हैं। भले ही यह ठीक-ठाक ही क्यों न हो जाए, फिर भी मैं इसे उपन्यास जैसी क्षणभंगुर पुस्तक की समृद्धि के लिए एक अभिशाप मानती हूं।" पहले से ही इसकी बहुत चर्चा होती है, मानो यह कोई बहुत बड़ी बात हो। लोग अक्सर ऐसी अतिरंजित अपेक्षाएँ पाल लेते हैं, या कम से कम जताते हैं, जिन्हें कोई भी प्रदर्शन पूरा नहीं कर सकता; फिर निराशा और उसके बाद उचित प्रतिशोध, निंदा और असफलता का सिलसिला शुरू हो जाता है। अगर लिखते समय मैं उन आलोचकों के बारे में सोचूँ, जो करर बेल का इंतज़ार कर रहे हैं, और 'उसकी सारी हड्डियाँ तोड़ देंगे, इससे पहले कि वह अपने अड्डे की तह तक पहुँच पाए', तो मेरा हाथ डेस्क पर ही जम जाएगा। लेकिन मैं बस अपना सर्वश्रेष्ठ कर सकता हूँ, और फिर धैर्य की चादर ओढ़कर उसके चरणों में बैठ जाता हूँ और प्रतीक्षा करता हूँ।

यहां जिस "उदासी" की बात हो रही है, वह अपने आप ठीक नहीं हुई; इसका कारण शारीरिक था। अपच, मतली, सिरदर्द, नींद न आना— इन सबने मिलकर मन को बुरी तरह उदास कर दिया था। इसी समय एक छोटी सी घटना घटी, जिसने एमिली के प्यारे और वफादार कुत्ते, कीपर की मृत्यु हो गई। वह जवानी के जोश और ताकत के साथ पादरी के घर आया था। उदास और गुस्सैल स्वभाव का वह कुत्ता, अदम्य एमिली से मिला था। अपनी प्रजाति के अधिकांश कुत्तों की तरह, वह भी एमिली से डरता था, उसका सम्मान करता था और उससे बहुत प्यार करता था। उसकी मृत्यु के बाद उसने पूरी निष्ठा से उसका शोक मनाया और बुढ़ापे की ओर बढ़ गया। और अब, उसकी जीवित बहन ने लिखा: "बेचारा बूढ़ा कीपर पिछले सोमवार सुबह एक रात बीमार रहने के बाद चल बसा; वह शांति से सो गया; हमने उसका

पुराना वफादार सिर बगीचे में रख दिया। फ्लॉसी ('मोटा घुंघराले बालों वाला कुत्ता') उदास है और उसे बहुत याद कर रही है। बूढ़े कुत्ते को खोने का बहुत दुख था; फिर भी मुझे खुशी है कि उसकी मृत्यु स्वाभाविक रूप से हुई। लोग लगातार कह रहे थे कि उसे मार देना चाहिए, जिसके बारे में न तो पापा और न ही मैं सोचना चाहते थे।"

जब मिस ब्रोंटे ने 8 दिसंबर को यह लिखा, तब वह ज़ुकाम और कमर दर्द से पीड़ित थीं। उनकी बीमारी बढ़ती गई और 17 दिसंबर को, वह - जो इतनी धैर्यवान, मौन और पीड़ा सहने वाली थीं - दूसरों पर निस्वार्थ बोझ डालने से इतनी डरती थीं - उन्हें अपनी सहेली से मदद मांगनी पड़ी।

मैं इस समय आपसे मिलने नहीं आ सकती, लेकिन अगर आप आकर मुझसे मिल सकें, भले ही कुछ दिनों के लिए ही सही, तो मैं आपकी आभारी रहूंगी। सच कहूं तो, पिछले महीने मेरी हालत बहुत खराब रही है। मैं ठीक होने की उम्मीद करती रही, लेकिन अंत में मुझे डॉक्टर के पास जाना पड़ा। कई बार मैं बहुत कमजोर और उदास महसूस करती थी, और लोगों से मिलने की बहुत इच्छा होती थी, लेकिन सिर्फ अपनी राहत के लिए आपसे मिलने की इच्छा करना मेरे लिए स्वार्थपूर्ण था। डॉक्टर हौसला बढ़ाते हैं, लेकिन अभी तक मेरी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ है। चूंकि यह बीमारी काफी समय से चल रही है, इसलिए मुझे लगता है कि यह अचानक ठीक नहीं हो सकती। मैं बिस्तर पर तो नहीं पड़ी हूं, लेकिन कमजोर हूं, लगभग तीन हफ्तों से भूख नहीं लग रही है, और मेरी रातें बहुत खराब गुजरती हैं। मैं अच्छी तरह जानती हूं कि लगातार और अत्यधिक अवसाद का इस बीमारी से गहरा संबंध है; और मैं जानती हूं कि कुछ खुशनुमा लोगों से मिलना मेरे लिए ढेर सारी दवाइयों से कहीं ज्यादा फायदेमंद होगा। अगर आप आ सकते हैं, तो शुक्रवार को आइए। कल लिखकर बता दीजिए कि क्या यह संभव है और आप किस समय आ सकते हैं। मैं कीघली में रहूंगा, ताकि मैं अपना उपहार भेज सकूं। मैं आपसे ज्यादा दिन रुकने का अनुरोध नहीं कर रहा हूं; बस कुछ दिनों के लिए रुकना ही काफी है।

बेशक, उसकी सहेली गई; और उसकी संगति से कुछ हद तक लाभ भी हुआ, जिसके लिए मिस ब्रोंटे हमेशा आभारी रहती थीं। लेकिन अब बुराई इतनी गहरी जड़ें जमा चुकी थी कि जिस "छोटे से खुशनुमा समाज" के लिए उसने इतनी भावुकता से विनती की थी, उससे कुछ समय के लिए राहत मिलना असंभव था।

कुछ ही समय बाद उनकी हालत फिर बिगड़ गई। वे बहुत बीमार थीं, और उपचार

के लिए दी गई दवाइयों का उनकी नाजुक शारीरिक स्थिति पर असामान्य प्रभाव पड़ा। श्री ब्रोंटे अपनी इकलौती संतान की हालत को लेकर बेहद चिंतित थे, क्योंकि वे बेहद कमजोर हो गई थीं और एक सप्ताह से अधिक समय से भोजन निगलने में असमर्थ थीं। धीरे-धीरे उनकी हालत सुधरी और दिनभर में चम्मच से थोड़ा-थोड़ा करके आधा कप तरल पदार्थ पीकर ही वे जीवित रहीं। फिर भी, अपने पिता की खातिर वे बिस्तर पर नहीं लेटीं और अपने सबसे बुरे समय में अकेले ही धैर्यपूर्वक संघर्ष करती रहीं।

जब वह स्वस्थ हो रही थीं, तो उन्हें अपने मनोबल को सहारा देने की आवश्यकता थी, और तब उन्होंने अपनी सहेली के आग्रह पर उनसे मिलने के लिए हामी भर दी। मिस ब्रोंटे की बीमारी के पूरे समय के दौरान, मिस - - उनसे मिलने की इच्छुक थीं; लेकिन उन्होंने इस दयालुता का लाभ उठाने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि "खुद पर बोझ डालना ही काफी है; किसी और को परेशान करना दुखदायी होगा;" और, अपने सबसे बुरे समय में भी, वह अपनी सहेली को विनोदी अंदाज़ में बताती हैं कि कैसे उन्होंने बड़ी चतुराई से मिस - - द्वारा मिस्टर ब्रोंटे को लिखे गए एक पत्र को हासिल कर लिया था, जिसके बारे में उन्हें संदेह था कि यह उनकी बेटी की स्थिति के बारे में उनकी चिंता को और बढ़ाने के लिए लिखा गया था, "और तुरंत ही उसके भावार्थ का अनुमान लगाकर, उन्होंने उसकी सामग्री को अपना बना लिया।"

सभी पक्षों के लिए खुशी की बात यह थी कि श्री ब्रोंटे इस सर्दी में बहुत अच्छे थे; अच्छी नींद, खुशमिजाज और अच्छी भूख, ये सभी उनकी चुस्ती-फुर्ती के संकेत थे; और ऐसे स्वस्थ होने के कारण, शार्लोट बिना किसी बड़ी चिंता के उन्हें अपने दोस्त के साथ एक सप्ताह बिताने के लिए छोड़ सकती थी।

जिस परिवार के साथ वह रहने गई, उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार और खुशनुमा संगति से उसे बहुत लाभ हुआ। वे उसे "कुरर बेल" के रूप में बिल्कुल भी पसंद नहीं करते थे, बल्कि शार्लोट ब्रोंटे के रूप में वर्षों से जानते और प्यार करते थे। उनके लिए उसकी कमजोरी, उस अकेली महिला के प्रति उनके स्नेहपूर्ण लगाव का एक नया दावा मात्र थी, जिसे उन्होंने पहली बार एक छोटी, माँ-विहीन स्कूली छात्रा के रूप में देखा था।

मिस ब्रोंटे ने इसी दौरान मुझे पत्र लिखा और मुझे अपने द्वारा झेली गई कुछ पीड़ाओं के बारे में बताया।

6 फरवरी, 1852।

“निश्चित रूप से, बीता हुआ शीतकाल मेरे लिए एक अजीब समय था; अगर मुझे

इसे दोबारा जीने का मौका मिले, तो मेरी प्रार्थना यही होगी, 'यह कष्ट मुझसे दूर हो जाए।' मन की वह उदासी, जो मुझे लगा था कि पिछली बार लिखते समय दूर हो गई थी, फिर से ज़ोरदार झटके के साथ लौट आई; आंतरिक जकड़न हो गई, और फिर सूजन। मेरे दाहिने हिस्से में तेज दर्द था, सीने में बार-बार जलन और पीड़ा होती थी; नींद लगभग गायब हो गई थी, या आती ही नहीं थी, सिवाय भयानक सपनों के साथ; भूख गायब हो गई थी, और धीमा बुखार मेरा लगातार साथी था। मुझे डॉक्टर से सलाह लेने में काफी समय लगा। मुझे लगा कि मेरे फेफड़े प्रभावित हैं, और मुझे दवाइयों पर कोई भरोसा नहीं था। आखिरकार, जब मैंने एक डॉक्टर से सलाह ली, तो उन्होंने मेरे फेफड़ों और सीने को स्वस्थ बताया, और मेरे सभी कष्टों का कारण लीवर की गड़बड़ी को बताया, जिस अंग पर सूजन आई थी। यह जानकारी मेरे प्यारे पिता के साथ-साथ मेरे लिए भी बहुत राहत की बात थी; लेकिन बाद में मुझे काफी कठिन चिकित्सा प्रक्रिया से गुजरना पड़ा, और मैं बहुत कम हो गया है। हालांकि अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुआ हूं, लेकिन मैं अत्यंत कृतज्ञता के साथ कह सकता हूं कि मैं काफी बेहतर हूं। मेरी नींद, भूख और ताकत सब वापस लौट रही हैं।

एस्मंड को प्रारंभिक रूप से पढ़ने की अनुमति मिलना उनके लिए बहुत रुचिकर था; और उन्होंने इस विषय पर अपने विचार श्री स्मिथ को लिखे एक आलोचनात्मक पत्र में व्यक्त किए, जिन्होंने उन्हें यह विशेषाधिकार दिया था।

14 फरवरी, 1852।

मेरे प्रिय महोदय, श्री थैकरे की रचना को पढ़ना मेरे लिए अत्यंत आनंददायक रहा है; और मैं अब इतनी कम बार अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ कि एक बार मुझे बिना किसी आपत्ति के, इस दुर्लभ और विशेष आनंद के लिए धन्यवाद देने की अनुमति अवश्य दें। फिर भी मैं न तो श्री थैकरे की और न ही उनकी पुस्तक की प्रशंसा करने जा रहा हूँ। मैंने पढ़ा है, आनंद लिया है, रुचि ली है, और अंततः, कृतज्ञता और प्रशंसा के साथ-साथ क्रोध और दुःख भी महसूस करता हूँ। फिर भी, उनकी कोई भी पुस्तक पढ़ने के बाद, विषय या प्रस्तुति चाहे जो भी हो, इन दोनों भावनाओं के बिना कोई भी उसे छोड़ नहीं सकता। पुस्तक के पहले भाग में, जिस बात ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह था लेखक का उस समय की भावना और साहित्य में खुद को पूरी तरह से ढालने का अद्भुत तरीका; संकेत, उदाहरण, शैली, सभी मुझे अपने सटीक पालन, सामंजस्यपूर्ण संगति, सूक्ष्म, स्वाभाविक सत्य और अतिशयोक्ति से पूरी तरह

मुक्त होने के कारण अत्यंत निपुण प्रतीत होते हैं। कोई घटिया नकलची इस तरह नहीं लिख सकता; कोई भद्दा दृश्य-चित्रकार हमें इतने सूक्ष्म और सजीव संकेत से मोहित नहीं कर सकता। उत्तम। लेकिन यह कितना तीखा व्यंग्य है, रोगग्रस्त विषयों का कितना निर्मम विश्लेषण है! खैर, और यह भी सही है, या सही होता, अगर वह क्रूर सर्जन अपने काम से इतना प्रसन्न न होता। थैकरे को अल्सर या धमनीविस्फार का विश्लेषण करना पसंद है; उसे कांपते, जीवित मांस में अपना क्रूर चाकू या औजार डालने में आनंद आता है। थैकरे नहीं चाहते कि पूरी दुनिया अच्छी हो; कोई भी महान व्यंग्यकार समाज को परिपूर्ण नहीं देखना चाहेगा।

हमेशा की तरह, वह महिलाओं के प्रति अन्यायपूर्ण है; घोर अन्यायपूर्ण। लेडी कैसलवुड को चाबी के छेद से झाँकने, दरवाजे पर कान लगाने और एक लड़के और एक दूधवाली से ईर्ष्या करने के लिए मजबूर करने के लिए उसे शायद ही कोई सजा न दी गई हो। पढ़ते समय मैंने कई अन्य बातें भी देखीं, जिन्होंने मुझे दुखी और क्रोधित किया; लेकिन फिर, कुछ ऐसे अंश भी आए जो इतने सच्चे, इतने गहन विचार से भरे और इतने कोमल भावों से अभिव्यक्त थे कि उन्हें क्षमा करने और उनकी प्रशंसा करने से खुद को रोकना असंभव था।

. . . .

लेकिन काश उन्हें यह समझाया जा सकता कि वे समकालीन राजनीतिक या धार्मिक षड्यंत्रों में ज्यादा रुचि न लें। थैकरे अपने हृदय में किसी भी युग या काल के राजनीतिक या धार्मिक षड्यंत्रों को महत्व नहीं देते। वे हमें घरेलू मानवीय स्वभाव को वैसे ही दिखाना पसंद करते हैं जैसे वे स्वयं प्रतिदिन देखते हैं; उनकी अद्भुत अवलोकन क्षमता हमेशा सक्रिय रहती है। यह क्षमता उनमें एक प्रकार के कप्तान और नेता की भूमिका निभाती है; और यदि उनके लेखन में कभी कोई अंश नीरस लगता है, तो वह तब होता है जब यह क्षमता कुछ समय के लिए गौण हो जाती है। मुझे लगता है कि इस खंड के पूर्वार्ध में यही स्थिति है। मध्य की ओर बढ़ते हुए, वे संयम छोड़ देते हैं, अपने असली रूप में आ जाते हैं, और अंत तक सशक्त बने रहते हैं। अब सब कुछ दूसरे और तीसरे खंड पर निर्भर करता है। यदि सार और रुचि के मामले में वे पहले खंड से कमतर साबित होते हैं, तो सच्ची सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। यदि निरंतरता प्रारंभ से बेहतर हो, यदि प्रवाह के साथ-साथ गति बढ़ती जाए, तो थैकरे विजयी होंगे। कुछ लोग उन्हें समकालीन लेखक कहने के आदी रहे हैं; ये आलोचक

अपने फैसले में सही हैं या नहीं, ये पूरी तरह से उन पर निर्भर करता है। उन्हें दूसरे स्थान पर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। ईश्वर ने उन्हें किसी से कम नहीं बनाया है। अगर मैं उनकी जगह होता, तो मैं खुद को वैसे ही दिखाता जैसा मैं हूं, न कि जैसा आलोचक मेरे बारे में बताते हैं; कम से कम मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करता। श्री थैकरे आरामपसंद और आलसी हैं, और शायद ही कभी अपना सर्वश्रेष्ठ करने की परवाह करते हैं। एक बार फिर धन्यवाद; और विश्वास करें, आपका सच्चा।

सी. ब्रोंटे।"

मिस ब्रोंटे का स्वास्थ्य इतना खराब था कि गंभीर बीमारी के बाद कई हफ्तों तक वे अपनी इच्छानुसार लेखन कार्य नहीं कर सकीं। इस दौरान उनकी रुचि की कुछ ही घटनाएं हुईं, लेकिन उनमें भी उन्हें कोई खास खुशी नहीं मिली। मार्च में उन्हें उपनिवेशों में एक मित्र के रिश्तेदार की मृत्यु की खबर मिली; और इससे उनके हृदय में व्याप्त गहरे भय की झलक मिलती है।

ई — — की मृत्यु की खबर मुझे पिछले हफ्ते एम — — के एक पत्र से मिली; एक लंबा पत्र, जिसने अपने सरल, सशक्त और सच्चे भावों से मेरे दिल को इतना झकझोर दिया कि मैंने उसे केवल एक बार ही पढ़ने का साहस किया। इसने मेरे आधे-अधूरे घावों को भयानक बल से कुरेद दिया। मृत्युशय्या पर उसका हाल बिल्कुल वैसा ही था — सांसें रुक रही थीं, इत्यादि। उसे डर है कि अब वह अपने एकांत में एक 'कठोर, निर्दयी और स्वार्थी स्त्री' बन जाएगी। इस डर ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया; मैंने इसे बार-बार अपने लिए महसूस किया है, और एम — — के डर के सामने मेरी क्या भूमिका है? ईश्वर उसकी मदद करे, क्योंकि केवल ईश्वर ही उसकी मदद कर सकता है!

बार-बार उसकी सहेली उसे घर छोड़ने के लिए उकसाती रही; और जब अकेलेपन में उदासी के ये दौरे उस पर हावी हो जाते थे, तो उसे ऐसा करने के लिए कई निमंत्रण भी मिलते थे। लेकिन वह खुद को ऐसी कोई छूट नहीं देती थी, जब तक कि उसकी सेहत के कारण यह बिल्कुल ज़रूरी न हो जाए। वह माहौल और समाज में बदलाव जैसे उत्तेजकों का सहारा लेने से डरती थी, क्योंकि इससे निश्चित रूप से नकारात्मक प्रतिक्रिया होती थी। जहाँ तक वह समझ सकती थी, उसका जीवन अकेला ही होना तय था, और उसे अपने स्वभाव को अपने जीवन के अधीन करना होगा, और यदि संभव हो, तो दोनों में सामंजस्य स्थापित करना होगा। जब वह खुद को कथा लेखन में

लगा पाती थी, तो सब कुछ अपेक्षाकृत ठीक रहता था। उसके उपन्यासों के पात्र उसके शांत क्षणों में उसके साथी होते थे, जो वह पूरी तरह से अकेले बिताती थी, कई दिनों तक अक्सर घर से बाहर निकलने में असमर्थ रहती थी। उसके उपन्यासों के पात्रों की रुचियाँ उसके अपने जीवन में रुचि की कमी को पूरा करती थीं; और स्मृति और कल्पना को अपना उचित काम मिल जाता था, और वे उसके मन पर हावी होना बंद कर देते थे। लेकिन अक्सर वह लिख नहीं पाती थी, अपने पात्रों को देख नहीं पाती थी, न ही उनकी बातें सुन पाती थी; सिरदर्द के एक घने कोहरे ने उन्हें धुंधला कर दिया था; वे उसके लिए अस्तित्वहीन हो गए थे।

यही स्थिति इस पूरी वसंत ऋतु में बनी रही; और उनके प्रकाशक इसके पूरा होने को लेकर जितने चिंतित थे, विलेट का काम रुका रहा। यहाँ तक कि उनकी सहेली को लिखे पत्र भी बहुत कम और संक्षिप्त हैं। उनमें से कहीं-कहीं मुझे एक-दो वाक्य ऐसे मिले हैं जिन्हें निकाला जा सकता है और जिन्हें सहेज कर रखना उचित होगा।

"एम — — का पत्र बहुत ही रोचक है; यह एक ऐसे मन को दर्शाता है जिसकी प्रशंसा किए बिना रहा नहीं जा सकता। इसकी शांत, भरोसेमंद दृढ़ता की तुलना बेचारी — — की अस्थिर निर्भरता से कीजिए। जब वह पहली बार खुशी से झूम उठी थी, तो मुझे याद नहीं आता कि उसने कभी ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की हो। उसके मन में अपने सुख को लेकर जो अविश्वास और संदेह था, वह हमेशा सहानुभूति का पात्र बना रहता था। एम — — विश्वास करती है; उसका विश्वास कृतज्ञतापूर्ण और शांत है; फिर भी स्वयं में प्रसन्न रहते हुए भी, वह दूसरों के प्रति कितनी विचारशील है!"

23 मार्च, 1852।

"प्रिय ई——, तुम कहती हो कि तुम अक्सर चाहती हो कि मैं भी तुम्हारी तरह कागज़ पर बातें करूँ। मैं कैसे कर सकती हूँ? मेरे पास सामग्री कहाँ है? क्या मेरे जीवन में बातचीत के लिए पर्याप्त विषय हैं? मुझे कौन-कौन मिलते हैं? मैं किन-किन लोगों से मिलने जाती हूँ? नहीं, तुम्हें बातें करनी होंगी, और मुझे सुनना होगा, और पाँच मिनट के मनोरंजन के लिए 'हाँ', 'ना' और 'धन्यवाद!' कहना होगा।"

. . . .

मुझे राजनीति में आपकी दिलचस्पी देखकर हंसी आती है। मुझे उत्तेजित करने की उम्मीद मत रखिए; मेरे लिए तो सभी मंत्रालय और सभी विपक्ष लगभग एक जैसे ही

लगते हैं। विपक्ष के नेता के रूप में डी'इजराइली गुटबाज़ी करते थे; अब जब लॉर्ड जॉन रसेल ने डी'इजराइली की जगह ले ली है, तो वे भी गुटबाज़ी करने वाले ही होंगे। लॉर्ड डर्बी का 'ईसाई प्रेम और भावना' तीन कौड़ी के बराबर है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, एस्क्वायर को।

25 मार्च, 1852।

“मेरे प्रिय महोदय, श्री स्मिथ ने कुछ समय पहले सूचित किया था कि वे शर्ली का पुनर्मुद्रण प्रकाशित करने पर विचार कर रहे हैं। मैंने इस कृति को संशोधित कर लिया है और अब मैं इसमें त्रुटियों की सूची संलग्न कर रहा हूँ। मैंने आज ही रेल द्वारा कॉर्नहिल पुस्तकों का एक रिटर्न बॉक्स भी भेज दिया है।”

मैंने हाल ही में 'द टू फैमिलीज़' को बड़े आनंद से पढ़ा। ऐसा लगता है कि यह रचना जनवरी में ही मुझ तक पहुँच जानी चाहिए थी; लेकिन एक गलती के कारण यह डेड लेटर ऑफिस में अटक गई और लगभग दो महीने तक वहीं पड़ी रही। मुझे इसकी शुरुआत बहुत पसंद आई; लेकिन अंत मुझे 'रोज़ डगलस' के स्तर का नहीं लगा। मुझे लगता है कि लेखिका ने मुख्य रुचि को उन दो पात्रों से हटाकर, जिन पर यह रचना टिकी है - बेन विल्सन और मैरी - अन्य कमतर पात्रों पर केंद्रित करके गलती की है। यदि उन्होंने बेन और मैरी को ही अपना नायक और नायिका बनाया होता और उनके भाग्य और चरित्र के विकास को उसी स्वाभाविक और वास्तविक ढंग से जारी रखा होता, जिस तरह से उन्होंने इसे शुरू किया है, तो एक उत्कृष्ट, बल्कि मौलिक पुस्तक का परिणाम हो सकता था। जहाँ तक लिलियास और रोनाल्ड की बात है, वे केवल काल्पनिक पात्र हैं, उनमें असली स्कॉटिश किसान का कोई अंश नहीं है; वे कैलेडोनियन बोली भी नहीं बोलते; वे एक सभ्य महिला और सज्जन की तरह बातें करते हैं।

मुझे बहुत पहले ही मिस कावानाघ की ‘विमेन ऑफ क्रिश्चियनिटी’ पढ़कर मिली संतुष्टि को स्वीकार कर लेना चाहिए था। उनकी उदारता और (कुल मिलाकर) उनकी निष्पक्षता बहुत ही प्रशंसनीय है। उन्होंने हंगरी की एलिजाबेथ के विषय को कुछ ज्यादा ही कोमल ढंग से छुआ है; और अपने मन में, उन्होंने स्पष्ट रूप से इस तथ्य को गलत समझा है कि प्रोटेस्टेंट धर्म में दान-पुण्य कैथोलिक धर्म की तुलना में कम प्रतीत होता है। वे भूल जाती हैं, या शायद नहीं जानतीं, कि प्रोटेस्टेंट धर्म रोमन धर्म की तुलना में अधिक शांत धर्म है; जिस प्रकार यह अपने पुरोहितों को लाल वस्त्र नहीं

पहनाता, उसी प्रकार यह अपनी नेक महिलाओं को संत घोषित नहीं करता, उनके नाम को विख्यात नहीं करता और उनके अच्छे कार्यों का बखान नहीं करता। मनुष्य के अभिलेखों में शायद उनके दान-पुण्य का उल्लेख न मिले, लेकिन स्वर्ग और पृथ्वी दोनों का हिसाब है।

"आपको और आपके परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ, मुझे आशा है कि आप सभी ने हाल ही में गुज़री भीषण सर्दी और पूर्वी हवाओं का सुरक्षित रूप से सामना किया होगा, जो यॉर्कशायर में अभी भी हमारी वसंत ऋतु को प्रभावित कर रही हैं। —प्रिय महोदय, आपका सादर,

सी. ब्रोंटे।"

"3 अप्रैल, 1852।"

"मेरे प्रिय महोदय, — बॉक्स बिल्कुल सुरक्षित रूप से पहुँच गया है, और मैं इसके अंदर रखी सामग्री के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ, जो अत्यंत ही विनम्रतापूर्वक चुनी गई है।"

जैसा कि आपने मुझसे 'द स्कूल फॉर फादर्स' के बारे में अपने विचार बताने को कहा, मैंने इसे तुरंत पढ़ लिया। मुझे यह पुस्तक चतुर, रोचक, बेहद मनोरंजक और आम तौर पर पसंद आने वाली लगी। विषयवस्तु का चुनाव सराहनीय है, जो अभी तक घिसा-पिटा नहीं है; विषय, पात्र और युग की नवीनता कहानी को एक विशेष आकर्षण प्रदान करती है। मुझे लगता है कि इसमें स्थितियों का सजीव चित्रण है और जो कुछ भी दिखाई देता है और स्पर्शनीय है—जो कुछ भी आँखों को सतह पर दिखता है—उसे वर्णित करने की जीवंत प्रतिभा है। मुझे लगता है कि इसका हास्य मंच पर खूब जम सकता है; अधिकांश दृश्यों को अपना पूर्ण प्रभाव देने के लिए नाटकीय तत्वों की आवश्यकता प्रतीत होती है। लेकिन मुझे लगता है कि इससे अधिक प्रशंसा करना उचित नहीं होगा। स्पष्ट रूप से कहूँ तो, कहानी पढ़ते समय मुझे नैतिकता और भावना में एक अद्भुत खोखलापन महसूस हुआ; उद्देश्य और भावना में एक अजीब शौकियापन और सतहीपन। आखिरकार, 'जैक' 'टोनी लम्पकिन' से कुछ खास बेहतर नहीं है, और दोनों के बीच बहुत अधिक विकल्प नहीं हैं। वह एक मसखरा है और वैसा ही दिखावटी जैसा उसके पिता उसे बनाना चाहते थे। पुराने अंग्रेज लोमड़ी शिकारी का घोर भौतिकवादी जीवन और एक सभ्य सज्जन का तुच्छ अस्तित्व दो चरम सीमाओं को दर्शाते हैं, दोनों अपने-अपने तरीके से इतने घृणित हैं कि एक युवक के भाग्य पर

भावुक होने पर मन में हल्की सी मुस्कान आ जाती है, जिसे एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाने के लिए मजबूर किया जाता है; अस्तबल से निकालकर शायद नृत्य-गृह में ले जाया जाता है। जैक की मृत्यु वास्तव में दुखद है, और आपको उस बेचारे की असमय मृत्यु पर खेद होता है; लेकिन आप यह नहीं भूल सकते कि अगर वह कर्नल पेनरुडॉक के हथियार के रास्ते में न आया होता, तो शायद लोमड़ी के शिकार में उसकी गर्दन टूट जाती। सर थॉमस वॅरिन का चरित्र उत्कृष्ट है; शुरू से अंत तक सुसंगत। मिस्टर एडिसन का चरित्र बुरा नहीं है, लेकिन अधूरा है, केवल एक रूपरेखा—रंग और पूर्णता की कमी है। उस व्यक्ति का चित्र है, उसकी वेशभूषा है, और उसके जीवन के खंडित किस्से हैं; लेकिन उस व्यक्ति का स्वभाव—आत्मा और स्व—कहाँ है? मैं महिला पात्रों के बारे में कुछ नहीं कहूँगा—एक भी नहीं। बस इतना ही कि लिडिया मुझे एक प्यारी सी छोटी अभिनेत्री जैसी लगती है, जो सुंदर कपड़े पहने, शालीनता से आती-जाती और फिर एक सभ्य कॉमेडी में प्रकट होती है, अपने किरदार के उचित भावों को पूरी चतुराई और भोलेपन के साथ अपनाती है, और बस इतना ही।

"व्यवसाय के आदर्श व्यक्ति का आपका वर्णन काफी हद तक सही है, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है; लेकिन हमें यह डर नहीं है कि समाज कभी इस स्तर तक पूरी तरह पहुँच पाएगा; मानव स्वभाव (चाहे वह कितना भी बुरा क्यों न हो) में ऐसे तत्व मौजूद हैं जो इसे रोकते हैं। लेकिन इस तरह की परिणति की प्रवृत्ति—मुझे डर है कि आज की यह स्पष्ट प्रवृत्ति—निस्संदेह क्रूर पीड़ा उत्पन्न करती है। फिर भी, जब प्रतिस्पर्धा की बुराई एक निश्चित सीमा को पार कर जाती है, तो क्या समय के साथ वह अपना इलाज खुद नहीं कर लेती? मुझे लगता है कि ऐसा होगा, लेकिन तब किसी उथल-पुथल भरे संकट के माध्यम से, जो अपने चारों ओर भूकंप की तरह सब कुछ तहस-नहस कर देगा। इस बीच, कितने लोगों के लिए जीवन एक संघर्ष बन गया है; आनंद और आराम सीमित हो गए हैं; श्रम इतना बढ़ गया है कि प्रकृति की सहनशीलता लगभग खत्म हो गई है। मैं अक्सर सोचता हूँ कि यह दुनिया सबसे भयानक पहेलियों में से एक होती, अगर इस दृढ़ विश्वास के लिए न होता कि एक आने वाली दुनिया है, जहाँ कर्तव्यनिष्ठ प्रयास और धैर्यपूर्ण पीड़ा को उनका फल मिलेगा।— विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आपका सच्चा,

सी. ब्रोंटे।"

ब्रसेल्स में अपनी पुरानी सहपाठी को लिखे एक पत्र में उन्होंने उस नीरस सर्दी का

संक्षिप्त विवरण दिया है जिससे वह गुज़री थीं।

हॉवर्थ, 12 अप्रैल, 1852।

“...मैंने बड़ी मुश्किलों से सर्दी और बसंत के शुरुआती दिनों को बिताया। मेरी सहेली जनवरी के शुरुआती दिनों में कुछ दिन मेरे साथ रही; वह इससे ज़्यादा दिन नहीं रुक सकती थी। उसके आने के दौरान मेरी हालत बेहतर थी, लेकिन उसके जाने के तुरंत बाद मेरी तबीयत फिर बिगड़ गई, जिससे मेरी ताकत बहुत कम हो गई। यह बात तो तय है कि अकेलेपन ने मेरी दूसरी परेशानियों को और भी बढ़ा दिया। कुछ दिन और रातें बहुत तूफ़ानी रहीं, जब मुझे सहारे और साथ की इतनी तीव्र चाहत हुई कि मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती। नींद न आने के कारण मैं रात-रात भर जागती रही, कमज़ोर और खुद को व्यस्त रखने में असमर्थ। मैं दिन-रात अपनी कुर्सी पर बैठी रहती थी, सबसे उदास यादें ही मेरी एकमात्र साथी थीं। यह एक ऐसा समय था जिसे मैं कभी नहीं भूलूँगी; लेकिन यह ईश्वर की मर्ज़ी थी, और शायद यही मेरे भले के लिए था।”

“अब मैं बेहतर महसूस कर रही हूँ; और अपनी सेहत में सुधार के लिए बहुत आभारी हूँ; लेकिन, मानो कोई न कोई बीमारी तो होनी ही थी, पापा, जो पूरी सर्दी भर स्वस्थ रहे, अब वसंत ऋतु में ब्रोंकाइटिस से पीड़ित हो गए हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह बीमारी अब तक की तुलना में बेहतर होकर ही ठीक हो जाएगी।”

"मैं मोतियाबिंद के बारे में आपके सवाल का जवाब देना न भूलूँ। अपने पापा को बताएँ कि मेरे पिता जब ऑपरेशन करवा रहे थे तब उनकी उम्र सत्तर साल थी; वे इस प्रयोग को आज़माने के लिए बहुत अनिच्छुक थे; उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि उनकी उम्र और कमज़ोरी को देखते हुए यह सफल होगा। मुझे इस मामले में बहुत दृढ़ निश्चय करना पड़ा और पूरी ज़िम्मेदारी पर काम करना पड़ा। मोतियाबिंद निकलवाने के बाद से अब लगभग छह साल बीत चुके हैं (इसे केवल दबाया नहीं गया था); इस दौरान उन्होंने कभी भी इस कदम पर पछतावा नहीं किया और शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो जब वे दृष्टि के उस अमूल्य विशेषाधिकार की बहाली पर कृतज्ञता और प्रसन्नता व्यक्त न करते हों, जिसे खोने का उन्हें कभी दुख हुआ था।"

मैंने अपने एक पत्र में मिस ब्रोंटे को उस कहानी की रूपरेखा दी थी जिस पर मैं उस समय काम कर रहा था, और जवाब में उन्होंने कहा: —

आपने अपने काम का जो संक्षिप्त विवरण दिया है (जिसके बारे में मैं, ज़ाहिर है,

कुछ नहीं कह सकता), वह मुझे बहुत ही सराहनीय लगता है; और इसका उद्देश्य व्यावहारिक रूप से उतना ही उपयोगी हो सकता है जितना कि सैद्धांतिक रूप से उच्च और न्यायसंगत। ऐसी पुस्तक उन अनेकों को आशा और ऊर्जा प्रदान कर सकती है जिन्होंने सोचा था कि उन्होंने इन दोनों का अधिकार खो दिया है; और उन लोगों के लिए सम्मानजनक प्रयास का एक स्पष्ट मार्ग खोल सकती है जिन्होंने मान लिया था कि इस संसार में उनका और सभी सम्मान का साथ छूट गया है।

"लेकिन—मेरी आपत्ति सुनो!"

"उसे क्यों मरना चाहिए? हमें किताब के रोने को क्यों चुप कराना चाहिए?"

"उस पीड़ा के बारे में सोचकर ही मेरा हृदय कांपने लगता है जो उसे सहनी पड़ेगी। फिर भी तुम्हें अपनी प्रेरणा का अनुसरण करना होगा। यदि वह प्रेरणा ही बलि देने का आदेश देती है, तो किसी भी दर्शक को बलि के चाकू को रोकने का अधिकार नहीं है: परन्तु इन मामलों में मैं तुम्हें एक कठोर पुजारिन मानती हूँ।"

मौसम सुहावना होने पर उनका स्वास्थ्य सुधर गया और उनकी लेखन क्षमता भी बढ़ गई। उन्होंने दुगने जोश के साथ अपने सामने मौजूद काम को ठान लिया और निरंतर परिश्रम के लिए सुख-सुविधाओं का त्याग कर दिया। इसलिए वे अपनी सहेली को लिखती हैं: —

"11 मई।"

प्रिय ई — — , — मुझे अपने इस संकल्प पर कायम रहना होगा कि फिलहाल न तो मैं तुमसे मिलने आऊँगी और न ही तुमसे मिलने आऊँगी। तुम शांति से बी में रहो, जब तक तुम एस नहीं चली जाती, जैसे मैं हॉवर्थ में रहूँगी; दिल से दी गई विदाई उतनी ही सच्ची होती है जितनी होंठों से, और शायद कम कष्टदायक भी। मुझे खुशी है कि मौसम बदल गया है; दक्षिण-पश्चिम हवा का लौटना मुझे अच्छा लग रहा है; लेकिन मुझे उम्मीद है कि तुम्हें अपनी पसंदीदा पूर्वी हवा के जाने का कोई अफसोस नहीं होगा। तुमने — — के बारे में जो कहा, उससे मुझे आश्चर्य नहीं हुआ; मुझे कई छोटे-छोटे पत्र मिले हैं (जिनमें से लगभग एक तिहाई में एक ऐसा ही है) जिनमें यही भावना झलकती है, — स्वयं और बच्चा ही एकमात्र विषय हैं, जिन पर बार-बार चर्चा होती रहती है, यहाँ तक कि ऊब भी जाती है। लेकिन मुझे लगता है कि इस पर ध्यान नहीं देना चाहिए, या इसे अनोखा नहीं समझना चाहिए। और मुझे डर है कि उससे सुधार की उम्मीद भी नहीं करनी चाहिए। मैंने हाल ही में एक फ्रांसीसी किताब में इसी

आशय का एक वाक्य पढ़ा था, कि 'विवाह को दोहरे स्वार्थ की स्थिति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।' इसलिए अविवाहितों को सांत्वना मिलनी चाहिए। मैरी के पत्र के लिए धन्यवाद। वह वास्तव में बहुत खुश लग रही है; और मैं आपको बता नहीं सकती कि उसकी खुशी पहले से कहीं अधिक वास्तविक, स्थायी और उचित प्रतीत होती है। मुझे लगता है कि इसका बहुत बड़ा श्रेय उसके स्वयं के व्यक्तित्व और उसके शांत, पवित्र, भरोसेमंद और धार्मिक स्वभाव को जाता है। मैरी हमेशा मुझे एक अस्थिर, अनिश्चित आनंद का आभास देती है, जो परिस्थितियों और उनके उतार-चढ़ाव पर पूरी तरह निर्भर करता है। यदि मैरी माँ बनती है, तो आपको एक बड़ा अंतर दिखाई देगा।

प्रिय ई., आपकी यात्रा मंगलमय और सुखद हो, ऐसी मेरी शुभकामना है; और जहाँ तक अभी अनुमान लगाया जा सकता है, आपकी यह इच्छा पूरी होने की प्रबल संभावना है। — आपका सादर,

"सी. ब्रोंटे।"

अध्याय XI.

पाठकों को याद होगा कि ऐनी ब्रोंटे को स्कारबोरो स्थित ओल्ड चर्च के कब्रिस्तान में दफनाया गया था। शार्लोट ने अपने ऊपर एक समाधि-पत्थर लगवाने के निर्देश दिए थे; लेकिन पिछली सर्दियों के एकांत में, उनके उदास और चिंतित विचार बार-बार उस अंतिम महान त्रासदी के स्थल पर लौट आते थे, और वे सोचती रहती थीं कि क्या मृत आत्मा की स्मृति को उचित सम्मान दिया गया है, अंततः उन्होंने चुपचाप यह निश्चय कर लिया कि वे स्वयं जाकर देखेंगी कि पत्थर और शिलालेख संतोषजनक स्थिति में

हैं या नहीं।

"क्लिफ हाउस, फिली, 6 जून, 1852।"

प्रिय ई——, मैं फाइली में बिलकुल अकेला हूँ। नाराज़ मत होना, यह कदम सही है। मैंने इस पर विचार किया और सोच-समझकर निर्णय लिया। वातावरण में बदलाव ज़रूरी था; कुछ कारण थे जिनकी वजह से मुझे दक्षिण नहीं जाना चाहिए था और यहाँ आना चाहिए था। शुक्रवार को मैं स्कारबोरो गया, कब्रिस्तान और पत्थर के स्मारक का दौरा किया। इसे फिर से तराशना और उस पर नए अक्षर लिखवाने होंगे; इसमें पाँच गलतियाँ हैं। मैंने आवश्यक निर्देश दे दिए हैं। वह कर्तव्य पूरा हो गया है; यह लंबे समय से मेरे मन पर बोझ बना हुआ था; और यह एक ऐसी तीर्थयात्रा थी जिसे मैं अकेले ही कर सकता था।

मैं श्रीमती स्मिथ के यहाँ अपने पुराने किराए के कमरे में हूँ; हालाँकि, उन्हीं कमरों में नहीं, बल्कि कम खर्चीले अपार्टमेंट में। वे मुझे देखकर खुश हुए, उन्हें आप और मैं अच्छी तरह याद थे, और ऐसा लग रहा था कि वे बहुत सद्भावना से पेश आ रहे हैं। जो बेटी हमारी सेवा करती थी, उसकी अभी-अभी शादी हुई है। मुझे लगता है कि फाइली काफी बदल गया है; और भी कई किराए के मकान बन गए हैं - उनमें से कुछ बहुत सुंदर हैं - समुद्र अपनी पुरानी शान में लौट आया है। मैं रेत पर खूब चलता हूँ, और उदास और निराश न होने की कोशिश करता हूँ। मेरा दिल आपको कितना याद करता है, यह कहने की ज़रूरत नहीं है। मैंने एक बार स्नान किया; ऐसा लगा जैसे मुझे अच्छा लगा हो। शायद मैं यहाँ दो सप्ताह तक रहूँ। अभी तक यहाँ बहुत कम आगंतुक आए हैं। लेडी वेनलॉक उस बड़े घर में ठहरी हुई हैं, जिसकी आप अक्सर बहुत सतर्कता से निगरानी करती थीं। एक दिन मैं फाइली ब्रिज तक पैदल जाने के इरादे से निकला, लेकिन दो गायों को देखकर वापस लौट आया। मैं किसी सुबह फिर कोशिश करने का इरादा रखता हूँ। मैंने पापा को ठीक-ठाक छोड़ा है। मैं काफी परेशान रहा हूँ। यहां आने के बाद से मुझे सिरदर्द और कमर में थोड़ा दर्द हो रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि यह ठंडी हवा के कारण है, क्योंकि हाल ही में बहुत ठंड थी; अभी मैं बेहतर महसूस कर रहा हूँ। क्या मैं हमेशा की तरह आपको कागजात भेज दूं? कृपया मुझे तुरंत फिर से लिखें और यह सब और आपके मन में जो भी आए, सब कुछ बताएं। — विश्वास करें, आपका विश्वासपात्र,

"सी. ब्रोंटे।"

"फिली, 16 जून, 1852।"

प्रिय ई — — , — मेरे बारे में निश्चिंत रहें। मुझे सच में लगता है कि फाइली में रहने से मुझे बहुत फायदा हुआ है; मुझे उम्मीद से कहीं ज्यादा लाभ मिला है। मेरा मानना है कि अगर मैं यहाँ दो महीने रहूँ और सामाजिक मेलजोल, व्यायाम और ताज़ी हवा का आनंद ले सकूँ, तो मेरा स्वास्थ्य पूरी तरह से ठीक हो जाएगा। हालाँकि, ऐसा संभव नहीं है; फिर भी मुझे जो भी लाभ मिला है, उसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ। मैं यहाँ एक और सप्ताह रुकूँगा।

"मैं — — का पत्र लौटा रही हूँ। मुझे उसके लिए खेद है: मुझे विश्वास है कि वह पीड़ा में है; लेकिन मुझे उसकी अभिव्यक्ति का तरीका कुछ खास पसंद नहीं आया। . . . दुःख और आनन्द दोनों ही अलग-अलग लोगों में अलग-अलग तरीकों से प्रकट होते हैं; और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि जब वह अपने 'प्यारे, पूजनीय पिता' के बारे में बात करती है तो वह सच्ची और गंभीर होती है; लेकिन काश वह सरल भाषा का प्रयोग करती।"

फिली से लौटने के कुछ ही समय बाद, श्री ब्रोंटे की गंभीर और तीव्र बीमारी से वह चिंतित हो गईं। कुछ दिनों तक यह आशंका बनी रही कि कहीं उनकी दृष्टि हमेशा के लिए न चली जाए, और इस भय से उनका मनोबल बुरी तरह टूट गया।

उनकी बेटी लिखती हैं, "किसी भी तरह की बीमारी के दोबारा होने पर जो मन को इतना उदास कर देती है, उसे संभालना सबसे मुश्किल होता है। प्रिय ई——, आप अपना साथ देने के लिए बहुत दयालु हैं; लेकिन आप जहां हैं वहीं शांत रहें; निश्चिंत रहें कि न तो अभी और न ही मौजूदा हालात में मुझे साथ या व्यस्तता की कमी महसूस हो रही है; मेरा समय लगभग भरा हुआ है और मेरे विचार भी व्यस्त हैं। ... मैं आपके आखिरी पत्र की मुख्य बातों पर ज्यादा टिप्पणी नहीं कर सकती; सलाह की जरूरत नहीं है: जहां तक मैं समझ सकती हूं, आप अब तक इन मुश्किलों का सामना अच्छे और समझदारी भरे तरीके से कर रहे हैं। मैं केवल यही प्रार्थना कर सकती हूं कि आपको यह संयुक्त शक्ति और धैर्य मिलता रहे। समर्पण, साहस, और जब संभव हो तो प्रयास—ये वे हथियार हैं जिनसे हमें जीवन की लंबी लड़ाई लड़नी है।"

मुझे लगता है कि जिस समय उनके विचार पूरी तरह से अपने पिता के लिए चिंता से भरे हुए थे, उसी दौरान उन्हें अपने प्रकाशकों से कोई पत्र मिला होगा, जिसमें उस काम की प्रगति के बारे में पूछताछ की गई होगी, जिसके बारे में उन्हें पता था कि वह

कर रही हैं, जैसा कि मुझे श्री विलियम्स को लिखा गया निम्नलिखित पत्र मिला है, जिसमें मेसर्स स्मिथ और एल्डर की कुछ प्रस्तावित व्यवस्थाओं का उल्लेख है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, एस्क्वायर को।

28 जुलाई, 1852।

"मेरे प्रिय महोदय, क्या 'शर्ली' का नया संस्करण जल्द ही प्रकाशित करने की योजना है? क्या इसे कुछ समय के लिए स्थगित करना बेहतर नहीं होगा? आपके पत्र के एक भाग के संदर्भ में, मुझे अपनी यह इच्छा व्यक्त करने की अनुमति दें, और मुझे आशा है कि ऐसा करने से मुझे एक लेखक के रूप में अपनी भूमिका से बाहर निकलने और व्यावसायिक व्यवस्थाओं में हस्तक्षेप करने वाला नहीं माना जाएगा, अर्थात्: 'जेन आयर' के लेखक की किसी भी नई रचना की घोषणा तब तक नहीं की जाएगी जब तक कि उसकी मूल प्रति मेरे प्रकाशक के हाथों में न आ जाए। शायद हममें से कोई भी भविष्य के बारे में इतनी दृढ़ता से बोलने का हकदार नहीं है; लेकिन कुछ लोगों के लिए ऐसी गणनाओं में अत्यधिक सावधानी बरतना मुश्किल होता है: मैं भी उनमें से एक हूँ। और ऐसा करते हुए, मैं क्षमाप्रार्थी लहजा नहीं अपना सकता। जो अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करता है, वही सही करता है।"

"पिछली शरद ऋतु में कुछ समय के लिए मेरी प्रगति तेज़ी से हुई। मैंने वसंत ऋतु को प्रकाशन का समय मानकर आशा की थी: लेकिन मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया; मैंने ऐसी सर्दी बिताई जिसे एक बार अनुभव करने के बाद कभी नहीं भुलाया जा सकता। वसंत ऋतु भी परीक्षा की एक लंबी अवधि से कुछ बेहतर साबित नहीं हुई। गर्म मौसम और समुद्र की सैर ने मुझे शारीरिक रूप से बहुत लाभ पहुँचाया है; लेकिन अभी तक न तो मेरी रचनात्मकता में कोई सुधार हुआ है और न ही मेरी रचना शक्ति में। और यदि ऐसा होता भी, तो कोई लाभ नहीं होता; मेरा समय और विचार इस समय मेरे पिता की देखभाल में लगे हुए हैं, जिनका स्वास्थ्य इस समय बहुत नाज़ुक है, क्योंकि गर्मी के कारण उनके सिर में खून जम गया है। — आपका सादर,

सी. ब्रोंटे।"

अगस्त के अंत से पहले, श्री ब्रोंटे का स्वास्थ्य पूरी तरह से ठीक हो गया था, और वह अपनी बेटी की अनुमति मिलने से पहले ही कुछ समय के लिए अपने कर्तव्यों को फिर से शुरू करने के लिए उत्सुक थे।

14 सितंबर को "महान ड्यूक" का निधन हो गया। जैसा कि हम देख चुके हैं, वह

बचपन से ही उनके आदर्श थे; लेकिन इस समय मुझे उनके बारे में इससे अधिक कोई संदर्भ नहीं मिलता, सिवाय उनकी सहेली को लिखे पत्र के निम्नलिखित अंश में दिए गए संदर्भ के: —

मुझे पूरी उम्मीद और विश्वास है कि इस गर्मी में आपके जीवन में जो बदलाव आए हैं, वे आपको स्थायी रूप से लाभ पहुंचाएंगे, भले ही उनमें कितना भी दर्द क्यों न रहा हो। फिर भी, मुझे खुशी है कि आप जल्द ही घर लौट रहे हैं; और मैं खुद को यह कहने से नहीं रोक पा रही हूँ कि मैं उस समय का कितना इंतज़ार कर रही हूँ जब बिना किसी रुकावट के मैं एक बार फिर हॉवर्थ में आपका स्वागत कर सकूँ। लेकिन ओह, मेरी हालत ठीक नहीं है; मैं परेशान हूँ—असमर्थ महसूस कर रही हूँ—कभी-कभी बहुत उदास भी। हालांकि, फिलहाल इस विषय पर बात नहीं करनी चाहिए; यह मुझे बहुत परेशान कर रहा है—लगभग—और दर्दनाक रूप से। जब तक यह काम खत्म नहीं हो जाता, तब तक मैं पहले से कहीं कम आनंद का अनुभव कर पा रही हूँ। फिर भी, मैं अक्सर रात में बिस्तर पर बैठकर आपके बारे में सोचती हूँ और आपको याद करती हूँ। टाइम्स के लिए धन्यवाद; इस महान और दुखद विषय पर जो लिखा गया था, वह बहुत अच्छा था। अचानक पूरा देश उस महान व्यक्तित्व के बारे में सही राय रखने लगा है। एक अमेरिकी किताब की समीक्षा भी थी, जिसे देखकर मुझे खुशी हुई। 'अंकल टॉम्स केबिन' पढ़ें: हालांकि, शायद आपने इसे पढ़ा होगा।

“भगवान का शुक्र है, पापा की सेहत ठीक है! जहाँ तक मेरी बात है, मेरा बदकिस्मत लिवर फिर से खराब हो गया है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि अब यह बेहतर व्यवहार करेगा; यह मेरे काम में बाधा डालता है - मेरी ऊर्जा और भावनाओं दोनों को कम कर देता है। मुझे समय-समय पर इस गड़बड़ी के लिए तैयार रहना होगा।”

हॉवर्थ हमेशा की तरह अस्वस्थ अवस्था में था; और मिस ब्रोंटे और टैबी दोनों ही प्रचलित महामारियों से बुरी तरह पीड़ित थीं। मिस ब्रोंटे को इस बीमारी से उबरने में लंबा समय लगा। उन्होंने व्यर्थ ही यह संकल्प लिया कि जब तक उनका प्रसव पूरा नहीं हो जाता, तब तक वे किसी भी सामाजिक मेलजोल या परिवेश में बदलाव नहीं करेंगी। वे लिखने के लिए बहुत बीमार थीं; और बीमारी के साथ-साथ उनके मन में पुराना भारीपन, अतीत की यादें और भविष्य की आशंकाएं भी लौट आईं। अंततः, मिस्टर ब्रोंटे ने इतनी प्रबल इच्छा व्यक्त की कि उनकी सहेली को उनसे मिलने के लिए आमंत्रित किया जाए, और उन्हें थोड़ी सी राहत इतनी आवश्यक लगी कि 9

अक्टूबर को उन्होंने उनसे केवल एक सप्ताह के लिए हॉवर्थ आने का अनुरोध किया।

मैंने सोचा था कि मैं अपना काम पूरा होने तक खुद को संयमित रखूंगी, लेकिन मुझे लगता है कि इससे काम नहीं चलेगा; मामला आगे नहीं बढ़ रहा है, और यह अत्यधिक अकेलापन बहुत भारी पड़ रहा है; इसलिए मुझे बस एक हफ्ते के लिए तुम्हारा प्यारा चेहरा देखने दो, ई.।

लेकिन वह अपनी सहेली की संगति केवल निर्धारित समय के लिए ही स्वीकार करती थी। इसलिए वह 21 अक्टूबर को मिस वूलर को लिखती है: —

"ई——सिर्फ एक हफ्ते के लिए ही मेरी साथी रही है। मैं उसे और नहीं रखना चाहती, क्योंकि मैं खुद से और अपनी देरी से तंग आ चुकी हूँ; और मुझे लगता है कि उसे बुलाना ही मेरे लिए प्रलोभन के आगे झुकना था; लेकिन सच तो यह है कि मेरा मनोबल गिर रहा था—कभी-कभी तो बिल्कुल टूट जाता था—और उसने मुझे बहुत सहारा दिया है। मुझे आश्चर्य है कि मैं तुम्हें हॉवर्थ में कब दोबारा देख पाऊँगी; मेरे पिता और नौकरों ने बार-बार यह इच्छा ज़ाहिर की है कि तुम्हें गर्मियों और पतझड़ के दौरान आने का न्योता दिया जाए, लेकिन मैंने हमेशा अनसुना ही किया है; मेरा मन करता था, 'अभी नहीं,' 'मुझे पहले आज़ाद होना है;' पहले काम, फिर मौज-मस्ती।"

मिस — — की मुलाक़ात से उन्हें बहुत लाभ हुआ था। दिन भर की सुखद संगति ने कुछ समय के लिए रात में शांतिपूर्ण विश्राम का असामान्य आशीर्वाद प्रदान किया; और अपनी सहेली के जाने के बाद वे इतनी स्वस्थ हो गईं कि काम में जुट गईं और विलेट की अपनी कहानी पर लगभग निरंतर लिखती रहीं, जो अब अपने अंतिम चरण में पहुँच रही थी। श्री स्मिथ को लिखा गया निम्नलिखित पत्र पांडुलिपि के पहले भाग के साथ भेजा गया प्रतीत होता है।

30 अक्टूबर, 1852।

"मेरे प्रिय महोदय, जब आप 'विलेट' पढ़ लें, तो कृपया ईमानदारी से बताएं कि आपको यह कैसी लगी। मैं आपको बता नहीं सकती कि मैं अपनी राय के अलावा किसी और की राय सुनने के लिए कितनी तरसती हूँ, और मैं कई बार कितनी निराश और हताश हो गई हूँ, क्योंकि कोई ऐसा नहीं था जिसे मैं एक पंक्ति पढ़कर सुना सकूँ या जिससे सलाह ले सकूँ। 'जेन आयर' ऐसी परिस्थितियों में नहीं लिखी गई थी, न ही 'शर्ली' का दो-तिहाई भाग। मैं इसके बारे में इतनी दुखी हो गई थी कि मैं किताब का ज़िक्र भी बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। यह अभी पूरी नहीं हुई है; लेकिन अब मुझे

उम्मीद है। गुमनाम प्रकाशन के बारे में मेरा बस इतना कहना है: यदि लेखक का नाम छिपाने से प्रकाशक के हितों को कोई नुकसान होता है, पुस्तक विक्रेताओं के ऑर्डर में बाधा आती है, आदि, तो मैं इस मुद्दे पर ज़ोर नहीं दूंगी; लेकिन यदि ऐसा कोई नुकसान नहीं है, तो मैं गुमनाम प्रकाशन की सुरक्षा के लिए बहुत आभारी रहूंगी। मुझे विज्ञापनों से डर लगता है — बड़े अक्षरों में छपा 'कुरर बेल का नया उपन्यास'।" या फिर 'जेन आयर के लेखक की नई रचना।' हालांकि, मुझे लगता है कि ये एक सेवानिवृत्त व्यक्ति के आध्यात्मिक विचार हैं; इसलिए आपको खुलकर बोलना होगा। . . . मुझे 'कर्नल एस्मंड' देखकर खुशी होगी। दूसरे खंड पर मेरी आपत्ति यह थी: मुझे लगा कि उसमें इतिहास बहुत ज्यादा था और कहानी बहुत कम।

एक अन्य पत्र में, "एस्मंड" का जिक्र करते हुए, वह निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करती है: —

मुझे तीसरा खंड सबसे अधिक चमकीला, प्रेरक और रोचक लगा। पहले और दूसरे खंड के बारे में मेरा विचार था कि उनके कुछ अंश प्रशंसनीय थे; लेकिन उनमें इतिहास बहुत अधिक और कहानी बहुत कम थी। मेरा मानना है कि एक काल्पनिक रचना सृजनात्मक होनी चाहिए: आदर्श को समर्पित पृष्ठों में वास्तविकता को संयम से ही शामिल किया जाना चाहिए। साधारण घरेलू रोटी केक से कहीं अधिक पौष्टिक और आवश्यक है; फिर भी मिठाई के रूप में मेज पर भूरी रोटी कौन देखना चाहेगा? दूसरे खंड में लेखक हमें उत्तम भूरी रोटी की भरपूर मात्रा प्रदान करता है; अपने तीसरे खंड में, केवल उतना ही अंश देता है जितना कि एक अच्छी तरह से बने, बहुत अधिक मीठे न होने वाले, प्लम-पुडिंग में रोटी के टुकड़ों की तरह।

श्री स्मिथ को लिखे उनके पत्र में, जिसमें 'एस्मंड' का उल्लेख था, जिसने मुझे अभी दिए गए उद्धरण की याद दिला दी, आगे लिखा है: —

आप देखेंगे कि 'विलेट' में सार्वजनिक हित के किसी भी विषय का उल्लेख नहीं है। मैं समसामयिक विषयों पर किताबें नहीं लिख सकता; कोशिश करना व्यर्थ है। न ही मैं नैतिक संदेश के लिए कोई किताब लिख सकता हूँ। न ही मैं कोई परोपकारी कार्य कर सकता हूँ, हालाँकि मैं परोपकार का सम्मान करता हूँ; और श्रीमती बीचर स्टोव की रचना 'अंकल टॉम्स केबिन' जैसे गंभीर विषय के सामने स्वेच्छा से और ईमानदारी से अपना चेहरा नंगा कर सकता हूँ। इन गंभीर विषयों को सही ढंग से समझने के लिए, इनका गहन और व्यावहारिक अध्ययन करना आवश्यक है—इनके पहलुओं को भली-

भांति जानना और इनके दुष्परिणामों को वास्तविक रूप से महसूस करना आवश्यक है; इन्हें व्यावसायिक मामले या व्यापारिक अटकलों के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि श्रीमती स्टोव ने बचपन से ही, किताबें लिखने के बारे में सोचने से बहुत पहले, गुलामी की पीड़ा को अपने हृदय में महसूस किया था। उनकी संपूर्ण रचना में भावना सच्ची है, बनावटी नहीं। ‘विलेट’ की ईमानदारी से आलोचना करना याद रखें और श्री विलियम्स से कहें कि वे अपनी राय खुलकर व्यक्त करें: ऐसा नहीं है कि मैं कुछ बदलने वाला हूँ, लेकिन मैं उनके विचार जानना चाहता हूँ। तुम्हारा।

जी. स्मिथ, एस्क्वायर को।

3 नवंबर।

मेरे प्रिय महोदय, आपके पत्र के लिए मैं बहुत आभारी हूँ; इससे मुझे बहुत राहत मिली, क्योंकि मैं इस बात को लेकर काफी परेशान था कि 'विलेट' दूसरों की नज़रों में कैसी दिखेगी। आपके सकारात्मक विचारों पर भरोसा करने का मुझे कुछ हद तक अधिकार है, क्योंकि जहाँ आपने असहमति का संकेत दिया है, वहाँ आप बिल्कुल सही हैं। आपने कम से कम दो बिंदुओं को बिल्कुल सही पकड़ा है जहाँ मुझे खामी महसूस हुई थी; - ग्राहम के बचपन और जवानी के बीच असंगति, पूर्ण सामंजस्य की कमी, - मिस फैंसहावे के प्रति उनके भावों में अचानक और तीखा बदलाव। हालाँकि, आपको याद रखना चाहिए कि गुप्त रूप से वह कुछ समय से उस युवती को कुछ कमतर आंकते थे - उन्हें देवदूतों से थोड़ा नीचे मानते थे। लेकिन फिर भी पाठक को इस भाव परिवर्तन की तैयारी का बेहतर एहसास होना चाहिए था। प्रकाशन व्यवस्था के संबंध में, मैं इसे कॉर्नहिल पर छोड़ता हूँ। आपने जो कहा है कि एक ऐसे रहस्य को बनाए रखना अनुचित है जिसे कायम नहीं रखा जा सकता, उसमें निस्संदेह एक निश्चित बल है; इसलिए आपको वही करना चाहिए जो आपको सबसे अच्छा लगे। बड़े अक्षरों में छपे विज्ञापनों को भी, विरोध के साथ और शुतुरमुर्ग की तरह छिपने की लालसा के साथ, स्वीकार कर लिया जाता है। तीसरे खंड का अधिकांश भाग 'चिड़चिड़े प्रोफेसर' के चरित्र के विकास में समर्पित है। लूसी को डॉ. जॉन से शादी नहीं करनी चाहिए; वह बहुत युवा, सुंदर, उत्साही और मधुर स्वभाव के हैं; वह प्रकृति और भाग्य के लाडले हैं और जीवन की लॉटरी में उन्हें ज़रूर जीतना चाहिए। उनकी पत्नी युवा, धनी और सुंदर होनी चाहिए; उन्हें सचमुच बहुत खुश रहना चाहिए। अगर लूसी

किसी से शादी करती है, तो वह प्रोफेसर से ही होनी चाहिए - एक ऐसा व्यक्ति जिसमें बहुत कुछ क्षमा करने योग्य है, बहुत कुछ 'सहन करने योग्य' है। लेकिन मैं शुरू से ही मिस फ्रॉस्ट के प्रति उदार नहीं हूँ, मेरा इरादा कभी भी उनके संवादों को सुखद बनाने का नहीं था। इस तीसरे खंड का समापन अभी भी कुछ चिंता का विषय है: हालाँकि, मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास ही कर सकता हूँ। यह जल्दी ही पूरा हो जाएगा, अगर मैं कुछ अप्रिय सिरदर्दों से बच सकूँ, जो जब भी मैं अपने काम में मग्न होता हूँ, अक्सर होते हैं। मुझे पकड़कर मुझे दंडवत करने के लिए। . . . .

"कर्नल हेनरी एस्मंड अभी-अभी पहुंचे हैं। वे अपने क्वीन ऐनी के परिधान में बेहद पुराने और प्रतिष्ठित दिख रहे हैं; विग, तलवार, लेस और झालरें पुराने 'स्पेक्टेटर' टाइप के लोगों द्वारा बखूबी दर्शाई गई हैं।"

इस पत्र के अंत में लिखे एक वाक्य के संदर्भ में, मैं उनके द्वारा कही गई बात का उल्लेख करना चाहूँगी; कि श्री ब्रोंटे चाहते थे कि उनकी नई कहानी का अंत सुखद हो, क्योंकि उन्हें ऐसे उपन्यास नापसंद थे जो मन पर उदासी का भाव छोड़ते हों; और उन्होंने उनसे अनुरोध किया कि वे अपने नायक और नायिका को (परियों की कहानियों के नायकों और नायिकाओं की तरह) "विवाह कराएँ और उन्हें सदा सुखमय जीवन जीने दें"। परन्तु एम. पॉल इमानुएल की समुद्री मृत्यु का विचार उनकी कल्पना में इस कदर अंकित हो गया था कि वह वास्तविकता का स्पष्ट रूप धारण कर बैठा था; और वे अपने काल्पनिक अंत को उसी प्रकार नहीं बदल सकती थीं जैसे कि वे वास्तविक घटनाएँ हों जिनका वे वर्णन कर रही हों। अपने पिता की इच्छा का पालन करते हुए वे केवल इतना ही कर सकती थीं कि भाग्य को रहस्यमय शब्दों में इस प्रकार छिपा दें कि पाठकों के चरित्र और विवेक पर ही उनका अर्थ सिद्ध हो।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, एस्क्वायर को।

"6 नवंबर, 1852।"

"मेरे प्रिय महोदय, आपके स्नेहपूर्ण पत्र के लिए धन्यवाद देना मेरा फौरन है, जिसमें 'विलेट' पर स्पष्ट और सटीक टिप्पणी की गई है। आपकी अनेक आलोचनाओं से मैं सहमत हूँ। तीसरा खंड शायद कुछ आपत्तियों को दूर कर दे; लेकिन कुछ अभी भी प्रासंगिक हैं। मुझे नहीं लगता कि रुचि उस स्तर तक पहुँचती है जैसा आप चाहते हैं। जो भी चरमोत्कर्ष है, वह अंत के निकट ही आता है; और तब भी, मुझे संदेह है कि नियमित उपन्यास पाठक 'पर्याप्त पीड़ा' (जैसा कि अमेरिकी कहते हैं) या कैनवास पर

उचित साहस के साथ उकेरे गए रंगों को उचित मानेंगे। फिर भी, मुझे डर है कि उन्हें जो प्रस्तुत किया गया है, उसी से संतुष्ट होना पड़ेगा: मेरे पास इससे अधिक चमकीले रंग नहीं हैं; यदि मैं लाल रंग को गहरा करने या पीले रंग को चमकाने का प्रयास करूँ, तो मैं उसे बिगाड़ दूँगा।"

"अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो पुस्तक की भावना को शुरू से अंत तक संयमित रखा गया है। नायिका के नाम के बारे में, मैं यह व्यक्त नहीं कर सकता कि किस सूक्ष्म विचार ने मुझे उसे एक ठंडा नाम देने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया; लेकिन, पहले तो मैंने उसे 'लूसी स्नो' (जिसमें 'e' लगा था) कहा; जिसे मैंने बाद में 'फ्रॉस्ट' में बदल दिया। बाद में, मुझे इस बदलाव पर पछतावा हुआ और मैं चाहता था कि उसका नाम फिर से 'स्नो' हो जाए। अगर बहुत देर न हुई हो, तो मैं चाहता हूँ कि पांडुलिपि में यह बदलाव अभी कर दिया जाए। उसका नाम ठंडा होना ही चाहिए; शायद आंशिक रूप से 'लुकस अ नॉन लुसेंडो' सिद्धांत पर - और आंशिक रूप से 'चीजों की उपयुक्तता' पर, क्योंकि उसके व्यक्तित्व में एक बाहरी शीतलता झलकती है।"

"आप कहते हैं कि जब तक उनके जीवन का विस्तृत वर्णन न किया जाए, तब तक उन्हें अस्वस्थ और दुर्बल समझा जा सकता है। मेरा मानना है कि वे समय-समय पर अस्वस्थ और दुर्बल दोनों ही थीं; उनका चरित्र पूर्ण शक्ति का दावा नहीं करता, और उनके जैसा जीवन जीने वाला कोई भी व्यक्ति स्वाभाविक रूप से अस्वस्थ हो जाएगा। उदाहरण के लिए, उन्हें पश्चात्ताप करने के लिए प्रेरित करने वाला कोई स्वस्थ भावना का आवेग नहीं था; बल्कि एकांत के दुख और बीमारी का अर्ध-प्रलाप था। हालाँकि, यदि पुस्तक इन सभी बातों को व्यक्त नहीं करती है, तो कहीं न कहीं कोई बड़ी त्रुटि अवश्य है। मैं कुछ अन्य बिंदुओं को भी स्पष्ट कर सकता था, लेकिन यह ऐसा होगा जैसे किसी चित्र को बनाना और फिर उसके नीचे दर्शाई जाने वाली वस्तु का नाम लिखना। हम जानते हैं कि वह किस प्रकार की पेंसिल है जिसे कलम की आवश्यकता होती है।"

"मेरे विचारों के विवरण के अनुरोध का आपने जिस स्पष्टता और पूर्णता से उत्तर दिया है, उसके लिए मैं आपको एक बार फिर धन्यवाद देता हूँ। महोदय, आपका अत्यंत हार्दिक धन्यवाद।"

"सी. ब्रोंटे।"

मुझे विश्वास है कि एमएस में यह काम श्री स्मिथ और आपके अलावा किसी और

द्वारा नहीं देखा जाएगा।

"10 नवंबर, 1852।"

"महोदय महोदय, मैं केवल यही चाहता था कि 'शर्ली' का प्रकाशन तब तक स्थगित रहे जब तक 'विलेट' लगभग तैयार न हो जाए; इसलिए अब जब भी आप उचित समझें, इसके प्रकाशन पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। पांडुलिपि को टाइप करने के बारे में मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि यदि मैं अपनी औसत रचना गति से और बिना किसी औसत व्यवधान के तीसरे खंड पर काम कर सकूँ, तो मुझे उम्मीद है कि यह लगभग तीन सप्ताह में तैयार हो जाएगा। यह निर्णय मैं आप पर छोड़ता हूँ कि मुद्रण को कुछ समय के लिए स्थगित करना बेहतर होगा या इसे तुरंत शुरू करना। यह निश्चित रूप से अधिक संतोषजनक होगा यदि आप पहले और दूसरे खंड को छापने से पहले तीसरा खंड देख लें; फिर भी, यदि विलंब हानिकारक सिद्ध होने की संभावना है, तो मुझे नहीं लगता कि यह अपरिहार्य है। मैंने 'एस्मंड' का तीसरा खंड पढ़ा है। मुझे यह मनोरंजक और रोमांचक लगा; ऐसा लगता है कि इसमें अन्य दो खंडों की तुलना में कहीं अधिक गति और उत्साह है, – वह गति और चमक जो इसके पूर्ववर्तियों में कभी-कभी कम पड़ जाती थी, यहाँ पूरी तरह से मौजूद है। कुछ अंशों में, मुझे लगा कि थैकरे ने अपनी पूरी क्षमता का प्रयोग किया है; उनकी भव्य, गंभीर शक्ति। इससे मुझे गहरी संतुष्टि मिली। 'आखिरकार उसने अपनी पूरी ताकत लगा दी,' मैं मन ही मन कहने से खुद को रोक नहीं पाई। इस पुस्तक में बीट्रिक्स के चरित्र से अधिक उत्कृष्ट चरित्र मुझे किसी और में नहीं दिखता; इसकी कल्पना ताज़गी भरी है और इसका चित्रण सजीव है। यह अनोखी है; इसमें एक नए प्रकार के प्रभाव हैं—कम से कम मेरे लिए तो नए ही हैं। बीट्रिक्स अपने आप में पूरी तरह बुरी नहीं है। वह कभी-कभी इतनी अच्छाई और महानता प्रकट करती है कि ऐसा लगता है—जैसे उसे किसी नियति ने मजबूर किया हो। ऐसा लगता है जैसे कोई प्राचीन अभिशाप उसके घर पर मंडरा रहा हो, और कई पीढ़ियों में एक बार उसका सबसे सुंदर आभूषण उसकी सबसे बड़ी बदनामी बन जाए। कभी-कभी, उसकी अच्छाई इस भयानक नियति से संघर्ष करती है, लेकिन भाग्य ही जीत जाता है। बीट्रिक्स एक ईमानदार महिला और एक अच्छे पति की पत्नी नहीं हो सकती। वह 'कोशिश करती है, लेकिन वह नहीं कर पाती।' घमंडी, सुंदर और कलंकित, वह वही पैदा हुई जो वह बनी, एक राजा की रखैल। मुझे नहीं पता कि आपने लीडर में छपी सूचना देखी है या नहीं; मैंने

उसे पढ़ा था। किताब खत्म करने के तुरंत बाद। क्या मैं इसे एक नीरस, ठंडी और अपर्याप्त समीक्षा मानकर गलत हूँ? अपनी तमाम दिखावटी मित्रता के बावजूद, इसने मुझ पर बेहद निराशाजनक प्रभाव डाला। यकीनन, 'एस्मंड' को अन्य स्रोतों से इससे अलग तरह का न्याय मिलेगा। आलोचक की एक तीखी टिप्पणी यह है कि ब्लैंच एमोरी और बीट्रिक्स एक जैसी हैं - मानो एक ही मूल चित्र से बनाई गई हों! मेरे लिए वे लगभग एक जैसी हैं जैसे एक नेवला और बंगाल की शाही बाघिन; दोनों चौपाये हैं, और दोनों औरतें। लेकिन मुझे आगे की टिप्पणियों में न तो आपका और न ही अपना समय बर्बाद करना चाहिए। आपका विश्वासपात्र,

"सी. ब्रोंटे।"

इसी महीने के कुछ समय बाद, एक शनिवार को, मिस ब्रोंटे ने 'विलेट' पूरी की और उसे अपने प्रकाशकों को भेज दिया। उन्होंने लिखा, "इसे पूरा करने के बाद मैंने प्रार्थना की। यह अच्छी है या बुरी, मुझे नहीं पता; हे ईश्वर, अब मैं चुपचाप परिणाम का इंतजार करूंगी। मुझे लगता है कि यह पुस्तक आडंबरपूर्ण नहीं मानी जाएगी; न ही यह ऐसी है जिससे किसी प्रकार की शत्रुता उत्पन्न हो।"

प्रसव पीड़ा समाप्त होने पर, उन्हें थोड़ा आराम करने की स्वतंत्रता महसूस हुई। कई मित्र उनसे मिलने और अपने घर में उनका स्वागत करने के लिए उत्सुक थे - मिस मार्टिन्यू, श्रीमती स्मिथ और उनकी वफादार दोस्त ई. -। ई. - को उन्होंने उसी पत्र में, जिसमें उन्होंने 'विलेट' के पूरा होने की घोषणा की थी, एक सप्ताह बिताने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने यह भी सोचना शुरू कर दिया कि क्या श्रीमती स्मिथ के विनम्र निमंत्रण का लाभ उठाना उचित होगा, ताकि प्रूफ रीडिंग को वहीं पर जांचने की सुविधा मिल सके।

यह पत्र केवल 'विलेट' पर उनकी अपनी आलोचनाओं के कारण ही नहीं दिया गया है, बल्कि इसलिए भी दिया गया है क्योंकि यह दर्शाता है कि उन्होंने छोटी-छोटी बातों को भी बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना सीख लिया था, जैसा कि एकाकी और एकांत जीवन जीने वाले सभी लोग करते हैं। श्री स्मिथ 'विलेट' के लिए धन लाने वाली डाक से पत्र नहीं भेज पाए थे, इसलिए उन्हें पत्र बिना किसी पत्र के ही प्राप्त हुआ। जिस मित्र के यहाँ वे ठहरी थीं, उनका कहना है कि उन्हें तुरंत लगा कि 'विलेट' को लेकर कुछ निराशा हुई है, या उनके किसी शब्द या कार्य से किसी को ठेस पहुंची है; और यदि रविवार बीच में न आता, जिससे श्री स्मिथ का पत्र आने का समय मिल जाता, तो वे

लंदन जाते समय निश्चित रूप से उसे देख लेतीं।

6 दिसंबर, 1852।

"मेरे प्रिय महोदय, — रसीदें मुझे सुरक्षित पहुँच गई हैं। पहली रसीद मुझे शनिवार को मिली, बिना किसी लाइन वाले कवर में, और मैंने सोमवार को ट्रेन पकड़कर लंदन जाने का मन बना लिया था, ताकि पता चल सके कि मामला क्या है और मेरे प्रकाशक को किस बात ने चुप करा दिया है। रविवार सुबह आपका पत्र आया, और इस तरह आप कॉर्नहिल में करर बेल के अचानक और बिना बुलाए आने से बच गए। जहाँ तक संभव हो, अस्पष्ट देरी से बचना चाहिए, क्योंकि वे अक्सर परेशान लोगों को अचानक और आवेगपूर्ण कदम उठाने के लिए मजबूर कर देती हैं। तीसरे खंड में एक पात्र समूह से दूसरे पात्र समूह की ओर रुचि के स्थानांतरण के बारे में आपकी शिकायत में मैं आपको फिर से सही मानता हूँ। यह सुखद नहीं है, और संभवतः पाठक को उतना ही अप्रिय लगेगा जितना कि एक तरह से लेखक के लिए यह अनिवार्य था। रोमांस की भावना एक अलग रास्ता सुझाती, जो कहीं अधिक अलंकृत और आकर्षक होता; यह एक सर्वोपरि नायक का निर्माण करती, उसके साथ निष्ठापूर्वक बनी रहती, और उसे सर्वोच्च पूजनीय बनाती; वह होना चाहिए था... एक मूर्ति, और वो भी मूक, अनुत्तरदायी मूर्ति नहीं; लेकिन यह वास्तविक जीवन से बिल्कुल अलग होता—सत्य के विपरीत—संभावना के विरुद्ध। हालाँकि, मुझे इस बात का गहरा डर है कि पुस्तक का सबसे कमज़ोर पात्र वही है जिसे मैंने सबसे सुंदर बनाने का लक्ष्य रखा था; और यदि ऐसा है, तो दोष उसमें वास्तविकता के सार की कमी में निहित है—उसके विशुद्ध रूप से काल्पनिक होने में। मुझे लगा कि इस पात्र में सार का अभाव है; मुझे डर है कि पाठक भी ऐसा ही महसूस करेंगे। इसके साथ जुड़ाव इक्सियन के भाग्य से बहुत मिलता-जुलता है, जिसका एक बादल से विवाह हुआ था। हालाँकि, मुझे लगता है कि पॉलिना का बचपन काफी अच्छी तरह से कल्पना किया गया है, लेकिन उसका... (इस रोचक वाक्य का शेष भाग पत्र से फटा हुआ है)। "इससे लंदन की संक्षिप्त यात्रा अधिक व्यावहारिक हो जाती है, और यदि आपकी माँ कृपा करके जब उनके पास समय हो, तो क्रिसमस के बाद का कोई ऐसा दिन बताएँ जो उन्हें सुविधाजनक लगे, तो मुझे पापा के स्वास्थ्य ठीक रहने पर उनके निमंत्रण का लाभ उठाने में खुशी होगी। काश मैं समय पर पहुँचकर कम से कम कुछ प्रूफ रीडिंग ठीक कर पाता; इससे परेशानी बच जाती।"

अध्याय XII.

जब मुझे पहली बार इस जीवनी को लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तो मेरे सामने सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि मैं शार्लोट ब्रोंटे की महानता, सच्चाई और कोमलता को कैसे प्रदर्शित करूँ, बिना उनके सबसे करीबी और घनिष्ठ मित्रों के निजी जीवन को उनके जीवन में अधिक शामिल किए। इस विषय पर काफी विचार करने के बाद, मैंने यह निश्चय किया कि यदि मैं लिखूँ तो सच्चाई ही लिखूँ; कुछ भी न छिपाऊँ, यद्यपि कुछ बातें, अपने स्वभाव के कारण, दूसरों की तरह विस्तार से वर्णित नहीं की जा सकतीं।

उनके जीवन की सबसे गहरी रुचियों में से एक स्वाभाविक रूप से उनके विवाह और उससे पहले की परिस्थितियों के इर्द-गिर्द घूमती है; लेकिन अन्य सभी घटनाओं की तुलना में (हाल ही की घटना होने और उनसे ही संबंधित किसी अन्य व्यक्ति से जुड़े होने के कारण), इस पर मुझे बहुत सावधानी से विचार करना होगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं स्मृति के सबसे पवित्र अंश में दखल दे दूं। फिर भी, मेरे पास दो कारण हैं, जो मुझे उचित और वैध लगते हैं, उनके वैवाहिक जीवन के कुछ महीनों - उस अल्पावधि के अत्यंत सुख - की घटनाओं का कुछ विवरण देने के लिए। पहला कारण यह है कि मैं इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं कि श्री निकोल्स उन्हें वर्षों तक लगभग प्रतिदिन देखते रहे थे; उन्हें एक बेटी, एक बहन, एक प्रेमिका और एक दोस्त के रूप में देखते थे। वे किसी भी प्रकार की साहित्यिक प्रसिद्धि से आकर्षित होने वाले व्यक्ति नहीं थे। मेरा मानना है कि यह प्रसिद्धि ही उन्हें किसी महिला के पास देखकर शायद विमुख कर देती। वे एक गंभीर, संयमी, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे, जिनमें

धर्म के प्रति गहरी आस्था थी और एक धर्मगुरु के रूप में अपने कर्तव्यों के प्रति भी उनका गहरा आदर था।

वह खामोशी से उसे देखता रहा और लंबे समय से उससे प्रेम करता रहा। वर्षों तक उसके जीवन को करीब से देखने वाले ऐसे व्यक्ति का प्रेम, एक नारी के रूप में उसके चरित्र का एक बड़ा प्रमाण है।

उनका स्नेह कितना गहरा था, यह शब्दों में बयां करना भी मेरे लिए मुश्किल है। उन्हें पता नहीं था—उन्हें तो बस थोड़ा सा ही शक होने लगा था—कि उनके मन में उनके लिए कोई विशेष स्नेह है, जब इसी दिसंबर में एक शाम वे चाय पर आए। चाय के बाद, वे अपनी आदत के अनुसार अध्ययन कक्ष से अपने बैठक कक्ष में लौट आईं, अपने पिता और उनके सहायक को वहीं छोड़कर। तभी उन्होंने अध्ययन कक्ष का दरवाजा खुलते सुना और उन्हें उम्मीद थी कि सामने का दरवाजा भी जोर से बंद होगा। लेकिन उसकी जगह एक हल्की सी दस्तक सुनाई दी; और, "बिजली की तरह, मुझे अचानक समझ आ गया कि क्या होने वाला है। वह अंदर आया। वह मेरे सामने खड़ा हो गया। उसके शब्द क्या थे, आप कल्पना कर सकते हैं; उसका व्यवहार आप शायद ही समझ पाएँ, और मैं उसे भूल भी नहीं सकती। उसने मुझे पहली बार यह एहसास दिलाया कि जब किसी पुरुष को प्रतिफल की आशंका हो, तब स्नेह व्यक्त करने में कितना कष्ट सहना पड़ता है। ... एक ऐसे व्यक्ति को, जो आमतौर पर इतना शांत रहता है, इस तरह कांपते, विचलित और अभिभूत देखकर मुझे एक अजीब सा झटका लगा। मैं बस उससे मुझे अकेला छोड़ने की विनती कर सकी और कल जवाब देने का वादा किया। मैंने पूछा कि क्या उसने पापा से बात की है। उसने कहा कि उसकी हिम्मत नहीं हुई। मुझे लगता है कि मैंने उसे आधे मन से और आधे मन से कमरे से बाहर निकाल दिया।"

मिस ब्रोंटे ने इस भले आदमी के दिल में जो स्नेह जगाया था, वह कितना गहरा, कितना भावुक और कितना अटूट था! यह उनके लिए सम्मान की बात है; और इसी नाते मैंने इस विषय पर इतना बोलना और उनके पत्र से इतने अंश उद्धृत करना अपना कर्तव्य समझा है। अब मैं उस विषय पर विस्तार से चर्चा करने के अपने दूसरे कारण की ओर बढ़ता हूँ, जिसे शायद कुछ लोग पहली नज़र में प्रकाशन के लिए बहुत निजी मान सकते हैं। जब मिस्टर निकोल्स उसे छोड़कर चले गए, तो शार्लोट तुरंत अपने पिता के पास गई और उन्हें सब कुछ बता दिया। वे हमेशा विवाह के विरोधी रहे थे और

लगातार इसके विरुद्ध बोलते रहते थे। लेकिन इस बार तो उनका विरोध और भी बढ़ गया; वे मिस्टर निकोल्स के अपनी बेटी के प्रति इस लगाव को सहन नहीं कर पा रहे थे। हाल ही में बीमार रही शार्लोट को परेशान करने के परिणामों से डरते हुए, उसने जल्दी से अपने पिता को वादा किया कि अगले दिन वह मिस्टर निकोल्स को स्पष्ट रूप से मना कर देगी। इस प्रकार चुपचाप और विनम्रता से, जिस पर अज्ञानी समीक्षकों द्वारा इतने कठोर निर्णय सुनाए गए थे, उसने प्रेम की इस जोशीली, भावुक घोषणा को स्वीकार किया, - इस प्रकार अपने पिता के लिए विचारशील होकर और स्वयं के लिए निस्वार्थ होकर, उसने इस बात पर विचार करना छोड़ दिया कि उसे कैसे जवाब देना चाहिए, सिवाय इसके कि जैसा वह चाहता था!

श्री निकोल्स द्वारा निष्ठा की घोषणा का तात्कालिक परिणाम यह हुआ कि उन्होंने हॉवर्थ के पादरी पद से इस्तीफा दे दिया; और श्रीमती ब्रोंटे ने शब्दों और कार्यों के संदर्भ में स्वयं को निष्क्रिय रखा, जबकि उन्हें अपने पिता द्वारा श्री निकोल्स के बारे में इस्तेमाल किए गए कठोर शब्दों और श्री निकोल्स की स्पष्ट पीड़ा और बिगड़ते स्वास्थ्य से गहरा दुख हुआ। इन परिस्थितियों में, उन्होंने श्रीमती स्मिथ के इस प्रस्ताव को पहले से कहीं अधिक सहर्ष स्वीकार किया कि वे उनसे दोबारा लंदन में मिलने जाएँ; और तदनुसार वे वर्ष 1853 के पहले सप्ताह में वहाँ गईं।

मुझे वहीं से निम्नलिखित पत्र प्राप्त हुआ। अब मैं उसके मित्रतापूर्ण शब्दों को बड़े दुख और गर्व के साथ लिख रहा हूँ।

“12 जनवरी, 1853।”

अब सारी जिम्मेदारी आप पर है। पिछली बार लिखने के बाद से आपकी कोई खबर नहीं मिली; लेकिन मुझे लगा कि मैं आपकी चुप्पी का कारण जानता हूँ, यानी काम में व्यस्तता, और इसलिए मैं इसे न केवल मजबूरी से, बल्कि संतोष के साथ स्वीकार करता हूँ।

जैसा कि ऊपर दी गई तारीख से पता चलता है, मैं इस समय लंदन में हूँ; अपने प्रकाशक के यहाँ शांति से रह रहा हूँ और प्रूफ़ आदि की जाँच कर रहा हूँ। आपकी किताब मिलने से पहले, मैंने श्री स्मिथ से यह बात कही थी और व्यक्त भी की थी कि मैं ‘रूथ’ के काम में बाधा नहीं डालना चाहता; ऐसा नहीं है कि मुझे लगता है कि ‘विलेट’ के साथ संपर्क से उसे कोई नुकसान होगा - हम नहीं जानते कि नुकसान उल्टा भी हो सकता है; लेकिन मुझे तुलनाएँ हमेशा से ही बुरी लगती हैं और मैं नहीं

चाहता कि न तो मैं और न ही मेरे दोस्त ऐसी तुलनाओं का शिकार बनें। इसलिए, श्री स्मिथ ने मेरी किताब का प्रकाशन 24 तारीख तक टालने का प्रस्ताव रखा है; उनका कहना है कि इससे 'रूथ' को दैनिक और साप्ताहिक समाचार पत्रों में शुरुआत करने का मौका मिलेगा और फरवरी के सभी पत्रिकाएँ भी उसी के लिए उपलब्ध रहेंगी। अगर आपको यह देरी अपर्याप्त लगे, तो बोलिए! वरना इसे और बढ़ा दिया जाएगा।

मैं दावे से कह सकता हूँ कि हम चाहे जो भी व्यवस्था कर लें, हम तुलनाओं को पूरी तरह से रोक नहीं पाएंगे; कुछ आलोचकों का स्वभाव ही द्वेषपूर्ण होता है; लेकिन हमें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, हम उन्हें चुनौती दे सकते हैं; वे हमें शत्रु नहीं बना पाएंगे, वे हमारे आपसी संबंधों में ईर्ष्या का एक भी दाग नहीं लगा पाएंगे; मैं इस बात की शपथ लेता हूँ; मुझे पता है कि आप भी वैसा ही करेंगे।

"'विलेट' को 'रूथ' से आगे निकलने का कोई अधिकार नहीं है। रूथ में अच्छाई, परोपकारी उद्देश्य और सामाजिक उपयोगिता है, जिसकी 'विलेट' एक पल के लिए भी अपेक्षा नहीं कर सकती; न ही यह श्रेष्ठता के आधार पर श्रेष्ठता का दावा कर सकती है। मुझे लगता है कि यह 'जेन आयर' से कहीं अधिक शांत है।"

. . . .

"मैं आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ, शायद उतना ही जितना आप मुझसे मिलने के लिए उत्सुक होंगे, इसलिए मैं मार्च के आपके निमंत्रण को एक वादा मानूंगा; उस महीने के अंत में, मुझे उम्मीद है कि मैं आपसे थोड़ी देर के लिए मिलने आऊंगा। श्री गैस्केल और आपके सभी प्रिय मित्रों को हार्दिक शुभकामनाओं सहित, मैं आपका हूँ," इत्यादि।

श्रीमती स्मिथ के यहाँ यह मुलाकात पिछली सभी मुलाकातों की तुलना में अधिक शांतिपूर्ण रही और परिणामस्वरूप उनकी रुचियों के अनुरूप थी। उन्होंने व्यक्तियों की बजाय वस्तुओं पर ध्यान दिया; और अपनी पसंद के दर्शनीय स्थलों को चुनने की अनुमति मिलने पर उन्होंने "जीवन के सजावटी पक्ष की अपेक्षा वास्तविक पक्ष" को चुना। उन्होंने दो जेलों का दौरा किया - एक प्राचीन और दूसरी आधुनिक - न्यूगेट और पेंटनविले; दो अस्पतालों, फाउंडलिंग और बेथलहम का भी दौरा किया। उनकी अपनी इच्छा पर उन्हें शहर के कई प्रमुख दर्शनीय स्थल भी दिखाए गए; बैंक, एक्सचेंज, रॉथ्सचाइल्ड्स आदि।

विशाल होते हुए भी सूक्ष्म संगठन की शक्ति ने हमेशा उनके मन में आदर और

प्रशंसा का भाव जगाया। वे इसे अधिकांश महिलाओं की तुलना में कहीं अधिक गहराई से समझती थीं। लंदन की अपनी इस अंतिम यात्रा के दौरान उन्होंने जो कुछ भी देखा, उससे वे अत्यंत प्रभावित हुईं—इतना अधिक कि वे अपनी भावनाओं को तुरंत व्यक्त करने या अपने विचारों पर तर्क करने में असमर्थ रहीं, क्योंकि वे विचार इतने सजीव थे। यदि वे जीवित होतीं, तो उनका गहरा हृदय इन बातों को अवश्य ही प्रकट कर देता।

जो कुछ उसने देखा, वह उसके विचारों में बसा रहा और उसके मन पर गहरा बोझ बन गया। उसे अपने मेज़बानों से अत्यंत स्नेह प्राप्त हुआ और उनके प्रति उसके मन में पुराना, स्नेहपूर्ण और कृतज्ञतापूर्ण भाव था। लेकिन समय के साथ बीतने वाले भविष्य को देखते हुए, यह कल्पना किए बिना नहीं रहा जा सकता कि इन दयालु मित्रों को अंतिम विदाई देने की तैयारी में उसके भावों में कुछ नरमी आई होगी, जिनसे वह फरवरी में एक बुधवार की सुबह आखिरी बार मिली थी। लौटते समय वह कीघली में अपनी दोस्त ई—— से मिली और दोनों साथ में हॉवर्थ के लिए रवाना हुईं।

“विलेट” — जो कि “जेन आयर” की तुलना में एक साधारण कहानी के रूप में कम रोचक है, लेकिन लेखक की असाधारण प्रतिभा को और भी अधिक प्रदर्शित करती है — को एक ही झटके में खूब सराहा गया। इतने कम पात्रों के समूह से, एक “पेंशन” जैसे नीरस और उबाऊ क्षेत्र में रहते हुए, इस अद्भुत कहानी का जन्म हुआ!

देखिए, वह अपनी सफलता की खुशखबरी को कैसे ग्रहण करती है!

15 फरवरी, 1853।

“कल और आज मुझे कम से कम सात अखबारों का बजट मिला। सभी सूचनाओं का सार ऐसा है कि मेरा हृदय ईश्वर के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है, जो दुख, काम और प्रेरणाओं, सभी का ध्यान रखता है। पापा भी प्रसन्न हैं। जहाँ तक मित्रों की बात है, मुझे विश्वास है कि मैं उनसे अब भी प्रेम कर सकता हूँ, बिना उनसे इस प्रकार की संतुष्टि में कोई बड़ा हिस्सा लेने की अपेक्षा किए। जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती है, मुझे यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि कोमल मानव स्वभाव पर हल्का दबाव डालना आवश्यक है; यह अधिक सहन नहीं कर सकता।”

मुझे लगता है कि आखिरी कुछ पंक्तियों में जो थोड़ी सी निराशा झलकती है, वह मिस मार्टिन्यू की राय से उपजी है, जिसे वह बहुत महत्व देती थीं। मिस मार्टिन्यू ने डेली न्यूज़ में 'विलेट' पर एक लेख में और मिस ब्रोंटे को लिखे एक निजी पत्र में,

आलोचनाओं के ऐसे शब्दों से उन्हें गहरी चोट पहुंचाई थी जिन्हें वह अनुचित और निराधार मानती थीं, लेकिन अगर वे सही और सच्ची थीं, तो वे किसी कलात्मक दोष से कहीं अधिक गंभीर थीं। एक लेखक यह मान सकता है कि वह किसी भी तरफ से आने वाली आलोचना को शांति से सहन कर सकता है; लेकिन उसकी तीव्रता पूरी तरह से उसकी प्रकृति पर निर्भर करती है। जनता के लिए, एक समीक्षक दूसरे की तरह ही एक तटस्थ व्यक्ति हो सकता है; लेकिन एक लेखक के लिए राय का अक्सर कहीं अधिक गहरा महत्व होता है। ये उन लोगों के फैसले होते हैं जिनका वह सम्मान और प्रशंसा करता है, या उन लोगों के मात्र शब्द होते हैं जिनके निर्णय की उसे जरा भी परवाह नहीं होती। समीक्षक की राय के व्यक्तिगत महत्व की यही जानकारी है, जिसके कारण कुछ समीक्षकों की आलोचनाएँ इतनी गहरी छाप छोड़ती हैं और लेखक के हृदय पर इतना गहरा आघात पहुँचाती हैं। और इस प्रकार, मिस मार्टिन्यू के प्रति अपने सच्चे और दृढ़ सम्मान के अनुपात में, मिस ब्रोंटे को न केवल लेखन बल्कि चरित्र के बारे में भी उनके द्वारा किए गए गलत आकलन से पीड़ा सहनी पड़ी।

उन्होंने बहुत पहले ही मिस मार्टिन्यू से पूछा था कि क्या उन्हें लगता है कि "जेन आयर" में नारीत्व की शालीनता या मर्यादा का कोई उल्लंघन हुआ है। मिस मार्टिन्यू के आश्वासन पर कि ऐसा नहीं है, मिस ब्रोंटे ने उनसे निवेदन किया कि यदि उन्हें लगता है कि "कुरेर बेल" की किसी भी भावी रचना में इस प्रकार की कोई कमी है, तो वे खुलकर बताएं। मिस मार्टिन्यू ने सत्य बोलने का जो वादा किया था, उसे उन्होंने "विलेट" के प्रकाशन के समय पूरा किया। मिस ब्रोंटे को इस अन्याय का गहरा दुख हुआ।

यह बताना उचित होगा कि उन्हें इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि उनकी रचनाओं में कुछ लोगों द्वारा किसे अभद्र माना जाता था। एक दिन, ब्रायरी में उस मुलाकात के दौरान जब मैं उनसे पहली बार मिला था, बातचीत महिलाओं द्वारा लिखे गए उपन्यासों पर केंद्रित हो गई; और किसी ने टिप्पणी की कि कुछ मामलों में, लेखिकाओं ने उस सीमा को बहुत पार कर दिया था जिसे पुरुष इस प्रकार की रचनाओं में उचित मानते थे। मिस ब्रोंटे ने कहा कि उन्हें आश्चर्य है कि क्या यह कल्पना को लगातार काम करने देने का स्वाभाविक परिणाम था; सर जेम्स और लेडी के शटलवर्थ और मैंने अपना विश्वास व्यक्त किया कि जिन लोगों का जिक्र किया गया था, उनके द्वारा इस तरह के शालीनता के उल्लंघन पूरी तरह से अनजाने में हुए थे।

मुझे उनका गंभीर और दृढ़ निश्चय याद है, "मुझे विश्वास है कि ईश्वर मुझसे मेरी कल्पना या अभिव्यक्ति की जो भी शक्ति हो, वह छीन लेंगे, इससे पहले कि वह मुझे यह समझने से अंधा कर दें कि क्या कहना उचित है और क्या नहीं!"

फिर से, जब भी उन्हें उपर्युक्त कारणों से "जेन आयर" की किसी भी प्रकार की आलोचना के बारे में पता चलता, तो वे हमेशा स्तब्ध और दुखी हो जातीं। लंदन में किसी ने उनसे कहा, "आप जानती हैं, मिस ब्रोंटे, हम दोनों ने ही अश्लील किताबें लिखी हैं!" वे इस बात पर बहुत सोचती थीं; और मानो यह बात उनके मन पर भारी पड़ रही हो, उन्होंने श्रीमती स्मिथ से पूछने का अवसर लिया, ठीक वैसे ही जैसे वे अपनी माँ से पूछतीं - अगर वे बचपन से ही माँ विहीन न होतीं - कि क्या वाकई "जेन आयर" में कुछ गलत है?

मैं स्वयं उनके कार्यों में कहीं-कहीं थोड़ी-बहुत अशिष्टता होने से इनकार नहीं करता, जबकि अन्यथा वे रचनाएँ अत्यंत उत्कृष्ट हैं। मैं केवल पाठकों से उनके जीवन पर विचार करने का आग्रह करता हूँ, जो उनके सामने स्पष्ट रूप से प्रकट किया गया है, और यह बताने का कि यह अन्यथा कैसे हो सकता था। उन्होंने बहुत कम पुरुषों से मुलाकात की; और इन कुछ पुरुषों में से एक-दो ऐसे थे जिनसे वे बचपन से परिचित थीं, जिन्होंने उनके प्रति बहुत मित्रता और दयालुता दिखाई, जिनके परिवार के माध्यम से उन्हें अनेक सुख प्राप्त हुए, जिनकी बुद्धि के प्रति उनके मन में बहुत सम्मान था, लेकिन वे उनसे सीधे बात करने के बजाय उनके सामने उतनी ही कम संकोच से बोलते थे जितना रोचेस्टर जेन आयर से बात करता था। इसे उनके निर्धन भाई के दुखद जीवन और उनके बीच रहने वाले मुखर लोगों के संदर्भ में देखें, और जीवन को उसके वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत करने के उनके दृढ़ संकल्प को याद रखें, न कि उसके अपेक्षित स्वरूप में, और फिर उनके व्यक्तित्व और उनकी क्षमता (यदि ईश्वर उन्हें जीवित रखता) के लिए उनके साथ न्याय करें, न कि इसलिए कि परिस्थितियों ने उन्हें कठोर भाषा का प्रयोग करने के लिए विवश किया और एक क्षण के लिए उनका हाथ अपवित्र हो गया। यह सब सतही था। उसके जीवन में हर बदलाव उसे शुद्ध कर रहा था; इससे उसका उत्थान नहीं हो रहा था। मैं फिर से रोता हूँ, "काश वह जीवित रहती!"

"विलेट" के कारण मिस मार्टिन्यू के साथ हुई गलतफहमी मिस ब्रोंटे के लिए घोर खेद का कारण बनी। उन्हें लगा कि उनके स्त्री स्वभाव को अपमानजनक गलतफहमी

ने ठेस पहुँचाई है; और जिस व्यक्ति ने अनजाने में उन्हें इस प्रकार आहत किया था, उससे वे बेहद प्यार करती थीं। पिछले जनवरी में ही उन्होंने एक मित्र को निम्नलिखित पत्र लिखा था, जिसके पत्र का भाव हम इस उत्तर से समझ सकते हैं: —

मैंने मिस मार्टिन्यू के बारे में आपकी कही हर बात ध्यान से पढ़ी; आपकी चिंता की सच्चाई और दृढ़ता ने मुझे बहुत प्रभावित किया; मुझे आपकी सलाह को नज़रअंदाज़ करने या उसका विरोध करने में दुख होगा, फिर भी मुझे नहीं लगता कि मिस मार्टिन्यू को पूरी तरह से छोड़ देना सही होगा। उनके स्वभाव में बहुत कुछ बहुत ही नेक है; सैकड़ों लोगों ने उन्हें छोड़ दिया है, मुझे डर है कि ज़्यादातर लोगों ने इस डर से कि अगर उनका नाम उनके नाम से जोड़ा गया तो उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान होगा, न कि किसी ऐसी शुद्ध धारणा से, जैसा कि आपने सुझाव दिया है, कि उनके घातक सिद्धांतों से नुकसान हो सकता है। मैं इन मतलबी दोस्तों के साथ बराबरी नहीं कर सकता; और क्या उनका पाप उन पापों में से एक नहीं है जिनका न्याय मनुष्य नहीं बल्कि ईश्वर को करना चाहिए?

सच कहूँ तो, मेरी प्रिय महोदया — — , मेरा मानना है कि यदि आप मेरी जगह होतीं और मिस मार्टिन्यू को उतना ही जानतीं जितना मैं जानता हूँ, — यदि आपने मुझे उनकी सच्ची दयालुता के प्रमाणों से अवगत कराया होता और देखा होता कि वे किस प्रकार परित्याग के दर्द को भीतर ही भीतर सहती हैं, — तो आप उन्हें छोड़ने वाली अंतिम व्यक्ति होतीं; आप पापी को पाप से अलग करतीं और यह महसूस करतीं कि सही यही है कि भले ही यह समर्थन प्रचलन से बाहर और अलोकप्रिय हो, फिर भी उनकी कठिन परिस्थिति में चुपचाप उनका साथ दिया जाए, बजाय इसके कि जब दुनिया उदाहरण पेश कर रही हो तब उनसे मुँह मोड़ लिया जाए। मेरा मानना है कि वे उन लोगों में से हैं जिन्हें विरोध और परित्याग त्रुटि में हठपूर्वक बांध देते हैं; जबकि धैर्य और सहनशीलता उन्हें गहराई से प्रभावित करते हैं और उन्हें अपने हृदय से यह पूछने के लिए प्रेरित करते हैं कि क्या वह जिस मार्ग पर चल रही हैं वह कहीं गलत तो नहीं है।

दयालु और निष्ठापूर्ण शब्द! जिनके बारे में मिस मार्टिन्यू को कभी पता नहीं चला; शार्लोट जब अपनी मृत बहनों के पास बेसुध और ठंडी पड़ी थी, तब उन्हें और भी भव्य और कोमल शब्दों में इसका प्रतिफल मिला। उनके बीच हुई संक्षिप्त दुखद गलतफहमी के बावजूद, वे दोनों महान महिलाएं और सच्ची सहेलियां थीं।

अब मैं एक सुखद विषय की ओर मुड़ता हूँ। लंदन में रहते हुए, मिस ब्रोंटे ने लॉरेंस द्वारा बनाया गया श्री थैकरे का चित्र देखा और उसे बहुत सराहा। कुछ देर चुपचाप उसके सामने खड़े रहने के बाद, उनके पहले शब्द थे, "और यहूदा से एक शेर प्रकट हुआ!" उस समय तक यह चित्र उत्कीर्ण हो चुका था, और श्री स्मिथ ने उन्हें उसकी एक प्रति भेजी।

जी. स्मिथ, एस्क्वायर को।

हॉवर्थ, 26 फरवरी, 1853।

मेरे प्रिय महोदय, कल शाम देर रात, मुझे हॉवर्थ पार्सनेज में एक विशिष्ट अतिथि, डब्ल्यू. एम. थैकरे, एस्क्वायर का स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आतिथ्य सत्कार के रीति-रिवाजों का ध्यान रखते हुए, मैंने आज सुबह उन्हें राजकीय सम्मान के साथ पदवी दी। वे अपने सुंदर, सुरुचिपूर्ण सुनहरे फांसी के तख्ते में बेहद आकर्षक लग रहे हैं। उनके साथ ड्यूक ऑफ वेलिंगटन की तस्वीर है (क्या आपको याद है कि आपने मुझे वह तस्वीर दी थी?) और इसके विपरीत, रिचमंड द्वारा बनाया गया एक ऐसे अयोग्य व्यक्ति का चित्र है, जिसका ऐसे समाज में नाम न होना ही उचित है। थैकरे उस व्यक्ति से एक भव्य तिरस्कार भरी दृष्टि से मुंह फेरे हुए हैं, जिसे देखना शिक्षाप्रद है। मुझे आश्चर्य है कि क्या इन उपहारों का दाता कभी इन्हें उन दीवारों पर देख पाएगा जहां वे अब टंगे हैं; मुझे यह कल्पना करने में आनंद आता है कि शायद एक दिन वह इन्हें देख ले। मेरे पिता आज सुबह पंद्रह मिनट तक उस महान व्यक्ति के चित्र का निरीक्षण करते रहे। उनके निरीक्षण का निष्कर्ष यह था कि उन्हें यह एक रहस्यमय चेहरा लगा; यदि उन्हें मूल व्यक्ति के चरित्र के बारे में पहले से कुछ भी पता नहीं होता, तो वे उसके चेहरे के भावों से इसे नहीं समझ पाते। मुझे इस पर आश्चर्य होता है। मेरे लिए चौड़ी भौंहें बुद्धिमत्ता का भाव प्रकट करती प्रतीत होती हैं। नाक और गालों के आसपास की कुछ रेखाएँ व्यंग्यकार और संशयवादी की झलक दिखाती हैं; मुँह बच्चों जैसी सरलता को दर्शाता है—शायद कुछ हद तक अनिश्चितता, असंगति—संक्षेप में कहें तो कमजोरी, लेकिन एक ऐसी कमजोरी जो अप्रिय नहीं है। मुझे यह उत्कीर्णन बहुत अच्छा लगा। एक अस्पष्ट, असंपूर्ण ईसाई भाव—सीधे शब्दों में कहें तो—द्वेष का भाव, जो मूल चित्र में अत्यंत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, यहाँ थोड़ा नरम हो गया है, और शायद इस सुधार प्रक्रिया में इसकी थोड़ी—बहुत थोड़ी—शक्ति खो गई है। क्या आपको भी ऐसा ही लगा?

1852-53 की इस सर्दी के दौरान मिस ब्रोंटे का स्वास्थ्य पिछले वर्ष की तुलना में काफी बेहतर था।

“जहाँ तक मेरी बात है,” (उसने मुझे फरवरी में लिखा) “मैंने अब तक ठंड का मौसम अच्छे से सहन किया है। मैंने बर्फ पर लंबी सैर की है और ठंडी हवा का आनंद लिया है। यह सर्दी मेरे लिए पिछली सर्दी जैसी नहीं रही। दिसंबर, जनवरी, फरवरी, 1951-12 एक लंबी तूफानी रात की तरह गुज़रे, जिसमें मुझे एक ही दर्दनाक सपना याद था, सारा समय अकेलेपन, दुख और बीमारी से भरा हुआ। 1952-13 के ये महीने शांति से और खुशी से बीत गए। इस बदलाव और आराम के लिए ईश्वर का धन्यवाद! यह कितना सुखद रहा, यह केवल वही जानता है! मेरे पिता ने भी इस मौसम को अच्छे से सहन किया है; और मेरी किताब और अब तक मिली प्रतिक्रिया ने उन्हें प्रसन्न और उत्साहित किया है।”

मार्च में शांत पार्सनेज को तत्कालीन रिपन के बिशप के आगमन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे एक रात श्रीमती ब्रोंटे के साथ ठहरे। शाम को, आस-पास के कुछ पादरियों को चाय और रात के भोजन पर उनसे मिलने के लिए आमंत्रित किया गया; और भोजन के दौरान, कुछ पादरी श्रीमती ब्रोंटे को "किताब में उनका नाम लिखने" के लिए मज़ाकिया अंदाज़ में ताने मारने लगे; और श्रीमती ब्रोंटे, अपने ही घर में, एक अजनबी की उपस्थिति में, लेखिका के रूप में अपनी छवि को इस तरह से ठेस पहुँचाए जाने से असहज महसूस करते हुए, विनम्रतापूर्वक बिशप से पूछा कि क्या इस तरह उन्हें कोने में धकेलना उचित है। मुझे बताया गया है कि बिशप अपनी मेज़बान के सौम्य और सरल व्यवहार और साधारण घर की व्यवस्था की पूर्ण शालीनता और सुसंगति से बहुत प्रभावित हुए। बिशप की अपनी यात्रा की यादें यहीं समाप्त होती हैं। अब हम श्रीमती ब्रोंटे की यादों की ओर रुख करते हैं।

4 मार्च।

बिशप आए थे और चले गए। वे वाकई बहुत ही आकर्षक बिशप हैं; लॉन स्लीव्स पहनने वाले सबसे दयालु सज्जन; फिर भी गंभीर और अतिक्रमण रोकने में पूरी तरह सक्षम। उनका दौरा बहुत अच्छा रहा; और जाते समय उन्होंने अपनी संतुष्टि व्यक्त की। पिछले हफ्ते इंस्पेक्टर भी आए थे; इसलिए मैं थोड़ा व्यस्त रहा। अगर आप हॉवर्थ में होते और तैयारियों की थोड़ी-बहुत भागदौड़ से परेशान हुए बिना, आप भी वहाँ मौजूद होते, तो मुझे बहुत खुशी होती। लेकिन जैसा कि आप समझ सकते हैं, घर

में काफी अव्यवस्था थी; फिर भी, सब कुछ व्यवस्थित, शांत और अच्छे से हो गया। मार्था ने बहुत अच्छे से इंतज़ार किया, और रसोई में उसकी मदद करने के लिए एक व्यक्ति था। पापा ने भी मेरी उम्मीद के मुताबिक अच्छा काम किया, हालाँकि मुझे संदेह है कि क्या वे एक और दिन इसे सहन कर पाते। बिशप के जाते ही मुझे तेज़ सिरदर्द हो गया: मैं कितना शुक्रगुजार था कि यह धैर्यपूर्वक मैंने उनके जाने का इंतज़ार किया। आज भी मैं मूर्खता में डूबा हुआ हूँ: ज़ाहिर है, यह कई दिनों की अतिरिक्त मेहनत और उत्तेजना का नतीजा है। बिशप का स्वागत बिना किसी परेशानी के करने की बात तो बहुत अच्छी है, लेकिन आपको उनके लिए तैयारी करनी ही होगी।

इस समय तक कुछ समीक्षाओं में
“विलेट” की कमियां निकाली जाने लगी थीं। मिस ब्रोंटे ने अपना पुराना अनुरोध किया।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, एस्क्वायर को।

“मेरे प्रिय महोदय, यदि कोई समीक्षा उनके द्वेष से तीन गुना अधिक प्रेरित होकर प्रकाशित हो, तो कृपया उसे मुझसे छुपाएँ नहीं। मुझे संतोषजनक समीक्षाएँ देखना अच्छा लगता है, विशेष रूप से मैं उन्हें अपने पिता को दिखाना चाहता हूँ; लेकिन मुझे असंतोषजनक और शत्रुतापूर्ण समीक्षाएँ भी देखनी होंगी; ये मेरे अपने ज्ञानवर्धन के लिए हैं; इन्हीं में मैं जनभावना और राय को सबसे अच्छी तरह समझता हूँ। खतरनाक और अप्रिय बातों की पड़ताल से बचना मुझे कायरता लगती है। मैं हमेशा यह जानना चाहता हूँ कि वास्तव में क्या है, और अंधेरे में रखे जाने पर ही मैं घबराता हूँ। . . . . .
.

“‘लूसी स्नो’ के चरित्र के बारे में, मेरी मंशा शुरू से ही यह थी कि उसे वह दर्जा न दिया जाए जिस पर कुछ नासमझ प्रशंसकों द्वारा ‘जेन आयर’ को दिया गया था। वह वहीं है जहाँ मैं उसे रखना चाहता था, और जहाँ उस पर आत्म-प्रशंसा का कोई आरोप नहीं लगाया जा सकता।”

“आज सुबह लेडी हैरिएट सेंट क्लेयर की ओर से भेजा गया आपका पत्र, मिस मुलोच के अनुरोध के बिल्कुल समान है — एम. पॉल इमानुएल के बारे में सटीक और प्रामाणिक जानकारी के लिए एक आवेदन! आप देख ही रही हैं कि महिलाएं इस छोटे से आदमी के बारे में कितना सोचती हैं, जिसे आपमें से कोई भी पसंद नहीं करती। मुझे कुछ दिन पहले एक पत्र मिला था; जिसमें बताया गया था कि एक प्रतिष्ठित

महिला, जिसने हमेशा यह तय किया था कि जब भी उसकी शादी होगी, उसका पति मिस ऑस्टेन के उपन्यास 'एम्मा' के 'मिस्टर नाइटली' जैसा ही होगा, अब उसने अपना इरादा बदल लिया है और कसम खाई है कि वह या तो प्रोफेसर इमानुएल का हमशक्ल ढूंढेगी, या फिर हमेशा के लिए अविवाहित रहेगी! मैंने लेडी हैरिएट को इस तरह से जवाब भेजा है कि मामला लगभग वहीं रुका रहे। चूंकि यह छोटी सी पहेली महिलाओं का मनोरंजन करती है, इसलिए उन्हें इसका हल बताकर उनका मनोरंजन खराब करना दुख की बात होगी।"

ईस्टर का त्योहार, जिसमें अजनबी पादरियों द्वारा दिए जाने वाले उपदेशों से जुड़ी जिम्मेदारियाँ, मैकेनिक्स इंस्टीट्यूट की बैठकें और स्कूल में चाय-नाश्ते जैसी गतिविधियाँ शामिल थीं, समाप्त हो गया; अप्रैल के अंत में वह मैनचेस्टर में हमसे मिलने आई। हमारे साथ एक मित्र, एक युवती, ठहरी हुई थी। मिस ब्रोंटे को उम्मीद थी कि हम अकेले होंगे; और यद्यपि हमारी मित्र मिस ब्रोंटे के स्वभाव के अनुरूप सौम्य और संवेदनशील थी, फिर भी उसकी उपस्थिति से मिस ब्रोंटे में एक कंपकंपी सी दौड़ गई। मैंने देखा कि हमारी दोनों मेहमान असामान्य रूप से चुप थीं; और मैंने मिस ब्रोंटे के शरीर में समय-समय पर एक हल्की सी सिहरन देखी। मैं उस युवती के संकोच का कारण समझ सकती थी; और अगले दिन मिस ब्रोंटे ने मुझे बताया कि एक अजनबी चेहरे को अचानक देखकर उन पर क्या असर पड़ा था।

दो-तीन साल हो गए थे जब मैंने फॉक्स-हाउ में एक शांत शाम की उम्मीद में उन पर ऐसा ही प्रभाव देखा था; और तब से उन्होंने लंदन में कई लोगों से मुलाकात की थी: लेकिन शर्म से उत्पन्न शारीरिक संवेदनाएँ अभी भी वैसी ही थीं; और अगले दिन उन्हें तेज सिरदर्द हुआ। मुझे कई बार यह देखने का मौका मिला कि यह घबराहट उनके स्वभाव में कितनी गहराई से समाई हुई थी, और इसे दूर करने के प्रयास में उन्हें कितनी पीड़ा होती थी। एक शाम हमारे मेहमानों में दो बहनें भी थीं जिन्होंने स्कॉटिश लोकगीतों को बहुत खूबसूरती से गाया। मिस ब्रोंटे "द बोनी हाउस ऑफ एयरली" शुरू होने तक चुपचाप और संयमित बैठी थीं, लेकिन उस गीत और उसके बाद गाए गए "कार्लिस्ले येट्स" का प्रभाव हैमेलिन के पाइपर के संगीत की तरह ही अनूठा था। उनकी आँखों में एक सुंदर, निर्मल चमक आ गई; उनके होंठ भावनाओं से काँप उठे; वह खुद को भूल गईं, उठीं और कमरे को पार करके पियानो के पास गईं, जहाँ उन्होंने उत्सुकता से एक के बाद एक गीत गाने का अनुरोध किया। बहनों ने उससे अगली

सुबह उनसे मिलने आने की विनती की, जब तक वह चाहे तब तक वे गाएँगी; और उसने खुशी-खुशी और कृतज्ञतापूर्वक वादा कर लिया। लेकिन घर पहुँचते ही उसका साहस टूट गया। हम कुछ देर गली में इधर-उधर घूमते रहे; वह लगातार अपनी मूर्खता के लिए खुद को कोसती रही, और अपनी यादों में बसी मीठी यादों में खो जाने की कोशिश करती रही, बजाय उस तीसरी बहन के बारे में सोचने के, जिसका सामना उसे अंदर जाने पर करना पड़ता। लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ; और इस डर से कि कहीं खुद से यह संघर्ष उसके सिरदर्द को न बढ़ा दे, मैं आखिरकार अंदर गया और उसके न आने के लिए जितना हो सके माफी मांगी। अजनबियों से मिलने के इस घबराहट भरे डर का बहुत कुछ कारण मैं उसके खुद के बदसूरत होने के विचार को मानता था, जो उसके मन में बचपन से ही गहराई से बैठा हुआ था, और जिसे वह अपने आप से बड़े ही अजीब तरीके से बढ़ा-चढ़ाकर बताती थी। उसने कहा, "मैंने देखा है कि एक बार कोई अजनबी मेरा चेहरा देख ले, तो वह सावधान रहता है कि उसकी नज़र कमरे के उस हिस्से पर दोबारा न जाए!" इससे ज़्यादा झूठा विचार किसी के मन में कभी नहीं आया होगा। इस यात्रा के दौरान जिन दो सज्जनों ने उन्हें देखा, उस समय उन्हें न जानते हुए भी, वे उनकी उपस्थिति से असाधारण रूप से आकर्षित हुए; और एक मनमोहक चेहरे, मधुर आवाज और सौम्य संकोची व्यवहार के प्रति आकर्षण की यह भावना उनमें से एक में इतनी प्रबल थी कि उसने उनके कार्यों के प्रति पहले से मौजूद अरुचि को भी पराजित कर दिया।

इसी दौरान मुझे एक और घटना का पता चला, जिससे उस नाजुक रिश्ते के बारे में कई राज़ खुल गए। एक रात सोने से ठीक पहले मैं उसे कोई डरावनी भूतिया कहानी सुनाने ही वाला था कि वह उसे सुनने से कतराने लगी और कबूल किया कि वह अंधविश्वासी है और किसी भी अशुभ विचार के उसके मन में बार-बार उठने लगती है। उसने बताया कि जब वह पहली बार हमारे पास आई थी, तो उसे अपनी ड्रेसिंग टेबल पर यॉर्कशायर की एक दोस्त का पत्र मिला था, जिसमें एक कहानी लिखी थी, जिसने उसके मन पर तब से गहरा असर छोड़ा हुआ है; वह कहानी रात के सपनों में भी आती है और उसकी नींद को बेचैन और नीरस बना देती है।

एक दिन हमने दो सज्जनों को उनसे रात के खाने पर मिलने के लिए आमंत्रित किया; हमें उम्मीद थी कि वे दोनों एक-दूसरे से मिलकर प्रसन्न होंगे। लेकिन हमारी निराशा के लिए, उन्होंने संकोच और संकोच के साथ उनके सभी प्रस्तावों को ठुकरा

दिया, और उनके प्रश्नों और टिप्पणियों का यथासंभव संक्षिप्त उत्तर दिया; अंततः उन्होंने उन्हें बातचीत में शामिल करने के प्रयास निराशापूर्वक छोड़ दिए, और आपस में और मेरे पति से हाल ही के स्थानीय विषयों पर बात की। इनमें थैकरे के व्याख्यानों (जो हाल ही में मैनचेस्टर में दिए गए थे) की चर्चा हुई, और विशेष रूप से फील्डिंग पर दिए गए व्याख्यान पर विस्तार से बात हुई। एक सज्जन ने इसका कड़ा विरोध करते हुए कहा कि यह नैतिक रूप से हानिकारक है, और खेद व्यक्त किया कि थैकरे जैसे व्यक्ति, जिनका उस समय के विचारों पर इतना अधिक प्रभाव था, ने अपने शब्दों को अधिक सावधानी से क्यों नहीं चुना। दूसरे सज्जन का विचार इसके विपरीत था। उन्होंने कहा कि थैकरे ने मानो लोगों का आंतरिक चित्रण किया है; अपनी गहन नाटकीय सहानुभूति के बल पर, उन्होंने स्वयं को कुछ पात्रों से जोड़ लिया, उनकी लालसाओं को महसूस किया, उनके सुखों में लीन हो गए, आदि। इससे मिस ब्रोंटे उत्साहित हो गईं, और उन्होंने उत्साहपूर्वक चर्चा में भाग लिया; उसकी संकोच की बर्फ पिघल गई, और उस समय से उसने कही गई हर बात में अपनी रुचि दिखाई, और शाम के दौरान चल रही किसी भी बातचीत में अपना योगदान दिया।

थैकरे के व्याख्यान को लेकर हुए विवाद में उन्होंने क्या कहा और क्या भूमिका निभाई, यह निम्नलिखित पत्र से पता लगाया जा सकता है, जो इसी विषय पर आधारित है: —

"व्याख्यान सुरक्षित रूप से पहुँच गए; मैंने उन्हें दो बार पढ़ा है। उनकी सराहना करने के लिए उनका अध्ययन करना आवश्यक है। जब मैंने उन्हें सुना था तब मैंने उन्हें अच्छा समझा था, लेकिन अब मैं उनकी वास्तविक शक्ति को समझता हूँ; और वह महान है। स्विफ्ट पर दिया गया व्याख्यान मेरे लिए नया था; मुझे वह लगभग बेजोड़ लगा। ऐसा नहीं है कि मैं श्री थैकरे के विचारों से हमेशा सहमत रहता हूँ, लेकिन उनकी शक्ति, उनकी अंतर्दृष्टि, उनकी सारगर्भित सरलता, उनकी वाक्पटुता—उनकी मर्दाना, प्रभावशाली वाक्पटुता—पूरी तरह से प्रशंसा के योग्य है। . . . मैं उनकी त्रुटियों का विरोध करता हूँ, चाहे ऐसा करना राजद्रोह ही क्यों न हो। मैं फील्डिंग पर दिए गए व्याख्यान में उपस्थित था: उसे सुनने में बिताया गया एक घंटा मेरे लिए कष्टदायक था। मेरे अंतरात्मा ने मुझे बताया कि फील्डिंग के चरित्र और अवगुणों के प्रति थैकरे का दृष्टिकोण गलत था। उस व्याख्यान को पढ़ने के बाद, मुझे तीन गुना अधिक विश्वास हुआ कि वह गलत थे—खतरनाक रूप से गलत। यदि थैकरे का कोई बेटा होता, जो

वयस्क हो चुका होता या बड़ा हो रहा होता, और एक प्रतिभाशाली लेकिन लापरवाह बेटा होता—क्या वह अपमान और मृत्यु की ओर ले जाने वाले रास्तों के बारे में इतनी हल्की-फुल्की बातें करते? वह इसके बारे में बात करते हैं। सब कुछ ऐसा लग रहा था मानो वह सिर्फ सिद्धांत गढ़ रहा हो; मानो उसने अपने जीवन में कभी ऐसी गलतियों के वास्तविक परिणाम न देखे हों; मानो उसने कभी चुपचाप खड़े होकर इसका अंतिम परिणाम न देखा हो। मेरा मानना है कि अगर एक बार भी उसने अपनी आँखों के सामने से उस उज्ज्वल भविष्य को गुजरते देखा होता, जो शुरुआत में ही गलत राहों के कारण बर्बाद हो गया था, तो वह कभी भी इतनी सहजता से उस दयनीय विनाश के कारणों के बारे में बात नहीं कर पाता। अगर मेरा कोई भाई जीवित होता, तो मैं उसे थैकरे का फील्डिंग पर लिखा व्याख्यान पढ़ने देने से डरता। मैं उसे उससे छुपा देता। अगर सावधानी के बावजूद वह उसके हाथ लग भी जाता, तो मैं उससे प्रार्थना करता कि वह उस चालाक व्यक्ति की बातों में न आए, चाहे वह कितनी भी समझदारी से काम ले। ऐसा नहीं है कि मैं चाहता था कि थैकरे फील्डिंग की निंदा करे, या पाखंडी तरीके से उसके जीवन की निंदा करे; लेकिन मुझे इस बात का गहरा दुख है कि उसके दिल में कभी भी ऐसे करियर के खतरे को महसूस करने का गहरा एहसास नहीं हुआ, कि वह अपनी कुछ शक्ति को फील्डिंग के लिए समर्पित कर सकता था। किसी भी नौजवान द्वारा इसे अपनाने के खिलाफ एक सशक्त चेतावनी। मेरा मानना है कि प्रलोभन अक्सर सबसे अच्छे पुरुष स्वभाव को भी अपने वश में कर लेता है; जैसे चिड़िया या ततैया सबसे मीठे और रसीले फलों पर झपटती है और खट्टे-कच्चे फलों को त्याग देती है। अपने वंश के सच्चे प्रेमी को अपनी शक्ति रक्षा और संरक्षण में लगानी चाहिए; उसे हर प्रलोभन को उसके धोखे पर क्रोध के साथ दूर भगा देना चाहिए। मुझे यकीन है कि आपको यह कुछ ज्यादा ही गंभीर लगेगा; लेकिन विषय गंभीर है, और इस पर गंभीरता से विचार किए बिना कोई नहीं रह सकता।

अध्याय XIII.

मैनचेस्टर की अपनी यात्रा के बाद, उन्हें पिछली सर्दियों की दर्दनाक परिस्थितियों का फिर से सामना करना पड़ा, क्योंकि श्री निकोल के हॉवर्थ से जाने का समय निकट आ रहा था। एक सार्वजनिक सभा में, आठ वर्षों तक निष्ठापूर्वक सेवा करने वाले व्यक्ति को पैरिशवासियों की ओर से सम्मान का एक प्रशस्ति पत्र प्रस्तुत किया गया: और उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया, और उन्हें भविष्य में उनके बारे में एक शब्द भी सुनने की कोई उम्मीद नहीं थी, सिवाय किसी पड़ोसी पादरी द्वारा गलती से बताई गई किसी अधूरी जानकारी के।

मैंने जून में लंदन से लौटने पर उनसे मिलने का वादा किया था; लेकिन, मिलने का दिन तय होने के बाद, श्री ब्रोंटे का एक पत्र आया, जिसमें उन्होंने बताया कि उन्हें फ्लू का इतना गंभीर दौरा पड़ा है और सिर में असहनीय दर्द हो रहा है कि उन्हें मुझसे अनुरोध करना पड़ रहा है कि मैं उनके ठीक होने तक अपनी यात्रा स्थगित कर दूं। हालांकि मुझे इस बात का दुख था, लेकिन मुझे इस बात का अफसोस नहीं था कि मेरी यात्रा उस मौसम तक टल गई जब मैदान हीथर के बैंगनी फूलों से पूरी तरह खिल उठेंगे; और इस तरह एक ऐसा दृश्य प्रस्तुत होगा जिसके बारे में उन्होंने मुझसे अक्सर बात की थी। इसलिए हमने तय किया कि मैं अगस्त या सितंबर से पहले उनसे मिलने नहीं आऊंगा। इसी बीच, मुझे एक पत्र मिला जिसका एक अंश मैं यहाँ उद्धृत करना चाहता हूँ, क्योंकि यह दर्शाता है कि काल्पनिक लेखन के बारे में उनकी क्या धारणा थी, और मेरे कार्यों में उनकी हमेशा की तरह स्नेहपूर्ण रुचि भी।

9 जुलाई, 1853।

आपके पत्र के लिए धन्यवाद; यह एक शांत बातचीत की तरह सुखद, वसंत की बौछारों की तरह स्वागत योग्य, और किसी मित्र के आगमन की तरह स्फूर्तिदायक था; संक्षेप में, यह 'क्रैनफोर्ड' के एक पृष्ठ जैसा था। ... एक विचार मेरे मन में आता है। क्या आप, जिनके इतने सारे मित्र हैं, - इतने व्यापक परिचितों का दायरा है, - जब आप लिखने बैठती हैं, तो क्या आपके लिए उन सभी बंधनों और उनकी मधुर यादों से खुद को अलग करना आसान होता है, ताकि आप अपनी स्वतंत्र महिला बन सकें, इस

बात से अप्रभावित या विचलित हुए बिना कि आपका काम दूसरों के मन को कैसे प्रभावित कर सकता है; यह किस प्रकार की निंदा या सहानुभूति उत्पन्न कर सकता है? क्या आपके और कठोर सत्य के बीच कभी कोई प्रकाशमान बादल नहीं आता, जैसा कि आप अपनी गुप्त और स्पष्ट दृष्टि वाली आत्मा में जानती हैं? संक्षेप में, क्या आप कभी अपने पात्रों को जीवन से अधिक मनमोहक बनाने के लिए प्रलोभित नहीं होतीं, इस प्रवृत्ति से कि आप अपने विचारों को उन लोगों के विचारों के अनुरूप ढाल लें जो हमेशा दयालुता से महसूस करते हैं, लेकिन कभी-कभी न्यायपूर्ण ढंग से देखने में विफल रहते हैं? प्रश्न का उत्तर न दें; यह प्रश्न नहीं है। जिसका उत्तर दिया जाना अपेक्षित था... श्रीमती स्टोव के बारे में आपका विवरण अत्यंत रोचक था। मैं आपसे मिलने, आपसे वह बात और कई अन्य बातें दोबारा सुनने के लिए तरस रही हूँ। मेरे पिताजी की तबीयत में सुधार है। मेरी भी तबीयत में सुधार है; लेकिन आज मुझे फिर से सिरदर्द है, जिसकी वजह से मैं ठीक से लिख नहीं पा रही हूँ। एम. और एम. को मेरा प्यार देना, वे दोनों बहुत प्यारी और खुशमिजाज बेटियाँ हैं। आप अभी मेरा संदेश एफ. और जे. तक नहीं पहुँचा सकतीं। मुझे वह नन्ही सी प्यारी बच्ची बहुत प्यारी लगी, - ऐसा नहीं है कि मुझे लगता है कि भेजने वाली को मेरी परवाह है; उसे मेरी परवाह नहीं है, और हो भी नहीं सकती, क्योंकि वह मुझे जानती नहीं है; - लेकिन कोई बात नहीं। मेरी यादों में वह एक विशिष्ट व्यक्तित्व है। मुझे लगता है कि उसका स्वभाव बहुत ही प्यारा, स्पष्टवादी और आशाजनक है। मैं उसे अक्सर देखती हूँ; जैसे वह उस शाम 'ट्वेल्थ नाइट' देखने गई थी, जब वह बरामदे से गाड़ी की ओर शान से कदम बढ़ा रही थी। मुझे जे. के भविष्य पर विश्वास है; मुझे उसके हाव-भाव और उसके चेहरे के भाव बहुत पसंद हैं।

सितंबर के आखिरी दिनों में मैं हॉवर्थ गया था। पहले कही गई बात को दोहराने का जोखिम उठाते हुए, मैं उस समय लिखे गए अपने पत्र के कुछ अंश यहाँ लिख रहा हूँ।

“रेलवे से कीघली तक का पूरा सफर एक धुंधले, बूंदा-बांदी वाले, स्याही जैसे काले दिन जैसा था। कीघली ऊन उत्पादन का एक उभरता हुआ शहर है, जो पहाड़ियों के बीच एक घाटी में बसा है – कोई सुंदर घाटी नहीं, बल्कि यॉर्कशायर के लोग जिसे ‘बॉटम’ या ‘बोथम’ कहते हैं, वैसा ही। मैं कीघली से कार में हॉवर्थ के लिए निकला, जो चार मील दूर था – चार कठिन, खड़ी और पथरीली मील की दूरी, सड़क क्षितिज के चारों ओर उठती-गिरती लहरदार पहाड़ियों के बीच से होकर गुजर रही थी, जिनका

लंबा, असीम और घुमावदार रूप था, मानो वे महान सर्प की रेखा का हिस्सा हों, जिसके बारे में नॉर्स पौराणिक कथाओं में कहा गया है कि वह दुनिया को घेरे हुए है। दिन सीसे के रंग का था; सड़क के किनारे पत्थर के कारखाने थे – इन कारखानों से संबंधित पत्थर की झोपड़ियों की धूसर, फीकी कतारें, और फिर हम बंजर, भूखे-प्यासे दिखने वाले खेतों में पहुँचे; – हर जगह पत्थर की बाड़ें थीं, और कहीं पेड़ नहीं थे। हॉवर्थ एक लंबा, फैला हुआ गाँव है जिसमें एक खड़ी संकरी गली है – इतनी खड़ी कि जिस पत्थर से इसे पक्का किया गया है, वह भी टेढ़ा-मेढ़ा है। सड़क को इस तरह मोड़ा गया था कि घोड़ों के पैर फिसल न जाएँ और पीछे की ओर न गिरें; अगर वे फिसल जाते, तो वे जल्द ही कीघली पहुँच जाते। लेकिन अगर घोड़ों के पास बिल्लियों जैसे पैर और पंजे होते, तो और भी अच्छा होता। खैर, हम (आदमी, घोड़ा, गाड़ी और मैं) इस गली से ऊपर चढ़े और सेंट ऑटेस्ट (वह कौन थे?) को समर्पित चर्च तक पहुँचे; फिर हम बाईं ओर एक गली में मुड़ गए, सेक्स्टन के यहाँ क्यूरेट के आवास के पास से, स्कूल-हाउस के पास से, पार्सनेज के प्रांगण के दरवाजे तक। मैं चर्च की ओर देखते हुए घर के चारों ओर घूमकर सामने के दरवाजे तक गया; — चारों ओर दलदल ही दलदल था। भीड़भाड़ वाला कब्रिस्तान घर और कपड़े सुखाने के लिए बने छोटे घास के बाड़े को घेरे हुए था।

"मुझे नहीं पता कि मैंने कभी इससे अधिक स्वच्छ स्थान देखा हो; यह अब तक का सबसे सुंदर स्थान है। सच कहूँ तो, जीवन घड़ी की तरह चलता है। घर में कोई नहीं आता; गहरी शांति भंग नहीं होती; शायद ही कोई आवाज़ सुनाई देती है; रसोई में घड़ी की टिक-टिक या बैठक में मक्खी की भिनभिनाहट पूरे घर में सुनाई देती है। मिस ब्रोंटे अपनी बैठक में अकेली बैठी हैं; नौ बजे अपने पिता के अध्ययन कक्ष में उनके साथ नाश्ता करती हैं। वह घर के कामों में मदद करती हैं; क्योंकि उनकी एक नौकरानी, टैबी, लगभग नब्बे वर्ष की है, और दूसरी अभी बच्ची है। फिर मैं उनके साथ विशाल मैदानों में टहलने गया, जहाँ एक-दो दिन पहले आए तूफान से हीथर के फूल मुरझा गए थे, और बैंगनी रंग की चमक के बजाय वे पूरी तरह से फीके भूरे रंग के हो गए थे। ओह, वे ऊँचे, जंगली, सुनसान मैदान, पूरी दुनिया से ऊपर, और सन्नाटे के क्षेत्र। मैं दो बजे दोपहर के भोजन के लिए घर लौटा। श्रीमान..." ब्रोंटे के लिए खाना मंगवाया जाता था। छोटी मेजों की सारी सजावट में एक जैसी ही सादगी और नज़ाकत थी। फिर हम आराम करने लगे और साफ, चमकदार आग के पास बैठकर बातें करने लगे;

यह एक ठंडा इलाका है, और आग की लपटें पूरे घर में एक सुंदर, झिलमिलाती रोशनी बिखेर रही थीं। ऐसा लगता है कि पिछले कुछ सालों में बैठक कक्ष को नए सिरे से सजाया गया था, क्योंकि मिस ब्रोंटे की सफलता ने उन्हें खर्च करने के लिए थोड़ा और पैसा दिया था। सब कुछ एक साधारण से ग्रामीण घर की छवि से मेल खाता है, जो बहुत ही साधारण लोगों का घर होता है। कमरे का मुख्य रंग गहरा लाल है, जो बाहर के ठंडे, धूसर परिदृश्य के लिए एक गर्मजोशी भरा माहौल बनाता है। वहाँ रिचमंड द्वारा बनाई गई उनकी एक तस्वीर है, और लॉरेंस द्वारा थैकरे के चित्र की एक नक्काशी है; और ऊँचे, संकरे, पुराने ज़माने के मेंटलपीस के दोनों ओर दो खांचे हैं, जो किताबों से भरे हुए हैं - उन्हें उपहार में मिली किताबें; उनके द्वारा खरीदी गई किताबें, जो उनकी व्यक्तिगत रुचियों और शौक को दर्शाती हैं; ये कोई आम किताबें नहीं हैं।

"उसकी नज़र कमज़ोर है और वह बुनाई के अलावा कुछ खास नहीं करती। उसकी आँखों की रोशनी इस तरह कमज़ोर हुई: जब वह सोलह या सत्रह साल की थी, तो उसे चित्र बनाने का बहुत शौक था; और वह पत्रिकाओं से तांबे की प्लेटों पर बने चित्रों की नकल करती थी (कलाकार इसे 'स्टिपलिंग' कहते हैं, है ना?) हर छोटी से छोटी बिंदु को बारीकी से लगाती थी, जब तक कि छह महीने के अंत में उसने चित्र की एक बेहद सटीक नकल तैयार नहीं कर ली। वह चित्र बनाकर अपने विचारों को व्यक्त करना सीखना चाहती थी। जब उसने कहानियों को चित्रों के माध्यम से लिखने की कोशिश की और सफल नहीं हुई, तो उसने लिखने का बेहतर तरीका अपनाया; लेकिन इतनी छोटी लिखावट में कि उस समय उसने जो लिखा था उसे समझना लगभग असंभव था।"

लेकिन अब खाने के बाद आराम के हमारे शांत समय पर लौटते हैं। मैंने जल्द ही देखा कि उसकी व्यवस्थित आदतें ऐसी थीं कि अगर कोई कुर्सी अपनी जगह से हट जाती तो वह बातचीत जारी नहीं रख पाती थी; हर चीज़ बड़ी ही बारीकी से व्यवस्थित थी। हमने उसके बचपन के पुराने दिनों की बातें कीं; उसकी बड़ी बहन (मारिया) की मृत्यु के बारे में, - ठीक वैसे ही जैसे 'जेन आयर' में हेलेन बर्न्स की मृत्यु हुई थी; स्कूल के उन अजीब, भुखमरी भरे दिनों के बारे में; किसी न किसी तरह से खुद को व्यक्त करने की इच्छा (जो लगभग बीमारी के बराबर थी), - लेखन या चित्रकारी के बारे में; उसकी कमजोर दृष्टि के बारे में, जिसने उसे सत्रह से उन्नीस वर्ष की आयु तक दो साल तक कुछ भी करने से रोक दिया था; उसके गवर्नेंस होने के बारे में; उसके

ब्रुसेल्स जाने के बारे में; जिस पर मैंने कहा कि मुझे लूसी स्नो पसंद नहीं है, और हमने एम. पॉल इमैनुएल पर चर्चा की; और मैंने उसे 'शर्ली' के प्रति उसकी प्रशंसा के बारे में बताया, जिससे वह खुश हुई; क्योंकि शर्ली का चरित्र उसकी बहन एमिली के लिए था, जिसके बारे में वह बात करते-करते कभी नहीं थकती, और न ही मैं सुनते-सुनते। एमिली अवश्य ही एक टाइटन्स की वंशज, पृथ्वी पर रहने वाले दैत्यों की परपोती। एक दिन, मिस ब्रोंटे अपने भाई द्वारा बनाई गई एक साधारण सी दिखने वाली तेल चित्रकला लेकर आईं, जिसमें वह खुद, अठारह साल की एक छोटी, कुछ हद तक सजी-धजी दिखने वाली लड़की, और अपनी दो अन्य बहनों, सोलह और चौदह साल की लड़कियों को छोटे बालों और उदास, स्वप्निल आँखों के साथ चित्रित कर रही थीं। ... एमिली के पास एक बड़ा कुत्ता था - आधा मास्टिफ़, आधा बुलडॉग - बहुत ही खूंखार, इत्यादि। ... यह कुत्ता उनके अंतिम संस्कार में उनके पिता के साथ-साथ चला; और फिर, अपनी मृत्यु के दिन तक, वह उनके कमरे के दरवाजे पर सोता रहा; हर सुबह उसके नीचे सूंघता और रोता रहा।

"हम आम तौर पर शाम छह बजे चाय से पहले थोड़ी देर टहलते हैं; साढ़े आठ बजे प्रार्थना करते हैं; और नौ बजे तक हम दोनों को छोड़कर घर के सभी लोग सो जाते हैं। हम सब दस बजे तक या उससे भी आगे तक जागते रहते हैं; और मेरे जाने के बाद, मैं मिस ब्रोंटे को नीचे आते और लगभग एक घंटे तक कमरे में इधर-उधर घूमते हुए सुनती हूँ।"

इस पत्र की प्रतिलिपि ने उस सुखद मुलाकात के दिनों को मेरे सामने स्पष्ट कर दिया है, - उनकी स्पष्टता में एक उदासी भी झलकती है। हम साथ में बहुत खुश थे; हम एक-दूसरे के विषयों में बहुत रुचि रखते थे। दिन इतना छोटा लग रहा था कि हमने जो कुछ कहा और सुना, वह उसके लिए काफी नहीं था। जिस जगह उसने अपना जीवन व्यतीत किया था - जहाँ उसने प्रेम किया और कष्ट सहे - उसे देखकर मैं उसके जीवन को और बेहतर ढंग से समझ पाई। श्री ब्रोंटे एक अत्यंत विनम्र मेज़बान थे; और जब वे हमारे साथ होते थे - अपने अध्ययन कक्ष में नाश्ते पर, या शार्लोट के बैठक कक्ष में चाय पर - तो वे अतीत का वर्णन एक भव्य और गरिमामय तरीके से करते थे, जो उनके आकर्षक व्यक्तित्व से बिल्कुल मेल खाता था। जब शार्लोट उपस्थित होती थी, तो उन्हें हमेशा यह एहसास रहता था कि वह एक बच्ची है जिसे मार्गदर्शन और नियंत्रण की आवश्यकता है; और वह स्वयं भी इस बात को बड़ी शांति और विनम्रता

से स्वीकार करती थी, जिससे मुझे आधा आनंद आता था, आधा आश्चर्य होता था। लेकिन जब उसे कमरे से बाहर जाना पड़ता था, तब उसकी प्रतिभा और प्रसिद्धि पर उनका सारा गर्व प्रकट हो जाता था। मैंने शार्लोट की रचनाओं के प्रति जो प्रशंसा व्यक्त की थी, वह सब कुछ वे उत्सुकता से सुनते थे। वह कुछ खास भाषणों को बार-बार दोहराने के लिए कहता था, मानो वह उन्हें अपनी स्मृति में अंकित करना चाहता हो।

मुझे उन दो-तीन विषयों की याद है जो हमने शाम को बातचीत के दौरान सुने थे, उन विषयों के अलावा जिनका जिक्र मैंने अपने पत्र में किया है।

मैंने उससे पूछा कि क्या उसने कभी अफीम ली है, क्योंकि "विलेट" में इसके प्रभावों का जो वर्णन किया गया था, वह बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैंने अनुभव किया था - वस्तुओं की स्पष्ट और अतिरंजित उपस्थिति, जिनकी रूपरेखा धुंधली थी या सुनहरी धुंध में खोई हुई थी, आदि। उसने उत्तर दिया कि जहाँ तक उसे याद है, उसने कभी भी किसी भी रूप में अफीम का एक दाना भी नहीं लिया था, लेकिन उसने वही प्रक्रिया अपनाई जो वह हमेशा तब अपनाती थी जब उसे किसी ऐसी चीज़ का वर्णन करना होता था जो उसके अपने अनुभव में नहीं आई हो; वह सोने से पहले कई रातों तक इस पर गहराई से सोचती रही, - यह सोचती रही कि यह कैसा होता है, या कैसा होगा, - अंततः, कभी-कभी जब उसकी कहानी का प्रवाह हफ्तों तक एक बिंदु पर रुका रहता था, तो वह सुबह उठती और उसके सामने सब कुछ स्पष्ट होता, मानो उसने वास्तव में उस अनुभव को जिया हो, और फिर वह उसका शब्दशः वर्णन कर सकती थी, जैसा वह हुआ था। मैं इसका मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण नहीं दे सकता; मुझे केवल इतना यकीन है कि ऐसा ही हुआ था, क्योंकि उसने ऐसा कहा था।

उन्होंने श्रीमती स्टोव के शारीरिक रूप-रंग के बारे में कई पूछताछ की; और यह बात उनके किसी सिद्धांत से स्पष्ट रूप से मेल खाती थी कि 'अंकल टॉम्स केबिन' की लेखिका कद में छोटी और दुबली-पतली थीं। उनका एक और सिद्धांत यह था कि स्कॉटिश और अंग्रेज़ों के रक्त के मिश्रण से ही इतने उत्तम मानसिक और नैतिक व्यक्तित्व वाले लोग पैदा होते हैं।

मुझे याद है, उन्होंने बताया था कि जब उन्होंने "जेन आयर" लिखा था, तो उन्हें साहित्यिक चोरी के आरोप का कितना डर था; क्योंकि उन्होंने श्रीमती मार्श की कहानी "डिफॉर्म्ड" में आधी रात को सुनाई देने वाली रहस्यमयी चीख का रोमांचकारी प्रभाव

पढ़ा था। उन्होंने यह भी कहा कि जब उन्होंने "नेबर्स" पढ़ा, तो उन्हें लगा कि हर कोई यही सोचेगा कि उन्होंने जेन आयर के चरित्र की कल्पना मिस ब्रेमर की कहानी की कथावाचक "फ्रांसेस्का" से की होगी। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे दोनों पात्रों में ज़रा भी समानता नहीं दिखती, और मैंने उन्हें यही बताया; लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रहीं कि फ्रांसेस्का, जेन आयर ही है जिसकी शादी एक नेक दिल स्वीडिश सर्जन से हुई है।

हम अनजाने में ही, अपनी लंबी पैदल यात्राओं के दौरान कई गरीब लोगों से मिलने गए। एक से हमने छाता उधार लिया था; दूसरे के घर में हमने सितंबर के भयंकर तूफान से बचने के लिए शरण ली थी। इन सभी झोपड़ियों में उनकी शांत उपस्थिति का एहसास होता था। उनके घर से तीन मील दूर, उनके लिए कुर्सी साफ की गई और प्यार से कहा गया, "बैठ जाइए, मिस ब्रोंटे;" और उन्हें पता था कि परिवार के किन अनुपस्थित या बीमार सदस्यों का हालचाल पूछना है। उनके शांत, कोमल शब्द, भले ही कम हों, यॉर्कशायर के लोगों के कानों को बहुत भाते थे। उनका स्वागत, भले ही थोड़ा रूखा और संक्षिप्त था, फिर भी सच्चा और हार्दिक था।

हमने जीवन के विभिन्न रास्तों के बारे में बात की। उसने अपने शांत भाव से, मानो उसने इस सिद्धांत को एक सत्य मान लिया हो, कहा कि उसका मानना है कि कुछ लोगों के लिए दुख और घोर निराशा पहले से ही तय होती है; कि सभी का भाग्य सुखद नहीं होता, जैसा कि शास्त्रों में बताया गया है; कि जिन लोगों का जीवन कठिन होता है, उनके लिए यह समझना अच्छा है कि यही ईश्वर की इच्छा है, और अपनी अपेक्षाओं को संयमित रखने का प्रयास करें, आशा को उन लोगों के लिए छोड़ दें जिनका भाग्य अलग है, और धैर्य और त्याग को अपने जीवन के गुण के रूप में अपनाएँ। मेरा दृष्टिकोण भिन्न था: मुझे लगता था कि मनुष्य का भाग्य उसकी कल्पना से कहीं अधिक समान होता है; कि कुछ लोगों के जीवन में सुख और दुख एक साथ आते हैं, जबकि दूसरों के जीवन में ये लगभग समान रूप से मिश्रित होते हैं। वह मुस्कुराई, सिर हिलाया और कहा कि वह खुद को किसी भी सुख की आशा न करने का प्रशिक्षण दे रही है; कि साहस रखना और निष्ठापूर्वक समर्पण करना बेहतर है; कुछ लोगों के लिए दुख और निराशा का कोई अच्छा कारण है, जिसे हम समय आने पर जान लेंगे, कि इस धरती पर कुछ लोगों का भाग्य क्यों होता है। इस बात को स्वीकार करना और धार्मिक आस्था में सच्चाई का सामना करना बेहतर था।

इस बातचीत के सिलसिले में, उन्होंने एक अधूरी योजना का ज़िक्र किया जिसके बारे में मैंने तब तक नहीं सुना था; कि कैसे पिछले जुलाई में, उन्हें कुछ दोस्तों (एक विवाहित जोड़ा और उनका बच्चा) के साथ स्कॉटलैंड की सैर पर जाने का मन हुआ था। वे खुशी-खुशी रवाना हुए; वह विशेष रूप से उत्साहित थीं, क्योंकि स्कॉटलैंड एक ऐसी भूमि थी जिसकी जड़ें उनकी कल्पनाशील भावनाओं में गहरी थीं, और एडिनबर्ग में दो दिन बिताने के बाद ही उन्होंने स्कॉटलैंड को देखा था। लेकिन, कार्लिस्ले के बाद पहले ही पड़ाव पर, उनका छोटा बच्चा थोड़ा अस्वस्थ हो गया; चिंतित माता-पिता को लगा कि कुछ अलग तरह का खाना उसे रास नहीं आया है, और वे उतनी ही बेसब्री से अपने यॉर्कशायर स्थित घर लौट आए, जितनी बेसब्री से दो-तीन दिन पहले वे एक महीने की सुखद सैर की उम्मीद में उत्तर की ओर निकले थे।

हम दोनों ने एक-दूसरे से विदा लेते समय साथ बिताए सुख को बार-बार ताज़ा करने का इरादा किया। हमने तय किया कि जब उसे चहल-पहल चाहिए होगी या जब मुझे शांति चाहिए होगी, तो हम एक-दूसरे को बता देंगे और ज़रूरत पड़ने पर एक-दूसरे के यहाँ आ-जाएँगे।

मुझे इस बात का एहसास था कि इस समय उसके मन में बहुत चिंता थी; और इसकी प्रकृति से परिचित होने के कारण, मैं उसके पिता के प्रति उसके व्यवहार में दिखाई गई धैर्यपूर्ण विनम्रता की गहराई से प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका।

हॉवर्थ से मेरे जाने के कुछ ही समय बाद, वह मिस वूलर से मिलने हॉर्नसी गईं, जो उस समय वहीं रह रही थीं। इस सहेली के साथ समय शांतिपूर्वक और खुशी से बीता, जिनकी संगति उन्हें हर साल और भी प्यारी लगने लगी थी।

मिस वूलर को

12 दिसंबर, 1853।

मुझे आश्चर्य होता है कि आप ये लंबी सर्दियों की शामें कैसे बिता रही हैं। शायद मेरी तरह अकेली। अकेले बैठे-बैठे अक्सर ये ख्याल आता है कि कितना अच्छा होता अगर आप मेरे घर के पास रहतीं, और मैं कभी-कभी आपके पास आ पाती, या आप मेरे साथ एक दिन-रात बिताने आ जातीं। हाँ; हॉर्नसी में वो हफ़्ता मुझे बहुत अच्छा लगा, और मैं वसंत का इंतज़ार कर रही हूँ, क्योंकि यही वो समय है जब आप मुझसे मिलने आने का अपना वादा पूरा करेंगी। मुझे डर है कि हॉर्नसी में आप बहुत अकेली होंगी। दुनिया के कुछ लोगों के लिए आपका जीवन जीना कितना मुश्किल लगता

होगा! शांत मन और निर्मल स्वभाव के साथ जीना कितना असंभव लगता होगा! मुझे ये अद्भुत लगता है, क्योंकि आप श्रीमती — — की तरह कठोर और भावहीन नहीं हैं, बल्कि प्रकृति से मिली कोमल भावनाओं से परिपूर्ण हैं। ऐसी भावनाएँ, जब दबी रहती हैं, तो कभी-कभी मन और स्वभाव को नुकसान पहुँचाती हैं। लेकिन आपके साथ ऐसा नहीं है। ये कुछ हद तक सिद्धांत और कुछ हद तक आत्म-अनुशासन ही है जो आपको ऐसा बनाए रखता है।

बेशक, जैसे-जैसे मैं बीते हुए वर्षों के करीब आता जा रहा हूँ, मेरे लिए अब तक की तरह विस्तार से लिखना असंभव होता जा रहा है, क्योंकि अब तक मैंने ऐसा करने में कोई संकोच नहीं किया था। मिस ब्रोंटे ने 1853-54 की सर्दी अकेले और चिंता में बिताई। लेकिन समय धीरे-धीरे प्रबल पूर्वाग्रहों और मानवीय दृढ़ संकल्प पर विजय प्राप्त कर रहा था। धीरे-धीरे श्री ब्रोंटे अपनी बेटी की शादी के विचार को स्वीकार करने लगे।

एक और पत्र है, जो श्री डोबेल को संबोधित है, जो उनके चरित्र के बौद्धिक पक्ष को विकसित करता है, इससे पहले कि हम एक पत्नी बनने वाली डरपोक और कर्तव्यनिष्ठ महिला में और उसके नौ महीने के विवाहित जीवन की बहुत छोटी, लगभग परिपूर्ण, खुशी में लेखिका के बारे में सभी विचार खो दें।

"कीघली के पास हॉवर्थ,"

3 फरवरी, 1854।

मेरे प्रिय महोदय, — मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता कि मुझे उस मौन के बारे में स्पष्टीकरण देने का अवसर पाकर कितनी खुशी हो रही है जिसका आपने उल्लेख किया है। आपका पत्र उस समय आया जब मेरे पिता अत्यंत बीमार थे और मैं उनके बिस्तर के पास से नहीं हट सकता था। उस समय मैंने किसी भी पत्र का उत्तर नहीं दिया था, और आपका पत्र उन तीन-चार पत्रों में से एक था, जिनका उत्तर देने का समय जब मुझे मिला और मैंने उनके अर्थ पर विचार किया, तब मुझे लगा कि उनका उत्तर देने का समय बीत चुका है, और मैंने उन्हें अंततः एक तरफ रख दिया। यदि आपको याद हो, तो आपने मुझे लंदन जाने के लिए कहा था; तब न तो जाना संभव था और न ही मना करना। मुझे यकीन था कि आप लंदन छोड़ चुके थे। आपने जिस बात का जिक्र किया — आपकी पत्नी की बीमारी — जिसके बारे में मैंने कई बार सोचा है और यह जानने की कोशिश की है कि क्या वह अब ठीक हैं। अपने इस पत्र

में आपने उनका जिक्र नहीं किया है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि अब तक उनका स्वास्थ्य पूरी तरह से ठीक हो चुका होगा।

"'बाल्डर' सुरक्षित पहुँच गया। मैंने उसे देखा, फिर बड़े आनंद से उसके पत्ते काटे। उसके बड़े भाई, शक्तिशाली 'रोमन' को अच्छी तरह याद करते हुए, उसी घराने और वंश के नए वंशज का हार्दिक स्वागत करना स्वाभाविक था। मैंने उसके बारे में पढ़ा है। उसने मुझे इस प्रकार प्रभावित किया कि वह शक्ति से परिपूर्ण है; मैंने उसमें जीवन का एक अनवरत भंडार पाया, लेकिन मुझे लगा कि उसका प्रिय और लाडला बच्चा उसके पिता के लिए मुसीबत लाएगा—उसका दिल दुखाएगा। मुझे ऐसा लगा कि उसकी शक्ति और सुंदरता याकूब के युग के स्तंभ यूसुफ की नहीं, बल्कि उस उड़ाऊ पुत्र की है, जिसने अपने पिता को परेशान किया, हालाँकि उसने हमेशा उसका प्यार बरकरार रखा।"

"ऐसा कैसे होता है कि जहाँ प्रतिभा के धनी प्रथम संतान अक्सर सम्मान दिलाती है, वहीं दूसरी संतान लगभग हमेशा ही निराशा और चिंता का कारण बनती है? मैं लगभग भविष्यवाणी कर सकता हूँ कि आपकी तीसरी संतान अपने पूर्ववर्ती संतान द्वारा उत्पन्न किसी भी चिंता का प्रायश्चित करेगी।"

"'बाल्डर' के उस चरित्र में एक शक्ति है, और मेरे लिए एक प्रकार का भय भी। क्या आप बल के साथ-साथ कलात्मक चरित्र की किसी विशेष कमी को भी दर्शाना चाहते थे? मुझे लगता है कि उन कमियों को कभी भी सशक्त शब्दों में व्यक्त नहीं किया गया। मैं यह नहीं समझ पाया और न ही सोच सकता था कि आप उन्हें सच्चे, महान कवि के अपने प्रिय आदर्श के रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे; मैंने उन्हें अतिरंजित आत्मसम्मान, लगभग उन्मत्त आकांक्षा का एक जीवंत चित्र माना; एक ऐसी प्रकृति जिसने बुद्धि को मोलोच बना दिया है - मूर्तिपूजक अग्नि में प्राकृतिक भावनाओं को अर्पित कर दिया है - हृदय को मस्तिष्क के लिए बलिदान कर दिया है। क्या हम सभी नहीं जानते कि सच्ची महानता सरल, आत्म-विस्मृत, महत्वाकांक्षाहीन, निस्वार्थ लगाव से भरी होती है? मुझे यकीन है कि आप इस सत्य को अपने हृदय में गहराई से महसूस करते हैं।"

लेकिन अगर आलोचक अब गलती कर रहे हैं (अभी तक मैंने उनकी कोई गहन चर्चा नहीं देखी है), तो आप एक दिन 'बाल्डर' के दूसरे भाग में उन्हें सही कर देंगे। आप उन्हें दिखाएंगे कि आप भी जानते हैं—शायद उनसे भी बेहतर—कि सच्चा महान

व्यक्ति अपने प्रेम में इतना सच्चा होता है कि वह बलिदान देने से कतराता नहीं; अपने काम में इतना लीन होता है कि उसके बारे में ज़ोर-शोर से बात नहीं करता; अपने द्वारा शुरू किए गए कार्य को पूरा करने का सर्वोत्तम तरीका खोजने में इतना मग्न होता है कि स्वयं को—एक साधन के रूप में—महान नहीं समझता। और यदि ईश्वर उसके मार्ग में बाधाएँ डालता है—यदि उसके कर्तव्य कभी-कभी उसकी क्षमताओं में बाधा डालते प्रतीत होते हैं—तो वह अवरोध और विलंब की धीमी पीड़ा को तीक्ष्णता से महसूस करता है, शायद तड़पता भी है; लेकिन यदि उसके हृदय में एक सच्चे मनुष्य का हृदय है, तो वह सहन कर सकता है, समर्पण कर सकता है, धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर सकता है।

"जो कोई भी मुझसे 'बाल्डर' के बारे में बात करे—भले ही मैं इतना एकांत जीवन जीता हूँ कि अक्सर टिप्पणी करने के लिए उपलब्ध नहीं होता—उसे आपके सुझाव और मेरी अपनी धारणा के अनुसार उत्तर दिया जाएगा। निष्पक्षता यह मांग करती है कि आप स्वयं अपने अर्थ का आकलन करें। अभी के लिए अलविदा, और मेरा विश्वास कीजिए।"

"विश्वासपूर्वक और कृतज्ञतापूर्वक,

"शार्लोट ब्रोंटे।"

सिडनी डोबेल, एस्क्वायर।

ब्रसेल्स में अपनी एक सहपाठी को लिखे पत्र से इस सर्दी के दौरान बाहरी घटनाओं के बारे में कुछ जानकारी मिलती है।

"8 मार्च।"

"तुम्हारी लिखावट दोबारा देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मुझे लगता है कि तुमसे बात किए हुए एक साल हो गया है। पिछले कुछ समय से तुम बार-बार मेरे मन में आ रही हो, और तुम्हारी चुप्पी के कारण को लेकर मुझे कुछ चिंताजनक आशंकाएं होने लगी थीं। तुम्हारे पत्र ने इन सभी आशंकाओं को दूर कर दिया; इसमें तुम्हारे पापा, मम्मी, बहनों और सबसे बढ़कर, तुम्हारे प्यारे और सम्मानित अंग्रेज होने की अच्छी खबर है।"

मेरे प्यारे पिता ने भीषण सर्दी का सामना बहुत अच्छे से किया है, जिसके लिए मैं और भी आभारी हूँ क्योंकि पिछली गर्मियों में जून में हुए एक दौरे के बाद उनका स्वास्थ्य कई हफ्तों तक बेहद नाजुक रहा था, जिससे कुछ घंटों के लिए उनकी दृष्टि

पूरी तरह चली गई थी, हालांकि उनके दिमाग, बोलने या चलने-फिरने की क्षमता पर जरा भी असर नहीं पड़ा था। मैं आपको बता नहीं सकती कि मैं कितनी आभारी थी, जब उस निराशाजनक और लगभग हताश कर देने वाले अंधकार के दौर के बाद, उन्हें एक बार फिर दिन की रोशनी की एक किरण दिखाई दी। मुझे डर था कि उनकी ऑप्टिक नस लकवे की चपेट में आ गई है। काफी देर तक एक तरह का धुंधलापन छाया रहा; और सच में, उनकी दृष्टि अभी पूरी तरह से साफ नहीं है, लेकिन वे पढ़-लिख सकते हैं और चल-फिर सकते हैं, और वे हर रविवार को दो बार उपदेश देते हैं, केवल पादरी ही प्रार्थना पढ़ते हैं। आप अच्छी तरह समझ सकते हैं कि मैं कितनी दिली इच्छा और प्रार्थना करती हूँ कि उनकी दृष्टि अंत तक बनी रहे; उन्हें अंधेपन के इस कष्ट से बहुत डर लगता है। उनका दिमाग पहले की तरह ही मजबूत और सक्रिय है, और राजनीति में उनकी उतनी ही रुचि है जितनी आपके पापा की। ज़ार युद्ध, फ्रांस और इंग्लैंड के बीच गठबंधन—इन सभी चीजों में वह अपना पूरा दिलो-जान लगा देता है; ऐसा लगता है मानो ये सब उसे उसके अपेक्षाकृत युवा दिनों में वापस ले जाते हैं और अंतिम महान यूरोपीय संघर्ष के उत्साह को फिर से जगा देते हैं। बेशक मेरे पिता की सहानुभूति (और मेरी भी) न्याय और यूरोप के साथ है, जो अत्याचार और रूस के खिलाफ लड़ रहे हैं।

मेरी परिस्थितियों को देखते हुए, आप समझ सकते हैं कि पिछले एक साल में मुझे घर से बाहर जाने का न तो समय मिला और न ही इच्छा। मैंने वसंत ऋतु में श्रीमती गैस्केल के साथ एक सप्ताह बिताया, और हाल ही में कुछ अन्य मित्रों के साथ दो सप्ताह बिताए, और इसमें आपके साथ आखिरी मुलाकात के बाद से मेरी सभी यात्राएँ शामिल हैं। मेरा जीवन वास्तव में बहुत ही एक जैसा और एकांतप्रिय हो गया है - जो मन और शरीर दोनों के लिए स्वास्थ्यकर नहीं है; फिर भी, मुझे समय-समय पर मिलने वाले समर्थन और प्रोत्साहन के लिए कृतज्ञता के भाव बार-बार जागृत होते हैं। मेरा स्वास्थ्य, हालांकि पूरी तरह से ठीक नहीं है, लेकिन मुझे कभी-कभी लगता है कि तीन साल पहले की तुलना में अब यह पहले से कहीं बेहतर है। सिरदर्द और अपच मेरी सबसे बड़ी बीमारियाँ हैं। क्या मैं इस मौसम में कुछ दिनों के लिए शहर आ पाऊँगा, यह अभी तय नहीं है; लेकिन अगर मैं आया, तो मुझे पी. प्लेस में मिलने की उम्मीद है।

अप्रैल में उन्होंने मिस वूलर को अपनी सगाई की जानकारी दी।

हॉवर्थ, 12 अप्रैल।

मेरी प्रिय मिस वूलर, — मेरे मामलों में आपकी हमेशा दिखाई गई सच्ची और स्नेहपूर्ण रुचि को देखते हुए, मुझे लगता है कि इस विषय पर आपको शीघ्र ही सूचित करना मेरा कर्तव्य है, क्योंकि इस विषय पर मैं आपसे पहले भी कई बार परामर्श कर चुका हूँ। इसलिए, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मेरे पिछले पत्र के बाद से, पापा का विचार धीरे-धीरे बदल गया है; और कुछ पत्राचार के बाद, और लगभग एक सप्ताह पहले श्री निकोल्स के यहाँ आने के परिणामस्वरूप, यह सहमति बनी कि पापा के वर्तमान सहायक को नौकरी मिलते ही वे हॉवर्थ के क्यूरेसी का कार्यभार संभाल लेंगे, और उचित समय पर उन्हें इस घर में एक निवासी के रूप में स्वीकार कर लिया जाएगा।

मुझे असीम संतोष है यह देखकर कि मेरे पिता ने इस मामले के बारे में अपना नया दृष्टिकोण स्वीकार कर लिया है और वे इसे बड़े ही सहजता से स्वीकार रहे हैं। सभी व्यवस्थाओं में उनकी सुविधा और एकांत का पूरा ध्यान रखा जाएगा। श्री निकोल्स अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उन्हें आराम और सहारा देने की गहरी इच्छा रखते हैं। श्री निकोल्स के स्वभाव को देखते हुए मुझे विश्वास है कि यह महज़ एक क्षणिक आवेगपूर्ण भावना नहीं है, बल्कि इसे एक कर्तव्य के रूप में दृढ़ता से स्वीकार किया जाएगा और स्नेह के साथ निभाया जाएगा। मुझे पता है कि ईश्वर की कृपा और बुद्धिमत्ता से जो नियति मुझे मिल रही है, वह शायद आम तौर पर उज्ज्वल न मानी जाए, लेकिन मुझे विश्वास है कि उसमें सच्ची खुशी के कुछ अंश दिखाई देते हैं। मुझे विश्वास है कि विचार-विमर्श के इस कदम से भावना और कर्तव्य दोनों की मांगें कुछ हद तक संतुलित हो जाएंगी। श्री निकोल्स की इच्छा है कि विवाह इस गर्मी में हो जाए; वे जुलाई का महीना सुझा रहे हैं, लेकिन यह बहुत जल्दी लगता है।

जब आप मुझे पत्र लिखें, तो मुझे अपना हालचाल जरूर बताएं। . . . मैंने लंदन जाने का अपना इरादा पूरी तरह से रद्द कर दिया है; अगले तीन महीने मेरे लिए बहुत व्यस्त रहेंगे; मैं एक महीना यूं ही बर्बाद नहीं कर सकता। . . . पापा को अभी-अभी आदरणीय बिशप का पत्र मिला है, जिसने हमें बहुत प्रसन्न किया है; उसमें श्री निकोल्स के हॉवर्थ लौटने (जिसके संबंध में उनसे परामर्श लिया गया था) के प्रति हार्दिक स्वीकृति और आगे होने वाली घरेलू व्यवस्थाओं पर हार्दिक संतोष व्यक्त किया गया है। ऐसा लगता है कि जून 1853 में जब वे यहां आए थे, तब उनकी सूझबूझ ने

स्थिति का जायजा लिया था।

अन्य पत्रों में उन्होंने उस ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की, जिन्होंने उन्हें अनेक कठिनाइयों, कष्टों और मानसिक उलझनों से उबारकर मार्गदर्शन दिया था; फिर भी, उन्हें वही अनुभूति हो रही थी जो अधिकांश विचारशील स्त्रियों को होती है, जब वे युवावस्था के शुरुआती उजाले के बाद विवाह करती हैं, कि सगाई की घोषणा करते समय एक अजीब सी उदासी छाई रहती है—क्योंकि चिंताएँ और भय आशाओं के साथ इस प्रकार घुलमिल जाते हैं कि उन्हें अलग करना असंभव हो जाता है। इस समय उनके मन को जो एक बड़ी राहत मिली, वह इस विश्वास से थी कि उनके पिता उनकी शादी से संबंधित सभी विचारों और तैयारियों में अत्यंत प्रसन्न थे। वे चाहते थे कि सब कुछ शीघ्रता से संपन्न हो और श्री निकोल्स को उनके पति के रूप में पादरी के घर में स्वागत करने की प्रत्येक प्रारंभिक व्यवस्था में उनकी गहरी रुचि थी। यह कदम श्री ब्रोंटे की वृद्धावस्था और कमजोर दृष्टि के कारण आवश्यक हो गया था, जिसके कारण शार्लोट जैसी आज्ञाकारी पुत्री का यह सर्वोपरि कर्तव्य था कि वह उनकी आवश्यकताओं की देखभाल में यथासंभव समय और सहायता प्रदान करे। श्री निकोल्स को भी उम्मीद थी कि जब भी वृद्ध पादरी को उनकी सेवाओं की आवश्यकता होगी, वे अपनी उपस्थिति से कुछ सांत्वना और प्रसन्नता प्रदान कर सकेंगे।

मई की शुरुआत में, मिस ब्रोंटे अपनी शादी से पहले तीन मुलाकातों के लिए घर से निकलीं। पहली मुलाकात हमसे थी। वह केवल तीन दिन ही रुकीं, क्योंकि उन्हें लीड्स के पास जाना था, जहाँ उन्हें अपनी शादी के लिए ज़रूरी सामान खरीदना था। जैसा कि उन्होंने कहा, उनकी तैयारियाँ न तो खर्चीली थीं और न ही व्यापक; मुख्य रूप से अपने कपड़ों की थोड़ी-बहुत पूर्ति, पादरी के घर में कुछ नए वॉलपेपर लगवाना और रंग-रोगन करवाना; और सबसे बढ़कर, अपने बैठक कक्ष के पीछे स्थित छोटे से पत्थर के फर्श वाले गलियारे (जो अब तक केवल सामान रखने के लिए इस्तेमाल होता था) को अपने पति के लिए अध्ययन कक्ष में बदलना। इस विचार और अपने पति के साथ-साथ अपने पिता के आराम की योजनाओं पर उनका मन काफी देर तक लगा रहा; और हमने उन पर उसी अटूट खुशी के साथ चर्चा की, जो मुझे लगता है कि सभी महिलाओं को ऐसी चर्चाओं में महसूस होती है — खासकर जब पैसों की बात आती है और उस तरह की तरकीब की ज़रूरत पड़ती है जिसका ज़िक्र चार्ल्स लैम्ब ने अपने निबंध 'एस्से ऑन ओल्ड चाइना' में किया है, कि किसी चीज़ को आखिरकार पाने की

खुशी में कितना बड़ा इज़ाफ़ा होता है।

हॉवर्थ, 22 मई।

घर आने के बाद से मैं सिलाई में बहुत व्यस्त रही हूँ; छोटा नया कमरा व्यवस्थित हो गया है, और हरे-सफेद पर्दे लग गए हैं; वे वॉलपेपर से बिल्कुल मेल खाते हैं, और साफ-सुथरे दिखते हैं। एक-दो दिन पहले मुझे एक पत्र मिला, जिसमें बताया गया कि श्री निकोल्स कल आ रहे हैं। मैं उनके बारे में चिंतित हूँ; एक बात को लेकर इतनी चिंतित हूँ कि मैं खुद से भी पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकती। ऐसा लगता है कि उन्हें फिर से गठिया की बीमारी से बहुत तकलीफ हो रही है। यह बात मुझे उनसे नहीं, बल्कि किसी और से पता चली है। जब मैं मैनचेस्टर में थी, तब वे बीमार थे। उन्होंने मुझसे कोई शिकायत नहीं की; इस विषय पर कोई संकेत भी नहीं दिया। अफसोस, उन्हें उम्मीद थी कि वे ठीक हो गए हैं, और मैं जानती हूँ कि उनकी उम्मीदों का यह टूटना उन्हें कितना दुखी करेगा। निस्वार्थ कारणों से उन्होंने दिल से कामना की थी कि यह बीमारी पुरानी न हो जाए। मुझे डर है—मुझे डर है; लेकिन अगर उन्हें कष्ट सहना ही है, तो उन्हें देखभाल और मदद की और भी अधिक आवश्यकता होगी। खैर! जो भी हो, भगवान हम दोनों की मदद करें और हमें शक्ति दें! मैं कल का बेसब्री से इंतजार कर रही हूँ। अधीरता और चिंता का मिश्रण।"

श्री ब्रोंटे की तबीयत थोड़ी खराब थी, जिससे वह काफी चिंतित थीं। इसके अलावा, घर की तैयारियों में व्यस्तता का बोझ दुल्हन पर भारी पड़ रहा था - हालांकि यह बोझ अप्रिय नहीं था, बल्कि उनका पूरा समय उसी में लग रहा था। हैलिफ़ैक्स से शादी के कपड़े आने के कई दिनों बाद तक वह इतनी व्यस्त थीं कि उन्हें खोलने का समय ही नहीं मिला; फिर भी वह इतनी व्यस्त नहीं थीं कि मिस वूलर की शादी में उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए कोई इंतजाम न कर सकें।

आज मैं मिस वूलर को पत्र लिख रही हूँ। प्रिय, क्या यह बेहतर नहीं होगा कि आप और वह एक ही दिन हॉवर्थ आ सकें और एक ही ट्रेन से कीघली पहुँचें? फिर मैं टैक्सी को स्टेशन पर आपको लेने और आपके सामान के साथ लाने का आदेश दे सकती हूँ। इस भीषण गर्मी में पैदल चलना न तो आपके लिए और न ही उनके लिए संभव है; और मुझे पता है कि अगर उन्हें अकेले छोड़ दिया जाए तो वह पैदल चलने की जिद करेंगी और लगभग मरणासन्न होकर पहुँचेंगी। मैंने सोचा कि पहले आपको इस व्यवस्था के बारे में बता देना बेहतर होगा, और फिर, अगर आपको यह पसंद आए, तो

आप मिस वूलर से समय आदि तय कर लें और मुझे बता दें। कृपया मुझे समय पर सूचित करें, ताकि मैं डेवोनशायर आर्म्स को टैक्सी के बारे में लिख सकूँ।

श्रीमान निकोल्स एक दयालु और विचारशील व्यक्ति हैं। अपनी तमाम पुरुषवादी कमियों के बावजूद, वे मेरी इस इच्छा को समझते हैं कि काम शांतिपूर्वक हो जाए, जिससे मैं उनका आभारी हूँ; और अगर कोई दखलंदाजी करके उनकी व्यवस्थाओं को बिगाड़ता नहीं है, तो वे इसे इस तरह से संभालेंगे कि हॉवर्थ में किसी को भी उस दिन की भनक नहीं लगेगी। वे 'महिलाओं' के बारे में भी बहुत विचारशील हैं - यानी आपके और मिस वूलर के बारे में। यहाँ तक कि उन्होंने उन व्यवस्थाओं का भी पहले से ही अनुमान लगा लिया है जो मैं उन्हें आपके प्रस्थान आदि के बारे में बताने वाला था। वे और श्रीमान एस - - एक दिन पहले शाम को - - आ रहे हैं; मुझे एक नोट लिखकर बता देना कि वे वहाँ हैं; ठीक सुबह आठ बजे वे चर्च में होंगे, और हमें वहीं उनसे मिलना है। श्रीमान और श्रीमती ग्रांट को नाश्ते के लिए आमंत्रित किया गया है, समारोह के लिए नहीं।

शादी 29 जून को तय हुई थी। उसकी दोनों सहेलियाँ एक दिन पहले हॉवर्थ पार्सनेज पहुँच गईं; और शार्लोट ने गर्मी की लंबी दोपहर और शाम कल की तैयारियों और घर से अनुपस्थिति के दौरान अपने पिता के आराम के लिए सोच-विचार में बिताई। जब सब कुछ हो गया—सामान पैक हो गया, सुबह का नाश्ता तैयार हो गया, शादी का जोड़ा निकाल कर रख दिया गया—ठीक सोने के समय, श्री ब्रोंटे ने घोषणा की कि वह घर पर ही रुकेंगे जबकि बाकी लोग चर्च जाएँगे। अब क्या किया जाए? दुल्हन को कौन विदा करेगा? वहाँ केवल पुजारी, दूल्हा-दुल्हन, दुल्हन की सहेली और मिस वूलर ही उपस्थित होने वाले थे। प्रार्थना-पुस्तक देखी गई; और उसमें पाया गया कि नियम कहता है कि पादरी “महिला को उसके पिता या सहेली के हाथों से ग्रहण करेगा”, और “सहेली” के लिंग के बारे में कुछ भी निर्दिष्ट नहीं है। इसलिए, हमेशा संकट में दयालु रहने वाली मिस वूलर ने अपनी पुरानी शिष्या को विदा करने की पेशकश की।

शादी की खबर चर्च से बाहर आने से पहले ही फैल चुकी थी, और कई पुराने और विनम्र मित्र वहाँ मौजूद थे, जिन्होंने उसे "बर्फ़ की बूंद जैसी" देखा। उसकी पोशाक सफेद कढ़ाईदार मलमल की थी, जिसके ऊपर लेस का लबादा और हरे पत्तों से सजी सफेद टोपी थी, जो शायद उसे सर्दियों के फीके फूल से मिलती-जुलती दिखा रही थी।

श्री निकोल्स और वह आयरलैंड में उनके मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने गए; और किलार्नी, ग्लेनगारिफ, टारबर्ट, ट्राली और कॉर्क का भ्रमण किया, जहाँ के दृश्यों के बारे में वह कहती हैं, "कुछ हिस्से मेरी कल्पना से भी कहीं अधिक सुंदर थे।" ... "मुझे कहना होगा कि मुझे अपने नए रिश्तेदार बहुत पसंद हैं। मेरे प्रिय पति भी अपने देश में एक नए रूप में नज़र आते हैं। कई बार मुझे चारों ओर से उनकी प्रशंसा सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई है। परिवार के कुछ पुराने नौकर और अनुयायी मुझे बताते हैं कि मैं बहुत भाग्यशाली हूँ; क्योंकि मुझे देश के सबसे अच्छे सज्जनों में से एक मिला है। ... मुझे विश्वास है कि मैं ईश्वर की आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे एक सही चुनाव करने में सक्षम बनाया; और मैं प्रार्थना करती हूँ कि मुझे एक सच्चे, सम्मानित व्यक्ति के स्नेहपूर्ण समर्पण का उचित प्रतिफल देने में सक्षम बनाया जाए।"

अब से उसके वैवाहिक जीवन के पवित्र द्वार उसके लिए बंद हो गए हैं। हम, उसके प्यारे दोस्त, बाहर खड़े होकर कभी-कभार उसकी आँखों में चमक और मधुर, शांत फुसफुसाहट की झलक पाते थे, जो उसके भीतर की खुशी का संकेत दे रही थी; और हम एक-दूसरे को देखकर धीरे से कहते थे, “कठिन और लंबे संघर्ष के बाद—अनेक चिंताओं और कड़वे दुखों के बाद—अब वह सुख का स्वाद चख रही है!” हमने उसके स्वभाव की हल्की कठोरता के बारे में सोचा, और कैसे वह घरेलू शांति की उस शांत धूप में पूरी तरह से मीठी हो जाएगी। हमने उसकी कठिनाइयों को याद किया, और इस विचार से प्रसन्न हुए कि ईश्वर ने उसकी आँखों से आँसू पोंछना उचित समझा। उसे देखने वालों ने उसके चेहरे पर एक बाहरी परिवर्तन देखा, जो उसके भीतर की भावनाओं को व्यक्त कर रहा था। और हमने अपने अपार प्रेम और श्रद्धा में सोचा, आशा की और भविष्यवाणी की।

लेकिन ईश्वर के तरीके हमारे तरीकों से अलग हैं!

सुनो, हमने जो सुना, उसमें खुशी की कुछ धीमी फुसफुसाहटें सुनाई दे रही थीं:

“उस धुंधली, शांत जून की सुबह के बाद से, जब आप, ई—— और मैं तीनों हॉवर्थ चर्च गए थे, तब से मुझे शायद ही कभी खाली समय मिला हो। ऐसा नहीं है कि मैं थकी हुई या बोझिल थी; बल्कि सच यह है कि अब मेरा समय मेरा अपना नहीं है; कोई और इसका एक बड़ा हिस्सा चाहता है और कहता है, 'हमें ऐसा करना चाहिए।' हम उसी के अनुसार ऐसा करते हैं; और आमतौर पर यह सही लगता है। . . . दूर-दूर से कई लोग हमसे मिलने आए, और हाल ही में एक छोटे से गाँव के कार्यक्रम की

तैयारी में थोड़ा व्यस्त रहे। श्री निकोल्स और मैं दोनों ही उनके लौटने पर गाँव वालों द्वारा दिखाए गए हार्दिक स्वागत और सद्भावना के लिए कुछ धन्यवाद देना चाहते थे; इसलिए, रविवार और दिन के विद्यार्थियों और शिक्षकों, चर्च की घंटियाँ बजाने वालों, गायकों आदि सहित लगभग पाँच सौ लोगों को स्कूल-रूम में चाय और रात के खाने के लिए आमंत्रित किया गया। वे इसका खूब आनंद लेते दिखे, और उनकी खुशी देखकर बहुत अच्छा लगा। गाँव वालों में से एक ने मेरे पति के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करते हुए उनका वर्णन इस प्रकार किया: 'एक सच्चे ईसाई और एक दयालु सज्जन।' मैं स्वीकार करती हूँ कि इन शब्दों ने मुझे बहुत प्रभावित किया, और मैंने सोचा (जैसा कि मुझे पता है कि यदि आप वहाँ होते तो आप भी सोचते) कि ऐसा चरित्र पाना और हासिल करना धन, प्रसिद्धि या शक्ति अर्जित करने से कहीं बेहतर है। मैं उस उच्च लेकिन सरल प्रशंसा को दोहराना चाहती हूँ। . . . जब हम आयरलैंड से लौटे तो मेरे प्यारे पिताजी की तबीयत ठीक नहीं थी। लेकिन मुझे यह कहते हुए अत्यंत खुशी हो रही है कि अब वे बेहतर हैं। ईश्वर उन्हें कुछ और वर्षों तक हमारे साथ बनाए रखें! उनके लंबे जीवन की कामना, साथ ही उनकी खुशी और स्वास्थ्य के लिए एक विशेष चिंता, मुझे शायद ही पता क्यों, अब मेरे भीतर शादी से पहले की तुलना में कहीं अधिक प्रबल प्रतीत होती है। पापा ने हमारे लौटने के बाद से कोई काम नहीं लिया है; और जब भी मैं मिस्टर निकोल्स को गाउन या सरप्लस पहने देखती हूँ, तो मुझे यह सोचकर सुकून मिलता है कि इस शादी ने पापा को उनके बुढ़ापे में अच्छी सहायता प्रदान की है।

"19 सितंबर।"

जी हाँ! मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि मेरे पति का स्वास्थ्य और मन दोनों सुधर गए हैं। उन्हें समय-समय पर अपनी खुशी को संक्षिप्त और स्पष्ट शब्दों में ईमानदारी से व्यक्त करते हुए सुनकर मुझे संतोष और कृतज्ञता का अनुभव होता है। मेरा जीवन पहले से कहीं अधिक व्यस्त हो गया है। मेरे पास सोचने का उतना समय नहीं है। मुझे अधिक व्यावहारिक होना पड़ रहा है, क्योंकि मेरे प्रिय आर्थर बहुत ही व्यावहारिक, समय के पाबंद और व्यवस्थित व्यक्ति हैं। वे हर सुबह नौ बजे तक राष्ट्रीय विद्यालय में होते हैं; वे बच्चों को साढ़े दस बजे तक धार्मिक शिक्षा देते हैं। लगभग हर दोपहर वे गरीब श्रद्धालुओं से मिलने जाते हैं। बेशक, वे अक्सर अपनी पत्नी के लिए भी कुछ न कुछ काम निकाल लेते हैं, और मुझे उम्मीद है कि उन्हें

उनकी मदद करने में कोई आपत्ति नहीं होती। मुझे लगता है कि यह मेरे लिए बुरा नहीं है कि उनका झुकाव पूरी तरह से जीवन के कार्यों और सक्रिय उपयोगिता की ओर है; साहित्य और चिंतन में उनकी रुचि कम है। उनके निरंतर स्नेह और दयालु व्यवहार के बारे में ज्यादा कुछ कहना उचित नहीं है; लेकिन वे न तो बदले हैं और न ही कम हुए हैं।

उनकी सहेली और दुल्हन की सहेली अक्टूबर में उनसे मिलने आई थीं। मुझे भी जाना था, लेकिन एक छोटी सी बाधा के कारण मैं नहीं जा पाई, जिसका मुझे हमेशा अफसोस रहेगा।

मैं युद्ध के बारे में कुछ नहीं कहता; लेकिन जब मैं इसकी भयावहता के बारे में पढ़ता हूँ, तो मुझे लगता है कि यह मानवता पर आई सबसे बड़ी विपत्तियों में से एक है। मुझे उम्मीद है कि यह युद्ध ज़्यादा समय तक नहीं चलेगा, क्योंकि मुझे लगता है कि इससे मिलने वाली कोई भी प्रसिद्धि उन कष्टों की भरपाई नहीं कर सकती जो सहने पड़ते हैं। यह थोड़ा नीच और देशद्रोही लग सकता है; लेकिन मुझे लगता है कि जैसे-जैसे हम अधेड़ उम्र की ओर बढ़ते हैं, बड़प्पन और देशभक्ति का हमारे लिए वह अर्थ नहीं रह जाता जो हम जवानी में समझते हैं।

आप पापा का हालचाल पूछ लीजिए। उनकी सेहत में सुधार हो रहा है और ठंड बढ़ने के साथ-साथ वे और भी तंदुरुस्त होते जा रहे हैं; दरअसल, पिछले कुछ सालों से उनकी सेहत गर्मियों के मुकाबले सर्दियों में ज़्यादा अच्छी रहती है। हम सब ठीक हैं; और जहाँ तक मेरी बात है, पिछले तीन महीनों में मुझे सिरदर्द वगैरह से इतनी राहत मिली है, जितनी पहले कभी नहीं मिली थी। मेरी ज़िंदगी पहले जैसी नहीं रही। ईश्वर करे कि मैं इसके लिए शुक्रगुज़ार रहूँ! मेरे पास एक अच्छा, दयालु और स्नेहशील पति है; और हर दिन उनके प्रति मेरा लगाव और भी मज़बूत होता जा रहा है।

शरद ऋतु के अंत में, सर जेम्स के शटलवर्थ ने लंकाशायर और यॉर्कशायर को अलग करने वाली सीमावर्ती पहाड़ियों को पार किया और उनके साथ दो या तीन दिन बिताए।

इसी समय के आसपास, श्री निकोल्स को हॉवर्थ में अपने पादरी पद से कहीं अधिक मूल्यवान पद की पेशकश की गई, और कई मायनों में यह प्रस्ताव बहुत लाभकारी था; लेकिन वे श्री ब्रोंटे के जीवित रहने तक हॉवर्थ से बंधे रहना चाहते थे। फिर भी, इस प्रस्ताव से उनकी पत्नी को बहुत प्रसन्नता हुई, क्योंकि यह उनके पति

के प्रति उनके सम्मान का प्रमाण था।

29 नवंबर।

"कल मेरा इरादा एक पंक्ति लिखने का था, लेकिन जैसे ही मैं लिखने बैठा, आर्थर ने मुझे टहलने के लिए बुलाया। हम चल पड़े, ज़्यादा दूर जाने का इरादा नहीं था; लेकिन, हालांकि मौसम तूफ़ानी और बादलों से घिरा था, सुबह सुहावना था; जब हम मैदान में लगभग आधा मील चल चुके थे, आर्थर ने झरने का सुझाव दिया; उसने कहा कि बर्फ पिघलने के बाद यह बहुत सुंदर लगेगा। मैं अक्सर इसे सर्दियों में इसकी पूरी शक्ति में देखना चाहता था, इसलिए हम आगे बढ़ते रहे। यह सचमुच बहुत सुंदर था; चट्टानों पर से बहता हुआ एक तेज़ झरना, सफ़ेद और सुंदर! जब हम इसे देख रहे थे, तभी बारिश शुरू हो गई, और हम भीगे आसमान के नीचे घर लौट आए। फिर भी, मुझे सैर का भरपूर आनंद आया, और मैं किसी भी कीमत पर इस नज़ारे को नहीं छोड़ना चाहता था।"

ऐसे मौसम में सात-आठ मील की यह पैदल यात्रा वह आसानी से पूरी नहीं कर पाई। तमाम सावधानियों के बावजूद, घर लौटने के तुरंत बाद ही उसे कंपकंपी होने लगी और उसे लंबे समय तक गले में खराश और सर्दी-जुकाम रहा, जिससे वह दुबली-पतली और कमजोर हो गई।

"क्या मैंने आपको बताया था कि हमारी प्यारी छोटी फ्लॉसी मर गई? वह एक दिन तक तड़पती रही और रात में शांति से बिना दर्द के मर गई। एक कुत्ते का खोना भी बहुत दुखद था; फिर भी, शायद ही किसी कुत्ते ने इतना सुखी जीवन जिया हो या इतनी सहज मृत्यु पाई हो।"

क्रिसमस के दिन वह और उसका पति उस निर्धन बूढ़ी औरत के पास गए (जिसके बछड़े को ढूंढने का काम उसने पहले कभी सौंपा था), और उसके दिल को खुश करने के लिए एक बड़ा सा मसालेदार केक अपने साथ ले गए। क्रिसमस के दिन हॉवर्थ में कई साधारण भोजन उसके उपहारों से और भी स्वादिष्ट बन गए।

नए साल (1855) की शुरुआत में, श्री और श्रीमती निकोल्स सर जेम्स के शटलवर्थ से मिलने गॉथोर्प गए। वे केवल दो या तीन दिन ही रुके, लेकिन संयोगवश पतले जूतों में गीली ज़मीन पर लंबी पैदल यात्रा करने से उनकी सर्दी और बढ़ गई।

वापस लौटने के कुछ ही समय बाद, उसे लगातार मतली और बार-बार बेहोशी के नए लक्षण सताने लगे। कुछ समय तक यह स्थिति बनी रहने के बाद, उसने श्री

निकोल्स की इच्छा मानकर डॉक्टर को बुलाने का फैसला किया। डॉक्टर आए और उन्होंने उसकी इस दयनीय बीमारी का एक प्राकृतिक कारण बताया; थोड़ा धैर्य रखने से सब ठीक हो जाएगा। वह, जो बीमारी में हमेशा धैर्य रखती थी, उसने हिम्मत नहीं हारी और आगे बढ़ती रही। लेकिन भयानक बीमारी बढ़ती ही गई, यहाँ तक कि भोजन को देखते ही उसे मतली होने लगी। एक व्यक्ति का कहना है, "पिछले छह हफ्तों में उसने जो खाया, उससे तो एक चिड़िया भी भूखी मर जाती।" टैबी का स्वास्थ्य अचानक और पूरी तरह बिगड़ गया, और घर की आखिरी बेटी, जिसकी उसने इतने लंबे समय तक सेवा की थी, के लिए चल रहे दुख और चिंता के इस समय में उसकी मृत्यु हो गई। मार्था ने अपनी मालकिन की कोमल देखभाल की और समय-समय पर आने वाले बच्चे के बारे में सोचकर उन्हें खुश करने की कोशिश करती रही। वह कहती, "मुझे यकीन है कि एक दिन मुझे खुशी होगी।" “पर मैं बहुत बीमार हूँ—बहुत थकी हुई हूँ—” फिर वह बिस्तर पर लेट गई, इतनी कमज़ोर कि उठ भी नहीं पा रही थी। उसी बिस्तर पर लेटे-लेटे उसने पेंसिल से दो चिट्ठियाँ लिखीं। पहली चिट्ठी पर कोई तारीख नहीं है और वह अपनी “प्रिय नेल” को संबोधित है।

मुझे अपने थके-हारे बिस्तर से एक पंक्ति लिखनी है। एम — — के ठीक होने की खबर सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं अपने कष्टों के बारे में बात नहीं करूंगी — यह व्यर्थ और कष्टदायक होगा। मैं आपको एक आश्वासन देना चाहती हूं, जिससे आपको तसल्ली मिलेगी — और वह यह है कि मुझे अपने पति में सबसे कोमल नर्स, सबसे दयालु सहारा, और किसी भी स्त्री को मिलने वाला सबसे बड़ा सांसारिक आराम मिला है। उनका धैर्य कभी नहीं टूटता, और दुख भरे दिनों और टूटी रातों में भी उनकी परीक्षा होती है। मुझे श्रीमती — — के बारे में लिखिए; वह कितने दिनों से बीमार थीं, और किस तरह? पापा — भगवान का शुक्र है! — अब बेहतर हैं। हमारी बेचारी बूढ़ी टैबी मर चुकी है और उसे दफना दिया गया है। मिस वूलर को मेरा प्यार देना। भगवान आपको सांत्वना और सहायता प्रदान करें।

“सी. बी. निकोल्स।”

दूसरा पत्र—जो धुंधले-धुरे पेंसिल के निशानों में लिखा था—उसने अपनी ब्रसेल्स की सहपाठी को लिखा था।

15 फरवरी।

आपकी चिट्ठी का कुछ शब्दों में जवाब जरूर दूंगी, चाहे आप ठीक हों या बीमार।

फिलहाल मैं बीमारी के कारण बिस्तर पर हूं और तीन सप्ताह से इसी हालत में हूं। अब तक, शादी के बाद से, मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहा है। मैं और मेरे पति अपने पिता के साथ घर पर रहते हैं; ज़ाहिर है, मैं उन्हें छोड़कर नहीं जा सकती थी। वे काफी ठीक हैं, पिछली गर्मियों से बेहतर हैं। मुझे लगता है कि दुनिया में मेरे पति से बेहतर और दयालु पति कोई नहीं हो सकता। मुझे अब अच्छे स्वास्थ्य में स्नेहपूर्ण साथ और बीमारी में कोमल देखभाल की कमी नहीं है। डॉ. डब्ल्यू. और आपकी बेहतरीन मां की चिंता के बारे में आपने जो कुछ भी बताया, उससे मैं पूरी तरह सहमत हूं। मुझे उम्मीद है कि वे दोबारा ऑपरेशन का जोखिम नहीं उठाएंगे। मैं अभी और नहीं लिख सकती; क्योंकि मैं बहुत कमजोर और लाचार हूं। भगवान आप सभी को आशीर्वाद दें। — आपकी स्नेही,

"सी. बी. निकोल्स।"

मुझे नहीं लगता कि उसने फिर कभी एक शब्द भी लिखा होगा। लंबे दिन और उससे भी लंबी रातें बीत गईं; वही लगातार मतली और कमजोरी बनी रही, और धैर्यपूर्वक विश्वास के साथ सहन करती रही। मार्च के तीसरे सप्ताह के आसपास एक बदलाव आया; उसे एक हल्का सा भ्रम होने लगा; और उसमें वह लगातार भोजन और यहाँ तक कि उत्तेजक पदार्थों के लिए भीख माँगने लगी। अब वह उत्सुकता से निगल रही थी; लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। एक पल के लिए इस बेहोशी से जागते हुए, उसने अपने पति का दुखी चेहरा देखा, और प्रार्थना के कुछ बुदबुदाते शब्द सुने कि ईश्वर उसे बचाए। "ओह!" वह फुसफुसाई, "मैं मरने वाली नहीं हूँ, है ना? वह हमें अलग नहीं करेगा, हम कितने खुश रहे हैं।"

शनिवार, 31 मार्च की सुबह, हॉवर्थ चर्च की घंटी की गंभीर ध्वनि ने उन ग्रामीणों को उसकी मृत्यु की सूचना दी, जो उसे बचपन से जानते थे, और जिनके दिल कांप उठे जब उन्होंने उन दोनों को पुराने भूरे रंग के घर में सुनसान और अकेले बैठे हुए सोचा।

अध्याय 14.

मुझे श्री फोर्स्टर द्वारा लिखित गोल्डस्मिथ के जीवन पर आधारित पुस्तक का एक अंश हमेशा से बहुत प्रभावित करता रहा है। उनकी मृत्यु के बाद के दृश्य का वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं: —

"कहा जाता है कि ब्रिक कोर्ट की सीढ़ियाँ शोक मनाने वालों से भरी हुई थीं, जो घरेलू जीवन से बिल्कुल अलग थीं; बेघर औरतें, किसी भी तरह के घरेलूपन से वंचित, जिनके पास उसके सिवा कोई दोस्त नहीं था, जिनके लिए वे रोने आई थीं; उस महान, एकाकी, दुष्ट शहर की बहिष्कृत महिलाएं, जिनके प्रति वह हमेशा दयालु और परोपकारी रहा था।"

यह बात मेरे मन में तब आई जब मैंने शार्लोट के अंतिम संस्कार से जुड़ी कुछ परिस्थितियों के बारे में सुना।

पहाड़ियों के उस घेरे से परे कुछ ही लोग जानते थे कि दूर-दूर तक प्रशंसा बटोरने वाली वह महिला ईस्टर की सुबह मृत पड़ी थी। जीवित लोगों की तुलना में उसके सगे-संबंधियों की संख्या उस कब्र में कहीं अधिक थी जहाँ उसे जल्द ही ले जाया जाना था। अपने गहरे शोक से स्तब्ध वे दोनों शोक संतप्त लोग अजनबियों की सहानुभूति नहीं चाहते थे। पल्ली के अधिकांश परिवारों में से केवल एक सदस्य को ही अंतिम संस्कार में आमंत्रित किया गया था; और कई गरीब परिवारों के लिए यह आत्मत्याग का कार्य बन गया था कि वे किसी और को उसे अंतिम श्रद्धांजलि देने का विशेषाधिकार सौंप दें; और जो लोग शोक संतप्त लोगों के औपचारिक जुलूस से बाहर थे, वे कब्रिस्तान और गिरजाघर में उमड़ पड़े, ताकि उसे ले जाते हुए और उसके अपनों के बगल में दफनाते हुए देख सकें, जिसे कुछ ही महीने पहले उन्होंने एक सफेद दुल्हन के रूप में देखा था, जो कांपती हुई खुशी भरी आशा के साथ एक नए जीवन में प्रवेश कर रही थी।

मृतकों के शोक में डूबे उन विनम्र मित्रों में एक गाँव की लड़की भी थी, जिसे कुछ समय पहले बहकाया गया था, लेकिन जिसने शार्लोट में एक पवित्र बहन पाई थी। शार्लोट ने उसे अपनी सहायता, सलाह और हौसला बढ़ाने वाले शब्दों से सहारा दिया था; उसकी परीक्षा के समय में उसकी हर ज़रूरत का ख्याल रखा था। जब इस गरीब

युवती ने सुना कि उसकी सहेली मृत्यु के कगार पर है, तो उसका दुःख अत्यंत गहरा था, और आज तक उसका शोक कम नहीं हुआ है। हॉवर्थ से लगभग चार मील दूर रहने वाली एक अंधी लड़की श्रीमती निकोल्स से इतना प्रेम करती थी कि वह बार-बार रोते और गिड़गिड़ाते हुए अपने आस-पास के लोगों से विनती करती थी कि उसे सड़कों और मैदानी रास्तों पर ले चलें, ताकि वह उनके अंतिम गंभीर शब्द सुन सके, "मिट्टी से मिट्टी, राख से राख, धूल से धूल; हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन में पुनरुत्थान की निश्चित और पक्की आशा में।"

शार्लोट ब्रोंटे की कब्र पर शोक मनाने वालों का यही हाल था।

मुझे अब ज्यादा कुछ कहना नहीं है। अगर मेरे पाठकों को लगे कि मैंने पर्याप्त नहीं कहा है, तो मैंने बहुत ज्यादा कह दिया है। मैं उसके जैसे चरित्र का मापन या मूल्यांकन नहीं कर सकता। मैं उसकी बुराइयों, अच्छाइयों और विवादास्पद पहलुओं का खाका नहीं खींच सकता। जो उसे लंबे समय से अच्छी तरह जानता था—इस जीवनी की "मैरी"—उसकी मृत मित्र के बारे में इस प्रकार लिखता है:

"वह अपने कर्तव्य को बहुत महत्व देती थी, और अधिकांश लोगों की तुलना में उसके विचार कहीं अधिक ऊंचे और स्पष्ट थे, और उसने उन्हें अधिक सफलता के साथ निभाया। मुझे लगता है कि उसने यह कार्य उन लोगों की तुलना में कहीं अधिक कठिनाई से किया, जिनके पास मजबूत हौसला और बेहतर भाग्य होता है। उसका पूरा जीवन परिश्रम और पीड़ा से भरा था; और उसने कभी भी वर्तमान सुख के लिए अपने बोझ को नहीं उतारा। मुझे नहीं पता कि आप मेरी कही हुई बातों का क्या लाभ उठा सकते हैं। मैंने यह सब उसकी सराहना पाने की प्रबल इच्छा से लिखा है। फिर भी, इससे क्या फर्क पड़ता है? उसने स्वयं अपनी कुछ क्षमताओं के उपयोग के लिए दुनिया से न्याय की अपील की, - जो सर्वोत्तम नहीं थीं, - फिर भी वे एकमात्र क्षमताएं थीं जिनका उपयोग वह अजनबियों के लाभ के लिए कर सकती थी। उन्होंने उसके परिश्रम के फल का भरपूर, लालच से आनंद उठाया, और फिर उन्हें पता चला कि ऐसी क्षमताओं का होना ही उसकी गलती थी। ऐसे संसार से उसके बारे में निर्णय क्यों मांगा जाए?"

लेकिन मैं उस आलोचनात्मक, संवेदनहीन जनता से मुंह मोड़ना चाहता हूँ—जो सतही तौर पर देखकर और गहराई से विचार किए बिना कठोर निर्णय लेने की प्रवृत्ति रखती है। मैं उस व्यापक और अधिक गंभीर जनता से अपील करता हूँ, जो दोषों और

गलतियों को कोमल विनम्रता से देखना जानती है; असाधारण प्रतिभा की उदारतापूर्वक प्रशंसा करना जानती है, और सभी महान गुणों का हार्दिक आदर करना जानती है। मैं शार्लोट ब्रोंटे की स्मृति को उस जनता को सौंपता हूँ।

शार्लोट ब्रोंटे, टी. वेमिस रीड द्वारा

सर थॉमस वेमिस रीड (1842-1905) एक ब्रिटिश समाचार पत्र संपादक, उपन्यासकार और जीवनी लेखक थे। 19 वर्ष की आयु में वे न्यूकैसल जर्नल के मुख्य संवाददाता बने। लीड्स मर्करी में काम करते हुए उन्होंने प्रांतीय समाचार पत्रों को हाउस ऑफ कॉमन्स की प्रेस गैलरी में प्रवेश का अधिकार दिलवाया। 1890-99 तक उन्होंने अपनी उदारवादी पत्रिका 'द स्पीकर' का संपादन किया और कई जीवनियाँ लिखीं, जिनमें शार्लोट ब्रोंटे के जीवन का यह विस्तृत विवरण भी शामिल है, जो पहली बार 1877 में प्रकाशित हुआ था।

सर थॉमस वेमिस रीड विलियम थॉमस स्टीड के साथ, सिडनी प्रायर हॉल द्वारा, 1889

अंतर्वस्तु

मैं।

परिचयात्मक।

II.

“जेन आयर” की कहानी।

III.

ब्रोंटे बहनों का प्रारंभिक इतिहास।

IV.

हॉवर्थ में रहने वाला परिवार।

वी
एक गवर्नेस के रूप में जीवन।
VI.
निर्णायक मोड़।
सातवीं।
लेखन और शोक।
आठवीं।
“शर्ली।”
IX.
अकेलापन और प्रसिद्धि।
एक्स।
“विलेट।”
XI.
विवाह और मृत्यु।
बारह.
मरणोपरांत सम्मान।
XIII.
ब्रोंटे के उपन्यास।
चौदहवें.
निष्कर्ष।

शार्लोट ब्रोंटे

मैं।

परिचयात्मक।

अंग्रेजी भाषा में लिखी गई सबसे आकर्षक और कलात्मक जीवनियों में से एक को प्रकाशित हुए महज बीस साल हुए हैं। श्रीमती गैस्केल की "शार्लट ब्रोंटे की जीवनी" प्रकाशित होते ही लोगों के दिलों में बस गई; और तब से लेकर आज तक उन सभी लोगों पर इसका प्रभाव बना हुआ है जो उस शख्सियत के जीवन में रुचि रखते हैं जिन्हें, शब्दों में कहें तो, "अपने युग की अग्रणी महिला" कहा गया है। प्रशंसनीय कौशल से, सशक्त और चित्रमय शैली में, और एक कलाकार द्वारा दूसरे कलाकार के प्रति महसूस की जाने वाली सहानुभूति के साथ लिखी गई यह जीवनी अपनी लोकप्रियता की पूरी हकदार थी और इसे आज भी बरकरार रखा है। हालांकि, श्रीमती गैस्केल को एक गंभीर समस्या का सामना करना पड़ा, जो अब बीस साल पहले की तुलना में काफी हद तक खत्म हो चुकी है। शार्लोट ब्रोंटे के निधन के कुछ ही महीनों बाद और उनके पिता के जीवित रहते हुए, जिनसे उन्हें अपने जीवन और प्रतिभा के कई पहलुओं के लिए बहुत कुछ सीखने को मिला था, श्रीमती गैस्केल को कई ऐसी घटनाओं का जिक्र करना पड़ा जो जीवित व्यक्तियों से इतनी गहराई से जुड़ी थीं कि उनका विस्तार से वर्णन करना संभव नहीं था। इसके बावजूद, शार्लोट ब्रोंटे के जीवन से जुड़े कुछ संदर्भों के कारण उन्हें गंभीर परेशानी का सामना करना पड़ा; उन्हें सुधार और खंडन करने के लिए मजबूर होना पड़ा, पुस्तक के बाद के संस्करण पहले संस्करण से काफी भिन्न थे, और अंत में उन्हें यह घोषणा करनी पड़ी कि इस विषय पर आगे का कोई भी पत्राचार उनके वकीलों के माध्यम से ही किया जाएगा। इस प्रकार, एक असाधारण जीवन का संपूर्ण चित्रण करने का उनका प्रयास विफल रहा, और उनकी कहानी वैसी ही थी जैसा श्री थैकरे ने कहा था, "अधूरी, फिर भी अत्यंत मार्मिक और प्रशंसनीय।"

इसके अलावा, एक और मामला था जिसमें श्रीमती गैस्केल की गलती थी। ऐसा लगता है कि उन्होंने यह ठान लिया था कि उनका काम एक विशेष शैली में होना चाहिए। उन्होंने शार्लोट ब्रोंटे के चरित्र की अपनी एक धारणा बना ली थी, और एक सच्चे कलाकार के जुनून और एक अनुभवी लेखक की कुशलता से उन्होंने सब कुछ

उसी धारणा के अनुरूप ढाल दिया। नतीजा यह हुआ कि जहाँ उन्होंने अपनी नायिका का एक असाधारण रूप से प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत किया, वहीं वह शार्लोट ब्रोंटे के सबसे पुराने और करीबी दोस्तों को पूरी तरह से संतुष्ट नहीं कर पाया। सच कहा जाए तो, "जेन आयर" की लेखिका का जीवन उतना दुखमय नहीं था जितना कि दुनिया अब मानती है। यह बिल्कुल सच है कि अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, जब इस अद्भुत महिला ने वे रचनाएँ लिखीं जिनसे उनका नाम प्रसिद्ध हुआ, उनका करियर दुख से घिरा रहा और मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा से ग्रस्त रहा। यह निर्विवाद है कि वे दुख की भट्टी में ही पली-बढ़ीं और इस मुकाम तक पहुँचीं। लेकिन यह सच नहीं है कि वह अपने पूरे जीवन में उस घोर अवसाद की शिकार रहीं, जो उन्हें कभी-कभार घेर लेता था और जिसे श्रीमती गैस्केल ने इतने सजीव और प्रभावशाली ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इसके विपरीत, उनके पत्रों से पता चलता है कि कम से कम ब्रसेल्स जाने तक वह एक खुशमिजाज और उत्साही लड़की थीं, और अंत तक उनमें अपने दुखों पर विजय पाने की क्षमता थी, उस अटूट साहस के बल पर जो उनका सबसे अनमोल धन था, और जिसके कारण ही उन्होंने असाधारण परीक्षाओं और निराशाओं पर लगातार विजय प्राप्त की थी। जो लोग यह मानते हैं कि शार्लोट ब्रोंटे का स्वभाव किसी भी तरह से रुग्ण या उदास था, वे उनके साथ घोर अन्याय करते हैं। अपने घर के सदस्यों और उस एकमात्र मित्र के अलावा, जिनसे वह जीवन भर गहरे स्नेह से जुड़ी रहीं, वह अपने सभी लोगों के साथ बेहद संयमित बातचीत करती थीं।

दूसरी तरफ, उपन्यास

शांत चांदी जैसी रोशनी और अकल्पनीय अंधेरे,

जो बातें दुनिया से छिपी रहीं और आज भी छिपी हुई हैं, लेकिन जिन्हें उन लोगों को देखना ही चाहिए जो शार्लोट ब्रोंटे को एक महिला के रूप में वास्तव में जानना चाहते हैं। अफसोस! जो लोग उनके और उनकी बहनों को उनके संक्षिप्त जीवनकाल में अच्छी तरह जानते थे, उनकी संख्या अब बहुत कम है। ब्रोंटे बहनों में से जिन्होंने कांटों भरे रेगिस्तान से प्रसिद्धि का फूल तोड़ा, वे अपनी किताबों और श्रीमती गैस्केल की जीवनी में जीवित हैं। लेकिन ब्रोंटे बहनें, वे महिलाएं जो तीस साल पहले जीवित रहीं और कष्ट सहे, और जिनके चरित्र में एक दुर्लभ और उदात्त कुलीनता, एक तीव्र संवेदनशीलता, एक शुद्ध कुलीनता समाहित थी, अब ज्ञात नहीं हैं।

फिर भी, हममें से कुछ लोगों के लिए उनसे परिचित होने का एक तरीका अभी भी

खुला है। अपने स्कूली दिनों से लेकर अपनी अंतिम बीमारी के अंतिम क्षणों तक, शार्लोट ब्रोंटे ने अपनी एकमात्र आजीवन मित्र के साथ घनिष्ठ और गोपनीय संबंध बनाए रखा। उस मित्र को उन्होंने सैकड़ों पत्र लिखे, जिनमें से शायद ही कोई ऐसा पत्र हो जिसमें "विलेट" की लेखिका की विशिष्ट शैली न हो। इस उल्लेखनीय पत्राचार को पढ़े बिना कोई भी लेखिका के चरित्र का रहस्य नहीं जान सकता; मेरा मानना है कि इसे पढ़े बिना कोई भी यह महसूस नहीं कर सकता कि वह महिला जो 1847 में अंग्रेजी साहित्य के क्षेत्र में "परछाई की तरह" प्रवेश कर गई और आठ साल से भी कम समय में उतनी ही खामोशी से विदा हो गई, अपने कार्यों से भी कहीं अधिक सच्ची और महान थी, श्रीमती गैस्केल द्वारा रचित उनके जीवन के उस उत्कृष्ट चित्रण से भी कहीं अधिक सच्ची और महान थी।

लिखते समय ये पत्र मेरे सामने पड़े हैं। ये 1832 के धुंधले पन्ने हैं, जो एक स्कूली छात्रा की लिखावट में लिखे गए हैं, जिनमें उसके स्नेह भरे शब्दों की भरमार है, फिर भी कहीं-कहीं कुछ ऐसे वाक्य भी हैं जो जीवंत हैं—जिनमें से कुछ तो वास्तव में इंग्लैंड के साहित्य में अपना स्थान पा चुके हैं; और यहाँ वह धुंधला पेंसिल नोट है जो लेखिका ने अपने "दुखद बीमारी के बिस्तर" से "मेरी प्यारी नेल" को लिखा था, जो जल्द ही मृत्यु का बिस्तर बनने वाला था! पहले पत्र और उस आखिरी दुख भरे नोट के बीच शार्लोट ब्रोंटे के मन की कितनी ही अभिव्यक्तियाँ इस अनमोल पांडुलिपि के ढेर में समाहित हैं! 22 वर्षों के एक निष्कलंक जीवन का यह सरल रिकॉर्ड फैला हुआ है। जहाँ तक एक महिला के रूप में शार्लोट ब्रोंटे के इतिहास और उनके परिवार के इतिहास का संबंध है, यह उस पूरे कालखंड के लिए पूर्ण है, कहानी में केवल वही अंतराल हैं जो तब आए जब वह और उनकी सहेली साथ थीं। उनके प्रारंभिक साहित्यिक प्रयासों के बारे में हमें यहाँ बहुत कम जानकारी मिलती है, क्योंकि अपने मित्र से भी उन्होंने अपने सच्चे उद्देश्य को खोजकर और श्रोताओं से बात करके अपने मन को भर देने वाले नए आनंद को प्रकट करने का साहस नहीं किया था; लेकिन एक लेखिका के रूप में उनके बाद के जीवन, और जिस दिन से उन्होंने "जेन आयर" को अपनी रचना के रूप में स्वीकार किया, तब से उनके परिश्रम के निरंतर और प्रचुर प्रमाण मिलते हैं। यहाँ हम उनके सभी गुप्त दुखों, उनकी आशाओं, उनके भयों, और अपने हृदय से उनके संवादों को भी पढ़ते हैं। इस अभिलेख में कई ऐसी बातें हैं जो इतनी पवित्र हैं कि उन्हें दुनिया के सामने प्रकट नहीं किया जा सकता। आज भी इन

"मृतकों के महान पत्रों" को कोमल और श्रद्धापूर्ण हाथों से ही स्पर्श करना चाहिए। लेकिन जिन्हें इन्हें देखने, पढ़ने और इन पर मनन करने की अनुमति मिलती है, वे मेरी ही तरह महसूस करते होंगे कि शार्लोट ब्रोंटे की आत्मा इन अप्रकाशित पन्नों में प्रकट होती है, और केवल यहीं हम देख सकते हैं कि वास्तव में वह किस प्रकार की महिला थीं, जिन्होंने यॉर्कशायर की पहाड़ी पर स्थित एकांत और गुमनामी में अपने लिए एक अमर नाम बनाया, इंग्लैंड के साहित्य को अमूल्य खजानों से समृद्ध किया, और साथ ही लगभग चालीस वर्षों तक एक ऐसा जीवन व्यतीत किया जो आत्म-संयम और धैर्यपूर्ण सहनशीलता से पवित्र और महान बन गया, जो इसकी सबसे प्रमुख विशेषताएं थीं।

श्रीमती गैस्केल ने अपना काम इतनी कुशलता से किया है कि दुनिया शायद ही ब्रोंटे की कहानी को दोहराना चाहेगी, भले ही कहानी सुनाने वाली उतनी ही प्रतिभाशाली क्यों न हो जितनी स्वयं "रूथ" की लेखिका। लेकिन जिन्हें शार्लोट ब्रोंटे के चरित्र की नई समझ प्राप्त करने का अवसर मिला है, जिन्हें ऐसी सामग्री मिली है जिसका उपयोग 1857 के जीवनीकार नहीं कर सके, वे इस महान महिला की स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने का साहस कर सकते हैं - एक ऐसी श्रद्धांजलि जो उनके अपने पत्रों से चुने गए फूलों से बुनी गई हो। और यह संभव नहीं है कि अभी वह समय आ गया हो जब "जेन आयर" की रचना करने वाली इस अद्वितीय और प्रतिभाशाली लेखिका का नाम, प्रसिद्धि या मार्मिक कहानी अंग्रेजी पाठकों के कानों तक "मामूली अर्थ की कहानी" या संदिग्ध रुचि की कहानी के रूप में पहुंचे।

II.

“जेन आयर” की कहानी।

सन् 1847 की शरद ऋतु के अंत में, लंदन के पाठकों को अचानक एक ऐसे उपन्यास की प्रशंसा और उस पर आश्चर्य करने का अवसर मिला, जो बिना किसी पूर्व प्रचार के उनके हाथों में आ गया था। "करर बेल द्वारा लिखित 'जेन आयर'" हर किसी की ज़ुबान पर छा गया, और समाज लेखक की पहचान और पुस्तक के वास्तविक अर्थ के बारे में अटकलों में उलझ गया। यह कोई साधारण पुस्तक नहीं थी, और इसने कोई साधारण सनसनी भी पैदा नहीं की। विचारों की कुछ कमियों और अभिव्यक्ति की भद्दी शैली से भद्दी होने के बावजूद, जो एक नौसिखिए लेखक की रचना का संकेत देती थी, यह पुस्तक पहले पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक एक ऐसी प्रतिभा की चमक से जगमगा उठी, जिसकी गहराई और शक्ति को केवल सबसे मंदबुद्धि व्यक्ति ही नकार सकता था। इसके लेखक ने जनता के मन पर अपना प्रभाव जमा लिया, चाहे जनता चाहे या न चाहे, और समाज, अपनी इच्छा के विरुद्ध ही सही, उस लेखक के वश में आ गया, जिसमें उस युग की प्रचलित भावना का बहुत कम अंश था, और जो या तो रूढ़िवादिता से अनभिज्ञ था, या उससे हृदय और आत्मा से घृणा करता था। साहित्य जगत के विशाल क्षेत्र में इस नवोदित लेखक के प्रभाव के विरुद्ध भयंकर विद्रोह हुआ, जो मानो रात के अंधेरे में चुपके से प्रवेश कर गया था और गढ़ पर अचानक कब्ज़ा कर लिया था। परन्तु उस क्षण सभी विरोध प्रतिभा की प्रबल शक्ति के आगे दब गए, और “जेन आयर” ने अपना रास्ता बना लिया, जहाँ भी पुरुष और स्त्री इस दुर्लभ और असाधारण बौद्धिक श्रेष्ठता को देखने और स्वीकार करने में सक्षम थे, वहाँ इसने मान्यता प्राप्त कर ली। श्री थैकरे कहते हैं, “मुझे वह आनंद, आश्चर्य और प्रसन्नता अच्छी तरह याद है, जिसके साथ मैंने ‘जेन आयर’ पढ़ी थी, जो मुझे एक ऐसे लेखक द्वारा भेजी गई थी जिसका नाम और लिंग दोनों ही उस समय मेरे लिए अज्ञात थे; और कैसे अपने काम के दबाव के कारण, मैं किताबों को हाथ में लेने के बाद उन्हें तब तक नीचे नहीं रख सका जब तक कि उन्हें पूरा पढ़ न लिया।” हर जगह यही हाल था। यहाँ तक कि वे लोग भी जिन्हें कहानी में कुछ भी सराहनीय नहीं लगा, वे लोग जिन्होंने महान भावनाओं और गहरे दुखों के इसके खुले प्रयोग का विरोध किया, और वे लोग जिन्होंने शिष्ट समाज के तौर-तरीकों के बारे में लेखक की अज्ञानता की कड़ी आलोचना की, उन्हें भी जादूगर के जादू में बंधे होने की बात स्वीकार करनी पड़ी।

"जेन आयर" ने बहुत जल्दी प्रशंसक बटोर लिए; और हर प्रशंसक के लिए उसके दर्जनों पाठक थे।

जो लोग उन्नीस सौ बीस साल पहले की उस सर्दी को याद करते हैं, वे जानते हैं कि हम सब में "जेन आयर" जैसा बुखार सा छा गया था। उस कहानी ने, जिसने अचानक कुरूपता में भी शान और प्रचंड जुनून में भी भव्यता पा ली थी, उस समय के फैशन को आकार दिया और "रोचेस्टर के नज़ारे" और "जेन आयर की अदाएं" खूब लोकप्रिय हो गईं। किताब, उसकी शोहरत और प्रभाव, उन दिनों के हिसाब से अद्भुत गति से समुद्र पार तक पहुँच गए। शांत न्यू इंग्लैंड के घरों में अंग्रेजी गवर्नेंस के इतिहास को इतनी उत्सुकता से पढ़ा गया कि लंदन में भी इसकी बराबरी नहीं की जा सकती थी, और उपन्यास के प्रकाशन के कुछ ही महीनों के भीतर यह दो महाद्वीपों में प्रसिद्ध हो गया। हमारे समय में किसी अन्य अंग्रेजी लेखक ने ऐसी सफलता हासिल नहीं की है; और न ही यह कहा जा सकता है कि कई सफलताएं इससे अधिक योग्य रही हैं। संयोगवश, यह गुमनाम कहानी, जिस पर एक अनुभवहीन लेखक की स्पष्ट छाप थी, ठीक उसी समय दुनिया के सामने आई जब एक और महान उपन्यास अंग्रेजी जनता के बीच लोकप्रियता हासिल करना शुरू कर रहा था। लेकिन प्रकाशन के समय, "जेन आयर" ने "वैनिटी फेयर" को आश्चर्यजनक और तीव्र गति से पीछे छोड़ दिया, जिससे थैकरे की रचना बहुत पीछे छूट गई; और इसके अज्ञात लेखक ने कुछ ही हफ्तों में इतनी व्यापक ख्याति प्राप्त कर ली, जितनी ख्याति सदी के महानतम रचनाकारों में से एक ने वर्षों के प्रयास से अर्जित की थी।

इस अतिप्रसिद्ध प्रसिद्धि की प्रतिक्रिया स्वाभाविक रूप से शुरू हुई, और यह तीखी और कठोर थी। पुस्तक की खामियाँ आसानी से उजागर हो गईं; नाटक के मंचन से लेखक की अनभिज्ञता स्पष्ट थी—यहाँ तक कि मूर्खों को भी; इसलिए एक ऐसे उपन्यासकार की आलोचना में तीखे लेख लिखना आसान हो गया, जिसने खुद को पारंपरिक आलोचनाओं के हर हमले के लिए खुला छोड़ दिया था। "जेन आयर" में आत्माओं का नग्न वास्तविकता में बहुत चित्रण किया गया था; लेखक ने उन गहराइयों को परखा था जिन्हें एक सामान्य कहानीकार कभी नहीं परख सकता था, और परस्पर विरोधी भावनाओं को मंच पर इतनी कुशलता से प्रस्तुत किया गया था कि शेक्सपियर भी ईर्ष्या करते; लेकिन वेशभूषा, पारंपरिक उपसंहार, दृश्यावली, यहाँ तक कि संवादों के शब्द भी ईमानदारी से कहें तो बहुत ही घटिया थे। एक साधारण नाटककार या

समीक्षक भी इन मामलों में बेहतर कर सकता था—जैसा कि अज्ञात लेखक को जल्द ही समझ आ गया। “जेन आयर” का क्रेज अपने चरम पर था, उसी समय दो अन्य उपन्यासों के प्रकाशन ने इस हमले को और भी तीक्ष्ण बना दिया। इन उपन्यासों को ऐसे लेखकों ने लिखा था जिनके लिंग-भेद रहित नामों से यह प्रतीत होता था कि वे करर बेल के भाई-बहन हैं। 1847 की तुलना में मानव स्वभाव में इतना परिवर्तन नहीं आया है कि इस बात के लिए क्षमा याचना की आवश्यकता हो कि सामान्य पाठक जगत और विशेष रूप से आलोचक जगत ने इस सिद्धांत को आसानी से स्वीकार कर लिया कि “वुथरिंग हाइट्स” और “एग्नेस ग्रे” उसी लेखक की पूर्ववर्ती रचनाएँ थीं जिन्होंने उन्हें “जेन आयर” दी थी। “वुथरिंग हाइट्स” में दूसरी पुस्तक की कुछ कमियों को अतिरंजित कर दिया गया था, और इसके कुछ उल्लेखनीय गुणों को विकृत और अतिरंजित करके स्पष्ट दोष बना दिया गया था; जबकि “एग्नेस ग्रे” एक कमजोर और साधारण कहानी थी जिसकी निंदा करना आसान था। इसलिए “जेन आयर” की लेखिका को न केवल अपना बोझ उठाना पड़ा, बल्कि उस सफल उपन्यास के बाद प्रकाशित हुई दो कहानियों का बोझ भी उठाना पड़ा। और समीक्षक—इस तथ्य से अनभिज्ञ थे कि वे एक ही तीर से तीन निशाने साध रहे थे—अपनी आलोचनात्मक ऊर्जा के लिए उपलब्ध व्यापक दायरे से प्रसन्न थे।

कहीं-कहीं, करर बेल के पक्ष में उन लेखकों ने भी ज़ोरदार संघर्ष किया, जो केवल नाम और किताब से ही परिचित थे। दिसंबर 1847 में फ्रेज़र पत्रिका ने लिखा, "यह आत्मा से आत्मा की बात है"; कुछ महीनों बाद ब्लैकवुड ने कहा, "यह संशयवादियों के लिए किताब नहीं है; यह स्त्रैण और बेस्वाद पुरुषों के लिए नहीं है; यह संवेदनशील हृदय और आलोचनात्मक समझ रखने वालों के आनंद के लिए है।" लेकिन कुल मिलाकर आलोचकों का मत प्रतिकूल था। यह पाया गया कि कहानी अनुचित और अनैतिक थी; कहा गया कि इसमें "कंगारूओं के तरीके से प्रेम-प्रसंग" का वर्णन भरा हुआ है, और यह "धर्म के एक मूर्तिपूजक सिद्धांत" से भरी हुई है; वहीं इसकी "अशिष्ट भाषा," "ढीले लहजे," "भयानक रुचि," और "अत्यंत अशिष्टता और भद्दापन" के विरुद्ध निंदा का एक व्यापक स्वर उठ खड़ा हुआ। बेशक, किताब से लेखक तक का सफर आसान था। जब पहली बार एक अज्ञात नाम से ऐसी कहानी प्रकाशित हुई, तो लंदन स्तब्ध रह गया और वहाँ के साहित्यिक जगत में गहरा उफान आ गया। करर बेल की असली पहचान को लेकर तरह-तरह की अफवाहें मुंह-जुबानी फैल रही थीं।

एक बात पर आलोचकों में लगभग एकमत था और "जेन आयर" की कहानी को महज़ एक प्रेम कहानी से कहीं बढ़कर, एक सच्ची आत्मकथा के रूप में स्वीकार किया गया था, जिसमें वास्तविक और दुखद अनुभवों का वर्णन था। यहाँ तक कि पुस्तक के सबसे कट्टर आलोचक ने भी माना था कि "इसमें इतने गहरे दुख और पीड़ा से भरे संघर्षों की कहानी है कि यह जानना ही कितना कष्टदायी है कि कोई इसे सोच भी सकता है, इसे झेलना तो दूर की बात है।" तो फिर यह अद्भुत गवर्नेस कहाँ थी? वह अकेली आत्मा, जिसकी पीड़ा भरी पुकार ने हर जगह पाठकों के दिलों को झकझोर दिया था, किस गुमनाम ठिकाने में छिपी हो सकती थी? आज हम शायद कड़वाहट से ज़्यादा उदासी के साथ मुस्कुरा सकते हैं, उन घटिया आरोपों पर जो महज़ मनमानी और हल्केपन से फैलाए गए हैं, उन लोगों द्वारा जो हमेशा कुछ नया जानने और कुछ नया अनुभव करने की चाह रखते हैं। उस समय का सबसे प्रचलित सिद्धांत—एक ऐसा सिद्धांत जिसे सबसे रूढ़िवादी और सम्मानित पत्रिकाओं में विस्तार से समझाया और चर्चा किया गया—यह था कि जेन आयर और बेकी शार्प एक ही चरित्र के अलग-अलग चित्र मात्र थे; और उनका मूल रूप श्री थैकरे की एक त्यागी हुई प्रेमिका में निहित था, जिसने महान लेखक को "वैनिटी फेयर" की नायिका का आदर्श दिया था, और जिसने "जेन आयर" के रोचेस्टर के रूप में उनका चित्र बनाकर उनसे बदला लिया था! कहानी के लेखकत्व के इस अद्भुत सिद्धांत पर विचार-विमर्श करने के बाद, क्वार्टरली रिव्यू ने पेक्सनिफियन उदारता के साथ, शांतिपूर्वक अपने निष्कर्षों को इन यादगार शब्दों में सारांशित किया: "यदि हम इस पुस्तक को किसी महिला से जोड़ते हैं, तो हमारे पास इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है कि इसे ऐसी महिला से जोड़ा जाए जिसने किसी पर्याप्त कारण से लंबे समय से अपनी ही जाति की महिलाओं का साथ त्याग दिया हो।"

अब दुनिया को सच्चाई पता चल गई है। उसे पता है कि ये कड़वे और शर्मनाक शब्द एक ऐसी महिला के लिए कहे गए थे जो सबसे सच्ची और पवित्र थी; एक ऐसी महिला के लिए जिसने जन्म से ही त्याग और धैर्य का जीवन व्यतीत किया था; एक ऐसी महिला जिसके स्नेह केवल उसके घर की पवित्र शरण में या उसके समान ही पवित्र और योग्य साथियों के साथ ही बसते थे; उन गिनी-चुनी महिलाओं में से एक जो अपने दोस्तों से बातचीत में अपने दिल की सारी बातें कह सकती हैं, इस विश्वास के साथ कि वर्षों बाद जिस अजनबी के हाथों में उनकी ये स्पष्ट बातें पहुँचेंगी, उसे उनमें

कुछ भी ऐसा नहीं मिलेगा जो निष्ठा, सच्चाई और निर्दोषता से रहित न हो। आलोचकों में आश्चर्य था, लंदन की चहल-पहल भरी दुनिया में भी आश्चर्य था, जब यह रहस्य उजागर हुआ और लोगों को बताया गया कि "जेन आयर" की लेखिका कोई भावुक प्रेम-प्रेमिका नहीं थीं जिन्होंने केवल अपने जीवन के दुखद अनुभवों को शब्दों में पिरोया था; बल्कि "एक गंभीर छोटी जोन ऑफ आर्क" थीं, जो पवित्र, सौम्य और उच्च विचारों वाली थीं, जिनके बारे में स्वयं थैकरे ने कहा था कि "उनके साथ हमेशा न्याय और सत्य के प्रति एक महान और पवित्र श्रद्धा बनी रहती थी।" क्विडनंक्स ने "जेन आयर" के लेखक की खोज में दूर-दूर तक छानबीन की थी; लेकिन हमें इस बात पर संदेह हो सकता है कि जब अंततः सच्चाई सामने आई, तो वे इस खोज से पहले से कहीं अधिक आश्चर्यचकित नहीं हुए होंगे कि कुरेर बेल यॉर्कशायर के एक दूरस्थ दलदली इलाके में रहने वाले एक ग्रामीण पादरी की युवा बेटी शार्लोट ब्रोंटे थीं।

ऐसी महिला द्वारा ऐसी पुस्तक लिखना नौ दिनों के आश्चर्य से कहीं अधिक था; और अंग्रेजी साहित्य के महान चमत्कारों और रहस्यों में से एक की कुंजी के लिए हमें शार्लोट ब्रोंटे के जीवन में ही जाना होगा।

III.

ब्रोंटे बहनों का प्रारंभिक इतिहास।

श्री ग्रेग की पुस्तक "एनगमास ऑफ लाइफ" में एक मार्मिक अंश है, जिसमें पुरुषों और महिलाओं के आंतरिक जीवन पर बाहरी परिस्थितियों के प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण किया गया है, और उदाहरण के तौर पर, धार्मिक "दृढ़ विश्वास" और अपूर्ण

पाचन के बीच संबंध को सावधानीपूर्वक समझाया गया है। यह निर्विवाद है कि हम परिस्थितियों के वश में हैं, और यह भी कि हमारा भाग्य, ठीक उसी प्रकार जैसे प्रवाल भित्तियाँ बनती हैं, असंख्य प्रभावों के फलस्वरूप बनता है, जिनमें से प्रत्येक अपने आप में तुच्छ और महत्वहीन प्रतीत होता है। लेकिन वह प्रवृत्ति जो लोगों को असाधारण सफलता प्राप्त करने वालों के जीवन की पूरी व्याख्या उन परिस्थितियों में खोजने के लिए प्रेरित करती है जिनमें उनका भाग्य रचा गया है, उसे बहुत स्वस्थ या सुखद नहीं कहा जा सकता। इस चाल से ब्रोंटे परिवार से अधिक क्रूरता से शायद ही किसी को नुकसान हुआ हो। पहाड़ियों के बीच उनके घर और उनके प्रारंभिक वर्षों के परिवेश के सजीव चित्र दुनिया के सामने प्रस्तुत किए गए हैं; जबकि जनता को यह विश्वास दिलाया गया है कि उनके जीवन पर जन्म से ही उदासी की एक गहरी छाया छाई हुई थी, और इसी तथ्य और दलदली भूमि के प्रभाव के कारण न केवल उनकी प्रतिभा का विशिष्ट झुकाव था, बल्कि उनके जीवन का संपूर्ण रंग और स्वरूप भी था। जो लोग इस प्रकार सामान्य अनुभव से परे हर चीज का हिसाब लगाने पर तुले हुए हैं, उन्हें प्रतिभा के महान रहस्य का विश्लेषण करने से पहले, हमें इस या उस दुर्लभ क्रू की उत्कृष्ट गुणवत्ता का सही कारण बताना चाहिए, वह रहस्य जो जोहानिसबर्ग या शैतो डी'इकेम को पारखियों की नजरों में प्रसिद्धि दिलाता है। इन प्रसिद्ध वाइन की सुगंध और महक के उत्पादन में परिस्थितियों का स्पष्ट रूप से बहुत कम योगदान होता है; क्योंकि हम जानते हैं कि समान बेलों पर पास में उगने वाले और दिखने में लगभग समान परिस्थितियों में, एक ही धूप से तपते हुए, एक ही बारिश से तरोताजा होते हुए, एक ही हवाओं से पोषित अंगूर, तुलनात्मक रूप से कमतर वाइन का उत्पादन करते हैं। जब दुनिया इस पहेली को सुलझा लेगी, तब प्रतिभा की उस गहरी समस्या से निपटने के लिए पर्याप्त समय होगा, जिस पर हम अब बहुत ही प्रशंसनीय और यहां तक कि हिंसक तरीके से हस्तक्षेप करने के लिए प्रवृत्त हैं।

इस चलन के कारण ब्रोंटे बहनों को भारी नुकसान उठाना पड़ा है, क्योंकि उनके सुरम्य और आकर्षक परिवेश ने महिलाओं के वास्तविक स्वरूप को धुंधला कर दिया है। हमने उनके जीवन का एक चित्र बना लिया है और उसमें सहायक वस्तुओं को इतनी बारीकी से भर दिया है कि जीवंत रंगों की चकाचौंध और अनेक महत्वपूर्ण बिंदुओं के बीच नायिकाओं की विशिष्ट पहचान धुंधली और अस्पष्ट हो गई है। इसके लिए किसी एक व्यक्ति को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। जैसा कि हमने देखा है,

दुनिया को सबसे पहले "कुरेर बेल" और उनकी बहनों से प्रेमपूर्ण परिस्थितियों में परिचय हुआ; उन सरल, दृढ़ निश्चयी महिलाओं का जीवन जनता के सामने आते ही एक रहस्यमय प्रेममय धुंध में लिपटा रहा; और जब सब कुछ बीत गया और "बहुमुखी राक्षस" की जिज्ञासा शांत करने का समय आया, तो उसे उस प्रेम कहानी की पूर्णता के अलावा कुछ नहीं चाहिए थी, जिसकी रूपरेखा उसने शुरू से ही अपने लिए तैयार कर रखी थी।

तो फिर, उस विचित्र और मार्मिक कहानी के मुख्य बिंदुओं से कौन अनजान है जो हमें बताती है कि "जेन आयर" की लेखिका का जीवन और मृत्यु कैसे हुई? पहाड़ियों के बीच बसे उस भयानक पादरी के घर से कौन परिचित नहीं है, जहाँ बहनें इतने प्रतिकूल और विचित्र प्रभावों के बीच रहती थीं; एक प्रोटेस्टेंट पादरी के घर में एकांतवास करती थीं; अपने पवित्र कौमार्य काल में दुख और पीड़ा तथा पतित बुराइयों के भयानक दृश्यों से घिरी रहीं; अपनी एक आदर्श दुनिया का निर्माण किया और उसमें बसती रहीं, अपने चारों ओर चल रही वास्तविक दुनिया से बेखबर? पिछली शताब्दी के यॉर्कशायर जीवन के उन सजीव चित्रणों से कौन मनोरंजन और रुचि नहीं रखता, जिनमें स्थानीय रंग इतना तीव्र और चटपटा है, और जो इसलिए कम दिलचस्प नहीं हैं क्योंकि वे उस व्यवस्था से संबंधित हैं जो ब्रोंटे बहनों के मंच पर आने से बहुत पहले ही पूरी तरह से समाप्त हो चुकी थी? श्रीमती गैस्केल की कहानी में ब्रैनवेल ब्रोंटे के जीवन की दुखद त्रासदी का स्पष्ट रूप से वर्णन करने के बजाय, जिस पर इशारों में प्रकाश डाला गया है, वह इतनी प्रमुखता से उभरती है कि जो लोग इसके बारे में ज्यादा नहीं जानते, उन्हें यह मानने में कोई हिचक नहीं होगी कि यही वह शक्तिशाली और सर्वव्यापी प्रभाव था जिसने बहनों के जीवन को वह मुकाम दिया जो उन्हें मिला? हालांकि, ब्रोंटे बहनों के इतिहास का असली आकर्षण इन बातों में नहीं है। यह उनके जीवन के परिवेश में नहीं पाया जाता, चाहे वह कितना भी उल्लेखनीय और रोमांटिक क्यों न रहा हो, बल्कि स्वयं उन महिलाओं में और उनके हृदय और बुद्धि के उन गुणों में पाया जाता है जो परिस्थितियों से परे थे। शार्लोट स्वयं इस धारणा को सबसे पहले खारिज कर देतीं कि उनकी बाहरी परिस्थितियों में कुछ भी असाधारण था। सनकी समझे जाने के डर से, जो एक जुनून की तरह था, वह अजनबियों की नजरों से लगभग अस्वस्थ भय से ग्रस्त थीं। अगर वह कभी कल्पना भी कर पातीं कि दुनिया भर के पाठक उनके नाम को, और उससे भी अधिक उनकी प्रिय बहनों के नामों को,

यॉर्कशायर के चरित्र की असभ्य विशेषताओं से, या उस घरेलू त्रासदी से जोड़ेंगे जिसमें उनके दुर्भाग्यपूर्ण भाई का जीवन समाप्त हुआ, तो उनकी आत्मा उस बात के खिलाफ आक्रोश से भर उठती जिसे वह लगभग एक व्यक्तिगत अपमान के रूप में देखतीं।

हॉवर्थ गांव।

फिर भी, यदि हॉवर्थ के परिवेश का तीनों बहनों की प्रतिभा के विकास में अपेक्षाकृत कम योगदान रहा हो, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि श्रीमती गैस्केल ने अपनी पुस्तक में जिन दो प्रभावों को प्रमुखता से दर्शाया है, उन्होंने उनके चरित्र पर गहरा प्रभाव डाला, एक का प्रभाव मामूली था और दूसरे का बहुत अधिक। दलदली भूमि का प्रभाव उनके जीवन और कार्यों दोनों में देखा जा सकता है; जबकि उनके पिता का प्रभाव कहीं अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पहले प्रभाव के बारे में तो जो सब जानते हैं, उसके अतिरिक्त कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। हॉवर्थ में अब एक रेलवे स्टेशन है, और इसलिए दुनिया भर के लोग बिना किसी कठिनाई या असुविधा के वहाँ पहुँच सकते हैं। फिर भी, आज भी, जब सुबह से शाम तक ट्रेन कई बार चीखती हुई वहाँ से गुज़रती है, तो हॉवर्थ अन्य स्थानों जैसा नहीं है। यॉर्कशायर के मध्य से लंकाशायर के मध्य तक फैली पहाड़ियों और दलदली भूमि के बीच बसा एक छोटा सा औद्योगिक गाँव, अपनी भौगोलिक स्थिति की जीवंत छाप लिए हुए है। इसके चारों ओर मीलों तक फैले दलदली क्षेत्र ग्रीष्म और शरद ऋतु के महीनों में बेहद खूबसूरत लगते हैं। तब हॉवर्थ अपने पूरे वैभव में होता है; एक विशाल, सुगंधित बैंगनी

रंग के सागर के बीच बसा एक छोटा सा धूसर पत्थर का गाँव, जहाँ से आती ठंडी हवाएँ मधुमक्खियों की भिनभिनाहट और हीथर की सुगंध को इसकी घुमावदार गलियों में बिखेर देती हैं। लेकिन यह सर्दियों के उदास, भारी दिनों में ही होता है, जब मैदान बर्फ से ढके होते हैं, कि हमें हॉवर्थ का असली रूप दिखाई देता है। तब हमें पता चलता है कि यह बाहरी दुनिया से बिल्कुल अलग एक जगह है; यहाँ तक कि रेलगाड़ी भी इसे उस विशाल वेस्ट राइडिंग के बीच लाने में नाकाम रही है जो अपने व्यस्त मिलों और भीड़-भाड़ के साथ पास ही स्थित है; और इसलिए सबसे कम समझदार व्यक्ति भी समझ सकता है कि उन दिनों में जब रेलगाड़ी नहीं थी, और हॉवर्थ अपनी ऊँची घाटी में बिल्कुल अलग-थलग, उपेक्षित और अनदेखा पड़ा था, तब यहाँ के लोगों को कम से कम उन एकांत विशेषताओं का आशीर्वाद मिला होगा जो ज़र्मैट और पोंट्रेसिना के ग्रामीणों को गर्मियों के पर्यटकों की बाढ़ आने से पहले आल्प्स के उन अपेक्षाकृत दूरस्थ इलाकों में अलग पहचान देती थीं। इन एकांत मैदानों के बीच पली-बढ़ी और, जैसा कि कम आबादी वाली पहाड़ियों पर रहने वाले सभी लोग करते हैं, आकाश और मौसम का अध्ययन करने की आदी, जैसे कि कस्बों और मैदानों के निवासी पुरुषों और महिलाओं के चेहरों का अध्ययन करते हैं, ब्रोंटे बहनों ने निस्संदेह प्रकृति के प्रति अपना प्रेम, तूफानी हवाओं और युद्धरत बादलों के प्रति अपना स्नेह हॉवर्थ में अपने निवास से प्राप्त किया।

लेकिन यह प्रभाव उनके पिता के वंशानुगत चरित्र के प्रभावों की तुलना में नगण्य था। आधुनिक समाज की सहज एकरूपता में रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे से अधिक उल्लेखनीय व्यक्तित्व शायद ही किसी और का हो। श्रीमती गैस्केल की जीवनी के पाठक जानते हैं कि हॉवर्थ के पादरी एक सनकी व्यक्ति थे, लेकिन उनकी सनक और मनमौजीपन का पूरा दायरा आज तक दुनिया के सामने नहीं आया है। वे जन्म से आयरिश थे, लेकिन युवावस्था में ही वे यॉर्कशायर में एक सहायक पादरी के रूप में चले गए और जीवन के अंत तक वहीं रहे। उनका असली नाम ब्रोंटे नहीं था - इस नाम की उत्पत्ति को लेकर उनकी बेटी के प्रसिद्ध होने पर बहुत सारा अनावश्यक रहस्य बना रहा - बल्कि प्रुन्टी था। काउंटी डाउन के अहाडेर्ग पैरिश में एक साधारण परिवार में जन्मे, वे एक बड़े परिवार के सदस्य थे, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे सभी अपनी शारीरिक शक्ति और सुंदरता के लिए जाने जाते थे। पैट्रिक प्रुन्टी परिवार के सबसे असाधारण सदस्य थे, और उनकी प्रतिभा को ड्रमगूलैंड के रेक्टर श्री टाइघे ने शीघ्र ही पहचान

लिया था। इस सज्जन ने उनकी शिक्षा का कम से कम कुछ खर्च वहन किया, जो सेंट जॉन कॉलेज, कैम्ब्रिज में पूरी हुई। प्रुन्टी से ब्रोंटे नाम में परिवर्तन के संबंध में कई मनगढ़ंत कहानियां प्रचलित हैं। इनमें से एक कहानी यह है कि ब्रोंटे परिवार का नाम ब्रोंटेरेस नामक एक प्राचीन आयरिश परिवार से लिया गया था, जिससे उनका संबंध था। यह संबंध संभवतः रहा हो, लेकिन एक बात पर कोई संदेह नहीं है। हॉवर्थ के पादरी का प्रारंभिक नाम प्रुन्टी था, और आयरलैंड छोड़कर इंग्लैंड जाने से कुछ ही समय पहले, अपने संरक्षक श्री टाइघे के अनुरोध पर, उन्होंने अपना नाम बदलकर ब्रोंटे रख लिया, जो अधिक मधुर नाम था। वे अच्छे और बुरे का एक विचित्र मिश्रण प्रतीत होते थे। यह बात उन्हें जानने वाले सभी लोग स्वीकार करते हैं कि उनमें कुछ अच्छाई भी थी। वे अधिकांश लोगों के प्रति दयालु भाव रखते थे और यॉर्कशायर में रहने वाले अपने अनुयायियों में पाई जाने वाली दृढ़ सत्यनिष्ठा से अत्यंत प्रसन्न होते थे। जब उनकी बेटी प्रसिद्ध हुई, तो उनसे अधिक प्रसन्न कोई नहीं हुआ। वे हर अखबार से उनकी बेटी से संबंधित हर छोटी-बड़ी खबर काट कर रख लेते थे; उन्हें उनकी उपलब्धियों पर गर्व था, उनकी बुद्धिमत्ता पर गर्व था और उनकी प्रतिष्ठा के लिए वे अत्यंत उत्सुक थे। लेकिन अपने पूरे जीवन में केवल एक ही व्यक्ति था जिसके प्रति उनके मन में सच्ची सहानुभूति थी, और वह व्यक्ति वे स्वयं थे। भावुक, अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाले, अभिमानी, और अपने घर के सदस्यों के प्रति स्वभावतः ठंडे और दूर रहने वाले, वे शार्लट ब्रोंटे द्वारा बाद में "शर्ली" के मिस्टर हेलस्टन के चित्रण में वर्णित कई विशेषताओं को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते थे। उनसे मिलने वाला अजनबी एक अत्यंत विनम्र, पुराने जमाने के सज्जन व्यक्ति को पाता था, जो अपने अतीत के बारे में बहुत बातें करता था और अपनी परिचित महिलाओं के दिलों को जीतने के बारे में बात करने के लिए उसे बस एक गिलास शराब की जरूरत होती थी। जब आप विचित्र वस्त्र पहने उस बूढ़े व्यक्ति की अथक वाचालता को सुन रहे थे, तो शायद आपके मन में यह विचार आया होगा कि वह महज़ एक चंचल, खुशमिजाज, अभिमानी और हानिरहित व्यक्ति है; लेकिन कभी-कभी उसकी तीक्ष्ण, धँसी हुई आँखों की एक पैनी नज़र आपको आगाह करती थी कि आपका साथी आपको भी परख रहा है, और यह दिखावटी घमंड उसके असली व्यक्तित्व को प्रकट करने से बहुत दूर था। केवल वही लोग जो एक ही छत के नीचे रहते थे, उसे उसके वास्तविक स्वरूप में जानते थे। उसके बच्चों द्वारा सुनाई गई कई कहानियों में से एक कहानी

उसकी पत्नी, जो एक विनम्र और सौम्य महिला थी, से संबंधित है, जिसका भाग्य निरंतर ठंडेपन और उपेक्षा को सहना था। किसी ने श्रीमती ब्रोंटे को एक बहुत सुंदर पोशाक भेंट की थी, और उनके पति, जो अपने अहंकार और मनमानी के लिए जाने जाते थे, उस उपहार से नाराज हो गए थे। अपनी पत्नी से, जो अपने प्रभुत्वशाली स्वामी से हमेशा भयभीत रहती थी, एक शब्द कहने से ही उनका मनचाहा परिणाम मिल जाता; लेकिन अपनी इस दृढ़ निश्चय में कि वह उस घृणित वस्त्र को न पहने, उसने जानबूझकर उसे टुकड़ों में काट दिया और उसके फटे-पुराने टुकड़े उसे भेंट कर दिए। अपनी पत्नी के जीवनकाल में भी उसने अकेले भोजन करने की आदत बना ली थी; वह हमेशा अपनी जेबों में भरी हुई पिस्तौलें रखता था और उत्तेजित होने पर बाहरी कमरों के दरवाजों पर गोलियां चलाता था, जिससे ग्रामीण अपने पादरी के घर में दिन के किसी भी समय पिस्तौल की गोलियों की आवाज सुनने के आदी हो गए थे। यह मानना गलत होगा कि हिंसा श्री ब्रोंटे द्वारा नियमित रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले हथियारों में से एक थी। अपनी पत्नी के साथ उसका व्यवहार चाहे कितना भी कठोर और दबंग रहा हो (जिसने जल्द ही उसे छोड़कर अपना शेष जीवन एक नीरस विधवापन में बिताया), उसकी सामान्य नीति बल के बजाय चतुराई से अपना लक्ष्य प्राप्त करना थी। अपनी श्रेष्ठ बुद्धि में गहरा विश्वास उसके गुणों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता था और उसे पूरा विश्वास था कि कोई भी इतना चतुर नहीं है कि उसकी कूटनीति से मात न खा सके। उनमें अद्भुत दृढ़ता भी थी, जिसके कारण वे अपने द्वारा शुरू किए गए किसी भी कार्य को अटूट संकल्प के साथ पूरा करते थे। बाद के वर्षों में, जब उनकी शक्ति क्षीण होने लगी और अंततः उन्हें अपनी बेटी की असलियत समझ में आने लगी, तब उनका अपने एक मित्र के चरित्र को लेकर उससे झगड़ा हो गया। बेटी, जो हमेशा आज्ञाकारी और सम्मानजनक थी, ने पाया कि जब भी वह उस मित्र के बारे में बोलते थे जिसने उन्हें नाराज किया था, तो उनके कड़वे और अन्यायपूर्ण क्रोध के सैलाब को रोकने का कोई भी प्रयास अत्यंत खतरनाक परिणामों से भरा होता था। उनके माथे की नसें फूल जाती थीं, उनकी आँखें गुस्से से चमक उठती थीं, उनकी आवाज कांपने लगती थी, और वह मजबूरी में चुपचाप सह लेती थी, कहीं ऐसा न हो कि उसके पिता का क्रोध उसके लिए घातक साबित हो जाए। लेकिन जब, उनकी हिंसा और अन्याय से असहनीय रूप से आहत होकर, वह कुछ दिनों के लिए अपने घर से चली गई और अपने पिता से कहा कि वह उनसे कोई भी ऐसा पत्र नहीं लेगी

जिसमें उस मित्र का नाम हो, तो बूढ़े व्यक्ति की चालाकी ने क्रोध का स्थान ले लिया। उन्होंने उसे सामान्य विषयों पर लंबे और स्नेहपूर्ण पत्र लिखे; लेकिन प्रत्येक पत्र के साथ कागज की एक छोटी सी पर्ची होती थी, जिस पर शार्लोट के कुत्ते फ्लॉसी द्वारा अपनी "अत्यंत सम्मानित और प्रिय मालकिन" के लिए एक नोट होने का दावा किया गया था, जिसमें कुत्ते ने यह घोषणा करते हुए कि उसने "मानव स्वभाव का एक बड़ा हिस्सा देखा जो भाषा की प्रतिभा रखने वालों से छिपा हुआ था," उस घृणित व्यक्ति पर उन हमलों को दोहराया, जिन्हें श्री ब्रोंटे अपने स्वयं के चरित्र में करने की हिम्मत नहीं कर पाते थे।

सन् 1821 में, एक सुनसान औद्योगिक गाँव के असभ्य और असभ्य समाज के बीच, ऐसे ही एक पिता की देखरेख में छह अनाथ बच्चों - पाँच बेटियों और एक बेटे - को छोड़ दिया गया था। पादरी के बच्चों को गाँव के छोटे पड़ोसियों से मिलने-जुलने की अनुमति नहीं थी; उनकी चाची, जो उनकी माँ की मृत्यु के बाद पादरी के घर आई थीं, उनके प्रति उनके पिता से भी कम ही सहानुभूति रखती थीं; उनका एकमात्र मित्र खुरदरा लेकिन दयालु नौकर टैबी था, जो बच्चों को समझे बिना उन पर तरस खाता था, और जिसकी दयालुता अक्सर उन्हें खुशी से ज़्यादा पीड़ा देती थी। इस प्रकार वे अजनबी, अकेले, पुराने ख्यालों वाले बच्चे बनकर बड़े हुए, जिन्हें बाहरी दुनिया का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था; वे स्वभाव से इतने शांत और संकोची थे कि वर्षों बाद, जब उन्होंने अपने कुछ रविवार के विद्यार्थियों को पादरी के घर बुलाया और उनका मनोरंजन करना चाहा, तो उन्होंने पाया कि उन्हें विद्यार्थियों से ही खेलना सिखाना पड़ा - क्योंकि उन्होंने कभी खेलना सीखा ही नहीं था। दुनिया से अलग-थलग, नन्ही ब्रोंटे बच्चियों ने मनोरंजन के अपने ही तरीके खोजे, और वे वाकई अनोखे तरीके थे। जब वे नर्सरी में ही थीं, परिवार की सबसे बड़ी बेटी मारिया मुश्किल से नौ साल की थी और तीसरी बेटी शार्लोट सिर्फ छह साल की, तब उन्होंने साहित्य और राजनीति में एक अनोखी रुचि लेना शुरू कर दिया था। पता नहीं किसने सबसे पहले इन अद्भुत नन्हे-मुन्नों को वेलिंगटन के महान कार्यों या बोनापार्ट के अपराधों के बारे में बताया था; लेकिन जिस उम्र में दूसरे बच्चे आमतौर पर ईंटों या गुड़ियों में व्यस्त रहते हैं, और जब जीवन की सारी रुचियां उनके लिए नर्सरी की दीवारों तक ही सीमित होती हैं, उस उम्र में ये अद्भुत ब्रोंटे बच्चियां महान ड्यूक के जीवन पर चर्चा कर रही थीं, और पड़ोसी सराय में गांव के सबसे पुराने और मजबूत राजनेताओं की तरह ही जोश से टोरी पार्टी का

समर्थन कर रही थीं।

छह साल की शार्लोट की एक मार्मिक कहानी है, जो हमें उस समय की उस अकेली बच्ची के आदर्श जीवन की झलक देती है, जब उसकी दो बड़ी बहनें स्कूल चली गई थीं और वह माँ के बिना घर में अकेली रह रही थी। उसने "द पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" पढ़ी थी और उस अद्भुत कहानी से वह इतनी छोटी उम्र में ही मंत्रमुग्ध हो गई थी। उसमें लिखी हर बात उसे सच्ची और वास्तविक लगती थी; उसका नन्हा दिल क्रिश्चियन के साथ स्वर्ण नगर की तीर्थयात्रा पर निकल पड़ा था, बेडफोर्ड के लोहार द्वारा स्वर्ग के वैभव के वर्णन ने उसके उज्ज्वल मन को प्रज्वलित कर दिया था; और उसने ठान लिया था कि वह भी विनाश के नगर से भाग निकलेगी और उस आश्रय को प्राप्त करेगी जिसकी ओर हर युग की थकी हुई आत्माएँ उत्सुकता से मुड़ती हैं। लेकिन वह जगमगाता नगर कहाँ था, जिसकी सड़कें सोने की, द्वार मोतियों के, दीवारें कीमती पत्थरों की, जीवन की धाराएँ बहती और प्रकाश का सिंहासन था? बेचारी नन्ही बच्ची! बून्यान के स्वर्गिक नगर के वर्णन से मेल खाने वाला एकमात्र स्थान जो उसे दिखाई दिया, वह था जिसके बारे में उसने रसोई में नौकरों को उत्साहपूर्वक चर्चा करते सुना था, और उसका नाम था ब्रैडफोर्ड! इसलिए, 1822 में एक दिन, नन्ही शार्लोट ब्रोंटे, हॉवर्थ के उस पादरी के घर से भाग निकली, जिसे वह एक मनहूस जगह मानती थी, और ब्रैडफोर्ड के लिए रवाना हो गई। बुद्धिमान लोग चाहें तो उस घोर निराशा पर अनुमान लगा सकते हैं जो उसका इंतजार कर रही थी जब, बड़ों की तरह, उस स्थान पर पहुँचकर जिसे उसने स्वर्ग समझा था, उसने पाया कि वह केवल ब्रैडफोर्ड था। लेकिन वह अपने काल्पनिक स्वर्ण नगर तक कभी नहीं पहुँची। जब उसके कोमल पैर उसे सड़क पर एक मील ले गए, तो वह एक ऐसी जगह पर पहुँची जहाँ लटकते पेड़ों ने राजमार्ग को अंधेरा और उदास बना दिया था; उसने कल्पना की कि वह मृत्यु की घाटी में आ गई है, और आगे बढ़ने से डरते हुए, उसकी नर्स ने उसे सड़क के किनारे दुबका हुआ पाया।

ब्रोंटे बहनों के स्कूली दिनों के बारे में यहाँ कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। "जेन आयर" के प्रत्येक पाठक को पता है कि शार्लोट ब्रोंटे स्वयं उस धर्मार्थ संस्था के बारे में क्या सोचती थीं, जिसे उन्होंने इतनी बदनामी दिलाई है। वहीं उन्होंने अपनी सबसे बड़ी बहन को खो दिया, जिसकी कहानी हेलेन बर्न्स के दुखद वृत्तांत में वर्णित है; और इसी स्थान पर रहते हुए उनकी दूसरी बहन एलिजाबेथ की भी मृत्यु हो गई।

कोवान ब्रिज में बिताए गए इस दुखद वृत्तांत में केवल एक बात और जोड़नी है। वहाँ रहने के पूरे समय के दौरान, युवा ब्रोंटे बहनों ने शायद ही कभी भूख की पीड़ा से मुक्ति का अनुभव किया हो।

अब शार्लोट उस छोटे परिवार की मुखिया थी; परिवार के शेष सदस्य उसके भाई ब्रैनवेल और बहनें एमिली और ऐनी थीं। श्रीमती गैस्केल ने कोवान ब्रिज की कठिनाइयों से बचकर निकले इन चार लोगों के 1825 से 1831 के बीच के जीवन का एक जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया है। उन्होंने वे वर्ष हॉवर्थ में लगभग बिना किसी चिंता या सहानुभूति के बिताए। उनके पिता को उनकी स्थिति में कोई खास रुचि नहीं थी, कुछ भी ऐसा नहीं था जो उन्हें अपने स्वार्थी कामों में डूबे रहने से बाहर निकाल सके; उनकी चाची, जो एक स्थायी रूप से बीमार महिला थीं, का मानना था कि उनका कर्तव्य तब पूरा हो जाता है जब वे उन्हें कुछ पाठ पढ़ा देती हैं और उनसे प्रतिदिन कुछ मात्रा में सिलाई का काम करवाती हैं। बाकी समय उन्हें अपने हाल पर छोड़ दिया जाता था, और इस प्रकार उन्होंने उपन्यास लिखकर अपनी प्रतिभा का प्रारंभिक संकेत दिया।

श्रीमती गैस्केल ने इन बाल कलाकारों के प्रदर्शन के चरित्र का कुछ अंदाजा हमें अंशों की एक श्रृंखला के माध्यम से दिया है, जो उनकी दुर्लभ योग्यता को पर्याप्त रूप से दर्शाते हैं। हालांकि, उन्होंने विशेष रूप से शार्लोट की रचनाओं पर ध्यान केंद्रित किया है। ब्रोंटे की कहानियों के सभी पाठक "द आइलैंडर्स" नाटक और अन्य उल्लेखनीय रचनाओं के वर्णन को याद रखेंगे, जो दर्शाते हैं कि शार्लोट अपनी किशोरावस्था के पहले वर्ष में ही कितनी वास्तविक शक्ति और मौलिकता के साथ अपनी कलम चला सकती थीं; लेकिन जिन कुछ लोगों ने परिवार के बाल साहित्य का पूरा संग्रह देखा है, वे इस बात की गवाही देते हैं कि ब्रैनवेल और एमिली कम से कम शार्लोट जितनी ही मेहनती और सफल थीं। वास्तव में, इस छोटी उम्र में भी, एमिली की प्रतिभा का विलक्षण स्वरूप प्रकट होने लगा था, और अलौकिक प्रभावों की ओर उनका झुकाव तब प्रदर्शित हुआ जब उन्होंने अपने नर्सरी रूम में अपनी पहली परियों की कहानियाँ लिखीं। यह ध्यान में रखना उचित होगा कि आलोचकों ने शार्लोट ब्रोंटे पर बच्चों की प्रतिभा को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने का आरोप कितनी बार लगाया है। ब्रोंटे बहनों के शुरुआती दिनों के बारे में हमें जो कुछ भी पता है, उससे यह साबित होता है कि जो बात किसी और व्यक्ति के मामले में अतिशयोक्ति होती, वह शार्लोट

के मामले में उनके अपने अनुभवों का एक सच्चा चित्रण मात्र थी।

ब्रोंटे बहनों की इन प्रारंभिक रचनाओं में से केवल एक ही नमूना यहाँ उद्धृत किया जा सकता है: यह वही है जिसका मैंने पहले ही उल्लेख किया है, नाटक "द आइलैंडर्स"।

31 जून, 1829।

“द आइलैंडर्स” नाटक की रचना दिसंबर 1827 में इस प्रकार हुई। एक रात, जब नवंबर की ठंडी बर्फीली बारिश और तूफानी कोहरे के बाद कड़ाके की सर्दी के बर्फीले तूफान और तेज चुभने वाली रात की हवाएं चलने लगती हैं, हम सब रसोई की गर्म जलती हुई आग के चारों ओर बैठे थे। हम अभी-अभी टैबी से मोमबत्ती जलाने की उपयुक्तता को लेकर हुए झगड़े को सुलझा रहे थे, जिसमें टैबी विजयी रही, क्योंकि कोई मोमबत्ती नहीं लाई गई थी। काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा, जिसे ब्रैनवेल ने आलस भरे लहजे में यह कहकर तोड़ा, “मुझे नहीं पता कि क्या करना है।” एमिली और ऐनी ने भी यही बात दोहराई।

टैबी। क्या, तुम सोने जा सकते हो।

ब्रैनवेल। मैं इससे बेहतर कुछ भी करना पसंद करूंगा।

शार्लेट। आज रात तुम इतनी उदास क्यों हो, टैबी? ओह! काश हम दोनों के पास अपना-अपना एक द्वीप होता।

ब्रैनवेल। अगर ऐसा होता, तो मैं मैन द्वीप को चुनता।

शार्लोट। और मैं आइल ऑफ वाइट को चुनूंगी।

एमिली। मेरे लिए तो एरन द्वीप ही सबसे अच्छा है।

ऐनी। और मेरा होगा ग्वेर्नसे।

फिर हमने अपने द्वीपों के प्रमुख व्यक्तियों का चुनाव किया। ब्रैनवेल ने जॉन बुल, एस्टली कूपर और ली हंट को चुना; एमिली ने वाल्टर स्कॉट, मिस्टर लॉकहार्ट और जॉनी लॉकहार्ट को; ऐनी ने माइकल सैडलर, लॉर्ड बेंटिंक और सर हेनरी हैलफोर्ड को चुना। मैंने ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और उनके दो बेटों, क्रिस्टोफर नॉर्थ एंड कंपनी और मिस्टर एबरनेथी को चुना। यहीं हमारी बातचीत घड़ी के सात बजने की निराशाजनक आवाज़ से बाधित हुई और हमें सोने के लिए बुलाया गया।

IV.

हॉवर्थ में रहने वाला परिवार।

समय बीतता चला गया, और ब्रोंटे बहनें अब बच्ची नहीं रहीं। वे उस अपरिपक्व सक्रियता की अजीब अवस्था से बाहर निकल चुकी हैं, जिसमें उनके दिमाग इतने सक्रिय थे, उनका जीवन उनकी उम्र के अन्य लोगों के जीवन से इतना अलग था; उन्होंने तो दुनिया के प्रचलित मुहावरे के अनुसार अपनी शिक्षा भी "पूरी" कर ली है, और रोहेड स्थित मिस वूलर के अच्छे स्कूल में कुछ जान-पहचान और दो दोस्त बनाने के बाद, शार्लोट फिर से घर पर है, युवा, आशावान और अपने तरीके से खुश, अपने भाई और बहनों के साथ उस जीवन के रहस्य के प्रकट होने का इंतजार कर रही है, जो उन लोगों के लिए छिपे हुए आकर्षणों से भरा प्रतीत होता है जिनके सामने अभी सब कुछ है।

सन् 1833 की जून की एक सुहावनी सुबह, बोल्टन ब्रिज पर डेवोनशायर आर्म्स के सामने एक सुंदर घोड़ागाड़ी खड़ी थी। यह जगह व्हार्फ के नज़ारों से वाकिफ सभी मछुआरों और कलाकारों की चहेती थी। घोड़ागाड़ी में अपने कुछ साथियों के साथ एक युवती भी थी, जिसका चेहरा, कद-काठी और हाव-भाव उन सभी को याद आ गया होगा जिन्होंने "शर्ली" पढ़ी है। क्योंकि यह प्यारी, सुडौल यॉर्कशायर की युवती, जैसा कि हम उसे उस खास सुबह देखते हैं, बिल्कुल उसी कैरोलिन हेलस्टन जैसी थी जिसका ज़िक्र उस उपन्यास में मिलता है। मिस एन — — अपनी पुरानी सहपाठी और आज की सबसे करीबी दोस्त, शार्लोट ब्रोंटे का इंतज़ार कर रही थीं, जो अपने भाई-बहनों के साथ पास ही स्थित बोल्टन एबे के मनमोहक स्थल की सैर पर जा रही थीं। तभी, दलदली मैदानों से होते हुए कीघली तक जाने वाली खड़ी सड़क पर पहियों

की आवाज़ सुनाई दी, जो युवा लोगों की खुशमिजाज़ बातों और खिलखिलाती हंसी के साथ घुलमिल गई थी। क्या हम चुपके से आगे बढ़ें और सड़क पर चल रहे यात्रियों का अध्ययन करें? उनका वाहन कोई सुंदर घोड़ागाड़ी नहीं, बल्कि एक खस्ताहाल ठेलागाड़ी है, जो स्पष्ट रूप से किसी ग्रामीण खेत के बैलगाड़ियों और हल के बीच स्थित होने का संकेत देती है। खेतों से लाया गया घोड़ा एक युवक द्वारा चलाया जा रहा है, जो अपने देहाती पहनावे के बावजूद कोई साधारण गँवार नहीं है। उसके लाल बाल कानों के पीछे कुछ बिखरे हुए गुच्छों में लटके हुए हैं, क्योंकि ब्रैनवेल ब्रोंटे खुद को एक प्रतिभाशाली और कवि मानते हैं, और उस समय के चलन के अनुसार, नाई की कैंची से उन्हें वैसी ही घृणा है, जैसी प्रतिभा के साथ होती है। लेकिन उस लड़के का चेहरा सुंदर और आकर्षक है, सेल्टिक जोश और हास्य से भरपूर, चिंता की जरा सी भी झलक से रहित, जिससे एक बेहद आशावादी, होनहार और प्रतिभाशाली व्यक्ति का आभास होता है। वह अपनी तीन बहनों के साथ कितनी खुशी से मजाक करता है; वह अपनी असीम वाक्पटुता से अपने प्रिय कवियों के उद्धरण सुनाता है, उन्हें अपने आस-पास के सुंदर दृश्य पर लागू करता है; और अपने अदम्य साहस और साहस के साथ, वह रथ चलाने के ऐसे करतब दिखाता है जो समूह के सबसे छोटे सदस्य के डरपोक दिल को अचानक भयभीत कर देते हैं! उसके बगल में, अत्यंत सादगी और कुरूपता से सजी पोशाक में, जिस पर "घर का बना" का निशान स्पष्ट अक्षरों में छपा है, बहनों में सबसे बड़ी है। शार्लोट भी बातें कर रही है; उसके चेहरे पर प्यारी मुस्कान है; वह अपने आस-पास की हर चीज का आनंद ले रही है, शानदार सुबह, हरे-भरे पेड़ों और खिलते गुलाबों का आकर्षण, और सदा मधुर बहने वाली धारा; शायद सबसे अधिक, अपने भाई की संगति का आकर्षण, और अपनी सहेली से होने वाली उस मुलाकात की उम्मीद, जो बहुत करीब है। पीछे एक सुंदर छोटी लड़की बैठी है, जिसका रंग निखरा है और चेहरे की बनावट कोमल और सुडौल है, जिसे अजनबी देखते ही समूह की सबसे सुंदर लड़की समझ लेगा। उसका कद लंबा और शरीर थोड़ा गठीला है, और उसने शार्लोट जैसी ही पोशाक पहनी है। एमिली ब्रोंटे बाकी लोगों की तरह ज्यादा नहीं बोलतीं, लेकिन उनकी अद्भुत आंखें, झरने के तल पर स्थित तालाब की तरह चमकीली और अथाह, साथ ही कोमलता और गर्माहट से भरपूर, दिखाती हैं कि कैसे उनका मन इस दृश्य के प्रभाव से खिल रहा है; कैसे वह अपने आसपास की सबसे कम आकर्षक सुंदरियों को भी तुरंत पहचान लेती हैं, कैसे

पक्षियों के गीत, धूप की चमक और फूलों से सजी झाड़ियों की खुशबू का आनंद लेती हैं। अगर वह शार्लोट और ऐनी की तरह अपने भाई के लगातार चमकते शब्दों का जवाब तीखे शब्दों से नहीं देतीं, तो कभी-कभी एक अजीब, गहरी, कर्कश ध्वनि निकालती हैं, जिसे उन्हें सबसे अच्छी तरह जानने वाले लोग एक ऐसे आनंद की भाषा मानते हैं जो शब्दों में व्यक्त करने के लिए बहुत गहरा है। जब वे शांत सड़क पर आपके पास से गुजरें तो उन्हें निहारें और स्वीकार करें कि, उनके खुरदुरे और यहां तक कि असभ्य बाहरी रूप के बावजूद, गर्मी के लंबे दिन के दौरान आनंद चाहने वालों के इस पसंदीदा ठिकाने में इतने खुशमिजाज चार लोगों से मिलना मुश्किल हो सकता है।

अचानक, डेवोनशायर आर्म्स के सामने खुले मैदान में एक गाड़ी शोर मचाते हुए आती है, और ब्रोंटे बहनें गाड़ी और उसमें बैठे लोगों को देखती हैं। पल भर में सन्नाटा छा जाता है; ब्रैनवेल अपनी साधारण गाड़ी की तुलना सराय के दरवाजे पर खड़ी गाड़ी से करता है, और उसके चेहरे पर अपमानित गर्व की झलक दिखाई देती है; बहनें इस अंतर पर मुश्किल से ही ध्यान देती हैं, लेकिन उन्हें यह देखकर निराशा होती है कि उनका दोस्त अकेला नहीं है, और दोनों एक लंबी गहरी सांस लेती हैं, और अपने जीवन की सबसे कठिन परीक्षा, अजनबियों से मुलाकात के लिए तैयार हो जाती हैं। हंसी थम जाती है; ब्रैनवेल की वाक्पटुता भी समाप्त हो जाती है; उनकी आंखों की खुशी गायब हो जाती है, और जब वे उतरती हैं और मिस एन — — के साथियों से परिचय कराने की प्रक्रिया से गुजरती हैं, तो उनके चेहरे उनके कपड़ों की तरह ही नीरस और साधारण होते हैं। यह कोई काल्पनिक दृश्य नहीं था जिसे हम देख रहे थे। मिस एन——को आज भी वह दर्दनाक पल याद है जब उनके दोस्तों की खुशनुमा बातें और हंसी, उनके सामने आने वाले लोगों को देखकर थम गई थी। जिस दिन का सभी ने बेसब्री से इंतज़ार किया था, उस पूरे दिन तीनों ब्रोंटे बहनें एक-दूसरे से या अपनी सहेली से लिपटी रहीं, मुश्किल से फुसफुसाहट से ज़्यादा बोल पाती थीं, और हर नज़र और शब्द से उनके दिलों में समाई उस गहरी पीड़ा को ज़ाहिर करती थीं, जब कोई अजनबी उनके पास आता था। अनजान लोगों के सामने उनकी यही अत्यधिक शर्मिंदगी उनकी सबसे खास विशेषता थी। यह कमज़ोरी शारीरिक और नैतिक दोनों थी; और जो लोग यह सोचते हैं कि अजनबी की मौजूदगी का बोझ हट जाने पर उनके मन में कोई उदासी या उमंग की कमी आ जाती थी, वे उनके असली चरित्र को पूरी तरह से गलत समझते हैं। दुर्भाग्य से, पहली छाप हमेशा सबसे मज़बूत होती है, और

श्रीमती गैस्केल की पूरी कहानी में, शार्लोट ब्रोंटे से उनकी पहली मुलाकात के दौरान अनजान चेहरों के बीच उनकी घबराहट और असहजता का असर साफ देखा जा सकता है।

जो लोग शार्लोट ब्रोंटे के साथ सबसे घनिष्ठ संबंध में थे, यानी स्कूल के सामाजिक परिवेश में, वे उनके दिल के रहस्यों को उन लोगों से कहीं बेहतर जानते थे जो उनसे बाद में मिले। उनके लिए असली शार्लोट ब्रोंटे, जो उनकी उपस्थिति में कभी संकोच नहीं करती थीं, एक साहसी, चतुर, स्पष्टवादी और आवेगशील लड़की थीं; जो सबसे खुशमिजाज लोगों के साथ हंसने के लिए तैयार रहती थीं और अपने सहपाठियों के साथ शरारतों में भी शामिल होने से पीछे नहीं हटती थीं। "जीवनी" में जो चित्र मिलता है, वह गुप्त भय और अंधविश्वासों की शिकार एक लड़की का है। जब रोहेड स्थित पुराने स्कूल भवन के ऊपरी कमरों में भूत होने की कहानियां प्रचलित थीं, तब असली शार्लोट ब्रोंटे सर्दियों की रात के अंधेरे में अकेले ही उन कमरों में जाने से नहीं हिचकिचाती थीं, जबकि उनके साथी नीचे आग के चारों ओर डर से कांप रहे होते थे। जब उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और मिस एन के साथ पत्राचार शुरू किया, जो न केवल उनके जीवन के घटनाक्रम, बल्कि उनके दिल के रहस्यों के बारे में भी हमारे ज्ञान का एक बड़ा स्रोत है, तो यह नहीं माना जाना चाहिए कि उन्होंने हमेशा उसी गंभीर भाव से लिखा होगा जो श्रीमती गैस्केल द्वारा उद्धृत अधिकांश पत्रों में व्याप्त है। इसके विपरीत, जिन लोगों को इन पत्रों तक पहुंच प्राप्त है, वे पाएंगे कि "जीवन" में दिए गए कुछ अंश भी ऐसे वाक्यों से जुड़े हैं जो यह दर्शाते हैं कि जिस मनस्थिति में वे लिखे गए थे, वह उस मनस्थिति से बहुत अलग थी जो प्रतीत होती है। 1835 की शुरुआत में हॉवर्थ से लिखा गया निम्नलिखित पत्र इसका एक उदाहरण है:

खैर, मैं यहाँ तुमसे इस कदर अलग हो गया हूँ जैसे हमारे बीच सत्रह मील की जगह सौ मील का फासला हो। न मैं तुम्हें सुन सकता हूँ, न देख सकता हूँ, न महसूस कर सकता हूँ। तुम महज़ एक ख्याल बनकर रह गए हो, स्मृति में एक निराकार छाप, जो सौभाग्य से मिटाई नहीं जा सकती। घर की मेरी यात्रा कुछ उदास थी, और मेरे साथी की मौजूदगी और बातचीत के बिना तो और भी ज़्यादा उदास होती। मैंने उसे बहुत बुद्धिमान पाया। उसने मुझे अपने नाविक जीवन के कारनामों, अपने जहाज़ के डूबने और वेस्ट इंडीज़ में देखे गए तूफ़ान के बारे में बताया, और उसकी भाषा का प्रवाह कई बड़े-बड़े लोगों से कहीं बेहतर था। मुझे लगा कि वह हॉवर्थ के आसपास के

जंगलीपन को देखकर थोड़ा परेशान था, और मुझे लगता है कि उसने वहाँ से एक अच्छी रिपोर्ट वापस लाई होगी।

राजनीति जिस दिशा में जा रही है, उसके बारे में आपका क्या विचार है? मैं यह इसलिए पूछ रहा हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि अब आपको इस मामले में गहरी दिलचस्पी है; पहले आपको इसकी ज़्यादा परवाह नहीं थी। आप देख रहे हैं, बी—— विजयी हो रहा है। धिक्कार है! मैं तो उससे बहुत नफ़रत करता हूँ, और अगर किसी से मुझे सबसे ज़्यादा घृणा है तो वह यही आदमी है। लेकिन विपक्ष बँटा हुआ है। कुछ लोग कट्टर समर्थक हैं और कुछ उदासीन; और ड्यूक (बेहद ड्यूक) और सर रॉबर्ट पील में असुरक्षा के कोई लक्षण नहीं दिखते, हालाँकि वे दो बार हार चुके हैं। तो "हिम्मत रखो, मेरे दोस्त!" ईश्वर सत्य की रक्षा करे! जैसा कि पुराने घुड़सवार युद्ध में जाने से पहले कहा करते थे। अब, एलेन, मेरी इस सारी शेखी पर दिल खोलकर हँसो। लेकिन यह सब तुमने खुद ही किया है। क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें भी वैसे ही पत्र लिखूँ जैसे मैंने मैरी को लिखे थे? ये रहा नमूना! इसके बाद किताबों पर एक लंबा-चौड़ा लेख आएगा; लेकिन मैं आपको इससे बचाऊँगा।

श्रीमती गैस्केल की "जीवनी" पढ़ने वालों को इस पत्र का एक वाक्य उद्धृत मिलेगा, लेकिन अंत में "उस सारी शेखी" पर खिलखिलाती हंसी के बिना, जो दर्शाता है कि राजनीति में शार्लोट की रुचि युवावस्था की खुशमिजाज चंचलता से रहित नहीं थी। इससे भी अधिक प्रभावशाली ढंग से उनके वास्तविक चरित्र का चित्रण, जिसमें मनोदशाओं की अनंत विविधता, गंभीरता से प्रसन्नता में अचानक परिवर्तन दिखाई देते हैं, वह पत्र है जिसे मैं अब उद्धृत कर रहा हूँ:

पिछले शनिवार दोपहर, अपने भावुक मूड में, मैं बैठ गया और तुम्हें ऐसा पत्र लिखा जो मुझे केवल एम—— को लिखना चाहिए था, जो लगभग मेरे ही समान पागल है; आज, जब मैंने उस पत्र को सरसरी तौर पर देखा, तो मुझे लगा कि एलेन की शांत नज़र इसे तिरस्कार से देखेगी, इसलिए मैंने कुछ ऐसा लिखने का निश्चय किया जो सामान्य ज्ञान के अनुरूप हो। एलेन, मैं तुम्हें अपने सारे विचार और भावनाएँ नहीं बताऊँगा। मैं उस संयम को बरकरार रखूँगा जो मुझे निर्णय लेने में एक सभ्य चरित्र बनाए रखने में सक्षम बनाता है; अन्यथा, मुझे जानने वाले सभी लोग मुझे बहुत पहले ही एक मूर्ख मान चुके होते। तुम हाल ही में मेरे प्रति बहुत दयालु और कोमल रही हो; और तुमने मुझे उन छोटे-मोटे उपहासों से बख्श दिया है जो मेरे दयनीय और बेहद

संवेदनशील स्वभाव के कारण, पहले मुझे ऐसा महसूस कराते थे जैसे मुझे गर्म लोहे से छुआ गया हो; ऐसी बातें जिनकी किसी और को परवाह नहीं होती, मेरे मन में जहर की तरह चुभती हैं। मुझे पता है ये भावनाएँ बेतुकी हैं, इसलिए मैं इन्हें छिपाने की कोशिश करता हूँ; लेकिन छिपाने से ये और भी गहरी चुभती हैं, और मैं कितना मूर्ख हूँ। एलेन, काश मैं हमेशा तुम्हारे साथ रह पाता, मैं तुम्हें पहले से कहीं ज़्यादा प्यार से जकड़ने लगा हूँ। अगर हमारे पास अपना एक छोटा सा घर और कुछ पैसे होते, तो मुझे लगता है कि हम बिना किसी तीसरे व्यक्ति पर निर्भर हुए, मृत्यु तक प्यार से जी सकते थे।

श्रीमती गैस्केल ने इस पत्र का बहुत ही अधूरा और अपूर्ण उपयोग किया है, केवल "आपने हाल ही में मेरे प्रति बहुत दयालुता दिखाई है" से लेकर "छिपाने से उनका दर्द और गहरा हो जाता है" तक के शब्दों को उद्धृत किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि एक क्षणभंगुर मनोदशा को वह महत्व दिया गया है जो वास्तव में उचित नहीं थी, और शार्लोट के चरित्र का वह सौम्य पक्ष जो उनके सबसे करीबी और प्रिय मित्रों के बीच स्पष्ट था, बाहरी दुनिया से पूरी तरह छिपा दिया गया है। फिर से, मैं कहना चाहूँगा कि हमें श्रीमती गैस्केल को दोष नहीं देना चाहिए। मैंने अभी जिस पत्र का उदाहरण दिया है, उसमें से जिन वाक्यों को उन्होंने छोड़ा है, वे न केवल "कुरर बेल" की उस आदर्श छवि से पूरी तरह असंगत हैं, जिसे दुनिया ने लेखिका के जीवनकाल में उपलब्ध सीमित संसाधनों के आधार पर गढ़ा था, बल्कि श्रीमती गैस्केल की शार्लोट ब्रोंटे के चरित्र की व्यक्तिगत धारणा से भी पूरी तरह भिन्न हैं, जो उनके एकांत और प्रसिद्धि के वर्षों के दौरान उनसे संक्षिप्त परिचय पर आधारित है।

अपने मित्रों से बातचीत के दौरान उनके भावों में होने वाले तीव्र परिवर्तन को मिस एन को लिखे उनके पत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मैंने जो उद्धरण दिए हैं, उनसे पता चलता है कि कैसे एक ही पृष्ठ पर वे अचानक प्रसन्नता से उदासी में बदल जाती हैं; और इस प्रकार, उनके पत्र, जिनमें अनगिनत विषयों का वर्णन है, केवल उस समय लेखिका के भाव को दर्शाते हैं जब उन्होंने उन्हें लिखा था। उनके चरित्र के किसी विशेष पहलू को दर्शाने वाले अंशों का चयन करने के बजाय, पूरे पत्र को पढ़कर और उसका अध्ययन करके ही हम उनका पूर्ण चित्र बना सकते हैं।

यहां कुछ पत्रों के अंश दिए गए हैं जो "जीवनी" में नहीं मिलते हैं और जो मेरी कही बातों को स्पष्ट करते हैं। ये सभी पत्र 1832 की शुरुआत और 1835 के अंत के बीच

लिखे गए थे:

एम को बता देना— मुझे आशा है कि कोबेट के गहन चिंतन को पढ़ने से उन्हें लाभ होगा; लेकिन मैं उनसे निवेदन करता हूँ कि वे किसी भी हालत में मेरे ज्ञानवर्धन के लिए इन अंशों को दोहराने के बोझ से अपनी स्मृति को न भरें, अन्यथा मैं उनकी दयालुता और उनके गुणों को पूरी तरह से समझ पाऊँगा, क्योंकि वह सम्मानित व्यक्ति और उनके सिद्धांत, चाहे निजी हों या राजनीतिक, मेरे पसंदीदा नहीं हैं।

सितंबर 1832 में उन्होंने लिखा, “आपके विस्तृत और बेहद रोचक पत्र के लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ। यह मेरे संक्षिप्त और सारहीन पत्रों से बिलकुल अलग है; लेकिन मुझे पता है कि आप मेरी स्थिति को देखते हुए, जिनमें समाचारों की कमी साफ झलकती है, मुझे क्षमा कर देंगी। मैं समाचार पत्रों के माध्यम से मिलने वाली जानकारी के अलावा किसी भी तरह की सूचना से पूरी तरह से वंचित हूँ, और मुझे विश्वास है कि आपको राजनीतिक चर्चा या सप्ताह भर की घटनाओं के सारांश में कोई खास दिलचस्पी नहीं होगी... मुझे बहुत दुख है कि मिस — — वैसी नहीं निकलीं जैसा आपने सोचा था; लेकिन, मेरी प्यारी एलेन, इस दुनिया में कभी भी पूर्णता की उम्मीद नहीं करनी चाहिए; और मुझे पता है कि आपके स्वाभाविक रूप से भरोसेमंद और स्नेही स्वभाव के कारण आपने यह मान लिया था कि मिस — — लगभग दोषरहित थीं... मुझे लगता है, मेरी प्यारी एलेन, हमारी दोस्ती स्कूली दोस्ती के सामान्य नियम का अपवाद बनने वाली है। कम से कम मुझे इतना तो पता है कि दूरी ने आपके प्रति मेरे बहन जैसे स्नेह को जरा भी कम नहीं किया है।”

आपके पिछले पत्र से आपके मन की ऐसी अवस्था का पता चला जिससे बहुत उम्मीदें जगती थीं। इसे पढ़ते हुए, मेरा मन हुआ कि काश मेरे विचार भी आपके विचारों से मिलते-जुलते होते; लेकिन दुर्भाग्य से, मेरे मन में आने वाले सभी अच्छे विचार उनके अस्तित्व को समझने से पहले ही गायब हो जाते हैं। मेरे द्वारा लिए गए हर सही संकल्प इतने क्षणभंगुर, इतने नाजुक और इतनी आसानी से टूट जाने वाले होते हैं कि कभी-कभी मुझे डर लगता है कि मैं कभी भी वह नहीं बन पाऊंगा जो मुझे बनना चाहिए।

मैं आपको यह आश्वासन देने के लिए जल्दी से पत्र लिख रहा हूँ कि हम आपके

बताए दिन आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे। जैसा कि आप अब इस इलाके और यहाँ के सामाजिक मेलजोल की कमी से परिचित हैं, और हमारी सादी, नीरस जीवनशैली से भी, मुझे अब उतना डर नहीं है जितना पहले था कि आप अपनी यात्रा की नीरसता और एकरूपता से निराश होंगे। हालाँकि, एक बात ऐसी है जो हमारी दिनचर्या को पहले से कहीं अधिक नीरस बना देगी। ब्रैनवेल, जो हमें हमेशा खुशमिजाज रखते थे, कुछ दिनों में हमें छोड़कर U—— के पड़ोस में एक निजी ट्यूटर के रूप में नौकरी करने जा रहे हैं। उन्हें वहाँ कैसा लगेगा, यह अभी देखना बाकी है। फिलहाल वे आशा और दृढ़ संकल्प से भरे हुए हैं। मैं, जो उनके बदलते स्वभाव और सक्रिय जीवन के प्रति उनके प्रबल झुकाव को जानता हूँ, बहुत अधिक आशावादी होने की हिम्मत नहीं कर सकता। हम उनके जाने की तैयारियों में यथासंभव व्यस्त हैं, और कमीजें सिलने और कॉलर बनाने में हमारा पूरा समय लगा हुआ है।

अप्रैल, 1835।

चुनाव! चुनाव! यह पुकार हमारे एकांत पहाड़ों में भी तुरही की गूंज की तरह सुनाई दे रही है। बी—— के घनी आबादी वाले इलाके में क्या हाल है? आपके भाइयों ने किस झंडे तले एकजुटता दिखाई है? नीला या पीला? उन पर अपना प्रभाव डालें; उनसे विनती करें, चाहे इसके लिए आपको घुटने टेकने पड़ें, कि वे इस संकट की घड़ी में अपने देश और धर्म के साथ खड़े रहें!... स्टुअर्ट वर्टली, यॉर्कशायर के सबसे देशभक्त कुलीन व्यक्ति के पुत्र, को अपने गृह प्रांत का प्रतिनिधि चुना जाना चाहिए। लॉर्ड मॉरपेथ पिछले सप्ताह हॉवर्थ में थे, और मैंने उनसे मुलाकात की। उनके बारे में मेरी राय उस पत्र में दर्ज है जो मैंने कल मैरी को लिखा था। इसे दोबारा लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है, इसलिए मैं आपको यहां परेशान नहीं करूंगा।

इन संक्षिप्त अंशों से भी स्पष्ट होता है कि इस समय शार्लोट ब्रोंटे का जीवन निराशा से भरा नहीं था। 1832 से 1835 के बीच के ये वर्ष उनके जीवन के सबसे सुखमय वर्षों में गिने जाने चाहिए - वास्तव में, हॉवर्थ के उस छोटे से परिवार के सभी सदस्यों के जीवन में। युवा अपने पिता के शीतलता और विलक्षणता तथा अपनी चाची की उत्तरी रीति-रिवाजों और उत्तरी लोगों के प्रति, स्वयं सहित, सूक्ष्म अरुचि के अभ्यस्त थे। वे शर्मीले और विचित्र थे, जीवन शैली और विचार शैली दोनों में; लेकिन उन सभी में एक स्वस्थ, खुशहाली थी जो भविष्य में शांतिपूर्ण जीवन की आशा

जगाती थी। इस समय कुछ साधारण साहित्यिक प्रयासों ने उनकी आशाओं को जगाया। शार्लोट ने कुछ प्रारंभिक कविताएँ लिखी थीं (जो अब पुनर्मुद्रण के योग्य नहीं हैं), और उन्होंने उन पर साउथी की राय जानने की कोशिश की। राजकवि ने उन्हें एक विनम्र और विचारशील उत्तर दिया, जिससे उन्हें इन प्रयासों में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन नहीं मिला; ब्रैनवेल द्वारा अपनी कुछ रचनाओं के लिए वर्ड्सवर्थ का संरक्षण प्राप्त करने का प्रयास भी उतना सफल नहीं रहा। यदि कोई 1835 के इस नव वर्ष में हॉवर्थ पैरिश के सुनसान इलाके में गया होता और पादरी के परिवार से मिला होता, तो यह कहना आसान है कि अजनबी का ध्यान किस पर केंद्रित होता। ब्रैनवेल ब्रोंटे, जिनका उल्लेख पिछले पत्रों में से एक में किया गया है, उस छोटे से परिवार की आशा और गौरव थे। उस समय उन्हें जानने वाले सभी लोग उनकी असाधारण प्रतिभा और आकर्षक व्यक्तित्व के साक्षी हैं। शार्लोट की तरह कद में छोटे, वे एक दुर्लभ व्यक्तिगत सुंदरता से संपन्न थे। लेकिन उनका मुख्य आकर्षण उनकी बौद्धिक प्रतिभा में निहित था। यहां तक कि उनके पिता के सुस्त पैरिशवासियों ने भी उस लड़के में प्रतिभा की लौ को पहचान लिया था; और जो कोई भी अब हॉवर्थ जाकर ब्रोंटे परिवार की कहानी की खोज करेगा, उसे पता चलेगा कि गांव के बुजुर्गों की सबसे जीवंत यादें, सबसे प्यारी यादें, इसी अभागे युवक के इर्द-गिर्द घूमती हैं। महत्वाकांक्षी और चतुर, ऐसा लगता था मानो उनका भविष्य विश्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए ही बना हो। उनकी बातचीत करने की क्षमता अद्भुत थी; एक कलाकार के रूप में भी उनमें असाधारण प्रतिभा की झलक थी, और बचपन से ही उन्होंने उत्कृष्ट कविताएँ लिखी थीं। अन्य उपलब्धियों में, जो उपयोगी से अधिक विचित्र थीं, जिन पर वे गर्व कर सकते थे, उनमें एक थी एक साथ दो पत्र लिखने की क्षमता। इस असाधारण परिवार के इतिहास में यह एक छोटी सी विशेषता है, फिर भी ध्यान देने योग्य है कि इसके सबसे कम सफल सदस्य ने नेपोलियन को एक मामले में पीछे छोड़ दिया। महान विजेता नेपोलियन अपने सचिवों को एक साथ आधा दर्जन पत्र लिखवा सकते थे। ब्रैनवेल ब्रोंटे इससे भी कहीं अधिक कर सकते थे। दोनों हाथों में कलम लेकर वे एक ही समय में दो अलग-अलग पत्र लिख सकते थे।

शार्लेट ब्रैनवेल से एक साल बड़ी थीं। 1835 में, जब वे उन्नीस वर्ष की थीं, तब वे उतनी बदसूरत नहीं थीं जितना उन्हें बताया गया है। लिखते समय मेरे सामने उनका बनाया हुआ एक छोटा सा चित्र पड़ा है। उसमें उनके शारीरिक अंगों की सारी कमियों

को चतुराई से बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया गया है। उभरा हुआ माथा आक्रामक ढंग से बाहर निकला हुआ है, जो हाइड्रोसेफालस का संकेत देता है, नाक "फूल की पंखुड़ी की तरह ऊपर उठी हुई" है, और मुंह अनावश्यक रूप से बड़ा बनाया गया है; जबकि उनका छोटा कद भद्दा और बेडौल है। लेकिन हालांकि वे कभी सुंदरता का दावा नहीं कर सकती थीं, फिर भी उनमें कुछ खूबियां थीं, उनकी आंखें, बाल और विशाल माथा सभी आकर्षक थे। एमिली, जो उनसे दो साल छोटी थीं, शार्लेट की तरह सांवली थीं; लेकिन वे लंबी और सुगठित थीं, जबकि उनकी आंखें बेहद खूबसूरत थीं। अपने पूरे जीवन में उनका स्वभाव केवल विचित्र ही नहीं था, बल्कि उससे कहीं अधिक था। उन्हें अपने पिता की विलक्षणता का काफी अंश विरासत में मिला था, जो उनके पिता के शिष्टाचार से अछूता था। अजनबियों के प्रति उनकी अरुचि का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। जब पादरी, जो हॉवर्थ के एकमात्र सामाजिक समूह का हिस्सा थे, उनके निवास पर आते थे, तो वह उनसे इस प्रकार बचती थीं मानो वे अपने साथ महामारी लेकर आए हों। जब कभी-कभार वह बाहर निकलती थीं, तो अपरिचित लोगों की संगति में बिल्कुल चुप बैठी रहती थीं। उनका यह संकोच इतना गहरा था कि अपने परिवार में भी, जहाँ वह अकेले सहज महसूस करती थीं, उनके प्रति स्नेह के साथ-साथ एक प्रकार का भय भी समाया रहता था। एक बार, जब शार्लोट की सहेली उनके निवास पर आई थीं, तो शार्लोट स्वयं बीमारी के कारण उनके साथ सैर पर नहीं जा सकीं। घरवालों के आश्चर्य के बीच, एमिली ने स्वेच्छा से मिस एन—— के साथ खुले मैदानों में सैर पर जाने की पेशकश की। वे दोनों साथ चल पड़ीं, और लड़की ने अपना संकोच त्याग दिया, और इतनी स्वतंत्रता और जोश के साथ बात की जिससे उसके चरित्र की वास्तविक मजबूती का प्रमाण मिला। उसकी सहेली उसकी बुद्धिमत्ता और मिलनसारिता से मुग्ध हो गई। लेकिन जब वे पादरी के घर लौटे तो शार्लोट उनका इंतज़ार कर रही थी, और जैसे ही उसे मौका मिला, उसने उत्सुकता से मिस एन से पूछा, "एमिली ने कैसा व्यवहार किया?" यह पहली बार था जब उसने परिवार के सीमित दायरे से बाहर किसी को आमंत्रित किया था। उसका सबसे बड़ा आनंद अपने कुत्तों के साथ मैदानों में घूमना था, जिन्हें वह मर्दाना अंदाज़ में सीटी बजाकर पुकारती थी। उसका दिल सचमुच धरती के इन मूक प्राणियों के लिए धड़कता था। वह उन लोगों को कभी माफ नहीं करती थी जो उनके साथ बुरा व्यवहार करते थे, और न ही उन पर भरोसा करती थी जिन्हें वे नापसंद करते थे। एमिली ब्रोंटे के कुछ लक्षण शेली

के "सेंसिटिव प्लांट" की याद दिलाते हैं।

अगर वे फूल उसके अपने बच्चे होते, तो वह

मैं उनकी इतनी कोमल देखभाल कभी नहीं कर सकती थी;

और, कविता की नायिका की तरह, उसकी कोमलता और दानशीलता यहाँ तक पहुँच सकती थी।

— — उन बेचारे निर्वासित कीड़ों का, जिनका इरादा,

हालांकि उन्होंने गलत काम किया, लेकिन वे निर्दोष थे।

उनकी असाधारण साहस की एक मिसाल "शर्ली" में मिलती है, जहाँ उन्हें नायिका के रूप में चित्रित किया गया है। यह घटना उस पागल कुत्ते के साथ उनके संघर्ष की है जिसने उन्हें पादरी के घर की रसोई के दरवाजे पर तब काट लिया जब वह उसे पानी पिला रही थीं। उस बहादुर लड़की ने आग से एक लोहे की छड़ उठाई, जो संयोगवश गर्म हो रही थी, और तुरंत अपने हाथ के घाव को दाग दिया, जिससे एक चौड़ा और गहरा निशान बन गया, जो उनकी मृत्यु तक बना रहा। कई हफ्तों बाद तक उन्होंने अपनी बहनों को इस घटना के बारे में नहीं बताया। पहाड़ियों में बसे अपने घर और यॉर्कशायर के उन लोगों से, जिनके बीच उनका पालन-पोषण हुआ था, उन्हें बहुत लगाव था। हॉवर्थ से दूर रहने पर वह बीमार पड़ जाती थीं और कमजोर होती चली जाती थीं। उनका स्वभाव विचित्र, अनियंत्रित और अदम्य था; और उनकी दो बहनों के अलावा शायद ही किसी ने उनके असाधारण गुणों की सराहना की हो, या उस प्रतिभा को पहचाना हो जो "वुथरिंग हाइट्स" की विचित्र कहानी की हर पंक्ति में झलकती है।

परिवार की सबसे छोटी सदस्य ऐनी, अपनी अन्य प्रतिभाओं के साथ-साथ बेहद खूबसूरत भी थी। बौद्धिक रूप से वह अपनी बहनों से काफी कमतर थी; लेकिन उसके सौम्य और मधुर स्वभाव ने कई लोगों का दिल जीत लिया, जो शार्लोट और एमिली के कठोर बाहरी स्वभाव से चिढ़ते थे।

यह वह परिवार था जो उन वर्षों में पहाड़ियों के बीच सुख और शांति से रहता था, जब जीवन की उथल-पुथल अभी दूर थी। उनके जीवन को सुखमय तो नहीं कहा जा सकता था; लेकिन उनके पत्रों से पता चलता है कि वह निस्संदेह शांतिपूर्ण, सुखी और सुखद था।

वह घर जहाँ शार्लोट गई थीं।

वी

एक गवर्नेस के रूप में जीवन।

परिवार के खर्चों को कम करने और ब्रैनवेल को रॉयल अकादमी में कला का संपूर्ण प्रशिक्षण दिलाने की आशा से प्रेरित होकर, शार्लोट ने एक गवर्नेंस के रूप में काम करने का निश्चय किया। उनकी पहली नौकरी रोहेड स्थित उनके पुराने स्कूल में थी, जहाँ वे अपनी सहेली मिस वूलर के साथ थीं और जहाँ वे अपनी विश्वासपात्र मिस एन — — के घर के बहुत करीब रहती थीं। एमिली कुछ समय के लिए उनके साथ गईं, लेकिन जल्द ही उनकी तबीयत खराब हो गई और उन्हें ग्रामीण इलाकों की याद सताने

लगी, और कुछ ही महीनों के अनुभव के बाद वे हॉवर्थ लौट आईं। ब्रोंटे बहनों के गवर्नेंस के रूप में जीवन को लेकर काफी सहानुभूति दिखाई गई है; और मैं यह कहने को तैयार नहीं हूँ कि यह सहानुभूति पूरी तरह से अनुचित है। उनका संयम, एक-दूसरे के प्रति उनका स्नेह, और दुनियादारी से उनका अनभिज्ञ होना, इन सबने मिलकर "गवर्नेंस कहलाने वाले वर्ग के लिए जीवन का जो प्याला होता है" — शार्लोट के अपने शब्दों में — उन्हें विशेष रूप से अरुचिकर बना दिया। लेकिन यह मानना गलत होगा कि उनके साथ गवर्नेंस के रूप में कठोर व्यवहार किया गया था, या कम से कम शार्लोट को अपनी परेशानियाँ असहनीय लगी थीं। हॉवर्थ की स्वतंत्रता और पारिवारिक साथ को त्यागकर किसी अजनबी के घर में मेहनत और अकेलेपन को स्वीकार करना निश्चित रूप से अप्रिय था; लेकिन यह एक कर्तव्य था, और कम से कम दो बहनों ने इसे बिना किसी शिकायत के स्वीकार कर लिया था। एमिली का स्वभाव अजनबियों के बीच रहने के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त था; उसने अपने संकोच को दूर करने के कई प्रयास किए, लेकिन सभी व्यर्थ रहे; और यॉर्कशायर के विभिन्न हिस्सों में एक-दो परिवारों में थोड़े समय के अनुभव के बाद, वह अपने पिता की गृहणी के रूप में स्थायी रूप से रहने के लिए हॉवर्थ लौट आई। ब्रोंटे बहनों के जीवन के इस प्रसंग पर विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। वे अपरिचित चेहरों के बीच रह रही थीं, और उनके पास अपने वास्तविक चरित्र को प्रकट करने का कोई प्रलोभन नहीं था, लेकिन शार्लोट द्वारा अपने दोस्तों को लिखे कुछ पत्रों के अंश उस समय उनके विचारों की कुछ झलक दिखाते हैं। एक-दो अलग-थलग वाक्यों को छोड़कर, ये पत्र श्रीमती गैस्केल की "जीवनी" के पाठकों के लिए काफी नए होंगे:

आपकी इच्छा के अनुसार आपको पत्र भेजने के अवसर की मैं प्रतीक्षा कर रहा था; लेकिन ऐसा कोई अवसर न मिलने के कारण मैंने अंततः डाक से पत्र लिखने का निश्चय किया है, क्योंकि मुझे डर है कि यदि मैंने और देरी की तो आप मेरी इस देरी को उदासीनता समझ लेंगी। मैं हमारे बीच की दूरी और फिर से मिलने में लगने वाले समय की कल्पना भी नहीं कर सकता। एलेन, मेरे पास आपको बताने के लिए कोई खबर नहीं है, कोई बदलाव नहीं है। आपसे आखिरी बार मिलने के बाद से मेरा जीवन पहले की तरह ही नीरस और एक जैसा बीत रहा है - सुबह से शाम तक बस पढ़ाना, पढ़ाना, पढ़ाना। मेरे जीवन में सबसे बड़ा बदलाव आपकी चिट्ठी, टी-शर्ट से आने वाली कॉल या किसी नई मनमोहक किताब से मिलने से ही आता है। "लाइफ ऑफ

ओबरलिन" और लेग रिचमंड की "डोमेस्टिक पोर्ट्रेटचर" इस श्रेणी की आखिरी किताबें हैं जिन्हें मैंने पढ़ा है। बाद वाली किताब ने मेरा ध्यान बहुत आकर्षित किया और मुझे अजीब तरह से मोहित कर लिया। इसे बिना देर किए प्राप्त करें, चाहे मांगें, उधार लें या चुरा लें, और "मेमोइर ऑफ रिचमंड" पढ़ें। उस संक्षिप्त और साधारण जीवन का वो छोटा सा वृत्तांत मैं कभी नहीं भूलूंगा। वो सुंदर है, न तो उसकी भाषा के कारण, न ही उसमें वर्णित घटनाओं के कारण, बल्कि इसलिए कि उसमें एक युवा, प्रतिभाशाली, सच्चे ईसाई के जीवन और मृत्यु का सरल वर्णन है। एलेन, वह किताब ले आओ (काश मेरे पास होती तो मैं तुम्हें दे पाता), उसे पढ़ो और मुझे बताओ कि तुम्हें वह कैसी लगी। कल मैंने सुना कि लंदन से ही तुम्हारी तबीयत खराब थी। आशा है अब तुम ठीक हो। क्या तुम पहले से ज़्यादा खुश हो? परिस्थितियों को स्वीकार करने की कोशिश करो और उस धैर्य का सहारा लो, जो मुझे पता है कि तुममें भरपूर है। तुम्हारी अनुपस्थिति ने मेरे मन में एक खालीपन छोड़ दिया है, जिसे भरने के लिए अभी तक कुछ भी पर्याप्त नहीं मिला है। मैं रात दस बजे का समय नहीं भूलता। मुझे हर रात याद आता है, और अगर तुम्हारी भलाई के लिए मेरी सच्ची प्रार्थना से तुम्हें कुछ लाभ होगा, तो तुम्हें ज़रूर होगा। मुझे पता है बाइबल कहती है: "धर्मी की प्रार्थना बहुत कारगर होती है," और मैं धर्मी नहीं हूँ। फिर भी, मेरा मानना है कि ईश्वर सच्चे मन से की गई किसी भी प्रार्थना को अस्वीकार नहीं करता। मेरी प्यारी ई——, अलविदा। मैं अब और नहीं लिख सकती, क्योंकि मुझे एक कम सुखद काम के लिए बुलाया गया है।

ड्यूसबरी मूर, 2 अक्टूबर, 1836।

मुझे आपको एक सप्ताह पहले ही पत्र लिखना चाहिए था, लेकिन हाल ही में मेरा समय इतना व्यस्त रहा है कि अब तक मुझे आपके पिछले पत्र का उत्तर देने का अवसर ही नहीं मिला। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे विलंबित पत्र का इतनी जल्दी उत्तर मिलने पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है। इससे मुझे आत्म-निंदा का भी आभास हुआ… मेरी बहन एमिली ने हैलिफ़ैक्स के पास लगभग चालीस विद्यार्थियों वाले एक बड़े विद्यालय में शिक्षिका के रूप में कार्यभार संभाला है। उसके जाने के बाद से मुझे उसका केवल एक पत्र मिला है। उसमें उसके कर्तव्यों का भयावह वर्णन है। सुबह छह बजे से रात लगभग ग्यारह बजे तक कड़ी मेहनत, जिसके बीच में केवल

आधा घंटा व्यायाम मिलता है। यह तो गुलामी है। मुझे डर है कि वह इसे सहन नहीं कर पाएगी। प्रिय एलेन, यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि अंततः आपको कुछ ऐसे साथी मिल गए हैं जिनकी सोच आपसे मिलती-जुलती है। मैं इससे अधिक नीरस जीवन की कल्पना नहीं कर सकता जो ऐसे दृश्यों, ध्वनियों और साथियों के बीच व्यतीत हो जो हमारे भीतर की प्रकृति से बिल्कुल भिन्न हों। आपके पत्रों के लहजे से ऐसा लगता है कि आपका मन पहले की तरह ही स्थिर है, न तो किसी नई बात से चकाचौंध हुआ है और न ही किसी बुरे उदाहरण से प्रभावित हुआ है। इसके लिए मैं आभारी हूँ। — — से संबंधित पैराग्राफ पढ़कर मुझे मुस्कुराने से खुद को रोकना मुश्किल हो गया। उनमें आपके चरित्र की स्वाभाविक, सांसारिकता से परे सादगी की झलक थी। एलेन, यकीन मानिए, हर इंसान का एक काला पक्ष होता है। हालांकि कुछ लोग अपनी कमियों को छिपाने की कला जानते हैं, लेकिन करीबी जान-पहचान धीरे-धीरे उस पर्दे को हटा देती है और एक-एक करके दाग दिखने लगते हैं; अंत में हमें पूर्णता का वह रूप दिखाई देता है जो दागों से पूरी तरह ढका हुआ है, जिन्हें स्नेह भी नहीं मिटा सकता।

उसकी सहेली की स्नेहपूर्ण प्रशंसाओं के साथ-साथ लगातार ऐसी बातें भी कही जाती हैं जिनका स्वरूप उससे बिल्कुल अलग होता है।

अपने एक पत्र में वह लिखती हैं, “अगर मुझे लोग पसंद आते हैं, तो उन्हें बताना मेरा स्वभाव है, और मैं तुम्हारे घमंड को हवा देने से नहीं डरती। तुम्हारा असली आकर्षण धर्म से आता है, और ईश्वर करे कि इसका प्रभाव तुम्हें हमेशा पवित्र, सरल और परोपकारी बनाए रखे, जैसे तुम अब हो। तुम्हारे सामने मैं क्या हूँ? तुलना करते समय मुझे अपनी ही तुच्छता का एहसास होता है। मैं तो एक बहुत ही साधारण, तुच्छ इंसान हूँ! मुझमें कुछ ऐसी आदतें हैं जो मुझे बहुत दुखी करती हैं, कुछ ऐसी भावनाएँ हैं जिनमें तुम शामिल नहीं हो सकते—जिन्हें दुनिया में बहुत कम लोग ही समझ सकते हैं। मुझे इन आदतों पर गर्व नहीं है। मैं इन्हें जितना हो सके छिपाने और दबाने की कोशिश करती हूँ, लेकिन कभी-कभी ये फूट पड़ती हैं, और फिर जो लोग इस विस्फोट को देखते हैं वे मुझसे नफरत करते हैं, और मैं कई दिनों तक खुद से नफरत करती रहती हूँ।”

एलेन, मैंने तुम्हें जितने भी पत्र लिखे हैं, सब जल्दबाजी में लिखे हैं। अब मैं इस मौके का फायदा उठा रही हूँ। श्रीमान जे — — यहाँ हैं; उनके ज़रिए ये पत्र मिस ई

— — तक, उनके ज़रिए एक्स — — तक और उनके ज़रिए तुम तक पहुँचेंगे। मैं तुम्हें मुझसे मिलने न आने के लिए दोष नहीं देती। मुझे यकीन है कि तुम्हारे पास पर्याप्त कारण रहे होंगे; लेकिन मैं तुमसे मिलने के लिए तरस रही हूँ, और आशा करती हूँ कि जल्द ही कम से कम कुछ पल के लिए तो मेरी यह इच्छा पूरी हो जाएगी। अगले शुक्रवार, अगर सब ठीक रहा, तो मैं जी — — जाऊँगी। रविवार को मुझे उम्मीद है कि कम से कम तुम्हारी एक झलक तो मिल ही जाएगी। मैं हफ़्तों से तुम्हारे आने की उम्मीद में जी रही हूँ। हफ़्तों से हफ़्तों मुझे निराशा ही हाथ लगी है। मैंने तुम्हें लिखे अपने आखिरी पत्र में जो कहा, उसका मुझे कोई पछतावा नहीं है। वो बात मैंने सहानुभूति और दया के कारण कही थी, जिसके लिए मैं कभी भी पर्याप्त रूप से आभारी नहीं हो सकती। मैं एक अजीब सी मानसिक स्थिति में हूँ; अभी भी उदास हूँ, लेकिन निराश नहीं। मैं सही करने की कोशिश करती रहती हूँ, गलत भावनाओं को रोकती रहती हूँ; गलत विचारों को दबाते हुए भी, हर पल मैं भटक जाता हूँ। मुझमें हमेशा उन लोगों को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति रहती है जो मुझसे कहीं बेहतर हैं। एक खास समूह का हिस्सा बनने के विचार से ही मुझे घृणा होती है—डर लगता है कि कहीं ज़रा सा भी दावा करने पर मैं पाखंड में डूब न जाऊँ, पूरी तरह से आत्म-धर्मी लोगों की श्रेणी में विलीन न हो जाऊँ। इस समय लिखते हुए मुझे धार्मिक उपदेशों जैसे लगने वाले एक भी शब्द का प्रयोग करने के विचार से घृणा होती है। मैं खुद से नफरत करता हूँ; मैं खुद को तुच्छ समझता हूँ। अगर केल्विन का सिद्धांत सच है, तो मैं पहले से ही समाज से बहिष्कृत हूँ। आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि मेरी भावनाएँ कितनी कठोर, विद्रोही और अड़ियल हैं। जब मैं इस विषय पर अध्ययन करना शुरू करता हूँ तो मेरी भावनाएँ लगभग ईश्वर-निंदा और नास्तिकता की ओर झुक जाती हैं। मुझे मत छोड़ो—मुझसे भयभीत मत हो। तुम जानते हो कि मैं कैसा हूँ। काश मैं तुम्हें देख पाता, मेरी प्रियतमा। मैंने अपने अत्यंत प्रेम और दृढ़ हृदय से तुम पर असीम स्नेह बरसाया है। अगर ठंड लगने लगी तो खेल खत्म।

आपके प्यारे पत्र का संक्षिप्त और सारगर्भित उत्तर देने के लिए क्षमा करें, क्योंकि जिस क्षण वह मुझे मिला और जिस क्षण मैं उत्तर लिख रहा हूँ, पूरा घर सामान पैक करने और तैयारियों में व्यस्त है, क्योंकि आज हम सब घर जा रहे हैं। मेरी कमियों को लेकर आपकी सहानुभूतिपूर्ण टिप्पणी दयालु और उदार है, लेकिन मैं इसकी सच्चाई पर विश्वास नहीं कर सकता। शायद ही कोई इतनी उदारता से मेरी कमियों को देखता

हो, जितनी आप देख रही हैं। आपकी सांत्वना भरी सलाहें दयालु हैं, एलेन; और जब मैं उन्हें शांति से और अकेले में पढ़ पाऊँगा, तो मुझे विश्वास है कि मुझे उनसे सांत्वना मिलेगी। लेकिन अभी, मेरे मन की इस अशांत और उत्तेजित अवस्था में, मैं उनमें निहित पवित्र आत्मा को नहीं समझ पा रहा हूँ। इस विषय को आगे बढ़ाना मेरे लिए अनुचित होगा। मेरे विचार अन्य बातों में उलझे हुए हैं। आपने हॉवर्थ की अपनी यात्रा का उल्लेख नहीं किया है। क्या आपने परिवार से इस बारे में बात की है? क्या वे आपको आने देने के लिए सहमत हुए हैं? लेकिन मैं घर पहुँचकर लिखूँगा। पिछले शुक्रवार से मैं आधे साल के पाठों को पूरा करने में पूरी तरह व्यस्त रही हूँ, जो भूगोल संबंधी प्रश्नों में भयानक कोहरे के साथ समाप्त हुए (सोचिए, श्रीमती — — और — — को यह समझाना कितना मुश्किल होता!), और उसके बाद श्रीमती — — के कपड़े सिलने में लगी रही। श्रीमती — — मुझे फोन कर रही हैं: मेरी शिष्या की नाइट कैप के बारे में कुछ बात है। अलविदा। आशा है हम जल्द ही फिर मिलेंगे।

यहां यह देखा जा सकता है कि धार्मिक संघर्ष फिर से शुरू हो गया था। जिस महिला पर बाद में "मूर्तिपूजा" का आरोप लगाया गया, वह वैसी ही यातनाएं झेल रही थी जैसी कूपर ने अपने सबसे बुरे समय में झेली थीं, और उनकी ही तरह, वह इस संघर्ष के बीच आस्था, विनम्रता और धैर्य प्राप्त कर रही थी। लेकिन इस तरह के पत्र केवल छिटपुट हैं; आम तौर पर वह हंसमुख, कभी-कभी तो बेहद प्रसन्नतापूर्वक लिखती हैं।

रो हेड स्कूल।

क्वार्टरली के समीक्षक और अन्य परोपकारी लोग, जिन्होंने खुले तौर पर यह घोषणा की थी कि "जेन आयर" की लेखिका एक अनुचित व्यक्ति थीं, जिन्होंने एक अनुचित पुस्तक लिखी थी, क्या कहते यदि उन्हें बताया जाता कि उन्होंने अपने पहले विवाह प्रस्ताव के विषय पर निम्नलिखित पत्र लिखा था - वह भी तब जब वह एक गवर्नेंस थीं, और इस तथ्य के बावजूद कि उस प्रस्ताव ने उन्हें अपने भविष्य के जीवन के बारे में सभी चिंताओं से मुक्ति पाने का मार्ग प्रदान किया था?

आपने मुझसे पूछा कि क्या मुझे टी — — का पत्र मिला है? लगभग एक सप्ताह हो गया है। मैं स्वीकार करती हूँ कि पत्र की सामग्री ने मुझे थोड़ा आश्चर्यचकित किया; लेकिन मैंने इसे अपने तक ही सीमित रखा, और यदि आपने मुझसे इस विषय पर प्रश्न न किया होता तो मैं इस पर ध्यान भी न देती। टी — — का कहना है कि वह — — में आराम से रह रहा है, और उसका स्वास्थ्य काफी सुधर गया है। फिर वह संकेत देता है कि उचित समय पर उसे एक पत्नी की आवश्यकता होगी, और स्पष्ट रूप से मुझसे वह पत्नी बनने का अनुरोध करता है। कुल मिलाकर पत्र बिना किसी

बनावट या चापलूसी के, और व्यावहारिक शैली में लिखा गया है जो उसके विवेक को दर्शाता है। अब इस प्रस्ताव में कुछ ऐसी बातें थीं जो एक मजबूत प्रलोभन साबित हो सकती थीं। मैंने सोचा कि अगर मैं शादी कर लूँ तो — — मेरे साथ रह सकता है, और मैं कितनी खुश रहूँगी। लेकिन फिर मैंने खुद से दो सवाल पूछे: क्या मैं टी — — से उतना ही प्यार करती हूँ जितना एक स्त्री को अपने पति से करना चाहिए? क्या मैं उसे खुश करने के लिए सबसे योग्य व्यक्ति हूँ? अफसोस! मेरे अंतरात्मा ने इन दोनों सवालों का जवाब "नहीं" दिया। मुझे ऐसा लगा कि यद्यपि मैं टी — — का सम्मान करती थी, यद्यपि मेरे मन में उनके प्रति एक सौम्य भाव था, क्योंकि वे एक मिलनसार और सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे, फिर भी मेरे मन में उनके लिए वह तीव्र लगाव नहीं था और न ही कभी हो सकता था जो मुझे उनके लिए मरने को तैयार कर दे — और यदि कभी मेरी शादी हुई तो मैं अपने पति को उसी श्रद्धा भाव से देखूंगी। दस में से एक संभावना है कि मुझे फिर कभी ऐसा मौका नहीं मिलेगा; लेकिन कोई बात नहीं। इसके अलावा, मुझे पता था कि वे मेरे बारे में इतना कम जानते हैं कि उन्हें शायद ही पता हो कि वे किसे लिख रहे हैं। क्यों, मुझे मेरे स्वाभाविक घरेलू रूप में देखकर वे चौंक जाएंगे। वे सोचेंगे कि मैं सचमुच एक बेबाक, रोमांटिक उत्साही हूँ। मैं अपने पति के सामने सारा दिन गंभीर चेहरा बनाकर नहीं बैठ सकती थी। मैं हँसती, व्यंग्य करती और जो मन में आता वही कह देती; और यदि वे एक चतुर व्यक्ति होते और मुझसे प्यार करते, तो उनके सामने दुनिया के सारे पलड़े हवा के समान हल्के होते। क्या मैं, अपने मन की ऐसी प्रवृत्ति को जानते हुए, ईमानदारी से कह सकती थी कि मैं टी — — जैसे गंभीर और शांत युवक से शादी करूँगी? नहीं; यह उनके साथ विश्वासघात होता, और इस तरह का विश्वासघात मुझे शोभा नहीं देता। इसलिए मैंने उन्हें एक लंबा पत्र लिखा जिसमें मैंने यथासंभव विनम्रता से अपनी अस्वीकृति व्यक्त की, और साथ ही स्पष्ट रूप से अपनी अस्वीकृति के कारण भी बताए। मैंने उन्हें यह भी बताया कि मेरे विचार से किस प्रकार की महिला उनके लिए पत्नी के रूप में उपयुक्त होगी।

वह लड़की जिसने इतने शांत भाव से एक उचित प्रस्ताव को ठुकरा दिया और अपने भरोसेमंद दोस्त को ईमानदारी से इसके कारण बताए, आलोचकों और जनता द्वारा चित्रित "जेन आयर" की लेखिका से बिल्कुल अलग थी। शायद उपरोक्त पत्र में वर्णित अस्वीकृति की पूरी कीमत तभी स्पष्ट होती है जब इसकी तुलना इसके तुरंत बाद किए गए निम्नलिखित स्वीकारोक्ति से की जाती है:

जब मैं इस बात पर विचार करती हूँ कि मुझे अपना जीवन एक गवर्नेस के रूप में बिताना पड़ेगा, तो मैं बहुत दुखी हो जाती हूँ। मेरे विचार से इस पद के लिए सबसे ज़रूरी गुण है परिस्थितियों को सहजता से स्वीकार करना और जहाँ भी हों, वहाँ सहज और घर जैसा महसूस करना — ये ऐसे गुण हैं जिनकी हमारे परिवार में किसी को भी कमी नहीं है। मैं जानती हूँ कि मैं श्रीमती — — जैसी महिला के साथ नहीं रह सकती; लेकिन मुझे उम्मीद है कि सभी महिलाएँ उनके जैसी नहीं हैं, और मेरा आदर्श वाक्य है, "फिर से कोशिश करो।"

वह जीवन भर दूसरों के सुख-दुख में समान रूप से सहानुभूति रखने में कितनी सक्षम थीं, यह उनके जीवनकाल में लिखे गए कई पत्रों से सिद्ध होता है। निम्नलिखित पत्र उनकी विशेष मित्र के प्रति उनकी कोमल और हार्दिक सहानुभूति की उन अभिव्यक्तियों में से न तो सबसे प्रारंभिक है और न ही सबसे विशिष्ट, जो उनके पत्राचार में पाई जाती हैं, लेकिन चूंकि श्रीमती गैस्केल ने इसका उपयोग नहीं किया है, इसलिए मैं इसे यहां उद्धृत कर रहा हूं:

1838.

जब आपका पत्र मुझे मिला, तब हम नाश्ता कर रहे थे, इसलिए मैं बहुत जल्दी में लिख रहा हूँ। आपकी मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। मुझे विश्वास है कि ईश्वर या तो उन्हें दूर कर देंगे या आपको उन्हें सहने की शक्ति देंगे। काश मैं आपके पास आकर अपनी पूरी मदद कर पाता! लेकिन यह असंभव है। मैं आपको सांत्वना देने की हिम्मत भी नहीं कर पा रहा हूँ—कहीं मेरी सांत्वना उपहास जैसी न लगे। मैं जानता हूँ कि बीमारी के समय अजनबी यह नहीं समझ सकते कि रिश्तेदार कैसा महसूस करते हैं। लेकिन एक बात मैं आपको याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है। आपने इसे पहले भी कई बार दोहराया होगा: ईश्वर सब कुछ अच्छे के लिए करता है; और अगर सबसे बुरा भी हो जाए, और मृत्यु आशा को पूरी तरह से नष्ट कर दे, तो याद रखना कि यह आपके उस दृढ़ विश्वास और शांत भक्ति की एक परीक्षा होगी, जिसने आपको इतने लंबे समय तक एक ईसाई के रूप में पहचान दी है। हालाँकि, मैं आशा करता हूँ कि इस परीक्षा का समय अभी नहीं आया है, आपका भाई ठीक हो जाए, और सब ठीक हो जाए। यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ कि आपका स्वास्थ्य इतना खराब है। एक बार फिर, काश मैं तुम्हारे साथ होता, कम से कम सहानुभूति से ही उस बोझ को हल्का कर पाता जो तुम पर इतना भारी पड़ रहा है। इतनी भागदौड़ और दुख के बीच मुझे याद

करने के लिए धन्यवाद। हम सब दुख में स्वार्थी हो जाते हैं। लेकिन जहाँ तक मैंने देखा है, तुम्हारे साथ ऐसा नहीं है। मैं तुमसे दोबारा कब मिल पाऊँगा? इस सवाल के जवाब की अनिश्चितता मुझे दुखी कर देती है। हर परिस्थिति में, हर मौके में, मुझे विश्वास है कि मैं तुम्हें वैसे ही प्यार करूँगा जैसे अभी करता हूँ। हम एक-दूसरे के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और एक-दूसरे को याद कर सकते हैं। दूरी यादों को रोक नहीं सकती। तुमने मुझे पत्र लिखने का वादा किया है, और मुझे पूरा विश्वास है कि तुम अपना वादा निभाओगे। एम—— और तुम्हारी माँ को मेरा प्यार देना। मेरी शुभकामनाएँ और प्यार, और तुम्हारे कल्याण के लिए हार्दिक दुआएँ अपने साथ ले जाना।

एक निजी परिवार में दाई के रूप में अपने एक कार्यकाल के दौरान (वह बहुत पहले मिस वूलर के घर के आरामदायक आश्रय को छोड़ चुकी थीं) उन्होंने 1841 में पत्रों की एक श्रृंखला लिखी, जिसमें उन्होंने दिखाया कि उन्हें "गवर्नेस कहलाने वाले वर्ग के लिए जीवन का जो स्वरूप होता है, वह कितना कम पसंद था।"

रात के बारह बज रहे हैं; लेकिन सोने से पहले मुझे आपको एक पत्र लिखना ही होगा। अगर आपको लगता है कि मैं आपका निमंत्रण ठुकरा दूँगा, या आपने मुझे यह सोचकर भेजा है, तो आप गलत हैं। आपका वह छोटा सा पत्र पढ़ते ही मैंने तुरंत हिम्मत जुटाई, तुरंत श्रीमती — — के पास गया, उनसे सवाल पूछा, और दो मिनट तक कोई जवाब नहीं मिला। मैंने सोचा, "क्या वह मुझे मना कर देंगी जब मैं उनके लिए इतनी मेहनत करता हूँ?" मैडम ने अनिच्छा से, ठंडे स्वर में कहा, "हाँ — —।" मैंने अत्यंत विनम्रता से कहा, "धन्यवाद मैडम!" और कमरे से बाहर जाने ही वाला था कि उन्होंने मुझे वापस रोकते हुए कहा, "तो बेहतर होगा कि आप शनिवार दोपहर को जाएँ, जब बच्चों की छुट्टी होती है, और अगर आप सोमवार सुबह उनके सभी पाठों के लिए समय पर लौट आते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि ज्यादा नुकसान होगा।" मैंने सोचा, आप तो बिल्कुल ही अजीब हैं; लेकिन फिर भी मैं मान गया, और इस तरह सौदा हो गया। तो अगले शनिवार के बाद वाला दिन तय हो गया है। मैं आऊंगा, ईश्वर जानता है, कृतज्ञता और प्रसन्नता से भरे हृदय से, एक दिन की परिश्रम की छुट्टी पाकर प्रसन्न होकर। अगर आप गाड़ी नहीं भेजेंगे तो मैं पैदल ही आ जाऊंगा। मैं स्वतंत्रता का आनंद लेने आ रहा हूं; कुछ सुखद और सौहार्दपूर्ण बातचीत करने और दो-तीन चेहरों को देखने के लिए जिन्हें मैं पसंद करता हूं। ईश्वर आपका भला करे! मैं आपसे फिर मिलना चाहता हूं। अगले शनिवार दोपहर के लिए शुभकामनाएं! शुभ

रात्रि, मेरी प्रियतमा!

पिछले तीन हफ़्तों से घर में "पूरी तरह से सफ़ाई" नाम का वो घिनौना काम चल रहा था। अब वो लगभग पूरा हो चुका है, जिसके लिए मैं भगवान का शुक्रगुज़ार हूँ, क्योंकि इस दौरान मैंने नर्स और गवर्नेस दोनों की भूमिका निभाई, जबकि नर्स रसोइया और नौकरानी बन गई। वैसे, वो नर्स अब तक की सबसे खूबसूरत लड़की है... मुझे लगने लगा था कि श्रीमती - - अपनी उछल-कूद और चटपटी बातों, खराब व्याकरण और उससे भी बदतर वर्तनी के बावजूद एक अच्छी महिला हैं; लेकिन मुझे उनके चरित्र की एक छोटी सी आदत का अनुभव हुआ है, जिसने उन्हें मेरी नज़र में हमेशा के लिए बदनाम कर दिया है। किसी व्यक्ति के साथ लंबे समय तक बराबरी का व्यवहार करने के बाद, अगर कोई छोटी सी बात भी गड़बड़ हो जाती है, तो वो बहुत ही भद्दे और असभ्य तरीके से गुस्सा करने में ज़रा भी संकोच नहीं करतीं, हालाँकि न्याय के लिहाज़ से जहाँ वो सारा दोष डालती हैं, वहाँ किसी को दोष नहीं दिया जा सकता। मुझे लगता है कि क्रोध ही अशिष्टता या परिष्कार की असली कसौटी है। ये जगह अभी बेहद खूबसूरत लग रही है। यहां का परिसर वाकई बेहद खूबसूरत है, और चारों ओर पन्ना की तरह हरा-भरा है। काश आप आकर इसे देख लेते।

VI.

निर्णायक मोड़।

शार्लोट ब्रोंटे के जीवन का "तूफान और तनाव" का दौर वैसा नहीं था जैसा दुनिया

मानती है। बाकी इंसानों की तरह, उन्हें भी जंगल में अपनी लड़ाई खुद लड़नी पड़ी, एक नहीं बल्कि कई शैतानों से; और जीवन की नई राहों पर मंडराते प्रलोभनों से उनका यही तीखा संघर्ष था जिसने उन्हें वो बनाया जो वो थीं। दुनिया मानती है कि पादरी के घर में ही "जेन आयर" की लेखिका ने वे अनमोल अनुभव प्राप्त किए जो बाद में उनके लिए इतने उपयोगी साबित हुए। श्रीमती गैस्केल, जो कठोर बुराइयों के प्रति अपने सच्चे नारीवादी भय से प्रेरित थीं, हमें यह समझाती हैं कि बहनों के इतिहास का दुखद मोड़ उनके भाई के अपमान और बर्बादी से जुड़ा था। हमसे यह भी मानने को कहा जाता है कि अगर उस अकेली महिला की मूर्खता न होती, जिसे शायद शार्लोट ने कभी देखा ही न हो, तो "कुरर बेल" कभी कलम न उठातीं, और साधारण से हॉवर्थ के दागदार और खुरदुरे माथे पर यश की आभा न चमकती।

ऐसा नहीं है। ब्रोंटे रोमांस की परंपराओं में पले-बढ़े लोगों को शायद निराशा हो जब उन्हें पता चले कि वास्तविकता उनकी धारणा से भिन्न है; कुछ सतही आलोचक तो यह भी मान सकते हैं कि जब यह सिद्ध हो जाता है कि अपने भाई के पतन से उत्पन्न भय ने शार्लट को साहित्यिक अभिव्यक्ति में सांत्वना खोजने के लिए प्रेरित नहीं किया, तो शार्लट का नैतिक कद कम हो जाता है। लेकिन सच्चाई तो बताई जानी चाहिए; और जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे उस सच्चाई में ऐसा कुछ भी नहीं दिखता जो उस महिला की प्रसिद्धि और सम्मान को, चाहे जरा सा भी, प्रभावित करे जिसके बारे में मैं लिख रहा हूँ।

शार्लोट की ब्रुसेल्स यात्रा, पहले एक छात्रा के रूप में और बाद में मैडम हेगर के विद्यालय में एक शिक्षिका के रूप में, उनके जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुई, जिसने उनके जीवन की दिशा बदल दी और उसे एक नया उद्देश्य और अर्थ प्रदान किया। उस यात्रा से पहले तक वह यॉर्कशायर की एक सरल, दयालु और सच्ची लड़की थीं, जिनमें विलक्षण प्रतिभाएँ थीं, जो कभी-कभी तीव्र आवेगों से प्रेरित हो जाती थीं, अक्सर ऐसी भावनाओं से व्याकुल हो जाती थीं जिनकी प्रकृति को वह समझ नहीं पाती थीं, लेकिन हमेशा अपने सीमित अनुभवों और जीवन एवं संसार के सीमित ज्ञान से घिरी रहती थीं। बेल्जियम जाने से पहले तक, उनकी सबसे बड़ी परेशानियाँ अजनबियों की संगति के प्रति उनकी अरुचि से जुड़ी थीं, उनका सबसे भारी बोझ उस "गवर्नेस के लिए बने जीवन के प्याले" का स्वाद चखने की मजबूरी थी, जिससे उन्हें घोर घृणा थी। इस विश्वास के साथ कि यदि वे एक बार फ्रेंच और जर्मन

भाषाओं की बारीकियों में पारंगत हो जाएँ तो वे अपना खुद का विद्यालय चलाने के योग्य हो जाएँगी, वह और एमिली ब्रुसेल्स की इस यात्रा पर निकल पड़ीं।

अगर उसने अपने शुरुआती दिनों में गवर्नेस के तौर पर मिले विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया होता और एक गंभीर अंग्रेज सज्जन की वफादार पत्नी बनकर बस गई होती, तो उसके भविष्य के बारे में अटकलें लगाना स्वाभाविक है। उस स्थिति में शायद "शर्ली" लिखा जाता, लेकिन "जेन आयर" और "विलेट" कभी नहीं। उसने बेल्जियम की राजधानी में अपने दो साल के प्रवास के दौरान बहुत कुछ सीखा; लेकिन वहाँ रहते हुए उसने जो सबसे महत्वपूर्ण सबक सीखा, वह था आत्मज्ञान, जिसका स्वाद भले ही कड़वा हो, लेकिन जीवन के लिए बहुत लाभकारी होता है। श्रीमती गैस्केल ने इंग्लैंड से निर्वासन में बिताए लंबे महीनों के दौरान लिखे गए पत्रों का इतना भरपूर उपयोग किया है कि उनमें से चुनने के लिए अपेक्षाकृत बहुत कम बचा है। इस समय उसकी कहानी की बाहरी परिस्थितियों के बारे में सभी जानते हैं। थोड़े समय के लिए उसे एमिली का साथ मिला; और दोनों बहनें, समय ही धन है यह बात समझने वाले लोगों की तरह अथक परिश्रम से एक साथ काम कर रही थीं। वे खुश और आशावान थीं, विदेशी राजधानी के नए-नए नज़ारों का आनंद ले रही थीं, हर दिन नए अनुभव प्राप्त कर रही थीं और उस पल का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थीं जब वे अपने परिचित हॉवर्थ लौटेंगी और पादरी के घर की दीवारों के भीतर अपना खुद का स्कूल खोलकर अपने जीवन के सपने को साकार करेंगी। लेकिन फिर एमिली चली गई, और शार्लोट, घर पर कुछ समय बिताने के बाद, अकेली लौट आई। वर्षों बाद, अपनी सहेली को लिखते हुए, वह अपनी वापसी के बारे में इन शब्दों में बताती है: “चाची की मृत्यु के बाद, मैं अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध ब्रसेल्स लौट आई, उस समय जो एक अनियंत्रित आवेग जैसा लग रहा था, उसी ने मुझे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया। मुझे अपनी स्वार्थी मूर्खता की सज़ा दो साल से अधिक के सुख और मन की शांति से पूरी तरह वंचित रहने के रूप में मिली।” वह अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध क्यों लौटी? उसके दोस्तों ने बताया कि उसका भावी पति सेंट गुडुल की घंटियों की ध्वनि के पास कहीं रहता था, और उसने ब्रसेल्स लौटने पर ज़ोर दिया क्योंकि उसकी शादी वहीं होने वाली थी। अब हम जानते हैं कि वास्तविकता कितनी अलग थी। जिस पति का वह इंतज़ार कर रही थी, वह उस समय हॉवर्थ में प्रेम की अपनी लंबी शिक्षा शुरू करने ही वाला था। फिर भी, उसका दिल भले ही न धड़का हो, लेकिन उसकी आत्मा बेल्जियम

के उस शहर में कैद हो गई थी। उसके पत्रों में हमें उस समय के उसके जीवन की सच्चाई नहीं मिलती। सच्चाई तो है, पर पूरी नहीं। लूसी स्नो कहती हैं, "बेहोशी और भयानक समाधि की अवस्था में, मैंने अपने स्वभाव के सार को बड़ी सावधानी से थामे रखा... सतह पर तो आम नज़र ही पड़ती है।" उसके आंतरिक जीवन के रहस्यों को कागज़ पर उतारना मुमकिन नहीं था, भले ही वे पंक्तियाँ सिर्फ़ उसकी सहेली और विश्वासपात्र के लिए ही लिखी गई थीं। जैसा कि हम सब जानते हैं, कुछ बातें दिल सहज प्रवृत्ति से छुपा लेता है, और यहाँ तक कि खुले और स्पष्ट स्वभाव वाले लोग भी मजबूरी में ही उन्हें प्रकट करते हैं। अक्टूबर 1843 में ब्रुसेल्स से अपनी सहेली को लिखते हुए, वह कहती हैं: “मुझे बहुत कुछ कहना है, एलेन; कई छोटी-छोटी अजीब बातें, विचित्र और पेचीदा, जिन्हें मैं पत्र में लिखकर बताना नहीं चाहती, लेकिन शायद एक दिन, या बल्कि एक शाम, अगर कभी हम हॉवर्थ या बी—— में आग के पास, फेंडर पर पैर रखकर, बाल संवारते हुए फिर से मिलें, तो मैं तुम्हें बता सकती हूँ।” ब्रुसेल्स में बिताए अपने आखिरी साल की सबसे कठिन बातों में से एक यह थी कि उन्हें अपने जीवन की सभी गहरी भावनाओं को अपने भीतर ही बंद रखना पड़ा, एक शांत और यहाँ तक कि उदासीन बाहरी रूप बनाए रखना पड़ा, जो आम लोगों की नज़रों को कुछ भी न बताए, उस परेशान, बेचैन दिल के ऊपर जो अंदर धड़क रहा था।

हॉवर्थ लौटने के कुछ ही दिनों बाद, वह अपनी सहेली से रोते हुए पूछती है, “तुम्हें क्या लगता है मैं तुमसे कब मिल पाऊँगी?” “मुझे तुम्हें बहुत कुछ बताना है, और मुझे यकीन है कि तुम्हें भी मुझे बहुत कुछ बताना होगा—ऐसी बातें जिन्हें हम दोनों में से कोई भी कागज़ पर लिखना नहीं चाहेगा...। मुझे नहीं पता कि तुम भी मेरी तरह महसूस करती हो या नहीं, लेकिन अब कई बार मुझे ऐसा लगता है जैसे कुछ दोस्ती और स्नेह को छोड़कर मेरे सारे विचार और भावनाएँ बदल गई हैं। मेरे अंदर जो उत्साह हुआ करता था, वह अब शांत और टूटा हुआ सा है। मेरे भ्रम कम हो गए हैं। अब मैं सक्रिय प्रयास करना चाहती हूँ—जीवन में कुछ करना चाहती हूँ। हॉवर्थ मुझे एक सुनसान, शांत जगह लगती है, दुनिया से दूर, जैसे कहीं दबी हुई। मैं अब खुद को जवान नहीं समझती; दरअसल, मैं जल्द ही अट्ठाईस साल की हो जाऊँगी, और ऐसा लगता है जैसे मुझे भी दूसरों की तरह काम करना चाहिए और दुनिया की कठोर वास्तविकताओं का सामना करना चाहिए। लेकिन फिलहाल इस भावना को नियंत्रित करना मेरा कर्तव्य है, और मैं ऐसा करने का प्रयास करूँगी।”

हाँ; अब वह “मोहभंग” हो चुकी थी, और ब्रुसेल्स से वह एक ऐसा हृदय लेकर लौटी थी जो पहले जैसा हल्का और जीवंत कभी नहीं हो सकता था, एक ऐसी आत्मा जो फिर कभी उतनी उमंग से नहीं उड़ सकती थी, जितनी उन शुरुआती वर्षों में थी जब ज्ञान के वृक्ष का स्वाद अभी तक नहीं चखा गया था, और जीवन का रहस्य अभी तक प्रकट नहीं हुआ था। जैसा कि मैंने कहा है, बेल्जियम में यह प्रवास शार्लोट ब्रोंटे के करियर का एक महत्वपूर्ण मोड़ था, और इसका सच्चा इतिहास और अर्थ उनकी “जीवनी” और पत्रों में नहीं, बल्कि उनकी रचना “विलेट” में पाया जाता है, जो उनके मन की उत्कृष्ट कृति है, और उनके अपने हृदय के इतिहास के सबसे जीवंत अंशों का प्रकटीकरण है। “मैंने कहा था कि मुझे लूसी स्नो पसंद नहीं थी,” यह टिप्पणी श्रीमती गैस्केल ने शार्लोट ब्रोंटे के अपने संस्मरण में भोलेपन से दोहराई है। इस पर आश्चर्य की कोई बात नहीं है। लूसी स्नो को कभी भी सभी के द्वारा पसंद किए जाने के लिए नहीं बनाया गया था; लेकिन फिर भी लूसी स्नो वास्तविक शार्लोट ब्रोंटे की सबसे सच्ची तस्वीर है जो हमारे पास है; इस विचित्र नायिका के साथ घटी कई घटनाएं उसकी रचनाकार के जीवन से हूबहू ली गई हैं। "विलेट" में एक छोटी सी घटना - लूसी का रोमन कैथोलिक पादरी के पास अचानक जाना - शार्लोट के अपने अनुभव से ली गई है। विदेशी स्कूल में लंबी, एकांत छुट्टियों के दौरान, जब उसका मन बेचैन और व्याकुल था, हृदय भारी था, नसें तनावग्रस्त थीं, तो वह बड़े-बड़े खाली स्कूल के कमरों से निकलकर सड़क पर शांति की तलाश में निकल पड़ी; और उसे शायद शांति तो नहीं मिली, लेकिन कम से कम सहानुभूति तो मिली, एक पादरी की सलाह से, जो उस चर्च में कन्फेशनल में बैठा था जहाँ वह भटकती हुई गई थी। उस पादरी ने उस नन्ही विधर्मी पर दया दिखाई और उसे रोमन कैथोलिक धर्म में बांधने की कोशिश किए बिना उसकी व्याकुल आत्मा को शांत किया। इन्हीं अनुभवों से, एक सुधरे हुए हृदय और शांत स्वभाव के साथ, हालांकि पूरी तरह से टूटी नहीं, वह परिचित हॉवर्थ लौट आई, ताकि "दुनिया की कठोर वास्तविकताओं" का सामना कर सके।

शार्लट के मामले में हालात वाकई बेहद कठिन थे। उसका भाई, जो कभी परिवार की उम्मीद था, अब बोझ और अभिशाप बन चुका था; और उस पल से वह उस फिजूलखर्ची की तरह हो गया जिसके लिए कोई भी कीमती चीज़ नहीं काटी जाएगी। उसके पिता की नज़र कमज़ोर होती जा रही थी; वह और उसकी बहनें भी उम्र के साथ आगे बढ़ रही थीं, और "कुछ तो करना ही होगा।" शार्लट घर लौट आई थी, लेकिन

उसका दिल अब भी ब्रसेल्स में था, और उसकी आत्मा के पंख उस पिंजरे के खिलाफ़ बेचैनी से फड़फड़ाने लगे थे जिसमें वह कैद थी। यह तो वही पुरानी कहानी थी। वह दुनिया में गई थी, अजीबोगरीब खुशियाँ चखी थीं, और ऐसे कड़वे अनुभवों को जी भर कर जिया था जो उसे और भी प्यारे लगते थे। हॉवर्थ लौटकर वह एक नई औरत बनकर लौटी, ऐसे स्वाद और उम्मीदों के साथ जिन्हें उस पादरी के घर की नीरस ज़िंदगी से मिलाना मुश्किल था जिसने कभी उसे पूरी तरह संतुष्ट किया था।

"अगर मैं घर छोड़ सकती तो हॉवर्थ में नहीं होती," लौटने के तुरंत बाद वह कहती है। "मैं जानती हूँ कि जीवन बीत रहा है, और मैं कुछ नहीं कर रही, कुछ कमा नहीं रही; यह कभी-कभी बहुत कड़वा एहसास होता है, लेकिन मुझे इस धुंध से निकलने का कोई रास्ता नहीं दिखता।" और फिर, लगभग अपने जीवन में पहली बार, उसके होठों से निराशा की एक चीख सी निकलती है: "शायद, जब मैं घर छोड़ने के लिए स्वतंत्र हो जाऊँगी, तो मुझे न तो रहने की जगह मिलेगी और न ही नौकरी। शायद, मैं जीवन के सुनहरे दौर को भी पार कर चुकी होऊँगी, मेरी क्षमताएँ क्षीण हो जाएँगी, और मेरे थोड़े-बहुत ज्ञान काफ़ी हद तक भुला दिए जाएँगे। ये विचार कभी-कभी मुझे बहुत चुभते हैं; लेकिन जब भी मैं अपने अंतरात्मा से पूछती हूँ, तो वह पुष्टि करती है कि घर पर रहना मेरा सही फैसला है, और जब मैं मुक्ति की तीव्र इच्छा के आगे झुकती हूँ तो वह मुझे कड़वी फटकार लगाती है।"

लेकिन निजी भावनाओं का यह विस्फोट असाधारण था, और केवल एक कान से ही कहा गया था। अपने घर की चारदीवारी के भीतर शार्लोट फिर से गृहणी बन गईं, घरेलू कामों में व्यस्त हो गईं, और स्कूल चलाने की अपनी योजना को अमल में लाने के किसी अवसर की तलाश में रहीं। उन्होंने न तो घर की परेशानियों को, न ही अपने दिल के उस बोझ को, जिसे वह गुप्त रूप से सहती थीं, अपने मन को उदास और निराश होने दिया। श्रीमती गैस्केल की रचना पढ़ने वाले कई लोग मानते हैं कि शार्लोट ब्रोंटे पर जीवन की कठिनाइयों का यही प्रभाव पड़ा था। वास्तव में, वह इतनी मजबूत, साहसी, हंसमुख - लगभग मर्दाना - थीं कि ऐसी किसी भी स्वार्थी शिकायत के आगे झुकने का उनका कोई इरादा नहीं था। वह कभी भी उन कमजोर आत्माओं में से नहीं थीं जो "जीवन के दुखों पर उदास होकर यह सोचती रहती हैं कि ईश्वर का यह ब्रह्मांड इतनी प्रतिष्ठित हस्ती को पाकर कितना अयोग्य है।" जब उसके अपने दुख सबसे गहरे थे और उसकी किस्मत सबसे कठिन लग रही थी, तब भी उसे दूसरों के चरित्र और

भाग्य पर चर्चा करने में एक अलग ही आनंद मिलता था, और वह अपने दोस्तों के आंतरिक जीवन का विश्लेषण करने में उतना ही परिश्रम और समय लगाती थी जितना कि हमारे पाखंडी बायरन अपने स्वयं के भावों और संवेदनाओं के अध्ययन में लगाते हैं। वास्तव में, युवाओं में पाई जाने वाली आत्म-दया की भावना का उसके पत्रों में कोई अंश नहीं मिलता। अब तक अप्रकाशित यह पत्र, जो ठीक उसी समय लिखा गया था जब घर में सबसे अधिक अंधकार के बादल छाए हुए थे, उसकी अस्वस्थ आत्म-चेतना से मुक्ति और उसके आसपास के लोगों के कल्याण में उसकी गहरी रुचि को दर्शाता है:

आपने मुझे इतना लंबा और रोचक पत्र भेजा, इसके लिए आप सचमुच बहुत अच्छी लड़की हैं। रेलगाड़ी के डिब्बे में उस युवक और युवती के बारे में आपके पूरे विवरण से मुझे आपकी अवलोकन क्षमता का एहसास हुआ, जो आपकी कल्पना से कहीं अधिक दुर्लभ प्रतिभा है। आपको इसके लिए आभारी होना चाहिए। मैंने आज तक किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात नहीं की है जिसमें अवलोकन क्षमता न हो और जिसकी बातचीत रोचक हो, और न ही किसी ऐसे व्यक्ति से जिसके साथ मैं एक सुखद घंटा न बिता सकूँ। — — में व्यक्तियों के बारे में आपके उल्लेखों से मुझे आनंद आया। श्री जेड — — के बारे में आपने जो बताया है कि वे — — पर पूरा ध्यान देते हैं, उसकी सत्यता पर मुझे कोई संदेह नहीं है। लेकिन क्या कभी शादी होगी, यह एक अलग बात है। पैसा ही इस बात का फैसला करेगा, जैसा कि इसी तरह के अन्य मामलों में होता है। आपका यह कहना बिल्कुल सही है कि श्री जेड — — जितना खुद मानते हैं, उससे कहीं अधिक राय से प्रभावित होते हैं। पिछली बार जब मैं — — में था, तब मैंने उनके व्यक्तित्व को एक नए रूप में देखा। कई बार तो मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं होता था जब मैं सुनता था कि वे धन, दिखावट, परिवार और उन सभी सुविधाओं पर कितना जोर देते हैं जो दुनिया की मूर्तियाँ हैं। विवाह पर उनकी बातचीत (और उन्होंने इस विषय पर बहुत बातें कीं) किसी भी घिसे-पिटे धन-लोभी व्यक्ति की बातचीत से ज़रा भी अलग नहीं थी, सिवाय इसके कि उन्होंने अपने विशिष्ट और सहज साहस के साथ ऐसे विचार और सिद्धांत व्यक्त किए जिन्हें डरपोक लोग छुपाते हैं। बेशक, मैंने उनकी किसी भी बात का विरोध नहीं किया। मैं सुनता रहा और मन ही मन हँसता रहा यह सोचकर कि आठ साल पहले अगर किसी ने ज़ेड पर धन-दौलत और स्वार्थ का उपासक होने का आरोप लगाया होता तो

मैं कितना क्रोधित होता। वास्तव में, मैं अब भी मानता हूँ कि दस साल पहले वाला ज़ेड आज का ज़ेड नहीं है। दुनिया ने अपनी कठोरता और स्वार्थ से उन्हें पूरी तरह बदल दिया है। वे खुद को सबसे बुद्धिमान से भी अधिक बुद्धिमान समझते हैं। सांसारिक दृष्टि से वे बुद्धिमान हैं। उनकी भावनाएँ एक ऐसी प्रक्रिया से गुज़री हैं जो उन्हें कभी भी उनके स्वार्थ के विरुद्ध नहीं जाने देंगी; लेकिन हे भगवान! सिद्धांतों की सारी महिमा और चरित्र की ऊँचाई सब व्यर्थ हो गई! मैंने एक और बात सीखी। ज़ेड की ज़बान के खुरदुरे पक्ष से ज़्यादा उसके चिकने पक्ष से डरो। उन्हें तीखी-सी तारीफें करने की कला आती है, जिन्हें वे बड़ी मुश्किल से करते हैं, मानो उन्हें इसकी आदत न हो और वे ये सब अपनी इच्छा के विरुद्ध ही कर रहे हों। इन तारीफों को आप इनकी दुर्लभता के कारण महत्व देने को तैयार हो जाते हैं। धिक्कार है! ये तो हर किसी को मिल सकती हैं, और सच कहें तो ये खोखली चापलूसी ही हैं।

लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण निम्नलिखित पत्र है, जो संबोधित मित्र के कल्याण में इतनी दयालुता और सावधानीपूर्ण रुचि दर्शाता है, भले ही इसमें एक बड़े पारिवारिक दुख का कड़वा समाचार निहित है:

31 जुलाई, 1845।

आपका छोटा सा पैकेट पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। यह मेरे लिए सचमुच ज्ञान का खजाना था। मुझे लगता है कि जी — — के बारे में मिली जानकारी उत्साहवर्धक है। मैंने मिस — — को लिखी पंक्तियाँ पढ़ीं। वे उनके स्नेहपूर्ण स्वभाव को बखूबी व्यक्त करती हैं और काव्यात्मक हैं, क्योंकि वे सत्य हैं। अभिव्यक्ति, लय और छंद में कुछ त्रुटियाँ तो अपेक्षित ही थीं। श्री — — के बारे में आपने जो कुछ भी कहा, उससे मुझे बहुत आनंद आया। फिर भी, मेरे मन से एक डर नहीं निकल रहा है, कि आप उनके बारे में बहुत ज्यादा सोच रही होंगी। भले ही उनमें कुछ कमियाँ हों, और जैसा कि आप जानती हैं, फिर भी उनमें कुछ ऐसे गुण हैं जो आपको पता चलने से पहले ही आपके मन में रुचि पैदा कर सकते हैं। उनमें महिलाओं को अपनी नज़र और व्यवहार में कुछ अनैच्छिक भाव से प्रभावित करने की कला है, जिससे उनमें यह धारणा जागृत होती है कि वह उनकी परवाह करते हैं, जबकि उनके शब्द और कार्य पूरी तरह से लापरवाह, असावधान और अपने प्रति बिल्कुल भी समझौता न करने वाले होते हैं। यह कला केवल उन पुरुषों में होती है जिन्होंने जीवन और दुनिया को बहुत करीब से देखा हो और जो स्त्री आकर्षण के प्रति कुछ हद तक उदासीन हो चुके हों। इसलिए

सावधान रहें। ये शब्द सुखद या प्रशंसात्मक नहीं हैं, लेकिन ये उस व्यक्ति के शब्द हैं जो आपको इतने लंबे समय से जानता है कि अगर वह आपके लिए स्थायी रूप से उपयोगी हो सकता है, तो वह आपके क्षणिक अप्रिय व्यवहार की परवाह नहीं करता।

मैं सुरक्षित घर पहुँच गया। रेलगाड़ी के डिब्बे में एक सज्जन थे जिन्हें मैंने चेहरे से पहचान लिया, वे विदेशी और फ्रांसीसी थे। मुझे इतना यकीन था कि मैंने उनसे पूछने की हिम्मत की, "महाशय, क्या आप फ्रांसीसी हैं?" वे चौंक गए और तुरंत अपनी भाषा में जवाब दिया। कुछ मिनट की बातचीत के बाद जब मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने अपना अधिकांश जीवन जर्मनी में नहीं बिताया है, तो वे और भी आश्चर्यचकित और उलझन में दिखे। उन्होंने कहा कि मेरा अनुमान सही था। मैंने उनके जर्मन लहजे में फ्रेंच बोलने से यह अंदाजा लगा लिया था।

रात के दस बज रहे थे जब मैं घर लौटी। मैंने ब्रैनवेल को बीमार पाया। वह अक्सर बीमार पड़ जाते हैं, अपनी ही गलती के कारण। इसलिए पहले तो मुझे झटका नहीं लगा। लेकिन जब ऐन ने मुझे उनकी बीमारी का तात्कालिक कारण बताया तो मुझे बहुत गहरा सदमा लगा। उन्हें पिछले गुरुवार को श्रीमान — — का एक पत्र मिला था जिसमें उन्हें सख्ती से बर्खास्त कर दिया गया था...। तब से हमें उनके साथ बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा है। वह अपने व्याकुल मन को सुन्न करने या डुबोने के अलावा कुछ नहीं सोचते थे। घर में किसी को भी चैन नहीं मिला, और अंत में हमें उन्हें एक हफ्ते के लिए घर से बाहर भेजना पड़ा और उनकी देखभाल के लिए किसी को भेजना पड़ा। उन्होंने आज सुबह मुझे पत्र लिखा है और अपनी इस बेहूदा हरकत के लिए पश्चाताप व्यक्त किया है। उन्होंने लौटने पर सुधार का वादा किया है, लेकिन जब तक वह घर पर रहेंगे, मुझे घर में शांति की उम्मीद नहीं है। मुझे डर है कि हम सभी को दुख और बेचैनी के दौर के लिए तैयार रहना होगा। अब मैं श्रीमती — — या किसी और से मदद नहीं मांग सकती।

घर में उदासी और भी गहरी होती जा रही थी; लेकिन शार्लोट अब भी इतनी मजबूत और साहसी थीं कि दुनिया का सामना कर सकें, अपने दोस्तों में हमेशा की तरह दिलचस्पी बनाए रख सकें और पहले की तरह अपने आसपास के लोगों के चरित्र और जीवन पर चर्चा कर सकें। उस समय उनके परिचितों के दायरे की झलकियाँ वाकई दिलचस्प हैं। जिन लोगों से उनका संपर्क हुआ, उनमें से कई लोगों ने शायद ही सोचा होगा कि पादरी की बेटी के उभरे हुए माथे के नीचे से उनकी पैनी निगाहें उन पर

टिकी हुई थीं। फिर भी, उनके पत्राचार की सबसे दिलचस्प विशेषताओं में से एक यह प्रमाण है कि वे धीरे-धीरे चरित्र का वह ज्ञान प्राप्त कर रही थीं, जिसे उन्होंने बाद में अपनी पुस्तकों में खुलकर इस्तेमाल किया। अब तक अप्रकाशित पत्रों के कुछ अंश यह दिखाने के लिए पर्याप्त हैं कि घरेलू अंधकार के उन दिनों में उनके जीवन और विचारों की धारा कैसे बह रही थी, जबकि उनकी प्रसिद्धि का उदय अभी भी रात के सबसे काले अंधेरे में छिपा हुआ था।

मैंने अभी-अभी एम. — — के पत्र पढ़े हैं। वे बहुत रोचक हैं और उनके मौलिक और जीवंत विचारों को दर्शाते हैं। उनमें बस एक ही कमी है, और वह है उनकी चंचलता। यह सुरक्षित नहीं है, बुद्धिमानी नहीं है; और अक्सर उनके बारे में गलत धारणाएँ बन जाती हैं। शायद चंचलता सही शब्द नहीं है; लेकिन यह एक लापरवाह लहजा है, जो मुझे तब पसंद नहीं आता जब वह दिखावटीपन से निकलता है, और उससे भी कम तब जब वह टोपी के नीचे छिपा हो।

मैं आपको मिस — — के नोट्स धन्यवाद सहित लौटा रहा हूँ। मुझे उन्हें पढ़ना हमेशा अच्छा लगता है। वे मुझे एक सौम्य मन का सच्चा सूचक प्रतीत होते हैं, जो अपने आप को बहुत अधिक महत्व नहीं देता। अनावश्यक प्रशंसा करके उनमें इस चेतना को जगाने से सावधान रहें। सरल हृदय, समझदार, लेकिन प्रतिभाशाली न होने वाले लोगों का यह विशेषाधिकार है कि वे दूसरों के विचारों और कार्यों से अपने विचारों और कार्यों की अत्यधिक तुलना किए बिना अच्छा कर सकते हैं और आत्म-प्रशंसा के लिए पर्याप्त प्रेरणा प्राप्त किए बिना अच्छा कर सकते हैं। प्रतिभाशाली लोग लगभग हमेशा अपने भीतर की उत्कृष्टता को भलीभांति जानते हैं...। आप मुझसे पूछते हैं कि क्या हम अधिक आरामदायक स्थिति में हैं। काश मैं कुछ सकारात्मक कह पाता; लेकिन जब तक ब्रैनवेल घर पर रहकर सुधार की बजाय पतन की ओर अग्रसर है, तब तक हम कैसे अधिक आरामदायक स्थिति में हो सकते हैं? हाल ही में उन्हें सूचित किया गया है कि यदि वे अधिक स्थिर व्यवहार करें तो उन्हें उसी रेलवे में पुनः भर्ती कर लिया जाएगा जहाँ वे पहले तैनात थे, लेकिन वे प्रयास करने से इनकार करते हैं। वे काम नहीं करना चाहते, और घर पर वे हर संसाधन पर बोझ हैं, हर खुशी में बाधा हैं। लेकिन शिकायत करने का कोई फायदा नहीं है।

आपके पिछले पत्र के लिए मैं आपको फिर से धन्यवाद देता हूँ, जो मुझे पिछले दोनों पत्रों से कहीं अधिक रोचक लगा—यह बिल्कुल वैसा ही लिखा गया है जैसा मैं

चाहता हूँ कि आप मुझे लिखें—कोई भी बात अधूरी नहीं। इस तरह का पत्राचार वास्तविक बातचीत के बाद सबसे अच्छा विकल्प है, हालाँकि यह मानना पड़ेगा कि दोनों के बीच अभी भी बहुत अंतर है। आपके पत्र पढ़ते समय मैं आपका चेहरा, आवाज़ और उपस्थिति स्पष्ट रूप से कल्पना कर सकता हूँ। फिर भी कल्पना वास्तविकता नहीं है, और जब मैं उन्हें लिफाफे में वापस रखता हूँ और अपनी मेज पर रख देता हूँ तो मुझे यह अंतर स्पष्ट रूप से महसूस होता है। उस काउंटेस के बारे में मेरी जिज्ञासा थोड़ी बढ़ गई है जिसका आपने उल्लेख किया है। उसका नाम क्या है? आपने अभी तक नहीं बताया है। आपके कथन से मैं यह तय नहीं कर पा रहा हूँ कि वह वास्तव में बुद्धिमान है या केवल सनकी। ये दोनों बातें कभी-कभी साथ-साथ चलती हैं, लेकिन अक्सर अलग-अलग देखी जाती हैं। मैं आमतौर पर सनकीपन से बहुत दूर रहना पसंद करता हूँ, और खुद को सनकी समझे जाने से मुझे बहुत डर लगता है, इस बात से मेरा यह तात्पर्य नहीं है कि मैं खुद को बुद्धिमान मानता हूँ। ईश्वर जानता है कि अनेक महत्वपूर्ण मामलों में मुझसे अधिक मूर्ख शायद ही किसी ने ईश्वर की कृपा का लाभ उठाया हो। हे प्रभु, नेल, मैं कभी-कभी आत्म-निराशा में डूबने लगता हूँ। पहले मैं कहता और सोचता था कि X — — की शादी अवश्य होगी। अब मैं इस बारे में इतना आश्वस्त नहीं हूँ। उसे कभी भी ऐसे पति को स्वीकार करना शोभा नहीं देगा जिससे वह प्रेम न कर सके, या कम से कम सम्मान न कर सके, और ऐसा प्रतीत होता है कि अनुकूल परिस्थितियों में उसे ऐसा पति मिलने की संभावना बहुत कम है; इसके अलावा, जितना मैंने सुना और देखा है, उससे लगता है कि पत्नी के लिए धन को लगभग सर्वोपरि माना जाता है। खैर, अगर उसकी नियति कुंवारी रहना है तो मुझे नहीं लगता कि वह पछताएगी। मुझे लगता है कि वह अपने मन और स्वभाव में ऐसे साधन ढूंढ लेगी जो उसे आगे बढ़ने में मदद करेंगे। समाज के बारे में मुझे ज़्यादा समझ नहीं है, लेकिन इसकी कार्यप्रणाली की जो झलक मैंने देखी है, उससे मुझे यह बहुत ही विचित्र और जटिल प्रतीत होता है, जिसमें प्रकृति उलट-पुलट हो गई है। आपके सभ्य लोग मुझे लाक्षणिक रूप से कहें तो, उल्टे-सीधे नज़र आते हैं —उनके लिए झूठ ही सच है, सच ही झूठ, उनके लिए सुख का अर्थ है निरंतर और उबाऊ काम, और सांसारिक गतिविधियों में ही ऊब। लेकिन यह शायद अज्ञानता का उस चीज़ के प्रति नज़रिया है जिसे वह समझ नहीं सकती। इसलिए मैं उनका न्याय नहीं करता, लेकिन अगर मुझे—आप शब्द जानते ही होंगे—अपने स्वाद, विचार और

भावनाओं को—उदाहरण के लिए—बदलने के लिए कहा जाए, तो मैं यॉर्कशायर की रसोई की आग में कूदकर स्वेच्छा से जलकर सौदा पूरा करना पसंद करूँगा।

मैं तुम्हें एक छोटा सा नोट लिखूंगा, बस यूं ही, ताकि बदले में तुमसे एक पत्र लिखवाने का बहाना मिल जाए। मुझे दुख है कि तुम W—— नहीं गए, पहला इसलिए कि तुमने अवलोकन और आनंद का अनुभव नहीं किया; और दूसरा इसलिए कि मुझे तुम्हारे द्वारा देखी गई चीजों का वर्णन सुनने का सौभाग्य नहीं मिला। तुमने जिस स्पष्टवादिता से वहाँ जाने की इच्छा जताई, उस पर मुझे हंसी आ गई। तुम्हारा हृदय अत्यंत ईमानदार है, और पवित्र भी, क्योंकि यह अपने अंतर्मन को दिखाने में शर्म नहीं करता: बस सावधान रहना कि तुम किसके सामने खुलकर बोलते हो। कुछ लोग तुम्हारी स्पष्टवादिता का महत्व नहीं समझेंगे, और सूअरों के सामने मोती नहीं फेंकने चाहिए। तुम उन लोगों की नज़रों में अच्छा दिखना चाहते हो जिन्हें तुम प्रसन्न करना चाहते हो, यह बिल्कुल सही है। जिन लोगों का हम सम्मान करते हैं, उनके सामने अच्छा दिखना स्वाभाविक है (वास्तविक रूप से अच्छा, झूठा नहीं)। ईश्वर करे कि ऐसा करने की शक्ति और इच्छा तुममें हमेशा बनी रहे; ईश्वर करे कि तुम इतने युवा और सुंदर दिखो कि सफेद वस्त्र पहन सको; और आपको यह एहसास हमेशा बना रहे कि आप देखने में आकर्षक हैं। मुझे पता है कि आपमें इतनी समझदारी है कि आप घमंड के कारण इस आशीर्वाद को दुर्भाग्य में नहीं बदल सकतीं। आखिरकार, उम्र तो आएगी ही, और यह अच्छी बात है कि जब आपका चेहरा बदल जाए तो आपके पास दोस्तों के लिए एक सुंदर चेहरे से भी बेहतर कुछ है। मुझे उम्मीद है कि इस अत्यधिक ठंड ने आपको या आपके परिवार को ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचाया होगा। इसने मुझे बुरी तरह से जकड़ लिया है - कुछ समय के लिए मेरी भूख खत्म कर दी, और मेरे दांत में दर्द कर दिया; संक्षेप में, मुझे उस बीमार हालत में डाल दिया है जिसमें मैंने एक से अधिक बार B — — और — — दोनों जगहों पर खुद को काफी परेशानी का सबब बनाया है। नतीजा यह है कि इस समय मैं लगभग आपकी माँ जितनी बूढ़ी दिखती हूँ - सफ़ेद बाल, मुरझाया हुआ चेहरा और कमजोर। हालाँकि, आज मौसम थोड़ा नरम है, और मुझे उम्मीद है कि जल्द ही बेहतर महसूस करूंगी; वास्तव में, मैं अभी बीमार नहीं हूँ, और मेरे दांत का दर्द पूरी तरह से ठीक हो गया है; लेकिन मुझे शक्ति की कमी और उत्साह की कमी महसूस हो रही है जो मुझे आपके या किसी और के लिए एक बुरा साथी बना देगी। मैं अब बड़ी रकम मिलने पर भी

यात्रा पर नहीं जाऊंगा।

जून, 1846।

मुझे आशा है कि मृत्यु के सभी दुखद पहलू अब तक दूर हो चुके होंगे और वहाँ के थके-हारे निवासियों को थोड़ी राहत मिलने लगी होगी। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसने बहुत कष्ट सहे; और मुझे विश्वास है, और मैं मानता भी हूँ, कि पृथ्वी पर उसके लंबे कष्ट उसके पापों के प्रायश्चित के रूप में स्वीकार किए जाएँगे। उसके लिए तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं, लेकिन उसके रिश्तेदार— उसकी माँ और बहनें— ही हैं जिनके लिए मुझे वास्तव में और हमेशा के लिए दया आती है।

10 जुलाई, 1846।

प्रिय एलेन, किसने आपसे गंभीरता से पूछा कि क्या मिस ब्रोंटे की शादी — — से नहीं होने वाली थी? मुझे यह कहने की शायद ही ज़रूरत है कि इससे ज़्यादा निराधार अफवाह कभी नहीं हो सकती। मुझे समझ नहीं आता कि यह अफवाह कैसे फैली होगी। श्री — — के साथ मेरा हमेशा से एक ठंडा, दूर का सा व्यवहार ही रहा है। मैं ऐसी अफवाह का ज़िक्र उनके सामने, मज़ाक में भी, करने की सोच भी नहीं सकती। इससे मैं अगले छह महीने तक उनके और उनके साथी पादरियों के बीच हंसी का पात्र बन जाऊंगी। वे मुझे कुंवारी समझते हैं; और मैं उन सभी को बेहद नीरस, संकीर्ण और भद्दा मानती हूँ।

सातवीं।

लेखन और शोक।

पाठक देख चुके हैं कि ब्रैनवेल ब्रोंटे का पतन शार्लोट के जीवन का निर्णायक मोड़ नहीं था। श्रीमती गैस्केल, अपने भाई की बर्बादी के संबंध में शार्लोट की भावनाओं के बारे में अपनी धारणा का समर्थन करने के लिए उत्सुक थीं, लेकिन उन्होंने न तो स्वयं के साथ और न ही अपनी नायिका के साथ न्याय किया है। इस प्रकार, वह पिछले अध्याय में उद्धृत पत्रों में से एक के एक अंश का उपयोग करती हैं, लेकिन ऐसा करने में वह शायद इसके सबसे विशिष्ट शब्दों को छोड़ देती हैं। “उन्होंने” (ब्रैनवेल) “आज सुबह पश्चाताप की भावना व्यक्त करते हुए लिखा है; ... लेकिन जब तक वह घर पर रहेंगे, मुझे घर में शांति की शायद ही उम्मीद है।” यह अंश “जीवनी” में इसी रूप में दिखाई देता है, जबकि शार्लोट ने अपने भाई के “अपनी बेहूदा मूर्खता के लिए पश्चाताप” व्यक्त करने और “वापस आने पर सुधार का वादा” करने के बारे में लिखा था। श्रीमती गैस्केल युवा ब्रोंटे के उन घोर पापों को "नासमझी" कहकर उजागर करने की हिम्मत नहीं कर पाईं, और न ही उन्हें यह विश्वास हो पाया कि जो व्यक्ति दुराचार में इतना डूब चुका है, उसमें सुधार की कोई गुंजाइश है। इसके अलावा, उनका एक उद्देश्य उन लोगों को दंडित करना भी था जिन्होंने लड़के के दुराचार में उनका साथ दिया था, और जिन्हें उन्होंने खुले तौर पर न केवल उसके पतन बल्कि उसकी बहनों की असमय मृत्यु का भी दोषी ठहराया। इस प्रकार, उन्होंने अपनी पूरी पुस्तक में ब्रोंटे की कहानी के इस दुखद प्रसंग को शार्लोट की तुलना में कहीं अधिक गहराई से और दुखद ढंग से प्रस्तुत किया। अपने जीवन के इस काल में अपने दो सबसे करीबी दोस्तों को लिखे उनके सभी पत्रों को पढ़ने के बाद, मैं यह कहने में सक्षम हूं कि ब्रैनवेल के इस अपमानजनक पतन का शार्लोट पर उतना गहरा प्रभाव नहीं पड़ा जितना कि श्रीमती गैस्केल पर, जिन्होंने युवा ब्रोंटे को कभी नहीं देखा था, केवल कहानी सुनाने मात्र से पड़ा। फिर भी, शार्लोट, हालांकि अपने भाई के घृणित दुराचार का शिकार होने के तथ्य से पूरी तरह से विचलित होने के लिए बहुत बहादुर, स्वस्थ और समझदार थी, फिर भी वह उसकी स्थिति की उदासी और शर्मनाकता के प्रति असंवेदनशील नहीं थी। उसने इस बारे में क्या सोचा, यह उसने स्वयं "द प्रोफेसर" की कहानी में दुनिया को बताया है (पृष्ठ 198)।

जीवन का मेरा अनुभव अभी सीमित ही था, फिर भी मुझे एक बार घरेलू छल-

कपट के दिलचस्प और मनमोहक परिणामों का प्रत्यक्ष अनुभव करने का अवसर मिला था। इस उदाहरण में कल्पना का कोई सुनहरा आवरण नहीं था; मैंने इसे नग्न और वास्तविक रूप में देखा, और यह अत्यंत घृणित था। मैंने एक ऐसे मन को देखा जो नीच छल-कपट और कपटपूर्ण धोखे की आदत से दूषित हो चुका था, और एक ऐसे शरीर को देखा जो दुर्गुणों से दूषित आत्मा के संक्रामक प्रभाव से भ्रष्ट हो चुका था। इस दृश्य को लंबे समय तक देखने के कारण मुझे बहुत कष्ट हुआ था; अब मुझे उन कष्टों का कोई पछतावा नहीं था, क्योंकि उनकी याद मात्र ही प्रलोभन के लिए एक बेहतरीन औषधि का काम करती थी। इसने मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास स्थापित कर दिया था कि दूसरों के अधिकारों का हनन करने वाला अवैध सुख भ्रामक और विषैला सुख है - इसकी खोखलापन उस समय तो निराशा देता है, लेकिन इसका विष बाद में क्रूरतापूर्वक पीड़ा देता है, और इसके प्रभाव हमेशा के लिए भ्रष्ट कर देते हैं।

ऐनी ब्रोंटे के कोमल और संवेदनशील मन पर ब्रैनवेल के पतन का प्रभाव वैसा ही था जैसा श्रीमती गैस्केल ने चित्रित किया है। अपने भाई की बर्बादी देखकर वे गहरे दुख से टूट गईं; लेकिन शार्लोट और एमिली अपनी बहन से कहीं अधिक दृढ़ थीं, और उनके पत्रों में व्यक्त उनकी प्रबल भावना अपने भाई की कमजोरी के प्रति घोर घृणा और उसके पतन में किसी भी तरह से सहायक रहे सभी लोगों के प्रति आक्रोश थी। यह शार्लोट के चरित्र की प्रचलित धारणा से मेल नहीं खाता, लेकिन यह बिल्कुल सत्य है।

हमें इस धारणा को पूरी तरह से नकार देना चाहिए कि भाई के भाग्य का बहनों के जीवन पर उतना गहरा प्रभाव था जितना माना जाता है। फिर भी, जैसा कि हमने देखा है, उन वर्षों के दौरान जब उनका घर ब्रैनवेल की उपस्थिति से अंधकारमय था, शार्लोट पर एक बहुत ही मजबूत, हालांकि छिपा हुआ, प्रभाव था। ब्रसेल्स और उस जीवन के लिए उसकी तड़प, जो अब एक लुप्त सपने की तरह लग रही थी, लगभग पहले जितनी ही प्रबल थी। हॉवर्थ में सब कुछ नीरस, सामान्य और उबाऊ था। स्कूल चलाने की योजना विफल हो गई थी; गरीबी और गुमनामी अब से सभी बहनों का नियत भाग्य प्रतीत हो रही थी। दोस्तों से संपर्क का स्रोत भी लगभग पूरी तरह से कट गया था; क्योंकि शार्लोट परिवार की खर्चीली सदस्य को अजनबियों की निगाहों के सामने उजागर करने की शर्म सहन नहीं कर सकती थी। इसी समय, और पिछले अध्याय में उद्धृत पत्रों में वर्णित मनोदशा में, उसने कलम उठाई और अपने चारों ओर फैली

संकीर्ण और घृणित चिंताओं से बचने के लिए कविता की दुनिया में शरण ली। बचपन से ही उन्हें कविताएँ लिखने की आदत थी, जिनमें से कुछ ही अब तक साधारण स्तर से ऊपर उठ पाई थीं। अब, ब्रुसेल्स में अपने दिल में चल रहे सारे उतार-चढ़ावों के बोझ तले दबी हुई, उन्होंने फिर से लिखना शुरू किया, एक प्रबल प्रेरणा से, पहले से कहीं अधिक गहरे विचारों से प्रेरित होकर। अपनी प्रतिभाओं के इस गुप्त अभ्यास में उन्हें सुकून और आनंद मिला; अपनी सहेली को लिखे उनके पत्रों से पता चलता था कि उनका मन फिर से तरोताज़ा हो रहा था, और हॉवर्थ की "यहूदिया की पहाड़ियों" से दिखने वाला नीरस दृश्य अब उज्ज्वल होने लगा था। सभी बहनों के जीवन में वह एक बड़ा दिन था जब शार्लोट को अचानक पता चला कि एमिली ने भी "अपने दिल की बात कागज़ पर उतारने" का साहस किया था। शार्लोट को यह जानकर छोटी बहन बहुत परेशान हुई, क्योंकि उसकी कविताएँ पूरी तरह गुप्त रूप से लिखी गई थीं। लेकिन आपसी स्वीकारोक्ति ने उनके बीच सुलह को जल्दी कर दिया। शार्लोट ने अपनी कविताएँ दीं, और फिर ऐनी ने भी, अपनी आदत के अनुसार शरमाते हुए, उसी तरह के कुछ छिपे हुए खजाने बड़ी बहन की गोद में डाल दिए। तो ऐसा हुआ कि 1846 में, अपने सबसे करीबी दोस्तों को बिना बताए, उन्होंने दुनिया के सामने - अपने ही खर्च और जोखिम पर, बेचारे! - "कुरेर, एलिस और एक्टन बेल" द्वारा रचित कविता की वह पतली सी किताब पेश की, जो अब लगभग भुला दी गई है, जिसके गुणों को कुछ ही पाठकों ने पहचाना है और कुछ ही आलोचकों ने सराहा है।

ये कविताएँ सशक्त, शांत और सच्ची हैं; ये बायरन से प्रभावित लड़कियों की आवेगपूर्ण या भावुक अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं; न ही ये उस्तादों के संगीत की मात्र प्रतिध्वनि हैं, चाहे कितनी भी कुशलता से लिखी गई हों। जब हम इस पुस्तक के पन्ने पलटते हैं, तो पाते हैं कि ये महिलाएँ इसलिए लिखती हैं क्योंकि वे महसूस करती हैं। वे इसलिए लिखती हैं क्योंकि उनके पास कहने के लिए कुछ है; वे दुनिया के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए लिखती हैं, हर बहन अपने रहस्य को अपनी आत्मा में समेटे हुए है। आश्चर्य की बात यह है कि इन कविताओं में शार्लोट का दबदबा नहीं है। कविता उनकी प्रतिभा की सीमाओं के लिए बहुत संकीर्ण प्रतीत होती है; लय, तुकबंदी और छंद के स्व-लगाए बंधनों के भीतर वे अपनी इच्छानुसार उड़ान नहीं भर सकीं। यह सच है कि कहीं-कहीं हमें ऐसी पंक्तियाँ मिलती हैं जो प्रतिभा के प्रकाश से चमक उठती हैं; लेकिन कुल मिलाकर, हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि करर बेल ने एक कवि के रूप

में कोई ख्याति प्राप्त नहीं की। न ही ऐनी को महान गायिकाओं में गिना जा सकता है। उनकी कविताएँ वास्तव में मधुर हैं, कोमलता, त्याग और नम्रता से परिपूर्ण हैं, जो उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ थीं। उनकी एक-दो छोटी कविताएँ अब यॉर्कशायर के चर्चों में प्रयुक्त भजन संग्रहों में शामिल हैं; लेकिन, आमतौर पर, उनकी रचनाओं में वह जीवंतता नहीं है जो उनकी बहनों की रचनाओं में पाई जाती है। इस संग्रह में एमिली को पहला स्थान प्राप्त है। उनकी कुछ कविताओं में एक ऐसी गीतात्मक सुंदरता है जो उन्हें पढ़ने के बाद भी मन में बसी रहती है; अन्य कविताओं में एक भावुकता, अर्थ की गहराई, तीव्रता और गंभीरता है जो गायिका का नाम जानने पर चौंका देती है, और जो "वुथरिंग हाइट्स" के कई अंशों की कुंजी प्रदान करती है, जिन्हें देखकर दुनिया कांप उठती है और जल्दी से अनदेखा कर देती है। ऐसी पंक्तियाँ एमिली ब्रोंटे के नाम को आधुनिक अंग्रेजी साहित्य के छात्रों के लिए आज की तुलना में कहीं अधिक परिचित बना देंगी।

मृत्यु! यह उस समय आई जब मैं सबसे ज्यादा भरोसेमंद था।
मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि मुझे आनंद मिलेगा —
फिर प्रहार करो, समय की मुरझाई शाखा विभाजित हो रही है
अनंत काल की नई जड़ से!
समय की शाखा पर पत्तियाँ चमकती हुई बढ़ रही थीं।
रस से भरपूर और चांदी जैसी ओस से लबालब;
पक्षी हर रात इसके आश्रय के नीचे इकट्ठा होते थे;
रोजाना जंगली मधुमक्खियां इसके फूलों के चारों ओर उड़ती थीं।
दुःख दूर हो गया, और उसने सुनहरे फूल को तोड़ लिया;
अपराधबोध ने अपने अहंकार में आकर पेड़-पौधों को नोच डाला;
लेकिन अपने माता-पिता की दयालु गोद में
जीवन की पुनर्जीवनकारी धारा सदा बहती रही।
मैंने बिछड़ी हुई खुशियों पर जरा भी शोक नहीं किया।
खाली घोंसले और मौन गीत के लिए —
आशा थी, और उसने मुझे हँसी के साथ मेरे दुख से बाहर निकाल दिया।
फुसफुसाते हुए, "सर्दी ज्यादा देर तक नहीं टिकेगी!"
और देखो! दस गुना अधिक आशीष प्राप्त हो रही है।

वसंत ऋतु ने सौंदर्य से भरपूर लताओं को सुशोभित कर दिया;
हवा, बारिश और तीव्र गर्मी, दुलारते हुए,
उस दूसरे मई के दिन खूब धूमधाम से मनाया गया!
यह बहुत ऊँचा उठ खड़ा हुआ - कोई भी पंखदार दुःख इसे बहा नहीं सकता था;
पाप उसकी चमक से दूर रहने से डरता था;
प्रेम और उसका स्वयं का जीवन, इसे बनाए रखने की शक्ति रखता था।
सभी बुराइयों से— हर अभिशाप से, सिवाय तुम्हारे।
निर्दयी मृत्यु! नए पत्ते मुरझाकर सूख रहे हैं;
शाम की हल्की हवा शायद अभी भी ताजगी लौटा सकती है—
नहीं! सुबह की धूप मेरी पीड़ा का उपहास उड़ाती है —
मेरे लिए, समय को अब और खिलना नहीं चाहिए!
इसे काट डालो, ताकि दूसरी शाखाएँ फल-फूल सकें।
जहां वह सूखा हुआ पौधा हुआ करता था;
इस प्रकार कम से कम इसका सड़ता हुआ शव तो पोषण प्रदान करेगा।
जिससे यह उत्पन्न हुआ — शाश्वतता।

वह छोटी सी किताब असफल रही। यह पहली उड़ान मात्र निराशा में समाप्त हुई; और कुरेर, एलिस और एक्टन बेल को साहित्यिक सफलता से निराश होकर एक बार फिर हॉवर्थ के पादरी निवास में जीवन की वास्तविकताओं का सामना करना पड़ा। यह 1846 की गर्मियों और शरद ऋतु का समय था; इसी दौरान उन्हें उन चिंताओं के बारे में सोचना पड़ा जो उनकी कविता संग्रह की असफलता से भी कहीं अधिक उनके करीब थीं। उनके पिता की दृष्टि लगभग जा चुकी थी, और उनके सारे विचार उस ऑपरेशन पर केंद्रित थे जिससे उनकी दृष्टि वापस आ सके। श्री ब्रोंटे को उनकी बेटियों द्वारा इस ऑपरेशन के लिए मैनचेस्टर ले जाया गया। इस दौरान शार्लोट द्वारा लिखे गए कई पत्र पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं; लेकिन जिन दो पत्रों का मैं अब उल्लेख कर रहा हूँ वे नए हैं, और वे यह दर्शाते हैं कि उनके जीवन के इस महत्वपूर्ण मोड़ पर बहनों को किन संकीर्ण चिंताओं और परेशानियों ने जकड़ रखा था।

22 सितंबर, 1846।

प्रिय एलेन, — मेरे पास तुम्हें बताने के लिए कुछ नया नहीं है, सिवाय इसके कि पापा की सेहत में सुधार हो रहा है, हालांकि मुझे लगता है कि ठीक होने की प्रक्रिया

बहुत धीमी है। मुझे लगता है कि उनकी दृष्टि पूरी तरह ठीक होने में अभी कई सप्ताह लगेंगे; फिर भी जब भी श्री विल्सन आते हैं, वे ऑपरेशन की पूर्ण सफलता पर संतोष व्यक्त करते हैं और मुझे विश्वास दिलाते हैं कि पापा जल्द ही पढ़ और लिख सकेंगे। वे अभी भी अपने अंधेरे कमरे में कैद हैं, हालांकि अब पहले से थोड़ी अधिक रोशनी आती है। नर्स आज जा रही है — उसके जाने से निश्चित रूप से राहत मिलेगी, हालांकि मुझे लगता है कि वह अपने वर्ग में सबसे बुरी नहीं है।

29 सितंबर, 1846।

प्रिय एलेन, — जब मैंने तुम्हें आखिरी बार लिखा था, तब हमारी वापसी वाकई अनिश्चित थी, लेकिन श्री विल्सन को स्कॉटलैंड बुलाया गया; उनकी अनुपस्थिति ने हमें आज़ादी दे दी। मैंने जल्दी प्रस्थान किया, और अब हम घर पर हैं। पापा दिन-प्रतिदिन स्वस्थ हो रहे हैं। उनकी दृष्टि अभी पूरी तरह से ठीक नहीं है, लेकिन उसमें सुधार हो रहा है, और मुझे पूरा विश्वास है कि यह आगे भी जारी रहेगा। हमारी अनुपस्थिति के दौरान सुनिश्चित हुई भलाई और टल गई बुराई के लिए मैं वास्तव में आभारी हूँ। तुमने — — के बारे में जो कहा, उससे मुझे बहुत दुख हुआ और आश्चर्य भी हुआ। मैं — — के मलेरिया को अच्छी तरह जानती हूँ, यह गैस की एक भयानक बदबू है। जब मैं वहाँ रही, तो मैं इससे दिन में दस बार बीमार पड़ी। नए घरों को सजाने के बारे में संकोच के कारण उनका जाने से हिचकिचाना मुझे क्रोधित और आश्चर्यचकित करता है। क्या उनके पास जो फर्नीचर है वह बहुत अच्छा नहीं है? मनुष्यों का विरोधाभास अविश्वसनीय है। मुझे आश्चर्य है कि अगर वे अपनी बहन को यह कहानी सुनाएँ तो वह क्या कहेगी? वह बिना पीठ वाली लकड़ी की कुर्सी पर, बिना कालीन वाले लकड़ी के घर में बैठती है, और न तो वह ऐसी खराब जगह से अपमानित महसूस करती है और न ही खुद को अपमानित समझती है।

हॉवर्थ पार्सनेज और कब्रिस्तान।

मैनचेस्टर की इस यात्रा की योजना बनने के लगभग उसी समय, और अपनी कविताओं की विफलता का एहसास होने के कुछ ही समय बाद, बहनों ने एक और महत्वपूर्ण साहित्यिक उद्यम शुरू किया। कलम एक बार हाथ में लेने के बाद वे उसे छोड़ नहीं सकती थीं। कविता से उन्हें केवल धन का नुकसान हुआ था; लेकिन उनके मन में यह विचार आया कि गद्य लेखन से धन कमाया जा सकता है। किसी भी तरह, काल्पनिक पात्रों की कहानियाँ सुनाकर, अपने एकांत जीवन में जिन विषयों पर उन्होंने गहराई से विचार किया था, उन पर खुलकर अपने दिल की बात कहकर, वे हॉवर्थ के एकांत से राहत पा सकती थीं। तदनुसार, तीनों ने एक-एक उपन्यास लिखना शुरू किया। लंबी चर्चा के बाद, जिसमें कथानक की रूपरेखा और यहाँ तक कि विभिन्न पात्रों के नाम भी तय किए गए, कहानियाँ एक साथ शुरू की गईं। काश, उस अनोखी साहित्यिक बैठक का कोई रिकॉर्ड सुरक्षित रखा गया होता! शार्लेट, अपने जीवन के बाद के दिनों में, हमेशा कोमल, प्रेमपूर्ण, लगभग श्रद्धापूर्वक उन दिनों के बारे में बात करती थीं, जब वह और उनकी प्रिय बहनें अपने-अपने उपन्यासों की योजना और शैली तय करने में लगी हुई थीं। वह समय उनके लिए पवित्र प्रतीत होता था, और यद्यपि उन्होंने उस भ्रम पर मुस्कुराना सीख लिया था जिसके तहत काम शुरू हुआ था, और तीनों बहनों द्वारा प्रदर्शित विचारों और विधियों की त्रुटियों और कमियों को स्पष्ट रूप से

देख सकती थीं, फिर भी उन्होंने अपनी उपस्थिति में किसी को भी एमिली और ऐनी की प्रतिभा पर सवाल उठाने या तीनों बहनों द्वारा उपन्यास लेखन के नीरस और व्यावसायिक तरीके का उपहास करने की अनुमति नहीं दी। अपने बचपन की पुरानी परंपराओं पर लौटते हुए, वे पादरी के घर के बैठक कक्ष में मेज के चारों ओर बैठ गईं, प्रत्येक अपनी कलम में व्यस्त थी। इस समय उनके काम का कोई निशान उनके पत्रों में नहीं मिलता; और जब कभी-कभार पिता या भाई उनके कमरे में आते थे, तो चल रहे काम के बारे में कुछ नहीं कहा जाता था। उपन्यास लेखन, कविताओं के लेखन और प्रकाशन की तरह, अभी भी पूरी तरह से गुप्त रखा गया था। "इस इलाके में इस नाम का कोई सज्जन नहीं है," श्री ब्रोंटे ने गांव के डाकिया से कहा, जब उसने यह पूछने की हिम्मत की कि श्री कुरेर बेल कौन हो सकते हैं जिनके लिए लंदन से इतनी बार पत्र आते हैं। लेकिन हर रात तीनों बहनें, जब वे कम साज-सज्जा वाले कमरे में टहलतीं या कब्रों पर टकटकी लगाकर उस जगह को देखतीं जहाँ बिच्छू-बूटी के ढेर से मौसम की मार झेल चुका चर्च का टावर उठता था, तो एक-दूसरे को दिन भर के काम के बारे में बतातीं और उस परिपूर्ण प्रेम की स्वतंत्रता के साथ एक-दूसरे के परिश्रम की आलोचना करतीं, जो गलतफहमी के सभी भय को दूर कर देता है। और यहाँ मैं उपन्यास लेखन के दौरान लिखे गए दो पत्रों का उल्लेख करना चाहूँगा, जो कुछ मायनों में पूरी तरह से महत्वहीन नहीं हैं:

प्रिय नेल, — तुम्हारा पिछला पत्र मुझे बेहद मनोरंजक और ज्ञानवर्धक लगा। बी में गिरने की तुम्हारी कहानी पढ़कर मुझे हँसी आ गई, लेकिन मैं उस तमाशे में तीसरा पक्ष बनना बिल्कुल पसंद नहीं करती। मैं तुम्हारे साथ एक बार गिर चुकी हूँ और तुम्हारी बेतुकी हँसी का शिकार हो चुकी हूँ, और मैं उस अनुभव को दोहराना नहीं चाहती। मुझे तुम्हारी उस कुशलता की प्रशंसा करने की अनुमति दो जिससे तुम पूछे गए प्रश्न का ज़रा भी उत्तर दिए बिना ही स्पष्टीकरण दे देती हो। मुझे मिस आर. के अंधविश्वास के बारे में अब भी उतना ही पता है जितना पहले था। वह अंधविश्वास क्या है? — किसी मृत शरीर के बारे में? और उससे क्या निष्कर्ष निकलता है? क्या तुम्हें याद है मैंने तुम्हें उस दुष्ट और सबसे बड़े अपराधी श्री जे. एस. के बारे में बताया था — या क्या मैंने तुम्हें कभी बताया भी था? इंग्लैंड और फ्रांस दोनों जगह दुराचार का घिनौना जीवन जीने के बाद, उसने अपनी पत्नी को दो बच्चों के साथ, बिना एक पैसा भी, मैनचेस्टर में एक अनजान लॉजिंग हाउस में बीमारी और घोर गरीबी में छोड़ दिया

था? कल शाम मार्था ऊपर आकर बोली कि एक महिला—जैसा कि उसने कहा, "काफी शालीन"—मुझसे रसोई में बात करना चाहती है। मैं नीचे गया। वहाँ श्रीमती एस खड़ी थीं, पीली और थकी हुई, लेकिन फिर भी आकर्षक लग रही थीं, और साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए थीं, जैसा कि उनकी छोटी बच्ची भी थी जो उनके साथ थी। मैंने उन्हें दिल से चूमा। उन्हें देखकर मेरी आँखों में लगभग आँसू आ गए थे, क्योंकि जब मैंने उनके अकारण कष्टों, पीड़ाओं और शारीरिक दुर्दशा के बारे में सुना था, तो मुझे उन पर बहुत दया आई थी। उन्होंने हमारे साथ चाय पी, लगभग दो घंटे रुकीं, और खुलकर अपनी भयानक परेशानियों की कहानी सुनाई। उनके स्वास्थ्य ने उनकी बीमारी पर विजय प्राप्त कर ली है; और उनकी उत्कृष्ट समझ, उनकी सक्रियता और दृढ़ता ने उन्हें समाज में एक सम्मानजनक स्थान पुनः प्राप्त करने और अपने और अपने बच्चों के लिए एक सम्मानजनक जीवन यापन करने में सक्षम बनाया है। वह उपनगरों के एक बहुत ही अच्छे इलाके में एक लॉजिंग हाउस चलाती हैं (जिसे मैं जानता हूँ), और बहुत अच्छा कर रही हैं। उन्हें नहीं पता कि श्री एस कहाँ हैं, और निश्चित रूप से अब उन्हें देखने की हिम्मत भी नहीं कर सकतीं। वह फिलहाल कुछ दिनों के लिए ई — — में — — परिवार के साथ रह रही है, जो मेरे विचार से हमेशा से उसके प्रति बहुत दयालु रहे हैं, और इस परिस्थिति के लिए वे काफी हद तक प्रशंसनीय हैं।

मैं जानना चाहता हूँ कि क्या व्हिटसनटाइड के आसपास का समय आपके लिए हॉवर्थ आने के लिए उपयुक्त रहेगा। अक्सर उस समय मौसम सुहाना रहता है। कम से कम मुझे याद है कि पिछले साल उस समय मौसम बहुत खूबसूरत था। फिलहाल तो सर्दी ज़ोरों से लौट आई है, इसलिए हम सब सर्दी-जुकाम से परेशान हैं। नाक बहने की आवाज़ें खूब सुनाई दे रही हैं और घर में दलिया बनाने की खूब चर्चा हो रही है। आप सब कैसे हैं?

12 मई, 1847।

प्रिय एलेन, अगले सप्ताह गुरुवार या शुक्रवार को आपसे मिलकर हम सभी को बहुत खुशी होगी, जो भी दिन आपको सबसे सुविधाजनक लगे। आप लगभग किस समय यहाँ पहुँचेंगी और कैसे आएँगी - कीघली तक कोच से या हॉवर्थ तक बग्घी से? अब कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए। मैं ऐसी कोई रुकावट नहीं चाहता; मैं आपसे

मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। मुझे आशा है कि आप यहाँ आराम से रहेंगी। ब्रैनवेल अब शांत हैं, और इसका एक अच्छा कारण है। वसंत ऋतु में उन्हें जो अच्छी-खासी रकम मिली थी, वह अब खत्म हो चुकी है, और इसलिए उन्हें कुछ हद तक संयम बरतना पड़ रहा है। आप उन्हें मानसिक रूप से कमजोर और दिखने में बिल्कुल अय्याश पा सकती हैं। मुझे इस बात का कोई डर नहीं है कि वे आपके साथ किसी भी तरह का असभ्य व्यवहार करेंगे, इसके विपरीत वे बिल्कुल शांत स्वभाव के होंगे।

मैं अच्छे मौसम की प्रार्थना करता हूँ, ताकि आपके ठहरने के दौरान हम बाहर जा सकें। अभी के लिए अलविदा। नीरसता और एकरसता के लिए तैयार रहें। बी — — में सभी को मेरा प्यार देना।

क्या यह बताने की आवश्यकता है कि कैसे तीन कहानियाँ—“द प्रोफेसर,” “वुथरिंग हाइट्स,” और “एग्नेस ग्रे”—आखिरकार कीघली के छोटे से स्टेशन से रवाना हुईं, उस अनजान लंदन में जहाँ उनका भविष्य उज्ज्वल था, जो बहनों के लिए अब भी एक आदर्श शहर था, जहाँ साधारण मनुष्य नहीं, बल्कि कुछ विचित्र और भिन्न प्रकार के प्राणी रहते थे? क्या कोई उन थका देने वाले महीनों से अनजान हो सकता है जो “द प्रोफेसर” के एक हाथ से दूसरे हाथ में जाने और एमिली और ऐनी द्वारा लिखी गई कहानियों के प्रकाशक की मेज पर तब तक प्रतीक्षा करने में बीते जब तक कि उन्हें प्रकाशक की शर्तों पर दुनिया के सामने पेश नहीं किया जा सका? शार्लेट असफल हो गई थी, लेकिन उसका साहसी हृदय निराश होने वाला नहीं था। “द प्रोफेसर” का अंतिम पृष्ठ पूरा होते ही “जेन आयर” का पहला पृष्ठ लिखना शुरू हो गया। उस अद्भुत कहानी की पूरी रचना लेखिका के व्यस्त मस्तिष्क में तब हुई जब उसके आसपास का जीवन इन उदास रंगों में लिपटा हुआ था, और निराशा, पीड़ा और अंधकारमय आशंकाएँ उसके दैनिक साथी थे। उनकी पहली कहानी को मेसर्स स्मिथ, एल्डर एंड कंपनी द्वारा निर्णायक रूप से अस्वीकार कर दिए जाने के साथ-साथ कुछ स्नेहपूर्ण सलाह भी दी गई थी; इसलिए उन्होंने अब "जेन आयर" की पूर्ण पांडुलिपि उसी फर्म को सौंप दी। परिणाम पहले ही बताया जा चुका है। 24 अगस्त, 1847 को कहानी लीड्स से लंदन भेजी गई; और वर्ष समाप्त होने से पहले ही, पूरे इंग्लैंड में उपन्यास और उसकी लेखिका की प्रशंसा गूंज उठी।

क्या मुझे बहनों का बचाव करने की आवश्यकता है, उन पर लगाए गए इस आरोप से कि उन्होंने अपने दोस्तों को अपने विश्वास में न लेकर उनके प्रति विश्वासघात

किया? बिलकुल नहीं। उन्होंने आपस में वादा किया था कि इस रहस्य को पवित्र मानकर पूरी तरह से गुप्त रखा जाएगा, यहाँ तक कि अपने घर वालों से भी छिपाकर रखा जाएगा। वे प्रसिद्धि के लिए काम नहीं कर रही थीं; क्योंकि वे बार-बार यह साबित करती हैं कि व्यक्तिगत प्रसिद्धि उनकी अंतिम आकांक्षा है। लेकिन उन्हें अपना सच्चा उद्देश्य मिल गया था; काम करने की पुकार अदम्य थी; उन्होंने उसका पालन किया, और अब वे बस यही चाहती थीं कि उनका काम स्वयं अपनी कहानी कहे, लेखकों के विनम्र व्यक्तित्व से पूरी तरह अलग होकर।

जनवरी 1848 में ऐनी ब्रोंटे द्वारा लिखे गए एक पत्र में, जब इंग्लैंड और अमेरिका के साहित्यिक जगत में "जेन आयर" और एलिस और एक्टन बेल की कलम से प्रकाशित दो अन्य कहानियों के लेखकत्व को लेकर विरोधाभासी सिद्धांतों पर उत्सुकतापूर्वक चर्चा हो रही थी, मुझे निम्नलिखित अंश मिलता है: "मेरे पास आपको बताने के लिए कोई खबर नहीं है, क्योंकि जब से आप यहां आई हैं, हम कहीं नहीं गए, किसी से नहीं मिले और कुछ भी खास नहीं किया है, फिर भी हम सुबह से शाम तक व्यस्त रहने का प्रबंध कर लेते हैं।" कोमल और अत्यंत कर्तव्यनिष्ठ लड़की, अपनी सहेली से रहस्य छिपाते हुए, सच्चाई को जरा भी नहीं तोड़ सकती। इटैलिक में लिखे गए शब्द उसके अपने हैं। ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है जिसके बारे में बात की जा सके। सहेली को अपने संदेह थे। सर्दियों के लिए दक्षिणी घर में रहते हुए, वह नया उपन्यास, जिसके बारे में हर कोई बात कर रहा था, शहर से लाया गया। मेहमानों में से एक को इसे ज़ोर से पढ़ने के लिए कहा गया, और उसके आगे बढ़ने से पहले ही शार्लोट ब्रोंटे की सहपाठी ने इसके लेखक का रहस्य उजागर कर दिया। तीन महीने पहले, शार्लोट कुछ दिन मिस एन — — के घर पर बिता रही थीं, और उन्होंने मेज़बान की उपस्थिति में कहानी के प्रूफ-शीट को खुलेआम ठीक किया था; लेकिन उन्होंने मेज़बान को इस विषय पर उनसे बात करने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं दिया था, और कुछ भी नहीं कहा गया था। अब, उस क्षण के आश्चर्य में, मिस एन — — ने उपस्थित लोगों से कहा कि यह कहानी मिस ब्रोंटे ने ही लिखी होगी; और चतुर सहेलियों ने तुरंत उन्हें सलाह दी कि वे किसी को भी यह न बताएं कि वे "जेन आयर" की लेखिका को जानती हैं, क्योंकि ऐसे व्यक्ति से उनका परिचय उनके चरित्र पर धब्बा माना जाएगा! जब शार्लोट को उनकी सहेली ने चुनौती दी, तो उन्होंने उग्र शब्दों में इनकार किया, जिससे सत्य की पूर्ण पुष्टि हुई; और जब 1848 की वसंत ऋतु में मिस एन — — ने

हॉवर्थ का दौरा किया, तो पूरी तरह से स्वीकारोक्ति की गई, और कहानियों के अलावा कविताएँ भी सामने लाई गईं और उन्हें दिखाई गईं।

शार्लेट ब्रोंटे के पत्रों को पढ़ने वाले लोग देखेंगे कि लेखन के क्षेत्र में अपनी यात्रा की घोषणा से पहले ही उनके लहजे में एक स्पष्ट बदलाव आ जाता है। ऐसा नहीं है कि वे अपनी शुरुआती दोस्त के प्रति कम स्नेह रखती हैं, या अपने पुराने साथियों के भाग्य में उनकी रुचि में जरा भी कमी आती है। इसके विपरीत, ऐसा लगता है मानो उनके जीवन की दिशा बदलने वाली इस बड़ी घटना ने उन्हें उन लोगों से और भी अधिक मजबूती से जोड़ दिया है जिन्हें वे गुमनामी में जानती और प्यार करती थीं। लेकिन उनके द्वारा लंबे समय तक किए गए पत्राचार में अक्सर तुच्छ लगने वाले विषयों को संभालने के तरीके में शक्ति और स्वतंत्रता का एक स्पष्ट विकास दिखाई देता है, जो दर्शाता है कि उनके बौद्धिक परिश्रम से उनका मन कितना विकसित हुआ था, उनके विचार कितने विस्तृत हुए थे। "जेन आयर" के लेखन की घोषणा गुप्त रहने के दौरान उन्होंने अपनी सहपाठी को निम्नलिखित अंतिम पत्र लिखा था, और मुझे लगता है कि यह मेरे द्वारा कही गई बात की पुष्टि करेगा:

25 अप्रैल, 1848।

आपके पत्र की सामग्री से मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ। वास्तव में, इसमें हमारे लिए नया क्या था? वी——में अच्छाई और बुराई दोनों हैं, जैसे अधिकांश लोगों में होती हैं। उसका अपना स्वाभाविक स्वभाव है, और दुनिया ने उसमें जो बदलाव किए हैं, वे भी हैं। इस बीच, बी—— और जी—— उसकी जोड़ी बनाने की चिंता क्यों कर रही हैं? भगवान के नाम पर, अगर उसे यह तरीका अच्छा लगता है, तो वह आधी देहांत को रिझाए और आधी से शादी कर ले, और यह सब शांति से करे। उसकी अपनी परेशानियाँ तो होंगी ही; शादी करना इतना आसान काम नहीं लगता, यहाँ तक कि एक पुरुष के लिए भी, क्योंकि इतनी सारी महिलाओं को खुश करना पड़ता है। ब्रह्मचर्य का मार्ग अपनाने वाले लोग अधिक शांत होते हैं। मुझे क्यू—— के पत्र और भी अच्छे लगने लगे हैं। उसकी अच्छाई वास्तव में प्रतिभा से कहीं बढ़कर है। मुझे लगता है कि उसकी कभी शादी नहीं होगी, लेकिन उसके मिलनसार स्वभाव से उसे सुकून मिलेगा। बेशक, उसके पत्रों से ही अंदाजा लगाया जा सकता है, और पत्र अक्सर धोखा देते हैं; लेकिन उसके पत्र इतने सरल और स्वाभाविक लगते हैं। फिर भी, अगर मैं आपकी जगह होता तो इस पत्राचार के बीच बेचैन महसूस करता। क्या

कभी आपके मन में यह शंका नहीं आती कि अगर आप दोनों कभी मिले तो क्या होगा?... ऐनी कहती है कि यह सोचकर उसे खुशी होती है कि आपने उसकी छोटी सी ड्राइंग संभाल कर रखी है। वह इसे किसी अजनबी के लिए बनाने के बजाय आपके लिए बनाना चाहती थी।

"कुरर बेल" ने अपनी किस्मत के अचानक आए इस बदलाव को बड़ी शांति और संयम से स्वीकार किया। उन्होंने अपने प्रकाशकों और अपनी पुस्तक के बारे में लिखने वाले आलोचकों के साथ खुलकर पत्र व्यवहार किया; उन्होंने अपने पिता को अपनी रचना का रहस्य बताया और उन्हें वह मसौदा दिखाया जो उनकी मेहनत का फल था; लेकिन अपने दोस्तों को लिखे पत्रों में उनके लहजे में कोई बदलाव नहीं दिखता। जैसा कि हम जानते हैं, सफलता उनके लिए बहुत सुखद थी; लेकिन उन्होंने इस सम्मान को विनम्रता से स्वीकार किया, अपने भीतर भरी हुई महत्वाकांक्षा को जरा भी प्रकट नहीं होने दिया। उन्होंने प्रकाशक को अपनी पहचान तक नहीं बताई थी, जब तक कि एक संयोगवश उन्हें इस अफवाह का पता नहीं चला कि लेखिका ने रोचेस्टर के चरित्र में श्री थैकरे पर व्यंग्य किया है और उनके निजी जीवन के दुखों को भी उजागर किया है। इस अनुमान से स्तब्ध होकर, वह ऐनी के साथ रात की ट्रेन से लंदन गईं और स्टेशन पर नाश्ता करने के बाद कॉर्नहिल स्थित एक प्रतिष्ठान की ओर पैदल गईं, जहाँ उन्हें मालिक से बात करने में बहुत कठिनाई हुई, क्योंकि उन्होंने कहा था कि वह उन्हें उनके नाम से नहीं पहचानेंगे। अंततः वह दुकान में आए और कुछ झुंझलाहट के साथ बोले: "युवती, तुम्हें मुझसे क्या चाहिए?" "महोदय, हम यॉर्कशायर से आए हैं। मैं आपसे अकेले में बात करना चाहती हूँ। मैंने 'जेन आयर' लिखी है।" "तुमने 'जेन आयर' लिखी है!" प्रसन्न प्रकाशक ने कहा; और उन्हें अपने कार्यालय में ले जाकर, अपनी माँ के घर आने पर ज़ोर दिया, जहाँ उनकी माँ उनका पूरा ख्याल रखेंगी। शार्लोट ने बाद में सुबह-सुबह स्टेशन पर अकेले इंतज़ार करने और बड़े शहर की भीड़ में उनके अकेलेपन के बीच के विचित्र अंतर को बताया, और शाम को ओपेरा हाउस में शानदार मंडली के बीच जेनी लिंड का प्रदर्शन सुनते हुए खुद को पाने के अनुभव को भी बताया।

लेकिन जल्द ही उनके विचार साहित्यिक उपलब्धियों से हटकर ब्रैनवेल की ओर मुड़ गए। ब्रैनवेल, जो इतने लंबे समय से उनके "साधारण घर" में एक अंधकारमय साये की तरह थे, बिना किसी पूर्व सूचना के उनसे बिछड़ गए। परिवार की विलक्षणता को पूरी तरह से अपनाते हुए, उन्होंने किसी और की तरह न मरने का निश्चय किया;

और जब अंतिम पीड़ा आई, तो वे खड़े हो गए, मानो गर्व से मृत्यु को चुनौती दे रहे हों, और खड़े-खड़े ही उनकी मृत्यु हो गई। अपने एक मित्र को लिखे गए इस पत्र में (जो अब तक अप्रकाशित है) - अपने पुराने सहपाठी को नहीं - शार्लोट अपने भाई के जीवन की त्रासदी के अंतिम अध्याय का वर्णन इस प्रकार करती हैं:

हॉवर्थ, 14 अक्टूबर, 1848।

जिस घटना का आप जिक्र कर रहे हैं, वह हम पर सचमुच अचानक घटी और हम सभी के लिए एक गहरा सदमा थी। मेरे बेचारे भाई का स्वास्थ्य लंबे समय से खराब था, और गर्मियों के दौरान उनकी भूख कम हो गई थी और वे कमजोर लग रहे थे; लेकिन न तो हमने, न उन्होंने खुद ने, और न ही उनके मामले में सलाह लिए गए किसी भी चिकित्सक ने इसे तत्काल खतरे का मामला समझा: वे अपनी मृत्यु से दो दिन पहले घर से बाहर निकले थे, और केवल एक दिन बिस्तर पर रहे। आपकी सहानुभूति के लिए धन्यवाद। इन परिस्थितियों में, कई लोग हमारे इस नुकसान को राहत की तरह समझेंगे; सच तो यह है कि हमें पूरी विनम्रता और कृतज्ञता के साथ यह स्वीकार करना चाहिए कि ईश्वर ने न्याय में दया का भाव भी डाला है; लेकिन फिर भी, जैसा कि आप अनुभव से जानते ही होंगे, करीबी रिश्तेदारों के बीच अंतिम वियोग जीवित बचे लोगों के लिए अत्यंत पीड़ादायक होता है। तब हर गलती और पाप भुला दिया जाता है; दया और शोक उनके दिल और यादों में बस जाते हैं। फिर भी, हमारे दुख में हमें सांत्वना मिलती है। बेचारे ब्रैनवेल के जीवन के अंतिम कुछ दिनों में एक बहुत ही शुभ परिवर्तन आया; उनका व्यवहार, उनकी भाषा, उनके भाव, सब कुछ पूरी तरह बदल गया था और नरम पड़ गया था। यह बदलाव मृत्यु के भय के कारण नहीं हो सकता था, क्योंकि उनकी मृत्यु के आधे घंटे के भीतर वे खतरे से बेखबर लग रहे थे। हम उन्हें ईश्वर के हाथों में सौंपते हैं! वे मनुष्य की तरह नहीं देखते। पापा, मैं शुक्रगुजार हूँ कि उन्होंने इस स्थिति को काफी अच्छे से सहन किया। शुरुआत में उनका दुख बहुत गहरा था। इकलौते बेटे को खोना कोई साधारण बात नहीं है। लेकिन उनकी शारीरिक शक्ति में अभी तक कोई कमी नहीं आई है, और उन्होंने अब काफी हद तक मानसिक शांति भी पा ली है; मेरी प्यारी बहनें भी काफी हद तक ठीक हैं। दुर्भाग्य से, जब सबसे ज्यादा ताकत की जरूरत थी, उसी समय बीमारी ने मुझे घेर लिया; मैंने एक-दो दिन तक ठीक होने की उम्मीद में सहन किया, लेकिन हालत और बिगड़ गई; बुखार, मतली, भूख का पूरी तरह से खत्म होना और पेट में दर्द इसके

लक्षण थे। डॉक्टर ने इसे पित्त ज्वर बताया - लेकिन मुझे लगता है कि यह हल्का रूप रहा होगा; कुछ ही दिनों में दवा और देखभाल से ठीक हो गया; मैं केवल एक हफ्ते तक बिस्तर पर रही, और मुझे उम्मीद है कि अब मैं लगभग ठीक हूँ। मुझे बेहद दुख हुआ कि जिस समय सक्रियता और प्रयास की सबसे अधिक आवश्यकता थी, उस समय मैं निष्क्रिय रहा। पिछला महीना मेरे जीवन में अंधकारमय सा रहा।

हाय! वह बहादुर महिला, जिसे परिवार के बोझ का पूरा हिस्सा न उठा पाने का बहुत दुख था, उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसका बोझ कितना बढ़ जाएगा, और उसके सामने आने वाले बादल कितने घने और काले होंगे, उन सभी बादलों से कहीं ज्यादा जिनसे वह अब तक गुज़री थी। उसके रास्ते में जो तूफान मंडरा रहा था, वह ऐसा था जिसे प्रसिद्धि या समृद्धि की कोई धूप भी दूर नहीं कर सकती थी। शार्लोट का दिल हमेशा जिससे सबसे ज्यादा जुड़ा रहा था, वह बहन जो उम्र और स्नेह में उसके सबसे करीब थी, एमिली, प्रतिभा की धनी लेकिन दुर्भाग्यशाली बच्ची, धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगी। शार्लोट अपनी प्रसिद्धि के एकांत में कहती हैं, "उसने अपने जीवन में कभी किसी काम में देरी नहीं की, और अब भी नहीं कर रही थी।" फिर भी एमिली ब्रोंटे का तेजी से पतन इस कहानी के सबसे दुखद पहलुओं में से एक है। मैंने उसके संकोच की बात की है। वह इतना गहरा था कि मरते समय उसने अपनी बहनों को भी यह मानने से इनकार कर दिया कि वह बीमार है। उन्होंने उसे अपनी आँखों के सामने कमजोर होते देखा; वे जानते थे कि मृत्यु उसके कदमों में खड़ी है; फिर भी उन्होंने उसे वैसी देखभाल देने की हिम्मत नहीं की जैसी एक बीमार व्यक्ति को चाहिए होती है, और जैसी देखभाल वे उसे देना चाहते थे। यह शार्लोट के जीवन की सबसे क्रूर यातना थी। एमिली की बीमारी के संक्षिप्त समय के दौरान, उसकी बहन ने अपनी सहेली को इस प्रकार लिखा:

मैंने एमिली से आपके आने का ज़िक्र महज़ एक सुझाव के तौर पर किया था, इस हल्की सी उम्मीद के साथ कि शायद इससे उसका मन प्रसन्न हो जाए, क्योंकि वह आपको इस घर के बाकी सभी लोगों से ज़्यादा मानती है। लेकिन मैंने पाया कि ऐसा नहीं हुआ; ज़रा सी भी उत्तेजना या परेशानी उसे बर्दाश्त नहीं है, और सच कहूँ तो मुझे नहीं लगता कि इस खराब मौसम में कीघली से पैदल आना-जाना आपके लिए बिल्कुल भी उचित है। फिर भी मैं आपसे मिलना चाहती थी, और ऐनी भी। एमिली की हालत अभी भी वैसी ही है: कल मुझे लगा कि वह थोड़ी बेहतर है, लेकिन आज

उसकी तबीयत ठीक नहीं है। फिर भी मुझे उम्मीद है, क्योंकि मुझे उम्मीद रखनी ही होगी; वह मेरे लिए जीवन से भी ज़्यादा प्यारी है। अगर निराशा की धुंध मेरे दिल तक पहुँच गई तो मैं बेकार हो जाऊँगी। मुझे लगता है कि सबसे पहले तो फेफड़ों में सूजन थी; इसका समय पर इलाज होना चाहिए था; लेकिन वह कोई देखभाल नहीं चाहती, कोई उपाय नहीं अपनाना चाहती, वह बहुत ज़िद्दी है। काश मैं उसकी हालत और भावनाओं को और अच्छे से समझ पाती। बुखार पहले जितना तेज नहीं है, लेकिन कमर में दर्द, खांसी और कमजोरी अभी भी मौजूद हैं।

पादरी के घर में दिन धीरे-धीरे, गंभीरता से बीतते गए, हर दिन शार्लोट और ऐनी के टूटे हुए दिलों पर दुख का एक नया बोझ लेकर आता था। एमिली का दृढ़ संकल्प अंत तक अटल रहा। दिन-प्रतिदिन वह अपनी बीमारी को मानने से इनकार करती रही, आराम करने, दवा लेने या उत्तेजक पदार्थ लेने से इनकार करती रही; अपने कांपते हाथों को पहले की तरह काम करने के लिए मजबूर करती रही। और फिर दिसंबर की वह दुखद सुबह आई, जिसकी कहानी श्रीमती गैस्केल ने सरल भाव से बयान की है, जब वह "हमेशा की तरह उठी और कपड़े पहने, कई बार रुकी, लेकिन सब कुछ खुद ही किया," यहाँ तक कि पिछले वर्षों की तरह सिलाई भी करती रही; अचानक उसने अधूरा काम एक तरफ रख दिया, अपनी बहन से धीमी आवाज़ में कहा: "अगर तुम डॉक्टर को बुलाओ तो मैं अभी उससे मिल लूँगी," और दो घंटे में शांति से इस दुनिया से चली गई।

टूटे हुए दिल वाले पिता, अपनी बची हुई बेटियों के सहारे, एमिली के पीछे-पीछे पुराने गिरजाघर में उसकी कब्र तक गए। वहाँ एक और शोक मनाने वाला था - वह खूंखार बूढ़ा कुत्ता जिसे एमिली लगभग किसी भी इंसान से ज़्यादा प्यार करती थी।

हां—शार्लोट ने अपनी सहेली को लिखते हुए कहा—अब एमिली न तो समय में है और न ही इस धरती पर। कल हमने उसके निर्जीव शरीर को चुपचाप गिरजाघर के फर्श के नीचे दफना दिया। हम इस समय बहुत शांत हैं। भला क्यों न हों? उसे कष्ट सहते देखने का दर्द अब थम गया है। हमें लगता है कि उसे शांति मिल गई है। अब कड़ाके की ठंड और तेज हवा से डरने की कोई जरूरत नहीं है। एमिली को ये सब महसूस नहीं होता। वह आशा से भरे समय में मरी। हमने उसे जीवन के यौवन में ही जाते देखा। लेकिन यही ईश्वर की इच्छा है, और जिस जगह वह गई है, वह उस जगह से बेहतर है जहां से वह आई है।

दिसंबर 1848 के उसी महीने में, जब शार्लोट इस भीषण परीक्षा से गुज़रीं और प्रेम और त्याग के ये कोमल शब्द लिखे, तभी क्वार्टरली रिव्यू ने उन्हें एक अनुचित महिला के रूप में निंदा की, जिसने "किसी पर्याप्त कारण से" अपनी स्त्री जाति के समाज को खो दिया था!

हॉवर्थ के छोटे से परिवार के दो सदस्यों को तीन मात्र महीनों में मृत्यु के भयानक तूफान ने छीन लिया; लेकिन अभी उसका प्रकोप पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ था। एमिली को कब्र में दफनाए जाने के तुरंत बाद, तीनों बहनों में सबसे छोटी और कोमल ऐनी धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगी। वह बहुत धीरे-धीरे मुरझाती गई। सर्दी बीत गई और वसंत आशा की एक किरण लेकर आया; लेकिन 16 मई को लिखा गया निम्नलिखित अप्रकाशित पत्र दर्शाता है कि शार्लोट ने स्कारबोरो की उस यात्रा पर कितने भय के साथ प्रस्थान किया, जिसे उसकी बहन ने अंतिम उपाय के रूप में करने पर जोर दिया था:

अगले बुधवार को हमारे प्रस्थान का दिन तय है; एलेन अपनी दयालु और मित्रवत इच्छा से हमारे साथ आ रही है। मैं उसका साथ मना नहीं करना चाहती, लेकिन उसे जाने के लिए ज़ोर देने की हिम्मत नहीं कर पा रही, क्योंकि मुझे इस बात की ज़रा भी उम्मीद नहीं है कि यह यात्रा इसमें शामिल लोगों के लिए सुखद या लाभदायक होगी। ऐनी बेहद कमज़ोर है। उसे खुद यह पक्का विश्वास है कि समुद्र की ताज़ी हवा उसे ताकत वापस पाने का मौका देगी। इसलिए उसे यह मौका मिलना ही चाहिए। प्रयोग करने का निश्चय कर लेने के बाद, आशंकाएँ व्यर्थ हैं, फिर भी जब मैं उसे देखती हूँ तो आशंकाएँ बढ़ जाती हैं। वह एमिली से भी ज़्यादा दुबली हो गई है, उसकी साँसें इतनी कमज़ोर हैं कि वह धीरे-धीरे भी सीढ़ियाँ चढ़ नहीं पाती। वह रात को बहुत कम सोती है, और अक्सर सुबह का अधिकांश समय अर्ध-सुस्ती की अवस्था में बिताती है। फिर भी वह दिन भर जागती रहती है, और मौसम अच्छा होने पर थोड़ी देर के लिए बाहर भी जाती है। ताज़ी हवा आमतौर पर अस्थायी रूप से ताजगी देती है, लेकिन उसकी स्फूर्तिदायक शक्ति कम हो जाती है।

मैं उस वफादार मित्र और साथी का ऋणी हूँ जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है, जिसने मुझे स्कारबोरो की दुखद यात्रा और उसके दुखद अंत का निम्नलिखित विवरण दिया है:

स्कारबोरो जाते समय हम यॉर्क में रुके, और जॉर्ज होटल में आराम करने और

भोजन करने के बाद, जिसका उन्होंने आनंद लिया, ऐनी एक कुर्सी पर बैठकर बाहर गईं और शार्लोट के साथ कुछ टोपियाँ और पोशाकें खरीदीं, साथ ही पादरी से भी मिलीं। स्कारबोरो पहुँचने के अगले दिन सुबह, उन्होंने स्नानघर जाने की ज़िद की और वहाँ केवल परिचारक के साथ ही रहने को कहा। वह अकेले ही अपने कमरे तक वापस आईं, लेकिन बगीचे के द्वार पर पहुँचते ही थककर गिर पड़ीं। उन्होंने कभी उस द्वार का नाम नहीं बताया, लेकिन बाद में इसका पता चला। उसी दिन उन्होंने गधे की गाड़ी में सैर की और चालक लड़के से जानवरों के प्रति दयालुता के बारे में बात की। रविवार को वह फिर से अकेले रहना चाहती थीं और चाहती थीं कि हम चर्च जाएँ। यह देखकर कि हम उन्हें नहीं छोड़ेंगे, उन्होंने बाहर जाने की अनुमति माँगी और हम सैलून की ओर चल पड़े। वह आधे रास्ते में आराम करती रहीं और हमें यह कहकर आगे भेजती रहीं कि वह चाहती हैं कि हम उस जगह को देखें, क्योंकि यह हमारी पहली यात्रा थी, हालाँकि उनकी नहीं। शाम को, हमें फिर से चर्च जाने के लिए कहने के बाद, वह बैठक के कमरे की खिड़की के पास बैठकर एक बेहद खूबसूरत सूर्यास्त का आनंद ले रही थी। अगली सुबह (जिस दिन उसकी मृत्यु हुई) वह सात बजे उठी और खुद कपड़े पहने, किसी की मदद लेने से इनकार कर दिया। वह हम सब में सबसे पहले नीचे जाने के लिए तैयार थी; लेकिन जब वह सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुँची, तो उसे नीचे उतरने में डर लगने लगा। शार्लोट उसके पास गई और उसे यह पता चला। मुझे लगा कि कोई परेशानी है, इसलिए मैं यह देखने के लिए अपने कमरे से बाहर निकली कि क्या बात है, तभी ऐनी ने मुस्कुराते हुए मुझे बताया कि उसे नीचे जाने वाली सीढ़ियों से डर लग रहा है। मैंने तुरंत कहा: "मुझे तुम्हें गोद में उठाने दो;" वह खुश दिखी, लेकिन मेरे लिए चिंतित भी थी। शार्लोट को यह विचार पसंद नहीं आया और ऐनी की इस कमजोरी के नए सबूत से वह बहुत दुखी भी हुई, यह मैं देख सकती थी। आखिरकार शार्लोट मान गई और अपने कमरे में चली गई और हमें वहीं छोड़ दिया। फिर मैं ऐनी से एक-दो सीढ़ियाँ नीचे गई और उससे विनती की कि वह अपनी बाहें मेरे गले में डाल ले, और मैंने कहा: "मैं तुम्हें बच्चे की तरह गोद में उठा लूँगी।" उसे अब भी डर लग रहा था, लेकिन जब मैंने उसे नीचे उतारने का वादा किया, अगर मैं ऐसा नहीं कर सका, तो उसने मुझ पर भरोसा करने की सहमति दी। ऐसा लग रहा था जैसे उसे इस प्रयास के लिए ताकत मिल रही हो, लेकिन सीढ़ियों के नीचे पहुँचते ही बेचारी ऐनी का सिर मेरे सिर पर भारी वज़न की तरह गिर पड़ा। यह सदमा बहुत भयानक था, क्योंकि मुझे

लगा कि अब मौत ही आ रही है। मैं किसी तरह उसे उसकी आरामकुर्सी के सामने तक ले गया और उस पर बिठा दिया, खुद उसके सामने घुटनों के बल गिर पड़ा, इस बात से बहुत दुखी था, और आखिरकार उसे गिरने दिया, हालाँकि वह उसकी कुर्सी पर ही गिरी। वह काँप रही थी, लेकिन उसने मुझे सांत्वना देने के लिए अपनी बाहें फैलाईं और कहा: "आप जानते हैं कि कुछ नहीं किया जा सकता था, आपने अपनी पूरी कोशिश की।" इसके बाद वह नाश्ते की मेज पर बैठी और उसके लिए तैयार किए गए उबले हुए दूध का एक कटोरा पिया। जैसे ही सुबह 11 बजे का समय नज़दीक आया, वह सोचने लगी कि क्या उसे समय पर घर पहुँचाया जा सकता है ताकि वह वहीं मर सके। दोपहर 2 बजे मौत आ गई, और केवल उसका सुंदर शरीर ही शांति में रह गया।

उसने अपने पूरे जीवन में जिस मधुरता और समर्पण भाव से उसे सुशोभित किया था, उसी भाव से उसने अपनी आत्मा को अर्पित कर दिया, यहाँ तक कि अंतिम क्षण में भी वह रोते हुए बोली: "हिम्मत रखो, शार्लोट, हिम्मत रखो!" जब वह अपनी बची हुई बहन को विदाई दे रही थी।

मेरे सामने एमिली और ऐनी के बचे हुए कुछ पत्र पड़े हैं। उनमें सहेजने लायक कुछ खास नहीं है। दोनों पत्रों में इस बात का ज़िक्र है कि शार्लोट परिवार की सबसे बड़ी पत्र-व्यवहार करने वाली सदस्य हैं, और उनके संक्षिप्त और नीरस पत्रों में उस व्यक्ति के लिए कोई आकर्षण नहीं हो सकता जो उनसे लगातार पत्र प्राप्त करता रहता है। फिर भी, तीनों में सबसे महान एमिली की सादगी और संयम बाकी बहनों के बचे हुए पत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले अपने भीतर छिपी असली शक्ति को पहचान लिया था; उन्होंने इस शक्ति के प्रयोग से मिलने वाले आनंद का अनुभव किया था; उन्होंने एक ऐसे भविष्य की आशा की थी जो उनके परिश्रम और धैर्य से भरे जीवन के किसी भी अन्य हिस्से की तरह उज्ज्वल और समृद्ध हो। अचानक मृत्यु उनके सामने आ गई, और उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि उन्हें अपना काम अधूरा छोड़ना होगा। हर किसी ने अपने-अपने तरीके से इस भयानक शत्रु का सामना किया, लेकिन उनमें से कोई भी उस आघात से भी नहीं हिचकी। एमिली का गर्वित स्वभाव हार मानने को तैयार नहीं था, और जैसा कि हमने देखा है, अंतिम पीड़ा तक उसने शारीरिक कमजोरियों के प्रति पूर्ण उदासीनता का भाव दिखाया, जिसमें वह अंतिम कमजोरी भी शामिल थी जो अंततः हम सभी को पराजित करती है। ऐनी को अपने धार्मिक विश्वास में शुद्ध और गहरा सुकून मिला,

और वह इस दृढ़ विश्वास के साथ प्रसन्नतापूर्वक मर गई कि वह मृत्यु के बाद मिलने वाले उस परिपूर्ण जीवन में प्रवेश कर रही है। एक विद्रोही थी, दूसरी ने समर्पण दिखाया; लेकिन दोनों ने अपने-अपने विशिष्ट स्वभाव के अनुसार साहस और धैर्य का प्रदर्शन किया।

आठवीं।

“शर्ली।”

शार्लोट स्कारबोरो से हॉवर्थ अकेली लौटी। उसके पिता ने असाधारण स्नेह के साथ उसका स्वागत किया, और उसने परिचित छत के नीचे फिर से आकर "खुश होने की कोशिश की"। "लेकिन इस बार खुशी का एहसास नहीं हुआ।" फिर भी, जिस साहस ने उसकी बहनों को अंत तक थामे रखा था, उसी साहस ने उसे अकेलेपन और शोक की पीड़ा में सहारा दिया। अब भी उसके हृदय में कोई कड़वाहट या उदासी नहीं थी, जिसने इतना गहरा दुख सहा था। चुपचाप लेकिन दृढ़ता से अपने दुख को एक तरफ रखकर, अपनी सहेली के सभी निमंत्रणों को ठुकराते हुए कि वह कुछ समय के लिए कहीं और जाकर राहत पाए, वह उस कहानी को पूरा करने बैठ गई, जिसका उद्देश्य दुनिया को यह बताना था कि खोई हुई एमिली अपनी प्यारी बहन की नजरों में कैसी थी। अकेले, उसी कमरे में जहाँ एक साल पहले तीन खुश बहनें एक साथ काम करती थीं, उन दीवारों के भीतर जो अब कभी पुरानी आवाजों से नहीं गूंजेंगी, या उन मैदानों पर चलते हुए, जिन पर एमिली के दृढ़, लचीले कदम अब कभी नहीं पड़ेंगे, उसने "शर्ली" की शानदार कहानी रची - जो उसकी रचनाओं में सबसे उज्ज्वल और स्वस्थ थी। लिखते समय वह कभी-कभी अपने प्रियजनों को संदेश भेजती हैं, जो हमें उस

अकेली महिला के नश्वर शरीर में धधकते नायक या शहीद की भावना को प्रकट करते हैं। "समर्पण, साहस, और जहाँ तक संभव हो प्रयास - ये वे हथियार प्रतीत होते हैं जिनसे हमें जीवन की लंबी लड़ाई लड़नी चाहिए;" और ये केवल शब्द नहीं हैं, यह वह अपनी आदत के अनुसार पूरी ईमानदारी और निष्ठा से सिद्ध करती हैं, इन पर अक्षरशः अमल करके। लेकिन कभी-कभी बोझ उन पर इतना भारी हो जाता है कि वह लगभग असहनीय हो जाता है। विचित्र रूप से, दुनिया की नज़र में एक मामूली सी बात, एक नौकर की बीमारी, उनके सबसे तीव्र शोक का कारण बनती है।

लगता है आपको घर पर श्रम और कठिनाइयों से जूझना पड़ रहा है, लेकिन अब मुझे सचमुच खुशी है कि आप हॉवर्थ नहीं आईं। हालात ऐसे हैं कि आपको वहाँ केवल असुविधा और उदासी ही मिलती। टैबी और मार्था दोनों इस समय बीमार बिस्तर पर हैं। मार्था की बीमारी बहुत गंभीर है। दस दिन पहले उसे आंतरिक सूजन हो गई थी; टैबी का लंगड़ा पैर फिर से खराब हो गया है, वह खड़ी नहीं हो सकती और चल भी नहीं सकती। मार्था की एक बहन मेरी मदद करती है, और उसकी माँ कभी-कभी आती है। पिछले हफ्ते एक दिन मैं दस मिनट के लिए पूरी तरह टूट गई थी, और पागलों की तरह बैठकर रोई थी। मार्था की बीमारी चरम पर थी; टैबी की चीख सुनकर मैं रसोई में गई, और मैंने उसे फर्श पर लेटा हुआ पाया, उसका सिर रसोई की अंगीठी के नीचे था। वह उठने की कोशिश में अपनी कुर्सी से गिर गई थी। पापा ने अभी-अभी कहा था कि मार्था की हालत बहुत गंभीर है; मैं खुद उस दिन सिरदर्द और बीमारी से व्याकुल थी; मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ या किससे मदद माँगूँ। भगवान का शुक्र है, मार्था अब स्वस्थ हो रही है; मुझे उम्मीद है कि टैबी जल्द ही ठीक हो जाएगी। पापा भी काफी अच्छे हैं। मुझे इस बात की तसल्ली है कि मेरे प्रकाशकों को मेरा भेजा हुआ काम बहुत पसंद आया है - इससे मुझे हौसला मिलता है, लेकिन ज़िंदगी एक संघर्ष है। ईश्वर करे हम सब इसे अच्छे से लड़ सकें।

यह पत्र 24 सितंबर, 1849 का है, जिस समय "शर्ली" लिखी जा रही थी और उनके प्रकाशकों के पास थी। उन्होंने एमिली के चरित्र को शर्ली के रूप में ही चित्रित किया है; और उनकी सहेली एलेन को कैरोलिन हेलस्टन के रूप में दुनिया के सामने प्रस्तुत किया है। जब यह पुस्तक, जिसमें सदी के आरंभिक यॉर्कशायर के जीवन के जीवंत चित्र और शेक्सपियर द्वारा मंच पर प्रस्तुत किए गए पात्रों के समान वास्तविक चरित्रों का उत्कृष्ट चित्रण है, प्रकाशित हुई, तो केवल एक ही प्रशंसा की लहर दौड़ी,

यहाँ तक कि उन आलोचकों से भी जो "जेन आयर" की निंदा करने के लिए इतने उत्सुक थे। इस बिंदु तक उन्होंने अपनी गुमनामी बनाए रखी थी, लेकिन अब उनकी पहचान उजागर हो गई थी, और लंदन में उनके प्रशंसकों ने अंततः उन्हें अपने यहाँ आने और साहित्य जगत के अपने साथियों से मिलने के लिए राजी कर लिया, वे पुरुष और महिलाएं जिनके नाम "कुरेर बेल" द्वारा दुनिया के सामने अपनी पहली विनम्र अपील करने से बहुत पहले हॉवर्थ पार्सनेज में घर-घर में जाने जाते थे।

शर्ली का "फील्ड हेड"।

लंदन में अपने पहले प्रवास के दौरान लिखे गए निम्नलिखित पत्रों में से एक का अंश पहले ही प्रकाशित हो चुका है; लेकिन इसे पुनः प्रकाशित करना उचित होगा:

दिसंबर, 1849।

मुझे अभी याद आया कि चूंकि आपको मेरा पता नहीं पता, इसलिए जब तक आपको पता न मिल जाए, आप मुझे पत्र नहीं लिख सकते। मैं पिछले गुरुवार को इस बड़े शहर में आई थी, और तब से एक तरह के भंवर में फंसी हुई हूँ; क्योंकि बदलाव, दृश्य और उत्तेजनाएँ, जो दूसरों के लिए मामूली होती हैं, मेरे लिए बहुत मायने रखती हैं। जब मैंने श्रीमान — — को डॉक्टर — — के पास जाने की अपनी योजना के बारे में बताया, तो मुझे लगा कि यह बिल्कुल भी ठीक नहीं है। उन्हें बहुत बुरा लगा होगा: उन्होंने अपनी माँ से मुझे पत्र लिखवाया, और इस तरह मैं अपने मुख्य अतिथि को उनके घर पर ठहराने के लिए राजी हो गई। अब तक मुझे इस निर्णय पर पछतावा नहीं हुआ है। श्रीमती — — ने शुरू में मेरा स्वागत ऐसे किया जैसे मुझे बहुत सावधानी बरतने के सख्त आदेश दिए गए हों। मेरे शयनकक्ष में शाम और सुबह आग

जलती थी, दो मोमबत्तियाँ थीं, आदि, और श्रीमती — — और उनकी बेटियाँ मुझे आदर और चिंता के मिले-जुले भाव से देखती थीं। लेकिन अब सब कुछ बदल गया है; कहने का तात्पर्य यह है कि ध्यान और शिष्टाचार पहले की तरह ही हैं, लेकिन चिंता और अलगाव पूरी तरह से गायब हो गए हैं; वह मुझसे ऐसे पेश आती है मानो मुझे पसंद करती हो, और मैं भी उसे बहुत पसंद करने लगता हूँ। दयालुता दिल जीतने का एक शक्तिशाली जादू है। पहली नज़र में मैंने — — के बारे में कुछ खास अच्छा नहीं सोचा था — लेकिन वह मुझे बहुत पसंद आया: मैं उसे एक व्यापारी के रूप में नहीं, बल्कि एक बेटे और भाई के रूप में ज़्यादा पसंद करता हूँ। श्री डब्ल्यू — — भी वास्तव में बहुत सज्जन और जानकार हैं; उनकी कुछ कमज़ोरियाँ ज़रूर हैं, लेकिन समाज में वे नज़र नहीं आतीं। श्री एक्स — — (छोटे कद के व्यक्ति) ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा दिखाई है। उनके बारे में अभी तक मैं कोई स्पष्ट राय नहीं बना पाया हूँ। उनमें काबिलियत तो है ही, क्योंकि वे अपनी फर्म चलाते हैं और अपने दृढ़ निश्चय से चालीस नौजवानों को अपने नियंत्रण में रखते हैं। उनके युवा वरिष्ठ अधिकारी उन्हें पसंद करते हैं, जो सच कहूँ तो, फिलहाल मुझसे कहीं ज़्यादा है। दरअसल, मुझे शक है कि वह हेलस्टन जैसे लोगों में से हैं — कठोर, निरंकुश और अपनी मर्ज़ी के मालिक। वह बहुत दयालु बनने की कोशिश करते हैं, और कभी-कभी सहानुभूति भी जताते हैं, लेकिन सफल नहीं हो पाते। उसके चेहरे के बीचोंबीच एक दृढ़, भयानक नाक है, जो मेरे चेहरे पर चुभने पर मेरी आत्मा को लोहे की तरह चीर देती है। फिर भी वह बेहद बुद्धिमान, तेज, खोजी, समझदार और अटूट दृढ़ता वाली स्मृति वाला व्यक्ति है: उसके पास जाना पत्थर से कोमल या गर्म फर की ओर मुड़ने जैसा है। मैंने थैकरे को देखा है।

खुशी की बात करें तो, मैं उत्तेजना भरे माहौल में हूँ, लेकिन कभी-कभी मुझे तीव्र पीड़ा होती है—मेरा मतलब मानसिक पीड़ा से है। जिस समय श्री थैकरे आए, उस समय मैं भूख से बुरी तरह कमजोर था, क्योंकि मैंने नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया था, और शाम के सात बज रहे थे। उत्तेजना और थकावट ने मिलकर उस शाम मेरी हालत खराब कर दी। उन्होंने मेरे बारे में क्या सोचा, यह मैं नहीं बता सकता। आज शाम मैं मिस मार्टिन्यू से मिलने जा रहा हूँ; उन्होंने मुझे बहुत ही स्नेहपूर्वक पत्र लिखा है; वह मुझे केवल करर बेल के नाम से जानती हैं; मैं अकेला जा रहा हूँ; मेरा अनुभव कैसा रहेगा, यह मैं नहीं जानता। अगर श्रीमती — — दयालु न होतीं, तो मैं कभी-

कभी बहुत दुखी होता; लेकिन वह मुझसे लगभग स्नेहपूर्वक व्यवहार करती हैं, उनका ध्यान कभी कम नहीं होता। मैंने बहुत कुछ देखा है; मुझे उम्मीद है कि किसी दिन मैं आपको बता पाऊँगा। कल मैं श्री — — के साथ संसद के नए भवन का निरीक्षण करने गया था। पिछली बार जब मैंने लिखा था, तब से बेचारे श्री X — — गठिया के बुखार के कारण रास्ते से हट गए हैं। मुझे उनके लिए खेद है। अंधेरा हो रहा है। मुझे रुकना होगा। मैं लंदन में अपने पूर्व निर्धारित समय से एक दिन भी अधिक नहीं रुकूंगा। इन बिंदुओं पर मैंने अपना संकल्प बना लिया है और मैं विचलित नहीं होऊंगा। टाइम्स अखबार ने मुझ पर बेरहमी से हमला किया है।

निम्नलिखित पत्र (एक अपवाद को छोड़कर जो पहले प्रकाशित नहीं हुआ है) 1850 की वसंत ऋतु के हैं, जब शार्लोट फिर से घर पर थीं, अपने पिता की देखभाल और घरेलू कामों में व्यस्त थीं, जो उनके साहित्यिक कार्यों और चिंताओं के साथ-साथ उनका ध्यान भी बाँट रहे थे। पहला पत्र, जो विशेष रूप से लंदन की उनकी यात्रा से संबंधित है, यॉर्कशायर में उनके एक पुराने मित्र को संबोधित था:

एलेन ने आपको बताया होगा कि मैंने पिछले दिसंबर में लंदन में दो सप्ताह बिताए थे। वे चाहते थे कि मैं एक महीना रुकूँ, उनका कहना था कि इतने समय में मैं अपने परिचितों का पूरा दायरा बना लूँगा, लेकिन मुझे दो सप्ताह का ऐसा रोमांच ही काफी लगा। पूरा दिन आमतौर पर दर्शनीय स्थलों की सैर में बीतता था, और अक्सर शामें समाज में ही गुज़ारी जाती थीं; यह मेरे लिए लंबे समय तक सहन करने से परे था। एक बार मेरी मुलाकात मेरे आलोचकों के एक समूह से हुई - उनमें से सात लोग थे। उनमें से कुछ तो लेखन में मेरे कट्टर दुश्मन रहे थे, लेकिन आमने-सामने वे बेहद विनम्र थे। ये सज्जन मुझे उन कुछ लेखकों से कहीं अधिक भव्य, आडंबरपूर्ण, जोशीले और दिखावटी लगे, जिनसे मैं मिला था। उदाहरण के लिए, श्री थैकरे बहुत शांत और सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं; फिर भी, उन्हें कुछ आदर और अविश्वास की दृष्टि से देखा जाता है। उनकी बातचीत बहुत ही विचित्र है, इतनी अटपटी कि सुखद नहीं लगती। मुझे चार्ल्स डिकेंस, लेडी मॉर्गन, श्रीमती ट्रोलोप, गोर और कुछ अन्य लोगों से मिलने का प्रस्ताव दिया गया था; लेकिन मुझे पता था कि इन परिचय से मुझे कुछ हद तक बदनामी मिलेगी, जिसे मैं झेलना नहीं चाहता था; इसलिए मैंने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया। शहर में अपने प्रवास के दौरान मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित करने वाली चीज चित्र थे; टर्नर के सर्वश्रेष्ठ जलरंग चित्रों के एक-दो निजी संग्रह वास्तव में अद्भुत थे।

उनके बाद के तेल चित्र विचित्र हैं - ऐसी चीजें जिनका वर्णन करना असंभव है। मैंने मैक्रेडी को दो बार अभिनय करते देखा है; एक बार "मैकबेथ" में और एक बार "ओथेलो" में। मैंने एक रात्रिभोज में यह कहकर सबको चौंका दिया कि मुझे वह पसंद नहीं है। उनके शानदार अभिनय की प्रशंसा करना आजकल का चलन है; उनकी पूरी शैली से ज्यादा बनावटी और कृत्रिम, कम प्रभावशाली कुछ और हो सकता है, इसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। सच तो यह है कि रंगमंच की पूरी व्यवस्था खोखली बकवास है। वे प्रहसन तो ठीक-ठाक करते हैं; अभिनेता अपनी भूमिकाओं को समझते हैं और उनके साथ न्याय करते हैं। उन्हें त्रासदी या शेक्सपियर के बारे में कुछ भी समझ नहीं है, और यही उनकी विफलता है। मैंने ऐसा कहा, और ऐसा कहने पर सन्नाटा छा गया, मानो कोई स्तब्ध रह गया हो। मुझे कई मौकों पर असहमति जतानी पड़ी और असहमति जताने से कुछ लोगों को ठेस भी पहुंची। आजकल एलिज़ाबेथ बैरेट ब्राउनिंग जैसी कविता की एक खास तरह की, जटिल और अस्पष्ट शैली की प्रशंसा करना आम बात हो गई है। कुछ रचनाओं का ज़िक्र हुआ, जिनके बारे में करर बेल से बहुत उत्साह की उम्मीद थी, लेकिन ऐसा न होने पर उन्होंने निराश किया। लंदन के लोग देहाती लोगों की तरह लगते हैं, जो छोटी-छोटी बातों में उलझे रहते हैं, जिनकी परवाह शहर के खास तबकों के बाहर कोई नहीं करता। वे ऐसे लोगों, साहित्यकारों और महिलाओं की बातें करते हैं, जिनके नाम गांवों में शायद ही सुने जाते हैं और जिनमें कोई दिलचस्पी नहीं होती। मुझे लगता है कि मुझे लंदन में रहना शायद ही पसंद आएगा, और अगर मुझे वहां रहना ही पड़े तो मैं निश्चित रूप से कम ही लोगों से मिलूंगा—खासकर साहित्यिक आलोचकों से।

आपके जाने के बाद से मुझे थैकरे का एक उल्लेखनीय पत्र मिला है, लंबा, रोचक और उनके विशिष्ट स्वभाव वाला; लेकिन दुर्भाग्य से इसका अंत इस सख्त हिदायत के साथ होता है, "यह पत्र किसी को न दिखाएँ"; साथ ही यह भी लिखा है कि अगर उन्हें लगा कि उनके पत्र दूसरों ने देख लिए हैं, तो वे या तो लिखना बंद कर देंगे, या केवल वही लिखेंगे जो प्रथागत है। अगर यह बात न होती तो मैं इसे बाकी पत्रों के साथ भेज देता। मैंने इसका लंबा जवाब दिया है। मेरा जवाब संतोष देगा या नाराज़गी, यह अभी पता चलना बाकी है। थैकरे के भाव ऐसे नहीं हैं जिन्हें सामान्य गणना से समझा जा सके: उनका स्वभाव हमेशा बदलता रहता है। फिर भी, पत्राचार में, मौखिक बातचीत

की तरह, यह बात मुझे परेशान करती है।

शर्ली का “ब्रियारफील्ड” चर्च।

मुझे लगता है कि मुझे आपको पहले ही लिख देना चाहिए था, लेकिन पता नहीं हाल ही में मुझ पर किस तरह का भारीपन छाया हुआ है, जिसने मेरी सोचने-समझने की शक्ति को कम कर दिया है, आराम को थका देने वाला बना दिया है और काम को बोझिल बना दिया है। कभी-कभी घर की खामोशी, कमरे का एकांत मुझ पर इतना भारी बोझ बन जाता है कि उसे सहना मुश्किल हो जाता है, और यादें उतनी ही सजग, मार्मिक और स्पष्ट हो जाती हैं, जबकि अन्य भावनाएँ सुस्त पड़ जाती हैं। मैं इस स्थिति का कुछ श्रेय मौसम को देता हूँ। तूफानों और तेज हवाओं में पारा हमेशा नीचे गिर जाता है, और इससे पहले भी मुझे वातावरण में आने वाली अशांति का आगाह शारीरिक कमजोरी और गहरे, भारी मानसिक दुख के रूप में मिला है, जिसे कुछ लोग पूर्वाभास कहते हैं। यह पूर्वाभास ही है, लेकिन बिल्कुल भी अलौकिक नहीं। हॉवर्थ के लोग "शर्ली" के बारे में बहुत मूर्खता कर रहे हैं; वे इसे उत्साह से लेते हैं। जब उन्हें मैकेनिक्स इंस्टीट्यूशन में पुस्तकें मिलीं, तो सभी सदस्य उन्हें चाहते थे; उन्होंने तीनों के लिए लॉटरी निकाली, और जिसे भी एक किताब मिली, उसे केवल दो दिन रखने की अनुमति थी, और इससे अधिक समय तक रखने पर प्रतिदिन एक शिलिंग का जुर्माना देना पड़ता था। वे क्या कहते हैं, यह बताना सरासर व्यर्थ और व्यर्थ होगा। मुझे लंबे समय से लंदन से कोई पत्र नहीं मिला है, और अब जब वह प्रेरणा समाप्त हो गई है, तो मुझे यह जानकर बहुत शर्म आ रही है कि मैं उस पर कितना निर्भर हो गया

था। डाक के समय तक मुझे आशा की उत्तेजना बनी रहती है, और जब दिन-प्रतिदिन कुछ नहीं मिलता तो मैं निराश हो जाता हूँ। यह एक मूर्खतापूर्ण, शर्मनाक और अर्थहीन स्थिति है। मैं अपनी निर्भरता और मूर्खता पर बहुत क्रोधित हूँ। मन के लिए बिल्कुल अकेला रहना, छोटी-मोटी परेशानियों और निराशाओं पर किसी से बात न कर पाना और उन्हें हँसकर टाल देना बहुत बुरा है। अगर मैं लिख पाता तो शायद बेहतर होता, लेकिन मैं एक पंक्ति भी नहीं लिख सकता। फिर भी (ईश्वर की कृपा से), मैं इस मूर्खता से लड़ूँगा। मुझे कुछ दिन पहले मिस — — का एक मूर्खतापूर्ण पत्र मिला था। उसमें कुछ बातें मुझे चुभ गईं, विशेष रूप से यह अनावश्यक रूप से गंभीर आश्वासन कि लेखन के क्षेत्र में मैंने जो कुछ भी किया है, उसके बावजूद भी मैं अब भी उसकी नज़रों में एक खास स्थान रखता हूँ। मैंने तुरंत ही दृढ़ता और गरिमापूर्ण उत्तर दिया। मैंने कहा कि इस विषय पर मुझे कोई संदेह नहीं था, और न ही मैंने खुद के साथ और न ही उसके साथ कोई अन्याय किया यह मानकर कि मैंने जो लिखा है उसमें ऐसा कुछ है जिससे सम्मान खोना उचित हो। मैंने संकेत दिया कि मैं जानता हूँ कि कुछ लोग "जेन आयर" पर आपत्ति जताते हैं, और उनके भले के लिए मुझे खेद है, क्योंकि मैंने हमेशा उन्हें ऐसे व्यक्तियों में पाया है जिनमें बौद्धिकता पर पशु प्रवृत्ति हावी होती है, स्वभाव से असभ्य, प्रवृत्ति से कामुक, चाहे उनकी शिक्षा और सिद्धांत कुछ भी हों।

मैं आपके मनोरंजन के लिए अखबार का एक टुकड़ा भेज रहा हूँ। मुझे यह देखकर हंसी भी आई और दिल भी छू गया, क्योंकि इसमें उन लोगों का जिक्र है जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। यह एक अमेरिकी अखबार का अंश है, और इसे हॉवर्थ के एक प्रवासी ने लिखा है। आपको इसमें सच्चाई और झूठ का एक अनोखा मिश्रण मिलेगा। अगली बार जब आप लिखें तो इसे लौटा दें। मैं आपको "जेन आयर" पर एक राय भी पढ़ने के लिए भेज रहा हूँ, जिसे इस गाँव के एक मजदूर ने लिखा है; बल्कि, मैं कहूँ कि यह उस बेचारे के मन में किताब को लेकर पैदा हुई भावनाओं का एक रिकॉर्ड है; यह मेरे लिए नहीं लिखा गया था, और न ही लेखक को अब पता है कि उसका यह छोटा सा दस्तावेज किसी तरह मेरे पास पहुँच गया है, और मैंने इसे देने वालों से वादा लिया है कि वे उसे इस बात की जानकारी कभी नहीं देंगे। वह एक विनम्र, विचारशील, भावुक और पढ़ने वाला व्यक्ति है, जिससे मैंने अपने जीवन में शायद तीन बार ही बात की है; उसका नाजुक स्वास्थ्य उसे कठिन या शारीरिक श्रम करने में असमर्थ बनाता

है; वह और उसका परिवार अक्सर अभाव में रहते हैं। उन्हें डर था कि अगर मिस ब्रोंटे ने उनकी लिखी हुई रचना देख ली तो वे उसका उपहास करेंगी। लेकिन मिस ब्रोंटे इसे सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से एक मानती हैं, क्योंकि यह उनकी रचना को मिली सबसे सच्ची और सरल प्रशंसाओं में से एक है। आपको भी इसे लौटाना चाहिए। इसे आपको दिखाकर मैं आपको बहुत सम्मान दे रहा हूँ।

एक बार फिर हम देख सकते हैं कि दूसरों के कल्याण में उनकी स्वस्थ और प्रसन्न रुचि अब प्रकट होने लगी है। कुछ समय तक, मृत्यु के घावों के गहरे दर्द के कारण, उन्हें अपने मित्रों के मामलों पर पत्राचार में चर्चा करने की इच्छा नहीं होती थी; लेकिन अब बाहरी दुनिया उनकी नए सिरे से ध्यान देने योग्य है, और वह एक बार फिर अपने परिचितों के चरित्रों पर कुशलता और बारीकी से चर्चा और विश्लेषण करने लगती हैं, जिससे वे अजनबियों के लिए भी उतने ही रोचक बन जाते हैं जितने कि काल्पनिक कथाओं के सबसे गहनता से अध्ययन किए गए पात्र हो सकते हैं।

मैं क्यू — — का पत्र लौटा देता हूँ। यह मामला बेहद अप्रिय है। मुझे अब यह शुरुआत, प्रगति और अंत, हर लिहाज़ से पूरी तरह से अनुचित लगता है। क्यू — — ही इसमें एकमात्र पवित्र चीज़ है; वह अपने कठोर पिता और निर्दयी, प्रेमहीन प्रेमी के बीच ऐसे खड़ी है जैसे दुनिया के दो कठोर धूर्तों के बीच मासूमियत। यह तुलना वी — — पर लागू करना थोड़ा कठिन लगता है, लेकिन अब जैसा मैं उसे देखता हूँ, वह इसके योग्य है। अगर वी — — के पास पत्नी का भरण-पोषण करने का कोई साधन नहीं है, अगर उसके पास एक भी पैसा ऐसा नहीं है जिस पर उसे भरोसा हो, तो वह ऐसी स्त्री से विवाह करने के बारे में कैसे सोच सकता है जिससे वह अपने भरण-पोषण के लिए काम करने की उम्मीद नहीं कर सकता? वी — — की बेईमानी, और इस मामले का दो बार झूठा बयान, उसके खिलाफ़ बहुत गहरा और दर्दनाक सबूत पेश करता है। यह उसके छिपे हुए इरादों की एक झलक दिखाता है, जिन्हें मैं शब्दों में बयान करने से बचता हूँ। आख़िरकार, वह शायद अधिकांश पुरुषों जैसा ही है। निःसंदेह, वे पुरुष जो अपनी युवावस्था में मौज-मस्ती करते हैं और अधोलोक में पहुँचते-पहुँचते उनकी भावनाएँ कुंद और वासनाएँ समाप्त हो जाती हैं, विवाह में उनका केवल एक ही उद्देश्य हो सकता है - अपने स्वार्थ की पूर्ति। और यह सोचकर दुख होता है कि ऐसे पुरुष युवा, विनम्र, ईमानदार, हृदय और जीवन से पवित्र, ताज़ी भावनाओं और अनछुए भावों वाली महिलाओं को अपनी पत्नियाँ बना लेते हैं - मानो वे उनके

दूसरे रूप हों - और ऐसे सद्गुण और जीवंतता को अपने मुरझाए हुए अस्तित्व से, ऐसी ईमानदारी को अपने खोखलेपन से, ऐसी निस्वार्थता को अपने लचर लालच से जोड़ लेते हैं! यह सोचकर आत्मा अंतर्मन तक व्याकुल हो जाती है। प्रकृति और न्याय ऐसे विवाह की अनुमति नहीं देते। यह टिप्पणी उत्तेजना में लिखी गई है। क्यू - - के पत्र ने मानो एक छलपूर्ण पर्दे को हटा दिया है और पिता और दूल्हे दोनों को एक गहरे अंधकार में छिपे हुए, एक-दूसरे की तुच्छता से वाकिफ, और परिणामस्वरूप आपसी सम्मान से रहित दिखाया है! ये बातें मुझे क्रोधित करती हैं, लेकिन मैं शांत हो जाऊँगा।

मुझे आपका पिछला पत्र नहीं मिल रहा है, इसलिए यह उसका उत्तर नहीं होगा। यदि संभव हो तो कृपया डाक द्वारा तुरंत पुनः लिखें और मुझे बताएं कि आप कैसे हैं। आपके पिछले पत्र में आपने जो कहा, उससे मेरा यह अनुमान पुष्ट हो गया कि आपको हाल ही में बुखार आने के लक्षण काफी समय से थे। ठंडे पानी से स्नान आदि की आपकी इच्छा, मेरे विचार से, बुखार का ही परिणाम है। आजकल लगभग सभी लोग हल्के बुखार की शिकायत कर रहे हैं। मुझे भी बार-बार प्यास और भूख लगने से यह महसूस हुआ है। पापा और मार्था ने भी यही शिकायत की है। मुझे डर है कि यह नम मौसम आपको रास नहीं आएगा; लेकिन कृपया लिखकर सब कुछ बताएं। हाल ही में मुझे कई पत्रों का उत्तर देना पड़ा है; और कुछ पत्र तो बहुत परेशान करने वाले थे, उन लोगों के जो अपनी किताबों के बारे में राय चाहते हैं, जान-पहचान बनाना चाहते हैं और चापलूसी करते हैं; ऐसे लोग जो मेरे बारे में पूरी तरह से गलत समझते हैं। उन्हें बिना नाराज किए जवाब देना, टालना और शांत करना बहुत मुश्किल है; क्योंकि ऐसे लोग बहुत संवेदनशील होते हैं और अपमानित होने पर दुर्भावना दिखाने लगते हैं। उनकी किताबें अक्सर निराशाजनक होती हैं।

जून 1850 में, उन्हें लंदन की एक और यात्रा करने के लिए प्रेरित किया गया, इस बार वह उस समय गईं जब सीज़न अपने चरम पर था, हालांकि उन्होंने जाने से पहले यह शर्त रखी थी कि उन्हें "प्रशंसा का पात्र नहीं बनाया जाना चाहिए।"

मैं पिछले गुरुवार को लंदन आया था। मैं — — में ठहरा हूँ। यहाँ मुझे बहुत आराम महसूस हो रहा है। श्रीमती — — मेरे साथ शांत और सौम्य व्यवहार करती हैं, जो मुझे बहुत पसंद है। उनका बेटा पहले की तरह ही मिलनसार और दोस्ताना है। मैंने

बहुत कम लोगों से मुलाकात की है, और आगे भी ज्यादा लोगों से मिलने की संभावना नहीं है, क्योंकि समझौता यह था कि मुझे बहुत शांत रहना है। हम रॉयल एकेडमी की प्रदर्शनी, ओपेरा और चिड़ियाघर गए थे। मौसम बहुत सुहावना है। मैं लंदन में दो सप्ताह से अधिक नहीं रुकूँगा; बुखार और थकावट मुझे थोड़ी परेशान कर रही है, लेकिन मुझे लगता है कि पहले जितनी बुरी नहीं है — क्योंकि वास्तव में मैं अभी तक उतना थका हुआ नहीं हूँ।

यदि सब ठीक रहा तो मैं मंगलवार को लंदन से रवाना हो रहा हूँ, और यदि यह व्यवस्था आपके लिए सुविधाजनक बनी रहती है तो मुझे कुछ दिनों के लिए आपके पास आने में बहुत खुशी होगी। इस बार मेरी लंदन यात्रा मेरी अपेक्षाओं से कहीं अधिक सुखद रही है। मुझे पहले की तुलना में कम कष्ट हुआ और अधिक आनंद मिला; हालाँकि, अभी भी एक कठिन अंत बाकी है। श्रीमती — — का सबसे छोटा बेटा स्कॉटलैंड के स्कूल में पढ़ रहा है, और उनका सबसे बड़ा बेटा उसे छुट्टियों के लिए घर लाने जा रहा है। पिछली शाम उसने अपनी एक बहन को साथ ले जाने की इच्छा जताई, और अगली शाम उसने यह भी प्रस्ताव रखा कि मिस ब्रोंटे एडिनबर्ग जाकर उनसे मिलें और उस शहर और उसके उपनगरों को देखें। मुझे लगा कि वह मज़ाक कर रहे हैं, मैं हँस पड़ा और मना कर दिया। हालाँकि, ऐसा लगता है कि वह गंभीर थे, और अपनी इच्छा पूरी करवाने के आदी होने के कारण, वह विरोध को बर्दाश्त नहीं करते। यह बात मुझे बिल्कुल असंभव लग रही थी, इसलिए मैंने फिर भी इनकार कर दिया। श्रीमती — — को यह बिल्कुल पसंद नहीं आया, लेकिन उनके नेक बेटे का इरादा और भी दृढ़ हो गया। आज सुबह वह आईं और मुझसे जाने की विनती की; जी——की इतनी तीव्र इच्छा थी कि उन्होंने उससे अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने की विनती की थी, इत्यादि। अब, मुझे विश्वास है कि हम दोनों एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह समझते हैं और एक-दूसरे का बहुत सम्मान करते हैं। हम दोनों जानते हैं कि समय ने हमारे बीच कितनी बड़ी खाई खड़ी कर दी है। हम एक-दूसरे को शर्मिंदा नहीं करते, या बहुत कम ही करते हैं। मेरी छह-आठ साल की वरिष्ठता, और सुंदरता आदि का कोई दिखावा न होना, एक पूर्ण सुरक्षा कवच है। मुझे उनके साथ चीन जाने में ज़रा भी डर नहीं है। मुझे उन्हें प्रसन्न देखना अच्छा लगता है। मैं उन्हें नाराज़ या निराश करना बिल्कुल पसंद नहीं करती; इसलिए उनकी इच्छा पूरी

होगी, और अगर सब ठीक रहा तो मैं आपके साथ कुछ दिन बिताने के बाद एडिनबर्ग में उनसे मिलने जाऊंगी। उनकी उमंग भरी ऊर्जा और युवा जोश से मेरी मांसपेशियों और नसों पर काफी दबाव पड़ेगा; लेकिन मुझे विश्वास है कि मैं किसी तरह इसे संभाल लूंगी।

IX.

अकेलापन और प्रसिद्धि।

1850 और 1851 के दौरान लिखे गए शार्लोट ब्रोंटे के पत्र उस महिला के वास्तविक चरित्र के सबसे मूल्यवान उदाहरणों में से हैं जो हमारे पास मौजूद हैं। लगातार कई दुखद घटनाओं से व्याकुल होकर, जिन्होंने उनके सबसे प्रिय मित्रों और साथियों को उनसे छीन लिया था, और उन्हें बंजर भूमि पर स्थित उस नीरस घर और उसके वृद्ध मुखिया का एकमात्र सहारा बना दिया था, फिर भी उन्होंने अपने मन की शांति और यहाँ तक कि अपनी जीवंतता और प्रसन्नता को काफी हद तक पुनः प्राप्त कर लिया था। अब उन्होंने जीवन को उस रूप में देखना शुरू कर दिया था जैसा कि यह तिरस्कृत गवर्नेंस के लिए नहीं, बल्कि सफल लेखिकाओं के लिए प्रस्तुत किया जाता है। लंदन की उनकी यात्राओं ने उन्हें साहित्यिक जगत के कुछ प्रमुख व्यक्तियों के संपर्क में ला दिया था। थैकरे के साथ उनकी मुलाकात को कौन भूल सकता है, जब वे "उस दिग्गज से उनकी कुछ कमियों के बारे में बात करने के लिए प्रेरित हुईं?" हॉवर्थ स्वयं जिज्ञासु लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया था, और कई आगंतुक किसी न किसी बहाने से पुराने पादरी के घर तक पहुँच जाते थे, जहाँ श्री ब्रोंटे उनका हार्दिक

स्वागत करते थे, जबकि उनकी बेटी शर्मीली उदासीनता से पेश आती थीं। उनका पत्राचार भी समाज और जगत के प्रतिष्ठित पुरुषों और महिलाओं के बीच व्यापक रूप से फैल गया था। कुल मिलाकर, पहाड़ियों के बीच अपने एकांत निवास से वह एक बिल्कुल अलग जीवन को देख रही थीं - एक ऐसा जीवन जिसमें कई नई रुचियाँ थीं, बहुत कुछ ऐसा था जो उनके हृदय में अब तक अनछुए भावों को जगाने और उनके स्वभाव और प्रतिभा के नए पहलुओं को उजागर करने वाला था। कोई यह कल्पना करना चाहेगा कि क्या हो सकता था, यदि 1848 की शरद ऋतु और 1849 की वसंत ऋतु के दौरान आए मृत्यु के उस तूफान ने उनके घर और हृदय में व्याप्त उजाड़ न किया होता। जैसा कि हुआ, कोई भी नई बात उन्हें बीते हुए कल को भुला नहीं सकी; कोई भी नया चेहरा, चाहे कितना भी स्वागत योग्य क्यों न हो, उन चेहरों की कोमल यादों को धुंधला नहीं कर सका जिन्हें अब कभी नहीं देखा जा सकता था, और न ही उस स्नेह को कम कर सका जिससे वह अब भी अपने स्कूली दिनों की सहेली से जुड़ी हुई थी। सादगी और ईमानदारी उसके पत्रों की प्रमुख विशेषताएँ हैं, उसके जीवन के इस नाजुक दौर में भी, और इससे पहले के सभी वर्षों में भी। ये पत्र उसके मन की विभिन्न मनोदशाओं को दर्शाते हैं; ये उसे कई अलग-अलग परिस्थितियों में दिखाते हैं; लेकिन ये हमेशा इस बात का आभास कराते हैं कि उसकी अंतरात्मा के प्रति निष्ठा और सत्य एवं पवित्रता के प्रति श्रद्धा आज भी वैसी ही है जैसी उसके सुखमय और सांसारिकता से दूर गुमनामी के दिनों में थी। जिन पत्रों का मैं अब उल्लेख कर रहा हूँ, वे जनता के लिए बिल्कुल नए हैं।

18 जुलाई, 1850।

आपको खुश होना चाहिए, क्योंकि आपके पत्र से मुझे पता चलता है कि आप उदास हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने जो कहा है उसे इस अर्थ में लें: कि इन परिस्थितियों में, मेरे लिए लंबी आयु की उम्मीद करना अनुचित होगा - यह एक स्पष्ट सत्य है। बाकी, हम सब उस परमेश्वर के हाथों में हैं जो अपने उपहार, स्वास्थ्य या बीमारी, जीवन की लंबाई या अल्पता, प्राप्तकर्ता के सर्वोत्तम अनुसार देता है: जिसे काम करना है उसे समय दिया जाएगा; जिसे कोई कार्य नहीं सौंपा गया है उसके लिए विश्राम का समय जल्दी आएगा। जहाँ तक हमारी अंतिम नींद से पहले के कष्टों, बीमारी, क्षय, शरीर और आत्मा के संघर्ष की बात है, यह सभी को देर-सवेर अवश्य ही सहना पड़ता है। यदि एक दृष्टिकोण से देखा जाए तो संसार में कम संबंध होना

दुखद है, तो दूसरे दृष्टिकोण से यह सुखदायक है; जिन महिलाओं के पति और बच्चे हैं, उन्हें मृत्यु का सामना उन महिलाओं की तुलना में अधिक पीड़ा और भय के साथ करना पड़ता है जिनके कोई नहीं हैं। इस विषय को समाप्त करते हुए, मैं कामना करता हूँ (बिना किसी बनावटीपन के, और न ही किसी घिसे-पिटे अर्थ में) कि हम दोनों इस मामले में हमेशा यही कह सकें, ईश्वर की इच्छा पूरी हो। मैं घर पर धीरे-धीरे व्यवस्थित हो रहा हूँ, लेकिन अकेलापन अभी भी भारी लगता है। यह एक बड़ा बदलाव है, लेकिन भविष्य की ओर देखते हुए मैं आशा करता हूँ कि सब कुछ अच्छा होगा। मुझे क्षणिक उत्साह से वास्तविक लाभ की इतनी कम उम्मीद है कि मैं लंदन को पत्र लिखकर अपने घर लौटने की सूचना देने में प्रतिदिन देरी करता हूँ; और तब तक यह तय था कि मैं उनसे कोई पत्र नहीं सुनूँगा। पत्रों से मिलने वाली छोटी-मोटी प्रेरणा पर निर्भर रहना कष्टदायक है। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि मैं इसे पूरी तरह से त्याग दूँ, किसी बहाने से सभी पत्राचार बंद कर दूँ, और डाक के समय आपके पत्र के अलावा किसी और पत्र की प्रतीक्षा न करूँ।

1 अगस्त, 1850।

मेरी प्यारी ई., मैंने सचमुच हाल के गीले मौसम को बहुत महसूस किया है, और बार-बार होने वाली सर्दी-जुकाम से परेशान रही हूँ, पापा भी। उनके बारे में मैं बिल्कुल भी खुश नहीं हूँ: हर सर्दी-जुकाम उन्हें इतना कमजोर बना देता है कि वे थककर चूर हो जाते हैं। यह कहना आसान है कि यह दुनिया केवल परीक्षा की घड़ी है, लेकिन इसे महसूस करना बहुत कठिन है। आपके दोस्त — — अभी खुश लग रहे हैं, और आशा है कि वे हमेशा खुश रहेंगे! सी. ब्रोंटे का प्यार आर — — को देना और उनसे कहना कि उन्हें उम्मीद है कि श्री — — उनके लिए एक अच्छा पति साबित होंगे। अगर ऐसा नहीं हुआ, तो उनका बुरा हाल होगा! मैं क्यू — — के लिए भी ऐसी ही कामना करती हूँ; और तब मुझे सच में लगता है कि एक तरह की खुशी होगी। एच — — में रहने का प्रस्ताव जीवन की समझदारी से शुरुआत करने जैसा लगता है, दिखावे के बिना — मुझे यह पसंद आया। क्या आप इन सभी कछुआ-कबूतरों के बीच सहज महसूस कर रही हैं? मैं आपकी वर्तमान स्थिति में एक दिन भी नहीं रह सकती; मुझे ऐसा लगेगा जैसे मैं फालतू हूँ, जैसा कि फ्रांसीसी कहते हैं; यानी रास्ते में रुकावट। लेकिन तुम मुझसे अलग हो। मेरा चित्र लंदन से आया है, और ड्यूक ऑफ वेलिंगटन

का भी, और ढेर सारे स्नेह भरे पत्र भी। पापा को लगता है कि चित्र मुझसे ज़्यादा बूढ़ा दिखता है। उनका कहना है कि चेहरे की बनावट में कोई निखार नहीं है, लेकिन वे मानते हैं कि भाव अद्भुत और सजीव हैं। मैंने "सामाजिक पहलू" नाम की किताब बी — — पर छोड़ दी थी; मुझसे ले लो। मैं शायद तुम्हें दे दूँ, क्योंकि लेखक ने कृपा करके मुझे एक और प्रति भेजी है...। तुम मुझसे कुछ वादा करने को कहते हो: भला भविष्य को न जानने वाला वादा कैसे कर सकता है? मैं तो नहीं।

2 सितंबर, 1850।

बेचारी श्रीमती ए — — लगता है अब नहीं रहीं; मैंने अखबारों में उनकी मृत्यु की खबर पढ़ी। यह जीवन की प्रकृति, उसकी विचित्र क्षणभंगुरता और कई मामलों में स्पष्ट निरर्थकता का एक और सबक है... वी — — पिछले शनिवार को यहाँ आए थे; टी — — , जिन्हें उनके साथ आना था, अपनी योजना को पूरा नहीं कर पाए। मुझे उनकी अनुपस्थिति का अफसोस हुआ, क्योंकि मुझे वी — — के साथ लंबी बातचीत की बिल्कुल भी इच्छा नहीं थी। हालाँकि, बातचीत काफी अच्छी तरह से संपन्न हुई। अब वह अपने भविष्य को लेकर संतुष्ट हैं, और इससे वह — ऊपरी तौर पर — अन्य चीजों से भी संतुष्ट दिखते हैं। उन्होंने क्यू — — के बारे में संतोष और प्रशंसा के साथ बात की। वह विवाह को एक ऐसे बंदरगाह के रूप में देखते हैं जहाँ वह अपने अब कुछ हद तक क्षतिग्रस्त जहाज को शांति से किनारे लगा सकें। उन्होंने जीवन में वह सब देख लिया है जो वह देखना चाहते थे; अब वह बसने के लिए तैयार हैं। मैंने उनकी सारी बातें शांति और प्रसन्नता के साथ सुनीं — दिखावटी नहीं बल्कि वास्तविक — क्योंकि पापा अब कुछ बेहतर हैं; उसकी भूख और मनोदशा में सुधार हुआ है, और इससे मेरे मन की चिंता कुछ हद तक कम हो गई है। मुझे लगता है कि वातावरण और परिवेश में हाल ही में हुए बदलावों से मेरे स्वास्थ्य को भी काफी लाभ हुआ है; कम से कम मुझे तो ऐसा लगता है कि मैं पहले से अधिक स्वस्थ महसूस कर रहा हूँ। फिर भी मैंने अपने तरीके से वी के चरित्र पर विचार किया - मुझे विश्वास है कि उसकी गहराई और व्यापकता का पता चल चुका है।

मैंने गवर्नेंस को — — पर देखा; वह थोड़ी बेहतर और अधिक प्रसन्न लग रही थी। मुझे देखकर वह लगभग उतनी ही प्रसन्न हुई मानो हम रिश्तेदार हों; और जब मैंने उसे विदाई दी तो उसने दिली उम्मीद जताई कि मैं जल्द ही फिर आऊँगा। बच्चे उसे पसंद

करते हैं और कुल मिलाकर आज्ञाकारी हैं — ये दो बातें उसकी स्थिति की अपरिहार्य कठिनाइयों को कुछ हद तक कम करती हैं।

हिम्मत रखो, प्यारी नेल, और निष्क्रिय मत रहो; या, जब कोई चारा न हो, और जब तुम्हारा दिल उदास और दबा हुआ हो, तो याद रखो कि जीवन क्या है और सभी के लिए क्या होना चाहिए: धूप के कुछ पल, घने बादलों और अक्सर तूफानी अंधेरे के कई पलों के साथ बदलते रहते हैं। मानवता अपने भाग्य से बच नहीं सकती, जो कि एक मिश्रित प्याला पीना है। आइए हम विश्वास करें कि कड़वाहट और सिरका दोनों ही लाभप्रद हैं।

14 सितंबर, 1850।

प्रिय एलेन, काश तुम मुझे बता पातीं कि मेरी शादी को लेकर जो भी अफवाहें तुम सुन रही हो, वो क्या हैं। अगर मुझे सारी जानकारी होती, तो मैं बेहतर ढंग से समझ पाती कि ये अफवाहें कहाँ से आ रही हैं। अभी तो मैं बिल्कुल असमंजस में हूँ। मैं किससे शादी करूँ? मुझे लगता है कि लंदन छोड़ने के बाद से मैंने शायद ही कोई ऐसा पुरुष देखा हो जिससे मेरी शादी संभव हो सके। बेशक, ऐसे पुरुष होंगे जिनसे, अगर मैं चाहूँ, तो शादी कर सकती हूँ। लेकिन मुझे अभी तक कोई भी ऐसा वैवाहिक प्रस्ताव नहीं मिला है जो मुझे सचमुच पसंद आए। और अगर मिल भी जाए, तो भी कई बाधाएँ होंगी। इस तरह की बात का ज़रा सा भी ज़िक्र पापा को बहुत बुरा लगता है। हाल ही में एडिनबर्ग से प्रकाशित होने वाली एक नई पत्रिका, द पैलेडियम में "कुरर बेल" शीर्षक से एक लेख छपा है। यह एक प्रभावशाली रचना है, और इसमें इतनी गहरी सहानुभूति और प्रशंसा है जिसकी मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी। इसमें लेखक आदि के बारे में कुछ गलतियाँ हैं, लेकिन मुझे उम्मीद है कि एक दिन मैं उन्हें सुधार लूँगी। श्री एक्स (छोटे कद के व्यक्ति) ने सबसे पहले मुझे इस लेख के बारे में बताया। उनका पत्र पाकर मुझे कुछ आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैंने नौ महीने पहले ही यह मान लिया था कि अब उस तरफ से कोई पत्र-व्यवहार नहीं होगा। बाद में मुझे उनसे एक पत्र मिला, जो मेरे पत्र के उत्तर में था। कृपया इसे पढ़ें और मुझे बताएं कि लेखक के चरित्र आदि के बारे में इससे आपको क्या राय बनती है। उनमें न तो भावना की कमी है और न ही समझ की।

14 अक्टूबर, 1850।

मैं क्यू — — का पत्र लौटाता हूँ। वह अपने पति के स्नेह से काफी खुश और संतुष्ट प्रतीत होती है। क्या हनीमून मनाने का यही सामान्य तरीका है? मुझे तो ऐसा लगता है कि वे इसे कुछ ज़्यादा ही करते हैं। यात्रा करना, खींचतान करना, थक जाना, भीग जाना और उलझन में पड़ जाना, ये सब मेरी खुशी की धारणाओं से बिल्कुल मेल नहीं खाता। इसके अलावा, दिन में दो बार खाना, आदि किसी को भी थका देता है। यह सब मुझे लगभग दस साल पहले लंदन में वी — — के साथ बिताए उन कुछ दिनों की याद दिलाता है, जब मैं लंबे उपवास और अत्यधिक थकान के कारण बुखार और कमजोरी से कई बार बेहोश होने की कगार पर था। हालांकि, इसमें कोई संदेह नहीं कि दुल्हन ऐसी चीजों को दूसरों से बेहतर सहन कर सकती है। कुछ अंशों पर मैं मन ही मन मुस्कुराया। उसे अपने पति की बौद्धिक क्षमताओं और उपलब्धियों पर अद्भुत विश्वास है। वी — — के भ्रम जल्द ही टूट जाएंगे, लेकिन क्यू — — के नहीं टूटेंगे — और इसी में वह उससे अधिक खुश है...। मुझे लगता है कि — — को भी शायद पता चल जाएगा कि उसे भी एक पत्नी चाहिए। लेकिन मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा। आप जानते हैं कि मैं इन मामलों पर मजाक और छेड़छाड़ को नापसंद करता हूँ। व्यर्थ के शब्द कभी-कभी अनजाने में नुकसान पहुंचाते हैं।

दिसंबर, 1850।

कल दोपहर दो बजे के कुछ देर बाद मैं ठीक-ठाक घर पहुँच गया और पापा को, भगवान का शुक्र है, स्वस्थ और सर्दी-जुकाम से मुक्त पाया। आज थोड़ी-बहुत कमजोरी और सिरदर्द है, पर कुछ खास नहीं... क्रिसमस की किताबें, जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, थैकरे, श्रीमती गैस्केल और श्री रस्किन की थीं। श्री डब्ल्यू — — का कोई पत्र नहीं आया। उनसे बात किए हुए छह सप्ताह हो गए हैं। मैं बेचैन हूँ, पर लिखने का मन नहीं कर रहा। 'द एग्जामिनर' मेरे प्रस्तावना को लेकर बहुत नाराज़ है, क्योंकि मैंने आलोचकों के समूह के बारे में बात करते समय इसे विशेष अपवाद नहीं बनाया। यह नाराज़गी दुर्भाग्यपूर्ण और बेवजह है, क्योंकि मेरे मन में तो मैंने इसे अपवाद ही माना था। एक अन्य अखबार भी इसी बात पर बहुत संवेदनशील है; पर कोई बात नहीं, ये सब क्षणभंगुर हैं।

उपरोक्त पत्र में जिस "प्रस्तावना" का उन्होंने उल्लेख किया है, वह एमिली और ऐनी ब्रोंटे की रचनाओं के उनके संकलित संस्करण की प्रस्तावना थी, जिसमें उन्होंने इस तथ्य का जिक्र किया है कि "वुथरिंग हाइट्स" और "एग्नेस ग्रे" के प्रकाशन के समय "आलोचक उनके साथ न्याय करने में विफल रहे"।

20 जनवरी, 1851।

आपके दो पत्रों के लिए हार्दिक धन्यवाद। आप आजकल बहुत प्रसन्न लग रहे हैं, और यदि आप रात को घर आते समय सर्दी-जुकाम से बचने का ध्यान रखें, तो मुझे यह सुनकर कोई दुख नहीं हुआ; थोड़ी सी गतिविधि, प्रसन्नता, और ऊर्जा न केवल लाभकारी है, बल्कि आवश्यक भी है। आपके पिछले से पिछले पत्र ने मुझे मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया। मुझे लगता है कि आप छोटी-छोटी बातों से बड़े निष्कर्ष निकाल लेते हैं। मुझे लगता है कि जिन "पक्के इरादों" की आप कल्पना करते हैं, वे काल्पनिक हैं। मुझे लगता है कि "अंदरूनी भावना" बस इतनी सी है, एक तरह की स्वाभाविक पसंद और किसी अनुकूलता का एहसास। यदि उम्र, धन आदि की कोई बड़ी बाधा न होती, तो शायद व्यक्तिगत स्नेह ही उन चीजों को संभव बना देता जो आज असंभव हैं। यदि पुरुष और महिलाएं एक-दूसरे के स्वभाव, रूप, बातचीत, व्यवहार आदि को पसंद करने के कारण विवाह करते — और यदि, इसके अलावा, उनकी उम्र लगभग बराबर होती — तो जिस संयोग का आप जिक्र कर रहे हैं, उसे संयोग माना जा सकता था; लेकिन विवाह को अन्य कारण नियंत्रित करते हैं — सुविधा, संबंध, धन। फिलहाल मैं उसे एक मित्र के रूप में पाकर संतुष्ट हूँ, और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे इतनी समझदारी प्रदान करे कि मैं इतने युवा, इतने उभरते और इतने आशावान व्यक्ति को किसी और नज़रिए से न देख सकूँ। राइन नदी के बारे में संकेत मुझे परेशान कर रहा है; मैं पत्थर का नहीं बना हूँ और जो दूसरों के लिए महज़ उत्साह है, वह मेरे लिए बुखार है। खैर, यह भविष्य की बात है, और मैं उस भविष्य का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा हूँ। जैसा कि मैं अभी देख रहा हूँ, यात्रा संभव नहीं है - कई कारणों से - मुझे आश्चर्य होता है कि वह इसके बारे में सोच भी कैसे सकता है। अलविदा। ईश्वर हम दोनों को कुछ शांत बुद्धि और शक्ति प्रदान करे, न केवल पीड़ा की परीक्षा सहने के लिए, बल्कि सुख के प्रलोभन का विरोध करने के लिए भी, जब वह ऐसे रूप में आए जिसे हमारा विवेक अस्वीकार कर दे।

26 फरवरी, 1851।

आपको हमेशा यही निष्कर्ष निकालना चाहिए कि जब मैं नहीं लिखती, तो इसका मतलब यही है कि मेरे पास कहने के लिए कुछ खास नहीं है। यकीन मानिए, बुरी खबर तो बहुत जल्दी फैलती है, और अच्छी खबर भी, जब ऐसी कोई चीज आती है। अगर मैं अक्सर खुशमिजाज रहती या दिखती, तो शायद मैं और ज्यादा लिखती, यह जानते हुए कि मेरे पत्र आपको खुश करेंगे। लेकिन समय के साथ, कभी-कभार धूप की एक झलक ही काफी है। फिर भी, मैं ठीक-ठाक गुजारा कर रही हूँ। कभी-कभी मेरा मन करता है कि मैं गर्मियों से पहले आपको न बुलाने के अपने संकल्प को तोड़ दूं और आपको एक-दो हफ्ते में इस पैटमोस आने के लिए कह दूं। लेकिन यह आपके लिए बहुत उबाऊ होगा... क्या आप अगले हफ्ते यहाँ आकर उतनी ही देर रुकना चाहेंगे जितनी देर आप आराम से एकरसता सहन कर सकें? अगर मौसम सुहाना होता और मैदान सुंदर होते, तो मुझे इतनी चिंता नहीं होती - हम घूमने जा सकते थे।

इस समय यह स्पष्ट है कि मिस ब्रोंटे अपनी नियमित मानसिक थकावट के दौरों में से एक से पीड़ित थीं। वे अपने पत्रों में बार-बार अपनी बीमारियों का जिक्र करती हैं, जिनका कारण वे आमतौर पर अपने लीवर को बताती हैं, और वे एक ऐसी घटना का भी बार-बार उल्लेख करती हैं जिसने उन्हें काफी चिंता और परेशानी में डाल दिया था। यह एक प्रतिष्ठित व्यवसायी का विवाह प्रस्ताव था, जिनसे वे लंदन में पहले ही मिल चुकी थीं। निम्नलिखित पत्र, जिन्हें यहां सटीक तिथि का ध्यान रखे बिना शामिल किया गया है, और जिनमें से श्रीमती गैस्केल ने केवल आधा दर्जन पंक्तियों का उपयोग किया है, इसी विषय से संबंधित हैं:

अब आप “बृहस्पति” और “शुक्र” के बारे में कुछ नहीं कहेंगे। इस तरह की बेतुकी बातों से आपका क्या मतलब है? सच तो यह है कि इससे बड़ी भ्रांति कोई नहीं हो सकती, और मैं इसे ज़रा भी मज़ाक में नहीं लेना चाहता, क्योंकि मेरी बुद्धि इसे तुच्छ समझती है। X का विचार मुझे कम चौंकाता है; अगर “मेल” की बात हो, तो यह ज़्यादा संभावित मेल होता, जो कि है ही नहीं। वह अब भी अपना छोटा सा अखबार भेजता है, और पिछले दिन एक ऐसा पत्र आया जो विशाल, सारगर्भित, विवेकपूर्ण और ज्ञान से भरपूर था, मानो किसी महान व्यक्ति का लिखा हुआ हो।

X — — आया था, और चला गया; सब कुछ पहले जैसा ही है। मुझे पहले से

मिली थोड़ी-बहुत जानकारी के अलावा बस इतना पता है कि यह ऑस्ट्रेलियाई परियोजना उनकी कंपनी की निरंतर समृद्धि के लिए आवश्यक है, कि केवल उन्हीं को इसे सफलतापूर्वक पूरा करने की क्षमता और साधन प्राप्त हैं, कि व्यापारिक प्रतिष्ठा और कर्तव्यबोध के कारण ही उन्होंने इस सम्मान और जोखिम भरे पद को स्वीकार किया है, कि वे बड़ी अनिच्छा से जा रहे हैं, और वे पाँच साल के लिए अनुपस्थित रहने की सोच रहे हैं। वे पहले से काफी दुबले और बूढ़े लग रहे थे। मैंने उन्हें बहुत करीब से देखा, और एक बार अपने शीशे से भी। ब्रैनवेल से उनकी समानता मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई दी; यह स्पष्ट है। वे बदसूरत नहीं हैं, लेकिन बहुत ही विचित्र हैं। उनके चेहरे की रेखाएं एक दृढ़ता और, मुझे कहना होगा, चरित्र की कठोरता दर्शाती हैं, जो आकर्षक नहीं है। जब वे मेरे पास खड़े थे, जब वे मुझे अपनी तीखी निगाहों से देख रहे थे, तो मेरे लिए शांत और स्थिर खड़े रहना और पहले की तरह पीछे न हटना ही बड़ी मुश्किल थी। अगर मैं स्पष्टवादी नहीं हूँ तो कुछ भी कहने का कोई फायदा नहीं। मैं स्वीकार करता हूँ कि इस अवसर पर, यद्यपि मैं उनके प्रति बहुत ही सकारात्मक दृष्टिकोण रखता था, फिर भी उनके व्यवहार और उनकी उपस्थिति ने मुझे पहली मुलाकात की तुलना में शायद ही कोई अधिक प्रसन्न किया। विदाई के समय उन्होंने मुझे एक पुस्तक दी और संक्षिप्त शब्दों में मुझसे अनुरोध किया कि मैं इसे उनके लिए संभाल कर रखूँ, और जल्दी से कहा: "मुझे ऑस्ट्रेलिया में आपसे सुनने की आशा है; आपके पत्र मेरे लिए आपकी कल्पना से कहीं अधिक सुखदायक रहे हैं और रहेंगे।" और इस तरह वे चले गए, और अपने कठोर और रूखे स्वभाव के बावजूद, उनके व्यवहार अक्सर अटपटे लगते थे, उनकी अनुपस्थिति और मेरे मन से उनके विचारों का न निकलना, निश्चित रूप से मुझे पहले से कम सहारा और अधिक अकेलेपन में छोड़ गया है। देखो, प्रिय नेल, हम अभी भी बिल्कुल एक ही स्तर पर हैं। तुम अकेली नहीं हो। मुझे लगता है कि इस घटनाक्रम में अभी भी कुछ रहस्य है, और क्या यह कभी मेरे लिए स्पष्ट होगा, मुझे नहीं पता। हालाँकि, मेरा सीधा कर्तव्य है कि मैं अपने मन को इस विषय से दूर रखूँ, और यदि संभव हो तो इस पर विचार करने से बचूँ... मुझे लगता है कि उनके व्यवहार में मेरे प्रति सम्मान है; एक ऐसा सम्मान जिसका मैं पूरी तरह से प्रतिफल नहीं दे सकती, और फिर भी इसके चले जाने से एक दर्दनाक खालीपन महसूस होता है। मुझे अभी-अभी आपका संदेश मिला है। ऊपर आपने मेरे आगंतुक का पूरा विवरण दिया है। मैं यह कहने की हिम्मत नहीं कर सकती कि

आपकी यह नेक इच्छा पूरी हुई है कि इस मुलाकात से मुझे दर्द से ज़्यादा खुशी मिले। मेरे दिल में कुछ दर्द है जो मुझे अंदर ही अंदर परेशान कर रहा है। लेकिन मुझे धैर्य बनाए रखना होगा।

आपके प्यारे पत्र के लिए धन्यवाद। आपका पत्र लिखना बहुत ही दयालुतापूर्ण था, भले ही वह आपके स्कूल का दिन था। मैंने आपको कभी भी किसी मित्रतापूर्ण कार्य में बाधा डालने की हिम्मत करते नहीं देखा। मैं पिछले शुक्रवार को तो कभी नहीं भूल पाऊँगी, और मुझे लगता है कि उस सुबह और दोपहर के बाद की शाम और रात भी कभी नहीं भूल पाऊँगी। मुसीबतें अक्सर अकेले नहीं आतीं, और X के जाने के तुरंत बाद पापा की तबीयत बहुत खराब हो गई। वे जल्दी सो गए। एक घंटे तक उनकी तबीयत खराब रही, और जब आखिरकार उन्हें नींद आने लगी और मैं उन्हें छोड़कर चली गई, तो मैं भोजन कक्ष में भारीपन, भय और उदासी की भावना के साथ आई, जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन और सहना उससे भी कठिन था। काश आप मेरे साथ होतीं, यह ख्याल मेरे मन में आया; लेकिन मैंने इसे एक स्वार्थी इच्छा समझकर मन से निकाल दिया। वास्तव में, यह भावना क्षणिक ही थी; ऐसे क्षणों में मेरी स्वाभाविक प्रवृत्ति अकेले ही संघर्ष से निपटने की होती है; यह सोचना कि मैं दूसरों पर बोझ डाल रही हूँ, सब कुछ और भी बदतर बना देता है। आप मुझसे कोमल, सांत्वना भरे लहजे में बात करती हैं; लेकिन प्रिय नेल, मैं अपने लिए कहीं अधिक कठोर भाषा का प्रयोग करती हूँ। पांच साल की दूरी; तीन महासागरों की विभाजक दूरी; एक पुरुष के सक्रिय करियर और एक स्त्री के निष्क्रिय जीवन के बीच का व्यापक अंतर। ये सब बातें लगभग जीवन भर के अलगाव के बराबर हैं। लेकिन एक और बात है जो इन सबसे कहीं अधिक कठिन बाधा है। क्या X और मैं कभी एक-दूसरे के अनुकूल हो पाएंगे? क्या मैं कभी उसके लिए इतना प्यार महसूस कर पाऊंगी कि उसे पति के रूप में स्वीकार कर सकूं? मेरे मन में मित्रता, कृतज्ञता, सम्मान सब है; लेकिन जब भी वह मेरे पास आता था, और जब भी मैं उसकी निगाहें खुद पर टिकी देखती थी, मेरी नसें जम जाती थीं। अब जब वह दूर है, तो मैं उसके प्रति कहीं अधिक कोमल महसूस करती हूं; केवल पास आने पर ही मैं कठोर हो जाती हूं। मैं घमंडी नहीं बनना चाहती थी और न ही मेरा ऐसा कोई इरादा था, लेकिन मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह बिल्कुल सच है कि हम सब एक सर्वशक्तिमान के अधीन हैं, कि उनकी

कृपा से हमारी इच्छाशक्ति कुम्हार के हाथों में मिट्टी के समान है।

मुझे उम्मीद है पापा की तबीयत ज्यादा खराब नहीं होगी; लेकिन उनका मिजाज बदलता रहता है। आपके जाने के बाद से वो सिर्फ एक बार ही नाश्ते के लिए नीचे आए हैं। अभी उनके बारे में सोचने का मौका मिलना मेरे लिए एक तरह से अच्छा है; इससे मेरा ध्यान उन दूसरी बातों से हट जाता है जो पूरी तरह से कड़वाहट और निराशा से भरी हैं; क्योंकि मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि उम्मीद की जो नींव टिकी हुई थी, उसका इतना बुरी तरह से बिखर जाना, जैसा कि मैं अभी बता रही हूँ, शायद ही संभव हो।

आज मुझे X — — का एक छोटा सा, शांत सा पत्र मिला। वह एक हफ्ते पहले शनिवार को लंदन लौट गया था। वह अगले महीने इंग्लैंड छोड़ रहा है। उसके पत्र के अंत में उसने पूछा है कि क्या उससे पहले लंदन में मुझसे मिलने का कोई मौका है। मुझे उसे बताना होगा कि मैंने अपनी यात्रा जून में तय कर ली है, इसलिए शायद अब हमारी मुलाकात नहीं होगी। इस मामले में अभी भी आपसी समझ की कमी है, और कई मायनों में उदासी और पीड़ा है। मैं सचमुच कह सकती हूँ कि मेरा अंतरात्मा अब मुझे X — — के साथ अन्याय या निर्दयता का व्यवहार करने का दोषी नहीं ठहराता। मैंने इस तरह जो गलती की थी, उसे मैंने उससे और दूसरों से उसके बारे में बात करते समय सुधारने का प्रयास किया है। मुझे यकीन है कि उसमें प्रशंसनीय और उत्कृष्ट गुण हैं; लेकिन अपनी हर इच्छा, हर इरादे, यहाँ तक कि उसकी आखिरी मुलाकात के दौरान उसे सबसे अनुकूल दृष्टि से देखने के बावजूद, मेरे लिए अपने दिल में यह सोचना असंभव था कि वह एक दिन पति के रूप में स्वीकार्य हो सकता है...। नहीं, अगर X ही मेरे भाग्य में एकमात्र पति हो, तो मुझे हमेशा अविवाहित ही रहना होगा। लेकिन फिर भी कभी-कभी मुझे उसके लिए दुख होता है; और शायद यह व्यर्थ है, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि उसे ज्यादा तकलीफ होगी — कठोर स्वभाव, पेशा, जगह का बदलाव उसके लिए अनुकूल साबित होगा।

मुझे हाल ही में मिस मार्टिन्यू का एक लंबा और स्नेहपूर्ण पत्र मिला है। उन्होंने बताया है कि वह स्वस्थ और खुश हैं। साथ ही, मुझे श्रीमान — — का भी एक बहुत

लंबा पत्र मिला है, जो कई हफ्तों बाद आया पहला पत्र है। उन्होंने X — — के बारे में बहुत आदर और खेद व्यक्त किया है और कहा है कि उनके कई मित्र उन्हें बहुत याद करेंगे। मुझे यह जानकर कुछ आश्चर्य हुआ कि पापा को X — — बहुत पसंद आ गए हैं। विदाई के समय उनके प्रति पापा का विशेष स्नेह और विनम्रता, उन्हें "स्वयं, अपने देश और अपने ईश्वर के प्रति सच्चे रहने" की प्रेरणा देना और उन्हें शुभकामनाएं देना, उस समय मुझे आश्चर्यचकित कर गया था; और उसके बाद जब भी उन्होंने उनका जिक्र किया है, तो उनकी बहुत प्रशंसा की है...। आप कहते हैं कि पापा में गहरी समझ है। इस विषय पर मुझे लगता है कि वास्तव में उनमें यह समझ है। मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया है, फिर भी वे इस पूरे मामले से भली-भांति परिचित लगते हैं। मुझे लगता है कि कभी-कभी उनके अनुमान मेरे अनुमानों से कहीं अधिक होते हैं। मुझे लगता है कि वे सोचते हैं कि पांच साल के लिए स्थगित किया गया ऐसा विवाह, ऐसे सभ्य और विश्वसनीय व्यक्ति के साथ, एक बहुत ही उचित और सलाह योग्य बात होगी। लेकिन मैं कोई सवाल नहीं पूछता, और न ही वह मुझसे कोई सवाल पूछता है; और अगर वह पूछता भी तो मेरे पास उसे बताने के लिए कुछ नहीं होता।

प्रेम प्रसंग के बाद अगली गर्मियों में उन्होंने एक बार फिर लंदन की यात्रा की, जहाँ उन्होंने श्री थैकरे के हास्य लेखकों पर व्याख्यान सुने। अपने आदर्श को उनके सबसे अच्छे मूड में सुनना उन्हें कितना अच्छा लगा, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। कुछ लोग आज भी जीवित हैं जिन्हें वह पहला व्याख्यान याद है, जब पूरा लंदन "वैनिटी फेयर" के लेखक को सुनने के लिए इकट्ठा हुआ था, और अचानक कमरे में यह अफवाह फैल गई कि "जेन आयर" की लेखिका भी श्रोताओं में शामिल हैं। पहले तो पुरुष और महिलाएं साहित्यिक और सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों की उस शानदार मंडली में "कुरर बेल" को पहचानने में असमर्थ थे; लेकिन अंत में उन्हें एक अभिभावक की ममतामयी देखरेख में छिपा हुआ पाया गया, संकोच से भरी, शरमाती हुई, लेकिन उत्साहित और प्रसन्न - खुद पर मिले ध्यान से नहीं, बल्कि अपने लिए मिलने वाले शानदार अवसर से। एक-दो सज्जनों ने उनसे परिचय प्राप्त करने का प्रयास किया और उन्हें यह परिचय मिल भी गया - उनमें लॉर्ड कार्लिस्ले और श्री मोनकटन मिल्नेस शामिल थे। वे पादरी की बेटी के रूप या भाषण से विशेष रूप से प्रभावित नहीं हुए। उसका व्यक्तित्व साधारण था, उसके कपड़े कुछ हद तक देहाती थे, उसकी भाषा विचित्र रूप से सटीक और औपचारिक थी, उसका व्यवहार अजीब और संयमित था।

कुल मिलाकर, वह एक ऐसी महिला थी जिसे लंदन भी सम्मान नहीं दे सकता था; बाहरी तौर पर इतनी सादी, सरल और दिखावा रहित कि उसकी पूजा करना असंभव था। जैसा कि हम जानते हैं, उसके भीतर कुछ असाधारण और अद्भुत था; लेकिन, लूसी स्नो की तरह, उसने अपने असली स्वरूप को एक ऐसे पर्दे के नीचे छिपा रखा था जिसे किसी भी सामान्य मित्र या परिचित को हटाने की अनुमति नहीं थी। यह "बिग बेबीलोन" की एक संक्षिप्त यात्रा थी, और फिर हॉवर्थ में वापसी, एकांत और कर्तव्य की ओर! जुलाई 1851 में, वह पादरी के आवास से अपने एक मित्र को इस प्रकार लिखती है:

आपका पत्र पाकर मुझे सबसे पहले निराशा हुई, लेकिन थोड़ा सोचने पर मुझे समझ आ गया कि "सब कुछ अच्छा ही हुआ।" सच तो यह है कि आपको और एलेन को एक साथ बुलाना मेरी तरफ से बहुत बड़ी फिजूलखर्ची थी; ऐसी अच्छी चीजों को आपस में बाँटना कहीं बेहतर है। आपके आने की उम्मीद मुझे तब तसल्ली देगी जब एलेन का आना बीत जाएगा। ऐसा नहीं है कि मैं दोस्तों की संगति पर निर्भर रहने की कमजोरी के आगे झुकना चाहता हूँ, चाहे वे कितने भी प्यारे क्यों न हों; लेकिन फिर भी कभी-कभार मिलने वाली संगति को मैं जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा मानता हूँ और उसकी तलाश भी करता हूँ। तो जब भी आपको हॉवर्थ आने में सुविधा हो, मुझे बता दीजिएगा, और अगर कोई ऐसी बात न हो जो अभी मैं नहीं देख सकता, तो आपका हार्दिक स्वागत होगा। अगर किसी कारणवश आना टालना पड़े, तो मैं आपको खुलकर बता दूँगा। मैं आपको संगति का आनंद तो नहीं दे सकता; न ही सुंदर दृश्यों का। लेकिन मैं आपके लिए बहुत कुछ उपलब्ध कराता हूँ - दलदली भूमि, कुछ किताबें, कुछ शांत पल, और साथ ही एक पुराना छात्र भी। एलेन ने शायद आपको बताया होगा कि मैंने इस गर्मी में एक महीना लंदन में बिताया। जब आप आएँ तो आप इस विषय पर जो चाहें पूछ सकते हैं, और मैं अपनी हकलाने की क्षमता के अनुसार उनका उत्तर देने की कोशिश करूँगा। क्रिस्टल पैलेस के बारे में मुझसे ज़्यादा सवाल न पूछें। मैं वहाँ पाँच बार गया था, और निश्चित रूप से कुछ रोचक चीज़ें देखीं, और उसका नज़ारा वाकई अद्भुत और विस्मयकारी है। लेकिन मैं कभी भी उस विषय पर भावुक नहीं हो पाया, और हर बार वहाँ जाना मेरी अपनी मर्ज़ी से नहीं बल्कि ज़बरदस्ती हुआ था। वह बहुत ही भीड़भाड़ वाला स्थान है; और आखिरकार, उसके चमत्कार केवल आँखों को ही आकर्षित करते हैं, और शायद ही कभी दिल या दिमाग

को छूते हैं। मैं इस बात से उन लोगों के लिए असहमत हूँ जिनके पास वैज्ञानिक ज्ञान का व्यापक भंडार है। एक बार मैं सर डेविड ब्रूस्टर के साथ गया था, और मैंने पाया कि वे वस्तुओं को मुझसे अलग नज़रिए से देखते थे।

एक्स।

“विलेट।”

सन् 1851 की शरद ऋतु के साथ शार्लोट ब्रोंटे के जीवन में एक नए युग का आरंभ हुआ। उन्होंने "विलेट" लिखना शुरू किया। उस अद्भुत पुस्तक के वास्तविक स्वरूप के बारे में पहले ही बहुत कुछ कहा जा चुका है, जिसमें उनके अपने गहन अनुभव और परिपक्व ज्ञान का सार दुनिया के सामने प्रस्तुत है। इसे लिखने की शैली के बारे में उनके पाठक कुछ नहीं जानते। फिर भी, उनकी प्रतिभा की यह सबसे प्रिय रचना, इतने कष्टों से भरी थी कि कई बार उन्हें कलम त्यागने और हमेशा के लिए चुप हो जाने का मन हुआ। हर वाक्य उनके लिए खून की एक बूँद की तरह निचोड़ा गया था, और पुस्तक धीरे-धीरे, घोर पीड़ा के बीच रची गई, जिसका कुछ कारण उनकी शारीरिक कमजोरी और पीड़ा थी, लेकिन उससे भी अधिक वह पीड़ा थी जिससे उनका मन गुजर रहा था, क्योंकि वे अपने जीवन के सबसे अंधकारमय अध्याय के दृश्यों को उन लोगों के लिए चित्रित कर रही थीं जिनके लिए वे लिख रही थीं। इस समय भी उनके पत्रों से ही हमें उनके अनुभवों का सबसे अच्छा अंदाजा मिलता है। शायद ही कोई इन पत्रों को पढ़कर यह अनुमान लगा पाए कि इनकी लेखिका उसी समय एक महान कृति की रचना में लगी हुई थीं, जो अंग्रेजी प्रतिभा के सर्वश्रेष्ठ और उत्कृष्ट नमूनों में शुमार होने वाली थी। लेकिन इन्हें पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति इस

बात से अवगत हुए बिना नहीं रह सकता कि उस महिला की आत्मा कितनी सच्ची थी, अपने प्रियजनों के प्रति उसकी सहानुभूति कितनी गहरी थी, उसके आसपास के नीरस और साधारण चरित्रों की भी उसकी आलोचना कितनी तीखी थी, और दूर स्थित विशाल संसार में या उसके सामने घटित हो रहे छोटे संसार के नाटक में उसकी रुचि कितनी जीवंत और सच्ची थी। यहां तक कि उसके पत्रों में वर्णित साधारण घटनाएं, उसकी कलम से निकले आकस्मिक भाव भी तब दिलचस्प हो जाते हैं जब हम याद करते हैं कि कौन बोल रहा है और उसके जीवन के किस मोड़ पर ये शब्द उसके मुंह से निकले हैं।

सितंबर, 1851।

मैंने आपका पिछला पत्र कहीं खो दिया है, इसलिए मैं उसे पढ़कर यह नहीं देख सकती कि उसमें क्या लिखा है जिसका उत्तर देना है; लेकिन अब समय आ गया है कि उसका किसी न किसी रूप में उत्तर दिया जाए, चाहे मुझे कुछ कहना हो या न कहना हो। मिस — — का पत्र बिल्कुल उनके स्वभाव के अनुरूप है। "मित्रता," "आपसी मित्र," "पुराने दिन," आदि की सारी बातें बेतुकी लगती हैं। श्रीमती — — ने मुझे एक या दो सप्ताह पहले पत्र लिखा था — एक नेक इरादे वाला, स्नेहपूर्ण पत्र, जिसमें आने वाले अच्छे समय का काफी ज़िक्र था, शायद उचित ही। मेरा मतलब है, सरल शब्दों में कहें तो, जल्द ही माँ बनने की उनकी उम्मीद। इसमें कोई संदेह नहीं कि उनके लिए ऐसा महसूस करना स्वाभाविक है जैसे कोई महिला पहले कभी माँ नहीं बनी हो; लेकिन मैं उन्हें थोड़ा झकझोर देने वाला उत्तर लिखने से खुद को रोक नहीं पाई। एक-दो दिन पहले मुझे उनका एक और पत्र मिला, हमेशा की तरह अच्छा, लेकिन मुझे लगता है कि जिस अनौपचारिक तरीके से उनके डर और अपेक्षित व्यक्ति के बारे में बात की गई थी, उससे वह थोड़ी परेशान थीं... मैं कैसे जीती हूँ, यह बताना व्यर्थ है। मैं जीवन जी रही हूँ; लेकिन क्या मैं इसका आनंद लेती हूँ या नहीं, यह एक अलग सवाल है। फिर भी, मैं अपना जीवन गुज़ार रही हूँ। मुझे लगता है कि मौसम आजकल कुछ खास अच्छा नहीं रहा है; या फिर हवा और वातावरण में बदलाव के लाभकारी प्रभाव खत्म हो रहे हैं। नियमित व्यायाम के बावजूद, पुराने सिरदर्द और नींद भगाने वाली रातें फिर से शुरू हो गई हैं। लेकिन मैं अपना जीवन गुज़ार रही हूँ, और मुझे शिकायत करने की न तो इच्छा है और न ही कोई अधिकार।

अक्टूबर, 1851।

फिलहाल मेरा घर से बाहर जाने का बिल्कुल भी इरादा नहीं है। मैंने अभी-अभी मिस मार्टिन्यू, श्रीमती गैस्केल और श्रीमती फोर्स्टर, तीनों को मना कर दिया है। मैं चाहकर भी नहीं जा सकती। पिछले एक महीने से घर में एक के बाद एक लोग बीमार पड़ रहे हैं। पहले टैबी को फ्लू हुआ, फिर मार्था को भी हो गया और अब वो बीमार होकर बिस्तर पर पड़ी है, और मुझे यह बताते हुए दुख हो रहा है कि पापा को भी सर्दी लग गई है। अभी तक मैं ठीक हूँ, और इसके लिए शुक्रगुजार हूँ, क्योंकि इन सबकी देखभाल कौन करेगा? इस पतझड़ में मैंने बहुत मानसिक तनाव झेला है; लेकिन उन सब बातों पर सोचने का कोई फायदा नहीं है। फिलहाल मुझे कुछ राहत मिली है। मुझे चिट्ठी लिखने का पहले से भी ज्यादा मन नहीं कर रहा है... जीवन एक संघर्ष है।

नवंबर, 1851।

पापा, टैबी और मार्था फिलहाल ठीक हैं, लेकिन पूरी तरह स्वस्थ नहीं हैं। मार्था खासकर कमजोर दिखती हैं। काश उनका स्वास्थ्य बेहतर होता। वैसे भी, उन्हें ज्यादा काम देने से हमेशा डर लगता है; और फिर भी कई काम ऐसे हैं जो मैं खुद नहीं कर सकती; और इतने लंबे समय से उनके साथ रहने के बाद हम बदलाव नहीं चाहते। कुछ दिन पहले मुझे ऑस्ट्रेलिया से संलग्न पत्र मिला। मुझे उसी तरफ से पहले भी एक पत्र मिला था, जिसका अभी तक कोई जवाब नहीं आया है। मैंने आपसे कहा था कि मुझे वहां से कोई जवाब मिलने की उम्मीद नहीं थी - और सच में नहीं थी। पत्र लंबा है, लेकिन इसे पढ़ना आपके लिए फायदेमंद होगा। इसमें कुछ खूबियां हैं - इसे नकारा नहीं जा सकता - भरपूर जानकारी, एक खास तरह की प्रतिभा, और (मुझे लगता है) कहीं-कहीं रुचि की गलतियां भी हैं। यह छोटा आदमी अपने लंबे पत्रों के साथ मेरे लिए हमेशा की तरह एक पहेली बना हुआ है। एच - - "घरेलू खुशियों" के बारे में आपका वर्णन मुझे बहुत अच्छा लगा। वे लोग बहुत खुश दिखते हैं; ईश्वर करे वे हमेशा ऐसे ही खुश रहें! यह जानकर मुझे कुछ हद तक तसल्ली मिलती है कि ऐसी खुशी धरती पर मौजूद है।

नवंबर, 1851।

यहां सब कुछ लगभग पहले जैसा ही है... मेरे जीवन में बस कभी-कभार आने

वाले पत्रों से ही थोड़ा-बहुत बदलाव आता है। मिस डब्ल्यू - - के हॉवर्थ छोड़ने के बाद से मुझे उनसे दो पत्र मिले हैं, जिनसे मुझे बहुत स्नेह हुआ। ऐसा लगता है कि उन्हें थोड़ी सी सौहार्दपूर्ण संगति, थोड़ा सा ध्यान और स्नेह बहुत अच्छा लगता है। उनका कहना है कि उन्होंने कई दिनों से ऐसा आनंद नहीं लिया जैसा उन्होंने यहां दस दिनों के प्रवास के दौरान लिया। लेकिन आप जानते ही हैं कि हॉवर्थ कैसा है - काफी नीरस। ऑस्ट्रेलिया से आए एक्स - - के पत्र का उत्तर देने से पहले मैंने हिम्मत जुटाकर - - को पत्र लिखा और उनसे एक्स - - के चरित्र और स्वभाव का निष्पक्ष विवरण देने का अनुरोध किया, क्योंकि मुझे इन विषयों के बारे में बहुत कम जानकारी थी और बिना और जानकारी के पत्राचार जारी रखना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। मुझे उत्तर मिल गया है, जो मैं संलग्न कर रहा हूँ। इसे प्राप्त करने के बाद मैंने एक्स - - को शांत और विनम्र तरीके से उत्तर दिया है। वसंत ऋतु से पहले मुझे उनसे कोई खबर नहीं मिल पाएगी।

दिसंबर, 1851।

आशा है कि आपका पिछला सप्ताह अच्छा बीता होगा। यहाँ बहुत कठिन समय रहा। पापा तो अब तक ठीक हैं; लेकिन इन हवाओं और मौसम के बदलावों ने मुझे ज़ुकाम कर दिया है; हालाँकि, अब मैं पहले से बेहतर हूँ। बेचारा बूढ़ा कीपर (एमिली का कुत्ता) पिछले सोमवार सुबह एक रात बीमार रहने के बाद मर गया। वह शांति से सो गया; हमने उसका पुराना वफादार सिर बगीचे में रख दिया। फ्लॉसी उदास है और उसे बहुत याद कर रही है। बूढ़े कुत्ते को खोने का बहुत दुख था; फिर भी मुझे खुशी है कि उसकी मृत्यु स्वाभाविक थी। लोग बार-बार कह रहे थे कि उसे मार देना चाहिए, जिसके बारे में न तो पापा और न ही मैं सोचना चाहते थे। अगर मैं किसी शहर के पास होती और मुझे ताज़ा और मीठा कॉड-लिवर ऑयल मिल जाता, तो मैं सचमुच आपकी सलाह मानकर उसे ज़रूर आज़माती; लेकिन हॉवर्थ में मुझे वह कैसे मिलेगा, यह मेरी समझ से परे है...। आपने "द लिली एंड द बी" के बारे में पूछा। अगर आपने इसे पढ़ा है, तो आपने एक ऐसा कारनामा कर दिखाया है जो मेरे बस से बाहर है। मैंने कुछ पन्ने देखे और फिर उसे निराशा में रख दिया, और अब उसे दोबारा पढ़ने की हिम्मत भी नहीं हो रही है। लेकिन मुझे वॉरेन की रचनाएँ कभी पसंद नहीं आईं। "मार्गरेट मैटलैंड" एक अच्छी किताब है, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है।

इस समय, जिस बीमारी का वह इन पत्रों में हल्के में ज़िक्र करती है, वह इतनी बढ़ गई कि उसके पिता चिंतित हो गए, और अंततः उसने अपना काम छोड़कर अपनी सहेली से मिलने का सुख और आराम पाने की सहमति दे दी। जब तक मुलाकात चली, वह खुशी का स्रोत रही; लेकिन उसके समाप्त होते ही अवसाद लौट आया, और उसकी हालत गंभीर रूप से बिगड़ गई। इस दौरान उसके कष्टों का कुछ अंश - जब "विलेट" अभी भी बेड़ियों में जकड़ी हुई थी - जनवरी 1852 के निम्नलिखित पत्र से पता चलेगा:

काश तुम देख पातीं कि मैंने पापा के पास जाते हुए तुम्हारे पत्र को कितनी शांति से पकड़ा था, और उसका भावार्थ भांपते ही मैंने उसे अपने वश में कर लिया था। शांत रहो। स्थिर रहो। प्रिय नेल, मेरा पक्का इरादा है कि जब भी संभव होगा, मैं कुछ दिनों के लिए बी—— आऊँगी; लेकिन इस बारे में मुझे खुद ही फैसला करना होगा, और मुझे समय लेना होगा। आज मैं बेहतर हूँ—काफी बेहतर; लेकिन तुम शायद ही समझ पाओगी कि पारा चढ़ते ही लोग मुझे घर से कहीं भी, चाहे खुली या बंद गाड़ी में, ले जाने के लिए किस हालत में डाल देते हैं। और बोलने की बात करें तो—चार दिन पहले मैं तीन वाक्य भी ठीक से नहीं बोल पाती थी। फिर भी मुझे देखभाल की ज़रूरत नहीं थी, और मैं बिस्तर पर नहीं पड़ी। खुद को संभालना ही काफी था; किसी और को परेशान करना मेरे लिए बहुत कष्टदायक होता।

मार्च, 1852।

ई. टी. की मृत्यु की खबर मुझे पिछले हफ्ते एम. — — के एक लंबे पत्र से मिली, जिसने मेरे दिल को इतना झकझोर दिया कि उसकी सरल, सशक्त और सच्ची भावनाओं ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मैंने उसे सिर्फ एक बार ही पढ़ा। इसने मेरे अधूरे घावों को भयानक बल से कुरेद दिया — मृत्युशय्या का दृश्य बिल्कुल वैसा ही था — साँसें रुक रही थीं, इत्यादि। उसे डर है कि अब वह अपने इस उदास एकांत में "एक कठोर, निर्दयी और स्वार्थी स्त्री" बन जाएगी। इस डर ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। मैंने इसे बार-बार अपने लिए महसूस किया है; और एम. — — के डर के सामने मेरी क्या स्थिति है? अगर मुझे यह विश्वास करने की शक्ति होती कि इंग्लैंड में समृद्धि और सुख उसका इंतजार कर रहे होंगे, तो मैं उसके लिए हार्दिक कामना करता। लेकिन मुझे ऐसी कोई संभावना नहीं दिखती। ईश्वर उसकी मदद करे, जैसा

कि केवल ईश्वर ही कर सकता है!

एक अन्य मित्र को, हॉवर्थ से एक संक्षिप्त यात्रा के लिए बाहर जाने के निमंत्रण के जवाब में, वह इस प्रकार लिखती है:

12 मार्च, 1852।

आपके स्नेहपूर्ण पत्र ने मुझे बहुत लुभाया है, पर मुझे इसका विरोध करना ही होगा। घर से बाहर जाना मेरे लिए मुमकिन नहीं है, जब तक कि स्वास्थ्य या कोई और ज़रूरी कारण मुझे जाने के लिए विवश न कर दे। लगभग चार महीनों से (यानी जब से मैं बीमार पड़ा हूँ) मैंने कलम नहीं उठाई है; मेरा काम रुका हुआ है, और मेरी सोचने-समझने की क्षमता निष्क्रिय हो गई है; अब और आराम करना तो मुमकिन ही नहीं है, और मैं इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहता। मेरे प्रकाशक मेरी लंबी देरी से परेशान हैं; कभी-कभी मुझे उनकी अधीरता को संक्षिप्त और रूखे जवाबों से दबाना पड़ता है। फिर भी, जिस सुख से मैं अब खुद को वंचित कर रहा हूँ, उसे मैं बस कुछ समय के लिए टाला हुआ ही मानना चाहता हूँ। मैंने सुना है कि आप गर्मियों में स्कारबोरो आने की योजना बना रहे हैं; और अगर मैं जुलाई या अगस्त के अंत तक अपना काम पूरा कर लूँ, तो मुझे आपके साथ वहाँ कुछ समय बिताने में कितनी खुशी होगी!... हालांकि, इतने समय में योजना बनाना मेरे लिए संभव नहीं है; मेरे लिए बहुत कुछ, सबसे पहले, पापा के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है (जो पूरी सर्दी के दौरान, मैं शुक्रगुजार हूं, वास्तव में बहुत अच्छा रहा है), और दूसरा, काम की प्रगति पर - एक ऐसा मामला जो पूरी तरह से इच्छा या संकल्प पर निर्भर नहीं है, बल्कि काफी हद तक प्रयास की पहुंच से परे है, या गणना की सीमा से बाहर है।

जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती गई, उसकी पीड़ा में कोई कमी नहीं आई, और अंततः, कुछ राहत की तलाश में, उसने अचानक अकेले ही फाइली की यात्रा की, जिसका एक कारण स्कारबोरो में अपनी बहन की कब्र के ऊपर स्थापित स्मारक-पत्थर को देखने की उसकी इच्छा भी थी।

फिली बे, जून, 1852।

मेरी प्रिय महोदया — — , — आपका स्नेहपूर्ण और स्वागतयोग्य पत्र मुझे यहाँ मिला, जहाँ मैं पिछले तीन सप्ताह से बिल्कुल अकेली रह रही हूँ। बदलाव और समुद्री हवा की आवश्यकता महसूस हो रही थी। दूरी और अन्य कारणों से मैं एलेन के साथ दक्षिण नहीं जा सकी, हालाँकि अगर मैं पूरी तरह स्वतंत्र और निश्चिंत होती तो मुझे

बहुत खुशी होती। एलेन ने मुझे कुछ समय पहले बताया था कि आप शरद ऋतु तक स्कारबोरो नहीं आ पाएंगी, इसलिए मैंने तुरंत अपना सामान पैक किया और यहाँ आ गई। पहले एक-दो दिन मुझे बहुत डर लगा कि समुद्र तट मुझे रास नहीं आएगा, क्योंकि मुझे लगभग लगातार सिरदर्द और अन्य कष्टदायक बीमारियाँ थीं; मौसम भी अंधकारमय, तूफानी और अत्यधिक — कड़ाके की ठंड वाला था। ऐसी परिस्थितियों में मेरा अकेलापन वीरान सा लग रहा था; मेरी कुछ शामें नीरस गुज़रीं और रातें जागकर गुज़रीं। लेकिन अब वो समय भी बीत गया। मुझे लगता है कि अब मैं इस बदलाव से बेहतर और मजबूत महसूस कर रही हूँ, और एक-दो दिन में घर लौटने की उम्मीद करती हूँ। एलेन ने मुझे बताया कि श्री डब्ल्यू ने कहा था कि जिन लोगों को मेरे जैसी लिवर की समस्या रहती है, उन्हें हर दिन तीन-चार घंटे चलना चाहिए; इसलिए, जब से मैं यहाँ आया हूँ, तब से जितना हो सका उतना चला हूँ, और खुले में रहने के कारण मेरा चेहरा लगभग किसी मछुआरे या नहाने वाली महिला की तरह झुलस गया है। जहाँ तक मेरे काम की बात है, वह काफी समय से रुका हुआ है; निश्चित रूप से सुस्त लिवर दिमाग को भी सुस्त कर देता है। मुझे कोई प्रेरणा नहीं मिल रही है। अगर यह स्थिति पूरी तरह से नहीं बदली, तो शरद ऋतु में छुट्टी मिलने की मेरी संभावना बहुत कम है; फिर भी, स्कारबोरो में आपसे कुछ समय के लिए न मिल पाने का मुझे बहुत दुख होगा। स्कारबोरो में मुझे जो कर्तव्य निभाना था, वही मुख्य कारण था जिसने मुझे पूर्वी तट की ओर आकर्षित किया। मैं वहाँ गया, कब्रिस्तान का दौरा किया और पत्थर देखा। उसमें पाँच त्रुटियाँ थीं; इसलिए मुझे उसे दोबारा तराशने और उस पर दोबारा अक्षर लिखवाने के निर्देश देने पड़े।

समुद्री हवा उसके लिए अच्छी थी; लेकिन फिर भी वह अपने महान कार्य को आगे बढ़ाने में असमर्थ रही, उन लोगों द्वारा डाले गए दबाव के बावजूद जो इस संबंध में केवल जनता की अधीरता को व्यक्त कर रहे थे।

हॉवर्थ, जुलाई, 1852।

मैं फिर से घर आ गया हूँ, जहाँ (ईश्वर का धन्यवाद) सब ठीक है। मैं पहले से बहुत बेहतर महसूस कर रहा हूँ, और आशा करता हूँ कि यह सुधार स्थायी रहे... फाइली में पहले दो सप्ताह तक मुझे लगातार दाहिनी ओर दर्द और सिरदर्द होता रहा। मेरा मनोबल भी बहुत गिरा हुआ था – कभी-कभी तो बिल्कुल टूट जाता था। मुझे डर था कि पिछली सर्दियों की सारी परेशानियाँ और कष्ट फिर से लौट आ रहे हैं; इसलिए अब

मैं वास्तव में शुक्रगुजार हूँ कि मैं इतना बेहतर महसूस कर रहा हूँ... आपने ऑस्ट्रेलिया के बारे में पूछा। चलिए इस विषय को संक्षेप में ही समाप्त कर देते हैं, और इस पर दोबारा चर्चा नहीं करते। वहाँ सन्नाटा पसरा है। कॉर्नहिल में भी सन्नाटा छाया हुआ है; इस सीज़न के लिए मेरे पास कोई काम तैयार न होने से वहाँ बहुत निराशा है। एलेन, हमें अपने साथी मनुष्यों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए – केवल स्वयं पर और उस पर जो हम और उन दोनों से ऊपर है। मेरे काम, जैसा कि आप उन्हें कहते हैं, अभी रुके हुए हैं, और मैं उन्हें जल्दी नहीं कर सकता। मुझे अपना समय लेना होगा, चाहे वह कितना भी लंबा समय क्यों न हो।

अगस्त, 1852।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पापा की सेहत में अब काफी सुधार हो चुका है। उनकी आँखों में सूजन लगभग न के बराबर है और उनका स्वास्थ्य भी संतोषजनक रूप से सुधर रहा है। वे जल्द ही काम पर लौटने की उम्मीद भी कर रहे हैं, लेकिन इस मामले में सावधानी बरतनी होगी। पापा की बीमारी के दौरान मार्था ने बहुत सहयोग और मदद की है। बेचारी टैबी को भी इस समय अंग्रेजी हैजा हो गया है, जो फ्लू के साथ-साथ इस इलाके में आजकल लगभग हर जगह फैला हुआ है। मुझे भी इसका थोड़ा सा असर हुआ था; लेकिन कुल मिलाकर यह बहुत धीरे-धीरे ठीक हो गया, मेरे सीने और लीवर पर इसका असर पिछले तीन सालों में किसी भी सर्दी-जुकाम से कम ही हुआ है... मैं आपके बारे में कुछ मजबूरी में और अधूरी जानकारी के साथ लिख रही हूँ; क्योंकि, प्रिय नेल, आपके पत्र बहुत ही रहस्यमय होते हैं, जिनमें सिर्फ इशारे होते हैं और मेरी ज़बान बंद हो जाती है। उदाहरण के लिए, आपके आखिरी पोस्टस्क्रिप्ट के बारे में मैं क्या कहूँ? यह तो बिल्कुल रहस्यमय है। मैं समझ ही नहीं पा रही हूँ कि आपको मुझे लिखने में क्या हिचक रही है। शायद आपको लगता होगा कि चूंकि मैं आमतौर पर संयम से लिखती हूँ, इसलिए आपको भी ऐसा ही करना चाहिए। लेकिन मेरा संयम जानबूझकर नहीं, बल्कि मजबूरी से है। मैं चुप हूँ क्योंकि मेरे पास सचमुच कहने को कुछ नहीं है। मैं बार-बार दोहरा सकती हूँ कि मेरा जीवन एक खालीपन है, अक्सर एक बहुत ही थका देने वाला बोझ है, और भविष्य कभी-कभी मुझे भयभीत कर देता है; लेकिन इस तरह के दोहराव से क्या लाभ होगा, सिवाय आपको थकाने और खुद को कमजोर करने के? जो दुख मुझे कभी-कभी पीड़ा

देते हैं, वे मेरी स्थिति के कारण हैं - इसलिए नहीं कि मैं एक अकेली महिला हूँ और शायद अकेली ही रहूँगी, बल्कि इसलिए कि मैं अकेली हूँ और शायद अकेली ही रहूँगी। लेकिन इसका कोई उपाय नहीं है, और इसलिए इसे सहना ही होगा, और वह भी कम से कम शब्दों में। मैं यह सिर्फ आपको यह साबित करने के लिए लिख रही हूँ कि जो कुछ आप मुझसे खुलकर कहना चाहते हैं, उतना ही खुलकर आप लिख भी सकते हैं। समझ लीजिए कि मैं पहले की तरह ही दृढ़ संकल्पित हूँ कि जब तक मैं अपना काम पूरा नहीं कर लेती, तब तक मैं आपसे मिलने की छुट्टी नहीं लूँगी। मेहनत के बाद सुख; लेकिन जब तक काम अधूरा पड़ा रहा, मैं कभी भी मनोरंजन का आनंद नहीं ले सका।

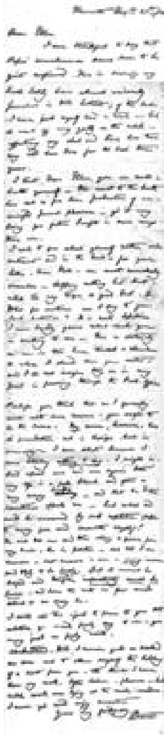

शार्लोट ब्रोंटे का उपमापूर्ण पत्र।

धीरे-धीरे "विलेट" के पन्ने दर पन्ने लिखे जा रहे थे। इन पत्रों से पाठक को पता चलता है कि पुस्तक की रचना सुखद मनोदशा में नहीं की गई थी। ऊपर छपे अंतिम पत्र की तारीख के कुछ सप्ताह बाद अपने प्रकाशक को लिखते हुए, वह कहती हैं: "मैं आपको बता नहीं सकती कि मैं अपने विचारों के अलावा अन्य लोगों के विचार सुनने

के लिए कितनी तरसती थी, और मैं कई बार कितनी निराश और हताश हो जाती थी, क्योंकि कोई ऐसा नहीं था जिसे मैं एक पंक्ति पढ़कर सुना सकूं, या जिससे सलाह ले सकूं। 'जेन आयर' ऐसी परिस्थितियों में नहीं लिखी गई थी, न ही 'शर्ली' का दो-तिहाई भाग। मैं इसके बारे में इतनी दुखी हो गई थी कि मैं पुस्तक का जिक्र भी नहीं कर सकती थी। यह अभी तक पूरी नहीं हुई है; लेकिन अब मुझे उम्मीद है।" लेकिन हालांकि उनका काम उन पर लगातार दबाव डाल रहा था, और इसे पूरा करने की उनकी तीव्र चिंता उनके स्वास्थ्य और मनोबल पर भारी पड़ रही थी, फिर भी वह अपने दोस्तों के पत्रों का जवाब देने के लिए समय निकाल लेती थीं, जिससे पता चलता था कि बाहरी दुनिया में उनकी रुचि पहले की तरह ही तीव्र थी।

सितंबर, 1852।

ए — — के नोट्स के लिए धन्यवाद। मुझे उन्हें पढ़ना अच्छा लगता है, वे खबरों से भरे होते हैं, लेकिन वे पढ़ने में मुश्किल हैं। बहुत से शब्द तो मैं समझ ही नहीं पाती। यह जानकर खुशी हुई कि एम — — बहुत अच्छी हैं, और — — के बारे में भी अच्छी खबरें आ रही हैं। मुझे — — से कभी-कभी नोट्स मिलते हैं, लेकिन मुझे डर है कि मेरे आखिरी जवाब से उन्हें ज्यादा संतुष्टि नहीं मिली। उसमें सलाह नाम की उस अप्रिय चीज़ का अंश था — ऐसी सलाह, जिसे शायद, और मुझे लगता है, हल्की फटकार के रूप में समझा गया था। मैं मुश्किल से ही बता सकती हूँ कि — — में ऐसा क्या है जो, उनकी मिलनसारिता के प्रति दृढ़ विश्वास के बावजूद, उनके कल्याण की सच्ची कामना के बावजूद, मन को ऊबा देता है, तृप्त करता है, अधीरता पैदा करता है। वह बड़ी सहजता से ऐसे विचार और पसंद पेश करती हैं जो न तो उनके अपने हैं और न ही किसी भी अर्थ में उनके स्वभाव के हैं। मेरा धैर्य सचमुच ऐसे दिखावटी स्वभाव वाले व्यक्ति की परीक्षा नहीं झेल सकता। वह अपने बच्चे के नखरे और जिद्दी स्वभाव के बारे में इतना बक-बक करती रही, जिसे वह एक कठोर, सांवला छोटा बच्चा बताती है, जो सिर्फ वही करता है जो उसे अच्छा लगता है, कि आखिरकार मैंने भी उसे कुछ कह दिया - बहुत जोर से नहीं, लेकिन इतना जरूर कि उसे लगे कि उसके साथ अन्याय हुआ है, मुझे इसमें कोई शक नहीं। मैं क्या करूँ। वह अक्सर कहती है कि वह "स्वार्थी" नहीं है, लेकिन सच तो यह है कि मैंने शायद ही कभी किसी को इतना अचेतन, पूरी तरह से और अक्सर कमजोर अहंकारी देखा हो। फिर, वह असंगत भी है। एक ही सांस में वह अपने वैवाहिक सुख का बखान करती है और

सहानुभूति के लिए गिड़गिड़ाती है। समझ में नहीं आता। एक आदर्श पति और बच्चे के होते हुए भी, यह गिड़गिड़ाने और भीख मांगने का स्वर क्यों? या तो उसकी किस्मत वैसी नहीं है जैसा वह बताती है, या उसे संतुष्ट करना मुश्किल है।

अक्टूबर में, "विलेट" के पूरा होने तक खुद को आराम न देने का उनका दृढ़ संकल्प टूट गया। उन्हें मदद के लिए गुहार लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा, और यह स्वीकार करना पड़ा कि साथ की लालसा को कुचलने के उनके प्रयास में उन्हें हार का सामना करना पड़ा।

अक्टूबर, 1852।

पापा की इतनी प्रबल इच्छा है कि मैं तुम्हें आने के लिए कहूँ, और मुझे भी थोड़ी सी ताजगी की इतनी सख्त ज़रूरत है कि मैं तुमसे विनती कर रही हूँ कि तुम एक हफ्ते के लिए हॉवर्थ आ जाओ। मैंने सोचा था कि काम पूरा होने तक मैं खुद को रोके रखूँगी, लेकिन लगता है इससे काम नहीं चलेगा। काम आगे नहीं बढ़ रहा है, और यह अत्यधिक अकेलापन बहुत भारी पड़ रहा है। तो नेल, बस एक हफ्ते के लिए तुम्हारा प्यारा चेहरा देख लो, ताकि मुझे ताजगी मिल जाए। क्या तुम बुधवार को आ सकती हो? कल लिखना, और मुझे बताना कि तुम किस ट्रेन से कीघली पहुँचोगी, ताकि मैं तुम्हें बुला सकूँ।

शार्लेट को शारीरिक और मानसिक थकान से ग्रस्त होने के बावजूद यह यात्रा सुखद रही। उसने उस "एक छोटे से सप्ताह" के लिए अपना काम एक तरफ रख दिया, अपनी सहेली के साथ खुले मैदानों में घूमने गई, पहले की तरह बातें कीं, और अंत में, जब वह फिर से अकेली रह गई, तो उसने कहा कि इस बदलाव ने उसे "अत्यंत लाभ" पहुँचाया है। अपनी सहेली के जाने के तुरंत बाद उसे लिखे पत्र में वह कहती है:

आपका पत्र आज सुबह ही आया। मुझे कल ही इसकी उम्मीद थी, और सच कहूँ तो मैं भी आपकी तरह थकने लगी थी। यह ठीक नहीं है। मुझे डर है कि मैं आपकी ज़्यादा परवाह कर रही हूँ। आपने इसे शायद किसी बुरे समय पर पढ़ा होगा, किसी बुरे दौर में। यकीनन ऐसा हमेशा या अक्सर नहीं होता, वरना वैवाहिक जीवन सचमुच एक बेढंगा स्वर्ग है। मैंने सिर्फ़ 'द एग्जामिनर' भेजा है, 'द लीडर' अभी तक पढ़ा नहीं है। मुझे जिस पछतावे का डर था, उससे मैं बच गई। शनिवार को मैं काम में लग गई, और क्योंकि अभी भी खुशनुमा माहौल बना हुआ है, और लिखने-लिखने से मेरी आँखें बहुत

थक गई हैं, इसलिए मेरी खराब लिखावट के लिए माफ़ कर दीजिएगा। पापा को यह सुनकर खुशी हुई कि आप ठीक-ठाक घर पहुँच गए हैं - और हमें भी... मुझे अपने प्यारे साथी की बहुत याद आ रही है; अब वो सुकून भरी नींद नहीं मिलेगी।

अब उनकी कलम तेजी से चलने लगी और "विलेट" के अंतिम अध्याय अपेक्षाकृत आसानी से लिखे गए, और अंत में 22 नवंबर को उन्होंने इस प्रकार लिखा:

सोमवार सुबह।

मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि मैंने शनिवार को अपना लंबा काम पूरा कर लिया, पार्सल पैक करके कॉर्नहिल भेज दिया। यह करने के बाद मैंने प्रार्थना की। यह अच्छा हुआ या बुरा, मुझे नहीं पता। डी.वी., अब मैं चुपचाप परिणाम का इंतज़ार करने की कोशिश करूँगी। मुझे लगता है कि किताब को दिखावटी नहीं माना जाएगा, न ही यह किसी तरह की शत्रुता पैदा करने वाली है। पापा की तबीयत ठीक है, इसलिए मुझे उम्मीद है, प्रिय नेल, मैं आपकी इच्छा के अनुसार कुछ दिनों के लिए बी—— आ सकती हूँ। मिस मार्टिन्यू ने भी मुझे उनसे मिलने के लिए बहुत आग्रह किया है। मैंने वादा किया है कि अगर सब ठीक रहा, तो मैं नवंबर के अंत या दिसंबर की शुरुआत में आऊँगी, ताकि मैं बी—— से वेस्टमोर्लैंड जा सकूँ। क्या बुधवार आपको ठीक रहेगा? "एस्मंड" मेरे साथ आएगा—यानी थैकरे का उपन्यास।

हर पाठक जानता है कि "विलेट" का अंत किस तरह होता है, और श्रीमती गैस्केल से अधिकांश लोग यह भी जानते हैं कि वास्तविक परिणाम को कुछ अनिश्चितता में छोड़ने का कारण लेखिका की अपने पिता को प्रसन्न करने की पुत्रवत इच्छा थी। शार्लोट स्वयं दृढ़ निश्चयी थीं कि वह लूसी स्नो को पॉल इमैनुएल की सुखी पत्नी नहीं बनाएंगी। उनका इरादा कभी भी "उसे सुखद स्थानों में बसाने" का नहीं था। लूसी को जीवन के तूफ़ान और तनाव को उसी तरह सहना था जैसे उसकी रचनाकार को सहना पड़ा था; और अंत में उसे अकेला छोड़ दिया जाना था, प्रेम और सौहार्दपूर्ण संगति की धूप में अपने जीवन की सुखद दोपहर बिताने की आशा से हमेशा के लिए वंचित कर दिया जाना था। लेकिन श्री ब्रोंटे, अपने ही घर में घटित हो रही हृदयविक्षतता और आत्मा की थकान की उस त्रासदी से पूरी तरह अनभिज्ञ थे, जो "विलेट" में चल रही कहानी के साथ एक आश्चर्यजनक समानता प्रस्तुत करती थी, और कहानी के निराशाजनक अंत को बर्दाश्त नहीं कर सके, और विरोध और विनती से अपनी बेटी को कम से कम इस हद तक अपनी योजना बदलने के लिए राजी कर लिया कि

परिणाम अनिश्चित रहे।

तो “विलेट” भी उसी राह पर चल पड़ी, जिस राह पर “जेन आयर” और “शर्ली” पहले चल चुकी थीं, हॉवर्थ के एकांत पादरी के घर से कॉर्नहिल के व्यस्त प्रकाशन गृह तक और फिर वहाँ से दुनिया के सामने। पांडुलिपि भेजे जाने पर शार्लोट के मन में कुछ भय था। वह धीरे-धीरे उस दृढ़ विश्वास को बना रही थीं जो उनके जीवन भर कायम रहा - यह विश्वास कि “विलेट” में उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है, और चाहे अच्छा हो या बुरा, इसी से उनकी प्रतिष्ठा टिकेगी या गिरेगी। लेकिन जैसा कि हमने देखा है, वह कहानी पर दूसरों की राय जानने के लिए बहुत उत्सुक थीं। और वह केवल इसकी खूबियों पर सामान्य राय ही नहीं चाहती थीं। वह कुछ छोटी-छोटी बातों को लेकर भी परेशान थीं। अपनी आदत के अनुसार, उन्होंने अपने अधिकांश पात्रों को वास्तविक जीवन से लिया था, और केवल ब्रसेल्स में रहने के दौरान ही उन्होंने उन मॉडलों का अध्ययन नहीं किया था जिनका उपयोग उन्होंने पुस्तक लिखते समय किया था। स्वाभाविक रूप से, वह यह जानने के लिए उत्सुक थीं कि क्या उन्होंने अपने चित्रों को बहुत शाब्दिक रूप से चित्रित किया है। अतः "विलेट" को पांडुलिपि के रूप में ही "डॉ. जॉन" के मूल लेखक के हाथों में सौंप दिया गया। जब उस सज्जन ने कहानी पढ़ी और सभी पात्रों की सहजता से आलोचना की, तो उनका मन शांत हो गया और उन्हें पता चल गया कि उन्होंने कहानीकार और जीवनीकार को अलग करने वाली सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया है।

इसी बीच, अपना काम खत्म करके, वह हॉवर्थ से जल्दी से निकल गई और अपनी सहेली के साथ बी—— में अपनी मेहनत से कमाई हुई छुट्टियाँ बिताने चली गई। "एस्मंड" भी उसके साथ था, और शांत दोपहरें उसे ज़ोर से पढ़ने में बीतती थीं। 9 दिसंबर को वह हॉवर्थ से लिखती है, और अपने घर सुरक्षित लौटने की सूचना देती है:

मैं कल दोपहर पांच बजे सुरक्षित घर पहुँच गया, और मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि पापा और बाकी सब लोग बिल्कुल ठीक थे। मैंने लीड्स में अपना काम संतोषजनक ढंग से निपटा लिया, और अपनी इच्छानुसार हेडड्रेस को ठीक करवा लिया। अब यह पहले की तरह झाड़ीदार और बेस्वाद नहीं है। मेरे आने पर मुझे कोई प्रूफ शीट नहीं मिली, बल्कि श्री एस — — का एक पत्र मिला, जिसे मैं साथ ले जाना चाहता था, लेकिन इतने सारे शब्द मुश्किल से पढ़े जा रहे हैं कि आपको इसे पढ़ने में आनंद नहीं आएगा। वह अपने "तर्क" को रहस्य बनाए हुए हैं; तीसरे खंड में

कुछ ऐसा है जो उनके गले में अटक गया है; और जिस "महिला पात्र" के बारे में मैंने पूछा था, उसके बारे में उन्होंने जवाब दिया कि "वह एक अजीब, आकर्षक छोटी बिल्ली है," लेकिन साथ ही यह भी कहा कि "वह उससे प्यार नहीं करते।" उन्होंने यह भी कहा कि वह "विलेट" के बारे में अब और कोई सवाल का जवाब नहीं देंगे। आज सुबह मुझे श्री विलियम्स का एक छोटा सा नोट मिला, जिसमें उन्होंने बताया है कि उन्हें अभी तक तीसरा खंड पढ़ने की अनुमति नहीं मिली है। श्रीमती — — की ओर से एक पत्र भी है, जो बहुत ही स्नेहपूर्ण है। काश मैं आज भी उनकी उस स्नेहपूर्ण भावना को उसी तरह महसूस कर पाती: एक समय था जब वह मुझे बहुत सुखद लगती थी। प्रिय नेल, तुरंत पत्र लिखना और मुझे बताना कि तुम्हारी माँ कैसी हैं। उन्हें और बी — — में सभी को मेरा हार्दिक प्रणाम कहना। पिछली बार जब मैं उनसे मिलने गई थी, तब सभी लोग बहुत अच्छे लगे थे। मुझे वह यात्रा अत्यंत सुखद याद है।

"विलेट" को मिली निजी प्रतिक्रिया वैसी नहीं थी जैसी लेखिका ने उम्मीद की थी। प्रकाशक को कहानी के कुछ पहलुओं पर आपत्ति थी, और जिन लोगों ने पांडुलिपि देखी, उन्होंने भी अपनी असहमति व्यक्त करने में देर नहीं की। यह स्पष्ट था कि कॉर्नहिल में निराशा थी; और मिस ब्रोंटे का स्वाभिमान काफी आहत हुआ। उन पत्रों को यहाँ पुन: प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है जिनमें उन्होंने उस समय की घटनाओं का वर्णन किया है, क्योंकि उनका सार ऊपर दिए गए विवरण से स्पष्ट हो जाता है। लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि उन्होंने कितनी विनम्रता से उन सभी लोगों की बातें सुनीं जिन्होंने आलोचना की, उनकी आपत्तियों को समझने की उनकी उत्सुकता, और उनके द्वारा उठाए गए हर मुद्दे पर उनसे चर्चा करने की उनकी तत्परता। इस आलोचना से उत्पन्न चिड़चिड़ाहट का कोई संकेत नहीं मिलता, केवल इस बात का दुख और उदासी है कि वह दूसरों को उस तरह प्रभावित करने में सफल नहीं हो पाईं जैसा उन्होंने आशा की थी। फिर भी उन्हें इस बात पर शायद ही आश्चर्य हुआ हो। क्या उन्होंने वर्षों पहले, जब "शर्ली" पहली बार प्रकाशित हुई थी, ये शब्द नहीं लिखे थे? —

चाहे ज्ञात हो या अज्ञात, गलत समझा गया हो या इसके विपरीत, मैंने तय कर लिया है कि मैं इसके अलावा कुछ और नहीं लिखूंगा। मैं अपनी क्षमता के अनुसार ही लिखूंगा। वे दो इंसान जो मुझे समझते थे और जिन्हें मैं समझता था, अब इस दुनिया

में नहीं हैं। कुछ लोग अब भी मुझसे प्यार करते हैं, और मैं उनसे बिना यह उम्मीद किए प्यार करता हूं, या यह उम्मीद करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है, कि वे मुझे पूरी तरह से समझेंगे। मैं संतुष्ट हूं, लेकिन लेखन के मामले में मुझे अपनी मर्जी से ही लिखना है... मैं ईश्वर का आभारी हूं जिसने मुझे यह प्रतिभा दी; और इस वरदान की रक्षा करना और इसका लाभ उठाना मेरे धर्म का एक हिस्सा है।

इसलिए अब वह खुद को गलत समझे जाने पर आश्चर्यचकित नहीं है। न ही वह क्रोधित है। वह उन लोगों को अपने वास्तविक अर्थ समझाने के लिए पूरी तरह तैयार है जिन्होंने उसे गलत समझा है, लेकिन वह अपने लिखे हुए पर अडिग है। उन दो वर्षों के दर्द और दुख के दौरान उससे जो रचना निकली है, वह ऐसी रचना नहीं है जिसे दूसरों को खुश करने के लिए मनमाने ढंग से बदला जा सके। अपने पिता के आग्रह पर भी उसने कथानक के अंत में होने वाली त्रासदी पर पर्दा डालने से अधिक कुछ करने से इनकार कर दिया था; और वह नई घटनाओं को शामिल नहीं कर सकती, न ही नए रंग भर सकती है, क्योंकि उसकी पांडुलिपि का मूल्यांकन करने वाले आलोचकों के छोटे समूह ने इसे अपूर्ण घोषित कर दिया है। "मुझे डर है कि वे" (पाठक) "जो प्रस्तुत किया गया है उसी से संतुष्ट होंगे। मेरे पास इससे अधिक चमकीले रंग नहीं हैं; यदि मैं लाल रंग को गहरा करने या पीले रंग को चमकाने का प्रयास करूँ, तो मैं केवल धब्बे ही बना दूँगी।" फिर भी वह स्वीकार करती है कि जो लोग पुस्तक का मूल्यांकन केवल बाहरी रूप से करते हैं, उनके पास यह शिकायत करने का कुछ कारण है कि यह अन्य उपन्यासों की तरह नहीं है।

आप कहते हैं कि लूसी स्नो को रुग्ण और दुर्बल समझा जा सकता है, जब तक कि उनके जीवन का इतिहास अधिक स्पष्ट रूप से न बताया जाए। मेरा मानना है कि वह समय-समय पर रुग्ण और दुर्बल दोनों ही थीं; उनका चरित्र किसी भी प्रकार से पूर्ण शक्ति का दावा नहीं करता, और उनके जैसा जीवन जीने वाला कोई भी व्यक्ति स्वाभाविक रूप से रुग्ण हो जाएगा। उदाहरण के लिए, उन्हें पश्चात्ताप करने के लिए प्रेरित करने वाला कोई स्वस्थ भाव नहीं था; बल्कि एकांत के दुख और बीमारी का अर्ध-प्रलाप था। हालाँकि, यदि पुस्तक इन सभी बातों को व्यक्त नहीं करती है, तो कहीं न कहीं कोई बड़ी त्रुटि अवश्य है। मैं कुछ अन्य बिंदुओं को भी स्पष्ट कर सकता था, लेकिन यह ऐसा होगा जैसे किसी चित्र को बनाना और फिर उसके नीचे दर्शाई जाने वाली वस्तु का नाम लिखना।

खुशी की बात है कि महान पठन जगत का दिल, समग्र रूप से, इसके किसी भी हिस्से से कहीं अधिक विशाल और सच्चा है। "विलेट" की पांडुलिपि पढ़ने वालों को जो पहली नज़र में समझ नहीं आया, वह पुस्तक के हाथों में आते ही जनता को तुरंत समझ आ गया। हर स्तर और विचारधारा के आलोचकों ने आश्चर्य और प्रशंसा व्यक्त की, क्योंकि उन्होंने देखा कि कैसे सरल पात्रों और सामान्य घटनाओं से प्रतिभा ने साहित्य की इस अद्भुत कृति को रचा था। शायद, यह पुस्तक आम बोलचाल की भाषा में लोकप्रिय होने की उम्मीद नहीं कर सकती थी। लेखिका ने रोमांस के "आकर्षक और लुभावने" रास्ते से सावधानीपूर्वक परहेज किया था और प्रेरणा के कठोर निर्देशों का मौन पालन करते हुए लिखा था, जो जैसा कि हमने देखा है, केवल रुक-रुक कर आती थी, जिसके बीच में लेखिका को बेहद उदास और दुखी छोड़ देती थी, लेकिन जब आती थी तो उसे मंत्रमुग्ध और आज्ञाकारी बना देती थी। फिर भी, साधारण दुखों के नीरस वृत्तांत से, जिसमें कोई चौंकाने वाली घटनाएँ नहीं हैं, और कविता के कुछ ही फूलों से सुशोभित है, उन्होंने एक ऐसी हृदय-कथा की रचना की है जो आज तक अंग्रेजी कथा साहित्य के उस स्कूल में अद्वितीय बनी हुई है जिससे वह संबंधित है।

मैंने कुछ नोट्स एकत्रित किए हैं, जिनमें से सभी एक ही व्यक्ति को संबोधित नहीं हैं, और जिनमें पुस्तक की सफलता और उसके स्वागत के बारे में उनका विवरण दिया गया है:

11 फरवरी, 1853।

क्षमा करें, यह संक्षिप्त पत्र है, क्योंकि मेरे पास केवल आपके पिछले स्नेहपूर्ण और स्वागतयोग्य पत्र के लिए धन्यवाद देने का समय है, और यह कहने का कि आपकी इच्छा का पालन करते हुए, मैं आज डाक द्वारा आपको दो समीक्षाएँ भेज रहा हूँ — द एग्जामिनर और द मॉर्निंग एडवर्टाइज़र — जिन्हें आप कृपया अपने खाली समय में लौटा देंगे। एलेन के पास एक तीसरी समीक्षा — द लिटरेरी गजेट — है, जिसे वह भी भेज देंगी। पुस्तक को अब तक अच्छी प्रतिक्रिया मिली है — जिसके लिए मैं आभारी हूँ — मुझे विश्वास है कि यह मेरी अपनी वजह से कम और उन कुछ सच्चे मित्रों की वजह से अधिक है जो मेरी भलाई में इतनी सच्ची रुचि रखते हैं कि मेरी खुशी में खुश होते हैं।

15 फरवरी।

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आप सुरक्षित घर पहुँच गए और आपने लीड्स में अपने सभी कार्य सफलतापूर्वक पूरे कर लिए। आपने यह नहीं बताया कि आपने बिशप की मिठाई मंगवाई थी या नहीं; लेकिन मुझे कल सुबह तक पता चल जाएगा। मुझे कल और आज सात अखबारों का बजट मिला। सभी खबरों का सार ऐसा है कि मेरा हृदय ईश्वर के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है, जो दुख, काम और प्रेरणा, सभी का ध्यान रखता है। पापा भी प्रसन्न हैं। जहाँ तक मेरे मित्रों की बात है, मुझे विश्वास है कि मैं उनसे इस प्रकार की संतुष्टि में कोई बड़ी हिस्सेदारी की अपेक्षा किए बिना भी उनसे प्रेम कर सकता हूँ। जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती है, मुझे यह स्पष्ट होता जाता है कि कोमल मानव स्वभाव पर कोमल दबाव ही पर्याप्त होता है। यह अधिक सहन नहीं कर सकता।

मुझे श्रीमती गैस्केल से खबर मिली है। बहुत दयालु, प्रशंसात्मक, इत्यादि। श्री एस —— ने मुझे बताया कि उन्होंने पता लगा लिया है कि मिस मार्टिन्यू ने ही डेली न्यूज में नोटिस लिखा था। जे. टी. ने मुझे 5 पाउंड में एक विस्तृत लेख लिखकर देने की पेशकश की, लेकिन मैंने उनसे कहा कि टाइम्स शायद मुझे वही काम मुफ्त में दे देगा।

10 मार्च, 1853।

मुझे कल सुबह ही द गार्जियन अखबार मिला, और मैंने अभी तक न तो द क्रिटिक देखा है और न ही शार्प्स मैगज़ीन। द गार्जियन से मुझे ज़्यादा दुख नहीं हुआ। मैं मकसद समझ गई, जिसे छिपाने की कोई कोशिश नहीं की गई है। फिर भी मुझे लगता है कि यह दुश्मनों के लिए एक बढ़िया छोटा सा तोहफा है (श्रीमान — — ने पापा को समीक्षा की खबर सबसे पहले दी थी), और उन "दोस्तों" के लिए तो और भी बढ़िया है जो — भगवान भला करे उनका! — भले ही वे जानबूझकर किसी को नुकसान न पहुँचाना चाहें, फिर भी सफलता के मीठे प्याले में कड़वाहट घोलने में बड़ा आनंद लेते हैं। क्या शार्प्स का छोटा सा लेख भी मीठी कैंडी जैसा है, एलेन? या उसमें कड़वाहट का सही स्वाद है? बेशक मुझे लगता है कि यह द गार्जियन जैसा ही होगा। मेरे "प्यारे दोस्त" द टाइम्स का इंतज़ार करते-करते थक जाएँगे। "हे सिसरा! अपने रथ के पहियों को इतनी देर क्यों लगा रहे हो?"

22 मार्च।

— — के नोट्स भेजने के लिए धन्यवाद। हालाँकि मैंने हाल ही में उन पर ध्यान नहीं दिया है, फिर भी वे मुझे हमेशा मनोरंजक लगते हैं। मुझे उन्हें पढ़ना अच्छा लगता है; उनसे उनके जीवन के बारे में काफी स्पष्ट जानकारी मिल जाती है। — — द्वारा अपनी अच्छी साथी के मन को सुधारने के प्रयास मुझे मुस्कुराने पर मजबूर कर देते हैं। मुझे लगता है कि यह सब ठीक है, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे अपने तरीके से खुश हैं; बस उनके प्रयासों को दी गई दिशा कुछ हद तक समस्याग्रस्त लगती है। बीजगणित और प्रकाशिकी! कुछ चुनिंदा सामान्य पठन से उनके दृष्टिकोण को व्यापक क्यों नहीं बनाया जाए? हालाँकि, वे अपने तरीके से मनोरंजन करने में सही हैं। "विलेट" के बारे में आम राय के प्रति आपका निराशावादी दृष्टिकोण मुझे कम आश्चर्यचकित करता है, क्योंकि ऐसा लगता है कि आपके पास केवल प्रतिकूल समीक्षाएँ ही आई हैं। मुझे कुछ अलग तरह की रिपोर्टें मिली हैं; लेकिन कोई बात नहीं; समय बताएगा। जहाँ तक लूसी स्नो के चरित्र की बात है, मेरा इरादा शुरू से ही यह था कि उन्हें वह दर्जा न दिया जाए जिस पर कुछ नासमझ प्रशंसकों ने "जेन आयर" को दिया था। वह वहीं है जहाँ मैं उसे देखना चाहता था, और जहाँ आत्म-प्रशंसा का कोई आरोप उस पर नहीं लग सकता।

XI.

विवाह और मृत्यु।

जैसा कि हम जानते हैं, हर किताब का अपना एक गुप्त इतिहास होता है, जो छपे हुए पन्नों को पढ़ने वाली दुनिया से छिपा रहता है, लेकिन लेखक के लिए वह इतना स्पष्ट

होता है कि वह उसमें लिखे शब्दों से कहीं अधिक कुछ देख पाता है। थैकरे बताते हैं कि कैसे अपने जीवन के एक दुखद दौर में लिखी गई अपनी एक छोटी कहानी को दोबारा पढ़ते हुए, उन्हें वह सारा दृश्य याद आ गया जिसमें वह कहानी रची गई थी, और उन्हें फिर से उन पीड़ाओं का एहसास हुआ जो उनके दिल को चीर रही थीं जब उनकी कलम उन कठपुतलियों के काल्पनिक भाग्य को गढ़ने में व्यस्त थी जिन्हें उन्होंने मंच पर रखा था। पंक्तियों के बीच उन्होंने पाठक के सामने रखी कहानी से बिल्कुल अलग कहानी पढ़ी। मैंने यह दिखाने की कोशिश की है कि शार्लोट ब्रोंटे के उपन्यासों के साथ भी ऐसा ही था। हर उपन्यास एक दोहरा प्रेम प्रसंग था, जिसका दुनिया के लिए एक अर्थ था और लेखक के लिए दूसरा। फिर भी, जब उन्होंने "शर्ली" और "विलेट" लिखीं, तब उन्हें खुद इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि इन दोनों किताबों की गुप्त धाराओं का एक अजीब मिश्रण उनके लिए क्या लेकर आने वाला है, या उनकी आखिरी रचना की असली नायिका - यानी खुद उनके साथ होने वाले अप्रत्याशित भाग्य का।

मैंने बताया है कि उनका यह दृढ़ विश्वास कितना पक्का था कि "लूसी स्नो" का भाग्य दुखद होगा - एक ऐसा जीवन जिसके अंतिम वर्ष अकेलेपन और पीड़ा में, और मुरझाई हुई आशाओं की कड़वाहट के बीच बीतेंगे। बहुत कम पाठक "विलेट" के अंतिम अंश को भूले होंगे, जिसमें त्रासदी, हालांकि छिपी हुई है, आसानी से देखी जा सकती है:

सूर्य विषुव को पार कर जाता है; दिन छोटे हो जाते हैं, पत्ते मुरझाने लगते हैं; लेकिन - वह आ रहा है।

रात में पाला पड़ता है; नवंबर ने अपने कोहरे को पहले ही भेज दिया है; हवा अपनी शरद ऋतु की कराह में डूबी है; लेकिन - वह आ रहा है।

आकाश घना और गहरा काला है—पश्चिम से बादलों का एक झुंड आ रहा है; बादल अजीबोगरीब आकृतियाँ बना रहे हैं— मेहराब और चौड़ी किरणें; शानदार सुबहें उठ रही हैं— गौरवशाली, शाही, किसी राजा की तरह बैंगनी; आकाश एक ज्वाला है; वे इतने उग्र हैं कि युद्ध के सबसे भयंकर रूप को भी मात देते हैं— इतने रक्तपातपूर्ण कि विजय को भी लज्जित कर देते हैं। मैं आकाश के कुछ संकेतों को जानता हूँ; मैंने उन्हें बचपन से ही देखा है। हे भगवान, उस बादल पर नज़र रखो! हे! उसकी रक्षा करो!

हवा पश्चिम की ओर मुड़ जाती है। शांति, शांति, बंशी — हर खिड़की पर विलाप करती हुई! यह उठेगी — यह उग्र होगी — यह लंबी चीखें मारेगी: चाहे मैं इस रात घर में इधर-उधर भटकूँ, मैं इस तूफान को शांत नहीं कर सकता। बढ़ते घंटे इसे और मजबूत बनाते हैं: आधी रात तक, सभी नींद से जागते पहरेदार एक भयंकर दक्षिण-पश्चिम तूफान को सुनते और डरते हैं…

शांति, स्थिर हो जाओ! ओह! हजारों विलाप करने वाले, प्रतीक्षारत किनारों पर पीड़ा में प्रार्थना करते हुए, उस आवाज की प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन वह सुनाई नहीं दी - तब तक सुनाई नहीं दी जब तक कि सन्नाटा छा गया, कुछ लोग इसे महसूस नहीं कर सके; जब तक कि सूरज वापस नहीं आ गया, उसका प्रकाश कुछ लोगों के लिए रात बन गया!

इस अंधकारमय परिदृश्य में, जैसा कि यहाँ छाया हुआ है, शार्लोट ब्रोंटे को लगा कि उनका जीवन समाप्त हो जाएगा; सारी धूप बुझ जाएगी, सारी खुशियाँ मृत्यु के कड़वे झोंके से छिन्न-भिन्न हो जाएँगी, सारी आशाएँ मुरझा जाएँगी या जड़ से उखड़ जाएँगी। लेकिन जैसा उन्होंने कल्पना की थी, वैसा अंत नहीं हुआ। ईश्वर उनकी कल्पना से कहीं अधिक दयालु थे; और संध्याकाल में उनके विक्षिप्त मार्ग पर प्रकाश और शांति छा गई।

“शर्ली” के अंतिम अंश को पढ़ने वालों को वहाँ “एक सच्चे ईसाई सज्जन” का उल्लेख मिलेगा, जिन्होंने कहानी के प्रसिद्ध तीन पादरियों में से एक, पाखंडी मालोन का स्थान लिया था। यह सज्जन, श्री मैकार्थी, बाकी सभी की तरह कोई काल्पनिक पात्र नहीं थे। उनका वास्तविक रूप श्री निकोल्स थे, जो कई वर्षों तक हॉवर्थ में श्री ब्रोंटे के पादरी के रूप में एक सरल, सादा जीवन व्यतीत करते रहे थे, और जिनका नाम शार्लोट के अपने मित्र को लिखे पत्रों में अक्सर आता है। उनके बारे में लिखे गए किसी भी उल्लेख में इस बात का जरा सा भी संकेत नहीं मिलता कि वे एक सम्मानित मित्र से अधिक थे। और ऐसा था भी नहीं। श्री निकोल्स, मिस ब्रोंटे के पास रहते हुए और उन्हें किसी और से कहीं अधिक करीब से देखते हुए, उनके प्रति एक गहरा और अटूट लगाव विकसित कर चुके थे, जबकि स्वयं मिस ब्रोंटे इस तथ्य से पूरी तरह अनभिज्ञ थीं। इसका पहला अहसास उनके लिए एक झटके जैसा था; एक तरह से फटकार जैसा भी। जबकि वह खुद को अकेली, एकांत और पीड़ा भरे जीवन के लिए अभिशप्त समझती थी, वहीं उसके चारों ओर एक कोमल लेकिन मर्दाना प्रेम

पनप रहा था।

यह स्पष्ट है कि दिसंबर 1852 में उन्होंने अपनी सहेली को जो पत्र लिखे थे, उन्हें यहाँ छापा नहीं जा सकता। फिर भी, एक स्त्री, एक पुत्री और एक प्रेमिका के रूप में लिखे गए इन पत्रों से अधिक सम्मानजनक पत्र शायद ही कभी लिखे गए हों। उनके हृदय की भावनाओं का कोई संकोच नहीं है। उन्होंने अपनी सहेली पर पूरा विश्वास किया है और अपनी हर आशा, भय और प्रसन्नता को इस प्रकार व्यक्त किया है, जैसा कि केवल पवित्र, सत्यनिष्ठ और पूर्णतः नेक स्त्रियाँ ही कर सकती हैं। श्रीमती गैस्केल ने इस विचित्र प्रेम कहानी की व्यापक विशेषताओं को संक्षेप में, लेकिन स्पष्ट रूप से वर्णित किया है, जो उस समय आशा से भरी थी, अपने संक्षिप्त फलस्वरूप इतनी सुखद और सुंदर थी, और फिर जल्द ही घोर अंधकार में डूब गई। श्री ब्रोंटे को श्री निकोल्स द्वारा अपनी पुत्री के प्रति दिखाए गए व्यवहार से इतनी घृणा थी कि उनके चरित्र की सारी कठोरता और कड़वाहट उजागर हो गई। हाल के वर्षों में उनके स्वभाव में कुछ नरमी आई थी, जिसे शार्लोट ने आशा भरी खुशी के साथ अपने हॉवर्थ स्थित एकाकी जीवन में एकमात्र सहारा माना था। वह उसका कितना ऋणी था, यह उसके सिवा कोई नहीं जानता था। जब वह अपने बेटे की मृत्यु के बोझ तले दब रहा था, तब उसने उसे सहारा दिया था; जब एक अंधकारमय और कड़वे दौर में उसने दुख और पश्चाताप से राहत पाने के लिए कायरों का सहारा लिया था, तब उसके साहसी हृदय, उसकी कोमलता, उसके अटूट साहस ने उसे बुरे रास्तों से वापस खींच लिया था और सम्मान के मार्ग पर कायम रखा था; और अब उसकी सफलता से उसकी अपनी महत्वाकांक्षाएँ भी पूरी तरह संतुष्ट थीं; वह अपनी बेटी की प्रसिद्धि की चमक में दमक रहा था और बेचारा, उस रोशनी और गर्मी में धूप सेंक रहा था। लेकिन उसकी पुरानी ईर्ष्या, उसके चरित्र की तीव्र कटुता तब फूट पड़ी जब उसने अपने और उसके बीच एक और व्यक्ति को आते देखा, और वह दूसरा व्यक्ति लंदन की महान दुनिया का कोई आदर्श नहीं था, बल्कि एक साधारण ईमानदार आदमी था जो वर्षों से लगभग उसके घर के नीचे ही रहता था।

जब श्री निकोल्स के प्रेम प्रसंग की कहानी सुनकर शार्लोट ने आश्चर्य और भावुकता के साथ अपने पिता को यह प्रस्ताव बताया, तो "अत्यधिक बेचैनी और क्रोध का माहौल छा गया। अन्याय की भावना से मेरा खून खौल उठा। लेकिन पिताजी की हालत इतनी बिगड़ गई कि उन्हें हल्के में नहीं लिया जा सकता था। उनके माथे की

नसें कोड़े की तरह तन गईं और उनकी आँखें अचानक लाल हो गईं। मैंने तुरंत वादा किया कि कल श्री निकोल्स को स्पष्ट रूप से मना कर दूंगी।" इसके तुरंत बाद, यानी जब "विलेट" प्रकाशित हुई, तो मिस मार्टिन्यू ने "सभी महिला पात्रों के विचारों और जीवन" को "केवल एक ही चीज़ से परिपूर्ण" के रूप में चित्रित करने के तरीके की निंदा करके लेखिका को गहरा दुख पहुँचाया। आलोचक ने यह बात बिल्कुल सही कही थी कि प्रेम ही एक स्त्री के जीवन का सब कुछ नहीं होता। शायद इस विषय पर लिखते समय उनकी कलम इतनी तीखी न होती, यदि उन्हें पता होता कि "विलेट" की लेखिका ने कुछ ही सप्ताह पहले कितनी खामोशी से अपनी पसंद-नापसंद को त्याग कर अपने पिता की क्रोधित इच्छा के आगे अपना भाग्य समर्पित कर दिया था। इसे वास्तव में इस बात का एक और उदाहरण माना जाना चाहिए कि 1848 के क्वार्टरली समीक्षक ने "कुरर बेल" के चरित्र का कितना सटीक आकलन किया था।

इसके बाद जो संघर्ष हुआ, वह न केवल तीखा और पीड़ादायक था, बल्कि हठपूर्ण और लंबा भी था। श्री निकोल्स ने वर्षों से चले आ रहे अपने पादरी पद से इस्तीफा दे दिया और हॉवर्थ छोड़ने की तैयारी करने लगे। श्री ब्रोंटे ने न केवल नरमी का कोई संकेत नहीं दिखाया, बल्कि उनके जाने पर खुलकर खुशी जताई और अपने सहकर्मी के आचरण के बारे में कड़वी व्यंग्यात्मक भाषा में अपनी राय व्यक्त करने का कोई अवसर नहीं छोड़ा। इस दौरान शार्लोट ने कितना गहरा कष्ट सहा, यह मेरे सामने मौजूद पत्रों से सिद्ध होता है। इस बात से दृढ़ विश्वास रखते हुए कि उनका पहला कर्तव्य उस माता-पिता के प्रति है, जिनके सहारे वह अकेली रह गई थीं, उन्होंने उनकी सुख-सुविधाओं के लिए अपनी हर इच्छा का त्याग करने के अपने दृढ़ संकल्प में कभी कोई कमी नहीं आने दी। लेकिन उनका हृदय उस व्यक्ति के लिए दया से व्याकुल था जो उनके प्रेम के कारण पीड़ा सह रहा था, और उनके पिता के घोर अन्यायपूर्ण आचरण से उनका आक्रोश चरम पर पहुँच गया था।

पापा से दया या नरमी की उम्मीद करना उतना ही असंभव है जितना लकड़ी से रस निकलने की। मैंने मिस्टर एन. की तरह भावनाओं से इतनी सख्ती से लड़ते हुए किसी को नहीं देखा, और जब वो पल भर के लिए भी झुकते हैं, तो उन पर पड़ने वाले तनाव को देखकर लगभग जी मिचलाने लगता है। खैर, उन्हें जाना ही है, और मैं उनसे बात नहीं कर सकती, उन्हें देख नहीं सकती, उन्हें जरा भी दिलासा नहीं दे सकती—और मुझे यह स्वीकार करना ही होगा। ईश्वर की मर्ज़ी ही सब कुछ है; यही

एकमात्र सांत्वना है।

इन सब बातों में—संघर्ष की गंभीरता का जिक्र करते हुए वह फिर कहती हैं—दया के पात्र मैं बिल्कुल नहीं हूँ, और बेशक कोई मुझ पर दया नहीं करता। हॉवर्थ में सभी सोचते हैं कि मैंने उसका तिरस्कार किया है। अगर दया से उसे कोई लाभ होता, तो उसे दया मिलनी चाहिए थी, और मुझे विश्वास है कि उसे मिल भी गई है। वे चाहें तो मुझे गाली दे सकते हैं। वे ऐसा करेंगे या नहीं, यह मैं नहीं कह सकती।

नव वर्ष के दिन मैंने तुम्हारा ख्याल रखा और आशा करती हूँ कि चाय बनाने की तुम्हारी मुश्किलों से तुम उबर गए होगे। मैं भी अपने छोटे-मोटे कामों में व्यस्त हूँ, इस सप्ताह लंदन जाने की तैयारी में—जिसके लिए मुझे सुई-धागे का थोड़ा-बहुत काम करना पड़ रहा है। मुझे लगता है कि प्रेस की देखरेख के लिए जाना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि श्रीमान एस—— ने ठान लिया है कि जब तक मैं नहीं आती, तब तक छपाई का काम नहीं होने देंगे। सच कहूँ तो, ब्रुकरायड में रहने के बाद से मुझे केवल तीन प्रूफ शीट ही मिली हैं। पापा भी चाहते हैं कि मैं जाऊँ, शायद रास्ते से हट जाने के लिए; लेकिन मुझे एक और व्यक्ति के लिए दुख हो रहा है जिस पर मेरे सिवा कोई तरस नहीं खाता... लोग उसकी भावनाओं की प्रकृति को नहीं समझते, लेकिन अब मैं समझ गई हूँ। श्रीमान एन—— उन लोगों में से हैं जो बहुत कम लोगों से जुड़ते हैं, जिनकी भावनाएँ गहरी और गहरी होती हैं, जैसे कोई भूमिगत धारा, जो तेज़ बहती है लेकिन संकरे रास्ते में। वह बेचैन और बीमार रहते हैं। वह कभी-कभार अपना कर्तव्य निभाते हैं, लेकिन चर्च के पास भी नहीं जाते, हर रविवार को किसी और को बुला लेते हैं। कुछ दिन पहले उन्होंने पापा को पत्र लिखकर अपना इस्तीफा वापस लेने की अनुमति मांगी थी। पापा ने जवाब दिया कि वे ऐसा तभी कर सकते हैं जब वे लिखित में वादा करें कि वे इस अप्रिय विषय पर न तो उनसे और न ही मुझसे कभी बात करेंगे। उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया है, इसलिए मामला अभी भी अनसुलझा है। मुझे पूरा यकीन है कि उनकी बर्खास्तगी ऑस्ट्रेलिया के लिए प्रस्थान होगी। प्रिय नेल, हालांकि मैं उनसे प्यार नहीं करती, लेकिन मुझे उन्हें अकेलेपन में कष्ट सहते हुए देखना अच्छा नहीं लगता और मैं चाहती हूं कि वे कहीं भी हों ताकि वे खुश रह सकें। उनकी और पापा की अभी तक न तो मुलाकात हुई है और न ही बातचीत हुई है।

अपने जीवन के इस संकट के समय में, जब दुख ने उन्हें एक नए और तीव्र रूप में

घेर लिया था, लेकिन जब सौभाग्य से काले बादल के दूसरी ओर सूर्य की किरणें प्रकाशित हुईं, तब वे कुछ सप्ताह बिताने के लिए लंदन गईं। उनकी यात्रा के दौरान लिखे गए पत्रों से मैंने निम्नलिखित अंश लिए हैं:

11 जनवरी, 1853।

मैं पिछले बुधवार को यहाँ आया था। मेरी यात्रा सुखद रही और अंत में मेरा हार्दिक स्वागत हुआ। आने के बाद से मेरा समय काफी अच्छा बीता है, फिर भी मुझे आपको ज्यादा कुछ बताना नहीं है; और शायद बताना भी न पड़े। मेरा इरादा ज्यादा बाहर जाने या ज्यादा लोगों से मिलने का नहीं है। सर जे. एस. — — ने घर से निकलने से पहले मुझे दो-तीन बार पत्र लिखा था और मुझसे वादा लिया था कि मैं उन्हें बताऊँगा कि मैं कब शहर में आऊँगा, लेकिन मैं अपने प्रवास के अंतिम दिनों तक पत्र व्यवहार टालने का अधिकार अपने पास रखता हूँ। इस घर में सब कुछ लगभग पहले जैसा ही लग रहा है, फिर भी मुझे कुछ बदलाव नजर आ रहे हैं। श्रीमती — — और उनकी बेटी ठीक लग रही हैं; लेकिन श्री — — पर मेहनत का असर अभी से दिखने लगा है। उनका रंग-रूप, चेहरा और चेहरे की बनावट, सब कुछ बदल गया है। उनकी वर्तमान स्थिति से ज्यादा उनकी पुरानी छवि ही उनके अतीत को दर्शाती है, जो उनके बारे में मेरे द्वारा दी गई छवि को सही ठहराती है। इस तरह का शारीरिक बदलाव देखकर दुख होता है; फिर भी मुझे खुशी और कृतज्ञता है कि यह केवल शारीरिक बदलाव है। जहां तक मैं समझता हूं, मेरे विवेक और व्यवहार में कोई गिरावट नहीं आई है - बल्कि, मुझे लगता है, इसके विपरीत स्थिति उत्पन्न हुई है।

19 जनवरी, 1853।

मैं लंदन में अब भी बड़े आराम और शांति से रह रहा हूँ, जैसा मुझे पसंद है, लोगों से ज़्यादा चीज़ों को देखना पसंद करता हूँ। इस बार मुझे अपनी पसंद के दर्शनीय स्थलों को देखने की छूट मिली, इसलिए मैंने जीवन के सजावटी पक्ष के बजाय वास्तविक पक्ष को चुना। मैं दो जेलों का दौरा कर चुका हूँ, एक प्राचीन और एक आधुनिक, न्यूगेट और पेंटनविले; साथ ही बैंक, एक्सचेंज, फाउंडलिंग हॉस्पिटल भी। और आज, अगर सब ठीक रहा, तो मैं डॉ. फोर्ब्स के साथ बेथलहम हॉस्पिटल देखने जा रहा हूँ। मुझे लगता है कि श्रीमती — — और उनकी बेटियाँ मेरे इस तरह के उदास शौक पर थोड़ी हैरान हैं; लेकिन मैं इस पर ध्यान नहीं देता। मुझे यह बताते हुए

खुशी हो रही है कि पापा ठीक हैं। मैं उनके दो नोट्स के अंश संलग्न कर रहा हूँ, जिनसे आपको यह बेहतर ढंग से पता चलेगा कि वे किसी विषय पर कैसे विचार करते हैं। मेरी किताब इस महीने के अंत में प्रकाशित होने वाली है। श्रीमती गैस्केल ने अनुरोध किया था कि इसे "रूथ" के प्रकाशन से टकराने न दिया जाए, और प्रकाशन को एक या दो सप्ताह के लिए स्थगित करने से इनकार करना असंभव था।

लंदन की यात्रा से लाभ हुआ; लेकिन इससे उस पीड़ा को दूर नहीं किया जा सका जो उसने इस संघर्ष की अवधि के दौरान झेली थी।

हॉवर्थ, 19 मई, 1853।

यह जानकर लगभग राहत मिली कि आप जी — — में केवल एक महीने रुकने का सोच रहे हैं; हालाँकि, आपको जल्द घर वापस आते देखना स्वार्थीपन नहीं है... मुझे यह जानकर संतोष हो रहा है कि यहाँ के लोग श्री एन — — के जाने पर उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए चंदा इकट्ठा कर रहे हैं। कई लोग उनके प्रति सहानुभूति और सम्मान दोनों व्यक्त कर रहे हैं। चर्च के अधिकारियों ने हाल ही में उनसे सीधे-सीधे पूछा: वे क्यों जा रहे हैं? क्या यह श्री ब्रोंटे की गलती थी या उनकी अपनी? उन्होंने उत्तर दिया, अपनी। क्या उन्होंने श्री ब्रोंटे को दोषी ठहराया? नहीं, उन्होंने नहीं ठहराया: अगर कोई गलत था, तो वह वे स्वयं थे। क्या वे जाने को तैयार थे? नहीं; इससे उन्हें बहुत दुख हुआ। फिर भी, वे हमेशा सही नहीं होते। मुझे न्यायसंगत होना चाहिए। पापा ने स्कूल में चाय पीते समय उनसे संयमित शिष्टाचार से, लेकिन फिर भी शिष्टाचार से बात की। उन्होंने शिष्टाचार से जवाब नहीं दिया; उन्होंने आगे की बात काट दी। इस तरह का व्यवहार पापा कभी नहीं भूलेंगे और न ही माफ करेंगे। यह उनके मन में एक अनकही कड़वाहट भर देता है... यह तो बहुत ही निराशाजनक स्थिति है। प्रिय नेल, अब मौसम अच्छा है। हम इन धूप भरे दिनों को आपके आगमन के लिए शुभ संकेत मानेंगे।

27 मई, 1853।

आप विदाई के बारे में जानना चाहेंगे। यह पूरा मामला एक दुखद विषय है, लेकिन मुझे संक्षेप में ही इस पर चर्चा करनी होगी। प्रशस्ति पत्र एक सार्वजनिक सभा में प्रस्तुत किया गया था। श्री एफ — — और श्री जी — — वहाँ उपस्थित थे। पापा की तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए मैंने उन्हें दूर रहने की सलाह दी, और उन्होंने ऐसा

ही किया। पिछले रविवार की बात करें तो, वह एक कठिन संघर्ष था। श्री एन — — को कोई भी काम नहीं करना चाहिए था। वह आज सुबह छह बजे हॉवर्थ से चले गए। कल शाम वह पापा को नेशनल स्कूल के दस्तावेज़ सौंपने और अलविदा कहने आए थे। वे सफाई, पेंट धोने आदि में व्यस्त थे, इसलिए वह मुझे वहाँ नहीं पा सके। मैं पापा की उपस्थिति में उनसे बात करने के लिए बैठक में नहीं गई। वह यह सोचकर बाहर चले गए कि उन्हें मुझे नहीं देखना है; और वास्तव में अंतिम क्षण तक मुझे यही लगा कि न देखना ही बेहतर है। लेकिन यह देखकर कि वह बाहर जाने से पहले काफी देर तक रुके रहे, और उनके लंबे दुख को याद करके, मैंने हिम्मत जुटाई और कांपते हुए और दुखी मन से बाहर चली गई। मैंने उसे बगीचे के दरवाजे से टिका हुआ पाया... ज़ाहिर है, मैं सीधे उसके पास गया। बहुत कम बातें हुईं; वो भी मुश्किल से समझ में आईं: कई बातें जो मैं उससे पूछना चाहता था, मेरी याददाश्त से पूरी तरह गायब हो गईं। बेचारा! लेकिन उसे ऐसी उम्मीद और हिम्मत की ज़रूरत थी जो मैं उसे नहीं दे सकता था। फिर भी मुझे विश्वास है कि अब वह जानता होगा कि मैं उसकी दृढ़ता और दुख के प्रति निर्मम अंधा और उदासीन नहीं हूँ। कुछ हफ्तों के लिए वह दक्षिण इंग्लैंड जा रहा है— उसके बाद वह यॉर्कशायर में कहीं पादरी का पदभार संभालेगा, लेकिन मुझे नहीं पता कहाँ। पापा की तबीयत आजकल बिल्कुल ठीक नहीं है। मैं श्री एन —— का नाम उनके सामने लेने की हिम्मत नहीं करता। वह दूसरों से उनके बारे में शांत और बिना किसी निंदा के बात करते हैं; लेकिन मुझसे इस मामले पर उनका कोई समझौता नहीं है। खैर, वह चला गया— चला गया— और बात यहीं खत्म! मुझे भविष्य में उसके बारे में एक शब्द भी सुनने की कोई उम्मीद नहीं दिखती, जब तक कि श्री जी—— या किसी अन्य अप्रत्यक्ष स्रोत से कोई अधूरी जानकारी न मिल जाए।

सन् 1853 का शेष समय उतार-चढ़ाव भरा रहा। श्री निकोल्स हॉवर्थ छोड़कर चले गए; शार्लोट अपने पिता के साथ ही रहीं। इस दौरान उन्हें देखने वाले सभी लोग इस बात के साक्षी हैं कि जिस व्यक्ति ने उन्हें बेरहमी से चोट पहुंचाई थी, उसके प्रति उनकी अटूट और कभी न डगमगाने वाली निष्ठा थी। लेकिन उन्होंने इस दुख को भी, पहले के दुखों की तरह, साहस और प्रसन्नता के साथ सहा। कभी-कभी वह अपनी सहेली से अपने दिल की बात कहती थीं, अपने कष्टों का कुछ अंश प्रकट करती थीं; लेकिन बाकी सभी से वह चुप रहीं।

हॉवर्थ, 13 अप्रैल, 1853।

प्रिय महोदया, आपके पिछले स्नेहपूर्ण पत्र का उत्तर बहुत पहले ही दिया जाना चाहिए था, और दिया भी जाता, यदि मैं अपने पत्र-व्यवहारियों और उनके संदेशों को जो महत्व देता हूँ, उसके अनुरूप उत्तर देने में तत्परता दिखा पाता। यद्यपि आप भली-भांति समझ सकती हैं कि अक्सर इसके विपरीत ही होता है, और आग्रहपूर्ण पत्र अक्सर रुचिकर पत्रों से अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। मेरे प्रकाशक "विलेट" को मिली प्रतिक्रिया से पूर्णतः संतुष्ट हैं। वास्तव में, अधिकांश समीक्षाएँ अनुकूल रही हैं। यद्यपि आप इस बात से अवगत होंगी कि एक छोटा सा अल्पसंख्यक समूह है जो इस कृति को अनुकूल दृष्टि से नहीं देखता। रोमनवाद पर "कुरर बेल" की टिप्पणियों ने उन्हें हाई चर्च पार्टी की घोर नाराजगी का शिकार बना दिया है, जिसे उन्होंने अपने प्रमुख प्रकाशनों, द गार्जियन, द इंग्लिश चर्चमैन और द क्रिश्चियन रिमेंबरेंसर के माध्यम से स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। मैं भली-भांति समझ सकता हूँ कि इन प्रकाशनों द्वारा मुझ पर लगाए गए कुछ आरोप अधिकांश पाठकों के मन में मेरी छवि को और भी पुष्ट करेंगे। लेकिन इसे सहना ही होगा; और जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं किसी भी ऐसे आरोप को बर्दाश्त नहीं कर सकता जो अंतरात्मा और तर्क के आंतरिक प्रमाणों से समर्थित न हो। कहावत है, "अतिवादी सोच एक-दूसरे से मेल खाती है"; इसके प्रमाण स्वरूप मैं यह कहना चाहूँगा कि मिस मार्टिन्यू को "विलेट" में लगभग वही दोष नज़र आता है जो पुसेई समर्थकों को। वह मुझ पर पोपवाद पर "कठोरता से" हमला करने का, उस पर "भावुकता से" आक्रमण करने का आरोप लगाती हैं। अन्य मामलों में, इस रचना के संदर्भ में, उन्होंने इतना विचित्र और अप्रत्याशित कटु रवैया दिखाया है कि मुझे हिम्मत जुटाकर उनसे कहना पड़ा कि उनके और मेरे बीच आपसी मतभेदों की खाई इतनी चौड़ी और गहरी है, एकता का पुल इतना कमज़ोर और अनिश्चित है, कि मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि बार-बार मिलना-जुलना बेहद खतरनाक और अनुचित होगा, और मैंने उनसे अपनी लंबे समय से नियोजित यात्रा को अनिश्चित काल के लिए स्थगित करने का अनुरोध किया है। बेशक, अब वह बहुत नाराज़ हैं, लेकिन इसमें कुछ नहीं किया जा सकता। श्रीमान — — से एक लंबा और स्नेहपूर्ण पत्र प्राप्त हुए दो-तीन सप्ताह हो गए हैं, जिसका उत्तर मैंने कुछ समय पहले दिया था। मेरा मानना है कि वे मुझे परिवर्तन और तथाकथित "राजनीतिक प्रगति" का मुझसे कहीं बेहतर समर्थक समझते हैं। हालांकि, मैंने अपने उत्तर में इन विषयों का उल्लेख नहीं किया।

उन्होंने अपनी कुछ पांडुलिपियों को प्रकाशित करने की इच्छा व्यक्त की। मुझे डर है कि मेरे उत्तर का कुछ हद तक हतोत्साहित करने वाला लहजा उन्हें शायद पसंद न आए; लेकिन वास्तव में, आज के इस तीव्र प्रतिस्पर्धा के दौर में प्रकाशन करना एक बड़ा जोखिम है।

18 अप्रैल, 1853।

अगर सब ठीक रहा तो मैं इस सप्ताह के अंत तक मैनचेस्टर जाने का सोच रहा हूँ। मेरा इरादा बस कुछ दिनों के लिए रुकने का है; लेकिन मैं B—— तक वापस आने के बारे में कुछ नहीं कह सकता। मेरी उम्मीद मत रखना; मैं जल्द ही हॉवर्थ में आपसे मिलना चाहूँगा। दो-तीन सप्ताह पहले, मिस मार्टिन्यू ने मुझे पत्र लिखकर पूछा कि उन्हें मेरी ओर से कोई खबर क्यों नहीं मिली, और मुझे एम्बल्ससाइड जाने के लिए कहा। स्पष्टीकरण दिए गए; दोनों तरफ से पत्र काफी सौहार्दपूर्ण थे; लेकिन, मैंने ठोस आधार पर अपना निर्णय लिया था, इसलिए मैं उस पर अडिग रहा। मैंने उनसे मिलने से इनकार कर दिया है और उन्हें अलविदा कह दिया है। यही बेहतर है; हमारे स्वभाव और सिद्धांतों में जो मतभेद थे, वे इतने गंभीर थे कि उन्हें हल्के में नहीं लिया जा सकता था।

मिस मार्टिन्यू के साथ इस मतभेद पर अब ज्यादा विचार करने की जरूरत नहीं है। अफसोस की बात है कि दो इतनी सच्ची, इतनी ईमानदार और अपनी बात कहने में इतनी निडर महिलाएं कभी आपस में मतभेद रख पाईं। शार्लोट ब्रोंटे जानती थीं कि मिस मार्टिन्यू का बहादुरी से साथ कैसे देना है जब उन्हें लगता था कि उनके ईमानदारी से बने विचारों के कारण उन्हें तकलीफ हो रही है; वह जानती थीं कि समय रहते उदारता और दृढ़ता से उनकी ओर से कैसे बोलना है। लेकिन उनकी संवेदनशील प्रकृति को उन आलोचनाओं से गहरा आघात पहुंचा जिन्हें वह अन्यायपूर्ण मानती थीं; और इस तरह ये दो महान महिलाएं अलग हो गईं और फिर कभी नहीं मिलीं।

अपने पिता के व्यवहार से जो मानसिक पीड़ा वह झेल रही थी, उसके साथ-साथ उसे तीव्र शारीरिक यातना भी सहनी पड़ रही थी। 1853 की गर्मियों के दौरान लिखे गए उसके कई पत्रों में इस तरह के वाक्य मिलते हैं: “मैं दस दिनों से लगातार सिरदर्द से बहुत पीड़ित हूँ - कहा जाता है कि नसों में दर्द है। अंत में छाले पड़ने से कुछ आराम मिला है; लेकिन मैं अभी भी कमजोर और भ्रमित हूँ।” श्रीमती गैस्केल, जो यह देखने

आई थीं कि शरद ऋतु में हॉवर्थ कितना सुंदर दिखता है, के आने से उसे कुछ राहत मिली; लेकिन अपनी पुरानी दोस्त और स्कूल शिक्षिका, मिस वूलर के साथ समुद्र तट की यात्रा से उसे और भी अधिक लाभ हुआ, जिसके पहले उसने उन्हें निम्नलिखित पत्र लिखा था:

हॉवर्थ, 30 अगस्त, 1853।

प्रिय मिस डब्ल्यू, जब आपका प्यारा पत्र आया तब मैं घर से बाहर थी, और चूंकि इसे आगे नहीं भेजा गया था, इसलिए मुझे वापस आने तक यह नहीं मिला। पूरी गर्मी भर मेरे मन में समुद्र किनारे कुछ समय के लिए आपके साथ रहने की इच्छा रही है; और अभी भी मैंने यह इरादा पूरी तरह से नहीं छोड़ा है, हालांकि इसकी पूर्ति मेरे पिताजी के स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। फिलहाल वे बहुत कमजोर और उदास हैं, इसलिए उन्हें छोड़कर जाने का ख्याल भी मन में नहीं आता। लेकिन अगर उनकी सेहत में सुधार होता है, तो मैं शरद ऋतु पूरी तरह समाप्त होने से पहले आपके पास आना चाहूंगी।

मेरी अनुपस्थिति केवल एक सप्ताह की थी, जब मैं श्रीमान और श्रीमती — — और उनके बच्चे के साथ स्कॉटलैंड की यात्रा पर गया था। वे किर्ककुडब्राइट या सोल्वे फ़र्थ के किसी जल-स्थल पर ठहरने के इरादे से गए थे। हम मुश्किल से उस स्थान पर पहुँचे और एक रात ही रुके थे कि बच्चे (आधुनिक घरों का वह थोड़ा जिद्दी सदस्य) में अस्वस्थता के कुछ लक्षण दिखाई देने लगे। मेरी अनुभवहीन समझ के अनुसार, उसकी बीमारी बहुत मामूली लग रही थी, जिससे उसकी भूख या मनोदशा पर कोई असर नहीं पड़ रहा था; लेकिन माता-पिता की नज़र में मामला अलग था। स्कॉटलैंड की हवा बच्चे के लिए अनुकूल नहीं बताई गई, और इसलिए हमें वापस लौटना पड़ा। मैं मानता हूँ कि मुझे "सुंदर स्कॉटलैंड" को इतनी जल्दी और अचानक छोड़ने में थोड़ी हिचकिचाहट हुई, लेकिन ज़ाहिर है मैं कुछ कह नहीं सका, क्योंकि मेरे मन में यह धारणा कितनी भी प्रबल क्यों न हो कि यह बीमारी बहुत मामूली और अस्थायी थी (प्रसव से यह धारणा पुष्ट हुई), मैं पूरी तरह से निश्चित नहीं हो सकता था कि ऐसा ही था; और अगर लंबे समय तक वहां रहने के बाद कोई बुरे परिणाम निकले होते, तो मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाता।

इसके बाद इल्कली का ख्याल आया। हम वहाँ गए, लेकिन मैं वहाँ सिर्फ तीन दिन ही रुक पाई, क्योंकि एक स्टेशन पर ट्रेन बदलते समय जल्दबाजी में मेरा बक्सा खो

गया और बिना कपड़ों के मैं वहाँ नहीं रुक सकी। मुझे उसके बारे में दो बार पता चला, लेकिन अभी तक वह मुझे नहीं मिला है। पूरी संभावना है कि वह अब किर्ककुडब्राइट में पड़ा होगा, जहाँ उसे भेजा गया था।

कुछ छोटी-मोटी परेशानियों के बावजूद, मुझे यह छोटी यात्रा बहुत अच्छी लगी। डम्फ्रीज़ से किर्ककुडब्राइट तक (तीस मील की दूरी, जो स्टेज-कोच के बाहर तय की गई) जिस रास्ते से हम गुज़रे, वहाँ का नज़ारा बहुत सुंदर था, हालाँकि यह पूरी तरह से स्कॉटिश नहीं था, क्योंकि वहाँ खूब खेती और घने जंगल थे। मुझे इल्कली भी बहुत पसंद आया और मैं वहाँ दोबारा जाना चाहूँगा। कुल मिलाकर, मुझे लगा कि परिस्थितियों के चलते मुझे इतनी जल्दी घर लौटना ही बेहतर था, क्योंकि मैंने पापा को अस्वस्थ पाया। अब उनकी हालत थोड़ी बेहतर है, फिर भी जब तक मैं उन्हें पूरी तरह से स्वस्थ और तंदुरुस्त नहीं देख लेता, तब तक उन्हें छोड़कर जाना मुझे ठीक नहीं लगेगा।

कुछ बातों पर अफ़सोस भी हुआ और कुछ पर मुस्कान भी आई, लेकिन जिस छोटे से पारिवारिक दल के साथ मैंने यात्रा की, उसमें मुझे कई प्रशंसनीय बातें भी दिखीं। श्रीमान — — एक अत्यंत समर्पित पिता और पति हैं। उनकी पत्नी के प्रति उनकी अपार दयालुता की मैं प्रशंसा करता हूँ; लेकिन अपने इकलौते बच्चे के प्रति माता-पिता के इस असीम स्नेह को देखकर मुझे मन ही मन थोड़ी निराशा हुई। दुनिया सूर्य के चारों ओर नहीं घूमती; यह एक भ्रम है। कुछ बच्चे, मैंने स्पष्ट रूप से देखा है, हर चीज़ का केंद्र होते हैं। माता-पिता केवल तभी भोजन, विश्राम और व्यायाम कर सकते थे जब वह नखरेबाज़ बच्चा उन्हें अनुमति देता था। जब श्रीमती — — अपना भोजन कर रही थीं, तब श्रीमान — — ने नर्स की भूमिका निभाई। एक नाममात्र की नर्स भी दल के साथ थी, लेकिन उसकी भूमिका एक तरह से नितांत प्रतीक्षा की थी, क्योंकि बच्चा उसकी उपस्थिति पसंद नहीं करता था। संतान के प्रति कोमलता एक सद्गुण है, फिर भी मैंने ऐसी माताओं को देखा है जो अत्यंत कोमल और विचारशील थीं, फिर भी अपने बच्चों के प्रति प्रेम के कारण उन्हें न तो स्वयं पर और न ही दूसरों पर अत्याचारी बनने देती थीं।

प्रिय मिस डब्ल्यू, जब भी आपको लिखने का समय या इच्छा हो, आपसे दोबारा संपर्क करने पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता और आभार होगा—हालांकि, जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया है, मेरी चुप्पी को गलत समझने का कोई डर नहीं है। यदि

आप सर्दियों के आने से पहले हॉर्नसी छोड़ दें, तो मुझे आशा है कि आप सीधे हॉवर्थ आएंगी और कहीं और जाने से पहले वहां अपनी बहुप्रतीक्षित मुलाकात करेंगी। पापा और नौकरों ने आपको शुभकामनाएं भेजी हैं। मैं हमेशा आपके स्मृति संदेशों को समय पर पहुंचाता हूं, क्योंकि उनसे मुझे प्रसन्नता होती है।

दिसंबर का महीना आया और उसने अपनी सहेली को पत्र लिखकर आश्चर्य व्यक्त किया कि वह लंबी सर्दियों की शामें कैसे बिता रही है— "शायद अकेले, मेरी तरह।" उसके लिए सर्दी का मौसम नीरस था; लेकिन बसंत का आगमन निकट था। श्री ब्रोंटे अपनी बेटी को पैनी नजरों से देखते हुए इस बात को छिपा नहीं सके कि उसका स्वास्थ्य और मनोबल पहले से कहीं अधिक कमजोर हो गया था। लेखन का सारा काम त्याग दिया गया था; और घर के काम, पिता की सेवा या उस बूढ़ी नौकरानी की देखभाल, जिसकी अब सेवा भी करनी पड़ती थी, उसका समय व्यतीत करने लगे थे; लेकिन उसका हृदय एक ऐसे बोझ से भारी था जैसा उसने पहले कभी नहीं जाना था। अंततः, अपनी बेटी के प्रति सच्चे स्नेह ने उस व्यक्ति के कठोर स्वभाव को पिघला दिया। उसकी शादी का विरोध अचानक समाप्त हो गया; उन्होंने उससे श्री निकोल्स को हॉवर्थ वापस बुलाने के लिए कहा, और अपने विशिष्ट मनमौजी स्वभाव के साथ, वे अब शादी को रोकने के लिए उतने ही उत्सुक हो गए जितने पहले कभी थे।

हॉवर्थ में श्री निकोल्स को आमंत्रित करने वाले पत्र के संबंध में एक विचित्र घटना घटित हुई, जिसकी व्याख्या उन पत्रों में से पहले पत्र में की गई है जिनका मैं अब उल्लेख कर रहा हूं।

हॉवर्थ, 28 मार्च, 1854।

कल आपके पत्र के साथ भेजे गए पत्र ने मुझे पहले तो उलझन में डाल दिया, क्योंकि मैं अपनी लिखावट को तुरंत पहचान नहीं पाया। जब मैंने पहचान लिया, तो मुझे बहुत घबराहट और झुंझलाहट हुई, क्योंकि पत्र तो शुक्रवार को ही पहुँच जाना चाहिए था। इसका उद्देश्य उन्हें बहुत चिंता से मुक्त करना था। खैर, मुझे उम्मीद है कि उन्हें यह आज मिल जाएगा; और कुल मिलाकर, जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मैं केवल इस बात के लिए आभारी हो सकता हूँ कि गलती इतनी गंभीर नहीं हुई और पत्र किसी लापरवाह और बेईमान व्यक्ति के हाथों में नहीं पड़ा। मैंने इसे कुछ दिनों की अस्वस्थता और बेचैनी के बाद लिखा था, जब मैं कमजोर और लिखने में असमर्थ महसूस कर रहा था। उन्हें लिखते समय मैं साथ ही साथ आपके पत्र का उत्तर देने का

भी इरादा कर रहा था; शायद इसी वजह से मेरे मिले-जुले और अटपटे संबोधन में विचारों की उलझन दिखाई देती है।

काश आप ईस्टर के आसपास आ पाते, किसी और समय नहीं, इसी कारण से। श्री निकोल्स, अगर कोई बाधा न हो, तो उसी समय आने का प्रस्ताव रखते हैं। मुझे लगता है कि वे श्रीमान — — के यहाँ ठहरेंगे, जैसा कि वे पहले दो-तीन बार कर चुके हैं; लेकिन वे यहाँ अक्सर आते रहेंगे, जिससे आपकी मुलाक़ातें थोड़ी और मज़ेदार हो जाएँगी। शायद, वे कभी-कभी हमारे साथ टहलने भी चले जाएँ। कुल मिलाकर, यह आपके लिए एक छोटा सा बदलाव होगा, जैसा कि आप जानते हैं कि मैं हमेशा नहीं दे सकता। अगर सब ठीक रहा, तो उनकी आने की परिस्थितियाँ पहले की यात्राओं से अलग होंगी। अगर ऐसा न होता, तो मैं आपको उनसे मिलने के लिए न कहता, क्योंकि जब परिस्थितियाँ निराशाजनक हों, तो जितने कम लोग संकट में हों, उतना ही अच्छा है। वे जनवरी में यहाँ आए थे, और तब उनका स्वागत किया गया था... मुझे उम्मीद है कि अब स्थिति थोड़ी अलग होगी। पापा ने आज बिस्तर पर ही नाश्ता किया है, और अभी तक उठे नहीं हैं। उनकी ब्रोंकाइटिस अभी भी परेशान कर रही है। पिछला हफ्ता मेरे लिए अच्छा नहीं रहा, लेकिन अब मैं काफी बेहतर महसूस कर रहा हूँ, क्योंकि मेरा मन थोड़ा शांत है, हालांकि काफी स्थिर है, और मेरी उम्मीदें भी बहुत मामूली हैं। शायद मई में, मैं आपके आस-पास आऊँगा, और तब बी. आने की उम्मीद करूँगा; लेकिन जैसा कि आप मेरी कही बातों से समझ गए होंगे, मैं उससे पहले नहीं आ सकता। प्रिय ई., इस बारे में सोचो और अगर हो सके तो हॉवर्थ आ जाना।

11 अप्रैल, 1854।

श्री निकोल्स के आगमन का परिणाम यह हुआ कि पापा की सहमति मिल गई और उनका सम्मान भी प्राप्त हो गया, क्योंकि श्री निकोल्स ने हर बात में निस्वार्थ और सहनशील होने का प्रमाण दिया है। उन्होंने यह भी दिखाया है कि यद्यपि उनकी भावनाएँ अत्यंत तीव्र हैं, फिर भी वे क्षमाशील हैं... वास्तव में, प्रिय एलेन, मेरी सगाई हो चुकी है। श्री निकोल्स कुछ महीनों में हॉवर्थ के क्यूरेसी में लौटेंगे। मैंने यह शर्त रखी कि मैं पापा को नहीं छोड़ूंगा, और मैंने स्वयं पापा को एक निवास योजना का प्रस्ताव दिया है जिससे उनकी एकांतता और सुविधा में कोई दखल न हो, और आर्थिक दृष्टि से उन्हें हानि के बजाय लाभ हो। जो एक समय असंभव लग रहा था, अब संभव हो

गया है, और पापा को वास्तव में इस संभावना से खुशी मिलने लगी है। जहाँ तक मेरी बात है, प्रिय ई—— , यद्यपि मैं उस ईश्वर का आभारी हूँ जिसने मुझे बहुत सी कठिनाइयों, गहरे दुख और मन की उलझनों से उबारा है, फिर भी मैं बहुत शांत हूँ... मुझे जो सुख का अनुभव हो रहा है वह अत्यंत संयमित है। ईश्वर ने मुझे यही नियति दी है। निःसंदेह, यही मेरे लिए सबसे अच्छा है; और मैं अपने प्रियजनों के लिए भी उतनी ही खुशी की कामना करने से पीछे नहीं हटती। संभव है कि हमारी शादी गर्मियों के दौरान हो जाए। श्री निकोल्स चाहते हैं कि यह जुलाई में हो। उन्होंने आपके बारे में बहुत स्नेह से बात की और कहा कि उन्हें उम्मीद है कि आप हमारी शादी में आएंगी। मैंने कहा कि मैं किसी और को ब्राइड्समेड नहीं बनाना चाहती। क्या मैंने सही कहा? मेरा मतलब है कि शादी बिल्कुल शांत तरीके से हो। अभी इन बातों का ज़िक्र मत करना। अलविदा। ये घोषणाएँ करते हुए एक अजीब, थोड़ी उदासी सी महसूस हो रही है। यह सब कुछ वैसा नहीं है जैसा हमने पहले सोचा था - चिंताएँ, डर, उम्मीदों के साथ इस तरह घुल-मिल गए हैं कि उन्हें अलग करना मुश्किल है। मुझे उम्मीद है कि मैं इस बारे में आपसे बात कर लूंगी।

अंततः वह दिन आ ही गया, और अब हर पत्र में होने वाली दुल्हन की आशाओं और चिंताओं का जिक्र है।

15 अप्रैल।

मुझे उम्मीद है कि मई के दूसरे सप्ताह के आसपास आपसे मुलाकात होगी। मैनचेस्टर की यात्रा अभी भी मेरे सिर पर मंडरा रही है; मैंने इसे कई बार टाला है, लेकिन आखिरकार अगले महीने की शुरुआत में जाने का वादा कर दिया है। मैं केवल तीन दिन रुकूँगी; फिर मैं H. में दो या तीन दिन बिताऊँगी, फिर B. आऊँगी। तीनों यात्राओं को, यदि संभव हो तो, दो सप्ताह के भीतर ही निपटाना होगा। मुझे लगता है कि मुझे लीड्स जाना पड़ेगा। मेरी खरीदारी न तो महंगी होनी चाहिए और न ही बहुत ज्यादा। आपको बस अपने मन में टोपी और पोशाकों के बारे में फैसला कर लेना चाहिए: मुझे लगता है कि ऐसी कोई चीज सबसे अच्छी रहेगी जिसे शादी के बाद भी अच्छे से पहना जा सके। मैंने तुरंत मिस W — — को पत्र लिखा, और आज सुबह उनसे एक बहुत ही प्यारा पत्र मिला। पापा का इस मामले में मन पूरी तरह बदल गया लगता है; और उन्होंने मुझसे और मेरी गैरमौजूदगी में भी कहा है कि जब से उन्होंने सब कुछ तय होने दिया है, तब से वे कितना खुश महसूस कर रहे हैं। मुझे यह जानकर

बहुत राहत मिली कि वे इस मामले को तर्कसंगत ढंग से देख रहे हैं, और उनके साथ उन विषयों पर शांतिपूर्वक और सौहार्दपूर्ण ढंग से बात कर पा रहे हैं जिन पर कभी मैं बात करने की हिम्मत नहीं करता था। वे चाहते हैं कि अब काम आगे बढ़े, और प्रारंभिक तैयारियों में उनकी काफी रुचि है। उनका स्वास्थ्य प्रतिदिन सुधर रहा है, हालांकि पूर्वी हवा के कारण गले और सीने में हल्की सी जलन बनी हुई है। पापा में जो भावना निराश हुई थी, वह थी महत्वाकांक्षा - पितृ गौरव - जो हमेशा से एक बेचैन भावना रही है, जैसा कि हम सभी जानते हैं। अब जब यह बेचैन भावना दूर हो गई है, तो न्याय, जिसे कभी पूरी तरह भुला दिया गया था, एक बार फिर सुना जा रहा है, और मुझे उम्मीद है कि स्नेह फिर से अपनी शक्ति प्राप्त कर लेगा। मेरी आशा है कि अंत में यह व्यवस्था पापा के लिए मेरे द्वारा किए गए किसी भी प्रयास से कहीं अधिक लाभकारी साबित होगी। श्री एन. ने अपने अंतिम पत्र में ही पापा के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने की अपनी हार्दिक इच्छा का मार्मिक ढंग से उल्लेख किया है, ताकि वे उनकी वृद्धावस्था में उन्हें सहारा और सांत्वना दे सकें। यह उनके साथ केवल बातें नहीं होंगी। वे ज्यादा बोलने वाले नहीं हैं, न ही वे केवल वादों में लिप्त हैं।

28 अप्रैल।

पापा, ईश्वर का धन्यवाद! उनकी सेहत में लगातार सुधार हो रहा है। उन्होंने रविवार को दो बार और बुधवार को भी उपदेश दिया और बिल्कुल भी थके नहीं। उनका मन और मनोदशा पहले से बिल्कुल अलग है; वे बहुत अधिक प्रसन्न और शांत हैं। मुझे विश्वास है कि महत्वाकांक्षा के भ्रम पूरी तरह से दूर हो गए हैं, और वे वास्तव में यह समझ गए हैं कि किसी दुखी और निष्ठावान हृदय को शांति देना और उसकी निष्ठा में एक ठोस भलाई को सुरक्षित रखना, उस व्यक्ति को निर्दयतापूर्वक त्याग देने से कहीं बेहतर है जो वास्तव में अपने और मेरे हितों से जुड़ा हुआ है, और किसी व्यर्थ खोखले सपने के पीछे भागने से बेहतर है।

हेम्सवर्थ, 6 मई।

मैं गुरुवार दोपहर को यहाँ आया था। मैं शनिवार और रविवार को यहीं रुकूँगा, और अगर सब ठीक रहा तो सोमवार को दोपहर के खाने के बाद, चाय के समय तक B. पहुँचने की उम्मीद है। आप अपने मन से तय कर लीजिए कि मैं आपसे मिलने के लिए

कितना उत्सुक हूँ। — — ने मुझे बताया कि आप बेहतर दिख रहे हैं। उसने यह भी कहा कि मैं नहीं — बल्कि हमेशा की तरह बदसूरत दिख रहा हूँ। लेकिन कोई बात नहीं, प्रिय नेल — जैसा कि आपने कभी नहीं किया। कुल मिलाकर, मैं इस समय बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूँ, और पिछले दो हफ़्तों में सिरदर्द से काफ़ी राहत मिली है। श्री एन. को B. आने की इतनी उत्सुकता दिखाने के लिए आपका आभार, और मुझे खेद है कि परिस्थितियाँ इस कदम के अनुकूल नहीं हैं। लेकिन, स्थिति को जानते हुए, मैंने उनसे यह प्रस्ताव नहीं दोहराया, क्योंकि मुझे लगा कि यह उन्हें कर्तव्य भूलने के लिए उकसाने जैसा होगा।

इन पत्रों में, लेखिका के जीवन के नए स्वरूप पर पड़ने वाले सुखद प्रभावों के अलावा, एक और विशेषता उल्लेखनीय है - वह है लेखिका का अपनी सहेली के प्रति असीम स्नेह। उनके हृदय में पनपे नए प्रेम ने उनके पुराने प्रेम को और भी प्रबल कर दिया है, और वे अपनी युवावस्था की एकमात्र बची हुई सहेली पर वह स्नेह और देखभाल बरसाती हैं जो अब वे अपनी सगी बहनों को भी नहीं दे सकतीं।

हॉवर्थ, 14 मई।

मैंने फरवरी की समय सारिणी से लीड्स, कीघली और स्किप्टन जाने वाली ट्रेनों का समय देखा, और जब मैं लीड्स पहुंचा तो पाया कि मैं पूरी तरह गलत था। उस लाइन पर ट्रेनें बदल दी गई थीं। एक ट्रेन तो उसी क्षण स्टेशन से निकल चुकी थी - वास्तव में, वह अभी-अभी भाप छोड़ते हुए रवाना हुई थी; अगली ट्रेन सवा पांच बजे तक नहीं थी; इसलिए मेरे पास सिर्फ चार घंटे थे बैठकर अंगूठे घुमाने के लिए। मैंने किसी तरह समय तो गुजार लिया, लेकिन यह सोचकर मुझे बहुत गुस्सा आया कि मैं इसे बी में कितना अधिक सुखद ढंग से बिता सकता था। जब मैं घर पहुंचा तो ठीक सात बज रहे थे। मैंने पापा को ठीक पाया। ऐसा लगता है कि मेरी अनुपस्थिति में वे विशेष रूप से स्वस्थ रहे हैं, लेकिन आज वे थोड़े बीमार हैं, और उन्होंने केवल एक बार प्रवचन दिया। हालांकि, आज शाम को वे फिर से बेहतर हैं। प्रिय एलेन, मैं तुम्हें बहुत शांत मन से नहीं छोड़ सकता था, और न ही तुम्हारे बारे में संतुष्टि का भाव लेकर जा सकता था। ऐसा नहीं है कि मुझे लगता है कि वह खराब खांसी खतरनाक जगह पर है; लेकिन यह तुम्हारे शरीर को हिला देती है, तुम्हें थका देती है, और तुम्हें बीमार दिखाती है। इसका ध्यान रखना, प्रिय एलेन। कुछ समय के लिए शाम की ठंडी हवा से बचें; जब मौसम ठंडा हो तो घर के अंदर ही रहें। जब तक खांसी पूरी तरह ठीक न हो

जाए, आपमें फिर से ताकत न आ जाए और आप ठंड और तापमान में बदलाव को बेहतर ढंग से सहन करने में सक्षम न हो जाएं, तब तक इन सावधानियों का पालन करें। मेरा विश्वास करें, इस समय तापमान में अधिक उतार-चढ़ाव आपके लिए ठीक नहीं है। मैं इसके साथ ही चादर भेज रही हूँ, लेकिन मैंने अभी तकिया न देने का फैसला किया है, कहीं आप उस पर बहुत पास बैठकर सिलाई न करने लगें। यह कभी भी काम आ सकता है, और जब भी आएगा, यह आपका ही उपहार होगा।

22 मई।

मुझे आश्चर्य है कि आप कैसी हैं, और क्या आपकी वो परेशान करने वाली खांसी ठीक हो गई है; लेकिन मुझे डर है कि पिछले सप्ताह के बदलते मौसम ने आपकी स्थिति में सुधार नहीं किया होगा। मैं यह नहीं मानती और न ही विश्वास करती हूँ कि खांसी किसी महत्वपूर्ण अंग से संबंधित है। फिर भी, यह कमजोरी का संकेत है, और अनावश्यक धूप में निकलने से बचने की चेतावनी है। प्रिय एलेन, अभी एक घंटे की लापरवाही आपके पूरे स्वास्थ्य को आने वाले वर्षों तक बिगाड़ सकती है - आपको एक ऐसी पुरानी बीमारी में डाल सकती है जो आपको समय से पहले ही कमजोर, मुरझाया हुआ और कमजोर कर देगी। इसलिए, एक बार फिर, सावधान रहें। यदि आप किसी शाम की पार्टी में जाती हैं, तो घर आते समय अपने आप को कंबल और पंखों वाले बिस्तर में लपेट लें, और अपने मुंह पर दो बार बोआ (एक प्रकार का कंबल) मोड़ लें, ताकि वह श्वसन यंत्र का काम करे। घर आने के बाद से मैं स्केच बनाने में बहुत व्यस्त रही हूँ। छोटा नया कमरा अब व्यवस्थित हो गया है, और हरे और सफेद पर्दे लग गए हैं। वे वॉलपेपर से बिल्कुल मेल खाते हैं, और साफ-सुथरे दिखते हैं। एक-दो दिन पहले मुझे एक पत्र मिला, जिसमें बताया गया था कि श्री एन कल आ रहे हैं। मैं उनके बारे में चिंतित हूँ, एक बात को लेकर इतनी चिंतित हूँ कि मैं उसे शब्दों में बयां नहीं कर सकती। लगता है कि उन्हें गठिया का दर्द फिर से बहुत बढ़ गया है। यह बात मुझे उनसे नहीं, बल्कि किसी और से पता चली है। जब मैं मैनचेस्टर और बी में थी, तब वे बीमार थे। उन्होंने मुझसे कोई शिकायत नहीं की, न ही इस बारे में कोई इशारा किया। अफसोस! उन्हें उम्मीद थी कि वे ठीक हो गए हैं; और मैं जानती हूँ कि उनकी इस उम्मीद के टूटने से उन्हें कितना दुख होगा। निस्वार्थ भाव से उन्होंने दिल से यही कामना की थी कि यह बीमारी पुरानी न हो जाए। मुझे डर है—मुझे डर है—

लेकिन फिर भी, मैं सुख-दुख में उनके साथ खड़ी रहूँगी। गठिया के दर्द की यह आशंका शादी के खिलाफ इस्तेमाल किए गए मजबूत तर्कों में से एक थी। किसी तरह यह बात मायने नहीं रखती थी। अगर उन्हें इस पीड़ा को सहना ही है, तो लगता है कि उन्हें देखभाल और मदद की और भी ज्यादा जरूरत होगी। और फिर भी, ऐसे मामले के अंतिम परिणाम भयावह हैं। खैर, जो भी हो, भगवान हम दोनों की मदद करें और हमें शक्ति दें। मैं कल का बेसब्री और चिंता के मिले-जुले भाव से इंतज़ार कर रहा हूँ। बेचारा! मैं अपनी आँखों से देखना चाहता हूँ कि वह कैसा है।

हॉवर्थ, 7 जून।

यह जानकर मुझे बहुत खुशी और आभार हुआ कि आपकी सेहत में सुधार हो रहा है, हालांकि मुझे डर है कि मौसम में आई ठंडक के कारण आपकी खांसी थोड़ी बढ़ गई होगी। क्या आप अपना ठीक से ख्याल रख रहे हैं और घर में ही रह रहे हैं या बाहर जाते समय गर्म कपड़े पहन रहे हैं और साथ में एक बोआ (एक प्रकार का फर) का इस्तेमाल कर रहे हैं? इस आखिरी बात पर मैं विशेष रूप से जोर देना चाहूंगी, क्योंकि आप इस बारे में लापरवाह लग रहे थे और शायद इस बात से अनजान थे कि फर के घने बाल कितनी हद तक वातावरण से होने वाले नुकसान से बचा सकते हैं। कुछ दिन पहले पापा को लेकर मैं फिर से बहुत परेशान थी। लगभग एक हफ्ते पहले जब मौसम बहुत उमस भरा और ठंडा था, तब अचानक उन्हें बहरापन हो गया और उन्होंने कुछ अन्य लक्षणों की शिकायत की, जिनसे उनके सिर से जुड़ी पुरानी समस्याएँ झलक रही थीं। उनका मनोबल भी बहुत गिर गया था। उन्हें संभालना मेरे लिए बहुत मुश्किल था और मैं खुद भी बहुत दुखी और निराश थी। हालांकि उन्होंने कुछ दवा ली, जिससे उन्हें आराम मिला। ठंडे मौसम ने भी उन्हें रास आ रहा है। उनका अस्थायी बहरापन फिलहाल पूरी तरह से गायब हो गया है और उनका दिमाग फिर से शांत और स्थिर है। मैं पूरी उम्मीद करती हूं कि उनकी सेहत में सुधार होता रहेगा। वह बदकिस्मत व्यक्ति लगातार मुझे परेशान करने की कोशिश कर रहा है, और मुझे पापा से हर बात छुपानी पड़ रही है, ताकि उन्हें उस चिंता से बचाया जा सके जो उन्हें बहुत तकलीफ देती है... मुझे मजबूरी में इस विवाद का बोझ मिस्टर निकोल्स पर डालना पड़ रहा है, जो मुझसे छोटे हैं और इसे बेहतर ढंग से संभाल सकते हैं। सबसे बुरी बात यह है कि मिस्टर एन को पापा की तरह बोलने और काम करने का अधिकार नहीं है, वरना वे ऐसा

जानबूझकर करते। ऐसे में मुझे मध्यस्थता करनी होगी, न कि उकसाना; एक किले की दीवार के बीच पंखों का बिस्तर और तोप के गोले का भारी प्रहार।

16 जून।

मेरी प्रिय मिस डब्ल्यू — — , — कुछ अप्रिय घटनाओं के कारण, अब तक मामला इतनी अनिश्चितता में रहा है कि मैं दिन तय करने की दिशा में कोई कदम नहीं उठा सकी; और अब, यदि मैं पापा को असुविधा से बचाना चाहती हूँ, तो मुझे जल्दी करनी होगी। मुझे लगता है कि जुलाई की शुरुआत ही वह सबसे दूर की तारीख है जिस पर मैं विचार कर सकती हूँ; संभवतः मुझे इससे भी नज़दीकी तारीख — जून के अंत — को स्वीकार करना पड़ सकता है। मैं अगले सप्ताह तक पूरी तरह से निर्णय नहीं ले सकती। इस बीच, मेरी प्रिय मिस डब्ल्यू — — , कृपया जितनी जल्दी हो सके आ जाएँ और मुझे अपने आगमन की तारीख बता दें। मैंने एलेन को पत्र लिखकर आपसे संपर्क करने का अनुरोध किया है... आपकी अनुपस्थिति बहुत बड़ी निराशा होगी। पापा भी आपकी उपस्थिति की बहुत कामना करते हैं। श्री निकोल्स मेरी इस इच्छा को समझते हैं कि सब कुछ शांतिपूर्वक हो जाए; और उन्होंने ऐसी व्यवस्था की है जिससे, मुझे विश्वास है, पूरी गोपनीयता सुनिश्चित होगी। समारोह में आप, एलेन और श्री एस ही उपस्थित रहेंगे। श्रीमान और श्रीमती जी को बाद में नाश्ते के लिए आमंत्रित किया गया है। मुझे पता है कि आप इस संक्षिप्त संदेश के लिए क्षमा चाहेंगे, क्योंकि मैं बहुत व्यस्त हूँ और आज तक व्यस्त रहूँगा। श्रीमान सी के पूरे परिवार को मेरा हार्दिक प्यार दीजिएगा। मुझे आशा है कि श्रीमान सी और श्रीमान निकोल्स की कभी मुलाकात होगी। मेरा मानना है कि आपसी जान-पहचान समय के साथ आपसी सम्मान को जन्म देगी; लेकिन उनमें से कम से कम एक को जानने के बाद ही उसकी सराहना की जा सकती है। और मुझे कहना होगा कि अभी तक मुझे उनमें कोई ऐसी बात नहीं मिली है जिसे और करीब से जानने पर भी वे कमजोर पड़ें। मुझे कोई बड़ी खोज तो नहीं मिलती, लेकिन कभी-कभी मुझे उनके चरित्र का कोई ऐसा छोटा सा पहलू मिल जाता है जो सम्मान जगाता है। वे हमेशा भरोसेमंद, सच्चे, वफादार और स्नेही हैं; शायद थोड़े अड़ियल हैं, लेकिन फिर भी आसानी से प्रभावित हो जाते हैं और दयालुता के प्रभाव में आ जाते हैं - एक ऐसे व्यक्ति जिन्हें कभी मजबूर नहीं किया जा सकता, लेकिन जिनका मार्गदर्शन किया जा सकता है।

हॉवर्थ चर्च।

शादी 29 जून, 1854 को हुई। पास के एक पादरी ने विवाह की रस्में पूरी कीं; शार्लोट की "प्यारी नेल" अकेली सहेली थी; उसकी पुरानी स्कूल टीचर, मिस वूलर, जिनकी दोस्ती उसके दिल के बेहद करीब थी, ने उसे विदा किया; और हॉवर्थ आने वाले आगंतुक जिन्हें विवाह रजिस्टर दिखाया जाता है, वे देखेंगे कि ये दो वफादार और भरोसेमंद दोस्त ही एकमात्र गवाह थे। शादी के तुरंत बाद दूल्हा और दुल्हन मिस्टर निकोल्स के कुछ रिश्तेदारों से मिलने आयरलैंड के लिए रवाना हो गए। "मुझे उम्मीद है कि मैं ईश्वर की आभारी हूं कि उन्होंने मुझे सही चुनाव करने में सक्षम बनाया; और मैं प्रार्थना करती हूं कि मुझे एक सच्चे, सम्मानित, और घमंड रहित व्यक्ति के स्नेहपूर्ण समर्पण का उचित प्रतिफल देने में सक्षम बनाया जाए," ये शब्द आयरलैंड से लिखे गए पहले पत्र में मिलते हैं। एक महीने बाद दुल्हन अपनी सहेली को इस प्रकार लिखती है:

डबलिन, 28 जुलाई, 1854।

आपको पत्र लिखे बिना अब और चैन से नहीं बैठ सकती, और पिछले दो हफ़्तों में मुझे बिल्कुल भी समय नहीं मिला। हम यात्रा में व्यस्त रहे हैं, और बीच-बीच में थोड़ा आराम भी मिला, जिससे मैं भेजे गए बधाई संदेशों में से कुछ का जवाब दे सकी। मैं नहीं चाहती थी कि ये संदेश वापस आने तक जमा होते रहें, क्योंकि मुझे पता है कि

वापस आने पर मैं काफ़ी व्यस्त हो जाऊंगी। हम किलार्नी, ग्लेन गैरीफ़, टारबर्ट, ट्राली, कॉर्क गए और अब एक बार फिर डबलिन में हैं, अपने घर के रास्ते में, जहाँ हमें उम्मीद है कि अगले हफ़्ते पहुँच जाएँगे। मैं रास्ते के नज़ारों का वर्णन करने की कोशिश नहीं करूँगी। कुछ हिस्से तो मेरी कल्पना से भी कहीं ज़्यादा खूबसूरत थे। बेशक, इन सब से मुझे बहुत आनंद मिला है, और शायद उससे भी ज़्यादा, उस स्नेहपूर्ण और निरंतर सुरक्षा से जो हमेशा मेरे चारों ओर रही है, और जिसने यात्रा को मेरे लिए पहले से बिल्कुल अलग बना दिया है। प्यारी नेल, यह लिखा है कि इस दुनिया में कोई भी सुख पूर्ण नहीं होता। पापा की तबीयत ठीक नहीं है, और मैं घर जाने के लिए तरस रही हूँ, कभी-कभी तो बहुत ज़्यादा। सचमुच, अब मैं और आनंद नहीं ले सकता और आराम नहीं कर सकता, इसलिए हम घर जा रहे हैं।

वह एक नए जीवन में लौट रही थी। एक ऐसे व्यक्ति से विवाहित, जिसने वर्षों की वफादारी और धैर्य से उसके प्रति अपने प्रेम की प्रबलता और सच्चाई को सिद्ध किया था, ऐसा लग रहा था मानो शांति और धूप, स्नेह की चमक और घर का सुख अंततः उस पर और उसके चारों ओर छाने वाले थे। पादरी के घर का खाली बैठक कक्ष, जो छह वर्षों के एकांत और पीड़ा से केवल दुखी महिला और उसे छोड़कर चले गए लोगों की यादों से भरा था, एक बार फिर जीवित लोगों की आवाज़ों से गूंज उठा। पति के मजबूत और ईमानदार स्वभाव ने पत्नी को सहारा दिया; लंबे समय से उसे जकड़े हुए अलगाव का दर्द पूरी तरह से गायब हो गया, और उसके स्थान पर वह "निर्भरता का मधुर एहसास" आ गया जो एक सच्चे प्रेम का सबसे धन्य फल है। लंबे समय तक चले उतार-चढ़ाव भरे बुखार के बाद उसके जीवन की आत्मा पर एक गहरी शांति छा गई थी; और उसके दोस्तों ने उसके चरित्र के उन कोनों में कोमलता की नई कोंपलें, सौम्यता और स्नेह के नए फूल खिलते देखे, जो अब तक बंजर थे। शांति और आशा के इन सुखद महीनों के दौरान लिखे गए उसके पत्रों में से मैं बहुत कुछ उद्धृत नहीं कर सकता; वे जीवित बचे लोगों के जीवन से इतने गहरे जुड़े हुए हैं कि ऐसा करना संभव नहीं है; लेकिन उन सभी में एक ही भावना झलकती है। वे दर्शाते हैं कि जिस साहस, धैर्य और प्रसन्नता के साथ उसने अपने जीवन के उस तूफानी मध्य-मार्ग में भाग्य के कठोर प्रहारों को सहा था, उसका फल उसे मिला; और अंततः खुशी आ गई, शायद उस रूप में नहीं जैसा उसने अपनी युवावस्था में कल्पना की थी, बल्कि एक ठोस वास्तविकता के रूप में, और अब वह एक हास्यास्पद भ्रम नहीं थी।

9 अगस्त, 1854।

— — शायद अंत में स्वीकार कर ही लेगा; और आपकी बातों से मुझे लगता है कि ऐसा करना तर्कसंगत होगा। अगर वाकई कोई और जिसे वह पसंद करती, उसे पाना चाहता और ईमानदारी से अपनी बात रखता, तो बात कुछ और होती। लेकिन ऐसा लगता है कि ऐसा नहीं है; और किसी भी तरह की अनचाही और निराधार पसंद को पालना न तो सही है और न ही बुद्धिमानी। घर आने के बाद से मुझे एक पल भी खाली नहीं मिला। मेरी जिंदगी सचमुच बदल गई है; लगातार जरूरत महसूस होना, लगातार बुलाया जाना और व्यस्त रहना अजीब लगता है; फिर भी यह एक अद्भुत अच्छी बात है। अभी तक मुझे पूरी तरह समझ नहीं आया है कि कुछ पत्नियां इतनी स्वार्थी कैसे हो जाती हैं। वैवाहिक जीवन के अपने अनुभव के आधार पर, मुझे लगता है कि यह आपको खुद से दूर कर देता है… प्रिय नेल, पिछले छह हफ्तों में मेरे विचारों का रंग काफी बदल गया है। मैं जीवन की वास्तविकताओं को पहले से कहीं ज्यादा जानता हूं। मुझे लगता है कि कई गलत धारणाएं फैलाई जाती हैं, शायद अनजाने में। मुझे लगता है कि वे विवाहित महिलाएं जो बिना सोचे-समझे अपने परिचितों को शादी करने के लिए उकसाती हैं, वे काफी हद तक दोषी हैं। मैं अपनी ओर से केवल वही बात पूरी ईमानदारी और अर्थ के साथ कह सकती हूँ जो मैं हमेशा से सैद्धांतिक रूप से कहती आई हूँ: ईश्वर की इच्छा का इंतज़ार करो। सचमुच, नेल, एक स्त्री के लिए पत्नी बनना एक गंभीर, विचित्र और जोखिम भरा अनुभव होता है। पुरुष का भाग्य इससे कहीं अधिक भिन्न होता है... क्या मैंने तुम्हें बताया है कि श्री निकोल्स कितने बेहतर हो गए हैं? वे काफी स्वस्थ और तंदुरुस्त दिखते हैं। उनमें यह सुधार देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है; और सच कहूँ तो, आश्चर्य भी हुआ है।

हॉवर्थ, 7 सितंबर, 1854।

आज मैं एक फ्रेंच अखबार भेज रही हूँ। आपको लगभग लगेगा कि मैंने इन्हें भेजना छोड़ दिया है, क्योंकि इतने लंबे समय से कोई अखबार नहीं भेजा गया है। असल में, मेरी अनुपस्थिति में इनका काफी ढेर लग गया था। भेजने से पहले मैं इन्हें एक बार देख लेना चाहती थी, लेकिन अभी तक मुझे मुश्किल से ही समय मिला है। समय एक ऐसी चीज है जिसका कभी मेरे पास भरपूर भंडार होता था; अब वह कहाँ चला गया है, यह कहना मुश्किल है, लेकिन मेरे पल पूरी तरह से व्यस्त हैं। सावधान रहो, एलेन।

शादीशुदा औरत के पास हर दिन का बहुत छोटा हिस्सा ही अपना होता है। ऐसा नहीं है कि मैं अभी तक इस तरह के एकाधिकार की शिकायत कर रही हूँ, और मुझे उम्मीद है कि मैं इसे कभी दुर्भाग्य नहीं मानूँगी, लेकिन यह निश्चित रूप से मौजूद है। हम दोनों निराश थे कि तुम उस दिन नहीं आ सकीं जिसका मैंने जिक्र किया था। मुझे इस शानदार मौसम की बहुत कमी खल रही है। मैदान अपनी पूरी शान में हैं; मैंने उन्हें बैंगनी फूलों से इतना भरा हुआ कभी नहीं देखा; मैं चाहती थी कि तुम उन्हें उनके सबसे अच्छे रूप में देखो। अब वे तेजी से बदल रहे हैं, और मुझे डर है कि एक हफ्ते में वे मुरझाकर सूख जाएँगे। जैसे ही आप घर से बाहर निकल सकें, मुझे जरूर लिखकर बता देना... पापा की हालत में काफी सुधार हो रहा है। मेरे पति भी स्वस्थ हैं; उनकी हालत में लगातार हो रहे सुधार को देखकर उन्हें थोड़ी चिंता भी होने लगी है। मुझे लगता है मैं ठीक हूँ – दो महीने पहले से तो निश्चित रूप से बेहतर हूँ; लेकिन लोग मेरी तारीफ वैसे नहीं करते जैसे आर्थर की करते हैं – माफ करना, ये नाम तो ठीक है; अब तो ये नाम इस्तेमाल करना स्वाभाविक हो गया है।

हॉवर्थ, 16 सितंबर, 1854।

मेरी प्रिय महोदया — — , — आपने कृपा करके मुझे एलेन के साथ रहने के दौरान पत्र न लिखने को कहा था; मैं इस सप्ताह उसके आने की प्रतीक्षा कर रही हूँ; और जैसा कि मुझे लगता है कि आपके जैसे पत्र का उत्तर देने में देरी करना अनुचित होगा, मैं इस कहावत का पालन करूँगी: "अभी से बेहतर कोई समय नहीं है," और तुरंत उत्तर दूँगी। मुझे खेद है कि आपको मेरे स्वास्थ्य के बारे में चिंता हुई; आयरलैंड छोड़ने से पहले ही मेरी खांसी ठीक हो गई थी, और घर लौटने के बाद से मुझे कभी-कभार सिरदर्द के अलावा कोई बीमारी नहीं हुई है। मेरे प्रिय पिताजी भी काफी बेहतर हैं। डॉ. बी — — रविवार को यहाँ यहूदियों के लिए प्रवचन देने आए थे, और उन्होंने यह कहकर मुझे बहुत प्रसन्न किया कि उन्हें लगता है कि पिताजी में पिछली बार — लगभग एक साल पहले — से लेकर अब तक कोई बदलाव नहीं आया है। मुझे खेद है कि यह राय थोड़ी चापलूसी भरी है; लेकिन फिर भी इससे मुझे खुशी हुई, क्योंकि मुझे डर था कि वे निश्चित रूप से दुबले और बूढ़े दिख रहे थे। आपने पूछा कि हमारे यहाँ कौन-कौन आए थे। आस-पास के कई पादरी आदि आए थे, लेकिन दूर से कोई खास नहीं आया। जैसा कि आपने कहा, हॉवर्थ एक बहुत ही शांत जगह है; यहाँ

पहुँचना भी मुश्किल है, और जब तक कोई ज़रूरत न हो, या फिर तीव्र जिज्ञासा न हो, या फिर सच्ची और परखी हुई दोस्ती न हो, तब तक कुछ ही लोग इतने दूरदराज के कोने में जाने की हिम्मत करते हैं। इसके अलावा, अब जब मेरी शादी हो चुकी है, तो मुझे आम लोगों की दिलचस्पी का केंद्र बनने की उम्मीद नहीं है। जो महिलाएं अपने अविवाहित जीवन में कुछ प्रसिद्धि (चाहे उसे बदनामी कहें या सेलिब्रिटी) हासिल कर चुकी होती हैं, वे अक्सर नाम बदलने के बाद गुमनामी में चली जाती हैं। लेकिन अगर सच्ची घरेलू खुशी प्रसिद्धि की जगह ले ले, तो यह बदलाव वाकई बेहतर है। हाँ, मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि मेरे पति का स्वास्थ्य और मन बेहतर है। उन्हें समय-समय पर अपनी खुशी को संक्षिप्त लेकिन स्पष्ट शब्दों में ईमानदारी से व्यक्त करते हुए सुनकर मुझे संतोष और कृतज्ञता महसूस होती है। मेरा जीवन पहले से कहीं अधिक व्यस्त है; मेरे पास सोचने के लिए उतना समय नहीं है: मुझे अधिक व्यावहारिक होना पड़ता है, क्योंकि मेरे प्यारे आर्थर बहुत ही व्यावहारिक होने के साथ-साथ बहुत ही समय के पाबंद और व्यवस्थित व्यक्ति हैं। हर सुबह वे नौ बजे तक राष्ट्रीय विद्यालय में होते हैं; वह बच्चों को सुबह साढ़े दस बजे तक धार्मिक शिक्षा देते हैं। लगभग हर दोपहर वह गरीब श्रद्धालुओं से मिलने जाते हैं। बेशक, वह अक्सर अपनी पत्नी के लिए भी थोड़ा-बहुत काम निकाल लेते हैं, और मुझे उम्मीद है कि उन्हें उनकी मदद करने में कोई आपत्ति नहीं होती। मुझे लगता है कि यह मेरे लिए बुरा नहीं है कि उनका झुकाव पूरी तरह से वास्तविक जीवन और सक्रिय उपयोगिता की ओर है - साहित्य और चिंतन में उनकी रुचि बहुत कम है। उनके निरंतर स्नेह और दयालु व्यवहार के बारे में ज्यादा कुछ कहना मेरे लिए उचित नहीं है; लेकिन अभी तक उनमें कोई बदलाव नहीं आया है और न ही वे कम हुए हैं। काश, मेरी प्यारी मिस — — , आपके पास कोई दयालु, वफादार साथी होता जो आर — — में आपके एकांत को खुशनुमा बना देता, कोई ऐसा मित्र होता जिससे आप दृश्यों, सुहावने मौसम और सुखद सैर का आनंद साझा कर पातीं। आप कभी शिकायत नहीं करतीं, कभी बड़बड़ाती नहीं, हमेशा आभारी ही लगती हैं; लेकिन मैं जानती हूँ कि आप उस विशेषाधिकार को अवश्य ही याद करती होंगी जिसकी सराहना आपसे बेहतर कोई नहीं कर सकता।

उपरोक्त पत्रों की तरह ही अन्य पत्र भी हैं, जिनमें समय की निरंतर व्यस्तता का वर्णन है, जो कभी भारी बोझ हुआ करता था; सभी इस बात का प्रमाण देते हैं कि

शांति और प्रेम ने उनके हृदय में अपना घर बना लिया था; और सभी उस उदासी से मुक्त थे जो अन्य वर्षों में आम थी। हालाँकि, इनमें से केवल एक पत्र, जो उनके अंतिम क्रिसमस दिवस के अगले दिन लिखा गया था, उद्धृत करना आवश्यक है।

हॉवर्थ, 26 दिसंबर।

मैं श्रीमती — — का पत्र लौटा रही हूँ: जैसा आपने कहा, यह बहुत ही सच्चा, ईमानदार, स्नेहपूर्ण, मातृत्वपूर्ण है, इसमें बनावटीपन या अतिशयोक्ति का कोई अंश नहीं है। मुझे लगता है कि वह अपने बच्चे को बिगाड़े बिना उससे प्यार करेंगी। वह अपनी खुशी का भी दिखावा नहीं करतीं। जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती जा रही है, मुझे अतिशयोक्ति का संदेह बढ़ता जा रहा है। मुझे लगता है कि आजकल हर कोई अपनी अद्भुत खुशियों का बखान करने में एक-दूसरे से होड़ करता है — और कभी-कभी वे झूठ भी बोलती हैं! यह सुनकर मुझे सचमुच खुशी हुई कि आप सभी बी — — में बेहतर हैं। अब तीन-चार हफ्तों में मुझे आपके पास आने की छुट्टी मिलने की उम्मीद है। मैं निश्चित रूप से आपसे दोबारा मिलने के लिए तरस रही हूँ। एक बात मुझे इस देरी के लिए तैयार कर रही है — मौसम। मुझे नहीं पता कि आपके यहाँ भी मौसम उतना ही खराब रहा है जितना हमारे यहाँ; लेकिन यहाँ तीन हफ्तों से लगातार तूफानों के अलावा कुछ नहीं हुआ है...। आपने श्रीमती गैस्केल के बारे में पूछा। वह यहाँ नहीं आई हैं, और मुझे लगता है कि मैं नहीं चाहूँगी कि वह अब गर्मियों तक आएँ। वह आजकल अपनी "नॉर्थ एंड साउथ" कहानी में बहुत व्यस्त हैं। मुझे यह संदेश बहुत संक्षिप्त में लिखना होगा। आर्थर मेरी ओर से आपको और आपके परिवार को क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाएँ देता है और उम्मीद करता है कि आपको भी ऐसे कई क्रिसमस मिलें। ईश्वर की कृपा से वह और मैं दोनों स्वस्थ हैं; और वह निश्चित रूप से मेरे प्यारे हैं - अब छह महीने पहले की तुलना में और भी प्यारे हैं। तीन दिन में हमारी शादी को इतने ही दिन हो जाएँगे।

वैवाहिक जीवन के इन सुखद महीनों में साहित्यिक कार्यों के लिए बहुत कम समय था। अपनी जिम्मेदारियों के लिए नई-नई परिचित पत्नी, जीवन भर के अपने धैर्य, आत्मसंयम और परिश्रम से उन्हें निभाने में लगी रही। अब उसका जीवन उसके लिए सर्वोपरि था; और जो समय वह पहले पढ़ने, अध्ययन करने, चिंतन करने और लिखने में व्यतीत करती थी, अब वही पति उसके लिए समय निकालता था। लेकिन कभी-कभी उसे स्वयं पर बहुत अधिक दबाव डालना पड़ता था। श्री निकोल्स उसकी

साहित्यिक प्रसिद्धि से कभी आकर्षित नहीं हुए थे; वास्तव में, साहित्यिक प्रयासों के प्रति उनकी कोई सहानुभूति नहीं थी, और कुल मिलाकर वे यही चाहते थे कि उनकी पत्नी साहित्य जगत में कोई नई सफलता प्राप्त करने के बजाय कलम को पूरी तरह से त्याग दे। इसलिए उसने समर्पण कर दिया, और प्रसन्नतापूर्वक उस "प्रतिभा" को दबा दिया जो उसके गहरे और अनेक दुखों में उसका सहारा रही थी। फिर भी एक बार "वह जादू" इतना प्रबल हो गया कि उसका विरोध करना असंभव हो गया, और उसने जल्दबाजी में "एम्मा" नामक एक नई कहानी के कुछ पन्ने लिख डाले, जिसमें उसने एक बार फिर अपने पसंदीदा विषय - एक असहाय लड़की की कहानी - पर लिखने का प्रस्ताव रखा। यह देखना कितना सुखद होता कि अब जब उसके विचारों का रंग बदल चुका था और एक सुखी विवाह ने उसे उस जीवन के एक नए पहलू से परिचित करा दिया था जिसका उसने इतने गहनता और निरंतर अध्ययन किया था, तो वह अपने विषय को किस प्रकार प्रस्तुत करती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। 19 जनवरी को, सर जे. के. शटलवर्थ के यहाँ से लौटने के बाद, उसने अपनी सहेली को इस प्रकार पत्र लिखा। यह पत्र उसकी सहपाठी को स्याही से लिखा गया अंतिम पत्र था:

हॉवर्थ, 19 जनवरी, 1855।

गॉथोर्प से लौटने के बाद से आर्थर के चचेरे भाई श्री बी — — हमारे साथ रह रहे थे। उनसे मिलकर बहुत खुशी हुई। काश आप उनसे मिल पाते और उनसे जान-पहचान कर पाते: आखिर स्वभाव और शिष्टाचार से सच्चा सज्जन व्यक्ति हर दिन नहीं मिलता… मैं बी — — आना चाहती थी, और मुझे उम्मीद थी कि मैं निश्चित रूप से लिख पाऊंगी और 31 जनवरी, बुधवार का दिन तय कर पाऊंगी; लेकिन सच तो यह है कि मुझे यकीन नहीं है कि मैं घर से निकलने के लिए स्वस्थ रहूंगी। फिलहाल तो मैं एक बहुत उबाऊ मेहमान साबित होऊंगी। आयरलैंड से लौटने के बाद से लगभग दस दिन पहले तक मेरा स्वास्थ्य वास्तव में बहुत अच्छा था। तब से मुझे अपच और लगातार कमजोरी हो रही है। मैंने पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया जैसा आजकल कर रही हूं। मुझे बहुत दुख हो रहा है कि मेरी सुंदरता कम हो रही है और मैं दुबली हो रही हूं, ठीक उसी समय जब मैंने बी — — जाने के बारे में सोचा था। बेचारा जे — —! मुझे अब भी उम्मीद है कि वह ठीक हो जाएगा, लेकिन ए—— की लिखी बातें दुखद हैं, हालांकि हमेशा स्पष्ट या सुसंगत नहीं होतीं। प्रिय एलेन, मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ, और आशा करता हूँ कि मैं तुम्हें स्वस्थ देखूंगा।

उसके आसपास के लोग पहले तो चिंतित नहीं हुए। उन्हें उम्मीद थी कि जल्द ही सब ठीक हो जाएगा; उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि जिन खुशियों का स्वाद उसने अभी चखना शुरू ही किया था, वे उससे छिनने वाली हैं। लेकिन उसकी कमजोरी तेजी से बढ़ती गई; बीमारी कम होने का नाम नहीं ले रही थी; और पति और पिता के दिलों में एक जानलेवा डर घर करने लगा। वह जल्द ही इतनी कमजोर हो गई कि उसे बिस्तर पर ही रहना पड़ा, और उस "उदास बिस्तर" से उसने पेंसिल से दो-तीन धुंधली लिखावटें लिखीं जो आज भी मौजूद हैं - उस जीवन भर के पत्राचार के अंतिम मार्मिक अध्याय, जिनसे हमने इतने सारे अंश एकत्र किए हैं। उनमें से एक में, जिसे श्रीमती गैस्केल ने प्रकाशित किया है, वह कहती हैं: "मैं आपको एक आश्वासन देना चाहती हूँ जो मुझे पता है कि आपको सांत्वना देगा - और वह यह है कि मुझे अपने पति में सबसे कोमल नर्स, सबसे दयालु सहारा, और किसी भी स्त्री को मिलने वाला सबसे अच्छा सांसारिक आराम मिलता है। उनका धैर्य कभी नहीं टूटता, और दुख भरे दिनों और टूटी रातों में भी इसकी परीक्षा होती है।" एक और आखिरी पत्र में, वह कहती हैं: "मैं बोल नहीं सकती - यहाँ तक कि अपने प्यारे, धैर्यवान, वफादार आर्थर से भी मैं एक बार में कुछ ही शब्द बोल पाती हूँ।" मार्च की एक उदास सुबह, जब धरती पर अभी भी पाला जमा हुआ था और वसंत का सूरज उन लोगों के दिलों को खुश करने के लिए नहीं आया था जो गर्मियों का इंतजार कर रहे थे, उनकी सहेली को एक और पत्र मिला, जो शार्लोट ब्रोंटे की साफ-सुथरी, बारीक लिखावट में नहीं, बल्कि उनके पिता के कांपते अक्षरों में लिखा गया था:

हॉवर्थ, कीघली के पास, 30 मार्च, 1855।

प्रिय महोदया, हम सब बहुत संकट में हैं, और श्री निकोल्स तो इतने संकट में हैं कि वे लिखने की स्थिति में भी उतने स्वस्थ और संयमित नहीं हैं। इसलिए मैं आपको कुछ पंक्तियाँ लिखकर यह बताना चाहता हूँ कि मेरी प्रिय पुत्री बहुत बीमार है, और ऐसा लगता है कि वह मृत्यु के कगार पर है। यदि वह बोल पाती, तो निस्संदेह आपके इस स्नेहपूर्ण पत्र का उत्तर देते समय हमें बोलकर लिखवाती। लेकिन अब हमें अपने विवेक से ही उत्तर देना है। डॉक्टरों को उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है, और हमने लंबे समय से जो आशा संजो रखी थी, वह अब समाप्त हो गई है; अब हमें केवल इस गंभीर घटना का सामना करना है और ईश्वर से प्रार्थना करनी है कि वह हमें जीवन भर के लिए पर्याप्त कृपा और शक्ति प्रदान करें।

आपका सदा सच्चा और आदरपूर्वक,

पी. ब्रोंटे.

अगले दिन, 31 मार्च, 1855 को, हॉवर्थ पार्सनेज में एक बार फिर परदे गिरा दिए गए; परिवार की आखिरी और महान संतान का देहांत हो गया था; और शार्लोट ब्रोंटे का शानदार नाम बस एक नाम बनकर रह गया था! "हम अकेले रह गए हैं," श्री ब्रोंटे ने उस पत्र में कहा था जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है - और ऐसा ही हुआ। न केवल यश, बल्कि प्रकाश भी उस पार्सनेज से चला गया था जहाँ निःसंतान पिता और विधवा पति अपने मृत परिवार के साथ बैठे थे। उस उजाड़ यॉर्कशायर के मैदान के सभी उजाड़ और वीरान स्थानों में से अब कोई भी स्थान इतना उजाड़ और वीरान नहीं था जितना कि वह घर जो कभी शार्लोट ब्रोंटे का घर हुआ करता था।

बारह.

मरणोपरांत सम्मान।

यह कहावत कि किसी को उसकी मृत्यु तक सुखी नहीं मानना चाहिए, उसमें एक गहरा सत्य छिपा है, जिसे हममें से अधिकांश लोग समझ नहीं पाते। कभी-कभी जीवन की खुशी मृत्यु से ही चरम पर पहुँच जाती है; और जो सतही दृष्टि से नाटक के नीरस और दुखद अंत जैसा प्रतीत होता है, वास्तव में वह उस बोझ से मुक्ति का सुखद अनुभव होता है जिसे सहन करना असहनीय हो गया था। लेकिन जब जीवन और साँसें पूर्ण आशा के क्षण में, और संभवतः सबसे बड़े आनंद के क्षण में, अचानक थम जाती हैं, तो हमारे विश्वास पर असहनीय दबाव पड़ता है, और हम अंधे और

व्याकुल होकर भाग्य के उस भयानक प्रहार को ही देख और महसूस कर पाते हैं जिसने प्रियजन को हमसे छीन लिया है, और उस बड़े खालीपन को जो घर और परिवार में रह गया है। इसी भावना के साथ बाहरी दुनिया ने यॉर्कशायर की पहाड़ियों में ईस्टर के दिन घटी उस त्रासदी के बारे में सुना, जिसका अंत कड़वे शब्दों में हुआ। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, हॉवर्थ के उस छोटे से परिवार को जानने वाले लोग उस परम आनंद की प्रतीक्षा कर रहे थे जो निकट प्रतीत हो रहा था। उन्होंने अकेली लेखिका को एक भरोसेमंद और खुशहाल पत्नी के रूप में विकसित होते देखा था, और वे उस दूर के दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे जब बच्चे उनकी गोद में इकट्ठा होंगे, और एक नई पीढ़ी, खुशहाल परिस्थितियों में जन्मी, उन तनावों और दबावों से मुक्त होकर, जो उन पर डाले गए थे, एक महान नाम और शायद एक महान प्रतिभा के अंश को अमर कर देगी।

इन सभी आशाओं के चकनाचूर हो जाने की घोषणा दुनिया के लिए एक असहनीय आघात थी। जब यह खबर फैली कि "जेन आयर" की लेखिका का निधन हो गया है, तो उनके जीवनकाल में उनके कट्टर आलोचक रहे लोगों में भी पीड़ा और खेद का ऐसा स्वर उठा, जिसे सुनकर वे स्वयं भी अत्यंत आश्चर्यचकित रह जातीं। उनकी सच्ची, सहज विनम्रता, जिसने प्रसिद्धि के चरम पर भी उन्हें अपने चारों ओर मंडराते प्रलोभनों के बीच अपने सरल स्वभाव को बनाए रखने में सक्षम बनाया था, ने उन्हें कभी भी स्वयं को विश्व में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में महसूस करने से रोका था। लेखन के क्षेत्र में उन्होंने जो कुछ भी किया, वह इसलिए किया क्योंकि वे अपनी प्रतिभा के प्रबल प्रभाव से बच नहीं सकती थीं; लेकिन यह विचार कि ऐसा करके उन्होंने स्वयं को असाधारण रूप से महान बना लिया है, उनके मन में कभी नहीं आया। उनका एक भी पत्र ऐसा नहीं है जो यह दर्शाता हो कि उन्होंने अपनी प्रसिद्धि या धन-दौलत के बारे में कुछ सोचा हो। इसके विपरीत, उनके आंतरिक जीवन के जो भी अंश बचे हैं, वे इस बात का प्रमाण हैं कि अंत तक वे स्वयं को उतना ही विनम्र मानती रहीं जितना कि यॉर्कशायर या ब्रुसेल्स में अपने "शासकीय" जीवन के दौरान मानती थीं। वे जानती थीं कि वे जहाँ भी जाती थीं, लोगों का ध्यान आकर्षित करती थीं; लेकिन उनका स्वयं का यह दृढ़ विश्वास था कि यह ध्यान केवल जिज्ञासा के कारण था, और वह भी किसी सुखद या प्रशंसात्मक प्रकार की जिज्ञासा नहीं थी। उनका पालन-पोषण ऐसे लोगों के बीच हुआ था जो किसी भी साहित्यिक कार्य को, और विशेष रूप से पुस्तक लेखन

को, स्त्री अधिकारों और कर्तव्यों की सीमा से परे मानते थे। इसलिए वे इस धारणा से कभी पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाईं कि कलम उठाकर वे किसी न किसी रूप में समाज के मर्यादाओं का उल्लंघन कर रही हैं। उनके एक पत्र के अंश से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने इस विचार को कितनी तीव्रता और आक्रोश से खारिज किया कि उन्होंने कभी भी ऐसा कुछ लिखा है जिसके लिए उन्हें शर्म महसूस करनी चाहिए। उनके शुद्ध हृदय ने इस मामले में उनका पूर्ण समर्थन किया। लेकिन, अपने साहित्यिक जीवन के शुरू से अंत तक, ऐसा प्रतीत होता था कि उपन्यास लिखकर उन्होंने पारंपरिक मानदंडों का उल्लंघन किया है, और परिणामस्वरूप उन्हें साहित्य जगत में उच्च स्थान प्राप्त करने वाली एक महान महिला के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक विचित्रता के रूप में देखा जाता था, जिसने कुछ ऐसा किया था जिससे वह कुछ समय के लिए बदनाम हो गई थीं। एक लेखिका के रूप में अपनी सफलता को भुलाने की उनकी तत्परता उनके पत्रों के हजारों अंशों से स्पष्ट होती है, जिनमें से कई अंश इतने कोमल या पवित्र हैं कि उन्हें उद्धृत नहीं किया जा सकता। उनके पत्रों को पढ़े बिना यह देखना असंभव है कि एक इकलौते मित्र को छोड़कर, यॉर्कशायर में उनके दैनिक जीवन के साथी उनकी साहित्यिक प्रसिद्धि से बिल्कुल भी आकर्षित नहीं हुए। अपनी स्वाभाविक विनम्रता के साथ उन्होंने स्वयं को उनके मूल्यांकन के अनुरूप स्वीकार किया, और जबकि दूर-दराज के राष्ट्र उनकी प्रशंसा कर रहे थे, वह स्वयं घर पर अपने मित्रों के दायरे में एक विनम्र स्थान ग्रहण करने के लिए पूरी तरह से तैयार थीं। उनके पति की रुचियों का निस्संदेह उनके जीवन के अंत तक इस सरल और सच्ची विनम्रता को बनाए रखने में कुछ योगदान था। वह उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के बारे में सभी विचारों को त्यागने के लिए दृढ़ थे; उनकी सारी चिंता—जो लगभग पूरी तरह से उनकी पत्नी की खुशी की चाह से उपजी थी—यह थी कि वह लेखिका बनना पूरी तरह से छोड़ दें और गाँव के पादरी की व्यस्त, उपयोगी और संतुष्ट पत्नी बन जाएँ। यह तथ्य छिपाना गलत होगा कि पति की इच्छाओं को पूरा करने के लिए उन्हें अपने ऊपर बहुत दबाव डालना पड़ा; और जैसा कि हमने देखा है, एक बार उनके आत्म-संयम की शक्ति टूट गई और उन्होंने कलम चलाने के वर्जित विलासितापूर्ण कार्य में लिप्त हो गईं। लेकिन यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन लोगों से घिरी होने के बावजूद, जो उनसे बहुत प्यार करते थे, फिर भी उन्हें उस समय के महान लेखकों में से एक के रूप में उनकी स्थिति की कोई मान्यता नहीं देते थे, उन्होंने अपने स्थान के बारे में उनके आकलन को

स्वाभाविक विनम्रता के साथ स्वीकार किया और अपने घर की चारदीवारी के बाहर खुद को नगण्य या महत्वहीन समझा।

इसी विश्वास में वह जीती और मरी। मेरे सामने मौजूद पत्रों में से, जिनमें से मैं उद्धृत करने से परहेज कर रहा हूँ, वे कई ऐसे पत्र हैं जो उस अंतिम दुखद बीमारी के दौरान लिखे गए थे जब अंत उनकी दृष्टि में मंडरा रहा था। इनमें, जहाँ एक ओर शुरुआती दिनों के दोस्तों के बारे में कई चिंतित पूछताछ और उनके बदलते भाग्य पर कई टिप्पणियाँ हैं, वहीं दूसरी ओर उनके पति और पिता और हॉवर्थ में पैरिश के काम के कई संकेत भी हैं, लेकिन एक भी पंक्ति ऐसी नहीं है जो एक लेखिका के रूप में उनकी अपनी भावनाओं या उनके जीवन के संक्षिप्त अंतिम वर्षों में उनके द्वारा किए गए कार्यों को व्यक्त करती हो। उपन्यासकार पूरी तरह से दृष्टि से ओझल हो गई है, और केवल पत्नी, मित्र, गर्भवती माँ ही शेष रह गई है। मुझे शार्लोट ब्रोंटे के पत्राचार के अंतिम अध्यायों से अधिक मार्मिक रूप से यह दिखाने वाली कोई और बात नहीं पता कि महान प्रसिद्धि कितनी छोटी चीज है, यहाँ तक कि सबसे उल्लेखनीय और अद्भुत सफलताएँ भी जीवन की वास्तविकताओं को कितना कम प्रभावित कर सकती हैं। उनकी मृत्यु, बाहरी दुनिया के लिए पूरी तरह से अज्ञात; उनका शांत अंतिम संस्कार, जिसे केवल एक पादरी की बेटी, एक सहायक की पत्नी के अंतिम संस्कार के रूप में माना गया; स्थानीय समाचार पत्रों को भेजी गई उनकी मृत्यु की विनम्र घोषणा - ये सभी बातें स्वयं के प्रति उनके निम्न दृष्टिकोण के अनुरूप हैं।

लेकिन मृत्यु, जो मानवता की कसौटी है, ने दुनिया और उसके बचे हुए रिश्तेदारों और दोस्तों के सामने उसकी वास्तविक स्थिति उजागर कर दी। 1855 के उस दुखद मार्च सप्ताह के समाचार पत्रों की प्रतियां मेरे सामने पड़ी हैं, जिन्हें बड़े प्यार से सहेज कर रखा गया है। वे शब्दों से परे एक ऐसी वाक्पटुता से एक राष्ट्र के उस महान आत्मा के लिए शोक व्यक्त करती हैं, जो असमय ही इस दुनिया से विदा हो गई। इन सभी प्रेमपूर्ण प्रशंसाओं में से दो का विशेष रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए। एक है मिस मार्टिन्यू द्वारा द डेली न्यूज में "कुरर बेल" के बारे में लिखा गया उदार, हालांकि पूरी तरह संतोषजनक नहीं, लेख, और दूसरा है "शर्ली" द्वारा लिखा गया कहीं अधिक सहानुभूतिपूर्ण लेख, जो कुछ महीनों बाद फ्रेजर मैगज़ीन में प्रकाशित हुआ था।

उनके पिता, उनके पति और उनकी जीवन भर की सहेली, यह जानकर अत्यंत भावुक और व्याकुल हो गए कि कैसे सरल, विनम्र महिला, जो इतने लंबे समय से

उनके लिए एक मधुर और परिचित उपस्थिति रही थीं, ने पाठकों के दिलों में गहरी जगह बना ली थी। लेकिन वे पूरी सच्चाई को समझने में धीमे थे। जब इस महान जीवन का कोई रिकॉर्ड संरक्षित करने का प्रस्ताव रखा गया, और जब श्रीमती गैस्केल को शार्लोट के सभी साहित्यिक परिचितों में से इस कार्य के लिए सबसे उपयुक्त माना गया, तो उनके सबसे करीबी और प्रिय लोगों ने इसका कड़ा विरोध किया। एक स्वाभाविक भावना के साथ, जिस पर कोई दोषारोपण नहीं किया जा सकता, लेकिन जो उनके जीवन के परिवेश के चरित्र पर प्रकाश डालती है, उन्होंने अपने परिवार की इस दिवंगत सदस्य के वास्तविक चरित्र और जीवन के बारे में दुनिया को बताने का विरोध किया। सौभाग्य से, उनकी झिझक दूर हो गई, और दुनिया को ब्रोंटे परिवार की कहानी एक ऐसी महिला के शब्दों में पढ़ने का अवसर मिला जो स्वयं एक प्रतिभाशाली और उच्च नैतिक मूल्यों वाली महिला थीं। आशा है कि इस शोधपत्र के पाठक यह नहीं सोचेंगे कि लेखक ने श्रीमती गैस्केल के प्रतिद्वंद्वी के रूप में खुद को स्थापित करने का प्रयास किया है। वे अपने विषय के प्रस्तुतीकरण में श्रीमती गैस्केल के बराबर होने का दावा नहीं कर सकते, न ही विषय से जुड़ी नवीनता में। और यदि उन्हें कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर उनसे असहमत होना पड़ा है, तो यह ध्यान रखना चाहिए कि आज का लेखक उन कई कठिनाइयों और बाधाओं से मुक्त है जो बीस वर्ष पूर्व के लेखक पर थीं। श्रीमती गैस्केल को वास्तव में अपने कार्य में गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। न केवल उन्हें आवश्यक सभी सामग्री आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाई, बल्कि उन्हें एक रमणीय और सुंदर कहानी में कई अप्रासंगिक और यहां तक कि हानिकारक सामग्री भी शामिल करनी पड़ी। जब श्रीमती गैस्केल ने अपने द्वारा प्रस्तावित जीवन की संक्षिप्त रूपरेखा तैयार करने के बाद श्री ब्रोंटे से शिकायत की कि उनकी बेटी के इतिहास में इतनी घटनाएं नहीं हैं कि एक सामान्य लंबाई की रोचक कहानी लिखी जा सके, तो उनका उत्तर हमेशा की तरह विशिष्ट था: "यदि शार्लोट के जीवन में एक पुस्तक लिखने के लिए पर्याप्त तथ्य नहीं हैं, महोदया, तो आपको कुछ तथ्य गढ़ने होंगे।" यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि श्रीमती गैस्केल ने इस सलाह को मानने से इनकार कर दिया; फिर भी, उन्हें अपने पूरे लेखन कार्य के दौरान ऐसे विषयों को शामिल करने की बाध्यता से जूझना पड़ा जिनका उनके मुख्य विषय से कोई खास संबंध नहीं था; और इसका परिणाम इस तथ्य में देखा जा सकता है कि शार्लोट ब्रोंटे और उनकी बहनों की सीधी-सादी कहानी में ऐसे दुखद प्रसंग बुने गए हैं

जिनका वास्तव में इससे कोई लेना-देना नहीं था।

श्रीमती गैस्केल की जीवनी का प्रकाशन दुनिया के लिए एक रहस्योद्घाटन के रूप में सामने आया। दुनिया भर के पाठक "कुरर बेल" की रचनाओं की प्रशंसा करना सीख चुके थे और उनकी प्रतिभा के असामयिक अंत पर शोक व्यक्त कर रहे थे, लेकिन उनमें से कुछ ही लोगों ने कल्पना की थी कि "जेन आयर" की लेखिका का जीवन और व्यक्तिगत चरित्र इतना जटिल था।

चार्ल्स किंग्सले द्वारा श्रीमती गैस्केल को लिखे गए निम्नलिखित पत्र से "संस्मरण" के प्रकाशन से कई लोगों के मन में उत्पन्न हुई घृणा और आक्रोश का पर्याप्त संकेत मिलता है:

सेंट लियोनार्ड्स, 14 मई, 1857।

आइए, लंबे समय बाद आपसे फिर से जुड़ते हुए, मिस ब्रोंटे की जीवनी "जीवनी" के लिए आपकी प्रशंसा करें। आपने एक नाजुक और महान कार्य किया है, और आपने इसे बखूबी निभाया है। यकीन मानिए, यह पुस्तक बहुत सफल होगी। यह साहित्यकारों को इस बात पर और भी दृढ़ विश्वास दिलाएगी कि एक सरल, सदाचारी और व्यावहारिक गृहस्थी जीवन, उच्च कल्पनाशील प्रतिभा के साथ संगत है; और यह उस युग की रूढ़िवादिता को भी उजागर करेगी जो पूरी तरह से साफ-सुथरा तो नहीं है, लेकिन सावधानीपूर्वक सफेदी किया हुआ है, और यह मानने पर मजबूर करेगी कि पवित्रता अब (अब तक के सभी युगों की तरह) बुराई के ज्ञान के साथ पूरी तरह से मेल खाती है। मैं स्वीकार करता हूँ कि इस पुस्तक ने मुझे स्वयं पर शर्मिंदा कर दिया है। "जेन आयर" मैंने मुश्किल से ही पढ़ी थी, मैं बहुत कम ही उपन्यास पढ़ता हूँ - वास्तव में, आपकी और थैकरे की पुस्तकें ही ऐसी हैं जिन्हें मैं पढ़ना पसंद करता हूँ। "शर्ली" ने मुझे शुरुआत में ही घृणा उत्पन्न कर दी थी, और मैंने इस लेखिका और उनकी पुस्तकों को इस धारणा के साथ छोड़ दिया था कि वह एक ऐसी व्यक्ति थीं जिन्हें अशिष्टता पसंद थी। मैंने उन्हें कितना गलत समझा! और मैं कितना आभारी हूं कि मैंने अपनी गलतफहमियों का एक शब्द भी कभी लिखित रूप में नहीं दिया, या उस व्यक्ति के बारे में अपनी गलत धारणाओं को दर्ज नहीं किया जो मुझसे कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

आपने अपना काम बखूबी कर दिखाया है और हमें कष्टों से परिपूर्ण हुई एक वीर स्त्री का चित्र प्रस्तुत किया है। अब मैं उनके लिखे हर शब्द को ध्यानपूर्वक और

प्रेमपूर्वक पढ़ूँगी, विशेषकर उन कविताओं को, जो इस तरह अप्रकाशित नहीं रह जानी चाहिए थीं, और जो (फ्रेज़र पत्रिका की समीक्षा के अनुसार) असाधारण शक्ति और पवित्रता से परिपूर्ण प्रतीत होती हैं।

पृष्ठभूमि को जिस कुशलता से चित्रित किया गया था, उससे चित्र का प्रभाव और भी बढ़ गया; और जीवनी को ऐसी लोकप्रियता मिली जो हाल की किसी अन्य अंग्रेजी जीवनी को शायद ही मिली हो। फिर भी, शुरुआत से ही, कुछ लोग ऐसे भी मिले जिन्होंने श्रीमती गैस्केल द्वारा प्रदर्शित कौशल, सहानुभूति और पूर्ण ईमानदारी को स्वीकार करते हुए भी दबी आवाज़ में कहा कि कहानी में वर्णित शार्लोट ब्रोंटे, उन सभी मामलों में वह शार्लोट ब्रोंटे नहीं थी जिन्हें वे जानते थे।

हॉवर्थ चर्च का आंतरिक भाग।

श्रीमती गैस्केल की रचना के प्रकाशन के तुरंत बाद एक बड़ा बदलाव आया। हॉवर्थ और उसका पादरी निवास एक ऐसा पवित्र स्थान बन गया जहाँ दुनिया भर से सैकड़ों साहित्यिक तीर्थयात्री आने लगे। उस घर को देखना जहाँ तीनों बहनों ने अपना जीवन व्यतीत किया और अपना काम किया, उस वेदी पर खड़े होना जहाँ शार्लोट का विवाह हुआ था और जिसके नीचे अब उनकी अस्थियाँ विराजमान हैं, और उनके वृद्ध पिता का सारगर्भित, व्यावहारिक, लेकिन सैद्धांतिक उपदेश सुनना, हर साहित्यिक प्रेमी की आकांक्षा थी। वास्तव में, यॉर्कशायर में, वेस्ट राइडिंग के गंभीर स्वभाव वाले लोग इस

उत्साह से बहुत प्रभावित नहीं हुए। जिस प्रकार शार्लोट स्वयं अपने यॉर्कशायर के मित्रों के लिए एक साधारण और कुछ हद तक गुमनाम व्यक्तित्व थीं, उसी प्रकार हॉवर्थ को भी उसके आस-पास रहने वाले लोग एक बहुत ही नीरस और उबाऊ गाँव मानते थे। लेकिन प्रतिभा का साम्राज्य भौगोलिक सीमाओं से परे होता है, और भले ही शार्लोट ब्रोंटे के प्रभुत्व को उनके अपने घर में मान्यता नहीं मिली, लेकिन दुनिया के दूर-दराज के कोनों से उनकी शक्ति की खुली और पूर्ण स्वीकृति मिली। हालाँकि, संयुक्त राज्य अमेरिका के अलावा किसी अन्य देश ने ब्रोंटे के तीर्थस्थल पर इतने उत्सुक और उत्साही आगंतुकों को नहीं भेजा, और "जेन आयर" की लेखिका की मृत्यु के तुरंत बाद के दस वर्षों में हॉवर्थ पहुँचने वाले अमेरिकियों की संख्या, यदि ठीक से दर्ज की जाए, तो दुनिया को चकित कर देगी। दलदली भूमि के किनारे स्थित वह उजाड़ और एकांत घर, जिसका छोटा सा उदास बगीचा कब्रिस्तान तक फैला हुआ था, जहाँ कई पीढ़ियों के गाँव के मृत लोग आराम कर रहे थे, और बिच्छू-बूटी के किनारे से उठते पुराने टावर, बस्ती के गंदे घरों और उससे परे बंजर दलदली भूमि का उसका नीरस दृश्य, उन वर्षों के दौरान अटलांटिक के दूसरी ओर से लगभग उतने ही आगंतुकों को आकर्षित करता था जितने कि एबॉट्सफोर्ड या स्ट्रैटफ़ोर्ड-अपॉन-एवन। श्री ब्रोंटे और श्री निकोल्स, हालांकि इन जिज्ञासु लेकिन उत्साही मेहमानों के लगातार दखल से बचने के लिए उत्सुक थे, फिर भी उनसे मिलने से पूरी तरह बच नहीं सके। परिणामस्वरूप, कई अमेरिकी महिलाएं और पुरुष उन कमरों में गए जहां तीनों बहनें प्रेम और एकता के साथ रहती थीं, और जहां शार्लेट ने अपने जीवन के प्रकाश के चले जाने के बाद अकेले ही परिश्रम किया था, और कई अमेरिकी पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में इन यात्राओं के प्रभाव का विवरण प्रकाशित हुआ।

केवल एक ही मामले में उन अनुभवों को याद करना आवश्यक प्रतीत होता है। स्वर्गीय श्री रेमंड, जो कई वर्षों तक द न्यूयॉर्क टाइम्स के संपादक रहे, ने हॉवर्थ का दौरा किया और अपनी यात्रा का विवरण लिखा, जिसके कुछ अंश यहाँ उद्धृत किए जा सकते हैं। वे बताते हैं कि कैसे कीघली की रेल यात्रा के दौरान, जो उस समय हॉवर्थ के सबसे नज़दीकी रेलवे स्टेशन था, उन्होंने अपनी एकमात्र साथी, एक बुद्धिमान, मिलनसार और बेहद सुखद अंग्रेज़ महिला को, यॉर्कशायर आने के अपने उद्देश्य के बारे में बताकर आश्चर्यचकित कर दिया। वह महिला पास में ही रहती थी, उसने 'जेन आयर' उपन्यास पढ़े थे और 'लड़कियों को बुद्धिमान समझती थी;' लेकिन 'वह उनके

घर जाने के लिए दस कदम भी नहीं चली, और न ही वह समझ पाई कि अमेरिका से आए एक अजनबी को उनके मामलों में कोई दिलचस्पी क्यों होगी।' हॉवर्थ पहुँचकर, पादरी के घर की बनावट और आसपास के इलाके के माहौल से संतुष्ट होने के बाद, श्री रेमंड ब्लैक बुल इन में भोजन करने और सोने चले गए। "जब मैं अपने कमरे में जाने के लिए मोमबत्ती लेकर निकला, तो एक पल के लिए रसोई में चला गया, जहाँ मकान मालिक और मालकिन आराम से पाइप और बीयर पीते हुए बातें कर रहे थे। उनके साथ वहाँ का एक मिलनसार देहाती भी था, जो बाद में पता चला कि वह पुराने नौकर टैबी का भतीजा था, जो लंबे समय तक जीवित रहा और अंत में ब्रोंटे परिवार की सेवा में ही उसकी मृत्यु हो गई। मैं भी उनके साथ बैठ गया और आधी रात के बाद तक वहीं बैठा रहा। ब्रैनवेल स्पष्ट रूप से गाँव का पूजनीय नायक था। मकान मालिक ने बताया, वह एक छोटा सा लाल बालों वाला लड़का था, फुर्तीला, बुद्धिमान, कहानियों, चुटकुलों और हर तरह की सुखद बातों से भरपूर; वह कस्बे में सबका चहेता था और ब्लैक बुल मंडलों का विशेष आकर्षण था। छोटा होने के बावजूद, उसे डराना असंभव था। उन्होंने उसे एक चक्की दंगे के दौरान स्वेच्छा से अंदर जाकर एक दर्जन लोगों की पिटाई करते देखा था, जिनमें से कोई भी उसे एक मिनट में अपनी जेब में डालकर ले जा सकता था। वास्तव में, पूरे परिवार की एक विशेषता खतरे और डर के प्रति पूर्ण असंवेदनशीलता प्रतीत होती थी। एमिली और शार्लोट, ये लोग मुझे बताया गया कि एक दिन वे गली से गुजर रही थीं, तभी उनका बड़ा कुत्ता, कीपर, अपने ही आकार के दूसरे कुत्ते से लड़ने लगा। जबकि बाकी सब लोग दूर खड़े होकर चिल्ला रहे थे, ये लड़कियां अंदर गईं, कीपर को गर्दन से पकड़ लिया और उसे खींचकर और सिर पर पीटकर उसे वहां से ले जाने में सफल हो गईं। मैंने यह अंश इसलिए उद्धृत किया है क्योंकि यह उस व्यक्ति के हवाले से पुष्टि करता है जिसने शार्लोट ब्रोंटे की मृत्यु के तुरंत बाद पूछताछ की थी, और इन पृष्ठों में वर्णित परिवार की कुछ विशेषताओं के विवरण की पुष्टि करता है; और श्री रेमंड की श्री ब्रोंटे के साथ हुई मुलाकात की कहानी, जिसे अमेरिकी स्पष्टता के साथ बताया गया है, अपने आप में रोचक और महत्वपूर्ण है।

अगली सुबह मैंने पादरी के घर जाने की तैयारी की। मुझे बताया गया कि श्री ब्रोंटे और श्री निकोल्स अजनबियों से मिलना पसंद नहीं करते, क्योंकि वे उत्सुकतावश आने वाले लोगों से सख्त नफरत करते हैं और स्वभाव से बेहद एकांतप्रिय और

आरक्षित हैं। फिर भी मैंने अपना कार्ड भेज दिया और मुझे प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर स्थित छोटी सी लाइब्रेरी में ले जाया गया, जहाँ मुझे श्री निकोल्स के आने का इंतजार करने को कहा गया। कमरा छोटा था, बहुत ही सादे ढंग से सजा हुआ था, दीवारों के चारों ओर छोटी-छोटी किताबों की अलमारियाँ थीं, खिड़कियों के बीच वाली अलमारी में ब्रोंटे के उपन्यासों की प्रतियाँ रखी थीं। श्री निकोल्स थोड़ी देर में अंदर आए और मेरा स्वागत किया। मेरे दखल के लिए माफी मांगने पर उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि यद्यपि उन्हें कई लोगों से मिलने से मना करना पड़ता है, फिर भी वे और उनके पिता अपने मित्रों से मिलकर हमेशा प्रसन्न होते हैं, और मेरे कार्ड पर लिखा "न्यूयॉर्क" शब्द ही मेरे स्वागत के लिए काफी था। उन्होंने बताया कि जब मैं उनसे मिलने गया तो श्री ब्रोंटे उठे नहीं थे, लेकिन उन्होंने मुझे तब तक रोके रखने का अनुरोध किया था जब तक कि वे तैयार होकर नीचे न आ जाएं, जैसा कि वे थोड़ी देर बाद आए। मेरी उन दोनों से आधे घंटे तक बेहद सुखद बातचीत हुई... श्री ब्रोंटे का व्यक्तित्व आकर्षक और विशिष्ट है। वे लंबे, पतले और काफी हट्टे-कट्टे हैं, उनका व्यवहार फुर्तीला और ऊर्जावान है, उनका चेहरा विचारशील है और बिल्कुल भी अप्रिय नहीं है, और उनकी चाल-ढाल में दृढ़ता और चरित्र की दृढ़ता झलकती है। श्रीमती गैस्केल द्वारा उनके उग्र स्वभाव, उनकी पत्नी के रेशमी वस्त्रों को जलाने, जिन्हें वे पहनना पसंद नहीं करते थे, कुर्सियों और मेजों को आरी से काटने और अपने अत्यधिक क्रोध को शांत करने के लिए पिछवाड़े में पिस्तौल चलाने की बताई गई असाधारण कहानियाँ, उनके वर्तमान रूप में बिल्कुल भी सही नहीं बैठतीं और आमतौर पर इन्हें अतिशयोक्ति माना जाता है। मैंने उनसे कहा कि देश का नज़ारा और शहर का सामान्य स्वरूप देखकर मुझे सुखद निराशा हुई, क्योंकि वे श्रीमती गैस्केल के वर्णन से कहीं अधिक गंभीर और अरुचिकर थे। श्री निकोल्स और श्री ब्रोंटे एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए, और श्री ब्रोंटे ने कहा: "खैर, मुझे लगता है कि श्रीमती गैस्केल ने हम सबको जितना हो सके उतना बुरा दिखाने की कोशिश की।" श्री ब्रोंटे एक बहुत चौड़ा सफेद नेकक्लॉथ पहनते हैं, और आमतौर पर अपनी ठुड्डी को इस तरह झुका लेते हैं कि उनका मुंह मुश्किल से ही दिखाई देता है। इससे उनके चेहरे पर एक अनोखा भाव आ जाता है, जो चौड़े धातु के फ्रेम वाले बड़े गोल शीशों के चश्मे से और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। अस्सी वर्ष से अधिक आयु के और कुछ हद तक दुर्बल होने के बावजूद, वे हर रविवार को अपने चर्च में एक बार उपदेश देते हैं... जब मैं विदा लेने के लिए उठा, तो श्री निकोल्स ने

मुझे बैठक कक्ष में आकर शार्लोट का चित्र देखने के लिए कहा। यह वही चित्र है जिससे "जीवन" में उत्कीर्णन बनाया गया है; लेकिन बाद वाला चित्र के साथ न्याय नहीं करता, जिसे श्री निकोल्स ने मूल चित्र की सटीक प्रतिकृति बताया था। मैंने टिप्पणी की कि उत्कीर्णन से चेहरे, और विशेष रूप से आँखों में, एक अजीब, भयावह और अप्रिय भाव आ गया है जो चित्र में नहीं दिखता। उन्होंने कहा कि उन्होंने भी इसे देखा है, और इससे अधिक अन्यायपूर्ण कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि शार्लोट की आँखें जितनी कोमल और स्नेहपूर्ण हो सकती थीं, उतनी ही कोमल और स्नेहपूर्ण थीं।

एक अमेरिकी "साक्षात्कारकर्ता" की कलम से लिखे गए ये अंश भले ही मामूली लगें, लेकिन समकालीन दृश्यों और घटनाओं के अभिलेख के रूप में इनका अपना महत्व है, जिनकी स्मृति धीरे-धीरे मिटती जा रही है। फिर भी, आज भी हॉवर्थ में ऐसे वृद्ध पुरुष और महिलाएं मिल जाते हैं जो जिज्ञासु अजनबी को उस परिवार की कई यादें सुना सकते हैं, जो कमोबेश उनकी अपनी हैं, और जिसने इस स्थान को इतना गौरव प्रदान किया है।

श्री ब्रोंटे शार्लोट की मृत्यु के बाद छह वर्ष तक जीवित रहे। अपनी अत्यधिक आयु के बावजूद, वे अपनी मृत्यु से कुछ महीने पहले तक नियमित रूप से चर्च में उपदेश देते रहे; और जब अंततः वे बिस्तर पर पड़े, तब भी उन्होंने विश्व के मामलों में अपनी सक्रिय रुचि बनाए रखी। शार्लोट ने अपने बचपन के एक लेखन में जिन समाचार पत्रों का उल्लेख किया है, जिन्हें वे नियमित रूप से अपने संरक्षण में "प्राप्त" करते थे - द लीड्स मर्करी और द इंटेलिजेंसर - वे अब भी उनके लिए लाए जाते थे और उन्हें जोर से पढ़कर सुनाए जाते थे। वे राजनीतिक जानकारी के हर छोटे से छोटे अंश को एक अनमोल टुकड़े की तरह संजो कर रखते थे; और कोई भी आगंतुक जो उन्हें बता सकता था कि उनके आसपास के बड़े वेस्ट राइडिंग शहरों में सार्वजनिक जीवन की धाराएँ कैसे बह रही हैं, उसका वे निश्चित रूप से स्वागत करते थे। लेकिन उनके बाद के वर्षों का मुख्य आनंद उनकी बेटी की स्मृति के प्रति दिखाए गए सार्वजनिक सम्मान से जुड़ा था। श्रीमती गैस्केल की कृति के प्रकाशन के बाद प्रेस द्वारा उनकी खूबियों और प्रतिभा की जो प्रशंसा की गई, उसे उन्होंने अपने जीवन के अंतिम क्षण तक महत्व दिया; और अंत में वह उस बच्ची के चरित्र और आंतरिक जीवन के बारे में कुछ हद तक समझ पाया, जो इतने लंबे समय तक अपने पिता के घर में एक अजनबी की तरह रही थी।

शार्लोट ब्रोंटे के पिता के विषय को समाप्त करने से पहले मुझे एक बात अवश्य कहनी चाहिए। उनके जीवन के अंतिम वर्षों में उन्हें जानने वाले कुछ लोगों ने, जिनमें से एक व्यक्ति इस विषय पर अपनी राय देने का सर्वथा हकदार है, इन पृष्ठों में उनके चित्रण पर आपत्ति जताई है, उनका कहना है कि यह अतिरंजित है। जहाँ तक उनके प्रारंभिक जीवन और युवावस्था का संबंध है, मैं इस आपत्ति को स्वीकार नहीं कर सकता; क्योंकि इन पृष्ठों में श्री ब्रोंटे के बारे में जो कुछ भी बताया गया है, वह सर्वोत्तम स्रोतों से एकत्रित किया गया है - उनके बच्चों के पत्रों और उन लोगों की स्मृतियों से जिन्होंने उस दौरान उन्हें अक्सर देखा था। लेकिन यह बिल्कुल सच है कि वृद्धावस्था में, विवाह के बाद, और विशेष रूप से शार्लोट की मृत्यु के बाद, उनका स्वभाव आश्चर्यजनक रूप से नरम हो गया था। अपनी बेटी और श्री निकोल्स की सगाई के प्रति उनका उग्र विरोध उस तीव्र जुनून का लगभग अंतिम निशान था जिसने उन्हें उनके प्रारंभिक वर्षों में जकड़ रखा था; और वे आगंतुक, जो श्री रेमंड की तरह, उनके जीवन के अंतिम दिनों में उनसे पहली बार परिचित हुए, उनके युवावस्था और मध्य आयु के दौरान उनके स्वभाव के बारे में बताई गई कहानियों पर विश्वास करना मुश्किल पाते थे। समय ने अंततः अपना प्रभाव दिखाया, यहाँ तक कि उनके कठोर स्वभाव पर भी, कठोरता को नरम करते हुए, और उस तीखेपन को मिटाते हुए, जिसकी विलक्षणताएँ लंबे समय से स्पष्ट थीं। श्री ब्रोंटे के जीवन के अंतिम दृश्यों का उल्लेख श्री निकोल्स द्वारा हॉवर्थ में उन अंतिम दुखद वर्षों के दौरान निभाई गई भूमिका के संदर्भ के बिना नहीं किया जा सकता। वफादार पति एक वफादार बेटे के रूप में पादरी के घर की छत के नीचे रहे। दो पुरुष, जो इतने कोमल और पवित्र बंधन से बंधे थे, अब जब जीवित और प्रत्यक्ष संबंध समाप्त हो गया था, तो उन्हें आसानी से अलग नहीं किया जा सकता था। कुछ लोगों को यह अजीब लग सकता है कि शार्लोट ब्रोंटे ने अपना दिल ऐसे व्यक्ति को दे दिया, जो उनकी प्रतिभा से प्रेरित प्रबल जुनून के प्रति सहानुभूति रखने को तैयार नहीं था। लेकिन अगर अपने पति में उन्हें ऐसा व्यक्ति मिला जो उनके साहित्यिक कार्यों में उनकी मदद करने की संभावना नहीं रखता था, तो उनमें उन्हें एक ऐसा मित्र भी मिला जिसकी निष्ठा मृत्यु तक कायम रही। इन सभी दुख भरे और एकाकी वर्षों के दौरान, जब ब्रोंटे बहनों के पिता उस बुलावे की प्रतीक्षा कर रहे थे जो उन्हें एक बार फिर उनके साथ बुलाएगा, शार्लोट के पति उनके साथ रहे, उनके दुख और थकान के क्षणों में धैर्यपूर्वक उनके साथी बने, उस जीवित विरासत के

वफादार संरक्षक बने जो उन्हें उनकी प्रिय महिला ने सौंपी थी। और इस आत्म-त्यागी जीवन से उन्होंने शार्लोट ब्रोंटे की स्मृति को उनकी बौद्धिक महानता की सबसे कोमल और जीवंत प्रशंसा से भी कहीं अधिक सम्मान दिया।

ब्रोंटे की कहानी के अंतिम अध्याय और उससे पहले के अध्यायों के बीच एक विचित्र उदासी भरी सामंजस्यता है। पादरी के घर से वह चमक हमेशा के लिए गायब हो गई थी; वह उल्लास जो कभी वहाँ देखा जाता था, अब लुप्त हो गया था; यहाँ तक कि अंग्रेजी साहित्य में एक जीवंत हस्ती के घर के रूप में उसकी ख्याति भी मिट गई थी; लेकिन फिर भी एक ऐसा व्यक्ति बचा था जो अपने व्यक्तित्व में उस कर्तव्यनिष्ठा की महानता का साक्षी था, जिसकी आवश्यकता के प्रति शार्लोट पूरी तरह आश्वस्त थीं। श्री निकोल्स की वह मित्रता, जिससे उन्होंने श्री ब्रोंटे के अंतिम दिनों को सुकून दिया, हॉवर्थ की कहानी का एक मार्मिक प्रसंग है, और इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता।

जब श्री ब्रोंटे का निधन हुआ, तो न केवल उन लोगों में, जो उनके परिवार से जुड़े सभी लोगों के हॉवर्थ पर दावे से प्रभावित थे, बल्कि स्वयं पैरिशवासियों में भी यह आम इच्छा थी कि उनके दामाद को उनका उत्तराधिकारी बनाया जाए, और इस प्रकार ब्रोंटे परिवार का उस स्थान से संबंध पूरी तरह से टूट न जाए जहाँ उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया और अपना काम पूरा किया। लेकिन चर्च का संरक्षण प्रदान करना हमेशा इस प्रकार के विचारों से प्रभावित नहीं होता है। हॉवर्थ के पादरी का पद एक अजनबी को दिया गया; श्री निकोल्स आयरलैंड लौट गए; और नए चेहरे और एक नया जीवन उस पादरी निवास में भर गया जहाँ "जेन आयर" और "वुथरिंग हाइट्स" लिखी गई थीं।

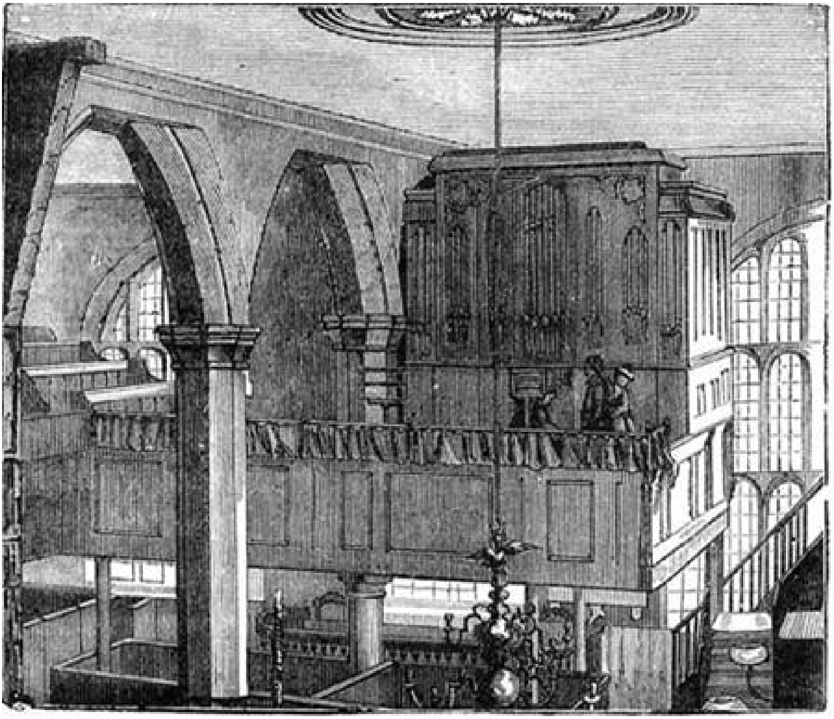

ब्रोंटे की पट्टिका और बेंच के ऊपर स्थित ऑर्गन लॉफ्ट।

XIII.

ब्रोंटे के उपन्यास।

शार्लोट की मृत्यु के बाद भी ब्रोंटे के उपन्यासों की बिक्री काफी हद तक जारी रही।

श्रीमती गैस्केल द्वारा लिखित "जीवनी" के प्रकाशन से बिक्री में और भी वृद्धि हुई और तीनों बहनों की प्रसिद्धि देश-विदेश में बहुत बढ़ गई। लेकिन हाल के वर्षों में इन पुस्तकों को लगभग नजरअंदाज करने का चलन रहा है; और यद्यपि हाल ही में इनके नए संस्करण प्रकाशित हुए हैं, फिर भी इनकी बिक्री 1850 से 1860 के बीच की बिक्री के बराबर नहीं रही है। फिर भी, इन उल्लेखनीय रचनाओं में पहले जैसी रुचि न होने के बावजूद, ये समय-समय पर इस देश और अन्य देशों के साहित्यिक आलोचकों का ध्यान आकर्षित करती रहती हैं, और स्वाभाविक रूप से बहनों की रचनाओं की समीक्षा में "कुरर बेल" की रचनाएँ सबसे आगे हैं।

एमिली ब्रोंटे की इकलौती गद्य रचना "वुथरिंग हाइट्स" अब लगभग अनपढ़ है। यहाँ तक कि जो लोग परिवार की प्रतिभा के प्रशंसक हैं, जो "जेन आयर" या "विलेट" में प्रदर्शित गुणों के बारे में उच्च राय रखते हैं, वे भी "उस भयानक किताब" से सिहर उठते हैं, जैसा कि ब्रोंटे परिवार को करीब से जानने वाला एक व्यक्ति हमेशा इसे कहता है। लेकिन मैं अपने पाठकों का ध्यान इस कहानी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, क्योंकि यह अपने आप में "जेन आयर" की तरह ही अद्भुत कृति है। यह सच है कि एक उपन्यास के रूप में यह घृणित और लगभग भयावह है। जैसे-जैसे कोई हीथक्लिफ के अपराधों के भयानक वृत्तांतों के अध्याय दर अध्याय पढ़ता है, इसकी तुलना में केवल एक ही साहित्यिक कृति याद आती है, वह है "टाइटस एंड्रोनिकस" की खूनी त्रासदी। पहले पृष्ठ से लेकर अंतिम पृष्ठ तक, पुस्तक में शायद ही कोई ऐसा अंश है जो इसे कुछ हद तक सार्थक बनाए। वातावरण शुरू से अंत तक भयावह और तूफानी है, जो कभी-कभार जुनून और पागलपन की ज्वाला से रोशन होता है। स्वयं नायक ही काल्पनिक कथाओं का सबसे बड़ा खलनायक है; और कहानी में शायद ही कोई ऐसा पात्र हो जो किसी न किसी रूप में मानसिक या नैतिक विकृति का शिकार न हो। कोई यह दावा नहीं कर सकता कि ऐसी कहानी कभी लिखी जानी चाहिए थी; इसे पढ़े बिना कोई यह महसूस नहीं कर सकता कि इसकी लेखिका का मन विकृत, बल्कि कहें तो विक्षिप्त रहा होगा। हालाँकि, एमिली ब्रोंटे द्वारा "वुथरिंग हाइट्स" लिखने के आचरण के बचाव में बहुत कुछ कहा जा सकता है। जब यह कहानी लिखी गई थी तब वह अट्ठाईस वर्ष की थीं, और पाठक को उनके जीवन की परिस्थितियों और उन प्रेरणाओं का कुछ अंश देखने को मिलता है जिन्होंने उन्हें कलम उठाने के लिए प्रेरित किया। बाहरी दुनिया के अनुसार, उनका जीवन असाधारण रूप से बंजर

और अनुत्पादक रहा था। इसका एकमात्र महत्वपूर्ण प्रसंग ब्रुसेल्स की संक्षिप्त यात्रा थी। लेकिन ब्रुसेल्स ने एमिली पर वैसा प्रभाव नहीं डाला जैसा शार्लोट पर डाला था। वह हॉवर्थ बिल्कुल अपरिवर्तित लौट आईं; दलदली भूमि के प्रति उनका प्रेम पहले से कहीं अधिक प्रबल था; अजनबियों के बीच रहने के दौरान झेले गए हमलों ने उसके आत्मसंयम को और भी मजबूत कर दिया; उसका पूरा स्वभाव अब भी घर के एकांत जीवन और उन जानवरों की संगति से मिलने वाले सुकून के लिए तड़प रहा था जिनसे वह प्यार करती थी और उन नौकरों से जिन्हें वह समझती थी। जब उसने, कुछ हद तक कलम से पैसा कमाने की निराशाजनक उम्मीद में, और उससे भी अधिक अपने दबे हुए भावों को कुछ राहत देने के लिए, "वुथरिंग हाइट्स" लिखना शुरू किया, तब उसे दुनिया का कोई ज्ञान नहीं था। शार्लेट कहती हैं, "मैं यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हूँ कि जिन किसानों के बीच वह रहती थी, उनके बारे में उसे उतना ही व्यावहारिक ज्ञान था जितना किसी नन को उन ग्रामीण लोगों के बारे में होता है जो कभी-कभी उसके मठ के द्वार से गुजरते हैं।" प्रकृति और अपने निकटतम रिश्तेदारों के प्रति प्रेम को छोड़कर, प्रेम उसके लिए पूरी तरह से अनजाना भाव था - जैसा कि "वुथरिंग हाइट्स" में इसके चित्रण का अध्ययन करने वाला कोई भी व्यक्ति आसानी से समझ सकता है। क्रूर और निर्मम, या जानबूझकर किए गए अपराध के बारे में उसे कोई व्यक्तिगत जानकारी नहीं थी। यह सच है कि उनके सामने स्वार्थपरक भोग-विलास के दुष्परिणामों का एक दुखद उदाहरण था, और उसी से उन्होंने अपनी कहानी के कुछ अंशों के लिए सामग्री ली। लेकिन मानव स्वभाव की उन महान गतिविधियों के बारे में, जिन्हें किताबों से नहीं सीखा जा सकता, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव से ही प्राप्त किया जा सकता है, वे पूरी तरह अनभिज्ञ थीं। हालांकि उस समय शार्लोट स्वयं संसार और पुरुषों-महिलाओं के बारे में बहुत कम जानती थीं, फिर भी एमिली की तुलना में वे जीवन के रहस्यों की पारखी थीं।

जब कोई महिला "एलिस बेल" जैसा जीवन जी चुकी हो, तो उसकी पहली साहित्यिक रचना को एक भोले-भाले और अनुभवहीन बच्चे का प्रयास ही माना जाना चाहिए। इसमें कई खामियां हो सकती हैं; कलाकृति के लिए आवश्यक सभी नियम-कानूनों की अनदेखी की गई हो सकती है; कहानी, लहजा और प्रस्तुति के लिहाज से यह पुस्तक पूरी तरह से त्रुटिपूर्ण हो सकती है; लेकिन फिर भी यह हमें लेखिका के वास्तविक चरित्र की कहीं अधिक गहरी समझ प्रदान करेगी, बजाय किसी अधिक

विस्तृत और सफल रचना के, जिसे अनुभव से सीखकर जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए रचा गया हो।

"वुथरिंग हाइट्स" एक ऐसी लेखिका की रचना है जो उम्र को छोड़कर हर मायने में एक बच्ची ही थी, और इसकी बड़ी और स्पष्ट कमियों को उसी तरह माफ किया जा सकता है जैसे बचपन की गलतियों को माफ किया जाता है। लेकिन इस बाल कलाकार की रचना में बौद्धिक प्रतिभा कितनी विशाल थी! लेखिका पाठक से पहली ही मुलाकात में उसे अपने वश में कर लेती है, उसे रोमांचित, मंत्रमुग्ध, शायद भयभीत भी कर देती है, एक ऐसी पकड़ में जो कभी ढीली नहीं पड़ती, और अंत में, कहानी पढ़ने के बाद, उसे किसी बड़े मानसिक प्रयास से व्याकुल और थका हुआ छोड़ देती है। आधुनिक अंग्रेजी साहित्य में "वुथरिंग हाइट्स" से अधिक असाधारण स्तर पर "रचनात्मक प्रतिभा" का कोई और प्रभावशाली प्रमाण नहीं मिल सकता। अपनी बुद्धि के किन अथाह कोनों से इस शर्मीली, घबराई हुई, अप्रशिक्षित लड़की ने ऐसे पात्रों की रचना की जो उसकी कहानी में सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं? श्रीमती डीन, वफादार गृहिणी, को हम समझ सकते हैं; क्योंकि उनकी आदर्श एमिली के साथ हॉवर्थ की रसोई में काम करने वाली थीं। जोसेफ, एक विचित्र हाई कैल्विनिस्ट, जिसकी अपने पंथ के प्रति निष्ठा उसके आसपास के मनुष्यों के प्रति जरा सी भी सहानुभूति से कम नहीं होती, जीवन से प्रेरित एक पात्र था; और यद्यपि उसका चित्रण जीवंत और प्रभावशाली है, फिर भी इसे समझा जा सकता है। लेकिन हीथक्लिफ, दो कैथरीन और हैरेटन अर्नशॉ—इनमें से कोई भी एमिली ब्रोंटे के दायरे में नहीं आया। उनके मित्रों के समूह में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो मौलिकता या चरित्र की दृढ़ता में उनके करीब हो। कहीं-कहीं किसी मनोवैज्ञानिक ने, जो विकृत मानवीय स्वभाव के रहस्यों में पारंगत था, ऐसे पात्रों के अस्तित्व की कल्पना की होगी—वर्षों के गहन अध्ययन से प्रबुद्ध आंतरिक चेतना से उन्हें गढ़ा होगा। लेकिन एमिली ब्रोंटे की कलम को इन विचित्र और अद्भुत चित्रों को चित्रित करने में ऐसी कोई धीमी और कष्टदायक प्रक्रिया निर्देशित नहीं करती थी। ये चित्र उस सारी जीवंतता और ताजगी, उस सजीव वास्तविकता और प्रभाव के साथ सामने आते हैं, जो केवल प्रतिभा की सहज रचनाओं में ही हो सकती है। वे वास्तव में नकल नहीं हैं, बल्कि सजीव मूल कृतियाँ हैं, जिनका जीवन उनकी स्वयं की मेहनत और पीड़ा का परिणाम है।

इस दृष्टि से देखा जाए तो, मुझे लगता है कि उन्हें साहित्य की सबसे विचित्र

रचनाओं में गिना जाना चाहिए। उनकी घृणास्पद प्रकृति ही उनके प्रभाव को बढ़ाती है। मैंने कहा है कि हीथक्लिफ काल्पनिक कथाओं का सबसे बड़ा खलनायक है। कहानी का पाठक उसकी पत्नी की उस पीड़ादायक पुकार को दोहराना चाहता है जब वह पूछती है: "क्या श्री हीथक्लिफ एक इंसान हैं? यदि हाँ, तो क्या वे पागल हैं? और यदि नहीं, तो क्या वे शैतान हैं?" उपन्यास में ऐसे चरित्र को देखना सुखद नहीं है; लेकिन मैं दोहराता हूँ, हीथक्लिफ जैसे पूर्ण खलनायक का चित्रण करना किसी भी सामान्य मानवीय चरित्र का चित्रण करने से कहीं अधिक कठिन है। इस कार्य को करने के लिए आवश्यक शक्ति का एकाग्रत्व अत्यंत अधिक है। हर क्षण लेखक को अंधेरे से हटकर प्रकाश का स्पर्श देने का प्रलोभन होता है; और यदि कलाकार इस प्रलोभन के आगे झुक जाता है तो उसे चित्र के पूरे प्रभाव को नष्ट करने का जोखिम उठाना पड़ता है। प्रकाश और छाया का होना आवश्यक है, अन्यथा चित्र मात्र अंधकार का धब्बा बन जाता है; और लेखक ने जिस व्यक्ति को चित्रित करने का प्रयास किया है, वह एक राक्षस के रूप में सामने आता है, जिसे हमारे ही मानव जाति का प्राणी मानना असंभव है। लेकिन जब तक इन सूक्ष्म पहलुओं को उस कुशलता और आत्म-नियंत्रण के साथ प्रस्तुत नहीं किया जाता जो कला से अधिक प्रतिभा की विशेषता है, तब तक, जैसा कि मैंने कहा है, पूर्ण विफलता निश्चित है। अब, एमिली ब्रोंटे हीथक्लिफ के अपने चित्रण में असफल नहीं हुई हैं। वह वास्तव में, अंग्रेजी साहित्य की भव्य इमारत के एक कक्ष के रूप में निर्मित उस विशाल मानव चित्र-दीर्घा में बिल्कुल अद्वितीय है। हम उसकी तुलना किसी अन्य काल्पनिक प्राणी से नहीं कर सकते। हम उसकी साहित्यिक वंशावली का पता भी नहीं लगा सकते। वह एक विशिष्ट प्राणी है, जितना मौलिक है उतना ही घृणित भी। लेकिन यह परिस्थिति इस तथ्य को नहीं बदलती कि हम उसे एक वास्तविक प्राणी के रूप में स्वीकार करते हैं, न कि केवल एक विकृत राक्षस के रूप में। वह उतना ही अकेला है जितना फ्रेंकस्टीन का प्राणी था; लेकिन हम उसके भीतर उन सूक्ष्म तत्वों के संयोजन को पहचानते हैं जो उसे मानव जाति के साथ संबंध प्रदान करते हैं। इस प्रकार, एमिली ब्रोंटे सफल रही हैं; और भले ही वह लिखते समय एक युवती थी, उसने उस मुकाम को हासिल कर लिया है जहाँ कुछ सबसे अनुभवी लेखक पूरी तरह से असफल रहे हैं। उदाहरण के लिए, "वुथरिंग हाइट्स" की तुलना लॉर्ड लिटन की "स्ट्रेंज स्टोरी" के भयानक दृश्यों से करें, और आप तुरंत समझ जाएंगे कि एक महिला का स्पर्श कितना अधिक शक्तिशाली

और निपुण है। लॉर्ड लिटन का खलनायक, हालांकि उसे इतनी सावधानी और कुशलता से चित्रित किया गया है, अक्सर बेतुका और अंततः पूरी तरह से उबाऊ होता है। एमिली ब्रोंटे का खलनायक शुरू से अंत तक सुसंगत, भयानक और आकर्षक है। फिर, लेखिका कभी भी अपने पाठक को किसी भूत-प्रेत से डराने की कोशिश नहीं करती। वह कभी भी पर्दे के पीछे अलौकिक शक्तियों के काम करने की संभावना का संकेत नहीं देती। यहां तक कि जब वह हमें यह दिखा रही होती है कि हीथक्लिफ हमेशा मृत कैथरीन से प्रेतवाधित रहता है, तब भी वह अपने शब्दों से यह स्पष्ट कर देती है कि इस विषय पर उसका विश्वास एक अव्यवस्थित मस्तिष्क का भ्रम मात्र है, जो दोषी अंतरात्मा से ग्रस्त है। "मुझे पता था कि वहां कोई भी जीवित प्राणी मौजूद नहीं था," हीथक्लिफ ने बताया कि कैथरीन को दफनाए जाने के बाद वाली रात को उन्होंने उसकी कब्र कैसे खोदी थी; "लेकिन जिस निश्चितता से आप अंधेरे में किसी ठोस शरीर के आने का आभास करते हैं, उसी निश्चितता से मैंने महसूस किया कि कैथी वहाँ थी: मेरे नीचे नहीं, बल्कि धरती पर। राहत की एक अचानक अनुभूति मेरे हृदय से मेरे हर अंग में फैल गई। मैंने अपनी पीड़ा का श्रम त्याग दिया और तुरंत ही सांत्वना पाकर लेट गया—अकथनीय सांत्वना। उसकी उपस्थिति मेरे साथ थी; वह तब भी मेरे साथ रही जब मैंने कब्र को भरा और मुझे घर ले गई। आप चाहें तो हंस सकते हैं; लेकिन मुझे यकीन था कि मैं उसे वहाँ देखूंगा। मुझे यकीन था कि वह मेरे साथ थी, और मैं उससे बात किए बिना नहीं रह सका। हाइट्स पहुँचकर मैं उत्सुकता से दरवाजे की ओर भागा। वह बंद था; और मुझे याद है कि उस लानत अर्नशॉ और मेरी पत्नी ने मेरे प्रवेश का विरोध किया। मुझे याद है कि मैंने उसे लात मारकर उसकी सांस रोक दी, और फिर जल्दी से ऊपर अपने और उसके कमरे में चला गया। मैंने बेचैनी से चारों ओर देखा—मैंने उसे अपने पास महसूस किया—मैं उसे लगभग देख सकता था, और फिर भी नहीं देख पा रहा था! उस समय तो मुझे अपनी तड़प की पीड़ा से—अपनी प्रार्थनाओं की तीव्रता से—खून के पसीने बहाने चाहिए थे।" बस एक झलक पाने के लिए! मुझे एक भी झलक नहीं मिली। उसने खुद को, जैसा कि वह अक्सर जीवन में होती थी, मेरे लिए एक शैतान के रूप में दिखाया। और तब से, कभी ज़्यादा तो कभी कम, मैं उस असहनीय यातना का शिकार रहा हूँ... जब मैं हरेटन के साथ घर में बैठा होता था, तो ऐसा लगता था कि बाहर जाते ही मैं उससे मिलूँगा; जब मैं मैदानों पर चलता था तो मुझे लगता था कि मैं उसे आते हुए देखूँगा। जब मैं घर से निकलता था

तो जल्दी वापस लौट आता था। मुझे यकीन था कि वह कहीं हाइट्स पर ही होगी! और जब मैं उसके कमरे में सोता था - मुझे वहाँ से भी बेदखल कर दिया गया। मैं वहाँ लेट नहीं सकता था; क्योंकि जैसे ही मैं अपनी आँखें बंद करता, वह या तो खिड़की के बाहर होती, या खिड़कियों के पैनल हटा रही होती, या कमरे में प्रवेश कर रही होती, या यहाँ तक कि अपना प्यारा सा सिर उसी तकिए पर रख रही होती जिस पर वह बचपन में रखती थी; और मुझे देखने के लिए अपनी पलकें खोलनी पड़ती थीं। और इसलिए मैं रात में सौ बार अपनी आँखें खोलता और बंद करता था - और हर बार निराश ही होता था! यहाँ एक ऐसे व्यक्ति का चित्र है जो सचमुच प्रेतवाधित है। किसी अलौकिक शक्ति का आह्वान नहीं किया गया है; पाठक की विश्वसनीयता पर कोई दबाव नहीं डाला गया है। हमें प्रकृति के किसी भी नियम के निलंबन में विश्वास करने के लिए नहीं कहा जाता है। एक शब्द में कहें तो, हम सभी समझ सकते हैं कि कैसे एक दुष्ट व्यक्ति, जिसका मस्तिष्क मानो उसकी अपनी दुष्टता के धुएं से मदहोश हो गया हो, अपने पूरे जीवन में इस प्रकार के भय से पीड़ित हो सकता है; और केवल इसलिए कि हम इसे समझ सकते हैं, हीथक्लिफ को उसकी मृत प्रेमिका के भूत का प्रेतवाधित होना, श्रीमती रेडक्लिफ द्वारा अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले नाटकीय दृश्यों या लॉर्ड लिटन द्वारा अपनी प्रसिद्ध भूत कथा में प्रयुक्त परिष्कृत और सूक्ष्म अलौकिक घटनाओं की तुलना में कहीं अधिक भयानक है।

अंग्रेजी भाषा की सबसे विचित्र कहानी की लेखिका की यह कठोर ईमानदारी, जिसने उन्हें पाठक के मन में भय उत्पन्न करने के सबसे आसान तरीके का सहारा लेने से रोक दिया, पूरे उपन्यास में झलकती है। रचना शुरू से अंत तक उत्कृष्ट है, हालांकि कला थोड़ी अटपटी और भद्दी है। वह कभी भी कोई तारीख अपनी स्मृति से नहीं भूलतीं, और न ही उनमें वे अधूरी कड़ियाँ हैं जो आमतौर पर अनुभवहीन लेखकों की रचनाओं में पाई जाती हैं। सब कुछ बड़े करीने से, स्पष्ट रूप से और सावधानीपूर्वक पूरा किया गया है। हर तारीख और हर घटना अपने स्थान पर सटीक बैठती है। पाठक को कभी भी किसी अनसुलझे रास्ते पर भटकने नहीं दिया जाता। हालांकि शुरुआत में वह खुद को एक उलझन भरे भूलभुलैया में पाता है, जो साहित्यिक कला के नियमों के अनुरूप नहीं है, उसे बस सीधे आगे बढ़ना है, और अंत में उसे सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। एमिली किसी भी तथ्य को, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, अपनी पकड़ से ओझल नहीं होने देतीं। भले ही पाठक को यह कहानी अभी अप्रासंगिक लगे,

लेकिन धैर्यपूर्वक रचना कर रहे लेखकों की रचना में इसके लिए जगह बनाई गई है और अंत में यह उसी स्थान पर स्थापित हो जाएगी। इसलिए कहानी में कोई भी काम अधूरा नहीं छोड़ा गया है; न ही उन व्यापक प्रभावों को प्राप्त करने के लिए विवरणों की अनदेखी की गई है, जिनसे कहानी भरपूर है।

पाठक जब "वुथरिंग हाइट्स" खोलेंगे, तो उन्हें इसके पन्नों में अप्रत्याशित स्थानों पर लेखक के चरित्र के कई सरल और निर्दोष रहस्य उजागर होते नज़र आएंगे। हम जानते हैं कि कहानी कैसे लिखी गई थी, और शार्लोट और ऐनी द्वारा इसे दिन-प्रतिदिन कैसे संशोधित किया जाता था। इन परिस्थितियों में हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि एमिली ने अपने लेखन में अपने सच्चे आंतरिक स्वभाव को बहुत अधिक प्रकट नहीं होने दिया। यहाँ तक कि अपनी बहनों से भी वह अपने दिल की कुछ सबसे प्रबल और गहरी भावनाओं को छुपाती थीं। लेकिन निम्नलिखित जैसे अंश, जब उनके इतिहास के संदर्भ में पढ़े जाते हैं, जैसा कि हम अब जानते हैं, तो एक विचित्र और स्थायी रुचि के लगते हैं:

उन्होंने कहा कि जुलाई की गर्मी में दिन बिताने का सबसे सुखद तरीका था सुबह से शाम तक दलदली भूमि के बीचोंबीच किसी झाड़ी पर लेटना, जहाँ मधुमक्खियाँ फूलों के बीच मधुर गुनगुनाती हों, लार्क पक्षी सिर के ऊपर ऊँची उड़ान भरते हों, और नीला आकाश और चमकीला सूरज लगातार बिना बादलों के चमकता रहे। यही उनके लिए स्वर्ग की खुशी की सबसे उत्तम कल्पना थी। मेरी कल्पना थी किसी सरसराते हरे पेड़ पर झूलना, पश्चिम से आती हवा का आनंद लेना, ऊपर तेज़ी से तैरते चमकीले सफेद बादल; और न केवल लार्क पक्षी, बल्कि थ्रॉस्टल, ब्लैकबर्ड, लिनेट और कोयल चारों ओर मधुर संगीत बिखेर रहे हों, और दूर से दलदली भूमि ठंडी, धुंधली घाटियों में बंटी हुई दिखाई दे; लेकिन पास ही लंबी घास के बड़े-बड़े टीले हवा में लहरों की तरह लहरा रहे हों; और जंगल, बहता पानी, और पूरी दुनिया जागृत और आनंद से सराबोर हो। वे चाहते थे कि सब शांति के परमानंद में डूबे रहें। मैं चाहती थी कि सब एक शानदार उत्सव में जगमगाते और नाचते रहें। मैंने कहा कि उनका स्वर्ग आधा ही जीवंत होगा; और उन्होंने कहा कि मेरा स्वर्ग मदहोश होगा। मैंने कहा कि मैं उसकी गोद में सो जाऊंगी; और उसने कहा कि वह मेरी गोद में सांस नहीं ले सकता।

“वह” के स्थान पर “ऐनी” पढ़ें, और मान लें कि एमिली स्वयं बोल रही है, और इस अंश में हमें दोनों बहनों की विपरीत रुचियों का एक जीवंत वर्णन मिलता है।

शार्लोट को अपने आसपास प्रचलित उच्च कैल्विनवाद से जो घृणा थी, वह एमिली में और भी प्रबल थी। उनकी कविताएँ उनके चरित्र के इस पहलू पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं; लेकिन हमें उनके एकमात्र उपन्यास से भी कुछ जानकारी मिलती है। बूढ़ा नौकर जोसेफ, जीवन का एक जीवंत चित्रण था, और वह उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता था जिसे लेखिका पूरी तरह से नापसंद करती थीं, लेकिन साथ ही साथ उसके प्रति एक निश्चित सम्मान भी रखती थीं। बार-बार वह अपने पूरे व्यंग्य के साथ "सबसे थकाऊ, आत्म-धर्मी फरीसी" पर प्रहार करती हैं, जो बाइबल को खंगालकर प्रतिज्ञाओं को अपने लिए चुनता है और शापों को अपने पड़ोसियों पर फेंकता है। फिर भी कहानी में जोसेफ से अधिक प्रेम से भरा कोई पात्र नहीं है, और केवल उसका चित्रण करते समय ही वह अपने उस हास्य को प्रकट होने देती हैं, जो उनकी बहनों के अनुसार, हमेशा उनके चरित्र की सतह के बहुत करीब छिपा रहता था, और किसी अजनबी के न होने पर प्रकट होने के लिए हमेशा तैयार रहता था। "वुथरिंग हाइट्स" पढ़ने वाले कुछ ही लोग जोसेफ की उस विचित्र टिप्पणी को भूल पाए होंगे जब लड़का हीथक्लिफ गायब हो गया था और बाकी लोग उसके भाग्य के बारे में अटकलें लगा रहे थे।

नहीं, नहीं, वह गिम्मर्टन में कहीं नहीं है। मुझे आश्चर्य होगा अगर वह किसी दलदल में दबा हुआ हो। यह मुलाकात व्यर्थ नहीं गई, और मैं आपसे कहना चाहूंगी, महोदया। अगली बारी आपकी ही होगी। ईश्वर का धन्यवाद! सभी का कर्म उनके भले के लिए होता है जिन्हें चुना जाता है और कूड़े-कचरे से निकाला जाता है। आप जानते हैं कि पवित्र शास्त्र क्या कहता है।

कहानी में एक ऐसा अंश है जो एमिली की अपनी मृत्यु का इतना विचित्र पूर्वाभास देता है कि यह विश्वास करना कठिन है कि उन अंतिम क्षणों में जब उसने इतने दृढ़ संकल्प के साथ भयंकर शत्रु का सामना किया, तो उसके मन में यह बात नहीं रही होगी। वह श्रीमती अर्नशॉ की मृत्यु के बारे में लिख रही है।

बेचारी! अपनी मृत्यु से एक सप्ताह पहले तक उसका हंसमुख हृदय कभी कमजोर नहीं हुआ; और उसका पति दृढ़तापूर्वक, बल्कि उग्रता से, यह दावा करता रहा कि उसका स्वास्थ्य प्रतिदिन सुधर रहा है। जब केनेथ ने उसे चेतावनी दी कि बीमारी की इस अवस्था में उसकी दवाएँ बेकार हैं, और उसे उसकी देखभाल करके उसे और अधिक खर्च करने की आवश्यकता नहीं है, तो उसने जवाब दिया:

“मुझे पता है आपको इसकी ज़रूरत नहीं है। वह ठीक हैं; उन्हें अब आपकी

देखभाल की कोई ज़रूरत नहीं है! उन्हें कभी टीबी नहीं थी। उन्हें बुखार था, और अब वह उतर गया है: उनकी नाड़ी अब मेरी तरह धीमी है, और उनके गाल एकदम ठंडे हैं!”

उसने अपनी पत्नी को भी यही कहानी सुनाई, और ऐसा लगा जैसे उसने उस पर विश्वास कर लिया हो। लेकिन एक रात जब वह उसके कंधे पर सिर रखकर कह रही थी कि उसे लगता है कि वह कल उठ पाएगी, तभी उसे खांसी का दौरा पड़ा - बहुत हल्का सा - उसने उसे अपनी बाहों में उठा लिया; उसने अपने दोनों हाथ उसकी गर्दन पर रख दिए, उसका चेहरा बदल गया, और उसकी मृत्यु हो गई।

सचमुच, मानव हृदय के रहस्य विचित्र और अगम्य हैं! पाठक मेरे द्वारा उद्धृत अंश से हटकर उस पत्र को पढ़ें जिसमें शार्लोट विलाप करती है कि "एमिली बहुत जिद्दी है," और यह भी पढ़ें कि कैसे उसने तब तक अपनी बीमारी को मानने से इनकार कर दिया जब तक कि मृत्यु ने उसे उसी तरह अचानक अपनी चपेट में नहीं ले लिया जैसे अर्नशॉ की पत्नी को लिया था। खतरे के आगमन के प्रति उसकी अज्ञानता, जिसका उसने अपनी कहानी में इतनी स्पष्टता से वर्णन किया है, कुछ ही महीनों बाद उसके द्वारा और भी अधिक स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हुई। इस अंतिम उद्धरण में, जिसे मैं एक ऐसी पुस्तक से उद्धृत करने का साहस कर रहा हूँ जिसे अब शायद ही कभी खोला जाता है, हम देखते हैं कि लेखिका स्पष्ट रूप से अपने दिल की गहराई से उस विषय पर बोल रही है जिस पर वह बातचीत में विशेष रूप से संकोच करती थी।

पता नहीं ये मेरी कोई खास आदत है या नहीं, लेकिन मृत्यु के कक्ष में बैठकर मैं शायद ही कभी प्रसन्न होता हूँ, बशर्ते कोई उन्मादी या निराश शोक मनाने वाला मेरे साथ ये कर्तव्य न निभाए। मुझे वहाँ ऐसी शांति दिखाई देती है जिसे न धरती और न ही नरक भंग कर सकता है, और मुझे अनंत और अंधकारमय परलोक का आश्वासन मिलता है— वो शाश्वतता जिसमें वे प्रवेश कर चुके हैं—जहाँ जीवन असीम है, प्रेम सहानुभूति से परिपूर्ण है, और आनंद परिपूर्ण है। उस अवसर पर मैंने देखा कि श्री लिंटन जैसे प्रेम में भी कितना स्वार्थ है, जब उन्होंने कैथरीन की मुक्ति पर इतना दुख व्यक्त किया! वास्तव में, उसके अशांत और अधीर जीवन को देखते हुए, कोई संदेह कर सकता था कि क्या वह अंततः शांति के आश्रय की हकदार थी। ठंडे मन से सोचने पर संदेह हो सकता है; लेकिन उसके शव के सामने नहीं। शव ने अपनी शांति का दावा किया, जो मानो उसके पूर्व निवासी के लिए भी उतनी ही शांति का वादा था।

“वुथरिंग हाइट्स” के पन्नों से चुने गए ये अंश भी यह दिखाने के लिए पर्याप्त हैं

कि यह कहानी सामान्य उपन्यासों से कितनी अलग है। “जेन आयर” से हर मायने में भिन्न, यह कहानी जीवन की वास्तविकता के बजाय प्रेम कहानियों से संबंधित पात्रों और परिस्थितियों से संबंधित है, फिर भी इसमें वही मौलिकता, वही साहस, वही विचारशीलता और वही गहन व्यक्तित्व झलकता है। साहित्यिक कृतियों के रहस्यों को जानने वालों के लिए यह आश्चर्य की बात है कि हॉवर्थ पार्सनेज ने “जेन आयर” जैसी रचना की; लेकिन यह आश्चर्य और भी बढ़ जाता है जब हमें पता चलता है कि उसी समय, उसी स्थान के एक अन्य निवासी के मस्तिष्क से “वुथरिंग हाइट्स” जैसी अद्भुत कहानी भी निकली। भले ही वह पुस्तक कितनी ही त्रुटियों से भरी हो, फिर भी यह साबित करने के लिए पर्याप्त है कि एमिली ब्रोंटे के निधन के साथ ही दुनिया ने एक दुर्लभ और प्रतिभाशाली प्रतिभा को खो दिया।

ब्रोंटे बहनों की कहानी में रुचि रखने वाले सभी लोग यह जानने के लिए उत्सुक होंगे कि एमिली को इस प्रेम कहानी की सामग्री कहाँ से मिली। मैंने कहा है कि हीथक्लिफ और कहानी के अन्य प्रमुख पात्र उनकी स्वयं की रचनाएँ हैं; और वास्तव में यह पुस्तक अपनी मौलिकता में लगभग अद्वितीय है। लेकिन इससे इस तथ्य पर कोई असर नहीं पड़ता कि उनके जीवन के किसी न किसी पड़ाव पर, इस अनोखे फल को जन्म देने वाले बीज बोए गए होंगे। कुछ लोगों ने - जो निश्चित रूप से वर्तमान शताब्दी में वेस्ट राइडिंग के जीवन की परिस्थितियों से अनजान हैं - यह सुझाव दिया है कि एमिली ने अपने कथानक की रूपरेखा अपने आसपास के लोगों के अवलोकन से प्राप्त की। लेकिन हॉवर्थ के आसपास का जीवन वास्तव में शांत और सामान्य था। जोसेफ और श्रीमती डीन गाँव में और उसके आसपास बहुतायत में पाए जाते थे; लेकिन उनके आसपास ऐसे कोई लोग नहीं थे जिनके जीवन में हीथक्लिफ से जुड़ा रहस्य समाहित हो। जहाँ तक मुझे पता चला है, एमिली के प्रारंभिक बचपन के दौरान ही उनका मन उन भयावह परंपराओं से भर गया था जिनका उपयोग उन्होंने बाद में "वुथरिंग हाइट्स" लिखने में किया। श्री ब्रोंटे, अपनी अन्य प्रतिभाओं के अतिरिक्त, कहानी सुनाने की कला में अत्यधिक निपुण थे, और उन्हें इस प्रतिभा का उपयोग अपने बच्चों के दिलों में अंधविश्वासी भय को जगाने के लिए करना बहुत पसंद था।

हालांकि वह आमतौर पर अकेले ही भोजन करते थे, फिर भी वे अक्सर उस मेज पर आ जाते थे जहाँ उनकी बेटियाँ, शायद उनकी एक सहेली के साथ, नाश्ता कर रही होती थीं। वे भोजन में शामिल हुए बिना, स्कूली छात्राओं के उस छोटे समूह का

मनोरंजन करते हुए उन्हें कई रोमांचक कहानियाँ सुनाते थे, जो न केवल पिछली सदी में यॉर्कशायर के जीवन से संबंधित थीं, बल्कि उस और भी अधिक रोमांचक जीवन से भी जुड़ी थीं जिसे वे आयरलैंड में पीछे छोड़ आए थे। अपने बच्चों को डराने की कोशिश में, वे एक के बाद एक डरावनी कहानियाँ सुनाते हुए अपने होठों पर एक ठंडी मुस्कान बिखेरते थे; और जब वे उन्हें भयभीत करने में सफल हो जाते थे, तो उनकी तेज आँखें जीत की चमक से दमक उठती थीं। एमिली इन कहानियों को बड़ी उत्सुकता से सुनती थी। वह बाद में घंटों तक अपनी बहनों को ये कहानियाँ सुनाती रहती थी; और उनकी संवेदनशील प्रकृति में इन कहानियों के गहरे प्रभाव का इससे बेहतर प्रमाण और क्या हो सकता है कि इन्हीं कहानियों ने उन्हें "वुथरिंग हाइट्स" लिखने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, पिता का प्रभाव, जो सभी बेटियों पर मजबूत था, एमिली पर विशेष रूप से मजबूत था; और हम उस प्रभाव की प्रकृति का अंदाजा उस विचित्र और भयानक कहानी से लगा सकते हैं जो उसकी छाया में रची गई थी।

ऐनी ब्रोंटे की रचनाओं को पढ़ने के बाद मन में एक अजीब सी निराशा का भाव आता है। उन्होंने दो उपन्यास लिखे, “एग्नेस ग्रे” और “द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल”, लेकिन इनमें से कोई भी पढ़ने लायक नहीं है। पहले उपन्यास में उन्होंने एक गवर्नेस के रूप में अपने शांत और धैर्यपूर्ण जीवन में घटी कुछ घटनाओं का वर्णन करने का प्रयास किया है। पाठक को यह जानना चाहिए कि ये अनुभव साधारण नहीं थे। शार्लोट ब्रोंटे और उनकी बहनों के इस संक्षिप्त विवरण को लिखते समय मैंने ब्रैनवेल ब्रोंटे के जीवन की त्रासदी का अनावश्यक उल्लेख करने से पूरी तरह परहेज किया है। लेकिन इस कहानी का एक विचित्र और दुखद पहलू यह है कि धर्मपरायण और सौम्य सबसे छोटी बहन को शार्लोट या एमिली की तुलना में उनके पापों और कष्टों की अधिक निकट और निरंतर साक्षी बनना पड़ा। जब वह भटक गए और घोर अपमान के साथ घर से निकाल दिए गए, तब वह उनके साथ एक ही छत के नीचे रह रही थीं। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि उनके जीवन का उन पर उतना ही गहरा और प्रबल प्रभाव पड़ा जितना श्रीमती गैस्केल ने वर्णित किया है। ब्रैनवेल का पतन ऐनी ब्रोंटे के जीवन का एक दुखद मोड़ था। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि इसका असर उनके साहित्यिक कार्यों पर भी पड़ा। इसी के अनुरूप, जहाँ "एग्नेस ग्रे" हमें उनके गवर्नेस जीवन के कुछ दृश्यों को तीस साल पहले के सामान्य प्रेम कहानियों की शैली में प्रस्तुत करती है, वहीं "द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल" ब्रैनवेल ब्रोंटे के पतन के बाद

की उनकी दयनीय और घृणित स्थिति का चित्र प्रस्तुत करती है। शार्लोट, अपनी बहनों के संक्षिप्त संस्मरण में, इस विषय पर ऐनी के साथ न्याय करती हैं जब वे इन शब्दों में बोलती हैं:

एक्टन बेल द्वारा लिखित "द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल" को भी इसी तरह की प्रतिकूल प्रतिक्रिया मिली। इस पर मुझे आश्चर्य नहीं होता। विषय का चुनाव पूरी तरह से गलत था। लेखक के स्वभाव के बिल्कुल विपरीत विषय की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। इस चुनाव के पीछे के कारण शुद्ध थे, लेकिन मुझे लगता है कि उनमें कुछ विकृति भी थी। अपने जीवन में उन्होंने प्रतिभाओं के दुरुपयोग और क्षमताओं के गलत इस्तेमाल के भयानक परिणामों को करीब से और लंबे समय तक देखा था; उनका स्वभाव स्वाभाविक रूप से संवेदनशील, शांत और उदास था; जो कुछ उन्होंने देखा वह उनके मन में गहराई से बैठ गया; इससे उन्हें हानि हुई। वे इस विषय पर तब तक विचार करती रहीं जब तक कि उन्हें यह विश्वास नहीं हो गया कि दूसरों को चेतावनी देने के लिए हर विवरण (काल्पनिक पात्रों, घटनाओं और स्थितियों के साथ) को चित्रित करना उनका कर्तव्य है। उन्हें अपने काम से नफरत थी, फिर भी वे उसे जारी रखती थीं। जब इस विषय पर उनसे तर्क किया गया, तो उन्होंने ऐसे तर्कों को आत्म-भोग का प्रलोभन माना। उन्हें ईमानदार रहना था; उन्हें बनावटीपन, नरमी या छिपाव नहीं करना था। इस नेक इरादे से लिए गए संकल्प के कारण उसे गलतफहमी और कुछ अपमान का सामना करना पड़ा, जिसे उसने अपनी आदत के अनुसार, हर अप्रिय बात को शांत और धैर्यपूर्वक सहन किया। वह एक बहुत ही सच्ची और व्यावहारिक ईसाई थी, लेकिन धार्मिक उदासी के एक अंश ने उसके संक्षिप्त, निर्दोष जीवन को एक दुखद रंग दे दिया।

मैंने जिस अंश का उद्धरण दिया है, उसमें ब्रोंटे बहनों में से तीसरी और सबसे कम चर्चित बहन का कितना सटीक चित्रण मिलता है! एक प्यारी, सुंदर चेहरे वाली लड़की, जो एक निर्दोष जीवन जी रही थी, जिसके मन में उज्ज्वल भविष्य की कोई आशा नहीं थी—क्योंकि उसके दिल का एकमात्र छोटा सा रोमांस भी मृत्यु के निर्दयी हाथों से चकनाचूर हो चुका था—और अपनी बहनों की तरह कलाकार या रचनाकार के जुनून से प्रेरित नहीं थी; एक ऐसी लड़की जिसका सरल विश्वास अपनी प्रारंभिक नींव से अब तक अडिग था; जिसे गरीबों से मिलने और बीमारों की मदद करने में आनंद आता था, जिसमें अपनी शक्ति का ऐसा दृढ़ विश्वास नहीं था जैसा शार्लोट और

एमिली को उनके सबसे कठिन समय में सहारा देता था, और जिसकी भक्ति भी "उदासी से रंगी हुई" थी। यह वही लड़की है जिसने रचनात्मक क्षमता के प्रयोग से उत्पन्न होने वाली किसी भी अप्रतिरोध्य प्रेरणा से नहीं, बल्कि कर्तव्य की भावना से प्रेरित होकर, अपने भाई के पतन से जुड़े एक भयानक दुराचार के परिणामों को उपन्यास के पन्नों में चित्रित करने का कठिन कार्य अपने हाथ में लिया। बेशक, वह असफल रही। ऐनी ब्रोंटे जैसे कमजोर हाथों से उन पापों पर प्रभावी प्रहार नहीं किए जा सकते, जिन पर उन्होंने प्रहार किया। लेकिन उनकी असफलता को स्वीकार करते हुए, आइए हम उनके आत्म-बलिदान के साहस और उस प्रबल भक्ति को भी उचित सम्मान दें, जिसने उन्हें इस कष्टदायक कार्य को करने के लिए प्रेरित किया।

शार्लोट ब्रोंटे के उपन्यासों के बारे में, समग्र रूप से, मैं इस समय कुछ नहीं कहूँगा; लेकिन उस कहानी के बारे में यहाँ कुछ कहना उचित होगा जो उन्होंने उस समय लिखी थी जब उनकी बहनें "वुथरिंग हाइट्स" और "एग्नेस ग्रे" लिख रही थीं। यह उनकी मृत्यु के बाद ही प्रकाशित हुई, और श्रीमती गैस्केल के लेखन से दुनिया को उनके जीवन के बारे में कुछ सच्चाई पता चल चुकी थी। आम पाठक के लिए इसकी रुचि काफी हद तक कम हो गई थी क्योंकि लेखिका ने अपनी अंतिम महान कृति, "विलेट" में इसकी सामग्री का बहुत अधिक उपयोग किया था। लेकिन एक उपन्यास मात्र के रूप में भी "द प्रोफेसर" में उल्लेखनीय खूबियाँ हैं, और केवल इसी दृष्टिकोण से इसे पढ़ना सार्थक होगा; जबकि लेखिका के चरित्र के बारे में नई जानकारी प्राप्त करने के साधन के रूप में, यह "वुथरिंग हाइट्स" से कम मूल्यवान नहीं है। यह सच है कि "द प्रोफेसर" वास्तव में उनका पहला प्रयास नहीं था। "यह निश्चित रूप से पहला प्रयास नहीं था," शार्लोट इसके संदर्भ में कहती हैं, "क्योंकि इसे लिखने वाली कलम कई वर्षों के अभ्यास में काफी घिस चुकी थी।" लेकिन उनकी पिछली रचनाएँ, जिनका अब शायद ही कोई निशान बचा है — उन शुरुआती पांडुलिपियों को सावधानीपूर्वक नष्ट कर दिया गया था, सिवाय उन कुछ को छोड़कर जिन्हें श्रीमती गैस्केल को देखने की अनुमति दी गई थी — किसी भी तरह से पूर्ण रचनाएँ नहीं थीं, न ही उन्हें प्रकाशन के उद्देश्य से लिखा गया था। शार्लोट ब्रोंटे ने जिस दिन वास्तव में गद्य रचना को प्रकाशित करने का इरादा किया था, वह पहला अवसर था जब उन्होंने अपनी दो बहनों के साथ बैठकर एक नए उपन्यास का पहला पृष्ठ लिखना शुरू किया था।

इसलिए, व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो, "द प्रोफेसर" को उनकी पहली रचना

माना जा सकता है; और निश्चित रूप से उपन्यास लेखन के विषय पर शार्लोट के विशिष्ट विचारों को इस पुस्तक से अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से कोई और रचना नहीं दर्शा सकती। दुनिया जानती है कि उन्होंने अपनी सभी रचनाओं में जीवन को उसी रूप में प्रस्तुत करने का कितना दृढ़ प्रयास किया जैसा उन्होंने उसे देखा था। "जेन आयर" में वास्तव में रोमांटिक घटनाएँ और परिस्थितियाँ हैं, लेकिन उस रचना में भी कथा लेखक के लिए निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया गया है; साथ ही यह भी नहीं भूलना चाहिए कि "जेन आयर" आंशिक रूप से प्रकाशकों की उस सीधी अपील का जवाब थी जिसमें "द प्रोफेसर" से भिन्न चरित्र की रचना की मांग की गई थी। उस पहली कहानी में उन्होंने यह निर्धारित किया कि वे एक पुरुष के जीवन को वैसे ही लिखेंगी जैसे आमतौर पर पुरुषों का जीवन होता है। उनके नायक को "कभी भी बिना मेहनत के एक पैसा भी नहीं मिलेगा;" भाग्य के अचानक पलटने से "वह पल भर में धनवान और उच्च पदस्थ नहीं हो जाएगा;" और वह "किसी सुंदर लड़की या उच्च पदस्थ महिला" से भी विवाह नहीं करेगा। "आदम के पुत्र होने के नाते उसे आदम के भाग्य में भागीदार होना चाहिए, और जीवन भर सुख का एक मिश्रित और संयमित प्याला पीना चाहिए।"

बहुत कम उपन्यास पाठक उपन्यास के इस स्वरूप से सहमत होंगे। कथाकार एक कलाकार है जिसका यह कर्तव्य है कि वह पुरुषों और महिलाओं को सामान्य जीवन की चिंताओं से, इस संसार के हर हिस्से में व्याप्त घृणित परिवेश से बाहर निकाले और हमें जीवन को विभिन्न, शायद काल्पनिक, परिस्थितियों में दिखाए: एक ऐसा जीवन जो हमारे अपने जीवन के विपरीत हो और हमारे मानसिक दृष्टि को कुछ राहत प्रदान करे, जो जीवन के निरंतर कष्टों, निराशाओं, संघर्षों और नीरस वर्षों के चिंतन से थकी और ऊब चुकी है। हम जानते हैं कि कैसे एक महान जीवित लेखिका ने इस सिद्धांत का विरोध करने का साहस किया है और कैसे अपनी सर्वश्रेष्ठ कथाओं में उन्होंने हमें जीवन को उसके वास्तविक रूप में, पीड़ा, दुःख और निराशा की दुखद और कड़वी परिस्थितियों में दिखाया है। लेकिन शार्लोट ब्रोंटे ने "द प्रोफेसर" जॉर्ज एलियट के कलम उठाने से बहुत पहले लिखा था; और उन्हें कम से कम इस बात का श्रेय तो मिलना ही चाहिए कि वे अपनी साथी लेखिका के नाम से मशहूर होने से पहले ही कथा साहित्य के क्षेत्र में एक सुधारक के रूप में सक्रिय थीं।

“द प्रोफेसर” लिखते समय उन्होंने अपने लिए जो शर्तें रखी थीं, उन पर वे खरी

उतरीं। अंग्रेजी साहित्य में इस कहानी से अधिक गंभीर और यथार्थवादी रचना शायद ही कहीं मिले। फिर भी, भले ही कहानी का दृश्य एक विशाल मैदान मात्र हो, जिसमें विविधता लाने के लिए कोई छोटी पहाड़ी भी न हो, फिर भी इसकी अपनी एक अलग ही सुंदरता है जो इसे हमारी प्रशंसा का पात्र बनाती है। जैसा कि सर्वविदित है, यह कहानी ब्रुसेल्स शहर से संबंधित है, जहाँ से वे इसे लिखना शुरू करने से ठीक पहले लौटी थीं। लेकिन "द प्रोफेसर" और "विलेट" की भावना में अंतर देखना दुखद है। एक ही परिस्थितियों और मूल रूप से एक ही कहानी पर आधारित होने के बावजूद, लेखिका ने दोनों कहानियों को अपने-अपने तरीके से प्रस्तुत किया है। शार्लोट ब्रोंटे को जानने वालों के लिए इसका कारण कोई रहस्य नहीं है। जब उन्होंने "द प्रोफेसर" लिखी, तब वे निराश थीं, फिर भी वे युवा थीं और एक बेहतर भविष्य में उस प्रबल विश्वास से परिपूर्ण थीं, जिसे युवा हृदय भाग्य के सबसे कठोर प्रहारों के बावजूद भी कभी नहीं छोड़ पाता। वह बेचैन और दुखी होकर घर लौटी थी, उसे हॉवर्थ अपने लिए बहुत छोटा और शांत लग रहा था; उसका मन इस वास्तविकता को स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि उसका शेष जीवन इसी साधारण छत के नीचे व्यतीत होना तय था। दुख और उदासी से भरी होने के बावजूद, वह इस उम्मीद को नहीं नकार सकती थी कि उसके आगे उज्ज्वल दिन आने वाले हैं। जीवन का बुखार उसे जकड़े हुए था; लेकिन इस तीव्र पीड़ा में ही इस बात का प्रमाण था कि प्रेम और आशा, जीवन का भरपूर आनंद लेने की क्षमता, अब भी उसके भीतर जीवित थी। इसलिए, "द प्रोफेसर" एक दुखद और नीरस पुस्तक होने के बावजूद, जीवन और आशा से परिपूर्ण है, और सभी दुखी लोगों के अंतिम सुख में अटूट विश्वास इसके हर पन्ने में झलकता है; और इसका अंत शांति और सुकून के दृश्य के साथ होता है।

"विलेट" का मामला बिल्कुल अलग है। यह "द प्रोफेसर" की रचना के वर्षों बाद लिखी गई थी, जब जीवन की कठोर वास्तविकताएँ भावनाओं या कल्पना के कोमल कोहरे में छिपी नहीं रह गई थीं, और जब अकेला वर्तमान, भविष्य, "जो अक्सर मुझे भयभीत करता है," ने लेखिका को इस बात का अत्यंत पीड़ादायक एहसास दिलाया कि उसने जीवन का प्याला लगभग अंत तक पी लिया है। एक कृति के रूप में इसकी तुलना पहली कहानी से नहीं की जा सकती। हर पृष्ठ पर हमें कलाकार के हाथ के निशान दिखाई देते हैं। यह सच है कि दोनों रचनाओं में प्रतिभा झलकती है, लेकिन "विलेट" में यह प्रतिभा एक परिष्कृत रुचि द्वारा संयमित और नियंत्रित है, या उस

उच्च दबाव में काम कर रही है जो केवल एक प्रशिक्षित लेखक ही डाल सकता है। फिर भी, यद्यपि हमें बाद वाली रचना की श्रेष्ठता को स्वीकार करना होगा, हम दोनों के बीच की भावना में दुखद, विचित्र अंतर से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। जैसा कि मैंने कहा है, कहानियाँ लगभग एक जैसी हैं। कुछ विचित्र परिवर्तनों के साथ, वास्तव में, वे लगभग एक समान हैं। लेकिन वे केवल इस अर्थ में समान हैं कि जीवन के रोमांस से भरी आँखों वाली सुंदर और आशावान लड़की का चित्र, उस थकी-हारी और अकेली महिला के चित्र के समान है जिसके लिए रोमांस का अंत हो चुका है। इन दोनों के बीच पीड़ा, दुःख और धैर्य की एक पूरी दुनिया समाई हुई है। मैंने उस मनोदशा की बात की है जिसमें "द प्रोफेसर" लिखा गया था - उस समय भी हृदय में आशा की किरण बाकी थी, जो भविष्य में कुछ उज्जवल और बेहतर होने के अपने दयालु, यद्यपि भ्रामक, संकेत दे रही थी। जीवन के दुःखों की परीक्षा से गुज़रे सभी लोग उस समय लेखिका के स्वभाव और "विलेट" की रचना करते समय उनके स्वभाव के बीच के अंतर को समझ सकेंगे। ऐसे दुःख से गुज़रने वाले जानते हैं कि दुःख के पहले और सबसे कड़वे क्षण में भी हृदय इस धन्य विश्वास को कैसे नहीं नकार सकता है कि दर्द से मुक्ति का समय आएगा - शायद दूर, लेकिन उस दिन एक ऐसा उज्ज्वल दिन फिर से चमकेगा जो अचानक ग्रहण लग गया है। जैसे-जैसे वर्ष बीतते जाते हैं, और असहनीय पीड़ा का पहला दर्द आदत के कारण नीरस शांति में बदल जाता है, वैसे-वैसे वह विश्वास जो उन्हें सबसे तीव्र पीड़ा सहने की शक्ति देता था, उनसे दूर हो जाता है और उन्हें उस धुंधली एकरसता में छोड़ देता है, जिस पर कभी कोई भोर नहीं आती। सहनशीलता के इसी अंतिम और सबसे दुखद चरण में "विलेट" की रचना हुई थी। ब्रसेल्स में हुए हृदय-साक्षात्कारों की तीव्र पीड़ाएँ लुप्त हो चुकी थीं। लेखिका, अब उस लड़की की आत्म-चेतना से मुक्त होकर, अपनी कहानी, उस काल के अपने दुखों को भी, पहले की तुलना में अधिक सहजता और कलात्मकता से प्रस्तुत कर सकती थी; परन्तु उनके संपूर्ण लेखन में यह नीरस विश्वास व्याप्त था कि सुख और दुःख के उन मिश्रित दिनों में उन्होंने जीवन का सर्वोत्तम अनुभव किया था, और उनके सामने आने वाले भविष्य में ऐसा कुछ भी नहीं हो सकता जो उस समय के प्रबल सुखों या तीव्र पीड़ा को पुनर्जीवित कर सके। जैसा कि हम जानते हैं, यह पुस्तक लगभग पूर्ण निराशा के भाव से ओतप्रोत है। शार्लोट ब्रोंटे की प्रतिभा के सिवा कोई और ऐसी रचना को उसके गहरे अंधकार में डूबने से नहीं बचा सकता था। आत्मा के इस गहन

और दुखद अध्ययन में न केवल मनोवैज्ञानिकों को, बल्कि पाठकों के विशाल जनसमूह को मोहित करने की क्षमता होना एक ऐसी उपलब्धि है जिसकी तुलना हाल के साहित्यिक कार्यों में शायद ही की जा सके। "द प्रोफेसर" में हम उन्हीं दृश्यों, लगभग उन्हीं पात्रों और घटनाओं के बीच घूमते हैं, लेकिन पूरा वातावरण बिल्कुल अलग है। यह एक नीरस, ठंडा वातावरण है, लेकिन ऐसा लगता है कि बादलों के पीछे सूरज चमक रहा है, और देर-सवेर नायक और नायिका को उसकी जीवनदायिनी किरणों का आनंद लेने का अवसर मिलेगा। दोनों कहानियों को एक साथ रखकर पढ़ें और उन वर्षों के बीच घटी सभी घटनाओं के संदर्भ में इन्हें पढ़ें, जिनमें ये लिखी गई थीं - ब्रैनवेल, एमिली और ऐनी की मृत्यु, कुछ सुंदर भ्रमों का पूरी तरह से चकनाचूर होना जिन्होंने शार्लोट के साहित्यिक विजय के शुरुआती वर्षों में उसके दिल को सहारा दिया था, भविष्य की खुशी के बारे में सभी आशाओं का स्पष्ट रूप से समाप्त हो जाना - और आपको इनसे लेखक की आत्मा का कहीं अधिक सच्चा ज्ञान प्राप्त होगा जितना कोई आलोचक या जीवनीकार आपको बता सकता है।

"द प्रोफेसर" से विदा लेने से पहले, जिसे स्वाभाविक रूप से जनता से कभी अधिक ध्यान नहीं मिला, मुझे इसमें से एक अंश उद्धृत करना होगा, जिसकी समानता शार्लोट ब्रोंटे के कई पत्रों में पाई जा सकती है। यह उस मानसिक अवसाद के दौर का वर्णन करता है, जैसा कि केवल वही व्यक्ति कर सकता है जिसने इसे स्वयं झेला हो, जो शारीरिक बीमारी से उत्पन्न हुआ था और जिससे वह समय-समय पर प्रभावित होती थी, और जिसके प्रभाव में उन्होंने अपना काफी काम किया था। इसे पढ़कर, हमें उनके चरित्र के उन पहलुओं के वास्तविक मूल का कुछ अंदाजा हो जाता है जिन्हें विकृत और अप्राकृतिक माना जाता था।

मनुष्य सदा अपनी नश्वरता से जकड़ा रहता है, और मेरी नश्वर प्रकृति ही अब लड़खड़ा रही थी और कराह रही थी; मेरी नसें झकझोर कर बेसुध सी आवाज निकाल रही थीं, क्योंकि आत्मा, हाल ही में एक लक्ष्य की ओर बेतहाशा दौड़ते हुए, शरीर की तुलनात्मक कमजोरी पर अत्यधिक दबाव डाल रही थी। मुझ पर घोर अंधकार छा गया; मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे कमरे में कोई ऐसा व्यक्ति आ गया हो जिसे मैं पहले जानता था लेकिन हमेशा के लिए बिछड़ चुका था। मैं कुछ समय के लिए रोग-भ्रम का शिकार हो गया था। वह बचपन में मेरी परिचित, बल्कि मेरी मेहमान रह चुकी थी; मैंने उसे एक साल तक अपने घर में ठहराया था; उस दौरान वह गुप्त रूप से मेरे साथ रही

थी; वह मेरे साथ सोती थी, मेरे साथ खाना खाती थी, मेरे साथ घूमती थी, मुझे जंगलों के कोने, पहाड़ियों की घाटियाँ दिखाती थी जहाँ हम साथ बैठ सकते थे, और जहाँ वह अपना घूंघट मुझ पर डाल सकती थी, और इस तरह आकाश और सूर्य, घास और हरे पेड़ को छिपा सकती थी; मुझे पूरी तरह से अपनी मृत्यु-शीतित छाती से लगा लेती थी और हड्डियों जैसी बाहों से थाम लेती थी। ऐसे समय में वह मुझे कैसी-कैसी कहानियाँ सुनाती थी! वह मेरे कानों में कैसे गीत सुनाती थी! वह मुझसे अपने देश—कब्रिस्तान—के बारे में कैसे बातें करती थी और बार-बार मुझे वहाँ जल्द ही ले जाने का वादा करती थी; और मुझे एक काली, उदास नदी के किनारे तक खींचकर, दूसरी ओर असमान टीलों, स्मारकों और शिलाखंडों से सजे किनारे दिखाती थी, जो चाँदनी से भी अधिक धुंधली चमक में खड़े थे। "कब्रिस्तान!" वह फुसफुसाती, उन फीके ढेरों की ओर इशारा करते हुए, और कहती, "इसमें तुम्हारे लिए एक महल तैयार है।" लेकिन मेरा बचपन अकेला, माता-पिता विहीन, भाई-बहन से रहित था; और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि जैसे ही मैं जवान हुआ, एक जादूगरनी ने मुझे अस्पष्ट मानसिक भटकन में खोया हुआ पाया, कई भावनाओं और कुछ लक्ष्यों के साथ, उज्ज्वल आकांक्षाओं और निराशाजनक संभावनाओं के साथ, मजबूत इच्छाओं और कोमल आशाओं के साथ, दूर से अपना मायावी दीपक मेरी ओर उठाया, और मुझे अपने भयानक गुंबदनुमा घर में ले गई।

जब मिस ब्रोंटे को यहाँ वर्णित शारीरिक कष्टों के दौर से गुज़रना पड़ता था, तब उनके व्यवहार से देखने वालों को यह आभास होता था कि उनका मन स्वभाव से ही मनोरोगी है; और जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, यही प्रभाव कभी-कभी उनके लेखन में भी दिखाई देता है। इस छोटी सी पुस्तक को लिखने का एक उद्देश्य यह दिखाना है कि उनके जीवन से जुड़ी उदासी और अवसाद का कितना बड़ा हिस्सा विशुद्ध रूप से शारीरिक या आकस्मिक कारणों से ही उत्पन्न हुआ है।

चौदहवें.

निष्कर्ष।

शार्लोट ब्रोंटे के जीवन या चरित्र के किसी भी पहलू के लिए क्षमा याचना करने की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर ने उन्हें घोर पीड़ाओं और उससे भी अधिक कठिन प्रलोभनों की भट्टी में जो रूप दिया, वही वे थीं; उनका जीवन, अपनी असाधारण विशिष्टता से परिपूर्ण होने के बावजूद, हमेशा बाहरी प्रभावों के अधीन रहा, जिनके लिए वे स्वयं उत्तरदायी नहीं थीं, और जिन्होंने एक से अधिक बार उनके अस्तित्व के संपूर्ण स्वरूप और उद्देश्य को बदलने की धमकी दी; उनकी प्रतिभा, जिसने अंधकार और विपत्ति की ठंडी छाया में अपने प्रथम फल प्रकट किए, उस सफलता की तुलना में कहीं अधिक दुख, एकांत और पीड़ा से विकसित हुई, जो उन्होंने इतनी प्रचुर मात्रा में प्राप्त की थी। उनके चरित्र के कुछ पहलू ऐसे हैं जिन्हें हम शायद ही समझ पाते हैं, जिनके अस्तित्व का कारण हम बता नहीं सकते; और उनकी प्रतिभा के कुछ पहलू ऐसे हैं जो हमारी भावनाओं को ठेस पहुंचाते हैं और हमारे पारंपरिक विचारों को झकझोर देते हैं; लेकिन इस महान महिला को वास्तव में जानने और प्रेम करने वाला कोई भी व्यक्ति इनके लिए क्षमा या बहाने का एक शब्द भी नहीं कहेगा।

जिस फैशन ने उन्हें प्रसिद्धि के शिखर तक पहुंचाया, वह कई अन्य फैशनों की तरह ही अब चलन से बाहर हो गया है; और वर्तमान पीढ़ी, एक अन्य प्रकार के उपन्यास लेखन की प्रशंसा में डूबी हुई, "कुरर बेल" की रचनाओं को समय से पहले ही भुला दिया है। लेकिन उनके मित्रों को निराश होने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि उपेक्षा की उस अंधकारमय कब्र से पुनरुत्थान का एक क्षण अवश्य आएगा, और वह महिला जिसने हमें इस शताब्दी की तीन सबसे उत्कृष्ट रचनाएँ दी हैं, अपने देश के साहित्य में अपना वास्तविक स्थान फिर से स्थापित करेगी। अब हमें उनकी रचनाओं की "अनैतिकता" के बारे में कुछ भी सुनने को नहीं मिलता। युवा पीढ़ी, यदि हाल की लोकप्रिय कहानियों के चमकदार या उपदेशात्मक पन्नों से हटकर "जेन आयर" या "विलेट" की ओर रुख करती है, इस उम्मीद में कि उन्हें वहाँ कुछ ऐसा मिलेगा जो उनके उदासीन मन को गुदगुदा सके, तो उन्हें कुछ भी अनुचित नहीं मिलेगा - जैसा कि

हम इन प्रबुद्ध युगों में इस शब्द को समझते हैं - और वे आलोचकों की उस पीढ़ी के बारे में एक अजीब धारणा बना लेंगे जिसने "कुरर बेल" को अनैतिक कथा रचनाओं का लेखक बताया था। लेकिन कहा जाता है कि उनकी कहानियों में कुछ अशिष्टता है, "अन्यथा इतनी महान।" श्रीमती गैस्केल ने भी इस आरोप को स्वीकार किया है; और आम तौर पर यह माना जाता है कि शार्लोट ब्रोंटे, एक लेखिका के रूप में, हालांकि लहजे में अनैतिक नहीं थीं, भाषा में असभ्य और विचारों में अशिष्ट थीं। सच्चाई, मेरा मानना है, यह है कि यह तथाकथित अशिष्टता कुछ और नहीं बल्कि वह सरलता और पवित्रता, वह सहजता और अचेतनता है जो एक निष्कलंक हृदय जीवन की उन बड़ी समस्याओं से निपटने में स्वाभाविक रूप से प्रदर्शित करता है, जो दुर्भाग्यवश... अच्छे और बुरे के गहरे सागर में डूबे हुए लोग भी कभी भी शर्मिंदगी से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकते। एक अमेरिकी लेखक ने शार्लोट ब्रोंटे को "महिलाओं में महान प्री-राफेलिट" बताया है, जो ईश्वर द्वारा दिखाए गए संदेश को व्यक्त करने में न तो शर्मिंदा थीं और न ही भयभीत, और प्रकृति की रूपरेखा को हूबहू उतारने में उनका उद्देश्य इतना दृढ़ था कि वे एक बाल बराबर भी विचलित नहीं हुईं। हालाँकि, वे इससे कहीं बढ़कर थीं; वे इतनी साहसी थीं कि उन्होंने न्याय का अपना मानक स्थापित किया; और जब वे यॉर्कशायर के एक साधारण पादरी की अज्ञात पुत्री थीं, तब भी वे इस तरह की घोषणा के स्वर से दुनिया भर के पाठकों के दिलों को झकझोर सकती थीं: "परंपरागतता नैतिकता नहीं है; आत्म-धार्मिकता धर्म नहीं है; फरीसी के चेहरे से नकाब उतारना कांटों का ताज पहनने जैसा अधार्मिक कार्य नहीं है।" याद रहे कि ये शब्द लगभग तीस साल पहले लिखे गए थे, जब रूढ़िवादिता अभी भी हमारे अंतर्मन के विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति को रोकने में एक शक्तिशाली प्रभाव रखती थी। और हमें इस बात के लिए आभारी होना चाहिए कि उस वीर समूह में, जिसके कारण हमें अंग्रेजी विचार की मुक्ति मिली, एक महिला को सम्मानजनक स्थान प्राप्त है।

उनके जीवन के समाप्त होने के तुरंत बाद, उनकी मित्र मिस मार्टिन्यू ने उनके बारे में लिखा: “अपने पेशे में, एक प्रतिभाशाली महिला की गहरी अंतर्दृष्टि के अलावा, उनमें एक पुरुष का बल, एक नायक का धैर्य और एक संत की कर्तव्यनिष्ठा थी।” जो लोग उन्हें सबसे अच्छी तरह जानते हैं, वे उनके व्यक्तिगत चरित्र के लिए उन विशेषणों का प्रयोग करेंगे जो मिस मार्टिन्यू ने उनके लेखन करियर के लिए आरक्षित किए थे। इन पृष्ठों में मेरा उद्देश्य श्रीमती गैस्केल की प्रशंसनीय जीवनी में चित्रित चित्र को एक-

दो विशेषताओं को जोड़कर पूरक करना है, जो शायद अपने आप में मामूली हों, फिर भी एक विश्वसनीय चित्र के रूप में समग्र प्रभाव को देखते हुए महत्वपूर्ण हैं। शार्लोट ब्रोंटे स्वभाव से निराशावादी नहीं थीं; युवावस्था में वे खुश और उत्साही थीं; और अपने जीवन के अंतिम क्षण तक उनमें एक शांत शक्ति और प्रसन्नता थी जो शायद ही कभी उनसे विमुख हुई, सिवाय तब जब उनके मानसिक कष्टों के साथ-साथ तीव्र शारीरिक पीड़ा भी जुड़ गई। यदि उनका मन उनके दुर्बल और कष्टदायी शरीर के निराशाजनक प्रभावों से मुक्त हो पाता, तो वह हमारे युग के सबसे स्वस्थ और शांत मनों में से एक होता। लेकिन फिर भी, उन्होंने भाग्य के कठोर प्रहारों का बिना संकोच किए और बिना किसी दिखावे के सामना किया; और वह महिला, जिसे आज भी दुनिया भर में आत्म-जागरूक प्रतिभा और अनियंत्रित रुग्णता का चमत्कार माना जाता है, अपनी मृत्यु तक अपने मित्रों के कल्याण में गहरी रुचि रखती रहीं, जहाँ भी उन्हें लगा कि सहानुभूति की आवश्यकता है और वह इसके योग्य है, वहाँ अपनी पूरी सहानुभूति अर्पित करती रहीं, और अपने घर के पवित्र एकांत में अपनी उज्ज्वल और प्रसन्नतापूर्ण उपस्थिति से हॉवर्थ के गंभीर पादरी निवास को रोशन करती रहीं, जो दृढ़ और शांत भी थी।

"उनकी विलक्षणता को कम मत समझिए," उनकी प्रसिद्धि के चरम दौर में उन्हें जानने वाले एक प्रतिभाशाली मित्र ने इन पृष्ठों के लेखन के दौरान कहा। यह स्वीकार करना होगा कि उनकी विलक्षणता चरम पर थी—जहाँ तक दुनिया का नजरिया था। लेकिन मैंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि यह विलक्षणता कितनी हद तक बाहरी और सतही थी, जो आंशिक रूप से उनके प्रारंभिक जीवन की विशिष्ट परिस्थितियों के कारण थी, लेकिन मुख्य रूप से अजनबियों के सामने अत्यधिक शर्म के कारण थी, जो उन्होंने अपनी बहनों के साथ साझा की थी। जैसा कि इनमें से कुछ पत्रों से पता चलेगा, दिल से वह सबसे सच्ची महिलाओं में से एक थीं; और उनका अपना हृदय-काल उतना असाधारण या अधिकांश महिलाओं के हृदय-काल से उतना भिन्न नहीं था, जितना कि आम जनता मानती है।

उनके चरित्र का सार कर्तव्य के प्रति सरल और अटूट समर्पण था। एक बार वे असफल हुईं, या यूँ कहें कि एक बार उन्होंने अपनी इच्छाओं को कर्तव्य के सही मार्ग से भटकने दिया, और उस एक असफलता ने उनके पूरे जीवन को प्रभावित किया। लेकिन स्वयं के प्रति उनकी निंदा दुनिया द्वारा उन पर की जाने वाली किसी भी निंदा

से कहीं अधिक तीखी और कड़वी थी, और उस एक छोटी सी गलती से उन्होंने ऐसे सबक सीखे जिन्होंने उन्हें आगे चलकर आत्म-बलिदान की ऐसी अटूट शक्ति के साथ जीने में सक्षम बनाया जो साधारण पुरुषों और महिलाओं के बजाय संतों और नायकों को विख्यात करती है। अपने स्नेह में भावुक, आवेगी और दृढ़, उन्होंने अपने प्रियजनों को अपने से बिछड़ने दिया, फिर भी उन्होंने स्वयं में या ईश्वर में अपना विश्वास नहीं खोया; अपने मित्रों के साथ हुए व्यवहार के प्रति कोमल रूप से संवेदनशील, उन्होंने अपने पिता द्वारा उस व्यक्ति के प्रति की गई क्रूरता और अन्याय का बदला उस गहन समर्पण और आत्म-बलिदान से चुकाया जिसका दिल उन्होंने जीता था, जिसकी गहराई का आकलन केवल वही लोग कर सकते हैं जो जानते हैं कि किन कठिन परिस्थितियों में एक अयोग्य माता-पिता पर यह सब किया गया था; प्रतिभावान बच्चों की तरह, अपनी कल्पना के जादू में बंधी होने के बावजूद, जीवन के अंतिम महीनों में उन्होंने कलम को एक तरफ रख दिया और अपने पति की इच्छा पर उन पत्नी कर्तव्यों में पूरी तरह से खुद को समर्पित कर दिया, जिनमें उनकी रुचि बहुत कम थी। जो लोग इन तथ्यों को जानते हुए भी यह दावा करने का साहस करते हैं कि लेखक "कुरर बेल" को विशिष्ट बनाने वाले गुण महिला शार्लोट ब्रोंटे में नहीं थे, उनके दिमाग में गहरी जड़ें जमाए हुए और अनुचित पूर्वाग्रह भरे हुए हैं।

मैंने यह दृढ़ विश्वास व्यक्त किया है कि "जेन आयर" और इसकी सहयोगी रचनाओं की तुलनात्मक उपेक्षा केवल अस्थायी है। यह सच है कि कुछ मामलों में ये पुस्तकें आकर्षक नहीं हैं। हालाँकि इन्हें संक्षिप्तता और सशक्त शैली में लिखा गया है, जो उन सभी को प्रसन्न करेगी जिनकी रुचियाँ वर्तमान पीढ़ी के सुंदर लेखन से ऊब चुकी हैं, फिर भी इनमें साहित्यिक परिष्कार की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। और यद्यपि इनके पन्नों में प्रस्तुत चित्र कलाकृतियों के रूप में अद्भुत हैं, चरित्र चित्रण के रूप में अद्वितीय हैं, कलाकार की क्षमता सीमित है, और आमतौर पर चुने गए विषय उतने मनभावन नहीं हैं जितने सोचे जा सकते थे। फिर भी, पुरुषों और महिलाओं के इस कुशल चित्रकार में एक महान और उल्लेखनीय गुण है, जो कुछ ऐसे लेखकों में नहीं है जिन्होंने कुछ हद तक उनके पदचिन्हों पर चलकर कहीं अधिक व्यापक और शानदार ख्याति प्राप्त की है। उनकी पुस्तकों में किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं है; हमें कभी भी उस कुशल कलाकार की असाधारण चतुराई की प्रशंसा करने का अवसर नहीं दिया जाता, जो तीक्ष्ण छुरी से हमारे सामने आत्मा की

उस संपूर्ण पेचीदा कार्यप्रणाली को उजागर कर देता है, जिसे चीर-फाड़ के नीचे फैलाया जाता है; न ही हमें रुककर उन उपदेशात्मक प्रवचनों को सुनने के लिए कहा जाता है जो किसी उपन्यासकार की अपेक्षा उपदेशक या व्याख्याता के लिए अधिक उपयुक्त होते हैं। हमें कलाकार ही सिखा रहा है, न कि शरीर रचना विज्ञानी; और अंततः, हम किसी प्रख्यात शरीर क्रिया विज्ञानी के सबसे विस्तृत रेखाचित्रों या अनुभागों की तुलना में राफेल के कार्टूनों से पुरुषों और महिलाओं के वास्तविक स्वरूप का अधिक सटीक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

शार्लोट ब्रोंटे के लेखन में शायद उनकी अटूट ईमानदारी से बढ़कर कोई और गुण नहीं है। वे हमेशा किसी अदृश्य और सर्वशक्तिमान शक्ति के मार्गदर्शन में लिखती थीं, और तभी लिखती थीं जब उन्हें लिखने की तीव्र इच्छा होती थी और उनके पास कहने के लिए कुछ होता था। एक बार उनके मुंह से निकला, "मैं हाल ही में चुप रही हूँ क्योंकि पिछली बार लिखने के बाद से मैंने कुछ भी नहीं लिखा है।" जब तक उन्हें यह विश्वास नहीं होता था कि उन्होंने कुछ लिखा है, कोई ऐसा सत्य जिसे उन्हें दुनिया तक पहुंचाना है, तब तक वे कलम नहीं उठाती थीं। उनके पास तेजी से और बिना किसी रोक-टोक के लिखने का हर प्रलोभन था। घर में पैसों की जरूरत थी, और उपन्यासों के लेखन मात्र से ही पैसा कमाया जा सकता था, जो चाहे अच्छे हों, बुरे हों या औसत दर्जे के हों, बिकते ही थे। लेकिन उन्होंने इस प्रलोभन का बहादुरी से सामना किया, यहाँ तक कि जब उनके दोस्तों की विनतियों से उन्हें और बल मिला तब भी; और शुरू से अंत तक उन्होंने दुनिया को अपना सर्वश्रेष्ठ ही दिया। यह ईमानदारी—दुर्भाग्यवश उन लोगों में दुर्लभ है जिनका भाग्य अपनी बुद्धि को धन में बदलने का कष्टदायी है—इन सीमाओं से कहीं आगे तक जाती थी। जब लेखन के दौरान उन्हें लगता कि कोई पात्र उनके हाथ से फिसल गया है—और हर कथाकार जानता है कि ऐसा कितनी आसानी से हो सकता है—तो वे साहित्यिक कला के नियमों के अनुसार उस चित्र को पूरा करने का प्रयास नहीं करती थीं। वे धैर्यपूर्वक नई प्रेरणा की प्रतीक्षा करती थीं; जागते समय गहन अध्ययन करती थीं, बेचैन नींदों में लगातार अपने काम के सपने देखती थीं, जब तक कि शायद उन्हें आवश्यक प्रेरणा न मिल जाए और वे आगे बढ़ सकें। लेकिन अगर वह प्रेरणा नहीं मिलती थी, तो वे कभी भी साहित्यिक शिल्प कौशल की किसी चतुराई से प्रतिभा की इस प्रेरणा की जगह लेने का दिखावा नहीं करती थीं। चित्र अधूरा ही रह जाता था—जहाँ तक लिखा गया था, वहाँ तक परिपूर्ण

था, लेकिन उस बिंदु पर टूट जाता था जहाँ लेखिका की तीक्ष्ण अंतर्दृष्टि विफल हो जाती थी या उनसे दूर चली जाती थी। और जब उनका काम पूरा हो जाता था, तब भी वे दूसरों के कहने पर उसमें बदलाव या संशोधन करने के लिए तैयार नहीं होती थीं; किसी प्रशंसा या सफलता के लिए भी वे अपने किसी भी पात्र के भाग्य को नहीं बदलती थीं, जैसा कि उनकी प्रतिभा की भट्टी में तय हो चुका था। यहां तक कि जब उनके पिता ने "विलेट" की कहानी का अंत बदलने के लिए अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग किया, तब भी, जैसा कि हम देख चुके हैं, वे अपनी बेटी को इस विपत्ति को छुपाने के लिए ही मना सके। नायक का अंत निश्चित था; और शार्लोट, चाहे उसकी अपनी इच्छा कुछ भी हो, उसे उसके भाग्य से नहीं बचा सकी। इन जैसी सच्ची, ईमानदार, सरल और संपूर्ण पुस्तकें अपने अंतिम भाग्य के लिए फैशन के बदलावों या जनता की पसंद की सनक पर निर्भर नहीं करतीं। ये पुस्तकें एक महान प्रतिभा के धीरे-धीरे विकसित हुए फल के रूप में अपना स्थान बनाए रखेंगी, उन दर्जनों साधारण लेखकों की रचनाओं के पूरी तरह भुला दिए जाने के बहुत बाद भी जो आज दुनिया का ध्यान आकर्षित करने में सक्षम हैं। "जेन आयर" का साहस और जुनून, "शर्ली" की व्यापक मानवीय सहानुभूति, चमकीला हास्य और सजीव चित्रण, और "विलेट" की स्थिर, धैर्यपूर्ण और अद्वितीय शक्ति एकाग्रता, इस शताब्दी के साहित्य के स्मरण और अध्ययन के दौरान प्रशंसा बटोरती रहेगी।

लेकिन जब हम लेखक से स्त्री की ओर, लिखित पन्नों से लेखिका की ओर मुड़ते हैं, और जब हम "कुरेर बेल" के प्रेम प्रसंगों में दिखाई देने वाले पात्रों के स्वरूप और भाग्य को भूलकर उस मार्मिक कहानी को याद करते हैं जो हमेशा हॉवर्थ पार्सनेज और ब्रोंटे परिवार के महान परिवार से जुड़ी रहेगी, तो हम देखते हैं कि कलाकार अपनी रचनाओं से कहीं अधिक महान है, स्त्री लेखिका से कहीं अधिक श्रेष्ठ और पवित्र है, और "जेन आयर" की लेखिका अपने परिश्रम से कहीं अधिक अपने जीवन से हमें साहस, आत्म-बलिदान और धैर्य के वे पाठ सिखाती रहेंगी जिनकी हमारी दीन-हीन मानवता को निरंतर और अत्यंत आवश्यकता है।

समाप्त।

फ्रांसिस ए. लेलैंड द्वारा रचित "द ब्रोंटे फैमिली"

फ्रांसिस लेलैंड एक पूर्व पुस्तक विक्रेता और ब्रैनवेल ब्रोंटे के मित्र थे। उनकी मुलाकात ब्रैनवेल के भाई, हैलिफ़ैक्स के मूर्तिकार जे.बी. लेलैंड के माध्यम से हुई थी, जो ब्रैनवेल के सबसे अच्छे मित्र थे। 1851 में अपने भाई की मृत्यु के बाद, फ्रांसिस को ब्रैनवेल के पत्रों, रेखाचित्रों और कविताओं का विशाल संग्रह विरासत में मिला, जिसे वे प्रकाशित करने के लिए उत्सुक थे। 1886 में उन्होंने यह जीवनी प्रकाशित की, जिसमें ब्रैनवेल की बहनों के बजाय उनके अशांत जीवन पर विशेष ध्यान दिया गया है। जीवनी में, वे इस विचार का समर्थन करते हैं कि एमिली अपने भाई के विशेष रूप से करीब थीं और 'वुथरिंग हाइट्स' दोनों की संयुक्त रचना थी। लेलैंड का दावा है कि ब्रैनवेल ने शार्लोट की जानकारी के बिना, अपनी प्रिय बहन, सहानुभूतिशील एमिली को अपूर्ण पांडुलिपि पूरी करने के लिए सौंप दी थी।

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना।

खंड I

अध्याय 1।

ब्रोंटे बहनों के प्रारंभिक जीवन की परिस्थितियाँ।

अध्याय II.

श्रीमती ब्रोंटे।

अध्याय III.

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे।

अध्याय IV.
ब्रोंटे बहनों का बचपन।
अध्याय V.
ब्रैनवेल का बचपन।
अध्याय VI.
बच्चों की साहित्यिक रुचियां।
अध्याय VII.
युवा।
अध्याय VIII.
ब्रोंटे बहनों के कला संबंधी उद्देश्य।
अध्याय 9.
शार्लोट एट रो हेड।
अध्याय X.
ब्रैनवेल ब्रोंटे और उनकी बहनों के जीवनीकार।
अध्याय XI.
ब्रैनवेल एट ब्रैडफोर्ड।
अध्याय XII.
साहित्यिक प्रभाव और आकांक्षाएँ।
अध्याय XIII.
प्रारंभिक कविताएँ।
अध्याय 14.
'कैरोलाइन' पर कविताएँ।
अध्याय पंद्रह।
पादरी के आवास पर होने वाले कार्यक्रम।
अध्याय सोलह।
ब्रॉटन-इन-फर्नेस में ब्रैनवेल।
अध्याय सत्रह।
सॉवरबी ब्रिज पर ब्रैनवेल। — शार्लोट के प्रयास।
अध्याय 18वां।

ब्रैनवेल की कविता, 1842।
खंड II
अध्याय 1।
शार्लोट और एमिली ब्रुसेल्स में।
अध्याय II.
अन्य कविताएँ।
अध्याय III.
एक गलत जगह पर लगा हुआ लगाव।
अध्याय IV.
‘ब्रैनवेल का पतन,’ जैसा कि उनकी बहनों की जीवनियों में वर्णित है।
अध्याय V.
ब्रैनवेल का प्रस्तावित उपन्यास।
अध्याय VI.
'वास्तविक विश्राम।' - 'पेनमैनमावर।'
अध्याय VII.
बहनों की कविताएँ और उपन्यास। — ब्रैनवेल के साहित्यिक कार्य।
अध्याय VIII.
निराशा। — ब्रैनवेल के पत्र।
अध्याय 9.
ब्रैनवेल के पत्र और श्री ग्रुंडी के साथ उनका अंतिम साक्षात्कार।
अध्याय X.
ब्रैनवेल ब्रोंटे और 'वुथरिंग हाइट्स।'
अध्याय XI.
ब्रैनवेल ब्रोंटे और 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल।'
अध्याय XII.
ब्रैनवेल की कमियां। — ‘जेन आयर’ का प्रकाशन।
अध्याय XIII.
ब्रैनवेल की उत्तरवर्ती काव्य रचनाएँ।
अध्याय 14.

हॉवर्थ में प्रसिद्धि।
अध्याय पंद्रह।
ब्रैनवेल की मृत्यु।
अध्याय सोलह।
ब्रैनवेल का किरदार।

प्रस्तावना।

मुझे लंबे समय से ऐसा लगता रहा है कि ब्रोंटे परिवार का इतिहास अधूरा है और कुछ मायनों में इसे ठीक से समझा भी नहीं गया है। जिन लोगों ने इस पर लिखा है—जैसा कि मैं इन पृष्ठों में आगे बताऊंगा—उनके कुछ विशेष उद्देश्य रहे हैं, जिनके कारण शायद स्वाभाविक रूप से उन्होंने कुछ खास बिंदुओं को ज़रूरत से ज़्यादा महत्व दिया है और अन्य को नज़रअंदाज़ कर दिया है। इस प्रकार, हालांकि ब्रोंटे परिवार पर कई सक्षम रचनाएँ उपलब्ध हैं, फिर भी उनसे संबंधित कई बातें अपेक्षाकृत अस्पष्ट हैं। विशेष रूप से परिवार के एक सदस्य—पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे—के साथ अन्याय हुआ है, जिनके जीवन पर कई बार ऐसे लेखकों ने लिखा है जिनके अपने अन्य उद्देश्य रहे हैं; और भाई के चरित्र की गलतफहमी के कारण, बहनों, विशेष रूप से ऐनी को भी कुछ मामलों में गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस परिस्थिति और इस तथ्य के कारण कि मेरे पास बहुत सी नई जानकारी है और मैं ब्रैनवेल की लिखी हुई काफी मात्रा में अज्ञात कविताएँ यहाँ प्रकाशित कर सकता हूँ, मुझे यह रचना लिखने की प्रेरणा मिली है। इन संग्रहों में शामिल उनकी कविताओं को उनके जीवन के उन कालखंडों के अनुसार रखा गया है जिनमें वे लिखी गई थीं, क्योंकि मुझे लगा कि भले ही उन्हें एक पूर्ण रूप में संकलित करने के कई लाभ हों, ऐसा करने से कविताओं और

उनके लेखक के जीवन दोनों के महत्व में काफी कमी आ जाएगी। ब्रैनवेल की कविताएँ, शायद किसी भी अन्य लेखक की कविताओं की तुलना में, उनके लेखन के समय की भावनाओं को इतनी स्पष्ट रूप से व्यक्त करती हैं कि उनके चरित्र का सही आकलन केवल उन्हें उनके जीवन-इतिहास के अंश के रूप में देखकर ही प्राप्त किया जा सकता है, जो वास्तव में वे हैं। इसके अलावा, जब हम उन परिस्थितियों पर विचार करते हैं जिनमें इनमें से कोई भी कविता लिखी गई थी, तो विषय की हमारी समझ और सराहना स्वाभाविक रूप से अधिक व्यापक और सच्ची हो जाती है। ब्रोंटे परिवार पर लिखने वाले लेखकों का ध्यान इस बात पर गया है कि ब्रैनवेल का उनकी बहनों पर महत्वपूर्ण प्रभाव था; और यद्यपि मैं मानता हूँ कि यह दूसरों के दावों से काफी भिन्न था, फिर भी उनके चरित्र के बारे में विस्तार से बताए बिना न तो उनके साथ और न ही उनकी बहनों के साथ न्याय करना संभव होगा।

इन पृष्ठों में, मैंने रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे के चरित्र पर पुनर्विचार करना उचित समझा है, जिनके चरित्र के साथ-साथ उनके पुत्र के चरित्र के साथ भी उनकी पुत्रियों की जीवनियों में अनुचित व्यवहार किया गया है। मैंने ब्रोंटे परिवार के आसपास की कला और साहित्य की स्थानीय परिस्थितियों का भी कुछ विवरण दिया है, जो उनके इतिहास का एक ऐसा पहलू है जो अब तक अज्ञात रहा है, लेकिन ब्रैनवेल ब्रोंटे और उनकी बहनों के जीवन और कार्यों को सही ढंग से समझने के लिए विशेष रूप से आवश्यक है। इन परिस्थितियों और श्री ब्रोंटे और उनके पुत्र के जीवन के लहजे के प्रति मेरे बदले हुए दृष्टिकोण के कारण मुझे ब्रोंटे परिवार के प्रारंभिक वर्षों का अधिक विस्तार से वर्णन करना पड़ा है, जो अन्यथा आवश्यक नहीं होता, लेकिन मुझे आशा है कि कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालने से यह कमी पूरी हो जाएगी। यहां पहली बार ब्रैनवेल ब्रोंटे द्वारा अपने एक घनिष्ठ मित्र, जे. बी. लेलैंड, जो एक मूर्तिकार थे और जिनकी मृत्यु 1851 में हुई थी, को लिखे गए पत्रों की एक श्रृंखला प्रकाशित की गई है, और इन्हीं पत्रों के माध्यम से ब्रैनवेल के जीवन के एक दिलचस्प कालखंड की नई जानकारी प्राप्त होती है।

मेरे कार्य के कुछ हिस्सों में, विशेषकर बहनों के जीवन से संबंधित भागों में, मैं श्रीमती गैस्केल की आकर्षक पुस्तक 'शार्लोट ब्रोंटे का जीवन' का बहुत ऋणी हूँ; और यह मेरे लिए अत्यंत खेद का विषय है कि मुझे कई बिंदुओं पर उस लेखिका से असहमत होना पड़ रहा है। मैं श्री टी. वेमिस रीड की प्रशंसनीय पुस्तक 'शार्लोट ब्रोंटे:

एक मोनोग्राफ' का भी कुछ हिस्सों में ऋणी हूँ, जिसने श्रीमती गैस्केल द्वारा किए गए कई त्रुटियों और भ्रांतियों को दूर किया है। पाठक यह समझेंगे कि मुझे कई स्थानों पर सुश्री ए. मैरी एफ. रॉबिन्सन की पुस्तक 'एमिली ब्रोंटे' में दिए गए सिद्धांतों का खंडन करना और उनके कथनों पर प्रश्न उठाना पड़ रहा है, जो कि अपने विशेष विषय के संदर्भ में ब्रोंटे परिवार के इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान है।

इस रचना को लिखने में मुझे जॉर्ज सियरल फिलिप्स (जनवरी सियरल) द्वारा 1872 में 'मिरर' में प्रकाशित 'ब्रैनवेल ब्रोंटे' नामक लेख बहुत उपयोगी लगा। फ्रांसिस एच. ग्रुंडी की पुस्तक 'पिक्चर्स ऑफ द पास्ट' में ब्रैनवेल ब्रोंटे पर लिखा अध्याय भी मेरे लिए अत्यंत सहायक रहा है। ये दोनों सज्जन ब्रैनवेल के निजी मित्र थे और मैं उनका आभारी हूं।

इन पृष्ठों को लिखने में मैंने ब्रोंटे परिवार के बारे में जानकारी के कई अन्य स्रोतों का भी उपयोग किया है, जिनमें 'आवर्स एट होम', 'शार्लेट ब्रोंटे के अप्रकाशित पत्र', 'स्क्राइबर', 'शार्लेट ब्रोंटे की यादें', 'एथेनियम', श्री ए. सी. स्विनबर्न द्वारा लिखित 'नोटिस और पत्र' और 'ब्रोंटे-ब्रैनवेल परिवार के जीवित बचे सदस्यों में से एक' शामिल हैं। इस महिला को उनके अत्यंत स्नेहपूर्ण पत्र के लिए भी मैं अपना आभार व्यक्त करना चाहता हूँ।

अपनी इस रचना की तैयारी में मुझे पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे के व्यक्तिगत परिचय रखने वाले कई लोगों की जानकारी और सहानुभूति से बहुत सहायता मिली है। इन लोगों ने उनके जीवन और चरित्र के बारे में मेरे दृष्टिकोण का समर्थन किया है, और ब्रोंटे परिवार के अन्य सदस्यों के बारे में भी उन्हें इसी प्रकार का ज्ञान था। इनमें से, मैं श्री एच. मेरॉल और श्री विलियम वुड का हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जो ब्रैनवेल के शुरुआती परिचित थे; साथ ही श्री विलियम डियर्डन का भी। ब्रैडफोर्ड में ब्रैनवेल के प्रवास के संबंध में जानकारी देने के लिए मैं श्री जे. एच. थॉम्पसन और श्रीमती थॉर्नटन का बहुत आभारी हूँ। मुझे ब्राउन परिवार से भी बहुत जानकारी प्राप्त हुई है, जिनके सभी सदस्य अब इस दुनिया में नहीं हैं, सिवाय श्रीमती ब्राउन के, जिनके प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे ब्रोंटे परिवार की नर्स नैन्सी गैर्स (अब श्रीमती वेनराइट) से भी बहुत विश्वसनीय जानकारी मिली है, और मैं विशेष रूप से उनका आभार व्यक्त करता हूँ। इन सबके अलावा, मैं उन लोगों के प्रति भी अपनी गहरी और हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना नहीं भूलूंगा, जो मुझे उनका नाम लेने की

अनुमति नहीं देंगे, क्योंकि उन्होंने अथक सहयोग, परामर्श और साहित्यिक विवेक का प्रदर्शन उतनी ही खुशी और कुशलता से किया है।

एफ. ए. एल.

ओकवुड, स्किरकोट, हैलिफ़ैक्स, अक्टूबर, 1885।

खंड I

अध्याय 1।

ब्रोंटे बहनों के प्रारंभिक जीवन की परिस्थितियाँ।

ब्रोंटे प्रतिभा — पैट्रिक ब्रोंटे — उनका जन्मस्थान — उनके प्रारंभिक प्रयास — दीक्षा — हार्ट्सहेड में नियुक्ति — हाई टाउन — उनका प्रेम प्रसंग और विवाह — थॉर्नटन में स्थानांतरण — उनका घर — थॉर्नटन चैपल — श्रीमती ब्रोंटे का बिगड़ता स्वास्थ्य — श्री ब्रोंटे द्वारा हॉवर्थ के पद को स्वीकार करना — निवासियों का असभ्य व्यवहार — हॉवर्थ और हेप्टनस्टॉल के बीच स्थानीय झगड़े — हॉवर्थ का वर्णन — श्रीमती ब्रोंटे का निधन।

साहित्यिक सफलता की बहुत कम कहानियाँ ब्रोंटे बहनों की कहानी जितनी रुचि जगाती हैं और अपने आप में इतनी रोचक और मनमोहक हैं। यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है कि कैसे ये बच्चियाँ, जो एकांत में पली-बढ़ीं और एक तरह से बौद्धिक जीवन से कटी रहीं, जिन्हें मानव जाति का अध्ययन करने का सीमित अवसर मिला और बाहरी दुनिया के तौर-तरीकों का न के बराबर ज्ञान था, गहन बुद्धि से भावनाओं के सूक्ष्म जाल को समझने, मानवीय क्रियाओं के मूल को स्पष्ट रूप से प्रकट करने और चरित्र के सबसे मर्दाना और प्रभावशाली पहलुओं को सशक्त ढंग से चित्रित करने में सक्षम हुईं? इसका उत्तर बहनों की प्रारंभिक शक्ति और अंतर्निहित मानसिक प्रवृत्ति में खोजा गया है, जो उनके बचपन के विचित्र और कठोर परिवेश से आकारित और उनके अभागे भाई के दुर्भाग्य और पापों से तीखे प्रकाश और जीवंत भावनाओं से रंगी हुई थी। इन विभिन्न बिंदुओं को स्पष्ट करने के लिए, शार्लोट और एमिली ब्रोंटे के जीवनीकारों ने, जहाँ तक संभव हो, बहनों की बौद्धिक पृष्ठभूमि और क्षमता का वर्णन किया है, उनके मित्रहीन बचपन की कहानी को गंभीर रंगों में चित्रित किया है, और अंत में, स्पष्ट निंदा के साथ, उनके भाई पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे के दुखद इतिहास के बारे में हमें वह सब कुछ बताया है जो वे जानते थे। यह एक विचित्र तथ्य है कि यह भाई, जिसे उसका परिवार अपना सबसे उज्ज्वल रत्न और आशा मानता था, इन दिनों केवल अपनी बहनों के साथ ही उल्लेखित किया जाता है, और वह भी क्षमा याचना के साथ। इस कृति के दौरान, जिसमें ब्रैनवेल ब्रोंटे के माता-पिता से लेकर उनकी मृत्यु तक के जीवन का पता लगाया जाएगा, हमें इस परिस्थिति का स्पष्टीकरण मिलेगा; लेकिन हम यह भी पाएंगे कि, उनकी कमियों और पापों के बावजूद, उनकी बौद्धिक प्रतिभा, जैसा कि उनकी साहित्यिक प्रतिभा और उनके अवशेषों से प्रमाणित होता है, उन्हें उस असाधारण परिवार के एक योग्य सदस्य के रूप में उच्च स्थान का हकदार बनाती है। इसके अलावा, यह भी देखा जाएगा कि शार्लोट, एमिली और ऐनी पर उनका प्रभाव उतना नहीं था जितना आमतौर पर माना जाता है, और उनकी घरेलू परेशानियों के अलावा अन्य परिस्थितियों ने भी उन्हें अपनी उत्कृष्ट कृतियों को लिखने के लिए प्रेरित किया।

इन प्रतिभाशाली लेखकों के पिता, पैट्रिक ब्रोंटे, जिनका जीवन और व्यक्तित्व अध्ययन के योग्य है, डाउन काउंटी के मूल निवासी थे। उनका जन्म सेंट पैट्रिक दिवस, 1777 को हुआ था; और अपने पिता ह्यूग ब्रोंटे, उर्फ ब्रंटी के घर अहाडेर्ग में अपना

बचपन बिताने के बाद - अपने माता-पिता के घर में शोरगुल मचाने वाले दस बच्चों में से एक - उन्होंने सोलह वर्ष की आयु में उसी काउंटी के ड्रमगूलैंड में एक ग्राम विद्यालय खोला। वयस्क होने के बाद भी वे इसी व्यवसाय में लगे रहे और श्रीमती गैस्केल के अनुमान के विपरीत, वे कभी शिक्षक नहीं बने; लेकिन पादरी बनने की महत्वाकांक्षा के कारण, अपने संरक्षक, डाउन काउंटी के ड्रमगूलैंड और ड्रमबैलीरूनी के पादरी श्री टाइघे की सहायता से, उन्हें 1 अक्टूबर, 1802 को सेंट जॉन कॉलेज, कैम्ब्रिज में प्रवेश मिला, जब वे 25 वर्ष के हो चुके थे। कैम्ब्रिज में उन्होंने एक सक्रिय जीवन व्यतीत किया, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है। यह ज्ञात है कि उन्होंने उस स्वयंसेवी दल में शामिल होकर फ्रांस के आक्रमण के खतरे से निपटने के लिए तैयारी की थी। अपने कॉलेज में चार वर्ष बिताने के बाद, 1806 में कला स्नातक की उपाधि प्राप्त करने पर, उन्हें पादरी के रूप में नियुक्त किया गया और एसेक्स में एक क्यूरेसी के पद पर नियुक्त किया गया, जहाँ वे संभवतः अधिक समय तक नहीं रहे।

यॉर्कशायर के वेस्ट-राइडिंग में स्थित हार्ट्सहेड के स्थायी पादरी का पद रिक्त हो जाने पर, ड्यूसबरी के पादरी द्वारा निवेदन किए जाने पर श्री ब्रोंटे को यह पद प्राप्त हुआ।

हार्ट्सहेड में स्थित सेंट पीटर का गिरजाघर, जिसमें नॉर्मन काल के व्यापक अवशेष मौजूद हैं और जिसका हाल ही में जीर्णोद्धार किया गया है, उसी नाम के मूल गांव से लगभग एक मील दूर एक ऊंचे स्थान पर स्थित है। अपने चौड़े, निचले और विशाल बुर्ज और पुराने विशालकाय यू वृक्ष के साथ, यह कई मील दूर तक एक विशिष्ट दृश्य प्रस्तुत करता है, और चारों ओर से काल्डर और कोल्ने की घाटियों के विस्तृत और भव्य दृश्य प्रस्तुत करता है, जिनमें वनों से ढकी ढलानें, रमणीय खेत और घाटियों में बसे व्यस्त गांव शामिल हैं। पहाड़ी की तलहटी में, किर्कलीस के घने और अंधकारमय जंगल, हेनरी द्वितीय के शासनकाल में रेनरस फ्लैंड्रेनसिस द्वारा सिटॉक्स संप्रदाय की ननों के लिए स्थापित मठ के लगभग अविभाज्य अवशेषों को छिपाते हैं।

किर्कलीस से जुड़ी रोचक परिस्थितियाँ और प्रमाण मौजूद हैं, खासकर उस पार्क में जहाँ से काल्डर नदी दिखाई देती है। इस मठ का भी अपना एक दिलचस्प इतिहास है, जो एलिज़ाबेथ डी स्टेनटन के एकांत जीवन से जुड़ी घटनाओं से संबंधित है। एलिज़ाबेथ डी स्टेनटन मठ की मठाधिपिका थीं, और उन्हीं का स्मारक उस मठ के धार्मिक लोगों की कब्रों की निशानी के तौर पर बचा है। रॉबिन हुड से जुड़ी कहानियाँ

भी प्रचलित हैं। यहाँ आज भी वह कक्ष मौजूद है, जिसके बारे में परंपरा कहती है कि 'महान डाकू' की मृत्यु हुई थी, और साथ ही वह कब्र भी, जो वहाँ से धनुष की मार की दूरी पर स्थित है, जहाँ पीढ़ियों से लोग मानते आए हैं कि उनकी अस्थियाँ विराजमान हैं। किर्कलीस जिले में शार्लोट ब्रोंटे की विशेष रुचि थी, और उन्होंने इसे अपनी रचना 'शर्ली' में ननेली के नाम से वर्णित किया है, जिसमें इसके पुराने गिरजाघर, जंगल, मठ के खंडहर और 'इसके प्रतिष्ठित व्यक्ति - इसके बैरोनेट' का जिक्र है। लुई मूर उस बैरोनेट के घर नहीं जा सके - हालांकि वह एक दयालु सज्जन थे - क्योंकि वहां वे 'अर्ल ऑफ हंटिंगडन के भूत से मिलने के लिए उनसे और उनके साथियों के धुंधले समूह से ननेली जंगल के सबसे घने, काले और पुराने ओक के पेड़ की छांव में मिलने का समय तय करना ज्यादा पसंद करते... बल्कि उस खंडहर हो चुके मठ के गीले और खरपतवार से ढके अवशेषों के बीच, जंगल के भीतरी हिस्से में सड़ते हुए, किसी प्रेत मठाध्यक्षा या धुंधली नन से मिलने का समय तय करना ज्यादा पसंद करते।'

श्री ब्रोंटे ने वर्ष 1811 में हार्ट्सहेड में अपनी सेवाएँ शुरू कीं; और चर्चवार्डन की पुस्तक में 1815 तक उन्हें भुगतान किए गए ईस्टर-शुल्क का विवरण दर्ज है। यह दिलचस्प बात है कि श्री ब्रोंटे के इस प्रारंभिक उल्लेख में, नाम को 'ब्रंटी' और 'ब्रोंटी' दोनों तरह से लिखा गया है।

हार्ट्सहेड में कोई स्थायी घर न होने और उस समय न तो इस स्थान पर और न ही पड़ोसी गाँव क्लिफ्टन में कोई उपयुक्त निवास उपलब्ध होने के कारण, श्री ब्रोंटे ने हाई टाउन में, लिवरसेड्ज के पास, बिर्स्टॉल के पल्ली में क्लॉ लेन के शीर्ष पर स्थित एक विशाल और सुखद घर में निवास किया, जो उनके इलाज के स्थान से लगभग एक मील दूर था। सुंदर दृश्यों से सुसज्जित इस घर में प्रवेश एक सामान्य चौड़ाई के गलियारे से होता है, जिसके बाईं ओर ड्राइंग रूम है, जिसकी बीम प्लास्टर मोल्डिंग से सुशोभित हैं, जैसा कि निर्माण के समय था। गलियारे के दाईं ओर भोजन कक्ष है। नाश्ते का कमरा और रसोईघर इनके पीछे हैं। यह घर तीन मंजिला है और सड़क से लगभग दो गज पीछे है, जो सीधे लिवरसेड्ज और क्लेकहीटन के अब घनी आबादी वाले कस्बों की ओर जाती है। ये दोनों ही काफी प्राचीन स्थान हैं, जिनके निवासी विभिन्न कारखानों में कार्यरत थे और श्री ब्रोंटे के समय में इनकी संख्या बढ़ रही थी।

अब जब उनके पास पर्याप्त आमदनी और एक आलीशान घर था, तो उन्हें उन चिंताओं से राहत मिली, जो संभवतः उनके शुरुआती संघर्षों में उनके साथ थीं; और

कुछ समय के लिए अपनी महत्वाकांक्षा को विराम देने के बाद, उन्होंने शांति और संतोष के साथ काव्य चिंतन की ओर रुख किया। उनकी पहली पुस्तक का नाम 'कॉटेज पोएम्स' था, जिसके शीर्षक पृष्ठ पर उन्होंने स्वयं को 'रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे, बी.ए., हार्ट्सहेड-कम-क्लिफ्टन के मंत्री' के रूप में वर्णित किया है। यह पुस्तक 1811 में हैलिफ़ैक्स में प्रकाशित हुई थी। इसके कुछ विषय इस प्रकार हैं: 'खुशहाल कॉटेजवासी', 'इंद्रधनुष', 'शीतकालीन रात्रि ध्यान', 'एक महिला को उसके जन्मदिन पर भेजे गए छंद', 'कॉटेज मेड' और 'मकड़ी और मक्खी'। श्री ब्रोंटे अपने और अपने काम के बारे में इस प्रकार कहते हैं: 'पादरी के कामों से मुक्त होने पर वे 'कॉटेज पोएम्स' लिखने में व्यस्त हो गए;' सुबह से दोपहर तक और दोपहर से रात तक, उनका काम अवर्णनीय आनंद से भरा रहता था, ऐसा आनंद जिसका वे जीवन भर अनुभव करना चाहते थे। उनके घंटे सुखद और लगभग अनभिज्ञतापूर्वक बीतते थे, और जब रात होती और वे सोने के लिए लेटते, मीठी शांति और मन की स्थिरता के साथ उनकी आँखें नींद में बंद होने से पहले, वे अक्सर सोचते थे कि यद्यपि आलोचना की संवेदनशीलता उन्हें नापसंद हो, फिर भी अपने विनम्र कार्य को पूरा करने का दिन का काम ईश्वर की दृष्टि में सुखद था, और उनकी कृपा से यह किसी जरूरतमंद आत्मा के लिए उपयोगी हो सकता है जिसे आलोचनात्मक बारीकियों की परवाह न हो। वे पूरे समय शत्रुतापूर्ण आलोचना के प्रति उदासीन होने का दावा करते हैं।

यह जानकर सुखद लगता है कि श्री ब्रोंटे, यद्यपि इंग्लैंड के एक रमणीय क्षेत्र में संपन्न जीवन व्यतीत कर रहे थे, फिर भी अपने माता-पिता और अपनी जन्मभूमि को नहीं भूले। जब तक उनकी माताजी जीवित रहीं, वे उन्हें प्रति वर्ष बीस पाउंड भेजते रहे; और यद्यपि हमारे पास इस अवसर का कोई लिखित प्रमाण नहीं है, हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि उन्हें आयरलैंड की यात्रा करने का अवसर अवश्य मिला होगा। उन्होंने अपने प्रारंभिक जीवन के क्षेत्र से अपना संबंध बनाए रखा; और बाद के वर्षों में, उन्होंने श्री टाइघे के एक रिश्तेदार को अपना सहायक नियुक्त किया। उनकी ‘कॉटेज पोयम्स’ में से एक का शीर्षक ‘द आयरिश केबिन’ है, जिसकी एक-दो पंक्तियाँ यहाँ दी जा सकती हैं: —

'क्या गरीबी, संयमित और स्वच्छ होनी चाहिए?'
कृपया जब भी देखने के लिए प्रस्तुत किया जाए,
क्या केबिन भूरी या हरी बंजर भूमि पर होना चाहिए?

आपको जो भी बात दिलचस्प लगे, उसका खुलासा करें;
क्या एरिन के मधुर वीणा की ध्वनि कानों को सुकून देगी?
जब मेरी जैसी उंगलियों से स्पर्श होता है,
फिर कृपया ध्यानपूर्वक पास आओ,
और प्रत्येक पंक्ति पर ईमानदारी से विचार करें।'

वह उत्तरी आयरलैंड की एक ऊँची पर्वत श्रृंखला, मोर्ने के पहाड़ों पर एक शीतकालीन दृश्य का वर्णन करता है, और इस प्रकार अपनी कविताओं में वर्णित स्वच्छ और मेहनती झोपड़ी में अपने आतिथ्यपूर्ण स्वागत का संकेत देता है:

निर्मम तूफान से बच निकला,
मैंने उस साधारण आश्रम में प्रवेश किया;
इमारत छोटी और गर्म थी।
फर्नीचर सरल और सुव्यवस्थित होना चाहिए।
और अब, प्रिय पाठक, स्वीकृति दें।
प्रत्येक हृदय में जो जोश प्रज्वलित था,
हमारे झोपड़ीवासियों ने दयालुतापूर्वक प्रयास किया
अपने अतिथि का सम्मानपूर्वक स्वागत करना।

इस पुस्तक से और अधिक अंश यहाँ देना अनावश्यक है; इतना कहना ही पर्याप्त है कि संभवतः श्री ब्रोंटे उस दिन को देखने के लिए जीवित रहे जब उन्हें इस बात का दुख और आश्चर्य हुआ कि उन्होंने कभी इसे प्रेस को सौंप दिया था।

हालांकि श्री ब्रोंटे की कविताएँ शांतिपूर्ण और संतुष्ट जीवन की चाहत से प्रेरित हैं, जो उत्तेजना और चिंताओं से मुक्त हो, फिर भी संकट और आपात स्थितियों में, जैसे कि हार्ट्सहेड में उनके कार्यकाल के दौरान हुए लुडाइट दंगों में, उन्होंने एक बार फिर वही सक्रिय और दृढ़ निश्चय दिखाया जिसने उनकी प्रारंभिक महत्वाकांक्षा को प्रेरित और पोषित किया था; और पड़ोस के अशांत वातावरण को दबाने में उनकी तत्परता ने उन्हें असंतुष्ट लोगों के बीच बेहद अलोकप्रिय बना दिया होता, यदि वे उनके आचरण की ईमानदारी और अटूट सत्यनिष्ठा का सम्मान करना न सीख लेते। इन प्रारंभिक काल में श्री ब्रोंटे के ऊर्जावान जीवन, उनकी निरंतर महत्वाकांक्षा और साहित्यिक गतिविधियों में, जो स्पष्ट रूप से उनके लिए प्रिय थीं, हम उन प्रेरक शक्ति, साहित्यिक आकांक्षा और रुचि के कारकों को देख सकते हैं जिन्होंने उनके बच्चों की विशिष्ट

बौद्धिक क्षमता का निर्माण किया।

श्रीमती गैस्केल ने अपनी पुस्तक 'शार्लेट ब्रोंटे का जीवन' में रेवरेंड श्री ब्रोंटे के प्रेम प्रसंग और विवाह के कुछ विवरण दिए हैं, जिनमें उन्होंने काफी रुचि दिखाई थी।

श्री ब्रोंटे की मुलाकात अपनी भावी पत्नी (मिस मारिया ब्रैनवेल - जिनके चरित्र के बारे में मैं अगले अध्याय में बात करूंगा - जो पेनज़ेंस के दिवंगत श्री टी. ब्रैनवेल की तीसरी पुत्री थीं) से लगभग 1812 की गर्मियों में हुई थी, जब वह अपने चाचा, रेवरेंड जॉन फेनेल से मिलने गई थीं। फेनेल एक मेथोडिस्ट पादरी और ब्रैडफोर्ड के पास वुडहाउस ग्रोव स्थित वेस्लेयन अकादमी के प्रधानाध्यापक थे, लेकिन बाद में वे एस्टैब्लिशमेंट के पादरी बन गए और हैलिफ़ैक्स पैरिश के क्रॉसस्टोन के पादरी नियुक्त किए गए। इस मुलाकात के तुरंत बाद सगाई हो गई और श्रीमती गैस्केल के अनुसार, सितंबर के सुहावने दिनों में किर्कस्टॉल एबे में पिकनिक मनाने की योजना थी, जिसमें 'चाचा, चाची और चचेरी बहन जेन' - जेन की सगाई एक अन्य पादरी श्री मॉर्गन से हुई थी - भी शामिल थे।

श्री ब्रोंटे ने जिस कृति के उद्देश्य और दायरे का वर्णन किया है, जिससे मैंने एक अंश लिया है, और उस पर कार्य करते समय उनकी मनस्थिति का जो विवरण दिया है, उससे हमें ब्रोंटे परिवार के पिता के आंतरिक जीवन की झलक मिलती है, जो मिस ब्रैनवेल से विवाह से पहले हार्ट्सहेड में स्थायी सहायक पादरी के रूप में उनके प्रवास के दौरान का है। अपने जीवन के इस काल में वे पूर्णतः सुखी प्रतीत होते थे; भविष्य के किसी भी दुख या आशंका ने उनकी शांति को धूमिल या कम नहीं किया था। यह विवाह 29 दिसंबर, 1812 को ब्रैडफोर्ड के पास गाइज़ली में संपन्न हुआ, जिसका संचालन बियरली के पादरी रेवरेंड डब्ल्यू मॉर्गन ने किया, जो 'चचेरी बहन जेन' के मंगेतर थे। यह एक अत्यंत रोचक तथ्य है कि उसी दिन और उसी स्थान पर, श्री ब्रोंटे ने अपनी पत्नी की चचेरी बहन, मिस जेन फेनेल, जो ऊपर उल्लिखित श्री फेनेल की इकलौती पुत्री थीं, और रेवरेंड डब्ल्यू मॉर्गन के बीच विवाह समारोह संपन्न कराया, जिन्होंने जैसा कि बताया गया है, ठीक उसी समय स्वयं अपने विवाह समारोह में भी विवाह संपन्न कराया था।

अगर महिला को विदा करने की जिम्मेदारी श्री फेनेल को न सौंपी गई होती, तो वे स्वाभाविक रूप से अपनी भतीजी और श्री ब्रोंटे के लिए यह समारोह संपन्न करते।

जब श्री ब्रोंटे हार्ट्सहेड में वैवाहिक जीवन में स्थिर हो गए और उनके आसपास एक

युवा परिवार के पनपने की संभावना थी, तो उन्होंने भविष्य के चिंतन में आनंद का अनुभव किया। श्रीमती ब्रोंटे, जो अपने घरेलू तौर-तरीकों में हमेशा सौम्य और स्नेही थीं, ने उनके साहित्यिक कार्यों में उन्हें सांत्वना और प्रोत्साहन दिया और अपनी तीक्ष्ण दृष्टि और सटीक निर्णय से उनका मार्गदर्शन और सहायता की। इसी दौरान श्री ब्रोंटे ने 'द रूरल मिनिस्ट्री' नामक पुस्तक लिखी, जो 1813 में हैलिफ़ैक्स में प्रकाशित हुई। इस कृति में वर्णनात्मक कविताओं का एक संग्रह था, जिनके शीर्षक थे: 'द सब्बाथ बेल्स', 'किर्कस्टॉल एबे', 'एक्सटेम्पोर वर्सेज', 'लाइन्स टू अ लेडी ऑन हर बर्थडे', 'एन एलेजी', 'रिफ्लेक्शंस बाय मूनलाइट', 'विंटर', 'रूरल हैप्पीनेस', 'द डिस्ट्रेस एंड रिलीफ', 'द क्रिश्चियन्स फेयरवेल' और 'द हार्पर ऑफ एरिन'। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हार्ट्सहेड में रहते हुए उनकी इन दो रचनाओं के प्रकाशन के कारण, श्री ब्रोंटे आसपास के क्षेत्रों में एक महत्वाकांक्षी और साहित्यिक संस्कृति एवं प्रतिभा के धनी व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हो गए।

श्री ब्रोंटे अपनी दुल्हन को हाई टाउन स्थित अपने घर ले गए थे, और वहीं उनकी बेटियाँ मारिया और एलिजाबेथ का जन्म हुआ। मारिया का बपतिस्मा 23 अप्रैल, 1814 को हुआ था और रजिस्टर में उनका नाम 'पैट्रिक ब्रोंटे और उनकी पत्नी मारिया की बेटी' के रूप में दर्ज है। रेवरेंड श्री मॉर्गन ने बपतिस्मा संपन्न कराया था। एलिजाबेथ के बारे में रजिस्टर में ऐसी कोई प्रविष्टि नहीं है, क्योंकि उनका बपतिस्मा अन्य बच्चों के साथ थॉर्नटन में हुआ था।

हार्ट्सहेड-कम-क्लिफ्टन में लगभग पाँच वर्षों तक पादरी रहने के बाद, श्री ब्रोंटे ने पद से इस्तीफा दे दिया और ब्रैडफोर्ड के विकर से थॉर्नटन के पादरी का पदभार ग्रहण कर लिया, जो उस पल्ली में एक स्थायी पादरी पद था। यह संभवतः ब्रैडफोर्ड के क्राइस्ट चर्च के तत्कालीन पादरी श्री मॉर्गन के सुझाव पर हुआ था।

थॉर्नटन घाटी के उत्तरी ढलान पर खूबसूरती से बसा हुआ है। आसपास की पहाड़ियों पर हरे-भरे और उपजाऊ चारागाह फैले हुए हैं, और छायादार पगडंडियों वाली वनभूमि इस क्षेत्र की सुंदरता को और भी बढ़ा देती है। श्रीमती गैस्केल कहती हैं, 'यह इलाका वीरान और जंगली है; पत्थर की दीवारों से घिरे बंजर भूभाग क्लेटन हाइट्स तक फैले हुए हैं।' शार्लेट की जीवनीकार द्वारा चित्रित यह अप्रिय तस्वीर, जिले की वास्तविक स्थिति से मेल नहीं खाती। यहाँ की मिट्टी प्राकृतिक रूप से उपजाऊ है, और निवासी अपनी मेहनत और उद्यमशीलता के लिए जाने जाते हैं। इसलिए,

पहाड़ियों और घाटियों के विस्तृत क्षेत्र में अब कोई बंजर भूमि खेती योग्य भूमि में दखल देती हुई दिखाई नहीं देती।

यह कस्बा कुछ हद तक नियमित रूप से बसा हुआ है। मुख्य सड़क पर वह घर स्थित है जहाँ श्री ब्रोंटे थॉर्नटन में अपने प्रवास के दौरान रहे थे। हॉल के दरवाजे तक पहुँचने के लिए कई सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती थीं। हॉल के एक तरफ भोजन कक्ष था और दूसरी तरफ ड्राइंग रूम। सामने की ओर जाने वाले मार्ग के ऊपर एक ड्रेसिंग रूम था, जिसकी खिड़की से पड़ोसी अक्सर श्री ब्रोंटे को तैयार होते हुए देखते थे। घर के दरवाजे के ऊपर, एक पत्थर की पटिया पर, आज भी ये अक्षर दिखाई देते हैं:

एक।

एस।

1802

ये जॉन और सारा ऐशवर्थ के नाम के शुरुआती अक्षर हैं, जो थॉर्नटन के पूर्व निवासी थे; और यह निवास स्थान तब तक पादरी के निवास के रूप में बना रहा जब तक कि श्री ब्रोंटे के उत्तराधिकारी द्वारा चैपल के निकट नीचे एक और निवास स्थान का निर्माण नहीं किया गया।

थॉर्नटन का चैपल एक संकरा, संकुचित और भद्दा भवन है। उत्तरी भाग में वर्गाकार कॉटेज खिड़कियों की दो पंक्तियाँ हैं, जहाँ से रोशनी आती है। दक्षिणी भाग में पाँच नुकीली, लंबवत खिड़कियाँ हैं, जिनसे सूर्य की रोशनी अंदर के अंधकार को दूर करती है।

छोटी सी प्रार्थना-प्रार्थना की मेज चार चौखटों वाली खिड़की से रोशन होती है, जिसके ऊपर दीवार पर बाहर की ओर 1620 की तारीख अंकित है। भूतल पर ऊँची पीठ वाली, बिना रंगी हुई लकड़ी की बेंचें लगी हैं। दो दीर्घाएँ खिड़कियों को लगभग छिपा देती हैं और इमारत के भीतर उदासी का माहौल बना देती हैं। बेंचों के नीचे और गलियारों में कब्र के पत्थर बिछे हैं, और नम और जर्जर भीतरी हिस्से में दुर्गंध फैली हुई है। इसी चैपल में श्री ब्रोंटे उपदेश देते थे और पादरी और क्लर्क से काफी ऊपर बने मंच से, जहाँ से वे अपने उपदेश देते थे, वे अपने ठीक नीचे वाली बेंच पर बैठी अपनी पत्नी और बच्चों को देख सकते थे।

थॉर्नटन के नए पादरी ने अपने चैपल में सक्रिय रुचि दिखाई है; क्योंकि पश्चिमी स्क्रीन में, जो एक प्रकार की लॉबी को नेव से अलग करती है, एक लकड़ी की पट्टिका

पर एक शिलालेख चित्रित है जिसमें दर्ज है कि वर्ष 1818 में इस चैपल की 'मरम्मत और सौंदर्यीकरण' किया गया था, उस समय रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे, बी.ए., मंत्री थे।

थॉर्नटन में रहते हुए श्री ब्रोंटे ने अपने साहित्यिक कार्यों को निरंतर जारी रखा, जिनमें से एक उनकी लघु पुस्तक 'द कॉटेज इन द वुड, ऑर द आर्ट ऑफ बिकमिंग रिच एंड हैप्पी' थी। यह एक धर्मनिष्ठ परिवार की कहानी है, जिसमें एक वृद्ध दंपत्ति और एक गुणी संतान शामिल है, जिसकी सुंदरता और शिक्षा उसे एक साधारण परिवार की बेटी से कहीं अधिक प्रतिष्ठित बनाती है। संयोगवश, एक युवक लगभग बेबस अवस्था में उनके घर आता है, जिसकी आदतें अत्यंत अनैतिक और अनैतिक हैं, जैसा कि आगे की कहानी से पता चलता है; और पुस्तक का उद्देश्य निरंतर असंयम के भयावह परिणामों को दर्शाना है। कहानी गद्य में लिखी गई है, लेकिन श्री ब्रोंटे ने कथा की एक घटना का काव्यात्मक रूप भी प्रस्तुत किया है। इसका शीर्षक 'द नाइटली रेवेल' है और इसकी अपनी एक अलग ही गरिमा है। निम्नलिखित अंश में, 1811 में हैलिफ़ैक्स में प्रकाशित उनके छोटे से संग्रह की शैली की तुलना में, शब्द चयन और छंद दोनों में काफी सुधार दिखाई देता है। इसी कारण से इसे पुन: प्रस्तुत करना उचित है।

मेज के चारों ओर चमकीले गिलास चमक रहे हैं।
भूरे रंग की बीयर से भरा हुआ, या लाल रंग की शराब से सजा हुआ;
हर कोई अपना गिलास गटकता है, और प्यास से तड़पते हुए और मांगता है।
जब तक उन्मादपूर्ण उल्लास, गीत और बेकाबू कोलाहल न हो जाए,
और व्यर्थ का भयंकर विवाद, और क्रूर लड़ाई
शांत रात की मीठी नींद को भंग कर दो।
‘बिना, भीतर, ऊपर, नीचे, चारों ओर,
अधार्मिक मजाक और मुंहफट कसमों की गूंज सुनाई देती है;
कमजोर तर्कशक्ति, कांपते हुए, अपने लड़खड़ाते सिंहासन को छोड़ देती है।
सत्य, सम्मान, सद्गुण, न्याय, सब कुछ लुप्त हो गया है;
धूर्त, काली निगाहों वाली वेश्या की घातक साँस
यह पाप, दुःख, शर्म और मृत्यु की ओर आकर्षित करता है।
जुए की मेज भी, वह घातक जाल है।
सबसे तीव्र भावनाओं से घिरे होने के कारण पतन होता है;

पश्चाताप, निराशा, प्रतिशोध और घातक घृणा
अंधकारमय डिजाइन के साथ, कठोर कारावास में प्रतीक्षा करो,
जब तक स्कारलेट मर्डर अपना खूनी हाथ नहीं लहराता,
गंभीर स्वर में भयानक आदेश देता है;
फिर वे तेजी से बाहर निकलते हैं, और गुप्त आवरण से
तेज धार वाली तलवार निकालो और मृत्यु का काम कर दो।

श्री ब्रोंटे ने 1818 में, हॉवर्थ में अपनी नियुक्ति से पहले, अपनी रचना 'मेड ऑफ किलार्नी' प्रकाशित की थी। वह थॉर्नटन में ज्यादा समय तक नहीं रहे थे, जहां वह लगभग 1815 में गए थे, जब उनके परिवार में काफी वृद्धि होने से उनकी माता-पिता की जिम्मेदारियां बढ़ गईं थीं।

जब उन्होंने यह पद स्वीकार किया, तो संभवतः उन्हें हार्ट्सहेड की तुलना में अधिक वेतन मिलता था, लेकिन एक युवा परिवार की जिम्मेदारियों ने शायद उन्हें कुल मिलाकर गरीब बना दिया। वहीं अप्रैल 1816 में शार्लोट ब्रोंटे, 1817 में पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे, 1818 में एमिली जेन ब्रोंटे और संभवतः श्रीमती गैस्केल के अनुसार, श्री ब्रोंटे के हॉवर्थ जाने से ठीक पहले ऐनी ब्रोंटे का जन्म हुआ, जो 25 फरवरी 1820 को हुआ था।

थॉर्नटन में ब्रोंटे परिवार के जीवन के बारे में हमें बहुत कम जानकारी है। लेकिन उस समय श्री ब्रोंटे कई बातों से चिंतित थे। उनकी पत्नी का स्वास्थ्य उनके लिए बहुत दुखद था, और हालांकि उन्हें अपने साहित्यिक कार्यों और अपने पादरी मित्रों की संगति से कुछ सांत्वना मिलती थी, फिर भी निकट भविष्य में आने वाले शोक और पीड़ा के समय की आशंका से उनका मनोबल टूट जाता था।

छह छोटे बच्चों के साथ, जो जल्द ही माँ-विहीन हो सकते थे, श्री ब्रोंटे का भविष्य अंधकारमय और निराशाजनक था, और उन्होंने अपने इलाज के स्थान को छोड़ने का विचार भी किया। यहाँ, ब्रैडफोर्ड से उचित दूरी पर रहते हुए, उन्हें हार्ट्सहेड की तुलना में मित्रों के व्यापक दायरे में रहने का अवसर मिला, और यहीं उनके बच्चों को स्थानीय जीवन और चरित्र की पहली झलक मिली। थॉर्नटन के पुराने निवासी उन्हें अपने पिता के निवास के सामने, गाँव की गली में खेलते हुए याद करते थे, और अक्सर उन्हें गोद में लिए हुए या उनके माता-पिता को हाथ पकड़कर आस-पड़ोस की गलियों में ले जाते हुए देखते थे। जब उन्होंने थॉर्नटन छोड़ा तब वे बच्चे ही थे; फिर भी, कई मायनों में,

उस गाँव के निवासी खुद को सौभाग्यशाली मान सकते हैं कि यह 'जेन आयर', 'वुथरिंग हाइट्स' और 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल' के लेखकों का जन्मस्थान था।

कुछ समय बाद श्री ब्रोंटे को थॉर्नटन छोड़ने का अवसर मिला, क्योंकि हॉवर्थ में पादरी श्री चार्नोक की मृत्यु के कारण एक पद रिक्त हो गया था। इस गिरजाघर का वातावरण अधिक सुखद था और पादरी का वेतन थॉर्नटन की तुलना में कुछ बेहतर था, इसलिए श्री ब्रोंटे ने संरक्षक के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। हालांकि, हमें बताया गया है कि जब उन्होंने अपने प्रस्तावित सेवा स्थल का दौरा किया, तो उन्हें बताया गया कि हालांकि उन्हें व्यक्तिगत रूप से पैरिशवासियों से कोई आपत्ति नहीं थी, फिर भी ब्रैडफोर्ड के विकर के नामित व्यक्ति होने के नाते, उन्हें स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि इस नियुक्ति में निवासियों के पास वीटो का अधिकार था।

श्री ब्रोंटे द्वारा यह घोषणा किए जाने पर कि यदि उन्हें निवासियों का समर्थन प्राप्त न होता, तो उनकी सेवाएँ व्यर्थ होतीं, संरक्षक द्वारा यह स्थान श्री रेडहेड को भेंट कर दिया गया, और ऐसा प्रतीत होता है कि गाँव असाधारण घटनाओं का केंद्र बन गया। ऐसा प्रतीत होता है कि धर्मसुधार आंदोलन के बाद, हॉवर्थ के पादरी पद की नियुक्ति, जो अनादि काल से ब्रैडफोर्ड के विकर के पास थी, ज़मींदारों और कुछ न्यासियों के नियंत्रण में आ गई, जिनके पास पादरी के वेतन के लिए मुख्य निधि थी, जिसे वे अपने द्वारा दिए गए अधिकार के बल पर रोक सकते थे। वास्तव में, वे वेतन रोककर किसी भी समय किसी नियुक्ति को अस्वीकार या रद्द कर सकते थे, यदि वह उन्हें स्वयं अप्रिय लगती थी। श्री ब्रोंटे ने बाद में श्री रेडहेड के बारे में लिखते हुए कहा: ‘मेरे पूर्ववर्ती ने ब्रैडफोर्ड के विकर और कुछ न्यासियों की सहमति से पदभार ग्रहण किया था, जिसके परिणामस्वरूप उनका इतना विरोध हुआ कि केवल तीन सप्ताह के कार्यकाल के बाद ही उन्हें इस्तीफा देने के लिए विवश होना पड़ा।’ यह विरोध और इसके तात्कालिक परिणाम क्या थे, यह हमें श्रीमती गैस्केल की ‘शार्लट ब्रोंटे का जीवन’ पुस्तक से पता चलता है, और यहाँ इनका उल्लेख वेस्ट-राइडिंग के निवासियों और इन ऊबड़-खाबड़ और तूफानी पहाड़ियों पर बसे लोगों के असाधारण संकल्प और चरित्र की दृढ़ता के उदाहरण के रूप में किया जा सकता है।

हॉवर्थ के पादरी श्री चार्नोक की मृत्यु से पहले लंबी बीमारी के दौरान, उनके सहायक पादरी श्री रेडहेड ने उनका स्थान ग्रहण किया था। श्री ब्रोंटे के पद छोड़ने पर,

जैसा कि ऊपर बताया गया है, संरक्षक ने उन्हें रिक्त पद के लिए नियुक्त किया और ऐसा प्रतीत होता है कि वे निवासियों की अवहेलना करते हुए भी पादरी पद पर अपना अधिकार बनाए रखने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। लेकिन ज़मींदारों ने यह महसूस करते हुए कि उन्हें उनके लंबे समय से स्थापित विशेषाधिकार से वंचित किया जा रहा है, या उसमें हस्तक्षेप करने का प्रयास किया जा रहा है, श्री रेडहेड की नियुक्ति का विरोध किया। इस सज्जन के चर्च में पहली बार उपदेश देने के अवसर पर, चर्च उपासकों से नहीं, बल्कि उपद्रव करने के इरादे से आए लोगों की भीड़ से भरा हुआ था। इन लोगों ने तय किया कि प्रार्थना सभा न हो, या उसे अनसुना कर दिया जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने अपने भारी लकड़ी के जूते पहन लिए थे, जिन्हें वे रविवार को छोड़कर हर दिन पहनते थे। जब चोगा पहने पादरी प्रार्थना पढ़ रहे थे, तो जूतों की धमक और खड़खड़ाहट ने उनकी आवाज़ को दबा दिया और लोग पूरी ताकत से शोर मचाते हुए चर्च से बाहर निकल गए, जो किसी भी तरह से कम नहीं था। अगले रविवार को और भी शर्मनाक घटनाएँ हुईं। बताया जाता है कि प्रार्थना शुरू होते ही एक आदमी गधे पर सवार होकर चर्च के मुख्य भाग में आया, उसका चेहरा गधे की पूंछ की ओर था और उसके सिर पर कई पुरानी टोपियाँ रखी हुई थीं। जैसे ही उसने अपने जानवर को आगे बढ़ाया, खुशी की चीखें, ठहाकों की गड़गड़ाहट और समर्थन करने वाले लोगों के नारों ने पादरी की आवाज़ को पूरी तरह से दबा दिया; और वह गिरे बिना ही चैपल से निकल गया।

तीसरे रविवार को, श्री रेडहेड ने उस चर्च के गढ़ को बचाने के लिए अंतिम और ज़ोरदार प्रयास करने का निश्चय किया, जिसका अधिकार उन्हें औपचारिक रूप से दिया गया था। इसके लिए वे अपने साथ कुछ हमदर्द सज्जनों और उनके घोड़ों को लेकर आए; और पादरी, अपने समर्थकों के साथ, गाँव की गली से होते हुए 'बुल' चर्च में पहुँचे। लेकिन दुश्मन सतर्क थे: लोग उत्तेजित थे और नए आने वालों का पीछा करते हुए चर्च तक पहुँच गए। उनके साथ एक चिमनी साफ़ करने वाला भी था, जो कुछ ही समय पहले पास की चिमनियों की सफाई पूरी करके आया था और जिसे उन्होंने लगभग शराब पिला दी थी। उन्होंने उसे पढ़ने की मेज के ठीक सामने खड़ा कर दिया, जहाँ श्री रेडहेड पहले ही पहुँच चुके थे, और शराब के नशे में धुत, काले चेहरे वाले उस सफाईकर्मी ने पादरी के संयमित भाषणों पर सहमति में सिर हिलाया। कहा जाता है, “अंततः, किसी शरारती व्यक्ति के उकसावे पर या नशे की हालत में, वह

उपदेश मंच की सीढ़ियों पर चढ़ गया और श्री रेडहेड को गले लगाने का प्रयास किया। फिर हंगामा और भी बढ़ गया। कुछ उपद्रवी लोगों ने कालिख से सने चिमनी साफ करने वाले को श्री रेडहेड की ओर धकेल दिया, जब वह भागने की कोशिश कर रहा था। उन्होंने उसे और उसके उत्पीड़क दोनों को गिरजाघर के प्रांगण में गिरा दिया, जहाँ कालिख से भरा थैला खाली किया गया था। हालाँकि, अंत में श्री रेडहेड "ब्लैक बुल" चर्च में भाग निकले, जिसके दरवाजे तुरंत बंद कर दिए गए, फिर भी लोग बाहर उग्र रूप से जमा थे और उन्हें और उनके दोस्तों को पत्थर मारने की धमकी दे रहे थे।" वे वहाँ से भाग निकले, और श्री रेडहेड, पूरी तरह पराजित होकर, हॉवर्थ के पादरी पद से सेवानिवृत्त हो गए।

श्री ब्रोंटे, जिन्होंने निवासियों पर अनुकूल प्रभाव डाला था, अब उनके द्वारा स्वीकार कर लिए गए थे, और उनके स्वभाव की स्वाभाविक दयालुता और उनके शिष्टाचार की शालीनता ने गांव में शांति और संतोष सुनिश्चित किया।

एक पादरी के रूप में उनकी जिम्मेदारियाँ हल्की नहीं थीं, हालाँकि उनके कार्यक्षेत्र का नया क्षेत्र, नैतिक स्थिति के लिहाज़ से, शायद उत्तरी इंग्लैंड के ऐसे ही अन्य गाँवों से बदतर नहीं था। हॉवर्थ के विशेष इतिहासकार यॉर्क के पश्चिम में स्थित बंजर पहाड़ों की आबादी को 'अपने जंगली इलाकों के स्वभाव के अनुसार असभ्य और अभिमानी' बताते हैं। यह यॉर्कशायर के एक जमींदार जेम्स रिथर का कथन है। प्रसिद्ध ओलिवर हेवुड ने 13 जून, 1672 को हॉवर्थ में जोनास फोस्टर के घर पर उपदेश देते हुए, उस स्थान की अनैतिकता, भ्रष्टाचार और अपवित्रता पर विलाप किया। पिछली शताब्दी में, श्री ग्रिमशॉ ने वहाँ सहायक पादरी रहते हुए यह दृढ़ विश्वास व्यक्त किया था कि अधिकांश लोग अपनी आँखों के सामने ही नरक की ओर जा रहे हैं! श्रीमती गैस्केल हमें बताती हैं कि हॉवर्थ में, 'बिना होश खोए शराब पीना एक मर्दाना उपलब्धि मानी जाती थी।' उन दिनों श्रद्धा के पतन और अपवित्रता में वृद्धि का एक उल्लेखनीय उदाहरण पड़ोसी गाँव हेप्टनस्टॉल में पाम संडे के पालन में मिलता है, और स्वयं हॉवर्थ में प्राचीन काल में यह पर्व चर्च से बाहर निकलने और वापस चर्च में लौटने वाले लोगों के जुलूसों से प्रमुखता से मनाया जाता था, जो ताड़ की शाखाएँ लिए होते थे और विशेष उत्सव के लिए निर्धारित भजन और गीत गाते थे।

यह सर्वविदित है कि उस समय आसपास की पहाड़ियों और घाटियों के निवासी इस उत्सव में शामिल होते थे; और जिस समय की मैं बात कर रहा हूँ, उस समय

लोगों की उपस्थिति कम नहीं हुई थी, बल्कि बढ़ गई थी, हालाँकि वे किसी और उद्देश्य से आते थे। यह एक विलक्षण तथ्य है कि वेस्ट राइडिंग के गाँवों के बीच स्थानीय झगड़े, यदि हम उन्हें ऐसा कह सकते हैं, तो चलते रहते थे। और इस प्रकार, हॉवर्थ द्वारा हेप्टनस्टॉल को और हेप्टनस्टॉल द्वारा हॉवर्थ को बारी-बारी से अपने-अपने गाँवों के नायकों के बीच पाम संडे को होने वाले संघर्षों के लिए चुनौती दी जाती थी। इसलिए, इन स्थानों के निवासी बिना किसी नागरिक या धार्मिक कारण के एक-दूसरे को पीटने और चोट पहुँचाने के लिए इकट्ठा होते थे: जीत का लालच और पहुँचाई गई चोटों के प्रति क्रूर उदासीनता इन शत्रुतापूर्ण बैठकों की विशेषता थी। ऐसे मौकों पर, हेप्टनस्टॉल में, अत्यधिक शराबखोरी और दंगे के बीच, चर्च के द्वार से लेकर 'बट्रेस' तक, जो हेप्टनस्टॉल बैंक के तल पर नदी पार करने वाले पुल के पास सड़क का एक ढलान वाला हिस्सा था, लगभग एक मील तक आमने-सामने की लड़ाईयां होती थीं। ऐसी ही एक दावत में, हॉवर्थ का एक झगड़ालू व्यक्ति, जो रात होने के बावजूद घर नहीं लौटना चाहता था और बेहद असंतुष्ट दिख रहा था, जब उसकी पत्नी ने उससे पूछा कि उसे क्या हुआ है, तो उसने उत्तर दिया, 'मैंने अभी तक किसी से लड़ाई नहीं की है, और जब तक मैं कुछ कर नहीं लेता, तब तक मैं किसी के पास नहीं जाऊंगा।' उसकी स्नेही पत्नी ने जवाब दिया, 'तो जाओ, लड़ाई करो और इसे खत्म करो, क्योंकि हमें जाना ही होगा।' वेस्ट-राइडिंग पुलिस ने अपनी संस्था के माध्यम से इन शर्मनाक कार्रवाइयों पर रोक लगा दी।

श्री ब्रोंटे के नए पदस्थ निवास हॉवर्थ का कई लेखकों द्वारा विस्तृत और सटीक वर्णन किया गया है। यह ब्रैडफोर्ड पैरिश की पश्चिमी सीमा पर स्थित है और एक ऊंचे टीले पर बसा है। हालांकि, यह उससे भी ऊंचे भूभाग से काफी हद तक पश्चिमी तूफानों से सुरक्षित है, जो कि बंजर भूमि और दलदलों से बना है।

जिस गिरजाघर में उन्होंने अपने शेष जीवन में धार्मिक अनुष्ठान किए और जहाँ उनके प्रतिभाशाली बच्चे अपने संक्षिप्त लेकिन यादगार जीवन के बाद विश्राम कर रहे हैं, वह प्राचीन काल से ही मौजूद था। एडवर्ड तृतीय के शासनकाल के प्रारंभ में वहाँ एक प्रार्थना कक्ष की स्थापना की गई थी, जहाँ एक पुजारी प्रतिदिन एडम डी बैटली की आत्मा की शांति, उनके पूर्वजों की आत्माओं और सभी दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करते थे। यह गिरजाघर, जो महादूत संत माइकल के सम्मान में ईश्वर की महिमा को समर्पित है, का हाल ही में बड़े पैमाने पर जीर्णोद्धार किया गया है।

पुरानी संरचना में उससे भी पुरानी, प्रारंभिक अंग्रेजी शैली की एक इमारत के निशान अभी भी मौजूद हैं। इसमें समय के साथ विकसित हुए अच्छे और बुरे दौरों के प्रमाण और पुरानी और परिचित आंतरिक व्यवस्थाओं से जुड़ी यादों के कारण यह गिरजाघर निवासियों के लिए प्रिय था। हालांकि वर्तमान गिरजाघर अपने पूर्ववर्ती की तुलना में स्थापत्य कला में एक श्रेष्ठ कृति है, फिर भी ऐसे संबंधों से यह अनिवार्य रूप से वंचित है, और ब्रोंटे बहनों की प्रतिभा के कारण पूर्व संरचना को प्राप्त विश्वव्यापी रुचि लगभग नष्ट हो गई है क्योंकि इसके स्थान पर एक ऐसी इमारत का निर्माण किया गया है जिसमें उन्होंने कभी प्रार्थना नहीं की और जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा; हालांकि यह सच है कि उनके अवशेष इसकी सतह के नीचे विश्राम कर रहे हैं, जैसा कि स्मारक पट्टियों से संकेत मिलता है।

पुराने गिरजाघर के अस्तित्व के दौरान, हॉवर्थ में लगातार लोगों का तांता लगा रहता था; लेकिन, उसके हटाए जाने के बाद, दूर-दूर से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करने के लिए कुछ खास नहीं बचा था, और गांव में आने वाले आगंतुकों की संख्या में स्पष्ट कमी आई।

हाल ही में हुए बदलावों में, पादरी के निवास में भी काफी परिवर्तन हुए हैं, जहाँ रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे के बच्चे रहते थे और साहित्य के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की थी। अधिक जगह पाने के लिए घर में एक नया भाग जोड़ना आवश्यक समझा गया है, और निवास को और अधिक सुंदर बनाने के लिए, पुराने कॉटेज के शीशे, जिनसे होकर कीमती और अमूल्य पांडुलिपियों के पन्नों पर प्रकाश पड़ता था, जब वे कुशल और प्रतिभाशाली हाथों से लिखे जाते थे, उनकी जगह कांच के चौकोर शीशे लगा दिए गए हैं। कुल मिलाकर, घर का भीतरी और बाहरी भाग ब्रोंटे परिवार के समय से बिल्कुल अलग दिखता है।

जब श्री ब्रोंटे ने हॉवर्थ में स्थायी पादरी का पद स्वीकार किया, तब वहां का चैपलरी थॉर्नटन के चैपलरी की तुलना में कहीं अधिक आबादी वाला और महत्वपूर्ण था। 170 पाउंड प्रति वर्ष का वेतन, एक अच्छा आवास और 27 पाउंड 13 शिलिंग का भरण-पोषण भत्ता मिलने से आर्थिक दृष्टि से यह बदलाव वांछनीय साबित हुआ; और श्रीमती ब्रोंटे को मिलने वाले 50 पाउंड प्रति वर्ष के वार्षिक भत्ते से इस संबंध में चिंता कुछ हद तक कम हो गई।

जिले की जनसंख्या लगभग चार हज़ार सात सौ थी, और श्री ब्रोंटे के कार्यकाल के

पहले दस वर्षों में इसमें लगभग बारह सौ लोगों की वृद्धि हुई। इस चैपलरी में स्टैनबरी और नियर एंड फार ऑक्सनहोप के कस्बे या बस्तियाँ, साथ ही लंकाशायर की सीमा तक फैले विशाल मैदान और बिखरे हुए घर शामिल थे। हॉवर्थ से एक मील पश्चिम में स्थित स्टैनबरी की क्यूरेसी, 100 पाउंड प्रति वर्ष के साथ, श्री ब्रोंटे के अधिकार में थी; इसके अलावा, उस स्थान पर एक निःशुल्क विद्यालय के रखरखाव के लिए 600 पाउंड पर ब्याज और एक घर भी था, और हॉवर्थ में इसी उद्देश्य के लिए 90 पाउंड प्रति वर्ष की राशि भी थी। वर्ष 1849 में, जब श्री ब्रोंटे अभी भी पद पर थे, हॉवर्थ के चैपलरी को विभाजित किया गया था, ऑक्सनहोप में 1,500 पाउंड की लागत से एक चर्च का निर्माण किया गया था, और वहां के क्यूरेसी का मूल्य 150 पाउंड प्रति वर्ष था।

श्री ब्रोंटे ने हॉवर्थ के पादरी पद को स्वीकार करने का जो निर्णय लिया, उसमें संभवतः उनकी पत्नी का नाजुक स्वास्थ्य और उनके बच्चों का कमज़ोर स्वास्थ्य भी महत्वपूर्ण था। वे जानते थे कि वेस्ट-राइडिंग के व्यस्त औद्योगिक केंद्रों के धुएँ से भरे वातावरण से कीघली और हॉवर्थ पूरी तरह मुक्त तो नहीं थे, लेकिन साल के अधिकांश समय पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम से चलने वाली हवाएँ, जो उन दलदली भूमि पर बहती थीं जहाँ से आयरिश जलधारा दिखाई देती थी, अपनी शुद्धता से उनके परिवार को वह स्फूर्ति प्रदान करती थीं जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। यह भी संभव है कि श्री ब्रोंटे के हॉवर्थ में बसने से, जहाँ उनके बच्चों को घूमने-फिरने के लिए लगभग असीमित जंगली, झाड़ियों से ढकी पहाड़ियाँ मिल गईं, उनके छोटे जीवन में कुछ वृद्धि हुई हो। हालाँकि, श्रीमती ब्रोंटे को इस बदलाव से कोई खास लाभ नहीं हुआ। वह कुछ समय से एक घातक बीमारी - एक आंतरिक कैंसर - से पीड़ित थी, जिसके कारण हॉवर्थ पहुंचने के लगभग अठारह महीने बाद उसकी मृत्यु हो गई।

अध्याय II.

श्रीमती ब्रोंटे।

ब्रोंटे बहनों की माँ — उनका चरित्र और व्यक्तित्व — उनकी साहित्यिक रुचि — पेनज़ेंस, उनका जन्मस्थान — पेनज़ेंस का वर्णन — ब्रैनवेल परिवार — मारिया ब्रैनवेल के व्यक्तिगत गुण — उनके सद्गुण — श्री ब्रोंटे को लिखे उनके पत्र — उनके घरेलू अनुभव।

ब्रोंटे बहनों की माता - जिनका सितंबर 1821 में निधन हो गया, जिससे उनके बच्चे उस स्नेहपूर्ण और कोमल देखभाल से वंचित हो गए जो उन्होंने अपने वैवाहिक जीवन के अल्पकाल में उन्हें दी थी - यदि जीवित रहतीं, तो अपने विनम्र, सौम्य और मातृत्व गुणों से उनके चरित्र को आकार देतीं। श्रीमती ब्रोंटे कद में छोटी थीं, लेकिन उनका व्यवहार शालीन और दयालु था; सुंदर न होते हुए भी, वे आकर्षक और सभ्य थीं, और उनमें गहरी समझ, विवेक और विनम्रता थी। श्रीमती गैस्केल कहती हैं कि वे 'बहुत ही सुरुचिपूर्ण थीं, और हमेशा सादगीपूर्ण ढंग से सजी-धजी रहती थीं जो उनके सामान्य व्यक्तित्व के अनुरूप थी, और कुछ विवरण उनकी बेटी द्वारा अपनी पसंदीदा नायिकाओं के लिए पसंद की जाने वाली पोशाक शैली की याद दिलाते हैं।' श्रीमती ब्रोंटे साहित्यिक प्रतिभा और रुचि से भी संपन्न थीं। उन्होंने किसी पत्रिका में प्रकाशन के उद्देश्य से 'धार्मिक मामलों में गरीबी के लाभ' शीर्षक से एक निबंध लिखा था; और उनके पत्र सुरुचिपूर्ण और सहज थे। पेनज़ेंस में उनके रिश्तेदार उन्हें 'अपनी प्रिय चाची' और 'एक ऐसी शख्सियत बताते थे, जिन्हें वे और पूरा परिवार प्रतिभा और अत्यंत मिलनसार स्वभाव की महिला के रूप में सम्मान की नजर से देखते थे;' और साथ ही, 'उनमें असाधारण प्रतिभाएं थीं, जो उन्हें अपने पिता से विरासत में मिली थीं।'

जैसा कि बताया गया है, श्रीमती ब्रोंटे कॉर्नवाल काउंटी के एक नगर निगम और बंदरगाह शहर पेनज़ेंस की मूल निवासी थीं। पेनज़ेंस पेनविथ जिले में स्थित है और इंग्लैंड का सबसे पश्चिमी शहर है। यहाँ की जलवायु बेहद सुखद और स्वास्थ्यवर्धक है, और यहाँ की भूमि अपनी उपजाऊपन और घास के मैदानों और चरागाहों की सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। हालाँकि, इसकी समुद्री स्थिति के कारण अतीत में इसे विदेशी

आक्रमणकारियों का सामना करना पड़ा था, जिनमें से अंतिम आक्रमण 1595 में स्पेनियों का था। इस घटना का विवरण यह है कि ब्रिटनी के शासक आक्रमणकारियों ने कॉर्निश तट पर कब्जा करने के लिए पर्याप्त सैनिकों से लैस चार जहाज भेजे। वे माउंट्स बे के पश्चिमी किनारे पर स्थित एक प्रसिद्ध स्थान माउसहोल के पास उतरे और शहर में प्रवेश कर उसे आग लगा दी, जिसके बाद निवासी उनके सामने से भाग गए। कुछ समय बाद यह कस्बा बहुत ही रमणीय हो गया, और कई घर बड़े और आलीशान थे, जबकि सड़कें अच्छी तरह से पक्की थीं। आम तौर पर लोग लंबी आयु पाते थे, और कुछ तो पितृसत्तात्मक आयु तक पहुँच गए: इनमें से एक - डॉली पेंट्रीथ, जिनकी मृत्यु एक सौ दो वर्ष की आयु में हुई, और जिन्होंने 'माउसहोल' को अपना निवास स्थान बनाया था - कॉर्निश भाषा बोलने वाली अंतिम व्यक्ति के रूप में जानी जाती थीं। जलवायु के सुहावने होने के कारण, फेफड़ों की बीमारियों से पीड़ित कई लोगों ने वहाँ निवास किया।

पेनज़ेंस एक ऐसा शहर था जो इतिहासकारों और पुरातत्वविदों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्थलों से घिरा हुआ था, जिनका विस्तृत वर्णन बोरलेस और अन्य लेखकों ने किया है। यहाँ टिन और सार्डिन मछली पालन के साथ-साथ तांबा, मिट्टी के बर्तन, चिकनी मिट्टी और अन्य निर्मित और व्यापारिक वस्तुओं का भी व्यापक व्यापार होता था। स्थानीय उद्योगों में से एक में श्री थॉमस ब्रैनवेल कार्यरत थे। उनका विवाह कार्ने नामक महिला से हुआ था और उनके चार पुत्री और एक पुत्र थे। मारिया उनकी तीसरी पुत्री थीं। श्री और श्रीमती ब्रैनवेल का परिवार संभ्रांत था और वे पेनज़ेंस के उच्च समाज में विचरण करते थे। वे वेस्लेयन मेथोडिस्ट धर्म के अनुयायी थे और उनके बच्चों का पालन-पोषण भी इसी धर्म के अनुसार हुआ था। श्री ब्रैनवेल अपने व्यवसाय की चिंताओं को संगीत के आनंद और सांत्वना से दूर करते थे, जिसमें उनकी निपुणता बताई जाती है। उन्होंने और उनकी पत्नी ने अपने बच्चों को वयस्क होते देखा; और उनका निधन 1808 में श्री ब्रैनवेल और उनकी पत्नी का 1809 में हुआ।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, मारिया ब्रैनवेल ने 1812 की गर्मियों की शुरुआत में अपने चाचा श्री फेनेल से मुलाकात की और पहली बार श्री ब्रोंटे को देखा। दोनों के बीच आपसी प्रशंसा का भाव जागा और एक तरह से सगाई की शुरुआत हुई। घर लौटने पर दोनों के बीच पत्राचार शुरू हुआ और श्री ब्रोंटे ने उन पत्रों को संभाल कर रखा। उनकी बेटी की जीवनीकार ने इन पत्रों का उल्लेख किया है और हमें पता चलता

है कि मिस ब्रैनवेल के पत्रों में असाधारण विनम्रता, विचारशीलता और धार्मिकता झलकती थी। उन्हें अचानक सगाई होने पर आश्चर्य हुआ, लेकिन उन्होंने श्री ब्रोंटे के स्नेह को विनम्रता और खुलेपन से स्वीकार किया। भविष्य आपसी सहमति से तय हुआ। मिस ब्रैनवेल को कुदरत ने कोई खास आकर्षण नहीं दिया था, फिर भी, जैसा कि कहा गया है, वह सुंदर और शालीन थीं; और उनकी सहज सुंदरता ने उनके सभी परिचितों का दिल जीत लिया। उनके बारे में पहले से उल्लिखित व्यक्तिगत गुणों के अलावा बहुत कम जानकारी उपलब्ध है; और उनके वैवाहिक जीवन (चाहे अविवाहित रहे हों या विवाहित), जो अत्यंत सरल और घटनाहीन था, के बारे में घरेलू कर्तव्यों के नियमित निर्वाह और अपने क्षेत्र में दायित्वों के पूर्ण पालन के अलावा कुछ भी दर्ज नहीं किया जा सकता है। अपने आचरण में निर्दोष, अपने कर्तव्यों के प्रति प्रेमपूर्ण और अपने ऊपर आने वाले कष्टों को धैर्यपूर्वक सहने वाली, वह उन सभी गुणों का आदर्श थीं जो घरेलू जीवन की शोभा बढ़ाते हैं और घर को सुखमय और संतुष्ट बनाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने अपने घर का संचालन विवेकपूर्ण ढंग से किया और अपने पति की आय का मितव्ययिता से और सर्वोत्तम उपयोग किया।

श्रीमती गैस्केल ने अपनी शादी से पहले श्री ब्रोंटे को लिखे अपने एक पत्र का अंश प्रस्तुत किया, जो उनकी शांत संवेदनशीलता और समझदारी को उत्कृष्ट रूप से दर्शाता है। वह कहती हैं: 'कुछ वर्षों से मैं पूरी तरह से अपनी ही स्वामी रही हूँ, किसी के नियंत्रण में नहीं; बल्कि मेरी बहनें, जो मुझसे कई साल बड़ी हैं, और यहाँ तक कि मेरी प्यारी माँ भी, हर महत्वपूर्ण अवसर पर मुझसे सलाह लेती थीं, और मेरे विचारों और कार्यों की उपयुक्तता पर शायद ही कभी संदेह करती थीं; शायद आप इसे कहने पर मुझ पर घमंड का आरोप लगाएँ, लेकिन आपको यह समझना होगा कि मैं इस पर गर्व नहीं करती। मैंने कई बार इसे एक कमी के रूप में महसूस किया है, और यद्यपि, ईश्वर का धन्यवाद, इसने मुझे कभी गलती करने के लिए प्रेरित नहीं किया, फिर भी, अनिश्चितता और संदेह की परिस्थितियों में, मैंने एक मार्गदर्शक और प्रशिक्षक की कमी को गहराई से महसूस किया है।'

श्रीमती गैस्केल द्वारा विशेष रूप से वर्णित विवाह की सामान्य तैयारियाँ की गईं; लेकिन तैयारियों के दौरान एक दुर्घटना घटित हुई, जिसका उल्लेख श्री ब्रोंटे को लिखे गए निम्नलिखित पत्र में किया गया है: —

मुझे लगता है कि आपने मुझसे इतनी दौलत की उम्मीद नहीं की होगी, लेकिन मुझे

आपको यह बताते हुए दुख हो रहा है कि मैं अब भी उतनी दौलतमंद नहीं हूँ जितना मैंने सोचा था। मैंने अपनी किताबें, कपड़े वगैरह मंगवाने का ज़िक्र किया था। शनिवार शाम को, लगभग उसी समय जब आप अपने काल्पनिक जहाज़ डूबने की कहानी लिख रहे थे, मैं एक असली जहाज़ डूबने की घटना को पढ़ और महसूस कर रही थी। तभी मुझे अपनी बहन का एक पत्र मिला, जिसमें उसने बताया कि जिस जहाज़ में उसने मेरा बक्सा भेजा था, वह डेवोनशायर के तट पर फँस गया, जिसके परिणामस्वरूप बक्सा समुद्र की प्रचंड लहरों से चकनाचूर हो गया, और मेरी थोड़ी-बहुत संपत्ति, कुछ चीज़ों को छोड़कर, गहरे समुद्र में समा गई। अगर यह किसी और बुरी घटना की शुरुआत नहीं है, तो मैं इसे ज़्यादा गंभीरता से नहीं लूंगी, क्योंकि घर छोड़ने के बाद यह पहली विपत्ति है।

जैसा कि पिछले अध्याय में बताया गया है, शादी 29 दिसंबर, 1812 को गाइज़ली में हुई थी।

अध्याय III.

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे।

रेवरेंड पी. ब्रोंटे का चरित्र — उन पर लगे आरोप — जीवनीकारों के गंभीर आरोप — आरोपों का अन्यायपूर्ण होना — श्री ब्रोंटे द्वारा आरोपों का कड़ा खंडन — नैन्सी गैर्स की गवाही — श्रीमती ब्रोंटे और रेशमी पोशाक का प्रसंग — श्री ब्रोंटे, श्री हेलस्टोन के कथित प्रतिरूप — पिस्तौल की गोलियों का सिद्धांत — विज्ञान ज्ञान पर श्री ब्रोंटे — मिस ब्रैनवेल।

रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे, जिन्होंने अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद अपने बच्चों की शिक्षा का दायित्व संभाला, उनके व्यक्तित्व में कई दुखद विचित्रताएँ थीं। उनके बारे में जो कहानियाँ प्रचलित हैं, उनमें जिस प्रकार के उग्र स्वभाव, अतार्किक पूर्वाग्रह और अडिग इच्छाशक्ति का वर्णन मिलता है, वैसा कहीं और मिलना वास्तव में कठिन है। लेकिन हम आगे देखेंगे कि इनमें से अधिकांश आरोप निराधार हैं, जबकि अन्य संभवतः पूर्णतः गलत धारणाओं का परिणाम हैं।

श्रीमती गैस्केल इन विचित्रताओं का वर्णन करती हैं। एक बार, वे बताती हैं, जब बच्चे गीले मैदानों में खेलकर लौटे थे, तो नर्स ने रेवरेंड श्री मॉर्गन द्वारा दिए गए कुछ रंगीन जूते निकाले, जो हार्ट्सहेड में मारिया के संरक्षक थे, और उन्हें आग के सामने सजा दिया। श्री ब्रोंटे ने यह देखकर, और यह सोचकर कि चमकीले रंग शायद घमंड पैदा करेंगे, जूतों को कोयलों पर ढेर कर दिया, जिससे पूरा घर जले हुए चमड़े की तेज़ गंध से भर गया। वे आगे कहती हैं, 'इससे बहुत पहले, किसी ने श्रीमती ब्रोंटे को एक रेशमी गाउन दिया था... उन्होंने उसे अपनी दराजों में संभाल कर रखा था। लेकिन एक दिन, रसोई में रहते हुए, उन्हें याद आया कि उन्होंने चाबी दराज में ही छोड़ दी है, और श्री ब्रोंटे को ऊपर सुनकर, उन्हें अपने गाउन के साथ कुछ बुरा होने का आभास हुआ, और जल्दी से ऊपर दौड़कर, उन्होंने पाया कि वह टुकड़ों में कटा हुआ था... जब वह नाराज़ या असंतुष्ट होता था तो बोलता नहीं था, बल्कि अपने उग्र क्रोध को पीछे के दरवाजे से लगातार पिस्तौल चलाकर निकालता था... कभी-कभी उसका क्रोध अलग रूप ले लेता था, लेकिन फिर भी वह चुप ही रहता था। एक बार उसने चूल्हे की चटाई ली और उसे अंगीठी में ठूंसकर जानबूझकर आग लगा दी, और बदबू के बावजूद कमरे में तब तक रहा जब तक कि वह सुलगकर बेकार नहीं हो गई। एक बार उसने कुछ कुर्सियाँ लीं और उनकी पीठ को तब तक आरी से काटा जब तक वे स्टूल जैसी नहीं हो गईं।

श्री वेमिस रीड, जो श्री ब्रोंटे की सत्यनिष्ठा और अपनी बेटियों की प्रसिद्धि पर उनके उचित गर्व की प्रशंसा करते हुए, 'पिस्तौल की गोलियों' और 'सुंदर पोशाक' की कहानियों को परोक्ष रूप से अपनाते हैं, उनके बारे में कहते हैं, 'ऐसा लगता है कि वे अच्छाई और बुराई का एक विचित्र मिश्रण थे। उनमें कुछ अच्छाई भी थी, यह बात उन्हें जानने वाले सभी लोग मानते हैं। वे अधिकांश लोगों के प्रति दयालु भाव रखते थे... लेकिन अपने पूरे जीवन में केवल एक ही व्यक्ति था जिसके प्रति उनकी सच्ची

सहानुभूति थी, और वह व्यक्ति वे स्वयं थे।' वे 'भावुक, स्वेच्छाचारी, अभिमानी और अपने घर के सदस्यों के प्रति स्वभावतः ठंडे और दूर रहने वाले' थे। उनकी पत्नी 'अपने प्रभुत्वशाली स्वामी से हमेशा भयभीत रहती थीं... यह मानना गलत होगा कि हिंसा उन हथियारों में से एक थी जिनका श्री ब्रोंटे अक्सर सहारा लेते थे... उनकी सामान्य नीति बल के बजाय चालाकी से अपना लक्ष्य प्राप्त करना थी।'

मिस रॉबिन्सन बिना किसी संकोच के, श्रीमती गैस्केल और श्री रीड द्वारा प्रकाशित श्री ब्रोंटे की आलोचनाओं को दोहराती हैं और पूछती हैं, 'कौन यह कहने की हिम्मत कर सकता है कि वह विवाह सुखमय था? श्रीमती गैस्केल, श्री ब्रोंटे के जीवन और उनके दृष्टिकोण से लिखते हुए, उनकी अथक देखभाल और रात्रिकालीन सेवा में उनके समर्पण की बात करती हैं। लेकिन, उस घातक बीमारी की घोषणा से पहले, वह युवा पत्नी के अकेलेपन... उनके धैर्यपूर्ण कष्ट और उनके उग्र स्वभाव के कई संकेत देती हैं।'

इससे यह स्पष्ट होता है कि यदि ये सभी कथन सत्य हैं, तो श्री ब्रोंटे का स्वभाव वास्तव में दुखी रहा होगा; और यह आश्चर्यजनक है कि 'ऐसे पिता' के साथ, 'छह छोटे बच्चों' की युवा और उत्कृष्ट प्रतिभाओं का इतना उत्कृष्ट मार्गदर्शन और प्रशिक्षण हुआ कि बाद के वर्षों तक जीवित रहने वाले चार बच्चों में से कम से कम तीन वर्तमान शताब्दी की महिला साहित्यकारों में उच्च और प्रमुख स्थान रखते हैं। और यह और भी विचित्र होगा कि ये बच्चे अपने सौम्य स्वभाव और परिष्कृत विचारों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। आशा की जा सकती है कि इस पुस्तक के पाठक, स्नेही, लेकिन अक्सर मनमौजी ब्रैनवेल के अतिरिक्त ज्ञान के साथ, श्री ब्रोंटे को लिखे पत्र में श्री हेगर द्वारा व्यक्त की गई भावना से सहमत होंगे, कि, en jugeant un père de famille par ses enfants on ne risque pas de se tromper. इसमें कोई संदेह नहीं कि जिन बच्चों का मैंने उल्लेख किया है, उनके गुण वास्तव में काफी हद तक श्री ब्रोंटे के स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन और शिक्षा के कारण थे। जैसा कि हम देख चुके हैं, उन्होंने सेंट जॉन कॉलेज, कैम्ब्रिज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी; और विश्वविद्यालय की संस्कृति और माहौल उनके घर में समाहित हो गया था, जहाँ उनके बच्चे—विशेष रूप से ब्रैनवेल—उससे प्रभावित हुए थे। इसके अलावा, श्री ब्रोंटे की बौद्धिक प्रतिभा या उनकी कविताओं और गद्य रचनाओं में प्रदर्शित कौशल के बारे में चाहे जो भी सोचा जाए, हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि उनमें उच्च मानसिक

प्रशिक्षण और देहाती जीवन की सच्चाई और सादगी के प्रति गहरी सहानुभूति थी।

श्री ब्रोंटे पर लगे आरोपों के बाद, जो उनकी बेटी शार्लोट की जीवनी के पहले संस्करण में प्रकाशित हुए थे, उन्होंने अपने चरित्र पर लगे उन अपमानजनक आरोपों का लगातार खंडन किया। उन्होंने मुझसे कहा, 'वे पूरी तरह से झूठे थे।' उन्होंने कहा कि उन्होंने 'एक पति और पिता के रूप में अपने सभी कर्तव्यों को पूरी दया, चिंता और स्नेह के साथ निभाया, जो उनसे अपेक्षित था।' और श्रीमती ब्रोंटे ने स्वयं, जैसा कि श्रीमती गैस्केल ने उद्धृत किया है, कहा था, 'क्या मुझे इस बात के लिए आभारी नहीं होना चाहिए कि उन्होंने मुझे कभी क्रोधित शब्द नहीं कहा?' इस प्रकार उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि श्री ब्रोंटे के स्वभाव में चाहे जो भी विचित्रताएँ रही हों, उनकी पत्नी को कम से कम कभी भी इसके परिणाम भुगतने नहीं पड़े। बच्चे भी हमेशा अपने पिता को आदर, कृतज्ञता और भक्ति की दृष्टि से देखते थे।

8 जुलाई, 1857 को श्री ब्रोंटे से हुई मेरी बातचीत में, उन्होंने अपने ऊपर लगाए गए अनुचित आरोपों के बारे में बताया, जो सार्वजनिक रूप से सामने आए थे। उन्होंने कहा, “श्रीमती गैस्केल की ‘शार्लट का जीवन’ पुस्तक प्रकाशित होने तक मुझे यह पता ही नहीं था कि दुनिया में मेरा कोई शत्रु है, और उससे भी कम यह कि कोई मेरी मृत्यु से पहले ही मुझे बदनाम करेगा। उस पुस्तक में मेरे परिवार के प्रति मेरे आचरण से संबंधित हर बात या तो झूठी है या तोड़-मरोड़ कर पेश की गई है। मैंने कभी भी ऐसे कृत्य नहीं किए जो उसमें मुझ पर आरोपित किए गए हैं।” बाद में एक साक्षात्कार में श्री ब्रोंटे ने स्पष्ट किया कि ‘शत्रु’ शब्द से उनका तात्पर्य ‘झूठे मुखबिरों और शत्रुतापूर्ण आलोचकों’ से था। उनका मानना था कि श्रीमती गैस्केल ने गाँव की अफवाहों को सुना था और किसी बर्खास्त नौकर से जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की थी।

तो चलिए, इन आरोपों के स्रोत की जाँच करते हैं। श्रीमती गैस्केल बताती हैं कि उनकी सूचना देने वाली एक ‘अच्छी बुज़ुर्ग महिला’ थीं, जो श्रीमती ब्रोंटे की बीमारी के दौरान उनकी देखभाल करती थीं। अब यह ज्ञात है कि इस महिला में चाहे जो भी अच्छे गुण रहे हों, उनकी कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी कम से कम उच्च कोटि की नहीं थी, और कुछ ऐसी घटनाओं में उनकी संलिप्तता पाई गई जिसके कारण श्री ब्रोंटे ने उन्हें तुरंत बर्खास्त कर दिया। अपनी बर्खास्तगी का कारण बताते हुए और श्री ब्रोंटे को अपमानित करते हुए, इस महिला ने उनके स्वभाव और आचरण का विवरण दिया,

जिसमें 'शार्लट के जीवन' के पहले संस्करण से उद्धृत कहानियों को भी शामिल किया गया था, और यह विवरण उस स्थान के एक पादरी को दिया गया था; और इसी तरह श्रीमती गैस्केल उनसे और उनके परिवार से परिचित हुईं। नैन्सी गैर्स, एक निष्ठावान युवती जो थॉर्नटन में श्री ब्रोंटे की सेवा में थीं, हॉवर्थ में स्थानांतरित होने के बाद भी परिवार के साथ रहीं, और जो अब भी जीवित हैं - विधवा, श्रीमती वेनराइट - एक उन्नत उम्र में, ब्रैडफोर्ड की एक जानी-मानी निवासी, मुझे बताती हैं कि जिस 'रेशमी पोशाक' को श्री ब्रोंटे ने कथित तौर पर फाड़ दिया था, वह एक प्रिंटेड पोशाक थी, नई नहीं, और श्री ब्रोंटे को उसकी विशाल आस्तीनें पसंद नहीं थीं, इसलिए एक दिन मौका मिलते ही उन्होंने उन्हें काट दिया। यह सब एक मज़ाक था, जिसे श्रीमती ब्रोंटे तुरंत समझ गईं, और ऊपर जाकर, वह पोशाक नीचे ले आईं और नैन्सी से कहा, 'देखो उन्होंने क्या किया है; अब तुम्हारी बारी है।' नैन्सी अन्य कहानियों को पूरी तरह निराधार बताती हैं। वह श्री ब्रोंटे को 'अत्यंत स्नेही पति' बताती हैं; 'उनसे अधिक स्नेही पिता और दयालु स्वामी कभी नहीं हुए;' और 'उनका स्वभाव बिल्कुल भी हिंसक नहीं था;' बिलकुल इसके विपरीत।

इन निंदनीय कहानियों के बारे में यह दृष्टिकोण सौभाग्य से शार्लोट ब्रोंटे के शब्दों से भी पुष्ट होता है। 'शर्ली' के चौथे अध्याय में, श्री हेलस्टोन के बारे में लिखते हुए - जिनका चरित्र, यद्यपि पूरी तरह से उनके पिता पर आधारित नहीं है, फिर भी निस्संदेह उनके स्वभाव और उनसे जुड़ी कुछ घटनाओं के बारे में उनकी जानकारी से प्रभावित है - वह कहती हैं कि अपनी पत्नी की मृत्यु पर, 'उनका शुष्क आँखों वाला और संयमित शोक एक बूढ़ी गृहणी और श्रीमती हेलस्टोन की बीमारी में उनकी सेवा करने वाली एक महिला परिचारिका को चौंका गया... वे शव के बारे में गपशप करती रहीं, उनकी धीमी गति से हुई बीमारी और उसके वास्तविक या कथित कारण के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर किस्से सुनाती रहीं; संक्षेप में, वे उस गंभीर छोटे आदमी के प्रति एक-दूसरे को आक्रोशित करती रहीं, जो बगल के कमरे में कागजात देख रहा था, इस बात से अनजान कि वह किस बदनामी का पात्र बन रहा था। श्रीमती हेलस्टोन को दफनाए जाने के तुरंत बाद ही पड़ोस में अफवाहें फैलने लगीं कि उनकी मृत्यु हृदय विदारक होने से हुई है; ये बातें जल्दी ही दुर्व्यवहार की रिपोर्टों में तब्दील हो गईं, और अंततः पति द्वारा किए गए कठोर व्यवहार के विवरण में बदल गईं: ये रिपोर्टें सरासर झूठी थीं, लेकिन फिर भी इन्हें बड़ी उत्सुकता से स्वीकार किया गया। इस प्रकार यह देखा जा

सकता है कि श्री हेलस्टोन का चरित्र आंशिक रूप से श्री ब्रोंटे का बचाव बन जाता है। ऊपर उल्लिखित अवसर पर, श्री ब्रोंटे ने आगे कहा कि, 'श्रीमती गैस्केल द्वारा अपनी बेटी के बारे में लिखे गए प्रशंसनीय संस्मरण के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए भी, वे अपने और अपने बेटे ब्रैनवेल की कमियों के बारे में उनके अनावश्यक उल्लेखों को एक अन्यथा कुशलतापूर्वक किए गए कार्य की खामियां मानते हैं।' इस अवसर पर, वे इस विचार से आश्वस्त प्रतीत हुए कि उनके द्वारा की गई आपत्तियों के कारण, आपत्तिजनक अंशों को कृति के बाद के संस्करणों से हटा दिया जाएगा, और अंततः वे जनता के साथ न्याय कर लेंगे। उन्होंने इन शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त की: — 'मैं लंबे समय से दुनिया के लिए एक अमूर्त व्यक्ति रहा हूँ, और अब इस तरह जनता के सामने घसीटा जाना, एक निर्दयी पति के रूप में प्रस्तुत किया जाना, और उन कृत्यों का आरोप लगाया जाना जो मैंने कभी नहीं किए, मुझे सुकून नहीं देता।'

पिस्तौल की गोलियों की कहानी को आसानी से समझाया जा सकता है। यह ज्ञात है कि श्री ब्रोंटे, हेलस्टोन की तरह, सैन्य मामलों में विशेष रुचि रखते थे और उनमें अंकल टोबी जैसी ही भावनाएँ थीं। वे भी लुडाइट आंदोलन के उथल-पुथल भरे दौर में रहते थे और श्री हेलस्टोन की तरह ही आत्मरक्षा के लिए पिस्तौल रखते थे। याद होगा कि उस सज्जन ने अपने अध्ययन कक्ष के मेंटलपीस के ऊपर कपड़े के बक्सों में दो जोड़ी पिस्तौलें टांग रखी थीं, जो हमेशा भरी रहती थीं। जहाँ तक मुझे पता है, श्री ब्रोंटे, आग्नेयास्त्रों के उपयोग के आदी होने के कारण, रात में सुरक्षा के लिए उन्हें अपने पास रखते थे; लेकिन, उनके खतरनाक हो जाने के डर से, कभी-कभी दिन में भी उनका इस्तेमाल कर लेते थे।

श्री ब्रोंटे के विरोध और खंडन तथा उन पर लगे घोटालों का खंडन प्रभावी रहा; और 1860 में प्रकाशित 'शार्लट का जीवन' के संस्करण में उन आरोपों को पूरी तरह से हटा दिया गया। जब श्री ब्रोंटे को न्याय का यह विलंबित कार्य मिला, तब वे चौरासी वर्ष के थे। यह भी उल्लेखनीय है कि हॉवर्थ के लोगों ने जब श्रीमती गैस्केल के अतिरंजित और त्रुटिपूर्ण बयानों को प्रकाशित होते देखा, तो उन्होंने खुलकर अपनी असहमति व्यक्त की। हॉवर्थ के पूर्व चर्चवार्डन श्री वुड ने भी श्रीमती ब्रोंटे के वस्त्रों को काटे जाने की कहानियों और ऊपर उल्लिखित अन्य आरोपों का खंडन किया।

श्री ब्रोंटे के बारे में सच्चाई यही प्रतीत होती है: यद्यपि, श्री हेलस्टोन की तरह - जिनके चरित्र के कई गुण हॉवर्थ के पादरी से लिए गए थे - वे अपने पेशे से भटक

सकते थे, लेकिन उनकी तरह वे 'बिल्कुल भी दुष्ट नहीं थे,' और उनकी तरह ही, 'वे एक कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ निश्चयी, कठोर, बहादुर, सख्त, अटल और वफादार छोटे आदमी थे: एक ऐसा व्यक्ति जिसमें लगभग सहानुभूति की कमी थी, जो सौम्य नहीं था, पक्षपाती और कठोर था: लेकिन सिद्धांतों के प्रति सच्चा - सम्माननीय, बुद्धिमान और ईमानदार।' संभवतः हम यह कहने में पूरी तरह से गलत नहीं होंगे कि, 'शर्ली' के पादरी की तरह, प्रकृति ने उन्हें कभी भी 'एक बहुत अच्छा पति, विशेष रूप से एक शांत पत्नी के लिए' नहीं बनाया था। उनमें वह सूक्ष्म सहानुभूति और सूक्ष्म बोध का अभाव था जो उन्हें अपने परिवार को पूरी तरह से सुखी बनाने में सक्षम बनाता। और जब वे अपनी राजनीति, अपने पर्चों और अपने उपदेशों पर चिंतन करते थे, तो श्री हेलस्टोन की तरह, वे शायद अपनी 'जीवंतता को अपनी किताबों की अलमारी और अध्ययन-मेज में बंद कर देते थे।' फिर भी श्री हेलस्टोन न तो क्रूर हैं और न ही पागल, 'न तो अत्याचारी हैं और न ही पाखंडी,' बल्कि 'बस एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अच्छे स्वभाव से कहीं अधिक उदार हैं, मिलनसार से कहीं अधिक प्रतिभाशाली हैं, सच्चे न्याय से कहीं अधिक सावधानीपूर्वक निष्पक्ष हैं - यदि आप ऐसे सूक्ष्म अंतरों को समझ सकते हैं?'

इस लेख में रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे के चरित्र का इतनी विस्तार से बचाव करना आवश्यक नहीं होता, यदि दुर्भाग्यवश ऐसा न हुआ होता कि हाल के वे ग्रंथ, जिन्होंने उनकी बेटियों के लेखन का प्रशंसनीय ढंग से वर्णन किया है, उन पर लगे गंभीर आरोपों को स्वीकार कर लेते हैं और काफी हद तक दोहरा भी देते हैं। इसके अलावा, किसी ऐसे चरित्र को पुनर्स्थापित करना कभी व्यर्थ नहीं होता जिसे लापरवाही से नष्ट कर दिया गया हो। अब यह बचाव प्रस्तुत किया जा चुका है, और यह आशा की जा सकती है कि 'छह अनाथ बच्चों' के पिता आम धारणा से कहीं अधिक स्नेही और प्रेमपूर्ण थे, और उन्होंने उनके पालन-पोषण और शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। वास्तव में, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। उनकी पत्नी की मृत्यु ने उन्हें उनके हाथों में सौंप दिया था, वे ही धरती पर उनके एकमात्र सहारा थे, और यह कहना गलत नहीं होगा कि वे अपने कर्तव्य को जानते थे और उसे बखूबी निभाया, जैसा कि उनके बच्चों का जीवन सिद्ध करता है, स्वाभाविक स्नेह के आधार पर, और शायद कुछ उच्चतर उद्देश्यों से भी।

कुछ वर्षों बाद श्री ब्रोंटे द्वारा वैज्ञानिक ज्ञान के संदर्भ में लिखे गए एक पत्र का निम्नलिखित अंश उनके विशिष्ट व्यक्तित्व को पर्याप्त रूप से दर्शाता है। वे कहते हैं:

“नवाचार और संशयवाद के इस युग में, एक उदार और धर्मपरायण व्यक्ति का यह परम कर्तव्य है कि वह मानव मामलों की विविध, जटिल प्रणाली में हर उस आंदोलन को अपनी क्षमताओं के अनुसार अधिकतम सीमा तक बढ़ावा दे, जिसका प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से स्वाभाविक रूप से दूषित और सीमित प्रकृति के मन को शुद्ध और विस्तारित करने तथा उसे उस उच्च स्तर तक उठाने में योगदान हो, जिसकी अपेक्षा शास्त्र करते हैं, साथ ही मानवता के सर्वोत्तम हितों को भी पूरा करता है।”

अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद, श्री ब्रोंटे को अपने घर के कामकाज की देखरेख करने और अपने बच्चों के पालन-पोषण के महत्वपूर्ण दायित्व में सहायता करने के लिए किसी की आवश्यकता महसूस हुई; और इसलिए, वर्ष 1822 के अंत में, दिवंगत महिला की बड़ी बहन, मिस एलिजाबेथ ब्रैनवेल ऑफ़ पेनज़ेंस, उनके साथ रहने आईं। उनका शारीरिक रूप से कद छोटा और दुबला-पतला बताया जाता है; वे हमेशा रेशमी वस्त्र पहनती थीं, जो मेहमानों के स्वागत के लिए हमेशा उपयुक्त होते थे; और उस समय के फैशन के अनुसार, वे भूरे रंग के घुंघराले बालों का एक लट बांधती थीं, जो उनके माथे को खूबसूरती से ढक लेता था। वे आदत के तौर पर कभी-कभी अपने पास रखी सोने की नसवार की डिब्बी से एक चुटकी तंबाकू पी लेती थीं। जब वे उजाड़, जंगली और बंजर हॉवर्थ में रहने लगीं, तो कहा जाता है कि उन्होंने अपने जन्मस्थान, धूप से भरे पेनज़ेंस के फूलों से सजे मैदानों के लिए आह भरी। मिस ब्रैनवेल को अपनी दिवंगत बहन के बच्चों से बहुत स्नेह था, जिसके कारण वे उनसे जुड़ी हर बात में गहरी रुचि रखती थीं - उनके स्वास्थ्य, घर की सुख-सुविधा और स्वच्छता, और उनके बौद्धिक विकास में। श्री ब्रोंटे के घर के कामकाज में उन्हें वफादार और भरोसेमंद टैबी का बहुत सहयोग मिला, जो 1825 में घरेलू नौकरानी के रूप में परिवार में शामिल हुई थीं। ब्रोंटे परिवार में लगभग तीस वर्षों की लंबी और निष्ठापूर्ण सेवा के माध्यम से टैबी ने परिवार का सम्मान और विश्वास अर्जित किया। उनका जन्म और पालन-पोषण हॉवर्थ के चैपलरी में हुआ था, उस समय जब मिलें और मशीनें नहीं थीं, जब रेलवे ने पहाड़ियों और घाटियों के निवासियों को इंग्लैंड के शहरों और कस्बों से परिचित नहीं कराया था; और, इसके अलावा, उस प्राचीन बोली को, जो किंग अल्फ्रेड के ओरोसियस और बेडे के अनुवादों और इसी तरह के अन्य ग्रंथों के पाठकों के लिए भाषाविज्ञान की दृष्टि से बहुत रोचक थी, असभ्य, अशिष्ट और बर्बर माने जाने से पहले की बात है। टैबी ने अपने बचपन और अपने पिता की भाषा में सुधार करने

का कोई प्रयास किए बिना, बोली का सही ढंग से प्रयोग किया; और इस मामले में, साथ ही अपने सभी व्यवहारों में, वह मौलिक और सच्ची थीं। मुख्य रूप से टैबी से ही युवा ब्रोंटे बहनों ने यॉर्कशायर डोरिक बोली से परिचित होना सीखा, जिसे उन्होंने बाद में 'शर्ली', 'वुथरिंग हाइट्स' और अपनी अन्य रचनाओं में इतनी सटीकता से प्रस्तुत किया।

अध्याय IV.

ब्रोंटे बहनों का बचपन।

लड़की का बचपन — चरित्र की गंभीरता — शार्लोट द्वारा बचपन की परियों की दुनिया का वर्णन — हॉवर्थ के शांत और गंभीर दलदली इलाकों का उनके लेखन पर प्रभाव — खिलौनों का उपहार — उनके द्वारा अभिनीत नाटक — श्री ब्रोंटे द्वारा एक कथित भूकंप पर टिप्पणी — अपने बच्चों के प्रति उनकी देखभाल का प्रमाण — हॉवर्थ का व्याकरण विद्यालय — शिक्षक की देखरेख में उनके बच्चे — विद्यालय का चरित्र — कोवान ब्रिज स्कूल — श्री कैरस विल्सन के प्रबंधन पर शार्लोट का दृष्टिकोण — मारिया और एलिजाबेथ की मृत्यु।

हॉवर्थ के पादरी के घर में ब्रोंटे बहनों का बचपन सचमुच बहुत ही विचित्र था। हमने देखा है कि उन्हें बचपन में ही उस मातृ स्नेह से वंचित कर दिया गया जिसकी उन्हें बहुत आवश्यकता थी, और उन्हें एक ऐसे पिता के हाथों में छोड़ दिया गया जो इस तरह की जिम्मेदारी से अपरिचित थे, जो अनुशासन के कठोर विचारों से भरे हुए थे, और शिक्षा के ऐसे सिद्धांतों से परिपूर्ण थे जो बच्चों की समझ से परे थे। श्री ब्रोंटे के

घर में शायद ही कभी मौज-मस्ती और मनोरंजन के लिए जगह थी, सुंदर कपड़ों या घर की सजावट के प्रति बहुत कम सहनशीलता थी, और बच्चों की जरूरतों की समझ भी बहुत कम थी। कठोर औपचारिकता, शांत कमरे, गंभीर पोशाक, सादा भोजन और एकांत जीवन इन विचारशील और प्रतिभाशाली बच्चों के हिस्से में आया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे अपनी उम्र से कहीं अधिक गंभीर और शांत स्वभाव के हो गए; कि जब बचपन का आराम उनसे दूर हो गया, तो वे अखबार पढ़ने और हैनिबल और सीज़र, बोनापार्ट और वेलिंगटन के गुणों पर बहस करने में जुट गए; या फिर, जब उन्हें गाँव के बच्चों की संगति से वंचित कर दिया गया, क्योंकि उन पर बचपन में ही 'मैं कौन हूँ और तुम कौन हो?' का दबाव डाल दिया गया था, तो वे चुपचाप दलदली इलाकों में चले गए। फिर भी, यह बचपन, चाहे कितना भी कठोर और गंभीर क्यों न रहा हो, जहाँ हम उस सुंदर सरलता और आनंद की व्यर्थ खोज करते हैं जो यौवन की पहचान होनी चाहिए, अपनी एक अलग ही सुंदरता और आनंद रखता था; और इसका अपना एक गुण भी था। शार्लोट ब्रोंटे ने स्वयं हमें बचपन के सुखों का एक ऐसा सुंदर चित्र दिया है जो अंग्रेजी साहित्य में पाया जा सकता है, वह जादुई दुनिया जिसे वास्तविकता के तट सामने आने से पहले पार कर लिया जाता है; जब वे दूर से इतने नीले, कोमल और शांत दिखाई देते हैं कि हम उन्हें पाने के लिए तरसते हैं; जब हम 'चांदी की रेखाओं की झलक पाते हैं, और बहते पानी की कल्पना करते हैं,' 'अनेक वीरान जगहों, और अक्सर मृत्यु की बाढ़, या मृत्यु के समान ठंडी और लगभग काली दु:ख की किसी धारा' की परवाह किए बिना, जिन्हें सच्चे आनंद का स्वाद चखने से पहले पार करना पड़ता है। इस प्रकार, ब्रोंटे बहनें खुले मैदानों में विचरण करते हुए, प्रकृति की स्वतंत्रता का आनंद लेते हुए, अपनी प्रतिभाओं को उत्कृष्ट उद्देश्यों की ओर विकसित करते हुए, बचपन की उस वीर दुनिया में भी जी रही थीं, 'जिसके निवासी आधे दिव्य या आधे दानव जैसे थे; जिसके दृश्य स्वप्न जैसे थे; घने जंगल और विचित्र पहाड़ियाँ; चमकीले आकाश, अधिक खतरनाक जल; मीठे फूल, अधिक लुभावने फल; विशाल मैदान; उजाड़ रेगिस्तान; प्रकृति में पाए जाने वाले खेतों से कहीं अधिक धूप वाले खेत।' क्या हम इस बात पर संदेह कर सकते हैं कि ब्रोंटे बच्चों को, जैसा कि दुनिया को बाद में पता चला, अन्य बच्चों की तुलना में अधिक तीक्ष्ण बुद्धि, अधिक उच्च सहानुभूति और अधिक श्रेष्ठ प्रतिभा प्राप्त थी, और उन्होंने इन चीजों का आनंद दूसरों की तुलना में कहीं अधिक लिया? और उनके बचपन का गुण यही था: कि इसने

उन्हें स्थानीयता के प्रभाव, खुले मैदानों के असीम विस्तार और उन लोगों के विचित्र और कठोर चरित्र से सबसे मजबूत रूप में प्रभावित किया, जिनके बीच वे रहते थे, और जिनका उन्होंने बाद में इतनी खूबसूरती से चित्रण किया। इस तरह के प्रभाव लगभग हर लेखक की रचनाओं में देखे जा सकते हैं, लेकिन ब्रोंटे बहनों की रचनाओं में ये विशेष रूप से स्पष्ट हैं। इनके बिना ये लेखिकाएँ 'जेन आयर', 'शर्ली' और 'वुथरिंग हाइट्स' जैसी रचनाएँ नहीं लिख सकती थीं, ठीक वैसे ही जैसे गोल्डस्मिथ अपनी 'विकार ऑफ वेकफील्ड' नहीं लिख पाते यदि उनके शुरुआती वर्ष लिसी के रमणीय गाँव में न बीते होते। बैंगनी हीथर और सुनहरे गॉर्स से लदे दलदली मैदान, लहरों की तरह फैले हुए, एमिली ब्रोंटे के लिए सर्वोपरि थे; और वह, उनकी बहनें, और युवा ब्रैनवेल, अपनी सहज प्रशंसा और शानदार कल्पनाशीलता के साथ, टैबी के साथ, हॉवर्थ के आसपास की ऊँचाइयों के मुक्त वातावरण का भरपूर आनंद लेते थे। उनके अपने झरने की तेज़ आवाज़, और उनके आते ही उड़ते हुए तीखे पक्षियों की तीखी चीखें, उनके लिए प्रकृति के जीवंत जीवन की मित्रवत आवाज़ें थीं, जिसका शक्तिशाली प्रभाव उन्हें बहुत प्रेरित करता था।

अपने प्रारंभिक वर्षों में उन्हें शायद ही कोई साथी मिला; और अपनी उम्र और स्थिति के बच्चों के साथ अधिक मेलजोल न रख पाने या अपने आस-पड़ोस के बच्चों के साथ बचकाने खेल न खेल पाने के कारण, श्री ब्रोंटे के बेटे और बेटियाँ अपने बड़ों के बीच ऐसे परिपक्व हुए जैसे उनकी बुद्धि उनकी उम्र से कहीं अधिक परिपक्व हो, और वे ऐसे ज्ञान से बोलते थे जो मानो लोगों और रीति-रिवाजों के वास्तविक अनुभव से उपजा हो। वे वास्तव में 'पुराने जमाने के बच्चे' थे। उनकी असाधारण चतुराई जल्द ही देखी गई, और नौकर हमेशा सतर्क रहते थे कि कहीं बच्चे उनकी कोई बात दोहरा न दें। इसके बावजूद, छोटे ब्रोंटे अभी भी बच्चे ही थे, और बचपन की चीजों में आनंद लेते थे। बड़े हो चुके पुरुष न तो सड़कों पर लट्टू घुमाते हैं, न ही गलियों में घेरा घुमाते हैं, और न ही पुराने जमाने की तरह शाम को 'लुका-छिपी' खेलते हैं; लेकिन ब्रोंटे के बच्चे अपने बचपन में ये सब काम करते थे, और अपनी असाधारण गंभीरता के बावजूद, वे कभी-कभी उत्साह के साथ बचपन के सरल आनंद और मनोरंजन में भाग लेते थे, जैसा कि उन्हें मिले खिलौनों के उपहारों को लेकर उनकी उत्सुकता से प्रमाणित होता है।

ब्रैनवेल ब्रोंटे के बारे में सबसे पहली जानकारी हमें इस बात से मिलती है कि

शार्लोट को याद था कि एक सुनहरी शाम को हॉवर्थ के पादरी के घर के बैठक कक्ष में उनकी माँ उनके साथ खेल रही थीं। बाद में, हमें बताया गया कि एक बार श्री ब्रोंटे उनके लिए लीड्स से लकड़ी के सैनिकों का एक डिब्बा लाए थे। बच्चे सो रहे थे, लेकिन अगली सुबह, शार्लोट ने अपनी एक बचपन की पांडुलिपि में लिखा है, 'ब्रैनवेल सैनिकों का एक डिब्बा लेकर हमारे दरवाजे पर आए। एमिली और मैं बिस्तर से उछल पड़े, और मैंने एक सैनिक को झट से उठा लिया और कहा, "यह ड्यूक ऑफ वेलिंगटन है! यही ड्यूक बनेगा!" मेरे ऐसा कहते ही एमिली ने भी एक सैनिक उठा लिया और कहा कि यह उसका होगा; जब ऐनी नीचे आई तो उसने भी कहा कि एक सैनिक उसका होगा। मेरा सैनिक सबसे सुंदर, सबसे लंबा और हर तरह से सबसे उत्तम था। एमिली का सैनिक गंभीर दिखने वाला था, और हम उसे "ग्रेवी" कहते थे। ऐनी का सैनिक बिल्कुल उसी की तरह एक अजीब सा छोटा सा था, और हम उसे "वेटिंग-बॉय" कहते थे।' ब्रैनवेल ने अपना बच्चा चुना और उसे "बोनापार्ट" नाम दिया। इस प्रकार शार्लोट अपने बचपन की इन सुखद घटनाओं को आनंदपूर्वक सुनाती हैं और उनसे मिलने वाली खुशी को दर्ज करती हैं।

श्री ब्रोंटे कहते हैं, 'जब वे छोटे बच्चे थे, जैसे ही वे पढ़ना-लिखना सीख गए, शार्लोट और उसके भाई-बहन अपने खुद के छोटे-छोटे नाटक गढ़कर उनका मंचन किया करते थे, जिनमें ड्यूक ऑफ वेलिंगटन, जो मेरी बेटी शार्लोट का नायक था, हमेशा विजयी होता था; और अक्सर उनके बीच बोनापार्ट, हैनिबल और सीज़र की तुलनात्मक खूबियों को लेकर विवाद भी होता था।'

अपने शुरुआती नाटकों को मंच पर प्रस्तुत करते समय, वे बचकाने उत्साह से भरे रहते थे और कभी-कभी किसी के गुस्से को तार-तार कर देने में भी पीछे नहीं हटते थे। उन्होंने देखा कि टैबी को इस तरह की असाधारण हरकतें पसंद नहीं थीं; लेकिन एक बार, उन्होंने अपनी अभिनय और आवाज़ में इतना जोश भर दिया कि टैबी डर गई और अपने भतीजे के घर चली गई। जैसे ही उसकी सांसें सामान्य हुईं, वह बोली, "विलियम! तुम्हें मिस्टर ब्रोंटे के घर जाना होगा, क्योंकि मुझे यकीन है कि वे बच्चे पागल हो रहे हैं और मैं उनके साथ अब और घर पर नहीं रुक सकती; और जब तक तुम वापस नहीं आओगे, मैं यहीं रहूंगी!" जब भतीजा पादरी के घर पहुँचा, तो बच्चों ने टैबी के साथ किए गए उस अद्भुत मज़ाक पर ज़ोर से ठहाके लगाए।

श्री ब्रोंटे—अन्य प्रतिभाशाली और विलक्षण बच्चों के माता-पिता और मित्रों की

तरह, जो बाद में धर्म, कला, कविता, साहित्य, राजनीति या युद्ध के क्षेत्र में प्रसिद्ध हुए, और जिन्होंने बचपन में ही प्रतिभा के ऐसे उत्कृष्ट प्रमाण दिए जिनका वर्णन उनकी जीवनियों में मिलता है—ने अपने बच्चों में भी उस मानसिक शक्ति, प्रखर कल्पनाशीलता और भाषा एवं अभिव्यक्ति की श्रेष्ठ क्षमता के प्रमाण देखे, जो बाद के वर्षों में उनमें विकसित हुई। वे अक्सर यह कल्पना करते थे कि उनके बच्चों में महान प्रतिभाएं छिपी हैं, और इसमें कोई संदेह नहीं कि वे कभी-कभी अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की आशा करते थे। इसी आशा ने उन्हें प्रोत्साहित किया, और उन्होंने श्रीमती गैस्केल को प्रकाशन के लिए अपने बेटे और बेटियों में बचपन के उन सभी प्रतिभा के प्रमाण दिए जो उन्हें याद थे। लेकिन, मुझे खेद है कि उन्होंने उस लेखिका को जो जानकारी दी है, उससे हम उनके द्वारा निकाले गए या निकाले जाने वाले निष्कर्ष को सही ठहराने के लिए पर्याप्त जानकारी नहीं जुटा सकते, क्योंकि दी गई जानकारी बहुत ही तुच्छ और महत्वहीन है। शायद श्री ब्रोंटे उस समय अपने संदेश को व्यक्त करने के उद्देश्य से देखे गए विशेष संकेतों को भूल गए थे। जो भी हो, इसमें कोई संदेह नहीं कि उनके मन में यह बात बनी रही कि उनके बच्चों में पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के प्रति उनकी उत्सुकता से पढ़ने की आदत के अलावा भी प्रतिभा स्पष्ट थी, और यह भी कि उनके विचार तत्कालीन राजनीतिक दलों के हितों और विवादों के अलावा अन्य योजनाओं और उद्देश्यों में भी लगे हुए थे।

श्री ब्रोंटे कहते हैं, 'जब मेरे बच्चे बहुत छोटे थे, - जहाँ तक मुझे याद है, सबसे बड़ा लगभग दस साल का था और सबसे छोटा लगभग चार साल का, - यह सोचकर कि वे मुझसे कहीं अधिक जानते हैं, ताकि वे कम संकोच के साथ बोलें, मैंने सोचा कि अगर उन्हें किसी तरह के आवरण में रखा जाए, तो मैं अपना उद्देश्य पूरा कर सकता हूँ; और संयोग से घर में एक मुखौटा था, इसलिए मैंने उन सभी को खड़े होकर मुखौटे के आड़ से निडर होकर बोलने को कहा। मैंने सबसे छोटी (ऐनी, बाद में एक्टन बेल) से शुरुआत की और पूछा कि उसके जैसी बच्ची सबसे ज्यादा क्या चाहती है; उसने उत्तर दिया, "उम्र और अनुभव।" मैंने अगली (एमिली, बाद में एलिस बेल) से पूछा कि उसके भाई ब्रैनवेल के साथ मुझे क्या करना चाहिए, जो कभी-कभी शरारती लड़का होता था; उसने उत्तर दिया, "उससे तर्क करो, और जब वह तर्क न सुने, तो उसे कोड़े मारो।" मैंने ब्रैनवेल से पूछा कि पुरुष और स्त्री की बुद्धि में अंतर जानने का सबसे अच्छा तरीका क्या है; उन्होंने उत्तर दिया, “उनके शरीर की बनावट में अंतर देखकर।”

जब शार्लोट से पूछा गया कि दो सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें कौन सी हैं, तो उन्होंने कहा कि 'बाइबल' और उसके बाद 'प्रकृति की पुस्तक' सर्वश्रेष्ठ हैं। श्री ब्रोंटे ने फिर अपनी अगली बेटी से पूछा, 'एक महिला के लिए शिक्षा का सबसे अच्छा तरीका क्या है?' उसने उत्तर दिया, 'वह शिक्षा जिससे वह अपने घर का अच्छे से संचालन कर सके।' फिर उन्होंने सबसे बड़ी बेटी मारिया से पूछा, 'समय बिताने का सबसे अच्छा तरीका क्या है?' उसने उत्तर दिया, 'सुखद अनंत जीवन की तैयारी में समय व्यतीत करके।' श्री ब्रोंटे कहते हैं कि हो सकता है उन्होंने ठीक यही शब्द न कहे हों, लेकिन लगभग यही शब्द थे और उन्होंने उनकी स्मृति पर अमिट छाप छोड़ी है।

लेकिन जैसा कि हमें बताया जाता है, कुछ समय तक श्री ब्रोंटे के बच्चों का बौद्धिक पोषण मुख्य रूप से पत्रिकाओं और समाचार पत्रों से ही होता था। खिलौनों की किताबों और परियों की कहानियों की जगह पत्रिकाओं और समाचार पत्रों ने ले ली, जिससे उनके नन्हे मन उन नैतिक विषयों और मनोरंजक कहानियों की ओर आकर्षित हुए जो उस समय धारावाहिकों में दिखाई जाती थीं; और उनका ध्यान संसद में चल रहे राजनीतिक मुद्दों पर भी काफी हद तक केंद्रित था। अपने पिता से धार्मिक और राजनीतिक विचार और मत ग्रहण करते हुए, वे सदन ऑफ लॉर्ड्स और सदन ऑफ कॉमन्स में प्रमुख कंजर्वेटिवों के प्रबल समर्थक बन गए। उन्होंने अक्सर अपने पिता और चाची के बीच इन विषयों पर बातचीत सुनी थी; वे उत्सुकता से सुनते थे और बाहरी दुनिया और उसकी गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करते थे। अपने परिवेश से उनका मन जल्द ही बचपन के सामान्य विचारों, इच्छाओं और रुचियों से ऊपर उठ गया; और इन परिस्थितियों में, हालांकि यह अजीब लग सकता है, यह कोई असामान्य बात नहीं है कि इन प्रतिभाशाली बच्चों द्वारा लकड़ी के सैनिकों को वर्तमान युग के दो महान विरोधी योद्धाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए बनाया गया।

घर पर बच्चों के सामान्य पालन-पोषण और श्री ब्रोंटे द्वारा उन्हें सौंपे गए औपचारिक कार्यों के अलावा, वे पत्रिकाएँ और अन्य प्रकाशन भी पढ़ते थे। मारिया, सबसे बड़ी होने के नाते, नौ वर्ष से कम उम्र में ही समाचार पत्र पढ़ने लगी थी और अपने छोटे भाई-बहनों को घरेलू और विदेशी खबरों के साथ-साथ सार्वजनिक हस्तियों और उस समय के समसामयिक विषयों के बारे में भी बताती थी। वास्तव में, इन गंभीर और बचकाने विषयों पर उनकी रुचि इतनी प्रबल थी कि वे अपने पिता से इन पर विवेकपूर्ण बुद्धिमत्ता के साथ चर्चा कर सकती थीं, जिससे बच्चों की प्रतिभाओं के

विकास के साथ-साथ उनके प्रति पिता की रुचि भी बढ़ती गई। युवा ब्रोंटे, यद्यपि अभी भी बचपन में थे, बौद्धिक रूप से जल्द ही बच्चे नहीं रह गए थे: वास्तव में, वे अधिकांश बच्चों की तुलना में कम उम्र में ही 'वास्तविकता के तट' को छू चुके थे; और यद्यपि कभी-कभी, शायद क्षण भर के लिए, तुच्छ मामलों में रुचि रखते थे, ऐसा लगता है कि उन्होंने लगभग हर चीज को साहित्यिक उपयोग में ला दिया था। ब्रैनवेल के खिलौने, जिन्हें उन्होंने बड़ी खुशी से ग्रहण किया था, ने भी 'युवा पुरुषों के नाटक' को जन्म दिया।

श्री ब्रोंटे अपने बच्चों की मानसिक प्रतिभाओं के क्रमिक विकास में गहरी रुचि रखते थे, और अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद भी उन्होंने उनके स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और उसकी रक्षा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इसके लिए उन्होंने हॉवर्थ के गिरजाघर द्वारा उपलब्ध कराए गए साधनों का भरपूर उपयोग किया। उपयुक्त समय पर बच्चों को खुले मैदानों में घूमने के लिए प्रोत्साहित किया और ग्रीष्म एवं शरद ऋतु के महीनों में अपने परिवार के युवा सदस्यों को समुद्र से आने वाली शुद्ध और स्फूर्तिदायक हवा का आनंद लेने का अवसर दिया, जो हीथर की सुगंध से भरपूर होती थी।

मंगलवार, 2 सितंबर, 1824 को, एक भयंकर तूफान और अभूतपूर्व रूप से भारी बारिश हुई, जिसकी मात्रा जलप्रपात के समान थी। इसके कारण कीघली और कोल्ने के बीच स्थित क्रो हिल नामक पहाड़ी पर, जो समुद्र तल से लगभग एक हजार फीट ऊपर है, एक विशाल दलदल में विस्फोट हो गया। बड़े-बड़े पत्थरों से मिला हुआ कीचड़, उससे नीचे उतरने वाली एक खड़ी और ऊबड़-खाबड़ घाटी में बह गया। पोंडेंस नामक छोटे से गाँव तक पहुँचकर, यह जलप्रपात और भी फैल गया और आसपास के खेतों को कई फीट की गहराई तक अपने कब्जे में ले लिया, जिससे कई अन्य विनाशकारी परिणाम हुए।

श्री ब्रोंटे ने इसे भूकंप का प्रभाव माना और उन्होंने 'लीड्स मर्करी' को एक संदेश भेजा, जिसमें उन्होंने कहा: 'जब यह घटना घटी, तो बादल तांबे के रंग के, गहरे और नीचे की ओर झुके हुए थे, वातावरण में तीव्र विद्युत आवेश था और असामान्य रूप से घुटन थी।' उसी महीने - रविवार, 12 सितंबर, 1824 को - उन्होंने हॉवर्थ चर्च में इस विषय पर एक प्रवचन दिया, जिसमें उन्होंने अपने श्रोताओं को बताया कि आपदा के दिन मौसम बेहद सुहावना था, इसलिए उन्होंने अपने छोटे बच्चों को, जो अस्वस्थ थे,

नौकरों के साथ खुले मैदान में टहलने के लिए भेजा था, और चूंकि वे उनकी अपेक्षा से अधिक समय तक वहीं रहे, इसलिए वे उनके लौटने का इंतजार करने के लिए एक ऊपरी कमरे में चले गए। मैदानों के ऊपर आकाश तेजी से काला हो रहा था; उन्होंने दूर से गरजने की आवाज सुनी और बिजली की लगातार चमक देखी। दस मिनट पहले तक हवा का नामोनिशान भी नहीं था, लेकिन अचानक तेज़ हवा चलने लगी और अपने साथ धूल और सूखी घास के बादल उड़ाने लगी। उन्होंने आगे कहा, 'मेरा छोटा परिवार किसी सुरक्षित जगह पर पहुँच गया था, लेकिन मुझे पता नहीं था।' ये थे शार्लोट, ब्रैनवेल, एमिली और ऐनी। उनकी बहनें मारिया और एलिजाबेथ उस समय कोवान ब्रिज पर थीं।

जब श्री ब्रोंटे ने हॉवर्थ के पादरी का पदभार संभाला, तो उन्होंने पाया कि वहाँ एक व्याकरण विद्यालय पहले से ही मौजूद था, और उन्होंने उसमें विशेष व्यक्तिगत रुचि ली, क्योंकि यह एक प्राचीन संस्था थी, निधियों से संपन्न थी, और हाल ही में इसका जीर्णोद्धार किया गया था। उनकी नीति यह दर्शाने की थी कि उन्हें इसमें रुचि है; ताकि न्यासियों के समर्थन में अपना समर्थन जोड़कर, वे संभवतः उनके प्रति उनकी अनुकूल राय को पुष्ट कर सकें और उनके निरंतर सौहार्द को सुनिश्चित कर सकें। उस समय यह आवश्यक था, क्योंकि उनके प्रिय संस्थान के प्रति उनकी ओर से किसी भी प्रकार की उदासीनता से शायद वैसी ही प्रतिक्रिया उत्पन्न हो सकती थी जैसी श्री रेडहेड के जबरन इस्तीफे का कारण बनी थी, या उनके और न्यासियों के बीच अलगाव पैदा हो सकता था। इस व्याकरण विद्यालय के संबंध में यह कहा जाता है कि क्रिस्टोफर स्कॉट ने 4 अक्टूबर, चार्ल्स प्रथम के 13वें वर्ष की वसीयत में, चर्च के मार्ग से सटे अपने द्वारा निर्मित एक विद्यालय भवन दान में दिया था; और यह निर्धारित किया गया कि एक विद्यालय-प्रबंधक होना चाहिए जो कम से कम स्नातक हो, यदि कला में स्नातकोत्तर न हो तो स्नातक की उपाधि प्राप्त हो, और जो ग्रीक और लैटिन भाषाएँ पढ़ाए। 1818 में विद्यालय का विस्तार किया गया था, जब ब्रोंटे परिवार अभी भी थॉर्नटन में रहता था, और तब न्यासियों द्वारा विद्यालय-प्रबंधक के लिए एक नया घर बनवाया गया था।

इस संस्थान की स्थापना छात्रों को शास्त्रीय शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी, इसलिए आस-पास के संभ्रांत वर्ग के लोग अपने बच्चों को जिले के सामान्य विद्यालयों की तुलना में कहीं बेहतर शिक्षा दिलाने में संकोच नहीं करते थे। विद्यालय

पादरी के घर के निकट स्थित था, बीच में केवल एक गली थी, और यह विशाल और रोशनी से भरपूर था। लेकिन श्री ब्रोंटे ने अपने आगमन पर पाया कि इसे कुछ समय से नियमित व्याकरण विद्यालय के रूप में संचालित नहीं किया जा रहा था: चैपलरी के निवासियों में अपने बच्चों के लिए शास्त्रीय शिक्षा के लाभों की कोई खास मांग नहीं थी। फिर भी, 1826 के ग्रीष्मकाल में न्यासियों द्वारा नियुक्त शिक्षक, यद्यपि दोनों विश्वविद्यालयों में से किसी से भी स्नातक नहीं थे, लैटिन पढ़ाने में सक्षम बताए जाते थे, और वे एक विद्वान व्यक्ति थे, जो लड़कों और लड़कियों दोनों को ज्ञान की हर आवश्यक शाखा में शिक्षा प्रदान करते थे। इस मामले में शिक्षक अपने कुछ पूर्ववर्तियों से किसी भी प्रकार से भिन्न नहीं थे। हालांकि इस तरह की शिक्षा तुरंत उपलब्ध थी, श्री ब्रोंटे ने अपनी बेटियों या बेटे ब्रैनवेल के लिए लंबे समय तक इसका लाभ नहीं उठाया। श्रीमती गैस्केल कहती हैं कि उनके नियमित कार्य वे स्वयं ही देते थे। हालांकि, श्री ब्रोंटे ने संभवतः अपने बच्चों को शिक्षक द्वारा दिए गए शुरुआती पाठों को दोहराते हुए सुना होगा ताकि यह पता चल सके कि उन्होंने उन्हें कितनी आसानी से सीखा है। बाद में, ब्रैनवेल और उनकी बहनों ने ग्रामर स्कूल में अधिक रुचि दिखाई और वे उससे जुड़े संडे स्कूल में सक्रिय और इच्छुक शिक्षक बन गए। वास्तव में, जैसा कि आज भी याद है, उन्हें अक्सर विद्यार्थियों के जुलूसों में देखा जाता था।

हालाँकि श्री ब्रोंटे ने अपने बच्चों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए सतर्कता और स्नेहपूर्वक देखभाल की थी, वे भली-भांति जानते थे कि यद्यपि वे उनके शारीरिक स्वास्थ्य को किसी हद तक मजबूत कर सकते थे, लेकिन स्वभाव से नाजुक होने के कारण वे बचपन में होने वाली बीमारियों और कष्टों को निश्चित रूप से नहीं रोक सकते थे, जिनसे उनके बच्चों का दुर्भाग्यवश देहांत था। इसलिए, जब मारिया और एलिजाबेथ खसरा और काली खांसी की चपेट में आईं, तो उनके परिवार में चिंता का माहौल छा गया। इन रोगों से आंशिक रूप से ठीक होने के बाद, उन्हें - शायद कुछ हद तक ताज़ी हवा के लिए - कोवान ब्रिज में हाल ही में स्थापित एक स्कूल में भेजना उचित समझा गया, जो लीड्स और केंडल के बीच कोच-मार्ग पर स्थित एक छोटा सा गाँव था, जहाँ हॉवर्थ से आसानी से पहुँचा जा सकता था, क्योंकि कोच वहाँ से प्रतिदिन गुजरता था। यह स्कूल विशेष रूप से उन पादरियों की बेटियों के रहने और शिक्षा के लिए स्थापित किया गया था, जिन्हें इसकी आवश्यकता थी। जैसा कि हम श्रीमती गैस्केल की 'शार्लट ब्रोंटे का जीवन' से जानते हैं, इसकी शुरुआत रेवरेंड

विलियम कारस विल्सन ने की थी। और हम यह भी जानते हैं कि बाद के वर्षों में 'जेन आयर' की लेखिका ने लोवुड के नाम से इसकी स्थिति और प्रबंधन की कड़ी और निर्मम आलोचना की थी, और कहानी की एलेन बर्न्स कोई और नहीं बल्कि मारिया ब्रोंटे थीं। 'जेन आयर' के पाठक आक्रोशित हो गए, और कोवान ब्रिज स्कूल को जनता द्वारा घोर निंदा, आलोचना और निंदा का सामना करना पड़ा, जिससे इसके संस्थापक और संरक्षक को अत्यंत पीड़ा और दुख हुआ।

इस घटनाक्रम के संदर्भ में, शार्लोट ने वास्तव में अपने भावी जीवनीकार से कहा था कि 'अगर उन्हें यह पता होता कि लोवुड को तुरंत कॉवन ब्रिज से जोड़ दिया जाएगा, तो उन्होंने "जेन आयर" में लोवुड के बारे में वह नहीं लिखा होता जो उन्होंने लिखा था, हालांकि संस्था के बारे में उनके विवरण में एक भी शब्द ऐसा नहीं था जो उस समय की सच्चाई से अलग न हो, जब उन्हें इसके बारे में जानकारी थी। उन्होंने यह भी कहा कि एक काल्पनिक रचना में उन्होंने हर बात को उस निष्पक्षता के साथ बताना आवश्यक नहीं समझा जो न्याय अदालत में अपेक्षित होती है, न ही उद्देश्यों की खोज करना और मानवीय कमियों को नज़रअंदाज़ करना, जैसा कि वह संस्था के अधीक्षण का निष्पक्ष विश्लेषण करते समय कर सकती थीं।' श्रीमती गैस्केल का मानना है कि शार्लोट 'स्वयं उस अत्यधिक प्रभाव को सुधारने का अवसर पाकर प्रसन्न होतीं जो उनके सजीव चित्रण से जनता के मन पर पड़ा था, हालांकि स्वयं भी, वहां घटी घटनाओं के परिणामों से जीवन भर हृदय और शरीर दोनों से पीड़ित रहने के कारण, अंत तक तथ्यों में अपने गहरे विश्वास को ही तथ्य मान सकती थीं - सत्य की अपनी अवधारणा को ही परम सत्य मान सकती थीं।'

लेकिन श्री विल्सन के लिए यह कहना उचित ही होगा कि निर्धारित परिसर की निम्न स्थिति, विद्यालय भवनों की व्यवस्था और गृह विभाग के अक्षम प्रबंधन ने बोर्डिंग छात्रों के लिए उतना घातक साबित नहीं किया, भले ही हम कथित कठोर नियमों को स्वीकार कर लें। क्योंकि, जब विद्यालय में हल्का बुखार या सर्दी-जुकाम फैला, जिसे डॉ. बैटी ने 'न तो चिंताजनक और न ही खतरनाक' माना था, और लगभग चालीस छात्र इसकी चपेट में आ गए, तो कोवान ब्रिज में किसी की भी मृत्यु नहीं हुई, और श्रीमती गैस्केल के अनुसार, घर पर इसके दुष्प्रभावों से केवल एक की मृत्यु हुई; और, हालांकि नाजुक थे, ब्रोंटे के बच्चे इस बीमारी से पूरी तरह बच गए। श्रीमती गैस्केल ने स्कूल के कथित कुप्रबंधन, विद्यार्थियों पर किए गए कठोर व्यवहार—विशेष रूप से

एक जिम्मेदार शिक्षिका, 'मिस स्केचर्ड' द्वारा—खाना पकाने की व्यवस्था और भोजन की अपर्याप्तता, घरेलू विभाग में स्वच्छता नियमों की सामान्य उपेक्षा, और स्वयं उस स्थान की निवासियों के निरंतर स्वास्थ्य और आराम के लिए पूर्णतः अनुपयुक्तता का विस्तृत वर्णन किया है। लेकिन शार्लोट ब्रोंटे की जीवनीकार ने बाद के वर्षों में उन कठोर आलोचनाओं को काफी हद तक संशोधित किया, जिन्हें उनकी नायिका ने 'जेन आयर' में वर्णित करना उचित समझा था—जो एक प्रशंसनीय काल्पनिक रचना है, हालांकि जरूरी नहीं कि तथ्यों पर आधारित हो—और वह काउवान ब्रिज स्कूल के बारे में शार्लोट के वर्णन के संदर्भ में कहती हैं: 'आठ वर्षीय बच्ची के मन में चरित्र की जो छवियां, विचार और धारणाएं बनी थीं, वे पच्चीस वर्ष बाद तीखे शब्दों में पुन: प्रस्तुत होने वाली थीं। उसने श्री विल्सन के चरित्र का केवल एक ही पक्ष देखा था; और उस समय उन्हें जानने वाले कई लोग मुझे इस बात का आश्वासन देते हैं कि इसे कितनी निष्ठा से प्रस्तुत किया गया है, साथ ही वे इस बात पर खेद भी व्यक्त करते हैं कि चित्रण ने मानो उनके सभी नेक और कर्तव्यपरायण गुणों को मिटा दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि श्री विल्सन में 'महान और उत्तम गुण' थे - जिन्हें शार्लोट ने अनदेखा कर दिया था - जिनके बारे में जीवनी लेखक को 'प्रचुर प्रमाण' प्राप्त हुए थे। श्री ब्रोंटे को इन गुणों की जानकारी रही होगी, क्योंकि मारिया और एलिजाबेथ की मृत्यु के बाद शार्लोट और एमिली को कॉवन ब्रिज वापस भेज दिया गया था। श्रीमती गैस्केल आश्चर्य करती हैं कि शार्लोट ने अपने पिता के उन्हें और एमिली को वापस उस स्थान पर भेजने के निर्णय का विरोध क्यों नहीं किया, जबकि हम अनुमान लगा सकते हैं कि वह जानती थीं कि उनकी मृत बहनों को उसी स्कूल में कथित रूप से कितना कष्ट सहना पड़ा था जहाँ वह और एमिली लौट रही थीं। ‘जेन आयर’ में वर्णित इतनी दयनीय स्थिति उस समय मौजूद नहीं हो सकती थी जिससे शार्लोट के मन में इतना भय बैठ जाए जितना हमें विश्वास दिलाया जाता है, और श्री ब्रोंटे को यह जानकारी नहीं हो सकती थी कि स्कूल के प्रति कोई गंभीर आपत्तियां मौजूद थीं। वास्तव में, उस समय संस्था की वास्तविक स्थिति ‘जेन आयर’ की नेक और दयालु मिस टेंपल की गवाही से स्पष्ट है, जिनके पति लिखते हैं: ‘मैंने अक्सर अपनी दिवंगत प्रिय पत्नी को कोवान ब्रिज में अपने प्रवास के बारे में बात करते सुना है; हमेशा श्री कैरस विल्सन की प्रशंसा करते हुए, उनके विद्यार्थियों के प्रति उनके माता-पिता जैसे प्रेम और उनके प्रति विद्यार्थियों के प्रेम के बारे में; भोजन और सामान्य व्यवहार के बारे में, प्रशंसा के

शब्दों में। मैंने उन्हें एक दुर्भाग्यपूर्ण रसोइए का जिक्र करते सुना है जो कभी-कभी दलिया खराब कर देता था, लेकिन जिसे, उन्होंने कहा, जल्द ही बर्खास्त कर दिया गया था।'

कोवान ब्रिज में रहते हुए मारिया की तबीयत अचानक बिगड़ गई और चिंताजनक लक्षण दिखाई देने लगे। श्री ब्रोंटे को बुलाया गया। उन्हें मारिया की बीमारी के बारे में कुछ भी पता नहीं था और जब उन्होंने उसे देखा तो वे बुरी तरह से स्तब्ध रह गए। वे अपनी मरणासन्न बेटी को लेकर लीड्स की गाड़ी में सवार हो गए। श्रीमती गैस्केल कहती हैं, 'लड़कियाँ सड़क पर भीड़ बनाकर पुल पार करते हुए, झोपड़ियों के पास से गुज़रते हुए, मारिया को देखती रहीं, और फिर वह हमेशा के लिए आँखों से ओझल हो गई।'

इस अवसर पर श्री ब्रोंटे का दुःख अत्यंत गहरा और असहनीय था। उनकी पहली संतान, हार्ट्सहेड स्थित उनके घर की शुरुआती खुशियाँ, उनके विधवा जीवन के शुरुआती वर्षों की बुद्धिमान और प्रतिभाशाली साथी - उनके सामने ही दुनिया छोड़ गई! वह, जिसकी मासूम और विचारशील बातों ने उनके एकांत क्षणों को खुशनुमा बना दिया था, जिसकी खिलखिलाती हंसी ने अक्सर घर में रौनक भर दी थी, जिसने अपने छोटे भाई-बहनों की निस्वार्थ भाव से निरंतर देखभाल की, और उनकी दिवंगत माँ की भूमिका बखूबी निभाई - उनकी आँखों से ओझल हो रही थी! हॉवर्थ पहुँचने पर, मिस ब्रैनवेल ने उनका हार्दिक और आँसुओं से भरी सहानुभूति के साथ स्वागत किया, जबकि ब्रैनवेल और ऐनी ने बच्चों जैसी घबराहट और भय के साथ उनका स्वागत किया। उस मरणासन्न बच्ची की देखभाल में स्नेह की हर संभव कोशिश की गई, लेकिन आगमन के कुछ दिनों बाद ही, 6 मई, 1825 को उसकी मृत्यु हो गई।

एलिज़ाबेथ भी उसी घातक बीमारी की चपेट में आ गईं और उसी वर्ष 15 जून को तपेदिक से उनकी मृत्यु हो गई, अपनी बहन के एक महीने और कुछ दिन बाद। ब्रैनवेल इन दुखद घटनाओं को कभी नहीं भूले और उनके मन पर इन मौतों और अंत्येष्टि अनुष्ठानों का गहरा प्रभाव पड़ा, जो उनकी बाद की कुछ शोकपूर्ण रचनाओं का विषय बन गया।

कोवान ब्रिज में मारिया की शुरुआती यादें यही थीं कि वह नाज़ुक थी, और अपनी उम्र के हिसाब से असाधारण रूप से बुद्धिमान और विचारशील थी। एलिजाबेथ के बारे में मिस टेंपल लिखती हैं: 'दूसरी, एलिजाबेथ, परिवार में इकलौती ऐसी सदस्य है

जिसकी मुझे एक भयावह दुर्घटना के बाद स्पष्ट याद है; जिसके परिणामस्वरूप मैंने उसे कुछ दिनों और रातों तक अपने शयनकक्ष में रखा, न केवल अधिक शांति के लिए, बल्कि इसलिए भी कि मैं उस पर नज़र रख सकूँ... दो छोटी बच्चियों (यदि दो थीं) की मुझे बहुत धुंधली यादें हैं, सिवाय इसके कि एक, पाँच साल से कम उम्र की एक प्यारी बच्ची, स्कूल की लाडली थी।'

श्रीमती गैस्केल कहती हैं, 'यह आखिरी बच्ची एमिली होगी। शार्लोट बहनों में सबसे ज्यादा बातूनी मानी जाती थी - एक "तेज-तर्रार, होशियार बच्ची।"'

अध्याय V.

ब्रैनवेल का बचपन।

ब्रोंटे परिवार का पुनर्मिलन — ब्रैनवेल को विक्टर क्रिम्सवर्थ का आदर्श माना जाता है — वह चरित्र ब्रैनवेल का संपूर्ण चित्रण नहीं है — उनकी मित्रताएँ — कीघली दावत में उनका आगमन — ब्रैनवेल के तंत्रिका तंत्र पर इसका प्रभाव — कुश्ती — खोया हुआ चश्मा — अपने पिता की नाराज़गी का भय — श्रीमती गैस्केल की 'ब्लैक बुल' घटना की कहानी पर सवाल — मिस ब्रैनवेल और उनका भतीजा।

कोवान ब्रिज से शार्लोट और एमिली के लौटने पर, मृत्यु से बची युवा ब्रोंटे बहनें फिर से एक हो गईं; और कुछ वर्षों तक, शार्लोट के 1831 में रो हेड स्कूल जाने तक, वे साथ-साथ अपने शौक पूरे करती रहीं। इन बचपन के वर्षों में ब्रैनवेल अपनी बहनों के निरंतर साथी थे, और वे सभी उन पर गर्व और स्नेह करती थीं। उन दिनों शार्लोट उनकी एक सहानुभूतिपूर्ण मित्र थीं; और अपने बाद के वर्षों में, उन्हें इस बात का

गहरा अफसोस था कि वह उनसे कुछ हद तक अलग हो गई थीं। लेकिन मारिया की मृत्यु के बाद, कोमल एमिली उनकी सबसे करीबी साथी बन गईं, और उनके बीच का गहरा स्नेह कभी कम नहीं हुआ। बहनों ने अपने भाई में छिपी प्रतिभा को तुरंत पहचान लिया, और वे ब्रैनवेल को, और वास्तव में उन्हें जानने वाले सभी लोग, बौद्धिक प्रतिभा में अपने से श्रेष्ठ मानते थे। अपने बचपन में भी, ब्रैनवेल ब्रोंटे ने ज्ञान प्राप्त करने की असाधारण क्षमता दिखाई, और उनकी बोध शक्ति बहुत तीव्र थी। वह भी एक चंचल स्वभाव के थे, जिसमें कभी-कभी गहरी उदासी झलकती थी, लेकिन उन्होंने कम उम्र में ही एक जीवंत और आकर्षक वाक्पटुता हासिल कर ली थी। उनके व्यवहार में एक प्रचंड उत्साह और उत्सुकता थी जो उनकी भरपूर जीवंतता को दर्शाती थी, और वे अपने सामने आने वाले जीवन के सुखों में बड़ी उत्सुकता से लिप्त रहते थे। शार्लोट, जो अपने भाई की प्रतिभा, योग्यता, ज्ञान और स्नेह के खजाने को भलीभांति जानती थीं, ने उनके स्वभाव में कई ऐसी बातें भी देखीं जिनसे उन्हें चिंता हुई। उन्होंने उनकी बुद्धि की असामान्य और अस्वस्थ चमक देखी, और उस कमजोरी और आत्म-नियंत्रण की कमी को पहचाना जिसके कारण ब्रैनवेल, प्रलोभन के अधीन होने पर, कई विनाशकारी प्रभावों का शिकार हो जाते थे, जिनका प्रभाव आगे चलकर देखा जाएगा। यह मानने का कारण है कि शार्लोट ने 'द प्रोफेसर' में ब्रैनवेल के जीवन के इस काल का चित्रण किया है, जहाँ वह विक्टर क्रिम्सवर्थ के बचपन का वर्णन करती हैं; और, यद्यपि यह अंश काफी लंबा है, फिर भी इसे यहाँ मूल्यवान मानते हुए दिया गया है, क्योंकि यह ब्रैनवेल की प्रारंभिक प्रतिभाओं का पूरा विवरण प्रस्तुत करता है, और उस तरीके का भी वर्णन करता है जिससे उनकी बहन - बाद की घटनाओं के आलोक में - उनकी प्रतिभाओं और उनकी कमियों को देखती थीं, और यह देखा जाएगा कि बाद वाली प्रतिभाओं के प्रति वह कुछ हद तक कठोर थीं।

‘विक्टर,’ वह विलियम क्रिम्सवर्थ से कहलवाती हैं, ‘जितना मैं किसी सुंदर पुरुष को नहीं पहचानती, उतना ही वह एक सुंदर बच्चा भी नहीं है… वह पीला और दुबला-पतला है, उसकी आँखें बड़ी-बड़ी हैं… उसका शरीर सुडौल तो है, लेकिन दुबला-पतला है… मैंने कभी किसी बच्चे को इतना कम मुस्कुराते नहीं देखा, न ही किसी ऐसे बच्चे को देखा जो किसी रुचिकर किताब को पढ़ते समय या रोमांच, खतरे या आश्चर्य की कहानियाँ सुनते समय इतनी दृढ़ता से भौंहें सिकोड़ता हो… लेकिन, हालांकि वह शांत है, वह दुखी नहीं है – हालांकि गंभीर है, उदास नहीं; सुखद

संवेदनाओं के प्रति उसकी संवेदनशीलता इतनी तीव्र है कि वह उत्साह में बदल जाती है... जब वह पढ़ना सीख गया, तो वह किताबों का शौकीन हो गया, और आज भी वैसा ही है। उसके खिलौने कम ही रहे हैं, और उसने कभी और खिलौनों की चाह नहीं की। उसके पास जो खिलौने हैं, उनके प्रति उसका एक विशेष लगाव है जो स्नेह के समान है; घर के एक-दो जीवित जानवरों के प्रति यह भावना लगभग जुनून में बदल जाती है... मैंने उसके हृदय में करुणा, स्नेह और वफादारी के स्वस्थ और बढ़ते हुए बीज देखे।' मैंने उसकी बुद्धि के बगीचे में अच्छे सिद्धांतों का भरपूर विकास देखा— तर्क, न्याय, नैतिक साहस, जो कि अगर नष्ट नहीं हुए तो भी, एक उपजाऊ उपज का वादा करते हैं...। वह (उसकी माँ) देखती है, जैसा कि मैं भी देखता हूँ, विक्टर के स्वभाव में कुछ ऐसा है— एक प्रकार का विद्युतीय उत्साह और शक्ति— जो कभी-कभी अशुभ चिंगारियाँ उत्सर्जित करता है; हन्सडेन इसे उसकी आत्मा कहते हैं, और कहते हैं कि इसे दबाया नहीं जाना चाहिए। मैं इसे पापी आदम का खमीर कहता हूँ, और मानता हूँ कि अगर इसे उससे पूरी तरह से नहीं निकाला जा सकता, तो कम से कम इसे अच्छी तरह से अनुशासित किया जाना चाहिए; और वह किसी भी शारीरिक या मानसिक पीड़ा के लिए तैयार है जो उसे आत्म-संयम की कला में गहराई से स्थापित कर देगी। फ्रांसिस (उसकी माँ) अपने बेटे के इस विशिष्ट चरित्र को कोई नाम नहीं देती; लेकिन जब यह उसके दाँत पीसने में, उसकी आँखों की चमक में, निराशा, दुर्भाग्य, अचानक दुख, या कथित अन्याय के विरुद्ध भावनाओं के उग्र विद्रोह में प्रकट होता है, तो वह उसे अपनी छाती से लगा लेती है, या उसे अपने साथ अकेले जंगल में टहलने ले जाती है; फिर वह उससे किसी दार्शनिक की तरह तर्क करती है, और तर्क के लिए विक्टर हमेशा सुलभ रहता है; फिर वह उसे प्रेम भरी निगाहों से देखती है, और प्रेम से विक्टर को अचूक रूप से वश में किया जा सकता है। लेकिन क्या भविष्य में दुनिया उसकी हिंसा का सामना तर्क या प्रेम के हथियारों से करेगी? ओह, नहीं! उसकी काली आँख की उस चमक के लिए—उसकी हड्डियों वाले माथे पर उस बादल के लिए—उसके मूर्ति जैसे होठों के उस दमन के लिए, उस लड़के को एक दिन प्यार भरी बातों के बजाय मार पड़ेगी, चुंबनों के बजाय लातें पड़ेंगी; फिर मौन क्रोध के उस दौरे के लिए जो उसके शरीर को बीमार और उसकी आत्मा को पागल कर देगा; फिर योग्य और लाभकारी पीड़ा की उस परीक्षा के लिए जिससे वह (मुझे विश्वास है) एक बुद्धिमान और बेहतर इंसान बनकर निकलेगा।

ब्रैनवेल के बचपन के स्वाभाविक सौंदर्यबोध और दोष, जो शार्लोट द्वारा 'द प्रोफेसर' में विक्टर क्रिम्सवर्थ के चित्रण में कुछ हद तक झलकते हैं, को उस चरित्र के सामान्य गुणों से मिलता-जुलता ही माना जाना चाहिए। शारीरिक रूप से ब्रैनवेल और क्रिम्सवर्थ भिन्न थे, हालांकि मानसिक रूप से उनमें समानता पाई जाती है; लेकिन यहां भी, शार्लोट ने विक्टर का चित्रण करते समय उसे ध्यान में रखते हुए, अन्य उदाहरणों की तरह ही, अपने भाई के वास्तविक दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया है। फिर भी, यह सच है कि जो लोग ब्रैनवेल ब्रोंटे को उनके प्रारंभिक जीवन में जानते थे, वे उनमें विक्टर क्रिम्सवर्थ की झलक देख सकते थे।

आगे के पृष्ठों में ब्रैनवेल की प्रतिभा की महानता देखी जा सकती है, - महान, हालांकि उनके जीवन की गलतियों और दुर्भाग्य से धूमिल, - साथ ही उन दुखों से भी जो उनके आवेगी, दयालु और स्नेही स्वभाव ने उन पर लाए, दुख जिन्हें उनकी बहन ने उनके जुनून के परिणाम के रूप में दुखद रूप से व्यक्त किया है, और उनके आने वाले वर्षों के दंड के रूप में बताया है।

ब्रैनवेल ब्रोंटे में, 'अपराधी आदम के खमीर' की झलक कभी-कभार अवश्य देखी जा सकती थी, लेकिन उनके घर के सुधरने वाले प्रभावों ने इसे काफी हद तक कम कर दिया था; और, यद्यपि मानवीय कमियों से श्री ब्रोंटे के बच्चे मुक्त नहीं हो सकते थे, फिर भी उनकी प्रारंभिक मनमानी और चिड़चिड़ाहट, लिंग के प्रभाव से, उनकी बहनों की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त हुई। हालांकि, श्री ब्रोंटे के बच्चों के बीच बचपन के सामान्य स्नेह से भी कहीं अधिक गहरा स्नेह था। अपने जीवन के इस दौर में, वे भ्रष्ट मानवीय स्वभाव की चालों से अनभिज्ञ थे, और ब्रैनवेल ने अपने बचपन के सभी उल्लासपूर्ण उत्साह के साथ अपनी बहनों के गहरे और प्रबल स्नेह का भरपूर प्रतिफल दिया। लेकिन, कुछ वर्ष बीतने के बाद, वे यौवन के सुनहरे सूर्योदय में जागे; और, भाई की अनुपस्थिति में, उन्होंने हॉवर्थ के कुछ युवाओं के साथ संगति की तलाश की और उन्हें अपना खेल साथी बना लिया। उनमें से एक, उसकी बहनों के कुछ दोस्तों का भाई था, जो उसका निजी साथी बन गया था, और इसी साथी के साथ वह अक्सर खुले मैदानों में, घास के मैदानों में और गांव की गलियों में खुशी से हंसते हुए मौज-मस्ती किया करता था।

इन दोनों मित्रों में से जो जीवित बचा, उसने मुझे कीघली में वार्षिक उत्सव के दौरान घटी एक घटना सुनाई, जिसमें वे युवक शामिल हुए थे। ऐसे अवसरों पर हमेशा

की तरह, शहर स्टॉलों, प्रदर्शनों और मनोरंजन के विभिन्न स्थानों से भरा हुआ था। रंग-बिरंगे, चमकीले झिलमिलाते वस्त्रों में सजे कलाकार और घुड़सवार, ढोल, ऑर्गन, पैंडियन पाइप, झांझ, डफली और कैस्टनेट की धुन पर अपने मंचों पर आगे-पीछे नाच रहे थे। मेवों और तरह-तरह की मिठाइयों से सजे स्टॉल भी थे, और झूलने वाली नावें और झूले भी थे, साथ ही अन्य मनोरंजन के साधन भी थे।

जैसे-जैसे शाम ढलती गई और मेले रोशन होते गए, ब्रैनवेल का उत्साह, हंसी और मस्ती बेकाबू होती चली गई: वह सब कुछ देखना और सब कुछ आजमाना चाहता था। वह और उसका दोस्त खुशी-खुशी एक हिलती हुई नाव में चढ़ गए। जब नाव पूरी ऊंचाई पर पहुंची, तो ब्रैनवेल को नीचे मेले का मनमोहक दृश्य दिखाई दिया; लेकिन जब नाव नीचे उतरने लगी, तो वह जोर से चिल्ला उठा, 'ओह! मेरी नसें! मेरी नसें! ओह! मेरी नसें!' हर बार नीचे उतरने पर, लड़के के नाजुक शरीर की हर नस सिहर उठती, झनझनाती और कांपती थी। मेले से निकलकर दोनों घर की ओर चल पड़े; और पेड़ों के झुरमुट के बीच एक झोपड़ी के पास एक ग्रामीण इलाके में पहुंचकर, ब्रैनवेल, जो अभी भी जोश से भरा हुआ था, ने अपने साथी से कुश्ती का प्रस्ताव रखा। दोनों के बीच लड़ाई हुई, जिसमें ब्रैनवेल हार गया। गाँव पहुँचकर और खिड़कियों में तेज़ रोशनी देखकर ही ब्रैनवेल को एहसास हुआ कि उसका चश्मा खो गया है, क्योंकि ब्रैनवेल अपनी बहन शार्लोट की तरह ही निकट दृष्टि दोष से ग्रस्त था। यह उसके लिए वाकई एक बड़ी परेशानी थी, क्योंकि उसे डर था कि कहीं उसके पिता को पता न चल जाए कि चश्मा कहाँ गया। उसने अपने साथी को अपनी चिंता बताई; लेकिन दोनों की नींद हराम करने वाली रात के बाद, ब्रैनवेल का दोस्त सुबह जल्दी ही खोए हुए चश्मे की तलाश में वहाँ पहुँच गया। तभी पास की झोपड़ी में रहने वाली महिला ने एक युवक को चश्मा ढूँढ़ते हुए देखा और उसके पास आकर, यह जानकर कि वह क्या ढूँढ़ रहा है, उसे चश्मा दिखाया जो उसने उसके आने से ठीक पहले ज़मीन से उठाया था। चश्मा पाकर ब्रैनवेल बहुत खुश हुआ और जल्दी से पादरी के घर की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने ब्रैनवेल को जागते हुए पाया, जो खोए हुए चश्मे को पाकर अत्यंत प्रसन्न था, क्योंकि उसके पिता के गुस्से का खतरा टल गया था।

श्रीमती गैस्केल ने ब्रोंटे बहनों के भाई के बारे में लिखा है, लेकिन स्रोत का पता लगाना मेरे लिए असंभव है। उनके बचपन की उन प्रतिभाओं के लिए उनकी प्रशंसा

करने के बाद, जिनका प्रमाण इन पृष्ठों में दिया गया है, वह कहती हैं कि: 'लोगों की प्रशंसा उन्हें बहुत अच्छी लगती थी, और इसी वजह से वे अरविल्स और गाँव की सभी बड़ी सभाओं में आमंत्रित किए जाते थे, क्योंकि यॉर्कशायर के लोग बुद्धि के प्रति विशेष रुचि रखते हैं; और इसी कारण उन्हें "ब्लैक बुल" के मालिक द्वारा किसी भी ऐसे यात्री को उनकी संगति की सिफारिश करने का अवांछनीय गौरव भी प्राप्त हुआ, जो शराब के नशे में अकेला या उदास महसूस कर रहा हो। "क्या आपको अपनी बोतल उठाने में मदद करने के लिए किसी की ज़रूरत है, महोदय? यदि हाँ, तो मैं पैट्रिक को बुला दूँगा" (गाँव वाले उन्हें उनकी मृत्यु तक इसी नाम से पुकारते थे, हालाँकि, अपने परिवार में वे हमेशा ब्रैनवेल ही कहलाते थे)। और, जब संदेशवाहक गया, तो मकान मालिक ने अपने मेहमान का मनोरंजन लड़के की अद्भुत प्रतिभाओं के बारे में बताकर किया, जिसकी असाधारण बुद्धिमत्ता और बातचीत करने की अद्भुत क्षमता गाँव का गौरव थी। मकान मालिक द्वारा ब्रैनवेल को ऐसे अवसरों पर हॉवर्थ के 'बुल' में बुलाने के लिए पादरी के घर संदेश भेजने की इस बात को उस समय ब्रैनवेल को जानने वाले लोग और मकान मालिक दोनों ही नकारते हैं। मकान मालिक हमेशा कहता था कि उसने कभी ऐसा करने की हिम्मत नहीं की। अगर उसने ऐसा किया होता तो यह एक घोर दुस्साहस और पादरी के घर में रहने वालों के लिए एक अक्षम्य अपराध होता। इसके अलावा, संदेश संभवतः किसी नौकर को, या शायद स्वयं श्री ब्रोंटे को, या उनकी किसी बेटी को दिया जाता, और परिवार की प्रतिष्ठा के लिए ब्रैनवेल को नीचे के पब में इस तरह के काम के लिए जाने से मना किया जाता।

ब्रैनवेल अपने शुरुआती दिनों में न केवल घर का लाडला था, बल्कि अपनी चाची का विशेष प्रिय भी था। यह नेक महिला अपने परिवार और नाम पर गर्व करती थी, एक ऐसा नाम जिसे अपने भतीजे ने असीम संतुष्टि के साथ धारण किया था। इसलिए, उसकी कभी-कभी चंचल और शोरगुल भरी हंसी उसकी चाची को दुखी होने के बजाय प्रसन्न करती थी, क्योंकि यह मन और शरीर के स्वास्थ्य का सच्चा संकेत था। वह उसकी बचकानी कमियों को आसानी से माफ कर देती थी; और कभी-कभी, उसके भूरे बालों को संवारते हुए, वह स्नेह और प्रेम से उसके चेहरे को देखती, उसे उसकी उम्र के अनुरूप नैतिक सलाह देती, और उसे दिखाती कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त क्षमताओं को लगन से विकसित करके वह संसार में एक उत्कृष्ट स्थान प्राप्त कर सकता है। ईश्वर ने उसकी माँ के स्थान पर इसी कोमल और निस्वार्थ मार्गदर्शक को

रखा था, ताकि वह अपने बेटे को वे अच्छे सिद्धांत सिखा सके जो वह स्वयं उसे सिखाती।

अध्याय VI.

बच्चों की साहित्यिक रुचियां।

ब्रोंटे बहनों की युवावस्था की रचनाएँ — उनका चरित्र — उनमें ब्रैनवेल की भूमिका — 'द सीक्रेट' का एक अंश — ब्रोंटे बच्चों का पठन — इस अवधि में ब्रैनवेल का चरित्र।

श्री ब्रोंटे ने शायद थोड़ी अतिशयोक्ति की थी जब उन्होंने कहा था कि शार्लोट और उनके भाई-बहन जैसे ही पढ़ना-लिखना सीखे, वे अपने छोटे-छोटे नाटक गढ़कर उनका मंचन करने लगे थे; लेकिन यह निश्चित है कि अपने जीवन के शुरुआती दौर में उन्हें अपने विचारों को लिखित रूप में साकार होते देखकर आनंद और गर्व होता था। शार्लोट ने वास्तव में अपनी बचपन की रचनाओं की एक सूची दी है। ये रचनाएँ बाईस खंडों में थीं और इनमें कहानियाँ, साहसिक वृत्तांत, जीवन वृत्तांत, चिंतन, कविताएँ, गीत आदि शामिल थे। श्रीमती गैस्केल और अन्य लेखकों द्वारा प्रकाशित सभी शीर्षकों को दोहराए बिना, यह कहा जा सकता है कि इन रचनाओं में असाधारण प्रतिभा और परिश्रम झलकता था। ब्रैनवेल, एमिली और ऐनी में भी यही भावना थी और उन्होंने अपने खाली समय में इसी प्रकार की ऊर्जा का प्रदर्शन किया।

जनवरी 1831 में शार्लोट के रो हेड जाने से पहले, ब्रैनवेल अपनी बहनों के साथ मिलकर अपनी मासिक पत्रिका का प्रकाशन करते थे, जिसमें युवा कहानियाँ होती

थीं। श्रीमती गैस्केल ने शार्लोट द्वारा 'टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स' के लिए लिखे गए परिचय का हवाला दिया है, जो इन्हीं 'लिटिल मैगजीन्स' में से एक थी और जून 1829 में प्रकाशित हुई थी। इससे पता चलता है कि ब्रैनवेल की एक टिप्पणी ने उसी नाम के नाटक की रचना को प्रेरित किया, और उन्होंने आइल ऑफ मैन को अपना क्षेत्र चुना, और जॉन बुल, एस्टली कूपर और ली हंट को इसके मुख्य पात्रों के रूप में नामित किया। शार्लोट ने अपने अधिकांश नाटकों के प्रकाशन की तिथियाँ दी हैं। वह कहती हैं: 'हमारे नाटक, "यंग मेन," जून 1826; "अवर फेलोज़," जुलाई 1827; "आइलैंडर्स," दिसंबर 1827 को प्रकाशित हुए थे। ये हमारे तीन महान नाटक हैं जिन्हें गुप्त नहीं रखा गया है। एमिली और मेरे सर्वश्रेष्ठ नाटक 1 दिसंबर 1827 को प्रकाशित हुए थे; अन्य मार्च 1828 में। सर्वश्रेष्ठ नाटक का अर्थ है गुप्त नाटक; वे बहुत ही बढ़िया हैं। हमारे सभी नाटक बहुत ही अनोखे हैं। उनकी प्रकृति को कागज पर लिखने की मुझे आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं उन्हें हमेशा याद रखूंगा। नाटक "यंग मेन्स" की प्रेरणा ब्रैनवेल के पास मौजूद कुछ लकड़ी के सैनिकों से मिली; "आवर फेलोज़" की प्रेरणा "ईसप की कहानियों" से मिली; और "आइलैंडर्स" की प्रेरणा कई घटित घटनाओं से मिली।

युवा ब्रोंटे बहनों की इन रचनाओं के साहित्यिक मूल्य को सही ढंग से समझना मुश्किल होगा, लेकिन यह जानना दिलचस्प होगा कि ब्रैनवेल ने इस कार्य में किस प्रकार की सहायता की, साथ ही इन प्रारंभिक रचनाओं की सामान्य गुणवत्ता क्या थी। श्रीमती गैस्केल ने ब्रैनवेल की युवावस्था की साहित्यिक प्रतिभा का उल्लेख किया है। हमारे पास जो भी जानकारी है, उससे यह निश्चित है कि उनका मन भी इन विषयों में उतना ही लगा रहता था जितना उनकी बहनों का, और उनकी महत्वाकांक्षा भी उन्हीं के अनुरूप थी। श्रीमती गैस्केल ने यह भी दर्ज किया है कि वे अपनी बहनों के साथ उनकी युवावस्था की रचनाओं के संकलन में शामिल थे। लेखिका यह भी कहती हैं कि उनकी युवावस्था की गतिविधियाँ 'अधिकांशतः एकांत और बौद्धिक प्रकृति की' थीं।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, शार्लोट ने अपनी युवावस्था की कहानियों की एक सूची या कैटलॉग लिखा था, जिनमें से एक कहानी का अंश श्रीमती गैस्केल ने हूबहू प्रकाशित किया है। यह अंश छोटी, अलंकृत और संकुचित लिखावट में लिखा गया है—इतना छोटा कि आम पाठक के लिए इसका कोई खास उपयोग नहीं है। 'शार्लोट ब्रोंटे का जीवन' में इसे लिखावट के नमूने के रूप में शामिल किया गया

था। यह उस समय के बच्चों की साहित्यिक क्षमता, नाट्य कौशल और कल्पना शक्ति को सही मायने में दर्शाता है, और इन प्रारंभिक रचनाओं के चरित्र का एक दिलचस्प नमूना प्रस्तुत करता है। इसके कुछ अंश यहाँ दिए जा सकते हैं:

रहस्य।

अध्याय 1।

एक सुहावने ग्रीष्म ऋतु के दिन, सुबह तीन घंटे तक वेरडोपोलिस स्थित गृह कार्यालय में सन्नाटा छाया रहा, जो केवल कलम की रगड़, रूलर गिरने या कभी-कभार खांसी जैसी आवाज़ों से ही टूट रहा था; या फिर कभी-कभार प्रथम सचिव द्वारा अपने प्रभावशाली स्वर में फुसफुसाते हुए दिए गए संक्षिप्त आदेशों से। अंततः, लगभग बीस संदेशों को पूरा करने के बाद, उस महान व्यक्तित्व ने क्लर्कों में प्रमुख पद पर आसीन एक छोटे कद के दुबले-पतले युवक को संबोधित करते हुए कहा:

'श्री राइमर, क्या आप कृपया मुझे बता सकते हैं कि अभी कितने बजे हैं?'

‘जी हां, महाराज!’ यह तुरंत उत्तर आया, और फुर्तीला सेवक अपनी सीट से उछलकर, अन्य लोगों की तरह घड़ी देखने के बजाय, सूर्य की स्थिति देखने के लिए खिड़की की ओर दौड़ा; अपना अवलोकन करने के बाद उसने उत्तर दिया: “ठीक बारह बज रहे हैं, महाराज।”

‘बहुत खूब,’ मार्क्विस ने कहा। ‘तो आप सब काम छोड़ दें और सुनिश्चित करें कि आपकी सभी डेस्कें बंद हों, ताकि कार्यालय में कागज का एक भी टुकड़ा बिखरा हुआ न रहे। श्री राइमर, मैं आपसे अपेक्षा करता हूँ कि आप मेरे निर्देशों का पालन सुनिश्चित करें।’ इतना कहकर उन्होंने अपनी टोपी और दस्ताने पहने और शान से प्रवेश कक्ष की ओर बढ़ने लगे, तभी क्लर्कों के बीच हल्की सी हलचल और फुसफुसाहट ने उनके कदम रोक दिए।

‘क्या बात है?’ उसने पीछे मुड़कर पूछा। ‘मुझे उम्मीद है कि ये किसी झगड़े की आवाजें नहीं हैं!’

‘मैं — और —’ एक चौड़े, घुंघराले बालों वाले, अत्यंत लड़ाकू दिखने वाले युवक ने कहा, ‘लेकिन — लेकिन — महाराज यह भूल गए हैं कि — कि — —’

‘वह क्या?’ मार्क्विस ने कुछ अधीरता से पूछा।

‘अरे! — बस आज दोपहर आधी छुट्टी है — और — और — —’

‘मैं समझ गया,’ उसके वरिष्ठ अधिकारी ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, ‘आपको और स्पष्टीकरण देकर अपनी विनम्रता पर बोझ डालने की आवश्यकता नहीं है, फ्लैनगन; सच तो यह है कि मुझे लगता है कि आप अपनी हमेशा की उदारता चाहते हैं, और मुझे याद दिलाने के लिए मैं आपका आभारी हूं - क्या इतना काफी होगा?’ उसने अपनी जेब खोलकर बीस पाउंड का बैंक नोट निकाला और उसे पास की मेज पर रख दिया।

‘माई लॉर्ड, आप तो बहुत उदार हैं,’ फ्लैनगन ने उत्तर दिया; लेकिन मुख्य सचिव ने हंसते हुए अपने दस्ताने वाले हाथ को अपने होठों पर रखा, और अन्य क्लर्कों को तिरस्कारपूर्ण ढंग से सिर हिलाकर, बरामदे की सीढ़ियों से नीचे उतरे और तेजी से चले गए, ताकि उनकी उदारता के लिए उमड़ रही कृतज्ञता की शोरगुल भरी अभिव्यक्तियों से बच सकें।

जिस व्यस्त और चौड़ी सड़क पर शानदार गृह कार्यालय स्थित है, उसके ठीक विपरीत दिशा में उतना ही शानदार औपनिवेशिक कार्यालय स्थित है; और जिस प्रकार आर्थर, मार्क्विस ऑफ डौरो ने पूर्व इमारत को छोड़ा था, उसी प्रकार एडवर्ड स्टेनली सिडनी ने बाद वाली इमारत को छोड़ा था: दोनों इमारतें सड़क के मध्य में मिलीं।

‘अच्छा, नेड,’ मेरे भाई ने हाथ मिलाते हुए कहा, ‘आज तुम कैसे हो? मुझे लगता है कि यह चमकीला सूरज और आसमान तुम्हें ज़रूर तरोताज़ा कर देगा।’

श्री सिडनी ने हल्की मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "क्यों, मेरे प्रिय डौरो, ऐसा सुहावना मौसम स्वस्थ और स्वतंत्र लोगों का मनोबल बढ़ा सकता है, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह बढ़ाता भी है; लेकिन मेरे लिए, जिसका मन और शरीर सार्वजनिक और निजी जीवन की तमाम भारी चिंताओं का निरंतर शिकार है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वातावरण में धूप की खुशी है या बारिश की नमी।"

‘एडवर्ड,’ आर्थर ने जवाब दिया, उसी समय उसके चेहरे पर वह अप्रिय भाव आ गया जिसे मेरा मकान मालिक ‘चिड़चिड़ा’ कहता है; ‘अब मुझे इस तरह की बेकार की बातों से परेशान मत करो, नेड, मैं इससे पूरी तरह थक चुका हूँ: क्या तुम्हें याद है कि आज राजकोष के सभी विभागों में आधा अवकाश है?’

'हां; और इस वजह से मुझे कुछ पैसों का नुकसान हुआ है; मेरी राय में इन पुरानी और बेतुकी परंपराओं को खत्म कर देना चाहिए - ये विनाशकारी हैं।'

‘अरे, तुमने बेचारे लोगों को क्या दे दिया?’

‘दो संप्रभु;’ आर्थर ने इस संदेश के जवाब में एक ज़ोरदार विराम चिह्न लगाया।

अब वे नोकेल स्ट्रीट में प्रवेश कर चुके थे और वहाँ मौजूद शानदार दुकानों की कतार के पास चुपचाप आगे बढ़ रहे थे, तभी उनके पीछे पहियों की आवाज़ सुनाई दी और एक सुचारू रूप से लुढ़कती हुई रथ तेज़ी से आकर ठीक वहीं रुक गई जहाँ वे खड़े थे। खिड़की का एक शीशा टूट गया, एक सफेद हाथ आगे बढ़ा और उन्हें पास आने का इशारा किया, तभी एक मधुर आवाज़ सुनाई दी,

'श्री सिडनी, मार्क्विस ऑफ डौरो, एक क्षण इधर आइए।'

दोनों सज्जनों ने बुलावा स्वीकार किया, आर्थर ने तत्परता से, सिडनी ने अनिच्छा से।

'आपकी क्या आज्ञा है, प्रिय महिलाओं?' पूर्व ने सम्मानपूर्वक गाड़ी में बैठी महिलाओं, लेडी जूलिया सिडनी और लेडी मारिया स्नीकी को झुककर प्रणाम करते हुए कहा।

‘हमारे आदेश मुख्य रूप से आपके साथी के लिए हैं, महाराज, आपके लिए नहीं,’ सिकंदर प्रथम की पुत्री ने उत्तर दिया; ‘अब, श्रीमान सिडनी,’ उसने सीनेटर पर मुस्कुराते हुए कहा, ‘आपको अवज्ञा न करने का वादा करना होगा।’

'पहले मुझे यह बता दीजिए कि मुझे क्या करना है,' यह सतर्क जवाब था, साथ ही आसपास की दुकानों पर एक भयभीत नजर भी डाली गई थी।

‘कोई बड़ी बात नहीं है, एडवर्ड,’ उसकी पत्नी ने कहा, ‘लेकिन मुझे उम्मीद है कि तुम इस बार मेरी मदद करने से इनकार नहीं करोगे, प्रिय। मुझे बस कुछ गिनी चाहिए ताकि मैं श्री लैपिस की दुकान में देखी गई झुमकों की एक जोड़ी की कीमत चुका सकूँ।’

‘बिल्कुल नहीं,’ उसने उत्तर दिया। ‘मैं तुम्हें एक पैसा भी नहीं दूंगा: तुम्हें तिमाही भत्ता मिले अभी मुश्किल से तीन सप्ताह ही हुए हैं, और अगर वह भी अभी तक मिल गया तो तुम्हें इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।’

इस निर्णायक जवाब के साथ, उसने सहज रूप से अपने हाथ अपनी पैंट की जेबों में डाले और जल्दबाजी में कदम बढ़ाते हुए वहां से चला गया।

“कितना कंजूस बंदर है!” लेडी जूलिया गाड़ी की सीट पर पीछे की ओर धंसते हुए बोलीं, और क्रोध और निराशा की तेज लालिमा से उनके गोरे गाल लाल हो गए। “वह हमेशा मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार करता है, लेकिन मैं उसे इसका सबक सिखाऊंगी!”

‘इतना परेशान मत हो, मेरी प्यारी,’ उसकी सहेली ने कहा, ‘अगर तुम स्वीकार करो तो मेरा पर्स तुम्हारी सेवा में है।’

‘मैं तुम्हारी अच्छाई को समझती हूँ, मारिया, लेकिन निश्चित रूप से मैं इसका फायदा नहीं उठाऊँगी; नहीं, नहीं, मैं झुमकों के बिना भी रह सकती हूँ—यह तो बस एक शौक है, हालाँकि सच कहूँ तो मुझे झुमके ज़्यादा पसंद होते।’

‘मेरी प्यारी चचेरी बहन,’ मार्क्विस ने कहा, जो अब तक पूरे दृश्य को चुपचाप, लेकिन बड़े आनंद के साथ देख रहा था, ‘तुम निश्चित रूप से मेरी जानकारी में सबसे खर्चीली युवतियों में से एक हो: आखिर इन गहनों की तुम्हें क्या जरूरत है? मेरी जानकारी के अनुसार तुम्हारे पास कम से कम एक दर्जन अलग-अलग तरह के कान के आभूषण हैं।’

'यह सच है; लेकिन ये तो बिल्कुल अलग तरह की हैं; ये इतनी सुंदर और अनोखी हैं कि मैं इन्हें पाने की इच्छा किए बिना नहीं रह सकी।'

'खैर, चूंकि आपका मन तो इन गहनों पर इतना अटका हुआ है, तो मैं देखूंगा कि क्या मेरा बटुआ इनकी कीमत चुका सकता है, अगर आप मुझे श्री लापिस के यहाँ आपके साथ चलने की अनुमति दें।'

'ओह! धन्यवाद, आर्थर, आप बहुत दयालु हैं,' लेडी जूलिया ने कहा, और जैसे ही वह अंदर आया और उनके बीच बैठ गया, दोनों महिलाओं ने तुरंत उसके लिए जगह बना दी।

कुछ ही मिनटों में वे जौहरी की दुकान पर पहुँच गए। श्री लापिस ने विनम्रतापूर्वक झुककर उनका स्वागत किया और अपने चमचमाते आभूषण दिखाने लगे। जिन लटकनों ने लेडी जूलिया को इतना मोहित कर लिया था, वे दो नन्हे-नन्हे चमकीले हमिंगबर्ड के आकार के थे, जिनके रत्नजड़ित पंख प्रकृति के चमकीले रंगों के बराबर या उनसे भी कहीं अधिक चमकीले थे...

कहानी का यह आनंदमय और सुखद अंश, जिसमें पात्रों और दृश्यों का इतना सजीव चित्रण किया गया है, ब्रोंटे बच्चों की रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ में से एक, या शायद सर्वश्रेष्ठ ही माना जा सकता है। वास्तव में, इन प्रारंभिक कहानियों की भावना और शैली को उनके आस-पास की पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के लेखों के उत्सुक और

अवलोकनशील पठन का परिणाम माना जा सकता है - जब उनके रचनात्मक मन पर अमिट छाप पड़ी, जिससे उन्होंने, शायद अनजाने में ही, सटीक साहित्यिक रचना का ज्ञान और अभ्यास प्राप्त किया, और अपने विचारों को उपयुक्त शब्दों में पिरोना सीखा। उनकी मजबूत स्मृति और चीजों को व्यवस्थित करने की सहज क्षमता ने उन्हें इतनी कम उम्र में ही साहित्यिक जगत के प्रवेश द्वार तक पहुँचा दिया। श्रीमती गैस्केल कहती हैं कि ये रचनाएँ मुख्य रूप से शार्लोट द्वारा इतनी छोटी लिखावट में लिखी गई थीं कि 'आवर्धक लेंस की सहायता के बिना उन्हें पढ़ना लगभग असंभव था'। उनके द्वारा दिया गया नमूना सीधी लिखावट में है, और कहानियों को यथासंभव टाइप किए गए रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास था। हालांकि, शार्लोट और एमिली ने अपने शुरुआती कार्यों में कभी इस छोटे अक्षरों वाली लिखावट का इस्तेमाल किया था, लेकिन बाद के वर्षों में उन्होंने इसे पूरी तरह से त्याग दिया। ब्रैनवेल ने ऐसा कभी नहीं किया, और श्रीमती गैस्केल द्वारा बनाया गया प्रतिकृति पृष्ठ उनके सामान्य हस्तलिखित पृष्ठों के छोटे आकार से कुछ हद तक मिलता-जुलता है।

श्री टी. वेमिस रीड का कहना है कि श्रीमती गैस्केल ने ब्रोंटे बच्चों के बाल्यकालीन प्रदर्शनों के बारे में बात करते हुए 'शार्लट की रचनाओं पर विशेष ध्यान दिया।' वे कहते हैं, 'ब्रोंटे की कहानी के सभी पाठक 'द आइलैंडर्स' नाटक और अन्य उल्लेखनीय रचनाओं को याद रखेंगे, जो यह दर्शाते हैं कि शार्लट अपनी किशोरावस्था के शुरुआती वर्षों में ही कितनी जीवंतता और मौलिकता के साथ अपनी कलम चला सकती थीं।' वे आगे कहते हैं कि 'जिन कुछ लोगों ने परिवार के बाल्यकालीन संग्रह को देखा है, वे इस बात की गवाही देते हैं कि ब्रैनवेल और एमिली कम से कम शार्लट जितनी ही मेहनती और सफल थीं।'

इस प्रारंभिक दौर में भी युवा ब्रोंटे बहनों ने लगन से पढ़ना शुरू कर दिया था। सन् 1829 में ही 'ब्लैकवुड्स मैगज़ीन' ने शार्लोट की बचपन की रुचि के अनुसार खुद को 'सबसे सक्षम पत्रिका' के रूप में स्थापित कर लिया था, और उसके बाद से पूरा परिवार क्रिस्टोफर नॉर्थ और उनके साथियों के शानदार निबंधों को बड़े चाव से पढ़ता था। अन्य समाचार पत्रों में वे 'जॉन बुल' और 'लीड्स इंटेलिजेंसर' पढ़ते थे, जो दोनों कट्टर रूढ़िवादी थे, और 'लीड्स मर्करी', जो विपरीत दल का था। युवा ब्रोंटे बहनें 'ब्रिटिश एस्सेइस्ट्स', 'द रैम्बलर', 'द मिरर' और 'द लाउंजर' भी पढ़ती थीं, और वे स्कॉट की बड़ी प्रशंसक थीं।

लेकिन शार्लट ने बाद में अपनी सहेली 'ई' को पढ़ने के लिए पुस्तकों के संबंध में जो सलाह दी, उससे पता चलता है कि उनका पठन-पाठन कहीं अधिक व्यापक था: शेक्सपियर, मिल्टन, थॉमसन, गोल्डस्मिथ, पोप, बायरन, कैंपबेल और वर्ड्सवर्थ; ह्यूम, रोलिन और 'यूनिवर्सल हिस्ट्री'; जॉनसन की 'पोएट्स', बॉसवेल की 'जॉनसन', साउथी की 'नेल्सन', लॉकहार्ट की 'बर्न्स', मूर की 'शेरिडन', मूर की 'बायरन' और वोल्फ की 'रिमेन्स'; और प्राकृतिक इतिहास के लिए, उन्होंने बेविक, ऑडबोन, व्हाइट और, आश्चर्यजनक रूप से, गोल्डस्मिथ की अनुशंसा की। ब्रैनवेल के पसंदीदा कवि वर्ड्सवर्थ और उदास कवि कूपर थे, जिनकी कविता 'कैस्टअवे' को वे अक्सर उद्धृत करना पसंद करते थे। ब्रोंटे बहनों ने अपने युवावस्था में कीघली के पुस्तकालय से काफी बौद्धिक ज्ञान प्राप्त किया।

इन बच्चों को जिस असाधारण साहित्यिक गतिविधि ने प्रेरित किया, वह उनके जीवन में कभी नहीं छूटी; और जैसा कि हम देख चुके हैं, ब्रैनवेल और उनकी बहनों ने कई उल्लेखनीय रचनाएँ लिखीं। लेकिन, समय बीतने और अनुभव प्राप्त होने के साथ, उनकी साहित्यिक रचनाओं में अधिक शक्ति और निखार आने लगा। फिर भी, चाहे कभी-कभी उनका मन कितना भी प्रसन्न क्यों न हो, तात्कालिक अवसर बीत जाने के बाद, वे फिर से उसी गंभीर उदासी में डूब जाते थे, जो उनके पूरे जीवन में उनकी सबसे प्रमुख विशेषता रही।

श्री ब्रोंटे अपने बच्चों की बढ़ती प्रतिभा को देखकर अत्यंत प्रसन्न थे; परन्तु उनकी सबसे बड़ी आशा अपने पुत्र पर टिकी थी, जिस पर उन्हें पूरा विश्वास था कि वह उनके नाम को गौरवान्वित करेगा और अमर करेगा। इन वर्षों में वह बालक विलक्षण और चंचल था, विनोद और उल्लास से भरपूर, गाँव वालों से मिलने पर तुरंत चुटकुले सुनाने को तैयार रहता था, और अत्यंत शीघ्रता से मानव स्वभाव के अच्छे और बुरे दोनों पहलुओं को आत्मसात करता रहता था। श्री ब्रोंटे ने अपनी पूरी क्षमता से ब्रैनवेल की शिक्षा पर ध्यान दिया, उन्हें अपने पुत्र के चरित्र की अस्थिरता का आभास नहीं हुआ, और न ही उन्हें उसके परिचितों से किसी प्रकार की हानि का आभास हुआ।

हॉवर्थ के पादरी की साहित्यिक रुचि स्पष्ट थी, और अपने बेटे में साहित्यिक प्रतिभा देखकर उन्हें अत्यंत प्रसन्नता हुई। श्री ब्रोंटे पर यह आरोप लगाया गया है कि उन्होंने ब्रैनवेल को किसी सार्वजनिक विद्यालय में नहीं भेजा, बल्कि उसकी शिक्षा के लिए पूरी तरह से स्वयं ही मार्गदर्शन पर निर्भर रहे। श्री ब्रोंटे की स्थिति को देखते हुए,

उन्हें इस तरह का कदम उठाने की आवश्यकता नहीं थी। पास के ग्रामर स्कूल में एक ऐसे शिक्षक थे जो आवश्यकता पड़ने पर अपने छात्रों को उच्च शिक्षा देने में सक्षम थे; और श्री ब्रोंटे स्वयं भी ऐसा करने में सक्षम थे, लेकिन अपने विद्यालय में दैनिक कार्यों के कारण उनके पास अपने बेटे की पूरी शिक्षा का जिम्मा लेने के लिए बहुत कम या बिल्कुल भी समय नहीं बचता था: वे केवल समय-समय पर उसकी प्रगति पर नजर रख सकते थे। वास्तव में, श्री ब्रोंटे अपने बेटे की शिक्षा को अंतिम रूप दे सकते थे। हालांकि, जो लोग उस प्रतिभाशाली युवक को उसकी युवावस्था की परिपक्वता में जानते थे, वे उसके द्वारा अर्जित ज्ञान की व्यापकता को पहचानते थे, और यह भी महसूस करते थे कि उसे उस ज्ञान का सदुपयोग करना जानने के लिए पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित किया गया था।

अध्याय VII.

युवा।

शार्लोट रो हेड जाती है — घर वापसी — उस समय ब्रैनवेल — उसकी बहनों का साथी — शार्लोट को एक यात्रा पर ले जाता है — उसे मुक्केबाजी में रुचि हो जाती है — उसकी शिक्षा — संगीत के प्रति उसका प्रेम — उसकी उत्कृष्ट स्मृति — उसका व्यक्तित्व — उसकी आत्मा।

सन् 1831 से पहले ब्रोंटे परिवार के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है, लेकिन यह स्पष्ट है कि श्री ब्रोंटे ने अपने बच्चों की आदतों और चरित्र के निर्माण में गहरा प्रभाव डाला। उदाहरण के लिए, उनका एक अध्ययन कक्ष था जिसमें वे अपना काफी

समय व्यतीत करते थे। बच्चों का भी अपना अध्ययन कक्ष था। श्री ब्रोंटे कविताएँ और कहानियाँ लिखते थे और नाश्ते की मेज पर अक्सर अजीबोगरीब कहानियाँ सुनाते थे। बच्चे इन बातों में उनका अनुकरण करते थे। श्री ब्रोंटे को सभी राजनीतिक मामलों में गहरी रुचि थी; और इस मामले में भी बच्चे उनका अनुसरण करते थे। संक्षेप में, वे लगभग हर चीज में उनका अनुकरण करते थे। बाद में, वे स्वयं को उनके मार्गदर्शन के लिए एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते थे और उन्हें बताते थे कि उन्होंने किस प्रकार संघर्ष किया और अपने पद तक पहुँचने के लिए कड़ी मेहनत की; और इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनके बच्चों को उनके करियर के प्रति बहुत सम्मान था।

मिस ब्रैनवेल का प्रभाव श्री ब्रोंटे के प्रभाव से बिल्कुल अलग था। अपने भतीजे की बौद्धिक क्षमता पर गर्व करते हुए, उनका उद्देश्य उसकी बहनों को अच्छी गृहणी और घरेलू सद्गुणों का आदर्श बनाना था। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने शयनकक्ष को एक शिक्षण कक्ष में बदल दिया और उन्हें सिलाई और कढ़ाई सिखाई; और वे अपना समय दान के लिए कपड़े बनाने में लगाती थीं, जिसके बारे में उनका मानना था कि 'यह काम प्राप्तकर्ताओं के भले के लिए नहीं, बल्कि सिलाई करने वालों के भले के लिए है; यह उनके लिए उचित है।' मिस ब्रैनवेल के मार्गदर्शन में उन्होंने सफाई, धुलाई, बेकिंग, खाना पकाना, जैम और जेली बनाना और अन्य कई घरेलू काम भी सीखे; और यहाँ भी, बाकी सभी चीजों की तरह, वे होशियार छात्राएँ थीं।

लेकिन, सन् 1830 के अंत में, यह निर्णय लिया गया कि शार्लोट को कहीं और व्यापक शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए; और लीड्स और हडर्सफ़ील्ड के बीच स्थित रो हेड में मिस वूलर द्वारा संचालित एक विद्यालय को चुना गया। यह एक विचित्र, पुराने ज़माने का घर था, जो एक रमणीय ग्रामीण इलाके में स्थित था और शार्लोट के लिए विशेष रुचिकर था, क्योंकि यह हार्ट्सहेड से ज़्यादा दूर नहीं था, जहाँ उनके पिता का यॉर्कशायर में पहला क्यूरेसी पद था। यह बात, साथ ही रॉबिन हुड की परंपराओं से ग्रसित किर्कलीस प्रायरी के अवशेषों की निकटता, और मिस वूलर से सुनी गई विचित्र स्थानीय कहानियों ने उन्हें बाद में इस क्षेत्र को अपने उपन्यास 'शर्ली' का पृष्ठभूमि बनाने के लिए प्रेरित किया। मिस वूलर एक दयालु, मातृत्व भाव वाली महिला थीं, जो अपने प्रत्येक विद्यार्थी में रुचि रखती थीं। वह लंबे समय से एक गहरी दृष्टि वाली थीं और शिक्षण में अपने ज्ञान का उपयोग करना बखूबी जानती थीं। इस विद्यालय में, सोलह वर्षीय शार्लोट एक अथक छात्रा थीं, जो ज्ञान की खोज में शायद ही कभी

विश्राम करती थीं। वह बहुत मिलनसार नहीं थी और अक्सर खेल के समय अपनी किताब लेकर अकेली बैठी रहती थी—एक दुबली-पतली, नाज़ुक लड़की, जिसके भूरे बाल उस पन्ने को ढक लेते थे जिस पर उसकी आँखें, 'वे भावपूर्ण गोले', बड़ी तल्लीनता से टिकी रहती थीं। उसके साथियों ने उस समय टिप्पणी की थी कि उसके पास असाधारण ज्ञान का भंडार था, जबकि सामान्य जानकारी के कुछ बिंदुओं पर वह अपेक्षाकृत अज्ञानी थी। लेकिन जब शार्लोट ने जून 1832 में रो हेड छोड़ा, तो वह हॉवर्थ के पादरी निवास में अधिक विस्तृत विचारों और व्यापक ज्ञान के साथ लौटी, और शायद साहित्यिक दुनिया के आनंद के प्रति उसकी रुचि और भी बढ़ गई थी। रो हेड में शार्लोट की मुलाकात अपनी जीवन भर की दोस्त 'ई' से हुई, और साथ ही मैरी और मार्था 'टी' से भी।

इस समय के आसपास, ब्रोंटे परिवार में पूर्ण शांति प्रतीत होती है। शार्लोट ने रो हेड में मिस वूलर की छात्रा रहते हुए ब्रैनवेल के साथ पत्राचार किया था; और श्रीमती गैस्केल ने 17 मई, 1832 को उसी स्थान से उन्हें भेजे गए एक पत्र के अंश प्रकाशित किए हैं, जब वे पंद्रह वर्ष के थे, जिसमें उन्होंने अपने पुराने राजनीतिक झुकाव को दर्शाया है, जिसमें ब्रैनवेल भी शामिल थे। पत्र में लिखा है: 'हाल ही में मुझे लगने लगा था कि राजनीति में मेरी जो रुचि पहले थी, वह अब खत्म हो गई है; लेकिन हाउस ऑफ लॉर्ड्स द्वारा सुधार विधेयक को खारिज किए जाने और अर्ल ग्रे के निष्कासन या इस्तीफे आदि की खबर से मुझे जो अत्यधिक खुशी हुई, उसने मुझे आश्वस्त कर दिया कि राजनीति के प्रति मेरा लगाव अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। मुझे बहुत खुशी है कि चाची ने "फ्रेजर पत्रिका" पढ़ने के लिए सहमति दे दी है;' हालांकि आपके वर्णन से मुझे पता है कि इसकी सामान्य विषयवस्तु "ब्लैकवुड" की तुलना में यह कुछ कम रोचक होगी, फिर भी यह पूरे साल किसी भी पत्रिका को न देख पाने से बेहतर होगी; और निश्चित रूप से ऐसा ही होगा, क्योंकि जिस छोटे से जंगली दलदली गाँव में हम रहते हैं, वहाँ किसी भी पुस्तकालय से इस प्रकार की कोई पत्रिका उधार लेने की कोई संभावना नहीं होगी। मैं आपके साथ आशा करता हूँ कि वर्तमान सुहावना मौसम हमारे प्यारे पापा के स्वास्थ्य में पूर्ण सुधार लाने में सहायक होगा; और यह आंटी को उनके जन्मस्थान की सुखदायक जलवायु की सुखद यादें दिलाएगा।

शार्लोट के राजनीतिक सिद्धांत उनके पिता, भाई और बहनों की तरह ही दृढ़तापूर्वक रूढ़िवादी थे, और उनके धार्मिक मतों ने इन सिद्धांतों को और भी प्रबल

बना दिया था। वे अपनी पार्टी की पोषित राजनीतिक मान्यताओं का दृढ़तापूर्वक पालन करते थे, और उदारवादी मांगों के प्रति की गई किसी भी रियायत को संविधान के मूल सिद्धांतों पर आक्रमण मानते थे। यही कारण था कि 7 अक्टूबर, 1831 को जब सदन ने सुधार विधेयक को अस्वीकार कर दिया तो शार्लोट अत्यंत प्रसन्न हुईं। लेकिन बाद के वर्षों में घटनाओं के क्रम ने उनके राजनीतिक विचारों को काफी हद तक बदल दिया।

उस समय ब्रैनवेल, जो अभी भी घर पर ही शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, अपनी बहनों के साथ नियमित रूप से रहते थे और अक्सर उनके साथ आसपास के मनोरम स्थानों और मैदानी इलाकों की सैर पर जाते थे। 'स्क्राइबर' में लिखते हुए 'ई' कहते हैं: 'शार्लोट ने हॉवर्थ से अपनी पहली यात्रा स्कूल छोड़ने के लगभग तीन महीने बाद की। वह दो पहियों वाली बग्घी में यात्रा कर रही थीं, जो हॉवर्थ में स्कूल लाने वाली ढकी हुई गाड़ी के अलावा एकमात्र परिवहन साधन था। श्री ब्रोंटे ने ब्रैनवेल को उनके साथ भेजा था; वह उस समय उनके बहुत प्यारे भाई थे, शार्लोट के लिए उनकी आत्मा के समान प्रिय; उनकी पसंद और भावनाएँ पूरी तरह एक जैसी थीं और साथ रहना उन्हें बहुत आनंद देता था। ब्रैनवेल शायद इससे पहले कभी घर से बाहर नहीं गए थे; वह हर चीज को लेकर बेहद उत्साहित थे।' वह बेफिक्र होकर लड़कपन के आनंद में इधर-उधर घूम रहा था, बुर्जदार छत वाले घर, लॉन में लगे सुंदर शाहबलूत के पेड़ों (एक पेड़ उसे विशेष रूप से आकर्षित कर रहा था क्योंकि वह तूफानों से टूटकर लोहे के घेरे में लिपटा हुआ था, लेकिन फिर भी शान से फल-फूल रहा था) और एक बड़े पक्षी-चिड़ियाघर को देख रहा था, जो घर को एक सुंदर पृष्ठभूमि प्रदान करता था - इन सभी को वह पूरे उत्साह से देखता और उन पर टिप्पणी करता था। उसने अपनी बहन से कहा कि वह उसे स्वर्ग में छोड़ रहा है, और अगर वह बेहद खुश नहीं हुई तो कभी नहीं होगी! वास्तव में, वह तब अपने आप में खुश थी, क्योंकि वह अपने उत्साह के साथ यह देखने के लिए उत्सुक थी कि उसके भाई की महान क्षमता और प्रतिभा क्या कर सकती है। उस समय उसकी उम्र पंद्रह से सोलह वर्ष के बीच होगी।

जून 1833 में, जब ब्रैनवेल लगभग इसी उम्र के थे, हमें पता चलता है कि उन्होंने अपनी बहनों को बड़े हर्ष के साथ एक गाड़ी में बिठाकर बोल्टन ब्रिज तक पहुँचाया, जहाँ उनकी दोस्त 'ई' उनसे मिलने आई थीं। 'ई' युवा ब्रोंटे बहनों का 'डेवनशायर आर्म्स' में एक गाड़ी में इंतज़ार कर रही थीं। यह बोल्टन के प्राचीन मठ और उसके प्राचीन

जंगलों और घाटियों की यात्रा थी। हम उस समय को देखते हुए आसानी से कल्पना कर सकते हैं - 'जून का हरा-भरा महीना', जब प्रकृति प्रसन्न होती है, और घने जंगल रंग-बिरंगे पत्तों से भरे होते हैं, जबकि एम्बर रंग की व्हार्फ नदी ऐतिहासिक बार्डन के ऊपर की दलदली पहाड़ियों से निकलकर खंडहर हो चुके मठ के शांत मैदानों तक अपने पथरीले रास्ते से तेज़ी से बहती है - कि ब्रोंटे बहनों के दिल इन शानदार और भव्य एकांतों से मंत्रमुग्ध और प्रभावित होकर प्रसन्न हुए होंगे।

यह खेदजनक ही है कि जहाँ उनकी बहनें आपस में खुलकर विचार-विमर्श कर सकती थीं और गुप्त रूप से स्नेहपूर्वक समान रुचियों का आनंद ले सकती थीं, वहीं ब्रैनवेल का कोई भाई नहीं था जिसकी सहानुभूतिपूर्ण सलाह उन्हें मिल सके; इसलिए, वे स्वयं पर निर्भर हो गए और उन्होंने ऐसे मित्रों की संगति का सहारा लिया जिन्होंने उन्हें दुनिया के तौर-तरीकों और समाज की बुराइयों से तब परिचित कराया जब उन्हें इनके बारे में ज्यादा जानने का समय भी नहीं आया था। वास्तव में, दुर्भाग्य से, यह कोई असामान्य घटना नहीं थी कि भोले-भाले, हंसमुख और भोले-भाले ब्रैनवेल को हॉवर्थ के कब्रिस्तान के रखवाले - प्रसिद्ध जॉन ब्राउन - के भद्दे चुटकुलों को सुनते हुए देखा जाता था, जबकि वह कर्मचारी पादरी के घर की छाया में, कब्रिस्तान में अक्सर खोदी जाने वाली कब्रों को खोदने में व्यस्त होता था।

हॉवर्थ में जिस तरह के समाज में वे आराम करते थे, उसी ने उन्हें मुक्केबाजी में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया, जो लंबे समय तक बनी रही। हालांकि, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि मुक्केबाजी और इस 'महान कला' में रुचि को धनी, प्रभावशाली और प्रतिष्ठित लोगों ने लोकप्रिय बनाया था, जिनमें लॉर्ड बायरन भी शामिल थे, और साथ ही पूर्ववर्ती युग के फैशनेबल और फैशनेबल लोगों ने भी। प्रसिद्ध प्रोफेसर जैक्सन कवि के घनिष्ठ मित्र थे और कई बार न्यूस्टेड में उनसे मिलने गए थे। इस शताब्दी के आरंभ में भी, शहर के कई प्रतिष्ठित लोग एंजेलो और जैक्सन की अकादमी में अभ्यास के लिए एकत्र होते थे। ब्रैनवेल भी 'बेल्स लाइफ इन लंदन' और उस समय के अन्य खेल समाचार पत्रों को बड़े चाव से पढ़ते थे। उस समय के प्रसिद्ध मुक्केबाजों के नाम और रूप-रंग से वह परिचित थे, जो समाज के संभ्रांत वर्ग को खुश करने के लिए, भीड़ की वाहवाही और 'चैंपियन बेल्ट' पहनने के सम्मान के लिए एक-दूसरे को बुरी तरह पीटते थे, यहाँ तक कि उनका शरीर भी इंसान जैसा न रह जाता था। 'बेल्स लाइफ' हॉवर्थ के एक सराय मालिक के यहाँ किराए पर थी; और गाँव के मुक्केबाजी क्लब के सदस्य,

जिनमें ब्रैनवेल भी शामिल थे, 'आत्मरक्षा की महान कला' से संबंधित सभी सार्वजनिक मामलों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। उनके पास कई मुक्केबाजी के दस्ताने थे, और वे समय-समय पर हॉवर्थ की एक इमारत के ऊपरी कमरे में मुक्केबाजी का अभ्यास करते थे। ये गतिविधियाँ, जिस समय की हम बात कर रहे हैं, उस समय बचकानी मस्ती मात्र थीं, और निस्संदेह उनमें भाग लेने वालों के जोश और ऊर्जावान स्वभाव के अनुकूल थीं, और ब्रैनवेल के लिए तो ये और भी अधिक थीं, जिनमें ये दोनों गुण प्रचुर मात्रा में थे। लेकिन हो सकता है कि यहीं उनकी मुलाकात ऐसे युवकों से हुई हो जिनके तौर-तरीकों और आचरण का उनके करियर की शुरुआत में ही उन पर बुरा असर पड़ा हो। हालांकि, अगर ब्रैनवेल का उत्साह कभी-कभी उन्हें अपने साथियों के बहकावे में ले आता था, तो उनके सहज अच्छे हृदय ने उन्हें तुरंत और पूरी शिद्दत से पश्चाताप करने के लिए प्रेरित किया। अपने पिता के पेशे के प्रति उनके सम्मान ने उनकी नज़रों में उनकी अपनी किसी भी गलती को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया - जबकि उन्हें सामान्य से कहीं अधिक अच्छा होना चाहिए था - और अपनी कमियों को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हुए, वे गहरे दुख में अपने 'भयानक आचरण' पर विलाप करते थे। ईमानदारी और सच्चाई के ऐसे स्पष्ट प्रमाणों ने उन्हें तुरंत क्षमा दिला दी। वे स्वाभाविक रूप से अपनी चाची के प्रिय थे; लेकिन वे अपने आस-पास के सभी लोगों से इतनी सहजता से जुड़ जाते थे कि यह स्पष्ट है कि उनकी युवावस्था की जो भी गलतियाँ थीं, वे केवल सतही थीं।

ब्रैनवेल ने अपनी युवावस्था में जो अध्ययन किया, उसके बारे में उनके साहित्यिक मित्रों ने बाद के वर्षों में पाया कि इससे उन्हें शास्त्रीय ज्ञान का काफी लाभ मिला। उन्हें ग्रीक और लैटिन लेखकों का व्यापक और अच्छा ज्ञान था। वे यूरोप और इस देश के इतिहास और वर्तमान स्थिति से भलीभांति परिचित थे; और इन विषयों तथा उस समय के साहित्य पर उनकी वार्तालाप क्षमता उत्कृष्ट थी। श्री ब्रोंटे ने अपने पुत्र और पुत्रियों के लिए संगीत की शिक्षा की व्यवस्था की थी, और ब्रैनवेल धार्मिक संगीत के बहुत शौकीन थे और ऑर्गन बजा सकते थे। वे हाल के और पूर्व के महान संगीतकारों की रचनाओं से परिचित थे; और यद्यपि वे उनकी जटिल रचनाओं को भलीभांति प्रस्तुत नहीं कर पाते थे, फिर भी जब उनके मित्र उन्हें ये रचनाएँ सुनाते थे तो वे इतने उत्साहित हो जाते थे कि वे सधे कदमों से कमरे में इधर-उधर घूमते रहते थे, उनकी आँखें छत की ओर उठी रहती थीं, वे अपने स्वर से संगीत का भावपूर्ण ढंग से

गुनगुनाते थे और आते-जाते कुर्सियों पर हाथ से ताल देते रहते थे। वे 'सैमसन' के ऑरेटोरियो के उत्साही प्रशंसक थे, जिसे हैंडल 'मसीहा' के समान मानते थे, और हेडन, मोजार्ट और अन्य संगीतकारों के मास संगीत के भी प्रशंसक थे। वास्तव में, ब्रैनवेल के हृदय में धर्म गहराई से समाया हुआ था; लेकिन जब भी वे इस तरह का पवित्र संगीत सुनते थे, उनकी भक्ति भावनाएँ और भी प्रबल हो जाती थीं, और प्रलोभन, भोग-विलास और मूर्खता के समय में भी उनकी प्रारंभिक धार्मिकता का प्रभाव कभी कम नहीं हुआ। उनकी छोटी-छोटी उपलब्धियों में, उन्होंने सहजता से शॉर्टहैंड लिखना सीख लिया था, और दोनों हाथों से एक साथ बड़ी आसानी से लिख सकते थे, जिससे उनमें एक ही समय में दो अक्षर लिखने की असाधारण क्षमता थी। उनकी लिखावट साफ-सुथरी थी। ब्रैनवेल में अवलोकन की अद्भुत क्षमता और असाधारण स्मृति भी थी। यह दर्ज है कि लंदन आने से पहले, उन्होंने मानचित्रों और पुस्तकों के गहन अध्ययन से इसकी गलियों को इतनी अच्छी तरह से समझ लिया था कि वे वहां की भाषा में पूर्ण ज्ञान रखते थे और महानगर के निवासियों को उन गलियों और स्थानों के अपने घनिष्ठ ज्ञान से चकित कर देते थे जिनके बारे में उन्होंने कभी सुना भी नहीं था। शारीरिक रूप से वे औसत कद से कुछ कम थे, लेकिन उनका रूप-रंग परिष्कृत और सज्जनतापूर्ण था, और उनके शिष्टाचार अत्यंत शालीन थे। उनका रंग गोरा और चेहरे की बनावट आकर्षक थी; उनके होंठ और ठोड़ी सुडौल थे; उनकी नाक उभरी हुई और रोमन शैली की थी; उनकी आंखें आनंद से चमकती थीं और उनका सुडौल माथा उनके चेहरे को अंडाकार आकार देता था, जो उन्हें एक अनूठा आकर्षण प्रदान करता था और उन्हें जानने वालों को उनकी प्रशंसा करने के लिए प्रेरित करता था। इसके अलावा, उनका वादन सरल और सहज था, फिर भी परिष्कृत था; लेकिन अंग्रेजी भाषा की उच्चतम अभिव्यक्ति, और यॉर्कशायर और आयरिश बोलचाल की भाषा से परिचित होने के कारण, वे आवश्यकता पड़ने पर सबसे विचित्र और व्यापक शब्दों का भी सहजता से प्रयोग कर सकते थे। यह वाकई आश्चर्यजनक था कि कैसे वह किसी गंभीर और उदात्त विषय पर चर्चा, गहन विवेचन या किसी उदात्त काव्य विषय से अचानक ही अपने हल्के-फुल्के और मनोरंजक आयरिश या यॉर्कशायर चुटकुलों की ओर मुड़ जाते थे। वह लगभग एक ही समय में उदास और प्रसन्न हो सकते थे, जैसे अप्रैल के मौसम की धूप और उदासी; अपने दुखद, छोटे और उतार-चढ़ाव भरे जीवन के भविष्य के उजाले और छायाओं को पूर्वाभास देते हुए। संक्षेप में,

वह कभी-कभी गंभीरता में भी विनोदी और प्रसन्न प्रतीत होते थे।

यह भी ज्ञात है कि ब्रैनवेल, अपने युवा जीवन के उस दौर में - जब वयस्कता अपनी आशाओं और खुशियों, अपने उद्यमों और आकांक्षाओं, अपने स्नेह और अपनी जिम्मेदारियों के साथ उनके सामने फैली हुई थी - अपनी पूरी क्षमता से, जैसा कि उन्हें विश्वास था, एक शानदार साहित्यिक या कलात्मक भविष्य की नींव रखने में व्यस्त थे।

अध्याय VIII.

ब्रोंटे बहनों के कला संबंधी उद्देश्य।

युवा ब्रोंटे बहनों में कला के प्रति प्रेम — उनके विस्तृत चित्र — जे. बी. लेलैंड, मूर्तिकार — स्पार्टाकस — श्री जॉर्ज होगार्थ की राय — लीड्स में कला प्रदर्शनी — श्री विलियम रॉबिन्सन, उनके चित्रकार — ब्रैनवेल का लक्ष्य चित्र-चित्रकला — लंदन में जे. बी. लेलैंड — ब्रैनवेल और रॉयल अकादमी — उनका लंदन दौरा।

ब्रोंटे बहनों के जीवनीकारों ने विशेष रूप से शार्लोट और एमिली की कलात्मक प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है; और उनके लिखित वर्णनों की मौलिकता और सटीकता, तथा उनके शब्द-चित्रों की रचना और 'रंग' की सुंदरता, ब्रोंटे प्रतिभा की उत्कृष्टता पर विभिन्न लेखकों के लिए एक अटूट विषय रही है। इस परिवार के सदस्यों में, चाहे वह रेखाचित्र हो, चित्रकला हो या मूर्तिकला, कला के प्रति गहरी समझ बचपन से ही प्रकट थी; लेकिन, यद्यपि वे प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन करने और व्यक्तिगत चरित्रों के चित्रण में कुशल और उपयुक्त शाब्दिक अभिव्यक्ति से परिपूर्ण थीं, फिर भी उनमें

अपने विचारों को - चाहे वे विचित्र और अनूठे हों या सुंदर और आनंदमय - उस मूर्त और स्थिर रूप में ढालने की क्षमता उतनी नहीं थी, जिस रूप में कलाकार अपनी प्रतिभा की अभिव्यक्ति को अमर बनाते हैं। शार्लोट और ब्रैनवेल की कला के प्रति निष्ठा इतनी तीव्र थी और उनका यह दृढ़ विश्वास था कि एक समय कला-संधि केवल यांत्रिक निपुणता पर आधारित थी और इसे लंबे अध्ययन और अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता था। इसलिए बहन ने वूलेट, ब्राउन, फिटलर और अन्य कलाकारों की भव्य पुरानी नक्काशी की लगभग हूबहू नकल करने में अथक परिश्रम किया, यहाँ तक कि इस लगन से उनकी दृष्टि धुंधली हो गई; और ब्रैनवेल ने भी इसी विश्वास के साथ उत्सुकतापूर्वक उनका अनुसरण किया। उनमें निस्संदेह महान प्रतिभा और दृढ़ता थी; और यद्यपि हमारे पास शार्लोट द्वारा बनाए गए कोई भी मौलिक चित्र नहीं हैं, हम जानते हैं कि ब्रैनवेल ने कलम और स्याही से बड़ी सहजता, हास्य और मौलिकता के साथ चित्र बनाए। इस कार्य के दौरान उनकी रचनाओं पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाएगा। शार्लोट के चित्रों को विवरण में प्री-राफेलाइट कहा जाता था, लेकिन वे उस शैली की भावना के निकट भी नहीं थे; ब्रैनवेल के चित्र, चाहे वे जिन व्यक्तियों का चित्रण करते हों, उनकी कितनी भी प्रशंसनीय छवि प्रस्तुत करते हों, उनमें हर मामले में उस कलात्मक स्पर्श की कमी थी जो प्रतिभावान कलाकार हमेशा प्रदान करते हैं और करना अनिवार्य है। रो हेड स्कूल में पढ़ते समय, शार्लोट को उनके सहपाठियों ने पहले किसी को भी इतना अच्छा और तेज़ी से चित्र बनाते हुए नहीं देखा था, और उनमें से एक ने हमें बताया है कि 'वह चित्रकला, मूर्तिकला, कविता, संगीत आदि से संबंधित हर जानकारी को ऐसे ग्रहण करती थी मानो वह सोना हो।' एक या दो साल पहले उसने जिन महान कलाकारों की कृतियों को देखने की इच्छा व्यक्त की थी, उनकी सूची से पता चलता है कि तेरह वर्ष की आयु में भी कला में उसकी रुचि ने उसे उनके और उनकी रचनाओं के बारे में पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

1832 में घर लौटने पर, शार्लोट ने 21 जुलाई को पादरी के घर में अपने जीवन के बारे में लिखा: 'सुबह नौ बजे से साढ़े बारह बजे तक, मैं अपनी बहनों को पढ़ाती हूँ और चित्र बनाती हूँ; फिर हम दोपहर के भोजन तक टहलते हैं। दोपहर के भोजन के बाद मैं चाय के समय तक सिलाई करती हूँ, और चाय के बाद मैं या तो लिखती हूँ, पढ़ती हूँ, या थोड़ा बहुत कल्पना का काम करती हूँ, या अपनी इच्छानुसार चित्र बनाती हूँ।' शार्लोट ने श्रीमती गैस्केल को यह भी बताया कि 'उनके जीवन के इस दौर में,

चित्र बनाना और अपनी बहनों के साथ टहलना, उनके दिन के दो सबसे बड़े सुख और विश्राम थे।'

श्री ब्रोंटे ने देखा कि उनके बेटे और बेटियों को चित्रकारी में आनंद आता है, और यह मानते हुए कि यह उनकी स्वाभाविक प्रतिभा है जिसे निखारा जाना चाहिए, शायद एक ऐसे कौशल के रूप में जो भविष्य में उनके लिए उपयोगी साबित हो सकता है, उन्होंने उनके लिए एक चित्रकारी शिक्षक नियुक्त किया। लेकिन उन्होंने यह भी देखा कि ब्रैनवेल चित्रकारी में अपनी बहनों से श्रेष्ठ था, और वह तेल रंगों में भी चित्रकारी करता था, और शायद कभी-कभी उन्हें यह उम्मीद भी रही होगी कि उनका बेटा एक प्रख्यात कलाकार बनेगा।

यह स्पष्ट है कि चित्रकारी न केवल शार्लोट के खाली समय का एक बड़ा हिस्सा थी, बल्कि यह उनकी गृह शिक्षा का भी एक हिस्सा थी। उनकी बहनों और स्वयं शार्लोट ने भी इन शुरुआती वर्षों में इस कला को सीखने के लिए बहुत मेहनत की, और ब्रैनवेल भी इसी उद्देश्य के प्रति लगन से प्रयासरत थे। शार्लोट तो कला को अपना पेशा बनाने के बारे में भी सोचती थीं; और यह इरादा इतना प्रबल था कि उन्हें शायद ही यह विश्वास दिलाया जा सकता था कि यह उनका सच्चा पेशा नहीं है। संक्षेप में, उनकी कलात्मक भावना हमेशा वास्तविक कलाकृतियों को देखकर असीम आनंदित होती थी, और उनका अवलोकन उनके जीवन के प्रमुख सुखों में से एक था। श्री रोचेस्टर को चित्र दिखाते हुए जेन आयर कहती हैं, 'संक्षेप में, उन्हें चित्रित करना मेरे जीवन के सबसे तीव्र सुखों में से एक था।' ब्रोंटे बहनों का कला के प्रति यह प्रेम समय बीतने के साथ एक जुनून बन गया, और इसका संवर्धन एक अनिवार्य और व्यावहारिक कर्तव्य बन गया। वे इस बात से अनभिज्ञ थे कि कला के प्रति उनका परिश्रम और समर्पण, जैसा कि वे समझते थे, उनकी प्रतिभा का गलत उपयोग था। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कला के प्रति उनका प्रेम, रचना एवं विश्लेषण के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करने की उनकी उत्सुकता, तथा कला अभ्यास और कला शिक्षा में निपुण होने की उनकी प्रबल इच्छा, उन लोगों की सफलता से कितनी प्रेरित और प्रोत्साहित हुई होगी जिनसे वे परिचित थे और जिन्होंने इसी दिशा में प्रगति की थी।

जिस वर्ष श्री ब्रोंटे को हार्ट्सहेड में नियुक्त किया गया, उसी वर्ष हैलिफ़ैक्स में जोसेफ बेंटली लेलैंड नामक एक कलाकार का जन्म हुआ, जो आगे चलकर श्री ब्रोंटे

के पुत्र ब्रैनवेल के घनिष्ठ मित्र और प्रेरणास्रोत बने। लेलैंड ने अपने बचपन में ही मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने या पेंसिल से रेखाचित्र बनाने की सहजता और सटीकता से अपनी प्रतिभा की दिशा का संकेत दिया, जिससे उनकी रुचि की वस्तुएँ चित्रित हो जाती थीं। जैसे-जैसे वे बड़े होते गए, मूर्तिकार ने उन शास्त्रीय विषयों को कलात्मक शक्ति के साथ चित्रित किया जिन्हें पहले कभी मूर्तिकला में नहीं उतारा गया था। इक्कीस वर्ष की आयु में उन्होंने थ्रेसियन सेनापति स्पार्टाकस की एक प्रतिमा बनाई, जिसने लगातार कई रोमन सेनाओं को हराने के बाद, क्रैसस प्रेटोर द्वारा अपनी सेना सहित पराजित होकर मारा गया था। मृत नेता को मृत्यु के ठीक बाद के उस क्षण में दर्शाया गया है जब उसकी मांसपेशियाँ अत्यधिक कठोर नहीं हुई होती हैं। विशाल आकार की यह प्रतिमा जीवित व्यक्तियों से प्रेरित होकर बनाई गई थी और हर लिहाज से मूर्तिकार की उम्र से कहीं अधिक उत्कृष्ट कृति थी। यह 1832 में मैनचेस्टर प्रदर्शनी की सबसे प्रभावशाली कलाकृति थी और उसी वर्ष 3 नवंबर को 'मैनचेस्टर कूरियर' में इसकी खूब प्रशंसा हुई थी। ऐसी प्रशंसाओं ने कलाकार को और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित किया, जो जल्द ही अन्य अधिक उत्कृष्ट और सफल कृतियों के निर्माण में स्पष्ट रूप से दिखाई दी। इनमें से एक लगभग छह फीट ऊंची शैतान की विशाल प्रतिमा थी, जिसे 'वास्तव में मिल्टन के 'महादूत का विकृत रूप' बताया गया था।' चार्ल्स डिकेंस के ससुर श्री जॉर्ज होगार्थ - जो साहित्यिक शक्ति और ज्ञान के धनी थे - उस समय 'हैलिफ़ैक्स गार्जियन' के संपादक थे और उन्होंने कलाकार के छोटे से स्टूडियो का दौरा किया, जहाँ उन्होंने पहली बार एक कोने में, छज्जे वाली छत के नीचे, शैतान की प्रतिमा देखी। वह इसकी खूबियों से चकित थे और उन्होंने 24 मई, 1834 को अखबार में इस कृति की आलोचना प्रकाशित की। लेलैंड को इस प्रतिमा को लंदन भेजने के लिए ज़ोरदार आग्रह किया गया, जिसे उन्होंने अपने द्वारा तैयार की गई कुछ अन्य प्रतिमाओं के साथ भेजा; और आलोचकों को उनके स्टूडियो में आने का निमंत्रण दिया गया। श्री होगार्थ द्वारा अपने संपादक अखबार में प्रकाशित अनुकूल राय को 2 दिसंबर, 1834 के 'मॉर्निंग क्रॉनिकल' में और भी अधिक प्रशंसात्मक शब्दों में समर्थन मिला। लेकिन इन वर्षों में लीड्स में ललित कला प्रोत्साहन के लिए उत्तरी सोसायटी की वार्षिक प्रदर्शनी आयोजित की जा रही थी; और लेलैंड ने अपनी कृति को लंदन भेजने से पहले, इसे लीड्स में आयोजित प्रदर्शनी में अपने योगदानों में शामिल किया।

सन् 1834 की गर्मियों में वहाँ प्रदर्शित तेल चित्रों और जलरंग रेखाचित्रों का संग्रह उत्तम और विविधतापूर्ण प्रतीत होता है। कॉपले फील्डिंग द्वारा जलरंग में बनाए गए सुंदर भूदृश्य, और अलेक्जेंडर नैस्मिथ, जॉन लिननेल, रॉबर्ट मैक्रेथ द्वारा तेल चित्रों में बनाए गए भूदृश्य, तथा अन्य कलाकारों के चित्र भी अच्छी तरह से प्रदर्शित थे। एच. फ्रैडेल द्वारा ऐतिहासिक चित्र, कारमाइकल द्वारा समुद्री चित्र और श्वानफेल्डर द्वारा बनाए गए पशु चित्र, जो हमेशा उत्कृष्ट रहे हैं, इन प्रसिद्ध कलाकारों के लिए अत्यंत प्रशंसनीय थे। विलियम बेविक और विलियम रॉबिन्सन द्वारा बनाए गए कई उत्कृष्ट चित्रों ने दीर्घाओं की सुंदरता और आकर्षण को और बढ़ा दिया। पाठक कल्पना कर सकते हैं कि ब्रोंटे परिवार - शार्लोट और ब्रैनवेल, और संभवतः श्री ब्रोंटे और एमिली - अपने सामने प्रदर्शित चित्रों और मूर्तियों का भरपूर आनंद ले रहे थे। वे ब्रैनवेल की प्रशंसनीय भावना में किसी नए चित्र की चमक देखकर अचानक निकले "देखो, शार्लोट!" वह शार्लोट की त्वरित आलोचना और उनके तथा उनके भाई द्वारा किसी कृति की रचना में लगे गहन चिंतन को समझने के प्रयासों की कल्पना कर सकते हैं। युवा ब्रोंटे आलोचक, शैतान के विशाल सिर को देखते हुए—उन चेहरों की कठोर और अटल दृढ़ता को देखते हुए, जिनकी ‘अलौकिक सुंदरता भी गहरी उदासी के बादल से ढकी है;’ और ‘पूर्ण निराशा में डूबे महान और गौरवशाली प्राणी’ के चित्रण को देखते हुए—शायद यह विचार करते होंगे कि क्या कलाकार की कल्पना में कोई आदर्श उत्पन्न हुआ है और इस प्रकार यह किसी आदर्श से नहीं, बल्कि उनके चिंतन की दृष्टि से गढ़ा गया है, या क्या सफलता अंततः कष्टदायी परिश्रम का ही प्रमाण है। किसी भी स्थिति में, शार्लोट और ब्रैनवेल को चित्रों और कलाकृतियों की ऐसी ही प्रदर्शनी में बुद्धिमत्तापूर्ण और शिक्षित अवलोकन करने में आनंद आता था।

यह निश्चित है कि इसी समय उनकी कला साधना को एक नई प्रेरणा और नया अर्थ मिला, और संभवतः इसी समय के कुछ समय बाद श्री ब्रोंटे ने अपने पुत्र और पुत्रियों के प्रशिक्षण के लिए लीड्स के एक कलाकार, श्री विलियम रॉबिन्सन को नियुक्त किया, जिनका उल्लेख मैंने प्रदर्शनी में कई चित्र बनाने वाले कलाकार के रूप में किया है। ब्रोंटे परिवार का उद्देश्य अब चित्रकला का अभ्यास करना था, और इसी कारण इस योग्य प्रशिक्षक को नियुक्त किया गया था।

श्री रॉबिन्सन लीड्स के मूल निवासी थे, जिन्होंने अपनी स्वाभाविक प्रतिभा और निरंतर लगन से स्थानीय ख्याति से कहीं अधिक ख्याति अर्जित की थी। कला के प्रति

उनका प्रेम इतना गहरा था कि उनके मित्रों की इच्छाएँ भी उन्हें इससे विचलित नहीं कर सकीं, और उन्होंने लीड्स के ही एक प्रशंसनीय जलरंग चित्रकार श्री रोड्स, सीनियर से कला की शिक्षा प्राप्त की। लेकिन श्री रॉबिन्सन को चित्र-चित्रकला में विशेष रुचि थी, जिसके लिए उन्होंने अपनी पूरी प्रतिभा समर्पित कर दी थी और साथ ही इसके अभ्यास को बेहतर बनाने के लिए हर अवसर का लाभ उठाया। वर्ष 1820 में, वे महानगर गए और अपने साथ सर थॉमस लॉरेंस से परिचय पत्र लेकर गए, जिन्होंने उनका बड़े स्नेह से स्वागत किया और वे इस प्रख्यात कलाकार के शिष्य बन गए। सर थॉमस ने उदारतापूर्वक कोई पारिश्रमिक लेने से इनकार कर दिया और रॉबिन्सन अपने गुरु के कार्यों में उनकी सहायता करते रहे। उनका परिचय फुसेली से हुआ और उन्हें रॉयल अकादमी में अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, क्योंकि उनका काम अपेक्षित योग्यता से परिपूर्ण था। इस बहुप्रतीक्षित सफलता ने उन्हें नए सिरे से प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। 1824 में, वे अपने गृहनगर लौट आए, जहाँ उन्हें अनेक कार्य प्राप्त हुए। बाद में उनका परिचय अर्ल डी ग्रे से हुआ, जिनके और उनके परिवार के सदस्यों के चित्र उन्होंने बनाए। श्री रॉबिन्सन ने यूनाइटेड सर्विस क्लब के लिए चार चित्र भी बनाए, जिनमें से एक ड्यूक ऑफ वेलिंगटन का था, जिन्होंने उन्हें कई बार चित्र बनाने का अवसर देकर सम्मानित किया। इनके अलावा, उनकी अन्य कृतियों में राजकुमारी सोफिया का चित्र और डचेस ऑफ ग्लॉसेस्टर के लिए ड्यूक ऑफ यॉर्क के चित्र की एक प्रति शामिल थी। ब्रैनवेल ब्रोंटे और उनकी बहन ने इसी सज्जन से चित्र-चित्रकला की कुछ शिक्षाएँ प्राप्त कीं, और उस्ताद के करियर के ज्ञान ने उत्साही ब्रैनवेल के मन में उसी दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा को प्रबल किया, जबकि अन्य कलाकारों के समकालीन प्रयासों ने इस प्रेरणा को और भी बल दिया।

उस समय आस-पड़ोस के कुछ कलाकार लंदन में अपनी किस्मत आजमाने की कोशिश कर रहे थे, और ब्रैनवेल ब्रोंटे उन्हें उनकी प्रतिष्ठा के कारण जानते थे: पशु चित्रकार सी. एच. श्वानफेल्डर और जॉन डब्ल्यू. रोड्स, जो उस कलाकार के पुत्र थे जिनसे श्री रॉबिन्सन ने शिक्षा प्राप्त की थी। बाद वाले के पिता ने उन्हें कला को अपना पेशा बनाने से रोकने का प्रयास किया था, लेकिन सब व्यर्थ था: उनकी प्रतिभा को रोका नहीं जा सका। उन्होंने जलरंग और तेल रंगों में बड़ी सुंदरता और निष्ठा के साथ चित्र बनाए; हरी-भरी गली, पुरानी दीवार से लटकता जंगली फूल, उनके विषय थे।

लंदन के प्रेस में उनकी कृतियों की खूब प्रशंसा हुई और जहाँ भी उन्हें प्रदर्शित किया गया, उनकी सराहना की गई; लेकिन, जब वे आशाओं से भरे हुए थे, तभी गर्टिन, लिवरसेडगे और बोनिंगटन की तरह, उन्हें भी आँखों में सूजन और खराब स्वास्थ्य का सामना करना पड़ा। उनकी मृत्यु मात्र तैंतीस वर्ष की आयु में हो गई, और उनका संस्मरण मार्च 1843 के 'द आर्ट जर्नल' में प्रकाशित हुआ। शार्लेट और ब्रैनवेल द्वारा कला के मंदिर पर जबरन कब्ज़ा करने का दृढ़ संकल्प, संभवतः, कुछ हद तक लेलैंड की बढ़ती प्रसिद्धि के कारण भी था; क्योंकि साहित्य और कला के क्षेत्र में, हैलिफ़ैक्स आसपास के किसी भी शहर की तुलना में ब्रोंटे बहनों के अधिक निकट था। इसके अलावा, लेलैंड की रचनाओं की प्रशंसा लंदन के समाचार पत्रों से उनके गृह जिले के सभी समाचार पत्रों में पुनः प्रकाशित हो चुकी थी, और 'लीड्स इंटेलिजेंसर' और 'लीड्स मर्करी' में उनकी प्रशंसा में काव्यात्मक रचनाएँ प्रकाशित हुईं; इसलिए, यह बहुत संभव लगता है कि वे उनकी रचनाओं का अनुकरण करने और उनकी सफलता के बराबर पहुँचने के लिए उत्सुक थीं।

मैंने इन प्रभावों का उल्लेख करना आवश्यक समझा है, क्योंकि इन्हीं से यह स्पष्ट होता है कि ब्रैनवेल और उनकी बहन ने चित्रकला को अपना पेशा क्यों बनाया, और भाई ने तो कुछ समय तक इस पेशे को जारी भी रखा, जबकि उनमें इसके लिए कोई विशेष योग्यता नहीं थी। दरअसल, ब्रैनवेल स्वयं एक चित्रकार बनना चाहते थे, और उनका मानना था कि रॉयल अकादमी में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम इस पेशे के लिए सर्वोत्तम तैयारी का साधन है।

गहरी और स्पष्ट अवलोकन क्षमता, मन में बनी धारणाओं को याद रखने की अद्भुत क्षमता और एक कुशल चित्रकार होने के कारण, वे कैनवास पर आसानी से उन व्यक्तियों के प्रशंसनीय चित्र बना लेते थे जिन्हें वे चित्रित करते थे। लेकिन यह स्पष्ट है कि उन्हें न तो रंगों को सही ढंग से मिलाने का तरीका सिखाया गया था और न ही उन्हें ठीक से तैयार होने पर उपयोग करने का तरीका, या शायद वे एक कुशल छात्र नहीं थे। इसलिए, वे आवश्यक त्वचा के रंग प्राप्त करने में असमर्थ थे, जिनके लिए बहुत ही सूक्ष्मता की आवश्यकता होती है, और न ही प्रकाश और छाया के उन क्रमिक बदलावों को प्राप्त कर पाते थे जो एक अच्छे चित्र या पेंटिंग के लिए आवश्यक हैं। यदि ब्रैनवेल को यह ज्ञान होता, तो उनके द्वारा बनाए गए चित्र उनकी कलाकृतियाँ होतीं; लेकिन उनके द्वारा उपयोग किए गए रंग लगभग गायब हो चुके हैं, और उबले

हुए तेल के रंग के अलावा शायद ही कोई रंग बचा है, जिसके साथ उन्हें मिलाया गया था। फिर भी, यदि ब्रैनवेल अपने काम में भाग्यशाली भी होते, तो भी वे शायद एक साधारण चित्रकार ही बन पाते। हालांकि, उनकी महत्वाकांक्षा और भी बढ़ गई, और उन्होंने इस उद्यम के लिए खुद को तैयार किया, इस उम्मीद के साथ कि हॉवर्थ द्वारा जो वांछित चीजें उपलब्ध नहीं कराई जा सकती थीं, वे उन्हें लंदन में भरपूर मात्रा में उपलब्ध कराई जाएंगी, जब लंबे समय से प्रतीक्षित अवसर आएगा।

हॉवर्थ में वे काफी मेहनती थे, क्योंकि उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों और कई दोस्तों के चित्र बनाए थे। इनमें से एक का वर्णन श्रीमती गैस्केल ने बहुत अच्छे से किया है, और उनका विवरण यहाँ देना उचित होगा: — 'यह उनकी बहनों का एक समूह था, जीवन-आकार का, तीन-चौथाई लंबाई का... मुझे लगता है कि चित्र अद्भुत थे। अन्य दो बहनों के चित्रण की सटीकता का अंदाजा मैं इस बात से लगा सकती हूँ कि कैनवास के बड़े फ्रेम को पकड़े हुए और उसके ठीक पीछे खड़ी शार्लोट, अपने ही चित्र से कितनी मिलती-जुलती थी, हालाँकि चित्र लिए हुए दस साल से अधिक समय बीत चुका होगा। चित्र लगभग बीच में एक बड़े खंभे से विभाजित था। खंभे के जिस तरफ सूर्य की रोशनी पड़ रही थी, उस तरफ शार्लोट उस समय की महिलाओं की पोशाक में खड़ी थी, जिसमें गिगॉट आस्तीन और बड़े कॉलर थे। गहरी छाया वाली तरफ एमिली थी, जिसके कंधे पर ऐनी का कोमल चेहरा टिका हुआ था। एमिली का चेहरा मुझे शक्ति से भरा हुआ लगा; शार्लोट का चेहरा चिंता से भरा हुआ; ऐनी की कोमलता झलक रही थी। दोनों छोटी बहनें अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुई थीं, हालांकि एमिली शार्लोट से लंबी थी; उनके बाल छोटे थे और उन्होंने लड़कियों जैसे कपड़े पहने थे। मुझे याद है, मैं इन दोनों उदास, गंभीर, छायादार चेहरों को देख रही थी और सोच रही थी कि क्या मैं उस रहस्यमय भाव को पहचान सकती हूँ जो कहा जाता है कि शीघ्र मृत्यु का संकेत देता है। मुझे एक प्यारी सी अंधविश्वासी उम्मीद थी कि स्तंभ उनके भाग्य को ऐनी के भाग्य से अलग करता है, जो चित्र में अलग खड़ी थी, जैसे जीवन में वह जीवित रही। मुझे यह देखकर अच्छा लगता था कि स्तंभ का चमकीला भाग उसकी ओर था - कि चित्र में प्रकाश उस पर पड़ रहा था। मैं शायद उसके चेहरे में - बल्कि उसके जीवंत चेहरे में - उसकी जवानी में मृत्यु का संकेत ढूंढ रही थी।

श्रीमती गैस्केल द्वारा इस चित्र के वर्णन से स्पष्ट है कि ब्रैनवेल में न केवल उत्कृष्ट

चित्र बनाने की क्षमता थी, जैसा कि हमने देखा है, बल्कि उनमें अपनी बहनों के चेहरों पर विचार, बुद्धिमत्ता और संवेदनशीलता को उकेरने की भी क्षमता थी; और उन्हें उनके स्वाभाविक भावों, शक्ति, चिंता और कोमलता से परिपूर्ण करने की भी। ब्रैनवेल ने इस चित्र पर जो गहन चिंतन किया और इसकी रहस्यमय रचना पर जो ध्यान दिया, वह निस्संदेह उनके स्वयं के मस्तिष्क की योग्यता और क्षमता को दर्शाता है, जिसने उन्हें इन आवश्यक भावों को प्राप्त करने में सक्षम बनाया; और यह स्पष्ट है कि उनके विचार की विशिष्टता ने उनके चित्र को उस उदासी और निराशा से भर दिया, जिसने बाद में 'नॉर्थेंगरलैंड' के गंभीर उपनाम से लिखी गई उनकी कविताओं को भी प्रभावित किया। यह चित्र रॉयल अकादमी में अपने नियोजित अध्ययन की तैयारी के दौरान उनके द्वारा बनाए गए कई चित्रों में से एक है; और वृद्ध नर्स, नैन्सी गैर्स, मुझे बताती हैं कि वह अक्सर उनका चित्र बनाना चाहते थे, लेकिन उन्होंने उनसे कहा कि वह खुद को 'पर्याप्त सुंदर' नहीं मानतीं।

कुछ समय बाद ब्रैनवेल ने श्री जॉर्ज सियरल फिलिप्स को अपनी कलात्मक आकांक्षाओं की कहानी सुनाई। उन्होंने पूरे परिवार के चित्रकारी के प्रति प्रेम का वर्णन किया और बताया कि विशेष रूप से शार्लोट कला की अच्छी जानकार थीं और प्राचीन कलाकारों के जीवन से भलीभांति परिचित थीं, जिनकी कृतियों का वे विवेकपूर्ण विश्लेषण करती थीं। लेकिन उन्होंने कहा कि रेखाचित्रों की बारीक नकलें बनाते-बनाते उनकी आंखों की रोशनी खराब हो गई थी, जिनमें से एक पर वे छह महीने तक काम करती रहीं। उन्होंने कला के प्रति अपने अटूट प्रेम और रॉयल अकादमी में अपने प्रस्तावित अध्ययन के प्रति उज्ज्वल और आत्मविश्वासपूर्ण आशाओं के बारे में भी बताया, जो उनके परिवार और स्वयं का एक प्रिय सपना था।

लेलैंड ने दिसंबर 1833 में लंदन का दौरा किया था, जहाँ उन्होंने स्टोथर्ड से एल्गिन मार्बल्स के क्यूरेटर ओटली के लिए एक परिचय पत्र प्राप्त किया, ताकि उन्हें ब्रिटिश संग्रहालय में संगमरमर की मूर्तियों का अध्ययन करने की अनुमति मिल सके। अनुमति तुरंत मिल गई और मूर्तिकार ने इसका लाभ उठाया। एक साल बाद लेलैंड महानगर में रहने लगे। चैंट्री और वेस्टमैकोट ने उनका सौहार्दपूर्ण स्वागत किया, वेस्टमैकोट ने उन्हें रात्रिभोज पर आमंत्रित किया और बाद में उन्हें पिमलिको में अपनी फाउंड्री और निर्माणाधीन कार्यों को दिखाया, जिनमें ड्यूक ऑफ यॉर्क की मूर्ति भी शामिल थी। उनका परिचय नैस्मिथ (प्रसिद्ध इंजीनियर के पिता, जिनकी कहानी हाल

ही में विश्व के सामने आई है) और वार्ली से भी हुआ, जिनसे उन्हें मित्रता प्राप्त हुई। वार्ली एक प्रसिद्ध भूदृश्य चित्रकार थे और दूसरे जलरंग कलाकार के रूप में ख्यातिप्राप्त थे। वार्ली, जिनका ज्योतिष में गहरा विश्वास था, युवा मूर्तिकार की कुंडली बनाने में लगे रहे। अन्य लोगों के साथ-साथ, उनकी मुलाकात हेडन से हुई, जिनके अधीन उन्होंने बाद में शरीर रचना विज्ञान का अध्ययन किया। दिवंगत कलाकार लेलैंड के सच्चे मित्र थे और उन्हीं के मार्गदर्शन में उन्होंने कला में भव्यता और सुंदरता की अपनी स्वाभाविक समझ को परिपूर्ण किया। यहीं रहते हुए उन्होंने हॉग की कविता 'क्वीन्स वेक' के उस अंश के चित्रण के रूप में 'किलमेनी' की आदमकद प्रतिमा बनाई, जिसमें परीलोक में परियों के संगीत से निष्कलंक कन्या जागृत होती है। यह एक सफल कृति थी और आलोचकों ने इसकी सराहना की। बाद में इसे उनके गृह नगर के साहित्यिक एवं दार्शनिक समाज के लिए खरीद लिया गया।

जब लेलैंड महानगर में थे, तब शार्लोट ने 6 जुलाई, 1835 को लिखा था:

‘हम सब अलग होने वाले हैं, बिखरने वाले हैं, जुदा होने वाले हैं। एमिली स्कूल जाएगी, ब्रैनवेल लंदन जाएगा, और मैं एक गवर्नेस बनूंगी। यह आखिरी फैसला मैंने खुद लिया है, यह जानते हुए कि मुझे कभी न कभी यह कदम उठाना ही पड़ेगा, स्कॉटिश कहावत के अनुसार, “जो जल्दी हो सो जल्दी”; और यह भी जानते हुए कि अगर ब्रैनवेल को रॉयल एकेडमी में और एमिली को रो हेड में दाखिला मिल जाए, तो पापा को अपनी सीमित आमदनी में ही काफी कुछ करना पड़ेगा।’

जब यह परियोजना ब्रोंटे परिवार का ध्यान आकर्षित कर रही थी, तब लेलैंड लंदन में ब्रैडफोर्ड के मूल निवासी, मेज़ोटिंटो-एनग्रेवर श्री गेलर के घर में रह रहे थे। उसी समय, मूर्तिकार ने मैटुरिन की त्रासदी 'बर्ट्राम' के एक अंश को दर्शाने वाली तीन आकृतियों का एक समूह तैयार किया, जिसमें योद्धा को पूर्व पाठ सुनते हुए दिखाया गया था। इस कृति को गेलर ने उत्कीर्ण किया था। कहा जाता है कि इस समूह को 'मैटुरिन की सच्ची भावना' से प्रेरित होकर बनाया गया था और 1835 में लंदन की पत्रिकाओं में इसकी काफी सराहना हुई, उसी वर्ष ब्रैनवेल ने महानगर का दौरा किया था। ये समीक्षाएँ यॉर्कशायर के अधिकांश समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुईं।

ब्रैनवेल को एक कलाकार के रूप में आगे बढ़ाने और उन्हें अपनी पढ़ाई शुरू करने और जारी रखने के अवसर और साधन उपलब्ध कराने की योजना अंततः तय हो गई थी, जहाँ वे उन महान मूर्तिकारों और चित्रकारों की भावना से प्रेरित हो सकें जिन्होंने

अमर नाम छोड़े हैं और जिनकी कृतियाँ लंदन की सार्वजनिक कला दीर्घाओं में संग्रहित हैं। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए ब्रोंटे परिवार द्वारा किए गए बलिदानों का यहाँ संक्षेप में उल्लेख करना मात्र ही पर्याप्त है। ब्रैनवेल एक प्रिय भाई थे; और वे निस्संदेह उनके हितों को बढ़ावा देने, उनके विचारों को आगे बढ़ाने और उनकी कलात्मक प्रतिभा को दुनिया के सामने लाने में सच्ची खुशी महसूस करते। हालाँकि, यह शायद ही संभव प्रतीत होता है कि रॉयल अकादमी में छात्र के रूप में ब्रैनवेल के प्रवेश से जुड़ी कठिनाइयों पर उचित विचार किया गया हो। प्राचीन और कंकाल से लिए गए उनके चित्रों की प्रारंभिक परीक्षा के बिना उन्हें प्रवेश नहीं दिया जा सकता था, ताकि यह पता लगाया जा सके कि एक चित्रकार के रूप में उनकी क्षमता उन्हें छात्र बनने के योग्य बनाती है या नहीं; और, यदि वह इसमें सफल हो जाता, तो उसे नियमित शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती और उन विभिन्न विद्यालयों में जाना पड़ता जहाँ प्रोफेसर और शिक्षाविद शिक्षण प्रदान करते थे। निस्संदेह यह चाहा गया होगा कि ब्रैनवेल को अपने पेशेवर कलात्मक करियर के लिए नियमित और लंबी तैयारी मिले; लेकिन इसमें वर्षों लग जाते और इसके परिणामस्वरूप आर्थिक बोझ शायद बहुत अधिक पड़ता, भले ही ब्रैनवेल की प्रतिभा इस खर्च को उचित ठहराती। लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि उसने कभी प्रारंभिक परीक्षा दी हो या प्रशिक्षु के रूप में प्रवेश के लिए आवेदन भी किया हो।

ऐसा प्रतीत होता है कि श्री ब्रोंटे के लिए अपने बच्चों की इच्छाओं को बढ़ावा देने का उनका मकसद उन्हें संतुष्ट करना था। ऐसा नहीं लगता कि उन्हें ब्रैनवेल के कलाकार बनने के प्रबल इरादे को पूरा करने की कोई अति-आशा थी। वास्तव में, श्री ब्रोंटे की स्वयं की इच्छा थी कि उनका पुत्र उनके पेशे को अपनाए, लेकिन चंचल स्वभाव वाले उस युवक को शायद पादरी के पद के कार्यों में कोई रुचि नहीं थी।

हालांकि, ब्रैनवेल लंदन गए, जहां निस्संदेह उनका उद्देश्य एल्गिन मार्बल्स से प्रेरणा लेना और रॉयल अकादमी और अन्य दीर्घाओं में चित्रों का अध्ययन करना था, और यह सब उन्होंने पूरी ईमानदारी से किया। उस समय के महान चित्रकारों की कृतियों को देखकर एक कलाकार के रूप में अपनी क्षमताओं के बारे में उन्हें जो भी धारणा बनी, उसकी हमें कोई निश्चित जानकारी नहीं है; लेकिन यह मानना गलत नहीं होगा कि सर जोशुआ रेनॉल्ड्स, गेन्सबोरो, सर थॉमस लॉरेंस और अन्य कलाकारों की उत्कृष्ट कृतियों को देखकर वे निराश हुए होंगे; और जब उन्होंने अपनी और उनकी

कृतियों के बीच की अपार दूरी पर विचार किया, तो एक शानदार कलात्मक करियर की उनकी आशाएं आंशिक रूप से धूमिल हो गईं। चाहे यह इन परिस्थितियों के कारण हो, या कला को पेशे के रूप में अपनाने वाले सभी लोगों के सामने आने वाले शुरुआती संघर्षों के प्रति उनकी जागरूकता के कारण, या फिर प्रतिभा की कमी या दुर्भाग्य के कारण कला जगत में अपनी पहचान बनाने में असफल रहने वालों के दुर्भाग्यपूर्ण भाग्य पर विचार करने से उनका साहस डगमगा गया हो; या फिर इसका कारण यह था कि पेशेवर करियर की तैयारी और अध्ययन के वर्षों के दौरान उनके पिता लंदन में उनका भरण-पोषण करने में असमर्थ थे, जिसकी आवश्यकताओं पर पर्याप्त रूप से विचार नहीं किया गया था, यह अब सटीक रूप से ज्ञात नहीं है। ब्रैनवेल ने लंदन में अपने संक्षिप्त प्रवास के दौरान अधिकांश सार्वजनिक संस्थानों का दौरा किया; और अन्य स्थानों के अलावा, वेस्टमिंस्टर एब्बे भी देखा, जिसके पश्चिमी अग्रभाग का उन्होंने कुछ समय बाद स्मृति से इतनी सटीकता से रेखाचित्र बनाया कि उनके परिचित श्री ग्रुंडी आश्चर्यचकित रह गए।

महानगर छोड़ने से पहले, ब्रैनवेल होल्बोर्न स्थित कैसल टैवर्न जाने से खुद को रोक नहीं पाए। उस समय यह टैवर्न अनुभवी मुक्केबाज टॉम स्प्रिंग द्वारा चलाया जाता था और उस दौर के प्रमुख खेल हस्तियों का पसंदीदा स्थान था। वहीं, ब्रैनवेल की ही तरह जिज्ञासावश वहां मौजूद वूलवेन नाम के एक सज्जन ने उस युवक को देखा। उसकी बोलने की असाधारण क्षमता और याददाश्त इतनी तेज थी कि दर्शकों का ध्यान उस पर इतना गया कि उन्होंने उसे कुछ प्रसिद्ध मुकाबलों की तारीखों को लेकर उठे विवाद में निर्णायक बना दिया। बाद के वर्षों में ब्रैनवेल और वूलवेन घनिष्ठ मित्र बन गए।

ब्रैनवेल एक समझदार व्यक्ति बनकर पादरी के घर लौटे। उन्हें इस बात की गहरी निराशा थी कि वे उन लोगों की तरह नहीं कर पा रहे थे, जिनका वे अनुकरण करना चाहते थे, लेकिन वे अभी तक पूरी तरह से हतोत्साहित नहीं हुए थे। हम आगे देखेंगे कि ब्रैनवेल ने अपने कलात्मक ज्ञान का किस उद्देश्य से उपयोग किया। कला में उनके अकादमिक करियर को लेकर उनकी आशाओं की विफलता उनके परिवार को बहुत बुरी तरह महसूस हुई। यह दुखद होने के साथ-साथ अपमानजनक भी था, लेकिन उन्होंने इसे अनुकरणीय धैर्य और सहनशीलता के साथ सहन किया। जब इन दर्दनाक अनुभवों ने ब्रोंटे बहनों को ब्रैनवेल के लिए उच्च कलात्मक अध्ययन की निराशा से अवगत कराया, और जब उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि उनकी प्रतिभा में कला

शामिल नहीं है, तो शार्लोट ने अपने उपन्यास 'विलेट' में लूसी स्नो के चरित्र के तहत लिखा: 'मैं अपनी मेज पर झुकी हुई चित्र बना रही थी - यानी, एक विस्तृत रेखा-उत्कीर्णन की नकल कर रही थी, अपनी प्रतिलिपि को मूल के अंतिम रूप तक पहुंचाने के लिए परिश्रमपूर्वक काम कर रही थी, क्योंकि कला के बारे में मेरी यही व्यावहारिक धारणा थी; और, हैरानी की बात है, मुझे उस काम में बेहद आनंद आता था, और मैं स्टील या मेज़ोटिंटो प्लेटों की अद्भुत ढंग से तैयार की गई प्रतिकृतियां भी बना सकता था - ऐसी चीजें जो ऊनी काम में कई उपलब्धियों के बराबर ही मूल्यवान थीं, लेकिन उन दिनों मैं उन्हें काफी अच्छा मानता था।

अध्याय 9.

शार्लोट एट रो हेड।

शार्लोट एक शिक्षिका के रूप में और एमिली एक छात्रा के रूप में रो हेड लौटती है — स्वयं को बनाए रखने का उनका दृढ़ संकल्प — एमिली के संबंध में शार्लोट की आशंकाएँ — शार्लोट की धार्मिक उदासी — खुद पर लापरवाही का आरोप — वह निराशा की कगार पर है — दुनिया के बारे में और अधिक जानने की उत्सुकता — एमिली लॉ हिल, हैलिफ़ैक्स में एक शिक्षिका के रूप में — शार्लोट की उत्तेजना — वह स्वास्थ्य कारणों से घर लौटती है।

अकादमी परियोजना की खबर और गवर्नेंस के रूप में जीवन शुरू करने के अपने दृढ़ संकल्प के बारे में अपनी सहेली को बताते हुए शार्लोट ने कहा, 'हम सब अलग होने वाले हैं, बिखरने वाले हैं, जुदा होने वाले हैं।' अगर ब्रैनवेल की महत्वाकांक्षा ने उसकी

अपनी महत्वाकांक्षा को प्रोत्साहित किया था, तो उसकी विफलता ने उसकी योजनाओं में कोई बदलाव नहीं किया। वह कहती है कि घर छोड़ने के विचार से वह 'दुखी' थी, 'बहुत दुखी'; फिर भी वह मिस वूलर के स्कूल में वापस जा रही थी, जिनसे वह प्यार और सम्मान दोनों करती थी, रो हेड में रहने के लिए, इस बार पढ़ाने के लिए, न कि सीखने के लिए। लेकिन उसकी बहन एमिली भी स्कूल की छात्रा के रूप में उसके साथ जाने वाली थी, और उनका साथ होना दोनों बहनों के लिए एक सांत्वना थी; और शार्लोट भी उन दोस्तों के घरों के पास होगी जिनसे वह वहाँ पढ़ते समय मिली थी। यह सोचकर उसे खुशी होती थी कि वह कभी-कभी उनसे मिल पाएगी।

जुलाई के अंत में, दोनों बहनें रो हेड के लिए रवाना हुईं। यह उन साहसिक यात्राओं में से पहली थी जो ये बहनें समय-समय पर करती थीं। वास्तव में, उनके जीवन की सबसे मजबूत विशेषताओं में से एक वह दृढ़ता थी जिसके साथ उन्होंने स्वयं का भरण-पोषण करने का प्रयास किया, तब भी जब कोई स्पष्ट रूप से अत्यावश्यक आवश्यकता उन्हें प्रेरित नहीं कर रही थी। फिर भी, इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक दुखद विचार कभी-कभी उन्हें विचलित करता था, और वह यह था कि उनके पिता की तनख्वाह उनके निधन के साथ ही समाप्त हो जाएगी; कि उनके पास अपने प्रयासों के अलावा कोई अन्य सहारा नहीं था; और यह कि, सभी मानवीय मामलों की अनिश्चितता को देखते हुए, वे किसी भी क्षण घर, सहारा और आश्रय से वंचित हो सकती थीं। इसलिए, जब तक वे सक्षम थीं, अपनी व्यक्तिगत ऊर्जा से जीविका के साधन सुरक्षित करना उनका कर्तव्य बन गया था।

जब श्री ब्रोंटे अपने युवा परिवार को अपने आसपास देखते और अपने घर के सुख का आनंद लेते, तो अपनी मृत्यु की अनिश्चितता और उसके परिणामस्वरूप अपने बच्चों की बेबसी का डर उन्हें अक्सर सताता था। लेकिन उन्हें इस बात से कुछ राहत मिलती थी कि उनके बच्चों को उनका साहसिक और ऊर्जावान स्वभाव काफी हद तक विरासत में मिला था, जिनका सफल जीवन हमेशा उनके सामने एक उदाहरण और सम्मानजनक प्रयासों के लिए प्रेरणा का स्रोत था।

श्री ब्रोंटे ने संसार में अपनी उन्नति के लिए किए गए प्रारंभिक बलिदानों पर पूर्ण संतोष के साथ पीछे मुड़कर देखा। उनके बच्चे उनके प्रयासों की कहानी से परिचित थे। यद्यपि, कहीं अधिक प्रतिभावान होने के बावजूद, उनमें वह शारीरिक शक्ति और सहनशक्ति नहीं थी जिसने उनकी प्रगति में सहायक भूमिका निभाई थी; और शार्लोट

और एमिली, जब भी उन पर कोई असामान्य दबाव पड़ता, तो वे शीघ्र ही अपनी शक्ति खो बैठती थीं और परिणामस्वरूप अवसाद से ग्रस्त हो जाती थीं। छोटी बहन को घर की याद सताती थी, और स्कूल जाने के कुछ ही समय बाद एमिली पीली पड़ गई और बीमार हो गई। शार्लोट को मन ही मन यह आ रहा था कि यदि वह वहीं रही तो उसकी मृत्यु हो जाएगी; और तीन महीने बाद, वह हॉवर्थ लौट आई, जहाँ अकेले ही दलदली भूमि के बीच, प्रकृति के उन सभी जंगली जीवों के साथ, जिन्होंने उसकी भावनाओं में गहरी रुचि जगाई थी, वह संतुष्ट हो सकी। लेकिन सबसे छोटी बहन, ऐनी, उसकी जगह रो हेड आ गई, और ऐसा लगता है कि वह और शार्लोट वहाँ कुछ समय के लिए बहुत खुश रहीं; लेकिन गहरी धार्मिक भावना के कारण बड़ी बहन के मन में धीरे-धीरे धार्मिक उदासी की प्रवृत्ति विकसित हो रही थी, और यह उस पर हावी होती गई।

6 जुलाई, 1835 को 'ई' को लिखे पत्र में ही उन्होंने 'कर्तव्य, आवश्यकता, ये कठोर स्वामियाँ हैं' कहकर नौकरी की तलाश में अपने कार्यों को नियंत्रित करने की बात कही थी। उनकी सहेली मैरी उनसे मिलने गई और श्रीमती गैस्केल को लिखे पत्र में उन्होंने लिखा: 'मैंने उनसे पूछा कि वह इतने कम पैसों में इतना कुछ कैसे कर सकती हैं, जबकि वह इसके बिना भी रह सकती हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि अपने और ऐनी के कपड़ों के बाद कुछ भी नहीं बचता, हालाँकि उन्हें कुछ बचाने की उम्मीद थी। उन्होंने माना कि यह कोई शानदार स्थिति नहीं थी, लेकिन वह क्या कर सकती थीं? मेरे पास कोई जवाब नहीं था। कर्तव्य की भावना के अलावा उन्हें किसी और चीज में रुचि या आनंद नहीं था, और जब भी उन्हें समय मिलता, वह अकेले बैठकर 'मुलाकात' करती थीं।' बाद में उसने मुझे बताया कि एक शाम वह ड्रेसिंग रूम में तब तक बैठी रही जब तक कि पूरी तरह अंधेरा नहीं हो गया, और फिर अचानक सब कुछ देखकर वह एकदम भयभीत हो गई। 1836 की ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियों से कुछ राहत मिली। पूरा परिवार घर पर था, और उनकी दोस्त 'ई' उनसे मिलने आई, जिससे मानसिक मनोरंजन का एक सुखद समय मिला। लेकिन, स्कूल लौटने के बाद, निराशा ने उसे फिर से घेर लिया और उसके विचारों को घेर लिया; और उसने धार्मिक मामलों में अपनी भावनाओं के बारे में लिखा: 'मैं वास्तव में जैसी हूँ उससे बेहतर बनना चाहती हूँ। मैं कभी-कभी पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करती हूँ कि मुझे ऐसा बना दिया जाए। मुझे अंतरात्मा की पीड़ा होती है, पश्चाताप के दौरे पड़ते हैं, पवित्र, अवर्णनीय चीजों की

झलक मिलती है, जिनसे मैं पहले कभी परिचित नहीं थी; यह सब भले ही मिट जाए, और मैं घोर अंधकार में डूब जाऊँ, लेकिन मैं एक दयालु उद्धारकर्ता से प्रार्थना करती हूँ कि यदि यह सुसमाचार का भोर है, तो यह पूर्ण दिन में बदल जाए। मुझे गलत न समझें - यह न सोचें कि मैं अच्छी हूँ; मेरी बस यही इच्छा है। मुझे अपनी पिछली बेपरवाही और जल्दबाज़ी से नफ़रत है। ओह! मैं पहले से बेहतर नहीं हूँ। मैं उस भयानक, निराशाजनक अनिश्चितता की स्थिति में हूँ कि इस समय मैं बूढ़ा, सफ़ेद बालों वाला होना, अपने सारे जवानी के सुख-सुविधाओं को खो देना और कब्र के कगार पर पहुँच जाना भी स्वीकार कर लूँगी, अगर इससे मुझे ईश्वर से मेल-मिलाप और उनके पुत्र के गुणों के द्वारा मुक्ति की उम्मीद मिल सके। मैं इन मामलों के प्रति कभी पूरी तरह से लापरवाह नहीं थी, लेकिन मैंने हमेशा इन्हें एक धुंधली और घृणित दृष्टि से देखा है; और अब, अगर संभव हो तो, बादल और भी गहरे होते जा रहे हैं, और एक और भी दमनकारी निराशा मेरे मन पर हावी हो रही है। तुमने मुझे हिम्मत दी, मेरी प्यारी; एक पल के लिए, एक कण के लिए, मुझे लगा कि मैं तुम्हें अपनी आध्यात्मिक बहन कह सकती हूँ; लेकिन वह उत्साह बीत चुका है, और मैं अब पहले की तरह ही दुखी और निराश हूँ।

हमें उस मानसिक पीड़ा को कम नहीं आंकना चाहिए जिसके कारण यह स्वीकारोक्ति हुई। सौभाग्य से, यह पीड़ा हमेशा बनी नहीं रही, न ही उसकी भावनाएं हमेशा इतनी तीव्र रूप से प्रभावित होती रहीं। जिस पत्र से उपरोक्त अंश लिया गया है, उसी में वह अपने मित्रों को उस आनंद की अनुभूति कराना चाहती है जो उसे तब हुई जब उसने अपने मित्र का पैकेट दीवार के ऊपर से फेंकते हुए देखा, जिसे वह अपनी गाड़ी में हडर्सफील्ड बाजार की ओर ले जा रहा था। वह अपने स्थान पर डटी रही, उसकी अतिरंजित तर्कशक्ति ने उसे उस आराम और विश्राम को पाने से रोक रखा था जिसकी उसे बहुत आवश्यकता थी; लेकिन वह अपने कर्तव्यों के लिए अक्षम नहीं थी, और संभवतः उसका परिवार उसकी परेशानियों से पूरी तरह अनजान था: इसलिए वह बनी रही।

ब्रैनवेल और एमिली ने ठान लिया था कि वे अपनी बहन से अपने प्रयासों में पीछे नहीं रहेंगी, और वे हॉवर्थ में मिलने वाली जानकारी से कहीं अधिक दुनिया को जानने के लिए उत्सुक थीं। एमिली को शार्लोट के समान ही लॉ हिल के एक बड़े स्कूल में नौकरी मिल गई, जो हैलिफ़ैक्स के पास स्थित था, जहाँ उन्हें अपने कर्तव्यों को

आसान नहीं लगा। वहाँ उन्हें जानने वाले एक व्यक्ति को याद है कि वे अजनबियों से बेहद संकोच करती थीं, लेकिन उनका स्वभाव बिल्कुल भी निर्दयी नहीं था; इसके विपरीत, वे उन लोगों के प्रति उदार और विचारशील थीं जिनसे उनके अच्छे संबंध थे। लॉ हिल में उनका प्रवास छह महीने बाद समाप्त हुआ। उनका निवास स्थान एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित था, जहाँ से हैलिफ़ैक्स दिखाई देता था। एमिली को स्कूल का स्थान पसंद आया, और वेस्ट-राइडिंग की शांत, हरे-भरे पहाड़ों की भव्यता और विचित्रता ने उन्हें बेहद आकर्षित किया। इसके अलावा, वहाँ की हवा हॉवर्थ जितनी ही शुद्ध थी, और लॉ हिल से सुंदर दृश्य दिखाई देते थे, जिनमें उनके पिता के गिरजाघर में स्थित ऑक्सनहोप मूर की पर्वत श्रृंखला भी शामिल थी। दूसरी ओर, वह हार्ट्सहेड और किर्कलीस के अधिक विकसित जिले को देख सकती थी, और रो हेड को भी देख सकती थी, जहाँ उसकी बहनें शार्लोट और ऐनी रहती थीं। ब्रैनवेल ने भी अपनी बहनों की तरह ही उस इलाके में द्वारपाल का पद प्राप्त किया, जिसे उसने कुछ महीनों तक संभाला।

इस साल के अंत में उनकी साहित्यिक रचनाओं से जुड़ी कुछ घटनाओं ने उन्हें दिलचस्पी दिलाई, जिनके बारे में मैं आगे विस्तार से बात करूँगा। मिस वूलर द्वारा अपने स्कूल को ड्यूसबरी मूर में स्थानांतरित करना बहनों के लिए कुछ मायनों में दुर्भाग्यपूर्ण था, क्योंकि यह स्थान पहले वाले स्थान की तुलना में कम स्वास्थ्यकर था, और जब शार्लोट और ऐनी 1837 में क्रिसमस पर घर लौटीं, तो दोनों की तबीयत ठीक नहीं थी। शार्लोट बहुत तनावग्रस्त थीं और ऐनी सीने की बीमारी से पीड़ित थीं, जिससे उन्हें तपेदिक से मारिया और एलिजाबेथ की मृत्यु की यादें ताजा हो गईं। उनकी परेशानियों में एक और बात जुड़ गई, जब टैबी गली में बर्फ पर फिसल गई और उसका पैर टूट गया। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें अपनी सहेली 'ई' से मिलने की उम्मीद छोड़नी पड़ी, क्योंकि वे उस बूढ़ी नौकरानी की देखभाल में व्यस्त थीं, जिसे वे उसके दोस्तों के पास भेजना नहीं चाहती थीं, चाहे यह कई कारणों से कितना भी वांछनीय क्यों न हो। उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि वे तब तक खाना भी नहीं खाएँगे, जब तक उनकी चाची, जिन्होंने अपनी भतीजियों को छोड़कर बाकी सभी को संतुष्ट करते हुए मामले को सुलझा लिया था, टैबी को वहाँ से ले जाने का अपना इरादा नहीं छोड़ देतीं। वे सफल रहीं, और टैबी पादरी के घर में ही रही, जहाँ समय के साथ वह स्वस्थ हो गई, और शार्लोट को अपना काम फिर से शुरू करने से पहले अपने

दोस्तों से मिलने का मौका मिला।

शार्लोट एक बार फिर अपने नियमित कर्तव्यों पर लौट आई, उसकी घबराहट पहले से कहीं अधिक बढ़ गई थी; श्रीमती गैस्केल कहती हैं: 'इस समय के आसपास वह किसी भी अचानक शोर से बीमार और कांपने लगती थी, और चौंक जाने पर अपनी चीखों को मुश्किल से रोक पाती थी।' मिस वूलर के आग्रह पर, उसने एक चिकित्सक से परामर्श लिया, जिसने उसे तुरंत हॉवर्थ लौटने की सलाह दी, जहाँ शांति और आराम उसके लिए अत्यंत आवश्यक हो गया था। तब उसके पिता ने उसके लिए अपनी दो सहेलियों, मैरी और मार्था टी—— की संगति का इंतजाम किया, जिनकी संगति से शार्लोट को कभी इतना आनंद नहीं मिला था। वे पादरी के घर में रहने आईं, और उनकी हंसमुख बातचीत और सुखद व्यवहार ने शार्लोट के स्वास्थ्य और मनोबल में बहुत सुधार किया। श्रीमती गैस्केल द्वारा प्रकाशित शार्लोट द्वारा अपनी सहेली 'ई' को लिखे गए निम्नलिखित पत्र में हमें इस युवा समूह का एक रोचक चित्र मिलता है:

‘हॉवर्थ,

9 जून, 1838।

मुझे बुधवार को आपके संदेशों का पैकेट मिला; इसे मैरी और मार्था मेरे लिए लाई थीं, जो कुछ दिनों से हॉवर्थ में ठहरी हुई थीं; वे आज विदा हो रही हैं। आपको इस पत्र की तारीख देखकर आश्चर्य होगा। आपको पता है, मुझे ड्यूसबरी मूर में होना चाहिए था; लेकिन मैं वहाँ तब तक रुका रहा जब तक मैं रुक सकता था, और अंत में मैं और अधिक रुक नहीं सका और न ही मेरी हिम्मत हुई। मेरा स्वास्थ्य और मनोबल पूरी तरह से टूट चुका था, और जिस चिकित्सक से मैंने परामर्श लिया, उन्होंने मुझे सलाह दी कि चूंकि मुझे अपने जीवन की परवाह है, इसलिए मैं घर चला जाऊं। इसलिए मैं घर चला गया, और इस बदलाव ने मुझे एक साथ तरोताजा और शांत कर दिया है। मुझे उम्मीद है कि अब मैं फिर से पहले जैसा बनने की राह पर हूँ।

“आप जैसे शांत और स्थिर मन वाले व्यक्ति उस क्षुद्र व्यक्ति की भावनाओं को समझ ही नहीं सकते जो अब आपको पत्र लिख रहा है, जिसने कई हफ्तों तक असहनीय मानसिक और शारीरिक पीड़ा झेलने के बाद, कुछ हद तक शांति का अनुभव किया है। मैरी की हालत बहुत खराब है। उसे सांस लेने में तकलीफ होती है, सीने में दर्द रहता है और बार-बार बुखार आता है। मैं आपको बता नहीं सकता कि इन लक्षणों से मुझे कितनी पीड़ा होती है; ये मुझे मेरी दो बहनों की याद दिलाते हैं, जिन्हें

कोई भी दवा बचा नहीं सकी। मार्था अब बिल्कुल ठीक है; वह यहाँ रहने के दौरान लगातार खुशमिजाज रही है, और इसी वजह से वह बहुत ही आकर्षक रही है...।"

'वे मेरे बारे में इतना शोर मचा रहे हैं कि मैं अब और लिख नहीं सकती। मैरी पियानो बजा रही है; मार्था अपनी छोटी सी जीभ से जितनी तेज़ी से चल सकती है उतनी तेज़ी से बकबक कर रही है; और ब्रैनवेल उसके सामने खड़ा होकर उसकी जीवंतता पर हंस रहा है।'

इन दिनों ब्रैनवेल की सेहत ठीक थी और जरूरत पड़ने पर वह काफी खुशमिजाज भी हो जाते थे। उनमें आशा और उत्साह अभी भी बाकी था, लेकिन आने वाले वर्षों में वे शार्लोट के अवसाद से भी कहीं अधिक गहरे और गंभीर अवसाद में डूब जाएंगे।

अध्याय X.

ब्रैनवेल ब्रोंटे और उनकी बहनों के जीवनीकार।

जीवनीकारों द्वारा ब्रैनवेल को जिस परिप्रेक्ष्य में देखा गया है — ग्रंथसूची — श्रीमती गैस्केल — वे कारण जिनके कारण वे त्रुटि में पड़ गईं — ब्रैनवेल के मित्रों की नाराजगी — श्री जॉर्ज सियरल फिलिप्स — श्री टी. वेमिस रीड द्वारा ब्रैनवेल का चित्रण — श्री एफ. एच. ग्रंडी द्वारा ब्रैनवेल पर टिप्पणी — मिस ए. मैरी एफ. रॉबिन्सन द्वारा ब्रैनवेल का चित्र।

ब्रैनवेल के जीवन के उन पहलुओं तक पहुँचने से पहले, जिन्हें गलत समझा गया है, ब्रोंटे परिवार के अपने संक्षिप्त विवरण में कुछ समय रुककर उनके बारे में कुछ ऐसी परिस्थितियों पर विचार करना उचित होगा, जिन्हें ब्रोंटे परिवार पर भविष्य में

लिखने वाले किसी भी लेखक के लिए अनदेखा करना असंभव होगा। इस पुस्तक में इन पर विचार करना विशेष रूप से आवश्यक है, क्योंकि यह पुस्तक ब्रोंटे बहनों, उनके जीवन और उनके कार्यों पर चर्चा करते हुए, ब्रैनवेल की स्थिति को स्पष्ट करने का विशेष लक्ष्य रखती है। जब डेरवेंट कोलरिज ने अपने पिता की संक्षिप्त जीवनी लिखी, जो कवि की रचनाओं के आरंभ में दी गई है, तो उन्होंने इस विषय पर कुछ खेदपूर्ण ढंग से विचार किया, यह पूछते हुए कि क्या जनता को कवि के जीवन के उस हिस्से के बारे में जानने का अधिकार है जो मृत्यु के बाद उनके साथी मनुष्यों को प्रभावित नहीं करता है, और यह घोषणा करते हुए कि मृतकों की निजता पवित्र है। उन्हें इस बात का गहरा दुख था कि कोलरिज के जीवन की पवित्रता उन लोगों द्वारा भंग की गई थी जिनके पास न तो सटीक ज्ञान था और न ही उचित विवेक। इस पुस्तक के लेखक को इस बात का गहरा अफसोस है कि परिस्थितियोंवश उन्हें भी अपने काम के एक हिस्से को लगभग निंदात्मक लहजे में देखना पड़ रहा है, और कभी-कभी तो बचाव की मुद्रा भी अपनानी पड़ रही है। क्योंकि, यदि कोलरिज की कमियों को उन लोगों ने उजागर किया है और उनका भरपूर फायदा उठाया है जिनकी जिज्ञासा उन्हें ऐसी चीजों में आनंद लेने के लिए प्रेरित करती है, तो पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे के बारे में क्या कहा जाए, जिनके कुकर्मों को न केवल एक बेहतर उद्देश्य के योग्य दृढ़ता से खोजा गया है, बल्कि उन्हें बहुत हद तक बढ़ा-चढ़ाकर और गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है, और इसके अलावा, उनके पूरे जीवन को उन लेखकों ने तोड़-मरोड़ कर पेश किया है जिन्होंने उसमें अपनी परिकल्पनाओं के लिए कुछ सबूत खोजने का प्रयास किया है? ब्रैनवेल का दुर्भाग्य रहा है कि उनके जीवन को कुछ हद तक उन लोगों द्वारा कई बार लिखा जा चुका है जिनका कोई और उद्देश्य था, और परिणामस्वरूप, उन्होंने उनके जीवन की परिस्थितियों का सही आकलन करने का प्रयास नहीं किया। यह देखा जा सकता है कि इन लेखकों ने, शायद अपरिहार्य रूप से, उनके बारे में कई गंभीर गलतियाँ की हैं, जिसके कारण आज उनका नाम एक कलंक और यहाँ तक कि बदनामी के प्रतीक के रूप में लिया जाता है। यदि यह याद किया जाए कि श्रीमती गैस्केल ने अपनी 'शार्लेट ब्रोंटे की जीवनी' में उन्हें एक शराबी और अफीम का सेवन करने वाले व्यक्ति के रूप में वर्णित किया है, जिसने अपनी बहनों का जीवन दुखमय बना दिया था, और संभवतः अपने पिता को गोली मार दी होती; श्री टी. वेमिस रीड ने अपनी पुस्तक 'शार्लोट ब्रोंटे, ए मोनोग्राफ' में उन्हें 'यह खोया हुआ और पतित व्यक्ति'

बताया है; मिस रॉबिन्सन ने अपनी पुस्तक 'एमिली ब्रोंटे' में उन्हें 'बेचारा, अर्ध-पागल अकेला प्राणी' कहा है और उनकी 'अशिष्ट कमजोरी', 'भ्रष्ट और घृणित भावुकता' और 'भावुक पश्चाताप' पर उपदेश दिया है; और अंत में श्री स्विनबर्न ने 'एथेनियम' में इस कृति की समीक्षा करते हुए कहा है, 'उस दयनीय और घृणित नीच व्यक्ति के बारे में - जो अपनी सामान्य व्यभिचारिता के लिए नहीं, बल्कि अपने घोर स्वार्थ, झूठे दिखावे और निर्दयी कायरता के लिए घृणित है - इस संस्मरण में बहुत कुछ लिखा गया है;' इससे स्पष्ट होता है कि हमारे सामने जीवनी के लिए एक विचित्र विषय है।

लेकिन, मिस रॉबिन्सन की ‘एमिली ब्रोंटे’ के प्रकाशन के बाद से, जिसमें ब्रैनवेल को विशेष रूप से नीचा दिखाया गया है, ब्रोंटे बहनों के कई प्रशंसकों ने महसूस किया है कि उनके जीवन को उनकी बहनों के जीवनीकारों के सिद्धांतों और आवश्यकताओं से स्वतंत्र रूप से और उनके प्रति शत्रुतापूर्ण भावना के बिना देखा जाना वांछनीय है; क्योंकि बहुत से लोग मानते हैं कि ब्रैनवेल की प्रतिभा को कभी भी पर्याप्त रूप से मान्यता नहीं मिली है, और कुछ लोग जानते हैं कि, उनकी कई कमियों और कुकर्मों के बावजूद, उन पर लगाए गए आरोप, उनमें से कई पूरी तरह से असत्य हैं, जबकि कई और अत्यधिक अतिरंजित हैं, और उनके स्वभाव और चरित्र को पूरी तरह से गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है। उनके अनेक पत्रों और कविताओं के संग्रह और उनसे व्यक्तिगत परिचय के कारण, मैंने उनकी बहनों के जीवन के संदर्भ में उनके जीवन की कहानी बताने का बीड़ा उठाया है। मेरा मानना है कि उनके विचित्र और दुखद इतिहास में बहुत कुछ ऐसा है जिसे जानना आवश्यक है, जबकि उनकी बौद्धिक क्षमता के पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि वे जिस बौद्धिक परिवार से संबंधित थे, उसके एक योग्य सदस्य थे। इस कृति के कुछ भागों में जिन परिस्थितियों का उल्लेख किया जाएगा, उन्हें स्पष्ट करने के लिए, ब्रैनवेल के जीवन की जीवनी पर संक्षेप में प्रकाश डालना और उन कारणों का पता लगाने का प्रयास करना उचित होगा जिनके कारण उनकी बदनामी हुई है।

श्रीमती गैस्केल, जिनका शार्लोट ब्रोंटे से उनके भाई-बहनों की मृत्यु के बाद परिचय हुआ, जब उनके जीवन के सभी सबसे दुखद क्षण बीत चुके थे, उन्होंने उनमें गहरे अवसाद के लक्षण देखे, या उन्हें ऐसा लगा, जो दुख और अवसाद से भरे जीवन का परिणाम था। अपनी ‘शार्लोट ब्रोंटे की जीवनी’ में, इस लेखिका ने शार्लोट के जीवन की कठिनाइयों के क्रमिक प्रभावों का पता लगाने और उनमें उनके चरित्र की कुछ हद

तक विलक्षणता का स्पष्टीकरण खोजने का प्रयास किया है, जिसके कारण उन्होंने अपनी पूर्वधारणा के बल पर कई परिस्थितियों की व्याख्या अपने सिद्धांत की पुष्टि के रूप में की है। कम से कम, यही वह स्पष्टीकरण है जो श्री टी. वेमिस रीड ने अपनी 'शार्लोट ब्रोंटे, एक मोनोग्राफ' में श्रीमती गैस्केल द्वारा मिस ब्रोंटे के कुछ पत्रों के साथ किए गए आंशिक व्यवहार के बारे में दिया है। यदि हम श्रीमती गैस्केल की इस पूर्वधारणा को ध्यान में रखते हुए लेखन की कल्पना करें, जिसमें उन्होंने अपनी नायिका के इतिहास की सभी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं को अनावश्यक महत्व दिया है, तो हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि ब्रोंटे बहनों के जीवन का उनका वर्णन अक्सर निराशाजनक है, कि हॉवर्थ में उनका एकांतवास, उनकी गरीबी और उनके संघर्षों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया है, या फिर अपने चित्रण में एक गंभीर पृष्ठभूमि जोड़ने के लिए, उन्होंने उन निराधार कहानियों पर अत्यधिक विश्वास किया है जिनसे उन्होंने श्री ब्रोंटे को कम से कम व्यवहार में तो शैतानी रूप में चित्रित किया है, और जिन्होंने पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे के जीवन को इतने अंधकारमय और दुखद रंगों में रंगने में मदद की है। उन्होंने हॉवर्थ में उनकी बदनामी, उसके बाद उनके नशे की लत और उनकी मृत्यु की कहानी सुनी थी। उनका मानना था कि इसी में बहनों के मन का गहरा दुख था, वह चिंता जिसने उनके लेखन में एक विलक्षणता पैदा की थी और उनके जीवन पर एक काला साया डाला था। श्रीमती गैस्केल ने शायद यह मान लिया था कि उनका दायित्व केवल भाई में बुराई की शुरुआत को चित्रित करना और उसके पतन का कारण बताना ही नहीं था, बल्कि उस महिला को दंडित करना भी था जिसे वे 'ब्रैनवेल के पतन' के लिए जिम्मेदार मानती थीं। इस उद्देश्य से उन्होंने बहनों की असमय मृत्यु के लिए उस महिला को आंशिक रूप से जिम्मेदार ठहराना उचित समझा; और यह मानते हुए कि भाई के अपमान का उन पर वही प्रभाव पड़ा जो उन्हें लगता था, उन्होंने पत्रों के आंशिक संस्करणों का उपयोग किया और ब्रैनवेल के पूरे आचरण को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया। उनकी पुस्तक को उन लोगों ने आश्चर्य के साथ पढ़ा जिनके चरित्र को इससे नुकसान पहुँचाया गया था, और उन्हें बाद के संस्करणों में उस महिला के खिलाफ आरोपों को हटाना पड़ा; साथ ही श्री ब्रोंटे के खिलाफ आरोपों को भी। लेकिन श्रीमती गैस्केल अब भी यही मानती रहीं कि कारण चाहे जो भी हो, परिणाम एक ही था।

उस समय कुछ लोगों का मानना था कि श्रीमती गैस्केल को अपनी कृति के बाद

के संस्करणों में आपत्तिजनक कथनों को वापस लेना पड़ा था, इसलिए वे कथन अनिवार्य रूप से असत्य थे। श्री थैकरे ने कहा था कि यह जीवनी 'अपूर्ण तो है, लेकिन अत्यंत मार्मिक और प्रशंसनीय है', और मूल संस्करण अभी भी प्रचलन में था और विदेशों में इसकी नकल की जा रही थी।

ब्रैनवेल ब्रोंटे के मित्र, जो उनकी बौद्धिक क्षमता और वास्तविक स्वभाव से परिचित थे, उनकी स्मृति के साथ हुए अन्याय से बेहद आहत थे; और उनके पक्ष में कई प्रस्तुतियाँ दी गईं। इनमें से एक 'चैम्बर्स जर्नल' में 1869 में प्रकाशित 'ए विंटर्स डे एट हॉवर्थ' नामक लेख में थी। श्री जॉर्ज सियरल फिलिप्स ने 1872 के 'मिरर' में भी कुछ मूल्यवान संस्मरण प्रकाशित किए, जो ब्रैनवेल के उच्च चरित्र और सौम्य स्वभाव को दर्शाते थे।

श्री वेमिस रीड की पुस्तक 'शार्लोट ब्रोंटे, एक मोनोग्राफ' का प्रकाशन, जो 1877 में प्रकाशित हुई थी, ने ब्रैनवेल के जीवन और चरित्र के मूल दृष्टिकोण पर ध्यान तो दिलाया, लेकिन उसे मिटाने का लक्ष्य नहीं रखा। श्री रीड ने इस विचार का सफलतापूर्वक खंडन किया कि ब्रैनवेल के करियर का शार्लोट और एमिली पर वही प्रभाव था जैसा श्रीमती गैस्केल ने बताया था, और उन्होंने स्वयं उस कहानी से कोई असहमति व्यक्त नहीं की। वास्तव में, इस लेखक को यह संदेह नहीं था कि इसका स्पष्टीकरण इस तथ्य में निहित था कि ब्रैनवेल उतने बुरे नहीं थे जितना उन्हें दिखाया गया था, या श्रीमती गैस्केल ने उन पत्रों के अलावा अन्य गलतियाँ भी की थीं जिन्हें उन्होंने सुधारा था। लेकिन, यद्यपि श्री रीड ने श्रीमती गैस्केल द्वारा ब्रैनवेल के जीवन के विवरण को दोहराने से सावधानीपूर्वक परहेज किया, फिर भी 'मोनोग्राफ' में उनकी युवावस्था के बाद उनके बारे में जो भी उल्लेख किया गया है, वह हमेशा निंदात्मक शब्दों में ही है, जिससे दबे हुए घोटाले पर विश्वास कम नहीं हुआ है। इसके अलावा, श्री रीड ने श्री ब्रोंटे के खिलाफ कुछ आरोपों को फिर से उठाया और उनकी एक भयावह छवि प्रस्तुत की।

इन्हीं परिस्थितियों में ब्रैनवेल के एक अन्य मित्र, श्री एफ. एच. ग्रुंडी, सी.ई. ने अपनी पुस्तक 'पिक्चर्स ऑफ द पास्ट' (1879) में उनकी स्मृति को कुछ हद तक सम्मान देने का प्रयास किया और कहा कि उनकी बड़ी कमियों के बावजूद, उनकी क्षमताएँ अत्यंत उच्च कोटि की थीं और उनका स्वभाव प्रशंसनीय था। मुझे इस कार्य में श्री ग्रुंडी की सामग्री उपयोगी लगी है। लेकिन, दुर्भाग्य से, ब्रैनवेल के इस मित्र ने

स्मृति के आधार पर लिखा और उनके जीवन के कालक्रम में इतनी बड़ी गलतियाँ कीं कि उनका विवरण वास्तविक परिस्थितियों का सही चित्रण नहीं करता। श्री ग्रुंडी ने भी स्पष्ट रूप से श्रीमती गैस्केल की पुस्तक को पढ़कर अपनी स्मृति को ताज़ा किया था, इसलिए उनकी जानकारी उस लेखिका की गलत धारणाओं से काफी प्रभावित थी। इस टिप्पणी का इच्छित प्रभाव के बिल्कुल विपरीत प्रभाव पड़ा और तब से इसका व्यापक रूप से उन लेखकों द्वारा उपयोग किया गया है जिनका उद्देश्य ब्रैनवेल को दिवंगत लोगों की श्रेणी में रखना है।

मिस रॉबिन्सन की हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'एमिली ब्रोंटे' में, ब्रैनवेल के जीवन के उस घोटाले को, जिसे श्रीमती गैस्केल ने पाठकों के सामने रखा था, पुन: प्रस्तुत किया गया है, और उनके चरित्र के बारे में उनकी बुरी रिपोर्ट को और भी बढ़ा दिया गया है। यह सवाल उठ सकता है, 'एक बहन के संस्मरण में भाई के कुकर्मों के विवरण को एक प्रमुख विशेषता के रूप में प्रकाशित करना क्यों आवश्यक होना चाहिए? इतने लंबे समय से दबाए गए घोटाले को क्यों पुनर्जीवित किया जाए?' मिस रॉबिन्सन ने वास्तव में इसका कारण बताया है, क्योंकि ब्रैनवेल के पापों ने उनकी बहन की प्रतिभा के झुकाव को निर्धारित करने में इतनी बड़ी भूमिका निभाई थी कि 'उन्हें अनदेखा करना उस आघात को अनदेखा करने के समान होता जिसने "कविताओं" की कल्पना को "वुथरिंग हाइट्स" की त्रासदी में बदल दिया,' और शायद यही एकमात्र उपयुक्त उद्देश्य है जो ऐसा करने में पाया जा सकता था; लेकिन यह समझाने के लिए पर्याप्त नहीं है कि मिस रॉबिन्सन ने ब्रैनवेल ब्रोंटे का पहली बार ज़िक्र करने से लेकर उनकी मृत्यु पर अपनी टिप्पणियों तक, उनके जीवन के हर कार्य को तिरस्कार, निंदा और घृणा से क्यों देखा है, या उन्होंने पहले की सभी राय के विपरीत, उनकी क्षमताओं को लगभग नगण्य क्यों बताया है। जबकि श्री रीड ने सुझाव दिया कि एमिली ब्रोंटे ने अपना उपन्यास लिखते समय अपने भाई के आचरण से कुछ प्रेरणाएँ प्राप्त की होंगी, श्री ग्रुंडी ने एक ऐसा बयान दिया था जिससे यह संकेत मिलता है कि ब्रैनवेल ने कहानी का एक हिस्सा स्वयं लिखा था। यदि ब्रैनवेल की क्षमताएँ मिस रॉबिन्सन के कथन से बेहतर नहीं थीं, तो उन्होंने श्री ग्रुंडी के दावे को तुरंत खारिज कर दिया है; लेकिन फिर भी उन्होंने इसके लिए अन्य तर्क भी दिए हैं, और ब्रैनवेल में जो गिरावट उन्होंने आवश्यक समझी है, वह इस बात को साबित करने के लिए पर्याप्त है कि उन्होंने यह कृति नहीं लिखी होगी, साथ ही एमिली के उस चिंतन के कारण को भी

दर्शाती है जिसके तहत उन्होंने 'वुथरिंग हाइट्स' जैसी त्रासदी की रचना की।

श्रीमती गैस्केल के विचारों से मिलते-जुलते विचारों के साथ, मिस रॉबिन्सन ने शार्लोट की जीवनीकार का अनुसरण करते हुए उन्हीं गलतियों को दोहराया है। यह स्पष्ट करने के लिए कि ब्रैनवेल की बहन द्वारा लिखित 'वुथरिंग हाइट्स' के निर्माण में उनकी भूमिका व्यक्तिपरक थी, इस लेखक ने उनके जीवन में कहानी के पात्रों की कई कमियों को दर्शाना आवश्यक समझा है। मिस रॉबिन्सन ने अपने इस कार्य को इतनी कुशलता से किया है कि श्री स्विनबर्न ने अपनी समीक्षा में कहा है कि 'निम्न प्राणियों के प्रति एमिली ब्रोंटे की कोमलता इतनी व्यापक थी कि उसमें उनका अपना दुखी भाई भी शामिल था।' लेकिन तथ्यों की चूक और त्रुटियों के कारण मिस रॉबिन्सन अपने सिद्धांत के शिकार के साथ बहुत अन्याय किए बिना सफल नहीं हो पाई हैं। मैं बाद में 'वुथरिंग हाइट्स' और 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल' दोनों से ब्रैनवेल के संबंध पर विस्तार से चर्चा करूँगा।

मुझे पूरी उम्मीद है कि मैं यह साबित कर पाऊँगा कि ब्रैनवेल (जैसा कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानने वाले सभी लोग कहते हैं) एक महान और शक्तिशाली बौद्धिक प्रतिभा के धनी थे, उनकी स्मृति पर लगे कलंक को काफी हद तक मिटा पाऊँगा और उनके चरित्र की उल्लेखनीय विशिष्टता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित कर पाऊँगा। ऐसा करने के लिए, मुझे श्रीमती गैस्केल की 'शार्लट ब्रोंटे की जीवनी' के उन अंशों पर आपत्ति जतानी होगी जो उनके भाई से संबंधित हैं, जैसा कि मुझे कुछ हद तक श्री ब्रोंटे से संबंधित अंशों पर भी करना पड़ा था। हालाँकि, विशेष रूप से, इस कृति के पहले संस्करण में दिए गए विस्तृत विवरणों और श्री रीड और मिस रॉबिन्सन के हाल के संस्करणों में उनके दोहराव और विस्तार पर चर्चा करना आवश्यक होगा।

मैंने इन टिप्पणियों को इस स्थान पर प्रस्तुत करना आवश्यक समझा है, ताकि पाठक, जब ब्रैनवेल और उनकी बहनों के साथ उनके संबंधों के बारे में पूर्व लेखकों द्वारा दिए गए कुछ कथनों पर विचार करें, तो उन्हें उन विचारों की स्पष्ट समझ हो सके जिनके साथ इन कथनों वाली रचनाएँ लिखी गई हैं।

अध्याय XI.

ब्रैनवेल एट ब्रैडफोर्ड।

ब्रैनवेल एक फ्रीमेसन बन जाते हैं — कला के प्रति उनका प्रेम कम नहीं होता — उन्हें तेल चित्रकला का प्रशिक्षण मिलता है — ब्रैडफोर्ड में वे चित्र चित्रकला शुरू करते हैं — उनके द्वारा प्राप्त कार्य — कलाकार श्री थॉम्पसन को उनका पत्र — मिस रॉबिन्सन द्वारा दुर्व्यवहार के आरोप — उनके गलत बयान — ब्रैडफोर्ड में ब्रैनवेल का वास्तविक चरित्र और आचरण — वहां उनके कथित अफीम सेवन पर टिप्पणियाँ।

जब ब्रैनवेल लंदन से लौटे, तो उनके परिचितों ने हॉवर्थ में उनका हार्दिक स्वागत किया, जिससे उन्हें काफी संतोष हुआ। इनमें से कुछ लोगों ने ही उन्हें फ्रीमेसन बनने के लिए प्रेरित किया था। इस प्रकार ब्रैनवेल गांव के सौहार्दपूर्ण मंडलों के साथ और भी घनिष्ठ रूप से जुड़ गए।

उस समय हॉवर्थ में 'द लॉज ऑफ द थ्री ग्रेसेस' का आयोजन होता था। इस लॉज में ब्रैनवेल को सदस्य के रूप में प्रस्तावित किया गया और 1 फरवरी, 1836 को उन्हें स्वीकार कर लिया गया। 29 फरवरी को उनका दीक्षा संस्कार हुआ, 28 मार्च को उनकी दीक्षा पूरी हुई और उसी वर्ष 25 अप्रैल को उन्हें पदोन्नत किया गया। जॉन ब्राउन 'वर्शिपफुल मास्टर' थे। ब्रैनवेल 1836 में ग्यारह बैठकों में उपस्थित रहे, जिनमें से एक बैठक (18 सितंबर) का विवरण उन्होंने स्वयं दर्ज किया। उसी वर्ष 20 दिसंबर को उन्होंने 'जूनियर वार्डन' के कर्तव्यों का निर्वाह किया; और 16 जनवरी से 11 दिसंबर, 1837 तक लॉज की सात बैठकों में वे सचिव रहे और उनका विवरण भी दर्ज किया। उसी वर्ष क्रिसमस के दिन उन्होंने ऑर्गन वादक के रूप में भी कार्य किया। मेसोनिक लॉज से संबंधित अपने कर्तव्यों के अतिरिक्त, उन्होंने स्थानीय टेम्परेंस सोसाइटी के सचिव का पदभार भी संभाला, जिसके वे सदस्य थे।

ब्रैनवेल का कला के प्रति प्रेम इतना प्रबल था और कला के अभ्यास में उनकी रुचि

इतनी तीव्र थी कि अकादमी परियोजना की विफलता से उनकी आकांक्षाओं को जो झटका लगा था, वह भी उन्हें हतोत्साहित नहीं कर सका। इसलिए, मेरा मानना है कि जब उन्होंने व्यवस्थापक का पद छोड़ा, तो कलाकार बनने की उनकी प्रबल इच्छा, जो निराशा के बावजूद अभी भी उनके मन में थी, फिर से जागृत हो गई। रॉयल अकादमी में अध्ययन की परियोजना के साकार न हो पाने के कारण, उन्होंने सोचा कि यदि उन्हें श्री रॉबिन्सन से पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त हो जाए, तो वे संभवतः चित्रकार बनने के पेशे के लिए भी खुद को योग्य बना सकते हैं, जो उन दिनों में, जब फोटोग्राफर इतने महत्वपूर्ण नहीं थे, आज की तुलना में अधिक मूल्यवान था; और श्री ब्रोंटे, अपने पुत्र की इच्छा का समर्थन करते हुए, इस प्रस्ताव को मंजूरी देने के लिए तैयार हो गए, क्योंकि इससे ब्रैनवेल को शिक्षक के पेशे के अलावा एक वैकल्पिक व्यवसाय मिल सकता था, जो उनके लिए एकमात्र उपलब्ध विकल्प प्रतीत होता था।

हॉवर्थ पार्सनेज में श्री रॉबिन्सन के कुछ ही पाठों के दौरान, प्रत्येक पाठ के लिए शुल्क दो गिनी था। लेकिन अब यह तय किया गया कि ब्रैनवेल लीड्स स्थित कलाकार के स्टूडियो में उनसे प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। इस तरह उन्हें न केवल कला सीखने के बेहतर अवसर मिलेंगे, बल्कि खर्च भी काफी कम होगा। इसके लिए वे ब्रिगेट के एक सराय में ठहरे, लेकिन कभी-कभी अपने गुरु के चित्रों की नकल करने के लिए उन्हें हॉवर्थ ले जाते थे। इस प्रकार की शिक्षा उन्होंने कुछ महीनों तक प्राप्त की, और अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने अपनी चाची की कृपा से प्राप्त शिक्षा का लाभ उठाने का निश्चय किया। इसी व्यावसायिक इरादे से उन्होंने ब्रैडफोर्ड में निजी अपार्टमेंट किराए पर लिए और अपनी मां के रिश्तेदार, क्राइस्ट चर्च के रेवरेंड विलियम मॉर्गन के संरक्षण में एक चित्रकार के रूप में काम करना शुरू किया। उन्होंने अन्य लोगों के साथ-साथ इस सज्जन और पादरी रेवरेंड हेनरी हीप के चित्र भी बनाए। कुछ महीनों तक ब्रैनवेल इन सराहनीय प्रयासों से अपना भरण-पोषण करने में सफल रहे; लेकिन यह उम्मीद करना लगभग असंभव था कि वह पड़ोस के अधिक उम्रदराज और अनुभवी कलाकारों के साथ प्रतिस्पर्धा में पर्याप्त रूप से सफल हो पाएगा।

उनकी अन्य तस्वीरों में, उनकी मकान मालकिन श्रीमती किर्बी और उनके दो बच्चों के चित्र भी शामिल थे। इनमें से एक सुंदर छोटी बच्ची उनकी विशेष प्रिय थी। उनके बार-बार अनुरोध पर, वह उनके निजी बैठक कक्ष में उनके साथ भोजन करती थी, और उसकी मनमोहक मुस्कान और हंसमुख बातें हमेशा उन्हें मोहित कर देती थीं।

यहां यह उल्लेख करना उचित होगा कि जब ब्रैनवेल ने श्री रॉबिन्सन के अधीन अध्ययन शुरू किया, तो उनकी मुलाकात एक सहपाठी श्री जे. एच. थॉम्पसन से हुई, जो ब्रैडफोर्ड में चित्रकार थे। दोनों के बीच घनिष्ठ मित्रता विकसित हुई; और ब्रैनवेल से अधिक अनुभवी होने के कारण, थॉम्पसन समय-समय पर अपने युवा मित्र की कृतियों को अंतिम रूप देते थे।

ब्रैडफोर्ड में कलाकार के रूप में अपना पेशा छोड़ने के तुरंत बाद, ब्रैनवेल ने अपने और अपनी मकान मालकिन के बीच उत्पन्न हुई कुछ गलतफहमी के संदर्भ में श्री थॉम्पसन को एक पत्र लिखा। पत्र पर 'हॉवर्थ, 17 मई, 1839' की तिथि अंकित है।

'प्रिय महोदय,

'आपके आखिरी संदेश ने मुझे ब्रैडफोर्ड में आपसे मिलने का पक्का इरादा करने के लिए प्रेरित किया है, क्योंकि निश्चित रूप से गलतफहमियों और देरी के इस सिलसिले को आखिरकार रोकना ही होगा।'

मैं आज दोपहर दो बजे (शुक्रवार) "बुल्स हेड" पर उपस्थित रहूंगा, और आप भी वहां या ब्रैडफोर्ड में मौजूद रहें ताकि मेरे पहुंचने पर आप मेरी सहायता कर सकें!

'मैं श्रीमती किर्बी पर आश्चर्यचकित हूँ। मेरे पास उनकी कोई भी तस्वीर पूरी करने के लिए नहीं है। लेकिन मैंने कहा था कि अगर मैं वहाँ वापस जाऊँगी, तो मैं उनके लिए तीन तस्वीरें पॉलिश कर दूँगी; और मुझे ऐसे लोग भी समझ में नहीं आते जो किसी की मदद को कर्तव्य समझते हैं।'

एक बार फिर, मैं आपको दिल से धन्यवाद देता हूं कि आपने उस व्यक्ति के प्रति सहानुभूति दिखाई जिसके पास खुद के लिए कोई सहानुभूति नहीं है।

'आपका विश्वासी,

'पी. बी. ब्रोंटे।'

श्रीमती किर्बी पहले उल्लेखित चित्रों से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थीं; लेकिन श्री थॉम्पसन की सकारात्मक राय सुनकर वे तुरंत मान गईं। हालांकि ब्रैनवेल ने बताए गए कारणों से ब्रैडफोर्ड में रहना छोड़ दिया, फिर भी वे बाद में हॉवर्थ में कभी-कभी चित्र बनाते रहे; और साथ ही अक्सर अपने मित्रों से मिलने भी जाते थे, क्योंकि जैसा कि हम आगे देखेंगे, वे आस-पास के कवियों और कलाकारों से परिचित हो गए थे।

मिस रॉबिन्सन ने ब्रैनवेल का चित्र उस समय बनाने का जिम्मा लिया था, जब उनके हालात ऐसे थे कि वे बीस साल के हो चुके थे, जबकि वास्तव में वे बाईस साल

के थे; और उनकी रचना इस प्रकार है: 'वे ब्रैडफोर्ड में चित्रकार के रूप में गए और - उनकी हिम्मत देखकर आश्चर्य होता है - कुछ महीनों तक वहाँ जीविका चलाने में सफल भी रहे... उनके सुनहरे बाल, उनकी अशिक्षित प्रतिभा का दिखावा, और अखबार के कवि वाले कोने में छपी उनकी कविताएँ, बीस साल के इस अशिक्षित और फिजूलखर्ची करने वाले चित्रकार का हमेशा के लिए गुजारा नहीं कर सकीं। जल्द ही वहाँ उनका चित्रकला का काम समाप्त हो गया। वे अचानक ब्रैडफोर्ड से गायब हो गए, भारी कर्ज में डूबे हुए, और तब तक नजरों से ओझल रहे जब तक कि वे घबराए हुए, शराबी और अफीम के आदी होकर हॉवर्थ में अपने घर और एमिली के पास वापस नहीं आ गए।'

ये सभी कथन सरासर असत्य हैं। मेरे पास एक ऐसे व्यक्ति की पुख्ता जानकारी है जो ब्रैनवेल को लीड्स में जानता था और उस समय ब्रैडफोर्ड में रहता था जब वह वहाँ था। उसने बताया कि ब्रैनवेल ने उस शहर को कर्ज में डूबे बिना छोड़ा था; वह निश्चित रूप से शराबी नहीं था; और अगर उसने कभी कुछ लिया भी था, तो वह भी कभी-कभार ही, और वह भी सामान्य रीति-रिवाज से अधिक नहीं। यदि अन्य सभी प्रमाण न हों, तो मैं ब्रैनवेल के बारे में उन मित्रों द्वारा दिए गए विवरण पर विश्वास करना चाहूंगा जो उसे व्यक्तिगत रूप से जानते थे और जो इस समय, जब मैं यह लिख रहा हूँ, उसी स्थान पर रह रहे हैं जहाँ उसने अपने हाथों की मेहनत से जीविका कमाई थी, बजाय ऊपर उद्धृत अनुचित, अन्यायपूर्ण और अतिरंजित आरोपों के। लेकिन ब्रैनवेल के अपने मित्र को लिखे पत्र से यह दावा तुरंत खारिज हो जाता है कि वह 'अचानक भारी कर्ज में डूबे हुए ब्रैडफोर्ड से गायब हो गए और नजरों से ओझल हो गए।' और, उनके मानसिक रूप से अस्थिर और शराबी होने के कथन के संबंध में, उन्हें जानने वालों के साक्ष्य को ही स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि वे निःसंकोच कहते हैं कि वे इसके विपरीत, 'एक शांत, विनम्र, अंतर्मुखी और संकोची युवक थे, जो निष्क्रिय स्वभाव और नाजुक स्वास्थ्य वाले प्रतीत होते थे।' इसके अलावा, ब्रैडफोर्ड में अपना पेशा छोड़ने के बाद भी वे अक्सर वहां जाते थे, क्योंकि उनकी साहित्यिक रुचि, कलात्मक गतिविधियों और संगीत प्रतिभा ने उन्हें उस शहर में कई मित्र बना दिए थे। निस्संदेह, एमिली की जीवनीकार ने ब्रैडफोर्ड में कला के पेशे से जीविका कमाने के ब्रैनवेल के ईमानदार, नेक और सम्मानजनक प्रयास का जो वर्णन किया है, वह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है।

मिस रॉबिन्सन का दावा है कि ब्रैनवेल बीस साल की उम्र से ही अफीम का सेवन करते थे, उन अन्य हानिकारक आदतों के अलावा जिनका उन्होंने उन पर आरोप लगाया है। हालांकि, इस बात का कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है कि उस समय वे ऐसा करते थे; और, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि एमिली की जीवनीकार ने ब्रैडफोर्ड में ब्रैनवेल के कला अभ्यास को ब्रॉटन-इन-फर्नेस में उनके शिक्षण के बाद के समय से जोड़ा है, शायद यह संदेह करने की अनुमति दी जा सकती है कि उनकी जीवनीकार भी इतनी कम उम्र में अफीम के सेवन के संबंध में अपने दावों में उतनी ही गलत हैं। ब्रैनवेल वास्तव में बाद में इस हानिकारक आदत में पड़ गए और समय-समय पर इसके परिणाम भुगते; लेकिन यह मानने का कोई कारण नहीं है कि वे पूरी तरह से इसके वश में हो गए थे, या इस आदत से उन्हें मानसिक या शारीरिक रूप से बहुत नुकसान हुआ था। हम केवल उनके अफीम के सेवन के मूल कारण का अनुमान लगा सकते हैं; लेकिन, जब हम डी क्विन्सी की अद्भुत पुस्तक के प्रति उस समय के युवा साहित्यकारों के असाधारण आकर्षण पर विचार करते हैं, तो हम समझ सकते हैं कि ब्रैनवेल, जिन्होंने यह पुस्तक पढ़ी, संभवतः इसके प्रभाव में आ गए थे। इसके अलावा, हमें यह भी याद रखना चाहिए कि उस युवक की दो बहनों की मृत्यु तपेदिक से हुई थी, और डी क्विन्सी कहते हैं कि अफीम के सेवन ने उन्हें अपने पिता के भाग्य से बचा लिया था, जो इसी बीमारी का शिकार हो गए थे। अंत में, यह नहीं भूलना चाहिए कि इस शताब्दी के पूर्वार्ध में, साहित्यकारों के बीच अफीम का उपयोग एक प्रकार से प्रचलन में आ गया था, और डी क्विन्सी और कोलरिज के कई प्रशंसकों का मानना था कि इस प्रथा को पर्याप्त स्वीकृति मिल गई थी। लेकिन इन लेखकों में से पहले ने अफीम का सेवन रुक-रुक कर किया था, और हमारे पास यह मानने का कारण है कि उनके बाद आए ब्रैनवेल ने भी ऐसा ही किया होगा। तो चलिए, कल्पना कीजिए युवा ब्रोंटे की, जो स्वप्निल और भावुकता की दुनिया में मग्न थीं और तपेदिक से मुक्ति पाने की आशा रखती थीं। उन्होंने 'अकल्पनीय सुख और दुख के भयानक कारक' के प्रभाव को आजमाने का निश्चय किया, एक ऐसा कदम जिससे कई कम साहसी लोग हिचकते। ब्रैनवेल ने निस्संदेह 'एक अंग्रेज अफीम-भक्षी की स्वीकारोक्ति' में पढ़ा होगा कि यह औषधि शरीर को अव्यवस्थित नहीं करती, बल्कि एक प्रकार का स्वास्थ्य प्रदान करती है, जो स्वाभाविक प्रतीत होता यदि इसे प्राप्त करने का तरीका अलग न होता। उनका मानना था कि - इस जादू के प्रभाव में आए व्यक्ति में - 'उसके स्वभाव

का दिव्य पक्ष सर्वोपरि होता है, नैतिक भावनाएँ निर्मल शांति की स्थिति में होती हैं; और सबसे ऊपर राजसी बुद्धि का महान प्रकाश होता है।' श्रीमती गैस्केल अपने ऊपर अफीम के प्रभाव का वर्णन करती हैं। वह कहती हैं: 'मैंने उससे (शार्लोट से) पूछा कि क्या उसने कभी अफीम का सेवन किया है, क्योंकि "विलेट" में इसके प्रभावों का जो वर्णन दिया गया था, वह बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैंने अनुभव किया था - वस्तुओं की स्पष्ट और अतिरंजित उपस्थिति, जिनकी रूपरेखा अस्पष्ट थी, या सुनहरी धुंध में खो गई थी, आदि।' ब्रैनवेल ने जब पहली बार इसका सेवन किया था, तब शायद उसने इस औषधि के इतने तीव्र प्रभावों का अनुभव नहीं किया होगा; लेकिन यह याद रखना चाहिए कि उसने कई बार इसका अभ्यास किया और इसके परिणामस्वरूप होने वाले कष्टों और दंडों को भुगता।

ब्रैडफोर्ड में चित्रकारी करने के बाद, वे फिर कभी वहाँ नहीं रहे, और उस स्थान को छोड़ने के दौरान ही उन्हें यह एहसास होने लगा कि उन्होंने जो कलात्मक करियर चुना था वह एक गलती थी, और उन्होंने इसे पेशे के रूप में छोड़ने का निश्चय किया। इसके अलावा, जैसा कि हम आगे देखेंगे, अन्य प्रभाव भी उन पर पड़ रहे थे और अभी भी पड़ रहे थे, जिसके कारण वे एक बार फिर साहित्य की ओर मुड़ गए। चित्रकारी शिक्षकों से परिचय के समय से ही वे आस-पड़ोस के साहित्यिक और कलात्मक दोनों ही मंडलों से जुड़ गए थे; और उन्होंने अपनी बहनों के साहित्यिक भविष्य की भविष्यवाणी कर दी थी।

अध्याय XII.

साहित्यिक प्रभाव और आकांक्षाएँ।

कविता की नई प्रेरणा — वर्ड्सवर्थ — साउथी, स्कॉट और बायरन — साउथी से शार्लोट ब्रोंटे तक — हार्टले कोलरिज — यॉर्कशायर के उनके प्रतिष्ठित व्यक्ति — वेस्ट-राइडिंग के कवि — अलारिक ए. वाट्स — ब्रैनवेल की साहित्यिक क्षमताएँ।

वर्तमान शताब्दी के आरंभिक भाग में, काव्य की भावना उन क्षेत्रों में भी प्रकट होने लगी जहाँ पहले कभी इसका कोई प्रभाव नहीं देखा गया था। डेला क्रुस्कन शैली की पांडित्यपूर्ण शैली, वर्ड्सवर्थ जैसे प्रकृति प्रेमी कवि की रचनाओं में, एक ताज़गी भरी और शुद्ध प्रेरणा में तब्दील हो गई, जो घरेलू और ग्रामीण सौंदर्य के परिचित विषयों में आनंदित होती थी, जो अक्सर सरल और अस्पष्ट दोनों होते थे। वास्तव में, वर्ड्सवर्थ ही थे जिन्होंने 'काव्य के सिद्धांत का विकास' किया - जैसा कि ब्रैनवेल ब्रोंटे भली-भांति जानती थीं - जिसने साहित्य में पुनर्जागरण काल के बाद से शायद ही कभी इतना बड़ा परिवर्तन लाया हो। 'स्पष्ट संवेदना की स्थिति में मनुष्यों की वास्तविक भाषा के चयन को छंदबद्ध व्यवस्था में ढालने' की कठिनाई को हल करने के अपने प्रयास में, वर्ड्सवर्थ ने परिचित और सरल विषयों से ओतप्रोत काव्यात्मक भावनाओं के स्वाभाविक विस्फोट का मार्ग प्रशस्त किया। तथाकथित 'लेक स्कूल' के कवि, और विशेष रूप से वर्ड्सवर्थ, कोलरिज और साउथी, वास्तव में इस नए आंदोलन के नेता थे; और, प्रतिभा की बेरोक-टोक उड़ान के फलस्वरूप, इंग्लैंड के कई अज्ञात स्थानों से ऐसी मधुर काव्यात्मक आवाज़ें उभरीं जो पहले कभी नहीं सुनी गई थीं। उसी समय, स्कॉट और बायरन द्वारा दी गई रोमांटिकता की छाप ने नई पीढ़ी के कई युवा कवियों पर गहरा प्रभाव डाला। उस समय के स्थानीय साहित्य का अध्ययन करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह स्पष्ट है कि ऐसी प्रेरणा से रचित रचनाएँ अक्सर महान और स्थायी महत्व की थीं। साउथी ने 1837 में शार्लोट ब्रोंटे को लिखे पत्र में वास्तव में कहा है, 'आजकल हर साल कई कविता संग्रह प्रकाशित होते हैं, लेकिन उन पर किसी का ध्यान नहीं जाता, जबकि अगर उनमें से कोई भी पचास साल पहले प्रकाशित हुआ होता, तो उसके लेखक को उच्च ख्याति प्राप्त होती।'

शायद पूरे इंग्लैंड में वेस्टमोर्लैंड के कवियों का प्रभाव यॉर्कशायर के वेस्ट-राइडिंग की घाटियों जितना कहीं और महसूस नहीं किया गया होगा। दरअसल, उस क्षेत्र के एक युवा प्रकाशक, श्री एफ. ई. बिंगले, प्रतिभा को पहचानने में सक्षम थे और उनमें इतनी उद्यमशीलता थी कि वे हार्टले कोलरिज की रचनाओं को प्रकाशित करने के

उद्देश्य से उन्हें लीड्स ले आए। युवा कोलरिज - अपने पिता के नाम की प्रतिष्ठा के अलावा - पहले से ही 'ब्लैकवुड्स मैगज़ीन' में कभी-कभार योगदान देने वाले के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे, जहाँ उनकी प्रशंसित कविता 'लियोनार्ड और सुसान' पहली बार प्रकाशित हुई थी। श्री बिंगले ने हार्टले कोलरिज द्वारा लिखित कविताओं के दो संग्रह और 'यॉर्कशायर और लंकाशायर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों की जीवनी संबंधी सूचनाओं' की एक श्रृंखला प्रकाशित करने के लिए उनसे अनुबंध किया। कविताओं के एक संग्रह का प्रकाशन 1833 में हुआ और उसे खूब सराहा गया। ‘द वर्थीज़’ का तीसरा अंक प्रकाशित हुआ, जो छह सौ बत्तीस पृष्ठों का एक अष्टकोणीय खंड था। कुछ परिस्थितियों के चलते श्री बिंगले को शेष प्रतियां एक अन्य प्रकाशक को बेचनी पड़ीं, जिसने 1836 में इस प्रसिद्ध कृति का एक नया शीर्षक प्रकाशित किया। इसी प्रकाशन गृह से 1834 में जॉर्ज विल्सन की ‘सिरिल, अ पोयम इन फोर कैंटोस; एंड माइनर पोयम्स’ प्रकाशित हुई। सी. एफ. एडगर, जो ‘यॉर्कशायर लिटरेरी एनुअल’ के संपादक थे, जिसका पहला खंड 1831 में प्रकाशित हुआ था, उन्होंने ही अगले वर्ष श्री बिंगले द्वारा प्रकाशित कविताओं का एक संग्रह भी लिखा था; और इसके बाद लीड्स प्रकाशन गृह से अन्य काव्य रचनाएँ भी प्रकाशित हुईं।

लेकिन, उन दिनों, यॉर्कशायर के घनी आबादी वाले वेस्ट-राइडिंग में शायद ही कोई ऐसा इलाका होता था जहाँ कोई कवि न हो, और वह कवि भी असाधारण प्रतिभा का धनी होता था। एयरडेल के कवि निकोलसन ने, जिस समय की मैं बात कर रहा हूँ, उससे पहले अपनी 'एयरडेल, और अन्य कविताएँ' और 'एबोर का वीणा' प्रकाशित की थीं। उनकी काव्य प्रतिभा वास्तव में उत्कृष्ट थी, और उनकी बहुमुखी प्रतिभा और उनकी रचनाओं की सुखद प्रकृति ने निकोलसन को वेस्ट-राइडिंग में बहुत लोकप्रिय बना दिया था। उनका निधन 1843 में हुआ। गार्ग्रेव के प्रतिभाशाली कवि रॉबर्ट स्टोरी ने पहले के वर्षों में स्थानीय समाचार पत्रों में कई गीत और कविताएँ प्रकाशित की थीं; और उन्होंने 1836 में 'द मैजिक फाउंटेन' नामक एक संग्रह प्रकाशित किया। इसके बाद 1838 में 'द आउटलॉ' और 1842 में 'लव एंड लिटरेचर' प्रकाशित हुए। यह कवि कंजर्वेटिव पार्टी के कट्टर समर्थक थे और उनकी गीतात्मक प्रतिभाएँ अटूट ऊर्जा के साथ उनके उद्देश्य के लिए समर्पित थीं। उनकी 'सॉन्ग्स एंड पोएम्स' और 'लिरिकल एंड अदर माइनर पोएम्स' बाद में प्रकाशित हुईं। उनके राजनीतिक गीत जोशीले थे और उनके देहाती गीत चरागाहों, घास के मैदानों और दलदलों की सुगंध से भरे हुए थे, जो

प्रकृति की ताजगी को उसके सबसे सुखद समय में समेटे हुए थे। थॉमस क्रॉसली, 'ओवेंडन के कवि', स्टोरी की तरह, उच्चतम कोटि की गीतात्मक प्रतिभा से संपन्न थे और काउंटी के समाचार पत्रों में नियमित रूप से योगदान देते थे; और उन्होंने 1837 में 'द फ्लावर्स ऑफ एबोर' नामक एक प्रशंसनीय और मनमोहक रचना प्रकाशित की। उसी वर्ष, विलक्षण प्रतिभा के धनी विलियम डियर्डन, जिन्हें 'कैल्डीन का कवि' कहा जाता था, ने अपनी पाँच पंक्तियों वाली कविता 'स्टार-सीर' प्रकाशित की, जो शक्ति, मौलिकता और कल्पना की उदात्तता से परिपूर्ण थी। यह रचना रोमांटिसिज़्म की भावना से अत्यधिक प्रभावित थी और इसमें मधुर भाषा का प्रयोग किया गया था।

यह ‘स्मारिका’, ‘स्मृति चिन्ह’, ‘भूलने योग्य फूल’ और ‘वार्षिक पत्रिका’ का युग था, जिनकी खूब बिक्री होती थी और जिनमें वाकई बहुत कुछ अच्छा होता था। साउथी के अनुसार, ‘स्मृति चिन्ह’ के मालिक हीथ ने एक वर्ष में पंद्रह हजार प्रतियां बेचीं और अगले अंक के लिए चार हजार गज रेशम का इस्तेमाल किया; क्योंकि ये पत्रिकाएं हमेशा रेशम और सोने से सजी होती थीं। अलारिक ए. वाट्स, जिन्होंने 1822 में अपनी ‘काव्य रचनाएँ’ प्रकाशित कीं (जिसका चौथा संस्करण, स्टोथर्ड और नेसफील्ड के डिजाइनों से सुसज्जित और विस्तृत रूप से तैयार किया गया था, आवश्यक हो गया था), उसी वर्ष ‘लीड्स इंटेलिजेंसर’ के संपादक बने, जिसका उन्होंने बड़े उत्साह और कुशलता से संचालन किया। बाद में उन्होंने ‘मैनचेस्टर कूरियर’ की स्थापना की, जिसका उन्होंने कुछ समय तक संपादन किया और उत्तरी क्षेत्रों में वे काफी प्रसिद्ध थे। 1828 और 1829 में उनकी ‘पोएटिकल एल्बम’ प्रकाशित हुई, 1831 में ‘सीन्स ऑफ लाइफ, एंड शेड्स ऑफ कैरेक्टर’; और 1825 से 1834 तक उन्होंने अपनी ‘लिटरेरी सौवेनियर; ए कैबिनेट ऑफ पोएट्री एंड रोमांस’ का प्रकाशन किया, जिसे अपार सफलता मिली। यह पूरी संभावना है कि उनके इस प्रयास की अपार लोकप्रियता के कारण ही ‘द व्हाइट रोज़ ऑफ यॉर्क’ नामक एक समान कृति प्रकाशित हुई, जिसे 1834 में हैलिफ़ैक्स में प्रकाशित किया गया था। इस कृति का संपादन जॉर्ज होगार्थ ने किया था, और पहले उल्लेखित लेखकों के अलावा—जो निकोलसन, एयरडेल कवि और लीड्स के लेखकों को छोड़कर, इसमें योगदानकर्ता थे—एफ. सी. स्पेंसर, ‘द वेल ऑफ बोल्टन’ नामक कविता संग्रह के लेखक; हेनरी इंग्राम, ‘मटिल्डा’ नामक पुस्तक के लेखक; हेनरी मार्टिन, ‘हैलिफ़ैक्स एक्सप्रेस’ के संपादक भी शामिल थे। जॉन रोबी, जिन्होंने ‘द ट्रेडिशन्स ऑफ लंकाशायर’ लिखी थी,

और अन्य लेखकों ने भी इसमें योगदान दिया। इस कृति में सी. पीटर्स द्वारा लिखित 'मोर्ले हॉल' नामक एक रचना भी शामिल थी, जो इसी काउंटी की एक लोककथा पर आधारित थी। इस विषय पर 'द फ्लावर्स ऑफ एबोर' के लेखक ने भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया था। बाद में ब्रैनवेल ब्रोंटे ने भी इसी विषय में रुचि दिखाई, उनके मित्र लेलैंड ने कहानी के एक दृश्य की मिट्टी की प्रतिमा बनाई थी।

इसमें कोई शक नहीं कि यॉर्कशायर में लोगों की भावनाओं को झकझोर देने वाले इन साहित्यिक प्रभावों का ब्रोंटे बहनों की शुरुआती रचनाओं पर गहरा असर पड़ा और शायद यही उनकी मूल प्रेरणा भी थीं। सभी स्थानीय अखबार साहित्यिक आंदोलन की खबरों से भरे हुए थे; और हॉवर्थ के पादरी के घर में व्यस्त दिमागों में इस खबर से होड़ मच गई। विशेष रूप से ब्रैनवेल, जो इस नए क्षेत्र में काम करने वाले कई लोगों को व्यक्तिगत रूप से जानते थे और उनकी संगति में सबसे ज्यादा खुश रहते थे, अपनी कलात्मक आकांक्षाओं के बीच ही उनके साहित्यिक कार्यों में शामिल होने के लिए प्रेरित हुए। इस समय, ब्रोंटे बहनों की इस दिशा में रुचि और काव्य एवं गद्य रचना में उनकी प्रगति ने उन्हें उज्ज्वल भविष्य की आशाओं से भर दिया। शार्लोट के अनुसार, बचपन से ही साहित्यिक रचना के उनके प्रयास उनके लिए सबसे बड़ी प्रेरणा और सबसे जीवंत सुखों में से एक थे। उन्हें धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा कि उनकी प्रतिभा कलात्मक नहीं बल्कि साहित्यिक है, और वे उस ओर बढ़ते उत्साह और गहरी रुचि के साथ आगे बढ़ने लगे।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि ब्रैनवेल, जो संभवतः अपनी बहनों से बहुत प्रभावित थे, या शायद वे उनसे अधिक प्रभावित थीं—क्योंकि वे हमेशा उनकी प्रतिभा को अपनी प्रतिभा से कहीं अधिक महान मानती थीं—जल्द ही कलम का प्रयोग कलम से अधिक करने लगे। श्री ब्रोंटे की बेटियों में विवेक और आलोचनात्मक क्षमता भरपूर थी, जो उन्हें अपने भाई की प्रतिभा का सटीक आकलन करने में सक्षम बनाती थी; और श्रीमती गैस्केल मानती हैं कि शुरुआत में, वे शायद इस विशिष्ट परिवार के सबसे प्रतिभाशाली सदस्य थे, और यह कलात्मक दृष्टि से कहीं अधिक साहित्यिक दृष्टि से था। उनका यह सकारात्मक निर्णय उनके सामने मौजूद प्रमाणों पर आधारित था। वे उनकी काव्य और गद्य रचनाओं से भली-भांति परिचित थीं; और यह कि इनमें विचारों की अपार सुंदरता और अभिव्यक्ति की अपार निपुणता के साथ-साथ पर्याप्त शक्ति, मौलिकता और नवीनता भी झलकती है, इसके प्रमाण आगे के पृष्ठों में मिलेंगे।

अध्याय XIII.

प्रारंभिक कविताएँ।

ब्रैनवेल का वर्ड्सवर्थ को पत्र, छंदों सहित — उस पर टिप्पणियाँ — कोई उत्तर नहीं — उन्होंने पुनः प्रयास किया — मैनचेस्टर और लीड्स रेलवे में उनकी रुचि — ब्रैडफोर्ड और हैलिफ़ैक्स में ब्रैनवेल के साहित्यिक और कलात्मक मित्र — वहाँ लेलैंड की रचनाएँ — उनमें ब्रैनवेल की गहरी रुचि — प्रारंभिक कविताएँ — श्रीमती गैस्केल द्वारा उनकी साहित्यिक क्षमताओं पर दिया गया निर्णय।

ब्रैनवेल, कला के क्षेत्र में पूरी ऊर्जा के साथ काम करते हुए भी, जैसा कि मैंने कहा है, अपनी साहित्यिक क्षमता से अनभिज्ञ नहीं थे। हालांकि, उनकी बहनों के काम को अत्यंत लगन से आगे बढ़ाया जाना था, लेकिन दुर्भाग्यवश ब्रैनवेल की प्रतिभा की चमक अक्सर अस्थिर, अनियमित और अनिश्चित होती थी: वास्तव में, उस समय भी उनका मन अस्थिर था।

यह उल्लेखनीय है कि श्री ब्रोंटे के सभी बच्चों की एक विशेषता यह थी कि बौद्धिक क्षमता और साहित्यिक प्रतिभा के साथ-साथ, उन्हें अपनी रचनाओं, विशेषकर काव्य रचनाओं की गुणवत्ता पर हमेशा संदेह रहता था। वे स्वयं को कोहरे में भटकते यात्रियों, घने जंगल में संघर्ष करते यात्रियों या बिना किसी विश्वसनीय जानकारी के टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर भटकते यात्रियों की तरह महसूस करते थे, जब तक कि वे एक ऐसे बिंदु पर नहीं पहुँच जाते जहाँ प्रगति असंभव प्रतीत होती थी, जब तक कि उन्हें कोई ऐसा मार्गदर्शक नहीं मिल जाता जिस पर उन्हें भरोसा हो। वास्तव में, ब्रोंटे परिवार को

यह प्रतीत होता था कि अपनी रचनाओं पर राय के बिना, समय व्यर्थ ही बेकार की चीजों पर खर्च हो सकता है। इसलिए, दिसंबर 1836 में शार्लोट ने अपनी कुछ कविताओं को साउथी के मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने का निश्चय किया; और ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने हार्टले कोलरिज से भी परामर्श लिया था।

हालांकि, साउथी द्वारा अपनी बहन के पत्र का उत्तर देने से पहले, ब्रैनवेल ने भी उसी भावना से प्रेरित होकर वर्ड्सवर्थ को संबोधित किया, जिनके लेखन के प्रति उनके मन में बहुत श्रद्धा थी। उनका पत्र निम्नलिखित है; और यद्यपि यह पहले प्रकाशित हो चुका है, फिर भी इसे यहाँ उद्धृत करना आवश्यक है।

‘हॉवर्थ, ब्रैडफोर्ड के पास,

यॉर्कशायर, 19 जनवरी, 1837।

'महोदय,

मैं आपसे अत्यंत विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि आप मेरे द्वारा भेजे गए पत्र को पढ़ें और उस पर अपना निर्णय दें, क्योंकि जन्म से लेकर अपने उन्नीसवें वर्ष तक, मैं एकांत पहाड़ियों में रहा हूँ, जहाँ मुझे न तो यह पता था कि मैं कौन हूँ और न ही मैं क्या कर सकता हूँ। मैं उसी कारण से पढ़ता था जिस कारण से खाता या पीता था—क्योंकि यह प्रकृति की एक वास्तविक तृप्ति थी। मैं उसी सिद्धांत पर लिखता था जिस सिद्धांत पर मैं बोलता था—मन की प्रेरणा और भावनाओं से; और मैं इसे रोक भी नहीं सकता था, क्योंकि जो आता था, वह निकल जाता था और वहीं समाप्त हो जाता था। जहाँ तक आत्म-अभिमान की बात है, वह चापलूसी से पोषित नहीं हो सकता, क्योंकि आज तक दुनिया में आधे दर्जन लोग भी नहीं जानते कि मैंने कभी एक पंक्ति भी लिखी है।

लेकिन अब एक बदलाव आ चुका है, महोदय; और मैं उस उम्र में पहुँच गया हूँ जहाँ मुझे अपने लिए कुछ करना होगा: मेरे पास जो क्षमताएँ हैं, उनका उपयोग किसी निश्चित उद्देश्य के लिए किया जाना चाहिए, और क्योंकि मैं स्वयं उन्हें नहीं जानता, इसलिए मुझे दूसरों से पूछना होगा कि उनका क्या महत्व है। फिर भी, यहाँ कोई ऐसा नहीं है जो मुझे बता सके; और अगर वे बेकार भी हैं, तो अब से समय इतना कीमती होगा कि उसे उन पर बर्बाद नहीं किया जा सकता।

“मुझे क्षमा करें, महोदय, कि मैंने उस व्यक्ति के समक्ष आने का साहस किया है जिनकी रचनाएँ मुझे हमारे साहित्य में सबसे प्रिय हैं और जो मेरे लिए एक विद्वान के

समान रहे हैं, और जिनके समक्ष मैंने अपनी एक रचना रखी है और उनसे उसकी विषयवस्तु पर निर्णय माँग रहा हूँ। मुझे ऐसे व्यक्ति के समक्ष आना ही होगा जिनके निर्णय को कोई चुनौती नहीं दे सकता; और ऐसे ही व्यक्ति वे हैं जिन्होंने कविता के सिद्धांत और व्यवहार दोनों को इस प्रकार विकसित किया है कि आने वाले हज़ार वर्षों तक उनकी स्मृति में स्थान रहेगा।"

महोदय, मेरा उद्देश्य खुली दुनिया में अपनी पहचान बनाना है, और इसके लिए मैं केवल कविता पर ही निर्भर नहीं हूँ— कविता भले ही नाव को रवाना कर दे, पर उसे आगे नहीं ले जा सकती; व्यावहारिक और वैज्ञानिक गद्य, जीवन में साहसिक और सशक्त प्रयास, मुझे दुनिया की नज़रों में और अधिक पहचान दिलाएँगे; और फिर, कविता उस नाम को गौरव से भर देगी; लेकिन इन सब की शुरुआत साधनों के बिना नहीं हो सकती, और क्योंकि मेरे पास ये साधन नहीं हैं, इसलिए मुझे हर संभव प्रयास करके इन्हें प्राप्त करना होगा। निःसंदेह, आज के समय में, जब एक भी कवि लिखने में सक्षम नहीं है, तो अगर कोई बेहतर व्यक्ति आगे आए तो यह क्षेत्र खुला होना चाहिए।

मैं आपको जो भेज रहा हूँ वह एक बहुत लंबे विषय की प्रस्तावना है, जिसमें मैंने तीव्र कल्पना और तीक्ष्ण भावनाओं के साथ संघर्ष करती प्रबल भावनाओं और कमजोर सिद्धांतों को विकसित करने का प्रयास किया है, जब तक कि युवावस्था वृद्धावस्था की ओर बढ़ती है, तब तक बुरे कर्म और क्षणिक सुख मानसिक पीड़ा और शारीरिक विनाश में परिणत होते हैं। अब, इसे पूरा भेजना आपके धैर्य का मज़ाक उड़ाना होगा; जो आप देख रहे हैं, वह एक कल्पनाशील बच्चे के वर्णन से अधिक होने का दावा भी नहीं करता। लेकिन इसे पढ़िए, महोदय; और, जैसे आप घोर अंधकार में किसी को प्रकाश देते हैं - जैसे आप अपनी दयालुता को महत्व देते हैं - मुझे एक शब्द में उत्तर दीजिए, यह बताते हुए कि मुझे आगे लिखना चाहिए या नहीं। अनुचित क्रोध के लिए क्षमा करें, क्योंकि इस मामले में मेरी भावनाएँ ठंडी नहीं हो सकतीं; और विश्वास कीजिए, महोदय, अत्यंत सम्मान के साथ।

आपका अत्यंत विनम्र सेवक,

'पी. बी. ब्रोंटे।'

श्रीमती गैस्केल ने निम्नलिखित छह छंद दिए हैं, जो संपूर्ण रचना का लगभग एक तिहाई हिस्सा हैं, और उन्होंने इन्हें रचना का सबसे बुरा भाग नहीं बताया है:

इसलिए जहाँ वह अपनी उज्ज्वल महिमा में राज करता है,
रात के उन तारों भरे आकाश के ऊपर,
उनके प्रकाशमय स्वर्ग के बीच,
ओह, मैं ऐसा क्यों नहीं हो सकता?
अक्सर क्रिसमस की सुबह जागते समय,
नींदहीन गोधूलि में अकेला पड़ा हुआ,
मेरे मन में विचित्र विचार उमड़ रहे हैं।
उन्होंने मेरे लिए अपनी जान दे दी।
और अक्सर, अपने कमरे में लेटे हुए,
क्या मैंने रोने से खुद को जगाया है?
सपनों से, जहाँ मैंने उन्हें मरते हुए देखा
शापित वृक्ष पर।
और मेरी माँ अक्सर कहती रही हैं,
मैंने अपना सिर उसकी गोद में रखा हुआ था,
उसे डर था कि कहीं मेरा जन्म न हो जाए।
लेकिन अनंत काल के लिए।
इसलिए मैं अपना शीर्षक स्पष्ट रूप से पढ़ सकता हूँ।
आकाश में बने आलीशान घरों तक,
और मैं भय को अलविदा कह दूं।
और मेरी रोती हुई आँखों को पोंछ दो।
मैं इस संगमरमर के पत्थर पर लेट जाऊंगा,
और दुनिया को एक तरफ रख दो,
उसे उसके काले सिंहासन पर देखना
'चंद्रमा अपने गौरवशाली सफर पर है।'

ब्रैनवेल का वर्ड्सवर्थ को लिखा पत्र अधिकतर अच्छी तरह से लिखा गया है और उसमें एक उत्सुकता झलकती है, जो यह दर्शाती है कि वे नौ कवियों के बीच अपनी स्थिति के बारे में एक उच्च और सक्षम विद्वान की राय जानने के लिए कितने उत्सुक थे। यह पत्र हमें उनके पढ़ने और लिखने के उत्साह, उनकी महत्वाकांक्षी मानसिकता और साहित्यिक जगत में उनके विशेष उद्देश्यों के बारे में बताता है। हालांकि कविताएँ

प्रारंभिक भक्ति की प्रबल भावना से ओतप्रोत थीं, फिर भी वर्ड्सवर्थ के लिए उनका निष्पक्ष रूप से मूल्यांकन करना निराशाजनक हो सकता था, और संभवतः उन्होंने खुले तौर पर स्वीकार करने के बजाय चुप रहना बेहतर समझा, क्योंकि अगर पीड़ा देनी ही थी तो उन्होंने पीड़ा देने के बजाय चुप रहना ही बेहतर समझा। या शायद उन्होंने उस युवा अजनबी के पत्र में दिखाई देने वाली सहज स्पष्टता और स्पष्ट आत्म-सम्मान को गलत समझा, जिसने अपने शब्दों को इतने आत्मविश्वास से व्यक्त किया था, जबकि उसने अपनी प्रतिभा का कोई प्रमाण नहीं दिया था। लेकिन, किसी भी तरह, श्रीमती गैस्केल हमें बताती हैं कि कवि ने ब्रोंटे बहनों के प्रसिद्ध होने तक पत्र और छंदों को संरक्षित रखा था, और उन्होंने 1850 में यह संदेश अपने मित्र श्री क्विलिनन को दिया था, जब 'कुरर बेल' का असली नाम ज्ञात हुआ था।

इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए कि श्रीमती गैस्केल द्वारा प्रकाशित छंदों में हमें ब्रैनवेल की नाटकीय प्रतिभा का अध्ययन करने का अवसर नहीं मिलता, जिसे उन्होंने अपनी कविता में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया था। उनमें ब्रैनवेल द्वारा वर्णित उन भावुक भावनाओं के प्रभाव का कोई विकास नहीं है: 'उच्च कल्पना और तीव्र भावनाओं से जूझना' और अंत में 'मानसिक पीड़ा और शारीरिक विनाश'।

हालांकि, लंबे इंतजार से निराश होकर, या मित्रवत सलाह और आलोचना से प्रेरित होकर, उन्होंने चुपचाप अपने साहित्यिक कार्यों में, कला की तरह ही, परिश्रम किया। वर्ष 1837 शार्लोट के लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष साबित हुआ। मार्च में, उन्हें अंततः साउथी से उत्तर मिला, जिसे उन्होंने 'थोड़ा कठोर' माना और जिससे उन्होंने सकारात्मकता प्राप्त की। लॉरिएट को दिए अपने उत्तर में वह कहती हैं, 'मुझे उम्मीद है कि अब मुझे अपना नाम छपा हुआ देखने की कभी इच्छा नहीं होगी... वह पत्र पवित्र है; उसे पापा, मेरे भाई और मेरी बहनों के अलावा कोई नहीं देखेगा।'

ऐसा प्रतीत होता है कि वर्ड्सवर्थ के साथ अपने पहले प्रयास की विफलता के बावजूद, ब्रैनवेल ने बाद में कुछ अन्य, और अधिक परिपक्व रचनाओं के साथ पुनः प्रयास किया, जिन्हें उन्होंने उस कवि और हार्टले कोलरिज को प्रस्तुत किया, जिनके बारे में श्रीमती गैस्केल कहती हैं, 'दोनों ने ही प्रशंसात्मक और सराहनीय राय व्यक्त की।' लेकिन, शायद, इस तथ्य ने कि वर्ड्सवर्थ ने ऊपर उद्धृत पत्र का कोई उत्तर नहीं भेजा और उन्हें यह नहीं बताया कि उन्हें 'लिखना जारी रखना चाहिए या नहीं', ब्रैनवेल को कुछ समय के लिए हतोत्साहित कर दिया; और उन्हें यह संदेह होने लगा होगा कि

उनकी रचनाएँ व्यर्थ हैं, और अब समय 'इन पर बर्बाद करने के लिए बहुत कीमती है।' इस तरह, शायद, उन्हें अपनी कला के पेशे की ओर अधिक ऊर्जा के साथ मुड़ने के लिए प्रेरित किया गया, ताकि वे अपना जीवन यापन कर सकें, जिसका मैंने पिछले अध्याय में उल्लेख किया था, हालाँकि हम देखेंगे कि उन्होंने अपने साहित्यिक कार्य को नहीं छोड़ा।

ब्रैनवेल को अब यॉर्क और लैंकेस्टर काउंटियों की पर्वतीय सीमाओं के भव्य और जंगली दृश्यों से परिचित होने के अवसर भी मिलने लगे, जो कि उनकी बहनों की पहुंच से कहीं अधिक विस्तृत क्षेत्र था।

उस समय मैनचेस्टर और लीड्स रेलवे का निर्माण कार्य लिटिलबोरो के नीचे चल रहा था, जो सुरम्य और रमणीय टॉडमॉर्डन घाटी से होकर गुजरता था। ब्रैनवेल को इस कार्य में बहुत रुचि हो गई; और चूंकि हेब्डेन ब्रिज तक लाइन को पूरा करने के लिए आवश्यक सामान और अन्य सामग्री लिटिलबोरो से नहर के माध्यम से भेजी जा रही थी, जिसे पहले मैनचेस्टर से ट्रेन द्वारा भेजा गया था, इसलिए उन्होंने जल्द ही नाविकों से दोस्ती कर ली और उन्हें अक्सर उनकी नावों में देखा जाने लगा। इन्हीं में से एक अवसर पर, पहले उल्लेखित श्री वूलवेन, जो आधिकारिक तौर पर निर्माण कार्य में कार्यरत थे, ने होल्बोर्न के 'कैसल टैवर्न' में अचानक आए उस चतुर युवक को तुरंत पहचान लिया और उससे बातचीत शुरू कर दी। इन घटनाओं के कारण उनके बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुए, जो कई वर्षों तक जारी रहे।

ब्रैडफोर्ड में ब्रैनवेल के परिचितों में, पहले उल्लेखित मेज़ोटिंटो-एनग्रेवर गेलर के अलावा, प्रशंसनीय भूदृश्य चित्रकार विल्सन एंडरसन भी शामिल थे, जिनकी कृतियों को उनके द्वारा चित्रित स्थानों के सत्यपूर्ण चित्रण और उनकी कुशल कलाकारी और रंग-निर्माण के कारण सराहा जाता है; और साथ ही प्रसिद्ध और उत्कृष्ट चित्रकार रिचर्ड वालर भी। इनके अलावा, स्थानीय कवि एडवर्ड कॉलिंसन; रॉबर्ट स्टोरी; और ब्रैडफोर्ड के भावी इतिहासकार जॉन जेम्स भी थे। ये सभी ब्रैनवेल और लेलैंड दोनों के निजी परिचित थे, और उनके बीच अक्सर संपर्क बना रहता था। बीस वर्षों से अधिक समय तक, इन मित्रों का एक समूह समय-समय पर ब्रैडफोर्ड के 'जॉर्ज होटल' में मिस रेनी के संरक्षण में मिलता रहता था, जिन्हें अपने घर में खाली समय में आस-पड़ोस की कलात्मक और साहित्यिक हस्तियों को देखकर बहुत गर्व होता था। लेलैंड कुछ स्मारकों का निर्माण करवाने के लिए हैलिफ़ैक्स में थे, जिन्हें उन्होंने अपने गृह नगर के

विभिन्न संरक्षकों के लिए लंदन में तैयार करवाया था। वहीं रहते हुए, उन्होंने एक प्राचीन मकान के ऊपरी कमरे में अपने विशाल 'अफ्रीकी ब्लडहाउंड' समूह का मॉडल बनाया। उनका मॉडल इस नस्ल का एक जीवित कुत्ता था। लंदन में प्रदर्शित इस समूह को काफी सराहना मिली। लैंडसियर ने इसे 'अपनी तरह की सबसे उत्कृष्ट आधुनिक कृति' माना। यह अब सैलफोर्ड संग्रहालय में है। इस समूह की प्रगति में ब्रैनवेल और उनके ब्रैडफोर्ड के मित्रों की गहरी रुचि थी; और वे अक्सर लेलैंड के अस्थायी स्टूडियो में आते थे। यह डियर्डन की एक कविता का विषय भी बना। अपने एक विशाल कार्य - 'थ्रेसियन फाल्कनर्स' समूह - के लिए इस स्टूडियो की ऊंचाई अपर्याप्त पाकर, लेलैंड ने बाद में शहर के दूसरे हिस्से में एक उपयुक्त स्थान ले लिया, जो स्थानीय साहित्यकारों का मिलन स्थल बन गया। नई कृति में तीन आकृतियाँ शामिल थीं, जिनमें से मध्य आकृति बैठी हुई थी और उसकी दाहिनी तर्जनी उंगली पर एक बाज़ था; उसका बायाँ हाथ एक ऐसे युवक के कंधे पर टिका था जो किसी अचानक ध्वनि से जागृत हुआ प्रतीत हो रहा था; और उसके दाहिनी ओर एक समान युवक अर्ध-लेटी हुई मुद्रा में, सुनने की मुद्रा में था। केवल मध्य आकृति ही पूर्ण हुई और अब वह सैलफोर्ड संग्रहालय में है।

ब्रैनवेल, कलाकार के स्टूडियो में अपनी यात्राओं के दौरान, अक्सर अपनी कलात्मक आशाओं के टूटने पर शोक व्यक्त करते थे और स्वीकार करते थे कि उन्हें इस बात का गहरा दुख है कि अपनी क्षमताओं पर उनका भरोसा कितना गलत साबित हुआ था। लेकिन मूर्तिकार एक कवि भी थे, और इस प्रकार ब्रैनवेल और वे एक ही क्षेत्र में काम करते थे। लेलैंड की कई कविताएँ यॉर्कशायर के समाचार पत्रों और 'मॉर्निंग क्रॉनिकल' में प्रकाशित हुईं और हमेशा सच्ची काव्य उत्कृष्टता की मानी जाती थीं। ब्रैनवेल साहित्यिक मामलों में कलाकार के निर्णय पर बहुत भरोसा करते थे और अक्सर अपनी रचनाएँ उन्हें प्रस्तुत करते थे।

हालांकि ब्रोंटे ने, जैसा कि हम देख चुके हैं, एक उच्च कलात्मक करियर की आशा छोड़ दी थी, फिर भी वे चित्रकारी के अभ्यास से जुड़े रहे, और इससे उन्हें कला के प्रति सजग रहने का समय मिला। निम्नलिखित उनकी सबसे प्रारंभिक कविताएँ हैं, जिनकी पांडुलिपियाँ मेरे पास हैं; और ये केवल अंश हैं। पहली ग्यारह पंक्तियों की एक कविता है, जो 23 जनवरी, 1838 की है, जो मूल रूप से साठ पंक्तियों की एक कविता का समापन थी;

'इस दृश्य को दुखों की एक श्रृंखला ने घेर लिया है।'
और तारों भरे आकाश को छुपा दो;
लेकिन ऐसे सभी बादल जो बीच में बाधा डालते हैं
नश्वर जीवन से उत्पत्ति प्राप्त करें।
और— हे भगवान! मुझे मुस्कुराने का मौका मिला!
उनके दुखों के तूफान मुझ पर कहर बरपाते हैं,
जब मुझे इतना पक्का पता है
उस दौरान तुम प्रकाश बिखेरते रहोगे;
कि अंततः, जब वे चले जाएंगे,
मैं तेरे सिंहासन की महिमा देखूंगा।
अब की तुलना में कहीं अधिक उज्ज्वल स्थिति थी।

ब्रैनवेल द्वारा इक्कीस वर्ष की आयु में लिखा गया यह अंश उनके प्रारंभिक मनभाव की विशेषता दर्शाता है। उनका स्वभावतः सौम्य और संवेदनशील था, लेकिन जल्द ही उनके जीवन को घेरने वाली ईसाई धर्मपरायणता की भावना से वे परिपूर्ण हो गए। उस समय वे नेक भावनाओं और उच्च आकांक्षाओं से भी भरे हुए थे; परन्तु उनके स्वभाव में समाई उदासी की छाया उनके लेखन को प्रभावित करने लगी थी। निम्नलिखित अंश, जो एक अन्य कविता की शुरुआत है, संभवतः इसी प्रकार के चिंतनशील भाव में लिखा गया होगा, यद्यपि मेरे पास उपलब्ध अंश में इसका शीर्षक स्पष्ट नहीं है।

मृत्यु की विजय।
मई, 1838।
'ओह! इस पहली उज्ज्वल मई दिवस की सुबह,
इससे हमारी धरती स्वर्ग में परिवर्तित हो जाती प्रतीत होती है।
मेरी अपनी कड़वी सोच को सहन किया जाए।
इस भीषण सर्दी के कारण!
इस धरती की तरह, मेरा मन भी इसी प्रकार निर्मित हो।
अपने चारों ओर फैलती ताजगी को महसूस करना,
इसे जगाने के लिए किसी अन्य सहायता की आवश्यकता नहीं है।
तेरी उस आनंदमय रोशनी से भी अधिक, जो इतने लंबे समय से प्रतीक्षित थी।

जंगल की मीठी धूप! - तुम्हारे सिवा कोई नहीं
स्मृति के आनंद को जागृत कर सकता है,
जो क्षय की ओर अग्रसर प्रतीत हो रहा था, जैसे सब कुछ क्षय होता है।
'ओह! काश वे भी तुम्हारी तरह खिल उठें,'
गर्मी का मौसम नजदीक आने की उम्मीद के साथ!
नहीं— मुझे अपने थके हुए माथे को महसूस करने दो—
वहाँ घुंघराले बाल कहाँ हैं?
इसे छाया देने वाला हाथ क्यों कांपता है?
ये सुस्त अंग क्यों परहेज करते हैं?
सुबह की धूप में उनकी सैर?
हे नश्वर आत्मा! क्या तू छल कर सकता है?
जैसे बहन-आत्मा! लेकिन रूप अस्वीकार करते हैं
वास्तविक और अवास्तविक के बीच भ्रम पैदा करना।
लेकिन, कल्पना की सनक के साथ, वह
यह बीते हुए समय की चीजों को भविष्य की चीजों से जोड़ता है।
मुझे खुद भी शक है कि मैंने बताया है या नहीं।
मेरी दुखों और चमत्कारों की कहानी समाप्त हुई,
या सोचें कि उसका जादू प्रकट हो सकता है
इससे पहले खुशियों का एक मायावी मार्ग —
या, इस मई दिवस की आग के नीचे दबे हुए —
पूछो, "क्या मैं बीते दिनों को फिर से जी सकता हूँ?"
क्या मैं गाम्बिया के बगल में बैठा बच्चा हूँ?
क्या यह जंगल दूर-दूर तक लहरा रहा है?
क्या मेरे कदमों की आहट स्वतंत्र है?
क्या यह बचपन की खुशी भरी हंसी है?

इस सुंदर रचना में हमें ब्रैनवेल के स्वयं द्वारा निर्मित दुखों की पहली भावुक अभिव्यक्ति मिलती है, जो भीतर से उत्पन्न होकर, उनके मन के हर विचार को गहरे अंधकार में डुबो देती है। यहाँ हम उन्हें एक क्षण के लिए प्रारंभिक उदासी में डूबे हुए देखते हैं, मानो वे मानसिक निराशा के रेगिस्तान में खड़े हों; लेकिन अतीत के प्रति

स्नेह से भरे भाव से वे बीते दिनों की खुशियों को विलाप भरे शब्दों में याद करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे यहाँ आत्मा के रहस्यों में उन सुखों और आशाओं की खोज कर रहे हैं जो उनका नश्वर शरीर उन्हें नहीं दे सकता। जैसा कि मैंने पहले बताया है, ब्रैनवेल अपनी बहनों की मृत्यु की दुखद परिस्थितियों को कभी नहीं भूले; और इन घटनाओं पर उनके एकांत चिंतन ने उनकी रचनाओं को एक निराशावादी स्वर दिया। सन् 1838 में उन्होंने 'नॉर्थेंगरलैंड' उपनाम अपनाया। उनकी प्रारंभिक कविताएँ, यद्यपि कभी-कभी कुछ शक्ति दर्शाती थीं, ब्रोंटे साहित्य की चमक में इजाफा करने के लिए पर्याप्त रूप से प्रतिभाशाली नहीं थीं।

श्रीमती गैस्केल, उस समय ब्रैनवेल की साहित्यिक प्रतिभा का उल्लेख करते हुए कहती हैं: “उनकी पांडुलिपि के एक अंश में, जिसे मैंने पढ़ा है, अभिव्यक्ति की ऐसी सटीकता और सुंदरता है जो अत्यंत प्रभावशाली है। यह एक कहानी की शुरुआत है, और इसमें पात्रों का चित्रण विशिष्ट चित्रकारी की तरह किया गया है, वह भी एकदम शुद्ध और सरल भाषा में, जो एडिसन के ‘स्पेक्टेटर’ में प्रकाशित कई लेखों की विशेषता है। अंश इतना छोटा है कि यह आंकलन करना संभव नहीं है कि उनमें नाट्य प्रतिभा कितनी थी, क्योंकि कहानी के पात्रों के बीच संवाद नहीं है। लेकिन कुल मिलाकर, शैली की सुंदरता और संयम ऐसा है जिसकी इस उग्र और दुर्भाग्यशाली युवक से अपेक्षा नहीं की जा सकती थी।” श्रीमती गैस्केल आगे कहती हैं, “उनके हृदय में साहित्यिक प्रसिद्धि पाने की ऐसी प्रबल इच्छा थी जो उनकी बहनों में कभी-कभार ही झलकती थी।” वे यह भी कहती हैं कि “उन्होंने अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए विभिन्न प्रयास किए... और वे अक्सर ‘लीड्स मर्करी’ में कविताएँ लिखते थे।” हालाँकि, यह अंतिम कथन गलत है, क्योंकि ब्रैनवेल की कोई भी रचना उस पत्रिका में प्रकाशित नहीं हुई है।

अध्याय 14.

‘कैरोलाइन’ पर कविताएँ।

ब्रैनवेल की प्रतिभा का काव्यात्मक झुकाव — 'कैरोलिन की प्रार्थना' — 'कैरोलिन पर' — 'कैरोलिन' — इन प्रारंभिक रचनाओं की आत्मा।

जैसा कि पिछले अध्याय में बताया गया है, ब्रैनवेल अपने खाली समय में और अन्य अनियमित कार्यों में व्यस्त रहते हुए अपनी प्रतिभा के काव्य झुकाव को आगे बढ़ा रहे थे और अपनी भाषा और छंदों में सुधार करने का प्रयास कर रहे थे। उनकी प्रारंभिक काव्य रचनाओं में से, संभवतः निम्नलिखित सर्वश्रेष्ठ हैं। ये रचनाएँ विचारों और चिंतन की समान श्रृंखला, भक्ति और श्रद्धा की समान भावनाओं, और साथ ही उनकी बहनों की कविताओं में व्याप्त उदासी और निराशा की समान भावना से विख्यात हैं। वास्तव में, यह जाने बिना कि ये वास्तव में ब्रैनवेल की रचनाएँ हैं, हम आसानी से इन्हें शार्लोट, एमिली या ऐनी की रचनाएँ मान सकते हैं।

निम्नलिखित तीन काव्य रचनाएँ ‘कैरोलाइन’ पर आधारित हैं, जिनके द्वारा ब्रैनवेल अपनी बहन मारिया का उल्लेख करते हैं; और इनमें से दो में, वे उनकी मृत्यु और अंतिम संस्कार की यादों को दर्ज करते हैं। तीनों में से पहली रचना, जिसे उन्होंने एक बच्चे की भावनाओं और शब्दों में ढाला है, का शीर्षक है:

कैरोलिन की प्रार्थना,
या फिर बचपन से स्त्रीत्व में परिवर्तन।
मेरे पिता, और मेरे बचपन के मार्गदर्शक!
यदि मैं अक्सर तुझसे दूर भटक गया हूँ;
भले ही तेरा इकलौता पुत्र मर गया हो
मुझ जैसे बच्चे को मृत्यु से बचाने के लिए;
‘ओह! फिर भी—जब मेरा हृदय तेरी ओर मुड़ता है
दुःख के क्षणों में, जो अब अक्सर आते हैं —
हे ईश्वर, तुम वही ईश्वर बनो जो तुम कभी थे।

और मेरे हृदय को शांत करो, और मेरे माथे को साफ करो।
मैं अब छोटा बच्चा नहीं रहा
तेरे शक्तिशाली पंखों की छाया में;
अब तो मेरे सपने भी और भी ज्यादा बेकाबू लगने लगे हैं।
उन नींदों की तुलना में जो मुझे पहले लाती थीं।
मैं और अधिक देखता हूँ — मैं और गहराई से महसूस करता हूँ —
आशा अधिक प्रबल है, लेकिन हृदय पहले की तरह कोमल नहीं है;
और पुरानी चीजें नए रूप प्रकट करती हैं,
सब कुछ विचित्र रूप से चमकीला या विकृत हो गया।
मैं जीवन की खुली लहरों में प्रवेश कर रहा हूँ;
तो—बचपन के दिव्य किनारों को अलविदा!
और, हे मेरे पिता, कृपा करके मेरा मार्गदर्शन करें।
कैरोलीन, इन विशाल जलमार्गों के बीच से होकर गुजरो!
दूसरा यह है:

कैरोलिन पर।
'तेरे पैतृक महल का प्रकाश,
थाई कैरोलिन, अब मुस्कुराती नहीं है:
उसने अपने महल को कफ़न में बदल दिया है।
उनके बगीचे के रास्ते चर्च के गलियारों के लिए उपयुक्त हैं:
अनंत नींद ने उसके सीने को शांत कर दिया है
जहां शांति और आनंद ने अपना मंदिर बना लिया;
उसका सुनहरा सिर आराम करने के लिए नीचे झुक गया है।
काश, वह विश्राम मुझे और शांत कर देता!
'तुम्हें, बिस्तर की रखवाली करते हुए'
जहां वह मूक और गतिहीन पड़ी थी,
आधी रात के वो पल कितनी धीमी गति से बीतते हैं!
सूरज की रोशनी के बिना ही दिन की शुरुआत हुई!
न ही उसने सुबह की किरण की ओर अपनी आँखें खोलीं।

हालांकि तुम्हारे चारों ओर सभी लोग उसकी उपस्थिति से जाग उठे थे;
और न ही तेरे कौवे के पंखों वाले सपने को तोड़ा।
ताबूत, कफ़न और समाधि के बारे में।
'जब उसका सीना शांत है तो तुम अपना सीना क्यों पीट रहे हो?'
उसके चले जाने के बाद तुम क्यों रुके हुए हो?
क्या तुम अच्छे या बुरे की आशा करते हो?
क्या अकेले ही साथी की तलाश करना संभव है?
शायद तुम कब्रिस्तान के पत्थर के बारे में सोच रहे हो
बीते समय की मुस्कान छुपा सकते हैं और आहों को दबा सकते हैं:
वह स्मृति, अपनी आत्मा के साथ, उड़ गई है;
तुम उसे वहीं छोड़ सकते हो जहाँ वह पड़ी है।
नहीं! आनंद तो बस एक छाया मात्र है।
इसकी स्मृति का मिट जाना ही बेहतर है;
लेकिन चिंताएं, जो जीवन की विजेता होती हैं, कभी दूर नहीं होतीं।
उनकी वास्तविकता इतनी सशक्त है!
तुम उस दिन को भूल सकते हो जिसने दिया
वह सौंदर्यपूर्ण संतान तुम्हारे साथ है,
लेकिन वह क्षण नहीं जब कब्र
तुमने अपनी उधार ली हुई दुल्हन को वापस ले लिया।

हालांकि ब्रैनवेल ने अभिव्यक्ति के रूप और हानि की परिस्थिति को बदल दिया है, फिर भी वह पारिवारिक शोक के उसी विषय से जुड़े हुए हैं, जिससे शार्लोट स्वयं बहुत प्रभावित थीं।

निम्नलिखित अंश एक लंबी कविता के पहले अध्याय के रूप में लिखा गया था। इसका शीर्षक भी 'कैरोलीन' है; और यह 'हैरियट' नामक एक पात्र का एकालाप है, जो अपनी बहन, जो कविता का विषय है, के लिए शोक व्यक्त करती है और दिवंगत बहन की मृत्यु और अंतिम संस्कार की अपनी प्रारंभिक यादों को याद करती है। यह अत्यंत संभव है कि ब्रैनवेल ने 'हैरियट' को शार्लोट या एमिली के भावों को व्यक्त करने के लिए एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया हो, क्योंकि उन्होंने मारिया के लिए 'कैरोलीन' नाम अपनाया था।

कैरोलाइन।
दिन ढलते ही मौसम शांत और साफ हो जाएगा।
यह वातावरण में अपनी चमक बिखेरता है।
तिरछी धूप चमक रही थी,
दूर तक फैली छायाओं के साथ मिश्रित:
नदी धीरे-धीरे बहती है, उसकी झलक फीकी पड़ जाती है।
धीरे-धीरे इसका जल अपना नृत्य करना बंद कर देता है,
जैसे-जैसे शाम की खामोशी बढ़ती गई
यह हमारे परिश्रम को बताता है कि विश्राम निकट है।
ऐसी चुप्पी क्यों बरती जा रही है?
क्या यह गर्मी के दिन की गिरावट है?
क्या हमारी पृथ्वी को स्वर्ग का कुछ अंश महसूस होता है?
क्या प्रकृति की आवाज प्रार्थना कर सकती है?
और जब दिन के काम पूरे हो जाते हैं,
अपने सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के सिंहासन के नीचे।
क्या दोपहर की धूप जा चुकी है?
क्या इसका कर्ज मुस्कान से चुकाया जा सकता है?
'पवित्र आनंद की शांत हवाएँ
इन जंगली जंगलों में सांस लेते हुए,
नश्वर पागलपन के भंवर के ऊपर
बच्चे की नींद को फैलाओ:
पेड़ों के ये चारों ओर फैले हुए क्षेत्र
शाम की हवा के साथ झूमते हुए,
दूर के समुद्रों जैसी आवाज के साथ,
संगीत को मधुर बनाना।
उनके ऊपर वुडचर्च हॉल नीचे उतर रहा है
मोती जैसे चमकीले आकाश के बीच गहरा रंग,
अपनी ऊँची-ऊँची चिमनियों के समूह के साथ,

गुजरते समय हवा को जगा देता है:
और पूर्वजों की पुरानी शान में,
उस प्राचीन कथा के दृश्य के चारों ओर,
इसके सभी विशाल और प्राचीन बलूत के पेड़,
अपनी शाखाओं को ऊपर की ओर लहराते हुए।
''उन छज्जों के बीच एक है —
दिन ढलने के बाद सबसे जल्दी अंधेरा हो जाता है —
जब शरद ऋतु की हवाएँ सबसे तेज़ होती हैं,
सबसे ज्यादा कराहने की आवाज आती है और सबसे लंबे समय तक गूंजती है।
वहाँ—सूरज डूबते सूरज की हवा जैसी घुंघराले बालों के साथ,
सब कुछ सुहावना, उज्ज्वल और सुंदर लग रहा है —
हैरियट एक गाल पीछे की ओर झुकाकर बैठी है।
बांह पर पहाड़ की बर्फ की तरह सफेद;
जबकि, एक तीव्र उभार के साथ, उसका मन
बहुत पहले की यादों से भर जाता है।
'जैसे उस मीनार से अंतिम संस्कार की घंटी बज रही हो,
आकाश में इसकी शोक की घंटी गूंज रही है,
जीवन के अनिश्चित दिनों के बारे में चेतावनी देता है
निर्जीव प्रकृति की तरह ही क्षय होना स्वाभाविक है;
और उसे बताता है कि चेतावनी गहरी है
वह उस स्थान पर बोलती है जहाँ उसके अपने पूर्वज सो रहे हैं।
और जहाँ विनाश शिकार बनाता है
जो कभी उसके लिए यह दुनिया थी,
लेकिन जो—मिट्टी के अन्य देवताओं की तरह—
इसने अपने अंधभक्त को धोखा दिया है:
उभरे हुए स्तनों और चमकती आँखों के साथ
जो लापरवाह आकाश को फटकारते प्रतीत होते हैं,
वह शब्दों के माध्यम से राहत पाने का प्रयास करती है।
लंबे समय से दबे हुए शोक के भावों के लिए।

समय के बादल छंट जाते हैं, और स्मृति का प्रकाश
अचानक मेरी आंखों के सामने आ गया;
उन विचारों के लिए, जिन्हें शब्दों में कभी व्यक्त नहीं किया जा सकता,
उस अंतिम संस्कार की घंटी में ध्वनि ढूंढो।
आज शाम मेरा दिल भावनाओं से भरा हुआ प्रतीत हो रहा था।
फिर भी मुझे कुछ भी स्पष्ट रूप से पता नहीं चला;
सांसों में ध्वनि अपरिभाषित
मेरे विचार से यह ईओलियन संगीत है:
फिर वो घंटी बजती है, और सब कुछ शांत हो जाता है।
एक सामंजस्य में, जो सहजता से बहता है
सपने की तरह मधुर और गंभीर
एक यादगार अंत्येष्टि भजन का।
यह दृश्य किसी जादुई कांच जैसा प्रतीत हो रहा था।
जो उसके बादलों से ढके चेहरे पर अंकित था
अजीबोगरीब परछाइयाँ जो आँखों को धोखा देती थीं
जिनके स्वरूपों की परिभाषा अनिश्चित है;
वह घंटी बूढ़े एग्रीप्पा की जादुई छड़ी है।
जो बादलों को दोनों ओर से अलग करता है,
और विनाश के चित्रित रूपों को दर्शाता है
अंधकार में क्षणिक प्रकाश:
हाँ— यह बीते वर्षों का एक दृश्य दिखाता है—
दबे हुए आंसुओं का झरना खुल जाता है —
और स्मृति के गहन विचारों को जागृत करता है
सोते हुए सपनों को - भुलाया नहीं गया है।
यह मुझे गर्मी के दिनों की याद दिलाता है।
इस प्रकार अपनी विदाई की किरण बिखेरते हुए,
आसमान इतना चमकीला और शांत था,
और पहाड़ नीले रंग के, और वन हरे रंग के।
“अहा, मुझे वह घंटा अच्छी तरह याद है।”

जब मैं ठीक इसी तरह बैठकर निहार रहा था,
उस लता-ढकी मीनार की ओर
नीचे लहराते इन फूलों के बीच!
नहीं—ये फूल नहीं—ये तो बहुत पहले ही मुरझा चुके हैं।
और फूल खिले, खिले और मुरझा गए।
क्योंकि सिर को घेरने वाले बालों को उखाड़ दिया गया था
उस गिरजाघर के पत्थर के नीचे रखा हुआ!
मैं झुककर एक गुलाब तोड़ने लगा जो उगा हुआ था।
इस खिड़की के बगल में, फिर हाथ हिलाते हुए;
लेकिन मेरा छोटा हाथ वापस पीछे हट गया।
आंतरिक पीड़ा की किसी प्रकार की निंदा से;
क्योंकि जिसने इसे प्यार किया था वह वहां नहीं थी।
अपनी कबूतर जैसी आंखों से मुझे परखने के लिए,
और किसी चीज़ ने मेरे दिल को सहन करने के लिए प्रेरित किया।
उसे सबसे ज्यादा पसंद आने वाली गुलाब की कली जिसे वह नष्ट कर देती थी।
क्या वो घंटी थी— वो अंतिम संस्कार की घंटी?
क्या हवा में उदासी भरी आवाज सुनाई दे रही है?
क्या वह उदासी भरी घंटी थी?
सबसे पहले किस बात ने मेरे मन में दुःख की अनुभूति जगाई?
मैंने अपने शोक वस्त्रों पर नजर डाली
जब तक मेरा दिल बचकाने डर से धड़कता रहा,
और— अपने अकेलेपन से भयभीत होकर—
मैंने देखा, कुछ जानी-पहचानी आवाजें सुनाई दीं।
लेकिन बाहर सब खामोश थे
दोपहर की धूप भरी खामोशी,
और अंदर केवल दबी हुई कदमों की आवाज सुनाई दे रही थी
धीरे-धीरे और शांतिपूर्वक उनका निधन हो गया।
मुझे वह विस्मय अच्छी तरह याद है।
जिसके बाद मैं वहां से जल्दी से रवाना हो गया;

और, जैसे ही मैं दौड़ा, सहज शुरुआत
जिससे मुझे मेरी माँ का रूप दिखाई दिया,
काले वस्त्र पहने, पीला चेहरा लिए हुए,
और गाल और रुमाल आंसुओं से भीगे हुए थे।
जैसे ही वह मेरे चेहरे को चूमने के लिए झुकी
और मेरे अनिश्चित भय को शांत कर दूं।
“वह मुझे अपने शोक वस्त्र में ले गई,”
मूक गलियारों से होते हुए, एक कमरे तक,
जिनके काले पर्दों के नीचे भीड़ लगी हुई थी,
झुकी हुई आँखों और उदासी से भरे माथे के साथ,
मेरे परिचित रिश्तेदार; जबकि — सिर के साथ
अपनी बहन के बिस्तर पर झुकते हुए —
मेरे पिता की कठोर आँखों से एक आँसू बह निकला।
वहाँ रखे ताबूत पर।
मेरी माँ ने मुझे उठाकर दिखाया
उस ताबूत के अंदर क्या हो सकता है?
और, इस क्षण तक, मैं महसूस कर सकता हूँ
वह खामोश सिसकी— वह भयानक ठंड—
जिससे मैंने अपना पीला पड़ा चेहरा छुपा लिया
उसके आलिंगन की प्यारी परतों में;
क्योंकि मैं अपना सिर घुमाने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहा था।
कहीं उसकी नम आंखें उस बिस्तर को न देख लें।
‘लेकिन, हैरियट,’ मेरी माँ ने कोमल स्वर में कहा,
अपनी बहन और मेरे बच्चे को देखो
एक पल रुकिए, इससे पहले कि उसका रूप छिप जाए
हमेशा के लिए ‘ताबूत के ढक्कन के नीचे!’
मैंने अपील सुनी और जवाब भी दिया;
क्योंकि मैं विदाई देने के लिए नीचे झुक गया।
लेकिन, जैसे ही मैंने देखा, मैं डर को भूल गया।

सौम्य और जादुई आनंद में।
“वह तब भी वहीं लेटी थी, जैसे अब लेटी है।”
तब से शरीर का एक भी अंग नहीं हिला है।
स्वप्नहीन नींद में बंद, वे आँखें
कि शायद वह फिर कभी जाग न पाए।
वह लेटी हुई थी, ठीक वैसे ही जैसे मैंने उसे लेटे हुए देखा था।
इससे पहले कई खुशनुमा रातों में,
जब मैं विनम्रतापूर्वक घुटने टेककर बैठा था—
वह जिसे आराधना करना सिखा रही थी:
ओह, ठीक वैसे ही जैसे मैंने उसके सामने प्रार्थना की थी,
और उसने मेरी प्रार्थना स्वर्ग तक पहुंचा दी।
वह अपने सिर पर फूल रखे लेटी हुई थी।
हालांकि, औपचारिक कफ़न के कपड़ों ने उसके बालों को छिपा रखा था!
फिर भी उसके होठों पर मुस्कान बरकरार थी
जिसने उन्हें उस समय अलग कर दिया जब उम्मीदें चरम पर थीं।
दर्द से उसकी भौंहें अभी भी सिकुड़ी हुई लग रही थीं।
जब सभी को लगा कि वह मर नहीं सकती।
और, हालांकि उसका बिस्तर तंग और अजीब लग रहा था,
उसके बेहद चमकीले गाल अब पूरी तरह फीके पड़ गए थे।
मेरी छोटी आँखों ने शायद ही कोई बदलाव देखा हो।
उन घंटों से जब चांदनी से उसका माथा पीला पड़ जाता था।
और फिर भी मुझे ऐसा महसूस हुआ—और मैं मुश्किल से बोल पा रहा था—
ठंडा चेहरा, लड़खड़ाती सांसें,
जब मेरा हाथ संगमरमर के गाल को छू गया
जो बिल्कुल निष्क्रिय रूप से नीचे पड़ा हुआ था।
डर के मारे मेरी सांस फूल गई और मैंने हांफते हुए कहा, 'बोलो, कैरोलीन!'
और मैंने अपनी बहन को उठने के लिए कहा;
लेकिन उसने मेरी आवाज़ का जवाब नहीं दिया।
न ही उसने अपनी सोई हुई आँखें खोलीं।

फिर मैं अपनी माँ की ओर मुड़ी।
और उससे प्रार्थना की कि वह फोन करे;
लेकिन, हालांकि उसने अपने दर्द को छिपाने की पूरी कोशिश की,
इससे उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।
उसने मुझे अपने दर्द भरे स्तनों से सटा लिया।
मानो उसका दिल टूट जाएगा,
और बाकी सब पर चुपचाप झुका रहा।
जिसे वह जगा नहीं सकी:
शेष बचे हुए लोग, जिनके बीते हुए वर्ष
उसकी आत्मा ने व्यर्थ ही प्रतीक्षा की थी;
मां की आशाओं और आशंकाओं का अंत,
और सुख और दुख।
"वे आए—उन्होंने ताबूत का ढक्कन दबाया"
मेरी कैरोलिन के ऊपर,
और फिर, मुझे लगा, मैं हमेशा के लिए छिप गया
मेरी बहन का चेहरा मेरे चेहरे से!
एक क्षण के लिए शुरुआत बेकाबू हो गई थी —
एक और व्यक्ति जिसे अच्छी तरह से याद किया जाता है —
जब पहली बार मेरे निर्मल हृदय से
पीड़ा के आंसू बह निकले:
विचारों का वह सैलाब जो भरता हुआ प्रतीत होता था
धड़कता हुआ दिल, उमड़ती हुई आंखें,
जबकि वर्तमान में मौजूद सभी अच्छी या बुरी चीजें मिट जाती हैं
बीते हुए समय की यादों से पहले।
बाकी सब कुछ खाली सा लगता है— शोक जुलूस,
दु:खों का गौरवपूर्ण जुलूस,
गिरजाघर के प्रांगण के मेहराब के नीचे का मार्ग,
शो देखने आए दर्शक।
ट्रेन के बीच में मेरी जगह या मेरे विचार

मैं याद करने की कोशिश करता हूँ, लेकिन व्यर्थ ही—
मैं सोच या देख नहीं पा रहा था:
मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि मेरा जन्म कहाँ हुआ था:
और बस यही महसूस हुआ कि मौत ने सब कुछ छीन लिया है।
मेरी कैरोलाइन, मेरी ओर से।
"धीरे-धीरे और उदास होकर, उसकी कब्र पर,"
ऑर्गन अपने अंतिम स्वर की गूंज सुनाता है,
और, अपने अंतिम अंधकारमय निवास स्थान तक,
शोक मनाने वालों के साथ शव ले जाया जा रहा है,
जबकि, उस पर झुकते हुए, कई चेहरे
'युवा साथियों के बीच आंसू दिखाई देते हैं।'
मुझे लगता है मैंने भीड़ की तरफ एक नजर डाली थी।
वह चुपचाप चिंतन में डूबा खड़ा था,
और अब भी मुझे वो आवाज़ सुनाई देती है
उनमें से किसी की आवाज सुनाई दे रही है —
'मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ' —
जो मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा!
"लंबे वर्षों ने कभी भी इसे नष्ट नहीं किया है"
उस दिन की अस्वाभाविक विचित्रता,
जब मैंने थाली पर देखा
मृत्यु की भयावहता द्वारा राज्य का उपहास उड़ाने के बारे में —
वह सुप्रसिद्ध शब्द, वह चिरस्थायी नाम,
अब लेकिन सपने की तरह याद है
लगभग भुला दिए गए दिव्य भजनों में से,
मेरी बहन का नाम — मेरी कैरोलाइन!
धीरे-धीरे, उदास और धीमी गति से, वे उसे नीचे उतारते गए।
नीचे स्थित उसके संकरे घर में:
और वास्तव में, यह गहरा प्रतीत होता था।
अनंत काल की वह एक झलक,

जहां जीवन से अलग होकर भ्रष्टाचार पनपता था,
जहां सुंदरता जल्द ही मिट्टी में तब्दील हो जाएगी!
हालांकि लगभग बेहोश था, फिर भी बुरी तरह गिर पड़ा।
वो बूँदें जिन्होंने मेरी अंतिम विदाई की बात कही;
और मेरी सिसकियाँ बेतहाशा फूट पड़ीं, जब खोखली सी आवाज़ गूंजी
उसके ऊपर फेंका गया पहला ठंडा ढेला,
जब चमक जंग में बदलने लगी,
'एशीज़ तू एशीज़ डस्ट टू डस्ट!'
“वह क्षण कितना कड़वा लग रहा था जब,
पृथ्वी के अनुष्ठान समाप्त हो गए,
हम भरी हुई कब्र से फिर मुड़ गए
उसे हमेशा के लिए छोड़ देना;
और, जब ठंड से बाहर निकलते हैं
नम, कब्रनुमा हवा का,
जैसे ही मैं मुड़ा, देखने में उदासीन महसूस कर रहा था।
शाम सुहावनी और सुहावनी है।
चेहरे पर कितनी उदासी भरी मुस्कान थी!
ढलते सूरज का!
ऐसा लग रहा था मानो उनकी नवीनतम दौड़
हम उस शाम की दौड़ में शामिल थे!
वहाँ उसका गोला पेड़ों के झुरमुट के पीछे डूब गया।
मेरे पैतृक घर का,
ऊपर आकाश की असीम गुंबद के साथ
उनकी समाधि पर चंदवा लगाने के लिए।
फिर भी उदासी और शांति का भाव बरकरार है,
जहां तक उनकी अंतिम विदाई की बात है,
उन हरे-भरे जंगली जंगलों पर चमकने के लिए
जिस पर वह रहना पसंद करता था।
मैंने उसे खो दिया, और उस खामोश कमरे को भी।

जहां मैं शीघ्र ही विश्राम करने के लिए लेट गया,
अंधकार छाने लगा, उस अँधेरे के नीचे
गोधूलि बेला के मंद क्षय का;
तो, मेरा दिल टूट जाता था और मैं सिसकियाँ भरती थी,
और उमड़ती आँखों से अंधा,
मुझे ऐसा लगा जैसे घंटों तक मैं जागता रहा और पूरी रातें बीत गईं।
और मानो दिन निकल ही नहीं रहा था।
मैंने लगभग यही प्रार्थना की कि मैं मर जाऊं—
लेकिन फिर यह विचार आता
अगर मैंने ऐसा किया, तो मेरी लाश वहीं पड़ी रहेगी
उस भयानक कब्र में;
जब तक मुझे उसका पत्थर नहीं दिखा, तब तक मुझे ऐसा ही लगा।
चांदनी की चमक से साफ,
जबकि कैरोलिन का उज्ज्वल रूप ही काफी है
वहाँ चुपचाप देखता रहा:
वह पूरी तरह सफेद रंग की थी और देवदूत के पंखों जैसी प्रतीत हो रही थी।
और देखने में अस्पष्ट;
लेकिन जब निर्मल चांदनी चमकी
मैंने उसे मुझे इशारा करते देखा।
और लुप्त हो जाना, इस प्रकार इशारा करते हुए, जबकि हवा
उस आधी रात की दीवार के चारों ओर,
मेरे लिए—जो अब कई साल पीछे छूट गया है—
तब लगा कि मेरी बहन को ही फोन करना चाहिए!
और इस तरह मुझे बीते घंटे याद आ गए।
जब हम एक साथ विश्राम करते हैं,
मैं अक्सर लेटकर बारिश की आवाज़ सुनता था।
दिसंबर के तूफानी मौसम के बारे में;
जो, जब अक्सर, वे उसमें जाग उठते थे
आंतरिक चिंतन के स्वर,

उस जंगली माहौल को तस्वीरों से भर देगा,
दूर की यादों से प्रेरित;
तो, जब मैं लेटा हुआ था, मैंने फिर से सुना
उसकी मीठी-मीठी जुबान,
किसी याद की हुई धुन का अभ्यास करते हुए
बहुत पुराने समय की बात है!
और, मेरी आत्मा की दृष्टि में एक क्षणिक घटना घटी,
जो बातें वह अक्सर मुझसे कहती थी—
जब, क्रिसमस की रात को नींद से जागते हुए,
उसकी स्नेह भरी बाहें मुझे गले लगा लेंगी—
उस आधी रात जैसे दिखने वाले दिन के बारे में,
जिसका अंधकार कलवारी पर छाया हुआ है,
प्रकृति की गहरी निराशा का कंपकंपाता हुआ भाव प्रकट हुआ
उसके बेटों ने जो किया था, उस पर:
जब पवित्र सलेम की धुंधली हवा
चीख से गूंज उठा,
जिसने दुनिया को बताया कि नश्वर प्राणी कितनी हिम्मत दिखाते हैं
अमर को सूली पर चढ़ाया जाए;
जब वे लोग जो शोक में डूबे हुए दूर बैठे थे,
दुखी हृदय और आँखों से,
उन्होंने वहां अपने महान मुक्तिदाता को देखा।
उपहास और निंदा के बीच ही मृत्यु होती है;
जब उनकी सारी सांसारिक शक्ति समाप्त हो गई,
जब प्यास और कमजोरी ने उनका सिर झुका दिया,
जब उनके पीले अंग भीग गए
घातक ओस और टपकते रक्त के साथ,
जब उनका सारा थका हुआ शरीर कांप उठा,
जब मृत्यु ने विजयी होकर जीवन की लौ बुझा दी,
जब उसने अपनी चमकती आँखों से ऊपर की ओर देखा

उन विशाल प्रतीत होने वाले आकाशों की ओर,
जब उनकी पीड़ा भरी चीख फूट पड़ी —
‘हे भगवान! हे भगवान! क्या तूने मुझे त्याग दिया है!’
तब मेरी युवावस्था की भावनाएं चौंक उठीं।
मानो मंदिर दो भागों में फट गया हो,
मेरे कान में बुरी तरह से चुभ रहा है
भय की अपनी गहरी गड़गड़ाहट के साथ,
पूरी दुनिया को निराशा के सागर में डुबोते हुए,
मानो उसके भगवान प्रकृति की कब्र हों;
मेरी निगाहों के सामने चादर ओढ़े भूत मंडरा रहे थे
गुजरते हुए, उस नीरस भूलभुलैया के बीच से निकल गया,
मानो उस दिन पर खुशी मना रहे हों
जब मृत्यु—उनका राजा—स्वर्ग पर अपना वर्चस्व स्थापित कर चुका था।
चमकते हुए श्मशान की नमी में सजे हुए,
वे मेरे सिर के चारों ओर बड़बड़ाते हुए प्रतीत हो रहे थे।
रात के अंधकारमय शून्य से होकर मुझे रास्ता दिखाते हुए
शांत और गंभीर कलवारी की ओर,
जहां वह क्रॉस स्थिर चमक के साथ जगमगा रहा था
कांटों से सुशोभित दिव्य सिर के चारों ओर —
एक धधकती हुई क्रॉस — एक प्रकाशस्तंभ
इस विश्व की सर्वव्यापी रात के लिए!
वह ऐसी चमक से जगमगा रहा था,
और मेरी आत्मा को इस प्रकार भेदते हुए,
हांफते हुए मैंने रोने की कोशिश की
उसके लिए, जिसके बारे में मैंने सोचा था कि वह सो रही है,
और मुझे उस भयानक चमक से छुपा दो।
कैरोलीन की बाहों में!
मैं इसी प्रयास में जाग उठा—दिन हो चुका था;
वह परेशान करने वाला सपना दूर हो गया था;

दिन का समय था—और मैं अकेला लेटा हुआ था।
उस विशाल कमरे और आलीशान पलंग में;
मेरे बगल में कैरोलिन नहीं है! चौड़ा
और लहर लगातार बहती चली गई।
उसके और मेरे बीच मौत का सवाल है!
वहाँ विराम लगा।
प्यारी हैरियट की आवाज, ऐसे विचारों के कारण —

यह कविता गहरी भावनाओं और सबसे मार्मिक दुःखों से उपजी है। दुःख और निराशा से रंगे हुए ये बिम्ब विचित्र और सजीवता के साथ हमारे सामने आते हैं; और कई अंश अत्यंत कोमलता, सुंदरता और करुणा से ओतप्रोत हैं। कुछ चित्रों की पीड़ादायक, और शायद कुछ हद तक अतिरंजित तीव्रता, चाहे वे स्वप्नों के हों या वास्तविकता के, यहाँ किसी साधारण कलाकार के कौशल से नहीं चित्रित की गई है, भले ही रचना में कुछ युवावस्था की कमियाँ दिखाई दें। यह कविता ब्रैनवेल की अन्य रचनाओं की तुलना में कोमल मिठास के लिए अधिक उल्लेखनीय है; लेकिन इसमें कुछ स्थानों पर उनकी बाद की रचनाओं की शक्ति और सामर्थ्य का अभाव है, और कई भागों में इसकी गुणवत्ता असमान है। इसके प्रारंभिक भाग में, जहाँ वे लयबद्ध छंद का प्रयोग करते हैं, उनकी शब्दावली पर बायरन का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस रचना में ब्रैनवेल एक बार फिर उस समय की याद दिलाते हैं जब उनके अभी तक 'कठोर न हुए हृदय' से पीड़ा के आँसू बहते थे, और बीते हुए पलों की यादों में उनके वर्तमान दुख भुला दिए जाते हैं। हम देखते हैं कि उन्होंने कैरोलीन में कितनी मार्मिकता से एक शिक्षिका, संरक्षक और मित्र के वे सभी गुण चित्रित किए हैं, जो उनकी बहन मारिया में थे। बहुत समय बाद, शार्लोट ब्रोंटे ने इसी तरह की भावनाओं से प्रेरित होकर, 'जेन आयर' के पहले अध्यायों को हेलेन बर्न्स के चरित्र में अपनी मृत बहन की स्थिति के चित्रण के लिए समर्पित किया, जिसकी मृत्यु कॉवन ब्रिज से लौटने के कुछ दिनों बाद हुई थी, जिसे वह शायद ही कभी भूल पाईं और न ही क्षमा कर पाईं।

अध्याय पंद्रह।

पादरी के आवास पर होने वाले कार्यक्रम।

शार्लोट को विवाह का पहला प्रस्ताव - इस संबंध में उनकी टिप्पणियाँ - दूसरा प्रस्ताव अस्वीकृत - ऐनी एक गवर्नेस - वह इस पर नैतिक विचार रखती हैं - शार्लोट को एक पद मिलता है - जो उनके लिए अनुपयुक्त है - वह उसे छोड़ देती हैं - ब्रैनवेल को प्राकृतिक दृश्यों में आनंद आता है - वह अपने दोस्तों के साथ लिवरपूल की यात्रा करते हैं - शार्लोट ईस्टन जाती हैं - हॉवर्थ में क्यूरेट - उनके पार्सनेज की यात्राएँ - चर्च के करों पर सार्वजनिक बैठकें - शार्लोट का रिचर्डसन शैली के उपन्यास का प्रयास - वह इसकी शुरुआत वर्ड्सवर्थ को उनकी राय के लिए भेजती हैं - ब्रैनवेल को निजी ट्यूटर के रूप में नियुक्ति मिलती है।

मिस वूलर ने अपना स्कूल ड्यूसबरी मूर में स्थानांतरित कर दिया था, जहाँ से शार्लोट और ऐनी की वापसी के बाद, तीनों बहनें कुछ महीनों तक एक साथ घर पर रहीं। साहित्यिक गतिविधियों और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करते हुए इस सुखद और बेरोकटोक मेलजोल में शार्लोट का मन विकसित हुआ और उनकी शक्ति लौट आई। ब्रैनवेल के बारे में भी सोचना था; ब्रैडफोर्ड में उनका उद्यम और उनके चित्रों पर हो रही प्रगति। फिर उन्हें मिस्टर मॉर्गन की तस्वीर देखने जाना था; और ऐसे अवसरों पर ब्रैनवेल कला, साहित्य और अपने परिचितों के बारे में बहुत कुछ कहते थे। लेकिन ब्रैनवेल आमतौर पर रविवार को हॉवर्थ में होते थे, और तब उन्हें शार्लोट के अपने दोस्तों से मिलने जाने और उन अवसरों पर उनके कारनामों के बारे में पता चलता था। 1839 की वसंत ऋतु में, ब्रैडफोर्ड से ब्रैनवेल की वापसी से कुछ ही समय पहले,

शार्लोट को शादी का पहला प्रस्ताव मिला। एक युवा पादरी, जो श्रीमती गैस्केल के अनुसार, 'जेन आयर' के अंतिम खंड में वर्णित संत जॉन से कुछ मिलता-जुलता था, जाहिर तौर पर शार्लोट ब्रोंटे की ओर आकर्षित हुआ था; लेकिन ऐसा लगता है कि उस समय विवाह का विचार उनके मन में गंभीरता से नहीं आया था। कुछ मायनों में यह प्रस्ताव उनके लिए काफी लुभावना रहा होगा, और उन्होंने सोचा होगा कि उनका वैवाहिक जीवन कितना सुखमय हो सकता है। हालांकि, शार्लोट ब्रोंटे का स्वभाव सुख-सुविधाओं से भरे रास्ते को चुनकर कांटों भरे रास्ते को अनछुआ छोड़ने का नहीं था; और उन्होंने खुद से पूछा कि क्या वह उस पादरी से उतना ही प्रेम करती हैं जितना एक स्त्री को अपने पति से करना चाहिए, और क्या वह उसे खुश रखने के लिए सबसे योग्य हैं। 'अफ़सोस!' वह कहती हैं, 'मेरी अंतरात्मा ने इन दोनों सवालों का जवाब "नहीं" दिया।' वह अच्छी तरह जानती थीं कि उनके मन में उसके प्रति एक सौम्य आकर्षण था, लेकिन यह उनके लिए पर्याप्त नहीं था, क्योंकि यह असंभव था कि वह कभी उसके लिए इतना गहरा लगाव महसूस कर सकें कि उसके लिए अपना जीवन बलिदान कर दें। जब तक उसके भीतर ऐसी भक्ति जागृत नहीं होती, वह कभी किसी से शादी नहीं करेगी। उसकी टिप्पणी विशिष्ट है: 'दस में से एक संभावना है कि मुझे फिर कभी ऐसा मौका नहीं मिलेगा; लेकिन कोई बात नहीं।'

शार्लोट ब्रोंटे को लगा कि युवा पादरी और उनके बीच सहानुभूति की कमी है, क्योंकि वह एक 'गंभीर, शांत स्वभाव का युवक' था; और वह जानती थी कि जब वह अपना असली रूप दिखाएगी, हँसेगी, व्यंग्य करेगी और जो मन में आएगा कहेगी, तो वह चौंक जाएगा और उसे एक चंचल, रोमांटिक उत्साही समझेगा। उसका अगला प्रस्ताव भी उसे पसंद नहीं आया; क्योंकि कुछ ही महीनों में, पास के एक पादरी, डबलिन विश्वविद्यालय से अभी-अभी स्नातक हुए एक युवा आयरिश व्यक्ति ने उसे शादी का प्रस्ताव दिया। यह बात शार्लोट को मज़ेदार लगी, क्योंकि उसकी ओर से यह पहली नज़र का प्यार था। वह अपने पादरी के साथ परिवार से मिलने आया और जल्द ही मिस्टर ब्रोंटे की बेटी पर मोहित हो गया। शार्लोट को घर पर कभी भी उस अप्रिय शर्मिंदगी का सामना नहीं करना पड़ा जो उसे बाहर परेशान करती थी; इसलिए उसने पादरी से बातचीत और मज़ाक किया और उसके अनोखे स्वभाव से बहुत आनंदित हुई। दोपहर का समय सुहावना बीता, क्योंकि उसने अपने देशवासियों की तरह सहजता से खुद को घर जैसा महसूस कराया। वह हाजिरजवाब, जीवंत, उत्साही और

चतुर था; लेकिन फिर भी, उसमें एक अंग्रेज की गरिमा और विवेक की कमी थी। जैसे-जैसे शाम ढलती गई, शार्लोट को उसकी बातों में आयरिश चापलूसी का तड़का पसंद नहीं आया और जैसा कि उसने कहा, वह थोड़ी ठंडी पड़ गई। पादरी और उसका सहायक चले गए; लेकिन अगली सुबह शार्लोट को बाद वाले का एक पत्र मिला जिसमें विवाह का प्रस्ताव था और प्रेम की गहरी अभिव्यक्ति थी, यह देखकर वह कितनी आश्चर्यचकित हुई! उसने अपनी सहेली से कहा, 'मुझे उम्मीद है कि तुम दिल खोलकर हंस रही हो। यह मेरे किसी कारनामे जैसा तो नहीं है, है ना? यह तो मार्था के कारनामे जैसा है। मैं तो कुंवारी ही रहूंगी। कोई बात नहीं। मैंने बारह साल की उम्र से ही यही ठान लिया था। मैंने सोचा, मैंने पहली नजर के प्यार के बारे में सुना है, लेकिन यह तो सबसे बढ़कर है!' मैं आपको यह अनुमान लगाने के लिए छोड़ता हूं कि मेरा उत्तर क्या होगा, मुझे पूरा विश्वास है कि आप गलत अनुमान लगाकर मेरे साथ अन्याय नहीं करेंगे।

हालांकि इस समय शार्लोट के पत्रों से ऐसा प्रतीत नहीं होता कि विवाहित जीवन उनके लिए बहुत आकर्षक था, लेकिन उनके बाद के पत्रों से, और शायद विशेष रूप से 'जेन आयर' के अंतिम अध्यायों से, यह स्पष्ट होता है कि वे गृहस्थ जीवन के सुखों और त्यागों को समझ सकती थीं, स्नेह को सही ढंग से जानती थीं और वैवाहिक प्रेम के वास्तविक मूल्य को पहचानती थीं। लेकिन वर्तमान समय में—हालांकि अपने जीवन के एक बाद के काल में, जब वे महाद्वीप पर थीं, तब उन्होंने उस 'दिल के जुनून' की पूरी तीव्रता का अनुभव किया था, जिसे उनके बारे में लिखने वाले लोग व्यक्त करने में असफल रहे थे—उन्होंने अपने आसपास की संतुष्ट परिस्थितियों से, जिनमें वे गृहस्थ थीं, खुद को अलग करने से इनकार कर दिया, एक अनिश्चित शांति और निश्चित आज्ञाकारिता की स्थिति के लिए। शार्लोट का निर्णय उनके परिवार की भावनाओं के विपरीत नहीं था; क्योंकि उन्होंने घर पर ही रहने का निश्चय कर लिया था, इसलिए उनकी भविष्य की योजनाएँ प्रभावित नहीं होतीं।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, ऐनी ने एक गवर्नेस के रूप में जीवन बिताने का निश्चय कर लिया था, क्योंकि वह अपनी बहनों की तरह ही मेहनत करना चाहती थी। पूछताछ की गई और अंततः एक नौकरी मिल गई। ऐनी अगले छह वर्षों तक इसी तरह के काम में लगी रही, और इसी अनुभव ने उसे अपने पहले उपन्यास, 'एग्नेस ग्रे' का विषय दिया। यदि हम यह मान लें कि उसने उस समय अपने अनुभव का वर्णन

किया है, जहाँ उसकी नायिका अपनी पहली नौकरी की तैयारी और प्रस्थान की परिस्थितियों का वर्णन करती है, तो यह प्रतीत होता है कि उसे अपने दोस्तों को अपने इस इरादे की बुद्धिमत्ता के बारे में समझाने में कुछ कठिनाई हुई होगी। अपने परिवार को यह सुझाव देने के बाद एग्नेस ग्रे कहती है:

उस दिन और उसके बाद कई दिनों तक मैं चुप रही; लेकिन फिर भी मैंने अपनी प्यारी योजना को पूरी तरह नहीं छोड़ा। मैरी ने अपना ड्राइंग का सामान लिया और लगन से काम में जुट गई। मैंने भी अपना सामान लिया; लेकिन ड्राइंग करते हुए मैं दूसरी बातों के बारे में सोच रही थी। एक गवर्नेस बनना कितना सुखद होगा! दुनिया में जाना; एक नए जीवन में प्रवेश करना; अपने लिए काम करना; अपनी अप्रयुक्त प्रतिभाओं का उपयोग करना; अपनी अनजानी क्षमताओं को आजमाना; अपना भरण-पोषण खुद कमाना, और अपने पिता, माता और बहन को सहारा और मदद देना, साथ ही उन्हें मेरे भोजन और वस्त्र के बोझ से मुक्त करना; पापा को दिखाना कि उनकी छोटी एग्नेस क्या कर सकती है; मम्मी और मैरी को यह विश्वास दिलाना कि मैं उतनी असहाय और नासमझ नहीं हूँ जितना वे समझते हैं। और फिर, बच्चों की देखभाल और शिक्षा का जिम्मा मिलना कितना प्यारा होगा! दूसरे चाहे कुछ भी कहें, मुझे लगता था कि मैं इस काम के लिए पूरी तरह सक्षम हूँ: बचपन में मेरे अपने विचारों की स्पष्ट स्मृति सबसे अनुभवी सलाहकार के निर्देशों से भी अधिक विश्वसनीय मार्गदर्शक होगी। मुझे बस अपने नन्हे विद्यार्थियों से हटकर उनकी उम्र में खुद पर ध्यान देना था, और मैं तुरंत जान जाता कि उनका विश्वास और स्नेह कैसे जीता जाए; गलती करने वालों के पश्चाताप को कैसे जगाया जाए; डरपोक को कैसे प्रोत्साहित किया जाए और दुखी को कैसे सांत्वना दी जाए; सद्गुण को व्यवहारिक, शिक्षा को वांछनीय और धर्म को जीवंत और बोधगम्य कैसे बनाया जाए।

ऐनी ब्रोंटे अपनी बहनों की तुलना में अधिक सौम्य और हंसमुख स्वभाव की थीं; उनमें शार्लोट जैसी उग्रता, निराशावादी भावना या मानसिक शक्ति नहीं थी, फिर भी उनमें अब तक मिली प्रशंसा से कहीं अधिक पहल करने की क्षमता थी। लेकिन उनके सौम्य स्वभाव, उनकी विश्वासयोग्य धार्मिकता और उनका अधिक संतुलित स्वभाव उन्हें उन परिस्थितियों में बेहतर सफलता प्राप्त करने में सक्षम बनाता था जिन्हें उन्होंने चुना था। उन्हें अपनी परेशानियों, अपनी झिझक और अपने संकोच से जूझना पड़ा, लेकिन उन्होंने जीवन को सहनीय और यहां तक कि सुखी भी बनाया। 'एग्नेस ग्रे' इसी

प्रकार उनके जाने का वर्णन करती है, जो निस्संदेह ऐनी ब्रोंटे का अनुभव है।

तैयारी में अभी कुछ और सप्ताह बाकी थे। वे सप्ताह मुझे कितने लंबे और उबाऊ लग रहे थे! फिर भी वे ज्यादातर खुशियों से भरे थे, उज्ज्वल आशाओं और प्रबल अपेक्षाओं से भरपूर। मुझे अपने नए कपड़े सिलने और बाद में अपने बक्सों की पैकिंग में मदद करने में कितना विशेष आनंद आया! लेकिन इस काम में थोड़ी कड़वाहट भी मिली हुई थी; और जब यह सब हो गया - जब कल मेरे जाने की सारी तैयारी हो गई, और घर पर आखिरी रात करीब आ रही थी - अचानक मेरे दिल में एक पीड़ा उमड़ पड़ी। मेरे प्यारे दोस्त उदास दिख रहे थे, और इतनी दयालुता से बातें कर रहे थे कि मैं अपने दिल को उमड़ने से मुश्किल से रोक पा रही थी; लेकिन फिर भी मैंने खुश रहने का दिखावा किया। मैंने मैरी के साथ मैदानों में अपनी आखिरी सैर की थी, बगीचे में और घर के चारों ओर अपनी आखिरी सैर की थी... मैंने पुराने पियानो पर अपनी आखिरी धुन बजाई थी, और पापा के लिए अपना आखिरी गाना गाया था, आखिरी नहीं, मुझे उम्मीद थी, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि यह बहुत लंबे समय के लिए आखिरी था।

शार्लेट और एमिली ऐनी की प्रस्थान की तैयारियों में मदद करने में व्यस्त हो गईं, और जब वह सोमवार, 15 अप्रैल, 1839 को उन्हें छोड़कर गईं तो वे बहुत दुखी और चिंतित थीं। वह अपनी इच्छा से अकेले गईं, यह सोचकर कि वह अपने दम पर बेहतर ढंग से सब कुछ संभाल लेंगी, और जब उनकी कमियों को वे लोग न देख पाएं जिनकी उम्मीदें वह बनाए रखना चाहती थीं। हालांकि, उन्होंने अपने द्वारा प्राप्त स्थान से संतुष्टि व्यक्त करते हुए लिखा कि घर की मालकिन बहुत दयालु थीं। उन्होंने दो सबसे बड़ी बेटियों को अपने संरक्षण में रखा था, बाकी बच्चे नर्सरी में थे, जिनसे उनका कोई वास्ता नहीं था।

हालांकि शार्लोट ने अपनी सहेली को लिखे एक पत्र में ऐनी की उस चतुराई और संवेदनशीलता की प्रशंसा की, जिसके साथ वह पत्र-व्यवहार में खुद को व्यक्त कर सकती थी, लेकिन उसे कुछ डर था कि, उसके स्वभाव में इतनी स्वाभाविक झिझक थी कि उसकी मालकिन कभी-कभी यह मान लेगी कि उसे बोलने में कोई दिक्कत है।

नौकरी पाने की शार्लोट की उत्सुकता इतनी प्रबल थी कि उसने अपने इस कदम पर ठीक से विचार नहीं किया और उसे ऐसी नौकरी मिली जो उसे संतोषजनक नहीं लगी। यह नौकरी यॉर्कशायर के एक धनी निर्माता के परिवार में थी; और यह मानना

उचित होगा कि उसके मालिकों का आलीशान परिवेश हॉवर्थ स्थित परिवार के परिवेश से काफी भिन्न था। यहाँ शार्लोट पर तरह-तरह के कामों का बोझ डाल दिया गया, जिससे वह असंतुष्ट हो गई और उसका आराम भंग हो गया। एमिली को लिखे एक पत्र में वह कहती है कि वह 'कई सारे कढ़ाई के कामों से घिरी हुई है; कई गज कैम्ब्रिक की किनारी सिलनी है, मलमल की टोपियाँ बनानी हैं, आदि।' उसे घर के बाहरी दृश्य सुंदर लगे, जिनमें 'सुखद जंगल, सफेद रास्ते, हरे-भरे लॉन और नीला, धूप से जगमगाता आकाश' शामिल थे; लेकिन ये परिवेश उस अपमान की भरपाई नहीं कर सके जो उसकी स्थिति ने उस पर थोपा था, और उसकी मालकिन और वह एक-दूसरे को पसंद नहीं करती थीं; इसलिए शार्लोट 1839 की जुलाई की छुट्टियों के बाद उस जगह वापस नहीं लौटी।

ब्रैनवेल अभी तक बेरोजगार थे, और वे यॉर्कशायर के वेस्ट-राइडिंग की पहाड़ियों और घाटियों के दृश्यों, घटनाओं और परिस्थितियों का आनंद लेते थे, और अक्सर घर से बाहर रहते थे। वे देश भर में घूमते, लोगों से मिलते-जुलते और उनकी हाजिरजवाबी का लुत्फ उठाते थे, जिससे उन्हें बाद में अपने अवलोकन और अनुभव के आधार पर जीवन और चरित्र के सजीव चित्रण करने में मदद मिली। जुलाई 1839 में हॉवर्थ 'रशबियरिंग' के समय, वे एक-दो मित्रों के साथ लिवरपूल गए थे, और वहाँ अपने पिता के आदेश का पालन करते हुए, सेंट जूड चर्च में प्रसिद्ध प्रचारक रेवरेंड एच. मैकनील के उपदेश की स्टेनोग्राफिक रिपोर्ट तैयार की। यहाँ, टिक के अचानक हमले ने उन्हें दर्द निवारक के रूप में किसी न किसी रूप में अफीम का सहारा लेने के लिए मजबूर कर दिया, जिसका दर्द में सुखदायक प्रभाव वे पहले से ही जानते थे। इसके बाद, शहर में घूमते हुए एक संगीत की दुकान के पास से गुजरते समय, ब्रैनवेल का ध्यान खिड़की में प्रदर्शित हैंडल के 'सैमसन' नामक ऑरेटोरियो की एक प्रति पर गया, जिसका प्रदर्शन हमेशा उन्हें बेहद उत्साहित करता था, और उन्होंने उत्सुकतापूर्वक अपने मित्र से इसे खरीदने के लिए कहा, साथ ही कुछ मास और विभिन्न ऑरेटोरियो संगीत भी खरीदा, जो उन्होंने किया।

लिवरपूल से लौटने पर, ब्रैनवेल अपने मित्र के प्रति कुछ ऋणी होने के कारण, उनका चित्र बनाने के लिए तैयार हो गए, जिस पर श्री एम. — — सहमत हो गए। सप्ताह में एक बार चित्र बनवाने का निर्णय लिया गया, जो उस कमरे में होगा जहाँ ब्रैनवेल अध्ययन और चित्रकला करते थे। अपनी यात्राओं के दौरान, श्री एम. — —

हमेशा चूल्हे के सबसे ऊपरी हिस्से पर आलू की एक पंक्ति देखते थे, जिन्हें भूनने के लिए रखा जाता था। ब्रैनवेल को इस तरह से भुने हुए आलू बहुत पसंद थे, ठीक वैसे ही जैसे उपन्यास में जेन आयर को थे। जेन आयर कहती हैं, 'उस रात, बिस्तर पर जाते समय, मैं कल्पना में गरमागरम भुने हुए आलू का बार्मेसाइड डिनर तैयार करना भूल गई... जिससे मैं अपनी आंतरिक इच्छाओं को शांत करती थी।' जब श्री एम. —— हर हफ्ते पादरी के घर जाते थे, तो उन्हें हमेशा ब्रैनवेल के स्टूडियो से सटे कमरे में किसी के जोर से बोलने की आवाज सुनाई देती थी; और अंत में, उनकी जिज्ञासा जागृत हुई, तो उन्होंने पूछा कि कौन है। ब्रैनवेल ने उत्तर दिया कि उनके पिता रविवार के उपदेश को याद कर रहे थे। जब चित्र अंतिम रूप देने के लिए तैयार था, तब श्री एम. ने देखा कि ब्रैनवेल ने कैनवास के प्रत्येक कोने पर क्रमशः जोहान सेबेस्टियन बाख, मोजार्ट, हेडन और हैंडल के नाम उकेरे थे। उन्होंने आपत्ति जताई, लेकिन ब्रैनवेल अपनी बात पर अड़े रहे और कहा कि चूंकि उनके मित्र एक कुशल संगीतकार थे और इन अमर संगीतकारों की सबसे जटिल और कठिन रचनाओं को भी भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर सकते थे, इसलिए वे हर तरह से उनके साथ इस तरह से जुड़ने के योग्य थे जैसा उन्होंने सोचा था। श्री एम. मान गए। चित्र पूरा होने पर, ब्रैनवेल ने अपने मित्र को एक गिलास शराब पीने के लिए कहा; और जब दोनों इस विषय पर बातचीत कर रहे थे, तभी श्री ब्रोंटे और उनकी बेटियाँ ब्रैनवेल की कृति को देखने के लिए कमरे में आईं। वे इससे प्रसन्न हुए और इसे एक सटीक चित्र और उत्कृष्ट रचना बताया।

हम कल्पना कर सकते हैं कि ब्रैनवेल लिवरपूल के अपने अनुभव को कितने उत्साह से सुनाते होंगे। मर्सी नदी के चमत्कारों, उस पर चलने वाले विशाल जहाजों और समुद्र पार नई दुनिया के साथ उसके व्यापार के बारे में बताने के लिए उनके पास कितना कुछ होता! ऐसा लगता है कि उनकी यात्रा के कारण ही परिवार ने उस बंदरगाह पर एक सप्ताह या दो सप्ताह बिताने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन लगभग उसी समय, शार्लोट की सहेली ने उन्हें क्लीथोर्प्स की एक साथ यात्रा करने का सुझाव दिया, जो उन्हें बहुत पसंद आया।

वह कहती हैं, "समुद्र को देखने का विचार, उसके निकट होने का विचार—सूर्योदय, सूर्यास्त, चांदनी और दोपहर के समय उसके बदलते स्वरूपों को देखना—शांत अवस्था में, शायद तूफान में भी—मेरे मन को तृप्त और संतुष्ट कर देता है। मुझे किसी भी बात से असंतोष नहीं होगा। और फिर मुझे ऐसे लोगों के साथ नहीं रहना है

जिनसे मेरी कोई समानता नहीं है—जो झंझट और उबाऊ होंगे।"

समुद्र तट की शार्लोट की यात्रा बार-बार टलती रही, क्योंकि कई बार बाधाएं उत्पन्न हुईं। लिवरपूल परियोजना को लेकर परिवार की अनिर्णयता और घर छोड़कर कहीं और जाने की उनकी स्पष्ट अनिच्छा ने उनके द्वारा अपेक्षित आनंद को समय-समय पर टाल दिया; लेकिन अंततः उन्होंने जाने का निश्चय कर लिया। उनका सामान पैक था और सारी तैयारी हो चुकी थी, लेकिन कोई वाहन उपलब्ध नहीं हो सका। श्री ब्रोंटे ने उनके कोच से जाने और अपने मित्र से मिलने के लिए कुछ दूर पैदल चलने पर आपत्ति जताई, और उनकी चाची ने मौसम, सड़कों और चारों दिशाओं से आने वाली हवाओं का हवाला देते हुए कहा कि शार्लोट ने लगभग उम्मीद छोड़ दी थी। उन्होंने अपने मित्र को बताया कि घर के बड़े-बुजुर्गों ने इस प्रस्ताव पर कभी भी सहर्ष सहमति नहीं दी थी, और विरोध बढ़ता जा रहा था, हालांकि उनके पिता उन्हें जाने की अनुमति देने को तैयार थे। फिर भी, वे भी चाहते थे कि वह घर पर ही रहें। शार्लोट इस बात से 'आक्रोशित' थीं कि उनकी चाची ने व्यवस्था होने तक विरोध को टाल दिया था। अंत में 'ई' को पादरी के घर जाने के लिए कहा गया।

उपरोक्त परिस्थितियों के कारण, शार्लोट की समुद्र तट यात्रा अगले सितंबर तक स्थगित कर दी गई, जब इस योजना के लिए अनुकूल अवसर मिला, और ऐसा प्रतीत होता है कि यह योजना पूरी तरह से रद्द नहीं हुई थी; और वह और उसकी सहेली ईस्टन गईं जहाँ उन्होंने दो सप्ताह बिताए। यहीं पर शार्लोट ने पहली बार समुद्र देखा।

बाद में उन्होंने लिखा, 'ई., क्या तुम अब तक समुद्र को भूल चुके हो? क्या वह तुम्हारे मन में धुंधला पड़ गया है? या क्या तुम अब भी उसे देख सकते हो, गहरा नीला, हरा और झागदार सफेद, और जब हवा तेज़ चलती है तो उसकी गर्जना सुन सकते हो, या जब हवा शांत होती है तो उसकी धीमी आवाज़ सुन सकते हो?' ऐसा लगता है कि लिवरपूल की यात्रा अंततः छोड़ दी गई थी।

लगभग इसी समय लिखे गए एक पत्र में श्रीमती गैस्केल को हॉवर्थ पार्सनेज के आसपास आने वाले कई क्यूरेटों का पहला उल्लेख मिला। तीन साल पहले श्री ब्रोंटे ने 'अतिरिक्त क्यूरेट सोसाइटी' या इसी तरह की किसी संस्था से सहायता मांगी थी और उन्हें तुरंत सहायता प्रदान की गई थी। उनके चैपलरी के बढ़ते कर्तव्यों के कारण यह कदम आवश्यक हो गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि एक क्यूरेट को स्टैनबरी में नियुक्त किया गया था, जबकि दूसरे को नेशनल या ग्रामर स्कूल का मास्टर बनाया

गया था। ये सज्जन पार्सनेज में अक्सर आते-जाते रहते थे और वहां रहने वालों के जीवन में कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक बदलाव लाते थे। इसी परिस्थिति ने शार्लोट ब्रोंटे को वे जीवंत अध्ययन प्रदान किए जिन्हें उन्होंने बाद में 'शर्ली' में तीन क्यूरेटों के चित्रण में अवश्य ही याद रखा। दूसरी ओर, एमिली हमेशा इन सज्जनों से दूर रहती थीं।

हॉवर्थ में पादरियों के आगमन से चर्च के कामकाज में हलचल बढ़ गई; और, इस समय चर्च-कर का मुद्दा सर्वोपरि होने के कारण, नए आए पादरियों ने उन असंतुष्टों के खिलाफ एक अभियान शुरू कर दिया जिन्होंने चर्च-कर देने से इनकार कर दिया था। शार्लोट ने एक लंबा पत्र लिखा जिसमें उन्होंने इस मामले पर हॉवर्थ में आयोजित एक हिंसक सार्वजनिक सभा और असहमति के खिलाफ दिए गए दो उपदेशों का जिक्र किया - एक उपदेश श्री डब्ल्यू द्वारा दिया गया, जो एक 'महान, वाक्पटु, उच्च-चर्च, प्रेरितिक-उत्तराधिकार प्रवचन' था, जिसमें उन्होंने असंतुष्टों की निडरता और दृढ़ता से आलोचना की; दूसरा उपदेश श्री सी द्वारा दिया गया, जो शायद शार्लोट ने हॉवर्थ के मंच से अब तक सुने गए भाषणों से कहीं अधिक तीक्ष्ण, चतुर, साहसी और हृदयस्पर्शी था। हालांकि, वह इन दोनों सज्जनों से पूरी तरह सहमत नहीं थी, और सोचती थी कि अगर वह एक डिसेंटर होती, तो वह 'दोनों को लात मारने या कोड़े मारने का पहला मौका ढूंढ लेती।'

1839-40 की सर्दियों में, शार्लोट ने अपने खाली समय का उपयोग एक कहानी लिखने में किया, जिसे उन्होंने रिचर्डसन के सात या आठ खंडों वाले उपन्यासों के समान पैमाने पर शुरू किया था। श्रीमती गैस्केल ने पांडुलिपि के कुछ अंश देखे, जो बहुत छोटे अक्षरों में लिखे गए थे; लेकिन उन्होंने इसे समझने में कम रुचि दिखाई, क्योंकि शार्लोट ने स्वयं 'द प्रोफेसर' की प्रस्तावना में इसकी निंदा की थी। ब्रैनवेल, जिन्हें उन्होंने यह प्रस्तुत किया था, उस समय समझ गए थे कि इसकी अलंकृत रचना शैली में वह अपनी प्रतिभा के विपरीत काम कर रही हैं, और उन्होंने उनसे कहा कि वह गलती कर रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रैनवेल स्वयं भी गद्य लेखन में व्यस्त थे जब उन्होंने उन्हें यह राय दी थी। हालांकि, कुछ महीनों बाद, शार्लोट ने अपनी कहानी की शुरुआत वर्ड्सवर्थ को भेजने का फैसला किया, और यह कि परिणाम एक प्रतिकूल निर्णय था, जिसके लिए वह पूरी तरह से अप्रस्तुत नहीं थीं, कवि को लिखे गए उनके निम्नलिखित पत्र से समझा जा सकता है: —

लेखक आम तौर पर अपनी रचनाओं के प्रति बहुत दृढ़ निश्चयी होते हैं, लेकिन मैं इससे इतना जुड़ा हुआ नहीं हूँ कि इसे बिना किसी खास कष्ट के छोड़ सकूँ। निस्संदेह, अगर मैं इसे जारी रखता तो इसे रिचर्डसन की तरह ही गंभीरता से लेता... मेरे दिमाग में आधा दर्जन खंडों के लिए सामग्री थी... बेशक, मुझे इस आकर्षक योजना को छोड़ने का बहुत अफसोस है, जिसका मैंने खाका खींचा है। अपने दिमाग से एक दुनिया बनाना और उसमें ऐसे पात्रों को बसाना, जो कई मेल्कीसेडेक हों और जिनका कोई पिता या माता न हो, केवल आपकी अपनी कल्पना हो, बहुत ही ज्ञानवर्धक और लाभदायक है... मुझे खेद है कि मैं पचास या साठ साल पहले अस्तित्व में नहीं था, जब “लेडीज़ मैगज़ीन” एक हरे-भरे पेड़ की तरह फल-फूल रही थी। उस स्थिति में, मुझे कोई संदेह नहीं है, साहित्यिक प्रसिद्धि के लिए मेरी आकांक्षाओं को उचित प्रोत्साहन मिलता और मुझे श्री पर्सी और वेस्ट को सर्वश्रेष्ठ समाज से परिचित कराने और उनके सभी कथनों और कार्यों को दो-स्तंभों वाले, घनी छपाई वाले पृष्ठों में दर्ज करने का आनंद मिलता... मुझे याद है, जब मैं बच्ची थी, तो कुछ पुरानी किताबें हाथ में लेकर उन्हें छुप-छुप कर बड़े आनंद से पढ़ती थी। आपने आजकल की उन धैर्यवान पाठकों का बिल्कुल सही वर्णन किया है। मेरी चाची भी उनमें से एक थीं, और आज भी उन्हें लगता है कि "लेडीज़ मैगज़ीन" की कहानियाँ आधुनिक साहित्य की किसी भी घटिया रचना से कहीं बेहतर हैं। मुझे भी ऐसा ही लगता है; क्योंकि मैंने उन्हें बचपन में पढ़ा था, और बचपन में प्रशंसा करने की क्षमता तो बहुत प्रबल होती है, लेकिन आलोचना करने की क्षमता बहुत कमज़ोर होती है... मुझे खुशी है कि आप यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि मैं किसी वकील की क्लर्क हूँ या उपन्यास पढ़ने वाली दर्जी। मैं इस बारे में आपकी बिल्कुल भी मदद नहीं करूँगी...

अपने साहित्यिक कार्यों के बीच भी, उन्होंने नए पद प्राप्त करने के अपने प्रयासों में कोई कमी नहीं आने दी। परिस्थितियोंवश शार्लोट को यहूदियों को दिए जाने वाले चंदे को छोड़ना पड़ा, और उन्होंने ठान लिया कि यदि कोई पद मिल सके तो वे उसे स्वीकार करेंगी, हालाँकि वे कहती हैं, 'मुझे गवर्नेंस बनने का विचार भी बिल्कुल पसंद नहीं है।' इन छुट्टियों में बहनों ने एक और विकल्प पर विचार किया, वह था हॉवर्थ में एक स्कूल खोलना, जिसके लिए पादरी के आवास का विस्तार करना आवश्यक होगा।

ब्रैनवेल को रोजगार पाने में शार्लोट से अधिक सफलता मिली, उन्हें एक ट्यूटर की

नौकरी मिल गई; और उन्हें नए साल से अपना कार्यभार संभालना था। इस घटना के बारे में शार्लोट कहती हैं, 'एक बात तो तय है, जिससे हमारी दिनचर्या पहले से कहीं अधिक नीरस हो जाएगी। ब्रैनवेल, जो हमें हमेशा खुशमिजाज रखते थे, कुछ ही दिनों में हमें छोड़कर उल्वरस्टन के आसपास के इलाके में एक निजी ट्यूटर के रूप में काम करने जा रहे हैं। उन्हें वहां कैसा लगेगा, यह तो अभी देखना बाकी है। फिलहाल तो वे आशा और दृढ़ संकल्प से भरे हुए हैं। मैं, जो उनके बदलते स्वभाव और सक्रिय जीवन के प्रति उनके प्रबल झुकाव को जानती हूँ, बहुत ज्यादा आशावादी होने की हिम्मत नहीं कर सकती।'

ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रैनवेल ने इस वर्ष क्रिसमस के दिन 'लॉज ऑफ द थ्री ग्रेसेस' में विदाई यात्रा की थी, जहाँ उन्होंने ऑर्गन वादक के रूप में कार्य किया था। यह एकमात्र ऐसा अवसर है जब 1839 में लॉज की बैठकों में उनकी उपस्थिति दर्ज है, और यह अंतिम अवसर है जब हॉवर्थ मेसोनिक संस्था की कार्यसूची में उनका नाम आता है।

अध्याय सोलह।

ब्रॉटन-इन-फर्नेस में ब्रैनवेल।

ब्लैक कॉम्ब जिला — ब्रैनवेल की सॉनेट — वर्ड्सवर्थ और हार्टले कोलरिज — ब्रैनवेल का 'ट्रम्प के बूढ़े बदमाश' को पत्र — मिस रॉबिन्सन द्वारा अपनी पुस्तक 'एमिली ब्रोंटे' में इसका प्रकाशन — हॉवर्थ के लोगों से ब्रैनवेल का घनिष्ठ परिचय — वे उनके चरित्रों को सटीकता से चित्रित कर सकते थे — मानवीय भावनाओं का

उनका ज्ञान — एमिली का एकांत।
ब्रैनवेल, अपनी बहनों की तरह ही रोजगार के इच्छुक थे, इसलिए उन्होंने ब्रॉटन-इन-फर्नेस के श्री पोस्टलेथवेट के परिवार में शिक्षक के पद के लिए आवेदन किया और उन्हें यह पद मिल भी गया। उन्होंने 1 जनवरी, 1840 को अपना नया कार्यभार संभाला।

अब जब वे इंग्लैंड के झील क्षेत्र के पास रहने लगे थे, जो कई काव्यमय स्मृतियों से सुशोभित था और वर्ड्सवर्थ, कोलेरिज और साउथी की जन्मभूमि होने के कारण उन्हें प्रिय था, तो स्वाभाविक रूप से उन्हें अपने आसपास की हर चीज में गहरी रुचि हो गई; और जब वे अपने नियोक्ता के बेटों को पढ़ाने में व्यस्त नहीं होते थे, तो वे उन स्थानों की यात्रा करने का अवसर निकालते थे जो उन्हें आकर्षित करते थे। अपनी एक पैदल यात्रा के दौरान, वे एक सड़क किनारे सराय में रुके और बैठक कक्ष की आग के सामने बैठकर चिंतन कर रहे थे, तभी एक युवक कमरे में दाखिल हुआ। ब्रैनवेल मुड़े और उन्होंने तुरंत अपने एक मित्र, आयर्टन को पहचान लिया, जिनसे उनकी मुलाकात लीड्स में हुई थी। इस अप्रत्याशित मुलाकात से आश्चर्य और प्रसन्नता दोनों में समान रूप से थी; और ब्रैनवेल के मित्र, जो देश भर में गाड़ी चला रहे थे, ने उनसे यात्रा में कुछ दूर तक साथ चलने का अनुरोध किया, ताकि साक्षात्कार को आगे बढ़ाया जा सके और शुरू हुई बातचीत को जारी रखा जा सके। युवा शिक्षक अपने मित्र के साथ लगभग दस मील तक गाड़ी चलाकर गए, उल्वरस्टन तक लंबी वापसी की पैदल यात्रा की उन्हें बिल्कुल परवाह नहीं थी।

ब्रैनवेल को 'लेक पोएट्स' की रचनाएँ बहुत पसंद थीं और वे साउथी की गद्य रचनाओं से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने 'लाइफ ऑफ नेल्सन' पढ़ी और स्वयं उस महान नौसैनिक नायक के जीवन को दर्शाने वाली एक कविता लिखने के लिए प्रेरित हुए। उन्होंने साउथी की 'कोलोक्वीज़ ऑन सोसाइटी' और अन्य रचनाएँ भी पढ़ीं। लेकिन इस समय ब्रैनवेल की सबसे बड़ी प्रशंसा वर्ड्सवर्थ के प्रति थी। वे उस कवि द्वारा ब्लैक कॉम्ब की चोटी से दिखने वाले दृश्य के सुंदर वर्णन से मंत्रमुग्ध थे और शायद वे अपने 'मन के देवता' द्वारा पहाड़ की ढलान पर एक पत्थर पर लिखी गई पंक्तियों को जानते थे और संभवतः उन्होंने स्वयं भी उस चोटी से दृश्य देखा था। लेकिन ब्रैनवेल निश्चित रूप से ब्लैक कॉम्ब को दूर से जानते थे। पाँच मील दूर से ही वे उसे देख सकते थे; और उन्होंने निम्नलिखित सॉनेट में उसका गुणगान किया:

काला कंघा।

दूर, और आधा प्रकट, छाया और प्रकाश के बीच,

ब्लैक कॉम्ब आधा मुस्कुराता है, आधा भौंहें चढ़ाता है; उसका विशाल रूप

शांति के लिए शायद ही झुकते हैं — बल्कि लड़ने के लिए अधिक दृढ़ हैं

एक हजार वर्षों का तूफान से संघर्ष

फिर एक घंटे तक धूप में आराम करें, गर्म धूप से मंद होकर।

उज्ज्वल और हवा रहित विश्राम के लिए; फिर भी उसकी ऊँचाई भी

वह इस दुनिया की सहानुभूतियों से ऊपर नहीं है, वह मुस्कुराता है।

जबकि कई मनुष्यों का हृदय सुखों के छल-कपट की ओर आकर्षित होता है

झुकने की क्षमता तो है, लेकिन उठना भूल जाना —

मानो वह विशालकाय और घने वस्त्रों से ढका हुआ, हमारी दृष्टि में प्रकट हो रहा हो,

वह फिर से अपने तूफानी आकाश में आनंदित होता है।

अस्थिर सुखों में मनुष्य की शक्ति क्षीण हो जाती है।

इस प्रकार तूफानों के सामने ब्लैक कॉम्ब अजेय साबित होता है।

जब हम भटक रहे हों, तो जीवन को इतनी अच्छी तरह से कौन जान सकता है!

इसमें कोई संदेह नहीं कि ब्रैनवेल जब उल्वरस्टन में रह रहे थे, तभी उन्हें कुछ कविताओं पर वर्ड्सवर्थ की प्रशंसा मिली, जिन्हें उन्होंने समीक्षा के लिए प्रस्तुत किया था। संभवतः उन्हें उस लेखक से मिलने का अवसर मिला, जिनकी रचनाएँ उन्हें 'हमारे साहित्य में सबसे प्रिय' थीं, और शायद इसी तरह की किसी यात्रा के दौरान उन्हें हार्टले कोलरिज से उत्साहवर्धक विचार प्राप्त हुए। 'द नॉर्दर्न वर्थीज़' के लेखक ब्रैडफोर्ड स्थित 'द जॉर्ज' के समूह से परिचित थे और ब्रैनवेल, ब्रोंटे और लेलैंड से भी उनका परिचय था।

हॉवर्थ स्थित ‘लॉज ऑफ द थ्री ग्रेसेस’ के स्वामी ने ब्रैनवेल को अपने पुराने परिचित को भूलने नहीं दिया; क्योंकि इस सज्जन ने जल्द ही उन्हें एक पत्र लिखा, जिसका जवाब ब्रैनवेल ने अपने आगमन के बाद अगले वर्ष 13 मार्च को ब्रॉटन-इन-फर्नेस से दिया। यह दुर्भाग्यपूर्ण जवाब, जिसमें ब्रैनवेल ने हॉवर्थ के मेसोनिक सेक्स्टन को व्यंग्यात्मक हास्य के साथ ‘ट्रम्प का बूढ़ा बदमाश’ कहा था, वही है जिसे मिस

रॉबिन्सन ने अपनी पुस्तक 'एमिली ब्रोंटे' में प्रकाशित करने की नासमझी की; और जिसने ब्रैनवेल पर श्री स्विनबर्न की गालियों की बौछार कर दी। वास्तव में, यदि इस पत्र को एक घोर दुराचारी, निर्लज्ज और पापी व्यक्ति की स्वाभाविक अभिव्यक्ति माना जाए, तो उसे न तो यहाँ और न ही कहीं और कोई रक्षक मिल सकता है। लेकिन यह उम्मीद करने के अच्छे कारण हैं कि ऐसा नहीं था। हमने देखा है कि ब्रैनवेल हॉवर्थ के असभ्य ग्रामीण समाज में शामिल हो गया था, जहाँ अपनी प्रतिभा और पादरी के पुत्र होने के कारण उसे बहुत सम्मान प्राप्त था। इसलिए यह स्वाभाविक था कि वह मूर्खतापूर्ण ढंग से अपने चुने हुए मित्रों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने का प्रयास करे, और चरित्र की उसकी समझ इतनी अच्छी थी कि वह जान सके कि 'लॉज ऑफ द थ्री ग्रेसेस' के उसके कई साथियों की रुचियों और झुकावों के लिए किस प्रकार का पत्र सबसे उपयुक्त होगा। वास्तव में, उसने दुराचार का वह साहस और शैतानी भाव अपनाया, जिसे उन दिनों कई लोग मर्दानगी का सबसे अच्छा प्रमाण मानते थे, और आज भी कई लोग मानते हैं, क्योंकि यह दुनियादारी के ज्ञान का प्रतीक था। फिर भी, पत्र के अंत में—मिस रॉबिन्सन द्वारा वह अंश नहीं दिया गया है—ब्रैनवेल यह मानकर चलता है कि कब्रिस्तान का रखवाला इसे नहीं दिखाएगा, और वह उससे 'भगवान के लिए' लाल रंग से चिह्नित पंक्तियों को मिटाने की विनती करता है। ब्रैनवेल 'ट्रम्प के बूढ़े बदमाश' को अच्छी तरह जानता था, और उसे यकीन था कि उसका पत्र उसके करीबी दोस्तों के बीच खूब हंसी-मजाक का कारण बनेगा, जिन्हें कब्रिस्तान का रखवाला ज़रूर पढ़ेगा। उसे पत्र के कुछ अंशों पर शर्म आती थी, जो इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि यह किसी भ्रष्ट और निर्लज्ज स्वभाव का परिणाम नहीं था, बल्कि एक दुष्ट और उदासीन सांसारिक व्यक्ति के व्यवहार का प्रदर्शन था। और यह भी अकल्पनीय है कि एक युवक, जो समकालीन कविताओं में वर्णित संवेदनशील स्वभाव का था, साथ ही साथ एक कठोर और निंदक व्यभिचारी भी हो सकता था। दरअसल, यह स्पष्ट है कि आपत्तिजनक संकेत उनके द्वारा नहीं दिए गए थे, बल्कि दूसरों की टिप्पणियों से प्रेरित थे, जिनके प्रति ब्रैनवेल अपनी अवमानना दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

ब्रैनवेल ब्रोंटे का दुर्भाग्य रहा है कि उन्होंने जो पत्र नादानी में, केवल अपने निजी मित्रों के लिए लिखा था, वह उनकी बदनामी के प्रतीक और प्रमाण के रूप में दुनिया के सामने प्रकाशित हो गया। कम से कम इसके प्रकाशन से एक लाभ तो मिलता ही

है, क्योंकि यह हमें उनके चरित्र की तीव्र और स्पष्ट समझ और लेखन की तीक्ष्ण शैली को दर्शाता है, जो उनके अधिक जोशीले स्वभाव में उनके व्यक्तित्व की विशेषता बनने लगी थी। पत्र इस प्रकार है: —

'ब्रॉटन-इन-फर्नेस,

13 मार्च, 1840।

'ट्रम्प का पुराना बदमाश,

'यह मत सोचो कि मैं तुम्हें भूल गई हूँ, हालाँकि तुम्हें पत्र लिखने में मुझे इतनी देर हो गई। मेरा इरादा था कि जैसे ही मुझे कहानी सुनाने के लिए सामग्री मिल जाए, मैं तुम्हें एक कहानी भेज दूँ, और अब जाकर मुझे खुद को समझने और अपनी स्थिति जानने का समय मिला है। अगर तुम मुझे अभी देखोगे, तो मुझे पहचान नहीं पाओगे, और लोग मेरे बारे में जो कहते हैं, उसे सुनकर हँसोगे। ओह, इस दुनिया का झूठ और पाखंड! मैं समुद्र तट के किनारे एक छोटे से एकांत कस्बे में बसी हूँ, मेरे चारों ओर जंगली, पथरीली और बादलों से ढकी पहाड़ियाँ हैं। मेरे मालिक एक सेवानिवृत्त काउंटी मजिस्ट्रेट हैं, एक बड़े जमींदार हैं, और बेहद उदार स्वभाव के हैं। उनकी पत्नी शांत, सौम्य और मिलनसार महिला हैं, और उनके दो बेटे अच्छे और जोशीले हैं। मेरे मकान मालिक एक सम्मानित सर्जन हैं, और सात में से छह दिन शराब के नशे में धुत रहते हैं! उनकी पत्नी एक हंसमुख, बातूनी और दयालु आत्मा हैं; और उनकी बेटी! - ओह! मौत और नरक! खैर, मैं कौन हूँ?' यानी, वे मुझे क्या समझते हैं? एक अत्यंत शांत, गंभीर, संयमी, धैर्यवान, सौम्य हृदय वाला, गुणी, सज्जन दार्शनिक, – अच्छे कर्मों का आदर्श और धार्मिक विचारों का भंडार। अगर मैं कमरे में प्रवेश करता हूँ, तो मेज़पोश के नीचे ताश के पत्ते फेंटे जाते हैं, गिलास अलमारी में रख दिए जाते हैं। मैं न तो शराब पीता हूँ, न शराब, न ही माल्ट। मैं काले कपड़े पहनता हूँ और संत या शहीद की तरह मुस्कुराता हूँ। हर कोई कहता है, "श्री पोस्टलेथवेट के शिक्षक कितने अच्छे नौजवान हैं!" यह सच है, क्योंकि मैं एक जीवित प्राणी हूँ और मैं उन पर बड़े आराम से हँसता हूँ। मैं उनकी अच्छी राय बनाए रखना चाहता हूँ। मैंने अपने जाने के बाद वाली रात को केंडल में अपने पुराने दोस्त व्हिस्की के साथ छह महीने की विदाई ली। रॉयल होटल में सज्जनों का एक समूह था और मैं उनके साथ शामिल हो गया। हमने रात का खाना और व्हिस्की-टॉडी मंगाई जो "बहुत तीखी" थी! उन्हें लगा कि मैं एक चिकित्सक हूँ और उन्होंने मुझे कुर्सी पर बिठा दिया। मैंने कई टोस्ट दिए, जिन्हें सबने

एक साथ पी लिया, जब तक कि कमरा घूमने लगा और मोमबत्तियाँ हमारी आँखों में झिलमिलाने लगीं। मेहमानों में से एक सम्मानित बूढ़ा आदमी था, जिसके सिर पर पाउडर लगा था, गुलाबी गाल थे, मोटा तोंद थी और अंगूठियाँ पहनी हुई थीं। उसने "द लेडीज़" का टोस्ट दिया... जिसके बाद उसने एक भाषण देना शुरू किया; और दो मिनट में, एक बड़े वाक्य के बीच में, वह रुक गया, अपना सिर पोंछा, इधर-उधर देखा, हकलाया, खाँसा, फिर रुका और अपनी चप्पलें माँगीं। वेटर ने उसे बिस्तर तक पहुँचाया। फिर एक लंबा आयरिश जमींदार और इज़राइल का एक निवासी अपने-अपने देशों को लेकर झगड़ने लगे; और बहस की गरमाहट में, उन्होंने अपने गिलास उलट दिए, एक दूसरे के गले पर, अपने खुद के गले पर नहीं। मैंने खून निकालने, दस्त लगाने और छाले करने की सलाह दी; लेकिन उन्होंने एक दूसरे को सचमुच "जेम वार्डर" दे दिया, इसलिए मैंने भी अपना गिलास ज़मीन पर फेंक दिया और कसम खाई कि मैं "पुराने आयरलैंड" में शामिल हो जाऊँगा! खूब हंगामा हुआ, लेकिन आखिरकार हम शांत हो गए। अगली सुबह मैंने खुद को बिस्तर पर पाया, मेरे पास पोर्टर की एक बोतल, एक गिलास और एक कॉर्कस्क्रू रखा था। तब से मैंने दूध-पानी से ज्यादा कुछ नहीं पिया है, और उम्मीद है कि मिडसमर में लौटने तक नहीं पीऊँगा; तब देखेंगे। मैं स्प्रिंगहेड के प्रिंस विलियम जितना मोटा हो रहा हूँ, और उनके दोस्त, पार्सन विंटरबोथम जितना धार्मिक। मेरा हाथ अब कांपता नहीं है। मैं मिस्टर पोस्टलेथवेट के साथ उल्वरस्टन में बैंकर के यहाँ जाता हूँ, और वहाँ बैठकर चाय पीता हूँ और बूढ़ी महिलाओं के साथ गपशप करता हूँ। जहाँ तक युवा लड़कियों की बात है! अभी मेरे पास एक बैठी है - गोरा चेहरा, नीली आँखें, काले बाल, अठारह साल की - उसे जरा भी अंदाजा नहीं है कि शैतान उसके इतना करीब है!

“आपका पत्र देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई, साहब, लेकिन मुझे एक वाक्य भी समझ नहीं आया – शायद आप समझ जाएँगे कि मेरा क्या मतलब है... आप सब कैसे हैं? मैं आप सबको फिर से सुनने और देखने के लिए तरस रहा हूँ। “शैतान का अंगूठा” कैसा है, जिसे लोग — — — — कहते हैं, और “शोक में शैतान” कैसा है, जिसे वे — — — — कहते हैं? — — — —, और — — — —, और डॉक्टर कैसे हैं; और वह जो नरक के चिमटे के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा – वह जिसकी आँखों से शैतान खिड़कियों की तरह झाँकता है – मेरा मतलब है — — — —, साहब? छोटा — — — —, “लंबे पैर वाला” — — — —, और बाकी सब कैसे

हैं? क्या उनकी शादी हो गई है, उन्हें दफना दिया गया है, शैतान ने उन्हें सता दिया है, और वे शापित हो गए हैं? जब मैं आऊँगा तो मैं उनका हाथ अच्छे से दबाऊँगा; तब तक मैं इतना धार्मिक हूँ कि वे मेरे बारे में सोच भी नहीं सकते। वह टेढ़े पैरों वाला शैतान मुझसे अभद्र प्रश्न पूछता था जिनका उत्तर मैं उसे उसी तरह देता था।” बेल्ज़ेबब उसे छड़ी बना देगा! जब तक मैं वापस न आऊं, तब तक शराब न पीना जारी रखो, मेरे दोस्त; इससे तुम्हारा शरीर ठीक हो जाएगा... क्या "लिटिल नॉज़ी" को लगता है कि मैं उसे भूल गया हूँ? नहीं, बृहस्पति की कसम! और न ही उसकी घड़ी। मैं उसे कुछ दिनों में एक यादगारी पत्र भेजूंगा! लेकिन मुझे तुमसे ज़्यादा सुंदर किसी से बात करनी है; तो शुभ रात्रि, मेरे दोस्त।

'मेरा विश्वास करो,

‘द फिलॉसफर’

‘सीधे लिखो। बेशक तुम यह पत्र नहीं दिखाओगे; और, भगवान के लिए, लाल स्याही से खींची गई सभी पंक्तियों को मिटा दो।’

जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, यह पत्र हॉवर्थ में कुछ चुनिंदा परिचितों के लिए ही लिखा गया था और इसका उद्देश्य केवल कुछ क्षणों के मनोरंजन के लिए था। इसे पढ़े जाने के बाद इसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाना था। लेकिन जॉन ब्राउन ने इस पत्र को संभाल कर रखा, जिसे मैंने देखा और उसकी प्रतिलिपि बनाई। यह एक विचित्र घटना है, जो हॉवर्थ के लोगों के बीच इसके प्रभाव को दर्शाती है, कि मूल प्रति 1874 में खो जाने के बावजूद, चर्च के चौकीदार के भाई को यह पत्र मुंह ज़बानी याद था और वह इसे काफी सटीकता से दोहरा सकता था। इस तरह इसे कई बार लिखा गया है। इस पत्र का उल्लेख इस कृति में नहीं किया जाता, यदि मिस रॉबिन्सन ने - अजीब बात है - इसे अपनी 'एमिली ब्रोंटे' के लिए एक उपयुक्त अलंकरण न समझा होता। यदि ब्रैनवेल को इसे लिखते समय इसके भाग्य का पता होता, तो यह 'लॉज ऑफ द थ्री ग्रेसेस के आदरणीय मास्टर' तक कभी नहीं पहुँचता, बल्कि उनके द्वारा स्वयं ही जला दिया जाता। क्योंकि, जैसा कि हमने देखा है, वह लाल रंग से अंकित कुछ अभिव्यक्तियों से शर्मिंदा था, जिन्हें मिटाने की उसने विनती की थी।

यह पत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है; क्योंकि यह दर्शाता है कि ब्रैनवेल अपने जीवन के इस युवा दौर में ही मानव स्वभाव और उसकी गहराइयों के बारे में कितना जानते थे। उन्होंने अपने परिचितों के साथ लगातार मेलजोल, गहरी समझ और घनिष्ठ बातचीत के

माध्यम से उनके भावों, मनोभावों और प्रवृत्तियों को भली-भांति जान लिया था। उन्होंने उन्हें सुना था, उन पर ध्यान दिया था और उनके चरित्रों का सटीक और सजीव चित्रण कर सकते थे। वे समाज के तौर-तरीकों और घरेलू जीवन की परंपराओं से भली-भांति परिचित थे। उनके लिए संसार एक चित्र-दीर्घा के समान था और उसमें रहने वाले सभी जीव-जंतु गहन अध्ययन के विषय थे। पुरुषों और उनके व्यवहारों का, कठोर, निर्दयी और स्वार्थी लोगों का, तथा साथ ही कोमल, सौम्य और सौम्य स्वभाव वाले पुरुषों और महिलाओं का उनका ज्ञान उन्हें उनके दुख-सुख की कहानियों को ईमानदारी और कुशलता से प्रस्तुत करने में सक्षम बनाता था।

जब वह युवावस्था में पहुँच गया, जब उसकी बुद्धि अपने पूर्ण विकास पर थी, तब तक वह समाज में घुलमिल चुका था और हॉवर्थ जीवन के रहस्यों में दीक्षित हो चुका था; और अपने से बड़े और कठोर पुरुषों की अतिवादिता से परिचित हो चुका था। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि यदि उसने युवावस्था में सामान्य से अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया था, तो वह अपने द्वारा अर्जित विशिष्ट ज्ञान से उत्पन्न प्रलोभनों से बच नहीं पाया। लेकिन, जब वह इस प्रकार संसार के कुटिल रास्तों और लापरवाह भटकावों से गुजर रहा था, अच्छे और बुरे अनुभवों का भंडार प्राप्त कर रहा था, तब उसकी बहनें अधिकतर घर पर ही एकांतवास में रहती थीं, और जब वे बाहर जाती थीं, तब भी इसी प्रकार एकांत में रहती थीं। एमिली के बारे में शार्लोट कहती हैं, 'मैं यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हूँ कि उसे उन किसानों के बारे में व्यावहारिक ज्ञान उतना ही था जितना कि एक नन को उन ग्रामीण लोगों के बारे में होता है जो कभी-कभी उसके मठ के द्वार से गुजरते हैं। मेरी बहन का स्वभाव स्वाभाविक रूप से मिलनसार नहीं था; परिस्थितियों ने उसके एकांतवास की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया।' चर्च जाने या पहाड़ियों पर टहलने के अलावा, वह शायद ही कभी घर की दहलीज पार करती थी। हालाँकि उसके आस-पास के लोगों के प्रति उसकी भावनाएँ दयालु थीं, फिर भी उसने कभी उनसे मेलजोल नहीं चाहा, और न ही कुछ अपवादों को छोड़कर कभी ऐसा किया। फिर भी वह उन्हें जानती थी, उनके तौर-तरीके, उनकी भाषा, उनके पारिवारिक इतिहास से परिचित थी; वह उनकी बातें रुचि से सुन सकती थी और उनके बारे में विस्तार से, सूक्ष्म, सजीव और सटीक रूप से बात कर सकती थी; लेकिन उनसे उसका शायद ही कभी कोई संवाद होता था। लेकिन जैसा कि हमने देखा है, ब्रैनवेल उन लोगों के साथ घुलता-मिलता और व्यक्तिगत संपर्क रखता था जिनसे एमिली दूर

रहती थी; और उसका व्यक्तिगत ज्ञान और उसकी निर्विवाद प्रतिभा ने मिलकर उसे अपने आस-पास के लोगों के मजबूत और विशिष्ट चरित्र को समझने, उसकी सराहना करने, उसकी गहनता से विश्लेषण करने और उसकी प्रवृत्ति का आकलन और परिभाषित करने में सक्षम बनाया। इसलिए यह और भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि ब्रैनवेल से हमारे पास चित्रात्मक वर्णन के रूप में बहुत कम बचा है, और उनके द्वारा प्रकट किए गए अवलोकन के समृद्ध खजाने ने, अधिकांशतः, केवल उन लोगों की स्मृतियों में अपनी छाप छोड़ी है जिन्हें उनके प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

अध्याय सत्रह।

सॉवरबी ब्रिज पर ब्रैनवेल। — शार्लोट के प्रयास।

उल्वरस्टन में ब्रैनवेल की नियुक्ति समाप्त - उन्हें सोवरबी ब्रिज पर रेलवे में नौकरी मिल जाती है - लुडेनडेन फुट में ब्रैनवेल - उनके दोस्तों की उनके बारे में यादें - शार्लोट और एमिली फ्रेंच उपन्यास पढ़ रही हैं - शार्लोट को नौकरी मिल जाती है - ऐनी के बारे में चिंतित - बहनों की स्कूल परियोजना - ब्रुसेल्स जाने की शार्लोट की तीव्र इच्छा - अपनी चाची ब्रैनवेल को उनका पत्र।

यदि श्री पोस्टलेथवेट के यहाँ उनकी नियुक्ति के उत्तरदायित्वों का निर्वाह, जो उनके पिता की इच्छा से जून 1840 में समाप्त हुआ, ब्रैनवेल को हॉवर्थ के अपने परिचितों की खुशनुमा संगति से निर्वासन के रूप में महसूस हुआ था, तो ब्रैडफोर्ड और हैलिफ़ैक्स के आसपास के उनके कलात्मक और साहित्यिक मित्रों से यह अलगाव और भी अधिक गहरा था। इसलिए उन्होंने अत्यंत लगन और चिंता के साथ लीड्स

और मैनचेस्टर रेलवे में एक पद प्राप्त करने का प्रयास किया, जिसके खुलने का वे बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, हैलिफ़ैक्स के निकट काल्डर घाटी में किसी स्थान पर; और उन्हें सोवरबी ब्रिज स्टेशन पर प्रभारी क्लर्क के पद पर नियुक्ति प्राप्त हुई। ब्रैनवेल के दृढ़ संकल्प के बारे में शार्लेट कहती हैं: 'मेरा एक दूर का रिश्तेदार, पैट्रिक ब्रैनवेल, लीड्स और मैनचेस्टर रेलमार्ग पर क्लर्क के रूप में अपनी किस्मत आज़माने के लिए निकल पड़ा है। यह एक साहसिक, रोमांचक, रोमांटिक और साहसी योद्धा जैसा जीवन है।' ब्रैनवेल ने 1 अक्टूबर, 1840 को सोवरबी ब्रिज में अपना नया काम शुरू किया, जो हेब्डेन ब्रिज से नॉर्मनटन तक की लाइन के खुलने से ठीक पहले था।

जैसा कि पहले ही देखा जा चुका है, ब्रैनवेल और लेलैंड के बीच जान-पहचान थी; लेकिन अब जब ब्रैनवेल ब्रॉटन-इन-फर्नेस में रहने के कारण कलाकार के स्टूडियो में छह महीने या उससे अधिक समय तक आना-जाना बंद कर चुके थे और अब वे आस-पास के इलाके में रहने लगे थे, तो दोनों के बीच नियमित संपर्क होने लगा। 1840 की शरद ऋतु में एक सुहावनी रविवार दोपहर को, मेरे भाई, जो एक मूर्तिकार थे, की इच्छा पर मैं उनके साथ सॉवरबी ब्रिज स्टेशन पर ब्रैनवेल से मिलने गया। युवा रेलवे क्लर्क दिखने में सज्जन व्यक्ति जैसे थे और जिस पद को उन्होंने चुना था, उससे कहीं बेहतर पद के लिए योग्य प्रतीत होते थे। कद में वे औसत से थोड़े कम थे; जैसा कि श्री ग्रुंडी कहते हैं, वे 'लगभग नगण्य रूप से छोटे' नहीं थे, न ही उनकी 'चेहरे पर उदासी' थी; और न ही वे 'मनुष्य का एक साधारण नमूना' थे। वे दुबले-पतले और फुर्तीले थे, फिर भी उनका शरीर सुगठित था। उनका रंग साफ और लालिमा लिए हुए था, और उस समय उनके चेहरे के भाव प्रसन्न और हंसमुख थे। उनकी आवाज में मधुरता थी, और उनकी अंग्रेजी बोलने और प्रयोग करने की शैली एकदम सही थी। ब्रैनवेल बेहद खुशमिजाज लग रहे थे, और उनमें शराबखोरी के वे लक्षण बिल्कुल नहीं थे, जिनका आरोप कुछ लेखकों ने उनके जीवन के इस दौर में उन पर गलत तरीके से लगाया है।

मेरे भाई ने मुझसे अक्सर ब्रैनवेल की काव्य प्रतिभा, उनकी संवाद क्षमता और उनकी उच्च स्तरीय शिक्षा के बारे में बात की थी; और व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलने पर, मुझे उनकी मानसिक प्रतिभा और साहित्यिक उपलब्धियों के इस आकलन में कोई संदेह नहीं मिला।

ब्रैनवेल कुछ महीनों तक सोवरबी ब्रिज में रहे, जहाँ से 1841 में उनका तबादला

लुडेनडेन फुट में कर दिया गया, जो घाटी में लगभग एक मील आगे स्थित एक स्थान था, जहाँ हाल ही में एक स्टेशन स्थापित किया गया था। श्री ग्रुंडी, जो उस लाइन पर सहायक अभियंता थे, की ब्रैनवेल से मुलाकात बाद वाले स्थान पर हुई; और वे इसके बारे में कहते हैं, 'आस-पास कोई गाँव नहीं था,' और यह कि, 'यदि इस विचित्र व्यक्ति को बुरी तरह से परेशान करने के उद्देश्य से कोई स्थान चुना गया होता, तो यही वह स्थान होता।'

श्री ग्रुंडी ने शायद केवल अपनी स्मृति के आधार पर ही बात की होगी। स्टेशन से दो मिनट की पैदल दूरी पर स्थित लुडेनडेन फुट का प्राचीन गाँव, जहाँ की आबादी आस-पास की मिलों और कारखानों में काम करती थी, और साथ ही 'रेड लायन' और 'शटल एंड एंकर' नामक दो पुराने सराय, ब्रैनवेल के प्रवास के आस-पास के क्षेत्र से एकांत और जंगलीपन को पूरी तरह से दूर करने के लिए पर्याप्त थे। फिर भी, यह बदलाव शायद ही वांछनीय था, और निस्संदेह इसने ब्रैनवेल को अपने काम से विरक्ति करने में योगदान दिया। यह खेदजनक है कि ब्रैनवेल और श्री ग्रुंडी के पेशे इस प्रकार के थे कि उनके बीच नियमित और निरंतर संपर्क संभव नहीं हो पाया, और समय और स्थान की दूरी ने अपने मित्र की यादों को इतना धुंधला कर दिया है कि, हालांकि उनके द्वारा बुद्धिमानी से संरक्षित पत्र मूल्यवान हैं, फिर भी उनकी यादों में कई अशुद्धियाँ आ गई हैं, और श्रीमती गैस्केल के अतिरंजित विवरण ने उनके द्वारा बनाए गए चित्र में अनुचित प्रभाव डाला है।

श्री विलियम हीटन, जिन्होंने ‘फ्लावर्स ऑफ काल्डरवेल’ नामक कविताओं का एक छोटा संग्रह लिखा था, ब्रैनवेल ब्रोंटे को तब से अच्छी तरह जानते थे जब वे लुडेनडेन फुट में थे। उन्होंने मुझे एक पत्र लिखा जिसमें उनके मन और चरित्र का, और साथ ही गाँव के एक सराय में उनकी बातचीत का निम्नलिखित वर्णन था, जहाँ वे कभी-कभी मिलते थे: —

हीटन कहते हैं, “वे हंसमुख और प्रसन्नमिजाज थे, लेकिन कभी-कभी उदास और निराश भी दिखाई देते थे; फिर भी, यदि विषय कोई ऐसा हो जिससे वे परिचित हों, या कोई ऐसा लेखक हो जिसे वे पसंद करते हों, तो वे अपनी सीट से उठ खड़े होते और सुंदर भाषा में लेखक के चरित्र का वर्णन ऐसे उत्साह और प्रवाह के साथ करते, जैसा मैंने पहले कभी नहीं सुना था। उनकी प्रतिभा असाधारण थी। मैंने उन्हें एवन के कवि, शेली, वर्ड्सवर्थ और बायरन के साथ-साथ बटलर की “हुडिब्रस” की रचनाएँ इस तरह

सुनाते सुना है कि अक्सर मुझे यह इच्छा होती थी कि काश मैं भी उनकी तरह विद्वान होता। उस समय मैंने कविताएँ लिखना शुरू ही किया था। यह सच है कि मैंने कई रचनाएँ लिखी थीं, लेकिन वे कभी प्रकाशित नहीं हुईं; और एक बार मैंने उन्हें एक रचना दिखाई, जिसे उन्होंने बहुत अच्छी बताया। उन्होंने मुझे ऐसी किताबें उधार दीं जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थीं, और वे हमेशा मुझे जानकारी देने के लिए तत्पर रहते थे। उनका स्वभाव हमेशा मेरे प्रति सौम्य था।" मैं प्रकृति की उदात्त और सुंदर रचनाओं के प्रति उनके प्रेम को कभी नहीं भूलूंगा, न ही उस तरीके को जिससे वे पहाड़ों की धाराओं और जंगलों की छोटी नदियों के किनारे देखे गए सुंदर फूलों और दुर्लभ पौधों के बारे में बताते थे। ये सभी चीजें उनके लिए विशेष थीं; और मैंने अक्सर उन्हें बुलबुल के मधुर गीतों और उन विचारों के बारे में विस्तार से बात करते सुना है जिन्होंने उन्हें पहली बार बुलबुल की आवाज़ सुनकर मंत्रमुग्ध कर दिया था।

ब्रैनवेल ने लुडेनडेन फुट में अपने बारह महीने के प्रवास के दौरान नए परिचित बनाए, लेकिन धनी निवासियों के शौक, रुचियां और शौक उनके अनुरूप नहीं थे; और शायद, अपने कर्तव्यों के अनुरूप न होने की तुलना में, वे बौद्धिक आनंद की तलाश में अक्सर हैलिफ़ैक्स जाते थे, जो उनके अपने सीमित व्यवसाय और लुडेनडेन फुट के समाज से उन्हें नहीं मिल पाता था।

जब वे इस स्थान पर रेलवे कंपनी की सेवा में व्यस्त थे, तब शार्लोट के पत्राचार में उनके बारे में कोई महत्वपूर्ण जानकारी नहीं मिलती। उनके काम में लगे होने से प्रसन्न होकर, उनकी बहनें आजीविका कमाने की योजना बनाने में लगन से जुट गईं ताकि वे साहित्यिक कार्यों में एक-दूसरे की सहायता कर सकें।

शार्लेट अभी भी एमिली के साथ घर पर थी और फ्रांसीसी उपन्यास पढ़ रही थी। हमें पता चलता है कि उसने फ्रांसीसी उपन्यासों का एक और गठ्ठा मंगवाया था, जिसमें 'चालीस से अधिक खंड' थे। वह कहती है, 'मैंने लगभग आधे पढ़ लिए हैं। ये बाकी उपन्यासों की तरह ही चतुर, शरारती, धूर्ततापूर्ण और अनैतिक हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि इनसे फ्रांस और पेरिस का पूरा ज्ञान मिलता है और ये फ्रांसीसी बातचीत का सबसे अच्छा विकल्प हैं।' इस काम में हम तीन साल पहले वाली शार्लेट ब्रोंटे को मुश्किल से ही पहचान पाते हैं, जिसका धार्मिक उन्माद उसे निराशा की ओर धकेल रहा था, सिवाय उस जोश के जिसके साथ वह अपने नए झुकाव का अनुसरण कर रही थी। उसने इस दूसरे गठ्ठे के बीस खंड पढ़ लिए थे और बीस और पढ़ने का

इरादा रखती थी। उसे उम्मीद थी कि इस प्रक्रिया से वह भाषा से इतनी परिचित हो जाएगी कि दूसरों को इसे सिखा सकेगी।

उस पत्र में, जिसमें उन्होंने ब्रैनवेल के रेलवे में अपने पद पर जाने की घोषणा की थी—जो उन्होंने प्रसन्न मन से लिखा था, जब उन्हें सब कुछ गुलाबी रंग का दिखाई दिया, जिसका कारण उन्होंने हॉवर्थ में 'यहूदिया की पहाड़ियों' पर चलने वाली तेज़ हवा को बताया—उन्होंने लिखा: 'श्रीमती बी नाम की एक महिला को, ऐसा लगता है, एक शिक्षक की आवश्यकता है। काश वह मुझे रख लेतीं; और मैंने मिस वूलर को यह बताने के लिए पत्र लिखा है। सचमुच, घर पर रहना, अपनी मर्ज़ी से कुछ भी करने की पूरी आज़ादी होना कितना सुखद है। लेकिन मुझे टिड्डों और चींटियों के बारे में एक पुरानी घिसी-पिटी कहानी याद आ रही है, जो एक घिसे-पिटे बूढ़े धूर्त, ईसप नाम के व्यक्ति ने सुनाई थी; टिड्डे पूरी गर्मी गाते रहे और पूरी सर्दी भूखे मरते रहे।'

ब्रैनवेल एक कुशल शिक्षक साबित हो रहे थे, क्योंकि अगर वे गाते थे, तो साथ ही साथ व्यावहारिक रूप से भी काम करने के लिए उत्सुक रहते थे; और अब तक वे लुडेनडेन फुट में अच्छा काम कर रहे थे। शार्लोट भी नौकरी पाने के लिए दृढ़ संकल्पित थीं, लेकिन श्रीमती बी—— के साथ उनकी बातचीत विफल रही। श्रीमती ने शार्लोट द्वारा अपनी योग्यताओं को स्पष्ट रूप से बताने पर प्रसन्नता व्यक्त की, लेकिन उन्हें ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो संगीत और गायन का प्रशिक्षण दे सके। यह काम मिस ब्रोंटे नहीं कर सकती थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनमें संगीत की वह रुचि नहीं थी जो उनके भाई-बहनों को ब्रैनवेल परिवार से विरासत में मिली थी। शायद वे अपने पिता से अन्य बच्चों की तुलना में अधिक मिलती-जुलती थीं। अंततः, मार्च 1841 में, उन्होंने एक निजी गवर्नेंस के रूप में अपनी दूसरी नौकरी शुरू की। वे अपनी सहेली को लिखती हैं, 'मैंने तुम्हें कुछ समय पहले बताया था कि मैं नौकरी पाना चाहती हूँ, और जब मैंने ऐसा कहा था, तो मेरा संकल्प पूरी तरह से दृढ़ था। मुझे लगा कि चाहे कितनी भी बार मुझे निराशा हो, मैं अपने प्रयासों को छोड़ने का इरादा नहीं रखती।' दो-तीन बार बुरी तरह नाकाम होने के बाद—पत्राचार और साक्षात्कार के रूप में तमाम परेशानियों के बाद—आखिरकार मुझे सफलता मिल गई है, और मैं अपने नए स्थान पर अच्छी तरह से स्थापित हो गया हूँ।'

शार्लट को अपना निवास स्थान बहुत बड़ा नहीं लगा, लेकिन ज़मीन सुंदर और विशाल थी। उसने आराम पाने के लिए कुछ त्याग किया था, जैसा कि वह कहती है,

अच्छी ज़िंदगी नहीं, बल्कि खुश चेहरे और गर्मजोशी भरे दिल। उसके दो विद्यार्थी थे, एक आठ साल की लड़की और दूसरा छह साल का लड़का। हालाँकि उसे अपने पिता के घर से दूर रहने पर हमेशा घर की याद सताती रहती थी, जहाँ का माहौल उसे बहुत अपनापन और स्नेह देता था, लेकिन अपने नए घर में उसे अपने मालिकों की सहज उदारता और दयालुता के कारण काफी राहत मिली। वह कहती है, 'मेरी दिली इच्छा और कोशिश उन्हें खुश करने की होगी। अगर मुझे लगे कि मैं उन्हें संतुष्टि दे रही हूँ, और साथ ही मैं स्वस्थ भी रहूँ, तो मुझे उम्मीद है कि मैं कुछ हद तक खुश रहूँगी। लेकिन मेरे अलावा कोई नहीं बता सकता कि एक गवर्नेंस का काम मेरे लिए कितना कठिन है - क्योंकि मेरे अलावा कोई नहीं जानता कि मेरा पूरा मन और स्वभाव इस काम के लिए कितना अरुचिपूर्ण है।' यह मत सोचिए कि मैं इसके लिए खुद को दोषी नहीं मानती, या इस भावना पर काबू पाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ती। मेरी कुछ सबसे बड़ी मुश्किलें उन चीजों में हैं जो आपको तुलनात्मक रूप से मामूली लगेंगी। बच्चों की अभद्र और बेरुखी भरी हरकतों को रोकना मेरे लिए बहुत मुश्किल है। नौकरों या मालकिन से अपनी कोई भी इच्छा, चाहे वह कितनी भी हो, माँगना मेरे लिए बहुत कठिन है। रसोई में जाकर उसे हटवाने की बजाय सबसे बड़ी असुविधा सहना मेरे लिए कहीं ज्यादा आसान है। मैं मूर्ख हूँ। भगवान ही जानता है कि मैं इसमें कुछ नहीं कर सकती।

शार्लोट को अपने प्रवास के पहले महीने के बाद हालात थोड़े आसान लगने लगे और उसकी घर की याद भी कुछ कम हो गई। हालाँकि उसका समय काफी व्यस्त रहता था, फिर भी उसके प्रति बहुत स्नेह दिखाया गया और उसके पिता और उसकी सहेली को उससे मिलने के लिए आमंत्रित किया गया।

जून में, अपने नियोक्ता की अनुपस्थिति में, उन्होंने लिखा, 'आप शायद ही कल्पना कर सकते हैं कि मुझे एक नोट लिखने के लिए पंद्रह मिनट का समय भी नहीं मिल पाता; लेकिन ऐसा ही है; और जब कोई नोट लिखा जाता है, तो उसे डाकघर तक एक मील ले जाना पड़ता है, जिसमें लगभग एक घंटा लग जाता है, जो दिन का एक बड़ा हिस्सा है। श्रीमान और श्रीमती — — एक सप्ताह से बाहर हैं। मुझे आज सुबह उनसे खबर मिली। उनके लौटने का कोई निश्चित समय नहीं है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि इसमें ज्यादा देरी नहीं होगी, वरना मैं इस छुट्टी में ऐनी से मिलने का मौका चूक जाऊंगी। मुझे पता चला है कि वह पिछले बुधवार को घर आई थी, और उसे केवल

तीन सप्ताह की छुट्टी दी जाएगी, क्योंकि जिस परिवार के साथ वह है, वे स्कारबोरो जा रहे हैं। मैं उससे मिलना चाहती हूं, ताकि मैं खुद उसके स्वास्थ्य का जायजा ले सकूं। मैं किसी और की रिपोर्ट पर भरोसा नहीं कर सकती, कोई भी अपने अवलोकन में पर्याप्त बारीकी नहीं दिखाता। मैं चाहती थी कि आप उससे मिलें। नौकरों और बच्चों के साथ मेरा अब तक का व्यवहार बहुत अच्छा रहा है; फिर भी यह नीरस और एकाकी काम है। आप भी मेरी तरह समझ सकते हैं कि बिना साथी के होने पर कितना अकेलापन महसूस होता है।

एक गवर्नेंस के जीवन की तमाम परेशानियों और अपमानों से जूझती नाज़ुक ऐनी की तस्वीर शार्लोट के लिए स्वाभाविक रूप से काफ़ी दुखद थी, जो अपनी सबसे छोटी बहन के कल्याण के लिए हमेशा चिंतित और सतर्क रहती थी। शायद वह अपनी कल्पना में अपनी बहन की कठिनाइयों को अपनी कठिनाइयों के संदर्भ में बढ़ा-चढ़ाकर देखती थी। सच तो यह है कि दोनों बहनों के मन और हृदय में ऐसे गुण थे जो उन्हें अजनबियों के बीच संतोष या खुशी का अनुभव करने के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त बनाते थे। विशेष रूप से शार्लोट, जिसका स्वभाव संवेदनशील, observant और दृढ़ था; जिसकी कल्पना शक्ति बहुत विकसित, सक्रिय और उर्वर थी, लेकिन अक्सर निराशावादी भी; जिसकी इच्छाशक्ति शक्तिशाली थी, फिर भी एक उत्तेजित स्वभाव की तंत्रिका कमजोरी से विवश थी, ऐसे करियर की आवश्यकताओं के अनुसार अपनी प्रवृत्ति को ढालने में उसे कठिनाई होती थी; वह स्वतंत्रता के लिए तरसती थी। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि जब शार्लोट हॉवर्थ पहुँची - जो कि ऐनी के लौटने से पहले ही हो गया था - तो वहाँ एक स्कूल खोलने की उस परियोजना को फिर से शुरू किया गया जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, जहाँ वे घर जैसी स्वतंत्रता का आनंद ले सकें।

श्री ब्रोंटे और मिस ब्रैनवेल इस परियोजना के प्रति प्रतिकूल नहीं थे, और वे नाश्ते की मेज पर या शाम को कभी-कभार इस बात पर चर्चा करते थे कि वे लड़कियों को उनके मनचाहे मुकाम तक पहुँचाने में सबसे अच्छी मदद कैसे कर सकते हैं। इन मामलों में बहनों के पिता हमेशा से ही उनके मित्र रहे होंगे; वे उन संघर्षों और उम्मीदों से प्रसन्न और रुचि रखते थे जो उनके अपने शुरुआती जीवन के आशापूर्ण दिनों की याद दिलाते थे। बड़ों के विचार-विमर्श से हमें पता चलता है कि चाची ने ऋण देने की पेशकश की थी, या संकेत दिया था कि यदि उनकी भतीजियाँ किसी पद के निर्धारण

और छात्रों के चयन के रूप में अपनी योजनाओं की ठोसता का आश्वासन दे सकें, तो वे शायद ऋण देंगी। ईस्ट-राइडिंग को वेस्ट-राइडिंग की तुलना में स्कूलों से कम सुसज्जित माना जाता था, और बहनों का पसंदीदा विचार बर्लिंगटन के पड़ोस में अपनी प्रस्तावित अकादमी खोलना था, जहाँ उनके और उनके छात्रों दोनों के स्वास्थ्य की आशा की जा सकती थी। लेकिन सवाल यह था कि उनकी चाची उन्हें कितना पैसा देंगी। शार्लोट को नहीं लगता था कि वह इस तरह के काम में 150 पाउंड से ज़्यादा खर्च करेंगी, और उन्हें शक था कि क्या यह एक स्कूल खोलने और घर चलाने के लिए पर्याप्त होगा, चाहे वह छोटे पैमाने पर ही क्यों न हो। इन विचारों ने बहनों, खासकर शार्लोट की इन योजनाओं को लेकर आशा और उत्साह को थोड़ा कम कर दिया। वह बेसब्री से अपनी सहेली के आने का इंतज़ार कर रही थी, जिस दिन छुट्टियों के दौरान वह पादरी के घर पर उनसे मिलने आने वाली थी। वह खिड़की से लगातार देखती रहती थी, हाथ में दूरबीन लिए और कभी-कभी नाक पर चश्मा लगाए, अपनी योजनाओं पर बहनों के अलावा किसी और से बात करने और नई राय सुनने के लिए उत्सुक थी। लेकिन उसकी सहेली नहीं आ सकी, और वह कहती है, 'जो सौ बातें मुझे तुमसे कहनी थीं, वे अब भूल जाएंगी, और कभी कही ही नहीं जाएंगी।' शार्लोट को डर लगने लगा कि उसकी योजनाओं को पूरा होने में कुछ समय लग जाएगा, और उसने ठान लिया कि जब तक कुछ पक्का नहीं हो जाता, वह अपनी नौकरी नहीं छोड़ेगी। लेकिन स्कूल को बनाए रखने की यह उम्मीद, जिसे उन्होंने कई वर्षों तक संजोकर रखा था, बहनों द्वारा कभी पूरी नहीं की जा सकी; परिस्थितियों के बदलते स्वरूप, जीवन की बदलती धाराओं ने उन्हें बार-बार दूर कर दिया, भले ही उन्हें विश्वास था कि वे अपनी आशाओं के लक्ष्य के करीब पहुंच रही हैं।

शार्लोट अपने घर लौट आई और 7 अगस्त, 1841 को लिखे एक पत्र में उसने अपनी सहेली को बताया कि उसे फिर से 'खुद का एहसास' हो गया है। श्रीमान और श्रीमती — — घर से बाहर थे, और उसने इस अवसर का लाभ उठाते हुए कहा कि वहाँ अकेले रहना उसके लिए सबसे सुखद समय था। उसने घर के बारे में विस्तार से बताया: बच्चे अच्छे नियंत्रण में थे, और नौकर-चाकर उसकी देखभाल करते थे; उसने अपने बारे में यह भी कहा कि मालिक और मालकिन की अनुपस्थिति ने उसे हमेशा खुशमिजाज और बातूनी दिखने के दायित्व से मुक्ति दिला दी थी।

उसकी सहेलियाँ, मार्था और मैरी टी——, यूरोप में खूब सुख-सुविधाओं का

आनंद ले रही थीं, जहाँ वे अपने भाई के साथ एक महीने के लिए रहने गई थीं। शार्लोट को मैरी का एक लंबा पत्र और एक पैकेट मिला था जिसमें एक सुंदर काला रेशमी स्कार्फ और ब्रुसेल्स से उपहार के रूप में खरीदे गए सुंदर चमड़े के दस्तानों की एक जोड़ी थी। वह इनसे प्रसन्न थी और इस बात से भी कि यूरोप की सबसे शानदार राजधानियों में से एक के इतने चहल-पहल भरे माहौल में भी उसे याद किया गया। मैरी के पत्रों में 'उन चित्रों और गिरजाघरों का जिक्र था जो उसने देखे थे— चित्र बेहद खूबसूरत थे, गिरजाघर बेहद पूजनीय थे।' यह विवरण पढ़ते ही शार्लोट के गले में कुछ अटक सा गया। उसे 'संयम और निरंतर काम के लिए तीव्र बेचैनी' हो गई; 'पंख पाने की ऐसी प्रबल इच्छा—ऐसे पंख जो धन से मिल सकते हैं; देखने, जानने, सीखने की ऐसी तीव्र प्यास; मानो एक पल के लिए उसके भीतर कुछ शारीरिक रूप से फैल गया हो।' कुछ समय के लिए उसे अपनी अनछुई क्षमताओं का एहसास हुआ; फिर सब कुछ ढह गया। उसने इन भावनाओं को, भले ही वे क्षणिक थीं, विद्रोही और बेतुका समझा, और जिस दृढ़ संकल्प ने उन्हें विचलित किया था, उसी ने उन्हें शीघ्र ही शांत कर दिया। उसने आशा की कि वे फिर से न उठें, क्योंकि वे अत्यंत पीड़ादायक थीं। स्कूल परियोजना, फीकी पड़ने के बजाय, और मजबूत होती जा रही थी, और तीनों बहनें इसे ध्रुव तारे की तरह देखती रहीं, जिसके चारों ओर उनकी अन्य सभी कम महत्वपूर्ण योजनाएँ घूमती रहीं। निराशा में वे इसी की ओर देखती रहीं। शार्लेट कभी-कभी इस विश्वास से व्याकुल और निराश हो जाती थी कि उसमें अपने पेशे के लिए कोई स्वाभाविक प्रतिभा नहीं है। वह कहती है कि यदि केवल अध्यापन ही आवश्यक होता, तो सब कुछ सहज और आसान होता; और वह आगे कहती है, 'लेकिन दूसरों के घरों में रहना - अपने वास्तविक चरित्र से अलगाव - एक ठंडे, कठोर, उदासीन बाहरी रूप को अपनाना, यही पीड़ादायक है।'

ऐसा प्रतीत होता है कि मिस वूलर लगभग इसी समय ड्यूसबरी मूर स्थित अपना स्कूल बंद करने का इरादा कर रही थीं और उन्होंने इसे मिस ब्रोंटे बहनों को देने की पेशकश की थी। स्कूल के लिए मिलने वाली अनुकूल शर्तों के मुकाबले एक-दो कमियों को नज़रअंदाज़ करना पड़ा। ऐनी के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित शार्लोट को यह स्थिति अनुकूल नहीं लगी; विद्यार्थियों की संख्या भी कम हो गई थी, और उनके दोस्तों का तर्क था कि एक सफल संस्थान स्थापित करने से पहले शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सुविधाएँ प्रदान करना आवश्यक होगा। लेकिन शार्लोट ने स्कूल लेने का निश्चय कर

लिया था। हालाँकि, बहनों को इस बात का पूरा भरोसा नहीं था कि उनकी योग्यताएँ सफलता सुनिश्चित कर पाएंगी। इसलिए, शार्लोट को एक ऐसा सुझाव दिया गया जिससे उन्हें आवश्यक क्षमताएँ प्राप्त हो सकें, जिसे उन्होंने अपनी पूरी ऊर्जा के साथ स्वीकार कर लिया; इस प्रकार वह अपनी चाची को लिखती हैं, जिन पर सब कुछ निर्भर करता है:

29 सितंबर, 1841।

'प्रिय चाची,

मैंने मिस वूलर को पत्र लिखकर उनके प्रस्ताव को स्वीकार करने की इच्छा जताई थी, लेकिन तब से मुझे उनसे कोई खबर नहीं मिली है। इस लंबे मौन का कारण समझ में नहीं आ रहा है, शायद सौदे को अंतिम रूप देने में कोई अप्रत्याशित बाधा आ गई हो। इस बीच, श्रीमान और श्रीमती (उनके विद्यार्थियों के माता-पिता) और अन्य लोगों ने एक योजना का सुझाव दिया है और उसे मंजूरी दे दी है, जिसे मैं अब आपको बताना चाहती हूँ। मेरे मित्र मुझे सलाह देते हैं कि यदि मैं स्थायी सफलता प्राप्त करना चाहती हूँ, तो स्कूल शुरू करने में छह महीने की देरी करूँ और किसी भी तरह से, चाहे जैसे भी हो, महाद्वीप के किसी स्कूल में इस बीच का समय बिताऊँ। उनका कहना है कि इंग्लैंड में स्कूल इतने अधिक हैं और प्रतिस्पर्धा इतनी कड़ी है कि श्रेष्ठता प्राप्त करने की दिशा में ऐसा कोई कदम उठाए बिना, हमें शायद बहुत संघर्ष करना पड़ेगा और अंत में असफल भी हो सकते हैं। वे यह भी कहते हैं कि आपने जो 100 पाउंड का ऋण देने की कृपा की है, उसकी शायद अभी पूरी आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि मिस वूलर हमें फर्नीचर उधार देंगी। और यदि यह सट्टा अच्छा और सफल होना है, तो कम से कम आधी राशि उसी तरह से लगाई जानी चाहिए जैसा मैंने बताया है, जिससे ब्याज और मूलधन दोनों की शीघ्र चुकौती सुनिश्चित हो सके।

मैं फ्रांस या पेरिस नहीं जाऊँगा। मैं बेल्जियम के ब्रुसेल्स जाऊँगा। वहाँ की यात्रा का खर्च, यात्रा के सबसे महंगे किराए पर भी, £5 होगा; वहाँ रहना इंग्लैंड की तुलना में लगभग आधा ही महंगा है, और शिक्षा की सुविधाएँ यूरोप के किसी भी अन्य स्थान के बराबर या उससे बेहतर हैं। आधे साल में, मैं फ्रेंच भाषा में पूरी तरह से पारंगत हो सकता हूँ। मैं इतालवी में बहुत सुधार कर सकता हूँ, और जर्मन का भी थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त कर सकता हूँ; बशर्ते मेरा स्वास्थ्य अभी जैसा है वैसा ही अच्छा बना रहे। मैरी अभी ब्रुसेल्स में एक बेहतरीन होटल में रह रही है। मैं शैतो डी कोक्लेबर्ग जाने के

बारे में नहीं सोचूँगा, जहाँ वह रहती है, क्योंकि वहाँ के नियम बहुत महंगे हैं; लेकिन अगर मैं उसे पत्र लिखूँ, तो वह, ब्रिटिश पादरी की पत्नी श्रीमती जेनकिंस की सहायता से, मेरे लिए एक सस्ता, अच्छा आवास और सम्मानजनक सुरक्षा की व्यवस्था कर सकती है। मुझे उससे अक्सर मिलने का अवसर मिलेगा; वह मुझे शहर से परिचित कराएगी; और, उसके चचेरे भाइयों की सहायता से, संभवतः मुझे उन लोगों से परिचय प्राप्त होगा जो अब तक मेरे परिचित किसी भी व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक बेहतर, परिष्कृत और सुसंस्कृत होंगे।

ये वो फायदे हैं जो स्कूल शुरू होने पर वाकई काम आएंगे; और अगर एमिली भी मेरे साथ इन फायदों का लाभ उठा सके, तो हम भविष्य में वो मुकाम हासिल कर पाएंगे जो आज मुमकिन नहीं। मैं ऐनी की जगह एमिली का नाम ले रही हूँ, क्योंकि अगर हमारा स्कूल चल पड़ा तो ऐनी भी भविष्य में कभी ये फायदा उठा सकती है। मुझे पूरा यकीन है कि लिखते समय आपको मेरी बात सही लगेगी। आप हमेशा अपने पैसे का सही इस्तेमाल करना पसंद करती हैं। आपको फालतू की खरीदारी पसंद नहीं है; जब आप किसी पर एहसान करती हैं, तो बड़े ही सलीके से करती हैं; और यकीन मानिए, इस तरह खर्च किए गए 50 या 100 पाउंड भी सही जगह इस्तेमाल होंगे। बेशक, इस विषय पर आपसे बेहतर दोस्त मुझे दुनिया में कोई और नहीं पता। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हमें ये फायदा मिल जाए, तो हमारी जिंदगी बदल जाएगी। पापा शायद इसे एक बेतुकी और महत्वाकांक्षी योजना समझेंगे; लेकिन महत्वाकांक्षा के बिना दुनिया में तरक्की कौन कर सकता है? जब वो कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी जाने के लिए आयरलैंड छोड़कर गए थे, तब वो भी मेरी ही तरह महत्वाकांक्षी थे। मैं चाहती हूँ कि हम सब मिलकर आगे बढ़ें। मुझे पता है कि हम सबमें प्रतिभाएँ हैं, और मैं चाहती हूँ कि उनका सदुपयोग हो। आंटी, मैं आपकी मदद की उम्मीद करती हूँ। मुझे विश्वास है कि आप मना नहीं करेंगी। मुझे पता है, अगर आप मान जाएँगी, तो अगर कभी आपको अपनी इस दयालुता पर पछतावा हो, तो इसमें मेरी कोई गलती नहीं होगी।

शार्लोट को जवाब के लिए कुछ समय इंतजार करना पड़ा, लेकिन आखिरकार जवाब मिल ही गया; उसका उत्साह रंग लाया। जवाब अनुकूल था: उसे और एमिली को ब्रुसेल्स जाना था।

रेलवे कंपनी में अपने कार्यकाल के दौरान, ब्रैनवेल कभी-कभी लुडेनडेन फुट से हॉवर्थ पार्सनेज में अपने परिवार से मिलने के लिए एक छोटी गाड़ी किराए पर लेकर

जाया करते थे। श्री ग्रुंडी कभी-कभी उनके साथ जाते थे और वे साथ में खुले मैदानों में चले जाते थे या पादरियों के साथ उस बूढ़े ज्योतिषी से मिलने जाते थे। उनके एक मित्र के अनुसार, तब वे 'अपने सबसे अच्छे रूप में होते थे और वाक्पटु और मनोरंजक होते थे, हालांकि कभी-कभी लौटने पर वे फूट-फूटकर रोते थे और कसम खाते थे कि वे सुधर जाएंगे।' यह अंतिम कथन ब्रैनवेल के आत्म-निरीक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण दर्शाता है। बहुत कम लोग - और ब्रैनवेल उनमें से अंतिम थे - जानबूझकर गलत काम करते हैं। अन्य अधिकांश लोगों की तरह, वे भी अक्सर ऐसे प्रभावों में आ जाते थे जिनका विरोध वे सावधानी और आत्म-नियंत्रण की आदत से कर सकते थे। शायद वे अनियमित रूप से जानते थे कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए; लेकिन परिणामों के प्रति असावधानी के कारण, वह कभी-कभी गलती कर बैठता था, कभी-कभी अपने भीतर के प्रबल भ्रम के वश में आ जाता था, और बाहरी आकर्षण के अनुरूप कार्य करता था; फिर भी वह अपनी मानसिक शक्ति को नियंत्रित कर सकता था और अपने पिछले कार्यों की गहन और पीड़ादायक समीक्षा कर सकता था। अतः वह अपने कार्यों का नैतिक मूल्यों के आधार पर विश्लेषण करने की क्षमता से वंचित नहीं था, और जब उसका विवेकपूर्ण निर्णय उसे उनके वास्तविक स्वरूप को समझने में सक्षम बनाता था, तो वह उचित पश्चाताप प्रदर्शित करता था।

ब्रैनवेल जब भी घर आते थे, तो उन्हें अपनी बहनों के प्रयासों, परियोजनाओं और संकल्पों के बारे में बहुत कुछ पता चलता था। वे उनके उद्देश्यों से भली-भांति परिचित थे और यह भी जानते थे कि दूसरों को पढ़ाने के लिए उन्हें और अधिक योग्य बनाने के लिए उठाए जा रहे कदम कितने महत्वपूर्ण थे, विशेषकर फ्रांसीसी भाषा और संगीत के उनके ज्ञान को परिपूर्ण करने के लिए। वे अपनी बहनों की उस परम आशा से भी अवगत थे कि यदि भविष्य सुरक्षित हो, तो उन्हें अपने बचपन के उस सपने को साकार करने का समय मिलेगा कि वे एक दिन लेखिका बनें, जिसे उन्होंने दूरी और व्यस्तताओं के बावजूद कभी नहीं छोड़ा। वे उनकी प्रतिभा के प्रति अत्यंत श्रद्धा रखते थे; और यद्यपि उनके जीवन में भी मौज-मस्ती, भोग-विलास और आनंद के क्षण आते थे, फिर भी वे उसी दिशा में अपनी आशाओं और आकांक्षाओं को कभी नहीं भूले।

अध्याय 18वां।

ब्रैनवेल की कविता, 1842।

लुडेनडेन फुट की स्थिति — ब्रैनवेल मैनचेस्टर की यात्रा करते हैं — उमस भरी गर्मी — वे आस-पास के सुरम्य स्थानों का दौरा करते हैं — श्री ग्रुंडी के लिए उनकी तात्कालिक कविताएँ — वे रेलवे कंपनी छोड़ देते हैं — मिस रॉबिन्सन की अनुचित टिप्पणियाँ — उनके तीन सॉनेट — उनकी कविता 'अफगान युद्ध' — ब्रैनवेल का श्री ग्रुंडी को पत्र — उनका आत्म-अवमूल्यन।

लीड्स और मैनचेस्टर रेलवे में प्रभारी क्लर्क के रूप में ब्रैनवेल ब्रोंटे की दूसरी नियुक्ति का स्थान लुडेनडेन फुट था। यह गाँव सोवरबी ब्रिज और मिथोलमरॉयड के लगभग बराबर दूरी पर स्थित था, जो क्लिविगर डीन में अपने उद्गम स्थल से नीचे उतरती काल्डर नदी के बाएँ किनारे पर एक उपजाऊ और मध्यम रूप से वनों से भरी घाटी में बसा हुआ था। नदी के दोनों किनारों पर खेती की गई पहाड़ियाँ काफी ऊँचाई तक उठती हैं और बेहद रमणीय लगती हैं। आस-पास के निर्माताओं और संभ्रांत लोगों में ब्रैनवेल को स्वागत करने वाले बहुत कम लोग मिले, इसलिए उन्होंने उन कलाकारों और साहित्यकारों की ओर रुख किया जिन्हें वे पहले हैलिफ़ैक्स में जानते थे।

लेकिन ब्रैनवेल ने इसके अतिरिक्त घाटी में (उनके साथी सहायक श्री डब्ल्यू —— उनकी अनुपस्थिति में उनका कार्यभार संभालते हुए) हेब्डेन ब्रिज, हेप्टनस्टॉल, द रिज, टॉडमॉर्डन और वाड्सवर्थ की ऊँचाइयों की ओर भ्रमण किया। वास्तव में, आस-पास कई अद्भुत सुंदर और रोचक स्थान थे, जो लंबे समय से कलाकारों और कवियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहे हैं, और जिनसे उन्होंने स्वयं को परिचित कराने का प्रयास किया।

इस घाटी की सीमा पर स्थित विशाल, गोलाकार पहाड़ियाँ, कई जगहों पर सुंदर

घाटियों और दर्रों से घिरी हुई हैं, जिनकी पीट से रंगी धाराएँ आसपास के ऊँचे ग्रॉस-मूर से निकलकर पथरीले तल पर बहती हुई काल्डर नदी में गिरती हैं। वार्ली और मिड्गली कस्बों के बीच स्थित लुडेनडेन डीन से एक छोटी सी धारा लुडेनडेन फुट की ओर बहती है, जो एक घाटी से होकर गुजरती है, जिसकी हरी-भरी ढलानों पर स्थापत्य और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कई प्राचीन भवन स्थित हैं। इनमें ईवुड हॉल, जहाँ बिशप फैरर का जन्म हुआ था, और कर्शॉ हाउस, एक सुंदर जैकोबियन हवेली शामिल हैं। क्रैग घाटी, जो लुडेनडेन फुट से एक मील या उससे अधिक दूरी पर स्थित विपरीत किनारे पर काल्डर नदी में उतरती है, अधिक गहरी और घने जंगलों से आच्छादित है। एक ओर सोवरबी स्थित है - जिसमें आर्कबिशप टिलोटसन का जन्मस्थान हॉग एंड शामिल है - और दूसरी ओर एरिंगडेन, जो प्लांटाजेनेट काल में एक शाही हिरण-पार्श्व था। लेकिन कैल्डर नदी की संगम धाराओं के बीच से बहने वाली घाटियों में सबसे सुंदर हेब्डेन की घाटी है, जो एक रमणीय घाटी है। यह घाटी हेप्टनस्टॉल की घने जंगलों से घिरी खड़ी ढलानों के बीच से होकर गुजरती है, जिसके शिखर पर सेंट थॉमस ए बेकेट का प्राचीन और अब खंडहर हो चुका चर्च स्थित है। इसके अलावा, वाड्सवर्थ में क्रिम्सवर्थ की संकरी घाटी भी है, जिसने शार्लोट ब्रोंटे को उनके शुरुआती उपन्यासों में से एक के नायक का नाम दिया था। इन भव्य ऊँचाइयों के बीच से नदी हार्डकासल की विशाल चट्टानों के नीचे से बहती है और हेब्डेन ब्रिज पर कैल्डर नदी में मिलने से पहले अपने मार्ग में कई चट्टानी अवरोधों को पार करते हुए गर्जना करती है। यह एक ऐसा क्षेत्र था जहाँ हॉवर्थ से पिकनिक मनाने वाले अक्सर आते थे, क्योंकि पहाड़ियों के ऊपर से एक सीधी सड़क थी।

ब्रैनवेल ने एक बार मैनचेस्टर का दौरा भी किया था; और लौटने पर, उन्होंने मिथोलमरॉयड के पड़ोस में रहने वाले एक युवा पादरी को, जो कभी-कभी उनकी बातचीत सुनने के लिए लुडेनडेन फुट स्थित उनकी लकड़ी की झोपड़ी में आते थे, बताया कि मैनचेस्टर के पैरिश चर्च की वास्तुकला ने उन्हें कितना प्रभावित किया था। मेहराबदार द्वार के नीचे खड़े होकर उन्होंने स्तंभों और मेहराबों की लंबी कतारों और नक्काशीदार छत को देखा, जिसके हल्के-फुल्के विवरण ने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया था। उस अवसर पर वे चर्च के गायन कक्ष में गए और लेडी चैपल को देखा - जिसमें अभी भी उस काल की सुंदर जालीदार नक्काशी और स्तंभों वाली स्क्रीन मौजूद थी - जहाँ कब्र खोदने वालों के औजार रखे थे, जो उन्हें 'थ्री ग्रेसेस लॉज के पूजनीय मास्टर'

की याद दिलाते थे, जिनमें लोहे की छड़, कुदाल, फावड़ा, ठेला, तख्ते और रस्सियाँ शामिल थीं; क्योंकि लेडी चैपल को इन भयानक सामानों के लिए एक सुविधाजनक स्थान बना दिया गया था।

सन् 1841 की गर्मियों में ब्रैनवेल और उनके दोस्त के लिए शांत स्टेशन पर समय कुछ नीरस सा बीत रहा था। ट्रेनों के बीच के अंतराल में, मधुमक्खी या ततैया की कभी-कभार भिनभिनाहट या चिड़िया की भिनभिनाहट के अलावा शायद ही कुछ सुनाई देता था, जबकि गर्मी के सूरज की लगभग सीधी किरणें लकड़ी की झोपड़ी की छत पर पड़ती थीं और उस जगह को असहनीय बना देती थीं। थकावट भरे आलस्य के क्षणों में, या ऊंघते हुए खाली समय में, ब्रैनवेल अपना और अपने दोस्त के मनोरंजन के लिए किताबों के हाशिये पर लापरवाही से आस-पड़ोस के लोगों और उस समय के प्रसिद्ध मुक्केबाजों के चित्र बनाकर समय बिताते थे।

हेब्डेन ब्रिज के आसपास ब्रैनवेल के कुछ परिचित लोग थे, और वे उनसे मिलने जाना नहीं भूलते थे। उनकी बहन, शार्लोट, बाद के वर्षों में कभी-कभी हेब्डेन ब्रिज स्थित हैंगिंग रॉयड में मेरे दिवंगत मित्र, रेवरेंड सटक्लिफ सोडेन के घर आती थीं, जो उस समय मिथोलम के पादरी थे - वही सज्जन जिन्होंने बाद में उस प्रतिभाशाली महिला और श्री निकोल्स का विवाह संपन्न कराया था। श्री निकोल्स और श्री सोडेन की मित्रता काफी पुरानी थी, और ब्रैनवेल लुडेनडेन फुट में रहते हुए भी उनसे परिचित थे। वास्तव में, कभी-कभी उनके 'लकड़ी के झोपड़े' में पादरी भी उनसे बातचीत करने आते थे। श्री सोडेन प्राकृतिक दृश्यों के शौकीन थे, और उनके कार्यक्षेत्र में दलदली भूमि, जंगल, चट्टानें, नदियाँ, नाले और घाटियाँ शामिल थीं, जहाँ वे अक्सर जाया करते थे। ब्रैनवेल की रुचियां उनकी इच्छा के अनुरूप थीं, लेकिन इन आकर्षणों ने ब्रैनवेल का ध्यान अक्सर और बहुत दूर तक उनकी स्थिति के अनिवार्य कर्तव्यों से भटका दिया, भले ही वे कर्तव्य अपेक्षाकृत हल्के थे। इसलिए, जैसा कि अपेक्षित था, इस प्रतिभाशाली लेकिन परिवर्तनशील युवक का काम असंतोषजनक पाया गया और स्पष्टीकरण मांगा गया। लुडेनडेन फुट में उनके बारह महीने के आधिकारिक कर्तव्यों की समाप्ति के समय, उनकी पुस्तकों की जांच की गई और वे अव्यवस्थित और अपूर्ण पाई गईं। उनके खातों में अनियमितता और कमियों पर भी ध्यान दिया गया था और इस संबंध में एक जांच शुरू की गई थी। अधिकारियों ने पुस्तकों की जांच करते समय पृष्ठों के हाशिये पर कलम और स्याही से बने रेखाचित्र पाए, जिनका मैंने पहले

ही उल्लेख किया है; और इन्हें दुर्भाग्यपूर्ण ब्रैनवेल द्वारा अपने कर्तव्यों के पालन और खातों को रखने में लापरवाही और उदासीनता का निर्णायक प्रमाण माना गया।

अप्रिय पूछताछ और विरोधों के माध्यम से उन्हें पता चल गया था कि रेलवे कंपनी में उनकी स्थिति अनिश्चित है, और वे इसके अंतिम परिणामों को लेकर चिंतित थे। अंततः उन्हें कंपनी के लेखापरीक्षा में उपस्थित होने के लिए कहा गया, और उनके मित्र डब्ल्यू — — उनके साथ गए।

सन् 1841 की क्रिसमस के दौरान, ब्रोंटे परिवार के सभी सदस्य घर पर एक साथ मिलने की उम्मीद कर रहे थे, क्योंकि शार्लोट और एमिली ब्रुसेल्स की यात्रा पर जाने वाली थीं; लेकिन शार्लोट को जनवरी 1842 में अपना भाई वहाँ नहीं मिला, क्योंकि वह उस महीने और वर्ष की 20 तारीख को लिखती हैं: 'जब से मैं घर आई हूँ, मैं हर हफ्ते ब्रैनवेल से मिलने की उम्मीद में घर जाती रही हूँ, और वह अभी तक आ नहीं पाया है। हालाँकि, हमें पूरी उम्मीद है कि वह अगले शनिवार को आ जाएगा।' ब्रैनवेल निश्चित रूप से घर लौट आया, लेकिन तभी जब उसे यह सूचित किया गया कि रेलवे कंपनी को अब उसकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं है। उसने अपने पद के कर्तव्यों को कितना कष्टदायक और आवश्यक दृढ़ता को अपनी रुचियों और शौक के साथ असंगत पाया, यह स्पष्ट नहीं है, हालाँकि इस निष्कर्ष पर शायद ही कोई संदेह होगा कि ऐसा ही था। लेकिन अपनी नौकरी खोने पर उसे जो अपमान और दुख हुआ, उसने उसे कुछ समय के लिए निराशा में डुबो दिया; और उनके स्वभाव की स्वाभाविक उदासी ने उन्हें अपने खाली समय के सामान्य सुखों और आनंदों को असाधारण अपराधों और कर्तव्य के उल्लंघन में तब्दील करने के लिए प्रेरित किया। लेकिन लुडेनडेन फुट स्टेशन की स्थिति और ब्रैनवेल के व्यवहार और कर्तव्यों पर इसके कथित हानिकारक प्रभाव के बारे में श्री ग्रंडी की गलत यादें, उनके मित्र के बारे में उनकी कई यादों की सटीकता पर संदेह पैदा कर सकती हैं।

ब्रैनवेल के उस स्थान पर रहने की निम्नलिखित घटना, जिसका वर्णन श्री ग्रुंडी ने किया है, उनके लेखन में एक मूल्यवान योगदान मानी जा सकती है; क्योंकि, यद्यपि यह सहज रूप से रचित है, फिर भी ये छंद दर्शाते हैं कि वे अप्रत्याशित अवसरों पर भी, अपने विषय की अच्छी समझ और लयबद्ध अभिव्यक्ति के एक निश्चित सामंजस्य के साथ, अपनी जन्मजात काव्य प्रतिभा का उपयोग कर सकते थे।

श्री ग्रुंडी कहते हैं, 'एक बार उन्हें (ब्रैनवेल को) लगा कि मैं एक पार्टी में उनके साथ

दूरी बनाकर व्यवहार कर रहा हूँ, और वे बहुत नाराज़ होकर चले गए। जब मैं उसी शाम अपने कमरे में पहुँचा, तो मुझे निम्नलिखित बातें मिलीं, जो स्वाभाविक रूप से तात्कालिक थीं:—

“वह व्यक्ति जो दूसरे को नहीं जानता,”
जिसका हृदय कभी सहानुभूति नहीं दिखा सकता,
जो अपने साथी, मित्र या भाई से प्रेम नहीं करता,
अनादरित जीवन — अनसुनी मौतें:
उसकी जमी हुई आंखें, उसका रक्तहीन हृदय,
प्रकृति, घृणास्पद होकर, जाने का आदेश देती है।
“ओह, ग्रंडी! तुम तो और भी महान उद्देश्य के लिए पैदा हुए हो।”
ऐसी शर्मिंदगी से बचने का दायित्व तुम्हारा ही हो;
और अब से कभी यह मत सोचना कि वह
जो शिष्टाचारवश अपना हाथ आगे बढ़ाता है
जो उसके प्रति दयालु भाव रखता हो,
उनकी कुलीन जन्म या नाम उनकी प्रतिष्ठा को धूमिल कर सकता है।
“चाहे कोई व्यक्ति कितना भी नीच क्यों न हो,
यह जान लो कि मनुष्य भी उतना ही मनुष्य है जितना तुम हो;
चाहे तुम्हारी कोमल रेखा कितनी भी ऊँची क्यों न हो,
जान लो कि लिखने वाला तुम्हारे बराबर ही योग्य हो सकता है;
और यद्यपि उसका शरीर क्षीण और मृत हो चुका है,
उसके सिर के चारों ओर अभी भी कुछ रोशनी टिमटिमा रही है।
“हाँ! हालाँकि उसके लड़खड़ाते अंग बूढ़े प्रतीत होते हैं,
उसका दिल और खून अभी ठंडा नहीं हुआ है।
अरे, ग्रुंडी! उसके बुरे रास्तों से दूर रहो।
उसकी बेचैन रातें, उसके परेशान दिन;
लेकिन उसके चंचल मन को कभी कम मत समझना।
नेक भावनाओं से भरी सहज प्रवृत्ति,
द्वेष और विश्वासघात से दूर,
विचार के लिए, दयालुता के लिए और तुम्हारे लिए।

'"पी. बी. ब्रोंटे।"'

ब्रैनवेल की अत्यधिक संवेदनशीलता के कारण वे अपने जीवन के सुख-दुख दोनों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते थे। मैंने पाया कि सामाजिक परिवेश में, या जब साहित्य और कला चर्चा का विषय होते थे, तो वे प्रसन्न, विनोदपूर्ण और किस्सों से भरपूर रहते थे; और फिर लगभग अनायास ही खड़े हो जाते और चमकते चेहरे के साथ, कल्पना के जीवंत प्रवाह में विषय पर चर्चा करने लगते, अपनी जानकारी के भंडार को अद्भुत और मनमोहक वाक्पटुता से प्रदर्शित करते। परन्तु निराशा या दुर्भाग्य के समय वे उदास विचारों में डूब जाते और अक्सर हताशा के करीब पहुँच जाते। ऐसे ही क्षणों में वे अपनी कलम उठाते और कविता के माध्यम से अपनी भावनाओं की पूर्णता और अपने दुख की गहराई को व्यक्त करते; और यही कारण है कि उनकी अधिकांश रचनाओं में मार्मिक उदासी झलकती है। मैं पहले ही उनकी बहनों के मन में व्याप्त उदासी के बारे में बात कर चुका हूँ।

सन् 1842 के आसपास ब्रैनवेल की काव्य प्रतिभा के महत्व पर अनुचित टिप्पणी की गई है। मिस रॉबिन्सन, ब्रोंटे बहनों के निर्णय पर सवाल उठाते हुए संदेह व्यक्त करती हैं कि क्या ब्रैनवेल की मानसिक क्षमताएँ उनके नैतिक गुणों से कहीं अधिक थीं, और कहती हैं: 'ब्रैनवेल के पत्रों और कविताओं को देखते हुए यह संदेहजनक है कि जेम्स मोंटगोमरी की सलाह मानने से उनके पिता की रचना "कॉटेज इन द वुड" से कुछ बेहतर रचना हो पाती। सहज प्रवाह, जो अक्सर बेतुकी बातों की सीमा पर होता है, कहीं-कहीं एक उज्ज्वल और मनमोहक स्पर्श, कहीं-कहीं पारंपरिक भजन-पुस्तकों और उपदेशों की शैली की झलक - ऐसी कमजोर और चरित्रहीन रचनाएँ ही हॉवर्थ की भावुकता से भरी छद्म प्रतिभा की एकमात्र निशानी हैं।'

ब्रैनवेल की परिपक्व कविताओं और रचनाओं के बारे में मिस रॉबिन्सन की अज्ञानता के कारण, उन्होंने और अन्य लोगों ने उनके बारे में गंभीर गलत धारणाएँ बना ली हैं; और उन्होंने, यह कहना ही होगा कि अत्यधिक कटुता के साथ, एमिली की जीवनी को उनके कुकर्मों की विस्तृत निंदा और बौद्धिक क्षमता में उनकी बहनों से उनकी कथित हीनता के वर्णन से सजाया है। यह वास्तव में दयनीय है कि मिस रॉबिन्सन, और केवल वे ही नहीं, ब्रैनवेल के वास्तविक जीवन और अवशेषों के अभाव में, श्रीमती गैस्केल की प्राथमिक त्रुटियों का खंडन करने के लिए कुछ भी न होने के कारण, उनके विरुद्ध शोर मचाने में शामिल हो गईं और लगभग जानबूझकर उस

प्रतिभाशाली भाई के जीवन को निंदनीय लिखने का प्रयास किया, जिसका जीवन वह दुनिया के सामने प्रस्तुत कर रही थीं।

1842 में ब्रैनवेल को अपनी बौद्धिक क्षमताओं का विकास अधिक स्पष्ट रूप से महसूस होने लगा और उन्हें अपने विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को काव्यमय और सुंदर भाषा में व्यक्त करने की अपनी स्वाभाविक क्षमता का अधिक स्पष्ट ज्ञान होने लगा। अपनी बदनामी और हाल ही में नौकरी छूटने के कारण उत्पन्न अवसाद और उदासी में डूबे रहने के दौरान उन्होंने निम्नलिखित तीन सॉनेट लिखे। इनमें व्याप्त गहन भाव, शोकपूर्ण स्वर में व्यक्त, और उनमें व्याप्त दुःख की पूर्ण चेतना, उनकी भावपूर्ण सुंदरता को बेजोड़ बनाती है; और उनकी भाषा की मधुरता उन्हें विशिष्ट बनाती है। ये सॉनेट ब्रैनवेल की काव्य प्रतिभा को बखूबी दर्शाते हैं। उनकी आत्मा उनकी नश्वरता से परे चली गई है; परन्तु दुःख और शोक ने उनकी कल्पना को घेर लिया है और उसे समाधि के दायरे में बांध रखा है। यहां, निराशावादी और अंधकारमय दर्शन के साथ, वह हमें, मानवीय सुख की नगण्य मात्रा से प्रभावित होकर, उस दुख की निरंतर पुनरावृत्ति को पहचानने के लिए कहता है जिसमें हम पैदा होते हैं, और यह समझने के लिए कहता है कि प्रकृति या मानव जाति में कितना कम परोपकारी है।

सॉनेट I.

लैंडसियर की पेंटिंग पर।

'चरवाहे का मुख्य मातम मनाने वाला' — एक कुत्ता जो गोधूलि बेला में अपने मालिक की कब्र पर पहरा दे रहा है।

यश की किरणें स्नेह के आंसुओं को सुखा देती हैं;
और जो लोग ऊपर उठते हैं, वे भूल जाते हैं कि वे कहाँ से आए हैं;
धन की सुनहरी शान—आनंद का चमकीला पंख—
हम वर्षों के अपने इस प्रयास में जिन चीजों का अनुसरण करते हैं —
हमारी आशा जिस चीज की तलाश करती है, हमारी सावधानी जिस चीज से डरती है,
उन पवित्र विचारों को धुंधला या नष्ट कर दो जो चिपके रहते हैं
उस स्थान के चारों ओर जहाँ हमारे प्रिय शरीर विश्राम कर रहे हैं;
लेकिन तुम्हारे साथ नहीं – हमारे दास – जिसके सुख और दुख

हम इसे चापलूसी समझते हैं— न तो सत्ता और न ही अहंकार तुम्हारा है।
न तो हमारे प्रयास, न ही रिश्ते; फिर भी, इस कब्र पर,
जहां हाल ही में शोक मनाने के लिए भीड़ उमड़ी थी,
मुझे तो बस तुम्हारी धीमी, हृदयविहीन विलाप सुनाई देती है।
मुझे तो बस यही दिखाई देता है कि तुम्हें लंबे समय तक तड़पना पड़ेगा।
उसके लिए जिसे तू—यदि प्रेम में शक्ति होती—बचाना चाहता!

सॉनेट II.
चिंता से उत्पन्न होने वाली संवेदनहीनता पर।
क्यों नन्ही आँखों को आँसुओं का सबसे बड़ा स्रोत माना जाए?
और युवा हृदय अक्सर आहें क्यों भरते हैं?
जब प्रिय मित्र साथ छोड़ दें, या प्रेमी बिछड़ जाएं,
या फिर काल्पनिक दुख और खतरे उनके मन में भय पैदा कर देते हैं?
आह! जिसने पूछा है, उसने तो बस वसंत ऋतु के वर्ष ही देखे हैं।
या फिर समय की कठोर आवाज ने उसे बहुत पहले ही इसका कारण बता दिया था!
दिनों की संख्या बढ़ने से दुख भी बढ़ता है;
और दुख स्वार्थ को जन्म देता है, जो झुलसा देता है
दिल की पहली भावनाएँ: युद्ध के शोर के बीच,
मृत्यु की भयानक गिरफ्त में, सैनिक की आँखें अंधी हो गई हैं।
अपने मरते हुए साथियों के लिए, और उसके लिए जिसकी आशाएँ समाप्त हो गई हैं।
मानव जाति के कष्टों से सबसे अधिक निर्दयी हो जाता है;
एक रक्तरंजित आत्मा अक्सर रक्तपात में आनंद लेती है:
एक दुखी हृदय अक्सर एक अत्याचारी मानसिकता को जन्म देता है।

सॉनेट III.
शांतिपूर्ण मृत्यु और पीड़ादायक जीवन पर।
तुम सुखी मृत लोगों के लिए शोक क्यों करते हो?

क्योंकि यदि उनका जीवन नष्ट हो जाए, तो उनकी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाएगी।
और दुख और अभाव उन्हें अब और परेशान नहीं कर सकते;
और वे कभी भी सांसारिक बिस्तर पर नहीं सोए।
अब वे इतनी गहरी नींद सो रहे हैं, जबकि पहले वे स्वप्नहीन थे।
अज्ञात तट के अँधेरे कक्षों में,
जहां रात और सन्नाटा हर बंद दरवाजे की रक्षा करते हैं।
अत: ऐसे लोगों से अपना सिर झुकाकर मुंह फेर लो।
और जीवित रहते हुए मृतकों का शोक मनाओ— जिनकी आत्मा उड़ती है—
जिसकी जान उसकी मृत्यु से पहले ही निकल जाती है;
जीवन के अंधकारमय आकाश के नीचे स्वर्ग का कोई नामोनिशान नहीं है,
जो उस अंधकार को दूर करने की कोई आशा नहीं देखता,
वही है जो उस कभी न मरने वाले कीड़े को महसूस करता है, —
मकबरे की वास्तविक मृत्यु और अंधकार।

इन दुखद और सुंदर सॉनेट के लेखक के बारे में निंदात्मक शब्दों में बात करना कष्टदायक है, यह कहते हुए कि जब उन्होंने इन्हें लिखा था और नौकरी की तलाश में मिस्टर ग्रंडी से मदद मांगी थी, तब वे 'पतनग्रस्त और तिरस्कारपूर्ण' थे।

'अफ़सोस,' मिस रॉबिन्सन कहती हैं, 'कोई भी मददगार हाथ उस डूबते हुए बेचारे को व्यर्थ की कामुकता के दलदल से नहीं बचा सका जिसने उसे धीरे-धीरे निगल लिया!' आइए और आगे देखें।

सन् 1838 में शुरू हुए अफ़गान युद्ध में, जिसमें अंग्रेजों को उस समय पूर्ण विजय प्राप्त हो गई थी, सर्दियों की शुरुआत में दोस्त मोहम्मद के पुत्र अकबर खान का षड्यंत्र रचा गया, जब भारत से मदद की कोई उम्मीद नहीं थी। काबुल में विद्रोह हुआ, जिसमें कई अधिकारी और सैनिक मारे गए, जिसके कारण मेजर पोटिंगर को अपमानजनक शर्तों को स्वीकार करना पड़ा। अंग्रेजों ने काबुल छोड़ दिया; और 6 जनवरी, 1842 को शुरू हुई खैबर दर्रे से होते हुए भारत की ओर विनाशकारी वापसी को लंबे समय तक दुखद रूप से याद किया जाएगा। सोलह हजार सैनिकों में से - जिनमें दस हजार से अधिक महिलाएं और बच्चे शामिल थे - जिन्हें रास्ते में लगातार शत्रुतापूर्ण कबीलों द्वारा परेशान किया गया और भीषण सर्दी से बेहाल कर दिया गया, केवल एक व्यक्ति, डॉक्टर ब्रायडन, जीवित बच कर यह खबर सुनाने में सक्षम रहा।

इन भयावह घटनाओं से व्याकुल होकर, ब्रैनवेल ने उसी वर्ष 7 मई को 'लीड्स इंटेलिजेंसर' में निम्नलिखित शक्तिशाली और प्रभावशाली कविता प्रकाशित की।

अफ़गान युद्ध।
हमारी चिमनी के अंदर हवाएं गरजती हैं,
बारिश की बौछारें हर खिड़की के शीशे को हिला देती हैं।
फिर भी— यदि कुछ भी हमारे परिवार को अलग न करे—
हम हवा हो या बारिश, मुस्कुरा सकते हैं।
बीमारी प्रियजन के कमरे में छाया डालती है।
कदम धीरे-धीरे इधर-उधर सरकते हैं,
फिर भी—दुख के बीच भी—हमारे दिल याद रखते हैं
हम उस पीड़ा को दूर करने के लिए वहां मौजूद हैं।
अंततः शोक का समय आ गया है।
अंतिम संस्कार की घंटी गंभीर स्वर में बजती है;
और हमें लगता है कि अब वापसी संभव नहीं है।
भाग्य ने ऐसी विदाई की अनुमति दी:
फिर भी हम पर एक पवित्र आशा की किरण चमकती है;
हम उस व्यक्ति के लिए रोए जो मर गया;
और मृत्यु हमें धरती के नीचे ही लौटा देगी;
जैसे गोल चूल्हे के पत्थर - अगल-बगल रखे हुए।
लेकिन—जब सभी शाम को एक साथ,
टिमटिमाती रोशनी के चारों ओर चक्कर लगाओ,
दिसंबर के तूफानी मौसम के दौरान
तूफानी रात का स्वागत करने वाले:
जब प्रत्येक कान, लगभग अचेतन अवस्था में, सुनता है
बाहर से देखने पर यह शीत ऋतु का युद्ध प्रतीत होता है।
जब हर कांपती पलक चमकती है
जैसे ही हर कोई दूर रहने वाले किसी व्यक्ति के बारे में सोचता है —
एक व्यक्ति ठंडी खामोशी में मर रहा है,

कहानी, गीत और मुस्कान का सिलसिला रुक जाता है;
मन में सवाल उठता है— “क्या प्रियजन झूठ बोल रहा है?”
किसी तूफानी द्वीप पर ठंड है?
और मृत्यु के साथ—जब संदेह दूर हो जाते हैं,
जब निराशा में भी आशा और भय बाकी हों —
भले ही हमारी पीड़ा और परिश्रम उसे दूर कर दें,
विश्राम व्यर्थ के आँसू लाता है।
‘तो, पुराने इंग्लैंड — जब चेतावनी
मुझे तेरे अंतिम संस्कार की घंटियों की आवाज सुनाई दे रही है—
यद्यपि तेरे मृतकों के लिए एक सेना शोक मना रही है,
मित्र और रिश्तेदार प्रत्येक शवयात्रा को देखते हैं।
लेकिन अफसोस! अटलांटिक जल
दूर से एक और आवाज सुनाई दी!
अज्ञात विपत्तियाँ, अनगिनत नरसंहार,
क्रूर मौतें, कलंकित युद्ध!
‘स्तन और झंडे, कुचले हुए और रक्तरंजित,
जो कभी अजेय प्रतीत होता था;
इंग्लैंड के बच्चे — इंग्लैंड का गौरव,
मुस्लिम तलवारें प्रहार करती हैं और सब कुछ नष्ट कर देती हैं!
दूर-दराज के इलाकों में उनकी हड्डियां क्षीण हो रही हैं।
लेकिन मुझे उनकी आत्माओं की पुकार सुनाई देती है—
क्या हमारी सर्वशक्तिमान माता जल्दी कर रही हैं?
अपने बच्चों के पतन का बदला लेने के लिए?
‘इंग्लैंड उठो! तेरा प्राचीन गर्जन’
इनसे भी अधिक शक्तिशाली शत्रुओं को पराजित किया;
उसने पूरी दुनिया के बंधनों को तोड़ दिया।
मैंने तुझे समुद्रों पर साम्राज्य प्रदान किया:
और जब तक एक भी गुलाब खिल सकता है,
तुम्हारे पूर्व वैभव का प्रतीक,

बुढ़ापा तुम्हारे हृदय पर हावी न होने दे।
घोर अंधकार में भी सबसे तेज रोशनी चमकती है!
'जब तक एक बलूत का पेड़ तुम्हारे घरों को छाया देगा,
तुम भी उसी प्रकार खड़े रहो जैसे तुम खड़े रहे हो;
वसंत ऋतु उपवन और घास के मैदानों का स्वागत करती है,
सर्दी को तुम्हारा खून न जमने दो।
इस समय तक सेंट जॉर्ज का मानक
समय की निरंतर प्रगति का नेतृत्व किया;
इंग्लैंड! इसे आगे की ओर स्ट्रीम करते रहो,
आयु और जलवायु पर विजय प्राप्त करने वाला!

इस कविता में ब्रैनवेल अपने विषय की शुरुआत घरेलू पीड़ा के चित्रण से करते हैं—जिससे वे अच्छी तरह परिचित हैं—और उपस्थित लोगों के स्नेहपूर्ण व्यवहार से मिलने वाली सांत्वना की तुलना दूर-दराज के स्थानों में, अपने घरों और मित्रों से दूर, तूफानों और युद्धों में मारे जाने वाले लोगों के निराशाजनक भाग्य और उपेक्षित मृत्यु से करते हैं। उनके भीतर व्याप्त सच्ची, निष्ठावान और राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित होकर, इंग्लैंड के प्रति उनकी यह सशक्त अपील, जो मुख्यतः अंतिम दो छंदों में समाहित है, शायद अब तक लिखी गई सबसे उत्कृष्ट और सशक्त अपीलों में से एक है।

मई 1842 में, लेलैंड को हॉवर्थ और उसके आसपास के क्षेत्र के लिए कुछ स्मारक बनाने का काम सौंपा गया था; और उसी महीने की 15 तारीख को, ब्रैनवेल ने उन्हें एक स्मारक के डिजाइन के संदर्भ में पत्र लिखा, जिसे उन्होंने रेवरेंड पी. ब्रोंटे की अध्यक्षता वाली एक समिति को प्रस्तुत करने के लिए भेजा था, और उन्हें उसी महीने की 20 तारीख को अपने पादरी निवास पर आमंत्रित किया, यह जानते हुए कि उनके पिता उनसे मिलकर प्रसन्न होंगे। लेलैंड ने हॉवर्थ का दौरा किया और श्री ब्रोंटे के आतिथ्य का आनंद लिया; और शाम को, पादरी और उनके बेटे के साथ, स्मारक समिति के समक्ष उपस्थित हुए।

ब्रैनवेल ने 22 मई, 1842 को श्री ग्रुंडी को एक दिलचस्प पत्र भी लिखा था, जिसे उस सज्जन ने गलती से 1845 का मान लिया है। इसमें उन्होंने कहा है कि जब घर के सभी लोग चर्च में होते हैं और वे पादरी के घर में अकेले रहते हैं, तो अकेले बैठे-बैठे कुछ पंक्तियाँ लिखने का प्रलोभन उन्हें रोक नहीं पाता, ताकि उनका मन प्रसन्न हो

सके। उन्होंने बर्खास्तगी के बाद से झेले गए अत्यधिक दर्द, बीमारी और मानसिक अवसाद का जिक्र किया है। उन्होंने लुडेनडेन फुट में रहते हुए खुद को एक 'दयनीय हालत' में बताया है, जिसके लिए उन्हें ऊर्जा पाने के लिए छह गिलास व्हिस्की की आवश्यकता होती थी, और वे लगभग पागल हो गए थे! और उन्हें लगता है कि उनकी इस स्थिति के अंतिम चरण से उबरने में बाधा आ रही है क्योंकि 'उनके पास पुरानी चिमनियों और पुराने राख के पेड़ों के बीच सिसकती हवा के सिवा कुछ भी सुनने को नहीं है, और देखने को केवल हीथ से ढकी पहाड़ियाँ हैं, जिन पर तब चला गया था जब जीवन में आशा की कोई किरण नहीं थी और पछताने के लिए कुछ भी नहीं था।' वह खुद को कड़वे शब्दों में कोसते हैं कि लुडेनडेन फुट में रहते हुए उन्होंने उन कमियों में छूट मांगी, जो उनके चरित्र पर काला धब्बा बन गईं। उनकी बहन शार्लोट का मन भी उसी निराशावादी सांचे में ढल गया प्रतीत होता है; क्योंकि, जब वह शारीरिक कष्ट से पीड़ित थी, या उसके मन पर छाए निराशा और हताशा से घिरी हुई थी, तो जैसा कि हमने देखा है, वह अपनी सहेली 'ई' से अपने 'अंतरात्मा के दर्द' और 'पश्चाताप' के बारे में बात करने के लिए विवश हो गई थी। वह अपने 'पूर्व के लापरवाह रवैये और जल्दबाजी' से घृणा करती है। वह 'भयानक, निराशाजनक अनिश्चितता' की स्थिति में है, और 'हालात और भी गहरे होते जा रहे हैं', और एक और भी निराशाजनक हताशा उसके मन पर हावी हो रही है।

अपनी सहेली को लिखे एक अन्य पत्र में शार्लट कहती हैं कि वह 'एक अजीब मानसिक स्थिति में हैं - अभी भी उदास हैं, लेकिन निराश नहीं हैं। मैं सही करने की कोशिश करती रहती हूँ... मैं खुद से घृणा करती हूँ, खुद को तुच्छ समझती हूँ।' और फिर, बाद में, वह सोचती हैं कि क्या नया साल 'हमारे सभी पापों, मूर्खताओं, गुप्त घमंडों और अनियंत्रित भावनाओं और प्रवृत्तियों से पिछले साल की तरह ही काले धब्बों से भरा होगा,' और कहती हैं, 'मुझे भरोसा नहीं है; लेकिन मैं खुद को इससे बेहतर, न ही विनम्र और न ही पवित्र महसूस करती हूँ।'

ब्रैनवेल, अपने मित्र के सामने उसी लहजे में अपनी अनावश्यक रूप से अतिरंजित स्वीकारोक्ति करते हुए, अपने मन और आत्मा के नवीनीकरण का वर्णन करता है। अंततः उसने लुडेनडेन फुट में अपने अनुभव से कहीं बेहतर स्वास्थ्य, शक्ति और मानसिक स्थिरता प्राप्त कर ली है। वह पहले की उत्तेजना के बिना भी प्रसन्नतापूर्वक बात कर सकता है और दूसरों की संगति का आनंद ले सकता है। वह दृढ़ संकल्प के

साथ लिख सकता है, सोच सकता है और कार्य कर सकता है, और उसे केवल वर्षों से अधिक प्रसन्न रहने के लिए प्रयास करने की प्रेरणा की आवश्यकता है। उसके भीतर अभी भी कुछ ऐसा शेष है जो उसके काम आ सकता है। वह सोचता है कि उसे बहुत लंबे समय तक एकांत में नहीं रहना चाहिए, क्योंकि दुनिया उन लोगों को जल्दी भूल जाती है जो इसे 'अलविदा' कहना चाहते हैं। फिर, यद्यपि उसे इस बात पर शर्म आती है, वह एक नई नौकरी प्राप्त करने के संबंध में अपने कुछ प्रश्नों के उत्तर मांगता है, स्पष्ट रूप से इस मामले में श्री ग्रुंडी के प्रभाव को महत्वपूर्ण मानते हुए।

इस पत्र पर सरसरी नज़र डालनी चाहिए। यह ब्रैनवेल के स्वस्थ और तंदुरुस्त मन को दर्शाता है, हालांकि शारीरिक बीमारी और गहरे दुख ने उनके मन को कुछ समय के लिए विचलित कर दिया था। एकांत पादरी निवास और आसपास के ग्रामीण इलाकों के सन्नाटे का उनका वर्णन, साथ ही उनकी अपनी उदास भावनाओं की अभिव्यक्ति, काफी सजीव है। उनकी बहनों ने भी इसी शक्ति और कलात्मक भाव से लिखा था। श्री ग्रुंडी को यह पत्र लिखने का उनका उद्देश्य रेलवे से संबंधित कोई नौकरी प्राप्त करना था, और उन्होंने लुडेनडेन फुट में रहते हुए अपनी आदतों और भोग-विलास का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया, और इसकी तुलना अपने मानसिक, नैतिक और शारीरिक विकास से की जो उन्होंने वहां से निकलने के बाद प्राप्त किया था। उन्हें उम्मीद थी कि इस तुलना से वे एक अनुकूल प्रभाव डाल सकेंगे, और श्री ग्रुंडी का स्टीफेंसन में पद उनकी रुचियों और क्षमताओं के अनुरूप कोई नौकरी दिलाने में सहायक हो सकता है। लेकिन श्री ग्रुंडी इस उद्देश्य में उनकी सहायता नहीं कर सके, जिसे वे अपने उग्र और आवेगी स्वभाव के कारण पूरी लगन से पूरा करना चाहते थे। उन्होंने बड़े जोश के साथ घोषणा की, 'मैं फिर से उस घिनौनी लापरवाही, उस द्वेषपूर्ण लेकिन निर्मम व्यभिचार, और यह जानने के दृढ़ संकल्प से गुजरने के बजाय अपना हाथ देना पसंद करूंगा कि मन शरीर को कितनी दूर तक ले जा सकता है, बिना दोनों को नरक में धकेले जाने के।'

लेकिन जिस समय की मैं बात कर रहा हूँ, उस समय ब्रैनवेल ऊर्जा और परिश्रम से परिपूर्ण थे; वास्तव में, वे निष्क्रिय नहीं रह सकते थे। उन्होंने श्री ग्रुंडी से 9 जून, 1842 को प्राप्त पत्र के उत्तर में एक और पत्र लिखा। इससे हमें पता चलता है कि उनके मित्र ने या तो उनके आवेदनों पर ध्यान नहीं दिया था, या रोजगार के संभावित स्रोत में उनके हितों को आगे बढ़ाने में असमर्थ थे, क्योंकि उन्होंने निराशाजनक उत्तर

दिए थे। ब्रैनवेल को इस निराशा का गहरा एहसास हुआ, लेकिन उनका कहना है कि श्री ग्रुंडी के दयालु और विचारशील लहजे ने उन्हें राहत दी। उनके मित्र ने पूछा था कि वे अपना ध्यान कहीं और क्यों नहीं लगाते। इस पर ब्रैनवेल ने उत्तर दिया कि उनके अधिकांश रिश्तेदार पादरी हैं, और उनमें से कुछ निजी जीवन के कारण व्यस्त दुनिया से दूर हैं। चर्च के बारे में वह कहता है कि उसमें कोई ऐसी मानसिक योग्यता नहीं है, 'शायद पाखंड को छोड़कर,' जो उसे 'चर्च के उपदेश मंचों पर अपनी छाप छोड़ने' में सक्षम बना सके। वह श्री ग्रुंडी को बताता है कि श्री जेम्स मोंटगोमरी और एक अन्य साहित्यकार, जिन्होंने हाल ही में उसका कुछ काम देखा था, चाहते हैं कि वह साहित्य की ओर ध्यान दे। वह कहता है कि उसमें आत्म-प्रशंसा का कोई भाव नहीं है, लेकिन उसमें सक्रिय रहने की प्रबल इच्छा है। वह कुछ हद तक बदल गया है, फिर भी, हालांकि उसमें अपने मित्र जैसी उमंग नहीं है, फिर भी वह पहनावे और दिखावे में सामान्य शालीनता का कुछ हद तक अनुकरण कर सकता है।

हॉवर्थ में लेलैंड के कला कार्यों में ब्रैनवेल ने काफी रुचि दिखाई, और उनके पत्राचार में उनकी सक्रियता और परिश्रम स्पष्ट रूप से झलकता है। उन्होंने 29 जून, 1842 को मूर्तिकार को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने हॉवर्थ समिति के कुछ सदस्यों के आचरण का उल्लेख किया, जिन्होंने एक पेशेवर मामले में उनके मित्र के साथ अनुचित व्यवहार किया था। वे कहते हैं: —

'जब आपने हॉवर्थ में समिति छोड़ी थी, तब मुझे इससे अधिक दिल से शर्मिंदगी कभी महसूस नहीं हुई थी; लेकिन उस समय मैं इस विषय पर बोलना नहीं चाहता था, और मुझे उम्मीद थी कि आप गोथिक अज्ञानता और बदतमीजी के लिए वह छूट देंगे, जो शायद आपको पहले भी कई बार देनी पड़ी होगी; और बाद में उपस्थित एक-दो लोगों को लगा कि उन्होंने आपके मन पर कोई सराहनीय प्रभाव नहीं छोड़ा है।'

‘भले ही यह एक मामूली सी तारीफ़ हो, फिर भी मैं हॉवर्थ में आपसे दोबारा मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ, और उस सौहार्दपूर्ण माहौल को आधे दिन के लिए भूल जाना चाहता हूँ जिसमें मैं हूँ, जहाँ मुझे गधे की रेंक से ज़्यादा मधुर कोई शब्द नहीं सुनाई देता। जब आप आएँ, तो श्री कॉन्स्टेबल को साथ ले आएँ, लेकिन फादर मैथ्यू को छोड़ दें, क्योंकि यॉर्कशायर के दलदली इलाकों में उनकी बातचीत बहुत ठंडी और निर्मम है।’

जिस पन्ने पर यह पत्र लिखा गया है, उसके निचले भाग में ब्रैनवेल ने कलम और

स्याही से एक उत्कृष्ट रेखाचित्र बनाया है। क्षितिज तक फैला हुआ यह उजाड़ क्षेत्र, हॉवर्थ के सुनसान जंगलों का सटीक चित्रण करता है, जो रात के बादलों से घिरे हैं और ढलते सूरज की किरणों से जगमगा रहे हैं, जिनके बीच अर्धचंद्राकार चंद्रमा दिखाई दे रहा है। अग्रभूमि में स्मारकों का एक समूह है, जिनमें से एक मकबरा एक तरफ धंसा हुआ है; और एक समाधि-पत्थर पर 'रिसर्गम' शब्द खुदा हुआ है। ब्रैनवेल एक कुशल चित्रकार थे, और इस बात का पर्याप्त प्रमाण यह है कि उनके हाथ उस समय की कठिनाइयों के बावजूद नहीं कांपते थे, जिस समय उन्होंने अपने जीवन के इस दौर में बहुत कुछ सहा था। इस विस्तृत रेखाचित्र की बारीकी ही यह साबित करती है।

पत्र में उल्लिखित श्री कॉन्स्टेबल, मूर्तिकार के परिचित थे और कला एवं कविता में काफी निपुण थे। ब्रैनवेल ने इस सौहार्दपूर्ण संबंध को नैतिक कर्तव्य का पूर्णतः उल्लंघन नहीं माना और इसी सौहार्दपूर्ण संदर्भ ने उन्हें फादर मैथ्यू की ओर शांत और हास्यपूर्ण ढंग से संकेत करने के लिए प्रेरित किया।

पहले खंड का अंत।

खंड II

अध्याय 1।

शार्लोट और एमिली ब्रुसेल्स में।

ब्रसेल्स में प्रवास का निर्णय — शार्लोट ने उच्च शिक्षा के लिए ब्रसेल्स को क्यों चुना — शार्लोट और एमिली ने मैडम हेगर के साथ निवास किया — 'विलेट' में दृश्य का एक चित्र — पेंशननेट में — मैडम हेगर — श्रीमान हेगर — शार्लोट को ब्रसेल्स पसंद आया — बेल्जियमवासियों और अंग्रेजों के बीच उनका अंतर — मिस ब्रैनवेल की मृत्यु — हॉवर्थ वापसी।

एक महीने से भी अधिक समय बीतने के बाद शार्लोट को अपनी चाची ब्रैनवेल से जवाब मिला। इस बीच, वह पादरी के घर में चल रही चिंताजनक चर्चाओं का धैर्यपूर्वक इंतज़ार करती रही और उसने अपनी इस बड़ी योजना के बारे में अपनी सहेली को एक शब्द भी नहीं बताया। गुमनाम रहकर काम करना और अपने प्रयासों को उनके परिणामों से पहचान दिलाना उसका तरीका था। लेकिन अंततः, जैसा कि मैंने कहा, उसकी योजना को मंज़ूरी मिल गई; आवश्यक धन उपलब्ध हो गया; और अब केवल उसे अपनी यात्रा की व्यवस्था करनी बाकी थी, और एमिली को भी कुछ व्यवस्थाएँ करनी थीं। बहुत सारे पत्र लिखने थे, ब्रसेल्स को पत्र लिखने थे - जहाँ शार्लोट सभी शहरों में से जाना पसंद करती - और कई अन्य स्थानों को भी पत्र लिखने थे; कपड़े सिलने थे और विदाई देनी थी।

1841 की क्रिसमस पर अपनी नौकरी छोड़कर जब शार्लोट हॉवर्थ आकर पारिवारिक परिवेश में शामिल हुईं, तो उन्हें बहुत निराशा हुई कि ब्रैनवेल वहाँ नहीं थे, और इससे ब्रैनवेल भी बहुत दुखी थे। लेकिन योजनाओं पर चर्चा हुई, पत्र लिखे गए, और शार्लोट को अपने साहस पर कोई पछतावा नहीं था, बल्कि वे इस उद्यम के प्रति पूरी तरह आश्वस्त थीं। यह योजना हमें एक अजीबोगरीब महत्वाकांक्षी योजना लगती है, और दुनियादारी की कम समझ को दर्शाती है, कि ब्रुसेल्स में छह महीने बिताकर इतने कम समय में फ्रेंच भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जाए, इतालवी भाषा में निपुणता हासिल की जाए और जर्मन भाषा का थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त किया जाए; और इस तरह ज्ञान से लैस होकर बर्लिंगटन में एक सफल स्कूल स्थापित किया जाए,

क्योंकि ड्यूसबरी मूर परियोजना को पहले ही छोड़ दिया गया था।

शार्लोट ने कई कारणों से ब्रुसेल्स को चुना: एक तो यह कि यात्रा सस्ती थी, दूसरा यह कि वहाँ शिक्षा यूरोप के किसी भी अन्य स्थान की तुलना में कम से कम उतनी ही अच्छी, और शायद उससे भी बेहतर, मिल सकती थी; और तीसरा, उसकी सहेलियाँ मैरी और मार्था टी—— ब्रुसेल्स के शैतो डी कोक्लेबर्ग में ठहरी हुई थीं, और मैरी, अंग्रेज़ पादरी की पत्नी श्रीमती जेनकिंस के साथ, मनचाहा पेंशननेट (छात्रवृत्ति के लिए उपयुक्त स्थान) पा सकती थीं। लेकिन एक अस्थायी निराशा हाथ लगी: खबर आई कि ब्रुसेल्स के स्कूल अच्छे नहीं थे; और शार्लोट ने तुरंत एक और संस्थान खोजने का काम शुरू किया, जो उसे लिले में मिला—एक ऐसा संस्थान जिसकी सिफारिश बैपटिस्ट नोएल ने की थी, जहाँ प्रत्येक छात्र के लिए शुल्क 50 पाउंड था। अंततः यह तय हुआ कि शार्लोट और एमिली फरवरी 1842 के मध्य में लंदन में रह रही मैडम मार्ज़ियल्स के साथ इस स्थान की यात्रा करेंगी, लेकिन फिर योजना बदल दी गई। चैपलिन की पत्नी श्रीमती जेनकिंस ने, शार्लोट की अपार प्रसन्नता के लिए, ब्रुसेल्स में रू डी'इसाबेल में मैडम हेगर के प्रतिष्ठान का पता लगाया, जिसकी बहुत प्रशंसा की जाती थी, और अंततः यह निर्णय लिया गया कि दोनों बहनें वहीं जा सकती हैं।

शार्लोट दृढ़ निश्चय और पूरे आत्मविश्वास के साथ ब्रुसेल्स गई और उसे कोई पछतावा नहीं हुआ; लेकिन एमिली के साथ ऐसा नहीं था। बड़ी बहन छोटी बहन से बिल्कुल अलग थी; उसके स्वभाव में रोमांच का भाव था और नए स्थानों को देखने का आनंद भी उसे बहुत आता था। जैसे लूसी स्नो, जो शार्लोट का सबसे सटीक चित्रण करती हैं, ने कहा था, 'इस वीरान जगह को छोड़ो और यहाँ से निकल जाओ;' और उसने इस सवाल का जवाब, 'कहाँ?' दृढ़ संकल्प के साथ दिया; और जहाँ भी उसकी मानसिक क्षमता ने उसे अनुमति दी, वह वहाँ की हर चीज़ के सार को आत्मसात करने के लिए निकल पड़ी। 'विलेट' में अपनी यात्रा के बारे में वह कहती हैं, 'पृष्ठभूमि में एक गंभीर और गहरा नीला आकाश फैला हुआ था, और - शाही वादों से भरपूर, जादू के रंगों से सराबोर - उत्तर से दक्षिण की ओर ईश्वर द्वारा तराशा हुआ एक धनुष, आशा का एक मेहराब फैला हुआ था:' लेकिन उसे मिटाना था। 'इसे रद्द कर दें, पाठक — या बल्कि इसे रहने दें, और इससे एक नैतिक सीख लें — एक अनुप्रासपूर्ण, हस्तलिखित प्रतिलिपि:

“दिन में देखे जाने वाले सपने शैतान के भ्रम होते हैं।”

शार्लोट का मोहभंग होना तय था। लेकिन उसने उस खुशहाल बेल्जियम की राजधानी को अपने लिए एक जादुई दुनिया बना लिया था, और वहाँ से वह कितनी दर्दनाक यादें अपने साथ लाई थी! श्री वेमिस रीड के अनुसार, और निस्संदेह वे सही हैं, एमिली के साथ और बाद में अकेले ब्रसेल्स में बिताया गया समय शार्लोट के जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था, और 'विलेट' में इसका वर्णन उसने अपने दिल के खून की तरह, घोर पीड़ा के बीच किया था। लेकिन जनवरी 1842 में उसे इन बातों का कोई आभास नहीं था; तब भविष्य एक सुखद और शांत वातावरण में सोया हुआ था, इतना सुखद कि हॉवर्थ और वहाँ के अपने परिचितों, अपने पिता, भाई और बहन से बिछड़ने से उसे शायद ही कोई पीड़ा हुई; और बाद में, जहाँ तक उसके पत्रों और 'विलेट' से पता चलता है, जो और भी अधिक व्यक्त करता है, पादरी के घर की परेशानियाँ उसके लिए कभी भी गंभीर नहीं थीं। विदेश में उसके सुख-दुख वास्तव में उसके अपने थे, और उसने उन्हें अकेले ही सहा और झेला था।

लेकिन एमिली के लिए हॉवर्थ कोई वीरान जगह नहीं थी, बल्कि एक स्वर्ग थी, और बड़े दुख के साथ उसने उन मैदानों को छोड़ा जिन्हें आने वाली गर्मियों में बैंगनी लहरों से ढक जाना था। एमिली ब्रोंटे अपनी बहन की तुलना में अपने इलाके और घर के माहौल से कहीं अधिक प्रभावित थीं। यॉर्कशायर की दूर पहाड़ियों के बीच उनके पिता, ब्रैनवेल और ऐनी रहते थे, जिनसे वह दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार करती थीं; और कई घंटे, अपने छोटे से घर के कमरों में बैठकर, वह उनकी आशाओं और उनके दुखों पर विचार करती थीं। हम यह नहीं कह सकते कि ब्रसेल्स में रहने से एमिली में कोई बदलाव आया, न ही यह कि इससे बाहरी दुनिया के साथ उनका कोई गहरा जुड़ाव हुआ।

श्री ब्रोंटे अपनी बेटियों और मैरी व उनके भाई के साथ ब्रुसेल्स गए। वे लंदन में एक-दो दिन रुके, पैटरनोस्टर रो स्थित चैप्टर कॉफ़ी हाउस में ठहरे और बेल्जियम की राजधानी लौटने से पहले उन्होंने काफ़ी दर्शनीय स्थलों का भ्रमण किया। 'विलेट' में शार्लोट ने लंदन की अपनी पहली यात्रा और लाबासेकोर की सैर का वर्णन किया है, लेकिन वास्तविक विवरण संभवतः उनकी दूसरी यात्रा से संबंधित हैं। फिर भी, हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि उन्होंने उसी भावना से महानगर को देखा, उसके व्यस्त जीवन और उसमें व्याप्त उत्साह का आनंद लिया। हम कल्पना कर सकते हैं कि

वे सेंट पॉल के गुंबद पर खड़ी होकर नदी और उसके पुलों को देख रही हैं, और उसके किनारे टेंपल गार्डन और उससे आगे वेस्टमिंस्टर को देख रही हैं; और हम उन्हें पैटरनोस्टर रो के क्लासिक मैदान में भी देख सकते हैं। एमिली ने इस यात्रा के दौरान अपनी भावनाओं का कोई विवरण नहीं दिया है, लेकिन हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि उनकी भावनाएँ शार्लोट की भावनाओं से बहुत भिन्न थीं। 'द प्रोफेसर' में विलियम क्रिम्सवर्थ की बेल्जियम में प्रवेश करते समय की भावनाओं का वर्णन है, और निस्संदेह शार्लोट की भी वैसी ही भावनाएँ थीं। 'यह बेल्जियम है, पाठक। देखिए! इस दृश्य को नीरस या उबाऊ मत कहिए—जब मैंने इसे पहली बार देखा था, तब यह मुझे न तो नीरस लगा था और न ही उबाऊ। जब मैं फरवरी की एक सुहावनी सुबह ओस्टेंड से निकला और ब्रुसेल्स जाने वाली सड़क पर था, तब मुझे कुछ भी नीरस नहीं लगा। मेरे आनंद की भावना चरम सीमा तक पहुँच गई थी; अछूती, तीव्र, उत्कृष्ट... मैंने पहली बार स्वतंत्रता को अपनी बाहों में भरा, और उसकी मुस्कान और आलिंगन के प्रभाव ने मेरे जीवन को सूर्य और पश्चिमी हवा की तरह पुनर्जीवित कर दिया।'

उस समय यह प्रस्ताव रखा गया था कि दोनों बहनें सितंबर में आने वाली छुट्टियों तक पेंशननेट में ही रहें, जब उन्हें घर लौटना था। वे उस समय काम के लिए ब्रसेल्स में थीं, और उन चंचल स्कूली छात्राओं को उनमें कोई साथी नहीं मिला, क्योंकि वे लंबे समय तक साथ रहीं और अलग-अलग पढ़ाई करती रहीं। ये दोनों बहनें आसानी से दोस्त नहीं बनाती थीं; वे शर्मीली थीं, और उनके साथी उन्हें अजीब समझते थे - शार्लोट, अपनी सादी, घर में बनी पोशाक में, और एमिली, अपनी गगोट आस्तीन और लंबी, सीधी स्कर्ट में, बगीचे में साथ-साथ टहलती थीं। श्रीमती जेनकिंस ने श्रीमती गैस्केल को बताया कि उन्होंने उनसे रविवार और छुट्टियों में उनके साथ समय बिताने के लिए कहा था, लेकिन अंत में उन्हें पता चला कि इन मुलाकातों से भी उन्हें खुशी से ज्यादा तकलीफ होती है, और उसके बाद से वे दूर ही रहीं। एमिली का यह संकोच कभी पूरी तरह से दूर नहीं हुआ, लेकिन शार्लोट ने बाद में आत्मविश्वास हासिल किया और दोस्त बनाए।

श्रीमती गैस्केल के रिकॉर्ड के अनुसार, रू डी'इसाबेल में मैडम हेगर के घर से जुड़ी मध्ययुगीन वीरता और रोमांस की यादें थीं, जो निस्संदेह नन के खलिहान और उस पुराने बगीचे में जाने में झलकती हैं जहाँ लूसी स्नो रहती है। चहल-पहल भरी रू रॉयल से चार सीढ़ियाँ उतरकर रू डी'इसाबेल तक जाती हैं, और जब कोई ऊपर खड़ा होता

है तो उसके घरों की चिमनियाँ पैरों के स्तर तक पहुँच जाती हैं। तेरहवीं शताब्दी में इस शांत गली को फॉसे ऑक्स चिएन्स कहा जाता था, क्योंकि मैडम हेगर के घर की जगह पर ड्यूक के कुत्तों के रहने की जगह थी; लेकिन बाद में इसकी जगह बेघर और गरीबों के लिए एक अस्पताल बना दिया गया। इसके बाद अर्बलट्रियर्स डू ग्रैंड सेरमेंट ने वहाँ अपना स्थान बनाया, और कुलीन लोग उनसे मिलने आते थे, और वे बड़े समारोह और दावतें देते थे। बाद में इस सड़क का नाम बदलकर रू डी'इसाबेल कर दिया गया, क्योंकि इन्फेंटा इसाबेला ने अर्बालेट्रियर्स को अपनी ज़मीन से होकर सड़क बनाने की अनुमति देने के लिए राजी कर लिया और बदले में उनके लिए पास में ही एक आलीशान हवेली बनवाई, जो बाद में मैडम हेगर की थी।

विलियम क्रिम्सवर्थ ने उस इमारत को देखा। 'मुझे याद है, पार्क में प्रवेश करने से पहले, मैं कुछ देर जनरल बेलियार्ड की मूर्ति को निहारने के लिए खड़ा रहा, और फिर मैं उसके ठीक आगे बनी विशाल सीढ़ी के ऊपर तक गया, और मैंने नीचे एक संकरी गली में देखा, जिसे बाद में मुझे पता चला कि वह रू डी'इसाबेल थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरी नज़र सामने वाले एक बड़े से घर के हरे दरवाजे पर पड़ी, जहाँ एक पीतल की प्लेट पर लिखा था, "पेंशनैट डे डेमोइसेल्स"।'

इस पेंशननेट की स्वामिनी मैडम हेगर एक सक्षम महिला थीं और अपने पद के कर्तव्यों को भली-भांति समझती थीं, लेकिन जाहिर तौर पर शार्लोट के उनके साथ संबंध अच्छे नहीं थे और ब्रुसेल्स में रहने के दूसरे वर्ष में ही उनके बीच दूरियां आ गईं। कहा जाता था कि स्वामिनी के स्वभाव में कुछ रूखापन और संशय था, जिससे लोग उनके प्रति आकर्षित नहीं होते थे; और ऐसा प्रतीत होता है कि शार्लोट को उनके विचारों और पूर्वाग्रहों के प्रति कोई सहनशीलता नहीं थी। श्री हेगर, अपनी पत्नी के विपरीत, फुर्तीले और ऊर्जावान स्वभाव के थे, क्रोधी और चिड़चिड़े स्वभाव के थे, लेकिन साथ ही कोमल और परोपकारी भी थे। कहा जाता था कि उनके जैसा महान और प्रशंसनीय व्यक्तित्व बहुत कम लोगों में था, वे सेंट विंसेंट डी पॉल सोसाइटी के एक उत्साही सदस्य थे, और कठिन शैक्षिक कार्यों में व्यस्त रहने के बाद, वे अक्सर गरीबों को इकट्ठा करते थे ताकि उनका मनोरंजन और उन्हें शिक्षा दे सकें। उन्होंने एथेंस में अध्ययन विभाग के प्रमुख के रूप में अपना आकर्षक पद भी छोड़ दिया क्योंकि वे वहाँ के पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा को शामिल करने में सफल नहीं हो सके। श्री हेगर के चरित्र के कई गुण पॉल इमानुएल के चरित्र में भी दिखाई देते हैं।

वह विद्यालय बड़ा और समृद्ध था, जिसका संचालन महाद्वीपीय विद्यालयों की तरह ही होता था, और शार्लोट थोड़े ही समय में वहाँ के व्यस्त जीवन में प्रसन्न हो गईं। उन्होंने अपनी रचना 'विलेट' में उस संस्थान का एक प्रशंसनीय चित्र, एक सटीक तस्वीर, प्रस्तुत की है, जिसमें वास्तव में वहाँ बिताए समय के दौरान उनकी मानसिक स्थिति समाहित है। उन्हें और एमिली को जो प्रशिक्षण दिया गया, वह अन्य विद्यार्थियों से भिन्न था। श्री हेगर ने शीघ्र ही यह जान लिया कि वे अधिकांश लोगों से कहीं अधिक प्रतिभाशाली हैं, इसलिए उन्होंने उन्हें व्याकरण और शब्दावली के सामान्य पाठ्यक्रम से हटाकर फ्रांसीसी साहित्य के उच्चतर क्षेत्रों में भेजने का साहसिक कदम उठाया; और उनका यह प्रयोग सफल सिद्ध हुआ।

शार्लोट और एमिली, एक और लड़की और मैडम हेगर के बच्चों की देखभाल करने वाली गवर्नेंट के साथ, घर के कैथोलिक धर्म के एकमात्र अपवाद थे, और ब्रोंटे बहनों ने पाया कि इस अंतर ने उन्हें बाकी निवासियों से भावनात्मक रूप से अलग कर दिया। शार्लोट कहती हैं, 'हम इतनी बड़ी संख्या के बीच पूरी तरह से अलग-थलग हैं;' लेकिन वह आगे कहती हैं, 'मुझे लगता है कि मैं कभी दुखी नहीं होती; मेरा वर्तमान जीवन इतना सुखद है, मेरी प्रकृति के अनुकूल है, एक गवर्नेंस के जीवन की तुलना में। मेरा समय लगातार व्यस्त रहने के कारण बहुत जल्दी बीत जाता है।' हमें यह नहीं पता चलता कि घर से आने वाली खबरों से उन्हें कोई परेशानी होती थी, न ही वे अपनी अनुपस्थिति में विशेष रूप से बेचैन थीं। बाद में वह कहती हैं, 'मैं यह नहीं मानती कि मुझे कभी-कभी घर की याद नहीं आती; लेकिन कुल मिलाकर, मैंने अब तक बहुत साहस दिखाया है; और मैं ब्रसेल्स में खुश रही हूँ, क्योंकि मैं हमेशा उन कामों में पूरी तरह से व्यस्त रही हूँ जो मुझे पसंद हैं।'

इस समय शार्लोट की खुशी स्वयं में थी। वह उस समय की आशा में डूबी हुई थी जब बहनों के लिए एक स्कूल खोलना संभव होगा, जो उनकी कठिन पढ़ाई का फल होगा, और उस लगन और दृढ़ता का भी, जिसका जिक्र श्री हेगर ने श्री ब्रोंटे को लिखे पत्र में किया था, जब शार्लोट और एमिली को हॉवर्थ बुलाया गया था। लूसी स्नो ने अपनी रचना 'विलेट' में ऐसी ही आशाओं का वर्णन किया है; उस छोटे से मकान का, जिसमें एक बड़ा कमरा और दो-तीन छोटे कमरे होंगे; कुछ बेंच और डेस्क, काला टेबल और वह चबूतरा, जिसमें कुर्सी, मेज, चाक और स्पंज होंगे, जहाँ वह दिन के विद्यार्थियों को पढ़ाएगी। ‘मैडम बेक की शुरुआत—जैसा कि मैंने उन्हें अक्सर कहते

सुना है—बेहतर स्थिति से नहीं हो सकती थी, और अब वह कहाँ हैं?' यही उम्मीद लूसी स्नो ने श्री पॉल से दोहराई, और उन्हें यह सुनकर खुशी हुई, हालाँकि उन्होंने इसे 'अलनाशर का सपना' कहा। लेकिन ब्रुसेल्स में रहने के शुरुआती महीनों में यह शार्लोट के जीवन का सार था।

शार्लोट को ब्रुसेल्स पसंद था और वह इसे एक सुंदर शहर कहती थी; उसे ब्रुसेल्स के आसपास का ग्रामीण इलाका भी अच्छा लगता था, हालाँकि यह उसके अपने पहाड़ी हॉवर्थ से बहुत अलग था। लेकिन उसे वहाँ के निवासी पसंद नहीं थे; बेल्जियमवासी उसके लिए निम्न कोटि के लोग थे; वह उनके सुखों में शामिल नहीं हो सकी और उन्हें समझ नहीं पाई। जीवन के प्रति अपने सीमित दृष्टिकोण के साथ शार्लोट अजनबियों के बीच आई; उसने उन्हें अपने आदर्शों से भिन्न पाया और उनसे घृणा करने लगी। जिन दो पुस्तकों में उसने बेल्जियमवासियों के बारे में अपने विचार दर्ज किए हैं, उनमें बार-बार 'अल्बियन की पुत्री और प्रोटेस्टेंट धर्म की पालक' और 'रोम की पालक संतान और जेसुइट धर्म की आश्रिता' की तुलना की गई है, और हमेशा बाद वाली की ही कमतर दिखाई गई है। 'द प्रोफेसर' में श्रीमती यूलाली, हॉर्टेंस और कैरोलिन, और 'विलेट' में श्रीमती ब्लैंच, वर्जिनी और एंजेलिक, शार्लोट की नज़र में बेल्जियम की महिलाओं के प्रतीक हैं—भारी, गंभीर, अच्छाई से अप्रभावित, कामुक, स्थूल और बुद्धिहीन। लाबासे-कूरिएन्स 'सूअरों का झुंड' थीं, जिन्हें बलपूर्वक नहीं चलाया जा सकता था; 'जब भी उनके लिए झूठ बोलना आवश्यक होता था, वे इसे बड़ी आसानी और बेपरवाही से बोल देती थीं, अंतरात्मा की किसी भी फटकार की परवाह किए बिना;' और वे निर्मम, पशुवत और स्वार्थी थीं। फिर भी, अपने कर्तव्यों में व्यस्त शार्लोट इन साथियों के साथ भी खुश थीं। हमारे पास यह जानने का कोई वास्तविक साधन नहीं है कि एमिली उनके बारे में क्या सोचती थीं, क्योंकि उनके बीच बिताए उनके जीवन का वर्णन उनके लेखन में कभी नहीं मिलता, और इसका उन पर कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा। शार्लोट ने कहा कि उसकी बहन 'घोड़े की तरह' काम करती थी और उसके मिस्टर हेगर के साथ अच्छे संबंध नहीं थे।

दोनों बहनों के ब्रुसेल्स में अब दोस्त बन गए थे, क्योंकि वे कभी-कभी मैरी और मार्था टी से मिलती थीं, जो वहाँ शैतो डी कोक्लेबर्ग में ठहरी हुई थीं, और इन युवतियों के शहर में चचेरे भाई-बहन भी थे, जिनका घर अक्सर एक सुखद मिलन स्थल होता था। लेकिन एमिली इन दोस्ती में कोई खास प्रगति नहीं कर पाई।

लंबी छुट्टियां सितंबर में शुरू हुईं, लेकिन शार्लोट और एमिली तय योजना के अनुसार घर नहीं लौटीं; हॉवर्थ में सब ठीक था और उनके लौटने का कोई कारण नहीं था। मैडम हेगर ने प्रस्ताव रखा कि वे छह महीने और वहीं रहें, शार्लोट अंग्रेजी शिक्षिका के रूप में और एमिली कुछ विद्यार्थियों को संगीत सिखाएं; उनकी पढ़ाई जारी रहेगी और उन्हें बिना वेतन के भोजन मिलेगा, लेकिन उन्हें कोई वेतन नहीं दिया गया। अंततः ये शर्तें मान ली गईं और बहनें लंबी छुट्टियों के दौरान कुछ अन्य छात्रों के साथ वहीं रहीं, और शार्लोट कम से कम खुश थीं।

लेकिन एक साल बाद, जब पेंशननेट के कमरे एक बार फिर सुनसान हो गए, और एमिली हॉवर्थ के पादरी के घर में बहुत दूर चली गई, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह फिर से उसी उदासी से घिर गई, जो पहले मिस वूलर के यहाँ रहने के दौरान उसमें देखी गई थी। ब्रसेल्स में अपने पहले प्रवास का उत्साह फीका पड़ गया, उसे वहाँ की चीजों में कोई नवीनता नहीं मिली, और वह बहुत समय एकांत में चिंतन करती रही। लेकिन उसकी उदासी की शुरुआत खुद से हुई। 'मेरी जवानी मुझे छोड़ रही है,' उसने मैरी से कहा; 'मैं इससे बेहतर कभी नहीं कर सकती, और मैंने अभी तक कुछ भी नहीं किया है,' और इस मित्र के अनुसार, ऐसे समय में वह सोचती थी कि अधिकांश मनुष्य सांसारिक हितों के दबाव में एक-एक करके अपनी क्षमता और भावना खोते चले जाते हैं, जब तक कि वे पूरी तरह से मृत नहीं हो जाते। 'मुझे उम्मीद है कि मरते ही मुझे मेरी कब्र में रख दिया जाएगा; मैं इस तरह घूमना नहीं चाहती,' उसने आगे कहा। मैरी ने उसे सलाह दी कि जब वह इस हालत में हो तो बदलाव के लिए घर या कहीं और चली जाए, और शार्लोट ने सलाह के लिए उसे धन्यवाद दिया, लेकिन उसने इसे नहीं माना।

'वो छुट्टियाँ! क्या मैं उन्हें कभी भूल पाऊँगी? मुझे नहीं लगता,' लूसी स्नो कहती हैं... 'मेरा दिल मानो मर ही गया था; दुख भरी तड़पों ने उसकी नसों को जकड़ लिया था। सितंबर के दिन कितने लंबे थे! कितने शांत, कितने निर्जीव! वह वीरान परिसर कितना विशाल और खाली लग रहा था! वह सुनसान बगीचा कितना उदास था, — अब बीते हुए शहर की धूल से धूसर!' लूसी स्नो को भविष्य से कोई सुकून नहीं मिला; और जीवन के प्रति एक दुखद उदासीनता अक्सर उन पर हावी हो जाती थी, — 'सांसारिक चीजों के अंत तक समय से पहले पहुँचने की एक निराशाजनक स्वीकृति।' उन्हें भविष्य एक निराशाजनक रेगिस्तान जैसा लगा: 'भूरे रंग की रेत, न हरे-भरे खेत,

न ताड़ का पेड़, न कुआँ।’ और यही वो विचार थे जिन्होंने ब्रसेल्स में शार्लोट ब्रोंटे को भी सताया और उन्हें बुरी तरह से बोझिल कर दिया। अवसाद के ऐसे ही एक दौर में, उदासी से व्याकुल होकर, उसे स्वीकारोक्ति कक्ष में सांत्वना मिली, जब उसने अपने एकांत दुख की कहानी एक पादरी के कान में सुनाई - एक पेरे सिलास, 'विलेट' में उनके जैसा, जिसने लूसी स्नो से शांति और आशा के बारे में बात की।

लेकिन 1842 में ब्रुसेल्स में शार्लोट की पहली छुट्टियों के अंत में एक अलग तरह की मुसीबत आ पड़ी, जब मार्था टी की मृत्यु से उन्हें और एमिली को गहरा सदमा लगा। मार्था की मृत्यु शैतो डी कोक्लेबर्ग में एक छोटी सी बीमारी के बाद हुई थी। ब्रुसेल्स में उनके छोटे से परिवार के लिए यह एक बड़ा शोक था, क्योंकि मृत लड़की एक हंसमुख और स्नेही साथी थी, जिसे 'शर्ली' में जेसी के नाम से याद किया जाता है, और उसके जाने का गहरा शोक मनाया गया। लेकिन ब्रोंटे बहनों के लिए एक और दुख इंतजार कर रहा था; उन्हें पता चला कि उनकी चाची ब्रैनवेल बीमार थीं, और उनका निधन हो गया था; घर पर उनकी जरूरत थी; और तुरंत, बहुत जल्दबाजी में तैयारी करके, वे ब्रुसेल्स से चली गईं, एमिली फिर कभी वापस नहीं लौटीं। वे हॉवर्थ में अपने पादरी के घर लौटीं, तो पाया कि अंतिम संस्कार हो चुका था, और घर उस व्यक्ति से वंचित हो गया था जो वर्षों से उसका सहारा और संरक्षक रहा था।

इस प्रकार ब्रुसेल्स में उनका प्रवास अचानक समाप्त हो गया और उनकी पढ़ाई बाधित हो गई; लेकिन उन्होंने वहाँ रहते हुए बहुत कुछ सीखा था। श्री हेगर ने श्री ब्रोंटे को उनके नुकसान पर सांत्वना देने के लिए पत्र लिखा और कहा कि एक साल में दोनों लड़कियाँ भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार हो जाएँगी। उन्हें शिक्षा मिल रही थी और साथ ही वे शिक्षण कला भी सीख रही थीं: एमिली पियानो सीख रही थी और बेल्जियम के सर्वश्रेष्ठ प्रोफेसरों से शिक्षा प्राप्त कर रही थी; और उसके स्वयं के छोटे-छोटे विद्यार्थी भी थे। ‘Elle perdait donc à la fois un reste d’ignorance et un reste plus gênant encore de timidité.’ शार्लोट फ्रेंच पढ़ाना शुरू कर रही थी और ‘cette assurance, cet aplomb si nécessaire dans l’enseignement.’ प्राप्त कर रही थी। श्री हेगर के इसी दयालु पत्र ने बाद में श्री ब्रोंटे को शार्लोट को ब्रुसेल्स लौटने की अनुमति देने के लिए प्रेरित किया।

अध्याय II.

अन्य कविताएँ।

ब्रैनवेल एट द पार्सनेज: हिज लोनलीनेस — 'द एपिक्यूरियन सॉन्ग' — 'सॉन्ग' — नॉर्थेंजरलैंड — 'नूह की मेथुसालेह की कब्र पर चेतावनी' — मिस्टर ग्रंडी को पत्र — मिस ब्रैनवेल की मृत्यु — उनकी वसीयत — उनके भतीजे की याद — इस मामले में उनकी बहनों के जीवनीकारों द्वारा उनके साथ किया गया अन्याय।

जब उनकी बहनें शार्लोट और एमिली ब्रुसेल्स में थीं और ऐनी एक गवर्नेंस के रूप में बाहर गई हुई थीं, तब ब्रैनवेल को हॉवर्थ के पादरी निवास में निश्चित रूप से अकेलापन महसूस हुआ होगा; लेकिन ऐसा लगता है कि उन्होंने संगीत और कविता के सुखदायक प्रभाव में अपनी परेशानियों से सांत्वना पाई। वे जानते थे कि ये गतिविधियाँ जीवन की राह में आने वाली कई कठिनाइयों को कम करती हैं और मनुष्य को वास्तविकता से परे एक शुद्ध और श्रेष्ठ क्षेत्र में ले जाती हैं। उनका मानना था कि वे ‘प्रशंसा, मधुर दुःख या अलौकिक आनंद के उन्माद में आत्मा को संगीतमय, और कुछ हद तक अस्पष्ट शब्दों के साथ आगे ले जाते हैं, जिससे मन में सुंदर और अलौकिक छवियाँ उभरती हैं।’ ब्रैनवेल की आत्म-भोग की प्रवृत्ति और समाज में उनके आनंद के बारे में चाहे जो कुछ भी कहा गया हो, यहाँ तक कि ‘द बुल’ और हॉवर्थ के भ्रष्ट लोगों के साथ भी, उनकी कथित भ्रष्टता और रूखे स्वभाव ने उनकी कविताओं को विकृत नहीं किया, भले ही उनकी प्रारंभिक रचनाएँ कविता की उच्चतर उत्कृष्टताओं से कितनी भी अपूर्ण रही हों। उनकी रचनाओं की सामान्य शैली, जो धार्मिक और कभी-कभी दार्शनिक होती है, से ऐसा प्रतीत होता है कि अपने दुर्भाग्य के बावजूद, जो किसी न किसी रूप में हमेशा उनके साथ रहे, उन्होंने कविता और चिंतन

के अंधकारमय मार्गों में सांत्वना खोजी।

उनकी कविताओं के सर्वत्र व्याप्त अंधकार में कभी-कभार कुछ प्रकाशमय प्रकाश फूट पड़ते हैं; परन्तु फिर भी, उनमें उदासी का भाव व्याप्त रहता है। ब्रैनवेल की कविताओं की विशिष्टताओं पर इस कृति के उत्तरार्ध में और अधिक चर्चा की जाएगी।

उन्होंने 1842 में निम्नलिखित छंद लिखे:

एक आनंदप्रिय व्यक्ति का गीत।
'दुःख की यात्राएँ
बताइए, हमें शोक क्यों मनाना चाहिए?
क्योंकि कल का सूरज
इसके कलश पर प्रकाश पड़े;
और हम जो कुछ भी सोचते हैं वह इतना दर्दनाक है
तब तक प्रस्थान कर चुके होंगे।
जो चीज वापस नहीं आ सकती, उसे एक पल के लिए सहन कर लें;
'क्योंकि अतीत ने समय ले लिया है'
इसका दिया हुआ प्रत्येक घंटा,
और वे कभी जागते नहीं।
कल की कब्र से;
तो निश्चित रूप से हम अवहेलना कर सकते हैं
परछाइयाँ, स्मृति की तरह,
ग्रीष्म ऋतु की लहर की तरह कमजोर और क्षणभंगुर।
'जिस गहराई से वे गिर रहे हैं'
न सुख, न दुख
हमारे वापस बुलाने के बावजूद,
आप हमसे दोबारा संपर्क कर सकते हैं;
हालांकि हम उनके बारे में सोचते रहते हैं,
उन्हें कोई वापस नहीं ला सकता।
जहां उन्हें रखा जाता है, वे वहीं हमेशा के लिए रह जाते हैं।
इसलिए वर्तमान को पकड़ लें,

और इसके फूल इकट्ठा करो,
क्योंकि, चाहे दुखद हो या सुखद,
यही सब कुछ हमारा है;
हम दिन का उजाला बर्बाद कर रहे हैं,
शाम तेजी से बीत रही है।
और बीतते घंटों के साथ ही रात तेजी से लौट आती है।
हां, और हम, जब रात होती है,
जो भी जल्दी हो,
हमें मरना ही होगा, क्योंकि यही हमारा भाग्य है।
और उनके बगल में सो जाओ;
क्योंकि परिवर्तन ही एकमात्र उपाय है
निरंतर जारी;
और यह अपनी लहरों के साथ सृष्टि को बहा ले जाता है।

यहां ब्रैनवेल, अपनी आदत के विपरीत, प्रसन्न मन से लिखते हुए, अतीत की असफलताओं को भूल जाते हैं और समय-समय पर मिलने वाले सुख-सुविधाओं में शांति की तलाश करके अपना ध्यान उनसे हटा लेते हैं। वे सांसारिक चीजों की क्षणभंगुर प्रकृति से भलीभांति परिचित हैं; और अपनी उस सहज और मनमोहक काव्यात्मक क्षमता से, जिससे उनके बिम्ब और रूपक हमेशा वर्णित होते हैं, वे एपिक्यूरियन को आशावादी की आशाओं से भर देते हैं, या स्टोइक की उस उदासीनता से भर देते हैं जो मानव जीवन के सुखों को धूमिल करने वाली अंधकारमय छायाओं के प्रति होती है। इस गीत में मिस रॉबिन्सन द्वारा उल्लिखित 'उपदेशात्मक लहजे' का कोई अंश निश्चित रूप से नहीं है, और न ही यह 'कमजोर और चरित्रहीन अभिव्यक्ति' है।

सन् 1842 में रचित निम्नलिखित गीत भावपूर्ण रूप से बर्न्स की रचना 'ऑल्ड लैंग साइन' की याद दिलाता है। हालांकि, इसका विषय अलग है और इसमें चिरस्थायी स्नेह की गहरी भावना व्याप्त है, तथा यह इसके प्रति अत्यंत भावपूर्ण अभिव्यक्ति है।

गाना।
क्या जीवन की पहली भावनाओं को भुला देना चाहिए?

जैसे-जैसे समय बीतता जाता है?
क्या मनुष्य का भाग्य हमेशा बदलता रहता है?
क्या काम करने के तरीके में बदलाव आया है?
‘क्या वह दूरी, जो दिल को दिल से अलग करती है,
क्या हृदय के सर्वोत्तम विचार भी नष्ट हो जाते हैं?
यदि वे वर्ष, जो हमारी जवानी को विदा करते हैं,
क्या हम बचपन की यादों को मिटा देना चाहते हैं?
‘ओह! ऐसा मत कहो कि ये आने वाले वर्ष
क्या गहरी मित्रता से ये लाभ होंगे?
मित्रता की खुशियों, आशाओं और भय के लिए,
गहरे स्रोतों से झरने फूटते हैं।
‘इसकी भावनाएं दिल से जुड़ी हैं;
इसका चिन्ह—चमकती हुई आंख,
जब जीभ पर नए भाव उभरते हैं,
उठो, जियो और मरो।
इसलिए, राहगीरों के चेहरों पर मुस्कान आ सकती है।
गुजरते हुए पलों का आनंद लें;
लेकिन केवल पुराने परिचितों के कारण
क्या कभी आंसू बन सकते हैं?

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, लेलैंड स्वयं एक कवि और कुशल एवं विवेकशील साहित्यिक आलोचक थे। ब्रैनवेल ने अपनी कुछ कविताएँ उनके विचार जानने के लिए उन्हें भेजीं और उन्होंने अपने मित्र को सलाह दी कि वे उन्हें 'नॉर्थेंगरलैंड' के छद्म नाम से प्रकाशित करने के बजाय अपने नाम के साथ प्रकाशित करें, क्योंकि वे उन्हें उनकी प्रतिभा के अनुरूप मानते थे। लेकिन ब्रैनवेल ने 12 जुलाई, 1842 को लेलैंड को पत्र लिखकर कुछ तकनीकी प्रश्न पूछे और परिशिष्ट में लिखा, 'नॉर्थेंगरलैंड इतने लंबे समय से गुप्त और मौन रूप से काम कर रहे हैं कि वे आपके प्रोत्साहन को उस रूप में लेने का साहस नहीं कर सकते जो उनका अहंकार उन्हें लेने के लिए प्रेरित करेगा।'

10 अगस्त, 1842 को उन्होंने लेलैंड को एक स्मारक के संदर्भ में लिखा, जिसे उस मूर्तिकार ने हाल ही में हॉवर्थ में स्थापित किया था, और उन्होंने यह कहकर पत्र

समाप्त किया:

जब आप श्री कॉन्स्टेबल से मिलें—जिन्हें मैं सीधे पत्र लिखूंगा—तो कृपया उन्हें बता दें कि—जब यह पत्र पहुंचा तब मैं घर पर नहीं था, और मेरे लौटने पर इसे मुझे न देने वालों की लापरवाही के कारण—मुझे उनका पत्र अभी मिला है। इसके निर्देशों का सहर्ष पालन किया जाएगा; लेकिन बेहतर होगा कि वे चार्ल्स फ्रीमैन या बेंजामिन काउंट, एस्क्वायर्स की प्रतिष्ठा पर किसी भी प्रकार का कलंक न लगाएं।'

ब्रैनवेल ने 'महान विज्ञान' में अपनी प्रारंभिक रुचि नहीं खोई, बल्कि इसे अर्ध-गंभीर दृढ़ता के साथ जारी रखा। कॉन्स्टेबल और लेलैंड 'रिंग' के मुक्केबाजी मुकाबलों को क्रूर और अपमानजनक मानते थे, लेकिन ब्रैनवेल हमेशा ऊर्जा और उत्साह के साथ इसके चैंपियनों का बचाव करने का दावा करते थे; और इस पत्र में वे उनमें से दो का मज़ाकिया अंदाज़ में उल्लेख करते हैं। 1842 में उनके साहित्यिक कार्यों में निम्नलिखित कविता शामिल है। इसका शीर्षक है:

मेथुसालेह की कब्र पर नूह की चेतावनी।
भाइयों और साथियों! एक पल रुकिए!
आपके नवीनतम कुलपति की कब्र के बगल में,
जबकि ईश्वर का न्यायपूर्ण प्रतिशोध अभी भी विलंबित है,
जबकि ईश्वर की असीम दया अभी भी बचा सकती है।
क्या तुम मेरी ज़बान को यह कहने के लिए विवश करोगे?
इस अनाम घास के नीचे
आज तुम्हारे हाथों ने, मेरे हाथों के साथ, अपना हाथ रखा है।
क्या वह धरती पर आखिरी व्यक्ति था जिसने ईश्वर के साथ कदम मिलाया?
'क्या वह पीला शव, जिसके सफ़ेद बाल
वे तो बस क्षय के आगे आत्मसमर्पण कर चुके हैं।
हमारे वर्षों को बांधने वाली जंजीर को तोड़ दो
सौ युग बीत गए?
क्या अस्सी वर्षों की चेतावनियाँ भय का कारण बनेंगी?
क्या हवा में फुसफुसाहट की तरह मर जाना?
क्या तुम्हारे सिर पर मंडराता अंधकार,

क्या इसके अंधे पीड़ित और भी अंधेरे में डूबे हुए हैं?

‘क्या आकाश से तूफान दुनिया के बाहर आएंगे?

क्या आप अपने भीतर नरक से उठने वाले और भी भयंकर तूफानों को खोज सकते हैं?

क्या लंबे समय से संचित, देर से आने वाला क्रोध प्रस्फुटित होगा?

या फिर, क्या आप पाप से मुंह मोड़ लेंगे, क्या आप ऐसा कर सकते हैं?

‘कृपया धैर्य रखें, अगर मेरी बातें बहुत सीधी-सादी हों।’

मेरे पुत्रों, समय तेजी से बीत रहा है;

अगर मेरे उच्चारण में कोई गड़बड़ी हो तो मुझे क्षमा करें:

क्या मैं बच जाऊंगा और प्रकृति नष्ट हो जाएगी?

उस विराम के लिए क्षमा करें: — स्वर्ग की ओर एक नज़र

यह बात मुझे साफ-साफ बताती है कि वह चला गया है।

जिसने व्यर्थ ही मेरे साथ लंबे समय तक प्रयास किया था

केवल पृथ्वी के लिए और उसकी शांति के लिए।

‘वह चले गए! — मेरे पिता — पूरे जीवन भर जीवित रहे, —’

ऐसे जीवन से जिसमें उनके लिए कोई खुशी नहीं बची थी;

सृष्टि की सबसे पहली ज्वाला में जन्मा;

स्वयं मरते हुए—वही, इसकी नवीनतम किरण।

लेकिन वह चला गया! और, ओह, देखो,

उनकी मृत्यु में ईश्वर का नवीनतम संकेत प्रकट हुआ!

इससे अधिक स्पष्ट रूप से कभी नहीं बताया गया

देवदूत की उपस्थिति, उनकी योजना।

इसके द्वारा, शाम की किरणें वापस ले ली गईं

तारों से रहित रात छाने से पहले;

इसके द्वारा, अंतिम धन्य आत्मा का जन्म हुआ

अंत की इस शुरुआत से;

गृहयुद्ध के सभी संघर्षों के कारण

वह किरण उस भाग्यशाली शहर के भीतर चमकती है;

वहाँ हृदय की सभी बुरी भावनाओं से,

प्रतिशोध की वह इतनी ज़ोरदार पुकार;
उस विशाल अंधकारमय बादल की दीवार के कारण,
आकाश के चारों ओर ढेर सारी आशंकाएँ;
अपनी तमाम विनाशकारी भविष्यवाणियों से,
हे मनुष्यों के बच्चों— पश्चाताप करो! पश्चाताप करो!

इस कविता में उदासी की छाप भी है, लेकिन ब्रैनवेल के भावों की उथल-पुथल से इसकी लय और गरिमा अप्रभावित रहती है। रचना का भाव भव्य और उपयुक्त भाषा में बखूबी व्यक्त किया गया है, हालांकि उनकी बहनों की पिछली कविताओं में समय-समय पर दिखाई देने वाली असंगतता और अनिश्चितता के कुछ उदाहरण इसमें भी देखे जा सकते हैं।

सन् 1842 के उत्तरार्ध में मिस ब्रैनवेल के स्वास्थ्य की स्थिति ब्रोंटे परिवार के लिए चिंता का कारण बन गई। बीते वर्षों में बीमारी और मृत्यु से परिचित होने के कारण, वे उस महिला के अपरिहार्य निधन की आशंका से दुखी थे, जो वर्षों से उनके लिए माँ के समान थीं। अपने घर पर छाए इस दुख के साये में, ब्रैनवेल ने अपने मित्र श्री ग्रुंडी को पत्र लिखकर इसका जिक्र किया और बताया कि वे अपनी चाची के अंतिम समय में उनके साथ हैं, जो बीस वर्षों से उनकी माँ के समान थीं। 29 अक्टूबर को श्री ग्रुंडी को लिखे एक अन्य पत्र में, ब्रैनवेल ने स्नेहपूर्ण शब्दों में उनकी मृत्यु का उल्लेख किया:

मुझे खेद है कि मैं ठीक से बोल नहीं पा रहा हूँ, लेकिन दो रातों से मैं ऐसी पीड़ा देख रहा हूँ जो मैं अपने सबसे बड़े दुश्मन को भी सहने की कामना नहीं करूँगा; और मैंने अपने बचपन से जुड़े सभी सुखद दिनों का गौरव और मार्गदर्शक खो दिया है। हॉवर्थ में आपसे आखिरी बार मिलने के बाद से मैं इतना दुखी हूँ कि अब मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि मैं भारत में लड़ रहा हूँ या कहीं और, क्योंकि जब मन उदास होता है, तो खतरा ही सबसे कारगर इलाज होता है। लेकिन मैं जानता हूँ कि आपको मरना पसंद नहीं है, बस आपसे अनुरोध है कि मेरे इन दो संदेशों से यह समझ लें कि मैं आपको नहीं, बल्कि खुद को भूला हूँ।

जैसा कि अंतिम अध्याय में बताया गया है, शार्लोट और एमिली अपनी चाची की मृत्यु के बाद ब्रुसेल्स से जल्दी घर लौटीं, तो उन्होंने पाया कि उन्हें पहले ही दफना दिया गया था।

मिसेज गैस्केल ने मिस ब्रैनवेल की मृत्यु का जिक्र करते हुए उस महिला की

वसीयत का निम्नलिखित संस्करण प्रस्तुत किया है। वह कहती हैं:

'मिस ब्रैनवेल ने अपनी व्यक्तिगत मितव्ययिता और त्याग के बल पर जो थोड़ी-सी संपत्ति अर्जित की थी, वह उन्होंने अपनी भतीजियों को वसीयत में दे दी थी। उनके प्रिय ब्रैनवेल को भी अपना हिस्सा मिलना था; लेकिन उनके फिजूलखर्ची ने उस भली-भांति बुजुर्ग महिला को दुखी कर दिया था, इसलिए वसीयत में उनका नाम शामिल नहीं किया गया था।'

मिस रॉबिन्सन, अप्रत्यक्ष रूप से और बिना सोचे-समझे, इस लेखक का अनुसरण करते हुए कहती हैं:

'मिस ब्रैनवेल की वसीयत सार्वजनिक करनी ही थी। उन्होंने अपनी सीमित आमदनी से जो थोड़ी-बहुत संपत्ति बचाई थी, वह सब उनकी तीन भतीजियों को दे दी गई थी। ब्रैनवेल उनका लाडला था, इकलौता बेटा, जिसका नाम उन्हीं के नाम पर रखा जाता था; लेकिन उसकी बदनामी ने उन्हें बहुत गहरा घाव दिया था। वसीयत में उसका नाम तक नहीं था।'

श्रीमती एलिजाबेथ ब्रैनवेल ने वर्ष 1833 में (जब उनके भतीजे की आयु लगभग पंद्रह वर्ष थी) अपनी वसीयत बनाई थी, जिसके द्वारा उन्होंने श्री ब्रोंटे के बच्चों के लिए निम्नलिखित वस्तुएँ छोड़ी थीं: —

शार्लोट के लिए, एक भारतीय वर्कबॉक्स।

एमिली जेन को, चीनी मिट्टी के ढक्कन वाला एक वर्कबॉक्स और एक हाथीदांत का पंखा।

ब्रैनवेल को एक जापानी ड्रेसिंग केस।

ऐनी को, उसकी घड़ी, चश्मा और चेन।

इन तीन भतीजियों में, उनकी अंगूठियां, चांदी के चम्मच, किताबें, कपड़े आदि, उनके पिता की इच्छानुसार बाँटे जाने थे। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त धन, उन्होंने अपनी भतीजियों शार्लोट, एमिली और ऐनी ब्रोंटे तथा अपनी बहन जेन किंग्स्टन की पुत्री एलिजाबेथ जेन के लाभ के लिए ट्रस्ट में रखा था, जिसे सबसे छोटी के इक्कीस वर्ष की आयु प्राप्त करने पर उनके बीच समान रूप से विभाजित किया जाना था। लेकिन, यदि इन तीनों की मृत्यु हो जाती, तो सारा धन उनकी भतीजी ऐनी किंग्स्टन को मिलता, और यदि उनकी भी मृत्यु हो जाती, तो संचित धन उनके 'प्रिय भाई और बहनों' के बच्चों के बीच बाँटा जाता। यदि ब्रैनवेल, जो इन 'बच्चों' में से एक थे, अपनी

बहनों और वसीयत में उल्लिखित चचेरे भाई से अधिक समय तक जीवित रहते, तो वे प्रश्नगत संचित धन के एकमात्र प्राप्तकर्ता नहीं तो कम से कम एक प्राप्तकर्ता होते। यह संभावना मिस ब्रैनवेल के मन में वसीयत करते समय मौजूद थी, और इसे कभी भी न तो बदला गया और न ही रद्द किया गया।

यह आश्चर्यजनक है कि एक ऐसे विषय पर इतनी अज्ञानता प्रदर्शित की गई जिसे इतनी आसानी से सही ढंग से व्यक्त किया जा सकता था; लेकिन यह दुखद है कि इस अज्ञानता के कारण ब्रोंटे बहनों के जीवनीकारों ने गलत बयानों के माध्यम से ब्रैनवेल को अतिरिक्त और अनुचित रूप से चोट पहुंचाई।

अध्याय III.

एक गलत जगह पर लगा हुआ लगाव।

क्रिसमस, 1842 — ब्रैनवेल खुश है — शार्लोट एक और वर्ष के लिए ब्रुसेल्स जाती है — ब्रैनवेल को ट्यूटर के रूप में नियुक्ति मिलती है — ब्रैनवेल हैलिफ़ैक्स जाता है और वहाँ मिस्टर ग्रंडी से मिलता है — ब्रुसेल्स में शार्लोट का मानसिक अवसाद — श्रीमती गैस्केल इसका कारण ब्रैनवेल के आचरण को मानती हैं — सबूत बताते हैं कि ऐसा नहीं था — ब्रुसेल्स में शार्लोट की 'निराशा' — वह हॉवर्थ लौट आती है — ब्रैनवेल का गलत लगाव — उसे नए परिवेश में भेज दिया जाता है।

मिस ब्रैनवेल की मृत्यु के कारण शार्लोट और एमिली ब्रुसेल्स से घर लौट आई थीं; और ऐनी, अपनी स्थिति के कारण, इस दुखद अवसर पर उपस्थित थीं। जब क्रिसमस की छुट्टियाँ आईं, तो सभी बहनें फिर से घर पर थीं। ब्रैनवेल उनके साथ थे; जो उस

समय हमेशा एक सुखद अनुभव होता था, और शार्लोट की सहेली, 'ई', उनसे मिलने आई। अपनी चाची की मृत्यु के पहले दुख से उबरने के बाद, उन्होंने साथ मिलकर क्रिसमस का खूब आनंद लिया। ब्रैनवेल हंसमुख और प्रसन्न थे; और शार्लोट ने अपने उस सहेली को, जो अभी-अभी उनसे विदा हुई थी, एक प्रसन्न मन से पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने एक मज़ाकिया संदेश भेजा। शार्लोट कहती हैं, 'ब्रैनवेल जानना चाहते हैं कि आपने परिवार के हर सदस्य को विशेष रूप से शुभकामनाएँ भेजते समय उनका ज़िक्र क्यों नहीं किया। वह जानना चाहते हैं कि उन्होंने आपको किस बात से नाराज़ किया है? या क्या किसी युवती के लिए घर के पुरुषों का ज़िक्र करना अनुचित माना जाता है?' जब वे साथ थीं, तो उन्होंने उत्सुकता और आशा के साथ भविष्य की योजनाओं पर चर्चा की। शार्लोट ने महाशय हेगर के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था कि वह एक और वर्ष के लिए ब्रुसेल्स लौट जाए, जहाँ वह फ्रेंच भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेगी और एक स्कूल शुरू करने के लिए पूरी तरह से योग्य हो जाएगी, जबकि यह अभी भी असंभव था। एमिली को अब अपने पिता के घर की देखभाल के लिए घर पर ही रहना था, और ऐनी को अपनी गवर्नेस की नौकरी पर वापस लौटना था।

ब्रैनवेल को भी उसी परिवार में शिक्षक के रूप में नौकरी मिल गई जहाँ ऐनी कुछ समय से कार्यरत थीं। उन्होंने 1842 की क्रिसमस की छुट्टियों के बाद अपने नए पद पर कार्यभार संभाला। अपने मालिक के घर पहुँचने पर उनका परिचय परिवार के सदस्यों से कराया गया; और यह कहना गलत नहीं होगा कि उनके नए मित्र उनके शालीन व्यवहार, उनकी बुद्धिमत्ता और उनके ज्ञान की व्यापकता से अत्यंत संतुष्ट थे। यहाँ ब्रैनवेल ने स्वयं को प्रसन्न पाया; क्योंकि उनकी अपेक्षा के विपरीत, उन्हें एक सुखद और आरामदायक ठिकाना मिल गया था, जहाँ उन्होंने केवल एक शिक्षक के सामान्य परिश्रम की ही उम्मीद की थी। उनका परिवार इस बात से संतुष्ट था कि उन्हें इस प्रकार सम्मानजनक और आशाजनक रूप से काम पर लगाया गया है। जिस सज्जन ने ब्रैनवेल को अपने बेटे का शिक्षक नियुक्त किया था, वे साहित्यिक रूप से निपुण थे; उन्हें ग्रामीण खेलों का शौक था, उनका स्वभाव शिष्ट और बुद्धि तीव्र थी। उनकी पत्नी उच्च कोटि की, शालीन व्यवहार वाली और दयालु स्वभाव की महिला थीं; और यद्यपि उस समय वह अधेड़ उम्र के करीब थे, फिर भी उनमें जबरदस्त व्यक्तिगत आकर्षण था।

यदि ब्रोंटे परिवार ब्रैनवेल की नियुक्ति से प्रसन्न था, तो जिस परिवार में उनका प्रवेश हुआ था, वह भी उतना ही प्रसन्न था कि उन्हें एक ऐसा शिक्षक मिला है जिसकी प्रतिभा उनके सद्गुणों के बराबर है। उनके गुरु, जो एक पादरी थे, का समय अक्सर अपने पद के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों में व्यतीत होता था, और उनकी पत्नी आमतौर पर घर के कामों और ग्रामीण जीवन के सुख-सुविधाओं में व्यस्त रहती थीं। इसलिए, ब्रैनवेल को अपने कर्तव्यों के निर्वहन में अधिक परेशानी नहीं हुई; और जिस परिवार में उन्हें रखा गया था, उसमें उन्हें वह कठोर औपचारिकता नहीं मिली जो उनके पद को बोझिल बना सकती थी। अपने शिष्य के साथ आस-पड़ोस में सैर-सपाटे से उनका समय विविध बना रहता था; और शाम को, दिन के कर्तव्यों के निर्वहन के बाद, जब वे अपने फार्महाउस में लौटते थे, तो उनका समय पूरी तरह से उनके अपने विवेक पर निर्भर होता था।

ऐनी के विपरीत, ब्रैनवेल में संकोच की कोई समस्या नहीं थी। स्वभाव से मिलनसार और सामाजिक होने के कारण, उन्होंने अपने निवास स्थान के आस-पास के लोगों से जल्दी ही जान-पहचान बना ली, जिनमें डॉ. — — भी शामिल थे, जो उस परिवार के चिकित्सक थे जिसके वे शिक्षक थे। इसके अलावा, किस्सों का भंडार और कहानियाँ सुनाने का मनोरंजक अंदाज़ उन्हें एक बेहतरीन साथी बनाता था। ब्रैनवेल एक कुशल संगीतकार भी थे, क्योंकि उन्होंने अपनी इस रुचि को और निखारा था और संगीत प्रदर्शन में काफी निपुणता हासिल कर ली थी।

छह महीने जल्दी ही बीत गए, और ब्रैनवेल और ऐनी एक बार फिर हॉवर्थ स्थित पादरी के घर में अपनी उपस्थिति से खुशियाँ लेकर आए। घर में स्वागत के बाद ब्रैनवेल की पहली इच्छाओं में से एक हैलिफ़ैक्स में अपने मित्रों से मिलने जाना था; जहाँ इस अवसर पर उन्हें श्री ग्रुंडी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपने और अपनी बहन के अपने कर्तव्यों पर लौटने के बाद, इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने अपने आप को उस परिवार का स्नेह और सद्भाव बनाए रखने के लिए किए गए प्रयासों को जारी रखा, जिनके साथ वे रह रहे थे।

शार्लोट रुए डी'इसाबेल में अंग्रेजी शिक्षिका के रूप में कार्यरत थीं; जहाँ उन्होंने फ्रेंच भाषा से कुछ हद तक परिचित होने के बावजूद, घर की याद सताने और अस्वस्थता के कारण, वर्ष के अंत तक वहीं रहने का संकल्प लिया; और यदि संभव हो तो जर्मन भाषा का ज्ञान प्राप्त करने की भी इच्छा जताई।

अगस्त की शुरुआत में, जब छुट्टियाँ नज़दीक आ रही थीं, शार्लोट का मन उदास हो गया। एक सुनसान घर में, एक अनजान शहर में पाँच सप्ताह अकेले बिताने की संभावना उसके लिए असहनीय थी: उसका आखिरी अंग्रेज़ दोस्त ब्रसेल्स छोड़ रहा था; उसके पास कोई नहीं था जिससे वह अपने विचार साझा कर सके। वह लिखती है, 'मैं आपको पहले ही बता देती हूँ, मैं बहुत उदास हूँ, इस समय मुझे धरती और आकाश दोनों सूने और खाली लग रहे हैं।' अपने जीवन में पहली बार उसे छुट्टियों से सचमुच डर लग रहा था; वह कहती है, 'हाय, मैं मुश्किल से लिख पा रही हूँ, मेरे दिल पर इतना भारी बोझ है; और मैं घर जाना चाहती हूँ। क्या यह बचकाना नहीं है?' फिर भी, अपनी कमजोरी के बावजूद, उसने हिम्मत नहीं हारी और डटे रहने का निश्चय किया; लेकिन शार्लोट ब्रोंटे के लिए, लूसी स्नो की तरह, सितंबर के वे दिन कष्ट भरे थे। कुछ समय बाद, एक बार उसका यह संकल्प टूट गया। वह किसी छुट्टी पर अकेली थी; घर के बाकी लोग शहर में अपने दोस्तों से मिलने गए थे; शार्लोट का अब वहाँ कोई दोस्त नहीं था। वह अकेली थी और मैडम हेगर द्वारा उपेक्षित महसूस कर रही थी; वह इसे और सहन नहीं कर सकी, इसलिए वह स्वयं मैडम के पास गई और उनसे कहा कि वह नहीं रह सकती; लेकिन महाशय हेगर ने यह सुनकर, अपने विशिष्ट उग्र स्वभाव के साथ, अपना निर्णय सुनाया कि उसे नहीं जाना चाहिए, और वह वहीं रुक गई।

श्रीमती गैस्केल ने ब्रुसेल्स में अपने दूसरे वर्ष के दौरान खराब स्वास्थ्य के कारण मानसिक अवसाद से पीड़ित होने का वर्णन निराशाजनक शब्दों में किया है, और वास्तव में यही वह मुख्य बिंदु प्रतीत होता है जिसे वह दर्शाना चाहती हैं। वह कहती हैं: 'घर से आने वाली खबरों में, विशेष रूप से ब्रैनवेल के संबंध में, दुख और चिंता के कारण थे। आधी रात को, विशाल और शांत घर में, लंबे समय से सुनसान पड़े छात्रावास के अंत में जागते हुए, उन लोगों के बारे में हर डर, जिनसे वह प्यार करती थीं और जो दूसरे देश में इतनी दूर थे, एक भयानक वास्तविकता बन गया, जिसने उन्हें दबा दिया और उनके दिल में जीवन-रक्त का प्रवाह ही रोक दिया। वे रातें बीमारी, उदासी, जागते रहने वाली पीड़ा के समय थे, जो आने वाले वर्षों में ऐसी कई रातों के अग्रदूत थे।' श्री टी. वेमिस रीड ने शार्लोट पर अपने एकालाप में, श्रीमती गैस्केल द्वारा शार्लोट के कभी-कभार होने वाले अवसाद पर जोर देने और उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने के तरीके पर उचित आपत्ति जताई है; और, निश्चित रूप से, ब्रुसेल्स से लिखे

उनके किसी भी पत्र में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे ब्रैनवेल को लेकर चिंता का कोई कारण पता चले। इसके विपरीत, इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि इस तरह की किसी भी बात ने उनकी बहन की शांति भंग नहीं की। शार्लोट ने 1843 के अंत में ब्रुसेल्स छोड़ दिया और 2 जनवरी, 1844 को हॉवर्थ पहुंचीं। ब्रैनवेल और ऐनी भी क्रिसमस की छुट्टियों के लिए घर पर थे, और शार्लोट ने अपनी सहेली 'ई' को इन शब्दों में लिखा: 'ऐनी और ब्रैनवेल अभी-अभी हमें छोड़कर वापस चले गए हैं; वे दोनों अपने-अपने पदों पर बहुत सम्मानित हैं।'

तब यह ज्ञात था कि ब्रैनवेल ने अपने नियोक्ताओं को संतुष्ट कर दिया था, और परिवार के इस पुनर्मिलन की खुशी एक परिस्थिति के कारण ही पूर्ण हो पाई। शार्लोट के दोस्त अब उम्मीद कर रहे थे कि वह स्कूल जाना शुरू करेगी। वह कहती है कि उसकी सबसे बड़ी इच्छा यही थी। उसके पास इस काम के लिए पर्याप्त धन था, और उसे आशा थी कि सफलता के लिए उसके पास आवश्यक योग्यताएं भी हैं। फिर भी वह उस समय स्कूल शुरू नहीं कर सकी। वह लिखती है, 'आप मुझसे पूछेंगे, क्यों? यह पापा के कारण है; जैसा कि आप जानते हैं, वह अब बूढ़े हो रहे हैं, और मुझे यह बताते हुए दुख हो रहा है कि उनकी दृष्टि कमजोर हो रही है। मुझे कुछ महीनों से लग रहा है कि मुझे उनसे दूर नहीं रहना चाहिए; और अब मुझे लगता है कि अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए उन्हें (कम से कम जब तक ब्रैनवेल और ऐनी अनुपस्थित हैं) छोड़ना बहुत स्वार्थपूर्ण होगा।' जिस तारीख को हम यहाँ पहुँचे हैं, उसके कुछ समय बाद लिखे गए उनके एक पत्र में एक टिप्पणी से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें दूसरी बार ब्रसेल्स जाने का पछतावा था। वह कहती हैं, ‘चाची की मृत्यु के बाद, मैंने अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध ब्रुसेल्स लौट आई, उस समय मुझे एक अप्रतिरोध्य प्रेरणा महसूस हुई। अपनी स्वार्थी मूर्खता के लिए मुझे दो साल से अधिक के सुख और मन की शांति से पूरी तरह वंचित रहकर दंडित होना पड़ा।’ जब शार्लोट ब्रुसेल्स में ही थीं, तब उन्होंने सुना कि उनके कुछ दोस्तों का मानना है कि ‘मैडम ब्रोंटे का जीवनसाथी’ महाद्वीप में ही होगा, क्योंकि उन्होंने इंग्लैंड में 50 पाउंड प्रति वर्ष की नौकरी ठुकरा दी थी और 16 पाउंड की नौकरी स्वीकार कर ली थी और बेल्जियम लौट आई थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने उनमें से एक को लिखे पत्र में इस बात से इनकार किया है; हालाँकि, यह स्पष्ट नहीं है कि उन्होंने अपने दोस्त को चिढ़ाने के इरादे से ऐसा किया या सवाल से बचने के लिए। श्री रीड का मानना है कि ब्रुसेल्स में अपने इस दूसरे

प्रवास के दौरान, शार्लोट ब्रोंटे ने एक ऐसा भावनात्मक अनुभव किया जो उनके जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुआ और उन्हें वह बनाया जो वह थीं; और यह उनके भाई की बाद की विपत्तियाँ नहीं थीं, जैसा कि श्रीमती गैस्केल हमें विश्वास दिलाना चाहती हैं, जिन्होंने उनके जीवन के सुख को नष्ट कर दिया।

मार्च के मध्य में, जब बहनों ने अनुपस्थित ब्रैनवेल के लिए कमीज़ें सिलने का काम पूरा कर लिया, तो शार्लोट अपनी सहेली से मिलने के लिए छुट्टी पर गईं, जिससे उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। लौटने पर उन्होंने श्री ब्रोंटे और एमिली को स्वस्थ पाया, और ब्रैनवेल का एक पत्र भी मिला, जिसमें उन्होंने बताया था कि वह और ऐनी भी काफी स्वस्थ हैं।

ब्रैनवेल ने इस वर्ष 4 जुलाई को हैलिफ़ैक्स का दौरा किया। उस समय उनका स्वास्थ्य पहले जैसा अच्छा नहीं था, और उनकी बहनों ने गौर किया कि वे आसानी से उत्तेजित हो जाते थे। लुडेनडेन फुट छोड़ने से दो-तीन महीने पहले तक, जब वे पच्चीस वर्ष के हो चुके थे, तब तक वे शारीरिक रूप से मजबूत न होते हुए भी अच्छे स्वास्थ्य में थे, और उनका मनोबल लगभग हमेशा ही अच्छा रहता था। अपनी युवावस्था में, शार्लोट के विपरीत, उन्हें गंभीर मानसिक अवसाद या धार्मिक उदासी का कोई गहरा अनुभव नहीं हुआ था। वे केवल चिंतन में लीन होने पर ही गंभीर हो जाते थे, और उनके विचार उस उदासी से भर जाते थे जो उनकी कुछ प्रारंभिक कविताओं में झलकती है। अब, हालांकि, उनका आत्मविश्वास कम हो गया था; और आसानी से उत्तेजित होने के कारण, उनकी वह उमंग और मन की वह लचीलता, जिसने उन्हें विशिष्ट बनाया था, क्षय के लक्षण दिखाने लगी थी। यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वे जीवन भर अपने युवावस्था के गुणों को बनाए रखेंगे: और शार्लोट ने हमें इसी समय के आसपास बताया है कि उनके भीतर कुछ ऐसा था, जो उत्साह से भरा हुआ करता था, वह शांत हो गया था और टूट गया था; वह जीवन में सक्रिय भागीदारी चाहती थी। घर छोड़ने में असमर्थ होने के कारण, उसने हॉवर्थ पार्सनेज में एक स्कूल खोलने का प्रयास किया। यदि उसे विद्यार्थियों की पर्याप्त संख्या मिल जाती, तो उसने घर में एक और शाखा बनाने का प्रस्ताव रखा; लेकिन, कमोबेश प्रोत्साहन मिलने के बाद, उसने पाया कि किसी को भी अपनी पसंद से बच्चों को ऐसी जगह भेजने के लिए राजी करना बिल्कुल असंभव था जो हवा और मौसम के इतने संपर्क में हो। बहनों को अपने प्रयास पर कोई खेद नहीं था; और, यह अनुचित रूप से कहा गया है

कि उन्हें अपनी असफलता का भी बहुत अफसोस नहीं था, क्योंकि उन्हें ब्रैनवेल के बारे में डर और आशंकाएँ थीं, और उन्हें लगा कि जो जगह उनका निवास स्थान हो सकती है, वह अजनबियों के बच्चों के घर के लिए शायद ही उपयुक्त हो। ब्रैनवेल और ऐनी 1844 की क्रिसमस पर फिर से घर पर थे, और वे अगले जनवरी की शुरुआत में अपने कर्तव्यों पर लौट आए। उसी महीने के दौरान शार्लोट लिखती हैं,

'कुल मिलाकर, ब्रैनवेल गर्मियों की तुलना में अधिक शांत और कम चिड़चिड़ा रहा है।'

उस समय न तो उसे नौकरी छोड़ने का डर था और न ही बर्खास्तगी का; लेकिन ऐनी ने अपने भाई में एक खास तरह की उत्तेजना और चंचल स्वभाव देखा था, जो अचानक प्रसन्नता से उदासी और बेचैनी में बदल जाता था। जैसा कि देखा जा चुका है, इस बात ने अन्य बहनों का भी ध्यान आकर्षित किया था, जो इससे चिंतित थीं और इसके कारण को लेकर बहुत चिंतित थीं। वास्तव में, ब्रैनवेल में पिछले छह महीनों से एक बदलाव आ रहा था, एक ऐसा बदलाव जिसे शुरुआत में वह खुद भी मुश्किल से समझ पाया था। उसके दिल में एक नई भावना घर कर गई थी, जिसका उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था, और जिसके खिलाफ उसने व्यर्थ ही संघर्ष किया। ब्रैनवेल, जिसने अपने घर की चारदीवारी से बाहर कभी प्यार नहीं किया था, अपने मालिक की पत्नी के प्रति आसक्त प्रशंसा से भर गया था, जो बाद में उसकी गर्मजोशी भरी भावनाओं के साथ एक गहरे स्नेह में बदल गया और अंततः एक उग्र और प्रबल जुनून में परिवर्तित हो गया। जैसा कि आगे स्पष्ट होगा, जिस महिला ने उसकी समझ को चकाचौंध और भ्रमित कर दिया था, वह इस बात से अनभिज्ञ थी कि उसने शिक्षक के हृदय पर ऐसा प्रभाव डाला था। शिक्षक उसके दयालु और विनम्र व्यवहार को अपने स्नेह की प्रतिफल समझने लगा, एक ऐसा भ्रम जिसे, जैसा कि आगे बताया जाएगा, उसने अपने जीवन के अंत तक पाले रखा। अपने मन की इस विचित्र विकृति के तहत, उसने यह आशा पाल रखी थी कि, चूंकि उसका शिक्षक कमजोर स्वास्थ्य में था, इसलिए वह जल्द ही उस विधवा से विवाह करने की स्थिति में आ जाएगा, जिसके बारे में उसका मानना था कि वह पहले ही उस पर अपना स्नेह बरसा चुकी है; जब, अच्छी स्थिति में होने और, जैसा कि उसने कहा था, 'स्थायी शांति की अमूल्य समृद्धि' प्राप्त करने पर, वह अक्सर घोषित करता था, साहित्यिक जीवन की सामान्य उथल-पुथल से मुक्त होकर, निश्चित प्रगति करने और उस समय के

सर्वश्रेष्ठ लेखकों में अपना नाम कमाने में सक्षम होगा।

लेकिन अपने जीवन के इस दौर में ब्रैनवेल ने ज़्यादा कविताएँ नहीं लिखीं, क्योंकि उनका मन अन्य कामों में व्यस्त था। हालाँकि, नीचे दी गई दो सुंदर सॉनेट कविताएँ उनकी ही हैं, जो मई 1845 में लिखी गई थीं और जिनका शीर्षक है:

प्रवासी।
जब हमारे घर के निशान हमारी नजरों से ओझल हो जाते हैं,
और, विदाई की सारी कड़वाहट दूर हो गई,
हम अपनी आत्मा को सागर के झाग में विलीन कर देते हैं।
और उस नवजात जीवन में जो हमारे सामने है,
सुदूर कोलंबियाई या ऑस्ट्रेलियाई तट पर,
बीते हुए समय को आने वाले समय से बदलने का प्रयास करें:
तो फिर कितना दुखद होगा, अगर मातम फिर लौट आए —
(रात के विस्मृति भरे अंधकार से भी कम स्वागत योग्य)
पुराने इंग्लैंड की नीली पहाड़ियाँ एक बार फिर हमारी नज़रों के सामने आ गईं।
जब हमारे विचार उसके आकाश से दूर होते प्रतीत होने लगे, —
वह पीड़ा जो लगभग शांत हो चुके दर्द को जगा देती है!
अत: जब बीमार व्यक्ति मृत्यु के लिए तैयार होकर लेटा होता है,
एक बेहद प्रिय आवाज, एक यादगार धुन,
समय को अनंत काल पर कठोर प्रहार करने दो।
जब, दिनभर की कड़ी मेहनत के बाद,
अज्ञात वृक्षों की दुर्लभ और सुखद छाया के नीचे,
किसी विदेशी धरती को निःसंकोच उलट-पलट करना,
अकेला निर्वासित व्यक्ति अपनी शाम की शांति की तलाश करता है, —
उसकी आत्मा को वे उष्णकटिबंधीय वन दिखाई नहीं देते;
न ही स्वर्ग इस संसार की उथल-पुथल को शांत कर पाता है;
न ही वह तीखी हवा उसके जलते माथे को ठंडक पहुंचाती है।
अरे नहीं! इंग्लैंड के द्वीप के तूफानी बादल
अपने साथ तूफानी हवाओं में संगीत की लहरें लेकर आओ,

और इसके हरे-भरे मैदानों पर, रात की परछाइयाँ गहरी होती जाती हैं,
"ऑल्ड लैंग साइन" की याद आते ही अंधेरा छा जाता है।
इस प्रकार, जब प्यास का दानव, उसकी शक्ति के अधीन हो जाता है
यात्री सिर झुकाता है, और तीव्र नींद में डूब जाता है।
उसे बहते झरने की आवाज़ सुनाई देती है और ठंडी फुहार महसूस होती है।

ब्रैनवेल का मन सुखमय भविष्य की आशाओं से प्रफुल्लित था, और इसी कारण वे भावपूर्ण, सुसंगत और सुंदर रचनाएँ लिख पाते थे, जैसा कि पूर्वोक्त सॉनेटों में देखा जा सकता है। परन्तु दुर्भाग्यवश उनका मन दुविधा में डूबा रहा, और जैसे-जैसे उनके प्रेम का भ्रम बढ़ता गया, वे, जैसा कि आगे सिद्ध होगा, एक अतिउत्तेजित और विवेचनात्मक कल्पना के शिकार हो गए, और अंततः उस सनकी प्रवृत्ति के शिकार हो गए जिसके बारे में लूसी स्नो कहती हैं कि उन्होंने हमेशा इसे किसी भी पुरुष या स्त्री के लिए सबसे दुर्भाग्यपूर्ण अभिशाप माना है। वास्तव में, जैसे ही नए जुनून ने उनके हृदय पर पूर्णतः अधिकार कर लिया, वे मन की उस विकृत प्रवृत्ति के शिकार हो गए, जो उनकी बहन शार्लट में कुछ हद तक कम ही पाई जाती थी, और जिससे वह कभी-कभी भयभीत रहती थीं। यह ध्यान देने योग्य है कि जब लूसी स्नो उस पत्र को ढूंढ रही होती हैं जो उनसे चुरा लिया गया है, तो वे स्वयं को सनकीपन का दोषी ठहराती हैं। ब्रैनवेल में ये मानसिक परेशानियां दिन-ब-दिन बढ़ती गईं।

समय बीतता गया; और जब वह अपने नियोक्ता के साथ लगभग ढाई साल बिता चुका था, जिसके अंतिम भाग में उसका आत्म-नियंत्रण कमजोर पड़ने लगा, तो उसने अपने स्वभाव की अजीब अनियमितताओं और अपने लंबे समय से दबे हुए उग्र जुनून को प्रकट करना शुरू कर दिया। घर की मालकिन ने उसके प्रति बहुत धैर्य और सहनशीलता दिखाई; और उसके परिवार की भावनाओं के प्रति सच्ची श्रद्धा ने उसे मामले के शुरुआती आभास में ही उसे नौकरी से निकालने का माध्यम बनने से रोक दिया। वास्तव में, उसे तब तक बर्खास्त नहीं किया गया जब तक कि यह कदम बिल्कुल आवश्यक नहीं हो गया। हालाँकि, उसके पद से निष्कासन में अधिक देरी नहीं हुई, क्योंकि ब्रैनवेल ने अपना पूर्व आत्म-नियंत्रण खो दिया था; और उसकी नासमझी ने मालकिन की अनिच्छा को पराजित कर दिया, जिसने अंततः जुलाई 1845 में, जब ब्रैनवेल छुट्टी पर घर से बाहर था, अपने पति को उसके आचरण के बारे में बता दिया। इसके तुरंत बाद उनके नियोक्ता द्वारा उन्हें एक पत्र भेजा गया, जिसमें उनकी

बर्खास्तगी की सूचना दी गई थी।

शार्लोट ब्रोंटे के अपनी सहेली 'ई' को लिखे पत्रों और श्रीमती गैस्केल तथा अन्य लेखकों की रचनाओं में इस घटना के बारे में बहुत कुछ बताया गया है, जिसने ब्रैनवेल की आशाओं को चकनाचूर कर दिया था, और जिस पर टिप्पणी और सुधार दोनों की आवश्यकता है। हम पहले ही देख चुके हैं कि लुडेनडेन फुट से बर्खास्तगी के बाद ब्रैनवेल मानसिक और शारीरिक रूप से कितने दयनीय स्थिति में पहुँच गए थे; लेकिन उनकी स्थिति, उनकी पिछली नौकरी से निकाले जाने पर हुई घोर निराशा की तुलना में, बिल्कुल स्वस्थ थी - एक ऐसी स्थिति जिसका सटीक वर्णन करना असंभव है। वास्तव में, वे बेहद खुश थे। उनके लिए समृद्धि का सूर्य निर्मल वैभव के साथ चमक रहा था, और आशा की नदियाँ पृथ्वी के किसी भी संगीत से कहीं अधिक समृद्ध और गहरी लय के साथ बह रही थीं। उनकी कल्पनाओं के स्वर्ग में खिले गुलाब, सुरिस्तान के प्रसिद्ध गुलाबों से कहीं अधिक चमकीले और उनके विचार में कहीं अधिक स्थायी थे, और उनकी आशाओं से भरे हरे-भरे मैदान बीते वर्षों में उनके लिए कल्पना से परे उपजाऊ और सुगंधित थे। लेकिन अचानक, उनकी काव्यमय और कल्पनाशील आत्मा द्वारा रचित स्वर्ग, बिना किसी पूर्व सूचना के, अनिद्रा और कष्ट भरे दिनों के क्षेत्र में बदल गया - 'ग्यारह लगातार अनिद्रा भरी भयानक रातें' जिनका वे बाद में वर्णन करते हैं - जहाँ उनका मन व्याकुल और असमंजस में पड़कर तीव्र और अनियंत्रित पीड़ा से कांप रहा था।

ब्रैनवेल के भविष्य में आए इस अप्रत्याशित बदलाव से ब्रोंटे परिवार की पीड़ा का पूर्ण रूप से अंदाजा लगाना मुश्किल है। उनकी परिस्थितियाँ इतनी दयनीय थीं कि वे किसी और बात के बारे में सोच ही नहीं पा रहे थे; और अपने दुख में डूबे होने के कारण भविष्य के बारे में सोचने की भी हिम्मत नहीं थी। इसी दुख के प्रत्यक्ष प्रभाव में ऐनी ब्रोंटे ने अपनी मार्मिक कविता 'डोमेस्टिक पीस' लिखी, जिसमें उन्होंने परिवार की बदली हुई परिस्थितियों पर शोक व्यक्त किया है। शार्लोट अपनी सहेली से मिलकर घर लौटी थीं और उन्होंने अपने भाई को उसी हालत में पाया जिसका मैंने वर्णन किया है। 31 जुलाई, 1845 की तारीख में उन्होंने इसका वर्णन इस प्रकार किया है: 'जब मैं घर पहुँची तो रात के दस बज रहे थे। मैंने ब्रैनवेल को बीमार पाया। वह अक्सर अपनी ही गलती के कारण बीमार पड़ जाते हैं। इसलिए पहले तो मुझे झटका नहीं लगा। लेकिन जब ऐनी ने मुझे उनकी वर्तमान बीमारी का तात्कालिक कारण बताया तो मुझे

बहुत गहरा सदमा लगा। उन्हें पिछले गुरुवार को श्रीमान — — से एक पत्र मिला था, जिसमें उन्हें सख्ती से बर्खास्त कर दिया गया था...।' तब से हमें उसके साथ बहुत कष्ट झेलना पड़ा है। वह अपने व्याकुल मन को सुन्न करने या डुबोने के अलावा कुछ नहीं सोचता था। घर में किसी को भी चैन नहीं मिला, और अंततः हमें उसे एक सप्ताह के लिए घर से बाहर भेजना पड़ा, साथ में किसी को उसकी देखभाल के लिए भेजना पड़ा। उसने आज सुबह मुझे पत्र लिखा है, और अपनी इस मूर्खतापूर्ण हरकत के लिए पश्चाताप व्यक्त किया है। उसने लौटने पर सुधार का वादा किया है, लेकिन जब तक वह घर पर रहेगा, मुझे घर में शांति की उम्मीद नहीं है। मुझे डर है कि हम सभी को दुख और अशांति के दौर के लिए तैयार रहना होगा। मैं अब मिस — — या किसी और से भी मदद नहीं मांग सकती।

ब्रैनवेल को अपने ऊपर आई बदनामी से इतना गहरा दुख हुआ था कि श्री ब्रोंटे को इसके परिणामों की आशंका हुई और उन्होंने अपने बेटे को कुछ समय के लिए ऐसी जगहों पर भेजने का फैसला किया, जहाँ से उसका ध्यान इस विषय से हट सके। ब्रैनवेल द्वारा अपनी बहन को लिखे पत्र से यह स्पष्ट है कि यह प्रयास कुछ हद तक सफल रहा, जिसमें उनकी स्वाभाविक भावनाएँ और पश्चाताप झलकते हैं। ब्रैनवेल को लिवरपूल की अपनी पिछली यात्रा याद थी, इसलिए उन्होंने इस बार उसी स्थान को चुना और वहाँ से वेल्स के तट की ओर रवाना हुए। यात्रा के दौरान उनके मन में उठे दुख को उन्होंने बाद में कविता के माध्यम से व्यक्त किया।

अध्याय IV.

‘ब्रैनवेल का पतन,’ जैसा कि उनकी बहनों की जीवनियों में वर्णित है।

अपनी निराशा के बाद ब्रैनवेल — लेडी बायरन की मनस्थिति में उनकी स्थिति की समानता — श्रीमती गैस्केल की गलत धारणाएँ — मामले की वास्तविक स्थिति — शार्लोट ने अपनी कविता 'प्रेफरेंस' में इसका चित्रण किया है — उन्होंने 'द प्रोफेसर' में ब्रैनवेल की स्थिति का संकेत दिया है — श्रीमती गैस्केल को अपने कार्य के बाद के संस्करणों में अपना विवरण छोड़ना पड़ा — उस समय ब्रैनवेल की दुर्बलता और खराब स्वास्थ्य।

पहले आघात से उबरने के बाद, जब उसकी तीव्रता कम होकर पीड़ा और दर्द के कमज़ोर रूप में बदल गई, तो ब्रैनवेल में एक अजीब सी शांति छा गई, जो उसके मित्रों के लिए पहले के तूफ़ानी उथल-पुथल से कहीं अधिक कष्टदायक और भयावह थी। इस बात के प्रमाण हैं कि उस समय उसके परिवार ने उसकी मानसिक स्थिति को गलत समझा था, और उसके प्रति उनकी चिंता ने ही उन्हें - विशेषकर शार्लोट को - उसके कार्यों को, चाहे वे कितने भी गैर-जिम्मेदाराना क्यों न हों, गंभीर अपराध और आदतन पाप मानने पर मजबूर कर दिया था। वास्तव में, कुछ लोगों का कहना है कि शार्लोट ने उसके बाद दो वर्षों तक उससे बात नहीं की।

उनकी बहन की निंदाएँ शायद उतनी ही नासमझी भरी थीं जितनी कि वे भावुक, अनियंत्रित और बाहरी तौर पर संवेदनहीन थीं; फिर भी वे क्षणिक क्रोध में कही गई निंदाएँ थीं, अपने भाई के प्रति उनके गहरे स्नेह और उनकी दुखी, निराशाजनक और पागलपन भरी भावनाओं के लिए सच्चे दुख की अभिव्यक्ति थीं। लेकिन ब्रैनवेल के मित्रों और परिचितों ने स्पष्ट रूप से देखा कि केवल एक ही विषय पर उनका मन विचलित हो गया था; और वह था उनकी प्रेमिका के प्रति उनके अटूट प्रेम की धारणा। उन्होंने यह भी देखा कि एक विशेष भ्रम में उनके मन की सामान्य शक्तियों के इस विकृत होने के बावजूद, अन्य सभी विषयों पर उनकी तर्क क्षमता सही और सुसंगत रूप से प्रभावित नहीं हुई थी। वे जानते थे, भले ही ब्रोंटे परिवार न जानता हो, कि ब्रैनवेल का मन, स्वभाव से ही रुग्ण और अवसादग्रस्त था, उनकी आशाओं के अचानक और अप्रत्याशित रूप से टूटने से पूरी तरह से विचलित हो गया था; और उनका हृदय और बुद्धि इतनी बुरी तरह से आहत और घायल हो चुके थे कि उस गहरे दुःख के कारण उन्होंने अनेक कार्य और बातें कीं, जिनमें वे अनुत्तरदायी थे। यह बात शीघ्र ही स्पष्ट हो जाएगी।

लेकिन बहनें ब्रैनवेल के मन की वास्तविक स्थिति से लंबे समय तक अनजान नहीं

रहीं। उन्हें पता चल गया कि वह अपने दुख के विषय के प्रति जुनूनी थे, और इस बात ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। वास्तव में, उन्होंने अपने कई उपन्यासों में इस स्थिति का वर्णन किया है और इससे उत्पन्न पीड़ा और मानसिक विक्षोभ पर शोक व्यक्त किया है। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, लूसी स्नो इससे बुरी तरह पीड़ित है। लेकिन, 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल' में, एक पात्र गिल्बर्ट मार्खम पर - जिसकी परिस्थितियाँ एक विवाहित महिला के प्रति ब्रैनवेल के प्रेम से बिल्कुल मिलती-जुलती हैं - इसी मामले में जुनूनी होने का आरोप लगाता है; और, 'वुथरिंग हाइट्स' में, हीथक्लिफ की मृत्यु से पहले की घटनाओं का वर्णन करते हुए, नेली डीन आरोप लगाती है कि वह एडगर लिंटन की पत्नी के प्रति अपने प्रेम में जुनूनी है। हालाँकि, ब्रैनवेल की बहनों ने उनके आचरण के प्रति वह दुखद दृष्टिकोण कभी नहीं अपनाया, जिसने श्रीमती गैस्केल को प्रभावित किया था।

कुछ समय तक ब्रैनवेल केवल उसी महिला के बारे में बात करता रहा जिससे वह प्रेम करता था, और उसने उसके बारे में ऐसी बातें कहीं जिनका कोई आधार नहीं था, सिवाय उसकी अपनी कल्पनाओं के। उसने कहा कि वह महिला उससे बेइंतहा प्यार करती थी। उसके बिछड़ने से वह असहनीय पीड़ा में थी। उसका पति, क्रूर, निर्दयी और भावनाहीन, उसे अपने घोर क्रोध और हर सुख-सुविधा से वंचित करने की धमकी देता था। ब्रैनवेल ने अपने मित्र डब्ल्यू को पत्र लिखकर बताया कि इस उत्पीड़न के कारण पीड़ित महिला ने 'खुद को उसकी शरण में सौंप दिया था!' और इसी तरह की कई अन्य निराधार, अतिरंजित और असंभव कहानियाँ भी फैलाई गईं। संक्षेप में, वह अपने मित्रों के बीच घूमता रहा, हर किसी को पूरी गोपनीयता से अपने दुखों के बारे में बताता रहा, और अपनी प्रेमिका के कष्टों का भयावह वर्णन करता रहा। यदि इस एक बिंदु पर ब्रैनवेल की मानसिक स्थिति के अन्य सभी प्रमाण अपर्याप्त हों, तो यह पर्याप्त होगा कि उन्होंने उस महिला के बारे में, जिसकी रक्षा करने का उन्होंने दायित्व लिया था, ऐसी बातें सार्वजनिक रूप से प्रचारित कीं जिनसे निश्चित रूप से उसकी बदनामी होनी थी; और वास्तव में, अविवेकी व्यक्तियों के हाथों में, इसने उनके जीवन के सबसे बड़े सार्वजनिक कलंक को जन्म दिया, और अंततः उनका और उस महिला का नाम, जिसे उन्होंने एक ही सांस में प्यार किया और बदनाम किया, लोगों के बीच कलंकित कर दिया।

उस समय ब्रैनवेल की मानसिक स्थिति और उसके बाद घटी घटनाओं के संदर्भ में,

लेडी बायरन के मामले में उनके पति से विमुख होने के बाद की स्थिति से बिल्कुल समानता पाई जा सकती है। अपने मित्रों के साथ एकांत में रह रही इस दुखी महिला ने कवि की मृत्यु के बाद पाँच वर्षों से अधिक समय तक उनकी बहन, माननीय श्रीमती ली के साथ अत्यंत मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे। लेकिन उस अवधि के अंत में, दुर्भाग्य और विशेष बुराइयों के चिंतन से कमजोर होकर, उनका मानसिक संतुलन एक बिंदु पर बिगड़ गया; और उन्होंने पूर्ण विश्वास के साथ अपने मृत पति और उनकी बहन पर अत्यंत भयावह आरोप लगाए। कुछ लोगों ने इन आरोपों पर कुछ समय के लिए विश्वास भी किया; लेकिन थोड़ा सा विचार करने पर ही पता चलता है कि लेडी बायरन का मानसिक संतुलन बिगड़ गया था, क्योंकि उनके जीवन के सभी कार्यों ने उनके द्वारा दिए गए कथनों को गलत साबित कर दिया। यह संभव ही नहीं था कि वह अपनी भाभी के साथ स्नेहपूर्ण संबंध बनाए रख पाती, यदि उसे पता होता—जैसा कि उसने अपने सनक में दावा किया था—कि उसकी भाभी की काल्पनिक बदनामी कितनी गहरी थी। लेकिन यह नहीं माना जा सकता कि वह अभागी महिला स्पष्ट रूप से पागल थी; इसके विपरीत, जैसा कि सभी ने कहा, वह स्पष्ट और सटीक अवलोकन, सुस्पष्ट और तार्किक विचार पद्धति और सामान्य से कहीं अधिक शांत और स्वाभाविक भाव-भंगिमाओं से संपन्न थी।

ब्रैनवेल ब्रोंटे के साथ भी ठीक ऐसा ही हुआ था; क्योंकि जब उनके शोक की तीव्रता समाप्त हो गई, हालांकि वे आम तौर पर शांत रहते थे और उनके विचार हमेशा स्पष्ट और तार्किक होते थे, फिर भी उन पर अजीब धारणाएं और तथ्यों की गलत व्याख्याएं हावी होने लगीं, और उन्होंने पूरे विश्वास के साथ अपनी प्रियतम प्रेमिका से संबंधित ऐसी घटनाओं का वर्णन किया, जिनसे उन्हें शर्मिंदगी उठानी पड़ी - जिसे, यदि वे स्वस्थ दिमाग के होते, तो न केवल वे जानते कि वे झूठी हैं, बल्कि यदि वे सच होतीं, तो वे उन्हें गुप्त रूप से अपने साथ कब्र में ले जाते।

ठीक उसी प्रकार, जैसे लेडी बायरन ने अपनी पीड़ाओं की कहानी अत्यंत विश्वास के साथ कई लोगों को सुनाई थी, वैसे ही ब्रैनवेल ब्रोंटे ने भी कई मित्रों को अपने विश्वासपात्र बनाकर अपनी विपत्तियों का सार बताया था। और, जिस प्रकार लेडी बायरन द्वारा प्रचारित कहानी नेक, ईमानदार और नेक इरादों वाली श्रीमती बीचर स्टोव को बताई, जिन्होंने स्वयं को उत्पीड़ित सद्गुणों की रक्षक मानते हुए, सितंबर 1869 के 'मैकमिलन' में प्राप्त साहित्यिक उपहार को प्रकाशित करने में जल्दबाजी की; उसी

प्रकार श्रीमती गैस्केल ने भी, उसी प्रकार के साजो-सामान से सजी-धजी, विवेक पर अत्यधिक क्रोध के साथ, हॉवर्थ के व्यस्त चापलूसों से एकत्रित घोटाले को दुनिया के सामने प्रकाशित कर दिया, जिससे पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे की सुंदर प्रतिष्ठा और उस महिला की छवि पूरी तरह से धूमिल हो गई, जिस पर उनका असीम प्रेम टिका हुआ था। लॉर्ड बायरन के बारे में उनकी पत्नी के भ्रम के कारण फैलाया गया घोटाला बहुत जल्द ही खारिज हो गया; लेकिन ब्रैनवेल से संबंधित मामला, हालांकि उनकी मृत्यु को सैंतीस वर्ष बीत चुके हैं, फिर भी पुनः प्रकाशित किया गया है और अब भी उस पर विश्वास किया जाता है - उनकी बहनों के सभी जीवनीकारों ने सर्वसम्मति से उनके नाम को कलंक और तिरस्कार के हवाले कर दिया है।

ब्रैनवेल द्वारा रचित कहानियों के प्रसार में कोई कमी नहीं आई, बल्कि उनकी लोकप्रियता में अत्यधिक वृद्धि हुई; और वर्षों बीतने के साथ ही निराश प्रेम की ये कहानियाँ ऐसे घोटालों में बदल गईं जिनका विस्तार से वर्णन करना अनुपयुक्त था, तभी जानकारी की उत्सुकता में श्रीमती गैस्केल हॉवर्थ गईं और अपने काम के लिए उन लोगों से सामग्री एकत्र की, जिन्होंने ब्रैनवेल के मूल कथनों में अपने स्वयं के अलंकरण जोड़ दिए।

श्रीमती गैस्केल ने इन परिस्थितियों का वर्णन करते समय सही दिशा से कितना विचलन किया, यह दिखाने के लिए, पाठक के समक्ष उनके द्वारा इस विषय में कही गई अधिकांश बातों को प्रस्तुत करना बेहतर होगा, ताकि पूरा मामला स्पष्ट हो सके; और, इस पुस्तक को बंद करने से पहले, वह संभवतः आश्वस्त हो जाएगा कि कहानी के अपने संस्करण में वह पूरी तरह से गुमराह थीं।

श्रीमती गैस्केल लिखती हैं: 'सभी शर्मनाक बातें सामने आ गईं। ब्रैनवेल अपने पश्चाताप की पीड़ा, या कहें तो, अपने अपराधबोध से उपजे प्रेम की पीड़ा को शर्म के किसी भी भय से छिपाने की स्थिति में नहीं था। उसने अपनी भावनाओं को पूरी तरह से प्रकट होने दिया; उसने उन प्रेममयी बहनों को असहनीय रूप से आघात पहुँचाया और दुखी किया; अंधा पिता स्तब्ध बैठा रहा, उस दुराचारी स्त्री को कोसने के लिए बेताब था जिसने उसके इकलौते बेटे को इस घातक अपराध के गहरे कलंक में धकेल दिया था।'

'उसके मिजाज और स्वभाव में आए सभी उतार-चढ़ाव—कई महीनों की बेपरवाह खुशी और उदासी—अब स्पष्ट हो गए थे। उसकी असंयम की वजह महज़ भूख मिटाने

से कहीं अधिक गहरी थी; उसने पश्चाताप को भुलाने के लिए एक आदतन शराबी के रूप में अपना जीवन शुरू किया था।'

उसके लिए सबसे दयनीय बात यह थी कि जिस स्त्री ने उसे इतना मोहित कर लिया था, उसके प्रति उसके मन में अब भी प्रेम की तीव्र लालसा थी। यह सच है कि उसने भी उससे उतना ही प्रेम किया; हम देखेंगे कि उसका प्रेम कितना सच्चा साबित हुआ। कुछ महीनों बाद जब वह उससे गुप्त रूप से हैरोगेट में मुलाकात करने गया, तो उसके मन में एक अजीब सी अंतरात्मा की कशमकश हुई, जब उसने उसके द्वारा प्रस्तावित भागकर शादी करने से इनकार कर दिया; इस भ्रष्ट, कमजोर युवक में अपने दुख भरे अंतिम दिनों तक कुछ अच्छाई शेष थी। यह मामला सामान्य लक्षणों के विपरीत है: पुरुष पीड़ित बन गया; उसका जीवन पीड़ा और अपराधबोध से ग्रस्त होकर नष्ट हो गया; उसके परिवार को घोर शर्मिंदगी झेलनी पड़ी। वह स्त्री—उसके पिता के पवित्र नाम के बारे में सोचें—जिसकी रगों में सम्मानित परिवारों का रक्त प्रवाहित होता है—उसका बचपन का घर, जिसकी छत के नीचे वे लोग रहते थे जिनके नाम उनके अच्छे कर्मों के लिए संत समान माने जाते हैं—वह आज भी प्रतिष्ठित समाज में इतराती फिरती है; अपनी उम्र के हिसाब से दिखावटी महिला; अपनी कथित दौलत के सहारे चलती थी। मैंने उसका नाम काउंटी के अखबारों में देखा है, क्रिसमस पार्टियों में जाने वालों में से एक के रूप में; और मैंने लंदन के ड्राइंग रूमों में उसके बारे में सुना है। अब आइए, न केवल उसके दोषी साथी के कष्टों के बारे में पढ़ें, बल्कि उन निर्दोष पीड़ितों को हुए कष्टों के बारे में भी पढ़ें, जिनकी असमय मृत्यु के लिए आंशिक रूप से उसे जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

श्रीमती गैस्केल आगे लिखती हैं: 'कुछ महीनों बाद, जिस महिला के साथ उसका प्रेम संबंध था, उसके बीमार पति की मृत्यु हो गई। ब्रैनवेल इस घटना का दयनीय आशा के साथ इंतज़ार कर रहा था। पति की मृत्यु के बाद, उसकी प्रेमिका मुक्त हो जाएगी; यह अजीब लग सकता है, लेकिन वह युवक अब भी उससे बहुत प्यार करता था, और अब उसने कल्पना की कि वह समय आ गया है जब वे शादी करने और बिना किसी आरोप या दोष के साथ रहने की उम्मीद कर सकते हैं। उसने उसके साथ भाग जाने का प्रस्ताव रखा था; वह उसे लगातार पत्र लिखती थी; वह उसे पैसे भेजती थी - एक बार में बीस पाउंड; उसे उसके द्वारा किए गए आपराधिक कृत्य याद थे; उसने उसके लिए शर्म और अपने बच्चों द्वारा किए गए खुलासे की धमकी का सामना किया

था; उसने सोचा कि वह उससे प्यार करती होगी; उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि एक भ्रष्ट महिला कितनी बुरी हो सकती है।'

चूंकि श्रीमती गैस्केल को ब्रैनवेल की मानसिक स्थिति के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, इसलिए उन्हें सुनी हुई बातों की पूर्ण सत्यता पर संदेह करने का कोई कारण नहीं सूझा; और अत्यधिक आत्मविश्वास के साथ, और न्यायसंगत आक्रोश की पर्याप्त अभिव्यक्ति के साथ, उन्होंने इस घटना को इस चौंकाने वाले तरीके से निपटाया।

इन आरोपों के समर्थन में, श्रीमती गैस्केल महिला के पति की वसीयत का हवाला देती हैं, जिसके अनुसार, उनके पति ने अपनी पत्नी को जो भी संपत्ति दी थी, वह इस शर्त पर दी थी कि वह ब्रैनवेल से फिर कभी न मिलें; और वह आगे कहती हैं कि पति की मृत्यु के बाद, महिला ने अपने कोचमैन को हॉवर्थ भेजा; क्योंकि जिस समय वसीयत पढ़ी जा रही थी, उन्हें यह आशंका थी कि ब्रैनवेल उनके पास आ रहे होंगे। श्रीमती गैस्केल आगे कहती हैं कि कोचमैन से मुलाकात के बाद, ब्रैनवेल इस बात से पूरी तरह टूट गए थे कि वह उस महिला को फिर कभी नहीं देख पाएंगे, जिससे उन्होंने शादी करने की उम्मीद की थी।

शार्लोट की जीवनीकार ने हॉवर्थ की अफवाहों से मिली जानकारी के आधार पर इस मामले और इसके कथित परिणामों के बारे में जल्दबाजी में, बिना सोचे-समझे, गलत और भली-भांति राय बना ली। लेकिन उन्हें ब्रैनवेल और उनकी बहनों के कार्यों में कई ऐसी परिस्थितियाँ मिलीं जो उनके विचारों की पुष्टि नहीं करती थीं, और वास्तव में वे उन बातों से बिल्कुल विपरीत थीं जिनकी स्वाभाविक रूप से अपेक्षा की जाती यदि ब्रैनवेल का दुराचार वास्तव में उतना गंभीर होता जितना कि वह बताती हैं। अपनी बात को पूरी तरह से स्पष्ट करने के लिए, जैसा कि हम देख चुके हैं, श्रीमती गैस्केल ने अठारह महीने पहले ब्रुसेल्स में शार्लोट के प्रवास के बारे में बात करते हुए घर से मिली उन सूचनाओं का उल्लेख किया था जिनसे ब्रैनवेल के बारे में शार्लोट अत्यधिक भयभीत हो गई थीं। फिर भी, जनवरी 1844 में, ब्रुसेल्स से लौटने के कुछ ही समय बाद, शार्लोट ने अपनी सहेली 'ई' से कहा कि ऐनी और ब्रैनवेल 'दोनों अपनी-अपनी स्थिति में बेहद सम्मानित थे।' और फिर, 1845 के बारे में लिखते हुए, श्रीमती गैस्केल कहती हैं: 'वह इस परिपक्व और दुष्ट महिला के बहकावे में इस कदर आ गए थे कि वे अनिच्छा से अपनी छुट्टियों के लिए घर गए, वहाँ यथासंभव कम समय तक रहे, अपने असाधारण व्यवहार से उन सभी को उलझन और व्यथित करते रहे - कभी

अत्यंत प्रसन्न, कभी घोर अवसाद में - खुद पर घोर अपराध और विश्वासघात का आरोप लगाते रहे, बिना यह बताए कि वे क्या थे; और कुल मिलाकर पागलपन की हद तक चिड़चिड़ापन प्रदर्शित करते रहे।' शार्लोट और उसकी बहन उसके रहस्यमय व्यवहार से बहुत परेशान थीं... उनके मन में एक अस्पष्ट भय घर कर रहा था कि कहीं वह उनकी गहरी बदनामी का कारण न बन जाए। यह भी ध्यान देने योग्य है कि जब संशोधित संस्करण में इस अंश का आरंभिक भाग हटा दिया गया, तो श्रीमती गैस्केल ने - जहाँ उन्होंने बहनों के मन में 'अस्पष्ट भय' का उल्लेख किया है - ये शब्द जोड़े: 'यह भय आंशिक रूप से उसके अपने आचरण के कारण और आंशिक रूप से ऐनी के घर भेजे गए पत्रों में व्यक्त किए गए गहरे संदेह के कारण था।' लेकिन हम शार्लोट के अपनी सहेली को लिखे पत्र से जानते हैं कि जब वह घर लौटी और ब्रैनवेल को बीमार पाया, जैसा कि वह कहती है कि वह अक्सर बीमार रहता था, तो वह पहले तो हैरान नहीं हुई, लेकिन जब ऐनी ने उसे उसकी वर्तमान बीमारी का तात्कालिक कारण बताया, तो वह बहुत अधिक स्तब्ध रह गई, जिससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि ब्रैनवेल की बर्खास्तगी और उसका कारण उसके लिए पूरी तरह से आश्चर्यजनक था जब उसने इसके बारे में सुना। तो फिर, ऐनी के घर भेजे गए पत्रों में 'गहरे संदेह' की अभिव्यक्ति कैसे हो सकती थी?

श्रीमती गैस्केल ने शार्लोट के पत्र के उस हिस्से का सारांश करना आवश्यक समझा जिसमें आश्चर्य की ये अभिव्यक्तियाँ थीं, और उनके संस्करण में, आश्चर्यजनक रूप से, स्पष्ट असंगति गायब हो गई है। श्रीमती गैस्केल के काम में अगले भाग को भी विकृत कर दिया गया है, जिसमें ब्रैनवेल की 'पागलपन भरी मूर्खता' के शार्लोट के संकेत और 'वह लौटने पर सुधार का वादा करता है' वाक्य को पूरी तरह से छोड़ दिया गया है। श्री वेमिस रीड ने इस पत्र को प्रकाशित करते हुए इस बात की ओर इशारा किया है और कहा है कि 'श्रीमती गैस्केल ने शार्लोट के पत्र के उस हिस्से को संक्षेप में लिखा है जिसमें आश्चर्य की अभिव्यक्तियाँ थीं। गैस्केल युवा ब्रोंटे द्वारा किए गए उन घोर पापों को मूर्खता कहकर संबोधित करने की हिम्मत नहीं कर सकीं, और न ही उन्हें यह विश्वास हो सका कि जो व्यक्ति दुराचार में इतना डूब चुका हो, उसमें सुधार की कोई संभावना हो सकती है। और, यदि हम श्रीमती गैस्केल के शार्लेट की 'वास्तविक' भावनाओं के दृष्टिकोण को अनदेखा करते हुए, मामले की वास्तविक स्थिति को ध्यान में रखते हुए पत्र को पढ़ें, तो हम तुरंत समझ जाएंगे कि ब्रैनवेल दुराचार में इतना नहीं

डूबा था, इसलिए उसकी बहन द्वारा उसके आचरण के लिए प्रयुक्त शब्द 'पागलपन भरी मूर्खता' ही उसका सटीक वर्णन था।

ब्रैनवेल के आचरण के बारे में सीधी-सी बात यह है कि उन्हें संगति का बहुत शौक था और इसके परिणाम भुगतने ही पड़े। निस्संदेह, ऐनी ने कभी-कभी अपने भाई पर ऐसे प्रभाव देखे होंगे जिन्हें वह पूरी तरह से नकारना चाहती थीं। इसके अलावा, जैसा कि हम देख चुके हैं, वह बेतहाशा प्रेम में डूबे हुए थे। पहले तो अनिच्छा से, और उनके बारे में जो हम जानते हैं, उससे लगता है कि शायद उन्होंने अपनी पिछली छुट्टियों में खुद को 'सबसे बड़े अपराध' का दोषी ठहराया होगा। लेकिन यह मानने का कारण है कि इस घटना के बारे में, और ब्रैनवेल ब्रोंटे से जुड़ी अन्य घटनाओं के बारे में भी, हमें प्रारंभिक गलती के दृष्टिकोण से जो कुछ हुआ होगा, उसका काफी कुछ बताया गया है।

श्रीमती गैस्केल द्वारा श्रीमती ब्रोंटे पर लगाए गए मुख्य आरोपों के बारे में मैं ब्रैनवेल की आशाओं की अंतिम विफलता के परिणामों पर विचार करते समय बात करूँगा; लेकिन यहाँ यह स्पष्ट है कि श्रीमती ब्रोंटे ने ब्रैनवेल को कभी पत्र नहीं लिखे। उन्होंने जानबूझकर ऐसा कुछ भी नहीं किया जिससे ब्रैनवेल के इस विचित्र जुनून में उनकी संलिप्तता साबित हो सके, और जहाँ तक पति की वसीयत का संबंध है, जो लगभग वर्ष के अंत में लिखी गई थी, तो ब्रैनवेल ब्रोंटे का अस्तित्व ही न रहा हो, ऐसा प्रतीत होता है। श्रीमती गैस्केल ने वह दस्तावेज़ देखा ही नहीं होगा।

अगर ब्रैनवेल के आचरण और उस महिला के बारे में शार्लोट ब्रोंटे के विचारों का कोई और सबूत चाहिए, जिसके चरित्र पर इतना कलंक लगा है, तो उनकी कविता 'प्रेफरेंस' ही काफी है। इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि शार्लोट खुद श्रीमती — — के बारे में उस समय प्रचलित कहानियों पर विश्वास नहीं करती थीं, और उन्होंने अपनी इस रचना में वास्तविक परिस्थितियों का अपना संस्करण प्रस्तुत किया है। कविता में महिला को उस व्यक्ति की निंदा करते हुए दिखाया गया है जो उनसे प्रेम निवेदन कर रहा है, और जिसे वह एक सैनिक के रूप में संबोधित करती हैं, जिसके प्रति उनके मन में बहन जैसा स्नेह है, जबकि वह स्वयं उस व्यक्ति से अत्यंत प्रेम से जुड़ी हुई हैं जिसके बारे में वह बहुत स्नेह से बात करती हैं।

मैं तुम्हें तिरस्कारपूर्वक फटकार नहीं लगाता।

मैं तुम्हारे वचनों को अहंकार में नहीं तोड़ता।

लेकिन, यकीन मानो, मैं तुमसे प्यार नहीं कर सकता।

तुम राजकुमार होते और मैं गुलाम।

फिर वह उससे कहती है कि यह सोचना कि वह उससे गुप्त रूप से प्यार करती है, उसका भ्रम है, और उसके प्रति उसकी उदासीनता दिखावटी है। वह अपने व्यक्तिगत व्यवहार का हवाला देते हुए दृढ़ता से साबित करती है कि वह उससे प्यार नहीं करती।

'मेरे हाथ को छूकर देखो, हे स्वयं को धोखा देने वाले;
नहीं—शांत रहो, क्योंकि मैं ऐसा ही हूँ;
क्या जलन हो रही है? क्या मेरे होंठ कांप रहे हैं?
क्या मेरी आंखों में परेशानी की चमक है?
क्या तुम एक पल के रंग को नाम दे सकते हो?
मेरे माथे पर— मेरे गाल पर?
क्या तुम उनके शांत पीलेपन को रंग सकते हो?
क्या उसमें एक चापलूसी भरी, जोशीली प्रवृत्ति भी है?

उसके प्रति अपनी सद्भावना को बहन जैसा बताते हुए वह आगे कहती है:

क्रोध मत करो, रोष मत करो, क्रोध व्यर्थ है।
क्रोध मेरा मन नहीं बदल सकता;
लेकिन मुझे यह भावना जड़विहीन लगती है।
जो जुनून की हवा में इस प्रकार घूमता है।
क्या मैं प्यार कर सकता हूँ? ओह, गहराई से—वास्तविक रूप से—
स्नेहपूर्वक—प्यार से—लेकिन तुम्हें नहीं;
और मेरे प्रेम का उचित उत्तर मिल गया है।
उतनी ही ऊर्जा के साथ।'

फिर वह उससे कहती है कि यदि वह अपने प्रतिद्वंद्वी को देखना चाहता है, तो पर्दा हटा दे, तब वह उसे पेड़ों की छाया में, किताबों से घिरे हुए, अपनी 'लगातार कलम' चलाते हुए देखेगा। यहाँ शार्लोट 'प्रतिद्वंद्वी' को उसके महल के परिसर में एक आले में, अपने घर के एकांत में अपने खाली समय का सदुपयोग करते हुए दिखाती है; और उस महिला से कहती है कि वह अपने पति को उस सैनिक से मिलवाए जो उससे बात कर रहा है। वह कहती है:

'वह वहाँ बैठा है — मनुष्यों में प्रथम!'

विवेकशील व्यक्ति—तर्कशील व्यक्ति;
कठोर, शायद, लेकिन हमेशा न्यायप्रिय;
झूठ, अन्याय और राजद्रोह का शत्रु।
सम्मान की ढाल और सद्गुण की जिम्मेदारी!
कार्यकर्ता, विचारक, दृढ़ रक्षक
स्वर्ग के सत्य का — मनुष्य की स्वतंत्रता;
लोहे की आत्मा — निंदा का प्रमाण,
वह चट्टान जहाँ संस्थापकों ने अत्याचार किया।

वह घोषणा करती है कि उसका विश्वास अटूट है, और इसलिए जिसे वह संबोधित कर रही है उसे मुकदमा करने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि जब तक ईश्वर पृथ्वी और स्वर्ग में शासन करता है, वह अपने हृदय के पुरुष के प्रति वफादार रहेगी, जिसके प्रति वह अविचल रूप से समर्पित है; और जो 'स्वर्ग के सत्य का रक्षक' है - उसका पति।

शायद ही कोई शार्लोट से बेहतर इस बात से परिचित हो कि उस समय गाँव में इस शख्स के बारे में कितनी झूठी और घिनौनी अफवाहें फैली हुई थीं; और यह अच्छी बात है कि उन्होंने अपनी कविता 'प्रेफरेंस' में उन घटनाओं के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है, जिनके कारण उस समय इतनी हानिकारक अफवाहें फैली थीं। फिर भी, शार्लोट इस कविता में उस महिला के चरित्र को साफ करने की कितनी भी इच्छुक क्यों न हों, जिन पर इतनी बेरहमी से कलंक लगाया गया था, ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने भाई पर कोई दया नहीं दिखाई, जो इस पूरे घटनाक्रम का मुख्य पात्र था। 'द प्रोफेसर' में विलियम क्रिम्सवर्थ के मुख से इस दुखद घटना के संदर्भ में उनके भाई का जो चित्रण किया गया है, वह इस प्रकार है:

‘यद्यपि जीवन का मेरा अनुभव सीमित था, फिर भी एक बार मुझे अपने आस-पास ही एक रोचक और मनमोहक घरेलू विश्वासघात के परिणामों का उदाहरण देखने का अवसर मिला था। इस उदाहरण में कल्पना का कोई सुनहरा आवरण नहीं था; मैंने इसे नग्न और वास्तविक रूप में देखा; और यह अत्यंत घृणित था। मैंने एक ऐसे मन को देखा जो नीच छल-कपट और कपटपूर्ण धोखे की आदत से भ्रष्ट हो चुका था, और एक ऐसे शरीर को देखा जो दुर्गुणों से दूषित आत्मा के संक्रामक प्रभाव से दूषित हो चुका था। इस दृश्य को लंबे समय तक देखने के कारण मुझे बहुत कष्ट सहना पड़ा था; उन

कष्टों का मुझे अब कोई पछतावा नहीं था, क्योंकि उनकी याद मात्र ही प्रलोभन के लिए एक बहुत ही कारगर औषधि का काम करती थी।' उन्होंने मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास स्थापित कर दिया था कि गैरकानूनी सुख, जो दूसरों के अधिकारों का हनन करता है, भ्रामक और विषैला सुख है—इसका खोखलापन उस समय तो निराशा देता है, लेकिन इसका विष बाद में क्रूरतापूर्वक पीड़ा देता है, और इसके प्रभाव हमेशा के लिए भ्रष्ट कर देते हैं। संभवतः शार्लेट नहीं चाहती होंगी कि इस कथन को उनके भाई पर अक्षरशः लागू किया जाए; लेकिन, दुर्भाग्य से, इस और इसी तरह के अनपेक्षित कथनों ने बहनों के जीवन और साहित्य पर लिखने वाले लगभग सभी लेखकों को काफी हद तक पक्षपाती बना दिया है।

आगे की कानूनी कार्यवाही के खतरे के चलते, श्रीमती गैस्केल ने अपने मित्रों की सलाह पर 1860 का संस्करण प्रकाशित किया, जिसमें उल्लिखित आरोपों के साथ-साथ श्री ब्रोंटे के खिलाफ लगाए गए आरोपों को भी हटा दिया गया था। हालांकि, उन्होंने अपने पहले अनुमान के प्रभाव और कहानी की नैतिक शिक्षा को व्यर्थ नहीं जाने दिया। उन्होंने कुछ वाक्य जोड़े जिनका उद्देश्य पाठक को यह बताना था कि ब्रैनवेल के साथ भी कुछ ऐसा ही गलत हुआ था, उस जगह पर जहां उनकी बहन ऐनी गवर्नेस थीं। इसलिए, इन परिस्थितियों में, मैंने इस विषय पर विस्तार से चर्चा करना आवश्यक समझा है।

यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि पीड़ित महिला का आक्रोश असीम था, और वह केवल अपने मित्रों के आग्रह पर ही मुकदमे को आगे बढ़ाने से रुकी। मित्रों ने बताया कि श्रीमती गैस्केल अपने कथनों को प्रमाणित नहीं कर सकतीं, और चूंकि पुस्तक को उसके मूल रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता था और परिणामस्वरूप उसका प्रसार सीमित था, इसलिए मुकदमे के सार्वजनिक होने पर समाचार पत्रों में व्यापक प्रचार से बचने के लिए मामले को यहीं समाप्त कर देना बेहतर था; इसके अलावा, जो लोग उसे जानते थे, वे श्रीमती गैस्केल के निराधार आरोपों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते थे। इसका प्रभाव पड़ा और महिला ने चिढ़कर इस बात को स्वीकार कर लिया।

मिस रॉबिन्सन की 'एमिली ब्रोंटे' में, शार्लोट की जीवनीकार द्वारा छोड़े गए किस्सों को लगभग पूरी तरह से पुनः प्रस्तुत किया गया है; और इस लेखक ने श्रीमती गैस्केल के विचारों से मिलते-जुलते विचारों का समर्थन करते हुए, ब्रैनवेल के अपमान के

शार्लोट के विवरण वाले पत्र के उनके संस्करण को उद्धृत करना आवश्यक समझा है, और ऐनी के पत्रों की कथित विषयवस्तु को भी काफी हद तक विस्तृत किया है। इस विषय पर इतनी गहराई से चर्चा करने में काफी संकोच रहा है; लेकिन मिस रॉबिन्सन की पुस्तक के प्रकाशन के बाद सार्वजनिक प्रकाशनों में इस पर हुई चर्चा के बाद, ऐसा लगता है कि अब इन कहानियों के निराधार होने का पर्दाफाश करने का समय आ गया है। इसलिए पाठक देखेंगे कि मैंने इस विषय को पूरी रचना में ध्यान में रखा है।

ब्रैनवेल को अपनी पिछली नौकरी से निकाले जाने पर इतना गहरा सदमा लगा कि उन्हें ग्यारह रातों तक नींद नहीं आई। अपने दुख को भुलाने के लिए उन्होंने जो बेतहाशा कोशिश की, उससे उन्हें कंपकंपी के दौरे पड़ गए। संभवतः इन्हीं रातों में से एक रात, अचानक सोते समय, उन्होंने मोमबत्ती गिरा दी और बिस्तर में आग लग गई। जलने की गंध से ध्यान आकर्षित हुआ और बहनें जलती हुई सामग्री को बुझाने के लिए कमरे में दौड़ पड़ीं। यह घटना निस्संदेह गुमनाम ही रह जाती, अगर मिस रॉबिन्सन की खोजबीन न होती, जिनके कारण जनता को इस घटना का विवरण मिला, जो हमें 'जेन आयर' में मिस्टर रोचेस्टर के बचाव और एमिली द्वारा 'कीपर' को उस सबसे अच्छे बिस्तर से हटाने की घटना की याद दिलाता है, जिस पर वह आराम से सो रहे थे। यह भी याद किया जाएगा कि जिस रात मिस्टर लॉकवुड वुदरिंग हाइट्स में रुके थे, उस रात उनके साथ भी इसी तरह की दुर्घटना हुई थी, जब मोमबत्ती उन किताबों पर गिर गई थी जिन्हें वह पढ़ने की कोशिश कर रहे थे।

वेल्स से लौटने पर ब्रैनवेल ने अपने मित्र लेलैंड को पत्र लिखा, जिन्हें पेशेवर तौर पर हॉवर्थ जाना था, और उनसे पादरी के घर आने का आग्रह किया। इस प्रकार वे अपनी व्यथा में डूबे हुए लिखते हैं। उनकी आशाओं का सपना दुख की भयावह तस्वीर में बदल गया था, उनकी उलझन में उनके मन में यह ख्याल ही नहीं आया था कि वह महिला उनसे विवाह करने के लिए स्वतंत्र हो जाएगी; वे उसे फिर कभी नहीं देख पाएंगे, उन्हें भुला दिया जाएगा; उन्हें उससे संपर्क करना ही होगा।

हॉवर्थ, 4 अगस्त, 1845।

'प्रिय महोदय,

मुझे यह कहने की शायद ही आवश्यकता है कि आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी होगी, क्योंकि ईश्वर जानता है कि इस समय मेरे मन पर काफी बोझ है, और मैं आपके जैसे किसी व्यक्ति के साथ एक घंटा बिताना चाहूंगा, ताकि कम से कम अस्थायी रूप

से इसे हल्का कर सकूं।

'मैं कल लिवरपूल और उत्तरी वेल्स की एक सप्ताह की यात्रा से लौटा, लेकिन अपनी अनुपस्थिति के दौरान मैंने पाया कि मैं जहाँ भी गया, काले वस्त्र पहने एक महिला, जो खुद को "दुख" कहती थी, मेरे साथ-साथ चलती थी और मेरे हाथ पर इस तरह झुकती थी मानो वह मेरी कानूनी पत्नी हो।'

'अन्य पतियों की तरह, मैं भी उसकी उपस्थिति को नजरअंदाज कर सकता था।'

आपका अत्यंत सादर,

'पी. बी. ब्रोंटे।'

इस महीने लिखे गए शार्लोट ब्रोंटे के एक-दो पत्रों में उनके भाई का ज़िक्र मिलता है। वे बताती हैं कि उनकी सेहत ठीक नहीं है, हालांकि पिछले एक-दो दिनों से उनका स्वास्थ्य और स्वभाव कुछ बेहतर है, क्योंकि अब उन्हें 'शराब से परहेज़ करने के लिए मजबूर किया गया है'। और फिर 18 तारीख को, वे लिखती हैं, 'ब्रैनवेल को लेकर मेरी उम्मीदें बहुत कम हो गई हैं। मुझे कभी-कभी डर लगता है कि वह कभी भी ज़्यादा कुछ करने लायक नहीं रह पाएगा। हाल ही में उसके भविष्य और भावनाओं को जो ठेस पहुंची है, उसने उसे पूरी तरह से लापरवाह बना दिया है।'

19 तारीख को ब्रैनवेल ने लेलैंड को एक छोटा सा नोट भेजा, जिसमें उन्होंने कहा, 'जहां तक मेरे निजी मामलों की बात है, मैं बस यही कामना करता हूं कि उनके अंधकार में मुझे आशा की एक किरण दिखाई दे। आशा है आप ठीक और प्रसन्न होंगे।'

अध्याय V.

ब्रैनवेल का प्रस्तावित उपन्यास।

ब्रैनवेल के अतीत के जीवन अनुभवों की समीक्षा — वे साहित्यिक कार्य में राहत तलाशते हैं — वे तीन खंडों का उपन्यास लिखने का प्रस्ताव रखते हैं — इस विषय पर उनका पत्र — एक खंड पूर्ण — उपन्यास लिखने की उनकी क्षमता — श्री ग्रुंडी को उनकी निराशा पर लिखा गया उनका पत्र।

ब्रैनवेल अब अट्ठाईस वर्ष के हो चुके थे। इस कृति के आरंभिक भाग में पाठक ने उनके शुरुआती करियर की बौद्धिक क्षमता, उनकी प्रतिभा, बहुमुखी प्रतिभा और मानसिक शक्ति के प्रमाण देखे हैं, और उन रास्तों को भी देखा है जिनके माध्यम से उस असाधारण परिवार के शिखर स्तंभ माने जाने वाले ब्रैनवेल को धीरे-धीरे घोर दुख की ओर धकेल दिया गया था।

अपने अल्प जीवनकाल में ही, ब्रैनवेल ब्रोंटे ने महान महत्वाकांक्षा का स्वाद चख लिया था और प्रेम के प्रभाव में स्वयं को समर्पित कर दिया था, फिर भी उन्होंने निराशा और अपमान की पीड़ा सहन की थी, और अब वे घोर निराशा का सामना कर रहे थे। ऐसे प्रभाव, अपनी तूफानी साँसों से आत्मा को झकझोर देते हैं, और कल्पना पर अपना उदास प्रभाव डालते हैं; और जो इस प्रभाव को महसूस कर लेता है, वह जीवन की अद्भुत कहानी, अस्तित्व के संघर्ष और भावनाओं की परिपूर्णता से और भी गहराई से प्रभावित हो जाता है, और मानव स्वभाव के रहस्यों की कहीं अधिक गहरी समझ प्राप्त कर लेता है। इसी तरह, जब बायरन अपने जीवन के सबसे बड़े दुर्भाग्य से गुज़र चुके थे और इंग्लैंड को हमेशा के लिए त्याग चुके थे, तब उन्हें 'मैनफ्रेड' और 'केन' की उदास महिमा ने प्रेरित किया। भावनाओं का यह तूफान और तनाव, जब कल्पना एक उच्च चेतना प्राप्त करती है, सिगुर्ड और फाफनीर के बीच हुए संघर्ष के समान है, उस राक्षस का रक्त पीने के समान है, जिसने अजगर-हत्यारे को पक्षियों की रहस्यमयी भाषा सिखाई। पाठक देखेंगे कि कैसे इन प्रभावों ने ब्रैनवेल ब्रोंटे को प्रभावित किया और पक्षियों की आवाज़ें उनके लिए कितनी दुखदायी थीं; कैसे उनकी प्रेरणा दुख के स्वर से प्रेरित हुई और उनकी एकमात्र लालसा शांति थी। वास्तव में, उन दिनों कोई आशा नहीं थी।

हालांकि, ब्रैनवेल ब्रोंटे के जीवन में भी, जैसा कि उनकी परिस्थितियों में सभी मनुष्यों के साथ होता है, कभी-कभी निराशा के गहरे दुख से उबरने की एक तीव्र

इच्छा उत्पन्न होती थी। उनके मन में कुछ करने की, कुछ मानसिक उत्तेजना पाने की लालसा जागती थी, ताकि वे उस दुःख से अपना ध्यान हटा सकें जिसे वे कभी नहीं भूल सकते थे। और, उनके चिंतन के इस परिवर्तन के साथ, उनके भीतर एक और भावना विकसित हुई, जो उनके जैसे लोगों के कार्यों के प्रति उनकी टूटी हुई सहानुभूति से उत्पन्न हुई थी: उन्होंने मानवीय मामलों को एक दर्शक के रूप में देखना सीख लिया, न कि उनमें किसी व्यक्तिगत रुचि रखने वाले व्यक्ति के रूप में। इसी तरह उनके अनुभव ने उन्हें मनुष्यों के कार्यों के छिपे हुए कारणों को उजागर किया; और, उनकी स्वार्थपरता को पहचानते हुए, वे स्वयं एक प्रकार के संशयवादी बन गए।

ब्रैनवेल इसी मनोस्थिति में थे जब उन्होंने अपने मित्र लेलैंड से मिलने के तुरंत बाद, जो यॉर्क के कई सार्वजनिक संस्थानों के परोपकारी रहे दिवंगत डॉक्टर स्टीफन बेकविथ की समाधि और लेटी हुई प्रतिमा के निर्माण में व्यस्त थे, जिसे वहाँ के मिनस्टर में स्थापित किया जाना था, स्वयं को सक्रिय करने का संकल्प लिया। अपने मन को किसी ऐसे काम में मग्न करने की इच्छा से, जिससे वे अपने हृदय के तूफान, घायल अहंकार, आहत आत्मसम्मान और नष्ट हुई आशा के बवंडर को शांत कर सकें, जो चिंतन के क्षणों में उनके मन में उमड़ता था और उन्हें विक्षिप्तता या हताशा की ओर धकेल देता था, उन्होंने निराशा से उत्पन्न एक नई ऊर्जा के संकल्प के साथ साहित्यिक रचना की ओर रुख किया। उन्होंने स्वयं को यह संकल्प दिलाया कि वे एक काल्पनिक रूप में, और एक साधारण उपन्यास के रूप में, जो तीन खंडों में प्रकाशित होगा, मानव आत्मा में काम करने वाली विभिन्न भावनाओं को यथासंभव चित्रित करेंगे। इस कार्य में लगने वाले आवश्यक श्रम ने उनकी महत्वाकांक्षा को प्रोत्साहन दिया, जो कुछ समय के लिए कायम रही; और जाहिर तौर पर उन्हें उम्मीद थी कि वे साहित्य की व्यस्त दुनिया में अपना स्थान बना पाएंगे। उस समय उनकी बहनों के उपन्यास अस्तित्व में नहीं थे, और शायद उनके बारे में सोचा भी नहीं गया था। शार्लोट को अभी तक एमिली की लिखावट में लिखी कविता संग्रह नहीं मिली थी, और बहनों के साहित्यिक भविष्य का अभी उजाला होना बाकी था। फिर भी ब्रैनवेल, जिनके व्यवहार ने उन्हें काफी बेचैनी का कारण दिया था, और जिनके दुख उनके मन को कड़वा कर रहे थे, अब एक ऐसे लक्ष्य के लिए खुद को तैयार कर चुके थे, जिसे उन्होंने कभी हासिल करने की कोशिश नहीं की थी, और जिसके पूरा होने की ओर वे कुछ हद तक आत्मविश्वास से देख रहे थे। अपने मित्र लेलैंड को लिखे निम्नलिखित

पत्र में, वे अपनी योजना का खुलासा करते हैं; और संभवतः इसी में हमें इस विषय पर लगभग सभी प्रत्यक्ष जानकारी मिल जाती है:

हॉवर्थ, 10 सितंबर, 1845।

'मेरे प्रिय सर,

'मुझे निश्चित रूप से बहुत दुख हुआ कि मैं उस शुक्रवार को आपसे नहीं मिल पाया जिस दिन आपने अपनी यात्रा का ज़िक्र किया था, लेकिन आपके न आने का जो कारण आपने बताया वह पूरी तरह से जायज़ था। अगर मैं कमरे में दाखिल होता और देखता कि हफ़्तों या महीनों की मेहनत पल भर में बर्बाद हो गई है (ज़ाहिर तौर पर - मुझे उम्मीद है, ऐसा नहीं है)।'

मुझे उम्मीद है कि वह झुंझलाहट अब खत्म हो गई है; और मैं आपके दोबारा आने के वादे पर भरोसा कर रहा हूँ; क्योंकि मुझे किसी ऐसे व्यक्ति की संगति से ज्यादा खुशी किसी और चीज से नहीं मिलती जिसे मैं एक सच्चा इंसान मानता हूँ, और जिसने इतनी तकलीफ झेली हो कि वह दूसरे की तकलीफ को समझ सके।

'जो भी लाइनें मैंने तुम्हारे हाथों में दी हैं, उनकी चिंता मत करो, बस उन्हें लेकर यहाँ आ जाओ, और अगर वे रास्ते में तुम्हारी जेब से खो गई हों, तो मैं शिकायत नहीं करूँगा, बशर्ते तुम उस दुर्घटना के लिए माफी मांगने के लिए मौजूद रहो।'

'जबसे मैंने आपको हैलिफ़ैक्स में देखा है, तबसे मैंने अपनी बीमारी से बचाए हुए समय का सदुपयोग तीन खंडों वाले उपन्यास की रचना में किया है, जिसका एक खंड पूरा हो चुका है, और आगामी दो खंडों के साथ मिलकर, यह वास्तव में पिछले छह वर्षों के विचारों और जीवन के इस टेढ़े-मेढ़े रास्ते में हुए अनुभवों का परिणाम है।'

'मुझे लगा कि मुझे दिन-रात धीमी आंच पर भुनते हुए कुछ करने के लिए खुद को प्रेरित करना चाहिए, ताकि मैं अपनी पीड़ाओं को दूर कर सकूं; और मैं जानता था कि प्रकाशन और पठन जगत की वर्तमान स्थिति में, एक उपन्यास सबसे अधिक बिकने वाली वस्तु है, इसलिए - जहां एक ऐसे काम के लिए दस पाउंड की पेशकश की जाती है, जिसके निर्माण के लिए एक व्यक्ति की बुद्धि का चरम उपयोग आवश्यक होता है - वहीं तीन खंडों के लिए दो सौ पाउंड की पेशकश ठुकरा दी जाएगी, जिसकी रचना के लिए सिगार पीने और धुन गुनगुनाने की आवश्यकता होती है।'

मेरा उपन्यास वर्षों के चिंतन का परिणाम है; और यदि यह मनुष्य के अच्छे और बुरे भावों का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है, जो छल के आवरण में लिपटे हुए हैं, जो

पुरुष और स्त्री दोनों को जकड़ लेता है; यदि यह "हैमलेट" या "लियर" में मनुष्य के हृदय को उजागर करने वाले पन्नों की तरह ही जीवन के अनिश्चित पथ पर हमारे अंतर्विरोधाभासी भावों और संघर्षों को सटीक रूप से दर्ज करता है, तो मुझे उतनी ही संतुष्टि (और उतना ही आश्चर्य) होगा जितना कि मर्सी नदी को पार करने की शर्त लगाकर आयरिश सागर को पार करने पर होता। बर्केनहेड के बजाय डबलिन पर उतरना, काल्पनिक साहित्य के वर्तमान अंधकार से निकलकर स्मोलेट या फील्डिंग जैसे लेखकों द्वारा रचित दृढ़ता से स्थापित चट्टान पर छलांग लगाने से कहीं अधिक सुखद होगा।

मैं वह छलांग तब लगाने की उम्मीद करता हूँ जब मैं आपके महान थीसियस का प्रतिद्वंद्वी बन सकूँ, जो उसे देखने के बाद सोते समय मेरे सपनों में आता था। लेकिन, इस बीच, मैं अपने आप को लगभग जानलेवा चिंताओं से बाहर निकालने की पूरी कोशिश कर सकता हूँ, और यही अपने आप में एक पुरस्कार होगा।

मुझे बताइए कि मैं आपसे कब मिलने की उम्मीद कर सकता हूँ, और यकीन मानिए, प्रिय महोदय।

आपका,

'पी. बी. ब्रोंटे।'

कलम और स्याही से बना एक जीवंत रेखाचित्र इस पत्र का समापन करता है; इसमें उनकी स्वयं की एक प्रतिमा को गिरा हुआ दिखाया गया है, और उनकी प्रिय महिला दया भाव से उसकी ओर हाथ बढ़ाए हुए है, जबकि उसके नीचे यह वाक्य लिखा है: 'गिराया गया, गिरा दिया गया, लेकिन दूर नहीं फेंका गया!'

इस पत्र में हमें ब्रैनवेल की निराशा के बावजूद उनकी सुसंगति का एक उदाहरण मिलता है, जिसमें उनकी रचना शैली की सुंदरता और स्वतंत्रता विषय के विभिन्न भागों की सुसंगत और तार्किक व्यवस्था के साथ मिलती है; लेकिन वे अपने पत्र का समापन उस महिला के प्रत्यक्ष उल्लेख से किए बिना नहीं कर सकते, जिसके बारे में उनका मानना है - तमाम विपरीत प्रमाणों के बावजूद - कि वह उनसे अटूट प्रेम करती है। इसी आकर्षण के चलते वे अब भी उस समृद्धि और सुख की आशा रखते हैं जिसके बारे में उन्होंने पहले अपने मित्रों से बात की थी।

इसके अलावा, ब्रैनवेल के पत्र से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने दुख, पीड़ा और खराब स्वास्थ्य के बीच भी गंभीरता से एक उपन्यास लिखने का कार्य शुरू किया था

(हालांकि, मेरा मानना है कि उन्होंने अपने शिक्षक रहते हुए इसकी कुछ रूपरेखा तैयार कर ली थी), जिसका एक खंड उन्होंने पूरा कर लिया था। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उन्होंने इसे कोई बड़ा मानसिक प्रयास समझा हो, बल्कि एक पीड़ादायक अनुभव का स्वाभाविक परिणाम और वर्तमान दुख से राहत पाने का उचित उपाय माना। फिर भी, उनका उद्देश्य मानव स्वभाव का सजीव चित्रण प्रस्तुत करना था; और अपने अनुभव और शक्ति के ज्ञान के बल पर, उन्हें स्पष्ट रूप से आशा थी कि यह उस समय की उन रचनाओं से बेहतर होगी, जिनकी रचना की वे इतनी हल्की-फुल्की टिप्पणी करते हैं। वास्तव में, उनका अनुभव इतना व्यापक था कि उनकी जैसी तीव्र बोध क्षमता वाले व्यक्ति को अपने आसपास के लोगों के चरित्र, भावनाओं और उद्देश्यों को आसानी से समझने में सक्षम बनाता था। वेस्ट-राइडिंग के ग्रामीण लोगों के बारे में उनका ज्ञान बहुत व्यापक था; क्योंकि हॉवर्थ स्थित 'ब्लैक बुल' रेस्तरां में सभी के प्रशंसित अतिथि के रूप में बैठे हुए, वे वहाँ के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों से मिल चुके थे। बैठक कक्ष की आग के पास, लंबी सर्दियों की शामों में, उन्हें लोगों के स्वभाव को समझने के पर्याप्त अवसर मिले थे; वास्तव में, जॉन ब्राउन को लिखे उनके पत्र से पता चलता है कि उन्होंने उनमें से कुछ का किस प्रकार विश्लेषण किया था। वे केवल एक घंटे के आनंद के लिए उनकी संगति में नहीं आते थे: वे पादरी के घर में बिताए जीवन से परे एक अलग जीवन की झलक पाने के लिए तरसते थे। और यॉर्कशायर के किसान—जिनका वे फिर भी सम्मान करते थे—उन लोगों के लिए जो उनकी बोली जानते हैं, और उनके कामों में रुचि रखते हैं, जैसा कि ब्रैनवेल करते थे और कर सकते थे, गहरी समझ, तीक्ष्ण अवलोकन क्षमता और सहज हास्य का भंडार प्रकट करते हैं; और वे पूरे ग्रामीण क्षेत्र की कहानियाँ सुनाने में आनंद लेते हैं। लेकिन उनकी सराहना करने से पहले उन्हें समझना आवश्यक है। ब्रैनवेल भी अपने आस-पास के उन किसानों के घरों में मेहमान रहे थे, जहाँ वे हाल ही में रहने लगे थे, और जब भी वे उनसे मिलने जाते थे, वे हमेशा उनका स्वागत करते थे। लेकिन उन्होंने किसानों की भावनाओं से कहीं अधिक तीव्र भावनाओं का अनुभव किया था; वह लंदन के गहरे जीवन के बारे में कुछ जानने के लिए तरस रहा था, और अंततः उसे मुक्केबाजों और उनके संरक्षकों की संगति में वह मिल गया।

जब उनका मन करता, तो उनके ये सभी विविध अनुभव धाराप्रवाह ढंग से उनके मुख से निकलते; और उनकी बुद्धि की चमक और कल्पना की प्रतिभा उन्हें ऐसे समय

में एक अत्यंत सुखद साथी बना देती थी। लेकिन जैसा कि देखा गया है, उन्हें सबसे अधिक आनंद शामों में उस क्षेत्र में प्रचलित साहित्यकारों के छोटे समूह के साथ बिताने में आता था; और व्हार्फ के कवि स्टोरे, ब्रैडफोर्ड के इतिहासकार जेम्स, जॉर्ज सियरल फिलिप्स, मूर्तिकार लेलैंड और अन्य लोगों की संगति में उन्हें प्रतिस्पर्धा और बेहतर चीजों के लिए प्रेरणा मिलती थी। लेकिन इन प्रभावों के तहत उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों का किस प्रकार उपयोग किया, और उनकी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं ने उन्हें किस प्रकार रंग दिया - जहाँ तक उनके उपन्यास का संबंध है - शायद कभी बताया नहीं जा सकता। अपने अंतिम छह वर्षों के दौरान 'जीवन के इस टेढ़े-मेढ़े रास्ते' पर उनका अनुभव काफी विविध रहा था; और निस्संदेह वे इस पर आधारित एक शिक्षाप्रद कहानी लिख सकते थे। लेकिन, उन्होंने जो पुस्तक लिखी थी उसका क्या हुआ, यह शायद कोई नहीं बता सकता; और दो और पुस्तकें लिखने की उनकी योजना शायद पूरी नहीं हुई।

ब्रैनवेल ने अक्टूबर 1845 में श्री ग्रुंडी को जो पत्र लिखा था, उससे हमें उनकी मानसिक स्थिति का कुछ अंदाजा लगता है; और उसमें निहित एक संकेत से हम संभवतः यह अनुमान लगा सकते हैं कि उन्होंने अपने उपन्यास के अन्य दो खंड लिखने का इरादा छोड़ दिया था। वे कहते हैं:

मुझे डर है कि लिखावट पहचानते ही आप मेरा यह पत्र जला देंगे; लेकिन अगर आप इसे पूरा पढ़ेंगे, तो शायद आप मेरी उस मानसिक पीड़ा को नज़रअंदाज़ करने के बजाय दया दिखाएंगे, जिसने मुझे लगभग तीन (मेरे लिए) घटनापूर्ण वर्षों की चुप्पी के बाद यह पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया। जब मैं बहुत बीमार था और अपने कमरे में ही सीमित था, तब मैंने दो महीने पहले आपको पत्र लिखा था, यह सुनकर कि आप स्किप्टन रेलवे के रेजिडेंट इंजीनियर हैं, स्किप्टन के सराय में। मुझे कोई जवाब नहीं मिला, और चूंकि मेरे पत्र में केवल एक दिन के लिए आपकी संगति का अनुरोध किया गया था, ताकि एक ऐसे मित्र की संगति में मेरा थका हुआ मन शांत हो सके, जिसके पास हमेशा वह था जो मुझे हमेशा चाहिए था, लेकिन अब सबसे ज्यादा चाहिए, प्रसन्नता, मुझे यकीन है कि आपको मेरा पत्र नहीं मिला, वरना आपका दिल जवाब देने के लिए प्रेरित करता।

दो ग्रीष्मकाल पहले, हैलिफ़ैक्स में आपसे आखिरी बार हाथ मिलाने के बाद से, हाल तक मेरा जीवन स्पष्ट रूप से सुखमय और विलासितापूर्ण रहा है। आप पूछेंगे, "तो

फिर वह शिकायत क्यों करता है?" मैं केवल यही बता सकता हूँ कि मेरे भीतर कितना गहरा दुख छिपा था, जिसने मुझे एक भंवर में धकेल दिया, भले ही जीवन की सतही लहरें मुझे शांति की ओर ले जाती प्रतीत हो रही थीं। 1845 की वसंत ऋतु में शुरू किए गए और लगातार बीमारी के कारण कभी पूरे न हो पाने वाले एक पत्र में, मैंने आपको यह बताने की कोशिश की थी कि मैं — — के पुत्र का शिक्षक था, जो एक धनी सज्जन थे, जिनकी पत्नी — — की पत्नी की बहन थीं, जो — — काउंटी के सांसद थे, और लॉर्ड — — के चचेरे भाई थे। इस महिला ने (हालाँकि उनके पति मुझसे घृणा करते थे) मेरे प्रति इतनी दयालुता दिखाई कि जब एक दिन मैं उनके पति के व्यवहार से बहुत दुखी हुआ, तो वह दयालुता असाधारण भावनाओं के इज़हार में बदल गई। उसके मानसिक और व्यक्तिगत आकर्षणों के प्रति मेरी प्रशंसा, उसकी निस्वार्थ ईमानदारी, उसका मधुर स्वभाव और दूसरों के लिए अथक चिंता, जबकि बदले में मुझे वह सब कुछ नहीं मिला जिसकी मुझे सबसे अधिक अपेक्षा थी... यद्यपि वह मुझसे सत्रह वर्ष बड़ी है, इन सबने मिलकर मेरे मन में उसके प्रति आसक्ति पैदा कर दी और ऐसी भावनाएँ उत्पन्न कर दीं जिनकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। लगभग तीन वर्षों तक मुझे प्रतिदिन "दुखद सुख मिलता रहा, जो जल्द ही भय में बदल जाता था।" तीन महीने पहले मुझे अपने मालिक का एक क्रोधित पत्र मिला, जिसमें मुझे धमकी दी गई थी कि यदि मैं अपनी छुट्टी से वापस लौटा, जो मैं घर पर बिता रहा था, तो वह मुझे गोली मार देगा; और उसकी नौकरानी और चिकित्सक के पत्रों ने मुझे उस प्रकोप के बारे में सूचित किया, जिसे केवल उसके दृढ़ साहस और संकल्प ने रोका कि उसे जो भी नुकसान हो, वह मुझे नहीं होना चाहिए... मैं नौ लंबे हफ्तों तक शरीर से पूरी तरह टूट चुका और मन से बिखर चुका था। उसके मुक्त होकर मुझे स्वयं और अपनी संपत्ति देने की संभावना कभी भी उसके वर्तमान दुःख के कारण उसके पतन की आशंका को दूर नहीं कर सकी। मुझे अपने मन और शरीर के विनाश का भी भय था, जो ईश्वर ही जाने! अपने छोटे से जीवन में मैंने बहुत कष्ट झेले हैं। लगातार ग्यारह रातों तक नींद न आने के भयानक कष्ट ने मुझे लगभग अंधा कर दिया; और जब मुझे स्वास्थ्य लाभ के लिए वेल्स ले जाया गया, तो वहाँ के सुंदर दृश्यों, समुद्र और संगीत की आवाज़ों ने मुझे असहनीय पीड़ा दी। आप कहेंगे, "मैं कितना मूर्ख हूँ!" लेकिन अगर आप मेरे दुख के उन अनेक कारणों को जानते, जिनका मैं यहाँ ज़िक्र भी नहीं कर सकता, तो शायद आप दया भी करेंगे और निंदा भी। श्री

मैकाले और श्री बैंस के विनम्र अनुरोध पर, मैंने कुछ पढ़ने योग्य लिखकर अपने मन को जगाने का प्रयास किया है, लेकिन मैं वास्तव में ऐसा नहीं कर पा रहा हूँ। बेशक आप इस सब के लिए लेखक को तुच्छ समझेंगे। मैं केवल यही कह सकता हूँ कि लेखक भी ऐसा ही महसूस करता है, और अगर उसे यह उम्मीद न होती कि काम और बदलाव उसे फिर से स्वस्थ कर देंगे, तो वह जीना नहीं चाहता।

'मैं अपने उस व्यवहार के लिए तहे दिल से माफी मांगता हूँ जो मानो एक तरह का रोना-धोना और अहंकार जैसा लगता है, और उन दिनों का ज़रा सा भी ज़िक्र करने की हिम्मत नहीं करता जब आपकी संगति में, मैं कभी-कभी उन विचारों में डूब जाता था जो मुझे "बीते दिनों की याद दिलाते हैं," मुझे डर है कि वे दिन कभी वापस नहीं आएंगे, — मैं बना रहता हूँ, इत्यादि।'

इस पत्र में हम देखते हैं कि ब्रैनवेल ने श्री ग्रुंडी को श्रीमती — — के बारे में कहानी विस्तार से बताई, जिसे वह जब भी मौका मिलता, प्रकाशित करता था। वह अपने खराब स्वास्थ्य, शरीर की दुर्बलता और मानसिक टूटन के बारे में भी बताता है, जिसने उस समय उसे पूरी तरह से पंगु बना दिया था। शार्लोट को ब्रैनवेल द्वारा बताई गई शारीरिक स्थिति पर शायद ही विश्वास हुआ हो; क्योंकि वह कुछ समय बाद अपने एक पत्र में कहती है, 'ब्रैनवेल से आशा की कोई किरण नहीं दिखती: वह कहता है कि वह इतना बीमार है कि नौकरी ढूंढने के बारे में सोच भी नहीं सकता।' इस समय के आसपास शार्लोट के अन्य पत्रों में भी इसी तरह के अंश मिलते हैं; लेकिन हम आगे देखेंगे कि, चाहे उसकी स्वास्थ्य स्थिति कैसी भी रही हो, वह नौकरी के प्रति उतना उदासीन या भविष्य के प्रति उतना लापरवाह नहीं था जितना शार्लोट समझती थी।

अध्याय VI.

'वास्तविक विश्राम।' - 'पेनमैनमावर।'

‘वास्तविक विश्राम’ — टिप्पणियाँ — ब्रैनवेल और एमिली की आत्मा एक समान — लेलैंड को पत्र — ब्रैनवेल अपने दुखों पर चिंतन करते हैं — ‘पेनमैनमावर’ — टिप्पणियाँ — वह अभी भी रोजगार की तलाश और आशा करते हैं — शार्लोट की कुछ अतिरंजित अभिव्यक्तियाँ — कथित पलायन का प्रस्ताव — कहानी की संभावित उत्पत्ति।

हालांकि ब्रैनवेल ब्रोंटे का स्वास्थ्य इतना दुर्बल था कि अपनी इच्छा के विरुद्ध भी वे शारीरिक श्रम करने में असमर्थ थे, और घोर निराशा से उबरने के बाद, जिसके बल पर उन्होंने अपने उपन्यास का एक खंड पूरा किया, वे ऐसी स्थिति में आ गए थे कि उन्हें लगता था कि साहित्यिक रचना करना उनके बस की बात नहीं है, फिर भी लगभग उसी समय वे अपनी दो सर्वश्रेष्ठ कविताएँ लिख रहे थे जो आज भी उपलब्ध हैं। श्री ग्रुंडी को लिखे पत्र में यह स्पष्ट है कि वे अपनी मानसिक स्थिति के कारण कोई भी पठनीय साहित्यिक रचना करने में असमर्थ हैं। लेकिन हमें उनकी प्रतिभा के तात्कालिक उभार का निश्चित ज्ञान है, और यह उभार कविता में प्रकट हुआ, जिसने उनकी भावनाओं को खुलकर व्यक्त करने का अवसर दिया। निम्नलिखित कविता में हमें शायद असहनीय दुःख की सबसे शक्तिशाली और विलक्षण अभिव्यक्ति मिलती है। भावनाओं के उन तूफानों के बाद, जिनसे इसके लेखक गुजरे थे, अब एक विचित्र शांति छा गई थी।

वास्तविक विश्राम।
मुझे पानी पर एक शव पड़ा हुआ दिखाई देता है।
सूजी हुई और दृष्टिहीन आँखों से आकाश की ओर देखते हुए,
और बाहें फैलाकर आगे बढ़ते हुए, लहर दर लहर
यह अपनी असीम लहरदार कब्र में इसे ऊपर उठाता है।
समय नहीं, बल्कि सागर, इसके लहराते बालों को पतला कर देता है;
दुःख नहीं, क्षय अपना माथा नंगा कर देता है;
इसके सदस्य गतिशील तो हैं, लेकिन निरर्थक परिश्रम में नहीं।
क्योंकि समुद्र इस संसार की उथल-पुथल से कहीं अधिक शांत होते हैं;

भ्रष्टाचार उसके होंठों और गालों की लाली छीन लेता है।
लेकिन आहत अहंकार मृतकों के लिए शोक नहीं करता;
और यद्यपि वे अंग क्षय की ओर तेजी से बढ़ते हैं,
किसी भी प्रकार का कष्ट उनकी शक्ति को छीन नहीं सकता।
पीड़ा रहित दृष्टि, हृदय और मस्तिष्क से,
शांति और तूफान के बीच से गुजरते हुए यह मुख्य भूभाग पर तैरता रहता है;
हालांकि प्रेम और आनंद बहुत पहले ही नष्ट हो चुके हैं,
इसके हृदय में दुख की एक भी पीड़ा नहीं होती;
हालांकि खरपतवार और कीड़े इसकी अनमोल सुंदरता को छिपा देते हैं,
इसमें न तो आहत अहंकार का एहसास होता है और न ही गर्व का;
हालांकि किसी दूर तट की ओर यात्रा करते हुए,
इसे तैरने के लिए न तो देखभाल की जरूरत है और न ही सोने की;
हालांकि यह अनंत काल की यात्रा पर निकली है,
इसे भविष्य में क्या होने वाला है, इस बारे में सोचने की आवश्यकता नहीं है;
हालांकि नग्न, असहाय और साथीहीन,
इसे न तो गरीबी का एहसास होता है और न ही यह कष्ट को जानता है।
आह, शव! काश तुम मेरे पीड़ादायक मन को बता पाते
तू अपने पीछे दुःख के कैसे-कैसे दृश्य छोड़ गया है?
तुमने जो जीवन सांस लेते हुए जिया है, वह कितना दुखद है!
मृतकों के साथ तुम्हारा प्रवास कितना संघर्षमुक्त है;
मैं तुम्हारा स्थान ग्रहण करना चाहूंगा— तुम्हारी जगह लेने की तीव्र इच्छा रखूंगा
तुम्हारे साथ लहरों पर सवार होकर दुनिया भर में घूमने वाला एक यात्री!
मुझे एक ऐसा दुख है, जिस पर तुम्हें कोई दुख नहीं है;
मेरा दिल धड़क रहा है, मानो फट रहा हो, जबकि तुम्हारा दिल पत्थर की तरह स्थिर है;
मेरी नसें बेतहाशा धड़क रही हैं, जबकि तुम्हारी नसें मृत और सूखी हैं;
और दुख, जल नहीं, मेरी बेचैन आँखों को धुंधला करते हैं;
तुम जिसे बहुत प्यार करते हो, उसके साथ रहने की तीव्र इच्छा नहीं रखते।
और अनुपस्थिति तुम्हारे साथ जुड़े बंधन को नहीं तोड़ती;

तुम्हारे हृदय में अचानक कोई पीड़ा नहीं उठती;

तुम्हारे पास वह सब कुछ है जिसकी सभी मनुष्य कामना करते हैं, - सच्चा विश्राम।

मेरा बाहरी ढांचा तुम्हारे जैसा नहीं है।

युवा जीवन की गर्माहट से भरपूर—मृत्यु की गिरावट की ठंडक से नहीं;

वह आँख जो स्वर्ग के सूर्यप्रकाश को देखती है, —

एक हृदय जो आनंद से रोमांचित है, पीड़ा से विक्षिप्त है —

लेकिन, तुम्हारी इस शांत और निर्मल अवस्था के बदले में,

तुम्हारी शीतल विस्मृति की औषधि का उपहार,

मैं अपनी जवानी, अपना स्वास्थ्य, अपना आने वाला जीवन सब कुछ कुर्बान कर दूंगा।

और अपनी सागरमयी समाधि में अपनी नींदें बाँटो।'

यहां कवि, जिसकी आत्मा नश्वरता से मुक्ति के लिए तड़प रही है, जिसकी कुचली हुई और घायल आत्मा खारे और अशांत लहरों के ऊपर मंडरा रही है, उस पर तैरते हुए पीले और भयावह शरीर का चिंतन करता है, और उससे संवाद स्थापित करते हुए, उदास और सुंदर शब्दों में उसके एकाकीपन और विस्मृति को व्यक्त करता है। जलमयी यात्रा में मृत शरीर के साथ चलते हुए, वह गहरी सहानुभूति से उस संसार से उसके पूर्ण अलगाव को देखता है जिसे उसने पीछे छोड़ दिया है, और उसकी स्थिति की तुलना अपने स्वयं के निराश यौवन के निराशाजनक दुःख से करता है। वह विलक्षण शक्ति और कुशलता के शब्दों में इस विचित्र और एकाकी चित्र का वर्णन करता है; और एक कलाकार और कवि के रूप में, वह बेतहाशा, लेकिन खूबसूरती से, समुद्र में डूबे हुए और जीवितों के क्षय को, लंबे समय तक चले दुख के प्रभावों से, चित्रित करता है। ब्रैनवेल ने वास्तव में प्रेम किया था, हालांकि दुर्भाग्य से; और उसके जुनून के दुख ने उसे अपने भीतर, स्वयं पर चिंतन करने के लिए प्रेरित किया। ‘भटकते यहूदी’ की तरह, जो हर चट्टान, हर झाड़ी, हर बादल में अपने निरंतर दुख से मुक्ति की कोई आशा नहीं देखता, ब्रैनवेल के प्रतिभाशाली मस्तिष्क का हर विचार, उनके उर्वर मस्तिष्क की हर कल्पना, उनके लिए सागर, पृथ्वी और आकाश का हर रूप, किसी न किसी रूप में उनके अपने प्रारंभिक और अदम्य स्नेह से ओतप्रोत था। हालाँकि, अपने हृदय की प्रियतमा के प्रति उन भ्रमों के अलावा, जिनके कारण वे

पीड़ित थे और जिन्होंने उन्हें पागलपन की ओर धकेल दिया, उनके स्वभाव में ही उदासी और निराशा की प्रवृत्ति अंतर्निहित थी, एक ऐसी मानसिक स्थिति जिसमें उनकी बहन एमिली काफी हद तक उनसे मिलती-जुलती थीं। यह बात इस हद तक सच थी कि अक्टूबर 1845 में लिखी गई अपनी कविता 'द फिलॉसफर' में उन्होंने न केवल इसी तरह के विचित्र विचारों और इच्छाओं को व्यक्त किया है, बल्कि ऐसा लगता है मानो दोनों के बीच विचारों का कुछ आदान-प्रदान हुआ हो, - शायद उन्होंने उनकी 'रियल रेस्ट' पढ़ी हो और उसकी प्रवृत्ति की आंशिक आलोचना करते हुए निम्नलिखित शब्द लिखे हों। वह एक ज्ञानवर्धक आत्मा की बात कर रही हैं:

काश मैंने उसकी शानदार आँख देखी होती
एक बार उन बादलों को रोशन कर दो जो मुझे और भी ज्यादा बेचैन कर देते हैं;
मैंने कभी भी इस कायरतापूर्ण चीख को नहीं उठाया था
सोचना बंद कर देना, और अस्तित्व समाप्त कर देना;
मैंने कभी विस्मृति को आशीर्वाद नहीं कहा था,
और न ही मौत की ओर बेताब होकर हाथ बढ़ाना,
निरर्थक विश्राम के लिए बदलने की विनती की गई
यह सजीव आत्मा, यह जीवित सांस —
ओह, मुझे मरने दो— वो शक्ति और इच्छाशक्ति
उनका क्रूर संघर्ष समाप्त हो सकता है;
और अच्छाई पर विजय प्राप्त की और बुराई पर भी विजय प्राप्त की।
एकाग्रचित्त में खो जाओ!

यह उल्लेखनीय है कि शार्लोट ने भी अपनी कविता 'गिल्बर्ट' के दूसरे भाग में पानी पर तैरते हुए शव की घटना का उपयोग किया है, जिसे दुखी व्यक्ति अपने सपने में देखता है, वास्तव में उसे विस्मृति की शांति देने के लिए नहीं, बल्कि ब्रैनवेल की कविता के विपरीत, उसमें शोक और पश्चाताप की पीड़ा को जगाने के लिए।

फिर, 25 नवंबर, 1845 को, ब्रैनवेल ने लेलैंड को पत्र लिखा। वह उन दुर्भाग्यपूर्ण विचारों से खुद को मुक्त नहीं कर सके जिन्होंने उनकी समझ को विकृत कर दिया था, लेकिन अन्य सभी विषयों पर उन्होंने न्यायसंगत लिखा।

‘हॉवर्थ,
‘ब्रैडफोर्ड, यॉर्कशायर।

'मेरे प्रिय सर,

'मैं आपको संलग्न दस्तावेज भेज रहा हूं, और मुझे आपको यह बताना चाहिए कि मैं इतनी निजी प्रकृति की किसी भी चीज को मुद्रित रूप में क्यों प्रकाशित करवाना चाहता था।'

'मेरे पास उस व्यक्ति से संवाद करने का कोई और तरीका नहीं है, जो खतरे से मुक्त हो, जिससे मैं प्रेम किए बिना नहीं रह सकता। मेरे सामान्य हस्ताक्षर, "नॉर्थेंगरलैंड," के साथ छपी हुई पंक्तियाँ किसी भी संदेह को जन्म नहीं दे सकतीं — क्योंकि मेरे दिवंगत दुखी नियोक्ता को मेरे कुछ भी लिखने की क्षमता के विचार मात्र से ही घृणा होती थी, और मैकाले द्वारा मुझे भेजे गए प्रशंसा पत्र के बारे में सुनकर उन्हें एक दिन की बीमारी हो गई थी; इसलिए उन्हें नाम पता नहीं चलेगा।'

मैंने एक निजी माध्यम से उसकी वर्तमान भीषण पीड़ा में सांत्वना का एक पत्र भेजा था, लेकिन भेद खुलने के परिणामों के भय से मैंने उसे वापस मंगा लिया।

'इन पंक्तियों की केवल एक ही खूबी है, - वेल्श पर्वत के नीचे नौकायन करते समय मेरी भावनाओं को सही मायने में व्यक्त करना, जब स्टीमर पर सवार बैंड ने "ये बैंक्स एंड ब्रेज़!" गाना शुरू किया। भगवान जानता है कि, कई अलग-अलग कारणों से, वे भावनाएं आनंद से बहुत दूर थीं।'

'मैं उन मामलों पर चिंतन करने से उत्पन्न होने वाली मानसिक थकावट से बहुत पीड़ित हूं जिनके बारे में वर्तमान में सोचना व्यर्थ है, और सक्रिय कार्य ही मेरे लिए सबसे बड़ा इलाज और आशीर्वाद होगा, क्योंकि वास्तव में, घंटों तक उन विचारों में उलझे रहने के बाद जिन्हें काम से शांत किया जा सकता था, मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे मैं जी नहीं सकता, और यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है, तो इससे हृदय की स्थायी बीमारी हो जाएगी, जो पहले से ही बहुत बेचैन धड़कनों से परेशान है।'

मुझे आपके साथ एक घंटा बिताने की बहुत इच्छा है, और अगर मुझे मौका मिला, तो मैं वादा करता हूँ कि मैं उदास दिखने की कोशिश नहीं करूँगा। आपने कहा था कि आप जल्द ही हॉवर्थ में होंगे, लेकिन वह "जल्द ही" अब "कभी नहीं" में बदल गया होगा; इसलिए मुझे आपसे मिलने के लिए किसी दिन हैलिफ़ैक्स जाना होगा।

मैंने अखबारों में मरे के स्मारक की प्रशंसा होते देखी, और मुझे उम्मीद है कि आप बेकविथ के स्मारक के साथ-साथ अपनी खुद की सजीव प्रतिमा के साथ भी अच्छा

कर रहे होंगे।

'मेरा वाला, तुम्हारे थीसियस की तरह, अपने हाथ-पैर खो चुका है, और मुझे डर है कि इसका सिर भी खो चुका है, क्योंकि यह न तो हिल सकता है, न लिख सकता है और न ही पहले की तरह सोच सकता है।'

मुझे उम्मीद है कि जॉन ब्राउन के हैलिफ़ैक्स से लौटने पर मुझे आपसे सूचना मिलेगी, जहाँ वह गए हैं।

मैं बना रहता हूँ, इत्यादि।

'पी. बी. ब्रोंटे।'

संलग्न कविता का शीर्षक था:

पेनमैनमावर.
'ये हवाएँ, ये बादल, नवंबर की ये सर्द आंधी'
अपने तूफ़ान से झुलसे हुए रूप को वापस लाओ
उन आँखों के लिए जो उस उदास आकाश को देखती हैं
उन्होंने तुम्हारी महानता को कितनी देर बाद देखा;
जब मैं, तेरे अशांत सागर से भी अधिक व्याकुल,
उसकी लहरों में, मुझे तुम्हारा साथ मिला।
'धुंध के बीच तूने अर्वन के तट पर भौंहें चढ़ाईं,
'आँसू भरी आँखों से मैंने सागर की गर्जना के बीच तुम्हें देखा,
और तेरा नीला अग्रभाग, हजारों तूफानों से उजाड़ हो चुका है,
चिंता से थके हुए दिल वाले रिश्तेदार होने का दावा किया।
मुस्कुराते हुए खेतों की ओर बढ़ते हुए तुम्हारे चेहरे पर कोई मुस्कान नहीं थी।
और मुस्कुराते हुए खेतों से लौटते समय मेरे पास भी कोई नहीं था;
सूर्य के प्रकाश के बीच अंधकार ने तेरे स्लेटी माथे को रंग दिया।
मधुर संगीत के बीच, मैं तुम्हारे समान ही अंधकारमय दिखाई दिया;
प्राचीन स्कॉटलैंड का गीत, गुनगुनाती लहरों पर सवार होकर,
"बीते हुए समय के बारे में, जो कभी वापस नहीं आएगा,"
तुम्हारी ओर से शोकपूर्ण स्वर में प्रतिध्वनित हुई,
और मुझे भी अपने भीतर वैसी ही उदास प्रतिध्वनि मिली;

लहरें, बादल और परछाइयाँ निरंतर परिवर्तनशील गति में आगे बढ़ रही थीं।
तुम्हारी चट्टानी पर्वत श्रृंखला के चारों ओर, ऊपर और उस पर,
लेकिन तुम्हारा वह प्रभुत्वशाली चेहरा मैंने शायद ही कभी देखा हो।
मेरे समय में जो परिवर्तन हुए, उनसे कहीं अधिक तेजी से परिवर्तन हुए।
और जैसे-जैसे तेज हवाएँ और इंसानी हाथ, अंततः,
बिखरे हुए पत्थरों में अपार शक्ति बदल गई है
उस पुराने किले का, जिसकी चट्टानों की धारीदार पट्टी धूसर रंग की है
रोमन या सैक्सन सेनाओं को रोके रखा गया;
मुझे लगा कि उस युवा, अडिग व्यक्ति का भी यही हाल था।
जब विल चाहेगा, तो निस्संदेह वह मार्ग परिवर्तन का कारण बन सकता है।
जिसने हमेशा इसकी शक्ति पर भरोसा रखा,
कभी-कभी यह अपने दुखों को चुनौती देने का आदेश देता था।
अब मेरी आत्मा भी तेरे समान ही, हे प्राचीन पर्वत, विलीन हो गई है।
जिसका सिर मानवीय बुराई के खिलाफ रक्षाहीन है;
और, जैसा कि तुम लंबे समय से लहर को देखते आ रहे हो
वह लेता तो है, लेकिन देता नहीं, जैसे कब्रिस्तान की कब्र।
मैं, जीवन के प्रवाह की तरह, आकाश के थकाऊ विस्तार से होकर गुजरता हूँ,
निरंतर संघर्ष और परिवर्तन से कभी आराम नहीं मिलता।
लेकिन, पेनमैनमावर! तुम्हारा भाग्य इससे बेहतर था।
इसके सभी अंधकारों के माध्यम से, उस अंधकार से कहीं अधिक जिसने मेरे मन को अंधकारमय कर दिया;
तुम्हारे विशालकाय शरीर में कोई तीव्र विचार नहीं उभरे।
जो हो सकता था, जो है, या जो था, उसके लिए शोक;
तुम्हें उस गौरवशाली क्षण की कोई स्मृति नहीं थी।
जब ब्रिटेन तुम्हारी विशाल शक्ति पर टिका हुआ था;
तुम्हें हरी-भरी ढलान के प्रति कोई भावना नहीं थी
जिसने तुझ पर इस प्रकार भरोसा किया जैसे मनुष्य का हृदय आशा पर टिका रहता है;
घास के मैदान, झोपड़ियों और पेड़ों से भरे हुए,

यद्यपि तुम संरक्षक थे, फिर भी तुमसे मुझे कोई मुस्कान नहीं मिली;
प्राचीन सागर के प्रकोप से उनका आकर्षण शायद उन पर हावी हो जाए।
लेकिन तुम फिर भी अपने अविचल राज्य को बरकरार रख सकते थे।
मुझे कभी-कभी आंतरिक अनुभूति के क्षणिक क्षण महसूस होते थे
तुम्हारी ऊबड़-खाबड़ आकृति को प्रकट करने वाले लोगों की तरह ही भयंकर।
चकाचौंध भरी रोशनी वाली रातों में, जब कान बहरा कर देने वाली गर्जना होती है
तेरी प्रतिध्वनि वापस पुरानी मोना के तट पर पहुँचती है।
मैं एक ऐसे फूल को जानता था, जिसकी पत्तियाँ खिलने के लिए बनी थीं।
जब तक मृत्यु इसे किसी मकबरे की शोभा बढ़ाने के लिए न ले जाए,
अब, निराशाजनक शोक के प्रकोप के नीचे पीला पड़कर,
कभी न खिलने वाला, फिर भी जीवित पत्ता;
एक ऐसा फूल जिस पर मेरा मन प्रकाश बिखेरना चाहेगा।
काश, मेरे जैसे दिमाग से एक किरण भी टूट पाती।
मेरे कान लहजों को समझने में माहिर थे।
इसका अर्थ "अलविदा!" कहने के समान ही है, न कि "नष्ट हो जाओ!"
एक आंख जिसने दूर से एक कोमल आकृति को देखा,
पीड़ा के तूफान से पराजित, बेघर;
एक बांह—एक होंठ—जो गले लगाने के लिए कांप रहा था
मेरी परी की कोमल छाती और शोकग्रस्त चेहरा,
एक ऐसा मन जो ओउस के उपजाऊ पक्ष से जुड़ा हुआ था
मेनाई नदी की लहरों पर—बिना किसी वस्तु के—उछलते हुए!
हे आत्मा! जो उस विशाल पर्वत और मुझे अपनी ओर खींचती है
अस्पष्ट एकता के मिलन में,
मुझे बताओ, क्या मुझे वह कठोर भौंह मिल सकती है?
जो तूफान का सामना करता है, वह अब भी काफी हद तक अखंड है।
जैसे कभी यह किले की शान को कायम रखता था,
अब वह भी गायब हो गया, जैसे सुबह के समय बादलों की अपनी ही टोपी?
इसका सीना पत्थर का है, क्या मुझे एक स्टील का मिल सकता है?
सहना—आघात देना—बचाव करना—फिर भी कभी महसूस न करना?

यह उतना ही दृढ़ रहा जितना कि अभिमानी एडवर्ड के शब्द।

इंग्लैंड की आग और तलवार के लिए पहाड़ और घाटियाँ दे दीं।

जैसे जब सफेद पाल और भाप से निकलने वाला धुआं समुद्र के रास्ते पर चलता था,

और सारी दुनिया में शांति छा गई, सिवाय लहरों और मेरे।

'मुझे भी, इसी प्रकार, नश्वर चिंताओं से ऊपर उठने दो,'

सभी कष्ट सहते हुए भी, कभी निराशा का सामना न करो;

मैं अब जिस दुःख का शोक मना रहा हूँ, उसका निडर होकर सामना कर रहा हूँ।

और तूफ़ान और धूप में भी, अचल पेनमैनमावर की तरह डटे रहो!

उनकी अन्य रचनाओं की तरह, ये पंक्तियाँ भी उस दुःख से ओतप्रोत हैं जिसने उन्हें दिन-रात जकड़ रखा था। पूरी रचना में, मानसिक शांति के लिए उनकी तीव्र लालसा को खूबसूरती से व्यक्त किया गया है; और इसमें वे शाश्वत पर्वत की शक्ति और शांति की तुलना अपने उतार-चढ़ाव भरे इतिहास, निरंतर परिवर्तनों, प्रकाश और छायाओं से करते हैं, और अपने उबड़-खाबड़ और तूफानी जीवन से करते हैं; वह स्त्री, जिसके आकर्षण ने उनकी कल्पना को मोहित कर लिया है, उन्हें दुख भरी यादों का विषय प्रदान करती है। विशाल पर्वत वह शक्तिशाली छवि है जिससे उनकी व्याकुल आत्मा संवाद करती है, और वे शक्ति की प्रार्थना करते हैं ताकि वे अपनी विपत्तियों से ऊपर उठ सकें, और 'अविचल पेनमैनमावर' की तरह, उन तूफानों, विपत्तियों और विनाश का सामना कर सकें जो उन्हें धमका रहे हैं। लेकिन इस बात की संभावना बहुत कम थी कि वह स्त्री इन पंक्तियों को देख पाएगी।

उस समय ब्रैनवेल किसी ऐसे काम की तलाश में थे जिससे उनका ध्यान उन दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों पर व्यर्थ चिंतन करने से हट सके जिन्होंने उनकी शांति भंग कर दी थी। घर से दूर रहने की उनकी बेचैनी भी कम नहीं थी, क्योंकि जब उनके परिवार को उनकी बदनामी के बारे में पता चला तो घर में उनका रहना उनके लिए सबसे बड़ा अपमान साबित हुआ था; फिर भी, अपनी कुशलता से, उन्होंने उस विषय पर चुप्पी साधे रखी जिसे उनका पागलपन उन्हें दूसरों के सामने दोहराने के लिए इतना उत्सुक बना देता था। उनकी बहनें एमिली और ऐनी उन्हें चाहे जिस नज़र से देखें, शार्लोट कम से कम उन्हें पतित मानती थीं। 4 नवंबर, 1845 को उन्होंने अपने दोस्त को उनके बारे में लिखा: 'मुझे उम्मीद थी कि मैं आपको हॉवर्थ आने के लिए कह

सकूँगी। ऐसा लग रहा था मानो ब्रैनवेल को नौकरी मिल जाएगी, और मैं उनके प्रयासों के परिणाम का इंतज़ार कर रही थी ताकि कह सकूँ, प्रिय — —, आओ और हमसे मिलो। लेकिन वह पद (रेलवे समिति में सचिव का पद) किसी और को दे दिया गया है। ब्रैनवेल अभी भी घर पर हैं; और जब तक वह यहाँ हैं, आप नहीं आ सकतीं।' जितना अधिक मैं उसे देखती हूँ, मेरा यह संकल्प उतना ही दृढ़ होता जाता है। काश मैं उसके पक्ष में एक शब्द भी कह पाती, पर मैं नहीं कह सकती। मैं चुप रहूँगी। लीड्स के बारे में आपके दयालु सुझाव के लिए हम सब आपके आभारी हैं; लेकिन मुझे लगता है कि हमारी स्कूल योजनाएँ फिलहाल स्थगित हैं। उसी वर्ष 31 दिसंबर को वह फिर कहती हैं: 'आपने — — के बारे में ठीक ही कहा है कि व्यभिचार से होने वाले कष्टों से अधिक भयानक कोई कष्ट नहीं होता; अफसोस! मैं इस बात की सच्चाई को प्रतिदिन सिद्ध होते देखती हूँ। — — और — — को अपने अभागे भाई की सेवा में उतना ही थका देने वाला और बोझिल जीवन जीना पड़ता होगा। यह वास्तव में दुखद है कि जिन लोगों ने कोई पाप नहीं किया है, उन्हें इतना कष्ट सहना पड़ता है।' शार्लोट ने नैन्सी गैर्स को भी पत्र लिखा, जो कभी-कभी पादरी के घर में सहायता करती थीं, और अपने भाई के आचरण की शिकायत की; लेकिन बाद में उन्होंने पत्र को नष्ट करने का अनुरोध किया। उनकी इच्छा का पालन किया गया।

किसी जीवनी के पन्नों में पाठक को उस विषय से उचित रूप से परिचित कराना लगभग असंभव है, जिस विषय को जानने वाले, जिसने उसे जिया, देखा और जिसके बारे में उससे बात की। फिर भी, किसी के पत्रों को सही ढंग से समझने के लिए ऐसा ज्ञान कितना आवश्यक है! लेकिन अगर हमें ब्रैनवेल ब्रोंटे और उनकी बहन के चरित्र के बारे में गलत धारणा है, तो हम उनके पत्रों को पढ़कर सही अंतर्दृष्टि कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

मिस रॉबिन्सन ने श्री ग्रुंडी को लिखे अपने पत्रों में अपने बारे में कुछ अपमानजनक टिप्पणियों के आधार पर विश्वासपूर्वक यह निष्कर्ष निकाला है कि उस समय, 'वे स्पष्ट रूप से, और स्वयं उनके स्वीकारोक्ति के अनुसार, किसी भी साहित्यिक प्रयास के लिए शारीरिक रूप से बहुत कमजोर थे,' पाठक ने कितनी सटीकता से इसे देखा है और आगे भी देखेंगे। और श्री वेमिस रीड ने श्री ब्रोंटे के चरित्र के संबंध में, श्रीमती गैस्केल के उनके बारे में दृष्टिकोण को अपनाते हुए और उनके बच्चों के पत्रों पर भरोसा करते हुए, उनका एक ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है, जिस पर, जैसा कि वे

स्वीकार करते हैं, 'उन लोगों में से कुछ जिन्होंने उन्हें उनके बाद के वर्षों में जाना था, जिनमें एक व्यक्ति भी शामिल है जो इस विषय पर राय रखने का सबसे अधिक हकदार है, ने इसे अतिरंजित होने के कारण आपत्ति जताई है।' इसलिए, हमें पत्रों में जो कुछ भी मिलता है, उसे अक्षरशः नहीं लेना चाहिए। शार्लोट द्वारा अपने पिता के क्रोध के वर्णन को शब्दशः लेना मूर्खता होगी जब उसने उन्हें विवाह के प्रस्ताव के बारे में बताया, जो उनकी इच्छा के अनुरूप नहीं था; या यह मानना कि 'पापा से दया या नरमी की उम्मीद करना लकड़ी से रस निकलने जितना ही असंभव है,' जबकि हम जानते हैं कि बाद में उन्होंने स्वेच्छा से हार मान ली और अपनी राय का त्याग कर दिया। शार्लोट द्वारा अपने बारे में कही गई किसी भी अतिरंजित बात को अक्षरशः स्वीकार करना भी उचित नहीं होगा। और इसलिए, श्रीमती गैस्केल द्वारा ब्रैनवेल के जीवन की बाहरी घटनाओं का वर्णन पूरा करने के बाद यह कहना उचित नहीं लगता, 'ब्रैनवेल ब्रोंटे के बारे में जो कुछ भी और कहा जाना है, वह शार्लोट स्वयं कहेंगी, मैं नहीं;' और फिर बहन के पत्रों के उन अंशों को उद्धृत करना जिनमें उनकी निंदा की गई है, और अनुकूल बातों को संक्षेप में प्रस्तुत करना या दबा देना। लेकिन मिस रॉबिन्सन इससे भी आगे बढ़ गई हैं। उन्होंने अलग-अलग तिथियों के विभिन्न पत्रों से कुछ निंदात्मक अंश उद्धृत करके, 4 नवंबर के पत्र में सचिव पद की संभावना का कोई उल्लेख न करते हुए, और दूसरे पत्र में 'उन्हें' शब्द का प्रयोग न करते हुए, अपने पाठक को यह आभास कराया है कि बर्खास्तगी के बाद ब्रैनवेल नौकरी नहीं खोजेंगे। 'उनका ऐसा कोई इरादा नहीं था,' वह कहती हैं। लेकिन सचिव पद प्राप्त करने के लिए ब्रैनवेल के प्रयास, जिनका जिक्र शार्लोट ने किया है, उनके विपरीत स्वभाव का पर्याप्त प्रमाण हैं; और हम देखेंगे कि उन्होंने अन्य क्षेत्रों में भी प्रयास किए।

विद्यालय के संचालन में विफलता का दोष भी उन्हीं पर लगाया गया है, हालांकि जैसा कि हम देख चुके हैं, श्री ब्रोंटे की बढ़ती अंधता और हॉवर्थ में विद्यार्थियों को प्राप्त करने में कठिनाई ही इसकी विफलता के मुख्य कारण थे। अन्यत्र विद्यालय खोलने का प्रयास क्यों नहीं किया गया, इस पर आगे चर्चा की जाएगी।

श्रीमती गैस्केल ने हमें बताया है कि ब्रैनवेल को बर्खास्त किए जाने के कुछ महीनों बाद, वह अपने पूर्व नियोक्ता की पत्नी से गुप्त रूप से मुलाकात करने के लिए एक तय समय पर गए थे। वह कहती हैं, "जब उन्होंने पत्नी द्वारा प्रस्तावित विवाह के लिए सहमति देने से इनकार कर दिया, तो उनके मन में एक अजीब सी अंतरात्मा की

आवाज़ दबी हुई थी।" मिस रॉबिन्सन, जो इस बात को मानती हैं, का मानना है कि श्री ग्रुंडी को भेजे गए पत्र में "स्वयं और संपत्ति" वाक्यांश, श्रीमती गैस्केल की इस राय पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है कि ब्रैनवेल ब्रोंटे में अभी भी कोई अंतरात्मा बची थी। वह कहती हैं कि उन्होंने "थोड़ा और इंतजार करने" की सलाह दी थी - ताकि महिला के पति की मृत्यु के बाद उन्हें संपत्ति मिल सके। लेकिन अगर प्रस्तावित विवाह की यह घटना वास्तव में घटी होती, तो ब्रैनवेल द्वारा सुझाया गया विलंब निश्चित रूप से इस बात का प्रमाण माना जाना चाहिए कि उन्हें किसी भी प्रकार का अपमानजनक कार्य घृणित लगता था। महिला के पास भी अपनी पर्याप्त संपत्ति थी, जिसके बारे में, यदि उन्होंने विवाह का प्रस्ताव रखा होता, तो वह उन्हें अवश्य सूचित करतीं। लेकिन, अगर हम उन संभावित स्रोतों पर विचार करें जिनसे ऐसी कहानी उत्पन्न हो सकती है, तो हम अनुमान लगा सकते हैं कि श्रीमती गैस्केल, जिन्होंने इसे सबसे पहले सार्वजनिक किया और जिनके अधिकार पर ही यह आज भी मान्य है, ने इसे और अन्य कई घटनाओं को हॉवर्थ के प्रचलित विवाद से प्राप्त किया होगा - भला उन्हें यह कहाँ से पता चला होगा? - और जब हम यह याद करते हैं कि गाँव में फैली अफवाहें, भले ही सौ गुना बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई हों, ब्रैनवेल के स्वयं के अंधविश्वास और बेबुनियाद बयानों से उत्पन्न हुई थीं, तो शायद हम यह निष्कर्ष निकालने में गलत नहीं होंगे कि इसका कोई आधार नहीं था। निश्चित रूप से इसके लिए कोई पर्याप्त सबूत नहीं है। और यह कहानी अपने आप में ही अविश्वसनीय है, क्योंकि इसमें कहा गया है कि महिला ने न केवल अपनी प्रतिष्ठा की परवाह नहीं की, बल्कि उन आर्थिक चिंताओं को भी पूरी तरह से त्याग दिया, जिनके कारण कुछ समय बाद, अपने पति की मृत्यु के बाद, उन्होंने अपने प्रियतम से सम्मानपूर्वक विवाह नहीं किया।

मैंने इस रचना में पहले श्री पीटर्स द्वारा रचित लंकाशायर की एक परंपरा पर आधारित कविता 'लेलैंड की बेटी' का उल्लेख किया है, जो एक प्रेमपूर्ण पलायन की कहानी है। ब्रैनवेल ने 1846 की शुरुआत में लीघ के पल्ली में स्थित मोर्ले हॉल पर एक कविता लिखने का प्रस्ताव रखा, जहाँ एडवर्ड VI के शासनकाल में यह पलायन हुआ था, और जिसमें वे इस घटना का भी उल्लेख करेंगे।

यह परंपरा, और इस विषय पर ब्रैनवेल की प्रस्तावित कृति, हॉवर्थ और हैलिफ़ैक्स दोनों स्थानों पर अक्सर चर्चा का विषय बनती थी; और यह संभव है कि लगभग दस साल बाद, जब श्रीमती गैस्केल हॉवर्थ में अपनी कृति के लिए सामग्री की खोज कर

रही थीं, तो इस प्राचीन पलायन की कहानी ब्रैनवेल और उनके पूर्व नियोक्ता की पत्नी से संबंधित गाँव की कहानियों के साथ मिल गई थी, और इस प्रकार, समय और स्थान के संबंध में कुछ अतिरिक्त जानकारियों के साथ, श्रीमती गैस्केल के लिए तैयार थी।

अध्याय VII.

बहनों की कविताएँ और उपन्यास। — ब्रैनवेल के साहित्यिक कार्य।

काव्य रचनाकारों के रूप में बहनें — प्रकाशन का निर्णय — प्रत्येक ने एक उपन्यास की शुरुआत की — वह भावना जिसके तहत कार्य किया गया — 'द प्रोफेसर' — 'एग्नेस ग्रे' — 'वुथरिंग हाइट्स' — ब्रैनवेल की स्थिति — एक मार्मिक घटना — 'एक पिता का अपनी कब्र में लेटी बच्ची को पत्र' — सॉनेट सहित पत्र — बहनों की कविताओं का प्रकाशन।

यदि ब्रैनवेल ब्रोंटे ने अपने दुर्भाग्य से प्रेरित होकर साहित्य के प्रति स्वयं को समर्पित कर दिया था, तो उनकी बहनें भी जल्द ही साहित्य के क्षेत्र में उतर गईं। शार्लोट कहती हैं, 'एक दिन, 1845 की शरद ऋतु में, मुझे संयोगवश अपनी बहन एमिली की लिखावट में लिखी कविताओं की एक पांडुलिपि मिली।' बड़ी बहन को आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वह जानती थी कि छोटी बहन कविता लिख सकती थी और लिखती भी थी; लेकिन उसने सोचा कि ये कोई साधारण रचनाएँ नहीं थीं। वह कहती हैं, 'मेरे कानों को इनमें एक विशेष संगीत सुनाई दिया - जंगली, उदास और उत्थानकारी। मेरी बहन एमिली भाव-भंगिमाओं को प्रकट करने वाली नहीं थी, न ही वह ऐसी थी जिसके

मन और भावनाओं में उसके सबसे करीबी और प्रिय लोग भी बिना अनुमति के दखल दे सकें; उसे मेरी खोज के लिए राजी करने में घंटों लग गए, और उसे यह समझाने में कई दिन लग गए कि ऐसी कविताएँ प्रकाशन के योग्य हैं।' शार्लोट ब्रोंटे ने यहाँ एमिली की कविता में पाए जाने वाले उस रहस्यमय जादू को अचूक सटीकता से समझ लिया। वह विचित्र, जंगली, अनोखी आवाज़, जिससे वह हमसे बात करती है, सबसे पहले उसी से बात करती थी, और उसने भी हमारी ही तरह उस बंजर भूमि की हवा की महक महसूस की, जिस पर उसका संगीत रचा गया था। ऐनी ने भी कविताएँ लिखीं, जिनमें 'एक मधुर, सच्ची करुणा' थी; और तीनों बहनों ने, काफी सोच-विचार के बाद, यह मानते हुए कि उनकी रचनाएँ एक ही खंड में प्रकाशित हो जाएँगी, इस विषय पर पूछताछ शुरू की, और अब उन्होंने करर, एलिस और एक्टन बेल के छद्म नाम अपना लिए, जो बाद में इतने प्रसिद्ध हुए। हालाँकि, यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि अनुभवहीन और अज्ञात लेखकों की रचनाएँ इतनी मूल्यवान होंगी कि कोई प्रकाशक उन्हें अपने जोखिम पर प्रकाशित करने के लिए प्रेरित हो। दरअसल, मिस ब्रोंटे कहती हैं, 'सबसे बड़ी पहेली उन प्रकाशकों से किसी भी तरह का जवाब पाने में कठिनाई थी जिनसे हमने संपर्क किया था।' उन्होंने एडिनबर्ग के मेसर्स चैंबर्स को सलाह के लिए पत्र लिखा, और उन्हें एक संक्षिप्त और व्यावहारिक उत्तर मिला, जिस पर बहनों ने अमल किया और अंततः आगे बढ़ीं।

हमें मिली जानकारी के अनुसार, 28 जनवरी, 1846 को शार्लोट ने श्री एयलॉट और जोन्स को पत्र लिखकर पूछा कि क्या वे कविताओं का एक खंड प्रकाशित करेंगे; यदि वे स्वयं इसका खर्च नहीं उठाएंगे, तो लेखकों के खर्च पर। श्री एयलॉट और जोन्स ने बिना किसी संकोच के उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

जब बहनों को यह एहसास हुआ कि प्रकाशक अज्ञात लेखकों की कविताएँ किसी और शर्त पर स्वीकार नहीं करेंगे, तभी उन्होंने गद्य रचना की ओर रुख किया। ब्रैनवेल, अपनी घोर निराशा में, मुख्यतः मानसिक अशांति से राहत पाने के लिए तीन खंडों वाले उपन्यास लिखने पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे; लेकिन उनकी बहनें, अब बिल्कुल अलग भावनाओं के साथ, एक-एक खंड की कहानी लिखने में जुट गईं। हमें बताया जाता है कि उन्हें यह विचार आया था कि उपन्यास लेखन से पैसा कमाया जा सकता है। वास्तव में, वे ठीक उसी विचार से प्रभावित थीं जो ब्रैनवेल ने अपने मित्र लेलैंड को लिखे अपने उल्लेखनीय पत्र में कथा साहित्य से प्राप्त होने वाले लाभ के बारे में

व्यक्त किया था। शार्लेट कहती हैं, 'असफलता हमें कुचल नहीं सकी: सफलता पाने के मात्र प्रयास ने ही जीवन में एक अद्भुत उत्साह भर दिया था; इसे जारी रखना ही था। हम सभी ने एक-एक गद्य कहानी लिखने का काम शुरू किया: एलिस बेल ने "वुथरिंग हाइट्स" लिखा, एक्टन बेल ने "एग्नेस ग्रे" और करर बेल ने भी एक खंड में एक कथा लिखी।'

जिस पेशेवर अंदाज़ में बहनों ने उपन्यास लेखन किया, उससे यह मानना मुश्किल है कि साहित्यिक उत्साह के दौरान उन्होंने अपने भाई के आचरण पर बहुत विचार किया होगा; लेकिन मिस रॉबिन्सन अपने पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि उनके चरित्र और कमियों का उनकी रचनाओं के लहजे पर गहरा प्रभाव पड़ा था। इसी विश्वास और इरादे से लिखते हुए, जैसा कि अपेक्षित था, उन्होंने भाई और पादरी के घर में रहने वालों से संबंधित हर परिस्थिति को घोर नकारात्मक रूप में चित्रित करना आवश्यक समझा है, और अक्सर वास्तविक तथ्यों से बिल्कुल भिन्न निष्कर्षों पर पहुँच गई हैं। इसके अलावा, अपने विचारों का समर्थन करते हुए, लेखिका ने ब्रैनवेल की निराशा और उसके परिणामों को चार महीने पहले घटित घटना के रूप में प्रस्तुत करने की गंभीर गलती की है।

इन परेशानियों के प्रभाव में बहनों द्वारा लिखे गए उपन्यासों में वास्तव में इनका कोई स्पष्ट निशान नहीं मिलता। शार्लेट की कहानी 'द प्रोफेसर', जो काफी समय बाद प्रकाशित हुई, ब्रसेल्स में उनके व्यक्तिगत अनुभवों का प्रत्यक्ष परिणाम है, और इसमें जो कुछ झलकियाँ मिलती हैं, वे वहीं झेली गई उनकी परेशानियों का विवरण हैं। इस पुस्तक में, कुरेर बेल ने उस प्रयासपूर्ण जीवन का वर्णन किया है, जो उन्हें सबसे सम्मानजनक लगता था, बाहरी दुनिया के उन रास्तों पर चलने का वर्णन किया है जिनके सुख-दुखों को उन्होंने बहुत गहराई से महसूस किया था। मार्च 1845 में ही उन्होंने एक मित्र को पत्र लिखकर बताया था कि हॉवर्थ में रहना उनका कर्तव्य था, फिर भी वे वहाँ खुश नहीं थीं। 'एक समय था जब हॉवर्थ मुझे बहुत सुखद लगता था; अब ऐसा नहीं है। मुझे ऐसा लगता है जैसे हम सब यहीं दफन हो गए हों। मैं यात्रा करना चाहती हूँ; काम करना चाहती हूँ; एक कर्मठ जीवन जीना चाहती हूँ।' इस प्रकार 'द प्रोफेसर' उस काम और कर्मठ जीवन की कहानी है जिसके लिए लेखिका स्वयं तड़प रही थीं। अपने धनी रिश्तेदारों द्वारा उपेक्षित और अपने क्रूर भाई द्वारा त्यागे जाने के बाद, विलियम क्रिम्सवर्थ ब्रुसेल्स में अपना भाग्य आजमाने निकलता है और वहाँ

के एक स्कूल में अंग्रेजी के प्रोफेसर के रूप में पद प्राप्त करता है। वह एक ऐसा जीवन जीता है जिसे शार्लोट अच्छी तरह जानती है; वह उस जगह पर है जिससे शार्लोट को प्यार हो गया है; और वह बारीकी से उस चरित्र और दिनचर्या का वर्णन करता है जिससे शार्लोट अच्छी तरह परिचित है। उसका शिक्षक पेलेट, पॉल इमैनुएल की तरह ही एक मौलिक चरित्र है, और ज़ोराइड रॉयटर मैडम बेक का प्रतिरूप है। इन पात्रों को सशक्त रूप से गढ़ा गया है, जैसा कि मैडमोजेल हेनरी का चरित्र है; लेकिन पुस्तक में एक नौसिखिए लेखक की छाप दिखाई देती है। इस प्रकार, क्रिम्सवर्थ द्वारा फ्रांसिस को दिया गया प्रस्ताव कितना अस्वाभाविक लगता है, जहाँ वह उससे अपनी पत्नी बनने का अनुरोध करते हुए, उससे अपने प्रति सम्मान की माँग करते हुए, उसके प्रति अपनी भक्ति का एक शब्द भी नहीं कहता; और जहाँ, जब वह उसे वह सब कुछ दे देती है जिसकी वह लंबे समय से आशा कर रहा था, तब भी उसकी एकमात्र टिप्पणी होती है, 'बहुत खूब, फ्रांसिस!' लेकिन पुस्तक में हमारे लिए अधिक रुचिकर बात वह भावना है जो क्रिम्सवर्थ को उसके प्रयासों में प्रेरित करती है, जहाँ वह शार्लोट की इच्छा के अनुरूप, एक संपन्न जीवन यापन के लिए जी-जान से संघर्ष करता है; और वह विद्यालय भी है, जिसे उसकी पत्नी ने बनाया और स्थापित किया, जो शार्लोट के स्वयं के विचारों का सटीक प्रतिरूप है। यह शिक्षाप्रद और विलक्षण है कि इस पुस्तक में हम क्रिम्सवर्थ को उसी भय-भ्रम से पीड़ित पाते हैं जो इसके लेखक को भी सताता था, और वह भी उस समय जब उसे सबसे अधिक प्रसन्न होना चाहिए था।

वह कहता है, 'मनुष्य अपनी नश्वरता से सदा घिरा रहता है, और मेरी नश्वर प्रकृति ही अब लड़खड़ा रही थी और विलाप कर रही थी; मेरी नसें झनझना रही थीं और एक झूठी आवाज़ निकाल रही थीं, क्योंकि आत्मा, हाल ही में एक लक्ष्य की ओर बेतहाशा दौड़ते हुए, शरीर की तुलनात्मक कमजोरी पर अत्यधिक दबाव डाल रही थी। मुझ पर घोर अंधकार छा गया; मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे कमरे में कोई ऐसा व्यक्ति आ गया हो जिसे मैं पहले जानता था, लेकिन जिसे मैं हमेशा के लिए बिछड़ चुका समझता था। मैं अस्थायी रूप से रोग-भ्रम का शिकार हो गया था। वह बचपन में एक बार मेरी परिचित, बल्कि मेरी मेहमान रह चुकी थी; मैंने उसे एक साल तक अपने घर में ठहराया था; उस दौरान वह गुप्त रूप से मेरे साथ थी; वह मेरे साथ सोती थी, मेरे साथ खाती थी, मेरे साथ बाहर घूमती थी, मुझे जंगलों के कोने, पहाड़ियों की घाटियाँ दिखाती थी, जहाँ हम साथ बैठ सकते थे, और जहाँ वह अपना घूंघट मुझ पर डाल

सकती थी, और इस तरह आकाश और सूर्य, घास और हरे पेड़ को छिपा सकती थी; मुझे पूरी तरह से अपनी मृत्यु-शीत अवस्था में सीने से लगा लिया और हड्डियों जैसी भुजाओं से थामे रखा।' यही वह प्रेत था जो शार्लोट को भी सताता था। उसके भाई के व्यवहार के प्रभाव के बारे में मुझे 'द प्रोफेसर' में केवल दो अंश मिले हैं—एक वह जो मैंने इस खंड में पहले विक्टर क्रिम्सवर्थ की युवावस्था के संबंध में उद्धृत किया है, और दूसरा अध्याय 20 में, जहाँ विलियम क्रिम्सवर्थ पेलेट का घर छोड़ देता है, कहीं ऐसा न हो कि उसकी छत के नीचे कोई 'व्यावहारिक आधुनिक फ्रांसीसी उपन्यास' लिखा जा रहा हो। 'द प्रोफेसर' लिखते समय शार्लोट का उद्देश्य इसे रोमांस का आकर्षण न देना था। उसका नायक जीवन में अपने संघर्षों से आगे बढ़ता है, और उसे अचानक धन-दौलत नहीं मिलती, क्योंकि उसे अपनी हर कमाई खुद करनी होती है, और अंत में उसकी शादी किसी सुंदर लड़की या उच्च वर्ग की महिला से भी नहीं होती। शार्लोट कहती हैं, 'हालांकि, इसके बाद मैंने पाया कि प्रकाशकों ने आम तौर पर इस प्रणाली को शायद ही पसंद किया, बल्कि वे कुछ अधिक कल्पनाशील और काव्यात्मक चाहते थे;' और शायद इसी कारण से, इस पुस्तक को 'एग्नेस ग्रे' और 'वुथरिंग हाइट्स' की तरह जल्दी प्रकाशक नहीं मिला, जिन्हें इसके साथ पादरी के घर से भेजा गया था।

ऐनी ब्रोंटे की कहानी 'एग्नेस ग्रे', 'द प्रोफेसर' की तरह ही, लेखिका के जाने-पहचाने अनुभवों का चित्रण है, जिसे उन्होंने लगभग उसी रूप में प्रस्तुत किया है। एक गवर्नेंस के रूप में ऐनी के अनुभव ने उन्हें जीवन के कुछ पहलुओं से परिचित कराया था, जिन्हें वे अपने लेखन में शामिल किए बिना नहीं रह सकीं। इसी कारण एग्नेस ग्रे को ब्लूमफील्ड्स के लापरवाह और स्वार्थी परिवार के बीच डाल दिया जाता है; और बाद में, हॉर्टन लॉज में मरे परिवार के साथ रहते हुए, वह एक ऐसे व्यक्तिगत चरित्र और सामाजिक जीवन को देखती है, जो अपनी शीतलता और सांसारिकता के कारण ऐनी ब्रोंटे को, उनके गर्मजोशी भरे और सहानुभूतिपूर्ण स्वभाव के कारण, अत्यंत अरुचिकर लगा। वह वैवाहिक संबंधों की मूर्खता और सांसारिक पद के लिए प्रेम को त्यागने और सुख का सौदा करने के अन्याय का वही पाठ पढ़ाती हैं, जिस पर वह बाद में 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल' में और अधिक बलपूर्वक चर्चा करती हैं। ऐनी ब्रोंटे के अपने अनुभव के इस काल्पनिक समानांतर में, यदि कहीं और, तो हमें उनके भाई के पतन के हालिया इतिहास का कुछ प्रतिबिंब मिलने की उम्मीद की जा सकती है। श्री रीड ने दावा किया है कि यह उनके जीवन का अंधकारमय मोड़ था, क्योंकि 'जब वह भटक

गए, तब उनके साथ एक ही छत के नीचे रहते हुए,' वह 'शार्लट या एमिली की तुलना में उनके पापों और कष्टों की अधिक निकट और निरंतर साक्षी बनने के लिए विवश थीं।' कहा जाता है कि उनके घर भेजे गए पत्रों में उनकी बुरी आशंकाओं का संदेश था। लेकिन फिर भी, अपने भाई की बदनामी की छाया में लिखी गई उनकी कहानी, सौम्य और धर्मपरायण ऐनी ब्रोंटे की सरल, स्पष्ट और हास्यपूर्ण कहानी है, जिसमें बुराई या दुष्टता का कोई आभास नहीं मिलता; और इस लिहाज से यह उनकी दूसरी रचना से बिल्कुल अलग है। इस बात के प्रमाण हैं कि जब बहनों ने अपने उपन्यास लिखे, तब उन्होंने ब्रैनवेल को सनकी मान लिया था और इस तरह वे उनके इतिहास को अपने लिए स्पष्ट कर सकती थीं। 'एग्नेस ग्रे' उपन्यास के रूप में सफल नहीं हो सका, लेकिन इसमें हमें ऐनी की एक ऐसी प्रतिभा दिखाई देती है जो शार्लोट की रचनाओं में शायद ही नज़र आती है - हास्य की प्रतिभा। उदाहरण के लिए, देखिए कि उन्होंने युवा ब्लूमफील्ड्स और बाद में मिस मटिल्डा मरे के चरित्र को, उनकी अश्वारोहण प्रवृत्ति और मर्दाना रुचियों के साथ, कितनी सशक्तता और हास्यपूर्ण ढंग से चित्रित किया है।

'वुथरिंग हाइट्स', जिसे एमिली ब्रोंटे ने उसी समय पादरी के घर से भेजा था, 'द प्रोफेसर' या 'एग्नेस ग्रे' दोनों से कहीं अधिक उत्कृष्ट है। यह जुनून और त्रासदी से भरपूर एक नाटकीय कहानी है जिसने दुनिया को चकित कर दिया, और कहा जाता है कि ब्रैनवेल का उस समय का जीवन इससे बहुत प्रभावित था। अनुमानतः, यह तर्क दिया जाता है कि ब्रैनवेल के दुर्भाग्य के कारण उनकी समझ पर पड़े गहरे प्रभाव के बिना, और 'एक ऐसे भाई के आसपास के माहौल के बिना, जो अपनी प्रेमिका के लिए अधूरी वासना में डूबकर शराब पीकर अपनी जान दे रहा था, जिससे उसकी शादी नहीं हो सकती थी', एमिली ब्रोंटे इसकी कल्पना भी नहीं कर सकती थीं। इसलिए, शायद एमिली की इस रचना का अध्ययन तब तक स्थगित करना बेहतर होगा जब तक कि उस काल के बारे में और अधिक जानकारी न मिल जाए जिसमें इसे लिखा गया था; और जब तक ब्रैनवेल के चरित्र और जीवन पर, और पूर्ववर्ती लेखकों की कालभ्रमित गलतियों पर कुछ नया प्रकाश न पड़ जाए।

श्रीमती गैस्केल ने उस दौर को बहुत कम टिप्पणी के साथ छोड़ दिया जब बहनों ने उपन्यास लेखन में अपना समय व्यतीत किया। लेकिन वे उनके साहित्यिक कार्यों के दौरान ब्रैनवेल की उपस्थिति को याद रखती हैं, — 'उनके घर में पछतावे की काली

छाया छाई हुई थी।' शार्लेट के जीवनीकार ने ब्रैनवेल के अंतरात्मा को किस बात से ठेस पहुँचने का अनुमान लगाया, यह सर्वविदित है; लेकिन, अगर उनके जैसे स्वभाव से ही पश्चातापी व्यक्ति में इसका यह कारण होता, तो हमें उनके पत्रों या कविताओं में इसकी कोई अभिव्यक्ति अवश्य मिलती।

‘वह मन, जो दोषी कष्टों पर चिंतन करता है,
यह आग से घिरे बिच्छू के समान है।

फिर भी, ब्रैनवेल के लेखन और उनके आचरण के अध्ययन में शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उनमें किसी प्रकार का पश्चाताप नहीं दिखता। अपनी निराशा के पहले आघात के बाद, उन्होंने इस आशा से स्वयं को प्रोत्साहित किया कि समय उन्हें वह सुख देगा जिसकी वे कामना करते थे; और कुछ लोगों का मानना है कि इसके पीछे पर्याप्त कारण भी थे। जब वे उस महिला के कथित अस्वस्थता और कष्टों के बारे में सोचते थे तो वे दुखी हो जाते थे।

यह उल्लेखनीय है कि ब्रैनवेल के आचरण को पूरी तरह से पश्चाताप से जोड़कर देखना, श्रीमती गैस्केल के काम की एक विशेषता थी, जिस पर जॉर्ज एलियट जैसी महान विचारक ने, जैसा कि उनके हाल ही में प्रकाशित पत्रों से पता चलता है, आपत्ति जताई और खेद व्यक्त किया।

यदि हम यह मान लें कि ब्रैनवेल मतिभ्रम का शिकार थे, तो शायद हमें उस पीड़ा के वास्तविक कारण का कुछ अंदाजा हो सके जो उन्हें अपने आत्म-चिंतन में डूबने पर सहन करनी पड़ती थी। उनका जीवन घोर निराशाओं से भरा था। कला के क्षेत्र में उनके शुरुआती लक्ष्य, जिनके लिए उन्होंने इतनी तैयारी की थी और जिनसे उन्हें इतनी उम्मीदें थीं, उनके सामने ही धराशायी हो गए; शिक्षक और प्रशिक्षु के रूप में उनके पहले प्रयास विफल रहे; फिर रेलवे कंपनी में उनकी नौकरी छूट गई; और अंत में, पिछली नौकरी में उन्हें जो मोह सताया था, जिसमें भविष्य की समृद्धि और पिछली सभी परेशानियों से मुक्ति का सपना था, वह अंततः बर्खास्तगी, मानसिक व्याकुलता और अपमान में परिणत हुआ। ये सभी बातें चिंतन के क्षणों में उनके मन में उमड़ आती थीं, जिन्हें वे सहन नहीं कर पाते थे, और वे विभिन्न तरीकों से, जिनमें से कुछ उनके लिए सम्मानजनक थे, इन विषयों से अपना ध्यान हटाने की कोशिश करते थे, लेकिन कभी-कभी इस तरह से कि घर में शिकायतें होती थीं और उनका स्वभाव चिड़चिड़ा और गुस्सैल हो जाता था। दूसरी ओर, ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें अपने

परिवार की ओर से उन कष्टों के प्रति सहानुभूति की कमी से ठेस पहुंची, जिन्हें वे समझ नहीं पा रहे थे।

मिस्टर जॉर्ज सियरल फिलिप्स, जिनसे ब्रैनवेल की मुलाकात ब्रैडफोर्ड में हुई थी और जो उनसे हॉवर्थ में मिलने आए थे, कहते हैं कि ब्रैनवेल कभी-कभी घर पर उनके साथ होने वाले व्यवहार की शिकायत करते थे; और एक उदाहरण के रूप में, वे निम्नलिखित बातें बताते हैं:

“संडे स्कूल की एक बच्ची, जिसमें उन्हें और उनके घर के सभी लोगों को बहुत रुचि थी, बहुत बीमार पड़ गई और उन्हें डर था कि वह बच नहीं पाएगी। उन्होंने कहा, “मैं उस बेचारी बच्ची को देखने गया; उसके साथ आधा घंटा बैठा और उसे एक भजन पढ़कर सुनाया, और उसके अनुरोध पर एक स्तोत्र भी। मुझे उसके साथ प्रार्थना करने का भी बहुत मन हुआ,” उन्होंने भावुकता से कांपती आवाज में कहा; लेकिन, आप देखिए, मैं काफी अच्छी नहीं थी। मेरी हिम्मत कैसे हुई किसी और के लिए प्रार्थना करने की, जो खुद अपने लिए प्रार्थना करना लगभग भूल चुकी थी! मैं भारी मन से वहाँ से लौटी, क्योंकि मुझे पूरा यकीन था कि वह मर जाएगी, और सीधे घर चली गई, जहाँ मैं उदासी में डूब गई। मुझे किसी के सहारे की ज़रूरत थी। अक्सर होती है, लेकिन कोई भी दयालु शब्द मेरे कानों तक नहीं पहुँचता, दिल तक तो बिल्कुल नहीं। शार्लट ने मेरी उदासी देखी और पूछा कि मुझे क्या हुआ है। तो मैंने उसे बताया। उसने मुझे ऐसी नज़र से देखा जिसे मैं कभी नहीं भूल पाऊँगी - चाहे मैं सौ साल तक जी लूँ - जो मैं कभी नहीं जीऊँगी। वह बिल्कुल उसके जैसी नहीं थी। उसने मुझे ऐसे घायल कर दिया जैसे किसी ने मेरे मुँह पर ज़ोरदार मुक्का मारा हो। उसमें बहुत सी बातें छिपी थीं। वह एक संदेह भरी नज़र थी। वह मुझ पर ऐसे छा गई, जैसे सवाल कर रही हो, जाँच कर रही हो, मानो मैं कोई जंगली जानवर हूँ। उसने कहा, 'क्या मेरे कानों ने मुझे धोखा दिया, या मैंने सही सुना?' और फिर वह दर्द भरी, हैरान करने वाली अभिव्यक्ति आई, जो सबसे बुरी थी। उसने कहा, 'मुझे आश्चर्य है कि क्या यह...' सच है?’ लेकिन, कमरे से निकलते समय, ऐसा लगा जैसे वह खुद पर मुझे नुकसान पहुंचाने का आरोप लगा रही हो, और मुझ पर प्यार से मुस्कुराते हुए बोली, ‘वह मेरी छोटी छात्रा है, और मैं जाकर उससे मिलूंगी।’ मैंने एक शब्द भी नहीं कहा। मैं बहुत आहत थी। उसके जाने के बाद, मैं यहाँ ‘ब्लैक बुल’ में आई, और घोर निराशा और हताशा में इसका जिक्र किया। जब मैं अच्छा बनने की कोशिश कर रही थी, तो वे मुझे थोड़ी सी भी तवज्जो

क्यों नहीं दे सकते थे?’

मार्च की शुरुआत में, शार्लोट एक मित्र से मिलकर लौटीं, और हमें पता चला कि जब वह उस कमरे में गईं जहाँ उनका भाई था, तो उन्हें उससे बात करना बहुत मुश्किल लगा; लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया और न ही कोई जवाब दिया; वह स्तब्ध था; शार्लोट ने सुना था कि जब वह दूर थीं, तब उसके भाई ने एक जरूरी कर्ज चुकाने के बहाने एक सोने का सिक्का हासिल कर लिया था और उसे एक पब में बदलवा लिया था, जिसका परिणाम अपेक्षित ही हुआ।

शार्लेट ने 31 मार्च, 1846 को फिर कहा: 'मैं शुक्रगुजार हूं कि पापा की हालत काफी अच्छी है, हालांकि ब्रैनवेल के बुरे बर्ताव से वह अक्सर बहुत दुखी हो जाते हैं। वहां - स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है, सिवाय इसके कि वह बदतर होती जा रही है।'

इसी समय ब्रैनवेल ने निम्नलिखित सुंदर कविता लिखी, जो अभिव्यक्ति में कुछ अपूर्ण होते हुए भी उनकी प्रतिभा की विशेषता दर्शाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह कविता श्री फिलिप्स से व्यक्त की गई उनकी अलगाव की भावनाओं से प्रेरित थी और इसमें उन लोगों के प्रति कुछ फटकार भी शामिल है जो उन्हें स्वाभाविक स्नेह से रहित समझते थे। यह 3 अप्रैल, 1846 को लिखी गई थी।

एक पिता द्वारा अपनी मृत्यु के बाद अपनी संतान को लिखा गया पत्र।
‘धरती से, — जिसकी जीवनदायिनी अप्रैल की वर्षाएँ
वसंत ऋतु के आगमन के प्रतीक फूलों के नीचे मुरझाई हुई घास को छुपा दो,
और हर उस कोमल हवा में, जो उसकी बारिश को लाती है, दे दो,
खेतों और जंगलों के फिर से हरे-भरे होने का वादा, —
मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, जिसके चेहरे के पहलू
समय या स्थान में परिवर्तन के साथ कभी नहीं बदल सकता;
किसकी निगाहें भारत के सबसे भीषण युद्धों को देख सकती थीं?
मंगल ग्रह के सबसे साहसी पुत्र से भी कम संकोची;
जिनके होंठ, बहुत पहले के स्टोइक दार्शनिकों के होठों से भी अधिक दृढ़ थे,
न तो खुशी से मुस्कुराएगा और न ही दुख से पीला पड़ेगा;
जिनके अंग कहीं अधिक दृढ़ता से पीड़ा सहन कर सकते थे

युद्ध के तूफानों में सबसे शक्तिशाली नायकों से भी बढ़कर;
जिसका स्वभाव न तो भलाई की कामना करता है, न ही बुराई से कतराता है,
न तो ध्यान भटकने की धड़कन महसूस होती है, न ही आनंद का रोमांच।
मैं तुम्हें वह लिख रहा हूँ जिसे तुम कभी नहीं पढ़ोगे।
तुम मेरी बात नहीं मानोगे, चाहे कितना भी खून बहे।
वह हृदय जिसे कई लोग एक बेकार पत्थर समझते हैं,
लेकिन जो अक्सर किसी प्रियजन के लिए व्याकुल रहता है;
और न ही, यदि वह जीवन, रहस्यमय, ऊपर से आता है,
एक बार फिर अपनी पथरीली आँखों में भावनाएँ जगाओ,
क्या तुम अपने पिता को जान सकते थे, या महसूस कर सकते थे कि वह
मैंने तुम्हें जीवन, स्वरूप और विचार प्रदान किए;
जब तुम्हारी मृत्यु हुई, तब तुम्हारा दिन अभी शुरू ही हुआ था।
और रात अब भी जीवन की सुबह के आगमन से जूझ रही थी;
बचपन का ढलता तारा, तेरे युवा दिन
केवल अपनी टिमटिमाती किरणों से प्रकाशित,
शाम के धुंधले आसमान से मिली इतनी मधुर, फिर भी नाजुक सी देन।
जिसकी प्रज्वलन, आने वाली दोपहर की भविष्यवाणियाँ,
लेकिन यह हमें यह नहीं बताता कि ग्रीष्म ऋतु की दोपहर हमें ढक सकती है
हमारे सूरज की रोशनी गरजते बादलों के आवरण में लिपटी हुई है।
'यदि, जब तुमने स्वेच्छा से अपना जीवन दिया, तो वह कभी नहीं
मैंने तुम्हें या तो आशा दी थी या भय।
लेकिन चुपचाप चमक उठा था; और न ही पूछा कि खुशी है या नहीं।
तुम्हारा भविष्य का मार्ग या तो तुम्हें प्रसन्न करे, या दुःख से भर दे;
'यदि तब तूने ग्रीष्म ऋतु के समुद्र पर देखा हो,
एक, जो चेहरे और रक्त में तुम्हारे जैसा था,
नीले आसमान और हरे पानी पर,
गर्मी की चमक के बीच धुंध में घुलते हुए,
मुसीबत को घूरते हुए—हमेशा हिचकिचाते हुए
हर घंटे दुखों के बीच नया भय पैदा होता है,

और खुशियाँ—चाहे उनकी कितनी भी कीमत हो—फिर भी दुगुनी कीमती होती हैं।
वे “परेशान करने वाले सुख जल्द ही भय से दंडित हो जाते हैं;”
यदि तुमने उसे देखा होता, तो तुम कभी विश्वास नहीं करते
काश तुम्हें अभी तक जीने का अनुभव हुआ होता!
तुम्हारी आंखें केवल तुम्हारी मां की छाती ही देख सकती थीं;
तुम्हारी भावनाएं बस उसी पर टिके रहना चाहती थीं;
वही तुम्हारी दुनिया थी; उसी से तुम्हें भोजन और नींद मिलती थी।
और बचपन की कब्र और इसके बीच का अंतर नगण्य है।
तुमने इस संसार को ऐसे देखा जैसे कोई व्यक्ति लेटा हुआ विश्राम कर रहा हो।
एक मैदान पर, और गुलाबों की क्यारी में,
ऊपर संगमरमरी आकाश के अलावा और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
पेड़ों के झुरमुट में हवा की सरसराहट के अलावा और कुछ सुनाई नहीं दे रहा था:
मैं— तेरे जीवन का स्रोत— एक भटकते हुए व्यक्ति की तरह था जो सीने से लगा हुआ था
तेज पहाड़ी हवाएँ चल रही थीं, और मैं शिखर पर आराम कर रहा था।
जिसकी ऊबड़-खाबड़ चट्टानें घास के मैदान के ऊपर उठी हुई थीं,
ऊपर ओले और उत्तर दिशा से तेज हवाएं चल रही थीं,
और प्रकृति, एक नक्शे की तरह, उसके नीचे फैली हुई थी;
दूर तक फैली घुमावदार नदी, पेड़, मीनार और शहर,
छाया और धूप, उसकी निगाहों के नीचे अंकित हो गईं
उस रहस्यमय हाथ से जिसने योजना को कब्र में उतारा
उस नीरस देश का जिसे "मनुष्य का जीवन" कहा जाता है।
यदि तुम्हें देखा जाए तो मनुष्यों की निगाहें घृणा से तुम्हारे प्रति विरक्ति करेंगी।
और शायद, बिना किसी घृणा के मेरी ओर मुड़ जाए;
फिर भी तुममें सुंदरता, मासूमियत और मुस्कान थी।
और अब इस संसार के दुखों और छल-कपट से विश्राम पाओ।
हालांकि मुझे बेचैनी और चिंता सता रही है,
तो निश्चित रूप से, तुम्हारा भाग्य कहीं अधिक उज्ज्वल और सुखमय है।

तो ऐसा ही हो; और भले ही तुम्हारे कान कभी न सुनें
मृत्यु की अंधकारमय नदी के उस पार इन पंक्तियों को पढ़ते हुए सुनो,
निराशा की सीमाओं से व्यर्थ नहीं
चिंता से मुक्त होने की खुशी की ध्वनि गूंज उठे!

इस वर्ष 6 अप्रैल को शार्लोट ने मेसर्स आयलॉट एंड जोन्स को पत्र लिखकर सूचित किया कि मेसर्स बेल तीन अलग-अलग और असंबद्ध कहानियों का एक उपन्यास प्रकाशन के लिए तैयार कर रहे हैं, जिसे सामान्य उपन्यास के आकार के तीन खंडों के रूप में एक साथ या अलग-अलग खंडों के रूप में प्रकाशित किया जा सकता है। उनका इरादा इसे अपने खर्च पर प्रकाशित करने का नहीं था, और वे यह जानना चाहते थे कि यदि स्वीकृति मिल जाती है तो मेसर्स आयलॉट इसे प्रकाशित करने के लिए तैयार होंगे या नहीं।

जब बहनों ने ये पूछताछ शुरू की, तब तक उपन्यास लगभग पूरे हो चुके थे। जिस फर्म से संपर्क किया गया, उन्होंने सहर्ष सलाह दी, जिसका लाभ उठाकर शार्लोट ने खुशी-खुशी कुछ प्रश्न पूछे। ये प्रश्न उन कठिनाइयों से संबंधित थे जिनका सामना अज्ञात लेखकों को प्रकाशकों से सहायता प्राप्त करने में करना पड़ता है; और शार्लोट ने हमें बताया है कि तीनों कहानियाँ लगभग डेढ़ साल तक उनके बीच घूमती रहीं। लेकिन अंततः 1847 की गर्मियों की शुरुआत में 'वुथरिंग हाइट्स' और 'एग्नेस ग्रे' को स्वीकृति मिल गई।

ब्रैनवेल और लेलैंड के बीच एक सौहार्दपूर्ण समझौता हुआ था कि लेलैंड अपने मित्र का एक पदक बनाएंगे और ब्रैनवेल 'मोर्ले हॉल' कविता लिखेंगे, जिसका उल्लेख मैंने ऊपर किया है - यह एक ऐसा विषय था जिसमें मूर्तिकार की बहुत रुचि थी। अपनी बहन द्वारा मेसर्स आयलॉट से पूछताछ करने के कुछ ही समय बाद, ब्रैनवेल अपने पदक के लिए बैठने के लिए हैलिफ़ैक्स गए; और 28 अप्रैल को उन्होंने अपने मित्र को निम्नलिखित पत्र लिखा: —

‘हॉवर्थ, ब्रैडफोर्ड,

‘यॉर्कशायर।

'मेरे प्रिय सर,

'मैं बहुत उत्सुक हूं - हालांकि आपकी दयालुता के बदले में मैं एक संप्रभु लेंट के बदले एक सिक्सपेंस देने जैसा ही कुछ दूंगा - मोर्ले पर अपनी प्रस्तावित पंक्तियों में

अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए, मैं निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चाहता हूं... यदि मुझे ये तथ्य पता चल जाएं, तो मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूंगा, लेकिन मैं जो कुछ भी लिखने का प्रयास करता हूं, उसमें संभावनाओं और स्थानीय विशेषताओं पर ही केंद्रित रहना चाहता हूं।'

'मैं खुद पर मुस्कुराए बिना यह नहीं सोच सकता कि मुझे तीन दिन हैलिफ़ैक्स में एक ऐसे काम के लिए रुकना पड़ा जिसमें तीन घंटे भी नहीं लगने चाहिए थे; लेकिन सच तो यह है कि जब मैं खुद पर ध्यान देता हूँ, तो मुझे इतनी पीड़ा होती है कि मैं खुद से बाहर निकलने के किसी भी प्रलोभन का विरोध नहीं कर सकता – और इसी कारण से, मैं अपने लिए उपयुक्त अवसरों की तलाश कर रहा हूँ, जिनके माध्यम से मैं विदेश यात्रा कर सकूँ। घर की शांति और अपने परिवार को अपनी अधिकांश पीड़ाओं के बारे में न बता पाने की असमर्थता मुझे लिखने के लिए प्रेरित करती है।'

मुझे घर की याद नहीं आ रही है।
पहले की तरह ही उज्ज्वल;
मैं खुशियों को भूल गया हूँ।
निंदा करना सिखाया गया!
मेरे घर को आराम मिल गया है
एक पीड़ित छाती में,
जिस पर मैंने अक्सर जोर दिया है,
लेकिन शायद अब और नहीं।

'मुसीबतें कभी अकेली नहीं आतीं - और बड़ी मुसीबत के साथ-साथ मुझे कुछ छोटी-छोटी मुसीबतों का भी सामना करना पड़ रहा है।'

साहित्यिक प्रयास एक सहारा प्रतीत होता है; परन्तु इससे उत्पन्न होने वाली निराशा और साहित्यिक जगत की बाधाओं को तोड़कर प्रकाशकों के बीच अपनी पहचान बनाने की लगभग असंभवता मुझे हतोत्साहित और उदासीन बना देती है, क्योंकि मैं ऐसी कोई रचना नहीं लिख सकता जो बिना पढ़े ही पुस्तकालय की आग में जल जाए। वैसे, मेरे पास एक अच्छी-खासी किताब लिखने की सामग्री है, और यदि मैं स्वयं लंदन में होता, तो शायद मैं कवियों के संरक्षक — — — — से संपर्क करता; यद्यपि मुझे विश्वास है कि वह बेचारा अक्सर घटिया रचनाएँ प्रकाशित करने की अपनी उदारता के कारण दुखी होता होगा। जैसा कि मैं जानता हूँ कि यहाँ रहते हुए मैं लंदन

में पांडुलिपि भेज सकता हूँ और उसे अलविदा कह सकता हूँ, इसलिए मुझे किसी प्रकाशक की आग को हवा देना मूर्खता लगती है। अहंकार का यही हाल है!

'मैंने आज सुबह समय बिताने के लिए एक बेहद खराब तरीके से बनाया गया चित्र संलग्न किया है। मेरा इरादा पत्थर पर एक बहुत ही भद्दी आकृति को दर्शाने का था।'

जब हमारे सारे खुशनुमा पल हमेशा के लिए चले गए प्रतीत होते हैं,
शरीर या मन को प्रभावित करने वाली हर चीज नष्ट हो गई।
अपने जैसे लोगों के प्रति प्रेम या मित्रता को पोषित करने के लिए,
और कैरन की नाव, तैयार होकर, लेथे नदी पर रवाना हुई।
हमारी आत्माओं को बहने दो, और हमारे सभी विचारों को अलग कर दो।
जो कभी जीवन का प्रकाश था; उससे अभी भी कुछ शेष हो सकता है।
किसी प्रियतम की गोद में, जिसके तकिये पर हम
क्या हम अपने पूर्ण स्वरूप को पूरी तरह से समर्पित कर सकते हैं?
और यदि, उसकी कब्र की ओर— मृत्यु का भयानक मार्ग—
हमारी प्यारी के पैर उसके द्वारा हर कदम पर पड़ें
हम अपने कदमों के निशान खुद बनाकर उसी निवास स्थान तक पहुंचेंगे।
और समाधि-समारोह का उत्सव मनाओ;
क्योंकि जिस चीज ने हमें आनंद दिया, और जिस चीज से हमें आनंद मिला,
क्या हमें मृत्यु से डरना चाहिए, जबकि वह उसे फिर से जीवित कर देगा?

आपका अत्यंत सादर,

'पी. बी. ब्रोंटे।'

इस पत्र में जिस रेखाचित्र का उल्लेख किया गया है, वह स्याही से बना है और इसमें एक महिला की आकृति है, जिसके हाथ जुड़े हुए हैं, बाल लहरा रहे हैं और चेहरा दूसरी ओर झुका हुआ है। इसमें किसी को भी दर्शाने का कोई संदेह नहीं है। इस पर स्पेनिश भाषा में 'नुएस्ट्रा सेनोरा डे ला पेना' - यानी शोक की देवी - लिखा है, जो रेखाचित्र में एक समाधि-पत्थर पर भी अंकित है।

लेलैंड को लिखे इस पत्र के अंत में लिखी गई यह सॉनेट जितनी सुंदर है उतनी ही दुखद भी है, और इसमें न केवल संगीतमय लय और विषय की पूर्णता है, जो अभिव्यक्ति के इस तरीके के लिए आवश्यक है, बल्कि यह ब्रैनवेल के उच्च कोटि के मस्तिष्क और उनके हृदय की अनियंत्रित भावनाओं की दिशा को भी प्रदर्शित करती

है।

इस पत्र में ब्रैनवेल ने अपने उपन्यास का और कोई ज़िक्र नहीं किया। फिर भी, उनकी बहनों के कविताओं के अनुभव ने छह महीने पहले व्यक्त किए गए उनके इस मत की पुष्टि ही की थी कि कविता प्रकाशन से कोई आर्थिक लाभ नहीं होगा। बहनों ने अपनी छोटी सी रचना पर तीस पाउंड से अधिक खर्च किए थे; लेकिन उन्होंने इसे सफलता की एक कोशिश के रूप में उचित महत्व दिया। यह मई की शुरुआत में छपी थी।

शार्लोट ने प्रकाशकों के साथ बातचीत बहुत ही पेशेवर तरीके से की थी। उन्होंने प्रकाशकों को समीक्षा के लिए भेजी जाने वाली प्रतियों और विज्ञापनों के बारे में निर्देश दिए थे, जिन पर वह कम खर्च करना चाहती थीं। पुस्तक प्रकाशित हुई, और दुनिया ने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया: इसका कहीं जिक्र भी नहीं हुआ; लेकिन हॉवर्थ की बहनें धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करती रहीं, और उन्हें इस बात का कोई अफसोस नहीं था कि उनकी प्रतीक्षा व्यर्थ गई; क्योंकि उन्हें अपनी दूसरी साहित्यिक कृति, तीन गद्य कहानियों से नई उम्मीद जगी थी। शार्लोट कविताओं के बारे में कहती हैं, 'पुस्तक छपी: यह बहुत कम जानी जाती है, और इसमें जो कुछ भी जानने योग्य है, वह एलिस बेल की कविताएँ हैं। इन कविताओं के महत्व के बारे में मेरा दृढ़ विश्वास, और जो आज भी है, उसे अनुकूल आलोचनाओं का समर्थन नहीं मिला है; लेकिन फिर भी मुझे इसे बनाए रखना होगा।'

अपने पत्र में ब्रैनवेल ने रोजगार की तलाश में अपनी उत्सुकता व्यक्त की है; और जिस दिशा में वे इसे तलाश रहे हैं, वह भी बुद्धिमानी भरा है। इस समय उनके लिए परिवेश और परिस्थितियों में पूर्ण परिवर्तन ही सबसे अच्छा उपाय और सबसे बड़ा वरदान साबित होता। दुर्भाग्यवश, वे इस प्रयास में असफल रहे; और हम उन्हें फिर से श्री ग्रुंडी को पत्र लिखते हुए पाते हैं, जिसमें वे किसी प्रकार के रोजगार के बारे में पूछताछ कर रहे हैं।

अध्याय VIII.

निराशा। — ब्रैनवेल के पत्र।

ब्रैनवेल के दिवंगत नियोक्ता की मृत्यु — ब्रैनवेल की निराशा — उनके पत्र — उनका भ्रम — लेलैंड द्वारा उनके लिए बनाया गया पदक — श्री ब्रोंटे का अंधापन — 'वुथरिंग हाइट्स' के संदर्भ में श्री ग्रुंडी को ब्रैनवेल का बयान — बहनों द्वारा स्कूल खोलने का इरादा त्यागना।

सन् 1846 की गर्मियों के आरंभ में एक ऐसी घटना घटी जिसने ब्रैनवेल को उस निराशा से भी कहीं अधिक विकराल और विचलित कर देने वाली बना दिया, जिससे वह कुछ हद तक उबर चुके थे। यह घटना उनके पूर्व नियोक्ता की मृत्यु के कारण घटी। निस्संदेह, शिक्षक पद से बर्खास्तगी और इस घटना के बीच बीते समय में, उन्होंने शायद अनजाने में ही, इस आशा को मन में संजो रखा था कि उनके पति की मृत्यु के बाद, जिस महिला से उन्हें बेहद लगाव था, वह उनसे विवाह कर लेगी। इस मनोस्थिति में, जब उनके सामने का रास्ता साफ होने से उनका भ्रम और भी गहरा गया और उनका आत्म-नियंत्रण भी भंग हो गया, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि मृत्यु से त्रस्त उस घर में रहने वालों के लिए वे कष्टदायी हो गए।

निम्नलिखित कहानी, कुछ भिन्नताओं के साथ, उस समय ब्रैनवेल के किसी वास्तविक या जानबूझकर किए गए अनुचित कार्य से संबंधित बताई गई है। कहा जाता है कि इस समय, श्रीमती — — ने हॉवर्थ में एक दूत भेजा, जिसमें ब्रैनवेल को 'फिर कभी उनसे न मिलने' की चेतावनी दी गई थी, क्योंकि यदि उन्होंने ऐसा किया, तो वह अपनी सारी संपत्ति खो देंगी। जल्द ही यह स्पष्ट हो जाएगा कि उनके पति की वसीयत में ऐसा कोई प्रावधान नहीं था, और ब्रैनवेल के ऐसे किसी भी कार्य से उनकी सुरक्षित संपत्ति जब्त नहीं हो सकती थी। इसलिए, श्रीमती गैस्केल और मिस रॉबिन्सन द्वारा इतनी विस्तार से वर्णित पूरी कहानी को शायद गलत साबित किया जा सकता है। लेकिन श्रीमती गैस्केल निःसंदेह कहती हैं कि श्रीमती — — ने 'एक नौकर को

बहुत जल्दबाजी में हॉवर्थ भेजा। वह “ब्लैक बुल” पर रुका, और ब्रैनवेल के लिए पादरी के घर एक दूत भेजा गया। वह नीचे आया, इत्यादि।’ पच्चीस साल बाद, मिस रॉबिन्सन ने इस कहानी को और विस्तृत किया। वह कहती हैं: ‘दो आदमी तेज़ी से गाँव पहुँचे। उन्होंने ब्रैनवेल को बुलवाया, और जब वह बहुत उत्तेजित अवस्था में पहुँचा, तो सवारों में से एक घोड़े से उतरकर उसके साथ “ब्लैक बुल” में चला गया।’ ब्रैनवेल की उत्तेजना या दोनों वृत्तांतों में भिन्नता की जाँच किए बिना—क्योंकि कहानी में केवल एक ही बात है जिस पर दोनों लेखक पूरी तरह सहमत हैं, अर्थात्, उस अवसर पर ब्रैनवेल ‘बछड़े की तरह मिमियाया!’—इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसे साक्ष्यों के आधार पर, यह मामला छोटे-मोटे मुकदमों की सुनवाई के लिए गठित किसी भी ग्रामीण जूरी के समक्ष टिक नहीं सकता था। लेकिन ब्रैनवेल ने स्वयं, नीचे दिए गए श्री ग्रुंडी को लिखे अपने पत्र में, कहा है कि कोचवान उनसे मिलने आया था, न कि महिला ने उसे भेजा था; और हम उचित रूप से यह अनुमान लगा सकते हैं—यदि वह कभी आया भी था—तो वह स्वयं आया होगा, क्योंकि वह ब्रैनवेल से व्यक्तिगत रूप से परिचित था जब वह —— में शिक्षक था। लेकिन क्या यह मानना उचित है कि, जैसा कि कहा गया है, श्रीमती — — ब्रैनवेल से प्रेम करती थीं, तो क्या उन्हें अपने दुखों और विलापों को अपने प्रियतम ब्रैनवेल से साझा करने के लिए अपने ‘कोचमैन’ के अलावा कोई और विश्वसनीय व्यक्ति नहीं मिला? इस कहानी में पागलपन जैसी असंगति है। और यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि — — में ब्रैनवेल के शिक्षण काल से संबंधित अन्य कहानियाँ, जिनमें शार्लोट और एमिली के जीवनीकारों की इतनी रुचि रही है, हॉवर्थ से संबंधित हैं, और इस कारण वे अधिक विश्वसनीय नहीं हैं।

मुझे खेद है कि श्रीमती गैस्केल द्वारा इस घटना के संबंध में किए गए तथ्यों की त्रुटियों और अतिरंजित कथनों से पाठक को और अधिक परेशान करना पड़ रहा है। वह श्रीमती — — के बारे में कहती हैं: ‘उनके पति ने एक वसीयत बनाई थी, जिसमें उन्होंने अपनी संपत्ति केवल इस शर्त पर छोड़ी थी कि वह ब्रैनवेल ब्रोंटे को फिर कभी न देखें।’ (इटैलिक मेरे द्वारा किए गए हैं।) इस वसीयत के संबंध में श्रीमती गैस्केल की धारणाएँ उतनी ही त्रुटिपूर्ण हैं जितनी कि उन्होंने मिस ब्रैनवेल की वसीयत के संबंध में, जहाँ तक उनके भतीजे का संबंध है, की थीं। वास्तव में, ब्रैनवेल के जीवन के इस सबसे दुखद दौर के संबंध में उनके अन्य आरोपों की तरह, उन्होंने जिन जानकारियों का इस्तेमाल किया है, वे विश्वसनीय या दस्तावेजी साक्ष्यों के बजाय सुनी-सुनाई बातों

पर आधारित हैं। यह स्पष्ट है कि उन्होंने उन वसीयतों को कभी नहीं देखा जिनके बारे में वह इतने विश्वास के साथ बात करती हैं।

श्रीमती — — को एक अनुबंध और एक निश्चित वैवाहिक समझौते के तहत इतनी आय प्राप्त हुई थी कि उनके पति की मृत्यु के बाद वे ब्रैनवेल के साथ जीवन भर आराम से रह सकती थीं। इसके अतिरिक्त, श्री — — ने अपनी पत्नी को अपनी अचल और चल संपत्ति से प्राप्त होने वाला हिस्सा भी दिया। वे उनकी मुख्य न्यासी, निष्पादक और उनके बच्चों की संरक्षक भी थीं। इसके अलावा, उन्होंने अपने सह-न्यासियों को यह निर्देश दिया था कि वे हमेशा उनकी पत्नी की इच्छाओं और हितों का ध्यान रखें और उनके मामलों के प्रबंधन के संबंध में उनसे परामर्श किए बिना कोई कार्य न करें। लेकिन यह सब — और यह बिल्कुल सामान्य बात है — केवल उनके विधवापन की अवधि तक ही जारी रहना था; और यह सामान्य व्यवस्था, ध्यान देने योग्य है, ब्रैनवेल के विरुद्ध किसी और के विरुद्ध निर्देशित नहीं थी। तो फिर, यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि श्रीमती गैस्केल के इस दावे का क्या अर्थ है कि श्रीमती — — को दी गई संपत्ति केवल इस शर्त पर दी गई थी कि 'वे ब्रैनवेल ब्रोंटे को फिर कभी न देखें'? श्रीमती गैस्केल और उनके अनुयायियों ने श्रीमान — — की वसीयत के संबंध में जो कुछ भी दावा किया हो, वह ब्रैनवेल के जरा भी संदर्भ के बिना बनाई गई थी, जिसने स्वयं इसके स्वरूप को गलत समझा था, और जिसका अस्तित्व ही इसमें अज्ञात है, इसके प्रावधानों में उस मामले का दूर-दूर तक कोई जिक्र नहीं है जिसने दुर्भाग्यपूर्ण शिक्षक को दिन-रात परेशान किया था।

यदि विधवा का ब्रैनवेल के प्रति प्रेम केवल उसकी आहत मानवता का भ्रम मात्र न होकर, वह सच्चा स्नेह होता, जैसा कि वह दृढ़ता से मानता था, तो अब उसके पास पर्याप्त आय के साथ उसके साथ एक सम्मानजनक और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने का अवसर होता। परन्तु वह स्नेह, जो त्याग को सहज बना देता है, ब्रैनवेल के लिए, यहाँ तक कि अब भी, त्याग की माँग करने को तैयार नहीं था, भले ही अब उनकी आवश्यकता होती। इसके अलावा, इस बात का कोई ठोस प्रमाण नहीं है कि श्रीमती — — ने कभी भी उसके संबंध में वे कृत्य किए हों जो उन पर आरोपित किए गए हैं; इसके विपरीत, अपनी पत्नी के प्रति सच्चा स्नेह और अटूट विश्वास, जो उसकी वसीयत में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि उसके पति के पास उसकी निष्ठा पर प्रश्न उठाने का कोई कारण नहीं था। यह सत्य है कि

जहाँ एक ओर अपने निवास स्थान के आस-पास के मित्रों के व्यापक दायरे में महिला की प्रतिष्ठा बेदाग थी, वहीं हॉवर्थ और उसके आसपास के क्षेत्र में ही उसकी बदनामी, गलत बयानी और झूठे दावे किए जा रहे थे। शार्लोट ब्रोंटे को यह सब तब ज्ञात था जब उन्होंने अपनी कविता 'वरीयता' लिखी थी।

ब्रैनवेल की मानसिक स्थिति और उनके मतिभ्रम के अंतिम चरण की सीमा को जून 1846 में लिखे गए निम्नलिखित पत्रों में देखा जा सकता है, जिनमें से पहला पत्र श्री ग्रुंडी को लिखा गया था।

‘हॉवर्थ, ब्रैडफोर्ड,

‘यॉर्क.

'प्रिय महोदय,

‘मुझे आपको फिर से परेशान करना पड़ेगा—’ (यहाँ रोजगार के लिए एक और प्रार्थना आती है, साथ ही यह स्वीकारोक्ति भी कि उनकी सेहत ही इस इच्छा को लगभग नामुमकिन बना देती है।) इसके बाद वे कहते हैं, ‘जिन सज्जन के साथ मैं था, उनका निधन हो गया है। उनकी संपत्ति परिवार के लिए ट्रस्ट में छोड़ी गई है, बशर्ते मैं विधवा से न मिलूँ; और अगर मैं मिलता हूँ, तो यह संपत्ति वसीयतकर्ता ट्रस्टियों के पास वापस चली जाएगी, जिससे विधवा बर्बाद हो जाएगी। वह अब दुखों और पीड़ाओं से व्याकुल है; और हॉवर्थ में मुझसे मिलने आए उसके कोचमैन द्वारा बताई गई उसकी स्थिति का विवरण सुनकर मैं अवर्णनीय दुःख से भर गया हूँ। उसका दिमाग पागलपन की कगार पर है, और मेरा दिमाग इतना थका हुआ है कि मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी कब्र में होता।’

आपका अत्यंत सादर,

‘पी. बी. ब्रोंटे।’

उन्होंने अत्यधिक विचलित अवस्था में लेलैंड को पत्र भी लिखा।

मुझे अब तक आपको “मोर्ले हॉल” भेज देना चाहिए था, लेकिन मैं इस समय इसे पूरा करने में असमर्थ हूँ, क्योंकि मैं इतनी पीड़ा से जूझ रहा हूँ कि मृत्यु से कहीं बेहतर है। श्रीमान — — का निधन हो गया है, और उन्होंने अपनी विधवा को दयनीय स्वास्थ्य स्थिति में छोड़ दिया है… वसीयत के कारण, वह पूरी तरह से शक्तिहीन हो गई हैं। वसीयत के कार्यकारी न्यासी (जिनमें से प्रमुख, जैसा कि हमने देखा है, वही महिला थीं जिनके प्रति उनके निराशाजनक प्रेम का वे शोक व्यक्त कर रहे थे) मुझसे

घृणा करते हैं, और उनमें से एक का कहना है कि अगर वह मुझे देखेगा तो मुझे गोली मार देगा।

मुझे इन बातों की परवाह नहीं है, लेकिन मुझे उस व्यक्ति के जीवन की परवाह है जो मुझसे भी अधिक पीड़ा झेल रहा है...।

'आप, मुझसे उम्र में बहुत बड़े नहीं हैं, लेकिन आपने जीवन को अच्छी तरह से जाना है। अब मैं इसे घोर पीड़ा के साथ जी रहा हूँ - चार रातों से मैं सोया नहीं हूँ - तीन दिनों से मैंने भोजन नहीं किया है - और जब मैं धरती पर अपने सबसे प्रिय व्यक्ति की हालत के बारे में सोचता हूँ, तो मेरी इच्छा होती है कि मेरा दिमाग भी उतना ही ठंडा और बेजान हो जितना कि आपके स्टूडियो में पड़ा हुआ वह पदक।'

'मैं बहुत अहंकारी ढंग से लिखता हूं, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरा दिमाग विचारों के एक समूह से भरा हुआ है, और मैं एक दोस्त से एक वाक्य सुनने के लिए तरसता हूं।'

मैं क्या करूँ? मुझे नहीं पता—मैं मरने के लिए बहुत कठोर हूँ, और जीने के लिए बहुत दुखी। मेरी दयनीयता हवाई महलों के बारे में नहीं, बल्कि कठोर वास्तविकताओं के बारे में है; मेरी दृढ़ता शारीरिक शक्ति में निहित है; लेकिन, प्रिय महोदय, मेरा मन केवल एक निराशाजनक भविष्य देखता है, जिसमें प्रवेश करने की मेरी उतनी ही कम इच्छा है जितनी किसी शहीद की सूली पर चढ़ने की।

मुझे पूरी उम्मीद है कि आप बिल्कुल ठीक होंगे, और आशा है कि मेरी यह बेतरतीब लिखावट आपको मुझे एक निकम्मा मूर्ख या बिल्कुल उबाऊ व्यक्ति के रूप में नहीं दिखाएगी।

यकीन मानिए, आपका अत्यंत हार्दिक धन्यवाद।

‘पी. बी. ब्रोंटे।’

इस पत्र के साथ ब्रैनवेल का एक स्याही से बनाया गया चित्र भी संलग्न था, जिसमें उसे खंभे से बांधा गया था, उसकी कलाइयाँ जंजीरों से जकड़ी हुई थीं और वह आग और धुएँ से घिरा हुआ था। मांसपेशियों की अकड़न, चेहरे के भावहीन चेहरे और दर्द की स्पष्ट शुरुआत को चित्र में बखूबी दर्शाया गया है। चित्र के नीचे, दबी हुई लिखावट में, 'मैं स्वयं' लिखा है।

फिर वह लेलैंड को एक पत्र लिखता है जिसमें वह अपने व्यर्थ शोक का वर्णन करता है और उस शोक के अपने ऊपर पड़ने वाले प्रभावों को स्पष्ट रूप से बताता है।

वह अपने विक्षिप्त विचारों में डूबी महिला का जिक्र करते हुए कहता है, 'खैर, मेरे प्रिय महोदय, आखिरकार मुझे अपना अंतिम प्रहार मिल गया है, और मैं उस आघात से स्तब्ध होकर पत्थर की तरह जम गया हूँ।'

'आज सुबह मुझे उस चिकित्सक से एक लंबा, दयालु और निष्ठापूर्ण पत्र मिला है, जिसने उनकी अंतिम बीमारी के दौरान उनकी देखभाल की थी, और जिसने उसके बाद एक ऐसे व्यक्ति से मुलाकात की है जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता।'

‘वह मुझे अच्छी तरह जानता है, और मेरी हालत पर उसे बहुत दया आती है... मेरे लिए यह बहुत कठिन काम है, महोदय; मैं इसे सह सकती हूँ, लेकिन मेरी सेहत इतनी खराब है कि शरीर मानसिक आघात सहन नहीं कर सकता... मेरी भूख खत्म हो गई है, रातें भयानक होती हैं, और कुछ न करने से मैं बीते दृश्यों में खोई रहती हूँ — उसके बारे में — उसकी आवाज़ के बारे में — उसके व्यक्तित्व के बारे में — उसके विचारों के बारे में — यहाँ तक कि अगर भगवान मुझे अपने पास बुला लें तो मुझे खुशी होगी। परलोक में मेरी हालत इस लोक से बदतर नहीं हो सकती।’

17 जून को शार्लोट लिखती हैं:

ब्रैनवेल का कहना है कि वह अपने लिए कुछ भी कर नहीं सकता और न ही करेगा; उसे अच्छे पदों की पेशकश की गई है, जिनके लिए वह दो सप्ताह के काम से खुद को योग्य साबित कर सकता था, लेकिन वह शराब पीने और हम सबको दुखी करने के अलावा कुछ नहीं करेगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि बहनों को उनकी वर्तमान पीड़ा की गहराई का अंदाजा नहीं था, और उन्होंने इस समय अपने भाई की मानसिक स्थिति को कुछ हद तक गलत समझा था। लेकिन ब्रैनवेल, हालांकि किसी भी अचानक और अप्रत्याशित निराशा से मानसिक रूप से बहुत आहत होते थे, फिर भी उनमें काफी हद तक उबरने की क्षमता थी; और अपनी पीड़ाओं पर कुछ समय तक उदास रहने के बाद, वे अपने आसपास घट रही घटनाओं में फिर से रुचि लेने लगते थे। ऐसा लगता है कि उनकी अंतिम परिस्थितियों में भी यही स्थिति थी; उनके हृदय की गहराई में एक ऐसा दुख था जिससे वे अपने मित्रों के शौक और सुख-सुविधाओं में लीन होकर बचने का प्रयास करते थे।

3 जुलाई को, ऐसा प्रतीत होता था कि वह इस निराशा से कुछ हद तक उबर चुके हैं, ब्रैनवेल ने अपने मित्र, मूर्तिकार को लिखा:

'प्रिय महोदय,

'जॉन ब्राउन ने मुझे बताया कि आपके स्टूडियो में मेरी बेहद दयनीय छवि का एक रिलीफ फ्रेम लगा हुआ है।'

'अगर यह नकली है, तो मैं चाहूंगी कि वाहक इसे हॉवर्थ ले आए; ऐसा नहीं है कि मुझे इसकी जरा भी परवाह है, सिवाय इसके निर्माता के प्रति सम्मान के कारण, - लेकिन मेरी बहनें मुझसे इसे प्राप्त करने की कोशिश करने के लिए कहती हैं; और मैं उनकी आज्ञा का पालन करते हुए लिख रही हूं।'

मुझे पूरी उम्मीद है कि आप मुझसे ज्यादा मजबूत हैं, और मैं वादा करता हूं कि जैसे ही नीरस दिन और रातें मुझे ऐसा करने की अनुमति देंगी, मैं आपको "मोर्ले हॉल" भेज दूंगा।

'मुझ पर विश्वास करो,

आपका अत्यंत सादर,

'पी. बी. ब्रोंटे।'

यह उनकी आदमकद प्रतिमा थी, जिसमें सिर और कंधे भी शामिल थे, जिसे लेलैंड ने बनाया था। यह प्रतिमा बहुत ही उभरी हुई थी और हूबहू उनकी आकृति थी। इसे गहरे अंडाकार खांचे में जड़ा गया था, जो गहरे लाल मखमल से बना था, और इसे एक मजबूत, कांच के फ्रेम में लगाया गया था। हॉवर्थ स्थित पादरी के आवास के ड्राइंग रूम में टांगने पर यह दीवार से लगभग आठ इंच बाहर निकला हुआ था; यही वह प्रतिमा थी जिसे श्रीमती गैस्केल ने देखा था, जिसके बारे में वह कहती हैं: — 'मैंने ब्रैनवेल का चेहरा देखा है; यह आम तौर पर बहुत सुंदर माना जाता है; माथा विशाल है, आंखें सही जगह पर हैं, और चेहरे की अभिव्यक्ति सुंदर और बौद्धिक है; नाक भी अच्छी है; लेकिन मुंह के आसपास मोटी रेखाएं हैं, और होंठ, हालांकि सुंदर आकार के हैं, ढीले और मोटे हैं, जो आत्म-भोग का संकेत देते हैं, जबकि थोड़ा पीछे हटी हुई ठुड्डी इच्छाशक्ति की कमजोरी का आभास देती है।' श्रीमती गैस्केल को उस कृति का केवल अपूर्ण दृश्य ही दिखाई दिया जिसका उन्होंने वर्णन किया है, क्योंकि यह खिड़कियों के ठीक सामने वाली दीवार पर टंगी हुई थी, इसलिए इस पर किसी भी प्रकार की पार्श्व रोशनी नहीं पड़ रही थी।

ब्रैनवेल ने 16 जुलाई को लेलैंड को फिर से पत्र लिखा, अब वह पहले से कहीं अधिक स्वस्थ थे और अपने दोस्तों से मिलने के लिए उत्सुक थे।

मैं आपको अगले सोमवार को हॉवर्थ आने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से संलग्न बिल भेज रहा हूँ...।

'स्वयं के लिए, अवर्णनीय भय और हृदय की तीव्र धड़कन के बाद, मैंने अपने शरीर का ध्यान रखा है, लेकिन इसका क्या लाभ? सर्वोत्तम स्वास्थ्य भी तीव्र और आदर्श मानसिक पीड़ा को दूर नहीं कर सकता।'

'खुशनुमा संगति मुझे तब तक अच्छी लगती है जब तक कि कोई कड़वी सच्चाई मेरे दिमाग में कौंध न जाए, और फिर गोली का उपहार भी मैं कृतज्ञता के साथ स्वीकार कर लूंगा।'

'काश मैं लेखन को शरण के रूप में इस्तेमाल कर पाता, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता; और जहाँ तक नींद की बात है, मेरा दिमाग, चाहे जाग रहा हो या सो रहा हो, सात सप्ताह से लगातार सक्रिय है।'

ब्रैनवेल ने मिस्टर ग्रंडी को भी पत्र लिखा।

जब से मैंने श्री जॉर्ज गूच को देखा है, तब से मैं उस शख्स की बिगड़ती सेहत की खबरों से बहुत दुखी हूँ जिसे मैं दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार करता हूँ, और जो मेरी गलती की वजह से ऐसे दुख झेल रही है जो उसे बिल्कुल भी नहीं मिलने चाहिए थे। मेरे पिता भी अब पूरी तरह से अंधे हो चुके हैं, और इन कारणों से साहित्यिक गतिविधियों में मेरी कोई रुचि नहीं रह गई है। अगर मैं आपसे मिल पाता तो मुझे बहुत खुशी होती, लेकिन... शायद आपकी यादें धुंधली हो गई हों, क्योंकि आपने मुझमें कुछ खास नहीं देखा; लेकिन मैं अब भी अक्सर आपको याद करके खुश होता हूँ, भले ही आप मुझसे दिमागी तौर पर कितने अलग हों।

श्री ग्रुंडी कहते हैं, 'मैंने उन्हें लगभग सत्रह मील दूर स्किप्टन के डेवनशायर होटल में आने के लिए आमंत्रित किया था, और जवाब में मुझे उनका आखिरी पत्र मिला।' ब्रैनवेल कहते हैं,

अगर मुझमें यात्रा के लिए पर्याप्त शक्ति रही और मौसम सुहावना रहा, तो मुझे इस महीने की 31 तारीख, शुक्रवार को डेवनशायर में आपसे मिलने में खुशी होगी। उस चेहरे को देखना जिसे मैं पहले देखता था और पसंद करता था जब मैं खुश और स्वस्थ था, अब मेरे लिए सबसे अच्छी दवा साबित हो रहा है।

श्री ग्रुंडी, इन पत्रों को 1848 में लिखा हुआ मानकर, ब्रैनवेल के अंतिम पत्र बताकर गलती कर रहे हैं। ब्रैनवेल जिस शुक्रवार का जिक्र कर रहे हैं, वह 31 जुलाई,

1846 का दिन रहा होगा। उसी महीने के अंत में, शार्लोट और एमिली नेत्र विशेषज्ञ श्री विल्सन से परामर्श करने मैनचेस्टर गईं, जिन्होंने बाद में श्री ब्रोंटे की आंखों से मोतियाबिंद का ऑपरेशन किया। इन परिस्थितियों में, ब्रैनवेल स्किप्टन की अपनी नियोजित यात्रा पूरी नहीं कर पाए।

जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती गई, मोतियाबिंद धीरे-धीरे बढ़ता गया, और अंत में श्री ब्रोंटे पूरी तरह से अंधे हो गए। उनकी दृष्टि से परिचित चीजों का धीरे-धीरे ओझल होना उन पर बहुत गहरा प्रभाव डाल रहा था। कभी-कभी उनके मन में यह विचार आता था कि यदि उनकी दृष्टि हमेशा के लिए चली गई, तो वे अपने इलाके में कुछ भी नहीं रह जाएंगे; लेकिन उन्होंने अपने धैर्य और सहनशीलता के साथ इस पीड़ा को काफी हद तक सहन किया। उनकी सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि जब उनकी दृष्टि इतनी धुंधली हो गई कि वे अपने बच्चों के चेहरे भी मुश्किल से पहचान पाते थे, और जब वे पढ़ने के लिए अपनी आंखों का उपयोग नहीं कर पा रहे थे, तो वे अपनी किताबों के सुकून और बाहरी दुनिया की खबरों के स्रोतों - समाचार पत्रों - से कट गए, जिनमें उनकी गहरी रुचि थी। तब वे दूसरों से मिली जानकारी या अपने बच्चों पर निर्भर रह गए, जो साहित्यिक और घरेलू कामों से समय निकालकर उन्हें पढ़कर सुनाते थे। फिर भी आशा बाकी थी—दृष्टि की बहाली की आशा, और श्री ब्रोंटे तब भी उपदेश देने में सक्षम थे, भले ही वे उन लोगों को देख न सकें जिनसे वे बात कर रहे थे। यह उल्लेखनीय था कि तब भी उनके उपदेशों को पूरा होने में ठीक आधा घंटा लगता था। शब्दों के कुशल प्रयोग के कारण वे हमेशा इस समय को पर्याप्त मानते थे, और अब वे इससे अधिक समय नहीं लेते थे।

सभी निजी मित्रों से हर संभव पूछताछ की गई थी ताकि किसी भी संभावित ऑपरेशन की सफलता की संभावनाओं का पता लगाया जा सके, और इसी उद्देश्य से बहनें मैनचेस्टर गईं। वहां उनकी मुलाकात मिस्टर विल्सन से हुई, जो हालांकि, केवल विवरण के आधार पर यह निश्चित रूप से नहीं कह सके कि आंखें ऑपरेशन के लिए तैयार हैं या नहीं। उन्होंने मोतियाबिंद निकालने का प्रस्ताव रखा, और तदनुसार यह तय किया गया कि मिस्टर ब्रोंटे उनसे मिलें।

शार्लोट 16 अगस्त को अपने पिता को मैनचेस्टर ले गई और कुछ दिनों बाद अपनी सहेली को लिखते हुए उसने कहा, 'मैं तुम्हें बस एक पंक्ति लिख रही हूँ ताकि तुम्हें पता चल जाए कि मैं कहाँ हूँ, ताकि तुम मुझे यहाँ पत्र लिख सको, क्योंकि मुझे

लगता है कि तुम्हारा पत्र मुझे इस बड़े शहर में हो रहे अजनबीपन से राहत दिलाएगा। पापा और मैं बुधवार को यहाँ आए; उसी दिन हमने नेत्र विशेषज्ञ श्री विल्सन से मुलाकात की; उन्होंने पापा की आँखों को ऑपरेशन के लिए पूरी तरह तैयार बताया और ऑपरेशन के लिए अगले सोमवार का दिन तय किया है। उस दिन हमारे बारे में सोचो! हम कल अपने कमरे में पहुँच गए। मुझे लगता है कि हम आराम से रहेंगे; कम से कम हमारे कमरे तो बहुत अच्छे हैं... श्री विल्सन कहते हैं कि हमें कम से कम एक महीने यहाँ रहना होगा। मुझे आश्चर्य है कि एमिली और ऐनी ब्रैनवेल के साथ घर पर कैसे रहेंगी। उन्हें भी अपनी परेशानियाँ होंगी। काश तुम यहाँ होती! दुनिया में अनुभव प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को धीरे-धीरे मजबूर होना पड़ता है; लेकिन सीखना बहुत अरुचिकर होता है।' इस मामले में एक सुखद बात यह है कि श्री विल्सन इस मामले के बारे में बेहद सकारात्मक राय रखते हैं।

अपने भाई के बारे में शार्लोट की आशंकाएँ सौभाग्य से निराधार साबित हुईं; वह स्वयं अपने पिता के स्वस्थ होने को लेकर चिंतित था; और, श्रीमती गैस्केल के अनुसार, लौटने पर शार्लोट ने अपनी अनुपस्थिति के दौरान सुनिश्चित हुई भलाई और टल गए बुरे परिणामों के लिए कृतज्ञता व्यक्त की।

शार्लेट के अगले पत्र से हमें पता चलता है कि ऑपरेशन हो चुका था। 'श्री विल्सन ने ऑपरेशन किया; दो अन्य सर्जनों ने सहायता की। श्री विल्सन का कहना है कि वे इसे पूरी तरह सफल मानते हैं; लेकिन पापा को अभी कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। ऑपरेशन ठीक पंद्रह मिनट तक चला; यह श्री सी. द्वारा वर्णित साधारण मोतियाबिंद निकालने का ऑपरेशन नहीं था, बल्कि मोतियाबिंद निकालने का अधिक जटिल ऑपरेशन था। श्री विल्सन मोतियाबिंद निकालने के ऑपरेशन के सख्त खिलाफ हैं। पापा ने असाधारण धैर्य और दृढ़ता दिखाई; सर्जन आश्चर्यचकित लग रहे थे। मैं पूरे समय कमरे में मौजूद थी, क्योंकि उनकी यही इच्छा थी कि मैं वहाँ रहूँ; बेशक, ऑपरेशन पूरा होने तक मैंने न तो कुछ बोला और न ही हिली-डुली, और फिर मुझे लगा कि पापा या सर्जनों से जितना कम बोलूँ, उतना ही अच्छा है। पापा अब एक अंधेरे कमरे में अपने बिस्तर पर हैं, और उन्हें चार दिनों तक हिलाया नहीं जाना है; उन्हें जितना हो सके कम बोलना है और उनसे जितना कम बात की जाए उतना ही अच्छा है।' कोई सूजन नहीं हुई, फिर भी ऑपरेशन की सफलता के लिए अत्यधिक सावधानी, पूर्ण शांति और प्रकाश से पूरी तरह परहेज करना आवश्यक था। और श्री

ब्रोंटे अपनी आंखों पर पट्टी बांधे अपने अंधेरे कमरे में ही रहे। इन कठिन परिस्थितियों में शार्लोट अपने पिता के बारे में इस प्रकार कहती हैं: ‘वे बहुत धैर्यवान हैं, लेकिन निश्चित रूप से उदास और थके हुए हैं। उन्हें कल पहली बार अपनी दृष्टि जांचने की अनुमति दी गई थी। उन्हें धुंधला दिखाई दे रहा था। श्री विल्सन पूरी तरह से संतुष्ट दिखे और उन्होंने कहा कि सब ठीक है। मैनचेस्टर आने के बाद से दांत दर्द के कारण मेरी रातें खराब गुज़री हैं।’ लेकिन, जब खतरा टल गया, तो रोज़ाना सुधार हुआ और श्री ब्रोंटे और उनकी मददगार बेटी सितंबर के अंत में हॉवर्थ लौट सके, जब उनकी दृष्टि तेजी से ठीक हो रही थी।

संभवतः उन छह हफ्तों के दौरान जब श्री ब्रोंटे और शार्लोट मैनचेस्टर में अनुपस्थित थे, श्री ग्रुंडी ने ब्रैनवेल से मिलने का निश्चय किया। वे कहते हैं: 'चूंकि वे मुझसे मिलने नहीं आए, इसलिए मैंने जल्द ही हॉवर्थ में उनसे मिलने का फैसला किया और उनकी दयनीय और बदहाल स्थिति देखकर मैं स्तब्ध रह गया। फिर भी वे किसी भी तरह की मुलाकात की गुहार लगाते रहे, ताकि वे बदलाव के रोमांच का अनुभव कर सकें; बेशक, यह व्यर्थ था।'

ऐसा प्रतीत होता है कि इसी अवसर पर, पादरी के घर में हुई बातचीत के दौरान, ब्रैनवेल ने अपने उपन्यास के संबंध में श्री ग्रुंडी से एक बयान दिया था, जिसने काफी सुर्खियां बटोरी हैं। मैं इसे उन्हीं शब्दों में प्रस्तुत कर रहा हूँ जिनमें श्री ग्रुंडी ने घटना का वर्णन किया है। ‘पैट्रिक ब्रोंटे ने मुझसे कहा था, और उनकी बहन के कथन से भी इस बात की पुष्टि हुई, कि उन्होंने “वुथरिंग हाइट्स” का एक बड़ा हिस्सा स्वयं लिखा था।’ इस घटना के संदर्भ में यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब श्री ग्रुंडी ने हॉवर्थ में ब्रैनवेल और एमिली से बात की, तो बहनों द्वारा कुछ महीने पहले पूरी की गई तीनों उपन्यासों को बार-बार अस्वीकृति का सामना करना पड़ा था, और शायद उन्हें उनके प्रकाशन को लेकर बहुत कम भरोसा था। दरअसल, ‘द प्रोफेसर’ ऑपरेशन के दिन ही शार्लोट के पास वापस आ गया था, जिसे स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया गया था। इस कहानी को प्रकाशित करने के लिए कोई प्रकाशक मिलने की संभावना कम होने के बावजूद, उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपने पिता के मैनचेस्टर स्थित एक अंधेरे कमरे में बंद रहने के दौरान ही तीन खंडों वाली उस कहानी को लिखना शुरू कर दिया, जो बाद में 'जेन आयर' के नाम से प्रसिद्ध हुई। ऐनी ने भी 'एग्नेस ग्रे' पूरी करने के बाद 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल' लिखना शुरू कर दिया था, जो तीन खंडों वाली कहानी

ही होनी थी। दोनों बहनें उपन्यास लेखन में इतनी मग्न हो गई थीं कि इस दौरान एक मित्र द्वारा स्कूल खोलने के लिए उपयुक्त स्थान सुझाए जाने पर उन्हें टालमटोल भरा जवाब ही मिला।

'घर छोड़ दो!' शार्लेट ने जवाब में कहा। 'मुझे न तो नौकरी मिलेगी और न ही रोज़गार; शायद तब तक मेरी जवानी भी ढल चुकी होगी, मेरी सोचने-समझने की शक्ति कमज़ोर पड़ चुकी होगी और जो थोड़ा-बहुत ज्ञान मैंने हासिल किया है, वो भी काफी हद तक भूल चुका होगा। ये विचार कभी-कभी मुझे बहुत चुभते हैं; लेकिन जब भी मैं अपने अंतरात्मा से सलाह लेती हूँ, वो यही कहती है कि घर पर रहना सही है, और जब भी मैं घर से निकलने की तीव्र इच्छा के आगे झुकती हूँ, तो वो मुझे बुरी तरह फटकारती है। अगर मैं इन चेतावनियों को अनसुना कर दूँ, तो मुझे सफलता की उम्मीद बहुत कम होगी। आपसे जल्द ही फिर बात करना चाहूँगी। — — से सीधे मुद्दे पर बात करो और उससे साफ़-साफ़ बताओ कि वो वास्तव में कितने विद्यार्थियों को दिला सकता है; लोग अक्सर सोचते हैं कि वे इस तरह से बड़े-बड़े काम कर सकते हैं, जब तक कि वे कोशिश नहीं कर लेते; लेकिन विद्यार्थी पाना किसी और तरह का सामान पाने से बिल्कुल अलग है।'

अध्याय 9.

ब्रैनवेल के पत्र और श्री ग्रुंडी के साथ उनका अंतिम साक्षात्कार।

ब्रैनवेल का व्यंग्यात्मक हास्य — हॉवर्थ में श्री ग्रुंडी की उनसे मुलाकात — इसके कालक्रम के संबंध में त्रुटियाँ — दुखद वर्णन — ब्रैनवेल की संभावित चाल — उनके

और श्री ग्रुंडी के बीच पत्राचार बंद हो जाता है — लेलैंड को पत्र — एक शोकपूर्ण कविता — एक और पत्र।

ब्रैनवेल, अपने पिता की दृष्टि वापस लाने वाले ऑपरेशन के समय के नजदीक आने पर परिवार की चिंता में भागीदार थे, और जब सब कुछ ठीक रहा तो उन्हें गहरी राहत मिली; इसके अलावा, उनकी निराशा भी समय के साथ कम हो गई थी, और अब उनके कार्यों और पत्रों में एक गंभीर और व्यंग्यात्मक हास्य झलकने लगा था। इसी मनोदशा में उन्होंने अक्टूबर 1846 की शुरुआत में लेलैंड को एक पत्र लिखा, जिसमें उनके कुछ बेहद जीवंत काले और आउटलाइन वाले रेखाचित्र शामिल थे। पत्र के शीर्ष पर जॉन ब्राउन का एक चित्र था, जो एक स्मारक पर अक्षर उकेरने में लगे हुए थे, और जिन्हें दो अलग-अलग रूपों में दर्शाया गया था। ये दोनों रूप एक ही रेखाचित्र में हैं, जो बीच में एक खंभे से विभाजित है, जिस पर एक खोपड़ी रखी है। पहले भाग में, कब्रिस्तान के कर्मचारी को उल्लासपूर्ण उल्लास की स्थिति में दिखाया गया है, जो मेज और कुर्सियों को लात मार रहा है, जबकि उसकी कुर्सी पीछे की ओर गिर रही है। वह अपने दाहिने हाथ में एक गिलास पकड़े हुए है और अपनी यॉर्कशायर बोली में कसम खाता है कि वह 'राजा और आधा' है! इसके नीचे 'स्वर्ग' शब्द अंकित है। दूसरा चित्र जॉन ब्राउन को अपना काम शुरू करते हुए दर्शाता है। एक मेजनुमा मकबरे पर कब्रिस्तान के रखवाले का हथौड़ा और छेनी रखी हैं। यह तय न कर पाने के कारण कि कहाँ से शुरू करें, वह कहता है, 'मैं क्या करूँ?' कोने में हॉवर्थ चर्च के पश्चिमी भाग का चित्र है और ब्राउन के पास एक समाधि-पत्थर है, जिस पर खोपड़ी और हड्डियाँ बनी हैं और उस पर लिखा है, 'यहाँ गरीब लेटा है।' इसके नीचे 'शुद्धिकरण' शब्द लिखा है। निम्नलिखित पत्र है:

'मेरे प्रिय सर,

'श्री जॉन ब्राउन चाहते हैं कि मैं आपको बताऊं कि यदि आप डाक द्वारा उन्हें उनके प्रस्तावित कार्य की प्रकृति और उसे पूरा करने में लगने वाले संभावित समय के बारे में बता सकें, तो वे स्वयं या उनका भाई, या दोनों, अगले सप्ताह की शुरुआत में आपसे मिलने आएंगे।'

'उन्होंने आपके पत्र का उत्तर देने में केवल इसलिए देरी की है क्योंकि वे रोशडेल-ऑन-द-राइन से हैम की भूमि तक और फिर वहां से गेहेन्ना, टोफेट, गोलगोथा, एरेबस, स्टिक्स और उस स्थान तक की तीर्थयात्रा पर अपरिहार्य रूप से अनुपस्थित

थे, जिसे टार्टारस कहा जाता है, जहां वे सिसिफस, टैंटलस, थीसियस और इक्सियन के साथ रहते और भोजन करते हैं।'

हालाँकि, मुझे आशा है कि जब वह आपसे मिलेगा, तो वह मूसा, एलियास और भविष्यवक्ताओं की संगति में शामिल हो जाएगा, "भजन गाते हुए, एक नम बादल पर बैठेगा," जैसा कि मेरे एक परिचित ने धन्य लोगों के पेशे का वर्णन किया था।

“मोर्ले हॉल” अपनी गर्भावस्था के आठवें महीने में है, और जल्द ही एक सुंदर, स्वस्थ लड़के को जन्म देने की उम्मीद करती है, जिसका नाम उसके पिता कम से कम होमर रखना चाहते हैं, हालांकि माँ का सुझाव है कि “पोएटेस्टर” अधिक उपयुक्त होगा; लेकिन यह बहुत ही अभिजात्य लगता है।

‘क्या थोरवाल्डसेन द्वारा ऑगस्टस सीज़र के लिए बनाया गया पदक टूटा हुआ है?’ इस प्रश्न के साथ एक सिक्के का चित्र संलग्न है, जो एक साधारण पैसे के आकार का है, जिस पर ब्रैनवेल का चेहरा बना हुआ है — एक उत्कृष्ट प्रतिकृति — जिसके चारों ओर सम्राट का नाम अंकित है। वह आगे लिखते हैं:

‘काश मैं तुम्हें देख पाता; और, चूंकि हॉवर्थ मेला अगले मेले के बाद वाले सोमवार को लगता है, इसलिए वहां तुम्हारी उपस्थिति किसी गिरे हुए व्यक्ति को प्रसन्न कर देगी।’ यहां वह खुद को एक खाई में सिर के बल कूदते हुए चित्रित करता है।

दिन-रात के अपने लेन-देन के रिकॉर्ड में मुझे आपके पढ़ने लायक कुछ भी नहीं मिला। मेरे चारों ओर अभी भी बादल और अंधेरा छाया हुआ है। आशा है कि आपके यहाँ कम से कम नीला आकाश और धूप तो होगी।

'मन और शरीर की निरंतर और अपरिहार्य उदासी मुझे किसी भी मानसिक प्रयास को जारी रखने से भी रोकती है, जो मुझे उस सूखे टोस्ट के भाग्य से बचा सके, जिसे छह घंटे तक ठंडे पानी के गिलास में भिगोकर रखा गया हो और जिसे किसी बूढ़ी कुंवारी की डरपोक बिल्ली को देने का इरादा हो।'

यहां बिल्ली का एक रेखाचित्र है, जो एक पतले हाथ से दोनों ओर पकड़े हुए गिलासों के बीच विचलित दिख रही है।

क्या सचमुच 'रिसस सार्डोनिकस' जैसी कोई चीज होती है - व्यंग्यात्मक हंसी? क्या कोई व्यक्ति कभी उस सुबह हंसा था जिस सुबह उसे फांसी दी जानी थी?

इस पत्र के अंत में फांसी के तख्ते का एक चित्र है, जिसमें एक हाथ अपराधी (जॉन ब्राउन) की ओर फंदा बढ़ा रहा है, और एक उत्कृष्ट चित्र है, जिसमें वह उस

रस्सी को देखकर मुस्कुरा रहा है जो उसके जीवन का अंत करने वाली है!

श्री ग्रुंडी ने 'बहुत जल्द' हॉवर्थ की दोबारा यात्रा की। लेकिन श्री ग्रुंडी द्वारा प्रकाशित उनकी यात्रा के विवरण के संबंध में, मुझे उस समय के बारे में कुछ टिप्पणियाँ करनी होंगी। श्री ग्रुंडी ने ब्रैनवेल ब्रोंटे द्वारा उन्हें संबोधित बाद के पत्रों को 1848 का बताया है – जबकि वे वास्तव में 1846 के हैं – और कुछ हद तक सुसंगतता दिखाते हुए, अपने मित्र का निम्नलिखित चित्र प्रस्तुत किया है, इस धारणा के साथ कि 'कुछ दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई'। लेकिन श्री ग्रुंडी की हॉवर्थ यात्रा ब्रैनवेल से मिलने की इच्छा से प्रेरित थी, जिसे ब्रैनवेल ने उस समय लिखे एक पत्र में व्यक्त किया था जब उनके पिता 'पूरी तरह से अंधे' थे, और जैसा कि श्री ग्रुंडी कहते हैं कि उनकी यात्राएँ ब्रैनवेल के स्किप्टन जाने में असफल होने के तुरंत बाद हुईं, ये परिस्थितियाँ स्वयं ही तिथि के प्रश्न के संबंध में पर्याप्त प्रमाण हैं।

श्री ग्रुंडी अपनी अंतिम मुलाकात के बारे में कहते हैं: 'बहुत जल्द मैं उनसे आखिरी बार मिलने के लिए फिर से हॉवर्थ गया। छोटे से सराय से मैंने उन्हें विशाल, चौकोर, ठंडे दिखने वाले रेक्टरी में बुलवाया। मैंने दो लोगों के लिए भोजन का ऑर्डर दिया था, और कमरा आरामदायक और गर्म लग रहा था, चमकदार कांच और चांदी की दीवारें लाल पर्दों से जगमगाती आग की रोशनी को खूबसूरती से प्रतिबिंबित कर रही थीं। जब मैं उनके आने का इंतजार कर रहा था, उनके पिता को अंदर लाया गया। रेक्टर के व्यवहार की पुरानी अकड़ काफी हद तक गायब हो चुकी थी। उन्होंने ब्रैनवेल के बारे में पहले से कहीं अधिक स्नेह से बात की, लेकिन साथ ही वे लगभग निराशा से भी बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि जब मेरा संदेश आया, तो ब्रैनवेल बिस्तर पर थे, और पिछले कुछ दिनों से इतने कमजोर थे कि बिस्तर से उठ भी नहीं पा रहे थे; फिर भी, उन्होंने आने पर जोर दिया था, और वे तुरंत आ रहे थे। हम अलग हो गए, और मैंने उन्हें फिर कभी नहीं देखा।'

तभी दरवाज़ा धीरे से खुला और एक सिर दिखाई दिया। लाल, बिखरे, बिना कटे बालों का एक गुच्छा, एक बड़े, दुबले-पतले माथे के चारों ओर बेतरतीब ढंग से लहरा रहा था; गाल पीले और पिचके हुए, मुँह लटका हुआ, पतले सफेद होंठ काँप नहीं रहे थे बल्कि थरथरा रहे थे, धँसी हुई आँखें, जो कभी छोटी थीं, अब पागलपन की रोशनी से चमक रही थीं - ये सब मिलकर एक दुखद कहानी बयां कर रहे थे, लेकिन बहुत स्पष्ट रूप से। मैं जल्दी से अपने दोस्त के पास गया, उसे सबसे खुशमिजाज तरीके से

नमस्कार किया, जैसा कि मुझे पता था कि उसे सबसे ज्यादा पसंद था, उसे जल्दी से कमरे में खींच लिया और उसे गर्म ब्रांडी का एक कड़ा गिलास जबरदस्ती पिला दिया। इसके प्रभाव में, और उस उज्ज्वल, खुशनुमा माहौल के कारण, वह डरा हुआ लग रहा था - खुद से डरा हुआ। उसने एक पल के लिए मेरी तरफ देखा और कुछ बुदबुदाया कि वह गर्म बिस्तर छोड़कर इस ठंडी रात में बाहर आ गया है। ब्रांडी का एक और गिलास और लौटती हुई गर्माहट ने धीरे-धीरे उसे पुराने ब्रोंटे जैसा बना दिया। उसने कुछ खाना भी खाया, जो उसने कहा कि उसने बहुत समय से नहीं खाया था; इसलिए हमारी आखिरी मुलाकात सुखद रही, हालांकि गंभीर थी। मैंने उनकी बुद्धिमत्ता को इससे पहले कभी इतना स्पष्ट रूप से नहीं जाना था। उन्होंने खुद को मृत्यु की बेसब्री से प्रतीक्षा करते हुए बताया—वास्तव में, मृत्यु की तीव्र इच्छा रखते हुए, और अपने होश में रहने वाले उन क्षणों में, यह सोचकर प्रसन्न होते हुए कि मृत्यु इतनी निकट है। उन्होंने एक बार फिर घोषणा की कि वह मृत्यु उस कहानी के कारण होगी जिसे मैं जानता था, और किसी अन्य कारण से नहीं।

जब अंततः मुझे जाने के लिए विवश होना पड़ा, तो उसने चुपके से अपनी कोट की आस्तीन से एक नक्काशीदार चाकू निकाला, उसे मेज पर रखा, और मुझे दोनों हाथों से पकड़कर कहा कि उसने मुझसे फिर कभी मिलने की सारी उम्मीदें छोड़ दी थीं, और जब मेरा संदेश आया तो उसने सोचा कि यह शैतान का बुलावा था। कपड़े पहनकर, उसने वह चाकू लिया, जिसे उसने लंबे समय से छुपा रखा था, और सराय में आया, कमरे में घुसकर कमरे में बैठे व्यक्ति को चाकू मारने के पूरे इरादे से। उत्तेजित मन की स्थिति में उसने दरवाजा खोलते समय मुझे पहचाना नहीं, लेकिन मेरी आवाज और हावभाव ने उसे वश में कर लिया, और जैसा कि उसने कहा, "उसे होश में ला दिया।" मैंने उसे नंगे बदन सड़क पर झुके हुए शरीर और आँसू बहाते हुए छोड़ दिया। कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई... उसकी उम्र अट्ठाईस वर्ष थी।

श्री ग्रुंडी का इस साक्षात्कार का विवरण अपने आप में असंगत है। ज़ाहिर है, अगर उनका मित्र सचमुच इतना नशे में था जितना वे बताते हैं, तो यह मानना मुश्किल है कि श्री ब्रोंटे को अपने बेटे के सराय में आने की जानकारी रही होगी। यह स्पष्ट है कि श्रीमती गैस्केल के विवरण के सामने आने के बाद, इतने समय बाद श्री ग्रुंडी की साक्षात्कार और ब्रैनवेल के हावभाव की स्मृति को एक नया महत्व मिल गया है। मेरा मानना है कि सच्चाई यह है: कि लेलैंड को लिखे अपने पत्रों की भावना में, ब्रैनवेल ने

एक नाटक किया और अपने मित्र पर यह चाल चली ताकि उस समय के अपने विशेष मूड को संतुष्ट कर सके, एक ऐसा प्रसंग जिसे बाद वाले ने, तिथि के बारे में अपनी गलत धारणा के कारण, कुछ हद तक भयावह रूप में चित्रित किया है। वास्तव में, यह बहुत संभव है कि, हैमलेट की तरह, उसने 'एक अजीब व्यवहार' किया हो। इस दृष्टिकोण की पुष्टि करने वाली कुछ बातें अगले अध्याय में सामने आएंगी। जहां तक मुझे पता है, अपने मित्रों के बीच ब्रैनवेल कभी-कभी क्रोधित और कभी-कभी उग्र हो जाते थे, और एक अजीब सी बेसुध अवस्था में आ जाते थे, जिससे वे अचानक उबर जाते थे और फिर से शांत और स्वाभाविक हो जाते थे, वास्तव में, उन भावनाओं का सफलतापूर्वक अभिनय करने पर मुस्कुराते थे जिन्हें वे उस समय शायद ही महसूस करते थे। ब्रैनवेल और श्री ग्रुंडी के बीच आगे कोई पत्राचार न होना, और यह तथ्य कि स्किप्टन और ब्रैडफोर्ड रेलवे, जिसके लिए वे निवासी अभियंता थे, ब्रैनवेल की मृत्यु से एक वर्ष से अधिक पहले पूरी तरह से चालू हो गया था, यह दर्शाता है कि इस तिथि के बाद दोनों के बीच संपर्क समाप्त हो गया था। शायद पाठक को इन स्पष्टीकरणों से परेशान करने की आवश्यकता नहीं होती, यदि ब्रैनवेल के साथ अपनी अंतिम शाम के श्री ग्रुंडी के वर्णन को मिस रॉबिन्सन द्वारा एमिली ब्रोंटे के भाई के निधन से कुछ समय पहले उनके चित्र में पुनर्प्रकाशित करने के माध्यम से किसी प्रकार की पुष्टि न मिली होती।

ब्रैनवेल ने फिर लेलैंड को लिखा:

'प्रिय महोदय,

मैंने एक पत्र लिखवाया था और मेरा इरादा था कि हैलिफ़ैक्स के उस जाल में फँसा देने वाले शहर को छोड़ने के कुछ दिनों बाद ही उसे आपको भेज दूं।

'वह पत्र, मेरे पर्स में इतने लंबे समय तक रखे रहने के कारण पुराना हो गया था, इसलिए मैंने उसे जला दिया है, और अब एक बहुत लंबे पत्र के पूर्वाभास के रूप में एक छोटा सा नोट भेज रहा हूं।'

मुझे आपसे बहुत कुछ कहना है जिससे शायद आप बुरी तरह ऊब जाएंगे; लेकिन चूंकि यह केवल सलाह मांगना होगा, मुझे उम्मीद है कि आप उस बिल्ली की तरह महसूस करेंगे जब उसके बालों को उसकी पूंछ की ओर सहलाया जाता है। तब वह गुर्राती है; लेकिन जब उसके बालों को ऊपर की ओर सहलाया जाता है तो वह थूकती है।

'मेरी इच्छा है कि श्रीमान - - मुझे मेरा बकाया बिल भेज दें, और जैसे ही मुझे मेरी खर्च की गई नकदी या कोई भी राशि प्राप्त होगी, मैं उसका भुगतान कर दूंगा।'

मुझे उम्मीद है कि वह समझौता जल्द ही हो जाएगा।

लेकिन क्या कुछ पाउंड किसी व्यक्ति की आत्मा को मलाई वाले दूध के शांत कटोरे की तरह बना सकते हैं?

'अगर संभव हो तो मैं उस कटोरे को पूरी तरह से खाली करना चाहूंगा।'

मैं उन मामलों पर विस्तार से लिखूंगा (Deo Volente) जो मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन आपके लिए कम महत्वपूर्ण हैं।

'बंधनों में आपका,

'सेंट पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे।'

उपरोक्त पत्र के साथ, ब्रैनवेल ने तीन जीवंत रेखाचित्रों वाला एक पृष्ठ संलग्न किया। पहला रेखाचित्र एक ऐसे दृश्य को दर्शाता है जिसमें मूर्तिकार और ब्रैनवेल मुख्य पात्र हैं। वे एक-दूसरे के सामने स्टूल पर बैठे हैं, प्रत्येक के हाथ में शराब का गिलास है, और उनके बीच जमीन पर एक डिकैंटर रखा है। मूर्तिकार के पीछे थीसियस की खंडित प्रतिमा रखी है। कूपर की 'एनाटॉमी' की एक प्रति शीर्षक पृष्ठ पर खुली है; और उस पर झुकी हुई एडमोडियस, सेटेबोस, या किसी अन्य पंख वाले शैतान की आकृति उन दोनों को देख रही है। दूसरा रेखाचित्र स्वयं ब्रैनवेल का है, जिन्हें एक लेटी हुई प्रतिमा के रूप में दर्शाया गया है, जो एक शिलाखंड पर टिकी है, जिसके नीचे निम्नलिखित शोकपूर्ण पंक्तियाँ लिखी हैं: —

'तेरी आत्मा उड़ गई है,
और केवल मिट्टी
इसका आनंद या चिंता से कोई लेना-देना नहीं है;
तो अगर प्रकाश का प्रकाश चला जाए,
तब दुखों का सैलाब नहीं आता।
और हताशा शक्तिहीन पड़ी है।

तीसरा चित्र एक भूदृश्य है, जिसके अग्रभाग में एक समाधि-पत्थर है, जिसके अर्धवृत्ताकार शीर्ष पर खोपड़ी और हड्डियाँ बनी हुई हैं। पत्थर पर "HIC JACET" शब्द खुदे हुए हैं। दूर स्थित ऊँची पहाड़ियाँ दृश्य को घेरे हुए हैं। चित्र के दाईं ओर दो चीड़ के पेड़ हैं, और अर्धचंद्र, जो एक मानव आकृति का प्रतिनिधित्व करता है, एक

पाइप के साथ बना हुआ है। इसके नीचे यह वाक्य अंकित है:

'मार्टिनी लुइगी शाश्वत शांति की भीख मांगता है!'

कुछ समय बाद लेलैंड को लिखे गए इस पत्र में ब्रैनवेल के मन की उथल-पुथल फिर से झलकती है। वह अब भी इस सुखद कल्पना में डूबा हुआ है कि वह उस महिला के अटूट प्रेम का पात्र है; और अपने उस जुनून की अस्पष्टता के साथ, जिससे वह अब भी ग्रस्त है, वह मूर्तिकार से गंभीरतापूर्वक कहता है कि उसने जो कुछ उससे कहा, वह उसने किसी से नहीं कहा था; जबकि सच्चाई यह थी कि वह अपनी अधूरी आशाओं की कहानी उन सभी को सुना रहा था जो इसे सुनना चाहते थे। कहानी एक ऐसे प्रेम की है जो बेतहाशा, तीव्र और व्यर्थ है—जिसके सुख-दुखों का वह सजीव वर्णन करता है—और उसे विश्वास है कि उसे भी उतनी ही ऊर्जा और जुनून के साथ प्रेम मिलेगा।

'मेरे प्रिय सर,

मैं एक घसीटकर लिखा हुआ पत्र लिखने जा रहा हूँ, जिसके लिए मुझे आपकी दया की याचना करनी होगी; लेकिन, जब मैं अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य पर, और फिर अपने भीतर देखता हूँ, तो मुझे बहुत कुछ ऐसा मिलता है, चाहे वह कितना भी अप्रिय क्यों न हो, जो अभिव्यक्ति के लिए तरसता है।

पिछले सप्ताह एक सच्चे और दयालु मित्र ने मुझे आगाह किया कि एक महिला के बारे में छिपी हुई उम्मीदों को छोड़ देना चाहिए, चाहे इसके लिए कितना भी प्रयास करना पड़े। वह — — हैं, और उन्हें — — के सांसद — द्वारा आदेश दिया गया था कि वे मुझे वह पत्र बिना खोले लौटा दें जो मैंने — — को संबोधित किया था और जिसे उस महिला को देखने की अनुमति नहीं थी। वह भी, शक्तिशाली लोगों से घिरी हुई हैं जो मुझसे बेहद नफरत करते हैं, धार्मिक उदासी में डूब गई हैं, मानती हैं कि उनका दुख ईश्वर का दंड है, और निराशापूर्वक अपने भाग्य को स्वीकार कर लिया है। केवल ईश्वर ही जानता है कि मुझे कितना कष्ट सहना पड़ता है, और आगे चलकर कितना कष्ट सहना पड़ेगा, उन हजारों यादों को अपने दिल और स्मृति से मिटाने में जो बीते चार वर्षों के विचार से उमड़ आती हैं। जैसे दृष्टि खो चुके व्यक्ति के लिए सूर्य के प्रकाश के विचार, वे चमकीले प्रेत हैं जिन्हें फिर कभी साकार नहीं किया जा सकता।

मुझे आशा थी कि बहुत जल्द मैं उस महिला का पति बनूँगा जिसे मैं दुनिया में सबसे अधिक प्यार करता हूँ, और जिसके साथ मैं भरपूर सुख-सुविधाओं के साथ

आराम से रह सकूँगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए अपना नाम बनाने का प्रयास करूँगा, उन छोटी-छोटी लेकिन अनगिनत परेशानियों से परेशान हुए बिना, जो मच्छरों की तरह हमें रोज़मर्रा की भागदौड़ में परेशान करती हैं। वह आशा और वह स्वयं दोनों ही अब समाप्त हो चुकी हैं - वह धैर्यपूर्वक क्षय की ओर मुरझा रही है, - उसने श्रम के लिए जगह बना ली है, जिसका बोझ अब मुझ पर आ पड़ा है, जो इसे सहने में असमर्थ है। यह असमर्थता उन कारणों से उत्पन्न होती है जिन्हें मैं शारीरिक शक्ति होने पर आंशिक रूप से दूर कर सकता था; लेकिन, उस शक्ति की कमी और रोज़ाना तनावग्रस्त नसों की उपस्थिति के कारण, यह कार्य आसान नहीं है। सच कहूँ तो, जीवन भर मुझे बहुत लाड़-प्यार मिला है, और अपनी पिछली स्थिति में मैं इतना मालिक था और मैंने खुद को इतना सुख-सुविधाओं में लिप्त कर लिया था कि अब जब मुझ पर बीमारी और विपत्ति का बादल छा गया है, तो जीवन की एक नई लड़ाई लड़कर, पाँच साल पहले की स्थिति से उस स्थिति तक फिर से उठना, जहाँ से मुझे भारी हानि और कोई लाभ न होने के साथ पीछे हटना पड़ा था, बहुत निराशाजनक होगा। मेरी सेना आज भी वहीं खड़ी है जहाँ तब थी, लेकिन जवानी, सेहत, उम्मीद और मानसिक एवं शारीरिक लचीलेपन के बलिदान पर शोक मना रही है।

'पिछले दो नुकसान वाकई उस व्यक्ति के लिए बहुत मायने रखते हैं जिसने कभी इन पर अपना वर्चस्व स्थापित करने की उम्मीदें टिका रखी थीं। महान रचनाएँ, कलाकृतियाँ, संगीत या कविताएँ, अब मेरी कल्पना को जगाने के बजाय, घोर निराशा का बवंडर मेरे मन पर छा जाती हैं; और अगर मैं बैठकर लिखने की कोशिश करता हूँ, तो वे सभी विचार जो पहले सूर्य के प्रकाश में आते थे, अब मातम के काले घेरे में मुझे घेर लेते हैं; क्योंकि वास्तव में हर वह सुखद उत्तेजना जो मैं पहले महसूस करता था, अब नीरसता या पीड़ा में बदल गई है।'

'मैं अपने दोस्तों की अति आशावादी उम्मीदों को कभी पूरा नहीं कर पाऊंगा, क्योंकि उनतीस साल की उम्र में मैं मानसिक और शारीरिक रूप से पूरी तरह बूढ़ा हो चुका हूं—वास्तव में, जितना मैं व्यक्त करना चाहता हूं उससे कहीं अधिक। ईश्वर जानता है कि जब मैं बायरन के उन भयानक सत्य शब्दों को उद्धृत करता हूं तो मैं किसी अनाड़ी कवि की तरह बेतरतीब ढंग से नहीं लिखता—

"बस बहुत हो गया — बस बहुत हो गया — ओह! मुझ पर कभी नहीं।"

हृदय की ताजगी ओस की बूंदों की तरह बरसेगी।

उन सभी खूबसूरत चीजों में से जो हम देखते हैं,

यह खूबसूरत और नए भावों को उजागर करता है!

'मैं पहले सोचा करता था कि अगर मुझे एक हफ्ते के लिए ब्रिटिश संग्रहालय में - पुस्तकालय सहित - पूरी आजादी मिल जाए, तो मुझे ऐसा लगेगा जैसे मैं सात दिनों के लिए स्वर्ग में हूँ; लेकिन अब, सच में, प्रिय महोदय, मेरी आँखें एल्गिन मार्बल्स, मिस्र के सैलून और सबसे कीमती स्तंभों पर ऐसे टिकी रहेंगी जैसे किसी मरी हुई कॉड मछली की आँखें।'

मेरे यहाँ के असभ्य और बदतमीज़ परिचित मेरी उदासी का एकमात्र कारण मेरे कभी-कभी अनियमित जीवन को मानते हैं, क्योंकि उन्होंने नकदी की कमी या अधिकता से होने वाले कष्टों के अलावा और कोई कष्ट नहीं झेला है। वे नहीं जानते कि मैं एक कमीज़ को ज़्यादा पसंद करूँगा बजाय एक जीवंत मन के, और अगर मैं अभी यॉर्क मिनस्टर में कदम रखूँ तो मेरी पूर्ण उदासी उनकी सौ पाउंड की ज़रूरत से कहीं ज़्यादा बुरी होगी; और अगर एक दर्जन गिलास या एक बोतल शराब उनकी चिंताओं को दूर कर देती है, तो ऐसे उपाय मुझे केवल बाहरी तौर पर लोगों के बीच स्वीकार्य बनाते हैं, मेरी चिंताओं को कभी दूर नहीं करते।

'मैं बस इतना जानती हूँ कि अब मेरे लिए कुछ बनने का समय आ गया है, जबकि मैं कुछ भी नहीं हूँ; मेरे पिता के पास जीने के लिए अधिक समय नहीं बचा है; और जब उनकी मृत्यु होगी, तो मेरी शाम, जो पहले से ही धुंधली हो चुकी है, रात में बदल जाएगी; और तब भी मेरा शरीर इतना मजबूत रहेगा कि वह मुझे वर्षों तक यातना और निराशा में रखेगा, जब मैं हर पल प्रार्थना करूँगी कि मैं मर जाऊँ।'

‘मैं जानता हूँ कि लिखते समय मैं अपनी घोर निराशा के एक सबसे बड़े कारण से बच रहा हूँ; लेकिन, हे भगवान, महोदय, इसका ज़िक्र करना मेरे लिए लगभग असहनीय है!’ इसके बाद इस विषय से संबंधित कई संदर्भ आते हैं, जिनसे पाठक पहले से ही परिचित हैं, इसलिए उन्हें यहाँ दोहराना अनावश्यक है। फिर ब्रैनवेल आगे लिखते हैं:

‘जीवित किसी भी व्यक्ति से मैंने वह बात नहीं कही जो मैं अब आपसे कह रहा हूँ, और मैं आपको अपने अटपटे विवरण से परेशान नहीं करता, यदि मुझे यह विश्वास न होता कि आप मेरी बात का कुछ अंश समझ पाएंगे—हालांकि पूरा नहीं, महोदय; क्योंकि जो निराश है और जानता है कि उसकी घड़ी में रात के बारह बज रहे हैं, वह

अपने भावों को उस व्यक्ति तक नहीं पहुंचा सकता जिसकी घड़ी में दोपहर के बारह बज रहे हैं।’

अध्याय X.

ब्रैनवेल ब्रोंटे और 'वुथरिंग हाइट्स।'

‘वुथरिंग हाइट्स’ — जनता द्वारा पुस्तक की स्वीकृति — इसे गलत समझा गया — इसके लेखक — श्री डियर्डन का विवरण — श्री एडवर्ड स्लोएन और श्री ग्रंडी के कथन — श्री टी. वेमिस रीड की टिप्पणियाँ — ‘वुथरिंग हाइट्स’ और ब्रैनवेल के पत्रों के बीच पत्राचार — ‘नक्काशी-चाकू प्रकरण’ — आगे के पत्राचार — ब्रैनवेल और एमिली के विचारों में समानताएँ।

अब हम ब्रैनवेल के करियर की प्रमुख विशेषताओं से परिचित हो चुके हैं, उनके चरित्र की कुछ झलक प्राप्त कर चुके हैं और उनकी प्रतिभा के बारे में बहुत कुछ जान चुके हैं। हमने ब्रोंटे बहनों के जीवन के उस सबसे महत्वपूर्ण दौर के इतिहास के बारे में भी कुछ जानकारी हासिल की है, जब वे नए उत्साह के साथ साहित्य में लौटीं और इसी उत्साह ने उन्हें प्रसिद्धि दिलाई।

हमने देखा है कि उपन्यास लेखन का गंभीर प्रयास सबसे पहले ब्रैनवेल ने ही किया था, और हमने श्री ग्रंडी के ‘वुथरिंग हाइट्स’ के लेखकत्व संबंधी कथन पर भी ध्यान दिया है। इसलिए, इस प्रश्न पर कुछ कहना उचित होगा; क्योंकि कई अन्य लोगों ने भी यह दावा किया है कि ब्रैनवेल ही इसके मुख्य लेखक थे। मिस रॉबिन्सन ने अपनी पुस्तक ‘एमिली ब्रोंटे’ में इस दावे को पूरी तरह असत्य बताया है; लेकिन वे सही

कहती हैं, जैसा कि सभी सहमत होंगे, कि 'जो लोग इन झूठे दावों को जानते हैं, उनकी तिरस्कारपूर्ण चुप्पी में ऐसे दुष्परिणाम गिरी हुई चट्टानों के नीचे छिपे गंदे कीड़ों की तरह पनपते और बढ़ते हैं।' इसलिए, इस विषय पर जो कुछ कहा गया है, उसे यथासंभव स्पष्ट और संक्षिप्त रूप से दर्ज करना और सच्चाई के बारे में एक सुझाव देना अनुचित नहीं होगा।

जब 'वुथरिंग हाइट्स' प्रकाशन प्रक्रिया में धीमी गति से आगे बढ़ने के बाद दिसंबर 1847 में दुनिया के सामने आई, तो न तो आलोचक और न ही आम जनता इसके अर्थ को पूरी तरह समझ पाई। शार्लोट ब्रोंटे के शब्दों में, समीक्षक अक्सर हमें "दीवार पर लिखे" के सामने जमा हुए ज्योतिषियों, चाल्डियनों और भविष्यवक्ताओं की भीड़ की याद दिलाते हैं, जो न तो अक्षरों को पढ़ पाते हैं और न ही उनकी व्याख्या कर पाते हैं। 'वुथरिंग हाइट्स' में उन्हें विषय अरुचिकर, पात्र क्रूर, अवधारणा अपरिष्कृत और रचना का उद्देश्य पूरी तरह समझ से परे लगा। इसका जो सबसे सटीक निष्कर्ष निकाला जा सकता था, वह यह था कि उत्तरी इंग्लैंड में किसी अशिष्ट व्यक्ति ने, अपनी ही जाति के प्रति घृणा से जलते हुए, लगभग शैतानी इरादे से स्वार्थ और अपराध की सबसे घिनौनी गहराइयों को उजागर करने का निश्चय किया था। उसने इन गहराइयों को ऐसे विकृत और घृणित पात्रों के कार्यों में पिरोया था कि उसके द्वारा रची गई इस भयावह रचना को पढ़कर मन कांप उठता था। एक आलोचक ने, जिसने पुस्तक में 'स्वर' और परिष्करण की कमी पर विस्तार से चर्चा की, अनुमान लगाया कि इसके लेखक को 'प्रेम में निराशा नहीं, बल्कि अहंकार का गहरा आघात' लगा था, जिसने उसकी आत्मा को इतना कड़वा कर दिया था कि उसने अपनी ही जाति से बदला लेने के लिए यह चुभने वाली कहानी लिखी और इसे 'लो, ले लो!' चिल्लाते हुए मानवता के मुंह पर फेंक दिया।

इस लेखक ने तो युवाओं को इस पुस्तक के प्रति आगाह करना अपना कर्तव्य समझा। उनका कहना है, 'इसे सभ्य समाज से बहिष्कृत कर देना चाहिए। पुस्तक का पूरा लहजा ही नीचता से भरा है।' — 'कोई व्यक्ति विवेकहीनता या असंस्कृति के अभाव में या जानबूझकर असभ्य हो सकता है; 'वुथरिंग हाइट्स' के लेखक दोनों ही हैं।' — 'लेकिन हमारे लेखक में अश्लीलता का दाग मात्र दिखावे से कहीं अधिक गहरा है; वह असभ्य इसलिए हैं क्योंकि उन्हें ऐसा ही रहना पसंद है।' मैं इन टिप्पणियों को एक चरम उदाहरण के रूप में उद्धृत कर रहा हूँ, यह दिखाने के लिए कि

एक आलोचक, जो 'वुथरिंग हाइट्स' की महान कल्पना शक्ति, सूक्ष्मता, गहरी अंतर्दृष्टि और उत्कृष्ट नाटकीयता को पहचान सकता था, फिर भी इसके अज्ञात लेखक के प्रति इतनी तीव्र घृणा महसूस करता था कि उसे अपने साथियों के साथ रहने के अयोग्य समझता था। उस समय के आलोचकों के मन में यह बात कभी नहीं आई कि यह पुस्तक किसी ऐसे व्यक्ति के अलावा किसी और द्वारा लिखी जा सकती है जिसका व्यक्तिगत चरित्र मजबूत हो और जिसे मानव स्वभाव के अंधकारमय पक्ष का व्यापक अनुभव हो।

हालाँकि, यह धारणा शीघ्र ही फैल गई कि 'वुथरिंग हाइट्स' 'जेन आयर' की लेखिका की एक प्रारंभिक और अपरिपक्व रचना थी, जिसे जनता पर थोपने का प्रयास किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप उन पर कुकर्म का आरोप लगाया गया; और यहाँ तक कि सिडनी डोबेल (सितंबर 1850 के 'पैलेडियम' में), पहले आलोचक जिन्होंने प्रतिभा के प्रति पर्याप्त सहानुभूति रखते हुए पुस्तक की प्रकृति को समझा और उसके महत्व को ग्रहण किया, भी इस त्रुटि से बच नहीं पाए। इस गलतफहमी के दुर्भाग्यपूर्ण परिणामों को यहाँ दोहराने की आवश्यकता नहीं है, जिसके कारण शार्लोट को अंततः अपना भेष उतारना पड़ा और खुले तौर पर घोषणा करनी पड़ी कि 'वुथरिंग हाइट्स' उनकी बहन एमिली की रचना थी। 'अन्यायपूर्ण और गंभीर त्रुटि!' शार्लोट कहती हैं। 'पहले तो हम इस पर हँसे, लेकिन अब मुझे इस पर गहरा अफसोस है।' उनके इस कथन के बाद, लेखकत्व पर आगे की टिप्पणी स्वाभाविक रूप से बंद हो गई; लेकिन, समय-समय पर, जब पुस्तक पर चर्चा होती थी, तो इस बात पर काफी आश्चर्य व्यक्त किया जाता था कि एमिली ब्रोंटे जैसी एक सरल और अनुभवहीन लड़की, इतने नर्वस और रुग्ण विश्लेषण के साथ, उन भावनाओं की कार्यप्रणाली का इतना गंभीर चित्र कैसे बना सकती थी जिन्हें वह वास्तव में कभी जान नहीं सकती थी, और हीथक्लिफ और हिंडले अर्नशॉ जैसे 'इतने निर्दयी और अटल स्वभाव, इतनी खोई हुई और पतित आत्माओं' का चित्रण कैसे कर सकती थी।

कॉर्नहिल मैगज़ीन के एक लेखक ने एमिली ब्रोंटे को यह विशिष्टता प्रदान की है कि उन्होंने एक ऐसी पुस्तक लिखी है जो भाषा में उतनी ही अनूठी है जितनी कि "पैराडाइज़ लॉस्ट" या "पिलग्रिम्स प्रोग्रेस"। वे इसके बारे में इस प्रकार लिखते हैं: "इसकी शक्ति बिल्कुल विशाल है; पहले पृष्ठ से लेकर अंतिम पृष्ठ तक यह किसी दैत्य के बौद्धिक संघर्ष की तरह लगती है। यह भयावह है, यह सच है, और शायद अब तक

लिखी गई सबसे अप्रिय पुस्तकों में से एक है: लेकिन हम इस लगभग अविश्वसनीय तथ्य पर आश्चर्यचकित रह जाते हैं कि इसे एक दुबली-पतली देहाती लड़की ने लिखा था, जो भीड़ में एक महत्वहीन व्यक्ति के रूप में पहचानी जाती, और जिसे दुनियादारी का बहुत कम या बिल्कुल भी अनुभव नहीं था। हीथक्लिफ में, एमिली ब्रोंटे ने इयागो के बाद सबसे बड़े खलनायक का चित्रण किया है। शेक्सपियर में भी उसका कोई मुकाबला नहीं है। गोएथे के "फाउस्ट" का मेफिस्टोफेल्स हीथक्लिफ की तुलना में एक सज्जन व्यक्ति है..." लेकिन “वुथरिंग हाइट्स” साहित्य में एक अद्भुत कृति है। हम दुनिया को चुनौती देते हैं कि वह ऐसी कोई और रचना प्रस्तुत करे जिसमें पूरा वातावरण दमित ऊर्जा से इतना भरा हुआ प्रतीत हो, और जो आंधी और वीरानगी के अंधकार से बंधी हो।

शायद 'वुथरिंग हाइट्स' की यही भयावह और विशाल शक्ति एक कारण है कि कई पाठक इसे पूरी तरह से समझ नहीं पाते हैं। श्री स्विनबर्न कहते हैं, 'संभवतः, एमिली ब्रोंटे की पुस्तक का पूरा आनंद लेने के लिए, किसी के पास उनकी सहज प्रवृत्ति का स्वाभाविक अंश होना चाहिए, और पृथ्वी के विशेष बिंदुओं के प्रति उनके प्रेम का पूर्व अनुभव होना चाहिए - वही प्रकाश, ध्वनियाँ, रंग, गंध, दृश्य और आकृतियाँ, जो उसी निर्जन, मुक्त, बंजर और बाड़विहीन बंजर भूमि के हैं।'

लेकिन ‘वुथरिंग हाइट्स’ की रचना काफी हद तक शार्लोट के लिए भी समझ से परे थी, हालांकि वह अपनी बहन के चरित्र और परिस्थितियों पर विचार करके इसका स्पष्टीकरण देने का प्रयास करती हैं। जैसा कि हमने देखा है, वह कहती हैं, ‘मैं यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हूं कि उसे उन किसानों के बारे में व्यावहारिक ज्ञान उतना ही था जितना कि एक नन को उन ग्रामीण लोगों के बारे में होता है जो कभी-कभी उसके मठ के द्वार से गुजरते हैं।’

“वुथरिंग हाइट्स,” शार्लोट ब्रोंटे के नए संस्करण की प्रस्तावना के शब्दों में, एक जंगली कार्यशाला में साधारण औजारों और घरेलू सामग्रियों से गढ़ा गया था। मूर्तिकार को एक सुनसान मैदान में ग्रेनाइट का एक बड़ा पत्थर मिला; उस पर नज़र गड़ाए हुए, उसने देखा कि कैसे उस चट्टान से एक क्रूर, काले, भयावह सिर को उभारा जा सकता है; एक ऐसा रूप जिसमें भव्यता का कम से कम एक तत्व - शक्ति - समाहित है। उसने एक साधारण छेनी से काम किया, किसी मॉडल से नहीं बल्कि अपने चिंतन की कल्पना से। समय और परिश्रम से, चट्टान ने मानव रूप धारण कर लिया; और वह

वहाँ विशाल, काली और क्रोधित मुद्रा में खड़ी है, आधी मूर्ति, आधा पत्थर: पहले अर्थ में, भयानक और भूतिया; दूसरे अर्थ में, लगभग सुंदर, क्योंकि इसका रंग हल्का भूरा है, और उस पर दलदली भूमि की काई चढ़ी हुई है; और खिलते फूलों और मनमोहक सुगंध के साथ हीथ विशालकाय के पैरों के पास निष्ठापूर्वक उगता है।

कई साल पहले, 'पीपल्स मैगज़ीन' के एक लेखक ने 'वुथरिंग हाइट्स' के लेखकत्व के बारे में लिखते हुए कहा था: 'कौन सोच सकता है कि हीथक्लिफ, एक ऐसा व्यक्ति जो अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक विनाश के अपने सीधे मार्ग से कभी नहीं भटका, ... एक डरपोक और एकांतप्रिय महिला की संतान था? लेकिन यही सच था।' इस वाक्य को पढ़ने के बाद, 'स्टार सीयर' और 'मेड ऑफ कैल्डीन' के लेखक श्री विलियम डियर्डन, जो ब्रैनवेल ब्रोंटे से परिचित थे, ने जून 1867 में 'हैलिफ़ैक्स गार्जियन' को इस प्रश्न से संबंधित कुछ तथ्य भेजे, जो उनके व्यक्तिगत ज्ञान में थे और उन्होंने अपनी कविता 'द डेमन क्वीन' की पांडुलिपि प्रस्तावना से लिए थे, जो उस समय प्रकाशित नहीं हुई थी।

इस विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रैनवेल और श्री डियर्डन के बीच एक सौहार्दपूर्ण काव्य प्रतियोगिता हुई थी। दोनों को एक ऐसी कविता लिखनी थी जिसमें मुख्य पात्र का प्रलय से पहले वास्तविक या काल्पनिक अस्तित्व हो। इस अवसर पर वे हॉवर्थ से एक मील से कुछ अधिक दूरी पर स्थित कीघली जाने वाली सड़क पर 'क्रॉस रोड्स' नामक एक छात्रावास में मिले, जहाँ उन्होंने अपनी-अपनी रचनाओं को पढ़कर एक शाम बिताई। लेलैंड को कविताओं की गुणवत्ता का निर्धारण करना था। इस मुलाकात के संदर्भ में श्री डियर्डन कहते हैं,

हम तय समय और स्थान पर मिले... मैंने "डेमन क्वीन" का पहला अंक पढ़ा; लेकिन जब ब्रैनवेल ने अपनी टोपी में हाथ डाला—जो आमतौर पर उसके बिखरे हुए कागजों का भंडार होती थी—जहाँ उसने अपनी पांडुलिपि कविता रखी थी, तो उसने पाया कि उसने गलती से वहाँ एक उपन्यास के कुछ पन्ने रख दिए थे, जिस पर वह अपना "शुरुआती हाथ" आज़मा रहा था। अपनी गलती से हुई निराशा से दुखी होकर, वह कागज़ों को अपनी टोपी में वापस रखने ही वाला था, तभी दोनों दोस्तों ने उससे उन्हें पढ़ने का आग्रह किया, क्योंकि वे यह देखने के लिए उत्सुक थे कि वह एक उपन्यासकार की कलम कैसे चला सकता है। कुछ झिझक के बाद, उसने अनुरोध मान लिया और लगभग एक घंटे तक हमारा ध्यान अपनी ओर खींचे रखा, हर पन्ने को

पढ़ने के बाद अपनी टोपी में डालता गया। कहानी एक वाक्य के बीच में अचानक रुक गई, और उसने हमें उसका अगला भाग मौखिक रूप से सुनाया, साथ ही अपने पात्रों के मूल नामों के साथ; लेकिन, चूंकि इनमें से कुछ पात्र अभी भी जीवित हैं, इसलिए मैं उनके नाम सार्वजनिक रूप से नहीं बता रहा हूँ। उन्होंने कहा कि उन्होंने अभी तक अपनी रचना का शीर्षक तय नहीं किया है, और उन्हें डर है कि शायद उन्हें कभी कोई ऐसा प्रकाशक न मिले जो इसे प्रकाशित करने का साहस करे। ब्रैनवेल द्वारा पढ़े गए अंश का दृश्य और उसमें प्रस्तुत पात्र—जितना विकसित हुए थे—वही थे जो "वुथरिंग हाइट्स" में थे, जिसे शार्लोट ब्रोंटे ने विश्वासपूर्वक अपनी बहन एमिली की रचना बताया था।

ब्रैनवेल ब्रोंटे के एक अन्य मित्र, हैलिफ़ैक्स के श्री एडवर्ड स्लोएन, जिन्होंने 'निबंध, कहानियां और रेखाचित्र' (1849) नामक कृति लिखी थी, ने श्री डियर्डन को बताया कि ब्रैनवेल ने उन्हें उपन्यास का अंश-अंश करके पढ़कर सुनाया था, जैसा कि उस समय वह तैयार हो रहा था, इतना कि प्रकाशित होने पर 'वुथरिंग हाइट्स' को पढ़ते ही वे उसमें वर्णित पात्रों और घटनाओं का पूर्वाभास करने में सक्षम हो गए थे। इस प्रकार श्री डियर्डन और दिवंगत श्री स्लोएन ने दावा किया कि उन्हें ब्रैनवेल की कृति 'वुथरिंग हाइट्स' के बारे में प्रकाशन से पहले ही जानकारी थी। और हमने देखा है कि श्री ग्रुंडी का कहना है कि ब्रैनवेल ने अपनी बहन की सहमति से कहा था कि उन्होंने "वुथरिंग हाइट्स" का एक बड़ा हिस्सा स्वयं लिखा था, एक ऐसा बयान जो, लडेनडेन फुट में ब्रैनवेल द्वारा उन्हें सुनाई गई "बीमार प्रतिभा की विचित्र कल्पनाओं" को याद करते हुए, श्री ग्रुंडी को यह मानने के लिए प्रेरित करता है कि "कहानी स्वयं उनकी बहन की नहीं बल्कि उनकी अपनी ही थी।"

मूल लेखक के रूप में इस कृति के श्रेय का प्रमाण अत्यंत सरल है। शार्लोट ब्रोंटे ने जीवनी संबंधी सूचना और 'वुथरिंग हाइट्स' की प्रस्तावना में स्पष्ट रूप से कहा है कि यह पुस्तक एलिस बेल की रचना थी; और उस समय उनके मन में इस कथन की सत्यता को लेकर कोई संदेह नहीं था; न ही पुस्तक के प्रकाशक को इस बारे में कोई शंका थी। इसके अलावा, कहा जाता है कि नौकरानी मार्था ने एमिली ब्रोंटे को इसे लिखते हुए देखा था। हमें यह भी बताया जाता है कि यह असंभव है कि सौम्य स्वभाव वाली एमिली जैसी नेक आत्मा किसी अन्य की रचना पर अपना अधिकार जताने जैसा घिनौना धोखा कर सकती थी। अंत में, आधुनिक आलोचकों को यह मानने में कोई

कठिनाई नहीं हुई कि 'वुथरिंग हाइट्स' की लेखिका एक महिला हो सकती है। उन्हें इस बात में कोई असंगतता या असंभवता नहीं दिखती कि एक स्त्री की बुद्धि उस पुस्तक में विकसित भयावह प्रवृत्तियों का इतना गहन ज्ञान रखती है, और न ही उस पुस्तक के नैतिक विकृति की उन अराजक गहराइयों तक उतरने में, जहाँ हिंडले अर्नशॉ के लिए घृणित ईशनिंदा के साथ अपनी आत्मा को शाप देना संभव है, ताकि वह 'अपने निर्माता को दंडित' कर सके, और जहाँ हीथक्लिफ का जीवन भर का प्रतिशोध अद्भुत शक्ति के साथ अपने भयावह और निष्प्रभावी अंत तक पहुँचता है।

शार्लोट का कथन इस तथ्य से कितना कमजोर हो जाता है कि जब तक उसे कविता संग्रह नहीं मिला और तीनों बहनों ने अपने उपन्यास लिखना शुरू नहीं किया (याद रहे, इसी दौरान ब्रैनवेल की रचनाओं का एक खंड लिखा गया था) तब तक उन्होंने एक-दूसरे को अपनी-अपनी साहित्यिक रचनाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं दी थी, यह शायद व्यक्तिगत राय का विषय है। मार्था का कथन शायद ही कोई मायने रखता, जब तक हमें यह पता न हो कि एमिली जो लिख रही थी वह ब्रैनवेल की रचनाओं से पूरी तरह स्वतंत्र थी। और फिर, एलिस बेल का धोखाधड़ी के आरोप से बचाव करने वालों ने शायद जल्दबाजी की है; क्योंकि जहाँ तक मुझे पता है, ऐसा आरोप न तो कभी लगाया गया है और न ही इसका संकेत दिया गया है।

ब्रैनवेल की ‘वुथरिंग हाइट्स’ लिखने की क्षमता के बारे में यहाँ ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है। जो लोग इस पुस्तक को पढ़ेंगे, वे देखेंगे कि अपनी कमजोरियों और गलतियों के बावजूद, ब्रैनवेल वास्तव में दुर्भाग्यशाली थे कि उन्हें लगातार खुलेआम इस बात की आलोचना झेलनी पड़ी कि ‘उन बुराइयों का बोलबाला है जो उनमें नहीं थीं’, और इसके अलावा, उनकी स्मृति धूमिल हो गई है और उनके कार्यों को कई लेखकों ने गलत तरीके से पेश किया है, जिन्होंने उनकी बहनों की रचनाओं के सबसे अंधकारमय अंशों का स्रोत उनके चरित्र में खोजने का प्रयास किया है।

जैसा कि हमें बताया गया है कि वह पूरी तरह से 'दुखी व्यक्ति', 'सिद्धांतहीन स्वप्नद्रष्टा', 'बेचैन और बातूनी फिजूलखर्ची करने वाला' था, उससे कहीं दूर, वास्तव में, उसके भीतर प्रचुर मात्रा में योग्य महत्वाकांक्षा, अपनी क्षमताओं पर विनम्र विश्वास था, जिसका उसने कभी बखान नहीं किया, और अपने परिवार की प्रसिद्धि पर उचित गर्व था, जिसके बारे में यह उम्मीद की जा सकती है कि यह कम से कम उसे किसी भी अच्छे या प्रभावशाली कार्य करने की नैतिक क्षमता की कमी के आरोप से मुक्त

कर देगा।

ब्रैनवेल ब्रोंटे के मुख से निकली उन सभी विचित्र कहानियों, विचित्र कल्पनाओं और वेस्ट-राइडिंग के लोगों के जीवन पर किए गए जीवंत और शानदार विवेचनों को सुनने वाले - और अब ऐसे लोग बहुत कम हैं - यह पहचान लेंगे कि उनके विचारों की प्रवृत्ति और 'वुथरिंग हाइट्स' के लेखक के विचारों की प्रवृत्ति में कम से कम कोई विरोध नहीं, बल्कि समानता थी। और, कहानी के विशेष बिंदुओं के बारे में, यह कहा जा सकता है कि ब्रैनवेल ब्रोंटे ने वहां चित्रित अधिकांश जुनून, कमजोरियों और भावनाओं का अनुभव किया था; उन्होंने उन्मादी भ्रम में, हीथक्लिफ की तरह ही तीव्र प्रेम किया था; हिंडले अर्नशॉ की तरह ही, हानि के दर्द में, 'जब उनका जहाज डूब गया; कप्तान ने अपना पद छोड़ दिया; और चालक दल ने उसे बचाने की कोशिश करने के बजाय, दंगा और अराजकता में भाग लिया, जिससे उनके दुर्भाग्यपूर्ण जहाज के लिए कोई उम्मीद नहीं बची।' उन्होंने वास्तव में 'हाइट्स' के अभागे स्वामी की आसक्तिपूर्ण मूर्खता को भी बहुत हद तक प्रकट किया था; और अंत में, इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनमें हीथक्लिफ के समान ही चरित्र की दृढ़ता, संकल्प और ऊर्जा थी।

श्री टी. वेमिस रीड के व्याख्यान का निम्नलिखित अंश उस सज्जन के मत को दर्शाता है - जिसका उपयोग वे यह साबित करने के लिए करते हैं कि ब्रैनवेल आंशिक रूप से अपनी बहन की रचना का विषय थीं - कि इस पुस्तक में हीथक्लिफ और ब्रैनवेल की भावनाओं और कथनों में एक स्पष्ट समानता है, जिसे, जैसा कि वे कहते हैं, आलोचकों ने बार-बार एक अफीम खाने वाले के सपने के समान बताया है, जो कि हमने देखा है कि ब्रैनवेल थीं। श्री रीड कहते हैं: 'मैंने कहा था कि शायद "वुथरिंग हाइट्स" का सबसे प्रभावशाली भाग वह है जो हीथक्लिफ और कैथरीन के संबंधों से संबंधित है, जब वह किसी और की पत्नी बन चुकी थी। कहानी के पूरे पृष्ठ खलनायक के उस व्यक्ति के प्रति क्रोध और आक्रोश से भरे हुए हैं जिसका जीवन उसके और उसकी प्रेमिका के बीच खड़ा है। इसी तरह के क्रोध ब्रैनवेल ब्रोंटे द्वारा अपने करियर के इस दौर में लिखे गए सभी पत्रों में पाए जाते हैं; और हम यकीन कर सकते हैं कि इसी तरह की बड़बड़ाहट हमेशा उसके होठों पर रहती थी, जब वह उदास और लगभग पागल होकर हॉवर्थ के पादरी के घर के कमरों में घूमता रहता था। बल्कि, मुझे ब्रैनवेल की अपनी भाषा और "वुथरिंग हाइट्स" के अंशों के बीच कुछ आश्चर्यजनक शाब्दिक

समानताएं मिली हैं। उसके अपने ही एक पत्र में, उसकी प्रेमिका के संदर्भ में ये शब्द हैं: "उसके बिना मेरा जीवन नरक होगा। उसके बेचारे, बीमार पति का तथाकथित प्यार उसके लिए मेरे प्यार के मुकाबले क्या मायने रखता है?" अब, "वुथरिंग हाइट्स" खोलें, और आपको ये शब्द मिलेंगे: "दो शब्द मेरे भविष्य को बयां कर सकते हैं - मृत्यु और नरक: उसे खोने के बाद का जीवन नरक होगा। फिर भी मैं एक पल के लिए भी यह सोचने में मूर्ख था कि वह एडगर लिंटन के लगाव को मेरे लगाव से ज्यादा महत्व देती है। अगर वह अपने तुच्छ अस्तित्व की पूरी शक्ति से प्यार करता, तो भी वह अस्सी वर्षों में उतना प्यार नहीं कर सकता जितना मैं एक दिन में कर सकता हूँ।"

यदि श्री रीड ने इस अनुच्छेद की शुरुआत उद्धृत की होती, तो इसमें व्यक्त भावनाओं और ब्रैनवेल ब्रोंटे को प्रेरित करने वाली भावनाओं के बीच एक और समानता दिखाई देती। हीथक्लिफ बोल रहे हैं: "'तुम्हें लगता है कि वह मुझे लगभग भूल चुकी है?' उसने कहा। 'अरे, नेली! तुम जानती हो कि वह नहीं भूली है! तुम भी उतना ही जानती हो जितना मैं जानता हूँ, कि लिंटन के बारे में वह जितना सोचती है, उससे हज़ार गुना ज़्यादा मेरे बारे में सोचती है! मेरे जीवन के सबसे दुखद दौर में, मेरे मन में ऐसा ही एक विचार आया था: पिछली गर्मियों में पड़ोस में लौटने पर यह विचार मुझे सताता रहा; लेकिन केवल उसके आश्वासन से ही मैं उस भयानक विचार को फिर से स्वीकार कर पाया। और फिर, लिंटन कुछ भी नहीं रह जाता, न हिंडले, न ही मेरे सारे सपने!"

हमने देखा है कि 1845 की गर्मियों में, ब्रैनवेल ने अपनी नौकरी खो दी और हॉवर्थ के पड़ोस में लौट आए, और अपने जीवन के उस सबसे दुखद दौर में, जब उन्होंने अपना उपन्यास, 'रियल रेस्ट' और 'पेनमैनमावर' लिखा था, तब उन्हें भी यह आभास हुआ था कि उनकी प्रेमिका उन्हें लगभग भूल चुकी है।

यह देखा जा सकता है कि कैथरीन अर्नशॉ, पुस्तक के पूर्वार्ध में, श्री रीड द्वारा उद्धृत विरोधाभास के समान ही एक विरोधाभास का प्रयोग करती हैं। हीथक्लिफ और स्वयं के बारे में बात करते हुए वह कहती हैं, 'हमारी आत्माएँ चाहे जिस भी चीज़ से बनी हों, उसकी और मेरी एक समान हैं; और लिंटन की आत्मा चाँदनी और बिजली, या पाले और आग की तरह भिन्न है।' यद्यपि यह पूरी तरह से सटीक नहीं है कि इस अवधि के ब्रैनवेल के सभी पत्रों में इसी प्रकार के उद्गार हैं, या उनके मुख पर हमेशा ऐसे ही उद्गार रहते थे, फिर भी उनके पत्रों और कविताओं में 'वुथरिंग हाइट्स' की कुछ विशेषताओं

और अंशों के साथ विचार और अभिव्यक्ति की अन्य समानताएँ पाई जाती हैं, जो कम उल्लेखनीय नहीं हैं। कुछ उदाहरण उस रचना में बहुत कुछ स्पष्ट करेंगे, जिस पर विश्वास करना आसान नहीं है कि लेखक ने इसे किसी अन्य व्यक्ति के कथनों से हूबहू लिखा होगा। जॉन ब्राउन को लिखे उनके पत्र में ही हम देख सकते हैं कि ब्रैनवेल जब चाहें कितनी शक्ति से अपने विचारों को व्यक्त कर सकते थे। उस पत्र में वह एक ऐसे व्यक्ति की बात करता है जिसे 'नरक के चिमटे की तरह इस्तेमाल किया जाएगा' और दूसरे की 'जिसकी आँखों से शैतान खिड़कियों की तरह झाँकता है'। आइए उपन्यास के अध्याय 7 में हीथक्लिफ की आँखों के वर्णन पर ध्यान दें, जहाँ उन्हें 'काले शैतानों की वह जोड़ी, जो इतनी गहराई में दबी हुई हैं, जो कभी भी अपनी खिड़कियाँ साहसपूर्वक नहीं खोलतीं, बल्कि शैतान के जासूसों की तरह उनके नीचे छुपी हुई चमकती रहती हैं' और अध्याय 17 में, जहाँ इसाबेला हीथक्लिफ उनके बारे में कहती हैं: 'नरक की धुंधली खिड़कियाँ एक पल के लिए मेरी ओर चमकीं; हालाँकि, जो शैतान आमतौर पर बाहर देखता था, वह इतना धुंधला और डूबा हुआ था कि मुझे उपहास की एक और आवाज़ निकालने से डर नहीं लगा।'

हमने देखा है कि ब्रैनवेल अपने उपन्यास पर लिखे पत्र के अंत में 'कास्टअवे' शब्द का किस प्रकार प्रयोग करते हैं। शार्लोट ने कहा है कि उन सभी का झुकाव कूपर की कविता 'द कास्टअवे' की ओर था और उन्होंने किसी न किसी रूप में इसका उपयोग किया था; उन्होंने श्रीमती गैस्केल को बताया कि ब्रैनवेल ने ऐसा किया था। 'वुथरिंग हाइट्स' में इस शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है। हीथक्लिफ को 'एक छोटा लास्कर, या एक अमेरिकी या स्पेनिश कास्टअवे' बताया गया है, और छोटी कैथरीन धर्मनिष्ठ जोसेफ को संबोधित करते हुए, विचित्र रूप से और संयोगवश, ब्रैनवेल के पत्र में किए गए संकेत को याद करते हुए, इन शब्दों में कहती है: 'नहीं, दुष्ट! तुम एक कास्टअवे हो - चले जाओ, वरना मैं तुम्हें बुरी तरह चोट पहुँचाऊँगी! मैं तुम्हारी मोम और मिट्टी की मूर्तियाँ बनवाऊँगी।'

'वुथरिंग हाइट्स' में 'लिंटन' और 'हेयरटन' नामों के उल्लेख के संदर्भ में यह भी उल्लेख किया जा सकता है कि अपने उपन्यास के लेखन से कुछ समय पहले, ब्रैनवेल अक्सर पहले नाम के एक स्थान पर जाया करते थे, और जैसा कि हमने देखा है, जब वह ब्रॉटन-इन-फर्नेस में थे, तब उनका आयर्टन नाम का एक मित्र था।

अपने उपन्यास पर लिखे उपरोक्त पत्र में, ब्रैनवेल ने अपने काम के स्वरूप के बारे

में बात करते हुए कहा है कि वे काल्पनिक साहित्य की वर्तमान नीरसता से निकलकर स्मोलेट या फील्डिंग जैसे प्रतिष्ठित लेखकों की श्रेणी में आने की आशा रखते हैं, और 'हैमलेट' या 'लियर' की तरह ही मनुष्य के हृदय को सत्यनिष्ठा से प्रकट करने की बात करते हैं। 'वुथरिंग हाइट्स' के पहले चार अध्याय, जो कहानी के अधिक गंभीर हिस्सों की प्रस्तावना का काम करते हैं, हमें उस फार्म के निवासियों से परिचित कराते हैं जिसके नाम पर उपन्यास का नाम रखा गया है। हीथक्लिफ के थ्रशक्रॉस ग्रेंज को किराए पर लेकर वहाँ रहने आए श्री लॉकवुड, 'हाइट्स' में अपने मकान मालिक से की गई अपनी दो मुलाकातों का अनुभव साझा करते हैं। कहानी के इस हिस्से के उत्कृष्ट हास्य में हमें निश्चित रूप से ब्रैनवेल ब्रोंटे की, और शायद स्मोलेट और फील्डिंग की भी याद आती है। अगले अध्याय गृहस्वामी के वर्णन के अनुरूप अधिक संयमित शैली में वर्णित हैं। 'वुथरिंग हाइट्स' में 'किंग लियर' का केवल एक बार उल्लेख है, इन यात्राओं में से दूसरी यात्रा के दौरान, जब अंततः, मिस्टर लॉकवुड, कुत्तों द्वारा गिराए जाने के बाद, 'हाइट्स' के निवासियों को संबोधित करते हैं, 'प्रतिशोध की कई असंगत धमकियों के साथ, जो अपनी असीम कटुता में 'किंग लियर' की याद दिलाती हैं।' इस कहानी और शेक्सपियर की महान त्रासदी का कई बार एक दूसरे से संबंध बताया गया है, और मिस रॉबिन्सन, ब्रैनवेल की अपनी गद्य कहानी पर की गई टिप्पणी से अनभिज्ञ होकर, 'वुथरिंग हाइट्स' को 'किंग लियर' के साथ दूसरा स्थान देती हैं।

‘वुथरिंग हाइट्स’ को पढ़े बिना तपेदिक और मृत्यु की कहानी में निभाई गई भूमिका से प्रभावित हुए बिना रहना असंभव है। शायद ही कोई ऐसा पात्र हो जिसमें हमें तपेदिक का कोई लक्षण, कोई कमजोरी, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, न दिखाई दे; और लेखक के सटीक अवलोकन के प्रमाण तपेदिक की शक्ति के चित्रण में मिलते हैं। ब्रैनवेल की ‘कैरोलीन’ पर लिखी कविता में हम पहले ही देख चुके हैं कि उन्होंने कितनी कुशलता से उस बीमारी से उसकी मृत्यु का चित्रण किया है; और कितनी गहराई से, और लगभग रुग्णता से, उन्होंने इसके विनाशकारी प्रभावों पर विचार किया है; और उनकी बाद की कविताओं में से एक में हमें पतन का एक दूसरा और अधिक मार्मिक चित्रण मिलता है। एमिली की कविता में इस प्रकार का कुछ भी नहीं है; और सच तो यह है कि 'वुथरिंग हाइट्स' के लेखक को खोजते समय हमें वही बात हैरान करती है जो हमें ब्रैनवेल की कविताओं में नहीं मिलती, बल्कि उनकी कविताओं में कहीं अधिक। ब्रैनवेल अपनी रचनाओं में अक्सर वास्तविक और व्यक्तिगत रुचि के

विषयों पर लिखते हैं, और उनकी रचना की रूपरेखा स्पष्ट है। उनकी कई कविताएँ, एक बार पढ़ने के बाद, स्मृति पर ऐसी छाप छोड़ती हैं जो उनकी शक्ति और मौलिकता का पर्याप्त प्रमाण है। एमिली की अधिकांश कविताएँ व्यक्तिगत भावनाओं से रहित, कल्पनाशील और आदर्शवादी हैं।

यह याद किया जा सकता है कि श्री ग्रुंडी ने अपनी पुस्तक 'पिक्चर्स ऑफ द पास्ट' में ब्रैनवेल के साथ अपनी अंतिम मुलाकात का वर्णन किया है, जिसके बारे में उनका दावा है कि यह ब्रैनवेल की मृत्यु से कुछ ही दिन पहले हुई थी। मैंने निर्णायक रूप से यह सिद्ध कर दिया है कि श्री ग्रुंडी और उनके बाद सुश्री रॉबिन्सन द्वारा इस मुलाकात की तारीख गलत बताई गई है, और वास्तव में यह 1846 में हुई थी, जब पांडुलिपि अभी भी लेखक के पास थी, शायद उस समय उसमें संशोधन चल रहा था। ब्रैनवेल ने अपने मित्र के अनुसार, उस अवसर पर अपनी कोट की आस्तीन में एक नक्काशीदार चाकू छिपा रखा था, जिससे वह उन्माद में शैतान को मारना चाहता था, जिसकी पुकार ने, उसके अनुसार, उसे सराय में बुलाया था; और वह वहाँ श्री ग्रुंडी को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। मैंने अनुमान लगाया है कि जब यह विचित्र घटना घटी, तो ब्रैनवेल अपने मित्र के साथ केवल मजाक कर रहा था, जिसने आश्चर्य में आकर उसे पूरी तरह से गंभीरता से ले लिया था। और, यह याद करते हुए कि श्री ग्रुंडी कहते हैं कि ब्रैनवेल ने उनसे पहले ही कहा था कि 'वुथरिंग हाइट्स' काफी हद तक उनकी अपनी रचना है, यह देखा जा सकता है कि उपन्यास में ऐसे अंश हैं जो ब्रैनवेल के इरादे के बारे में इस अनुमान और श्री ग्रुंडी के कथन दोनों को ही संभाव्यता प्रदान करते प्रतीत होते हैं। इस प्रकार, अध्याय 9 में, हिंडले अर्नशॉ उन्मादी नशे की हालत में घर लौटता है, और नेली डीन को अपने बेटे को अलमारी में छिपाते हुए देखकर, वह पागलों की तरह उस पर टूट पड़ता है और चिल्लाता है: 'स्वर्ग और नरक की कसम, तुमने उस बच्चे की हत्या करने की कसम खाई है! अब मुझे पता है कि वह हमेशा मेरे रास्ते से कैसे दूर रहता है। लेकिन, शैतान की मदद से, मैं तुम्हें चाकू निगलवा दूँगा, नेली! तुम्हें हंसने की ज़रूरत नहीं है; क्योंकि मैंने अभी-अभी केनेथ को, सिर नीचे करके, ब्लैकहॉर्स दलदल में ठूंस दिया है; दो एक के बराबर है—और मैं तुममें से कुछ को मारना चाहता हूँ: जब तक मैं ऐसा नहीं कर देता, मुझे चैन नहीं मिलेगा!' इस पर नेली डीन जवाब देती है, 'लेकिन मुझे यह चाकू पसंद नहीं है, मिस्टर हिंडले; इससे लाल हेरिंग काटी जा रही हैं। अगर आप चाहें तो मैं गोली खाना ज़्यादा पसंद करूँगी।'

फिर, अध्याय 17 में, जब इसाबेला के ताने हीथक्लिफ को क्रोधित कर देते हैं, तो वह एक खाने का चाकू उठाता है और उसके सिर पर फेंक देता है; और वह उसके कान के नीचे लगती है। तब हम मान सकते हैं कि जब ब्रैनवेल अपने मित्र के सामने इस अजीब वेश में प्रकट हुआ, तो वह केवल मज़ाक में, एक 'मज़ाकिया स्वभाव' के साथ, उन घटनाओं का पूर्वाभ्यास कर रहा था जिनका उसने हाल ही में उस पुस्तक में वर्णन किया था जिसका उल्लेख उसने मिस्टर ग्रंडी से किया था।

मिस रॉबिन्सन ने अपनी पुस्तक 'एमिली ब्रोंटे' (पृष्ठ 95) में ब्रैनवेल के अपने पारिवारिक नाम पर गर्व के बारे में कुछ व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ की हैं। वे लिखती हैं, 'अपने नाम पर गर्व!' 'उन्होंने इस पर एक कविता लिखी, "ब्रोंटे", जो नेल्सन की प्रशंसा में थी, और जिसे ली हंट, मिस मार्टिन्यू और अन्य लोगों की संरक्षणवादी स्वीकृति मिली, जिन्हें उनके विशेष अनुरोध पर प्रस्तुत किया गया था। क्या उन्होंने कभी अपने एक दर्जन चाचा-चाचियों, अहादर्ग के प्रुन्टी परिवार के बारे में सुना था? या यदि नहीं, तो हॉवर्थ के विकर (sic) ने अपने प्राचीन नाम की महिमा का इस बखान और विजयगान को सुनकर कितनी संवेदनाएँ व्यक्त की होंगी?' ब्रोंटे नाम पर ब्रैनवेल का गर्व मूर्खतापूर्ण ही होता यदि वह उस प्रकार का होता जैसा मिस रॉबिन्सन मानती हैं; लेकिन शायद इसका कोई और अर्थ था। बहरहाल, नेली डीन ने 'वुथरिंग हाइट्स' में जन्म के गौरव को बिल्कुल अलग नज़रिए से पेश किया है, जहाँ वह हीथक्लिफ को अच्छी सलाह देती हैं। 'तुम तो भेस बदले हुए राजकुमार के लायक हो,' वह उस 'छोटे लास्कर' यानी 'अमेरिकी या स्पेनिश जहाज़ के मलबे से छूटे' हीथक्लिफ से भी कहती हैं। 'कौन जानता है कि तुम्हारे पिता चीन के सम्राट थे और तुम्हारी माँ भारतीय रानी, और दोनों एक हफ्ते की कमाई से वुथरिंग हाइट्स और थ्रशक्रॉस ग्रेंज दोनों खरीद सकते थे? और तुम्हें दुष्ट नाविकों ने अगवा कर इंग्लैंड लाया था। अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो मैं अपने जन्म को लेकर ऊँचे विचार रखती; और अपने जन्म के बारे में ये विचार मुझे एक छोटे किसान पर होने वाले अत्याचारों को सहने का साहस और सम्मान देते!' ब्रैनवेल ब्रोंटे ने भी ठीक यही किया था।

दो अन्य बिंदु हैं जिनमें मैं 'वुथरिंग हाइट्स' की शब्दावली और विचारों तथा ब्रैनवेल ब्रोंटे के विचारों के बीच समानताएं इंगित करूंगा। यहां प्रकाशित उनके एक पत्र में, ब्रैनवेल, गले में फंदा डाले एक अपराधी की मुस्कुराती हुई तस्वीर बनाते हुए, यह प्रश्न पूछते हैं: 'क्या वास्तव में रिसस सार्डोनिकस जैसी कोई चीज होती है?' क्या कोई

व्यक्ति फांसी पर चढ़ने से पहले उस सुबह हंसा था?' उपन्यास में, इसाबेला हीथक्लिफ कहती हैं: 'मैं ऐसी मानसिक स्थिति में थी कि किसी भी बात से विचलित नहीं होती: वास्तव में, मैं उतनी ही बेपरवाह थी जितनी कुछ अपराधी फांसी के तख्ते पर खड़े होकर खुद को दिखाते हैं।' अंत में, हीथक्लिफ, हिंडले अर्नशॉ के बारे में कहते हुए घोषणा करते हैं: 'सही ही है कि उस मूर्ख के शरीर को चौराहे पर बिना किसी रस्म के दफनाया जाना चाहिए।' ब्रैनवेल न केवल हॉवर्थ के पास और इसी तरह के अन्य चौराहों पर आत्महत्या करने वालों को दफनाए जाने की परंपराओं से परिचित थे, बल्कि वे जिले में अपनी यात्राओं के दौरान, जब भी इस दिशा में होते थे, उस स्थान पर स्थित प्राचीन छात्रावास में जाया करते थे: और वास्तव में, उन्होंने अपनी लिखी कविता के पाठ के लिए इसी घर को चुना था, और जैसा कि हमने देखा है, उन्होंने इसके बदले में अपने उपन्यास का वह अंश, जिसे 'वुथरिंग हाइट्स' माना जाता है, श्री डियर्डन और अपने दूसरे मित्र को यहीं पढ़कर सुनाया था। उपन्यास में अभिव्यक्ति की उन सभी छोटी-छोटी समानताओं को इंगित करना उबाऊ होगा जो ब्रैनवेल के पत्रों में पाई जाती हैं।

फिर भी, 'वुथरिंग हाइट्स' में दो-तीन बिंदु ध्यान देने योग्य हैं, जो एमिली की कविता में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। प्रकृति के प्रति एमिली का प्रेम, दलदली भूमि के प्रति प्रेम; अस्तित्व के रहस्य पर उनका गहन चिंतन, जिसने उन्हें मृत्यु की शांति को सभी के लिए भविष्य के विश्राम के आश्वासन के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया, उनकी कविता में पाया जाता है; और कुछ हद तक, 'वुथरिंग हाइट्स' में भी। इस प्रकार, कहानी के अध्याय सोलह में, हम लिंटन और उनकी मृत पत्नी के बारे में पढ़ते हैं: 'अगली सुबह - बाहर उज्ज्वल और खुशनुमा - शांत कमरे के पर्दों से कोमल होकर अंदर आई, और पलंग और उस पर लेटे व्यक्ति को एक मधुर, कोमल चमक से भर दिया। एडगर लिंटन ने अपना सिर तकिए पर रखा था और उनकी आँखें बंद थीं। उनके युवा और सुंदर चेहरे लगभग उतने ही मृत्यु-समान थे जितने उनके बगल में लेटी महिला के, और लगभग उतने ही स्थिर: लेकिन उनका चेहरा थकी हुई पीड़ा की खामोशी थी, और उनकी पत्नी का चेहरा पूर्ण शांति का। उनका माथा चिकना था, पलकें बंद थीं, उनके होंठों पर मुस्कान का भाव था; स्वर्ग में कोई भी देवदूत उससे अधिक सुंदर नहीं हो सकता था जितना वह दिखाई दी। और मैंने उस असीम शांति का अनुभव किया जिसमें वह लेटी हुई थी: मेरा मन उस दिव्य विश्राम की शांत छवि को

निहारते हुए कभी भी इतनी पवित्र अवस्था में नहीं था। मैंने सहज रूप से उन शब्दों को दोहराया जो उसने कुछ घंटे पहले कहे थे: “हम सभी से अतुलनीय रूप से परे और श्रेष्ठ! चाहे वह अभी भी पृथ्वी पर हो या अब स्वर्ग में, उसकी आत्मा ईश्वर के साथ है!”

मृत कैथरीन द्वारा प्रस्तुत शांति के दृश्य से नेली डीन के मन में जो विचार आए, वे श्री रीड को एमिली के स्वभाव के अनुरूप प्रतीत होते हैं, मानो वह अपने दिल की गहराई से बोल रही हो। कहानी में कथावाचक कहता है, "मुझे नहीं पता कि यह मुझमें कोई विशेषता है या नहीं, लेकिन मृत्यु के कक्ष में देखते हुए मैं शायद ही कभी प्रसन्न न होता हूँ, बशर्ते कोई उन्मादी या निराश शोक मनाने वाला मेरे साथ यह कर्तव्य साझा न करे। मैं एक ऐसी शांति देखता हूँ जिसे न तो धरती और न ही नरक भंग कर सकता है, और मुझे अनंत और छायाहीन परलोक का आश्वासन मिलता है - वह शाश्वतता जिसमें वे प्रवेश कर चुके हैं - जहाँ जीवन अपनी अवधि में असीम है, प्रेम अपनी सहानुभूति में और आनंद अपनी परिपूर्णता में। मैंने उस अवसर पर देखा कि श्री लिंटन जैसे प्रेम में भी कितना स्वार्थ है, जब उन्होंने कैथरीन की इस सुखद मुक्ति पर इतना दुख व्यक्त किया! निश्चित रूप से, उसके अशांत और अधीर जीवन के बाद, कोई संदेह कर सकता था कि क्या वह अंततः शांति के आश्रय की हकदार थी। ठंडे चिंतन के समय कोई संदेह कर सकता है; लेकिन तब नहीं, उसके शव की उपस्थिति में। इसने अपनी शांति का दावा किया, जो इसके पूर्व निवासियों के लिए समान शांति की प्रतिज्ञा प्रतीत होती थी। लेकिन श्री लॉकवुड, गृहस्वामी की इस चिंता के बारे में बात करते हुए कहते हैं कि क्या उन्हें लगता है कि ऐसे लोग परलोक में खुश हैं, 'मैंने श्रीमती डीन के प्रश्न का उत्तर देने से इनकार कर दिया, जो मुझे कुछ अपरंपरागत लगा।' कहानी एडगर लिंटन, हीथक्लिफ और कैथरीन की समाधियों के बारे में बात करते हुए समाप्त होती है: 'मैं उस शांत आकाश के नीचे उनके चारों ओर रुका रहा: हीथ और हरेबेल के बीच पतंगों को फड़फड़ाते देखा, घास के बीच से बहती कोमल हवा को सुना, और सोचा कि कोई उस शांत धरती में सोने वालों के लिए अशांत नींद की कल्पना कैसे कर सकता है।' लेकिन इन्हीं बिंदुओं में ब्रैनवेल और एमिली के बीच भावनाओं का एक उल्लेखनीय मेल भी है। वास्तव में, इन विचारों की अभिव्यक्ति में, ब्रैनवेल की कविता एमिली की कविता से कहीं अधिक शक्तिशाली है। हम उनके ‘वास्तविक विश्राम’ की विस्मृतिपूर्ण शांति की तीव्र इच्छा से परिचित हैं; और अपने

पत्रों में उन्होंने कई समाधियों के चित्र बनाए हैं, जिनमें से एक पर ये शब्द अंकित हैं: 'मैं विश्राम की प्रार्थना करता हूँ'; और 'कब्र में पड़ी बच्ची को लिखे पत्र' में उन्होंने हमें उस शांत और पीड़ारहित समाधि की कष्टमुक्ति के बारे में बताया है। यहाँ ब्रैनवेल की कुछ पंक्तियाँ हैं, जो इस संयोग को दर्शाती हैं:

यह मत सोचो कि जीवन ही सुख है।
लेकिन इसे कर्तव्य के साथ-साथ सावधानी भी समझें;
अपनी विपत्ति में आशा की प्रार्थना करो।
और अपने जवाबों के बदले निराशा पाओ;
फिर भी आगे बढ़ते रहो, क्योंकि जीवन का रास्ता कठिन है।
अंत में, ईश्वर के साथ शांति में ही मेरा अंत हो!

हम फिर से पूछ सकते हैं: क्या ब्रैनवेल ब्रोंटे ने 'वुथरिंग हाइट्स' या इसका कोई भाग लिखा था? इस बात के प्रमाण शायद अपर्याप्त हैं। लेकिन यह याद रखना चाहिए कि, जैसा कि उन्होंने लेलैंड को लिखे पत्र में कहा था, उन्होंने स्पष्ट रूप से तीन खंडों वाले उपन्यास का कार्य शुरू किया था और किसी न किसी रूप में अपनी कहानी का एक खंड लिख चुके थे। श्री ग्रुंडी को दिए गए अपने बयान में ब्रैनवेल पर लगाए गए झूठ के आरोप को अब शायद ही दोहराया जाएगा; लेकिन कुछ लोग यह कह सकते हैं कि श्री ग्रुंडी अपने मित्र द्वारा अपने उपन्यास के बारे में कही गई बातों को अपनी बहन के 'वुथरिंग हाइट्स' के संदर्भ से जोड़ने में गलती कर रहे हैं, और वे सज्जन जो मानते हैं कि ब्रैनवेल द्वारा उन्हें पढ़कर सुनाया गया उपन्यास वही है जो एमिली द्वारा लिखा गया है, वे भी गलत हैं। ऐसा कहा जाता है कि जब कभी-कभार पिता या भाई उस कमरे में आते थे जहाँ बहनें अपने उपन्यास लिख रही होती थीं, तो उस समय चल रहे काम के बारे में कुछ नहीं कहा जाता था। लेकिन यह स्वीकार करना होगा कि उस काल के इतिहास के बारे में हमें जो जानकारी है, उससे इन विचारों को बहुत कम प्रोत्साहन मिलता है।

हमने देखा है कि 1845 की शरद ऋतु से पहले, ब्रैनवेल अपने उपन्यास लिखने में लगे हुए थे; कुछ समय बाद, हमें संदेह होता है कि वे इसे आगे नहीं बढ़ा रहे हैं, और हम उन्हें एमिली की समकालीन कविता के समान विषय पर एक कविता लिखते हुए पाते हैं। फिर हम देखते हैं कि बहनें उपन्यास लेखन में लग जाती हैं, ठीक ब्रैनवेल के विचारों के अनुसार इससे लाभ कमाने के उद्देश्य से। जब वे 28 अप्रैल, 1846 को

लेलैंड को लिखते हैं, अपनी बहनों की कविताओं के प्रकाशन से कुछ समय पहले, और जब वे अपने उपन्यास पूरे कर रही थीं, ब्रैनवेल ने अपने उपन्यास के बारे में बात करना बंद कर दिया था, लेकिन कहते हैं कि यदि वे स्वयं लंदन में होते, तो वे अपनी कविताओं के साथ एक निश्चित प्रकाशक से संपर्क करते। अब यह वही वर्ड्सवर्थ का संस्करण था जिसे शार्लोट ने चार महीने पहले बहनों के अपने कविता संग्रह के लिए एक मॉडल के रूप में चुना था। ब्रैनवेल, भले ही इस समय तक अपनी बहन शार्लोट के साथ उनके संबंध कितने भी तनावपूर्ण क्यों न रहे हों, यह अवश्य जानते होंगे कि उनकी बहनें अपनी कहानियां लिख रही थीं। तो फिर, उनके उद्देश्यों में यह बदलाव क्यों आया? जिस व्यक्ति ने गद्य को काव्य से श्रेष्ठ बताया था, जिसके कारण बाद में बहनों ने उपन्यास लिखना शुरू किया, वह अपने उपन्यास के बारे में चुप क्यों है, जबकि वह अपनी कविताओं को प्रकाशित करने की सोच रहा है? और फिर कभी हमें उनके उपन्यास को पूरा करने के किसी प्रयास के बारे में पता नहीं चलता, जबकि वे अपनी बहनों की रचनाएँ प्रकाशित होने के एक साल बाद तक जीवित रहे। इस बीच उनके उपन्यास का क्या हुआ?

शायद इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि ब्रैनवेल और उनकी बहन के बीच किसी हद तक सहयोग रहा होगा। ब्रैनवेल ने ही मूल विचार दिया, पात्रों को गढ़ा और रचना का प्रारंभिक भाग लिखा, जिसे उनकी बहन ने लिया, संशोधित किया, पूरा किया और उसमें अपनी व्यक्तिगत भावना का समावेश किया जिससे संपूर्ण रचना में एकता का भाव आ गया। इस दृष्टिकोण के समर्थन में यह ध्यान दिया जा सकता है कि यद्यपि 'वुथरिंग हाइट्स' की शैली में कोई बदलाव नहीं है, फिर भी मूल कहानी के सभी पहलू सत्रहवें अध्याय में, यानी पुस्तक के आधे से अधिक भाग में, एक तरह से पूर्ण हो जाते हैं। इसके पहले भाग में हम कैथरीन के प्रति हीथक्लिफ के प्रचंड प्रेम को उसकी मृत्यु तक देखते हैं। हम एडगर लिंटन के प्रति उसकी शत्रुता को देखते हैं, जो लिंटन की बहन को प्राप्त करने से शांत होती है, जिससे वह घृणा और तिरस्कार करता है, लेकिन जो थ्रशक्रॉस ग्रेंज की उत्तराधिकारी बनने वाले बच्चे की माँ है, और हम इस अभागी पत्नी की मृत्यु को भी देखते हैं। उपन्यास के इस पहले भाग में, अर्नशॉ के प्रति हीथक्लिफ की घृणा का क्रमिक विकास भी दिखाया गया है, जब वह कहता है: 'मैं यह तय करने की कोशिश कर रहा हूँ कि मैं हिंडले से कैसे बदला लूँगा। मुझे परवाह नहीं कि मुझे कितना इंतज़ार करना पड़े, बस मैं आखिरकार यह कर सकूँ। मुझे

उम्मीद है कि वह मेरे करने से पहले नहीं मरेगा,' और उस दयनीय चरित्र की मृत्यु तक, जिसका बेटा एक अज्ञानी आश्रित बनकर रह जाता है, क्योंकि उसके शराबी पिता को जुए की मेज पर अपनी सारी संपत्ति अपने शैतानी पीछा करने वाले के हाथों उड़ाने के लिए बहकाया गया है। यहाँ उस अंधकारमय और द्वेषपूर्ण भावना का चित्रण किया गया है जो हीथक्लिफ को राक्षसों के समान मानती है, जैसा कि वह कहता है: 'मुझे कोई दया नहीं है - मुझे कोई दया नहीं है! कीड़े जितना अधिक तड़पते हैं, उतना ही अधिक मैं उनकी आँतें कुचलने के लिए तरसता हूँ। यह एक नैतिक पीड़ा है, और मैं दर्द बढ़ने के अनुपात में अधिक ऊर्जा से पीसता हूँ।'

कहानी के दूसरे भाग में, जो अठारहवें अध्याय से शुरू होता है, हम लिंटन, अर्नशॉ और हीथक्लिफ के बच्चों के भाग्य के बारे में जानने लगते हैं। हमें पता चलता है कि कैसे हीथक्लिफ अपने दुखी और रोने वाले बेटे को लिंटन की बेटी से शादी कराने के लिए तैयार करता है, जिसकी वह जबरदस्ती शादी कराता है और इस तरह ग्रेंज पर अपना अधिकार जमा लेता है; कैसे वह युवा हरेटन अर्नशॉ को बिगाड़ने की कोशिश करता है, यह देखने के लिए कि क्या एक ही हवा से एक पेड़ दूसरे पेड़ की तरह टेढ़ा नहीं हो जाता; और अंत में कैसे उसका बदला पूरी तरह विफल हो जाता है। इस प्रकार 'वुथरिंग हाइट्स' के दो अलग-अलग भाग हैं, जिनमें से एक दूसरे का पूरक और पूरा करने वाला है।

यहां दिए गए विचार के समर्थन में, मैं यह उल्लेख करना चाहूंगा कि 'वुथरिंग हाइट्स' को पढ़ते समय, ब्रैनवेल के लेखन, पत्रों आदि से इसकी समानताओं का पता लगाने के प्रयास में, मैं इस तथ्य से अत्यंत प्रभावित हुआ कि उपन्यास के पहले भाग में मुझे पाँच समानताएँ मिलीं, जबकि दूसरे भाग में केवल एक ही मिली। इसलिए, यदि 'वुथरिंग हाइट्स' के अंतिम भाग में, ब्रैनवेल ने लेखक को चरित्र के कुछ पहलुओं के लिए आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है, तो हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए, भले ही ये पहलू बहुत कम हों। फिर भी, नेली डीन हीथक्लिफ के कैथरीन के प्रति प्रेम के बारे में कहती हैं: 'वह अपनी दिवंगत प्रेमिका के विषय में एक तरह का जुनून सवार था; लेकिन बाकी सभी मामलों में उसकी बुद्धि मेरी ही तरह तेज थी।'

मैंने जिस सहयोग का उल्लेख किया है, उससे एमिली ब्रोंटे के अनुचित व्यवहार का कोई संकेत नहीं मिलता: वह ब्रैनवेल की हमेशा एक दयालु, सौम्य और निष्ठावान मित्र थीं, और शायद अपनी बहनों से भी अधिक उत्सुकता से उनकी सफलता की कामना

करती थीं। इसलिए, ब्रैनवेल द्वारा अपनी प्रिय बहन को, जिनके प्रति वह उनके अटूट स्नेह के लिए हमेशा आभारी थे, अपना शुरू किया हुआ काम सौंपना, जिससे वह शायद असंतुष्ट थे या जिसे पूरा करने में असमर्थ थे, या उन्हें कथानक प्रदान करना और उनकी किसी भी कहानी के पात्रों के चित्रण में अपने अनुभव से उनकी सहायता करना, कोई असामान्य बात नहीं है। ऐसा करना उनके बारे में जो हम जानते हैं, उससे पूरी तरह मेल खाता है; और जहाँ तक मुझे पता है, उपन्यास के प्रकाशन से बारह महीने पहले मिस्टर ग्रंडी के पादरी के घर आने के बाद उन्होंने कभी भी इसके लेखक होने का दावा नहीं किया; और उन्होंने इसे केवल दो या तीन निजी मित्रों को ही पढ़कर सुनाया, और यदि मेरा अनुमान सही है, तो शायद उनकी बहन द्वारा काम शुरू करने से पहले ही।

ब्रैनवेल के उपन्यास के लुप्त होने के अलावा, एक और बात इस दृष्टिकोण से स्पष्ट होती है: एमिली, जिन्होंने कभी दूसरा उपन्यास नहीं लिखा, ने न केवल बहनों की समकालीन कहानियों में सबसे मौलिक और प्रभावशाली कहानी लिखी, बल्कि यह शार्लोट की 'द प्रोफेसर' से कहीं अधिक लंबी और ऐनी की 'एग्नेस ग्रे' से लगभग डेढ़ गुना लंबी है। इसलिए, 'वुथरिंग हाइट्स' की उत्पत्ति का प्रश्न यहीं अनसुलझा रह जाता है।

अध्याय XI.

ब्रैनवेल ब्रोंटे और 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल।'

शार्लोट का यह कथन कि उनकी बहन ऐनी ने अपने भाई के आचरण के फलस्वरूप

यह पुस्तक लिखी - कुछ लोगों की यह धारणा कि ब्रैनवेल हंटिंगडन का प्रतिरूप था - दोनों पात्र पूरी तरह से भिन्न हैं - कहानी के वास्तविक स्रोत - ऐनी ब्रोंटे ने इस संदेह से बचने के लिए काफी प्रयास किए कि हंटिंगडन ब्रैनवेल का चित्र था।
शार्लोट ब्रोंटे, जिन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उनकी बहन एमिली द्वारा रचित 'वुथरिंग हाइट्स' जैसी भयावह कहानी ब्रैनवेल के दुर्भाग्य पर चिंतन करने का परिणाम थी, फिर भी ऐनी ब्रोंटे के दूसरे उपन्यास, 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल' पर अपनी टिप्पणी में—जिसे लेखिका ने असंयम के दुष्परिणामों के प्रति चेतावनी के रूप में लिखा था—उन्होंने संकेत दिया है कि ऐनी ने इसे अपने भाई के आचरण से प्रभावित होकर कर्तव्यवश लिखा था; और कुछ लेखकों ने शार्लोट के इस कथन पर सवाल उठाते हुए कि पात्र काल्पनिक हैं, यह निष्कर्ष निकाला है कि आर्थर हंटिंगडन में हमें ब्रैनवेल ब्रोंटे का 'एक चित्र' और 'एक छवि' मिलती है। मेरे विचार से, सही मायने में, ऐनी ब्रोंटे के प्रति यह मानना क्रूरतापूर्ण है कि उन्होंने हमें धूर्त हंटिंगडन के चरित्र में अपने भाई का एक चित्र दिया है। यदि उसका भाई इतना नीच होता, तो वह उसके चरित्र के विवरणों को अनदेखा करके लिखने की हिम्मत नहीं कर पाती; यदि वह हंटिंगडन जैसा न होता, तो वह उस पर इस तरह मानहानि का आरोप नहीं लगा पाती।

चूंकि ब्रोंटे बहनों के जीवनीकारों में से किसी ने भी ब्रैनवेल को कभी नहीं जाना था, इसलिए यह संभव है कि जीवनियों में वर्णित ब्रैनवेल ब्रोंटे, उपन्यासों के काल्पनिक ब्रैनवेल से अधिक प्रभावित हैं, बजाय इसके कि उपन्यासों के पात्र ब्रोंटे बहनों के भाई से प्रभावित हों। हंटिंगडन की सतही हास्य-व्यंग्य शैली ही उन्हें ब्रैनवेल ब्रोंटे के आदर्श से जोड़ती है। हंटिंगडन में उनके कुछ गुण अवश्य ही मौजूद हों, लेकिन वे उस चरित्र में चित्रित सबसे बुरे गुणों में से नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर, हंटिंगडन द्वारा जुए के प्रति व्यक्त की गई घृणा को लिया जा सकता है।

हालाँकि, हम आर्थर हंटिंगडन और ब्रैनवेल ब्रोंटे के चरित्रों के बीच किसी भी सच्ची समानता की व्यर्थ ही तलाश करेंगे, और निश्चित रूप से, लगभग हर मामले में, एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत है। एमिली ब्रोंटे के जीवनीकार का कहना है कि ब्रैनवेल ने 'हेनरी (sic) हंटिंगडन के चित्र के लिए ऐनी के सामने काफी दयनीय मुद्रा में पोज दिया था;' लेकिन मैं पूछना चाहूँगा कि वह चित्र कहाँ है? यह ध्यान देने योग्य है कि हंटिंगडन न केवल एक शराबी है, बल्कि वह एक व्यभिचारी भी है, एक ऐसा व्यक्ति

जिसमें इतनी निर्दयता है कि वह अपनी भोली पत्नी को, जब वह सोफे पर उसके बगल में बैठी उसे खुश करने की कोशिश कर रही होती है, अपने 'पूर्व प्रेम प्रसंगों की कहानियाँ' सुनाता है, जो हमेशा किसी विश्वासपात्र लड़की के बर्बाद होने या किसी भोले-भाले पति के धोखे पर आधारित होती हैं; और जब मैं अपनी घृणा और आक्रोश व्यक्त करती हूँ,' वह कहती हैं, 'तो वह इसे ईर्ष्या का आरोप बताता है और तब तक हँसता है जब तक उसकी आँखों से आँसू न बहने लगें।' लेकिन ब्रैनवेल के साथ मामला अलग था, जिस पर कभी यह आरोप नहीं लगाया गया कि वह आपराधिक दुराचार, व्यभिचार और विश्वासघात की इतनी नीचता तक गिरा; और यहाँ तक कि जिन्होंने उसके मालिक की पत्नी के प्रति उसके जुनून की कहानी सुनाई है, वे भी यह कहने पर विवश हैं कि वह पवित्र बना रहा और उसके द्वारा किए गए कथित दुराचार से भयभीत हो गया। हंटिंगडन का दुष्ट स्वभाव भी स्वार्थ में इतना डूबा हुआ है और उसमें इतनी निर्मम क्रूरता है, - जैसा कि कई मौकों पर वह अपनी शक्तिहीन पत्नी पर विजय प्राप्त करता है, - कि वह अपने विश्वासयोग्य, विचारशील, खुले दिल और उदार स्वभाव वाले ब्रैनवेल के बिल्कुल विपरीत खड़ा है।

हंटिंगडन के पाखंड का ज़िक्र करना ब्रैनवेल से उसके चरित्र में और अंतर स्पष्ट करने के लिए ज़रूरी है; और यह हंटिंगडन के मन की एक बहुत ही विशिष्ट विशेषता है कि वह शुरू से अंत तक पूरी तरह से अनादरपूर्ण और अधार्मिक है, इस हद तक कि वह पवित्र वस्तुओं का मज़ाक उड़ाता है और कहता है कि उसकी पत्नी की धार्मिकता उसे अपने ईश्वर से ईर्ष्या करने के लिए काफ़ी है। फिर वह कहता है, जब वह उसका हाथ अपने सिर पर रखता है और वह उसके घुंघराले बालों में 'काफ़ी नीचे, खासकर बीच में' धंस जाता है; 'अगर ईश्वर ने मुझे धार्मिक बनाया होता, तो उन्होंने मुझे श्रद्धा का उचित अंग क्यों नहीं दिया?' यह अनादर वह अपने घरेलू जीवन में भी ले जाता है और अपनी घोर और संवेदनहीन क्रूरता से मानवीय स्नेह की पवित्रता और हृदय के पवित्र स्थानों पर आक्रमण करता है। यह ब्रैनवेल ब्रोंटे से कितना अलग है, जिनके चरित्र में श्रद्धा और स्नेह सर्वोपरि थे! क्या हम हंटिंगडन को दिवंगत आत्मा के स्नेह में उसी तरह डूबे रहने की कल्पना कर सकते हैं, जैसे ब्रैनवेल अपनी 'कैरोलाइन' कविताओं में करते हैं? क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि वे अपने प्रारंभिक वर्षों की पवित्र स्मृतियों को अपनी मृत्यु तक एक अनमोल धरोहर की तरह संजो कर रखते, जैसा कि उनके आदर्श ने किया था? बीते वर्षों की स्मृतियों से 'उछलते दिल और

उमड़ती आँखों' को भर देने वाला 'विचारों का उफान' स्वार्थी और भावनाहीन हंटिंगडन के उथले मस्तिष्क को कैसे भर सकता था? और हंटिंगडन भी लगातार शराब पीने वाले की उस जानी-मानी समस्या से ग्रस्त हैं; वे जीवन के मामलों में सारी रुचि खो देते हैं और निरंतर हल्केपन में जीते हैं। उनकी पत्नी कहती हैं, 'इस अपूर्ण दुनिया में हमेशा एक 'लेकिन' होता है, और मैं चाहती हूँ कि वे कभी-कभी गंभीर हो जाएँ। मैं उन्हें वास्तविक, ठोस गंभीरता से लिखने या बोलने के लिए राजी नहीं कर सकती।' मुझे अब तो इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता, लेकिन अगर हमेशा ऐसा ही रहा तो मैं अपने गंभीर स्वभाव का क्या करूँगी?' मैं ये सवाल तब पूछती जब ब्रैनवेल ब्रोंटे इस अनुचित हल्केपन का प्रदर्शन करते थे? अगर वे हमेशा पूरी गंभीरता से लिखते और बोलते नहीं थे; अगर वे वास्तव में उस तीव्र भावनाओं के तूफान और तनाव के बीच नहीं रहते थे जिसे हंटिंगडन का दयनीय स्वभाव कभी अनुभव करने में असमर्थ था?

अंत में, हेलेन हंटिंगडन हमें बताती हैं कि उनके पति अच्छे और उच्च विचारों के प्रति उदासीन हैं, वे अखबारों और खेल पत्रिकाओं के अलावा कुछ नहीं पढ़ते, उनकी इच्छा है कि वे कुछ साहित्यिक अध्ययन करें, या चित्रकारी या वादन सीखें; और जब वे अपने मित्रों से बिछड़ जाते हैं, तो उनकी स्थिति असहनीय हो जाती है, बौद्धिक संसाधनों के सहारे और ईश्वर के प्रति अच्छे विवेक से भी उन्हें कोई राहत नहीं मिलती। तो फिर, ब्रैनवेल के मानसिक संसाधन क्या थे? इसके विपरीत, उनके विचार काफी अच्छे और उच्च थे; वे साहित्य के विद्यार्थी थे, और विशेष रूप से महान कवियों के पाठक थे; उन्होंने वास्तव में साहित्यिक कार्य में रुचि ली थी; और वे चित्रकारी और ऑर्गन वादन दोनों कर सकते थे और करते भी थे; और जब वे समाज से विमुख हो जाते थे, या किसी संकट में पड़ जाते थे, तो उन्हें अपने साहित्यिक कार्यों में सांत्वना मिलती थी, और हमने देखा है कि संकट में राहत पाने के उद्देश्य से ही उन्होंने अपने उपन्यास का एक खंड लिखा था। संक्षेप में कहें तो, बौद्धिक चरित्र और आदतों के मामले में, वह बिल्कुल वैसा ही था जैसा हेलेन हंटिंगडन अपने पति के बारे में चाहती थीं।

यदि ब्रैनवेल ब्रोंटे के स्वभाव, चरित्र और क्षमताओं तथा उपन्यास में हंटिंगडन के गुणों में कोई समानता नहीं है, तो उपरोक्त बातों के बाद हम निश्चित रूप से यह उम्मीद कर सकते हैं कि तथ्यों की एकमात्र समानता - शराब के प्रति उनकी लत - में कुछ समान लक्षण होंगे। लेकिन यहाँ भी, समानता बहुत कम है, जबकि अंतर स्पष्ट

हैं। उदाहरण के लिए, हंटिंगडन लगातार और आदतन शराबी है; ब्रैनवेल कभी-कभार ही शराब पीते थे और लंबे समय तक संयमी रहे: हंटिंगडन शराब के प्रति प्रेम के कारण पीते हैं; ब्रैनवेल अपने दुखों को भुलाने के लिए शराब पीते थे। इसके अलावा, ब्रोंटे के जीवनीकारों ने इस बात पर विशेष जोर दिया है कि ब्रैनवेल की असंयम की आदत का एक हिस्सा अफीम का सेवन था, लेकिन हंटिंगडन में यह विशेषता नहीं है, हालांकि ऐनी इस प्रथा से स्पष्ट रूप से परिचित थीं, क्योंकि वह उपन्यास में उल्लेख करती हैं कि लॉर्ड लोबोरो ने एक समय इसका सेवन किया था।

लेकिन हंटिंगडन के चरित्र के लिए हमें कहीं और देखना होगा। शार्लोट द्वारा दिए गए उस व्यक्ति के विवरण से, जिसे ब्रोंटे बहनें अच्छी तरह जानती थीं, यह पता चलेगा कि ऐनी ने अपनी कहानी की रचना किन स्रोतों से की थी।

'तुम्हें श्रीमान और श्रीमती — — याद हैं? श्रीमती — — कुछ दिन पहले यहाँ आई थीं, अपने पति की शराबखोरी, फिजूलखर्ची और अय्याशी की बड़ी दुखभरी कहानी सुनाते हुए। उन्होंने पापा से सलाह माँगी; उन्होंने कहा कि उनके सामने बर्बादी के सिवा कुछ नहीं है। उन पर इतना कर्ज था जिसे वे कभी चुका नहीं सकते थे। उन्हें उम्मीद थी कि श्रीमान — — को तुरंत पादरी पद से बर्खास्त कर दिया जाएगा; उन्हें अपने कड़वे अनुभव से पता था कि उनकी बुराइयाँ पूरी तरह से निराशाजनक थीं। वह उनके और उनके बच्चे के साथ क्रूरता से पेश आते थे; और भी कई लोगों के साथ ऐसा ही करते थे। पापा ने उन्हें सलाह दी कि अगर उनके पास घर हो तो उन्हें हमेशा के लिए छोड़ दें और घर वापस चली जाएँ। उन्होंने कहा कि उन्होंने यही करने का निश्चय कर लिया था; और जैसे ही श्रीमान — — उन्हें बर्खास्त करेंगे, वह तुरंत उन्हें छोड़ देंगी। उन्होंने उनके प्रति घोर घृणा और तिरस्कार व्यक्त किया, और किसी भी तरह से उनके प्रति सम्मान का कोई भाव नहीं दिखाया। मुझे इस बात पर आश्चर्य नहीं है, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने कभी ऐसे आदमी से शादी क्यों की जिसके प्रति उनकी भावनाएँ हमेशा से लगभग वैसी ही रही होंगी जैसी अब हैं।' मुझे नैतिक रूप से पूरा यकीन है कि कोई भी सभ्य महिला श्रीमान जैसे व्यक्ति के प्रति घृणा के अलावा कुछ और महसूस नहीं कर सकती। इससे पहले कि मैं उनके चरित्र को जानती या संदेह करती, और जब मैं उनकी बहुमुखी प्रतिभाओं पर आश्चर्यचकित थी, तब भी मुझे यह घृणा अनियंत्रित रूप से महसूस होती थी। मुझे उनसे बात करना, उन्हें देखना भी नापसंद था; हालाँकि, मुझे यकीन नहीं था कि इस नापसंदगी का कोई ठोस कारण है,

और मैंने केवल सहज प्रवृत्ति पर भरोसा करना मूर्खतापूर्ण समझा, इसलिए मैंने इस भावना को यथासंभव छिपाया और दबाया; और हर मौके पर, मैंने उनके साथ यथासंभव शालीनता से व्यवहार किया। मैरी की भी ऐसी ही भावना देखकर मैं पहली ही नज़र में दंग रह गई; जब हम उनसे विदा हुए तो उसने कहा, "वह एक घिनौना आदमी है, शार्लोट!" मैंने सोचा, "वह सचमुच है।"

और यहाँ एक और मामला है जो ब्रोंटे बहनों को पता था। ‘क्या तुम्हें याद है मैंने तुम्हें बताया था — या क्या मैंने तुम्हें कभी बताया था — उस दुष्ट और सबसे बड़े अपराधी श्रीमान — — के बारे में? इंग्लैंड और फ्रांस दोनों जगह दुराचार का घिनौना धंधा करने के बाद, उसने अपनी पत्नी को मैनचेस्टर में दो बच्चों के साथ, बिना एक पैसा भी, एक अनजान लॉजिंग हाउस में बीमारी और घोर गरीबी में छोड़ दिया था? कल शाम मार्था ऊपर आकर बोली कि एक महिला — “काफी सभ्य,” जैसा कि उसने कहा — रसोई में मुझसे बात करना चाहती है। मैं नीचे गई। वहाँ श्रीमती — — खड़ी थीं, पीली और थकी हुई, लेकिन फिर भी आकर्षक और साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए, जैसे उनकी छोटी बच्ची जो उनके साथ थी। मैंने उन्हें दिल से चूमा। उन्हें देखकर मैं लगभग रो पड़ी, क्योंकि जब मैंने उनके अकारण कष्टों, पीड़ाओं और शारीरिक दुर्दशा के बारे में सुना था, तो मुझे उन पर पूरी तरह से दया आ गई थी। उन्होंने हमारे साथ चाय पी, लगभग दो घंटे रुकीं, और खुलकर अपनी भयानक परेशानियों की कहानी सुनाई... उन्हें नहीं पता कि श्रीमान — — कहाँ हैं, और ज़ाहिर है कि अब उन्हें देखने की उनकी इच्छा और भी कमज़ोर हो गई है। वह फिलहाल कुछ दिनों के लिए ई — — में — — परिवार के साथ रह रही हैं, जो मेरे विचार से हमेशा से उनके प्रति बहुत दयालु रहे हैं, और यह स्थिति उनके लिए बहुत ही सराहनीय है।

ब्रोंटे बहनों ने हीथक्लिफ और इसाबेला, हंटिंगडन और हेलेन के दुर्भाग्यपूर्ण चरित्रों को गढ़ने के लिए ऐसे ही मामलों को आधार बनाया। उन्होंने कहा कि वे जीवन को उसी रूप में चित्रित करने के लिए बाध्य महसूस करती थीं जैसा वह उन्हें दिखाई देता था।

हमारे द्वीप और जलवायु के अभिशाप माने जाने वाले क्षय रोग और असंयम, यॉर्कशायर के वेस्ट-राइडिंग में भी उतने ही गंभीर हैं। ठंड और उमस भरा वातावरण, गरीबी और अभाव की तरह, मादक पदार्थों के सेवन को बढ़ावा देता है, और कुछ लोगों के स्वभाव में संयम की सीमा जल्द ही पार हो जाती है। इस असंयम का प्रभाव

ऐनी के मन में गहराई से बैठ गया था। उसके भाई के कभी-कभार किए जाने वाले इस दुरुपयोग ने उसे इससे परिचित करा दिया था; लेकिन यह मान लेना कि हंटिंगडन के चरित्र के माध्यम से वह उसकी कमियों को जनता के सामने प्रस्तुत करना चाहती थी, स्पष्ट रूप से एक गलती होगी, साथ ही ऐनी के साथ घोर अन्याय भी होगा।

इस प्रश्न का गहन अध्ययन करने पर मुझे यह विश्वास हो गया है कि हंटिंगडन न केवल ब्रैनवेल ब्रोंटे का चित्र मात्र नहीं है, बल्कि वह स्पष्ट रूप से और जानबूझकर उनका प्रतिरूप है। 'वाइल्डफेल हॉल' की लेखिका ब्रैनवेल से इतना भिन्न चरित्र तभी रच सकती थीं, जब उनका ऐसा करने का इरादा हो; अन्यथा, परिस्थितियों के प्रभाव और उस समय की प्रेरणा से प्रेरित होकर लिखते समय, उनके सशक्त व्यक्तित्व का कुछ अंश निश्चित रूप से पुस्तक में समा जाता। ऐनी ब्रोंटे के प्रति न्यायसंगत रूप से यह दर्ज करना सुखद है कि यद्यपि उन्हें ब्रैनवेल और अन्य लोगों में असंयम के दुष्परिणाम देखने के लिए विवश होना पड़ा था, फिर भी उन्होंने जानबूझकर इन बुराइयों से मिली सीख को अपने भाई से बिल्कुल भिन्न चरित्र के कार्यों और विचारों के माध्यम से व्यक्त किया। वास्तव में, उन्होंने इस संदेह को भी दूर करने के लिए काफी प्रयास किए - जो दुर्भाग्यवश व्यर्थ ही सिद्ध हुए - कि उनका भाई हंटिंगडन का प्रतिरूप था। उस धारणा को दूर करने के लिए, लेखिका ने कहानी के नायक, गिल्बर्ट मार्खम को काफी हद तक ब्रैनवेल की परिस्थितियों में ही रखा है। मार्खम और ब्रैनवेल के चरित्र में एक उत्साही और उदार स्वभाव के अलावा कोई समानता नहीं है; लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि - ब्रैनवेल की ही तरह - मार्खम भी एक विवाहित महिला के प्रति आसक्त है, जिसके पति की मृत्यु का वह बेसब्री से इंतजार कर रहा है; इस जुनून को उसके लिए एक सनक माना जाता है - 'एक सनक,' उसका भाई फर्गस कहता है, 'लेकिन इसका जिक्र मत करो; ठीक है, लेकिन इसके बारे में बात मत करो;' और अंत में, मार्खम भी ब्रैनवेल की तरह ही सोचता है कि उस महिला के दिवंगत पति ने 'अपनी वसीयत इस तरह बनाई होगी कि उसके पुनर्विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया गया हो।'

यह भी ध्यान देने योग्य है कि 'वाइल्डफेल हॉल' जितना असंयम के विरुद्ध विरोध है, उतना ही यह दिखावटी वैवाहिक संबंधों के विरुद्ध भी है; परन्तु इसका ब्रोंटे परिवार की परिस्थितियों से क्या संबंध था? इसका कहीं अधिक संबंध 'श्रीमान और श्रीमती — —' जैसे उदाहरणों से था, जिनका उल्लेख शार्लोट के पत्र से ऊपर किया गया है,

जहाँ असंयम के साथ-साथ दुर्भाग्य भी जुड़ा हुआ था, जैसा कि आर्थर और हेलेन हंटिंगडन के मामले में है।

अध्याय XII.

ब्रैनवेल की कमियां। — ‘जेन आयर’ का प्रकाशन।

उपन्यास लेखन — बहनों की कार्यशैली — ब्रैनवेल का बिगड़ता स्वास्थ्य और अनियमितताएं — 'जेन आयर' — इसका स्वागत और चरित्र — यह ब्रैनवेल से प्रभावित नहीं था — ब्रैनवेल के पत्र और रेखाचित्र, 1848।

लेकिन उस समय न तो ‘वुथरिंग हाइट्स’ और न ही ‘द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल’ जनता के सामने आई थीं। दरअसल, 1847 की गर्मियों तक ‘वुथरिंग हाइट्स’ और ‘एग्नेस ग्रे’ को प्रकाशन के लिए स्वीकार नहीं किया गया था। इसी बीच ऐनी अपनी दूसरी किताब पर काम कर रही थीं और शार्लोट प्रेरणा के आवेग में ‘जेन आयर’ लिख रही थीं।

श्रीमती गैस्केल ने हमें बताया है कि बहनें रात नौ बजे अपना काम समेटकर बैठक में घूमती थीं और कहानियों के कथानक पर चर्चा करती थीं, साथ ही उनके प्रसंगों पर भी विचार-विमर्श करती थीं। सप्ताह में एक या दो बार वे अपनी लिखी हुई रचनाएँ एक-दूसरे को पढ़कर सुनाती थीं और उनकी राय सुनती थीं। श्री ब्रोंटे जल्दी सोने चले जाते थे और उन्हें अपने लेखन कार्य की जानकारी नहीं थी, क्योंकि उनकी बेटियाँ अपने मित्रों से भी इस बारे में बात नहीं करती थीं। वास्तव में, बहनों का लेखन एक ऐसा रहस्य था जो केवल उनके भाई ब्रैनवेल को ही पता था। ब्रैनवेल निस्संदेह लेखन

पर सलाह देते थे और प्रकाशकों और साहित्यकारों के साथ व्यवहार में कई व्यावहारिक बातें भी सिखाते थे, जिन्हें दुनियादारी की कम जानकारी के कारण वे अक्सर नज़रअंदाज़ कर देती थीं।

लेकिन उस समय ब्रैनवेल का स्वास्थ्य स्पष्ट रूप से बिगड़ रहा था, और यह स्पष्ट हो गया कि यद्यपि वे अपनी बहनों की तुलना में शारीरिक रूप से अधिक स्वस्थ थे, फिर भी वे अपने परिवार की तपेदिक की प्रवृत्ति से अछूते नहीं थे। रोजगार पाने के उनके सभी प्रयास व्यर्थ सिद्ध हुए। उनका शारीरिक स्वास्थ्य लंबे समय से बिगड़ रहा था, और जल्द ही वे निरंतर परिश्रम करने में असमर्थ हो गए। उनके विचित्र व्यवहार का अधिकांश भाग संभवतः उनकी बौद्धिक क्षमता से संपन्न मस्तिष्क पर इस कमजोरी की प्रतिक्रिया से उत्पन्न हुआ था।

यॉर्कशायर की इन पहाड़ियों पर अधिकांश सर्दियों में भीषण पाला और ठंड पड़ती है, और ये समय ब्रोंटे परिवार के लिए हमेशा कष्टदायी होते थे। हॉवर्थ में इन्फ्लूएंजा महामारी की तरह फैल जाता था, और चर्चयार्ड के पास स्थित पादरी के घर में रहने वालों को भी इससे कोई अछूता नहीं रहता था। श्री ब्रोंटे ने गाँव में उचित जल निकासी व्यवस्था करवाने के लिए बहुत प्रयास किए, लेकिन व्यर्थ। वास्तव में, 1846 के दिसंबर में 'उत्तरी ध्रुव जैसे दिन' थे, जिन्हें शार्लोट को याद नहीं है; आकाश बर्फ जैसा लग रहा था, और हवा दोधारी तलवार की तरह तेज़ थी। इसका परिणाम यह हुआ कि पूरा घर खांसी और जुकाम से बीमार पड़ गया। ऐनी को अस्थमा था; श्री ब्रोंटे और ब्रैनवेल को इन्फ्लूएंजा और खांसी थी। वे हवा के रुख में होने वाले हर बदलाव पर उत्सुकता से नज़र रखते होंगे, और दक्षिण-पश्चिम की उन हवाओं के लिए तरसते होंगे जो सर्दियों में भी कभी-कभी वसंत की कोमलता के साथ मैदानों पर आती थीं; और इस बार उनकी निराशा जल्द ही दूर हो गई, और ऐनी की सेहत में काफी सुधार आ गया। उपन्यास लेखन पहले की तरह चलता रहा। ब्रैनवेल की कमजोरियाँ और कमियाँ कभी-कभी उनके काम में बाधा डालती थीं, लेकिन हमें यह नहीं पता चला कि 1847 के दौरान उन्होंने ऐसी कोई परेशानी खड़ी की हो जिससे उनकी बहनों के काम पर असर पड़े। ज़ाहिर है, उनके पास बहुत कम या बिल्कुल भी पैसा नहीं था, और हम जानते हैं कि पिछले साल की व्यस्तता के दौरान उन्होंने कुछ छोटे-मोटे कर्ज ले लिए थे। इसका नतीजा यह हुआ कि एक शेरिफ अधिकारी हॉवर्थ पहुँच गया, और ब्रैनवेल को अपने कर्ज चुकाने पड़े, जिस पर उनकी बहन शार्लोट बहुत नाराज़ हुई थीं, क्योंकि

बाद में उन्होंने खुद को 'बहुत ज़्यादा भावुक और उग्र' होने का आरोप लगाया। लगभग तीन महीने बाद शार्लोट को ब्रैनवेल पर फिर से संदेह हुआ; उन्होंने कहा कि उनका व्यवहार 'खर्चीला' था, और उन्होंने 'रहस्यमयी इशारे' किए, जिससे उन्हें लगा कि उन्होंने और कर्ज ले लिया है। हालाँकि, इस मामले में वह गलत थीं।

मई 1847 में, शार्लोट ने 'ई.' को अपने घर आने का निमंत्रण दिया और कहा कि ब्रैनवेल पहले से शांत है, क्योंकि वसंत ऋतु में उसे जो बड़ी रकम मिली थी, वह खत्म हो चुकी थी और उसे कुछ हद तक संयम बरतना पड़ रहा था। शार्लोट आगे कहती है, 'तुम्हें उम्मीद करनी चाहिए कि वह मानसिक रूप से कमजोर और दिखने में बिल्कुल अय्याश होगा। मुझे नहीं लगता कि वह तुम्हारे साथ असभ्य व्यवहार करेगा; इसके विपरीत, वह बिल्कुल शांत और सौम्य होगा।' ऐसा प्रतीत होता है कि उसने कुछ रकम उधार ली थी, जो उसने बाद में वसूल कर ली; लेकिन जैसा कि हमने देखा है, वह पहले भी कर्ज में डूब चुका था और यॉर्क कैसल में कैद होने की आशंका से घबराकर, उसने अपने दोस्तों को, जहाँ वह ट्यूटर था, अपनी तंगहाली के बारे में बताया था; जिस पर उसके दिवंगत मालिक की विधवा ने दयालुता दिखाते हुए एक तीसरे व्यक्ति के माध्यम से उसे पैसे भेजे थे। इस दौरान वह घर पर पढ़ने में काफी समय बिताता था और उसने कई कविताएँ लिखीं।

जुलाई के अंत में, जैसा कि हमें बताया गया है, शार्लोट ने अपने भाई से यह जानने के लिए परामर्श किया कि मेसर्स स्मिथ एंड एल्डर, जिन्हें उन्होंने 'द प्रोफेसर' भेजा था, ने जवाब क्यों नहीं दिया। उनके भाई ने तुरंत इसका कारण डाक टिकट न भेजना बताया। 2 अगस्त को, उन्होंने फिर से लिखा, और उन्हें तुरंत ही विचारशील उत्तर मिला, जिसने उन्हें उसी महीने की 24 तारीख को अपनी तीन खंडों वाली कृति, 'जेन आयर' भेजने के लिए प्रोत्साहित किया। इसे स्वीकार कर लिया गया और अगले अक्टूबर में प्रकाशित किया गया। इस बीच, अगस्त की शुरुआत में, 'ई.' ने पादरी के घर का दौरा किया, और दोस्तों ने मैदानों में टहलते हुए शानदार मौसम का आनंद लिया। शार्लोट ने लगभग तुरंत ही उनसे मुलाकात की, और उनकी अनुपस्थिति के दौरान उन्होंने 'जेन आयर' के प्रूफ को ठीक किया, यहाँ तक कि अपनी दोस्त के साथ एक ही मेज पर बैठकर, जिनसे उन्होंने अपने काम के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। हॉवर्थ लौटने पर, उन्होंने लिखा: 'मैं घर पहुँच गई, और सब ठीक पाया।' ईश्वर का धन्यवाद।' 'वुथरिंग हाइट्स' और 'एग्नेस ग्रे' अभी भी प्रकाशक के पास ही थीं, जिनसे

लेखकों को बहुत ही कम शर्तों पर समझौता मिला था; श्रीमती गैस्केल इस बात का जिक्र करते हुए कहती हैं, ‘यह एक ऐसा सौदा था जिसका आगे उल्लेख किया जाएगा।’ हालाँकि, ‘शार्लट के जीवन’ में इस विषय पर और कुछ नहीं मिलता; और हम उम्मीद कर सकते हैं कि ‘मेसर्स बेल’ के उपन्यासों को जल्द ही मिली प्रसिद्धि ने समझौते की शुरुआती शर्तों में काफी बदलाव ला दिया होगा। अगले तीन महीनों के दौरान, शार्लट ‘जेन आयर’ की समीक्षाओं के संबंध में मेसर्स स्मिथ एंड एल्डर, श्री जी. एच. लेवेस और श्री डब्ल्यू. एस. विलियम्स के साथ पत्राचार करती रहीं, जो उस समय प्रकाशित हो रही थीं।

सन् 1847 में 'जेन आयर' पाठकों के बीच एक अद्भुत रहस्योद्घाटन के रूप में सामने आई। यह भावनाओं की एक दुखद कहानी थी, जो उस समय के आम उपन्यासों की घिसी-पिटी बनावट से बिलकुल अलग थी; इसमें इतनी जोशीली ऊर्जा भरी थी और इतने मार्मिक विषय थे कि इसे तुरंत ही महान और निर्विवाद प्रतिभा का प्रतीक मान लिया गया। आज इस पुस्तक को पढ़कर हम आसानी से समझ सकते हैं कि शार्लोट ब्रोंटे ने अपने समय के लोगों के मन पर इतनी गहरी छाप क्यों छोड़ी और अपने लिए एक अमर ख्याति क्यों अर्जित की। वह आज भी ऐसा ही कर सकती हैं। जेन आयर का विचित्र, अकेला और मित्रहीन बचपन, गेट्सहेड और लोवुड स्कूल में उसके अनुभव, और उन सभी अनुभवों के दौरान उसका आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता, कहानी को अत्यंत सत्य बनाती है; लेकिन जब यह साधारण सी छोटी सी पात्र अपनी भावनाओं की गहराई को प्रकट करती है और अपनी आशाओं और दुखों में हमारी मानवीय सहानुभूति को जगाती है; जब हम रोचेस्टर के साथ उसके रिश्ते की भयावह त्रासदी को पढ़ते हैं, और उन भावनाओं के तूफान और तनाव से हिल जाते हैं जो उसे प्रभावित करती हैं; जब, सबसे बढ़कर, हम उसे अंधेरे से बाहर आते हुए देखते हैं, उसकी गरिमा और पवित्रता बेदाग रहती है, हालांकि वह एक बार फिर मित्रहीन और अकेली है, तो हम उस प्रतिभा की प्रशंसा में अभिभूत हो जाते हैं जिसने एक ऐसा चित्र चित्रित किया है जो एक साथ इतना सच्चा मानवीय और इतना विचित्र है।

‘जेन आयर’ पुस्तक, लेखिका के व्यक्तित्व का स्वाभाविक और सहज परिणाम थी। हालाँकि जेन आयर का चरित्र, लूसी स्नो की तरह शार्लोट ब्रोंटे का प्रतिनिधित्व नहीं करता, फिर भी जेन आयर को प्रेरित करने वाली सभी शक्तियाँ और क्षमताएँ

शार्लोट ब्रोंटे में समाहित थीं। 1847 में यह पुस्तक लोगों के लिए एक रहस्योद्घाटन के समान थी; उन्होंने स्वयं को एक महान हस्ती के हाथों में पाया और एक अनियंत्रित धारा में बह गए। लेकिन उनमें से कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने इसके प्रभाव का विरोध किया, जब उन्होंने पाया कि रूढ़िवादिता की सतही सीमाओं को बहुत पार कर लिया गया था और जब उन्होंने देखा कि इसकी लेखिका दुनियादारी में बहुत कुशल नहीं थीं। इन लोगों ने उस शक्ति के विरुद्ध विद्रोह किया जिसने उन्हें रोचेस्टर नामक एक ऐसे चरित्र में रुचि लेने के लिए विवश कर दिया था, जो उच्च ईसाई आदर्शों से विमुख हो गया था। इसलिए पुस्तक की 'अनैतिकता', उसकी 'अशिष्टता', उसकी 'ढीली शैली' और उसमें व्याप्त 'धर्म की मूर्तिपूजक विचारधारा' के विरुद्ध आक्रोश उत्पन्न हुआ, जिसने हॉवर्थ के पादरी निवास में उसकी लेखिका, भोली-भाली लड़की को इतना दुख पहुँचाया कि 'क्वार्टरली रिव्यू' में उसके विरुद्ध यह टिप्पणी लिखी गई: 'यदि हम इस पुस्तक को किसी महिला की रचना मानते हैं, तो हमारे पास इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है कि हम इसे ऐसी महिला की रचना मानें जिसने किसी पर्याप्त कारण से लंबे समय से अपनी ही जाति की महिलाओं का साथ त्याग दिया है।'

लेकिन ऐसे आलोचक यह भूल गए कि जीवन में हम सबसे अधिक जिन लोगों से प्रेम करते हैं, वे परम महान, पूर्ण, अलौकिक और देवदूत जैसे नहीं होते; बल्कि वे होते हैं जो अपनी कमियों के बावजूद सुंदर और सच्चे होते हैं, भले ही वे उन सभी दोषों से भरे हों जिनसे हमारी मानवता ने उन्हें लाद दिया है; वे जो, वर्ड्सवर्थ की कविता में वर्णित बच्चे की तरह, संसार के कलंक और पाप के बीच भी, दिव्यता से प्रेरित 'गौरव के बादलों' को अपने साथ लिए रहते हैं। यही वे प्रकाश हैं जो 'जेन आयर' को एक ऐसी सुंदरता से रोशन करते हैं जो वास्तव में और पूर्णतः मानवीय है। इस प्रकार, अपनी पहली ज़बरदस्त प्रशंसा के बाद, यह पुस्तक अंग्रेजी साहित्य में उस शिखर पर पहुँच गई जहाँ इसे एक महान और मौलिक प्रतिभा की रचना के रूप में, और जैसा कि हम अब जानते हैं, एक सच्ची और महान महिला की रचना के रूप में, हमेशा के लिए रहना चाहिए।

इसलिए, श्रीमती गैस्केल को शार्लोट की प्रतिभा की उन विशेषताओं को समझाने की कोई आवश्यकता नहीं थी, जिनके कारण 'जेन आयर' और उसके लेखक पर इस प्रकार के आरोप लगे, और इसके लिए उन्होंने अपने भाई के चरित्र और इतिहास का हवाला दिया, जैसा कि उन्होंने समझा था। एमिली और ऐनी के उपन्यासों के साथ जो

भी हुआ हो, शार्लोट के उपन्यास स्पष्ट रूप से उनके अपने स्वभाव और अपने अनुभवों का परिणाम थे, और उन पर उनके भाई का किसी भी प्रकार का प्रभाव नहीं था। यदि वह उनके मामलों से कोई सुझाव लेती भी हैं, तो वह उसे ठंडेपन या कठोरता से लेती हैं। उदाहरण के लिए, 'द प्रोफेसर' से उद्धृत उस अंश को लें, जहाँ विलियम क्रिम्सवर्थ घरेलू विश्वासघात की एक घटना की अपनी स्मृति का वर्णन करते हैं।

दिसंबर 1847 में एलिस और एक्टन बेल की रचनाएँ प्रकाशित हुईं। उसी वर्ष क्रिसमस पर तीनों बहनें लेखिकाओं की दुनिया में प्रसिद्ध हो गईं - करर बेल तो और भी मशहूर हो गईं। किसी परिवार के बारे में इतना कुछ दर्ज होना अक्सर संभव नहीं होता। ब्रैनवेल उनकी सफलता से बेहद खुश थे और उन्होंने उत्सवों में इतना मग्न होकर जश्न मनाया कि उन्हें स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना करना पड़ा। उनका कमजोर स्वास्थ्य जल्द ही उन चीजों से प्रभावित होने लगा जिनका आमतौर पर मजबूत लोगों पर कोई खास असर नहीं पड़ता, और उन्हें इसके परिणाम भुगतने पड़े। 11 जनवरी 1848 को शार्लोट लिखती हैं: - 'हाल ही में घर पर हमारा जीवन बहुत सुखमय नहीं रहा है। ब्रैनवेल किसी न किसी तरह से पुराने मोहल्ले से और अधिक धन प्राप्त करते रहे हैं और उन्होंने हमारा जीवन दुखमय बना दिया है... पापा दिन-रात परेशान रहते हैं; हमें चैन नहीं मिलता; वे हमेशा बीमार रहते हैं; दो-तीन बार दौरे पड़ चुके हैं; उनका अंतिम परिणाम क्या होगा, यह तो भगवान ही जानते हैं। लेकिन ऐसा कौन है जिसके जीवन में कोई न कोई कमी, कोई न कोई परेशानी, कोई न कोई राज़ न हो?' अब बस अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना और ईश्वर द्वारा दी गई हर चुनौती को धैर्यपूर्वक सहन करना ही शेष है। इसी महीने 'जेन आयर' का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ।

श्रीमती गैस्केल ने शायद इसी दौर के संदर्भ में कहा होगा कि ब्रैनवेल ने अपने पिता को गोली मारी होगी। लेकिन यह कथन अतिशयोक्तिपूर्ण है; और वास्तव में, मार्था ब्राउन और नैन्सी वेनराइट दोनों ने मुझे बताया है कि ब्रैनवेल उतना बुरा नहीं था जितना श्रीमती गैस्केल ने उसे बताया है। मेरे सूचनादाता का कहना है, 'अगर वह अपने पिता को गोली मारना चाहता, तो वह आसानी से ऐसा कर सकता था, क्योंकि शयनकक्ष के दरवाजे पर हमेशा भरी हुई बंदूकें और पिस्तौलें टंगी रहती थीं।' वह बताती हैं कि एक बार वह शयनकक्ष की सफाई कर रही थीं और जैसे ही उन्होंने बंदूकें धूल झाड़ने के लिए उतारीं, श्री ब्रोंटे घबराए हुए कमरे में आए और उन्हें चेतावनी दी

कि वे आगे कभी भी, किसी भी हालत में, उनसे छेड़छाड़ न करें, क्योंकि वे तब भी भरी हुई थीं और गलती से चल सकती थीं, जिससे उनकी जान को खतरा हो सकता था। उन्होंने स्वयं फिर से बंदूकें टांग दीं। श्री ब्रोंटे ने इस अनोखी प्रथा को जारी रखा और इसे बंद करने के लिए उन्हें राजी नहीं किया जा सका; और, जैसा कि पाठक को ज्ञात है, ब्रैनवेल और उनके पिता इसी शयनकक्ष में रहते थे।

इस समय ब्रैनवेल स्वयं अपनी कमियों के प्रति सचेत थे और कुछ हद तक उनसे शर्मिंदा भी थे। जनवरी 1848 में उन्होंने लेलैंड को लिखा: 'जब मैं पिछली बार हैलिफ़ैक्स में आपसे मिला था, तब मेरी तबीयत वास्तव में ठीक नहीं थी; और यदि आप श्रीमती — — से मिलें, तो कृपया उन्हें बता दें कि मैं उनके व्यवहार को अत्यंत दयालु और मातृत्वपूर्ण मानता हूँ, और यदि मैंने अपनी अस्थायी बीमारी के दौरान कुछ ऐसा किया हो जिससे उन्हें ठेस पहुँची हो, तो मुझे इसका गहरा खेद है, और मैं उनसे निवेदन करता हूँ कि जब तक मैं उनसे दोबारा न मिलूँ, तब तक वे मेरे खेद को मेरी क्षमा याचना समझें; मुझे विश्वास है कि ऐसा जल्द ही होगा।' वे अपने साहित्यिक कार्यों और कविताओं के बारे में सामान्य शब्दों में बात करते हैं, विशेष रूप से 'कैरोलिन' कविता का उल्लेख करते हैं, जिसे उन्होंने बहुत पहले लिखा था, और बाद में एक लंबा पत्र लिखने का वादा करके पत्र समाप्त करते हैं।

इस पत्र के साथ एक चित्र संलग्न है, जो ब्रैनवेल द्वारा बनाए गए सबसे विचित्र चित्रों में से एक है, जिसे वह अपने मित्र को नष्ट करने की सलाह देता है। यह उसका स्वयं का चित्र है, जिसमें सिर और कंधे सहित, कलम से बड़े उत्साह से बनाया गया है, और एक प्रशंसनीय समानता भी है, प्रोफ़ाइल से, गंभीर और विचारशील, चश्मा पहने हुए, लेकिन ब्रैनवेल का यह चित्र कितनी दयनीय स्थिति में है! क्योंकि, जिस प्रकार प्राचीन काल के शहीदों को उनकी छाती में चाकू घोंपे और उनके गले में रस्सी डाले हुए दर्शाया जाता है, उसी प्रकार ब्रैनवेल ने स्वयं को अपने गले में फंदा डाले हुए, अपनी कल्पना की भयावह शहादत में चित्रित किया है।

अध्याय XIII.

ब्रैनवेल की उत्तरवर्ती काव्य रचनाएँ।

ब्रैनवेल की काव्य रचना — 'मोर्ले हॉल' कविता में उपयोग करने के लिए उनके द्वारा चुनी गई सामग्री का संक्षिप्त विवरण — कविता — अधूरा विषय — ब्रैनवेल की कविता, 'द एंड ऑफ ऑल' — अपनी कविता 'पर्सी हॉल' पर राय मांगने के लिए लेलैंड को लिखा गया उनका पत्र — अवलोकन — कविता।

इस अवधि में, जब ब्रैनवेल का स्वास्थ्य खराब था, उनकी काव्य रचनाएँ अधूरी रह गईं, क्योंकि उनकी लिखी दो रचनाएँ ही बची हैं, और दोनों ही अंश मात्र हैं। इनमें से पहली रचना 'मोर्ले हॉल' है, जिसे वे अपने मित्र लेलैंड के लिए लिख रहे थे, लेकिन जिसे वे पूरा करने से पहले ही मर गए। उन्होंने इसे कई सर्गों में एक महाकाव्य के रूप में रचने की योजना बनाई थी, जिसमें प्रेम प्रसंगों की एक श्रृंखला का वर्णन था, जिनमें से एक वास्तविक पलायन (जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है) मुख्य था। उन्होंने जो भाग पूरा किया वह प्रारंभिक सर्ग था, या यूँ कहें कि उसका एक अंश, जो नीचे दिया गया है; लेकिन, चूंकि उन्होंने इस रचना में बहुत उत्साह से काम किया था, और यदि यह पूरी हो जाती तो एक लंबी और महत्वपूर्ण रचना होती, इसलिए यहाँ संक्षेप में उन सामग्रियों का वर्णन करना उचित होगा जिनके साथ उन्होंने काम करने का प्रस्ताव रखा था।

मोर्ले हॉल, या उसका जो भी अवशेष बचा है, वह लैंकेस्टर काउंटी के लीघ पैरिश में स्थित है; और यह लगातार दो परिवारों का निवास स्थान रहा है, जो विवाह के माध्यम से रिश्तेदार बन गए और प्रसिद्धि प्राप्त की। पहला परिवार लेलैंड परिवार था, जो मूल रूप से लंकाशायर में उसी नाम के स्थान से था, और बाद में, राजा हेनरी अष्टम के शासनकाल से पहले कई पीढ़ियों तक, मोर्ले हॉल में निवास करता रहा।

हेनरी अष्टम के समय में यह हवेली सर विलियम लेलैंड या लेलैंड की थी, जिनके परिवार में उनके पुत्र और उत्तराधिकारी थॉमस और उनकी पुत्रियाँ ऐनी और

एलिजाबेथ थीं, जो क्रेवन के व्हिटगिल निवासी एलन सिंगलटन की पुत्री और उत्तराधिकारी ऐनी से उनके विवाह से हुई थीं। मोर्ले में अत्यंत समृद्ध जीवन व्यतीत करते हुए, सर विलियम से उनके मित्र और संभवतः रिश्तेदार, विद्वान पुरातत्वविद् जॉन लेलैंड मिलने आते थे। इस लेखक ने अपनी यात्रा का वर्णन इस प्रकार किया है: 'मैनचेस्टर से मोर्ले की ओर, सर विलियम लेलैंड के घर की ओर आते हुए, मैं एक बाड़े वाले मैदान से गुजरा, ... बाईं ओर एक मील से अधिक दूरी पर, श्री लैंगफोर्ड के तथाकथित एजक्रॉफ्ट का एक सुंदर स्थान था... श्री लेलैंड का घर, मोर्ले, नींव को छोड़कर, पत्थर के चौकोर ढांचे से बना है जो पानी से छह फुट ऊपर एक विशाल टीले के भीतर तक फैला हुआ है, और यह पूरी तरह से लकड़ी का बना है, जैसा कि लैंकेस्टरशायर के अधिकांश हिस्सों में सज्जनों के घरों के निर्माण में आम है। यहाँ फलों के बागों, विभिन्न प्रकार के फलों और सुंदर ढंग से बनाए गए रास्तों और बगीचों का उतना ही आनंद है जितना लैंकेस्टरशायर के किसी भी स्थान पर है।

सर विलियम के बाद उनके पुत्र थॉमस उत्तराधिकारी बने, जिन्होंने सर जॉन एथर्टन की पुत्री ऐनी से विवाह किया था। उनके पुत्र और उत्तराधिकारी रॉबर्ट और दो पुत्रियाँ, ऐनी और एलिस थीं। ऐनी ने टाइल्डस्ले के एडवर्ड टाइल्डस्ले से विवाह किया, जिनके साथ श्री पीटर्स द्वारा पद्यबद्ध किंवदंती के अनुसार, और जिस पर ब्रैनवेल विस्तार से लिखना चाहते थे, ऐनी भाग गई थीं। इस घटना की परंपरा आज भी मॉर्ले हॉल में प्रचलित है। कहा जाता है कि जब थॉमस लेलैंड की सबसे बड़ी पुत्री ऐनी और एडवर्ड टाइल्डस्ले के बीच प्रेम निराधार हुआ, तो ऐनी के पिता ने इस संबंध को अस्वीकार कर दिया। यह भी कहा जाता है कि इस निषेध की अवहेलना करते हुए, भागने के लिए एक रात तय की गई और जब घर के सभी लोग सो रहे थे, तब यह तय किया गया कि ऐनी अपनी कमर में एक रस्सी बांधेगी, जिसका एक सिरा खाई के पार टाइल्डस्ले की ओर फेंकेगी, जो वहाँ प्रतीक्षा कर रहा होगा, और फिर एक अन्य व्यक्ति के साथ पानी में उतरेगी और टाइल्डस्ले उसे खींचकर किनारे पर ले आएगा। किंवदंती के अनुसार, यह कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और परिवार को भागकर शादी करने की बात पता चलने से पहले ही शादी का जश्न मनाया गया।

यह उल्लेखनीय है कि, जबकि थॉमस लेलैंड का रॉबर्ट लेलैंड के रूप में एक वैध पुत्र और उत्तराधिकारी था, मोर्ले का जागीर घर और उसकी संपत्ति केवल विवाह के माध्यम से टाइल्डस्ले परिवार को हस्तांतरित हो गई, मानो ऐसा कोई व्यक्ति था ही

नहीं।

इस परिवार से जुड़ी अन्य कई दिलचस्प और विचित्र कहानियां भी हैं, जिनसे ब्रैनवेल परिचित थे; लेकिन इस संक्षिप्त उल्लेख के लिए इस कृति का सीमित उपयोग ही पर्याप्त है।

मॉर्ले के टाइल्डस्ले परिवार से ही वीर सर थॉमस थे, जो शाही सेना में मेजर-जनरल थे और 25 अगस्त, 1651 को विगन में शहीद हो गए थे। ब्रैनवेल ने अपनी कविता में इसी घटना का जिक्र किया है। कविता का अंश इस प्रकार है: —

मोर्ले हॉल,
लीघ — लंकाशायर।
जब जीवन की जवानी, उमड़ते बादलों से घिरी हो
उन चिंताओं के बारे में जो अंतिम संस्कार में शामिल भीड़ की तरह आती हैं,
जो है उससे ऊब जाना, और जो दिखाई नहीं देता
भविष्य पर सूर्य की एक किरण फूट पड़ी,
यह उन दुखों को दूर करने का प्रयास करता है जो
और बीते समय की उज्ज्वल खुशियों को उधार लें।
जिस पर हमारे पैर पड़े, वह शायद एक सड़क रही हो।
घोड़ों के खुरों द्वारा ऊंट के बोझ के नीचे दबाए जाने से;
लेकिन बचपन के घंटों में हमें जो कुछ देखने को मिला
क्या खेत जून को मई के मौसम के फूलों से सजा रहे थे?
तो जो कुछ हुआ और सहा गया, भले ही वह बहुत पहले की बात हो,
दुख के आंसुओं से रंगे होने के बावजूद भी यह हमारे हृदय को संतुष्ट करेगा।
जब वर्तमान दुख हर विचार को व्यस्त कर दे,
हमारे पिता के दुख आनंद का रूप धारण कर सकते हैं।
और, हमारे पूर्वजों ने जो कुछ सहा है, उसे जानते हुए,
हम थके होने के बावजूद भी मुस्कुराते हुए आगे बढ़ सकते हैं।
क्योंकि यदि हमारी जवानी किसी संकट के बादल की छाया में आ जाए,
जीवन के फूलों से भरे मैदान बंजर दलदलों में बदल रहे हैं,
हम उस प्रचंड चमक और विस्फोट की गर्जना को जानते हैं

हम जैसे अन्य लोगों को भी यह सब सुनने और महसूस करने के लिए मजबूर होना पड़ा;

और जब वे एक शांत कब्र में सड़ रहे हों,
सब कुछ छीन लिया गया — उनके पास जो कुछ भी था, सब व्यर्थ है —
हम अब भी, चेहरा सीधा करके, सूर्य को निहारते हैं।
जो कार्य किए गए हैं, उनके उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत करें।
सिर या हाथ से — और, आने वाले समय में,
हम विनाश के द्वार तक उज्ज्वल रास्तों पर चल सकते हैं।
तो, अगर हम अपने आरामदायक विला के दरवाजे से देखें,
लताओं या हनीसकल से ढका हुआ,
दुख भरे विचार होने पर भी हम मुस्कुरा सकते हैं।
यह सोचकर कि हमारी झोपड़ी उस ढेर से कहीं बेहतर है।
जिसके बुर्ज हमारे सामने जंगल के बीचोंबीच लड़खड़ा रहे हैं,
और जिनके अभिमानी स्वामी हमें रौंदते थे;
अब चारों ओर खरपतवार और लताएं उग आई हैं।
और समय के स्पर्श से, जो पत्थर पर पत्थर गिराता है।
हम घिस-पिट कर चुकी चीजों को तिरस्कार भरी निगाहों से देखते हैं।
और कभी भी अपने पतन के बारे में सपने न देखें।
इस प्रकार, मई दिवस प्रत्येक फूल और पेड़ को प्रसन्न करता है,
धरती को जीवंत करते हुए और लगभग मुझे भी प्रसन्न करते हुए,
मैं ली की जीर्ण-शीर्ण खाईयों को लगभग भूल ही गया हूँ।
'विस्तृत लंकाशायर ने अपना बचपन बदल लिया है,
जैसे समय के साथ-साथ छोटे पौधे बड़े होकर लकड़ी के लट्ठे बन जाते हैं;
लेकिन बड़े होने पर भी उन्हें अपना बचपन याद रहता है।
और उनके अंधेरे दिसंबर में गर्मी के बारे में सोचें,
इसलिए मैनचेस्टर और लिवरपूल को आश्चर्य हो सकता है,
और उन प्राचीन महलों को प्रणाम करते हैं जिन पर वे चिंतन करते हैं।
इस बात से अनभिज्ञ कि मनुष्य की आत्मा सभी चीजों के लिए तरसती है
जो एक बार खो जाने पर, प्रार्थनाओं से भी कभी वापस नहीं आ सकता।

गारे, ईंट और पत्थर के ऐतिहासिक ढेर,

जहां व्यापार की बोलियां शोर मचाती हैं और संघर्ष जारी रखने के लिए लाभ कमाती हैं,

धनवानों द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा करना —

परिश्रम और जान की कीमत पर खरीदे गए मुनाफे के कारण युवा मारे गए —

यह शांत, चिंतनशील मन को बाधित नहीं करेगा

बीते वर्षों को याद करते हुए जब गर्मियों की हवाएँ चलती थीं

गाते हुए, चक्कियों के ऊपर नहीं, बल्कि पैतृक महलों के चारों ओर।

और, इंजन की भाप के बजाय, झरनों से ओस बरसने लगी।

‘जो ईंटों से बने घरों से घिरे रहते हैं,

जो देखने या सूंघने में कुछ भी सुंदर नहीं दिखाते।

हरे-भरे खेतों के लिए तड़प, अपने कमरे में संजो कर रखेगा

कुछ मुरझाए हुए पौधे जिनमें प्राकृतिक रूप से फूल नहीं खिलते;

और, उन कारखानों में उमड़ने वाली भीड़ की तरह,

गर्मी के बीच मुरझाते हुए, और अपनी बसंत ऋतु में बूढ़े होते हुए,

इसलिए लंकाशायर शायद इसे स्नेहपूर्वक देखेगा

उसके सदियों पुराने अवशेष तेजी से लुप्त हो रहे हैं,

और रेलमार्ग, सड़क और मिल पर अतिक्रमण करते हुए

चारों ओर धुएँ से भरा परिदृश्य है,

वह शायद किसी लड़खड़ाती दीवार को देखकर मुस्कुरा दे।

पुराने दिनों को वापस लाओ, जैसे कि प्राचीन मोर्ले हॉल।

लेकिन वे मीनारें जिन्हें लीलैंड ने पुराने समय में देखा था

अब, लीलैंड की रचनाओं की तरह, वे भी लगभग लुप्त हो चुकी हैं।

पुरातत्वविद के पन्ने, मकड़ी के जाले से ढके हुए,

प्राचीन हवेली को जमीन के बराबर समतल कर दिया गया था।

जब वो सब कुछ खत्म हो जाएगा जो कभी गर्व को बढ़ावा देता था,

मनुष्य को इस बात की परवाह कम ही होती है कि समय अपने पीछे क्या छोड़ जाता है;

और जब एक बाग और एक खाई, आधी सूखी हो,

शेष रह जाते हैं, बीते हुए युग की सत्ता के एकमात्र अवशेष के रूप में।
क्या हमें अपने भविष्य के स्वरूप के बारे में नहीं सोचना चाहिए?
और ली की शिलाओं में हमारे ताबूतों को देखें।
उस स्थान के भीतर जो कभी निवास स्थान हुआ करता था
मनुष्य के लिए शांति या युद्ध का प्रश्न और ईश्वर का भय,
अब बारिश हो या हवा चलना एक दैनिक खेल बन गया है।
और मानव जाति के साथ कोई जान-पहचान नहीं टिकती।
कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें प्यार किया जा सकता है, और प्यार जो प्यार दे सकते हैं।
जब मस्तिष्क सोचता है, तब नब्ज़ें धड़कती हैं और शरीर जीवित रहते हैं।
मृत्यु की बेबसी में, उन्हीं के साथ लेटना होगा
जो हमारी ही तरह कब्र को अपना अंतिम विश्राम स्थान पाते हैं,
जब मृत्यु पर्दा गिरा देती है और रात शाम को अपने अंत की ओर ले जाती है।
‘राजा चार्ल्स, जो भाग्य के बिगड़ने पर भी नहीं गिरे,’
शायद उदास निगाहों से मोर्ले हॉल पर एक नजर डालेगा,
और, यद्यपि उनका सिंहासन दुर्भाग्य की लहर से बच गया,
याद रखना, टाइल्डस्ले ने उस सिंहासन को बचाने के लिए अपनी जान दे दी।

इस कालखंड में ब्रैनवेल की अगली कविता का शीर्षक 'सबका अंत' है, जो पूर्ण है और उनकी सबसे मार्मिक कविताओं में से एक है। यह उनके मनोभाव का सटीक चित्रण करती है और उस समय उनके विचारों की उदासी और विक्षिप्तता को दर्शाती है। वे अपने प्रियतम की मृत्यु पर अपने गहरे चिंतन को व्यक्त करते हैं, जिसके जाने से उनकी आत्मा एक खाली और उजाड़ शून्य में तब्दील हो जाती है, एक ऐसा दुख जिसे कोई कम या दूर नहीं कर सकता। लेकिन क्षण भर के लिए वे यह सपना देखते हैं कि दूर देशों में युद्ध, संघर्ष और खतरे से भरा जीवन, एकांत महत्वाकांक्षा के 'पत्थरमय सुख', उन दुःखों की स्मृति को संजो सकते हैं जिन्हें मिटाया नहीं जा सकता। फिर भी, इस ठंडे सपने से भी, हृदय के इस क्रूर अफीम से, मरणासन्न स्त्री की कराह उन्हें इस चेतना की ओर खींच लाती है कि उसके जाने के साथ ही सब कुछ

समाप्त हो जाएगा। शोक संतप्त व्यक्ति स्वयं ब्रैनवेल हैं, और उनकी 'मैरी' निस्संदेह उनके उस खोए हुए स्नेह की महिला हैं, जिनके खोने का शोक वे अब भी उदासी और पीड़ा भरे शब्दों में व्यक्त करते हैं। प्रत्येक भावपूर्ण स्वर तीव्र मानसिक पीड़ा से गूंजता है, क्योंकि वे आने वाले उन वर्षों की निराशा के बारे में सोचते हैं जिनमें उन्हें अकेले ही कब्र की ओर भटकना पड़ेगा। यहाँ, उनकी अन्य कविताओं की तरह, ब्रैनवेल की लयबद्ध मधुरता उन शब्दों में प्रवाहित होती है जिन्हें उनके इच्छित विचार को व्यक्त करने के लिए सावधानीपूर्वक चुना गया है, और यह विचार स्वयं भी बड़ी शक्ति और संकेत के साथ प्रस्तुत किया गया है।

सब कुछ का अंत।
उस निर्मम शीत ऋतु की रात में,
जब मेरी पत्नी—मेरी मैरी—की मृत्यु हुई,
मैं, अपनी अग्नि के घटते प्रकाश से,
वह बेचैनी से बैठा रहा और चुपचाप आह भरी।
जब अनियंत्रित दुःख की कड़वी लहर फूट पड़ी,
मुझे ऐसा लगा, जब वह चली गई थी,
घंटों नहीं, बल्कि वर्षों तक, ऐसा ही चलता रहेगा।
और जागकर रोना, और अकेले जागते रहना।
‘सारी सांसारिक आशाएं समाप्त हो चुकी थीं।
और घड़ी की हर टिक-टिक मौत को और करीब ला रही थी।
उस शांत कक्ष की ओर जहाँ वह लेटी थी,
जब आत्मा और शरीर मृत्यु के लिए शांत हो जाएं;
लेकिन मेरी दृष्टि उसकी स्वर्ग की ओर उन्मुख दृष्टि नहीं थी।
जब गर्म आँसुओं ने मुझे झुलसा दिया, जैसे उसकी नियति
मेरे बीमार दिल की धड़कन तेज़ हो गई
अधीर पीड़ा को स्थान देने के लिए।
“ओह, अब,” मैंने सोचा, “थोड़ी देर रुकिए।”
और इस विशाल घर में अब और कोई नहीं रह पाएगा।
जिसका स्नेहपूर्ण प्रेम अंधकार को दूर कर सकता था

कई लंबी रातें बीत चुकी हैं!
ओह! वो सारे सुखद पल बीत गए!
जब हम अपने घर की आग के पास बैठे थे,
तेज हवाओं की गर्जना सुनकर मुझे मुस्कान आ जाती थी।
और मुड़कर अपनी खूबसूरत दुल्हन को गले लगा लूँ।
मैं उन विचारों को सहन नहीं कर सका जो मेरे मन में उठे।
जो हो चुका है और जो होना ही है,
और फिर भी अँधेरी रात अपना रहस्य उजागर करती रहेगी
इसकी दुःखपूर्ण भविष्यवाणी;
फिर भी मैंने देखा — मैं कितना दुखी था —
अन्यथा, लंबी-लंबी रातें, अकेलेपन और उदासी में बीतती रहेंगी।
समय के साथ फीके पड़ चुके बालों और कांपते घुटनों के साथ —
असहाय, निराश होकर, मेरी कब्र की ओर चलो।
फिर भी, उस मकबरे की शाश्वत छाया अभी भी बनी हुई है।
मेरे हृदय में भयानक भय उत्पन्न हो गया।
जब मैं उसकी छाया को फैलते हुए देख सका
आने वाले प्रत्येक नीरस वर्ष में,
जिसकी आंसुओं की घाटी ने ऐसी निराशा जगाई
मेरे माथे पर पसीने की बूंदों के साथ,
मैंने प्रार्थना में अपने हाथ बेतहाशा ऊपर उठा लिए
काश, मृत्यु आकर मुझे अभी ले जाए;
फिर उत्तर सुनने के लिए रुक गए —
पागलपन ने मेरे दिमाग को इतना विकृत कर दिया था —
जब, अचानक, आधी रात के आकाश में,
एक लंबी गर्जना के साथ शीत ऋतु की हवा जाग उठी;
और मुझमें जागृत हुआ, यद्यपि अनिर्दिष्ट रूप से,
उफनते समुद्रों का एक तीव्र विचार
जिसकी उग्र लहरें बेरोकटोक विचरण करती थीं,
और, दूर से आती हुई, उमड़ती हुई आवाज़ ने फुसफुसाते हुए कहा, "शांति।"

मैं इस अजीब सी भावना को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।
जिससे पता चला कि दिसंबर का विशाल समुद्र,
और यह भी मत बताइए कि यह अचानक बदलाव कहाँ से आया।
असहाय, निराशाजनक और दयनीय स्थिति से;
लेकिन किसी तरह इसने मुझे यह बात बता दी।
एक ऐसा जीवन—जब मेरी प्रिय चीजें मुझसे दूर हो गईं—
जिसकी एकाकी स्वतंत्रता
शायद मुझे मकबरे की ओर भटकना ठीक लगे।
“ऐसा नहीं था कि मैं अपने प्यार को भूल गया था —
उस रात हमेशा के लिए विदा होते हुए—
उसके लिए असहनीय शोक ने ही उसे प्रेरित किया।
मेरी आत्मा ने उन सभी चीजों को त्याग दिया जिन्हें वह पहले महत्व देती थी;
उस दुख ने मुझे खोजबीन करने के लिए प्रेरित किया।
एक नवजात जीवन, जिसका कठोर आनंद
इससे दुःख की पीड़ा शांत हो सकती है।
उनकी स्मृति को संजोकर रखा जा सकता है, नष्ट नहीं किया जा सकता।
मैं उठा और पर्दे हटा दिए
तारों से रहित निर्जन आकाश को निहारने के लिए,
और उस आधी रात के मलबे पर बनी छवि
जिस रास्ते पर मैं जल्दी से आगे बढ़ना चाहता था,
एक तूफान से दूसरे तूफान तक निरंतर प्रसारण,
और एक पल भी देखने का मौका नहीं दिया गया;
मन की तूफानी हवाओं के बीच यादें गुज़र गईं
जिन दिलों से मैंने प्यार किया - जिन दृश्यों को मैं जानता था।
मेरे मन ने सब कुछ पहले से ही भांप लिया था
तब से मेरी आंखों ने जो कुछ देखा है;
मैंने तुरही की युद्धघोषणा सुनी,
मैं लहूलुहान पुरुषों की पंक्ति में सवार हुआ,
मैंने नॉर्वे की मुख्य भूमि की लहरों पर सवारी की,

मैंने सीरिया के तट की रेत पर अपने निशान देखे,
मुझे ऐसा अजीब संघर्ष और दर्द महसूस हुआ
क्या मुझे जीवित मृत्यु से मुक्ति मिल सकती है?
'मैं अपनी महत्वाकांक्षा को अपनी दुल्हन बनाऊंगा,
और उसे लाल वस्त्रों में देखना आनंददायक था।
क्योंकि रक्तपात के बल पर कोई भी इतनी बेतहाशा सवारी नहीं करता।
जैसे जिनके हृदय पहले ही लहूलुहान हो चुके हैं;
हाँ, भले ही तुम्हें बहुत पहले लेट जाना चाहिए था
कब्रिस्तान की मिट्टी से ठंडेपन से दबा हुआ,
और यद्यपि मैं तुम्हें इस पतित अवस्था में जानता था,
दूर रहने पर मैं शायद उदास सी मुस्कान दूं;
हो सकता है मैं अपनी छाती में अफीम लगा दूं।
शायद सपना देखूँ: — लेकिन ओह! वह दिल दहला देने वाली आह
मुझे यह विचार स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया था।
अगर वह चली गई तो सब कुछ खत्म हो जाएगा;
मैं मुड़ा, रोया और आगे भटकता रहा।
सभी बेचैनी से एक कमरे से दूसरे कमरे में भटक रहे थे।
उस शांत कक्ष में, जहाँ केवल
अंधकार में एक धुंधली रोशनी टिमटिमा रही थी।
'समय का पता ही नहीं चला और वह पल मेरे ऊपर से गुजर गया।'
जब मेरी छाती उसके बिस्तर के ऊपर झुकी हुई थी,
और वह नीरस जीवन जो मेरे सामने मंडरा रहा था
मेरी आवाज भर्रा गई— मैंने अपना सिर झुका लिया।
उसने मुझसे मधुर पवित्र शब्द कहे।
उस उज्ज्वल आकाश का जो इतना निकट चमक रहा था,
और वह अक्सर और पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करती थी।
हो सकता है कि मैं कभी उससे वहां मिल जाऊं;
लेकिन जल्द ही सारी बातें खत्म हो गईं।
जब यह संसार समाप्त हो जाएगा, और स्वर्ग भी,

घोर अंधेरे में, ऐसा प्रतीत होता था मानो वह मंडरा रहा हो।
उसकी आधी मंद, आधी चमकती आँखों पर;
वह अपने प्रेमी को आखिरी बार प्यार भरी नजरों से देखती है,
मरने से पहले आखिरी बार गले लगाना;
और फिर, जब वह उसके ऊपर झुका हुआ प्रतीत होता है,
उनकी मरियम उन्हें आकाश से देखती हैं।

इसी काल की ब्रैनवेल की एक और कविता, जो उनकी अंतिम रचना थी, का शीर्षक 'पर्सी हॉल' है, जिसे वे पूरा करने से पहले ही मर गए। इसका पहला मसौदा लेलैंड की राय के लिए निम्नलिखित पत्र के साथ भेजा गया था:

‘हॉवर्थ, ब्रैडफोर्ड,

‘यॉर्कशायर।

'मेरे प्रिय सर,

मैं साथ में संलग्न अंश भेज रहा हूँ, जो इतना मैला है कि अगर मुझमें हिम्मत होती तो मैं इसे हूबहू लिख लेता, केवल इसलिए कि मैं आपसे यह राय ले सकूँ कि पूरा होने पर इसे "ब्लैकवुड्स मैगज़ीन" जैसी किसी प्रतिष्ठित पत्रिका को भेजना उचित होगा या नहीं।

मुझे उम्मीद है कि आप खतरनाक हॉवर्थ से सुरक्षित घर पहुंच गए होंगे, और मैं ठीक हूँ।

'प्रिय महोदय,

आपका अत्यंत हार्दिक,

‘पी. बी. ब्रोंटे।’

जिस पृष्ठ पर पत्र लिखा गया है, उसके निचले भाग में कलम और स्याही से एक विशाल, नीचा पत्थर का क्रॉस बना हुआ है, जिस पर 'POBRE!' शब्द अंकित है। यह एक उजाड़ पहाड़ी की चोटी पर स्थित है, जिसके पीछे एक तूफानी आकाश है। ब्रैनवेल इसके बारे में नीचे लिखते हैं: 'अब तक लिखा गया सबसे अच्छा समाधि-लेख। यह स्पेन में एक मृत यात्री के ऊपर एक साधारण क्रॉस पर खुदा हुआ है, और इसका सीधा सा अर्थ है "बेचारा!"' ब्रैनवेल के इस विचार के संदर्भ में यह याद रखना चाहिए कि लॉर्ड बायरन ने अपने एक पत्र में बोलोग्ना में एक मकबरे पर अंकित 'Implora pace!' देखकर अपने ऊपर पड़े प्रभाव का वर्णन किया है। कवि कहते हैं: 'जब मैं मर

जाऊं, तो मैं चाहूंगा कि कोई मित्र मेरी कब्र के ऊपर केवल यही शब्द देखे - "Implora pace!"' इस टिप्पणी को पढ़कर श्रीमती हेमंस ने अपनी मार्मिक छोटी कविता लिखी, जिसका शीर्षक इतालवी समाधि-लेख है।

ब्रैनवेल का यह पत्र विशेष रूप से रोचक है, क्योंकि यह हमें दर्शाता है कि अपने जीवन के अंतिम वर्ष में भी, और अपनी अंतिम अधूरी कविता पर काम करते हुए भी, उन्होंने साहित्यिक जगत में एक कवि के रूप में अपनी पहचान बनाने की महत्वाकांक्षा को बरकरार रखा था; और क्योंकि वह फिर से 'ब्लैकवुड्स मैगज़ीन' का जिक्र करते हैं, जिसका महत्व, जैसा कि याद होगा, उनके और उनकी बहनों के युवा मन पर गहरा प्रभाव छोड़ गया था।

लेलैंड को लिखे पत्र के साथ संलग्न अंश, 'पर्सी हॉल', यद्यपि अभी भी दुखद है, फिर भी इसके लेखक की सबसे उत्कृष्ट रचनाओं में से एक है। यहाँ, एक विचित्र और सुंदर संयोग से—यदि इसे संयोग ही कहा जाए—हम ब्रैनवेल को, अपनी नवीनतम रचना में, और इस रचना के पूर्व भाग में दी गई उनकी युवावस्था की रचनाओं की तरह, क्षय रोग के भयावह अध्ययन में लीन पाते हैं; संक्षेप में, हम उन्हें अपने बाद के करियर की छायाओं से ओतप्रोत पाते हैं, उस बहन की मृत्यु के बारे में फिर से बताते हुए, जिसकी स्मृति को उन्होंने जीवन भर स्नेह से संजोए रखा; और शायद, अपने परिवार के अन्य सदस्यों की तुलना में कहीं अधिक गहरी अंतर्दृष्टि के साथ, वे अपनी बहनों एमिली और ऐनी के उस अंत की भविष्यवाणी करते हैं, जो उस बीमारी से उनका इंतजार कर रहा था, जिसका जहर उनके स्वयं के दुबले-पतले शरीर में अपना असर कर रहा था। वास्तव में, इस विषय का चित्रण उस समय ब्रैनवेल की भावनाओं और उनके परिवार को प्रभावित करने वाली उस दुखद बीमारी से उत्पन्न उनके विचारों का सटीक चित्रण है। यह कविता, इस कृति के पूर्वांतरों में उल्लिखित कुछ अन्य कविताओं की तरह, बिम्बों, दृश्यों और कल्पनाओं से परिपूर्ण है, जो लगभग हमेशा ही प्रतिभा की सहज शक्ति और मौलिकता से जीवंत होती हैं। महिला की स्थिति का वर्णन, जिस प्रकार दुर्बलता ने उसे भविष्य के प्रति सजग बना दिया है — जो उस समय ब्रैनवेल की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है — उन प्रभावों का वर्णन जिन्होंने 'उसके हृदय को धड़कने से और उसकी आत्मा को निराश होने से रोका', और जीवित बची महिला की पीड़ादायक भावनाओं का वर्णन, सभी वास्तविकता की जीवंतता से ओतप्रोत हैं; उनमें सत्य की उदात्त गरिमा है, जो उस गहन ज्ञान से उत्पन्न होती है जो

उन दुःखों से अत्यंत गहराई से जुड़ा है जिन्होंने कविता को प्रेरित किया है। शायद, स्नेही पर्सी की उमंग में, ब्रैनवेल किसी न किसी रूप में अपने ही स्वभाव को दर्शाते हैं, हालाँकि उन पर कभी यह आरोप नहीं लगाया गया कि वे मोहिनी मुस्कानों से मोहित हुए थे या खेल के आनंद में बहक गए थे। मुझे लगता है कि ब्रैनवेल की काव्य प्रतिभा उनकी बहन एमिली से कहीं अधिक श्रेष्ठ है, ठीक वैसे ही जैसे एमिली की प्रतिभा शार्लोट और ऐनी की काव्य रचनाओं से श्रेष्ठ थी। एमिली की काव्य प्रेरणा की अभिव्यक्तियाँ सुंदर, बेबाक और मार्मिक हैं, मानो ईओलस के वीणा से निकली धुनें हों, लेकिन उनमें ब्रैनवेल की कल्पना की व्यापक शक्ति, गहराई और विस्तार की कमी है, जो उनकी सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में प्रदर्शित होती है; हालाँकि ब्रैनवेल की काव्य रचनाओं में भी शक्ति की अभिव्यक्ति के बजाय उसके प्रमाण मिलते हैं।

पर्सी हॉल।
पश्चिम की ओर ढलती सूरज की किरणें पर्सी हॉल पर मुस्कुरा रही थीं।
और प्राचीन दीवार पर हरे पत्ते चमक रहे थे।
जहां मैरी गर्मी की हवा का आनंद लेने के लिए बैठी थी,
और पेड़ों के बीच घुलमिलते उसके संगीत को सुनो।
वहाँ वह अपने शांत कुटिया में विश्राम कर रही थी।
जून की लंबी दोपहर के दौरान, घंटों दर घंटे
चोरी-छिपे, मीठी चमक के साथ उसके पास से गुज़रते हुए, परछाइयों तक,
घास के मैदानों पर मुश्किल से ध्यान दिया गया, लंबा होता गया;
लेकिन फिर भी वह बैठी रही, मानो उसे पता ही न हो कि कैसे।
उसका समय बीतता गया, उसकी भौंहें स्वर्ग की ओर झुकी हुई थीं,
और आँखें जो केवल तभी जागती हुई प्रतीत होती थीं, जब भी...
गर्मी की शाम की ठंडी हवा उसके चेहरे को छू रही थी।
दिन भर उसके अंगों में थकान महसूस होती रहती थी।
मानो उसके शरीर पर नींद छाने वाली हो;
और न ही वह अपने सुस्त विचारों को जगाकर परवाह करने में सक्षम थी।
दिन के लिए, या घंटे के लिए, या वह क्या थी, या कहाँ थी:
इस प्रकार— सपनों में खोए हुए, हालांकि नींद से वंचित,

उसके अंगों में बुखार जैसी गर्मी दौड़ती रहती थी,
एक थकावट, एक उदासी, जो छाई हुई थी
उसकी स्फूर्ति और जीवन की असीम शक्तियों के बारे में —
उसे दर्द की तीव्र पीड़ा महसूस नहीं हुई।
लेकिन विचार करना उसके उत्तेजित मस्तिष्क को कष्टदायक प्रतीत हुआ;
कभी-कभी भव्य जंगल उसके सामने तैरने लगते थे।
उसके ऊपर चमकते बादलों के समूह के साथ मिश्रित होकर,
फिर दृश्य हमेशा के लिए दृष्टि से ओझल हो जाते हैं,
या फिर उन काल्पनिक पात्रों से उसका मजाक उड़ाए जिन्हें वह कभी जानती ही नहीं थी:
कभी-कभी ऐसा लगता था कि उसकी आत्मा आज के बारे में सोच-विचार कर रही है।
और फिर वह बेतहाशा दूर भटक गया।
उसके बचपन की झलकियाँ चुराते हुए,
या फिर भविष्य में होने वाली संभावनाओं के दिवास्वप्नों में खोए हुए।
हाँ—विचारों के भूलभुलैयानुमा मार्ग के माध्यम से—
चाहे कुछ भी याद रहे या भुला दिया जाए,
चाहे सपना कितना भी दूषित या धुंधला क्यों न हो,
फिर भी ऐसा प्रतीत होता था कि भविष्य हर बदलाव के बावजूद तैरता रहेगा।
सब कुछ अपरिभाष्य है, लेकिन इशारा कर रहा है
जब जीवन समाप्त हो जाएगा तो उसका स्वागत किससे होगा;
उसे ऐसा लगा मानो—जिन सभी लोगों को वह बहुत अच्छी तरह जानती थी—
उसकी आवाज फुसफुसाते हुए उसे "अलविदा" कहने के लिए कह रही थी;
वह उसे अपने सुखमय घर को भुलाने के लिए कह रही थी;
वह और भी दूर क्षणभंगुर था—अब भी उसे आने का इशारा कर रहा था।
उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई व्यक्ति आराम से लेटा हुआ महसूस करता हो।
हांफती हुई छाती पर ठंडे हाथों को मोड़े हुए,
अभी-अभी अपने पति का अंतिम आलिंगन प्राप्त किया है,
उसने एक बच्चे को चूमा और अपना पीला चेहरा फेर लिया।

इस दुनिया से—जहां सारी भावनाएं त्याग दी गई हैं—
किसी अज्ञात की ओर, जो मंडरा रहा है— ओह! कितना करीब!
और फिर भी— क्षय की उस छवि के विपरीत—
जब वह चुपचाप लेटी हुई थी, तब उसके चारों ओर कुछ मंडरा रहा था,
एक पवित्र सूर्यप्रकाश, एक दिव्य कली,
इससे मकबरे का खौफ कुछ कम हो गया।
और, जैसा कि इसने स्वर्ग के उस पार के शानदार संसार को दिखाया,
उसने उसके दिल को धड़कने से और उसकी आत्मा को निराश होने से रोका।
लेकिन, चमकती हरी घास के ऊपर से कौन आगे बढ़ता है?
क्या ये भव्य उपवन मौन कदमों से एक दूसरे के बीच से गुजरते हैं?
अपने उस नाज़ुक फूल को देखने के लिए, जो उसे नहीं देखता,
फिर भी वह अपनी छवि को हर विचार के साथ समाहित रखता है।
क्योंकि उसी के कारण वो एक आंसू बह निकला
उसकी नीली आँखों से, यह सोचना कि वह कितनी करीब थी
शायद यही उनका विदाई का समय हो!
'मौन कदमों से'
पर्सी ने अपना सुनहरा सिर अपनी पत्नी के ऊपर झुकाया;
और, जब उसने उसे इतनी शांति से सोते हुए देखकर मुस्कुराया,
उसके मन में एक सौम्य अनुभूति छा गई।
जिससे प्रेरित होकर उसने चमकते आकाश की ओर रुख किया।
इसकी भव्यता से हृदय भर जाने पर,
जब वह इस बात पर विचार कर रहा था कि इसकी चमक कितनी अधिक दिव्य है।
वह एक घंटे पहले ही चला गया था।
जहां भव्य कमरे, तीव्र प्रकाश से गर्म,
उसके सामने जबरन बुराई और दुष्टता को थोपा गया;
जहां वह स्वयं अपराध में फंस गया हो, या किसी को अपराध में फंसा रहा हो,
उसकी आत्मा ने अपना समय खो दिया था, और समय की गिनती भूल गई थी।
अब वो मोहक आहें और मुस्कान गायब हो गई थीं।
उसके माथे से "खेल" की चिंताएं गायब हो गई थीं;

उसने मैरी का गर्म हाथ अपने हाथ में ले लिया।
उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं, और— ओह, वे कितनी कोमल चमक रही थीं!
उनके आंसुओं के धुंध के बीच स्नेह की चिंगारी जागृत हुई,
बीते वर्षों के प्रकाश को फिर से जगाते हुए!
उसे पता नहीं था कि उसने अपनी उन चमकती आँखों को क्यों घुमा लिया।
आकाश के प्रति इस प्रकार मौन समर्पण के साथ;
उसे पता नहीं था कि उसकी बांह ने उसे इस तरह क्यों जकड़ लिया था।
मानो उसे जाना ही था, फिर भी वह उसे जाने नहीं दे सकती थी!
"मौत जैसी आवाज में, लेकिन देवदूत जैसी मुस्कान के साथ," उसने कहा।
"मेरी प्रियतमा, जब मैं मर जाऊँगा, तो उन्हें परवाह करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी।"
मेरे मुकुट और ताबूत में लिपटे सिर को फूलों से सजाना;
उन सभी फूलों के लिए जिन्हें मैं देखना पसंद करूंगा
ये फूल अभी खिल रहे हैं, और मेरे साथ ही मुरझा जाएंगे:
वही सूर्य आज हम सभी को पुनर्जीवित होने का आह्वान करता है।
और वही हवाएँ हमें विनाश की ओर ले जाएंगी;
जब सर्दी आएगी तो हम सब नहीं रहेंगे।
धूल में विलीन हो गया — फिर, ढक दिया गया
वसंत ऋतु की पुनर्जीवित हरियाली से। देखो, पर्सी, अब
मेरे गाल कितने लाल हैं — मेरे खिलते हुए गुलाब कितने लाल हैं!
लेकिन शरद ऋतु की तेज हवाओं के आने पर फिर से आना;
फिर उनके बदलते पत्तों और मुरझाए फूलों को देखें;
फिर मेरे बिस्तर के पास आओ, फिर मुझे देखो।
सब कुछ कितना बदल गया है— सिवाय तुम्हारे लिए मेरे प्यार के!
उसने बात की और अपना गर्म हाथ उसके हाथ पर रख दिया;
लेकिन उसने दिल दहला देने वाली आह के अलावा कुछ भी जवाब नहीं दिया;
ओह! उसकी आवाज में भविष्यवाणी की झलक साफ सुनाई दे रही थी।
उसके चेहरे पर स्पष्ट प्रमाण मौजूद थे।
तीव्र उपभोग की शक्ति का! यद्यपि प्रत्येक दिन

उसने उसकी सहज चंचलता को धीरे-धीरे खत्म होते देखा था।
और उसकी आँखों में अस्वाभाविक चमक दिखाई देती है;
उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसकी मृत्यु हो सकती है।
लेकिन उसे लगा कि उसका डर निराधार था।
किसी ऐसी चीज को खोने का दुख जो उन्हें बेहद प्रिय थी;
फिर भी—अब—जब, उसकी भविष्यवाणियों भरी चीखों से चौंककर,
उसने अपनी भयभीत, पत्थर जैसी आँखों को उसकी ओर घुमाया।
और उसने अपना विक्षिप्त सिर उसके गालों पर झुका दिया।
उसने मृत्यु को उस पर घातक लाल रंग लिखते हुए देखा —
उसने देखा और तुरंत ही उसकी आत्मा का प्रकाश डूब गया।
तारों से रहित रात के सूर्यविहीन गोधूलि में!
जब वह अचानक लगे सदमे से व्याकुल होकर बैठा था,
फिर से—और पूरी गंभीरता के साथ—वह बोली,
मानो उसके रचयिता की दुनिया चमक रही हो
अपनी ही धुंधली छायाओं के बीच से:
"मेरे असामयिक निधन पर शोक मत करो - प्रियतम;"
अच्छा ही है कि मृत्यु इससे अधिक भयावह रूप धारण न करे।
इसके बाद वह आता है - खैर, वह विधवा उम्र
मैं अपनी मित्रविहीन तीर्थयात्रा को आगे नहीं बढ़ाऊंगा।
जीवन की अंधकारमयी आंसुओं की घाटी से गुज़रते हुए—यह अच्छा है कि दर्द
न तो वह अपना चाबुक चलाता है और न ही अपनी जलती हुई जंजीर बांधता है।
लेकिन मेरी मृत्यु शैया पर मेरी हालत में मामूली गिरावट आएगी।
तुम्हारे जैसे प्रेम से मुझे सुकून और सहारा मिलता है!

मेरी कविता की प्रति में जे. बी. लेलैंड द्वारा कलम और स्याही से बनाया गया आदर्श पर्सी का चित्र है। यह चित्र सशक्त और प्रभावशाली है; और यद्यपि यह ब्रैनवेल का सटीक चित्र नहीं है, फिर भी सामान्य रूप से उनसे कुछ मिलता-जुलता है। रेखाचित्र के ऊपर 'नॉर्थेंगरलैंड' और नीचे 'अलेक्जेंडर पर्सी, एस्क्वायर' लिखा है; जबकि कलाकार का नाम पर्सी की आकृति से पड़ने वाली छायाओं में दिखाई देता है।

अध्याय 14.

हॉवर्थ में प्रसिद्धि।

शार्लोट का साहित्यिक विषयों पर पत्राचार — उपन्यास — लेखकत्व की स्वीकारोक्ति — ब्रैनवेल का बिगड़ता स्वास्थ्य — उनका लेलैंड को पत्र — ब्रैनवेल और श्री जॉर्ज सियरल फिलिप्स — ब्रैनवेल की बुद्धि की शक्ति बरकरार — 'प्रोफेसर लियोनिडास लियोन' का उनका वर्णन — बाद वाले सज्जन द्वारा 'जेन आयर' के पठन का विवरण — शार्लोट और कृति पर ब्रैनवेल की टिप्पणियाँ।

सन् 1848 के शुरुआती महीने ब्रोंटे परिवार के लिए, और हॉवर्थ गांव के सभी लोगों के लिए, बेहद कठिन साबित हुए। इन्फ्लूएंजा और अन्य बीमारियां फैली हुई थीं, और बहनें भी इससे अछूती नहीं रहीं: ऐनी को तो तेज खांसी और बुखार हो गया, जिससे उनके दोस्त चिंतित हो गए। चर्चयार्ड के पास स्थित पादरी का घर स्वास्थ्य के लिए हानिकारक था; लेकिन श्री ब्रोंटे के कहने पर, एक नया कब्रिस्तान दूसरी जगह खोला गया। हालांकि, वे हर घर में पानी की अच्छी आपूर्ति करवाने में सफल नहीं हो पाए।

उस समय शार्लोट, श्री लेवेस और श्री विलियम्स के साथ 'फ्रेजर मैगज़ीन' में 'जेन आयर' की समीक्षा और अन्य साहित्यिक विषयों पर पत्राचार कर रही थीं। वह अभी भी अपनी पुस्तक के लेखकत्व का रहस्य अपने मित्रों से छिपाए हुए थीं, 'ई.' को टालमटोल भरे पत्रों से भ्रमित कर रही थीं और उनसे प्रकाशन के विचार को छोड़ने के लिए कह रही थीं। 'वुथरिंग हाइट्स' को जनता ने बहुत पसंद नहीं किया था, और एमिली की किसी और साहित्यिक रचना के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं मिलती।

लेकिन शार्लोट 'शर्ली' लिख रही थीं और ऐनी 'द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल' पर काम कर रही थीं, तपेदिक की उस उदासी के बावजूद जो उन पर हावी थी, जैसा कि ब्रैनवेल ने 'पर्सी' की पत्नी के बारे में वर्णित किया है; और जनवरी में लिखे अपने पत्र में, ऐनी ने 'ई.' को बताया कि हॉवर्थ में रहने के बाद से उन्होंने कुछ खास नहीं किया था; फिर भी वे सुबह से शाम तक व्यस्त रहने का प्रबंध करती थीं। हालांकि, वसंत ऋतु में, जब यह मित्र फिर से ब्रोंटे परिवार से मिलने गई, तो उसने अपने लेखन का पूरा श्रेय स्वीकार कर लिया और उसे कविताएँ और उपन्यास दिखाए गए। हालाँकि, ब्रोंटे की बेटियों की पहचान 'मेसर्स बेल' से पहले से ही कुछ लोगों को पता थी, कविताओं के संबंध में, और कभी-कभी इस पर चर्चा भी होती थी, हालाँकि इस तथ्य को सार्वजनिक नहीं किया गया था। ब्रैनवेल स्वयं घर पर थे, शांत थे, लेकिन उनका स्वास्थ्य और शक्ति अभी भी कमज़ोर हो रही थी, क्योंकि शारीरिक कमज़ोरी, उदासी और पुरानी हो चुकी ब्रोंकाइटिस का उन पर बुरा असर पड़ रहा था।

‘द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल’ को ‘वुथरिंग हाइट्स’ और ‘एग्नेस ग्रे’ के प्रकाशक को भेजा गया और उन्होंने इस वर्ष जून में इसे स्वीकार कर लिया। यदि एलिस और एक्टन बेल की पहली रचनाओं का महत्व कम आंका गया था क्योंकि उन्हें ‘जेन आयर’ के लेखक की प्रारंभिक रचनाएँ माना जाता था, तो एक्टन की नई रचना को उसी लेखक की रचना माने जाने के कारण अधिक महत्व प्राप्त हुआ। ‘जेन आयर’ अमेरिका में बहुत लोकप्रिय हुई थी, और वहाँ के एक प्रकाशक ने इसके लेखक की अगली रचना के शुरुआती पन्नों के लिए मेसर्स स्मिथ एंड एल्डर को अच्छी कीमत की पेशकश की, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। लेकिन ‘द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल’ के प्रकाशकों ने यह मानते हुए कि एक्टन बेल, करर बेल का ही दूसरा नाम है, एक अन्य अमेरिकी प्रकाशन गृह को भी इसी तरह की पेशकश की। इस परिस्थिति के कारण प्रश्न और स्पष्टीकरण का दौर शुरू हुआ; और शार्लोट और ऐनी ने मेसर्स स्मिथ एंड एल्डर को यह आश्वस्त करने के लिए लंदन जाने का निश्चय किया कि वे वास्तव में अलग-अलग व्यक्ति हैं। प्रकाशक उन दोनों सुंदर महिलाओं को देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने उनका हार्दिक स्वागत किया। शार्लोट और ऐनी ओपेरा देखने गईं, रॉयल अकादमी और नेशनल गैलरी गईं, और हॉवर्थ लौटने से पहले उन्होंने मिस्टर स्मिथ और मिस्टर विलियम्स से मुलाकात की।

ब्रैनवेल को घर पर पाया गया, शारीरिक रूप से वे वैसे ही थे जैसे उन्होंने उन्हें छोड़ा

था। गर्मियों भर चली पुरानी ब्रोंकाइटिस के कारण उनकी हालत धीरे-धीरे बिगड़ती जा रही थी और उनमें कमजोरी के लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। 22 जुलाई को अपने मित्र लेलैंड को लिखे पत्र में उन्होंने 'पांच महीने की घोर अनिद्रा, तेज खांसी और मानसिक पीड़ा' का जिक्र किया। उन्होंने आगे लिखा, 'मैंने तुम्हें पांच-छह पन्नों का पत्र लिखने का बहुत समय से संकल्प लिया था, लेकिन असहनीय मानसिक कष्ट और शारीरिक कमजोरी ने मुझे ऐसा करने से पूरी तरह रोक दिया।' पत्र पर हस्ताक्षर थे, 'आपका सच्चा, लेकिन लगभग थका हुआ, पी. बी. ब्रोंटे।' शार्लोट ने उनकी बीमारी का कारण केवल अत्यधिक लाड़-प्यार को माना और उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि अंत केवल दो महीने दूर है। उन्होंने 28 जुलाई को लिखा: 'ब्रैनवेल का व्यवहार पहले जैसा ही है। उनका स्वास्थ्य बहुत कमजोर हो गया लगता है। पापा और कभी-कभी हम सभी उनके साथ दुख भरी रातें बिताते हैं। वे दिन भर सोते रहते हैं और परिणामस्वरूप रात में जागते रहते हैं।' लेकिन क्या हर घर में कोई न कोई मुश्किल नहीं आती?’ लेकिन ब्रैनवेल की सेहत ऐसी नहीं थी कि वे घर में ही बंद रहें, और ऐनी की तरह ही, उनके धार्मिक पुनरुत्थान भी होते थे, जिससे उन्हें अपने दोस्तों से मिलने का मौका मिलता था। मैंने उस समय एक बार हैलिफ़ैक्स में उनसे बात की थी, और उन्हें अक्सर हॉवर्थ गाँव में देखा जाता था।

अगस्त या सितंबर में एक रोचक घटना घटी, जिसका विवरण हमें श्री जॉर्ज सियरल फिलिप्स से प्राप्त हुआ है। इससे हमें पता चलता है कि शारीरिक दुर्बलता और मानसिक कष्ट के बावजूद, ब्रैनवेल की बुद्धि अंत तक अपनी शक्ति बनाए रखी; और हमें यह भी पता चलता है कि उन्हें अपनी बहनों की रचनाओं और उनकी ख्याति पर कितना गर्व था। मैं स्वयं अपने व्यक्तिगत अनुभव से श्री फिलिप्स द्वारा ब्रैनवेल की उस समय की विलक्षण बुद्धि के बारे में कही गई सभी बातों का समर्थन कर सकता हूँ। जब शार्लोट और ऐनी लंदन गईं, तो उन्होंने ब्राउन नाम अपना लिया था; लेकिन उनका असली नाम और निवास स्थान कुछ लोगों को पता चल गया था, और जल्द ही यह बात सबको पता चल गई। तब हॉवर्थ में स्थित प्रतिभा के इस तीर्थस्थल पर तीर्थयात्रियों का तांता लग गया, जो उस दिन से आज तक जारी है और आने वाले कई वर्षों तक जारी रहेगा। वास्तव में, उस समय एक सज्जन हॉवर्थ में तीन दिन तक रुके और ब्रैनवेल के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखा, और श्री फिलिप्स के विवरण से हमें पता चलता है कि ब्रैनवेल पहले आने वालों को किस दृष्टि से देखते थे।

उनके मित्र कहते हैं, 'ब्रैनवेल से मेरी जान-पहचान के अंतिम दौर में, उनके शारीरिक रूप में बहुत बदलाव आ गया था; लेकिन अगर उनके मानसिक रूप में भी वही बदलाव आया था, जैसा कि उनके जीवनीकार ने कहा है, तो वे निश्चित रूप से एक असाधारण और प्रतिभाशाली व्यक्ति रहे होंगे। क्योंकि मैंने शायद ही कभी इतना वाक्पटु और विचारपूर्ण भाषण सुना हो, जो हास्य के अनमोल रत्नों से जगमगाता हो और काव्य से मधुर और संगीतमय बन जाता हो, जैसा कि हॉवर्थ गाँव के "ब्लैक बुल" में उनके साथ बिताई गई शामों में उनके होठों से निकलता था। उनका शरीर दुबला-पतला था और उनकी बहन शार्लोट की तरह उनका माथा भी सुडौल था। लेकिन, नशे में चूर होने पर भी, उनमें श्रीमती गैस्केल द्वारा बताए गए शराबी होने का जरा सा भी आभास नहीं होता था। "उनके घने भूरे बाल"—यहाँ उनका तात्पर्य उनके सिर के बालों से है—थोड़े बिखरे हुए थे; लेकिन इसके अलावा, उनमें नशे का कोई लक्षण नहीं दिखता था।' उनकी आंखें बेहद चमकदार थीं और उनके चेहरे पर वैसी ही जीवंतता थी जैसी हो सकती थी; और तो और, उनके पूरे हावभाव से गहन आनंद के संकेत मिल रहे थे।

ब्रैनवेल ने उपन्यासों के कुछ पात्रों का वर्णन किया और अपनी बहनों, विशेष रूप से शार्लोट के बारे में विस्तार से बताया, जिनकी प्रसिद्धि के कारण, उनके अनुसार, गाँव में पहले की तुलना में कहीं अधिक अजनबी आने लगे थे; और श्री फिलिप्स ने एक सज्जन व्यक्ति की यात्रा का निम्नलिखित विवरण दिया है, जो 'जेन आयर' के उत्साही प्रशंसक थे, जिनके कुछ हद तक विलक्षण व्यक्तित्व को उन्होंने 'लंदन विश्वविद्यालय में ग्रीक के प्रोफेसर लियोनिडास लियोन' की उपाधि से छुपाया है:

एक शाम, जब हम सराय के छोटे से बैठक कक्ष में एक साथ बैठे थे, तभी सराय का मालिक अंदर आया और ब्रैनवेल से पूछा कि क्या वह एक ऐसे सज्जन से मिलना चाहेंगे जो उनसे जान-पहचान करना चाहते हैं।

"वह एक मजाकिया आदमी है," मकान मालिक ने कहा; "और मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि वह बहुत अमीर है।"

जैसे ही मकान मालिक बोल रहा था, सिर पर सफेद फर की टोपी, बगल में छाता और नाक पर नीले रंग का चश्मा लगाए एक छोटा, चुस्त-दुरुस्त आदमी बिना किसी औपचारिकता के कमरे में दाखिल हुआ। वह बहुत ही नखरे और उत्तेजित अंदाज में मेज के पास पहुंचा और चिल्लाया:

“मकान मालिक, हमारे लिए थोड़ी ब्रांडी लाओ। मुझे उस प्रतिष्ठित महिला के भाई के साथ एक गिलास ब्रांडी पीने का सौभाग्य चाहिए, जिन्होंने वह महान पुस्तक लिखी जिसने लंदन में तहलका मचा दिया। तीन गिलास, - मकान मालिक - क्या आप सुन रहे हैं? और आप, महोदय, उस महान महिला के भाई हैं, जैसा कि मैंने अनुमान लगाया है? प्रोफेसर लियोनिडास लियोन, महोदय, आपके सम्मान के समक्ष अपना परिचय देने के लिए उपस्थित हैं।”

ब्रैनवेल ने गंभीरता से जवाब दिया:

“पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे, महोदय, हॉवर्थ में आपका स्वागत करने और आपसे बैठने का अनुरोध करने का सम्मान रखते हैं।”

इस पर उस छोटे आदमी ने झुककर अभिवादन किया और अपने गोल-मटोल चेहरे पर एक खुशनुमा हंसी बिखेरी और कहा कि यह उसके लिए एक ऐसा सम्मान है जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी, कि वह "उस महान महिला के भाई, उसके सगे भाई, जिसने यह पुस्तक लिखी है" के साथ एक ही भोजन पर अतिथि के रूप में बैठा है।

‘यहाँ ब्रांडी और पानी परोसा गया, और वह छोटा आदमी और भी खुशमिजाज और बातूनी हो गया। वह लंदन विश्वविद्यालय में ग्रीक के प्रोफेसर थे, और संयोग से लंदन के प्रकाशक स्मिथ के यहाँ थे, जिनके मित्र विलियम्स एक “अद्भुत साहित्यकार थे — सचमुच एक अद्भुत व्यक्ति!” — विलियम्स ने प्रोफेसर से पूछा कि क्या उन्होंने उस समय की चर्चित पुस्तक देखी है — जिसे उन्होंने “विशाल पुस्तक” कहा — जो एक अच्छी प्रतिष्ठा और आधा दर्जन दौलत बनाने वाली थी। श्री विलियम्स ने उसकी इतनी प्रशंसा की कि प्रोफेसर उसके प्रति बहुत उत्साहित हो गए और पूछा कि वह कहाँ मिल सकती है। इस पर, उन्होंने एक सोने का सिक्का देकर उसे खरीदा और बिना बचे पैसे के उसे पढ़ने के लिए घर भाग गए। “यह तो अद्भुत थी, महोदय,” उन्होंने कहा।’

प्रोफेसर ने ‘जेन आयर’ की खूब प्रशंसा की और ब्रैनवेल और मिस्टर फिलिप्स को बताया कि उनका सोने का समय रात दस बजे था, लेकिन किताब पढ़ते समय वे पूरी तरह से मग्न होकर सुबह छह बजे तक बैठे रहे, जब तक कि नौकरानी नहीं आ गई। फिर वे अपने कमरे में चले गए, लेकिन बिस्तर पर जाने के बजाय, वे सुबह दस बजे तक कहानी खत्म करने तक उसके किनारे पर बैठे रहे। ब्रैनवेल ने कहा कि प्रोफेसर द्वारा ‘जेन आयर’ पढ़ने की यह कहानी सुनकर उन्हें इतनी हंसी आई कि वे पेट

पकड़कर हंसे। और जब उन्होंने अगले दिन शार्लोट को इसके बारे में बताया, तो वह भी दिल खोलकर हंसी, और जब वे ऊपर जाकर दूसरी बहनों को यह बात बताने गए, तो उनकी हंसी ने ब्रैनवेल को फिर से खुश कर दिया।

श्री फिलिप्स आगे बताते हैं, 'जब प्रोफेसर की कहानी समाप्त हुई, तो उन्होंने ब्रैनवेल को उस "महान महिला" से मिलवाने के लिए मनाने की कोशिश की, जिसने वह किताब लिखी थी। उन्होंने कहा कि वे उनसे मिलने के लिए बेताब थे और लंदन से यॉर्कशायर तक सिर्फ उनकी एक झलक पाने और शायद उनके वस्त्र के किनारे को छूने की उम्मीद में आए थे। जब उन्होंने देखा कि ब्रैनवेल इस प्रस्ताव को ठुकरा रहे हैं, तो उन्होंने वास्तव में उन्हें बड़ी रकम की पेशकश की और फिर अपनी जेब से एक कीमती सोने की घड़ी निकालकर मेज पर रख दी और कहा कि अगर वे उन्हें उनसे मिलने और हाथ मिलाने देंगे, तो वे इसे भी साथ में दे देंगे...।'

बेचारे ब्रैनवेल अपनी बहन के बारे में अत्यंत स्नेहपूर्ण शब्दों में बात करते थे, ऐसे शब्द केवल एक गहरे भाव वाले व्यक्ति ही कह सकते हैं। वे उनकी शक्ति को जानते थे, और उनके विशाल, उमंग भरे हृदय में छिपी अपार भावनाओं और करुणा को भी, इससे बहुत पहले कि उन्होंने उन्हें "जेन आयर" में व्यक्त किया। जब उन्होंने अपने रिचर्डसन शैली के उपन्यास के पहले अध्याय लिखे, तो उन्होंने उस रचना की निंदा करते हुए कहा कि यह उनकी प्रतिभा के विपरीत है - जो उनके विवेक और आलोचनात्मक निर्णय का अच्छा प्रमाण है। लेकिन जब "द प्रोफेसर" लिखा गया, तो उन्होंने कहा कि यह बेहतर है, लेकिन वह इससे भी बेहतर कर सकती हैं; और, हालांकि यह "जेन आयर" के बराबर नहीं है, फिर भी यह एक महान मौलिकता और नाटकीय रुचि की रचना है।

"मैं जानता हूँ," शार्लोट की प्रतिभाओं के बारे में बात करने के बाद ब्रैनवेल ने कहा, "कि मुझमें भी लोकप्रिय कहानियाँ लिखने की पर्याप्त क्षमता थी; लेकिन अकादमी की योजना की विफलता ने मुझे बर्बाद कर दिया। मैं जंगल में एक पेड़ की तरह गिर पड़ा, जो अचानक और तेज़ हवा से टकराकर फिर कभी नहीं उठ सका। ज़रा सोचिए, अपनी शिक्षा और उन शुरुआती सपनों के साथ, जो लगभग हकीकत में बदल चुके थे, मैं एक काउंटर-जम्पर या रेलवे कार्यालय में क्लर्क बन गया, जो कि कुछ समय तक मेरा पेशा भी था। इसने मुझे मेरी नज़रों में नीचा दिखाया और मेरा दिल तोड़ दिया।"

श्री फिलिप्स कहते हैं, 'उनसे बहस करना व्यर्थ था, फिर भी मैं खुद को रोक नहीं सका और मैंने उनके भीतर की सुप्त ऊर्जा को एक बार फिर से नेक कार्य के लिए जगाने की पूरी कोशिश की।'

“अब बहुत देर हो चुकी है,” उन्होंने कहा; “और अगर तुम सब कुछ जानते तो तुम भी यही कहते।” शराब की लत लगने से पहले, वे एकांतप्रिय घर के सर्वज्ञानी हुआ करते थे। उनकी बहनों की साहित्यिक रचनाओं पर हमेशा उनकी राय ली जाती थी; लेकिन जिस समय की मैं अभी बात कर रहा हूँ, उस समय वे घर में एक गुमनाम शख्स थे।

श्री फिलिप्स द्वारा अपने मित्र के बारे में दिया गया विवरण कुछ इस प्रकार है; यह श्री ग्रुंडी और उनके बाद मिस रॉबिन्सन द्वारा वर्णित नक्काशीदार चाकू और शैतान के वध की अविश्वसनीय घटना से इतना भिन्न है कि यदि हम इस घटना पर विश्वास न करें - जिसे उस सज्जन ने इस अवधि में घटित बताया है, जो कि हमने देखा है कि कितनी गलत है - कि यह घटना संभवतः एक विचित्र हास्य के रूप में घटित हुई थी।

अपने जीवन के अंतिम दो महीनों के दौरान, ब्रैनवेल लोगों के लिए काफी चर्चा का विषय बन गए और उन्हें सम्मान भी प्राप्त हुआ; क्योंकि उनकी बहनें एकांत जीवन व्यतीत करती थीं, इसलिए वे आम तौर पर परिवार के एकमात्र सदस्य थे जो जनता के लिए सुलभ थे। जब वे अजनबियों से मिलते थे, तो वे हमेशा गरिमापूर्ण व्यवहार करते थे और उनकी जिज्ञासा से प्रभावित नहीं होते थे। जो लोग उनसे परिचित हुए, वे श्री फिलिप्स की तरह ही, उनकी महान बौद्धिक क्षमता और उनकी बातचीत की शालीनता और हास्य से प्रभावित हुए। एक सज्जन - जो स्वयं इस समय एक पेशे में शीर्ष पर हैं - जो ब्रैनवेल को बहुत अच्छी तरह जानते थे, उन्होंने मुझसे कहा कि वे हमेशा मानते थे कि शार्लोट के भाई की प्रतिभा ऐसी थी कि वे साहित्य जगत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकते थे।

अध्याय पंद्रह।

ब्रैनवेल की मृत्यु।

ब्रैनवेल का बिगड़ता स्वास्थ्य — जीर्ण ब्रोंकाइटिस और कुपोषण — उनकी मृत्यु — शार्लोट द्वारा इसके संदर्भ — इससे संबंधित कुछ कथनों का सुधार — ब्रोंटे परिवार के बाद के इतिहास का सारांश।

सन् 1848 की वसंत और ग्रीष्म ऋतु तूफानी, गीली और प्रतिकूल रही, और अगस्त में सुहावने मौसम से ब्रैनवेल को कोई खास लाभ नहीं हुआ। उनकी भूख कम हो गई थी और वे कमजोर हो गए थे। पुरानी ब्रोंकाइटिस के अलावा, वे कुपोषण (एक प्रकार की क्षय रोग) से भी पीड़ित थे, जो वंशानुगत प्रवृत्ति के साथ-साथ मानसिक पीड़ा और अनियमित जीवनशैली के प्रभावों से उत्पन्न होती है। हालांकि, न तो उन्हें, न उनके परिवार को और न ही उनके चिकित्सकों को तत्काल किसी खतरे की आशंका थी।

दरअसल, वे पूरी तरह से घर में ही कैद नहीं थे, और अपनी मृत्यु से केवल दो दिन पहले ही गाँव में थे; लेकिन उस समय घर पहुँचने से पहले ही उनकी शक्ति जवाब दे गई। कब्रिस्तान के रखवाले के भाई विलियम ब्राउन ने उन्हें पादरी के घर की ओर जाने वाली गली में पाया, वे पूरी तरह से थके हुए थे, हाँफ रहे थे और आगे बढ़ने में असमर्थ थे। उन्हें घर तक पहुँचाया गया, जहाँ से वे फिर कभी जीवित नहीं निकले।

अपने जीवन के अंतिम दिनों में, ब्रैनवेल अधिक शांत, संयमित और बेहतर भावनाओं से भरे हुए थे। उनके परिवार का स्नेह पहले जैसा ही बना रहा और उन्होंने अपने प्रिय भाई के अंत को अत्यंत चिंता के साथ देखा। कई महीनों से उनके मन पर छाए अजीब से पागलपन ने उन्हें अब छोड़ दिया था और उनके शुरुआती वर्षों के सरल विचार और भावनाएँ फिर से उनके पास लौट आईं। रविवार, 24 सितंबर की सुबह उनका निधन हो गया। उन्होंने रात भर अपने व्यर्थ जीवन, बर्बाद जवानी और शर्मिंदगी के बारे में पश्चाताप के साथ बात की। वे इससे भी भरे हुए थे।

बीते समय की जवानी और मर्दानगी का एहसास व्यर्थ हो जाता है।

जन्मजात प्रतिभा और अर्जित ज्ञान व्यर्थ ही चला गया।

उनका स्वाभाविक प्रेम भी सुंदर और मार्मिक शब्दों में प्रकट हुआ, जिसने उन

लोगों को सांत्वना और संतुष्टि प्रदान की जिन्हें वह हमेशा के लिए छोड़कर जाने वाले थे।

अंत से कुछ समय पहले, जॉन ब्राउन ब्रैनवेल के कमरे में दाखिल हुए और वे दोनों अकेले थे। युवक, हालांकि कमजोर और मरणासन्न था, उसने उनके साथ बिताए जीवन के बारे में बात की। उसने अपने अतीत की उन गलतियों का संक्षिप्त स्मरण किया, जिनमें कब्र खोदने वाला अक्सर शामिल होता था; लेकिन उसमें उसने उस महिला का कोई जिक्र नहीं किया जिसकी छवि उसके मन में छाई हुई थी। मृत्यु के निकट आने की शांति और उससे पहले के आत्म-नियंत्रण में, वह मानो इस बात से अनभिज्ञ था कि उसने कभी अपने परिवार के सदस्यों के अलावा किसी और से प्रेम किया था, उस स्नेह की गहराई और कोमलता को व्यक्त करने के लिए उसके पास शब्द नहीं थे। लेकिन, तभी, ब्राउन का हाथ पकड़कर, उसने कहा: 'ओह, जॉन, मैं मर रहा हूँ!' फिर, मानो अपने भीतर ही सोचते हुए, वह बुदबुदाया: 'अपने पूरे जीवन में मैंने न तो कोई महान कार्य किया है और न ही कोई अच्छा कार्य।' अंतिम क्षण निकट देखकर, कब्रिस्तान के रखवाले ने घरवालों को बुलाया और घंटीघर में चला गया। सुबह लगभग नौ बजे पीड़ा शुरू हुई। ब्रैनवेल का संघर्ष और ऐंठन बहुत तीव्र थी और कुछ समय तक जारी रही: अंतिम सांस लेते हुए, वह ऐंठन के साथ लगभग अपने पैरों पर खड़ा होने ही वाला था, और अपने पिता की बाहों में गिरकर उसकी मृत्यु हो गई।

श्रीमती गैस्केल इस घटना के बारे में कहती हैं: 'मैंने ब्रैनवेल की अंतिम बीमारी के दौरान उनकी देखभाल करने वाले एक व्यक्ति से सुना है कि उन्होंने खड़े होकर मरने का निश्चय किया था। उन्होंने बार-बार कहा था कि जब तक जीवन है, तब तक इच्छाशक्ति है कि वह जो चाहे कर सकती है; और जब अंतिम पीड़ा शुरू हुई, तो उन्होंने ऊपर बताई गई स्थिति में खड़े होने पर जोर दिया।' यह विवरण ब्राउन परिवार द्वारा मुझे दिए गए विवरण से मेल नहीं खाता, और शायद यह वास्तव में घटी घटना का कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है।

9 अक्टूबर को शार्लोट ने अपने भाई के निधन के बारे में इस प्रकार लिखा: 'पिछले तीन सप्ताह हमारे साधारण से घर में अंधकारमय रहे हैं। ब्रैनवेल का स्वास्थ्य पूरी गर्मी भर बिगड़ता रहा; लेकिन फिर भी न तो डॉक्टरों को और न ही उन्हें खुद लगा कि उनका अंत इतना निकट है जितना वास्तव में था। वे केवल एक दिन को छोड़कर पूरी तरह बिस्तर पर ही रहे, और अपनी मृत्यु से दो दिन पहले गाँव में थे। 24 सितंबर,

रविवार की सुबह बीस मिनट के संघर्ष के बाद उनका निधन हो गया। अंतिम पीड़ा आने तक वे पूरी तरह होश में थे। मृत्यु से दो दिन पहले उनके मन में वह विशेष परिवर्तन आया था जो अक्सर मृत्यु से पहले होता है; बेहतर भावनाओं की शांति ने उन्हें भर दिया; स्वाभाविक स्नेह की वापसी ने उनके अंतिम क्षणों को चिह्नित किया। अब वे ईश्वर की शरण में हैं; और सर्वशक्तिमान ईश्वर सर्वदयालु भी हैं। यह गहरा विश्वास कि अंततः उन्हें विश्राम मिल गया है - अपने संक्षिप्त, गलतियों से भरे, कष्टदायक, बुखार से ग्रस्त जीवन के बाद उन्हें अच्छी तरह से विश्राम मिला है - अब मेरे मन को शांत करता है। अंतिम विदाई, उनके पीले पड़े शव का दृश्य, मुझे कल्पना से परे तीव्र, कड़वा दर्द दिया।' अंतिम क्षण आने तक हम नहीं जान सकते कि हम अपने किसी करीबी रिश्तेदार को कितना क्षमा कर सकते हैं, उस पर कितनी दया दिखा सकते हैं और कितना शोक कर सकते हैं। उसकी सारी बुराइयाँ अब न के बराबर हैं और न ही थीं। हमें केवल उसके दुख याद हैं। पापा पहले तो बहुत दुखी हुए, लेकिन कुल मिलाकर उन्होंने इस स्थिति को अच्छे से सहन कर लिया।

कुछ दिनों बाद उन्होंने एक अन्य मित्र को अपने भाई की मृत्यु के बारे में पत्र लिखा। "जिस घटना का आपने जिक्र किया है, वह हम पर सचमुच अचानक आ पड़ी और हम सभी के लिए एक गहरा सदमा थी... आपकी सहानुभूति के लिए धन्यवाद। इन परिस्थितियों में कई लोग हमारे इस नुकसान को राहत की तरह समझेंगे; वास्तव में, हमें पूरी विनम्रता और कृतज्ञता के साथ यह स्वीकार करना चाहिए कि ईश्वर ने न्याय में दया का भाव भी डाला है; लेकिन फिर भी, जैसा कि आप अनुभव से जानती होंगी, निकट संबंधियों के बीच अंतिम वियोग जीवित बचे लोगों के लिए अत्यंत पीड़ादायी होता है। उस समय हर गलती और पाप भुला दिया जाता है; दया और शोक उनके दिलों और यादों में समा जाते हैं। फिर भी, हमारे दुख में सांत्वना की कोई कमी नहीं है। बेचारे ब्रैनवेल के जीवन के अंतिम कुछ दिनों में एक बहुत ही शुभ परिवर्तन आया... और यह परिवर्तन मृत्यु के भय के कारण नहीं हो सकता था, क्योंकि उनकी मृत्यु के आधे घंटे के भीतर वे खतरे से बेखबर प्रतीत हुए।"

शार्लोट अपनी बात का समापन अपने स्वयं के स्वास्थ्य का जिक्र करते हुए करती है, जो तनाव के कारण बिगड़ गया था।

ब्रैनवेल को उसी कब्र में दफनाया गया जिसमें उनकी बहनों मारिया और एलिजाबेथ के अवशेष थे, और उनका नाम पट्टिका पर उनके नाम के ठीक बाद अंकित है। इस

प्रकार, तेईस वर्षों के बाद, वे उन लोगों के साथ मिट्टी में विलीन हो गए जिनसे जीवन भर उनका स्नेह कभी कम नहीं हुआ था।

यह अच्छा होता यदि उनके नश्वर शरीर को समाहित करते समय, उनकी कमियों और दुखों की स्मृति को भी विस्मृति में दफ़न कर दिया जाता। जैसा कि हमने देखा है, शार्लोट को अपने भाई के जाने के बाद उनके दुखों के अलावा कुछ भी याद नहीं था; और यदि शार्लोट और उनकी बहन एमिली के जीवनीकारों ने उन लोगों की भावनाओं पर विचार किया होता जिनके बारे में उन्होंने लिखा था - जिन्हें शार्लोट ने इतने मार्मिक और आँसुओं से व्यक्त किया है - तो वे ब्रैनवेल द्वारा, एक नश्वर प्राणी के रूप में, किए गए किसी भी अपराध पर पर्दा डाल देते। लेकिन, श्रीमती गैस्केल के उनके बारे में अन्य कथनों में से एक, उनकी मृत्यु से संबंधित भी है, जिसे यहाँ अनदेखा नहीं किया जा सकता, क्योंकि यद्यपि उन्हें अपने अन्य आरोपों के साथ इसे अपने कार्य के दूसरे संस्करण से हटाना पड़ा था, मिस रॉबिन्सन ने इसे हाल ही में अपनी पुस्तक 'एमिली ब्रोंटे' में पुनः प्रकाशित किया है। कथन का आशय यह था कि जब ब्रैनवेल की मृत्यु हुई, तो उनकी जेबें उस महिला के पत्रों से भरी हुई थीं जिनकी वे प्रशंसा करते थे। इस साहसिक बयान के जवाब में मार्था ब्राउन ने स्पष्ट खंडन करते हुए कहा कि उस समय वह बीमारों के कक्ष में कार्यरत थीं और उन्हें व्यक्तिगत रूप से पता था कि संबंधित महिला का एक भी पत्र या उसका कोई अंश भी नहीं मिला था। अधिकांश पत्र ब्रैनवेल के परिचित एक सज्जन के थे, जो उस समय उनके पूर्व कार्यस्थल के पास ही रहते थे। मार्था इस गलत बयानी से बेहद नाराज थीं।

यहां ब्रोंटे परिवार के बाद के इतिहास का संक्षिप्त विवरण देना उचित होगा। ब्रैनवेल की मृत्यु के बाद एमिली का स्वास्थ्य तेजी से बिगड़ने लगा, जो उनके लिए एक गहरा सदमा था, और उसके बाद वाले रविवार को वह कभी घर से बाहर नहीं निकलीं। उनकी खांसी बहुत जिद्दी थी और उन्हें सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। शार्लोट ने खतरे को भांप लिया था, लेकिन वह इसे टाल नहीं सकीं, क्योंकि एमिली चुप और अंतर्मुखी थीं, सवालों के जवाब नहीं देती थीं और बताई गई दवाइयां भी नहीं लेती थीं। वह दिन-प्रतिदिन कमजोर होती गईं और मंगलवार, 19 दिसंबर को उनका निधन हो गया। उसी समय ऐनी की हालत भी धीरे-धीरे बिगड़ रही थी, लेकिन वह कुछ समय तक जीवित रहीं। शार्लोट ने कहा, 'ऐनी की हालत धीरे-धीरे बिगड़ रही है; लेकिन इसकी प्रकृति संदेह से परे है।' एमिली के विपरीत, वह सहानुभूति की तलाश में थीं,

दवाइयां लेती थीं और ठीक होने के लिए हर संभव प्रयास करती थीं। अंततः यह तय किया गया कि शार्लेट और वह स्कारबोरो जाएँ, इस उम्मीद में कि वातावरण में बदलाव से उन्हें नई ऊर्जा मिलेगी, और वे 24 मई, 1849 को पादरी के घर से रवाना हो गईं। लेकिन इस बदलाव का कोई लाभ नहीं हुआ, और ऐनी की 28 मई को स्कारबोरो में मृत्यु हो गई, जहाँ उन्हें दफनाया गया।

इसके बाद शार्लोट के जीवन का विशुद्ध साहित्यिक भाग शुरू हुआ। उन्होंने सितंबर 1849 की शुरुआत में 'शर्ली' का लेखन पूरा किया और यह 26 अक्टूबर को प्रकाशित हुआ। उनका असली नाम और जिस इलाके में वे रहती थीं, वह अब सर्वविदित हो गया था। समीक्षाओं की बाढ़ आ गई; लेकिन शार्लोट को यूजीन फोरकेड की 'रिव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस' में लिखी समीक्षा सर्वश्रेष्ठ लगी। अब उनके ऊपर से संकट का बादल छंट गया और उन्होंने लंदन का दौरा किया, थैकरे, मिस मार्टिन्यू और अन्य लोगों से मुलाकात की और साहित्यिक जीवन की गतिविधियों में उत्साहपूर्वक जुट गईं। 'विलेट' का निर्माण नवंबर 1852 में पूरा हुआ। शार्लोट ने 29 जून 1854 को रेवरेंड आर्थर बेल निकोल्स से विवाह किया, जो लंबे समय से उनके पिता के सहायक पादरी थे, और उनकी मृत्यु शनिवार, 31 मार्च 1855 को हुई। रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे, जिन्हें मैं जानता था, एक सुंदर, लंबे, भूरे बालों वाले और आदरणीय बुजुर्ग व्यक्ति थे, जो अपने सभी बच्चों से अधिक समय तक जीवित रहे और 7 जनवरी 1861 को हॉवर्थ में उनका निधन हो गया।

अध्याय सोलह।

ब्रैनवेल का किरदार।

ब्रैनवेल की कविता में उनके चरित्र का चित्रण — उनकी कविताओं में प्रदर्शित धार्मिक और कोमल भाव — भविष्य की बजाय अतीत पर ध्यान केंद्रित करने की उनकी प्रवृत्ति का उदाहरण — उनके मन की उदासी — उनकी निराशावादी प्रवृत्ति — प्रकृति के प्रति ब्रैनवेल का दृष्टिकोण — उनकी रचनाओं में प्रदर्शित चरित्र पर अवलोकन।

अक्सर यह देखा गया है कि किसी कवि के जीवन को सबसे अच्छी तरह से उसके द्वारा छोड़ी गई रचनाओं से ही समझा जा सकता है। हम उसके बाहरी जीवन की परिस्थितियों को समझने में गलती कर सकते हैं, कालक्रम या तथ्यों के बारे में भूल सकते हैं, और इस तरह अक्सर उसके चरित्र का गलत आकलन कर सकते हैं; लेकिन, यदि हम उसकी रचनाओं में छिपे व्यक्तित्व को खोज लें, यदि हम उस अंतर्निहित भावना को समझ लें जिससे उसकी रचनाएँ प्रेरित हैं, तो हम उसके हृदय की गहरी भावनाओं को जान पाएंगे, उसके विचारों की विशिष्ट प्रवृत्ति को समझ पाएंगे, और यहाँ तक कि उसकी आत्मा के मनोविज्ञान को भी जान पाएंगे। यह खोज, सच है, अक्सर अत्यंत कठिन होती है; स्वाभाविक अभिव्यक्ति में छिपे रहस्यों को पूरी तरह से सुलझाना संभव नहीं होता, न ही रूढ़िवादिता या बनावटीपन के धुंधले माध्यम को पूरी तरह से भेदना संभव होता है जिसके माध्यम से यह अस्पष्ट रूप से प्रकट होती है; यूफ्यूइस्ट या पोप जैसे कवियों की रचनाओं में इसे समझना विशेष रूप से कठिन होता है, जहाँ अतिरंजित परिष्कार या शास्त्रीय और औपचारिक सटीकता का प्रयोग किया जाता है।

लेकिन, ब्रैनवेल ब्रोंटे की रचनाओं के साथ मामला बिल्कुल अलग है; और इसका एक बहुत ही सरल कारण है, कि उन्होंने जो कुछ भी लिखा वह व्यक्तिगत प्रेरणा से प्रेरित था, और भावनाओं की पूर्णता और उन जीवंत विचारों या अनुभूतियों की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति थी जिन्हें छिपाना लगभग असंभव था; क्योंकि, संक्षेप में, उन्होंने कुछ कहने की सच्ची कलात्मक भावना से प्रेरित होकर लिखा।

यदि ब्रैनवेल का स्नेही स्वभाव उन्हें अपने प्रारंभिक वर्षों की यादों और उन दिवंगत बहनों के विचारों में लीन कर देता था, जिनसे वे बहुत प्यार करते थे, तो वे दिवंगत कैरोलिन के लिए विलाप करती हैरियट की आवाज़ में बोलते थे; उन्हें अपनी बहनों को खोने वाली उस भयानक बीमारी और उसके कारण उनके परिवार में होने वाली तबाही की याद ही उनके 'पर्सी हॉल' की उदास कल्पना को जन्म देने के लिए काफी थी। यदि

वे घोर निराशा में डूब जाते थे और महत्वाकांक्षा की निरर्थकता, अहंकार की मूर्खता और दुःख की सार्वभौमिकता के प्रति सचेत हो जाते थे, तो उनके सॉनेट उनकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति थे, जिनमें उन्हें राहत और सांत्वना दोनों मिलती थी।

उनके मामले में, मूर्ति को संगमरमर से बाहर निकालने के लिए किसी कुशल कलाकार की आवश्यकता नहीं है, बल्कि केवल एक सहानुभूतिपूर्ण भावना, मानवता के स्नेह से भरा हृदय और कुछ हद तक उदास विचारों के प्रति संवेदनशील मन ही पर्याप्त है, जिससे ब्रैनवेल की रचनाओं के हर भाव को समझा जा सके और उनकी रचनाओं में व्याप्त नैतिक और कोमल संवेदना को आत्मसात किया जा सके। ब्रैनवेल की कविताएँ उनके लेखन के समय की भावनाओं को इतनी पूर्णता से व्यक्त करती हैं कि उन्हें इस कृति में अलग से रखा गया है। लेकिन, इसे समाप्त करने से पहले, उनकी रचनाओं की कुछ सबसे विशिष्ट विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण देना उचित होगा, और ऐसा करने से हम उनके स्वभाव और उनकी कविता दोनों का सही आकलन कर सकेंगे।

ब्रैनवेल की कविता में, उनके युवावस्था से ही, सबसे पहली बात जो ध्यान खींचती है, वह है उसमें व्याप्त भक्ति का भाव। उन्होंने वर्ड्सवर्थ को जो सरल छंद भेजे थे, भले ही वे कविता के रूप में कितने भी महत्वहीन क्यों न हों, वे मूल्यवान हैं, क्योंकि वे उनके प्रारंभिक मन के झुकाव को दर्शाते हैं; और एक वर्ष बाद, 1838 में, उन्होंने जो सुंदर पंक्तियाँ लिखीं, जिनमें उन्होंने सांसारिक वस्तुओं की व्यर्थता के प्रति पहली बार चेतना प्रकट की, जिसे उनकी बहन ऐनी ने भी कविता में ढाला था, वे हमें एक स्वर्गीय भविष्य की आशा के बारे में बताती हैं, जो अपनी शांति में नश्वर जीवन की बुराइयों के विपरीत है। 'कैरोलिन की प्रार्थना' और 'कैरोलिन पर' शीर्षक वाली कविताएँ भी, भले ही सरल हों, उनके भक्तिमय मन के प्रमाण हैं; और 'कैरोलिन' की लंबी कविता में फिर से ध्यान दें कि कैसे हैरियट प्रकृति की शांति में दिव्य सांत्वना पाती है।

‘पवित्र आनंद की शांत हवाएँ
इन जंगली जंगलों में सांस लेते हुए,
नश्वर पागलपन के भंवर के ऊपर
बच्चे की नींद को फैलाओ;

और कितनी कोमलता से वह अपनी दिवंगत बहन द्वारा मानव जाति के उद्धारकर्ता

के कष्टों से प्राप्त धार्मिक शिक्षाओं को याद करती है, एक ऐसी स्मृति जिसे ब्रैनवेल ने स्वयं सहेज कर रखा था। कुछ समय बाद, हम ब्रैनवेल को एक लंबी कविता पर काम करते हुए पाते हैं, जिसका केवल एक अंश ही हमारे पास है, जो अपने स्वरूप में पूर्णतः पवित्र और उद्देश्य में नैतिक है - 'मेथूसाले की कब्र पर नूह की चेतावनी'। यहाँ नूह, सर्वव्यापी प्रलय से पहले, आकाश के चारों ओर छाई बादलों की दीवार के सामने भी, लोगों को उपदेश देते हैं और उनसे कहते हैं कि इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, पाप से दूर रहें। यह सच है कि बाद की कविताओं में, जब ब्रैनवेल का मन गहरे अंधकार में डूबा होता है, तो यह भाव इतना स्पष्ट नहीं होता, और शायद इसे केवल कोमल भावों की प्रचुरता से ही समझा जा सकता है, जो केवल भक्तिमय भावना से ही उत्पन्न हो सकते हैं; और इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यद्यपि उन्होंने अपनी प्रारंभिक भक्ति का कुछ अंश खो दिया हो, फिर भी उसका प्रभाव कभी कम नहीं हुआ। इसके अलावा, ब्रैनवेल की संपूर्ण रचना में संतुलित नैतिकता के प्रमाण मिलते हैं, क्योंकि वे कहीं भी भ्रष्ट भावनाओं का महिमामंडन नहीं करते, न ही अधार्मिकता का प्रदर्शन करते हैं, और न ही कामुक विचारों के चित्रण या कामुक घटनाओं के वर्णन से पाठकों को भ्रष्ट करते हैं। और मैं पाठक से उनकी कविता की इस प्रशंसनीय विशेषता के संदर्भ में यह याद रखने का आग्रह करूंगा कि उन पर कभी भी उस प्रकार के अतिभोग का आरोप नहीं लगाया गया है जिसने कई प्रतिभाशाली और बौद्धिक रूप से सक्षम व्यक्तियों को अपनी ओर आकर्षित किया है।

ब्रैनवेल की कविता में जो बात मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित करती है, वह है अतीत के प्रति उनका गहरा प्रेम, जिसे वे वर्तमान से अधिक महत्व देते हैं और जिसके सुखों को वे भविष्य के किसी भी सुख से कहीं अधिक मधुर और पवित्र मानते हैं। उनके जीवन के उत्तरार्ध की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, जब निराशा ने आशा को पूरी तरह से क्षीण कर दिया था, तो इस विचार को आसानी से समझा जा सकता है; लेकिन यह उनके द्वारा लिखी गई शुरुआती कविताओं में भी उतना ही स्पष्ट है। ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रैनवेल के चिंतनशील मन में, बचपन के सभी विचार, यौवन के सभी सुख और उससे जुड़ी भावनाएँ, समय बीतने के साथ-साथ स्मृति के सुनहरे आवरण में पवित्र और उदात्त हो गईं। अतीत की पवित्रता में ऐसे स्थान थे जहाँ बेंडमीर के गुलाब हमेशा अपरिवर्तित रूप से खिलते थे; ऐसे स्थान जहाँ वे स्मृतियों के सुख के लिए जाते थे, जब एकांत उन्हें चिंतन करने के लिए प्रेरित करता था। स्मृति के ये सुख

अक्सर चिंतनशील होते थे, क्योंकि वे दुखद घटनाओं से जुड़े होते थे, या वे ऐसे सुख थे जो लंबे समय तक बिछड़ने के बाद दुख में बदल जाते थे, जैसा कि सुखों के साथ होता है। ब्रैनवेल ने वर्ड्सवर्थ को लिखे अपने पत्र और अपने अन्य पत्रों में भरपूर सच्ची महत्वाकांक्षा व्यक्त की है और भविष्य में काम करने के बारे में साहसपूर्वक बात की है; और उन्होंने इसी तरह से बात की थी। लेकिन उनकी कविताओं से मुझे यह आभास हुआ है कि यह महत्वाकांक्षा परिस्थितियों की आवश्यकता और साहित्यिक प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न हुई थी; वास्तव में, ब्रैनवेल के मन की संरचना सौम्य चिंतनशील प्रकृति की थी, जिसके सामने महत्वाकांक्षा के सुख खोखले और अपर्याप्त प्रतीत होते हैं। कम से कम यह स्पष्ट है कि वे भविष्य की तुलना में अतीत पर अधिक संतोष के साथ विचार करते थे। जहाँ तक उनकी कविता का संबंध है, हमने 'द एंड ऑफ़ ऑल' में देखा कि जब हानि ने अतीत को चिंतन के लिए असहनीय बना दिया, तभी उन्होंने एकाकी महत्वाकांक्षा और व्यक्तिगत प्रसिद्धि के कठोर सुखों की ओर रुख किया। मुझे लगता है कि यह उनके चरित्र का एक बहुत ही कोमल गुण है, हालांकि यह उनके लिए उन लोगों के साथ जीवन की लड़ाई लड़ने के लिए कितना भी अनुपयुक्त क्यों न हो, जो भविष्य के सुखों की तलाश करते हैं, बजाय उन सुखों की ओर मुड़ने के जिनका स्वाद वे वास्तव में अब और नहीं ले सकते।

ब्रैनवेल के चिंतनशील क्षणों में, शायद जंगल की धूप या दूर बजती घंटियों की आवाज़ ही उनकी यादों को ताज़ा कर देती थी, ठीक वैसे ही जैसे 'कैरोलाइन' कविता में हैरियट की यादों को ताज़ा कर देती थी, आँसुओं का झरना खोल देती थी और स्मृति को उन विचारों से भर देती थी।

‘सोए हुए सपनों के बारे में—भूला नहीं गया।’

इस प्रकार, चिंतन के प्रभाव में आकर, उस पर एक आभा छा गई।

विचारों का वह सैलाब, जो भरता हुआ प्रतीत होता है
धड़कता हुआ दिल, उमड़ती हुई आंखें,
जबकि वर्तमान में मौजूद सभी अच्छी या बुरी चीजें मिट जाती हैं
बीते हुए पलों की छाया से पहले।

इससे उसे वे पल भी याद आ गए जब कैरोलिन भी सर्दियों के तूफानों की आवाज़ सुनकर रातों को तस्वीरों और भावनाओं से भर देती थी।

‘दूर की यादों से प्रेरित।’

स्मृति के ये खजाने, जिनका उल्लेख ब्रैनवेल अपनी कई कविताओं में करते हैं, उनके लिए पवित्र थे और इन्हें अपवित्र नहीं किया जा सकता था। वास्तव में, वे अपने एक सॉनेट में बताते हैं कि स्नेह के आँसू सम्मान की वृद्धि और जीवन की रुचियों और कार्यों से सूख जाते हैं, जो

उन पवित्र विचारों को धुंधला या नष्ट कर दो जो चिपके रहते हैं

उस जगह के चारों ओर जहां हमारे प्रिय शरीर सो रहे हैं।

ब्रैनवेल के लिए अतीत इतना पवित्र था, क्योंकि उसमें उनके शुरुआती स्नेह और सबसे गहरे दुख समाए हुए थे। इस संग्रह की कई कविताओं का जिक्र करते हुए मुझे उनकी दिवंगत बहनों, मारिया और एलिजाबेथ के प्रति उनके प्रेम और जीवन के अंतिम वर्ष तक उनके शोक मनाने की बात कहने का अवसर मिला है। उनका स्वभाव अत्यंत स्नेही था। उन्होंने 'कैरोलिन' और 'पर्सी हॉल' दोनों कविताओं में विरह की पीड़ा और प्रियजन के बिछड़ने पर उत्पन्न होने वाले अंधकारमय शून्य का इतना सजीव चित्रण किया है कि उनकी संवेदनशीलता के बारे में हमें कोई संदेह नहीं रह जाता।

पाठक ने अवश्य ही ध्यान दिया होगा कि ब्रैनवेल की कविता अक्सर काफी निराशाजनक ढंग से रची जाती है, और यह कि—किसी ऐसी आत्मा की तरह जो अपने नश्वर दुखों के दृश्य को नहीं छोड़ सकती और अपने कष्टों के स्थान पर भटकती रहती है—वे अक्सर उन पीड़ादायक विवरणों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिन्हें अन्य लोग विस्मृति में धकेल देना पसंद करेंगे। 'कैरोलिन' कविता में, काले वस्त्रों में लिपटी उनकी माँ की छवि अभी भी उनकी आँखों के सामने है; उन्हें अपनी बहन के ताबूत में लिपटे कफ़न भी याद हैं, और

उसके बेहद चमकीले गाल अब पूरी तरह मुरझा गए थे;

ताबूत का ढक्कन बंद होना और उसे उसकी संकरी जगह में नीचे उतारना अभी भी उसकी आंखों के सामने है; और उसे कब्र के पास की अपनी भावना दर्दनाक रूप से याद आती है:

और मेरी सिसकी बेतहाशा थी, जब खोखली सी आवाज़ गूंजी

उसके ऊपर पहला ठंडा मिट्टी का ढेला फेंका गया।

बाद में, यद्यपि वे विभिन्न विषयों में व्यस्त थे, ब्रैनवेल उस बीमारी के शारीरिक प्रभावों के रुग्ण और पीड़ादायक विश्लेषण से खुद को पूरी तरह से मुक्त नहीं कर सके, जिससे वे बहुत भयभीत थे; और वे क्षय रोग से होने वाली गिरावट और असमय

क्षय की तस्वीर को बहुत खूबसूरती से प्रस्तुत करते हैं।

विचारों का यह स्वर, और ब्रैनवेल के बाद के वर्षों में घटी अनेक विपत्तियाँ और निराशाजनक आशंकाएँ, उनकी लगभग हर रचना को एक शोकपूर्ण रूप देने में स्वाभाविक रूप से सहायक रहीं; और हम पाते हैं कि यहाँ संकलित कविताओं में, एक उदाहरण को छोड़कर— 'द एपिक्यूरियन सॉन्ग'— जिसे हम उल्लास के क्षण की उपज मानते हैं, शायद ही कोई ऐसी पंक्ति हो जो गहरे पश्चाताप या क्रूर और कड़वे दुःख की चेतना को व्यक्त न करती हो।

वह मानवीय सुख की निरर्थकता और दुख की निरंतर उपस्थिति के अहसास से भरा हुआ था:

नहीं! आनंद तो बस एक छाया मात्र है।
इसकी स्मृति का मिट जाना ही बेहतर है।
लेकिन चिंताएं, जो जीवन की विजेता होती हैं, कभी दूर नहीं होतीं।
उनकी वास्तविकता इतनी सशक्त है।

जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, ये दुख अपने भारी बोझ में इतने भयावह होते गए कि मन मुश्किल से ही उन्हें सहन कर पाता था, और ब्रैनवेल ने उस दौर में, जब उनकी पुकार मृत्यु में शांति के लिए थी, यह महसूस किया कि जब जीवन का प्रकाश चला जाता है,

‘दुखों का सैलाब उमड़ता नहीं है,
और हताशा बेबस पड़ी है।

ब्रैनवेल के साथ, वास्तव में, जैसा कि उनकी कविता 'पर्सी हॉल' में मैरी के साथ है, 'विचार उत्तेजित मस्तिष्क के लिए कष्टदायक प्रतीत होता था।'

तब विस्मृति उसके लिए तात्कालिक दुःख से एक बहुप्रतीक्षित राहत बन गई, और उसे उस स्वप्नहीन, जल में बहते हुए शव से ईर्ष्या होने लगी, जिसका लुढ़कता हुआ बिस्तर दुनिया की उथल-पुथल से कहीं अधिक शांत प्रतीत होता था।

समुद्र की लहरों से हिलते हुए शरीर की यह आकृति मुझे ब्रैनवेल के प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है, जिसमें कुछ बहुत ही उल्लेखनीय बात थी। उनके मित्रों का हमेशा यह कहना था कि युवा कवि एक महान पर्यवेक्षक थे और प्रकृति की रचनाओं में विशेष आनंद लेते थे। इसलिए, पहली नज़र में यह कुछ आश्चर्यजनक लगता है कि अपनी कविताओं में वे प्रकृति का वर्णनात्मक या स्पष्ट रूप

से वर्णन नहीं करते हैं, और हमें कुछ सांकेतिक संकेतों और चित्रों से यह अनुमान लगाना पड़ता है - जो वास्तव में शब्दों से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं - कि उन्होंने प्रकृति का अवलोकन किया था। लेकिन हमें पता चलता है कि ब्रैनवेल के लिए प्रकृति की रचनाओं का महत्व अधिकांश लोगों की तुलना में कहीं अधिक गहरा था, उनका मानना था कि प्रकृति का मानवीय भावनाओं के साथ कोई रहस्यमय जुड़ाव या अवर्णनीय संबंध है, और एक तरह से यह ईश्वर की अभिव्यक्ति या प्रत्यक्ष प्रतिबिंब है। वर्ड्सवर्थ, साउथी और कोलरिज पहले ही प्रकृति को कुछ इसी तरह से देख चुके थे; लेकिन यह मान लेना गलत होगा कि ब्रैनवेल ने उनका अनुकरण किया: उनके विचार इतनी तेज़ी और आवेग से प्रवाहित होते हैं कि ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचना असंभव है। संभव है कि यदि उनका जीवन शांत रहा होता, तो वे प्रकृति की सरल सुंदरताओं पर चिंतन करते और उनमें परिचित विचारों के साथ एक सहज सामंजस्य पाते; शार्लोट और ऐनी अपनी कविता में इससे आगे नहीं बढ़ पातीं; लेकिन एमिली और ब्रैनवेल के साथ ऐसा नहीं था। एमिली, अपने संयमित और भावुक स्वभाव के साथ, एकांत दलदली भूमि में एक सहानुभूतिपूर्ण आकर्षण महसूस करती थीं; और ब्रैनवेल, अपने दुखों से जूझते हुए, भयंकर तूफानों में एक ऐसी शक्ति पाते थे जिससे उन्हें लड़ना था, या विशाल पहाड़ों में अटूट शक्ति और शाश्वत धैर्य की छवि देखते थे, एक ऐसी शक्ति जिसके लिए उन्हें प्रयास करना था और उसे अपना बनाना था। लेकिन, ब्रैनवेल की प्रारंभिक कविताओं में, यह प्रभाव इतना स्पष्ट नहीं है, और उनकी प्रेरणा केवल उन उदास विचारों से जुड़ी है जिनमें प्रकृति सहभागी है। इस प्रकार वर्ड्सवर्थ ने गाया था:

‘कल्पना, जो आनंदित लोगों के मनोरंजन का नेतृत्व करती है,
अक्सर भटकते हुए तीर को फेंकने में आनंद आता है;
दुखद न होने वाली चीजों के पीछे दुखद परछाइयाँ भेजना,
निर्दोष खेतों को दुख के संकेतों से भर देना:
उसके प्रभाव में, जंगल की एक साधारण सी पुकार
यह मनुष्य के दुख की प्रतिध्वनि बन जाता है।

और इस प्रकार हम ब्रैनवेल की 'कैरोलिन' में देखते हैं कि कैसे, अपनी शांति में भी, पूर्व संध्या का सुंदर चित्रण—जब सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं, पानी थम जाता है,

और शांति और सन्नाटा श्रम से विश्राम का संकेत देता है—हैरियट के विलापपूर्ण विचारों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। लेकिन फिर आता है अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न:

ऐसी चुप्पी क्यों बरती जा रही है?
इस गर्मी के दिन की उदासी के लिए,
क्या हमारी पृथ्वी को स्वर्ग का कुछ अंश भी महसूस होता है?
क्या प्रकृति की आवाज प्रार्थना कर सकती है?

संक्षेप में, प्रकृति में व्याप्त वह सामंजस्यपूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण आकर्षण क्या है?

पृथ्वी के जंगली इलाके, पहाड़ और दलदली भूमि, जहाँ तूफान आते थे और तेज़ हवाएँ चलती थीं, ब्रैनवेल और एमिली की विशाल प्रतिभा के सबसे करीब थे। इस प्रकार, सॉनेट में, ब्रैनवेल ने ब्लैक कॉम्ब की शाश्वत भव्यता को मनुष्य के लिए एक उदाहरण के रूप में और मानवीय कमजोरी के विपरीत प्रस्तुत किया; और बाद में, जब उनका दुख सबसे तीव्र था, तो वे पेनमैनमावर के साथ एक 'अस्पष्ट एकता के मिलन' में लीन हो गए, मनुष्य के जीवित, धड़कते हृदय की तुलना पथरीली पहाड़ी से करते हुए, और विनती करते हुए,

‘मुझे भी, इसी प्रकार, नश्वर चिंताओं से ऊपर उठने दो,’
सभी कष्ट सहते हुए भी, कभी निराशा का सामना न करो।
मैं अब जिन दु:खों का शोक मनाता हूँ, उनका निडर होकर सामना करता हूँ।
और तूफ़ान में भी डटे रहो और अचल पेनमैनमावर की तरह चमकते रहो।

और अंत में, 'एक पिता द्वारा अपनी कब्र में पड़ी बच्ची को लिखे पत्र' में, हम पाते हैं कि वह स्वयं की तुलना बीहड़ पहाड़ों के बीच में खड़े किसी व्यक्ति से करते हैं:

‘मैं, तेरे जीवन का स्रोत, एक भटकते हुए व्यक्ति की तरह था जो सीने से लगा हुआ था’
तेज पहाड़ी हवाएँ चल रही थीं, और मैं शिखर पर आराम कर रहा था।
जिसकी ऊबड़-खाबड़ चट्टानें घास के मैदान के ऊपर उठती हैं,
ऊपर ओले पड़ रहे थे और उत्तर दिशा से तेज हवाएं चल रही थीं।

इस संक्षिप्त पड़ताल से यह स्पष्ट हो जाएगा कि ब्रैनवेल ब्रोंटे की कविताएँ पूर्णतः आत्मनिरीक्षण पर आधारित थीं, जिनमें लगभग अंतिम पंक्ति तक उनके अपने विचारों या भावनाओं का प्रत्यक्ष संदर्भ मिलता है; और इस प्रकार इन्हें उनके जीवन की कहानी का एक वास्तविक अंश माना जा सकता है। हालाँकि, जैसा कि इस पुस्तक के पाठक जानते हैं, उनकी कविताओं में जो स्वभाव प्रकट होता है, वह अक्सर मूर्खता और भोग-विलास के कारण छिपा रहता है, फिर भी वह स्वभाव अत्यंत सौम्य, स्नेही और सहानुभूतिपूर्ण था; यह सच है कि वे भावुक और अस्थिर थे, लेकिन फिर भी यह एक ऐसा स्वभाव था जिसे अक्सर गलत समझा गया और जिसके साथ अक्सर अन्याय भी हुआ। इस पुस्तक का एक उद्देश्य पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे को जनता के सामने सही साबित करना है; यह प्रयास उन्हें उनकी उन मूर्खताओं और कमजोरियों से मुक्त करने का नहीं है जो वास्तव में उनकी थीं—जिनके बारे में जनता, जीवनीकारों की गलतियों के कारण ही जान पाई—बल्कि यह दर्शाने का है कि किसी भी तरह से उनका स्वभाव प्रशंसनीय था, निंदा के योग्य नहीं। इस प्रकाशन का उद्देश्य, उनकी काव्य रचनाओं के माध्यम से, यह प्रदर्शित करना भी है कि उनकी प्रतिभा उनकी बहनों को प्रसिद्धि दिलाने वाली प्रतिभा के समान ही है। फिर भी, शायद यह माना जा सकता है कि यहाँ प्रकाशित कविताओं में वास्तविक पूर्ति की अपेक्षा समृद्ध संभावनाओं का अधिक समावेश है, साहित्यिक सफलता की वास्तविक प्राप्ति की अपेक्षा उसकी प्रतिबद्धता अधिक है। लेकिन, ब्रैनवेल ब्रोंटे की कविता को पढ़ते समय, जो कि एकसमान रूप से उदास है, श्री स्विनबर्न द्वारा श्री ब्राउनिंग के बारे में कही गई बात को याद रखना उचित होगा कि 'किसी भी पुस्तक के साथ न्याय करने के लिए, जो आग या कूड़ेदान में फेंकने के अलावा किसी अन्य प्रकार के न्याय की हकदार है, उसे उचित मनोदशा में पढ़ना आवश्यक है।'

समाप्त।

क्लेमेंट किंग शॉर्टर द्वारा रचित "शार्लोट ब्रोंटे और उनका

समूह"

क्लेमेंट किंग शॉर्टर (1857-1926) एक ब्रिटिश पत्रकार और साहित्यिक आलोचक थे। लेखक और आलोचक होने के साथ-साथ, वे अपने पसंदीदा लेखकों से संबंधित पांडुलिपियों, पुस्तकों और अन्य सामग्रियों को इकट्ठा करने के अपने शौक के लिए भी जाने जाते थे। वे एक उत्साही संग्राहक थे, विशेष रूप से ब्रोंटे बहनों की रचनाओं पर उनका विशेष ध्यान था। इस संग्रह और शोध के परिणामस्वरूप अंततः उनकी कुछ सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ सामने आईं, जिनमें यह जीवनी भी शामिल है, जो पहली बार 1896 में प्रकाशित हुई थी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने एलिजाबेथ गैस्केल की 'द लाइफ ऑफ शार्लेट ब्रोंटे' का संपादन भी किया, जो 1899 में इस डेल्फी संग्रह में भी शामिल है।

सन् 1894 में प्रकाशित पत्रिका ‘वैनिटी फेयर’ में शॉर्टर का चित्रण।

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना

प्रारंभिक: श्रीमती गैस्केल

अध्याय 1: पैट्रिक ब्रोंटे और उनकी पत्नी मारिया

अध्याय II: बचपन

अध्याय III: विद्यालय और गवर्नेंस जीवन

अध्याय IV: हेगर बोर्डिंग स्कूल, ब्रुसेल्स

अध्याय V: पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे

अध्याय VI: एमिली जेन ब्रोंटे
अध्याय VII: ऐनी ब्रोंटे
अध्याय VIII: एलेन नुसे
अध्याय IX: मैरी टेलर
अध्याय X: मार्गरेट वूलर
अध्याय XI: हॉवर्थ के क्यूरेट
अध्याय XII: शार्लोट ब्रोंटे के प्रेमी
अध्याय XIII: साहित्यिक महत्वाकांक्षाएँ
अध्याय 14: विलियम स्मिथ विलियम्स
अध्याय पंद्रह: विलियम मेकपीस थैकरे
अध्याय सोलह: साहित्यिक मित्रताएँ
अध्याय सत्रह: रेवरेंड आर्थर बेल निकोल्स

प्रस्तावना

लगभग पाँच सौ पृष्ठों की इस पुस्तक के बारे में दावा किया गया है कि इसका अधिकांश भाग ब्रोंटे बहनों की प्रेम कहानी में पूरी तरह से नई सामग्री का समावेश है। इस परिणाम के लिए मेरा श्रेय नगण्य है; और मैं सर्वप्रथम रेवरेंड आर्थर बेल निकोल्स का हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिनके व्यक्तिगत झुकाव के उदार त्याग के लिए मैं सदा कृतज्ञ रहूँगा। श्री निकोल्स ने चालीस वर्षों की चुप्पी को अत्यंत अनिच्छा से तोड़ा है, और यदि उन्हें यह ज्ञात न होता कि उनके विवाह से संबंधित कुछ पत्र पहले से ही निजी तौर पर मुद्रित होकर कम से कम आठ या दस लोगों के हाथों में पहुँच चुके हैं, तो वे अब भी उनके प्रकाशन के लिए सहमत नहीं होते। गोमरसाल की

मिस एलेन नुसे का भी मैं धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने अपने पास मौजूद अनेक पत्रों को मेरे लिए उपलब्ध कराया और अनेक रोचक जानकारी प्रदान की। श्री डब्ल्यू. एस. विलियम्स को शार्लोट ब्रोंटे द्वारा लिखे गए पत्र, जो उनके पुत्र और पुत्री, श्री और श्रीमती थॉर्नटन विलियम्स ने मुझे सहर्ष उधार दिए, उनके बिना मेरी पुस्तक अपूर्ण होती। सर वेमिस रीड, हेकमोंडविक के श्री जे. जे. स्टीड, ब्रैडफोर्ड के श्री बटलर वुड, ड्यूसबरी के श्री डब्ल्यू. डब्ल्यू. येट्स, श्री एर्स्किन स्टुअर्ट, श्री बक्सटन फोरमैन और श्री थॉमस जे. वाइज उन अनेक ब्रोंटे विशेषज्ञों में से हैं जिन्होंने मुझे सलाह देकर या सामग्री उधार देकर मेरी सहायता की है। विशेष रूप से श्री वाइज ने मुझे कई बहुमूल्य पांडुलिपियाँ उधार दी हैं। अंत में, मैं अपने मित्र डॉ. रॉबर्टसन निकोल का आभारी हूँ, जिन्होंने अपने स्नेहपूर्ण प्रोत्साहन से मुझे पत्रकारिता के अनेक कार्यों के बीच भी इस छोटी सी पुस्तक को तैयार करने के लिए प्रेरित किया।

क्लेमेंट के. शॉर्टर.
198 स्ट्रैंड, लंदन,
1 सितंबर, 1896.

प्रारंभिक: श्रीमती गैस्केल

अंग्रेजी जीवनी साहित्य में श्रीमती गैस्केल द्वारा लिखित 'शार्लट ब्रोंटे का जीवन' जितनी व्यापक लोकप्रियता किसी और पुस्तक की नहीं है। यह चालीस वर्षों से अद्वितीय लोकप्रियता का स्थान रखती है; और तमाम जीवनियाँ आने-जाने के बावजूद, यह आज भी बोसवेल की 'जॉनसन' और लॉकहार्ट की 'स्कॉट' के साथ अपना स्थान बनाए हुए है। जहाँ तक पाठकों की बात है, यह वास्तव में अपने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण प्रतिद्वंद्वियों के दसियों के मुकाबले सैकड़ों की संख्या का दावा कर सकती

है। इस सफलता के स्पष्ट कारण हैं। श्रीमती गैस्केल स्वयं एक लोकप्रिय उपन्यासकार थीं, जिनके पाठक बहुत व्यापक थे, और क्रैनफोर्ड ने कम से कम हमारे साहित्य की क्लासिक रचनाओं में अपना स्थान बना लिया है। उन्होंने शार्लट ब्रोंटे की जीवनी पर उन सभी साहित्यिक प्रतिभाओं का प्रयोग किया, जिन्होंने उनके सात उपन्यासों को आकर्षक बनाया था। और इन प्रतिभाओं का उपयोग वास्तविक जीवन की एक ऐसी प्रेम कहानी पर किया गया, जो कल्पना से परे किसी भी चीज़ से कम आकर्षक नहीं थी। एक लेखिका के रूप में शार्लट ब्रोंटे की सफलता ने दुनिया की निगाहें उन पर टिका दीं। ठाकरे ने उसका नाम या लिंग जानने से पहले ही उसे अपना वैनिटी फेयर भेजा था। वह अनमोल पत्रिका मेरे सामने पड़ी है।

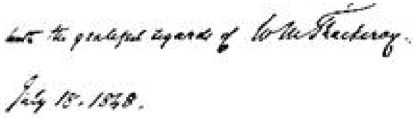

थैकरे ने सफल लेखकों को भी अपनी पुस्तकों की हस्ताक्षरित प्रतियाँ बहुत कम भेजीं। साहित्यिक प्रसिद्धि के उन सात दुखद वर्षों के दौरान जेन आयर की लेखिका के बारे में अटकलें इतनी प्रचलित थीं कि 1855 में शार्लोट ब्रोंटे की मृत्यु के समय उनकी जीवनी लिखना अनिवार्य हो गया। पूरी दुनिया ने यॉर्कशायर के एक गरीब पादरी की तीन अद्भुत बेटियों के बारे में सुना था, जो एक के बाद एक दुखद गति से मृत्यु को प्राप्त हुईं, लेकिन अपने पीछे कम से कम दो अमर रचनाएँ छोड़ गईं। बूढ़े अंधे पिता और शोक संतप्त पति ने भ्रमित प्रशंसा और आलोचनाएँ पढ़ीं, कभी प्रशंसा पर उदास आनंद के साथ, तो अक्सर घोर अशुद्धि पर गहरे दुख के साथ। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि श्री ब्रोंटे के मन में यह बात बैठ गई कि एक प्रामाणिक जीवनी वांछनीय है। श्रीमती निकोल्स की मृत्यु के बाद के छह कठिन वर्षों के दौरान हॉवर्थ के पादरी निवास में उनके साथ रहने वाले उनके दामाद, श्री आर्थर बेल निकोल्स, अपनी पत्नी के निजी जीवन के खुलासे के लिए आसानी से राजी नहीं हुए; और यद्यपि हम, जिन्होंने श्रीमती गैस्केल का संस्मरण पढ़ा है, श्री ब्रोंटे के निर्णय के लिए आभारी होने के सभी कारण रखते हैं, फिर भी शार्लोट ब्रोंटे के जीवित रिश्तेदारों को निःसंदेह अधिक शांति मिलती यदि इस विषय पर पूरी तरह से चुप्पी साध ली जाती। 1857 में जब यह पुस्तक प्रकाशित हुई, तो इसने श्री ब्रोंटे और श्री निकोल्स सहित कई लोगों को असीम पीड़ा दी; और श्रीमती गैस्केल के बाद के अनुभवों ने उन्हें यह विश्वास दिला दिया कि सभी

जीवनी साहित्य असहनीय और अवांछनीय है। ऐसा लगता है कि उन्होंने निर्देश दिया था कि उनकी कोई जीवनी न लिखी जाए; और अब जब उनकी मृत्यु को तीस वर्ष बीत चुके हैं, तो हमारे पास अपने युग की सबसे आकर्षक महिलाओं में से एक के बारे में कोई ठोस रिकॉर्ड नहीं है। साहित्य जगत को हुई इस क्षति का अहसास लेखक को अत्यंत गहराई से हुआ है, क्योंकि उनके पास श्रीमती गैस्केल द्वारा शार्लोट ब्रोंटे की जीवनी लेखन के दौरान उनकी कई मित्रों को लिखे गए पत्रों का एक संग्रह है। ये सभी पत्र उस महिला के अद्वितीय आकर्षण, उनकी मानवता और व्यापक सहानुभूति से हमें प्रभावित करते हैं। ये पत्र हमें श्रीमती गैस्केल के बारे में बेहतर सोचने पर मजबूर करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे थैकरे द्वारा श्रीमती ब्रुकफील्ड को लिखे गए पत्र हमें वैनिटी फेयर की लेखिका के बारे में बेहतर सोचने पर मजबूर करते हैं।

इन पत्रों के अलावा, श्रीमती गैस्केल के पदचिन्हों पर चलने से हमें उनकी उस असाधारण कर्तव्यनिष्ठा का पता चलता है जिसके साथ उन्होंने अपना कार्य किया। इतनी प्रसिद्धि के बावजूद, अगर वे केवल स्वेच्छा से उन्हें सौंपी गई सामग्री पर एक संक्षिप्त मोनोग्राफ लिखतीं, तो उन्हें उतनी ही सफलता और निश्चित रूप से उतना ही आर्थिक लाभ मिल सकता था। श्रीमती गैस्केल में जीवनी लेखक के कर्तव्यों का उच्च आदर्श था। उन्होंने तथ्यों का पता लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी; उन्होंने शार्लोट ब्रोंटे के नाम से जुड़े हर स्थान का दौरा किया - थॉर्नटन, हॉवर्थ, कोवान ब्रिज, बिर्स्टॉल, ब्रुसेल्स - और उन्होंने शार्लोट ब्रोंटे के शुरुआती दिनों के दोस्तों को अनगिनत पत्र लिखे।

लेकिन यह सवाल उठ सकता है कि श्रीमती गैस्केल को जीवनीकार के रूप में क्यों चुना गया? यह चुनाव श्री ब्रोंटे ने किया था, न कि जैसा कि सुझाव दिया गया है, किसी बाहरी प्रभाव से। जब श्री ब्रोंटे ने एक बार यह तय कर लिया कि एक प्रामाणिक जीवनी लिखी जानी चाहिए - और इस मामले में केवल वे ही सक्रिय थे - तो इस बात में शायद ही कोई संदेह रह गया था कि यह कार्य किसे सौंपा जाएगा। प्रसिद्धि के कारण शार्लोट के जितने भी मित्र बने, उनमें श्रीमती गैस्केल अपनी साहित्यिक प्रतिभा और उदार सहानुभूति के लिए प्रमुख थीं। उनकी मुलाकात श्रीमती ब्रोंटे से तब हुई थी जब वे 1850 में सर जेम्स के शटलवर्थ से मिलने आई थीं; और शार्लोट द्वारा अपने पिता को लिखे गए एक पत्र और श्री डब्ल्यू. एस. विलियम्स को लिखे गए अन्य पत्रों से उस मित्रता की शुरुआत का संकेत मिलता है जिसने साहित्यिक इतिहास में एक

अमिट छाप छोड़ी:

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

20 नवंबर, 1849।

महोदय, आपने कहा था कि यदि मैं शर्ली की प्रतियाँ व्यक्तियों को भेजना चाहूँ तो मुझे उन व्यक्तियों के नाम बताने होंगे। मैंने एक व्यक्ति के बारे में सोचा है जिन्हें मैं प्रति भेंट करना चाहूँगा - हैरियट मार्टिन्यू। उनके चरित्र के लिए - जैसा कि उनकी रचनाओं में प्रकट होता है - मेरे मन में गहरी प्रशंसा और सम्मान है। क्या आप इस पुस्तक के साथ संलग्न नोट भेज देंगे?

आज सुबह आपने जो पत्र भेजा था, वह मैरी बार्टन की लेखिका श्रीमती गैस्केल का था; उन्होंने कहा था कि मुझे उसका उत्तर नहीं देना है, लेकिन मैं ऐसा करने से खुद को रोक नहीं पा रही हूँ। उस पत्र को पढ़कर मेरी आँखों में आँसू आ गए। वह एक अच्छी, एक महान महिला हैं। मुझे गर्व है कि मैं इतनी नेक आत्माओं के दिलों को छू सकती हूँ। श्रीमती गैस्केल के स्वभाव में मुझे अपनी बहन एमिली से एक दूर का संबंध देखकर दुख के साथ खुशी होती है। मिस मार्टिन्यू के मन में भी मैंने हमेशा यही महसूस किया है, हालाँकि उनमें बहुत अंतर हैं। ये दोनों महिलाएं मुझसे कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं - निश्चित रूप से योग्यता और अनुभव में मुझसे कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। मुझे लगता है कि अगर मैं उन्हें जानती तो मैं भी उनका सम्मान करती। - प्रिय महोदय, आपकी सच्ची,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

29 नवंबर, 1849।

प्रिय महोदय, — मैं डाक के लिए दो पत्र संलग्न कर रहा हूँ। कल आपने जो पत्र भेजा था, वह हैरियट मार्टिन्यू का था; उसमें लिखी बातें अत्यंत संतोषजनक थीं। मुझे ऐसे उच्च कोटि के विद्वानों से मिली सहानुभूति के लिए आभारी होना चाहिए, और मुझे विश्वास है कि मैं हूँ भी। जब श्रीमती गैस्केल कहती हैं कि वे मेरी रचनाओं को अपनी बेटियों के लिए एक अनमोल धरोहर के रूप में रखेंगी, और जब हैरियट मार्टिन्यू स्नेहपूर्ण प्रशंसा व्यक्त करती हैं, तो मुझे आलोचकों के दूसरे वर्ग की कटु आलोचनाओं से राहत मिलती है। एकांतवास के मेरे संकल्प के कारण मैं फिलहाल इन महिलाओं से और अधिक संवाद नहीं कर पा रहा हूँ, लेकिन अब मैं जानता हूँ कि

वे मेरे प्रति क्या भाव रखती हैं — मैं जानता हूँ कि मेरे लेखन ने उनके बुद्धिमान और पवित्र मन को कैसे प्रभावित किया है। यह ज्ञान मेरे लिए वर्तमान में सहारा है और शायद भविष्य में कवच भी बनेगा।

मुझे श्रीमती विलियम्स के अच्छे स्वास्थ्य की उम्मीद है और इसलिए, आप सभी अब तक पूरी तरह से स्वस्थ हो गए होंगे। यदि सब ठीक रहा, तो शायद मैं आपसे अगले सप्ताह मिलूँ। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

1 जनवरी, 1850।

मेरे प्रिय महोदय, क्या मैं आपसे अनुरोध कर सकता हूँ कि वुदरिंग हाइट्स की एक प्रति श्रीमती गैस्केल को भेज दी जाए; उनका वर्तमान पता 3 ससेक्स प्लेस, रीजेंट्स पार्क है। उन्होंने अभी-अभी मुझे मूरलैंड कॉटेज भेजा है। उस पुस्तक के प्रकाशन से मुझे निराशा हुई, क्योंकि मुझे उम्मीद थी कि इसे स्मिथ, एल्डर एंड कंपनी को दिया जाएगा; लेकिन लगता है उनके पास कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि श्री चैपमैन ने स्वयं उनसे क्रिसमस पर एक पुस्तक लिखने का अनुरोध किया था। कल घर लौटने पर मुझे कॉर्नहिल से दो पैकेट मिले, जो दो जाने-माने लेखकों के नाम से मेरे लिए रखे हुए थे। आप सभी बहुत अच्छे हैं।

मुझे विश्वास है कि मिस मार्टिन्यू से मिलने से मुझे लाभ हुआ है। इससे अधिक रोचक मुलाकात मैंने शायद ही कभी की हो। यदि उदाहरण से आत्मनिर्भरता प्राप्त की जा सकती है, तो मुझे अच्छी तरह से सीख लेनी चाहिए थी। लेकिन मेरा स्वभाव उनका नहीं है; मैं इसे उनके जैसा नहीं बना सकती, चाहे मैं इसे सत्तर बार सात बार दुख की भट्टी में डाल दूं, और युगों तक परिश्रम और आत्म-बलिदान की कसौटी पर अनुशासित कर लूं। शायद अगर मैं उनके जैसी होती तो मैं उनकी इतनी प्रशंसा न करती जितनी मैं करती हूं। वह कुछ हद तक दृढ़ हैं, हालांकि पूरी तरह से अचेतन रूप से; लेकिन वह दयालु भी हैं, उनका स्नेह एक साथ अचानक और निरंतर है, जिसकी ईमानदारी पर आप संदेह नहीं कर सकते। शाम को उनके पास बैठकर उनकी बातें सुनना सुखद था, मैं चुप रहती थी। वह मुझे अद्भुत प्रवाह और वाक्पटुता के साथ बोलती हुई प्रतीत होती हैं। उनकी जीवंतता उनकी बौद्धिक क्षमताओं की तरह ही अटूट है। मुझे उनकी उत्तम सेहत देखकर खुशी हुई। मुझे विश्वास है कि न तो अकेलापन

और न ही दोस्तों का बिछड़ना उन्हें तोड़ सकता है। मुझे उसमें कुछ कमियाँ नज़र आईं, लेकिन उसकी खूबियों के चलते मुझे वो कमियाँ भी अच्छी लगीं। उसके मुकाबले मानसिक और शारीरिक रूप से खुद को तुच्छ महसूस करने से मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई।

आशा है आप और आपका परिवार कुशल मंगल होंगे, और आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। आपका प्रिय महोदय, आपका सादर।

'सी. ब्रोंटे।'

रेव. पी. ब्रोंटे को

'द ब्रायरी, विंडरमेयर, 10 अगस्त, 1850।

प्रिय पापा, मैं कल शाम आठ बजे एक सुरक्षित, हालांकि कुछ थकाऊ यात्रा के बाद यहाँ पहुँची। मुझे तीन बार गाड़ी बदलनी पड़ी और लैंकेस्टर में डेढ़ घंटा इंतज़ार करना पड़ा। सर जेम्स मुझे स्टेशन पर लेने आए थे; उन्होंने और लेडी शटलवर्थ दोनों ने मेरा बहुत ही स्नेहपूर्ण स्वागत किया। यह जगह बेहद खूबसूरत है, हालांकि मौसम बादल छाए हुए, धुंध भरा और तूफानी है; लेकिन कभी-कभी सूरज निकल आता है और पहाड़ियों और झील को रोशन कर देता है। श्रीमती गैस्केल आज शाम यहाँ आ रही हैं, और एक-दो और लोग भी। मुझे खेद है कि मैं मिस मार्टिन्यू से नहीं मिल पाऊँगी, क्योंकि वह शरद ऋतु के लिए घर से निकल चुकी हैं।

कृपया मुझे पत्र लिखकर बता देना कि तुम कैसे हो और कैसे हो। टैबी और मार्था को मेरा प्रणाम कहना, और— यकीन मानो, प्यारे पापा, तुम्हारी स्नेही बेटी।

'सी. ब्रोंटे।'

और उस पहली मुलाकात के बाद, हॉवर्थ से लौटने पर, उसने अपनी एक सहेली को इस तरह लिखा: —

लेडी शटलवर्थ सर्दी लगने के कारण घर से बाहर नहीं निकल पाईं; लेकिन सौभाग्य से मैरी बार्टन की लेखिका श्रीमती गैस्केल मेरे आने के एक दिन बाद ब्रायरी में आईं। मुझे उनकी संगति से सचमुच बहुत खुशी हुई। वह एक असाधारण प्रतिभा की धनी, हंसमुख, मनभावन और सौहार्दपूर्ण स्वभाव की महिला हैं, और मेरा मानना है कि उनका हृदय दयालु और नेक है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

20 सितंबर, 1850।

मेरे प्रिय महोदय, मैं अपनी बहनों के बारे में जो कुछ कहना चाहती हूँ, उसकी एक संक्षिप्त प्रति आपको भेज रही हूँ। इसे पढ़ने के बाद आप बेहतर ढंग से समझ पाएंगे कि इसे "सूचना" कहना उचित है या "संस्मरण"। मुझे लगता है कि "सूचना" अधिक विस्तृत और भिन्न प्रकार का वर्णन है। मेरा उद्देश्य उनके व्यक्तित्व का सही चित्रण करना है, न कि उनके सरल, घटनाहीन जीवन का वर्णन करना। मैं आपसे अपेक्षा करती हूँ कि आप ईमानदारी से मुझे इसमें जो भी त्रुटिपूर्ण लगे, उसे बताएँगे। मैं इसे पारंपरिक शैली में नहीं लिख सकी - यह मेरे लिए असंभव था।

आपके बेटे की सफलता के बारे में सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मुझे विश्वास है कि वह दृढ़ संकल्पित रहेगा और लगातार प्रगति करता रहेगा, और अपने माता-पिता को संतोष और गर्व का कारण प्रदान करेगा।

मुझे यह जानकर भी बहुत खुशी हुई कि मिस कावानाघ ने मिस्टर कोलबर्न के साथ बहुत अच्छा काम किया है। उनकी स्थिति मुझे पूरी सहानुभूति के योग्य लगती है। मैं अक्सर उनके बारे में सोचती हूँ। क्या उनका उपन्यास जल्द ही प्रकाशित होगा? मुझे उम्मीद है कि यह दिलचस्प होगा।

मुझे पूरी उम्मीद थी कि श्रीमती गैस्केल अपनी अगली रचना स्मिथ एंड एल्डर को देंगी। प्रकाशकों के बारे में हमारी कुछ बातचीत हुई - हमने अपने साहित्यिक अनुभवों की तुलना की। उन्हें अपने और मेरे अनुभवों में अंतर देखकर बहुत आश्चर्य हुआ, हालाँकि मैंने उन्हें सारी बातें विस्तार से नहीं बताईं। अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो वह, आप और श्री स्मिथ आपस में अच्छे से घुलमिल जाएँगे; लेकिन पता नहीं ऐसे में उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार काम करने से रोकने वाले क्या कारण हो सकते हैं। मुझे लगता है कि श्री स्मिथ को इस बात पर कोई आपत्ति नहीं होगी कि मैं उन्हें कभी-कभी कॉर्नहिल की कुछ किताबें भेजूँ जो उन्हें पसंद आएँ। मैंने उन्हें वर्ड्सवर्थ की 'प्रेल्यूड' उधार दे दी है, क्योंकि वह इसे पढ़ने की बहुत इच्छा जता रही थीं।

मैं श्रीमती विलियम्स, आपकी बेटियों और मिस कावानाघ को अपने सभी पत्रों में श्रद्धांजलि नहीं भेजता, क्योंकि इससे मेरी सच्ची शुभकामना का केवल दिखावा रह जाता है। लेकिन मुझे विश्वास है कि शिष्टाचार और सम्मान का यह प्रतीक, भले ही कम ही व्यक्त किया जाए, हमेशा समझा जाता है। विश्वास कीजिए, आपका सादर।

'सी. ब्रोंटे।'

मिस ब्रोंटे ने श्रीमती गैस्केल के मैनचेस्टर स्थित घर में दो बार मुलाकात की, पहली

बार 1851 में और फिर 1853 में, और इस दूसरी मुलाकात के संबंध में हमारे पास निम्नलिखित पत्र है: —

श्रीमती गैस्केल, मैनचेस्टर को

हॉवर्थ, 14 अप्रैल, 1853।

'मेरी प्रिय श्रीमती गैस्केल, क्या आपको अच्छा लगेगा अगर मैं अगले गुरुवार, 21 तारीख को आऊं?'

'यदि वह दिन आपकी सुविधा के अनुरूप हो, और यदि मेरे पिता की सेहत अभी जैसी है वैसी ही बनी रहे, तो मुझे अपनी ओर से ऐसी कोई व्यस्तता नहीं पता जो मुझे आपसे मिलने की खुशी को और अधिक स्थगित करने के लिए मजबूर करे।'

मैं शाम सात बजे मैनचेस्टर पहुँचने वाली ट्रेन से पहुँचूँगा। मुझे लगता है कि यह आपके चाय के समय के आसपास होगा, और हाँ, घर से निकलने से पहले मैं खाना खा लूँगा। मुझे शाम को पहुँचना हमेशा अच्छा लगता है; यह दिन के व्यस्त मध्य में आने की तुलना में अधिक आरामदायक और सुखद लगता है। मुझे लगता है कि अगर मैं एक सप्ताह रुकूँ तो यह बहुत लंबा प्रवास होगा; इससे आपको मुझसे ऊबने का पूरा समय मिल जाएगा।

श्री गैस्केल और मारियाना को मेरी ओर से हार्दिक प्रणाम कहना। श्रीमती फ्लॉसी और जूलिया से निवेदन है कि वे अपने आदरणीय व्यवहार से एक संकोची प्रशंसक को प्रभावित करने की संभावना को ध्यान में रखें। मुझे खेद है कि मैं मेटा से नहीं मिल पाऊँगी। - मेरी प्रिय श्रीमती गैस्केल, आपका स्नेही और हार्दिक संदेश।

'सी. ब्रोंटे।'

1853 की शरद ऋतु में श्रीमती गैस्केल ने हॉवर्थ में शार्लोट ब्रोंटे की यात्रा का जवाब दिया। हालाँकि, वह हॉवर्थ चर्च में शार्लोट की शादी में उपस्थित नहीं थीं।

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 8 सितंबर।

मेरी प्रिय मिस वूलर, आपका पत्र सचमुच स्नेहपूर्ण था और उसे पढ़कर मुझे आपके साथ आने की बहुत इच्छा हुई। हालांकि, घर से बाहर जाने की मेरी संभावनाएं अभी भी अनिश्चित हैं। मुझे अगले सप्ताह या उसके अगले सप्ताह श्रीमती गैस्केल के आने की उम्मीद है, हालांकि तारीख अभी तय नहीं हुई है। उन्हें जून में आना था, लेकिन तब मुझे फ्लू की गंभीर बीमारी हो गई थी, जिसके कारण मैं उनका स्वागत या

अभिनंदन नहीं कर सका। तब से वह अपने पति और दो बड़ी बेटियों के साथ यूरोप में हैं; और आपका पत्र मिलने से ठीक पहले मुझे उनका एक पत्र मिला जिसमें उन्होंने एक अनिश्चित तारीख पर आने की इच्छा जताई थी, जिसे मैंने उनसे जल्द से जल्द तय करने का अनुरोध किया था। मेरे पिताजी पिछले तीन-चार दिनों से काफी बेहतर हैं।

जब मुझे कोई निश्चित जानकारी मिलेगी तो मैं आपको फिर से लिखूंगा। —विश्वास कीजिए, मेरी प्रिय मिस वूलर, आपका आदरपूर्वक और स्नेहपूर्वक।

'सी. ब्रोंटे।'

लेकिन शार्लोट ब्रोंटे के जीवन के इतने बाद में शुरू हुई यह मित्रता कभी भी घनिष्ठता के स्तर तक नहीं पहुँच पाई। जीवनी में इसके पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं; और श्रीमती गैस्केल को शार्लोट के पुराने मित्रों के पत्रों पर निर्भर रहना पड़ा। स्मिथ एंड एल्डर फर्म के प्रमुख श्री जॉर्ज स्मिथ ने लगभग बीस पत्र उपलब्ध कराए। श्री डब्ल्यू. एस. विलियम्स, जिन्हें जेन आयर की लेखिका को 'खोजने' का श्रेय दिया जाता है, ने अन्य पत्र दिए; और मेसर्स स्मिथ एंड एल्डर के स्टाफ के एक अन्य सदस्य, श्री जेम्स टेलर ने आधा दर्जन और पत्र उपलब्ध कराए; लेकिन सबसे बड़ी सहायता एक अन्य स्रोत से मिली।

शार्लोट ब्रोंटे बचपन से लेकर मृत्यु तक जिन दो सहपाठियों, मैरी टेलर और एलेन नुसे, के साथ नियमित रूप से पत्र व्यवहार करती थीं, उनमें से मैरी टेलर ने सभी पत्र नष्ट कर दिए थे; और इसी कारण श्रीमती गैस्केल की जीवनी में अधिकांश पत्र मिस एलेन नुसे को संबोधित थे, कभी 'मेरी प्यारी नेल' के रूप में, कभी केवल 'ई' के रूप में। मेरे पास मौजूद अप्रकाशित पत्र, जो जीवनी से संबंधित हैं, श्रीमती गैस्केल द्वारा मिस नुसे को लिखे गए 6 जुलाई, 1855 के पत्र से शुरू होते हैं। इसमें बताया गया है कि श्री ब्रोंटे के अनुरोध पर उन्होंने यह कृति लिखने का कार्य अपने हाथ में लिया था और हॉवर्थ गई थीं। वहाँ उनकी मुलाकात श्री निकोल्स से पहली बार हुई थी। उन्होंने श्री ब्रोंटे को बताया कि उन्हें अपने द्वारा लिए गए कार्य की कठिनाई का कितना एहसास था। फिर भी, वह ईमानदारी से चाहती थीं कि उनकी बेटी के चरित्र को उन सभी लोगों तक पहुँचाया जाए जो उनकी रचनाओं में गहरी रुचि रखते थे। श्री ब्रोंटे और श्री निकोल्स दोनों ने हर संभव सहायता करने पर सहमति जताई, हालांकि श्रीमती गैस्केल इस बात से हैरान थीं कि श्री ब्रोंटे की अपेक्षा श्री निकोल्स ही इस बात

को लेकर अधिक जागरूक थे कि ऐसी पुस्तक जनता के लिए कितनी आकर्षक होगी। उनकी भावनाएँ किसी भी जीवनी के बिल्कुल विपरीत थीं; लेकिन वे श्री ब्रोंटे की 'अति उत्साही इच्छा' के आगे झुक गए और लगभग एक दर्जन पत्रों के रूप में जो भी सामग्री उन्हें मिल सकी, उसे लेकर आए। इसके अलावा, श्री निकोल्स ने श्रीमती गैस्केल को बताया कि मिस नुसे ही सबसे उपयुक्त व्यक्ति हैं जिनसे संपर्क किया जा सकता है; कि शार्लोट के पंद्रह वर्ष की आयु से ही वह उनकी पत्नी की मित्र रही हैं, और वह मिस नुसे को पत्र लिखकर उनसे विनती कर रहे हैं कि वे श्रीमती गैस्केल को कुछ पत्र-व्यवहार देखने दें।

लेकिन यहाँ श्री निकोल्स का वास्तविक पत्र है, जो चालीस वर्षों बाद सामने आया है, साथ ही मिस नुसे के पहले के पत्र भी हैं, जिनसे ऐसा प्रतीत होता है कि 'ई' ने सुझाव दिया था कि उनकी सहेली की जीवनी लिखने का प्रयास किया जाना चाहिए - कम से कम गपशप करने वाले समुदाय की अटकलों को हमेशा के लिए समाप्त करने के लिए, जिनके बीच शार्लोट ब्रोंटे का व्यक्तित्व अभी भी रहस्य में डूबा हुआ था; और वास्तव में इन पत्रों से यह स्पष्ट है कि श्रीमती गैस्केल की इस मामले में भागीदारी वास्तव में मिस नुसे के कारण ही संभव हो पाई:

रेव. ए. बी. निकोल्स को

'ब्रुकरॉयड, 6 जून, 1855।

प्रिय श्री निकोल्स, इस माह शार्प पत्रिका में प्रकाशित "जेन आयर के बारे में कुछ शब्द" शीर्षक वाले लेख को पढ़कर मुझे बहुत दुख और पीड़ा हुई है। आप निश्चित रूप से यह लेख देखेंगे, और मुझे विश्वास है कि आप और श्री ब्रोंटे दोनों ही इसमें निहित गलत बयानों और दुर्भावनापूर्ण भावना को गहराई से महसूस करेंगे। क्या आप इस लेख को बिना किसी खंडन के प्रकाशित होने देंगे? लेखक मौन रहने का पात्र है, लेकिन पाठक और अनुयायी तो होंगे ही। क्या ऐसे लोगों को दुर्भावनापूर्ण झूठ के जाल में फंसा रहने दिया जाए, या उस व्यक्ति के साथ न्याय करने का प्रयास किया जाए जो न्याय की इतनी हकदार थी, जिसका नाम भी उसे सबसे अच्छे से जानने वाले लोग आदर और स्नेह से लेते हैं? क्या उसके वृद्ध पिता को उस कलंक से नहीं बचाया जाना चाहिए जो लेखक ने उन पर लगाने का घिनौना प्रयास किया है?

मेरी इच्छा है कि श्रीमती गैस्केल, जो हर तरह से सक्षम हैं, इस मामले का उत्तर दें और लेखक को करारा जवाब दें। हॉवर्थ, पार्सनेज और वहां के निवासियों से उनका

व्यक्तिगत परिचय उन्हें इस कार्य के लिए उपयुक्त बनाता है, और यदि अन्य विषयों पर उन्हें जानकारी की कमी हो तो मैं सहर्ष उन्हें पर्याप्त तथ्य उपलब्ध कराऊंगा जिससे कही गई अधिकांश बातों का खंडन हो सके, बशर्ते कि आपके पास स्वयं प्रस्तुत विषयों पर आवश्यक सभी जानकारी न हो। क्या आप श्रीमती गैस्केल से इस न्यायसंगत और सम्मानजनक बचाव का जिम्मा लेने का अनुरोध करेंगे? मुझे विश्वास है कि वह इसे सहर्ष स्वीकार करेंगी। उन्होंने प्रिय शार्लोट को बहुत महत्व दिया, और उनकी क्षमता और सामर्थ्य से किया गया ऐसा मित्रतापूर्ण कार्य उनकी पहले से अर्जित उपलब्धियों में और इजाफा करेगा। आशा है आप और श्री ब्रोंटे कुशल मंगल होंगे। आप दोनों को मेरा सादर प्रणाम। — विश्वास करें, आपका विश्वासपात्र।

'ई. नुसे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 11 जून, 1855।

प्रिय मिस नुसी, - हमने शार्प पत्रिका में छपा लेख नहीं देखा था, और शायद हम इसे देख भी नहीं पाते, अगर आपने हमारा ध्यान इस ओर न दिलाया होता। हमने इसकी एक प्रति मंगवाई और अब "जेन आयर के बारे में कुछ शब्द" पढ़ लिया है। लेखक ने निश्चित रूप से कई गलतियाँ की हैं, लेकिन जाहिर तौर पर किसी दुर्भावना से नहीं, क्योंकि वह शार्लेट की रचनाओं का प्रशंसक होने का दावा करता है, उनकी प्रतिभा को उचित सम्मान देता है, और हजारों लोगों की तरह उनकी असामयिक मृत्यु पर शोक व्यक्त करता है। ऐसा लगता है कि उसका उद्देश्य साहित्यिक जगत में सनसनी मचाने वाली लेखिका के बारे में लोगों की जिज्ञासा को शांत करना है। लेकिन अगर लेख इतना हानिरहित भी होता, तो भी हम इस पर ध्यान नहीं देते, क्योंकि ऐसा करने से हम इसे वह महत्व दे देते जो इसे अन्यथा नहीं मिलता। शार्लेट स्वयं भी ऐसा ही करतीं; और उनका चरित्र इतना ऊंचा है कि कम प्रसार और कम प्रभाव वाली पत्रिका में छपे बयानों से उसे ठेस नहीं पहुंच सकती - ऐसे बयान जिनकी सटीकता की लेखक गारंटी नहीं देता। शार्लोट और उनकी रचनाओं की उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई कई प्रशंसात्मक समीक्षाओं से शायद हम कुछ ईर्ष्यालु या द्वेषपूर्ण व्यक्तियों की निंदाओं के प्रति उदासीन हो जाएं, क्योंकि ऐसे लोग हमेशा मौजूद रहेंगे।

श्री ब्रोंटे के बारे में की गई टिप्पणियों ने उनमें केवल मनोरंजन की भावना जगाई - वास्तव में, मैंने उन्हें कुछ महीनों से इतना हंसते हुए नहीं देखा जितना वे लेख पढ़ते

समय हंसे। हम दोनों स्वस्थ हैं, लेकिन अकेले और उदास हैं।

श्री ब्रोंटे मेरी हार्दिक शुभकामनाओं के साथ जुड़ते हैं। — आपका सादर,

'ए. बी. निकोल्स।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 24 जुलाई, 1855।

प्रिय मिस नुसी, शार्लोट के बारे में कुछ अन्य गलत सूचनाएँ प्रकाशित होने के कारण, श्री ब्रोंटे ने यह उचित समझा है कि उनके बारे में कोई प्रामाणिक जानकारी प्रकाशित की जाए। इसलिए उन्होंने आपके सुझाव को अपनाते हुए श्रीमती गैस्केल से संपर्क किया है, जिन्होंने शार्लोट की जीवनी लिखने का बीड़ा उठाया है। श्रीमती गैस्केल कल आईं और उन्होंने हमारे साथ कुछ घंटे बिताए। सबसे बड़ी कठिनाई शार्लोट के चरित्र के विकास को दर्शाने वाली सामग्री प्राप्त करने में प्रतीत होती है। इसी कारण श्रीमती गैस्केल उनके पत्रों को, विशेषकर प्रारंभिक काल के पत्रों को देखना चाहती हैं। मुझे लगता है कि आपने कहा था कि आपके पास कुछ पत्र हैं; यदि ऐसा है, तो हम आपके आभारी होंगे यदि आप हमें वे पत्र प्रदान करें जो आपको उचित लगें, प्रकाशन के लिए नहीं, बल्कि केवल लेखक को उनकी विचार शैली की जानकारी देने के लिए। बेशक, उन्हें कुछ समय बाद लौटा दिया जाएगा।

मैं स्वीकार करता हूं कि मेरी अपनी भावनाओं के सबसे अनुरूप मार्ग इस मामले में कोई कदम न उठाना होगा, लेकिन मुझे श्री ब्रोंटे की इच्छाओं का विरोध करना उचित नहीं लगता।

हमारा उद्देश्य एक ही है, लेकिन कार्य करने का तरीका अलग-अलग है। श्री ब्रोंटे की तबीयत कुछ ठीक नहीं है। रविवार को हुई उत्तेजना (हमारी रश-बियरिंग) और कल श्रीमती गैस्केल की यात्रा ने उन्हें काफी परेशान कर दिया है। विश्वास कीजिए, आपका सच्चा मित्र।

'ए. बी. निकोल्स।'

श्रीमती गैस्केल, हालांकि, मिस नुसे से परिचय करना चाहती थीं और उन्होंने पूछा कि क्या वह उनसे मिलने आ सकती हैं; और उन्होंने यह भी कहा कि अगर शार्लोट की स्कूल शिक्षिका मिस वूलर अभी जीवित होतीं, तो वह उनसे भी मिलना चाहतीं। इस पत्र के जवाब में मिस नुसे ने निम्नलिखित उत्तर दिया: —

श्रीमती गैस्केल, मैनचेस्टर को

इल्कली, 26 जुलाई, 1855।

प्रिय महोदया, घर से अनुपस्थित रहने के कारण आपका पत्र अभी-अभी मुझ तक पहुँचा है। मुझे श्री ब्रोंटे के अनुरोध के बारे में पता नहीं था, लेकिन मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि उन्होंने ऐसा किया है। श्री निकोल्स का एक पत्र आपके पत्र के साथ भेजा गया था, जिसे मैंने सबसे पहले खोला और इस प्रकार आपके संदेश के लिए तैयार किया, जिसका विषय मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैं आपके द्वारा शुरू किए गए इस नेक कार्य में आपकी सहायता के लिए अपनी पूरी कोशिश करूँगा, लेकिन मुझे अपनी क्षमताएँ सीमित लगती हैं और मुझे आशंका है कि आपको कुछ निराशा हो सकती है कि मैं आपकी वांछित जानकारी में अधिक योगदान नहीं दे पा रहा हूँ। मेरे पास बहुत सारे पत्र हैं (क्योंकि मैंने पत्राचार का केवल एक छोटा सा हिस्सा नष्ट किया है), लेकिन मुझे डर है कि शुरुआती पत्र लेखक के चरित्र को कुछ बिंदुओं के अलावा और अधिक स्पष्ट नहीं करते हैं। शायद आप मुझसे अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें। आप उन्हें उद्देश्यपूर्ण ढंग से पढ़ेंगी - मैंने उन्हें केवल स्नेहवश पढ़ा है। मैं तुरंत पत्राचार की समीक्षा करूँगा और मैं आपको वह सब कुछ दिखाने का वादा करता हूँ जो मैं आपके मित्रवत संरक्षण में रख सकता हूँ। मुझे खेद है कि घर से अनुपस्थित रहने के कारण मैं आपके बताए समय पर ब्रुकरॉयड में आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सका। मैं अगले सोमवार तक यहीं रहने वाला हूँ, और उसके बाद आप जो भी दिन चाहें, आपसे मिलकर मुझे खुशी होगी। यदि अगले सप्ताह शुक्रवार या शनिवार को आना आपके लिए अधिक सुविधाजनक हो, तो मैं आपसे मिलने के लिए समय पर वापस आ जाऊँगा। मैं यहाँ हमारी स्कूल शिक्षिका, मिस वूलर के साथ रह रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि वह मुझे आपसे यहाँ मिलने की अनुमति दें, लेकिन वह मेरी इच्छा नहीं मान रही हैं; मुझे अपने घर में बैठकर उस व्यक्ति के बारे में सोचने की बजाय, जो अक्सर यहाँ मौजूद रहता था, इन पहाड़ियों के बीच आपसे बात करना अधिक सुखद लगता। — प्रिय महोदया, आपका सादर,

'एलेन नुसे।'

श्रीमती गैस्केल और मिस नुसे की मुलाकात हुई और उनकी मित्रता मृत्यु के साथ ही समाप्त हुई; और वास्तव में मेरे संग्रह में मौजूद सबसे सुंदर पत्रों में से एक वह है जिस पर 'मेटा गैस्केल' के हस्ताक्षर हैं और जिसकी तिथि 22 जनवरी, 1866 है। इसमें असीम कोमलता और करुणा के साथ उनकी मां के अंतिम क्षणों का विस्तृत

वर्णन है। हालांकि, यह उस समय से दस साल बाद की बात है जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं। 1856 में श्रीमती गैस्केल अपनी मित्र की जीवनी लिखने में पूरी तरह से जुटी थीं, जैसा कि उन्हें उम्मीद थी। उन्होंने दावा किया कि उन्होंने शार्लोट के जीवन की सभी घटनाओं के स्थलों का दौरा किया था, 'निजी गवर्नेस के दो छोटे-छोटे अंशों को छोड़कर।' एक दिन वह श्री स्मिथ के साथ चैप्टर कॉफी हाउस गईं, जहां दोनों बहनें लंदन में पहली बार रुकी थीं। एक और दिन वह यॉर्कशायर में थीं, जहाँ उनकी मुलाकात मिस वूलर से हुई, जिससे, जैसा कि उन्होंने कहा, 'शार्लट ब्रोंटे की पुरानी स्कूल शिक्षिका के प्रति अधिक मैत्रीपूर्ण तरीके से लिखने का अवसर मिला।' फिर वह ब्रुसेल्स में थीं, जहाँ मैडम हेगर ने उनसे मिलने से इनकार कर दिया, हालाँकि एम. हेगर दयालु और मिलनसार थीं, 'और मैं वास्तव में उन्हें बहुत पसंद और सम्मान करती हूँ।' उनके अनगिनत प्रश्न बेहद दिलचस्प थे। उन्होंने नोटपैड के कई पन्ने भर दिए। 'क्या ब्रैनवेल ब्रोंटे को जेन आयर के प्रकाशन के बारे में पता था,' उन्होंने पूछा, 'और उन्हें यह खबर कैसे मिली?' श्रीमती गैस्केल को अपने मन में पूरा विश्वास था कि उन्हें इसके प्रकाशन के बारे में कभी पता नहीं चला था, और हम जल्द ही देखेंगे कि वह सही थीं। उन्होंने कहा कि शार्लट ने उन्हें स्पष्ट रूप से बताया था कि ब्रैनवेल उस समय यह बात सुनने की स्थिति में नहीं थे। 'लड़कियों को वे किताबें कहाँ से मिलीं जिन्हें वे लगातार पढ़ती थीं? क्या एमिली शार्लट के साथ एक छात्रा के रूप में गई थीं जब शार्लट रो हेड में शिक्षिका के रूप में गई थीं?' ब्रैनवेल लंदन की रॉयल एकेडमी में पेंटिंग सीखने क्यों नहीं गए? क्या एमिली ने कभी गवर्नेस का काम किया था? एमिली के धार्मिक विचार क्या थे? क्या उन्होंने कभी दोस्त बनाए थे?’ मिस नुसे के मन में ऐसे ही सवाल तेजी से उठने लगे और सौभाग्य से उन्होंने अपने जवाब संभाल कर रखे।

श्रीमती गैस्केल, मैनचेस्टर को

‘ब्रुकरॉयड, 22 अक्टूबर, 1856।

मेरी प्रिय श्रीमती गैस्केल, अगर आप लंदन जाएं तो कृपया प्रिय शार्लोट के चित्र के संबंध में कुछ करने का प्रयास करें। इससे स्मृति का महत्व और रुचि बहुत बढ़ जाएगी, और लोगों को दिवंगत आत्मा के व्यक्तिगत स्वरूप के बारे में अपनी धारणा स्पष्ट करने में मदद मिलेगी, जिससे उन्हें बहुत संतोष होगा। मुझे लगता है कि हर अजनबी के लिए यह आश्चर्य की बात रही होगी कि वह देखने में इतनी सौम्य और

शालीन थीं।

एमिली ब्रोंटे रो हेड में छात्रा के रूप में गईं, जब शार्लोट शिक्षिका के रूप में गईं; वह वहाँ केवल दो महीने रहीं; वह कभी भी वहाँ स्थिर नहीं हो पाईं और घर की याद के कारण ही बीमार रहीं। ऐनी ने उनकी जगह ली और लगभग दो साल तक रहीं। एमिली ने हैलिफ़ैक्स या उसके आस-पास के किसी महिला विद्यालय में छह महीने तक शिक्षिका के रूप में काम किया। मुझे नहीं पता कि ब्रैनवेल को रॉयल अकादमी जाने से रोकने वाला कारण उनका आचरण था या आर्थिक तंगी। संभवतः दोनों ही तरह की बाधाएँ थीं।

मुझे डर है कि अगर आप मेरा नाम देंगी तो किताब में मुझे इतनी प्रमुखता मिलेगी जिससे मैं बिलकुल भी नहीं चाहती। मेरी सबसे आखिरी इच्छा यही होगी कि किताब में मेरा ज़िक्र ज़रूरत से ज़्यादा हो। अगर मुमकिन हो तो मैं बिल्कुल भी पहचानी न जाना चाहूँगी। मैं सिर्फ़ अपने दोस्त को देखना और पहचानना चाहती हूँ, हालाँकि तस्वीर को फ्रेम करने और सेट करने का आपका तरीका इसकी अहमियत को बहुत बढ़ा देगा। — मैं, मेरी प्यारी श्रीमती गैस्केल, आपकी बहुत-बहुत आभारी हूँ।

'एलेन नुसे।'

यह पुस्तक दो खंडों में, 'शार्लट ब्रोंटे का जीवन' शीर्षक से, 1857 की वसंत ऋतु में प्रकाशित हुई थी। शुरुआत में सब ठीक था। श्री ब्रोंटे ने पुस्तक के प्रति अपनी पहली प्रतिक्रिया प्रशंसापूर्ण ही दी थी। सर जेम्स शटलवर्थ ने आशा व्यक्त की थी कि श्री निकोल्स को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उनकी पत्नी को एक ऐसी ईसाई नायिका के रूप में जाना जाएगा जो एक शहीद संत के दृढ़ संकल्प के साथ अपने जीवन का कष्ट सह सकती थी। कैनन किंग्सले ने श्रीमती गैस्केल को एक भावपूर्ण पत्र लिखा, जो उनकी पुस्तक 'जीवनी' में प्रकाशित हुआ और तब से कई बार पुनर्मुद्रित हो चुका है।

सेंट लियोनार्ड्स से 14 मई, 1857 को उन्होंने लिखा, "मैं अपनी लंबे समय से रुकी हुई जान-पहचान को फिर से ताज़ा करना चाहता हूँ, और आपको बेचारी मिस ब्रोंटे के जीवन पर बधाई देना चाहता हूँ। आपने एक नाजुक और महान कार्य किया है, और आपने इसे बखूबी निभाया है। यकीन मानिए, यह किताब बहुत सफल होगी। यह साहित्यकारों को इस बात पर और भी दृढ़ विश्वास दिलाएगी कि एक सरल, सदाचारी और व्यावहारिक गृहस्थी जीवन उच्च कल्पनाशील प्रतिभा के साथ संगत है; और यह

उस युग की रूढ़िवादिता को भी शर्मिंदा करेगी जो बहुत साफ-सुथरा तो नहीं है, लेकिन सावधानीपूर्वक सफ़ाई किए गए स्वरूप में है, और यह मानने पर मजबूर करेगी कि पवित्रता अब (अब तक के सभी युगों की तरह) बुराई के ज्ञान के साथ पूरी तरह से मेल खाती है। मैं स्वीकार करता हूँ कि इस किताब ने मुझे खुद पर शर्मिंदा कर दिया है। जेन आयर को मैंने मुश्किल से ही पढ़ा था, मैं बहुत कम ही उपन्यास पढ़ता हूँ - वास्तव में, आपकी और थैकरे की किताबें ही ऐसी हैं जिन्हें मैं खोलना पसंद करता हूँ। शर्ली ने मुझे शुरुआत में ही निराश कर दिया था, और मैंने इस लेखिका और उनकी किताबों को इस धारणा के साथ छोड़ दिया था कि वह एक ऐसी व्यक्ति थीं जिन्हें अशिष्टता पसंद थी।" मैंने उसके बारे में कितनी बड़ी गलती की! और मैं कितना आभारी हूं कि मैंने अपनी गलतफहमियों का एक शब्द भी कभी लिखकर नहीं रखा, और न ही उस शख्स के बारे में अपनी गलत धारणाओं को दर्ज किया जो मुझसे कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

आपने अपना काम बखूबी किया है और हमें एक ऐसी वीर महिला का चित्र प्रस्तुत किया है जो कष्टों से परिपूर्ण हुई है। अब मैं उनके लिखे हर शब्द को ध्यानपूर्वक और प्रेमपूर्वक पढ़ूंगी, विशेषकर उन कविताओं को, जो इस तरह अप्रकाशित नहीं होनी चाहिए थीं, और जो (फ्रेजर पत्रिका की समीक्षा के अनुसार) असाधारण शक्ति और पवित्रता से परिपूर्ण प्रतीत होती हैं।

हालाँकि, यह जीत क्षणिक थी, और श्रीमती गैस्केल जल्द ही, जैसा कि उन्होंने खुद कहा, 'एक भयंकर मुसीबत में फँस गईं।' सबसे पहले तो, श्री ब्रोंटे को अपने बारे में की गई टिप्पणियों और इस सुझाव से आपत्ति थी कि उन्होंने अपनी पत्नी के साथ बुरा बर्ताव किया था। श्रीमती गैस्केल ने उन्हें कई सनकीपन और क्रोध के प्रकोप से जोड़ा था, जिसके बारे में उन्होंने अपने बाद के वर्षों में हमेशा दावा किया, और निस्संदेह पूरी सच्चाई के साथ, कि ये बातें ज़्यादा से ज़्यादा एक बर्खास्त नौकर की मनगढ़ंत कहानियाँ थीं। श्री निकोल्स को भी शिकायत थी। यह संदेह था कि वे उतने सहानुभूतिपूर्ण पति नहीं थे। यह संदेह पूरी तरह निराधार था, और श्री निकोल्स के अत्यधिक शर्मीलेपन के कारण उत्पन्न हुआ था। लेकिन न तो श्री ब्रोंटे और न ही श्री निकोल्स ने श्रीमती गैस्केल को ज़्यादा परेशान किया। कम से कम वे चुप रहे। हालाँकि, परेशानी कई तरफ से आई। यॉर्कशायर के लोग उस संरक्षणवादी रवैये से नाराज़ थे, जिसके तहत, जैसा कि उन्हें लगा, लंकाशायर की एक संभ्रांत महिला ने

उनके ज़िले का ज़िम्मा संभाला था। उन्होंने पलटवार करते हुए कहा कि वे उतने पिछड़े और असभ्य नहीं थे, जितना श्रीमती गैस्केल की पुस्तक के आरंभिक विवरणों से प्रतीत होता है। लंकाशायर और यॉर्कशायर के बीच हमेशा ईर्ष्या की भावना बनी रहती है। 'इस अराजक, फिर भी निर्दयी न होने वाली आबादी' के इन गंभीर चित्रों ने इस भावना को और भी तीव्र कर दिया। श्री रेडहेड के दामाद ने हॉवर्थ के साथ उस पादरी के संबंध के वृत्तांत का खंडन करते हुए लिखा, 'वह एक और वृत्तांत को सत्य बताते हैं, जिसमें मुझे कोई बड़ा अंतर नहीं दिखता।' मिस मार्टिन्यू ने शार्लोट ब्रोंटे के साथ अपने संबंधों के बारे में विस्तार से कई पन्ने लिखे। लंदन के दो अलग-अलग गृहस्वामियों ने दावा किया कि मिस ब्रोंटे और मिस मार्टिन्यू की पहली मुलाकात उनके घर पर हुई थी। एक अंश में श्रीमती गैस्केल ने फिजूलखर्ची करने वाले युवा नौकरों की बात की थी, और प्रश्न में उल्लिखित युवा नौकरों ने श्री ब्रोंटे से निम्नलिखित गवाही प्राप्त की:

हॉवर्थ, 17 अगस्त, 1857।

मैं सभी संबंधित व्यक्तियों को यह बताना चाहता हूं कि नैन्सी और सारा गैर्स, जब तक वे मेरी सेवा में थीं, मेरे बच्चों के प्रति दयालु, ईमानदार और फिजूलखर्ची न करने वाली थीं, बल्कि भोजन और उनके प्रभार में सौंपी गई अन्य सभी वस्तुओं के संबंध में पर्याप्त रूप से सावधान थीं।

पी. ब्रोंटे, ए.बी., 'हॉवर्थ, यॉर्कशायर के वर्तमान पदाधिकारी।'

हॉवर्थ में हुए एक घोटाले के नाटकीय वर्णन के लिए पूरे तीन पृष्ठ समर्पित थे, जो तीसरे संस्करण से पूरी तरह गायब हो गया। एक ऐसी लड़की का ज़िक्र, जिसे बहकाया गया था और जिसने मिस ब्रोंटे में एक दोस्त पाया था, ने और भी परेशानी खड़ी कर दी। श्रीमती गैस्केल ने मार्था ब्राउन को लिखा, 'मैंने 'बहकाया' शब्द को 'धोखा दिया' में बदल दिया है, और मुझे उम्मीद है कि इससे उस दुखी लड़की के दोस्त संतुष्ट हो जाएँगे।' लेकिन ये सब बातें कॉवन ब्रिज विवाद और ब्रैनवेल ब्रोंटे के कथित प्रेम प्रसंगों को लेकर संभावित कानूनी कार्यवाही के सामने छोटी थीं। श्रीमती गैस्केल ने जेन आयर में कॉवन ब्रिज के वर्णन का विशेष जोश के साथ बचाव किया। जेन आयर के ब्रॉकलहर्स्ट कहे जाने वाले श्री कारस विल्सन और उनके दोस्त बेहद गुस्से में थे। उन्होंने कानूनी कार्रवाई की धमकी दी। टाइम्स और डेली न्यूज़ में पत्र छपे। श्री निकोल्स ने चुप्पी तोड़ी - चालीस वर्षों में यह उनका एकमात्र ऐसा मौका था -

हैलिफ़ैक्स गार्जियन को दो सराहनीय पत्र लिखकर। काउवन ब्रिज विवाद एक बराबरी का संघर्ष साबित हुआ, हालांकि श्री कैरस विल्सन के गुणों की कई प्रशंसाएं की गई थीं। लगभग पचास साल पहले के औसत निजी स्कूलों के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी रखने वाले अधिकांश लोग इस बात से सहमत हैं कि शार्लोट ब्रोंटे का वर्णन काफी हद तक सही था। श्रीमती गैस्केल लिखती हैं, 'मैं आपको कई पत्र दिखाना चाहती हूं, जिनमें से अधिकांश हमारी प्रिय मित्र के चरित्र की प्रशंसा करते हैं, जैसा कि वह हकदार हैं, और उन लोगों के हैं जिनकी राय उनके लिए मायने रखती थी, जैसे ड्यूक ऑफ आर्गिल, किंग्सले, ग्रेग आदि। कई पत्र मेरी आलोचना करते हैं। मुझे लगता है कि इस तरह के सात या आठ पत्र कैरस विल्सन के गुट से आए हैं।'

ब्रैनवेल का मामला ज़्यादा गंभीर था। यहाँ श्रीमती गैस्केल ने सचमुच असाधारण लापरवाही दिखाई थी। ब्रैनवेल जिस महिला का ज़िक्र कर रहे थे, वह श्रीमती रॉबिन्सन थीं, जो थॉर्प ग्रीन के रेवरेंड एडमंड रॉबिन्सन की पत्नी थीं और बाद में लेडी स्कॉट बनीं। ऐनी ब्रोंटे दो साल तक उनके परिवार में गवर्नेस रहीं और ब्रैनवेल कुछ महीनों तक उनके बेटे के ट्यूटर रहे। अफ़ीम के नशे में ब्रैनवेल ने श्रीमती रॉबिन्सन के साथ अपने संबंधों के बारे में कुछ बयान दिए थे, जो पूरी तरह से गलत साबित हो चुके हैं, हालाँकि ब्रोंटे बेटियों ने उन पर आँख बंद करके विश्वास कर लिया था, क्योंकि वे स्वभाव से ऐसी महिला को अपने प्रिय भाई के पतन का कारण मानने को तैयार थीं। श्रीमती गैस्केल द्वारा इस तरह के अपर्याप्त साक्ष्य को स्वीकार करने की लापरवाही को केवल इस धारणा से समझाया जा सकता है कि उन्हें 'बुरी महिला' के सिद्धांत से मिलने वाले रोमांस में एक उपन्यासकार जैसी संतुष्टि मिली थी। उन्होंने इस पर काफ़ी बयानबाज़ी की। वे कहती हैं, 'जब उन पर जानलेवा हमला हुआ, तो उनकी जेबें उस महिला के पुराने पत्रों से भरी मिलीं, जिनसे वे प्रेम करते थे।' उनकी मृत्यु हो गई! वह अब भी जीवित हैं - मई मेले में। मैं उनका नाम काउंटी के अखबारों में देखता हूँ, क्रिसमस बॉल्स में जाने वालों में से एक के रूप में; और मैं उनके बारे में लंदन के ड्राइंग रूमों में सुनता हूँ - और इसी तरह। ब्रैनवेल ब्रोंटे की जेब में कोई प्रेम पत्र नहीं मिला। जब श्रीमती गैस्केल के पति ब्रैनवेल के पतन में श्रीमती रॉबिन्सन की मिलीभगत के सबूत मांगने के लिए हॉवर्थ पहुंचे, तो कोई सबूत नहीं मिला। मुझे श्री लेस्ली स्टीफन ने बताया कि उनके पिता, सर जेम्स स्टीफन, उस समय गहन जांच के लिए नियुक्त किए गए थे, और उन्होंने और अन्य प्रतिष्ठित वकीलों ने यह निष्कर्ष

निकाला कि यह झूठ या भ्रम का एक लंबा जाल था। यह विषय काफी घिनौना है, और वास्तव में ब्रोंटे परिवार की किसी भी जीवनी में लगभग अनावश्यक है; लेकिन यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि शार्लोट ब्रोंटे और उनकी बहनें पूरी तरह से आश्वस्त थीं कि उनके भाई के पतन के पीछे एक महिला का हाथ था; और शार्लोट ने इस विश्वास को अपने सभी करीबी और प्रिय मित्रों पर भी थोप दिया था। अपने भाई की मृत्यु के समय लिखे गए उनके पत्रों में दूसरे व्यक्ति की कथित दुष्टता की कड़ी निंदा झलकती है। यह एक क्रूर कलंक था कि उस दुष्ट लड़के की बात इतनी बड़ी गड़बड़ी का कारण बन गई। कम से कम यहाँ, श्रीमती गैस्केल ने वह सावधानी नहीं बरती जो एक पुरुष जीवनीकार, जो किसी पुरुष के प्रेम प्रसंगों के विवरण को अक्षरशः लेने की प्रवृत्ति कम रखता है, निस्संदेह बरतता।

फिर भी, अंततः श्रीमती गैस्केल ने अपना काम पूरी लगन और कुशलता से किया था। लॉकहार्ट की स्कॉट और फ्रॉड की कार्लाइल महान जीवनियों के उदाहरण हैं, जिनकी प्रकाशन के समय कड़ी आलोचना हुई थी; फिर भी ये दोनों पुस्तकें अपने-अपने क्षेत्र में क्लासिक मानी जाएंगी। रोचक होने के लिए शायद जीवनी लेखक का विवेकहीन होना अनिवार्य है, और निश्चित रूप से ब्रैनवेल की घटना - दो-तीन पन्नों का मामला - श्रीमती गैस्केल की जीवनी का एकमात्र ऐसा हिस्सा है जिसमें विवेकहीनता का बचाव नहीं किया जा सकता। और इसके लिए उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ी। उन्होंने एक मित्र से कहा, 'मैंने सच बताने की पूरी कोशिश की, और अब मुझे विश्वास है कि मैं सच के जितना करीब हो सकती थी, उतना करीब पहुंची।' एक अन्य अवसर पर उन्होंने कहा, 'मैंने हर पंक्ति को पूरी शक्ति और हृदय से तौला, ताकि हर पंक्ति अपने महान उद्देश्य को पूरा करे, यानी उन्हें एक ऐसी शख्सियत के रूप में पहचान और सम्मान दिलाए, जिन्होंने इतने भयानक जीवन को साहस और निष्ठा के साथ जिया।' और स्पष्ट रूप से श्रीमती गैस्केल इसमें सफल रहीं। यह बिल्कुल निश्चित है कि शार्लोट ब्रोंटे आज इतने शानदार मुकाम पर नहीं होतीं, यदि उनके कुशल जीवनीकार की एकनिष्ठ लगन न होती।

कभी-कभी यह कहा जाता है कि श्रीमती गैस्केल द्वारा खींचा गया चित्र बहुत ही निराशाजनक था, शार्लोट के पत्रों में ऐसे अंश हैं जो दर्शाते हैं कि उनका हृदय अक्सर प्रसन्न रहता था और उनका जीवन पर्याप्त रूप से आनंदमय था। तीनों बहनों के जीवन में उल्लास के लंबे दौर थे, इस पर निश्चित रूप से किसी को कोई संदेह नहीं था।

सौभाग्य से, बहुत कम लोगों का जीवन पूरी तरह से सुखहीन होता है। फिर भी, जब यह स्वीकार किया जाता है, तो कोई कैसे कह सकता है कि चित्र बहुत ही निराशाजनक था? कुल मिलाकर, शार्लोट ब्रोंटे का जीवन साहित्य में सबसे दुखद जीवन में से एक था। एक दयनीय विद्यालय में, जहाँ वह स्वयं दुखी थीं, उन्होंने अपनी दो बड़ी बहनों को बीमार पड़ते और घर ले जाकर मरते हुए देखा। उनके घर में घोर गरीबी थी। जिन वर्षों में इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी, उन वर्षों में उन्हें माँ का स्नेह नहीं मिला; और शायद माँ की भूमिका निभाने वाली चाची कुछ अधिक ही कठोर अनुशासनवादी थीं। उनके दूसरे विद्यालय ने वास्तव में उन्हें दो दयालु मित्र दिए; लेकिन उनकी शर्म ने उनके स्कूली जीवन को ही एक लंबी त्रासदी बना दिया। निजी गवर्नेंस के रूप में उनके दो अनुभवों के बारे में मैं आगे और विस्तार से बताऊंगी। ये उनके संवेदनशील स्वभाव के लिए यातना के दौर थे। तीनों लड़कियों की अपने दम पर स्कूल शुरू करने की महत्वाकांक्षा बुरी तरह विफल रही। बचपन और युवावस्था की दबी हुई जीवंतता ने शार्लोट को किसी विदेशी शहर के जीवन में सहानुभूति और सहनशीलता के साथ प्रवेश करने में असमर्थ बना दिया, और ब्रसेल्स उनके लिए एक और विपत्ति साबित हुआ। फिर दो साल के भीतर, जब साहित्यिक प्रसिद्धि अतीत के कष्टों के लिए सांत्वना ला रही थी, उन्होंने अपनी दो प्रिय बहनों को खो दिया। और अंत में, जब आखिरकार एक अच्छे आदमी ने उनका प्यार जीता, तो उनके पास सुखी वैवाहिक जीवन के केवल नौ महीने ही बचे थे। 'मैं मरने वाली नहीं हूँ। हम बहुत खुश रहे हैं।' मृत्युशय्या पर अपने पति से कहे गए ये शब्द उनकी दुखद कहानी में सबसे अधिक दयनीय हैं। उनका जीवन एक त्रासदी था, यह उस महिला मित्र का मत था जिसके साथ बौद्धिक पक्ष पर उनकी सबसे अधिक समानता थी। मिस मैरी टेलर ने न्यूजीलैंड से श्रीमती गैस्केल को जीवनी प्राप्त होने पर निम्नलिखित पत्र लिखा: —

वेलिंगटन, 30 जुलाई 1857।

प्रिय श्रीमती गैस्केल, मुझे डाक से सी. ब्रोंटे के जीवन पर आधारित दो खंड प्राप्त हुए हैं। मुझे यह प्रशंसा पत्र आपको समर्पित करते हुए प्रसन्नता हो रही है; अतः मैं इसके लिए आपका धन्यवाद करती हूँ। यह पुस्तक एक दुखद जीवन का सटीक चित्रण प्रस्तुत करने में पूर्णतः सफल रही है, और आपने मेरे उस प्रश्न का उत्तर दे दिया है कि आप उनके बारे में कैसे लिखेंगी, जबकि आप उनके आसपास के लोगों का सटीक वर्णन करने में असमर्थ हैं। यद्यपि यह सत्य जितना अंधकारमय नहीं है,

फिर भी शायद उतना ही है जितना लोग इसे अतिशयोक्तिपूर्ण कहे बिना और इस पर संदेह या खंडन किए बिना स्वीकार कर सकते हैं। मैंने इसकी दो समीक्षाएँ पढ़ी हैं। एक समीक्षा इसे "गरीबी और आत्म-दमन का जीवन" बताती है, जबकि दूसरी समीक्षा का इससे कोई लेना-देना नहीं है। दोनों में से किसी को भी यह अजीब या गलत नहीं लगता कि एक असाधारण प्रतिभा, परिश्रम और ईमानदारी से संपन्न महिला को अपना पूरा जीवन "गरीबी और आत्म-दमन" के दुःस्वप्न में बिताना पड़े। मुझे संदेह है कि उनमें से कोई भी ऐसा करेगा।

'यह जानकर अधिकांश लोगों की सौंदर्य संबंधी धारणाएं आहत होंगी कि शुरुआत में दिखाया गया चित्र एक बदसूरत महिला का है। मुझे किसी अतिरंजित चित्र को प्रकाशित करने का विचार बिल्कुल पसंद नहीं है। मैं चाहती थी कि होंठ और आंखें एक-दूसरे के करीब हों, और चेहरे का वास्तविक चौकोर आकार और बड़ी, बेमेल नाक दिखाई दे।'

मुझे ऐसा लगा था कि कार्टराइट की मिल 1820 में जली थी, न कि 1812 में। आपने उन काले कोट वाले और टोरी बर्बरों का बहुत ही अनुकूल वर्णन किया है जिन्होंने जनता को दबाकर रखा और उन दिनों अत्याचारों को भड़काया। ओल्ड रॉबर्टसन ने कहा था कि वे "उस समय की स्थिति में बदलाव होने की बजाय घुटनों तक खून में डूबना पसंद करेंगे" - एक ऐसी स्थिति जिसमें अनाज कानून, टेस्ट कानून और अन्य कई तरह के अत्याचार शामिल थे।

"पुस्तक के लिए एक बार फिर धन्यवाद — मुझे लगता है कि यह न्यूजीलैंड पहुंचने वाली पहली प्रति थी। — आपका सादर,

'मैरी टेलर।'

और कुछ समय बाद लिखे गए एक अन्य पत्र में (28 जनवरी 1858), मिस मैरी टेलर ने मिस एलेन नुसे को इसी तरह की भावना से लिखा: —

'श्रीमती गैस्केल की किताब के बारे में आपका विवरण बहुत रोचक था,' वह कहती हैं। 'वह एक जल्दबाज़ और आवेगशील व्यक्ति लगती हैं, और उनकी गर्मजोशी के बाद आवश्यक रूप से पीछे हटना उन्हें एक असंगत रूप देता है। फिर भी मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनकी किताब बहुत उपयोगी होगी। आपको पता ही होगा कि शार्लोट वास्तव में किस प्रकार की शख्सियत थीं, इस बारे में कई अजीब धारणाएँ उनके जीवन के सच्चे तथ्यों के ज्ञान से दूर हो जाएँगी। मैंने इस विषय पर आगे के

प्रकाशनों के बारे में अपूर्ण रूप से सुना है। जहाँ तक आने वाले खंडित संस्करण की बात है, मुझे इसका खेद है। मानहानिकारक हो या न हो, पहला संस्करण पूरी तरह से सच्चा था, और भाषण को छोड़कर, मेरी राय में, बाकी सब कुछ प्रकाशित करने योग्य था। बेशक, मुझे नहीं पता कि आवश्यकता श्रीमती गैस्केल को उन्हें कितना छोड़ने के लिए मजबूर करेगी। आप जानते हैं कि दुनिया हमेशा बदलती नहीं रहती, ऐसा कहना हमेशा जोखिम भरा होता है।'

हम जो इस पूरी कहानी को विस्तार से जानते हैं, वे समझेंगे कि पुस्तक को 'विकृत' करना वांछनीय था, और वास्तव में, सत्य ने कुछ हद तक इसकी मांग भी की। लेकिन मैरी टेलर के इन पत्रों को देखते हुए, आइए हम फिर कभी यह न सुनें कि शार्लोट ब्रोंटे के जीवन की कहानी, अपने मुख्य पहलुओं में, उनकी प्रतिभाशाली जीवनीकार द्वारा सटीक और पर्याप्त रूप से नहीं बताई गई थी।

तो फिर, स्वाभाविक रूप से मुझसे पूछा जाता है कि ब्रोंटे परिवार की जीवनी में एक और पुस्तक क्यों जोड़ी जाए? मुझे उम्मीद है कि इसका उत्तर पर्याप्त है। चालीस वर्ष बीत चुके हैं, और इन वर्षों में इस विषय में लोगों की रुचि लगातार बढ़ती गई है। वर्ष 1895 में हॉवर्थ स्थित ब्रोंटे संग्रहालय में दस हजार लोग आए थे। कई रोचक पुस्तकें लिखी गई हैं, जिनमें सर वेमिस रीड की मोनोग्राफ और श्री लेलैंड की ब्रोंटे फैमिली उल्लेखनीय हैं, लेकिन अब वे उपलब्ध नहीं हैं। कई नए तथ्य सामने आए हैं, और कई ऐसे विवरण भी हैं जो 1857 में तुच्छ माने जाते थे, लेकिन आज उनका पर्याप्त महत्व है; और कई ऐसे तथ्य जिन्हें उस समय दबा दिया गया था, उन्हें लगभग आधी सदी के अंतराल पर ईमानदारी और सम्मान के साथ जनता के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है। इन सबके अलावा, भाग्य मुझ पर मेहरबान रहा है।

लगभग तीन-चार साल पहले मिस एलेन नुसे ने मुझे लगभग 400 पृष्ठों की एक मुद्रित पुस्तक सौंपी, जिस पर प्रकाशक का नाम नहीं था, लेकिन उसके शीर्षक पृष्ठ पर लिखा था कि यह शार्लोट ब्रोंटे के जीवन की कहानी है, जो उनके पत्रों के माध्यम से बताई गई है। ये वही पत्र हैं - जिनकी संख्या 370 है - जो मिस नुसे ने श्रीमती गैस्केल और सर वेमिस रीड को दिए थे। इन पत्रों में से श्रीमती गैस्केल ने लगभग 100 प्रकाशित किए, और सर वेमिस रीड ने बीस साल पहले परिस्थितियों के अनुसार जितने पत्र प्रकाशित करना उचित समझा, उतने ही पत्र प्रकाशित किए।

मुझे बताया गया कि यह पुस्तक एक गलतफहमी के चलते निजी तौर पर छापी

गई थी और इसकी केवल कुछ दर्जन प्रतियां ही बची थीं। मिस नुसे ने मुझसे पूछा कि क्या मैं अप्रकाशित पत्रों के बचे हुए अंशों के बारे में कुछ लिखूँगी और क्या मैं ऐसा कुछ कर सकती हूँ जिससे उस मित्र के प्रति लोगों की सराहना बढ़े, जो बचपन से लेकर अब तक उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा रही हैं। पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो गया कि अभी भी कुछ पत्र ऐसे थे जिन्हें ब्रोंटे की कहानी में शामिल करना फायदेमंद हो सकता था। साथ ही, उनके प्रकाशन पर रोक लगने की संभावना भी उत्पन्न हुई। शार्लेट ब्रोंटे की वसीयत की जाँच, जिसे उनके पति ने 1855 में यॉर्क में प्रमाणित किया था, ने इस समस्या का एक आसान समाधान सुझाया। मैंने श्री निकोल्स से मिलने का निश्चय किया। मैंने सुना था कि वे इतने वर्षों से अपनी पत्नी के इर्द-गिर्द चल रहे विवाद से किसी भी तरह से जुड़ना नहीं चाहते थे; फिर भी मैंने उन्हें पत्र लिखा और उनके आयरिश घर में आने का हार्दिक निमंत्रण प्राप्त हुआ।

शार्लोट की मृत्यु के ठीक चालीस वर्ष बाद, 31 मार्च, 1895 को, मैं आयरलैंड के मध्य में स्थित एक शांत छोटे से कस्बे के स्टेशन पर उतरा, जहाँ मुझे उस व्यक्ति का हार्दिक अभिवादन प्राप्त हुआ, जिसकी देखरेख में शार्लोट ब्रोंटे ने अपना जीवन समर्पित किया था। यह कई मुलाकातों में से एक थी, और एक रोचक पत्राचार की शुरुआत थी। श्री निकोल्स ने अपने पास मौजूद सभी कागजात मुझे सौंप दिए। वे मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक विविध और प्रचुर मात्रा में थे। उनमें बचपन की पांडुलिपियाँ शामिल थीं, जिनके बारे में बहुत कुछ कहा जा चुका है, और वयस्क जीवन की कहानियाँ भी थीं, जिनमें से एक अंश वास्तव में 1856 के कॉर्नहिल पत्रिका में प्रकाशित एम्मा से भी बाद का था, जिस पर थैकरे का एक नोट था। ये वे पत्र थे जो शार्लोट ब्रोंटे ने ब्रुसेल्स में अपने दूसरे प्रवास के दौरान अपने भाई और बहनों को लिखे थे - 'प्रिय ब्रैनवेल' और 'प्रिय ई. जे.' को, जैसा कि वह एमिली को पुकारती थीं - इन पत्रों को छूने मात्र से ही ब्रोंटे के प्रशंसक को रोमांच का अनुभव होगा। यहां मारिया ब्रैनवेल द्वारा अपने प्रेमी पैट्रिक ब्रोंटे को लिखे गए प्रेम पत्र भी थे, जिनका उल्लेख श्रीमती गैस्केल की जीवनी में किया गया है, लेकिन जिन्हें अब तक कभी मुद्रित नहीं किया गया है।

श्री निकोल्स लिखते हैं, 'एमिली और ऐनी की पांडुलिपि के चार छोटे टुकड़े मुझे उस छोटे बक्से में मिले जो मैंने आपको भेजा है; बाकी मुझे एक अलमारी के निचले

हिस्से में अखबार में लिपटे हुए मिले, जहाँ वे लगभग तीस वर्षों से पड़े थे, और जहाँ, यदि आप न आते, तो वे मेरे जीवनकाल तक पड़े रहते, और संभवतः बाद में नष्ट हो जाते।'

मैकमिलन पत्रिका में प्रकाशित ब्रोंटे के पत्रों के कुछ संक्षिप्त अंश, जिन पर 'ई. बाल्मर विलियम्स' के हस्ताक्षर थे, ने मुझे श्री डब्ल्यू. एस. विलियम्स की एक प्रतिभाशाली पुत्री से संपर्क कराया। श्रीमती विलियम्स और उनके पति ने उदारतापूर्वक शार्लोट ब्रोंटे द्वारा अपने पिता को लिखे गए इन सभी पत्रों की पूरी श्रृंखला मुझे उपलब्ध करा दी। इन्हीं पत्रों में से कुछ के बारे में श्रीमती गैस्केल ने उत्साहपूर्वक लिखा था, जबकि उन्हें केवल कुछ ही पत्र देखने की अनुमति थी। इसके बाद, मैं मिस मैरी टेलर के भतीजे श्री जोशुआ टेलर का उनकी चाची के पत्रों को प्रकाशित करने की अनुमति देने के लिए आभारी हूं। श्री जेम्स टेलर, जो शार्लोट ब्रोंटे से विवाह करना चाहते थे और जिनकी बीस वर्ष बाद बॉम्बे में मृत्यु हो गई, अपने पीछे पत्रों का एक बंडल छोड़ गए, जो मुझे उत्तरी लंदन में एक रिश्तेदार के पास मिला। मिस नुसे को संबोधित एक पत्र के माध्यम से मुझे पता चला कि श्रीमती गैस्केल द्वारा संदर्भित 'ब्रसेल्स मित्र' मिस लेटिटिया व्हीलराइट थीं, और मैंने लंदन डायरेक्टरी में सभी व्हीलराइट्स को पत्र लिखने का निश्चय किया। मेरा पहला प्रयास सफल रहा, और मिस व्हीलराइट ने कृपा करके मुझे वे सभी पत्र दे दिए जो उन्होंने सहेज कर रखे थे। यह लगभग असंभव है कि समय के साथ जेन आयर की लेखिका के और भी अप्रकाशित पत्र सामने आएँगे। इनमें से कई पत्र जो पहले ही छप चुके हैं, जाली हैं, और मैंने वास्तव में पेरिस से संबोधित एक पत्र देखा है, एक ऐसा शहर जहाँ मिस ब्रोंटे कभी नहीं गईं। मुझे ब्रुसेल्स के डॉ. हेगर से यह आश्वासन मिला है कि मिस ब्रोंटे और उनके पिता के बीच का पत्राचार अब मौजूद नहीं है। फिर भी, इस छोटी सी पुस्तक को इस विश्वास के साथ प्रकाशित किया जा सकता है कि यह शार्लोट ब्रोंटे के पत्राचार का लगभग संपूर्ण संग्रह है, और यह एक विलक्षण व्यक्तित्व का बहुमूल्य खुलासा है। यह भी जोड़ा जा सकता है कि अब से श्री निकोल्स के अधिकारों को उनकी पत्नी के अप्रकाशित पत्राचार के बचे हुए हिस्से में स्थापित करने के लिए कदम उठाए जाएँगे।

अध्याय 1: पैट्रिक ब्रोंटे और उनकी पत्नी मारिया

किसी भी सजग शोधकर्ता को यह बात स्पष्ट प्रतीत होगी कि हॉवर्थ के पादरी और तीन प्रसिद्ध पुत्रियों के पिता रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे एक बेहद बदनाम व्यक्ति थे। हम सिंहासन पर पड़ने वाले तीव्र प्रकाश की बात करते हैं, लेकिन उस प्रकाश के आगे वह प्रकाश क्या है जो किसी ऐसे व्यक्ति पर पड़ता है जिसमें कुछ हद तक व्यक्तित्व हो और जिसे अपना जीवन एक शांत ग्रामीण गाँव में बिताना पड़े—मानो, निजी बातों और गपशप के केंद्र में, जो द्वार के भीतर आने वाले अजनबी के प्रति हमेशा सौहार्दपूर्ण नहीं होती? श्रीमती गैस्केल द्वारा शार्लोट ब्रोंटे की जीवनी के प्रारंभिक संस्करणों में श्री ब्रोंटे की छवि एक कठोर, चिड़चिड़े और स्पष्ट रूप से अप्रिय चरित्र की है। यह एक ऐसे व्यक्ति का चित्र है जो जीवन की फिजूलखर्ची से इतनी घृणा करता था कि क्रोध के आवेश में आकर वह अपने बच्चों के नए जूते और अपनी पत्नी की रेशमी पोशाक को भी नहीं छोड़ता था। उन्हें एक कठोर, बूढ़ा बदमाश मानने का मन करता है। श्रीमती गैस्केल के संस्मरणों में उनकी पिस्तौल चलाने की घटना का वर्णन आकर्षक तो है, लेकिन सुखद नहीं। कई जगहों पर यह बात कही जा चुकी है कि यह असली पैट्रिक ब्रोंटे नहीं थे, और उनके बारे में फैली ज़्यादातर अफवाहें एक बर्खास्त नौकर की बातों का नतीजा थीं, जो श्रीमती गैस्केल को पड़ोस में अपनी एक खोज यात्रा के दौरान पता चली थीं। जले हुए जूतों और फटे हुए कपड़ों की कहानियां अब मिथक बन चुकी हैं, और पिस्तौल चलाना अब एक हानिरहित शौक माना जा सकता है, जो किसी पादरी के गोल्फ या मछली पकड़ने से ज़्यादा बुरा नहीं है। अगर आज के समय में इस विषय में लोगों की दिलचस्पी होती, तो यह निश्चित है कि श्री ब्रोंटे को आग्नेयास्त्रों का इस्तेमाल करना बहुत पसंद था। हॉवर्थ के वर्तमान पादरी आपको हॉवर्थ चर्च के पुराने

टावर पर पिस्तौल की गोलियों के निशान दिखाएंगे, जिनके बारे में उन्हें पूरा यकीन है कि वे श्री ब्रोंटे द्वारा ही बनाए गए थे। मैंने स्वयं श्री ब्रोंटे के जीवन के अंतिम वर्षों में उनके पास मौजूद बंदूक और पिस्तौल दोनों को संभाला है - वैसे तो पिस्तौल एक बहुत ही सजावटी हथियार है, जिसका निर्माण ब्रैडफोर्ड में हुआ था। इन दोनों से उन्हें काफी आनंद मिलता था; लेकिन उनके दामाद, श्री निकोल्स, जो चालीस वर्ष बाद भी श्री ब्रोंटे के प्रति श्रद्धा और स्नेह रखते हैं, ने मुझे बताया कि हॉवर्थ चर्च पर गोलियों के निशान एक अनुभवहीन पादरी - श्री स्मिथ - की शरारत का परिणाम थे। वैसे भी यह सब मामूली बातें हैं, और हम आसानी से ब्रोंटे परिवार के पिता के जीवन के अधिक महत्वपूर्ण पहलुओं की ओर मुड़ जाते हैं। पैट्रिक ब्रोंटे का जन्म 17 मार्च, 1777 को सेंट पैट्रिक दिवस के दिन आयरलैंड के काउंटी डाउन के अहाडेर्ग में हुआ था। वे किसान ह्यूग ब्रंटी के दस बच्चों में से एक थे। उनके नौ भाई-बहन भी अपने आयरिश घर में ही रहे, उनकी शादी हुई और उनका विवाह भी हुआ, और वे शांति से इस दुनिया से विदा हुए। केवल पैट्रिक ही महत्वाकांक्षी थे, और उनका एक ऐसा मित्र भी था जो उन्हें जीवन के संघर्ष में सहारा देता था, जिसके बिना महत्वाकांक्षा का कोई महत्व नहीं होता। सोलह वर्ष की आयु में वे एक प्रकार के ग्राम विद्यालय के शिक्षक या सहायक शिक्षक थे, और पच्चीस वर्ष की आयु में, अपने पल्ली के पादरी श्री टाइघे से प्रेरित होकर, वे आयरलैंड से कैम्ब्रिज के सेंट जॉन कॉलेज के लिए रवाना हुए। 1802 में पैट्रिक ब्रोंटे ने कैम्ब्रिज में दाखिला लिया और कॉलेज के रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया। वहाँ हमें पैट्रिक ब्रोंटे का नहीं, बल्कि पैट्रिक ब्रांटी का नाम मिलता है, और यह हमें नाम की उत्पत्ति के बारे में एक दिलचस्प बिंदु पर ले जाता है। उनके जन्म के रजिस्टर में उनका नाम, उनके भाई-बहनों के जन्म के साथ, 'ब्रंटी' और 'ब्रंटी' के रूप में दर्ज है; और इसमें शायद ही कोई संदेह हो कि, जैसा कि डॉ. डगलस हाइड ने बताया है, मूल नाम ओ'प्रुन्टी था। सदी की शुरुआत में आयरिश लोग कुछ मामलों में लगभग उतने ही आदिम थे जितने कि एक सदी पहले के अंग्रेज थे; और ब्रोंटे नाम की वर्तनी में भिन्नता देखकर आश्चर्य नहीं होता - उनके भाई-बहनों के मामले में इसे कभी-कभी 'ब्रोंटी' लिखा जाता था। मुझे यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि नाम परिवर्तन के लिए लॉर्ड नेल्सन जिम्मेदार थे, और 1799 में महान नाविक को प्रदान की गई ब्रोंटे की डची ने अधिक अलंकारिक उपनाम का सुझाव दिया। नेल्सन के ड्यूक ऑफ ब्रोंटे बनने से पहले आयरलैंड में कोई ब्रोंटे नाम का व्यक्ति नहीं था; लेकिन पैट्रिक के सभी

भाई-बहन, जिनके साथ उनका जीवन भर पत्राचार चलता रहा, धीरे-धीरे, इस उपनाम की सुंदरता को भांपते हुए, एक सच्चे सेल्टिक भाव से प्रेरित होकर, अधिक आकर्षक उपनाम को अपना लिया। इस सिद्धांत के लिए, ज़ाहिर है, कोई ठोस सबूत नहीं है; हम केवल इतना जानते हैं कि पैट्रिक के पैतृक पल्ली के रजिस्टर में उनका नाम ब्रंटी दर्ज है, और उनके सभी पादरियों के हस्ताक्षर ब्रोंटे ही रहे हैं।

कैम्ब्रिज से, 1806 में दीक्षा लेने के बाद, श्री ब्रोंटे एसेक्स के वेदरफील्ड में एक पादरी के पद पर आसीन हुए; और श्री ऑगस्टीन बिररेल ने अपने अनूठे साहित्यिक अंदाज़ में बताया है कि कैसे उस आकर्षक आयरिश पादरी ने एक युवा पैरिशियनर - मिस मैरी बर्दर - के साथ प्रेम संबंध स्थापित किया। ऐसा लगता है कि मैरी बर्दर उनसे शादी कर लेतीं, लेकिन उनके एक अड़ियल चाचा और अभिभावक के कारण ऐसा नहीं हो पाया। उन्हें चुपके से उस इलाके से दूर भेज दिया गया, और प्रेमी फिर कभी नहीं मिले। श्री बिररेल की कहानी में कुछ संदेहास्पद बिंदु हैं। मैरी बर्दर, एक नॉनकॉन्फॉर्मिस्ट पादरी की पत्नी के रूप में, 1866 में 77 वर्ष की आयु में निधन हो गया। यह महिला, जिनसे निस्संदेह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से यह परंपरा प्राप्त हुई, ने एक बहुत ही मासूम प्रेम प्रसंग को बढ़ा-चढ़ाकर बताया होगा। इस कथन के लिए और अधिक प्रमाण चाहिए कि जब श्री ब्रोंटे ने 1821 में अपनी पत्नी को खो दिया, तो उन्होंने अपनी पुरानी प्रेमिका, मैरी बर्दर से अपने छह बच्चों की माँ बनने के लिए कहा, और उन्होंने 'ना' कह दिया। बहरहाल, श्री ब्रोंटे ने 1809 में वेदरफील्ड छोड़कर ड्यूसबरी में एक क्यूरेसी का पद ग्रहण किया, और ड्यूसबरी में भी वहाँ के आयरिश क्यूरेट के प्रेम प्रसंगों को लेकर काफ़ी चर्चा होती थी। हालाँकि, 1811 में हडर्सफ़ील्ड के पास हार्ट्सहेड में स्थानांतरित होने के बाद उन्हें जो अगली क्यूरेसी मिली, उससे श्री ब्रोंटे के प्रेम प्रसंगों का शीघ्र ही अंत हो गया। 1812 में, जब वे तैंतीस वर्ष के थे, उन्होंने पेनज़ेंस की मिस मारिया ब्रैनवेल से विवाह किया। मिस ब्रैनवेल कुछ ही महीने पहले यॉर्कशायर में अपने चाचा से मिलने के लिए कॉर्निश स्थित अपना घर छोड़कर आई थीं। उनके चाचा श्री जॉन फेनेल थे, जो चर्च ऑफ़ इंग्लैंड के एक पादरी थे और पहले मेथोडिस्ट मंत्री रह चुके थे। ऐसा प्रतीत होता है कि कॉर्निश ब्रैनवेल परिवार किसी न किसी समय मेथोडिज़्म के प्रति समर्पित रहा होगा, क्योंकि मैंने 'एम. ब्रैनवेल, जुलाई 1807' अंकित एक प्रति देखी है, जिसका शीर्षक पृष्ठ इस प्रकार है: —

ईसाई आदर्श का एक अंश: या, मसीह के अनुकरण पर एक ग्रंथ। थॉमस ए

केम्पिस द्वारा लैटिन में लिखित। जॉन वेस्ली, एम.ए., लंदन द्वारा संक्षिप्त और अंग्रेजी में प्रकाशित। कॉन्फ्रेंस ऑफिस, नॉर्थ ग्रीन, फिन्सबरी स्क्वायर में मुद्रित। जी. स्टोरी, एजेंट। जी. व्हिटफील्ड, सिटी रोड द्वारा विक्रय। 1803। कीमत 1 शिलिंग।

यह पुस्तक स्पष्टतः श्रीमती ब्रोंटे द्वारा पेनज़ेंस से लाई गई थी और उन्होंने इसे अपने पति को दे दिया था या अपनी सामग्रियों के बीच छोड़ दिया था। बेचारी छोटी महिला को मरे हुए पाँच-छह साल हो चुके थे जब यह पुस्तक उनकी एक बेटी के हाथ लगी, जैसा कि हमें पुस्तक के पहले पृष्ठ पर शार्लोट की लिखावट से पता चलता है: —

‘सी. ब्रोंटे की किताब। यह किताब मुझे जुलाई 1826 में मिली थी। यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है कि इसके लेखक कौन हैं, लेकिन आमतौर पर यह माना जाता है कि थॉमस ए केम्पिस इसके लेखक हैं। मैंने लीड्स मर्करी में 10,000 पाउंड का इनाम देखा था, जो भी निश्चित रूप से लेखक का पता लगा सके।’

जॉन वेस्ली, मारिया ब्रैनवेल और शार्लोट ब्रोंटे के नामों का संयोजन निश्चित रूप से इस छोटी सी पुस्तक, 'कीमत 1 शिलिंग', को एक विलक्षण रुचि प्रदान करता है!

लेकिन यहाँ मुझे उन पत्रों का उल्लेख करना होगा जो मारिया ब्रैनवेल ने अपने प्रेमी को संक्षिप्त प्रेम प्रसंग के दौरान लिखे थे। श्रीमती गैस्केल ने, जैसा कि याद होगा, इस पत्राचार का केवल एक अंश ही उद्धृत किया है, जो उन्हें श्री ब्रोंटे ने उनके संस्मरण की सामग्री के हिस्से के रूप में दिया था। कई साल पहले, यह छोटा पैकेट श्री ब्रोंटे की मेज से लिया गया था, क्योंकि हम पाते हैं कि शार्लोट ने 16 फरवरी, 1850 को एक मित्र को लिखा था: —

कुछ दिन पहले एक छोटी सी घटना घटी जिसने मुझे अजीब तरह से झकझोर दिया। पापा ने मेरे हाथों में चिट्ठियों और कागजों का एक छोटा सा पैकेट थमाते हुए कहा कि ये मम्मी की हैं और मैं इन्हें पढ़ सकती हूँ। मैंने उन्हें पढ़ा, उस समय मेरी मनःस्थिति ऐसी थी जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती। कागज समय के साथ पीले पड़ गए थे, क्योंकि ये सब मेरे जन्म से पहले लिखे गए थे। अब पहली बार उस दिमाग के अभिलेखों को पढ़ना अजीब लग रहा था जिससे मेरा अपना दिमाग निकला था; और सबसे अजीब, और साथ ही दुखद और सुखद, यह जानकर कि वह दिमाग वास्तव में उत्तम, पवित्र और उच्च कोटि का था। ये चिट्ठियाँ पापा को उनकी शादी से पहले लिखी गई थीं। उनमें एक सत्यनिष्ठा, एक परिष्कार, एक दृढ़ता, एक विनम्रता, एक समझदारी और एक कोमलता है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। काश वह

जीवित होतीं और मैं उन्हें जान पाती।

लगभग चालीस साल बाद, वह छोटा सा पैकेट मेरे पास है। अस्सी साल से भी अधिक समय पहले एक नेक महिला द्वारा अपने प्रेमी को लिखे गए इन पत्रों को, उनकी पवित्रता का पूर्ण अहसास करते हुए, छूते हुए, मन में यह आशा करने का आभास होता है कि इस पत्राचार को पूर्ण रूप से प्रकाशित करने में उस गोपनीयता का उल्लंघन नहीं होगा जो आज भी जीवन के कुछ पहलुओं का मार्गदर्शन करती है। पत्रों के साथ मुझे एक छोटी सी पांडुलिपि भी मिली, जो अत्यंत रुचिकर है। इसका शीर्षक है 'धार्मिक मामलों में गरीबी के लाभ', और इस पर श्री ब्रोंटे की लिखावट में हस्ताक्षर हैं, जो निस्संदेह कई वर्षों बाद लिखे गए थे: —

‘उपरोक्त बातें मेरी प्यारी पत्नी ने लिखी हैं और इन्हें किसी पत्रिका में प्रकाशित किया जाना है। इसे उनकी स्मृति के रूप में संभाल कर रखें।’

यह मानने का कोई कारण नहीं है कि पांडुलिपि कभी प्रकाशित हुई थी; न ही कोई कारण है कि किसी संपादक ने इसे प्रकाशित करने की इच्छा की होगी। इसमें स्पष्ट बातें प्रचुर मात्रा में हैं। साथ ही, यह भी ध्यान देने योग्य है कि शार्लोट ब्रोंटे और उनकी बहनों को अपने पिता और माता दोनों से ही साहित्यिक प्रतिभा का कुछ अंश विरासत में मिला था। यह कहना गलत नहीं होगा कि यदि उनके प्रतिभाशाली बच्चे न होते तो पिता या माता की एक भी पंक्ति संरक्षित न होती। इतना ही पर्याप्त है कि लेखन का उत्साह उनमें था, और कलम चलाने का वह तीव्र जुनून, जो शार्लोट ब्रोंटे में असाधारण रूप से प्रबल प्रतीत होता है, काफी हद तक उनके पिता और माता दोनों के समान जुनून से आया होगा। श्री ब्रोंटे को वास्तव में एक विपुल लेखक माना जा सकता है। उन्होंने कुल मिलाकर चार पुस्तकें, तीन पुस्तिकाएँ और दो प्रवचन प्रकाशित किए। उनकी पुस्तकों में से दो पद्य में और दो गद्य में थीं। कॉटेज पोएम्स 1811 में प्रकाशित हुई थी; द रूरल मिनस्ट्रेल 1812 में, उनके विवाह के वर्ष में प्रकाशित हुई थी; 1815 में 'द कॉटेज इन द वुड' और 1818 में 'द मेड ऑफ किलार्नी' प्रकाशित हुईं। पत्नी की मृत्यु के बाद उन्होंने कोई और पुस्तक प्रकाशित नहीं की। इन पुरानी शैली की रचनाओं को अब पढ़ने पर यह स्वीकार करना पड़ता है कि इनमें कोई खास विशिष्टता नहीं है। वास्तव में, यह बात कही गई है कि 'जेन आयर' की सबसे सशक्त पंक्तियों में से एक - 'मेरे स्वभाव के सबसे कोमल अंश तक, महोदय' - श्री ब्रोंटे की कविता से ली गई है। यह उनकी एकमात्र ऐसी पंक्ति है जो अमर रहेगी। अपनी बेटी शार्लोट की तरह, श्री

ब्रोंटे अपनी कविता की तुलना में अपने गद्य में अधिक रोचक हैं। 'द कॉटेज इन द वुड; या, द आर्ट ऑफ बिकमिंग रिच एंड हैप्पी' एक प्रकार का धार्मिक उपन्यास है - एक आध्यात्मिक पामेला, जिसमें एक निर्दोष लड़की का पीछा करने वाला दुष्ट व्यक्ति अंततः परिवर्तित हो जाता है और उससे विवाह कर लेता है। 'द मेड ऑफ किलार्नी; या, एल्बियन एंड फ्लोरा' अधिक रोचक है। एक कहानी के आवरण में यह कई महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार प्रस्तुत करती है। अब हम जानते हैं कि शार्लोट ने ब्रसेल्स जाने तक नृत्य क्यों नहीं सीखा, और बच्चों के खेल उसके लिए अनभिज्ञ क्यों थे, क्योंकि यहाँ नृत्य और ताश खेलने के विरुद्ध कई हल्के-फुल्के व्यंग्य हैं। ब्रिटिश संविधान और ब्रिटिश एंड फॉरेन बाइबल सोसाइटी की भी काफी आलोचना की गई है। लेकिन इस उपदेशात्मक कमजोरी के बावजूद, एक-दो रचनाएँ वास्तव में आकर्षक हैं, विशेष रूप से एक आयरिश शोक सभा का वर्णन, और कुछ श्वेत लड़कों के विरुद्ध एक घर की रक्षा का सशक्त वर्णन। यह सच है कि ये पुस्तकें केवल संग्राहकों के लिए ही रुचिकर हैं और पैट्रिक ब्रोंटे की उल्लेखनीय रचनाओं के कारण ही ये जीवित हैं। लेकिन उस समय के कई विपुल लेखक अपनी कम प्रतिभा के बावजूद अपने समकालीनों के बीच प्रतिभा के धनी माने जाते थे; और श्री ब्रोंटे ने लेखक के रूप में स्वयं को कोई विशेष दर्जा नहीं दिया। इस लेखक परिवार की ओर से तीस वर्ष बाद ही कोई और पुस्तक प्रकाशित हुई; लेकिन जेन आयर, द मेड ऑफ किलार्नी से कुछ हद तक प्रेरित है, यह निश्चित है।

जैसा कि मैंने बताया, श्री ब्रोंटे ने 1812 में मारिया ब्रैनवेल से विवाह किया। वह 29 वर्ष की थीं और पाँच बच्चों में से एक थीं—एक बेटा और चार बेटियाँ—जिनके पिता, श्री थॉमस ब्रैनवेल का 1809 में निधन हो गया था। एक विचित्र संयोग से, उनकी एक और बहन, शार्लोट का विवाह भी उसी दिन—18 दिसंबर 1812 को पेनज़ेंस में हुआ था। मेरे सामने ब्रैनवेल बहनों में से तीन द्वारा बनाए गए सैंपलर का एक बंडल है। मारिया ब्रैनवेल ने अपना सैंपलर 15 अप्रैल 1791 को पूरा किया था, और उस पर यह लिखा है, "पाप से ऐसे भागो जैसे साँप से, क्योंकि यदि तुम उसके बहुत पास जाओगे, तो वह तुम्हें काट लेगा। उसके दाँत शेर के दाँतों के समान हैं जो मनुष्यों की आत्माओं को मार डालते हैं।" एक अन्य सैंपलर एलिजाबेथ ब्रैनवेल द्वारा बनाया गया है; एक मार्गरेट द्वारा और एक ऐनी द्वारा। ये कुछ लघुचित्र, और जिन किताबों और कागज़ात का मैंने ज़िक्र किया है, वे ही श्रीमती ब्रोंटे की स्मृति के रूप में

हमारे पास बचे हैं, उनके पति से हुए बच्चों के अलावा। पेनज़ेंस की मिस ब्रैनवेल के पास मौजूद लघुचित्रों में श्री और श्रीमती थॉमस ब्रैनवेल - शार्लोट ब्रोंटे के नाना और नानी - और श्रीमती ब्रोंटे और उनकी बहन एलिज़ाबेथ ब्रैनवेल के बचपन के चित्र हैं।

लेकिन चलिए, प्रेम पत्रों के उस संग्रह पर वापस आते हैं। इस समय के अंतराल में टिप्पणी या स्पष्टीकरण संभव हो तो भी, इस पर टिप्पणी करना अनावश्यक है।

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे, ए.बी., हार्ट्सहेड को

वुड हाउस ग्रोव, 26 अगस्त, 1812।

मेरे प्रिय मित्र, यह संबोधन आपको आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त है कि मैं न केवल आपके प्रति आपके व्यवहार को स्वीकार करता हूँ, बल्कि उसका समर्थन भी करता हूँ। मैं वास्तव में आपको अपना मित्र मानता हूँ; फिर भी, जब मैं यह सोचता हूँ कि आपको जानने का सौभाग्य मुझे कितने कम समय से मिला है, तो मुझे अपनी जल्दबाजी पर खेद होता है, मेरा दिल बैठ जाता है, और यदि मुझे यह न पता होता कि आप इससे निराश और दुखी होंगे, तो मुझे लगता है कि मैं यह पत्र लिखने का कार्य ही छोड़ देता। यह न सोचें कि मैं इतना दुविधा में हूँ कि जो मैंने कहा है उस पर पछतावा करूँ। नहीं, मेरा विश्वास करें, ऐसा कभी नहीं होगा, जब तक आप मुझे ऐसा करने का कारण न दें। आपको यह डरने की आवश्यकता नहीं है कि आपने मेरे चरित्र को गलत समझा है। यदि मैं अपने बारे में कुछ भी जानता हूँ, तो मैं किसी भी प्रकार की दयालुता का प्रतिफल देने में असमर्थ हूँ, और आपके प्रति तो बिल्कुल भी नहीं, जिनके स्नेह और व्यवहार ने मुझे विशेष रूप से प्रसन्न किया है। मैं स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ कि आपके व्यवहार और आपके चरित्र के बारे में मैंने जो कुछ भी देखा और सुना है, उससे मेरे मन में गहरी श्रद्धा और सम्मान की भावना जागृत हुई है। आप निश्चिंत रहें, मुझ पर रखे गए अपने किसी भी भरोसे पर आपको कभी पछतावा नहीं होगा, और मेरा हमेशा यही प्रयास रहेगा कि मैं आपके मन में बनी इस अच्छी राय का पात्र बनूँ, भले ही मानवीय कमजोरी के कारण कुछ मामलों में मैं असफल हो जाऊँ। ये आश्वासन देते समय मैं अपनी शक्ति पर निर्भर नहीं हूँ, बल्कि उस परमेश्वर पर भरोसा करता हूँ जो जीवन भर मेरा अचूक मार्गदर्शक रहा है, और जिसकी निरंतर सुरक्षा और सहायता पर मुझे पूरा विश्वास है।

रविवार को मैंने आपके बारे में बहुत सोचा और मुझे डर था कि आप बारिश से बच नहीं पाएंगे। आशा है कि आपको इससे कोई परेशानी नहीं हुई होगी। मेरे चचेरे भाई ने

सोमवार को आपको पत्र लिखा था और आज दोपहर तक उत्तर मिलने की उम्मीद कर रहा है। आपके पत्र ने मुझे थोड़ी सी मूर्खतापूर्ण शर्मिंदगी में डाल दिया है, हालांकि मेरी भावनाओं पर दया करते हुए उन्होंने उपहास करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

अब मैं आपके सवालों का खुलकर जवाब दूंगा। दूसरों की विनम्रता मुझे आपकी स्नेहपूर्ण बातों को भुला नहीं सकती, न ही मैं आपके बारे में सोचे बिना अपनी रोज़ाना की मुलाकातों पर चल सकता हूँ, और यह कहने में मुझे कोई शर्म नहीं है कि मैं आपकी उपस्थिति की कामना करता हूँ। अगर आप जानते कि इसे लिखते समय मेरे मन में क्या चल रहा है, तो आप मुझ पर तरस खाते। मैं सच लिखना चाहता हूँ और आपको संतुष्ट करना चाहता हूँ, फिर भी डरता हूँ कि कहीं मैं हद से ज़्यादा न बोल दूँ और मर्यादा की सीमा पार न कर दूँ। लेकिन मैं जो कुछ भी कहूँ या लिखूँ, मैं आपको कभी धोखा नहीं दूँगा और न ही सच से आगे बढ़ूँगा। अगर आपको लगता है कि मैंने आप पर पूरा भरोसा नहीं किया है, तो मेरी स्थिति पर विचार करें और खुद से पूछें कि क्या मैंने आप पर पर्याप्त भरोसा नहीं किया है, शायद ज़रूरत से ज़्यादा। मुझे बहुत अफ़सोस है कि यह आपको कल के बाद ही मिलेगा, लेकिन मेरे पास पहले लिखने की कोई गुंजाइश नहीं थी। मुझे आपकी दयालुता पर भरोसा है कि आप इसमें जो कुछ भी अति-स्वभाव या अति-कठोर लगे, उसे क्षमा कर देंगे; और आपसे निवेदन है कि आप मुझे एक सच्चे और वफादार दोस्त के रूप में समझेंगे।

मेरे चाचा, चाची और चचेरे भाई/बहन हार्दिक शुभकामनाएँ देते हैं।

अब मैं एक बार फिर स्वयं को आपका सच्चा मित्र घोषित करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ।

'मारिया ब्रैनवेल।'

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे, ए.बी., हार्ट्सहेड को

वुड हाउस ग्रोव, 5 सितंबर, 1812।

मेरे प्रिय मित्र, — मुझे अभी-अभी आपका स्नेहपूर्ण और अत्यंत स्वागतयोग्य पत्र प्राप्त हुआ है, और यद्यपि मैं इसे सोमवार तक नहीं भेज पाऊँगा, फिर भी मैं आज शाम कुछ पंक्तियाँ लिखने के आनंद से खुद को वंचित नहीं कर सका। अब मैं इसे एक कार्य नहीं, बल्कि आपके पत्र को पढ़ने के समान ही आनंद मानता हूँ। मुझे श्री फेनेल से यह जानकर प्रसन्नता हुई, जो गुरुवार दोपहर को ब्रैडफोर्ड में थे, कि आपने वहाँ पूरी रात विश्राम किया। यदि आप आगे बढ़ते, तो मुझे यकीन है कि पैदल चलना

आपके लिए असहनीय होता; बार-बार इतनी अधिक थकान किसी भी स्वस्थ व्यक्ति को भी कष्ट पहुँचा सकती है। यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि हमारी आशंकाएँ निराधार थीं। मुझे कल अपने एक बहुत प्रिय मित्र का पत्र मिला, और यह जानकर संतोष हुआ कि घर पर सभी स्वस्थ हैं। मैं आपके साथ उस दयालु ईश्वर के प्रति अपनी असीम कृतज्ञता को महसूस करता हूँ — मेरा हृदय कृतज्ञता से भर उठता है, और मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं अपने सभी आशीर्वादों के दाता के प्रति उचित प्रतिफल दे सकूँ। सामान्यतः, मुझे लगता है कि मैं अपनी चिंताओं को उस पर सौंपने में सक्षम हूँ, और तब मुझे मन की एक ऐसी शांति और सुकून का अनुभव होता है जिसे कुछ ही चीजें भंग कर सकती हैं। कृपा के सिंहासन से की गई अपनी सभी प्रार्थनाओं में मैं कभी अपने लिए आशीर्वाद नहीं माँगता, बल्कि आपके लिए वही प्रार्थना करता हूँ, और जिस महत्वपूर्ण पद को निभाने के लिए आपको बुलाया गया है, उसे ध्यान में रखते हुए, मेरी प्रार्थनाएँ अत्यंत प्रबल हैं कि आपको इस कार्य के लिए आवश्यक सभी वरदान और कृपाएँ प्राप्त हों। हे मेरे प्रिय मित्र, आइए हम खूब प्रार्थना करें कि हम एक-दूसरे और अपने आस-पास के सभी लोगों के लिए पवित्र और उपयोगी जीवन जी सकें!

सोमवार की सुबह। — कल मैं और मेरा चचेरा भाई कवरली चर्च में थे, जहाँ हमने श्री वाटमैन का "मुझसे सीखो, क्योंकि मैं नम्र और दीन हृदय का हूँ" विषय पर दिया गया एक बहुत ही उत्कृष्ट उपदेश सुना। उन्होंने हमारे उद्धारकर्ता के चरित्र को अत्यंत मार्मिक और सौम्य रूप में प्रस्तुत किया। मैं शायद ही कभी उनके गुणों से इतना मोहित हुआ, उनकी विनम्रता के लिए इतना कृतज्ञ हुआ, या अपनी अयोग्यता पर इतना लज्जित हुआ; लेकिन मुझे खेद है कि मेरा हृदय उन सुखद और लाभकारी छापों को इतना कम संजो कर रख पाता है।

मुझे आपकी तन्हाई पर तरस आया और इस बात का अफसोस हुआ कि मैं इसे खुशनुमा नहीं बना सका। क्या आपने अपने दोस्तों को किसी घटना के बारे में बताने में जल्दबाजी नहीं की? आपने उन्हें थोड़ा और सोचने का मौका क्यों नहीं दिया? मुझे इस बात से डर लगता है कि यह बात सबको पता चल जाएगी। मैं सच में कभी-कभी आपके बारे में सोचता हूँ, लेकिन मैं यह नहीं कहूँगा कि कितनी बार, कहीं आपकी शान को ठेस न पहुँचे; और हम कभी-कभी आपके और डॉक्टर के बारे में बात करते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि अगर मेरे चचेरे भाई कभी-कभार आपका नाम न लेते, तो

मैं खुद भी शायद ही कभी आपका नाम लेता। मैंने बीते हुए समय के बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहा है। अगर मुझे ऐसा करना ज़रूरी लगता, तो मैं आपसे ऐसा करने का अनुरोध करता। लेकिन मुझे लगता है कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि किसी न किसी तरह से उन्हें हमारे बीच की स्थिति का काफी हद तक सही अंदाजा है; और उनके इशारों आदि का मैं खंडन नहीं करता, इसलिए मेरी चुप्पी ही पुष्टि मानी जाती है। श्री फेनेल ने मुझे कुछ गंभीर और उत्साहवर्धक सलाह देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है, और मेरी चाची अक्सर ऐसे छोटे-छोटे वाक्य बोलती रहती हैं जिनका मैं लाभ उठा सकूँ। मुझे लंबे समय से यह जानने का कारण है कि वर्तमान परिस्थिति सभी पक्षों को प्रसन्न करेगी। हर्मिटेज में हुए दृश्य का आपका हास्यास्पद वर्णन बहुत मनोरंजक था, हम उस पर दिल खोलकर हँसे; लेकिन मुझे डर है कि इससे मिस फेनेल के मन में वह सहानुभूति उत्पन्न नहीं होगी जिसकी आप अपेक्षा करते हैं। अब मैं आपको बताता हूँ कि उस समय मैं क्या सोच रहा था और क्या कर रहा था। मैं उस समय जेन और श्रीमती क्लैफम के साथ श्री टैथम के यहाँ चाय पीने के लिए पहाड़ी पर चढ़ रहा था, उस शाम के बारे में सोच रहा था जब मैंने पहली बार आपके साथ यही सैर की थी, और तब से मेरे हालात और विचारों में आए बदलाव के बारे में - कुछ हद तक यह इच्छा भी थी कि काश आपका हाथ मुझे सहारा देता और आपकी बातें सैर को छोटा कर देतीं। वास्तव में, हमारी सभी सैरों में अब एक नीरसता आ गई है जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। जब मैं काम करता हूँ, और अगर मुझे आगे बढ़ना हो तो मुझे खुशी होगी कि आप दूर हैं। जेन ने मुझसे निवेदन किया है कि मैं आपको उसकी शुभकामनाएँ दूँ। श्री मॉर्गन के आज शाम यहाँ आने की उम्मीद है। मुझे उनके हमलों का सामना करने के लिए दृढ़ और आत्मविश्वास से भरा चेहरा अपनाना होगा!

मैंने अब बिना किसी संकोच या सावधानी के एक लंबा पत्र लिखा है, और यदि मेरे दिल की सारी भावनाएँ आपके सामने प्रकट नहीं हो पाई हैं, तो विश्वास कीजिए, ऐसा इसलिए नहीं है कि मैं उन्हें छुपाना चाहता हूँ, क्योंकि मुझे आशा है कि इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे आपको दुख या नाराजगी हो। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ आपके सुख और कल्याण के लिए हैं, क्योंकि इसमें मेरा अपना सुख और कल्याण भी शामिल है। मेरे लिए प्रार्थना कीजिए कि मैं आपके लिए आशीर्वाद बनूँ, बाधा नहीं। मुझे आपकी पढ़ाई में बाधा न डालने दीजिए और न ही उस समय में दखल देने दीजिए

जो बेहतर कार्यों के लिए समर्पित होना चाहिए। मेरी इस स्वतंत्रता को क्षमा कीजिएगा, मेरे प्रिय मित्र, और निश्चिंत रहिए कि आप मेरे प्रिय हैं और हमेशा रहेंगे।

मारिया ब्रैनवेल।

‘जल्द ही लिखना।’

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे, ए.बी., हार्ट्सहेड को

वुड हाउस ग्रोव, 11 सितंबर, 1812।

मेरे प्रिय मित्र, कल का पूरा दिन ब्रैडफोर्ड के पास मिरी शाय में बिताने के कारण, मुझे शाम को लौटने तक आपका पत्र नहीं मिला, और इसलिए यदि मैं इसे डाक से भेजूं तो आज सुबह मेरे पास लिखने के लिए बहुत कम समय है। क्या आपको लगता है कि आप मुझे लिखकर परेशान कर रहे हैं? नहीं, मुझे लगता है कि मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि यदि ऐसा होता तो आप मुझे और परेशान नहीं करते। निश्चिंत रहें, आपके पत्र अत्यंत प्रसन्नता से प्राप्त होते हैं और मुझे आशा है कि हमेशा रहेंगे और मैं उन्हें बड़े चाव से पढ़ता हूँ। हमारे दयालु पिता आपकी प्रार्थनाओं को कृपापूर्वक पूरा करें! जब तक हम सुख के लिए पूरी तरह से उन पर निर्भर हैं, और एक-दूसरे को और अपने सभी आशीर्वादों को उनके हाथों से प्राप्त मानते हैं, तब तक हमें क्या हानि पहुँचा सकता है या हमें दुखी कर सकता है? न तो सांसारिक और न ही आध्यात्मिक।

जेन को कल शाम श्री मॉर्गन का एक पत्र मिला था, और वह चाहती हैं कि मैं आपको बताऊँ कि मेथोडिस्टों की प्रार्थना सभा अगले रविवार से शुरू होने वाली है। जब आप यहाँ दोबारा आएँगे तो जेन आपको नाराज़गी और कड़े शब्दों का सामना करवाएँगी, क्योंकि जहाँ तक आपको याद है, उन्होंने आपको डॉक्टर को देने के लिए एक पत्र दिया था, जो उन्हें अभी तक नहीं मिला है। आपने उस पत्र का क्या किया? यदि आप उसका सही विवरण दे सकें, तो आप जब चाहें हमसे मिलने आ सकते हैं और सभी की ओर से आपका हार्दिक स्वागत होगा। अगले बुधवार को, यदि मौसम सुहाना रहा, तो हम एक बार फिर किर्कस्टॉल एबे जाने का सोच रहे हैं, और मुझे लगता है कि आपकी उपस्थिति से हम सभी के लिए सैर कम सुखद नहीं होगी।

“बुजुर्ग व्यक्ति आ गए हैं और मेरे पत्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आपसे अगले सोमवार या मंगलवार को मिलने की आशा में, मैं आपका स्नेहपूर्वक और वफादार बना रहता हूँ।”

‘एम. बी.’

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे, ए.बी., हार्ट्सहेड को

वुड हाउस ग्रोव, 18 सितंबर, 1812।

मैं अपने प्रिय श्री बी के अनुरोध को सहर्ष स्वीकार करता हूँ! देखिए, आपको बस अपनी इच्छा व्यक्त करनी है और जहाँ तक संभव हो, मैं उसे पूरा करने में संकोच नहीं करता। मेरा हृदय कहता है कि आपकी खुशी में योगदान देना मेरे लिए हमेशा गर्व और प्रसन्नता का विषय रहेगा, और मुझे इस बात का भी भय नहीं है कि यह एक ईसाई के रूप में मेरे कर्तव्य के विरुद्ध होगा। आपके प्रति मेरा आदर और आप पर मेरा विश्वास इतना गहरा है कि मुझे दृढ़ विश्वास है कि आप मुझसे कभी भी ऐसी कोई अपेक्षा नहीं करेंगे जिसे मैं ईमानदारी से पूरा न कर सकूँ। भविष्य में जब भी मुझे सहायता और मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी, मैं आपसे संपर्क करूँगा, और आशा करता हूँ कि आप मुझे कोई भी आवश्यक सलाह या चेतावनी देने से कभी नहीं हिचकेंगे।

['कुछ वर्षों से मैं पूरी तरह से अपनी ही स्वामी रही हूँ, किसी के नियंत्रण में नहीं रही हूँ — बल्कि इसके विपरीत, मेरी बहनें जो मुझसे कई साल बड़ी हैं, और यहाँ तक कि मेरी प्यारी माँ भी हर महत्वपूर्ण मामले में मुझसे सलाह लेती थीं, और मेरे विचारों और कार्यों की उपयुक्तता पर शायद ही कभी संदेह करती थीं। शायद आप इसे बताने पर मुझ पर घमंड का आरोप लगाने को तैयार हों, लेकिन आपको यह समझना होगा कि मैं इस पर गर्व नहीं करती, मैंने कई बार इसे एक कमी के रूप में महसूस किया है; और यद्यपि, ईश्वर का धन्यवाद, इसने मुझे कभी गलती की ओर नहीं ले जाया, फिर भी उलझन और संदेह की परिस्थितियों में, मैंने एक मार्गदर्शक और प्रशिक्षक की कमी को गहराई से महसूस किया है।]

ऐसे समय में मैंने अलौकिक सहायता की आवश्यकता देखी और महसूस की है, और ईश्वर की कृपा से की गई प्रार्थनाओं से मैंने अनुभव किया है कि मेरे स्वर्गीय पिता हर सांसारिक मित्र का स्थान लेने में सक्षम और इच्छुक हैं। अब मुझे इस अभाव, इस असहाय कमजोरी का एहसास नहीं होगा, क्योंकि मेरा मानना है कि दयालु ईश्वरीय विधान ने यह तय किया है कि मैं आप में अपने सभी सांसारिक मित्रों को एक साथ पाऊँगी; और न ही मुझे आपकी सुरक्षा में स्वयं को सौंपने से डर लगता है, न ही मैं आपके नियंत्रण से पीछे हटती हूँ। जिनसे हम प्रेम करते हैं, उनके अधीन रहना सुखद होता है, विशेषकर तब जब वे अपने अधिकार का प्रयोग केवल हमारे हित के लिए

करते हैं। कितने कम लोग इस तरह लिखेंगे! लेकिन मुझे डर नहीं है कि आप इसका दुरुपयोग करेंगे। आप मुझे अपने विचार लिखने के लिए कहते हैं, और इस प्रकार जैसे ही वे मेरे मन में आते हैं, मैं उन्हें स्वतंत्र रूप से लिख देती हूँ।

शनिवार सुबह—मुझे नहीं पता कि आपने जो गलती की है उसके बाद आप यहाँ दोबारा आने की हिम्मत करेंगे या नहीं। गुरुवार शाम को जब हम घर पहुँचे, दरवाज़े के अंदर कदम रखने से पहले ही हमने देखा कि श्रीमान और श्रीमती बेडफोर्ड वहाँ थे, और उन्होंने आपसे अपने आने के इरादे का ज़िक्र करने का अनुरोध किया था—जिसका आपने ज़रा भी संकेत नहीं दिया! बेचारे मुझे भी आपके ऊपर बरसाई गई कठोर बातों का सामना करना पड़ा, क्योंकि सभी इस बात पर सहमत थे कि मैं ही इसका कारण था। श्रीमान फेनेल ने कहा कि आप सचमुच भ्रमित थे, और आपको यॉर्क भेजने की बात कर रहे थे, इत्यादि। और मुझे भी लगने लगा है कि यह, उस नोट के साथ, पागलपन के कुछ लक्षण दिखाता है! खैर, मैं तब तक अपना फैसला नहीं सुनाऊँगा जब तक मैं यह नहीं सुन लेता कि आप अपने बचाव में क्या कहते हैं, मुझे लगता है कि आप किसी न किसी तरह का बहाना बनाने के लिए तैयार होंगे।

कल मैंने अपनी बहनों को पत्र लिखकर एक कठिन लेकिन सुखद कार्य पूरा किया। मुझे लगा था कि मैं उस उद्देश्य को कभी पूरा नहीं कर पाऊँगी जिसके लिए यह पत्र लिखा गया था; लेकिन काफी सोच-विचार के बाद मैंने उन्हें आपके साथ अपने समझौते की प्रकृति, उस समझौते के पीछे के कारणों और प्रेरणाओं को समझाया, और यह भी बताया कि इसके परिणामस्वरूप मैं उनसे अपनी योजना के अनुसार जल्दी नहीं मिल पाऊँगी। मैंने यह आशा व्यक्त करते हुए पत्र समाप्त किया कि वे इस सूचना से उतनी ही प्रसन्न होंगी जितनी यहाँ मेरे मित्र हैं। मुझे लगता है कि वे मुझ पर कोई संदेह नहीं करेंगी कि मैंने कोई गलत कदम उठाया है, क्योंकि उनका मेरे प्रति स्नेह बहुत गहरा है। और मेरे प्रति उनका स्नेह उन्हें मेरी भलाई में प्रसन्न होने के लिए प्रेरित करेगा, भले ही इससे उनकी अपनी भलाई में कुछ कमी आए। मुझे आपके पत्र का उत्तर आने तक का समय बहुत लंबा लगेगा, और मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि आप जितनी जल्दी हो सके पत्र लिखें। मुझे क्षमा करें, मेरी प्रिय मित्र, यदि मैं आपको फिर से उस कमजोरी के आगे न झुकने की चेतावनी दे रही हूँ जिसके बारे में मैंने आपको शिकायत करते सुना है। जब आपका मन बोझिल हो और आपके विचार किसी एक विषय में ही उलझे हों, तो प्रार्थना को अपना सहारा बनाएं— आप

नि:संदेह अनुभव से जानते होंगे कि यह एक अचूक उपाय है और हर चिंता और भ्रम से मुक्ति दिलाता है। काश, हमारे भीतर प्रार्थना की भावना और अधिक होती! मुझे इसकी बहुत आवश्यकता महसूस हो रही है।

नाश्ते का समय नजदीक आ रहा है, मुझे फिलहाल आपसे विदा लेनी होगी, लेकिन निश्चिंत रहें कि आप हमेशा मेरी प्रार्थनाओं और दिलों में मेरे साथ रहेंगे।

मारिया।

श्री फेनेल ने मेरी बहनों को लिखे पत्र की प्रतिलिपि भेज दी है। अपनी सदाचारी दयालुता से उन्होंने मेरी कमियों को दूर किया है और मेरी इतनी प्रशंसा की है कि मैं वास्तव में इसके योग्य होती। उन्होंने आपके चरित्र को भी अत्यंत सकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया है; और मुझे विश्वास है कि भले ही वे आपको न जानें, फिर भी वे आपसे प्रेम और सम्मान करना नहीं छोड़ेंगी।

'यहाँ उपस्थित सभी लोग हार्दिक शुभकामनाओं के साथ अलविदा कहते हैं।'

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे ए.बी., हार्ट्सहेड को

वुड हाउस ग्रोव, 23 सितंबर, 1812।

मेरे प्रिय मित्र, आपके स्नेहपूर्ण पत्र के लिए हार्दिक धन्यवाद। आपने मेरे बारे में इतनी अच्छी बातें लिखी हैं कि अपनी ही प्रशंसा पढ़कर मुझे शर्म आ रही है। ईश्वर से प्रार्थना कीजिए कि मैं आपके प्रति दिखाई गई सारी दयालुता का पात्र बन सकूँ और आपके द्वारा मेरे बारे में व्यक्त की गई अच्छी राय के अनुरूप कार्य कर सकूँ। तभी मैं वास्तव में आपकी जीवनसाथी बन पाऊँगी, और यही मेरे जीवन का उद्देश्य रहेगा। आज हमारे यहाँ ब्रैडफोर्ड परिवार के कई लोग आए थे - रैंड्स, फॉसेट्स, डॉब्सन्स आदि। मेरा ध्यान अक्सर उनके साथ बिताए समय से हट गया, और मैं खुशी-खुशी उन्हें छोड़कर अपने वर्तमान काम में लग जाना चाहती थी। अपने मित्रों को पत्र लिखना और उनसे पत्र प्राप्त करना हमेशा से मेरे लिए सबसे सुखद रहा है, लेकिन मुझे अपने नए मित्र से पत्र प्राप्त करने और उन्हें पत्र लिखने से जितना आनंद मिलता है, उतना किसी और पत्र से नहीं। आपने जिस घर का जिक्र किया था, उसे छोड़ देने का मुझे जरा भी अफसोस नहीं है। अपने चचेरे भाई की मदद से मैंने आपके इस विचार की जानकारी अपने चाचा और चाची को दे दी है। श्री फेनेल ने आपके वर्तमान निवास स्थान के बारे में आपकी बात से तुरंत सहमति जताई और कहा कि यह विचार उनके मन में पहले भी आया था, लेकिन उन्हें आपसे इस बारे में बात करने का अवसर

नहीं मिला। मेरी चाची ने इतनी आसानी से इस बात को स्वीकार नहीं किया, लेकिन मुझे उनकी आपत्तियाँ बहुत महत्वपूर्ण नहीं लगीं। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे इसके पक्ष में आपके सभी तर्क पूरी तरह से सही लगते हैं और आपकी आपत्तियाँ इतनी मामूली हैं कि उन्हें आपत्ति कहना भी मुश्किल है। मेरे चचेरे भाई की भी यही राय है। वास्तव में, आप अपने मित्रों को योजना बताने से पहले उस पर विचार-विमर्श और उसे अच्छी तरह से समझने का ऐसा तरीका अपनाते हैं कि उनकी नाराज़गी या आपकी योजनाओं के विफल होने का जोखिम बहुत कम हो जाता है। मैं इस तरह से आपकी प्रतिभा की बहुत प्रशंसा करता हूँ - ईश्वर करे कि इनका उपयोग कभी भी बुरे उद्देश्य के लिए न हो! और जब इनका उपयोग अच्छे उद्देश्यों के लिए किया जाए, तो ये अचूक साबित हों! आपके पत्र से मुझे लगता है कि यह मध्यमार्गी योजना आपको सबसे अधिक पसंद आएगी, इसलिए यदि इस पर कोई नई आपत्ति नहीं उठती है, तो शायद यही आपके लिए सबसे अच्छा विकल्प साबित होगा। हालांकि, इस पर और विचार करने के लिए अभी पर्याप्त समय है। मुझे विश्वास है कि इस और अन्य सभी परिस्थितियों में आप ऊपर से आने वाली बुद्धि से निर्देशित होंगे - जिसका कुछ अंश निस्संदेह अब तक आपका मार्गदर्शन करता रहा है। इस विश्वास और इस विषय पर आपके तर्कों को पढ़कर मिली पूर्ण संतुष्टि ने मुझे आपके विचारों का तुरंत समर्थक बना दिया। मुझे आशा है कि ऐसा कुछ नहीं होगा जिससे आप ब्रैडफोर्ड में अगला सप्ताह बिताने का अपना इरादा बदल दें। निश्चिंत रहें, आपको पत्र-दर-पत्र जवाब मिलेगा; लेकिन क्या हम उस दौरान आपसे यहां मिलने की उम्मीद नहीं कर सकते? निश्चित रूप से आपको यात्रा सामान्य से अधिक थकाऊ नहीं लगेगी। जब से आप ब्रैडफोर्ड में थे, तब से मुझे चर्च के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है। श्री रॉसन अभी वहां हैं, लेकिन श्री हार्डी और उनके भाई अनुपस्थित हैं, और मुझे पता चला है कि उनके बिना कोई निर्णायक कार्य नहीं किया जा सकता है। जेन को कल कुछ और जानकारी मिलने की उम्मीद है। शायद यह पत्र आप तक पहुंचने से पहले, आपको श्री मॉर्गन से इस संबंध में कुछ सूचना मिल जाए। यदि आपके पास अपनी गलतियों के लिए मुझसे माफी मांगने के अलावा और कोई माफी नहीं है, तो क्षमा की उम्मीद न करें, क्योंकि मैंने इसका जिक्र किसी से नहीं किया है, इसलिए भले ही इससे आपका चरित्र मेरी राय में साफ हो जाए, लेकिन इसका किसी और पर कोई असर नहीं पड़ेगा। थोड़ी सी भी बात मुझे आपकी गलतियों को दया के पर्दे में ढकने के लिए

प्रेरित नहीं करेगी। मैं पहले से ही आपके मामलों में एक तरह से भागीदार महसूस कर रहा हूँ। आपकी हर प्रशंसा और निंदा मुझ पर समान रूप से असर डालेगी। आपके सुख-दुख मेरे भी सुख-दुख होंगे। इस तरह एक बढ़ेगा और दूसरा घटेगा। जब तक ऐसा रहेगा, मुझे आशा है कि हम हमेशा "जीवन की चिंताओं" को "सुखद" पाएंगे। और हम हर परीक्षा और कष्ट को, क्योंकि ये कभी-कभी हमारे भाग्य में आते हैं, ईश्वर और एक-दूसरे के और करीब लाएं! मेरा हृदय आपकी व्यापक प्रार्थनाओं में पूरी तरह से शामिल है। मुझे विश्वास है कि वे सब मिलकर ईश्वर की कृपा के सिंहासन पर आसीन होंगे, और प्रभु के गुणों से हमें इस जीवन में शांति और सुख तथा परलोक में शाश्वत आनंदमय जीवन प्रदान करेंगे। अनंत काल तक एक साथ पूर्ण और निर्बाध आनंद में रहने का विचार कितना पवित्र सुख देता है! यह हमें भरपूर प्रयास और धैर्य के लिए प्रेरित करना चाहिए। लेकिन लिखते समय, मेरे ही शब्द मुझे दोषी ठहरा रहे हैं - मैं अपने कर्तव्य के प्रति आलस्य और शिथिलता से शर्मिंदा हूँ। काश मैं पहले से कहीं अधिक सावधान, सतर्क और सक्रिय हो सकूँ!

मेरे चाचा, चाची और जेन ने मुझसे उनका हार्दिक अभिवादन भेजने का अनुरोध किया है, और वे अगले सप्ताह जब भी आप ब्रैडफोर्ड से सुविधाजनक समय पर आ सकें, आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे। कृपया मुझे जल्द ही पत्र दें - मुझे सोमवार को आपके पत्र की प्रतीक्षा रहेगी। अलविदा, मेरे प्रिय मित्र। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि आप स्वयं सुखी रहें और अपने आस-पास सभी के लिए उपयोगी हों।

'मारिया ब्रैनवेल।'

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे, ए.बी., हार्ट्सहेड को

वुड हाउस ग्रोव, 3 अक्टूबर, 1812।

मेरे प्यारे दोस्त ने मुझे इतनी बेरहमी से कैसे निराश किया? अगर उन्हें पता होता कि आज दोपहर मुझे चिट्ठी मिलने की कितनी बेसब्री थी, और जब बैग आया और उसमें मेरे लिए कुछ नहीं था, तो मुझे कितनी निराशा हुई, तो मुझे यकीन है कि वे एक छोटी सी बात को अपने काम में बाधा नहीं बनने देते। लेकिन आपके न लिखने का जो भी कारण रहा हो, मुझे नहीं लगता कि यह लापरवाही या निर्दयता थी, इसलिए मैं आपको ज़रा भी दोष नहीं देती। मैं बस आपसे विनती करती हूँ कि भविष्य में आप मेरी भावनाओं को अपनी भावनाओं से समझें, और हो सके तो मुझे कभी भी चिट्ठी की उम्मीद न रहने दें। आपको याद होगा कि ब्रैडफोर्ड से भेजे गए मेरे आखिरी पत्र में

मैंने कहा था कि अगले दिन लिखना मेरे बस में नहीं होगा, लेकिन आपसे शनिवार को पत्र मिलने की विनती की थी, और आपको आश्चर्य नहीं होगा कि मुझे उम्मीद थी कि आप मेरी इस विनती को मान लेंगे। अभी-अभी मेरे मन में आया है कि शायद यह पत्र आपको नहीं मिला; अगर ऐसा है, तो आपको भी निराशा हुई होगी। लेकिन मुझे लगता है कि इसकी संभावना बहुत कम है, क्योंकि वह बुजुर्ग बहुत सावधान हैं, और मैंने कभी नहीं सुना कि उन्होंने अपनी देखरेख में रखी कोई चीज़ खोई हो। जिस नोट का मैं जिक्र कर रहा हूँ, वह गुरुवार सुबह लिखा गया था, और आपको ब्रैडफोर्ड छोड़ने से पहले मिल जाना चाहिए था। मुझे याद नहीं कि उसमें क्या लिखा था, लेकिन मुझे पता है कि वह जल्दबाजी में लिखा गया था और अचानक समाप्त हो गया था। श्री फेनेल कल श्री मॉर्गन से मिलने की बात कर रहे हैं। मैं इस अवसर को उनके माध्यम से कार्यालय भेजने में नहीं चूकना चाहता, क्योंकि इससे आपको यह एक दिन पहले मिल जाएगा, और यदि आप मुझसे प्रतिदिन संपर्क की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो चौबीस घंटे बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। मुझे वास्तव में चिंता है कि यह घटना, जिसे कई लोग मामूली समझेंगे, मेरे मन को इतना विचलित कर रही है। मुझे डर है कि अगर मुझे आपको लिखकर अपने मन को हल्का करने का यह अवसर न मिलता, तो मैं आज रात चैन से सो नहीं पाता, और अब मुझे खेद है कि आपको यह सोमवार तक नहीं मिल पाएगा। क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि अब मुझे कोई सूचना मिलने वाली है? या मुझे बुधवार को आपसे मिलने तक धैर्य रखना होगा? लेकिन मैं ये क्या बकवास लिख रहा हूँ? यकीनन इसके बाद आपको कोई शक नहीं होगा कि मेरा दिल पूरी तरह से आपका है। दो महीने पहले तो मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आप मेरे दिल और भावनाओं में इतना स्थान पा लेंगी, और उससे भी कम मैंने ये सोचा था कि मैं इतनी हिम्मत करके आपको ये बात कह दूँगा। मुझे लगता है कि मुझे आपको यहाँ दोबारा आने से मना करना पड़ेगा, जब तक आप मुझे ये भरोसा न दिला दें कि आप मेरा प्यार फिर कभी नहीं चुराएँगी। बस बहुत हो गया; मुझे अपनी कलम को संभालना होगा, क्योंकि अगर मैं अपनी लिखी हुई बातों को सुधारूँ तो मेरा मन करेगा कि मैं उसे आग में फेंक दूँ, लेकिन मैंने ठान लिया है कि आपको मेरा पूरा दिल दिखाऊँगा। मैंने अभी तक आपको ये नहीं बताया कि मुझे गुरुवार दोपहर को आपका मज़ाकिया-मज़ाकिया संदेश मिला, जिसके लिए आपका धन्यवाद।

मेरी चचेरी बहन चाहती है कि मैं उसे बताऊँ कि वह अपने जन्मदिन पर, जब वह

इक्कीस वर्ष की हो जाएगी, एक लंबी कविता की उम्मीद करती है। श्री फेनेल भी हमारे साथ आपसे अनुरोध करते हैं कि आप बुधवार को अवश्य उपस्थित रहें, क्योंकि यह तय किया गया है कि यदि मौसम आदि अनुकूल रहा तो हम गुरुवार को एबे जाएँगे।

रविवार की सुबह। — मुझे यकीन नहीं है कि आज कुछ पंक्तियाँ जोड़ना सही है या नहीं, लेकिन यह जानते हुए कि इससे आपको प्रसन्नता होगी, मैं इसे समाप्त करना चाहता हूँ ताकि आप इसे कल पढ़ सकें। मैं बस इतना ही कहूँगा कि यदि मेरी तुच्छ प्रार्थनाओं का कोई प्रभाव हो, तो आज का आपका परिश्रम सुखद और फलदायी सिद्ध होगा, क्योंकि यह आपकी आत्मा और उन लोगों की आत्माओं से संबंधित है जिन्हें आप उपदेश देते हैं। मुझे विश्वास है कि अपने विश्राम के समय में आप मेरे लिए प्रार्थना करना नहीं भूलेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुझे आगे बढ़ने के लिए हर तरह की सहायता की आवश्यकता है; मुझे लगता है कि मेरा हृदय स्वर्ग की अपेक्षा पृथ्वी से अधिक जुड़ा हुआ है। कभी-कभी मुझे लगता है कि आध्यात्मिक विषयों के संबंध में मेरे जैसा सुस्त और निष्क्रिय मन कभी किसी का नहीं रहा।

ब्रैडफोर्ड से आपने जो पर्चे और पुस्तिकाएँ भेजीं, उनके लिए आपको धन्यवाद देना न भूलें। आशा है कि हम उनका सदुपयोग करेंगे। अब मुझे विदा लेनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि आपको यह बताने की शायद ही आवश्यकता है कि मैं आपका सच्चा और अत्यंत स्नेही हूँ।

'मारिया ब्रैनवेल।'

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे, ए.बी., हार्ट्सहेड को

वुड हाउस ग्रोव, 21 अक्टूबर 1812।

अत्यंत प्रसन्नता के साथ मैं लोगों से विदा होकर उस व्यक्ति से बात करने जा रहा हूँ जिसे मैं सबसे अधिक प्रिय मानता हूँ। यदि मेरे प्रिय मित्र मेरे हृदय को देख पाते तो वे आश्वस्त हो जाते कि उनके प्रति मेरा स्नेह उनके स्नेह से किसी भी प्रकार कम नहीं है - वास्तव में, कभी-कभी मुझे लगता है कि सत्य और निष्ठा में यह उनसे कहीं अधिक है। परन्तु इससे यह न समझिए कि मुझे आपकी सत्यनिष्ठा पर कोई संदेह है - नहीं, मैं दृढ़तापूर्वक मानता हूँ कि आप सच्चे और उदार हैं, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप जो कुछ भी व्यक्त करते हैं, वह सब वास्तव में महसूस करते हैं। बदले में, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप मुझे यह विश्वास दिलाएँ कि न केवल

मेरा स्नेह और सम्मान का एक बड़ा हिस्सा आपके लिए है, बल्कि वह सब कुछ है जो मैं महसूस कर सकता हूँ, और अब से मेरी भावनाओं को अपनी भावनाओं के अनुरूप परखें। यदि मेरा प्रेम आपके लिए अत्यंत महान न होता तो मैं इतनी प्रसन्नतापूर्वक अपना घर और अपने सभी मित्रों को कैसे छोड़ सकता था - वह घर जिसे मैं इतना प्रिय मानता था कि मैंने अक्सर सोचा है कि कोई भी चीज़ मुझे लंबे समय तक इसे छोड़ने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती, और वे मित्र जिनके साथ मैंने सुख-दुख के सभी उतार-चढ़ाव साझा किए हैं? फिर भी, इन सब बातों का महत्व कम हो गया है, और यद्यपि मैं इनके बारे में सोचे बिना आह नहीं भर सकता, फिर भी जीवन के सभी सुख-दुखों, चिंताओं और परेशानियों को आपके साथ साझा करने, आपके आराम में योगदान देने और आपकी यात्रा का साथी बनने की आशा मुझे इस दुनिया की किसी भी अन्य संभावना से कहीं अधिक आनंददायक लगती है। मुझे पिछले शनिवार को आपसे खबर मिलने की उम्मीद थी, और मुझे यह सोचकर बहुत दुख हो रहा है कि आपने मुझे दो दिन अधिक प्रतीक्षा करवाई, जो अनावश्यक था, लेकिन अच्छा है कि कभी-कभी मेरे धैर्य की परीक्षा हो, वरना मैं अपना धैर्य पूरी तरह खो सकता था, और यह वास्तव में एक बड़ी क्षति होती! हाल ही में मेरी आशाओं और आशंकाओं में काफी वृद्धि हुई है, जो मेरे जीवन की शांत एकरूपता को भंग कर रही हैं। ये अप्रिय नहीं हैं, क्योंकि इनसे मुझे अपने हृदय की बुराइयों और गलतियों को अधिक जानने का अवसर मिलता है, और उन्हें जानकर मुझे आशा है कि ईश्वर की कृपा से मैं उन्हें सुधार और परिवर्तित कर पाऊंगा। मुझे यह बताते हुए दुख हो रहा है कि मेरी चचेरी बहन को बहुत गंभीर सर्दी हो गई थी, लेकिन आज मुझे लगता है कि वह बेहतर है; उसकी खांसी कम लग रही है, और मुझे उम्मीद है कि हम शनिवार दोपहर को ब्रैडफोर्ड पहुँच जाएँगे, जहाँ हम मंगलवार तक रुकने का इरादा रखते हैं। आप निश्चिंत रहें, हम पिछली यात्रा जैसी दोबारा यात्रा करने के बारे में जल्द ही नहीं सोचेंगे। मुझे सोमवार का बेसब्री से इंतज़ार है, जब मुझे आपसे मिलने की उम्मीद है, क्योंकि अब हम अलग हैं, इसलिए जुदाई कष्टदायी है, और मिलना हमेशा खुशी से भरा होता है।

गुरुवार की सुबह। — मेरा इरादा नाश्ते से पहले इसे पूरा करने का था, लेकिन दुर्भाग्यवश मैं एक घंटा ज़्यादा सो गई। मैं उस बूढ़े आदमी के आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ। मुझे उम्मीद है कि मेरी चचेरी बहन आज बेहतर होगी; उसने मुझसे कहा है कि वह आपकी दयालु पूछताछ और उसके ठीक होने के लिए दिखाई गई

चिंता के लिए आपकी बहुत आभारी है। मैं उसका पूरा ख्याल रखती हूँ, लेकिन कल वह इतनी शरारती थी कि बिना टोपी के आँगन में चली गई! चूंकि आपने लीड्स जाने के बारे में कुछ नहीं कहा, इसलिए मैं समझती हूँ कि आप नहीं गए हैं। हमें शायद आज दोपहर डॉक्टर से खबर मिल जाएगी। बियरली में उनकी सफलता के बारे में सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई! ईश्वर करे कि आप दोनों आत्माओं के उद्धार के अपने प्रयासों में उत्साही और सफल हों, और आपका अपना जीवन पवित्र हो, और दूसरों की भलाई में लगे रहने के दौरान आपके हृदय अत्यंत धन्य हों! मुझे बहुत खुशी होती अगर मैं पिछले सोमवार को अपने प्रयासों से आपकी थकान कम कर पाती और आपका मनोबल बढ़ा पाती। मुझे उम्मीद है कि यह सुख अभी भी मेरे लिए सुरक्षित है। सामान्यतः, मुझे ईश्वर की दिव्य देखभाल और निरंतर दया पर पूर्ण विश्वास है, और जब मैं उनके द्वारा अतीत में किए गए उद्धार और अनुग्रहों पर विचार करता हूँ तो मैं विस्मय और श्रद्धा से भर जाता हूँ। उनके प्रति मेरे प्रेम और कृतज्ञता की छोटी सी झलक अक्सर मुझे नीचा दिखाती है और मुझे यह सोचने पर मजबूर करती है कि मैं उन लोगों से कुछ बेहतर नहीं हूँ जो किसी धर्म को नहीं मानते। मेरे प्रिय मित्र, मेरे लिए प्रार्थना कीजिए, और निश्चिंत रहिए कि मेरी प्रार्थनाओं, विचारों और हृदय का एक बहुत बड़ा हिस्सा आपके साथ है।

एम. ब्रैनवेल.

श्री फेनेल, श्री बेडफोर्ड से अनुरोध करते हैं कि वे उस व्यक्ति से मिलें जिसे ग्रोव के लिए कंबल बनाने का आदेश दिया गया है और उनसे कहें कि वे उन्हें जल्द से जल्द भेज दें। यदि श्री बेडफोर्ड यह प्रयास करेंगे तो श्री फेनेल उनके बहुत आभारी होंगे।

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे, ए.बी., हार्ट्सहेड को

वुड हाउस ग्रोव, 18 नवंबर, 1812।

'मेरी प्यारी नटखट पैट, — क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम इस विशेषण के मुझसे कहीं अधिक हकदार हो, जितना कि तुमने मुझे दिया है? मुझे सचमुच समझ नहीं आ रहा कि तुम्हारे आखिरी पत्र की शुरुआत का क्या मतलब है; हवा, लहरें और चट्टानें तो मुझे लगभग स्तब्ध ही कर गईं। मुझे लगा कि तुम मुझे किसी भयानक सपने के बारे में बता रही हो, या तुम्हें मेरे बेचारे बक्से के भाग्य का पूर्वाभास हो गया था, मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि तुम्हारी जीवंत कल्पना मेरे आखिरी पत्र में दिए गए मामूली से फटकार को इतना बड़ा मुद्दा बना देगी। जब तुम्हें सचमुच में कड़ी फटकार मिलेगी तो

तुम क्या कहोगी? चूंकि तुम हल्की सी डांट मिलने के बाद भी अपने अपराधों के लिए इतनी तत्परता से प्रायश्चित करती हो, इसलिए मुझे उम्मीद है कि तुम शायद ही कभी कड़ी सजा की हकदार बनोगी। मैं तुम्हारे प्रायश्चित को सहर्ष स्वीकार करती हूं और तुम्हें पूर्ण क्षमा भेजती हूं। लेकिन मैं यह स्वीकार नहीं कर सकती कि तुम्हारा स्नेह मेरे स्नेह से कहीं अधिक गहरा है।' लेकिन अब हम इस बारे में और कोई विवाद नहीं करेंगे, बल्कि हर अवसर का लाभ उठाकर इसकी सत्यनिष्ठा और शक्ति को सिद्ध करेंगे, हर तरह से मित्र और सहयात्री की तरह व्यवहार करते हुए, एक ही मार्ग पर चलते हुए, एक ही प्रेरणा से प्रेरित होकर और एक ही लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए। मुझे लगता है कि अगर बीस साल बाद भी हम जीवित रहे, तो मैं आपके लिए उतनी ही, या शायद उससे भी अधिक, लगन और प्रसन्नता से प्रार्थना करूँगा जितनी मैं अभी करता हूँ। मुझे खुशी है कि आप मेरी ईमानदारी से पूरी तरह आश्वस्त हैं, क्योंकि यह जानकर कि आपको मुझमें इस गुण की कमी का संदेह है, मुझे असहनीय पीड़ा और दुख होगा। मुझे इस गुण के होने से कोई लाभ नहीं मिलता, क्योंकि यह मुझमें अंतर्निहित है। फिर भी मुझे लगता है कि जहाँ यह गुण होता है, वहाँ यह शायद ही कभी अकेला मौजूद होता है, और जहाँ इसकी कमी होती है, वहाँ लगभग हर दूसरे गुण के अस्तित्व पर संदेह करने का कारण होता है। जहाँ तक उन अन्य गुणों की बात है जो आप मुझमें देखते हैं, यद्यपि मुझे यह जानकर खुशी होती है कि मैं आपकी नज़र में इतना ऊँचा स्थान रखता हूँ, फिर भी यह सोचकर शर्म आती है कि वे गुण मुझमें कितने कम हैं। लेकिन मेरे भविष्य के जीवन का सबसे सुखद उद्देश्य कृपा और ज्ञान में ऐसी वृद्धि प्राप्त करना होगा जिससे मैं आपकी उच्चतम अपेक्षाओं पर खरा उतर सकूँ और आपका सच्चा साथी बन सकूँ। मेरा दृढ़ विश्वास है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें एक-दूसरे के लिए चुना है; आइए हम निरंतर प्रार्थना और हर संभव प्रयास से उनकी इच्छा को हर तरह से पूरा करने का प्रयास करें! मुझे आपके प्रेम पर कोई संदेह नहीं है, और मैं खुलकर यह घोषणा करता हूँ कि मैं आपको संसार से भी अधिक प्रेम करता हूँ। मैं हमारे सभी अनुग्रहों के महान दाता के असीम प्रेम और कृपा के लिए अत्यंत आभारी हूँ, और "अपनी कृतज्ञता को केवल अपने शब्दों से ही नहीं, बल्कि अपने जीवन और व्यवहार से भी प्रकट करना चाहता हूँ।" मुझे आशा है कि हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा, और हमारी घनिष्ठता हमारे सांसारिक और शाश्वत हितों को बढ़ाने में सहायक होगी।

[‘मुझे लगता है कि आपने मुझसे इतनी ज़्यादा दौलत की उम्मीद नहीं की होगी, लेकिन मुझे आपको यह बताते हुए दुख हो रहा है कि मैं अब भी अपनी सोच से कहीं ज़्यादा गरीब हूँ। मैंने अपनी किताबें, कपड़े आदि मंगवाने का ज़िक्र किया था। शनिवार शाम को, लगभग उसी समय जब आप अपने काल्पनिक जहाज़ डूबने का वर्णन लिख रहे थे, मैं एक वास्तविक जहाज़ डूबने के बारे में पढ़ रहा था और उसके प्रभावों को महसूस कर रहा था। तभी मुझे अपनी बहन का एक पत्र मिला जिसमें उसने मुझे बताया कि जिस जहाज़ में उसने मेरा बक्सा भेजा था, वह डेवोनशायर के तट पर फँस गया, जिसके परिणामस्वरूप बक्सा समुद्र की प्रचंडता से चकनाचूर हो गया, और मेरी थोड़ी-बहुत संपत्ति, कुछ ही वस्तुओं को छोड़कर, गहरे समुद्र में समा गई। अगर यह किसी और भी बुरी घटना की शुरुआत नहीं है, तो मैं इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दूँगा, क्योंकि घर छोड़ने के बाद यह पहली विपत्ति है], और इतनी कृपा पाने के बाद, अगर मैं इसे अपने मन पर हावी होने दूँ तो यह मेरे लिए बहुत ही कृतघ्नता होगी।

श्रीमान मॉर्गन कल यहाँ आए थे, दरअसल वे आज सुबह ही गए हैं। उन्होंने बताया कि उन्होंने आपको अगले रविवार को बियरली आने का निमंत्रण पत्र लिखा है, और यदि आप उनका अनुरोध स्वीकार कर लें तो संभवतः हम आप दोनों को रविवार शाम को यहाँ देखेंगे। चूंकि हम अगले सप्ताह लीड्स जा रहे हैं, इसलिए हमें खुशी होगी यदि आप सोमवार या मंगलवार को हमारे साथ चलें। मैं यह बात मिस फेनेल की इच्छा पर लिख रहा हूँ, जिन्होंने आपसे स्नेहपूर्वक मिलने का अनुरोध किया है। श्रीमान फेनेल की शिकायतों और धमकियों के बावजूद, मुझे पूरा विश्वास है कि जब भी आप ग्रोव में आना चाहें, वे आपका हार्दिक स्वागत करेंगे। और आपको भी निश्चिंत रहना चाहिए कि आपको आपका सदा स्नेही,

मारिया।

डॉक्टर और उनकी पत्नी दोनों यह जानना चाहते हैं कि हम एक-दूसरे को लिखे पत्रों में किस तरह के संबोधन का इस्तेमाल करते हैं। मुझे लगता है कि उन्हें यह बात शायद ही पता चलेगी!

रेव. पैट्रिक ब्रोंटे, ए.बी., हार्ट्सहेड को

वुड हाउस ग्रोव, 5 दिसंबर, 1812।

मेरे प्रिय मित्र, — तो आपने सोचा होगा कि शायद मैं आपसे कुछ सुनने की उम्मीद करूँगी। चूंकि मामला इतना अनिश्चित था, और आप इतनी जल्दी में थे, तो

बेहतर होता कि आप कुछ दिन और पत्र लिखते, क्योंकि ऐसा लगता है कि आपको लगता है कि मुझे आपसे कोई खबर मिले या न मिले, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे याद है कि मैंने एक बार आपसे अनुरोध किया था कि आप अपनी भावनाओं के आधार पर मेरी भावनाओं का अंदाजा लगाएं — क्या मुझे यह समझना चाहिए कि आप इतने उदासीन हैं? मैं ऐसा विचार रखने को बिल्कुल तैयार नहीं हूँ, और मुझे दुख है कि आप मुझ पर इतनी ठंडी, हृदयहीन भावना का संदेह कर रहे हैं। लेकिन मैं इस विषय पर बहुत गंभीर हूँ; मेरा तो बस आपके आखिरी पत्र की शुरुआत में आपको थोड़ा प्रोत्साहित करने का इरादा था, और आपको यह बताने का कि मुझे उसमें एक तरह की शीतलता महसूस हुई जो आपके पहले के किसी भी पत्र में नहीं थी। अगर यह आशंका निराधार थी, तो मुझे माफ कर दीजिए कि मैंने ऐसा सोचा, और इसे मेरे स्नेह की सच्चाई और गर्माहट का सबूत मान लीजिए। सच्चा प्यार हमेशा इस बात को लेकर आशंकित रहता है कि उसे बदले में उतना प्यार नहीं मिल रहा है; तो आपको आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि कभी-कभी मेरे मन में डर पैदा हो जाता है। मेरा स्वाभिमान आपके स्नेह में कमी आने की बात बर्दाश्त नहीं कर सकता, न ही यह सोच सकता है कि मेरा स्नेह आपके स्नेह से अधिक मजबूत है। लेकिन मैं अपने दिल की सारी भावनाएं कलम से प्रकट नहीं कर सकता, और न ही मैं आपको यह बताऊंगा कि तय दिन पर आपसे मिलने की सोचकर मुझे खुशी है या नहीं।

'मिस फेनेल अपना हार्दिक अभिवादन चाहती हैं, और अपने पिता के साथ, कालीन के बारे में आपके द्वारा की गई मेहनत के लिए अत्यंत आभारी हैं, और उन्हें पूरा विश्वास है कि इससे उन्हें पूर्ण संतुष्टि मिलेगी। उन्हें लगता है कि हरे कपड़े की कोई आवश्यकता नहीं होगी।'

'हम अगले सप्ताह यहां केक बनाने का काम शुरू करने का इरादा रखते हैं, लेकिन चूंकि जिन पंद्रह या बीस लोगों का आपने जिक्र किया है वे शायद आपके पड़ोस में ही रहते हैं, इसलिए मुझे लगता है कि श्रीमती बी के लिए वहां बांटने के उद्देश्य से एक छोटा केक बनाना सबसे सुविधाजनक होगा, जिससे हमें इतनी दूर भेजने की परेशानी से मुक्ति मिल जाएगी।'

आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं कि मैं अपने पाठों को दिए जाने के तुरंत बाद सीख लूंगा। मैं एबीसी आदि में पहले से ही काफी निपुण हूं। उस सुंदर छोटे भजन के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं, जिसे मैंने पहले ही कंठस्थ कर लिया है, लेकिन मैं

इसे व्यवस्थित रूप से गाने का वादा नहीं कर सकता, हालांकि मैं थोड़ा और आत्मविश्वास हासिल करने का प्रयास करूंगा।

जब मैंने यह लिखना शुरू किया, तो जेन ने मुझे लॉर्ड लिट्टेलटन की 'एक महिला को सलाह' नामक पुस्तक दी। जब मैंने ये पंक्तियाँ पढ़ीं, "कभी भी आवेश के साथ संयम न बरतो, सावधानी से चुनाव करो, लेकिन फिर भी स्नेहपूर्वक दयालु बनो, इत्यादि," तो मुझे इस बात का बहुत दुख हुआ कि मैंने कुछ मामलों में तुम्हारे प्रति बहुत अधिक संयम बरता है। क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हें मुझसे कोई शिकायत है? यदि है, तो मुझे बता दो। क्योंकि यदि मेरे बस में होता, तो मैं तुम्हें किसी भी हालत में जरा भी दुख या बेचैनी नहीं पहुँचाता। मुझे पूरा विश्वास है कि किसी ने भी तुम्हें मुझसे अधिक शुद्ध, स्थिर, कोमल और प्रखर प्रेम से नहीं प्यार किया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है; यह सत्य है, और मुझे विश्वास है कि तुम इसे जानने योग्य हो। मैं अपने सभी धार्मिक और नैतिक गुणों में सुधार करना चाहता हूँ, ताकि मैं तुम्हारी सहायता कर सकूँ, और यदि संभव हो तो तुम्हारे लिए एक आभूषण बन सकूँ। हे प्रभु, आइए हम ज्ञान और अनुग्रह के लिए बहुत प्रार्थना करें ताकि हम अपने निर्धारित पदों को उचित रूप से निभा सकें, ताकि हम अपनी आत्मा में संतुष्टि का आनंद ले सकें, दूसरों को प्रेरित कर सकें और उस परमेश्वर के नाम की महिमा कर सकें जिसने हमें इतनी अद्भुत रूप से संरक्षित, आशीर्वादित और एक साथ लाया है।

'अगर इसकी शुरुआत में कुछ भी चिड़चिड़ापन जैसा लगे तो उसे माफ कर दीजिएगा; मेरा मन अब इस तरह की हर भावना से पूरी तरह मुक्त है, हालांकि मैं स्वीकार करता हूं कि मैं कभी-कभी इस प्रवृत्ति से बहुत आसानी से प्रभावित हो जाता हूं।'

जब भी सुविधाजनक हो, आपसे पुनः संपर्क करने का सौभाग्य प्राप्त हो। यह लेखन असाधारण रूप से खराब है, लेकिन मैं भी जल्दी में हूँ।

अलविदा, मेरी प्रियतम। मैं तुम्हारा स्नेही और सच्चा भक्त हूँ।

'मारिया।'

श्री ब्रोंटे पांच साल तक हार्ट्सहेड में रहे, जहाँ उनका विवाह हुआ था, और वहीं उनकी दो सबसे बड़ी बेटियाँ, मारिया और एलिजाबेथ, पैदा हुईं। फिर वे ब्रैडफोर्ड के पास थॉर्नटन चले गए, जहाँ 21 अप्रैल 1816 को शार्लोट, 1817 में ब्रैनवेल, 1818 में एमिली और 1819 में ऐनी का जन्म हुआ। 1820 में परिवार हॉवर्थ के पादरी के

घर में रहने लगा, और 1821 में उनकी माँ का निधन हो गया। एक या दो साल बाद, मिस एलिजाबेथ ब्रैनवेल पेनज़ेंस से अपने अनाथ भतीजे और भतीजियों की माँ बनने के लिए आईं। इस बात को मानने का कोई कारण नहीं है कि मिस ब्रैनवेल जेन आयर की श्रीमती रीड जितनी कठोर या आक्रामक व्यक्तित्व वाली थीं। यह मान लेना स्वाभाविक है कि वह कुछ हद तक सख्त और ज्यादा भावुक न होने वाली महिला थीं। श्रीमती गैस्केल की जीवनी में छपे उनके जीवन पर आधारित एकमात्र महत्वपूर्ण पत्र जो मैंने देखा है, वह ब्रसेल्स के एक स्कूल के प्रस्तावित दौरे में उनका सहयोग प्राप्त करने का शार्लोट का प्रयास था। ऐसा प्रतीत होता है कि मिस ब्रैनवेल ने आसानी से पैसे उपलब्ध करा दिए थे, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उनके अपनी भतीजियों के साथ बहुत अच्छे संबंध थे। बचपन में शायद कुछ ज्यादा ही अनुशासन रहा होगा, लेकिन सदी की शुरुआत में ऐसा अनुशासन आम बात थी जिसे आज के समय में बहुत कठोर माना जाएगा। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि बच्चों को भरपूर स्वतंत्रता दी गई थी। उनके शुरुआती वर्षों में उन्होंने जो लेखन कार्य किया, वह इस बात का पर्याप्त प्रमाण है। मिस ब्रैनवेल का निधन 1842 में हुआ; और उनकी वसीयत से, जिसका उल्लेख मैंने कहीं और किया है, यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपनी तीनों भतीजियों के साथ बहुत ही न्यायसंगत व्यवहार किया।

श्री ब्रोंटे ने अपने बच्चों की साहित्यिक सफलताओं का जिस तरह से स्वागत किया, उसका वर्णन शार्लोट ने बड़े ही सुखद ढंग से किया है। उन्हें अपनी बेटियों पर गर्व था और उनकी प्रसिद्धि से वे बेहद प्रसन्न थे। ऐसा लगता है कि उन्हें भी उनका भरपूर स्नेह प्राप्त था। शार्लोट उनसे प्रेम करती थीं और उनका आदर करती थीं। उनके सैकड़ों पत्र मौजूद हैं, जिनमें से कई में किसी न किसी व्यक्ति के बारे में कठोर और वास्तव में अवर्णनीय बातें लिखी हैं; लेकिन इन पत्रों में उनके पिता के बारे में एक भी कठोर शब्द नहीं है। अनुपस्थिति में भी वह उन्हें नियमित रूप से पत्र लिखती थीं। उन्होंने न केवल अपनी बेटी का स्नेह प्राप्त किया, बल्कि अपने बच्चों के बाद उनसे सबसे घनिष्ठ रूप से जुड़े लोगों ने भी उन्हें जीवन भर स्नेह और सम्मान दिया। मार्था ब्राउन, जो उनकी मृत्यु तक उनके साथ रहीं, हमेशा यही कहती थीं कि उनके मालिक के साथ बहुत अन्याय हुआ था और उनसे अधिक दयालु, उदार और हर तरह से अधिक योग्य व्यक्ति कभी नहीं हुआ। नैन्सी गैर्स, एक अन्य नौकरानी, हमेशा श्री ब्रोंटे को 'सबसे दयालु व्यक्ति' और एक अच्छे और स्नेही पिता के रूप में याद करती थीं।

शार्लोट ब्रोंटे के निधन को चालीस वर्ष बीत चुके हैं। और श्री निकोल्स के अपनी पत्नी के पिता के मृत्युशय्या से उठने के बाद से छत्तीस वर्ष बीत चुके हैं; लेकिन इस पूरी अवधि के दौरान उन्होंने उस व्यक्ति की अत्यंत सुखद यादें संजोए रखी हैं, जिनके साथ उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ आया था, जैसा कि हम आगे देखेंगे, और जिनके साथ उनका गंभीर मतभेद था, लेकिन जिनके बारे में उनका हमेशा से यही मानना था कि वे एक पूर्णतः सम्मानित और ईमानदार व्यक्ति थे।

दिसंबर 1860 में हॉवर्थ घूमने आई एक महिला आगंतुक की राय कुछ इतनी सौहार्दपूर्ण नहीं थी। वह लिखती हैं, "मैं बूढ़े श्री ब्रोंटे से मिलने गई थी और उनके साथ लगभग एक घंटा बिताया। वे पूरी तरह बिस्तर पर पड़े हैं, लेकिन गर्मियों के आने पर फिर से बिस्तर से उठने की उम्मीद जता रहे हैं। मुझे डर है कि बेचारे बूढ़े, ऐसा नहीं हो पाएगा जैसा वे सोच रहे हैं! बीमारी ने उन्हें काफी नरम बना दिया है; लेकिन फिर भी वे अपने आडंबरपूर्ण अंदाज में बात करते हैं और आम विषयों पर बातचीत के दौरान नैतिक टिप्पणियों और कुछ हद तक पुरानी बातों को भी मिला देते हैं।" यह कठोर है, लेकिन आखिरकार इसे एक साहित्यकार महिला ने ही लिखा है। कुल मिलाकर, हमारे सामने मौजूद सबूतों के आधार पर, हम यह मान सकते हैं कि श्री ब्रोंटे एक पूर्णतः ईमानदार और सम्मानित व्यक्ति थे, जिन्होंने जीवन के कुछ कठिन संघर्षों का बहादुरी से सामना किया। उनकी बेटियाँ उनके बारे में यही सोचती थीं, और हम भी उनके साथ यही सोच सकते हैं।

श्री ब्रोंटे का निधन 7 जून, 1861 को हुआ था, और हॉवर्थ चर्च में उनके अंतिम संस्कार का वर्णन अगले सप्ताह के ब्रैडफोर्ड रिव्यू में किया गया है: —

"कब्रिस्तान में भारी संख्या में लोग जमा हो गए थे, और दोपहर से कुछ मिनट पहले शव को बगीचे के पूर्वी द्वार से होते हुए कब्रिस्तान में लाया गया। ब्रैडफोर्ड के विकर, रेवरेंड डॉ. बर्नेट ने अंतिम संस्कार की प्रार्थना पढ़ी और चर्च में आगे-आगे चले। निम्नलिखित पादरी ताबूत को कंधा देने वाले थे: स्किप्टन के रेवरेंड डॉ. कार्टमैन; हेब्डेन ब्रिज के रेवरेंड श्री सोडेन; कलिंगवर्थ, ओकवर्थ, मॉर्टन, ऑक्सनहोप और सेंट जॉन्स इनग्रो के पादरी। मुख्य शोक संतप्त लोगों में मृतक के दामाद, रेवरेंड आर्थर बेल निकोल्स; गृहणी मार्था ब्राउन; और उनकी बहन; श्रीमती ब्राउन और श्रीमती वेनराइट शामिल थीं। कई ऐसे सज्जन भी शव के पीछे-पीछे चल रहे थे जिन्हें हम नहीं जानते थे। हॉवर्थ की सभी दुकानें बंद थीं, और चर्च की हर बेंच और गलियारे लोगों से भरे

हुए थे, और विकर द्वारा मृतक के अंतिम संस्कार की प्रार्थना के दौरान कई लोगों की आंखों में आंसू आ गए।” श्री ब्रोंटे के पार्थिव शरीर को उनकी बेटी शार्लोट के बगल में, वेदी की रेलिंग के भीतर रखा गया था। वे हॉवर्थ चर्च के भीतर दफनाए जाने वाले अंतिम व्यक्ति हैं। ताबूत पर यह शिलालेख अंकित था: "पैट्रिक ब्रोंटे, 7 जून, 1861 को 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया।"

उनकी वसीयत, जो वेकफील्ड में प्रमाणित हुई, में उनकी अधिकांश संपत्ति, स्वाभाविक रूप से, उस दामाद को दी गई थी जिसने शार्लोट ब्रोंटे की मृत्यु के बाद के छह वर्षों तक निष्ठापूर्वक उनकी सेवा और देखभाल की थी।

यह जानकारी उच्च न्यायालय के प्रोबेट, तलाक और एडमिरल्टी डिवीजन के प्रधान रजिस्ट्री से ली गई है।

स्वस्थ मन और विवेक से, परमपिता परमेश्वर, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर, मैं, पैट्रिक ब्रोंटे, बी.ए., ब्रैडफोर्ड पैरिश और यॉर्क काउंटी के हॉवर्थ के पादरी, अपनी यह अंतिम वसीयत बनाता/बनाती हूँ: मैं चालीस पाउंड अपने सभी भाइयों और बहनों के बीच समान रूप से विभाजित करने के लिए छोड़ता/छूती हूँ, जिन्हें मैंने अतीत में बड़ी रकम दी थी; और मैं निर्देश देता/देती हूँ कि चालीस पाउंड की यह राशि आयरलैंड के लॉघब्रिकलैंड के पास बैलिनास्केघ के श्री ह्यू ब्रोंटे को वितरण के लिए भेजी जाए; मैं अपनी सेविका, मार्था ब्राउन को तीस पाउंड देता/देती हूँ, जो मेरे और मेरे बच्चों के प्रति उनकी लंबी और निष्ठापूर्ण सेवाओं के प्रति सम्मान का प्रतीक है; अपने प्रिय और सम्मानित दामाद, रेवरेंड आर्थर बेल निकोल्स, बी.ए., को मैं अपनी मृत्यु के समय मेरे पास मौजूद सभी प्रकार की व्यक्तिगत संपत्ति का शेष भाग उनके पूर्ण लाभ के लिए छोड़ता/देती हूँ; और मैं उन्हें अपना एकमात्र निष्पादक नियुक्त करता/करती हूँ। और मैं अपने सभी पूर्व और अन्य वसीयतनामों को रद्द करता हूँ, जिसके गवाह के तौर पर मैंने, पैट्रिक ब्रोंटे ने, इस कागज़ पर लिखे अपने अंतिम वसीयतनामे पर, बीस जून, एक हज़ार आठ सौ पचपन को अपने हस्ताक्षर किए हैं।

पैट्रिक ब्रोंटे। — उक्त पैट्रिक ब्रोंटे द्वारा हमारी उपस्थिति में, जो उस समय उपस्थित थे, अपनी वसीयत के रूप में हस्ताक्षरित और स्वीकार किया गया, और जिन्होंने उनकी उपस्थिति में और एक दूसरे की उपस्थिति में गवाह के रूप में अपने नाम लिखे हैं: जोसेफ रेडमैन, एलिजा ब्राउन।

आयरिश रिश्तेदारों को भुलाया नहीं गया है, और वास्तव में यह वसीयत इस तथ्य

का सबसे प्रत्यक्ष प्रमाण देती है कि अपने जन्मभूमि से साठ वर्षों तक अनुपस्थित रहने के दौरान उन्होंने हमेशा अपने देश को, या कम से कम काउंटी डाउन में रहने वाले अपने रिश्तेदारों को, पर्याप्त रूप से याद रखा था।

अध्याय II: बचपन

थॉर्नटन गांव को शार्लोट ब्रोंटे की जन्मभूमि बनने का गौरव प्राप्त हुए अस्सी वर्ष बीत चुके हैं। आज यहां आने वाले आगंतुक को बेल चैपल, जहां श्री ब्रोंटे ने बपतिस्मा कराया था, जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मिलेगा, और वह कुंड जिसमें उनके बच्चों का बपतिस्मा हुआ था, आकाश की ठंडी हवाओं के सामने खुला पड़ा है। पैट्रिक ब्रोंटे जिस घर में रहते थे, वह अब एक कसाईखाना है, और वास्तव में, अनुमान लगाया जा सकता है कि उसमें बहुत कम ही कुछ पुराना बचा है। लेकिन नए गिरजाघर में अभी भी रजिस्टर खंगाले जा सकते हैं, और थोड़ी सी खोजबीन से ब्रोंटे बच्चों के बपतिस्मा का रिकॉर्ड मिल जाएगा। वहां, आस-पास के साधारण और असभ्य किसानों के नामों के बीच, हमें संबंधित प्रविष्टियां मिलती हैं, जो अपने पड़ोसियों से केवल इस तथ्य में भिन्न हैं कि श्री मॉर्गन या श्री फेनेल अपने रिश्तेदारों की मदद के लिए आए और श्री ब्रोंटे के स्थान पर बपतिस्मा कराया। यह ध्यान देने योग्य है कि ऐनी के बपतिस्मा के समय श्री ब्रोंटे को हॉवर्थ में नियुक्ति मिल चुकी थी।

यह सर्वविदित है कि हार्ट्सहेड में जन्मीं उनकी दो बड़ी बेटियाँ, मारिया और एलिजाबेथ थीं, जिनकी मृत्यु हॉवर्थ में शीघ्र ही होनी तय थी। जेन आयर की हेलेन बर्न्स में मारिया की धुंधली सी स्मृति जीवित है, लेकिन जहाँ तक मुझे पता है, इन

दोनों के बारे में केवल कुछ ही ठोस रिकॉर्ड उपलब्ध हैं, जो श्रीमती ब्रोंटे और उनकी बहनों द्वारा एक पीढ़ी पहले पेनज़ेंस में बनाए गए कुछ सैंपलर के समान हैं।

मारिया ब्रोंटे ने आठ साल की उम्र में 16 मई को इस सैम्पलर को पूरा किया था।

उनमें से एक हमें बताता है, और दूसरा:

एलिजाबेथ ब्रोंटे ने सात साल की उम्र में 27 जुलाई को इस सैम्पलर को पूरा किया था।

मारिया की मृत्यु मई 1825 में बारह वर्ष की आयु में हुई, और एलिजाबेथ की मृत्यु उसी वर्ष जून में ग्यारह वर्ष की आयु में हुई। हालाँकि, हमें उनकी तीन बहनों के बारे में सबसे अधिक चिंता है, हालाँकि सभी छह बच्चे 1820 में अपने माता-पिता के साथ हॉवर्थ चले गए थे।

हमें बताया जाता है कि हॉवर्थ का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया गया है; फिर भी आसानी से उपलब्ध निर्देशिकाओं से यह पता लगाना अनुचित नहीं होगा कि ब्रोंटे के वहां रहने के दौरान यह किस प्रकार का स्थान था। पिगोट की 1828 की यॉर्कशायर निर्देशिका श्री ब्रोंटे के कार्यकाल के पहले वर्ष की जनगणना इस प्रकार देती है: —

हॉवर्थ, एक घनी आबादी वाला औद्योगिक गांव है, जो पोंटेफ्रैक्ट के सम्मान में, मोर्ले वैपेंटेक में और ब्रैडफोर्ड के पल्ली में स्थित है, और कीघली से चार मील दक्षिण में है, जिसमें 1821 की जनगणना के अनुसार 4668 निवासी थे।

कुलीन और पादरी वर्ग: ब्रोंटे, रेव पैट्रिक, हॉवर्थ; हीटन, रॉबर्ट, जेंटलमैन, पोंडेन हॉल; माइल्स, रेव ओडी, हॉवर्थ; सॉन्डर्स, रेव मोसेस, हॉवर्थ।

उसी स्रोत से बीस साल बाद हमें अधिक स्पष्ट जानकारी मिलती है, जो आज भी काफी दिलचस्प है।

हॉवर्थ एक चैपलरी है, जिसमें ब्रैडफोर्ड पैरिश और मॉर्ले वैपेंटेक, वेस्ट राइडिंग में हॉवर्थ, स्टैनबरी और नियर और फार ऑक्सनहोप के छोटे-छोटे गांव शामिल हैं। हॉवर्थ ब्रैडफोर्ड से दस मील, हैलिफ़ैक्स, कोल्ने और स्किप्टन से लगभग उतनी ही दूरी पर, कीघली से साढ़े तीन मील दक्षिण में और हेब्डेन ब्रिज से आठ मील दूर है, जहां लीड्स और मैनचेस्टर रेलवे का एक स्टेशन है। हॉवर्थ एक पहाड़ी की ढलान पर स्थित है और इसमें एक अनियमित रूप से बनी हुई सड़क है। ऑक्सनहोप नामक हिस्से में बस्तियां और भी अधिक बिखरी हुई हैं, और स्टैनबरी उससे भी अधिक दूर है; पूरी चैपलरी एक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई है। ऊन की कताई और वस्त्रों का निर्माण यहां व्यापक रूप

से प्रचलित उद्योग हैं।

सेंट माइकल को समर्पित चर्च या यूं कहें कि चैपल (ब्रैडफोर्ड के अधीन), का पुनर्निर्माण 1757 में हुआ था: यह एक स्थायी क्यूरेसी है, जिसका संचालन ब्रैडफोर्ड के विकर और कुछ ट्रस्टी करते हैं; वर्तमान क्यूरेट रेव पैट्रिक ब्रोंटे हैं। अन्य पूजा स्थलों में बैपटिस्टों के लिए दो चैपल, प्रिमिटिव और वेस्लेयन मेथोडिस्टों के लिए एक-एक चैपल और ऑक्सनहोप में वेस्लेयन मेथोडिस्ट संप्रदाय के लिए एक और चैपल शामिल हैं। दो उत्कृष्ट निःशुल्क विद्यालय हैं - एक स्टैनबरी में, दूसरा, जिसे फ्री ग्रामर स्कूल कहा जाता है, ऑक्सनहोप के पास स्थित है; इसके अलावा रविवार की शिक्षा के लिए कई सुंदर भवन निर्मित हैं। तीन वार्षिक मेले लगते हैं: ये ईस्टर सोमवार, सेंट पीटर दिवस (पुराने तरीके से) के बाद दूसरे सोमवार और ओल्ड माइकलमास दिवस के बाद पहले सोमवार को आयोजित होते हैं। 1831 के आंकड़ों के अनुसार, हॉवर्थ चैपलरी और उसके आश्रित गांवों में 5835 निवासी थे। और जून 1841 में हुई जनगणना के अनुसार, जनसंख्या 6301 थी।

हॉवर्थ को आज भी और अधिक वर्णन की आवश्यकता नहीं है, लेकिन जिस घर में श्री ब्रोंटे 1820 से लेकर 1861 में अपनी मृत्यु तक रहे, उसका अधिक विस्तृत वर्णन नहीं किया गया है, शायद इसलिए कि श्री ब्रोंटे के उत्तराधिकारी हॉवर्थ आने वाले आकस्मिक आगंतुकों का अपने घर में स्वागत करने के लिए बहुत इच्छुक नहीं रहे हैं।

श्री ब्रोंटे के निधन के बाद से कई बदलाव हुए हैं, लेकिन घर ने अपनी मूल आकर्षक विशेषताओं को अभी भी बरकरार रखा है। यह सच है कि ब्रोंटे परिवार के समय में, सामने का दृश्य उतना ही उजाड़ था जितना आज आकर्षक है। तब कब्रिस्तान की दीवारों तक फैली बंजर ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा था, जिसमें इक्का-दुक्का किशमिश की झाड़ियाँ ही शोभा देती थीं। अब हमें यहाँ बहुतायत में पेड़ और एक सुव्यवस्थित लॉन दिखाई देता है। मिस एलेन नुसे को अच्छी तरह याद है कि एक सुहावनी गर्मी की दोपहर में एमिली और ऐनी इस बगीचे के छोटे से हिस्से में स्टूल पर बैठकर उन छोटी-छोटी झाड़ियों से किशमिश तोड़ रही थीं। उस समय की कोई आशंका नहीं थी, जो अब बहुत दूर नहीं है, जब कब्रिस्तान को बगीचे से अलग करने वाला वह खुरदुरा दरवाज़ा, जो उनके बचपन में उनकी माँ के लिए खोला जाता था, उनके शवों को ले जाने के लिए बार-बार खोला जाएगा। यह द्वार अब ईंटों से बंद कर दिया गया है। ब्रोंटे बहनों के समय में यह कमरा मृतकों के अंतिम संस्कार के लिए

आरक्षित था—एक भयावह व्यवस्था, जो आश्चर्यजनक रूप से बहनों की किसी भी कहानी में नहीं मिलती। हम घर में प्रवेश करते हैं, और दाहिनी ओर का दरवाजा श्री ब्रोंटे के अध्ययन कक्ष में खुलता है, जिसे हमेशा बैठक कक्ष कहा जाता था; बाईं ओर का दरवाजा भोजन कक्ष में खुलता है, जहाँ बच्चों ने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा बिताया। वास्तव में, बचपन से लेकर युवावस्था तक, तीनों लड़कियाँ नियमित रूप से अपने पिता के साथ उनके अध्ययन कक्ष में नाश्ता करती थीं। भोजन कक्ष—एक चौकोर और साधारण कमरा, जो गरीब मध्यम वर्ग के घरों में आम तौर पर पाया जाता है—में वे दोपहर का भोजन, चाय और रात का खाना खाती थीं। श्री ब्रोंटे चाय पर उनके साथ शामिल होते थे, हालाँकि वे हमेशा अपने अध्ययन कक्ष में अकेले भोजन करते थे। बच्चों की भोजन की मेज का वर्णन मुझे घर आए एक आगंतुक ने किया था। एक छोर पर मिस ब्रैनवेल बैठी थीं, दूसरे छोर पर शार्लोट, और उनके दोनों ओर एमिली और ऐनी। ब्रैनवेल उस समय अनुपस्थित थीं। रहने का स्थान अत्यंत साधारण था। एक ही टुकड़ा, जिसके बाद हमेशा किसी न किसी तरह की मिल्क-पुडिंग होती थी। ब्रोंटे परिवार में पेस्ट्री का कोई नामोनिशान नहीं था। मिल्क-पुडिंग, या दूध और चावल से बना भोजन, एमिली और ऐनी ब्रोंटे का मुख्य आहार रहा होगा, और इसके साथ वे नाश्ते में स्कॉच दलिया भी खाती थीं, जिसे वे अपने कुत्तों के साथ बाँटती थीं। शायद उस कमरे में देखे गए सभी दिवास्वप्नों, वहाँ किए गए लेखन के विशाल भंडार, और भविष्य के बारे में की गई बातचीत और अटकलों के बारे में सोचना अधिक रोचक है। मिस नुसे ने गोधूलि बेला का एक सुखद चित्रण किया है जब शार्लोट और वह एक-दूसरे का हाथ थामे मेज के चारों ओर चक्कर लगा रही थीं, और एमिली और ऐनी भी उसी तरह उनका अनुसरण कर रही थीं। उस समय प्रसन्नता और आशा की कोई कमी नहीं थी। श्री ब्रोंटे के स्टूडियो के पीछे रसोईघर था; और वहाँ हम आसानी से ब्रोंटे बच्चों को टैबी या मार्था, या उस समय के किसी भी नौकर को कहानियाँ सुनाते हुए और, जैसा कि उन सभी ने किया, पूरी तरह से घरेलू बनना सीखते हुए देख सकते हैं -एमिली सबसे अधिक। भोजन कक्ष के पीछे एक छोटा सा कमरा था, जिसे 1854 में शार्लोट की शादी के बाद खाली कराकर श्री निकोल्स के लिए एक छोटा सा अध्ययन कक्ष बना दिया गया था। मजबूत रेलिंग वाली सीढ़ियाँ आज भी वैसी ही हैं जैसी पचास साल पहले थीं; और इसके नीचे वह कोना आज भी दिखाई देता है जिसे परंपरा के अनुसार एमिली और उसके कुत्ते कीपर के बीच झगड़े का स्थान माना जाता है।

सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते समय दाईं ओर, पीछे की तरफ, ब्रैनवेल को एक स्टूडियो के रूप में दिया गया एक छोटा कमरा था। इस सीढ़ी के दूसरी ओर, पीछे की तरफ, नौकरों का कमरा था। घर के सामने, भोजन कक्ष के ठीक ऊपर, मिस ब्रैनवेल का कमरा था, जो शार्लोट ब्रोंटे की शादी होने तक अतिरिक्त शयनकक्ष के रूप में इस्तेमाल होता रहा। उसी कमरे में उनकी मृत्यु हुई। बाईं ओर, श्री ब्रोंटे के अध्ययन कक्ष के ऊपर, श्री ब्रोंटे का शयनकक्ष था। यह वह कमरा था जिसे उन्होंने कई वर्षों तक ब्रैनवेल के साथ साझा किया था, और इसी कमरे में ब्रैनवेल और उनके पिता की बीस साल के अंतराल पर मृत्यु हुई थी। सीढ़ियों पर, आधे रास्ते में, एक दादाजी की घड़ी थी, जिसे श्री ब्रोंटे हर रात सोने से पहले चाबी भरते थे। वे हमेशा रात नौ बजे सो जाते थे, और मिस नुसी को उनकी बुलंद आवाज़ अच्छी तरह याद है जब वे अपने अध्ययन कक्ष से निकलकर भोजन कक्ष के दरवाजे से गुजरते हुए कहते थे - 'बच्चों, देर तक मत जागना' - और बच्चे अक्सर देर तक जागते ही रहते थे। ऊपर की मंजिल पर इन दो सामने के कमरों के बीच, और गलियारे के ठीक पार, सीढ़ियों की ओर खुलने वाले दरवाजे के साथ एक छोटा कमरा था; लेकिन यह बच्चों का नर्सरी रूम था, जहाँ कई वर्षों तक बच्चे सोते थे, जहाँ उनकी अधिकांश छोटी किताबें संकलित की गई थीं, और जहाँ, संभवतः, 'द प्रोफेसर' और 'जेन आयर' की रचना हुई थी।

ब्रोंटे बच्चों के इन शुरुआती वर्षों के कार्यों के बारे में बहुत कुछ लिखा जा सकता है। श्रीमती गैस्केल ने लगभग अठारह पुस्तिकाओं की सूची दी है, लेकिन शार्लोट की कलम से लिखी गई कम से कम अठारह और पुस्तिकाएँ मौजूद हैं। ब्रैनवेल भी उतने ही विपुल लेखक थे; और उनके द्वारा रचित बाल रचनाओं का भी विशाल भंडार मौजूद है। यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि एमिली और ऐनी भी समान रूप से मेहनती थीं; लेकिन उनकी बाल रचनाओं में से शायद ही कोई बची हो, यहाँ तक कि बाद के वर्षों के अप्रकाशित अंश भी नहीं, जिनका उल्लेख थोड़ी देर बाद किया जाएगा। क्या एमिली और ऐनी ने अपनी मृत्यु की पूर्व संध्या पर जानबूझकर अपने सभी खजाने नष्ट कर दिए, या शार्लोट ने अपने शोक के दिनों में उन्हें नष्ट कर दिया, यह कभी ज्ञात नहीं हो सकेगा। इस बीच, शार्लोट और ब्रैनवेल के कार्यों पर ध्यान देना दिलचस्प है। शार्लोट की छोटी कहानियाँ उनके तेरहवें वर्ष में शुरू होती हैं और तेईस वर्ष की आयु तक जारी रहती हैं। तेरह से अठारह वर्ष की आयु तक, ऐसा लगता है कि उनका एक ही पसंदीदा नायक था। वह ड्यूक ऑफ वेलिंगटन थे; और उनकी श्रद्धा ड्यूक के बच्चों

तक भी फैली हुई थी, जो वास्तव में अपने पिता से भी कहीं अधिक उनके बचपन के स्नेह को आत्मसात करते प्रतीत होते थे। चाहे ये कहानियाँ परियों की कहानियाँ हों या आधुनिक जीवन के नाटक, सभी में मार्क्विस ऑफ डौरो का परिचय मिलता है, जो बाद में वेलिंगटन के दूसरे ड्यूक बने, और लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली का, जिनके पुत्र अब वेलिंगटन के तीसरे ड्यूक हैं। इनमें से कुछ अंशों की लंबाई वास्तव में अविश्वसनीय है। उनकी छोटी लिखावट में वे कुछ ही पन्नों में समा जाते हैं; लेकिन जब उत्साही प्रशंसकों द्वारा इनकी नकल की जाती है, तो पता चलता है कि उनमें से एक से अधिक अंश बीस हजार शब्दों के हैं।

कैप्टन ट्री द्वारा 1833 में लिखी गई कहानी 'द फाउंडलिंग' पैंतीस हजार शब्दों की है, हालांकि पांडुलिपि में केवल अठारह पृष्ठ हैं। उसी वर्ष लिखी गई 'द ग्रीन ड्वार्फ' इससे भी लंबी है, और वास्तव में 1833 में रो हेड से लौटने के बाद, शार्लोट ने निरंतर लेखन में अपना समय व्यतीत किया होगा। 'द एडवेंचर्स ऑफ अर्नेस्ट एलेम्बर्ट' इसी समय की एक पुस्तिका है, और लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली द्वारा लिखित 'आर्थरियाना, ऑर ऑड्स एंड एंड्स: बीइंग ए मिसलेनियस कलेक्शन ऑफ पीसेज़ इन प्रोज एंड वर्स' एक और रचना है।

इन छोटी-छोटी किताबों में लौह ड्यूक के बेटे को इस तरह से बात करने के लिए मजबूर किया गया है, जो एक आधुनिक साक्षात्कारकर्ता के दिल को खुश कर देता:

हाल ही में एक दोपहर, श्री रंडल ने मुझसे कहा, ‘लॉर्ड चार्ल्स, आज शाम मुझे अपने एक पुराने कॉलेज के दोस्त के साथ चाय पीने का कार्यक्रम है, इसलिए मेरी अनुपस्थिति में आप एनीड की साठ पंक्तियाँ तैयार कर लें। अगर मेरे लौटने तक यह तैयार नहीं हुई, तो आप अंजाम जानते ही हैं।’ ‘ठीक है, महोदय,’ मैंने बड़ी हड़बड़ी में किताबें निकालते हुए कहा और ऐसा दिखावा किया जैसे मैं एनीड की साठ पंक्तियों के बजाय पूरी किताब याद करने का इरादा रखता हूँ। हालाँकि, यह मेहनत का दिखावा बूढ़े सज्जन के पीठ फेरने तक ही चला। जैसे ही वे कमरे से निकले, मैंने पुरानी किताबों को एक तरफ फेंक दिया, अपनी टोपी उठाई और कमरे, हॉल और गैलरी से तेज़ी से गुज़रते हुए वाटरलू पैलेस के दरवाज़े के बाहर पहुँच गया।

एक और कहानी, 'द सीक्रेट', जिसका पहला पृष्ठ श्रीमती गैस्केल ने प्रतिरूपित किया था, भी 1833 में लिखी गई थी, और वास्तव में, अपने सत्रहवें वर्ष में, शार्लोट ब्रोंटे ने अपने जीवन के किसी भी वर्ष की तुलना में उतना ही लिखा होगा। 1832-3

में रो हेड में रहते हुए, ऐसा लगता है कि उन्होंने अपनी पढ़ाई, और विशेष रूप से अपनी चित्रकला पर काम किया होगा; लेकिन कोवान ब्रिज और रो हेड के बीच के अंतराल में उन्होंने बहुत कुछ लिखा। मेरे पास मौजूद सबसे पुरानी पांडुलिपियों पर 1829 की तारीख अंकित है - यानी शार्लोट के तेरहवें वर्ष की। ये उनकी 'टेल्स ऑफ द आइलैंडर्स' हैं, जो भूरे कागज के कवर में चार छोटे खंडों में फैली हुई हैं, जिन पर साफ-सुथरे ढंग से 'पहला खंड', 'दूसरा खंड' आदि अंकित हैं। इन 'कहानियों' में ड्यूक का विशेष महत्व है। 'एक शाम ड्यूक ऑफ वेलिंगटन डाउनिंग स्ट्रीट में अपने कमरे में लिख रहे थे।' वह एक साधारण सी आरामकुर्सी पर आराम से बैठा था, एक साधारण सी तंबाकू की पाइप पी रहा था, क्योंकि वह सिगार जैसी आधुनिक दिखावटी चीजों को तुच्छ समझता था... और इसी तरह बचकानी कल्पनाओं की भरमार थी। 'द सर्च आफ्टर हैप्पीनेस' और 'कैरेक्टर्स ऑफ ग्रेट मेन ऑफ द प्रेजेंट टाइम' भी 1829 में लिखी गई थीं। शायद एकमात्र महत्वपूर्ण बाल रचना वही है जिसमें वह वेलिंगटन के उत्साह से बच निकलती है। इसमें यह भी दिलचस्प है कि शार्लोट ने अपने बचपन में अपने पिता की जन्मभूमि के बारे में कुछ सुना था। इसे कहा जाता है—

आयरलैंड में एक रोमांचक यात्रा

आयरलैंड के दक्षिण में अपनी यात्रा के दौरान मेरे साथ एक अनोखा अनुभव हुआ। अगस्त के महीने की एक शाम, लंबी पैदल यात्रा के बाद, मैं कैहिल गाँव के ऊपर स्थित पहाड़ पर चढ़ रहा था, तभी अचानक मुझे एक सुंदर पुराना किला दिखाई दिया। यह एक चट्टान पर बना था, जिसके पीछे एक घना जंगल था और आगे एक नदी थी। नदी पर एक पुल था, जो किले तक जाने का रास्ता था। पुल पर पहुँचकर मैं कुछ देर रुका और चारों ओर के नज़ारे का आनंद लिया: नीचे दूर तक फैला शांत जल था, जिसमें हल्की चाँदनी की परछाईं छोटी से छोटी लहर से भी विचलित नहीं हो रही थी; घाटी में झोपड़ियों का एक समूह था जिसे काहिन के नाम से जाना जाता है, और इनके आगे किलला पर्वतमाला थी। चारों ओर, गोधूलि का धूसर आवरण धीरे-धीरे और लगभग अदृश्य रूप से छा रहा था। दूर के गाँव की हल्की गुनगुनाहट और मेरे पीछे जंगल में बुलबुल के मधुर गीत के अलावा कोई और आवाज़ उस शांत वातावरण को भंग नहीं कर रही थी। जब मैं इस खूबसूरत नज़ारे का आनंद ले रहा था, तभी एक सज्जन, जिन्हें मैंने पहले नहीं देखा था, ने मुझसे पूछा, “शुभ संध्या महोदय; क्या आप यहाँ अजनबी हैं?” मैंने हाँ में जवाब दिया। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं रात

कहाँ बिताने वाला हूँ; मैंने बताया कि मैं गाँव में ही कहीं सोने का इरादा रखता हूँ। “मुझे खेद है कि आपको वहाँ बहुत ही खराब व्यवस्था मिलेगी,” सज्जन ने कहा; “लेकिन अगर आप मेरे साथ महल में ठहरना चाहें, तो आपका स्वागत है।” मैंने उनके इस उदार प्रस्ताव के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और इसे स्वीकार कर लिया।

जब हम महल पहुँचे तो मुझे एक बड़े से बैठक कक्ष में ले जाया गया, जहाँ एक बुज़ुर्ग महिला आग के पास एक कुर्सी पर बैठी बुनाई कर रही थी। कालीन पर एक बहुत ही सुंदर कछुए के खोल जैसी बिल्ली लेटी हुई थी। जैसे ही मैंने उनका ज़िक्र किया, बुज़ुर्ग महिला उठ खड़ी हुईं; और जब श्री ओ'कैलाघन (बाद में मुझे पता चला कि उनका यही नाम था) ने उन्हें बताया कि मैं कौन हूँ, तो उन्होंने बड़े ही सौहार्दपूर्ण लहजे में कहा कि मेरा स्वागत है और मुझे बैठने के लिए कहा। बातचीत के दौरान मुझे पता चला कि वह श्री ओ'कैलाघन की माँ थीं और उनके पिता का निधन लगभग एक साल पहले हो गया था। हम लगभग एक घंटे बैठे रहे, तभी रात के खाने की घोषणा हुई और खाने के बाद श्री ओ'कैलाघन ने मुझसे पूछा कि क्या मैं रात के लिए आराम करना चाहूँगी। मैंने हाँ में जवाब दिया और एक छोटे लड़के को मुझे मेरे कमरे तक ले जाने के लिए कहा गया। यह महल के सबसे ऊपरी हिस्से में एक छोटा, साफ़-सुथरा और आरामदायक, पुराने ज़माने का कमरा था। जैसे ही हम अंदर आए, वह लड़का, जो देखने में चतुर और हंसमुख लग रहा था, कंधे उचकाते हुए बोला, “अगर मुझे सोने जाना होता, तो मैं यहाँ नहीं होता।” मैंने पूछा, “क्यों?” लड़के ने जवाब दिया, “क्योंकि कहते हैं कि बूढ़े गुरुजी का भूत उस कुर्सी पर बैठा देखा गया है।” मैंने पूछा, “क्या तुमने उन्हें देखा है?” “नहीं; लेकिन मैंने उन्हें उस बेसिन में बार-बार हाथ धोते सुना है।” मैंने पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है, मेरे प्यारे?” मैंने कहा, “डेनिस मुलरेडी।” मैंने कहा, “शुभ रात्रि।” डेनिस ने कमरे से निकलते हुए कहा, “शुभ रात्रि, गुरुजी; और ईश्वर आपको सभी परियों और भूतों से बचाए।”

जैसे ही मैं लेटा, मैं उस लड़के की बातों के बारे में सोचने लगा, और मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे एक अजीब तरह का डर महसूस हुआ, और एक-दो बार तो मुझे ऐसा भी लगा कि मेरे चारों ओर छाए अंधेरे में मुझे कुछ सफेद दिखाई दे रहा है। आखिरकार, तर्क की सहायता से, मैं इन विचारों पर काबू पाने में सफल रहा, जिन्हें कुछ लोग व्यर्थ की कल्पनाएँ कहेंगे, और सो गया। मैं लगभग एक घंटे सोया था कि एक अजीब सी आवाज़ ने मुझे जगा दिया, और मैंने अपने पर्दों के पीछे से एक

कंकाल को सफेद चादर में लिपटा हुआ देखा। मैं भय से कांप उठा और चीखने की कोशिश की, लेकिन मेरी जीभ सुन्न हो गई थी और मेरा पूरा शरीर डर से कांप रहा था। एक गहरी, खोखली आवाज़ में उसने मुझसे कहा, 'उठो, ताकि मैं तुम्हें इस दुनिया के अजूबे दिखा सकूँ,' और पल भर में मैंने खुद को बादलों और अंधेरे से घिरा पाया। लेकिन जल्द ही विशाल जलधाराओं की गर्जना मेरे कानों में पड़ी, और मैंने ऊँचे झरनों से उठती हुई पानी की फुहारों के कुछ बादल देखे जो भयानक भव्यता के साथ विशाल चट्टानों से नीचे लुढ़क रहे थे, और फिर नीचे खाड़ी में झाग और गर्जना कर रहे थे मानो वे किसी दैत्य के कड़ाहे में अपना अशांत निवास बना चुके हों। लेकिन जल्द ही दृश्य बदल गया, और मैंने खुद को क्राकोन की खानों में पाया। वहाँ ऊँचे खंभे और भव्य मेहराब थे, जिनकी जगमगाहट किसी भी परी महल से कम नहीं थी। वहाँ बहुत कम दीपक थे, केवल कुछ गरीब खनिकों के दीपक थे, जिनके खुरदुरे चेहरे उनके चारों ओर फैली चकाचौंध भरी आकृतियों और भव्यता के विपरीत एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। लेकिन इस सारी भव्यता के बीच मुझे भय और आतंक का एक अवर्णनीय अहसास हुआ, क्योंकि समुद्र हमारे ऊपर उग्र रूप धारण किए हुए था, और गरजती हवाओं और टकराती लहरों के भयानक और कोलाहलपूर्ण शोर से ऐसा लग रहा था मानो तूफान भयंकर हो। अब समुद्र के दबाव से काई से ढके खंभे चरमरा रहे थे, और चमकते मेहराब डूबने ही वाले थे। जब मैंने बहते पानी की आवाज़ सुनी और एक विशाल बाढ़ को अपनी ओर आते देखा, तो मैं भय से चीख उठा। दृश्य गायब हो गया, और मैंने खुद को बंजर चट्टानों और ऊँचे पहाड़ों से भरे एक विशाल रेगिस्तान में पाया। जैसे ही मैं एक चट्टान के पास पहुँचा, जिसमें एक बड़ी गुफा थी, मेरा पैर फिसल गया और मैं गिर पड़ा। तभी मैंने एक गहरी दहाड़ सुनी, और उसकी धधकती आँखों के अलौकिक प्रकाश में एक राजसी शेर को अपनी शाही नींद से जागते देखा। उसकी भयानक आँख मुझ पर टिकी थी, और रेगिस्तान गूँज उठा और चट्टानें उसकी भयंकर आनंद की दहाड़ से गूंज उठीं, जो उसने मेरी ओर झपट्टा मारते हुए लगाई थी। "खैर, महाराज, रात भर तेज हवा चली, हालांकि अब मौसम अच्छा है," डेनिस ने खिड़की का पर्दा खींचते हुए कहा और सुबह की तेज धूप की किरणें ओ'कैलाघन कैसल के शीर्ष पर स्थित छोटे से पुराने जमाने के कमरे में आने दीं।

सी. ब्रोंटे.

28 अप्रैल, 1829.

1829 में द यंग मेन्स मैगज़ीन के छह अंक लिखे गए; 1830 में मार्क्विस ऑफ डौरो की एक बेहद बचकानी कविता, द इवनिंग वॉक; और उसी वर्ष एक और अधिक साहित्यिक महत्व की कविता, द वायलेट। 1831 में हमें एक अधूरी कविता, द ट्रम्पेट हैथ साउंडेड मिलती है; और 1832 में द ब्राइडल नामक एक बहुत लंबी कविता। इनमें से कुछ, जैसे कि रिचर्ड कोउर डे लायन और ब्लोंडेल नामक कविता, धोबिनों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली एक-दो पैसे की नोटबुक में लिखी गई हैं। कभी-कभी उनके पिता ने छह पैसे की एक नोटबुक खरीदी है और उसके कवर के अंदर लिखा है।

इस पुस्तक में जो कुछ भी लिखा जाए, वह साफ, स्पष्ट और सुपाठ्य लिखावट में होना चाहिए। — पी. बी.

इस विषय पर चर्चा करते हुए, मैं करर बेल की कविताओं के प्रकाशन की तिथि तक के रिकॉर्ड का उल्लेख करना उचित समझूंगा। 'अ लीफ फ्रॉम एन अनओपन्ड वॉल्यूम' 1834 में लिखी गई थी, साथ ही 'द डेथ ऑफ डेरियस' और 'कॉर्नर डिशेज़' भी। 'सॉल: अ पोयम' 1835 में लिखी गई थी, और कई अन्य कविताएँ अभी तक अप्रकाशित हैं। 'लॉर्ड डौरो' नामक एक कहानी है, जो 1837 की है, और 1838 की कविताओं की एक पांडुलिपि पुस्तक भी है, लेकिन गंभीर साहित्यिक गतिविधियों से पहले की पांडुलिपियाँ लगभग यहीं समाप्त हो जाती हैं। निजी गवर्नेस के रूप में अपने वर्षों (1839-1841) और ब्रुसेल्स के अनुभवों (1842-1844) के दौरान, ऐसा लगता है कि शार्लट ने अपने सभी साहित्यिक प्रयासों को एक तरफ रख दिया था।

शार्लेट ब्रोंटे के बचपन का केवल एक ही पत्र मौजूद है। श्री ब्रोंटे ने इसे 'शार्लेट का पहला पत्र' शीर्षक से प्रकाशित पत्र के कवर पर अंकित किया है, संभवतः श्रीमती गैस्केल के मार्गदर्शन के लिए, जिन्होंने शायद इसे कम महत्वपूर्ण समझा होगा। आज के समय में शायद ही कोई ऐसा सोचेगा। तेरह वर्ष की शार्लेट, फेनेल परिवार के साथ रह रही हैं, जो उनकी मां के उन शुरुआती प्रेम पत्रों के मित्र थे।

रेव. पी. ब्रोंटे को

'पार्सनेज हाउस, क्रॉसटोन, 23 सितंबर, 1829.

मेरे प्यारे पापा, — चाची के अनुरोध पर मैं आपको यह सूचित करने के लिए ये पंक्तियाँ लिख रही हूँ कि "यदि सब ठीक रहा" तो हम शुक्रवार को दोपहर के भोजन तक घर पहुँच जाएँगे, और हमें आशा है कि आप स्वस्थ होंगे। खराब मौसम के कारण हम ज़्यादा बाहर नहीं निकल पाए, लेकिन फिर भी हमने पढ़ने, काम करने और अपने

पाठों को सीखने में बहुत आनंद लिया, जो अंकल फेनेल ने हमें प्रतिदिन पढ़ाने की कृपा की है। ब्रैनवेल ने प्रकृति से दो रेखाचित्र बनाए हैं, और एमिली, ऐनी और मैंने भी श्री फेनेल द्वारा वेस्टमोर्लैंड से लाए गए झीलों के कुछ दृश्यों से एक-एक रेखाचित्र बनाया है। वे इन सभी को अपने पास रखने का इरादा रखते हैं। श्री फेनेल को खेद है कि वे शुक्रवार को हॉवर्थ में हमारे साथ नहीं आ सकते, क्योंकि वहाँ जगह की कमी है, लेकिन उन्हें आशा है कि वे जल्द ही आपसे मिलेंगे। हम सभी आपकी स्नेही पुत्री के साथ अपना हार्दिक प्रेम भेज रहे हैं।

'शार्लोट ब्रोंटे।'

निम्नलिखित सूची में मेरे ज्ञान में मौजूद या जिनके बारे में मुझे कोई रिकॉर्ड मिल सका है, वे सभी प्रारंभिक ब्रोंटे पांडुलिपियां शामिल हैं:

शार्लोट ब्रोंटे द्वारा रचित अप्रकाशित साहित्य।

युवा पुरुषों की पत्रिकाएँ। छह अंकों में।

[इन छह संख्याओं में से केवल चार ही संरक्षित प्रतीत होती हैं।] 1829

सुख की खोज: एक कहानी। शार्लोट ब्रोंटे द्वारा रचित, 1829

दो प्रेम कथाएँ; अर्थात् बारह साहसिक यात्राएँ और आयरलैंड में एक साहसिक यात्रा (1829)

वर्तमान युग के महान पुरुषों के चरित्र, 17 दिसंबर 1829

द्वीपवासियों की कहानियाँ। शार्लोट ब्रोंटे द्वारा: —

खंड 1, दिनांक 31 जून, 1829

खंड 2, दिनांक 2 दिसंबर, 1829

खंड 3, दिनांक 8 मई, 1830

खंड 4, दिनांक 30 जुलाई, 1830

[इन खंडों के साथ एक पृष्ठ का दस्तावेज़ भी है जिसमें 'द्वीपवासियों की उत्पत्ति' का विस्तृत विवरण दिया गया है। दिनांक 12 मार्च, 1829।]

शाम की सैर: एक कविता। मार्क्विस डौरो द्वारा रचित, 1830

वोल्टेयर की हेनरीएड की पहली पुस्तक का अंग्रेजी पद्य में अनुवाद। शार्लोट ब्रोंटे द्वारा, 1830

एल्बियन और मरीना: एक कहानी। लॉर्ड वेलेस्ली द्वारा, 1830

अर्नेस्ट एलेम्बर्ट के कारनामे: एक परी कथा। शार्लोट ब्रोंटे द्वारा रचित, 1830

वायलेट: एक कविता। कई छोटी रचनाओं सहित। मार्क्वेस ऑफ डौरो द्वारा रचित। सार्जेंट ट्री द्वारा प्रकाशित। ग्लासटाउन, 1830।

दुल्हन। सी. ब्रोंटे द्वारा रचित, 1832

आर्थुरियाना; या, विविध रचनाएँ: गद्य और पद्य में लिखी गई रचनाओं का एक संग्रह। लॉर्ड चार्ल्स ए. एफ. वेलेस्ली द्वारा 1833 में प्रकाशित।

आर्थर के बारे में कुछ। चार्ल्स अल्बर्ट फ्लोरियन वेलेस्ली द्वारा 1833 में लिखित।

द विज़न। शार्लोट ब्रोंटे द्वारा, 1833

द सीक्रेट और लिली हार्ट: दो कहानियां। लॉर्ड चार्ल्स वेलेस्ली द्वारा।

[इस पुस्तक का पहला पृष्ठ श्रीमती गैस्केल की शार्लोट ब्रोंटे की जीवनी के खंड 1 में हूबहू प्रति के रूप में दिया गया है।] 1833

वेरदोपोलिस की यात्राएँ। माननीय चार्ल्स अल्बर्ट फ्लोरियन वेलेस्ली द्वारा। दो खंड। 1833

द ग्रीन ड्वार्फ: ए टेल ऑफ द परफेक्ट टेंस। लॉर्ड चार्ल्स अल्बर्ट फ्लोरियन वेलेस्ली द्वारा लिखित। शार्लोट ब्रोंटे। 1833

अनाथ बच्चा: हमारे समय की एक कहानी। कैप्टन ट्री द्वारा, 1833

रिचर्ड कोउर डे लायन और ब्लोंडेल। शार्लोट ब्रोंटे द्वारा, 8vo, पृष्ठ। पूर्ण रूप से हस्ताक्षरित: शार्लोट ब्रोंटे, और दिनांक: हॉवर्थ, ब्रैडफोर्ड के निकट, 27 दिसंबर, 1833।

माई एंग्रिया एंड द एंग्रियंस। लॉर्ड चार्ल्स अल्बर्ट फ्लोरियन वेलेस्ली द्वारा, 1834

एक अप्रकाशित पुस्तक का एक पृष्ठ; या, एक दुर्भाग्यशाली लेखक की पांडुलिपि। लॉर्ड चार्ल्स अल्बर्ट फ्लोरियन वेलेस्ली द्वारा संपादित, 1834

कॉर्नर डिशेज़: गद्य और पद्य में लिखी गई कुछ छोटी-छोटी रचनाओं का एक संक्षिप्त संग्रह। लॉर्ड चार्ल्स अल्बर्ट फ्लोरियन वेलेस्ली द्वारा 1834 में रचित।

द स्पेल: एन एक्स्ट्रावैगांज़ा। लॉर्ड चार्ल्स अल्बर्ट फ्लोरियन वेलेस्ली द्वारा। शार्लोट ब्रोंटे के हस्ताक्षर, 21 जून, 1834। विषयवस्तु में शामिल हैं: 1. प्रस्तावना, आधा पृष्ठ; 2. द स्पेल, 26 पृष्ठ; 3. हाई लाइफ इन वर्डोपोलिस: ऑर द डिफिकल्टीज़ ऑफ़ एनेक्सिंग ए सूटेबल टाइटल टू ए वर्क प्रैक्टिकली इलस्ट्रेटेड इन सिक्स चैप्टर्स। लॉर्ड सी. ए. एफ. वेलेस्ली द्वारा, 20 मार्च, 1834, 22 पृष्ठ; 4. द स्क्रैप-बुक: ए मिंगलिंग ऑफ़ मेनी थिंग्स। लॉर्ड सी. ए. एफ. वेलेस्ली द्वारा संकलित। शार्लोट ब्रोंटे, 17 मार्च,

1835, 31 पृष्ठ।

[यह पुस्तक ब्रिटिश संग्रहालय में है।]

दारियस कैडोमैनस की मृत्यु: एक कविता। शार्लोट ब्रोंटे द्वारा रचित। पृष्ठ संख्या: पूर्ण हस्ताक्षर और दिनांक 1835।

साउल और स्मृति: दो कविताएँ। सी. ब्रोंटे द्वारा। पृष्ठ 1835

1836 की महत्वपूर्ण घटनाएँ

'हमने बचपन में एक जाल बुना': एक कविता (पृष्ठ 6), सी. ब्रोंटे द्वारा हस्ताक्षरित, हॉवर्थ, 19 दिसंबर, 1835

घायल हिरण और अन्य कविताएँ। सी. ब्रोंटे द्वारा हस्ताक्षरित। 19 जनवरी, 1836। पृष्ठ 1836

लॉर्ड डौरो: एक कहानी। सी. ब्रोंटे द्वारा हस्ताक्षरित। 21 जुलाई, 1837।

कविताएँ। सी. ब्रोंटे द्वारा। पृष्ठ 1838

एक पादरी को निमंत्रण पत्र। शार्लोट ब्रोंटे द्वारा हस्ताक्षरित। 21 जुलाई, 1842। बड़ा ऑक्टेवो, पृष्ठ। ब्रुसेल्स में लिखा गया एक फ्रांसीसी अभ्यास, 1842।

जॉन हेनरी। शार्लोट ब्रोंटे द्वारा रचित, क्राउन 8vo, पृष्ठ संख्या, पेंसिल से लिखा हुआ, लगभग 1852

विली एलिन। शार्लोट ब्रोंटे द्वारा। क्राउन 8vo, पृष्ठ मई और जून 1853

श्रीमती गैस्केल द्वारा मुद्रित शार्लोट की 'मेरी पुस्तकों की सूची' में शामिल निम्नलिखित पुस्तकें अब उपलब्ध नहीं हैं:

अवकाश के क्षण: एक कहानी और दो अंश, 6 जुलाई, 1829

एडवर्ड डी क्रैक के कारनामे: एक कहानी, 2 फरवरी, 1830

उस युग के कुछ सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के जीवन की एक रोचक घटना: 10 जून, 1830 की एक कहानी

कवि का नाटक: दो खंडों में, 12 जुलाई, 1830

एक कविता संग्रह, 17 दिसंबर, 1829 को पूरा हुआ।

विविध कविताएँ, पूर्ण

[ये विविध कविताएँ संभवत: अलग-अलग पन्नों पर लिखी गई कविताएँ हैं, न कि कोई पूरी किताब—वास्तव में, ऐसी लगभग आधा दर्जन अलग-अलग कविताएँ अभी भी मौजूद हैं। शार्लोट की इन विविध कविताओं की सूची में अंतिम कविता 'द इवनिंग

वॉक', 1820 है; यह एक अलग किताब है, और इसे उपरोक्त सूची में शामिल किया गया है।] 3 मई, 1830

एमिली ब्रोंटे द्वारा

कविताओं का एक संग्रह, 8vo, पृष्ठ संख्या; हस्ताक्षर (पहले पृष्ठ के शीर्ष पर) ई. जे. बी. द्वारा। फरवरी 1814 में प्रतिलेखित। प्रत्येक कविता के शीर्षक में उसकी रचना तिथि अंकित है। इस पुस्तक में शामिल कविताओं में से चार अभी तक अप्रकाशित हैं, शेष 1846 की कविताओं में प्रकाशित हुई थीं। सभी कविताएँ सूक्ष्म अक्षरों में लिखी गई हैं।

कविताओं का एक संग्रह, वर्गाकार 8vo आकार, पृष्ठ संख्या। प्रत्येक कविता पर तिथि अंकित है, और पहली कविता पर ई. जे. ब्रोंटे के हस्ताक्षर हैं, दिनांक 19 अगस्त, 1837। साधारण लिखावट में लिखी गई हैं, बारीक लिखावट में नहीं। सभी अप्रकाशित (1837-1839)

चौदह या पंद्रह छोटी-छोटी, अलग-अलग आकार की पर्चियों पर दोनों तरफ बारीक अक्षरों में लिखी गई कविताओं की एक श्रृंखला। सभी अप्रकाशित (1833-1839)

पत्र और उत्तर। फ्रेंच भाषा का एक अभ्यास। बड़ा 8vo आकार, पृष्ठ संख्या। ई. जे. ब्रोंटे द्वारा हस्ताक्षरित, और दिनांक 16 जुलाई 1842।

लामोर फिलियल। फ्रेंच भाषा का एक अभ्यास। छोटा क्वार्टो, पृष्ठ संख्या। एमिली जे. ब्रोंटे द्वारा पूर्ण रूप से हस्ताक्षरित, और दिनांक 5 अगस्त 1842।

ऐनी ब्रोंटे द्वारा।

लेडी गेराल्डा की कविताएँ और अन्य काव्य। 28 पृष्ठों का एक क्राउन 8vo जिल्द वाला खंड। प्रत्येक कविता पर हस्ताक्षर (या आद्याक्षर) और तिथि अंकित है, जो 1836 से 1837 तक की हैं। सभी कविताएँ 1836-1837 के दौरान अप्रकाशित रहीं।

उत्तरी हवा और अन्य कविताएँ। 26 पृष्ठों का एक क्राउन 8vo वॉल्यूम का खंड। प्रत्येक कविता पर हस्ताक्षर (या आद्याक्षर) और तिथि अंकित हैं, कुछ कविताओं में उनके अपने नाम के अतिरिक्त छद्म नाम एलेक्जेंड्रिना ज़ेनोबिया या ओलिविया वर्नन भी शामिल हैं। तिथियाँ 1838 से 1840 तक की हैं। ये सभी कविताएँ 1838-1840 के दौरान अप्रकाशित रहीं।

कॉपर को समर्पित, और अन्य कविताएँ। 8vo, पृष्ठ। इस संग्रह में शामिल नौ

कविताओं में से तीन पर ऐनी ब्रोंटे के हस्ताक्षर हैं, चार पर ए. ब्रोंटे के हस्ताक्षर हैं, और दो पर 'ए. बी.' के प्रारंभिक अक्षर अंकित हैं। सभी पर तिथि अंकित है। इनमें से कुछ कविताएँ अप्रकाशित हैं, शेष 1846 की कविताओं में प्रकाशित हुई थीं।

कविताओं का एक पतला 8vo आकार का संग्रह (जिनमें से अधिकांश 1845 की हैं), प्रत्येक कविता पर ए. ब्रोंटे या केवल 'ए. बी.' के हस्ताक्षर हैं — कुछ कविताओं में उनके अपने नाम के अतिरिक्त या उसके स्थान पर ज़ेरोना उपनाम भी है। इनमें से कुछ कविताएँ अप्रकाशित हैं; शेष कविताएँ ऐनी द्वारा 1846 की कविताओं के संग्रह में लगभग 1845 में किए गए योगदान का हिस्सा हैं।

गीत: 'क्या जीवन की पहली भावनाओं को भुला देना चाहिए' (एक ऑक्टेवो पत्ता)

[ब्रैनवेल ब्रोंटे की एक कविता की साफ-सुथरी प्रति (2 पृष्ठ, वॉल्यूम), ऐनी ब्रोंटे की हस्तलेख में।] 1845

प्रेम की शक्ति और अन्य कविताएँ। पोस्ट ऑक्टेवो, पृष्ठ संख्या। प्रत्येक कविता पर हस्ताक्षर (या आद्याक्षर) और दिनांक 1845-1846 अंकित हैं।

स्वयं से संवाद, एक कविता। 8vo, पृष्ठ। हस्ताक्षर 'ए. बी.' और दिनांक 17 अप्रैल, 1848।

ब्रैनवेल ब्रोंटे द्वारा।

वॉशिंगटन का युद्ध। पी. बी. ब्रोंटे द्वारा लिखित। पूरे पृष्ठ पर रंगीन चित्रों सहित।

[एक अत्यंत बचकाना रचना, और ब्रोंटे परिवार की सभी पांडुलिपियों में सबसे पुरानी।] 1827

मेरी सेना में हुए विद्रोह का इतिहास, 1828

रोलांडो सेगुर की यात्राएँ: उनकी पूरी यात्रा के दौरान और अमेरिका, यूरोप, दक्षिणी ध्रुव आदि में उनके रोमांच का वर्णन। पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे द्वारा लिखित। दो खंडों में, 1829

कविताओं का संग्रह। यंग सोल्ट द राइमर द्वारा रचित। श्री चेटोब्रियांड द्वारा लिखित टिप्पणियों और व्याख्यानों सहित सचित्र। दो खंडों में, 1829

झूठे का पर्दाफाश। कैप्टन बड द्वारा, 1830

कैरेक्टैकस: एक नाटकीय कविता। यंग सोल्ट द्वारा रचित, 1830

बदला: तीन अंकों का एक दुखद नाटक। यंग सोल्ट द्वारा लिखित। पी. बी. ब्रोंटे। दो खंडों में। ग्लासटाउन

[यद्यपि शीर्षक पृष्ठ पर 'दो खंडों में' लिखा है, लेकिन पुस्तक केवल एक ही खंड में पूर्ण है।] 1830

द हिस्ट्री ऑफ द यंग मेन। जॉन बड द्वारा, 1831

एक अंग्रेज के पत्र। कैप्टन जॉन फ्लावर द्वारा लिखित। छह खंडों में, 1830-1832

द मंथली इंटेलिजेंसर। अंक 1

[ब्रैनवेल ब्रोंटे द्वारा रचित एक पांडुलिपि समाचार पत्र का एकमात्र अंक। इस पांडुलिपि में 4 पृष्ठ हैं, जो स्तंभों में व्यवस्थित हैं, ठीक एक सामान्य समाचार पत्र की तरह।] 27 मार्च, 1833

वर्डोपोलिस में वास्तविक जीवन: एक कहानी। कैप्टन जॉन फ्लावर, सांसद द्वारा। दो खंडों में। पी. बी. ब्रोंटे, 1833

वर्डोपोलिस की राजनीति: एक कहानी। कैप्टन जॉन फ्लावर द्वारा। पी. बी. ब्रोंटे 1833

समुद्री डाकू: एक कहानी। कैप्टन जॉन फ्लावर द्वारा लिखित।

[ब्रैनवेल की गद्य कहानियों में सबसे आडंबरपूर्ण कहानी।] 1833

थर्मोपाइले: एक कविता। पी. बी. ब्रोंटे द्वारा। 8vo, पृष्ठ 1834

और थके हुए लोग आराम कर रहे हैं: एक कहानी। पी. बी. ब्रोंटे द्वारा रचित, 1834

ऊन का उदय: एक एंग्रियन साहसिक कार्य। माननीय जॉन बैरन फ्लावर द्वारा, 1834

ध्रुव तारे की स्तुति और अन्य कविताएँ। पी. बी. ब्रोंटे द्वारा। क्वार्टो, पृष्ठ 1834

फील्ड मार्शल माननीय अलेक्जेंडर पर्सी, अर्ल ऑफ नॉर्थेंगरलैंड का जीवन। दो खंडों में। जॉन बड द्वारा। पी. बी. ब्रोंटे, 1835

एंग्रियनों का विद्रोह: एक कहानी। पी. बी. ब्रोंटे द्वारा रचित, 1836

प्रथम विश्व युद्ध का वृत्तांत। पी. बी. ब्रोंटे द्वारा, 1836

एंग्रियन स्वागत: एक कहानी। पी. बी. ब्रोंटे द्वारा रचित, 1836

पर्सी: एक कहानी। पी. बी. ब्रोंटे द्वारा।

एक पैकेट जिसमें लगभग छह या आठ पृष्ठों की कविताओं के चार छोटे समूह हैं, जिनमें से अधिकतर बिना शीर्षक के हैं, लेकिन सभी पर हस्ताक्षर या आद्याक्षर अंकित

हैं, और उन पर 1836 से 1838 तक की तिथि अंकित है।

प्रेम और युद्ध: एक कहानी। पी. बी. ब्रोंटे द्वारा, 1839

लॉर्ड नेल्सन और अन्य कविताएँ। पी. बी. ब्रोंटे द्वारा रचित। पेंसिल से लिखी गई। छोटा 8vo आकार, पृष्ठ संख्या।

[इस पुस्तक में ब्रैनवेल ब्रोंटे द्वारा स्वयं बनाया गया एक पूर्ण पृष्ठ का पेंसिल चित्र और साथ ही चार बारीकी से तैयार किए गए सिर के चित्र शामिल हैं। ये ब्रैनवेल की कलात्मक कुशलता की व्यापकता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।] 1844

अध्याय III: विद्यालय और गवर्नेंस जीवन

शार्लोट ब्रोंटे के विकास पर नए सिरे से प्रकाश डालने के लिए, उनके बचपन के कोवान ब्रिज स्कूल के वर्षों पर और अधिक चर्चा करना आवश्यक नहीं है। उन्होंने नौ वर्ष की आयु में स्कूल छोड़ दिया था, और स्कूल की जो भी यादें उनके वयस्क जीवन तक उनके साथ रहीं, वे जेन आयर में कमोबेश सुंदर रंगों के साथ समाहित हैं। 1825 से 1831 तक शार्लोट अपनी बहनों के साथ घर पर रहीं, जैसा कि हम देख चुके हैं, वह पढ़ती-लिखती थीं, लेकिन उन्होंने कोई व्यवस्थित शिक्षा नहीं ली। 1831-32 में वह हॉवर्थ से लगभग बीस मील दूर रो हेड स्थित मिस वूलर के स्कूल में बोर्डिंग छात्रा थीं। मिस वूलर वृद्धावस्था तक जीवित रहीं और 1885 में उनका निधन हो गया। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें अपनी इस प्रसिद्ध छात्रा पर बहुत गर्व था, और वह शुरुआती वर्षों में उनकी प्रतिभा से अनजान नहीं रही होंगी। शार्लोट रो हेड और बाद में ड्यूसबरी मूर में उनकी गवर्नेंस के रूप में उनके साथ रहीं। यह स्पष्ट है कि मिस ब्रोंटे बौद्धिक क्षेत्र में सबसे आगे थीं और उन्होंने एलेन नुसे और मैरी टेलर से दो पक्की दोस्ती की। रो हेड से हॉवर्थ लौटते समय शार्लोट को फ्रेंच का अच्छा ज्ञान और चित्रकारी का कौशल सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक लगा। इस समय के लगभग बीस चित्र और

वोल्टेयर की हेनरीएड की पहली पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद मौजूद है। एलेन नुसे के साथ उनकी दोस्ती शार्लोट ब्रोंटे के मृत्युशय्या से लिखे गए पेंसिल से लिखे नोट्स के साथ ही समाप्त हुई। नियमित पत्राचार का पहला संकेत निम्नलिखित पत्र में मिलता है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 21 जुलाई, 1832।

मेरी प्यारी एलेन, तुम्हारा प्यारा और रोचक पत्र पढ़कर मुझे बहुत खुशी हुई। घर आने के बाद से मैं लगभग हर दिन तुमसे पत्र की प्रतीक्षा कर रही थी, और आखिरकार मुझे वह पत्र मिलने की उम्मीद लगभग खत्म हो गई थी। तुमने मुझसे स्कूल छोड़ने के बाद से अपने हर दिन के बारे में बताने को कहा है। यह बताना आसान है, क्योंकि एक दिन का विवरण पूरे दिन का विवरण होता है। सुबह नौ बजे से साढ़े बारह बजे तक मैं अपनी बहनों को पढ़ाती हूँ और चित्र बनाती हूँ, फिर हम दोपहर के भोजन तक टहलते हैं; भोजन के बाद मैं चाय के समय तक सिलाई करती हूँ, और चाय के बाद मैं अपनी इच्छा अनुसार पढ़ती हूँ, लिखती हूँ, कुछ कल्पना का काम करती हूँ या चित्र बनाती हूँ। इस तरह एक सुखद, हालांकि कुछ हद तक नीरस, क्रम में मेरा जीवन बीत रहा है। घर आने के बाद से मैं केवल दो बार चाय पर बाहर गई हूँ। आज दोपहर हमारे घर मेहमान आने वाले हैं, और अगले मंगलवार को संडे स्कूल की सभी महिला शिक्षिकाएँ चाय पर आएंगी। मेरी प्यारी एलेन, मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम अपने भले के लिए स्कूल वापस जाओगी, हालाँकि मेरे भले के लिए मैं चाहूँगी कि तुम घर पर ही रहो, क्योंकि इससे हमें एक-दूसरे से चिट्ठी-पत्री करने के ज़्यादा मौके मिलेंगे। अगर तुम्हारे दोस्त तुम्हें स्कूल वापस न भेजने का फ़ैसला करते हैं, तो मुझे पता है कि तुममें इतनी समझदारी और नेक भावना है कि तुम अपनी तरक्की के लिए पूरी लगन से काम करोगी। तुम्हारी स्वाभाविक प्रतिभाएँ उत्कृष्ट हैं, और एक समझदार और सक्षम दोस्त के मार्गदर्शन में (और मुझे पता है कि तुम्हारे ऐसे कई दोस्त हैं), तुम सुरुचिपूर्ण साहित्य और यहाँ तक कि कविता के प्रति भी गहरी रुचि विकसित कर सकती हो, जो वास्तव में इसी श्रेणी में आती है। तुम्हारे बाल न भेजने से मुझे बहुत निराशा हुई; मेरी प्यारी एलेन, यकीन मानो, मैं उन्हें मंगवाने के लिए दुगने डाक खर्च से भी नहीं हिचकिचाऊँगी, लेकिन तुम्हें बाल न भेजने के लिए मुझे यही बहाना बनाना पड़ेगा। मेरी मौसी और बहनें तुम्हें अपना प्यार भेज रही हैं। अपनी माँ और बहनों को

मेरा प्यार से याद दिलाना, और अपने सच्चे दोस्त की ओर से सच्चे स्नेह की सभी शुभकामनाएँ स्वीकार करना।

‘शार्लोट ब्रोंटे।

नोट: हमने एक-दूसरे को नियमित पत्र लिखने का जो वादा किया था, उसे याद रखना। इस खराब लिखावट में जो भी गलतियाँ हों, उन्हें माफ कर देना। जब तुम मिस टेलर्स से मिलो, तो उन्हें मेरा प्यार देना। अलविदा, मेरी प्यारी एलेन।

अगले कुछ वर्षों में शार्लोट ने पढ़ना-लिखना सीखा और उस छोटे से गृहस्थी में यथासंभव अच्छी तरह से घरेलू शिक्षा प्राप्त की। फिर उन्होंने गवर्नेंस बनने का निश्चय किया—परिवार के आकार और मुखिया के मामूली वेतन को देखते हुए यह कोई असामान्य बात नहीं थी। आजकल तो कहीं अधिक समृद्ध माता-पिता भी अपनी बेटियों को इस तरह से जीविका कमाने देने में संतुष्ट रहते हैं। 1835 में शार्लोट गवर्नेंस के रूप में रो हेड लौट आईं और 1836 में जब मिस वूलर ने अपना स्कूल ड्यूसबरी मूर में स्थानांतरित किया, तब भी वह उसी पद पर बनी रहीं।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

‘ड्यूस्बरी मूर, 24 अगस्त, 1837।

मेरी प्यारी एलेन, मैंने तुम्हें पत्र लिखने का निश्चय किया है, कहीं तुम यह न सोचने लगो कि मैं तुम्हें भूल गई हूँ, और बदले में मुझे भूलने का निश्चय कर लो। जैसा कि तुम इस पत्र की तारीख से समझ जाओगी, मैं फिर से अपने पुराने काम में लग गई हूँ - पढ़ाना, पढ़ाना, पढ़ाना। मिस और मिसेज़ वूलर अगले क्रिसमस पर यहाँ आ रही हैं। मिस वूलर तब स्कूल का कार्यभार अपनी बहन एलिज़ा को सौंप देंगी, लेकिन मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि योग्य मिस वूलर घर में ही रहेंगी। मुझे उनसे विदा लेने का बहुत दुख होगा। तुम घर कब आओगी? जल्दी करो, तुम बाथ में काफी समय बिता चुकी हो। मुझे यकीन है कि अब तक तुम काफी सज-धज गई होगी। अगर पॉलिश की मोटी परत लगाई गई, तो मुझे डर है कि नीचे की असली लकड़ी पूरी तरह से छिप जाएगी, और तुम्हारे पुराने यॉर्कशायर के दोस्त इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे। आओ, आओ, मैं तुम्हारी अनुपस्थिति से सचमुच तंग आ गई हूँ। शनिवार के बाद शनिवार आता है, और मुझे इस बात की कोई उम्मीद नहीं रहती कि तुम दरवाजे पर दस्तक दोगी और फिर मुझे बताया जाएगा कि "मिस ई. एन. आ गई हैं।" हे भगवान! मेरे इस नीरस जीवन में वह एक सुखद घटना थी। काश ऐसा फिर कभी हो पाता, लेकिन इस

लंबे अलगाव की अकड़ और दूरी को पूरी तरह दूर होने में दो-तीन मुलाकातें लगेंगी। अभी मुझे आपको बस इतना ही बताना है कि मैरी टेलर अब बेहतर हैं और वह और मार्था वेल्स घूमने गई हैं। पैटी लगभग दो हफ्ते पहले अपने टट्टू पर सवार होकर मुझे इस महत्वपूर्ण घटना की सूचना देने आई थी। वह वास्तव में आपकी लंबी अनुपस्थिति को लेकर चिंतित थी और आपके लौटने की हार्दिक कामना कर रही थी। मेरी प्यारी एलेन, अलविदा। अगर हम सब ठीक रहे तो आशा है कि जल्द ही आपसे फिर मुलाकात होगी। ईश्वर आपका भला करे।

'सी. ब्रोंटे।'

जैसा कि निम्नलिखित पत्र से पता चलता है, चीजें हमेशा इतनी सुचारू रूप से नहीं चल रही थीं।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

'ड्यूस्बरी मूर, 4 जनवरी, 1838।

एलेन, तुम्हारा पत्र एक सुखद आश्चर्य था, हालाँकि उसमें एक तरह की फटकार थी। फिर भी, मैं अपना समझौता नहीं भूली थी। मेरे अचानक चले जाने के कारण के बारे में तुम्हारे अनुमान सही थे। ऐनी बहुत बीमार थी, उसका दर्द और साँस लेने में तकलीफ दोनों ही कम नहीं हो रही थीं, और मैं बहुत दुखी महसूस कर रही थी। मैं उसके मामले को उस नज़रिए से नहीं देख रही थी जो मैं किसी भी तटस्थ व्यक्ति से उम्मीद कर सकती थी। मिस वूलर मुझे मूर्ख समझती थीं, और अपनी राय साबित करने के लिए उन्होंने मेरे साथ बहुत ठंडा व्यवहार किया। एक शाम हमारी थोड़ी कहा-सुनी हो गई। मैंने उन्हें एक-दो सीधी-सादी बातें बताईं, जिससे वे रोने लगीं; और अगले दिन, मेरी जानकारी के बिना, उन्होंने पापा को पत्र लिखकर बताया कि मैंने उन्हें बहुत डांटा, उनकी कड़ी आलोचना की, आदि। पापा ने उनका पत्र मिलने के अगले दिन हमें बुलवाया। इस बीच मैंने मिस वूलर और उनके मामलों से हमेशा के लिए अलग होने का पक्का इरादा कर लिया था। लेकिन मेरे जाने से ठीक पहले, वह मुझे अपने कमरे में ले गई, और अपनी भावनाओं को, जिन्हें वह आम तौर पर बहुत सख्ती से नियंत्रित रखती है, व्यक्त करते हुए मुझे यह समझाया कि उसके ठंडे और अप्रिय व्यवहार के बावजूद, वह मेरे प्रति काफी स्नेह रखती है और मुझसे बिछड़ने पर उसे बहुत दुख होगा। अगर कोई मुझे पसंद करता है, तो मैं भी उसे पसंद करने से खुद को रोक नहीं पाता; और यह याद करके कि वह आम तौर पर मेरे प्रति बहुत दयालु रही है, मैंने हार

मान ली और कहा कि अगर वह चाहे तो मैं वापस आऊंगा। तो फिलहाल हम फिर से एक हो गए हैं, लेकिन मैं संतुष्ट नहीं हूं। अगर उसने मुझे दो दिन और दो रात लगातार रोने के बजाय घर से बाहर निकाल दिया होता, तो मैं उसका कहीं अधिक सम्मान करता। मैं बहुत गुस्से में था; मेरा "गुस्सैल स्वभाव" मुझ पर पूरी तरह हावी हो गया था, जिस पर मुझे गर्व नहीं है, क्योंकि यह मेरी कमजोरी थी; और न ही मुझे इस पर शर्म है, क्योंकि मेरे पास गुस्सा होने का कारण था।

ऐन अब काफी बेहतर है, हालांकि उसे अभी भी बहुत देखभाल की ज़रूरत है। फिर भी, उसके बारे में मेरी सबसे बुरी आशंकाएँ दूर हो गई हैं। आपने जिस योजना का ज़िक्र किया है, वह मुझे बहुत पसंद है, सिवाय भजन संहिता की एक आयत को याद करने के। मुझे उससे कोई सीधा लाभ नहीं दिखता। हमने नए साल में प्रवेश कर लिया है। क्या यह पिछले साल की तरह हमारे सभी पापों, मूर्खताओं, गुप्त घमंडों और अनियंत्रित भावनाओं और प्रवृत्तियों से कलंकित होगा? मुझे उम्मीद नहीं है; लेकिन मैं खुद को पहले से कहीं बेहतर, न ही विनम्र और न ही पवित्र महसूस कर रहा हूँ। अगले सोमवार को छुट्टियों के खत्म होने में तीन हफ्ते बाकी हैं। मेरी प्यारी ऐलन, जितनी जल्दी हो सके मुझसे मिलने आना; चाहे कभी-कभी मुझे दूसरों के प्रति कितनी भी कड़वाहट महसूस हो, तुम्हारी सौम्य, स्थिर मित्रता की याद मुझे सांत्वना देती है और मेरा मन शांत करती है। मुझे खुशी है कि तुम मेरी तरह भावुक मूर्ख नहीं हो। अपनी माँ और बहनों को मेरा ढेर सारा प्यार देना। मेरी सबसे भद्दी लिखावट के लिए मुझे माफ कर देना, और - विश्वास करना, मैं हमेशा तुम्हारा स्नेही हूँ।

'सी. ब्रोंटे।'

लेकिन ड्यूज़बरी मूर शार्लेट को रास नहीं आया। शायद यही मुख्य कारण था। वह हॉवर्थ लौट आई, लेकिन सिर्फ़ एक और नौकरी की तलाश में। इस बार उसने उसी काउंटी के स्टोनगैप में मिस्टर सिडगविक के परिवार में निजी गवर्नेंस का पद स्वीकार कर लिया। उनके घर से लिखे गए पत्रों पर टिप्पणी करने की कोई आवश्यकता नहीं है। श्रीमती गैस्केल ने पहले पत्र का एक वाक्य उद्धृत किया है।

मिस एमिली जे. ब्रोंटे को

स्टोनगैप, 8 जून, 1839।

प्रिय लाविनिया, मेरे सामान को ढूंढने और सही सलामत भेजने के लिए आपने जो भी प्रयास किया, उसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। डिब्बा और उसमें रखी चीजें

मुझे बहुत पसंद आईं। काश मैंने आपसे कुछ पत्र लिखने का कागज़ भी मंगवा लिया होता। ये मेरा आखिरी बचा हुआ कागज़ है। जब आप मेरे लिए बन रहे बाकी कपड़े भेज देंगी, तो मुझे बहुत खुशी होगी।

मैंने अपनी नई स्थिति से खुश रहने की बहुत कोशिश की है। जैसा कि मैंने कहा है, देश, घर और ज़मीन सब कुछ बहुत सुंदर है। लेकिन, अफसोस! चारों ओर इतनी सुंदरता देखकर भी, मनमोहक जंगल, घुमावदार सफेद रास्ते, हरी-भरी घास और नीला धूप से जगमगाता आसमान, एक पल भी खाली या सोचने का समय नहीं मिलता। बच्चे हर समय मेरे साथ रहते हैं, और इतने शरारती, जिद्दी और बेकाबू बच्चे पहले कभी नहीं हुए। उन्हें सुधारने की बात तो मैंने जल्दी ही समझ ली कि यह नामुमकिन है: उन्हें अपनी मनमर्जी करनी है। श्रीमती सिडगविक से शिकायत करने पर सिर्फ मुझे ही घूरा जाता है, और बच्चों को बचाने के लिए झूठे और पक्षपातपूर्ण बहाने बनाए जाते हैं। मैंने एक बार यह तरीका आजमाया था। यह इतना सफल रहा कि अब मैं इसे दोबारा नहीं आजमाऊँगी। मैंने अपने पिछले पत्र में कहा था कि श्रीमती सिडगविक मुझे पहचानती ही नहीं हैं। अब मुझे लगने लगा है कि वह मुझे जानना ही नहीं चाहती, उसे मेरी ज़रा भी परवाह नहीं है सिवाय इसके कि मुझसे ज़्यादा से ज़्यादा काम कैसे करवाया जाए। इसी उद्देश्य से वह मुझे कढ़ाई के ढेरों काम, सिलाई के लिए ढेरों कपड़ा, बनाने के लिए मलमल की टोपियाँ और सबसे बढ़कर, गुड़िया सजाने के कामों में उलझा देती है। मुझे नहीं लगता कि वह मुझे ज़रा भी पसंद करती है, क्योंकि इतने नए माहौल में, जहाँ मैं अब तक अजनबी और लगातार बदलते चेहरों से घिरी रही हूँ, मैं शरमा जाती हूँ। अब मुझे पहले से कहीं ज़्यादा स्पष्ट रूप से समझ आ रहा है कि एक निजी गवर्नेंस का कोई अस्तित्व नहीं होता, उसे एक जीवित और समझदार प्राणी नहीं माना जाता सिवाय उन थकाऊ कर्तव्यों से जुड़े होने के जो उसे निभाने होते हैं। जब तक वह बच्चों को पढ़ा रही होती है, उनके लिए काम कर रही होती है, उनका मनोरंजन कर रही होती है, तब तक सब ठीक है। अगर वह अपने लिए एक पल भी निकाल लेती है तो वह एक परेशानी बन जाती है। फिर भी, श्रीमती सिडगविक को सर्वत्र एक मिलनसार महिला माना जाता है। उनका व्यवहार दिखावटी तौर पर विनम्र है। वह बहुत बातें करती है, लेकिन मुझे लगता है कि उनकी बातें काम की नहीं होतीं। शायद कुछ समय बाद मुझे वह अच्छी लगने लगे। फिलहाल तो मुझे उससे कोई खास लगाव नहीं है। मेरी राय में मिस्टर सिडगविक सौ गुना बेहतर हैं - कम दिखावटी, कम

घमंडी, लेकिन कहीं ज़्यादा दयालु हृदय वाले। वह मुझसे बहुत कम बात करते हैं, लेकिन जब भी करते हैं, तो कुछ मिनटों के लिए मैं हमेशा खुश और शांत महसूस करता हूँ। वह मुझसे कभी बच्चों की गंदी नाक पोंछने, उनके जूते के फीते बांधने, उनके एप्रन लाने या उनके लिए कुर्सी लगाने को नहीं कहते। यहाँ बिताई गई सबसे सुखद दोपहरों में से एक - वास्तव में, एकमात्र सुखद दोपहर - वह थी जब मिस्टर सिडगविक अपने बच्चों के साथ बाहर गए थे और मुझे उनके पीछे थोड़ा चलने का आदेश दिया गया था। जब वह अपने शानदार न्यूफ़ाउंडलैंड कुत्ते के साथ अपने खेतों में टहल रहे थे, तो वह बिल्कुल एक स्पष्टवादी, धनी, रूढ़िवादी सज्जन की तरह लग रहे थे। वह जिन लोगों से मिलता था, उनसे खुलकर और सहजता से बात करता था, और हालांकि वह अपने बच्चों को बहुत लाड़-प्यार करता था और उन्हें खुद को बहुत ज्यादा चिढ़ाने की इजाजत देता था, लेकिन वह उन्हें दूसरों का घोर अपमान करने की अनुमति नहीं देता था।

मुझे कार्टर परिवार के लिए काफी सम्मान महसूस होने लगा है। घर पर तो मैं उनकी परवाह नहीं करती, लेकिन यहाँ वे मेरे दोस्त हैं। श्री कार्टर कल मिर्फ़ील्ड में थे और उन्होंने ऐनी को देखा। उनका कहना है कि वह बहुत अच्छी लग रही थी। बेचारी, वह सच में घर पर रहना चाहती होगी। श्रीमती कॉलिन्स की इस बात पर कि श्रीमती सिडगविक मुझे स्थायी रूप से अपने पास रखना चाहती हैं, मुझे नहीं लगता कि उनका ऐसा कोई इरादा था। इसके अलावा, मैं कुछ बदलावों के बिना यहाँ नहीं रहूँगी। उदाहरण के लिए, सिलाई का यह बोझ हटाना होगा। यह बहुत बुरा है। मैंने अपने पूरे जीवन में कभी इतना व्यस्त समय नहीं बिताया। अगले हफ्ते हम स्वार्क्लिफ जा रहे हैं, जो हैरोगेट के पास श्री ग्रीनवुड का घर है, वहाँ हम तीन हफ्ते या एक महीने रुकेंगे। उसके बाद मुझे उम्मीद है कि मिस होबी वापस आ जाएँगी। यह पत्र पापा या चाची को मत दिखाना, केवल ब्रैनवेल को दिखाना। वे सोचेंगे कि मैं जहाँ भी रहती हूँ, संतुष्ट नहीं रहती। मैं तुमसे शिकायत इसलिए कर रही हूँ क्योंकि इससे मुझे राहत मिली है, और सच में मुझे कुछ अप्रत्याशित कष्ट सहने पड़े हैं। हालांकि, हालात सुधर सकते हैं, लेकिन श्रीमती सिडगविक मुझसे ऐसी अपेक्षाएं रखती हैं जो मैं नहीं कर सकती—उनके बच्चों से प्यार करना और पूरी तरह से उनके प्रति समर्पित रहना। मैं वास्तव में बहुत अच्छी हूँ। मुझे इतनी नींद आ रही है कि मैं और नहीं लिख सकती। मुझे यहीं रुकना होगा। सभी को प्यार। — अलविदा।

'अपना अगला संदेश जे. ग्रीनवुड, एस्क्वायर, स्वारक्लिफ, हैरोगेट के पास भेजें।'

‘सी. ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

स्वारक्लिफ, 15 जून, 1839।

मेरी प्यारी एलेन, मैं तुम्हें पेंसिल से पत्र लिख रही हूँ क्योंकि अभी मुझे ड्राइंग रूम में जाए बिना स्याही नहीं मिल सकती, जहाँ मैं जाना नहीं चाहती। तुम्हारा पत्र मुझे कल ही मिला, क्योंकि अब हम स्टोनगैप में नहीं बल्कि स्वारक्लिफ में रह रहे हैं, जो श्रीमती सिडगविक के पिता श्री ग्रीनवुड का ग्रीष्मकालीन निवास है; यह हैरोगेट और रिपन के पास है। मैं तुम्हें बहुत पहले ही पत्र लिख देती और उस बिल्कुल नए माहौल की हर बात बता देती जिसमें मैं हाल ही में आई हूँ, अगर मैं रोज़ तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा न कर रही होती और तुम्हारे पत्र न लिखने पर दुखी न होती, क्योंकि तुम्हें याद होगा कि तुम्हारी बारी थी। मुझे तुम्हें अपने दुखों से ज़्यादा परेशान नहीं करना चाहिए, जिनके बारे में मुझे डर है कि तुमने बढ़ा-चढ़ाकर सुना होगा। अगर तुम मेरे पास होतीं, तो शायद मैं तुम्हें सब कुछ बताने, आत्ममुग्ध होने और एक निजी गवर्नेंस के रूप में अपने पहले पद पर रहते हुए आने वाली कठिनाइयों और संघर्षों की लंबी कहानी सुनाने के लिए प्रेरित हो जाती। वैसे तो, मैं आपसे बस यही कल्पना करने को कहूंगा कि मुझ जैसे शर्मीले और अभिमानी व्यक्ति की क्या हालत होती होगी, जब उन्हें अचानक एक बड़े परिवार के बीच फेंक दिया गया, जो मोर की तरह अभिमानी और यहूदियों की तरह धनी था, और वो भी ऐसे समय में जब वे बेहद खुश थे, जब घर मेहमानों से भरा हुआ था — सभी अजनबी: ऐसे लोग जिनके चेहरे मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। इस हालत में मुझे कुछ भयानक बच्चों की जिम्मेदारी दी गई, जिनसे मुझे लगातार मनोरंजन करने के साथ-साथ उन्हें शिक्षा देने की भी उम्मीद थी। मैंने जल्द ही पाया कि मेरी ऊर्जा पर लगातार दबाव पड़ने से वह पूरी तरह से थक गई थी; कई बार मैं उदास महसूस करता था — और शायद दिखता भी था। मुझे आश्चर्य हुआ जब श्रीमती सिडगविक ने इस विषय पर मुझे इतनी सख्ती और कठोर भाषा में फटकारा कि यकीन करना मुश्किल था। एक मूर्ख की तरह, मैं फूट-फूट कर रोया। मैं खुद को रोक नहीं पाया; पहले तो मेरा मनोबल पूरी तरह से टूट गया था। मुझे लगा था कि मैंने अपनी पूरी कोशिश की है, उन्हें खुश करने के लिए हर संभव प्रयास किया है; और सिर्फ इसलिए कि मैं शर्मीली और कभी-कभी उदास रहती थी, मेरे साथ ऐसा बर्ताव

किया जाना बहुत बुरा था। पहले तो मेरा मन सब कुछ छोड़कर घर लौटने का कर रहा था। लेकिन थोड़ा सोचने के बाद, मैंने अपनी बची हुई सारी ऊर्जा इकट्ठा करने और इस मुश्किल दौर का सामना करने का निश्चय किया। मैंने खुद से कहा, "मैंने आज तक कोई भी जगह बिना दोस्त बनाए नहीं छोड़ी; विपत्ति एक अच्छी शिक्षा है; गरीब मेहनत करने के लिए पैदा होते हैं, और आश्रित सहने के लिए।" मैंने धैर्य रखने, अपनी भावनाओं पर काबू पाने और जो भी हो उसे स्वीकार करने का संकल्प लिया; मैंने सोचा कि यह कठिन परीक्षा कुछ हफ्तों तक नहीं चलेगी, और मुझे विश्वास था कि इससे मुझे लाभ होगा। मुझे विलो और ओक के पेड़ की कहानी याद आई; मैं चुपचाप झुक गई, और अब मुझे विश्वास है कि तूफान थम रहा है। श्रीमती सिडगविक को आम तौर पर एक मिलनसार महिला माना जाता है; और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आम समाज में वह ऐसी ही हैं। उनका स्वास्थ्य अच्छा है, उनमें उत्साह है, इसलिए वह लोगों के बीच खुश रहती हैं। लेकिन क्या यह हर अच्छी भावना, हर कोमल और नाजुक संवेदना की कमी की भरपाई कर सकता है? अब वो मुझसे पहले से कुछ ज़्यादा शालीनता से पेश आती है, और बच्चे भी थोड़े ज़्यादा शांत हो गए हैं; लेकिन वो मेरे स्वभाव को नहीं जानती, और जानना भी नहीं चाहती। जब से मैं आई हूँ, उससे मेरी पाँच मिनट की भी बातचीत नहीं हुई, सिवाय तब जब वो मुझे डांट रही थी। मुझे किसी से दया की भीख नहीं चाहिए, सिवाय तुम्हारे। अगर मैं तुमसे बात कर रही होती तो तुम्हें बहुत कुछ बता सकती थी। अलविदा, प्यारी एलेन। मुझे जल्द ही फिर से लिखना, और बताना कि तुम कैसी हो।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 26 जुलाई, 1839।

प्रिय एलेन, — मैंने एक सप्ताह पहले स्वारक्लिफ छोड़ दिया। जीवन में मुझे कभी किसी घर से बाहर निकलने की इतनी खुशी नहीं हुई; लेकिन अभी मैं आपको कोई शिकायत नहीं करूंगी। मुझे तुरंत पत्र लिखें; अपनी योजनाओं के बारे में विस्तार से बताएं। यह भी बताएं कि आप कब जा रही हैं, ताकि मैं अपने उत्तर में निश्चित रूप से बता सकूं कि मैं आपके साथ आ सकती हूं या नहीं। मुझे जाना ही होगा, मैं जाऊंगी, मैंने ठान लिया है — मैं दृढ़ रहूंगी और सभी विरोधों का सामना करूंगी। — अलविदा, आपकी विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सिडगविक परिवार के साथ वह अनुभव कई दिनों तक मन में खटकता रहा, और हमें ब्रसेल्स से लिखे अपने पत्रों में शार्लोट ब्रोंटे का ज़िक्र मिलता है। साथ ही, यह मानना भी ज़रूरी नहीं है कि सिडगविक परिवार या उनके उत्तराधिकारी व्हाइट परिवार, जिनके ऋणी रहकर शार्लोट ने दूसरी बार निजी गवर्नेंस का काम किया था, ने उनके प्रति कोई गंभीर अमानवीय व्यवहार किया था। उनका स्वभाव उस विनम्र भूमिका के लिए उपयुक्त नहीं था, और विलेट की लेखिका और हमारी भाषा की सबसे सशक्त गद्य शैलियों में से एक की लेखिका को निरंतर नाइट-कैप बनाने के काम में लगा देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। साथ ही, यह भी कहा जा सकता है कि शार्लोट ब्रोंटे का कष्ट व्यर्थ नहीं गया, और उनके माध्यम से ही साथी महिलाओं की ओर से नर्सरी गवर्नेंस के पेशे को कुछ अतिरिक्त सम्मान और गरिमा मिली होगी।

एक या दो महीने बाद हमें शार्लोट द्वारा एलेन नुसे को लिखे एक पत्र में इस विषय पर चर्चा करते हुए पाया जाता है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 24 जनवरी, 1840।

मेरी प्यारी एलेन, तुम ब्लेक हॉल जैसे आधुनिक बच्चों के उद्दंड, हिंसक परिवार में कभी नहीं रह सकतीं। ऐनी वापस नहीं आ रही है। श्रीमती इंगम एक शांत, सौम्य महिला हैं; लेकिन बच्चों को अनुशासित रखना जीवन भर का संघर्ष था। जब मैं एक गवर्नेंस के रूप में अपना जीवन बिताने की मजबूरी के बारे में सोचती हूँ तो मुझे बहुत दुख होता है। मुझे लगता है कि इस पद के लिए सबसे ज़रूरी है कि हम परिस्थितियों को सहजता से स्वीकार कर सकें और जहाँ भी हों, वहाँ सहज और घर जैसा महसूस कर सकें - ये गुण हमारे परिवार में बिल्कुल नहीं हैं। मैं जानती हूँ कि मैं श्रीमती सिडगविक जैसी महिला के साथ नहीं रह सकती, लेकिन मुझे उम्मीद है कि सभी महिलाएं उनके जैसी नहीं हैं, और मेरा आदर्श वाक्य है "फिर से कोशिश करो"। मैरी टेलर, यह सुनकर मुझे दुख हुआ कि वह बीमार हैं - क्या तुमने उन्हें हाल ही में देखा है या उनके बारे में कुछ सुना है? बीमारी और मृत्यु, कम से कम इस इलाके में, बहुत आम लग रही है। - तुम्हारी सदा,

'सी. बी.'

उसने दोबारा कोशिश की, लेकिन उतनी ही कम सफलता मिली। मार्च 1841 में

वह रॉडन के अपरवुड हाउस के मिस्टर व्हाइट के परिवार में शामिल हो गई।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

‘अपरवुड हाउस, 1 अप्रैल, 1841।

मेरी प्यारी नेल, रात के बारह बज रहे हैं, लेकिन सोने से पहले मुझे तुम्हें एक शब्द लिखना ही है। अगर तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारा निमंत्रण ठुकरा दूँगा, या तुमने मुझे यह सोचकर भेजा है, तो तुम गलत हो। जैसे ही मैंने तुम्हारा वह छोटा सा पत्र पढ़ा, मैंने तुरंत हिम्मत जुटाई, उस पल के आवेग में आकर श्रीमती व्हाइट के पास गया, उनसे सवाल पूछा, और दो मिनट तक कोई जवाब नहीं मिला। क्या वह मुझे मना कर देंगी जब मैं उनके लिए इतनी मेहनत करता हूँ? मैंने सोचा। “हाँ” उन्होंने बेमन से, ठंडे स्वर में कहा। “धन्यवाद, महोदया,” मैंने अत्यंत विनम्रता से कहा, और कमरे से बाहर निकलने ही वाला था कि उन्होंने मुझे रोकते हुए कहा: “तो बेहतर होगा कि तुम शनिवार दोपहर को जाओ, जब बच्चों की छुट्टी होती है, और अगर तुम सोमवार सुबह उनके सभी पाठों के लिए समय पर लौट आओ, तो मुझे नहीं लगता कि ज्यादा नुकसान होगा।” तुम तो बिल्कुल ही अजीब हो, मैंने सोचा, लेकिन फिर भी मैं मान गया। तो अगले शनिवार के बाद वाला दिन तय है—अगले शनिवार को नहीं, ध्यान रहे। मुझे ठीक से नहीं पता कि काम के बारे में यह प्रस्ताव पूरी तरह से आपका अपना विचार है या जॉर्ज ने इस पर अपनी सहमति दे दी है—या फिर यह सहमति मेरे एक परिचित युवक के लगातार और ज़बरदस्त मज़ाक के कारण ज़बरदस्ती हासिल की गई है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगर वह वाहन भेजता है (जैसा कि मिस वूलर सभी पहिए वाले वाहनों को कहती थीं) तो यह उसके लिए बहुत नुकसानदायक और असुविधाजनक होगा, लेकिन जीवन में पहली बार मैं इसकी परवाह नहीं करूँगा, न ही इसके बारे में सोचूँगा। मैं आऊँगा—ईश्वर जानता है, आभारी और प्रसन्न हृदय से—काम से एक दिन की छुट्टी पाकर खुश। अगर आप वाहन नहीं भेजते हैं तो मैं पैदल आ जाऊँगा। ध्यान रहे, मैं मैरी टेलर को न्यूज़ीलैंड जाने से रोकने के इरादे से ब्रुकरायड नहीं आ रहा हूँ। मैंने इस विषय पर जो कुछ कहना था कह दिया है, और उसे अपने लिए निर्णय लेने का पूरा अधिकार है। मैं आज़ादी का आनंद लेने, कुछ सुखद बातचीत करने और अपने दो-तीन पसंदीदा चेहरों को देखने आ रहा हूँ। भगवान आपका भला करे। मैं आपसे फिर मिलना चाहता हूँ। अगले शनिवार दोपहर को फिर मिलेंगे! शुभ रात्रि, मेरी प्रियतमा।

‘सी. ब्रोंटे.

क्या आपने मिस्टर वेटमैन के वैलेंटाइन से अपनी पाइप जलाई है?

सुश्री एलेन नुसे के लिए

‘अपरवुड हाउस, 4 मई, 1841।

प्रिय नेल, — तुम्हें पत्र लिखे हुए काफी समय हो गया है; लेकिन मुझे लगता है, जैसा कि तुम जानती हो कि मेरे पास समय की कितनी कमी है, तुम मुझसे नाराज़ नहीं होगी। तुम्हारे भाई जॉर्ज ने तुम्हें बताया होगा कि जब हम रॉडन पहुँचे तो वह घर के अंदर नहीं गया, और इस बात पर श्रीमती व्हाइट मुझे बहुत गुस्सा दिला बैठीं। जब उन्होंने सुना कि वह सज्जन अभी-अभी घर के अंदर गए और फिर वापस आ गए, तो उनका चेहरा झुंझलाहट से लाल हो गया, क्योंकि वह राय के मामले में बहुत संवेदनशील हैं। श्री व्हाइट को भी इस घटना पर खेद था, लेकिन उनके इरादे भले ही अच्छे थे। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ, अगर तुम मुझसे मिलने आतीं तो तुम्हारा खूब स्वागत होता। पिछले तीन हफ्तों से घर में "पूरी तरह से सफाई" नाम का वह भयानक काम चल रहा है। अब यह लगभग पूरा हो चुका है, जिसके लिए मैं ईश्वर की कृपा का धन्यवाद करती हूँ, क्योंकि इस दौरान मैंने नर्स और गवर्नेस दोनों की भूमिका निभाई है, जबकि नर्स की जगह मुझे रसोइया और नौकरानी बनना पड़ा है। वैसे, वो नर्स सबसे खूबसूरत लड़की है जिसे आपने कभी देखा होगा, और सजने-संवरने पर वो अपनी मालकिन से कहीं ज्यादा सभ्य लगती है। मुझे पूरा यकीन है कि श्रीमती व्हाइट किसी उत्पाद शुल्क अधिकारी की बेटी रही होंगी, और मुझे यह भी पूरा विश्वास है कि श्री व्हाइट का खानदान बहुत नीचा है। फिर भी, श्रीमती व्हाइट बड़े ही दिखावटी अंदाज में अपने और उनके परिवार और संबंधों के बारे में बातें करती हैं, और व्यापारियों के पूरे समुदाय को, जैसा कि वो उन्हें कहती हैं, बड़े घमंड से देखती हैं। मुझे श्रीमती व्हाइट उनकी उछल-कूद और शेखी बघारने, उनकी खराब व्याकरण और उससे भी बदतर वर्तनी के बावजूद एक अच्छी महिला लगने लगी थी, लेकिन उनके चरित्र की एक छोटी सी कमी ने मुझे उनके प्रति उनकी अरुचि को पूरी तरह से खत्म कर दिया है। किसी व्यक्ति के साथ लंबे समय तक बराबरी का व्यवहार करने के बाद, अगर कोई छोटी सी बात भी गलत हो जाती है, तो वो बहुत ही अशिष्ट और असभ्य तरीके से अपना गुस्सा जाहिर करने में जरा भी संकोच नहीं करतीं। मुझे लगता है कि क्रोध ही असभ्यता या सभ्यता की असली कसौटी है।

यह जगह इस समय बेहद खूबसूरत लग रही है। यहाँ का मैदान सचमुच बहुत प्यारा है, और चारों ओर पन्ना की तरह हरा-भरा है। काश तुम आकर इसे देख लेतीं। श्रीमती व्हाइट तुम्हें यह दिखाकर बहुत खुश होतीं। श्री व्हाइट ने पापा को एक अर्जेंट निमंत्रण लिखा है, उनसे विनती की है कि वे यहाँ आकर एक हफ़्ता बिताएँ। मैं बिल्कुल नहीं चाहती कि पापा आएँ, यह एक तरह से एहसान चुकाने जैसा होगा। किसी तरह, मैंने हाल ही में बच्चों पर काफी हद तक नियंत्रण पा लिया है - इससे मेरा जीवन काफी आसान हो गया है; साथ ही, उस मोटे बच्चे की देखभाल करने से वह मुझे जानने लगा है और मुझसे प्यार करने लगा है। मुझे लगता है कि मैं भी उससे कुछ ज़्यादा ही प्यार करने लगी हूँ। किसी भी तरह का प्रयास हमेशा फायदेमंद होता है। अगर किसी भी तरह से आ सको तो मुझसे मिलने ज़रूर आना, मैं तुमसे मिलना चाहती हूँ। लगता है मार्था टेलर अब इस दुनिया में नहीं हैं। अलविदा, मेरी प्यारी। - तुम्हारी असहनीय

'सी. ब्रोंटे।'

रेव. हेनरी नुसे, अर्न्ले रेक्टरी को

'अपरवुड हाउस, रॉडन,

'9 मई, 1841.

महोदय, मैं रविवार शाम का कुछ समय आपके पिछले पत्र का उत्तर देने में लगा रहा हूँ। शायद आपको यह ठीक न लगे, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं कुछ गलत कर रहा हूँ। रविवार शाम ही लगभग मेरा एकमात्र खाली समय होता है। अगर मैं यह खाली समय किसी मित्र के साथ सुखद बातचीत में बिताऊँ तो कोई मुझे दोष नहीं देगा - क्या इसे एक मैत्रीपूर्ण पत्र लिखने में बिताना बुरा है?

मैंने अभी-अभी अपने नन्हे-मुन्ने बच्चों को उनके पालनों में आराम से सुलाया है, और मैं स्कूल के कमरे में अकेली बैठी हूँ, खिड़की के बाहर मैदानों और बगीचों में रविवार शाम की शांति छाई हुई है। मुझे आपको एक पत्र लिखना है - अपना यह ऋण चुकाने के लिए इससे बेहतर समय और क्या हो सकता है? श्रीमान नुसी, आपको किसी गपशप या खबर की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, मेरे पास आपको बताने के लिए कुछ भी नहीं है - और अगर होता भी तो इस समय मेरा मन नहीं है। आप मेरे इस असंबद्ध पत्र के लिए मुझे क्षमा करेंगे। अगर मुझे लगता कि आप आलोचनात्मक या नुक्ताचीनी करने वाले हैं तो मैं आपसे पत्र व्यवहार करने से मना कर देती। वास्तव में, जब मैं सोचती हूँ तो यह अजीब लगता है कि मैं औपचारिकता और संयम की भावना

के बिना उस व्यक्ति को पत्र लिखने बैठूँ जिससे मैं व्यक्तिगत रूप से इतनी कम परिचित हूँ; लेकिन सच्चाई यह है कि मैं पत्र में औपचारिक नहीं हो सकती - अगर मैं लिखती हूँ तो मुझे वही लिखना चाहिए जो मैं सोचती हूँ। लगता है एलेन ने आपको बताया है कि मैं फिर से गवर्नेंस बन गई हूँ। जैसा कि आपने कहा, अपने सगे-संबंधियों के लिए घर छोड़ना वाकई बहुत कठिन होता है, खासकर एक अच्छे घर को – चाहे वह धनी हो या आलीशान। मेरा घर भले ही साधारण हो और अजनबियों को आकर्षक न लगे, लेकिन मेरे लिए इसमें वह सब कुछ है जो मुझे दुनिया में कहीं और नहीं मिलेगा – वह गहरा, वह तीव्र स्नेह जो भाई-बहन एक-दूसरे के लिए महसूस करते हैं, जब उनके विचार एक जैसे होते हैं, जब वे बचपन से एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, और जब उनके बीच कभी कोई विवाद नहीं हुआ होता।

हम सब अब अलग हो चुके हैं, और अजनबियों के बीच जैसे-तैसे अपना पेट पाल रहे हैं—मेरी बहन ऐनी यॉर्क के पास है, मेरा भाई हैलिफ़ैक्स के पास कहीं रहता है, मैं यहीं हूँ। एमिली ही अकेली घर पर है, जहाँ उसकी उपयोगिता और तत्परता उसे अपरिहार्य बनाती है। इन परिस्थितियों में क्या हमें दुखी होना चाहिए? मुझे नहीं लगता—हमारा आपसी स्नेह हर मुश्किल में हमें सांत्वना देगा। अगर वह ईश्वर, जिस पर हम सब निर्भर हैं, हमें स्वास्थ्य और कर्तव्य के मार्ग पर दृढ़ रहने की शक्ति प्रदान करे, ताकि हम किसी भी प्रलोभन में आकर उससे एक इंच भी न भटकें, तो हमारे पास आभारी और संतुष्ट होने का पर्याप्त कारण होगा।

मैं यह दावा नहीं करती कि मैं हमेशा संतुष्ट रहती हूँ। एक गवर्नेंस को अक्सर दिल का दर्द सहना पड़ता है। मेरे मालिक, श्रीमान और श्रीमती व्हाइट, अपने तरीके से दयालु और नेक लोग हैं, लेकिन बच्चे बहुत लाड़-प्यार से पाले गए हैं। मुझे कभी-कभी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शायद दृढ़ता से उन पर विजय प्राप्त की जा सकती है। और मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई है कि मेरे आने के बाद से बच्चों की पढ़ाई में हुई प्रगति से माता-पिता काफी संतुष्ट हैं। लेकिन मैं अपनी चिंताओं और भावनाओं पर बहुत अधिक ध्यान दे रही हूँ। यह सच है कि वे मेरे लिए रुचिकर हैं, लेकिन यह बिल्कुल असंभव है कि वे आपके लिए भी रुचिकर हों, और इसलिए, मुझे आशा है कि आप अंतिम पृष्ठ को छोड़ देंगे, क्योंकि मुझे इसे लिखने का पछतावा है।

दो सप्ताह पहले एलेन का पत्र मिला था जिसमें उसने मुझे एक दिन के लिए ब्रुकरॉयड जाने का आग्रह किया था। मुझे काम से कुछ समय के लिए आराम करने

और पुराने परिचित चेहरों के बीच फिर से मिलने की इतनी तीव्र इच्छा थी कि मैंने झिझक को दूर करके श्रीमती व्हाइट से मुझे जाने की अनुमति मांग ली। उन्होंने सहमति दे दी और मैं चली गई, और मेरी छुट्टियाँ बहुत सुखद रहीं। मैंने आपकी माँ, आपकी बहनों मर्सी, एलेन और बेचारी सारा, और आपके भाइयों रिचर्ड और जॉर्ज को देखा - सभी स्वस्थ थे। एलेन ने कहीं नौकरी पाने की कोशिश करने की बात की। मैंने इस विचार को बहुत प्रोत्साहित नहीं किया। मैंने उसे सलाह दी कि वह कुछ समय के लिए अर्नली चली जाए। मुझे लगता है कि उसे बदलाव की ज़रूरत है, और मुझे विश्वास है कि आप उसे कुछ महीनों के लिए साथी के रूप में पाकर खुश होंगे। - आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

उपरोक्त पत्र मिस नुसे के भाई को लिखा गया था, जिनका शार्लोट ब्रोंटे के प्रति लगाव वर्तमान जीवनियों में कई बार उल्लेखित हो चुका है। मिस नुसे को लिखा गया निम्नलिखित पत्र आयरलैंड के संदर्भ के कारण विशेष रूप से रोचक है। यह विचित्र होता यदि शार्लोट ब्रोंटे अपने पिता की जन्मभूमि में एक गवर्नेस के रूप में लौटतीं। इस पर अटकलें लगाना मूर्खतापूर्ण है, फिर भी मन में यह सवाल उठता है कि क्या आयरलैंड को वह स्थानीय साहित्यिक रंग नहीं मिल जाता - जो उसकी सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है - जो हमेशा वेवरली के पाठकों के लिए स्कॉटलैंड को प्रिय बनाता है, और शर्ली के प्रशंसकों के लिए यॉर्कशायर को क्लासिक कृति का स्थान बनाता है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

'अपरवुड हाउस, 10 जून, 1841।

प्रिय नेल, अगर मैं तुम्हें किसी तरह का एक पत्र नहीं लिखूँगी तो मुझे पता है कि तुम सोचने लगोगी कि मैं तुम्हें नज़रअंदाज़ कर रही हूँ, पिछली बार जब हम मिले थे तब मैंने जो कुछ भी कहा था उसके बावजूद। मुझे यकीन है कि तुम यह सोच भी नहीं सकती कि मुझे एक पत्र लिखने के लिए पंद्रह मिनट का समय भी नहीं मिल सकता; लेकिन जब कोई पत्र लिखा जाता है तो उसे डाक से भेजने में एक मील का सफर तय करना पड़ता है, जिसमें लगभग एक घंटा लग जाता है, जो दिन का एक बड़ा हिस्सा होता है। श्रीमान और श्रीमती व्हाइट एक सप्ताह से बाहर हैं। आज सुबह उनसे मेरी बात हुई; वे अभी हेक्सहैम में हैं। उनके लौटने का कोई निश्चित समय नहीं है, लेकिन

मुझे उम्मीद है कि इसमें ज्यादा देरी नहीं होगी, वरना मैं इस छुट्टी में ऐनी से मिलने का मौका चूक जाऊँगी। मुझे पता चला है कि वह पिछले बुधवार को घर आई थी, और उसे केवल तीन सप्ताह की छुट्टियाँ मिलेंगी, क्योंकि जिस परिवार के साथ वह है वे स्कारबोरो जा रहे हैं। मैं उससे मिलकर उसकी सेहत का जायजा लेना चाहती हूँ। मैं किसी और की बात पर भरोसा नहीं कर सकती, किसी की भी जाँच-पड़ताल इतनी बारीकी से नहीं होती। मैं यह भी चाहता था कि आप उससे मिलें।

अब तक नौकरों और बच्चों के साथ मेरा तालमेल बहुत अच्छा रहा है, फिर भी यह नीरस और एकाकी काम है। आप भी मेरी तरह समझ सकते हैं कि बिना साथी के कितना अकेलापन महसूस होता है। मैंने मैरी टेलर को आयरलैंड का काम सौंपने की पेशकश की थी, लेकिन उनकी परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि वे इसे स्वीकार नहीं कर सकतीं। उनके भाइयों में इतना स्वाभिमान है कि वे अपनी बहन के "बाहर जाने" के विचार से ही आहत हो जाते हैं। मुझे तो हाल ही तक यह एहसास भी नहीं था कि यह इतना बड़ा अपमान है।

आपके आने से मुझे बहुत लाभ हुआ। काश मैरी टेलर भी आतीं, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि उनके साथ समय कैसे निकालूँ। अलविदा। ईश्वर आपका भला करे।

‘सी. ब्रोंटे.

मैं बिल्कुल ठीक हूँ, और मैं अब भी रात बारह बजे से पहले सो जाता हूँ। मैं लोगों को यह नहीं बताता कि मैं अपनी स्थिति से असंतुष्ट हूँ। मैं आगे बढ़ सकता हूँ; शिकायत करने का कोई फायदा नहीं है। मैंने आयरलैंड जाने का मौका खो दिया है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 1 जुलाई, 1841।

प्रिय नेल, — जब मुझे तुम्हारा पत्र मिला तब मैं घर पर नहीं थी, लेकिन अब मैं घर पर हूँ और यहाँ स्वर्ग जैसा लग रहा है। मैं कल रात ही आई थी। जब मैंने छुट्टी माँगी, तो श्रीमती व्हाइट ने मुझे एक सप्ताह या दस दिन की छुट्टी दी, लेकिन मैंने तीन सप्ताह की छुट्टी माँगी और तुम्हारे जैसी दृढ़ता से अपनी बात पर अड़ी रही, बच्ची। मैं अपनी बात मनवाने में सफल रही, लेकिन मुझे ऐसी जीत पसंद नहीं आती। मैंने एक और बात मनवा ली है। तुमसे सर्वसम्मति से अनुरोध है कि अगले मंगलवार को यहाँ आओ और जितना हो सके उतना रुको। चाची बहुत खुश हैं। मुझे लंबा पत्र लिखने की

ज़रूरत नहीं है। — अलविदा, प्रिय नेल।

'सी. बी.

नोट - ऐनी से मिलने का मौका मुझसे छिन गया है। वह वापस "मिस्र की धरती और गुलामी के घर" चली गई है। और, छोटा काला टॉम भी मर गया है। हर प्याले में, चाहे कितना भी मीठा क्यों न हो, कड़वाहट की एक बूंद जरूर होती है। शायद तुम काले टॉम की पहचान पता लगाने में असमर्थ हो, लेकिन चिंता मत करो, तुम्हारे आने पर मैं तुम्हें बता दूँगा। रखवाला पहले की तरह ही ठीक है, बड़ा और गंभीर। मैं लिखने के लिए बहुत खुश हूँ। आओ, आओ, बच्ची।

ऐसा लगता है कि इसी छुट्टी के दौरान उनके अपने स्कूल के संबंध में संकल्प ने अंतिम रूप ले लिया था। मिस वूलर ने ड्यूसबरी मूर को छोड़ने की बात कही - क्या शार्लोट और एमिली को इसे ले लेना चाहिए? शार्लोट की वहाँ हुई बीमारी की यादों ने इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक में दे दिया, और ब्रसेल्स का मुद्दा प्रमुखता से सामने आने लगा।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

'अपरवुड हाउस, 17 अक्टूबर, 1841।

प्रिय नेल, — जब भी मैं पत्र लिखने में थोड़ी सी भी चूक कर देती हूँ, तो तुम्हारा मुझे ताना मारना बड़ी क्रूरता है। मुझे लगता है कि मैं तुम्हें यह समझा नहीं पा रही हूँ कि मेरे पास मिस हैरिस या श्रीमती मिल्स जितना समय नहीं है। मैं तुम्हें कभी जानबूझकर नज़रअंदाज़ नहीं करती। मैं ऐसा कर ही नहीं सकती, तुम छोटी सी चिढ़ाने वाली, विश्वासघाती औरत।

मेरी मनोदशा इतनी खराब है कि शब्दों में बयान नहीं की जा सकती। मैंने आज रात एक घिनौना, मसालेदार, बेस्वाद खाना खाया है, जिसने मुझे दुनिया से पूरी तरह से विरक्ति कर दी है। तो तुम घर आ रही हो, है ना? फिर मुझसे लंबे पत्र की उम्मीद मत करना। फिलहाल तो मैं ड्यूसबरी मूर नहीं जा रही हूँ। मिस वूलर का प्रस्ताव तो अच्छा और दोस्ताना था, और मेरी नज़र में इससे उनकी सारी या लगभग सारी कमियाँ दूर हो जाती हैं; लेकिन ड्यूसबरी मूर मेरे लिए एक ज़हरीली जगह है; इसके अलावा, मैं कहीं और जाने के लिए बेताब हूँ। मुझे लगता है, नेल, मुझे ब्रसेल्स जाने का मौका दिख रहा है। मैरी टेलर ने मुझे यह कदम उठाने की सलाह दी है। मेरा मन और भावनाएँ मुझे ऐसा करने के लिए प्रेरित कर रही हैं। मैं इससे ज़्यादा एक शब्द भी

नहीं लिख सकती।

'सी. बी.'

मिस एमिली जे. ब्रोंटे को

'अपरवुड हाउस, रॉडन,

'7 नवंबर, 1841.

प्रिय ई. जे., — यह मत समझिए कि यह पत्र उस विषय पर कोई जानकारी देने के उद्देश्य से लिखा गया है जो हम दोनों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है: मैंने पत्र लिखे हैं, लेकिन अभी तक मुझे कोई जवाब नहीं मिला है। बेल्जियम बहुत दूर है, और हर जगह लोगों को सही गति से काम करने के लिए प्रेरित करना मुश्किल है। मैरी टेलर कहती हैं कि हम जनवरी से पहले रवाना होने की शायद ही उम्मीद कर सकते हैं। मैंने ऐनी और ब्रैनवेल दोनों को पत्र लिखने की इच्छा और इरादा किया था, लेकिन वास्तव में मुझे समय नहीं मिला।

'मुझे पता चला है कि श्री जेनकिंस को गलती से ब्रुसेल्स में ब्रिटिश कौंसुल कहा गया था; वे वास्तव में अंग्रेजी एपिस्कोपल पादरी हैं।'

मुझे लगता है कि शायद सबसे अच्छा यही होगा कि पापा उसे जल्द ही एक पत्र लिखें, लेकिन अभी नहीं। मैं आपको बता दूँगी कि यह कब किया जाना चाहिए, और यह भी कि उसमें क्या कहना सबसे अच्छा रहेगा। ड्यूसबरी मूर के लिए दुखी मत हो। तुम वहाँ के लिए बिल्कुल सही थे, और वास्तव में ऐनी भी। मिस वूलर ने पहले छह महीने तक दोनों में से किसी की भी बात नहीं सुनी।

'ऐनी को फिलहाल योजना में शामिल नहीं किया गया है, लेकिन अगर सब ठीक रहा तो मुझे पूरा भरोसा है कि अंत में उसे भी इसका पूरा लाभ मिलेगा। मैं सभी से आशा बनाए रखने का आग्रह करता हूँ। मुझे दिल से विश्वास है कि यह सबसे अच्छा कदम है, मेरी एकमात्र चिंता यह है कि कहीं दूसरे लोग संदेह न करें और निराश न हो जाएँ। ब्रुसेल्स में हमारा आधा साल पूरा होने से पहले ही, आपको और मुझे विदेश में नौकरी ढूंढनी होगी। अगर सब ठीक रहा और हम और घर वाले स्वस्थ रहे, तो मेरा बारह महीने तक घर लौटने का कोई इरादा नहीं है।'

मैं शायद 15 या 17 दिसंबर के आसपास अपरवुड से विदा लूँगी। ऐनी कब लौटने की बात कर रही है? वह कैसी है? डब्ल्यू. डब्ल्यू. इन सब बातों पर क्या कहते हैं? पापा और आंटी कैसे हैं, क्या वे उदास हैं? ऐनी और मार्था का रिश्ता कैसा रहेगा?

क्या डब्ल्यू. डब्ल्यू. को हाल ही में देखा या सुना गया है? सभी को प्यार। जल्दी लिखना। — अलविदा।

'सी. ब्रोंटे.

'मैं ठीक हूं।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

'रॉवडन, 10 दिसंबर, 1841।

मेरी प्यारी एलेन, मैरी टेलर से मुझे पता चला कि तुम घर आ गई हो और बीमार भी थी। अगर तुम आराम से लिख सको, तो मुझे अपनी बीमारी से पहले की भावनाएँ और उसके प्रभाव भी बता देना। मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ। मैरी टेलर ने बताया है कि तुम पहले जैसी ही दिख रही हो। मुझे उम्मीद है कि मैं दो या तीन हफ़्तों में हॉवर्थ वापस आ जाऊँगा। आशा है कि तब तुमसे मुलाक़ात हो जाएगी। मैं चाहूँगा कि तुम हॉवर्थ आओ, बजाय इसके कि मैं ब्रुकरॉयड जाऊँ। मेरी योजनाएँ धीरे-धीरे आगे बढ़ रही हैं और मुझे अभी तक यह निश्चित नहीं है कि मैं कहाँ जाऊँगा या अपरवुड हाउस छोड़ने के बाद क्या करूँगा। ब्रसेल्स अभी भी मेरा सपनों का घर है, लेकिन वहाँ पहुँचने से पहले समय और स्थान का एक लंबा सफ़र तय करना बाकी है। मुझे नहीं लगता कि मैं शैतो डी कोकलबर्ग जाऊँगा। मैंने एक कम खर्चीले होटल के बारे में सुना है। मैंने इतना ही लिखा था कि मुझे तुम्हारा पत्र मिला। मुझे उसे पाकर खुशी हुई। अपनी बीमारी के बारे में क्यों नहीं बताया? मैंने ये पत्र दो-तीन दिन पहले ही लिखने का सोचा था, लेकिन आजकल समय की बहुत कमी है। पिछले तीन दिनों से हम रात बारह या एक बजे सो रहे हैं। मुझे ये पत्र आज ही लिखना होगा, वरना तुम मुझे लापरवाह समझोगी। नई गवर्नेस, यानी जो आने वाली है, वो मेरे प्लान्स देखने आई थी, वगैरह। मेरी प्यारी एलेन, अलविदा। — यकीन मानो, दिल और आत्मा से, तुम्हारी सच्ची दोस्त।

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

17 दिसंबर, 1841।

मेरी प्यारी एलेन, मुझे अभी यह पक्का नहीं पता कि मैं अपरवुड कब छोड़ूंगा, लेकिन एक बात पक्की है, कि जब मैं जाऊंगा तो सीधे घर जाऊंगा। कहीं भी जाने से पहले हमारे भविष्य की योजनाओं के लिए कोई पक्की व्यवस्था करना बेहद ज़रूरी है।

मैं जानता हूं कि मैं तुमसे मिलना चाहता हूं, और यह भी जानता हूं कि जल्द ही तुमसे मिलने की मेरी इच्छा और आशा है। मुझे डर है कि तुम आते ही मुझे लापरवाही का आरोप लगाओगी, लेकिन मुझे पूरी उम्मीद है कि सोच-विचार करने के बाद तुम मुझे माफ कर दोगी। प्यारी एलेन, अगर आ सकती हो तो हॉवर्थ आ जाना, अगर नहीं आ सकती तो मैं कम से कम एक दिन के लिए ब्रुकरॉयड आने की कोशिश करूंगा, लेकिन इस पर निर्भर मत रहना – हॉवर्थ आ जाना। श्री जेनकिंस के पत्र के लिए धन्यवाद। तुम हमेशा दूसरों की सुविधा का ध्यान रखती हो, चाहे तुम खुद कितनी भी बीमार और दिखावटी क्यों न हो। मैं तुमसे कितना मिलना चाहता हूं, यह तुम नहीं जानती; लेकिन अगर मैं अभी ब्रुकरॉयड चला गया, तो घर वालों को बहुत निराशा होगी। मुझे क्रिसमस पर ब्रैनवेल से मिलने की कुछ उम्मीद है, और उसके बाद मैं उससे कब मिल पाऊँगी, यह मैं नहीं कह सकती। वह पिछले पाँच महीनों से घर पर नहीं है। — शुभ रात्रि, प्रिय एलेन।

'सी. बी.'

मिस मर्सी नुसे को

'रॉवडन, 17 दिसंबर।

मेरी प्रिय मिस मर्सी, – हालाँकि मैं बहुत व्यस्त हूँ, फिर भी मुझे आपके पत्र की दयालु और विनम्र सामग्री के लिए धन्यवाद देने का समय निकालना होगा। अगर मैं बिना किसी शर्त के आपका निमंत्रण स्वीकार कर लूँ, तो यह मेरे अपने भावों के सबसे अनुरूप होगा। लेकिन फिलहाल मैं इतना समय देना उचित नहीं समझता। अपरवुड से निकलते ही मुझे सीधे घर जाना है। उसके बाद मुझे ब्रुकरॉयड जाने का समय मिलेगा या नहीं, यह अभी पता नहीं – परिस्थितियाँ ही तय करेंगी। मैं इसके बजाय हॉवर्थ में एलेन से मिलना चाहता हूँ; हमारी मुलाकातें किसी भी तरह के न्याय के नाम पर नहीं होतीं। उसकी बीमारी के बारे में सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ – ईश्वर करे कि यह पहली और आखिरी बार हो जब उसे ऐसा दौरा पड़े! मुझे डर है कि एलेन ने सोचा होगा कि मैंने उसे लंबे और नियमित पत्र न लिखकर उसकी उपेक्षा की है। यह सोचकर मुझे बहुत दुख होता है कि उसे ऐसा लगा है – यह पूरी तरह निराधार है। मैं उसका महत्व जानता हूँ, और मैं किसी भी संभावित प्रतिफल के बदले उसका स्नेह नहीं खोना चाहता। अपनी माँ को मेरा नमस्कार कहना। मुझे उम्मीद है कि वह जल्द ही स्वस्थ हो जाएगी। — मेरी प्रिय मिस मर्सी, आपका हार्दिक धन्यवाद,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 10 जनवरी, 1842।

मेरी प्यारी एलेन, - क्या तुम यह पत्र मिलते ही मुझे लिखोगी और हॉवर्थ आने का अपना दिन तय करोगी? मैं क्रिसमस की पूर्व संध्या पर घर लौटी थी। मेरे और मेरे पूर्व मालिकों के बीच विदाई का दृश्य ऐसा था कि वहाँ रहते हुए मुझे जो बातें खटकती थीं, वे सब मिट गईं, लेकिन सच तो यह है कि पिछले छह महीनों में उन्होंने मुझसे बहुत ज़्यादा उम्मीदें रखीं। ऐन ने अपनी कठिन परिस्थिति में इतना अच्छा काम किया है कि उन्होंने उससे विनती की है कि वह उनके पास वापस आ जाए, भले ही थोड़े समय के लिए ही सही। मुझे लगभग लगता है कि वह वापस चली जाएगी, अगर हमें कोई अच्छा नौकर मिल जाए जो हमारा सारा काम कर दे। हमें लगभग चालीस-पचास साल की, अच्छे स्वभाव वाली, साफ-सुथरी और ईमानदार नौकरानी चाहिए। जब तुम आओगी तो तुम्हें ब्रसेल्स आदि के बारे में सब कुछ पता चल जाएगा। मिस्टर वेटमैन अभी भी यहीं हैं, बिल्कुल पहले जैसे। मुझे तुम दोनों की मुलाकात देखने की बहुत उत्सुकता है। मुझे पूरा यकीन है कि वह फिर से प्यार में पागल हो जाएंगे। आओ।

'सी. बी.'

अध्याय IV: हेगर बोर्डिंग स्कूल, ब्रुसेल्स

यदि शार्लोट ब्रोंटे को ब्रुसेल्स में कुछ समय बिताने की प्रेरणा न मिली होती, तो हमारे साहित्य ने विलेट नामक शक्तिशाली उपन्यास और विलक्षण मनमोहक प्रोफेसर को

खो दिया होता। यह प्रेरणा इस विश्वास से उत्पन्न हुई कि भाषाओं के बिना स्कूली शिक्षा पूरी तरह से निष्फल थी। मैरी और मार्था टेलर ब्रुसेल्स में अपने मित्रों के साथ ठहरी हुई थीं, और उन्होंने वहीं से शार्लोट को उपहार भेजे थे, जो उस समय अपरवुड हाउस में गवर्नेंस के पद पर कार्यरत थीं। शार्लोट ने अपनी चाची को कूटनीतिक पत्र लिखा, जिसका अंत बेहद संतोषजनक रहा। श्रीमती ब्रैनवेल (उस समय लगभग साठ वर्ष की थीं) ने अपनी भतीजियों के प्रति अच्छा व्यवहार किया, और यह तय हुआ कि शार्लोट और एमिली महाद्वीप जाएंगी, जबकि ऐनी थॉर्प ग्रीन में श्रीमती रॉबिन्सन के यहाँ गवर्नेंस का पद संभालेंगी। लेकिन ब्रुसेल्स के स्कूल पहली नज़र में बहुत संतोषजनक नहीं लगे। लिले में कुछ बेहतर होने की उम्मीद थी।

यह पत्र उस झिझक और संदेह के दौर में लिखा गया था। श्रीमती गैस्केल ने इसका केवल एक अंश ही प्रकाशित किया था।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

20 जनवरी, 1842।

प्रिय एलेन, मैं तुम्हारे दोस्तों के हॉवर्थ आने की अनुमति न देने के कारणों को पूरी तरह से नहीं समझ पा रहा हूँ; लेकिन जैसा कि अभी स्थिति है, और संभवतः अनिश्चित समय तक रहेगी, मेरे लिए ब्रुकरॉयड जाना असंभव है, इसलिए हिसाब-किताब उतना असंतुलित नहीं है जितना अन्यथा हो सकता था। हम तीन सप्ताह से भी कम समय में इंग्लैंड छोड़ने की उम्मीद कर रहे हैं, लेकिन अभी तक दिन निश्चित नहीं है, क्योंकि यह लंदन में रहने वाली एक फ्रांसीसी महिला, मैडम मार्ज़ियल्स की सुविधा पर निर्भर करेगा, जिनके साथ हमें यात्रा करनी है। हमारा गंतव्य स्थान बदल गया है। पापा को श्रीमान या बल्कि श्रीमती जेनकिंस से ब्रुसेल्स के फ्रांसीसी स्कूलों के बारे में एक प्रतिकूल जानकारी मिली, और आगे की पूछताछ पर, बैपटिस्ट नोएल और अन्य पादरियों द्वारा उत्तरी फ्रांस के लिले में एक संस्थान की सिफारिश की गई, और हमने वहीं जाने का निर्णय लिया है। प्रत्येक छात्र के लिए भोजन और केवल फ्रांसीसी भाषा के लिए पचास पाउंड का शुल्क है।

अलग कमरे के लिए अतिरिक्त राशि देने पर चाची की सहमति को मैंने उनकी दयालुता समझा। कई मायनों में यह हमारे लिए एक बड़ा सौभाग्य होगा। ब्रसेल्स से लिले जाने का मुझे कई कारणों से अफसोस है, खासकर इसलिए कि मैं मार्था टेलर से नहीं मिल पाऊँगी। मैरी ने मुझे जानकारी देने में अथक प्रयास किया है। उन्होंने

इसके लिए कोई कसर नहीं छोड़ी और न ही कोई खर्चा किया। मैरी अनमोल हैं। वास्तव में, मेरे दो दोस्त हैं - आप और वह - जो मेरे लिए पक्के और सच्चे हैं, जिनके विश्वास और निष्ठा में मुझे उतना ही दृढ़ विश्वास है जितना बाइबल में। मैंने आप दोनों को परेशान किया है, खासकर आपको; लेकिन आप हमेशा मुझे चिमटे से जलाकर रख देती हैं। मुझे हाल ही में ब्रसेल्स, लिले और लंदन को पत्र लिखने पड़े हैं। मुझे बहुत सारी कमीज़ें, नाइट गाउन, रूमाल और जेबें बनानी हैं, साथ ही कपड़े भी ठीक करने हैं। घर आने के बाद से मैं हर हफ्ते ब्रैनवेल से मिलने की उम्मीद करती रही हूँ, लेकिन वह अभी तक आ नहीं पाए हैं। हमें पूरी उम्मीद है कि वह अगले शनिवार को आएंगे। इन परिस्थितियों में मैं उनसे मिलने कैसे जा सकता हूँ? आप आग के पास बैठकर बातें करने की बातें करके मुझे बेचैन कर रहे हैं। यकीन मानिए, आने वाले कई महीनों तक हमें ऐसी कोई बातचीत करने का मौका नहीं मिलेगा। मेरे चेहरे पर बुढ़ापे के निशान दिखने लगे हैं, और जब आप मुझे अगली बार देखेंगे तो मैं टोपी और चश्मा पहने हुए ज़रूर मिलूंगा। — आपका स्नेही,

'सी. बी.'

यह श्री जेनकिंस ब्रुसेल्स स्थित ब्रिटिश दूतावास में पादरी थे, न कि वाणिज्य दूताधिकारी, जैसा कि शार्लोट ने पहले सोचा था। उनकी पत्नी का भाई हॉवर्थ के पड़ोस में रहने वाला एक पादरी था। श्री जेनकिंस, जिनके अंग्रेजी एपिस्कोपल चैपल में शार्लोट ब्रुसेल्स में अपने प्रवास के दौरान जाती थीं, ने अंततः रुए डी'इसाबेल में स्थित पेंशनैट हेगर की सिफारिश की। मैडम हेगर ने दोनों लड़कियों को विद्यार्थी के रूप में स्वीकार करते हुए पत्र लिखा, और उनके पिता फरवरी 1842 में उन्हें ब्रुसेल्स ले गए, जहाँ उन्होंने श्री जेनकिंस के घर पर एक रात बिताई और फिर हॉवर्थ लौट आए।

ब्रसेल्स में शार्लोट ब्रोंटे के जीवन को विलेट और द प्रोफेसर में पूर्ण सटीकता के साथ दर्शाया गया है। वास्तव में, स्थानीय परिवेश के दृष्टिकोण से, यह बात आज के उस आम आगंतुक के लिए स्पष्ट हो जाती है जो रू डी'इसाबेल में आता है। यह सच है कि घर को पृष्ठभूमि में स्थित शहर की कुछ इमारतों में शामिल करने के उद्देश्य से ध्वस्त कर दिया गया है, लेकिन आज भी कोई उन 'पुराने और विशाल फलों के पेड़ों' से नाशपाती खा सकता है जो पचास साल पहले शार्लोट और एमिली के समय में फलते-फूलते थे; कोई आज भी स्कूल के कमरों, लंबी छात्रावासों और 'बेलों से ढके बरसेउ' में घूम सकता है - अंदर और बाहर बहुत कम बदलाव हुआ है। यहाँ बीस

बिस्तरों वाला छात्रावास है, जिसके दो छोर के बिस्तर एमिली और शार्लोट के लिए आरक्षित हैं, केवल उन्हें ही अपनी उम्र या अंग्रेजी सनक के कारण अपने बिस्तरों को उन अठारह लड़कियों की निगाहों से परदे से ढकने का विशेषाधिकार प्राप्त है जो उनके साथ कमरा साझा करती थीं। प्रार्थना कक्ष में उस आले से क्रूस हटा दिया गया है जहाँ बच्चे हर सुबह प्रार्थना करते थे; लेकिन विलेट की एक प्रति हाथ में लेकर उस स्थान की हर विशेषता को फिर से जीवंत किया जा सकता है, जिसमें पास की एथेनी भी शामिल है, जिसकी छोटी खिड़की पेंशननेट के बगीचे और एले डिफेंडू की ओर खुलती है। इसी खिड़की से 'द प्रोफेसर' के मिस्टर क्रिम्सवर्थ खेलते हुए लड़कियों को देखते थे। वास्तव में, यहीं, रॉयल एथेनी में, एम. हेगर लैटिन के प्रोफेसर थे। इस प्रकार, बाहरी रूप से, पेंशननेट हेगर लगभग वैसा ही है जैसा शार्लोट और एमिली ब्रोंटे को फरवरी 1842 में दिखाई दिया था, जब वे पहली बार ब्रुसेल्स में आई थीं। विलेट की रू फॉसेट, 'द प्रोफेसर' की रू डी'इसाबेल, करर बेल के अनुभव की वास्तविक रू डी'इसाबेल है।

लेकिन इन कमरों और बगीचों में घूमने वाले लोगों के बारे में हम क्या कहेंगे— सौ से अधिक बच्चे, तीन-चार शिक्षिकाएँ, प्रोफेसर और उनकी पत्नी? यहाँ बहुत अटकलें लगाई गई हैं और वास्तविक तथ्यों को काफी हद तक गलत समझा गया है। शार्लोट और एमिली सीखने के लिए ब्रसेल्स गईं। उन्होंने उत्साह से पढ़ाई की। यह उनकी विदेश यात्रा का पहला अनुभव था, और यह उनके जीवन में बहुत देर से आया था, इसलिए वे उस व्यापक मानसिकता और अन्य देशों के रीति-रिवाजों के प्रति सहिष्णुता के साथ इसका अनुभव नहीं कर पाईं, जिसके बिना विदेश में एक अंग्रेज हमेशा एक अपराध माना जाता है। शार्लोट और एमिली को उस भूमि और लोगों से नफरत थी। उनका पालन-पोषण कट्टर प्रोटेस्टेंट के रूप में हुआ था। उनके पिता अल्स्टर के निवासी थे, और अपने समय के विवादों में उनका एकमात्र प्रयास कैथोलिक मुक्ति के प्रस्तावों पर हमला करना था। असहिष्णुता की इस विरासत के साथ, शार्लोट और एमिली अपने आस-पास मौजूद रोमनवाद का सामना कैसे कर सकती थीं? विलेट की कई तस्वीरों में यह स्पष्ट हो जाता है कि वे इसका कितना कड़ा विरोध करती थीं।

शार्लोट ब्रुसेल्स में तीन महीने से रह रही थीं जब उनकी एक ऐसी मित्रता हुई जिसके लिए मैं उनके जीवन के इस प्रसंग में कुछ भी जोड़ने के लिए आभारी हूँ। मिस लेटिटिया व्हीलराइट, लोअर फिलिमोर प्लेस, केंसिंग्टन में रहने वाले एक डॉक्टर की

पाँच बेटियों में से एक थीं। डॉक्टर व्हीलराइट अपने स्वास्थ्य और बच्चों की शिक्षा के लिए ब्रुसेल्स गए थे। बेटियाँ पेंशननेट में दिन के समय बोर्डिंग करती थीं, लेकिन जब उनके माता-पिता राइन नदी की यात्रा पर होते थे, तो वे पूरे एक महीने या उससे अधिक समय तक घर में रहती थीं। अन्यथा उनका निवास रू रॉयल में होटल क्लूस्येनार के एक फ्लैट में था, और ब्रुसेल्स में अपने बाद के प्रवास के दौरान शार्लोट अक्सर उनसे मिलने जाती थीं। इस शुरुआती दौर में शार्लोट और एमिली अपनी किताबों में इतनी व्यस्त थीं कि वे मिलने-जुलने या ऐसी ही फालतू बातों के बारे में नहीं सोचती थीं, और यह भी स्वीकार करना होगा कि इस समय लेटिटिया व्हीलराइट को शार्लोट के आने के बदले में दिखने में अप्रिय एमिली को सह-अतिथि के रूप में स्वीकारना बहुत महंगा लगता होगा। मिस व्हीलराइट, जो स्वयं चौदह वर्ष की थीं जब उन्होंने पेंशनैट हेगर में प्रवेश लिया था, उन दो बहनों को याद करती हैं, जो दुबली-पतली और पीली-सी दिखती थीं, बगीचे में इधर-उधर टहलती रहती थीं, अकेली और बिना किसी दोस्त के। लैटिशिया को कक्षा में खड़े होकर उन सभी बेल्जियम की लड़कियों को कुछ तिरस्कार भरी निगाहों से देखते हुए देखकर ही शार्लोट ब्रोंटे उसकी ओर आकर्षित हुईं। बाद में मिस ब्रोंटे ने हंसते हुए अपनी सहेली से कहा, 'यह बिल्कुल अंग्रेजी जैसा था।' उस समय एक और अंग्रेजी लड़की थी जो साथ रहने लायक उम्र की थी; लेकिन मिस मारिया मिलर के साथ, जिन्हें शार्लोट ब्रोंटे ने जिनेवरा फैंसहावे के रूप में चित्रित किया है, उनकी समानताएं कम थीं। बाद के वर्षों में मिस मिलर, श्रीमती रॉबर्टसन बन गईं, जो किसी न किसी रूप में एक लेखक की पत्नी थीं।

मिस व्हीलराइट और उनकी जो बहनें अभी जीवित हैं, उनके लिए विलेट और द प्रोफेसर में पेंशननेट हेगर का जो वर्णन है, वह बिल्कुल सटीक है। अपनी घनी काली मूंछों और काले बालों के साथ, शाम को अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए कक्षा में प्रवेश करते हुए एम. हेगर एक जानी-पहचानी शख्सियत थे, और उनकी लगभग प्रतिभा के बराबर तीक्ष्ण बुद्धि ने व्हीलराइट बहनों को उतना ही प्रभावित किया था जितना कि ब्रोंटे बहनों को। वहीं, श्रीमती हेगर, दरवाजों के पीछे से और गलियारों को कक्षाओं से अलग करने वाले कांच के पर्दों से हमेशा झांकती रहती थीं, जिससे सभी अंग्रेजी विद्यार्थियों को लगातार चिढ़ होती थी। यह ताक-झांक और जासूसी शायद महाद्वीप की छात्राओं की एक निपुण कला है, न कि हमारी अपनी छात्राओं की। खैर, श्रीमती हेगर एक कुशल जासूस थीं, और सबसे निर्दोष काम या मनोरंजन के बीच भी

विद्यार्थी अचानक धुंध को चीरती हुई आंखों की एक जोड़ी को गायब होते हुए देख लेते थे। इस और इसी तरह की सौ छोटी-छोटी बातों ने दोनों पक्षों के बीच दुश्मनी को और बढ़ा दिया, जो कि अक्टूबर में शार्लोट और एमिली को अचानक अपनी चाची की मृत्यु के कारण घर वापस बुलाए जाने से पहले अभी शुरू ही हुई थी। मिस नुसे को उनके लौटने पर लिखे गए पत्र में स्थिति का पर्याप्त स्पष्टीकरण दिया गया है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 10 नवंबर, 1842।

मेरी प्यारी एलेन, — जब तुम्हारा पत्र आया, तब तक मैं इंग्लैंड नहीं लौटा था। हमें चाची की बीमारी की पहली खबर बुधवार, 2 नवंबर को मिली। हमने सीधे घर लौटने का फैसला किया। अगली सुबह एक दूसरे पत्र से हमें उनके निधन की सूचना मिली। हम रविवार को एंटवर्प से रवाना हुए; हमने दिन-रात यात्रा की और मंगलवार सुबह घर पहुंचे — और ज़ाहिर है, अंतिम संस्कार और बाकी सब कुछ हो चुका था। अब हम उन्हें कभी नहीं देख पाएंगे। पापा ठीक हैं। हमें ऐनी घर पर मिली; वह भी ठीक हैं। तुमने कहा कि तुम्हें लंबे समय से मेरा कोई पत्र नहीं मिला। मैंने तुम्हें तीन हफ्ते पहले लिखा था। जब तुम इस पत्र का जवाब दोगी, तो मैं तुम्हें विस्तार से लिखूंगा। चाची, मार्था टेलर और श्री वेटमैन अब इस दुनिया में नहीं हैं; सब कुछ कितना उदास और खाली लगता है। श्री वेटमैन की बीमारी बिल्कुल वैसी ही थी जैसी मार्था की थी — वे उतने ही समय तक बीमार रहे और उसी तरह उनका निधन हुआ। चाची को आंतरिक अवरोध था; वे भी दो हफ्ते तक बीमार रहीं।

अलविदा, मेरी प्यारी एलेन।

'सी. ब्रोंटे।'

जिस चाची की अचानक मृत्यु के कारण शार्लोट और एमिली ब्रोंटे को ब्रुसेल्स से हॉवर्थ आना पड़ा, वह स्वभाव से बहुत ही समझदार महिला रही होंगी। उन्होंने अपनी संपत्ति अपनी उन भतीजियों को दी जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। उनकी वसीयत को पढ़ना रोचक है, और वास्तव में यह देखा जा सकता है कि इससे श्रीमती गैस्केल और बाद के जीवनीकारों द्वारा जल्दबाजी में की गई एक-दो गलतियों को सुधारा जा सकता है, क्योंकि उन्होंने वसीयत की एक प्रति पर आवश्यक आधा गिनी खर्च नहीं किया था। वसीयत इस प्रकार है: —

यह जानकारी महामहिम के उच्च न्यायालय से संबद्ध यॉर्क स्थित जिला प्रोबेट

रजिस्ट्री से ली गई है।

इस जीवन में शांति और परलोक में अनंत महिमा और आनंद के लिए पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा पर भरोसा रखते हुए, मैं अपनी यह अंतिम वसीयत छोड़ता हूँ: यदि मेरी मृत्यु हॉवर्थ में हो, तो मैं अनुरोध करता हूँ कि मेरे अवशेषों को मेरी प्रिय बहन के अवशेषों के जितना संभव हो सके पास स्थित चर्च में रखा जाए; इसके अलावा, मैं चाहता हूँ कि मेरे सभी जायज़ ऋण और अंतिम संस्कार के खर्च मेरी संपत्ति से चुकाए जाएँ, और मेरा अंतिम संस्कार संयमित और शालीन तरीके से किया जाए। मैं अपना भारतीय वर्कबॉक्स अपनी भतीजी शार्लोट ब्रोंटे को देता हूँ; चीनी मिट्टी के ढक्कन वाला अपना वर्कबॉक्स अपनी भतीजी एमिली जेन ब्रोंटे को अपने हाथीदांत के पंखे के साथ देता हूँ; अपना जापानी ड्रेसिंग बॉक्स अपने भतीजे पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे को देता हूँ; अपनी भतीजी ऐनी ब्रोंटे को अपनी घड़ी और उससे संबंधित सभी चीजें देता हूँ। साथ ही, मेरा चश्मा और उसकी चेन, मेरी अंगूठियां, चांदी के चम्मच, किताबें, कपड़े आदि, मैं अपनी उपर्युक्त तीन भतीजियों, शार्लोट ब्रोंटे, एमिली जेन ब्रोंटे और ऐनी ब्रोंटे के बीच उनके पिता की इच्छानुसार बांटने के लिए छोड़ता हूँ। और मैं यह इच्छा करता/करती हूँ कि मेरे माल की बिक्री से प्राप्त होने वाली वह सारी धनराशि, जिसमें पच्चीस पाउंड स्टर्लिंग भी शामिल हैं, जो मेरी बहन किंग्स्टन को मेरे माल की बिक्री से प्राप्त होने वाली धनराशि में उसके हिस्से के बदले में पच्चीस पाउंड अग्रिम देने के परिणामस्वरूप मुझे प्राप्त हुई है, और जिसे पेनज़ेंस के पास चियांडोवर स्थित बोलिथो संस एंड कंपनी, एस्क्वायर के बैंक में जमा किया गया है, उपरोक्त राशियों और वस्तुओं के भुगतान और कटौती के बाद, किसी सुरक्षित बैंक में जमा कर दी जाए या अच्छी ज़मींदारी पर उधार दी जाए, और वहाँ मेरी चार भतीजियों, शार्लोट ब्रोंटे, एमिली जेन ब्रोंटे, ऐनी ब्रोंटे और एलिजाबेथ जेन किंग्स्टन के एकमात्र लाभ के लिए संचित की जाए; और यह धनराशि या धनराशियाँ, और मेरी जो भी अन्य संपत्ति हो, उनके बीच समान रूप से विभाजित की जाए जब उनमें से सबसे छोटी जीवित भतीजी इक्कीस वर्ष की आयु प्राप्त कर ले। और यदि मेरी इन चार भतीजियों में से एक या अधिक की मृत्यु हो जाती है, तो उनका हिस्सा जीवित बचे लोगों में बराबर बाँट दिया जाएगा; और यदि केवल एक ही जीवित रहती है, तो सारा हिस्सा उसी को मिलेगा। और यदि वे सभी इक्कीस वर्ष की आयु से पहले मर जाती हैं, तो उनका सारा हिस्सा मेरी बहन, ऐनी किंग्स्टन को दे दिया जाएगा; और यदि वह भी निर्धारित समय से

पहले मर जाती है, तो मैं चाहता हूँ कि जो कुछ भी उसका होना था, वह मेरे प्रिय भाई और बहनों के सभी जीवित बच्चों में बराबर बाँट दिया जाए। मैं अपने बहनोई, रेवरेंड पी. ब्रोंटे, ए.बी., जो वर्तमान में यॉर्कशायर के हॉवर्थ के पादरी हैं; रेवरेंड जॉन फेनेल, जो वर्तमान में हैलिफ़ैक्स के पास क्रॉस स्टोन के पादरी हैं; रेवरेंड थियोडोर ड्यूरी, जो यॉर्कशायर के कीघली के रेक्टर हैं; और उपरोक्त हॉवर्थ के चैपलरी में स्टैनबरी के श्री जॉर्ज टेलर को अपना निष्पादक नियुक्त करता हूँ। मेरे द्वारा, एलिजाबेथ ब्रैनवेल द्वारा लिखित, और दिनांक 30 अप्रैल, 1833 को हस्ताक्षरित, मुहरबंद और वितरित। गवाह उपस्थित: विलियम ब्राउन, जॉन टूटिल, विलियम ब्राउन जूनियर।

28 दिसंबर, 1842 को यॉर्क काउंटी के ब्रैडफोर्ड पैरिश में स्थित हॉवर्थ की निवासी, अविवाहित एलिजाबेथ ब्रैनवेल (जिनकी यॉर्क प्रांत में वैधानिक संपत्ति थी) की वसीयत को यॉर्क की विशेषाधिकार अदालत में प्रमाणित किया गया। मृतक के वसीयतनामे को रेवरेंड पैट्रिक ब्रोंटे, क्लर्क और बहनोई, और जॉर्ज टेलर, दो ऐसे निष्पादकों द्वारा प्रमाणित किया गया जिन्हें प्रशासन सौंपा गया था (रेवरेंड थियोडोर ड्यूरी, एक अन्य निष्पादक, ने त्याग दिया था), जिन्होंने पहले विधिवत रूप से प्रशासन करने की शपथ ली थी।

1500 पाउंड से कम मूल्य की संपत्तियां शपथ के दायरे में आती हैं।

वसीयतकर्ता की मृत्यु 29 अक्टूबर 1842 को हुई।

अब श्रीमती गैस्केल की बात सुनिए: —

अपनी मितव्ययिता और त्याग के बल पर अर्जित की गई छोटी सी संपत्ति उन्होंने अपनी भतीजियों को वसीयत में दे दी। उनके प्रियतम ब्रैनवेल को भी उनका हिस्सा मिलना था, लेकिन उनके फिजूलखर्ची से वह भली-भांति परेशान थीं, इसलिए वसीयत में उनका नाम शामिल नहीं किया गया।

इस वसीयत को पढ़ने से पता चलता है कि यह 1833 में लिखी गई थी, ब्रैनवेल के लंदन की पहली यात्रा से पहले, और जब, जैसा कि उनके पूरे परिवार का मानना था, वे एक कलाकार के रूप में प्रसिद्धि और धन की राह पर अग्रसर थे। बुज़ुर्ग महिला को निश्चित रूप से लगा होगा कि लड़का अपना ख्याल रख सकेगा। कॉर्नवाल में उनकी अन्य भतीजियाँ भी थीं, लेकिन पेनज़ेंस में उनके मित्रों और रिश्तेदारों की सहानुभूति के चलते, एलिज़ाबेथ जेन किंग्स्टन, जिन्हें सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, को भी हिस्सा मिलना था। अगर किंग्स्टन, उनकी माँ और ब्रोंटे परिवार की सभी बेटियाँ उनसे

पहले मर जातीं, तो ब्रैनवेल को पेनज़ेंस में रहने वाले अपने चचेरे भाइयों के साथ संपत्ति बाँटनी पड़ती, जिनमें से दो अभी भी जीवित हैं। किसी भी स्थिति में, ब्रैनवेल का नाम तो लिखा ही गया था, और उन्हें 'मेरा जापानी ड्रेसिंग बॉक्स' मिला, चाहे उसकी कीमत कुछ भी रही हो।

पहले से प्रकाशित पत्रों के अतिरिक्त, तीन या चार पत्र शार्लोट ने मिस ब्रैनवेल की मृत्यु और ब्रुसेल्स लौटने के बीच के अंतराल में अपनी सहेली को लिखे थे; और उन्होंने ब्रुकरायड में मिस नुसे से मुलाकात की, और उन्होंने भी उनसे मुलाकात की।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 20 नवंबर, 1842।

प्रिय एलेन, आशा है कि अब आपके भाई की सेहत में काफी सुधार हो गया होगा और आपको उनके पास लगातार आने की ज़रूरत नहीं होगी। पापा ने आपको उनका प्रणाम कहा है और उनका कहना है कि अगर आप कुछ समय के लिए हॉवर्थ में हमारे साथ रहें तो उन्हें बहुत खुशी होगी। क्या आप अगले शुक्रवार को आ सकती हैं? मैंने इतनी जल्दी तारीख इसलिए बताई है क्योंकि ऐनी सोमवार को यॉर्क वापस जा रही है और जाने से पहले वह आपसे मिलना चाहती है। मुझे लगता है कि आपके भाई का स्वभाव इतना अच्छा है कि उन्हें आपके आने से कोई आपत्ति नहीं होगी। इस दुनिया में खुशियाँ बहुत कम हैं और इतने लंबे समय के बाद आपसे और मुझसे दोबारा मिलने के सुख से वंचित करना सचमुच अन्याय होगा। हमें उदास या निराश देखकर घबराइएगा मत। हम सब पहले जैसे ही हैं। आपको हमारे व्यवहार में कोई बदलाव नहीं दिखेगा। कृपया तुरंत जवाब दीजिए।

आपकी बहन और माता को मेरा प्यार और शुभकामनाएं।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 25 नवंबर, 1842।

मेरी प्यारी एलेन, मुझे उम्मीद है कि तुम्हारा निमंत्रण सचमुच दिल से था, क्योंकि मैं इसे स्वीकार करने का इरादा रखता हूँ। मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ, और चूंकि कुछ हफ्तों में शायद मैं फिर से इंग्लैंड छोड़ दूँगा, इसलिए मैं ज्यादा नखरे नहीं दिखाऊँगा और इस मौके को हाथ से जाने नहीं दूँगा। मुझे लगता है कि ब्रुकरॉयड में किसी बीमार व्यक्ति के रहते हुए किसी मेहमान का आना ठीक नहीं होगा - हालांकि, मैं ऐसी किसी

भी सलाह को नहीं मानता। ऐनी मंगलवार को सुबह 6 बजे हॉवर्थ से रवाना होगी, और हम साढ़े आठ बजे तक ब्रैडफोर्ड पहुँच जाएँगे। कई कारण हैं जिनकी वजह से मैं चाहता था कि तुम हॉवर्थ आओ, लेकिन जैसा कि लगता है कि हमेशा कोई न कोई बाधा आ ही जाती है, इसलिए मैं औपचारिकता, या अहंकार, या जो भी हो, उसे दरकिनार कर, मुहम्मद की तरह उस पहाड़ पर जाऊँगा जो मेरे पास नहीं आ सकता। गाड़ी ब्रैडफोर्ड के बॉलिंग ग्रीन इन में रुकेगी। अपनी बहन और माँ को मेरा प्यार देना।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 10 जनवरी, 1843।

प्रिय नेल, — यह एक अजीब स्थिति है कि मुझे पत्र लिखना पड़ रहा है और मेरे पास कहने को कुछ भी पढ़ने लायक नहीं है। मुझे खुशी है कि तुम सुरक्षित घर पहुँच गई। मुझे दो पत्र लिखने के लिए तुम सचमुच एक अच्छी लड़की हो, खासकर जब वे इतने लंबे थे। ब्रैनवेल जानना चाहता है कि जब तुम परिवार के हर सदस्य को विशेष रूप से अपना अभिवादन भेजती हो, तो तुम उसका ज़िक्र क्यों नहीं करती। वह जानना चाहता है कि क्या उसने तुम्हें किसी बात से नाराज़ किया है, या क्या किसी युवती के लिए घर के पुरुषों का ज़िक्र करना अनुचित माना जाता है। तुम्हारे जाने के बाद से हम एक बार खुले मैदान में घूमने गए थे। हम कीघली गए थे, जहाँ हमारी मुलाकात एक परिचित से हुई, जिसने हमें देखकर हैरानी जताई और जब उसकी साँसें सामान्य हुईं, तो उसने बताया कि उसने सुना था कि मैं मर गया हूँ और मुझे दफना दिया गया है।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 15 जनवरी, 1843।

प्रिय नेल, मलमल का रोल पहुँचाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। पिछले शनिवार को मुझे दूसरा उपहार मिला, जिसके लिए आपको बहुत सज़ा मिलनी चाहिए। मैं ब्रैनवेल को आपका संदेश पहुँचा दूँगी। आपने अपनी बाइबिल छोड़ दी है - मैं उसे कैसे भेजूँ? मुझे ठीक-ठीक याद नहीं कि मैं किस दिन घर से निकलूँगी, लेकिन इस महीने के आखिरी सप्ताह में। क्या आप मेरे साथ चल रही हैं? आपने बिरस्टॉल के जुलूस में जो पोशाक पहनी है, वह मुझे बहुत पसंद आई। मुझे लगता है आपने गुलाबी पेटीकोट, काली जैकेट और गुलाबों का हार कहा था - बहुत सुंदर! बदलाव के लिए मैं

आपको काला कोट, मखमली स्टॉकिंग और वेस्टकोट, सफेद पैंट और स्मार्ट बूट पहनने की सलाह दूँगी। पता: रू डी'इसाबेल। मुझे फिर से लिखना, शाबाश, बहुत जल्द। आपकी माँ और बहन को मेरा प्रणाम।

'सी. ब्रोंटे।'

इसके बाद वह फिर से ब्रुसेल्स में है, जैसा कि निम्नलिखित पत्र से पता चलता है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

ब्रुसेल्स, 30 जनवरी, 1843।

प्रिय एलेन, मैं पिछले शुक्रवार को सुबह नौ बजे लीड्स से लंदन के लिए रवाना हुई; देरी के कारण हम रात दस बजे तक लंदन नहीं पहुँच पाए—निर्धारित समय से दो घंटे देरी से। यूस्टन स्क्वायर पहुँचते ही मैंने एक टैक्सी ली और तुरंत लंदन ब्रिज घाट चली गई। जहाज़ उसी घाट पर खड़ा था, और मैं उसी रात जहाज़ पर सवार हो गई। अगली सुबह हम रवाना हुए। हमारी यात्रा सुखद और तेज़ रही, और हम अगली सुबह सात बजे ओस्टेंड पहुँचे। मैंने बारह बजे ट्रेन ली और शाम सात बजे रू डी'इसाबेल पहुँच गई। मैडम हेगर ने मेरा बड़े स्नेह से स्वागत किया। तीन दिनों की यात्रा की लगातार उत्तेजना से मैं अभी भी थकी हुई हूँ। कोई दुर्घटना नहीं हुई, लेकिन थोड़ी चिंता ज़रूर है। मिस डिक्सन ने आज दोपहर फोन किया था। मैरी टेलर ने उन्हें बताया था कि मैं जनवरी के आखिरी सप्ताह में ब्रुसेल्स में होऊँगी। मैं रविवार को वहाँ जा रही हूँ, ईश्वर की कृपा से। पता— मिस ब्रोंटे, मैडम हेगर के घर, 32 रू डी'इसाबेल, ब्रुसेल्स। - अलविदा दोस्त।

'सी. बी.'

शार्लोट ब्रोंटे की ब्रुसेल्स की इस दूसरी यात्रा ने कई अटकलों को जन्म दिया है, जिनमें से कुछ सुखद नहीं हैं। इस बात को सीधे-सीधे स्वीकार करना ही बेहतर है, क्योंकि कई बार यह संकेत दिया गया है कि शार्लोट ब्रोंटे, एम. हेगर से प्रेम करती थीं, ठीक वैसे ही जैसे उनकी आदर्श लूसी स्नो, पॉल इमैनुएल से प्रेम करती थीं। यह धारणा, जो पूरी तरह निराधार है, के पक्ष में कुछ तर्कसंगत बिंदु भी हैं, जिनमें से एक स्पष्ट कारण शार्लोट ब्रोंटे की रचनाओं की हर पंक्ति में आत्मकथात्मकता का भाव देखना है। फिर मिस नुसे को लिखे एक मुद्रित पत्र का एक अंश है जिसे इस सुझाव को पुष्ट करने के लिए उद्धृत किया गया है: 'चाची की मृत्यु के बाद, मैं अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध ब्रुसेल्स लौटी, उस समय जो एक अप्रतिरोध्य आवेग प्रतीत हुआ, उसी से

प्रेरित होकर। मुझे अपनी स्वार्थी मूर्खता के लिए दो साल से अधिक के सुख और मन की शांति से पूरी तरह वंचित रहने की सजा मिली।'

दुनियादारी जानने वाले और तथ्यों से अनभिज्ञ व्यक्ति के लिए यह मान लेना पूरी तरह से क्षम्य है कि इन दो वर्षों के दौरान शार्लोट ब्रोंटे का हृदय अपने प्रोफेसर के प्रति अटूट प्रेम से भरा हुआ था - निस्संदेह संयमित, जैसा कि सबसे आलोचक भी मानते हैं, लेकिन इतना स्पष्ट था कि मैडम हेगर की ईर्ष्या और दुर्भावना को आकर्षित कर सके। यह स्वीकार करना होगा कि मैडम हेगर और उनके परिवार ने इस धारणा को कायम रखा। जब श्रीमती गैस्केल उनसे रू डी'इसाबेल में मिलने आईं तो मैडम हेगर ने उनसे मिलने से इनकार कर दिया; और उनकी बेटियाँ आपको बताएंगी कि उनके पिता ने मिस ब्रोंटे के साथ अपना पत्राचार बंद कर दिया क्योंकि उनकी पसंदीदा अंग्रेजी छात्रा ने अत्यधिक प्रेम का प्रदर्शन किया था। इस विषय पर हाल ही में प्रकाशित एक निबंध के अनुसार, 'यॉर्कशायर लौटने के बाद उनका लगाव उनके बार-बार लिखे गए पत्रों में इस लहजे में व्यक्त किया गया था कि उनके ब्रसेल्स के मित्रों ने इसे न केवल विवेकपूर्ण बल्कि दयालुतापूर्ण भी समझा।' उन्हें चेतावनी दी गई थी कि इन पत्रों में झलकने वाले उत्साह को कम करके तर्कसंगतता से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। उन्हें यह भी सलाह दी गई थी कि वे छह महीने में केवल एक बार पत्र लिखें, और फिर अपने पत्रों का विषय अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य तक सीमित रखें, साथ ही अपनी परिस्थितियों और कामों का सीधा-सादा विवरण दें। अब इन सब बातों का मैं बिना किसी संकोच के खंडन करता हूँ, और यह खंडन एकमात्र उपलब्ध स्वतंत्र प्रमाण पर आधारित है। मिस लेटिटिया व्हीलराइट और उनकी बहनों ने ब्रसेल्स में अपने इस दूसरे प्रवास के दौरान शार्लोट ब्रोंटे को कई बार देखा था, और उनकी कहानी बिल्कुल अलग है। शार्लोट की वह आशंका, जो बाद में उनके मन पर भारी पड़ी, इस तथ्य के कारण थी कि उन्होंने अपने पिता को एक अति-उत्साही पादरी की लुभावनी संगति से लगभग असुरक्षित छोड़ दिया था। उस समय उन्होंने अत्यधिक मात्रा में व्हिस्की पी, जिससे शार्लोट के घर लौटने ने उन्हें शीघ्र ही बचा लिया।

मैडम हेगर अपने जीवन के अंतिम वर्षों में शार्लोट ब्रोंटे से सचमुच नफरत करती थीं। यह कोई असामान्य बात नहीं है, जब हम याद करते हैं कि मैडम ज़ोराइड रॉयटर और मैडम बेक के किरदारों में उस दुर्भाग्यशाली महिला को किस तरह हमेशा के लिए अपमानित किया गया है। लेकिन इन तीखे चित्रणों की रचनाकार के प्रति न्याय करते

हुए यह उल्लेख किया जा सकता है कि शार्लोट ब्रोंटे ने विलेट को उस शहर में लोकप्रिय होने से रोकने के लिए हर संभव सावधानी बरती, जिसने इसे प्रेरित किया था। उन्होंने मिस व्हीलराइट को बताया, जिनसे स्वाभाविक रूप से, लंदन यात्राओं के दौरान, वे अक्सर ब्रसेल्स के जीवन पर चर्चा करती थीं, कि उन्हें यह आश्वासन मिला था कि इसका कोई अनुवाद नहीं होगा और यह पुस्तक कभी भी फ्रेंच भाषा में प्रकाशित नहीं होगी। इसलिए, इस बात के लिए शार्लोट ब्रोंटे को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता कि उनकी मृत्यु के तुरंत बाद यह उपन्यास मैडम हेगर द्वारा समझी जाने वाली एकमात्र भाषा में प्रकाशित हुआ।

मिस व्हीलराइट ने मुझे बताया कि शार्लोट ब्रोंटे, उनके सभी शिष्यों की तरह, एम. हेगर की बहुत प्रशंसा करती थीं। वास्तव में, शार्लोट की पहली छाप सुखद नहीं थी: 'वे वाक्पटुता के प्रोफेसर हैं, बुद्धि के मामले में तो बहुत शक्तिशाली हैं, लेकिन स्वभाव से बेहद गुस्सैल और चिड़चिड़े हैं; एक छोटे कद के काले व्यक्ति हैं, जिनके चेहरे के भाव बदलते रहते हैं। कभी वे किसी पागल बिल्ली जैसे दिखते हैं, कभी किसी उन्मादी लकड़बग्घे जैसे; कभी-कभी, लेकिन बहुत कम ही, वे इन खतरनाक आकर्षणों को त्याग देते हैं और सौम्य और सज्जन व्यक्ति के स्वभाव से सौ डिग्री दूर एक अलग ही रूप धारण कर लेते हैं।' लेकिन वे शार्लोट पर विशेष ध्यान देते थे; और चूंकि वे पहले वास्तव में बुद्धिमान व्यक्ति थे जिनसे वह मिली थीं, यानी पहले व्यक्ति जिनके बौद्धिक हित थे - क्योंकि हम जानते हैं कि वे अपने पड़ोस के पादरियों से कितनी घृणा करती थीं - इसलिए वे उनके साथ वाद-विवाद करने के हर अवसर का आनंद लेती थीं, क्योंकि शार्लोट को, ऐसा कहा जा सकता है, आयरिश लोगों का वाद-विवाद का प्रेम विरासत में मिला था। इंग्लैंड लौटने के कुछ समय बाद, जब शार्लोट अपनी प्रसिद्धि के चरम पर थीं, तब उनकी मुलाकात लंदन में अपनी ब्रुसेल्स की सहपाठी से हुई। मिस व्हीलराइट ने उनसे पूछा कि क्या वे अब भी एम. हेगर के साथ पत्र व्यवहार करती हैं। शार्लोट ने उत्तर दिया कि उन्होंने ऐसा करना बंद कर दिया है। एम. हेगर ने एक पत्र में उल्लेख किया था कि उनकी पत्नी को यह पत्र व्यवहार पसंद नहीं था, इसलिए उन्होंने शार्लोट से कहा कि वे अपने पत्र रॉयल एथेनी के पते पर भेजें, जहाँ, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, वे लड़कों को पढ़ाते थे। शार्लोट ने अपनी सहेली से कहा, 'मैंने तुरंत पत्र लिखना बंद कर दिया। जब मुझे पता चला कि उनकी पत्नी को यह पसंद नहीं है, तो मैं उनके साथ पत्र लिखने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी; निश्चित रूप से मैं

उनकी जानकारी के बिना पत्र नहीं लिखती।' मिस व्हीलराइट आगे कहती हैं, 'उन्होंने यह बात उसी ईमानदारी से कही जो उनके हर कथन में झलकती थी, और मुझे उन पर संदेह करने की बजाय खुद पर संदेह करना चाहिए था।' तो फिर, शार्लोट ब्रोंटे के प्रशंसकों के मन से इस बेतुके और अपमानजनक आरोप को हमेशा के लिए मिटा दिया जाए, यदि वास्तव में यह कभी उनके मन में बैठा भी हो।

ब्रसेल्स की अपनी पहली यात्रा के दौरान शार्लोट ने रू रॉयल में व्हीलराइट परिवार से मुलाकात नहीं की थी। उन्हें एमिली का साथ ही पर्याप्त लगा था, और एमिली व्हीलराइट परिवार में इतनी लोकप्रिय नहीं थीं कि उनका स्वागत किया जाता। वे उनकी बुद्धिमत्ता को तो मानते थे, लेकिन उन्हें कठोर, निर्दयी और रूखे स्वभाव की समझते थे। हम जानते हैं कि वह आत्म-संयमित और अपने पैतृक क्षेत्र के लिए तरसती थीं। यह बात दस साल की उस बच्ची को स्पष्ट नहीं थी, जो व्हीलराइट बच्चों में सबसे छोटी थी और जिसे खेलने के समय में एमिली से प्रतिदिन संगीत की शिक्षा लेनी पड़ती थी। हालांकि, जब शार्लोट अकेले ब्रसेल्स लौटीं, तो उनका दो-तीन अंग्रेज़ परिवारों में हार्दिक स्वागत किया गया, जिनमें मिस्टर डिक्सन, रेवरेंड मिस्टर जेनकिंस और डॉ. व्हीलराइट के परिवार शामिल थे। वह कभी-कभी रविवार व्हीलराइट बच्चों के साथ बिताती थीं, और उनके साथ कभी-कभी उस अंग्रेज़ी एपिस्कोपल चर्च में जाती थीं, जहाँ व्हीलराइट परिवार जाता था और जिसके पादरी मिस्टर ड्रूरी थे। जब डॉ. व्हीलराइट मई में अपनी पत्नी को राइन नदी की यात्रा पर ले गए, तो उन्होंने अपने चार बच्चों को - जिनमें से एक छोटी बच्ची की पिछले नवंबर में ब्रुसेल्स में सात साल की उम्र में मृत्यु हो गई थी - पेंशननेट में मैडम हेगर की देखभाल में और शार्लोट की सीधी देखरेख में छोड़ दिया।

उस दौर में उनके जीवन में भरपूर खुशियाँ थीं। वे जर्मन भाषा सीख रही थीं। वे एम. हेगर और उनके बहनोई एम. चैपल को अंग्रेजी पढ़ाती थीं। वे कार्निवल में गईं और उन्होंने इसे 'विशाल भीड़ और समग्र उल्लास को देखकर उत्साहवर्धक' बताया। वे लिखती हैं, 'जब भी मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, अपनी वर्तमान स्थिति की तुलना अपने अतीत से करती हूँ, यहाँ अपनी स्थिति की तुलना श्रीमती सिडगविक या श्रीमती व्हाइट के यहाँ की स्थिति से करती हूँ, तो मैं आभारी महसूस करती हूँ।'

अपने भाई को लिखे एक पत्र में हमें इस कहानी का एक काला पक्ष देखने को मिलता है। इसमें लिखी बातों के अलावा भी कई बातें उजागर होती हैं। ब्रैनवेल को

लिखे इस पत्र में, जो मुझे अब तक मिला है (बचपन में लिखे एक पत्र को छोड़कर), यह स्पष्ट होता है कि भाई-बहन के बीच बहुत ही गोपनीय संबंध थे। कम से कम अब तक तो ब्रैनवेल के व्यवहार से उनके भविष्य को लेकर कोई आशंका नहीं थी, और उनकी चाची की वसीयत में उन्हें कोई खास स्थान न मिलना स्पष्ट रूप से किसी दुराचार के कारण नहीं था। ब्रैनवेल अब अपनी बहन ऐनी के साथ एक ही छत के नीचे रह रहे थे, क्योंकि उन्हें यॉर्क के पास थॉर्प ग्रीन में युवा एडमंड रॉबिन्सन के शिक्षक के रूप में नियुक्ति मिल गई थी, जहाँ ऐनी गवर्नेस थीं। पत्र पर हस्ताक्षर नहीं हैं, और अंत में मज़ाकिया अंदाज़ में 'योरन' लिखा है; और इसी पत्र पर ऐनी के लिए लिखे एक अंतिम संदेश के बाद ये अक्षर लिखे गए हैं।

ब्रैनवेल ब्रोंटे को

ब्रुसेल्स, 1 मई, 1843।

प्रिय ब्रैनवेल, मैंने सुना है कि आपने मुझे पत्र लिखा है। लेकिन हमेशा की तरह, यह पत्र मुझे प्राप्त नहीं हुआ, जिसके लिए मैं बहुत दुखी हूँ, क्योंकि मैं आपसे संपर्क करने के लिए बहुत उत्सुक थी। क्या आपने सही पता लिखा है और अंग्रेजी डाक शुल्क, 1 शिलिंग 6 पेंस, का भुगतान किया है? इसके बिना पत्र आगे नहीं भेजे जाते। मैंने पापा से एक-दो दिन पहले बात की थी। घर पर सब कुछ ठीक-ठाक लग रहा है। मुझे केवल इस बात का दुख है कि एमिली इतनी अकेली है; लेकिन खैर, आप और ऐनी जल्द ही छुट्टियों के लिए लौट रहे हैं, जिससे घर में कुछ समय के लिए रौनक आ जाएगी। क्या आपका स्वास्थ्य और मन बेहतर है, और क्या ऐनी भी ठीक है? मैंने सुना है कि पापा आपसे मिलने आए थे। क्या वे खुश और स्वस्थ लग रहे थे? जब आप मुझे पत्र लिखें तो इन सवालों के जवाब जरूर दें, क्योंकि मैं जानना चाहती हूँ। साथ ही, मुझे अपने शिष्य और परिवार के बाकी सदस्यों के बारे में भी विस्तार से बताएं। मुझे सामान्य तौर पर यह आश्वासन मिला है कि आप ठीक हैं और आपकी छवि अच्छी है, लेकिन मैं विस्तृत जानकारी जानना चाहता हूं।

मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ और हमेशा की तरह अपनी दिनचर्या में लगा हुआ हूँ। लेकिन मुझे महसूस हो रहा है कि मैं बहुत ही निराशावादी और चिड़चिड़ा होता जा रहा हूँ। आप कहेंगे कि यह कोई नई बात नहीं है, और आपने मुझे कभी परोपकार और मधुरता जैसे विपरीत गुणों से युक्त नहीं देखा। दास इस्त वार (जिसका अनुवाद है, यह सच है); लेकिन सच्चाई यह है कि यहाँ के लोग बिल्कुल भी अच्छे नहीं हैं। इस

घर में प्रतिदिन आने वाले 120 लोगों में से, मुझे केवल एक या दो ही ऐसे लोग दिखाई देते हैं जो सम्मान के पात्र हैं। यह मेरी मूर्खतापूर्ण नखरेबाजी के कारण नहीं है, बल्कि उनमें अच्छे गुणों की कमी के कारण है। उनमें न तो बुद्धि है, न शिष्टाचार, न अच्छा स्वभाव, न ही सहानुभूति। वे कुछ भी नहीं हैं। मैं उनसे नफरत नहीं करता - नफरत करना तो बहुत हल्का शब्द होगा। उनमें स्वयं कोई भावनाएँ नहीं हैं और न ही वे किसी में भावनाएँ जगाते हैं। लेकिन हर दिन कुछ परवाह न करने, किसी बात से न डरने, किसी बात को पसंद न करने, किसी बात से नफरत न करने, कुछ न होने, कुछ न करने से मन थक जाता है—हाँ, मैं पढ़ाती हूँ और कभी-कभी उनकी मूर्खता पर मेरा चेहरा गुस्से से लाल हो जाता है। लेकिन यह मत सोचो कि मैं कभी डांटती हूँ या क्रोधित होती हूँ। अगर मैं उतनी ही गर्मजोशी से बोलूँ, जितनी गर्मजोशी से मैं कभी-कभी रो-हेड में बोलती थी, तो वे मुझे पागल समझेंगे। यहाँ कोई कभी क्रोधित नहीं होता। ऐसी बात तो यहाँ होती ही नहीं। उनके खून में जमी कफ इतनी चिपचिपी है कि उबलती ही नहीं। वे आपस में बहुत बनावटी होते हैं, लेकिन वे शायद ही कभी झगड़ते हैं, और दोस्ती एक ऐसी मूर्खता है जिससे वे अनभिज्ञ हैं। काली हंस, एम. हेगर, इस नियम का एकमात्र सच्चा अपवाद है (क्योंकि मैडम, जो हमेशा शांत और तर्कशील रहती हैं, पूरी तरह से अपवाद नहीं हैं)। लेकिन मैं अब शायद ही कभी महाशय से बात करती हूँ, क्योंकि शिष्य न होने के कारण मेरा उनसे कोई खास वास्ता नहीं है। समय-समय पर वे मुझे किताबों का ढेर लगाकर अपनी दयालुता का परिचय देते हैं, इसलिए मुझे आज भी अपने जीवन में मिलने वाले सभी सुख-सुविधाओं और मनोरंजन के लिए उनका ऋणी रहना पड़ता है। साथ न होने के अलावा मुझे कोई शिकायत नहीं है। मेरे पास ज्यादा काम नहीं है, पर्याप्त स्वतंत्रता है, और मुझे शायद ही कभी कोई परेशान करता है। मैं एक सुखमय, स्थिर और शांत जीवन जी रहा हूँ, जिसके लिए श्रीमती सिडगविक को याद करके मुझे बहुत आभारी होना चाहिए। कृपया मुझे जल्द ही पत्र लिखें और ऐनी से अनुरोध करें कि वे पत्र के साथ एक छोटा सा उपहार भी भेज दें; यह मेरे लिए एक बहुत बड़ा उपकार होगा। आपको जो भी याद आए, सब कुछ बताएं।

'यह एक विचित्र आध्यात्मिक तथ्य है कि हमेशा शाम को जब मैं बड़े छात्रावास में अकेला होता हूँ, सफेद पर्दों वाले कुछ बिस्तरों के अलावा और कोई साथी नहीं होता, तो मैं हमेशा की तरह ही जुनून से नीचे की दुनिया के पुराने विचारों, पुराने चेहरों और

पुराने दृश्यों की ओर लौट जाता हूँ।'

'ऐनी को मेरा प्यार देना। और यकीन मानो, तुम्हारा...'

प्रिय ऐनी, मुझे पत्र लिखना। तुम्हारी स्नेही बहन।

‘सी. बी.

‘श्री हेगर अभी-अभी आए थे और मुझे उपहार में एक छोटी सी जर्मन पाठ्यपुस्तक दी। मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि कई दिनों से उन्होंने मुझसे मुश्किल से ही बात की थी।’

कुछ समय बाद वह एमिली को इसी तरह के लहजे में पत्र लिखती है।

मिस एमिली जे. ब्रोंटे को

ब्रुसेल्स, 29 मई, 1843।

प्रिय ई. जे., — पैसे की इस अनुचित माँग का कारण मैंने पापा को लिखे पत्र में बताया है। क्या आप विश्वास करेंगे, मैडम मुह्ल एक विद्यार्थी के लिए उतनी ही फीस माँगती हैं जितनी दो के लिए, यानी 10 फ्रैंक प्रति माह। ब्लैंचिस्यूज़ को दिए जाने वाले 5 फ्रैंक प्रति माह के साथ, यह सालाना 16 पाउंड का भारी खर्चा बन जाता है। आपने देखा होगा कि मैंने फिर से जर्मन सीखना शुरू कर दिया है। यहाँ सब कुछ पहले जैसा ही चल रहा है। बस मैडम ब्लैंच और मैडम हौसे इस समय एक-दूसरे से बुरी तरह लड़ रही हैं। वे एक-दूसरे से बिल्लियों की तरह नफरत करती हैं। मैडम ब्लैंच अपने उग्र स्वभाव से मैडम हौसे को डरा देती हैं (क्योंकि वे दोनों बहुत ही तीखी लड़ाई लड़ती हैं)। मैडम हौसे शिकायत करती हैं कि जब मैडम ब्लैंच गुस्से में होती हैं, तो "उनमें कोई दया नहीं रहती।" मुझे यह भी पता चला है कि मैडम सोफी मैडम ब्लैंच को बिल्कुल भी पसंद नहीं करतीं। वह कहती है कि वह निर्दयी, कपटी और प्रतिशोधी है, और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ये विशेषण उस पर पूरी तरह से लागू होते हैं। मुझे यह भी पता चला है कि वह श्रीमती हेगर की नियमित जासूस है, जिसे वह हर बात बताती है। वह मनगढ़ंत बातें भी करती है - जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। अब अंग्रेजी की कक्षाओं का पूरा जिम्मा मेरे पास है। मैंने पहली कक्षा को दो पाठ पढ़ाए हैं। इन पाठों में होर्टेंस जैनॉय का चेहरा देखने लायक था, उसका चेहरा "नीले बादलों से घिरे" बादल की तरह काला था, और उसके दोनों कान कच्चे मांस की तरह लाल थे। पूछे गए हर प्रश्न का उसका उत्तर होता था, "मुझे नहीं पता।" यह दुख की बात है, लेकिन उसके दोस्तों को एक ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो शैतान को भी भगा सकता है। मुझे इन इलाकों में साथ की बहुत कमी है। आजकल, श्रीमान और

श्रीमती हेगर मुझसे शायद ही कभी बात करते हैं, और मैं वास्तव में संस्थान में किसी और की परवाह करने का दिखावा नहीं करता। इस बात से यह मत समझिए कि मुझे श्रीमती हेगर से बहुत स्नेह है। मुझे पूरा यकीन है कि वह मुझे पसंद नहीं करतीं—क्यों, यह मैं नहीं बता सकती, और न ही मुझे लगता है कि उनके पास इस नापसंदगी का कोई ठोस कारण है; लेकिन एक बात तो तय है कि वह यह नहीं समझ पातीं कि मैं श्रीमती ब्लांश, सोफी और हौसे से घनिष्ठ मित्रता क्यों नहीं करती। श्री हेगर मैडम से बहुत प्रभावित हैं, और मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर वह मेरी असामाजिकता को बहुत नापसंद करते हों। उन्होंने मुझे पहले ही सार्वभौमिक विनम्रता पर एक संक्षिप्त व्याख्यान दिया है, और यह देखकर कि मुझमें कोई सुधार नहीं हुआ है, मुझे लगता है कि उन्होंने मुझे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में समझना शुरू कर दिया है जिसे अकेला छोड़ दिया जाना चाहिए—अपनी गलतियों के भरोसे छोड़ दिया जाना चाहिए; और परिणामस्वरूप उन्होंने अपने चेहरे की चमक काफी हद तक खो दी है, और मैं रॉबिन्सन क्रूसो जैसी स्थिति में दिन-प्रतिदिन बहुत अकेलापन महसूस कर रही हूँ। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अन्य मामलों में मुझे शिकायत करने लायक कुछ खास नहीं है, और यह भी शिकायत का कारण नहीं है। एम. हेगर की सद्भावना खोने के अलावा (अगर मैंने खो दी है तो) मुझे उनमें से किसी की परवाह नहीं है। आशा है आप स्वस्थ और खुश होंगे। मैदानों में अक्सर सैर कीजिएगा। यह सुनकर बहुत दुख हुआ कि हन्नाह अब नहीं रही, और उसने अपनी छोटी बहन की ज़िम्मेदारी आप पर छोड़ दी है। आशा है टैबी आपके साथ ही रहेगी - उसे मेरा प्यार देना। लड़ने वाले सज्जनों और मेरी पुरानी अस्थमा की बीमारी को मेरा नमस्कार कहना। - आपका

'सी. बी.

मैंने ब्रैनवेल को पत्र लिखा था, हालांकि मुझे उनसे कभी कोई पत्र नहीं मिला।

अगस्त में वह और भी असंतुष्ट है, लेकिन 'मैं कुछ और महीनों तक यहीं रहूंगी, जब तक कि मैं जर्मन भाषा सीख न लूं, और फिर मुझे उम्मीद है कि मैं आप सभी के चेहरे फिर से देख पाऊंगी।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

ब्रुसेल्स, 6 अगस्त, 1843।

प्रिय एलेन, — तुमने मेरे पिछले पत्र का उत्तर नहीं दिया; लेकिन क्षमा करना ईसाई धर्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसलिए इंग्लैंड को पत्र भेजने का अवसर

पाकर मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ और तुम्हें फिर से लिख रहा हूँ। पिछले रविवार दोपहर, ब्रुसेल्स के चैपल रॉयल में, मुझे उपदेश मंच से एक आवाज़ सुनाई दी जिसने तुरंत मेरे मन में बिर्स्टॉल और बैटली की पूरी तस्वीर ला दी। मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया, लेकिन मुझे लगा कि वह छोटा सा वेल्श टट्टू, जेनकिंस, वहाँ था। मुझे तुमसे पत्र मिलने की उम्मीद थी, लेकिन चूंकि मुझे कोई पत्र नहीं मिला, इसलिए मुझे लगता है कि मैं गलत था।

'सी. बी.

श्री जेनकिंस आए थे। वे आपका कोई पत्र नहीं लाए, लेकिन उन्होंने बताया कि आप हैरोगेट में हैं और वे आपका भेजा हुआ पत्र नहीं ढूंढ पाए। उन्होंने मुझे आपकी बहन के निधन की सूचना दी। बेचारी सारा, जब मैंने आखिरी बार उसे अलविदा कहा था, तब मैंने सोचा भी नहीं था कि मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊंगी। लेकिन यकीन मानिए, वह जहां गई है, वहां खुश है—यहां से कहीं ज्यादा खुश। जब शोक के पहले दिन बीत जाएंगे, तो आप समझ जाएंगे कि उसके चले जाने पर शोक मनाने से ज्यादा खुशी मनाने का कारण है। आपकी मां को उसकी मृत्यु का बहुत दुख हुआ होगा—और आपको भी। हैरोगेट में आपके होने से मुझे आशंका है कि आप स्वयं बीमार हैं। मुझे जल्द ही पत्र लिखना।

सितंबर में वह घटना घटी जिसे विलेट में इतना नाटकीय रूप दिया गया है - कट्टर प्रोटेस्टेंटवाद की एक बेटी द्वारा रोमन कैथोलिक चर्च के एक पादरी के सामने किया गया कबूलनामा; और मेरे हाल ही में खोजे गए ब्रोंटे संग्रहों में से एक महत्वपूर्ण कृति वह पत्र है जो शार्लोट ने एमिली को लिखा था जिसमें घटना का सीधा-सादा विवरण दिया गया है।

मिस एमिली जे. ब्रोंटे को

ब्रुसेल्स, 2 सितंबर, 1843।

प्रिय ई. जे., — आपको पत्र लिखने का एक और अवसर मिला है, तो मैं इसका सदुपयोग करते हुए कुछ पंक्तियाँ लिख डालता हूँ। छुट्टियाँ आधी से ज़्यादा बीत चुकी हैं, और उम्मीद से कहीं बेहतर रहीं। पिछले पखवाड़े मौसम बेहद सुहावना रहा, फिर भी पिछले साल इस समय की तरह एशियाई गर्मी नहीं थी। इसलिए मैंने खूब घूम-फिर किया और ब्रुसेल्स की गलियों से अच्छी तरह परिचित होने की कोशिश की। इस सप्ताह, मैडम ब्लैंच के अलावा कोई शिक्षक यहाँ नहीं है, जो पेरिस से लौट आई हैं,

इसलिए मैं भोजन के समय को छोड़कर हमेशा अकेला रहता हूँ, क्योंकि मैडम ब्लैंच का चरित्र इतना बनावटी और इतना घृणित है कि मैं उनके साथ समय बिताना बर्दाश्त नहीं कर सकता। उन्हें मेरी घोर नापसंदगी का एहसास है और अब वे मुझसे बात भी नहीं करतीं — यह मेरे लिए बड़ी राहत की बात है।

लेकिन अगर मैं यहाँ हमेशा अकेले ही बिना किसी से बात किए बैठी रहती, तो मैं निश्चित रूप से उदासी के गहरे गड्ढे में डूब जाती। इसलिए मैं बाहर निकल जाती हूँ और ब्रुसेल्स के बुलेवार्ड और गलियों में घंटों घूमती रहती हूँ। कल मैं कब्रिस्तान गई थी, और उससे भी आगे एक पहाड़ी पर गई जहाँ दूर-दूर तक सिर्फ खेत ही खेत थे। जब मैं वापस आई तो शाम हो चुकी थी; लेकिन घर लौटने की मुझे इतनी अरुचि थी, क्योंकि घर में मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं थी, इसलिए मैं रू डी इसाबेल के आस-पास की गलियों में घूमती रही और घर से बचती रही। मैं खुद को सेंट गुडुल के सामने पाई, और घंटी, जिसकी आवाज़ आप जानते हैं, शाम की प्रार्थना के लिए बजने लगी। मैं अंदर गई, बिलकुल अकेली (जो आपको लगेगा कि मेरे स्वभाव के विपरीत है), गलियारों में इधर-उधर घूमती रही जहाँ कुछ बूढ़ी औरतें प्रार्थना कर रही थीं, शाम की प्रार्थना शुरू होने तक। मैं प्रार्थना खत्म होने तक वहीं रुकी रही। फिर भी मैं चर्च नहीं छोड़ सकी और न ही खुद को घर जाने के लिए मजबूर कर सकी—मेरा मतलब स्कूल से है। मेरे मन में एक अजीब सा ख्याल आया। गिरजाघर के एक सुनसान हिस्से में छह-सात लोग अभी भी पाप स्वीकारोक्ति कक्षों के पास घुटनों के बल बैठे थे। दो पाप स्वीकारोक्ति कक्षों में मैंने एक पादरी को देखा। मुझे ऐसा लगा मानो मुझे इस बात की परवाह ही न हो कि मैं क्या कर रहा हूँ, बशर्ते वह पूरी तरह से गलत न हो, और इससे मेरे जीवन में कुछ बदलाव आए और मुझे कुछ पल का आनंद मिले। मेरा मन हुआ कि मैं खुद को कैथोलिक बना लूँ और जाकर सचमुच पाप स्वीकार करूँ, यह देखने के लिए कि यह कैसा होता है। मुझे जानने के नाते, आपको यह अजीब लगेगा, लेकिन जब लोग अकेले होते हैं तो उनके मन में ऐसे ही अनोखे ख्याल आते हैं। एक पश्चात्तापी पाप स्वीकार कर रहा था। वे पादरी की तरह बेंच या गलियारे में नहीं जाते, बल्कि सीढ़ियों पर घुटनों के बल बैठकर एक जाली के माध्यम से पाप स्वीकार करते हैं। पादरी और पश्चात्तापी दोनों बहुत धीमी आवाज़ में फुसफुसाते हैं, उनकी आवाज़ मुश्किल से सुनाई देती है। दो-तीन पश्चात्तापी लोगों को जाते और लौटते देखने के बाद, मैं अंत में पास पहुँचा और एक खाली जगह पर घुटनों के बल बैठ गया। मुझे

वहाँ दस मिनट तक घुटनों के बल बैठकर इंतज़ार करना पड़ा, क्योंकि दूसरी तरफ़ एक और पश्चातापी बैठा था जो मुझे दिखाई नहीं दे रहा था। आख़िरकार वह दृश्य हट गया और जाली के अंदर एक छोटा सा लकड़ी का दरवाज़ा खुला, और मैंने देखा कि पादरी अपना कान मेरी ओर झुकाए हुए हैं। मुझे बोलना शुरू करना पड़ा, और फिर भी मुझे उस विधि का एक शब्द भी नहीं पता था जिससे वे हमेशा अपने पाप स्वीकारोक्ति की शुरुआत करते हैं। यह एक अजीब स्थिति थी। मुझे ठीक वैसा ही महसूस हो रहा था जैसा आधी रात को टेम्स नदी पर अकेले होने पर होता है। मैंने यह कहकर शुरुआत की कि मैं एक विदेशी हूँ और प्रोटेस्टेंट के रूप में पला-बढ़ा हूँ। पादरी ने पूछा कि क्या मैं प्रोटेस्टेंट हूँ? मैं किसी तरह झूठ नहीं बोल सका और मैंने "हाँ" कह दिया। उन्होंने जवाब दिया कि इस स्थिति में मैं "पाप स्वीकारोक्ति का आनंद" नहीं ले सकता; लेकिन मैं पाप स्वीकार करने के लिए दृढ़ था, और आख़िरकार उन्होंने कहा कि वे मुझे अनुमति देंगे क्योंकि यह सच्चे चर्च में लौटने की दिशा में पहला कदम हो सकता है। मैंने सचमुच पाप स्वीकार किया - एक वास्तविक पाप स्वीकारोक्ति। जब मैंने अपना काम पूरा कर लिया, तो उसने मुझे अपना पता बताया और कहा कि हर सुबह मुझे रुए डू पार्क में उसके घर जाना है, जहाँ वह मुझसे बात करेगा और मुझे प्रोटेस्टेंट होने की गलती और उसके भारी पाप के बारे में समझाने की कोशिश करेगा! मैंने पक्का जाने का वादा किया। लेकिन, यह रोमांच यहीं खत्म हो जाता है, और मुझे उम्मीद है कि मैं उस पादरी को फिर कभी नहीं देखूँगी। मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि तुम पापा को इसके बारे में न बताओ। वह नहीं समझेंगे कि यह महज़ एक संयोग था, और शायद सोचेंगे कि मैं कैथोलिक बनने जा रही हूँ। उम्मीद है कि तुम और पापा ठीक हो, और टैबी और होलीज़ भी, और उम्मीद है कि तुम मुझे जल्द ही पत्र लिखोगी, - तुम्हारी,

'सी. बी.'

यह शायद कहने की आवश्यकता नहीं है कि 'द होलीज़' शार्लोट द्वारा क्यूरेट - मिस्टर स्मिथ और मिस्टर ग्रांट - के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक अपमानजनक नाम है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

ब्रुसेल्स, 13 अक्टूबर, 1843।

प्रिय एलेन, तुम्हारा पिछला पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी हुई; लेकिन जब मैंने उसे

पढ़ा, तो उसमें लिखी बातें मुझे बहुत दुख पहुँचाने वाली थीं। यह वाकई दुखद है कि बहन की मृत्यु के तुरंत बाद ही तुम्हें दूर के एक जिले से अपने भाई की गंभीर बीमारी की खबर मिली, और घर लौटने के बाद तुम्हारी बहन ऐन भी बीमार पड़ गई। मैरी डिक्सन ने मुझे बताया है कि तुम्हारे भाई के ठीक होने की उम्मीद बहुत कम है - क्या यह सच है? मैं आशा करती हूँ कि ऐसा न हो, उनके और तुम्हारे भले के लिए। उनका जाना वाकई एक बड़ा झटका होगा - एक ऐसा झटका जिसे ईश्वर टाल दे। मेरी प्रिय एलेन, ब्रुकरॉयड के हालात के बारे में मुझे जल्द ही लिखना मत भूलना। मैं इस विषय को लेकर बहुत चिंतित हूँ, क्योंकि तुम्हारा परिवार मेरे सबसे पुराने और सबसे प्यारे दोस्तों में से है। मुझे उम्मीद है कि दुख का यह दौर जल्द ही बीत जाएगा। यह बहुत लंबा रहा है।

'सी. बी.'

मिस एमिली जे. ब्रोंटे को

ब्रुसेल्स, 19 दिसंबर, 1843।

प्रिय ई. जे., मैंने अपना निर्णय ले लिया है। मुझे आशा है कि मैं नव वर्ष के अगले दिन घर पहुँच जाऊँगी। मैंने श्रीमती हेगर को बता दिया है। लेकिन घर आने के लिए मुझे अपने नकद में से 5 पाउंड और निकालने पड़ेंगे। मेरे पास अभी केवल 3 पाउंड हैं, और ब्रुसेल्स छोड़ने से पहले मुझे कई छोटी-मोटी चीजें खरीदनी हैं - जो आप जानते हैं कि इंग्लैंड में आसानी से नहीं मिलतीं - इसलिए 3 पाउंड पर्याप्त नहीं होंगे। आजकल मैं बहुत उदास हूँ, लेकिन मुझे आशा है कि घर पहुँचने पर सब ठीक हो जाएगा - खासकर अगर मुझे पापा, आप, बी. और ए. सब ठीक मिलें। मैं शारीरिक रूप से अस्वस्थ नहीं हूँ। बस मन थोड़ा विचलित है - सांत्वना की कमी के कारण।

अब मैं खुश होने की कोशिश करूंगा। अलविदा।

'सी. बी.'

अध्याय V: पैट्रिक ब्रैनवेल ब्रोंटे

छोटे पैट्रिक ब्रोंटे को हमेशा उनकी मां के पारिवारिक उपनाम ब्रैनवेल से जाना जाता था। आयरलैंड के संरक्षक संत से लिया गया यह नाम, जिससे उत्साही सेल्ट, रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट, दोनों ही अपने बेटे को अपमानित करने में आनंद लेते थे, यॉर्कशायर के पादरी के घर से शीघ्र ही निकाल दिया गया। ब्रैनवेल शार्लोट से एक वर्ष छोटे थे, और यह स्पष्ट है कि शार्लोट के अन्य मित्र बनने से पहले, एमिली और ऐनी की तरह ही वे दोनों घनिष्ठ मित्र थे। ब्रैनवेल की मृत्यु से दो-तीन वर्ष पहले तक भी, शार्लोट उन्हें सच्चे बहन जैसे स्नेह से पत्र लिखती रहीं, और वास्तव में, ब्रैनवेल को संबोधित केवल दो पारिवारिक पत्र ही बचे हैं जो उन्हीं के हैं। उनमें से एक, ब्रुसेल्स से लिखा गया, मैंने कहीं और छापा है। दूसरा, रो हेड से लिखा गया, जब शार्लोट सोलह वर्ष की आयु में वहाँ स्कूल में पढ़ रही थीं, श्रीमती गैस्केल द्वारा आंशिक रूप से प्रकाशित किया गया था, लेकिन इसे मूल से सीधे प्रतिलिपि बनाकर यहाँ देना उचित होगा।

PATRICK BRANWELL BRONTË

From a Silhouette in the possession of Mr. A. B. Nicholls

ब्रैनवेल ब्रोंटे को

रो हेड, 17 मई, 1832।

प्रिय ब्रैनवेल, हमेशा की तरह मैं अपना साप्ताहिक पत्र आपको ही संबोधित कर रहा हूँ, क्योंकि मुझे आपसे ही सबसे अधिक बातें कहनी हैं। मैं यह जानने के लिए अत्यंत उत्सुक हूँ कि आपकी लंबी और (मेरे विचार से) बेहद थका देने वाली यात्रा के बाद आप किस हालत में और कैसे घर पहुँचे। रो हेड पहुँचने पर ही मुझे यह स्पष्ट हो गया था कि आप बहुत थके हुए थे, हालाँकि आपने इसे स्वीकार नहीं किया। आपके जाने के बाद, कई प्रश्न और बातचीत के विषय मेरे मन में फिर से आए, जिनका उल्लेख मैं आपसे करना चाहता था, लेकिन आपको देखकर मुझे जो अप्रत्याशित खुशी हुई, उसकी वजह से मैं उन्हें पूरी तरह भूल गया। हाल ही में मुझे लगने लगा था कि राजनीति में मेरी जो रुचि पहले थी, वह अब खत्म हो गई है, लेकिन हाउस ऑफ लॉर्ड्स द्वारा सुधार विधेयक को खारिज किए जाने और अर्ल ग्रे के निष्कासन या इस्तीफे आदि की खबर सुनकर मुझे जो अपार खुशी हुई, उससे मुझे यकीन हो गया है कि राजनीति के प्रति मेरा आकर्षण अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। मुझे अत्यंत

प्रसन्नता हुई कि चाची ने फ्रेजर पत्रिका पढ़ने की सहमति दे दी है, क्योंकि यद्यपि मैंने आपके वर्णन से इसके विषयवस्तु के बारे में जान लिया है, यह ब्लैकवुड की तुलना में कुछ कम रोचक होगी, फिर भी यह पूरे वर्ष किसी भी पत्रिका को न देख पाने से बेहतर होगी; और निश्चित रूप से हमारी स्थिति भी ऐसी ही होगी, क्योंकि जिस छोटे से जंगली, दलदली गाँव में हम रहते हैं, वहाँ किसी भी पुस्तकालय से इस प्रकार की पत्रिका उधार लेने या प्राप्त करने की कोई संभावना नहीं होगी। मैं आपके साथ आशा करता हूँ कि वर्तमान सुहावना मौसम हमारे प्यारे पापा के स्वास्थ्य में पूर्ण सुधार लाने में सहायक होगा, और चाची को उनके जन्मस्थान की सुखदायक जलवायु की सुखद यादें दिलाएगा।

सभी को प्यार के साथ, - विश्वास करो, प्रिय ब्रैनवेल, मैं तुम्हारी स्नेही बहन बनी रहूंगी।

शार्लोट।

'तुम्हें सबसे ज्यादा क्या कहना है' यह वाक्य महत्वपूर्ण है। और ब्रैनवेल के बारे में शार्लोट ने बाद के कई पत्रों में बार-बार अत्यंत स्नेहपूर्ण शब्दों में उल्लेख किया है। वास्तव में, उन्हीं के उत्साह के कारण ही ब्रैनवेल की प्रतिभा का इतना अधिक मूल्यांकन हुआ है, जिसे ब्रोंटे बहनों पर लिखी गई पुस्तकों में भरपूर रूप से व्यक्त किया गया है।

ब्रैनवेल को स्वयं कम से कम तीन जीवनियों का नायक बनाया गया है। श्री फ्रांसिस ग्रुंडी का हमारे समय में कोई विशेष महत्व नहीं है, सिवाय इसके कि उन्होंने अपनी आत्मकथा में ब्रैनवेल के कुछ पत्र प्रकाशित किए हैं। मिस मैरी एफ. रॉबिन्सन, चाहे उनकी कविता कितनी भी उत्कृष्ट क्यों न हो, उन्हें एमिली ब्रोंटे की जीवनी लिखने का प्रयास कभी नहीं करना चाहिए था। उनकी पुस्तक मुख्य रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि 'प्रख्यात महिलाओं' की श्रृंखला में प्रकाशित होने के कारण, इसने इस बढ़ते मत को बल दिया कि एमिली, शार्लोट की तरह, अपने समय की महान लेखिकाओं में स्थान रखती थीं। मिस रॉबिन्सन ने एमिली ब्रोंटे के बारे में हमारे ज्ञान में कुछ भी नया नहीं जोड़ा, और उनकी पुस्तक ने ब्रैनवेल की कमियों पर अत्यधिक स्थान दिया, जिनके बारे में उनके पास कोई नई जानकारी नहीं थी।

श्री लेलैंड की पुस्तक, जिसे वे ब्रैनवेल की जीवनी बताते हैं, वास्तव में तथ्यों का एक अनमोल भंडार है। यदि इसे अधिक जीवंतता और उत्साह के साथ लिखा गया

होता, तो यह अधिक सफल हो सकती थी। वर्तमान स्वरूप में, यह एक नीरस पुस्तक है, जिसे केवल ब्रोंटे के प्रशंसक ही पढ़ सकते हैं। श्री लेलैंड में साहित्यिक समझ का अभाव है, और ब्रैनवेल को प्रतिभावान साबित करने की अपनी उत्सुकता में, वे कई ऐसे पत्र और कविताएँ छाप देते हैं जो यह पर्याप्त रूप से दर्शाते हैं कि वे प्रतिभावान नहीं थे।

शार्लेट ने अपने शुरुआती वर्षों में अपने भाई की परिवार के प्रतिभाशाली सदस्य के रूप में प्रशंसा करने में कभी संकोच नहीं किया। हम सभी जानते हैं कि किसी भी घर में लड़कियां अपने चतुर भाई की सबसे बेबाक और चुटीली बातों को भी कितनी उत्सुकता से स्वीकार कर लेती हैं और उन्हें मौलिक प्रतिभा का प्रतीक मानती हैं। ब्रोंटे परिवार इस मामले में अपवाद नहीं था। यह स्पष्ट है कि लड़के में एक विशेष प्रकार की प्रतिभा थी। वह निश्चित रूप से अपनी बहनों की तुलना में परिप्रेक्ष्य की बेहतर समझ के साथ चित्र बना सकता था, और उसके द्वारा बनाए गए एक-दो चित्र सराहनीय हैं। लेकिन लेखन की किसी विशेष प्रतिभा का कोई प्रमाण नहीं है, और उसके लिए इस्तेमाल किए गए 'प्रतिभाशाली' और 'शानदार' जैसे शब्द पूरी तरह से अनुपयुक्त हैं। ब्रैनवेल की मृत्यु 31 वर्ष की आयु में हुई, और यह उनके जीवन के अंतिम एक-दो वर्षों में ही हुआ था जब अफीम और शराब ने उन्हें बौद्धिक रूप से कमजोर कर दिया था। फिर भी, यदि हम इस बेतुके कथन को स्वीकार न करें कि उन्होंने 'वुथरिंग हाइट्स' लिखा था, तो ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं लिखा था जो साहित्य के मंदिर में उन्हें एक छोटा सा स्थान भी दिला सके।

ब्रैनवेल ने अपने शुरुआती वर्षों में अपनी बहनों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया, और उनके हस्ताक्षर वाली अनगिनत छोटी-छोटी रचनाएँ मेरे हाथ लगी हैं। उनकी बहनों की शुरुआती कहानियों का काल्पनिक शहर वर्दोपोलिस, ब्रैनवेल की रचनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 'रियल लाइफ इन वर्दोपोलिस' 1833 में लिखी गई थी। 'द बैटल ऑफ वाशिंगटन' स्पष्ट रूप से एक और भी बचकानी रचना है। 'कैरेक्टैकस' 1830 में लिखी गई थी, और कविताएँ और छोटी-छोटी प्रेम कहानियाँ वर्षों तक लगातार चलती रहीं, अंततः 1837 में - जब ब्रैनवेल बीस वर्ष के थे - 'पर्सी' नामक कहानी के साथ समाप्त हुईं। बाद की घटनाओं के आलोक में यह दिलचस्प है कि 1830 की एक पांडुलिपि का शीर्षक 'द लायर डिटेक्टेड' है।

ब्रैनवेल ब्रोंटे के बचपन की इन साधारण रचनाओं को यह मान लेना अनुचित होगा

कि उनमें बेहतर बनने की कोई संभावना नहीं थी, लेकिन इस तथ्य को देखते हुए कि 82 वर्षीय व्यक्ति के रूप में उनके पत्र उतने ही साधारण हैं जितने कि उनकी बहन के उसी उम्र में उल्लेखनीय पत्र हैं, हम ब्रैनवेल ब्रोंटे को पूरी तरह से खारिज कर सकते थे, यदि ब्रोंटे परिवार के विवरण में उनके जीवन का कोई सार अपरिहार्य न होता।

ब्रैनवेल का जन्म 1817 में थॉर्नटन में हुआ था। जब उनका परिवार हॉवर्थ चला गया, तो उन्होंने ग्रामर स्कूल में पढ़ाई की, हालांकि, इसमें कोई संदेह नहीं कि उनकी प्रारंभिक शिक्षा का अधिकांश श्रेय उनके पिता को जाता है। स्कूल की पढ़ाई पूरी होने के बाद, यह तय किया गया कि वे एक कलाकार बनेंगे। लीड्स के विलियम रॉबिन्सन नाम के एक व्यक्ति ने उन्हें अपनी पहली शिक्षा दी थी। श्रीमती गैस्केल ने शार्लोट, एमिली और ऐनी के एक आदमकद चित्र का वर्णन किया है, जिसे ब्रैनवेल ने इसी दौरान बनाया था। यह विशाल कैनवास कई वर्षों तक पादरी के घर की सीढ़ियों के ऊपर रखा रहा। 1835 में ब्रैनवेल रॉयल एकेडमी आर्ट स्कूल में छात्र बनने के उद्देश्य से लंदन चले गए। हॉवर्थ में उनकी लगभग तुरंत वापसी का कारण आज तक स्पष्ट नहीं हो पाया है। शायद उन्होंने अपना पैसा बर्बाद कर दिया और उनके पिता ने उन्हें सामग्री देने से इनकार कर दिया। इस पत्र से, जिसका एक मसौदा मुझे उनके कागजातों में मिला है, यह स्पष्ट होता है कि शुरुआत में वे काफी गंभीर थे।

रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स के सचिव को

महोदय, रॉयल अकादमी में प्रशिक्षु छात्र के रूप में प्रवेश पाने की मेरी प्रबल इच्छा है, लेकिन मुझे अपनी इच्छा पूरी करने के साधनों के बारे में कोई जानकारी नहीं है, इसलिए मैं संस्थान के सचिव के रूप में आपसे निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने का अनुरोध करता/करती हूँ।

मुझे अपनी चित्रकारी कहाँ प्रस्तुत करनी चाहिए?

'किस समय?

और विशेष रूप से,

क्या मैं इसे अगस्त या सितंबर में कर सकता हूँ?

आपका आज्ञाकारी सेवक,

ब्रैनवेल ब्रोंटे।

1836 में वे हॉवर्थ स्थित 'लॉज ऑफ द थ्री ग्रेसेस' के 'भाई' के रूप में नज़र आते हैं। अगले वर्ष वे ब्रैडफोर्ड में एक कलाकार के रूप में काम कर रहे थे और वहाँ के

लोगों के कई चित्र बना रहे थे। इसी दौरान उन्होंने वर्ड्सवर्थ को पत्र लिखे और कविताएँ भेजीं, जिन्हें वे उस समय नियमित रूप से लिख रहे थे। जनवरी 1840 में ब्रैनवेल ब्रॉटन-इन-फर्नेस में श्री पोस्टलेथवेट के परिवार में शिक्षक बन गए। इसी स्थान से उन्होंने वह बेतुका और मूर्खतापूर्ण पत्र लिखा, जो कई बार छप चुका है और जो केवल यह दर्शाता है कि तब भी और हमेशा की तरह उनका दिमाग अस्थिर था। ब्रॉटन-इन-फर्नेस से ही उन्होंने हार्टले कोलरिज को पत्र लिखा था और ये पत्र छापने योग्य हैं, कम से कम इसलिए क्योंकि दोनों व्यक्तियों का भाग्य एक जैसा था।

हार्टले कोलरिज को

'ब्रॉटन-इन-फर्नेस,

'लैंकशायर, 20 अप्रैल, 1840.

महोदय, — मैं अत्यंत अनिच्छा से निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ने के लिए ऐसे व्यक्ति का कुछ समय माँगने का साहस कर रहा हूँ जिस पर मेरा कोई अधिकार नहीं है और न ही मुझे हस्तक्षेप करने का साहस करना चाहिए, लेकिन मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं जानता जिस पर मैं अपने प्रश्नों के उत्तर के लिए भरोसा कर सकूँ, और मैं ऐसे व्यक्ति से प्रश्न पूछने की अपनी इच्छा को रोक नहीं सका जिसके निर्णय के विरुद्ध अपील की बहुत कम संभावना हो।

बचपन से ही मुझे अन्य और भिन्न-भिन्न कामों से जो भी समय मिलता था, उसे मैं साहित्यिक रचनाओं में लगाता था, और हमेशा अपने तक ही सीमित रखता था, और दो-तीन बार से ज़्यादा मैंने उन्हें किसी और को नहीं दिखाया है। लेकिन अब मैं सक्रिय जीवन में प्रवेश करने वाला हूँ, और विवेक कहता है कि मुझे उस समय को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए जो मेरी स्वतंत्रता का आधार बनेगा; फिर भी, महोदय, मुझे लेखन इतना पसंद है कि मैं इसे बिना यह पता लगाए नहीं छोड़ सकता कि क्या मैं इसका उपयोग अपने भरण-पोषण के लिए कर सकता हूँ, पूरी तरह से स्वयं के भरण-पोषण के लिए नहीं, बल्कि अपनी आजीविका में सहायता के लिए, क्योंकि मुझे प्रसिद्धि की लालसा नहीं है, और मैं उन लोगों की मूर्खता और भाग्य से अनजान नहीं हूँ जो बिना योग्यता के अपनी कलम पर जीवन यापन के लिए निर्भर रहते हैं; लेकिन मैं जानना चाहता हूँ, और शर्मिंदगी के साथ ही सही, उस व्यक्ति से पूछने का साहस करता हूँ जिसकी बात का मुझे सम्मान करना चाहिए: क्या आवधिक या अन्य लेखन के माध्यम से, मैं लेखन से खुद को संतुष्ट कर सकता हूँ, और इसे अपनी

आजीविका का साधन बना सकता हूँ।

'इस दृष्टिकोण से, मैं आपको पद्य रचना से परेशान नहीं करता, लेकिन गद्य में मेरी कोई भी रचना आपके धैर्य की अत्यधिक परीक्षा लेगी, और मुझे डर है कि यदि आप पद्य रचना को देखेंगे, तो आपका धैर्य पर्याप्त रूप से परखा जाएगा।'

'मुझे अपनी भाषा में अहंकार का आभास होता है, लेकिन मेरे हृदय में ऐसा कोई अहंकार नहीं है, महोदय, क्योंकि मैं स्वयं से मिलने वाले सभी प्रोत्साहनों से परे महसूस करता हूं, और न ही आपसे किसी प्रोत्साहन की आशा करता हूं।'

"यदि आप मेरे द्वारा भेजे गए संदेश पर कोई राय दें, चाहे वह कितनी भी निंदात्मक क्यों न हो, आपके सबसे विनम्र सेवक द्वारा अत्यंत कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार की जाएगी।"

पी. बी. ब्रोंटे।

नोट - पहला अंश उस अंश का ही अगला भाग है जो अनियंत्रित वासना से उपेक्षा, निराशा और मृत्यु की ओर पतन को चित्रित करने का प्रयास करता है। यह उस क्षण को दर्शाना चाहिए जो पश्चाताप के लिए सुख के बहुत निकट और आशा के लिए मृत्यु के बहुत निकट है। ये अनुवाद होरेस की कई रचनाओं में से दो हैं, और इस प्रश्न का उत्तर देने में सहायता के लिए दिए गए हैं - क्या होरेस या किसी अन्य प्रसिद्ध लेखक की रचनाओं के अनुवाद के लिए पारिश्रमिक प्राप्त करना संभव होगा?

अगर हम हॉवर्थ से लौटने पर लिखे गए उनके अगले पत्र से अंदाजा लगाएं, तो ऐसा लगता है कि ब्रैनवेल हार्टले कोलरिज से मिलने के लिए एम्बल्ससाइड गए थे।

हार्टले कोलरिज को

हॉवर्थ, 27 जून, 1840।

'महोदय, - शायद आप मुझे भूल गए होंगे, लेकिन मुझे वेस्टमोर्लैंड की क्लासिक झीलों की अपनी पहली यात्रा के दौरान एक वास्तविक बुद्धिजीवी व्यक्ति के साथ हुई अपनी पहली बातचीत को भूलने में बहुत समय लगेगा।'

'एम्बल्ससाइड में आपके साथ बिताए गए उस सुखद दिन के दौरान, मुझे होरेस के अनुवाद की पहली पुस्तक को पूरा होते ही आपको भेजने की अनुमति मिली, ताकि उस पर एक नज़र डालने के बाद आप मुझे बता सकें कि क्या यह आगे ध्यान देने योग्य है या इसे आग में जला देना बेहतर होगा।'

'मैंने – मुझे खेद है कि अत्यंत लापरवाही से, और अन्य कई अलग-अलग कामों के

बीच – दो पुस्तकों का अनुवाद करने का प्रयास किया है, जिनमें से पहली पुस्तक मैंने आपको भेजने का साहस किया है। महोदय, क्या आप अपनी पिछली कृपा का लाभ उठाते हुए मुझे यह बताएँगे कि मुझे इसमें सुधार करके काम जारी रखना चाहिए या इसे यूँ ही छोड़ देना चाहिए?'

मुझे लगता है इसमें बहुत सारे सुधारों की आवश्यकता है, लेकिन जब तक मुझे यह महसूस नहीं होता कि इस काम से मुझे लाभ होगा, तब तक मेरा मन उन्हें करने का नहीं है; फिर भी यदि आपका निर्णय किसी भी तरह से अनुकूल साबित होता है, तो मैं पूर्णता प्राप्त करने के लिए बिना किसी कसर के इसे पूरी तरह से फिर से लिखूंगा।

मैंने होरेस का अनुवाद करने की हिम्मत नहीं की, सिवाय इसके कि मैंने पहले के सभी अनुवादों की पूरी तरह से निरर्थकता देखी और सोचा कि एक बेहतर अनुवाद, चाहे वह किसी के भी द्वारा किया गया हो, शायद कुछ प्रोत्साहन प्राप्त कर सके। मैं अपने संदेह को उस व्यक्ति के निर्णय से दूर करना चाहता हूँ जिसकी राय का मैं आदर करता हूँ, और - लेकिन शायद मैं सपना देख रहा हूँ - उस व्यक्ति के निर्णय से, जिसे मैं वास्तव में गर्व से अपनी कोई भी रचना सौंप सकता हूँ जिसे कोई भी प्रकाशक देखे, सिवाय इसके कि, जैसा कि संभव है, वह रचना नाम को उतना ही बदनाम करे जितना कि नाम रचना को सम्मान दे।

'मुझे पारिश्रमिक की राशि की चिंता नहीं करनी चाहिए - क्योंकि कुछ भी मेरे लिए सब कुछ होगा - और चाहे वह कितना भी हो, मैं यह कहना चाहता हूं कि जब तक लिखित समझौते द्वारा मेरे और उस व्यक्ति के बीच लाभ (थोड़ा या ज्यादा) का विभाजन नहीं हो जाता, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा, जिसके माध्यम से ही मैं उस प्रभावशाली व्यक्ति, लंदन के पुस्तक विक्रेता से मिलने की उम्मीद कर सकता हूं।'

मेरी अस्पष्टता, जल्दबाजी और अहंकारपूर्ण प्रतीत होने के लिए मुझे क्षमा करें, और — महोदय, मुझे अपना सबसे विनम्र और आभारी सेवक समझें।

पी. बी. ब्रोंटे।

'यदि इस पत्र में कोई बात आपको अप्रिय लगे, तो महोदय, इसे अनुभवहीनता का परिणाम समझें, न कि धृष्टता का।'

अक्टूबर 1840 में, हमें ब्रैनवेल लीड्स और मैनचेस्टर रेलवे के सोवरबी ब्रिज स्टेशन पर प्रभारी क्लर्क के रूप में मिलते हैं, और अगले वर्ष लुडेनडेन फुट में, जहां

रेलवे इंजीनियर श्री ग्रुंडी उनसे परिचित हुए, और अतीत की तस्वीरें नामक पुस्तक में निहित पत्राचार शुरू हुआ।

मेरे पास एक छोटी सी मेमोरेंडम बुक है, जिसका इस्तेमाल ब्रैनवेल ने रेलवे क्लर्क के रूप में काम करते समय किया होगा। इसमें उस समय की रेलवे व्यवस्था पर नोट्स हैं, जिनसे पता चलता है कि वह इस तरह के करियर के लिए आवश्यक तथ्यों और आंकड़ों से खुद को तैयार करने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन इनके साथ-साथ 'लॉर्ड नेल्सन', 'रॉबर्ट बर्न्स' और इसी तरह के विषयों पर कविताएँ भी हैं, जिनमें इस तरह की सराहनीय भावनाएँ व्यक्त की गई हैं: —

‘तब इंग्लैंड का प्रेम और इंग्लैंड की ज़ुबान, और इंग्लैंड का हृदय लंबे समय तक सम्मान करेगा, गहन ज्ञान और मजबूत साहस का, अंग्रेजी जॉनसन के नाम का।’

कुल मिलाकर, उस लड़के के लिए एक साहित्यिक माहौल बन गया था, बशर्ते उसमें थोड़ी सी भी दृढ़ता होती। हालाँकि, रेलवे कंपनी जल्द ही उसकी मनमानी से तंग आ गई, और 1842 की शुरुआत में वह हॉवर्थ के पादरी निवास लौट आया। उसके मित्र श्री ग्रुंडी को लिखा गया निम्नलिखित पत्र जीवनी संबंधी दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

फ्रांसिस एच. ग्रुंडी को

25 अक्टूबर, 1842।

मेरे प्रिय महोदय, — कोई गलतफहमी नहीं है। मैंने अपने सबसे प्रिय मित्रों में से एक, रेवरेंड श्री वेटमैन के मृत्युशय्या पर लंबे समय तक सेवा की है, और अब मैं अपनी चाची के मृत्युशय्या पर उपस्थित हूँ, जो बीस वर्षों से मेरी माँ के समान रही हैं। मुझे उम्मीद है कि कुछ ही घंटों में उनका निधन हो जाएगा।

'चूंकि मेरी बहनें घर से दूर हैं, इसलिए मेरे मन में बहुत कुछ चल रहा है, और ये बातें आपके प्रति हमारी मित्रता की उपेक्षा करने के मेरे इरादे के लिए एक माफी के रूप में काम करती हैं।'

मैं न केवल आपको, बल्कि रेवरेंड जेम्स मार्टिन्यू को भी पत्र लिखना चाहता था, उनकी अत्यंत दयालु और सच्ची आलोचना के लिए कृतज्ञतापूर्वक और ईमानदारी से आभार व्यक्त करते हुए - कम से कम सलाह के रूप में, हालांकि प्रशंसा कुछ अधिक ही उदार थी; लेकिन मुझे खेद है कि पहले एक दुखद औपचारिकता पूरी करनी होगी। श्री स्टीफेंसन को मेरा हार्दिक प्रणाम कहिएगा, और इस खराब लिखावट के लिए क्षमा

करें - मेरी आंखें दु:ख से इतनी धुंधली हो गई हैं कि ठीक से देख नहीं पा रही हैं। - विश्वास कीजिए, आपका दुखी लेकिन आभारी मित्र और सेवक।

'पी. बी. ब्रोंटे।'

एक सप्ताह बाद वह उसी मित्र को पत्र लिखता है: —

मुझे खेद है कि मैं ठीक से बोल नहीं पा रहा हूँ, लेकिन मैं दो रातों से ऐसी पीड़ा देख रहा हूँ जो मैं अपने सबसे बड़े दुश्मन को भी सहने की कामना नहीं करूँगा; और मैंने अपने बचपन से जुड़े सभी सुखद दिनों के मार्गदर्शक और निर्देशक को खो दिया है। हॉवर्थ में आपसे आखिरी बार मिलने के बाद से मुझे बहुत दुख हुआ है।

जैसा कि याद होगा, शार्लोट और ऐनी उस समय ब्रुसेल्स से घर लौट रही थीं, और ऐनी को श्रीमती रॉबिन्सन के यहाँ अपनी गवर्नेंस की जिम्मेदारियों से मुक्ति पानी पड़ी थी। ब्रैनवेल ऐनी के साथ थॉर्प ग्रीन लौट आए थे, जहाँ उन्होंने श्री रॉबिन्सन के बेटे के शिक्षक के रूप में काम शुरू किया। उन्होंने दिसंबर 1842 में अपना कार्यभार संभाला।

यह मान लेना गलत नहीं होगा—हालांकि यह केवल एक अनुमान है—कि थॉर्प ग्रीन में अपना कार्यभार संभालने के कुछ ही समय बाद ब्रैनवेल ने अफीम का सेवन शुरू कर दिया था। मैंने पहले ही श्रीमती गैस्केल को शार्लोट ब्रोंटे और—शार्लोट की मृत्यु के बाद—उनके दोस्तों के इस कथन को स्वीकार करने में हुई परेशानी का जिक्र किया है कि ब्रैनवेल एक धूर्त महिला के जाल में फंस गए थे, जिसने अपने पति—एक सम्मानित पादरी—की मृत्यु के बाद उनसे शादी करने का वादा किया था। यह कहानी कई बार सुनाई जा चुकी है। ब्रैनवेल को बर्खास्त कर दिया गया और वे पादरी के घर लौटकर अपने साथ हुए अन्याय के बारे में बड़बड़ाने लगे। उन्होंने अपने दोस्तों को आश्वासन दिया कि अगर मिस्टर रॉबिन्सन की मृत्यु हो जाती है, तो विधवा ने उनसे शादी करने का वादा किया था। मिस्टर रॉबिन्सन की मृत्यु हो गई (26 मई, 1846), और फिर ब्रैनवेल ने जोर देकर कहा कि उन्होंने अपनी वसीयत में अपनी पत्नी को शादी करने से मना किया था, ऐसा न करने पर संपत्ति जब्त कर ली जाएगी। दस्तावेज़ की एक प्रति मेरे पास है।

11 सितंबर 1846 को यॉर्क काउंटी के लिटिल ओसबर्न पैरिश में थोरप ग्रीन के निवासी और दिवंगत क्लर्क रेवरेंड एडमंड रॉबिन्सन की वसीयत यॉर्क के प्रिरोगेटिव कोर्ट में उनकी विधवा लिडिया रॉबिन्सन, उनके उत्तराधिकारी आदरणीय चार्ल्स थोरप

और हेनरी न्यूटन, जो वसीयत के निष्पादक थे, की शपथों के तहत सिद्ध हुई, जिन्हें वसीयत का प्रशासन सौंपा गया था।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि वसीयत, जो एक लंबा दस्तावेज़ था, श्रीमती रॉबिन्सन के कार्यों पर कोई रोक नहीं लगा पाई। श्रीमती गैस्केल की जीवनी प्रकाशित होने पर वे अदालतों में अपना चरित्र साफ़ करने के लिए उत्सुक थीं, लेकिन उनके मित्रों ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। मित्रों ने बताया कि आत्मकथा के आगामी संस्करणों में आपत्तिजनक अनुच्छेदों को हटा देने और टाइम्स में एक पत्र प्रकाशित करने से ही मामला पर्याप्त रूप से सुलझ जाएगा।

यह पत्र टाइम्स के विज्ञापन पृष्ठों से लिया गया है।

'8 बेडफोर्ड रो,

'लंदन, 26 मई, 1857.

महोदय, रेवरेंड डब्ल्यू. गैस्केल और उनकी पत्नी श्रीमती गैस्केल (जो शार्लोट ब्रोंटे के जीवन की लेखिका हैं) की ओर से वकील के रूप में, मुझे उस कृति में निहित उन सभी कथनों को वापस लेने का निर्देश दिया गया है, जिनमें एक विधवा महिला (जिसका उल्लेख तो किया गया है, लेकिन नाम नहीं लिया गया है) पर वैवाहिक, मातृत्व या सामाजिक कर्तव्यों के उल्लंघन का आरोप लगाया गया है, और विशेष रूप से पहले खंड के अध्याय 13 और दूसरे खंड के अध्याय 2 में निहित उन कथनों को वापस लेने का निर्देश दिया गया है, जिनमें संबंधित महिला पर दिवंगत ब्रैनवेल ब्रोंटे के साथ अवैध संबंध का आरोप लगाया गया है। ये सभी कथन उस जानकारी पर आधारित थे जिसे श्रीमती गैस्केल उस समय विश्वसनीय मानती थीं, लेकिन आपके द्वारा मुझे दिए गए अतिरिक्त साक्ष्यों के साथ जांच करने पर मैंने पाया है कि वे विश्वसनीय नहीं हैं। इसलिए मुझे न केवल इन कथनों को वापस लेने का अधिकार है, बल्कि श्रीमती गैस्केल की ओर से उन कथनों को कहने के लिए गहरा खेद व्यक्त करने का भी अधिकार है। — मैं, महोदय, आपका सच्चा शुभचिंतक हूँ,

विलियम शेन।

'मेसर्स न्यूटन एंड रॉबिन्सन, सॉलिसिटर्स, यॉर्क।'

कुछ दिनों बाद एथेनियम में प्रकाशित एक विशेष 'नोट' अब कम दिलचस्प नहीं है।

हमें श्रीमती गैस्केल द्वारा लिखित शार्लेट ब्रोंटे के जीवन पर दोबारा टिप्पणी करने के लिए कहा जा रहा है, इसके लिए हमें खेद है, लेकिन हमें ऐसा करना ही होगा,

क्योंकि पुस्तक हमारी अनुशंसा के साथ प्रकाशित हुई है। यह कहना अनावश्यक है कि प्रशंसा का अर्थ जीवनी लेखक पर तथ्यों के सटीक संग्रहकर्ता के रूप में विश्वास करना है। हमें खेद है कि श्रीमती गैस्केल इस मामले में खरी नहीं उतरीं। पिछले कई हफ्तों से लंदन के कुछ गुटों में चल रही गपशप पर हमने ज्यादा ध्यान नहीं दिया; लेकिन टाइम्स अखबार ने श्रीमती गैस्केल की ओर से एक कानूनी माफीनामा प्रकाशित किया है, जिसमें उन्होंने श्री ब्रैनवेल ब्रोंटे की बर्बादी के कारण के संबंध में अपनी पुस्तक में दिए गए बयानों को वापस ले लिया है। श्रीमती गैस्केल के वकील अब यह स्वीकार करने को विवश हैं कि उनकी मुवक्किल ने अपर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर ये बयान दिए थे। मृतकों से संबंधित इतनी दुखद और जीवितों के लिए इतनी हानिकारक, मनगढ़ंत और निराधार कहानी को केवल इस आधार पर ही उचित ठहराया जा सकता है कि यह कहानी पूरी तरह से सच है। और हर किसी को इस बात का अफसोस होगा कि उन बयानों की जांच के लिए उचित सावधानी नहीं बरती गई जो, प्रतीत होता है, उचित नहीं हैं। साहित्य के हित में यह जरूरी है कि जीवनीकार केवल प्रमाणों के आधार पर जल्दबाजी में प्रकाशन न करें, चाहे वे बयान कितने भी उत्सुक और सच्चे क्यों न हों। वे मानहानि हो सकते हैं, और इस रूप में वे बेहद चुभ सकते हैं। इस बीच, शार्लेट ब्रोंटे की जीवनी को आगे प्रसारित करने से पहले उसमें संशोधन करना आवश्यक है।

इस बीच, आइए ब्रैनवेल ब्रोंटे के जीवन पर वापस लौटें जैसा कि उनकी बहन के पत्राचार में वर्णित है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

3 जनवरी, 1846।

प्रिय एलेन, मुझे आज तुम्हें पत्र लिखना ही होगा, चाहे मुझे कुछ कहना हो या न कहना हो, वरना तुम सोचने लगोगी कि मैं तुम्हें भूल गया हूँ; जबकि, एक भी दिन या एक भी घंटा ऐसा नहीं गुजरता जब मैं तुम्हारे बारे में न सोचूँ, और उस मुश्किल दौर के बारे में न सोचूँ जिसमें तुम जी रही हो, घूम रही हो और अपना जीवन बिता रही हो। मैरी टेलर का पत्र बेहद दिलचस्प और उसके व्यक्तित्व को बखूबी दर्शाता था। मेरे पास तुम्हें बताने के लिए कोई खबर नहीं है। यहाँ कोई बदलाव नहीं हुआ है। ब्रैनवेल से कोई उम्मीद नहीं दिखती; वह कहता है कि वह इतना बीमार है कि नौकरी ढूंढने के बारे में सोच भी नहीं सकता; वह घर पर भी आराम नहीं देता। मैं जल्द से जल्द ब्रुकरायड जाने के अपने इरादे पर कायम हूँ— बशर्ते तुम मुझे स्वीकार करो।

अपनी माँ और बहनों को मेरा ढेर सारा प्यार देना। — तुम्हारी प्यारी नेल, सदा वफादार।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

13 जनवरी, 1845।

मेरी प्यारी एलेन, मैंने अक्सर कहा और सोचा है कि तुमने अपने छोटे से जीवन में कई कठिन परीक्षाओं का सामना किया है। तुमने अब तक उन्हें बड़ी दृढ़ता और शांति से सहा है - मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम आगे भी ऐसा ही कर पाओगी। फिर भी तुम्हारे पत्र में कुछ ऐसा है जिससे मुझे डर लगता है कि वर्तमान परीक्षा सबसे बड़ी है, और तुम्हें सबसे ज़्यादा तकलीफ दे रही है। मुझे उम्मीद है कि यह जल्द ही बीत जाएगी और इसका कोई दुख नहीं रहेगा। मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ, तुमसे बात करना चाहता हूँ, और तुम्हें जितना हो सके उतना दिलासा देना चाहता हूँ। ब्रैनवेल और ऐनी शनिवार को हमें छोड़कर जा रहे हैं। ब्रैनवेल इस बार गर्मियों की तुलना में ज़्यादा शांत और कम चिड़चिड़ा है। ऐनी हमेशा की तरह अच्छी, सौम्य और धैर्यवान है। मुझे लगता है कि वह भी पहले से थोड़ी ज़्यादा मज़बूत हो गई है। - अलविदा, प्यारी एलेन।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

31 दिसंबर, 1845।

प्रिय एलेन, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं आपको आपके भेजे हुए सुंदर चप्पलों के लिए धन्यवाद दूं या फिर मेरी वजह से थोड़ी सी भी परेशानी और खर्च उठाने के लिए आपको डांटूं। अगर सब ठीक रहा तो मैं उन्हें सिलवाकर ब्रुकरॉयड आते समय अपने साथ ले आऊंगी।

"इस बात में कभी संदेह मत करना कि मैं जितनी जल्दी हो सकेगा ब्रुकरायड आऊंगा, नेल। मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हें देखने की मेरी इच्छा उतनी ही है जितनी तुम्हारी मुझे देखने की।"

मुझे शनिवार को एलेन टेलर का एक नोट मिला, जिसमें उन्होंने बताया कि न्यूजीलैंड से मैरी के पत्र प्राप्त हुए हैं और वह स्वस्थ और खुश हैं। मुझे लगता है कि आपने अभी तक उन्हें नहीं देखा है, क्योंकि आपने उनका उल्लेख नहीं किया है; लेकिन संभवतः यह नोट मिलने से पहले वे आपके पास पहुँच जाएँगे।

ब्रैनवेल के बारे में आपने जो कहा वह बिल्कुल सही है कि भोग-विलास से होने वाले कष्टों से बढ़कर कोई कष्ट नहीं होता। अफसोस! मैं इस बात की सच्चाई को प्रतिदिन सिद्ध होते देखता हूँ।

'आपके दोस्तों को अपने दुखी भाई की सेवा करते-करते थका देने वाला और बोझिल जीवन जीना पड़ता होगा। यह वास्तव में दुखद है कि जिन लोगों ने कोई पाप नहीं किया है उन्हें इतना कष्ट सहना पड़े।'

एलेन, मुझे थोड़ा और नियमित रूप से पत्र लिखना— तुम्हारे पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी होती है। अपनी माँ और बहनों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ देना।— तुम्हारी विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

मिस वूलर को

30 जनवरी, 1846।

मेरी प्रिय मिस वूलर, — मैंने अभी तक ब्रुकरॉयड में अपनी नियमित यात्रा नहीं की है, लेकिन एलेन से मुझे अक्सर खबर मिलती रहती है, और उसने मुझे यह बताना नहीं भूला कि आप वॉर्सेस्टरशायर गई हैं। हालाँकि, वह मुझे आपका पता नहीं दे सकी; अगर मुझे पता होता तो मैं आपको बहुत पहले ही पत्र लिख देता।

मुझे लगा था कि रेलवे संकट के बारे में सुनकर आप जानना चाहेंगे कि हमारा काम कैसा चल रहा है, और आप निश्चिंत रहें कि मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि हमारी छोटी सी पूंजी अभी तक कम नहीं हुई है। जैसा कि आपने कहा, "यॉर्क एंड मिडलैंड" एक बहुत अच्छी रेलवे लाइन है, फिर भी मैं आपसे स्वीकार करता हूँ कि मैं समय रहते समझदारी से काम लेना चाहता हूँ। मुझे नहीं लगता कि सबसे अच्छी लाइनें भी अपने मौजूदा प्रीमियम पर कई वर्षों तक चल पाएंगी, और मैं बहुत चिंतित था कि हम अपने शेयर समय रहते बेच दें और उससे प्राप्त राशि को किसी सुरक्षित निवेश में लगा दें, भले ही फिलहाल यह कम लाभदायक हो। हालाँकि, मैं अपनी बहनों को इस मामले को ठीक उसी तरह देखने के लिए राजी नहीं कर पा रहा हूँ जैसा मैंने सोचा था, और मुझे लगता है कि एमिली की राय के सीधे विरोध में काम करके उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाने के बजाय नुकसान का जोखिम उठाना बेहतर होगा। जब मैं ब्रसेल्स में था और दूरी के कारण अपने हितों की देखभाल नहीं कर पा रहा था, तब उसने मेरे लिए बहुत ही अच्छे और सक्षम तरीके से काम संभाला था; इसलिए, मैं

उसे ही काम संभालने दूँगा और इसके परिणाम भुगतूँगा। वह निस्वार्थ और ऊर्जावान तो हैं ही, और अगर वह मेरी अपेक्षा के अनुरूप उतनी सहज या ग्रहणशील न हों, तो मुझे याद रखना चाहिए कि पूर्णता मनुष्य के नसीब में नहीं होती। और जब तक हम अपने प्रियजनों और जिनसे हमारा गहरा संबंध है, उनके प्रति अटूट और अडिग आदर रखते हैं, तब तक यह कोई बड़ी बात नहीं है कि वे कभी-कभी अपने अनुचित और हठी विचारों से हमें परेशान कर दें। मेरी प्रिय मिस वूलर, आप भी मेरी ही तरह बहनों के आपसी स्नेह का महत्व जानती हैं; मेरा मानना है कि जब वे लगभग बराबर उम्र की हों, और शिक्षा, रुचि और भावनाएँ एक जैसी हों, तो इस संसार में इससे बढ़कर कुछ नहीं है।

'आप ब्रैनवेल के बारे में पूछते हैं। वह कभी नौकरी ढूंढने के बारे में नहीं सोचता, और मुझे डर लगने लगा है कि उसने खुद को जीवन में किसी भी सम्मानजनक पद को प्राप्त करने के अयोग्य बना लिया है; इसके अलावा, अगर उसके पास पैसा होता भी तो वह उसे केवल अपने ही नुकसान के लिए इस्तेमाल करता; मुझे डर है कि उसमें आत्म-नियंत्रण की क्षमता लगभग नष्ट हो चुकी है। आप मुझसे पूछते हैं कि क्या मैं पुरुषों को विचित्र प्राणी नहीं मानता? हाँ, बिल्कुल—मैंने अक्सर ऐसा सोचा है; और मुझे यह भी लगता है कि उनके पालन-पोषण का तरीका विचित्र है, उन्हें प्रलोभनों से ठीक से बचाया नहीं जाता। लड़कियों की रक्षा ऐसे की जाती है मानो वे बहुत ही नाजुक और भोली हों, जबकि लड़कों को दुनिया में ऐसे छोड़ दिया जाता है मानो वे सभी प्राणियों में सबसे बुद्धिमान और सबसे कम गुमराह होने वाले हों।

मुझे खुशी है कि आपको ब्रॉम्सग्रोव पसंद आया। जब भी मैं आपको वहां आनंद लेते हुए देखती हूँ, तो मुझे एक विशेष प्रकार की संतुष्टि मिलती है, क्योंकि इससे मुझे यह विश्वास हो जाता है कि इस जीवन में भी न्याय का फल मिलता है; अब आप स्वतंत्र हैं, और मुझे आशा है कि आपके पास अभी भी कई साल हैं जिनमें आप स्वस्थ और ऊर्जावान रहकर इस स्वतंत्रता का आनंद ले सकती हैं। इसके अलावा, मेरी खुशी का एक और स्वार्थी कारण भी है: ऐसा लगता है कि एक अकेली महिला भी उतनी ही खुश रह सकती है जितनी कि प्रिय पत्नियाँ और गर्वित माताएँ। मुझे इस बात की खुशी है— मैं आजकल अविवाहित और कभी शादी न करने वाली महिलाओं के अस्तित्व पर बहुत विचार करती हूँ, और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच चुकी हूँ कि इस धरती पर अविवाहित महिला से बढ़कर कोई सम्माननीय चरित्र नहीं है, जो पति या

माता के सहारे के बिना चुपचाप, दृढ़ता से अपना जीवन व्यतीत करती है, और जो पैंतालीस वर्ष या उससे अधिक आयु प्राप्त करने के बाद भी एक सुव्यवस्थित मन, साधारण सुखों का आनंद लेने की प्रवृत्ति, अपरिहार्य कष्टों को सहने का धैर्य, दूसरों के कष्टों के प्रति सहानुभूति और अपनी सामर्थ्य के अनुसार जरूरतमंदों की मदद करने की तत्परता रखती है। मैं इस पत्र को आज ही डाक से भेजना चाहती हूँ, इसलिए मुझे जल्दी में समाप्त करना होगा।— विश्वास कीजिए, मेरी प्रिय मिस वूलर, आपकी अत्यंत स्नेहपूर्ण,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

4 नवंबर, 1845।

प्रिय एलेन, आपने अपने पिछले पत्र में मेरी कोई निंदा नहीं की, लेकिन मुझे डर है कि आपने मुझे इतने लंबे समय तक जवाब न देने के लिए अनुचित समझा होगा। दरअसल, मैं आपको हॉवर्थ आने के लिए आमंत्रित करना चाहता था। ब्रैनवेल को नौकरी मिलने की उम्मीद थी, और मैं उनके प्रयासों के परिणाम का इंतजार कर रहा था ताकि मैं उनसे कह सकूँ, "प्रिय एलेन, हमसे मिलने आइए"; लेकिन वह पद (रेलवे समिति में सचिव का पद) किसी और को दे दिया गया है। ब्रैनवेल अभी भी घर पर हैं, और जब तक वह यहाँ हैं, आप नहीं आ सकतीं। उनके बारे में जितना अधिक मैं जानता हूँ, मेरा यह संकल्प उतना ही दृढ़ होता जा रहा है। काश मैं उनके पक्ष में एक शब्द भी कह पाता, लेकिन मैं नहीं कह सकता, इसलिए मैं चुप रहूँगा।

'एमिली और ऐनी चाहती हैं कि मैं आपको बताऊँ कि उन्हें लगता है कि नन्ही फ्लॉसी के लिए इतने बड़े परिवार का पालन-पोषण करना बहुत मुश्किल है; उनका मानना है कि सभी पिल्लों को संरक्षित करने के आपके विरोध काफ़ी हद तक सही है, क्योंकि अगर उन्हें रखा गया तो वे अपनी बेचारी माँ को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

14 अप्रैल, 1846।

प्रिय एलेन, — मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि आपका पिछला पत्र पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई; क्योंकि जब आपको लिखे मेरे दूसरे पत्र के तीन-चार दिन बाद भी

कोई उत्तर नहीं मिला, तो मुझे लगा कि कुछ गड़बड़ है। अपनी आशंकाओं को निराधार जानकर मुझे बहुत राहत मिली। मैं आपको मिस रिंगरोज़ के पत्र धन्यवाद सहित वापस भेज रही हूँ। मुझे उन्हें पढ़ना हमेशा अच्छा लगता है, वे मुझे एक सौम्य मन का सच्चा सूचक लगते हैं, जो अपने आप को बहुत अधिक महत्व नहीं देता; कृपया अनावश्यक प्रशंसा करके उनमें इस भावना को जागृत न करें। सरल हृदय, समझदार, लेकिन प्रतिभाशाली न होने वाले लोगों का यह विशेषाधिकार है कि वे अपने विचारों और कार्यों की दूसरों से तुलना किए बिना अच्छा कर सकते हैं और आत्म-प्रशंसा के लिए प्रेरणा प्राप्त किए बिना अच्छा व्यवहार कर सकते हैं। प्रतिभाशाली लोग लगभग हमेशा अपने भीतर की उत्कृष्टता को भली-भांति जानते हैं। काश मैं कुछ सकारात्मक कह पाती, लेकिन जब तक ब्रैनवेल घर पर रहकर सुधार की बजाय पतन की ओर अग्रसर होता रहेगा, तब तक हम कैसे निश्चिंत रह सकते हैं? हाल ही में उन्हें यह बताया गया है कि यदि वे बेहतर व्यवहार करें तो उन्हें रेलवे में उसी पद पर पुनः भर्ती कर लिया जाएगा जहाँ वे पहले तैनात थे, लेकिन वे कोई प्रयास करने को तैयार नहीं हैं; वे काम नहीं करना चाहते; और घर पर वे हर संसाधन पर बोझ हैं— सारी खुशियों में बाधा हैं। लेकिन शिकायत करने का कोई फायदा नहीं।

सभी को मेरा प्यार। जल्द ही फिर लिखना।

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

17 जून, 1846।

प्रिय एलेन, - आपके पिछले पत्र के लहजे से मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप कुछ हद तक शांत हो रही हैं। मुझे खेद है कि हम हाल ही में सामान्य से कुछ अधिक परेशान रहे हैं। श्री रॉबिन्सन की मृत्यु, जो लगभग तीन सप्ताह या एक महीने पहले हुई थी, ब्रैनवेल के लिए अपने आसपास के सभी लोगों को अपनी भावनाओं आदि से शोर-शराबा और गड़बड़ी में डालने का बहाना बन गई। इसके तुरंत बाद सभी से खबर आई कि श्री रॉबिन्सन ने मरने से पहले अपनी वसीयत बदल दी थी, और अपनी विधवा और ब्रैनवेल के बीच विवाह की सभी संभावनाओं को पूरी तरह से समाप्त कर दिया था, यह शर्त लगाकर कि यदि वह कभी भी उससे किसी भी प्रकार का संपर्क फिर से शुरू करने का साहस करती है तो उसे एक पैसा भी नहीं मिलेगा। स्वाभाविक रूप से, तब वह असहनीय हो गया। वह पापा को दिन-रात चैन से नहीं बैठने देता, और

लगातार उनसे पैसे ऐंठता रहता है, कभी-कभी धमकी देता है कि अगर उसे पैसे नहीं दिए गए तो वह आत्महत्या कर लेगा। वह कहता है कि श्रीमती रॉबिन्सन अब पागल हो गई हैं; उसका मानसिक संतुलन पूरी तरह बिगड़ चुका है, क्योंकि उसे मिस्टर रॉबिन्सन के प्रति अपने व्यवहार पर पछतावा है (जिनकी मृत्यु मानसिक पीड़ा के कारण शीघ्र हुई प्रतीत होती है) और उन्हें खोने का दुख है। मुझे नहीं पता कि उसकी बातों पर कितना विश्वास करूं, लेकिन मुझे डर है कि वह बहुत बीमार है। ब्रैनवेल का कहना है कि वह अपने लिए कुछ भी नहीं कर सकता और न ही करेगा। उसे कई बार अच्छे पदों की पेशकश की गई है, जिनके लिए वह दो सप्ताह के काम से योग्य हो सकता था, लेकिन वह शराब पीने और हम सबको दुखी करने के अलावा कुछ नहीं करेगा। मुझे एक सप्ताह पहले एलेन टेलर का एक पत्र मिला था, जिसमें उसने बताया था कि एक महीने पहले न्यूजीलैंड से पत्र मिले थे और सब ठीक था। मैं आपसे जल्द ही फिर से सुनना चाहूंगी। मुझे आशा है कि एक दिन मैं ब्रुकरॉयड को फिर से देखूंगी, हालांकि मुझे लगता है कि अभी ऐसा नहीं होगा - ये मनोरंजन के दिन नहीं हैं। सभी को प्यार।

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 1 मार्च, 1847।

प्रिय एलेन, ब्रैनवेल का व्यवहार आजकल बहुत खराब चल रहा है। उसके व्यवहार की अतिशयता और उसके द्वारा दिए गए रहस्यमय संकेतों (क्योंकि वह कभी खुलकर नहीं बोलता) से मुझे लगता है कि हमें जल्द ही उसके द्वारा लिए गए नए कर्जों की खबर मिलेगी। मिस रॉबिन्सन, जिन्होंने अपने पिता की मृत्यु के बाद लगभग छह महीने तक ऐनी से पत्र व्यवहार करना बंद कर दिया था, ने हाल ही में फिर से शुरू कर दिया है। दो सप्ताह तक उन्होंने लगभग हर दिन ऐनी को पत्र भेजे, जो असीम सम्मान और कृतज्ञता से भरे हुए थे। वे अपनी माँ के बारे में भी बहुत स्नेह से बात करती हैं और उनकी गलतियों का कभी कोई संकेत नहीं देतीं। हम विशेष ध्यान रखते हैं कि ब्रैनवेल को ऐनी को लिखे उनके पत्रों के बारे में पता न चले। मेरा स्वास्थ्य बेहतर है: मैं अपनी इस कमजोरी का कारण ठंडे मौसम को मानती हूँ, न कि किसी बेचैन मन को, क्योंकि आखिरकार, मेरे पास शुक्रगुजार होने के लिए बहुत सी चीजें हैं। जल्द ही फिर से लिखना।

‘सी. ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

12 मई, 1847।

प्रिय एलेन, अगले सप्ताह गुरुवार या शुक्रवार को आपसे मिलकर हम सभी को बहुत खुशी होगी, जो भी दिन आपको सबसे सुविधाजनक लगे। आप लगभग किस समय यहाँ पहुँचेंगी और कैसे आएँगी? क्या आप कीघली तक कोच से जाएँगी या हॉवर्थ तक किसी गाड़ी से? अब कोई रुकावट तो नहीं होनी चाहिए? मुझे कोई परेशानी नहीं चाहिए, मैं आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। आशा है कि आप यहाँ आराम से रहेंगी।

ब्रैनवेल अब शांत है, और इसका एक अच्छा कारण है: उसने काफी पैसा खर्च कर दिया है, और इसलिए उसे कुछ हद तक संयम बरतना पड़ रहा है। आप उसे मानसिक रूप से कमजोर और दिखने में बिल्कुल अय्याश पाएंगे। मुझे नहीं लगता कि वह आपके साथ जरा भी असभ्य व्यवहार करेगा; इसके विपरीत, वह बिल्कुल शांत और सौम्य रहेगा। मैं प्रार्थना करता हूं कि मौसम अच्छा रहे ताकि आपके ठहरने के दौरान हम बाहर जा सकें। अभी के लिए अलविदा। नीरसता और एकरसता के लिए तैयार रहें। ब्रुकरॉयड में सभी को मेरा प्यार देना।

‘सी. ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

28 जुलाई, 1848।

प्रिय एलेन, ब्रैनवेल का व्यवहार पहले जैसा ही है। उसका स्वास्थ्य काफी बिगड़ा हुआ लगता है। पापा, और कभी-कभी हम सभी, उसके साथ उदास रातें बिताते हैं: वह दिन भर सोता रहता है, और परिणामस्वरूप रात में जागता रहता है। लेकिन क्या हर घर में ऐसी कोई परेशानी नहीं होती?

‘मुझे जल्द ही पत्र लिखना, प्रिय नेल, और— यकीन मानो, तुम्हारा सच्चा,

‘सी. ब्रोंटे।’

ब्रैनवेल ब्रोंटे का निधन रविवार, 24 सितंबर, 1848 को हुआ था, और शार्लोट द्वारा अपने मित्र श्री विलियम्स को लिखे गए निम्नलिखित दो पत्र विशेष रूप से दिलचस्प हैं।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

2 अक्टूबर, 1848।

“मेरे प्रिय महोदय, — “हमने अपने मृत को अपनी आँखों से ओझल कर दिया है।” पिछले सप्ताह के अंधकारमय कोलाहल के बाद अब शांति छाने लगी है। हमें उनके जाने पर वैसे शोक मनाने की अनुमति नहीं है जैसे अन्य लोग अपने प्रियजनों के लिए शोक मनाते हैं। हमारे इकलौते भाई के चले जाने को हमें दंड के बजाय दया के रूप में ही देखना चाहिए। ब्रैनवेल बचपन में अपने पिता और बहनों का गौरव और आशा थे, लेकिन युवावस्था के बाद स्थिति बदल गई। उन्हें गलत राह पर जाते देखना हमारा दुर्भाग्य रहा है; उनके सही रास्ते पर लौटने की आशा, अपेक्षा और प्रतीक्षा करना; आशा के टलने की पीड़ा और प्रार्थना के विफल होने की निराशा को महसूस करना; अंततः हताशा का अनुभव करना — और अब एक महान करियर के अचानक और अनिश्चित अंत को देखना हमारा सौभाग्य रहा है।”

मैं शोक के कारण नहीं रो रही हूँ—कोई सहारा नहीं छिना, कोई सांत्वना नहीं छिन गई, कोई प्रिय साथी नहीं खोया—बल्कि प्रतिभा के विनाश, आशा के टूटने, और एक उज्ज्वल और चमकते सितारे के असमय और निराशाजनक अंत के कारण रो रही हूँ। मेरा भाई मुझसे एक साल छोटा था। बहुत समय पहले, उसके लिए मेरे सपने और आकांक्षाएँ थीं—वे दुखद रूप से नष्ट हो गईं। उसकी यादों में अब केवल उसकी गलतियाँ और पीड़ाएँ ही बची हैं। उसके जीवन और मृत्यु के प्रति मेरे मन में इतनी गहरी करुणा और दुख है, उसके संपूर्ण अस्तित्व के खालीपन के लिए इतनी तड़प है जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती। मुझे विश्वास है कि समय इन भावनाओं को शांत कर देगा।

मेरे बेचारे पिता स्वाभाविक रूप से अपनी बेटियों से ज़्यादा अपने इकलौते बेटे को महत्व देते थे, और उसके कारण उन्होंने बहुत कष्ट सहा था। वे उसके जाने पर दाऊद की तरह अबशालोम की मृत्यु पर रोते रहे - "मेरा बेटा, मेरा बेटा!" - और पहले तो उन्होंने सांत्वना स्वीकार नहीं की। फिर जब मुझे अपनी शक्ति जुटाकर उनके पास जाकर उनका सहारा बनना चाहिए था, तब मैं एक ऐसी बीमारी से बीमार पड़ गई जिसके लक्षण मुझे कुछ समय पहले से ही महसूस हो रहे थे, और उस मृत्यु के दृश्य के भय और पीड़ा ने मेरी स्थिति को और भी गंभीर बना दिया - ऐसा दृश्य मैंने पहली बार देखा था। बीता हुआ सप्ताह मेरे लिए अजीब सा रहा है। ईश्वर का धन्यवाद, मेरे पिता की कृपा से, मैं अब बेहतर हूँ, हालाँकि अभी भी कमज़ोर हूँ। काश मुझमें

शारीरिक शक्ति होती - इसकी कमी मेरे लिए बहुत बड़ी बाधा है। मैं वह नहीं कर सकती जो मैं करना चाहती हूँ, क्योंकि मुझमें निरंतर ऊर्जा और शारीरिक शक्ति की कमी है।

मेरे अभागे भाई को कभी पता ही नहीं चला कि उसकी बहनों ने साहित्य में क्या किया था—उसे यह भी नहीं पता था कि उन्होंने कभी एक पंक्ति भी प्रकाशित की थी। हम उसे अपने प्रयासों के बारे में इसलिए नहीं बता सके क्योंकि हमें डर था कि इससे उसे अपने व्यर्थ समय और प्रतिभा के दुरुपयोग का गहरा पछतावा होगा। अब उसे कभी पता नहीं चलेगा। मैं इस विषय पर अभी और बात नहीं कर सकती—यह बहुत कष्टदायक है।

आपकी सहानुभूति के लिए धन्यवाद, और मैं दिली प्रार्थना करता/करती हूँ कि आपके सभी पुत्रों का भला हो, और आपको उन कष्टों से मुक्ति मिले जो मेरे पिता को सहने पड़े। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 6 अक्टूबर, 1848।

मेरे प्रिय महोदय, आपके पिछले सच्चे मित्रवत पत्र और उसके साथ भेजे गए ब्लैकवुड अंक के लिए आपका धन्यवाद। दोनों ऐसे समय पर प्राप्त हुए जब मेरी बीमारी फिर से उभर आई थी और मैं बहुत उदास था। दोनों से मुझे लाभ हुआ, विशेषकर पत्र से। आपकी मित्रता की अभिव्यक्ति में मुझे केवल एक ही कमी लगती है: वे मुझे शर्मिंदा करती हैं, क्योंकि ऐसा लगता है कि वे यह संकेत देती हैं कि आप मुझे मेरी योग्यता से अधिक समझते हैं। मेरा मानना है कि आप आम तौर पर अपने साथी मनुष्यों के बारे में बहुत अधिक सोचते हैं - जिनके प्रति आपके मन में स्नेह है, उनमें केवल अच्छाई ही देखते हैं। इस आदत का अपरिहार्य परिणाम निराशा ही है। सभी पुरुषों और महिलाओं को धूल और राख समझें - दैवीयता की एक चिंगारी कभी-कभार इस नीरस ढेर में प्रज्वलित होती है - बस इतना ही। जब मैंने अपने दिवंगत भाई के सुंदर चेहरे और माथे को देखा (प्रकृति ने उन्हें उनकी बहनों की तुलना में अधिक सुंदर रूप और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान किया था) और स्वयं से पूछा कि आखिर किस बात ने उन्हें हमेशा गलत रास्ते पर धकेल दिया, हमेशा पतन की ओर ले गया, जबकि उनके पास उत्थान के इतने सारे गुण थे, तब मुझे मानवता की कमजोरी

का एक गहरा अहसास हुआ - धर्म और सिद्धांतों के बिना प्रतिभा भी सच्ची महानता तक नहीं पहुंच सकती। इन दोनों चीजों के महत्व, या यहां तक कि वास्तविकता पर भी, उन्होंने अपने अंत के कुछ दिनों तक विश्वास नहीं किया; और फिर अचानक ही उन्होंने इनके अस्तित्व और महत्व के प्रति दृढ़ विश्वास प्रकट किया। इस विचित्र परिवर्तन की स्मृति अब मेरे पिता को बहुत सांत्वना देती है। मैंने स्वयं, पीड़ादायक, शोकपूर्ण आनंद के साथ, उन्हें अपने अंतिम क्षणों में धीरे-धीरे प्रार्थना करते सुना; और अपने बिस्तर पर पिता द्वारा की गई अंतिम प्रार्थना में उन्होंने "आमीन" जोड़ा। उनके होठों से निकला वह शब्द कितना असामान्य था, निश्चित रूप से आप, जो उन्हें नहीं जानते, इसकी कल्पना नहीं कर सकते। इस बदलाव के समान ही उनके रिश्तेदारों के प्रति उनकी भावनाओं में भी बदलाव आया - सारी कड़वाहट गायब हो गई।

जब संघर्ष समाप्त हुआ और अंतिम भयानक पीड़ा के बाद एक शांत खामोशी छाने लगी, तब मुझे ऐसा महसूस हुआ, जैसा पहले कभी नहीं हुआ था, कि स्वर्ग में उसके लिए शांति और क्षमा है। उसके सारे दोष—स्पष्ट शब्दों में कहें तो, उसकी सारी बुराइयाँ—उस क्षण मुझे कुछ भी नहीं लगीं: उसके द्वारा किया गया हर गलत काम, उसके द्वारा पहुँचाया गया हर दर्द गायब हो गया; केवल उसकी पीड़ाएँ ही याद रह गईं; केवल स्वाभाविक भावनाओं को ठेस पहुँचने का दर्द ही रह गया। यदि मनुष्य अपने साथी की अपूर्णताओं को इस प्रकार पूरी तरह से भूल सकता है, तो मनुष्य को बनाने वाला परम सत्ता अपने प्राणी को कितना अधिक क्षमा कर सकता है?

यदि उनके पाप गहरे लाल रंग के होते, तो अब मेरा मानना है कि वे ऊन के समान सफेद हैं। उन्हें शांति मिल गई है, और इससे हम सभी को सुकून मिलता है। इस दुनिया को छोड़ने से बहुत पहले ही, उनके जीवन में कोई खुशी नहीं थी।

'ब्लैकवुड द्वारा जेन आयर का उल्लेख मुझे बहुत प्रसन्न कर गया, और मुझे विश्वास है कि जब साहित्यिक महत्वाकांक्षा के अलावा अन्य भावनाओं का उबाल मेरे मन में थोड़ा शांत हो जाएगा, तो मुझे और भी अधिक प्रसन्नता होगी।'

डॉक्टर ने मुझसे कहा है कि मुझे जल्दी स्वस्थ होने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए; लेकिन आज मैं निश्चित रूप से बेहतर महसूस कर रहा हूँ। मैं आभारी हूँ कि मेरे पिता ने अब तक इस कठिन समय का डटकर सामना किया है; और मेरी प्यारी बहनों ने भी, जिनकी अथक देखभाल और दयालुता के कारण ही मैं आज स्वस्थ हूँ। —विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आपका विश्वासपात्र।

‘सी. ब्रोंटे।’

ब्रैनवेल के बारे में मेरे पास मौजूद तिथि के क्रम में अंतिम पत्र एलेन नुसे की बहन को संबोधित है: —

मिस मर्सी नुसे को

हॉवर्थ, 25 अक्टूबर, 1848।

प्रिय मिस नुसे, आपके स्नेहपूर्ण पत्र के लिए हार्दिक धन्यवाद। जिस घटना का आपने जिक्र किया है, वह हम सब पर अचानक और बेहद दुखद ढंग से घटी। मेरे बेचारे भाई का स्वास्थ्य लंबे समय से खराब था, और गर्मियों के दौरान उनकी भूख कम हो गई थी और वे कमजोर लग रहे थे, लेकिन न तो हमने, न उन्होंने खुद ने, और न ही इस मामले में सलाह लिए गए किसी भी चिकित्सक ने इसे तत्काल खतरे का मामला माना। मृत्यु से दो दिन पहले वे घर से बाहर निकले थे, और केवल एक दिन बिस्तर पर रहे।

आपकी सहानुभूति के लिए धन्यवाद। इन परिस्थितियों में कई लोग हमारे इस नुकसान को राहत की बात समझेंगे; वास्तव में, हमें पूरी विनम्रता और कृतज्ञता के साथ यह स्वीकार करना चाहिए कि ईश्वर ने न्याय में दया का भाव भरपूर रखा है। लेकिन फिर भी, जैसा कि आप अनुभव से जानते ही होंगे, निकट संबंधियों के बीच अंतिम वियोग जीवित बचे लोगों के लिए अत्यंत पीड़ादायी होता है। उस समय हर गलती और पाप भुला दिया जाता है, दया और शोक उनके दिलों और यादों में बस जाते हैं। फिर भी, इस दुख में हमें सांत्वना भी मिलती है। बेचारे ब्रैनवेल के जीवन के अंतिम कुछ दिनों में एक अत्यंत शुभ परिवर्तन आया: उनका व्यवहार, उनकी भाषा, उनके भाव सब कुछ बदल गया और कोमल हो गया। यह परिवर्तन मृत्यु के भय के कारण नहीं हो सकता था, क्योंकि उनकी मृत्यु से आधे घंटे पहले तक वे खतरे से बेखबर प्रतीत होते थे। हम उन्हें ईश्वर के हाथों में सौंपते हैं: ईश्वर मनुष्य की दृष्टि से नहीं देखता।

पापा, शुक्र है कि उन्होंने इस मुश्किल घड़ी का सामना बहुत अच्छे से किया। शुरुआत में उन्हें बहुत दुख हुआ था - इकलौते बेटे को खोना कोई मामूली बात नहीं है, लेकिन अब तक उनकी शारीरिक शक्ति कम नहीं हुई है और उन्होंने मानसिक रूप से भी काफी हद तक खुद को संभाल लिया है; मेरी प्यारी बहनें भी ठीक हैं। दुर्भाग्य से, जब सबसे ज़्यादा ताकत की ज़रूरत थी, उसी समय मैं बीमार पड़ गया। मैंने एक-दो

दिन तक ठीक होने की उम्मीद में हिम्मत रखी, लेकिन हालत और बिगड़ गई। बुखार, उल्टी, भूख बिल्कुल न लगना और पेट में दर्द जैसे लक्षण थे। डॉक्टर ने इसे पित्त ज्वर बताया, लेकिन मुझे लगता है कि यह हल्का रूप रहा होगा; कुछ ही दिनों में दवा और देखभाल से ठीक हो गया। मैं सिर्फ एक हफ्ते बिस्तर पर पड़ा रहा और उम्मीद है कि अब लगभग ठीक हो चुका हूँ। मुझे बहुत बुरा लगा कि जब सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, तब मैं कुछ भी करने में असमर्थ था। पिछला महीना मेरे जीवन में उदासी से भरा रहा।

श्रीमती नुसे और आपकी बहन को मेरा ढेर सारा प्यार देना, और— यकीन मानिए, मेरी प्यारी मिस नुसे, आपकी सच्ची दोस्त।

'सी. ब्रोंटे।'

मेरे दुखी भाई को कभी पता ही नहीं चला कि उसकी बहनों ने साहित्य में क्या किया था - उसे इस बात की जानकारी भी नहीं थी कि उन्होंने कभी एक पंक्ति भी प्रकाशित की थी।

श्री विलियम्स को संबोधित इन शब्दों को पढ़ने वाला कौन एक पल के लिए भी यह कल्पना कर सकता है कि शार्लोट सच के अलावा कुछ और कह रही है? और फिर भी हमारे पास श्री ग्रुंडी लिख रहे हैं:

पैट्रिक ब्रोंटे ने मुझसे कहा था कि उन्होंने 'वुथरिंग हाइट्स' का एक बड़ा हिस्सा खुद लिखा था।

और श्री जॉर्ज सियरल फिलिप्स, अधिक जीवंत कल्पना के साथ, ब्रैनवेल को हॉवर्थ के ब्लैक बुल रेस्तरां के बैठक कक्ष में अपने मित्रों के सामने अपनी बहनों की प्रतिभा और जेन आयर तथा अन्य रचनाओं की खूबियों पर चर्चा करते हुए वर्णित करते हैं। श्री लेलैंड तो इतनी मूर्खता करते हैं कि ब्रैनवेल की कविता की तुलना एमिली की कविता से कर देते हैं, और ब्रैनवेल को श्रेष्ठ बताते हैं—जिससे आगे कोई टिप्पणी करना असंभव हो जाता है। 'मेरे अभागे भाई को कभी पता ही नहीं चला कि उसकी बहनों ने साहित्य में क्या योगदान दिया है'—शार्लट के ये शब्द उन सभी लोगों के लिए अंतिम सत्य माने जा सकते हैं जिन्हें वुदरिंग हाइट्स के लेखकत्व के बारे में कोई संदेह था।

अध्याय VI: एमिली जेन ब्रोंटे

एमिली ब्रोंटे आधुनिक साहित्य की एक रहस्यमयी हस्ती हैं। उनका जन्म एक साधारण पादरी के परिवार में हुआ और उनतीस वर्ष की आयु में वे इस दुनिया से विदा हो गईं। अपने पीछे उन्होंने अपने चरित्र या विचार शैली को दर्शाने वाली कोई भी महत्वपूर्ण कृति नहीं छोड़ी, सिवाय उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'वुथरिंग हाइट्स' और कुछ कविताओं के - जिनमें से तीन-चार कविताएँ हमेशा के लिए हमारे काव्य संग्रहों में अमर रहेंगी। और उन्होंने अपनी बहन ऐनी के अलावा किसी और को अपना मित्र नहीं बनाया। ऐनी के साथ उन्होंने अपने जीवन के उन दो-तीन दौरों में पत्र व्यवहार किया होगा जब वे अपनी प्रिय बहन से अलग थीं; और यह निश्चित है कि यह पत्र-व्यवहार अत्यंत स्नेहपूर्ण था। शार्लेट, जो अपनी छोटी बहन से बहुत प्रेम करती थीं, फिर भी विचारों और सहानुभूति में उनके बहुत करीब नहीं आ सकीं, उन्होंने एक पत्र में उन्हें 'मेरी प्यारी' कहकर संबोधित किया; और यह निश्चित है कि अपनी दोनों बहनों, और विशेष रूप से ऐनी को लिखे उनके पत्र अत्यंत कोमल और आत्म-प्रकटीकरण से भरपूर रहे होंगे। जब एमिली और ऐनी दोनों का देहांत हो गया, तो संभवतः शार्लोट ने उनके पत्रों और साहित्यिक सामग्रियों के हर टुकड़े को सावधानीपूर्वक नष्ट कर दिया होगा; और इसी कारण, उनकी पुस्तकों और साहित्यिक अंशों के अलावा, हम एमिली को केवल उनकी बहन की सहेली को लिखे गए दो औपचारिक पत्रों से ही जानते हैं। इनके अलावा एमिली के जीवन के प्रति दृष्टिकोण के बारे में कोई जानकारी नहीं है। शैशवावस्था में वह शार्लोट के साथ कॉवन ब्रिज गई थीं, और वहां की गवर्नेंस ने उन्हें 'एक प्यारी सी बच्ची' बताया था। लड़की होने पर वह रो हेड स्थित मिस वूलर के स्कूल गईं; लेकिन वहां, शार्लोट के विपरीत, उन्होंने कोई दोस्त नहीं बनाया। घर पर वे और ऐनी हमेशा साथ रहती थीं, लेकिन उन्होंने आपस में क्या कहा, इसका कोई

रिकॉर्ड नहीं है। दोनों बहनों में कई तरह से अंतर रहा होगा। ऐनी, सौम्य और प्रेरक स्वभाव की थीं, शार्लोट की तरह ही पली-बढ़ीं, अपने माता-पिता के ईसाई धर्म के प्रति समर्पित थीं, और एक पादरी के घर की सभी शर्तों के साथ पूरी तरह से सामंजस्य बिठाए हुए थीं। यह सोचना असंभव है कि 'द ओल्ड स्टोइक' और 'लास्ट लाइन्स' की लेखिका एमिली भी चर्च के सिद्धांतों से उतनी ही जुड़ी हुई थीं; लेकिन धार्मिक विषयों पर एमिली के क्या विचार थे, यह दुनिया कभी नहीं जान पाएगी। श्रीमती गैस्केल ने मिस नुसे से यही सवाल पूछा था: 'एमिली का धर्म क्या था?' लेकिन एमिली दुनिया की आखिरी शख्सियत थीं जिन्होंने इतने पवित्र विषय पर अपने सबसे मित्रवत मेहमान से भी बात की हो। जैसा कि हम जानते हैं, एमिली कुछ समय के लिए हैलिफ़ैक्स के पास लॉ हिल के एक स्कूल में थीं - मिस पैचेट के स्कूल में। वह इससे भी अधिक समय तक ब्रुसेल्स के हेगर पेंशननेट में रहीं। श्रीमती गैस्केल का काम शार्लोट ब्रोंटे की जीवनी लिखना था, न कि उनकी बहन एमिली की; और इसी वजह से श्रीमती गैस्केल की किताब में एमिली के बारे में बहुत कम लिखा है - एमिली की नज़र से हैलिफ़ैक्स और ब्रुसेल्स के जीवन का कोई विवरण नहीं है। लेकिन समय ने अपना बदला ले लिया है। यह पंथ, जिसकी शुरुआत श्री सिडनी डोबेल से हुई और जिसे श्री मैथ्यू अर्नोल्ड की उनके बारे में लिखी गई सुंदर पंक्तियों में काव्यात्मक अभिव्यक्ति मिली,

'जिसकी आत्मा ने शक्ति, जुनून, उत्साह, दुःख और साहस के मामले में बायरन की मृत्यु के बाद किसी समकक्ष को नहीं जाना,'

इसका समापन श्री स्विनबर्न द्वारा दिए गए एक उत्साहपूर्ण श्रद्धांजलि भाषण के साथ हुआ, जिन्होंने उन्हें प्रतिभाशाली अंग्रेजी महिलाओं में सबसे आगे रखा।

हमने कहा है कि एमिली ब्रोंटे एक ऐसी रहस्यमयी शख्सियत हैं, जिनके रहस्य को सुलझाने के लिए कितना भी शोध किया जाए, हम सुलझ नहीं पाएंगे; और यह अध्याय, यह स्वीकार किया जा सकता है, इस रोचक व्यक्तित्व के बारे में हमारी बहुप्रतीक्षित जानकारी में कुछ खास इजाफा नहीं करता। एमिली की निजी लिखावट का एक टुकड़ा मुझे मिला है—मुझे पूरा यकीन है कि शार्लोट ने अपनी बहन का सामान जलाते समय इसे नजरअंदाज कर दिया होगा। मेरे सामने लगभग दो इंच लंबा एक छोटा सा टिन का डिब्बा है, जिसे पिछले साल एक दिन श्री निकोल्स ने डेस्क के नीचे से निकाला था। यह उस तरह का डिब्बा है जिसमें पिन या मोती रखे जा सकते

हैं, जिनका अपने खास महत्व के अलावा कोई और मूल्य नहीं है। इसके अंदर छह पेंस के आकार के चार छोटे-छोटे कागज के टुकड़े करीने से मोड़े हुए थे। ये कागज लिखावट से भरे हुए थे, जिनमें से दो एमिली की और दो ऐनी ब्रोंटे की थीं। इनसे बहनों की एक सुखद, हालांकि कुछ अनोखी, व्यवस्था का पता चलता है, जो उनके बीसवें वर्ष के बाद भी कायम रही होगी। उन्होंने हर चार साल में एक तरह की आत्मकथा लिखने पर सहमति जताई थी, जिसे एमिली अपने जन्मदिन पर खोलेगी। हालाँकि, ये दस्तावेज़ अपनी कहानी खुद बयां करते हैं, और मैं पहले 1841 में लिखे गए दो दस्तावेज़ों का ज़िक्र कर रहा हूँ। एमिली हॉवर्थ में लिखती हैं, और ऐनी थॉर्प ग्रीन में मिस्टर रॉबिन्सन के बच्चों की गवर्नेंस के तौर पर काम करते हुए लिखती हैं। उस समय, एमिली काफी खुश और स्वस्थ थीं; और हालाँकि कविताओं के संग्रह के प्रकाशन को पाँच साल हो चुके हैं, फिर भी वह साहित्यिक परियोजनाओं में व्यस्त हैं, जैसा कि उनकी बहन ऐनी भी हैं। गोंडालैंड क्रॉनिकल्स, जिसका ज़िक्र किया गया है, हमारे लिए एक रहस्य ही रहेगा। निस्संदेह, एमिली की अन्य कई यादगार चीज़ों के साथ, उनकी दुखी बहन ने उन्हें भी नष्ट कर दिया होगा। हमारे पास शार्लोट और ब्रैनवेल के बचकाने प्रयासों की प्रचुर सामग्री है, लेकिन एमिली और ऐनी की शुरुआती लिखावट का शायद ही कोई अंश मिलता है। यह अध्याय और भी रोचक होता अगर हमारे पास ऐनी ब्रोंटे द्वारा लिखित सोलाला वर्नन की जीवनी या एमिली द्वारा लिखित गोंडालैंड क्रॉनिकल्स होती!

FACSIMILE OF PAGE OF EMILY BRONTË'S DIARY

एक कागज़ जिसे तब खोला जाना है जब ऐनी 25 साल की हो जाएगी, या उसके बाद मेरे अगले जन्मदिन पर, अगर सब ठीक रहा तो।

एमिली जेन ब्रोंटे। 30 जुलाई, 1841।

शुक्रवार की शाम है, लगभग 9 बज रहे हैं—तेज़ बारिश हो रही है। मैं भोजन कक्ष में बैठा हूँ, अभी-अभी डेस्क के बक्से समेटकर यह दस्तावेज़ लिख रहा हूँ। पापा बैठक में हैं— आंटी ऊपर अपने कमरे में हैं। वह पापा को ब्लैकवुड्स मैगज़ीन पढ़कर सुना रही हैं। विक्टोरिया और एडिलेड पीट-हाउस में आराम कर रही हैं। रखवाला रसोई में है — हीरो अपने पिंजरे में है। हम सब तंदुरुस्त और स्वस्थ हैं, और मुझे उम्मीद है कि शार्लोट, ब्रैनवेल और ऐनी भी स्वस्थ होंगी। उनमें से पहली जॉन व्हाइट, एस्क्वायर, अपरवुड हाउस, रॉडन में हैं; दूसरी लुडेनडेन फुट में हैं; और तीसरी, मेरा मानना है, स्कारबोरो में हैं, शायद इसी विषय पर कोई लेख लिख रही होंगी।

हमारे लिए एक अलग स्कूल स्थापित करने की योजना पर काम चल रहा है; अभी तक कुछ तय नहीं हुआ है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि यह योजना आगे बढ़ेगी, सफल होगी और हमारी सभी उम्मीदों पर खरी उतरेगी। आज से चार साल पहले, मैं सोचता

था कि क्या हम अभी भी इसी स्थिति में अटके रहेंगे या अपनी इच्छानुसार स्थापित हो जाएंगे। समय ही बताएगा।

मुझे लगता है कि इस अखबार के प्रकाशन के समय तक हम, यानी शार्लोट, ऐनी और मैं, किसी सुखमय और समृद्ध शिक्षण संस्थान के अपने बैठक कक्ष में आनंदपूर्वक बैठे होंगे, ग्रीष्मकालीन उत्सव के लिए अभी-अभी एकत्रित हुए होंगे। हमारे सारे कर्ज चुक चुके होंगे और हमारे पास अच्छी खासी रकम होगी। पापा, चाची और ब्रैनवेल या तो हमसे मिलने आए होंगे या आने वाले होंगे। वह एक सुहावनी, गर्म, गर्मी की शाम होगी, इस उजाड़ दृश्य से बिल्कुल अलग, और शायद ऐनी और मैं कुछ मिनटों के लिए बगीचे में जाकर अपने अखबार पढ़ लेंगे। मुझे आशा है कि या तो ऐसा होगा या इससे भी बेहतर कुछ होगा।

गोंडालिया और गोंडालिया इस समय खतरे में हैं, लेकिन अभी तक कोई खुला टकराव नहीं हुआ है। राजपरिवार के सभी राजकुमार और राजकुमारियां शिक्षा महल में हैं। मेरे पास बहुत सारी किताबें हैं, लेकिन मुझे यह कहते हुए खेद है कि हमेशा की तरह मैं उनमें से किसी में भी बहुत धीमी प्रगति कर पा रहा हूँ। हालांकि, मैंने अभी-अभी एक नया नियमितता पत्र तैयार किया है! और मुझे महान कार्य करने के लिए दृढ़ संकल्पित होना चाहिए। और अब मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ, दूर से साहस का संदेश भेजते हुए, हे लड़कों! निर्वासित और परेशान ऐनी को साहस, काश वह यहाँ होती।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, ऐनी थॉर्प ग्रीन से लिखती हैं।

30 जुलाई, 1841 ई.

आज एमिली का जन्मदिन है। वह अब 23 वर्ष की हो चुकी है और मुझे लगता है कि वह घर पर है। शार्लेट, मिस्टर व्हाइट के परिवार में गवर्नेंस का काम करती है। ब्रैनवेल, लुडेनडेन फुट रेलवे स्टेशन में क्लर्क है और मैं, मिस्टर रॉबिन्सन के परिवार में गवर्नेंस का काम करती हूँ। मुझे यह नौकरी पसंद नहीं है और मैं इसे बदलना चाहती हूँ। मैं अभी स्कारबोरो में हूँ। मेरे विद्यार्थी सो चुके हैं और मैं उनके पीछे जाने से पहले इसे जल्दी से खत्म करना चाहती हूँ।

हम अपना खुद का स्कूल खोलने की सोच रहे हैं, लेकिन अभी तक कुछ भी तय नहीं हुआ है, और हमें नहीं पता कि हम ऐसा कर पाएंगे या नहीं। मुझे उम्मीद है कि हम कर पाएंगे। और मैं सोचती हूँ कि चार साल बाद आज ही के दिन हमारी क्या

हालत होगी और हम सब कहाँ होंगे; उस समय, अगर सब ठीक रहे, तो मेरी उम्र 25 साल और 6 महीने होगी, एमिली 27 साल की, ब्रैनवेल 28 साल और 1 महीने का, और शार्लोट 29 साल और 15 महीने की होगी। अब हम सब अलग-अलग हैं और कई हफ़्तों तक दोबारा मिलने की संभावना नहीं है, लेकिन जहाँ तक मुझे पता है, हममें से कोई भी बीमार नहीं है और एमिली को छोड़कर बाकी सब अपनी-अपनी आजीविका के लिए कुछ न कुछ कर रहे हैं। एमिली भी हम सब की तरह ही व्यस्त है, और वास्तव में वह भी हमारी तरह ही अपने खाने-पीने का खर्च खुद उठाती है।

हम खुद को कितना कम जानते हैं! हम क्या बन सकते हैं, यह हम कितना कम जानते हैं!

चार साल पहले मैं स्कूल में थी। तब से मैं ब्लेक हॉल में गवर्नेस रही, फिर नौकरी छोड़ दी, थॉर्प ग्रीन आ गई और समुद्र व यॉर्क मिनस्टर देख लिया। एमिली मिस पैचेट के स्कूल में टीचर थी और फिर नौकरी छोड़ दी। शार्लोट ने मिस वूलर का स्कूल छोड़ा, श्रीमती सिडगविक के यहाँ गवर्नेस रही, फिर नौकरी छोड़ दी और श्रीमती व्हाइट के यहाँ चली गई। ब्रैनवेल ने पेंटिंग छोड़ दी, कंबरलैंड में ट्यूटर रहा, फिर नौकरी छोड़ दी और रेलवे में क्लर्क बन गया। टैबी हमें छोड़कर चली गई, उसकी जगह मार्था ब्राउन आ गई। हमारे पास कीपर था, एक प्यारी सी छोटी बिल्ली थी जो खो गई, और एक बाज भी था। एक जंगली हंस था जो उड़ गया, और तीन पालतू हंस थे, जिनमें से एक मारा गया। ये सभी बदलाव, और कई अन्य, ऐसी चीजें हैं जिनकी हमने जुलाई 1837 में उम्मीद या कल्पना नहीं की थी। अगले चार साल क्या लेकर आएंगे? यह तो केवल ईश्वर ही जानता है। लेकिन तब से हमारे जीवन में बहुत कम बदलाव आया है। मुझमें वही कमियां हैं जो तब थीं, बस फर्क इतना है कि अब मुझमें पहले से ज्यादा ज्ञान और अनुभव है, और पहले से थोड़ा ज्यादा आत्म-संयम भी है। जब हम यह लेख और एमिली का लिखा लेख खोलेंगे तो क्या होगा? मुझे आश्चर्य है कि क्या गोंडालियांड तब भी समृद्ध होंगे, और उनकी क्या स्थिति होगी। मैं फिलहाल सोलाला वर्नन के जीवन पर आधारित चौथे खंड को लिखने में लगा हुआ हूँ।

कुछ समय से मैं 25 वर्ष को अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव मानता रहा हूँ। यह एक सच्ची पूर्वसूचना साबित हो सकती है, या यह केवल एक अंधविश्वास हो सकता है; बाद वाला अधिक संभावित लगता है, लेकिन समय ही बताएगा।

ऐनी ब्रोंटे।

चलिए अब कागज के उन दो छोटे टुकड़ों पर नज़र डालते हैं। इन पर 30 जुलाई, 1845 की तारीख़ है, यानी एमिली का सत्ताईसवाँ जन्मदिन। जैसा कि वह कहती हैं, कई घटनाएँ घटी हैं। वह ब्रुसेल्स गई थीं, और घर पर फिर से पूरी तरह से बस गई हैं। साहित्य में उनकी रुचि अब भी प्रबल है, और हम अब भी गोंडल परिवार के बारे में सुनते रहते हैं। डायरियों के लहजे और भाव में आश्चर्यजनक रूप से बहुत कम अंतर है। अंत में लिखे गए वाक्य, '30 जुलाई, 1848 तक और उससे भी आगे तक इस पूरे परिवार के लिए शुभकामनाएँ,' में आने वाली किसी विपत्ति का कोई पूर्वाभास नहीं है। फिर भी, जुलाई 1848 में ब्रैनवेल ब्रोंटे मृत्यु के कगार पर थे, और एमिली अपनी मृत्युशय्या पर थीं। उनकी मृत्यु उसी वर्ष 14 दिसंबर को हुई।

हॉवर्थ, गुरुवार, 30 जुलाई, 1845।

मेरा जन्मदिन — हल्की बारिश, सुहावनी हवा, ठंडक। आज मैं सत्ताईस साल का हो गया हूँ। आज सुबह मैंने और ऐनी ने चार साल पहले, मेरे तेईसवें जन्मदिन पर लिखे गए कागज़ खोले। अगर सब ठीक रहा, तो हम इस कागज़ को मेरे तीसवें जन्मदिन पर — तीन साल बाद, 1848 में — खोलने का इरादा रखते हैं। 1841 के उस कागज़ के बाद से निम्नलिखित घटनाएँ घटी हैं। हमारी स्कूल योजना रद्द कर दी गई, और इसके बजाय शार्लोट और मैं 8 फरवरी 1842 को ब्रुसेल्स गए।

ब्रैनवेल ने लुडेनडेन फुट में अपना स्थान छोड़ दिया। सी. और मैं 8 नवंबर 1842 को ब्रसेल्स से चाची की मृत्यु के कारण वापस लौटे।

ब्रैनवेल जनवरी 1843 में थॉर्प ग्रीन में एक ट्यूटर के रूप में गए, जहां ऐनी ने अपनी पढ़ाई जारी रखी।

शार्लोट उसी महीने ब्रुसेल्स लौट आई और एक साल रहने के बाद, 1844 के नए साल के दिन फिर से वापस आ गई।

ऐनी ने जून 1845 में अपनी मर्जी से थोरप ग्रीन में अपना घर छोड़ दिया।

ऐनी और मैंने अपनी पहली लंबी यात्रा अकेले ही की। हम 30 जून, सोमवार को घर से निकले, यॉर्क में रात बिताई, मंगलवार शाम को कीघली लौटे, वहाँ रात बिताई और बुधवार सुबह पैदल घर वापस आ गए। मौसम भले ही थोड़ा खराब था, लेकिन ब्रैडफोर्ड में कुछ घंटों को छोड़कर हमने खूब आनंद लिया। हमारी इस यात्रा में हम, रोनाल्ड मैकलगिन, हेनरी अंगोरा, जूलियट ऑगस्टीना, रोसाबेल एस्माल्डन, एला और जूलियन एग्रेमोंट, कैथरीन नवार्रे और कॉर्डेलिया फिट्ज़ाफनोल्ड, शिक्षा के महलों से

भागकर उन राजभक्तों में शामिल हो गए, जिन्हें वर्तमान में विजयी रिपब्लिकनों ने बुरी तरह से खदेड़ दिया है। गोंडल आज भी पहले की तरह ही समृद्ध हैं। मैं इस समय प्रथम विश्व युद्ध पर एक पुस्तक लिख रहा हूँ। ऐनी इस विषय पर कुछ लेख और हेनरी सोफोना की एक पुस्तक लिख रही हैं। हमारा इरादा है कि जब तक ये बदमाश हमें प्रसन्न करते रहेंगे, हम उनका साथ देते रहेंगे, और मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि वे फिलहाल हमें प्रसन्न कर रहे हैं। मुझे यह भी बताना चाहिए था कि पिछली गर्मियों में स्कूल योजना को पूरी शक्ति के साथ पुनर्जीवित किया गया था। हमने पाठ्यक्रम के विवरण छपवाए, अपने सभी परिचितों को पत्र भेजकर अपनी योजनाएँ बताईं, और अपनी तरफ से हर संभव प्रयास किया; लेकिन बात नहीं बनी। अब मुझे स्कूल जाने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं है, और हममें से किसी को भी इसकी कोई खास चाहत नहीं है। हमारे पास वर्तमान जरूरतों के लिए पर्याप्त धन है, और भविष्य में और भी धन जमा होने की संभावना है। हम सभी स्वस्थ हैं, बस पापा की आँखों में थोड़ी तकलीफ है, और बी. को छोड़कर, जिसके बारे में मुझे आशा है कि वह ठीक हो जाएगा और आगे बेहतर होगा। मैं अपने आप में पूरी तरह संतुष्ट हूँ: पहले की तरह आलसी नहीं, बल्कि पहले की तरह ही खुशमिजाज, और मैंने वर्तमान का भरपूर आनंद लेना और भविष्य की आशा करना सीख लिया है, इस बेचैनी के साथ कि मैं अपनी सारी इच्छाएँ पूरी नहीं कर सकता; मुझे शायद ही कभी खाली बैठने की चिंता होती है, और मैं बस यही चाहता हूँ कि हर कोई मेरी तरह सुखी और निडर हो, और तब हमारी दुनिया बहुत अच्छी हो जाएगी।

गलती से मुझे पता चला कि हमने अखबार 30 तारीख के बजाय 31 तारीख को खोल लिया है। कल का दिन भी कुछ ऐसा ही था, लेकिन सुबह बहुत ही सुखद थी।

टैबी, जिसका ज़िक्र हमारे पिछले लेख में नहीं था, वापस आ गई है और ढाई साल से हमारे साथ रह रही है; और स्वस्थ है। मार्था, जो चली गई थी, वह भी यहीं है। हमारे पास फ्लॉसी है; टाइगर आया था और फिर खो गया; बाज़ हीरो खो गया, जिसे हंसों के साथ दे दिया गया था, और निस्संदेह मर गया है, क्योंकि जब मैं ब्रुसेल्स से लौटा तो मैंने सभी से पूछताछ की लेकिन उसके बारे में कुछ पता नहीं चला। टाइगर पिछले साल की शुरुआत में मर गया था। कीपर और फ्लॉसी ठीक हैं, साथ ही चार साल पहले लाई गई कैनरी भी। हम सब अब घर पर हैं, और शायद कुछ समय यहीं रहेंगे। ब्रैनवेल मंगलवार को एक हफ्ते के लिए लिवरपूल चला गया। टैबी अभी मुझे चिढ़ा

रही थी कि मैं पहले की तरह 'पिलोपुटेट' (कपड़े) पलट दूं। अगर मौसम अच्छा और धूप वाला होता तो ऐनी और मैं काले करंट तोड़ लेते। अब मुझे जल्दी से अपने कपड़े पलटने और इस्त्री करने जाना है। मेरे पास बहुत काम है, लिखने का भी, और मैं कुल मिलाकर काम में व्यस्त हूँ। 30 जुलाई, 1848 तक और उससे भी आगे तक पूरे परिवार के लिए शुभकामनाओं के साथ, - मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

एमिली ब्रोंटे।

अंत में, मैं ऐनी का अंतिम अंश प्रस्तुत करता हूँ, जिसके बारे में मौन रहना आवश्यक है। अधिकांश संदर्भों की व्याख्या मात्र अनुमान लगाना ही होगी।

गुरुवार, 31 जुलाई, 1845। कल एमिली का जन्मदिन था, और वह समय था जब हमें अपना 1845 का अखबार खोलना चाहिए था, लेकिन गलती से हमने इसे आज खोल दिया। जब से यह लिखा गया था तब से कितनी ही बातें घटित हुई हैं - कुछ सुखद, कुछ बिलकुल विपरीत। फिर भी मैं तब थॉर्प ग्रीन में था, और अब मैं मुश्किल से वहाँ से निकल पाया हूँ। मैं तब से ही इसे छोड़ना चाहता था, और अगर मुझे पता होता कि मुझे चार साल और वहाँ रहना है तो मैं कितना दुखी होता; लेकिन अपने प्रवास के दौरान मुझे मानव स्वभाव के कुछ बहुत ही अप्रिय और अकल्पनीय अनुभव हुए हैं। दूसरों ने अधिक बदलाव देखे हैं। शार्लेट ने मिस्टर व्हाइट का घर छोड़ दिया है और दो बार ब्रुसेल्स गई है, जहाँ वह हर बार लगभग एक साल रही। एमिली भी वहाँ गई है, और लगभग एक साल रही है। ब्रैनवेल ने लुडेनडेन फुट छोड़ दिया है, और थॉर्प ग्रीन में ट्यूटर रहा है, और उसे बहुत कष्ट और खराब स्वास्थ्य का सामना करना पड़ा है। वह गुरुवार को बहुत बीमार था, लेकिन वह जॉन ब्राउन के साथ लिवरपूल चला गया, जहाँ वह अब है, मुझे लगता है; और हम आशा करते हैं कि वह बेहतर होगा और भविष्य में और भी अच्छा करेगा। यह एक उदास, बादलों से घिरी, गीली शाम है। अब तक हमारी गर्मी बहुत ठंडी और गीली रही है। शार्लोट हाल ही में एलेन नुसे से मिलने के लिए तीन सप्ताह के लिए डर्बीशायर के हैदरसेज गई थीं। वह अभी भोजन कक्ष में सिलाई कर रही हैं। एमिली ऊपर इस्त्री कर रही हैं। मैं भोजन कक्ष में आग के सामने रॉकिंग चेयर पर पैर रखकर बैठी हूँ। पापा बैठक में हैं। मुझे लगता है कि टैबी और मार्था रसोई में हैं। कीपर और फ्लॉसी कहाँ हैं, मुझे नहीं पता। छोटा डिक अपने पिंजरे में उछल-कूद कर रहा है। जब पिछला लेख लिखा गया था, तब हम एक स्कूल खोलने के बारे में सोच रहे थे। योजना छोड़ दी गई थी, फिर बहुत

समय बाद दोबारा शुरू की गई और फिर छोड़ दी गई क्योंकि हमें छात्र नहीं मिल रहे थे। शार्लोट दूसरी नौकरी के बारे में सोच रही हैं। वह पेरिस जाना चाहती हैं। क्या वह जाएंगी? उन्होंने फ्लॉसी को अंदर आने दिया है, और वह अभी सोफे पर लेटा हुआ है। एमिली सम्राट जूलियस की जीवनी लिख रही है। उसने कुछ अंश पढ़ लिए हैं, और मैं बाकी का अंश सुनने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। वह कुछ कविताएँ भी लिख रही है। मुझे आश्चर्य है कि वे किस विषय पर हैं? मैंने 'पैसेजेस इन द लाइफ ऑफ एन इंडिविजुअल' के तीसरे खंड का लेखन शुरू कर दिया है। काश मैंने इसे पूरा कर लिया होता। आज दोपहर मैंने कीघली में रंगे अपने धूसर रंग के रेशमी फ्रॉक को सिलना शुरू किया। मैं इसे किस तरह बनाऊँगी? ई. और मेरे पास बहुत काम है। हम इसे कब तक कम कर पाएँगे? मैं सुबह जल्दी उठने की आदत डालना चाहती हूँ। क्या मैं सफल हो पाऊँगी? हमने साढ़े तीन साल पहले जो गोंडल क्रॉनिकल्स शुरू किए थे, उन्हें अभी तक पूरा नहीं किया है। वे कब तक पूरे होंगे? गोंडल इस समय दयनीय स्थिति में हैं। रिपब्लिकन सर्वोच्च हैं, लेकिन राजशाही अभी पूरी तरह से पराजित नहीं हुई है। युवा शासक, अपने भाइयों और बहनों के साथ, अभी भी शिक्षा महल में हैं। यूनिक सोसाइटी, छह महीने से भी अधिक समय पहले, गॉल से लौटते समय एक सुनसान द्वीप पर जहाज़ दुर्घटना का शिकार हो गई थी। वे अभी भी वहीं हैं, लेकिन हमने उन पर अभी तक ज्यादा खेला नहीं है। गोंडल मैदान आम तौर पर खेलने की अच्छी हालत में नहीं हैं। क्या उनमें सुधार होगा? मुझे आश्चर्य है कि 30 जुलाई 1848 को हम सब कहाँ होंगे, कैसे होंगे, जब अगर हम सब जीवित रहे तो एमिली 30 साल की हो जाएगी। मैं 29 साल का, शार्लोट 33 साल की और ब्रैनवेल 32 साल का होगा; और हमने क्या-क्या बदलाव देखे और जाने होंगे; और क्या हम खुद भी बहुत बदल गए होंगे? मुझे उम्मीद है कि कम से कम बुरे के लिए तो नहीं। मैं तो अब जितना समझदार हूँ, उससे ज्यादा समझदार या बूढ़ा तो नहीं हो सकता। अच्छे की उम्मीद करते हुए, मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

ऐनी ब्रोंटे।

इन लेखों के प्रकाशित होने में ठीक पचास वर्ष लग गए। एमिली ब्रोंटे में लोगों की रुचि हमेशा बनी रहती है, इसलिए मेरे द्वारा इस अंश को हूबहू प्रकाशित करना उचित है; और इसका महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि इसमें एमिली द्वारा स्वयं और अपने कुत्ते कीपर का एक कच्चा चित्र भी शामिल है। रेखाचित्र के प्रति एमिली का

प्रेम उनके हमेशा दुखमय जीवन का एक मार्मिक पहलू है। मैंने उनके कई रेखाचित्र देखे हैं। श्री निकोल्स के पास कीपर और फ्लॉसी का एक रेखाचित्र है, जिसमें कीपर वह बुलडॉग है जो उनके साथ मृत्यु तक रहा, और फ्लॉसी एक छोटा किंग चार्ली है जिसे मिस रॉबिन्सन में से किसी एक ने ऐनी को उपहार में दिया था। हालांकि, एमिली के अधिकांश रेखाचित्रों की तरह, इस रेखाचित्र में भी तकनीकी त्रुटियां हैं। वह जन्मजात कलाकार नहीं थीं, और संभवतः उन्हें मेहनत से कलाकार बनने के सर्वोत्तम अवसर नहीं मिले। मेरे सामने एक और रेखाचित्र है जो ऊपर उल्लिखित अंश में वर्णित बाज़ का है; और एक अन्य रेखाचित्र ग्राउलर नामक कुत्ते का है, जो कीपर का पूर्वज था, जिसका उल्लेख उनके पत्राचार में नहीं मिलता है। मैं यहाँ कवयित्री एमिली ब्रोंटे के बारे में नहीं लिखूंगा। उन्होंने अपने पीछे एक पांडुलिपि छोड़ी थी, जिसे उन्होंने और शार्लोट ने संरक्षित रखा था। इस पांडुलिपि में उनकी दो काव्य संग्रहों की सभी कविताएँ शामिल हैं, और कुछ अन्य कविताएँ भी हैं जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुई हैं। उदाहरण के लिए, यहाँ कुछ छंद दिए गए हैं जिनमें गोंडाल जनजाति का थोड़ा-सा उल्लेख मिलता है।

FACSIMILE OF TWO PAGES OF EMILY BRONTË'S DIARY

21 मई, 1838।

ग्लेनेडेन का सपना।

मुझे बताओ, क्या सर्दी आ गई है? बताओ मेरी नींद कितनी लंबी रही है? क्या जिन जंगलों को मैं इतनी प्यारी हालत में छोड़कर गया था, उन्होंने अपनी कोमल हरी चादर खो दी है?

क्या सुबह आने में देर कर रही है? क्या रात जाने में आनाकानी कर रही है? मुझे बताओ, क्या बर्फ से ढके ये उजाड़ पहाड़ और भी उजाड़ हो गए हैं?

"कैदी, जब से तुमने जंगल देखा है, उसके सारे पत्ते झड़ गए हैं, और एक और मार्च ने एक और मई के लिए मालाएँ बुन दी हैं।"

"बर्फ ने आर्कटिक के जल को अवरुद्ध कर दिया है; कोमल दक्षिणी हवाओं ने इसे मुक्त कर दिया है; और एक बार फिर गहरी हरी घाटी में सुनहरे फूल तुम्हारा स्वागत कर सकते हैं।"

'इस एकांत कारागार में पहरेदार, आनंद और दयालु हवा से वंचित, स्वर्ग एक दर्शन में उतरा, मेरी आत्मा को करना और सहना सिखाया।

'रात थी, सर्दियों की रात थी, मैं कालकोठरी के फर्श पर लेटा था, और बाकी सभी आवाजें शांत थीं — सिवाय नदी की गर्जना के।

मृत्यु और उजाड़ पर, अग्निहीन चूल्हों और निर्जीव घरों पर; अनाथों के हृदयविदारक दुःखों पर, देशभक्त पिताओं की रक्तरंजित कब्रों पर;

'दोस्तों के ऊपर, कि मेरी बाहें फिर कभी प्यार से गले न लगा सकें; स्मृति इतनी भारी थी कि पागलपन ने मेरे दिमाग में अपना खंजर चुभो दिया।

'गहरी नींद के बाद उन्माद छा गया, फिर भी, मैंने सोचा, मैं अब भी सोच रहा था; फिर भी मैंने अपने देश को खून बहते देखा, एक अत्याचारी की इच्छा के लिए मरते हुए।

'इसलिए नहीं कि मेरा आनंद नष्ट हो गया, प्रतिशोध की ज्वाला में जल गया; इसलिए नहीं कि मेरे बिखरे हुए रिश्तेदार दुख में मर गए या शर्म में जी रहे थे।

'ईश्वर जानता है कि मैं अपने हर प्रिय हृदय को दे देता, क्या उस बलिदान से प्रताड़ित गोंडल की स्वतंत्रता खरीदी जा सकती थी!'

लेकिन महत्वाकांक्षा के आदेश पर उसकी सारी पोषित आशाएँ क्षीण हो जाएँ, उसके सबसे श्रेष्ठ पुत्र एकत्रित हों, प्रयास करें, लड़ें और व्यर्थ में गिर जाएँ।

'झोपड़ी और महल, हॉल और कुटिया,

छतविहीन, ज़मीन पर ढहते हुए,
सर्वशक्तिमान स्वर्ग, एक प्रसन्न बदला लेने वाला
तेरा शाश्वत न्याय पाया गया।

'हाँ, वह भुजा जो कभी घायल हिरण के शोक में भी कांप उठती थी, मैंने उसे निर्दयी देखा, अपने स्वामी की प्रार्थना को रक्त से लथपथ करते हुए।

'शानदार सपना! मैंने शहर को देखा, शाही चमक में दमकता हुआ, और हजारों पूजनीय लोगों के बीच एक दिव्य रूप वाला व्यक्ति खड़ा था।

'राजसी पीड़ित की ओर इशारा करने की किसी को आवश्यकता नहीं है —
अब वह शाही गर्व से मुस्कुरा रहा है!
अब उसकी निगाह बिजली की तरह तेज है,
अब चाकू उसकी बगल में है!

आह! मैंने देखा कि मृत्यु कैसे अंधकारमय कर सकती है, उस विजयी आँख को अंधकारमय कर सकती है! उसके लाल हृदय के रक्त ने मेरे खंजर को भिगो दिया; मेरे कान ने उसकी मरणासन्न आह पी ली!

'परछाइयाँ आ रही हैं! इस आधी रात का क्या मतलब है? हे भगवान, मैं सब जानता हूँ! जान लो कि बुखार का सपना खत्म हो गया है, बदला लिए बिना, एवेंजर्स गिरेंगे!'

वास्तव में, कुछ अंश मौजूद हैं, जो सभी उन लड़कियों की खास छोटी लिखावट में लिखे गए हैं, और जिन पर 1833 से 1840 तक की अलग-अलग तारीखें अंकित हैं। एमिली की कविताओं का एक नया संस्करण, इन छंदों के कारण, उनके प्रशंसकों के लिए विशेष रुचि का विषय होगा। हालांकि, एक कवयित्री के रूप में उनकी तमाम प्रतिभाओं के बावजूद, एमिली ब्रोंटे को दुनिया भर में 'वुथरिंग हाइट्स' के लिए ही सबसे अधिक जाना जाता है; और उस पुस्तक की विचित्रता और प्रभाव उस पर पड़े प्रभावों के बारे में जानने की जिज्ञासा जगाते हैं। डॉ. राइट ने अपनी मनोरंजक पुस्तक 'द ब्रोंटेज़ इन आयरलैंड' में पैट्रिक ब्रोंटे के जन्म की कहानी सुनाई है और जोर देकर कहा है कि एमिली को 'वुथरिंग हाइट्स' की विचित्र सामग्री अपने पिता के आयरिश अनुभवों के किस्सों को सुनकर ही मिली थी। बेशक, यह कहना पर्याप्त नहीं है कि डॉ. राइट द्वारा बताई गई आयरिश ब्रोंटे बहनों की कहानी विरोधाभासों से भरी है। अशिक्षित किसानों से बेतरतीब ढंग से इकट्ठा की गई कई कहानियों में विसंगतियां हो

सकती हैं, फिर भी उनमें कुछ हद तक सच्चाई हो सकती है। लेकिन डॉ. राइट के वृत्तांत में कुछ भी पुष्ट नहीं है, सिवाय इस तथ्य के कि पैट्रिक ब्रोंटे ने अपने जीवन भर अपने भाई-बहनों के साथ थोड़ा-बहुत पत्राचार जारी रखा - यह तथ्य उनकी वसीयत पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है। डॉ. राइट ब्रोंटे परंपराओं के स्रोत का पता लगाने के लिए आयरलैंड की कई यात्राओं का जिक्र करते हैं; फिर भी उन्होंने अपने पहले संस्करण में इस बुनियादी तथ्य पर ध्यान नहीं दिया कि काउंटी डाउन के जन्म पंजीकरण में अनगिनत ब्रंटी नाम के लोगों का उल्लेख है, लेकिन एक भी ब्रोंटे का नहीं। डॉ. राइट ने संभवतः एमिली और शार्लोट की कहानियों को ध्यान में रखते हुए अपनी खोजबीन की। वे इसी तरह की परंपराओं की तलाश में थे, और तेज बुद्धि वाले आयरिश किसानों ने उन्हें वह सब कुछ दे दिया जो वे चाहते थे। उन्होंने उनके लाभ के लिए आस-पड़ोस की प्रचलित परंपराओं को प्रस्तुत किया और उन्हें अलंकृत किया, जैसा कि लोककथा प्रेमियों के लिए हर जगह किसान करते हैं। हमें बताया जाता है कि शार्लोट ब्रोंटे के चाचा ह्यूग ने जेन आयर पर क्वार्टरली रिव्यू का लेख पढ़ा और एक लाठी लेकर उस कड़वे हमले के लेखक से बदला लेने के लिए इंग्लैंड आ गए। वे लिवरपूल में उतरे, लिवरपूल से हॉवर्थ तक पैदल गए, अपनी भतीजियों से मिले, जो उनके चारों ओर जमा हो गईं और उन्होंने उनके मिशन का ब्योरा सुना। फिर वे लंदन गए और खूब पूछताछ की - लेकिन इस हास्यास्पद कहानी को आगे बढ़ाने की क्या ज़रूरत थी? दरअसल, क्वार्टरली रिव्यू का लेख दिसंबर 1848 में प्रकाशित हुआ था - एमिली की मृत्यु के बाद और ऐनी के मरणासन्न अवस्था में। समीक्षा प्रकाशित होने के तुरंत बाद शार्लोट को इसके लेखक के बारे में पता चला और मिस्टर विलियम्स के साथ उनके पत्राचार में मिस रिग्बी और क्वार्टरली का ज़िक्र एक से अधिक बार मिलता है।

यह एमिली के जीवन की कहानी से एक लंबा विषयांतर है, लेकिन यह पता लगाना महत्वपूर्ण है कि क्या उनके यॉर्कशायर स्थित घर के अलावा अन्य प्रभावों के भी कोई प्रमाण मिलते हैं। मैंने इस विषय पर मिस एलेन नुसे और श्री निकोल्स से चर्चा की है। मिस नुसे ने हॉवर्थ की अपनी सभी यात्राओं में डॉ. राइट द्वारा बताई गई आयरिश किंवदंतियों का कभी कोई ज़िक्र नहीं सुना और उनका दृढ़ विश्वास है कि वे काल्पनिक हैं। श्री निकोल्स, अपने ससुर के साथ पादरी के घर में छह साल अकेले रहने के दौरान, श्री ब्रोंटे से - जो किसी भी तरह से चुप रहने वाले व्यक्ति नहीं थे - इन

कहानियों के बारे में एक शब्द भी नहीं सुना और उनका भी यही मत है कि वे पूरी तरह से काल्पनिक हैं।

यह सुझाव दिया गया है कि एमिली के लिए अपने भाई के कुकर्मों पर आधारित अपनी कहानी के अधिक घृणित हिस्से को लिखना लगभग एक अपराध जैसा था। यह सरासर बकवास है। उन्होंने 'वुथरिंग हाइट्स' इसलिए लिखी क्योंकि उन्हें ऐसा करने की प्रेरणा मिली थी, और यह पुस्तक, अपनी सारी भयावह शक्ति और जोश के साथ, उन्नीसवीं सदी की नारीत्व की सबसे अद्भुत प्रतिभा का एक स्मारक बनकर हमेशा के लिए बनी रहेगी। यह आंशिक रूप से यॉर्कशायर में उनके जीवन से प्रेरित थी - स्थानीय रंग मुख्य रूप से हैलिफ़ैक्स में एक गवर्नेंस के रूप में उनके संक्षिप्त अनुभव से लिया गया था - लेकिन आंशिक रूप से ब्रसेल्स काल के दौरान उन्होंने जो जर्मन उपन्यास पढ़े थे, उनसे भी 'वुथरिंग हाइट्स' को प्रेरणा मिली।

हालांकि, यहां एमिली ब्रोंटे के अधिक मानवीय पक्ष की झलक मिलती है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

25 मार्च, 1844।

प्रिय नेल, मैं सुरक्षित घर पहुँच गई हूँ, और हॉवर्थ पहुँचने पर ज़्यादा थकी नहीं थी। आज मैं पहले से बेहतर महसूस कर रही हूँ, और आशा करती हूँ कि समय के साथ और भी स्वस्थ हो जाऊँगी। मैंने एमिली और पापा को स्वस्थ पाया, और ब्रैनवेल का एक पत्र मिला जिसमें उन्होंने बताया कि वह और ऐनी भी ठीक हैं। एमिली फूलों के बीजों के लिए आपकी बहुत आभारी है। वह जानना चाहती है कि क्या सिसिलियन मटर और क्रिमसन कॉर्नफ्लावर कठोर फूल हैं, या वे नाज़ुक हैं, और उन्हें गर्म और सुरक्षित स्थानों पर बोना चाहिए? मुझे यह भी बताएँ कि क्या आप शुक्रवार को श्रीमती जॉन स्वैन के घर गई थीं, और क्या आपको वहाँ मज़ा आया? मुझसे संक्षेप में बात करें, जैसे आप तब करतीं जब हम साथ होते। सुप्रभात, प्रिय नेल; मैं अभी आपसे और कुछ नहीं कहूँगी।

‘सी. ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

5 अप्रैल, 1844।

प्रिय नेल, आज सुबह तुम्हारा पत्र पाकर हम सब बहुत प्रसन्न हुए। हम सब, क्योंकि पापा और एमिली दोनों ही तुम्हारे और उस नन्हे शैतान के सुरक्षित पहुँचने की

खबर सुनने के लिए उत्सुक थे। जैसा कि तुमने अनुमान लगाया, तुम्हारे जाने के ठीक अगले दिन से ही एमिली और मैंने कमीज़ें सिलना शुरू कर दिया था, और तब से हम लगातार यही काम कर रहे हैं। हमें तुम्हारी संगति की उतनी ही याद आती है जितनी तुम्हें हमारी, यकीन मानो; काश तुम आस-पास होतीं। मुझे पत्र ज़रूर लिखना। मुझे गुरुवार को तुम्हारा एक और पत्र मिलेगा - मुझे निराश मत करना। तुम्हारी माँ और बहनों को मेरा प्रणाम। - तुम्हारी, थोड़ी चिड़चिड़ी।

'सी. ब्रोंटे।'

इससे पहले एमिली ने खुद मिस नुसे को एक पत्र लिखा था, और वास्तव में, एमिली ब्रोंटे द्वारा एलेन नुसे को लिखे गए वे दो पत्र जिन्हें मैं यहाँ छाप रहा हूँ, मेरे विचार से एमिली के एकमात्र बचे हुए पत्र हैं। श्री निकोल्स ने मुझे बताया कि उन्होंने एमिली की लिखावट में लिखा कोई पत्र कभी नहीं देखा। निम्नलिखित पत्र शार्लोट के ब्रुसेल्स में दूसरे प्रवास के दौरान लिखा गया था, और उस समय जब एलेन नुसे वहाँ उनके साथ जाने पर विचार कर रही थीं - एक ऐसी योजना जो कभी पूरी नहीं हुई।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

12 मई, 1843।

'प्रिय मिस नुसे, - अगर मैं आपको डाक शुल्क मुक्त भेजने के अवसर के बारे में सूचित करने के लिए आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद न दूं तो यह सामान्य शिष्टाचार का उल्लंघन होगा।'

मैंने आपके निर्देशानुसार लिखा है, हालांकि अगर अगले मंगलवार का मतलब कल है तो मुझे डर है कि बहुत देर हो जाएगी। शार्लेट ने घर लौटने के बारे में कभी कुछ नहीं कहा। अगर आप आधे साल के लिए वहां चले जाएं, तो शायद आप उसे अपने साथ वापस ला सकें - अन्यथा, यात्रा का सामना करने का साहस न होने के कारण वह वहां मेतुसेलाह की उम्र तक पड़ी रह सकती है।

यहां सभी स्वस्थ हैं; ऐनी भी अपनी आखिरी रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ थी। एक-दो सप्ताह में छुट्टियां शुरू हो जाएंगी, और फिर, अगर वह तैयार हुई, तो मैं उससे आपके लिए एक औपचारिक पत्र लिखवा लूंगी, जो मैंने पहले कभी नहीं किया। — प्यार और शुभकामनाओं के साथ।

'एमिली जे. ब्रोंटे।'

अगला पत्र उस समय लिखा गया था जब शार्लोट डर्बीशायर के हैथरसाज में श्री

हेनरी नुसे के घर पर अपनी दोस्त के साथ रह रही थी।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 9 फरवरी, 1846।

प्रिय मिस नुसी, मुझे लगता है कि शार्लोट के ठहरने के संबंध में कोई निर्णय लेने के लिए यह पत्र बहुत देर से आएगा। आपका पत्र तो आज सुबह (बुधवार) ही आया है, और अगर मेरा पत्र जल्दी नहीं पहुँचा तो आपको शुक्रवार तक नहीं मिलेगा। पापा को शार्लोट की बहुत याद आती है और उसे वापस पाकर उन्हें बहुत खुशी होगी। ऐनी और मुझे भी ऐसा ही लगता है; लेकिन चूंकि वह घर से बहुत कम बाहर जाती है, इसलिए आप उसे एक-दो दिन और अपने पास रख सकती हैं, अगर आप उसे मनाने में सक्षम हों - यानी, अगर यह अनुमति मिलने के समय वह आपके साथ हो। ऐनी की ओर से प्यार। आपकी सच्ची,

'एमिली जे. ब्रोंटे।'

एलिस और एक्टन बेल द्वारा लिखित 'वुथरिंग हाइट्स' और 'एग्नेस ग्रे' उपन्यास 1847 में तीन खंडों में एक साथ प्रकाशित हुए थे। पहला उपन्यास दो खंडों में और दूसरा एक खंड में था। प्रकाशन की एक विचित्र घटना के चलते, पुस्तक को 'वुथरिंग हाइट्स' खंड I और II तथा 'एग्नेस ग्रे' खंड III के रूप में प्रकाशित किया गया, संभवतः तीन खंडों वाले उपन्यास के प्रति लोगों की दीवानगी को देखते हुए। शार्लेट ने अगले पत्र में इस प्रकाशन का उल्लेख किया है, जिसके साथ 'जेन आयर' की दूसरी प्रस्तावना संलग्न थी - वही प्रस्तावना जो वास्तव में प्रकाशित हुई थी। 'त्रैमासिक पत्रिका के लिए एक संदेश' शीर्षक वाली पिछली प्रस्तावना रद्द कर दी गई थी।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

21 दिसंबर, 1847।

महोदय, मैं स्वयं अपने द्वारा भेजी गई प्रस्तावना से असंतुष्ट हूँ—मुझे भय है कि उसमें सतहीपन झलकता है। यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं संलग्न प्रस्तावना को प्रतिस्थापित करना पसंद करूँगा। यह थोड़ी लंबी है, लेकिन इसमें वह भाव व्यक्त किया गया है जिसे मैं लंबे समय से व्यक्त करना चाहता था।

श्री स्मिथ का मुझे 'द जार ऑफ हनी' भेजने का विचार वाकई बहुत दयालुतापूर्ण है। किताब मिलते ही मैं उन्हें पत्र लिखूंगा। आपके पत्रों के लिए मैं आपका जितना भी धन्यवाद करूं कम है, और मैं आपको यह बमुश्किल ही बता सकता हूं कि उनसे मुझे

कितना आनंद मिलता है; ऐसा लगता है मानो वे हमारे नीरस एकांत जीवन में प्रकाश और जीवन भर देते हैं, जहां हम चूहे की तरह जी रहे हैं। लेकिन, यह बात स्पष्ट रूप से समझ लीजिए, आप मुझे तभी पत्र लिखें जब आपके पास फुर्सत और इच्छा दोनों हों। मैं जानता हूं कि आपका समय इतना व्यस्त और इतना कीमती है कि आप किसी एक व्यक्ति की सेवा में बार-बार नहीं लग सकते।

'वुथरिंग हाइट्स और एग्नेस ग्रे के बारे में आपका निर्णय काफी हद तक सही है। एलिस का दिमाग सशक्त और मौलिक है, जो विचित्र लेकिन गंभीर शक्ति से भरपूर है। जब वे कविता लिखते हैं तो वह शक्ति एक साथ संक्षिप्त, विस्तृत और परिष्कृत भाषा में व्यक्त होती है, लेकिन गद्य में यह ऐसे दृश्यों में फूट पड़ती है जो आकर्षित करने से कहीं अधिक चौंकाते हैं। हालांकि, एलिस में सुधार होगा, क्योंकि वे अपनी कमियों को जानते हैं। एग्नेस ग्रे लेखक के मन का दर्पण है। पुस्तकों की वर्तनी और विराम चिह्न बेहद निराशाजनक हैं: प्रूफ शीट में सुधारी गई लगभग सभी त्रुटियां साफ-सुथरी प्रतियों में बरकरार हैं। यदि श्री न्यूबी हमेशा इसी तरह काम करते रहे, तो शायद ही कोई लेखक उन्हें दूसरी बार अपना प्रकाशक बनाना चाहेगा। — विश्वास कीजिए, महोदय, आपका सादर।'

'सी. बेल।'

जब जेन आयर का मंचन लंदन के एक थिएटर में हुआ — और इसे एक से अधिक बार मंच के लिए रूपांतरित किया गया है, और इंग्लैंड और अमेरिका में सैकड़ों बार इसका मंचन किया गया है — शार्लोट ब्रोंटे ने अपने मित्र श्री विलियम्स को इस प्रकार लिखा: —

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

5 फरवरी, 1848।

"प्रिय महोदय, — किसी छोटे थिएटर में जेन आयर का मंचन उस कृति के लेखक के लिए निस्संदेह एक कष्टदायक दृश्य होगा। मुझे लगता है कि ऐसे मंच पर अभिनेता और अभिनेत्रियाँ इसे बेहद बढ़ा-चढ़ाकर और बेहद भद्दा बना देंगे। मैं स्वयं से यह पूछे बिना नहीं रह सकता कि वे श्री रोचेस्टर के बारे में क्या सोचेंगे? और मेरे मन में इसके उत्तर में जो चित्र उभरता है, वह कुछ हद तक अपमानजनक है। वे जेन आयर के बारे में क्या सोचेंगे? मुझे इस प्रश्न के उत्तर में कुछ बहुत ही चंचल और बनावटी सा लगता है।"

फिर भी, अगर यह मेरे बस में होता, तो मैं स्वयं प्रदर्शनी का साक्षी बनने का प्रयास अवश्य करता। यदि मैं चुपचाप और अकेले जा सकता, तो मैं निस्संदेह जाता; मैं ऐसे दृश्य में एकत्रित किए जा सकने वाले उपयोगी अवलोकनों के लिए बड़बड़ाहट और शिकायत, अकड़ और मुंह बनाने, सब कुछ सहने का प्रयास करता।

'जहाँ तक आपके जाने की इच्छा का सवाल है, यह एक अलग प्रश्न है। मुझे डर है कि मुझमें वास्तव में ऐसा चाहने की हिम्मत नहीं है। कोई अपने काम से घृणा तो सहन कर सकता है, लेकिन किसी मित्र का ऐसी ही घृणा करना अप्रिय है। फिर भी, मैं जानता हूँ कि प्रदर्शनी के बारे में आपका विवरण और दर्शकों पर विभिन्न भागों के प्रभाव के बारे में आपके विचार सुनना मेरे लिए रुचिकर होगा। संक्षेप में, मैं जानना चाहता हूँ कि आप क्या सोचते हैं और इस विषय पर आप क्या कहते हैं। लेकिन आपको केवल मेरी जिज्ञासा शांत करने के लिए नहीं जाना है; आपको वही करना है जो आपको उचित लगे। आप जो भी निर्णय लें, मुझे संतुष्टि होगी: यदि आप नहीं जाते हैं, तो आप पुस्तक के बारे में एक भद्दी धारणा से बच जाएँगे; यदि आप जाते हैं, तो शायद मुझे कुछ जानकारी मिल जाएगी - दोनों ही विकल्पों के अपने-अपने फायदे हैं।'

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि दूसरा संस्करण बिक रहा है, स्मिथ एंड एल्डर के लिए यह अच्छी बात है। मुझे डर था कि यह कहीं पड़ा नहीं रहेगा और नुकसान होगा। ऐसा लगता है कि वुदरिंग हाइट्स भी बिक रही है, और इससे पता चलता है कि श्री न्यूबी अपने लेखकों के साथ बहुत अच्छे तालमेल में हैं। — आपका प्रिय महोदय, आपका विश्वासपात्र।

'कुरर बेल।'

मैं उपरोक्त पत्र को यहां इसलिए छाप रहा हूं क्योंकि इसके अनुवर्ती भाग में एलिस - एमिली ब्रोंटे - के बारे में कुछ कहा गया है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

15 फरवरी, 1848।

महोदय, जैसा कि आप समझ सकते हैं, आपके पत्र ने मुझे सोचने के लिए कुछ दिया है। इसने मेरे मन में एक विचित्र चित्र प्रस्तुत किया है, क्योंकि आपका वर्णन इतना सजीव है कि मुझे सब कुछ साकार होता हुआ प्रतीत होता है। मुझे जानकारी चाहिए थी और वह मुझे मिल गई है। आपने अपने विशाल संसार - अपने लंदन - के एक कोने से पर्दा उठाया है और मुझे उस चीज़ की झलक दिखाई है जिसे मैं घृणित

कह सकता हूँ, लेकिन जिसे मैं विचित्र कहना पसंद करता हूँ। तो, यही है महानगरीय जनता को लुभाने वाली चीजों का एक नमूना! यही है उनके पसंदीदा स्थानों में से एक का दृश्य!

क्या मैंने यह नहीं कहा था कि अगर मेरे बस में होता तो मैं इस थिएटर में जाकर यह प्रदर्शनी जरूर देखता? लोग जब बिना सोचे-समझे बातें करते हैं तो कितनी बेतुकी बातें बोल देते हैं!

अब आपको जो कुछ भी देखा उसे पूरी तरह से भूलने की कोशिश करनी चाहिए।

मेरी अगली किताब के बारे में, मुझे लगता है कि समय के साथ यह परिपक्व हो जाएगी, जैसे घास उगती है या मक्का पकता है; लेकिन मैं इसे जबरदस्ती नहीं कर सकता। अभी तक इसकी प्रगति धीमी है: ऐसा नहीं है कि मैं हर दिन, या हर सप्ताह भी कुछ पढ़ने लायक लिख सकूँ; लेकिन मैं (यदि अन्य मामलों से बाधित न हो) जब मन करेगा तब परिश्रम करूंगा, और उचित समय पर मुझे आशा है कि मैं ऐसा परिणाम प्राप्त कर पाऊंगा जिसे मैं अपने प्रकाशकों और जनता को प्रस्तुत करने में शर्म महसूस नहीं करूंगा।

क्या लेखकों के दो वर्ग नहीं हैं - लेखक और पुस्तक विक्रेता? और क्या पुस्तक विक्रेता लेखक से अधिक विपुल नहीं है? क्या वह वास्तव में आश्चर्यजनक रूप से उर्वर नहीं है; लेकिन क्या जनता, या प्रकाशक भी, उसकी रचनाओं पर ध्यान देते हैं? क्या समय के साथ दोनों उससे ऊब नहीं जाते?

क्या यह इसलिए नहीं है कि लेखक व्यापारियों, यानी लाभ चाहने वालों के लिए अधिक उपयुक्त जीवन शैली का लक्ष्य रखते हैं, इसलिए वे अक्सर मात्र सट्टेबाज बनने के लिए विवश हो जाते हैं, और अपनी कलम की प्रेरणा का स्रोत पैसा कमाने की आवश्यकता में पाते हैं? यदि वे मितव्ययी होने में शर्म महसूस न करते, तो क्या वे अधिक स्वतंत्र नहीं होते?

'मैं उस "विशाल संसार" का शांत अवलोकन करना बहुत पसंद करूँगा, जिसका आपने उल्लेख किया है, लेकिन अभी तक मुझे ऐसा करने का अधिकार नहीं मिला है: यह किसी भविष्य के लिए ही संभव है—कब, यह मुझे नहीं पता। मुझे लगता है कि एलिस इस तमाशे से घृणा से मुंह मोड़ लेंगे। मुझे नहीं लगता कि वे इसे अपना सिद्धांत मानते हैं कि "मानव जाति का उचित अध्ययन मनुष्य ही है"—कम से कम शहरों के कृत्रिम मनुष्य को तो नहीं। कुछ मामलों में मैं एलिस को कुछ हद तक सिद्धांतवादी

मानता हूँ: कभी-कभी वे ऐसे विचार प्रस्तुत करते हैं जो मुझे व्यावहारिक से कहीं अधिक साहसिक और मौलिक लगते हैं; उनकी तर्कशक्ति मुझसे आगे हो सकती है, लेकिन निश्चित रूप से वह अक्सर एक अलग राह पर चलती है। मैं कहूँगा कि एलिस को एक निबंधकार के रूप में देखे जाने तक उनकी पूरी क्षमता का पता नहीं चलेगा।'

'मैं आपको आपके लिफाफे में संलग्न पत्र लौटा रहा हूँ, यह बेरविक वार्डर के संपादक की ओर से है; उन्हें समीक्षा के लिए जेन आयर की एक प्रति चाहिए।'

आपके निरंतर स्नेह के लिए एक बार फिर धन्यवाद देते हुए, मैं आपका विश्वासपात्र बना रहता हूँ, प्रिय महोदय।

'कुरर बेल।'

कुछ समय बाद ही एमिली को भी वही बीमारी हो गई जिससे उसी वर्ष उनकी मृत्यु हो गई। ब्रैनवेल की मृत्यु सितंबर 1848 में हुई, और एक महीने बाद शार्लोट ने आशंकाओं से भरे दिल से लिखा: —

सुश्री एलेन नुसे के लिए

29 अक्टूबर, 1848।

प्रिय एलेन, मुझे खेद है कि मेरी अब तक की चिट्ठी न सुनने से आपको परेशानी हुई, लेकिन आपको याद रखना चाहिए कि आपकी चिट्ठी मिले हुए अभी एक हफ़्ता भी नहीं बीता है, और इस बीच मेरी ज़िंदगी में इतनी हलचल नहीं हुई है कि कुछ खास घटित हुआ हो। आप मुझसे अपने बारे में लिखने को कह रही हैं; इससे मैं असमंजस में हूँ, क्योंकि मेरे पास अपने बारे में कहने के लिए कुछ भी दिलचस्प नहीं है। मुझे लगता है कि मैं अपनी पिछली बीमारी के असर से लगभग उबर चुकी हूँ, और लगभग पूरी तरह स्वस्थ हो गई हूँ। कभी-कभी मुझे लगता है कि काश मैं थोड़ी और स्वस्थ होती, लेकिन हमें जो मिला है उसी से संतुष्ट रहना चाहिए, न कि उन चीज़ों के लिए तरसना चाहिए जो हमारी पहुँच से बाहर हैं। इस समय मैं अपनी बहनों को लेकर खुद से ज़्यादा चिंतित हूँ। एमिली की सर्दी और खांसी बहुत ज़िद्दी हैं। मुझे डर है कि उसे सीने में दर्द है, और जब वह ज़रा भी तेज़ी से चलती है तो कभी-कभी उसकी साँस फूलने लगती है। वह बहुत दुबली-पतली और पीली दिख रही है। उसका शांत स्वभाव मुझे बहुत बेचैन कर देता है। उससे सवाल करना बेकार है - कोई जवाब नहीं मिलता। उपचार सुझाना तो और भी व्यर्थ है—क्योंकि उन्हें कभी अपनाया नहीं जाता। मैं ऐनी के नाजुक स्वास्थ्य को भी नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती। मुझे लगता है कि हाल की

दुखद घटना ने मुझे सामान्य से अधिक चिंतित कर दिया है। मैं कभी-कभी बहुत उदास हो जाती हूँ। मैं सब कुछ ईश्वर के हाथों में छोड़ने की कोशिश करती हूँ; उनकी कृपा पर भरोसा करती हूँ; लेकिन कुछ परिस्थितियों में विश्वास और समर्पण का अभ्यास करना कठिन होता है। हाल ही में मौसम बीमारों के लिए बहुत प्रतिकूल रहा है: तापमान में अचानक बदलाव और ठंडी चुभने वाली हवाएँ यहाँ अक्सर चलती रही हैं। यदि मौसम स्थिर हो जाए, तो शायद सामान्य स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़े और खांसी-जुकाम जैसी परेशानियाँ दूर हो जाएँ। पापा पूरी तरह से बच तो नहीं पाए हैं, लेकिन अब तक हम सब से बेहतर स्थिति में हैं। इस सर्दी में मेरे ब्रुकरॉयड जाने का ज़िक्र मत करना। मैं किसी भी कीमत पर घर नहीं छोड़ सकती और न ही छोड़ना चाहती हूँ। मिस हील्ड की गंभीर बीमारी के बारे में सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ, मुझे लगता है कि वह कुछ वर्षों से अस्वस्थ हैं। इन बातों से यह एहसास और ज्ञान होता है कि यह संसार हमारा स्थायी निवास नहीं है। हमें मानवीय रिश्तों को बहुत गहराई से नहीं बांधना चाहिए, न ही मानवीय स्नेह को बहुत अधिक लगाव से थामना चाहिए। एक दिन वे हमें छोड़ देंगे, या हमें उन्हें छोड़ना पड़ेगा। फिलहाल के लिए अलविदा। ईश्वर आपको और जरूरतमंदों को स्वास्थ्य और शक्ति प्रदान करें। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

2 नवंबर, 1848।

महोदय, आपके पत्र लिखने के बाद से मुझे दो समाचार पत्र प्राप्त हुए हैं, स्टैंडर्ड ऑफ फ्रीडम और मॉर्निंग हेराल्ड, दोनों में कविताओं की समीक्षाएँ हैं; मुझे आशा है कि ये समीक्षाएँ श्री स्मिथ को इस संग्रह की ओर जन ध्यान आकर्षित करने में उपयोगी सिद्ध होंगी। यदि इनमें एलिस बेल की खूबियों को और अधिक स्पष्ट रूप से पहचाना गया होता, तो मैं इनकी और अधिक सराहना करता; लेकिन अमूर्त कविता के प्रेमी संख्या में कम हैं।

आपका पिछला पत्र बहुत अच्छा लगा, आपने उसे बड़ी ही नेक नियत से लिखा था: आपने उसे इतना रोचक बनाया कि मेरा ध्यान बँट गया। मैं आपको पहले ही धन्यवाद दे देती, बस मैं एक खुशनुमा दिन और अच्छे मूड का इंतज़ार कर रही थी ताकि आपसे बात कर सकूँ, और मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि हमारे शांत घर

पर जो उदासी छाई हुई है, वह अब भी छाई हुई है। मैं तो ठीक हूँ, लेकिन बाकी लोग बीमार हैं। पापा की तबीयत ठीक नहीं है, मेरी बहन एमिली को फेफड़ों में धीमी सूजन जैसी कोई बीमारी है, और यहाँ तक कि हमारी पुरानी नौकरानी, जो लगभग पच्चीस साल से हमारे साथ रह रही थी, भी गंभीर रूप से बीमार है।

मैं आशा करती हूँ कि आज शाम एमिली की तबीयत थोड़ी बेहतर होगी, पर यह कहना मुश्किल है। बीमारी में वह सचमुच एक दृढ़ निश्चयी महिला है: वह न तो सहानुभूति चाहती है और न ही स्वीकार करती है। कोई भी सवाल पूछना, कोई भी मदद की पेशकश करना, उसे परेशान करना होता है; जब तक मजबूर न किया जाए, वह दर्द या बीमारी के आगे एक कदम भी नहीं झुकती; वह अपने किसी भी शौक को स्वेच्छा से नहीं छोड़ती। आपको उसे वह करते हुए देखना होगा जो वह करने में असमर्थ है, और एक शब्द भी कहने की हिम्मत नहीं करनी होगी - यह उन लोगों के लिए एक पीड़ादायक मजबूरी है जिनके लिए उसका स्वास्थ्य और अस्तित्व उतना ही अनमोल है जितना उनकी रगों में बहने वाला जीवन। जब वह बीमार होती है तो मुझे लगता है कि दुनिया में कोई धूप नहीं है। बहन का रिश्ता सचमुच बहुत गहरा है, और मुझे लगता है कि उसके शक्तिशाली और विशिष्ट स्वभाव की एक खास कठोरता ही मुझे उससे और अधिक जुड़ने के लिए प्रेरित करती है। लेकिन यह सब पारिवारिक स्वार्थ है (कहने का मतलब है) - इसे माफ कर दें, और सबसे बढ़कर, जब आप मुझे लिखें तो कभी भी इसका या एमिली के नाम का जिक्र न करें। मैं हमेशा आपके पत्र नहीं दिखाता, लेकिन जब भी उनके बारे में पूछा जाता है तो मैं उन्हें कभी नहीं रोकता।

मुझे खेद है कि मैं ब्रैडफोर्ड ऑब्जर्वर में छपी इस खबर से ब्रोंटे परिवार को जोड़ने का श्रेय नहीं ले सकता। वह अखबार असंतुष्टों के हाथों में है, और मुझे लगता है कि सबसे अच्छे लेख आमतौर पर शहर के एक या दो बुद्धिमान असंतुष्ट पादरियों द्वारा ही लिखे जाते हैं। अलेक्जेंडर हैरिस आपके प्रोत्साहन से भाग्यशाली हैं, जैसे एक समय करर बेल थे। वह आपसे प्राप्त पहला पत्र नहीं भूले हैं, जिसमें आपने उनकी 'द प्रोफेसर' की पांडुलिपि को अस्वीकार कर दिया था, लेकिन अन्य प्रकाशकों द्वारा अस्वीकृति के लिए इस्तेमाल किए गए शब्दों से बिल्कुल अलग - कहीं अधिक समझदारी और सहानुभूति के साथ, इसने निराशा के दर्द को कम कर दिया और उनके मन में नई आशा जगा दी।

'कुरर बेल शायद आपसे फिर से इस बारे में बहस करें कि आप उनके बारे में

ज़रूरत से ज़्यादा अच्छा सोचते हैं, लेकिन वे ऐसा नहीं करते; वे यह स्वीकार करना पसंद करते हैं कि किसी साथी प्राणी का स्नेह - भले ही वह उनकी योग्यता से अधिक हो - उन्हें अच्छा लगता है: इससे उन्हें संतोष मिलता है। वे जानते हैं कि इस स्नेह का जो भी हिस्सा उनकी ओर से अनुचित है, वह रोज़मर्रा के संपर्क में आने पर टूटे हुए बुलबुले की तरह बिखर जाएगा, लेकिन उन्हें विश्वास है कि सच्ची दोस्ती का एक हिस्सा, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, बना रहेगा, और उस हिस्से को वे अपने खजानों में गिनते हैं।'

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि मैडलीन आखिरकार सामने आ गई हैं, और मॉर्निंग हेराल्ड में उनकी कृति और 'द थ्री पाथ्स' की सकारात्मक समीक्षा देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। मैं मिस कावानाघ को उनकी सफलता की कामना करती हूं।

मुझे आशा है कि श्रीमती विलियम्स का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, और आपका और आपके सभी बच्चों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा, क्योंकि स्वास्थ्य के बिना सुख का कोई स्थान नहीं है। — प्रिय महोदय, आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

अगला पत्र शायद एमिली के बारे में सबसे दिलचस्प झलक देता है जो हमें अब तक मिल पाई है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

22 नवंबर, 1848।

मेरे प्रिय महोदय, मैंने आपका अत्यंत सौहार्दपूर्ण पत्र पढ़ते ही एमिली को दे दिया, इस बात का विशेष ध्यान रखते हुए कि होम्योपैथी के पक्ष में एक शब्द भी न कहूँ—क्योंकि ऐसा करना उचित नहीं होता। आमतौर पर बेहतर यही होता है कि उसे अपना निर्णय स्वयं लेने दिया जाए, और विशेष रूप से उस पक्ष का समर्थन न किया जाए जिसे आप उसका समर्थन करवाना चाहते हैं; यदि आप ऐसा करेंगे, तो वह निश्चित रूप से विपरीत दिशा में झुकेगी, और दस में से एक संभावना है कि वह तर्क-वितर्क करके आपकी बात मानने से इनकार कर देगी। अब तक उसने दवा लेने से इनकार किया है, चिकित्सीय सलाह को ठुकराया है; कोई तर्क, कोई विनती उसे चिकित्सक के पास जाने के लिए राजी नहीं कर पाई है। आपका पत्र पढ़ने के बाद उसने कहा, "श्री विलियम्स का इरादा नेक और अच्छा था, लेकिन वह भ्रम में थे: होम्योपैथी तो बस एक प्रकार का झाड़-फूंक है।" फिर भी वह इस राय पर पुनर्विचार कर सकती है और

किसी दूसरे निष्कर्ष पर पहुँच सकती है; उसके दूसरे विचार अक्सर सबसे अच्छे होते हैं।

'नॉर्थ अमेरिकन रिव्यू पढ़ने लायक है; उसमें कोई लाग-लपेट नहीं है। बेल्स कितने बुरे लेखक होंगे! कितनी भयानक किताबें लिखते होंगे! आज, जब एमिली थोड़ी बेहतर लग रही थी, तो मैंने सोचा कि रिव्यू उसे अच्छा लगेगा, इसलिए मैंने उसे और ऐनी को पढ़कर सुनाया। जब मैं हमारे शांत, लेकिन अब कुछ उदास से हो चुके अलाव के पास उनके बीच बैठी थी, तो मैंने उन दो उग्र लेखकों को गौर से देखा। एलिस, जो "असाधारण प्रतिभा के धनी, लेकिन हठी, क्रूर और उदास व्यक्ति" थे, अपनी आरामकुर्सी पर पीछे की ओर झुके बैठे, जैसे-तैसे अपनी रुकी हुई साँसें खींच रहे थे, और अफसोस! बेहद पीले और कमजोर दिख रहे थे; उन्हें हँसने की आदत नहीं है, लेकिन सुनते हुए वे आधे आनंद और आधे तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ मुस्कुराए। एक्टन सिलाई कर रहे थे, कोई भी भावना उन्हें कभी बोलने के लिए प्रेरित नहीं करती, इसलिए वे भी केवल मुस्कुराए, और साथ ही अपने चरित्र को इतने अंधकारमय ढंग से चित्रित होते देखकर शांत आश्चर्य का एक शब्द कहा। मुझे आश्चर्य होता है कि अगर समीक्षक ने उस जोड़ी को मेरी तरह देखा होता, तो वह अपनी बुद्धिमत्ता के बारे में क्या सोचता। शायद उसने "बेल एंड कंपनी" में पुरुष साथी को व्यर्थ ही खोज निकाला होता। जब मैं ये गंभीर दावे पढ़ता हूँ कि जेन आयर साझेदारी में लिखी गई थी, और इसमें "एक से अधिक बुद्धि और एक से अधिक लिंग की छाप है", तो मुझे मन ही मन हंसी आती है।

अगर समझदार आलोचकों को पता चले कि जेन आयर की पांडुलिपि को सबसे पहले आपने या श्री स्मिथ ने छुआ था, और आपके या उनके पढ़ने से पहले किसी पुरुष ने इसकी एक पंक्ति भी नहीं पढ़ी थी, किसी पुरुष ने इसके पन्ने नहीं सुने थे, तो वे निश्चित रूप से अपनी प्रतिष्ठा में गिरावट महसूस करेंगे। हालांकि, इस मामले पर उनका जो दृष्टिकोण है, वह मुझे कुछ हद तक पसंद है। अगर वे चाहें, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है अगर वे यह सोचें कि इस पुस्तक को संकलित करने में एक दर्जन महिलाओं और पुरुषों ने सहयोग किया था। उन्हें यह अजीबोगरीब रचना लग रही होगी - यह अध्याय श्रीमान ने लिखा है, और वह मिस या मिसेज बेल ने; वह चरित्र या दृश्य पति द्वारा चित्रित किया गया है, और दूसरा पत्नी द्वारा! ज़ाहिर है, पुरुष ने कठिन काम किया, और महिला ने बारीक काम किया। मुझे यह विचार बहुत पसंद आया।

मैंने मैडलिन पढ़ी है। यह सादगी से गढ़ी गई एक अनमोल कृति है। जूलिया कावानाघ के प्रति मेरा आदर है; मैं कई अन्य प्रतिभाशाली हस्तियों की तुलना में उन्हें जानना अधिक पसंद करूंगी। किसी तरह मेरा दिल एलिजा लिन की तुलना में उनकी ओर अधिक आकर्षित होता है। ऐसा नहीं है कि मैंने एमीमोन या एज़ेथ पढ़ी हैं, लेकिन मैंने उनके कुछ अंश देखे हैं जिन्हें पचाना मेरे लिए सचमुच असंभव था। उन्होंने मेरी कल्पना में लिटन बुलवर को पेटीकोट में प्रस्तुत किया - एक विस्मयकारी छवि। वैसे, अमेरिकी आलोचक बुलवर के बारे में सराहनीय बातें कहते हैं - ईमानदारी से कहूं तो मुझे यह स्वीकार करना होगा।

मुझे फिलहाल आपसे विदा लेनी होगी। — आपका सादर,

'कुरर बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

7 दिसंबर, 1848।

महोदय, मुझे डॉ. क्यूरी की होम्योपैथी पर लिखी पुस्तक प्राप्त हो गई है, और इसके लिए आपको धन्यवाद देना भूल जाने के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। इसे ध्यानपूर्वक पढ़ने के बाद मैं इसे लौटा दूँगा। मेरी बहन ने इसे पढ़ लिया है, लेकिन अभी तक वह अपने पूर्व मत पर अडिग है: वह इस प्रणाली में प्रभावशीलता मानने को तैयार नहीं है। यदि मैं उसकी जगह होता, तो मुझे लगता है कि मैं इसे आज़माने के लिए उत्सुक होता, मुझे विश्वास है कि इससे शायद ही कोई नुकसान हो और लाभ ही हो।

'मैं एमिली की हालत के बारे में कोई अच्छी खबर नहीं दे सकता। मेरे पिता उसके बारे में बहुत निराश हैं। ऐनी और मैं यथासंभव आशा बनाए रखते हैं, लेकिन उसकी हालत और उसके लक्षण उस आशा को कुचल देते हैं। फिर भी मैं तर्क देता हूँ कि वर्तमान दुबलापन, खांसी, कमजोरी, सांस फूलना सूजन के परिणाम हैं, जो अब, मुझे विश्वास है, कम हो गई है, और समय के साथ ये बीमारियाँ धीरे-धीरे उससे दूर हो जाएँगी। लेकिन मेरे पिता अपना सिर हिलाते हैं और हमारे परिवार के उन अन्य लोगों के बारे में बात करते हैं जो कभी इसी तरह पीड़ित थे, जिनके लिए उन्होंने भी निराशा के बावजूद आशा बनाए रखी थी, और जो अब उस स्थान पर हैं जहाँ आशा और भय का कोई उतार-चढ़ाव नहीं है। हालाँकि, उनके मामले और एमिली के मामले में अंतर थे - मेरे विचार से महत्वपूर्ण अंतर। मुझे उसके ठीक होने की उम्मीद से जुड़े रहना

होगा, मैं इसे त्याग नहीं सकता।'

किसी कुशल पेशेवर की राय पाने के लिए मैं बहुत कुछ देने को तैयार हूँ। प्रिय महोदय, यह कहना आसान है कि चिकित्सा में कुछ भी नहीं है और चिकित्सक बेकार हैं, लेकिन जब हम अपने प्रियजनों को कष्ट में देखते हैं तो स्वाभाविक रूप से हम उनकी सहायता करना चाहते हैं; चुपचाप देखते रहना और कुछ न करना अत्यंत पीड़ादायक होता है। काश मेरी बहन में अनेक गुणों के साथ-साथ विनम्रता का गुण भी होता! मैंने बार-बार सलाह लेने की आवश्यकता पर ज़ोर देकर उसे नाराज़ किया है, और मुझे डर है कि मुझे आगे भी ऐसा ही करना पड़ेगा। चलिए इस विषय को यहीं समाप्त करते हैं; मुझे आपको अपने दुख में भागीदार बनाने का कोई अधिकार नहीं है।

मुझे सचमुच आश्चर्य है कि श्री न्यूबी ने एलिस और एक्टन बेल की एक और रचना प्रकाशित करने की बात कही है। एक्टन उनसे पूरी तरह तंग आ चुके हैं। मुझे लगता है कि मैंने पहले भी संकेत दिया है कि लेखक अब श्री न्यूबी को प्रकाशक के रूप में नहीं रखना चाहते। वे न केवल किए गए वादों को पूरा करना भूल जाते हैं, बल्कि तुच्छ और घटिया हथकंडों से उन रचनाओं पर पाखंड का साया डाल देते हैं जिनका प्रबंधन वे करते हैं। यह "बेल्स" को शोभा नहीं देता: उनके अपने ही रूढ़िवादी उत्तरी ग्रामीण विचार हैं कि क्या सभ्य, सम्माननीय और सज्जन है।

न्यूबी का आचरण इन धारणाओं से बिल्कुल मेल नहीं खाता; उन्होंने उसे पाया है —मैं यह नहीं कहूंगा कि उन्होंने उसे क्या पाया है। दो शब्द जो उस पर बिल्कुल सटीक बैठते हैं, मेरे कलम की नोक पर हैं, लेकिन मैं उन्हें इस्तेमाल करने की जहमत नहीं उठाऊंगा।

एलिस बेल इस समय लेखन या प्रकाशन के बारे में सोचने की स्थिति में नहीं हैं। ईश्वर की कृपा से यदि उनका स्वास्थ्य और शक्ति बहाल हो जाए, तो वे यह निर्णय लेने का अधिकार अपने पास सुरक्षित रखते हैं कि श्री न्यूबी ने अपनी दूसरी रचना पर अपना दावा खो दिया है या नहीं।

मैंने अभी तक पेंडेनिस का दूसरा अंक नहीं पढ़ा है। पहले अंक में मुझे सहजता, संसाधन और संभावनाओं के संकेत भरपूर लगे; लेकिन थैकरे की शैली अपनी पूरी क्षमता को एक साथ प्रदर्शित करने की नहीं है। वैनिटी फेयर की शुरुआत बहुत शांत थी - पूरी रचना शांत रही, लेकिन जैसे-जैसे धारा बहती गई, उसकी तीव्रता और शक्ति बढ़ती गई। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि पेंडेनिस के साथ भी ऐसा ही

होगा।

'आपको एलिजा लिन के बारे में मैंने जो कहा था उसे भूल जाना चाहिए। वह शायद सबसे अच्छी इंसान हों, और मैं एक संकीर्ण सोच वाला मूर्ख हूं जो किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति पूर्वाग्रह व्यक्त कर रहा हूं जिसे मैंने कभी देखा ही नहीं है।'

“मान लीजिए, मेरे प्रिय महोदय, मैं जल्दबाजी में हूँ, आपका सादर।”

‘सी. ब्रोंटे।’

अगले चार अक्षर स्वयं ही सब कुछ बयां कर देते हैं।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

9 दिसंबर, 1848।

महोदय, आपका पत्र मेरी एक मुश्किल को हल करता हुआ प्रतीत होता है और मेरे लिए रास्ता खोलता है। मैं जानती हूँ कि डॉ. इलियटसन या फोर्ब्स से परामर्श करना व्यर्थ होगा: मेरी बहन इंग्लैंड के सबसे कुशल चिकित्सक से भी, अगर उसे अभी उसके पास लाया जाए, तो भी इलाज नहीं करवाएगी और न ही उसकी सलाह मानेगी। होम्योपैथी के बारे में, उसने कम से कम यह तो माना है कि इससे ज्यादा नुकसान नहीं हो सकता; शायद अगर मुझे दवाइयाँ मिल जाएँ तो वह उन्हें आजमाने के लिए राजी हो जाए; खैर, प्रयोग तो किया ही जाएगा।

'डॉ. एप्स का पता न होने के कारण, मैं उनके मामले का संलग्न बयान आपके माध्यम से भेज रहा हूँ।'

“आप दोनों की दयालुता के लिए मैं दिल से आभारी हूँ कि आपने इस मामले में इतनी दिलचस्पी दिखाई जो मुझसे बहुत करीब से जुड़ा है। विश्वास कीजिए, आपका सच्चा मित्र।”

‘सी. ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

15 दिसंबर, 1848।

मेरी प्यारी एलेन, मैंने एमिली को तुम्हारे यहाँ आने के बारे में महज़ एक सुझाव के तौर पर बताया था, इस हल्की सी उम्मीद के साथ कि शायद इससे उसका मन बहल जाए, क्योंकि वह तुम्हें इस घर के बाकी सभी लोगों से ज़्यादा मानती है। लेकिन मैंने पाया कि ऐसा नहीं हुआ; ज़रा सी भी उत्तेजना या परेशानी बर्दाश्त नहीं की जा सकती, और सच कहूँ तो मुझे नहीं लगता कि इस खराब मौसम में कीघली से पैदल

आना और वापस आना तुम्हारे लिए बिल्कुल भी ठीक रहेगा। फिर भी मैं तुमसे मिलना चाहती थी, और ऐनी भी। एमिली की हालत अभी भी वैसी ही है; कल मुझे लगा कि वह थोड़ी बेहतर है, लेकिन आज उसकी तबीयत ठीक नहीं है। फिर भी मुझे उम्मीद है, क्योंकि मुझे उम्मीद रखनी ही होगी - वह मेरे लिए जीवन से भी ज़्यादा प्यारी है। अगर निराशा की धुंध मेरे दिल तक पहुँच गई तो मैं बेकार हो जाऊँगी। मुझे लगता है कि सबसे पहले तो उसे फेफड़ों में सूजन थी; इसका समय पर इलाज होना चाहिए था। वह बहुत ज़िद्दी है। काश मैं उसकी हालत और भावनाओं को और अच्छे से समझ पाती। बुखार पहले जितना तेज नहीं है, लेकिन कमर में दर्द, खांसी और कमजोरी अभी भी मौजूद हैं।

ब्रुकरायड में सभी को मेरी ओर से शुभकामनाएं देना, और यकीन मानिए, आपका विश्वासपात्र।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

21 दिसंबर, 1848।

मेरी प्यारी एलेन, एमिली को अब कोई दर्द या कमजोरी नहीं है। उसे इस दुनिया में अब कभी कष्ट नहीं सहना पड़ेगा। एक कठिन, संक्षिप्त संघर्ष के बाद वह चली गई। मंगलवार को, जिस दिन मैंने तुम्हें पत्र लिखा था, उसी दिन उसकी मृत्यु हो गई। मुझे लगा था कि वह शायद कुछ हफ्तों तक हमारे साथ रहेगी, लेकिन कुछ ही घंटों बाद वह अनंत काल में चली गई। हाँ, अब एमिली न तो समय में है और न ही पृथ्वी पर। कल हमने उसके कमजोर, नश्वर शरीर को चुपचाप चर्च के फर्श के नीचे दफना दिया। हम इस समय बहुत शांत हैं। हम शांत क्यों न हों? उसे कष्ट सहते देखने का दुख समाप्त हो गया है; मृत्यु की पीड़ा का दृश्य बीत चुका है; अंतिम संस्कार का दिन बीत गया है। हम महसूस करते हैं कि उसे शांति मिल गई है। अब कड़ाके की ठंड और तेज हवा से कांपने की कोई जरूरत नहीं है। एमिली को उनका एहसास नहीं होता। वह आशा के समय में मरी। हमने उसे जीवन के सबसे सुनहरे समय में जाते देखा। लेकिन यह ईश्वर की इच्छा है, और जिस स्थान पर वह गई है, वह उस स्थान से बेहतर है जहाँ वह गई थी।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

25 दिसंबर, 1848।

'मेरे प्रिय महोदय, जब मेरे मन को थोड़ी शांति मिलेगी तब मैं आपको विस्तार से लिखूंगा - फिलहाल मैं आपके पत्र के लिए संक्षेप में ही धन्यवाद दे सकता हूं, जो मुझे अपनी ईमानदारी में वाक्पटु लगा।'

‘एमिली अब यहाँ कहीं नहीं है, उसके नश्वर अवशेषों को घर से बाहर ले जाया गया है। हमने उसके प्रिय सिर को गिरजाघर के गलियारे के नीचे मेरी माँ, मेरी दोनों बहनों (जो बहुत पहले मर चुकी हैं) और मेरे बेचारे, अभागे भाई के सिर के बगल में रख दिया है। लेकिन वंश का एक छोटा सा अंश अभी भी बचा है—ऐसा मेरे बेचारे पिता सोचते हैं।’

खैर, नुकसान हमारा है, उसका नहीं, और मुझे कुछ उदास तसल्ली मिलती है, जब मैं हवा को बहते हुए सुनता हूँ और पाले की चुभन महसूस करता हूँ, यह जानकर कि प्रकृति उसे अब और कष्ट नहीं देगी; उसकी क्रूरता उसकी कब्र तक नहीं पहुँच सकती; उसका बुखार शांत हो गया है, उसकी बेचैनी थम गई है, उसकी गहरी, खोखली खांसी हमेशा के लिए शांत हो गई है; हम उसे रात में नहीं सुनते और न ही सुबह उसकी तलाश करते हैं; हमारे सामने अब उस असाधारण रूप से मजबूत आत्मा और नाजुक शरीर का संघर्ष नहीं है - वह निरंतर संघर्ष - जिसे एक बार देख लिया तो कभी भुलाया नहीं जा सकता। हमारे चारों ओर एक उदास सन्नाटा छाया हुआ है, जिसके बीच हम समर्पण की तलाश करते हैं।

मेरे पिता और मेरी बहन ऐनी की तबीयत ठीक नहीं है। जहाँ तक मेरी बात है, ईश्वर ने अब तक मुझ पर बड़ी कृपा की है; अब तक मैं अपना बोझ उठाने और दूसरों की थोड़ी मदद करने में सक्षम महसूस कर रही हूँ। मैं बीमार नहीं हूँ; मैं रोज़मर्रा के काम कर सकती हूँ और अपने शोकग्रस्त परिवार में आशा और ऊर्जा बनाए रखने के लिए कुछ कर सकती हूँ। मेरे पिता लगभग हर घंटे मुझसे कहते हैं, “शार्लोट, तुम्हें हिम्मत रखनी होगी, अगर तुमने मेरा साथ नहीं छोड़ा तो मैं टूट जाऊँगा”; आप समझ सकते हैं, ये शब्द मेरे लिए प्रेरणा का काम करते हैं। मेरी बहन ऐनी के शांत लेकिन गहरे शोक को देखकर मुझे उसके लिए इतना डर लगता है कि मैं डगमगाने की हिम्मत नहीं कर पाती। किसी को तो सबको हिम्मत देनी ही होगी।

इसलिए अब मैं यह नहीं पूछूंगा कि एमिली को हमारे गहरे लगाव के बीच, उसके यौवन काल में, उसकी प्रतिभा के चरम पर, क्यों छीन लिया गया; क्यों उसका अस्तित्व अब कुचले हुए हरे अनाज के खेत की तरह, जड़ से उखाड़े गए फलते-फूलते

पेड़ की तरह पड़ा है। मैं बस इतना ही कहूंगा कि परिश्रम के बाद विश्राम और तूफान के बाद शांति मीठी होती है, और बार-बार दोहराऊंगा कि एमिली अब यह जानती है। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

और फिर प्यारी बहन के बारे में ये आखिरी दयनीय संदर्भ आते हैं।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

2 जनवरी, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, मुझे लगता है कि अप्रिय परिस्थितियाँ अभी की सुखद परिस्थितियों की तुलना में कम कष्टदायी हैं। त्रैमासिक पत्रिका की आलोचना, चाहे कितनी भी कठोर क्यों न हो, मुझे चुभ नहीं सकती—क्योंकि उसकी प्रशंसा शायद मुझे प्रसन्न नहीं करेगी। करर बेल समीक्षकों और समीक्षाओं से एक दुखद स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं; उनकी स्वीकृति उनके हृदय पर एक अतिरिक्त भार की तरह पड़ सकती है, लेकिन उनकी निंदा उनके लिए कोई कड़वाहट नहीं रखती।

मेरी बहन ऐनी ने उस पत्र का उत्तर भेजा है जो आपको कुछ दिन पहले मिला था; क्या आप कृपया इसे डाक से भेज देंगे? उसकी और पापा की तबीयत अभी ठीक नहीं है, दोनों को ज़ुकाम हो गया है। फिलहाल मेरे पत्र संक्षिप्त ही होने चाहिए - उनमें खुशी की बातें नहीं हो सकतीं। फिर भी, मुझे हिम्मत बनी हुई है। हमारे घर में बीमारी और मृत्यु से मची तबाही को देखकर मैं बहुत दुखी हूँ, लेकिन साथ ही साथ ईश्वर के न्याय के प्रति श्रद्धा और उनकी दया के लिए कृतज्ञता भी महसूस कर रही हूँ। फिर भी, जीवन बहुत खाली हो गया है, और आशा ने मुझे धोखा दिया है; मैं कब फिर से उसके सुझावों पर भरोसा कर पाऊँगी, यह मुझे नहीं पता: वह फुसफुसाती रहती थी कि एमिली मरेगी नहीं, मर नहीं सकती, और अब वह कहाँ है? मेरी पहुँच से दूर, मेरी दुनिया से दूर - मुझसे छीन ली गई। - आपकी सच्ची,

'सी. ब्रोंटे।'

3 मार्च, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, — अब तक मैं कॉर्नहिल से आए पार्सल की प्राप्ति स्वीकार करना भूल जाता था। यह ऐसे समय आया जब मैं इसे खोल भी नहीं सकता था और इसके बारे में सोच भी नहीं सकता था; इसके अंदर क्या है, यह अभी भी एक रहस्य है। जब तक मैं इसका आनंद नहीं ले लेता, तब तक मैं इसे चखूंगा भी नहीं। मैंने इसे

कुछ दिन पहले देखा। इसने मुझे पिछले अक्टूबर में आए पहले पार्सल की याद दिला दी: एमिली तब बीमार पड़ने लगी थी — पार्सल खोलने और किताबों को देखने से उसे खुशी मिली; उन्हें पढ़ने में उसने कई दिन बिताए। उसकी आखिरी सुबह से ठीक पहले वाली शाम को मैंने उसे एमर्सन का एक निबंध पढ़कर सुनाया। मैं पढ़ता रहा, जब तक मुझे लगा कि वह सुन नहीं रही है — मैंने सोचा कि अगले दिन फिर से शुरू करूंगा। अगले दिन, उसके चेहरे की पहली झलक ने मुझे बता दिया कि रात होने से पहले क्या होने वाला है।

'सी. ब्रोंटे।'

19 नवंबर, 1849।

"मेरे प्रिय महोदय, मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि श्री टेलर की बीमारी उम्मीद से कहीं अधिक गंभीर निकली, लेकिन मुझे आशा है कि अब वे बेहतर हैं। उनका पूरी तरह से ठीक होना अभी संभव नहीं है, क्योंकि मेरा मानना है कि गठिया का बुखार एक ऐसी बीमारी है जो शरीर को धीरे-धीरे छोड़ती है।"

अब जबकि मैंने लंदन आने का लगभग पक्का इरादा कर लिया है, यह विचार मुझे सुखद लगने लगा है। पहले तो उदासी थी; मुझे पिछली बार की याद आ गई जब मैं गया था, किसके साथ गया था, किसके पास लौटा था, और उस यात्रा में मैंने जो कुछ देखा, सुना और कहा था, वह सब मैंने किस प्यारे साथ में बार-बार सुनाया था। एमिली खुद कभी किसी तरह के सामाजिक मेलजोल में नहीं जाती थी, और जब भी मैं जाता, तो लौटने पर मैं उसे हर दृश्य का स्पष्ट और सटीक वर्णन करके उसे प्रसन्न कर पाता था। जब मैं जाने के लिए ज़ोर देता, तो वह कभी-कभी कहती, "क्या फ़ायदा? शार्लट सब कुछ मुझे बता देगी।" और सचमुच मुझे उसे इस तरह प्रसन्न करना अच्छा लगता था। अब मेरा काम छूट गया है।

मैं उपदेश सुनने आया हूँ। मुझे लगता है कि आप आलोचना करने के लिए तैयार हैं; आप कुछ बिंदुओं पर बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं हैं, इसलिए मैं सुनने के लिए अपने कान खोलूंगा, और मैं विश्वास के प्रति अपने दिल को बंद नहीं करूंगा; लेकिन मैं आपको पहले ही चेतावनी दे देता हूँ, मेरे अपने सिद्धांत हैं, अर्जित नहीं, बल्कि जन्मजात, कुछ ऐसे सिद्धांत हैं जिनके बारे में मुझे डर है कि उन्हें जड़ से उखाड़ना उस सारी मिट्टी को उखाड़े बिना संभव नहीं है जहाँ से वे उत्पन्न हुए हैं, और नए बीज के लिए केवल अनुत्पादक चट्टान ही बचेगी।

मैंने कैक्सटन की रचनाएँ पढ़ी हैं, मैंने फैनी हर्वी की रचनाएँ देखी हैं। मुझे लगता है कि मैं इन दोनों के बारे में अपने विचार नहीं लिखूँगी - अगर मैं आपसे मिलूँगी तो बोल दूँगी।

‘ऐसी सौ-हजार रचनाएँ लीजिए और उनकी तुलना ठाकरे की एक किताब के पन्ने से कीजिए। मुझे उम्मीद है कि श्री ठाकरे स्वस्थ हो गए होंगे।’

आज सुबह 'द सन', 'मॉर्निंग हेराल्ड' और 'द क्रिटिक' प्रकाशित हुए। इनमें से किसी ने भी शर्ली से निराशा व्यक्त नहीं की, और न ही जेन के साथ उनकी तुलना किसी प्रतिकूल दृष्टिकोण से की। मुझे लगता है कि 'एथेनियम', 'स्पेक्टेटर', 'इकोनॉमिस्ट' जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशनों ने जल्दबाजी में सबसे पहले अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की ताकि वे माहौल बना सकें; यदि ऐसा है, तो उनकी यह चाल अभी पूरी तरह सफल नहीं हुई है।

‘आलोचक, हमारा पुराना मित्र, आज भी मित्र है। हर सुख में पीड़ा की धड़कन क्यों महसूस होती है? एलिस और एक्टन बेल का जिक्र हो रहा है, और वे कहाँ हैं? मैं शिकायत नहीं करूँगा। आस्था कहती है कि वे उन कब्रों में नहीं हैं जहाँ कल्पना जाती है—भावना, चिंतन और प्रेरणा से भरपूर आत्माएँ पृथ्वी से परे, एक अधिक गौरवशाली लोक में हैं। मैं उन्हें धन्य मानता हूँ। मैं सोचता हूँ, और सोचता रहूँगा, कि मेरी हानि उनका लाभ है। क्या आपको उनके बारे में बात करना थका देता है? यदि हाँ, तो मुझे क्षमा करें।— आपका सादर,

‘सी. ब्रोंटे.

इसे बंद करने से पहले मैंने आपके लिफाफे के नीचे संलग्न पत्र पर एक नज़र डाली। क्या आपने इसे पढ़ा? यह एक महिला का पत्र है, जो पूरी तरह से कुंवारी तो नहीं है, लेकिन लगभग वैसी ही है, जैसा कि वह कहती है; इस पर न हस्ताक्षर हैं और न ही तारीख; यह एक अजीबोगरीब, लेकिन सौम्य रचना है, जिसने मुझे आधा रुलाया, आधा हंसाया। मुझे यकीन है कि शर्ली उसके लिए काफी रोमांचक रही है, बल्कि कुछ ज़्यादा ही रोमांचक। चूंकि इस पर कोई पता नहीं है, इसलिए मैं पत्र का उत्तर नहीं दे सकता, और मुझे खुशी है - मुझे नहीं पता कि मैं क्या कहूँ। उसे यकीन नहीं है कि मैं एक सज्जन पुरुष हूँ या नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि वह ऐसा ही सोचती है। क्या आपको पता है कि वह कौन है? अगर मैं एक सज्जन पुरुष होता और अपने नायकों जैसा होता, तो उसे शक होता कि वह मुझसे प्यार कर बैठेगी। बेहतर

होगा कि वह ऐसा न करे। ऐसी संवेदनशीलता को बर्बाद करना दुखद होगा। आप और श्री स्मिथ ने मुझे अपनी प्रस्तावना में खुद को एक परिपक्व उम्र का अविवाहित सज्जन घोषित नहीं करने दिया, लेकिन अगर आपने अनुमति दी होती, तो बहुत सी बुजुर्ग अविवाहित महिलाएं खुश होतीं।

एमिली के बारे में मुझे जो आखिरी शब्द कहने हैं, वे मिस एलेन नुसे द्वारा मुझे लिखे गए एक पत्र में निहित हैं।

'एमिली ब्रोंटे के बारे में बहुत कम जानकारी है,' वह लिखती हैं, 'इसलिए हर छोटी-छोटी बात जिज्ञासा जगाती है। उनका अत्यधिक संयम अभेद्य प्रतीत होता था, फिर भी वे बेहद प्यारी थीं; वे अपने नैतिक बल में विश्वास जगाती थीं। बहुत कम लोगों में उनके जैसी देखने और मुस्कुराने की कला होती है। उनकी दुर्लभ भावपूर्ण निगाहों में से एक जीवन भर याद रखने लायक थी; उनमें आत्मा और भावनाओं की इतनी गहराई थी, फिर भी खुद को प्रकट करने में एक झिझक थी—आत्म-संयम की ऐसी शक्ति जो किसी और में नहीं देखी गई। वे सही मायने में अपने नियमों की पक्की थीं, और अपने नियमों का पालन करने वाली एक नायिका थीं। उन्हें और कोमल ऐनी को शक्ति और विनम्रता की संयुक्त मूर्तियों की तरह एक साथ देखा जा सकता था। अपने युवा दिनों में जब भी उनके काम उन्हें साथ रहने की अनुमति देते थे, वे एक-दूसरे का हाथ थामे हुए देखी जाती थीं। किसी मैदान की चोटी पर या किसी गहरी घाटी में एमिली आनंद और मस्ती से भरी एक बच्ची की तरह होती थीं; या जब उन्हें किसी की भलाई करने के लिए पूरी तरह से अपने दम पर काम करना पड़ता था, तो वे बातचीत में जीवंत हो उठती थीं और दूसरों को खुशी देने का आनंद लेती थीं।' जब वह खुले मैदानों में होती थी, तो कभी-कभी उसमें शरारत का भाव भी जाग उठता था। उसे शार्लोट को उन जगहों पर ले जाना अच्छा लगता था जहाँ वह अपनी मर्ज़ी से जाने की हिम्मत नहीं करती थी। शार्लोट को अनजान जानवरों से बहुत डर लगता था, और एमिली को उसे उनके पास ले जाना और फिर उसे बताना कि उसने क्या किया, और उसके डर पर बड़े मज़े से हँसना बहुत पसंद था। अगर एमिली को कोई किताब चाहिए होती जो उसने बैठक में छोड़ दी हो, तो वह बिना किसी की तरफ देखे, खासकर अगर कोई मेहमान मौजूद हो, तुरंत अंदर चली जाती थी। पादरियों में, मिस्टर वेटमैन ही एकमात्र अपवाद थे जिनके साथ वह शिष्टाचार का पालन करती थी। संगीत सीखने की उसकी क्षमता अद्भुत थी; उसकी शैली, स्पर्श और भाव किसी ऐसे प्रोफेसर

के समान थे जो अपने विषय में पूरी तरह डूबा हुआ हो। दो कुत्ते, कीपर और फ्लॉसी, हमेशा एमिली और ऐनी के स्कॉच ओटमील और दूध के नाश्ते के दौरान चुपचाप उनके पास बैठे रहते थे, और भोजन समाप्त होने पर उन्हें हमेशा हिस्सा दिया जाता था। बेचारा बूढ़ा कीपर, एमिली का वफादार दोस्त और भक्त, उसे एक इंसान की तरह समझता था। एक शाम, जब चारों सहेलियाँ बैठक में आग के चारों ओर पास-पास बैठी थीं, तो कीपर ने शार्लेट और एमिली के बीच जबरदस्ती घुसकर एमिली की गोद में बैठ गया; उसे जगह कम लग रही थी, इसलिए वह मेहमान के घुटनों पर आगे की ओर झुक गया और आराम से बैठ गया। एमिली का दिल कीपर के इस अदम्य धैर्य से पिघल गया, उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसके इतने करीब होने के कारण ही कीपर ने उसकी इस पसंद को स्वीकार कर लिया था। कभी-कभी एमिली कीपर को दिखाकर आनंद लेती थी—उसे उत्तेजित करती थी और शेर की तरह दहाड़ती थी। एक साधारण बैठक में यह एक भयानक प्रदर्शन था। एमिली के अंतिम संस्कार में कीपर एक गंभीर शोक मनाने वाला था और फिर कभी अपनी पुरानी खुशी नहीं लौट पाया।

अध्याय VII: ऐनी ब्रोंटे

इसमें शायद ही कोई शक हो कि ऐनी ब्रोंटे के दो उपन्यास, एग्नेस ग्रे और द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल, उनकी दो बड़ी बहनों के प्रेम उपन्यासों के साथ अपरिहार्य जुड़ाव के बिना बहुत पहले ही गुमनामी में खो गए होते। हालांकि यह बात स्वाभाविक लग सकती है, फिर भी आधी सदी बीत जाने के बाद भी ऐनी के व्यक्तिगत आकर्षण का एहसास होना स्वाभाविक है। जो लोग उन्हें जानते थे, वे हमेशा उनके साथ

'कोमलता' शब्द को जोड़ते थे। जब श्री निकोल्स ने एक पत्रिका के लेख में ऐनी का कथित चित्र देखा, तो उन्होंने लिखा: 'प्यारी, सौम्य ऐनी ब्रोंटे का कितना भयानक विकृत चित्र है!' श्री निकोल्स के पास शार्लोट द्वारा बनाया गया ऐनी का एक चित्र है, जिसे वे एक प्रशंसनीय प्रतिकृति मानते हैं, और यह वास्तव में उनके मधुर और सौम्य स्वभाव की छाप छोड़ता है।

जैसा कि हम देख चुके हैं, ऐनी को थॉर्नटन से हॉवर्थ तक लंबे वस्त्र पहनाकर ले जाया गया था। उनकी धर्ममाता मिस आउटवेट थीं, यह जानकारी मुझे ऐनी की प्रार्थना पुस्तिका में लिखे एक लेख से मिली। 'मिस आउटवेट द्वारा अपनी धर्मपुत्री ऐनी ब्रोंटे को, 13 जुलाई, 1827।' मिस आउटवेट अपनी धर्मपुत्री को नहीं भूलीं, क्योंकि उन्होंने अपनी वसीयत में ऐनी के लिए 200 पाउंड छोड़े थे।

ऐनी द्वारा तैयार किया गया एक नमूना है, जिस पर 23 जनवरी, 1830 की तारीख अंकित है, और प्रार्थना पुस्तक से भी बाद की एक पुस्तक है, जिसमें ऐनी का नाम है, और जैसा कि अपेक्षित है, यह अच्छे आचरण का पुरस्कार है। वाट की पुस्तक 'ऑन द इम्प्रूवमेंट ऑफ द माइंड' की एक प्रति में यह शिलालेख अंकित है: "सुचारू आचरण के लिए पुरस्कार, मिस वूलर के स्नेह के साथ, रो हेड, 14 दिसंबर, 1836 को प्रदान किया गया।"

पत्र-व्यवहार के अलावा हमें इससे ज़्यादा कुछ नहीं पता — कि ऐनी तीनों बहनों में सबसे कम मुखर थी और सबकी चहेती थी। शार्लोट के अपने शब्दों में भी यही कहा गया है कि यहाँ तक कि पादरी भी ऐनी को देखकर 'भेड़ जैसी आँखें' बना लेते थे। गवर्नेस के रूप में उनके दो अनुभवों के बारे में हमें बहुत कम जानकारी है, पहले ब्लेक हॉल में श्रीमती इंगम के साथ और बाद में थॉर्प ग्रीन में श्रीमती रॉबिन्सन के साथ। ब्रैनवेल के पागलपन की दुखद घटना ने बाद वाले स्थान पर उनके प्रवास को प्रभावित किया, लेकिन बहुत समय बाद उनकी पुरानी शिष्याएँ, मिस रॉबिन्सन, हॉवर्थ में उनसे मिलने आती थीं; और उनमें से एक, जो बाद में कीघली की श्रीमती क्लैफम बनीं, अपनी सौम्य गवर्नेस की अत्यंत सुखद यादें संजोए रखती थीं।

ANNE BRONTË
From a Drawing by Charlotte in the possession of Mr. Nicholls

गवर्नस के रूप में इन दो असहज घटनाओं को छोड़कर, ऐसा लगता है कि ऐनी को बाहरी दुनिया का कोई अनुभव नहीं था। ऐनी की मृत्यु से पहले ही, शार्लोट ब्रुसेल्स, लंदन और हैदरसेज (डर्बीशायर में) जा चुकी थीं। मुझे लगता है कि ऐनी ने कभी अपने गृह जिले से बाहर कदम नहीं रखा, हालांकि वह अपने परिवार में घर से दूर मरने वाली एकमात्र सदस्य थीं। उनके पत्राचार में से मेरे पास केवल निम्नलिखित दो पत्र हैं: —

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 4 अक्टूबर, 1847।

मेरी प्रिय मिस नुसे, आपके अप्रत्याशित और स्वागत योग्य पत्र के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। शार्लेट ठीक है और आपको पत्र लिखने का सोच रही है। सौभाग्य से, पूर्वी हवा अब नहीं चल रही है। इसके चलने के दौरान, वह हमेशा की तरह इसके प्रभाव की शिकायत करती रही। मुझे भी हमेशा की तरह, कम या ज्यादा, इससे कुछ हद तक परेशानी हुई; लेकिन इस बार, इसने मुझे सर्दी-खांसी नहीं दी, जिससे मुझे सबसे ज्यादा डर लगता है। एमिली इसे बहुत नीरस हवा मानती है, लेकिन यह उसके तंत्रिका तंत्र को प्रभावित नहीं करती। शार्लेट भी मेरी तरह इसे बहुत परेशान करने वाला

मानती है। आप उसके छाते के बारे में बिल्कुल गलत हैं; वह कहती है कि वह इसे वापस ले आई है, और मैं इस बात की गवाह हूँ, क्योंकि मैंने इसे कल उसके पास देखा था। जहाँ तक मेरी किताब की बात है, मैं इसे तब तक दोबारा नहीं देखना चाहती जब तक मैं आपको इसके साथ न देख लूँ, और तब यह लाने वाले के लिए काफी स्वागत योग्य होगी। हम सब यहाँ वैसे ही हैं जैसे आपने हमें छोड़ा था। मेरे पास आपको बताने के लिए कोई खबर नहीं है, सिवाय इसके कि श्री निकोल्स ने तीन-चार हफ्ते पहले छुट्टी ली और आयरलैंड चले गए, और उनके शनिवार तक लौटने की उम्मीद नहीं है; लेकिन सच कहूँ तो, यह कोई खबर नहीं है। हम सभी आपके प्यारे और सोच-समझकर चुने गए उपहारों से बहुत प्रसन्न और आभारी हैं, पापा से लेकर टैबी तक, या शायद मुझे कहना चाहिए कि मुझ तक। केकड़े का पनीर बहुत बढ़िया है, और शायद बहुत काम आएगा, लेकिन मुझे इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। यह कोई खास पसंद नहीं है, बल्कि मजबूरी में मैंने अपने पत्र के लिए इतना छोटा कागज चुना है, क्योंकि मेरे पास इससे बेहतर कोई कागज नहीं था; लेकिन शायद इसमें उतना ही लिखा होगा जितना आप पढ़ना चाहें और मैं लिखना चाहूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि मेरे पास कहने के लिए और कुछ नहीं है, सिवाय इसके कि आपकी प्यारी टैबी कितनी मनमोहक होगी। बस इतना ही, क्योंकि शार्लोट खुद आपको लिख रही है, या लिखने वाली है, इसलिए मुझे उसकी तरफ से कोई संदेश भेजने की ज़रूरत नहीं है। इसलिए मेरा प्यार स्वीकार करें। मेजर की शुभकामनाएँ देना न भूलें। और—मुझे अपना स्नेही मित्र समझें,

‘ऐनी ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 4 जनवरी, 1848।

मेरी प्रिय मिस नुसे, मैं आपको कोई लंबा-चौड़ा पत्र नहीं देने जा रही हूँ - इसके विपरीत, मैं एक साधारण से छोटे पत्र से ही संतुष्ट हो जाऊँगी, जो शार्लोट के पत्र में समाहित होगा, जो निश्चित रूप से मेरे किसी भी पत्र से कहीं अधिक आपको पसंद आएगा, हालाँकि मुझे आपके मेरे प्रति मित्रवत भाव या मेरे पत्र का स्वागत करने की आपकी इच्छा पर कोई संदेह नहीं है, भले ही मेरे साथ कोई और प्रिय साथी न हो; लेकिन आपको यह जानना होगा कि मेरी भाषा में एक दुखद कमी है, जिसके कारण मैं लिखने में उतनी ही बुरी हूँ जितनी बोलने में, जब तक कि मुझे कुछ विशेष कहना न

हो। अब, मुझे आपके और आपकी सहेली के प्यारे पत्र और उनकी सुंदर पहरेदार मूर्तियों के लिए धन्यवाद देना है, जिन्हें हम सभी उनके हाथों से बनी होने के कारण और भी अधिक महत्व देंगे। आपने हमें यह नहीं बताया कि आप इस प्रतिकूल मौसम को कैसे सहन कर रही हैं। हम सभी इस क्रूर पूर्वी हवा से परेशान हैं। हममें से ज़्यादातर, यानी शार्लोट, एमिली और मुझे, कुछ ही हफ़्तों के अंतराल में दो बार फ्लू या ज़ुकाम हो चुका है। पापा को एक बार हुआ है। टैबी तो इससे पूरी तरह बच गई है। मेरे पास आपको बताने के लिए कोई खबर नहीं है, क्योंकि जब से आप यहाँ आए हैं, हम कहीं नहीं गए, किसी से नहीं मिले और कुछ खास किया भी नहीं है - फिर भी हम सुबह से शाम तक व्यस्त रहते हैं। फ्लॉसी पहले से भी ज़्यादा मोटी हो गई है, लेकिन फिर भी भेड़ के शिकार का आनंद लेने के लिए काफी फुर्तीली है। मुझे उम्मीद है कि आप और आपके दोस्त जुकाम के मामले में हमसे ज़्यादा भाग्यशाली रहे होंगे।

सभी को शुभकामनाओं सहित, प्रिय मिस नुसे, मैं आपकी सदा स्नेहपूर्वक बनी रहूंगी।

‘ऐनी ब्रोंटे।’

जैसा कि हमने उल्लेख किया है, एग्नेस ग्रे को न्यूबी द्वारा 1847 में एक ही खंड में प्रकाशित किया गया था। द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल को उसी प्रकाशक द्वारा 1848 में तीन खंडों में प्रकाशित किया गया था। यह आम तौर पर ज्ञात नहीं है कि द टेनेंट ऑफ वाइल्डफेल हॉल का दूसरा संस्करण उसी वर्ष प्रकाशित हुआ था; और अगर मेरे पास बाद वाले संस्करण की एक प्रति न होती, तो मैं इसे अविश्वसनीय मानता कि ऐनी ब्रोंटे ने वास्तव में इस संस्करण की प्रस्तावना लिखी थी। पत्राचार में इस तथ्य को पूरी तरह से अनदेखा किया गया है। प्रश्नगत प्रस्तावना से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है, यदि इसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता हो, कि ऐनी ने पुस्तक लिखते समय अपने भाई को ध्यान में रखा था। वह कहती हैं, 'मैं यह नहीं मान सकती कि मैंने यहाँ जिन कुछ दुराचारी साथियों का उल्लेख किया है, उनके साथ इस अभागे आवारा की हरकतें समाज की सामान्य प्रथाओं का एक नमूना हैं: यह मामला एक चरम उदाहरण है, जैसा कि मुझे विश्वास है कि कोई भी समझने में विफल नहीं होगा; लेकिन मुझे पता था कि ऐसे चरित्र मौजूद हैं, और अगर मैंने किसी उतावले युवक को उनके नक्शेकदम पर चलने से रोका है, या किसी नासमझ लड़की को अपनी नायिका की स्वाभाविक गलती करने से बचाया है, तो यह किताब व्यर्थ नहीं

लिखी गई है।’ ‘बस एक शब्द और, और मैं समाप्त करती हूँ,’ वह आगे कहती हैं। ‘लेखक की पहचान के संबंध में, मैं यह स्पष्ट करना चाहती हूँ कि एक्टन बेल न तो करर हैं और न ही एलिस बेल, और इसलिए, उनकी गलतियों का दोष उन पर न लगाया जाए। नाम वास्तविक है या काल्पनिक, यह उन लोगों के लिए ज्यादा मायने नहीं रखता जो उन्हें केवल उनकी रचनाओं से जानते हैं।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

18 जनवरी, 1849।

प्रिय महोदय, — आपको पत्र लिखते समय मुझे ऐसा लग रहा है मानो मैं कोई गलत और स्वार्थी काम कर रही हूँ। मेरा मानना है कि जब तक हालात नहीं बदलते और हाल के दिनों में हम पर आई विपत्ति का दौर थम नहीं जाता, तब तक मुझे आपसे पत्र व्यवहार बंद कर देना चाहिए। लेकिन सच तो यह है कि कभी-कभी मुझे अपने मन का बोझ हल्का करना बेहद ज़रूरी लगता है। पापा से तो मैं सिर्फ़ हौसला बढ़ाने वाली बातें ही कहूँगी, ऐनी से सिर्फ़ प्रोत्साहन देने वाली — लेकिन आपसे मैं कड़वी सच्चाई का कुछ अंश ज़रूर कहूँगी।

'जैसा कि आप सोचते हैं, ऐनी और मैं अकेले और एकांत में बैठे रहते हैं, लेकिन हम पढ़ाई नहीं करते। ऐनी अब पढ़ नहीं सकती, वह मुश्किल से पढ़ पाती है; वह एमिली की कुर्सी पर बैठती है; उसकी तबीयत ठीक नहीं है। एक हफ्ते पहले हमने लीड्स से एक कुशल और अनुभवी चिकित्सक को उसे देखने के लिए बुलाया था। उन्होंने स्टेथोस्कोप से उसकी जांच की। उनकी रिपोर्ट पर मैं अभी विस्तार से चर्चा नहीं करूंगा - यहां तक कि कुशल चिकित्सक भी अक्सर अपने अनुमानों में गलत हो जाते हैं।'

'मेरी पहली इच्छा उसे किसी गर्म जलवायु वाले स्थान पर ले जाने की थी, लेकिन यह मना था: उसे यात्रा नहीं करनी चाहिए; उसे इस सर्दी में घर से बाहर नहीं निकलना है; उसके कमरे का तापमान लगातार एक समान बनाए रखना है।'

अगर मुझे माहौल और वातावरण बदलने की अनुमति मिल भी जाती, तो शायद मैं समझ ही नहीं पाती कि क्या करूं। मैं पापा को छोड़कर नहीं जा सकती थी; और जब मैंने उनके साथ आने की बात कही, तो इस विचार मात्र से ही वे इतने परेशान हो गए कि इस पर बात करना भी मुश्किल हो गया। पापा अब सत्तर साल से अधिक उम्र के हैं; लगभग तीस वर्षों से उनकी आदतें पूरी तरह एकांतप्रिय रही हैं; उनमें कोई भी

बदलाव उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं है, और शायद इस समय, खासकर जब बुढ़ापा उन पर इतना भारी पड़ रहा है, तो बिना किसी खतरे के ऐसा करना संभव ही नहीं है।

जब हमने एमिली को खोया, तो मुझे लगा कि हमने अपनी सारी पीड़ा सह ली है, लेकिन अब जब मैं ऐनी को एमिली की तरह खांसते हुए सुनती हूँ, तो मुझे डर लगता है कि कहीं अभी और भी कड़वाहट बाकी न हो। हालांकि, मुझे न तो आगे देखना चाहिए और न ही पीछे मुड़कर देखना चाहिए। अक्सर मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी संकरे तख्ते पर खाई पार कर रही हूँ - एक नज़र पीछे मुड़कर देखने से ही घबराहट हो सकती है।

‘ऐसी परिस्थितियों में, मेरे प्रिय महोदय, आपकी मित्रता पर मेरा क्या अधिकार है, आपके पत्रों से मिलने वाले सुकून पर मेरा क्या हक है? मेरा साहित्यिक चरित्र फिलहाल धूमिल हो चुका है, और आप मुझे सिर्फ इसी रूप में जानते हैं। पापा और ऐनी की देखभाल करना ही मेरे जीवन का वर्तमान मुख्य उद्देश्य है, प्रकाशकों या उनके संपर्कों से मुझे मिलने वाले किसी भी लाभ से परे। अगर ऐनी ठीक हो जाती है, तो मुझे लगता है कि मैं फिर से संभलकर करर बेल बन सकता हूँ, लेकिन अगर ऐसा नहीं होता है, तो मैं आगे कुछ नहीं सोचूंगा: आज के लिए जो कुछ भी बुरा है, वही काफी है।’

'ऐनी अपनी बीमारी में बहुत धैर्यवान है, उतनी ही धैर्यवान जितनी एमिली अडिग थी। मैं एक बहन को याद करती हूँ और दूसरी को श्रद्धा और स्नेह दोनों भावों से देखती हूँ - दुख की इस परीक्षा में दोनों में से कोई भी विचलित नहीं हुई।'

इस सर्दी के सारे दिन किसी अंतिम संस्कार के जुलूस की तरह उदासी और उदासी से भरे गुज़रे हैं। सितंबर से ही बीमारी ने घर का पीछा नहीं छोड़ा है। यह अजीब बात है कि पहले ऐसा नहीं होता था, लेकिन अब मुझे लगता है कि यह सब कई सालों से चल रहा था। हममें से कोई भी स्वस्थ रहने का आदी नहीं था, इसलिए हमने धीरे-धीरे बढ़ती कमजोरी को महसूस नहीं किया; हमें इसके लक्षणों का पता ही नहीं था: हल्की खांसी, भूख कम लगना, मौसम में ज़रा से भी बदलाव आने पर सर्दी लग जाना, ये सब हमने सामान्य बातें समझीं। अब मैं इन्हें एक अलग नज़रिए से देखता हूँ।

अगर आप इसका जवाब दें, तो मुझे वैसे ही लिखें जैसे आप किसी सामान्य रूप से शांत और प्रसन्न व्यक्ति को लिखते हैं। मैं खुद को यथासंभव दृढ़ और शांत रखना चाहता हूँ। जब तक पापा और ऐनी मुझे चाहते हैं, मैं आशा करता हूँ, प्रार्थना करता हूँ,

कि मैं उन्हें कभी निराश न करूँ। अगर मैं आपसे मिलूँ, तो मैं सामान्य विषयों पर बातचीत करने का प्रयास करूँगा, और मैं उन्हीं विषयों पर लिखना चाहूँगा—इसके अलावा, हमेशा की तरह मुझसे बात करना आपके लिए कम कष्टदायक होगा।

ईश्वर आपके उन घरेलू खजानों को दीर्घायु बनाए रखे जिन्हें आप अनमोल मानते हैं; और जब अंत में शोक का समय आए, तो वह आपको इसे सहने की शक्ति प्रदान करे। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

1 फरवरी, 1849।

'मेरे प्रिय महोदय, आज सुबह ऐनी इतनी शांत लग रही है, दर्द और बुखार से पूरी तरह मुक्त है, और स्वस्थ अवस्था में जैसी दिखती और बोलती है वैसी ही है, जिससे मुझे भी राहत महसूस हो रही है, और मैं इस अवकाश का लाभ उठाकर आपको पत्र लिख रहा हूँ, आशा है कि मेरा पत्र मेरे द्वारा महसूस की जा रही तुलनात्मक शांति को कुछ हद तक प्रतिबिंबित करेगा।'

मेरी उम्मीदें पूरी तरह से निराधार हैं या नहीं, यह तो मैं नहीं जानती; लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है कि श्री टील द्वारा बताई गई और डॉ. फोर्ब्स द्वारा अनुमोदित (जैसा कि मुझे जानकर खुशी हुई) दवाएँ अच्छा असर दिखा रही हैं। मुझे पता है कि तपेदिक एक ऐसी बीमारी है जो देखने में अच्छी नहीं लगती, लेकिन निश्चित रूप से ऐनी की बीमारी हाल ही में पहले की तुलना में कम चिंताजनक हो गई है: ऐंठन कम हो गई है; खांसी से भी अब आराम मिलता है। काश मैं मान पाती कि वह दो साल और जी पाएगी - एक साल और, मैं आभारी रहूँगी: मुझे उस भयानक संदेशवाहक के आने का डर सता रहा था जिसने कुछ ही दिनों में एमिली को हमसे छीन लिया।

पार्सल कल आ गया। आप और श्रीमान स्मिथ कोई भी काम अधूरा नहीं छोड़ते। आप दोनों को धन्यवाद सुनना पसंद नहीं है, इसलिए मैं अपना आभार मन में ही रखूंगी। किताबों का चुनाव एकदम सही है। पापा इस समय मैकाले का इतिहास पढ़ रहे हैं, जिसे वे देखना चाहते थे। ऐनी फ्रेडरिका ब्रेमर की कहानियों में मग्न है।

काश मैं भी बदले में एक पार्सल भेज पाती; मुझे उम्मीद थी कि अब तक मेरे पास भेजने के लिए एक पार्सल तैयार होगा। जब मैंने आपको और मिस्टर स्मिथ को लंदन में देखा था, तब मैंने जुलाई और वसंत के बीच आने वाली तमाम घटनाओं के बारे में

जरा भी नहीं सोचा था: कैसे मेरे विचार कल्पना से दूर होकर, सबसे क्रूर वास्तविकताओं में उलझ जाएंगे और उनमें समा जाएंगे।

मैं आपको बताता हूँ कि मैं क्या करना चाहता हूँ; मैं आपको अपनी पांडुलिपि का पहला खंड दिखाना चाहता हूँ, जिसकी मैंने प्रतिलिपि बनाई है। मैरी बार्टन (एक चतुर लेकिन पीड़ादायक कहानी) पढ़ते समय मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि विषय और घटनाओं दोनों में कुछ हद तक मेरी कहानी पहले से ही मौजूद है। मैं इस विषय पर आपकी राय जानना चाहूँगा और यह भी कि क्या यह समानता किसी अजनबी को भी उतनी ही स्पष्ट दिखाई देती है जितनी मुझे। मैं आपके द्वारा दिए जाने वाले सामान्य सुझावों और सलाह का भी लाभ उठाना चाहूँगा। इसलिए क्या मैं पुस्तकों की पहली खेप लौटाते समय पांडुलिपि भी भेज दूँ?

लेकिन याद रखिए, अगर मैं इसे आपको दिखाऊँ तो दो शर्तें हैं: पहली, कि आप मुझे अपनी राय ईमानदारी से दें—मैं इससे प्रभावित होने का वादा नहीं करता, लेकिन मैं आपकी राय जानना चाहूँगा; दूसरी, कि आप इसे दिखाएँ और श्री स्मिथ के अलावा किसी और से इसका ज़िक्र न करें। मुझे समय से पहले की गई घोषणाओं से हमेशा बहुत डर लगता है—वे नुकसान पहुँचा सकती हैं और कभी फायदा नहीं पहुँचा सकतीं। श्री स्मिथ से अनुरोध है कि वे अभी अपने त्रैमासिक परिपत्रों में इसका ज़िक्र न करें। सभी मानवीय मामले इतने अनिश्चित होते हैं, और मेरी स्थिति तो इस समय विशेष रूप से विचित्र है, कि मैं समय पर भरोसा नहीं कर सकता, और मैं चाहूँगा कि उस काम का कोई ज़िक्र न किया जाए जिसका एक बड़ा हिस्सा अभी लिखा जाना बाकी है।

पहले पार्सल में दो खंड हैं जिन्हें देखने के बाद मैं अपने से अलग नहीं कर पा रहा हूँ और श्री स्मिथ से उन्हें अपने पास रखने की अनुमति माँग रहा हूँ: श्री थैकरे की कॉर्नहिल यात्रा, आदि और सत्य की गवाही। यह अंतिम पुस्तक वास्तव में मेरे दिल के बहुत करीब है। इसमें प्रकट होने वाला मेरा दृष्टिकोण मुझे बहुत पसंद आया - यह उत्कृष्ट और उच्च कोटि का है। अलेक्जेंडर हैरिस जन्म से भले ही मसखरा हो, लेकिन स्वभाव से वह एक महान व्यक्ति हैं। जब मैं कोई और पुस्तक नहीं पढ़ पा रहा था, तब मैंने उनकी पुस्तक पढ़ी और उससे मुझे सुकून मिला। चाहे मैं उनके सभी विचारों से सहमत होऊँ या न होऊँ, मैं उनके सिद्धांतों, उनकी भावनाओं और उनके हृदय की प्रशंसा करता हूँ।

जल्द ही लिखकर बताइएगा कि क्या पांडुलिपि भेजना उचित होगा। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 4 फरवरी, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, आपके अनुरोध के अनुसार, मैं पार्सल बिना किसी देरी के भेज रहा हूँ। पांडुलिपि में सभी त्रुटियाँ हैं, क्योंकि प्रतिलिपि बनाने के बाद इसे दोबारा नहीं पढ़ा गया है। मैंने मैडलीन को, उन दो अन्य पुस्तकों के साथ, जिन्हें मैंने उल्लेख किया है, अपने पास रखा है; मैं इसे मिस कावानाघ का उपहार मानूंगा और इसकी साहित्यिक उत्कृष्टता और दाता के विनम्र गुण दोनों के लिए इसका सम्मान करूंगा। हमारे पास पहले से ही टेनीसन की कविताएँ और आवर स्ट्रीट मौजूद हैं। मैंने एमर्सन के निबंधों को बहुत रुचि से और अक्सर प्रशंसा के साथ पढ़ा है, लेकिन वे मिश्रित सोने और मिट्टी के समान हैं - मुझे लगता है कि उनमें गहरी और स्फूर्तिदायक सच्चाई, नीरस और निराशाजनक भ्रांति मिश्रित है। जॉर्ज बरो की रचनाओं में मुझे एक अद्भुत आकर्षण, वर्णन की एक जीवंत चित्रात्मक शक्ति, एक नई मौलिकता, एक सरल सादगी (कहने का अर्थ है), मिली, जो उन्हें अपनी एक अलग पहचान देती है। स्पेन में उनकी बाइबिल पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगा जैसे मैं वास्तव में उनके साथ यात्रा कर चुका हूँ और "जंगली सिल" को उसके पर्वतीय पालने से निकलते हुए देखा है; सिएरा के पहाड़ी जंगल में घूमा हूँ; मैंने मानेहेगन, कैस्टिलियन, अंडालूसियन, अरागोनिस और सबसे बढ़कर, बर्बर गिटानोस से मुलाकात की और उनसे बातचीत की।

श्री टेलर के आपके उल्लेख से मुझे लगता है कि शायद आप और श्री स्मिथ उन्हें पांडुलिपि के इस छोटे से रहस्य में शामिल करना चाहते हों—उन्हें इससे दूर रखना अनुचित लग सकता है, इससे आपकी शाम की बातचीत कम सुखद हो सकती है। यदि ऐसा है, तो उन्हें अवश्य ही इस बात का आश्वासन दें। वे फर्म से जुड़े हुए हैं, और निस्संदेह इसके रहस्यों को सुरक्षित रखेंगे। मुझे एक और समीक्षक पाकर खुशी होगी, और यदि वह कठोर हो, तो और भी अच्छा, बशर्ते वह निष्पक्ष भी हो। मैं तीखी आलोचना का स्वागत करता हूँ। मैं अपने पहले प्रयास से घटिया कुछ भी प्रकाशित करने की बजाय कभी भी कुछ भी प्रकाशित न करना बेहतर समझूंगा। इसलिए, आप तीनों ईमानदार रहें। यदि आपको लगता है कि यह पुस्तक जेन आयर से कम सफल

होने की संभावना रखती है, तो ऐसा कहें; यह केवल एक और प्रयास है, यानी, यदि जीवन और स्वास्थ्य साथ दें।

ऐन की हालत थोड़ी बेहतर है— सुहावना मौसम उसे रास आ रहा है। कभी-कभी मुझे उम्मीद की नई किरण सुनाई देती है, पर मैं उस पर पूरी तरह भरोसा नहीं कर पाती; उसने पहले मुझे बुरी तरह धोखा दिया था। अचानक ठंड पड़ना ही असली परीक्षा होगी। मुझे ऐसे बदलाव से डर लगता है, पर मुझे इसकी आशंका नहीं करनी चाहिए। बसंत का मौसम आने वाला है, और फिर गर्मी—हम थोड़ी उम्मीद तो रख ही सकते हैं!

ऐन ने कविताओं की समीक्षाएँ देखने की इच्छा व्यक्त की है। इसलिए बेहतर होगा कि आप उन्हें भेज दें। हमें उम्मीद है कि उनमें उस व्यक्ति के प्रति कष्टदायक संकेत होंगे जो अब निंदा और प्रशंसा से परे है; लेकिन इन्हें सहन करना होगा। हम स्वयं आलोचना के प्रति लगभग उदासीन हैं। मैंने त्रैमासिक पत्रिका बिना किसी पीड़ा के पढ़ी, सिवाय इसके कि मुझे आलोचक के कुछ वाक्य अपमानजनक लगे। ऐसा लगता है कि वह यह जताना चाहता है कि वह उच्च वर्ग के रीति-रिवाजों से भली-भांति परिचित है। चाहे जो भी हो, मुझे डर है कि वह सज्जन नहीं है; और उससे भी बढ़कर, कोई भी प्रशिक्षण उसे ऐसा नहीं बना सकता। श्रम करने के लिए जन्मे और पले-बढ़े कई गरीब लोग उस समीक्षक की भावनाओं को तुच्छ समझेंगे। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

2 मार्च, 1849।

"मेरे प्रिय महोदय, मेरी बहन की हालत में लगातार सुधार हो रहा है: उसमें सुस्ती और कमजोरी कम हो गई है; उसका मनोबल बढ़ गया है। मुझे लगता है कि यह बदलाव कृतज्ञता और आशा दोनों का कारण है।"

मुझे खुशी है कि आपको और श्री स्मिथ को मेरे वर्तमान कार्य की शुरुआत पसंद आई है। काश यह सिर्फ शुरुआत से कहीं अधिक होता; क्योंकि इतने लंबे अंतराल के बाद यह कैसे पुनः जुड़ पाएगा, या इतने लंबे समय तक प्रवाह के रुकने या यूं कहें कि थम जाने के बाद यह कैसे गति पकड़ पाएगा, यह मैं नहीं जानता।

आप दोनों ने अपनी आपत्तियों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया। प्रथम अध्याय के संबंध में आपने जो कहा है, उस पर गंभीरता से

विचार किया जाएगा। फिलहाल मैं इसे वापस लेने के लिए अनिच्छुक हूं, क्योंकि जैसा कि मैंने पहले जेन आयर के लोवुड भाग के बारे में कहा था, यह सच है। पादरी और उनके जीवन के घटनाक्रम को केवल वास्तविक जीवन से लिया गया चित्र मात्र है। मैं चाहूंगा कि आप मुझे अपनी आपत्तियों का आधार और अधिक विस्तार से समझाएं। क्या यह इसलिए है क्योंकि आपको लगता है कि यह अध्याय प्रेस द्वारा कृति की कड़ी आलोचना का कारण बन सकता है? क्या यह इसलिए है क्योंकि अब जब आप "कुरर बेल" की पहचान जान चुके हैं, तो यह दृश्य आपको स्त्रीत्वहीन लगता है? क्या यह इसलिए है क्योंकि यह मूल रूप से दोषपूर्ण और निम्न स्तर का है? मुझे खेद है कि पहले दो कारण मुझे स्वीकार्य नहीं होंगे - अंतिम कारण स्वीकार्य होगा।

'ऐनी और मैं आपके प्रति बहुत आभारी हैं कि आपने कविताओं की सभी समीक्षाओं को हमारे लिए इतनी सावधानी से सहेज कर रखा। जैसा कि आपने कहा, उनमें से कुछ वाकई पढ़ने लायक थीं। हमें यह जानकर खुशी हुई कि हमारे पुराने मित्र, आलोचक ने एक बार फिर हमारे लिए प्रशंसा के शब्द कहे हैं। मुझे एक बात बहुत रोचक लगी, वह यह कि चार समीक्षाएँ एक-दूसरे की हूबहू प्रतियाँ हैं। ऐसा कैसे हुआ? मुझे लगता है कि उन्होंने नकल की होगी।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

8 मार्च, 1849।

प्रिय एलेन, पिछले दो-तीन हफ्तों में ऐनी की हालत में मामूली बदलाव आया है। काश मैं कह पाती कि उसका वजन, ताकत या भूख बढ़ रही है; लेकिन इन मामलों में कोई प्रगति नहीं हुई है, और मुझे उम्मीद भी नहीं है कि कम से कम आखिरी दो मामलों में तो कोई कमी आई होगी; वह बेहद दुबली-पतली हो गई है। उसकी खांसी और कमर का दर्द पहले जैसा ही बना हुआ है।

मैं ये कुछ पंक्तियाँ इसलिए लिख रहा हूँ ताकि मेरी लगातार चुप्पी आपको अजीब न लगे; मैं नियमित रूप से पत्र व्यवहार नहीं कर सकता, इसलिए मुझे क्षमा करें। मुझे उम्मीद है कि आप और ब्रुकरॉयड में सभी लोग खुश और स्वस्थ होंगे। अपनी माँ और बाकी सभी को मेरा प्यार देना, और— यकीन मानिए, आपका सच्चा,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

11 मार्च, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, — पिछली बार पत्र लिखने के बाद से मेरी बहन की तबीयत थोड़ी बिगड़ गई है। लगभग एक सप्ताह से पाला पड़ रहा है, और इस बदलाव ने उसकी हालत पर बुरा असर डाला है, जैसा कि मुझे आशंका थी, हालांकि उतना गंभीर नहीं जितना पहले के अनुभव ने मुझे बताया था। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि अब उसकी हालत थोड़ी बेहतर है। उसका मन आमतौर पर शांत रहता है, और उसकी मुख्य परेशानियाँ लगातार खांसी और सुस्ती हैं।

मुझे पार्सल के सुरक्षित पहुंचने की सूचना पहले ही दे देनी चाहिए थी, लेकिन मैं इसे हर दिन टालता रहा, इस डर से कि कहीं मैं कोई दुख भरा पत्र न लिख दूं। इसी आशंका के कारण मैं इस पत्र को संक्षिप्त कर रहा हूं।

विश्वास कीजिए, चाहे सुख हो या दुख, आपका सच्चा शुभचिंतक।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री लैटिटिया व्हीलराइट को

हॉवर्थ, 15 मार्च, 1849।

प्रिय लेटिटिया, — मैं तुम्हें सर्दियों में पूरी तरह भूल तो नहीं पाई, पर तुम्हारी याद मुझे किसी भयानक सपने में अटकी सुखद याद की तरह ही सताती रही। तुमने कहा था कि मेरा आखिरी पत्र 14 सितंबर का था। तुमने पूछा था कि उसके बाद से मैंने समय कैसे बिताया। मुझे क्या हो गया है? मैं चुप क्यों रही?

यह जल्द ही बताया जाता है।

24 सितंबर को मेरे इकलौते भाई का, जो लंबे समय से अस्वस्थ थे और बाद में तपेदिक से पीड़ित हो गए थे—हालांकि हमें तत्काल किसी खतरे का आभास नहीं था—अचानक निधन हो गया। ऐसा लगा जैसे उनका निधन दो दिन पहले ही हुआ था। यह गहरा सदमा था। उनके अंतिम संस्कार से पहले ही मैं बीमार पड़ गई। हल्के बुखार ने मुझे बहुत कमजोर कर दिया। जब मैं धीरे-धीरे ठीक हो रही थी, मेरी बहन एमिली, जिसे आप जानते थे, फेफड़ों में सूजन से ग्रस्त हो गईं; मवाद बन गया; इसके बाद दो महीने आशा और भय के दर्द से भरे रहे, और 19 दिसंबर को उनका भी निधन हो गया।

मेरी सबसे छोटी और आखिरी बहन, ऐनी, जो जीवन भर कमज़ोर रही, की मृत्यु अभी ठीक से हुई भी नहीं थी कि अचानक उसमें ऐसे लक्षण दिखाई दिए जिनसे हम सब बहुत चिंतित हो गए। हमने तुरंत डॉक्टर से सलाह ली। स्टेथोस्कोप से उसकी

जाँच की गई और यह भयानक तथ्य सामने आया कि उसके फेफड़े भी प्रभावित हैं और तपेदिक का प्रकोप काफी बढ़ चुका है। इलाज का एक तरीका बताया गया, जिसे बाद में डॉ. फोर्ब्स ने भी सही ठहराया, जिन्हें आपके पापा शायद जानते होंगे। मुझे उम्मीद है कि इससे बीमारी कुछ हद तक टल गई है। अब वह एक बीमार मरीज है और मैं उसकी देखभाल कर रही हूँ। इन सभी कड़वी विपत्तियों में ईश्वर ने किसी न किसी रूप में मेरा साथ दिया है और मैं शुक्रगुजार हूँ कि मेरे पिता को भी अद्भुत सहारा मिला है; लेकिन असहनीय पीड़ा के कई घंटे, दिन और सप्ताह बीत चुके हैं और आने वाली विपत्ति का काला बादल अब भी हम पर छाया हुआ है। मैं ज्यादा नहीं लिख सकती। मैं केवल ईश्वर से प्रार्थना कर सकता हूँ कि वह आपको और आपके परिवार को उन कष्टों से बचाए जो उसने मुझ पर और मेरे परिवार पर डाले हैं।

आपकी प्यारी माँ और आपके सभी परिचितों को हार्दिक शुभकामनाएँ, —विश्वास कीजिए, आपका विश्वासपात्र

'सी. ब्रोंटे।'

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 24 मार्च, 1849।

प्रिय मिस वूलर, मैंने आपकी चिट्ठी का जवाब देने में इसलिए देरी की क्योंकि मुझे थोड़ी उम्मीद थी कि मैं अपनी बहन के स्वास्थ्य के बारे में आपकी पूछताछ का सकारात्मक जवाब दे सकूँगी। लेकिन अब ऐसा करना संभव नहीं है। उसकी सेहत धीरे-धीरे बिगड़ रही है और उतार-चढ़ाव आ रहे हैं, लेकिन इसकी प्रकृति स्पष्ट है। खांसी, कमर और छाती में दर्द, शरीर का कमजोर होना, ताकत में कमी और भूख में गिरावट जैसे लक्षणों को, हमारे पिछले दुखद अनुभव के बाद, हम संदिग्ध ही मानते हैं।

"मन से तो वह शांत है; मेरा मानना है कि हृदय से वह एक सच्ची ईसाई है। वह इस जीवन से परे देखती है, और अपने घर और विश्राम को पृथ्वी से कहीं और मानती है। ईश्वर इस दीर्घकालीन बीमारी की परीक्षा में उसका और हम सबका सहारा बने, और अंतिम क्षणों में उसकी सहायता करे जब आत्मा और शरीर को अलग करने का संघर्ष करना पड़ता है!"

'हमने एमिली को अपने बीच से बिछड़ते हुए देखा, जबकि हमारा दिल उससे बेहद लगाव से जुड़ा हुआ था, और हम एक-दूसरे से इतना प्यार करते थे कि ऐसा लगता

था मानो (अगर हम एक-दूसरे के साथ रह पाते) तो हम आपसी संगति और स्नेह में पूर्ण सुख पा सकते थे। उसे दफनाए जाने के तुरंत बाद ही ऐनी का स्वास्थ्य बिगड़ गया, और हमें चेतावनी दी गई कि तपेदिक ने उसे भी अपना शिकार बना लिया है, और उसके जीवन पर भरोसा करना व्यर्थ होगा।'

'अगर धर्म के सहारे के बिना केवल तर्क को ही इन सब बातों का बोझ उठाना पड़े, तो ये बातें असहनीय हो जाएंगी। मुझे अपने पिता और खुद को अब तक मिली शक्ति के लिए अत्यंत आभारी होने का कारण है। मेरा मानना है कि ईश्वर बुढ़ापे पर विशेष कृपा करता है; और जहाँ तक मेरी बात है, भविष्य में आने वाली मुश्किलें मुझे असहनीय लगती थीं, लेकिन जब वे आईं, तो मैंने उन्हें बिना टूटे सहन किया। फिर भी, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि एमिली की मृत्यु के बाद बीते समय में, एकांत, गहरे, निष्क्रिय दुख के क्षण भी आए हैं, जो हमारे जाने के तुरंत बाद के दुखों से कहीं अधिक कठिन थे। शोक का संकट एक तीव्र पीड़ा लेकर आता है जो प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है, और उसके बाद की उदासी कभी-कभी पंगु बना देती है।'

मैंने यह सीखा है कि हमें अपनी शक्ति में सांत्वना नहीं ढूंढनी चाहिए: हमें इसे ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता में खोजना चाहिए। धैर्य अच्छा है, लेकिन धैर्य को भी हमारे सामने डगमगाना चाहिए ताकि हमें यह पता चले कि हम कितने कमजोर हैं।

आपको और आपके सभी प्रियजनों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ, और मुझमें और मेरी बहन में आपकी निरंतर रुचि के लिए हार्दिक धन्यवाद, - विश्वास कीजिए, मेरी प्रिय मिस वूलर, आपका विश्वासपात्र।

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

16 अप्रैल, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, होम्योपैथी के विषय में आपकी बहुमूल्य सलाह के लिए हम आपके हार्दिक धन्यवाद देते हैं। हालांकि, हमें कई तरफ से अलग-अलग चिकित्सा पद्धतियों और दवाओं को आजमाने के लिए कहा जा रहा है, और मुझे डर है कि सभी की बात न मानकर हमने पहले ही कुछ लोगों को नाराज कर दिया है। असल बात यह है कि अगर हम हर बात मान लें, तो मेरी प्यारी बहन को लगातार बदलावों से परेशानी होगी। सबसे पहले कॉड-लिवर ऑयल और आयरन कार्बोनेट की पुरजोर सिफारिश की गई थी। ऐनी ने जब तक संभव हुआ, इनका सेवन किया, लेकिन अंत में उसे इन्हें

छोड़ना पड़ा: तेल से उसे कोई पोषण नहीं मिला, इससे उसकी कमजोरी नहीं रुकी, और क्योंकि इससे वह हमेशा बीमार रहती थी, इसलिए वह किसी भी तरह का भोजन नहीं कर पा रही थी। फिर हाइड्रोपैथी की पुरजोर सलाह दी गई। अब वह गोबोल्ड्स वेजिटेबल बाल्सम आजमा रही है; उसे लगता है कि इससे उसे कुछ फायदा हो रहा है; और चूंकि यह पहली दवा है जिससे उसे यह फायदा हुआ है, इसलिए वह इसे कुछ समय तक जारी रखना चाहती है। वह हवा में बदलाव से भी लाभ मिलने की उम्मीद कर रही है। हमें श्री टील से छह या आठ सप्ताह के भीतर समुद्र तट पर जाने की अनुमति मिल गई है। पहले तो मैं दो कर्तव्यों के बीच दुविधा में थी - पापा के साथ रहना और ऐनी के साथ जाना; लेकिन चूंकि पापा की स्वयं की अत्यंत दयालु इच्छा है कि मैं बाद वाली योजना को अपनाऊं, और इसके अलावा, ईश्वर की कृपा से, अब उनका स्वास्थ्य ठीक है, इसलिए मुझे आशा है कि मुझे अपनी बहन की देखभाल किसी और को सौंपने के कष्ट से मुक्ति मिल जाएगी, चाहे वह कितना भी मित्रवत क्यों न हो। हम यथासंभव लंबे समय तक साथ रहना चाहते हैं। मुझे यह भी आशा है कि इस बदलाव से मुझे शारीरिक शक्ति और मानसिक शांति का नवीनीकरण प्राप्त होगा (इन दोनों ही मामलों में मैं अभी उतनी अच्छी नहीं हूं जितनी मुझे होनी चाहिए या होनी चाहिए) जिससे मैं एक बेहतर और अधिक प्रसन्नताप्रिय नर्स बन सकूं।

मुझे डर है कि 'द एमिग्रेंट फैमिली' के बारे में मेरी टिप्पणियाँ आपको कठोर लगी होंगी। दरअसल, मैंने अलेक्जेंडर हैरिस की तुलना केवल उन्हीं से की थी। यह 'टेस्टिमोनी टू द ट्रुथ' के बराबर तो नहीं है, लेकिन अन्य लोकप्रिय पुस्तकों के मानकों पर खरा उतरने पर यह बेहद चतुराईपूर्ण और मौलिक है। विषय और उसे प्रस्तुत करने का तरीका दोनों ही बेजोड़ हैं: वे नए दृश्यों को नए नजरिए से प्रस्तुत करते हैं और रोचक विषयों पर रोचक जानकारी प्रदान करते हैं। प्रवास की बढ़ती आवश्यकता और प्रवृत्ति को देखते हुए, मुझे लगता है कि इसे वह सफलता प्राप्त करने का पूरा मौका है जिसकी यह हकदार है।

मैंने ली हंट की किताब 'द टाउन' इस धारणा के साथ उठाई थी कि यह केवल लंदनवासियों को ही रुचिकर लगेगी, लेकिन कुछ पन्ने पढ़ने से पहले ही मैं उनके सुखद, सुंदर और सहज लेखन शैली, विविध ज्ञान, सटीक विचारों और दयालु स्वभाव से मंत्रमुग्ध हो गया। ली हंट के लेखन में एक विशेष प्रकार का उदासी-विरोधी भाव है, फिर भी वे कभी शोरगुल भरे नहीं होते। वे सूर्य की रोशनी के समान हैं, एक साथ

उज्ज्वल और शांत।

'मुझे कार्लाइल दिन-ब-दिन और भी अच्छे लगने लगे हैं। उनकी शैली मुझे पसंद नहीं है, न ही मैं हमेशा उनके विचारों से सहमत होता हूँ, और न ही मैं उनकी नायक-पूजा से पूरी तरह सहमत हूँ; लेकिन सत्य के प्रति उनका एक मर्दाना प्रेम, जन्म, पद या धन से परे बौद्धिक और नैतिक गुणों की अंतर्निहित महानता की ईमानदार पहचान और निडरता से उनका समर्थन, मेरी सच्ची प्रशंसा का पात्र है। कार्लाइल क्वार्टरली के लिए लेखक के रूप में बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं हैं। मैंने उनकी फ्रेंच क्रांति नहीं पढ़ी है।'

श्री रस्किन की नई कृति के आगामी प्रकाशन पर मैं आपको बधाई देता हूँ। यदि 'द सेवन लैंप्स ऑफ आर्किटेक्चर' अपने पूर्ववर्ती 'मॉडर्न पेंटर्स' से मिलती-जुलती है, तो यह महज़ दीपक नहीं, बल्कि एक नया तारामंडल होगा - सात चमकीले तारे, जिनके उदय का पाठक जगत बेसब्री से इंतज़ार करेगा।

मुझसे यह मत पूछिए कि मैं कौन सी किताबें पढ़ना पसंद करूंगा। कॉर्नहिल से पार्सल मिलने का आधा आनंद तो उसमें लिखी सामग्री के चयन में ही होता है। जगह-जगह से कटे हुए पन्नों से यह जानना भी अच्छा लगता है कि उस रास्ते पर पहले भी कोई चल चुका है। हालांकि, उपन्यासों के संदर्भ में मैं यह जरूर कहना चाहूंगा कि मैं गॉडविन की कोई रचना पढ़ना चाहूंगा, हालांकि मुझे अब तक यह अवसर नहीं मिला है - कैलेब विलियम्स या फ्लीटवुड, या फिर आप जिसे भी पढ़ने लायक सबसे अच्छा समझते हों।

लेकिन अभी और किताबें भेजने की बात करना बहुत जल्दबाजी होगी; हमारा मौजूदा स्टॉक अभी आधा भी खत्म नहीं हुआ है। शायद आपको लगे कि मैं धीमी गति से पढ़ती हूँ, लेकिन याद रखिए, करर बेल एक देहाती गृहिणी हैं, और उनके पास सिलाई-कढ़ाई और रसोई से जुड़े कई छोटे-मोटे काम हैं जिनमें उनका आधा दिन लग जाता है, खासकर अब जब, अफसोस! जहाँ पहले तीन हाथ हुआ करते थे, वहाँ अब सिर्फ एक ही हाथ बचा है। मेरा इरादा उस बात को छेड़ने का नहीं था, वह बहुत दुख भरी है।

मैं कभी-कभार लिखने की कोशिश करता हूँ। शुरुआत में यह प्रयास बहुत कठिन था। अजीब तरह से इसने पिछले दिसंबर के भयानक नुकसान की याद दिला दी। ऐसा लग रहा था कि लिखने का प्रयास व्यर्थ से भी बदतर है, क्योंकि अब कोई "एलिस

बेल" जीवित ही नहीं है जिसे वह पढ़ सके; पूरी किताब, जिस पर सारी उम्मीदें टिकी थीं, व्यर्थता और मन की पीड़ा में तब्दील हो गई।

"फिर भी, मुझे दृढ़ रहने और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए एक प्रेरणा मिलती है, और मैं इसके लिए आभारी हूं: मैं कॉर्नहिल में अपने दयालु मित्रों को प्रसन्न करना चाहता हूं। इसके लिए मैं चाहता हूं कि मेरी शक्तियां वापस आ जाएं; और यदि ईश्वर की कृपा से मेरी शेष बहन भी ठीक हो जाए, तो मुझे लगता है कि ऐसा हो जाएगा।"

जब आप दोबारा लिखें तो मुझे अपना हालचाल बताना न भूलें। मुझे उम्मीद है कि तब तक आपकी तबीयत पूरी तरह ठीक हो चुकी होगी। — विश्वास करें, आपका सच्चा,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

1 मई, 1849।

प्रिय एलेन, मैंने मैरी टेलर का पत्र पढ़ते ही हन्सवर्थ को लौटा दिया। ईश्वर का धन्यवाद कि वह तब तक सुरक्षित थी, लेकिन मुझे नहीं लगता कि भूकंप तब तक समाप्त हुआ था। मुझे उसके बारे में फिर से खबर सुनने की बहुत प्रतीक्षा रहेगी।

लगभग एक सप्ताह पहले जब मौसम गर्म था, तब ऐनी की हालत और भी खराब हो गई थी। वह कमजोर होती चली गई, और उसके पेट का दर्द और खांसी दोनों बढ़ गए; हैरानी की बात है कि ठंड बढ़ने के साथ ही उसकी हालत में सुधार होता दिख रहा है। मुझे अब भी उम्मीद है कि अगर वह मई तक ठीक हो जाती है, तो वह लंबे समय तक जीवित रह पाएगी।

'हमने स्कारब्रो में रहने की जगह बुक कर ली है।' हमने एक बड़े बैठक कक्ष और हवादार दो बिस्तरों वाले कमरे की मांग की थी, जिसमें समुद्र का नज़ारा दिखता हो, और अगर मुझे गलतफहमी नहीं हुई है, तो हमें नंबर 2 क्लिफ में ये सभी सुविधाएं मिल गई हैं। ऐनी कहती है कि यह उस इलाके की सबसे अच्छी जगहों में से एक है। शहर में या उस सुनसान, खड़ी तटीय इलाके में, जहाँ मिस वूलर का घर स्थित है, रहने की जगह लेना ठीक नहीं होता। अगर ऐनी को कुछ हासिल करना है तो उसे हर तरह की सुविधा चाहिए। मिस आउटवेट [उसकी धर्ममाता] ने अपनी वसीयत में उसके लिए 200 पाउंड छोड़े हैं, और वह इस पैसे का बेहतर इस्तेमाल जीवन को लंबा करने

के लिए कर सकती है, भले ही इससे स्वास्थ्य ठीक न हो। हमें उम्मीद है कि हम 23 तारीख को घर से निकलेंगे, और मुझे लगता है कि यॉर्क में आराम करना और वहाँ पूरी रात रुकना उचित होगा। मुझे उम्मीद है कि यह व्यवस्था आपको ठीक लगेगी। प्रिय एलेन, हम आपकी संगति को एक वास्तविक सौभाग्य और आनंद मानते हैं। हम कम सामान लेकर चलेंगे और यॉर्क या स्कारब्रो में से ही हमें टोपियाँ, पोशाकें और कुछ अन्य चीजें खरीदनी होंगी; आपको क्या लगता है कौन सी जगह बेहतर रहेगी? काश, ईश्वर ऐनी को शक्ति और स्वास्थ्य प्रदान कर दे, तो हम कितने सुखी होंगे! लेकिन ईश्वर की इच्छा पूरी होनी ही है, और अगर वह ठीक नहीं होती है, तो हमें शक्ति और धैर्य के लिए प्रार्थना करनी होगी।

'सी. बी.'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

8 मई, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, मैं आपके दो स्नेहपूर्ण पत्रों के लिए आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। जिस सुहावने बसंत के मौसम की आप बात कर रहे हैं, उसकी धूप ने हमें उतनी खुशी नहीं दी जितनी आपको और हजारों अन्य लोगों को दी होगी - यह बदलाव मेरी बहन के लिए कष्टदायक साबित हुआ। एक-दो सप्ताह तक मुझे समझ नहीं आया कि क्या करूँ, वह बहुत कमजोर हो गई थी, और उसके पेट में दर्द बढ़ गया था और खांसी भी बढ़ गई थी। पिछले कुछ दिन काफी ठंडे रहे हैं, फिर भी, आश्चर्य की बात है, इस दौरान वह कमजोर होने के बजाय स्वस्थ होती हुई प्रतीत हुई है। वह अक्सर वही लक्षण दिखाती है जो एमिली में उसकी मृत्यु से कुछ दिन पहले दिखाई दिए थे - शाम को बुखार, रातों को नींद न आना और सुबह के समय सुस्ती; इससे बहुत चिंता होती है - फिर सुधार होता है, जिससे तसल्ली मिलती है। लगभग तीन सप्ताह में, यदि मौसम सुहावना रहा और उसकी ताकत यात्रा के लिए पर्याप्त रही, तो हम स्कारबोरो जाने की उम्मीद करते हैं। ऐसे हालात में घर से विदा लेने के बारे में सोचकर मुझे कुछ आशंकाएँ हैं; लेकिन चूंकि वह स्वयं इस प्रयोग को आजमाने की दिली इच्छा रखती है, इसलिए मुझे लगता है कि इसे नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। हम ईश्वर के हाथों में हैं, और हमें परिणाम उन्हीं पर छोड़ देना चाहिए। मेरी एक पुरानी सहपाठी, एक सच्ची और वफादार दोस्त, हमारे साथ चलने के लिए तैयार हो गई है। मुझे इस बात का संतोष होगा कि मैं पापा को दो उतनी ही सच्ची और वफादार

नौकरानियों की देखरेख में छोड़ रही हूँ। उनमें से एक अब बूढ़ी और कमजोर हो गई है, और रसोई के चूल्हे के पास अपनी कुर्सी से ज्यादा हिल-डुल नहीं सकती; लेकिन दूसरी जवान और फुर्तीली है, और वह भी सात साल से हमारे साथ रह रही है। इसलिए, आप देख सकते हैं, मेरे पास दुख के बीच भी शुक्रगुजार होने का कारण है, खासकर इसलिए कि पापा की सभी इंद्रियां अभी भी अक्षुण्ण हैं, और हालांकि वे मजबूत नहीं हैं, उनका सामान्य स्वास्थ्य अच्छा है - उन्हें बस एक तरह की पुरानी खांसी है।

मुझे उम्मीद है कि श्री स्मिथ जेन आयर का सस्ता संस्करण प्रकाशित करने का जोखिम नहीं उठाएंगे, उन्हें कुछ समय इंतजार करना चाहिए - जनता उस एक किताब के नाम से ऊब चुकी होगी। मैं यह वादा नहीं कर सकती कि दूसरी किताब कब तैयार होगी - न तो मेरा समय और न ही मेरा प्रयास मेरे अपने नियंत्रण में है। जेन आयर लिखते समय मैंने जिस तल्लीनता से बिना किसी डर के अपने काम में खुद को समर्पित कर दिया था, वह अब असंभव और निंदनीय होगा; लेकिन मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रही हूं और थोड़ी प्रगति भी की है। हम सभी को धैर्य रखना चाहिए।

इस बीच, मैं कहना चाहूँगा कि जनता को निश्चिंत रहने दें और हमें इस बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए। जहाँ तक आलोचकों की बात है, यदि बेल्स में वास्तव में कोई गुण है, तो मुझे इस बात का कोई डर नहीं है कि एक दिन उन्हें निष्पक्ष न्याय मिलेगा। कुछ मामलों में मेरी मानसिक और शारीरिक दृष्टि बहुत कमज़ोर है, और जनता की अधीरता, गलत व्याख्या, निंदा आदि के विचार से मैं उतना परेशान नहीं हूँ जितना कि कॉर्नहिल में उन दो-तीन मित्रों की चिंता से, जिनके प्रति मैं बहुत ऋणी हूँ और जिनकी उम्मीदों को मैं निराश नहीं करना चाहता। यदि वे शांतिपूर्वक प्रतीक्षा करने का निर्णय ले लें और मेरी सद्भावना पर, भले ही मेरी क्षमता पर नहीं, भरोसा रखें कि मैं यथासंभव आगे बढ़ूँगा, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी; लेकिन मेरा मानना है कि "उच्च कोटि की स्त्री" के लिए प्रतीक्षा करना, परिश्रम करना और अपने भाग्य को धीरे-धीरे साकार करना, उनकी बहनों की तुलना में अधिक कठिन होता है। वे हमेशा इतनी तेज़ी से चलती हैं और इतने लंबे कदम उठाती हैं कि कोई उनके साथ कदम मिलाकर नहीं चल सकता। किसी सज्जन को तब तक यह नहीं बताना चाहिए कि आपने कोई कार्य शुरू कर दिया है जब तक कि वह लगभग पूरा न हो जाए। करर बेल, चाहे उनके सामने कोई बाधा न हो और उनका रास्ता कितना भी सुगम क्यों न

हो, स्कॉट, बुलवर, थैकरे या डिकेंस जैसे लेखकों की तरह कभी आगे नहीं बढ़ सकते। मैं चाहता हूँ कि आप और श्री स्मिथ इसे अच्छी तरह समझ लें। मैं हमेशा से आपको अतिरंजित अपेक्षाओं से सावधान करना चाहता हूँ - मुझसे उम्मीद करते समय कम से कम उम्मीद रखें। एक ईमानदार पुरुष और महिला हमेशा अपेक्षाओं से ऊपर उठना पसंद करते हैं, न कि उनसे नीचे गिरना।

क्या मैंने पर्याप्त उपदेश दे दिए हैं? और क्या मुझे समझा गया है?

श्रीमती विलियम्स को मेरी हार्दिक संवेदनाएँ दीजिएगा। आशा है कि उनकी छोटी बेटी अब तक पूरी तरह स्वस्थ हो गई होगी। आपके बेटे के बारे में आपकी संतुष्टि भरी बातें सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मिस कावानाघ की प्रगति और कुशलक्षेम के बारे में सुनकर भी मुझे प्रसन्नता हुई। श्री हैरिस की रचनाओं की प्रशंसा उत्साहवर्धक और उचित है - ईश्वर करे कि ये उनके जीवन में सफलता का स्रोत बनें!

यदि श्री थैकरे फिर से करर बेल के बारे में पूछें, तो कह देना कि रहस्य अभी भी सुरक्षित है और सुरक्षित ही रहेगा क्योंकि इसे प्रकट करना उचित नहीं है। उनकी अपनी दूरदर्शिता ने उन्हें यह बात पहले ही भांप ली होगी। आशा है कि जल्द ही आपसे फिर संपर्क हो सकेगा, — विश्वास कीजिए, आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 16 मई, 1849।

प्रिय मिस वूलर, आपके पत्र और सहायता के उदार प्रस्ताव के लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहती हूँ। हमने पहले ही रहने की जगह बुक कर ली है। मैं खुद स्कारब्रो से परिचित नहीं हूँ, लेकिन ऐनी इसे अच्छी तरह जानती है, क्योंकि वह वहाँ तीन-चार बार जा चुकी है। उसे कुछ खास जगहें (नंबर 2 क्लिफ) बहुत पसंद थीं। हमने उनके बारे में लिखा था, और जब पता चला कि वे खाली हैं, तो हमने उन्हें बुक कर लिया। फिर भी, आपकी जानकारी हमारे लिए बहुत उपयोगी है, अगर हमें यह जगह किसी भी तरह से अनुपयुक्त लगे। भविष्य में उपयोग के लिए दिशा-निर्देश मिलना संतोषजनक है।

अगले बुधवार को हमारे प्रस्थान का दिन तय हो गया है। ऐलेन नुसे हमारे साथ आ रही हैं (ऐनी की इच्छा के अनुसार)। मैं उनका साथ मना नहीं कर सकी, लेकिन उन्हें जाने के लिए ज़ोर देने की हिम्मत भी नहीं कर पाई, क्योंकि मुझे इस बात की ज़रा भी

उम्मीद नहीं है कि यह यात्रा हम लोगों के लिए सुखद या लाभदायक होगी। ऐनी बेहद कमज़ोर हैं। उन्हें खुद यह पक्का विश्वास है कि समुद्र की हवा से उन्हें कुछ शक्ति वापस पाने का मौका मिलेगा; इसलिए, यह मौका हमें मिलना ही चाहिए। प्रयोग करने का निश्चय कर लेने के बाद, आशंकाएँ व्यर्थ हैं; फिर भी, जब मैं उन्हें देखती हूँ, तो आशंकाएँ उठ खड़ी होती हैं। वह एमिली से भी ज़्यादा दुबली-पतली हो गई हैं; उनकी साँसें इतनी कमज़ोर हैं कि वे सीढ़ियाँ चढ़ भी नहीं पातीं, चाहे कितनी भी धीरे-धीरे क्यों न चढ़ें। वह रात में बहुत कम सोती हैं, और अक्सर सुबह का अधिकांश समय अर्ध-सुस्ती की अवस्था में बिताती हैं। फिर भी, वह दिन भर जागती रहती हैं, और मौसम अच्छा होने पर थोड़ी देर बाहर भी जाती हैं। ताज़ी हवा आमतौर पर स्फूर्ति प्रदान करती है, लेकिन उसकी स्फूर्तिदायक शक्ति कम होती जा रही है।

आपकी सेहत और खुशहाली के लिए शुभकामनाओं सहित, - मेरी प्रिय मिस वूलर, आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

'नंबर 2 क्लिफ, स्कारबोरो', 27 मई, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, ऊपर दी गई तिथि से आपको पता चल जाएगा कि मैंने आपके पिछले पत्र का उत्तर शीघ्र क्यों नहीं दिया। मैं प्रस्थान की तैयारियों और यात्रा में व्यस्त थी। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि हम यॉर्क में एक रात विश्राम करने के बाद सुरक्षित रूप से अपने गंतव्य पर पहुँच गए। हमें जहाँ भी सहायता की आवश्यकता हुई, सहायता मिली; मेरी बहन के लिए हमेशा कोई न कोई मदद के लिए तैयार रहता था, जो मैं करने में पूरी तरह सक्षम नहीं थी: उसे डिब्बों में चढ़ाना और उतारना, उसे रेल पटरी के पार ले जाना आदि।

यॉर्क और उसके चर्च भवन, और स्कारबोरो और उसकी खाड़ी को एक बार फिर देखकर उसे खुशी हुई। शारीरिक शक्ति में अभी तक कोई सुधार नहीं हुआ है—मुझे डर है कि उसकी हालत में लगातार गिरावट आ रही है। जो लोग उसे देखते हैं, वे कहते हैं कि मुझे उससे ज्यादा समय तक जीवित रहने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए —लेकिन यह उसके मन को तसल्ली देने वाली बात है।

'हमारा कमरा सुखद है। ऐनी खिड़की पर बैठी है और नीचे समुद्र को देख सकती है, जो आज सुबह शीशे की तरह शांत है। वह कहती है कि अगर वह खुलकर सांस ले

पाती तो इस पल उसे बहुत सुकून मिलता - लेकिन वह खुलकर सांस नहीं ले सकती।'

मेरी दोस्त एलेन हमारे साथ है। उसकी मौजूदगी मुझे सुकून देती है। वह शांत और स्थिर स्वभाव की लड़की है - बहुत बुद्धिमान नहीं, लेकिन अच्छी और सच्ची है। वह मुझे बहुत पसंद है और हमेशा से पसंद रही है। मुझे उसका संयम, शांति, समझदारी और ईमानदारी, उन लोगों से कहीं ज्यादा पसंद है जिनमें ये गुण नहीं होते।

अगर कभी आपसे दोबारा मुलाकात हुई तो मुझे आपके आखिरी लेख में उठाए गए विषयों पर आपसे बात करने में खुशी होगी—या यूं कहें कि आपकी बातें सुनने में। हम इन चीजों को धुंधले शीशे से देखते हैं—या कम से कम मैं तो ऐसा ही देखता हूं। इस विषय पर अटकलों या चर्चा का विरोध करने के बजाय, मैं दूसरों की राय सुनना चाहूंगा। दूसरों से मेरा तात्पर्य केवल गंभीर और विचारशील लोगों से है—ऐसे मामलों में हल्केपन से उतना ही झटका लगता है जितना पाखंड से।

मुझे पत्र लिखना। इस अजनबी जगह पर तुम्हारे पत्र किसी मित्र के आगमन की तरह लगेंगे। डाक छूट जाने के डर से मैं फिलहाल और कुछ नहीं लिखूंगा। — यकीन मानिए, आपका सच्चा,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

30 मई, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, मेरी प्रिय बहन को अंततः शांतिपूर्वक घर ले जाया गया। सोमवार को उनका निधन हो गया। अपनी अंतिम साँस लेते हुए उन्होंने कहा कि वे प्रसन्न हैं और ईश्वर का धन्यवाद किया कि मृत्यु आ गई है, और इतनी शांति से आई है। मुझे नहीं लगा था कि यह इतनी जल्दी होगा।

फिलहाल आप मुझसे और कुछ जोड़ने की उम्मीद न करें। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

25 जून, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, मैं अब फिर से घर पर हूँ, जहाँ मैं पिछले गुरुवार को लौटी थी। मैं इसे अब भी घर ही कहती हूँ—ठीक वैसे ही जैसे भूकंप से इसकी सड़कें खंडहर में तब्दील हो जाएँ तो भी लंदन को लंदन ही कहा जाएगा। लेकिन मैं कृतघ्न नहीं होना

चाहती: हॉवर्थ का पादरी निवास अब भी मेरे लिए घर है, और पूरी तरह से खंडहर या उजाड़ घर भी नहीं है। पापा वहाँ हैं, और दो अत्यंत स्नेही और वफादार नौकर, और दो बूढ़े कुत्ते, जो अपने तरीके से उतने ही वफादार और स्नेही हैं— एमिली का बड़ा पालतू कुत्ता जो उसके अंतिम समय में उसके बिस्तर के पास लेटा रहा, और उसके अंतिम संस्कार में भी समाधि तक उसके साथ गया, अंतिम संस्कार की रस्में पढ़ते समय हमारे पैरों के पास बेंच पर दुबका रहा—और ऐनी का छोटा स्पैनियल। मेरे आने पर इन बेचारे जानवरों की खुशी अद्भुत थी। पहले जब मैं थोड़े समय के लिए अनुपस्थित रहती थी तो वे हमेशा मेरा गर्मजोशी से स्वागत करते थे—लेकिन उस अजीब, दिल को छू लेने वाले तरीके से नहीं। मुझे यकीन है कि वे सोचते थे कि मेरे लौटने के साथ ही मेरी बहनें भी जल्द ही आ जाएँगी। लेकिन अब मेरी बहनें यहाँ कभी नहीं आएँगी। कीपर एमिली के छोटे से शयनकक्ष में जा सकता है—जैसा कि वह आज भी हर दिन करता है—और फ्लॉसी ऐनी को उदास निगाहों से ढूंढ सकती है, लेकिन वे उन्हें फिर कभी नहीं देख पाएंगे—और न ही मैं—कम से कम मेरा मानवीय पक्ष तो नहीं। मुझे इतना उदास नहीं लिखना चाहिए, लेकिन मैं उदास होने से कैसे बच सकता हूँ? दिन के समय काम और व्यस्तता मुझे सहारा देते हैं, लेकिन जैसे ही शाम ढलती है, मेरे दिल में एकांत के बोझ के खिलाफ विद्रोह उठ खड़ा होता है—हानि और अभाव का एहसास मेरे लिए असहनीय हो जाता है। ऐसे क्षणों में मैं अच्छा या सौम्य नहीं रहता, मैं विद्रोही हो जाता हूँ, और केवल बगल के कमरे में सो रहे मेरे प्यारे पिता का ख्याल, या रसोई में दयालु नौकरों का ख्याल, या बेचारे कुत्तों का दुलार ही मुझे कोमल भावनाओं और अधिक तर्कसंगत विचारों की ओर लौटाता है। जहाँ तक रात की बात है—अगर मैं बिस्तर के बिना रह सकता, तो मैं कभी बिस्तर की तलाश नहीं करता। जागते हुए, मैं सोचता हूँ, सोते हुए, मैं उनके सपने देखता हूँ; और मैं उन्हें उनके स्वस्थ रूप में याद नहीं कर पाता, वे अभी भी मुझे बीमारी और पीड़ा में दिखाई देते हैं। फिर भी, ब्रैनवेल की मृत्यु के पहले सदमे के बाद मेरी रातें और भी बदतर हो गईं - वे उस समय बहुत भयानक थीं; और जागने पर जो अनुभूतियाँ होती थीं, उन्हें शब्दों में बयां करना असंभव है। ऐसा लग रहा था कि अभी जो झेलना बाकी है, उससे भी बुरा होने वाला है - वास्तव में, उससे भी बुरा हमारा इंतजार कर रहा था।

'इस सारी कड़वाहट का स्वाद चखना ही होगा। शायद समय के साथ जीभ को इसकी आदत पड़ जाएगी और इसका स्वाद कम तीखा लगेगा। इस दर्द को सहना ही

होगा; मुझे उम्मीद है कि एक दिन इसकी तीव्रता कम हो जाएगी। एलेन मेरे साथ वापस आना चाहती थी, लेकिन मैंने उसे आने नहीं दिया। मैं जानता था कि इस वीरानगी का सामना अभी कर लेना ही बेहतर होगा—देर हो या जल्दी, इस तीखे दर्द को सहना ही पड़ेगा।'

'सहानुभूति नहीं, श्रम ही इलाज होना चाहिए। गहरे दुख का एकमात्र कारगर उपाय श्रम ही है। एलेन जैसी शांत, हंसमुख साथी का साथ दर्द को एक सौम्य अफीम की तरह शांत करता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह घाव को कुरेदता या भरता नहीं है; उपचार के लिए अधिक कठोर और प्रभावी उपाय आवश्यक हैं। पूर्ण परिवर्तन से बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है; जहां वह संभव नहीं है, वहां काम ही सबसे अच्छा विकल्प है।'

मैं मिस कावानाघ से मुझे पत्र लिखने का अनुरोध बिल्कुल नहीं करता। उन्हें ऐसा करने की क्या ज़रूरत है? मेरा उन पर क्या अधिकार है? वह मुझे जानती ही नहीं हैं - वह मेरे बारे में केवल सुनी-सुनाई बातों के आधार पर ही जान सकती हैं। मुझे आपकी मित्रवत सहानुभूति की आदत हो गई है, और इससे मुझे सुकून मिलता है। मैंने एक-दो अन्य मित्रों की वफादारी पर भरोसा किया है, और मैं उसी पर निर्भर रहता हूँ। मेरे पिता का स्वाभाविक स्नेह और हमारे दोनों नौकरों का लगाव और चिंता मेरे लिए अनमोल और सांत्वनादायक हैं, लेकिन मैं आम सहानुभूति की तलाश नहीं करता; मुझे न तो पुरुष से और न ही स्त्री से पारंपरिक संवेदना चाहिए।

आपने अपने पिछले पत्र में जो पत्र भेजा था, उस पर एच. एस. मेयर्स के हस्ताक्षर थे—पता था, शीप्सकॉम्ब, स्ट्राउड, ग्लूस्टरशायर; क्या आप मुझे पत्र लिखने वाले के बारे में कोई जानकारी दे सकते हैं? मैं एक दिन उसे स्वीकार करने का इरादा रखता हूँ। यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई कि आपका छोटा बीमार बच्चा स्वस्थ हो गया है और आपके परिवार के बाकी सदस्य भी स्वस्थ हैं। श्रीमती विलियम्स को अपने पति और बच्चों की खातिर अपना ख्याल रखना चाहिए। उनका जीवन और स्वास्थ्य उनके आसपास के लोगों के लिए बहुत कीमती है, इसे यूं ही बर्बाद नहीं किया जा सकता—उन्हें उनका ध्यान रखना चाहिए।—विश्वास कीजिए, आपका सच्चा।

'सी. ब्रोंटे।'

ऐनी की मृत्यु की कहानी को दोबारा बताने की आवश्यकता नहीं है। मिस एलेन नुसे, जो इस घटना की प्रत्यक्षदर्शी थीं, ने श्रीमती गैस्केल के संस्मरण में इसे एक बार

में ही बता दिया है। स्कारबोरो स्थित समाधि पर निम्नलिखित शिलालेख अंकित है: —

यहां रेवरेंड पी. ब्रोंटे की पुत्री ऐनी ब्रोंटे के अवशेष दफन हैं, जो यॉर्कशायर के हॉवर्थ के पादरी थे। उनका निधन 28 मई, 1849 को 28 वर्ष की आयु में हुआ।

अध्याय VIII: एलेन नुसे

यदि किसी व्यक्ति के चरित्र का सूचक उसके मित्रों द्वारा पहचाना जाना है, जैसा कि अक्सर माना जाता है, तो शार्लोट ब्रोंटे इस कसौटी पर खरी उतरीं। वह मित्रता में विवेकशील और हृदय से वफ़ादार थीं। जिस प्रकाशक ने उन्हें 'पहला मौका' दिया, उसके प्रति उनके मन में जो कृतज्ञता थी, वह इस बात से स्पष्ट होती है कि विलेट के डॉ. जॉन, जो एक पुरुषोचित व्यक्ति थे, स्मिथ एंड एल्डर के श्री जॉर्ज स्मिथ थे। श्री डब्ल्यू. एस. विलियम्स भी एक विलक्षण प्रतिभावान और मिलनसार व्यक्ति प्रतीत होते थे। अपनी तीन सहेलियों, एलेन नुसे, मैरी टेलर और लेटिटिया व्हीलराइट के प्रति वह अपने अंतिम दिन तक वफ़ादार रहीं, और अपनी अंतिम बीमारी के दौरान उन्होंने इंग्लैंड में रहने वाली उनमें से दो को पेंसिल से पत्र लिखे। उनकी सभी सहेलियों में, एलेन नुसे का स्थान सर्वोपरि है। मैरी टेलर की तरह, उनकी भी शार्लोट से मुलाकात तब हुई जब पंद्रह वर्ष की आयु में वह पहली बार रो हेड स्कूल गईं। श्रीमती गैस्केल ने उस मित्रता की शुरुआत का पर्याप्त वर्णन किया है जिसे मृत्यु भी नहीं तोड़ सकी। एलेन नुसे और शार्लोट ब्रोंटे के बीच इतनी नियमितता थी कि अगर वे दोनों पचास साल बाद पैदा हुई होतीं तो यह असंभव होता। दोनों बहनें एक-दूसरे से बहुत प्यार

करती थीं। वे कभी-कभी लगभग हर दिन पत्र लिखती थीं। दोस्तों की तरह वे कभी-कभार छोटी-मोटी बातों पर झगड़ती भी थीं, लेकिन कुछ घंटे बीतने के बाद शार्लोट हमेशा पश्चाताप से भर जाती थीं। अपने जीवन के अंत में उन्होंने मिस नुसे के बारे में श्री विलियम्स को एक पत्र लिखा, जिसे यहाँ छापना उचित होगा।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

3 जनवरी, 1850।

मेरे प्रिय महोदय, मुझे मॉर्निंग क्रॉनिकल की अच्छी समीक्षा और चर्च ऑफ इंग्लैंड क्वार्टरली और वेस्टमिंस्टर की नकारात्मक समीक्षा प्राप्त हुई है। आपके पत्र के लिए भी धन्यवाद, जिसका उत्तर मैं अकेले होने पर पहले ही दे देता; लेकिन अभी मैं अपनी सहेली एलेन की संगति का आनंद ले रहा हूँ और वह मुझे आलसी और लापरवाह बना रही है - मैं सारा दिन उससे बात करने में इतना व्यस्त रहता हूँ कि कुछ और करने का समय ही नहीं मिलता। आपने महिलाओं की दोस्ती के विषय पर बात की है और महिलाओं के बीच सच्चे प्रेम संबंधों की कमी पर आश्चर्य व्यक्त किया है। विवाहित महिलाओं के बारे में, मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ कि वे अपने पतियों और बच्चों में व्यस्त रहती हैं - लेकिन अविवाहित महिलाएं अक्सर एक-दूसरे को बहुत पसंद करती हैं और एक-दूसरे के प्रति स्नेह से बहुत सुकून पाती हैं। हालाँकि, दोस्ती एक ऐसा पौधा है जिसे जबरदस्ती नहीं उगाया जा सकता। सच्ची दोस्ती कोई लौकी नहीं है जो एक रात में खिलकर एक दिन में मुरझा जाए। जब मैंने पहली बार एलेन को देखा था, तब मुझे उससे कोई लगाव नहीं था; हम स्कूल के सहपाठी थे। समय के साथ हमने एक-दूसरे की कमियों और खूबियों को जाना। हम दोनों एक-दूसरे से बिलकुल अलग थे—फिर भी, हम एक-दूसरे के लिए बने थे। स्नेह पहले एक बीज की तरह पनपा, फिर एक छोटा पौधा बना, फिर एक मजबूत पेड़ बन गया—अब, कोई भी नया दोस्त, चाहे वह कितना भी बुद्धिमान या गहरा क्यों न हो—यहाँ तक कि मिस मार्टिन्यू भी—मेरे लिए वह नहीं हो सकती जो एलेन है; फिर भी वह एक कर्तव्यनिष्ठ, observant, शांत, सभ्य यॉर्कशायर की लड़की से ज्यादा कुछ नहीं है। उसमें रोमांस की कमी है। अगर वह कविता या काव्यात्मक गद्य को ज़ोर से पढ़ने की कोशिश करती है, तो मैं चिढ़ जाता हूँ और उससे किताब छीन लेता हूँ—अगर वह इसके बारे में बात करती है, तो मैं अपने कान बंद कर लेता हूँ; लेकिन वह अच्छी है; वह सच्ची है; वह वफादार है, और मैं उससे प्यार करता हूँ।

'जब से मैं घर लौटा हूँ, मिस मार्टिन्यू ने मुझे एक लंबा और बेहद स्नेहपूर्ण पत्र लिखा है। उन्होंने मुझे एम्बल्ससाइड में उनसे मिलने के लिए आमंत्रित किया है। मुझे यह विचार अच्छा लगा। चाहे मैं इसे साकार कर पाऊँ या नहीं, इसकी संभावना होना सुखद है।'

आपने मुझे श्रीमती विलियम्स को पत्र लिखने के लिए कहा है। मैं चाहूँगी कि वे पहले मुझे पत्र लिखें; और उन्हें बिना किसी भाव या शैली का ध्यान रखे, अपनी पसंद का कोई भी पत्र लिखने दें। — आपकी सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

अच्छी, सच्ची, वफादार— मित्रता के लिए इनसे मधुर शब्द और कोई नहीं हो सकते; और मिस नुसे की यही वफादारी थी जिसने उन्हें हमारे समय में मधुर नारीत्व के एक उत्कृष्ट प्रतीक के रूप में चिह्नित किया है, और शार्लोट ब्रोंटे की मित्र के रूप में उन्हें एक स्थायी नाम दिलाएगी।

मिस एलेन नुसे एक बड़े परिवार की सदस्य थीं, जिनके सभी बच्चे अब जीवित हैं। शार्लोट ब्रोंटे के साथ उनकी पहली दोस्ती के वर्षों के दौरान उनका घर राइडिंग्स में था, जो उस समय उनके चाचा रूबेन वॉकर की संपत्ति थी, जो एक प्रतिष्ठित दरबारी चिकित्सक थे। इस परिवार ने उस पीढ़ी से लेकर इस पीढ़ी तक अपने कई सदस्यों को विभिन्न व्यवसायों में उच्च सार्वजनिक सेवा प्रदान की है। वास्तव में, दो नुसे और दो वॉकर अपने समय में दरबारी चिकित्सक थे। जब अर्ल फिट्ज़विलियम 1809 में काउंटी के लिए चुनाव प्रचार कर रहे थे, तो वे दो सप्ताह के लिए राइडिंग्स में अतिथि थे, और उनके चुनाव पर किरायेदारों ने उनकी अध्यक्षता की थी। मिस नुसे के चाचा रूबेन वॉकर, लुडाइट दंगों के दौरान लीड्स, ब्रैडफोर्ड, हडर्सफील्ड और हैलिफ़ैक्स सहित जिले के एकमात्र शांति न्यायाधीश थे - जो उस दिन के बाद से जनसंख्या वृद्धि का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है। एलेन नुसे का घर राइडिंग्स में था, जो उस समय उनके भाई जॉन के किराए पर था, 1837 तक, और फिर वह ब्रुकरायड चली गईं, जहां वह शार्लोट ब्रोंटे की मृत्यु के बहुत बाद तक रहीं।

एलेन नुसे को लिखा गया पहला पत्र 31 मई, 1831 का है, शार्लोट पिछले जनवरी में उनकी सहपाठी बनी थीं। ऐसा लगता है कि यह महज़ कक्षा में एक खेल-खेल में हुई मुलाक़ात थी, क्योंकि उस समय दोनों लड़कियाँ रो हेड में साथ पढ़ रही थीं।

MISS ELLEN NUSSEY AS A SCHOOL-GIRL
From a Painting

MISS ELLEN NUSSEY TO-DAY
From a Photograph

प्रिय मिस नुसे, — मैं इस अवसर का लाभ उठाते हुए आपको पिछले सप्ताह भेजे गए पत्र के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ और आपको इतने लंबे समय तक पत्र न लिखने के लिए क्षमा चाहता हूँ; वास्तव में, मुझे लगता है कि यह पहला पत्र या संदेश है जो मैंने आपको संबोधित किया है। मैरी के स्नेहपूर्ण निमंत्रण के लिए मैं उनका बहुत आभारी हूँ और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुझे गैल्वेनिज़्म पर व्याख्यान सुनना बहुत अच्छा लगता, क्योंकि वे निस्संदेह मनोरंजक और ज्ञानवर्धक होते। लेकिन हमें अक्सर अपने कर्तव्य के आगे झुकना पड़ता है (जैसा कि मिस वूलर ने उस दिन कहा था), और चूंकि इस छमाही में इतनी सारी छुट्टियां हैं, इसलिए एक अतिरिक्त छुट्टी मांगना लगभग अनुचित लगता; इसके अलावा, हम शायद अपनी पढ़ाई में पिछड़ जाते, इसलिए सब कुछ देखते हुए, शायद यह अच्छा ही हुआ कि परिस्थितियों ने हमें इस आनंद से वंचित कर दिया। — विश्वास रखें, आपका स्नेही मित्र।

‘सी. ब्रोंटे।’

लेकिन क्रिसमस की छुट्टियों तक, 'डियर मिस नुसे' 'डियर एलेन' बन चुकी होती है, और दोस्ती की अच्छी शुरुआत हो चुकी होती है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 13 जनवरी, 1832।

प्रिय एलेन, — आपका पत्र पाकर मुझे सुखद आश्चर्य हुआ, क्योंकि आपके नेक वादों के बावजूद, मुझे उनके पूरा होने पर थोड़ा भरोसा था। मैं जानती हूँ कि स्कूल की लड़कियाँ घर पहुँचते ही स्कूल से जुड़ी हर याद को भुला देती हैं, और वास्तव में उनके पास इतने सारे काम होते हैं कि वे स्कूल में किए गए वादों को पूरा करने के लिए समय नहीं निकाल पातीं। लेकिन यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई कि आप और मिस टेलर इस आम नियम के अपवाद हैं। हैजा अभी भी धीरे-धीरे फैल रहा है, लेकिन हमें अभी भी उम्मीद रखनी चाहिए, क्योंकि हम सब ईश्वर की कृपा से सुरक्षित हैं। इंग्लैंड अब तक भाग्यशाली रहा है, क्योंकि यहाँ यह बीमारी न तो इतनी तेज़ी से फैली है और न ही इतनी भयानक गति से फैली है, जितनी कि कई महाद्वीपीय देशों में फैली है। — आपकी स्नेही मित्र,

'शार्लोट ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 1 जनवरी, 1833।

प्रिय एलेन, मुझे लगता है कि हमने महीने में एक बार पत्र व्यवहार करने पर सहमति जताई थी। आपका पिछला रोचक पत्र प्राप्त किए हुए अब उतना समय बीत चुका है, इसलिए मैं अब उत्तर देने में जल्दबाजी कर रहा हूँ। नव वर्ष के आगमन पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें, और मुझे आशा है कि नव वर्ष का प्रत्येक दिन आपको और अधिक बुद्धिमान और बेहतर बनाएगा, इन शब्दों के सही अर्थों में। जनवरी का पहला दिन हमेशा मेरे मन में कई गंभीर और महत्वपूर्ण विचार लाता है, और एक ऐसा प्रश्न अक्सर उठता है जिसका उत्तर देना जितना कठिन है, उतना ही कठिन है - मैंने बीते वर्ष को कितना बेहतर बनाया है, और आने वाले वर्ष के लिए मेरी क्या सकारात्मक योजनाएँ हैं? ये, मेरी प्रिय एलेन, गंभीर विचार हैं जिन पर (हम दोनों अभी युवा हैं) न तो आप और न ही मैं बहुत गहराई से या गंभीरता से विचार कर सकते हैं। मुझे खेद है कि आपकी अत्यधिक झिझक, जो मुझे लगता है कि आपकी क्षमताओं में पर्याप्त आत्मविश्वास की कमी के कारण थी, ने आपको मुझे फ्रेंच में पत्र लिखने से रोक दिया, क्योंकि मुझे लगता है कि ऐसा करने से उस भाषा में आपके सुधार में काफी योगदान मिलता। आपने बड़ी दयालुता से मुझे मेरी बहनों के स्नेह से बहककर खुद को ज़रूरत से ज़्यादा महत्वपूर्ण समझने से बचने की चेतावनी दी, और फिर कोष्ठक में मुझसे नाराज़ न होने की विनती की। ओ एलेन, क्या आपको लगता है

कि मैं आपकी किसी भी अच्छी सलाह से नाराज़ हो सकता हूँ? नहीं, मैं आपका तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ, और अगर मुमकिन हो तो, इसके लिए आपसे और भी ज़्यादा प्यार करता हूँ। मुझे खुशी है कि आपको केनिलवर्थ पसंद आया। यह वाकई एक शानदार रचना है, उपन्यास से ज़्यादा प्रेम कहानी जैसी, और मेरी राय में, महान सर वाल्टर की कलम से निकली सबसे दिलचस्प रचनाओं में से एक है। वार्नी के चरित्र के प्रति आपकी घृणा को व्यक्त करने के आपके विशिष्ट और भोले-भाले अंदाज़ पर मुझे बहुत हंसी आई - इतनी ज़्यादा कि आपके पत्र के उस हिस्से को पढ़ते समय मैं ज़ोर से हँसे बिना नहीं रह सका। वह वाकई पूर्ण दुष्टता का साक्षात रूप है; और अपने गहरे और अत्यंत चालाक मन के चित्रण में, स्कॉट मानव स्वभाव के अद्भुत ज्ञान के साथ-साथ अपनी धारणाओं को मूर्त रूप देने की आश्चर्यजनक कुशलता का प्रदर्शन करते हैं, जिससे अन्य लोग भी उस ज्ञान में भागीदार बन सकें। इस बेहद नीरस पत्र में खबरों की कमी के लिए क्षमा करें, क्योंकि वास्तव में मेरे पास बताने के लिए कुछ भी नहीं है। एमिली और ऐनी को आपका सादर याद रखना। अपनी माँ और बहनों को मेरा ढेर सारा प्यार देना, और चूंकि बहुत देर हो चुकी है, इसलिए मुझे आपके प्रति अपने अटूट, अविचल और अविचल स्नेह के आश्वासन के साथ अपनी बात समाप्त करने की अनुमति दें। — अलविदा, मेरी प्यारी एलेन, मैं सदा तुम्हारा हूँ।

'शार्लोट।'

एमिली और ऐनी की ओर से मिस नुसे के आकर्षण के बारे में एक सुखद गवाही यहाँ दी गई है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 11 सितंबर, 1833।

प्रिय एलेन, मैंने आपके पिछले पत्र का उत्तर देने में इसलिए देरी की क्योंकि आपकी बातों से मुझे लगा कि आप घर से बाहर होंगी। जब से आप यहाँ आई हैं, एमिली बहुत बीमार है। उसे हाथ में एरिसीपेलस हो गया था, साथ ही पित्त के गंभीर दौरे और अत्यधिक कमजोरी भी थी। दर्द से राहत पाने के लिए उसके हाथ में चीरा लगाना पड़ा। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि अब वह लगभग ठीक हो गई है - वास्तव में, उसका स्वास्थ्य लगभग पूरी तरह से ठीक हो गया है। बीमारी अभी भी रुक-रुक कर होती रहती है। अगर मैं आपको बताऊँ कि आपने यहाँ सभी पर कितना प्रभाव डाला है, तो आप मुझ पर चापलूसी का आरोप लगाएँगी। पापा और आंटी

लगातार आपको मेरे लिए एक उदाहरण के रूप में पेश करते हैं ताकि मैं अपने कार्यों और व्यवहार को उसी के अनुसार ढाल सकूँ। एमिली और ऐनी कहती हैं, "उन्होंने मिस नुसी जितनी किसी को पसंद नहीं किया," और टैबी आपके बारे में बहुत सी बकवास बातें करती है, जिन्हें मैं बताना नहीं चाहती। प्रिय एलेन, आपको यह पत्र बिना लिखे हुए के बारे में सोचे पढ़ना चाहिए, क्योंकि मैंने इसे लगभग पूरी तरह से शाम के धुंधलके में लिखा है। अब इतना अंधेरा हो गया है कि रो हेड की युवतियों द्वारा मुझे दी गई "रात में देखने की अनोखी क्षमता" के बावजूद, मैं अब कुछ लिख नहीं सकता। पूरा परिवार मेरी ओर से आप सभी की कुशल मंगल कामना करता है। अपनी माता और बहनों को मेरा आदरपूर्वक स्मरण करना और उन सभी स्नेहपूर्ण और सच्चे भावों को व्यक्त करना जो बढ़ते अंधेरे के कारण मैं व्यक्त नहीं कर पा रहा हूँ।

'शार्लोट ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 11 फरवरी, 1834।

प्रिय एलेन, — मेरे पत्रों की कीमत डाक खर्च के बराबर भी नहीं है, इसलिए मैंने अब तक आपके पिछले पत्र का उत्तर देने में देरी की है; लेकिन इसे प्राप्त किए हुए दो महीने से अधिक समय बीत जाने के बाद, मैंने अंततः कलम उठाकर उत्तर देने का निश्चय किया है, कहीं ऐसा न हो कि मेरी इस लापरवाही से आप नाराज हो जाएं। आपकी खराब सेहत के बारे में सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। मुझे पूरी उम्मीद है कि आपके चिकित्सक का यह अनुमान गलत है कि आपको फेफड़ों की कोई बीमारी होने की आशंका है। प्रिय एलेन, यह वास्तव में एक विपत्ति होगी। मैंने तपेदिक के इतने मामले देखे हैं कि मैं इसे मानवता को होने वाली सबसे कपटी और घातक बीमारियों में से एक मानता हूँ। लेकिन मैं फिर से कहता हूँ, मुझे आशा है, बल्कि प्रार्थना है, कि आपका डर निराधार हो। यदि आपको याद हो, तो मैं आपको स्कूल में अक्सर बताता था कि आप स्वभाव से ही घबराती हैं — ऐसी मानसिक स्थिति से उत्पन्न होने वाले निराशावादी विचारों से सावधान रहें। नियमित रूप से व्यायाम करें, और मुझे पूरा विश्वास है कि सब ठीक हो जाएगा। क्या अद्भुत सर्दी रही है! लगातार बारिश और हवा चलती रही, लेकिन पाला और बर्फ लगभग न के बराबर ही पड़ी। क्या बिरस्टॉल में बारिश के मौसम के कारण ही आम स्वास्थ्य समस्याएं फैली हैं? हमारे यहाँ हाल ही में असामान्य रूप से कई मौतें हुई हैं। रिवाज़ के मुताबिक, मेरे पास बताने के लिए कोई

खबर नहीं है, दरअसल मैं न तो गपशप करने के लिए लिखता हूँ और न ही कोई पुख्ता जानकारी देने के लिए; हमारे बीच पत्र व्यवहार बनाए रखने का मेरा पहला मकसद आपसे जानकारी प्राप्त करना है, और दूसरा यह कि हम एक-दूसरे को अपने अलग-अलग अस्तित्व की याद दिला सकें; बातचीत के ऐसे किसी माध्यम के बिना, स्वाभाविक रूप से, आप, जो समाज और दोस्तों से घिरे हुए हैं, जल्द ही भूल जाएँगे कि मुझ जैसा कोई तुच्छ प्राणी भी कभी जीवित था। हालाँकि, मैं अपने इस छोटे से पहाड़ी गाँव के एकांत में, अपने इकलौते गैर-रिश्तेदार दोस्त, अपने प्यारे पुराने स्कूल के साथी के बारे में रोज़ाना - बल्कि लगभग हर घंटे - सोचता हूँ। एलेन, क्या आपको नहीं लगता कि मैंने बड़ी चतुराई से कुछ भी नहीं से एक पत्र बना लिया है? अलविदा, प्रियतम। ईश्वर आपको आशीर्वाद दें, यही आपके सदा वफादार दोस्त की हार्दिक प्रार्थना है।

'शार्लोट ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 10 नवंबर, 1834।

प्रिय एलेन, — तुम्हें पत्र लिखे हुए बहुत लंबा समय हो गया है। आज सुबह मैरी टेलर का पत्र पढ़कर मुझे अपनी इस लापरवाही का एहसास हुआ और मैंने तुरंत बैठकर इसकी भरपाई करने की कोशिश की। उसने बताया कि ब्रुकरॉयड की तुम्हारी चाची का निधन हो गया है और सारा बहुत बीमार है; इसके लिए मुझे बहुत खेद है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि उसकी हालत में अभी भी सुधार की गुंजाइश है। तुम्हें याद रखना चाहिए कि अगर उसकी मृत्यु हो भी जाती है, तो निस्संदेह यह उसके लिए बहुत बड़ा लाभ होगा। प्रिय एलेन, अपने पिछले पत्र में तुमने मुझसे नाच-गाने के बारे में पूछा था और यह भी कि क्या मुझे लगता है कि लड़कों और लड़कियों के समूहों में एक-दो घंटे नाचना आपत्तिजनक है। मैं श्री एटकिंसन से असहमत होने में संकोच करूंगा, लेकिन वास्तव में मुझे लगता है कि मामला कुछ इस प्रकार है: यह सर्वमान्य है कि नाचने का पाप केवल पैरों को हिलाने में नहीं है (जैसा कि स्कॉटिश लोग कहते हैं), बल्कि इसके साथ होने वाले परिणामों में है — अर्थात्, फिजूलखर्ची और समय की बर्बादी; जब इसका उपयोग केवल, जैसा कि आपने बताया है, युवाओं के बीच एक घंटे के मनोरंजन और आनंद के लिए किया जाता है (जिन्हें निश्चित रूप से ईश्वर के आदेशों का उल्लंघन किए बिना थोड़ा हल्का-फुल्का आनंद लेने की अनुमति दी जा

सकती है), तो ये परिणाम नहीं हो सकते। इसलिए (मेरे तर्क के अनुसार), ऐसे समय में मनोरंजन पूरी तरह से निर्दोष है। और कुछ न कहते हुए, मैं एलेन, आपके प्रति अपनी सच्ची और हार्दिक स्नेह की अभिव्यक्ति के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ।

'शार्लोट ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 12 जनवरी, 1835।

प्रिय एलेन, — मुझे लगा कि आपके प्यारे पत्र का उत्तर इतनी जल्दी न देना ही बेहतर होगा, कहीं ऐसा न हो कि (आपके व्यस्त समय को देखते हुए) मैं आपको दखलंदाज़ी करने लगूँ। मुझे आपको यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पापा ने मुझे निमंत्रण स्वीकार करने की अनुमति दे दी है, और मुझे आशा है कि जल्द ही मुझे एक बार फिर अपने परिवार के लगभग इकलौते और सबसे प्यारे दोस्त से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा। समय तय करना आप पर है, बस आपसे अनुरोध है कि बहुत जल्दी का दिन न चुनें; इस पत्र की तारीख से कम से कम दो सप्ताह या तीन सप्ताह बाद का समय रखें। ब्रैडफोर्ड में मुझसे मिलने के आपके दयालु प्रस्ताव के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ, लेकिन पापा का मानना है कि ऐसी योजना अनिश्चितता पैदा करेगी और आपके लिए परेशानी का कारण बनेगी। उनका सुझाव है कि मैं आपके द्वारा तय किए गए समय पर हॉवर्थ से सीधे एक बग्घी में जाऊँ, या यदि वह दिन अनुकूल न हो, तो अगले अच्छे मौसम वाले दिन जाऊँ। इस व्यवस्था से हम दोनों स्वतंत्र रहेंगे, और यदि आपको यह पसंद आया, तो शायद यही सबसे अच्छा विकल्प होगा जिस पर हम अंततः निर्णय ले सकते हैं। प्रिय एलेन, इस पत्र की संक्षिप्तता के लिए क्षमा करना, क्योंकि मैं बहुत जल्दी में हूँ, और मुझे आशा है कि हम जल्द ही आमने-सामने मिलेंगे, जो सौ पत्रों से कहीं बेहतर होगा। अपनी माँ और बहनों को मेरा आदरपूर्ण प्रेम देना, हमारे पूरे परिवार की शुभकामनाएँ स्वीकार करना, और विशेष रूप से मुझे अपना दृढ़ और वफादार मित्र मानना।

'शार्लोट ब्रोंटे।

नोट: जब मैं आऊँगी तो आपने मुझसे एक महीने रुकने के लिए कहा था, लेकिन मैं आपको अपनी उपस्थिति से ऊबाना नहीं चाहती, और इसके अलावा पापा और आंटी दोनों को लगता है कि दो सप्ताह का समय पर्याप्त है, इसलिए मैं उस अवधि से अधिक नहीं रुकूँगी। अलविदा, प्रियतम।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

रो हेड, 10 सितंबर, 1835।

मेरी प्यारी एलेन, — तुम बहुत दयालु हो और बार-बार निमंत्रण भेजती हो। मुझे समझ नहीं आता कि मना कैसे करूँ, और स्वीकार करना तो और भी शर्मनाक है। खैर, मैं इस हफ्ते नहीं आ सकती, क्योंकि हम पुनरावृत्ति के सबसे व्यस्त दौर में हैं; जब तुम्हारा पत्र आया, तब मैं पाँचवाँ भाग सुन रही थी। लेकिन मिस वूलर कहती हैं कि मुझे अगले शुक्रवार को गोमरसाल जाना ही होगा, जैसा कि उन्होंने व्हिटसंडे को मेरे लिए वादा किया था; और रविवार सुबह, अगर सुविधा हो तो मैं चर्च में तुमसे मिलूँगी और सोमवार सुबह तक राइडिंग्स में रुकूँगी। ये तो बहुत ही आसान प्रस्ताव है! मिस वूलर ने मुझे ऐसा करने पर मजबूर कर दिया है — उनका कहना है कि इसमें उनकी प्रतिष्ठा दांव पर लगी है! मुझे यह सुनकर बहुत दुख हुआ कि तुम्हारी माँ बीमार थीं। मुझे आशा है कि अब वह ठीक हो गई होंगी और परिवार के बाकी सभी लोग भी स्वस्थ होंगे। क्या तुम रविवार को चर्च में मिस टेलर से मिलने पर उन्हें यह पत्र दे दोगी? प्यारी एलेन, मेरे हाथों से लिखी गई सबसे भद्दी लिखावट के लिए मुझे माफ करना। अपनी माँ और बहनों को मेरा नमस्कार कहना, और— यकीन मानो, ई. नुसे का दोस्त।

'शार्लोट।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

20 फरवरी, 1837।

एलेन, तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे बहुत दुख हुआ— तुम्हारे बिना मैं क्या करूँगी? हम एक-दूसरे के साथ से इतने वंचित क्यों हैं? यह एक समझ से परे दुर्भाग्य है। मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए तरसती हूँ क्योंकि ऐसा लगता है कि तुम्हारे साथ बिताए दो-तीन दिन या सप्ताह उन भावनाओं को और भी मजबूत कर देंगे जिन्हें मैंने हाल ही में संजोना शुरू किया है। तुमने ही सबसे पहले मुझे वह रास्ता दिखाया था जिस पर मैं बड़ी कमजोरी से चलने की कोशिश कर रही हूँ, और अब जब मैं तुम्हें अपने साथ नहीं रख सकती, तो मुझे दुखी होकर अकेले ही आगे बढ़ना होगा।

हम क्यों बँटे हुए हैं? ऐलेन, इसका कारण यही होना चाहिए कि हम एक-दूसरे से ज़रूरत से ज़्यादा प्रेम करने के खतरे में हैं— सृष्टिकर्ता को भूलकर सृष्टि की पूजा करने में लीन हैं। पहले तो मैं "तेरी इच्छा पूरी हो" नहीं कह पाई। मुझे विद्रोही भाव

आया; लेकिन मैं जानती हूँ कि ऐसा सोचना गलत था। आज सुबह जब मुझे कुछ पल अकेले रहने का मौका मिला, तो मैंने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की कि मैं ईश्वर की इच्छा के हर आदेश को स्वीकार कर सकूँ—भले ही वह वर्तमान निराशा से कहीं अधिक कठोर हो। तब से मैं शांत और विनम्र महसूस कर रही हूँ—और परिणामस्वरूप अधिक प्रसन्न हूँ। पिछले रविवार को मैंने उदास मन से बाइबल उठाई; मैंने पढ़ना शुरू किया; एक ऐसा भाव मुझ पर छा गया जैसा मैंने कई वर्षों से नहीं जाना था— एक मधुर और शांत अनुभूति, वैसी ही जैसी मुझे बचपन में आती थी, जब मैं गर्मियों में रविवार की शाम को खुली खिड़की के पास बैठकर एक फ्रांसीसी रईस का जीवन पढ़ती थी, जिसने प्रारंभिक शहीदों के समय से कहीं अधिक पवित्रता प्राप्त की थी। मुझे अपनी एलेन की याद आई—काश वो मेरे पास होती, तो मैं उसे बता पाती कि मैं कितनी खुश हूँ, ईश्वर के पवित्र वचन के पन्ने मुझे कितने उज्ज्वल और गौरवशाली लगते हैं। लेकिन वो खुशी का एहसास बीत गया, और धरती और पाप लौट आए। एलेन, जाने से पहले मुझे तुमसे मिलना ही है; अगर तुम रो हेड नहीं आ सकतीं, तो मैं ब्रुकरॉयड तक पैदल चलने का इंतजाम कर लूँगी, बशर्ते तुम मुझे अपने जाने का समय बता दो। अगर तुम ईस्टर पर घर पर नहीं रहीं, तो मैं तुम्हारी माँ और बहनों का निमंत्रण स्वीकार करने का वादा नहीं कर सकती। तुम्हारे बिना ब्रुकरॉयड में मैं बहुत दुखी हो जाऊँगी, फिर भी अगर कुछ दिनों के लिए नहीं आ सकीं, तो कुछ घंटों के लिए उनसे मिलने का इंतजाम कर लूँगी। मैं उनसे तुम्हारे लिए प्यार करती हूँ। मैंने ये पत्र बस यूँ ही लिख दिया है। ये कब तक तुम तक पहुँचेगा, पता नहीं, लेकिन मैंने ठान लिया था कि इस मौके को हाथ से जाने नहीं दूँगी। अलविदा, ईश्वर तुम पर अपनी सारी कृपा बरसाए। मेरी प्यारी— अलविदा। शायद तुम ग्रीष्मकाल से पहले लौट आओ— क्या तुम्हें लगता है कि तुम लौट सकती हो? काश, तुम्हारे भाई जॉन को पता होता कि मैं कितना दुखी हूँ; उसे मुझ पर तरस आ जाता।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

8 जून, 1837।

मेरी प्यारी एलेन, जैसा कि आप देख सकती हैं, संलग्न पत्र आपके पिछले पत्र के मिलने से पहले लिखा गया था। मैं इसे इस पत्र के माध्यम से भेजना चाहता था, लेकिन आपकी बातों ने मेरा इरादा बदल दिया। आपके पत्र में जो आधार है, उस पर

आशा टिकाना मेरे लिए मुश्किल है - हमें कई बार निराशा हाथ लगी है, और मुझे डर है कि मैं उन्हें आपसे विदा लेने के लिए राजी नहीं कर पाऊंगा; लेकिन मैं पूरी कोशिश करूंगा, और कम से कम जल्द ही हमारी मुलाकात की संभावना तो है ही; इसी सोच से मैं खुद को दिलासा दूंगा। आप नहीं जानतीं कि मैं स्वार्थी रूप से कितना खुश हूं कि आप अभी भी लंदन और लंदनवासियों को नापसंद करती हैं - ऐसा लगता है जैसे यह इस बात का प्रमाण है कि आपकी भावनाएं नहीं बदली हैं। क्या हम सचमुच हॉवर्थ के मैदानों पर एक बार फिर साथ होंगे? मैं बहुत आशावादी होकर खुद को तसल्ली नहीं दे सकता। मुझे कई संदेह और कठिनाइयां दिखाई दे रही हैं। लेकिन मिस वूलर की अनुमति से, जो मैंने मांगी है और आंशिक रूप से प्राप्त भी कर ली है, मैं कल जाऊंगा और उन्हें दूर करने की कोशिश करूंगा। - विश्वास करो, मेरी प्यारी एलेन, तुम्हारा सदा सच्चा,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

12 जनवरी, 1839।

मेरी प्यारी एलेन, पिछले तीन महीनों में आपसे मिले अर्जेंट इनविटेशन की गिनती करके मुझे हंसी आ रही है। अगर मैंने उन सभी को या आधे को भी स्वीकार कर लिया होता, तो बिर्स्टैलियन ज़रूर यही सोचते कि मैं ब्रुकरॉयड को अपना स्थायी निवास बनाने आ गया हूँ। जब आप किसी बात पर ठान लेती हैं, तो आप लोगों को दुविधाओं के जाल में इस कदर उलझा देती हैं कि उन्हें मना करना मुश्किल हो जाता है; लेकिन मैं इस बार हिम्मत करके सारी दुविधाओं को पार कर जाऊँगा। सच कहूँ तो, मेरी प्यारी एलेन, मैं नहीं आ सकता। ज़रा सोचिए। क्या आपको इसमें कुछ अजीब नहीं लगता कि कोई व्यक्ति अपने सभी परिचितों से औपचारिक विदाई लेने के एक महीने के भीतर ही अपने मोहल्ले में वापस आ जाए? फिर भी, इनविटेशन के लिए मैं आपका और आपकी माँ का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ, जो आपने अत्यंत विनम्रता से दिया। आपने मेरे इस प्रस्ताव का कोई जवाब नहीं दिया कि आप टेलर्स के साथ हॉवर्थ आएँ। मुझे अब भी लगता है कि यही आपके लिए सबसे अच्छा रहेगा। मेरी यही कामना है कि आप और टेलर्स यहाँ सुरक्षित रहें; बिना मेहनत किए कोई सुख नहीं मिलता। मेरी प्यारी एलेन, अगली ग्रीष्म ऋतु तक मुझे और आमंत्रित मत करना। यहाँ सभी चाहते हैं कि तुम उन्हें याद रखो, खासकर मेरी चाची। तुम चाहे

कितनी भी नाराज़ हो, मैं हमेशा की तरह अपने हस्ताक्षर करने का साहस करूँगा (नहीं, हमेशा की तरह नहीं, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार)। — तुम्हारा, उदास।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

5 मई, 1838।

मेरी प्यारी एलेन, कल मुझे पता चला कि तुम बीमार हो। श्रीमान और श्रीमती हील्ड ड्यूसबरी मूर में थे, और उन्हीं से मुझे यह जानकारी मिली। आज सुबह मैं और जानकारी लेने के लिए ब्रुकरॉयड के लिए रवाना हुई, और अभी-अभी वहाँ से लौटी हूँ। तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए बहुत चिंतित हैं, तुम्हारा नाम लेते ही उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं; और वह और मर्सी दोनों तुम्हें घर पर देखने के लिए बहुत उत्सुक हैं। बेचारी, तुम दो सप्ताह से बिस्तर पर पड़ी हो; और जब मैं मन ही मन तुम्हें पत्र न लिखने के लिए कोस रही थी, तब तुम अकेले ही बीमारी से जूझ रही थी, और तुम्हारी देखभाल करने के लिए कोई सहेली भी नहीं थी। अगर मैं ईस्टर की छुट्टियों में ब्रुकरॉयड जा पाती, तो मुझे यह सब पहले ही पता चल जाता और मैं इस संकट में तुम्हारे प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करने में जल्दी करती, लेकिन श्रीमान वूलर की बीमारी और मृत्यु के कारण अचानक ड्यूसबरी मूर वापस बुलाए जाने से ऐसा नहीं हो सका। तब से मैं दो सप्ताह और दो दिन से बिल्कुल अकेली हूँ, क्योंकि श्रीमती वूलर इस बीच राउज़ मिल में व्यस्त थीं। एलेन, अब तुम समझ जाओगी कि मेरी चुप्पी उपेक्षा या स्नेह की कमी के कारण नहीं थी, हालांकि मुझे डर है कि तुमने बहुत पहले ही इसे इन्हीं कारणों से जोड़ दिया होगा। अगर तुम ठीक हो, तो मुझे बस दो पंक्तियाँ लिख देना—बस अपने स्वास्थ्य में सुधार की सूचना देने के लिए; लेकिन एक शब्द भी मत लिखना, अगर इससे तुम्हें दुख हो—एक शब्द भी नहीं। घर पर सब तुम्हें बहुत महत्व देते हैं। बीमारी और अनुपस्थिति स्नेह की उन भावनाओं को प्रकट करती हैं जो अगर तुम स्वस्थ और मौजूद होतीं तो शायद लंबे समय तक अनकही ही रहतीं। मेरी कामना है कि तुम्हारे दोस्तों (मैं खुद को भी उनमें शामिल करता हूँ) को जल्द ही अपने स्नेह की इतनी पीड़ादायक उत्तेजना का कारण न रहे। अभी तक मुझे तुम्हारी बीमारी की प्रकृति—उसकी सीमा—या वह कितनी कम हो गई है, इसका अधूरा ही अंदाजा है। जब तुम मुझे सब कुछ बता सको, तो कोई भी बात, चाहे कितनी भी छोटी क्यों न हो, मेरे लिए व्यर्थ नहीं होगी। तुम्हारा मन कैसा है? मुझे उम्मीद है कि तुम ज्यादा उदास

नहीं हो, क्योंकि बीमारी का सबसे दुखद परिणाम यही होता है। मुझे पता चला है कि तुम फिलहाल बाथ नहीं जा रही हो; लगता है उन्होंने व्यवस्था कुछ अजीब तरीके से की है। व्हाइट-ली बार के पास जब मैं तुमसे विदा हुआ, तो मुझे पहले कभी न महसूस हुई इतनी गहरी उदासी का अनुभव हुआ। पूर्वाभास के विचार पर अधिक ध्यान देना मूर्खता होगी, लेकिन मुझे निश्चित रूप से यह आभास हुआ था कि हमारे पुनर्मिलन का समय इतना अनिश्चित और इतना दूर कभी नहीं था। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है, मेरी प्रिय एलेन, कि तुम्हारी अनेक कठिनाइयों के बीच, तुम्हारे द्वारा हाल ही में अनुभव किए गए और तुम्हारे कई रिश्तेदारों में देखे गए कष्टों के बीच भी, तुम आशा की किरण ढूंढ पाई हो और परीक्षा में सहारा, दुख में सांत्वना और उथल-पुथल में शांति पा सकी हो, जहाँ मानवीय हस्तक्षेप कोई परिवर्तन नहीं ला सकता। मुझे लगता है कि तुम सही भावना से जानती हो कि जीवन की झुंझलाहट, चिंता और नीचता से खुद को कैसे दूर रखना है और इस दुनिया से परे पवित्र स्रोतों से सांत्वना कैसे प्राप्त करनी है। तुम यह चुपचाप, दूसरों को बिना बताए, करना जानती हो और बाइबल द्वारा हमें ईश्वर के साथ दिए गए उस पवित्र मिलन का लाभ उठा सकती हो। मुझे तुम्हारी माँ और बहन का प्रेम तुम तक पहुँचाने का दायित्व सौंपा गया है। मुझे भी उसी पार्सल में मेरा हिस्सा दे दीजिएगा, मुझे लगता है कि यह बहुत छोटा हिस्सा होगा। अलविदा, मेरी प्यारी एलेन।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

15 मई, 1840।

मेरी प्यारी एलेन, मैंने तुम्हारा पिछला पत्र बड़े चाव से पढ़ा। शायद लोगों को यह बताना हमेशा सही नहीं होता कि हम उनके कार्यों से सहमत हैं, फिर भी ऐसा करना बहुत सुखद होता है; और जैसे, अगर तुमने कुछ गलत किया होता, तो मुझे उम्मीद है कि मुझमें तुम्हें यह बताने की ईमानदारी होती, वैसे ही अब, क्योंकि तुमने सही किया है, मैं तुम्हें अपने विचार बताकर खुद को संतुष्ट करूंगा।

अगर मैं आपको अपना धर्मगुरु बना लूँ तो मैं आपकी उन कमजोरियों को उजागर कर सकता हूँ जिनके बारे में आप सोच भी नहीं सकते। मेरा यह मतलब नहीं है कि मैं खोखली तारीफों को बहुत महत्व देता हूँ, लेकिन प्रशंसा के कुछ शब्द अक्सर मुझे एक अजीब सी खुशी का एहसास कराते हैं जिसे छुपाने के लिए मुझे बहुत कोशिश करनी

पड़ती है - और दूसरी ओर, जल्दबाजी में कही गई कोई बात जिसे मैं उपेक्षा या अस्वीकृति समझ सकता हूँ, मुझे इतना परेशान करती है कि उसकी पीड़ा से मेरी आधी रात की नींद उड़ जाती है।

'सी. ब्रोंटे.

नोट: मुझे बुलाने की बात अब और मत करना—जब मैं आऊँगा तो खुद आ जाऊँगा। सभी तुम्हें अपना प्यार भेज रहे हैं। मुझे नौकरी मिलने की कोई उम्मीद नहीं है, जैसे चाँद पर जाने की भी नहीं। जितनी जल्दी हो सके मुझे फिर से लिखना।

इन बाद के वर्षों में हमें पेनज़ेंस में रहने वाले उनके रिश्तेदारों की बस यही एक झलक मिलती है। ऐसा लगता है कि जब शार्लोट चौबीस साल की थीं, तब वे हॉवर्थ आए थे। उनका प्रभाव अच्छा नहीं था।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

14 अगस्त, 1840।

'मेरी प्यारी एलेन, – चूंकि तुमने मुझे सिर्फ एक नोट भेजा था, इसलिए मैं भी तुम्हें सिर्फ एक ही नोट भेज रही हूँ, और वो भी बदले की भावना से नहीं, बल्कि इसलिए कि तुम्हारी तरह मेरे पास भी कहने को कुछ खास नहीं है। हमारे घर में सबसे ताज़ा खबर ये है कि दो हफ्ते पहले हमारे दक्षिण इंग्लैंड के कुछ रिश्तेदार, जॉन ब्रैनवेल, उनकी पत्नी और बेटी, हमसे मिलने आए थे। वे एक महीने से ज़्यादा समय से अंकल फेनेल के साथ क्रॉसटोन में रह रहे हैं। वे वाकई बहुत ही रईस लोग लगते हैं और खूब बातें करते हैं – मुझे लगा जैसे ये सिर्फ दिखावा है। मैं ये नहीं कह सकती कि मुझे वे बहुत पसंद आए। मेरी नज़र में तो ऐसा लग रहा था जैसे वे यॉर्कशायर में बड़े मुगल बनने की कोशिश कर रहे हों। श्री ब्रैनवेल उन महिलाओं से कहीं कम दिखावा करने वाले थे; वे एक स्पष्टवादी, समझदार किस्म के आदमी लग रहे थे, काफी लंबे और चुस्त-दुरुस्त, और उनकी नज़रें हमेशा तेज़ और सक्रिय रहती थीं। मुझे देखते ही उन्होंने कहा कि मैं बिल्कुल अपनी चाची शार्लेट जैसी दिखती हूँ। श्रीमती ब्रैनवेल खुद को बहुत प्रतिभाशाली, चतुर और निपुण महिला बताती हैं। मुझे लगा जैसे वहाँ काम से ज़्यादा शोर-शराबा था।' मेरी चचेरी बहन एलिज़ा कुदरत से एक चंचल, खूबसूरत लड़की बनने के लिए बनी थी, लेकिन कला ने उसे एक सुस्त, बनावटी और लाचार लड़की बना दिया है। मैं उससे दोस्ती करना चाहता था, लेकिन मुझे उससे लो चर्च, इवेंजेलिकल पादरी, मिलेनियम, बैपटिस्ट नोएल, वनस्पति विज्ञान और उसके अपने

धर्म परिवर्तन के अलावा और कोई बात नहीं मिली। गलत शिक्षा ने उसे पूरी तरह बिगाड़ दिया है। उसका चेहरा बताता है कि वह स्वभाव से अच्छी है, हालांकि शायद आलसी है। उसकी बनावटी हरकतें उसके गोल, गुलाबी चेहरे और लंबे, चंचल कद से इतनी बेमेल थीं कि उसे देखकर मैं हँसी रोक नहीं पाया। अगली बार एक लंबा पत्र लिखना और मैं भी तुम्हें वैसा ही पत्र लिखूंगा। अलविदा।

हम पहले ही मिस नुसे को गवर्नेंस के कार्यकाल के दौरान और ब्रुसेल्स से लिखे गए पत्रों को पढ़ चुके हैं। ब्रुसेल्स से अपनी अंतिम वापसी पर, शार्लोट एक पत्र लिखकर विनती करती है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 10 फरवरी, 1844।

प्रिय एलेन, — मुझे नहीं पता कि तुम क्या सोच रही हो और क्या सोच रही हो। क्या तुम बीमार हो? क्या तुम्हारे परिवार में कोई बीमार है? क्या तुम्हारी शादी हो चुकी है? क्या तुम मर चुकी हो? अगर ऐसा है, तो बेहतर होगा कि तुम मुझे एक पत्र लिखकर बता दो — मैं तो वापस इंग्लैंड में हूँ। जब तक तुम मुझे पत्र नहीं लिखोगी, मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊँगा।

'सी. ब्रोंटे.

'मुझे सीधे पत्र लिखो, शाबाश लड़की; मैं सचमुच बहुत बेचैन महसूस कर रही हूँ, और काफी समय से तुमसे सुनने के लिए उत्सुक हूँ।'

इसके कुछ समय बाद वह ब्रुकरॉयड में मिस नुसे से मिलने जाती है, और थोड़ी देर बाद वह इस प्रकार लिखती है:

सुश्री एलेन नुसे के लिए

7 अप्रैल, 1844।

प्रिय नेल, मुझे तुम्हारा पत्र मिला। उसमें एक ऐसी खुशखबरी थी जिसकी मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। हालाँकि, मैं इस विषय पर और जानकारी चाहती हूँ। क्या तुम मुझे बता सकती हो कि मैरी की योजनाओं में बदलाव का क्या कारण है और वह इतनी अचानक इंग्लैंड क्यों लौट आई है? क्या यह मैरी डिक्सन की वजह से है? क्या यह उसके भाई की इच्छा है, या यह उसका अपना दृढ़ निश्चय है? मुझे आशा है कि कारण चाहे जो भी हो, इससे उसे कोई परेशानी या नुकसान नहीं होगा। क्या तुम्हें पता है कि वह इंग्लैंड में कितने समय तक रहेगी? या वह हन्सवर्थ कब पहुँचेगी?

‘तुम मुझसे पूछती हो कि मैं कैसी हूँ। पिछले हफ्ते से मैं वाकई बहुत बेहतर महसूस कर रही हूँ—मुझे लगता है कि ब्रुकरायड की मेरी यात्रा मेरे लिए फायदेमंद रही। आजकल मौसम कितना सुहाना है। काश, जब मैं तुम्हारे साथ थी तब भी ऐसा ही मौसम होता। एमिली और मैं खुले मैदानों में खूब सैर करते हैं, जिससे हमारे जूते काफी खराब हो जाते हैं, लेकिन मुझे उम्मीद है कि इससे हमारे स्वास्थ्य को फायदा होता है।’

अलविदा, प्यारी एलेन। जल्द ही मुझे अपना एक और छोटा सा पत्र भेजना। सभी को मेरी शुभकामनाएं।

‘सी. बी.’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

9 जून, 1844।

मेरी प्यारी एलेन, ऐनी और ब्रैनवेल अब घर पर हैं, और वे और एमिली भी मेरी तरह आपसे अनुरोध करती हैं कि आप अगले सप्ताह की शुरुआत में हमारे साथ आ जाएँ। हमें लिखकर बताएँ कि आप किस दिन और कैसे आएँगी—अगर आप कोच से आ रही हैं, तो हम आपको कीघली में मिलेंगे। कृपया अगले सप्ताह की शुरुआत से पहले आ जाएँ, वरना ऐनी और ब्रैनवेल से आपका मिलना मुश्किल हो जाएगा क्योंकि उनकी छुट्टियाँ बहुत छोटी हैं। उन्हें जल्द ही स्कारबोरो में परिवार के पास जाना होगा। अपनी माँ और बहनों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ देना। आशा है वे सब ठीक होंगी।

‘सी. बी.’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

14 नवंबर, 1844।

प्रिय एलेन, आपका पत्र बिल्कुल सही समय पर आया, जैसा कि आपके पत्र हमेशा ही आते हैं; लेकिन आज सुबह मुझे सिरदर्द था और मेरा मूड थोड़ा खराब था, लेकिन आपके पत्र (भले ही वह मुश्किल से पढ़ा जा सकता हो - कृपया थोड़ी सी खरोंच के लिए क्षमा करें) ने मुझे खुश कर दिया। अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के साथ-साथ अपनी इच्छा को संतुष्ट करने के लिए, मैं तुरंत इसका उत्तर देने बैठ गया। सबसे पहले तो मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपके भाई की शादी होने वाली है, और उससे भी अधिक खुशी इस बात की है कि उनकी होने वाली पत्नी के पास अच्छी

खासी संपत्ति है - ऐसा नहीं है कि मैं आम तौर पर पैसे के लिए शादी करने का समर्थन करता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि कई मामलों में (और यह उनमें से एक है) पैसा शादी का एक बहुत ही वांछनीय पहलू है।

मुझे आश्चर्य है कि मैरी टेलर इंग्लैंड कब आने वाली हैं। मुझे उम्मीद है कि जब वह हन्सवर्थ में होंगी, तब आप घर पर होंगी, और हम तीनों की मुलाकात स्वर्ग के नीचे कहीं न कहीं हो सकेगी। प्रिय एलेन, मैं क्रिसमस पर अपने और ऐनी के ब्रुकरायड जाने का कोई वादा नहीं कर सकती; उनकी छुट्टियां इतनी छोटी होती हैं कि उन्हें घर से दूर छुट्टियां बिताना अच्छा नहीं लगेगा।

आपने अपनी किताब-मलमल की पोशाक, लेस वाली बर्था आदि के बारे में जिस विपत्ति का इतनी शांति से वर्णन किया, उसे सुनकर मैं भयभीत हो गया। आपको उस दिन को कोसने का पूरा हक है जब आपको उस कुख्यात छोटी "बदमाश" के रूप में इतना घातक उपहार मिला। जिस पूर्ण शांति से आपने उस विपत्ति को सहा, उससे मुझे यह पूर्णतः सिद्ध होता है कि आप दुनिया की सबसे अच्छी पत्नी, माँ और प्रेमिका बनेंगी। आप और ऐनी अद्भुत दार्शनिक सहनशक्ति की जोड़ी हैं; कोई बिगड़ा हुआ खाना, झुलसे हुए कपड़े, गंदे कालीन, फटे सोफे के कवर, चीखते-चिल्लाते बच्चे, चिड़चिड़े पति, आप दोनों में से किसी को भी विचलित नहीं कर सकते। आपको कभी भी अच्छे स्वभाव वाले पुरुष से शादी नहीं करनी चाहिए, यह शहद में चीनी मिलाने जैसा होगा, जैसे काले कांटों वाले डंडे पर सफेद गुलाब चिपकाना। इस सुंदर उपमा के साथ मैं अपना पत्र समाप्त करता हूँ। अलविदा, और जल्द ही लिखना।

'सी. ब्रोंटे।'

डर्बीशायर के हैदरसेज में शार्लोट ब्रोंटे की यात्रा के बारे में बहुत कुछ कहा गया है, और यह इसलिए दिलचस्प है क्योंकि मिस ब्रोंटे को 'आयर' नाम उसी इलाके के एक परिवार से मिला था, और जेन आयर में मॉर्टन को स्पष्ट रूप से हैदरसेज के रूप में पहचाना जा सकता है। मिस एलेन नुसे के भाई हेनरी हैदरसेज के विकर बने और उन्होंने कुछ समय बाद ही शादी कर ली। जब वे हनीमून पर थे, उनकी बहन उनके घर की देखभाल करने के लिए हैदरसेज गईं और उन्होंने अपनी दोस्त शार्लोट ब्रोंटे को अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया। यह यात्रा तीन सप्ताह तक चली। यह एकमात्र अवसर था जब शार्लोट ने हैदरसेज की यात्रा की थी। उस यात्रा से संबंधित दो-तीन संक्षिप्त टिप्पणियाँ यहाँ दी गई हैं।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

10 जून, 1845।

प्रिय एलेन, — शेफ़ील्ड की आपकी यात्रा व्यर्थ ही हुई, यह जानकर बहुत दुख हुआ। यह जानकर खुशी हुई कि गुरुवार को एक बस सेवा उपलब्ध है, और मैंने एमिली और ऐनी को बता दिया है कि मैं उस दिन आने की कोशिश करूँगी। रेलवे का उद्घाटन अब 7 जुलाई तक स्थगित कर दिया गया है। मैं आपको फिर से निराश नहीं करना चाहती, और इसी कारण और कुछ अन्य कारणों से उन्होंने स्कार्ब्रो जाने का विचार छोड़ दिया है, और इसके बजाय अगले सोमवार और मंगलवार को इल्कली या कहीं और घूमने जाने का फैसला किया है। मुझे आशा है कि हैदरसेज जाने में कोई और बाधा नहीं आएगी। मैं आपके साथ रहने के लिए बहुत उत्सुक हूँ, और मुझे डर है कि कहीं मुझे रोका न जाए या किसी तरह से मेरी यात्रा में देरी न हो जाए। ब्रैनवेल हमारे साथ केवल एक सप्ताह रुका था, लेकिन जब परिवार स्कार्ब्रो जाएगा तो वह वापस घर आ जाएगा। मैं सीधे ब्रुकरायड को पत्र लिखूँगी। कल मुझे हेनरी का एक छोटा सा पत्र मिला जिसमें उसने मुझे आपसे मिलने आने का निमंत्रण दिया था। यह आपकी उन चालों में से एक है, जिसके लिए आपको गला घोंटकर मार देना चाहिए। आपने हेनरी को पत्र लिखकर कहा है कि वह मुझे पत्र लिखे। क्या आपको लगता है कि मैंने इस मामले में औपचारिकता निभाई?

फ्रांसीसी अखबार आने बंद हो गए हैं। फिलहाल के लिए अलविदा।

'सी. बी.'

श्रीमती नुसे के लिए

23 जुलाई, 1845।

मेरी प्रिय श्रीमती नुसी, घर लौटते ही मैंने आपको पत्र लिखकर ब्रूकरॉयड में कुछ दिन ठहरने के लिए बार-बार आमंत्रित करने के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया। अगर सिर्फ एक दिन के लिए भी जाना होता, तो मुझे बहुत खुशी होती, सिर्फ आपसे और मिस मर्सी से मिलने के लिए (मुझे लगता है मिस नुसी घर पर नहीं हैं) और श्रीमती हेनरी से परिचय पाने के लिए, लेकिन मैं हैदरसेज में एलेन के साथ इतने लंबे समय तक रही हूँ कि अब ब्रूकरॉयड जाना मेरे लिए संभव नहीं है। घर पर मेरा इंतज़ार हो रहा था; और आखिरकार, घर ही हमारी प्राथमिकता होती है। जब मैं घर पहुँची (शनिवार रात दस बजे), तो मैंने पापा को, शुक्र है, ठीक-ठाक पाया, लेकिन उन्हें लगा

कि मैं बहुत दिनों से बाहर थी।

'मैंने एलेन को ठीक हालत में छोड़ा था, और जब मैं उसके साथ रहा तो उसका स्वास्थ्य आम तौर पर अच्छा था, लेकिन वह व्यापारिक मामलों को लेकर बहुत चिंतित है, और उसे डर है कि श्रीमान और श्रीमती हेनरी के आगमन से पहले चीजें ठीक न हों - वह चाहती है कि हैथरसेज में उनके आगमन का दिन दोनों के लिए खुशी का दिन हो।'

मुझे आशा है, मेरी प्रिय श्रीमती नुसे, आप कुशल मंगल होंगी; और यदि आप या मिस मर्सी की ओर से मुझे इस बात की पुष्टि करने वाला एक छोटा सा पत्र मिले तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। — विश्वास कीजिए, आपका स्नेहपूर्वक और ईमानदारी से।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

24 जुलाई, 1845।

प्रिय एलेन, — दिन-रात लगातार और गंभीर दांत दर्द ने मुझे बहुत सुस्त कर दिया है और मैं तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। कई बार मैंने बैठकर डेस्क खोलने की कोशिश की, लेकिन काम करने की हिम्मत नहीं हुई। आज, रात भर असहनीय दर्द सहने के बाद, मैं बेहतर महसूस कर रहा हूँ — बहुत बेहतर, और इस आराम का फायदा उठाकर मैं अपना कर्ज चुकाना चाहता हूँ। काश, मेरे पास अभी 50 पाउंड होते और तुम, एमिली, ऐनी और मैं सब घर से बाहर जा सकते, बिना किसी को परेशान किए। कितना अच्छा होता अगर हम सब एक साथ समुद्र किनारे चले जाते और कुछ हफ़्ते वहाँ रहकर सेहत और ताकत बटोर लेते। — हम सबको आराम की ज़रूरत है। विपत्ति तुम्हें रास आती है, एलेन। तुम्हारे अच्छे गुण तब सबसे ज़्यादा ज़ाहिर होते हैं जब तुम कष्ट के दबाव में होती हो। लगातार समृद्धि तुम्हारे स्वभाव में छिपी महत्वाकांक्षा को और बढ़ा सकती है। जब मैं हैथरसाज में आपके साथ ठहरी थी, तब मैंने इस छोटे से कीटाणु को हरी कोंपलें निकालते देखा था। तब यह इतना परेशान करने वाला नहीं था, और शायद कभी होगा भी नहीं। आपकी समझदारी, दृढ़ सिद्धांत और दयालुता इसे बढ़ने से रोक सकती है। दांत दर्द के कारण सिर झुकाए रखना ठीक नहीं है। अपनी माँ और बहनों को मेरा प्यार देना। जितनी जल्दी हो सके दोबारा लिखना। — आपकी विश्वासपात्र

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

18 अगस्त, 1845।

प्रिय एलेन, मैं तुम्हें इसलिए नहीं लिख रही हूँ कि मुझे तुम्हें कुछ बताना है, बल्कि इसलिए लिख रही हूँ कि मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे लिखो। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि तुम अपनी नई बहन से खुश हो। जब मैं हैदरसेज में थी, तब तुम मैरी टेलर को पत्र लिखने की बात कर रही थीं। मैंने हाल ही में उसे एक छोटा, बेढंगा पत्र लिखा है, जिस पर मुझे शर्म आती है, लेकिन जब मैंने लिखना शुरू किया तो मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास कहने के लिए वास्तव में बहुत कम था। मैंने वह पत्र हन्सवर्थ को भेज दिया है, और मुझे लगता है कि वह कभी न कभी पहुँच जाएगा। तुम्हें जल्द ही मुझे एक लंबा पत्र लिखना चाहिए। श्रीमान और श्रीमती हेनरी नुसे को मेरा आदरपूर्वक नमस्कार कहना। मिस आर को मेरा प्यार देना। तुम्हारी,

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

14 दिसंबर, 1845।

प्रिय एलेन, तुम्हारा पिछला पत्र पाकर मुझे खुशी हुई, भले ही वह छोटा और रूखा था। तीन सप्ताह बीत गए थे और तुमसे कोई खबर नहीं मिली थी, और मुझे लगा कि शायद कोई नई मुसीबत आ गई है। यह जानकर राहत मिली कि ऐसा नहीं था। ऐनी तुम्हारी इस बात के लिए आभारी है कि तुम उसे ब्रुकरॉयड नहीं बुला सकीं। वह चाहती है कि तुम हॉवर्थ आ सको। क्या तुम मुझे आदतवश डांट रही हो, या सचमुच नाराज़ हो? दोनों ही बातें बकवास हैं। तुम भी जानती हो और मैं भी कि ब्रुकरॉयड जाना मुझे हमेशा अच्छा लगता है, और मेरे जैसे जिसके पास इतने कम पैसे और इतने कम दोस्त हों, उसके लिए तो यह और भी बड़ी खुशी की बात होगी, लेकिन मैं हमेशा अपनी खुशी मनाने के मूड या हालात में नहीं होती। मैं तुमसे मिलने के लिए इतनी बेताब हूँ कि नए साल के बाद, अगर सब ठीक रहा, तो मैं ज़रूर बिर्स्टॉल आऊँगी। अब मैं चाहकर भी नहीं जा सकती। अगर तुम्हें लगता है कि मैं इस मामले में औपचारिकता निभा रही हूँ, तो तुम बहुत बड़ी गलती कर रही हो। मैं तुम्हें, तुम्हारी माँ और बहनों को बहुत लंबे समय से जानता हूँ, इसलिए तुममें से किसी के साथ औपचारिकता निभाने की ज़रूरत नहीं। अब मुझे और आमंत्रित मत करो, जब तक मैं खुद न आऊँ—खुद को इतना अभिमानी मत समझो कि तुम्हें इसकी परवाह नहीं; और अगर, जब मैं

आऊँगा (क्योंकि मैं तुम्हें पहले से बता दूँगा), और तुम्हें अच्छा न लगे, तो मुझे शांत भाव से बता देना। अगली बार मुझे एक लंबा पत्र चाहिए। अब प्रेमियों के झगड़े नहीं।

अलविदा। आपकी मां और बहनों को ढेर सारा प्यार।

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

28 जनवरी, 1847।

प्रिय एलेन, – प्रिय, तुम हमेशा जवान और इतनी खूबसूरत दिखो कि सफेद कपड़े पहन सको, और हमेशा इस बात का एहसास करती रहो कि तुम आकर्षक दिखती हो। मुझे पता है कि तुममें इतनी समझदारी है कि तुम घमंड की अति को अपनी खुशी को बर्बाद नहीं करने दोगी। आखिरकार, उम्र तो आएगी ही, और अच्छा है कि जब उम्र बदलेगी तो तुम्हारे पास दोस्तों के लिए सिर्फ एक सुंदर चेहरे से बेहतर कुछ होगा। मुझे उम्मीद है कि इस अत्यधिक ठंड ने तुम्हें या तुम्हारे परिवार को ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचाया होगा। इसने मुझे बुरी तरह से जकड़ लिया है, कुछ समय के लिए मेरी भूख मिटा दी है और मेरे दांत में दर्द कर दिया है; संक्षेप में, इसने मुझे उस बीमार हालत में डाल दिया है, जिसमें मुझे ब्रुकरॉयड और हन्सवर्थ दोनों जगह कई बार परेशानी खड़ी करने का सौभाग्य मिला है। नतीजा यह है कि इस समय मैं तुम्हारी माँ की उम्र का लग रहा हूँ – सफ़ेद बालों वाला, मुरझाया हुआ और कमजोर। हालाँकि, आज मौसम थोड़ा नरम है, और मुझे उम्मीद है कि मैं जल्द ही बेहतर महसूस करूँगा; सच है कि मैं अब बीमार नहीं हूँ, और मेरे दांत का दर्द भी कम हो गया है, लेकिन मुझमें शारीरिक शक्ति की कमी और मनोबल की कमजोरी है, जिसकी वजह से मैं आपके या किसी और के लिए एक अच्छा साथी साबित नहीं हो पाऊँगा। मैं इस समय बड़ी रकम मिलने पर भी मिलने नहीं आऊँगा।

जल्द ही लिखना। अपनी माँ और बहनों को मेरा ढेर सारा प्यार देना। अलविदा, प्यारी नेल।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

21 अप्रैल, 1847।

प्रिय नेल, आपके उपहार के लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ, जिसे आप कम मत समझिएगा, क्योंकि मुझे ये चीज़ें बहुत पसंद आईं; ये बेहद सुंदर और हल्की हैं। ये

कलाई की झालर के लिए हैं, है ना? क्या आप एक गज बिना बुने हुए लेस को स्वीकार करेंगी? मैंने सोचा था कि इसे किसी भी आकार में सिलकर खराब नहीं करना चाहिए। आपकी रचनात्मक उंगलियाँ इसे मेरी विनाशकारी उंगलियों से बेहतर तरीके से इस्तेमाल करेंगी। मुझे उम्मीद है, जैसा भी है, ब्रैडफोर्ड डाकघर में वे इसे लिफाफे से नहीं निकालेंगे, जहाँ वे आम तौर पर नरम महसूस होने पर पत्रों को खोलने की स्वतंत्रता लेते हैं जैसे कि उनमें कुछ सामान हो। मैं आपका और अपना जन्मदिन पूरी तरह भूल गई थी, जब तक कि आपका पत्र मुझे याद दिलाने के लिए नहीं आया। आपको जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। बेशक, हॉवर्थ की आपकी यात्रा मिस रिंगरोज़ की गतिविधियों के अनुसार ही होगी। मुझे आपकी इस आशंका पर हंसी आई कि मैं ईर्ष्या करूँगी। मैंने ऐसा कभी सोचा ही नहीं। वह और मैं आपके स्नेह में प्रतिद्वंद्वी नहीं हो सकते। मुझे पता है, आप उनके लिए मुझसे अलग भावनाएँ रखती हैं। वह मिलनसार और प्रशंसनीय हैं, मैं नहीं, लेकिन फिर भी हम आखिरी बात पर कायम रहेंगे, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है। संक्षेप में, इन दिनों मुझे एमिली और ऐनी से उतनी ही ईर्ष्या होती है जितनी आपसे। अगर मिस रिंगरोज़ व्हिटसनटाइड के आसपास ब्रुकरॉयड नहीं आती हैं, तो मैं चाहूंगी कि आप आएं। अगर मुलाकात टल जाती है तो मुझे बहुत निराशा होगी - मैं चाहूंगी कि मिस रिंगरोज़ गर्मियों में आने का समय तय करें, और फिर मैं शरद ऋतु में आपसे (ईश्वर की कृपा से) मिलने आऊं। मुझे नहीं लगता कि आपके साथ वापस जाना अच्छा विचार होगा। हम एक-दूसरे से इतनी कम बार मिलते हैं कि मैं मुलाकातों को बांटना ज्यादा पसंद करूंगी। सबको मेरा नमस्कार कहना। - आपकी विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

25 मई, 1847।

'प्रिय नेल, मेरे पास मर्सी के लिए एक छोटा सा उपहार है। तुम्हें इसे लाना होगा, क्योंकि मैं दोहराता हूँ कि मेरे ब्रुकरॉयड जाने से पहले तुम्हें हॉवर्थ आना होगा।'

मैं ये बात चिढ़ या गुस्से से नहीं कह रहा हूँ—मैं अभी नाराज़ नहीं हूँ—बल्कि इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि अभी ठोस कारणों से घर छोड़ना मेरे लिए मुश्किल होगा। अगर सब ठीक रहा तो मैं पतझड़ में आपसे मिलने आऊँगा, अभी मैं नहीं आ सकता। यकीन मानिए, अगर मैं आ पाता तो आपके पिछले पत्र के बाद मैं अपनी झिझक और

अहंकार को किनारे रखकर तुरंत मैसिडोनिया चला जाता। मैं अभी तक आपकी मदद नहीं कर पाया हूँ। आपने मुझे हमेशा एक नए नौकर की तरह समझा है, जिसे हर चीज़ के बारे में बताना पड़ता है और हर काम करने का तरीका दिखाना पड़ता है।

आपकी माता और मर्सी को मेरा हार्दिक प्रेम। — आपका,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

29 मई, 1847।

प्रिय एलेन, आपका पत्र और उसमें लिखी बातें हमें बहुत अच्छी लगीं। कृपया अपना सामान श्री ब्रोंटे के पते पर भेजें, और हम डाकिया को इसके बारे में पता करने के लिए कह देंगे। रेलमार्ग कुछ समय पहले खुल गया है, लेकिन यह केवल कीघली तक ही जाता है। यदि आप दोपहर लगभग 4 बजे पहुँचती हैं, तो एमिली, ऐनी और मैं स्टेशन पर आपसे मिलेंगे। हम डेवनशायर आर्म्स में साथ में चाय पी सकते हैं और शाम की ठंडक में घर वापस आ सकते हैं। यह व्यवस्था दोपहर की भीषण गर्मी में चार मील पैदल चलने से कहीं बेहतर होगी। यदि संभव हो तो डाक द्वारा तुरंत पत्र लिखें और बताएं कि क्या यह योजना आपको ठीक लगी। आपकी,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

10 नवंबर, 1847।

प्रिय एलेन, — मुझे डर सता रहा है कि कहीं तुम यह न सोच लो कि मैं तुम्हें भूल गई हूँ, और इसी डर ने मुझे तुम्हें पत्र लिखने के लिए मजबूर किया है, हालाँकि भगवान जानता है कि मेरे पास कहने के लिए कुछ खास नहीं है। अगर मैं तुमसे सुनने की इतनी उत्सुक न होती और जब मैं लापरवाह नहीं होती, तब भी लापरवाह दिखना मुझे अच्छा नहीं लगता, तो शायद मैं एक-दो हफ्ते बिना लिखे ही बीत जाने देती। रूथ के पत्र में बहुत सी बातें मुझे बहुत उदास करने वाली लगीं। बेचारी लड़कियाँ! मुझे डर है कि उनका घर बहुत दुखी होगा। तुम्हारा और मेरा घर, तमाम कमियों, विलासिता, धन और शान-शौकत की कमी के बावजूद, मुझे पूरा यकीन है कि कहीं ज्यादा खुशहाल है। काश तुम अमीर होतीं, ताकि तुम उसे कुछ समय के लिए अपने घर में पनाह दे पातीं और उसकी बेचैनी, पीड़ा और उदासी से राहत दिला पातीं। तुम्हारी बहन पर ईथर के असर के बारे में तुमने जो बताया, उससे मैं चौंक गई। मैं हमेशा इस सोच

से खुद को तसल्ली देती थी कि एक दिन इसके सुखदायक प्रभाव में अपने कुछ दांत निकलवा लूँगी, लेकिन अब मैं इसे सूंघने से पहले दो बार सोचूँगी; कोई भी खुद को मूर्ख नहीं बनाना चाहेगा। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

11 मार्च, 1848।

प्रिय एलेन, — तुम्हारे पिछले पत्र में बहुत ही समझदारी भरी बातें हैं। ईश्वर का शुक्र अदा करो कि उसने तुम्हें समझदार बनाया है, क्योंकि इसके बिना सुंदरता, धन या स्वास्थ्य का क्या ही अर्थ है? मुझे कुछ दिन पहले मिस रिंगरोज़ का एक पत्र मिला था। मुझे नहीं लगता कि मैं दोबारा लिखूँगी, उन कारणों से जो मैंने तुम्हें पहले ही बता दिए हैं; लेकिन उस पत्र ने मुझे बहुत प्रभावित किया, वह लगभग पूरी तरह से उन्हीं के बारे में था, प्रिय एलेन, एक तरह का कोमल स्नेह, जो मुस्कुराने और रोने को मजबूर कर देता है — उनकी भावनाएँ आधी सच्चाई और आधा भ्रम हैं। कोई भी इंसान पूरी तरह से वैसा नहीं हो सकता जैसा वह तुम्हें समझती हैं, फिर भी तुम्हारी दयालुता बहुत बड़ी रही होगी। अगर कोई अमीर होता, तो यात्रा करना और सर्दियों को ऐसे स्थानों पर बिताना कितना सुखद होता जहाँ सर्दियाँ नहीं पड़तीं। अपनी माँ और बहनों को मेरा प्यार देना। — विश्वास करो, तुम्हारी विश्वासपात्र।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

22 अप्रैल, 1848।

'प्रिय एलेन, - मुझे अभी-अभी आपका छोटा सा पार्सल मिला है, और मैं हम सभी की ओर से इसके अंदर की सामग्री के लिए और आपके पत्र के लिए भी आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिसके आने का मुझे, सच कहूँ तो, थोड़ा बेसब्री से इंतज़ार हो रहा था।'

गृहिणी का यात्रा साथी एक बहुत ही सुविधाजनक वस्तु है - बिलकुल वैसी ही चीज़ जो किसी के लिए एकदम उपयुक्त हो, और जिसे बनाने की हिम्मत या मेहनत मुझमें कभी नहीं होगी। मैं इसे घर से बाहर जाने के मौकों के लिए रखूंगी, इससे मुझे बहुत सारी परेशानियों से मुक्ति मिलेगी। इसके विभिन्न खानों और उनमें रखी चीज़ों को इतनी कुशलता से व्यवस्थित करने में ज़रूर कुछ सोच-विचार की आवश्यकता रही

होगी। मैं तो बिल्कुल भूल ही गई थी, जब तक कि आपके पत्र ने मुझे याद नहीं दिलाया कि आज आपका और मेरा जन्मदिन है। अब मैं बत्तीस वर्ष की हो गई हूँ। जवानी चली गई - चली गई - और कभी वापस नहीं आएगी; इसमें कुछ नहीं किया जा सकता। मैं कामना करती हूँ कि आप अपने जन्मदिन की कई सालगिरह मनाएँ और बढ़ती उम्र के साथ-साथ खुशियाँ भी बढ़ती जाएँ। मुझे लगता है कि दुख कभी न कभी हर किसी के जीवन में आता है, और जो लोग जवानी में इसका स्वाद मुश्किल से चखते हैं, उन्हें अक्सर परलोक में अधिक कड़वा और भरा हुआ प्याला पीना पड़ता है; जबकि, जो लोग जीवन के अंतिम क्षणों को जल्दी ही पी लेते हैं, जो शराब से पहले तलछट पी लेते हैं, वे स्वाभाविक रूप से एक शुद्ध और अधिक सुखद पेय की उम्मीद कर सकते हैं। कम से कम, कोई यही आशा कर सकता है। आपकी गवर्नेंस बनने की योजना सुनकर पहले तो मुझे थोड़ा दुख हुआ, लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह सोचना बेवकूफी थी। आप सही कर रही हैं, भले ही इससे आपको ज्यादा फायदा न हो। यह प्रयास आपके लिए अच्छा ही होगा; आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाने पर कभी पछतावा नहीं होता; इससे तो स्वतंत्रता में बहुत बड़ा लाभ मिलता है।

अपनी माँ और बहनों को मेरा प्यार देना। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

24 मई, 1848।

प्रिय एलेन, मैं सबसे पहले यह कहना चाहूँगा कि आपके पिछले पत्र का उत्तर दिए बिना इतना समय बीत जाने पर आपको नाराज़ होने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि आपने भी कई बार मुझे इससे भी ज़्यादा इंतज़ार करवाया है; और यह विनम्रतापूर्ण बात कहकर, जिससे आप कोई शिकायत नहीं करेंगी, मैं यह कहना चाहूँगा कि मुझे बहुत शर्म आती है जब आपको एक लंबा और बेहद रोचक पत्र मिलता है, जिसमें आपकी पसंद के विवरण होते हैं, और आप उसे स्वार्थी आनंद से पढ़ती हैं और अपने पत्र लिखने वाले को धन्यवाद देने की शिष्टाचार तक नहीं दिखातीं, और यह भी नहीं बतातीं कि आपको वह कहानी कितनी पसंद आई। मुझे आपके पिछले पत्र की कहानी बहुत पसंद आई; बेकर परिवार के बारे में जो विशेष वर्णन था, वह अनमोल था; न केवल उनके जैसा, बल्कि उनके पूरे वर्ग के लोगों जैसा - सम्माननीय, नेक इरादे वाले लोग, लेकिन गरिमा का वह छोटा सा दिखावा, निरर्थक

औपचारिकताओं के प्रति वह छोटी सी ईर्ष्या, जो ऐसे लोगों के लिए दूसरा धर्म बन गई है। उनके बीच आपकी स्थिति निंदनीय थी। जिस धैर्य से आपने इसे सहन किया, उसकी मैं प्रशंसा करता हूँ। उनका इस बात पर नाराज़ होना कि आप उनकी चाची के घर पूरी रात रुकीं, यह तो हद ही है। आकस्मिक ध्यान को महत्व न देना उचित है; उनसे क्षणिक संतुष्टि प्राप्त करना भी पूरी तरह से न्यायसंगत है, क्योंकि वे यह साबित करते हैं कि उनका उद्देश्य प्रसन्न करना है। उन्हें क्षणभंगुर ही रहने दें—एक घंटे के लिए, और उनके चले जाने पर पछतावा न हो।

मुझे जल्द ही फिर से लिखना और— यकीन मानो, तुम्हारा विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

3 अगस्त, 1849।

प्रिय एलेन, मुझे फर सुरक्षित मिल गए हैं। मुझे सेबल फर बहुत पसंद आए, और मैं उन्हें रख लूंगी; और गिलहरी को भी, जैसा कि तुमने समझदारी से सुझाव दिया था, 'बचाने के लिए' रख लूंगी। मुझे उम्मीद है कि यह पीतल के पोकर को बचाने के लिए स्टील के पोकर को बचाने जैसा नहीं है। मैं मैरी का पत्र लौटा रही हूँ। यह जीवन की किताब का एक और पन्ना है, और नीचे लिखा है "फिनिस" - शोकपूर्ण शब्द। मैकाले का इतिहास मुझे केवल उधार दिया गया था - लंदन से मेरे पास जितनी भी किताबें हैं, मैं उन्हें केवल उधार ही लेती हूँ, सिवाय कुछ विशेष मामलों के, जहाँ लेखक की इच्छा हो कि मैं उनकी रचना को अपने पास रखूँ।

क्या आपको लगता है कि कुछ हफ्तों में आपके लिए मुझसे मिलने आना संभव होगा? मैं बस अपने काम के बोझ से मुक्त होने का इंतजार कर रही हूँ ताकि आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूँ। हमारे घर पर आप जितना चाहें उतना पढ़ सकते हैं।

पिछले दो-तीन दिनों से मेरी सेहत काफी बेहतर है, सीने में जकड़न या जलन बिल्कुल नहीं है। सभी को प्यार। अलविदा, प्यारी नेल।

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

23 अगस्त, 1849।

प्रिय एलेन, पापा की तबीयत पिछले कुछ दिनों से बिल्कुल ठीक नहीं है—उन्हें

फिर से ब्रोंकाइटिस हो गया है। मैं कुछ दिनों से उनके बारे में बहुत चिंतित थी, सच कहूँ तो मेरी हालत इतनी खराब थी कि मैं तुम्हें बता भी नहीं सकती। जो कुछ हुआ है उसके बाद, बीमारी का कोई भी संकेत देखकर डर लगता है, और जब पापा को कुछ भी तकलीफ होती है तो मुझे बहुत दुख होता है कि वे ही मेरे इकलौते, आखिरी रिश्तेदार हैं जो इस दुनिया में मेरे पास हैं। कल और आज वे काफी बेहतर लग रहे हैं, जिसके लिए मैं सचमुच आभारी हूँ।

मैं तो वैसे तो ठीक हूँ, लेकिन मुझे लगातार हल्की सर्दी, गले और सीने में हल्का दर्द महसूस हो रहा है, जिससे मैं लाख कोशिश करने के बावजूद पूरी तरह छुटकारा नहीं पा पा रहा हूँ। क्या आपकी खांसी पूरी तरह ठीक हो गई है? काश यहाँ का वातावरण फिर से स्वास्थ्यकर हो जाए, क्योंकि मुझे लगता है कि यह ठीक नहीं है। यहाँ इंग्लैंड में हैजा बहुत फैला हुआ है।

मैं आपसे मिलना चाहता हूँ।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

16 अगस्त, 1850।

प्रिय नेल, मैं सोमवार (ईश्वर की कृपा से) को एक यात्रा पर जा रहा हूँ, जिसका ख्याल मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा। मैं वेस्टमोर्लैंड के विंडरमेयर जा रहा हूँ, जहाँ मैं सर जे. के. एस. के साथ कुछ दिन बिताऊँगा, जिन्होंने वहाँ शरद ऋतु और सर्दियों के लिए एक घर लिया है। मैंने अनिच्छा से जाने की सहमति दी, मुख्यतः पापा को खुश करने के लिए, जिन्हें मेरे इनकार से बहुत गुस्सा आता; लेकिन मुझे उन्हें छोड़कर जाना अच्छा नहीं लग रहा। मुझे उम्मीद है कि उनकी तबीयत में कोई बदलाव नहीं आया होगा, लेकिन उनकी कमजोरी अभी भी बनी हुई है। बुराई की आशंका करना और हमेशा आशंकित मन से आगे देखना ठीक नहीं है; लेकिन मुझे लगता है कि दुख एक दोधारी तलवार है - यह दोनों तरफ से काटता है: एक हानि की याद दूसरी हानि की आशंका पैदा करती है। प्रिय नेल, थोड़ा व्यायाम करो और सावधान रहो, और - विश्वास करो, तुम्हारा सच्चा,

‘सी. ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

10 मई, 1851।

'प्यारी नेल, - बेचारी छोटी फ्लॉसी! मैंने अभी तक पापा को उसके हाल के बारे में

बताने की हिम्मत नहीं जुटाई है, मुझे यह बहुत दुखद लगता है। खैर, उसकी मृत्यु चाहे जैसे भी हुई हो, उसने एक दयालु मालकिन के साथ सुखमय जीवन बिताया। छोटी अभागी! मुझे डर है कि उसे उसकी योग्यता से कहीं अधिक दया और धैर्य दिखाया गया।'

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 26 जुलाई, 1852।

प्रिय एलेन, आज मैं तुम्हें अपनी इच्छा से नहीं लिखती। हाल ही में मुझे फिर से सिरदर्द सताने लगा है - भारी बिजली का वातावरण मुझे बहुत परेशान कर रहा है, फिर भी अभी मैं पहले की तुलना में कम दुखी हूँ। पापा के बारे में सुनकर मुझे गहरा सदमा लगा। उन्हें अचानक आँख में तीव्र सूजन हो गई। श्री रूडॉक को बुलाया गया; और उनकी जाँच करने के बाद, उन्होंने मुझे दूसरे कमरे में बुलाया और कहा कि पापा की नाड़ी 150 प्रति मिनट की रफ्तार से चल रही थी, मस्तिष्क पर रक्त का अत्यधिक दबाव था, संक्षेप में, लक्षण स्पष्ट रूप से मिर्गी के दौरे के थे।

तुरंत सक्रिय उपाय किए गए। अगले दिन तक नाड़ी घटकर नब्बे हो गई। शुक्र है कि अब उनकी हालत बेहतर है, हालांकि पूरी तरह ठीक नहीं है। आंख में काफी सूजन है। उन्हें अपनी स्थिति का अंदाजा नहीं है। उन्हें यह बताना कि उन्हें पक्षाघात का खतरा था, लगभग उन्हें तुरंत मार डालने जैसा होगा - इससे मस्तिष्क में रक्त का प्रवाह बढ़ जाएगा और शायद मस्तिष्क फट जाए। उन्हें बहुत शांत रखा गया है।

प्रिय नेल, संक्षिप्त पत्र के लिए क्षमा करें। जल्द ही पुनः लिखना। अपने बारे में वह सब कुछ बताना जिससे आपको राहत मिले। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

3 अगस्त, 1852।

प्रिय एलेन, मैं आपको यह पत्र लिख रही हूँ कि पापा अब खतरे से बाहर हैं। उनके स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है, बीच-बीच में उनकी हालत बिगड़ती है, लेकिन मुझे लगता है कि वे धीरे-धीरे ही सही, लेकिन पूरी तरह से ठीक हो रहे हैं। श्री रूडॉक का कहना है कि दौरा बहुत ही गंभीर था; दो दिनों तक आंशिक लकवा रहा, लेकिन तंत्रिका तंत्र में अत्यधिक उत्तेजना के बावजूद उनका दिमाग बिल्कुल ठीक था। एक आँख में अभी भी

सूजन है और पापा कमजोर हैं, लेकिन मांसपेशियों की सारी समस्या दूर हो गई है और नाड़ी नियमित है। पापा की दृष्टि अभी तक बची है, इसके लिए हम अत्यंत आभारी हैं - उन्हें सबसे ज्यादा चिंता इस बात की थी कि कहीं उनकी दृष्टि चली न जाए।

प्रिय एलेन, आपके लिए मेरी शुभकामनाएँ। आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे.

'मेरे सिरदर्द में सुधार हुआ है। मुझे किसी मदद की जरूरत नहीं पड़ी, लेकिन आपके उदार प्रस्तावों के लिए मैं आपका तहे दिल से धन्यवाद करता हूं।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 12 अगस्त, 1852।

प्रिय एलेन, — जब से मैंने तुम्हें आखिरी बार लिखा था, पापा का मिजाज कभी बदलता रहा है। सोमवार बहुत बुरा दिन था, उनका मनोबल बहुत गिर गया था। लेकिन मंगलवार और कल का दिन काफी बेहतर था, और आज तो वे बिल्कुल ठीक लग रहे हैं। बीमारी के दोबारा होने पर जो उदासी छा जाती है, उसे संभालना लगभग सबसे मुश्किल होता है। प्रिय नेल, तुम्हारा साथ देना बहुत दयालुता भरा काम है; लेकिन तुम जहाँ हो वहाँ बिल्कुल शांत रहो; निश्चिंत रहो कि न तो अभी और न ही मौजूदा हालात में मुझे साथ या व्यस्तता की कमी महसूस हो रही है; मेरा समय लगभग भरा हुआ है, और मेरे विचार भी व्यस्त हैं।

श्री रूडॉक अब पूरी तरह से आश्वस्त प्रतीत होते हैं कि फिलहाल कोई खतरा नहीं है; उनका कहना है कि पापा का स्वास्थ्य उत्तम है और वे अभी कई वर्ष और जी सकते हैं। रक्त परिसंचरण में अभी तक पूरी तरह से संतुलन नहीं आया है, लेकिन मुझे विश्वास है कि सिर कलम करने जैसी किसी भी अप्रिय और खतरनाक घटना का खतरा पूरी तरह से टल गया है। मैं आपके अंतिम पत्र की मुख्य बातों पर अधिक टिप्पणी नहीं कर सकता; सलाह देना आवश्यक नहीं है। जहाँ तक मैं समझता हूँ, आप अब तक इन कठिनाइयों का सामना अच्छे और बुद्धिमानी से कर रहे हैं। मैं केवल यही प्रार्थना कर सकता हूँ कि यह संयुक्त शक्ति और धैर्य आप में निरंतर बना रहे। समर्पण, साहस, प्रयास, जब संभव हो - ये वे हथियार प्रतीत होते हैं जिनसे हमें जीवन की लंबी लड़ाई लड़नी है। - आपका विश्वासपात्र

'सी. ब्रोंटे।'

मिस नुसी के लिखे कई अन्य पत्र भी हमें यहाँ छपे पत्रों से कहीं अधिक प्राप्त हुए

हैं—वास्तव में, शार्लोट ब्रोंटे की जीवनी में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। ये पत्र उन बौद्धिक रुचियों से संबंधित नहीं हैं जो डब्ल्यू. एस. विलियम्स को लिखे पत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं और जो निस्संदेह मिस मैरी टेलर को लिखे पत्रों की विशेषता रही होंगी। एक बार जब शार्लोट ने अपनी मित्र से साहित्य के विषय पर बात की, तो उन्होंने कहा, 'मुझे यह पत्र मैरी को लिखना चाहिए था'; लेकिन यह मित्रता अधिकांश बौद्धिक मित्रताओं जितनी ही अनमोल थी, क्योंकि यह आपसी सम्मान और निस्वार्थ समर्पण पर आधारित थी। जैसा कि हम देख चुके हैं, एलेन नुसी ऐनी ब्रोंटे के साथ स्कारबोरो गईं और उनकी मृत्यु शैय्या पर उपस्थित थीं। उन्होंने शार्लोट की शादी में भाग लिया और उनकी समाधि पर शोक व्यक्त किया। चालीस वर्षों तक वे उनकी अथक समर्थक और दृढ़ हिमायती रहीं, अपनी महान मित्र की निंदा का एक भी शब्द सुनना उन्हें कतई पसंद नहीं था, बल्कि उन्हें मिली गौरवशाली पहचान को देखकर उन्हें बेहद खुशी होती थी, जिसका फल उन्हें भरपूर और समृद्ध रूप से प्राप्त हुआ है। यह कि वह अभी भी जीवित हैं और ब्रोंटे बहनों के इतने सारे रोचक गुणों को संरक्षित करने के लिए हमारी श्रद्धापूर्ण कृतज्ञता प्राप्त कर रही हैं, यह उन सभी जगहों पर पूर्ण और हार्दिक बधाई का विषय है जहां जेन आयर और वुथरिंग हाइट्स की लेखिकाओं के नामों को उचित और बुद्धिमानी से सम्मान दिया जाता है।

अध्याय IX: मैरी टेलर

श्रीमती गैस्केल की जीवनी में 'एम---' और शर्ली की जीवनी में 'रोज़ यॉर्क' के रूप में वर्णित मैरी टेलर, ब्रोंटे बहनों के प्रशंसकों के लिए हमेशा एक विशेष रुचि का विषय

रहेंगी। वे प्रचार से दूर रहती थीं और उनके नाम का उल्लेख उनके समूह के अन्य सदस्यों की तुलना में कम ही हुआ है। फिर भी उनका व्यक्तित्व असाधारण रूप से दृढ़ और सशक्त था। उन्होंने 'उद्देश्यपूर्ण' दो पुस्तकें लिखीं और जैसा कि हम आगे देखेंगे, उन्होंने अपने जीवन में अपनी शिक्षाओं को सशक्त रूप से साकार किया। यह याद किया जाएगा कि शार्लोट ब्रोंटे, एलेन नुसे और मैरी टेलर की पहली मुलाकात रो हेड स्कूल में हुई थी, जब शार्लोट और मैरी पंद्रह वर्ष की थीं और उनकी सहेली लगभग चौदह वर्ष की थीं। यहाँ मिस नुसे के विचार दिए गए हैं—

वह सुंदर और मासूम सी दिखती थी, लाल रंग की छोटी आस्तीन और कम गले वाली फ्रॉक पहने हुए, जैसा कि उस समय की लड़कियाँ पहनती थीं। मिस वूलर बाद के वर्षों में कहा करती थीं कि जब मैरी उनकी छात्रा बनकर उनके पास आई, तो उन्हें लगा कि वह इतनी सुंदर है कि जी ही नहीं सकती। वह स्कूल में ज्यादा बोलती नहीं थी, लेकिन मेहनती थी और हमेशा पढ़ाई के लिए तैयार रहती थी। वह शार्लोट ब्रोंटे और लेखिका के साथ कक्षा में हमेशा सबसे आगे रहती थी; शायद ही कभी कोई बदलाव होता था, और अगर होता भी था तो सिर्फ तीनों के साथ - एक ही बार में। शार्लोट और वह कुछ समय के लिए बहुत अच्छी दोस्त थीं, लेकिन हम दोनों में से किसी ने भी मुझसे दूरी नहीं बनाई, और शार्लोट को कभी ठीक से समझ नहीं आया कि मैरी से दूरियाँ कैसे पैदा हुईं, लेकिन यह दूरियाँ लंबे समय तक बनी रहीं। फिर एक समय ऐसा आया कि शार्लोट और मैरी दोनों ही पढ़ाई में इतनी निपुण हो गईं कि उनके लिए सीखने के लिए कुछ बचा ही नहीं था, और मिस वूलर ने उन्हें ब्लेयर की 'बेल्स लेटर्स' याद करने के लिए दी। हम सब उनकी पढ़ाई पर हँसते थे। शार्लेट ने हार नहीं मानी, लेकिन मैरी ने अपना अलग रास्ता अपनाया, साफ इनकार कर दिया और अवज्ञा की सजा भुगती; स्कूल छोड़ने से पहले लगभग एक महीने तक उसे रात का खाना नहीं खाना पड़ा। चांदनी रात में हम उसे हमेशा खिड़की के पास रखी दराजों वाली अलमारी पर चित्र बनाते हुए पाते थे, वह बेहद खुश और प्रसन्न रहती थी। उसका विद्रोह कभी खुलकर नहीं हुआ। वह हमेशा शांत स्वभाव की थी। इसके विपरीत, उसकी बहन मार्था मुखर थी, वह मिस वूलर को आमने-सामने इतना चुनौती देती थी कि कभी-कभी उसे कान पर एक घूंसा पड़ जाता था, जिसे शायद ही कोई संत रोक पाता। फिर मार्था कान पर घूंसा पड़ने के खतरे के बारे में विस्तार से बताती, मिस वूलर के एक आदरणीय भाई का हवाला देते हुए। स्कूल के साथियों के बीच

मार्था को "मिस बॉइस्टेरस" कहा जाता था, लेकिन वह हमेशा सबकी चहेती थी, क्योंकि उसका व्यवहार इतना तीखा और आकर्षक था। वह बिल्कुल भी सुंदर नहीं थी, बल्कि उससे कहीं बढ़कर थी - बदलाव और विविधता से भरपूर, बेबाक, जीवंत और मौलिक, अपने हंसमुख स्वभाव और स्नेह से लोगों को हंसाती थी। वह अपने पिता की लाडली थी। उन्हें उसका गाना सुनना बहुत पसंद था और वे उसे प्यार से "पैटी बच्ची" कहकर पियानो बजाने के लिए बुलाते थे।

मैरी में अपनी बहन जैसी सहज चंचलता कभी नहीं थी, लेकिन वह उन खेलों में बहुत सक्रिय रहती थी जो उसके दिमाग को व्यस्त रखते थे। उसका संगीत बहुत अच्छा था, लेकिन अभ्यास और लगन से निखरा हुआ था। मैरी और मार्था दोनों को ही कोई भी छल-कपट नापसंद था; उनमें दूसरों के प्रति कोई खास स्वाभिमान नहीं था, लेकिन वे जीवन की घटनाओं को शांत, समझदार और दूरदर्शी तरीके से स्वीकार करती थीं। वे अन्य विद्यार्थियों की तरह अच्छे कपड़े नहीं पहनती थीं, क्योंकि उस समय उनके घर में मितव्ययिता का नियम था। लड़कियों को अपनी माँ के आदेश पर नए दस्तानों को पहनने से पहले उन पर सिलाई करनी पड़ती थी ताकि वे लंबे समय तक चल सकें। उनके गहरे नीले कपड़े के कोट छोटे होने पर भी पहने जाते थे, और काले बीवर के बोनट सादे ढंग से सजे होते थे, मानो वे कोई फैशनेबल पोशाक हों। श्री टेलर जिले में सेना के कपड़े बनाने के एकाधिकार के साथ-साथ बैंकर भी थे। उन्हें नुकसान हुआ और उन्होंने बैंकिंग छोड़ दी। उन्होंने सभी लेनदारों का भुगतान करने का निश्चय किया और अपने जीवनकाल में यथासंभव इसे पूरा किया, यह इच्छा रखते हुए कि उनके पुत्र शेष कार्य को पूरा करें, जिसे उनके दो पुत्रों - शर्ली के मार्क और मार्टिन - ने अपने जीवनकाल में ही पूरा किया, जैसा कि समझा जाता है।

अब आइए शार्लोट द्वारा शर्ली में दिए गए विवरण को पढ़ें, और मुझे लगता है कि इससे हमें बहनों का काफी हद तक सही आकलन मिल जाएगा।

अगले दो लड़कियां हैं, रोज़ और जेसी; दोनों अब अपने पिता की गोद में बैठी हैं; वे अपनी माँ के पास शायद ही कभी जाती हैं, सिवाय तब जब ऐसा करना मजबूरी हो। बड़ी रोज़ बारह साल की है; वह अपने पिता जैसी दिखती है - पूरे समूह में सबसे ज़्यादा उन्हीं जैसी - लेकिन उसका चेहरा हाथीदांत में उकेरा हुआ पत्थर जैसा है; रंग और रेखाएँ सब कुछ कोमल हैं। यॉर्क का चेहरा कठोर है; उसकी बेटी का चेहरा कठोर नहीं है, न ही बहुत सुंदर है; यह सरल है - चेहरे पर मासूमियत है; गोल गाल खिले हुए

हैं; जहाँ तक उसकी धूसर आँखों की बात है, वे मासूमियत से अलग हैं - उनमें एक गंभीर आत्मा झलकती है - अभी एक युवा आत्मा है, लेकिन अगर शरीर साथ दे तो परिपक्व हो जाएगी; और न तो पिता और न ही माता की आत्मा इसकी तुलना में कुछ और है। दोनों के सार को ग्रहण करते हुए, यह एक दिन दोनों से बेहतर होगी - अधिक मजबूत, अधिक पवित्र, अधिक महत्वाकांक्षी। रोज़ अब एक शांत, और कभी-कभी जिद्दी लड़की है; उसकी माँ उसे अपने जैसी ही महिला बनाना चाहती है - एक ऐसी महिला जो अंधकारमय और नीरस कर्तव्यों को निभाए; रोज़ का मन विचारों से भरा हुआ है, जिनमें उसकी माँ से अनसुने विचार भी समाहित हैं। इन विचारों को कुचला जाना और दबाया जाना उसके लिए अक्सर पीड़ादायक होता है। उसने अभी तक विद्रोह नहीं किया है; लेकिन अगर उसे बहुत मजबूर किया गया, तो वह एक दिन विद्रोह कर देगी, और फिर वह हमेशा के लिए विद्रोह होगा। रोज़ अपने पिता से प्रेम करती है; उसके पिता उस पर कठोर शासन नहीं करते; वे उसके प्रति दयालु हैं। कभी-कभी उन्हें डर लगता है कि वह जीवित नहीं रहेगी, क्योंकि उसकी निगाहों से कभी-कभी जो बुद्धि की चिंगारी चमकती है और उसकी वाणी में जो चमक आती है, वह बहुत तेज है। इस विचार से वे अक्सर उसके प्रति दुखी और संवेदनशील हो जाते हैं।

उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं है कि नन्ही जेसी कम उम्र में ही मर जाएगी। वह इतनी हंसमुख और बातूनी है, चंचल है - आज भी उतनी ही अनोखी; उकसाने पर भावुक हो जाती है, लेकिन दुलार करने पर बेहद स्नेहशील; कभी कोमल तो कभी चंचल; सख्त होते हुए भी उदार; निडर - उदाहरण के लिए, अपनी माँ से, जिसके तर्कहीन रूप से कठोर और सख्त नियमों का उसने अक्सर उल्लंघन किया है - फिर भी मदद करने वाले किसी पर भी निर्भर रहती है। जेसी, अपने छोटे से प्यारे चेहरे, आकर्षक बातों और मनमोहक स्वभाव के साथ, लाडली बनने के लिए ही बनी है; और वह अपने पिता की लाडली है भी।

मैरी टेलर को उनके दोस्त 'पैग' कहकर बुलाते थे, और उनके बारे में मुझे जो पहला महत्वपूर्ण संदर्भ मिलता है, वह शार्लोट द्वारा एलेन नुसे को लिखे गए एक पत्र में मिलता है, जब वह सत्रह वर्ष की थीं।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 20 जून, 1833।

प्रिय एलेन, मुझे पता है कि तुम बहुत नाराज़ होगी क्योंकि मैंने तुम्हें पहले नहीं

लिखा; इस स्पष्ट लापरवाही का कारण, या यूँ कहूँ कि मेरी मंशा, यह थी कि मैंने तुम्हें तब तक न लिखने का निश्चय किया था जब तक मैं तुमसे तुम्हारे लंबे समय से प्रतीक्षित आगमन का अनुरोध न कर लूँ। चाची को लगा कि इसे गर्मियों के मध्य तक टालना बेहतर होगा, क्योंकि हमारे पहाड़ों में सर्दी और यहाँ तक कि बसंत का मौसम भी बहुत ठंडा और सर्द होता है। पापा चाहते हैं कि मैं तुम्हारी माँ को उनका प्रणाम कहूँ और यह भी कि अगर वह हमें हॉवर्थ में कुछ हफ्तों के लिए तुम्हारे साथ रहने की अनुमति दें तो वे बहुत आभारी होंगे। मैं तुम्हें अपनी सुविधानुसार कोई भी दिन चुनने की छूट देता हूँ, लेकिन सुबह का समय होना चाहिए। मुझे कल पैग टेलर का पत्र मिला; वह मेरे द्वारा उनके पिछले पत्र का तुरंत उत्तर न देने पर बहुत नाराज़ थीं। हालाँकि, मैं तुरंत बैठ गया और बहुत ही विनम्र उत्तर लिखा, ईमानदारी से अपनी गलतियों को स्वीकार किया और क्षमा मांगी; मुझे आशा है कि यह सफल रहा होगा। क्या आपको उस कष्टदायी, हालांकि (यह जानकर खुशी हुई कि आमतौर पर जानलेवा नहीं) बीमारी, इन्फ्लूएंजा से बहुत कष्ट हुआ है? हम अभी तक इससे बचे हुए हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि हम कब तक इससे बच पाएंगे। आपके आखिरी पत्र से आपकी मनस्थिति का पता चला, जिससे काफी उम्मीदें जगीं। इसे पढ़ते हुए, मैं यह कामना किए बिना नहीं रह सकी कि काश मेरी भावनाएँ भी आपकी भावनाओं से मिलती-जुलती होतीं; लेकिन दुर्भाग्य से, मेरे मन में आने वाले सभी अच्छे विचार, उनके अस्तित्व को जानने से पहले ही लगभग गायब हो जाते हैं; मेरे द्वारा लिया गया हर सही संकल्प इतना क्षणभंगुर, इतना नाजुक और इतनी आसानी से टूट जाने वाला होता है कि कभी-कभी मुझे डर लगता है कि मैं कभी भी वह नहीं बन पाऊंगी जो मुझे बनना चाहिए। पूरी उम्मीद है कि आपके साथ ऐसा न हो, कि आप अंत तक दृढ़ रहें, - मैं, प्रिय एलेन, आपकी सदा वफादार दोस्त बनी रहती हूँ।

'शार्लोट ब्रोंटे।'

अगले पत्र में श्री टेलर की मृत्यु का उल्लेख है। यह बताना शायद ही आवश्यक हो कि श्री टेलर वही श्री यॉर्क हैं जो ब्रायर्मेन्स में रहते थे और जिनका ज़िक्र शर्ली में प्रमुखता से किया गया है। मैंने गोमरसाल में मुख्य सड़क के पास स्थित उस भव्य लाल ईंटों वाले मकान का दौरा किया है, लेकिन ब्रोंटे परिवार के इलाके का वर्णन इस पुस्तक के दायरे में नहीं आता।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

3 जनवरी, 1841।

मेरी प्यारी एलेन, तुम्हारे पत्र में यह खबर सुनकर मुझे कोई हैरानी नहीं हुई, बल्कि मुझे लगा कि यह बदलाव श्री टेलर और उनके परिवार के लिए राहत की बात होगी। मृत्यु का दुख एक साल पहले ही टल गया था, जब पहली बार पता चला था कि उनकी बीमारी का अंत निश्चित है; तब से लेकर अब तक अनिश्चितता का माहौल बना रहा। अब यह अनिश्चितता भी खत्म हो गई है, और वर्तमान निश्चितता, चाहे कितनी भी दुखद क्यों न हो, पहले के संदेह से बेहतर है। उनकी मृत्यु का क्या परिणाम होगा, यह एक अलग सवाल है; जहाँ तक मेरी बात है, मैं परिवार के बिखरने और अलग-अलग हो जाने की आशंका कर रही हूँ, शायद तुरंत नहीं, लेकिन एक-दो साल के भीतर। यह सच है कि कुछ कारण ऐसे भी आ सकते हैं जो उन्हें कुछ समय और साथ रखें, लेकिन वे चंचल और सक्रिय स्वभाव के हैं, और हमेशा बंधे नहीं रह सकते। अकेले मैरी में ही इतनी ऊर्जा और शक्ति है जितनी बिर्स्टॉल और हॉवर्थ के संयुक्त परगनों में मौजूद किसी भी दस पुरुषों में भी नहीं होगी। उनके जैसे चरित्र को सामान्य सीमाओं में बांधना व्यर्थ है - वह उन्हें पार कर जाएंगी। मुझे नैतिक रूप से पूरा यकीन है कि मैरी अपनी खुद की उपलब्धियां स्थापित करेगी, और बाकी लोग भी ऐसा ही करेंगे।

'सी. ब्रोंटे।'

अपने पिता की मृत्यु के तुरंत बाद मैरी टेलर ने न्यूजीलैंड की ओर रुख किया, जहां उनके दोस्त थे, लेकिन इस विचार पर कुछ भी होने से पहले दो साल बीत गए।

मिस एमिली जे. ब्रोंटे को

'अपरवुड हाउस, 2 अप्रैल, 1841।

प्रिय ई. जे., हमेशा की तरह आपका पिछला पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। इसके लिए और साथ में भेजे गए पत्र के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ, हालांकि यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है - आपको मुझे वे पैकेट नहीं भेजने चाहिए थे। कल मुझे ऐनी का पत्र मिला; उसने कहा कि वह ठीक है। मुझे उम्मीद है कि वह बिल्कुल सच कह रही है। मैंने कुछ दिन पहले ऐनी और ब्रैनवेल को पत्र लिखा था। ब्रैनवेल से अभी तक कोई खबर नहीं मिली है। उम्मीद है कि दूसरे स्टेशन पर उसका स्थानांतरण उसके लिए अच्छा साबित होगा। जैसा कि आपने कहा, सब कुछ ठीक चल रहा है।

मैंने हिम्मत जुटाकर श्रीमती व्हाइट से एक दिन की छुट्टी मांगी ताकि मैं बिर्स्टॉल जाकर एलेन नुसी से मिल सकूं, जिन्होंने मेरे लिए एक घोड़ागाड़ी भेजने की पेशकश

की है। मेरी विनती मान ली गई, लेकिन बहुत ही ठंडे और धीमी गति से। हालांकि, मैंने अपनी बात पर बड़े ही अनुकरणीय और उल्लेखनीय ढंग से अडिग रही। मुझे उम्मीद है कि मैं अगले शनिवार को जा पाऊंगी। गोमरसाल में हालात बहुत ही अजीबोगरीब हैं। मैरी टेलर और वारिंग ने एक अनोखा फैसला लिया है, लेकिन मुझे लगता है कि इन अजीब परिस्थितियों में यह उचित है, हालांकि पहली बार में यह बेहद अटपटा लगता है। वे देश छोड़कर पलायन करने जा रहे हैं - पूरी तरह से देश छोड़ने जा रहे हैं। अगर वे अपना इरादा नहीं बदलते हैं तो उनका गंतव्य न्यूजीलैंड के उत्तरी द्वीप में पोर्ट निकोलसन है!!! मैरी ने ठान लिया है कि वह न तो गवर्नेस बनेगी, न शिक्षिका, न ही टोपी बनाने वाली, न ही नौकरानी। उसे इंग्लैंड में अपनी पसंद का कोई रोजगार नहीं दिख रहा है, इसलिए वह इसे छोड़ रही है। मैंने उसे सलाह दी थी कि वह पहले फ्रांस जाए और वहाँ एक साल रहे, इससे पहले कि वह न्यूजीलैंड जाने की इस अजीबोगरीब और असंभावित योजना पर फैसला करे, लेकिन वह अपने फैसले पर अड़ी हुई है। मैं उसके और उसके भाइयों के इस विषय पर क्या विचार हैं, या पोर्ट निकोलसन के बारे में उनकी जानकारी कितनी है, यह पूरी तरह से नहीं समझ पा रहा हूँ, इसलिए यह कहना मुश्किल है कि यह एक तर्कसंगत कदम है या सरासर पागलपन। पापा, आंटी, टैबी आदि को प्यार सहित - अलविदा।

'सी. बी.

नोट: मैं बिल्कुल ठीक हूँ; आशा है आप भी ठीक होंगे। जल्द ही फिर से लिखना।

इसके कुछ समय बाद ही मैरी ब्रुसेल्स की लंबी यात्रा पर गईं, जो कि जैसा कि हम देख चुके हैं, शार्लेट और एमिली के पेंशनैट हेगर में बसने का प्रत्यक्ष कारण था। ब्रुसेल्स में मार्था टेलर को एक कब्र मिली। यह उनका एक पत्र है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए।

ब्रुसेल्स, 9 सितंबर, 1841।

'मेरी प्यारी एलेन, मुझे मैरी से तुम्हारा पत्र मिला, और तुमने कहा कि मुझे लिखना है जबकि मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं है। मेरी बहन तुम्हें मेरे बारे में सब कुछ बताएगी, क्योंकि उसके पास मुझसे ज्यादा लिखने का समय है।'

मैरी और जॉन के मेरे साथ रहने के दौरान, हम लीज और स्पा गए, जहाँ हम आठ दिन रुके। यात्रा के दौरान मुझे फ्रेंच का अपना थोड़ा-बहुत ज्ञान बहुत काम आया। अब जब जॉन और मैरी जा रहे हैं, तो मैं फिर से पूरी लगन से काम शुरू करने जा रही हूँ।

मेरा इरादा सीधे जर्मन सीखना शुरू करने का है। मैं और भी कुछ लिखना चाहती थी, लेकिन मैरी की कलम नहीं चल रही; आपको उसे इसके लिए डांटना चाहिए और उससे कहना चाहिए कि वह आपको मेरी गतिविधियों का विस्तृत विवरण लिखे। आपको मुझे कभी-कभी पत्र लिखना चाहिए। जॉर्ज डिक्सन सितंबर के आखिरी सप्ताह में यहाँ आ रहे हैं, और आपको मेरी ओर से मैरी को एक पत्र भेजना है, जिसे वह आगे भेज दें। अलविदा। आपकी यात्रा मंगलमय हो।

'मार्था टेलर।'

जब शार्लोट ब्रुसेल्स में दूसरी बार रुक रही थी, तभी उसे मैरी के अपने भाई वारिंग के साथ न्यूजीलैंड जाने के दृढ़ संकल्प के बारे में पता चला, ताकि वह वहां किसी भी उचित तरीके से अपनी आजीविका कमा सके।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

ब्रुसेल्स, 1 अप्रैल, 1843।

प्रिय एलेन, तुम्हारा पिछला पत्र प्रशंसा के पात्र हैं - वह लंबा और रोचक था; मुझे ऐसा ही एक और पत्र शीघ्र भेजो, हो सके तो और भी लंबा। तुमने मैरी टेलर के दृढ़ और साहसी कार्यों के बारे में सुना होगा। उनके सार्वजनिक पत्रों से तुम्हें सारी जानकारी मिल गई होगी - मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं बचा है सिवाय शायद इस पर अपनी राय व्यक्त करने के। मैंने इस मामले के हर पहलू पर विचार किया है और वास्तव में मैं इसे बहुत तर्कसंगत ही मानती हूँ। ध्यान रहे, मैंने यह राय तुरंत नहीं बनाई, बल्कि इस पर अंतिम निर्णय लेने में कई दिन लगे।

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

रविवार शाम, 1 जून, 1845।

प्रिय एलेन, — शायद आपको पता होगा कि मैरी टेलर का एक और पत्र मिला है। हालांकि, हो सकता है कि घर से बाहर होने के कारण आपने इसे न देखा हो, इसलिए मैं आपको इसके विषयवस्तु का संक्षिप्त विवरण दे रही हूँ। यह भूमध्य रेखा के लगभग 4° उत्तर में लिखा गया था। पत्र के पहले भाग में सैंटियागो में उनके उतरने का विवरण था। उस समय उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था और वे बेहद खुश लग रही थीं। प्रस्थान के समय हवाएँ विपरीत दिशा में चल रही थीं, लेकिन उसके बाद उनकी यात्रा सफल रही। पत्र के दूसरे भाग में उन्होंने अत्यधिक गर्मी की शिकायत की है

और कहा है कि वे मुख्य रूप से संतरे खाकर जीवित हैं; फिर भी वे स्वस्थ थीं और जहाज पर सवार किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में उन्हें सिरदर्द और अन्य बीमारियाँ कम थीं। इस पत्र के मिलने से उनके सभी मित्रों को चिंता का बोझ कम हुआ होगा। फ्रांसीसी समाचार पत्रों के बारे में आपकी बात से मैं थोड़ी असहज हूँ — क्या आपका मतलब यह है कि आपको कोई समाचार पत्र नहीं मिला? मैंने उन्हें नियमित रूप से भेजा है। एमिली और मैं उन्हें आमतौर पर तीन दिन, कभी-कभी केवल दो दिन, अपने पास रखते हैं और फिर आपको भेज देते हैं। आपके भेजे कार्ड और अखबार से मुझे पता चला कि हेनरी की आखिरकार शादी हो गई है। दुल्हन की सहेली बनकर आपको कैसा लगा? और आपकी नई बहन और उसका परिवार आपको कैसा लगा? कृपया मुझे जल्द से जल्द पत्र लिखें और मुझे सब कुछ विस्तार से बताएं।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

मैनचेस्टर, 13 सितंबर, 1846।

प्रिय एलेन, पापा को लगता है कि उनकी सेहत में सुधार कुछ धीमा है, लेकिन डॉक्टर का कहना है कि वे बहुत अच्छे से ठीक हो रहे हैं। उन्हें बहुत कमजोरी और आंख में दर्द की शिकायत है, लेकिन मुझे लगता है कि यह कुछ समय तक तो रहेगा ही। उन्हें अभी भी अंधेरे में रखा जाता है, लेकिन अब वे दिन का अधिकांश समय बैठे रहते हैं, और कमरे में थोड़ी सी आग जलाने की अनुमति है, जिसकी रोशनी से उन्हें सावधानीपूर्वक बचाया जाता है।

इस समय तक आपको मैरी के पत्र मिल गए होंगे; वे बेहद रोचक हैं, और वह अपने आदर्श में है क्योंकि वह ऐसी जगह पर है जहाँ उसे एक कठिन कार्य करना है, एक महत्वपूर्ण सुधार लाना है, एक कमजोर पात्र को मजबूत करना है। आपने पूछा कि क्या मुझे यहाँ कोई आनंद मिला; सच कहूँ तो, मैं यह नहीं कह सकती कि मुझे मिला, और मैं घर जाने के लिए तरस रही हूँ, हालाँकि, दुर्भाग्य से, घर अब पूर्ण विश्राम का स्थान नहीं है। यह सोचकर दुख होता है कि कैसे एक निरंतर प्रेत, या बल्कि दो प्रेतों - पाप और पीड़ा - ने घर को अशांत कर रखा है; वे दिन की प्रसन्नता को धूमिल कर देते हैं और शाम के सुकून को भंग कर देते हैं।

ब्रुकरॉयड में सभी को मेरा प्यार देना, और यकीन मानिए, आपका विश्वासपात्र।

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

5 जून, 1847।

प्रिय एलेन, मैं तुम्हें मैरी टेलर का पत्र लौटा रही हूँ; इसे पढ़कर मुझे थोड़ा दुख हुआ, क्योंकि मुझे लगता है कि वह न्यूजीलैंड में अपने जीवन से पूरी तरह संतुष्ट नहीं है। उसे यह बहुत नीरस लगता है। मुझे लगता है कि वह जितना स्वीकार करती है, उससे कहीं अधिक अपने घर की याद सता रही है। तुम्हारे और मेरे बारे में उसके निराशावादी विचार उसकी मनोदशा को प्रसन्नता से परे दर्शाते हैं। मुझे भी एक पत्र मिला है; उसका लहजा तुम्हारे पत्र जैसा ही है, और उसकी विषयवस्तु भी।

मौसम कितना शानदार रहा! ओह! मुझे सच में बहुत अफ़सोस है कि आप तय समय पर हॉवर्थ नहीं आ सके, ये सुहावने धूप वाले दिन हमारे लिए एकदम सही होते; लेकिन अब क्या कर सकते हैं। अपनी माँ और मर्सी को मेरा ढेर सारा प्यार देना। —आपका विश्वासपात्र

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 26 जून, 1848।

प्रिय एलेन, अगर मुझे आपका पता पता होता तो मैं आपके पिछले पत्र का जवाब बहुत पहले ही दे देता, लेकिन आपने मुझे अपना पता नहीं दिया था, और मैं इस उम्मीद में इंतजार कर रहा था कि शायद आप दोबारा लिखें और अपनी गलती सुधार लें। हालांकि, मेरी यह उम्मीद पूरी नहीं हुई, इसलिए मैंने आखिरकार पत्र को ब्रुकरायड को भेजने का फैसला किया है; कृपया इसका जवाब देते समय मुझे अपना पता जरूर बता देना।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि लंदन में आपका अच्छा स्वागत हुआ और आप अपनी यात्रा के अंत तक सुरक्षित पहुँच गए। "नवीनतम उपन्यास" के बारे में गंभीरता से मेरी राय पूछने की आपकी भोली-भाली बात मुझे हास्यास्पद लगी। हॉवर्थ में हमारी कोई पुस्तकालय सेवा नहीं है, इसलिए "नए उपन्यास" हमारे पास बहुत कम आते हैं, और इसलिए हम उन पर राय देने के योग्य नहीं हैं।

लगभग तीन सप्ताह पहले, मुझे हन्सवर्थ से एक संक्षिप्त पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि श्री जो टेलर और उनके चचेरे भाई हेनरी, एलेन टेलर के कारण श्रीमती हेगर के

स्कूल के संबंध में कुछ पूछताछ करेंगे, और यदि मुझे कोई आपत्ति न हो, तो वे एक-दो दिन में हॉवर्थ आ जाएँगे। मैंने कहा कि यदि वे आना चाहें तो आ सकते हैं। वे आए, उनके साथ ब्रैडफोर्ड की मिस मॉसमैन भी थीं, जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था, केवल कभी-कभार उनके बारे में सुना था। वह बहुत तेज़ बारिश और हवा वाला दिन था; हमें उनके आने की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। मिस मॉसमैन पूरी तरह भीगी हुई थीं, और हमें उनके कपड़े बदलने पड़े, और उन्हें यथासंभव अपने कपड़े पहनाने पड़े। मुझे नहीं पता कि आप उन्हें जानते हैं या नहीं; मुझे वे सहज और काफी मिलनसार लगीं, हालाँकि उनके बाल बहुत लाल हैं। हेनरी टेलर वास्तव में जॉन से बहुत मिलते-जुलते हैं। जो दुबला-पतला लग रहा था; वह अच्छे मूड में था, और मुझे लगता है कि वह काफी खुशमिजाज था। काश आप वहाँ होते। कुछ दिनों से मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए बातचीत जारी रखने में थोड़ी दिक्कत हो रही थी, लेकिन कुल मिलाकर मैंने उम्मीद से बेहतर किया। मुझे खुशी हुई कि मिस मॉसमैन आईं, क्योंकि उन्होंने मदद की। मैरी के बारे में कोई नई बात नहीं बताई गई। पूरे समय कोई भी महत्वपूर्ण बात नहीं हुई; सब बस फालतू की बातें थीं, जिनका सार मुझे अब याद करने में बहुत मुश्किल होगी। चाय के तुरंत बाद वे चले गए। उसके बाद से मैंने उनके बारे में एक शब्द भी नहीं सुना है, लेकिन मुझे लगता है कि वे ठीक-ठाक घर पहुँच गए होंगे। मुझे यह मुलाकात एक अजीब सनक लगती है। मुझे लगता है कि यह पूरी तरह से एक मनमौजी फैसला था, जो शायद जिज्ञासा से प्रेरित था।

जो टेलर ने बताया कि वह ब्रुकरायड में आया था, और ऐनी ने उसे बताया था कि तुम बीमार हो, और ताज़ी हवा लेने के लिए दक्षिण की ओर जा रहे हो।

मुझे उम्मीद है कि आप जल्द ही मुझे फिर से पत्र लिखेंगी और विशेष रूप से अपने स्वास्थ्य और हालचाल के बारे में बताएंगी। मैरी गोरहम को मेरा प्रणाम कहना, क्योंकि मैंने उनसे सुनी-सुनाई बातों के आधार पर उनके प्रति कुछ सम्मान का भाव रखती हूँ, और - प्रिय नेल, विश्वास करो, आपकी विश्वासपात्र।

'सी. ब्रोंटे।'

ऊपर लिखे पत्र में जिस एलेन टेलर का जिक्र है, वह ब्रुसेल्स नहीं गई थीं। इसके बजाय वह न्यूजीलैंड में अपनी चचेरी बहन मैरी के साथ शामिल हो गईं।

मिस शार्लोट ब्रोंटे को

वेलिंगटन, 10 अप्रैल, 1849।

प्रिय शार्लेट, मुझे आपका लंदन यात्रा आदि का विवरण देने वाला एक बहुत ही रोचक पत्र पाकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। मुझे लगता है कि मैंने यह आभार पत्र आपको लिखे अपने पिछले पत्र के अंत में जोड़ा था, लेकिन तब से मुझे यह समझ में आया है कि आप इस छोटी सी दुनिया में एक बहुत ही महत्वपूर्ण हस्ती बनती जा रही हैं, और इसलिए, समझ रही हो? मुझे आपको फिर से लिखना होगा। मैं चाहती हूँ कि आप मुझे न्यूबी के बारे में कुछ बताएँ और यह भी कि असली एलिस बेल का सामना होने पर उस व्यक्ति ने क्या कहा। वैसे, आपका रहस्य जानने के बाद, क्या वह इसे गुप्त रखेगा? और आप श्री बेल के पते पर अपने पत्र कैसे भेजती हैं? अगर मुझे आपसे आधे दिन की भी बात करने का मौका मिले, तो पूरी योजना के बारे में सुनना बहुत दिलचस्प होगा। आप अपने बारे में लोगों को कब बताने का इरादा रखती हैं?

मैं एलेन टेलर के आने की बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ। शायद दो महीने में वो आ जाएँगी। मैंने सोचा था कि एलेन टेलर के लिए मेरे पास जो दर्जनों योजनाएँ हैं, उनमें से कुछ आपको लिखूँ, लेकिन क्योंकि चुनाव उन्हीं पर निर्भर करता है, तो बेहतर है कि मैं इंतज़ार करूँ और आपको बताऊँ कि वो क्या चुनती हैं। दो सबसे व्यावहारिक योजनाएँ हैं स्कूल चलाना और दुकान चलाना। दुकान चलाना ज़ाहिर तौर पर सबसे सेहतमंद है, लेकिन सबसे मुश्किल काम है। मैंने चैम्बर्स के लिए भूकंपों पर एक लेख लिखा है, और (एक साल बाद मुझे इसकी याद मत दिलाना, क्योंकि पत्नी का इरादा है) कुछ और लिखने का इरादा है। मैं और क्या करूँगी, ये मुझे नहीं पता। मुझे लगता है कि लिखने की क्षमता मेरे पास मौजूद खाली समय पर बिल्कुल भी निर्भर नहीं करती, बल्कि मेरे व्यस्त काम पर ज़्यादा निर्भर करती है। मैं अपने उपन्यास पर थोड़ा-थोड़ा लिखती हूँ और अपनी दूसरी किताब के बारे में सोचती हूँ। वो कैसी बनेगी, ये तो भगवान ही जानते हैं। वो न तो भूली जा सकती है और न ही कभी भूली जाएगी। वो मेरी बच्ची है, मेरा लाडला, और मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि वो एक ऐसा अजूबा है जैसा पहले कभी नहीं था। मेरा इरादा है कि जब वो बड़ा हो जाए तो समाज में क्रांति लाए और इतिहास में एक नया युग लाए।

इस बीच मैं क्रोशे से एक कॉलर बना रही हूं।

'हाँ।'

मिस शार्लोट ब्रोंटे को

'वेलिंगटन, न्यूजीलैंड,

‘24 जुलाई, 1849.

प्रिय शार्लेट, — जेन आयर को प्राप्त किए और पढ़े हुए लगभग एक महीना हो गया है। मुझे यह अविश्वसनीय लगा कि आपने सचमुच एक किताब लिखी है। जब मैं इंग्लैंड में था तब ऐसी घटनाएँ नहीं होती थीं। मुझे अब आपके अस्तित्व पर उतना ही विश्वास होने लगा है जितना मिस्टर रोचेस्टर के अस्तित्व पर। विश्वास की स्थिति में मुझे उन दोनों में से किसी पर भी संदेह नहीं है। इसे पढ़ने के बाद मैं माउंट विक्टोरिया की चोटी पर गया और आपको पत्र पहुँचाने के लिए एक जहाज की तलाश करने लगा। वहाँ एक छोटा सा जहाज था जिसमें एक ही मस्तूल था, और एच.एम.एस. फ्लाई भी था, और कुछ नहीं। अगर सिडनी से कोई मवेशी ले जाने वाला जहाज आता तो वह शायद कुछ दिनों में लौट जाता और डाक ले जाता, लेकिन एक महीने से पूर्वी हवा चल रही है और कुछ भी अंदर नहीं आ सकता।

1 अगस्त — हार्लेक्विन जहाज अभी-अभी ओटागो से आया है और हवा का रुख बदलते ही सिंगापुर के लिए रवाना होगा। इसी मार्ग से (जिस मार्ग से मैं स्वयं भी कभी जाना चाहता हूँ) मैं आपको यह पत्र भेज रहा हूँ। आशा है यह आपके लिए उपयोगी होगा। आपके उपन्यास ने मुझे एक कलाकृति के रूप में इतना परिपूर्ण होकर आश्चर्यचकित कर दिया। मुझे कुछ अधिक परिवर्तनशील और अपूर्ण होने की उम्मीद थी। आपने इसे बहुत कुशलता से निखारा है। अगर मैं ऐसा करता तो मैं थक जाता और लगभग दो पन्नों में ही सबको थका देता। आपकी पुस्तक में इस थकान का कोई संकेत नहीं है — आपने इसे अपने तक ही सीमित रखा है, तो आपके पास प्रचुरता रही होगी!

“आप मुझसे इस मायने में बहुत अलग हैं कि आपके पास उपदेश देने के लिए कोई सिद्धांत नहीं है। आपकी रचना से कोई नैतिक सीख निकालना असंभव है। क्या दुनिया आपके लिए इतनी अच्छी रही है कि आप इसकी निरर्थक बातों का विरोध नहीं करते? क्या आपने अपने पहले रेखाचित्रों में कभी व्यंग्य या निंदा नहीं की? जब मैं आपसे मिलूंगा तो आपको खूब डांटूंगा। मैं मिस्टर रिवर्स पर विश्वास नहीं करता। ब्रॉकलहर्स्ट जैसे अच्छे लोग होते ही नहीं। एक मिशनरी या तो रोटी का एक टुकड़ा लेने अपने कार्यालय जाता है, या फिर उत्साह से जाता है, और यह गुण सेंट जॉन के लिए बहुत अच्छा और बहुत बुरा दोनों है। ऐसे आदमी पर विश्वास करना आपकी बेतुकी उदारता है। आपने उच्च वर्ग के पाठकों की कल्पना करके बुद्धिमानी की है।

आप कभी भी किसी बात की व्याख्या या बचाव करने के लिए नहीं रुकते, और न ही इस विचार से परेशान लगते हैं। अगर श्रीमती फेयरफैक्स या कोई अन्य नेक इरादे वाला मूर्ख इसे पढ़ ले तो वह क्या सोचेगी? और फिर भी, आप जानते हैं, दुनिया ऐसे लोगों से बनी है, और इससे भी बदतर लोगों से।” एक बार फिर, आपने तीन खंड कैसे लिख डाले, बिना कुछ दर्जन बेतुके सिद्धांतों के खिलाफ़ युद्ध छेड़े, जिनमें से हर एक को "पाठकों का एक बड़ा और सम्मानित वर्ग" समर्थन देता है? एमिली ने जब वह अजीबोगरीब रचना 'वुथरिंग हाइट्स' लिखी, तो शायद उनके मन में ऐसा ही एक वर्ग था। ऐनी भी बार-बार आम सच्चाइयों का उपदेश देती हैं। उनके मन में तो उससे भी निचला वर्ग रहा है। एमिली ने शायद पुस्तक विक्रेता की सलाह मानी। जहाँ तक आपको मिली कीमत की बात है, वह निश्चित रूप से यहूदी प्रथा के अनुसार थी। लेकिन लोग क्या कर सकते थे? अगर उन्होंने आपसे कीमत तय करने को कहा होता, तो क्या आप खुद जानते हैं कि आपकी रकम में कितने अंक होते? और उन्हें कैसे पता चलता? और अगर उन्हें पता भी होता, तो यही वह ज्ञान है जिससे वे अपनी जीविका चलाते हैं। अगर मैं आपकी जगह होता, तो दो और किताबें बेचने के डर से मैं फिर कभी नहीं लिखता। फिर भी, आप शायद अब किसी और किताब में व्यस्त हैं। मुझे पुराने पत्रों में ऐनी का एक पत्र देखकर हैरानी हुई, जिसमें उन्होंने फॉनब्लैंक द्वारा मुद्रा प्रश्न पर लिखे गए पूरे लेख की एक प्रति भेजी थी! मुझे बेहद अफसोस है कि मैंने सावधानी बरतते हुए आपके पत्र जला दिए, और मैं सभी नाम भूल गया हूँ। क्या वह पत्र अल्बर्ट स्मिथ का था? वे सब आपके बारे में क्या सोचते हैं?

मैं इस किताब का ज़िक्र किसी से नहीं करता और न ही किसी से कोई राय सुनता हूँ। मैं इसे अक्सर उधार देता हूँ क्योंकि यह एक उपन्यास है, और यह बाकी उपन्यासों जितना ही अच्छा है! लोग कहते हैं कि “इसे पढ़कर उन्हें रोना आता है।” वे इतने पढ़े-लिखे नहीं हैं कि कोई राय दे सकें। अगर कभी मुझे किसी ने ऐसी राय दी तो मैं उसे आपके लिए सहेज कर रख दूँगा। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने 100 पन्ने लिख लिए हैं, और हाल ही में 50 और लिखे हैं। तेज़ी से लिखने का कोई फ़ायदा नहीं। मैं इतना निराश हो जाता हूँ कि कुछ कर ही नहीं पाता।

अगर मुझे बारह महीने के लिए पर्याप्त धन मिल जाए, तो मैं भारत होते हुए घर वापस जाऊँगा और अपनी यात्राओं के बारे में लिखूँगा, जिससे मेरे उपन्यास की नींव पड़ेगी। आपके अनुभव से शायद मैं आपसे बेहतर सौदा कर पाऊँ। मुझे अपनी सेहत

की सबसे ज़्यादा चिंता है। ऐसा नहीं कि मैं मर जाऊँगा, बल्कि शायद ऐसी स्थिति में पहुँच जाऊँगा जहाँ मैं न तो पूरी तरह स्वस्थ रहूँगा और न ही पूरी तरह बीमार, जिसमें मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देगा और मैं बहुत दुखी रहूँगा। यहाँ मेरा जीवन अप्रिय नहीं है। पियानो बजाने में मेरी अच्छी पकड़ है और पढ़ाने का थोड़ा-बहुत काम भी है।

अफसोस की बात है कि आप इस दुनिया में नहीं रहते, काश मैं आपको मांस की कीमतों के बारे में बता पाता। क्या आपको पता है, मैंने कुछ दिन पहले 23 पाउंड में छह बछिया खरीदी थीं, और अब इतनी ठंड पड़ गई है कि मुझे लगता है कि उनमें से आधी मर चुकी होंगी। एक आदमी ने 8 पाउंड में बीस भेड़ें खरीदीं, और उनमें से एक को छोड़कर बाकी सब मर चुकी हैं। दूसरे ने 150 भेड़ें खरीदीं और अब उसके पास सिर्फ 40 बची हैं।

मैंने अब आपको वह सब कुछ बता दिया है जो मुझे याद है, सिवाय इसके कि बिल्ली मेज पर है और मैं पढ़ने के लिए एक नई किताब उधार लेने जा रही हूँ - जो आधुनिक यूरोप के दर्शन के सभी सिद्धांतों का विवरण है। हाल ही में मेरी मुलाकात एक अजूबे से हुई, एक ऐसे व्यक्ति से जो सोचता है कि जेन आयर को मिस्टर रिवर्स से शादी करनी चाहिए थी! वह कोई कारण नहीं बताता - ऐसे लोग कभी नहीं बताते।

'मैरी टेलर।'

मिस शार्लोट ब्रोंटे को

वेलिंगटन, न्यूजीलैंड।

प्रिय शार्लेट, मैंने अपना काम शुरू कर दिया है! मैं इससे पूरी तरह से खुश हूँ - मतलब, यह उतना ही सुखद या कम से कम कष्टदायक है जितना कि आप अपनी आजीविका कमाने के लिए किसी काम से उम्मीद कर सकते हैं। इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि आपकी मेहनत का कुछ फल मिलता है, और आपको बिना किसी नतीजे के लगातार काम करने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ता। बाकी, यह बहुत अजीब है। मैं एक आँख का इस्तेमाल करते हुए दूसरी आँख से खुद को देखता रहता हूँ, और कभी-कभी खुद को बहुत अजीब स्थितियों में पाता हूँ। कल मैं तट के किनारे घाटों और कई गोदामों के पास से एक ऐसी गली में गया जहाँ मैं वेलिंगटन में अपने पाँच साल के दौरान कभी नहीं गया था। मैंने पैकेजों से भरी एक लंबी जगह का दरवाजा खोला, जिसके बीच में गलियारे थे, और एक तरफ ऊँची खिड़कियों की एक कतार थी। कमरे के दूसरे छोर पर एक आदमी खिड़की के नीचे एक मेज पर लिख रहा

था। मैं कमरे की पूरी लंबाई में बहुत धीरे-धीरे चला, क्योंकि मैं जिस काम के लिए आया था वह पूरी तरह से मेरे दिमाग से निकल गया था। सौभाग्य से उस आदमी ने मुझे तब तक नहीं सुना जब तक मुझे याद नहीं आ गया। फिर वह उठे, और मैंने उनसे कुछ स्टोन-ब्लू, सॉल्टपीटर, चाय, अचार, नमक आदि माँगे। वे बहुत विनम्र थे। मैंने कुछ चीज़ें खरीदीं और उनका बिल माँग लिया। वे फिर अपनी डेस्क पर चले गए; मैंने पास पड़े कुछ अखबारों पर नज़र डाली। सबसे ऊपर स्मिथ एंड एल्डर का एक सर्कुलर था जिसमें सबसे महत्वपूर्ण नई रचनाओं की सूचनाएँ थीं। पहला और सबसे लंबा सर्कुलर शर्ली को दिया गया था, एक किताब जिसका ज़िक्र मैंने मैनचेस्टर एक्ज़ामिनर में करर बेल द्वारा लिखित के रूप में देखा था। मैं शर्म से लाल हो गया। वह आदमी उठा और नोट को मोड़ दिया। मैंने उनके हाथ से नोट छीन लिया और दरवाजे की ओर चल पड़ा, पहले से भी ज़्यादा अजीब लग रहा था, क्योंकि एक साथी अंदर आ गया था और देख रहा था। क्लर्क ने उन्हें भेजने के बारे में कुछ कहा, और मैंने भी कुछ कहा - मुझे उम्मीद है कि वह बहुत मूर्खतापूर्ण नहीं था - और वहाँ से चला गया।

मैंने शर्ली के कुछ अंश देखे हैं जिनमें आपने काम करने वाली महिलाओं की बात की है। और इस पहले कर्तव्य, इस बड़ी आवश्यकता के बारे में आप सोचते हैं कि कुछ महिलाएं इसे तभी पूरा कर सकती हैं जब वे शादी छोड़ दें और दूसरे लिंग के लिए खुद को बहुत अप्रिय न बनाएं। आप कायर और गद्दार हैं। काम करने वाली महिला केवल इसी कारण से काम न करने वाली महिला से बेहतर है; और जो महिला अमीर नहीं है और अभी तक पैसा नहीं कमाती और कमाना भी नहीं चाहती, वह एक बड़ी गलती, लगभग एक अपराध की दोषी है - कर्तव्य की अवहेलना जो तेजी से और लगभग निश्चित रूप से हर तरह के पतन की ओर ले जाती है। श्रमिकों के लिए उनकी विशेष परिस्थितियों, कम संख्या या विलक्षण स्वभाव के आधार पर सहिष्णुता की वकालत करना आपका बहुत गलत है। काम या पतन उन सभी का भाग्य है जो धनवान परिवारों में पैदा हुए बहुत कम लोगों को छोड़कर बाकी सभी के लिए है।

एलेन मेरे साथ है, या मैं उसके साथ। मैं नहीं बता सकता कि हमारी दुकान कैसी चलेगी, लेकिन मैं पहले की तरह ही आशावादी हूँ। इस बीच, हम निश्चित रूप से खाली बैठने की तुलना में बेहतर तरीके से अपना मनोरंजन कर रहे हैं। हमें यह अच्छा लगता है, और यही सच है। कॉर्नेलिया के ज़रिए हम अपने रेखाचित्र और फर्न के पत्ते भेजने वाले हैं। आपको उन्हें देखना होगा, और उन्हें समझने के लिए आपको अपनी पूरी

नज़र लगानी पड़ेगी, क्योंकि वे पूरी तरह से अव्यवस्थित हैं। वे सभी वेलिंगटन से दो मील के दायरे में हैं, और उनमें से कुछ मुझे पसंद भी आए हैं - खासकर एलेन द्वारा बनाया गया मेरा रेखाचित्र। पिछले छह महीनों में मैंने पिछले चार वर्षों की तुलना में कहीं अधिक "समाज" देखा है। एलेन मेरे आमंत्रित होने और मेरी बेहतर आर्थिक स्थिति का आधा कारण है। यहाँ कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसका विशेष रूप से उल्लेख किया जा सके। सभी महिलाएँ अज्ञानी और संकीर्ण सोच वाली हैं, और पुरुष स्वार्थी हैं। वे सभ्य और ईमानदार किस्म के हैं, और कुछ बुद्धिमान और सक्षम हैं। श्री वुडवर्ड एकमात्र साहित्यिक व्यक्ति हैं जिन्हें हम जानते हैं, और वे ठीक-ठाक समझदार लगते हैं। यह वही क्लर्क था जिससे मैंने स्टोन-ब्लू रंग खरीदा था। हमारे यहाँ अभी-अभी एक मैकेनिक संस्थान खुला है, और वहाँ हर हफ्ते व्याख्यान होते हैं। लोगों को यह पता लगाने की कोशिश करते देखना मज़ेदार है कि क्या वहाँ जाना फ़ैशनेबल और उचित है या नहीं। किसी तरह लगता है कि यह है। मुझे लगता है कि मैंने आपको यह सब पहले भी बताया है, जिससे पता चलता है कि मेरी खबरें खत्म हो गई हैं। आपका अगला पत्र मुझे अच्छी खबर देगा, पिछली बार से ज़्यादा खुशी देने वाली। आप किसी न किसी तरह अपने एकांत से बाहर निकलेंगे और अपने साथियों में रुचियाँ ढूँढ़ेंगे। क्या आप जानते हैं कि ऐसे लोगों के बीच रहना जिनसे आपकी ज़रा भी रुचि नहीं है, अकेले रहने जैसा है, या उससे भी बदतर? एलेन नुसी ही एकमात्र ऐसी व्यक्ति हैं जिनसे आप बात कर सकते हैं, कम से कम जहाँ तक मुझे पता है। अगर मौका मिले तो उन्हें और मिस वूलर को मेरा प्यार देना। मैं यह पत्र ठीक ऐसी ही रात में लिख रहा हूँ जब आप इसे पढ़ेंगे - बारिश और तूफ़ान, आने वाली सर्दी, और जलती हुई आग। हमारी आग ज़मीन पर है, लकड़ी की, कोई फेंडर या लोहे की नहीं; कोई बात नहीं, हम बहुत आराम से हैं।

'हाँ।'

मिस शार्लोट ब्रोंटे को

वेलिंगटन, न्यूजीलैंड, 3 अप्रैल, 1850।

प्रिय शार्लोट, - ऐनी की मृत्यु और हर चीज़ के प्रति आपकी पूर्ण उदासीनता, यहाँ तक कि आपकी अंतिम पुस्तक की सफलता के प्रति भी, का वर्णन करते हुए आपका पिछला दुख भरा पत्र प्राप्त हुए लगभग एक सप्ताह हो गया है। हालाँकि आपने यह बात सीधे तौर पर नहीं कही है, लेकिन आपके पत्र की शैली से यह स्पष्ट है। मुझे यह

बहुत कठिन लगता है कि आप, जो किसी से भी बेहतर दोस्त बनाने और उन्हें बनाए रखने में सक्षम हैं, अपनी गरीबी के कारण एकांत में रहने के लिए अभिशप्त हैं। धन किसी को भी आपसे अधिक खुशी नहीं दे सकता, क्योंकि कोई भी इसका उपयोग आपसे बेहतर नहीं कर सकता। मेरे लिए, अपनी अति-भोगवादी आदतों के साथ, शायद मैं धन के बिना ही बेहतर हूँ, लेकिन मुझे विश्वास है कि यह आपको महान और उदात्त आनंद देगा। इसलिए लेखन में सफलता के लिए प्रयास करें; आपको इसके लिए उतना ही ध्यान देना चाहिए जितना आप स्वर्ग जाने के लिए देती हैं। हालाँकि अभी आपको नौकरी के लाभ सबसे अच्छे लगते हैं, लेकिन ईश्वर की कृपा से आपको जल्द ही अपनी सफलता से अन्य आनंद भी मिलेंगे। रेलवे के शेयर बढ़ेंगे, आपकी किताबें बिकेंगी, और आप प्रभाव और शक्ति प्राप्त करेंगी; और फिर निश्चित रूप से आपको इसका उपयोग करने के लिए कुछ न कुछ मिल जाएगा जो आपको रुचिकर लगेगा और आपको मेहनत करने के लिए प्रेरित करेगा।

एलेन के आने के बाद से मैं सामाजिक छल-कपट में बुरी तरह उलझ गया हूँ, इससे पहले मैंने कभी भी युवतियों और युवतों की तुलनात्मक संख्या के बारे में नहीं सोचा था। एलेन के लिए, केवल स्त्रीत्व के कारण इतना महत्व पाना बिल्कुल नया अनुभव है। जब उसने अपने समलैंगिक होने की बात सार्वजनिक की, तो उसे लगा कि उसकी प्रतिष्ठा बहुत गिर गई है, लेकिन अब उसे पहले से कहीं बेहतर स्वागत मिल रहा है। और ये लोग शिक्षा में किसी भी तरह से हीन नहीं हैं, हालांकि वे धन में हैं। वे सभ्य और संपन्न लोग हैं: छह किराना व्यापारी, एक कपड़ा व्यापारी, दो पादरी, दो क्लर्क, दो वकील और तीन-चार साधारण लोग। इनमें से एक को छोड़कर बाकी सभी के परिवार हैं जिनके साथ वे चाय पी सकते हैं, और बहुत सारे अविवाहित पुरुष हैं जिनके साथ वे छेड़छाड़ कर सकते हैं। पिछले तीन महीनों से हम हर रविवार को स्केच बनाने के लिए बाहर जाते रहे हैं। हम जिस चीज़ पर काम शुरू करते हैं, उससे थोड़ी सी भी समानता बनाने में हम शायद ही कभी सफल होते हैं, लेकिन यह आश्चर्यजनक रूप से दिलचस्प है। अगले साल हम बहुत सारे स्केच घर भेजने की उम्मीद करते हैं। इन सब के बावजूद मेरा उपन्यास अभी भी रुका हुआ है। अगर मेरे पास करने को कुछ न होता तो शायद ऐसा हो जाता, क्योंकि समय की कमी नहीं बल्कि मन की स्वतंत्रता की कमी ही मुझे इस पर ध्यान केंद्रित करने से रोक रही है। इस बीच यह विचार मेरे दिमाग में पनपता रहता है, क्योंकि मैं इसे कभी नहीं छोड़ता। मुझे लगता है कि मैंने

इस पर लगभग एक किताब लिख डाली है। एलेन नुसे को लिखा यह पत्र पढ़िए।

'मैरी टेलर।'

मिस शार्लोट ब्रोंटे को

वेलिंगटन, 13 अगस्त, 1850।

प्रिय शार्लेट, — लगभग छह महीने के इंतज़ार के बाद आखिरकार हमें शर्ली मिल गई। यह सोमवार दोपहर को कॉन्स्टेंटिनोपल से आई, ठीक उसी समय जब हम अगले दिन के लिए एक छोटी सी पार्टी की तैयारियों में जुटे थे। हमने कमरे को सजाने के लिए हर चीज़ पर लाल कंबल बिछाना बंद कर दिया (न्यूजीलैंड में कमरे को सजाने का यही तरीका होता है) और डिब्बा खोलकर सारे पत्र पढ़े। सोयर की 'हाउसवाइफ' और शर्ली तो थीं, लेकिन मिस मार्टिन्यू की किताब नहीं थी। उसकी जगह एडवर्ड ऑरलैंड नाम की एक बचकानी बच्चों की कहानी थी। मंगलवार को हम रात तीन-चार बजे तक नाचते रहे, पता नहीं क्यों। खैर, काम तो हो गया। बुधवार को मैंने शर्ली पढ़ना शुरू किया और अब तक एक अजीब उलझन में हूँ, खासकर उस सुंदर विदेशी के बारे में सोचकर, जिसकी हमारे घर में मेरे बचपन में देखभाल की गई थी। वैसे, तुमने उसे नौकरों के कमरे में रखा है। तुमने हम सबको इतना बुलवाया है जितना मुझे लगता है कि अगर हमने बोलने की हिम्मत की होती तो हम भी बोलते। तुमने मुझे कितनी प्यारी बच्ची बना दिया है! इसे पढ़ते हुए एक अजीब सा एहसास होता है जैसे हम सब बातें कर रहे हों। पिछले पाँच सालों में मैंने इस चटाई वाले हॉल और रंगीन बैठक की खिड़कियों को इतना सादा कभी नहीं देखा। लेकिन मेरे पिता ऐसे नहीं हैं। वो नफ़रत तो अच्छी तरह करते हैं और शायद प्यार भी करते हैं, लेकिन उतने ईमानदार नहीं हैं। मैंने अपने पिता से ही सीखा कि पैसे के लिए शादी नहीं करनी चाहिए और न ही ऐसा करने वाले किसी को बर्दाश्त करना चाहिए, और वो कभी किसी को ऐसा करने की सलाह नहीं देते थे, और ऐसा करने वालों की निंदा करने से भी नहीं चूकते थे। शर्ली, जेन आयर से कहीं ज़्यादा दिलचस्प है, जो तब तक बिल्कुल भी दिलचस्प नहीं लगती जब तक उसे कोई तकलीफ न झेलनी पड़े। इस आखिरी उपन्यास में इतनी ज़्यादा जीवंतता और हलचल है कि यह बाकी उपन्यासों से कहीं ज़्यादा याद रखने लायक है। क्या आप इसके सिलसिले में लंदन गए थे? किसलिए? मैंने श्री डिक्सन को लिखे आपके पत्र से देखा कि आप गए थे। मैं आपके कुछ विचारों का खंडन करना चाहता था, अब नहीं कर सकता। जहाँ तक मेरे घर लौटने की बात है,

आप पूछ सकते हैं। मैं पंद्रह सालों से अपनी आजीविका कमाने की इच्छा रखता था; पिछले अप्रैल में मैंने कोशिश शुरू की - अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि कितनी सफलता मिली। मैं बेहद अज्ञानी, शिष्टताहीन और हठी आलसी हूँ, और लगभग इतना बूढ़ा हो चुका हूँ कि सुधर नहीं सकता। सौभाग्य से मेरे लिए कोई और विकल्प नहीं है, इसलिए मुझे काम करना ही होगा। एलेन को यह काम अच्छा लगता है, यह उसकी और मेरी दोनों की एक गहरी इच्छा को पूरा करता है, और वह स्वभाव से ही मेहनती है। उससे दस साल छोटी एलेन के लिए हमारी दुकान वरदान साबित होगी। हो सकता है कि जीवन के सुनहरे दौर से पहले ही वह आत्मनिर्भरता हासिल कर ले और उसे बनाए रखने और उसका उपयोग करने का कौशल भी सीख ले। जहाँ तक मेरे लेखन की बात है, उसके बारे में भी आप भाग्य से ही पूछ लीजिए। मैं आपको कोई जानकारी नहीं दे सकता। मैं कभी-कभार एक-दो पन्ने लिख लेता हूँ। मैं कभी भी अपनी लिखी हुई बातें भूलता नहीं हूँ और न ही उनसे मेरा मन हटता है। जब मैं उन्हें दोबारा पढ़ता हूँ तो वे बहुत रोचक लगती हैं।

'मैरी टेलर।'

एलेन टेलर, जिसका बार-बार जिक्र किया गया, जैसा कि मैंने बताया, मैरी की चचेरी बहन थी। न्यूजीलैंड में उसकी असामयिक मृत्यु ने उसके एकमात्र पत्र को और भी दुखद बना दिया है जो मेरे पास है।

मिस शार्लोट ब्रोंटे को

वेलिंगटन, न्यूजीलैंड।

मेरी प्यारी मिस ब्रोंटे, — मैं आपको वह सब कुछ बताऊँगी जो मेरे मन में आता है, क्योंकि आपने पैग को लिखे अपने एक पत्र में कहा था कि आप चाहती हैं कि मैं आपको पत्र लिखूँ। मुझे यहाँ आए एक साल हो गया है। यह बहुत कम समय लगता है, फिर भी मैंने अपने जीवन में पहले से कहीं अधिक सोचा और किया है। जब हम पहुँचे, तो हेनरी और मैं जहाज़ से उतरने की इतनी जल्दी में थे कि हमने किसी के आने का इंतज़ार नहीं किया, बल्कि किनारे पर आई पहली नाव में चढ़ गए। जब हम उतरे तो हमने पूछा कि वारिंग कहाँ रहता है, लेकिन ज़्यादा दूर चले भी नहीं थे कि हमारी मुलाक़ात उससे हो गई। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था, लेकिन उसने अंदाज़ा लगा लिया कि हम वही चचेरे भाई-बहन हैं जिनकी उसे उम्मीद थी, इसलिए उसने हमें पकड़ लिया और अपने साथ ले गया। मैरी भी जल्द ही हमारे साथ आ गई,

और हम साथ घर चले गए। पहले तो मुझे लगा कि मैरी में ज़रा भी बदलाव नहीं आया है, लेकिन जब मैंने उसे लगभग एक हफ़्ते तक देखा तो मुझे लगा कि वह थोड़ी बूढ़ी हो गई है। पहली रात मैरी और मैं सुबह 2 बजे तक बातें करते रहे। मैरी और मैंने तय किया कि हम कुछ साथ मिलकर करेंगे, और हमने दो हफ्ते तक इस बारे में बात की कि हम स्कूल खोलेंगे या दुकान; अंत में हमने दुकान खोलने का फैसला किया। वेयरिंग को लगता था कि हमें चुप रहना चाहिए, और मुझे लगता है कि वह अब भी यही सोचता है कि हम यह सब मनोरंजन के लिए कर रहे हैं; लेकिन वह हमारी मदद करने से कभी इनकार नहीं करता। वह हमें हिसाब-किताब सिखा रहा है, और समय-समय पर हमारे लिए सामान खरीदता है। मैरी तो एकदम जोश में आ जाती है और सभी थोक दुकानों पर जाकर सामान देखती है, पैटर्न, नमूने आदि लेती है, कीमतें पूछती है, फिर घर आती है, हम उस पर चर्चा करते हैं; और फिर वह दोबारा जाती है और हमारी ज़रूरत का सामान खरीदती है। वह कहती है कि लोग हमेशा उसके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। हमारी दुकान चलाना यहाँ सबको हैरान कर देता है; मुझे लगता है कि वे सोचते हैं कि हम यह सब मजे के लिए कर रहे हैं। कुछ सोचते हैं कि हम इससे कुछ नहीं कमा पाएंगे, या थक जाएंगे; और सब हम पर हंसते हैं। घर छोड़ने से पहले मुझे लोगों के हंसने से डर लगता था, लेकिन अब इसका मुझ पर बहुत कम असर होता है।

अब मैरी और मैं साथ में रह रहे हैं: मैं मैरी के बिना नहीं रह सकता और वह अकेले नहीं रह सकती। मैंने वह घर बनाया है जिसमें हम रहते हैं, और हमने उसका नक्शा खुद बनाया है, इसलिए यह हमारे लिए ठीक है। हम बारी-बारी से दुकान में काम करते हैं, हिसाब-किताब रखते हैं और घर का काम करते हैं - मतलब, मैरी एक हफ्ते दुकान संभालती है और मैं रसोई, फिर हम बदल लेते हैं। मुझे लगता है कि अगर और कोई भयंकर भूकंप न आए और हम आग से बचाव कर सकें तो हम बहुत अच्छे से रह लेंगे। लकड़ी के घर में आग लग जाए तो वह बुझती नहीं; और हमारे पास एक तेल का पीपा है जो मेरी ऊंचाई के बराबर है, उससे आग बुझाने में मदद मिलेगी। अगर चिमनी के ऊपर से कुछ चिंगारियां निकलें तो छत की टाइलें खतरे में पड़ सकती हैं। लगभग दो हफ्ते पहले आए भूकंप ने मेज पर रखी दो दवा की बोतलें गिरा दीं और कुछ और चीजें भी खनकने लगीं, लेकिन कोई नुकसान नहीं हुआ। अगर इससे ज्यादा कुछ नहीं होता तो मुझे कोई परवाह नहीं, लेकिन मैं नहीं चाहता कि चिमनी गिर जाए -

उसे दोबारा बनवाने में 10 पाउंड लगेंगे। मैरी मुझे रुकने के लिए कह रही है क्योंकि लगभग रात के 9 बज रहे हैं और हम वारिंग के यहाँ रात के खाने के लिए जा रहे हैं। अलविदा। — आपका सच्चा,

'एलेन टेलर।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 4 जुलाई, 1849।

मैं जितना हो सकता है उतना अच्छा कर रहा हूँ। घर अब वैसा नहीं रहा जैसा पहले हुआ करता था - यह आप अच्छी तरह समझ सकते हैं; लेकिन अभी तक मैं ठीक-ठाक हूँ।

"मैं अभी तक हवा बदलने से मिले बड़े फायदों का दावा नहीं कर सकता; लेकिन दुर्भाग्य से मैं उस भयानक ईस्टन से अपने साथ सर्दी के बीज लेकर वापस आ गया हूँ, और अभी तक उससे छुटकारा नहीं पा सका हूँ। फिर भी मुझे लगता है कि मैं जाने से पहले की तुलना में बेहतर दिख रहा हूँ। आप कैसे हैं? आपने मुझे कभी नहीं बताया।"

'मेरी वापसी के बाद से श्री विलियम्स ने मुझे दो बार पत्र लिखा है, मुख्य रूप से अपनी तीसरी बेटी के बारे में, जो एक गवर्नेंस बनना चाहती है और उसे क्वीन कॉलेज में दाखिला मिलने की कुछ संभावना है, जो गवर्नेंस संस्थान से संबद्ध एक संस्था है; इससे उसे चार साल की शिक्षा सुनिश्चित हो जाएगी। उनका कहना है कि श्री जॉर्ज स्मिथ उदारतापूर्वक अपने प्रभाव का इस्तेमाल वोट जुटाने के लिए कर रहे हैं, लेकिन इतने सारे उम्मीदवार हैं कि उन्हें सफलता की उम्मीद नहीं है।'

मुझे मैरी टेलर का एक लंबा पत्र मिला - रोचक लेकिन दुखद, क्योंकि इसमें उन लोगों के कई संदर्भ थे जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। उन्होंने आपका जिक्र किया और आपके खाली जीवन की दयनीय स्थिति से प्रभावित दिखीं। उन्होंने अपने अच्छे स्वास्थ्य के बारे में बताया।

अपनी माँ और बहनों को मेरा प्यार देना, और—विश्वास मानिए, तुम्हारा भी।

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 18 मई।

प्रिय एलेन, — मैं इसके साथ मैरी टेलर का एलेन की मृत्यु की सूचना देने वाला पत्र और दो अंतिम पत्र भेज रही हूँ — ये सभी शोकपूर्ण दस्तावेज हैं। मुझे ये आज

सुबह हन्सवर्थ से बिना किसी सूचना या भेजने के निर्देश के प्राप्त हुए, लेकिन मुझे लगता है, अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो अमेलिया ने मुझे पिछले पत्र में इन्हें आपको भेजने के लिए कहा था। — आपकी विश्वासपात्र,

'सी. बी.'

मिस शार्लोट ब्रोंटे को

वेलिंगटन, न्यूजीलैंड।

प्रिय शार्लेट, — मैंने पिछले सप्ताह की एक कड़ाके की ठंड वाली शाम को तुम्हें पत्र लिखना शुरू किया था, लेकिन वह इतना उदास हो गया कि मैंने उसे अधूरा छोड़ दिया और फिर से लिखना शुरू किया। मैं अपने घर में बिल्कुल अकेली बैठी हूँ, या यूँ कहूँ कि जो मेरा होगा जब मैं उसका पूरा भुगतान कर दूँगी। मैंने एलेन की मृत्यु के बाद हेनरी से यह घर खरीदा था — दुकान समेत, और मैं इसे खुद ही चला रही हूँ। मैंने ठान लिया है कि मैं किसी की मदद नहीं लूंगी। मेरे पास ज़्यादा काम नहीं है, और एक अनुपयुक्त साथी का साथ सहना मेरे लिए असहनीय था। अब मुझे एहसास हो रहा है कि एलेन ही मुझे इतना व्यस्त रखती थी, और उसकी देखभाल न करने से मेरे पास बहुत समय है। मैंने घर को बहुत साफ-सुथरा रखना शुरू कर दिया है; इससे यह कम वीरान लगता है। मुझे अपने काम में बहुत रुचि है — उतनी ही जितनी किसी और चीज़ में हो सकती है जो सिर्फ़ मनोरंजन न हो। लेकिन मेरे जीवन का सबसे अच्छा हिस्सा इंग्लैंड से आने वाली खबरों का उत्साह है। लिखित और मुद्रित, सभी समाचार पढ़ना, इस जीवन से बिल्कुल अलग एक और जीवन जीने जैसा है। पुराने पत्र अजीब हैं—पढ़ना शुरू करने पर तो बहुत अजीब लगते हैं, लेकिन फिर भी काफी जाने-पहचाने लगते हैं। किताबें और अखबार भी वैसे ही हैं, हालांकि मुझे कभी कोई ऐसा इंसान नहीं मिला जिससे मैं उनमें पढ़ी किसी बात का ज़िक्र करना चाहूँ। कभी-कभी उनमें मुझे आपका छद्म नाम दिखता है। मैंने 'वुथरिंग हाइट्स' के दूसरे संस्करण की प्रस्तावना पर एक आलोचना देखी। मैंने इसे थैकरे के व्याख्यानों में शामिल होने वाले प्रतिष्ठित लोगों के बीच देखा। मैंने इसे सर जे. के. शटलवर्थ से भी जुड़ा हुआ देखा है। क्या वह आपसे शादी करना चाहते थे, या सिर्फ आपकी प्रशंसा करना चाहते थे? या कोई और था?

लंदन में आपका जीवन मेरे लिए एक "नया देश" है, जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती। लगता है आपको यह पसंद है—कम से कम इसकी कुछ चीजें तो, फिर

भी श्रीमती जे. टेलर को लिखे आपके हाल के पत्रों में उदासी और बीमारी की झलक मिलती है। "अब आपको क्या हो गया है?" जैसा कि मेरी माँ अक्सर पूछा करती थीं, मानो पखवाड़े में बीसवीं बार। यह सचमुच दुखद है कि जीवन के इस सुनहरे दौर में, अपनी मेहनत से अर्जित समृद्धि के चरम पर, आप स्वस्थ नहीं हैं। क्या मिस मार्टिन्यू ने आपको सुधारा नहीं? अगर उन्होंने सुधारा था, तो क्यों न आप उन्हें और उनकी योजना को फिर से आजमाएं? लेकिन मुझे लगता है कि अगर आपमें आशा और कोशिश करने की ऊर्जा होती, तो आप ठीक हो जाते। खैर, लगभग अंधेरा हो चुका है और जब आप इसे पढ़ेंगे तब तक आप निश्चित रूप से ठीक हो चुके होंगे, तो लिखने का क्या फायदा? मुझे आपके जीवन के कुछ विवरण जानने की बहुत इच्छा है, लेकिन मैं इसकी उम्मीद कैसे कर सकती हूँ? मैंने अक्सर आपको अपने जीवन का एक संक्षिप्त विवरण देने की कोशिश की है, लेकिन मुझमें वह कौशल नहीं है। मुझे ढेर सारी जानकारियाँ मिलती हैं, जिनमें से अधिकतर तुच्छ हैं और पूरी बात समझाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। काश, एक घंटे की बातचीत हो पाती! आप बहुत ही भटक रहे हैं और मुझे अजीब लगने लगे हैं। क्या आप पहले जैसे दिखते हैं, मुझे आश्चर्य है? जब आप और एलेन नुसे मिलते हैं तो किस बारे में बात करते हैं? देखो! अंधेरा हो गया।

रविवार रात। — मैंने उस जहाज़ को जाने दिया जो इसे ले जाने वाला था। चूंकि दूसरे जहाज़ भी जल्द ही जाने वाले थे, इसलिए मैंने ज़्यादा परवाह नहीं की। मैं सोच-विचार में डूबी हुई हूँ कि ऊनी मोज़े वगैरह मंगवाऊँ या नहीं। वे अगले साल इसी समय आएँगे, और कौन बता सकता है कि तब मुझे क्या चाहिए होगा या मैं क्या कर रही होऊँगी? फिर भी अब तक हमने ऐसे ही ऑर्डर भेजे हैं, और हमें अंदाज़ा था या पता था कि हमें क्या चाहिए होगा। मैं अभी-अभी एलेन की लिखावट में चार पन्नों की एक सूची देख रही थी। ये चीज़ें अगले जहाज़ से आ जानी चाहिए, या कम से कम इनका कुछ हिस्सा। जब मैं इससे ऊब गई तो मैंने "अपनी किताब" के कुछ पन्ने पढ़ने शुरू किए, कुछ और लिखने के इरादे से, लेकिन पढ़ने में आनंद आ गया। मैं अक्सर ऐसा करती हूँ, और मुझे यह बहुत दिलचस्प लगता है। यह तेज़ी से आगे नहीं बढ़ती, हालाँकि मैंने लगभग डेढ़ खंड लिख लिया है। यह संगीत, गरीबी, वाद-विवाद, राजनीति और जीवन के मौलिक विचारों से भरी है। मैं लाख कोशिश करने पर भी प्रेमी को इसमें शामिल नहीं कर सकती, और न ही बता सकती हूँ कि जब वह आएगा तो उसे क्या करना होगा। आम तौर पर पुरुषों के बारे में मैं कभी नहीं कह सकती कि

वे आगे क्या करेंगे। महिलाओं को मैं काफी अच्छी तरह समझती हूँ, और उनमें शायद ही कभी कोई चंचलता देखने को मिलती है - कम से कम इस मामले में तो वे पूरी तरह से स्त्रीत्वपूर्ण हैं।

मैं इस समय बिल्कुल अकाल की स्थिति में हूँ। पिछले दो महीनों से न तो किताबें हैं और न ही इंग्लैंड से कोई खबर। सरासर नीरसता के कारण मैं किसी पुस्तकालय में जाने का सोच रहा हूँ। अगर मेरे पास और समय होता तो मैं उदास हो जाता। मुझसे ज़्यादा सक्रियता को कोई पसंद नहीं करता। जब तक मैं लंबे समय तक सक्रिय नहीं रहता, उदासी मुझ पर छा जाती है। उदासी का बादल हमेशा मेरे पीछे मंडराता रहता है, और पूरी तरह से नज़रों से ओझल नहीं होता, सिवाय तब जब मैं लगातार काम करता रहता हूँ। सौभाग्य से, जितना ज़्यादा काम करता हूँ, उतना ही अच्छा लगता है। बुढ़ापे में मैं फर्श गंदा होने से पहले ही उसे साफ़ करूँगा और बर्तनों को बाहर से चमकाऊँगा। यही एक चीज़ है जो मुझे रात के खाने के लिए भूख दिलाती है।

'हाँ।

‘एलन नुसे को मेरा प्यार देना।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

वेलिंगटन, न्यूजीलैंड, 8 जनवरी 1857।

प्रिय एलेन, — कुछ दिन पहले मुझे आपका एक पत्र मिला, जिसकी तारीख 2 मई 1856 थी, साथ में कुछ पैटर्न और एक फैशन-पुस्तक भी थी। लगता है वे कहीं खो गए थे, क्योंकि बॉक्स को हेस्टिंग्स जहाज से आना चाहिए था, लेकिन अब जाकर फिलिप लैंग जहाज से मिला है। नए साल के उपहार के लिए यह बहुत उपयुक्त रहा, और पैटर्न खोले जाने के चौबीस घंटे के भीतर ही उनमें से एक ने रेशमी केप काट लिया। मुझे लगता है कि आपसे इतनी मेहनत करने का अनुरोध करके मैंने बहुत ही अनुचित बात की थी। जिस बेचारी महिला के लिए मुझे ये पैटर्न चाहिए थे, वह अब एक कुशल दर्जी बन चुकी है — उसका शराबी पति, जो उसकी सबसे बड़ी बदकिस्मती था, भाग गया है और हाल ही में उसका कोई पता नहीं चला है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि श्रीमती गैस्केल के जीवन में प्रगति हो रही है।

काश मैंने शार्लेट के पत्र संभाल कर रखे होते, हालांकि अपना घर होने के बाद ही मुझे ऐसा करना सुरक्षित लगा। मेरी अधूरी याददाश्त के मुकाबले वे कहीं बेहतर सबूत होते और कहीं ज़्यादा दिलचस्प भी। बिना कारण बताए कोई भी राय बेतुकी लग

सकती है, और अगर मुझे वे याद भी होते तो शायद ऐसा लगता कि मैंने कुछ और तथ्यों को नज़रअंदाज़ कर दिया है जिनसे मेरी राय बदल जानी चाहिए थी। पड़ोसियों के बारे में आपकी खबर बहुत दिलचस्प है, खासकर मिस वूलर और मेरे पुराने सहपाठियों के बारे में। काश मुझे पता होता कि मैं आपको यहाँ के अपने हालात और मुझ पर इस स्थिति के प्रभाव के बारे में कैसे बताऊँ। सबसे पहले तो, यह मुझे रास आ रहा है। स्कूल छोड़ने के बाद से मैं पहले से कहीं ज़्यादा स्वस्थ हूँ। अब मेरा जीवन काम के बोझ से दबा हुआ नहीं है, और मैं जो भी करता हूँ उसमें मुझे रुचि और आकर्षण है। मुझे लगता है कि मृत्युशय्या पर लेटे हुए जब मैं अपने अतीत को याद करूंगा, तो यही वो हिस्सा होगा जो मुझे सबसे अधिक सुखद लगेगा - मेरे जीवन में बिखरे हुए कई छोटे-छोटे सुख, जो दूर से देखने पर मानो मेरे जीवन को पूरी तरह ढक लेते हैं। वे सचमुच में मेरे जीवन को नहीं ढकते, लेकिन मैंने इतने सुख पहले कभी नहीं भोगे थे।

मैं अपनी दुकानदार का ध्यान रखता हूँ, बिल बनाता हूँ, और तय करता हूँ कि किसे भरोसा करना है और किसे नहीं। फिर मैं खरीदारी करने जाता हूँ, अब मुझे अपने काम की अच्छी समझ है और मेरी साख भी अच्छी है, इसलिए यह उतना चिंताजनक काम नहीं रहा। मैं खूब पढ़ता हूँ, कभी-कभी सोफे पर बैठकर, जो गर्मी के मौसम में मेरी एक आदत बन गई है। मेरे कुछ दोस्त हैं - ज़्यादा नहीं, और कोई बहुत बुद्धिमान भी नहीं, कृपया यह बात अपने तक ही रखें, क्योंकि इंग्लैंड के वेलिंगटन के लोगों की बातें और कारनामे न्यूज़ीलैंड तक कैसे पहुँच जाते हैं! वैसे भी वे ज़्यादा दिलचस्प नहीं हैं। इसमें कुछ हद तक मेरी भी गलती है, क्योंकि मुझे उनकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है। एक किताब उनमें से किसी से भी कम नहीं है, और एक अच्छी किताब उन सभी से कहीं ज़्यादा अच्छी है।

हमारे यहाँ की पूर्वी हवाएँ सबसे सुखद और स्वास्थ्यवर्धक होती हैं। उत्तर-पश्चिम से आने वाली नम और नरम हवा सिरदर्द और अवसाद लाती है—यहाँ तक कि पेड़ों को भी नुकसान पहुँचाती है।— आपका स्नेही,

'मैरी टेलर।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

वेलिंगटन, 4 जून 1858।

प्रिय एलेन, मैंने हाल ही में सुना है कि तुम ब्रुकरॉयड छोड़ रही हो। मैं ब्रुकरॉयड को

फिर कभी नहीं देख पाऊँगा, और वहाँ रहने वाले लोगों में से एक को भी नहीं; और एक जिसे मैं वहाँ अक्सर देखता था, उसे अब कभी नहीं देख पाऊँगा। अपना ख्याल रखना, प्रिय एलेन, और जितना हो सके खुशियाँ और खुशियाँ बटोरना, और जब मैं आऊँ तो तुम्हें खुश और खुशहाल देखना। कब आऊँगा, यह अभी पता नहीं; लेकिन एक बात पक्की है, मैंने इंग्लैंड से सामान मंगवाना बंद कर दिया है, क्योंकि बेचने के लिए कुछ न होने के कारण मुझे कभी न कभी यह काम बंद करना ही पड़ेगा। मुझे उम्मीद है कि आखिरी ऑर्डर किया हुआ सामान 1859 की शुरुआत में आ जाएगा। इसलिए, उस साल मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं होगा और न ही यहाँ रहने का कोई कारण होगा। शायद इस बारह महीने के भीतर मैं वेलिंगटन छोड़ दूँ।

हम यहाँ एक राजनीतिक संकट के चरम पर हैं। प्रांत के सर्वोच्च पद (अधीक्षक) के लिए चुनाव लगभग दो सप्ताह में होने वाले हैं। हमारे यहाँ एक छोटा-सा तूफान सा चल रहा है, जो सब कुछ हिला देने के लिए काफी तेज़ है। मेरी मुख्य रुचि चुनावी रिबन बेचने में है, हालाँकि मुझे डर है कि खराब मौसम के कारण इसका प्रदर्शन बहुत कम होगा। चुनावों के अलावा, कुछ भी दिलचस्प नहीं है। हम सब ठीक-ठाक चल रहे हैं। मेरे पास लगभग चार फुट ऊँचा एक टट्टू है, जो मुझे वेलिंगटन से लगभग दस मील दूर ले जाता है, जो पैदल दूरी से कहीं अधिक है, जहाँ मैं पिछले दस वर्षों से सीमित रहा हूँ। मैंने अधिकांश काम मिस स्मिथ को सौंप दिया है, जो अंततः इस व्यवसाय को संभालेंगी, और अगर मौसम अच्छा रहा तो मुझे लगता है कि मैं इसका आनंद उठाऊँगा। यहाँ मेरी सबसे बड़ी ज़रूरत पर्याप्त किताबें हैं जिनसे मेरा खाली समय भर जाए। मुझे लगता है कि जब मैं घर पहुँचूँगा तो अपनी आधी आय किताबों पर खर्च करूँगा और उन्हें पढ़ने के बाद बेच दूँगा ताकि बाकी पैसे बच सकें। मुझे पता है यह बेतुका है, लेकिन जिन लोगों की भूख संतुष्ट नहीं होती, वे सोचते हैं कि वे बहुत अधिक खा सकते हैं।

मिस वूलर को मेरा प्रणाम कहना और अगली बार उनके बारे में मुझे सब कुछ बताना। — आपका स्नेहपूर्वक,

'मैरी टेलर।'

मिस टेलर ने श्रीमती गैस्केल को एक-दो उपयोगी पत्र लिखे, जब वह शार्लोट ब्रोंटे की आत्मकथा लिख रही थीं, और पुस्तक के बारे में उनकी सकारात्मक राय हम पहले ही देख चुके हैं। लगभग 1859 या 1860 में वह इंग्लैंड लौट आईं और अपने जीवन

के शेष दिन यॉर्कशायर में अपने द्वारा निर्मित एक घर में पूर्ण एकांत में बिताए। जिस उपन्यास का उन्होंने अपनी सहेली को लिखे पत्र में उल्लेख किया है, वह कभी लिखा ही नहीं गया, या कम से कम प्रकाशित तो नहीं हुआ, क्योंकि मिस मैरी टेलर ने 1890 तक कोई उपन्यास नहीं लिखा था - मिस माइल्स। यह उपन्यास महिलाओं को पुरुषों से स्वतंत्र होने के लाभ और कर्तव्य दोनों को समझाने का प्रयास करता है। यह अच्छी तरह से लिखा गया है, हालांकि बहुत शानदार नहीं, और यदि लेखिका में आत्म-प्रचार की आधुनिक प्रतिभा होती, तो यह जनता को आकर्षित कर सकता था, केवल इस तथ्य से ही कि इसकी लेखिका करर बेल की मित्र थीं। लेकिन यह स्पष्ट है कि मिस टेलर प्रचार से नफरत करती थीं, और ब्रोंटे के प्रशंसकों द्वारा महिमामंडित होने से उन्होंने सख्ती से इनकार कर दिया। मिस माइल्स से बीस साल पहले, मैं यह भी कहना चाहूँगी कि उन्होंने इसी उपदेश को कम आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया था। विक्टोरियन मैगज़ीन में छपे लेखों की एक श्रृंखला को 'महिलाओं का पहला कर्तव्य' शीर्षक से पुनः प्रकाशित किया गया था। वे कहती हैं, 'पैसा कमाने के कर्तव्य को सिखाना ही इन लेखों का मुख्य उद्देश्य है।' वे कहती हैं, 'विश्व की महिला वर्ग को स्वयं का भरण-पोषण करने के सामान्य कर्तव्य का पालन करने की सलाह देती हैं,' और वे अपने सिद्धांत को ठोस तर्कों के साथ प्रस्तुत करती हैं, जो उनके समय की तुलना में आज के समय में कहीं अधिक स्वीकार्य हैं। मिस टेलर का निधन मार्च 1893 में यॉर्कशायर के हाई रॉयड में छिहत्तर वर्ष की आयु में हुआ। ब्रोंटे परिवार में उनका स्थान सदा गौरवपूर्ण रहेगा।

अध्याय X: मार्गरेट वूलर

दयालु और सौम्य स्वभाव वाली वह महिला, जिन्हें शार्लोट ब्रोंटे की शिक्षिका के रूप में हमेशा याद किया जाएगा, का इतिहास न के बराबर है। वह एक नेक दिल महिला थीं, जिन्होंने अपना काम किया और बिना किसी जीवनी लेखन के इस दुनिया से विदा हुईं, सिवाय इसके कि उन्होंने दो महान महिलाओं की शिक्षा में योगदान दिया। इसीलिए उनकी संक्षिप्त कहानी को यहाँ प्रस्तुत करना उचित है।

उनके एक रिश्तेदार लिखते हैं, 'हमें खेद है कि हम आपको हमारी चाची, मिस वूलर के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं दे सकते।' 'वह एक बड़े परिवार की सबसे बड़ी संतान थीं, जिनका जन्म 10 जून, 1792 को हुआ था। वह बेहद बुद्धिमान और उच्च शिक्षित थीं, और अपने लंबे जीवन भर, जो उनके तिरानवेवें वर्ष के पूरा होने से एक सप्ताह पहले तक चला, उन्होंने धार्मिक, राजनीतिक और हर तरह के धर्मार्थ कार्यों में गहरी रुचि ली, और कई संस्थानों की आजीवन गवर्नर रहीं। उनके प्रारंभिक जीवन का कुछ हिस्सा आइल ऑफ वाइट में रिश्तेदारों के साथ बीता, जहाँ वह सेवेल परिवार के साथ बहुत घनिष्ठ थीं, जिनमें से एक एमी हर्बर्ट के लेखक थे। अपने परिवार में, उन्हें हमेशा बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था, और उनके भाई-बहन उन्हें जीवन भर 'बहन' कहकर पुकारते थे। रो हेड और बाद में ड्यूसबरी मूर के स्कूल से सेवानिवृत्त होने के बाद, वह कभी-कभी हेकमोंडविक विकारेज में मेरे पिता और माता के साथ कई महीनों तक रहती थीं; फिर वह कुछ महीनों के लिए समुद्र तट पर चली जाती थीं, या तो अकेले या अपनी किसी बहन के साथ।' अपने जीवन के अंतिम दस-बारह वर्ष उन्होंने गोमरसाल में अपनी दो बहनों और एक भतीजी के साथ बिताए। तीनों बहनें एक ही वर्ष के भीतर चल बसीं, सबसे छोटी बहन पहले और सबसे बड़ी बहन अंत में। उन्हें मेरे माता-पिता और बहन के पास ही बिर्स्टॉल चर्चयार्ड में दफनाया गया है।

जब मिस ब्रोंटे रो हेड में थीं, तब वह उनकी छात्रा थीं; स्वर्गीय मिस टेलर और मिस ई. नुसे भी उसी समय उनकी छात्राएँ थीं। बाद में मिस ब्रोंटे गवर्नेस के रूप में वहीं रहीं। जब मेरे पिता मिर्फ़ील्ड पैरिश चर्च में प्रभारी क्यूरेट थे, तब उन्होंने मिस ब्रोंटे को कन्फर्मेशन के लिए तैयार किया था। जब मिस ब्रोंटे का विवाह हुआ, तो मिस वूलर मेहमानों में से एक थीं। श्री ब्रोंटे उस सुबह चर्च जाने के लिए स्वस्थ महसूस नहीं कर रहे थे, इसलिए मेरी चाची ने उन्हें विदा किया, क्योंकि वहाँ उनका कोई अन्य रिश्तेदार मौजूद नहीं था।

'मिस वूलर ने अपनी मृत्यु तक अपनी पूर्व छात्रा के साथ एक गर्मजोशी भरी दोस्ती बनाए रखी।'

मेरी चाची एक अत्यंत निष्ठावान प्रजा थीं और चर्च के प्रति उनकी गहरी आस्था थी। वह हर साल नियमित रूप से बाइबिल पढ़ती थीं और प्रतिदिन अपनी इतालवी बाइबिल का एक अध्याय पढ़ती थीं, क्योंकि वह कहती थीं कि "वह जो कुछ भी सीखती थीं उसे भूलना नहीं चाहती थीं।" और अगर उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाता जो उनसे फ्रेंच में बात कर सके तो उन्हें बहुत खुशी होती थी।

'मुझे डर है कि ये कुछ चीजें ज्यादा उपयोगी नहीं होंगी, लेकिन ऐसे व्यक्ति के बारे में कुछ भी दर्ज करना मुश्किल है जिसने इतना शांत और एकांत जीवन व्यतीत किया, लेकिन उपयोगी जीवन भी।'

मिस नुसी लिखती हैं, ‘मिस वूलर के बारे में मेरी यादें ये हैं कि वो कद में छोटी और मोटी थीं, लेकिन उनकी चाल-ढाल बेहद आकर्षक थी, बातचीत में बहुत धाराप्रवाह थीं और उनकी आवाज़ बहुत मधुर थी। स्कूल की छुट्टी के बाद कभी-कभी शार्लोट और मैं उनके साथ रहने आते थे। जब बच्चे सो जाते थे, तब हम उनके साथ बैठकर बहुत आनंदमय समय बिताते थे। वो हमसे बहुत गोपनीय बातें करती थीं और अपने चाचा-चाची - डॉ. मोर और उनकी पत्नी - के साथ आइल ऑफ वाइट में बिताए छह साल के किस्से सुनाती थीं। डॉ. मोर सैन्य स्टाफ में थे और द्वीप के समाज का उन पर विशेष प्रभाव था। श्रीमती मोर एक नेक और दयालु महिला थीं। व्यक्तिगत रूप से, मिस वूलर किसी मठाध्यक्षा जैसी थीं। वो कढ़ाईदार सफेद, अच्छी तरह फिट होने वाली पोशाकें पहनती थीं। उनके लंबे बाल गुंथे हुए मुकुट की तरह लगते थे और उनके सिर से कंधों तक लंबे-लंबे घुंघराले बाल लटकते थे। वो सुंदर या आकर्षक नहीं थीं, लेकिन उनकी शांत गरिमा ने उनकी उपस्थिति को प्रभावशाली बना दिया था। वो अत्यंत ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ थीं - एक ऐसी महिला जिन्होंने आत्म-त्याग को चरम सीमा तक सीमित रखा।’ उसकी आमदनी कम थी। वह आधी आमदनी से अपना गुजारा करती थी और बाकी रकम दान-पुण्य के कामों में दे देती थी।

यह स्पष्ट है कि शार्लोट अपनी स्कूल शिक्षिका को बहुत पसंद करती थीं, हालाँकि ऐनी के साथ ड्यूसबरी मूर में थोड़े समय के प्रवास के दौरान उनके बीच एक गंभीर मतभेद हो गया था। ऐनी को घर की याद सता रही थी और वह बीमार थीं, और मिस वूलर, अपने मजबूत स्वास्थ्य के कारण, ऐनी की बीमारी को समझ नहीं पा रही थीं।

अपनी बहन के लिए पूरी तरह से आश्वस्त शार्लोट ने पुरजोर विरोध जताया और दोनों बहनें जल्द ही घर लौट गईं। यहाँ मिस वूलर को संबोधित पत्रों का एक संग्रह है।

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 28 अगस्त, 1848।

'मेरी प्रिय मिस वूलर, - चूंकि आप घर से दूर रहते हुए मुझसे संपर्क करना चाहती हैं, इसलिए मैं बिना किसी देरी के लिख रहा हूँ। अक्सर ऐसा होता है कि जब हम किसी मित्र के पत्र का उत्तर देने में पहले तो देर करते हैं, तो कुछ ऐसी बाधाएँ आ जाती हैं जो हमें असहनीय रूप से विलंबित कर देती हैं।'

अपने पिछले पत्र में मैं आपके एक प्रश्न का उत्तर देना भूल गया था, और बाद में मुझे इस चूक का खेद हुआ; इसलिए मैं उसी का उत्तर देकर शुरुआत करूँगा, हालाँकि मुझे डर है कि अब जो मैं दे पाऊँगा वह थोड़ा देर से आएगा। आपने कहा था कि श्रीमती चैफम अपनी बेटी को स्कूल भेजने के बारे में सोच रही थीं, और जानना चाहती थीं कि कैस्टरटन स्थित क्लेर्जी डॉटर्स स्कूल इसके लिए उपयुक्त स्थान है या नहीं।

उस संस्था के बारे में मेरा व्यक्तिगत ज्ञान बीस साल पहले के अनुभव पर आधारित होने के कारण काफी पुराना है; उस समय वह संस्था अपने शुरुआती दौर में थी, और वह भी एक दयनीय और कमजोर अवस्था में। टाइफस बुखार समय-समय पर स्कूल में कहर बरपाता था, और खराब हवा, पानी और अपर्याप्त आहार से उत्पन्न होने वाली तपेदिक और स्क्रॉफ़ुला जैसी बीमारियाँ दुर्भाग्यपूर्ण विद्यार्थियों को अपनी चपेट में ले लेती थीं। उस समय वह श्रीमती चैफम के किसी भी बच्चे के लिए उपयुक्त स्थान नहीं होता। लेकिन, मुझे पता चला है कि उन दिनों के बाद से इसमें बहुत सुधार हुआ है। स्कूल को कोवान ब्रिज (एक ऐसी जगह जो जितनी सुरम्य थी उतनी ही अस्वस्थ भी थी - नीची, नम, लकड़ी और पानी से सुंदर) से कैस्टरटन में स्थानांतरित कर दिया गया है; मुझे विश्वास है कि आवास, आहार, अनुशासन, शिक्षण प्रणाली, सब कुछ पूरी तरह से बदल गया है और इसमें बहुत सुधार हुआ है। मुझे बताया गया था कि जो विद्यार्थी अच्छा व्यवहार करते थे और अपनी शिक्षा पूरी होने तक विद्यालय में रहते थे, उन्हें यदि वे उस पेशे को अपनाना चाहें तो शिक्षिका के रूप में नौकरी उपलब्ध कराई जाती थी, और चयन में बहुत सावधानी बरती जाती थी; यह भी बताया गया कि कैस्टरटन छोड़ने पर उन्हें उत्कृष्ट वस्त्र भी दिए जाते थे।

यदि मुझे डॉ. अर्नोल्ड का जीवन पढ़ने का अवसर मिला, तो मुझे इससे निश्चित रूप से लाभ होगा; आपकी अनुशंसा ने मुझे इसे पढ़ने के लिए उत्सुक कर दिया है। क्या आपको याद है कि आपने एक बार 'श्रीमती लीसेस्टर स्कूल' नामक पुस्तक की प्रशंसा की थी, जिसके बारे में आपने कहा था कि यह आपको मिली थी और आप यह जानना चाहते थे कि इसे किसने लिखा है? मैं कुछ दिन पहले चार्ल्स लैम्ब के पत्रों का एक नया प्रकाशित संग्रह पढ़ रहा था, जिसका संपादन सार्जेंट टैल्फोर्ड ने किया था, जिसमें मैंने पाया कि 'श्रीमती लीसेस्टर स्कूल' लैम्ब और उनकी बहन की पहली रचना थी। ये पत्र अपने आप में अत्यंत रोचक हैं; लैम्ब की रचनाओं और अवशेषों के सभी पिछले संग्रहों में इन्हें अब तक दबा दिया गया था, क्योंकि इनमें मिस लैम्ब की दुर्भाग्यपूर्ण बीमारी और एक भयानक घटना का बार-बार उल्लेख है जिसने उनके शुरुआती वर्षों को अंधकारमय कर दिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अत्यंत मधुर स्वभाव की महिला थीं और सामान्य अवस्था में उनकी बुद्धि अत्यंत तीव्र और स्पष्ट थी, लेकिन उन्हें समय-समय पर पागलपन के दौरे पड़ते थे जो साल में एक बार या उससे भी अधिक बार आते थे। अपने माता-पिता के लिए वह एक अत्यंत कोमल और आज्ञाकारी पुत्री थी, जो उनके बुढ़ापे में, जब एक शारीरिक रूप से और दूसरा मानसिक रूप से दुर्बल था, उनकी निरंतर देखभाल करती थी, और साथ ही परिवार के सीमित संसाधनों में कुछ योगदान देने के लिए कढ़ाई का काम भी करती थी। कई परिश्रमी दिनों और रातों की नींद हराम होने के कारण उसे उन्माद का दौरा पड़ा, जिसमें दुर्भाग्यवश उसने अपनी ही माँ की हत्या कर दी। बाद में उसे पागलखाने में भर्ती कराया गया, जहाँ उसे जीवन भर के लिए रखा जाता, यदि उसके भाई चार्ल्स ने उसके प्रति समर्पित होने और उसकी देखभाल करने का वादा न किया होता - और उसके लिए अपने विवाह के प्रस्ताव को न छोड़ा होता। मेरे विचार से, आत्म-त्याग का यह उदाहरण महिलाओं के इतिहास में शायद ही कहीं देखने को मिलता है। उन्होंने अपना बाद का जीवन साथ बिताया - भाईचारे के स्नेह के आदर्श के रूप में, और वे बहुत सुखी होते यदि मैरी लैम्ब पर जीवन भर विपत्ति न आती। मुझे यह एक दुखद और शिक्षाप्रद कहानी लगी। आपकी नन्ही भतीजी की सुबह पहली बार समुद्र को देखकर दिखाई गई मासूम खुशी का वर्णन मुझे मनोरंजक और सुखद लगा; इससे साबित होता है कि उसमें कुछ भावनाएं हैं - यह एक ताजगी भरा पहलू है, ऐसे समय और पीढ़ी में जब बच्चों में भावनाओं का बिल्कुल अभाव होना कोई असामान्य घटना

नहीं है।

मैंने आपके अनुरोध पर एक लंबा पत्र लिखा है, लेकिन मुझे डर है कि आपको यह बहुत मनोरंजक नहीं लगेगा। आपके छोटे साथी के लिए प्यार सहित, - विश्वास कीजिए, मेरी प्रिय मिस वूलर, आपका स्नेही और आदरपूर्ण पत्र।

‘सी. ब्रोंटे.

'मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि पापा अपनी उम्र के हिसाब से बहुत अच्छी सेहत में हैं। मेरी बहनें भी काफी अच्छी हैं।'

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 31 मार्च, 1848।

प्रिय मिस वूलर, आपकी पिछली चिट्ठी मिलने से पहले से ही मैं आपसे संपर्क करने की प्रतीक्षा कर रही थी। पिछली सर्दियों में बहुत बीमारियाँ फैलीं, और विशेष रूप से इन्फ्लूएंजा इतना गंभीर और व्यापक रूप से फैला कि हमारे आसपास के लोगों को बीमार देखकर अक्सर दूर रहने वाले दोस्तों के लिए चिंता होने लगी। एलेन नुसे ने मुझे बताया कि आप और मिस सी. वूलर दोनों ही इन्फ्लूएंजा से बच नहीं पाईं, लेकिन चूंकि आपकी चिट्ठी में आपके या उनके स्वास्थ्य का कोई जिक्र नहीं है, इसलिए मुझे उम्मीद है कि आप पूरी तरह से ठीक हो गई होंगी। मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि पापा अब तक इससे अछूते रहे हैं। मेरी बहन और मैं दोनों ही इससे प्रभावित हुए थे, लेकिन ऐनी ही एकमात्र ऐसी हैं जिन पर इसका लंबे समय तक असर रहा या जिन्होंने बहुत नुकसान पहुंचाया; उनके मामले में, इसके साथ कष्टदायक खांसी और बुखार भी था; लेकिन अब वह बेहतर हैं, हालांकि इससे उनकी छाती कमजोर हो गई है।

मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं चाहता था कि काश मेरा भाग्य बीते युद्ध के अशांत समय में होता, और उसकी रोमांचक घटनाओं में मुझे एक ऐसा आकर्षण दिखाई देता था जिसके बारे में सोचने मात्र से ही मेरी धड़कन तेज हो जाती थी। मुझे याद है, शायद, मैं थोड़ा अधीर भी हो गया था कि आप इस विषय पर मेरी भावनाओं से पूरी तरह सहमत नहीं थे, कि आपने मेरी आकांक्षाओं और अटकलों को बहुत शांति से सुना, और आपको ऐसा बिल्कुल भी नहीं लगा कि जलती हुई तलवार स्वर्ग के सुखों में कोई सुखद इजाफा कर सकती है। अब मैं जवानी से जी चुका हूँ; और, यद्यपि मैं यह कहने की हिम्मत नहीं करता कि मैं उसके सभी भ्रमों से बाहर निकल चुका हूँ, कि

जीवन से रोमांस पूरी तरह से गायब हो गया है, सच्चाई से पर्दा हट गया है, और मैं दोनों को नग्न वास्तविकता में देखता हूँ, फिर भी, निश्चित रूप से, कई चीजें मेरे लिए वैसी नहीं हैं जैसी दस साल पहले थीं; और बाकी के बीच, "युद्ध की शान-शौकत" ने मेरी आँखों में अपनी बनावटी चमक पूरी तरह खो दी है। मुझे अब भी कोई संदेह नहीं है कि नैतिक भूकंपों का आघात राष्ट्रों और व्यक्तियों दोनों में जीवन की एक जीवंत भावना को जगाता है। राष्ट्रीय स्तर पर मंडराते खतरों का भय क्षण भर के लिए लोगों का ध्यान छोटे-मोटे निजी खतरों से हटा देता है और उन्हें कुछ हद तक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है; परन्तु मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं कि उथल-पुथल भरी क्रांतियाँ दुनिया को उसकी सारी अच्छाइयों से वंचित कर देती हैं, सभ्यता को रोकती हैं और समाज के सबसे निचले तबके को सामने लाती हैं। संक्षेप में, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि विद्रोह और युद्ध राष्ट्रों के लिए गंभीर रोग हैं और इनकी प्रवृत्ति उन देशों की जीवन शक्ति को हिंसा के द्वारा समाप्त करने की है जहाँ ये घटित होते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इंग्लैंड उन ऐंठन, ऐंठन और उन्माद के दौरों से बच जाए जो इस समय महाद्वीप को विकृत कर रहे हैं और आयरलैंड को धमकी दे रहे हैं!

'फ्रांसीसी और आयरिश लोगों के प्रति मुझे कोई सहानुभूति नहीं है। जर्मन और इटालियन लोगों के मामले में मुझे लगता है कि स्थिति अलग है - उतनी ही अलग जितनी स्वतंत्रता के प्रति प्रेम और अनैतिकता के प्रति लालसा में अंतर होता है।'

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 27 सितंबर, 1850।

'मेरी प्रिय मिस वूलर, - जब मैं आपको बताऊं कि मैं इस मौसम में पहले ही झीलों की यात्रा कर चुका हूं, और मुझे लौटे हुए मुश्किल से एक महीना ही हुआ है, तो आप समझ जाएंगी कि अब मेरे लिए आपका निमंत्रण स्वीकार करना संभव नहीं है।'

काश मैं आपके पास आ पाता। काश आपका निमंत्रण पहले आया होता; सच कहूँ तो, यह मेरे लिए उस निमंत्रण से कहीं बेहतर होता जिससे मुझे लाभ हुआ। आपके कॉटेज में दो सप्ताह बिताना सुखद, सुकून देने वाला और कई मायनों में फायदेमंद होता। लेकिन ये सब व्यर्थ की बातें हैं। मेरी सैर हो चुकी है और अब वह समाप्त हो गई है। सर जे. के. शटलवर्थ विंडरमेयर के पास "द ब्रायरी" नामक घर में रह रहे हैं, और अगस्त में मैं कुछ समय के लिए वहीं रुका था। उन्होंने बड़ी कृपा से मुझे वहाँ का नज़ारा दिखाया - जैसा कि गाड़ी से देखा जा सकता है - और मैंने पाया कि "झील

क्षेत्र" एक शानदार इलाका है, जिसकी झलक मैंने केवल सपने में देखी थी - जागते या सोते हुए। लेकिन, मेरी प्यारी मिस वूलर, मुझे इसका आधा ही आनंद आया, क्योंकि मैं पूरी तरह से सहज नहीं था। मुझे स्पष्ट रूप से लगता है कि गाड़ी में बैठकर सुंदर दृश्यों की खोज करना मुझे रास नहीं आता; एक वैगन, एक स्प्रिंग-कार्ट, यहाँ तक कि एक पोस्ट-चेज़ भी काम आ सकती थी, लेकिन वह घोड़ागाड़ी सब कुछ उलट-पुलट कर देती है। मैं चुपके से निकल जाना चाहती थी, और पहाड़ियों और घाटियों के बीच अकेले भाग जाना चाहती थी। अनियंत्रित और आवारा प्रवृत्तियाँ मुझे सता रही थीं, और मुझे उन्हें नियंत्रित करना पड़ा, या यूँ कहें कि दबाना पड़ा, क्योंकि मुझे किसी भी हद तक उत्साह में डूबने और इस तरह "शेरनी", लेखिका, कलाकार की ओर ध्यान आकर्षित करने का डर था। सर जे. के. शटलवर्थ एक सक्षम और बुद्धिमान व्यक्ति हैं, लेकिन ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जिनके सामने कोई स्वेच्छा से झुक जाए।

आप कहते हैं कि आपको लगता है कि अब तक मेरे जान-पहचान के लोगों का दायरा काफी बढ़ गया होगा। नहीं, मैं ऐसा नहीं कह सकता। मुझे संदेह है कि ऐसा करने की इच्छा या क्षमता मुझमें है भी या नहीं। कुछ ही मित्र हैं जिन्हें मैं अच्छी तरह जानना चाहता हूँ; यदि ऐसा ज्ञान मुझे उतना ही सम्मान दिलाता है तो मैं अपने भावों को केंद्रित करने से खुद को रोक नहीं पाऊँगा। मेरे विचार से फिजूलखर्ची, मानहानि का पर्यायवाची है। हालाँकि, अभी तक मेरी परीक्षा नहीं हुई है। वसंत ऋतु में लंदन में बिताए एक महीने के दौरान, मैं बहुत शांत रहा, क्योंकि मुझे अपने सामने "शेर बनने" का डर सता रहा था। मैं केवल एक बार ही बाहर खाने गया और एक बार ही शाम की पार्टी में शामिल हुआ; और मैंने केवल सर जे. के. शटलवर्थ और अपने प्रकाशकों से ही मुलाकात की है। मैं इस व्यवस्था को छोड़ना नहीं चाहता। जहाँ तक मैं समझता हूँ, बिना सोचे-समझे लोगों से मिलना-जुलना केवल समय की बर्बादी और चरित्र के पतन का कारण बनता है। इसके अलावा, पापा को बार-बार छोड़ना ठीक नहीं होगा; वे अब 75 वर्ष के हो चुके हैं, बुढ़ापे की कमजोरियाँ उन पर हावी होने लगी हैं। गर्मी के मौसम में उन्हें लगातार ब्रोंकाइटिस की समस्या रही, लेकिन शुक्र है कि अब उनकी हालत कुछ बेहतर है। मुझे लगता है कि बदलाव और व्यायाम से मेरे स्वास्थ्य को भी फायदा हुआ है।

आप एलेन नुसे के बारे में पूछ रहे हैं। जब मैंने एलेन को लगभग दो महीने पहले

देखा था, तो वह बेहद स्वस्थ लग रही थीं। मुझे कभी-कभी गपशप के छोटे-छोटे अंश सुनने को मिलते हैं जो मुझे मनोरंजक लगते हैं। कोई दावा करता है कि उसके पास यह कहने का अधिकार है कि "जब मिस ब्रोंटे लंदन में थीं, तो वह रविवार को चर्च नहीं जाती थीं और सप्ताह के दिनों में पार्टियों, थिएटरों और ओपेरा में घूमती रहती थीं।" दूसरी ओर, लंदन के लोग मेरे एकांतवास को आश्चर्य का विषय बना देते हैं और इसके लिए बीस मनगढ़ंत कहानियां गढ़ देते हैं। पहले मैं इन खबरों को दिलचस्पी और कुछ हद तक विश्वास के साथ सुनता था; अब मैं बहरा और संशयवादी हो गया हूँ। अनुभव ने मुझे सिखाया है कि उनकी कहानियां कितनी आधारहीन हो सकती हैं।

इस हार्दिक आशा के साथ कि आपका स्वास्थ्य बेहतर है, और जब भी आप अपने सभी पुराने मित्रों से मिलें या उन्हें पत्र लिखें, तो उन्हें हार्दिक याद करें (और चाहे उनके मन में मेरे प्रति मित्रता का भाव समाप्त हो गया हो या नहीं, जिसका मुझे डर है कि कुछ मामलों में ऐसा ही है), - मेरी प्रिय मिस वूलर, मैं सदा आपकी स्नेहपूर्वक और आदरपूर्वक हूँ।

'सी. ब्रोंटे।'

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 14 जुलाई, 1851।

प्रिय मिस वूलर, आपका पत्र पाकर मुझे सबसे पहले निराशा हुई; लेकिन थोड़ा सोचने पर मुझे समझ आ गया कि सब कुछ अच्छा ही हुआ। सच कहूँ तो, आपको और एलेन को एक साथ बुलाना मेरी बहुत बड़ी फिजूलखर्ची थी; ऐसे अच्छे पलों को आपस में बाँटना कहीं बेहतर है। आपके आने की उम्मीद मुझे तब तसल्ली देगी जब एलेन का आना बीत जाएगा। ऐसा नहीं है कि मैं दोस्तों की संगति पर निर्भर रहने की कमजोरी के आगे झुकना चाहता हूँ, चाहे वे कितने भी प्यारे क्यों न हों, लेकिन फिर भी कभी-कभार मिलने वाली संगति को मैं जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा मानता हूँ और उसकी तलाश भी करता हूँ। इसलिए, जब भी आपको हॉवर्थ आने में सुविधा हो, मुझे बताएँ, और अगर कोई ऐसी बात न हो जो अभी मैं नहीं देख सकता, तो आपका हार्दिक स्वागत होगा। अगर किसी कारणवश आना टालना पड़े, तो मैं आपको खुलकर बता दूँगा।

समाज के सुख-सुविधाएँ, न ही सुंदर दृश्यों का आनंद, मैं आपको प्रदान नहीं कर सकता, लेकिन मैं आपको खुले मैदान, कुछ किताबें, बालों को संवारने के कई मौके

और एक पुराना शिष्य उपलब्ध करा सकता हूँ। एलेन ने शायद आपको बताया होगा कि मैंने इस गर्मी में एक महीना लंदन में बिताया है। जब आप आएँ तो आप इस विषय पर जो चाहें प्रश्न पूछ सकते हैं, और मैं अपनी हकलाने की क्षमता के अनुसार उनका उत्तर देने का प्रयास करूँगा। "क्रिस्टल पैलेस" के विषय पर मुझसे ज़्यादा सवाल न करें। मैं वहाँ पाँच बार गया था, और निश्चित रूप से कुछ रोचक चीज़ें देखीं, और वहाँ का नज़ारा काफ़ी आकर्षक और विस्मयकारी है, लेकिन मैं कभी भी उस विषय पर भावुक नहीं हो पाया, और हर बार की यात्रा मेरी अपनी मर्ज़ी से नहीं बल्कि ज़बरदस्ती की गई थी। वह एक अत्यधिक भीड़भाड़ वाला स्थान है; और अंततः, उसके चमत्कार केवल आँखों को ही आकर्षित करते हैं और शायद ही कभी दिल या दिमाग को छूते हैं। मैं इस अंतिम कथन का अपवाद उन लोगों के लिए मानता हूँ जिनके पास वैज्ञानिक ज्ञान का व्यापक भंडार है। एक बार मैं सर डेविड ब्रूस्टर के साथ गया था, और मैंने महसूस किया कि वे वस्तुओं को मेरी दृष्टि से अलग नजरिए से देखते थे।

‘एलेन लिख रही है, इसलिए वह अपना शुभकामना संदेश स्वयं पहुंचाएगी। अगर पापा कमरे में होते, तो मुझे पता है कि वे अपना सम्मान चाहते; और आपको मेरी ओर से शुभकामनाएँ और कुछ और हार्दिक उपहार स्वीकार करने चाहिए।’

‘सी. ब्रोंटे।’

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 22 सितंबर, 1851।

मेरी प्यारी मिस वूलर, हमारे मेहमान (कॉर्नवाल से आए एक रिश्तेदार) के चले जाने के बाद, अब सब ठीक है। जब भी आपका मन करे, पापा और मुझे आपसे मिलकर बहुत खुशी होगी। मेरी यही कामना है कि जो सुहाना मौसम अभी है, वह आपके साथ भी रहे। मुझे डर है कि आपके आने से पहले मौसम बदलने की आशंका से मैं इन अच्छे दिनों का थोड़ा उपेक्षित रहा। पापा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ, आपका आदरपूर्वक और स्नेहपूर्वक।

‘सी. ब्रोंटे.

‘जल्दी आइए; अगर हो सके तो बुधवार को।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

3 अक्टूबर, 1851।

प्रिय नेल, - यह मत सोचो कि मैं तुम्हें भूल गई हूँ क्योंकि मैंने तुम्हारे आखिरी पत्र के बाद से नहीं लिखा। लगभग हर दिन तुम मेरे विचारों में रहती हो और मैं सोचती रहती हूँ कि तुम्हारी माँ कैसी हैं; कृपया मुझे जल्द से जल्द सूचना दे देना। मैं व्यस्त थी, पहले एक अप्रत्याशित मेहमान, कॉर्नवाल से आई एक चचेरी बहन, जो कुछ दिनों से हमारे साथ रह रही है, और अब मिस वूलर के साथ, जो सोमवार को आई थीं। उनके बारे में हम मिलने पर कभी भी बात कर सकते हैं। मिस वूलर बहुत ही मिलनसार हैं और हमेशा से रही हैं। वह अच्छी शराब की तरह हैं: मुझे लगता है कि समय के साथ उनका व्यक्तित्व निखरता है; और वास्तव में, वह दिखने में चाहे जैसी भी हों, मन से रो हेड में रहने के समय से भी अधिक युवा हैं। पापा और उनके बीच बहुत अच्छी बनती है। मैंने अभी पापा को भोजन कक्ष में आते हुए सुना और उन्होंने उनकी समझदारी की बहुत प्रशंसा की। मुझे लगता है कि अब तक वह काफी सहज हैं और उन्हें हॉवर्थ पसंद है, लेकिन चूंकि वह अपने साथ केवल थोड़ा सा सामान लाई हैं, इसलिए वह ज्यादा दिन नहीं रुक सकतीं।

आप कैसी हैं? सीधे पत्र लिखना। आपकी माँ को मेरा प्यार, इत्यादि। अलविदा, प्रिय नेल। — आपकी विश्वासपात्र,

‘सी. ब्रोंटे.

मिस वूलर को

6 फरवरी, 1852।

एलेन नुसे ने आपको बताया होगा कि मैंने पिछले दिसंबर में लंदन में दो सप्ताह बिताए थे; वे चाहते थे कि मैं एक महीना रुकूँ, उनका कहना था कि इतने समय में मैं अपने परिचितों का पूरा दायरा बना लूँगी, लेकिन मुझे दो सप्ताह का ऐसा रोमांच ही काफी लगा। पूरा दिन आमतौर पर दर्शनीय स्थलों की सैर में बीतता था, और अक्सर शामें समाज में ही गुज़ारी जाती थीं; यह मेरे लिए लंबे समय तक सहन करने से परे था। एक बार मेरी मुलाकात अपने आलोचकों के एक समूह से हुई - उनमें से सात लोग थे; उनमें से कुछ तो लेखन में मेरे कट्टर दुश्मन रहे थे, लेकिन आमने-सामने वे बेहद विनम्र थे। ये सज्जन मुझे उन कुछ लेखकों से कहीं अधिक भव्य, आडंबरपूर्ण, जोशीले और दिखावटी लगे, जिन्हें मैंने देखा था। उदाहरण के लिए, श्री थैकरे शांत और सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं; फिर भी उन्हें कुछ आदर और अविश्वास की दृष्टि से देखा जाता है। उनकी बातचीत बहुत ही विचित्र है, इतनी अटपटी कि सुखद नहीं

लगती। मुझे चार्ल्स डिकेंस, लेडी मॉर्गन, श्रीमती ट्रोलोप, गोर और कुछ अन्य लेखकों से मिलने का प्रस्ताव दिया गया था, लेकिन मुझे पता था कि इन परिचय से मुझे कुछ हद तक प्रसिद्धि मिलेगी जिसका सामना मैं नहीं करना चाहता था; इसलिए मैंने कृतज्ञतापूर्वक इसे अस्वीकार कर दिया।

शहर में अपने प्रवास के दौरान मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित करने वाली चीज वे चित्र थे जो मैंने देखे। टर्नर के सर्वश्रेष्ठ जलरंग चित्रों के एक-दो निजी संग्रह वास्तव में एक अद्भुत अनुभव थे; उनके बाद के तेल चित्र विचित्र चीजें हैं - ऐसी चीजें जिनका वर्णन करना असंभव है।

मैंने मैक्रेडी को दो बार अभिनय करते देखा—एक बार मैकबेथ में और एक बार ओथेलो में। मैंने एक डिनर पार्टी में यह कहकर सबको चौंका दिया कि मुझे उनका अभिनय पसंद नहीं आया। उनके शानदार अभिनय की तारीफ करना आजकल फैशन बन गया है। उनकी पूरी शैली से ज़्यादा बनावटी और कृत्रिम, कम प्रभावशाली कुछ और हो सकता था, जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। सच तो यह है कि पूरा रंगमंच ही खोखला और बेतुका है। वे प्रहसन तो ठीक-ठाक करते हैं: अभिनेता अपने किरदारों को समझते हैं और उनके साथ न्याय करते हैं। लेकिन उन्हें त्रासदी या शेक्सपियर के बारे में कुछ भी समझ नहीं है, और यही उनकी विफलता है। मैंने ऐसा कहा; और ऐसा कहने पर सन्नाटा छा गया—एक खामोश हैरानी। मुझे कई मौकों पर असहमति जतानी पड़ी, और असहमति जताकर मैंने लोगों को नाराज़ भी किया। आजकल एलिज़ाबेथ बैरेट ब्राउनिंग जैसी एक खास तरह की, शब्दों से भरी, जटिल और अस्पष्ट काव्य शैली की प्रशंसा करना आम बात हो गई है। कुछ ऐसी रचनाओं का ज़िक्र हुआ जिनके बारे में करर बेल से बहुत उत्साह की उम्मीद थी, लेकिन ऐसा न कर पाने पर उन्होंने निराश किया।

लंदन के लोग देहाती नज़र आते हैं क्योंकि वे उन छोटी-छोटी बातों में बहुत ज़्यादा उलझे रहते हैं जिनकी परवाह शहर के खास तबकों के बाहर कोई नहीं करता; वे ऐसे लोगों—साहित्यिक पुरुषों और महिलाओं—के बारे में भी बात करते हैं जिनके नाम गाँव में शायद ही सुने जाते हैं और जिनमें कोई दिलचस्पी नहीं जगा सकता। मुझे लगता है कि मुझे लंदन में रहना शायद ही पसंद आएगा, और अगर मुझे वहाँ रहने के लिए मजबूर किया गया, तो मैं निश्चित रूप से कम ही लोगों से मिलूंगा, खासकर साहित्यिक मंडलों से दूर रहूंगा।

आपने मुझसे कहा था, मेरी प्रिय मिस वूलर, कि मैं एक लंबा पत्र लिखूँ। मैंने आपकी बात मान ली है। — अब यकीन मानिए, आपका स्नेहपूर्वक और आदरपूर्वक।

'सी. ब्रोंटे।'

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 12 मार्च, 1852।

प्रिय मिस वूलर, आपका स्नेहपूर्ण पत्र मुझे बहुत लुभा रहा है, पर मुझे इसका विरोध करना होगा। जब तक स्वास्थ्य या कोई और अत्यावश्यक कारण न हो, मुझे घर से बाहर नहीं जाना चाहिए। लगभग चार महीनों से (यानी जब से मैं बीमार हुई हूँ) मैंने कलम नहीं उठाई है। मेरा काम यूँ ही पड़ा है, और अभ्यास की कमी के कारण मेरी सोचने-समझने की क्षमता सुस्त पड़ गई है। अब और आराम करना संभव नहीं है, और मैं इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहती। मेरे प्रकाशक मेरी लंबी देरी से परेशान हैं; कभी-कभी मुझे उनकी अधीरता को संक्षिप्त और रूखे उत्तरों से शांत करना पड़ता है।

फिर भी, जिस सुख से मैं अब खुद को वंचित कर रहा हूँ, उसे मैं केवल स्थगित ही मानना चाहूँगा। मैंने सुना है कि आप गर्मियों के दौरान स्कारब्रो जाने का प्रस्ताव रख रहे हैं, और यदि मैं जुलाई या अगस्त के अंत तक अपना काम पूरा कर लूँ, तो मुझे वहाँ आपके साथ कुछ समय बिताने में कितनी खुशी होगी!

एलेन शायद मई के आसपास दो-तीन महीने के लिए दक्षिण की ओर जाएगी; उसने मेरे भी साथ जाने और ससेक्स तट पर ठहरने की योजना बनाई है; लेकिन कई कारणों से यह योजना मुझे अव्यावहारिक लगती है, और इसके अलावा, मेरे डॉक्टर को गर्मियों में दक्षिण की ओर जाने की सलाह पर संदेह है, उनका कहना है कि इससे बहुत थकान हो सकती है, जबकि स्कारब्रो या बर्लिंगटन से ताजगी और शक्ति मिलेगी। हालांकि, अभी इतनी दूर की योजना बनाना मेरे लिए मुश्किल है। मेरे लिए बहुत कुछ निर्भर करता है, पहला पापा के स्वास्थ्य पर (जो पूरी सर्दी, शुक्र है, बहुत अच्छा रहा है), और दूसरा, काम की प्रगति पर, जो पूरी तरह से इच्छा या संकल्प पर निर्भर नहीं है, बल्कि काफी हद तक प्रयास और गणना से परे है।

मैं फिलहाल और नहीं लिखूंगी, क्योंकि मैं इस पोस्ट को बचाकर रखना चाहती हूं। अगर घर के सभी लोगों को पता चले कि मैं लिख रही हूं, तो वे आपको हार्दिक शुभकामनाएं देंगे। टैबी और मार्था दोनों अक्सर मिस वूलर का हालचाल पूछती रहती

हैं और जब भी मौका मिले, उनसे सम्मान पाने की कामना करती हैं। — यकीन मानिए, आपकी सदा स्नेहपूर्ण और आदरपूर्ण।

‘सी. ब्रोंटे।’

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 2 सितंबर, 1852।

प्रिय मिस वूलर, मैंने आपके इस अत्यंत स्नेहपूर्ण पत्र का उत्तर देने में इसलिए देरी की क्योंकि मैं पापा के स्वास्थ्य के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थी। हमले के बाद कुछ हफ्तों तक उनकी सेहत में उतार-चढ़ाव आते रहे, और एक बार तो बीमारी के दोबारा होने का खतरा भी मंडरा रहा था, लेकिन मुझे उम्मीद है कि अब उनका स्वास्थ्य पूरी तरह से ठीक हो चुका है। आंख की तीव्र सूजन, जिससे पापा इतने परेशान थे कि उन्हें दृष्टि खोने का डर था, लेकिन जो शायद मस्तिष्क में रक्त के प्रवाह में अचानक वृद्धि का मात्र लक्षण था, अब पूरी तरह से ठीक हो गई है; आंशिक लकवा भी दूर हो गया है; भूख भी बढ़ गई है; कमजोरी और कभी-कभार हल्का चक्कर आना ही अब बीमारी के एकमात्र बचे हुए लक्षण प्रतीत होते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि पापा के उत्तम स्वास्थ्य को देखते हुए, उनके अभी कई वर्षों तक मेरे साथ रहने की पूरी संभावना है।

'दो बातों के लिए मैं अत्यंत आभारी हूं, अर्थात्, मेरी मानसिक क्षमताएं पूरी तरह से अक्षुण्ण रहीं, और यह कि मेरा स्वास्थ्य और शक्ति इस अवसर के लिए पर्याप्त साबित हुई। हालांकि मैं फाइली में निश्चित रूप से एकाकी था, फिर भी मुझे इस बदलाव से बहुत लाभ हुआ।'

इस सुहावने गर्म मौसम में समुद्र किनारे जाना कितना सुखद होगा, और मैं तुम्हारे साथ वहाँ रहना चाहूँगी; लेकिन अभी मुझे ऐसी किसी बात की उम्मीद नहीं है। तुम अच्छी तरह समझ सकती हो कि वर्तमान परिस्थितियों में पापा से दूर रहने के दौरान मुझे मन की शांति मिलना असंभव है; घर छोड़ने के बारे में सोचने से पहले उनका पूरी तरह से स्वस्थ होना ज़रूरी है।

प्रिय मिस वूलर, यदि आप इस मौसम में स्कारब्रो जाएँ, तो क्या मैं आपसे अनुरोध कर सकता हूँ कि आप एक बार कब्रिस्तान जाकर देख लें कि क्या पत्थर पर अंकित शिलालेख में मेरे निर्देशानुसार कोई परिवर्तन किया गया है। इस विषय पर हमें तब से कोई सूचना नहीं मिली है, और मुझे आशंका है कि परिवर्तन पर ध्यान नहीं दिया गया

होगा।

'एलेन ने दक्षिण में काफी समय बिताया है, लेकिन मुझे विश्वास है कि वह जल्द ही वापस आ जाएगी, और मैं शरद ऋतु में उसकी संगति का आनंद लेने के लिए उत्सुक हूं।'

सभी पुराने मित्रों को हार्दिक शुभकामनाओं सहित और आपको हार्दिक प्रेम के साथ, मेरी प्रिय मिस वूलर, मैं आपकी स्नेहपूर्वक और आदरपूर्वक हूँ।

‘सी. ब्रोंटे।’

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 21 सितंबर, 1852।

मेरी प्यारी मिस वूलर, — यह जानकर मुझे बहुत दुख हुआ कि जब एलेन पादरी के घर आई थी, तब आप फ्लू से पीड़ित थीं। मैं जानती हूँ कि आपके मामले में यह कमज़ोर कर देने वाली बीमारी मामूली नहीं है, क्योंकि इसके प्रभाव लंबे समय तक बने रहते हैं। यह इस इलाके में बहुत फैली हुई है। मैं तो बच नहीं पाई, लेकिन बीमारी और बुखार कुछ ही दिनों तक रहा और खांसी भी ज़्यादा गंभीर नहीं थी। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पापा की तबीयत ठीक है; एलेन को लगता है कि उनमें ज़रा भी बदलाव नहीं आया है।

और अब आपके इस अनमोल उपहार के लिए। यह पुस्तक मेरे लिए बहुत कीमती होगी—शायद मुख्य रूप से उपहारदाता के लिए, लेकिन स्वयं पुस्तक होने के कारण भी, क्योंकि यह एक अच्छी पुस्तक है; और मैं चाहता हूँ कि मैं इसे उस भावना के साथ पढ़ सकूँ जो आप चाहते हैं। इसे पढ़ने की सलाह इस प्रकार दी गई है कि उपेक्षा का कोई खतरा न रहे; यह हमेशा मेरी ड्रेसिंग टेबल पर रहेगी।

‘वर्तमान के दूसरे भाग की बात करें तो, यह इन परिस्थितियों में प्राप्त हुआ:

पिछले एक महीने से सर्दियों के कपड़े खरीदने और बनवाने की अत्यावश्यक इच्छा मेरे मन में खटक रही थी; खरीदारी तो जल्द ही हो सकती थी, लेकिन बनवाना कहीं अधिक गंभीर मुद्दा था। इसी समय एलेन एक बड़ा सा पार्सल लेकर आई, जिसे खोलने पर मुझे मेरी ज़रूरत की चीज़ें मिलीं, एकदम सही ढंग से बनी हुई और बेहतरीन कपड़े की; साथ ही सजावट भी थी - और यह सजावट इतनी सुंदर थी कि शायद मैं खुद इसे नज़रअंदाज़ कर देती क्योंकि यह एक अनावश्यक परेशानी होती। मुझे इस बात पर संदेह हुआ कि क्या मुझे इस अप्रत्याशित और संयोगवश मिले

उपहार को स्वीकार करना चाहिए; कपड़ों के साथ आए नोट को पढ़कर मुझे पता चला कि इसे स्वीकार करना एक तरह से उपकार करना होगा (!) यह बात इतनी लुभावनी थी कि इसे ठुकराना मुश्किल था; मैंने इसकी सत्यता की कोई भी बारीकी से जाँच नहीं की - संक्षेप में, मैंने इसे यथासंभव विनम्रता से स्वीकार कर लिया।

एलेन सिर्फ एक हफ्ते से मेरी साथी है। मैं उसे और नहीं रखना चाहती, क्योंकि मैं खुद से और अपनी देरी से तंग आ चुकी हूँ, और मुझे लगता है कि उसे बुलाना ही मेरे लिए प्रलोभन के आगे झुकना था; लेकिन सच तो यह है कि मेरा मनोबल गिर रहा था - कभी-कभी तो बिल्कुल टूट जाता था, और उसने मुझे बहुत सहारा दिया है। मुझे आश्चर्य है कि मैं तुम्हें हॉवर्थ में कब दोबारा देख पाऊँगी। मेरे पिता और नौकरों ने बार-बार यह इच्छा ज़ाहिर की है कि तुम्हें गर्मियों और पतझड़ के दौरान आने का अनुरोध किया जाए, लेकिन मैंने हमेशा अनसुना कर दिया: "अभी नहीं," मैं सोचती थी, "मैं पहले आज़ाद होना चाहती हूँ - पहले काम, फिर आनंद।"

मैं एलेन के माध्यम से एक किताब भेजना चाहती हूँ जो शायद एक घंटे का मनोरंजन कर दे: एक पादरी की पत्नी द्वारा लिखी गई स्कॉटिश कहानी। मुझे लगता है कि यह अच्छी तरह से लिखी गई है, और शायद आपको स्कॉटलैंड में देखे गए पात्रों और रीति-रिवाजों की याद दिलाएगी। जब आपको एक पंक्ति लिखने का समय मिले, तो मैं आपका हालचाल जानने के लिए उत्सुक रहूँगी। सभी पुराने दोस्तों को हार्दिक शुभकामनाएँ और आपके प्रति सच्चा स्नेह; जिसमें एलेन भी मेरा साथ दे रही है, — मेरी प्रिय मिस वूलर, आपकी आभारी और आदरपूर्ण।

'सी. ब्रोंटे।'

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 8 अक्टूबर, 1852।

'मेरी प्रिय मिस वूलर, घर लौटते ही मैं आपको तुरंत पत्र लिखना चाहता था, लेकिन मुझे कई छोटे-मोटे कामों में व्यस्त रहना पड़ा और इसी वजह से मैं अब तक व्यस्त रहा।'

मैं दोपहर करीब पांच बजे घर पहुंचा, और अनुपस्थिति के बाद घर लौटने पर होने वाली स्वाभाविक चिंता पापा को स्वस्थ और खुश देखकर सुखद रूप से दूर हो गई। उन्होंने बड़े चाव से आपका हालचाल पूछा। मैंने उन्हें आपका प्रणाम कहा, और उन्होंने विशेष रूप से मुझसे कहा कि जब भी मैं पत्र लिखूं, तो उनका प्रणाम भी लिखूं, और

यह भी कहूं कि उन्हें आशा है कि वे आपको हॉवर्थ में जल्द से जल्द, जब भी आपको सुविधाजनक लगे, मिलेंगे।

हॉर्नसी में बिताया गया मेरा सप्ताह बहुत सुखद और आनंददायक रहा। प्रिय मिस वूलर, आपके सच्चे स्नेह के लिए धन्यवाद, जिसने इस सप्ताह को इतना आकर्षक बना दिया। मैं आपको अक्सर याद करूंगी, खासकर जब मैं बाहर घूमने जाऊंगी और लंबी शामों में। मुझे लगता है कि मौसम आखिरकार सुहावना हो गया है: आज का दिन बहुत ही सुहावना है। काश मैं हॉर्नसी में होती और अभी आपके साथ रेत पर या झील के किनारे टहलने जाने की तैयारी कर रही होती।

जब आपका मन न हो तब भी मुझे पत्र लिखकर अपना समय बर्बाद न करें, लेकिन फिर भी मुझे आपसे कभी न कभी पत्र पाकर खुशी होगी। जब आप लिखें, तो मुझे बताएं कि आपको 'द एक्सपीरियंस ऑफ लाइफ' कैसी लगी, और क्या आपने एस्मंड को पढ़ा है और उसके बारे में आपकी क्या राय है। — आपका सदा स्नेह और सम्मान।

'सी. ब्रोंटे।'

मिस वूलर को

'ब्रुकरॉयड, 7 दिसंबर, 1852।

'मेरी प्यारी मिस वूलर, - चूंकि आपने शनिवार को मेरी छोटी-सी परेशानी में रुचि दिखाई, इसलिए मैं आपको यह बताने के लिए एक पंक्ति लिख रहा हूँ कि रविवार सुबह एक पत्र आया जिससे मुझे दर्द से राहत मिली और लंदन की अचानक यात्रा करने की आवश्यकता समाप्त हो गई।'

'पैसे का लेन-देन तो बेशक वही रहता है, और शायद पूरी तरह से न्यायसंगत भी नहीं है; लेकिन जब किसी लेखक को पता चलता है कि उसकी रचना को दिल से सराहा जा रहा है, तो वह बाकी सब माफ कर सकता है - वास्तव में, अब मेरा सबसे बड़ा अफसोस इस बात का है कि पापा निराश होंगे: उन्होंने मुझसे 500 पाउंड कमाने की उम्मीद की थी, और मैंने खुद भी इतनी कम राशि की पेशकश की उम्मीद नहीं की थी; हालांकि, 250 पाउंड भी कम नहीं हैं।'

ब्रूकरॉयड से आपके अचानक चले जाने से शोक संतप्त परिवार में सन्नाटा छा गया। एलेन को शांत करना आसान नहीं था, हालांकि मैंने उसे बार-बार यही बताया कि आपने हॉवर्थ को भी उतनी ही जल्दबाजी में छोड़ा था। मुझे आपको यह बताने का

आदेश दिया गया है कि उसने क्रिसमस के बाद तक यारमाउथ न जाने का फैसला किया है, क्योंकि पिछले कुछ दिनों में उसकी माँ के स्वास्थ्य में कुछ ऐसे लक्षण दिखाई दिए हैं जो उनकी पिछली बीमारी से पहले के लक्षणों से मिलते-जुलते हैं; और हालांकि यह आशा की जाती है कि ये लक्षण बिना किसी अप्रिय परिणाम के ठीक हो जाएंगे, फिर भी स्वाभाविक रूप से एलेन की फिलहाल घर छोड़ने की अनिच्छा बढ़ गई है।

दूसरे, मैं यह कहना चाहता हूँ कि जब आपके द्वारा छोड़े गए उपहार की जाँच की गई, तो उसकी कीमती कीमत और सुंदरता ने कुछ चिंता उत्पन्न की। एलेन सोचती है कि आप बहुत दयालु हैं, जैसा कि मैं भी हर सुबह सोचता हूँ, क्योंकि अब मुझे आपके इस उदार उपहार से लाभ मिल रहा है।

“पार्सनेज में सभी को हार्दिक शुभकामनाओं सहित, मेरी प्रिय मिस वूलर, मैं आपकी आदरपूर्वक और स्नेहपूर्वक हूँ।”

‘सी. ब्रोंटे.

नोट - मैं निर्देश दूंगा कि जैसे ही हन्सवर्थ दल एस्मंड (श्री थैकरे की रचना) को पढ़ ले, उसे आपको भेज दिया जाए। इसका दूसरा संस्करण पहले ही प्रकाशित हो चुका है।

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 20 जनवरी, 1853।

प्रिय मिस वूलर, अगर मेरी सेहत बेहतर होती तो आपके पिछले स्नेहपूर्ण पत्र का उत्तर इतने लंबे समय तक न दिया जाता। जब एलेन मेरे साथ थी, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मैं चमत्कारिक रूप से तरोताज़ा हो गई हूँ, लेकिन जिस दिन वह गई, उसी दिन से मेरी तबीयत फिर से बिगड़ने लगी; और यह बिगड़ती हालत बीमारी के दोबारा होने का संकेत थी। अगले दिन मेरे डॉक्टर ने फोन किया; उन्होंने कहा कि मुझे जो सिरदर्द हो रहा था, वह लीवर की निष्क्रियता के कारण था।

'भगवान का शुक्र है, अब मैं बेहतर महसूस कर रहा हूँ; और इस सुधार के लिए मैं बहुत आभारी हूँ - अपने प्रिय पिता के लिए उतना ही आभारी हूँ जितना कि अपने लिए।'

मैं आपके मित्र के बारे में आपकी चिंता को पूरी तरह समझ सकती हूँ। उनके इंग्लैंड छोड़कर अकेले एक अनजान देश में जाने का विचार, उनकी स्वाभाविक

संवेदनशीलता और संकोच के साथ, वास्तव में कष्टदायक है; फिर भी, मेरी प्रिय मिस वूलर, यदि वे वास्तव में अमेरिका चले जाते हैं, तो मैं आपको वही सांत्वना और सहारा दे सकती हूँ जो आपने मुझे दिया है, और जिसे आप कभी नहीं भूलतीं - अर्थात्, ईश्वर पर भरोसा। "ईश्वर फटे हुए मेमने के लिए हवा को नरम कर देता है," और वह निस्संदेह एक अच्छे, भले ही दुखी व्यक्ति की देखभाल करेगा, चाहे उसे कितनी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़े। जब आप दोबारा लिखें, तो मुझे यह जानकर खुशी होगी कि इस विषय पर आपकी चिंता दूर हुई है या नहीं। एलेन के माध्यम से यह जानकर मुझे वास्तव में खुशी हुई कि इल्कली अभी भी आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल है। नव वर्ष आपके लिए सुखद और शांतिपूर्ण हो, इसकी हार्दिक कामना करते हुए, - मेरी प्रिय मिस वूलर, आपकी हार्दिक और स्नेहपूर्ण।

'सी. ब्रोंटे।'

मिस वूलर को

27 जनवरी, 1853।

प्रिय मिस वूलर, आपका पत्र मुझे लंदन में मिला, जहाँ मैं लगभग तीन सप्ताह से रह रही हूँ और शायद कुछ और दिन रुकूँगी। विलेट कल प्रकाशित होने वाला है। श्रीमती गैस्केल की नई रचना के साथ टकराव से बचने के लिए इसे जानबूझकर अब तक विलंबित किया गया था। आपका नाम उपस्थित होने वालों की सूची में सबसे पहले था और पत्र पार्सनेज को भेजा गया था, जहाँ मैं यह पत्र भी भेज रही हूँ, क्योंकि आपने उल्लेख किया है कि आप इस सप्ताह के अंत में हैलिफ़ैक्स छोड़ रही हैं। श्रीमती मॉर्गन के बारे में आपने जो कहा है, मैं उसे ध्यान में रखूँगी; और यदि मुझे कभी उनकी सेवा करने का अवसर मिला, तो मैं ऐसा करने में कोई कसर नहीं छोड़ूँगी। काश, मेरे उपयोगी होने की संभावना अधिक होती। लंदन में स्कूल लगभग अप्रचलित माने जाते हैं। हर शाखा के लिए प्रोफेसरों वाले महिला महाविद्यालय पुराने जमाने के सेमिनरी की जगह ले रहे हैं। यह प्रणाली कैसे काम करेगी, यह मैं नहीं कह सकती। मुझे लगता है कि कॉलेज की कक्षाएं उन महिलाओं की शिक्षा पूरी करने के लिए बहुत उपयोगी हो सकती हैं जो आगे चलकर गवर्नेस के रूप में काम करना चाहती हैं, लेकिन छोटी लड़कियां उनमें कितनी प्रगति करेंगी, यह मेरे लिए एक अलग प्रश्न है।

प्रिय मिस वूलर, मैंने मिस मार्टिन्यू के बारे में आपकी सारी बातें ध्यान से पढ़ीं;

आपकी सच्ची और निरंतर चिंता ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मुझे आपकी सलाह को नज़रअंदाज़ करने या उसका विरोध करने में दुख होगा, फिर भी मुझे नहीं लगता कि मिस मार्टिन्यू को पूरी तरह से छोड़ देना सही होगा। उनके स्वभाव में बहुत कुछ बहुत ही नेक है। सैकड़ों लोगों ने उन्हें छोड़ दिया है, मुझे डर है कि ज़्यादातर लोगों ने इस डर से कि उनके नाम पर दाग लग सकता है अगर उन्हें उनके साथ जोड़ा जाए, न कि किसी शुद्ध विश्वास से, जैसा कि आपने सुझाव दिया है, कि उनके घातक सिद्धांतों से नुकसान हो सकता है। मैं इन मतलबी दोस्तों के साथ नहीं रह सकती। और क्या उनका पाप उन पापों में से एक नहीं है जिनका न्याय मनुष्य नहीं बल्कि ईश्वर को करना चाहिए?

सच कहूँ तो, मेरी प्रिय मिस वूलर, मेरा मानना है कि अगर आप मेरी जगह होतीं और मिस मार्टिन्यू को उतना ही जानतीं जितना मैं जानती हूँ—अगर आपने मुझे उनकी कठोर लेकिन सच्ची दयालुता के प्रमाणों से अवगत कराया होता, और देखा होता कि कैसे वह भीतर ही भीतर परित्याग से पीड़ित हैं, तो आप उन्हें छोड़ने वाली आखिरी व्यक्ति होतीं; आप पापी को पाप से अलग करतीं, और महसूस करतीं कि सही यही है कि भले ही यह समर्थन प्रचलन से बाहर और अलोकप्रिय हो, लेकिन दुनिया के उदाहरण के बावजूद उनसे मुंह मोड़ने के बजाय चुपचाप उनकी मुश्किल घड़ी में उनका साथ दिया जाए। मेरा मानना है कि वह उन लोगों में से एक हैं जिन्हें विरोध और परित्याग उनकी गलती पर अडिग बना देते हैं, जबकि धैर्य और सहनशीलता उन्हें गहराई से प्रभावित करती हैं और उन्हें अपने दिल से यह पूछने के लिए प्रेरित करती हैं कि क्या वह जिस रास्ते पर चल रही हैं वह कहीं गलत तो नहीं है। खैर, मेरे पास इस विषय पर सोचने का समय है, और मैं इस पर गंभीरता से विचार करूँगी।

लंदन में अपनी इस यात्रा के दौरान मैंने जो कुछ देखा है, उसके बारे में मैं आशा करता हूँ कि एक दिन घर पर आग के पास बैठकर आपको सब कुछ बताऊँगा। जब आप दोबारा लिखें, तो क्या आप कोई ऐसा समय बताएँगे जब आप मुझसे मिलने आ सकें? घर में सभी को आपकी उपस्थिति से प्रसन्नता होगी; आपकी पिछली यात्रा सभी को सुखद रूप से याद है।

'सादर शुभकामनाओं सहित, मैं सदा स्नेहपूर्वक और आदरपूर्वक आपका ही हूं।'

'सी. ब्रोंटे।'

शार्लोट की मृत्यु के बाद मिस नुसे को लिखे गए एक नोट से मिस वूलर द्वारा

अपनी मित्र की लोकप्रियता के संबंध में अपनाए गए काफी चतुर दृष्टिकोण का पता चलता है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

मेरी प्यारी मिस एलेन, शार्लेट की जीवनी का तीसरा संस्करण आखिरकार प्रकाशित हो गया है। हमारे पादरी ने मुझे बताया कि उन्हें पूरा यकीन है कि यह पिछले संस्करणों से काफी घटिया है। तो आप देख सकती हैं कि श्रीमती गैस्केल ने समझदार जनता के लिए गपशप जुटाने में अपनी दूरदर्शिता का परिचय देकर व्यावहारिक ज्ञान का प्रदर्शन किया। क्या मैंने आपको बताया था कि श्रीमती गिब्सन हल में दो-तीन युवतियों को जानती हैं जिन्होंने श्रीमती हेगर के पेंशन में अपनी शिक्षा पूरी की? श्रीमती जी ने कहा कि उन्होंने विलेट को बड़ी रुचि से पढ़ा - बेशक वे पढ़ेंगी। मैंने सफ़ोक की एक महिला के साथ अच्छी सैर की, जो स्पष्ट रूप से हमारे प्रिय सी. बी. को व्यक्तिगत रूप से जानने वाले व्यक्ति से मिलकर बहुत प्रसन्न थीं, और उनके बारे में बातचीत से जल्दी ऊब नहीं सकती थीं। - आपको और बहनों को प्यार, आपकी स्नेही,

'एम. वूलर।'

अध्याय XI: हॉवर्थ के क्यूरेट

श्री ब्रोंटे के कार्यकाल के दौरान हॉवर्थ की जनसंख्या वृद्धि के बारे में पहले ही कुछ कहा जा चुका है। 1821 में यह 4668 थी और 1841 में 6301 हो गई। इससे यह स्वाभाविक है कि श्री ब्रोंटे ने अपने बिशप से अपने पादरी कर्तव्यों में सहायता के लिए

आवेदन किया होगा, और 1838 में उन्हें यह सहायता स्थायी रूप से प्रदान की गई, जब श्री विलियम वेटमैन उनके पहले सहायक पादरी बने। ऐसा प्रतीत होता है कि श्री वेटमैन उनके प्रिय थे। वे कई बार पादरी के निवास पर दिखाई देते थे, हालाँकि मुझे शार्लोट के किसी भी उपन्यास में उनकी कोई छवि नहीं दिखती, और निश्चित रूप से शर्ली के तीन प्रसिद्ध सहायक पादरियों में उनका कोई स्थान नहीं है। ऐसा लगता है कि वे अपने पिता और भाई के अलावा एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें एमिली बर्दाश्त करती थीं। हम जानते हैं कि लड़कियाँ उन्हें स्त्री-समान मानती थीं और उन्हें 'सेलिया अमेलिया' कहकर पुकारती थीं, इसी नाम से वे एलेन नुसे को लिखे शार्लोट के पत्रों में अक्सर दिखाई देते हैं। उनका मिलनसार स्वभाव निर्विवाद प्रतीत होता है। एक किस्सा प्रचलित है कि वे पादरी की बेटियों को वैलेंटाइन कार्ड भेजने के लिए ब्रैडफोर्ड तक पैदल गए थे, क्योंकि उन्हें पता चला कि उन्हें कोई कार्ड नहीं मिला था। एक और किस्सा है कि वे उनका व्याख्यान सुनने के लिए कीघली गए थे। ऐसा लगता है कि वे थोड़े बहुत कवि भी थे, और जब एलेन नुसे हॉवर्थ में उनसे मिलने आई थीं, तो वे उनकी कुछ कविताओं की नायिका थीं। यहाँ एक पत्र है जो उस युवक के बारे में शार्लोट के विचार पर कुछ प्रकाश डालता है - उस समय उनकी आयु तेईस वर्ष थी।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

17 मार्च, 1840।

मेरी प्रिय श्रीमती एलेनोर, — मैं आपको चालीस हॉर्स पावर से डांटना चाहता हूँ क्योंकि आपने मैरी टेलर को बता दिया कि मैंने आपसे अनुरोध किया था कि आप उसे सब कुछ न बताएं, जिससे वह बहुत नाराज़ हो गई है और उसकी जिज्ञासा भी भड़क उठी है। उसे तुरंत हर एक घटना के बारे में बताएं, जिसमें वैलेंटाइन कार्ड, "फेयर ई — -, फेयर ई — -," आदि; "अवे फॉन्ड लव," आदि; "सोल डिवाइन," और सब कुछ शामिल है; साथ ही मिस सेलिया अमेलिया वेटमैन के चित्र का चित्रण और उस युवती की बार-बार और सुखद मुलाकातें भी। वैसे, मैंने उस बुद्धिमान और दिलचस्प युवती से आपके बारे में राय पूछी। उसकी राय अच्छी थी। "उसने" आपको सुंदर और बहुत अच्छी लड़की समझा। क्या आपको वह अखबार मिला है जो भेजा गया है, जिसमें कीघली में "उसके" व्याख्यान की सूचना है? श्री मॉर्गन आए और तीन दिन रुके। मिस वेटमैन की मदद से, हमारी अच्छी बातचीत हुई। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस भोली-भाली लड़की ने उस मोटे वेल्शमैन की बातों को कितने धैर्य और अच्छे

स्वभाव से सहा, हालाँकि बाद में उसने स्वीकार किया कि उसकी लंबी कहानियों से वह लगभग थक गई थी। आपके बिना हम बहुत उदास हैं। काश वे तीन सप्ताह फिर से आ जाते। आपके जाने के बाद से चाची कभी-कभी बहुत नाराज़ रहती थीं - हालाँकि, अब वह कुछ बेहतर हैं। रविवार को मुझे ज़ुकाम हो गया था और मैं दिन भर घर पर ही रही। ऐनी का ज़ुकाम ठीक हो गया है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह अभी पूरी तरह ठीक है। यहूदी टोकरी के लिए चित्र न भेजने के बारे में आपकी बहन ऐनी ने क्या कहा? मुझे उम्मीद है कि वह अर्न्ले जाने के विचारों में इतनी मग्न थी कि उसे इस बारे में याद ही नहीं आया। मुझे अपना पत्र छोटा करना पड़ रहा है। घर में सभी लोग आपको अपना प्यार भेज रहे हैं। मिस सेलिया अमेलिया वेटमैन भी चाहती हैं कि उन्हें याद किया जाए। जल्द ही फिर से लिखना और - यकीन मानिए, आपकी सदा की दोस्त।

'चारिवारी।'

ऐसा लगता है कि वह एक बेहद चिढ़ाए जाने वाले पादरी थे। अब मिस एलेन नुसे, जो अब मिस एग्नेस वाल्टन हैं, उनकी प्रेमिका मानी जाती हैं।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

9 अप्रैल, 1840।

प्रिय श्रीमती मेनेलास, मुझे लगता है कि आपको इतनी जल्दी पत्र लिखना मेरी बहुत बड़ी गलती है; वास्तव में, मुझे डर है कि आप मेरे बार-बार पत्र लिखने से मुझे दखलंदाजी समझने लगेंगी। मुझे हर पत्र के बीच पंद्रह मिनट का अंतराल रखना चाहिए, और मैं समय आने पर ऐसा करूँगा; चिंता मत कीजिएगा। उम्र बढ़ने के साथ-साथ मेरी टालमटोल करने की आदत और भी बेहतर होती जाएगी।

'मेरा हाथ किसी बूढ़े आदमी की तरह कांप रहा है, इसलिए मुझे उम्मीद नहीं है कि आप मेरी लिखावट पढ़ पाएंगे; कोई बात नहीं, पत्र को एक तरफ रख दीजिए और अगली बार जब मैं आपसे मिलूंगा तो मैं इसे आपको पढ़कर सुनाऊंगा।'

मैं अपनी दोस्त मिस सेलिया अमेलिया के लिए एग्नेस वाल्टन का चित्र बना रही हूँ। आप यह देखकर हँसेंगे कि जब वह इसे देखते हैं तो उनकी आँखें कितनी खुशी से चमक उठती हैं, मानो कोई प्यारा बच्चा नए खिलौने को पाकर खुश हो गया हो। अलविदा। मुझे कामदेव वगैरह के बारे में आपकी बकवास और न सुनें। आप भी मेरी तरह जानते हैं कि यह सब निराधार बकवास है।

‘सी. ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

20 अगस्त, 1840।

प्रिय श्रीमती एलेन, आपका लंबा-चौड़ा पत्र पढ़कर मुझे बहुत खुशी हुई। उस पत्र को खोलने का पूरा मामला (जिसमें बत्तखें और श्री वेटमैन भी शामिल थे) इतना हास्यास्पद था, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वैसे, श्री डब्ल्यू की बात करें तो, मैंने आपको बताया था कि वे छह सप्ताह पहले रिपन में अपनी परीक्षा देने गए थे। वे अभी तक वापस नहीं आए हैं, और उनका क्या हुआ, यह हमें नहीं पता। उनके जाने के बाद से ब्रैनवेल को एक पत्र मिला है, जिसमें उन्होंने एग्नेस वाल्टन की प्रशंसा की है, उन पार्टियों का वर्णन किया है जिनमें उन्होंने भाग लिया था, और बताया है कि वे दो बार बुरी तरह से प्यार में पड़ चुके हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि उन्होंने हॉवर्थ को इस पक्के इरादे से छोड़ा है कि वे कभी वापस नहीं लौटेंगे। अगर वे लौटते हैं, तो इसका कारण यह होगा कि उन्हें यहाँ कोई रोज़गार नहीं मिल पाया है। हॉवर्थ उनके लिए उपयुक्त जगह नहीं है। उन्हें कुछ नया चाहिए, नए चेहरे चाहिए, और चुनौतियों का सामना करना चाहिए। वे इतनी आसानी से खुश हो जाते हैं कि जल्द ही खुश करने से ऊब जाते हैं। उन्हें पादरी नहीं बनना चाहिए था। निश्चित रूप से उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। हमारे सम्मानित रिश्तेदार, जैसा कि आप उन्हें कहना चाहें, लंदन वापस चले गए हैं। वे हमारे साथ कभी नहीं रुके, वे केवल एक दिन हमारे घर पर रहे। क्या आपने हाल ही में मिस वूलर्स से कुछ सुना है? काश वे, या कोई और, मुझे नौकरी दिलवा देते। मैंने अनगिनत विज्ञापनों के जवाब दिए हैं, लेकिन मेरे आवेदनों को कोई सफलता नहीं मिली है।

कैलिबन।

यह सोचकर हैरानी होती है कि क्या शार्लोट ब्रोंटे द्वारा किसी नौकरी के लिए आवेदन करते हुए लिखा गया एक भी पत्र सुरक्षित रखा गया है! मैंने तो ऐसा कोई पत्र नहीं देखा है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

29 सितंबर, 1840।

मुझे पता है कि श्रीमती एलेन विलियम वेटमैन के बारे में कुछ सुनने के लिए बहुत उत्सुक हैं। मुझे लगता है कि उन्हें एक शब्द भी न बताकर मैं उन्हें परेशान कर दूँगी।

सच कहूँ तो, मेरे पास कहने के लिए बहुत कम है, क्योंकि मैं उनसे बहुत कम मिलती हूँ, सिवाय रविवार के, जब वे हमेशा की तरह सुंदर, हंसमुख और अच्छे स्वभाव के दिखते हैं। वेस्टमोर्लैंड से लौटने के बाद मुझे उनसे एक बार लंबी बातचीत करने का मौका मिला, जब उन्होंने एग्नेस वाल्टन के प्रति अपने स्नेह और प्रशंसा में अपना पूरा दिल खोलकर रख दिया। वे उनसे प्यार करते हैं या नहीं, यह मैं नहीं कह सकती; मैं बस इतना कह सकती हूँ कि ऐसा लगता है। जब वे दूर थे, तब उन्होंने हमें बहुत सारा शिकार भेजा - जंगली बत्तखों का एक जोड़ा, काले तीतरों का एक जोड़ा, तीतरों का एक जोड़ा, स्नाइप पक्षियों का एक जोड़ा, कर्ल्यू पक्षियों का एक जोड़ा और एक बड़ी सैल्मन मछली। अगर आप अभी श्री वेटमैन से मेरे चरित्र के बारे में उनकी राय पूछें, तो वे कहेंगे कि पहले तो उन्होंने मुझे हंसमुख और बातूनी समझा था, लेकिन आगे की जान-पहचान होने पर उन्हें पता चला कि मेरा स्वभाव चंचल और अस्थिर है, जिस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। उन्हें नहीं पता कि मैंने अपना व्यवहार उनके अनुसार ढाल लिया है—कि जब तक वे सम्मानजनक थे, मैं हंसमुख और बातूनी बनी रही, और जब उनका व्यवहार लगभग तिरस्कारपूर्ण हो गया, तो मुझे कुछ हद तक संयम बरतना पड़ा जो मेरे स्वभाव के विपरीत था, और इसलिए मेरे लिए बहुत कष्टदायक था। मुझे यह संयम बहुत सुविधाजनक लगता है, और इसलिए मैं इसे बनाए रखने का इरादा रखती हूं।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

12 नवंबर, 1840।

मेरी प्यारी नेल, — इस बेतरतीब ढंग से लिखे कागज़ को माफ़ कर देना, क्योंकि वह लेख मेरे पास नहीं है, और यही एक कागज़ मेरे डेस्क में उपलब्ध है। मैंने एक सुंदर चित्र मिटा दिया है, लेकिन बाकी को छोड़ दिया है — घोड़े के सिर और मनुष्य के सिर के पेंसिल स्केच — क्योंकि मुझे याद है कि ये मेरे हाथ की नहीं, बल्कि आदरणीय विलियम वेटमैन की पवित्र उंगलियों की रचना हैं। तुम देखोगी कि घोड़े के सिर में आँख थोड़ी ऊपर उठी हुई है, वरना मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि यह कोई बुरा प्रयास नहीं है। इसमें कलात्मकता और एक कलाकार की नज़र झलकती है। उस व्यक्ति के पास इसकी कोई प्रति नहीं थी। उसने इसे और एक-दो अन्य छोटी-मोटी चीज़ों को तब बनाया था जब वह एक शाम यहाँ आया था, लेकिन तुम्हें देखना चाहिए था कि बाद में वह अपनी रचनाओं को कितने घमंड से देखता था। उनमें से एक में

प्रसिद्धि की उड़ती हुई आकृति बादलों पर अपना नाम लिख रही है।

श्रीमती ब्रूक और मैंने पत्रों का आदान-प्रदान किया है। उन्होंने मेरे आवेदन की शैली, उसकी स्पष्टता आदि से प्रसन्नता व्यक्त की (मैंने उन्हें स्पष्ट कर दिया था कि यदि उन्हें कोई दिखावटी, सुरुचिपूर्ण, फैशनेबल व्यक्ति चाहिए, तो मैं उनके लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं हूँ), लेकिन उन्हें संगीत और गायन चाहिए। मैं उन्हें संगीत और गायन नहीं दे सकता, इसलिए बातचीत यहीं समाप्त होती है। हालाँकि, एक बार पदभार संभालने के बाद, मैं तब तक नहीं बैठूंगा जब तक मुझे वह न मिल जाए जो मैं चाहता हूँ; लेकिन अधूरे प्रोजेक्टों के बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं है, इसलिए हम इस विषय को यहीं समाप्त करते हैं। इस अंतिम वाक्य को मेरी ओर से एक व्यावहारिक संकेत समझें। ऐसा लगता है कि मिस वूलर का स्कूल बदहाल स्थिति में है। मैं उनके लिए विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने का प्रयास कर रहा हूँ, लेकिन सफल नहीं हो पा रहा हूँ, क्योंकि श्रीमती हीप ब्रैडफोर्ड में एक नया स्कूल खोल रही हैं।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

10 जनवरी, 1841।

'मेरी प्यारी एलेन, मैंने तुमसे पत्र लिखने का वादा किया था, इसलिए मुझे अपना वादा निभाना ही होगा, भले ही मेरे पास न तो ज्यादा कुछ कहने को है और न ही ज्यादा समय है।'

मैरी टेलर का आना हमारे लिए बहुत सुखद रहा, और मुझे लगता है कि उन्हें भी। उन्होंने और मिस्टर वेटमैन ने शतरंज के कई मैच खेले, जो आम तौर पर एक तरह की बनावटी दुश्मनी में खत्म हुए। मिस्टर वेटमैन की सेहत में सुधार है; लेकिन उन पर दिल मत लगाइए, मुझे डर है कि वे बहुत चंचल हैं - खासकर आपके साथ नहीं, बल्कि आधा दर्जन अन्य महिलाओं के साथ। उन्होंने अभी-अभी स्वानसी में अपनी प्रेमिका से नाता तोड़ लिया है और उसके सारे पत्र वापस भेज दिए हैं। आजकल उनकी प्रेमिका कैरोलिन ड्यूरी हैं, जिन्हें उन्होंने अभी-अभी कविताओं की एक बेहद भावुक प्रति भेजी है। बेचारा, उसका आशावादी स्वभाव उसे बहुत परेशान करता है।

स्वान्सी वाली घटना मुझे कुछ हद तक निर्दयी लगती है, हालाँकि मुझे इसका कोई स्पष्ट स्पष्टीकरण नहीं मिला है। वह पहले की तरह ही आहें भरता है। मैंने अभी तक उसका नाम नहीं लिया है, और जब तक मुझे उसके मन की असली भावनाएँ जानने

का उचित अवसर नहीं मिल जाता, तब तक मैं ऐसा करने का इरादा भी नहीं रखती। हो सकता है कि मैं कभी उसका ज़िक्र ही न करूँ, बल्कि इसके विपरीत, मैं आपके बारे में किसी भी तरह की बात करने से पूरी तरह बचूँगी। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि मैं उसके चरित्र के बारे में आगे क्या राय बना पाती हूँ। मुझे यह जानकर अच्छा नहीं लगा कि जब वह आप पर इतना ध्यान दे रहा था, उसी दौरान वह स्वान्सी की उस महिला के साथ नियमित रूप से पत्र व्यवहार कर रहा था; और अब जिस अचानक तरीके से उसने उससे संबंध तोड़ लिए हैं, और उसके मन की स्पष्ट अस्थिरता, ये सब अच्छे संकेत नहीं हैं। अगले एक महीने तक मुझे उसे देखने के ज़्यादा मौके नहीं मिलेंगे। अगले दो हफ़्तों तक वह अपने दीक्षा समारोह की तैयारी में पूरी तरह से व्यस्त रहेगा, और उसके बाद के दो हफ़्ते वह श्रीमान और श्रीमती वाल्टन के साथ एप्पलबी और क्रैकेंथॉर्प में बिताएगा। उसके बारे में मत सोचो; मुझे इस बात का डर नहीं है कि तुम्हारा दिल टूट जाएगा, लेकिन उसके बारे में मत सोचो।

'मर्सी और अपनी माँ को मेरा प्यार देना, और— यकीन मानो, तुम्हारा सच्चा दोस्त।'

सब ठीक हो जाएगा।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

'रॉवडन, 3 मार्च, 1841।

मेरी प्यारी एलेन, मुझे पूरा यकीन है कि आपको इस साल हमारे प्यारे दोस्त, हॉवर्थ के पादरी की तरफ से वैलेंटाइन मिला होगा। घर से निकलने से कुछ दिन पहले मुझे एक अनमोल तोहफ़ा मिला, लेकिन मुझे पता था कि इसे कैसे संभालना है, उन तोहफ़ों से ज़्यादा जो हमें एक साल पहले मिले थे। मैं उनके चरित्र की चालबाज़ियों और छल-कपटों से वाकिफ़ हूँ। उन्हें पता है कि मैं उन्हें जानती हूँ, और आप कल्पना भी नहीं कर सकतीं कि वे कितने शांत और सम्मानजनक रहे हैं। ध्यान रहे कि मैं उनके खिलाफ नहीं लिख रही हूँ - मैं ऐसा कभी नहीं करूँगी। मैं उन्हें बहुत पसंद करती हूँ। मैं उनके उदार, खुले स्वभाव और मधुर मिजाज का सम्मान और प्रशंसा करती हूँ - लेकिन प्यार की तमाम चालों, छल-कपटों और बेईमानी के बावजूद, बीस मील के दायरे में उनका कोई मुकाबला नहीं है। वे तीस साल से कम उम्र की हर महिला को, जिसे वे देखते हैं, यह यकीन दिलाना चाहते हैं कि वे उससे बेइंतहा प्यार करते हैं। मुझे और भी बहुत कुछ कहना है, लेकिन मेरे पास लिखने के लिए एक पल का भी समय

नहीं है। मेरी प्यारी एलेन, मुझे जल्द ही लिखना, भूलना मत। - अलविदा।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

21 मार्च, 1841।

मेरी प्यारी एलेन, मुझे नहीं पता कि तुम्हारी ये छोटी-छोटी हथकड़ियां कैसे पहनूं। जब तुम आओगी तो तुम ही इस रहस्य को सुलझा दोगी। मैं तुम्हें ये अनमोल वैलेंटाइन भेज रहा हूं। इसे संभाल कर रखना। लेखक की नीली आंखें, सुनहरे बाल और गुलाबी गाल याद रखना। तुम इसे अपने लिए लिखा हुआ समझ सकती हो, क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि लेखक ने इसे हर किसी के लिए उपयुक्त बनाने का इरादा किया था।

'अच्छी तरह से मोकाबिला करना।

'सी. बी.'

फिर कुछ और भी सूक्ष्म संकेत हैं, जिनमें से ऐनी से संबंधित संकेत विशेष रूप से दिलचस्प है।

मुझे लंबे-लंबे पत्र लिखो, और जो कुछ भी तुम्हारे मन में आए, सब कुछ बताओ, और सबके बारे में बताओ। "उनके युवा आदरणीय," जैसा कि तुम उन्हें प्यार से बुलाती हो, नाजुक और पीले दिख रहे हैं; बेचारे, क्या तुम्हें उन पर दया नहीं आती? मुझे तो दिल से आती है! जब वे स्वस्थ, मोटे और हंसमुख होते हैं, तो मैं उनके बारे में कभी नहीं सोचती, लेकिन जब भी उन्हें कोई तकलीफ होती है, मुझे हमेशा दुख होता है। वे चर्च में ऐनी के सामने बैठे रहते हैं, धीरे से आह भरते हैं, और ऐनी का ध्यान आकर्षित करने के लिए तिरछी निगाहों से देखते हैं, और ऐनी इतनी शांत, उसकी निगाहें इतनी झुकी हुई होती हैं, वे एक सुंदर दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

19 जुलाई, 1841।

हमारे आदरणीय मित्र, डब्ल्यू. डब्ल्यू., पहले की तरह ही प्यारे, मिलनसार, हंसमुख, अच्छे स्वभाव वाले, उदार, लापरवाह, चंचल और गैर-धार्मिक हैं। वे एग्नेस वाल्टन के साथ अपना पत्राचार जारी रखते हैं। पिछली वसंत ऋतु में वे एप्पलबी गए थे और एक महीने से अधिक समय तक वहाँ रहे।

शार्लोट के जीवन में गवर्नेस और ब्रसेल्स के प्रसंगों के दौरान हमें मिस्टर वेटमैन का ज़िक्र नहीं मिलता, और अगला रिकॉर्ड उनकी मृत्यु का है, जो सितंबर 1842 में हुई थी, जब शार्लोट और एमिली ब्रसेल्स में थीं। मिस्टर ब्रोंटे ने अंतिम संस्कार का उपदेश दिया, और प्रस्तावना में कहा कि हॉवर्थ में बीस वर्षों से अधिक समय से रहने के

दौरान उन्होंने कभी भी अपना उपदेश पढ़कर नहीं सुनाया था। वे कहते हैं, 'इसका कारण मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास है कि आम तौर पर, सामान्य श्रोताओं के लिए, बिना तैयारी के दिया गया उपदेश, हालांकि कुछ विशेष कमियों के साथ आता है, बोलचाल की भाषा में अधिक सहज होता है और कुल मिलाकर अधिकांश लोगों के लिए अधिक उपयुक्त होता है।' वे बताते हैं कि इस अवसर पर इस प्रथा से अलग होने का कारण यह था कि उनके उपदेश को मुद्रित करने का अनुरोध किया गया था।

श्री वेटमैन, उन्होंने अपने श्रोताओं को बताया, वेस्टमोर्लैंड के मूल निवासी थे और उन्होंने डरहम विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी। श्री ब्रोंटे ने आगे कहा, "जब वे वहाँ थे, मैंने इस धर्मप्रांत के परम पूजनीय धर्माध्यक्ष से निवेदन किया कि वे मुझे पैरिशवासियों की आवश्यकताओं और इच्छाओं के अनुरूप एक सहायक पादरी भेजें। मेरा निवेदन व्यर्थ नहीं गया। हमारे धर्मप्रांत के प्रमुख ने, अपने पादरियों के मुखिया और मार्गदर्शक के रूप में, शास्त्रानुसार एक उत्कृष्ट चयन किया, जो मेरी और शायद आपकी अपेक्षाओं से भी कहीं अधिक था। चर्च पादरी सहायता संस्था ने अपनी उदारता से आर्थिक सहायता प्रदान की, जिसके बिना सभी प्रयास विफल हो जाते।" श्री ब्रोंटे ने निष्कर्ष निकाला, "उनके पास प्रथम श्रेणी की शास्त्रीय योग्यताएँ थीं, और सबसे बढ़कर, उनके धार्मिक सिद्धांत सुदृढ़ और रूढ़िवादी थे।" श्री वेटमैन का निधन छब्बीस वर्ष की आयु में हुआ। उनके उत्तराधिकारी श्री पीटर ऑगस्टस स्मिथ थे, जिन्हें शार्लोट ब्रोंटे ने अपनी रचना 'शर्ली' में ब्रायर्फ़ील्ड के क्यूरेट श्री मैलोन के रूप में प्रसिद्ध किया है। श्री स्मिथ हॉवर्थ में श्री ए. बी. निकोल्स के पूर्ववर्ती थे। यहाँ शार्लोट ब्रोंटे द्वारा अपने मित्र को लिखे पत्र में उनके बारे में की गई सशक्त टिप्पणी दी गई है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

26 जनवरी, 1844।

'प्रिय नेल, - आज सुबह तुम्हारा पत्र पाकर हम सभी बहुत खुश हुए। हम, मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि पापा और एमिली दोनों ही तुम्हारे और उस नन्हे शैतान के सुरक्षित पहुँचने की खबर सुनने के लिए उत्सुक थे।'

जैसा कि आपने अनुमान लगाया है, एमिली और मैंने आपके जाने के ठीक अगले दिन से ही कमीज़ें बनाना शुरू कर दिया था, और तब से हम लगभग पूरी लगन से यही काम कर रहे हैं। हम आपकी संगति को उतना ही याद करते हैं जितना आप हमारी, इस बात पर यकीन मानिए। काश आप आस-पास होतीं, काश आप जैसा आपने

कहा, एक दोपहर अचानक हमारे पास आ जातीं, और अपनी टोपी और शॉल उतारकर, हर हफ्ते एक या दो शाम आराम कुर्सी पर बैठ जातीं। आपके रहने के दौरान मैंने निश्चित रूप से यह सपना देखा था कि एक दिन ऐसा हो सकता है, लेकिन वह सपना अब धुंधला रहा है। मैं निश्चित रूप से श्री स्मिथ की बात कर रही हूँ, जिनका आपने अपने पत्र में ज़िक्र नहीं किया है, और मुझे लगता है कि इस चूक के लिए आप मूर्ख हैं। मैं यह इसलिए कह रही हूँ कि सपना धुंधला रहा है, क्योंकि श्री स्मिथ ने आपके जाने के बाद से आपका नाम नहीं लिया है, सिवाय एक बार जब पापा ने कहा कि आप एक अच्छी लड़की हैं, तो उन्होंने कहा, "हाँ, वह एक अच्छी लड़की है - थोड़ी शांत। मुझे लगता है कि उसके पास पैसा है," और बस इतना ही। मुझे लगता है कि ये शब्द बहुत कुछ कह देते हैं; वे श्री स्मिथ के पक्ष में किसी का पूर्वाग्रह नहीं रखते। मैं पापा की कही हुई और लगातार दोहराई जा रही बात पर पूरी तरह विश्वास कर सकता हूँ, यानी कि श्री स्मिथ बहुत चंचल स्वभाव के व्यक्ति हैं, कि यदि वे शादी करते हैं तो जल्द ही अपनी पत्नी से ऊब जाएँगे और उसे बोझ समझने लगेंगे, और यह भी कि शादी करते समय पैसा उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक होगा।

पापा ने दो-तीन बार यह आशंका जताई है कि मिस्टर स्मिथ ने तुम पर इतना ध्यान दिया है, तो शायद उन्होंने तुम्हारे मन पर ऐसा प्रभाव डाला होगा जिससे तुम्हारी शांति भंग हो रही होगी। मैं उनसे कहती हूँ कि मुझे ऐसा नहीं लगता, क्योंकि मुझे विश्वास है कि तुम इन मामलों में पूरी तरह से नियंत्रण रखती हो। फिर भी, वह मुझसे कहते रहते हैं कि मैं तुम्हें पत्र लिखूँ और तुम्हें उनके बारे में सोचने से रोकूँ। मैंने पापा को पहले कभी इस तरह की बात पर इतना परेशान होते नहीं देखा; वे आमतौर पर ऐसे विषयों पर बहुत व्यंग्य करते हैं।

श्री स्मिथ को फांसी हो! मैंने उनके बारे में कभी अच्छी राय नहीं रखी, और इस समय तो मैं उनके बारे में बहुत ही बुरी राय रखने को तैयार हूं। मैंने इस विषय पर विस्तार से चर्चा कर ली है, क्योंकि रहस्यमय और संकोची बने रहने का क्या फायदा? यह व्यर्थ है।

मुझे तुरंत पत्र लिखना और बताना कि क्या तुमने खाना-पीना पूरी तरह छोड़ दिया है। मुझे इस बात पर हैरानी नहीं है कि लोग तुम्हें पीला और दुबला-पतला समझ रहे हैं। मुझे गुरुवार को तुम्हारा एक और पत्र मिलेगा - मुझे निराश मत करना।

आपकी माता और बहनों को मेरा सादर प्रणाम। — आपका, थोड़ा चिढ़कर।

‘सी. बी.’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

प्रिय नेल, — जब मैंने तुम्हारा एक और पत्र देखा तो मैंने डाकिया को गाली नहीं दी। और मुझे उम्मीद है कि जब मैं तुमसे कहूँगी कि मैं फिलहाल घर छोड़ने के बारे में सोच भी नहीं सकती, यहाँ तक कि हैरोगेट में तुमसे मिलने की खुशी के लिए भी नहीं, तो तुम भी मुझे गाली नहीं दोगी, लेकिन मुझे याद करने के लिए मैं तुम्हारी आभारी हूँ। रेवरेंड लोथारियो स्मिथ के बारे में मुझे कुछ नया नहीं पता। मुझे लगता है कि मैं उन्हें हर दिन थोड़ा कम पसंद करने लगी हूँ। मिस्टर वेटमैन 200 मिस्टर स्मिथ के बराबर थे। अलविदा। मुझे डर है कि तुम्हारी बातों से, "फ्लॉसी जूनियर" का व्यवहार खराब है और वह अपनी प्रेमिका को मुसीबतों में फंसाता है।

‘सी. ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

16 मार्च, 1844।

प्रिय एलेन, मुझे पिछले शनिवार को आपका स्नेहपूर्ण पत्र मिला था, और मुझे इसका उत्तर तुरंत दे देना चाहिए था, लेकिन इसी बीच मुझे मैरी टेलर का पत्र मिला, और मुझे उसका उत्तर देना पड़ा, साथ ही ब्रुसेल्स को भेजने के लिए कई पत्र लिखने पड़े। मेरी दृष्टि मुझे एक दिन में कई पत्र लिखने की अनुमति नहीं देती, इसलिए मुझे इसे धीरे-धीरे करना पड़ा।

मैं आपको दो और परिपत्र भेज रहा हूँ क्योंकि आपने इनकी मांग की थी, इसलिए नहीं कि मुझे उम्मीद है कि इनके वितरण से कोई परिणाम निकलेगा। मुझे आशा है कि यदि कभी ऐसा समय आए जब एमिली, ऐनी या मैं आपकी सेवा कर सकें, तो हम यह नहीं भूलेंगे कि आपने हमारी सेवा करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है।

श्रीमान स्मिथ अब यहाँ से चले गए हैं। वे इस समय आयरलैंड में हैं और वहाँ छह सप्ताह तक रहेंगे। उन्होंने अपने पीछे न तो कोई अच्छी छवि छोड़ी है और न ही कोई बुरी। किसी को उनकी मृत्यु का दुख नहीं है, क्योंकि जो व्यक्ति किसी से भी जुड़ाव महसूस नहीं करता, उससे कोई जुड़ाव कैसे रख सकता है। मुझे एक समय लगा था कि वे आपका सम्मान करते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं लगता। आपके जाने के बाद से उन्होंने कभी आपका हालचाल नहीं पूछा, और न ही मेरे सामने आपका ज़िक्र किया,

सिवाय एक बार जब मैंने जानबूझकर आपका ज़िक्र किया, तो उन्होंने कहा कि आप "ज़्यादा फुर्तीले नहीं हैं।" इस टिप्पणी का अर्थ आप स्वयं समझें।

फिर भी, मनुष्य में ऐसे गुण मौजूद हैं जो जीवन में आगे बढ़ने में उसके लिए अत्यंत उपयोगी होंगे। हालांकि, उसके सभी अच्छे गुण स्वार्थी प्रवृत्ति के हैं, लेकिन वे उसे उन जगहों पर सम्मान दिलाएंगे जहां बेहतर और अधिक उदार स्वभाव वाले लोगों को तिरस्कृत या कम से कम उपेक्षित किया जाएगा।

'मिस्टर ग्रांट फिलहाल उनकी जगह ठीक-ठाक निभा रहे हैं - लेकिन इन जैसे व्यक्तियों की किसी को परवाह नहीं है, इसलिए इन्हें छोड़ दें।'

'मैरी टेलर हमारे गोलार्ध को छोड़कर जा रही हैं। मेरे लिए यह कुछ ऐसा है मानो आकाश से कोई विशाल ग्रह गिर पड़ा हो। लेकिन, अगर वह न्यूजीलैंड में शादी नहीं करती हैं, तो वह वहां ज्यादा समय तक नहीं रहेंगी।'

मुझे जल्द ही दोबारा लिखना और मैं वादा करता हूं कि अगली बार मैं तुम्हें नियमित रूप से एक लंबा पत्र लिखूंगा।

'सी. ब्रोंटे।'

यहां वर्णित श्री ग्रांट हॉवर्थ में उस छोटे से व्याकरण विद्यालय के प्रधानाध्यापक के रूप में आए थे, जिसमें ब्रैनवेल ने अपनी शिक्षा का कुछ हिस्सा प्राप्त किया था। वे श्री डोने हैं, जो शर्ली में व्हिनबरी के क्यूरेट थे। व्हिनबरी ही ऑक्सनहोप है, जिसके गांव और जिले के श्री ग्रांट कुछ समय बाद पादरी बने। यह जिला हॉवर्थ चैपलरी से अलग किया गया था, और श्री ग्रांट ने एक चर्च, स्कूल भवन और पादरी निवास के निर्माण के लिए धन जुटाया था। कई साल पहले ऑक्सनहोप में उनका निधन हो गया, और उनके पैरिशवासी उनका बहुत सम्मान करते थे। ऐसा लगता है कि उन्होंने श्री ब्रोंटे और अन्य लोगों के बहुत से मज़ाक को सहा, जो हमेशा उन्हें श्री डोने कहकर पुकारते थे। उनके कई परिचितों का मानना था कि शर्ली के व्यंग्य ने उनके स्वभाव में सुधार किया था।

श्री स्मिथ ने 1844 में हॉवर्थ छोड़कर कीघली के पैरिश चर्च के क्यूरेट (पुजारी) का पदभार संभाला। बाद में वे एक जिला चर्च के पादरी बने, लेकिन स्वास्थ्य खराब होने के कारण वे अपने पैतृक देश लौट आए, जहाँ उनका निधन हो गया।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

15 अक्टूबर, 1844।

प्रिय नेल, — मैंने तुम्हें दो अतिरिक्त परिपत्र भेजे हैं, और यदि तुम चाहो तो अगली बार लिखते समय दो और भेज दूँगा। मेरे पास तुम्हें देने के लिए कोई खबर नहीं है। श्री स्मिथ दो सप्ताह के भीतर रवाना हो रहे हैं। कीघली में बसने से पहले वे कुछ सप्ताह आयरलैंड में बिताएँगे। उनका स्वभाव अभी भी वैसा ही है: अक्सर चिंतित और चिड़चिड़ा, कभी-कभी थोड़ा सहनीय — बस सहने योग्य। तुम्हारा दल कैसा रहा? तुम कैसी हो? जल्द ही और विस्तार से लिखना, क्योंकि तुम्हारे पत्र मेरे लिए बहुत सुकून देते हैं। हम सब ठीक हैं। ब्रुकरॉयड में घर के हर सदस्य को मेरा प्रणाम कहना। — तुम्हारा,

'सी. बी.'

शर्ली के तीसरे क्यूरेट, ननेली के श्री स्वीटिंग, श्री रिचर्ड ब्रैडली थे, जो कीघली पैरिश के एक बाहरी जिले ओकवर्थ के क्यूरेट थे। वे इस समय यॉर्कशायर के हैक्सबी के विकर हैं, लेकिन उम्र और कमजोरी के कारण उन्हें हॉवर्थ के उन पुराने दिनों की कोई याद नहीं है।

श्री ब्रोंटे के एक अन्य सहायक पादरी श्री डी रेन्ज़ी थे, जिन्होंने एक वर्ष से कुछ अधिक समय तक इस पद पर कार्य किया। वास्तव में, यह वही समय था जब श्री ब्रोंटे का श्री निकोल्स से उनके दामाद बनने की आकांक्षा को लेकर विवाद चल रहा था। हॉवर्थ छोड़ने के बाद, श्री डी रेन्ज़ी ब्रैडफोर्ड में सहायक पादरी बन गए। उनका निधन कुछ वर्ष पहले हो चुका है। श्री निकोल्स के सहायक पादरी के रूप में कार्यकाल की कहानी एक अलग अध्याय का विषय है। हालांकि, उनकी योग्यता का पर्याप्त प्रमाण यह है कि वे अपने पूर्ववर्तियों के प्रति शार्लोट ब्रोंटे की घोर घृणा के बावजूद उनका दिल जीतने में सफल रहे। एक पादरी के बारे में वह लिखती हैं, 'मुझे लगता है कि वह उन सभी सहायक पादरियों की तरह ही होंगे जिन्हें मैंने देखा है; वे मुझे स्वार्थी, अभिमानी और खोखले लोग लगते हैं।'

अध्याय XII: शार्लोट ब्रोंटे के प्रेमी

शार्लोट ब्रोंटे खूबसूरत नहीं थीं, लेकिन वे निश्चित रूप से बेहद आकर्षक रही होंगी। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि वे खूबसूरत नहीं थीं। जब पंद्रह साल की उम्र में उन्होंने रो हेड स्कूल में दाखिला लिया, तो मैरी टेलर ने एक बार उनके सामने ही कह दिया था कि वे बदसूरत हैं। लेकिन बाद के वर्षों में वे बदसूरत नहीं रहीं। उनके सभी दोस्त उनके मुलायम रेशमी बालों और खूबसूरत भूरी आँखों की तारीफ करते हैं, जो उत्तेजना के क्षणों में असाधारण चमक बिखेरती हुई प्रतीत होती थीं। लेकिन उनका रंग पीला था और उनकी नाक थोड़ी एक तरफ झुकी हुई थी। वे कद में छोटी थीं और वास्तव में, एक सामान्य व्यक्ति उन्हें एक विचित्र, साधारण सी दिखने वाली छोटी सी शख्सियत समझ सकता था। श्री ग्रुंडी की याददाश्त बहुत कमजोर थी जब उन्होंने ब्रोंटे परिवार के बारे में लिखा था; लेकिन, लाल बालों के उल्लेख को छोड़कर - और सभी लड़कियों के बाल भूरे थे - ऐसा लगता है कि जब उन्होंने 'बेटियों - दूर और विक्षिप्त, बड़ी नाक वाली, छोटे कद की, लाल बालों वाली, चश्मे से सजी हुई, बौद्धिक रूप से काफी विकसित, लेकिन हमेशा नीचे झुकी हुई आँखें, बहुत चुप, बेहद एकांतप्रिय' के बारे में लिखा था, तो वे बहुत गलत नहीं थे।

शार्लोट सचमुच बेहद शर्मीली थीं। मिस व्हीलराइट, जिन्होंने साहित्यिक सफलता के वर्षों में लंदन की अपनी यात्राओं के दौरान उन्हें अक्सर देखा था, कहती हैं कि वह किसी भी कमरे में बिना किसी लंबे दोस्त की आड़ लिए प्रवेश नहीं करती थीं। हॉवर्थ के एक निवासी, जो अभी भी जीवित हैं, याद करते हैं कि दुकानें जाते समय लड़कियाँ अक्सर उनके पास से गुजरती थीं और नज़रों से बचने के लिए अनजाने में अपने हाथ उनके सबसे नज़दीक वाले चेहरे पर रख लेती थीं। यह दिखावा नहीं था; यह सरासर झिझक थी। मिस व्हीलराइट हमेशा जॉर्ज रिचमंड के चित्र को—जिसके लिए शार्लोट ने फिलिमोर प्लेस में डॉ. व्हीलराइट के यहाँ ठहरने के दौरान पोज़ दिया था—पूरी तरह से बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया मानती थीं। शार्लोट के कई दोस्त इस बात से खुश थे, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि माथे का भव्य विस्तार अतिशयोक्ति थी। शार्लोट

का माथा ऊँचा था, लेकिन बहुत संकरा था।

यह सब तुलनात्मक रूप से महत्वहीन है। शार्लेट निश्चित रूप से किसी भ्रम में नहीं थीं; और हम जो आज उन्हें महानतम अंग्रेज़ महिलाओं में से एक मानते हैं, उन्हें भी किसी भ्रम में रहने की आवश्यकता नहीं है। इतना ही पर्याप्त है कि, भले ही शार्लेट सुंदर न हों, लेकिन उनके व्यवहार में एक अनूठा आकर्षण था, और जब वे किसी विषय में रुचि लेती थीं, तो उनकी बातचीत का प्रवाह इतना मनमोहक होता था कि बुद्धिमान पुरुष भी मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उन्हें कम से कम चार बार विवाह के प्रस्ताव मिले थे। जिन तीन प्रेमियों को उन्होंने ठुकरा दिया था, वे अब इस दुनिया में नहीं हैं, और शार्लेट के पत्रों में मौजूद वास्तविक तथ्यों का उल्लेख करने में अब कोई हर्ज नहीं है। इनमें से दो विवाह प्रस्ताव एक ही वर्ष में आए थे, जब वे तेईस वर्ष की थीं। उनका पहला प्रस्ताव उनकी सहेली एलेन नुसे के भाई की ओर से आया था। हेनरी नुसे डॉनिंगटन में एक पादरी थे जब उन्होंने शार्लेट ब्रोंटे को अपनी पत्नी बनने के लिए कहा। इस विषय पर लिखे गए दो पत्र, जिनमें से एक श्रीमती गैस्केल के संस्मरण में आंशिक रूप से विकृत रूप में छपा है, स्वयं ही सब कुछ बयां करते हैं।

रेव. हेनरी नुसे को

हॉवर्थ, 5 मार्च, 1839।

मेरे प्रिय महोदय, आपके पत्र का उत्तर देने से पहले मैं इसके विषय पर काफी समय तक विचार कर सकती थी; लेकिन पत्र मिलते ही और उसे पढ़ते ही मैंने तय कर लिया कि मुझे क्या करना है, इसलिए मुझे लगा कि देरी करना बिल्कुल अनावश्यक है। आप जानते हैं कि मुझे आपके परिवार के प्रति कृतज्ञता के कई कारण हैं, आपकी कम से कम एक बहन के प्रति मेरा विशेष स्नेह है, और मैं आपका बहुत सम्मान करती हूँ - इसलिए जब मैं कहती हूँ कि आपके प्रस्ताव का मेरा उत्तर स्पष्ट रूप से 'अस्वीकार' है, तो मुझ पर गलत इरादों का आरोप न लगाएँ। मुझे विश्वास है कि यह निर्णय लेते समय मैंने अपनी अंतरात्मा की आवाज को अपनी इच्छाओं से अधिक सुना है। मुझे आपसे विवाह के विचार से कोई व्यक्तिगत अरुचि नहीं है, लेकिन मुझे विश्वास है कि मेरा स्वभाव आपके जैसे पुरुष की खुशी के लिए उपयुक्त नहीं है। मेरी हमेशा से यह आदत रही है कि मैं जिनके बीच भी रहती हूँ, उनके चरित्र का अध्ययन करती हूँ, और मुझे लगता है कि मैं आपके चरित्र को जानती हूँ और कल्पना कर सकती हूँ कि किस प्रकार की स्त्री आपके लिए पत्नी के रूप में उपयुक्त

होगी। उसका चरित्र अतिप्रभु, जोशीला और मौलिक नहीं होना चाहिए; उसका स्वभाव सौम्य, उसकी धार्मिकता निर्विवाद, उसका मनोभाव शांत और प्रसन्न होना चाहिए; और उसका व्यक्तित्व इतना आकर्षक होना चाहिए कि आपकी आँखों को भाए और आपके उचित स्वाभिमान को संतुष्ट करे। जहाँ तक मेरी बात है, आप मुझे नहीं जानते; मैं वह गंभीर, संजीदा और शांत स्वभाव की व्यक्ति नहीं हूँ जैसा आप सोचते हैं; आप मुझे रोमांटिक और सनकी समझेंगे; आप कहेंगे कि मैं व्यंग्यात्मक और कठोर हूँ। हालाँकि, मैं छल को घृणा करती हूँ, और मैं कभी भी विवाह का गौरव प्राप्त करने और कुंवारी होने के कलंक से बचने के लिए किसी ऐसे योग्य पुरुष से विवाह नहीं करूँगी जिसे मैं प्रसन्न नहीं कर सकती। अंत में, डॉनिंगटन के पास स्थित स्कूल के संबंध में आपके दूसरे प्रस्ताव के लिए मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। मेरे बारे में इतनी रुचि लेने के लिए आपका आभार; लेकिन सच्चाई यह है कि मैं फिलहाल इस परियोजना में शामिल नहीं हो सकती क्योंकि मेरे पास सफलता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक पूंजी नहीं है। यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई कि आप आराम से बस गए हैं और आपका स्वास्थ्य काफी सुधर गया है। मुझे विश्वास है कि ईश्वर अपनी कृपा आप पर बनाए रखेंगे। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि आपके पत्र में दिखाई देने वाली समझदारी और चापलूसी व पाखंड से रहित लम्हे की मैं प्रशंसा करता हूँ। अलविदा। एक मित्र के रूप में आपसे संपर्क होने पर मुझे हमेशा खुशी होगी। — विश्वास करें, आपका सच्चा मित्र।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 12 मार्च, 1839।

मेरी प्यारी एलेन, जब तुम्हारा पत्र मेरे हाथ लगा, तो मैंने कहा, "आखिरकार वह आ ही रही है, उम्मीद है," लेकिन जब मैंने उसे खोला और उसमें लिखी बातें पढ़ीं, तो मेरा दिल बहुत दुखी हुआ। अब तुम्हें मुझे ब्रुकरोयड जाने के लिए कहने की ज़रूरत नहीं है। हमेशा के लिए, और इस बात का जोखिम उठाते हुए कि लोग मुझे अब तक का सबसे मूर्ख और बदकिस्मत कहेंगे, मैं तब तक नहीं जाऊँगा जब तक तुम हॉवर्थ नहीं जा लेती। मैं तुम्हें दोष नहीं देता, मुझे विश्वास है कि अगर संभव होता तो तुम ज़रूर आती; शायद मुझे दूसरों को दोष नहीं देना चाहिए, लेकिन मैं दुखी हूँ।

"अगर किसी अप्रत्याशित कारण से देरी न हो तो ऐनी 8 अप्रैल को ब्लेक हॉल

जाएगी। श्रीमती थॉमस ब्रूक से अभी तक मुझे कोई खबर नहीं मिली है। पापा चाहते हैं कि मैं कुछ और दिन घर पर रहूँ, लेकिन मुझे फिर से काम पर लौटने की बेचैनी होने लगी है; और फिर भी इतने हफ्तों के आराम के बाद उस नीरस “जिन-हॉर्स” के चक्कर में वापस लौटना कठिन काम होगा।”

‘मेरी प्यारी एलेन, तुम मुझसे पूछती हो कि क्या मुझे हेनरी का पत्र मिला है? हाँ, लगभग एक सप्ताह पहले मिला था। मैं स्वीकार करती हूँ कि पत्र की सामग्री ने मुझे थोड़ा आश्चर्यचकित कर दिया, लेकिन मैंने इसे अपने तक ही सीमित रखा, और यदि तुमने मुझसे इस विषय पर प्रश्न न किया होता, तो मैं इस पर ध्यान भी न देती। हेनरी का कहना है कि वह डॉनिंगटन में आराम से रह रहा है, उसका स्वास्थ्य काफी सुधर गया है, और ईस्टर के बाद वह विद्यार्थियों को पढ़ाना शुरू करने का इरादा रखता है। फिर वह संकेत देता है कि उचित समय पर उसे अपने विद्यार्थियों की देखभाल के लिए एक पत्नी की आवश्यकता होगी, और स्पष्ट रूप से मुझसे वह पत्नी बनने का अनुरोध करता है। कुल मिलाकर पत्र बिना किसी बनावटीपन या चापलूसी के, और एक व्यावहारिक शैली में लिखा गया है, जो उसके विवेक की प्रशंसा करता है।’

अब, मेरी प्यारी एलेन, इस प्रस्ताव में कुछ ऐसी बातें थीं जो मुझे बहुत लुभा सकती थीं। मैंने सोचा कि अगर मैं हेनरी नुसे से शादी कर लूँ, तो उसकी बहन मेरे साथ रह सकती है, और मैं कितनी खुश हो जाऊँगी। लेकिन फिर मैंने खुद से दो सवाल पूछे: क्या मैं उससे उतना प्यार करती हूँ जितना एक स्त्री को अपने जीवनसाथी से करना चाहिए? क्या मैं उसे खुश रखने के लिए सबसे योग्य हूँ? अफसोस! एलेन, मेरे अंतरात्मा ने इन दोनों सवालों का जवाब ना में दिया। मुझे लगा कि यद्यपि मैं उसका सम्मान करती हूँ, यद्यपि मेरे मन में उसके प्रति एक स्नेह है, क्योंकि वह एक मिलनसार और नेक स्वभाव का व्यक्ति है, फिर भी मेरे अंदर वह तीव्र लगाव नहीं है, और न ही हो सकता है, जो मुझे उसके लिए मरने को तैयार कर दे; और, अगर मैं कभी शादी करती हूँ, तो मैं अपने पति को उसी श्रद्धा से देखूँगी। दस में से एक संभावना है कि मुझे फिर कभी यह मौका नहीं मिलेगा; लेकिन कोई बात नहीं। इसके अलावा, मुझे पता था कि हेनरी मेरे बारे में इतना कम जानता है कि उसे शायद ही पता हो कि वह किसे लिख रहा है। क्यों, मुझे मेरे स्वाभाविक घरेलू रूप में देखकर वह चौंक जाएगा; उन्हें लगेगा कि मैं सचमुच एक बेबाक, रोमांटिक और उत्साही महिला हूँ। मैं अपने पति के सामने सारा दिन गंभीर चेहरा बनाकर नहीं बैठ

सकती थी। मैं हँसती, व्यंग्य करती और जो मन में आता, बोल देती। और अगर वह समझदार होते और मुझसे प्यार करते, तो उनकी छोटी से छोटी इच्छा भी हवा की तरह हल्की हो जाए, इस बात के आगे दुनिया ही तराजू पर तौली होती। क्या मैं, अपने मन की ऐसी प्रवृत्ति को जानते हुए, ईमानदारी से कह सकती थी कि मैं हेनरी जैसे गंभीर, शांत और युवा व्यक्ति से शादी करूँगी? नहीं, यह उन्हें धोखा देना होता, और इस तरह का धोखा देना मुझे शोभा नहीं देता। इसलिए मैंने उन्हें एक लंबा पत्र लिखा, जिसमें मैंने यथासंभव विनम्रता से अपनी अस्वीकृति व्यक्त की, और अपनी अस्वीकृति के कारणों को भी स्पष्ट रूप से बताया। मैंने उन्हें यह भी बताया कि किस तरह की महिला उनके लिए पत्नी के रूप में उपयुक्त होगी। — अलविदा, मेरी प्यारी एलेन।

'सी. ब्रोंटे।'

श्री नुसे एक बहुत ही नेक इंसान थे, जिनमें सर्वत्र सम्मान पाने की क्षमता थी। वे पहले चिचेस्टर के पास अर्न्ले के पादरी बने और बाद में डर्बीशायर के हैदरसेज के पादरी बने। यह उनके विवेकपूर्ण निर्णय था कि उन्होंने शार्लोट ब्रोंटे से विवाह करने की इच्छा रखी, जिनके पास, जैसा कि हम जानते हैं, न तो धन था, न ही कोई विशेष आकर्षण, और उस समय साहित्यिक प्रसिद्धि की भी कोई संभावना नहीं थी। उनके प्रस्ताव के जवाब में शार्लोट के व्यावहारिक पत्र का वांछित प्रभाव पड़ा। उन्होंने शीघ्र ही उनकी सलाह मान ली, और छह महीने बाद हमें शार्लोट द्वारा उनके विवाह की सगाई पर बधाई पत्र मिलता है।

रेव. हेनरी नुसे को

हॉवर्थ, 28 अक्टूबर, 1839।

महोदय, आपके पिछले पत्र का उत्तर देने में मुझे एलेन के पत्र की आशा थी, ताकि मैं आपको ब्रुकरायड से नवीनतम समाचार भेज सकूँ। हालाँकि, चूंकि वह पत्र नहीं लिख रही है, इसलिए मुझे लगता है कि मुझे अब उत्तर देने में देरी नहीं करनी चाहिए, कहीं आप मुझे लापरवाह न समझने लगें। जैसा कि आपने सही अनुमान लगाया है, मैंने आपके द्वारा उल्लिखित विषय के बारे में पहले ही थोड़ा सा संकेत सुना था, और यह जानकर मुझे खुशी हुई कि जिस महिला के प्रति आपका स्नेह है, वह एक योग्य और प्रशंसनीय महिला है। आपके कई मित्र इस कदम को शायद ही विवेकपूर्ण मानेंगे, क्योंकि धन-दौलत उस युवती के गुणों में से नहीं है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं यह

स्वीकार करता हूँ कि धन के पीछे न भागने के लिए मैं आपका और भी अधिक सम्मान करता हूँ, क्योंकि आपके पास मन की दृढ़ता, सिद्धांतों की दृढ़ता और मधुर स्वभाव है जो आमतौर पर सर्वशक्तिशाली आकर्षण की अनुपस्थिति की भरपाई कर सकते हैं। जो पत्नियाँ अपने पति के लिए धन लाती हैं, वे कभी-कभी अपने महत्व का घमंड और अपने अधिकारों को लेकर दृढ़ता भी लाती हैं, जो वैवाहिक जीवन में सुखदायी नहीं हो सकता। संभवतः वे तब नियंत्रण रखना चाहेंगी जब प्रकृति और स्नेह उन्हें अधीन होने के लिए बाध्य करते हैं - ऐसे में, मेरे विचार से, कोई खास सांत्वना नहीं मिल सकती।

दूसरी ओर, यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि जब दो व्यक्ति बिना धन के विवाह करते हैं, तो इस कमी को पूरा करने के लिए नैतिक साहस और शारीरिक परिश्रम की आवश्यकता होती है—निर्भरता से घृणा करने का साहस, अभाव सहने का धैर्य और जीविका कमाने के लिए परिश्रम करने की ऊर्जा होनी चाहिए। यदि ये गुण मौजूद हों, तो मुझे लगता है कि ईश्वर की कृपा से, हृदय और हाथ मिलाने वाले व्यक्तियों को सफलता और सुख का उचित हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार है, भले ही वे सांसारिक विवेक के कठोर सिद्धांतों से एक-दो कदम दूर चले गए हों। सम्मानजनक परिश्रम से अर्जित रोटी आलस्य की रोटी से कहीं अधिक मीठी होती है; और आपसी प्रेम और घरेलू शांति उन संपत्तियों से कहीं अधिक मूल्यवान हैं जिन्हें जंग लग सकती है और कीड़े खा सकते हैं।

एलेन के साथ अपनी पिछली सैर का मैंने और भी अधिक आनंद लिया, क्योंकि ऐसे सुख मुझे अक्सर नहीं मिलते। मैं आपको समुद्र के बारे में अपने विचार नहीं बताऊँगा, क्योंकि ऐसा करने से मैं अपने अति उत्साह के पाप में पड़ जाऊँगा। लेकिन मैं इतना ज़रूर कह सकता हूँ कि उसकी भव्यता, उसके बदलाव, उसका ज्वार-भाटा, उसकी अशांत लहरों की ध्वनि, चिंतन का ऐसा विषय थी जो न तो आँख को थकाती थी, न कान को और न ही मन को। ईस्टन में हमारा प्रवास अत्यंत सुखद रहा; मैं श्रीमान और श्रीमती हडसन की दयालुता के लिए हमेशा आभारी रहूँगा। अपने प्रवास के दौरान हम एग्नेस बर्टन से मिले और आपके दो पूर्व पैरिशवासियों - श्रीमती ब्राउन और श्रीमती डाल्टन से भी मुलाकात की। मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि उन्होंने आपकी प्रशंसा और हार्दिक सम्मान के साथ आपका नाम लिया। एलेन ने आपको हमारी सैर की सारी बारीकियाँ बता दी होंगी; इसलिए मेरे द्वारा उसका सारांश देना

उबाऊ होगा। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि हवा में बदलाव और नियमित व्यायाम से उनके स्वास्थ्य में काफी सुधार हुआ है। मैं अभी भी घर पर ही हूँ, क्योंकि मुझे अभी तक ऐसी कोई खबर नहीं मिली है जो मेरे दोस्तों को पसंद आए। हालाँकि, लंबे समय तक निष्क्रिय रहने से मैं बहुत बेचैन होने लगा हूँ। मुझे लगता है कि मुझे अपने लिए कुछ करना चाहिए, क्योंकि इस लंबे आराम से मेरा स्वास्थ्य पूरी तरह से ठीक हो गया है और अब मुझे आलस्य का कोई बहाना नहीं है। आपके भविष्य के कल्याण की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ, और इस आशा के साथ कि जब भी आपका प्रस्तावित विवाह संपन्न हो, वह आपके सुख और आनंद में सर्वोच्च योगदान दे, — विश्वास कीजिए, आपका सच्चा मित्र।

'सी. ब्रोंटे.

'पुनश्च: अपनी बहन मर्सी को मेरा नमस्कार कहना, जो फिलहाल तुम्हारी साथी और गृहणी है।'

यह पत्राचार यहीं समाप्त नहीं हुआ। दरअसल, शार्लोट इतनी बेहतरीन पत्र लेखिका थीं कि उनके साथ पत्र व्यवहार का अनुभव रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए इसे जारी रखना छोड़ना वाकई मुश्किल रहा होगा।

रेव. हेनरी नुसे को

हॉवर्थ, 26 मई, 1840।

"प्रिय महोदय, — आज सुबह अपने कागजात देखते समय मुझे पिछले फरवरी की आपकी एक चिट्ठी मिली जिस पर 'अनुत्तरित' लिखा हुआ था। आपकी बहन एलेन अक्सर मुझे चिट्ठियों का जवाब देने में समय की पाबंदी न रखने का आरोप लगाती हैं, और मुझे लगता है कि उनका आरोप यहाँ सही है। फिर भी, मैं आपकी इतनी समझदारी की सराहना करता हूँ कि आप इस बड़ी गलती को माफ कर देंगे, खासकर इसलिए कि मैं इसे तुरंत ठीक करने की कोशिश करूँगा।"

असल बात तो यह है कि जब पत्र आया, तब एलेन मेरे साथ रह रही थी, और मैं उससे बात करने में इतना मशगूल था कि दूसरों को पत्र लिखने का समय ही नहीं मिला। यह कोई बड़ी तारीफ़ नहीं है, पर अपमान भी नहीं। आप एलेन की अहमियत जानते हैं, आप जानते हैं कि मैं उससे कितनी कम बार मिलता हूँ, आप उसके प्रति मेरे आदर को भी थोड़ा-बहुत समझते हैं; और इन बातों से आप आसानी से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसका साथ एक बार मिल जाने पर इतना अनमोल होता है कि

उसे एक पल के लिए भी खोना नहीं चाहिए। एक स्त्री दूसरी स्त्री के महत्व को पुरुष से कहीं बेहतर समझ सकती है। पुरुष अक्सर समृद्धि में चमकने वाली बाहरी सुंदरता को ही देखते हैं, जबकि स्त्रियों को बारीकी से देखने का अवसर मिलता है, और वे उन गुणों को महत्व देना सीखती हैं जो विपत्ति में काम आते हैं।

'उस सौम्य स्वभाव और शांत समभाव में भी बहुत कुछ है जो घर को हमेशा रोशन और शांत रखता है—यह उस उग्र स्वभाव से कहीं बेहतर है जो दिन भर में बीस बार बदलता रहता है। मैंने एलेन का अध्ययन किया है और मुझे लगता है कि वह एक अच्छी पत्नी बनेगी—बशर्ते उसे एक अच्छा पति मिले। अगर उसकी शादी किसी मूर्ख या अत्याचारी से भी हो जाए, तो भी उसके स्वभाव में इतना साहस है कि वह उद्दंडता या कमजोरी दोनों के दबाव का सामना कर सकती है, हालांकि तब भी मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसकी समझ उसे बुरे हालात में भी बेहतर स्थिति का सामना करना सिखा देगी।'

आप देखेंगे कि मेरे सभी पत्र उपदेशात्मक हैं। उनमें कोई समाचार नहीं है, क्योंकि मुझे ऐसी कोई खबर नहीं पता जिसे सुनकर आपको रुचि हो। मैं अभी भी घर पर हूँ, बहुत स्वस्थ और खुश हूँ, और केवल इसलिए बेचैन हूँ क्योंकि मुझे अभी तक किसी पद के बारे में कोई सूचना नहीं मिली है।

मुझे आपका पत्र पाकर हमेशा खुशी होगी, और मैं वादा करता हूँ कि अगली बार जब आप लिखेंगे तो जवाब देने में देरी नहीं करूँगा। मुझे उम्मीद है कि आपके सुख के अच्छे अवसर अभी भी उज्ज्वल हैं; और आपने अपने भावी जीवनसाथी के बारे में जो कहा है, उससे मुझे पूरा विश्वास है कि वह ऐसी साथी होंगी जो आपको इस दुनिया की कठिनाइयों से खुशी-खुशी पार करने और अगले लोक में शांति प्राप्त करने में मदद करेंगी; कम से कम मैं यही आशा करता हूँ। आप इस मामले को सोच-समझकर आगे बढ़ा रहे हैं, यह बिल्कुल सही है, क्योंकि आप जो कदम उठाने जा रहे हैं, उसी पर आपके पूरे जीवन का सुख निर्भर करता है।

"आप मुझसे दोबारा किसी विशेष विषय पर पारंपरिक साहित्यिक शैली में लिखने के लिए न कहें। मैं ऐसा बिलकुल नहीं कर सकती। क्या आप मुझे किताबी कीड़ा समझते हैं? मुझे तो आपके इस विचार पर हँसी आ रही है, लेकिन शायद आप नाराज़ हो जाएँ। विषय क्या था? रसायन विज्ञान? या खगोल विज्ञान? या यांत्रिकी? या शंख विज्ञान? या कीट विज्ञान? या कोई और 'विज्ञान'? मुझे इनमें से किसी के बारे में कुछ

भी नहीं पता। मैं वैज्ञानिक नहीं हूँ; मैं भाषाविज्ञानी नहीं हूँ। आप मुझे मेरी असलियत से कहीं ज़्यादा विद्वान समझते हैं। अगर मैं आपको अपनी सारी अज्ञानता बता दूँ, तो मुझे डर है कि आप चौंक जाएँगे; लेकिन, क्योंकि मैं अभी भी आपकी नज़र में थोड़ा सा सम्मान बनाए रखना चाहती हूँ, इसलिए मैं चुप रहूँगी। — विश्वास कीजिए, आपकी सादर।”

‘सी. ब्रोंटे।’

रेव. हेनरी नुसे को

11 जनवरी, 1841।

'प्रिय महोदय, अब समय आ गया है कि मैं आपके पिछले पत्र का उत्तर दूं, क्योंकि मैं अपने उस वादे को पूरा करने में असफल रहूंगा कि मैं पिछली बार की तरह इतनी देरी नहीं करूंगा।'

आप जो कविताएँ भेजना चाहते हैं, उन्हें पाकर मुझे बहुत खुशी होगी। आप मुझसे बदले में कविताएँ भेजने के लिए कह रहे हैं। आपको कैसे पता कि मैं यह अनुरोध पूरा कर पाऊँगा? एक समय था जब मैं सोलह, सत्रह, अठारह और उन्नीस वर्ष का था, और कविताएँ लिखने में बहुत रुचि रखता था, लेकिन अब मैं चौबीस वर्ष का हूँ, लगभग पच्चीस वर्ष का होने वाला हूँ, और ये मध्य वर्ष जीवन के कुछ अनावश्यक रंगों को छीनने लगते हैं। इस उम्र में कल्पना को संवारने, विवेक को निखारने और युवावस्था के अनगिनत भ्रमों में से कम से कम कुछ को दूर करने का समय आ गया है। मैंने बहुत समय से कविता नहीं लिखी है।

“आप इस पत्र की नीरसता, नैतिकता और एकरसता को क्षमा करेंगे, और विश्वास कीजिए, आपके इस और परलोक में कल्याण के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाओं के साथ, आपका सच्चा मित्र।”

‘सी. ब्रोंटे।’

इस पत्र के साथ पत्राचार समाप्त होता है; लेकिन जैसा कि हमने देखा है, जब श्री नुसे डर्बीशायर के हैदरसेज के पादरी बने, तब शार्लोट ने उनकी बहन एलेन के साथ उनके घर में तीन सुखद सप्ताह बिताए थे। इसलिए, जब श्री नुसे को बाद वाले पद पर नियुक्त किया जाता है, तो वह अपने मित्र को बधाई देती हैं।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

29 जुलाई, 1844।

प्रिय नेल, हेनरी की खुशखबरी सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। इससे मुझे यह पता चलता है कि दुनिया में आगे बढ़ने के लिए दृढ़ता कितनी महत्वपूर्ण है। शांत आत्मविश्वास (अहंकार नहीं, क्योंकि वह तो भद्दा और घृणित होता है) एक प्रशंसनीय गुण है; लेकिन जो लोग स्वाभाविक रूप से इससे संपन्न नहीं होते, वे इसे कैसे प्राप्त करते हैं? हम सब यहाँ पहले की तरह ही व्यस्त हैं। पापा चाहते हैं कि उन्हें कोई सहायक पादरी मिल जाए, ताकि मिस्टर स्मिथ को छुट्टी मिल सके। अलविदा, प्रिय एलेन। मैं आपके और आपके परिवार के लिए सुख, स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना करता हूँ।

बर्लिंगटन जाने से पहले फिर से लिखना। मैरी को मेरा ढेर सारा प्यार।

'सी. ब्रोंटे।'

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, इसी बीच, 1839 में एक दूसरा प्रेमी भी सामने आया, और उसके प्रेम निवेदन की शीघ्रता मिस ब्रोंटे के प्रति विशेष आकर्षण का एक उल्लेखनीय प्रमाण है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

4 अगस्त, 1839।

मेरी प्यारी एलेन, मुझे तुम्हें एक अजीब घटना बतानी है - खूब हँसने के लिए तैयार हो जाओ! कुछ दिन पहले पापा के पूर्व सहायक पादरी, श्री हॉजसन, जो अब एक विकर हैं, हमारे साथ दिन बिताने आए थे, और अपने साथ अपने सहायक को भी लाए थे। श्री प्राइस नाम के ये सज्जन, डबलिन विश्वविद्यालय से अभी-अभी निकले एक युवा आयरिश पादरी हैं। हममें से किसी ने उन्हें पहली बार देखा था, लेकिन अपने देशवासियों की तरह, वे जल्द ही घर में घुलमिल गए। उनकी बातचीत में उनका व्यक्तित्व तुरंत झलक गया: हाजिरजवाब, जीवंत, उत्साही, चतुर भी, लेकिन एक अंग्रेज की गरिमा और विवेक की कमी थी। एलेन, तुम्हें पता है, घर पर मैं सहजता से बात करता हूँ, और कभी शर्माता नहीं, कभी उस दयनीय शर्मिंदगी से परेशान नहीं होता जो मुझे कहीं और सताती और विवश करती है। तो मैंने उस आयरिश व्यक्ति से बातचीत की और उसके चुटकुलों पर हँसा। हालाँकि मुझे उसके चरित्र में कुछ कमियाँ दिखीं, लेकिन मैंने उनकी मौलिकता से मिलने वाले मनोरंजन के कारण उन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया। शाम ढलते-ढलते मैं थोड़ा शांत हो गया और किनारे हट गया, क्योंकि उसने अपनी बातचीत में कुछ हद तक आयरिश चापलूसी का पुट डालना शुरू

कर दिया था, जो मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आया। खैर, फिर वो सब बातें बंद हो गईं और मैंने उनके बारे में दोबारा नहीं सोचा। कुछ दिनों बाद मुझे एक पत्र मिला, जिसका पता मुझे समझ नहीं आया, क्योंकि वह ऐसी लिखावट में था जिसे मैं देखने का आदी नहीं था। ज़ाहिर है, वह न तो आपसे था और न ही मेरी एकमात्र पत्र-व्यवहार करने वाली मैरी टेलर से। जब मैंने उसे खोला और पढ़ा, तो पता चला कि वह प्रेम की घोषणा और विवाह का प्रस्ताव था, जो उस बुद्धिमान युवा आयरिश व्यक्ति की जोशीली भाषा में व्यक्त किया गया था! वाह! मैंने सोचा, मैंने पहली नज़र के प्यार के बारे में तो सुना है, लेकिन यह तो सबसे बढ़कर है। मैं आपको यह अनुमान लगाने के लिए छोड़ता हूँ कि मेरा जवाब क्या होगा, मुझे पूरा विश्वास है कि आप गलत अनुमान लगाकर मेरे साथ अन्याय नहीं करेंगे। जब हम मिलेंगे तो मैं आपको वह पत्र दिखाऊँगा। आशा है आप दिल खोलकर हंस रहे होंगे। ये तो मेरी किसी रोमांचक कहानी जैसी नहीं है, है ना? ये तो मार्था टेलर की कहानियों से ज़्यादा मिलती-जुलती है। मैं तो कुंवारी ही रहूंगी। खैर छोड़ो, मैंने तो बारह साल की उम्र से ही ये फैसला कर लिया था। जल्द ही लिखना।

'सी. ब्रोंटे।'

इसके कुछ ही महीनों बाद हमें बेचारे मिस्टर प्राइस के बारे में आखिरी बार सुनने को मिला।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

24 जनवरी, 1840।

मेरी प्यारी एलेन, श्रीमान प्राइस का निधन हो गया है। कुछ समय से उनकी तबीयत खराब थी और रक्त वाहिका फटने से उनका देहांत हो गया। जब मैंने उन्हें देखा था, तब वे मजबूत और चुस्त-दुरुस्त दिखते थे, और यह बात लगभग छह महीने पहले की है। हालांकि मैं उनके बारे में बहुत कम जानती थी, और ज़ाहिर है, उनके बारे में मुझे कोई गहरी या स्थायी रुचि नहीं थी, फिर भी मैं स्वीकार करती हूँ कि जब मुझे अचानक उनके निधन की खबर मिली, तो मुझे गहरा सदमा लगा और दुख भी हुआ: ऐसा महसूस करने में कोई शर्म की बात नहीं थी, है ना? एलेन, मैं तुम्हें तुम्हारी अस्पष्ट और खराब लिखावट के लिए डांटती हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि तुम मेरी इस प्रशंसा का शत प्रतिशत जवाब दे सकती हो। मेरा लंबा पत्र लिखने का मन नहीं है, इसलिए अलविदा। ईश्वर तुम्हारा भला करे।

'सी. बी.'

शार्लेट के पत्रों में विवाह संबंधी कई विचार बिखरे हुए हैं। यह एक ऐसा विषय था जिस पर वह प्रश्न पूछने और अपने उत्तर खोजने से कभी नहीं थकती थी। एक अवसर पर वह कहती हैं, 'मेरा मानना है कि प्रेम के लिए विवाह करने से बेहतर है प्रेम से विवाह करना।' और अपनी एक सहेली के प्रशंसक के कुछ अनिश्चित रवैये के संदर्भ में, वह मिस नुसे से इस प्रकार कहती हैं:

सुश्री एलेन नुसे के लिए

20 नवंबर, 1840।

मेरी प्यारी नेल, तुम्हारा पिछला पत्र इतने महत्वपूर्ण विषयों पर लिखा था कि मैं उसका उत्तर देने में एक दिन भी देरी नहीं कर सकती। अब मैं तुम्हें एक प्रवचन और एक सलाह लिखने जा रही हूँ, जिसे तुम्हें अपनी दादी की ओर से आई सलाह की तरह मानना चाहिए। लेकिन सबसे पहले, तुमसे बात शुरू करने से पहले, मुझे श्री विंसेंट के कान में कुछ फुसफुसाना है, और काश वह बात उन तक पहुँच पाती। संत क्रिसॉस्टम, संत साइमन और संत जूड के नाम पर, वह सज्जन व्यक्ति एक पुरुष की तरह आगे आकर अपने सारे विचार स्वयं क्यों नहीं कहता, रिश्तेदारों के साथ समय बर्बाद करने के बजाय? "श्रीमान विंसेंट," मैं कहता हूँ, "स्वयं जाइए और कहिए: 'श्रीमती — -, मैं आपसे बात करना चाहता हूँ।' श्रीमती — - निश्चित रूप से विनम्रतापूर्वक उत्तर देंगी: 'श्रीमान विंसेंट, मैं आपकी सेवा में हूँ।' और फिर, जब कमरे में आप और वह छोड़कर बाकी सब चले जाएँ, तो पास में एक कुर्सी पर बैठ जाइए। उनसे आग्रह कीजिए कि वे अपना वह मूर्खतापूर्ण काम छोड़कर आपकी बात सुनें। फिर स्पष्ट, सुस्पष्ट, विनम्र, लेकिन दृढ़ स्वर में कहना शुरू कीजिए: 'श्रीमती — -, मुझे आपसे एक प्रश्न पूछना है — एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न: "क्या आप मुझे अच्छे और बुरे समय में अपना पति स्वीकार करेंगी? मैं अमीर नहीं हूँ, लेकिन हमारे भरण-पोषण के लिए मेरे पास पर्याप्त धन है। मैं कोई महान व्यक्ति नहीं हूँ, लेकिन मैं आपसे सच्चे और ईमानदारी से प्रेम करता हूँ। श्रीमती — -, यदि आप दुनिया को बेहतर जानतीं तो आप समझ जातीं कि यह एक ऐसा प्रस्ताव है जिसे ठुकराया नहीं जा सकता — एक दयालु, स्नेही हृदय और एक सामान्य आर्थिक स्थिति।" ऐसा कीजिए, श्रीमान विन्सेंट, और शायद आप सफल हो जाएँगे। — - को भावुक और प्रेम भरे पत्र लिखते रहिए, और मैं आपके प्रस्ताव के लिए एक पैसा भी नहीं दूँगा। श्रीमान विन्सेंट की बात यहीं

समाप्त होती है। अब सुश्री — - की बारी है, जिन्हें मित्र की सलाह नामक कड़वी गोली निगलनी है। उनसे कहिए: “क्या वह आदमी मूर्ख है? क्या वह धूर्त है? पाखंडी, ढोंगी, बेवकूफ, नासमझ? यदि वह इनमें से कोई भी या सभी है, तो निश्चित रूप से उससे उलझने का कोई मतलब नहीं है। उसे तुरंत रोक दीजिए — उसकी उम्मीदों को बिजली की गति और तीक्ष्णता से चकनाचूर कर दीजिए। क्या वह इससे बेहतर है? क्या उसमें कम से कम सामान्य ज्ञान, अच्छा स्वभाव, और संयमित स्वभाव है? तो फिर इस मामले पर विचार कीजिए।” आगे कहिए: “अब आपको उससे घृणा हो रही है—घृणा की चरम सीमा। यह संभव है, लेकिन कृपया याद रखिए कि आप उसे जानती नहीं हैं; आपकी उससे जान-पहचान केवल तीन-चार दिन ही हुई है। अधिक समय और घनिष्ठता से शायद आपका मन काफी हद तक उससे सहमत हो जाए। और अब मैं आपको एक सच्चाई बताता हूँ, जिस पर आप नाराज़ हो सकती हैं या नहीं, यह आपकी मर्ज़ी है।” उससे कहिए: “आपके स्वभाव के बारे में जितना मैं जानता हूँ, और मुझे लगता है कि मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ, उससे मैं कहूँगा कि आप शादी से पहले कभी प्यार नहीं करेंगी। शादी के बाद, और कुछ महीनों के लिए आप अपने जीवन में स्थिर हो जाएँगी, और अपने जीवनसाथी के साथ तालमेल बिठा लेंगी, तो आप शायद एक बहुत ही स्नेही और सुखी पत्नी बनेंगी; भले ही वह व्यक्ति आपकी सभी इच्छाओं को पूरा न करे, आप उसकी छोटी-मोटी गलतियों और कमियों को नज़रअंदाज़ करेंगी और उन पर ज़्यादा नाराज़ नहीं होंगी। यह विशेष रूप से तब होगा जब वह इतना समझदार हो कि आपको महत्वपूर्ण मामलों में उसका मार्गदर्शन करने दे।” यह भी कहें: “मुझे आशा है कि तुम उस रोमांटिक मूर्खता में नहीं पड़ोगी जिसे फ्रांसीसी लोग ‘उने ग्रांडे पैशन’ कहते हैं। मेरी प्यारी बच्ची, ‘उने ग्रांडे पैशन’ तो ‘उने ग्रांडे फोली’ है। हर चीज़ में औसत दर्जे का होना बुद्धिमत्ता है; भावनाओं में औसत दर्जे का होना परम बुद्धिमत्ता है।” उससे कहें: “जब तुम मेरी उम्र की हो जाओगी (मैं कम से कम साठ साल की हूँ, तुम्हारी दादी होने के नाते), तो तुम्हें पता चलेगा कि वे अधिकांश सांसारिक उपदेश, जिनकी ऊपरी तौर पर दिखने वाली ठंडक हमें जवानी में चौंकाती और दूर भगाती है, बुद्धिमत्ता पर आधारित हैं।”

‘किसी भी लड़की को तब तक प्यार नहीं करना चाहिए जब तक कि वास्तव में प्रस्ताव न दिया जाए। यह कहावत बिल्कुल सही है। मैं तो इसे और आगे बढ़ाते हुए इसकी पुष्टि भी करता हूँ: किसी भी युवती को तब तक प्यार नहीं करना चाहिए जब

तक कि प्रस्ताव न दिया जाए, स्वीकार न कर लिया जाए, विवाह समारोह संपन्न न हो जाए और वैवाहिक जीवन के पहले छह महीने न बीत जाएँ। इसके बाद एक स्त्री प्यार करना शुरू कर सकती है, लेकिन बहुत सावधानी से, बहुत संयम से, बहुत ही समझदारी से। यदि वह कभी इतना प्यार करती है कि एक कठोर शब्द या एक ठंडी निगाह उसके दिल को चीर देती है, तो वह मूर्ख है। यदि वह कभी इतना प्यार करती है कि उसके पति की इच्छा ही उसका कानून बन जाती है, और वह उसकी इच्छाओं का अनुमान लगाने के लिए उसकी निगाहों को देखने की आदत डाल लेती है, तो वह जल्द ही एक उपेक्षित मूर्ख बन जाएगी।'

मेरे दो अध्ययन हैं: आप मेरे लिए एक शांत, सौम्य चरित्र की सफलता, साख और सम्मान का अध्ययन हैं; मैरी मेरे लिए उस तिरस्कार, पश्चाताप और गलतफहमी का अध्ययन हैं जो उन भावनाओं के विकास के बाद उत्पन्न होती हैं जो स्वयं में महान, स्नेहपूर्ण, उदार, समर्पित और गहन होती हैं, लेकिन जिन्हें बहुत खुलकर प्रकट करने और स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के कारण उनके वास्तविक मूल्य का आकलन नहीं किया जाता। मुझे इस दुनिया में इससे अधिक सच्चे रूप से महान चरित्र देखने की आशा नहीं है। वह अपने प्रिय के लिए स्वेच्छा से अपनी जान दे देगी। उसकी बुद्धि और उपलब्धियाँ उच्चतम स्तर की हैं। फिर भी मुझे संदेह है कि मैरी कभी शादी करेगी। श्री वेटमैन उन युवतियों पर बहुत कड़ा रुख अपनाते हैं जो "हाँ" कहते समय "ना" कह देती हैं। वे मुझे आश्वस्त करते हैं कि उनका इरादा व्यक्तिगत नहीं है। मुझे उम्मीद है कि ऐसा ही हो। मैं निश्चित रूप से इस तरह के निरर्थक व्यवहार के प्रति उनकी असहमति से पूरी तरह सहमत हूँ। वास्तव में, जब हृदय सकारात्मकता का आह्वान कर रहा हो तो जीभ का नकारात्मक बोलना मूर्खता है। या यूँ कहें कि यह एक वीरतापूर्ण आत्म-त्याग का कार्य है, जिसके लिए मैं स्वयं को पूरी तरह असमर्थ मानता हूँ। मैं हजार पाउंड पाने के लिए ऐसा झूठ नहीं बोलूंगा। मुझे जल्द ही फिर से लिखना। आपने ऐसा क्यों कहा कि मैं हिप्पोक्रेट्स की प्रशंसा करता हूँ? यह सरासर झूठ है। मैंने उनमें कुछ प्रशंसनीय खोजने की कोशिश की, लेकिन असफल रहा।

'वह शायद अधिकांश पुरुषों जैसा ही है' (वह एक परिचित के बारे में कहती है)। 'निश्चित रूप से वे पुरुष जो जवानी में मौज-मस्ती करते हैं और अधेड़ उम्र में भावनाओं के कुंद और जोश के क्षीण हो जाते हैं, विवाह में उनका केवल एक ही उद्देश्य हो सकता है - अपने स्वार्थ की पूर्ति। यह सोचना कठिन है कि ऐसे पुरुष युवा, विनम्र,

ईमानदार, हृदय और जीवन से पवित्र, भावनाओं से परिपूर्ण और निर्मल महिलाओं को अपनी पत्नियाँ बनाते हैं - उन्हें अपने दूसरे रूप के रूप में स्वीकार करते हैं - और ऐसे सद्गुण और जीवंतता को अपने मुरझाए हुए अस्तित्व से, ऐसी ईमानदारी को अपने खोखलेपन से, ऐसी निस्वार्थता को अपने थके-हारे लालच से जोड़ते हैं - यह सोचना आत्मा को गहराई तक झकझोर देता है। प्रकृति और न्याय ऐसे विवाह की अनुमति नहीं देते।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

9 अगस्त, 1846।

प्रिय नेल, — ऐनी और मैं दोनों आपके निमंत्रण के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। बेशक, हमारा धन्यवाद केवल शब्दों तक सीमित नहीं है — यह अत्यंत हार्दिक है, विशेष रूप से आपके, आपकी माता और बहनों के लिए। लेकिन हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते; और मुझे लगता है कि आप भी इस बार हमारे अस्वीकार करने के कारणों को उचित समझेंगी।

दो सप्ताह में मुझे उम्मीद है कि मैं पापा के साथ मैनचेस्टर जाऊंगी ताकि उनकी आंखों का ऑपरेशन हो सके। एमिली और मैं एक सप्ताह पहले एक अच्छे सर्जन की तलाश में वहां गए थे, और हमें मिस्टर विल्सन के रूप में एक सर्जन मिल गया। वे केवल विवरण देखकर यह नहीं बता सके कि आंखें ऑपरेशन के लिए तैयार हैं या नहीं। इसलिए पापा को उनसे सलाह लेने के लिए मैनचेस्टर जाना ही होगा। अगर वे मोतियाबिंद को पूरी तरह से पका हुआ मानते हैं, तो हम वहीं रुकेंगे; इसके विपरीत, अगर उन्हें लगता है कि यह अभी पूरी तरह से नहीं जमा है, तो हमें वापस लौटना होगा - और पापा को कुछ और समय तक अंधेरे में ही रहना होगा।

पत्नी को कैसा महसूस होना चाहिए, इस बारे में आपकी सोच में कुछ कमी है। एलेन, चाहे पुरुष हो या स्त्री, जिसके पास धन होता है, वह मालिक बनना चाहेगा, उस पर निर्भर रहेगा। जिसने धन दिया है, वह कभी-कभी उस पर अपना महत्व समझेगा, और सामान्य बुद्धि वाले भी कम धनी साथी को ताना मारेंगे। इसके अलावा, किसी भी पति को अपनी पत्नी के लिए दया का पात्र नहीं होना चाहिए, जैसे किसी पत्नी को अपने पति के लिए नहीं। नहीं, प्रिय एलेन; जैसा कि कहते हैं, अच्छे विवाह में आनंद तो आता है, लेकिन हर सुख में कुछ कड़वाहट भी होती है। मैं अपनी सहेली के लिए बहुत धनी पति की कामना नहीं करती। मैं नहीं चाहती कि कोई भी पुरुष उसे

कभी भी "दया की पात्र" समझे। सभी को मेरा प्यार देना। - आपकी

'सी. ब्रोंटे।'

शार्लोट ब्रोंटे को शादी का तीसरा प्रस्ताव मिलने में कई साल लग गए। ये ब्रुसेल्स में बिताए गए उनके जीवन के वर्ष थे, और इसी वर्ष उन्होंने अपनी बहनों को खो दिया था। यह उनके शुरुआती साहित्यिक प्रसिद्धि के दौर में आया, और वास्तव में उसी का परिणाम था। श्री जेम्स टेलर स्मिथ एंड एल्डर में कार्यरत थे। वे साहित्यिक विभाग से जुड़े थे, और फर्म के सलाहकार के रूप में श्री डब्ल्यू. एस. विलियम्स के बाद दूसरे स्थान पर थे। ऐसा प्रतीत होता है कि श्री विलियम्स ने मिस ब्रोंटे को पत्र लिखकर सुझाव दिया था कि श्री टेलर को उनके नए उपन्यास 'शर्ली' की पांडुलिपि के लिए व्यक्तिगत रूप से हॉवर्थ आना चाहिए, और यह शार्लोट का जवाब है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

24 अगस्त, 1849।

'मेरे प्रिय महोदय, मुझे लगता है कि पुस्तक के लिए सबसे अच्छा शीर्षक 'शर्ली' होगा, बिना किसी स्पष्टीकरण या अतिरिक्त जानकारी के - जितना सरल और संक्षिप्त होगा, उतना ही बेहतर होगा।'

यदि श्री टेलर शहर लौटते समय यहाँ आते हैं, तो वे पांडुलिपि की जिम्मेदारी ले सकते हैं; मैं इसे सामान्य परिवहन से भेजने की बजाय उन्हें सौंपना बेहतर समझूँगी। क्या मैंने लंदन में श्री टेलर को देखा था? मुझे उनका नाम याद नहीं है।

अगर मैं उन्हें अपने भाई का साथ दे पाती, या अगर मेरे पिता इतने जवान और तंदुरुस्त होते कि उनके साथ मैदानों में घूम सकें और उन्हें आस-पास का इलाका दिखा सकें, या अगर पापा की एकांतप्रिय आदतें ऐसी न होतीं कि किसी अजनबी को घर में भी ज्यादा समय देना उन्हें असहज लगे, तो मैं उन्हें कुछ दिनों के लिए अपने पादरी के घर में सादा आतिथ्य सत्कार सहर्ष अर्पित करती। पापा जरा भी मानवद्वेषी या चिड़चिड़े स्वभाव के नहीं हैं, फिर भी वे स्वभाव से समाज की बजाय एकांत को पसंद करते हैं, और यह आदत एक अत्याचारी है जिसके बंधन को तोड़ना अब उनके लिए नामुमकिन है। अगर ये दिक्कतें न होतीं, तो मुझे लगता है कि मैं आपको यॉर्कशायर आने के लिए पहले ही कह देती। मुझे पता है कि पापा मिस्टर स्मिथ के किसी भी मित्र का पूरे स्नेह और सद्भाव से स्वागत करेंगे, लेकिन मैं यह भी जानती हूँ कि अगर उन्हें बहुत ज्यादा परेशान न किया जाए, तो वे किसी मेहमान को ज्यादा

समय नहीं दे सकते, और इसलिए उनका आतिथ्य सत्कार नीरस होगा।

आप इन बातों की गंभीरता को समझेंगे और यह भी समझेंगे कि मैं श्री टेलर को केवल एक दिन के लिए ही क्यों आमंत्रित कर रहा हूँ, न कि उनसे लंबे समय तक मिलने का अनुरोध कर रहा हूँ। आप मेरी बात पर विश्वास करेंगे, और वे भी, जब मैं कहता हूँ कि मुझे उनसे मिलकर अत्यंत प्रसन्नता होगी। उन्हें हॉवर्थ एक विचित्र, असभ्य और छोटा सा स्थान लगेगा, जैसा कि मुझे लगता है, उन्होंने पहले कभी नहीं देखा होगा। यह लीड्स से बीस मील दूर है; उन्हें रेलगाड़ी से कीघली आना होगा (मुझे लगता है कि हर दो घंटे में ट्रेनें हैं)। उन्हें याद रखना होगा कि शिपली नामक स्टेशन पर डिब्बे बदले जाते हैं, अन्यथा वे उन्हें स्किप्टन या कोल्ने ले जाएँगे, या पता नहीं कहाँ। कीघली पहुँचने पर उन्हें अभी भी चार मील की यात्रा करनी होगी; डेवोनशायर आर्म्स से वाहन किराए पर लिया जा सकता है - वहाँ कोई कोच या अन्य नियमित परिवहन नहीं है।

मैं चाहूँगा कि उनके आने से पहले मुझे उनसे सूचना मिल जाए और मुझे पता चल जाए कि वे किस दिन आ सकते हैं, ताकि मैं पांडुलिपि तैयार रख सकूँ; यदि यह पूरी तरह से तैयार नहीं है तो मैं अंतिम एक-दो अध्याय डाक से भेज सकता हूँ।

मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप यह पत्र श्री टेलर को भेज दें— इससे आपको अधिक स्पष्टीकरण देने की परेशानी से मुक्ति मिलेगी, और उन्हें इस बात का भी अंदाजा हो जाएगा कि उनके सामने क्या स्थिति है; तब वे स्वयं विचार कर सकते हैं कि इतने छोटे से उद्देश्य के लिए इतनी अधिक परेशानी उठाना उनके लिए उचित होगा या नहीं।— विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आपका सादर।

'सी. ब्रोंटे।'

जेम्स टेलर, कॉर्नहिल को।

3 सितंबर, 1849।

“मेरे प्रिय महोदय, शनिवार, 8 तारीख को आपका आगमन मेरे पिता और मेरे लिए अत्यंत सुविधाजनक होगा।”

पांडुलिपि अब पूरी हो चुकी है और आपके लिए तैयार है।

आशा है कि आपने अपनी छुट्टी का आनंद लिया होगा और अपनी यात्रा से सुख और लाभ दोनों प्राप्त किए होंगे, - प्रिय महोदय, आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

श्री टेलर कद में छोटे और लाल बालों वाले थे। मेरे सामने उनकी दो तस्वीरें हैं। ये तस्वीरें एक दृढ़ निश्चयी, सक्षम, गठीले शरीर वाले, घनी दाढ़ी वाले व्यक्ति को दर्शाती हैं: कुल मिलाकर एक जोशीले और दिलचस्प व्यक्तित्व वाले व्यक्ति। खैर, श्री टेलर को शार्लोट से प्यार हो गया था और वे अपने पहले के प्रेमियों की तुलना में कहीं अधिक दृढ़ थे। उन्हें श्री ब्रोंटे की सद्भावना का भी लाभ मिला था। पत्रों के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

14 सितंबर, 1850।

प्रिय एलेन, - तुम्हें लिखे अपने आखिरी पत्र पर मुहर लगाने के बाद मुझे याद आया कि मैं अमेलिया का पत्र उसमें डालना भूल गया था; हालांकि, लगता है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इसी बीच मुझे ब्रुकरोयड में हुई अपनी एक छोटी-मोटी चोरी का जिक्र करना है। क्या तुम्हें याद है कि तुमने मुझे एक छाता उधार दिया था, जिसे मुझे लीड्स में विदा होते समय तुम्हारे पास छोड़ देना चाहिए था? मैं अनजाने में उसे हाथ में लेकर चला गया। अगली बार जब तुम हॉवर्थ आओगी तो तुम्हें वह मिल जाएगा।

‘काश, प्यारी एलेन, तुम मुझे बता देतीं कि मेरी शादी को लेकर जो अफवाहें तुम सुन रही हो, वो क्या हैं। अगर मुझे सारी बातें पता होतीं, तो मैं बेहतर ढंग से समझ पाती कि ये अफवाहें कहाँ से आ रही हैं— अभी तो मैं बिल्कुल असमंजस में हूँ। मैं किससे शादी करूँ? मुझे लगता है कि लंदन छोड़ने के बाद से मैंने शायद ही कोई ऐसा पुरुष देखा हो जिससे मेरी शादी संभव हो सके। बेशक ऐसे पुरुष होंगे जिनसे, अगर मैं चाहूँ, तो शादी कर सकती हूँ; लेकिन मुझे अभी तक कोई ऐसा वैवाहिक प्रस्ताव नहीं मिला है जो मुझे सचमुच पसंद आए। और अगर मिल भी जाए, तो भी बहुत सी बाधाएँ होंगी। इस तरह की बात का ज़रा सा भी ज़िक्र पापा को बहुत बुरा लगता है।’

‘एडिनबर्ग से प्रकाशित होने वाली एक नई पत्रिका, पैलेडियम में हाल ही में ‘करर बेल’ शीर्षक से एक लेख छपा है। यह एक प्रभावशाली रचना है, और इसमें इतनी गहरी सहानुभूति और प्रशंसा झलकती है जिसकी मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी। इसमें लेखकों आदि के बारे में कुछ गलतियाँ हैं, लेकिन मुझे उम्मीद है कि एक दिन मैं इन्हें सुधार लूँगा। श्री टेलर (छोटे कद के व्यक्ति) ने मुझे सबसे पहले इस लेख के बारे में बताया। उनका पत्र पाकर मुझे कुछ आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैंने नौ महीने पहले ही यह

मान लिया था कि अब उस तरफ से कोई पत्राचार नहीं होगा। मैं आपको उनके द्वारा बाद में प्राप्त एक पत्र संलग्न कर रहा हूँ, जो मेरे पत्र के उत्तर में है। इसे पढ़ें और मुझे बताएं कि लेखक के चरित्र आदि के बारे में यह आपको कैसा लगता है। उनका छोटा सा अखबार कुछ हफ्तों के लिए गायब हो गया था, और मुझे लगा कि वह कैपुलेट परिवार के मकबरे में चला गया है; हालाँकि, यह फिर से प्रकाशित हो गया है, और उन्होंने बताया है कि उन्हें डर था कि इसका नियमित प्रकाशन शायद संतुष्टि से ज़्यादा नाराज़गी पैदा कर सकता है। मैंने उनसे कहा कि यह एक गलती थी - कि मुझे इसे पाकर बहुत खुशी हुई, लेकिन उम्मीद है कि वे इसे भेजने का झंझट नहीं करेंगे।' इसके अलावा, मैं इस अखबार को स्वीकार करके खुद को किसी भी तरह से बाध्य नहीं मानता, क्योंकि यह स्मिथ एंड एल्डर के प्रकाशन से संबंधित है। यह छोटा टेलर न तो भावना में कमजोर है और न ही समझ में।

'मेरे द्वारा दोबारा प्रकाशन करने की खबर सरासर झूठ है।'

सभी को मेरा सादर प्रणाम कहना, और विश्वास मानिए, आपका विश्वासपात्र

'सी. बी.'

उसकी सहेली द्वारा बृहस्पति का उल्लेख किसी अन्य संभावित प्रेमी के संदर्भ में किया गया है, और 'छोटे आदमी' के प्रति सौहार्दपूर्ण संकेत से यह संकेत मिलता है कि यदि उसने दृढ़ता दिखाई होती, या भारत न गया होता, जहाँ उसे स्मिथ एंड एल्डर के लिए बॉम्बे में एक शाखा खोलने के लिए भेजा गया था, तो श्री टेलर अंततः सफल हो सकते थे।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

30 जनवरी, 1851।

प्रिय नेल, — यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ कि अमेलिया की तबीयत फिर से खराब है; लेकिन मुझे लगता है कि हम दोनों को ज्यादा चिंता नहीं करनी चाहिए। भले ही इस बार सब ठीक न हो, लेकिन भविष्य में सब कुछ ठीक हो जाएगा। मुझे लगता है कि ये शुरुआती दुर्घटनाएँ सेहत को खराब नहीं करतीं, बल्कि बाद में होने वाली दुर्घटनाएँ करती हैं। उसे हिम्मत रखनी चाहिए — अभी भी उसके पास देखभाल करने के लिए, भाग-दौड़ करने के लिए, उन्हें सही राह दिखाने के लिए, उन्हें संवारने और प्रशिक्षित करने के लिए, शायद एक दर्जन छोटे जो टेलर होंगे — यानी, अचार वाली बर्च की लकड़ी का भरपूर इस्तेमाल करते हुए। आपको क्या लगता है कि मुझे हाल ही

में दो पत्र किससे मिले हैं? एलिस से। लगता है कि वे महाद्वीप से वापस आ गए हैं और अब टॉरक्वे में हैं। पहले पत्र ने मुझे थोड़ा प्रभावित किया क्योंकि मुझे लगा कि उसका लहजा थोड़ा शांत था; मुझे उम्मीद थी कि उसके स्वभाव में काफी सुधार हुआ होगा। सच में, उसमें "पुराने आदम" के कुछ अंश थे, लेकिन जिन्हें मैं नज़रअंदाज़ करने को तैयार था। मैंने उसे जल्द ही और विनम्रता से जवाब दिया। आज मुझे जवाब में एक लंबा-चौड़ा पत्र मिला, जो खोखली भावनाओं और दिखावटी लेखनी के ढोंग से भरा हुआ था। हर रचना में उसकी पुरानी व्यापारिक भावना झलकती है; वह ऑटोग्राफ मांगती है। लगता है उसने किसी अखबार में पढ़ा था कि मैं मिस मार्टिन्यू के साथ रह रहा हूँ; इसीलिए वह अपनी, वर्ड्सवर्थ की, साउथी की और मेरी लिखावट के नमूने मांगती है। अगर कोई और उसकी सेहत के बारे में बताता तो मुझे दुख और चिंता होती। वह कहती है कि बार-बार की परेशानियों से उसका स्वास्थ्य लगभग टूट चुका है, और उसे अपनी उम्र पर संदेह है: लेकिन, उसे पुराने समय से याद करके, मुझे उम्मीद है कि यह एक गलतफहमी हो सकती है। वह कहती है कि उसके "प्यारे पापा और मम्मी" और उसकी "प्यारी बहन" जीवित हैं, और "ठीक-ठाक" हैं। (यह आखिरी शब्द मैंने खुद लिखा है। मुझे नहीं पता कि बिर्स्टॉल में इसका इस्तेमाल यहाँ की तरह होता है या नहीं - इसका मतलब है औसत दर्जे का जीवन।)

'तुम्हें अब "बृहस्पति" और "शुक्र" के बारे में कुछ नहीं कहना है – ऐसी बेतुकी बातों से तुम्हारा क्या मतलब है? सच तो यह है कि इससे बड़ी भ्रांति कोई हो ही नहीं सकती, और मैं इसे मज़ाक में भी नहीं सुनना चाहता, क्योंकि मेरी बुद्धि इसे तुच्छ समझती है। "छोटे आदमी" का विचार मुझे कम चौंकाता है – अगर "परिणाम" का सवाल ही होता, तो यह ज़्यादा सटीक बैठता, लेकिन ऐसा नहीं है। वह अब भी अपना छोटा अखबार भेजता है; और पिछले दिन एक ऐसा पत्र आया जो विशाल, सारगर्भित, विवेकपूर्ण और ज्ञान से भरपूर था, मानो किसी दैत्य का लिखा हुआ हो। तुम जितना चाहो उतना और कितनी भी बुरी तरह से हंस लो; लेकिन सच तो यह है कि मेरे इस छोटे कद के और लाल बालों वाले दोस्त में एक शांत दृढ़ता है, जो उसके कद को और बढ़ा देती है, उसके सुनहरे बालों को काला कर देती है, और कुल मिलाकर मेरी नज़र में उसे बहुत सम्मान देती है।' हालांकि, मुझे अत्यधिक उत्साह से कोई परेशानी नहीं है - अब एक उचित दूरी और सम्मान बरकरार है, जिससे स्थिति काफी सहज हो जाती है।

“यह सब बकवास है, नेल, और तुम इसे समझ जाओगी। — तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद।”

‘सी. बी.

'मिस मार्टिन्यू की सहायक का नाम एटकिंसन है। वह अक्सर मुझे अत्यंत सौहार्दपूर्ण ढंग से पत्र लिखती हैं।'

जेम्स टेलर, कॉर्नहिल को

22 मार्च, 1851।

मेरे प्रिय महोदय, कल मैंने कॉर्नहिल को पुस्तकों का एक बक्सा भेजा, जिसमें नॉर्थ ब्रिटिश रिव्यू का वह अंक भी शामिल था जो आपने कृपापूर्वक मुझे उधार दिया था। जिस लेख की ओर आपने विशेष रूप से मेरा ध्यान दिलाया था, उसे मैंने बड़े आनंद और रुचि से पढ़ा, और यदि मैं अब उस पर विस्तार से चर्चा नहीं कर रहा हूँ, तो इसका कारण यह है कि मैं भली-भांति जानता हूँ कि इस समय आपका ध्यान पूरी तरह से उसी में लगा होगा, क्योंकि यदि मैंने श्री स्मिथ के अंतिम नोट के एक संक्षिप्त पैराग्राफ को सही समझा है, तो आप इस समय इंग्लैंड छोड़कर भारत जाने की तैयारी में हैं।

इसलिए, मैं इस कार्य में आपकी भलाई और समृद्धि के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ, और आशा करता हूँ कि जलवायु में इस बड़े बदलाव से आपके स्वास्थ्य को कोई खतरा नहीं होगा। मुझे लगता है कि कॉर्नहिल में आपकी कमी महसूस होगी, लेकिन निस्संदेह "व्यापार" एक ऐसा राक्षस है जो ऐसे बलिदानों की मांग करता है।

मुझे नहीं पता कि आप कब जाएंगे, और न ही यह कि आपकी अनुपस्थिति स्थायी होगी या केवल कुछ समय के लिए; चाहे जो भी हो, मेरी ओर से आपकी खुशी के लिए शुभकामनाएं स्वीकार करें, और मेरी विदाई, यदि मुझे आपसे दोबारा बात करने का अवसर न मिले। — विश्वास करें, आपका सच्चा,

‘सी. ब्रोंटे।’

जेम्स टेलर, कॉर्नहिल को

24 मार्च, 1851।

“मेरे प्रिय महोदय, — आपका पत्र मिलने से पहले मैंने आपको संक्षिप्त पत्र लिखा था, लेकिन मुझे डर है कि वह पत्र आप तक समय पर नहीं पहुँच पाया होगा।

अब मैं केवल इतना ही कहूँगा कि स्कॉटलैंड से आपकी वापसी पर आपसे मिलने पर मुझे और मेरे पिता दोनों को अत्यंत प्रसन्नता होगी — यह प्रसन्नता निश्चित रूप से उदासी से भरी होगी, जैसा कि हर विदाई में होता है, लेकिन फिर भी एक प्रसन्नता होगी।"

मैं मिस मार्टिन्यू और मिस्टर एटकिंसन की किताब के बारे में आपकी कही हर बात से पूरी तरह सहमत हूँ। मुझे उस महिला के हित में इसके प्रकाशन का गहरा अफसोस है; इससे भविष्य में उनकी उपयोगिता को गहरा आघात पहुँचता है। भला एक घोषित नास्तिक के शब्दों पर कौन भरोसा कर सकता है, या उसके निर्णय पर कौन विश्वास कर सकता है?

आप जिस संकट से गुज़रे हैं, उसमें आपका निर्णय आपके सुख और कल्याण के लिए सर्वोत्तम सिद्ध हो; और वास्तव में, जैसा कि आप सही करने की इच्छा और कर्तव्य की उच्च भावना से प्रेरित हैं, मुझे विश्वास है कि ऐसा ही होगा। मुझे केवल जलवायु परिवर्तन का डर है; लेकिन ईश्वर इसे भी सर्वोत्तम तरीके से संभाल लेंगे - आप उन पर विश्वास कर सकते हैं और उन पर भरोसा कर सकते हैं। इसलिए, आपको सांत्वना या समर्थन की कमी नहीं होगी, भले ही आपका भाग्य एक अजनबी भूमि में अजनबी होने का हो। - आपका सच्चा,

'सी. ब्रोंटे.

जब आप दक्षिण की ओर लौटने का समय निश्चित रूप से तय कर लें, तो मुझे एक पत्र लिखकर बता दें कि मैं आपको हॉवर्थ में किस दिन मिलने की उम्मीद कर सकता हूँ।

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

5 अप्रैल, 1851।

प्रिय एलेन, श्री टेलर आए और चले गए; सब कुछ पहले जैसा ही है। मुझे पहले से मिली थोड़ी-बहुत जानकारी के अतिरिक्त केवल इतना ही पता चला है कि स्मिथ, एल्डर, एंड कंपनी की निरंतर समृद्धि के लिए यह भारतीय परियोजना आवश्यक है, और यह कि केवल टेलर को ही इसे सफलतापूर्वक पूरा करने की क्षमता और साधन संपन्न माना गया है - व्यापारिक प्रतिष्ठा और कर्तव्य की भावना ने उन्हें उस सम्मान और जोखिम भरे पद को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया है जिस पर उन्हें नियुक्त

किया गया है, वे बहुत अनिच्छा से जा रहे हैं, और वे पाँच साल के लिए अनुपस्थित रहने की योजना बना रहे हैं।

वह बहुत दुबले और बूढ़े लग रहे थे। मैंने उन्हें बहुत करीब से देखा, और एक बार तो शीशे से भी; ब्रैनवेल से उनकी समानता मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई दी। वह बदसूरत नहीं हैं, लेकिन बहुत ही विचित्र हैं; उनके चेहरे की रेखाएं एक दृढ़ता और, मैं यह भी कहना चाहूँगी, चरित्र की कठोरता दर्शाती हैं जो आकर्षक नहीं होती। जब वह मेरे पास खड़े थे, जब उन्होंने मुझे अपनी तीखी निगाहों से देखा, तो मेरे लिए शांत और स्थिर खड़े रहना और पहले की तरह पीछे न हटना बड़ी मुश्किल थी। अगर मैं ईमानदार नहीं हूँ तो कुछ भी कहने का कोई फायदा नहीं। इसलिए मैं स्वीकार करती हूँ कि इस बार, यद्यपि मैं उनके प्रति बहुत सकारात्मक दृष्टिकोण रखती थी, फिर भी उनके व्यवहार और उनकी उपस्थिति ने मुझे पहली मुलाकात से ज्यादा प्रसन्न नहीं किया। विदाई के समय उन्होंने मुझे एक किताब दी, और संक्षेप में अनुरोध किया कि मैं इसे उनके लिए संभाल कर रखूँ, और जल्दी से कहा, "मुझे उम्मीद है कि भारत में आपसे संपर्क होगा - आपके पत्र मेरे लिए आपकी कल्पना से कहीं अधिक सुखद रहे हैं और रहेंगे।"

और इस तरह वह चला गया; और वह भले ही एक कठोर और रूखा छोटा आदमी था - भले ही उसके तौर-तरीके अक्सर अप्रिय होते थे - उसकी अनुपस्थिति और मेरे मन से उसके विचारों का न होना मुझे निश्चित रूप से पहले से कम सहारा और अधिक गहरे अकेलेपन में छोड़ देता है।

'देखो, प्रिय नेल, हालांकि हम अभी भी बिल्कुल एक ही स्तर पर हैं – तुम अकेली नहीं हो। मुझे लगता है कि इस लेन-देन में अभी भी कुछ रहस्य है, और क्या यह कभी मेरे लिए स्पष्ट होगा, यह मैं नहीं जानती; फिर भी, मेरा सीधा कर्तव्य है कि मैं इस विषय से अपना ध्यान हटाऊं, और यदि संभव हो तो इस पर विचार करने से बचूं। अपनी बातचीत में वह श्री स्मिथ का व्यक्तिगत रूप से उल्लेख करने से जानबूझकर बचते रहे, हमेशा "घर" – "फर्म" की बात करते रहे। वह पूरी बातचीत के दौरान उतने ही उत्तेजित और घबराए हुए लग रहे थे, जितने कि मैंने उन्हें पहली बार देखा था। मुझे लगता है कि उनके व्यवहार में मेरे लिए एक सम्मान है – एक ऐसा सम्मान जिसका मैं पूरी तरह से प्रतिफल नहीं दे सकती, और फिर भी इसके चले जाने से एक दर्दनाक खालीपन रह जाता है।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

9 अप्रैल, 1851।

प्रिय नेल, आपके प्यारे पत्र के लिए धन्यवाद; स्कूल के दिनों में भी आपने ऐसा ही लिखा, यह बिल्कुल आपकी आदत थी। मैंने कभी नहीं सोचा था कि आप किसी छोटी सी बाधा को किसी मैत्रीपूर्ण कार्य में रुकावट बनने देंगी।

मैं पिछले शुक्रवार को तो कभी नहीं भूल पाऊँगी, और मुझे लगता है कि उस सुबह और दोपहर के बाद की शाम और रात भी कभी नहीं भूल पाऊँगी। मुसीबतें अक्सर अकेली नहीं आतीं। श्री टेलर के जाने के तुरंत बाद, पापा, जिनकी तबीयत पहले बेहतर थी, अचानक बहुत खराब हो गई। वे जल्दी सो गए और एक घंटे तक बहुत बीमार रहे; और जब आखिरकार उन्हें नींद आने लगी और मैं उन्हें छोड़कर चली गई, तो मैं भोजन कक्ष में भारीपन, भय और उदासी की भावना के साथ आई, जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन और सहना उससे भी अधिक कठिन था। काश तुम मेरे साथ होतीं, यह ख्याल मेरे मन में आया, लेकिन मैंने इसे एक स्वार्थी इच्छा समझकर दबा दिया; वास्तव में, यह भावना क्षणिक ही थी: ऐसे क्षणों में मेरी स्वाभाविक प्रवृत्ति अकेले ही संघर्ष से निपटने की होती है - यह सोचना कि मैं दूसरों पर बोझ डाल रही हूँ और उन्हें कष्ट दे रही हूँ, सब कुछ और भी बदतर बना देता है।

'तुम मुझसे कोमल और सांत्वना भरे लहजे में बात करती हो, लेकिन मैं अपने लिए कहीं अधिक कठोर भाषा का प्रयोग करता हूँ, प्रिय नेल।'

पांच साल की दूरी—तीन महासागरों की विभाजक दूरी—एक पुरुष के सक्रिय करियर और एक स्त्री के निष्क्रिय जीवन के बीच का व्यापक अंतर—ये सब लगभग एक शाश्वत अलगाव के समान हैं। लेकिन एक और बात है जो इन सबसे कहीं अधिक कठिन बाधा है। क्या मिस्टर टेलर और मैं कभी एक-दूसरे के अनुकूल हो पाएंगे? क्या मैं कभी उनके लिए इतना प्यार महसूस कर पाऊंगी कि उन्हें पति के रूप में स्वीकार कर सकूं? मित्रता—कृतज्ञता—सम्मान तो मेरे मन में है, लेकिन जब भी वह मेरे पास आते थे, और मैं उनकी निगाहें खुद पर टिकी देखती थी, मेरी नसें जम जाती थीं। अब जब वह दूर हैं, तो मैं उनके प्रति कहीं अधिक कोमल महसूस करती हूं; केवल पास आने पर ही मैं कठोर हो जाती हूं—डर और क्रोध के एक अजीब मिश्रण से जकड़ जाती हूं, जिसे केवल उनके पीछे हटने और उनके व्यवहार में पूर्ण बदलाव के अलावा कुछ भी नरम नहीं कर पाता। मैं घमंडी नहीं बनना चाहती थी, न ही घमंडी बनने का मेरा इरादा था, लेकिन मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

यह बिलकुल सच है कि हम पर हमारे ऊपर बैठे किसी एक सत्ता का प्रभुत्व है—कि उसके हाथों में हमारी इच्छाशक्ति भी कुम्हार के हाथों में मिट्टी की तरह है।

पापा की तबीयत अभी भी बहुत खराब है, हालांकि कल और मुझे उम्मीद है कि आज सुबह उनकी तबीयत थोड़ी बेहतर है। आपकी मम्मी कैसी हैं? उन्हें और आपकी बहन को मेरा प्यार देना। आप कैसे हैं? घर लौटने के बाद से क्या आपको टिक की समस्या है? क्या डॉक्टरों को लगा कि आपकी शक्ल-सूरत में सुधार हुआ है?

जल्द ही फिर से लिखना। आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

23 अप्रैल, 1851।

मेरी प्यारी एलेन, आज मुझे श्री टेलर का एक छोटा सा संदेश मिला। वे एक सप्ताह पहले शनिवार को लंदन लौट गए थे; उन्होंने कृपा करके मेरे लिए कुछ किताबें चुनीं और भेजीं। वे 20 मई को इंग्लैंड छोड़ रहे हैं। उनके संदेश के अंत में उन्होंने पूछा है कि क्या उस समय से पहले लंदन में मुझसे मिलने का कोई मौका है। मुझे उन्हें बताना होगा कि मैंने अपनी यात्रा जून में तय कर ली है, इसलिए, संभवतः अब हमारी मुलाकात नहीं होगी।

इस मामले में अभी भी स्पष्ट आपसी समझ की कमी है, और कई मायनों में दुख और पीड़ा है। मैं सचमुच कह सकती हूँ कि मेरा अंतरात्मा अब मुझे श्री टेलर के साथ अन्याय या निर्दयता का व्यवहार करने का दोषी नहीं ठहराता। मैंने इस तरह जो गलती की, उसे मैंने स्वयं श्री टेलर के प्रति और दूसरों से उनके बारे में बात करते समय सुधारने का प्रयास किया है - विशेष रूप से श्री स्मिथ के सामने, हालाँकि मुझे इस बात पर संदेह है कि यह राय उन तक कभी पहुँचेगी भी या नहीं। मुझे यकीन है कि उनमें प्रशंसनीय और उत्कृष्ट गुण हैं; लेकिन अपनी हर इच्छा और हर इरादे के बावजूद, यहाँ तक कि उनकी अंतिम मुलाकात के दौरान उन्हें सबसे अनुकूल दृष्टि से देखने के बावजूद, मेरे अंतर्मन में यह सोचना असंभव था कि वे एक दिन पति के रूप में स्वीकार्य हो सकते हैं। अगर मैं आपको भी बताऊँ कि उनके बारे में मुझे क्या राय बनानी पड़ी, तो यह कठोर लगेगा। प्रिय नेल, मैंने उनमें एक सज्जन व्यक्ति की झलक देखी - मेरा मतलब है एक स्वाभाविक सज्जन व्यक्ति की झलक; आप जानते हैं कि मुझे बनावटी दिखावे की ज़रूरत नहीं है, और जहाँ तक दिखावे की बात है, मैं

खुद को इतना अच्छी तरह जानती हूँ कि इस मामले में मुझे ज़्यादा बारीकी से देखने का कोई हक नहीं है। मुझे उनमें ज़रा भी शिष्टता की झलक नहीं दिखी, न ही सच्चे संस्कार की कोई झलक। कहना मुश्किल है, पर सच यही है। बुद्धि में भी, हालाँकि वह चतुर हैं, पर घटिया हैं—पूरी तरह घटिया। ये बातें कहना अच्छा नहीं लगता, पर ईमानदारी से बोलना ही बेहतर है। अगर मैं उनसे शादी करूँ तो मेरा दिल दर्द और अपमान से छलनी हो जाएगा; मैं उन पर भरोसा नहीं कर सकती। नहीं; अगर मिस्टर टेलर ही मेरे लिए एकमात्र पति हैं, तो मुझे हमेशा अविवाहित ही रहना होगा। फिर भी, कभी-कभी मुझे उनके लिए दुख होता है, और शायद यह व्यर्थ है, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि उन्हें ज़्यादा तकलीफ़ होगी: कठोर स्वभाव, पेशा और जगह बदलने से उन्हें आराम मिलेगा।

सभी को शुभकामनाओं सहित, मैं, प्रिय नेल, आपकी अधेड़ उम्र की दोस्त हूँ।

‘सी. ब्रोंटे.

'जल्द ही लिखें।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

5 मई, 1851।

मेरी प्यारी एलेन, मुझे हाल ही में मिस मार्टिन्यू का एक लंबा और स्नेहपूर्ण पत्र मिला है। उन्होंने बताया कि वह स्वस्थ और खुश हैं। साथ ही, मुझे श्री विलियम्स का भी एक बहुत लंबा पत्र मिला है। उन्होंने श्री टेलर के बारे में बहुत सम्मानपूर्वक लिखा है। मुझे कुछ आश्चर्य के साथ पता चला कि पापा को श्री टेलर बहुत पसंद आ गए हैं। विदाई के समय उनके व्यवहार में जो विनम्रता थी, जिसमें उन्होंने उन्हें "स्वयं, अपने देश और अपने ईश्वर के प्रति सच्चे" रहने का आग्रह किया और उन्हें शुभकामनाएं दीं, उससे मैं थोड़ा अचंभित रह गई। उसके बाद जब भी उन्होंने उनका जिक्र किया है, तो उनकी बहुत प्रशंसा की है। जब मैंने कहा कि वह सज्जन नहीं हैं, तो मेरी आपत्ति पर उन्हें गुस्सा आ गया। आप कहती हैं कि पापा में गहरी समझ है। इस विषय पर मुझे यकीन है कि वाकई उनमें है। मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया है, फिर भी वह पूरी बात से वाकिफ लगते हैं। मुझे कभी-कभी लगता है कि उनके अनुमान मेरे अनुमानों से कहीं अधिक हैं। मुझे लगता है कि वह सोचता है कि पांच साल के लिए स्थगित किया गया संभावित विवाह, ऐसे शालीन और भरोसेमंद व्यक्ति के साथ, एक बहुत ही उचित और सलाहनीय मामला होगा।

आजकल तुम्हारी ये हरकत कैसी चल रही है? एक रात तो मेरी ये हरकत बहुत भयानक थी, इसने मुझे कई घंटों तक बुरी तरह जकड़ रखा था। अब भी कभी-कभी कम तीव्रता के साथ आती है। इसी वजह से और नींद पूरी न होने के कारण मैं आजकल बहुत आकर्षक लग रही हूँ, बिल्कुल लंदन में रहने वाली मेरी असली शक्ल – भूखी और थकी हुई। जल्दी लिखना, प्यारी नेल। – तुम्हारी विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

'112 ग्लूसेस्टर प्लेस,

'हाइड पार्क, 2 जून, 1851.

प्रिय एलेन, श्रीमान टेलर कुछ सप्ताह पहले चले गए। अब मुझे उनके स्वभाव के बारे में और भी खुलकर शिकायतें सुनने को मिल रही हैं। श्रीमान विलियम्स की संगति का मैंने एक शाम आनंद लिया, और हमेशा की तरह मुझे वे और उनका साथ दोनों ही पसंद आए। ऐसे अवसरों पर उनके सहज, दयालु और बुद्धिमान गुण स्पष्ट दिखाई देते हैं, और उनकी छोटी-मोटी कमियाँ और खामियाँ छुप जाती हैं। श्रीमान स्मिथ के रूप-रंग में कुछ बदलाव आया है। वे थोड़े बूढ़े, सांवले और अधिक चिंतित लग रहे हैं; उनका सामान्य व्यवहार अधिक गंभीर है, लेकिन शाम को उनका उत्साह फिर से लौट आता है। यहाँ सब कुछ पहले जैसा ही लग रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि कोई संकट आया होगा जिसमें उनकी ऊर्जा और पारिवारिक स्नेह ने सब कुछ संभाला है। इसका अनुमान मैं इस तथ्य से लगाता हूँ कि उनकी माँ और बहनें उनसे पहले से कहीं अधिक जुड़ी हुई हैं, और उनकी छोटी से छोटी इच्छा भी निर्विवाद रूप से मानी जाती है। आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

4 नवंबर, 1851।

प्रिय एलेन, पापा, टैबी और मार्था की सेहत में अभी कुछ सुधार हुआ है, लेकिन कोई भी पूरी तरह स्वस्थ नहीं है। मार्था अभी कमज़ोर लग रही है। काश उसकी सेहत अच्छी होती। वैसे भी, उसे ज़्यादा काम देने से हमेशा डर लगता है; और फिर भी कई काम ऐसे हैं जो मैं खुद नहीं कर सकती, और इतने लंबे समय से उसके साथ रहने के बाद हम उसे बदलना नहीं चाहते। नौकरों के मामले में तुम्हारा क्या हाल है? पिछले

दिन मुझे मिस्टर टेलर का एक लंबा पत्र मिला। मैंने तुमसे कहा था कि मुझे उससे कोई खबर मिलने की उम्मीद नहीं थी, और सच में नहीं थी। पत्र लंबा है, लेकिन इसे पढ़ना तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद होगा। इसमें कुछ खूबियाँ हैं, इसमें कोई शक नहीं; भरपूर जानकारी, एक खास तरह की प्रतिभा, जिसमें (मुझे लगता है) कहीं-कहीं थोड़ी-बहुत कलात्मकता की झलक भी है। वह स्नान के दृश्य के कई विवरणों को छोड़ सकते थे, जो बाकी सब कुछ मिस्टर थैकरे के उसी प्रक्रिया के वर्णन से बिल्कुल मेल खाता है। अपने लंबे पत्रों के साथ यह छोटा आदमी मेरे लिए आज भी उतना ही रहस्य बना हुआ है। हंसवर्थ में घरेलू खुशियों का आपका वर्णन पढ़कर मुझे बहुत आनंद आया। वे लोग बहुत खुश दिखते हैं - ईश्वर करे वे हमेशा ऐसे ही खुश रहें! यह जानकर मुझे कुछ हद तक खुशी हुई कि ऐसी खुशी धरती पर मौजूद है। श्री टेलर का पत्र पढ़कर मुझे लौटा देना। आपकी माँ को प्यार सहित, - प्रिय नेल, आपकी हार्दिक शुभकामनाएँ।

'सी. बी.'

जेम्स टेलर, बॉम्बे को

हॉवर्थ, 15 नवंबर, 1851।

मेरे प्रिय महोदय, आपके दोनों संदेश मुझे सुरक्षित रूप से प्राप्त हो गए हैं—17 सितंबर का पत्र और 2 अक्टूबर का पत्र। दूसरे पत्र को "खराब लिखावट" कहकर आप अपना ही अपमान कर रहे हैं। मुझे वह बिल्कुल स्पष्ट लगा, और मैंने एक भी शब्द नहीं छोड़ा, भले ही पंक्तियाँ और अक्षर इतने पास-पास थे। अगर ऐसा न होता तो मुझे खेद होता, क्योंकि यह मुझे शुरू से अंत तक अत्यंत रोचक लगा। यह देखा जा सकता है कि वही जानकारी जिसे हमने पहले शायद कुछ सुस्त ध्यान से मुद्रित पुस्तकों से एकत्र किया था, जब हमारे सामने परिचित हस्तलिखित रूप में प्रस्तुत की जाती है, और जिसमें किसी परिचित व्यक्ति का वास्तविक अनुभव शामिल होता है, तो उसमें एक नया और जीवंत आकर्षण उत्पन्न हो जाता है: जब हम कथावाचक को जानते हैं तो हमें कहानी समझ में आने लगती है।

स्नान का दृश्य मुझे बहुत मनोरंजक लगा। उस क्रिया का आपका वर्णन श्री थैकरे के कॉर्नहिल से ग्रैंड काहिरा की यात्रा में दिए गए विवरण से पूरी तरह मेल खाता है। यह तरीका थोड़ा कठोर लगता है, और मुझे लगता है कि कम हिंसक तरीकों से भी उतना ही लाभ प्राप्त किया जा सकता था; लेकिन मुझे लगता है कि पहले की थकान के बिना बाद का अहसास इतना सुखद नहीं होगा, और निस्संदेह यही आलस्यपूर्ण

अहसास है जिसे आत्म-भोगी मुसलमान मुख्य रूप से संजोते हैं। मुझे लगता है कि आपने इसे तिरस्कार करके सही किया।

मुझे यह अत्यंत खेदजनक लगता है कि बंबई का समाज बौद्धिक आकर्षण से इतना वंचित है। हालांकि, शायद आपके काम आपको इतना व्यस्त रखेंगे कि आप इस बात पर ज्यादा ध्यान नहीं देंगे। निस्संदेह ऐसे क्षण आएंगे जब आप लंदन और स्कॉटलैंड तथा वहां छोड़े गए अपने मित्रों को याद करेंगे; लेकिन मुझे लगता है कि काम का अपना ही रोमांच होता है। नया देश, नए दृश्य भी दिलचस्प होंगे; और चूंकि आपके पास पढ़ने के लिए किताबों की कमी नहीं होगी, इसलिए आप शायद जल्द ही इस बदलाव को स्वीकार कर लेंगे, जो कुछ लोगों के लिए निर्वासन जैसा प्रतीत होगा।

मुझे डर है कि जलवायु—जैसा कि आपने वर्णन किया है—यूरोपीय स्वास्थ्य के लिए बहुत कठिन होगी। अपने पहले पत्र में आपने अक्टूबर को खतरे का महीना बताया था; वह महीना अब बीत चुका है। क्या आप इस कठिन परीक्षा से सुरक्षित निकल पाए हैं, यह बात इंग्लैंड में आपके मित्रों को कुछ हफ्तों तक पता नहीं चल पाएगी—वे बस यही कामना कर सकते हैं कि ऐसा ही हो। आप मुझसे यह अपेक्षा नहीं करेंगे कि मैं आपके पत्र की तुलना में मात्रा या गुणवत्ता में समान पत्र लिखूँ; मुझे जो लिखना है वह संक्षिप्त होना चाहिए, और जो मैं संदेश देना चाहता हूँ वह सामान्य और मामूली विषयवस्तु से संबंधित होना चाहिए।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि मेरे पिताजी का स्वास्थ्य काफी अच्छा है। मैंने उन्हें आपके पत्र के कुछ अंश पढ़कर सुनाए और उन्हें उन्हें सुनकर रुचि हुई। जब मैंने उन्हें पत्र लिखा तो उन्होंने मुझे उनकी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करने का निर्देश दिया।

मुझे तो आपसे पत्र मिलने की उम्मीद ही नहीं रही थी। हॉवर्थ में विदा लेते समय आपने भारत से पत्र लिखने की बात कही थी, लेकिन उस समय मुझे संदेह हुआ कि कहीं यह शिष्टाचारवश कही गई बात तो नहीं थी; और जैसे-जैसे समय बीतता गया और आपकी ओर से कोई खबर नहीं मिली, मेरा यह विचार और भी पुख्ता हो गया। आपकी कुशल मंगल कामना के साथ, आपका सच्चा मित्र।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

19 नवंबर, 1851।

प्रिय एलेन, यहाँ सब कुछ पहले जैसा ही है, और मैं आज सुबह ही तुम्हें पत्र लिखने की सोच रही थी कि तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर खुशी हुई कि तुम्हारी माँ और पापा दोनों इस भीषण मौसम को सहन कर पा रहे हैं। मुझे जुकाम था, खासकर गले और छाती में, लेकिन मैंने ठंडे पानी से सिकाई की, जिससे मुझे गर्म पानी से सिकाई की तुलना में कहीं अधिक आराम मिला। मेरे जीवन में एकमात्र बदलाव कभी-कभार आने वाले पत्रों से ही होता है। मिस वूलर के हॉवर्थ छोड़ने के बाद से मुझे उनके दो पत्र मिले हैं, जिनसे मुझे बहुत सुकून मिला। उन्हें लगता है कि उन्हें थोड़ी सी अच्छी संगति बहुत पसंद है। उनका कहना है कि उन्होंने कई दिनों से ऐसा आनंद नहीं लिया जैसा उन्होंने यहाँ दस दिनों के प्रवास के दौरान लिया। लेकिन तुम जानती हो कि हॉवर्थ कैसा है - काफी नीरस।

आपको कैसे लगा कि आपके पिछले पत्र से मुझे ठेस पहुंची? मैं आपसे केवल एक बात पर असहमत थी। तुर्की स्नान के कामुक सुख के प्रति उस छोटे आदमी की अरुचि, मुझे स्वीकार करना होगा, मेरी सहमति में थी। उनके पत्र का उत्तर देने से पहले मैंने हिम्मत जुटाकर श्री विलियम्स को लिखा, जिनके या श्री स्मिथ के माध्यम से मुझे पता चला था कि भारतीय पत्र आया था, और उनसे श्री टेलर के चरित्र और स्वभाव के बारे में निष्पक्ष राय देने का अनुरोध किया, यह स्वीकार करते हुए कि मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं था। मैं आगे की जानकारी के बिना पत्राचार जारी नहीं रखना चाहती थी। मुझे उत्तर मिल गया है, जो मैं संलग्न कर रही हूँ। आपने हन्सवर्थ कछुआ कबूतरों के बारे में कुछ नहीं कहा है - वे कैसे हैं? और प्रॉमिस की शाखा कैसी है? आशा है कि वे ठीक होंगे। - आपकी विश्वासपात्र,

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

1 जनवरी, 1852।

'मेरे प्रिय महोदय, - मुझे आपको पत्र लिखने का अवसर पाकर खुशी हो रही है, क्योंकि मैं लंबे समय से आपको एक छोटा सा संदेश भेजना चाहता था, और केवल इस विश्वास के कारण ऐसा करने से हिचक रहा था कि क्रिसमस से पहले का समय आपके लिए बहुत व्यस्त होगा।'

आपके पिछले पत्र के लिए धन्यवाद देना चाहता था, जिससे मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। आपने श्री टेलर के चरित्र की बहुत प्रशंसा की है; ऐसे व्यक्ति की मित्रता को कम

से कम नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए; और यदि सिद्धांत और स्वभाव वैसे ही हैं जैसा आपने कहा है, तो व्यवहार और यहाँ तक कि स्वभाव की कमियाँ भी महत्वहीन होनी चाहिए। मुझे हमेशा उनके विवेक और समझदारी पर भरोसा था, लेकिन उनकी दयालुता पर मुझे संदेह था - वे मुझे थोड़े कठोर, सख्त और सहानुभूतिहीन प्रतीत होते थे। अब, विवेक, समझ और सिद्धांत अमूल्य और अत्यंत आवश्यक गुण हैं, लेकिन थोड़ी सी भावना और थोड़ी सी उदारता भी हो तो अच्छा है - इनके बिना, बेचारा नश्वर स्वभाव कठोर गुणों के आगे दब जाता है। मैंने श्री टेलर के पत्र का उत्तर 19 नवंबर को डाक से सीधे भेज दिया, क्योंकि विचार करने पर मुझे समझ नहीं आया कि आपको इससे परेशान करने की क्या आवश्यकता है।

क्या आपके बेटे फ्रैंक ने श्रीमती गैस्केल से मुलाकात की? और उन्हें वह कैसी लगीं?

हाल ही में मेरी सेहत कुछ ठीक नहीं रही है, लेकिन मुझे लगता है कि हालांकि मेरी हालत में लगभग हर दिन उतार-चढ़ाव आता है, मैं दो हफ्ते पहले की तुलना में काफी बेहतर हूं। पूरी सर्दी भर मुझे इस बात से बहुत तकलीफ हुई कि मैं डेस्क पर झुकने पर सीने में दर्द और जकड़न महसूस करता था, और रात को चैन से सो न पाने ने मुझे काफी परेशान किया, लेकिन मुझे उम्मीद है कि अच्छे दिन आएंगे। डॉक्टरों का कहना है कि मुझे कोई शारीरिक समस्या नहीं है।

आपको नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

7 मार्च, 1852।

प्रिय एलेन, आशा है कि तुम्हारी और तुम्हारी माँ दोनों की सर्दी-जुकाम अब तक पूरी तरह ठीक हो गई होगी। पापा को वसंत ऋतु में होने वाली ब्रोंकाइटिस की कुछ समस्या है, लेकिन फिलहाल इसमें काफी सुधार हुआ है, जो पिछले तीन वर्षों से बिल्कुल अलग है। मुझे उम्मीद है कि यह भी इतनी ही आसानी से ठीक हो जाएगी। मेरी तबीयत में सुधार हो रहा है।

प्रिय नेल, मैंने तुम्हें शुरू से ही कहा था कि मेरा ससेक्स जाना एक बहुत ही असंभव घटना है; मैं तुम्हें अब बता रहा हूँ कि जब तक स्वास्थ्य की वजह से मुझे काम छोड़ना और घर से निकलना बिल्कुल मजबूर न करना पड़े (जिसकी मुझे पूरी उम्मीद

है कि ऐसा नहीं होगा), मैं निश्चित रूप से जाने के बारे में नहीं सोचूंगा। दृढ़ निश्चय करना बेहतर है, और मुझे दृढ़ निश्चय करना ही होगा। ससेक्स में मनोरंजन और दोस्तों के बीच तुम्हें मेरी सबसे ज़्यादा ज़रूरत महसूस होगी। मुझे नहीं पता कि मैं स्कारब्रो जा पाऊंगा या नहीं, लेकिन शायद वहाँ जाने के लिए दो सप्ताह का समय निकालना संभव हो (मज़े के लिए नहीं बल्कि एक दुखद कर्तव्य के लिए), जबकि एक लंबी यात्रा के लिए मेरे पास एक महीना नहीं है। मेरे पास तुम्हें बताने के लिए कोई खबर नहीं है। जब से मैं ब्रुकरॉयड में था, भारत से कई चिट्ठियाँ आई हैं। उम्मीद कभी-कभी जागती थी, लेकिन निराशा ने उसे तोड़ दिया। मैंने एक शब्द भी नहीं सुना है, और कॉर्नहिल में पूछताछ करने के बारे में सोच भी नहीं सकता। खैर, किसी भी मामले में लंबे समय तक अनिश्चितता बनी रहना अक्सर कुछ हद तक कष्टदायक साबित होता है, लेकिन ईश्वर ही हमारे लिए सब कुछ निर्धारित करता है, और हमें उसकी इच्छा के आगे झुकना चाहिए। अपना मन शांत रखें; किसी भी चीज़ की अपेक्षा न करें। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

जब श्री टेलर 1856 में इंग्लैंड लौटे, तब तक शार्लोट ब्रोंटे का निधन हो चुका था। उनका परलोक सुखमय तो नहीं रहा, लेकिन सफलता अधिक मिली। यह सच है कि वे बॉम्बे में स्मिथ, टेलर एंड कंपनी के साथ सफल नहीं हो पाए। ऐसा लगता है कि वह फर्म ध्वस्त हो गई थी। लेकिन उन्होंने बॉम्बे में मित्र बनाए और 1863 में बॉम्बे गजट और बॉम्बे क्वार्टरली रिव्यू के संपादक के रूप में वहाँ लौट आए। कुछ समय बाद वे बॉम्बे सैटरडे रिव्यू के संपादक बने, हालाँकि यह पत्रिका भी लंबे समय तक नहीं चली। श्री टेलर की सफलताएँ पत्रकारिता में नहीं, बल्कि व्यापारिक क्षेत्र में थीं। बॉम्बे चैंबर ऑफ कॉमर्स के सचिव के रूप में, जो पद उन्हें 1865 में मिला, उन्होंने काफी ख्याति अर्जित की। इस पद के साथ-साथ उन्होंने बॉम्बे विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार और कई अन्य पदों पर भी कार्य किया। वे 1874 में शेरिफ चुने गए, उसी वर्ष उनका निधन हो गया। कैथेड्रल में एक भव्य अंतिम संस्कार समारोह आयोजित किया गया और उन्हें बॉम्बे कब्रिस्तान में दफनाया गया, जहाँ उनकी समाधि प्रवेश द्वार के बाईं ओर स्थित है, जिस पर लिखा है—

जेम्स टेलर का निधन 29 अप्रैल, 1874 को 57 वर्ष की आयु में हुआ।

उन्होंने इंग्लैंड यात्रा के दौरान शादी की, लेकिन यह वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं

रहा। यह इस कहानी का विषय नहीं है। हालांकि, यहाँ टाइम्स के 1863 के विवाह रिकॉर्ड से एक अंश दिया गया है:

‘23 तारीख को, सेंट पैनक्रास स्थित सेंट जॉन द इवेंजेलिस्ट चर्च में, रेवरेंड जेम्स मूरहाउस, एम.ए. द्वारा, फर्नीवल्स-इन और बॉम्बे के जेम्स टेलर, एस्क्वायर का विवाह, वियना के एडोल्फ रिट्टर की विधवा और एसेक्स के बिरचेंजर प्लेस के थॉमस हैरिसन, एस्क्वायर की सौतेली बेटी एनी से संपन्न हुआ।’

अध्याय XIII: साहित्यिक महत्वाकांक्षाएँ

हमने देखा है कि शार्लोट ब्रोंटे और उनकी बहनों ने बचपन से ही वे छोटी-छोटी किताबें लिखना शुरू कर दिया था जिनमें साहित्यिक प्रसिद्धि पाने की उनकी अस्पष्ट आकांक्षाएँ झलकती थीं। कभी-कभी उनका प्रयास सराहनीय है, विशेष रूप से 'द एडवेंचर्स ऑफ अर्नेस्ट एलेम्बर्ट' में, लेकिन कुल मिलाकर यह शेली की बाल रचनाओं जितना ही कमतर है। याद रहे, शेली ने उन्नीस वर्ष की आयु में 'ज़स्त्रोज़ी' लिखा था और कई अन्य रचनाएँ भी लिखी थीं जो अच्छी नहीं थीं, जिनमें से कुछ उन्होंने छपवाई भी थीं। सौभाग्य से, शार्लोट ब्रोंटे अपनी लगभग खाली जेब के कारण इस तरह की जल्दबाजी से बच गईं। अपनी चाची की मृत्यु के बाद ही उनके सीमित संसाधनों में कुछ वृद्धि हुई, तब जाकर ब्रोंटे बहनों ने अपने खर्च पर एक किताब प्रकाशित करने का विचार किया। उन्होंने पैटरनोस्टर रो स्थित अब विलुप्त हो चुकी फर्म आयलॉट एंड जोन्स से संपर्क किया और ऐसा लगता है कि शार्लोट ने फर्म को कई पत्र लिखे थे, जिनमें से केवल दो या तीन ही श्रीमती गैस्केल द्वारा प्रकाशित किए गए हैं। यह

पत्राचार तुलनात्मक रूप से महत्वहीन है, लेकिन शार्लोट के साहित्यिक करियर की व्यावहारिक शुरुआत के रूप में, अब तक अप्रकाशित जो पत्र संरक्षित किए गए हैं, उन्हें यहां पुन: प्रस्तुत करना शायद उचित होगा।

आयलॉट और जोन्स को

28 जनवरी, 1846।

महोदय, क्या मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या आप लघु कविताओं के एक संग्रह को एक ही खंड में, 8vo आकार में प्रकाशित करने का कार्य करेंगे?

यदि आप स्वयं इस कृति को प्रकाशित करने के जोखिम पर आपत्ति जताते हैं, तो क्या आप लेखक के खर्चे पर इसे प्रकाशित करेंगे? — मैं, महोदय, आपका आज्ञाकारी विनम्र सेवक हूँ।

‘सी. ब्रोंटे.

‘संबोधन — रेव. पी. ब्रोंटे, हॉवर्थ, ब्रैडफोर्ड, यॉर्कशायर।’

आयलॉट और जोन्स को

3 मार्च, 1846।

'महोदय, मैं 31 पाउंड, 10 शिलिंग का एक ड्राफ्ट भेज रहा हूँ, जो आपके अनुमान की राशि है।'

मुझे लगता है कि अब आपको इस काम की छपाई तुरंत शुरू करने से रोकने वाली कोई बात नहीं है।

जब आप मसौदा प्राप्त होने की पुष्टि कर दें, तो क्या आप बताएँगे कि यह कब तक पूरा हो जाएगा? — हाँ, महोदय, आपका सच्चा शुभचिंतक।

‘सी. ब्रोंटे।’

आयलॉट और जोन्स को

11 मार्च, 1846।

महोदय, मुझे प्रूफ शीट मिल गई है और मैं इसे सुधार कर वापस भेज रहा हूँ। यदि प्रिंटर की त्रुटियों को सुधारने की क्षमता पर ज़रा भी संदेह हो, तो मैं प्रत्येक शीट को लेखकों के निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करना पसंद करूँगा, क्योंकि उदाहरण के लिए, 'टम्बलिंग स्टार्स' की जगह 'ट्रेंबलिंग स्टार्स' जैसी गलती पूरी कविता को बेतुका बना सकती है; लेकिन यदि आपको अनुभव से पता है कि वह भरोसेमंद है, तो मैं इस विषय पर आपके आश्वासन पर भरोसा करूँगा और सुधार का कार्य उसे सौंप दूँगा,

क्योंकि मुझे पता है कि इससे समय और परेशानी दोनों की काफी बचत होगी।

मुझे छपाई और कागज संतोषजनक लग रहे हैं। बेशक मैं इस कृति को जल्द से जल्द प्रकाशित करवाना चाहता हूँ, लेकिन उससे भी अधिक मेरी यही इच्छा है कि इसे प्रकाशकों की नज़र में प्रशंसनीय और लेखकों की पसंद के अनुरूप प्रकाशित किया जाए। — महोदय, आपका सच्चा शुभचिंतक।

'सी. ब्रोंटे।'

आयलॉट और जोन्स को

13 मार्च, 1846।

महोदयगण, मैं आपको दूसरा प्रूफ भेज रहा हूँ। लेखकों ने अंततः निर्णय लिया है कि वे सभी प्रूफ बारी-बारी से प्राप्त करना पसंद करेंगे, लेकिन आपको पांडुलिपि संलग्न करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे त्रुटियों को स्मृति से सुधार सकते हैं। महोदयगण, आपका सच्चा शुभचिंतक।

'सी. ब्रोंटे।'

आयलॉट और जोन्स को

23 मार्च, 1846।

महोदयगण, चूंकि सी. ब्रोंटे, एस्क्वायर के निर्देशन में प्रूफ प्रतियां अब तक सुरक्षित रूप से प्राप्त हो चुकी हैं, इसलिए मैंने आपसे इसमें बदलाव करने का अनुरोध करना आवश्यक नहीं समझा, लेकिन कल एक छोटी सी गलती हो जाने के कारण, मुझे लगता है कि भविष्य में इन्हें मेरे वास्तविक पते, यानी मिस ब्रोंटे, रेव. पी. ब्रोंटे आदि के तहत मुझे भेजना बेहतर होगा। महोदयगण, आपका सच्चा शुभचिंतक।

'सी. ब्रोंटे।'

आयलॉट और जोन्स को

6 अप्रैल, 1846।

महोदय, सी., ई. और ए. बेल अब एक काल्पनिक कृति को प्रकाशन के लिए तैयार कर रहे हैं, जिसमें तीन अलग-अलग और असंबद्ध कहानियाँ शामिल हैं, जिन्हें या तो एक साथ, सामान्य उपन्यास के आकार के तीन खंडों के रूप में, या अलग-अलग एकल खंडों के रूप में प्रकाशित किया जा सकता है, जैसा कि सबसे उपयुक्त समझा जाएगा।

'इन कहानियों को स्वयं प्रकाशित करने का उनका कोई इरादा नहीं है। उन्होंने मुझे

आपसे यह पूछने का निर्देश दिया है कि क्या आप पांडुलिपि का विधिवत निरीक्षण करने के बाद, यह सुनिश्चित करने के बाद कि इसकी विषयवस्तु सफलता की उम्मीद जगाती है, इस कार्य को करने के लिए तैयार होंगे।'

"जल्दी उत्तर देने से हमें सहायता मिलेगी, क्योंकि यदि आप प्रस्ताव को अस्वीकार करते हैं, तो अन्य प्रकाशकों से पूछताछ करनी होगी। — महोदय, आपका सच्चा शुभचिंतक।"

'सी. ब्रोंटे।'

आयलॉट और जोन्स को

15 अप्रैल, 1846।

महोदय, मेरे पिछले प्रश्न का उत्तर देने के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आपके द्वारा दी गई जानकारी हमारे लिए मूल्यवान है, और पांडुलिपि पूर्ण होने पर आपके सुझावों पर अमल किया जाएगा।

'कविताओं की कोई प्रस्तावना नहीं होगी। खाली पृष्ठ पर विषयसूची हो सकती है, जिसे मेरा अनुमान है कि प्रिंटर तैयार करेगा। ऐसा लगता है कि पुस्तक अनुमान से पतली होगी।' — महोदय, आपका सच्चा शुभचिंतक।

'सी. ब्रोंटे।'

आयलॉट और जोन्स को

11 मई, 1846।

'सज्जनों, — पुस्तकों को वर्ड्सवर्थ के मॉक्सन के बारहवें संस्करण की शैली में तैयार किया जा सकता है।'

'कीमत 5 शिलिंग तय की जा सकती है, या यदि आपको लगता है कि मात्रा के हिसाब से यह बहुत अधिक है, तो 4 शिलिंग तय की जा सकती है।'

मुझे लगता है कि मैंने अपने पिछले लेख में जिन पत्रिकाओं का ज़िक्र किया था, वे फिलहाल विज्ञापन के लिए पर्याप्त होंगी, और मैं नहीं चाहूंगा कि आप 2 पाउंड से अधिक खर्च करें, खासकर तब जब अनुमान में लगभग 5 पाउंड की वृद्धि हुई है, जो कि एक गलती के कारण प्रतीत होती है। मेरा मानना है कि किसी कृति की सफलता विज्ञापनों की मात्रा से अधिक पत्रिकाओं से मिलने वाले प्रचार पर निर्भर करती है।

यदि आपको कोई आपत्ति नहीं है, तो पहले छह महीनों के अंत में जब आप अपना खाता जमा करेंगे, तब अनुमानित राशि की अतिरिक्त राशि का भुगतान किया जा

सकता है।

यदि आप मुझे यह बता सकें कि निर्दिष्ट पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के संपादकों को प्रतियां कितनी जल्दी भेजी जा सकती हैं, तो मैं आपका आभारी रहूंगा। —महोदय, आपका सच्चा शुभचिंतक।

'सी. ब्रोंटे।'

आयलॉट और जोन्स को

25 मई, 1846।

महोदयगण, मुझे आज सुबह आपका 22 तारीख का पत्र प्राप्त हुआ। मैं अब 5 पाउंड भेज रहा हूँ, जो कागज और छपाई के पूरे खर्च को पूरा करने के लिए आवश्यक अतिरिक्त राशि है। इससे 11 शिलिंग 9 पेंस की मामूली बचत होगी, जिसे आप मेरे खाते में जमा कर सकते हैं।

मुझे खुशी है कि आपने उल्लेखित समाचार पत्रों को प्रतियां भेज दी हैं, और यदि उनमें या अन्य किसी भी पत्रिका में, जिन्हें प्रतियां भेजी गई हैं, कोई सकारात्मक या नकारात्मक सूचना प्रकाशित होती है, तो मैं आपका आभारी रहूंगा यदि आप मुझे उन अंकों की सूची भेज दें; अन्यथा, मुझे इन प्रकाशनों को नियमित रूप से देखने का अवसर नहीं मिलता। मैं इसे चूक सकता हूं, और यदि कविताओं की प्रशंसा होती है, तो मेरा इरादा विज्ञापनों के लिए अतिरिक्त राशि आवंटित करने का है। दूसरी ओर, यदि वे अनदेखी रह जाती हैं या उनकी निंदा की जाती है, तो मुझे लगता है कि विज्ञापन देना बिल्कुल व्यर्थ होगा, क्योंकि न तो कृति के शीर्षक में और न ही लेखकों के नामों में ऐसा कुछ है जो किसी एक व्यक्ति का ध्यान आकर्षित कर सके। —महोदय, आपका सच्चा शुभचिंतक।

'सी. ब्रोंटे।'

आयलॉट और जोन्स को

10 जुलाई, 1846।

'महोदय, मुझे श्रीमान बेल द्वारा कविताओं की समीक्षाओं वाले क्रिटिक और एथेनियम की प्राप्ति स्वीकार करने का निर्देश दिया गया है।'

'अब उनका मानना है कि विज्ञापनों के लिए अतिरिक्त 10 पाउंड की राशि आवंटित की जा सकती है, और यह आप पर निर्भर करेगा कि आप अपनी सुविधानुसार कौन से चैनल चुनते हैं।'

वे चाहेंगे कि क्रिटिक से लिया गया निम्नलिखित अंश प्रत्येक विज्ञापन के साथ जोड़ा जाए: —

जिनके हृदयों में प्रकृति द्वारा सौंदर्य और सत्य के प्रति सहानुभूति जगाने वाले तार बुने गए हैं, वे इन रचनाओं में उस प्रतिभा की उपस्थिति को पहचानेंगे जो इस उपयोगितावादी युग ने बुद्धि के उच्चतर अभ्यासों के लिए समर्पित की थी।

वे आपसे अनुरोध करते हैं कि कविताओं की प्रतियां फ्रेजर मैगजीन, चैम्बर्स एडिनबर्ग जर्नल, द ग्लोब और एग्जामिनर को भी भेजें। — महोदय, आपका सच्चा शुभचिंतक।

'सी. ब्रोंटे।'

करर बेल ने एक प्रशंसक संपादक को निम्नलिखित पत्र लिखा: —

'डबलिन यूनिवर्सिटी मैगजीन' के संपादक को।

6 अक्टूबर, 1846।

महोदय, मैं अपने और अपने भाइयों एलिस और एक्टन की ओर से आपके पिछले अंक में साहित्य के क्षेत्र में हमारे पहले विनम्र प्रयासों पर प्रकाशित उदार टिप्पणी के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ; लेकिन उससे पहले प्रकाशित आधुनिक कविता पर लिखे निबंध के लिए मैं आपका और भी अधिक धन्यवाद करता हूँ—एक ऐसा निबंध जिसमें मुझे सत्य और सौंदर्य का सार समाहित प्रतीत होता है। यदि आपके सभी या आधे पाठकों को भी इसे पढ़कर वही आनंद प्राप्त हुआ जो मुझे और मेरे भाइयों को हुआ, तो आपका परिश्रम सार्थक सिद्ध हुआ है।

ऐसी आलोचना के बाद, लेखक को शायद पहले तो अपनी तुच्छता का अहसास हो सकता है—जैसा कि हमें हुआ—लेकिन दूसरी और तीसरी बार पढ़ने पर उसे उसमें एक ऐसी शक्ति और सुंदरता दिखाई देती है जो उसे और भी बेहतर रचनाएँ करने की प्रेरणा देती है। यह आलोचना के सही उद्देश्य को पूरा करती है: पूरी तरह से कुचलने के बजाय, यह सुधार करती है और प्रेरित करती है। मैं एक बार फिर आपका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ, और आपसे निवेदन करता हूँ कि आप भी इसमें शामिल हों।—आपका निरंतर और आभारी पाठक।

'कुरर बेल।'

जनता से मिली प्रतिक्रिया का अंदाजा डी क्विन्सी की प्रति के साथ भेजे गए निम्नलिखित पत्र से लगाया जा सकता है।

थॉमस डी क्विन्सी को।

16 जून, 1847।

'महोदय, मेरे रिश्तेदार एलिस और एक्टन बेल और मैंने, कई प्रतिष्ठित प्रकाशकों की बार-बार दी गई चेतावनियों की अनदेखी करते हुए, कविताओं का एक संग्रह छापने का जल्दबाजी भरा कार्य कर दिया है।'

'जिन परिणामों की भविष्यवाणी की गई थी, वे हम पर आ पड़े हैं: हमारी किताब नशे की तरह फैल गई है; न तो किसी को इसकी ज़रूरत है और न ही कोई इसे पढ़ता है। एक साल के भीतर हमारे प्रकाशक ने केवल दो प्रतियां बेची हैं, और इन दो प्रतियों से छुटकारा पाने के लिए उन्होंने कितनी मशक्कत की, यह केवल वे स्वयं ही जानते हैं।'

"इस संस्करण को संदूक बनाने वालों को सौंपने से पहले, हमने निर्णय लिया है कि जो प्रतियां हम बेच नहीं सकते, उनमें से कुछ को उपहार के रूप में वितरित करेंगे; और आपके कार्यों से हमें जो आनंद और लाभ मिला है, उसके प्रति आभार व्यक्त करते हुए हम आपको एक प्रति भेंट करते हैं। — महोदय, आपका अत्यंत आदरपूर्वक।"

'कुरर बेल।'

शार्लेट ब्रोंटे वितरण परियोजना को पर्याप्त रूप से अंजाम नहीं दे सकीं, क्योंकि काफी संख्या में बची हुई प्रतियां स्मिथ एंड एल्डर द्वारा नए शीर्षक पृष्ठ के साथ बंधी हुई प्रतीत होती हैं। स्मिथ एंड एल्डर के शीर्षक पृष्ठ वाली यह पुस्तक दुर्लभ नहीं है, जबकि आयलॉट एंड जोन्स के शीर्षक पृष्ठ वाली यह पुस्तक बेहद दुर्लभ है। संभवतः बेची गई दो प्रतियों के अलावा समीक्षा के लिए एक दर्जन और भेंट के लिए एक दर्जन प्रतियां थीं, लेकिन इनमें से केवल तीन या चार ही आज के पुस्तक प्रेमियों के लिए बची हैं।

यह प्रश्न में उल्लिखित शीर्षक पृष्ठ है:

कविताएं

द्वारा

कुरेर, एलिस और एक्टन बेल

लंदन

आयलॉट और जोन्स, 8 पैटरनोस्टर रो

1846

एयलॉट और जोन्स को लिखे पत्र से हमें वुदरिंग हाइट्स, एग्नेस ग्रे और द प्रोफेसर की पहली घोषणा मिलती है। ऐसा लगता है कि वुदरिंग हाइट्स और एग्नेस ग्रे के प्रकाशन में कोई खास या बिल्कुल भी कठिनाई नहीं हुई होगी। इन पर मॉर्टिमर स्ट्रीट के न्यूबी का प्रकाशन है और ये तीन खंडों में प्रकाशित हुए थे, पहले दो खंड वुदरिंग हाइट्स के लिए और तीसरा खंड एग्नेस ग्रे के लिए था, जिसे विचित्र रूप से तीन खंडों वाले उपन्यास की तरह चिह्नित किया गया है, जिसके शीर्षक पृष्ठ और बाइंडिंग पर 'खंड III' लिखा है। मैंने कहा है कि एमिली और ऐनी की पांडुलिपियों से पहले कोई यात्रा वृत्तांत नहीं थे। यह पूरी तरह निश्चित नहीं है। श्रीमती गैस्केल का तात्पर्य है कि यात्रा वृत्तांत थे; लेकिन, किसी भी स्थिति में, इस विषय पर कोई पुख्ता जानकारी नहीं है। यह स्पष्ट है कि न्यूबी ने इन्हें तब तक प्रकाशित नहीं किया जब तक कि पूरी दुनिया जेन आयर की चर्चा में नहीं थी। हालांकि, करर बेल द्वारा लिखित द प्रोफेसर में यात्रा वृत्तांत काफी थे! इसे स्मिथ एंड एल्डर के 'रीडर' श्री डब्ल्यू. एस. विलियम्स के हाथों में आने से पहले लगातार छह प्रकाशकों को पेश किया गया था। उस फर्म द्वारा विनम्रतापूर्वक इसे अस्वीकार किए जाने और तीन खंडों वाले उपन्यास पर सहर्ष विचार करने के सुझाव की जानकारी शार्लोट ब्रोंटे के सभी प्रशंसकों को है।

शार्लोट ब्रोंटे ने जिस निडरता और अटूट ईमानदारी के साथ पांडुलिपियों को भेजा, जिसमें उनकी पिछली सभी यात्राओं का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया था, उसकी प्रशंसा किए बिना कोई नहीं रह सकता।

आज के समय में यह समझना आसान नहीं है कि श्री विलियम्स ने 'द प्रोफेसर' को क्यों अस्वीकार किया। यह कहानी औसत उपन्यासों से कहीं अधिक श्रेष्ठ है, और वास्तव में इसमें ऐसे तत्व समाहित हैं जो करर बेल की किसी भी रचना के बराबर हैं। मुझे लगता है कि शार्लोट ब्रोंटे ने अस्वीकृति के बाद कहानी को दोबारा लिखा होगा, लेकिन पांडुलिपि से ऐसा प्रतीत नहीं होता।

शार्लोट ब्रोंटे की लेखन शैली यह थी कि वे गत्ते का एक टुकड़ा (दरअसल, किसी किताब का फटा हुआ कवर) और कुछ नोटपैड लेती थीं, और उन पर पेंसिल से छोटी लिखावट में अपनी कहानी का प्रारंभिक स्वरूप लिखती थीं। बाद में वे उसे क्वार्टो पेपर पर स्याही से बड़ी सफाई से कॉपी कर लेती थीं। उनके महान उपन्यासों की पेंसिल से लिखी मूल पांडुलिपियाँ आज तक संरक्षित नहीं हैं। जेन आयर और द

प्रोफेसर की मौजूदा पांडुलिपियाँ स्याही से लिखी हुई हैं।

जेन आयर की रचना श्री विलियम्स के प्रोत्साहन से हुई और इसे तुरंत स्वीकार कर लिया गया। यह अक्टूबर 1847 के पहले सप्ताह में प्रकाशित हुई थी।

पुस्तक के प्रकाशन की शुरुआत के दौरान श्री विलियम्स को निम्नलिखित पत्र प्राप्त हुए।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

4 अक्टूबर, 1847।

प्रिय महोदय, आपके पिछले पत्र के लिए मैं आपका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। यह मेरे लिए बहुत मूल्यवान है क्योंकि इससे मुझे उन विषयों पर ठोस राय मिली है जिन पर मैं सलाह चाहता था; आप निश्चिंत रहें, मैं आपकी बुद्धिमत्तापूर्ण और अच्छी सलाह से लाभ उठाने का हर संभव प्रयास करूंगा।

महोदय, कृपया मुझे आगाह करें कि आप मेरी क्षमताओं के बारे में बहुत अधिक आशावादी न हों, और न ही उनसे बहुत अधिक लाभ की उम्मीद रखें। मैं स्वयं अपनी क्षमताओं की कमियों और परिस्थितियों के प्रतिकूल प्रभावों से अवगत हूँ, जिनके कारण मुझे एक लेखक के रूप में लोकप्रियता प्राप्त करना कुछ कठिन लग सकता है। जिन प्रख्यात लेखकों का आपने उल्लेख किया है - श्री थैकरे, श्री डिकेंस, श्रीमती मार्श आदि - निःसंदेह उनके पास अवलोकन की ऐसी क्षमताएँ थीं जो मेरे पास नहीं हैं; निश्चित रूप से उनके पास दुनिया का ऐसा ज्ञान है, चाहे वह सहज ज्ञान से प्राप्त हो या अर्जित, जिस पर मेरा कोई दावा नहीं है, और यही बात उनके लेखन को वह महत्व और विविधता प्रदान करती है जो मैं जनता को प्रदान नहीं कर सकता।

फिर भी, यदि स्वास्थ्य ठीक रहा और समय मिला, तो मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूंगा; और यदि मुझे थोड़ी-बहुत सफलता भी मिल जाए, तो इसका महत्व और भी बढ़ जाएगा क्योंकि इससे यह सिद्ध होगा कि आपका दयालु परामर्श और प्रोत्साहन किसी अयोग्य व्यक्ति को नहीं दिया गया है। — आपका सादर,

'सी. बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

9 अक्टूबर, 1847।

'प्रिय महोदय, मुझे नहीं पता कि डबलिन यूनिवर्सिटी मैगज़ीन उन पत्रिकाओं की सूची में शामिल है या नहीं, जिन्हें मेसर्स स्मिथ एंड एल्डर नई प्रकाशनों की प्रतियां

भेजा करते हैं, लेकिन चूंकि मेरी और मेरे दो रिश्तेदारों, एलिस और एक्टन बेल की संयुक्त रचना को उस पत्रिका में कुछ हद तक अनुकूल समीक्षा मिली थी, इसलिए मुझे लगता है कि यदि संपादक का ध्यान जेन आयर की ओर आकर्षित किया जाए तो वे संभवतः इस पर भी कुछ टिप्पणी कर सकते हैं।'

'द क्रिटिक और एथेनियम ने भी उस कृति पर टिप्पणी की जिसका मैंने उल्लेख किया है। पहले उल्लेखित अखबार में समीक्षा अप्रत्याशित रूप से और उदारतापूर्वक प्रशंसात्मक थी, जबकि एथेनियम में समीक्षा अधिक संयमित थी, लेकिन फिर भी निराशाजनक नहीं थी। मैं इन परिस्थितियों का उल्लेख करता हूं और यह निर्णय आप पर छोड़ता हूं कि क्या इनसे कोई लाभ प्राप्त किया जा सकता है।'

आपने मुझे अपने पिछले पत्र का उत्तर देने के कर्तव्य से मुक्त कर दिया था, लेकिन उसमें व्यक्त विचारों की सत्यता का मेरा अहसास मुझे इस अवसर को न चूकने की अनुमति नहीं देता, जिसके तहत मैं आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। — आपका सादर,

'सी. बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 13 दिसंबर, 1847।

महोदय, आपका सुझाव अत्यंत महत्वपूर्ण है और मैं उस पर गंभीरता से ध्यान दूंगी। आपके तर्क में मुझे गहराई से समझ आ रहा है। मैं अपने चुने हुए करियर में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहती हूं। इसलिए मैं अध्ययन और प्रयास करूंगी; और समय, चिंतन और परिश्रम के बल पर, मुझे आशा है कि मैं आपके और अन्य लोगों द्वारा उदारतापूर्वक दिए गए प्रोत्साहन की कुछ हद तक पात्र बन सकूंगी। लेकिन समय आवश्यक होगा - यह बात मैं पहले से कहीं अधिक महसूस कर रही हूं। यदि जेन आयर का दूसरा संस्करण प्रकाशित होता है, तो मैं कुछ सुधार करवाना चाहूंगी और एक शुद्धिपत्र तैयार करूंगी। साथ में लिखी जाने वाली प्रस्तावना कैसी रहेगी? मैंने इसे संक्षिप्त रखना बेहतर समझा।

'द ऑब्जर्वर अभी-अभी मुझे मिला है। मैं हमेशा हर अखबार में छपने वाले लेख का विश्लेषण पढ़ने के लिए खुद को बाध्य करता हूँ। यह एक उचित दंड है, योजना और रचना की खामियों के लिए एक उचित लेकिन कठोर अपमान है। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या अन्य उपन्यासों का विश्लेषण भी जेन आयर के विश्लेषण की तरह

ही बेतुका लगता है। — प्रिय महोदय, आपका सादर,

'सी. बेल।'

निम्नलिखित पत्र रोचक है क्योंकि इसमें अस्वीकृत उपन्यास पर चर्चा की गई है, और इसे फिर से लिखने की परियोजना का उल्लेख किया गया है, जो विलेट के लेखन में समाप्त हुई।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

14 दिसंबर, 1847।

'प्रिय महोदय, मुझे अभी-अभी आपका 11 तारीख का स्नेहपूर्ण और स्वागतयोग्य पत्र प्राप्त हुआ है। मैं तुरंत इसके मुख्य विषय पर चर्चा शुरू करूँगा।'

"निश्चित रूप से, दूसरे काम को लेकर मेरे मन में काफी विचार-विमर्श चल रहा है। मुझे लगता है कि अभी धारावाहिक लेखन शुरू करना मेरे लिए जल्दबाजी होगी—मैं अभी इस कार्य के लिए योग्य नहीं हूँ: न तो मैंने जनता के बीच पर्याप्त मजबूत पकड़ बनाई है, न ही मुझमें पर्याप्त आत्मविश्वास है, और न ही मुझमें वह अटूट उत्साह है, न ही रचनाशीलता पर वह महारत है, जो जैसा कि आपने कहा है, और मुझे पूरा विश्वास है कि यह बिल्कुल सही है, धारावाहिक साहित्य में सफलता के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है। मैं दृढ़ता से महसूस करता हूँ कि अपना रास्ता बदलने से पहले, मुझे तीन खंडों वाले उपन्यास के रूप में एक और प्रयास करना चाहिए।"

इस तरह की रचना की योजना का सम्मान करते हुए, मैंने इस पर विचार किया है, लेकिन अभी तक इसके परिणाम बेहद असंतोषजनक रहे हैं। मैंने तीन बार इसके आरंभिक प्रयास किए हैं, लेकिन तीनों ही मुझे पसंद नहीं आए। कुछ दिन पहले मैंने 'द प्रोफेसर' पर एक नज़र डाली। मुझे इसका आरंभ बहुत ही कमजोर लगा, पूरी कहानी में घटनाओं और आकर्षण की कमी थी। फिर भी, रचना का मध्य और अंतिम भाग, जो ब्रुसेल्स, बेल्जियम स्कूल आदि से संबंधित है, मेरी समझ से सर्वोत्तम है: मेरे विचार में, इसमें 'जेन आयर' के अधिकांश भाग की तुलना में अधिक सार, अधिक तत्व और अधिक वास्तविकता है। मुझे लगता है कि यह एक वर्ग, एक पेशे और एक श्रेणी के पात्रों का एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है - ये सभी बहुत ही सामान्य और अपने आप में बहुत ही महत्वहीन हैं, लेकिन 'जेन आयर' के उस भाग की तुलना में नहीं जो आम तौर पर सबसे अधिक पसंद किया जाता है।

'मेरी इच्छा है कि मैं 'द प्रोफेसर' को नए सिरे से लिखूं, जहां तक संभव हो सके

उसमें कमियों को दूर करूं, कुछ हिस्सों को कम करूं, कुछ को विकसित करूं और इसे तीन खंडों वाली कृति बनाऊं - यह कोई आसान काम नहीं है, मैं जानता हूं, फिर भी मुझे विश्वास है कि यह असंभव नहीं है।'

'मैं यह नहीं भूला हूँ कि स्मिथ एंड एल्डर के साथ हुए मेरे समझौते में प्रोफेसर पद को अलग रखा गया था; इसलिए अपनी योजना को लागू करने से पहले, मैं इसकी व्यावहारिकता पर आपकी राय जानना चाहता हूँ। आपने पांडुलिपि पढ़ी या देखी होगी - अब आपको इसके महत्व के बारे में क्या विचार है? और आपको कितना भरोसा है कि मैं इसे इससे बेहतर बना सकता हूँ?'

मुझे पूरा विश्वास है कि व्यापारिक कारणों के साथ-साथ स्वाभाविक ईमानदारी के कारण भी आप मेरे साथ पूरी तरह से खुलकर बात करेंगे, इसलिए आपसे परामर्श करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। — महोदय, सादर,

'सी. बेल.

मुझे लगता है कि 'वुथरिंग हाइट्स' आखिरकार प्रकाशित हो गई है, कम से कम श्री न्यूबी ने लेखकों को इसकी छह प्रतियां भेज दी हैं। मुझे आश्चर्य है कि इसे कैसी प्रतिक्रिया मिलेगी। मैं कहूंगा कि यह 'जेन आयर' की तुलना में 'जोशपूर्ण' और 'मौलिक' विशेषणों की अधिक हकदार है। 'एग्नेस ग्रे' श्री लेवेस जैसे आलोचकों को अवश्य पसंद आएगी, क्योंकि यह 'सच्ची' और 'अतिशयोक्ति रहित' है। किताबें ठीक से तैयार नहीं की गई हैं - इनमें छपाई की कई गलतियां हैं। पहले मैंने श्री न्यूबी के बारे में शायद कुछ ज्यादा ही संयम से अपनी राय व्यक्त की थी, फिर भी मैं यह महसूस किए बिना नहीं रह सकता, और मुझे बहुत दुख होता है, कि एलिस और एक्टन को उनके हाथों वह न्याय नहीं मिला जो मुझे स्मिथ एंड एल्डर के हाथों मिला है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

31 दिसंबर, 1847।

महोदय, — आपके द्वारा बताए गए कारणों से, मुझे लगता है कि संपादक के स्थान पर लेखक शब्द का प्रयोग करना बेहतर होगा। मुझे वुदरिंग हाइट्स और एग्नेस ग्रे का लेखक कहलाने में कोई शर्म नहीं होगी, लेकिन इस सम्मान पर मेरा कोई वास्तविक दावा नहीं है, इसलिए मैं इसे अपने नाम से जोड़ना नहीं चाहता, जिससे सच्चे लेखकों को उनका उचित श्रेय न मिले।

जेन आयर के विरुद्ध उठाई गई आपत्तियों के बारे में मुझे बताना आपने बिलकुल

सही और अत्यंत दयालुतापूर्ण कार्य किया है—वे प्रशंसाओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। जब मैं अच्छे और गंभीर विचारों वाले लोगों द्वारा इस पुस्तक को “नास्तिक” और “हानिकारक” कहते हुए सुनता हूँ तो मुझे एक प्रकार का दुख होता है; परन्तु मैं जानता हूँ कि यह दुख लाभकारी सिद्ध होगा—कम से कम मुझे तो यही विश्वास है।

छल और कपट के आरोपों का क्या मतलब है, यह मेरी समझ से परे है। कहानी लिखना मेरे लिए कोई कला नहीं थी, न ही इसे प्रकाशित करना स्मिथ एंड एल्डर के लिए कोई छल था। छल और कपट कहाँ है?

मुझे 'द स्कॉट्समैन' पत्रिका मिली है, और जेन आयर की तुलना रेबेका शार्प से देखकर मुझे बहुत मजा आया - यह समानता मेरे दिमाग में शायद ही आती।

मैं आज ही इस पत्र को डाक से भेजना चाहता हूँ, इसलिए मुझे जल्दी में इसे समाप्त करना होगा। महोदय, आपका सादर,

‘सी. बेल।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 4 जनवरी, 1848।

“प्रिय महोदय, — आपके पत्र ने मुझे अपने आप पर शर्मिंदा कर दिया कि मैंने कभी कुछ गलत समझे लेकिन नेक इरादे वाले लोगों की प्रतिकूल राय से आहत होकर कोई शिकायत की या किसी भी तरह से अपनी पीड़ा व्यक्त की। लेकिन, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुझ पर जो इतनी उदारता से कृपा बरसाई गई है, उसके लिए मैं कृतघ्न नहीं हूँ। मैं अपने प्रयासों के लिए मिली आलोचना और प्रशंसा के अनुपात को भली-भांति समझ सकता हूँ: मैं स्पष्ट रूप से देखता हूँ कि मुझे मेरी योग्यता से कम प्रशंसा और अधिक प्रशंसा मिली है। इसलिए मैं निराश नहीं हूँ, हालाँकि भले ही अच्छे लोगों की नाराज़गी से क्षणिक रूप से दुखी हो जाऊँ।”

मुझे कुचलना बहुत मुश्किल होगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि पहली बात तो यह है कि मेरे इरादे नेक थे, मेरे हृदय में धर्म के प्रति गहरी श्रद्धा है, और अधर्म मुझे घोर नापसंद है; दूसरी बात, मैं उन लोगों के निर्णय पर दृढ़ विश्वास रखता हूँ जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया है। मेरी दृष्टि में आप और श्री लेवेस उतने ही विश्वसनीय जानकार हैं जितने कि श्री डिल्के या स्पेक्टेटर के संपादक, और मैं किसी भी परिस्थिति में, या किसी भी बदनामी के लिए, अपने मित्रों द्वारा अनुमोदित किसी बात को शर्म से नहीं देखूँगा - केवल एक कायर ही शत्रु की निंदा को मित्र के प्रोत्साहन से अधिक महत्व

देगा। इसलिए, आपको भविष्य में कम बोलने की अपनी धमकी को पूरा नहीं करना चाहिए; कृपया मुझे सब कुछ बताएँ।

मिस कावानाघ का मनोरोगी के बारे में दृष्टिकोण ली हंट के दृष्टिकोण से मिलता-जुलता है। मैं उनसे सहमत हूँ कि यह चरित्र भयावह है, लेकिन मैं जानता हूँ कि यह कुछ ज़्यादा ही स्वाभाविक है। पागलपन की एक अवस्था ऐसी होती है जिसे नैतिक उन्माद कहा जा सकता है, जिसमें अच्छाई या मानवीयता सब कुछ दिमाग से गायब हो जाता है और उसकी जगह शैतानी प्रवृत्ति ले लेती है। इस प्रकार ग्रस्त व्यक्ति का एकमात्र उद्देश्य और इच्छा दूसरों को परेशान करना, सताना और नष्ट करना होता है, और इस भयानक उद्देश्य के लिए अक्सर असाधारण चतुराई और ऊर्जा का प्रयोग किया जाता है। ऐसे मामलों में, रूप-रंग स्वभाव से मेल खाता है - सब कुछ राक्षसी प्रतीत होता है। यह सच है कि ऐसी गिरावट को देखकर केवल गहरी दया ही आनी चाहिए, और यह भी उतना ही सच है कि मैंने उस भावना पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है: मैंने भय को ज़्यादा हावी करके गलती की है। श्रीमती रोचेस्टर ने वास्तव में पागल होने से पहले एक पापी जीवन जिया था, लेकिन पाप स्वयं एक प्रकार का पागलपन है - सच्चे भले लोग इसे इसी रूप में देखते हैं और इसके प्रति दया भाव रखते हैं।

'जेन आयर यॉर्कशायर तक पहुँच गई है, इसकी एक प्रति इस इलाके में भी आ गई है। मैंने कुछ दिन पहले एक बुजुर्ग पादरी को इसे पढ़ते हुए देखा और उन्हें यह कहते हुए सुनकर मुझे संतोष हुआ, "अरे वाह, यहाँ तो — - स्कूल और श्रीमान — - भी हैं, मैं कसम खाता हूँ! और मिस — -" (लोवुड, श्रीमान ब्रॉकलहर्स्ट और मिस टेंपल के मूल चित्रों का नाम लेते हुए)। वे उन सभी को जानते थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वे चित्रों को पहचान पाएंगे, और यह देखकर मुझे खुशी हुई कि उन्होंने पहचान लिया, और इतना ही नहीं, उन्होंने उन्हें वास्तविक और न्यायसंगत भी बताया। उन्होंने यह भी कहा कि श्रीमान — - (ब्रॉकलहर्स्ट) को जो दंड मिला, वे उसके पात्र थे।'

'उन्होंने करर बेल को पहचाना नहीं। अदृश्य होकर चलने की क्षमता के बिना कौन सा लेखक होगा? इससे मन इतना शांत रह पाता है। मैं यह छोटी सी बात गोपनीय रूप से कह रहा हूँ।'

'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं कि वेस्टमिंस्टर रिव्यू में छपा नोटिस श्री लेवेस द्वारा नहीं है? इसमें उनके विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त किए गए हैं, और उन्होंने कहा था कि वे

शायद उस पत्रिका में कुछ पंक्तियाँ प्रकाशित करेंगे।'

'मैंने कई बार सोचा है कि मुझे फ्रेजर में उनकी समीक्षा के लिए श्री लेवेस को धन्यवाद देने के लिए पत्र लिखना चाहिए था; और वास्तव में, मैंने एक नोट लिखा भी था, लेकिन फिर मुझे याद आया कि उन्हें लेखक के धन्यवाद की आवश्यकता नहीं थी, और मुझे डर था कि इसे भेजना अनावश्यक होगा, इसलिए मैंने ऐसा नहीं किया; हालाँकि, मैंने कृतज्ञता व्यक्त नहीं की है, लेकिन मैंने इसे महसूस किया है।'

मैं आपको भी नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, और आपके और आपके परिवार के लिए समृद्धि और सफलता की कामना करता हूं। — यकीन मानिए, इत्यादि।

'कुरर बेल.

मुझे कूरियर और ऑक्सफोर्ड क्रॉनिकल प्राप्त हुए हैं।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

22 जनवरी, 1848।

"प्रिय महोदय, मुझे मॉर्निंग हेराल्ड प्राप्त हुआ है और उसमें प्रकाशित सूचना से मुझे बहुत प्रसन्नता हुई, विशेष रूप से प्रस्तावना के उस भाग के संदर्भ से जो मेसर्स स्मिथ एंड एल्डर से संबंधित है। यदि मेरी यह धन्यवादात्मक टिप्पणी मेरे प्रकाशकों के लिए लाभकारी हो सकती है, तो यह वांछनीय है कि इसे यथासंभव अधिक से अधिक प्रचार मिले।"

मुझे नहीं पता कि श्री थैकरे से संबंधित भाग को उतनी ही अच्छी प्रतिक्रिया मिलेगी या नहीं; लेकिन चाहे इसे आम तौर पर स्वीकार किया जाए और समझा जाए या नहीं, मुझे इसे लिखने का कोई पछतावा नहीं होगा, क्योंकि मैं इसकी सच्चाई के प्रति आश्वस्त हूं।

मुझे लगता है कि मेरा यह विचार गलत था कि एथेनियम और अन्य लोग वुदरिंग हाइट्स का श्रेय करर बेल को देना चाहते थे; असलियत इसके विपरीत है, जेन आयर का श्रेय एलिस बेल को दिया जाता है; और ऐसा लगता है कि श्री न्यूबी अपने विज्ञापनों को इस तरह से तैयार करना उचित समझते हैं जिससे यह गलतफहमी और बढ़ जाए। यदि श्री न्यूबी में थोड़ी भी समझ होती तो वे यह समझ जाते कि एलिस बेल करर बेल के सहारे के बिना भी अपने दम पर खड़े हो सकते हैं, और वे उस चीज़ को नकार देते जिसे स्वयं एलिस बेल नकारते हैं - छल-कपट का सहारा लेना।

हालांकि, एलिस, एक्टन और करर को इस मामले से व्यक्तिगत रूप से कोई लेना-देना नहीं है; जनता और आलोचक हमारी पहचान को जितना चाहें उतना भ्रमित करने के लिए स्वतंत्र हैं; मुझे केवल इस बात का डर है कि कहीं इससे मेसर्स स्मिथ एंड एल्डर को किसी तरह की ठेस न पहुँच जाए।

मुझे मिस कावानाघ के बारे में आपका विवरण बहुत पसंद आया। आपने जिस चरित्र का वर्णन किया है, वह एक ऐसे वर्ग का है जिसका मैं विशेष रूप से सम्मान करता हूँ: एक ऐसा वर्ग जिसमें सहनशीलता परिश्रम के साथ, प्रतिभा अच्छाई के साथ मिलती है; जहाँ प्रतिभा फिजूलखर्ची से अछूती रहती है, और आत्मनिर्भरता आत्मसंतुष्टि से रहित होती है। मेरा मानना है कि ऐसा चरित्र केवल वहीं पाया जाता है जहाँ परिश्रम और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा हो: यह केवल बंजर भूमि और छाया में ही पूर्णता प्राप्त कर सकता है; यदि भूमि बहुत बंजर हो, छाया बहुत नम और घनी हो, तो निश्चित रूप से यह वहीं मर जाता है जहाँ से यह उत्पन्न हुआ था। लेकिन मुझे विश्वास है कि मिस कावानाघ के साथ ऐसा नहीं होगा। मुझे विश्वास है कि वह जल्द ही सफलता की ओर अग्रसर होंगी। आपमें उन्हें मार्गदर्शन देने वाला एक दयालु मित्र मिला है, और मुझे आशा है कि उनकी माँ अपनी उस बेटी को, जो उनके प्रति इतनी मासूमियत से कर्तव्यनिष्ठ है, सुखी और सफल होते हुए देखेंगी।

आपने मुझसे पूछा था कि क्या मुझे जेन आयर के दूसरे संस्करण की कोई प्रति चाहिए, और मैंने कहा था - नहीं। यह सच है कि मुझे अपने लिए या अपने परिचितों के लिए कोई प्रति नहीं चाहिए, लेकिन अगर यह अनुरोध असामान्य न हो, तो मैं मिस कावानाघ को एक प्रति देना चाहूँगी। यदि आप कृपा करें, तो कृपया पुस्तक के पहले पृष्ठ पर लिख दें कि यह पुस्तक लेखिका की ओर से उनके जीवन और परलोक में सुख-समृद्धि के लिए शुभकामनाओं के साथ भेंट की जा रही है। मेरी इच्छा है कि उन्हें एक प्रति मिले, क्योंकि उन्होंने कहा था कि यह पुस्तक उनके लिए प्रेरणादायक रही है, और मैं जानती हूँ कि प्रेरणादायक पुस्तकें लेखकों के लिए मूल्यवान होती हैं।

मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि श्री स्मिथ को यह आम बीमारी हो गई है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि वे अब तक पूरी तरह से ठीक हो चुके होंगे। मैं इससे पूरी तरह से मुक्त नहीं हूँ, क्योंकि मैं इस समय इसके निराशाजनक प्रभाव में लिख रहा हूँ। आशा है कि आप अधिक भाग्यशाली रहे होंगे, - प्रिय महोदय, आपका विश्वासपात्र।

'सी. बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

3 मार्च, 1848।

“मेरे प्रिय महोदय, मुझे क्रिश्चियन रिमेंबरेंसर प्राप्त हुआ है और मैंने समीक्षा पढ़ी है। यह कुछ कुशलता से लिखी गई है; लेकिन न्याय करना स्पष्ट रूप से आलोचक का मुख्य उद्देश्य नहीं था, इसलिए वह उस कर्तव्य को पूरा करने से खुद को मुक्त करता है।”

मुझे लगता है कि समीक्षक को लगता होगा कि करर बेल को उनकी कुछ तीखी बातों से बहुत दुख हुआ होगा, बहुत आहत हुए होंगे - लेकिन ऐसा नहीं है। कुल मिलाकर, सी. बेल इस समीक्षा से निराश होने के बजाय उत्साहित हुए हैं: किसी शत्रु से अनिच्छा से प्राप्त की गई प्रशंसा सबसे अनमोल होती है - आप निश्चिंत हो सकते हैं कि इसमें चापलूसी का कोई अंश नहीं है। मुझे डर है कि मेरी क्षमताओं और मेरे कार्यों के बारे में उनकी राय कुछ अधिक ही ऊँची है; लेकिन यह उनकी अपनी गलती है। अन्य मामलों में, उनके तीर अँधेरे में लगे हैं, और उनके वार की सफलता, या कहें कि असफलता, मुझे रुलाने के बजाय हँसाती है। उनके व्यंग्य के तीर तीखे और सटीक हैं; उन्हें उन्हें उस लक्ष्य पर निशाना साधने में बर्बाद नहीं करना चाहिए था जिसे वे देख नहीं सकते।

मुझे आशा है कि ऐसी समीक्षाओं से मुझ पर कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा, और अगर भविष्य में मुझे पुजारियों आदि के बारे में कुछ कहने की प्रेरणा मिली, तो मैं पहले की तरह ही निडरता से कहूंगा। मुझे यह भी आशा है कि उनका गुस्सा मुझे क्रोधित नहीं करेगा। एक समुदाय के रूप में, शुरू से ही मेरे मन में उनके प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी, और मुझे लगता है कि विरोध को ऐसी दुर्भावना को जन्म देने देना एक गलती होगी। हो सकता है कि कुछ व्यक्तियों को कभी अपने चित्र बनवाने के लिए बुलाया जाए; यदि उनके साथी आम तौर पर समानता को नापसंद करते हैं और कलाकार की निंदा करते हैं - तो भाड़ में जाए! - विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आपका सादर।

‘सी. बेल।’

ऐसा प्रतीत होता है कि श्री विलियम्स ने संकेत दिया था कि शार्लोट थैकरे की तरह अपनी पुस्तकों का चित्रण स्वयं करके उनका अनुकरण करना पसंद कर सकती हैं।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

11 मार्च, 1848।

'प्रिय महोदय, मुझे अभी-अभी दूसरे संस्करण की प्रति प्राप्त हुई है, और मैं इसकी समीक्षा करूँगा और यथाशीघ्र सुधार भेज दूँगा; साथ ही, जैसा कि आप उचित समझते हैं, मैं तीसरे संस्करण के अवसर का लाभ उठाकर वुदरिंग हाइट्स और एग्नेस ग्रे के लेखकत्व संबंधी त्रुटि को भी सुधार लूँगा।'

आपके दूसरे सुझाव के बारे में, पहली नज़र में ही यह बहुत ही विवेकपूर्ण और उपयुक्त प्रतीत होता है; लेकिन मैं इसे नहीं अपना सकता, क्योंकि मुझमें वह कौशल नहीं है जो आप मुझमें देखते हैं। कलाकार की दृष्टि होना ही पर्याप्त नहीं है, कलाकार का हाथ भी होना चाहिए ताकि पहली प्रतिभा को व्यावहारिक उपयोग में लाया जा सके। मैंने अपने जीवन में ब्रिस्टल बोर्ड, ड्राइंग पेपर, क्रेयॉन और रंगों की टिकिया काफ़ी मात्रा में बर्बाद की हैं, लेकिन अब जब मैं अपने पोर्टफोलियो की सामग्री को देखता हूँ, तो ऐसा लगता है मानो इतने वर्षों तक बंद पड़े रहने के दौरान किसी परी ने उन चीज़ों को, जिन्हें मैं कभी कीमती सिक्का समझता था, सूखे पत्तों में बदल दिया हो, और मेरा मन करता है कि मैं अपने सारे चित्रों को आग में जला दूँ; मुझे लगता है कि उनका कोई मूल्य नहीं है। इसलिए, यदि जेन आयर का कभी चित्रण होना है, तो यह इसके लेखक के अलावा किसी और के हाथों से ही होना चाहिए। लेकिन मुझे उम्मीद है कि कोई भी मेरे पात्रों के चित्र बनाने की जहमत नहीं उठाएगा। बुलवर और बायरन के नायक और नायिकाएँ बहुत अच्छे हैं, वे सभी सुंदर हैं; लेकिन मेरे द्वारा चित्रित पात्र दिखने में अधिकतर अनाकर्षक होते हैं, और इसलिए आदर्श चित्रों के लिए उपयुक्त नहीं होते। मैंने हमेशा ऐसे चित्रणों को व्यर्थ ही माना है। थैकरे जैसा दूसरा कलाकार आसानी से नहीं मिलेगा। कुछ काली रेखाओं और बिंदुओं से वे भावों की इतनी सूक्ष्म, इतनी वास्तविक बारीकियों, चरित्र के इतने सूक्ष्म, इतने सूक्ष्म और इतने जटिल गुणों को कैसे चित्रित कर देते हैं, यह मैं बता नहीं सकता— मैं केवल आश्चर्यचकित और उनकी प्रशंसा कर सकता हूँ। थैकरे भले ही चित्रकार न हों, लेकिन वे एक कुशल चित्रकार हैं; उनकी पेंसिल के स्पर्श से कागज जीवंत हो उठता है। और फिर उनकी चित्रकारी इतनी ताजगी भरी है; आम चित्रकारों द्वारा चित्रित लकड़ी जैसे अंगों के बाद, उनके द्वारा मांस से ढके हुए हड्डियों और मांसपेशियों के आकार, अनुपात और शारीरिक रचना में एकदम सही, एक वास्तविक राहत देते हैं। थैकरे की हर रचना सच्ची है। यदि सत्य फिर से एक देवी होती, तो थैकरे उसके मुख्य पुरोहित

होते।

मैंने अपनी प्रस्तावना को कुछ दुख के साथ पढ़ा - मुझे यह पसंद नहीं आई। मैंने इसे तब लिखा था जब मैं फ्रांसीसी क्रांति के बारे में थोड़ा उत्साहित था, बिल्कुल आपकी तरह। काश मैंने इसे शांत मन से लिखा होता; मैं वही बातें कह पाता, बस अलग ढंग से। कोई व्यक्ति एक या दो शताब्दी पहले मर चुके लेखक के बारे में जितना चाहे उतना उत्साहित हो सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि किसी जीवित लेखक के बारे में उत्साह दिखाकर जनता को ऊबाना एक गलती है। मैं भविष्य में बेहतर ध्यान रखने का वादा करता हूँ। फिर भी, मैं अपनी मर्जी से सोचूंगा।

क्या लंदन के गणतंत्रवादी, और आप भी उनमें से एक हैं, अब शांत हो गए हैं? मुझे लगता है नहीं, क्योंकि आपके फ्रांसीसी भाई बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहे हैं। गुलामी का उन्मूलन और राजनीतिक अपराधों के लिए मृत्युदंड का उन्मूलन दो गौरवशाली कार्य हैं, लेकिन वे श्रम संगठन के प्रश्न को कैसे हल करेंगे! यदि वे ध्यान नहीं देंगे तो ऐसे सिद्धांत ही वह रेत का टीला बन जाएंगे जिस पर उनका जहाज फंस जाएगा। लामार्टिन, निःसंदेह, लामार्टिनों के राष्ट्र के लिए एक उत्कृष्ट विधायक साबित होंगे - लेकिन वह राष्ट्र कहाँ है? मुझे आशा है कि ये टिप्पणियाँ संशयपूर्ण और पर्याप्त रूप से संतुलित हैं। - विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आपका सादर।

‘सी. बेल।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

16 नवंबर, 1848।

'मेरे प्रिय महोदय, मैंने श्री स्मिथ को एक नोट में पुस्तकों के पार्सल की प्राप्ति की पुष्टि पहले ही कर दी है, और इस समयोचित ध्यान के लिए धन्यवाद देते हुए मुझे यकीन है कि मुझे आपको भी शामिल करना चाहिए; मुझे लगा कि कुछ पुस्तकों के चयन में आपकी रुचि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, और इससे बेहतर चयन करना मुश्किल होता।'

आज मुझे स्पेक्टेटर और रेव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस मिले। स्पेक्टेटर ने बेल्स के बारे में जो रुख अपनाया था, उसे ही बरकरार रखा है। करर बेल के हिस्से के बारे में उसकी राय से मुझे कोई खास आपत्ति नहीं है। यह सच है कि आलोचक केवल कमियां ही देखता है, लेकिन इस मामले में उसकी समझ काफी हद तक सही है। एलिस की खूबियों के प्रति वह बिल्कुल अंधा और बेखबर है। वह यह महसूस नहीं कर

पाता या स्वीकार नहीं करता कि करर को जिस बारीकी और मेहनत की कमी खलती है, वह एलिस में है; उसे इस बात का एहसास नहीं है कि "कविता का सच्चा सार" उसकी रचनाओं में व्याप्त है। चूंकि एलिस की कविताएं छोटी और सारगर्भित हैं, इसलिए आलोचक उन्हें तुलनात्मक रूप से महत्वहीन और नीरस मानते हैं। वे गलत हैं।

‘रिव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस में प्रकाशित समीक्षा अब तक प्रकाशित समीक्षाओं में से सबसे सक्षम और लेखक के लिए सबसे स्वीकार्य समीक्षा है। यूजीन फोर्केड ने जेन आयर को समझा और उसका आनंद लिया। मैं उन सभी के बारे में ऐसा नहीं कह सकता जिन्होंने इसकी आलोचना करने का दावा किया है। आलोचनाएँ और प्रशंसाएँ दोनों ही उचित हैं। दिए गए अनुवाद के नमूने कुल मिलाकर अच्छे हैं; कहीं-कहीं मूल पाठ का अर्थ गलत समझा गया है, लेकिन सामान्यतः इसका अनुवाद अच्छा है।’

इस जीवन में हमें जो भी स्वाद चखने को मिलता है, वह मिला-जुला होता है। एक समय ऐसा लगता था कि 'रिव्यू' में दी गई सफलता की खबर मेरे मन में लगभग उल्लास भर देगी। लेकिन यह ऐसे समय में आई है जब विपरीत परिस्थितियाँ भावनाओं का संतुलन बनाए रखती हैं—जब मेरी बहन की लगातार बीमारी वर्तमान को अंधकारमय और भविष्य को धुंधला कर देती है। वह दिन मेरे लिए खुशी का होगा जब मैं आपको बता सकूँगी कि एमिली बेहतर है। उसके लक्षण अभी भी फेफड़ों में धीमी सूजन, खांसी, सांस लेने में कठिनाई, सीने में दर्द और बुखार हैं। हम बेसब्री से उसके ठीक होने का इंतजार कर रहे हैं—आशा है यह जल्द ही आएगा।—प्रिय महोदय, आपका सादर,

‘सी. ब्रोंटे.

‘जब मैं इसे सील करने ही वाली थी, तभी मुझे आपका प्यारा पत्र मिला। यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई कि फैनी अपने माता-पिता की पसंद का रास्ता चुन रही है। मुझे उम्मीद है कि वह इस पर कायम रहेगी। उसे यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि इसके विपरीत कोई भी रास्ता उसे कभी खुशी नहीं देगा; और मुझे लगता है कि आपको और उसकी माँ को खुश देखकर उसे जो खुशी मिलेगी, वह इतनी मीठी होगी कि वह इसे खोने का जोखिम नहीं उठाएगी।’

'यह कुछ हद तक विचित्र है कि मैंने पहले ही अपनी बहनों से कहा था, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि मिस्टर लेवेस ने ही आपको रिव्यू दिखाया था।'

एमिली की अंतिम बीमारी से संबंधित अन्य कई पत्र पहले ही छप चुके हैं। जब ये पत्र लिखे गए थे, तब एमिली और ऐनी दोनों ही अपनी कब्रों में थीं।

जेम्स टेलर, कॉर्नहिल को

1 मार्च, 1849।

"मेरे प्रिय महोदय, पार्सल शनिवार शाम को आ गया। मुझे इसके अंदर रखी गई वस्तुओं के चयन में दिखाई गई समझदारी और दयालुता के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने की अनुमति दें। ऐसा लगता है कि ये सभी अच्छी पुस्तकें हैं, और हम जानते हैं कि अच्छी पुस्तकें अच्छे समाज का सर्वोत्तम विकल्प हैं; यदि परिस्थितियाँ मुझे बाद वाले विशेषाधिकार से वंचित करती हैं, तो मेरे मित्रों का स्नेहपूर्ण स्नेह मुझे पहले वाले की पर्याप्त मात्रा प्रदान करता है।"

शर्ली पर आपकी टिप्पणियों के लिए धन्यवाद। आपकी कुछ आलोचनाएँ श्री विलियम्स की कुछ आलोचनाओं से मेल खाती हैं। आप दोनों मेरे नायकों में स्पष्टता और प्रभाव की कमी की शिकायत करते हैं। शायद आप सही हैं। पुरुष चरित्र का चित्रण करते समय मुझे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है: अंतर्ज्ञान और सिद्धांत हमेशा अवलोकन और अनुभव की जगह नहीं ले सकते। जब मैं महिलाओं के बारे में लिखती हूँ तो मुझे अपने विषय पर पूरा भरोसा होता है - दूसरे मामले में, मुझे इतना भरोसा नहीं होता।

तो यहाँ आप सभी ने उस बिंदु पर आलोचनात्मक उंगली उठाई है जो अपनी सिकुड़न से अपनी कमजोरी को स्वीकार करता है; ब्रियारचैपल के दृश्यों, पादरियों आदि के संबंध में आप जो असहमति जता रहे हैं, वह कितनी उचित है, यह तो समय ही बताएगा। मैं भली-भांति जानता हूँ कि इन अंशों के लिए लेखक को वर्तमान में क्या प्रतिक्रिया मिलेगी: मुझे सर्वत्र निंदा की आशंका है, प्रशंसा की नहीं। और यदि लेखन के पीछे मेरा प्रेरक सिद्धांत लोकप्रियता की लालसा होती, या मेरी कलम पर मुख्य रोक निंदा का भय होता, तो मैं इन दृश्यों को हटा देता—या यूँ कहूँ कि मैंने इन्हें कभी लिखा ही नहीं होता। मैं यह नहीं कहूँगा कि मेरे विचार सही हैं या नहीं, या मेरी मान्यताएँ न्यायसंगत हैं या नहीं; परन्तु जो भी हों, मुझे उनके प्रभाव के आगे झुकना ही होगा। वे मुझे निंदा के भय से सत्य का बलिदान करने से रोकते हैं। मैं उनके निषेध को स्वीकार करता हूँ।

आपकी आलोचना में दिखाई देने वाली स्पष्टता के प्रति अपनी हार्दिक प्रशंसा

व्यक्त करते हुए, मैं, प्रिय महोदय, आपका सादर,

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

16 अगस्त, 1849।

'मेरे प्रिय महोदय, - जब से मैंने आपको आखिरी बार लिखा था, तब से मैं अपनी पुस्तक पर यथासंभव काम कर रहा हूँ, और मुझे लगता है कि अब मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि कुछ हफ्तों में मुझे पांडुलिपि को श्री स्मिथ के हाथों में सौंपने का सौभाग्य प्राप्त होगा।'

'नॉर्थ ब्रिटिश रिव्यू' मुझे समय पर मिल गया। मैंने ई. विन्धम, जेन आयर और एफ. हरवे के बारे में उसमें लिखी हर बात ध्यान से पढ़ी। लेख का अधिकांश भाग चतुराई भरा है, फिर भी कुछ टिप्पणियाँ ऐसी हैं जो मेरे लिए इसकी महत्ता को कम कर देती हैं।'

प्रशंसा को महत्व देने या निंदा के प्रति श्रद्धा रखने के लिए हमें उस स्रोत का सम्मान करना चाहिए जहाँ से प्रशंसा और निंदा आती है, और मैं एक असंगत आलोचक का सम्मान नहीं करता। वह कहता है, "यदि जेन आयर एक महिला की रचना है, तो वह एक ऐसी महिला होनी चाहिए जो स्त्रीत्व से रहित हो।"

‘ऐसे में तो यह किताब एक सरासर गलती है और इसकी कड़ी निंदा की जानी चाहिए। जेन आयर एक महिला की आत्मकथा है, और स्पष्ट रूप से एक महिला द्वारा लिखी गई है। अगर इसे इस तरह लिखा गया है जैसे कोई महिला नहीं लिखती, तो इसकी पूरी दृढ़ता से निंदा करें—इसे बुरा कहें, लेकिन प्रशंसा करने के बाद आलोचना न करें। मुझे इकोनॉमिस्ट अखबार याद आता है। उस अखबार के साहित्यिक आलोचक ने अगर किताब किसी पुरुष द्वारा लिखी गई होती तो उसकी प्रशंसा की होती, और अगर वह किसी महिला की रचना होती तो उसे “घृणित” बताया होता।’

ऐसे आलोचकों से मैं कहना चाहूँगा, “आपके लिए मैं न तो पुरुष हूँ और न ही स्त्री – मैं आपके समक्ष केवल एक लेखक के रूप में उपस्थित हूँ। यही एकमात्र मापदंड है जिसके आधार पर आपको मेरा मूल्यांकन करने का अधिकार है – यही एकमात्र आधार है जिस पर मैं आपके निर्णय को स्वीकार करता हूँ।”

एलिस और एक्टन बेल की रचनाओं पर की गई टिप्पणी कमजोर है, उसमें न तो न्याय का कोई दावा है और न ही विवेक का। आलोचक को यह पता नहीं था कि वे

लेखक इस दुनिया से विदा हो चुके हैं। मेरी दोनों बहनों के निधन के बाद से मैंने कोई ऐसी समीक्षा नहीं पढ़ी जिसे मैं उन्हें पढ़ने की कामना करती—यहां तक कि कोई भी ऐसी समीक्षा नहीं जिसने उनके जाने के दुख को मेरे लिए सहनीय न बनाया हो। खुद की प्रशंसा उनसे अधिक सुनना क्रूरतापूर्ण था, उनके गुणों को उनके वास्तविक स्वरूप से इतना विपरीत बताया जाना लगभग असहनीय था। यह दुख अब भी होता है; लेकिन वे इस दुनिया से इतनी दूर हैं, इसके उथल-पुथल से इतनी सुरक्षित हैं, कि मैं इसे बेहतर ढंग से सहन कर सकती हूँ।

लेकिन अब मुझे एक बात पर असुरक्षा महसूस होती है: मुझे दुख होगा अगर मेरे कारण मेरे पिता की मन की शांति भंग हो; इसीलिए मैं अपने लेखक होने की बात उनसे यथासंभव छिपाकर रखती हूँ। मैंने हमेशा उन्हें जेन आयर की सफलता का सावधानीपूर्वक संशोधित और हल्का-फुल्का विवरण दिया है—ठीक उतना ही जितना उन्हें प्रसन्न करे, बिना चौंकाए। महीने में एक बार भी हम दोनों के बीच इस किताब का ज़िक्र नहीं होता। मैंने क्वार्टरली पत्रिका को अपने तक ही सीमित रखा—इससे पापा चिंतित हो जाते। उसी क्वार्टरली पत्रिका के बारे में मुझे अपनी वर्तमान रचना की प्रस्तावना में लिखना है—बस एक छोटा सा शब्द। मुझे याद है, आपने एक बार कहा था कि वह समीक्षा एक महिला ने लिखी थी—मिस रिग्बी। क्या आप इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हैं?

‘त्रैमासिक पत्रिका से थोड़ी बातचीत करने के मेरे इरादे का ज़रा भी संकेत न दें। पहले से इसका ज़िक्र करना बहुत महत्वपूर्ण लगेगा। सभी योजनाएँ बिना शोर-शराबे के ही बनाई और कार्यान्वित की जाती हैं। विश्वास कीजिए, आपका सादर,’

‘सी. बी.’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

21 अगस्त, 1849।

'मेरे प्रिय महोदय, - मैं इस समय केवल संक्षेप में ही लिख सकता हूँ - सबसे पहले आपके रोचक पत्र और उसमें वर्णित उस पड़ोस के सजीव वर्णन के लिए धन्यवाद देने के लिए जहाँ आप रह रहे हैं, और फिर पुस्तक के शीर्षक के बारे में निर्णय लेने के लिए।'

अगर मुझे ठीक से याद है, तो मेरे कॉर्नहिल आलोचकों ने हॉलो मिल पर आपत्ति जताई थी, और अब मुझे भी यह नाम उचित नहीं लगता। इसे फील्डहेड कहना ज़्यादा

सही रहेगा, हालाँकि मुझे लगता है कि शर्ली शायद सबसे अच्छा नाम होगा। मुझे लगता है कि शर्ली इस रचना में सबसे प्रमुख और विलक्षण चरित्र बनकर उभरी है।

कॉर्नहिल को फील्डहेड और शर्ली में से किसी एक को चुनना पड़ सकता है। - यकीन मानिए, आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

मिस रिग्बी (बाद में लेडी ईस्टलेक) का प्रसिद्ध क्वार्टरली रिव्यू लेख दिसंबर 1848 में 'वैनिटी फेयर, जेन आयर और गवर्नेस' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। यह दो उपन्यासों और स्कूलों पर एक शोधपत्र की समीक्षा थी, और एक-दो आपत्तिजनक अंशों को छोड़कर इसे काफी प्रशंसनीय माना जा सकता था। जेन आयर को थैकरे की महान कृति के साथ जोड़ना, ऐसे समय में जब थैकरे साहित्यिक जगत में पहले ही एक वीर के रूप में स्थापित हो चुके थे, अपने आप में एक प्रशंसा थी। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह अटकलें लगाई गईं कि क्वार्टरली के संपादक जे. जी. लॉकहार्ट ने स्वयं ही इस लेख में कटुता भरी बातें लिखी थीं। वे कभी-कभी ऐसा कर भी सकते थे। हालांकि, अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि ऐसा नहीं था। मिस रिग्बी वह समीक्षक थीं जिन्होंने यह सुझाव देना एक आलोचक का अधिकार समझा कि लेखिका एक ऐसी महिला हो सकती हैं 'जिन्होंने अपने स्त्री समाज को खो दिया हो'। लॉकहार्ट ने समीक्षा को शायद जल्दबाजी में पढ़ा होगा, जैसा कि संपादक कभी-कभी करते हैं। लेख प्रकाशित होने से पहले, 13 नवंबर, 1848 को उन्होंने अपने सहयोगी को लिखा: —

लगभग तीन साल पहले मुझे 'कुरर, एक्टन और एलिस बेल की कविताएँ' नामक एक छोटी सी किताब मिली, साथ ही कुरर का एक अजीब सा छोटा सा नोट भी मिला, जिसमें उन्होंने लिखा था कि किताब एक साल पहले प्रकाशित हुई थी और केवल दो प्रतियाँ ही बिकी थीं, इसलिए बाकी को जला दिया गया था, लेकिन कुछ प्रतियाँ बाँटी गईं, जिनमें से एक मेरी थी। मुझे इस सप्ताह के 'स्पेक्टेटर' में उस छोटी सी किताब की एक निष्पक्ष समीक्षा मिली है; कृपया उसे देखें।

मुझे लगता है कि कुरेर की कविताएँ एक्टन और एलिस की कविताओं से कहीं बेहतर हैं, और मेरा मानना है कि उनका उपन्यास उन उपन्यासों से कहीं बेहतर है जो उन्होंने हाल ही में प्रकाशित किए हैं।

'मैं लेखकों के बारे में कुछ नहीं जानता, लेकिन आम धारणा यह है कि वे

लंकाशायर के किसी कस्बे में बुनकरों के धंधे से जुड़े भाई हैं। पहले तो आम तौर पर कहा जाता था कि कुरेर एक महिला थीं, और मेफेयर ने उन्हें श्री थैकरे की प्रिय मित्र बताकर इस बात को और पुख्ता कर दिया। लेकिन “पोशाक” के बारे में आपकी जानकारी से लिंग का सवाल हल हो जाता है। हालांकि, मुझे लगता है कि जेन आयर के स्कूली दृश्यों में किसी महिला ने जरूर मदद की होगी, जो मुझे – मैं मानता हूँ कि ऐसे मामलों में मैं अनभिज्ञ हूँ – बेहद सच्चाई से भरे लगते हैं।’

'मेरा सुझाव है कि आप एक्टन और एलिस बेल के उपन्यासों पर एक नज़र डाल लें - वुदरिंग हाइट्स उनमें से एक है। अगर मैनचेस्टर में आपका कोई दोस्त है, तो मुझे लगता है कि इन लेखकों की स्थिति के बारे में सटीक जानकारी प्राप्त करना आसान होगा।'

यह नवंबर में लिखा गया था, और लेख दिसंबर तक प्रकाशित नहीं हुआ था। जेन आयर की लेखिका के नैतिक मूल्यों पर लगाए गए आपत्तिजनक आरोपों के अलावा, जो तब तीखे अपमान में बदल जाते हैं जब यह समझा जाता है कि मिस रिग्बी को पूरा विश्वास था कि लेखक एक पुरुष था, समीक्षा में एक नए लेखक के लिए कुछ सकारात्मक पहलू भी हैं। जेन आयर और वैनिटी फेयर की 'समान लोकप्रियता' का उल्लेख किया गया है। समीक्षक आगे लिखते हैं, 'एक बहुत ही उल्लेखनीय पुस्तक; हमें ऐसी कोई दूसरी पुस्तक याद नहीं है जिसमें इतनी स्पष्ट शक्ति के साथ इतना घिनौना स्वाद हो।' शार्लोट ब्रोंटे की प्रबल रूढ़िवादी भावनाओं और चर्च के माहौल पर विचार करते हुए, निम्नलिखित में एक हास्यपूर्ण विडंबना है: —

'हम यह कहने में संकोच नहीं करते कि जिस मानसिकता और विचार ने सत्ता को उखाड़ फेंका है, विदेशों में हर मानवीय और दैवीय नियम का उल्लंघन किया है, और देश में चार्टिज्म और विद्रोह को बढ़ावा दिया है, वही मानसिकता और विचार जेन आयर की रचना में भी सहायक रहे हैं।'

एक अन्य अंश में, मिस रिग्बी, लेखक के पुरुषत्व पर विचार करते हुए, अंततः एक प्रकार के प्रमाणों के माध्यम से अपने तर्कों को पुष्ट करती हैं।

कोई भी महिला शिकार को सजाने और मिठाई बनाने के लिए एक ही हाथों का इस्तेमाल नहीं करती, न ही एक ही सांस में ऐसा करने की बात करती है। सबसे बढ़कर, कोई भी महिला दूसरी महिला को जेन की सहेलियों की तरह इतने शानदार कपड़े नहीं पहनाती। मिस इंग्राम आसमानी नीले क्रेप के मॉर्निंग रोब में बेहद आकर्षक

लग रही थीं, उनके बालों में एक नीला जालीदार स्कार्फ लिपटा हुआ था!! हमें पता चला है कि कोई भी महिला रात में अचानक जागने पर "एक फ्रॉक" पहनने के बारे में नहीं सोचेगी। उनके पास ऐसे मौकों के लिए अधिक सुविधाजनक और अधिक शालीन वस्त्र होते हैं।

वुथरिंग हाइट्स को 'इतना घृणित और निंदनीय रूप से मूर्तिपूजक' बताया गया है कि यह अंग्रेजी पाठकों के सबसे भ्रष्ट वर्ग को भी स्वीकार्य नहीं है। यह निस्संदेह मिस रिग्बी का संशोधन था, जो उन्होंने अपने संपादक के इस सुझाव के जवाब में किया था कि उन्हें 'एक्टन और एलिस बेल के उपन्यासों पर एक नज़र डालनी चाहिए।' क्वार्टरली के संपादक की कार्यप्रणाली, या वास्तव में मिस रिग्बी को लिखे उस पत्र को समझना थोड़ा मुश्किल है, जिसका मैंने उल्लेख किया है, क्योंकि उन्होंने कई महीने पहले ही पुस्तक के बारे में एक बिल्कुल अलग राय बना ली थी। 'मैंने मिस जेन आयर के कारनामों को पूरा कर लिया है,' वे श्रीमती होप को लिखते हैं (29 दिसंबर, 1847), 'और मुझे लगता है कि ऑस्टेन और एजवर्थ के अपने चरम पर रहने के बाद से वह सबसे बुद्धिमान लेखिका हैं, पचास ट्रोलोप और मार्टिन्यू के बराबर, पचास डिकेंस और बुलवर के साथ - लेकिन वह कुछ ज्यादा ही बेशर्म हैं।'

जब क्वार्टरली रिव्यू प्रकाशित हुआ, तब शार्लेट ब्रोंटे, जैसा कि हम देख चुके हैं, घरेलू संकट से जूझ रही थीं। कई महीनों बाद, जब जेन आयर के नए संस्करण के प्रकाशन की योजना बनी, तब उन्होंने अपने प्रकाशकों से एक प्रभावी जवाब की आवश्यकता पर चर्चा की, जिसमें हालांकि उनके स्त्रीत्व और परिवेश का खुलासा न हो। 'क्वार्टरली के लिए एक संदेश' नामक प्रारंभिक प्रस्तावना रद्द कर दी गई, और कुछ वाद-विवाद के बाद, वर्तमान प्रस्तावना को उसके स्थान पर रखा गया। 'पुस्तक' का अर्थ है शर्ली।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

29 अगस्त, 1849।

महोदय, — पुस्तक अब पूरी हो चुकी है (ईश्वर का धन्यवाद) और श्री टेलर के पास भेजने के लिए तैयार है, लेकिन अभी तक उनसे कोई सूचना नहीं मिली है। मुझे लगा था कि मैं बता पाऊँगा कि यह जेन आयर के बराबर है या नहीं, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता — यह बेहतर भी हो सकती है, बदतर भी। मैं आपकी राय जानने के लिए उत्सुक हूँ, मेरी अपनी राय का कोई महत्व नहीं है। मैं आपके अवलोकन के लिए

प्रस्तावना या “त्रैमासिक पत्रिका के लिए संदेश” भेज रहा हूँ।

‘अब इस काम का जो भी अंजाम हो, इसे लिखने का काम मेरे लिए वरदान साबित हुआ है। इसने मुझे अंधकारमय और निराशाजनक वास्तविकता से निकालकर एक अवास्तविक लेकिन सुखद दुनिया में पहुँचा दिया। सबसे बुरी बात यह है कि मेरी आँखें थोड़ी कमजोर हो गई हैं और मेरा सिर थोड़ा थका हुआ और लगातार काम करने से दर्द करने लगा है। जब तक आप विषय में पूरी तरह से लीन नहीं हो जाते, तब तक आप कुछ भी सार्थक नहीं लिख सकते, और जब आप ऐसा करते हैं, तो भूख और नींद दोनों कम हो जाती हैं - यह अपरिहार्य है।’

श्री स्मिथ इस पुस्तक को कब प्रकाशित करने का इरादा रखते हैं? अब यह उनकी है। मैं इसे और सारी मेहनत, देखभाल और चिंता उन्हें सौंपता हूँ - अच्छा हुआ कि इससे छुटकारा मिल गया, बस काश यह उनके पास ही होती। - आपका सादर,

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

31 अगस्त, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, मैं अपनी प्रस्तावना नहीं बदल सकती। मैं जनता के सामने आंसू नहीं बहा सकती, न ही जनता के कानों में कोई विलाप कर सकती हूँ। हमारे घरेलू जीवन की गहरी, वास्तविक त्रासदी अभी भी मेरे मन और स्मृति में ताज़ा है। यह उदासीन लोगों से बात करने का समय नहीं है; यह मुद्रित रूप में उल्लेख करने का विषय नहीं है।

‘तिमाही पत्रिका पर मैं अपना कोई आक्रोश नहीं प्रकट कर सकता। मैं बस उस पर हल्की सी व्यंग्यात्मक टिप्पणी ही कर सकता हूँ। यकीन मानिए, मेरे प्रिय महोदय, “सी. ब्रोंटे” का यहाँ कोई ज़िक्र नहीं होना चाहिए; वह क्या महसूस करती हैं या क्या महसूस करती थीं, यह सवाल नहीं है – सवाल तो “कुरर बेल” का है, जिनका अपमान हुआ है – उन्हें जवाब देना होगा। श्री स्मिथ निडर होकर मेरे द्वारा भेजी गई प्रस्तावना को छाप दें – इस बार मुझ पर भरोसा करें; भले ही मैं नाकाम साबित हो जाऊँ, उनका गिरना खतरनाक नहीं होगा: प्रस्तावना लिखना छोटी सी दूरी है, तीन खंडों जितना बड़ा काम नहीं।’

मुझे हमेशा से यह दृढ़ विश्वास रहा है कि किसी लेखक के लिए अपने व्यक्तिगत दुखों या पीड़ाओं के बारे में जनता को संबोधित करते समय शोकपूर्ण लहजा अपनाना

एक घोर त्रुटि है। जनता को उससे एक व्यक्ति के रूप में क्या लेना-देना? उसकी पीड़ाएँ तो उनके लिए मनोरंजन का साधन हैं; उसके दुख तो उबाऊ होंगे। जो हम गहराई से महसूस करते हैं, वह हमारा अपना है - हमें उसे अपने तक ही सीमित रखना चाहिए। एलिस और एक्टन बेल मेरे लिए एमिली और ऐनी थीं; मेरी बहनें - मेरे लिए अत्यंत प्रिय, बेहद प्यारी - जनता के लिए वे कुछ भी नहीं थीं - कुछ भी नहीं से भी बदतर - ऐसे लोग जिन पर अटकलें लगाई गईं, जिन्हें गलत समझा गया, गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया। यदि मैं जीवित रहा, तो शायद वह घड़ी आएगी जब मुझे उनके बारे में बोलने की प्रेरणा मिलेगी, लेकिन अभी वह समय नहीं आया है। - प्रिय महोदय, आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

17 सितंबर, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, आपका पत्र पढ़कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। एक लेखक जिसने अपनी पुस्तक किसी को नहीं दिखाई, योजना, विषय, पात्रों या घटनाओं के बारे में किसी से परामर्श नहीं किया, किसी जीवित व्यक्ति से राय नहीं ली और न ही उससे कोई राय प्राप्त की, बल्कि उसे अपने मस्तिष्क की मौन कार्यशाला में गुप्त रूप से गढ़ा — ऐसा लेखक उस क्षेत्र में अपनी रचना की पहली प्रतिक्रिया की एक विलक्षण भावना के साथ प्रतीक्षा करता है जिस पर वह भरोसा करता है, और वास्तव में वह तब प्रसन्न होता है जब वह प्रतिक्रिया अनुकूल सिद्ध होती है।

'क्या आपको लगता है कि यह पुस्तक इस धारणा को मजबूत करेगी कि कुरेर बेल एक महिला हैं, या यह इसके विपरीत राय का समर्थन करेगी?'

मैंने प्रूफ शीट वापस कर दी हैं। क्या वे सभी फ्रांसीसी वाक्यांशों को इटैलिक में छापेंगे? मुझे उम्मीद है कि ऐसा नहीं होगा, इससे वे कुछ हद तक भद्दे और ध्यान खींचने वाले लगते हैं।

मेरे पास और कुछ लिखने का समय नहीं है, कहीं ऐसा न हो कि पोस्ट के लिए बहुत देर हो जाए। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

10 सितंबर, 1849।

“प्रिय महोदय, आपकी सलाह बहुत अच्छी है, फिर भी मैं उसका पालन नहीं कर सकता: मैं अब बदल नहीं सकता। यह बेतुका लगता है, लेकिन यही सच है।”

शर्ली का इस मामले पर घबरा जाना शायद अटपटा लगे क्योंकि मुझे डर है कि इसे ठीक से संभाला नहीं गया है; वरना यह बिल्कुल स्वाभाविक है। ऐसे लोगों में, ऐसे अजीबोगरीब बिंदु, ऐसी विचित्र, अप्रत्याशित, असंगत कमजोरियाँ पाई जाती हैं—शायद कोई भी उत्साही कवि, चाहे कितना भी स्वस्थ क्यों न हो, इनसे पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकता; लेकिन वे मजबूरी में ही इन्हें प्रकट करते हैं, उन्हें शक होता है कि यह डर बेतुका है, और वे इसे छिपाए रखते हैं। फिर भी, मामला ठीक से संभाला नहीं गया है, और मैं अपना सिर झुकाकर धैर्यपूर्वक उस बात को स्वीकार करता हूँ, जिसके मैं यहाँ हकदार हूँ—आलोचना की मार। जब यह पड़ेगी तो मैं सहम जाऊँगा, लेकिन चीखूँगा नहीं।

'गॉथ के बारे में आप बिल्कुल सही हैं, आप एकदम सही हैं - वह स्पष्ट, गंभीर हैं, लेकिन बहुत ठंडे स्वभाव के हैं। मैं उन्हें महान मानता हूं, लेकिन उनमें सौम्यता की भावना नहीं महसूस कर सकता।'

आपने साहित्यिक मंडलों का जिक्र किया। सच कहूँ तो, मैं उनसे दूर भागता हूँ, हालाँकि मैं कुछ वास्तव में महान साहित्यिक हस्तियों से मिलने के लिए तरसता हूँ। लेकिन अभी यह संभव नहीं है—मैं अपनी पहचान गुप्त रखने का त्याग नहीं कर सकता। और मुझे एकांत से संतुष्ट रहने दीजिए—इसके अपने फायदे हैं। वास्तव में, मैं आमतौर पर शांत रहता हूँ, बस कभी-कभार ही एक संघर्ष मुझे विचलित करता है—कि मैं हॉवर्थ से परे एक व्यापक दुनिया की कामना करता हूँ। जब वह संघर्ष बीत जाता है, तो मेरा विवेक मुझे बताता है कि मैं किसी भी भिन्न चीज़ के लिए कितना अनुपयुक्त हूँ। आपका सादर,

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

15 सितंबर, 1849।

महोदय, आपने कहा था कि शर्ली की फ्रेंच भाषा पर आपत्ति जताई जा सकती है। उस अध्याय में, जिसका शीर्षक "Le coeval damped" है, फ्रेंच भाषा में लिखा एक लंबा पैराग्राफ है। मुझे उसका क्रमांक याद नहीं है। मुझे डर है कि वह दिखावटी लगेगा। यदि आप उचित समझें और अध्याय लौटा दें, तो मैं उसे मिटाकर उसके स्थान

पर अंग्रेजी में कुछ और लिख दूँगा। आपका सादर,

‘सी. ब्रोंटे।’

जेम्स टेलर, कॉर्नहिल को

20 सितंबर, 1849।

'मेरे प्रिय महोदय, अब समय आ गया है कि मैं उस पत्र का उत्तर दूं जो मुझे पिछले गुरुवार को आपसे प्राप्त हुआ था; यदि घर में एक पादरी की उपस्थिति और हमारे एक नौकर की अस्वस्थता के कारण मैं सामान्य से अधिक व्यस्त न होता तो मैं इसका उत्तर पहले ही दे देता।'

जैसा कि आप समझ सकते हैं, मुझे यह जानकर बहुत खुशी और उत्साह हुआ कि कॉर्नहिल में मेरे दोस्तों की राय शर्ली के पक्ष में थी - कि कुल मिलाकर, इसे जेन आयर से कोई खास कमतर नहीं माना गया। हालांकि, मैं जनता से अनुकूल स्वागत की अत्यधिक आशा करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ: पूर्वाग्रह के बीज बोए जा चुके हैं, और मुझे लगता है कि उसका परिणाम तो भुगतना ही पड़ेगा - लेकिन देखते हैं।

मैंने 'फ्रेंड्स इन काउंसिल' को बड़े आनंद से पढ़ा और 'द थॉट्स एंड ओपिनियंस ऑफ अ स्टेट्समैन' को तो और भी अधिक आनंद से। यह एक ऐसे सुंदर मन का वर्णन है जिसे सत्यतः सुंदर कहा जा सकता है— शांत, सामंजस्यपूर्ण, उदात्त और पवित्र; यह एक ऐसे हृदय को भी दर्शाता है जो दया और सहानुभूति से परिपूर्ण है। मुझे यह बहुत पसंद आया।

“पापा पिछले सप्ताह से काफी स्वस्थ हैं, वे आपसे मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ देना चाहते हैं। — विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आपका अत्यंत स्नेही।”

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

29 सितंबर, 1849।

'प्रिय महोदय, मैंने परिवर्तन कर दिया है; लेकिन मैंने यह परिवर्तन कॉर्नहिल को प्रसन्न करने के लिए किया है, न कि जनता या आलोचकों को।'

मुझे यह कहते हुए खेद है कि न्यूबी मेरा असली नाम जानता है। काश वह न जानता, लेकिन अब कुछ नहीं किया जा सकता। इस बीच, हालांकि मैं अपनी पहचान गुप्त रखना चाहता हूं, मुझे पकड़े जाने का कोई डर नहीं है। मैंने जो कुछ भी लिखा है,

उस पर मुझे कोई शर्म नहीं है - एक पंक्ति पर भी नहीं।

“पहला प्रूफ और आपका पत्र जिस लिफाफे में था, वह जनरल पोस्ट ऑफिस में खुला हुआ प्राप्त हुआ था और वहीं उसे दोबारा सील कर दिया गया था। शायद यह एक संयोग था, लेकिन मुझे लगता है कि आपको इस बात की जानकारी देना बेहतर होगा। — आपका सादर,

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

1 अक्टूबर, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, लिफाफा खोले जाने से मुझे बहुत खेद है: मुझे लगता है कि यह किसी की ताक-झांक का काम है, और अब हंगामा करना बेकार है—जो भी गड़बड़ होने की आशंका थी, वह हो चुकी है। यह हॉवर्थ में नहीं हुआ। मैं वहाँ के डाकघर के लोगों को जानता हूँ, और मुझे यकीन है कि वे ऐसा कदम उठाने की हिम्मत नहीं करेंगे; इसके अलावा, हॉवर्थ के लोग मुझे बहुत पहले से ही किताबी और शांत स्वभाव का समझते हैं, और मेरे बारे में और कुछ नहीं पूछते। लेकिन छोटे कस्बों की गपशप और जिज्ञासा कीघली में चरम पर है; वहाँ के लोग यह समझ नहीं पा रहे हैं कि मैं कभी मिलने क्यों नहीं जाता, किसी से जान-पहचान क्यों नहीं बढ़ाता, और हमेशा घर पर ही क्यों रहता हूँ। डाक से आने-जाने वाले उन पैकेटों ने निस्संदेह उनकी जिज्ञासा को और बढ़ा दिया है। खैर, मुझे खेद है, लेकिन मैं धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने की कोशिश करूँगा और चाहे कुछ भी हो जाए, खुद को ज्यादा परेशान नहीं करूँगा।

मुझे खुशी है कि आपको फ्रेंच शब्द 'devour' के लिए अंग्रेजी विकल्प पसंद आया।

किताबों का पार्सल शनिवार को आ गया। मैंने श्री टेलर को इस पत्र के माध्यम से इसकी प्राप्ति की पुष्टि की है। शर्ली के बारे में उनकी राय काफी हद तक आपकी राय से मिलती-जुलती है, बस आपके विचारों में अंतर के कारण वे इसे आपसे थोड़ा अलग ढंग से व्यक्त करते हैं। क्या आप कुछ मामलों में उनसे असहमत नहीं हैं? — आपका सादर,

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

1 नवंबर, 1849

मेरे प्रिय महोदय, मैं कल घर पहुँचा और मुझे आपका पत्र, श्री लेवेस का पत्र और शांति कांग्रेस समिति का पत्र मिला। आखिरी पत्र का जवाब देना अब बहुत देर हो चुकी है, क्योंकि उसमें करर बेल को पिछले मंगलवार को एक्सेटर हॉल में हुई उनकी बैठक में मंच पर आने का निमंत्रण था! ऐसे हालात में श्री करर बेल का व्यक्तित्व कितना अद्भुत होता! अगर शांति कांग्रेस को शर्ली का पत्र पढ़ने का मौका मिला, तो वे इसके लेखक से अपना पल्ला झाड़ लेंगे।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि श्री थैकरे की तबीयत बेहतर है, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वे गंभीर रूप से बीमार थे, मुझे लगा था कि यह केवल साहित्यिक अस्वस्थता थी। अगर वे इस विषय पर आपको कोई राय दें तो मुझे जरूर बताएं।

मुझे यह जानकर भी खुशी हुई कि श्री स्मिथ इस कृति की व्यावसायिक संभावनाओं से संतुष्ट हैं। मैं इसके साहित्यिक भविष्य को लेकर चिंतित न होने की कोशिश करता हूँ; और यदि मैं पूरी तरह से संयमी नहीं हो सकता, तो मुझे लगता है कि मैं अब भी काफी हद तक संतुष्ट हूँ।

'श्री लेवेस को पहला अध्याय पसंद नहीं आया, जिसमें वे आपसे मिलते-जुलते हैं।'

मैंने खुद को पिछले सप्ताह अपनी मित्र एलेन के साथ बिताने का सौभाग्य दिया। उसका निवास स्थान इस इलाके की तुलना में कहीं अधिक आबादी वाला और चहल-पहल भरा है। जब भी मैं वहाँ जाता हूँ, मुझे अनिवार्य रूप से समाज में शामिल होना पड़ता है - मुख्य रूप से पादरी समाज में।

अपनी पिछली यात्रा के दौरान, मुझे अक्सर इस बात का डर सताता रहा है, कभी सुखद रूप में, कभी दुखद रूप में, कि अब मैं अदृश्य नहीं रह गई हूँ। ऐसा लगता है कि जेन आयर पूरे जिले में पढ़ी जा रही है—एक ऐसी बात जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी—एक ऐसी परिस्थिति जिसकी संभावना मेरे मन में कभी आई ही नहीं थी। कभी-कभी मुझे नए आदर और बढ़ी हुई दयालुता का सामना करना पड़ा: पुराने सहपाठियों और पुराने शिक्षकों ने भी मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया। और फिर, पादरियों की भौंहें मुझ पर गरज उठीं। जब मेरा सामना एक-दो हट्टे-कट्टे पादरियों से हुआ, तो मेरा मन किया कि उनसे बहस शुरू हो जाए। काश वे खुलकर अपनी बात कह देते। आपको यह नहीं समझना चाहिए कि मेरे सहपाठी और शिक्षक क्लर्जी डॉटर्स स्कूल के थे—वास्तव में, मैं वहाँ एक छोटी बच्ची के रूप में केवल एक साल के लिए ही गई थी। मुझे यकीन है कि मुझे लंबे समय से भुला दिया गया है; हालाँकि मुझे

स्वयं सब कुछ स्पष्ट रूप से याद है: बचपन की यादें कभी मिटती नहीं हैं।

मुझे अभी-अभी डेली न्यूज़ मिली है। सच कहूँ तो, इसे पढ़कर मेरा दिल बैठ गया। यह अच्छी समीक्षा नहीं है, यह सरासर झूठी है। अगर शर्ली सभी पाठकों को उसी तरह प्रभावित करती है जैसे उसने उस एक पाठक को किया है, लेकिन - मैं आगे की बात नहीं कहूँगा।

कुल मिलाकर, मुझे खुशी है कि पहले एक बेहद बुरी खबर आई है - एक ऐसी खबर जिसकी अवर्णनीय अज्ञानता पहले मुझे स्तब्ध कर देती है और फिर झकझोर देती है। क्या हेलस्टोन और यॉर्क जैसे लोग नहीं हैं?

'हां, वहां हैं।

क्या पहला अध्याय घृणित या अश्लील है?

'ऐसा नहीं है, यह वास्तविक है।'

'ऐसे आलोचक की प्रशंसा करना मुझे मूर्खतापूर्ण और घृणित लगता है, और मैं इसे तिरस्कार करता हूं।'

अगर मेरी बहनें अब जीवित होतीं तो हम दोनों इस सूचना पर हंसते; लेकिन वे सो रही हैं, वे मेरे लिए कभी नहीं जागेंगी, और मैं मूर्ख हूं जो ऐसी बात से इतना प्रभावित हो रहा हूं जो आह भरने के लायक भी नहीं है। — यकीन मानिए, आपका सच्चा,

‘सी. बी.

'अगर मैं जल्दबाज़ी में लगूँ तो मुझे माफ़ कर देना, मुझे डर है कि मैं अब उतना दृढ़ और धैर्यवान नहीं रहा जितना पहले हुआ करता था। जब भी कोई सदमा लगता है, मुझे ऐसा लगता है कि मुझसे लगभग सभी सहारे छीन लिए गए हैं।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

5 नवंबर, 1849।

“मेरे प्रिय महोदय, मुझे प्रतियों का पार्सल शनिवार शाम तक नहीं मिला। ब्रैडफोर्ड से भेजी गई हर चीज़ मुझ तक पहुँचने में बहुत समय लेती है। मुझे लगता है कि इसे कीघली को भेजना बेहतर होगा। मुझे पुस्तक का स्वरूप और लेआउट बहुत पसंद आया; यह देखने में अच्छी लग रही है।”

मुझे एग्जामिनर और आपका पत्र मिल गया है। आप बहुत अच्छे हैं कि आप मुझसे नाराज़ नहीं हैं, क्योंकि मैंने आक्रोश और दुःख में लिखा था। डेली न्यूज़ के आलोचक मुझे बेहद अयोग्य, अज्ञानी और तुच्छ लगे। उनकी छोटी सी रचना पढ़कर मेरे अंदर

विद्रोह की लहर दौड़ गई। ऐसे व्यक्ति द्वारा आंका जाना मुझे घृणित लगा। हालाँकि, मुझे खुद पर नियंत्रण रखना चाहिए था, लेकिन मैंने नहीं रखा। मैं एग्जामिनर द्वारा आंका जाने के लिए तैयार हूँ - मुझे एग्जामिनर पसंद है। फॉनब्लैंक में शक्ति है, उनमें विवेक है - मैं उनकी आलोचना को स्वीकार करता हूँ, उनकी प्रशंसा के लिए आभारी हूँ; उनकी आलोचना विचारणीय है; जब वे अनुमोदन करते हैं, तो मैं थोड़ा गर्व महसूस करता हूँ। क्या मेरा यह मानना गलत है कि वह आलोचना श्री फॉनब्लैंक ने लिखी है? लेकिन चाहे वह फॉनब्लैंक ने लिखी हो या फोर्स्टर ने, मैं आभारी हूँ।

अन्य लेखों की समीक्षाएँ पढ़ते समय—जब मुझे वे मिलेंगी—मैं आपकी सलाह का पालन करने और अपना धैर्य बनाए रखने की कोशिश करूँगा। लेकिन मैं ऐसा करने के बारे में आश्वस्त नहीं हो सकता, क्योंकि पहले मेरे अच्छे संकल्प और इरादे थे, और आप देख सकते हैं, मैं असफल रहा।

आप मुझसे पूछते हैं कि क्या मेरा नेल्सन से कोई रिश्ता है। नहीं, मैंने कभी नहीं सुना कि मेरा उनसे कोई रिश्ता है। यह अफवाह शायद हमारे नाम के उनके नाम से मिलते-जुलते होने के कारण फैली होगी। मुझे आश्चर्य है कि मेरी वह पूर्व सहपाठी कौन थी जिसने श्री लेवेस को यह बात बताई, या वह कैसे करर बेल को सी. ब्रोंटे समझ बैठी। वह कोवान ब्रिज की लड़की तो नहीं हो सकती, उनमें से कोई भी मुझे याद नहीं रख सकता। उन्हें मेरी सबसे बड़ी बहन मारिया याद हो सकती है; उनकी असाधारण बुद्धि, साथ ही उनके शांत स्वभाव, बुद्धिमत्ता और दृढ़ता ने शायद उनके साथियों में से किसी एक के मन पर अमिट छाप छोड़ी हो। मेरी दूसरी बहन एलिजाबेथ को भी शायद याद किया जाता हो, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैंने अपने पीछे कोई निशान छोड़ा है। मेरा जीवन बहुत शांत रहा। मैं मेहनती और लगनशील थी, शायद मैं बहुत गंभीर स्वभाव की थी, क्योंकि मैंने अपनी बहनों को मरते हुए देखा था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मुझमें कोई उल्लेखनीय बात थी। — विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आपकी सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

15 नवंबर, 1849।

'मेरे प्रिय महोदय, - मैंने पिछली बार लिखने के बाद से ग्लोब, स्टैंडर्ड ऑफ फ्रीडम, ब्रिटानिया, इकोनॉमिस्ट और वीकली क्रॉनिकल प्राप्त किए हैं।'

'शर्ली कैसी है, और काम को लेकर अब आम राय क्या है?'

अखबारों के लहजे से मुझे यही लगता है कि जेन आयर से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले लोग शर्ली से सबसे कम खुश हैं; उन्हें वैसी ही उत्तेजना, रुचि और प्रेरणा न मिलने से निराशा हुई है; जबकि जेन आयर की आलोचना करने वाले लोग शर्ली को अपने पूर्ववर्ती से थोड़ा बेहतर मानते हैं। शायद इसकी नीरस विषयवस्तु उनके नीरस मन को भाती है। लेकिन मुझे लगता है कि जिस फैसले का मैं इंतजार कर रहा हूं, वह अखबारों पर निर्भर नहीं करता, सिवाय एग्जामिनर जैसे अखबारों के। मुझे लगता है कि मासिक और त्रैमासिक पत्रिकाएं इसे सुना देंगी। यह स्पष्ट है कि केवल उपन्यास पढ़ने वाले लोग शर्ली को कुछ हद तक असफल मानते हैं। फिर भी, कुल मिलाकर अधिकांश समीक्षाएं अनुकूल रही हैं। स्टैंडर्ड ऑफ फ्रीडम में जो समीक्षा छपी थी, वह बहुत ही विनम्रतापूर्ण थी; और विलियम हॉविट जैसे असहमति जताने वाले लेखक की ओर से आई यह समीक्षा मुझे आश्चर्यचकित करती है।

"क्या आप कॉर्नहिल से संतुष्ट हैं, या इसके विपरीत? मैंने 'द कैक्सटन्स' का कुछ हिस्सा पढ़ा है, और पूरा पढ़ने के बाद मैं आपको अपनी राय बताऊंगा; इस बीच, मैं आपकी राय जानना चाहूंगा। शायद मैं अपनी राय आपसे मिलने तक, चाहे जब भी हो, अपने पास रखूं।"

मैं धीरे-धीरे इस विचार के लिए खुद को तैयार कर रही हूँ कि किसी दिन मैं कीघली जाऊँगी, वहाँ से ट्रेन लेकर लीड्स जाऊँगी, फिर वहाँ से लंदन जाऊँगी, और एक बार फिर स्ट्रैंड और कॉर्नहिल की अजीबोगरीब, चहल-पहल भरी दुनिया में कदम रखूँगी। मैं आपसे थोड़ी बात करना चाहती हूँ और यह जानना चाहती हूँ कि सब कुछ कैसा चल रहा है। जब भी मैं आऊँगी, चुपचाप और थोड़े समय के लिए ही आऊँगी— मैं पापा को दो सप्ताह से अधिक समय तक छोड़कर नहीं जा सकती।— विश्वास कीजिए, आपकी सच्ची,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

22 नवंबर, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, यदि किसी लेखक के लिए यह निराशाजनक होता है कि उसकी रचना को पूरी तरह से अज्ञानी और अयोग्य लोग खारिज कर दें, तो यह उतना ही उत्साहवर्धक होता है जब आपके लेखन पर किसी ऐसे आलोचक द्वारा चर्चा और

विश्लेषण किया जाता है जो अपने विषय का पारसक हो—ऐसा आलोचक जिसका हृदय उसे महसूस करता हो, जिसकी क्षमता उस विषय को गहराई से समझती हो जिस पर वह काम करता है। यूजीन फोरकेड ने मुझे ऐसा ही उत्साह प्रदान किया है। यदि मैं उस व्यक्ति से मिलूँ, तो मेरा मन करेगा, “महोदय, आप मुझे जानते हैं, आपसे मिलना मेरे लिए सम्मान की बात होगी।”

'मुझे नहीं लगता कि फोज़र्दि को इस कृति में कोई खुरदरापन नज़र आता है - यह तो छोटे आलोचकों का काम है। कला का उस्ताद - सूक्ष्म विचार वाला, पैनी नज़र वाला, तीव्र भावना वाला फ्रांसीसी, उस रचना के निर्माण में प्रयुक्त तत्वों की वास्तविक प्रकृति को जानता है जिसका वह विश्लेषण करता है - वह चीजों की वास्तविक प्रकृति को जानता है, और उन्हें उनका सही नाम देता है।'

कल का आपका पत्र अभी-अभी मुझे मिला है। सबसे पहले, मैं श्रीमती विलियम्स के बारे में आपकी चिंता के प्रति अपनी हार्दिक सहानुभूति व्यक्त करना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि जब अपनों को दुख और पीड़ा घेर लेती है, जब बीमारी जैसा दुखद मेहमान आकर घर में दस्तक देता है, तो कितना दुख होता है। मेरी दिली कामना है कि यह दुख जल्द ही आपके घर से दूर हो जाए।

सर जे. हर्शेल के पत्र के लिए धन्यवाद। यह जानकर खुशी हुई कि श्री टेलर स्वस्थ हो रहे हैं। हो सकता है कि उनके हाथ को पूरी तरह ठीक होने में अभी कुछ सप्ताह लगें, लेकिन उनका समग्र स्वास्थ्य सुधर रहा है, यह एक सुखद आश्चर्य है।

आज आपने जो पत्र भेजे, उनमें से एक, जिस पर “कुरर बेल” लिखा है, ने मुझे लगभग चौंका दिया। लेखक पहले अपने परिवार का वर्णन करता है, और फिर अपने बारे में बेहद स्पष्ट और बेबाक तरीके से लिखता है, हालांकि मेरे विचार से यह उतना आकर्षक नहीं है। वह शर्ली के बारे में बेतहाशा उत्साह से लिखता है, और अंत में कुरर बेल की खोज शुरू करने और उसे जल्द से जल्द ढूंढ निकालने के अपने दृढ़ संकल्प की घोषणा करता है। पत्र में एक शक्ति है - प्रतिभा; यह कई बार बहुत ही प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है। लेखक कुछ हद तक शेखी बघारते हुए कहता है कि उसे उच्च बौद्धिक योग्यताओं का स्वामी माना जाता है, लेकिन अगर मैं गलत नहीं हूं, तो वह एक ऐसे स्वभाव और आदतों को दर्शाता है जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। स्नेही, दयालु और मिलनसार होने का दावा करते हुए, वह अपने परिवार के केवल एक सदस्य के बारे में ही दयालुता से बात करता है। वह खुद को आलसी

और मनमौजी मानता है, लेकिन कहता है कि वह अध्ययनशील है और कुछ प्रभावों के प्रति आज्ञाकारी भी है। यह पत्र मुझे अन्य ऐसे ही पत्रों की तरह ही प्रभावित करता, लेकिन इसकी उग्रता और करर बेल को ढूंढने के इसके अप्रिय संकल्प के कारण ऐसा नहीं हुआ। इसे पढ़कर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं कोई जादूगर हूँ जिसने किसी आत्मा को जगा दिया हो और उसे शांत करना उसके लिए मुश्किल हो। लेकिन मैं इसके बारे में नहीं सोचूंगा। इस तरह का जोश अक्सर शब्दों में ही शांत हो जाता है।

आशा है कि आपकी पत्नी के स्वस्थ होने के साथ ही आपके घर में शांति बहाल हो गई होगी। आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

16 फरवरी, 1850।

प्रिय नेल, कल रात के खाने के तुरंत बाद, मैंने रसोई में एक तेज़, शोरगुल भरी आवाज़ सुनी जो श्री ब्रोंटे से मिलने की मांग कर रही थी। किसी को बैठक में बुलाया गया। थोड़ी देर बाद, शराब मंगाई गई। "कौन है, मार्था?" मैंने पूछा। "कोई व्यापारी है," उसने कहा। "मुझे यकीन है कि वह सज्जन नहीं है।" वह व्यक्ति लगभग एक घंटे तक रुका रहा और लगातार ऊँची, अभद्र भाषा में बातें करता रहा। चाय के समय मैंने पापा से पूछा कि कौन था। "अरे!" उन्होंने कहा, "कोई और नहीं, बल्कि ब्रैडफोर्ड के पादरी!" पापा ने उन्हें जलपान के लिए आमंत्रित किया था, लेकिन उस व्यक्ति ने ब्लैक बुल में अपना खाना मंगवाया था, और पापा से वहाँ जाकर उनके साथ शामिल होने के लिए बहुत आग्रह कर रहा था, और प्रलोभन के तौर पर एक बोतल, या अगर पापा चाहें तो, "हॉवर्थ की सबसे अच्छी शराब की दो या तीन बोतलें!" देने की पेशकश कर रहा था। उसने कहा कि वह ब्रैडफोर्ड से सिर्फ़ जगह देखने आया था, और वहाँ के प्राकृतिक नज़ारों से मंत्रमुग्ध हो गया था! उसने पापा से बड़े प्यार से कहा कि वे उससे मिलने आएं और अपनी बेटी को भी साथ लाएं!!! क्या आपको लगता है कि उसे किताबों के बारे में कुछ पता है? उसने तो किताबों का ज़िक्र तक नहीं किया। मैंने उसे देखा तक नहीं, उसकी कोट की पूंछ तक नहीं। मार्था ने कहा कि वह उससे ज़्यादा पादरी जैसा नहीं दिखता था। पापा ने उसे थोड़ा फटेहाल बताया, लेकिन कहा कि वह बहुत ही मिलनसार और दोस्ताना था। पापा ने हमेशा की तरह उससे सवालों की झड़ी लगा दी: उसकी आमदनी कितनी है, वगैरह-वगैरह। उम्र के बारे में पूछे जाने पर उसने खुद को

सैंतीस साल का बताया - क्या यह झूठ नहीं है? उसकी उम्र इससे ज़्यादा होनी चाहिए। पापा ने उससे पूछा कि क्या वह शादीशुदा है। उसने कहा नहीं, उसका शादी करने का कोई इरादा नहीं है, उसे पत्नी की झंझट पसंद नहीं है। उसने खुद को "शानदार ज़िंदगी जीने वाला और बहुत मेहमाननवाज़ घर चलाने वाला" बताया।

'प्रिय नेल, मैंने तुम्हें एक लंबा पत्र लिखा है; तुम भी मुझे जवाब में एक लंबा पत्र लिखो।'

'सी. बी.'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

3 अप्रैल, 1850।

“मेरे प्रिय महोदय, मुझे डबलिन रिव्यू और आपका पत्र मिला है जिसमें आपने इंडियन नोटिसेस संलग्न किए हैं। मुझे आशा है कि ये समीक्षाएँ उपयोगी साबित होंगी; ये सभी अनुकूल हैं, और उनमें से एक (डबलिन) बहुत ही सराहनीय है। मैंने रेव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस के बाद से इतनी विवेकपूर्ण आलोचना नहीं पढ़ी है। यह एडिनबर्ग में लेवेस की समीक्षा से बिल्कुल विपरीत है, जहाँ बनावटी प्रशंसा, जो मूर्खों द्वारा दी गई थी और स्पष्ट रूप से वास्तविक और हार्दिक पसंद के बिना थी, और अशिष्ट, अभिमानी और अज्ञानी निंदा, बेतरतीब ढंग से मिली हुई थी - जिससे एक बहुत ही ढीला और असंगत समग्र रूप बन गया था।”

क्या आपको पता है कि बंगाल हरिकारू में छपी उस अटकल के पीछे कोई ठोस वजह है या नहीं, जिसमें कहा गया है कि टाइम्स में छपी आलोचना श्री ठाकरे ने लिखी थी? मैं यह जानना चाहता हूँ। अगर ऐसा है (और मुझे लगता है कि यह नामुमकिन नहीं है), तो इससे एक बेहद विचित्र स्वभाव की एक अनोखी और दिलचस्प झलक मिलेगी। क्या आपको लगता है कि यह सच हो सकता है?

श्रीमती विलियम्स के स्वास्थ्य के बारे में आपने जो जानकारी दी है, वह उत्साहजनक नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि उनकी अस्वस्थता का कुछ कारण मौसम में होने वाले बदलाव हैं; कम से कम, अगर लंदन में भी वैसी ही भीषण ठंड और ठंडी पूर्वी हवाएँ चली हों, जैसी यॉर्कशायर में हाल ही में चली हैं। मुझे उम्मीद है कि अब जो सुहावना तापमान है, उससे उनके स्वास्थ्य में शीघ्र सुधार होगा। श्रीमती विलियम्स को शुभकामनाओं सहित, — विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आपका सादर।

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

25 अप्रैल, 1850।

मेरे प्रिय महोदय, मैं श्री स्मिथ को आपके माध्यम से ग्रीनवुड के आवेदन का सहृदय उत्तर देने के लिए धन्यवाद दिए बिना यह पत्र नहीं छोड़ सकता; और मुझे पूरा विश्वास है कि आप और वह दोनों ही यह देखकर अत्यंत प्रसन्न होंगे कि इन उदार शर्तों ने एक भले और बुद्धिमान, यद्यपि गरीब व्यक्ति के मन में कितनी खुशी और आशा जगाई है। उन्हें लगता है कि अब उन्हें अपनी आजीविका कमाने का एक ऐसा तरीका नज़र आ रहा है जो ऊन कंघी करने के काम से कहीं अधिक उनके लिए उपयुक्त होगा, उनकी क्षमताओं का अधिक उपयोग करेगा और उनके स्वास्थ्य को भी लाभ पहुँचाएगा। मुझे पूरा विश्वास है कि वे जेन आयर के सस्ते संस्करण की बिक्री बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे; और हॉवर्थ और कीघली के सभी सम्मानित लोगों के पास उस कृति के होने के विचार से मुझे जो भी चिंता हो, वह इससे होने वाले लाभ के सामने फीकी पड़ जाती है; मेरा अर्थ है, उस व्यक्ति को मिलने वाली सहायता जो सहायता का पात्र है। मेरी इच्छा है कि वे हॉवर्थ में स्थायी रूप से एक छोटा सा पुस्तक विक्रय व्यवसाय स्थापित कर लें: इससे उस स्थान के साथ-साथ उन्हें भी लाभ होगा।

‘लीडर के लिए धन्यवाद, जिसे मैंने बड़े आनंद से पढ़ा। पिछले अंक में न्यूमैन के काम की समीक्षा बहुत अच्छी थी। — कृपया मेरी बात मानें, मैं जल्दबाजी में लिख रहा हूँ, आपका सादर।’

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

6 मई, 1850।

“मेरे प्रिय महोदय, मुझे जेन आयर की प्रति प्राप्त हुई है। मुझे इसकी छपाई और कागज काफी अच्छे लग रहे हैं। क्या आम जनता भी यही राय नहीं रखती? और क्या आप इस विषय पर बेवजह परेशान नहीं हो रहे हैं?”

'मुझे लगता है कि जब तक किसी को बताया न जाए, तब तक कुछ ही लोग टाइपोग्राफी की खामियों को खोज पाएंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि छपाई की कला में तकनीकी खामियां और खूबियां होती हैं, जिन्हें प्रिंटर और प्रकाशक अधिकांश

पाठकों की तुलना में अधिक महत्व देते हैं।'

मैं श्री स्मिथ के सस्ते प्रकाशनों से संबंधित प्रस्ताव का उल्लेख ग्रीनवुड से करूंगा। मेरा मानना है कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जिस पर प्रोत्साहन व्यर्थ नहीं जाएगा, और जो, यदि भाग्य बिल्कुल प्रतिकूल न हो, तो अपनी बुद्धिमत्ता और दृढ़ता के बल पर कुछ न कुछ कर दिखाएगा।

मुझे यह बताते हुए खेद है कि मेरे पिताजी की तबीयत हाल ही में ठीक नहीं है—ठंड ने उन्हें बहुत परेशान किया है; और जब तक मैं उन्हें ठीक नहीं देख लेता, तब तक शहर की मेरी नियोजित यात्रा स्थगित करनी पड़ेगी। आपको और कॉर्नहिल के अन्य मित्रों को हार्दिक शुभकामनाएँ—प्रिय महोदय, आपका विश्वासपात्र।

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

5 सितंबर, 1850।

मेरे प्रिय महोदय, मुझे आशा है कि मिस कावानाघ के हित में आपका सुझाव पूरी तरह सफल होगा। यह मुझे वास्तव में उपयुक्त और उत्कृष्ट लगता है, और मुझे पूरा विश्वास है कि उन्हें भी ऐसा ही लगेगा। नारी चरित्र का यह अंतिम वर्ग संभालना कठिन होगा: इसमें सूक्ष्म पहलू होंगे - फिर भी, यदि इसे अच्छी तरह से संभाला जाए, तो इससे एक आकर्षक और शिक्षाप्रद पुस्तक का निर्माण हो सकता है। इस योजना के क्रियान्वयन में एक बात निश्चित है। मिस कावानाघ स्वाद, विवेक या सिद्धांत के मामले में कोई गलती नहीं करेंगी; और जब वे भावनाओं से निपटेंगी, तब भी मैं उनकी शांत कलम के संयमित प्रवाह का अनुसरण करना पसंद करूंगा, बजाय किसी ऐसे लेखक की अनावश्यक अलंकरणों के, जिसमें संयम की शक्ति और प्रेरणा का जोश दोनों ही न हों।

मुझे डर है कि झील के नज़ारे की सुंदरता के बारे में मेरी बातें आपको कुछ ठंडी लगीं। सच तो यह है कि नज़ारा वाकई अद्भुत था—स्कॉटलैंड में मैंने जो कुछ भी देखा, उससे कहीं बेहतर; लेकिन मुझे उतना आनंद नहीं मिला, क्योंकि मैंने उसे उतने अनुकूल परिस्थितियों में नहीं देखा था। श्री स्मिथ और सर जे. के. शटलवर्थ दो अलग-अलग व्यक्तित्व हैं जिनके साथ यात्रा करना एक अनोखा अनुभव है। श्री स्मिथ के बारे में तो मुझे कुछ कहने की ज़रूरत ही नहीं—आप उन्हें जानते ही हैं। सर जे. शटलवर्थ ने मुझे अपनी मित्रता का प्रस्ताव दिया है, और मैं इस उपहार के लिए

आभारी होने की पूरी कोशिश करता हूँ; लेकिन उनका स्वभाव ऐसा है जिसके साथ तालमेल बिठाना मुश्किल है—और जहाँ तालमेल ही नहीं, वहाँ सच्ची श्रद्धा कैसे हो सकती है? उनके स्वभाव का नौवां हिस्सा व्यावहारिक है—दसवां हिस्सा कलात्मक है। उनके स्वभाव का यह दसवां हिस्सा मुझे बाकी सभी हिस्सों से विरोधाभासी लगता है—यह उन्हें कलाकारों की ओर थोड़ा सा झुकाव तो देता है, लेकिन उन्हें उनमें से एक बनाने के लिए बहुत कम है। मुझे लगता है कि जिन चीजों की वे प्रशंसा करते हैं, उन्हें न कर पाने की वजह से उनमें कड़वाहट पैदा हो जाती है—यह उन्हें पूर्णता पर संदेह करने और कमियों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर करती है। फिर उनकी उपस्थिति या ध्यान से शायद ही कोई सहज या प्रसन्न हो पाता है: वे सांसारिक और औपचारिक हैं। लेकिन मुझे रुकना होगा—क्या मैंने पहले ही बहुत कुछ कह दिया है? मुझे नहीं लगता, क्योंकि आपको लगेगा कि यह बात गोपनीय रूप से कही गई है और आप इसे दोहराएंगे नहीं।

पैलेडियम में छपा लेख वाकई सौ प्रतिकूल या मूर्खतापूर्ण समीक्षाओं का प्रायश्चित कर देता है। मैंने इस विषय पर श्री टेलर को अपने विचार बता दिए हैं, जिन्होंने कृपा करके मुझे इस विषय पर पत्र लिखा। समाचार पत्रों में प्रकाशित सूचनाओं और कुछ सप्ताह पहले भेजी गई सूचनाओं के लिए भी मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।

'मैं आपके सुझावों पर अमल करना चाहूँगा, जिसमें वुदरिंग हाइट्स और एग्नेस ग्रे को एक ही खंड में पुनर्मुद्रित किया जाए, साथ ही लेखकों के बारे में एक प्रस्तावना और व्याख्यात्मक सूचना भी हो; लेकिन सवाल उठता है, क्या न्यूबी इसे स्वीकार करेंगी? मैं इसे श्री स्मिथ के अलावा किसी और के हाथों में सौंपने का साहस नहीं कर सकता। वाइल्डफेल हॉल को संरक्षित करना मुझे उचित नहीं लगता। उस कृति में विषय का चुनाव एक गलती थी: यह सौम्य, एकांतप्रिय और अनुभवहीन लेखिका के चरित्र, रुचियों और विचारों से बिल्कुल मेल नहीं खाता था। उन्होंने इसे एक कठिन तपस्या और गंभीर कर्तव्य को पूरा करने की एक अजीब, कर्तव्यनिष्ठ, अर्ध-तपस्वी भावना के तहत लिखा था। कर्मों और विचारों में लगभग निर्दोष होने के बावजूद, उनके मन में बचपन से ही धार्मिक उदासी की एक झलक थी। मुझे हमेशा से इसका संदेह था, और मुझे उनके कागजात में इसके दुखद प्रमाण मिले हैं। अतिरिक्त रचनाओं के बारे में, मुझे लगता है कि कोई नहीं होगी, क्योंकि मैं प्रकाशन के लिए एक भी पंक्ति नहीं देना चाहूँगा जिसका मेरी बहनें स्वयं विरोध करतीं।'

मुझे अब अपनी बात समाप्त करनी होगी, अन्यथा मुझे पोस्ट मिलने में बहुत देर हो जाएगी। — विश्वास कीजिए, आपका सादर,

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

13 सितंबर, 1850।

मेरे प्रिय महोदय, श्री न्यूबी ने पहले तो वुदरिंग हाइट्स की 350 प्रतियां छापने का वादा किया था, लेकिन बाद में उन्होंने कहा कि उन्होंने केवल 250 प्रतियां ही छापी हैं। मुझे संदेह है कि उन्हें 50 पाउंड वापस करने के लिए बहुत अधिक परेशानी के बिना राजी किया जा सकेगा - जो कि श्री स्मिथ को सौंपने के लिए मेरे लिए उचित नहीं होगा। जहाँ तक मेरा सवाल है, श्री न्यूबी के मेरी बहनों के प्रति पूरे व्यवहार से मैंने यही निष्कर्ष निकाला है कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जिससे कम से कम संपर्क रखना ही बेहतर है। मुझे लगता है कि वह ज़रूरतमंद होने के साथ-साथ धूर्त भी है - और यदि वह ऐसा है, तो कोई भी अपने अधिकारों के लिए भी उसे परेशान नहीं करेगा।

'यदि श्री स्मिथ वुदरिंग हाइट्स और एग्नेस ग्रे को पुनर्प्रकाशित करना उचित समझते हैं, तो मैं एक प्रस्तावना तैयार करूँगा जिसमें लेखकों का संक्षिप्त और सरल परिचय होगा, जिससे उनकी पहचान के संबंध में सभी गलत धारणाओं को दूर किया जा सके - और प्रत्येक के कुछ काव्यात्मक अंश भी शामिल होंगे।'

यदि यह व्यवस्था स्वीकृत हो जाती है, तो कृपया मुझे सूचित करें, और मैं कार्य शुरू कर दूंगा (यह दुखद है, लेकिन मुझे विश्वास है कि यह आवश्यक है), और पूरा होने पर इसे भेज दूंगा। — आपका सादर, महोदय।

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

16 अक्टूबर, 1850।

महोदय, कुल मिलाकर शायद प्रस्तावना का अंतिम अनुच्छेद हटा देना ही बेहतर है, क्योंकि मेरा मानना है कि उसे सर्वोत्तम ढंग से व्यक्त नहीं किया गया था। हालाँकि, आपको अपने सुझाव के लिए क्षमा मांगने की आवश्यकता नहीं है - यह सद्भावना से दिया गया था और, मेरा विश्वास कीजिए, इसे सद्भावना से लिया गया; मैंने आपको गलत नहीं समझा - एक पल के लिए भी नहीं, मैं आपको कभी गलत नहीं समझता - मैं आलोचकों और जनता के बारे में सोच रहा था, जो फरीसियों की तरह नैतिक

उपदेश की मांग करते रहते हैं। क्या यह आश्वासन आपको पूरी तरह संतुष्ट करता है?

मैं यह कहना भूल गया था कि मैंने पहले मिस मार्टिन्यू से और बाद में सिडनी येन्डिस के एक घनिष्ठ मित्र (जिनका असली नाम श्री डोबेल है) के माध्यम से सुना था कि पैलेडियम में प्रकाशित उस प्रभावशाली लेख के लिए हम रोमन के लेखक के ऋणी हैं। मुझे खुशी है कि आप उनकी कविता भेजने जा रहे हैं, क्योंकि मैं उसे देखने के लिए बहुत उत्सुक था।

क्या आप प्रस्तावना में लिखे एक वाक्य पर ध्यान देंगे जिसे मैंने मिटा दिया है, क्योंकि उसे दोबारा पढ़ने पर मुझे उसमें प्रयुक्त अभिव्यक्तियों की वैज्ञानिक शुद्धता के बारे में पूरी तरह से संदेह हुआ। मुझे पता है कि धातु गैल्वेनिक क्रिया के संपर्क में आने पर चमकीले रंग की लौ में जलती है, लेकिन क्या वह पूरी तरह से भस्म हो जाती है, यह मुझे निश्चित नहीं है। शायद आप या श्री टेलर मुझे बता सकें कि प्रयुक्त शब्द में कोई त्रुटि है या नहीं - यदि नहीं, तो इसे वैसे ही रहने दिया जा सकता है। - आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

ऐसा प्रतीत होता है कि मिस ब्रोंटे ने अपने तीसरे उपन्यास, विलेट के संबंध में श्री विलियम्स के बजाय श्री जॉर्ज स्मिथ के साथ पत्राचार किया था, और वह पत्राचार श्रीमती गैस्केल की जीवनी में पाया जा सकता है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

1 फरवरी, 1851।

मेरे प्रिय महोदय, मैं आपको यह बताने में जरा भी देर नहीं करना चाहता कि आपके पत्र ने मुझे अत्यंत संतोष और राहत प्रदान की है, जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। वास्तव में, मुझे जो बात परेशान कर रही है, वह कोई और पुस्तक प्रकाशित करने, जनता के सामने अपना नाम लाने, धन प्राप्त करने आदि की मेरी अपनी चिंता नहीं है, बल्कि यह भय है कि मेरी विलंबता दूसरों को निराश कर रही है। अब, जिन "अन्य" लोगों की इस विषय पर इच्छा मेरे लिए वास्तव में मायने रखती है, वे मेरे पिता और कॉर्नहिल हैं, और चूंकि कॉर्नहिल बिना किसी हिचकिचाहट के मुझे अपना समय लेने की सलाह देते हैं, इसलिए मुझे लगता है कि मैं अपने प्रिय पिता की स्वाभाविक अधीरता को शांत कर सकता हूँ। वास्तव में, आपका दयालु और मैत्रीपूर्ण पत्र मेरे लिए बहुत सहायक होगा।

उपरोक्त लिखने के बाद, मैंने पापा को लिखा आपका पत्र पढ़ा। आपके तर्कों का उन्होंने समर्थन किया: वे सहमत हैं, और मैं संतुष्ट हूँ। अब मुझे केवल पैलेडियम को निराश करने की मजबूरी का अफसोस है, लेकिन इसमें कुछ नहीं किया जा सकता। — अलविदा, मेरे प्रिय महोदय, आपका अत्यंत स्नेही।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

मंगलवार की सुबह।

प्रिय एलेन, - विलेट के बारे में आम राय के प्रति आपका जो निराशावादी दृष्टिकोण है, उससे मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, प्रिय नेल, क्योंकि आपके पास केवल प्रतिकूल समीक्षाएँ ही आई हैं। मुझे कुछ अलग राय वाली रिपोर्टें मिली हैं; लेकिन कोई बात नहीं, समय ही बताएगा। लूसी स्नो के चरित्र के बारे में, मेरा इरादा शुरू से ही यह था कि उसे वह दर्जा न दिया जाए जिस पर कुछ नासमझ प्रशंसकों ने जेन आयर को पहुँचा दिया था। वह वहीं है जहाँ मैं उसे रखना चाहता था, और जहाँ उस पर आत्म-प्रशंसा का कोई आरोप नहीं लग सकता।

मैं आपका निमंत्रण स्वीकार नहीं कर सकता। मुझे ईस्टर पर घर पर रहना होगा, दो-तीन कामों के सिलसिले में, जिनमें प्रवचन देना, पादरियों का स्वागत करना, मैकेनिक्स इंस्टीट्यूट की बैठकें और चाय-पार्टी शामिल हैं। मैंने श्रीमती गैस्केल से मिलने जाने का वादा भी किया है; लेकिन जब तक यह सर्दी का मौसम बीत नहीं जाता, मैं कहीं भी जाना नहीं चाहता। मुझे उम्मीद है कि आपकी सर्दी ठीक हो गई है और आप आगे अपना ख्याल रखेंगे। रात का काम हमेशा जोखिम भरा होता है। आपका विश्वासपात्र

'सी. ब्रोंटे।'

मिस वूलर को

हॉवर्थ, 13 अप्रैल, 1851।

प्रिय मिस वूलर, आपके पिछले स्नेहपूर्ण पत्र का उत्तर बहुत पहले ही दे देना चाहिए था, और दे भी दिया जाता, यदि मैं अपने पत्र-व्यवहारियों और उनके संदेशों को जो महत्व देता हूँ, उसके अनुरूप उत्तर देने में तत्परता बरत पाता। यद्यपि आप आसानी से समझ सकती हैं कि अक्सर इसके विपरीत ही होता है, और आग्रहपूर्ण पत्र अक्सर रुचिकर पत्र की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

मेरे प्रकाशक विलेट को मिली प्रतिक्रिया से पूरी तरह संतुष्ट हैं, और वास्तव में अधिकांश समीक्षाएँ अनुकूल रही हैं; हालाँकि, आप जानते होंगे कि एक अल्पसंख्यक वर्ग है, जो संख्या में तो छोटा है लेकिन प्रभावशाली है, जो इस कृति को अनुकूल दृष्टि से नहीं देखता। कुरेर बेल की रोमनवाद पर की गई टिप्पणियों ने उन्हें हाई चर्च पार्टी के घोर असंतोष का शिकार बना दिया है, जिसे उन्होंने अपने प्रमुख प्रकाशनों - द गार्जियन, द इंग्लिश चर्चमैन और द क्रिश्चियन रिमेंबरेंसर - के माध्यम से स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि उन प्रकाशनों द्वारा मुझ पर लगाए गए कुछ आरोप अधिकांश पाठकों के मन में मेरी छवि को और खराब करेंगे - लेकिन इसे सहन करना होगा; और जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं किसी भी ऐसे आरोप को अपने ऊपर हावी नहीं होने दे सकता जो अंतरात्मा और तर्क के आंतरिक प्रमाणों से समर्थित न हो।

कहावत है, “अतिवादी आपस में टकराते हैं”; इसके प्रमाण स्वरूप मैं यह उल्लेख करना चाहूँगा कि मिस मार्टिन्यू को विलेट में लगभग वही दोष नज़र आता है जो पुसेईवादियों को। वह मुझ पर पोपवाद पर “तीव्रतापूर्वक हमला करने” और “भावुकता से” उस पर आक्रमण करने का आरोप लगाती हैं। अन्य मामलों में, उन्होंने इस रचना के संबंध में इतना विचित्र और अप्रत्याशित कटु रवैया दिखाया है कि मुझे हिम्मत जुटाकर उनसे कहना पड़ा कि उनके और मेरे बीच आपसी मतभेदों की खाई इतनी चौड़ी और गहरी है, एकता का पुल इतना कमज़ोर और अनिश्चित है, कि मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि बार-बार मिलना-जुलना अत्यंत खतरनाक और अनुचित होगा, और मैंने उनसे अपनी लंबे समय से नियोजित यात्रा को अनिश्चित काल के लिए स्थगित करने का अनुरोध किया है। बेशक, अब वह बहुत क्रोधित हैं, और मैं जानता हूँ कि उनकी कड़वाहट क्षणिक नहीं होगी—लेकिन इसका कोई उपाय नहीं है।

श्री व्हाइट का एक लंबा और स्नेहपूर्ण पत्र प्राप्त हुए दो-तीन सप्ताह हो गए हैं, जिसका उत्तर मैंने कुछ समय पहले दिया था। मेरा मानना है कि श्री व्हाइट मुझे परिवर्तन और तथाकथित "राजनीतिक प्रगति" का मुझसे कहीं अधिक प्रबल समर्थक समझते हैं। हालांकि, अपने उत्तर में मैंने इन विषयों का उल्लेख नहीं किया। उन्होंने अपनी कुछ पांडुलिपियों को प्रकाशित करने की इच्छा व्यक्त की है। मुझे डर है कि मेरे उत्तर का कुछ हद तक हतोत्साहित करने वाला लहजा उन्हें शायद पसंद न आए; लेकिन वास्तव में, आज के इस तीव्र प्रतिस्पर्धा के दौर में प्रकाशन करना एक बड़ा

जोखिम है। यदि सब ठीक रहा, तो मैं अगले सप्ताह श्रीमती गैस्केल के साथ कुछ दिन बिताने के लिए मैनचेस्टर जाने का इरादा रखता हूँ। एलेन की यार्माउथ यात्रा फिलहाल रद्द हो गई है; और वास्तव में, सभी बातों पर विचार करें तो, मुझे लगता है कि इस बात का कोई अफसोस नहीं है।

"क्या आपको नहीं लगता, मेरी प्यारी मिस वूलर, कि आप समुद्र तट पर जाने से पहले हॉवर्थ आ सकती हैं? मुझे डर है कि एक बार जब आप समुद्र तट पर बस जाएंगी, तो आपका प्रवास संक्षिप्त नहीं होगा। मैं फिर से कहना चाहता हूँ कि आपके आगमन की प्रतीक्षा न केवल मुझे, बल्कि हॉवर्थ पार्सनेज के प्रत्येक निवासी को अत्यंत प्रसन्नता होगी। पापा ने मुझे यह आदेश दिया है कि जब भी मैं लिखूँ, आपको उनका प्रणाम भेजूँ - इसलिए, इसे स्वीकार करें, और - विश्वास करें, आपका स्नेही और सच्चा।"

'सी. ब्रोंटे।'

अध्याय 14: विलियम स्मिथ विलियम्स

शार्लोट ब्रोंटे के संक्षिप्त करियर के दौरान उनके आसपास के लोगों के समूह को समझने के लिए, श्री विलियम स्मिथ विलियम्स को विशेष सम्मान देना अत्यंत आवश्यक है, जो उनके जीवन के अंतिम वर्षों में उनके सबसे घनिष्ठ पत्र-व्यवहारकर्ता थे। श्री विलियम्स को लिखे गए पत्र शार्लोट के सबसे बेहतरीन लेखन हैं, कम से कम उन पत्रों में जो आज तक संरक्षित हैं। ये पत्र साहित्यिक उत्साह और बौद्धिक रुचि से परिपूर्ण हैं। ये शार्लोट ब्रोंटे के विवेक और उदार हृदय को जीवनीकारों द्वारा उपलब्ध

कराई गई किसी भी अन्य सामग्री से कहीं अधिक प्रभावी ढंग से दर्शाते हैं। ये पत्र लेखक और प्राप्तकर्ता दोनों के लिए सम्मान की बात हैं, और वास्तव में, ये दोनों के विचारों को समान रूप से प्रतिबिंबित करते हैं। शार्लोट ने इस बात पर जोर दिया है कि उन्होंने अपने पत्र-व्यवहारकर्ताओं के अनुरूप खुद को ढाला, और श्री विलियम्स को लिखे उनके पत्रों में हम उन्हें उनके सर्वोत्तम रूप में पाते हैं। श्री विलियम्स ने कई वर्षों तक स्मिथ एंड एल्डर फर्म में 'रीडर' के पद पर कार्य किया। यह पद स्वयं लेखन से कम सम्मानजनक और महत्वपूर्ण नहीं है। हमारे समय में श्री जॉर्ज मेरेडिथ और श्री जॉन मोर्ले 'रीडर' रहे हैं, और श्री जेम्स पेन ने उस फर्म में यही पद संभाला है जिसने ब्रोंटे के उपन्यासों को प्रकाशित किया था।

श्री विलियम्स, जिनका जन्म 1800 में हुआ और निधन 1875 में हुआ, का स्मिथ एंड एल्डर से जुड़ने से पहले भी एक रोचक करियर था। अपने युवावस्था में उन्होंने फ्लीट स्ट्रीट के टेलर एंड हेसी में प्रशिक्षु के रूप में काम किया; और वे अक्सर बताते थे कि कैसे महान वक्ता कोलरिज की भारी-भरकम आकृति को पहली बार देखकर उनके बचपन के कोलरिज के आदर्श चकनाचूर हो गए थे। जब कीट्स इंग्लैंड छोड़कर रोम चले गए, तो श्री विलियम्स ही उन्हें विदा करने गए थे। हेज़लिट, ली हंट और कई अन्य प्रसिद्ध साहित्यकार श्री विलियम्स के बचपन से ही मित्र थे, और उनके बहनोई वेल्स थे, जो 'जोसेफ एंड हिज ब्रेथ्रेन' के लेखक थे। स्मिथ एंड एल्डर के साथ अपने जुड़ाव के दौरान उन्होंने थैकरे, श्रीमती गैस्केल और कई अन्य लेखकों की मित्रता प्राप्त की। टर्नर के कार्यों के प्रति उनके तीव्र उत्साह ने रस्किन का ध्यान आकर्षित किया। दरअसल, उन्होंने ही जॉन रस्किन के लेखन से चुने गए उस अत्यंत रोचक संग्रह का संकलन किया था, जो अपने मूल रूप में अब उपलब्ध नहीं है, लेकिन जिज्ञासु पाठकों द्वारा आज भी इसकी बहुत खोज की जाती है। इस संग्रह के संदर्भ में, मैं यहाँ जॉन रस्किन के पिता द्वारा श्री विलियम्स को लिखा गया एक पत्र प्रकाशित करना चाहूँगा, और ऐसा करना इसलिए भी उचित है क्योंकि श्री विलियम्स का नाम संग्रह के शीर्षक पृष्ठ से हटा दिया गया था।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

डेनमार्क हिल, 25 नवंबर, 1861।

'मेरे प्रिय महोदय, श्रीमती रस्किन ने मुझसे अनुरोध किया है कि मैं उनके पुत्र की रचनाओं के चयन की इतनी सुंदर जिल्द वाली प्रति भेंट करने के लिए आपकी

दयालुता के लिए उनका हार्दिक और कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद व्यक्त करूं; और जिसे देखकर उन्हें उन शानदार पुस्तकों के साथ बहुत प्रसन्नता होगी जिनसे आपके घर के सज्जनों की उदारता ने पहले ही हमारे पुस्तकालय को समृद्ध कर दिया है।'

श्रीमती रस्किन आपके द्वारा चुने गए उत्कृष्ट निर्णय के लिए आपको बधाई देती हैं, और श्रीमती रस्किन को दिए गए सुंदर उपहार के लिए मैं और मेरे बेटे की ओर से धन्यवाद देते हैं। — प्रिय महोदय, आपका अत्यंत सच्चा मित्र।

'जॉन जेम्स रस्किन।'

श्री विलियम्स के बारे में शार्लोट ब्रोंटे के विचार उन असंख्य पत्रों से स्पष्ट होते हैं जिन्हें छापने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है, और यह बात स्पष्ट है कि उनके प्रति कृतज्ञता का उनका एक कारण था, क्योंकि उन्हें पहली पहचान उन्हीं से मिली थी। 'द प्रोफेसर' नामक पुस्तक का पार्सल कई प्रकाशकों के पास भटकने के बाद श्री विलियम्स के हाथों में पहुँचा था। उन्होंने ही वह बात पहचानी जो हम सभी अब पहचानते हैं, कि कमियों के बावजूद यह वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। मेरा मानना है कि स्मिथ एंड एल्डर ने इसे किसी अन्य कारण से नहीं बल्कि इसकी अपर्याप्त लंबाई के कारण अस्वीकार किया था। खैर, अस्वीकृति का कारण यही बताया गया था कि इसकी लंबाई ही अस्वीकृत की गई थी। उन्हें बताया गया था कि एक अन्य पुस्तक, जो तीन खंडों वाले उपन्यास की मान्यता प्राप्त श्रेणी में आती, उसे शायद अधिक अनुकूल प्रतिक्रिया मिले।

शार्लोट ब्रोंटे ने श्री विलियम्स की सलाह मानी। उन्होंने जेन आयर लिखी और उसे तुरंत कॉर्नहिल स्थित स्मिथ एंड एल्डर के घर भेज दिया। इसे श्री विलियम्स ने पढ़ा और बाद में श्री जॉर्ज स्मिथ ने भी पढ़ा; और यह प्रकाशित हुई और हमें इसकी अपार सफलता का पता चला। शार्लोट ने जागकर खुद को प्रसिद्ध पाया। वह श्री विलियम्स के साथ नियमित रूप से पत्र व्यवहार करने लगीं और उन्हें सौ से कम पत्र नहीं भेजे, जिनमें से अधिकांश रोचक साहित्यिक विषयों पर आधारित थे।

मैं आपको बताना चाहूँगी कि श्री विलियम्स की एक बेटी ने चित्रकार श्री लोव्स डिकेंसन से शादी की थी; उनकी सबसे छोटी संतान, जो मिस ब्रोंटे के समय शिशु थी, संगीत जगत में मिस अन्ना विलियम्स के नाम से प्रसिद्ध है। परिवार का साहित्यिक और कलात्मक संबंधों का व्यापक प्रभाव है, लेकिन पिता को हम शार्लेट ब्रोंटे के मित्र और पत्र-व्यवहारकर्ता के रूप में जानते हैं। वे आज भी एक बड़े समूह की स्मृतियों में

एक दयालु और आकर्षक व्यक्ति के रूप में बसे हुए हैं - एक असाधारण रूप से अच्छे और ईमानदार व्यक्ति के रूप में।

निम्नलिखित पत्रों पर टिप्पणी करना लगभग हर मामले में अनावश्यक है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

25 फरवरी 1848।

मेरे प्रिय महोदय, आपके पत्र के लिए धन्यवाद; इसकी सामग्री ने मुझे बहुत प्रभावित किया, हालांकि पूरी तरह से खुशी नहीं हुई। लुई फिलिप (दुखी और नीच बूढ़ा आदमी!) और एम. गुइज़ोट निस्संदेह उस कठोर सबक के पात्र हैं जो उन्हें अब सिखाया जा रहा है, क्योंकि दोनों ने स्वयं को बेईमान साबित कर दिया है। और स्वतंत्रता और सत्य के लिए कोई भी राष्ट्र जो संघर्ष करता है, उसमें कुछ महानता होती है - कुछ ऐसा जो मुझे उसकी सफलता की कामना करने के लिए प्रेरित करता है; लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता कि फ्रांस - या कम से कम पेरिस - कभी भी सच्ची स्वतंत्रता का युद्धक्षेत्र या उसकी वास्तविक विजय का स्थल होगा। मुझे डर है कि वह नहीं जानती कि "वास्तविक गौरव कैसे दिखाया जाता है।" क्या उसमें वह शक्ति पाई जा सकती है जो "केवल उदार नम्रता" के आगे न झुके? क्या उसके "लगातार बदलावों" ने अभी तक हमेशा "शाश्वत शून्यता" ही नहीं लाई है? क्या पेरिस में पूर्ण सुधार के लिए पर्याप्त सामर्थ्य है? नीच, बेईमान गुइज़ोट को हटाए जाने के बाद, प्रतिभाशाली, सिद्धांतहीन थियर्स से बेहतर उत्तराधिकारी क्या मिल सकता है?

लेकिन मैं आपके उत्साह को कम कर रहा हूँ, जो मैं नहीं करना चाहूँगा, क्योंकि सच्चा उत्साह एक बेहतरीन भावना है जिसकी चमक की मैं जहाँ भी देखता हूँ, प्रशंसा करता हूँ।

आपके पत्र के साथ संलग्न छोटा सा पत्र एक फ्रांसीसी महिला का है, जो जेन आयर के फ्रांसीसी अनुवाद के लिए मेरी सहमति मांग रही हैं। उत्तर देने से पहले आपसे परामर्श करना मुझे बेहतर लगा। मुझे लगता है कि वह एक अच्छा अनुवाद करने में सक्षम हैं, हालांकि उनके पत्र में वर्तनी की एक-दो गलतियाँ थोड़ी अटपटी हैं; लेकिन मैं जानता हूँ कि सुशिक्षित मानी जाने वाली फ्रांसीसी महिलाओं के लिए भी अपनी मातृभाषा को सही ढंग से न लिख पाना कोई असामान्य बात नहीं है। लेकिन चाहे वह सक्षम हों या न हों, मुझे लगता है कि उन्हें मेरी सहमति से या बिना सहमति के भी पुस्तक का अनुवाद करने का अधिकार है। उन्होंने अपना पता दिया है: मैडम बी

- - डब्ल्यू. कमिंग, एस्क्वायर, 23 नॉर्थ बैंक, रीजेंट्स पार्क।

क्या मुझे उसके नोट का जवाब हां में देना चाहिए?

आपके विचार और उत्तर की प्रतीक्षा में, मैं आपका विश्वासपात्र बना रहूँगा, महोदय।

'सी. बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

28 फरवरी, 1848।

'प्रिय महोदय, मैंने मैडम बी के संबंध में आपकी सलाह के अनुसार कार्य किया है,' उन्होंने उनकी शिष्टाचार के लिए धन्यवाद दिया और स्पष्ट किया कि मैं नहीं चाहता कि मेरी सहमति को अनुवाद की औपचारिक स्वीकृति के रूप में माना जाए।

शनिवार के अखबारों से मुझे लुई फिलिप के पदत्याग, शाही परिवार के पलायन और फ्रांस में गणतंत्र की घोषणा के बारे में पता चला। ये घटनाएँ बहुत तेज़ी से घटीं, और दूर से देखने वाले के लिए इनमें से कुछ को समझना मुश्किल था। लुई फिलिप की शक्ति किस जादू से कमज़ोर हो गई? इतने लंबे समय तक गुइज़ोट के प्रति आसक्ति से चिपके रहने के बाद, उन्होंने अचानक इतनी नीचता से उसे क्यों त्याग दिया? क्या यह घबराहट थी जिसने उन्हें इतनी अचानक अपना सिंहासन छोड़ने और अपने समर्थकों को बिना किसी संघर्ष के त्यागने पर मजबूर कर दिया?

शायद इसमें कुछ डर भी शामिल था, लेकिन मैं कह सकता हूँ कि यह राजशाही के खतरों और कठिनाइयों से लंबे समय से चली आ रही थकान का ही नतीजा था। बूढ़े सम्राट के भागने पर शायद ही कोई उन पर तरस खाएगा, फिर भी मैं मानता हूँ कि वे मुझे दया के पात्र लगते हैं। उनकी बहन की मृत्यु ने उन्हें झकझोर दिया; उम्र का बोझ उन पर भारी है; उनके सिर पर लंबे समय से तलवार लटक रही है। यह नहीं भूलना चाहिए कि सम्राट और मंत्री भी इंसान ही होते हैं, और उनके पास भी इंसानी ताकत ही होती है; और अक्सर वे बुरी तरह से घिरे रहते हैं। दलीय भावना में कोई दया नहीं होती; उग्र स्वतंत्रता अपने विद्रोह के समय में शायद ही कभी सहनशीलता दिखाती है। काश आप उस बूढ़े सज्जन को अपने छाते और थैले के साथ कॉर्नहिल से नीचे उतरते हुए देख पाते; वे इंग्लैंड में सुरक्षित होते: जॉन बुल उन पर हँस सकता था, लेकिन उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता था।

अंतरिम सरकार के सदस्यों की सूची में साहित्यिक और वैज्ञानिक नामों को देखना

कितना अजीब लगता है! अगर कार्लाइल, सर जॉन हर्शेल, टेनीसन, श्री थैकरे और डगलस जेरोल्ड को इंग्लैंड के लिए एक नया संविधान बनाने के लिए चुना जाता तो कैसा लगता? क्या ऐसे लोग जनता के मत को सबसे प्रभावी ढंग से अपने शांत अध्ययन कक्ष से प्रभावित कर सकते हैं या किसी परिषद कक्ष से?

'और थियर्स को कुछ समय के लिए दरकिनार कर दिया गया है; लेकिन क्या वे आगे चलकर उससे खुश नहीं होंगे? क्या वे उसके जैसे चतुर, सूक्ष्म, कुशल और महत्वाकांक्षी व्यक्ति को पूरी तरह से दरकिनार कर सकते हैं? क्या वह सही समय का इंतजार करने वाला व्यक्ति नहीं है—जो अकुशल सिद्धांतकारों को प्रशासन में हाथ आजमाते और असफल होते देखे; और फिर आगे बढ़कर उन्हें दिखाए कि इसे कैसे किया जाना चाहिए?'

'कोई सोच सकता है कि थियर्स जैसे दिमाग के लिए राजनीतिक अशांति स्वाभाविक तत्व है'; लेकिन मैं उनके बारे में उनके लेखन के अलावा कुछ नहीं जानता, और मुझे हमेशा लगता है कि वे ऐसे लिखते हैं मानो बोनापार्ट की आत्मा उनके पीछे कमरे में इधर-उधर घूम रही हो और उनकी हर पंक्ति को निर्देशित कर रही हो, कभी-कभी पास आकर उनके कंधे पर झुककर यह देखने के लिए कि कोई भी क्रिया या घटना ठीक उसी तरह से प्रस्तुत या विकृत (जैसा भी मामला हो) हो जैसा वे चाहते हैं। ऐसा लगता है कि थियर्स ने नेपोलियन के चरित्र का इस हद तक अध्ययन किया है कि उन्होंने उसके कुछ गुणों को आत्मसात कर लिया है। निश्चित रूप से वे एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे, और यदि ऐसा है, तो निश्चित रूप से इस समय वे उत्थान के लिए संघर्ष कर रहे होंगे।

"आपको अपनी 'अशिष्टता' के लिए माफी नहीं मांगनी चाहिए। आप जानते हैं कि मुझे उन विषयों पर आपकी राय और विचार सुनना पसंद है जिन पर चर्चा करना आपको रुचिकर लगता है।"

आपके पत्र के बाहर लिखे छोटे से संदेश से मुझे यह समझ आया कि आपने मुझे 'एग्ज़ामिनर' भेजा था। इसलिए मैं आपके इस नेक इरादे के लिए आपका आभारी हूँ और मुझे खेद है कि डाकघर में किसी बेईमान व्यक्ति ने इसे नाकाम कर दिया, क्योंकि मुझे कोई पत्र नहीं मिला। मेरा मानना है कि हमें शुक्रगुजार होना चाहिए कि पत्रों का सम्मान किया जाता है, क्योंकि समाचार पत्रों की सुरक्षित डिलीवरी की कोई गारंटी नहीं होती। आपका सादर, महोदय।

‘सी. बेल।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

12 मई, 1848।

'मेरे प्रिय महोदय, मैं एक बड़ा कागज़ का पन्ना लेता हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं एक और लंबा पत्र लिखने वाला हूँ, और पहले वाले कारण से ही, यानी कि आपके पत्र ने मुझे रुचिकर लगा दिया है।'

मुझे मॉर्निंग क्रॉनिकल मिला है, और इसके एक प्रमुख लेख में आपके द्वारा वर्णित अंश को देखकर मैं आश्चर्यचकित और प्रसन्न दोनों हुआ। इस तरह का उल्लेख एक सामान्य सूचना से कहीं अधिक अर्थपूर्ण प्रतीत होता है। मुझे आशा है कि भविष्य में मैं इस तरह लिख पाऊंगा कि जेन आयर की प्रशंसा करने वाले सभी लोगों को निराश न करूं; कम से कम, मैं प्रयास करूंगा। लेकिन फिर भी, जब भी मैं अपनी एकमात्र पुस्तक की प्रशंसा सुनता हूं, तो मेरी खुशी संदेह और भय के मिश्रण से कम हो जाती है; और सच कहूं तो, मैं ऐसा ही चाहता हूं: मेरे लिए अभी सुरक्षित महसूस करना या इस प्रशंसा को अपना हक समझना बहुत जल्दबाजी होगी।

आपके पिछले पत्र में शिक्षण पर की गई कुछ टिप्पणियों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। मुझे लगता है कि आपने स्वयं कभी अध्यापन नहीं किया होगा; लेकिन यदि आप करते, तो आप इस कार्य के लिए आवश्यक सबसे महत्वपूर्ण योग्यता—मैंने लगभग कहा था कि एकमात्र महत्वपूर्ण योग्यता—को इससे बेहतर ढंग से नहीं बता सकते थे: न केवल ज्ञान प्राप्त करने की बल्कि उसे प्रदान करने की क्षमता—युवा मनों को प्रभावित करने की शक्ति—बच्चों के प्रति वह स्वाभाविक स्नेह, वह सहज सहानुभूति, जो, जैसा कि आपने कहा है, श्रीमती विलियम्स के पास सौभाग्य से है। जिस किसी के पास यह क्षमता, यह सहानुभूति होती है—भले ही वह अन्य रूप से अत्यधिक निपुण न हो—उसे शिक्षण के क्षेत्र में असफलता का कभी भय नहीं होना चाहिए। बच्चे उनके प्रति आज्ञाकारी होंगे, उनके मार्गदर्शन में सीखेंगे; परिणामस्वरूप माता-पिता उन पर भरोसा करेंगे। उनका कार्य अपेक्षाकृत आसान होगा, उनका मार्ग अपेक्षाकृत सुगम होगा। यदि यह क्षमता अनुपस्थित है, तो एक शिक्षक का जीवन शुरू से अंत तक संघर्षपूर्ण होगा। चाहे स्वभाव कितना भी सौम्य हो, कर्तव्य की भावना कितनी भी प्रबल हो, प्रसन्न करने की इच्छा कितनी भी प्रबल हो; चाहे उपलब्धियाँ कितनी भी प्रतिभाशाली और विविध हों; यदि किसी गवर्नेंस में अपने बच्चे का दिल

जीतने की क्षमता नहीं है, उसके बढ़ते हुए मन में धीरे-धीरे और निश्चित रूप से अपना ज्ञान डालने की कला नहीं है, तो उसका जीवन व्यर्थ और क्षीण हो जाएगा। किसी बच्चे को शिक्षित करना, जैसा कि मुझे लगता है श्रीमती विलियम्स ने अपने बच्चों को शिक्षित किया है, शायद स्वयं को उतना ही आनंद देते हुए जितना कि उन्हें लाभ पहुँचाते हुए, उस शिक्षक के लिए वास्तव में असंभव होगा जिसमें यह योग्यता नहीं है। लेकिन, मेरा मानना है कि यदि परिस्थितियाँ - जैसा कि आपकी बेटियों के मामले में है - किसी युवती को गवर्नेंस का पेशा अपनाने के लिए विवश करती हैं, तो वह शिक्षा देने का प्रयास कर सकती है और अच्छी शिक्षा भी दे सकती है। अर्थात्, यद्यपि वह बच्चे के मन को आकार नहीं दे सकती, उसके चरित्र को ढाल नहीं सकती, उसके स्वभाव को प्रभावित नहीं कर सकती और उसके आचरण का मार्गदर्शन नहीं कर सकती जैसा वह चाहती है, फिर भी वह पाठ पढ़ा सकती है - यहाँ तक कि ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में अच्छे, स्पष्ट और बुद्धिमत्तापूर्ण पाठ भी। वह दैनिक गवर्नेंस के रूप में अपने कम वेतन को कमा सकती है और दुगुना कमा सकती है। एक स्कूल शिक्षिका के रूप में वह सफल हो सकती है; लेकिन एक स्थायी गवर्नेंस के रूप में वह कभी भी (विशेष और असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर) खुश नहीं रहेगी। उसकी यह कमी उसे स्कूल के समय से ज़्यादा खेल-कूद के समय परेशान करेगी; जो पल बच्चों को समझने और उनके अनुसार ढलने वाली गवर्नेंस के लिए आराम और मनोरंजन का समय होते हैं, वही पल उस गवर्नेंस के लिए लगभग यातना बन जाएंगे जिसमें यह क्षमता नहीं है। कई बार, जब उसका बच्चा बेकाबू हो जाता है, जब वह ज़िम्मेदारी जिसे वह ईमानदारी और कुशलता से निभाना चाहती है, उसके लिए असहनीय हो जाती है, तब वह खुद को एक नौकरानी या रसोई की लड़की के रूप में देखना चाहेगी, न कि एक सताई हुई, कुचली हुई, अकेली और परेशान गवर्नेंस के रूप में।

कुछ दृष्टियों से 'गवर्नेंस संस्था' एक उत्कृष्ट व्यवस्था हो सकती है, लेकिन ज्ञान के स्तर को और भी ऊंचा उठाने का प्रयास करना बेतुका और क्रूर है। गवर्नेंस को उनके शिक्षण के लिए आधा या एक चौथाई वेतन भी नहीं मिलता, और अधिकतर मामलों में उनके विद्यार्थियों से उनकी योग्यता का आधा या एक चौथाई भी अपेक्षित नहीं होता। जीवन में कदम रखते समय एक युवा शिक्षिका की सबसे बड़ी चिंता हमेशा बहुत कुछ जानने की होती है; उसका सबसे बड़ा डर यही होता है कि कहीं उसे पर्याप्त

ज्ञान न मिल जाए। थोड़े से अनुभव से ही अधिकतर मामलों में उसे पता चल जाता है कि उसकी यह चिंता गलत थी। वह शायद ही कभी अपने विद्यार्थियों के लिए बहुत अज्ञानी साबित होगी; उसके ज्ञान की मांग अक्सर उसकी क्षमता से अधिक नहीं होगी। लेकिन उसके धैर्य और आत्म-नियंत्रण की परीक्षा होगी; उसकी ऊर्जा पर (और अगर यह शक्ति विफल हो जाए तो उसका क्या होगा!) भारी दबाव पड़ेगा।

मैंने एक अनपढ़ नर्सरी-मेड को देखा है जो मुश्किल से पढ़-लिख पाती थी, लेकिन अपने उत्कृष्ट, मददगार, आशावादी और शांत स्वभाव के कारण, जो उसे एक साथ हंसमुख और अविचल बनाता था; मजबूत शरीर और स्थिर, भावहीन नसों के कारण, जो उसे झटकों में भी दृढ़ और परेशानियों में भी अविचलित रखती थीं - वह अपेक्षाकृत आसानी से बिगड़े हुए बच्चों के एक बड़े परिवार का प्रबंधन करती थी, जबकि उनकी गवर्नेंस उनके बीच अकथनीय दुख का जीवन जीती थी: अत्याचार का शिकार, बच्चों को खुश करने और सिखाने के उसके प्रयास पूरी तरह व्यर्थ, दुखी, व्यथित, चिंतित - इतना सताया गया, इतना कुचला गया कि वह लगभग खुद को पहचानना ही बंद कर बैठी, और सोचने लगी कि किस दयनीय, कांपते हुए शरीर में उसका दमित मन कैद है, और वह कभी भी सम्मान और स्नेह से व्यवहार किए जाने की कल्पना भी नहीं कर सकती थी - जब तक कि उसने अंततः अपनी नौकरी छोड़ दी और पूरी तरह से टूटी हुई आत्मा और स्वास्थ्य में गिरावट के कगार पर पहुंचकर चली गई।

जो लोग शिक्षिकाओं को अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं, वे उनकी मुख्य पीड़ा के मूल कारण को नहीं जानते। उन्हें कला या विज्ञान में अतिरिक्त कौशल की नहीं, बल्कि अधिक शारीरिक और मानसिक शक्ति, और अधिक दृढ़ नैतिक स्थिरता की आवश्यकता होती है। जहाँ तक जबरन प्रशिक्षण प्रणाली का सवाल है, चाहे वह शिक्षकों पर लागू हो या छात्रों पर, मैं इसे एक क्रूर प्रणाली मानता हूँ।

यह सच है कि दुनिया उपलब्धियों की एक लंबी सूची की मांग करती है। 20 पाउंड प्रति वर्ष के वेतन पर, एक महिला से कई प्रोफेसरों के ज्ञान की अपेक्षा की जाती है - लेकिन यह मांग अतार्किक है, और मेरा मानना है कि इसका पालन करने के बजाय इसका विरोध किया जाना चाहिए। यदि मैं आपकी बेटियों की ओर से आपसे निवेदन करूँ, तो मैं कहूँगी, “उन्हें अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त करने के प्रयास में अपना युवा जीवन बर्बाद न करने दें। उन्हें एक या दो प्रतिभाओं को पूरी तरह से

विकसित करने का प्रयास करने दें; फिर उन्हें स्वास्थ्य, शक्ति और प्रसन्नता का भंडार बनाने का प्रयास करने दें। उन्हें आत्म-संयम, सहनशीलता, धैर्य और दृढ़ता प्राप्त करने के लिए परिश्रम करने दें; यदि संभव हो, तो उन्हें अपनी माँ से उस अनमोल कला का कुछ अंश सीखने दें जो उनके पास है - ये चीजें, अच्छे सिद्धांतों के साथ, एक गवर्नेंस के जीवन में उनके सबसे अच्छे सहारे और सबसे अच्छे सहायक साबित होंगी।"

"जहाँ तक उस स्त्री की बात है, जिसके बारे में आप कहते हैं कि उसे प्रदर्शन से घबराहट होती है, तो मुझे आपसे उसके प्रति नरमी बरतने की विनती करने की आवश्यकता नहीं है; मुझे यकीन है कि आप कठोर नहीं होंगे, लेकिन उसे स्वयं के प्रति दृढ़ रहना होगा, अन्यथा उसे परलोक में पछतावा होगा। उसे धीरे-धीरे अपनी झिझक पर काबू पाने का प्रयास शुरू करना चाहिए। यदि उसका भाग्य स्वतंत्र और सहज जीवन जीना होता, तो वह एकांत चाहने की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति का सम्मान कर सकती थी, और इसे एकांतप्रिय गुण के रूप में संजो भी सकती थी; लेकिन चूंकि यह उसका भाग्य नहीं है, चूंकि उसका भाग्य भीड़ में अपना रास्ता बनाना और स्वयं पर निर्भर रहना है, इसलिए उसे कहना चाहिए: मैं आत्म-संयम की कला सीखने का प्रयास करूंगी, इसलिए नहीं कि मैं अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करूँ, बल्कि इसलिए कि मुझे यह संतुष्टि मिले कि मैं अपनी स्वामिनी हूँ, और मनुष्य के भय से निर्भीक होकर चल और बोल सकती हूँ। हालाँकि, जब मैं यह सलाह लिख रही हूँ, तो मैं स्वीकार करती हूँ कि इसे देना जितना आसान है, उतना ही इसका पालन करना भी आसान है। सार्वजनिक दृष्टि में घबराए हुए व्यक्ति की संवेदनाएँ क्या होती हैं, यह केवल घबराए हुए व्यक्ति ही जानते हैं।" और यह बात अविश्वसनीय लग सकती है कि तर्क और दृढ़ संकल्प उन्हें नियंत्रित करने में कितने शक्तिहीन हैं, सिवाय उन लोगों के लिए जो वास्तव में पीड़ित हैं।

जेन आयर के लेखकत्व के बारे में आपने जिन अफवाहों का जिक्र किया, उन्होंने मुझे बेहद मनोरंजक लगा। इस विषय पर गपशप करने वाले ठीक वहीं हैं जहाँ मैं उन्हें देखना चाहता हूँ, यानी सच्चाई से जितना दूर हो सके; और चूंकि उनके पास अपनी कहानियों को आधार देने के लिए तथ्यों का एक अंश भी नहीं है, इसलिए वे कोरी कल्पनाएँ गढ़ते हैं। मुझे लगता है कि जज अर्ल ने अपनी कहानी जानबूझकर एक धोखा देने के लिए बनाई होगी; दूसरा झूठ तो आश्चर्यजनक है - इतना सूक्ष्म! लेखक से पूछा गया! मुझे आश्चर्य है कि वह कहाँ रहता था? कॉकेन के किस इलाके में? मुझे

यहीं रुकना होगा, कहीं ऐसा न हो कि आगे लिखते-लिखते एक और पन्ना भर जाए। - विश्वास कीजिए, आपका सच्चा।

‘कुरर बेल.

पी.एस. — मुझे आखिरकार थोड़ा सा कागज जोड़ना ही होगा, क्योंकि आपके पत्र पर सरसरी नजर डालते हुए मुझे याद आया कि मैं अपने अगले काम के बारे में आपके एक सवाल का जवाब देना भूल गया हूँ। मैंने उसमें अभी तक गवर्नेंस के बारे में बात नहीं की है, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि वह अपने पिछले काम से मिलता-जुलता हो। मैं अक्सर "महिलाओं की स्थिति" के मुद्दे पर कुछ कहना चाहता हूँ, लेकिन इस विषय पर इतनी "बेबुनियाद" बातें हो चुकी हैं कि इस पर बात करने में एक तरह की झिझक महसूस होती है। यह सच है कि महिला श्रम के लिए वर्तमान बाजार पूरी तरह से भरा हुआ है, लेकिन दूसरा बाजार कहाँ या कैसे खोला जा सकता है? कई लोग कहते हैं कि जिन पेशों में अभी सिर्फ पुरुष ही काम करते हैं, उन्हें महिलाओं के लिए भी खोल देना चाहिए; लेकिन क्या उनमें काम करने वाली और उम्मीदवार हर मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त से अधिक नहीं हैं? क्या महिला वकीलों, महिला डॉक्टरों, महिला उत्कीर्णकों, अधिक महिला कलाकारों, अधिक लेखिकाओं के लिए कोई जगह है? समस्या कहाँ है, यह तो साफ है, लेकिन इसका समाधान कौन बता सकता है? जब किसी महिला को अपने छोटे परिवार का पालन-पोषण और शिक्षा देनी होती है और घर-परिवार संभालना होता है, तो उसके हाथ भरे रहते हैं, उसका कर्तव्य स्पष्ट हो जाता है; जब उसका भाग्य उसे अलग-थलग कर देता है, तो मेरा मानना है कि उसे वह करना चाहिए जो वह कर सकती है, जैसे-तैसे जीना चाहिए, कम से कम शिकायत करनी चाहिए, जितना सहन कर सकती है, और जितना हो सके उतना अच्छा काम करना चाहिए। यह कोई सैद्धांतिक बात नहीं है, लेकिन मेरा मानना है कि यह व्यावहारिक तरीका है, जिसे दार्शनिकों और कानून निर्माताओं द्वारा सामाजिक व्यवस्था के बेहतर स्वरूप पर विचार करते समय अमल में लाना अच्छा है। साथ ही, मेरा मानना है कि जब धैर्य अपनी पूरी कोशिश कर चुका हो और परिश्रम अपनी सर्वोत्तम क्षमता से काम कर रहा हो, चाहे वह महिला हो या श्रमिक, और जब दोनों ही विफल हो जाते हैं, और दर्द और अभाव हावी हो जाते हैं, तो पीड़ित व्यक्ति स्वतंत्र होता है, उसे अंततः ईश्वर से राहत के लिए कोई भी मार्मिक गुहार लगाने का अधिकार होता है, यदि उस गुहार से उसे सहायता मिलने की आशा हो।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

2 जून, 1848।

मेरे प्रिय महोदय, मैं आपको यह संक्षिप्त पत्र लिखने के लिए कुछ क्षण निकाल रहा हूँ, क्योंकि यह सोचकर मुझे बेचैनी हो रही है कि आपके पिछले स्नेहपूर्ण पत्र का उत्तर इतने लंबे समय तक नहीं मिला। हाल ही में, कई छोटे-मोटे कामों में व्यस्तता के कारण मेरा समय पूरी तरह से व्यतीत हो गया है, जो महत्वपूर्ण से कहीं अधिक अत्यावश्यक हैं, और इस वजह से मैं अधिक महत्वपूर्ण और रुचिकर कार्यों के लिए समय नहीं निकाल पा रहा हूँ। व्यवधान एक दुखद उबाऊपन है, और मेरा मानना है कि पृथ्वी पर शायद ही कोई स्थान हो, निश्चित रूप से इंग्लैंड में तो बिल्कुल नहीं, जो इससे पूरी तरह सुरक्षित हो। वास्तव में, आप इस दुनिया में केवल एक ही लक्ष्य के लिए नहीं जी सकते; आपको किसी एक गंभीर उद्देश्य के साथ-साथ सौ छोटे-छोटे कर्तव्यों, चिंताओं और विकर्षणों को भी निभाना होगा; संक्षेप में, आपको जीवन को जैसा है वैसा ही स्वीकार करना होगा और उसका भरपूर आनंद उठाना होगा। ग्रीष्म ऋतु परिश्रम के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में; क्योंकि धूप आपके सभी परिचितों को उत्तेजित कर देती है, और एक बार मनोरंजन की इच्छा होने पर वे उसकी तलाश में दुनिया के कोने-कोने तक चले जाते हैं। मॉर्निंग क्रॉनिकल को पत्र लिखने के आपके सुझाव के लिए मैं आपका आभारी हूँ, लेकिन मैंने उस पर अमल नहीं किया। मुझे लगता है कि फिलहाल मैं ऐसा कदम उठाने से बचना चाहूंगा। आपकी उदारता के कारण मैं आपसे जो राय बेझिझक व्यक्त करना चाहता हूं, वे जनता के लिए परिपक्व या उपयुक्त नहीं हैं; करर बेल कार्लाइल नहीं हैं और उन्हें उनका अनुकरण नहीं करना चाहिए।

जब भी आप अपने बहुमूल्य समय का अधिक उपयोग किए बिना मुझे पत्र लिख सकें, तो याद रखें कि मुझे आपसे सुनकर हमेशा खुशी होगी। आपका पिछला पत्र मुझे उतना ही रुचिकर लगा जितना कि उससे पहले के दो पत्र; आपने अपने परिवार के बारे में जो कहा, उससे मुझे प्रसन्नता हुई; मुझे लगता है कि चरित्र के विवरण में हमेशा एक आकर्षण होता है, भले ही वे उन लोगों से संबंधित हों जिन्हें हमने कभी नहीं देखा हो, और न ही देखने की उम्मीद हो। आठ बच्चों के साथ आपका जीवन व्यस्त होगा; लेकिन, जिस तरह से आपने अपनी दो सबसे बड़ी बेटियों का जिक्र किया है, उससे स्पष्ट है कि वे कम से कम अपने माता-पिता के लिए संतोष का स्रोत हैं; मुझे

आशा है कि यह सभी बच्चों के साथ ऐसा ही होगा, और तब आपको कभी ऐसा महसूस नहीं होगा कि आपके पास बहुत अधिक बच्चे हैं। समझदार और अच्छे व्यवहार वाले बारह बच्चे उन बच्चों की तुलना में कम बोझिल हो सकते हैं जिनमें ये गुण नहीं होते। ऐसा लगता है कि आपसे बात किए हुए काफी समय हो गया है। मुझे आपसे फिर से सुनकर खुशी होगी। - विश्वास करें, आपका सच्चा,

'सी. बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 15 जून, 1848।

मेरे प्रिय महोदय, आपके पिछले दो पत्रों के लिए धन्यवाद। पहला पत्र पढ़कर मुझे आपकी मई की छुट्टियों का पूरा एहसास हुआ; मैंने आपके साथ उन छुट्टियों का आनंद लिया। मैंने दक्षिण इंग्लैंड के उस सुंदर गाँव को देखा, जो हमारे उत्तरी इंग्लैंड के धुएँ से भरे घरों और कालिख उगलने वाली चक्कियों से कितना अलग था। आपके वर्णन में मुझे उपजाऊ, फूलों से भरा एसेक्स दिखाई दिया - जो यॉर्कशायर के इस कोने में फैले ऊबड़-खाबड़, शांत और गंभीर, फिर भी प्रिय दलदली भूमि से बिल्कुल विपरीत था। मैंने सफेद स्कूल भवन, आदरणीय शिक्षक को देखा - मुझे तो ऐसा लगा जैसे मैंने आपको और आपकी बेटियों को भी देखा हो; और आपके दूसरे पत्र में आप सभी स्पष्ट रूप से दिखाई दिए, क्योंकि अपने बच्चों का वर्णन करते हुए आपने अनजाने में अपना ही वर्णन कर दिया है।

मैं यह अवश्य कह सकता हूँ कि आपके पत्र मेरे लिए मूल्यवान हैं, क्योंकि मुझे शायद ही कभी कोई ऐसा पत्र मिलता है जिसमें मुझे कुछ ऐसा न मिले जो मुझे सोचने और नए विषयों पर विचार करने के लिए प्रेरित करे। आपके शहर का जीवन मेरे अब तक के जीवन से कुछ अलग है, और इसके लाभों, परेशानियों, सुखों और संघर्षों के बारे में आपके उल्लेख अक्सर मेरे लिए बहुत मायने रखते हैं।

मैं हमेशा से यह मानता आया हूँ कि जीविका कमाना अपने आप में कोई बुराई नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि अगर स्वास्थ्य खराब हो जाए, रोज़गार न मिले, या हम पर निर्भर लोगों की कमज़ोरी के कारण हम पर इतना बोझ आ जाए कि हमारी क्षमता उसे संभाल न पाए, तो यह एक बड़ी बुराई बन सकती है। ऐसे में मैं कल्पना कर सकता हूँ कि विवाहित पुरुष फिर से अविवाहित होना चाहेगा, और विवाहित महिला, जब वह अपने पति को अपने और बच्चों के भरण-पोषण के लिए अत्यधिक परिश्रम

करते हुए देखती है, तो अपने पति के प्रति अपने स्नेह के कारण लगभग यही चाहेगी कि काश उसे कभी उसके जीवन में यह बोझ न उठाना पड़ा होता। इसलिए सबसे ज़रूरी यही है कि सभी, पुरुष और महिलाएँ, अपने लिए काम करने की शक्ति और इच्छाशक्ति रखें - यह सबसे उचित है कि पुत्र और पुत्रियों को बचपन से ही आत्मनिर्भरता और परिश्रम की आदत डाली जाए। पक्षी अपने बच्चों को उनके पंख मज़बूत होते ही उड़ना सिखाते हैं, यहाँ तक कि अगर वे अपने दम पर अपने पंखों पर भरोसा करने में अनिच्छुक लगते हैं, तो वे उन्हें घोंसला छोड़ने के लिए भी बाध्य करते हैं। क्या अबाबील और सारस पक्षी इस प्रकार मनुष्य को कोई ऐसा सबक नहीं देते जिससे उसे लाभ हो सके?

मुझे लगता है कि आपका दयालु हृदय इस विचार से दुखी है कि आपकी बेटी को एक स्वतंत्र और लाड़-प्यार भरे घरेलू जीवन से निकालकर अजनबियों के बीच बंधन और श्रम के जीवन में धकेल दिए जाने पर कितना कष्ट सहना पड़ेगा। शायद उसे कष्ट सहना ही पड़ेगा; लेकिन मेरे प्रिय महोदय, आप सांत्वना और साहस दोनों प्राप्त करें, इस विचार से अपनी चिंता को शांत करने का प्रयास करें, जो निराधार नहीं है। उसका कष्ट व्यर्थ नहीं जाएगा; उसे इससे बहुत लाभ होगा; वह "आँसुओं में बोएगी और आनंद में काटेगी।" एक गवर्नेंस का अनुभव अक्सर कड़वा होता है, लेकिन इसके परिणाम अनमोल होते हैं: मन, भावनाएँ और स्वभाव वहाँ एक ऐसे अनुशासन के अधीन होते हैं जो उतना ही कष्टदायी और अनमोल होता है। मैंने कई ऐसी गवर्नेंस को जाना है जो दुखी रहीं, लेकिन उनमें से किसी को भी इस कठिन परीक्षा से गुजरने का पछतावा नहीं हुआ, और शायद ही कोई ऐसी हो जिसका चरित्र इससे न सुधरा हो - मजबूत और शुद्ध हुआ हो, दृढ़ और कोमल हुआ हो, अपने कष्टों के लिए अधिक सहनशील बना हो, दूसरों के कष्टों के प्रति अधिक विचारशील बना हो।

लेकिन अगर आपकी बेटी गवर्नेंस बनकर बाहर जाती है, तो उसे सबसे पहले यह दृढ़ निश्चय करना चाहिए कि वह मुश्किलों से जल्दी विचलित नहीं होगी, अप्रिय बातों से जल्दी परेशान नहीं होगी; और अगर वह उत्साही और संवेदनशील है, तो उसे घर वालों की खातिर एक को समर्पण और दूसरे को सहन करना सिखाना चाहिए। यही गवर्नेंस के लिए धैर्य का सबसे अच्छा मंत्र है, यह आहत भावनाओं के लिए सबसे अच्छा मरहम है। जब उसकी परीक्षा हो, तो उसे कहना चाहिए, "मैं धैर्य रखूंगी, गुलामी के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि मैं अपने माता-पिता से प्यार करती हूं, और अपनी

लगन, मेहनत और सफलता से उनकी चिंताओं और मेरे प्रति स्नेह का प्रतिफल देना चाहती हूं।" इस सहायता से, कम से कम अपमान को भी अक्सर बड़ी शांति से सहा जा सकता है, जैसे कड़वी गोली को मीठे पानी के घूंट के साथ।

'मुझे लगता है कि जब आप कहती हैं कि गरीब लड़कियों को आत्मनिर्भर बनने के लिए पाला-पोसा जाना चाहिए और उन्हें इस काबिल बनाया जाना चाहिए, तो आपकी बात बिल्कुल सही है; और अगर उनकी शादी गरीब पुरुषों से होती है, तो इस उम्मीद के साथ होनी चाहिए कि वे भविष्य में अपने जीवनसाथी की मदद कर सकें। अगर सभी माता-पिता ऐसा सोचते, तो लड़कियों को इस सोच के साथ नहीं पाला जाता कि वे सिर्फ पैसों के लिए शादी करेंगी; और परिणामस्वरूप, महिलाओं को इतनी बुरी तरह से अपमानित नहीं किया जाता जितना कि वे आजकल अक्सर होती हैं।'

"दुर्भाग्यशाली लोग भी शादी कर सकते हैं, बशर्ते वे पहले से ही यह संकल्प लें कि वे अपनी शादी के परिणामों को अपने रिश्तेदारों पर बोझ नहीं बनने देंगे। लेकिन चूंकि जीवन अप्रत्याशित घटनाओं से भरा है, और एक महिला की परिस्थिति ऐसी हो सकती है कि वह एक साथ घर का कामकाज और आजीविका दोनों नहीं संभाल सकती (उदाहरण के लिए, श्रीमती विलियम्स के पास अपने आठ बच्चों के साथ क्या फुर्सत होगी?), इसलिए युवा कलाकारों और युवा गवर्नेंस को अपने भाग्य को एक करने से पहले दो बार सोचना चाहिए।"

आपकी बात में फिर से सच्चाई झलकती है जब आप यह इच्छा व्यक्त करते हैं कि फैनी को ऐसी स्थिति में रखा जाए जहाँ सक्रिय कर्तव्यों में उसका ध्यान लगा रहे, जहाँ उसकी प्रतिभा का प्रयोग हो और उसका मन व्यस्त रहे, और जहाँ, मैं यह जोड़ना चाहूँगा (मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि मेरा यह जोड़ आपके आधे-अधूरे स्वीकृत विचार को ही पूरा करता है), युवा कलाकार की छवि फिलहाल पृष्ठभूमि में चली जाए और आने वाले कुछ वर्षों तक एक साधारण परिप्रेक्ष्य में बनी रहे, भविष्य में काफी दूर तक फैले एक दृश्य का अंतिम बिंदु। फैनी इस बात को लेकर आश्वस्त रह सकती है: यदि वह एक कलाकार की पत्नी बनना चाहती है, तो उसे पहले भाग्य के साथ एक दाई के रूप में प्रशिक्षण लेना चाहिए; वह उस सम्मानजनक (यदि सही मायने में देखा जाए तो सम्मानजनक) लेकिन निश्चित रूप से विलासितापूर्ण नहीं, भाग्य के लिए इससे बेहतर तैयारी नहीं कर सकती।

'तो मैं यही कहूँगा—आपके पत्र में दी गई जानकारी और फ़ैनी की वर्तमान और

संभावित स्थिति के अनुमान के आधार पर—कि अपनी बेटी को इस प्रयोग में शामिल करना आपके लिए अच्छा और बुद्धिमानी भरा कदम होगा। यह प्रयोग लाभकारी हो सकता है, हानिकारक नहीं, क्योंकि भले ही वह पहले प्रयास में असफल हो जाए (जो कि असंभव नहीं है), फिर भी उसे इस प्रयास से कुछ हद तक लाभ होगा।'

मुझे श्री स्मिथ से मिराबो की पुस्तक विधिवत प्राप्त हुई। मैं फिर से कहना चाहूंगा, यह वास्तव में बहुत बड़ी मेहरबानी है। जब मैं पुस्तक पढ़ लूंगा, तो मैं आपको इसके बारे में अपने विचार बताऊंगा - इसका विषय रोचक है। एक बात ने मुझे थोड़ा परेशान किया - पन्ने पलटते समय मुझे कार्लाइल की शैली की कुछ झलक दिखाई दी। कार्लाइल एक महान व्यक्ति हैं, लेकिन मेरी हमेशा यही इच्छा रहती है कि वे सरल अंग्रेजी में लिखें; और उनके जर्मन लहजों की नकल करना, मेरे विचार से, उनकी कमियों की नकल करना है। क्या इस कृति के लेखक मैनचेस्टर के निवासी हैं? मुझे उनका नाम नहीं पूछना चाहिए, शायद। - विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आपका सादर।

'कुरर बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

22 जून, 1848।

'मेरे प्रिय महोदय, किसी ऐसी पुस्तक को पढ़ने के बाद जो आपको रुचिकर और ज्ञानवर्धक लगी हो, आप उसे पढ़ने के बाद बिना किसी शर्त के उसकी प्रशंसा करना पसंद करते हैं; आप उसकी दिल से प्रशंसा करना पसंद नहीं करते; आप उसकी प्रशंसा में कंजूसी नहीं करना चाहते, उसकी आलोचना करके उसके प्रभाव को कम नहीं करना चाहते।'

इसी कारण मुझे मिराबो के जीवन के बारे में अपने विचार बताने में थोड़ी कठिनाई हो रही है। इसने मुझे बहुत रुचिकर लगा दिया है और इससे मुझे अतिरिक्त जानकारी भी प्राप्त हुई है। इसे पढ़ते समय, मुझे अक्सर लेखक की योग्यता और सूझबूझ की सराहना करने, कथा को कुशलतापूर्वक आगे बढ़ाने, पाठक का ध्यान बांधे रखने और उसे अपने नायक पर केंद्रित रखने की कला की प्रशंसा करने का अवसर मिला है; लेकिन साथ ही साथ मुझे कई बार असहमति भी हुई है। मैं लेखक के राजनीतिक सिद्धांतों की आलोचना नहीं कर रहा हूँ, न ही उनकी प्रतिभा को कम आंकना चाहता हूँ; सच कहूँ तो, मिराबो की गलतियों को जिस तरह से उन्होंने प्रस्तुत किया है, वह

मुझे खटकता है — तब, मुझे लगता है, वे न तो बुद्धिमान हैं और न ही सही — वहाँ, मुझे लगता है, वे थोड़ी अशिष्टता, थोड़ा अहंकार और काफी हद तक अविवेकीता प्रदर्शित करते हैं।

क्या आप विश्वास के साथ यह कृति अपने पुत्र को सौंप सकते हैं, इस विश्वास के साथ कि इसका अध्ययन उसे हानि नहीं पहुँचाएगा, कि इससे उसके मन में यह अस्पष्ट धारणा नहीं बनेगी कि व्यापक स्तर पर किए गए दुराचार में कोई महानता होती है? जबकि सच्चाई यह है कि दुराचार में कोई महानता नहीं होती, यह किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाए, और चाहे वह किसी भी रूप में हो, केवल एक घिनौनी, नीच और अपमानजनक वस्तु है। सच्चाई यह है कि महान मिराबो दिव्यता और मृदयता का मिश्रण थे; उनकी त्रुटियों में कोई दिव्यता नहीं थी, वे सब मृगवत थीं; उन्होंने उन्हें बर्बाद कर दिया, उनकी प्रतिभा को नष्ट कर दिया, उनके उत्तम स्वभाव और उदार भावनाओं को कुंद कर दिया, उनकी सारी महानता को निष्फल कर दिया; उन्होंने उन्हें उनके यौवन काल में ही छीन लिया, उनके सभी उद्देश्यों को निष्फल कर दिया, और उस समय उनकी मृत्यु कर दी जब फ्रांस को उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी।

मेरी समझ से, मिराब्यू का जीवन और नियति मुझे पिछले कई वर्षों में पढ़ी गई सबसे निराशाजनक सीख देती है। कोई उम्मीद कर सकता था कि इतने सारे नेक गुणों ने उनके चरित्र को महान बनाया होगा और उन्हें महान लक्ष्य प्राप्त हुए होंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ - इस महान प्रतिभा ने एक दयनीय और पतित जीवन जिया और आत्म-संयम, नैतिकता और धर्म के अभाव के कारण कुत्ते जैसी मौत मरी। मिराब्यू का जीवन पढ़ने के बाद हृदय व्याकुल हो जाता है; और जब हम पुस्तक बंद करते हैं, तो हमें उनकी महानता के बारे में उतना नहीं सोचना पड़ता जितना कि उनकी निराशाजनक लापरवाही और उससे उत्पन्न पीड़ा, पतन और असमय मृत्यु के बारे में। मुझे लगता है कि जीवनी लेखक अपने नायक को हमेशा एक प्रभावशाली दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने में भी गलती करता है - सटीक सत्य की उपेक्षा करता है। वह उनकी अत्यधिक प्रशंसा करता है; वह उल्लेखित अन्य सभी पात्रों को दबा देता है और उन्हें छाया में रखता है ताकि मिराब्यू अधिक स्पष्ट रूप से उभर सके। कला के क्षेत्र में यह बात निःसंदेह सही है और कथा साहित्य में स्वीकार्य है; लेकिन इतिहास में (और जीवनी किसी व्यक्ति का इतिहास होती है) यह कथा की सटीकता पर आपके विश्वास को कमजोर करके उसकी शक्ति को कम कर देती है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

चैप्टर कॉफ़ी-हाउस, आइवी लेन, 8 जुलाई, 1848।

“महोदय महोदय, आपका निमंत्रण इतना सुखद है कि मैं इसे तुरंत स्वीकार किए बिना नहीं रह सकती। मैं श्रीमती विलियम्स और उनके बच्चों से मिलना चाहूंगी और आपसे कुछ देर शांति से बातचीत करना चाहूंगी। क्या आपको अच्छा लगेगा अगर हम कल दोपहर के भोजन के बाद, लगभग सात बजे, आएं और रविवार की शाम आपके साथ बिताएं?”

जब भी आपको आने की सुविधा हो, हमें आपसे मिलकर बहुत खुशी होगी। —प्रिय महोदय, आपका विश्वासपात्र

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 13 जुलाई, 1848।

'मेरे प्रिय महोदय, हम कल सुरक्षित घर पहुँच गए, और मुझे पूरा विश्वास है कि एक-दो दिन में हम अपनी यात्रा की थकान से उबर जाएंगे।'

"शहर की ओर इतनी जल्दी जाना कुछ हद तक जल्दबाजी भरा कदम था, लेकिन मुझे इस पर कोई पछतावा नहीं है। पहली बात तो यह है कि रहस्य उबाऊ होता है, और मुझे खुशी हुई कि मैंने आपके और श्री स्मिथ के साथ इसे दूर कर दिया, और खुद को आपके सामने वैसे ही प्रस्तुत किया जैसा मैं हूं, न कम न ज्यादा - इस प्रकार उन सभी गलत धारणाओं को दूर कर दिया जो इस विचार से उत्पन्न हो सकती थीं कि कुरेर बेल को उस पुरुष उपनाम पर उचित अधिकार था जिसे उन्होंने शायद कुछ हद तक अहंकारपूर्वक अपनाया था - संक्षेप में, कि वह श्रेष्ठ लिंग के थे।"

मुझे आप दोनों और श्री स्मिथ को देखकर भी बहुत खुशी हुई, और अब आप दोनों और आपके परिवारों की सुखद यादें मेरे मन में बसी हैं, इससे मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। अगर मैं श्रीमती विलियम्स को देख पाती तो मेरी संतुष्टि और भी बढ़ जाती। आपके बच्चों का रूप-रंग आपके द्वारा दिए गए विवरण से बिल्कुल मेल खाता था। फैनी को मैं सबसे कम स्पष्ट रूप से देख पाई; मैंने उसका चेहरा साफ देखने की कोशिश की, लेकिन कमरे में उसकी स्थिति ऐसी थी कि मैं उसे ठीक से देख नहीं पाई।

मैंने अभी-अभी जॉन बुल में आपका लेख पढ़ा; इसमें प्राचीन और आधुनिक चित्रों

के बीच स्पष्ट अंतर के कारण को बहुत ही स्पष्ट और विस्तार से समझाया गया है। काश, जब हम प्रदर्शनी और नेशनल गैलरी देखने गए थे, तब आप हमारे साथ होते; कला के पारखी से थोड़ी सी व्याख्या मिलने से हमें जो कुछ हमने देखा, उसे बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती; शायद, एक दिन हमें भी यह सौभाग्य प्राप्त हो।

शहर में रहने के दौरान आपने हम पर जो स्नेह दिखाया, उसके लिए मेरी और मेरी बहन की ओर से धन्यवाद स्वीकार करें, और—विश्वास कीजिए, आपका सादर।

‘शार्लोट ब्रोंटे।

मुझे उम्मीद है कि श्रीमती विलियम्स अपनी बीमारी से पूरी तरह ठीक हो गई हैं।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 31 जुलाई, 1848।

मेरे प्रिय महोदय, मैंने हाल ही में 'मॉडर्न पेंटर्स' पढ़ी है और इससे मुझे बहुत आनंद मिला है और आशा है कि कुछ ज्ञान भी प्राप्त हुआ होगा; कम से कम, इसने मुझे यह एहसास दिलाया कि मैं इस विषय पर पहले कितना अनभिज्ञ था। अब तक कला का मूल्यांकन करने में मेरा मार्गदर्शन केवल मेरी सहज बुद्धि ही करती थी; मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं आँखों पर पट्टी बांधकर चल रहा हूँ - यह पुस्तक मुझे आँखें दे रही है। काश मेरे पास कुछ चित्र होते जिनसे मैं इस नई समझ का परीक्षण कर पाता। टर्नर की कृतियों के इन शानदार वर्णनों को पढ़कर भला कौन उन्हें देखने की इच्छा नहीं करेगा? चाहे किसी दूसरे की राय कितनी भी प्रभावशाली और प्रेरक भाषा में प्रस्तुत की जाए, आप फिर भी स्वयं निर्णय करना चाहेंगे। मुझे इस लेखक की शैली बहुत पसंद आई: इसमें ऊर्जा और सुंदरता दोनों हैं; मुझे वे स्वयं भी पसंद आए, क्योंकि वे टर्नर के सच्चे प्रशंसक हैं। वे टर्नर की प्रशंसा या सम्मान में कोई कमी नहीं छोड़ते, बल्कि उनकी स्तुति करते हैं, उनका (या यों कहें कि उनकी प्रतिभा का) पूरे मन से आदर करते हैं। इस तरह की गहरी, गंभीर प्रशंसा के प्रति सहानुभूति व्यक्त की जा सकती है (क्योंकि वे भावुकता में डूबे रहने वाले व्यक्ति नहीं हैं)—इसका सम्मान किया जा सकता है; फिर भी संभवतः कई लोग इस पर हँसेंगे। श्री स्मिथ का इस पुस्तक को देने के लिए मैं वास्तव में आभारी हूँ, क्योंकि इससे अधिक प्रसन्न करने वाली पुस्तक मुझे शायद ही कभी मिली हो।

आपने वाइल्डफेल हॉल के बारे में कुछ समीक्षाएँ देखी होंगी। काश मेरी बहन को उन नकारात्मक समीक्षाओं से इतनी तकलीफ न होती। वह ज्यादा बोलती नहीं है,

क्योंकि उसका स्वभाव बेहद शांत, गंभीर और विचारशील है, यहाँ तक कि अपने करीबी रिश्तेदारों से भी वह संकोच करती है, लेकिन मैं देख सकता हूँ कि कभी-कभी वह उदास हो जाती है। सच तो यह है कि न तो उसने और न ही हममें से किसी ने इस किताब के बारे में ऐसी राय की उम्मीद की थी, जैसी कुछ आलोचकों ने दी है। इसमें लेखन और कलात्मकता की कमियाँ तो स्पष्ट थीं, लेकिन लेखक को जानने वाला कोई भी व्यक्ति इरादे या भावना की कमियों का अनुमान नहीं लगा सकता था। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे लगता है कि विषय का चुनाव दुर्भाग्यपूर्ण था - यह ऐसा विषय था जिसे लेखक सशक्त और सच्चाई से संभालने में सक्षम नहीं था। सरल और स्वाभाविक - शांत वर्णन और सरल करुणा, मेरे विचार से, एक्टन बेल की विशेषता है। मुझे एग्नेस ग्रे इस कृति से कहीं अधिक पसंद आई।

कृपया मुझे आगाह करें कि जब आप मुझे पत्र लिखें तो मेरी बहनों का ज़िक्र न करें। मेरा मतलब है, बहुवचन में इस शब्द का प्रयोग न करें। एलिस बेल को उनके छद्म नाम के अलावा किसी और नाम से संबोधित किया जाना बिल्कुल पसंद नहीं आएगा। मैंने आपको और श्री स्मिथ को उनकी पहचान बताकर बहुत बड़ी गलती की है। यह अनजाने में हुआ था - "हम तीन बहनें हैं" ये शब्द मुझसे बिना सोचे-समझे निकल गए। मैंने यह बात कहते ही पछतावा किया; अब तो मुझे बहुत पछतावा हो रहा है, क्योंकि मुझे लगता है कि यह एलिस बेल की हर भावना और इच्छा के विरुद्ध है।

इस सप्ताह के 'एग्जामिनर' में न्यूबी के एक छोटे से जाले को किसी कुशल ब्रश से बड़ी सफाई से साफ होते देखकर मुझे बहुत मजा आया। अगर न्यूबी अभी भी अनुभव से सीखने के लिए बहुत बूढ़ा नहीं हुआ है, तो इस तरह के खुलासे से उसे यह सीख मिलनी चाहिए कि "ईमानदारी ही सबसे अच्छी नीति है।"

आपका पत्र अभी-अभी मुझे मिला है। धन्यवाद देने में मुझे समय नहीं लगाना चाहिए, वरना मैं बहुत कुछ कह दूँगा। जैसा कि आप कुछ हद तक समझ गए होंगे, हमारा जीवन सुखों से रहित रहा है, और इसी कारण से हमारे जीवन में आने वाले सुख के क्षणों को हम बहुत गहराई से महसूस करते हैं; और मुझे लगता है कि यदि आप जानते कि आपसे इतना लंबा पत्र पाकर मैं कितना प्रसन्न हुआ हूँ, तो आप मुझ पर हँसते।

लेकिन बदले में, मैं आपकी इस बात पर मुस्कुराता हूँ कि आप हमें लंदन के समाज को देखने के लिए कितनी गंभीरता से प्रेरित कर रहे हैं। इसमें एक लाभ होगा -

एक बड़ा लाभ; फिर भी यह ऐसा लाभ है जिसे दुनिया की कोई भी शक्ति एलिस बेल जैसे लोगों को उठाने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती। और यहाँ तक कि एक्टन और कुरेर के लिए भी, समाज से परिचय का अनुभव करना उतना आसान नहीं होगा जितना आप शायद सोच भी नहीं सकते। पूर्ण एकांत और एकरसता का जीवन, जैसा कि हम लंबे समय से - बल्कि मैं कह सकता हूँ, हमेशा से - अभ्यस्त रहे हैं, मुझे डर है कि मन को जीवंत और रोमांचक दृश्यों के लिए अनुपयुक्त बना देता है, सामाजिक आनंद लेने की क्षमता को नष्ट कर देता है।

समाज की जो झलकियाँ मुझे कभी मिलीं, वे सब मुझे गवर्नेंस के रूप में अपने काम के दौरान ही मिलीं, और मेरे जीवन के कुछ सबसे दुखद पल अजनबी चेहरों से भरे ड्राइंग रूम में बीते। ऐसे समय में, मेरी ऊर्जा धीरे-धीरे कम होती जाती थी, यहाँ तक कि पूरी तरह से खत्म हो जाती थी, और जब मैं थकावट और अकेलेपन को और सहन नहीं कर पाती थी, तो मैं चुपके से निकल जाती थी, किसी भी कोने को पाकर बहुत खुश होती थी जहाँ मैं सचमुच अकेली रह सकूँ। फिर भी, मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि यद्यपि दुनिया को देखने का वह अनुभव कुछ समय के लिए असहनीय पीड़ादायक हो सकता है, लेकिन बाद में इसका लाभ अवश्य होगा; और जहाँ तक मुझे याद है, मैंने कभी भी बिना उतना ही कष्ट सहे कोई महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त नहीं किया है, इसलिए मैं किसी दिन आपकी सलाह को कम से कम आंशिक रूप से मानने का प्रयास करूँगी - यदि संभव हो, तो उस कष्टदायक अहंकार को दूर करने का जो हमेशा खुद को आंकता और दोष देता रहता है, और एक कुंवारी होने के नाते, किसी ऐसे क्षेत्र को देखने का प्रयास करूँगी जहाँ सभ्य मानवता का चिंतन किया जा सके।

मैं फिर से आप पर मुस्कुराता हूँ, यह सोचकर कि मैं आपके धार्मिक और दार्शनिक विचारों से नाराज़ हो सकता हूँ; कि मैं आपको इस बात के लिए दोषी ठहरा सकता हूँ कि आप विभिन्न संप्रदायों और मतों में से किसी एक को भी पूरी तरह से अपना नहीं बना सकते। मैं स्वयं यह अनुभव करता हूँ कि स्वर्ग से पृथ्वी पर कुछ प्रकाश आता है—सत्य के मंदिर से कुछ किरणें इस जीवन और संसार के अंधकार को भेदती हैं; परन्तु वे बहुत कम, धुंधली और बिखरी हुई हैं, और कौन बिना अहंकार के यह दावा कर सकता है कि उसने ऊपर की ओर जाने का एकमात्र सच्चा मार्ग पा लिया है?

फिर भी अज्ञान, कमजोरी या अविवेक के अपने सिद्धांत और रूप होते हैं; उनके सहारे होते हैं—वे अकेले नहीं चल सकते। उन्हें सिद्धांत में जो सबसे शुद्ध और अनुष्ठान

में सबसे सरल है, उसे थामे रहना चाहिए; कुछ न कुछ तो उन्हें चाहिए ही।

मैंने कभी एमर्सन को नहीं पढ़ा; लेकिन जिस किताब ने आपके मन पर इतना सुकून देने वाला असर डाला है, वह ज़रूर अच्छी होगी। वह लेखक वाकई प्रशंसनीय है जिसके शब्द उस धरती पर हल्की बारिश की तरह बरसे हों जिसे ताज़गी की सख्त ज़रूरत थी और जो इसके लायक भी थी, जिसका प्रभाव उस आत्मा को सुकून भरी हवा की तरह ऊपर उठा दे जिसे हालातों ने बेरहमी से कुचल दिया हो। अगर एमर्सन ने आपको खुश किया है, तो उनकी रचना व्यर्थ नहीं गई है।

"यह आत्म-संयम, आंतरिक शांति और शक्ति की भावना बनी रहे! आप अपने प्रति दयालु और न्यायसंगत बने रहें! मैं आपकी प्रशंसा या चापलूसी नहीं करूँगा, मुझे उन निराशाजनक प्रशंसाओं से घृणा है जो उत्कृष्टता की आकांक्षा रखने वाले मन के प्रयासों को बाधित करती हैं; लेकिन मुझे यह कहने की अनुमति अवश्य है कि यदि आपमें कुछ अच्छा और श्रेष्ठ न होता, कुछ बेहतर न होता, चाहे वह दिखावटी ही क्यों न हो, जो अक्सर देखने को मिलता है, तो आपकी मित्रता का आश्वासन उतना सुखदायी न होता जितना होता है; और न ही आपके पत्राचार का लाभ इतना बड़ा सौभाग्य प्रतीत होता।"

मुझे आशा है कि श्रीमती विलियम्स का स्वास्थ्य शीघ्र ही सुधरेगा और उनकी चिंताएँ कम होंगी। शांति के स्थान पर फूट डालने वाले वास्तव में निंदनीय हैं और विशेष रूप से समाज से बहिष्कृत होने के योग्य हैं।

“हमारा राज़ छुपाए रखने के लिए मैं आप और आपके परिवार का शुक्रिया अदा करता हूँ। ऐसा करते रहना हमारे लिए वाकई एक बड़ी मेहरबानी होगी; और मैं मानता हूँ कि मुझे आपके परिवार की ईमानदारी और विवेकशीलता पर पूरा भरोसा है, जिसके आप मुखिया हैं। — यकीन मानिए, आपका हार्दिक धन्यवाद।”

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

18 अक्टूबर, 1848।

मेरे प्रिय महोदय, आज शाम पढ़ाई या गंभीर लेखन के लिए मैं स्वयं को सक्षम महसूस नहीं कर रहा हूँ, इसलिए मैं आपको पत्र लिखकर ही अपना संतोष व्यक्त करूँगा। मेरी बीमारी, जिसे डॉक्टर पित्त ज्वर कहते हैं, बनी हुई है, या यूँ कहें कि मौसम में अचानक परिवर्तन के साथ यह फिर से लौट आती है, हालाँकि मुझे यह

कहते हुए खुशी हो रही है कि अब तक के दौरे पहले हमले की तुलना में काफी हल्के रहे हैं; लेकिन ये मुझे कमजोर और दुर्बल बनाए रखते हैं, खासकर इसलिए क्योंकि मुझे बहुत कम आहार लेना पड़ता है।

अफसोस! मेरी किताब फिलहाल एक तरफ रख दी गई है; ऐसा लगता है जैसे मेरा दिमाग और हाथ दोनों अपनी कुशलता खो चुके हैं; मेरी कल्पना शक्ति फीकी, स्थिर और मूक हो गई है। यह अक्षमता मुझे क्षोभित करती है; कभी-कभी मुझे इस विषय पर अत्यधिक चिंता सताती है, लेकिन मैं इससे यथासंभव लड़ने की कोशिश करता हूँ; इससे कोई लाभ नहीं होता।

मुझे खेद है कि मैं आपको कोई खुशनुमा पत्र नहीं लिख पाऊँगा। फिर भी, किसी न किसी रूप में पत्र लिखना मेरा दृढ़ संकल्प है, क्योंकि मैं उस व्यक्ति के प्रति एक लापरवाह पत्र लेखक के रूप में दिखना नहीं चाहता, जिसके पत्रों से मुझे इतना आनंद मिला है और अभी भी मिलता है। करर बेल के बराबर न होने की बात मत कीजिए, न ही उन्हें "एक बुरा व्यक्ति" समझिए; यदि आप उन्हें अभी देखते, आग के पास दुबके बैठे, पूर्वी हवा से सहमे हुए (जो कुछ दिनों से हमारी ठंडी पहाड़ियों पर उग्र और तेज बह रही है), और एक दयालु मित्र को कुछ पंक्तियाँ लिखने से कम कठिन काम के लिए कलम उठाने में असमर्थ, तो आपको खुद को उनसे कहीं अधिक श्रेष्ठ न समझने का पछतावा होता, क्योंकि आप उन्हें एक दयनीय प्राणी पाते।

आप निश्चिंत रहें, मैंने ईश्वर की कृपा और मनुष्य के स्वभाव पर आपके विचारों को रुचिपूर्वक पढ़ा है। आप पहले से ही जानते हैं कि आपके कहे गए अधिकांश विचारों में मेरे विचार आपसे मिलते हैं, और जहाँ मतभेद हैं, वहाँ मैं आपको प्रभावित करने का प्रयास नहीं करूँगा। विचार और विवेक स्वतंत्र हैं, या होने चाहिए; और किसी भी हालत में, यदि आपके विचार सर्वत्र स्वीकार किए जाते, तो कोई उत्पीड़न नहीं होता, कोई कट्टरता नहीं होती। लेकिन कभी भी धर्म परिवर्तन कराने का प्रयास न करें, दुनिया अभी तक आपके और एमर्सन के विचारों को ग्रहण करने के योग्य नहीं है: मनुष्य, जैसा कि वह अभी है, धर्म में मतों और रीति-रिवाजों के बिना नहीं रह सकता, ठीक वैसे ही जैसे वह सामाजिक मेलजोल में कानूनों और नियमों के बिना नहीं रह सकता। आप और एमर्सन दूसरों का मूल्यांकन स्वयं के आधार पर करें; समस्त मानवजाति आपके समान नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे प्रत्येक इस्राएली नथानिएल के समान नहीं था।

“क्या कोई ऐसा इंसान है,” आप पूछते हैं, “जो इतना पतित हो कि दया का एक कार्य भी उसे छू न सके—बल्कि, एक शब्द भी उसे पिघला न सके?” ऐसे सैकड़ों इंसान हैं जो दया के कार्यों को रौंदते हैं और स्नेह के शब्दों का उपहास करते हैं। यह मैं जानता हूँ, हालाँकि मैंने दुनिया को बहुत कम देखा है। मुझे लगता है कि मेरे स्वभाव में आपसे कहीं अधिक कठोरता है, कुछ ऐसा जो मुझे समय-समय पर मेरी जाति के बारे में निराशाजनक रहस्य बताता है, और मैं आशावादी की बातों पर विश्वास नहीं कर सकता, चाहे वह कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो। दूसरी ओर, जब कोई थैकरे बोलता है तो मैं उसे सुनने के लिए विवश महसूस करता हूँ। मैं जानता हूँ कि सत्य उसके होठों से अपने संदेश दे रहा है।

कुछ व्यक्तियों द्वारा किए गए महान, अच्छे और उदार कार्यों के संदर्भ में, हम उनके पीछे के उद्देश्यों का पता लगाते हैं और फिर उनके मूल्य का आकलन करते हैं; इस कसौटी पर शायद कुछ लोगों को लाभ होगा और कई लोगों को हानि। उद्देश्यों का अध्ययन एक विचित्र विषय है, जिसे किसी एक नश्वर मनुष्य द्वारा अपने साथियों के संदर्भ में बहुत अधिक गहराई तक नहीं ले जाना चाहिए।

मुझे निर्दयी मत कहिए। मैं अपने विचारों को आप पर थोपना नहीं चाहता, लेकिन मैं जानता हूँ कि दुनिया में भले ही बहुत से अच्छे, सच्चे और सज्जन लोग हैं, जिनके लिए दयालुता सर्वोपरि है, लेकिन उस झूठे दोस्त (मैंने लगभग उसे शैतान लिख दिया था) जैसे लोग भी कम नहीं हैं, जिसका आपने अपने हाल के पत्रों में से एक में बहुत अच्छे और सजीव वर्णन किया है, और जिसने घरेलू गद्दार की भूमिका निभाते हुए अक्सर उपकारों को अपने उपकारकों को चोट पहुँचाने के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया होगा। — विश्वास कीजिए, आपका सच्चा।

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

2 अप्रैल, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, मेरे आलोचकों ने मेरी पुस्तक पर जिस सौहार्दपूर्ण और स्पष्टवादिता से अपने विचार व्यक्त किए हैं, उसके लिए मैं उनका दिल से आभारी हूँ। श्री विलियम्स और श्री टेलर दोनों ने अपने विचारों को इस प्रकार व्यक्त और समर्थित किया है कि वे गहन विचार-विमर्श को प्रेरित करते हैं। अब मुझे भी कुछ कहना है। आप दोनों किसी विषय के कलात्मक चित्रण पर बहुत अधिक बल देते हैं। महोदय,

आप जो चाहें कहें—चाहे जितनी कुशलता से कहें—सत्य कला से श्रेष्ठ है। बर्न्स के गीत बुलवर के महाकाव्यों से श्रेष्ठ हैं। थैकरे के कच्चे, लापरवाह रेखाचित्र हजारों सावधानीपूर्वक तैयार किए गए चित्रों से कहीं बेहतर हैं। मैं अज्ञानी होते हुए भी इस सिद्धांत को मानने और कायम रखने का साहस रखता हूँ।

आप मुझसे यह उम्मीद न करें कि मैं मालोन और डोने को इतनी जल्दी छोड़ दूँगी - ये दोनों मेरे पसंदीदा लेखक हैं; पहले अध्याय में उनकी सौम्य और मनमोहक चमक दिखाई देती है, और यह खेदजनक है कि आप उनकी इस सादगी भरी चमक का आनंद नहीं ले पाते। न ही वह शुरुआती दृश्य पुस्तक के बाकी हिस्सों से अप्रासंगिक है, आगे और भी कई पहलू हैं जो उससे मेल खाएंगे।

'निस्संदेह, सरप्लस के इस मामले से क्रिश्चियन रिमेंबरेंसर और क्वार्टरली जैसे प्रकाशनों में हलचल मच जाएगी—ये पत्रिकाएँ पत्रिका जगत के विशालकाय दिग्गजों की तरह हैं; और अगर मैं अकेला होता, तो इस संभावना से मुझे ज़रा भी चिंता नहीं होती। ये दिग्गज अपने पीतल के कवच पहने, भारी भाले लहराते, अपने शिकार को देवताओं के नाम से कोसते और अपने शिकार को "बाहर आने" और अपना मांस आकाश के पक्षियों और मैदान के जानवरों को खिलाने के लिए गरजते हुए निमंत्रण देते हुए बड़े-बड़े प्रकाशनों का स्वागत करते। करर बेल, खुद को डेविड जैसा न समझते हुए भी, इन विशालकाय अनाकिमों से भयभीत नहीं हैं; लेकिन—सज्जनों, मेरी बात को सही समझिए—दूसरों को दोष में घसीटना उन्हें दुख देगा: कोई भी निंदा जो वास्तव में उनके प्रकाशकों को नुकसान पहुँचाएगी और उन्हें नाराज़ करेगी, वह स्वयं उन्हें ही चोट पहुँचाएगी। इसलिए विश्वास कीजिए कि वे जल्दबाजी में कोई कदम नहीं उठाएंगे—उनकी समझदारी पर भरोसा कीजिए।'

'श्री टेलर ने आरंभिक संबोधन के अभद्र प्रयोग के बारे में सही कहा है—जिसकी मैंने अपने मन में पहले ही निंदा कर ली थी। अभी प्रारंभिक रचना के बारे में इतना कहना ही काफी है। अंत में, मैं निवेदन करता हूँ कि पांडुलिपि को यथाशीघ्र लौटा दिया जाए।'

आपने जो पत्र भेजा है, वह मैरी हॉविट का है। इसमें एक अमेरिकी पत्रिका में लेखिका के रूप में काम करने का प्रस्ताव था। बेशक, मैंने इसे अस्वीकार कर दिया है। जब मैं लिख पाऊंगी, तो मेरी वर्तमान पुस्तक को ही मेरा पूरा ध्यान चाहिए। ओह! अगर ऐनी ठीक होती, अगर मृत्यु से उत्पन्न खालीपन थोड़ा कम हो जाता, अगर

'कभी नहीं' शब्द मेरे कानों में गूंजना बंद हो जाता, तो मुझे लगता है कि मैं कुछ कर सकती थी।

आपने अपने पारिवारिक मामलों का जिक्र किए हुए काफी समय हो गया है। मुझे उम्मीद है कि श्रीमती विलियम्स स्वस्थ होंगी और फैनी और आपके अन्य बच्चे भी खूब तरक्की करेंगे। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

3 जुलाई, 1849।

"मेरे प्रिय महोदय, आपने मुझे ऐसे विषयों पर संबोधित करके बिल्कुल सही किया है, जो मुझे एक सुसंगत उत्तर देने के लिए क्षण भर के लिए अपने सामान्य विचारों से हटकर सोचने पर मजबूर करते हैं। आपकी स्वस्थ बेटियों का जिक्र मुझे उस दुनिया की याद दिलाता है जहां अन्य लोग रहते हैं - जहां मैं कभी रहता था। जैसा कि आपने उनका वर्णन किया है, वे बेहद सुखद हैं - मैं उन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहता।"

एलेन, जो मेरी सबसे बड़ी बेटी है, के बारे में आपने जो कुछ भी कहा है, उससे मेरा मन उसके प्रति बहुत सम्मान करने को प्रेरित हुआ है। मुझे व्यावहारिक सोच पसंद है जो दूसरों के भले के लिए काम करती है। मैं एक कर्तव्यनिष्ठ बेटी का सम्मान करता हूँ जो अपने माता-पिता को खुश रखती है।

'फैनी के चरित्र के बारे में मैं किसी से भी सुनी-सुनाई जानकारी नहीं लूंगी, खासकर उसके दयालु पिता से तो बिल्कुल नहीं, जिनका आम तौर पर मानव स्वभाव के बारे में आकलन इस बात पर अधिक आधारित होता है कि क्या होना चाहिए, न कि क्या है। फैनी का मूल्यांकन मैं स्वयं करूंगी, और वह भी न तो जल्दबाजी में और न ही पहली छाप के आधार पर।'

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि लुइसा को क्वीन्स कॉलेज में दाखिला मिलने का मौका है। मुझे आशा है कि वह सफल होगी। महोदय, उदासीन न रहें - इसके प्रति गंभीर रहें। चाहे आगे कुछ भी हो, शिक्षा प्राप्त करना एक अमूल्य लाभ है। चाहे कुछ भी हो जाए, यह आत्मनिर्भरता की ओर एक कदम है, और अविवाहित स्त्री के जीवन का एक बड़ा अभिशाप उसकी निर्भरता है। लुइसा के हृदय और मस्तिष्क दोनों की सराहना है कि वह स्वयं इस दाखिला की इच्छा रखती है। उसकी इस इच्छा को प्रोत्साहित करें। आपकी बेटियाँ - आपके बेटों की तरह - आपके कंधों पर बोझ नहीं

बननी चाहिए। आपकी बेटियों को - आपके बेटों की तरह - जीवन में सम्मानजनक मार्ग प्रशस्त करने का लक्ष्य रखना चाहिए। उन्हें घर पर रखने की इच्छा न रखें। मेरा विश्वास करें, शिक्षक भले ही मेहनती, कम वेतन पाने वाले और तिरस्कृत हों, लेकिन घर पर खाली बैठी लड़की स्कूल की सबसे मेहनती और सबसे कम वेतन पाने वाली कर्मचारी से भी बदतर स्थिति में होती है। मैंने जब भी देखा है, न केवल साधारण घरों में, बल्कि धनी घरों में भी, बेटियों के परिवारों को शादी की प्रतीक्षा करते हुए, तो मुझे उन पर दिल से दया आती है। अगर भाग्य उन्हें सुखमय विवाह दे तो यह निःसंदेह अच्छी बात है; लेकिन अगर ऐसा न हो, तो उनके जीवन को कोई उद्देश्य दें, उनके समय को कोई काम दें, अन्यथा निराशा की चिड़चिड़ाहट और आलस्य की उदासीनता निश्चित रूप से उनके स्वभाव को भ्रष्ट कर देगी।

अगर लुइसा अंततः गवर्नेंस का पद संभालती है, तो उसके भविष्य को लेकर चिंता न करें। आपने उसके चरित्र का जो वर्णन किया है, उससे मुझे लगता है कि उसकी सहेलियों में से सौ में से एक की तुलना में उसके सुखी होने की अधिक संभावना है। आकर्षक बाहरी रूप (जो हमेशा एक लाभ होता है - बच्चे इसे पसंद करते हैं), समझदार, मिलनसार स्वभाव, हंसमुख, स्वस्थ, अच्छी औसत क्षमता वाली, लेकिन ऐसी कोई विशेष प्रतिभा नहीं जो उसे व्यायाम की लालसा या नियंत्रण में विद्रोह करने से दुखी कर दे - ऐसे गुणों से युक्त लुइसा को गवर्नेंस का पद अपेक्षाकृत आसान लगेगा। अगर वह अपनी माँ की तरह है - जैसा कि आपने कहा है - और अगर, परिणामस्वरूप, उसे बच्चों से प्यार है, और उन्हें संभालने की कुशलता है, तो उनकी देखभाल करना उसका स्वाभाविक पेशा है - उसे गवर्नेंस बनना चाहिए।

ब्रेक्सबोर्न का आपका रेखाचित्र, जैसा वह है और जैसा वह पहले था, दुखद रूप से सुखद है। मुझे एक साल पहले लिखे गए आपके पत्र में उसका पहला चित्र याद है—सिर्फ एक साल पहले। मैं इसी कमरे में था—जहाँ मैं अभी हूँ—जब मुझे वह पत्र मिला था। तब मैं अकेला नहीं था। उन दिनों आपके पत्र अक्सर चर्चा का विषय बनते थे—बातचीत का मुद्दा; अब, मैं उन्हें पढ़ता हूँ, वापस उनके कवर में लपेटकर रख देता हूँ। मुझे लगता है कि जॉनसन ने कहीं उस आनंद का दुखद उल्लेख किया है जो तब मिलता है जब हम "अकेले होते हैं और उसे दूसरों के साथ साझा नहीं कर सकते।" ऐसी परिस्थितियों में विचार शब्दों में नहीं बदल पाते, आवेग क्रिया में परिणत नहीं हो पाते।

मैं कितनी अकेली हूँ, अगर ईश्वर ने मुझे करियर अपनाने का साहस न दिया होता — प्रकाशकों से दो लंबे, थका देने वाले वर्षों तक लगातार विनती करने की हिम्मत न दी होती, तब मेरी क्या हालत होती? जवानी बीत जाने, बहनों के बिछड़ जाने और एक ऐसे बंजर इलाके में रहने के बाद, जहाँ एक भी शिक्षित परिवार नहीं है, मेरी क्या हालत होती? उस स्थिति में तो मेरी कोई दुनिया ही नहीं होती: प्रलय का जायज़ा लेते-लेते थक चुका कौआ, जिसके पास लौटने के लिए कोई नाव न हो, मेरा ही रूप होता। फिर भी, किसी न किसी रूप में आशा और प्रेरणा मुझे सहारा दे रही है। काश, आपकी सभी बेटियों— काश, इंग्लैंड की हर महिला— के पास भी आशा और प्रेरणा होती। अफसोस! ऐसी बहुत सी कुंवारी महिलाएं हैं जिनके पास ये दोनों ही नहीं हैं। विश्वास कीजिए, आपकी सच्ची।

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

26 जुलाई, 1849।

'मेरे प्रिय महोदय, मुझे आपको एक पत्र लिखने के लिए खुद को प्रेरित करना होगा, कहीं ऐसा न हो कि लंबे समय तक चुप्पी अजीब लगे।'

आपकी बेटी की सफलता के बारे में सुनकर मुझे सचमुच बहुत खुशी हुई। मुझे उम्मीद है कि इसके परिणाम उसके और उसके माता-पिता दोनों के लिए स्थायी रूप से लाभकारी साबित होंगे।

आपके बच्चों की शिक्षा से भी अधिक महत्वपूर्ण आपकी पत्नी का स्वास्थ्य है, और इसलिए यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि इस संबंध में आपकी चिंता कम होने की संभावना है। उनके स्वयं के हित में, और दूसरों के हित में भी, यह आशा की जाती है कि अब उन्हें उनके दर्दनाक और खतरनाक दौरों की पुनरावृत्ति से सुरक्षा प्राप्त है। यह जानकर भी प्रसन्नता हुई कि माता के इस संकट के दौरान बेटियों में अच्छे गुण विकसित हो रहे हैं। आपकी बेटियाँ हमेशा ऐसा आचरण करें जिससे उनके पिता द्वारा उनके चरित्र के बारे में की गई प्रशंसा उचित हो; वे कभी भी ऐसा कुछ न करें जिससे उन्हें निराशा या दुःख हो।

मेरे बारे में आपका सुझाव कुछ मायनों में अच्छा है, लेकिन दो लोग ऐसे हैं जिन्हें यह पसंद नहीं आएगा; और इनमें सबसे ज़्यादा असुविधा उस युवती को होगी जिसे मैं हॉवर्थ की पहाड़ियों में आकर दफन होने का अनुरोध करूँ, जहाँ उसे एक गिरजाघर

और पथरीला कब्रिस्तान दिखाई दे, गाँव के पादरी के घर की खामोशी मिले—जहाँ दिन भर घड़ी की टिक-टिक सुनाई देती है—और एक गंभीर, शांत अविवाहित महिला उसकी साथी बने। मैं किसी युवा को इस तरह कैद में देखना पसंद नहीं करूँगा। हमारे घर की खामोशी और उदासी एक प्रसन्न आत्मा के लिए एक शांत आत्मा से कहीं अधिक दमनकारी होगी। सच तो यह है कि मेरा काम ही मेरा सबसे अच्छा साथी है; अब से मैं किसी बड़े सांसारिक सुख की उम्मीद नहीं करता सिवाय उस सुख के जो मुझे अपने काम से मिल सके। समाज के लिए, लंबे समय तक एकांतवास ने मुझे काफी हद तक अनुपयुक्त बना दिया है, मुझे संदेह है कि अगर मुझे यह मिले भी तो क्या मैं इसका आनंद ले पाऊँगा। कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे इसका आनंद लेना चाहिए, और मैं इसके लिए तरसता हूँ; लेकिन कभी-कभी मुझे अपनी प्रसन्नता प्राप्त करने या दूसरों को खुश करने की क्षमता पर संदेह होता है। एकांत कारावास में बंद कैदी, संगमरमर के ब्लॉक में फंसा मेंढक, समय के साथ सभी अपने भाग्य के अनुरूप ढल जाते हैं। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

13 सितंबर, 1849।

महोदय, मैं इस प्रूफ-शीट के विषय पर आपकी राय जानना चाहता हूँ। श्री टेलर ने इसकी आलोचना की है; उनका मानना है कि शर्ली की घबराहट से संबंधित सारा हिस्सा - कुत्ते का काटना, आदि - त्रुटिपूर्ण है। इसे पढ़कर आपको कैसा लगा?

मैं यह सवाल इसलिए पूछ रहा हूँ, जबकि मैं भली-भांति जानता हूँ कि अब इसे बदला नहीं जा सकता। किसी काम को अपने हाथों से निकलने से पहले मैं उसे सुधारने के लिए अथक परिश्रम कर सकता हूँ, लेकिन एक बार जब मैं उसे पूर्ण मानकर दूसरों के निरीक्षण के लिए प्रस्तुत कर देता हूँ, तो उसमें बदलाव या संशोधन करना लगभग असंभव हो जाता है। मन में इस बात का गहरा संदेह है कि शायद सब कुछ ठीक न हो, फिर भी मैं अनिवार्य रूप से गलत को स्वीकार करने के लिए विवश महसूस करता हूँ।

हाल ही में, पढ़ना मेरे लिए बहुत बड़ा सुकून और मनोरंजन का स्रोत रहा है। मैंने जे. सी. हेयर की 'गेसेस एट ट्रुथ' पढ़ी है, एक ऐसी किताब जिसमें गहन और दूरगामी ज्ञान से भरपूर बातें हैं जो कभी-कभी पास्कल के विचारों की याद दिलाती हैं, ठीक

वैसे ही जैसे चंद्रमा का प्रकाश सूर्य के प्रकाश की याद दिलाता है।

मैंने आर्चबिशप व्हाटली की पत्नी द्वारा लिखित अंग्रेजी सामाजिक जीवन पर एक छोटी सी पुस्तक बड़े आनंद से पढ़ी। अच्छी और बुद्धिमान महिलाएं ऐसे विषयों पर बहुत अच्छा लिखती हैं। यह लेखिका गवर्नेंस के बारे में लिखती हैं। मुझे इस विषय पर उनके द्वारा प्रस्तुत शैली और क्वार्टरली में मिस रिग्बी की शैली में अंतर देखकर आश्चर्य हुआ। कितना सूक्ष्म भाव है - कितना सच्चा भाव है - कितना सूक्ष्म मन है यहाँ!

मैंने डेविड कॉपरफील्ड पढ़ी है; मुझे यह बहुत अच्छी लगी - कुछ हिस्सों में तो प्रशंसनीय है। आपने कहा था कि इसमें जेन आयर से समानता है। हाँ, कभी-कभी है - डिकेंस को पुरुषों और चीजों के अपने विविध ज्ञान का कितना बड़ा लाभ प्राप्त है! मैं एकरमैन की गोएथे पढ़ना शुरू कर रहा हूँ - यह एक बहुत ही रोचक कृति होने का वादा करती है। ईमानदार, सरल, एकनिष्ठ एकरमैन! महान, शक्तिशाली, विशाल आत्मा वाले, लेकिन साथ ही बेहद अहंकारी, पुराने जोहान वुल्फगैंग वॉन गोएथे! वह एक प्रखर अहंकारी थे - मुझे लगता है कि वे थे: उन्होंने बेचारे एकरमैन के अस्तित्व को अपने भीतर समाहित करने में उतना ही संकोच किया जितना व्हेल योना को निगलने में करती है।

ऐसे लोगों के बारे में विस्तृत विवरण पढ़ने, उनके परिवेश और समाज की भयावह तस्वीरें देखने का सबसे बुरा पहलू यह है कि इससे वास्तविकता को देखने की असहनीय पीड़ादायक लालसा उत्पन्न होती है। लेकिन क्या ऐसी वास्तविकता अब भी मौजूद है? क्या यूरोपीय समाज की तमाम उथल-पुथल के बीच ऐसा कोई विशाल, शक्तिशाली, स्वार्थी, पुराना लेविथान आज भी भारी-भरकम रूप से विचरण कर रहा है? मुझे नहीं लगता। - विश्वास कीजिए, आपका सादर।

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

19 मार्च, 1850।

प्रिय महोदय, किताबें कल शाम को आ गईं, ठीक उसी समय जब मैं उनका बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। कॉर्नहिल पार्सल खोलने में मुझे बहुत दिलचस्पी है। काश दर्द न होता—पर यही हाल है। जैसे ही मैं डोरियाँ खोलकर किताबें निकालता हूँ, मुझे उन लोगों की याद आती है जो कभी ऐसे मौकों पर उत्सुकता से देखते थे; मुझे उन जानी-पहचानी आवाज़ों की कमी खलती है जो हँसी-मज़ाक और सुखद टिप्पणियाँ करती

थीं; कमरा एकदम शांत और खाली सा लगता है; फिर भी इस बात से तसल्ली मिलती है कि पापा को कुछ किताबें पसंद आएंगी। बिना बाँटे खुशी को खुशी कहना मुश्किल है—उसका कोई स्वाद नहीं होता।

मुझे आशा है कि श्रीमती विलियम्स स्वस्थ होंगी और हाल ही में हुए अपने प्रियजन की मृत्यु के सदमे से उबर रही होंगी। उन्होंने वास्तव में एक ऐसा नुकसान सहा है जिसकी भरपाई नहीं हो सकती। लेकिन उनके प्रियतम लोगों की बहुतायत को देखते हुए, मुझे विश्वास है कि यह खालीपन लंबे समय तक या बहुत अधिक महसूस नहीं होगा। उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि उन्होंने क्या खोया है, बल्कि इस बात पर कि उनके पास क्या है। आठ प्यारे बच्चों के साथ, वह कभी गरीब या अकेली कैसे हो सकती हैं! - विश्वास कीजिए, महोदय, आपका सादर।

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

12 अप्रैल, 1850।

"मेरे प्रिय महोदय, मैं स्वीकार करता हूँ कि कलकत्ता के समाचार पत्र के अनुमान के निराधार होने की आपकी पुष्टि पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। कहते हैं कि जब हम किसी बात को सच मानना चाहते हैं, तो हम उसे सच मानने के लिए प्रवृत्त होते हैं; लेकिन मुझे लगता है (अपने अनुभव के आधार पर) कि हम उस अफवाह पर और भी अधिक शीघ्रता से विश्वास कर लेते हैं जो चौंका देती है।"

डॉ. फोर्ब्स का मुझे अपनी पुस्तक देना बहुत बड़ी कृपा है। आशा है श्री स्मिथ मेरी ओर से इस उपहार के लिए धन्यवाद व्यक्त करेंगे। आप इसे अगले पार्सल के साथ भेज सकते हैं, या शायद मई के अंत से पहले मैं स्वयं लंदन में आ जाऊं। पिछले पत्र में मैंने जिस निमंत्रण का जिक्र किया था, वह अब भी मेरे मन में है, और मैं भली-भांति जानता हूं कि इसे स्वीकार करने से कुछ मामलों में कितनी तपस्या करनी पड़ेगी, साथ ही यह भी जानता हूं कि इससे अन्य मामलों में कितना लाभ होगा। मेरा अंतरात्मा कहता है कि कष्ट के भय को सुधार के मार्ग में बाधा बनने देना एक कायर का कार्य होगा। लेकिन कष्ट सहना पड़ेगा। कोई बात नहीं।

हाल ही में साउथी के जीवन का अध्ययन करके मुझे बहुत आनंद मिला। आत्मकथा, जिससे यह शुरू होती है, अत्यंत रोचक है, और उसके बाद के पत्र भी कम दिलचस्प नहीं हैं, जो उनकी ईमानदारी में अत्यंत प्रशंसनीय चरित्र और परोपकार में

अत्यंत सौम्य स्वभाव के साथ-साथ उनकी प्रतिभा में प्रशंसनीय बुद्धि को प्रकट करते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि प्रतिभा घरेलू सुख के साथ मेल नहीं खाती, फिर भी साउथी घर पर सुखी थे और उन्होंने अपने घर को सुखमय बनाया; कवि होने के बावजूद उन्होंने न केवल अपनी पत्नी और बच्चों से प्रेम किया, बल्कि कवि होने के कारण उनका प्रेम और भी बढ़ गया। ऐसा लगता है कि वे सांसारिकता से पूरी तरह मुक्त थे। लंदन, अपने ठाठ-बाठ और दिखावे के साथ, और विद्वतापूर्ण पांडित्य से भरे विद्वानों के समूह, उन्हें आकर्षित करने के बजाय भयभीत करते थे। उन्होंने अपनी प्रतिभा में ही अपना सर्वश्रेष्ठ गौरव और घरेलू स्नेह में ही अपना परम सुख पाया। मुझे साउथी पसंद हैं।

मैंने भी मिस ऑस्टेन की एक रचना - एम्मा - पढ़ी है। मैंने इसे रुचिपूर्वक और उतनी ही प्रशंसा के साथ पढ़ा है जितनी मिस ऑस्टेन स्वयं उचित और उपयुक्त समझतीं। इन रचनाओं की प्रशंसा में किसी भी प्रकार की गर्माहट या उत्साह - किसी भी प्रकार की ऊर्जा, मार्मिकता या दिल को छू लेने वाली भावनाएँ बिल्कुल अनुपयुक्त हैं: ऐसी सभी अभिव्यक्तियों को लेखिका एक सभ्य उपहास से देखतीं, और शांत भाव से उन्हें बेतुका और फिजूलखर्ची कहकर खारिज कर देतीं। वे सभ्य अंग्रेज़ लोगों के जीवन की सतही झलक को बड़ी कुशलता से चित्रित करती हैं। उनके चित्रण में एक चीनी निष्ठा और सूक्ष्म कोमलता है। वे अपने पाठक को किसी भी उग्रता या गहनता से विचलित नहीं करतीं। उनकी भावनाएँ उनके लिए पूरी तरह अनजान हैं; वे उस तूफानी स्त्री-समूह से मौखिक परिचय से भी परहेज करती हैं। यहाँ तक कि भावनाओं को भी वे कभी-कभार ही शालीनतापूर्वक लेकिन दूर से स्वीकार करती हैं - उनसे बार-बार संवाद करना उनकी सहज प्रगति को बाधित कर सकता है। उनका काम मानव हृदय से उतना नहीं था जितना कि मानव आँखों, मुख, हाथों और पैरों से। जो चीज़ें पैनी नज़र से देखती हैं, सटीक बोलती हैं, लचीले ढंग से चलती हैं, उनका अध्ययन करना उन्हें भाता है; लेकिन जो चीज़ें तेज़ और पूरी तरह से धड़कती हैं, भले ही छिपी हुई हों, जिनमें रक्त दौड़ता है, जो जीवन का अदृश्य केंद्र और मृत्यु का सजीव लक्ष्य हैं— मिस ऑस्टेन इन सब की अनदेखी करती हैं। वे अपनी दृष्टि से अपने वंश के हृदय को उतना ही नहीं देख पातीं जितना कि प्रत्येक मनुष्य अपने शरीर से धड़कते सीने में हृदय को नहीं देख पाता। जेन ऑस्टेन एक पूर्ण और अत्यंत संवेदनशील महिला थीं, लेकिन एक बहुत ही अपूर्ण और कुछ हद तक असंवेदनशील

(बेहोश नहीं) स्त्री थीं। अगर यह धर्म-विरोधी बात है, तो मैं कुछ नहीं कर सकती। अगर मैं यह बात कुछ लोगों (उदाहरण के लिए ल्यूज़) से कहूँ, तो वे सीधे मुझ पर अतिरंजित वीरता का समर्थन करने का आरोप लगाएँगे, लेकिन मुझे डर नहीं है कि आप ऐसी किसी भद्दी गलती में पड़ जाएँगे। — विश्वास कीजिए, आपकी सच्ची,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

9 नवंबर, 1850।

मेरे प्रिय महोदय, मैंने लॉर्ड जॉन रसेल का पत्र बड़े उत्साह और रुचि से पढ़ा है, और मैं उन्हें इसे लिखने के लिए एक उत्साही और समझदार व्यक्ति मानता हूँ। उन्होंने किसी बुढ़िया की तरह डर का शोर नहीं मचाया है और न ही कोई अतिरंजित क्रोध व्यक्त किया है। सबसे अच्छे अनुच्छेदों में से एक वह है जो लंदन के बिशप और पुसेयवादियों से संबंधित है। ओह! काश डॉ. अर्नोल्ड अभी जीवित होते, या कोई दूसरा डॉ. अर्नोल्ड मिल पाता! यदि चर्च ऑफ इंग्लैंड के उच्चाधिकारियों में ऐसे दस लोग होते, तो वह पोप द्वारा प्रदत्त सभी लाल टोपी और मोजों को चुनौती दे सकती थी। उसके पवित्र स्थल शुद्ध हो जाते, उसके रीति-रिवाज सुधर जाते, उसकी मुरझाई हुई नसें फिर से जीवन शक्ति से भर जातीं; लेकिन ऐसा नहीं है।

यह अच्छी बात है कि सत्य अविनाशी है—कि विनाश न तो उसे कुचल सकता है और न ही अग्नि उसके दिव्य सार को नष्ट कर सकती है। यद्यपि रूप बदलते हैं और संस्थाएँ नष्ट होती हैं, फिर भी "सत्य महान है और उसकी विजय होगी।"

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि मिस कावानाघ का स्वास्थ्य सुधर गया है। आप उन्हें अपनी किताब जब भी सुविधाजनक हो भेज सकते हैं। मुझे कुछ दिन पहले कॉर्नहिल से एक पत्रिका मिली जिसमें जेनी लिंड का चित्र था - एक प्यारी, स्वाभाविक, भोली-भाली किसान लड़की का चेहरा, जो एक बनावटी, आलीशान महिला के पहनावे के साथ अजीब तरह से मेल नहीं खा रहा था। मैं जेनी के चरित्र को पसंद करता हूँ और उसका सम्मान करता हूँ। फिर भी, कुछ समय पहले ही मैंने उसकी निंदा करते हुए सुना - मानो उसमें कोई गुण बचा ही न हो - बीस घिनौने दोष बताए गए।

"इसी तरह आर. एच. होम का भी एक बेहद सटीक चित्रण था, जिसमें उनका कल्पनाशील माथा और कुछ हद तक मूर्खतापूर्ण दिखने वाला मुंह और ठोड़ी थी, जो

उनके मिश्रित व्यक्तित्व को दर्शाती है, जिसे मैं मानता हूँ कि वे स्वयं में समाहित करते हैं। श्री होम अच्छा लिखते हैं। मार्लो की मृत्यु पर आधारित वह त्रासदी मुझे डुमास की कुछ बेहतरीन नाट्य रचनाओं की याद दिलाती है। — आपका अत्यंत सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

जनवरी, 1851।

प्रिय एलेन, मैंने कल लीडर अखबार भेजा था, जिसे आपको हमेशा पढ़ने के बाद तुरंत हन्सवर्थ भेजना होता है। जब तक मुझे यह मिलता रहेगा, मैं इसे भेजता रहूंगा।

मैं हाइड्रोपैथिक उपचार आजमा रहा हूँ; मुझे यह पसंद है, और मुझे लगता है कि इससे मुझे लाभ हुआ है। इसके साथ कुछ दिन पहले प्राप्त एक पत्र संलग्न है। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप इसे पढ़ें क्योंकि इससे मेरे स्वभाव और मन दोनों का काफी अच्छा अंदाजा लगता है; इसे पढ़ें, वापस भेजें और मुझे बताएं कि आप इसके बारे में क्या सोचते हैं।

थैकरे ने समय की पाबंदी न होने के कारण बहुत परेशानी खड़ी कर दी है। श्री विलियम्स का कहना है कि अगर श्री स्मिथ की ऊर्जा, उत्साह और कार्यकुशलता से उन्हें मदद न मिली होती, तो वे पिछले कुछ हफ्तों की दिन-रात की मेहनत के बोझ तले दबकर मर गए होते।

'जल्द ही लिखें।

'सी. बी.'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

21 जुलाई, 1851।

मेरे प्रिय महोदय, — आपके अत्यंत रोचक पत्र का उत्तर देने में मैंने तब तक देरी की जब तक कि डिब्बा मेरे पास नहीं पहुँच गया; और अब जब वह आ गया है तो मैं केवल उसकी प्राप्ति की पुष्टि ही कर सकता हूँ: मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता कि डिब्बा खोलते समय मुझे कैसा महसूस हुआ। कॉर्नहिल के इन पार्सलों में किसी परी के उपहार जैसा जादुई आकर्षण है, साथ ही साथ स्कूल में घर से मिले किसी डिब्बे की तरह कम काव्यात्मक लेकिन अधिक ठोस आनंद भी है। आपने इस बार मुझे हमेशा से भी अधिक पुस्तकें भेजी हैं, और सभी अच्छी हैं।

नीचे बड़े आराम से रखी हुई बीस शानदार नक्काशीदार तस्वीरों के बारे में मैं क्या

कहूँ? मानो पूरी वर्नोन गैलरी को अपने घर में ही बुला लिया गया हो! सचमुच, मैं कुछ नहीं कह सकता, सिवाय इसके कि मैं उनका ध्यान रखूँगा, उन्हें साफ रखूँगा और बिना किसी नुकसान के वापस भेज दूँगा। — विश्वास कीजिए, आपका सच्चा।

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

6 नवंबर, 1851।

महोदय, मुझे आपके पुत्र फ्रैंक के लिए श्रीमती गैस्केल से परिचय पत्र भेजते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है, और मुझे पूरी उम्मीद है कि यह परिचय उनके लिए लाभकारी सिद्ध होगा। सब कुछ सुनिश्चित करने के लिए—क्योंकि मैं संदेहपूर्ण आधार पर आगे बढ़ना पसंद नहीं करता—मैंने उनसे पूछा कि क्या वे परिचय की अनुमति देंगी। उनके स्पष्ट और विनम्र उत्तर से मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई।

मुझे किताबें मिल गई हैं। आशा है कि 'द फेयर कैरू' पढ़ने के बाद मैं फिर से लिखूंगा। शीर्षक ही शुभ संकेत देता है—यह घिसा-पिटा नहीं लगता। विश्वास कीजिए, आपका सच्चा मित्र।

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 28 मई, 1853।

'मेरे प्रिय महोदय, — पुस्तकों का बक्सा कल शाम सुरक्षित रूप से पहुँच गया, और मैं विशेष रूप से चयन के लिए आभारी हूँ, क्योंकि इसमें कई ऐसी पुस्तकें शामिल हैं जो मेरे पिता को स्वीकार्य और रुचिकर लगेंगी।'

आज मैं लौटाई गई पुस्तकों का एक बक्सा भेज रहा हूँ। उनमें से दो-तीन पुस्तकें वही होंगी जो अभी भेजी गई हैं, जिन्हें मैंने पहले पढ़ा था — जैसे, मूर की 'लाइफ एंड कॉरेस्पोंडेंस', पहला और दूसरा खंड; लैमार्टिन की 'रेस्टोरेशन ऑफ द मोनार्की', आदि। हाल ही में सुहावने मौसम के दौरान मैंने कई बार आपके बारे में सोचा है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि आपको गर्मी और धूप कितनी अच्छी लगती है। मुझे उम्मीद है कि इस मौसम ने हमेशा की तरह खुशनुमा और लाभकारी प्रभाव डाला है। श्रीमती विलियम्स और उनकी बेटियों को मेरी ओर से शुभकामनाएँ देना, और — विश्वास कीजिए, आपका सच्चा,

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

6 दिसंबर, 1853।

मेरे प्रिय महोदय, मैंने पिछले सप्ताह कॉर्नहिल को लौटाई गई पुस्तकों का एक बक्सा भेजा था, मुझे उम्मीद है कि वह सुरक्षित रूप से पहुँच गया होगा। आज मुझे एडिनबर्ग गार्जियन प्राप्त हुआ, जिसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।

कृपया और किताबें चुनने या भेजने की जहमत न उठाएं। ये शिष्टाचार एक दिन समाप्त हो जाएंगे, और मैं इन्हें बेवजह इस्तेमाल करने की बजाय छोड़ देना बेहतर समझूंगा। — विश्वास करें, आपका सादर,

‘सी. ब्रोंटे।’

अध्याय पंद्रह: विलियम मेकपीस थैकरे

शार्लोट ब्रोंटे की थैकरे के प्रति, या यों कहें कि थैकरे की प्रतिभा के प्रति, निष्ठा साहित्यिक इतिहास का एक सुखद अध्याय है। जैसा कि हम देख चुके हैं, 1848 में उन्होंने मिस ब्रोंटे को वैनिटी फेयर की एक प्रति भेजी थी। 1852 में उन्होंने उन्हें एस्मंड की एक प्रति भेजी, जिस पर मित्रता का भाव दर्शाते हुए हार्दिक संदेश लिखा था।

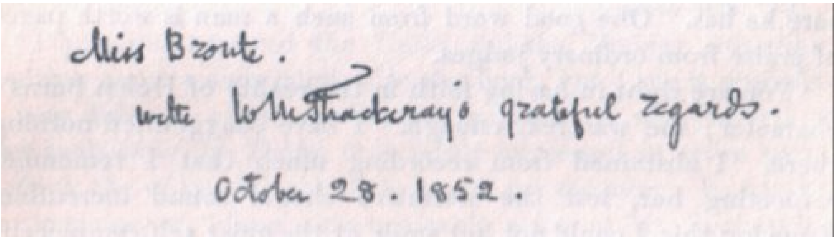

जेन आयर के दूसरे संस्करण को उन्हें समर्पित किया गया था, जिसमें उन्हें 'अपने समकालीनों द्वारा अब तक मान्यता प्राप्त बुद्धि से कहीं अधिक गहन और अद्वितीय बुद्धि' रखने वाला और 'उस समय का पहला सामाजिक पुनरुत्थानकर्ता' बताया गया था। और जब करर बेल का निधन हुआ, तो थैकरे ने ही उनकी स्मृति में सबसे भावपूर्ण श्रद्धांजलि लिखी। जब श्री जॉर्ज स्मिथ द्वारा लॉरेंस द्वारा बनाए गए थैकरे के चित्र की एक प्रति हॉवर्थ भेजी गई, तो शार्लोट ब्रोंटे उसके सामने खड़ी हुईं और आधे मज़ाकिया अंदाज़ में, आधे गंभीरता से, अपनी मुट्ठी हिलाते हुए मूल चित्र को 'तू महान है!' कहकर संबोधित किया।

इस तरह की नायक-पूजा के साथ, यह कल्पना की जा सकती है कि किसी भी अनुकूल आलोचना ने उन्हें अपने 'गुरु' से मिलने वाली आलोचना से अधिक असीम आनंद नहीं दिया होगा, क्योंकि वह अपने से केवल सात वर्ष बड़े और जिनकी सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें व्यावहारिक रूप से उनकी अपनी पुस्तकों के समकालीन थीं, पर विचार करने में कोई संकोच नहीं करती थीं।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 28 अक्टूबर, 1847।

प्रिय महोदय, आपका पिछला पत्र पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई और उस पर विचार करना अत्यंत उत्साहवर्धक है। श्री ठाकरे द्वारा सराहे जाने पर मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूँ, क्योंकि मैं श्री ठाकरे का प्रशंसक हूँ। शायद यह बात थोड़ी अहंकारपूर्ण लगे, लेकिन मेरा तात्पर्य यह है कि मैंने उनके लेखन में लंबे समय से वास्तविक प्रतिभा को पहचाना है, जिसकी मैं प्रशंसा करता हूँ, जिससे मैं आश्चर्यचकित होता हूँ और आनंदित होता हूँ। कोई भी लेखक उनके जितना उत्कृष्ट ढंग से वास्तविक और नकली में अंतर नहीं कर पाता। मेरा यह भी मानना था कि उनकी कठोर बाहरी दिखावट के भीतर गहरी और सच्ची भावनाएँ छिपी हैं। अब मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसा ही है। ऐसे व्यक्ति का एक अच्छा शब्द साधारण विद्वानों की

प्रशंसा के पन्नों के बराबर है।

हेलेन बर्न्स के चरित्र की वास्तविकता पर आपका विश्वास बिल्कुल सही है; वह सचमुच वास्तविक थीं। मैंने इसमें कुछ भी बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहा है। मैंने उनके बारे में जो कुछ भी याद है, उसे लिखने से परहेज किया है, कहीं ऐसा न हो कि कहानी अविश्वसनीय लगे। यह जानते हुए भी, मुझे उस शांत, आत्मसंतुष्ट हठधर्मिता पर हंसी आ गई, जिसके साथ एक पत्रिका ने लिखा है कि "हेलेन बर्न्स जैसी रचनाएँ बहुत सुंदर होती हैं, लेकिन बिल्कुल असत्य होती हैं।"

जेन आयर की कहानी भले ही घिसी-पिटी हो। श्री थैकरे कहते हैं कि उन्हें यह जानी-पहचानी लगती है। लेकिन अपेक्षाकृत कम उपन्यास पढ़ने के कारण, मुझे इससे पहले कभी सामना नहीं करना पड़ा था, और मुझे यह मौलिक लगी। एथेनियम के आलोचक द्वारा उल्लिखित कृति के बारे में मुझे सुनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था।

'द वीकली क्रॉनिकल' मुझे श्रीमती मार्श के समान बताने की कोशिश कर रहा है। मुझे अपने जीवन में कभी श्रीमती मार्श की एक पंक्ति भी पढ़ने का सौभाग्य नहीं मिला, लेकिन मैं उनकी रचनाएँ पढ़ना चाहता हूँ और ऐसा करने का पहला अवसर मिलते ही इसका लाभ उठाऊँगा। मुझे उम्मीद है कि मैं अनजाने में उनकी नकल करने वाला नहीं बनूँगा।'

मैं जेन आयर की अंतिम सफलता को लेकर अपनी उम्मीदें कम ही रखना चाहूँगा। लेकिन मेरी इच्छा है कि यह सफल हो, क्योंकि आपने इस काम में बहुत मेहनत की है, और अगर आपकी मेहनत बेकार जाए और आपकी आशाएँ टूट जाएँ तो मुझे बहुत दुख होगा। अगर मैं फिर से कहूँ कि मुझे लगता है कि मेरी आशाएँ कुछ ज़्यादा ही आशावादी हैं, तो मुझे माफ़ करना; बेहतर होगा कि मैं उन्हें थोड़ा कम करूँ। मासिक पत्रिकाओं और उपन्यासों के आलोचक जेन आयर में ऐसा क्या देखेंगे (अगर वे इसे पढ़ने की कृपा भी करें), जो उन्हें थोड़ी सी भी सराहना दिलाए? इसमें कोई ज्ञान नहीं है, कोई शोध नहीं है, इसमें सार्वजनिक हित के किसी विषय पर चर्चा नहीं है। मुझे डर है कि एक साधारण घरेलू उपन्यास बड़े विचारों और ठोस उपलब्धियों वाले लोगों को तुच्छ लगेगा।

फिर भी, आपके जैसे ऊर्जावान और अथक प्रयासों से कुछ हद तक अनुकूल परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे, और मुझे विश्वास है कि ऐसा होगा। — आपका सादर, महोदय।

‘सी. बेल.

28 अक्टूबर, 1847।

मुझे अभी-अभी टैबलेट और मॉर्निंग एडवर्टाइज़र मिले हैं। दोनों ही अखबार किताब के विरोधी नहीं लगते, लेकिन मैंने देखा है कि अलग-अलग स्वभाव वाले लोगों पर इसका अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। टैबलेट में छपे विश्लेषण पर मुझे हंसी आई, कुछ जगहों पर इसे अजीब तरीके से व्यक्त किया गया है। मुझे लगता है कि आलोचक मेरी बात पूरी तरह समझ नहीं पाए; उदाहरण के लिए, वे "मिस्टर रोचेस्टर के अरुचिकर व्यवहार पर जेन की अकल्पनीय घबराहट" की बात करते हैं। मुझे यह याद नहीं है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

11 दिसंबर, 1847।

'प्रिय महोदय, मैंने आपको पत्र लिखने में इसलिए देरी की क्योंकि मुझे उम्मीद थी कि आपके द्वारा भेजा गया पार्सल मुझ तक पहुँच जाएगा; लेकिन कीघली, ब्रैडफोर्ड और लीड्स स्टेशनों पर उचित पूछताछ करने के बाद भी मुझे इसकी कोई खबर नहीं मिली, इसलिए मुझे यह निष्कर्ष निकालना होगा कि यह खो गया है।'

“हालांकि, मैंने किसी तरह दूसरे माध्यम से फ्रेजर की पत्रिका देखने का इंतजाम कर लिया है, इसलिए मुझे श्री होम के उदार उपहार के लिए केवल खेद है। जब आप उनसे मिलें तो मेरी ओर से उन्हें धन्यवाद दें और उनसे कहें कि मैंने उनकी इस विनम्रता का पहले आभार व्यक्त नहीं किया, इसके लिए रेलवे ही जिम्मेदार है।”

श्री लेवेस बहुत उदार हैं: मुझे उनसे कुछ सख्ती की उम्मीद थी, लेकिन उन्होंने मुझे इससे बचा लिया। यह समीक्षा बाकी सभी समीक्षाओं से अलग है। वे वाकई असाधारण बुद्धि के व्यक्ति हैं: उनकी कुछ टिप्पणियों में विलक्षण बुद्धिमत्ता झलकती है; फिर भी वे हमेशा सही नहीं होते। मुझे डर है कि अगर उन्हें पता होता कि मैं कितना कुछ अंतर्ज्ञान से लिखता हूँ और कितना कम वास्तविक ज्ञान से, तो वे मुझे लिखने का घिनौना ही समझते। मुझे यकीन है कि अगर उन्हें मेरी सीमित ज्ञान और सीमित पठन-पाठन का पता होता, तो उनकी यही राय होती।

'ऐसे क्षण भी आते हैं जब मुझे यह विश्वास करना मुश्किल हो जाता है कि मैंने जो कुछ भी किया है, वह श्री थैकरे, सर जॉन हर्शेल, श्री फॉनब्लैंक, ली हंट और श्री लेवेस जैसे लोगों को क्षणिक आनंद देने योग्य समझा जाए - मेरे विनम्र प्रयासों का

ऐसा परिणाम होना ही एक महान पुरस्कार है।'

श्रीमान स्मिथ द्वारा कल भेजा गया बैंक बिल पाकर मुझे बहुत खुशी और गर्व हुआ, लेकिन श्री थैकरे के एक नोट के अंश वाले आपके पत्र को पाकर मुझे जो आनंद हुआ, वैसा आनंद मुझे शायद ही कभी हुआ हो। उस नोट में उन्होंने जेन आयर को पढ़कर अपनी संतुष्टि व्यक्त की थी। श्री थैकरे एक तीक्ष्ण और निर्मम व्यंग्यकार हैं। मैंने उनके लेखन को हमेशा प्रशंसा और आक्रोश की मिली-जुली भावनाओं के साथ ही पढ़ा है। मुझे लगता है कि आलोचक यह नहीं जानते कि वे कितने बौद्धिक अजगर हैं। वे उन्हें "हास्यपूर्ण," "प्रतिभाशाली" कहते हैं - उनका हास्य अत्यंत तीखा और बेहद घातक है: वे अपने शिकार के साथ खेलते नहीं, बल्कि उसे अपने घेरे में जकड़कर कुचल देते हैं। वे "संसार" के झूठ और मूर्खताओं के विरुद्ध अपने युद्ध में अत्यंत गंभीर प्रतीत होते हैं। मैं अक्सर सोचता हूँ कि वह "संसार" उनके बारे में क्या सोचता होगा। मेरे विचार से ऐसे व्यक्ति की सबसे बड़ी खामी मानव स्वभाव में निहित किसी भी अच्छाई पर अविश्वास करना होगा— अच्छे कार्यों के पीछे छिपी बुरी मंशाओं के प्रति गहरा संदेह। क्या यही उसकी कमियां हैं?

'कम से कम, ये उनकी लिखित भावनाओं की कमियाँ हैं, क्योंकि वे किसी भी पुरुष या महिला को एक साथ अच्छा और बुद्धिमान चित्रित नहीं कर पाते। क्या वे परोपकार को कमजोरी और बुद्धिमत्ता को मात्र छल समझकर भ्रमित नहीं कर देते?'

लेकिन मैं आपको बहुत लंबा पत्र लिखकर आपका समय बर्बाद नहीं करना चाहता। — विश्वास कीजिए, आपका सादर,

'सी. बेल.

आपके पत्र के बाद से मुझे शेफ़ील्ड आइरिस, ब्रैडफ़ोर्ड ऑब्ज़र्वर, द गार्जियन, न्यूकैसल गार्जियन और संडे टाइम्स मिले हैं। आखिरी दो अख़बारों में छपी समीक्षाओं में अंतर देखकर मुझे हंसी आ गई। संडे टाइम्स तो जेन आयर को लगभग बेहद निंदनीय और घृणित बता रहा है, जबकि न्यूकैसल गार्जियन इसे एक सौम्य औषधि की तरह समझ रहा है जिसे "सबसे नाज़ुक बीमार व्यक्ति को भी सुरक्षित रूप से दिया जा सकता है।" मेरा मानना है कि आलोचकों के बीच मतभेद होने पर जनता को ही फैसला करना चाहिए।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 23 दिसंबर, 1847।

‘प्रिय महोदय, — मुझे खुशी है कि आप और श्रीमान स्मिथ एंड एल्डर दूसरी प्रस्तावना को स्वीकार करते हैं।

मैंने पहले खंड की और दूसरे खंड के कुछ हिस्सों की त्रुटियों की सूची भेज दी है। शेष सुधार मैं यथाशीघ्र भेज दूंगा।

क्या संलग्न समर्पण पर्याप्त होगा? मैंने इसे संक्षिप्त रखा है, क्योंकि मैं आडंबर या दिखावे से बचना चाहता था।

‘चर्च ऑफ इंग्लैंड जर्नल में छपी खबर से मुझे बहुत खुशी हुई, और मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि यह चर्च ऑफ इंग्लैंड जर्नल में छपी थी। मिरर जैसे आलोचक चाहे कुछ भी कहें, मैं चर्च ऑफ इंग्लैंड से प्रेम करता हूँ। उसके पादरियों को मैं अचूक व्यक्ति नहीं मानता, मैंने उन्हें बहुत करीब से देखा है, लेकिन एस्टैब्लिशमेंट से, उसकी तमाम कमियों के बावजूद - अपवित्र अथानासियन पंथ को छोड़कर - मैं दिल से जुड़ा हुआ हूँ।’

क्या एडिनबर्ग रिव्यू में श्री थैकरे के लेखन पर आने वाली समीक्षा श्री लेवेस द्वारा लिखी गई है? मुझे उम्मीद है कि ऐसा ही हो। श्री लेवेस, अपनी गहरी समझ और उत्कृष्ट सूझबूझ के साथ, वैनिटी फेयर के लेखक के साथ न्याय करने में सक्षम होने चाहिए। बस उन्हें फील्डिंग के स्तर तक नहीं गिराना चाहिए - वे फील्डिंग से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। मुझे लगता है कि थैकरे की तुलना में फील्डिंग की शैली नीरस है और जीवन और मानव स्वभाव के प्रति उनके विचार भद्दे हैं।

आपकी शुभकामनाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, और हार्दिक शुभकामनाओं का प्रतिफल देते हुए, मैं आपका आदरपूर्वक आभारी रहूंगा।

‘सी. बेल.

'इस लिखावट पर सरसरी नजर डालने पर मुझे पता चला कि यह इतनी अस्पष्ट रूप से लिखी गई है कि मुझे डर है कि आप इसे शायद ही समझ पाएंगे; लेकिन इसके लिए कुछ हद तक ठंड भी जिम्मेदार है - मेरी उंगलियां सुन्न हो गई हैं।'

यहां जिस समर्पण की बात हो रही है, वह थैकरे को समर्पित है। लोग पहले से ही यह अनुमान लगा रहे थे कि यह पुस्तक थैकरे ने किसी छद्म नाम से लिखी होगी; कुछ अन्य लोगों ने, थैकरे के जीवन में 'एक महिला से जुड़ी कुछ कहानी' को जानते हुए, यह संकेत दिया था कि यह महान उपन्यासकार की किसी प्रेमिका ने लिखी होगी। वास्तव में, क्वार्टरली ने भी कुछ ऐसा ही इशारा किया था। लंदन की गपशप से

अनभिज्ञ करर बेल ने पूरे उत्साह से अपनी पुस्तक थैकरे को समर्पित कर दी थी। जब उन्हें पता चला कि श्री थैकरे की पत्नी, जेन आयर में रोचेस्टर की पत्नी की तरह, मानसिक रूप से अस्वस्थ थीं, तो उन्हें गहरा दुख हुआ। हालांकि, उनके साथ उनका पत्राचार सौहार्दपूर्ण ढंग से समाप्त हुआ प्रतीत होता है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 28 जनवरी, 1848।

'प्रिय महोदय, — आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि जब मैंने आपके पत्र के भीतर श्री ठाकरे का पत्र देखा, तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। कुछ समय तक मैंने इसे खोलने का साहस नहीं किया, कहीं ऐसा न हो कि इसे प्राप्त करने की मेरी खुशी इसकी सामग्री जानने पर दुख में बदल जाए — संक्षेप में, कहीं ऐसा न हो कि समर्पण किसी तरह से उन्हें अस्वीकार्य हो।'

और, सच कहूँ तो, मुझे डर है कि ऐसा ही हुआ होगा; वह ऐसा कहता नहीं है, उसका पत्र अपनी महान सादगी में अत्यंत मैत्रीपूर्ण है, लेकिन वह मुझे शुरुआत में ही एक ऐसी घटना से अवगत कराता है जिसने मुझे आश्चर्यचकित और भयभीत दोनों कर दिया।

मुझे लगता है कि आपको यह बात बताना कोई अनुचित बात नहीं है, क्योंकि आप इसे पहले से ही जानते होंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी निजी स्थिति कुछ मामलों में वैसी ही है जैसी मैंने श्री रोचेस्टर के बारे में बताई है; इसी से यह अफवाह फैली कि जेन आयर उनके परिवार की एक गवर्नेंस ने लिखी थी, और अब जब इसका समर्पण प्रकाशित हुआ है तो इस अनुमान की पुष्टि हो गई है।

यह कहना बिल्कुल सही होगा कि हकीकत अक्सर कल्पना से भी कहीं अधिक विचित्र होती है! यह संयोग मुझे उतना ही दुर्भाग्यपूर्ण और असाधारण लगा। बेशक, मुझे श्री थैकरे के घरेलू मामलों के बारे में कुछ भी पता नहीं था; मेरे लिए उनका अस्तित्व केवल एक लेखक के रूप में था। उनके व्यक्तित्व, रुतबे, संबंधों, निजी इतिहास के बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था, और आज भी काफी हद तक मुझे कुछ भी पता नहीं है; लेकिन मुझे बहुत दुख है कि मेरी अनजाने में हुई एक गलती ने उनके नाम और उनके निजी मामलों को आम गपशप का विषय बना दिया।

'मैंने उन्हें जो पीड़ा और असुविधा पहुंचाई होगी, उसके बावजूद उनका ज़रा भी शिकायत न करना और मुझसे इतनी दयालुता से बात करना, मेरे दुख को और बढ़ा

देता है। मैं अपने उत्तर में उनके प्रति अपनी खेद को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सका, क्योंकि मुझे इस बात का एहसास था कि उस खेद का कोई मूल्य नहीं था - मेरे द्वारा किए गए नुकसान को ठीक करने के लिए वह बिल्कुल बेकार था।'

'क्या आप मुझे इस विषय पर कुछ और बता सकते हैं? या क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि इस दुर्भाग्यपूर्ण संयोग का उन पर किस हद तक प्रभाव पड़ेगा - क्या इससे उन्हें बहुत अधिक और गहरा कष्ट होगा; क्योंकि वे स्वयं इस विषय पर बहुत कम बोलते हैं, इसलिए मुझे सटीक सत्य का अनुमान लगाने में कठिनाई हो रही है - लेकिन मुझे डर है।'

मेरे प्रिय महोदय, आपने समय-समय पर मेरे भविष्य के साहित्यिक मार्गदर्शन के लिए जो सलाह दी है, उस पर मेरी चुप्पी देखकर यह न सोचें कि मैं आपकी दयालुता की अवहेलना कर रहा हूँ या उसके प्रति उदासीन हूँ। मैं आपके पत्र संभाल कर रखता हूँ और अक्सर उनका संदर्भ लेता हूँ। परिस्थितियाँ शायद आपके द्वारा दी गई सलाह का अक्षरश: पालन करना मेरे लिए अव्यावहारिक बना दें, लेकिन मुझे लगता है कि मैं आपके उपदेशों की भावना को समझता हूँ और मुझे विश्वास है कि मैं उनसे लाभान्वित हो सकूँगा। जिन विवरणों और स्थितियों को मैं नहीं समझता और जिनका मैं व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण नहीं कर सकता, उनमें मैं किसी भी कीमत पर हस्तक्षेप नहीं करूँगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं श्रीमती ट्रोलोप की कृति 'फैक्ट्री बॉय' से भी अधिक हास्यास्पद गड़बड़ कर दूँ। इसके अलावा, मैं किसी भी विषय पर, चाहे वह सार्वजनिक हो या निजी, तब तक कोई भावना व्यक्त नहीं करूँगा जब तक मैं वास्तव में उसका अनुभव न कर लूँ। फिर भी, यद्यपि मुझे अपनी सहानुभूति सीमित करनी होगी; यद्यपि मेरा अवलोकन उन गहरे राजनीतिक और सामाजिक सत्यों तक नहीं पहुँच सकता जिन्हें सीखा जाना है; यद्यपि ज्ञान के कई द्वार जो आपके लिए खुले हैं, मेरे लिए हमेशा के लिए बंद हैं; हालांकि मुझे अंधेरे में अनुमान लगाना, गणना करना और टटोलना पड़ता है, और अनिश्चित निष्कर्षों पर अकेले ही पहुंचना पड़ता है, जबकि डिकेंस और थैकरे जैसे लेखकों को सत्य के मंदिर और प्रतिमा तक पहुंच प्राप्त है, उन्हें बस मंदिर में जाना होता है, एक पल के लिए पर्दा उठाना होता है, और बाहर आकर अपने देखे हुए को व्यक्त करना होता है—फिर भी हर कठिनाई के बावजूद, मैं अपने सीमित तरीके से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने का इरादा रखता हूं। मेरा सर्वश्रेष्ठ प्रयास अपूर्ण और अपर्याप्त होगा, और सच्चे गुरुओं—विशेष रूप से महानतम आधुनिक गुरु

थैकरे (क्योंकि मैं हृदय से उनका पूर्ण आदर करता हूं)—की रचनाओं की तुलना में यह तुच्छ होगा, लेकिन मुझे विश्वास है कि यह बनावटी या नकली नहीं होगा।—विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आदर सहित।

'कुरर बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

29 मार्च, 1848।

मेरे प्रिय महोदय, चर्च ऑफ इंग्लैंड क्वार्टरली रिव्यू में प्रकाशित समीक्षा कुल मिलाकर बुरी नहीं है। यह सच है कि यह जेन आयर की प्रवृत्ति की निंदा करती है, और ऐसा लगता है कि यह मानती है कि श्री रोचेस्टर को "पुनर्जन्म" की रहस्यमय प्रक्रिया से गुजरते हुए दिखाया जाना चाहिए था, तभी कोई सम्मानित व्यक्ति उनके अतीत की गलतियों के लिए उनके पश्चाताप को सच्चा मान सकता था; यह भी सच है कि यह जेन के धर्म पर संदेह पैदा करती है, और यह संदेह पैदा करती है कि वह हिंदू, मुस्लिम या नास्तिक थी। लेकिन इन विलक्षणताओं के बावजूद, यह एक विवेकपूर्ण समीक्षा है, उदाहरण के लिए मिरर में प्रकाशित समीक्षा से बिल्कुल अलग, जो एक कमजोर दुर्भावना का परिणाम प्रतीत होती है, जबकि यह आलोचक की वास्तविक राय है: कुछ नैतिक और धार्मिक धारणाएँ उनकी प्रणाली के अनुसार नहीं हैं, और वे उनसे असहमत हैं।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि श्री लेवेस की नई रचना जल्द ही प्रकाशित होने वाली है, और यह जानकर भी प्रसन्नता हुई कि मेसर्स स्मिथ एंड एल्डर इसके प्रकाशक हैं। श्री लेवेस ने मुझे भेजे गए अपने पिछले पत्र में बताया था कि उन्होंने अपना नया उपन्यास लिखना पूरा कर लिया है, और तब से मैं इसके प्रकाशन के विज्ञापन का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। मैं इसे पढ़ने के लिए उत्सुक हूँ, कम से कम लेखक के व्यक्तित्व को और गहराई से समझने के लिए ही सही। मैंने रैनथॉर्प को बड़े चाव से पढ़ा था - उसमें सच्ची प्रतिभा झलकती थी। मुझे उसका दो तिहाई भाग उत्कृष्ट लगा, जबकि उत्तरार्ध कुछ जल्दबाजी में और सतही ढंग से लिखा हुआ प्रतीत हुआ।

मुझे उम्मीद है कि मिस कावानाघ की रचना को वह सफलता मिलेगी जिसकी वे और उनकी रचना आपके विवरण के आधार पर हकदार हैं। मुझे लगता है कि मैंने उनकी कहानी के तथ्यों की रूपरेखा किसी पत्रिका, शायद चैम्बर्स जर्नल में देखी है।

मुझे लगता है कि कोई भी आलोचक, चाहे वह कितना भी कठोर क्यों न हो, उनकी रचना की "प्रवृत्ति" में कोई कमी नहीं निकालेगा।

मैं आपको बताता हूँ कि आप फ्रांसीसियों के प्रति पूरी तरह सहानुभूति क्यों नहीं रख सकते, या उनके भविष्य के कदमों पर कोई दृढ़ विश्वास क्यों नहीं कर सकते: क्योंकि उनमें से बहुत कम लामार्टिन हैं, और बहुत सारे लेड्रू रोलिन हैं। कम से कम, यही कारण है कि मैं उनकी गतिविधियों को आशा से अधिक भय के साथ देखता हूँ। जर्मनों के साथ मामला अलग है: स्वतंत्रता के लिए उनके तर्कसंगत और न्यायसंगत प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं दी जा सकती हैं।

जैसा कि आपने कहा, ऐसा लगता है मानो इंग्लैंड भी बदलाव के करीब आ रहा है। यह समुद्र द्वारा उन भूमियों से अलग है जहाँ यह राजमहलों को हिला रहा है, लेकिन भूकंप समुद्र से नीचे तक आते हैं, और हम न तो वह दिन जानते हैं और न ही वह समय जब हमारे द्वीप के नीचे से गुजरने वाला कंपन और गर्मी इसकी नींव को हिलाकर रख दे। इस बीच, एक बात निश्चित है, अंत में सब कुछ भलाई के लिए ही होगा।

आपने ठाकरे और वैनिटी फेयर के अंतिम अंक का ज़िक्र किया। ठाकरे की रचनाएँ जितनी ज़्यादा मैं पढ़ता हूँ, उतना ही मुझे यकीन होता जाता है कि वे अद्वितीय हैं—अपनी बुद्धिमत्ता में अद्वितीय, अपनी सच्चाई में अद्वितीय, अपनी भावना में अद्वितीय (उनकी भावना, भले ही वे इसका शोर न मचाएँ, मुद्रित पृष्ठ पर अब तक की सबसे सच्ची भावनाओं में से एक है), अपनी शक्ति में अद्वितीय, अपनी सरलता में अद्वितीय, अपने आत्म-संयम में अद्वितीय। ठाकरे एक महान व्यक्तित्व हैं, इतने शक्तिशाली कि वे सबसे कठिन कारनामों को भी शांत भाव से अंजाम दे सकते हैं; उनके सबसे बड़े प्रयासों में भी शांति का आकर्षण और भव्यता है; वे उन्माद से कुछ नहीं लेते, उनकी ऊर्जा कभी उन्मादपूर्ण नहीं होती— उनकी ऊर्जा समझदारी भरी, सधी हुई और विचारशील होती है। वैनिटी फेयर का अंतिम अंक इसे विशेष रूप से सिद्ध करता है। ज़बरदस्त, अपनी शक्ति में उत्तेजक, उत्तेजक से भी कहीं अधिक प्रभावशाली, कथा की रुचि को एक प्रवाह में, गहरा, परिपूर्ण, अदम्य रूप से आगे बढ़ाते हुए, यह फिर भी शांत है—चिंतन की तरह शांत, स्मृति की तरह शांत; और मुझे इसके कुछ अंश किसी भविष्यवाणी की तरह गंभीर लगते हैं। ठाकरे कभी भी अपने जोश में बहकते नहीं हैं—वे इसे नियंत्रण में रखते हैं। उनकी प्रतिभा उन्हीं की आज्ञा मानती है—यह

उनकी सेवक है, यह अपनी मनमानी से कोई निरंकुश परिवर्तन नहीं करती, इसे वही कार्य पूरा करना होता है जो तर्क और बुद्धि इसे सौंपते हैं, और कुछ नहीं। ठाकरे अद्वितीय हैं। मैं इससे अधिक कुछ नहीं कह सकता, मैं इससे कम भी कुछ नहीं कहूंगा।—विश्वास कीजिए, आपका सादर,

'सी. बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

2 मार्च, 1849।

क्वार्टरली के प्रति आपकी उदार नाराजगी ने मुझे प्रभावित किया। लेकिन करर बेल के कारण नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं है; सिवाय उन मामलों के जहाँ मे-फेयर की गपशप और श्री थैकरे का नाम लिया गया था, उन्हें कभी कोई आपत्ति नहीं हुई, लेकिन उन्होंने निश्चित रूप से उस अंश और एक-दो अन्य अंशों को बिल्कुल अनुचित माना था। हालांकि, बिना किसी सच्चाई के निंदा शायद ही कभी हानिकारक होती है: यह जड़विहीन पौधे की तरह है और जल्द ही मुरझा जाती है।

अगर आलोचक को पता होता कि उसने कितनी मूर्खतापूर्ण गलतियाँ की हैं, अगर उसे पता होता कि श्री थैकरे और करर बेल एक-दूसरे से कितने अपरिचित हैं, कि जेन आयर को लेखक ने वैनिटी फेयर की एक भी पंक्ति देखे बिना लिखा था, या अगर सी. बेल को पता होता कि श्री थैकरे की निजी परिस्थितियों में व्यक्तिगत संदर्भ की कल्पना करने का कोई कारण मौजूद है, तो वह उस सज्जन को पुस्तक समर्पित करने के बजाय, ऐसे कदम को नासमझी भरा, उद्दंड और अनुचित मानते और तदनुसार इससे बचते। — विश्वास कीजिए, मेरे प्रिय महोदय, आपका सादर।

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

14 अगस्त, 1848।

"मेरे प्रिय महोदय, मेरी बहन ऐनी और मैं दोनों वाइल्डफेल हॉल पर आपकी सटीक समीक्षा के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। मुझे लगता है कि आपकी टिप्पणियों ने पुस्तक की खूबियों और कमियों दोनों को सटीक रूप से उजागर किया है, और उनके साथ दी गई सलाह हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और हम उस पर पूरा ध्यान देंगे।"

मेरे विचार से एक लेखक का पहला कर्तव्य सत्य और प्रकृति के प्रति निष्ठावान रहना है; दूसरा, कला का ऐसा सजग अध्ययन करना है जिससे वह इन दो महान

देवताओं द्वारा दिए गए संदेशों की स्पष्ट और प्रभावी व्याख्या कर सके। बेल्स सत्य की पूजा में अत्यंत निष्ठावान हैं और वे कला का अध्ययन करने की आशा रखते हैं ताकि एक दिन वे दृढ़ विश्वास की भाषा को प्रभावी ढंग से बोलने की क्षमता प्राप्त कर सकें; यद्यपि उन्हें यह आशंका है कि वे चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, जब भी विषय उनके मन को झकझोर देगा, कोई कठोर शब्द या उग्र स्वर शिष्ट श्रोताओं को चौंका देगा।

मुझे लगता है कि मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ कि मैं श्री थैकरे को आधुनिक विद्वानों में प्रथम और सत्य का वास्तविक महापुजारी मानता हूँ; मैं उनका अध्ययन श्रद्धापूर्वक करता हूँ। मैं देखता हूँ कि वे जलपरी की पूंछ को पानी के नीचे ही रखते हैं और केवल मृत पुरुषों की हड्डियों और उस विषैली कीचड़ की ओर इशारा करते हैं जिसके बीच वह रेंगती है; लेकिन उनका इशारा अन्य लोगों के विस्तृत स्पष्टीकरणों से कहीं अधिक सजीव है, और उनका व्यंग्य इतना तीखा कभी नहीं होता जितना तब होता है जब वे शांत व्यंग्यात्मक कटाक्ष के साथ विनम्रतापूर्वक जनता के सामने अपने अनुकरणीय विवेक और संयम की प्रशंसा प्रस्तुत करते हैं। दुनिया थैकरे को दो साल या एक साल पहले की तुलना में अब बेहतर जान रही है, लेकिन अभी भी उन्हें आधा ही जानती है। उनका दिमाग मुझे उतना ही सरल और दिखावा रहित लगता है जितना कि वह गहन और स्थायी है - सतही नज़र को आकर्षित करने या बांधे रखने के लिए कोई दिखावटी अलंकरण नहीं है; वास्तविक को पहचानने की उनकी महान क्षमता ऐसी है जिसे समय के साथ ही पूरी तरह समझा जा सकता है। वैनिटी फेयर के समापन भाग में कुछ ऐसा है, एक तरह का "गहराई से भरा हुआ", जिसे एक पीढ़ी की समझ से पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। सौ साल बाद, अगर वह खुद को न्याय दिलाने के लिए जीवित रहे, तो वह आज से कहीं अधिक प्रसिद्ध होंगे। सौ साल बाद, कोई विचारशील आलोचक, गहरे पानी में खड़े होकर नीचे देखते हुए, उसमें से एक अनमोल मोती को चमकते हुए देखेगा - एक ऐसा दिमाग जो बुलवर्स आदि के समकालीनों के पास नहीं था - अध्ययन से प्राप्त ज्ञान नहीं, बल्कि वह चीज जो उनके साथ इस दुनिया में आई थी - उनकी जन्मजात प्रतिभा: वह चीज जिसने उन्हें, मुझे संदेह नहीं है, बचपन में अन्य बच्चों से अलग बनाया, जिसने शायद उन्हें जीवन में विशेष दुख और संघर्ष दिए, और जो अब उन्हें एक लेखक के रूप में अन्य लेखकों से अलग बनाती है। इस विषय पर बार-बार चर्चा करने के लिए क्षमा करें, मैं आपको ऊबना नहीं चाहता।

आप कहते हैं कि मिस्टर हंटिंगडन आपको मिस्टर रोचेस्टर की याद दिलाते हैं। क्या सच में ऐसा है? फिर भी दोनों में कोई समानता नहीं है; दोनों के चरित्र की बुनियाद बिल्कुल अलग है। हंटिंगडन स्वभाव से स्वार्थी, कामुक और सतही व्यक्ति का उदाहरण है, जिसका हंसमुख स्वभाव केवल युवावस्था में ही काम आता है, जिसके सबसे अच्छे दिन उसके शुरुआती दिनों में ही बीत जाते हैं, जो अनुभव से कभी लाभ नहीं उठाता और उम्र बढ़ने के साथ-साथ और भी बिगड़ता चला जाता है। मिस्टर रोचेस्टर विचारशील स्वभाव और अत्यंत संवेदनशील हृदय वाले हैं; वे न तो स्वार्थी हैं और न ही आत्म-भोगी; वे कम पढ़े-लिखे और गुमराह हैं; जब वे गलती करते हैं, तो वह जल्दबाजी और अनुभवहीनता के कारण होती है: वे कुछ समय के लिए अन्य लोगों की तरह ही जीवन जीते हैं, लेकिन अधिकांश लोगों से कहीं अधिक श्रेष्ठ होने के कारण, उन्हें वह पतित जीवन पसंद नहीं आता और वे उसमें कभी खुश नहीं रहते। उन्हें अनुभव के कठोर सबक सिखाए गए हैं और उनमें उनसे ज्ञान प्राप्त करने की समझ है। वर्षों ने उन्हें निखारा है; युवावस्था का जोश छंट गया है, लेकिन उनमें जो वास्तव में अच्छाई है वह अभी भी शेष है। उनका स्वभाव उत्तम किस्म की शराब जैसा है: समय उन्हें खट्टा नहीं कर सकता, बल्कि उन्हें और भी परिपक्व बना देता है। कम से कम यही वह चरित्र था जिसे मैं चित्रित करना चाहता था।

वुथरिंग हाइट्स का हीथक्लिफ एक बिलकुल अलग ही रचना है। वह इस बात का जीता-जागता उदाहरण है कि निरंतर अन्याय और कठोर व्यवहार का किसी व्यक्ति के स्वभाव पर क्या प्रभाव पड़ सकता है, जो स्वभाव से ही विकृत, प्रतिशोधी और निर्दयी होता है। अगर उसे सावधानीपूर्वक प्रशिक्षित किया जाता और उसके साथ दयालुता से व्यवहार किया जाता, तो शायद वह एक इंसान बन सकता था, लेकिन अत्याचार और अज्ञानता ने उसे एक राक्षस बना दिया। सबसे बुरी बात यह है कि उसकी आत्मा का कुछ अंश उस पूरी कहानी में व्याप्त प्रतीत होता है जिसमें वह दिखाई देता है: वह हर मैदान और घाटी में भटकती है, और हाइट्स के हर देवदार के पेड़ में पुकारती है।

मुझे एग्जामिनर और एटलस अखबारों के लिए आपका धन्यवाद करना नहीं भूलना चाहिए। बेचारे श्री न्यूबी! एग्जामिनर ने तो उन्हें दोनों कानों से पकड़कर सूली पर चढ़ा दिया, ऊपर से एटलस ने उनके माथे पर अपमान का निशान लगा दिया। यह एक दयनीय स्थिति है, और उन्होंने अपने हमलावरों को मूर्खतापूर्ण जवाब देकर मामले को और भी बदतर बना दिया है। अफसोस की बात है कि उनका कोई दयालु मित्र नहीं है

जो उन्हें समझा सके कि एग्जामिनर से बहस न करना ही बेहतर है। “प्रिंटर” के बारे में उनका बहाना बहुत ही हास्यास्पद था, और उनका दूसरा नोट तो दयनीय है। मुझे केवल इस बात का अफसोस है कि एलिस और एक्टन बेल के नाम उनके मामले से जबरदस्ती जुड़ गए हैं। मेरी बहन ऐनी चाहती है कि मैं कहूँ कि अगर वह कभी कोई और रचना लिखे, तो कॉपीराइट का पहला प्रस्ताव निश्चित रूप से श्री स्मिथ को ही दिया जाएगा।

मुझे आशा है कि श्रीमती विलियम्स का स्वास्थ्य आपके अंतिम पत्र लिखने के समय से बेहतर होगा। आपको और आपके परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। —विश्वास कीजिए, प्रिय महोदय, आपका सादर।

‘सी. ब्रोंटे।’

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

19 अक्टूबर, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, मैं फिर से घर आ गया हूँ; और पहले की तुलना में अधिक शांत और वीरान जगह पर लौटने के बाद जो शुरुआती एहसास हुए, उनके बाद अब मैं सहज महसूस करने लगा हूँ। मुझे लगता है कि लंदन से तुलना करने पर हॉवर्थ अधिक उजाड़ नहीं लगता; बल्कि इसके विपरीत, मुझे ऐसे विचार, कल्पनाएँ और सुखद भावनाएँ मिली हैं, जो शायद कई लंबी सर्दियों की शामों को खुशनुमा बना देंगी।

‘आप मुझसे अपनी बेटियों के बारे में राय पूछ रही हैं। काश मैं आपको कोई ऐसी राय दे पाती जो स्वीकार्य हो। एक शाम की मुलाकात मेरे लिए राय बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है, यह केवल मेरे मन पर एक छाप छोड़ती है। वे मुझे व्यवहार और रूप-रंग में मनमोहक लगीं: एलेन का चरित्र ऐसा है जिससे मैं तुरंत जुड़ सकती हूँ, और फैनी और लुईसा दोनों की अपनी-अपनी खूबियाँ हैं। हालाँकि, मैं श्रीमती विलियम्स जैसे चेहरे में उनकी बेटियों के कोमल युवा चेहरे की तुलना में कहीं अधिक पढ़ सकती हूँ - समय, प्रयास और परिश्रम एक स्पष्ट लिखावट लिखते हैं, जो मुस्कान या डिंपल से कहीं अधिक स्पष्ट होती है। मुझे बताया गया था कि आपने एक बार फैनी को पेशेवर गायिका बनाने के बारे में सोचा था, और यह भी बताया गया था कि फैनी को यह परियोजना पसंद नहीं आई। मैंने मन ही मन सोचा, अगर उसे यह पसंद नहीं है, तो यह कभी सफल नहीं हो सकता। मुझे लगता है कि इतने कठिन करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए, कलाकार का इस मार्ग के प्रति झुकाव जन्मजात, दृढ़ और अटूट

होना चाहिए। कोई आग्रह या दबाव नहीं होना चाहिए; जन्मजात प्रतिभा और दृढ़ इच्छाशक्ति को ही आकांक्षी को पंख देने चाहिए—इसके अलावा और कुछ भी उसे सच्ची प्रसिद्धि तक नहीं पहुंचा सकता, और भला कौन कमजोर होकर उठेगा और फिर अपमानजनक पतन की ओर जाएगा? मुझे यकीन है कि आप अपनी बेटी को एक साधारण कलाकार नहीं देखना चाहेंगे, और यदि उसे शीर्ष स्थान पर पहुंचना है, तो केवल उसका अपना साहस और दृढ़ संकल्प ही उसे वहां पहुंचा सकता है; कम से कम मुझे तो यही लगता है। फैनी शायद प्रसिद्धि को अपमानजनक मानती है, और मेरा मानना है कि एक महिला के लिए यह अपमानजनक ही होती है, चाहे वह गौरवशाली ही क्यों न हो। अगर मैं लिंड जैसी न होती, तो मैं गायिका न बनती।

लंदन की मेरी यात्रा भले ही संक्षिप्त रही हो, लेकिन मेरे लिए यह यादगार रही। कई बार मुझे ऐसा लगा जैसे मैं सपने में हूँ—जो कुछ घट रहा था, उस पर विश्वास करना मेरे लिए मुश्किल था। उदाहरण के लिए, जब मैं कमरे में दाखिल हुआ और मिस मार्टिन्यू के हाथ में अपना हाथ रखा, तो उन्हें प्रणाम करने की क्रिया और उनकी उपस्थिति दोनों ही मुझे किसी सपने जैसी लगीं। फिर, जब श्री थैकरे के आने की घोषणा हुई और मैंने उन्हें प्रवेश करते देखा, उनकी लंबी कद-काठी को देखा, उनकी आवाज़ सुनी, तो पूरी घटना सचमुच सपने जैसी थी। मुझे यकीन सिर्फ इसलिए हुआ क्योंकि मैं बुरी तरह से आत्म-नियंत्रण खो बैठा था। ऐसे हालात में आत्मसम्मान बुरी तरह से आहत होता है: उस पर धिक्कार है जो किसी महान बुद्धिजीवी की उपस्थिति में अपने बारे में सोचता है! अगर मुझे बोलना न पड़ता, तो मैं शायद अच्छे से बोल पाता, लेकिन जब मुझसे कुछ पूछा गया तो मुझे जवाब देना पड़ा, और यह प्रयास मेरे लिए किसी यातना से कम नहीं था—मैंने मूर्खतापूर्ण ढंग से जवाब दिया।

आलोचकों के समूह के बारे में, मैं यह नहीं कह सकता कि उन्होंने मुझे बहुत प्रभावित किया; मुझे उनका प्रदर्शन बेहद पसंद आया। फोस्टर और चोर्ले, दोनों ही एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं, और दोनों का ही एक विशेष शिक्षाप्रद आचरण और बातचीत है जिस पर विचार करना अच्छा लगता है। मैं श्री फोस्टर को बिल्कुल भी नापसंद नहीं करता - बल्कि इसके विपरीत, लेकिन उनके ऊंचे स्वर और थैकरे के सरल व्यवहार के बीच का अंतर उतना ही है जितना शेक्सपियर के लेखन और मैक्रेडी के अभिनय के बीच का अंतर।

श्री चोर्ले ने मुझे बहुत आकर्षित किया। वे एक विलक्षण व्यक्तित्व हैं—ऐसे व्यक्ति

जिनकी आप गहराई से जांच-परख कर लें, लेकिन यह तय न कर पाएं कि उनके चरित्र के हर पहलू को परखने के बाद आपको उनसे घोर घृणा होगी या फिर उनकी छिपी अच्छाई के कारण आप उनकी स्पष्ट बुराई को माफ कर देंगे। उनके अप्रिय चेहरे, उनकी अजीब आवाज, यहां तक कि उनके दिखावटीपन और चेहरे के भावों को भी माफ किया जा सकता है, अगर इन कमियों को उनकी प्रतिभा और सच्ची अच्छाई की झलक से जोड़ा जाए। अगर उनमें केवल ज्ञान, चतुराई और परोपकार का ढोंग ही है, तो चोर्ले एक अद्भुत इंसान हैं।

अपनी पत्नी और बेटियों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देना, और — यकीन मानिए, आपका सच्चा शुभचिंतक।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 19 दिसंबर, 1849।

प्रिय एलेन, — मैं एक बार फिर हॉवर्थ में हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी रोमांचक भंवर से बाहर निकली हूँ। हालाँकि समाज और बदलाव के आदी किसी व्यक्ति को यह जल्दबाजी या उत्तेजना शायद उतनी महसूस न होती, लेकिन मेरे लिए ये बहुत स्पष्ट थीं। मेरी शक्ति और मनोबल अक्सर इन प्रयासों की माँगों के लिए अपर्याप्त साबित होते थे। मैं यथासंभव सहन करती थी, क्योंकि जब भी मैं कमजोर पड़ती, मैं देख सकती थी कि श्री स्मिथ परेशान हो जाते थे; उन्हें हमेशा लगता था कि मुझे परेशान करने के लिए कुछ कहा या किया गया है, जो कभी नहीं हुआ, क्योंकि मुझे विरोधियों से भी उत्तम व्यवहार मिला — ऐसे लोग जिन्होंने मुझे नीचा दिखाने की पूरी कोशिश की थी। मैंने उन्हें बार-बार समझाया कि मेरी कभी-कभार की चुप्पी केवल बोलने की शक्ति की विफलता थी, इच्छा की नहीं, लेकिन फिर भी उन्हें हमेशा लगता था कि इसके पीछे कोई और कारण है।

श्रीमती स्मिथ कुछ सख्त मिजाज की हैं, लेकिन उनमें समझदारी और विवेक है; उन्होंने मुझे बहुत गौर से देखा। जब वे सज्जनों से घिरी होती थीं, तब भी उनकी नजर मुझसे नहीं हटती थी। मुझे उनकी निगरानी अच्छी लगती थी, चाहे वह कई लोगों के बीच मेरी सुरक्षा कर रही हो या सिर्फ उनके प्रिय व्यक्ति के साथ। मुझे पूरा यकीन है कि उन्होंने जल्द ही यह जान लिया कि मैं सभी को, थैकरे समेत, किस नजरिए से देखता हूँ। उनके "जॉर्ज" एक युवा अंग्रेज व्यवसायी का बेहतरीन उदाहरण हैं; मैं उन्हें

ऐसा ही मानता हूँ, और मुझे गर्व है कि मैं उनके सहायकों में से एक हूँ।

"ठाकरे बौद्धिक रूप से एक महान व्यक्तित्व हैं। उनकी उपस्थिति और क्षमताएं मुझे बौद्धिक रूप से गहराई से प्रभावित करती हैं; मैं उन्हें एक इंसान के रूप में नहीं देखता और न ही जानता हूँ। बाकी सभी उनके सामने गौण हैं। कुछ के लिए मेरे मन में आदर है, और मुझे विश्वास है कि सभी के प्रति मेरा शिष्टाचार है। बेशक, मैं नहीं जानता कि वे मेरे बारे में क्या सोचते थे, लेकिन मेरा मानना है कि उनमें से अधिकांश मुझसे एक अधिक विलक्षण और प्रभावशाली व्यक्तित्व की अपेक्षा रखते थे। मेरा मानना है कि वे प्रशंसा करने के लिए और आलोचना करने के लिए अधिक उत्सुक थे। मैं ठाकरे को छोड़कर बाकी सभी के साथ सहज महसूस करता था, और उनके साथ मैं पूरी तरह से मूर्ख साबित हुआ।"

"अब, प्यारी नेल, तुम हॉवर्थ कब आ सकती हो? वहाँ बस जाओ और मुझे जल्द से जल्द बता देना। सबको मेरा ढेर सारा प्यार देना। — तुम्हारी,"

'सी. बी.'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

10 जनवरी, 1850।

"मेरे प्रिय महोदय, श्रीमती एलिस ने अपनी सुबह की मुलाकात कर ली है। मुझे शर्ली और जेन आयर के बारे में उनकी बातचीत बहुत अच्छी लगी। वह प्रशंसा तो अनिच्छा से करती हैं और अक्सर बनावटी ढंग से आलोचना करती हैं। लेकिन जब भी कोई समीक्षक यह जताता है कि वह जिस कृति की आलोचना कर रहा है, उससे वह पूरी तरह प्रभावित और प्रेरित हुआ है, तो बाकी सब कुछ माफ करना आसान हो जाता है—नफरत और व्यक्तिगत पूर्वाग्रह को छोड़कर।"

मुझे एडिनबर्ग रिव्यू प्राप्त हुआ और मैंने उसे पढ़ा - यह बहुत ही क्रूर और बर्बर है। मैं लेवेस से नाराज नहीं हूँ, लेकिन मैं चाहता हूँ कि भविष्य में वह मुझे अकेला छोड़ दे और फिर कभी ऐसा कुछ न लिखे जिससे मुझे इतनी ठंड और बेचैनी महसूस हो, जैसा कि मुझे अभी हो रहा है।

थैकरे की क्रिसमस बुक ने मुझे एक साथ दुखी और प्रसन्न किया, जैसा कि उनकी अधिकांश रचनाएँ करती हैं। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि जब भी वे लिखते हैं, मेफिस्टोफेल्स उनके दाहिनी ओर और राफेल बाईं ओर खड़े होते हैं; महान संशयवादी और उपहास करने वाला आमतौर पर कलम का मार्गदर्शन करता है, देवदूत, महान

और सौम्य, यहाँ-वहाँ प्रकाश के अक्षरों को उकेरता है। हाय! थैकरे, काश आपके शक्तिशाली पंख आपको शहरों के धुएँ से ऊपर उठाकर स्वर्ग के निकट के पवित्र क्षेत्र में ले जाते!

फिलहाल के लिए अलविदा। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

25 जनवरी, 1850।

प्रिय एलेन, मुझे पूरा यकीन है कि आपकी अस्वस्थता का एक बड़ा कारण ठंड से पिघलती ठंड में मौसम का परिवर्तन था। मुझे एक दिन सिरदर्द हुआ था; लेकिन मेरे लिए यह मामूली ही था। आपको ठंड से सावधान रहना चाहिए। मैंने अभी-अभी अमेलिया को एक संक्षिप्त पत्र लिखकर कफ आदि के लिए धन्यवाद दिया है। मुझे बहुत अफ़सोस है कि मैंने पहले पत्र नहीं लिखा। इसके साथ आपके पढ़ने के लिए तीन पत्र संलग्न हैं, पहला मैरी टेलर का है। एक पत्र ल्यूज़ का है और एक सर जे. के. शटलवर्थ का है, कृपया इन्हें पढ़ें और वापस कर दें। आपके जाने के बाद से मुझे थैकरे का एक उल्लेखनीय पत्र भी मिला है, लंबा, रोचक, विशिष्ट, लेकिन दुर्भाग्य से यह इस सख्त निर्देश के साथ समाप्त होता है कि इस पत्र को किसी को न दिखाएं, और यह भी लिखा है कि अगर उन्हें लगता है कि उनके पत्र दूसरों ने देखे हैं, तो उन्हें या तो लिखना बंद कर देना चाहिए या केवल वही लिखना चाहिए जो प्रथागत है; अगर यह बात न होती तो मैं इसे बाकी पत्रों के साथ भेज देता। मैंने इसका विस्तार से उत्तर दिया है। मेरे जवाब से संतुष्टि मिलेगी या निराशा, यह अभी पता चलना बाकी है। ठाकरे की भावनाओं को सामान्य गणना से नहीं समझा जा सकता: उनका स्वभाव हमेशा बदलता रहता है, फिर भी पत्राचार और मौखिक बातचीत दोनों में यह बात मुझे परेशान करती है। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. बी.'

रेव. पी. ब्रोंटे को

'76 ग्लूसेस्टर टेरेस, हाइड पार्क,

'लंदन, गुरुवार सुबह।

प्रिय पापा, मैं यह पत्र जल्दबाजी में सिर्फ आपको यह बताने के लिए लिख रही हूँ कि मैं कल रात दस बजे बिना किसी नुकसान या सुरंग या कटिंग में किसी दुर्घटना के

बिल्कुल सुरक्षित यहाँ पहुँच गई। श्रीमान और श्रीमती स्मिथ ने स्टेशन पर मेरा स्वागत किया और मुझे स्नेहपूर्ण और हार्दिक स्वागत दिया। पूरे रास्ते मौसम सुहाना और गर्म था; आज भी ऐसा ही है। मैं अभी तक बाहर नहीं निकली हूँ, लेकिन आज दोपहर, अगर सब ठीक रहा, तो मैं श्री थैकरे का व्याख्यान सुनने जाऊँगी। मुझे नहीं पता कि मैं प्रदर्शनी कब देख पाऊँगी, लेकिन जब देखूँगी, तो आपको इसके बारे में सब कुछ लिखूँगी। मुझे आशा है कि आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। टैबी और मार्था को मेरा प्रणाम कहना, और — यकीन मानिए, आपकी स्नेही बेटी।

'सी. ब्रोंटे।'

यह नहीं कहा जा सकता कि शार्लोट ब्रोंटे और थैकरे को व्यक्तिगत संपर्क से लाभ हुआ। 'उनके साथ मैं बेहद मूर्ख थी,' वह कहती हैं। यह फिर से हाइन और गोएथे की कहानी जैसा ही था। जर्मन साहित्य के बादशाह की उपस्थिति में हाइन केवल बगीचे में लगे बेरों की ही बात कर सकते थे। अपने आदर्श थैकरे की उपस्थिति में शार्लोट ब्रोंटे उस जोश और बुद्धिमत्ता के साथ खुद को व्यक्त नहीं कर सकती थीं जो श्री विलियम्स के साथ उनके पत्राचार में झलकती थी। मिस ब्रोंटे, एक बार फिर, पुरुषों के छोटे-छोटे घमंडों की अति आलोचनात्मक थीं, और जैसा कि बताया गया है, उन्होंने विलेट में थैकरे के एक व्याख्यान के बाद किए गए मामूली अहंकार को उजागर किया है - उनका यह पूछना कि क्या उन्हें व्याख्यान पसंद आया। यह प्रश्न, जो दस में से नौ पुरुष अपनी महिला मित्र से पूछने को प्रवृत्त होते हैं, उनकी नज़र में 'अति-उत्सुकता' और 'भोलापन' था। थैकरे को, अपनी ओर से, बातचीत करना कठिन लगता था, जैसा कि हम उनकी बेटी श्रीमती रिची के एक संस्मरण से अनुमान लगा सकते हैं:

यंग स्ट्रीट स्थित हमारे धनुषाकार खिड़की वाले ड्राइंग रूम में आने वाले सबसे उल्लेखनीय व्यक्तियों में से एक ऐसी अतिथि हैं जिन्हें मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा - एक छोटी, नाजुक, नन्ही सी शख्सियत, जिनके छोटे से हाथ ने फिर भी एक ऐसा शक्तिशाली प्रभाव डाला जिसने उस दिन के पूरे साहित्यिक जगत को झकझोर दिया। मुझे वह दृश्य आज भी स्पष्ट रूप से याद है - गर्म गर्मी की शाम, खुली खिड़कियाँ, दरवाजे तक आती हुई गाड़ी, जब हम सब चुपचाप और उत्सुकता से बैठे थे; मेरे पिता, जो शायद ही कभी इंतजार करते थे, हमारे साथ इंतजार कर रहे थे; हमारी गवर्नेंस, मेरी बहन और मैं, हम सब एक कतार में बैठे थे, और उस महान घटना के लिए तैयार थे। हमने गाड़ी को रुकते देखा, और उसमें से श्री जॉर्ज स्मिथ का चुस्त-दुरुस्त शरीर

निकला, जो मिस ब्रोंटे को हमारे पिता से मिलवाने ला रहे थे। मेरे पिता, जो कमरे में इधर-उधर घूम रहे थे, अपने मेहमानों से मिलने के लिए हॉल में गए, और फिर, कुछ क्षणों के बाद, दरवाजा चौड़ा खुला, और दो सज्जन अंदर आए, एक छोटी, नाजुक, गंभीर, नन्ही सी महिला को साथ लेकर, जो पीली पड़ी हुई थी, सुनहरे सीधे बालों और स्थिर आँखों वाली थी। उनकी उम्र तीस से थोड़ी अधिक होगी; उसने हल्के हरे रंग की काई के पैटर्न वाली एक छोटी सी बरेज ड्रेस पहनी हुई है। वह दस्ताने पहने, चुपचाप, गंभीरता से प्रवेश करती है; हमारे दिल बेतहाशा उत्साह से धड़क रहे हैं। यही हैं लेखिका, वो अज्ञात शक्ति जिनकी किताबों ने पूरे लंदन को चर्चा, पढ़ने और सोचने पर मजबूर कर दिया है; कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि ये किताबें हमारे पिता ने लिखी थीं - वो अद्भुत किताबें। यह कहना कि हमें छोटी बच्चियों को जेन आयर पढ़ने के लिए दी गई थी, वास्तविकता को पूरी तरह से व्यक्त नहीं करता; यह कहना कि हमने बिना अनुमति के इसे ले लिया था, थोड़ा-थोड़ा यहाँ-वहाँ पढ़ा था, एक अकल्पनीय और अब तक अनसोची दुनिया में खो गए थे, ऐसी चीजों, समयों और स्थानों में जो पूरी तरह से मनमोहक और साथ ही साथ हमारे लिए बिलकुल समझ से परे थे, उस गर्मी की शाम को जेन आयर - महान जेन आयर - उस नन्ही सी महिला को देखते हुए हमारी मनःस्थिति का अधिक सटीक वर्णन होगा। वह पल इतना तनावपूर्ण था कि भोजन ने उस गंभीर अवसर को कुछ राहत दी, और हम सब मुस्कुरा उठे जब मेरे पिता ने झुककर अपना हाथ बढ़ाया; क्योंकि, हालांकि मिस ब्रोंटे एक प्रतिभाशाली महिला थीं, लेकिन उनकी कोहनी तक पहुंचना उनके लिए मुश्किल था। मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह है कि वह कुछ हद तक गंभीर और सख्त थीं, खासकर उन चंचल छोटी लड़कियों के प्रति जो बकबक करना चाहती थीं। श्री जॉर्ज स्मिथ ने मुझे बताया कि बाद में उन्होंने हमारे अनावश्यक रूप से बातचीत में दखल देने पर मेरे पिता के अद्भुत धैर्य और कोमलता की प्रशंसा की। वह उत्सुकता से उन्हें निहारती रहीं, और बीच-बीच में जवाब देते समय उनकी आँखों में एक अलग ही चमक आ जाती थी। मैं उन्हें मेज पर आगे झुकी हुई देख सकती हूँ, खाना नहीं खा रही थीं, बल्कि उनके सामने परोसी जा रही थाई को काटते हुए उनकी बातें सुन रही थीं।

मुझे लगता है कि इसी अवसर पर मेरे पिता ने शाम को अपने कुछ मित्रों को मिस ब्रोंटे से मिलवाने के लिए आमंत्रित किया होगा—क्योंकि हर कोई उन्हें देखने के लिए उत्सुक और उत्साहित था। भूत-प्रेत की कहानियाँ सुनाने वाली श्रीमती क्रो भी वहाँ

मौजूद थीं। श्रीमती ब्रुकफील्ड, श्रीमती कार्लाइल, और मुझे बताया गया है कि स्वयं श्री कार्लाइल भी उपस्थित थे, जो स्कॉटिश पहाड़ों पर कॉकनी लोगों के आगमन पर नाराज़गी जता रहे थे; उनकी पसंद के हिसाब से वहाँ बहुत सारे अमेरिकी भी थे, "लेकिन कॉकनी लोगों की तुलना में अमेरिकी तो देवताओं के समान थे," दार्शनिक कहते हैं। कार्लाइल परिवार के अलावा, श्रीमती इलियट और मिस पेरी, श्रीमती प्रॉक्टर और उनकी बेटी भी थीं, जो मेरे पिता के अधिकांश नियमित मित्र और साथी थे। लॉर्ड हॉटन की हालिया जीवनी में मुझे एक नोट देखकर हंसी आई जिसमें उल्लेख किया गया था कि लॉर्ड हॉटन को भी आमंत्रित किया गया था। काश वे भी उपस्थित होते—शायद पार्टी और भी बेहतर होती। वह एक उदास और खामोश शाम थी। हर कोई उस शानदार बातचीत का इंतजार कर रहा था जो कभी शुरू ही नहीं हुई। मिस ब्रोंटे अध्ययन कक्ष में सोफे पर बैठ गईं और हमारी दयालु गवर्नेस, मिस ट्रूलॉक से बीच-बीच में कुछ बुदबुदाती रहीं। कमरा बहुत अंधेरा लग रहा था, लैंप से थोड़ा धुआँ निकलने लगा था, बातचीत धीमी होती जा रही थी, महिलाएँ अभी भी उम्मीद से बैठी थीं, मेरे पिता उदासी और सन्नाटे से इतने परेशान थे कि वे इसे बिल्कुल भी सहन नहीं कर पा रहे थे। श्रीमती ब्रुकफील्ड, जो अध्ययन कक्ष के पास, उस कोने के करीब जहाँ मिस ब्रोंटे बैठी थीं, दरवाजे पर खड़ी थीं, उन्होंने थोड़ा आगे झुककर सामान्य भाव से पूछा, क्योंकि उस शाम चकाचौंध का कोई आसार नहीं था। "क्या आपको लंदन पसंद है, मिस ब्रोंटे?" उन्होंने कहा; फिर सन्नाटा छा गया, एक विराम आया, फिर मिस ब्रोंटे ने बहुत गंभीरता से उत्तर दिया, "हाँ और ना।" श्रीमती ब्रुकफील्ड ने स्वयं इस बातचीत का वर्णन किया है। उन दिनों मेरी बहन और मैं ऊबने के लिए बहुत छोटी थीं; हम भयभीत या प्रभावित हो सकती थीं, लेकिन अभी तक ऊबी नहीं थीं। पार्टी पार्टी थी, शेरनी शेरनी थी; और - क्या मैं इसे स्वीकार करूँ? उस समय बिस्कुट की एक अतिरिक्त थाली ही शाम को यादगार बनाने के लिए काफी होती थी। हम उस अवसर की महत्ता को महसूस कर रहे थे: भोजन कक्ष में चाय सजी थी, महिलाएँ ड्राइंग रूम में थीं। हम शायद असहज और उत्तेजित होकर इधर-उधर घूम रहे थे, और मिस ब्रोंटे के जाने के बाद जब मैं हॉल पार कर रही थी, तो मैंने अपने पिता को टोपी पहने हुए सामने का दरवाजा खोलते देखा तो मैं आश्चर्यचकित रह गई। उन्होंने अपनी उंगलियाँ होठों पर रखीं, अंधेरे में बाहर चले गए और चुपचाप दरवाजा बंद कर दिया। जब मैं वापस ड्राइंग रूम में गई, तो महिलाओं ने मुझसे पूछा कि वह कहाँ हैं। मैंने अस्पष्ट रूप

से उत्तर दिया कि मुझे लगता है कि वह वापस आ रहे हैं। मैं उस समय उलझन में थी, और यह बात मुझे कई वर्षों बाद तक स्पष्ट नहीं हुई, जब एक दिन श्रीमती प्रॉक्टर ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे पता है कि एक बार क्या हुआ था जब मेरे पिता ने जेन आयर से मिलने के लिए अपने घर पर एक पार्टी का आयोजन किया था। उन्होंने कहा कि वह उनके जीवन की सबसे नीरस शामों में से एक थी। फिर बड़े ही हास्यबोध के साथ उन्होंने स्थिति का वर्णन किया—वे सभी महिलाएं जो इतनी सुखद बातचीत की उम्मीद में आई थीं, और उदासी और बंधन, और कैसे, अंत में, स्थिति से अभिभूत होकर, मेरे पिता चुपचाप कमरे से निकल गए, घर से निकल गए, और अपने क्लब चले गए। महिलाएं इंतजार करती रहीं, सोचती रहीं, और अंत में वे भी चली गईं; और जब हम सबके चले जाने के बाद मोमबत्तियां जलाकर सोने जा रहे थे, मुझे याद है कि दो सुंदर मिस एल— - चमकदार रेशमी पोशाकों में, उम्मीदों से भरी हुई आईं। . . . हमने फिर भी कहा कि हमें लगता है कि हमारे पिता जल्द ही वापस आ जाएंगे, लेकिन मिस एल— - ने इस मौके का इंतजार करने से इनकार कर दिया, हंस पड़ीं, और लगभग तुरंत ही वापस चली गईं।

रेव. पी. ब्रोंटे को

28 मई, 1851।

प्रिय पापा, मुझे आपको एक और पत्र लिखकर बताना है कि मैं कैसी हूँ। घर छोड़ने के बाद से मैंने बहुत कुछ देखा है, जिसके बारे में मैं उम्मीद करती हूँ कि भविष्य में घर पर चाय के समय आपसे बात करूँगी। मैं थिएटर गई थी और मैकबेथ में मैक्रेडी का नाटक देखा। मैंने नेशनल गैलरी में चित्र देखे। मैंने टर्नर की पेंटिंग्स की एक सुंदर प्रदर्शनी देखी, और कल मैंने श्री थैकरे को देखा। उन्होंने यहाँ कुछ अन्य सज्जनों के साथ भोजन किया। वे बहुत लंबे आदमी हैं - छह फीट से भी अधिक लंबे, एक अजीब चेहरे वाले - सुंदर नहीं, बल्कि बहुत बदसूरत, आमतौर पर कुछ हद तक गंभीर और व्यंग्यात्मक भाव वाले, लेकिन दयालु दृष्टि भी रखते हैं। उन्हें यह नहीं बताया गया कि मैं कौन हूँ, मेरा उनसे परिचय नहीं कराया गया, लेकिन मैंने जल्द ही उन्हें अपने चश्मे से मुझे देखते हुए देखा; और जब हम सब भोजन के लिए नीचे जाने के लिए उठे, तो वे चुपचाप आगे बढ़े और बोले, "हाथ मिलाओ"; तो मैंने उनसे हाथ मिलाया। उन्होंने मुझसे बहुत कम शब्द कहे, लेकिन जब वे चले गए तो उन्होंने बहुत ही विनम्रता से फिर से हाथ मिलाया। मेरे ख्याल से, उसे दुश्मन बनाने से बेहतर दोस्त बनाना है,

क्योंकि वह देखने में बेहद प्रभावशाली व्यक्ति है। मैंने उसे दूसरे सज्जनों से बात करते हुए सुना। उसकी हर बात सीधी-सादी होती है, लेकिन अक्सर व्यंग्यपूर्ण, कठोर और विरोधाभासी होती है। मैं चुपचाप अपना काम करता रहा। मुझे लगता है कि ज़्यादातर लोग मुझे जानते हैं, लेकिन वे इतने सभ्य हैं कि अपनी पहचान ज़ाहिर नहीं करते, इसलिए यहाँ वो शोर-शराबा या प्रसिद्धि का भाव नहीं है जो मुझे नापसंद है।

आशा है आप ठीक होंगे; अपना ख्याल रखना। यहाँ का मौसम बहुत परिवर्तनशील है, और अक्सर नमी और धुंध छाई रहती है, इसलिए सर्दी से बचाव करना आवश्यक है। मैं लंदन में एक सप्ताह से अधिक नहीं रुकने वाली हूँ, लेकिन लौटने से दो-तीन दिन पहले फिर लिखूँगी। यदि आपको कुछ विशेष कहना हो तो इस पत्र का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है। टैबी और मार्था को मेरा नमस्कार कहना। — आपकी प्रिय पापा, आपकी स्नेही बेटी।

'सी. ब्रोंटे।'

रेव. पी. ब्रोंटे को

'76 ग्लूसेस्टर टेरेस, हाइड पार्क, लंदन, 30 मई, 1851।

प्रिय पापा, मैंने श्री थैकरे का एक व्याख्यान सुना और भव्य प्रदर्शनी देखी। गुरुवार दोपहर को मैं व्याख्यान सुनने गया था। यह एक बड़े और शानदार हॉल में दिया गया था - उसी तरह के हॉल में जहाँ अल्माक के बड़े-बड़े भोज आयोजित होते हैं। दीवारें पूरी तरह से रंगी और सोने से मढ़ी हुई थीं, बेंच गद्देदार सोफे थे जिन पर नीले रंग का कपड़ा लगा था। श्रोता लंदन के संभ्रांत समाज के कुलीन वर्ग से थे। कई डचेस वहाँ मौजूद थीं, और उनमें महारानी की वस्त्र-प्रबंधिका, महान और सुंदर डचेस ऑफ सदरलैंड भी थीं। इन सबके बीच थैकरे उठे और इतनी सरलता और सहजता से बोलने लगे मानो वे अपने घर में कुछ दोस्तों से बात कर रहे हों। व्याख्यान सचमुच बहुत अच्छा था: उन्होंने इसे तैयार करने में बहुत मेहनत की थी। यह बिना किसी पूर्व-रचनात्मकता के तैयार किया गया था; इसमें शुरू से अंत तक एक सौम्य हास्य और जीवंतता थी। जैसे ही मैं कमरे में दाखिल हुआ, उन्होंने मुझे देखा और सीधे मेरे पास आकर बहुत ही विनम्रता से बात की। फिर वह मुझे अपनी माँ के पास ले गए, जो एक सुंदर और आकर्षक बुजुर्ग महिला थीं, और मेरा उनसे परिचय कराया। व्याख्यान के बाद कोई मेरे पीछे आया, बेंच पर झुककर बोला, "क्या आप मुझे, एक यॉर्कशायरवासी होने के नाते, अपना परिचय देने की अनुमति देंगे?" मैं मुड़ा, पहले तो

सामने वाले अजनबी चेहरे को देखकर थोड़ा हैरान हुआ, लेकिन एक मिनट में ही मैंने उसके चेहरे के हाव-भाव पहचान लिए। "आप अर्ल ऑफ कार्लिस्ले हैं," मैंने कहा। वह मुस्कुराए और सहमति दी। उन्होंने कुछ देर तक विनम्रतापूर्वक और सौम्य तरीके से बात की। उन्होंने आपका हालचाल पूछा, हॉवर्थ में हुए चुनावी प्रचार के दृश्य को याद किया और आपसे निवेदन किया कि वह उन्हें याद रखें। बाद में डॉ. फोर्ब्स आए, और फिर यॉर्कशायर के सांसद श्री मोनकटन मिल्नेस आए, जिन्होंने लॉर्ड कार्लिस्ले की तरह ही अपना परिचय दिया।

कल हम क्रिस्टल पैलेस गए थे। इसका बाहरी हिस्सा विचित्र और सुरुचिपूर्ण है, लेकिन कुछ हद तक सारहीन सा लगता है। भीतरी हिस्सा किसी भव्य वैनिटी फेयर जैसा है। चारों ओर चमकीले रंग जगमगा रहे हैं; और हीरे से लेकर कताई मशीनों और प्रिंटिंग प्रेस तक, हर तरह की वस्तुएं देखने को मिलती हैं। यह बहुत ही सुंदर, भव्य, जीवंत और विस्मयकारी था, लेकिन मुझे थैकरे का व्याख्यान ज़्यादा पसंद आया।

“आशा है प्यारे पापा, आप ठीक होंगे। टैबी और मार्था को मेरा प्रणाम कहना, और आशा है कि वे भी ठीक होंगी। आपकी स्नेही पुत्री।”

‘सी. ब्रोंटे।’

रेव. पी. ब्रोंटे को

‘112 ग्लूसेस्टर टेरेस,

‘हाइड पार्क, 7 जून, 1851.

प्रिय पापा, यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आप ठीक-ठाक हैं और श्री कार्टमैन रविवार को आपकी मदद करने आए थे। मुझे डर है कि भोजन कक्ष में आपका सप्ताह बहुत आरामदायक नहीं रहा होगा; लेकिन मुझे लगता है कि अब तक बैठक कक्ष का नवीनीकरण लगभग पूरा हो चुका होगा और आप जल्द ही अपने पुराने कमरे में लौट सकेंगे। आज सुबह आपने मुझे जो पत्र भेजा था, वह मैरी टेलर का था। वह न्यूजीलैंड में स्वस्थ और खुश हैं और उनकी दुकान अच्छी चल रही है। फ्रांसीसी अखबार समय पर पहुँच गया। कल मैं दूसरी बार क्रिस्टल पैलेस गया। हम वहाँ लगभग तीन घंटे रहे और मुझे कहना होगा कि इस बार मैं उससे पहले की तुलना में कहीं अधिक प्रभावित हुआ। यह एक अद्भुत जगह है - विशाल, विचित्र, नई और जिसका वर्णन करना असंभव है। इसकी भव्यता किसी एक चीज़ में नहीं, बल्कि सभी चीजों के अनूठे संयोजन में निहित है। मानव उद्योग द्वारा निर्मित हर वस्तु आपको वहाँ दिखाई देगी,

चाहे वह रेल इंजनों और बॉयलरों से भरे विशाल डिब्बे हों, पूरी तरह से कार्यरत चक्की मशीनें हों, हर प्रकार की शानदार गाड़ियाँ हों, हर तरह के साज-सामान हों — या फिर कांच से ढके और मखमल से सजे स्टॉल हों जो सुनारों और चांदी के कारीगरों की सबसे खूबसूरत कलाकृतियों से लदे हों, और सावधानीपूर्वक संरक्षित ताबूत हों जिनमें लाखों पाउंड मूल्य के असली हीरे और मोती भरे हों। इसे बाज़ार या मेला कहा जा सकता है, लेकिन यह ऐसा बाज़ार या मेला है जिसे पूर्वी देवदूतों ने बनाया होगा। ऐसा लगता है मानो जादू ही पृथ्वी के कोने-कोने से इस धन-संपत्ति को एकत्रित कर सकता था — मानो केवल अलौकिक शक्तियों के हाथों ही इसे इस प्रकार, रंगों की ऐसी चमक और विरोधाभास तथा अद्भुत प्रभाव के साथ व्यवस्थित किया जा सकता था। विशाल गलियारों में भरी भीड़ किसी अदृश्य शक्ति द्वारा नियंत्रित और वश में प्रतीत होती है। जिस दिन मैं वहां था, उस दिन वहां मौजूद तीस हजार लोगों में से किसी में भी कोई तेज आवाज सुनाई नहीं दे रही थी, कोई अनियमित हलचल दिखाई नहीं दे रही थी - जीवन की लहर शांत रूप से आगे बढ़ रही थी, दूर से सुनाई देने वाली समुद्र की तरह एक गहरी गूंज के साथ।

श्री थैकरे अपने व्याख्यानों की सफलता से बेहद खुश हैं। इससे उनकी प्रसिद्धि और आर्थिक स्थिति दोनों में काफी वृद्धि होने की संभावना है। हालांकि, उन्होंने इस सप्ताह का व्याख्यान अगले गुरुवार तक के लिए स्थगित कर दिया है, क्योंकि डचेस और मार्क्विस ने उनसे बार-बार अनुरोध किया था। जिस दिन व्याख्यान होना था, उस दिन उन्हें महारानी और दरबार के साथ एस्कॉट रेस में जाना पड़ा। मैंने उनसे कहा कि मुझे लगता है कि उन्होंने उनके कारण व्याख्यान स्थगित करके गलत किया है - और मैं अब भी यही सोचती हूं। साहित्य संघ के लिए बुलवर के नाटक का शौकिया प्रदर्शन भी रेस के कारण स्थगित कर दिया गया है। मुझे आशा है, प्रिय पापा, कि आप, श्री निकोल्स और घर पर सभी स्वस्थ होंगे। मार्था से कहिए कि वह सफाई और सफाई का काम संयम से करे और खुद पर ज्यादा बोझ न डाले। मार्था और टैबी को मेरी शुभकामनाएं, - आपकी स्नेही पुत्री।

'सी. ब्रोंटे।'

रेव. पी. ब्रोंटे को

'112 ग्लूसेस्टर टेरेस,

'हाइड पार्क, 14 जून, 1851.

प्रिय पापा, अगर सब ठीक रहा और मार्था तब तक सफाई वगैरह का काम पूरा कर लेती है, तो मुझे लगता है कि मैं अगले हफ्ते के अंत या उसके अगले हफ्ते की शुरुआत में घर आ जाऊँगा। लंदन में मैं ठीक-ठाक रहा हूँ, बस थोड़ा सिरदर्द रहा है, शायद घुटन और हवा के दबाव के कारण। मौसम उतना अच्छा नहीं रहा जितना पिछली बार जब मैं यहाँ था, और बारिश और अंधेरे दिनों में यह विशाल शहर उतना खुशनुमा नहीं लगता। बाकी सभी दर्शनीय स्थल भव्य प्रदर्शनी के आगे फीके पड़ जाते हैं, जिसमें हर दिन हजारों-लाखों लोग उमड़ते रहते हैं। कल दोपहर मैं फिर से वहाँ था, और मैंने फ्रांस के पूर्व शाही परिवार - बूढ़ी रानी, डचेस ऑफ ऑरलियन्स और उनके दो बेटों वगैरह को गलियारे से गुजरते देखा। मुझे लगभग आश्चर्य होता है कि लंदनवासी इस विशाल दिखावटी मेले से थोड़ा भी क्यों नहीं ऊबते - और वास्तव में, हाल ही में एक नए आकर्षण ने बड़े लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है, यानी रानी द्वारा कल रात आयोजित एक शानदार भोज। सभी प्रतिष्ठित लॉर्ड्स और लेडीज़ इस महत्वपूर्ण आयोजन की तैयारियों में पूरी तरह से मग्न हैं। उनके प्रियतम श्री थैकरे भी उनके साथ सहानुभूति रखते हैं। वे कल यहाँ भोजन के लिए आए थे और शाम को जल्दी ही चले गए ताकि वे क्रमशः डचेस ऑफ नॉरफ़ॉक, मार्क्विस ऑफ लंदनडेरी, लेडीज़ चेस्टरफ़ील्ड और क्लैनरिकार्ड से मिल सकें और महल के लिए रवाना होने से पहले उन्हें चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल की भव्य वेशभूषा में देख सकें! ऐसा प्रतीत होता है कि उनके व्याख्यान बेहद सफल रहे हैं। उनका कहना है कि इनसे वे अपनी बेटियों के लिए कुछ व्यवस्था कर पाएंगे; और श्री स्मिथ का मानना है कि उन्हें इनसे कम से कम चार हज़ार पाउंड तो मिलेंगे ही। वे दो व्याख्यान देंगे और फिर एडिनबर्ग और शायद अमेरिका जाएंगे, लेकिन बार्नम के संरक्षण में नहीं। अन्य लोगों के साथ, लॉर्ड चांसलर भी उनके अंतिम व्याख्यान में उपस्थित थे, और श्री थैकरे का कहना है कि वे उनसे एक पद की उम्मीद कर रहे हैं; लेकिन मुझे लगता है कि वे मज़ाक कर रहे थे। ज़ाहिर है, श्री टी. इन सब से काफी लाड़-प्यार पा चुके हैं, और वास्तव में ऐसा होना स्वाभाविक भी है। उन्होंने दो-तीन बार मुझे अपने कुछ खास दोस्तों से मिलवाने का प्रस्ताव दिया है और उनका कहना है कि वे कई ऐसी प्रतिष्ठित महिलाओं को जानते हैं जो अगर मैं उनके घर जाऊं तो मेरा खुले दिल से स्वागत करेंगी; लेकिन, सच कहूं तो, मुझे नहीं लगता कि इस तरह की संगति उन पर इतना अच्छा प्रभाव डालती है कि मैं भी ऐसा ही करने का प्रयास करूं, इसलिए मैं उनसे संपर्क नहीं कर पा रही

हूं।

आशा है आप कुशल मंगल होंगे, प्रिय पापा। श्री निकोल्स, टैबी और मार्था, साथ ही बेचारे बूढ़े कीपर और फ्लॉसी को मेरा प्रणाम कहना, — आपकी स्नेही पुत्री।

‘सी. ब्रोंटे.

नोट: मुझे खुशी है कि बैठक का काम पूरा हो गया है और आप आराम से रह रही हैं, लेकिन यह सुनकर मुझे बहुत हैरानी हुई कि पियानो को बेडरूम में ले जाया गया है - वहाँ तो यह बिल्कुल बेतुका लगेगा, और बैठक में तो यह बहुत अच्छा लग रहा था, साथ ही आपकी किताबों के लिए भी सुविधाजनक था। मुझे समझ नहीं आ रहा कि आपको यह क्यों पसंद नहीं है।

श्रीमती गैस्केल की पुस्तक में थैकरे के बारे में कई सुखद उल्लेख मिलते हैं, जिनमें श्री जॉर्ज स्मिथ को लिखा गया एक पत्र भी शामिल है, जिसमें उन्होंने उपन्यासकार के चित्र के उपहार के लिए उन्हें धन्यवाद दिया है। वह कहती हैं, 'वे अपने सुंदर, सुरुचिपूर्ण, सुनहरे फांसी के तख्ते में शानदार दिखते हैं।' कुछ वर्षों बाद, थैकरे ने अपनी प्रशंसक के लिए एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि लिखी, जो उनके पाठकों को परिचित है: 'मैंने कल्पना की कि एक गंभीर छोटी जोन ऑफ आर्क हम पर आ रही है और हमारे आरामदेह जीवन, हमारे आसान नैतिक मूल्यों को फटकार रही है।' वे हमें बताते हैं, 'उन्होंने मुझे एक बहुत ही पवित्र, उदात्त और उच्च विचारों वाली व्यक्ति होने का आभास दिया। सत्य और न्याय के प्रति एक महान और पवित्र श्रद्धा हमेशा उनके साथ रही। उनकी पुस्तकें पढ़ने वाला कौन है जिसने कलाकार की उत्कृष्ट अंग्रेजी, सत्य के प्रति प्रज्वलित प्रेम, बहादुरी, सादगी, अन्याय के प्रति आक्रोश, उत्सुक सहानुभूति, पवित्र प्रेम और श्रद्धा, और एक तरह से कहें तो, उस महिला के भावुक सम्मान की प्रशंसा नहीं की है?' यॉर्कशायर के अंधकारमय मैदानों में एकांत में बसे कवियों के परिवार की कहानी कितनी अद्भुत है!

अध्याय सोलह: साहित्यिक मित्रताएँ

श्रीमती गैस्केल द्वारा मुद्रित एक पत्र है, जो शार्लोट ब्रोंटे ने एलेन नुसे को लिखा था। सत्रह वर्ष की आयु में, इस पत्र में सुश्री ब्रोंटे पढ़ने के लिए सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों पर चर्चा करती हैं और सर वाल्टर स्कॉट के प्रति विशेष श्रद्धा व्यक्त करती हैं। उन प्रारंभिक वर्षों में वे साहित्य की अथक छात्रा थीं। उन्होंने अपने पिता के अध्ययन कक्ष और कीघली पुस्तकालय में उपलब्ध सभी पुस्तकें पढ़ीं। जब वर्षों ने उन्हें साहित्यिक प्रसिद्धि और उससे जुड़ी मित्रताएँ दिलाईं, तो वे उन अनेक साहित्यकारों के साथ समान रूप से प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम थीं, जिनसे उनका मिलना नियति में था। उनके सबसे पक्के मित्र निस्संदेह श्री विलियम्स थे, जिन्होंने, जैसा कि हम देख चुके हैं, उन्हें लंदन से सभी नवीनतम पुस्तकें भेजीं और ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने उनके साथ उन पुस्तकों पर चर्चा भी की। श्री विलियम्स के बाद, कॉर्नहिल में उनके प्रमुख श्री जॉर्ज स्मिथ और श्री स्मिथ की माता का स्थान आता है। श्री स्मिथ सौभाग्य से अभी भी जीवित हैं और उस प्रसिद्ध प्रकाशन गृह के प्रमुख हैं जिसने थैकरे, जॉन रस्किन और शार्लोट ब्रोंटे को दुनिया से परिचित कराया। शार्लोट उनके बारे में क्या सोचती थीं, यह उनकी इस स्पष्ट स्वीकारोक्ति से पता चलता है कि वे विलेट में डॉ. जॉन के मूल पात्र थे, जैसे उनकी माँ श्रीमती ब्रेटन की मूल पात्र थीं - शार्लोट ब्रोंटे के उपन्यासों के शायद ये दो सबसे आकर्षक पात्र हैं। दोस्ती की शुरुआत में श्रीमती स्मिथ और उनका बेटा वेस्टबोर्न प्लेस में रहते थे, लेकिन बाद में वे ग्लॉसेस्टर टेरेस में चले गए, और शार्लोट दोनों घरों में उनके साथ रहीं। यह पहला पत्र वेस्टबोर्न प्लेस से ही लिखा गया था।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

‘4 वेस्टबोर्न प्लेस,

‘बिशप्स रोड, लंदन.

प्रिय एलेन, मुझे अभी याद आया कि चूंकि आपको मेरा पता नहीं पता, इसलिए जब तक आपको पता न मिल जाए, आप मुझे पत्र नहीं लिख सकतीं; मेरा पता ऊपर

दिया गया है। मैं पिछले गुरुवार को इस बड़े शहर में आई थी, और तब से एक तरह के भंवर में फंसी हुई हूँ; क्योंकि जो बदलाव, दृश्य और उत्तेजनाएं दूसरों के लिए मामूली होती हैं, वे मेरे लिए बहुत मायने रखती हैं। जब मैंने श्री स्मिथ को डॉ. व्हीलराइट के पास जाने की अपनी योजना के बारे में बताया, तो मुझे लगा कि यह बिल्कुल भी ठीक नहीं होगा - उन्हें बहुत बुरा लगता। उन्होंने अपनी माँ से मुझे पत्र लिखवाया, और इस तरह मैं अपने प्रधानाचार्य को उनके घर पर ठहराने के लिए राजी हो गई। मुझे इस निर्णय पर पछतावा करने का कोई कारण नहीं मिला। श्रीमती स्मिथ ने शुरू में मेरा इस तरह स्वागत किया जैसे मुझे अत्यंत सावधानी बरतने के सख्त आदेश मिले हों। मेरे शयनकक्ष में शाम और सुबह आग जलती थी, मोमबत्तियाँ जलती थीं, आदि। श्रीमती स्मिथ और उनकी बेटियाँ मुझे सम्मान और चिंता के मिले-जुले भाव से देखती थीं। लेकिन अब सब कुछ बदल गया है—कहने का मतलब है कि ध्यान और शिष्टाचार पहले की तरह ही बरकरार हैं, लेकिन डर और अलगाव पूरी तरह से गायब हो गए हैं। वह मुझसे ऐसे पेश आती है मानो मुझे पसंद करती हो, और मैं भी उसे पसंद करने लगा हूँ; दयालुता दिल जीतने का एक शक्तिशाली जादू है। पहली मुलाकात में मैंने उसके बेटे के बारे में कुछ खास अच्छा नहीं सोचा था; लेकिन वह मुझे बहुत पसंद आया। एक व्यापारी के रूप में नहीं, बल्कि एक बेटे और भाई के रूप में भी मैं उसे ज़्यादा पसंद करता हूँ। श्री विलियम्स भी सचमुच बहुत ही सज्जन और जानकार हैं। उनकी कुछ कमज़ोरियाँ ज़रूर हैं, लेकिन समाज में वे नज़र नहीं आतीं। श्री टेलर—वह छोटा आदमी—ने फिर से अपना असली रूप दिखा दिया है; वास्तव में, मुझे शक है कि वह हेलस्टोन परिवार के लोगों जैसा ही है—कठोर, निरंकुश और अपनी मर्ज़ी का मालिक। वह बहुत दयालु बनने की कोशिश करता है और कभी-कभी सहानुभूति भी जताता है, लेकिन कामयाब नहीं हो पाता। उसके चेहरे के बीचोंबीच एक दृढ़, भयानक नाक है, जो जब मेरे चेहरे पर चुभती है, तो लोहे की तरह मेरी आत्मा को चीर देती है। फिर भी, वह बेहद बुद्धिमान, तेज, खोजी, दूरदर्शी और अटूट स्मृति वाला व्यक्ति है। उसके बाद श्री विलियम्स या स्वयं श्री स्मिथ की ओर रुख करना, पत्थर से कोमल या गर्म फर की ओर मुड़ने जैसा है। मैंने थैकरे को देखा है।

'सी. ब्रोंटे।'

जेम्स टेलर, कॉर्नहिल को

6 नवंबर, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, मुझे खेद है कि श्री विलियम्स ने आपको बताया होगा कि मैं डेली न्यूज़ को लेकर बहुत परेशान थी, और मुझे लगता है कि इसी वजह से मुझे आपके पत्र मिले हैं। लेकिन अब मैंने अच्छे संकल्प ले लिए हैं, जिनकी परीक्षा आज सुबह ऑब्ज़र्वर में छपे उसी तरह के एक और लेख से हुई। ऐसे आलोचकों की प्रशंसा उनकी निंदा से कहीं अधिक कष्टदायी होती है; जो लेखक इसका शिकार बनता है, वह क्षण भर के लिए यही सोचता है कि काश उसने कभी लिखा ही न होता। और प्रेस को अभी भी यह पता नहीं है कि मैं एक महिला हूँ! वे कुरेर बेल को पुरुष क्यों नहीं मान सकते?

‘मैंने यह गलत धारणा बना ली थी, जो अब प्रतीत होती है, कि शर्ली में जेन आयर की तुलना में स्त्रीत्व के कम निशान थे; मुझे थोड़ा दुख है कि मैंने गलत अनुमान लगाया, हालांकि मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा कि गलती कहाँ है। आप पादरियों के बारे में अपनी बात पर कायम हैं। चूंकि आप मुझे दोषी मानते हैं, इसलिए मुझे यह बताना आपका उचित है। मुझे लगता है कि इस विषय पर मेरी राय अकेली ही अलग होगी।’

आपने जो किताबें भेजीं, उनमें मुझे वाकई बहुत दिलचस्पी थी। एकरमैन की 'गोएथे के साथ बातचीत', 'सत्य का अनुमान', 'परिषद में मित्र' और अंग्रेजी सामाजिक जीवन पर लिखी छोटी सी रचना मुझे विशेष रूप से पसंद आई, और आखिरी वाली तो बहुत ही अच्छी थी। कभी-कभी हम किताबों को पात्रों की तरह ही पसंद करने लगते हैं, किसी प्रतिभाशाली बुद्धि या विलक्षणता के कारण नहीं, बल्कि उनमें मौजूद किसी अच्छी, कोमल और सच्ची भावना के कारण। मुझे लगा कि वह छोटी सी किताब किसी महिला की रचना है, और वह भी एक मिलनसार, समझदार महिला की, और मुझे वह पसंद आई।

'आपको अभी मेरे लिए और अधिक कृतियों का चयन करने के बारे में नहीं सोचना चाहिए, मेरा भंडार अभी खत्म होने से बहुत दूर है।'

मैं एथेनियम के संबंध में आपके प्रस्ताव को स्वीकार करता हूँ; यह एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसे मैं देखना चाहूँगा, बशर्ते आप इसे बिना किसी परेशानी के भेज सकें। इसे समय पर वापस कर दिया जाएगा।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि पापा का स्वास्थ्य हाल ही में काफी अच्छा रहा है। पिछले दिन वे कीघली तक पैदल गए और वापस आए, और उन्हें बिल्कुल भी

थकान नहीं हुई। मैं भी काफी स्वस्थ हूँ।

आपके स्नेहपूर्ण पत्र और शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद, — विश्वास कीजिए, आपका सच्चा,

'सी. ब्रोंटे।'

श्रीमती गैस्केल ने मिस ब्रोंटे और जॉर्ज हेनरी लेवेस के संबंधों के बारे में बहुत कुछ लिखा है। लेवेस एक आलोचक थे जिनके साथ ब्रोंटे का काफी पत्राचार हुआ और कुछ मतभेद भी थे। यह याद किया जा सकता है कि शार्लोट ने उन्हें एमिली से मिलता-जुलता बताया है - यह एक विचित्र बात है, क्योंकि लेवेस को उनके परिचितों के बीच हमेशा एक बेहद बदसूरत आदमी माना जाता था। यहाँ उस पत्र का एक अंश है जिसमें श्रीमती गैस्केल ने काफी काट-छांट की है, और शेष भाग उन्होंने छापा है:

सुश्री एलेन नुसे के लिए

12 जून, 1850।

मैंने लेवेस को देखा है। वह कमजोरियों और पापों से भरा हुआ इंसान है, लेकिन अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो उसके स्वभाव की बुनियाद बुरी नहीं है; और अगर वह स्वभाव से लगभग शैतान भी होता, तो भी मैं उसके प्रति आधे उदास, आधे कोमल भाव के अलावा कुछ और महसूस नहीं कर पाती। यह आखिरी शब्द थोड़ा अजीब है, लेकिन मैं इसका इस्तेमाल इसलिए कर रही हूँ क्योंकि लेवेस का चेहरा मुझे लगभग रुला देता है, वह एमिली से इतनी अद्भुत रूप से मिलता-जुलता है - उसकी आँखें, उसके चेहरे के हाव-भाव, नाक, थोड़ा उभरा हुआ मुँह, माथा - यहाँ तक कि कभी-कभी तो भाव भी। लेवेस चाहे कुछ भी करे या कहे, मुझे विश्वास है कि मैं उससे नफरत नहीं कर सकती। एक और समानता भी मैंने देखी है, जिसने मुझे बहुत दुखी किया। आपको याद होगा कि मैंने मिस कावानाघ के बारे में बताया था, एक युवा लेखिका, जो अपनी माँ का भरण-पोषण अपनी लेखनी से करती थी। श्री विलियम्स से यह सुनकर कि वह मुझसे मिलने के लिए तरस रही है, मैं कल उससे मिलने गई। मैंने एक छोटी, लगभग बौनी सी आकृति देखी, जिसके सामने मुझे भी झुकना पड़ा; वह कुबड़ी नहीं थी—यानी, उसकी पीठ झुकी हुई नहीं थी, लेकिन उसकी भुजाएँ लंबी थीं, सिर बड़ा था और (पहली नज़र में) उसका चेहरा अजीब सा लगता था। वह मुझसे आधी सहजता से, आधी झिझकते हुए मिली; हम साथ बैठ गए, और जब मैंने उससे पाँच मिनट बात की, तो उसका चेहरा अब अजीब नहीं, बल्कि उदासी से भरा हुआ

जाना-पहचाना सा लगने लगा—उसकी हर भाव-भंगिमा मार्था टेलर जैसी थी। मैं उससे दोबारा मिलने का समय निकालने की कोशिश करूँगा। वह एक छोटे से, गरीब लेकिन साफ-सुथरे मकान में रहती है। उसकी माँ कुछ हद तक कमज़ोर दिमाग वाली महिला लगती है, जो उसकी अच्छी साथी नहीं बन सकती। उसके पिता ने अपनी पत्नी और बच्चे को पूरी तरह से छोड़ दिया है, और यह बेचारी छोटी, कमज़ोर, बुद्धिमान, मिलनसार लड़की अपना पेट पालने के लिए अपनी बुद्धि का दुरुपयोग कर रही है। वह पच्चीस साल की है। मेरा यहाँ कम से कम एक हफ्ते से ज़्यादा रुकने का इरादा नहीं है; लेकिन उस समय के बाद मैं घर नहीं जा सकता, क्योंकि हॉवर्थ स्थित घर की छत अभी-अभी उजाड़ हुई है; मरम्मत ज़रूरी हो गई है।

मैं एक-दो सप्ताह के लिए समुद्र तट पर जाना चाहता हूँ, ऐसे में क्या आप मेरे साथ आ सकते हैं? इस बीच, सभी को शुभकामनाएँ — विश्वास करें, आपका विश्वासपात्र।

‘सी. बी.’

लेकिन जाहिर तौर पर लेवेस के साथ उनकी जान-पहचान तीन साल पहले शुरू हुई थी।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

6 नवंबर, 1847।

'प्रिय महोदय, - यदि आप संलग्न पत्र को लंदन में डाक द्वारा भेजने का निर्देश देंगे तो मैं आपका आभारी रहूंगा, क्योंकि मैं अपने निवास स्थान के बारे में कोई सुराग देने से बचना चाहता हूं, और प्रचार मेरी महत्वाकांक्षा नहीं है।'

यह उस पत्र का उत्तर है जो मुझे कल मिला था और जिसे आपने पसंद किया था। इस पत्र पर जी. एच. लेवेस के हस्ताक्षर थे और लेखक ने मुझे बताया कि उनका इरादा फ्रेजर मैगज़ीन के दिसंबर अंक के लिए जेन आयर पर एक समीक्षा लिखने का है, और संभवतः, उन्होंने संकेत दिया है, वेस्टमिंस्टर रिव्यू के लिए एक संक्षिप्त लेख भी लिखने का है। कुल मिलाकर वे इस कृति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, हालांकि उन्होंने इसके नाटकीय अंशों के प्रति असहमति का संकेत दिया है।

क्या आप मुझे श्री लेवेस के बारे में कोई जानकारी दे सकते हैं? साहित्य जगत में उनका क्या स्थान है और उन्होंने कौन-कौन सी रचनाएँ लिखी हैं? वे स्वयं को "एक साथी उपन्यासकार" बताते हैं। उनके पत्र के स्पष्टवादिता भरे लहजे से मुझे उनके बारे

में अच्छा सोचने की प्रेरणा मिलती है।

मुझे क्रिटिक, दोनों पत्रिकाओं और मॉर्निंग पोस्ट से मिली समीक्षाओं वाला आपका पत्र प्राप्त हो गया है। मुझे आशा है कि ये सभी समीक्षाएं मिलकर सकारात्मक प्रभाव डालेंगी; इनसे कम से कम पुस्तक को कुछ प्रचार तो मिलेगा ही। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

श्री आर. एच. हॉर्न ने उन्हें अपना ओरियन विमान भेजा।

आर. एच. हॉर्न को

15 दिसंबर, 1847।

'प्रिय महोदय, - आपने मेरे विनम्र उपहार को स्वीकार करने में मेरी देरी को अजीब समझा होगा, लेकिन सच्चाई यह है कि यह कल तक मुझ तक पहुंचा ही नहीं था; इसे ले जाने वाला पार्सल गलत पते पर भेज दिया गया था - परिणामस्वरूप यह अपने रास्ते में दो सप्ताह तक अटका रहा।'

'मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ, न केवल 137 पृष्ठों की इस छोटी सी पुस्तक के उपहार के लिए, बल्कि एक कविता के उपहार के लिए भी। ओरियन की कविता अत्यंत वास्तविक और मधुर है; इसमें कुछ ऐसे अंश हैं जिन्हें मैं बार-बार पढ़ना चाहूँगा—शक्ति और सौंदर्य से परिपूर्ण अंश। पूरी कविता सच्ची है—कृत्रिमता के नाम पर शुद्ध, उदात्त बिम्बों से भरपूर। आलोचकों की प्रशंसा ने ओरियन के लेखक को कितना पुरस्कृत किया, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन मुझे लगता है कि इसकी रचना में उन्हें जो आनंद मिला होगा, वह अपने आप में एक बड़ा पुरस्कार रहा होगा। मुझे लगता है कि आपने इस महाकाव्य को लिखते समय कभी न कभी अपने काम से गहरी खुशी प्राप्त की होगी।'

इसके पठन से मुझे जो आनंद मिला, उसके लिए हार्दिक धन्यवाद। महोदय, आपका विश्वासपात्र,

'सी. बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

हॉवर्थ, 15 दिसंबर, 1847।

'प्रिय महोदय, मैं आपको सूचित करने के लिए जल्दबाजी में यह पत्र लिख रहा हूँ कि मुझे पार्सल मिल गया है। रेलवे कर्मचारियों की लापरवाही के कारण यह बिंगले भेज दिया गया था, जहाँ यह दो सप्ताह तक पड़ा रहा, फिर संयोगवश उस रास्ते से

गुजर रहे हॉवर्थ के एक डाकिया ने इसे मेरे पास पहुँचा दिया।'

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आपने फ्रेजर के साथ मिरर भी भेज दिया। "नवीनतम नए उपन्यास" पर लेख, संडे टाइम्स में छपे लेख से काफी मिलता-जुलता है। केवल एक अंश ने मेरी रुचि जगाई; वह अंश जिसमें जेन आयर के लेखक द्वारा प्रकाशित किसी पूर्व रचना का उल्लेख है - मैं स्वीकार करता हूँ, वहाँ मेरी जिज्ञासा थोड़ी बढ़ गई। समीक्षक का तात्पर्य उस छोटी सी कविता संग्रह से तो नहीं है जिसमें करर बेल ने एक तिहाई अंश लिखा था; लेकिन चूंकि वह, जेन आयर और एक पत्रिका को गुमनाम रूप से भेजे गए कुछ फ्रांसीसी छंदों का संक्षिप्त अनुवाद ही मेरी एकमात्र रचनाएँ हैं जो छपी हैं, इसलिए मुझे समझ नहीं आ रहा कि उनका उल्लेख और किस ओर है।

'समीक्षक गलत है, क्योंकि वह मेरे अर्थ को विकृत करने में, मुझ पर ऐसे इरादे थोपने में, जिन्हें मैं नहीं जानता, और ऐसे सिद्धांतों को थोपने में जिन्हें मैं अस्वीकार करता हूं, गलत है।'

श्री आर. एच. हॉर्न की ओरियन कविता मुझे बहुत पसंद आई। क्या आप कृपा करके संलग्न पत्र उन्हें भेज देंगे और यदि पता गलत हो तो उसे सुधार देंगे? —महोदय, सादर,

'सी. बेल।'

श्री लेवेस के अब भुला दिए गए उपन्यासों में से एक की निम्नलिखित विस्तृत आलोचना लगभग दयनीय है; यह आधुनिक आलोचक को उन प्रचुर साहित्यिक क्षणभंगुर सामग्रियों के गंभीर विश्लेषण में संकोच करने के लिए मजबूर कर सकती है जिनके बारे में हम दिन-प्रतिदिन इतना कुछ सुनते हैं।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

1 मई, 1848।

'मेरे प्रिय महोदय, मुझे खुशी है कि आपने मुझे अपना पत्र ठीक उसी रूप में भेजा जैसा आपने लिखा था - बिना किसी संशोधन, बिना किसी काट-छांट या नरमी के, क्योंकि मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस चूक से मुझे लाभ हुआ है।'

आपके विचारों का विरोध करने का प्रयास व्यर्थ होगा, क्योंकि वास्तव में, उन्हें पढ़ने से मुझे लगभग हर बिंदु पर उन आपत्तियों की स्पष्ट परिभाषा मिल गई जो मैंने पहले से ही महसूस की थीं, लेकिन व्यक्त करने की शक्ति या इच्छाशक्ति नहीं जुटा

पाई थी। शक्ति इसलिए नहीं कि मेरे लिए उनका गहन विश्लेषण करना या उचित शब्दों में आलोचना करना बहुत कठिन है; और इच्छाशक्ति इसलिए नहीं कि मुझे श्री लेवेस के साथ अन्याय करने का डर था। मैंने उनके काम की खूबियों को कम आंकने की बजाय बढ़ा-चढ़ाकर बताना बेहतर समझा।

श्री लेवेस की ईमानदारी, ऊर्जा और प्रतिभा निःसंदेह पाठक का सम्मान अर्जित करती है, लेकिन वे किन बिंदुओं पर उनका स्नेह प्राप्त करना चाहते हैं, यह मैं नहीं जानता। मुझे नहीं लगता कि वे उन सुखद भावनाओं को जगाने की परवाह करते हैं जो शिष्य को शिक्षक के प्रति मित्रता और श्रद्धा दोनों भावों से प्रेरित करती हैं। उनके ज्ञान का प्रदर्शन, जिसकी गवाही लगभग हर पृष्ठ देता है—ग्रीक, लैटिन, इतालवी, स्पेनिश, फ्रेंच और जर्मन लेखकों के उद्धरण उनकी अंग्रेजी भाषा को कढ़ाई की तरह सुशोभित करते हैं—आम पाठक को विस्मित और आश्चर्यचकित कर देता है; लेकिन यदि आप इसके अतिरिक्त, शालीनता के परिष्कृत आकर्षण और कल्पना के उदात्त आकर्षण की अपेक्षा रखते हैं—यदि आप इन मामलों में उतने ही सतर्क और सटीक हैं, जितना कि आपके स्वयं के स्वीकारोक्ति से प्रतीत होता है, तो श्री लेवेस को आपको यह बताना ही होगा कि वे इस विषय में रुचि नहीं रखते; संभवतः वे यह भी कहेंगे कि इसलिए यह विषय आवश्यक नहीं है। मुझे डर है कि वे कल्पना को एक भ्रम और शालीनता को एक दिखावा भी कह सकते हैं।

'मिस्टर लेवेस आपको एक ईमानदार, बेबाक और दिलकश अंदाज़ देंगे; लेकिन अगर दुर्भाग्य से आप यह टिप्पणी कर बैठें कि अगर यह बेबाक अंदाज़ थोड़ा कम होता तो शायद उतना ही ईमानदार होता, तो क्या आप भावुक या स्वप्नदृष्टा कहलाने का जोखिम नहीं उठाएंगे?'

यदि मुझे श्री लेवेस को संबोधित करने का सौभाग्य प्राप्त होता, और यदि उनसे ठीक वही कहना बुद्धिमानी या उचित होता जो मैं सोचता हूँ, तो मैं कुछ इस प्रकार के शब्द कहता—

"आपकी राय काफी हद तक सही और स्पष्ट है, लेकिन मुझे लगता है कि यह सीमित है; आपकी प्रतिभा का स्तर ऊंचा है, लेकिन मैं इसे उच्चतम नहीं मान सकता; जब आप सिद्धांतों पर आधारित नियम बनाते हैं तो आप पूरे ध्यान के पात्र होते हैं, लेकिन जब आप भावनाओं पर आधारित हठधर्मिता करते हैं तो आपका विरोध किया जाना चाहिए।"

“श्रीमान लेवेस, आप एक निश्चित सीमा तक जा सकते हैं, लेकिन उससे आगे नहीं। एक निश्चित बौद्धिक सीमा से परे जो कुछ भी है, उस पर आप चाहे जितना संदेह करें; रहस्य कभी आपके लिए स्पष्ट नहीं होगा, क्योंकि आप उस सीमा को कभी पार नहीं कर पाएंगे। आपका सारा ज्ञान, आपका सारा पठन, आपकी सारी बुद्धिमत्ता, आपका सारा दृढ़ संकल्प आपको उस अदृश्य रेखा को पार करने में मदद नहीं कर सकता—एक ऐसी सीमा जो जितनी अदृश्य है उतनी ही अगम्य भी है। उस क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए मनुष्य को उसमें जन्म लेना होगा; और अशिक्षित किसानों ने वहीं अपनी पहली सांस ली है, जबकि विद्वान दार्शनिकों ने बुढ़ापे तक उस तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत की है, और कभी सफल नहीं हुए हैं।” श्री लेवेस से यह कहना न तो मेरी हिम्मत होगी और न ही उचित होगा, लेकिन मैं उनके और दुनिया में नाम कमाने वाले कई अन्य लोगों के बारे में ऐसा सोचने से खुद को रोक नहीं पा रहा हूँ।

हेस्टर मेसन का चरित्र, जीवन और भाग्य मुझे इतना विचित्र, नीच और दयनीय लगा कि मुझे एक पल के लिए भी संदेह नहीं हुआ कि यह पूरी भयावह तस्वीर वास्तविक जीवन से ली गई है। मैंने सोचा कि "देहाती कवयित्री" का वर्णन करते हुए, उसकी अशिष्ट प्रांतीय और महानगरीय बदनामी का विवरण देते हुए, और विशेष रूप से उसके भाग्य की भयावह त्रासदी को छूते हुए, वह तथ्यों को ईमानदारी से दर्ज कर रहा था - इस प्रकार, चाहे कितना भी घृणित क्यों न हो, फिर भी ईमानदारी से "एक नैतिक संदेश" दे रहा था, यदि "कहानी को सजा नहीं रहा था"; लेकिन अगर हेस्टर ल्यूज़ की कल्पना की बेटी है, और अगर उसका अनुभव और उसका भाग्य उसकी कल्पना की उपज है, तो मैं कामना करता हूं कि अगली बार जब वह कोई उपन्यास लिखे तो उसका स्वाद बेहतर, उच्च और सच्चा हो।

जूलियस का बेकन के टुकड़े के साथ किया गया कारनामा उचित नहीं है; वह निश्चित रूप से एक शिलिंग या छह पेंस के शुल्क पर किसी लड़के से इसे अपने लिए उठवा सकता था।

'कैप्टन हीथ भी पोस्ट-चेज़ के पीछे बेहद दयनीय स्थिति में दिख रहे होंगे।'

श्रीमती वाइनर का चित्र किसी वास्तविक व्यक्ति के चित्र जैसा लगता है; और यह भी स्पष्ट है कि कलाकार अपनी मूल मॉडल से व्यक्तिगत घृणा करता था। उन्हें इतना बुरा चित्रित किया गया है कि उनसे प्रेम करने वालों के प्रति जरा भी सहानुभूति नहीं हो सकती; केवल उनसे घृणा ही की जा सकती है। वह एक दुष्ट आत्मा हैं, और

इसलिए श्री थैकरे की रेबेका जैसी नहीं हैं, जहाँ अभिमान, निर्दयता और झूठ को चित्रित करने वाले सशक्त और कुशल कलाकार ने नहीं छोड़ा है, बल्कि फिर भी मानवीयता को संरक्षित रखा है, और परिणामस्वरूप, जो सबक दिया गया है वह कहीं अधिक प्रभावशाली है। हम राक्षसों की विचित्र कल्पनाओं से कुछ नहीं सीख सकते - हम उनके जैसे नहीं हैं; लेकिन कपटी, स्वार्थी पुरुष या स्त्री के अवगुण हमें विनम्र बनाते हैं और चेतावनी देते हैं। अच्छी लड़कियों के बारे में आपकी टिप्पणियों से मैं पूरी तरह सहमत हूँ; और मुझे यह भी कहना होगा कि मुझे लगता है कि ब्लैंच, चाहे उसे कितनी भी प्यारी क्यों न दिखाया गया हो, अपने पति के पूरी तरह से घृणित होने का पता चलने के बाद उससे कभी प्रेम नहीं कर सकती थी। प्रेम क्रूरता से अधिक शक्तिशाली है, मृत्यु से भी अधिक शक्तिशाली है, लेकिन नीचता के आगे नष्ट हो जाता है; दया उसकी जगह ले सकती है, लेकिन दया प्रेम नहीं है।

अब तक तो मैं न केवल आपसे सहमत हूँ, बल्कि आपके सूक्ष्म विवेक और हर भद्दे, निर्मम, असंभावित और अशोभनीय दोष को सटीक रूप से चिह्नित करने की क्षमता पर आश्चर्यचकित भी हूँ। लेकिन अब मैं दूसरा पक्ष लेने जा रहा हूँ: मैं आपसे असहमत होने जा रहा हूँ, और यह सेसिल चेम्बरलेन के बारे में है।

आप कहते हैं कि जिस व्यक्ति में चित्र बनाने या हास्य ओपेरा लिखने की बुद्धि हो, वह ऐसा व्यवहार नहीं कर सकता जैसा उसने किया; आप कहते हैं कि प्रतिभावान और कुशल व्यक्तियों में घोर दोष हो सकते हैं, लेकिन वे क्रूरता या नीचता तक नहीं गिर सकते। काश ऐसा होता! काश बुद्धि नीच बुराइयों से बचा सकती! लेकिन, अफसोस! ऐसा नहीं हो सकता। नहीं, सेसिल का पूरा चरित्र बहुत ही सटीक ढंग से चित्रित किया गया है; यह बहुत ही उत्कृष्ट है, क्योंकि यह बहुत ही सच्चा है। ल्यूज़ बिल्कुल सही कहते हैं जब वे कहते हैं कि बुद्धि मनुष्य की सर्वोच्च क्षमता नहीं है, हालांकि यह सबसे चमकीली हो सकती है; जब वे घोषणा करते हैं कि उनके जैसे लोगों का नैतिक स्वभाव बौद्धिक स्वभाव से अधिक पवित्र है; जब वे "भलाई, प्रेम और शांत आत्म-बलिदान" को दुनिया की सभी प्रतिभाओं से ऊपर मानते हैं।

'यह विचार कि प्रतिभा पतन से बचाती है, उसमें कुछ दैवीयता है, यदि यह सच होता; लेकिन सैवेज हमें बताते हैं कि यह उनके लिए सच नहीं था; शेरिडन इस स्वीकारोक्ति की पुष्टि करते हैं, और बायरन इसे भयानक प्रमाण के साथ पुख्ता करते हैं।'

'शायद आप सेसिल चेम्बरलेन को कभी नहीं जानते होंगे। अगर आप ऐसे किसी व्यक्ति को जानते तो आपको लगता कि लेवेस ने चित्रण को अतिरंजित करने के बजाय उसे कुछ हद तक संयमित कर दिया है; आप जानते कि नैतिक दृढ़ता के बिना, सही और गलत की स्पष्ट समझ के बिना, उस सम्मानजनक सिद्धांत के बिना जो किसी व्यक्ति को ईमानदार परिश्रम पर शर्मिंदा होने के बजाय गर्व महसूस कराता है, बौद्धिक प्रतिभाएं घोर नीचता से भी सुरक्षा की गारंटी नहीं दे सकतीं।'

मुझे डबलिन यूनिवर्सिटी मैगज़ीन मिल गई है। समीक्षा मेरी उम्मीद से कहीं बेहतर है; दरअसल, मैंने तो उस तरफ से किसी भी समीक्षा की उम्मीद करना काफी समय से छोड़ दिया था; लेकिन समीक्षक कुछ ज्यादा ही समझदार नहीं लगता। बेचारे श्री जेम्स की जमकर आलोचना की गई है; आप भी उन पर काफी सख्त हैं। वे हमेशा मुझे उत्पादकता का चमत्कार लगते हैं।

अंत में, मैं आपके पिछले पत्र के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिसने मुझे प्रसन्न और शिक्षित किया। आपका यह विचार बिल्कुल सही है कि यह लेखक के चरित्र को दर्शाता है। जी हाँ, यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है (जैसा कि ल्यूज़ कहते थे)। और जब भी मुझे कोई और पांडुलिपि आपके निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा, मैं उस चरित्र के कुछ विशेष पहलुओं का पूरा लाभ उठाने का आग्रह करूँगा: मैं अपने प्रथम आलोचक से हमेशा यही अनुरोध करूँगा कि वे मित्रतापूर्ण होने के साथ-साथ निष्पक्ष भी हों; मेरी रचनाओं में जो कुछ भी उन्हें अनुचित लगे, मैं आशा करता हूँ कि वे उसकी निर्भीक निंदा करेंगे। रचना के उत्साह में, व्यक्ति से ऐसी गलतियाँ हो जाती हैं जिनका बाद में पछतावा होता है, और हमें अपनी कमियाँ इतनी गहराई से कभी महसूस नहीं होतीं जितनी तब होती हैं जब हम उन्हें दूसरों में अतिरंजित देखते हैं।

मैंने जल्दबाजी में अपना पत्र समाप्त किया है, क्योंकि मैंने बहुत लंबा पत्र लिख दिया है; लेकिन इसका कारण यह है कि आपके पत्र में बहुत कुछ उत्तर देने योग्य था। मुझे उसमें रुचि थी। मैं आपको यह बताने से खुद को रोक नहीं सका कि मैं आपसे कितनी हद तक सहमत हूँ। — विश्वास कीजिए, आपका सच्चा,

'सी. बेल।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

5 अप्रैल, 1849।

मेरे प्रिय महोदय, आपका पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं जानबूझकर अब

आपको कम ही पत्र लिखता हूँ, क्योंकि मुझे अच्छी तरह पता है कि मेरे पत्र आपको शायद ही कभी प्रसन्न करते हों। फिर भी, जब डाक से कोई पत्र आता है तो मुझे प्रसन्नता होती है: यह मुझे याद दिलाता है कि भले ही कर्म और जीवन का सूर्य हम पर न चमके, फिर भी वह दुनिया के अन्य हिस्सों पर पूरी तरह से चमक रहा है - और मुझे यह याद अच्छा लगता है।

मैं शिकायत नहीं करने जा रही हूँ। जब से मैंने आपको आखिरी बार लिखा था, तब से ऐनी को बीच-बीच में काफी तकलीफ हुई है—ठंड और पूर्वी हवाओं का उस पर असर पड़ा है। उसने कई रातें बिना सोए और दर्द में बिताई हैं, और कई दिन उदासी और सुस्ती में गुज़ारे हैं जिन्हें कोई भी चीज़ ठीक नहीं कर सकती—लेकिन फिर भी, सुहावने मौसम के लौटने पर वह तरोताज़ा हो जाती है। मुझे नहीं लगता कि वह अब एक महीने पहले की तुलना में कमज़ोर है, हालाँकि इसका कोई बड़ा कारण नहीं है। लेकिन इससे यह साबित होता है कि उसके शरीर में कोई तेज़ी से गिरावट नहीं आ रही है, और यह उम्मीद बनी रहती है कि गर्मी के मौसम से मिलने वाले सुकून से वह अभी और लंबे समय तक जीवित रह सकती है।

आपने श्री लेवेस के बारे में जो बताया, वह मुझे उनके व्यक्तित्व के अनुरूप ही प्रतीत होता है। वह व्यक्ति कितना आशावादी, बहुमुखी प्रतिभा का धनी और आत्मविश्वासी होगा जो इतनी सहजता से लेखक के शांत वातावरण को छोड़कर अभिनेता के चहल-पहल भरे वातावरण में ढल जाता है! मैं उनकी सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ; और सौभाग्यशाली समय में, मुझे उनके इस नए किरदार में उन्हें देखने से अधिक प्रसन्न करने वाली कोई और चीज नहीं होती।

जब ऐनी पढ़ने के लिए स्वस्थ होती है, तो कॉर्नहिल की पुस्तकें हमारे लिए एक सुखद और पसंदीदा स्रोत बनी रहती हैं। कार्लाइल की 'मिसलेनिस' मुझे बहुत रुचिकर लगती है। हमने 'द एमिग्रेंट फैमिली' पढ़ी है। इस कृति के पात्र अच्छे हैं, शांत सत्य और स्वभाव से परिपूर्ण हैं, और स्थानीय परिवेश का चित्रण उत्कृष्ट है; फिर भी मैं इसे एक अच्छा उपन्यास नहीं कह सकता। अलेक्जेंडर हैरिस का मन चिंतनशील, सत्य-प्रेमी और उच्च कोटि का है, फिर भी मुझे लगता है कि उनमें एक कथाकार के रूप में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त रचनात्मक क्षमता नहीं है। वे कुछ भी नया नहीं रचते - वे केवल नकल करते हैं। उनके पात्र चित्र हैं - चापलूसीपूर्ण रूप से सटीक; जो कुछ भी आदर्श है, वह मौलिक नहीं है। 'द टेस्टिमोनी टू द ट्रुथ' उनकी लिखी किसी भी

कहानी से कहीं बेहतर पुस्तक है। क्या यह कहना मेरी अति रूढ़िवादी सोच है?

ऐन आपकी भलाई के प्रति दिखाई गई आपकी सहृदय रुचि के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद देती है, और मैं और ऐन दोनों श्रीमती विलियम्स की शुभकामनाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिनका उल्लेख आपने पिछले पत्र में किया था। हम श्री स्मिथ और उन सभी के प्रति भी आभारी हैं जिन्होंने हमें मित्रतापूर्ण सहानुभूति प्रदान की।

जब भी आपको अपने लिए खुशी से लिखने का समय मिले, याद रखें कि करर बेल को आपसे सुनकर खुशी होगी, और वे जवाब में अपने पत्रों को यथासंभव सरल और उबाऊ बनाने की कोशिश करेंगे। — आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

मिस व्हीलराइट को हमेशा इस बात से बहुत परेशानी होती थी, जिनसे उनकी दोस्ती ब्रुसेल्स में हुई थी, कि लंदन की अपनी दुर्लभ यात्राओं के दौरान शार्लोट पर स्मिथ परिवार का ही कब्जा रहता था, लेकिन वह अक्सर लोअर फिलिमोर प्लेस में उनसे मिलने आती थीं।

सुश्री लैटिटिया व्हीलराइट को

हॉवर्थ, कीघली, 17 दिसंबर, 1849।

मेरी प्यारी लेटिटिया, मेरे पास बस इतना ही समय है कि मैं एक संक्षिप्त नोट लिखकर पोस्ट को बचा सकूँ। मैं शनिवार दोपहर को सुरक्षित घर पहुँच गई, और मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि पापा बिल्कुल ठीक हैं।

आपके जाने के बाद की शाम मेरी उम्मीद से बेहतर गुज़री। मेरे भरपेट दोपहर के भोजन और ताज़गी देने वाली कॉफ़ी की बदौलत, मैं आठ बजे के खाने का पूरी तरह से धैर्यपूर्वक इंतज़ार कर सका और उसकी लंबी अवधि को भी बड़ी हिम्मत से सहन कर पाया, और बातचीत करने के लिए मैं इतना थका हुआ भी नहीं था; और मुझे इस बात की खुशी थी, क्योंकि अन्यथा मुझे पता है कि मेरे मेज़बान और मेज़बानी करने वाली महिला बहुत निराश होते। श्री स्मिथ के अलावा खाने पर केवल सात सज्जन थे, लेकिन इनमें से पाँच आलोचक थे - एक प्रभावशाली समूह, जिसमें टाइम्स, एथेनियम, एग्जामिनर, स्पेक्टेटर और एटलस के साहित्यिक दिग्गज शामिल थे: साहित्य जगत में इतने खौफनाक लोग जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। मुझे यह एहसास नहीं हुआ कि उनकी उपस्थिति और बातचीत ने मुझे कितना उत्साहित

किया था, जब तक कि वे चले नहीं गए, और फिर प्रतिक्रिया शुरू हुई। जब मैं रात को सोने के लिए लेटा तो मुझे नींद आई; ऐसा करने का प्रयास व्यर्थ था - मैं अपनी आँखें बंद नहीं कर सका। रात बीत गई, सुबह हो गई, और मैं एक पल भी सोए बिना उठ गया। जब मैं डर्बी पहुंचा तो मैं इतना थका हुआ था कि मुझे वहां पूरी रात रुकना पड़ा।

'डाक जा रही है। अपनी माँ, एमिली, फैनी और सारा ऐन को मेरा प्यार देना। अपने पापा को मेरा आदरपूर्वक प्रणाम कहना, और— मेरी प्रिय लेटिटिया, विश्वास करना, मैं तुम्हारी विश्वासपात्र हूँ।'

'सी. ब्रोंटे।'

मिस व्हीलराइट की अन्य बहनों को लंदन की इन यात्राओं से जुड़ी कुछ घटनाएं अच्छी तरह याद हैं। उन्हें थैकरे से मिलने की संभावना को लेकर शार्लोट की घबराहट और बेचैनी याद है। उन्हें उनका सरल, सुंदर पहनावा, उनका शर्मीला स्वभाव और उनका बेदाग चरित्र याद है। वे मुझे बताती हैं कि शर्ली के प्रकाशन के समय के आसपास ही उन्होंने इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़ में पहली बार जाना था कि करर बेल और शार्लोट ब्रोंटे एक ही व्यक्ति थे। हालांकि, उन्होंने कहा कि उन्हें यह भी पता था कि शर्ली ब्रसेल्स की एक छात्रा की रचना थी, क्योंकि हॉर्टेंस मूर उनकी एक गवर्नेस - मैडम हाउसे - से बिल्कुल मिलती-जुलती थीं।

1849 के अंत में मिस ब्रोंटे और मिस मार्टिन्यू की जान-पहचान हुई। शार्लोट को अपनी अधिक दृढ़ निश्चयी बहन लेखिका के प्रति शुरू में बहुत प्रशंसा थी।

जेम्स टेलर को

1 जनवरी, 1850।

मेरे प्रिय महोदय, मुझे खेद है कि कागजात भेजने में कुछ अनियमितता आ गई; यह मेरी अनुपस्थिति के कारण हुई। मुझे आशा है कि इस व्यवधान से आपको कोई असुविधा नहीं हुई होगी। आपके पिछले पत्र में डॉ. अर्नोल्ड के प्रति आपकी सच्ची और विवेकपूर्ण प्रशंसा झलकती है, इसलिए शायद आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मिस मार्टिन्यू के यहाँ अपनी पिछली यात्रा के दौरान मैंने फॉक्स हाउ और वहाँ के निवासियों को और अधिक करीब से देखा, और अपने समय के एक महानतम और श्रेष्ठ व्यक्ति की विधवा और बच्चों में अत्यंत प्रशंसनीय और मनमोहक गुणों को देखकर मैं अभिभूत हो गया। मेरी मेज़बान के बारे में मैं शब्दों में अतिशयोक्ति नहीं कर सकता। उनके सभी दार्शनिक, राजनीतिक या धार्मिक विचारों से सहमत न होते हुए

भी, उनके सिद्धांतों को अपनाए बिना भी, मुझे उनमें एक योग्यता और महानता दिखाई देती है, और उनके व्यवहार में एक ऐसी निरंतरता, परोपकारिता और दृढ़ता है जो सच्ची श्रद्धा और स्नेह को आकर्षित करती है। उनका मूल्यांकन केवल उनके लेखन से नहीं, बल्कि उनके कर्मों और जीवन से किया जाना चाहिए—जिससे बढ़कर अनुकरणीय और महान कुछ भी नहीं हो सकता। वे मुझे एम्बल्ससाइड की परोपकारी प्रतीत होती हैं, फिर भी अपने सक्रिय और अथक परोपकार के लिए वे स्वयं को श्रेय नहीं देतीं। उनके घर का संचालन प्रशंसनीय है; इतिहास लेखन से लेकर महिलाओं के सबसे शांत कार्यों तक, वे जो भी करती हैं, उसे कुशलता से करती हैं। उनके शासन में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उपेक्षा बर्दाश्त नहीं की जाती, फिर भी वे न तो अत्यधिक सख्त हैं और न ही अत्यधिक अपेक्षाशील; उनके नौकर और उनके गरीब पड़ोसी उनसे प्रेम और सम्मान दोनों करते हैं।

मुझे उसकी बौद्धिक क्षमता और नैतिक मूल्यों को देखकर उसके बारे में बहुत अधिक बोलने की गलती नहीं करनी चाहिए। उसमें कुछ कमियां हैं, लेकिन उसकी खूबियों के सामने वे मुझे बहुत मामूली लगती हैं।

'त्योहारी शुभकामनाओं के साथ, मैं, प्रिय महोदय, आपका अत्यंत हार्दिक धन्यवाद।'

'सी. ब्रोंटे।'

इस बीच, शर्ली द्वारा कुरेर बेल के घरेलू दायरे में मचाई जा रही हलचल केवल पादरियों तक ही सीमित नहीं थी। यहाँ एक पत्र है जो कैनन हील्ड (सिरिल हॉल) ने उस समय लिखा था: —

सुश्री एलेन नुसे के लिए

'बर्स्टल, लीड्स के पास,

'8 जनवरी 1850।

प्रिय एलेन, – खबर है कि आप आज के समय के प्रसिद्ध लेखक करर बेल के साथ यात्रा पर हैं। मशहूर शर्ली भी अभी-अभी यहाँ पहुँची है। और जैसा कि लेखक के इरादों को सही ढंग से समझने पर किताब पढ़ना हमेशा अधिक रुचिकर होता है, मैं आपसे एक अनुरोध करने के लिए लिख रहा हूँ, जिसे कहने में मुझे कोई संकोच नहीं करना चाहिए क्योंकि मुझे लगता है कि एक तरह के "काव्यात्मक न्याय" के आधार पर मेरा यह अनुरोध करने का अधिकार है। इस पहेली का अर्थ यह है कि कहानी यह

है कि या तो मैं या मेरे पिता, मुझे ठीक से नहीं पता कि कौन, करर बेल के नाटकों में श्री हॉल के नाम से काम करते हैं, क्योंकि श्री हॉल को काले, पित्ती से ग्रसित और उदास चेहरे वाले व्यक्ति के रूप में दर्शाया गया है, जो थोड़ा झुका हुआ है और कभी-कभी स्थानीय बोली में बात करता है। यह आपके विनम्र सेवक पर बहुत अच्छा लगता है – मेरे पिता पर अन्य लक्षण मुझसे अधिक अच्छे लगते हैं। हालांकि मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मुझे जनता के मनोरंजन का साधन बनाया जाएगा, लेकिन करर बेल इस नीरस विषय पर जो चाहे लिख सकती हैं। लेकिन मुझे लगता है कि मुझे भी उस समूह के रहस्यों को जानने का पूरा अधिकार है जिसमें मैं शामिल हुआ हूँ। उनमें से कुछ बताने में सक्षम हैं और उन्हें पहेली सुलझाने के लिए किसी जादू-टोने की ज़रूरत नहीं है। उदाहरण के लिए, मैं यॉर्क परिवार को टेलर परिवार, मिस्टर मूर को मिस्टर कार्टराइट और मिस्टर हेलस्टोन को स्पष्ट रूप से मिस्टर रॉबर्टसन बता सकता हूँ, हालांकि लेखिका ने उनके चरित्र के बारे में गलत धारणा बनाई है और वह मेरे अब तक के सबसे प्रशंसनीय चरित्रों में से एक के पूर्ण महत्व को नहीं समझती हैं। मे सोचती हैं कि उन्हें दो कुंवारी महिलाओं में सेसिलिया क्रॉथर और मिस जॉनस्टन (बाद में श्रीमती वेस्टरमैन) दिखाई देती हैं।

अब कृपया हमें उन सभी अन्य नामों और स्थानों के बारे में पूरी जानकारी दें जिनका उल्लेख इस शर्ली में किया गया है। जब कुछ प्रमुख पात्रों को हमारे इलाके से परिचित हर कोई पहचान लेगा, तो बाकी लोगों के बारे में बताने में कोई हर्ज नहीं है। और, यदि आवश्यक हुआ, तो मैं करर बेल को किसी भी नुकसान से बचाऊंगा, और दुनिया को यह नहीं बताऊंगा कि मुझे मुख्यालय से जानकारी मिली है। जैसा कि मैंने पहले कहा था, मैं अब दोहराता हूं, कि चूंकि मैं या मेरे लोग इस व्यवसाय का हिस्सा हैं, इसलिए मुझे लगता है कि लाभांश के रूप में इस जानकारी पर मेरा उचित दावा है। मैरी और हैरियट भी यह जानकारी प्राप्त करना चाहती हैं; और हैरियट का तो अपना विशेष दावा प्रतीत होता है, क्योंकि अफवाह है कि वह भी "किताब में" है। इन खतरनाक दिनों में "सावधानी से चलना" चाहिए, जब, जैसा कि बर्न्स (क्या यह वही हैं?) कहते हैं—

‘तुम्हारे बीच एक बच्चा नोट्स ले रहा है, और यकीन मानो वो इसे छाप देगा।’

'सादर,

‘डब्ल्यू. एम. हील्ड.

मैरी और हैरियट मेरी ओर से आपको और सी-बी को इस मौसम की हार्दिक शुभकामनाएं देती हैं। कृपया श्री ब्रोंटे को भी मेरा प्रणाम कहिएगा, जिन्हें शायद बचपन में मेरी थोड़ी-बहुत याद हो। मुझे तो बस हार्ट्सहेड में उनसे मिलने की याद है।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

2 फरवरी, 1850।

मेरे प्रिय महोदय, मैंने आज एक पार्सल भेजा है जिसमें द कैक्स्टन्स, मैकाले के निबंध, हम्बोल्ट के पत्र और मेरी पढ़ी हुई कुछ अन्य पुस्तकें हैं। इन्हें बड़े ही अनोखे ढंग से पैक किया गया है, जो कॉर्नहिल में आपके कुशल अधिकारी को ईर्ष्या और प्रशंसा दोनों दिलाएगा। वैसे, उन्हें इसमें जगह-जगह लगी कुछ पिनों से सावधान रहना चाहिए, क्योंकि भविष्य में पूर्वी इंडीज के लिए और टोपियाँ पैक करते समय ये उनके काम आ सकती हैं। जब भी आप मुझे पुस्तकों की नई खेप भेजें, तो कृपया मिस ऑस्टेन की एक-दो पुस्तकें भी अवश्य भेज दें। मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि क्या मैंने उनकी पुस्तकें पढ़ी हैं, और जब मैं 'नहीं' में जवाब देती हूँ तो वे आश्चर्यचकित हो जाते हैं। मैंने 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' के अलावा कोई और पुस्तक नहीं पढ़ी है। मिस मार्टिन्यू ने 'पर्सुएशन' को सर्वश्रेष्ठ बताया था।

प्रथम प्रदर्शन के आपके विवरण के लिए धन्यवाद। इसे पढ़कर उत्साह और आनंद मिला, क्योंकि आपके जीवंत वर्णन से मुझे दृश्य साकार होता हुआ प्रतीत हुआ; आपकी आलोचना से भी मुझे नाटक का कुछ अंदाजा हो पाया। लेवेस एक विचित्र व्यक्ति हैं। मुझे हमेशा इस बात का अफसोस रहेगा कि लंदन में रहते हुए मैंने उन्हें नहीं देखा। वे मुझे चतुर, तेज और थोड़े असभ्य लगते हैं; मैं उन्हें पहले बुद्धिमान समझता था, लेकिन अब मेरा मानना है कि वे केवल धूर्त हैं, क्योंकि मैंने एक-दो बार देखा है कि वे दूसरों से मिली जानकारी को अपनी बड़ी खोजों के रूप में प्रस्तुत करते हैं - सच्ची बुद्धिमत्ता इस तरह की छोटी-मोटी चालों को तुच्छ समझती है। हालांकि लेवेस में कई खूबियां और कुछ सराहनीय गुण हैं, फिर भी उनमें कुछ भी वास्तव में महान नहीं है; और मुझे लगता है कि वे कभी भी कुछ वास्तव में महान नहीं कर पाएंगे। फिर भी वे ठीक वैसी ही सफलताओं के पात्र हैं जैसी आपने वर्णित की है - सार्वजनिक, संक्षिप्त और शोरगुल भरी जीत। लेवेस को प्रसिद्धि शोभा देती है। अगर शोहरत हासिल करना मुमकिन भी होता, तो भी यह उसके लिए एक अप्रिय चीज होती: वह उसके तुरही की गंभीर ध्वनि का बेसब्री से इंतजार कर रहा होता, जो देर

तक गूंजती और धीरे-धीरे तेज होती जाती।

मुझे श्री स्मिथ का ज़िक्र करने का आपका तरीका हमेशा पसंद आता है, क्योंकि उनके बारे में मेरी राय भी आपकी राय से मिलती है; और किसी अच्छे चरित्र की पुष्टि होना उतना ही सुखद होता है जितना कि उसका टूटना। मुझे पूरा विश्वास है कि उनका स्वभाव उत्तम है, और मुझे भरोसा है कि दुनिया का स्वार्थ और व्यापार की कठोर आदतें, भले ही उनके स्वभाव को बदल दें, लेकिन उसे पूरी तरह से बिगाड़ नहीं पाएंगी।

क्या आप मुझे शेरिडन नोल्स के बारे में कोई जानकारी दे सकते हैं? हाल ही में उनसे प्राप्त कुछ पंक्तियाँ और उनके द्वारा भेंट की गई जॉर्ज लवेल की रचना ने मुझे यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया है। बेशक, मैं जानता हूँ कि वे एक प्रख्यात नाटककार हैं, लेकिन क्या आप उनके व्यक्तित्व के बारे में कुछ जानते हैं?

मुझे लगता है कि उत्तरी आयरलैंड में आजकल शर्ली और जेन आयर दोनों को खूब पढ़ा जा रहा है; लेकिन मुझे तो कभी-कभार ही ऐसी अफवाहें सुनने को मिलती हैं। मैं कुछ नहीं पूछता, और मेरा एकांत जीवन किसी भी सूचना देने वाले को रोक देता है। एक-दो जिज्ञासु लोग हॉवर्थ पार्सनेज तक आ चुके हैं, लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि हमारी ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी और आसपास का इलाका ऐसी यात्राओं को रोकने के लिए काफी होगा। — विश्वास कीजिए, आपका सच्चा।

'सी. ब्रोंटे।'

जिज्ञासा के खोजकर्ताओं में सबसे स्थायी मित्र सर जेम्स के-शटलवर्थ थे, जो एक महीने बाद हॉवर्थ आए थे।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

1 मार्च, 1850।

प्रिय एलेन, मैं तुम्हें अपनी स्थिति बताने के लिए जल्दी में एक पंक्ति लिख रही हूँ। कई लोग जेन आयर और शर्ली में वर्णित दृश्यों को देखने के उद्देश्य से हॉवर्थ आने लगे हैं; उनमें से सर जे. के. शटलवर्थ और लेडी एस. लगातार आ रहे हैं; वे शुक्रवार को यहाँ थे। बैरोनेट पूरी तरह स्वस्थ दिखते हैं; वे मुश्किल से पैंतीस वर्ष के लगते हैं, लेकिन वे कहते हैं कि वे चौवालीस वर्ष के हैं। लेडी शटलवर्थ काफी सुंदर और अभी भी युवा हैं। वे दोनों बिल्कुल सरल स्वभाव के थे। यहाँ आकर उन्होंने फिर से मुझसे मिलने का आग्रह किया। पापा ने तुरंत उनका पक्ष लिया - मेरे मना करने की बात नहीं

सुनी। मुझे जाना ही होगा - इससे मेरे पास कोई बहाना या बचाव नहीं बचा। मैं तीन दिनों के लिए जाने को तैयार हो गई। वे चाहते थे कि मैं उनके साथ गाड़ी में वापस आऊँ, लेकिन मैंने कल तक के लिए टाल दिया। काश यह सब जल्दी खत्म हो जाता।

यदि सब ठीक रहा तो लौटने पर मैं उनके बारे में और अधिक लिख सकूँगी। सर जे. बहुत ही शिष्ट और आकर्षक हैं; मेरी इच्छा है कि वे जितने सुसंस्कृत हैं उतने ही ईमानदार भी हों। - जल्दबाज़ी में, आपकी विश्वासपात्र।

'सी. बी.'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

16 मार्च, 1850।

प्रिय महोदय, लंकाशायर में थोड़े समय के प्रवास के बाद घर लौटने पर मुझे आपका पत्र कई अन्य पत्रों के साथ मिला। पत्र पर शोक का संदेश देखकर मैं बहुत चिंतित हो गया। मुझे डर था कि कहीं वह भयानक विपत्ति, जिसके आने से हर घर कांप उठता है, आपके घर में न आ गई हो और आपसे शायद कोई बच्चा, या शायद उससे भी प्यारा कोई और छीन लिया हो। आपको जो हानि हुई है वह वास्तव में पीड़ादायक है, लेकिन मेरी अपेक्षा से कहीं कम पीड़ादायक है, इसलिए आपका पत्र पढ़कर मुझे बहुत राहत मिली। फिर भी, मैं जानता हूँ कि श्रीमती विलियम्स कैसा महसूस करेंगी। हमारे एक ही पिता और एक ही माता होती हैं, और जब उनमें से कोई एक चला जाता है, तो हम एक ऐसी चीज खो देते हैं जिसकी भरपाई कभी नहीं हो सकती। इस दुख की घड़ी में उन्हें मेरी हार्दिक संवेदनाएँ अर्पित करें। मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ कि इस दुखद समाचार से आपके युवा और हंसमुख परिवार पर कितना दुख छा गया होगा। बेचारे नन्हे डिक का रोना और दुःख का अचानक प्रकट होना अत्यंत भोला और स्वाभाविक है; उसने एक बच्चे का दुःख महसूस किया - एक तीव्र, लेकिन सौभाग्य से, क्षणिक पीड़ा। मुझे उम्मीद है कि समय के साथ जल्द ही आपको और आपकी पत्नी को शांति और आपके बच्चों को प्रसन्नता वापस मिल जाएगी।

मैंने शायद ज़िक्र किया था कि हाल ही में हॉवर्थ में एक-दो मेहमान आए थे; उनमें सर जेम्स के-शटलवर्थ और उनकी पत्नी भी शामिल थे। जाने से पहले उन्होंने मुझसे वादा लिया कि मैं पूर्वी लंकाशायर की सीमा पर स्थित उनके निवास स्थान गॉथोर्प हॉल में उनसे मिलने आऊँगा। मैं अनिच्छा से गया, क्योंकि मेरे लिए हमेशा उन लोगों के

प्रस्ताव को स्वीकार करना मुश्किल और कष्टदायक होता है जिनकी कृपा का मैं प्रतिफल नहीं दे सकता। सर जेम्स एक सुसंस्कृत, स्पष्ट बुद्धि और उच्च कोटि के विद्वान हैं। कुल मिलाकर, मेरा उनसे बहुत अच्छा अनुभव रहा।

"उनका स्वास्थ्य अब उनके कठोर आधिकारिक कार्यों के कारण थोड़ा बिगड़ गया है; और पुरानी पहाड़ियों और जंगलों के बीच स्थित पुराने खंडहरों और पुराने हॉलों की शांत सैर, उनके प्राचीन ओक-पैनल वाले ड्राइंग रूम में आग के पास की गई बातचीत (शायद मुझे इसे एकालाप कहना चाहिए, क्योंकि मैंने बोलने से कहीं अधिक सुना), हालांकि उन्हें पसंद थी, लेकिन मुझे इससे कोई खास थकान या बोझ महसूस नहीं हुआ। घर भी मुझे बहुत पसंद आया, लगभग तीन शताब्दी पुराना, धूसर, भव्य और सुरम्य। कुल मिलाकर, अब जब यात्रा समाप्त हो गई है, तो मुझे इस पर आने का कोई अफसोस नहीं है। सबसे बुरी बात यह है कि अब मेरे सिर पर लंदन में उनके यहाँ आने के निमंत्रण का खतरा मंडरा रहा है - जो निस्संदेह कुछ लोगों के लिए बहुत आनंददायक होगा, मेरे लिए घोर भय का कारण है। मैं व्यापक अवलोकन से प्राप्त होने वाले लाभों को बहुत महत्व देता हूँ, लेकिन मानसिक तनाव और शारीरिक थकावट के रूप में मुझे जो कीमत चुकानी पड़ेगी, उसके बारे में सोचकर मैं कांप उठता हूँ।" लेकिन अब आपको मेरी कोई और स्वीकारोक्ति नहीं मिलेगी—आपको वे मूर्खतापूर्ण लगेंगी।— आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

19 मार्च, 1850।

'प्रिय एलेन, मैं घर वापस आ गया हूँ, और अब जबकि यात्रा समाप्त हो गई है, मैं हमेशा की तरह खुश हूँ कि मैं आया था; ऐसा नहीं है कि मैं इसे और लंबा खींच सकता था: कुछ दिनों के लिए एक बिल्कुल अनजान जगह पर, बिल्कुल अनजान चेहरों के बीच रहना मेरे लिए काफी है।'

जब ट्रेन बर्नली में रुकी, तो मैंने सर जेम्स को मेरा इंतज़ार करते हुए पाया। लगभग तीन मील की ड्राइव के बाद हम गॉथोर्प के द्वार पर पहुँचे, और एक सुनसान रास्ते से गुज़रने के बाद, मेरे सामने हॉल खड़ा था - धूसर, प्राचीन, किलेनुमा और भव्य। यह 250 साल पुराना है, और अंदर और बाहर दोनों तरफ से पुरानी अंग्रेज़ी वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है। शटलवर्थ परिवार के प्रतीक चिन्ह और अनोखा चिन्ह प्रत्येक

कमरे की ओक की लकड़ी की पैनलिंग पर उकेरा गया है। वे कोई नवधनी परिवार नहीं हैं, बल्कि रिचर्ड तृतीय के समय से हैं। लंकाशायर का यह हिस्सा अपने प्राचीन घरों के लिए उल्लेखनीय है। पास में रहने वाले टाउनली परिवार का संबंध विजय के समय से है।

‘हालांकि, घर से कहीं अधिक रुचि मुझे लोगों में थी। लेडी शटलवर्थ बत्तीस वर्ष की एक छोटी महिला हैं, जिनका चेहरा सुंदर, कोमल और जीवंत है। अभिजात्य वर्ग के दिखावे के आरोप से उन्हें पूरी तरह मुक्त किया जा सकता है; स्पष्टवादिता, विनोद और सक्रियता उनमें भरपूर है; सच्चाई यह है कि मुझे लगता है कि उनके गुणों में शालीनता, गरिमा और गहरी भावनाएँ नहीं हैं। ये सभी गुण उनके पति में मौजूद हैं। उनका व्यवहार शालीन और गरिमामय है; उनकी रुचियाँ और भावनाएँ उच्च कोटि की हैं; वे स्पष्टवादी नहीं हैं, बल्कि इसके विपरीत, चतुर हैं; वे खुद को दुनियादार मानते हैं और दुनिया के तौर-तरीकों को जानते हैं; कुछ मामलों में वे शिष्ट और मिलनसार हैं, तो कुछ मामलों में वे सख्त और कठोर हैं। उनमें उच्च बौद्धिक विकास के साथ-साथ व्यापक अवलोकन क्षमता और पूरी तरह से व्यावहारिक दृष्टिकोण और आदतें हैं। उनकी नसें स्वभाव से ही अत्यंत संवेदनशील हैं, और उनकी वर्तमान गंभीर स्वास्थ्य स्थिति ने उनकी संवेदनशीलता को चिड़चिड़ापन में बदल दिया है।’ उनकी पत्नी का स्वभाव उनकी देखभाल और सेवा करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त है; अगर उनकी भावनाएँ इतनी कोमल और तीव्र न होतीं तो शायद वे इतना अच्छा काम न कर पातीं। वे दोनों आपस में बहुत अच्छे से घुल-मिल गए हैं। उनके चार बच्चे हैं और सभी अपने-अपने तरीके से बहुत अच्छे हैं। उनके यहाँ एक युवा जर्मन महिला गवर्नेस के रूप में काम करती है - एक शांत, सुशिक्षित और दिलचस्प लड़की, जिससे मुझे पहली ही नज़र में लगाव हो गया और दिल से वह घर में किसी भी और चीज़ से ज़्यादा प्यारी लगी। उसे भी मुझसे सहज रूप से लगाव हो गया। गवर्नेस होने के नाते उसके साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया जाता है, लेकिन उसके चेहरे पर आमतौर पर दिखने वाली उदासी और मायूसी छाई हुई थी। उसने मुझे बताया कि उसे घर की याद आ रही है, और वह देखने में भी वैसी ही लग रही थी।

मुझे तकिया और बाकी सामान वाला पार्सल मिल गया है, जिसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे लगता है कि मुझे फूलों के गुलदस्ते से शुरुआत करनी चाहिए; मुझे नहीं पता कि मैं कैसे कर पाऊँगी, लेकिन मैं कोशिश करूँगी। मुझे कई

पत्रों का जवाब देना है - श्री स्मिथ, श्री विलियम्स, थॉर्नटन हंट, लेटिटिया व्हीलराइट, हैरियट डायसन - इसलिए फिलहाल मैं आपसे विदा लेती हूँ। मुझे जल्द ही पत्र लिखना। घर से कुछ समय के लिए दूर रहना, हालांकि कुछ मायनों में कठिन और पीड़ादायक रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि इससे मेरा मनोबल थोड़ा कम हुआ है। फरवरी का पूरा महीना मेरे लिए बहुत मुश्किल भरा रहा। मैं कुछ बेहद दुखद यादों से उबर नहीं पाई - पिछले कुछ दिन, कष्ट, वे शब्द जो मुझे बेहद दुख पहुँचाते हैं, उन लोगों के, जिनके बारे में ईश्वर का विश्वास है कि वे अब खुश हैं। शाम और सोने के समय ऐसे विचार मुझे सताते थे, जिससे मेरा दिल दुखता था। अलविदा, प्रिय नेल। - आपकी विश्वासपात्र,

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

21 मई, 1850।

प्रिय एलेन, — मेरी मुलाक़ात फिर स्थगित हो गई है। मुझे यह बताते हुए बहुत दुख हो रहा है कि सर जेम्स शटलवर्थ बहुत गंभीर रूप से बीमार हैं। दो चिकित्सक दिन में दो बार उनकी देखभाल कर रहे हैं, और उनके रिश्तेदारों से भी मिलना-जुलना और बातचीत करना मना है, क्योंकि यह बहुत उत्तेजक हो सकता है। इसके बावजूद, उन्होंने मुझे स्वयं दो पत्र लिखे हैं, जिनमें उन्होंने मुझसे वादा मांगा है कि मैं उनके ठीक होने तक इंतज़ार करूँगी, और किसी और को मुझे, जैसा कि उन्होंने कहा है, "लंदन के भव्य जीवन में प्रवेश" करने नहीं दूँगी। उनके लिए मुझे बहुत दुख हुआ, लेकिन इस वाक्य पर मेरी मुस्कान आ गई। लेकिन मैं खुशी-खुशी वादा करती हूँ। मैं उनके बारे में कुछ जानती हूँ, और जो जानती हूँ उसका कुछ हिस्सा मुझे पसंद भी है। मुझे उन्हें किसी और से बदलने का ज़रा भी मन नहीं करता। उनकी पीड़ा बहुत अधिक है। मुझे विश्वास है और आशा है कि ईश्वर उनकी मानसिक शांति बनाए रखेंगे। मुझे अभी-अभी एक पत्र मिला है जिसमें बताया गया है कि उनकी हालत में कुछ सुधार हुआ है; लेकिन, ज़ाहिर है, स्थिति बदलती रहती है। लेडी शटलवर्थ भी बहुत दयनीय हैं; ऐसा लगता है कि उनकी रातें बहुत कष्टदायक होती हैं। अलविदा, प्यारी नेल। जल्द ही पत्र लिखना।

'सी. बी.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

‘76 ग्लूसेस्टर टेरेस,
‘हाइड पार्क गार्डन, 3 जून, 1850.

प्रिय एलेन, मैं पिछले गुरुवार को लंदन आया था। मैं श्रीमती स्मिथ के यहाँ ठहरा हूँ, जिन्होंने अपना निवास स्थान बदल लिया है, जैसा कि पते से पता चलेगा। इस कदम को तय करने से पहले काफी पत्र-व्यवहार, मनाने-बुझाने आदि का सिलसिला चला; लेकिन अंततः मैंने सर जेम्स को समझाया कि मुझे कुछ छोटे-मोटे व्यावसायिक काम निपटाने हैं और मैं अपने प्रकाशक के यहाँ शांति से रहूँगा। वह दो बार और लेडी शटलवर्थ एक बार मुझसे मिलने आए; दोनों अकेले थे। वह बेहद घबराए हुए हैं। मुझे तो यह जानकर बहुत डर लग रहा है कि वह मेरे उनके साथ हैम्पटन कोर्ट, विंडसर आदि जाने की बात कर रहे हैं। भगवान जाने मेरा क्या हाल होगा। मुझे तो इसका बहुत डर है।

यहां मुझे बहुत आराम महसूस हो रहा है। श्रीमती स्मिथ मेरे साथ शांत और सौम्य व्यवहार करती हैं, जो मुझे बहुत पसंद है। उनका बेटा पहले की तरह ही मिलनसार और दयालु है। मैंने बहुत कम लोगों से मुलाकात की है, और आगे भी ज्यादा लोगों से मिलने की संभावना नहीं है, क्योंकि समझौता यह था कि मुझे बहुत शांत रहना है। हम रॉयल एकेडमी की प्रदर्शनी, ओपेरा और चिड़ियाघर गए थे। मौसम बहुत सुहावना है। मैं लंदन में दो सप्ताह से अधिक नहीं रुकूंगा। बुखार और थकान थोड़ी बहुत है, लेकिन पहले जितनी बुरी नहीं है, क्योंकि वास्तव में अभी तक मुझ पर उतना दबाव नहीं पड़ा है। मुझे उम्मीद है कि आप जल्द ही पत्र लिखकर मुझे बताएंगे कि आप कैसे हैं। सभी को मेरा नमस्कार कहना। — आपका विश्वासपात्र

‘सी. बी.’

रेव. पी. ब्रोंटे को

‘76 ग्लूसेस्टर टेरेस,
‘हाइड पार्क गार्डन, 4 जून, 1850.

प्रिय पापा, आज सुबह आपका पत्र पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई, और यह जानकर और भी अधिक खुशी हुई कि आपका स्वास्थ्य कुछ हद तक सुधर रहा है। मुझे डर है कि आपको वर्तमान मौसम थोड़ा कष्टदायक लग सकता है, कम से कम अगर यॉर्कशायर में भी लंदन जितनी गर्मी रही तो। घर की छत के काम के कारण मुझे इन सुहावने दिनों का अफसोस हो रहा है। यह बहुत दुख की बात है कि कारीगर एक

सप्ताह पहले काम शुरू करने के लिए तैयार नहीं थे।

‘जब से मैंने लिखा है, मैं ओपेरा गया था; रॉयल अकादमी की प्रदर्शनी में भी गया था, जहाँ कुछ बेहतरीन पेंटिंग थीं, विशेष रूप से लैंडसियर द्वारा बनाई गई ड्यूक ऑफ वेलिंगटन की वाटरलू के मैदान की एक विशाल पेंटिंग, और कैम्पबेल की कविता "द लास्ट मैन" से मार्टिन की एक भव्य, अद्भुत तस्वीर, जिसमें लाल सूरज आकाश से गायब होता हुआ दिखाया गया है, और अग्रभूमि की सारी मिट्टी हड्डियों और खोपड़ियों से बनी है। जूलॉजिकल सोसाइटी के सचिव ने मुझे अपने बगीचों में प्रवेश का एक मानद टिकट भी भेजा, जिसे मैं चाहता हूँ कि आप देख सकें। वहाँ दुनिया के सभी हिस्सों के जानवर पेड़ों और झाड़ियों के बीच खुले आसमान के नीचे बड़े-बड़े पिंजरों में बंद हैं - शेर, बाघ, तेंदुए, हाथी, अनगिनत बंदर, ऊँट, पाँच या छह ऊँट-तेंदुआ, एक युवा दरियाई घोड़ा जिसका रखवाला एक मिस्रवासी है; हर तरह के पक्षी— चील, शुतुरमुर्ग, एंडीज पर्वतमाला से आए विशाल कोंडोर पक्षियों का एक जोड़ा, विचित्र बत्तखें और जलपक्षी जो बहुत खुश और आरामदायक प्रतीत होते हैं, और जिन झीलों में उन्हें रखा जाता है, उनके किनारे उगने वाले सरकंडों और घास के बीच अपने घोंसले बनाते हैं। कुछ अमेरिकी पक्षी अवर्णनीय आवाजें निकालते हैं।

‘पिंजरों में तरह-तरह के जीवित सांप और छिपकलियां भी थीं, कुछ विशालकाय सीलोन टोड जो फ्लॉसी से कुछ ही छोटे थे, कुछ बड़े विदेशी चूहे जो छोटे बुलडॉग जितने बड़े और खूंखार थे। उस जगह के सबसे खूंखार और जानलेवा दिखने वाले जीव ये चूहे थे, एक हंसता हुआ लकड़बग्घा (जो बीच-बीच में बीस पागलों की तरह भयानक हंसी हंसता था) और एक कोबरा डी कैपेलो सांप। मुझे लगता है कि यह सांप सबसे बुरा था: उसकी आंखें और चेहरा किसी शैतान जैसा था, और वह अपनी कांटेदार जीभ को तेजी से और लगातार बाहर निकालता रहता था।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि टैबी और मार्था काफी अच्छी हैं। उन्हें मेरा नमस्कार कहना, और — यकीन मानो, प्यारे पापा, आपकी स्नेही बेटी।

‘सी. ब्रोंटे.

मुझे उम्मीद है कि आपको शार्प्स मैगज़ीन में छपे नोटिस से कोई फर्क नहीं पड़ता; इससे मुझे जरा भी परेशानी नहीं है। श्री स्मिथ कहते हैं कि साहित्यिक दृष्टि से इसका कोई महत्व नहीं है। शार्प, जो पत्रिका के मालिक हैं, श्री स्मिथ के पिता के शिष्य थे।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

‘76 ग्लूसेस्टर टेरेस,
‘हाइड पार्क गार्डन, 21 जून, 1850.

प्रिय एलेन, अगर सब ठीक रहा तो मैं मंगलवार को लंदन छोड़ रहा हूँ, और अगर यह व्यवस्था आपके लिए सुविधाजनक रही तो मुझे कुछ दिनों के लिए आपके पास आकर बहुत खुशी होगी। मेरा इरादा सुबह नौ बजे एक्सप्रेस ट्रेन से निकलने का है, जो लीड्स में दोपहर दो बजकर पैंतीस मिनट पर पहुँचती है। मैं दोपहर लगभग चार बजे बैटली पहुँच जाऊँगा। क्या यह ठीक रहेगा?

इस बार लंदन की मेरी यात्रा मेरी उम्मीदों से कहीं बेहतर रही; मुझे पहले से कम कष्ट हुआ और अधिक आनंद मिला। हालांकि, अभी भी मेरे लिए एक कठिन अंत बाकी है। श्रीमती स्मिथ का सबसे छोटा बेटा स्कॉटलैंड में स्कूल में पढ़ रहा है, और उनका सबसे बड़ा बेटा जॉर्ज उसे छुट्टियों में घर लाने जा रहा है। पिछली शाम उसने अपनी एक बहन को साथ ले जाने की इच्छा जताई और प्रस्ताव दिया कि मिस ब्रोंटे एडिनबर्ग जाकर उनसे मिलें और उस शहर और उसके उपनगरों को देखें। मुझे लगा कि वह मजाक कर रहा है, मैं हँसी और मना कर दिया; लेकिन लगता है कि वह गंभीर था। मुझे यह बिल्कुल असंभव लगा, इसलिए मैंने फिर भी इनकार कर दिया। श्रीमती स्मिथ इसके पक्ष में नहीं थीं; आप आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि उन्होंने मेरे विरोध को बनाए रखने में मेरी कितनी मदद की होगी, लेकिन उनका नेक बेटा और भी दृढ़ हो गया। उसकी माँ घर की मालकिन है, लेकिन वह अपनी माँ का मालिक है। आज सुबह वह आई और मुझसे जाने की विनती की। "जॉर्ज की यही इच्छा थी"; उसने उससे अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने की विनती की थी, इत्यादि। अब मुझे विश्वास है कि जॉर्ज और मैं एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह समझते हैं और एक-दूसरे का बहुत सम्मान करते हैं। हम दोनों जानते हैं कि समय ने हमारे बीच कितनी बड़ी खाई पैदा कर दी है; हम एक-दूसरे को शर्मिंदा नहीं करते, या बहुत कम ही करते हैं; मेरी छह-आठ साल की वरिष्ठता, और सुंदरता आदि का कोई दिखावा न होना, एक पूर्ण सुरक्षा कवच है। मुझे उसके साथ चीन जाने में ज़रा भी डर नहीं है। मुझे उसे खुश देखना अच्छा लगता है, मैं उसे नाराज़ या निराश करना बिल्कुल पसंद नहीं करती, इसलिए उसकी मर्ज़ी पूरी होगी; और अगर सब ठीक रहा, तो मैं आपके साथ कुछ दिन बिताने के बाद एडिनबर्ग में उससे मिलने जाऊंगी। उसकी उमंग भरी ऊर्जा और युवा जोश से मेरी मांसपेशियों और नसों पर काफी ज़ोर पड़ेगा, लेकिन मुझे विश्वास है

कि मैं किसी तरह इसे संभाल लूंगी, और फिर शायद घर जाने से पहले आपके साथ कुछ दिन आराम करने के लिए वापस आ जाऊंगी। ब्रुकरॉयड में सभी को, आपके मेहमानों सहित, हार्दिक शुभकामनाओं सहित, - प्रिय एलेन, आपकी विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे.

'डाक द्वारा तुरंत जवाब दें।'

सुश्री लैटिटिया व्हीलराइट को

हॉवर्थ, 30 जुलाई, 1850।

मेरी प्यारी लैटिटिया, मैंने तुमसे वादा किया था कि घर लौटने पर तुम्हें पत्र लिखूंगा। मैं घर लौट आया हूँ, लेकिन तुम समझ सकती हो कि घर में बहुत से काम हैं जिन पर ध्यान देने और उन्हें व्यवस्थित करने की ज़रूरत है, क्योंकि हाल ही में छत हटाने के काम में घर पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है। हालाँकि, दराज और अलमारियों को कुछ समय के लिए इंतज़ार करना होगा, जब तक मैं अपना वादा पूरा नहीं कर लेता, हालाँकि यह बेहद ज़रूरी है कि यह काम जल्द से जल्द पूरा हो जाए।

स्कॉटलैंड में मेरा प्रवास संक्षिप्त था, और मैंने मुख्य रूप से एडिनबर्ग और उसके आसपास के इलाकों, एबॉट्सफोर्ड और मेलरोज़ को ही देखा, क्योंकि मुझे ग्लासगो से ओबन और फिर हाइलैंड्स के एक हिस्से से होकर जाने की अपनी मूल योजना छोड़नी पड़ी। लेकिन समय कम होने और सीमित दृश्यों के बावजूद, मुझे वहां के माहौल, संगति और परिस्थितियों का ऐसा आकर्षण मिला कि मुझे लगता है कि उस थोड़े से समय में प्राप्त आनंद लंदन में एक महीने के प्रवास के दौरान मिले आनंद के बराबर और उससे कहीं अधिक था। लंदन की तुलना में एडिनबर्ग इतिहास के एक जीवंत पन्ने की तरह है, जबकि लंदन राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर एक विशाल, नीरस ग्रंथ जैसा है; और मेलरोज़ और एबॉट्सफोर्ड के नाम ही अपने आप में संगीत और जादू लिए हुए हैं।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि घर लौटने पर मैंने पापा को काफी स्वस्थ पाया। दूर रहने के दौरान मैंने अक्सर उनके बारे में सोचा था; और इस पुराने घर में वापस आना कई मायनों में बेहद दुखद है, फिर भी उनके साथ एक बार फिर से होने से मुझे खुशी हुई।

मुझे याद है, तुम गाँव जाने का इरादा कर रही थी; मुझे उम्मीद है कि तुम अब वहाँ हो और किसी ऐसी जगह पर इस सुहावने दिन का आनंद ले रही हो जहाँ की हवा

लंदन के धुएँ से दूषित न हो और धूप धुंधली न हो। अगर तुम्हारे पापा, मम्मी या तुम्हारी कोई बहन आस-पास हों, तो उन्हें मेरा प्यार भरा नमस्कार कहना—अगर नहीं, तो उनसे मिलने तक याद रखना।—मेरी प्यारी लैटिटिया, मैं तुम्हारी जल्दबाज़ी में, लेकिन वफ़ादार हूँ।

'सी. ब्रोंटे।'

रेव. पी. ब्रोंटे को

'एम्बल्ससाइड, 15 अगस्त, 1850।

प्रिय पापा, मुझे लगता है मैं गुरुवार तक घर नहीं आ पाऊँगी। अगर सब ठीक रहा तो मैं सोमवार को यहाँ से निकल जाऊँगी और एलेन नुसे के साथ एक-दो दिन बिताऊँगी। मुझे अपनी यात्रा का बहुत आनंद आया। सर जे. के. शटलवर्थ कई बार आए और मुझे अपनी गाड़ी में घुमाने ले गए। वे बहुत ही मित्रवत लगते हैं; लेकिन, मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि वे पीले और बहुत कमजोर दिख रहे हैं। मुझे बहुत डर है कि अगर जल्द ही उनके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ तो वे ज्यादा दिन तक जीवित नहीं रहेंगे। लेडी एस. भी बीमार हैं और बाहर नहीं जा सकतीं। मैंने डॉ. अर्नोल्ड के परिवार के कई सदस्यों से मुलाकात की है और वे मुझे बहुत पसंद आए। मिस मार्टिन्यू की बात करें तो, मैं उनकी जितनी प्रशंसा करती हूँ और उन्हें देखकर आश्चर्यचकित होती हूँ, शब्दों में बयान नहीं कर सकती। उनकी श्रमशक्ति, व्यायाम करने की क्षमता और सामाजिक प्रसन्नता मेरी समझ से परे है। अपनी असाधारण बुद्धि की निरंतर सक्रियता के बावजूद वे स्वस्थ हैं। पहली मुलाकात में मैंने जितना सोचा था, उससे कहीं ज्यादा लंबी, मजबूत और हष्ट-पुष्ट महिला हैं। वह मेरे प्रति बहुत दयालु हैं, हालाँकि उन्हें लगता होगा कि मैं उनके मुकाबले बहुत तुच्छ व्यक्ति हूँ। अभी-अभी वह कमरे में आईं और मुझे अपने इतिहास के उस अध्याय को दिखाया जिसे वह लिख रही हैं, जिसमें ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के चरित्र और प्रायद्वीप में उनके कार्यों का वर्णन है। वह इस पर मेरी राय जानना चाहती थीं, और मुझे अपनी राय देने में खुशी हुई। ऐसा लगता है कि वह उन्हें समझती हैं और उनके साथ न्याय करती हैं।

"आप आज के बाद यहाँ कोई पत्र न भेजें, क्योंकि वे मुझ तक नहीं पहुँचेंगे। आशा है, प्यारे पापा, आप कुशल मंगल होंगे, और टैबी और मार्था को मेरा हार्दिक प्रणाम कहना, — आपकी स्नेही पुत्री।"

'सी. ब्रोंटे।'

डब्ल्यू. एस. विलियम्स को

2 अक्टूबर, 1850।

'मेरे प्रिय महोदय, इन अवशेषों को सही करने में आपने जिस देखभाल और दयालुता के साथ मेरी सहायता की है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं।'

'जब ये प्रकाशित होंगे, तो क्या ये दूसरों को भी वैसे ही दिखाई देंगे जैसे मुझे दिखाई देते हैं, यह मैं नहीं कह सकता। मुझे उम्मीद है कि ऐसा नहीं होगा। और वास्तव में, मुझे लगता है कि जो मेरे लिए कड़वी पीड़ा है, वह आम जनता के लिए केवल कोमल करुणा ही होगी।'

मिस मार्टिन्यू ने हाल ही में कई बार मुझे उनसे मिलने के लिए बुलाया है; और हालांकि उत्तर की ओर यात्रा करने के लिए यह मौसम थोड़ा नीरस है, मुझे लगता है कि अगर पापा की सेहत ठीक रही तो मैं एक-दो हफ़्ते में चली जाऊंगी। मुझे बड़े दुख और शर्मिंदगी के साथ यह महसूस होता है कि निरंतर अकेलेपन के कष्ट को सहना मेरे बस में नहीं है। मैंने सोचा था कि जब मुझे हर तरह के आनंद से, हर तरह की प्रेरणा से दूर रखा जाएगा, सिवाय बौद्धिक परिश्रम के, तो मेरा मन अपने आप जागृत हो जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं है। बुद्धि और कल्पना भी घरेलू खुशियों की किरण और पारिवारिक चर्चाओं के हल्के-फुल्के प्रोत्साहन के बिना नहीं रह सकती। देर शाम और पूरी रात, मेरा मन ऐसी स्थिति में चला जाता है जो पूरी तरह से अतीत—यादों—की ओर मुड़ जाती है; और यादें दुखद और निर्दयी दोनों होती हैं। यह कभी ठीक नहीं होगा और इससे कोई लाभ नहीं होगा। मैं आपको यह इसलिए बता रही हूं ताकि आप अपनी गलत धारणाओं को दूर कर सकें। आप मेरी मदद नहीं कर सकते और न ही आपको किसी भी तरह से मेरे प्रति सहानुभूति दिखाने की कोशिश करनी चाहिए। यह मेरा प्याला है, और मुझे इसे पीना ही होगा, जैसे दूसरे अपना प्याला पीते हैं। —आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

मिस ब्रोंटे के कागजातों में मुझे मिस मार्टिन्यू को लिखा गया निम्नलिखित पत्र मिला, जो शर्ली की कड़ी आलोचना के प्रकाशन के बाद स्वाभाविक रूप से व्यक्त की गई नाराजगी के साथ लिखा गया था।

सुश्री हैरियट मार्टिन्यू को।

प्रिय मिस मार्टिन्यू, मुझे लगता है कि आपके पत्र के लहजे और भावना को

समझने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि मैं आपकी इच्छा का तुरंत पालन करते हुए आपका पत्र भेज दूं। मैं इसे संलग्न कर रहा हूं और उस अंश को लाल स्याही से चिह्नित कर दिया है जिसने मुझे स्तब्ध कर दिया। बाकी सब ठीक है, सही है, आपके योग्य है, लेकिन मैं इस अंश का विरोध करता हूं; और यदि मुझे इंग्लैंड के सभी आलोचकों के समक्ष पेश किया जाए, तो ऐसे आरोप पर मैं जवाब दूंगा, "दोषी नहीं।"

मैं प्रेम को अपनी समझ के अनुसार जानता हूँ; और यदि कोई पुरुष या स्त्री ऐसे प्रेम को महसूस करने में शर्म महसूस करे, तो इस पृथ्वी पर मेरे अनुसार सत्यनिष्ठा, महानता, निष्ठा, सत्य और निस्वार्थता के समान कुछ भी सही, महान, निष्ठावान, सत्यनिष्ठ और निस्वार्थ नहीं है। — आपका सादर,

'सी. बी.

'आपसे असहमत होना मुझे तीव्र पीड़ा देता है।'

जेम्स टेलर, कॉर्नहिल को

6 नवंबर, 1850।

"मेरे प्रिय महोदय, श्रीमती अर्नोल्ड एक मिलनसार और निश्चित रूप से कभी बेहद खूबसूरत महिला रही होंगी; उनकी बेटी मुझे बहुत पसंद आई। वहाँ शेवेलियर बन्सन का एक पुत्र भी अपनी पत्नी, या कहें दुल्हन के साथ उपस्थित था। मैंने उस समय डॉ. अर्नोल्ड की जीवनी नहीं पढ़ी थी - अन्यथा, यह मुलाकात मुझे और भी अधिक रुचिकर लगती।

श्री विलियम्स ने मुझे बताया (यदि मैं गलत नहीं हूँ) कि आपने हाल ही में झील क्षेत्र का दौरा किया था। मुझे उम्मीद है कि आपने अपने भ्रमण का आनंद लिया होगा, और स्कॉटिश झीलों की तुलना में हमारी अंग्रेजी झीलें आपकी स्मृति में कुछ कमतर नहीं लगीं होंगी। — प्रिय महोदय, आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

'एम्बल्ससाइड, 21 दिसंबर, 1850।

प्रिय एलेन, मैंने सर जे. के. शटलवर्थ के यहाँ जाने से किसी तरह बच लिया है, और वादा किया है कि मैं किसी और दिन आऊँगी। मैंने सोचा कि घर जाने से पहले मैं तुम्हारे साथ दो-तीन दिन बिताना चाहूँगी; इसलिए, अगर तुम्हें कोई असुविधा न हो, तो मैं सोमवार को आऊँगी और गुरुवार तक रुकूँगी। मैं सोमवार दोपहर दो बजकर दस

मिनट पर ब्रैडफोर्ड (ईश्वर की कृपा से) पहुँच जाऊँगी, और स्टेशन से टैक्सी लेकर बिर्स्टॉल तक जा सकती हूँ। मुझे अपनी यात्रा का बहुत आनंद आया। मैंने बहुत से लोगों से मुलाकात की, और सभी बहुत ही दयालु थे; डॉ. अर्नोल्ड का परिवार तो विशेष रूप से दयालु था। मिस मार्टिन्यू मुझे बहुत अच्छी लगीं। सर जेम्स लगभग हर दिन मुझे घुमाने ले जाते रहे हैं। मैं मन ही मन मानने लगी हूँ कि वे मेरे प्रति वास्तव में दयालु हैं। मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि वे मुझे बहुत कमजोर और बीमार लग रहे हैं। लेडी शटलवर्थ बीमार हैं। वे बाहर नहीं जा सकतीं, और मैंने उनसे मुलाकात नहीं की है। फिर मिलेंगे, अलविदा।

'सी. ब्रोंटे।'

एम्बल्ससाइड की इसी यात्रा के दौरान शार्लोट ब्रोंटे और मैथ्यू अर्नोल्ड की मुलाकात हुई थी।

मिस्टर अर्नोल्ड ने फॉक्स हाउ (21 दिसंबर, 1850) से लिखा, 'सात बजे मिस मार्टिन्यू और मिस ब्रोंटे (जेन आयर) आईं; मैंने मिस मार्टिन्यू (जो बेहद ईशनिंदा करती हैं) से चर्च ऑफ इंग्लैंड के भविष्य के बारे में बात की, और अपनी अभागी बुद्धि के कारण, कल जाकर उनके गाय पालन के चमत्कार देखने का वादा किया — मैं, जिसे गाय और भेड़ में मुश्किल से ही फर्क पता है। मैंने मिस ब्रोंटे (तीस साल से अधिक उम्र की और सादी, हालांकि उनकी भूरी आँखें भावपूर्ण थीं) से उनके पादरियों, फ्रांसीसी उपन्यासों और ब्रुसेल्स के एक स्कूल में उनकी शिक्षा के बारे में बात की, और साढ़े नौ बजे शेरों को उनकी मांद में भेज दिया, और आपसे बात करने आया हूँ।'

इस 'धारणा' के आलोक में, यह देखना काफी दिलचस्प है कि 'तीस वर्ष से अधिक उम्र की और साधारण दिखने वाली' मिस ब्रोंटे ने मिस्टर मैथ्यू अर्नोल्ड के बारे में क्या सोचा होगा!

जेम्स टेलर, कॉर्नहिल को

15 जनवरी, 1851।

मेरे प्रिय महोदय, मुझे लगता है कि मेरे पिछले पत्र में व्यक्त की गई अपूर्णता के कारण आपको भ्रम हुआ होगा और आपने श्रीमती अर्नोल्ड के लिए उन टिप्पणियों को समझ लिया होगा जो मैंने मिस मार्टिन्यू के लिए लिखी थीं। मुझे याद है कि "मेरी मेज़बान" के बारे में लिखते समय मुझे उस शब्द में कुछ अस्पष्टता महसूस हुई थी; कृपया मुझे अब यह स्पष्ट करने की अनुमति दें कि यह मिस मार्टिन्यू को संदर्भित

करता था।

श्रीमती अर्नोल्ड वास्तव में, जैसा कि मेरे अपने अवलोकन और उन्हें जानने वाले सभी लोगों की सर्वसम्मत गवाही से पता चलता है, एक अच्छी और मिलनसार महिला हैं, लेकिन बौद्धिक क्षमता उनकी विशेषता नहीं है, और वे शक्ति या चरित्र की पूर्णता का दावा नहीं करतीं। मुझे लगता है कि यही बात उनकी बेटियों पर भी लागू होती है। आप उनमें एक-दूसरे और अपने साथियों के प्रति अत्यंत स्नेहपूर्ण भावना की प्रशंसा करते हैं, और वे अपने घर में पारिवारिक एकता और उससे उत्पन्न होने वाली परिष्कार का एक सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं; लेकिन जब बातचीत साहित्य या किसी ऐसे विषय पर होती है जो बुद्धि की परीक्षा लेता है, तो आप आमतौर पर महसूस करते हैं कि उनके विचार मौलिक होने के बजाय अनुकरणात्मक और ठोस होने के बजाय भावुक अधिक होते हैं। मुझे लगता है कि जिन लोगों ने श्रीमती अर्नोल्ड को केवल एक बार देखा है, वे निश्चित रूप से उनके बारे में प्रतिकूल राय रखेंगे; उनके परिचय के दौरान उनका व्यवहार मुझे काफी निराश कर गया, क्योंकि उसमें वह प्रामाणिकता और सरलता नहीं थी जिसकी डॉ. अर्नोल्ड की चुनी हुई जीवनसाथी से अपेक्षा की जानी चाहिए थी। जब मैंने श्रीमती गैस्केल और सर जे. के. शटलवर्थ से इस बारे में बात की, तो मुझे तसल्ली देते हुए कहा गया कि यह एक "पारंपरिक व्यवहार" है, लेकिन नज़दीकी जान-पहचान बढ़ने पर यह व्यवहार गायब हो जाता है; सौभाग्य से यह आश्वासन सही साबित हुआ। यह ध्यान देने योग्य है कि मैथ्यू अर्नोल्ड, सबसे बड़े बेटे और उस कविता संग्रह के लेखक जिसका आपने उल्लेख किया है, अपनी माँ की इस कमी को विरासत में पाते हैं। दिखने में आकर्षक और सुंदर होने के बावजूद, उनका व्यवहार दिखावटीपन के कारण अप्रिय लगता है। मैं स्वीकार करता हूँ कि पहले तो मुझे उन्हें देखकर खेद और हैरानी हुई; मुझे लगा जैसे डॉ. अर्नोल्ड की आत्मा अपने युवा प्रतिनिधि पर नाराज़ हो रही हो। हालाँकि, मुझे बताया गया कि "श्री अर्नोल्ड जान-पहचान बढ़ने पर सुधर गए।" और ऐसा ही हुआ: जल्द ही उनके दिखावटी घमंड के नीचे सच्ची विनम्रता दिखाई दी, और कुछ वास्तविक बौद्धिक आकांक्षाओं के साथ-साथ उच्च शैक्षणिक योग्यताओं ने सतही दिखावे को दूर कर दिया। मुझे बताया गया कि उनके धार्मिक विचार बहुत अस्पष्ट और अनिश्चित थे, और वास्तव में उन्होंने बातचीत के दौरान इसे ज़ाहिर भी कर दिया। उनके लिए सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात निस्संदेह उनके पिता का असमय निधन रहा है।

वेस्टमोर्लैंड की मेरी यात्रा से मुझे सचमुच बहुत लाभ हुआ। शारीरिक रूप से, वहाँ जाने से पहले मैं बीमार नहीं थी, लेकिन मेरे मन को गहरा आघात पहुँचा था। अपनी बहन के कागजात, स्मृति चिन्ह और दस्तावेजों को देखते समय, जो दूसरों के लिए कुछ भी नहीं होते, मेरे लिए बहुत कष्टदायक साबित हुए। आस-पास सामाजिक मेलजोल से उस दुखद प्रभाव को कम करने या मिटाने का कोई साधन नहीं था; अपने पिता से, ज़ाहिर है, मेरी एकमात्र चिंता यही थी कि मैं इसे छुपाऊँ - उम्र के साथ दुख व्यक्त करने में उतना ही धैर्य रखना पड़ता है जितना बचपन में। निरंतर एकांत मेरे लिए असहनीय हो गया था, और सच कहूँ तो, मुझे इस बदलाव से खुशी हुई। आप कहेंगे कि हमारे भीतर परिस्थितियों को सहने या उन्हें अपने वश में करने की शक्ति होनी चाहिए। यह सच है, हमें इसके लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए, लेकिन कभी-कभी हमारा सर्वश्रेष्ठ प्रयास भी व्यर्थ हो जाता है। फिर भी, अब मैं बेहतर हूँ, और इस आराम के लिए बहुत आभारी हूँ।

मेरी बहन की रचनाओं में आपने जो रुचि दिखाई है, उससे मुझे बहुत खुशी हुई। इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, खासकर इसलिए क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि आप ईमानदारी के अलावा कुछ और नहीं कह रहे होंगे। वुदरिंग हाइट्स के नए संस्करण के बारे में मैंने केवल एग्जामिनर, लीडर और एथेनियम में ही सूचनाएँ देखी हैं। एथेनियम में छपी सूचना ने मुझे कुछ हद तक प्रसन्न किया: यह शांत लेकिन सम्मानजनक है - कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा।

आपने पूछा कि क्या मिस मार्टिन्यू ने मुझे सम्मोहन का अनुयायी बना दिया? बिलकुल नहीं; फिर भी मैंने इसकी प्रभावकारिता के चमत्कारों के बारे में सुना था और मुझे बताई गई हर बात पर अविश्वास करना मुश्किल था। मैंने खुद भी एक प्रयोग किया था; और यद्यपि परिणाम पूरी तरह से स्पष्ट नहीं था, लेकिन यह अनुमान लगाया गया था कि समय के साथ मैं एक उत्कृष्ट विषय साबित होऊंगा।

'मेरा मानना है कि मिस मार्टिन्यू की आगामी कृति में सम्मोहन के प्रश्न पर बिना किसी संकोच के चर्चा की जाएगी, और मुझे इस बात का दुखद पूर्वाभास है कि अन्य विषयों को, जो अटकलों के लिए कम वैध आधार प्रदान करते हैं, किस तरह से निपटाया जाएगा।'

आपने लीडर का जिक्र किया; आप इसके बारे में क्या सोचते हैं? मुझसे योगदान देने के लिए कहा गया है; लेकिन हालांकि मैं निष्पक्षता और शिष्टाचार की भावना का

सम्मान करता हूं जिसके साथ यह समग्र रूप से संचालित होता है, कुछ बिंदुओं पर इसके सिद्धांत ऐसे हैं कि मैं अब तक इसके कॉलम में अपना नाम देखने के विचार से कतराता रहा हूं।

आपकी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद, — मैं, प्रिय महोदय, आपका सादर,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री लैटिटिया व्हीलराइट को

हॉवर्थ, 12 जनवरी, 1851।

प्रिय लेटिटिया, चाहे मुझे कितने ही पत्र लिखने हों (और अभी तो पत्रों की बाढ़ सी आ गई है), तुम्हारे लिए समय निकालना ही होगा। तुम्हारे स्नेहपूर्ण प्रश्नों के उत्तर में, मैं कहना चाहूँगी कि लंदन में रहना और स्कॉटलैंड की यात्रा मेरे लिए बहुत लाभकारी रही; उस समय तो बहुत अच्छी रही; लेकिन शरद ऋतु के अंत में मेरा स्वास्थ्य फिर से कुछ हद तक बिगड़ गया, और कुछ दिनों की अस्वस्थता के कारण मैंने पहले प्राप्त की हुई अतिरिक्त शारीरिक शक्ति और ऊर्जा खो दी। यह मेरी बहनों के पत्रों और कागज़ात को देखने के कष्टदायक कार्य के कारण हुआ। कई छोटी-छोटी स्मृतियों और दस्तावेजों ने मिलकर एक अवर्णनीय उदासी का भाव उत्पन्न किया, जिसे एकांत ने और गहरा कर दिया और तब तक बढ़ावा दिया जब तक मैं बीमार नहीं पड़ गई। हालाँकि, मैं यह कहते हुए आभारी हूँ कि वेस्टमोर्लैंड की एक संक्षिप्त यात्रा ने मुझे फिर से तरोताज़ा कर दिया है, और पापा का अभी स्वस्थ और प्रसन्न होना मुझे कृतज्ञता के कई कारण देता है। जब हमारे पास केवल एक ही अनमोल चीज़ बचती है, तो हम उसकी बहुत कद्र करते हैं।

मैं कुछ समय से मिस मार्टिन्यू के साथ रह रही हूँ। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, यह मुलाकात मेरी रुचियों से बिल्कुल मेल नहीं खाती। वह निश्चित रूप से बौद्धिक और शारीरिक दोनों ही दृष्टियों से अद्भुत प्रतिभाओं से परिपूर्ण हैं, और यद्यपि मैं उनके कुछ विचारों से सहमत नहीं हूँ और कुछ मामलों में उन्हें त्रुटिपूर्ण मानती हूँ, फिर भी मैं उनका हार्दिक सम्मान करती हूँ। जिस प्रकार से वह उच्च कोटि की मानसिक संस्कृति को नारीत्व के कर्तव्यों के उत्कृष्ट निर्वहन के साथ जोड़ती हैं, वह मुझे प्रशंसा से भर देता है, जबकि उनकी स्नेहपूर्ण दयालुता ने मुझे कृतज्ञता का पात्र बना दिया है।

'जादूगर पैक्सटन के क्रिस्टल महल का आपका वर्णन काफी सजीव है। मैं उसे

देख पाऊँगा या नहीं, यह मुझे नहीं पता। इस मौसम में लंदन में इतनी भीड़भाड़ और चहल-पहल होगी कि मुझे वहाँ जाने से डर लग रहा है।'

मुझे विदा लेते हुए केवल इतना ही कहना है कि मैं आपके पूरे परिवार को अपनी हार्दिक संवेदनाएँ व्यक्त करूँ और आपको अपना प्यार भेजूँ। — आपका सदा,

'सी. ब्रोंटे।'

रेव. पी. ब्रोंटे को

'112 ग्लूसेस्टर टेरेस, हाइड पार्क,

'लंदन, 17 जून, 1851.

प्रिय पापा, मैं आपको यह बताने के लिए जल्दी में पत्र लिख रहा हूँ कि मुझे पता चला है कि वे मुझे अगले मंगलवार तक लंदन छोड़ने नहीं देंगे; और जैसा कि मैंने श्रीमती गैस्केल के साथ घर लौटते समय एक-दो दिन बिताने का वादा किया है, इसलिए शायद मैं अगले सप्ताह शुक्रवार या शनिवार से पहले हॉवर्थ नहीं लौट पाऊँगा। इस तरह मार्था को कुछ और दिन मिल जाएँगे, और उसे जल्दबाजी या अधिक काम नहीं करना चाहिए। कल मैंने कार्डिनल वाइजमैन को देखा और उनका भाषण सुना। यह सेंट विंसेंट डी पॉल की रोमन कैथोलिक सोसाइटी की एक बैठक थी; कार्डिनल ने अध्यक्षता की। वे एक बड़े, मोटे आदमी हैं, कुछ-कुछ मिस्टर मॉर्गन जैसे; उनकी ठुड्डी दोहरी ही नहीं बल्कि तिहरी और चौगुनी है; उनका मुँह बहुत बड़ा है, होंठ चिकने हैं, और ऐसा लगता है जैसे उन्हें अच्छे खाने के बाद शराब की एक बोतल पसंद आएगी। वे कमरे में मुस्कुराते, नखरे करते और एक मोटी बूढ़ी औरत की तरह झुकते हुए आए, और अपनी कुर्सी पर बड़े ही शालीनता से बैठ गए और एक चालाक पाखंडी की तस्वीर लग रहे थे। वह बिशप या डीन की तरह सादे कपड़ों में काले वस्त्र पहने हुए थे, लेकिन उन्होंने लाल दस्ताने और एक चमकीली लाल जैकेट पहनी हुई थी। उनके चारों ओर कई छोटे पादरी थे, जिनमें से कई बेहद काले और रहस्यमय लग रहे थे। कार्डिनल एक पाखंडी मेथोडिस्ट उपदेशक की तरह चिकनी और गिड़गिड़ाती हुई शैली में बोल रहे थे। श्रोता उन्हें मानो भगवान की तरह पूज रहे थे। पूरी सभा में अत्यधिक उत्साह का माहौल था। मुझे बाद में बताया गया कि मेरे और मेरे साथ आए व्यक्ति के अलावा वहाँ एक भी प्रोटेस्टेंट मौजूद नहीं था। सभी भाषणों में लोगों को पोप धर्म में परिवर्तित करने के लिए हर संभव प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। ऐसे माहौल में ही कैथोलिकों के कार्यों का एहसास होता है। वे अपने काम

में बेहद दृढ़ और उत्साही हैं! प्रोटेस्टेंटों को इससे सीख लेनी चाहिए। यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई कि आप ठीक हैं। अपना पूरा ख्याल रखना। टैबी और मार्था, और श्री निकोल्स को मेरा प्रणाम कहना, और - विश्वास कीजिए, प्यारे पापा, आपकी स्नेही बेटी।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

19 जून, 1851।

प्रिय एलेन, मुझे लंदन में अपनी योजना से कुछ दिन अधिक रुकना पड़ेगा। सर जे. के. शटलवर्थ को पता चल गया है कि मैं यहाँ हूँ। मुझे उनकी इस इच्छा को रोकने में थोड़ी परेशानी हो रही है कि मैं सीधे उनके घर जाऊँ और वहीं ठहरूँ, लेकिन श्रीमती स्मिथ ने मेरी मदद की और मैंने एक दिन बिताने का वादा करके बात मनवा ली। घर लौटते समय मुझे श्रीमती गैस्केल के साथ एक-दो दिन बिताने का वादा किया गया है, और मैं उन्हें टाल नहीं सका, क्योंकि वह गर्मियों के कुछ दिनों के लिए बाहर जा रही हैं। लेडी शटलवर्थ बहुत नाज़ुक लग रही हैं। पापा अब बहुत चाहते हैं कि मैं घर आ जाऊँ; और जैसे ही मैं अपने सभी वादे जल्द से जल्द पूरे कर लूँगा, मुझे घर जाना ही होगा। अगले मंगलवार को मैं दो दिनों के लिए मैनचेस्टर जा रहा हूँ।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

'112 ग्लूसेस्टर टेरेस,

'हाइड पार्क, 24 जून, 1851.

प्रिय एलेन, मैं अब शुक्रवार तक लंदन नहीं छोड़ सकती। कल श्री स्मिथ की एकमात्र छुट्टी है। श्री टेलर के जाने से उन पर काम का बोझ बढ़ गया है। मेरे आने के बाद से कई बार उन्हें सुबह तीन बजे तक शहर में ही रुकना पड़ा है। वह हम सबको रिचमंड ले जाना चाहते हैं, और मैंने पिछले हफ्ते उनसे, उनकी माँ और बहनों के साथ रुकने और जाने का वादा किया था। मैं शुक्रवार को श्रीमती गैस्केल के घर जा रही हूँ। — विश्वास कीजिए, आपकी विश्वासपात्र।

'सी. ब्रोंटे।'

रेव. पी. ब्रोंटे, हॉवर्थ, यॉर्कशायर को

'112 ग्लूसेस्टर टेरेस,

‘26 जून, 1851.

प्रिय पापा, मैं अभी तक लंदन से निकल नहीं पाई हूँ, लेकिन अगर सब ठीक रहा तो मैं कल जाऊँगी, मैनचेस्टर में श्रीमती गैस्केल के साथ दो दिन रहूँगी और सोमवार 30 तारीख को अवश्य घर लौट आऊँगी। पिछले एक-दो दिनों में मैंने बहुत सी चीजें देखी हैं, जिनमें से कुछ बहुत ही रोचक थीं, और लंदन में अपने प्रवास के पहले दो हफ्तों की तुलना में मेरा स्वास्थ्य भी काफी बेहतर रहा है। सर जेम्स और लेडी शटलवर्थ सचमुच बहुत दयालु और अत्यंत ध्यान देने वाले रहे हैं। उन्होंने आपको अपना नमस्कार कहा है और सभी प्रकार के सौहार्दपूर्ण संदेश भेजे हैं। मार्क्विस ऑफ वेस्टमिंस्टर और अर्ल ऑफ एल्समेरे ने मुझे अपने चित्रों का निजी संग्रह देखने का आदेश भेजा था, जिसका मैंने बहुत आनंद लिया। 87 वर्षीय कवि श्री रोजर्स ने मुझे अपने साथ नाश्ते पर आमंत्रित किया। आपको पता होना चाहिए कि उनका नाश्ता अपनी विशिष्ट परिष्कृतता और स्वाद के लिए पूरे यूरोप में प्रसिद्ध है। वह अपने भोजन में कभी भी चार से अधिक लोगों को आमंत्रित नहीं करते: स्वयं और तीन अतिथि। जिस सुबह मैं वहाँ थी, मेरी मुलाकात लॉर्ड ग्लेनेल और श्रीमती डेवनपोर्ट से हुई, जो लेडी शटलवर्थ की रिश्तेदार और बेहद खूबसूरत और फैशनेबल महिला थीं। मुलाकात बहुत रोचक रही; और बाद में मुझे बहुत खुशी हुई कि मैं वहाँ गई थी। मुझे सबसे ज्यादा खुशी और आश्चर्य इस बात से हुआ कि सर डेविड ब्रूस्टर, जो अपने समय के अग्रणी वैज्ञानिकों में से एक थे, मुझे क्रिस्टल पैलेस ले गए और वहाँ की सबसे अनोखी चीजों को दिखाते और समझाते हुए मुझे बहुत कुछ बताया। आप जानते हैं, प्यारे पापा, कि मैं इन चीजों का जिक्र शेखी बघारने के लिए नहीं कर रही हूँ, बल्कि इसलिए कर रही हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि इससे आपको खुशी मिलेगी। मुझे लगता है कि कोई भी मेरे बारे में बुरा नहीं सोचता कि मैं प्रचार से दूर रहती हूँ और बड़ी पार्टियों में नहीं जाती, और हर कोई सचमुच विनम्र और सम्मानजनक लगता है, यह व्यवहार मुझे बहुत अच्छा लगता है, और लगना भी चाहिए। सोमवार तक के लिए अलविदा। मिस्टर निकोल्स, टैबी और मार्था को मेरा प्रणाम कहना, और - यकीन मानिए, आपकी स्नेही बेटी।

‘सी. ब्रोंटे।’

अध्याय सत्रह: रेवरेंड आर्थर बेल निकोल्स

श्री आर्थर बेल निकोल्स की उदार सहायता के बिना यह पुस्तक लिखी ही नहीं जा सकती थी, और इसलिए शार्लोट ब्रोंटे के वैवाहिक जीवन का वर्णन करते समय मैंने अपनी कलम को अत्यंत सावधानी से चलाया होगा। हालांकि, इसमें न तो कोई दुखद रहस्य उजागर करने हैं, न ही कोई छुपी हुई बातें। श्री निकोल्स की कहानी बहुत सरल है; और यह पूरी तरह से विश्वसनीय है, इसके पर्याप्त प्रमाण हैं। ब्रोंटे परिवार की निरंतर प्रसिद्धि के कारण उनके जीवन पर होने वाली व्यापक चर्चा के बीच, शायद यह अपरिहार्य था कि एक विपरीत मत को भी बल मिले। श्री निकोल्स के अपने देश में कई रिश्तेदारों ने प्रचलित विकृत बयानों पर अक्सर अफसोस जताया है। शार्लोट के पति के बारे में एक प्रतिकूल लेख पढ़ने के बाद श्री निकोल्स के भाई ने अपनी बेटी से कहा, 'यह क्रूरता है कि तुम्हारे चाचा आर्थर, जो हमारी जानकारी में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति थे, के साथ ऐसा व्यवहार किया जाए।' फिर भी, इस तरह के आकलन का फैलना स्वाभाविक ही था; और मैं स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ कि श्री निकोल्स से मिलने से पहले मेरा मानना था कि शार्लेट ब्रोंटे का वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं था - यह राय मैंने आंशिक रूप से श्रीमती गैस्केल से और आंशिक रूप से यॉर्कशायर की प्रचलित परंपरा से बनाई थी। वास्तव में, श्रीमती गैस्केल श्री निकोल्स को पसंद नहीं करती थीं, और मिस ब्रोंटे की जीवनी लिखते समय उनके संपर्क में आए कुछ लोग आमतौर पर दयालु जीवनी लेखक श्री निकोल्स की इस भावना को और भड़काने के लिए उत्सुक थे। श्री निकोल्स ने स्वयं सुलह का प्रयास नहीं किया। जैसा कि हम आगे देखेंगे, वे एक स्कॉटिश थे, और स्कॉटिश मौन स्वभाव का यॉर्कशायर के मिलनसार और हंसमुख लोगों पर प्रभाव डालना मित्रतापूर्ण नहीं था। इसके अलावा, उन्होंने

श्रीमती गैस्केल को 'द प्रोफेसर' में बदलाव करने की अनुमति नहीं दी, और इस मामले में भी उन्होंने बुद्धिमानी और कुशलता से काम लिया। उन्हें प्रचार से नफरत थी, और सबसे बढ़कर, अपने वैवाहिक जीवन के पर्दे को उजागर करने के प्रयास को वे घोर घृणा से देखते थे। कौन कह सकता है कि वे गलत थे, और विवादों से भरे इस पूरे क्षेत्र से चालीस वर्षों से अधिक समय तक दूर रहकर उन्होंने जो विश्राम किया, वह पूरी तरह से उचित साबित हुआ? हमारे समय में मिस ब्रोंटे की कम से कम एक मित्र ने ब्रोंटे के प्रशंसकों के अनुचित उत्साह के कारण उन्हें झेलनी पड़ी तमाम परेशानियों की कड़ी शिकायत की है। श्री निकोल्स ने अपनी विवेकपूर्ण चुप्पी से इन सब से खुद को बचा लिया है। अब जब उनकी पत्नी की मृत्यु को चालीस वर्ष से अधिक समय बीत चुका है, तो जनता को वह सब कुछ बताना अनुचित नहीं होगा जो वे जानना चाहते हैं।

श्री निकोल्स का जन्म 1817 में काउंटी एंट्रिम में हुआ था, लेकिन उनके माता-पिता दोनों स्कॉटिश थे। सात वर्ष की आयु में उन्हें उनके चाचा - रेवरेंड एलन बेल - की देखरेख में छोड़ दिया गया, जो किंग्स काउंटी के बानाघर स्थित रॉयल स्कूल के प्रधानाध्यापक थे। श्री निकोल्स ने बाद में ट्रिनिटी कॉलेज, डबलिन में दाखिला लिया और वहीं से वे हॉवर्थ गए, जहाँ उन्हें पहली बार पादरी के रूप में नियुक्त किया गया। उन्होंने 1844 में अपने ही देश के निवासी श्री पीटर ऑगस्टस स्मिथ का स्थान लिया। शार्लेट के पत्रों में नए पादरी के बारे में जो पहली छाप मिलती है, वह उनके पूर्ववर्तियों की तुलना में शायद ही अधिक अनुकूल है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

9 अक्टूबर, 1844।

प्रिय एलेन, — यहाँ सब कुछ पहले जैसा ही चल रहा है, बस आजकल ब्रैनवेल कुछ ज़्यादा ही परेशान करने वाला और झंझट भरा हो गया है; वह पापा की ज़िंदगी को दयनीय बना रहा है। श्री निकोल्स भी वैसे ही हैं। मुझे उनमें अच्छाई के वे दिलचस्प अंश बिल्कुल नज़र नहीं आते जो तुमने खोजे थे; उनकी संकीर्ण सोच ही मुझे सबसे ज़्यादा खटकती है। मुझे डर है कि उनके अंदर छिपी अच्छाई का खजाना तुम्हारी कल्पनाशीलता का ही है। — तुम्हारी,

‘सी. बी.’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

10 जुलाई, 1846।

प्रिय एलेन, किसने गंभीरता से आपसे पूछा कि क्या मिस ब्रोंटे अपने पिता के पादरी से शादी नहीं करने वाली थीं? मुझे यह कहने की शायद ही ज़रूरत है कि यह अफवाह इससे ज़्यादा निराधार कभी नहीं रही। श्री निकोल्स के साथ मेरा हमेशा से एक ठंडा और दूर का शिष्टाचार ही रहा है। मैं ऐसी अफवाह का ज़िक्र उनके सामने मज़ाक में भी नहीं कर सकती। इससे मैं अगले छह महीने तक उनके और उनके साथी पादरियों के बीच हंसी का पात्र बन जाऊंगी। वे मुझे कुंवारी समझते हैं, और मैं उन सभी को बेहद नीरस, संकीर्ण और भद्दा समझती हूँ।

मुझे जल्द ही फिर से लिखना, चाहे तुम्हें कुछ कहना हो या न कहना हो। अपनी माँ और बहनों को मेरा हार्दिक प्यार देना।

‘सी. ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

17 नवंबर, 1846।

प्रिय एलेन, मैं बस एक संक्षिप्त संदेश लिख रही हूँ कि मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया और मुझे उसे पाकर बहुत खुशी हुई। मुझे नहीं पता कि तुमने इतने लंबे समय तक मुझे कब पत्र नहीं लिखा। मुझे तो लगने लगा था कि तुम अपने भाई जोशुआ के पास चली गई हो।

पापा की सेहत बहुत अच्छी है। पिछले रविवार को उन्होंने चर्च में दो बार प्रार्थना पढ़ी। अगले रविवार को उन्हें तीनों प्रार्थना सभाओं की ज़िम्मेदारी खुद ही निभानी होगी, क्योंकि मिस्टर निकोल्स आयरलैंड में हैं। अपनी माँ और बहनों को मेरा नमस्कार कहना। ओंडल पहुँचते ही जितनी जल्दी हो सके मुझे पत्र लिखना। आपको शुभकामनाएँ।

‘सी. ब्रोंटे।’

स्कॉटलैंड की वह झिझक हावी रही, और आने वाले कई दिनों तक मिस्टर निकोल्स के खिलाफ जाती रही।

THE REV. ARTHUR BELL NICHOLLS
From a Portrait taken during his Curacy at Haworth

सुश्री एलेन नुसे के लिए

7 अक्टूबर, 1847।

प्रिय एलेन, मैं तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा कर रही थी; लेकिन चूंकि तुम पत्र नहीं लिखतीं, और शायद तुम सोचती हो कि अब मेरी बारी है, तुम्हारी नहीं, हालांकि इस बारे में मुझे पूरी तरह से स्पष्ट जानकारी नहीं है, इसलिए मैं तुम्हें जवाब पाने के उद्देश्य से अपना एक संक्षिप्त पत्र भेज रही हूँ। ऐनी तुम्हारे पत्र से बहुत प्रसन्न हुई; मुझे लगता है कि उसने अब तक उसका उत्तर दे दिया होगा। मैं आशा करती हूँ कि उसका स्वास्थ्य पहले से थोड़ा बेहतर हो गया होगा और उसका मनोबल भी थोड़ा बढ़ गया होगा, लेकिन वह बहुत ही निष्क्रिय जीवन जी रही है और लगातार या तो किताब पढ़ती रहती है या अपनी मेज पर झुकी रहती है। उसे टहलने के लिए मनाना या उससे बातचीत करना हमारे लिए बहुत मुश्किल है। मैं इस विश्वास के साथ अगली गर्मियों का इंतजार कर रही हूँ कि यदि संभव हो तो वह कम से कम कुछ समय के लिए समुद्र तट पर अवश्य जाएगी।

मुझे खेद है कि मैंने आपको पूर्वी हवा के बारे में डर से भर दिया; पिछली हवा का

झोंका मुझे उतना तेज़ नहीं लगा जितना अक्सर लगता है। उस मार्मिक किस्से ने मेरी सहानुभूति को बहुत जगाया। क्या अगली बार जब आपका संदेशवाहक आपसे मिला तो आपने उसे कान पर एक थप्पड़ मारकर अभिवादन किया? मुझे लगता है कि मुझे भी ऐसा करने का बहुत मन कर रहा था। श्री निकोल्स अभी तक नहीं लौटे हैं। मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि कई स्थानीय लोग चाहते हैं कि वे इंग्लिश चैनल पार करने की परेशानी न उठाएं। चरवाहे और भेड़-बकरियों के बीच ऐसा भाव नहीं होना चाहिए। यह वैसा नहीं है जैसा बिस्टॅल में प्रचलित है। यह वैसा नहीं है जैसा बेचारे श्री वेटमैन ने जगाया था।

उन सभी को मेरा ढेर सारा प्यार देना, और यकीन मानो, तुम्हारा सच्चा शुभचिंतक।

'सी. ब्रोंटे।'

अगली झलक अधिक सौम्य है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

28 जनवरी, 1850।

प्रिय एलेन, तुम्हारी माँ की बीमारी के बारे में सुनकर मुझे बहुत चिंता हुई; जल्द ही फिर से लिखना, चाहे एक ही पत्र क्यों न हो, मुझे बताना कि वे कैसी हैं। मुझे विश्वास है कि यह दुख कुछ समय के लिए ही होगा, लेकिन यह आने वाले समय की एक झलक और चेतावनी है। प्रिय एलेन, इसे अपने मन को उस बड़ी परीक्षा के लिए तैयार करने दो, जिसका सामना तुम्हें कुछ वर्षों में अवश्य करना पड़ेगा। प्रकृति के बंधनों का टूटना ही वह पीड़ा है जिससे हम सबसे अधिक डरते हैं और जिसका अनुभव हमें निश्चित रूप से करना होगा। ल्यूज़ का पत्र पढ़कर मुझे हंसी आ गई; इसके लिए मैं उनका और अधिक सम्मान करता हूँ। सर जे. के. शटलवर्थ का पत्र पढ़कर मुझे हंसी नहीं आई; उन्होंने बाद में फिर से लिखा है। मुझे आज मिस एलेक्जेंडर का एक पत्र मिला है, जो कहती हैं कि वे डॉ. एलेक्जेंडर की बेटी हैं। क्या आप उनके बारे में कुछ जानती हैं? मैरी टेलर स्वस्थ और खुश लग रही हैं और उनकी सेहत में सुधार हो रहा है। मुझे जल्द ही आपसे फिर से सुनने की उत्सुकता होगी।

'सी. बी.

पी.एस. — श्री निकोल्स ने शर्ली पढ़ना समाप्त कर लिया है; उन्हें यह बहुत पसंद आया। जॉन ब्राउन की पत्नी को लगा कि उनका दिमाग खराब हो गया है क्योंकि

उन्होंने उन्हें अकेले बैठे हुए, ताली बजाते और ज़मीन पर पैर पटकते हुए ज़ोर-ज़ोर से हंसते हुए सुना। वह पापा को पादरियों से जुड़े सभी दृश्य ज़ोर से पढ़कर सुनाते थे। उन्हें अपने चरित्र पर पूरा भरोसा था। श्री ग्रांट क्या कहेंगे, यह अलग बात है। कोई बात नहीं।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 27 जुलाई, 1851।

प्रिय नेल, आशा है कि घर की उस कष्टदायक यात्रा से तुम्हें सर्दी-जुकाम नहीं हुआ होगा; तुम्हें मेरी सलाह मानकर शनिवार तक रुक जाना चाहिए था। क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मुझे पूर्वाभास हो रहा है कि ऐसा करना तुम्हारे लिए बेहतर होगा?

मुझे खुशी है कि आपकी माँ ठीक हैं। क्या वह दानकर्ता के इरादे को ध्यान में रखते हुए, ब्लूबेरी के संरक्षित क्षेत्र की दयनीय और पत्थर जैसी हालत को माफ करने के लिए तैयार हैं? लगता है आपके जाने के बाद वहाँ अच्छे लोगों की महफ़िल हुई थी। आप देख सकते हैं कि हॉवर्थ आकर आपने क्या खोया है। आपके जाने के बाद से यहाँ मिस मार्टिन्यू के एक लंबे पत्र के अलावा कोई खास घटना नहीं हुई है। (उन्होंने वेस्टमिंस्टर में "महिला" पर लेख नहीं लिखा था; वैसे, यह एक पुरुष द्वारा लिखा गया है, और उस समय के अग्रणी दार्शनिकों, राजनीतिक अर्थशास्त्रियों और तत्वमीमांसाविदों में से एक थे।) श्री निकोल्स का आयरलैंड के लिए प्रस्थान और उनके जाने की पूर्व संध्या पर खुद आकर विदाई की चाय पीने का निमंत्रण; अच्छा, सौम्य और विवादरहित। अपने चचेरे भाई के समाधि लेख के बारे में पूछने आए उस सख्त मिजाज व्यक्ति का एक पत्र। मैं इसे संलग्न कर रहा हूँ - अपने तरीके से इससे बेहतर कोई और चीज़ मिलना मुश्किल है। हालाँकि, आपको इसे वापस करने की कोई ज़रूरत नहीं है। हन्सवर्थ में सब कैसे हैं? यह कहना व्यर्थ है कि मैं अकेला हूँ या नहीं; मैं बहुत अच्छे से गाड़ी चला रहा हूँ, और पापा भी ठीक-ठाक हैं। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

मैं अगला पत्र यहाँ छाप रहा हूँ क्योंकि, यद्यपि इसमें श्री निकोल्स का कोई उल्लेख नहीं है, फिर भी इसका संबंध इसके बाद वाले पत्र से है। डॉ. व्हीलराइट भी श्री ब्रोंटे की तरह दृष्टिहीनता से पीड़ित थे।

सुश्री लैटिटिया व्हीलराइट को

हॉवर्थ, 12 अप्रैल, 1852।

प्रिय लेटिटिया, आपके पिछले पत्र ने मुझे बहुत चिंतित कर दिया। मुझे आशा थी कि आप अब तक पूरी तरह स्वस्थ हो गई होंगी, और यह जानकर मुझे बहुत दुख और आश्चर्य हुआ कि आप अभी भी इतनी दुर्बलता से पीड़ित हैं। मुझे लगता है कि आपका शरीर स्वाभाविक रूप से स्वस्थ है। क्या लंदन की हवा आपको रास नहीं आ रही है? जहाँ तक मेरी बात है, मैंने सर्दियों और वसंत के शुरुआती दिनों को बड़ी मुश्किलों से बिताया। मेरी सहेली जनवरी के शुरुआती दिनों में कुछ दिनों के लिए मेरे साथ रुकी थी - वह इससे ज़्यादा दिन नहीं रुक सकती थी। उसके आने के दौरान मेरी हालत बेहतर थी, लेकिन उसके जाने के तुरंत बाद मेरी तबीयत फिर से बिगड़ गई, जिससे मेरी ताकत बहुत कम हो गई। यह बात तो तय है कि अकेलेपन ने मेरी अन्य समस्याओं को और भी बढ़ा दिया। कुछ दिन और रातें ऐसी थीं जब मुझे सहारे और साथ की इतनी तीव्र आवश्यकता महसूस हुई जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती। मैं रात-रात भर जागती रही; कमजोर और खुद को व्यस्त रखने में असमर्थ, मैं दिन-रात अपनी कुर्सी पर बैठी रही, सबसे दुखद यादें ही मेरी एकमात्र साथी थीं। वह एक ऐसा समय था जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा, लेकिन यह ईश्वर की इच्छा थी और शायद यही मेरे भले के लिए हुआ।

अब मैं बेहतर महसूस कर रही हूँ और अपनी सेहत में सुधार के लिए बहुत आभारी हूँ; लेकिन मानो कोई न कोई बीमारी तो होनी ही थी, पापा, जो पूरी सर्दी भर स्वस्थ रहे, अब वसंत ऋतु में ब्रोंकाइटिस से पीड़ित हो गए हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह बीमारी अब तक की तुलना में बेहतर होकर ही ठीक हो जाएगी।

मोतियाबिंद के बारे में आपके सवाल का जवाब देना न भूलें। अपने पापा को बता देना कि ऑपरेशन के समय मेरे पिता सत्तर वर्ष के थे; वे इस प्रयोग को आजमाने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे - उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि उनकी उम्र और शारीरिक शक्ति की कमी के बावजूद यह सफल होगा। मुझे इस मामले में दृढ़ निश्चय करना पड़ा और पूरी जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेनी पड़ी। मोतियाबिंद निकलवाने के बाद से अब लगभग छह साल बीत चुके हैं (इसे केवल दबाया नहीं गया था)। इस दौरान उन्होंने कभी भी इस कदम पर पछतावा नहीं किया, और शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो जब वे दृष्टि के उस अमूल्य वरदान की बहाली पर कृतज्ञता और प्रसन्नता व्यक्त न करते हों, जिसे खोने का उन्हें कभी दुख झेलना पड़ा था।

मुझे आशा है कि आपके भाई चार्ल्स के बारे में जो भी खबर आपको मिलेगी, वह उनके माता-पिता और बहनों के साथ-साथ उनके लिए भी संतोषजनक होगी। आपकी बेचारी माँ ने कई कठिनाइयाँ झेली हैं, और उनका शांत और धैर्यवान स्वभाव हम सभी के लिए अनुकरणीय है। उन्हें, अपने पापा को और अपने सभी परिचितों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ देना, और— विश्वास कीजिए, आपको मेरी शुभकामनाएँ, आपका सच्चा।

'सी. ब्रोंटे।'

रेव. पी. ब्रोंटे, हॉवर्थ, यॉर्कशायर को

क्लिफ हाउस, फाइली, 2 जून, 1852।

प्रिय पापा, आपके पत्र के लिए धन्यवाद। इसे पाकर मुझे इतनी खुशी हुई कि मैंने सोचा कि मुझे इसका तुरंत जवाब देना चाहिए। मुझे कल ही आपके पत्र की उम्मीद थी, और शायद निराश होने पर मैं थोड़ी बेवजह चिंतित हो गई थी, लेकिन मौसम इतना ठंडा था कि मुझे डर था कि या तो आप बीमार हैं या मार्था की तबीयत ज्यादा खराब है। मुझे उम्मीद है कि मार्था अपना ख्याल रखेगी। मुझे उसके बारे में थोड़ी चिंता हो रही है।

कुल मिलाकर मैं यहाँ बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूँ, लेकिन मैंने अभी तक स्नान नहीं किया है क्योंकि मुझे बताया गया है कि मौसम अभी बहुत ठंडा है और अभी शुरुआत भी नहीं हुई है। समुद्र बहुत ही शानदार है। कल ज्वार कुछ असामान्य रूप से ऊँचा था, और मैं कल दोपहर लगभग एक घंटे तक चट्टानों पर खड़ा होकर बड़ी-बड़ी भूरी, मैली लहरों को आते हुए देखता रहा, जिन्होंने पूरे किनारे को झाग से सफेद कर दिया और हवा में गरज से भी गहरी और खोखली आवाज़ भर दी। फ़ाइली में अभी भी बहुत कम पर्यटक आते हैं, इसलिए अक्सर मैं और कुछ समुद्री पक्षी और मछुआरे ही समुद्र, किनारे और चट्टानों के पूरे विस्तार पर अकेले होते हैं। जब ज्वार उतरता है तो रेत चौड़ी, लंबी और चिकनी होती है, और उस पर चलना बहुत सुखद होता है। जब ज्वार चढ़ता है, तो रेत का एक भी अंश नहीं बचता। मैंने कल एक बड़े कुत्ते को समुद्र में दौड़ते हुए देखा, और वह सील की तरह तैर रहा था और लहरों का सामना कर रहा था। मुझे आश्चर्य है कि फ़्लॉसी इस पर क्या प्रतिक्रिया देगी।

रविवार दोपहर को मैं एक चर्च गया, जिसे मैं श्री निकोल्स को दिखाना चाहूँगा। वह हमारे गलियारे की लंबाई और चौड़ाई से तीन गुना से भी कम था, ईंटों से बना फर्श,

फफूंदी से हरी दीवारें, सफेद रंग से रंगी बेंचें, लेकिन समय और जीर्णता के कारण रंग लगभग पूरी तरह से उतर चुका था। एक छोर पर गायकों के लिए एक छोटी सी गैलरी थी, और जब गायक गाने के लिए खड़े हुए, तो उन्होंने सभी ने सभा की ओर पीठ कर ली, और सभा ने भी उपदेशक और पादरी की ओर पीठ कर ली। इस तमाशे का असर इतना हास्यास्पद था कि मैं हँसे बिना नहीं रह सका; अगर श्री निकोल्स वहाँ होते तो वे ज़रूर हँसते। गैलरी की ओर देखना और श्रोताओं के सामने केवल गायकों की चौड़ी पीठ देखना बेहद अटपटा था। फाइली में एक नेक इरादे वाला लेकिन पूरी तरह से निष्क्रिय पादरी है, और मेथोडिस्ट समुदाय फल-फूल रहा है।

मुझे मिस्टर बटरफील्ड की हार से खुशी हो रही है; फिर भी एक तरह से यह बुरी स्थिति है, जिससे मेहनतकश लोग असंतुष्ट और अवज्ञाकारी हो सकते हैं। प्यारे पापा, मिस्टर निकोल्स, टैबी और मार्था को मेरा प्रणाम कहना। मार्था को ठंडी हवाओं से सावधान रहने और सफाई में ज़रूरत पड़ने पर मदद लेने के लिए कहना। आशा है आप सब ठीक रहेंगे। — आपकी स्नेही बेटी।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

15 दिसंबर, 1852।

प्रिय एलेन, — मैं वह पत्र लौटा रहा हूँ, जो अत्यंत विशिष्ट है और मुझे आशंका है कि यह आपकी यात्रा के सुखद अंत का संकेत नहीं है। उसमें और उसके नौकरों में कुछ गड़बड़ अवश्य है। मैं एक और पत्र संलग्न कर रहा हूँ, जो इससे ठीक पहले घटी घटना और कई ऐसे संकेतों के साथ, जिनका अर्थ मैंने स्वयं भी मुश्किल से समझा है, और किसी और को बताने की तो बात ही दूर, मेरे मन में गहरी चिंता का भाव पैदा कर रहा है। आप देखेंगे कि यह पत्र श्री निकोल्स की ओर से है।

मुझे नहीं पता कि जब आप यहाँ रुके थे तो आपने उन्हें कभी विशेष रूप से देखा था या नहीं। आपकी समझ आमतौर पर काफी तेज होती है - कभी-कभी तो मुझे लगता है कि बहुत तेज; फिर भी चूंकि आपने कुछ नहीं कहा, इसलिए मैंने अपनी धुंधली आशंकाओं को दबा लिया, जिन्हें दृष्टि का पुख्ता मार्गदर्शन नहीं मिल सकता था। पापा ने क्या देखा या अनुमान लगाया, मैं नहीं पूछूंगी, हालांकि मैं अनुमान लगा सकती हूं। उन्होंने श्री निकोल्स की सारी उदासी, उनके देश छोड़ने की धमकियों, उनके बिगड़ते स्वास्थ्य के सभी लक्षणों को बारीकी से देखा है - थोड़ी सहानुभूति और

बहुत अप्रत्यक्ष व्यंग्य के साथ। सोमवार शाम को श्री निकोल्स चाय पर यहाँ आए थे। मैंने स्पष्ट रूप से देखे बिना ही, जैसा कि मैं कुछ समय से बिना देखे ही महसूस कर रही हूं, उनकी लगातार निगाहों और अजीब, बेचैन संयम का अर्थ अस्पष्ट रूप से महसूस किया। चाय के बाद मैं हमेशा की तरह भोजन कक्ष में चली गई। हमेशा की तरह, श्री निकोल्स पापा के साथ आठ से नौ बजे तक बैठे रहे; फिर मैंने उन्हें बैठक का दरवाजा खोलते हुए सुना जैसे कि वे जा रहे हों। मुझे सामने के दरवाजे के टकराने की उम्मीद थी। वे गलियारे में रुक गए; उन्होंने दस्तक दी; बिजली की तरह मुझे आख़िरकार समझ आ गया कि क्या होने वाला है। वह अंदर आया; वह मेरे सामने खड़ा हो गया। उसके शब्द क्या थे, इसका आप अंदाज़ा लगा सकते हैं; उसके हाव-भाव को आप शायद ही समझ पाएँ, और मैं उसे भूल भी नहीं सकती। सिर से पैर तक काँपते हुए, बेहद पीला पड़ा हुआ, धीमी, जोशीली, फिर भी मुश्किल से बोलते हुए, उसने मुझे पहली बार यह एहसास दिलाया कि जब किसी पुरुष को बदले की उम्मीद न हो, तब स्नेह का इज़हार करने में उसे कितनी कीमत चुकानी पड़ती है।

'आम तौर पर एकदम स्थिर रहने वाले व्यक्ति को इस तरह कांपते, विचलित और व्याकुल देखकर मुझे एक अजीब सा झटका लगा। उसने महीनों से सहे अपने कष्टों के बारे में बताया, उन कष्टों के बारे में बताया जिन्हें वह अब और सहन नहीं कर सकता था, और कुछ आशा की भीख मांगी। मैं उससे केवल इतना ही कह सका कि वह मुझे अकेला छोड़ दे और कल जवाब देने का वादा करे। मैंने उससे पूछा कि क्या उसने पापा से बात की है। उसने कहा कि उसकी हिम्मत नहीं हुई। मुझे लगता है कि मैंने उसे आधे मन से और आधे मन से कमरे से बाहर निकाल दिया। उसके जाने के बाद मैं तुरंत पापा के पास गया और उन्हें सब कुछ बताया। उस समय के हिसाब से बहुत ज्यादा बेचैनी और गुस्सा उमड़ पड़ा; अगर मैं मिस्टर निकोल्स से प्यार करता होता और उनके लिए इस्तेमाल किए गए ऐसे अपशब्द सुने होते, तो मेरा सब्र टूट जाता; लेकिन उस समय तो अन्याय की भावना से मेरा खून खौल रहा था। लेकिन पापा ने खुद को ऐसी हालत में पहुंचा दिया जिसे हल्के में नहीं लिया जा सकता था: उनकी कनपटी की नसें कोड़े की रस्सी की तरह तन गईं और उनकी आंखें अचानक लाल हो गईं। मैंने तुरंत वादा किया कि श्री निकोल्स को कल स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया जाएगा।

मैंने कल पत्र लिखा था और मुझे यह संदेश मिला। इस कथन में कुछ और जोड़ने

की आवश्यकता नहीं है। पापा की मुझे पत्नी के रूप में देखने मात्र से ही घोर घृणा और श्री निकोल्स की पीड़ा, दोनों ही मुझे पीड़ा पहुँचाती हैं। आप जानती हैं कि श्री निकोल्स से मेरा कभी कोई लगाव नहीं था, लेकिन सोमवार शाम को उनकी हालत देखकर, कई महीनों से उनके कष्टों के अचानक खुलासे से जो गहरी दया उत्पन्न हुई, वह बहुत कष्टदायक और कष्टदायक है। मुझे लंबे समय से यह संदेह था कि वे मेरी परवाह करते थे और चाहते थे कि मैं भी उनकी परवाह करूँ, लेकिन मैं उनके भावों की गहराई और तीव्रता को नहीं जानती थी। प्रिय नेल, अलविदा। - आपकी विश्वासपात्र

'सी. ब्रोंटे.

'मेरे पास सर जे. के. शटलवर्थ और मिस मार्टिन्यू के पत्र हैं, लेकिन मैं अभी उनके बारे में बात नहीं कर सकता।'

इस पत्र से त्रासदी की शुरुआत होती है। श्री ब्रोंटे, अपनी बेटी की प्रसिद्धि को ध्यान में रखते हुए, सोचते थे कि उन्हें सौ पाउंड वार्षिक वेतन पाने वाले पादरी से शादी करने से बेहतर जीवनसाथी मिलेगा। अपने जीवन में पहली बार, और ऐसा माना जा सकता है कि केवल एक बार, उनकी भावनाएँ पूरी तरह से भड़क उठीं। श्री निकोल्स के लिए यह सम्मान की बात है, और उनकी उदारता का प्रमाण भी है, कि उन्होंने हमेशा यह माना है कि श्री ब्रोंटे का रवैया पूरी तरह से उचित था। श्री ब्रोंटे के प्रति उनका वर्तमान भाव असीम सम्मान और आदर का है, और अपने ससुर के बारे में कभी-कभार की गई अप्रिय टिप्पणियों ने उन्हें शायद तब से भी अधिक पीड़ा पहुँचाई है जब वे स्वयं इसके शिकार हुए थे।

'श्री निकोल्स के प्रति मेरा लगाव आप जानती ही हैं कि कभी नहीं था।' शार्लोट ब्रोंटे के अपने भावी पति के प्रति थोड़े से स्नेह के बारे में किए गए इस और अन्य आकस्मिक उल्लेखों पर काफी चर्चा हुई है। नौकरानी मार्था ब्राउन अपने अंतिम दिनों में बताया करती थीं कि शार्लोट रसोई में आकर उनसे पूछती थीं कि क्या किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करना उचित है जिससे पूरी तरह प्यार न हो – और मार्था ब्राउन श्री निकोल्स का बहुत सम्मान करती थीं। लेकिन इन सब बातों को ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना भी संभव है। मनोविज्ञान में यह आम बात है कि एक स्त्री का प्रेम धीरे-धीरे विकसित होता है। यह बिल्कुल निश्चित है कि अलगाव और जुदाई के इस दौर में शार्लोट ब्रोंटे ने बहुत कष्ट सहा; श्री ब्रोंटे से अस्थायी अलगाव के बाद श्री निकोल्स की हॉवर्थ वापसी उन्हीं के प्रयासों से संभव हुई; और अंत में, उनकी अंतिम

बीमारी से पहले के वैवाहिक जीवन के महीने उनके जीवन के सबसे सुखद महीने थे।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 18 दिसंबर, 1852।

प्रिय नेल, तुम शायद पूछोगी, कैसा चल रहा है? क्योंकि मुझे यकीन है कि मुझे नहीं पता। यह सब मुझे एक सपने जैसा लगता, अगर मेरी बुद्धि मुझे यह न बताती कि यह बहुत समय से चल रहा है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि भावनाओं का यह उथल-पुथल कहाँ से और कैसे उत्पन्न होता है।

'तुम पूछती हो कि पापा मिस्टर निकोल्स के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। काश तुम यहाँ होतीं और पापा को इस हालत में देख पातीं: तुम्हें उनके बारे में कुछ पता चलता। वो उनके साथ इतनी कठोरता से पेश आते हैं कि उसे नरम करना नामुमकिन है, और इतना तिरस्कार करते हैं कि उसे शांत करना नामुमकिन है। अभी तक दोनों की कोई मुलाकात नहीं हुई है; सब कुछ चिट्ठियों के ज़रिए ही हुआ है। मुझे कहना पड़ेगा कि पापा ने बुधवार को मिस्टर निकोल्स को एक बहुत ही कठोर चिट्ठी लिखी। उनकी मानसिक और स्वास्थ्य स्थिति को देखते हुए (क्योंकि बेचारे ने अपना खाना पूरी तरह से ठुकराकर अपनी मकान मालकिन, मार्था की माँ को डरा दिया है) मुझे लगा कि इस आघात को रोकना ज़रूरी है, और मैंने इस निर्मम पत्र के साथ एक पंक्ति लिखना उचित समझा कि हालाँकि मिस्टर निकोल्स को मुझसे कभी भी उनके द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं का जवाब देने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, फिर भी, मैं उन भावनाओं में शामिल होने से इनकार करती हूँ जिनसे उन्हें दुख पहुँचता है; और मैंने उन्हें हिम्मत और हौसला बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया। दोनों चिट्ठियाँ मिलते ही वो घर से निकल पड़े।' कल संलग्न संक्षिप्त पत्र प्राप्त हुआ।

आपको यह समझना होगा कि पापा के गुस्से का एक बड़ा हिस्सा इस विचार से उपजा है, जो पूरी तरह निराधार नहीं है, कि मिस्टर निकोल्स ने इतने लंबे समय तक अपने इरादे को छुपाकर बेईमानी की है। मुझे यह भी डर है कि पापा अपनी पैसों की तंगी के बारे में कुछ ज्यादा ही सोचते हैं; उनका कहना है कि यह रिश्ता मेरे लिए अपमानजनक होगा, कि मैं खुद को बर्बाद कर दूंगी, और अगर मैं शादी करती हूं तो वे मुझसे बहुत अलग तरह की उम्मीद रखते हैं; संक्षेप में, इस विषय पर उनका नजरिया कुल मिलाकर ऐसा नहीं है जिससे मैं सहानुभूति रख सकूं। मेरी अपनी आपत्तियां भावनाओं, रुचियों और सिद्धांतों में असंगति और बेमेलपन की भावना से उत्पन्न होती

हैं।

“कैसी हो प्यारी नेल, और ब्रुकरॉयड में सब कैसे हैं? सबको मेरा नमस्कार कहना। — तुम्हारी, मेरी हार्दिक कामना है कि पापा को शांति मिले और मिस्टर निकोल्स को उनका बीफ और पुडिंग मिल जाए।”

‘सी. ब्रोंटे.

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पापा की आंख में शुरुआती सूजन गायब हो रही है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

2 जनवरी, 1853।

प्रिय नेल, नव वर्ष की रात मैंने तुम्हारे बारे में सोचा और आशा करती हूँ कि चाय बनाने की तुम्हारी कठिन परीक्षा सफलतापूर्वक संपन्न हो गई होगी। मुझे उम्मीद है कि मंगलवार और बुधवार भी सुखद बीतेंगे। मैं भी इस सप्ताह लंदन जाने की अपनी छोटी-मोटी तैयारियों में व्यस्त हूँ, जिसके लिए मुझे कुछ सुई-धागे का काम करना पड़ रहा है। मुझे लगता है कि प्रेस की देखरेख के लिए जाना मेरे लिए अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि श्री स्मिथ मेरे आने तक छपाई को आगे नहीं बढ़ने देने पर अड़े हुए हैं। वास्तव में, ब्रुकरॉयड में रहने के बाद से मुझे केवल तीन प्रूफ शीट ही मिली हैं। पापा भी चाहते हैं कि मैं जाऊँ, शायद रास्ते से हट जाने के लिए; लेकिन मुझे एक और व्यक्ति के लिए दुख हो रहा है जिस पर मेरे अलावा किसी को दया नहीं आती। मार्था उससे बहुत नाराज़ है; जॉन ब्राउन कहता है, "वह उसे गोली मारना चाहता है।" वे उसकी भावनाओं की प्रकृति को नहीं समझते, लेकिन अब मैं समझ गई हूँ कि वे क्या हैं। वह उन लोगों में से एक है जो बहुत कम लोगों से जुड़ते हैं, जिनकी भावनाएँ गहरी और घनिष्ठ होती हैं, जैसे कोई भूमिगत धारा, जो तेज़ बहती है, लेकिन एक संकरे रास्ते में। वह बेचैन और बीमार बना हुआ है; वह कभी-कभार अपना कर्तव्य बखूबी निभाता है, लेकिन चर्च के पास भी नहीं जाता, हर रविवार को उसकी जगह कोई और आ जाता है। कुछ दिन पहले उसने पापा को पत्र लिखकर अपना इस्तीफा वापस लेने की अनुमति मांगी थी। पापा ने जवाब दिया कि वह ऐसा तभी कर सकता है जब वह लिखित में वादा करे कि वह इस अप्रिय विषय को न तो उनसे और न ही मुझसे कभी उठाएगा। उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया है, इसलिए मामला अभी भी अनसुलझा है। मुझे पूरा यकीन है कि उसकी बर्खास्तगी ऑस्ट्रेलिया जाने के साथ ही

होगी। प्यारी नेल, हालांकि मैं उससे प्यार नहीं करती, लेकिन मुझे यह सोचकर अच्छा नहीं लगता कि वह अकेलेपन में कष्ट सहे, और मैं चाहती हूं कि वह कहीं भी हो ताकि वह खुश रहे। वह और पापा अभी तक मिले या बात नहीं की है। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि तुम्हारी माँ ठीक हैं, और यह भी कि चुनौती भरा काम आगे बढ़ रहा है। मुझे उम्मीद है कि मेरे घर आने से पहले तुम्हें नॉरफ़ॉक नहीं बुलाया जाएगा: मैं चाहूंगी कि तुम पहले हॉवर्थ आ जाओ। जल्द ही फिर लिखना। — तुम्हारी विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

4 मार्च, 1853।

प्रिय एलेन, — हमारे यहाँ पादरी लोग रात्रि भोज और चाय पर आए थे। श्री एन. का व्यवहार कुछ खास अच्छा नहीं था। मुझे लगा कि उन्होंने अपनी उदासी से लड़ने की कोई कोशिश नहीं की, बल्कि उसे इस तरह ज़ाहिर किया जैसे सबका ध्यान उन पर जाए; बिशप तो इससे स्पष्ट रूप से हैरान थे। श्री निकोल्स ने भी पापा से बात करते समय एक-दो बार अपना आपा खोया। मार्था मुझे उनके कुछ "भयानक" हाव-भाव के बारे में भी बताने लगी थी, लेकिन मैं उनके बारे में सुनना नहीं चाहती थी। सच तो यह है कि जब वह हमेशा के लिए चले जाएँगे तो मुझे बहुत राहत मिलेगी। मुझे उन पर दया आती है, लेकिन मुझे उनका यह गहरा उदास चेहरा पसंद नहीं है। शाम की प्रार्थना के बाद वह गली में मेरे पीछे-पीछे आए, उनका व्यवहार बिल्कुल भी अच्छा नहीं था। बिशप और अन्य पादरियों के कमरे में चले जाने के बाद वह गलियारे में भी रुक गए, और जब मैं वहाँ से हटकर ऊपर चली गई, तो उन्होंने मुझे ऐसी नज़र से देखा जिससे मार्था का दिल दहल गया। ऐसा लगता है कि इस बीच वह रसोई के दरवाजे से उन पर नज़र रख रही थी। अगर श्री निकोल्स दिल से अच्छे इंसान हैं, तो यह दुख की बात है कि प्रकृति ने उन्हें अच्छाई को और अधिक आकर्षक रूप में प्रकट करने की क्षमता नहीं दी है। इन सबके अलावा, उन्होंने इंस्पेक्टर के साथ एक बेहद ज़िद्दी और अनावश्यक बहस छेड़ दी, जिसे सुनकर मेरे सारे पुराने नकारात्मक विचार इतने प्रबल हो गए कि मुझे डर है कि मेरा चेहरा उन्हें दर्शाए बिना नहीं रह सका।

प्रिय नेल, मुझे लगता है कि हाल के ठंडे मौसम में आपका घर पर होना और नॉरफ़ॉक में न होना सौभाग्य की बात है। ब्रुकरॉयड में सभी को मेरा प्यार। —

आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

9 मार्च, 1853।

प्रिय एलेन, मुझे पूरा यकीन है कि मिस वूलर को आपसे मिलकर उतना ही आनंद आएगा जितना आपको उनकी संगति से। प्रिय नेल, आपने जिस मुद्दे का जिक्र किया है, उस पर आपने जो विवेकपूर्ण और मैत्रीपूर्ण चुप्पी साधे रखी है, उसके लिए मैं आपका तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूं। मुझे डर था कि आप दोनों के बीच इस पर चर्चा होगी, और इस विचार से ही मुझे असहनीय बेचैनी हुई थी; अब तो यह चर्चा का विषय भी नहीं लगता। मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है, और आपको यह समझना ही होगा कि अगर मुझे कोई बेचैनी है तो वह किसी पक्के और अटल विचार की नहीं, बल्कि उस चिंता की है जो किसी महत्वपूर्ण मामले को लेकर पूर्ण अनिश्चितता की स्थिति से उत्पन्न होती है। मुझे नहीं पता, मुझे खुद भी यकीन नहीं है, कि कोई और समाधान स्थायी अलगाव और अटूट चुप्पी से बेहतर होगा। फिर भी, उस स्थिति में बहुत पीड़ा सहनी पड़ी है और सहनी पड़ेगी। खैर, हर किसी का अपना बोझ होता है।

मैंने अभी तक कागजात नहीं पढ़े हैं; ईश्वर की कृपा से मैं उन्हें कल भेज दूंगा। —आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे.

'समझ लीजिए कि मैंने ऊपर जो कुछ भी कहा है, वह दया या सहानुभूति के लिए नहीं था। मुझे खुद पर भी दया नहीं आती। मेरी बस यही इच्छा है कि इस दुनिया के सभी मामलों में निष्पक्ष और पारदर्शी व्यवहार हो, और कोई छल-कपट न हो।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 6 अप्रैल, 1853।

प्रिय एलेन, श्री मॉर्गन के पत्र के अनुसार, मेरी मैनचेस्टर यात्रा फिलहाल स्थगित हो गई है। उन्होंने लिखा है कि चूंकि पापा उनसे मिलने बकिंघम नहीं जा सकते, इसलिए वे उनसे मिलने यॉर्कशायर आएंगे; कब, यह अभी पता नहीं है, और मुझे ईश्वर से आशा है कि वे ज्यादा दिन नहीं रुकेंगे, क्योंकि पापा को यात्रा करना बिल्कुल भी पसंद नहीं है। हालांकि, मुझे तब तक इंतजार करना होगा जब तक उनकी परेशानी दूर नहीं हो जाती।

आप श्री निकोल्स के बारे में पूछ रहे हैं। मैंने सुना है कि उन्हें पादरी का पद मिल गया है, लेकिन अभी पता नहीं कहाँ। मुझे उम्मीद है कि यह खबर सच है। वह और पापा कभी बात नहीं करते। ऐसा लगता है कि वह एक उदास जीवन जी रहे हैं। हाल की घटनाओं ने उन पर ऐसा प्रभाव डाला है कि उनका व्यवहार जम गया है और उनका चेहरा न केवल उनसे सीधे जुड़े लोगों के लिए, बल्कि हर किसी के लिए उदास हो गया है। वह अपने कमरे में उदास बैठे रहते हैं। अगर श्री ग्रांट या कोई अन्य पादरी उनसे मिलने आते हैं, और जैसा कि वे सोचते हैं, उन्हें खुश करने के लिए, तो वह मुश्किल से ही कुछ बोलते हैं। मैंने पाया है कि वह उन्हें कुछ नहीं बताते, किसी से कोई बात नहीं करते, अपने मन की बात जानने के सभी प्रयासों को ठुकरा देते हैं। मैं मानता हूँ कि मैं इस बात के लिए उनका सम्मान करता हूँ। वह अब भी फ्लॉसी को अपने कमरे में जाने देते हैं और उसे सैर पर ले जाते हैं। वह अब भी कभी-कभी श्री सोडेन से मिलने जाते हैं, और बेचारे, बस इतना ही। वह बीमार और दुखी दिखते हैं। मुझे विश्वास है और ईश्वर से प्रार्थना है कि हॉवर्थ से निकलते ही वह ठीक हो जाएँगे। मुझे उन पर बहुत दया आती है। हम कभी मिलते नहीं, न बात करते हैं, और न ही मैं उसकी तरफ देखने की हिम्मत करती हूँ; मैं उसे केवल मौन दया ही दे सकती हूँ, और चूंकि वह इसके बारे में कुछ नहीं जानता, इसलिए इससे उसे कोई सांत्वना नहीं मिलती। वह अब इतना उदास और अंतर्मुखी हो गया है कि कोई उसे पसंद नहीं करता। उसके साथी पादरी उसके इस रूप में किसी भी तरह की परेशानी से दूर रहते हैं; निचले दर्जे के लोग उसे नापसंद करते हैं। पापा को उससे घोर घृणा है, और मुझे डर है कि उसे पापा से भी। मार्था उससे नफरत करती है। मुझे लगता है कि वह लगभग मरणासन्न है और वे उससे या उसके बारे में एक शब्द भी दोस्ताना नहीं बोलेंगे। वह इन सब का कितना हकदार है, यह मैं नहीं कह सकती; निश्चित रूप से वह कभी भी मिलनसार या सौम्य नहीं था, और अब तो पहले से भी कम है, और अफसोस! मैं उसे इतना अच्छी तरह से नहीं जानती कि यह सुनिश्चित कर सकूँ कि उसकी उदासी के पीछे सच्चाई और सच्चा स्नेह है, या केवल द्वेष और गहरी निराशा है। इस स्थिति में मुझे पूरी तरह से निष्क्रिय रहना होगा, और मैं हूँ भी। शायद मैं जीवन का सबसे पवित्र और अनमोल रत्न खो रहा हूँ—सच्चा लगाव—या शायद मैं अपने चिड़चिड़े स्वभाव के बंधन से मुक्त हो रहा हूँ। इस दुविधा में मेरा विवेक मुझे पापा की इच्छा के विरुद्ध एक कदम भी उठाने नहीं दे रहा, क्योंकि उनकी इच्छा सबसे

कड़वी और अतार्किक पूर्वाग्रहों से भरी हुई है। इसलिए मैं इस मामले को वहीं छोड़ देता हूँ जहाँ हमें सभी महत्वपूर्ण मामलों को छोड़ना चाहिए।

ब्रुकरॉयड में सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देना, और विश्वास मानिए, आपका विश्वासपात्र

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

16 मई, 1853।

प्रिय एलेन, — जिन पूर्वी हवाओं के बारे में तुम पूछ रही हो, उन्होंने आज तक मुझे चमत्कारिक रूप से बचाए रखा है, लेकिन आज मैं शारीरिक रूप से कुछ अस्वस्थ और मानसिक रूप से कुछ उदास महसूस कर रही हूँ। मुझे यकीन नहीं है कि इस बीमारी के लिए पूरी तरह से पूर्वी हवाएँ ही ज़िम्मेदार हैं। कल चर्च में एक अजीब सा दिन था। ऐसा लग रहा था मानो मुझे बेचारे श्री निकोल्स के प्रति स्नेह की प्रकृति और सच्चाई के बारे में मेरे संदेह के लिए दंडित किया जा रहा हो। श्वेत रविवार को संस्कार रोकने का साहस करने पर मुझे एक ऐसा सबक मिला जिसे दोहराया नहीं जा सकता। वह संघर्ष करते रहे, लड़खड़ाते रहे, फिर खुद पर से नियंत्रण खो बैठे — मेरी आँखों के सामने और सभी उपस्थित लोगों के सामने पीले, कांपते हुए, चुप खड़े रहे। भगवान का शुक्र है, पापा वहाँ नहीं थे! जोसेफ रेडमैन ने उनसे कुछ शब्द कहे। उन्होंने बहुत प्रयास किया, लेकिन केवल मुश्किल से फुसफुसाते और लड़खड़ाते हुए ही पूरी प्रार्थना सभा पूरी कर पाए। मुझे लगता है कि उन्होंने सोचा होगा कि यह आखिरी बार होगा; वह या तो इस सप्ताह या अगले सप्ताह चले जाएँगे। मैंने आसपास की महिलाओं को सिसकते हुए सुना, और मैं अपने आँसू नहीं रोक पाई। जो कुछ हुआ था, उसकी सूचना पापा को जोसेफ रेडमैन या जॉन ब्राउन में से किसी एक ने दी थी; इससे केवल गुस्सा ही भड़का और "कायरतापूर्ण बकवास" जैसे शब्द सुनने को मिले। दया या नरमी की उम्मीद करना लकड़ी से रस निकलने की उम्मीद करने जैसा ही असंभव है।

मैंने श्री निकोल्स की तरह भावनाओं से इतनी दृढ़ता से लड़ते हुए किसी को नहीं देखा, और जब वे क्षण भर के लिए भी हार मान लेते हैं, तो उन पर पड़ने वाले तनाव को देखकर लगभग जी मिचला जाता है। खैर, उन्हें जाना ही है, और मैं उनसे बात नहीं कर सकता, उन्हें देख नहीं सकता, उन्हें जरा भी सांत्वना नहीं दे सकता, और मुझे यह स्वीकार करना ही होगा। ईश्वर की इच्छा सर्वोपरि है, यही एकमात्र सांत्वना है। —

आपका विश्वासपात्र

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

19 मई, 1853।

प्रिय एलेन, मुझे यह जानकर एक विशेष संतोष हो रहा है कि यहाँ के लोग श्री निकोल्स के जाने पर उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए चंदा इकट्ठा कर रहे हैं। कई लोग उनके प्रति सहानुभूति और सम्मान दोनों व्यक्त कर रहे हैं। चर्चवार्डन ने हाल ही में उनसे सीधे-सीधे पूछा: वे क्यों जा रहे हैं? क्या यह श्री ब्रोंटे की गलती थी या उनकी अपनी? उन्होंने उत्तर दिया, "उनकी अपनी।" क्या उन्होंने श्री ब्रोंटे को दोषी ठहराया? "नहीं! उन्होंने ऐसा नहीं किया: अगर कोई गलत था तो वह वे स्वयं थे।" क्या वे जाने के लिए तैयार थे? "नहीं! इससे उन्हें बहुत पीड़ा हुई।" फिर भी वे हमेशा सही नहीं होते। मुझे निष्पक्ष रहना चाहिए। उनमें सम्मान और हठधर्मिता—भावना और उदासी—का एक विचित्र मिश्रण दिखाई देता है। पापा ने स्कूल में चाय पीते समय उनसे संयमित शिष्टाचार से, लेकिन फिर भी शिष्टाचार से बात की। उन्होंने शिष्टाचार से जवाब नहीं दिया; उन्होंने आगे की बात काट दी। सार्वजनिक रूप से इस तरह का व्यवहार पापा कभी नहीं भूलेंगे और न ही माफ करेंगे, यह उनके भीतर एक अनकही कड़वाहट भर देता है। मुझे डर है कि दोनों के आपसी भाव ईसाई धर्म के अनुरूप नहीं हैं। और न ही मुझे पता है कि उनमें से कौन तर्क के प्रति सबसे कम संवेदनशील है या कौन क्षमा करने की सबसे कम संभावना रखता है। यह एक दयनीय स्थिति है।

प्रिय नेल, मौसम अब सुहाना है। हम इन धूप भरे दिनों को यारमाउथ की आपकी यात्रा के लिए शुभ संकेत मानेंगे। ब्रुकरायड के सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएँ और आपको भी ढेर सारी शुभकामनाएँ। आपका सच्चा शुभचिंतक,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 27 मई, 1853।

प्रिय एलेन, — क्या आप विदाई के बारे में जानना चाहेंगी? यह पूरा मामला एक दुखद विषय है, लेकिन मुझे संक्षेप में ही बताना होगा। प्रशस्ति पत्र एक सार्वजनिक सभा में प्रस्तुत किया गया था। श्री टेलर और श्री ग्रांट वहाँ उपस्थित थे। पापा की तबीयत ठीक नहीं थी और मैंने उन्हें दूर रहने की सलाह दी, जो उन्होंने मान ली। जहाँ

तक पिछले रविवार की बात है, वह बहुत कष्टदायक था। श्री निकोल्स को कोई भी काम नहीं करना चाहिए था।

आज सुबह छह बजे वो हॉवर्थ से चले गए। कल शाम वो पापा को नेशनल स्कूल के दस्तावेज़ सौंपने और अलविदा कहने आए थे। डाइनिंग रूम में सफाई का काम चल रहा था—पेंट वगैरह धुल रहे थे, इसलिए मुझे वहाँ नहीं पाया। पापा की मौजूदगी में मैं उनसे बात करने के लिए बैठक में नहीं गई। वो ये सोचकर बाहर चले गए कि मुझे नहीं देखना पड़ेगा; और सच कहूँ तो, आखिरी पल तक मुझे भी यही लगा कि न देखना ही बेहतर है। लेकिन जब मैंने देखा कि वो गेट से बाहर जाने से पहले काफी देर तक रुके रहे, और उनके लंबे दुख को याद करके, मैंने हिम्मत जुटाई और कांपते-कांपते और दुखी मन से बाहर गई। मैंने उन्हें बगीचे के दरवाजे से टेक लगाकर, व्यथा से कराहते हुए पाया, वो ऐसे रो रहे थे जैसे औरतें कभी नहीं रोतीं। ज़ाहिर है, मैं सीधे उनके पास गई। बहुत कम बातें हुईं, और वो भी मुश्किल से समझ में आईं। कई बातें जो मैं उनसे पूछना चाहती थी, मेरी याददाश्त से पूरी तरह गायब हो गईं। बेचारे! लेकिन उन्हें ऐसी उम्मीद और हिम्मत की ज़रूरत थी जो मैं उन्हें नहीं दे सकती थी। फिर भी, मुझे विश्वास है कि अब उन्हें पता चल गया होगा कि मैं उनकी दृढ़ता और दुख के प्रति निर्मम और उदासीन नहीं हूँ। कुछ हफ्तों के लिए वे इंग्लैंड के दक्षिण में जा रहे हैं, उसके बाद वे यॉर्कशायर में कहीं पादरी का पदभार ग्रहण करेंगे, लेकिन मुझे नहीं पता कि कहाँ।

पापा की तबीयत आजकल बिल्कुल ठीक नहीं है। मैं उनसे मिस्टर निकोल्स का नाम लेने की हिम्मत भी नहीं करती। वो दूसरों से उनके बारे में चुपचाप और बिना किसी बुराई के बात करते हैं, लेकिन मुझसे इस मामले में उनका रवैया एकदम सख्त है। खैर, वो तो चले गए—बस अब सब खत्म। मुझे नहीं लगता कि भविष्य में उनके बारे में कुछ सुनने को मिलेगा, जब तक कि मिस्टर सोडेन या किसी और से कोई अधूरी जानकारी न मिल जाए। इन सब में मुझ पर तरस खाने की कोई ज़रूरत नहीं है, और ज़ाहिर है, कोई मुझ पर तरस नहीं खाता। हॉवर्थ में सब सोचते हैं कि मैंने उन्हें ठुकरा दिया है। अगर मिस्टर निकोल्स को तरस आता, तो उन्हें ज़रूर आता, और मुझे लगता है कि उन्हें आता भी है। वे चाहें तो मुझे बुरा-भला कह सकते हैं; वे ऐसा करेंगे या नहीं, ये मैं नहीं कह सकती।

जल्द ही लिखें और बताएं कि आपकी संभावनाएं कैसी चल रही हैं। मुझे विश्वास है

कि वे प्रतिदिन उज्ज्वल होंगी। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री लैटिटिया व्हीलराइट को

हॉवर्थ, 18 मार्च, 1854।

मेरी प्यारी लैटिटिया, — तुम्हारी लिखावट दोबारा देखकर मुझे बहुत खुशी हुई; मुझे लगता है कि तुमसे बात किए हुए एक साल हो गया है। हाल ही में तुम बार-बार मेरे विचारों में लौट आई थीं, और तुम्हारी चुप्पी के कारण को लेकर मुझे कुछ बुरे संकेत मिलने लगे थे। तुम्हारे पत्र ने इन सभी आशंकाओं को दूर कर दिया; यह तुम्हारे पापा, मम्मी, बहन और सबसे बढ़कर, तुम्हारे प्यारे और सम्मानित अंग्रेज होने की अच्छी खबर लेकर आया है।

मेरे प्यारे पिताजी ने भीषण सर्दी का सामना बहुत अच्छे से किया है, जिसके लिए मैं और भी आभारी हूँ, क्योंकि पिछली गर्मियों में जून में हुए एक दौरे के बाद उनका स्वास्थ्य कई हफ्तों तक बेहद नाजुक रहा था, जिससे कुछ घंटों के लिए उनकी दृष्टि पूरी तरह चली गई थी, हालांकि उनके दिमाग, बोलने या चलने-फिरने की क्षमता पर जरा भी असर नहीं पड़ा था। प्रिय लेटिटिया, मैं आपको बता नहीं सकती कि मैं कितनी आभारी थी जब उस भयानक और लगभग निराशाजनक अंधकार के दौर के बाद उन्हें फिर से दिन की रोशनी की एक किरण दिखाई दी। मुझे डर था कि उनकी ऑप्टिक नस लकवे की चपेट में आ गई है। काफी देर तक एक तरह का धुंधलापन छाया रहा, और वास्तव में उनकी दृष्टि अभी पूरी तरह से साफ नहीं है, लेकिन वे पढ़-लिख सकते हैं और चल-फिर सकते हैं, और वे हर रविवार को दो बार उपदेश देते हैं, केवल पादरी ही प्रार्थना पढ़ते हैं। आप अच्छी तरह समझ सकती हैं कि मैं कितनी लगन से प्रार्थना करती हूँ कि उनकी दृष्टि अंत तक बनी रहे; उन्हें अंधेपन के इस कष्ट से बहुत डर लगता है। उनका दिमाग पहले की तरह ही मजबूत और सक्रिय है, और राजनीति में उनकी उतनी ही रुचि है जितनी आपके पापा की। ज़ार, युद्ध, फ्रांस और इंग्लैंड के बीच गठबंधन—इन सभी चीज़ों में वह अपना पूरा दिलो-जान लगा देता है। ऐसा लगता है मानो ये सब उसे उसके अपेक्षाकृत युवा दिनों में वापस ले जाते हैं और यूरोप के अंतिम महान संघर्ष के उत्साह को फिर से जगा देते हैं। बेशक, मेरे पिता की सहानुभूति, और मेरी भी, न्याय और यूरोप के साथ है, जो अत्याचार और रूस के खिलाफ लड़ रहे हैं।

मेरी परिस्थितियों को देखते हुए, आप समझ सकती हैं कि पिछले एक साल में मुझे घर से बाहर जाने का न तो समय मिला और न ही इच्छा। मैंने वसंत ऋतु में श्रीमती गैस्केल के साथ एक सप्ताह बिताया, और हाल ही में कुछ अन्य मित्रों के साथ दो सप्ताह बिताए, और इसमें आपके साथ आखिरी मुलाकात के बाद से मेरी सभी यात्राएँ शामिल हैं। मेरा जीवन वास्तव में बहुत ही एकाकी और एकांतप्रिय है, जो मन और शरीर दोनों के लिए स्वास्थ्यकर नहीं है; फिर भी, मुझे समय-समय पर मिलने वाले समर्थन के लिए कृतज्ञता का भाव बार-बार महसूस होता है, जो मुझे अभी भी प्रोत्साहित करता है। मेरा स्वास्थ्य, हालांकि पूरी तरह से ठीक नहीं है, लेकिन मुझे कभी-कभी लगता है कि तीन साल पहले की तुलना में कुल मिलाकर बेहतर है; सिरदर्द और अपच मेरी सबसे बुरी बीमारियाँ हैं। क्या मैं इस मौसम में कुछ दिनों के लिए शहर आ पाऊँगी, यह अभी पता नहीं है; लेकिन अगर मैं आई तो फिलिमोर प्लेस में अवश्य आऊँगी। आपके पापा, मम्मी और बहनों को हार्दिक शुभकामनाएँ, - प्रिय लेटिटिया, आपकी स्नेही।

'सी. ब्रोंटे।'

श्री निकोल्स के उत्तराधिकारी श्री ब्रोंटे को रास नहीं आए। उन्होंने बार-बार शिकायत की, और एक दिन शार्लोट ने अपने पिता पर पलटवार करते हुए उनसे साफ-साफ कह दिया कि सारी गलती उन्हीं की है - उन्हें बस इतना करना था कि उन्हें श्री निकोल्स से शादी करने की अनुमति दे देनी थी, जिनसे उनका पत्र व्यवहार था और जिनसे वे वास्तव में प्यार करती थीं, और सब ठीक हो जाता। एक छोटे से समझौते के तहत, श्री निकोल्स के उत्तराधिकारी श्री डी रेन्ज़ी का तबादला ब्रैडफोर्ड के एक चर्च में कर दिया गया, और श्री निकोल्स ने किर्क-स्मीटन में अपना पादरी पद छोड़ दिया और एक बार फिर हॉवर्थ लौट आए, एक स्वीकृत प्रेमी के रूप में।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 28 मार्च, 1854।

मेरी प्यारी एलेन, कल के तुम्हारे पत्र के साथ भेजे गए संदेश ने मुझे पहले तो उलझन में डाल दिया, क्योंकि मैं अपनी लिखावट को तुरंत पहचान नहीं पाई; जब मैंने पहचाना, तो मुझे बहुत घबराहट और झुंझलाहट हुई, क्योंकि पत्र तो शुक्रवार को ही पहुँच जाना चाहिए था। इसका उद्देश्य उसे बहुत चिंता से मुक्त करना था। खैर, मुझे उम्मीद है कि उसे यह आज मिल जाएगा; और कुल मिलाकर, जब मैं इस बारे में

सोचती हूँ, तो मैं केवल इस बात के लिए आभारी हो सकती हूँ कि गलती इतनी गंभीर नहीं हुई और पत्र किसी लापरवाह और बेईमान व्यक्ति के हाथों में नहीं पड़ा। मैंने इसे कुछ दिनों की अस्वस्थता और बेचैनी के बाद लिखा था, जब मैं कमजोर और लिखने में असमर्थ महसूस कर रही थी। उसे लिखते समय, मैं साथ ही साथ तुम्हारे संदेश का उत्तर भी देने का इरादा कर रही थी, शायद इसी वजह से मेरे मिले-जुले और अटपटे संबोधन में विचारों का भ्रम दिखाई देता है।

‘काश आप ईस्टर के आसपास आ पाते, क्योंकि श्री निकोल्स, अगर कोई बाध्यता न हो तो, उसी समय आने का इरादा रखते हैं। मुझे लगता है कि वे श्री ग्रांट के घर पर ही ठहरेंगे, जैसा कि वे पहले दो-तीन बार कर चुके हैं, लेकिन वे अक्सर यहाँ आते रहेंगे, जिससे आपकी यात्रा और भी सुखद हो जाएगी। शायद वे कभी-कभी हमारे साथ टहलने भी चले जाएँ। कुल मिलाकर, यह एक छोटा सा बदलाव होगा, जैसा कि आप जानते हैं, मैं हमेशा नहीं दे सकता।’

'यदि सब ठीक रहा तो वह उन सभी लोगों से अलग परिस्थितियों में आएगा जो पहले उसकी यात्राओं में शामिल हुए थे; यदि ऐसा नहीं होता, तो मैं आपको उससे मिलने के लिए नहीं कहता, क्योंकि जब परिस्थितियाँ निराशाजनक और अशुभ हों, तो जितने कम लोग उस संकट से पीड़ित हों उतना ही बेहतर है।'

'वह जनवरी में यहां आए थे और तब उनका स्वागत तो हुआ था, लेकिन सुखद नहीं था। मुझे उम्मीद है कि अब स्थिति थोड़ी अलग होगी।'

पापा ने बिस्तर पर ही नाश्ता किया और अभी तक उठे नहीं हैं; उनकी ब्रोंकाइटिस अभी भी परेशान कर रही है। पिछला हफ्ता मेरे लिए अच्छा नहीं रहा, लेकिन अब मैं काफी बेहतर महसूस कर रहा हूँ, क्योंकि मेरा मन थोड़ा शांत है, हालांकि बहुत स्थिर है, और बहुत ही मामूली उम्मीदों पर ही खरा उतरता है।

'शायद मई में, मुझे ब्रूकरॉयड आने की उम्मीद हो सकती है, लेकिन जैसा कि आप मेरी कही बातों से समझ गए होंगे, मैं इससे पहले नहीं आ सकता।'

‘प्यारी नेल, इस बारे में सोच लो और अगर हो सके तो हॉवर्थ आ जाना। जैसे ही फैसला कर लो, मुझे लिख देना।’ — तुम्हारी स्नेही,

‘सी. ब्रोंटे।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

1 अप्रैल, 1854।

मेरी प्यारी एलेन, मेरे पत्र के आपके दूसरे अर्थ में आप बिलकुल सही थीं। हॉवर्थ में किसी भी आगंतुक के लिए नीरसता का मुझे भलीभांति ज्ञान है, इसलिए मैं थोड़ा सा भी बदलाव लाने का अवसर पाकर प्रसन्न हूँ। लेकिन आज सुबह मुझे सूचना मिली कि श्री निकोल्स सोमवार को आ रहे हैं, जिससे मेरी छोटी-मोटी योजनाएँ गड़बड़ा गईं। मैंने उन्हें टालने की कोशिश की, पर सफल नहीं हो पाई। अब चूंकि ईस्टर का समय आपके और मेरे दोनों के लिए अनुकूल नहीं लग रहा है, इसलिए हम इसे किसी बेहतर अवसर तक के लिए स्थगित कर रहे हैं। इस बीच, प्रिय एलेन, आपके आने के दयालु प्रस्ताव के लिए धन्यवाद। पापा अभी भी पूरी तरह से ठीक नहीं हैं: उनकी खांसी बहुत परेशान करने वाली है, और सीने में काफी सूजन है। आज वे कल से कुछ बेहतर लग रहे हैं, और मुझे पूरी उम्मीद है कि यह सुधार जारी रहेगा।

आपकी माताजी और ब्रुकरॉयड के सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएँ, - प्रिय एलेन, आपकी स्नेही।

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 11 अप्रैल, 1854।

'प्रिय एलेन, - कॉलर के लिए धन्यवाद; यह बहुत सुंदर है, और मैं इसे बनाने और देने वाली के लिए इसे पहनूंगी।'

श्री निकोल्स सोमवार को आए और पिछले पूरे सप्ताह यहीं रहे। जुलाई से हालात कुछ इस तरह रहे। उन्होंने सितंबर में भी आने का वादा किया, लेकिन फिर परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बिगड़ गईं कि मैं उनसे ज़्यादा मिल नहीं पाई। वे पत्र लिखते रहे। चिट्ठियों का बोझ मेरे मन पर बना रहा। पापा से इसे छुपाए रखने में मैं बहुत दुखी हो गई। आख़िरकार, असहनीय पीड़ा ने मुझे हिम्मत जुटाकर यह बात बताने पर मजबूर कर दिया। मैंने सब कुछ बता दिया। उस समय यह बहुत कठिन और मुश्किल काम था, लेकिन कुछ दिनों बाद नतीजा यह हुआ कि मुझे चिट्ठी-पत्री जारी रखने की अनुमति मिल गई। श्री निकोल्स जनवरी में आए; वे दस दिन आस-पास रहे। मैं उनसे काफ़ी मिली। मैंने पापा से बेहतर जान-पहचान बनाने का मौका माँगने का समझौता किया था। मुझे वह मौका मिला, और जो कुछ मैंने जाना उससे मेरे मन में उनके लिए सम्मान और स्नेह पैदा हुआ। फिर भी पापा बहुत ही शत्रुतापूर्ण और बेहद अन्यायपूर्ण थे।

मैंने श्री निकोल्स को उनके रास्ते में आने वाली बड़ी बाधा के बारे में बताया। उन्होंने दृढ़ता दिखाई। उनकी इस आखिरी मुलाकात का नतीजा यह हुआ कि पापा की सहमति मिल गई, और मुझे लगता है कि उनका सम्मान भी हासिल हो गया, क्योंकि श्री निकोल्स ने हर बात में निस्वार्थ और सहनशील साबित किया है। निश्चित रूप से, मुझे उनका सम्मान करना चाहिए, और मैं उनके प्रति केवल ठंडे सम्मान से अधिक कुछ नहीं रोक सकता। वास्तव में, प्रिय एलेन, मैं उनसे सगाई कर चुका हूँ।

श्री निकोल्स कुछ महीनों के भीतर हॉवर्थ के क्यूरेसी में लौट आएंगे। मैंने यह शर्त रखी थी कि मैं पापा को नहीं छोड़ूंगी; और मैंने पापा को ही एक ऐसी निवास योजना का प्रस्ताव दिया था जिससे उनकी एकांतता और सुविधा में कोई दखल न हो और आर्थिक दृष्टि से उन्हें हानि के बजाय लाभ हो। जो एक समय असंभव लग रहा था, अब वह संभव हो गया है, और पापा को इस संभावना से सचमुच खुशी मिलने लगी है।

प्रिय एलेन, मैं उस ईश्वर की आभारी हूँ जिसने मुझे कई कठिनाइयों, गहरे दुख और मन की उलझनों से उबारा है, फिर भी मैं बहुत शांत और आशाहीन हूँ। मुझे जो भी सुख मिलता है, वह अत्यंत संयमित होता है। मुझे अपने पति से प्रेम करने का पूरा भरोसा है। मैं उनके कोमल प्रेम के लिए आभारी हूँ। मेरा मानना है कि वे स्नेही, कर्तव्यनिष्ठ और उच्च सिद्धांतों वाले व्यक्ति हैं; और यदि इन सबके बावजूद, मुझे इस बात का अफसोस हो कि मुझमें उत्कृष्ट प्रतिभा, अनुकूल रुचियाँ और विचार नहीं हैं, तो मुझे लगता है कि मैं अत्यंत अभिमानी और कृतघ्न होऊंगी।

'ईश्वरीय कृपा ने मुझे यह नियति दी है। निःसंदेह, यह मेरे लिए सर्वोत्तम है। और मैं अपने प्रियजनों के लिए भी इससे कम सुख की कामना करने से पीछे नहीं हटता।'

“संभव है कि हमारी शादी गर्मियों के दौरान हो जाए। श्री निकोल्स चाहते हैं कि यह जुलाई में हो। उन्होंने आपके बारे में बहुत ही स्नेह से बात की और कहा कि उन्हें उम्मीद है कि आप हमारी शादी में आएंगी। मैंने कहा कि मैं किसी और को ब्राइड्समेड नहीं बनाना चाहती। क्या मैंने सही कहा? मेरा मतलब है कि शादी बिल्कुल शांत और बिना किसी झिझक के हो।”

अभी इन बातों का ज़िक्र मत कीजिए। मैं जल्द ही मिस वूलर को पत्र लिखूंगी। अलविदा। ये घोषणाएँ करते हुए एक अजीब सी उदासी महसूस हो रही है। यह सब कुछ वैसा नहीं है जैसा हमने पहले सोचा था; चिंताएँ, भय, आशाओं के साथ इस तरह

घुलमिल गए हैं कि उन्हें अलग करना मुश्किल है। मुझे उम्मीद है कि मैं इस बारे में आपसे बात कर लूंगी। पिछले हफ्ते कई बार मैंने आपकी उपस्थिति की कामना की और श्री निकोल्स - जिन्हें अब मैं आर्थर कहती हूँ - से यह कहा भी, लेकिन उन्होंने कहा कि यही वह समय और स्थान था जब वे आपसे मिलना नहीं चाहते थे। अलविदा। - आपकी स्नेही,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

15 अप्रैल, 1854।

मेरी प्यारी नेल, मुझे उम्मीद है कि मई के दूसरे सप्ताह के आसपास कहीं तुमसे मुलाकात होगी।

मैनचेस्टर की यात्रा का विचार अब भी मेरे मन में बना हुआ है। मैंने इसे कई बार टाला है, लेकिन आखिरकार अगले महीने की शुरुआत में जाने का वादा कर दिया है। मैं सिर्फ तीन दिन रुकूंगा, फिर हन्सवर्थ में दो-तीन दिन बिताऊंगा, और फिर ब्रुकरॉयड आऊंगा। तीनों यात्राओं को संभव हो तो दो सप्ताह के भीतर ही निपटाना होगा।

मुझे लगता है कि मुझे लीड्स जाना पड़ेगा। मेरी खरीदारी न तो महंगी होनी चाहिए और न ही बहुत ज्यादा। आपको बस अपने मन में टोपी और पोशाकों का फैसला कर लेना चाहिए; कुछ ऐसा जो शादी के बाद भी अच्छे से पहना जा सके, मेरे ख्याल से सबसे अच्छा रहेगा।

मैंने तुरंत मिस वूलर को पत्र लिखा और आज सुबह मुझे उनसे एक बहुत ही स्नेहपूर्ण पत्र मिला। अगर आपको लगता है कि वह शादी में आना चाहेंगी तो मैं उनसे पूछना नहीं भूलूंगी।

पापा का इस मामले पर नजरिया पूरी तरह बदल गया लगता है, और उन्होंने मुझसे और मेरी गैरमौजूदगी में भी कहा है कि जब से उन्होंने सब कुछ सुलझने दिया है, तब से उन्हें कितना सुकून मिला है। उन्हें इस मामले को तर्कसंगत ढंग से लेते हुए सुनना, और उन विषयों पर उनसे बात करना जिन पर पहले मैं बात करने की हिम्मत नहीं करता था, मेरे लिए बहुत राहत की बात है। वे चाहते हैं कि अब काम आगे बढ़े, और वे तैयारियों में काफी दिलचस्पी ले रहे हैं। उनका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन सुधर रहा है, हालांकि पूर्वी हवा के कारण गले और सीने में हल्की सी जलन बनी रहती है।

'पापा के प्रति जो भावना निराश हुई थी, वह महत्वाकांक्षा, पितृ गौरव थी - एक

ऐसी भावना जो हमेशा बेचैन रहती है, जैसा कि हम सब जानते हैं। अब जब यह अशांत भावना दूर हो गई है, तो न्याय, जिसे कभी पूरी तरह भुला दिया गया था, एक बार फिर सुना जा रहा है, और मुझे उम्मीद है कि स्नेह अपनी शक्ति पुनः प्राप्त कर लेगा।'

मेरी आशा है कि अंततः यह व्यवस्था पापा के लिए मेरे द्वारा किए गए किसी भी अन्य प्रयास से कहीं अधिक लाभकारी सिद्ध होगी। श्री निकोल्स ने अपने अंतिम पत्र में पापा के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, उनकी वृद्धावस्था में उन्हें सहारा और सांत्वना देने की अपनी हार्दिक इच्छा का भावपूर्ण ढंग से उल्लेख किया है। यह केवल उनके साथ बातचीत नहीं होगी - वे ज्यादा बात नहीं करते, न ही बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। - आपका स्नेही,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

28 अप्रैल, 1854।

मेरी प्यारी एलेन, मैंने तुम्हें अपने आने-जाने के बारे में स्पष्ट जानकारी देने के लिए पत्र लिखने में देरी की। अगर सब ठीक रहा, तो मैं 1 मई को मैनचेस्टर जा रहा हूँ। वहाँ से गुरुवार को हन्सवर्थ में रहूँगा और सोमवार तक वहीं रहूँगा, फिर (ईश्वर की कृपा से) ब्रुकरॉयड आऊँगा। मुझे सप्ताह के अंत तक घर पहुँच जाना है। पापा, ईश्वर का धन्यवाद! उनकी सेहत में बहुत सुधार हो रहा है। उन्होंने रविवार और बुधवार को दो बार उपदेश दिया और बिल्कुल भी थके नहीं; उनका मन और मनोदशा पहले से बहुत अलग है, वे बहुत अधिक प्रसन्न और शांत हैं। मुझे उम्मीद है कि महत्वाकांक्षा के भ्रम पूरी तरह से दूर हो गए हैं, और वे वास्तव में समझते हैं कि एक दुखी और निष्ठावान हृदय को राहत देना, उसकी निष्ठा को सुरक्षित रखना, एक ठोस भलाई है, बजाय इसके कि जो व्यक्ति वास्तव में मेरे और अपने हित से जुड़ा है, उसे निर्दयता से त्याग दिया जाए और किसी व्यर्थ खोखले साये का पीछा किया जाए।

प्रिय एलेन, श्री निकोल्स को आमंत्रित करने के आपके स्नेहपूर्ण निमंत्रण के लिए धन्यवाद। उन्हें मैनचेस्टर और हन्सवर्थ में भी आमंत्रित किया गया था। यदि इस व्यवस्था में कोई वास्तविक बाधा न होती तो मुझे उनके आने पर कोई आपत्ति नहीं होती - कुछ छोटी-मोटी असहजताएँ थीं जिन्हें मैं पुराने मित्रों से उनका परिचय कराने के लिए दूर करने की कोशिश करता; लेकिन संयोगवश, वे अपने रेक्टर की

अनुपस्थिति के कारण नहीं जा सकते। श्री सी. जून तक अपने परिवार के साथ शहर में रहेंगे, और उन्होंने हमेशा यह शर्त रखी है कि उनकी अनुपस्थिति में उनका सहायक किर्क-स्मीटन में ही रहेगा।

ओरेटोरियो में आपका प्रदर्शन कैसा रहा? और शादी में आने के प्रस्ताव पर मिस वूलर ने क्या प्रतिक्रिया दी? आपसे मिलने पर मुझे कई बातों पर चर्चा करनी है। आशा है आपकी माँ और सभी लोग स्वस्थ होंगे। उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ और आपको सच्चा प्यार, - प्रिय नेल, आपकी विश्वासपात्र।

'सी. ब्रोंटे.

जब आप पत्र लिखें, तो मुझे श्रीमती गैस्केल के पते पर संबोधित करें, पता है: प्लायमाउथ ग्रोव, मैनचेस्टर।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

22 मई, 1854।

प्रिय एलेन, — मुझे आश्चर्य है कि तुम कैसी हो, और क्या तुम्हारी वो परेशान करने वाली खांसी ठीक हो गई है। अनावश्यक धूप से बहुत सावधान रहना। अभी, प्रिय एलेन, एक घंटे की लापरवाही भी तुम्हें सचमुच बीमार कर सकती है। इसलिए एक बार फिर, अपना ख्याल रखना। घर आने के बाद से मैं सिलाई में बहुत व्यस्त रही हूँ। छोटा नया कमरा व्यवस्थित हो गया है, और हरे और सफेद पर्दे लग गए हैं; वे वॉलपेपर से बिल्कुल मेल खाते हैं, और साफ-सुथरे दिखते हैं। एक-दो दिन पहले मुझे एक पत्र मिला जिसमें बताया गया था कि श्री निकोल्स कल आ रहे हैं। मैं उनके बारे में चिंतित हूँ, एक बात को लेकर इतनी चिंतित हूँ कि मैं खुद से भी पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकती। ऐसा लगता है कि उन्हें फिर से गठिया की बीमारी से बहुत तकलीफ हो रही है। यह बात मुझे उनसे नहीं, बल्कि किसी और से पता चली है। जब मैं मैनचेस्टर और ब्रुकरॉयड में थी, तब वे बीमार थे। उन्होंने मुझसे कोई शिकायत नहीं की, इस विषय पर कोई संकेत भी नहीं दिया। अफसोस! उन्हें उम्मीद थी कि वे ठीक हो गए हैं, और मैं जानती हूँ कि उनकी उम्मीदों का यह विरोधाभास उन्हें कितना दुखी करेगा। निस्वार्थ भाव से उन्होंने दिली दुआ की कि यह बीमारी कभी पुरानी न हो जाए। मुझे डर लग रहा है, बहुत डर लग रहा है। लेकिन फिर भी, मैं सुख-दुख में उनके साथ खड़ी रहूंगी। गठिया के दर्द की यह आशंका शादी के खिलाफ इस्तेमाल किए गए मजबूत तर्कों में से एक थी। लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ। अगर उन्हें

कष्ट सहना ही है, तो लगता है कि उन्हें देखभाल और मदद की और भी ज्यादा जरूरत होगी। फिर भी, ऐसे मामले की अंतिम संभावनाएं भयावह हैं। आपको अपनी चाची याद हैं ना? खैर, चाहे कुछ भी हो जाए, भगवान हम दोनों की मदद करें और हमें शक्ति दें। मैं कल का बेसब्री और चिंता के मिले-जुले भाव से इंतजार कर रही हूं। बेचारा! मैं अपनी आंखों से देखना चाहती हूं कि वह कैसा है।

रात हो रही है और अंधेरा छा रहा है। जल्दी लिखना, प्यारी एलेन। शुभ रात्रि और ईश्वर आपका भला करे। — आपकी स्नेही,

'सी. ब्रोंटे.

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 27 मई, 1854।

प्रिय एलेन, आपका पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी हुई और यह जानकर मैं आभारी हूं कि आप बेहतर हैं। फिर भी, अपनी सेहत में आए सुधार को लेकर ज्यादा आशावादी न हों—इसे अपने ऊपर हावी न होने दें। श्री निकोल्स अभी-अभी मुझसे विदा हुए हैं। उनकी बीमारी के बारे में आपकी उम्मीदें निराधार नहीं थीं। पहले तो मैं बहुत घबरा गई थी। लेकिन धीरे-धीरे पूछताछ करने पर मेरी चिंता दूर हो गई। संक्षेप में, मुझे जल्द ही पता चला कि मेरा काम सहानुभूति दिखाने के बजाय सही आकलन करना था। हॉवर्थ में रहते हुए मरीज का अच्छा इलाज हुआ और वह काफी बेहतर होकर घर लौटे; हालांकि, कुछ मामलों में उनकी स्थिति बिल्कुल तर्कसंगत नहीं थी, जैसा कि उनकी जैसी महिलाएं अक्सर गलतियां करती हैं।

मनुष्य वास्तव में एक अद्भुत यंत्र है, जब आप उसकी तथाकथित शक्ति की पूरी कमजोरी को देखते हैं। आठ वर्ष से अधिक आयु की कोई भी बच्ची ऐसी नहीं होगी जो उसके जिद्दी और अड़ियल व्यवहार के लिए उसे फटकार न सके। मैंने मेज़पोश के लिए एक बॉर्डर खरीदा है और उसे बिछा दिया है।

अलविदा, प्रिय एलेन। जल्द ही फिर से लिखना, और ध्यान रखना और सूचना देना। — आपका विश्वासपात्र,

'सी. ब्रोंटे।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

12 जून, 1854।

प्रिय एलेन, पापा ने आज दो बार उपदेश दिया, हमेशा की तरह ही बढ़िया और

प्रभावशाली ढंग से। यह अजीब है कि उनका मिजाज कैसे बदलता रहता है, कितनी जल्दी वे उदास हो जाते हैं और कितनी जल्दी ठीक हो जाते हैं। जब वे बेहतर होते हैं तो मुझे बहुत खुशी होती है। प्रिय नेल, मुझे इस बात की भी खुशी है कि तुम पहले से ज़्यादा स्वस्थ हो। किर्क-स्मीटन में मेरे सम्मानित परिचित अभी भी खुद को बेहतर मानने को तैयार नहीं हैं। मिस वूलर को न लिखने को लेकर मैं थोड़ी परेशान हूँ। मुझे डर है कि वे मुझे लापरवाह समझेंगी, जबकि मैं बस व्यस्त और परेशान हूँ। मैं अपने सिलाई-कढ़ाई के काम को थोड़ा निपटाना चाहती हूँ, और ब्रुकरॉयड में पढ़ने के समय से ही मैं समय की कमी के कारण सिलाई कर रही हूँ। श्री निकोल्स ने मुझे पूरे एक हफ्ते तक रोके रखा।

मुझे कार्ड तो बहुत पसंद आया, लेकिन लिफाफा नहीं। मुझे चांदी के अक्षरों वाला बिल्कुल सादा लिफाफा चाहिए।

'मुझे हैलिफ़ैक्स से अपनी ड्रेस एक-दो दिन पहले मिली थीं, लेकिन मुझे उन्हें खोलने का समय नहीं मिला है, इसलिए मुझे नहीं पता कि वे कैसी हैं।'

अगली बार जब मैं लिखूँगी, तो आशा है कि मैं आपको स्पष्ट जानकारी दे पाऊँगी और आपसे निवेदन करूँगी कि आप बिना किसी देरी के यहाँ आ जाएँ। अलविदा, प्रिय नेल। — आपकी विश्वासपात्र

‘सी. ब्रोंटे.

मैं लिफाफों के बारे में बताना लगभग भूल ही गया था। श्री निकोल्स का कहना है कि मैंने बहुत कम लिफाफे मंगवाए हैं; उनके हिसाब से साठ की जरूरत होगी। क्या इस गलती को सुधारने में बहुत देर हो चुकी है? उनके पादरी मित्रों की कोई कमी नहीं है। मैंने अपनी सूची अभी तक तैयार नहीं की है।

शार्लोट ब्रोंटे की उन मित्रों की सूची, जिन्हें शादी के कार्ड भेजे जाने थे, उनकी स्वयं की लिखावट में है, और यह काफी रोचक है:

कार्ड भेजें

रेव. डब्ल्यू. मॉर्गन, रेक्टरी, हल्कॉट, आयल्सबरी, बक्स। जोसेफ ब्रैनवेल, एस्क्वायर, थामर टेरेस, लाउंसेस्टन, कॉर्नवाल।

डॉ. व्हीलराइट, 29 फिलिमोर प्लेस, केंसिंग्टन, लंदन।

जॉर्ज स्मिथ, एस्क्वायर, 65 कॉर्नहिल, लंदन।

श्रीमती और मिस स्मिथ, 65 कॉर्नहिल, लंदन।

डब्ल्यू. एस. विलियम्स, एस्क्वायर, 65 कॉर्नहिल, लंदन।

आर. मोनकटन मिल्नेस, एस्क्वायर।

श्रीमती गैस्केल, प्लायमाउथ ग्रोव, मैनचेस्टर।

फ्रांसिस बेनोच, एस्क्वायर, पार्क, ब्लैकहीथ, लंदन।

जॉर्ज टेलर, एस्क्वायर, स्टैनबरी।

श्रीमती और मिस टेलर।

एच. मेर्राल, एस्क्वायर, ली साइक्स, हॉवर्थ।

ई. मेर्राल, एस्क्वायर, एबोर हाउस, हॉवर्थ।

आर. बटरफील्ड, एस्क्वायर, वुडलैंड्स, हॉवर्थ।

आर. थॉमस, एस्क्वायर, हॉवर्थ।

जे. पिकल्स, एस्क्वायर, ब्राउ टॉप, हॉवर्थ।

वूलर परिवार।

ब्रुकरायड।

निम्नलिखित बातें उनकी शादी के दिन, 29 जून, 1854 को लिखी गई थीं।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

गुरुवार शाम।

प्रिय एलेन, मैं जल्दबाजी में बस एक पंक्ति लिख रही हूँ, यह बताने के लिए कि एक सुखद यात्रा के बाद हम सुरक्षित रूप से कॉनवे पहुँच गए हैं; शाम नम और तूफानी है, हालाँकि दिन मुख्य रूप से सुहावना था और धूप की कुछ किरणें भी निकलीं। खैर, हम एक आरामदायक सराय में ठहरे हुए हैं। मेरी सर्दी-जुकाम में कोई सुधार नहीं हुआ है। अगर तुम्हें यह पत्र कल मिले और तुम तुरंत जवाब लिखो, तो इसे सीधे मेरे पते पर बैंगोर के डाकघर में भेज देना, ताकि मुझे यह सोमवार को मिल जाए। बताना कि तुम और मिस वूलर कैसे घर पहुँचीं। जब भी तुम लिखो, मिस वूलर को मेरा हार्दिक और कृतज्ञतापूर्ण प्यार देना। मुझे लगता है कि सोमवार को हम इंग्लिश चैनल पार कर लेंगे। अभी के लिए बस इतना ही। — तुम्हारी विश्वासपात्र और स्नेही,

'सी. बी. एन.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 9 अगस्त, 1854।

प्रिय एलेन, मुझे पूरी उम्मीद है कि अब आप अकेली होंगी और मेहमानों के मनोरंजन के झंझट से मुक्त होंगी। आप शिकायत तो नहीं करतीं, लेकिन मुझे लगता है कि आप इससे बहुत थक चुकी हैं।

घर लौटने के बाद से मुझे एक पल भी खाली नहीं रहना पड़ा। मेरा जीवन सचमुच बदल गया है: लगातार ज़रूरत महसूस होना, लगातार काम में व्यस्त रहना अजीब लगता है; फिर भी यह एक अद्भुत अच्छी बात है। मुझे अभी तक पूरी तरह समझ नहीं आया है कि कुछ पत्नियाँ इतनी स्वार्थी कैसे हो जाती हैं। जहाँ तक मेरे वैवाहिक अनुभव की बात है, मुझे लगता है कि यह आपको अपने आप से दूर कर देता है।

इस सप्ताह हमारे यहाँ कई मेहमान आए। कल श्री सोडेन और एक अन्य सज्जन ने यहाँ भोजन किया, और श्री और श्रीमती ग्रांट चाय पर उनके साथ शामिल हुए।

'मुझे नहीं लगता कि हम पापा की वजह से जल्द ही ब्रुकरॉयड जाएंगे। मैं कुछ समय के लिए फिर से घर छोड़ना नहीं चाहती, लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप जल्द ही यहां आ जाएंगे।'

मुझे श्री सोडेन बहुत पसंद हैं। उन्होंने आपके बारे में पूछा था। श्री निकोल्स ने उन्हें बताया कि हमें उम्मीद है कि आप तीन-चार हफ्तों में हमारे साथ रहने आएंगे, और उन्हें फिर से आमंत्रित करना चाहिए क्योंकि वे चाहते हैं कि हम कई लंबी सैर पर जाएं, और चूंकि उन्हें अपनी पत्नी की देखभाल करनी होगी, और वह काफी परेशानी वाली हैं, इसलिए दूसरी महिला के लिए एक संरक्षक का होना बिल्कुल आवश्यक होगा। श्री सोडेन पूरी तरह सहमत दिखे।

प्रिय नेल, पिछले छह हफ्तों में मेरे विचारों का रंग काफी बदल गया है: मैं जीवन की वास्तविकताओं को पहले से कहीं अधिक जानती हूँ। मुझे लगता है कि कई गलत धारणाएँ फैलाई जा रही हैं, शायद अनजाने में। मुझे लगता है कि वे विवाहित महिलाएँ जो बिना सोचे-समझे अपने परिचितों को शादी करने के लिए उकसाती हैं, वे इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार हैं। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं केवल वही बात और भी अधिक गंभीरता और अर्थ के साथ कह सकती हूँ जो मैं हमेशा सैद्धांतिक रूप से कहती आई हूँ, "ईश्वर की इच्छा का इंतजार करो।" सचमुच, नेल, एक स्त्री के लिए पत्नी बनना एक गंभीर, विचित्र और जोखिम भरा अनुभव होता है। पुरुष का भाग्य इससे कहीं अधिक भिन्न होता है। मुझे बताना कि तुम कब आ सकती हो। पापा की तबीयत बेहतर है, लेकिन पूरी तरह ठीक नहीं है। तुम्हारी माँ कैसी हैं? उन्हें मेरा प्यार देना। —

तुम्हारी विश्वासपात्र,

'सी. बी. निकोल्स।

'क्या मैंने आपको बताया है कि मिस्टर निकोल्स कितने बेहतर हो गए हैं? वे काफी मजबूत और तंदुरुस्त दिखते हैं; आयरलैंड में हमारे चार सप्ताह के प्रवास के दौरान उनका वजन 12 पाउंड बढ़ गया। उनमें यह सुधार देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है, और सच कहूँ तो, आश्चर्य भी हुआ है।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 29 अगस्त।

प्रिय एलेन, क्या आप अगले बुधवार (6 सितंबर) को यहाँ आ सकती हैं? यदि संभव हो तो आने की व्यवस्था करने का प्रयास करें, क्योंकि ठंड और छोटे दिनों तक अपनी यात्रा को टालने से बेहतर होगा कि आप आ जाएँ। प्रिय नेल, मैं आपसे फिर मिलना चाहती हूँ, और मेरे पति भी आपका सहर्ष स्वागत करेंगे; और मैं आपको विश्वास दिला सकती हूँ कि वे शिष्टाचार और पक्षपात में कंजूसी नहीं करते। उनके एक दोस्ताना शब्द का अर्थ अधिकांश लोगों के बीस शब्दों के बराबर होता है।

हाल ही में हम गायकों, घंटी बजाने वालों, संडे स्कूल के शिक्षकों और संडे और नेशनल स्कूलों के सभी विद्यार्थियों के लिए रात्रि भोज और चाय-पानी का आयोजन करने में व्यस्त थे, जिनकी कुल संख्या लगभग 500 थी। इससे सभी को संतुष्टि मिली और यह कार्यक्रम अच्छे से संपन्न हुआ।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पापा की तबीयत काफी बेहतर है; उन्होंने पिछले रविवार को प्रवचन दिया। तुम्हारी माँ इस भीषण गर्मी को कैसे सहन कर रही हैं? प्यारी नेल, जल्दी लिखना और कहना कि तुम आ रही हो। — तुम्हारी विश्वासपात्र

'सी. बी. एन.'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 7 सितंबर, 1854।

प्रिय एलेन, मैं आज एक फ्रेंच अखबार भेज रही हूँ। आपको लगभग लगेगा कि मैंने इन्हें भेजना छोड़ दिया है, क्योंकि इतने लंबे समय से कोई अखबार नहीं भेजा गया है। दरअसल, मेरी अनुपस्थिति में इनका काफी ढेर लग गया था। मैं इन्हें भेजने से पहले एक बार देख लेना चाहती थी, और अभी तक मुझे मुश्किल से ही समय मिला है। समय एक ऐसी वस्तु है जिसका कभी मेरे पास भरपूर भंडार होता था; अब वह कहाँ

चला गया है, यह कहना मुश्किल है, लेकिन मेरे पल पूरी तरह से व्यस्त हैं। ध्यान रहे, एलेन, विवाहित महिला के पास अपने दिन का बहुत छोटा हिस्सा ही होता है। ऐसा नहीं है कि मैं अभी तक इस तरह के एकाधिकार की शिकायत कर रही हूँ, और मुझे उम्मीद है कि मैं इसे कभी दुर्भाग्य नहीं मानूँगी, लेकिन यह निश्चित रूप से मौजूद है। हम दोनों निराश हैं कि आप उस दिन नहीं आ सकीं जिसका मैंने जिक्र किया था। मुझे इस शानदार मौसम की बहुत कमी खल रही है। मैदान अपनी पूरी शान में हैं, मैंने उन्हें बैंगनी फूलों से इतना भरा हुआ कभी नहीं देखा। मैं चाहती थी कि आप उन्हें उनके सबसे अच्छे रूप में देखें; ये पत्ते अभी रंग बदल रहे हैं, और मुझे डर है कि एक हफ्ते में ये मुरझाकर सूख जाएंगे। जैसे ही आप घर से बाहर निकल सकें, मुझे जरूर लिखकर बता देना।

पापा की सेहत में काफी सुधार हो रहा है। मेरे पति भी स्वस्थ हैं; वास्तव में, अपनी सेहत में हो रहे सुधार को लेकर वे थोड़ी चिंता भी जताने लगे हैं। मुझे लगता है मैं ठीक हूँ, निश्चित रूप से दो महीने पहले से बेहतर हूँ, लेकिन लोग मेरी तारीफ वैसे नहीं करते जैसे आर्थर की करते हैं - नाम के लिए क्षमा करें, अब तो यह नाम इस्तेमाल करना स्वाभाविक हो गया है। प्रिय नेल, मुझे उम्मीद है कि आप ब्रुकरायड में ठीक होंगी और आपके यहाँ आने-जाने का सिलसिला लगभग खत्म हो गया होगा। आपको जो भी परेशानी उठानी पड़ रही है, उसके लिए मैं दिल से आपके प्रति सहानुभूति रखती हूँ और मुझे उन लोगों पर शर्म आती है जो इस तरह एक के बाद एक मुफ्तखोरी करने आते हैं; उनसे दूर रहें और यहाँ आएं। - आपकी विश्वासपात्र

'सी. बी. निकोल्स।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 7 नवंबर, 1854।

प्रिय एलेन, आर्थर चाहता है कि तुम मेरे पत्रों को जला दो। जब मैंने यह पत्र लिखना शुरू किया था तब वह बाहर था, लेकिन अभी-अभी अंदर आया है। वह कहता है कि उसे "पुराने दोस्तों" पर अविश्वास नहीं है, बल्कि युद्ध की संभावनाओं पर - अनजाने में उन पत्रों के हाथों और आँखों के सामने पहुँचने पर अविश्वास है जिनके लिए वे कभी लिखे ही नहीं गए थे।

'यह सब मुझे बहुत मनोरंजक लगता है; यह पुरुषों का पत्र-व्यवहार को देखने का तरीका है। कहावत है कि पुरुषों के पत्र नीरस और सारहीन होते हैं। मुझे पहले कभी

समझ नहीं आया कि वे उन्हें ऐसा क्यों बनाते हैं। एक अर्थ में वे सही हो सकते हैं: अजीब संयोग तो होते ही हैं। जहाँ तक मेरे अपने नोट्स की बात है, मैंने कभी उन्हें महत्व देने या उनके भविष्य के बारे में सोचने का नहीं सोचा था, जब तक कि आर्थर ने उन दोनों पर इतनी गंभीरता से विचार नहीं किया।'

अगर सब ठीक रहा तो मैं अगले हफ्ते फिर लिखूंगा और आपसे मिलने आने की तारीख तय कर लूंगा। मुझे यकीन है कि आपको थोड़ी देर आराम करना चाहिए, या कम से कम करना तो बनता है, ताकि आप और लोगों से परेशान न हों; लेकिन जब भी मैं आऊं, प्रिय नेल, मौजूदा हालात में, मेरी मुलाकात शांतिपूर्ण होगी, और मुझे एक-दो साधारण कपड़ों से ज्यादा कुछ लाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जब आप लिखें तो मुझे यह बता देना। — आपका सच्चा शुभचिंतक।

'सी. बी. निकोल्स।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 14 नवंबर, 1854।

प्रिय एलेन, मैं अभी-अभी तुम्हें पत्र लिखने के लिए समय निकाल पाया हूँ; पिछले दो-तीन दिनों से मेहमानों ने मुझे बहुत व्यस्त रखा है। सर जे. के-शटलवर्थ और उनका एक मित्र शनिवार दोपहर को यहाँ आए और सोमवार को भोजन के बाद तक रुके।

जब मैं ब्रुकरॉयड जाऊंगी, तो आर्थर मुझे वहां ले जाएगा और एक रात रुकेगा, लेकिन मैं अभी तक अपनी यात्रा का समय तय नहीं कर पाई हूं। फिलहाल अलविदा, प्रिय नेल। — आपकी विश्वासपात्र

'सी. बी. निकोल्स।'

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 21 नवंबर, 1854

प्रिय एलेन, — आपने श्री सोडेन के मामले के बारे में पूछा था। वे एक तूफानी बारिश वाले दिन यहाँ आए थे। हमने इस बारे में बात की। वे प्रस्ताव पर विचार करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं, लेकिन निश्चित रूप से उनके या संरक्षक के निर्णय लेने से पहले गहन जांच-पड़ताल और विचार-विमर्श आवश्यक है। इस बीच, श्री सोडेन इस बात को लेकर बेहद चिंतित हैं कि मामले को पूरी तरह गुप्त रखा जाए; निराशा की स्थिति में, अगर हेब्डेन ब्रिज में यह अफवाह फैल गई कि वे जाने के बारे में सोच रहे हैं, तो यह उनके लिए बहुत कष्टदायक और हानिकारक होगा। आर्थर कहते हैं कि

अगर एक फुसफुसाहट भी फैल जाए तो ये बातें एक पादरी से दूसरे पादरी तक जंगल की आग की तरह फैल जाती हैं। मैं किसी न किसी तरह से चाहती हूँ कि अगर जांच में सब कुछ संतोषजनक पाया जाता है, तो मामला सुलझ जाए।

'मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि पापा की सेहत काफी अच्छी है; उनकी बहरापन की समस्या में काफी राहत मिली है। उन्हें गर्मी के मौसम से ज्यादा सर्दी का मौसम पसंद आता है; इसके अलावा, वे शांत और संतुष्ट हैं, जैसा कि मैं ईश्वर का आभार व्यक्त करते हुए देख पा रहा हूं।'

प्रिय एलेन, मैं कामना करता हूँ कि तुम हर मुश्किल में सफल रहो। आर्थर अभी यहाँ नहीं है, वरना वह तुम्हें एक प्यारा सा संदेश भेज देता। विश्वास करो, तुम्हारा विश्वासपात्र।

‘सी. बी. निकोल्स।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 29 नवंबर, 1854।

प्रिय एलेन, आर्थर अभी तक मेरे ब्रुकरॉयड जाने को लेकर थोड़ा आशंकित है; बुखार, जैसा कि तुम जानती हो, एक डरावना शब्द है। मैं खुद इससे ज़्यादा चिंतित नहीं हूँ कि कहीं मैं घर से दूर बीमार न पड़ जाऊँ और परेशानी न खड़ी कर दूँ; और अजनबी लोग कभी-कभी घर में रहने वालों की तुलना में संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

श्री सोडेन ने सर जे. के. शटलवर्थ से मुलाकात की है, लेकिन मुझे लगता है कि मामला अभी तक काफी अनिश्चित है। ऐसा लगता है कि मैनचेस्टर के बिशप की शर्त है कि चयनित पादरी, यदि संभव हो तो, उनके अपने धर्मक्षेत्र से होना चाहिए, और आर्थर का कहना है कि यह बिल्कुल सही और न्यायसंगत है। आर्थर के पक्ष में एक अपवाद बनाया जा सकता था, लेकिन श्री सोडेन के साथ मामला इतना स्पष्ट नहीं है। हालांकि, अगर यह मामला आगे नहीं बढ़ता है, जैसा कि मुझे उम्मीद है, तो कोई नुकसान नहीं होगा। प्रिय नेल, बहुत जल्द लिखना, और— विश्वास करो, तुम्हारा विश्वासपात्र।

‘सी. बी. निकोल्स।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 7 दिसंबर, 1854।

प्रिय एलेन, — अब मुझे क्रिसमस से पहले ब्रुकरॉयड जाने की छुट्टी नहीं मिलेगी, इसलिए मेरी उम्मीद मत रखना। मुझे खुद कोई डर नहीं है, और अगर यह सिर्फ मेरे हाथ में होता तो मैं ज़रूर आता। लेकिन अब ये मामले मेरे बस में नहीं हैं: किसी और से सलाह लेनी होगी; और जहाँ उसकी इच्छा और निर्णय किसी विशेष मार्ग की ओर झुकाव रखते हैं, मैं कोई आपत्ति नहीं करता, बल्कि उसे अपना लेता हूँ। आर्थर को हम दोनों को निराश करने का दुख है, लेकिन उसकी यही इच्छा है कि हमारी मुलाकात से पहले कुछ सप्ताह बीत जाएँ। शायद मेरी सर्दी-जुकाम की वजह से उसकी यह इच्छा और पक्की हो गई है। मैं झरने तक पैदल नहीं जा पाया। हालाँकि घर लौटते ही मैंने अपने गीले कपड़े बदल लिए, फिर भी मुझे बाद में ठंड लग गई, और उसी रात मेरा गला खराब हो गया और सर्दी-जुकाम हो गया; हालाँकि, अब मैं बेहतर हूँ, पर पूरी तरह ठीक नहीं हूँ।

क्या मैंने आपको बताया था कि हमारा बेचारा छोटा फ्लॉसी मर गया? वह एक दिन तक तड़पता रहा और रात में शांति से बिना दर्द के मर गया। एक कुत्ते का खोना भी बहुत दुखद था, फिर भी शायद ही किसी कुत्ते ने इतना खुशहाल जीवन जिया हो या इतनी आसानी से मृत्यु पाई हो।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि पापा की सेहत काफी अच्छी है और मेरा प्यारा बेटा खूब फल-फूल रहा है। मेरा मतलब यह नहीं है कि वह लगातार मोटा होता जा रहा है, जो कि कोई नहीं चाहेगा, लेकिन वह बेहतरीन सेहत में है।

मुझे यकीन है कि आपको फ्रेंच अखबार के इतने लंबे समय तक गायब रहने पर आश्चर्य होगा। मेरे पास इतने सारे बिना पढ़े अखबार जमा हो गए थे कि मैंने सोचा कि पुराने अखबार भेजने में देर न करूं; अब आपको वे नियमित रूप से मिलेंगे। मैं जल्दी में लिख रही हूँ। मुझे समझ नहीं आता कि मैं आजकल इतनी जल्दी में क्यों रहती हूँ; लेकिन सच तो यह है कि जब भी आर्थर घर पर होता है, मुझे कुछ न कुछ काम करना ही पड़ता है जिसमें वह मेरा साथ दे सके, या कम से कम मेरा ध्यान उससे न भटकाए – इस तरह कई छोटे-मोटे काम उसके जाने तक टलते रहते हैं, और फिर मैं पूरी तरह व्यस्त हो जाती हूँ। अलविदा, प्यारी एलेन, आशा है हम जल्द ही मिलेंगे। – आपकी विश्वासपात्र

‘सी. बी. निकोल्स।’

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 26 दिसंबर, 1854।

प्रिय एलेन, — मैं पत्र का जवाब दे रही हूँ। जैसा कि तुमने कहा, यह बहुत ही सच्चा, ईमानदार, स्नेहपूर्ण और मातृत्व से भरा है — इसमें बनावटीपन या अतिशयोक्ति का कोई अंश नहीं है। मुझे लगता है कि मैरी अपने बच्चे को बिगाड़े बिना उससे प्यार करेगी। वह अपनी खुशी का भी दिखावा नहीं करती। जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती जा रही है, मुझे अतिशयोक्ति का संदेह बढ़ता जा रहा है। मुझे लगता है कि कभी-कभी यह एक तरह का फैशन बन जाता है कि हर कोई अपनी अद्भुत खुशी का बखान करने में एक-दूसरे से होड़ करे, और कभी-कभी वे — झूठ बोलती हैं। यह जानकर मुझे सचमुच खुशी हुई कि ब्रुकरॉयड में तुम सब ठीक हो। तीन-चार हफ्तों में मुझे तुम्हारे पास आने की छुट्टी मिल जाएगी। मैं तुमसे दोबारा मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। एक बात मुझे इस देरी के लिए माफ़ करती है — मौसम। मुझे नहीं पता कि तुम्हारे यहाँ भी मौसम उतना ही खराब रहा है जितना हमारे यहाँ, लेकिन यहाँ तीन हफ्तों से लगातार तूफ़ानों के अलावा कुछ नहीं हुआ है।

आपने अपने पिछले पत्र में श्री सोडेन और सर जेम्स के बारे में पूछा था। मुझे डर है कि श्री सोडेन के बचने की संभावना बहुत कम है; पिछली बार जब उन्होंने आर्थर को पत्र लिखा था तब उन्हें इस बारे में कोई नई जानकारी नहीं मिली थी, और कल सर जेम्स से मिले एक नोट में भी इस विषय का उल्लेख नहीं है।

'आप श्रीमती गैस्केल के बारे में भी पता कर लीजिए। वह यहाँ नहीं आई हैं, और मुझे लगता है कि अब गर्मियों तक उनका आना ठीक नहीं होगा। वह उत्तर और दक्षिण की अपनी कहानी लिखने में बहुत व्यस्त हैं।'

मुझे यह संदेश संक्षिप्त में लिखना होगा ताकि यह बहुत लंबा न हो जाए। आर्थर मेरी ओर से आपको और आपके परिवार को क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाएँ देता है। ईश्वर का धन्यवाद, वह स्वस्थ है, और मैं भी स्वस्थ हूँ, और वह मेरा प्यारा बेटा है, निश्चित रूप से अब वह छह महीने पहले से कहीं अधिक प्यारा है। तीन दिन में हमारी शादी को इतने दिन हो जाएँगे! अलविदा, प्यारी नेल। — आपका विश्वासपात्र

'सी. बी. निकोल्स।'

1855 की शुरुआत में श्री और श्रीमती निकोल्स ने गॉथोर्प में सर जेम्स के-शटलवर्थ से मुलाकात की। मुझे उनके द्वारा इस वर्ष लिखे गए केवल चार पत्रों की जानकारी है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

हॉवर्थ, 19 जनवरी, 1855।

प्रिय एलेन, गॉर्थॉर्प से लौटने के बाद से हमारे यहाँ आर्थर के चचेरे भाई श्री बेल ठहरे हुए थे। उनसे मिलकर बहुत खुशी हुई। काश तुम उनसे मिल पातीं और उनसे परिचय कर पातीं; स्वभाव और शिष्टाचार से सच्चा सज्जन व्यक्ति हर दिन नहीं मिलता।

हैबरघम या पैडिहम के पद के लिए फिलहाल किसी के भी चुने जाने की संभावना कम ही है। वर्तमान पादरी अपना इस्तीफा वापस लेना चाहते हैं और दो साल के लिए एक सहायक पादरी नियुक्त करने का इरादा रखते हैं। मुझे डर है कि श्री सोडेन ने शायद ही कोई अनुकूल प्रभाव छोड़ा हो; आर्थर के आने की प्रबल इच्छा व्यक्त की गई थी, लेकिन यह संभव नहीं है।

मैं ब्रुकरॉयड आना चाहता हूँ, और आशा करता हूँ कि बुधवार, 31 जनवरी को निश्चित रूप से तारीख तय कर पाऊँगा; लेकिन सच तो यह है कि मुझे यकीन नहीं है कि मैं घर से निकलने के लिए स्वस्थ रहूँगा। फिलहाल तो मैं एक उबाऊ आगंतुक साबित होऊँगा। आयरलैंड से लौटने के बाद से लगभग दस दिन पहले तक मेरा स्वास्थ्य वास्तव में बहुत अच्छा था, लेकिन फिर अचानक मेरे पेट में खराबी आ गई; तब से मुझे अपच और लगातार कमजोरी महसूस हो रही है। प्रिय नेल, अनुमान मत लगाओ, क्योंकि अभी बहुत जल्दी है, हालाँकि मैंने पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया जैसा आजकल कर रहा हूँ। लेकिन इस बात को अपने तक ही रखना, क्योंकि मैं अभी कोई निश्चित राय नहीं बना सकता। मुझे बहुत दुख हो रहा है कि ब्रुकरॉयड जाने के ठीक उसी समय मेरा रूप बिगड़ रहा है और मैं दुबला हो रहा हूँ। प्रिय एलेन, मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ, और आशा करता हूँ कि मैं तुमसे स्वस्थ मिलूँगा। सभी को मेरा प्यार। — तुम्हारा विश्वासपात्र

'सी. बी. निकोल्स।'

तीन और पत्र थे, लेकिन वे उनकी मृत्युशय्या से पेंसिल से लिखे गए थे। इनमें से दो पत्र श्रीमती गैस्केल द्वारा छापे गए हैं - एक मिस नुसे को और दूसरा मिस व्हीलराइट को। यह तीसरा और अंतिम पत्र है।

सुश्री एलेन नुसे के लिए

मेरी प्यारी एलेन, श्रीमती हेविट के समझदारी भरे और स्पष्ट पत्र के लिए बहुत-

बहुत धन्यवाद। उन्हें भी धन्यवाद कहना। उनका मामला कई मायनों में मेरे जैसा ही था, लेकिन मेरी हालत कहीं ज़्यादा खराब है; मेरा शरीर कंकाल की तरह दुबला हो गया है। मैं बोल नहीं सकती। यहाँ तक कि अपने प्यारे, धैर्यवान और वफादार आर्थर से भी मैं एक बार में कुछ ही शब्द बोल पाती हूँ।

'पिछले दो दिनों से मेरी तबीयत कुछ बेहतर है, और मैंने अलग-अलग समय पर कुछ बीफ-टी, एक चम्मच वाइन और पानी, और एक निवाला हल्का पुडिंग लिया है।'

प्रिय एलेन, मैं भली-भांति समझती हूँ कि तुम बेचारी मर्सी के साथ किन-किन मुश्किलों से गुज़री हो और आगे भी गुज़रोगी। ईश्वर करे तुम्हें सहारा मिलता रहे और तुम कभी हिम्मत न हारो। यहाँ बीमारी बहुत फैली हुई है। श्रीमान और श्रीमती क्लैफम, तुम्हारी माँ और मर्सी को मेरा प्रणाम कहना। जब भी समय मिले, पत्र लिखना। — तुम्हारी,

'सी. बी. निकोल्स।'

अब ज्यादा कुछ कहना बाकी नहीं है। यह कोई जीवनी नहीं बल्कि पत्रों का संग्रह है, और मुझे बस इतना ही कहना है कि श्रीमती निकोल्स का 31 मार्च 1855 को प्रसव के बाद हुई बीमारी के कारण निधन हो गया और उन्हें हॉवर्थ चर्च में ब्रोंटे समाधि में दफनाया गया। उनकी वसीयत इस प्रकार है: —

यह जानकारी महामहिम के उच्च न्यायालय से संबद्ध यॉर्क स्थित जिला प्रोबेट रजिस्ट्री से ली गई है।

ईश्वर के नाम पर। आमीन। मैं, शार्लोट निकोल्स, ब्रैडफोर्ड पैरिश और यॉर्क काउंटी के हॉवर्थ की निवासी, स्वस्थ और विवेकशील मन, स्मृति और समझ रखते हुए, लेकिन अपनी मृत्यु के प्रति सचेत रहते हुए, सत्रह फरवरी, एक हजार आठ सौ पचपन को, अपनी अंतिम वसीयत निम्नलिखित रूप में बनाती हूँ, अर्थात्: यदि मेरी कोई संतान न हो, तो मैं अपनी सारी संपत्ति अपने पति को पूर्णतः देती हूँ, परन्तु यदि मेरी संतान हो, तो मैं अपने पति को उनके जीवनकाल तक अपनी संपत्ति का हिस्सा देती हूँ, और उनकी मृत्यु के बाद मैं चाहती हूँ कि मूलधन मेरे जीवित बच्चे या बच्चों को मिले; यदि एक से अधिक बच्चे हों, तो उन्हें बराबर-बराबर हिस्सा मिले। और मैं अपने पति, आर्थर बेल निकोल्स, क्लर्क को अपनी इस अंतिम वसीयत का एकमात्र निष्पादक नियुक्त करती हूँ; इसके साक्षी स्वरूप मैंने अपनी इस अंतिम वसीयत पर ऊपर लिखी तिथि और वर्ष को अपने हस्ताक्षर किए हैं - शार्लोट निकोल्स। उक्त

वसीयतकर्ता शार्लोट निकोल्स द्वारा, उनकी अंतिम वसीयत के रूप में, हम सभी की उपस्थिति में हस्ताक्षरित और स्वीकार किया गया, जिन्होंने उनके अनुरोध पर, उनकी उपस्थिति में और एक दूसरे की उपस्थिति में, साथ ही साथ गवाह के रूप में अपने नाम इस पर हस्ताक्षर किए हैं: पैट्रिक ब्रोंटे, बी.ए., हॉवर्थ, यॉर्कशायर के पादरी; मार्था ब्राउन।

18 अप्रैल 1855 को, यॉर्क काउंटी के ब्रैडफोर्ड पैरिश में हॉवर्थ की निवासी शार्लोट निकोल्स (पवित्र आदेशों में क्लर्क रेवरेंड आर्थर बेल निकोल्स की पत्नी) की वसीयत (यॉर्क प्रांत के भीतर वास्तविक संपत्ति रखने वाली) को यॉर्क के विशेषाधिकार न्यायालय में पति आर्थर बेल निकोल्स द्वारा शपथपूर्वक प्रमाणित किया गया था, जिन्हें प्रशासन का एकमात्र निष्पादक बनाया गया था, और जिन्होंने पहले विधिवत रूप से प्रशासन करने की शपथ ली थी।

वसीयतकर्ता की मृत्यु 31 मार्च 1855 को हुई।

'अधूरी प्रसिद्धि' पर शोक मनाना व्यर्थ है, लेकिन यह मानना आसान नहीं कि भविष्य में उनके लिए कोई बड़ी उपलब्धि थी। मिस ब्रोंटे के चार उपन्यास उनकी प्रतिभा के अमर प्रमाण बने रहेंगे। इनमें से दो उपन्यासों में उन्होंने अपने गृह क्षेत्र के सभी पहलुओं को प्रभावी ढंग से चित्रित किया, और अन्य दो में व्यापक जीवन के उन सभी पहलुओं को जो उन्हें प्रकट हुए। अस्सी वर्ष की आयु तक जीवित रहने पर भी वे इतना प्रभावी ढंग से ऐसा नहीं कर पातीं। यह सच है कि उनका जीवन दुखमय था, लेकिन ऐसे उपहार शायद ही कभी सुख लेकर आते हैं। प्रसिद्धि का स्वाद चखना, और वह भी इतनी स्थायी प्रसिद्धि, निश्चित रूप से एक अद्भुत अनुभव था।

श्री निकोल्स अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद छह वर्षों तक हॉवर्थ में ही रहे। श्री ब्रोंटे की मृत्यु के बाद वे आयरलैंड लौट गए। कुछ वर्षों बाद उन्होंने अपनी चचेरी बहन, मिस बेल से दोबारा शादी की। उनका यह दूसरा विवाह अत्यंत सुखमय रहा। मैंने उन्हें एक अत्यंत सरल और आकर्षक घर में पाया, जहाँ उन्हें जानने वाले सभी लोग उनका सम्मान करते थे और उनके अपने परिवार में उन्हें बहुत प्यार करते थे। यह समझना कठिन नहीं था कि शार्लोट ब्रोंटे उनसे प्रेम करती थीं और उनके लिए माता-पिता के विरोध का सामना किया था। उनमें सौम्यता, ईमानदारी, स्वाभाविक भक्ति और कोमल मन के गुण थे; और वे न केवल करर बेल की प्रसिद्धि के लिए, बल्कि अपने पिता के लिए भी बेहद चिंतित थे - जिन्हें पिछले वर्षों में अनुचित रूप से बदनाम किया

गया था। श्री निकोल्स अपने आयरिश घर की सुखद शांति का आनंद दीर्घायुता से लेते रहें, यही उन सभी की कामना है जिन्होंने उनकी पत्नी के प्रति निरंतर समर्पण के बारे में पढ़ा है, जो अपनी स्त्री जाति की महानतम महिलाओं में सर्वदा स्थान रखती हैं।

यॉर्कशायर के स्कारबोरो में ऐनी ब्रोंटे की कब्र

सेंट माइकल एंड ऑल एंजल्स चर्चयार्ड, हॉवर्थ — ऐनी को छोड़कर ब्रोंटे परिवार का अंतिम विश्राम स्थल

हॉवर्थ के सेंट माइकल और ऑल एंजल्स चर्चयार्ड में स्थित समाधि